तमिल

कम्ब रामायण

बालकाण्ड

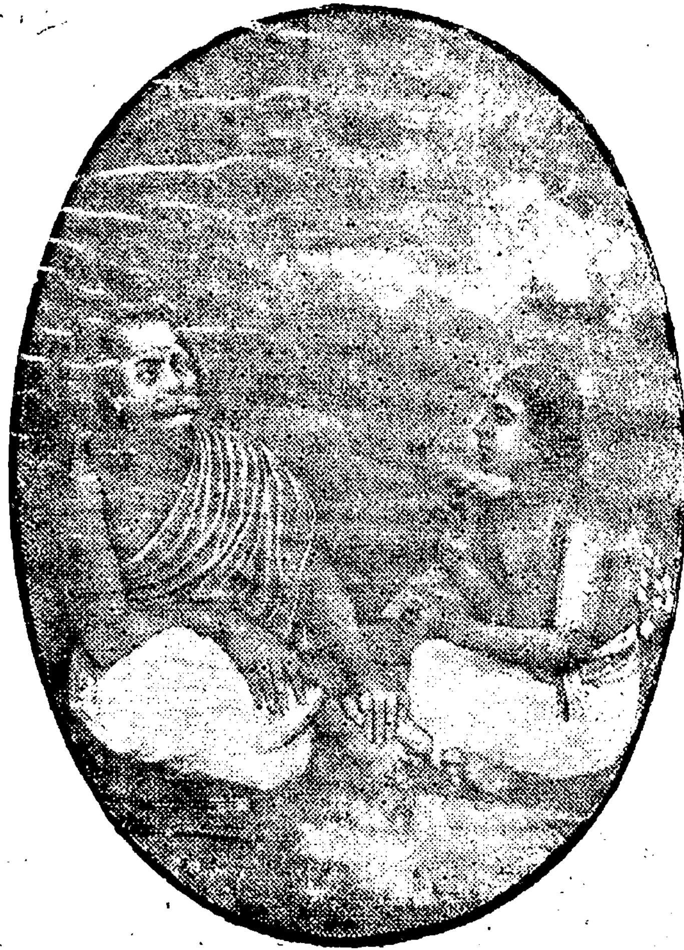

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

श्री स्वामी चिन्मयानन्द

बाम्बे यज्ञशाला
१४-११-७६

श्री शेषाद्रि
मदुरै

धन्य ॐ

हरि: ओम्, हरि: ओम्, हरि: ओम्, प्रणाम।

कम्बर रामायण के पूरे दस हज़ार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें।

प्रेम प्रेम प्रेम
(प्रेमसहित)
ॐ चिन्मयानन्द

कम्बन-मणिमण्डपम्

कारैक्कुडी (तमिऴनाडु) में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल
पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन अडिप्पॉडि
(कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन
द्वारा स्थापित—

उपर्युक्त पवित्र 'कम्बन-मणिमण्डप' में स्थायी निवास करते हुए, परमभक्त श्री सा० गणेशन, वार्षिक जयन्ती, उत्सव, पूजा की व्यवस्था रखते हैं। वे स्वयं 'कम्बन का प्रचार करके, कन्या (नितयौवना) तमिऴ की श्री-वृद्धि करने के' अपने स्तुत्य प्रयत्नों में 'कम्बन-मण्डपम्' की रचना, कम्बन के नाम पर एक विद्यालय आदि स्थापित करके अपने को 'कम्बन अडिप्पॉडि' अर्थात् 'कम्बन-चरणरेणु', ऐसा नाम देकर कम्बन-ज्योति को जगाये हुए हैं।

K. SANTHANAM
PHONE : 74231

58, Esst Abhiramapuram Street
MYLAPORE, MADRAS-4

To enable the millions of people whose Mother Tongue is Hindi to read, understand and appreciate Tamil classical literature like Kamba-Ramayana is certainly a worthy effort.

There can be differences of opinion as to how this should be done. To transliterate the Tamil verses into Hindi script and thereby enable the Hindi people to read Kamban in the original is one method.

To teach Hindi people the Tamil script and thereby enable them to read the Tamil original is another.

In this volume the first method has been adopted. The amount of effort involved is tremendous as the volume containing only the Balakandam with transliteration, meaning of words and Hindi translation is a volume of 652 pages.

I wish the effort all suceess.

1 - 9 - 79 Sd/ K. SANTHANAM.

अनुवाद

लाखों हिन्दी भाषियों को कम्बरामायण सरीखे तमिळ के उत्कृष्ट ग्रन्थों के पढ़ने, समझने और रसास्वादन के विषय में सहायता देना अवश्य एक अच्छा प्रयास है ।

यह कैसे किया जाय, उस पर मत भिन्न हो सकते हैं । तमिळ पदों का लिप्यन्तरण करना एक उपाय है और उनको तमिळ का अक्षर सिखाकर स्वयं पढ़ लेने देना दूसरा उपाय है ।

इसमें पहला मार्ग अपनाया गया है । प्रयास बहुत बड़ा है । बालकाण्ड ही ६५२ पृष्ठ तक में व्याप्त हो गया है ।

परिश्रम की सफलता की कामना करता हूँ ।

58, ईस्ट अभिरामपुरम् स्ट्रीट (हस्ताक्षर) के० सन्तानम्
मइलापुरम्, मद्रास-4 भूतपूर्व (संविधान सदस्य, केन्द्रमंत्री, उपराज्यपाल, विन्ध्य प्रदेश···)

Dr. S. Shankar Raju Naidu

M.A., Ph.D., F.R.A.S. (London).

PROFESSOR & HEAD OF THE DEPARTMENT OF HINDI

UNIVERSITY OF MADRAS—5

विश्व-महाकाव्यों में आदि संस्कृत कवि वाल्मीकि-रचित रामायण का एक विशिष्ट स्थान है। अन्य किसी महाकाव्य का रामायण के समान पुनःपुनः पुनर्जन्म नहीं हुआ है— न मूल ग्रन्थ की ही भाषा में और न अन्यान्य भाषाओं में। रामायण ही एक ऐसा महाकाव्य है जिस पर संस्कृत में ही नहीं अपितु अन्य सभी सम्पन्न भारतीय भाषाओं में काल एवं स्थान की परिवर्तित संस्कृति के अनुकूल सर्वथा मौलिक रूप में ग्रन्थ-रत्नों की रचना हुई है। इनके अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया की भाषाओं में भी अनेकानेक आश्चर्य-जनक रामायणों को श्रेष्ठ कवियों ने जन्म दिया है। इन सब पर यदि—

डॉ० सु० शंकर राजू नायडू

(i) 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्'

(ii) 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'

(iii) 'भूषण बिनु न विराजयी, कविता बनिता मित्र'

आदि सार्थक साहित्यिक सूक्तियों के आधार पर पुंखानुपुंख रूप से विचार किया जाय तो किसी भी सहृदय निष्पक्ष विद्वान को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि तमिऴ में रचित कम्बरामायण का उनमें अद्वितीय स्थान है। कम्बर का काल बारह्वीं शताब्दी माना जाता है। इस रचना में कथा-वस्तु, पात्र-परिकल्पना व उद्देश्य में मूल वाल्मीकि की रचना से अनेकानेक स्थानों में अपूर्व परन्तु आवश्यक अन्तर देख सकते हैं, जो तमिऴ संस्कृति की विशिष्टता के परिचायक हैं।

इस अनुपम तमिऴ महाकाव्य का हिन्दी (अर्थात् खड़ी बोली) में रूपान्तरण करके प्रो० ति० शेषाद्रि ने एक राष्ट्रीय महत्त्व का अत्युत्तम साहित्यिक कार्य सम्पन्न किया है। उन्होंने अपने अनुवाद में मूल कम्बरामायण के एक-एक शब्द का ही नहीं अपितु उनमें निहित व्यंजना व ध्वनि का भी विशेष ध्यान रखा है। प्रो० शेषाद्रि ने इस प्रकाशन के द्वारा तमिऴ-हिन्दी के बीच एक ऐसे सुदृढ़ साहित्यिक पुल का निर्माण किया है, जिससे राष्ट्रीय एकता को समझने में विशेष सहायता प्राप्त होगी और साथ ही हिन्दी के विद्वान संसार की प्राचीनतम जीवित भाषा तमिऴ के साहित्यिक सौन्दर्य का कुछ अनुमान कर सकेंगे।

प्रो० शेषाद्रि इस सफल प्रयत्न के लिए बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं।

मद्रास, ६ सितम्बर, १९७९

(ह०) सु० शंकर राजू

FOREWORD

Kamban is the greatest poet produced by Tamil Nadu and his Ramayana is a strikingly original recreation and not a translation. He has made significant departures from the frame-work of the original story and has introduced dramatic situations and dialogues which are not to be found in the original. His characterisation of the main characters in the Epic are radically different from, and a great improvement upon the original. He neutralizes the stiffness of the Epic with the supplen ss of Drama and suffuses both with the glow of his lyrical intensities. Whatever he does, he manages to sustain in the reader a feeling of passionate intimacy with things that count. He drives the reader to

जस्टिस् (न्यायमूर्ति) एस० महाराजन्

dip himself again and again in the cleansing waters of his Ramayana and to emerge with a warmer idealism, with a sense of keener personal partricipation in the upholding of virtue, with a sharper sensitivity to what is beautiful, good or true, with a greater courage to put the ultimate questions and an easier confidence to tackle them.

And all this he achieves through his supreme gift of poetry. Kamban's rhythm has an unrivalled fullness, variety and sufficiency. He manipulates his vowel and consonantal sounds with such dexterity and magic that they bring out the astral form of any mood or emotion. And his rhythmic inventions have the effect of hushing the chattering

mind of the reader and keeping it receptive to the message of the Poet, undistracted by the pressures of the private will. All this manipulation bears the imprimatur of unlaboured spontaneity and does not betray the pre-verbal agony of poetic creation. While describing some deep inexorable purpose behind the Cosmos or while conveying some glimpse of the inner chambers of existence, his rhythm effectively prolongs the moment of contemplation. Such indeed is the *attar* of Kamban's poetry that by common consent of the Tamils, Kamban has been rightly acclaimed as Kavi Chakravarti or the Emperor of Poesy.

Edward Leuders, a distinguished American Poet, has after going through the English translation of some of the poems of Kamban, said: "The characteristic reach of the Poet Kamban for cosmic personification in his poetry clearly ties these high and abstract matters to very human letail. It is the world of human experience he deals with, and it is through the exaltation of poetic song that he achieves what all the world's great poetry attempts to achieve...a marriage of the divine and timeless with the earthly and experiential".

V.V.S. Iyer, who was a great scholar in Latin, Greek, Sanskrit, French and English has remarked that Kamban is entitled to a pre-eminent place in an assembly of the greatest poets of the world.

Prof. T. Seshadri has, by translating this great classic into Hindi, built a bridge of literary and intellectual understanding between the great Hindi-speaking world and the greatest poet of the Tamils. That Mr. Seshadri is a distinguished scholar in Hindi, Tamil and English and that his trilingual competence and his great expertise in the field of translation peculiarly fit him for the translation of Kamban into Hindi, is beyond question. By his translation, he has thrown open new avenues for comparative literary research. I am specially grateful to him for indicating with star marks the songs of Kamban, which alone were accepted as genuine by the great and distinguished aesthete, Rasikamani T K. Chidambaranatha Mudaliar, so that distortions may be avoided by Hindi men of letters and critics in the true evaluation of Kamban's genius. I admire Mr. Seshadri for having achieved the stupendous task of translating Kamban and thereby putting the Tamils under a deep debt of gratitude to him.

Shri Nandkumar Avasthi, Mukhya Nyasi Sabhapati, Bhuvan Vani Trust, has done pioneering work in India by causing the translation into Hindi the best in the literatures of the world. More than any other single individual in India, he has dedicatea his life to the sacred work of effecting through literature not only national integration but also world integration. May God bless his laudable venture with all success.

(Sd.) Justice S. Maharajan,
Chairman, Tamil Nadu State Expert Committee
for Translation of Classics &
Chairman, Tamil Nadu State Official
Language (Leg.) Commission, Madras-2.

अनुवाद

कम्बन तमिळ्नाडु (देश)-प्रसूत महानतम कवि हैं और उनकी रचित रामायण प्रभावकारी मौलिक पुनर्रचना है। उन्होंने केवल अनुवाद नहीं किया है। उन्होंने मौलिक कहानी के ढाँचे में अनेक स्थलों में साभिप्राय परिवर्तन किये हैं और ऐसी नाटकीय घटनाओं और कथोपकथनों का विधान किया है जो मूल में प्राप्त नहीं। इस महान काव्य के प्रधान पात्रों का चरित्र-चित्रण जो कवि ने किया है, वह मूल से तत्त्वत: भिन्न है और असल में वह मूल का संशोधन है। उन्होंने काव्य की 'रुक्षता' को 'नाटक' की कोमलता से लचकदार बनाया है और दोनों को अपनी गीति की तीव्रता की ज्योति से आलोकित कर दिया है। उन्होंने जो भी किया है वहाँ उन्होंने इतना कौशल दिखाया है कि मुख्य घटनाओं से पाठक की रागात्मक आत्मीयता हो जाती है। वे पाठक को अपनी रामायण के पवित्रकारी प्रवाह में फिर-फिर गोता लगाने को मजबूर कर देते हैं और पाठक बाहर आते समय हर बार पहले से अधिक उत्साहवर्धक आदर्शवादिता, नैतिकता के संस्थापन में व्यक्तिगत योगदान की तीव्रतर दायित्व भावना, सत्यं, शिवं, सुन्दरम के प्रति अधिक संवेदनशीलता, परममुख्य प्रश्नों को उठाने का और अधिक साहस और उनका समाधान निकाल लेने का अधिक सुलभ-आत्मविश्वास —इनको लिये हुए निकलता है।

यह सब कवि सम्पादन करते हैं अपनी सर्वोत्कृष्ट कविता के वरदान द्वारा। कम्बन के (छन्दरचना) लय में एक अद्वितीय पूर्णता है, विविधता है और पर्याप्तता है। वे अपने स्वरों और व्यंजनों का इस दक्षता और जादू के साथ ताना-बाना बुनते हैं कि किसी भी मन-स्थिति या भाव को 'नक्षत्रलौकिक' (दिव्य) रूप प्राप्त हो जाता है। उनके आविष्कृत नये छन्दों में पाठक के बकवादी मन को चुप कराने का सामर्थ्य है; और स्वतन्त्र संकल्प के दबावों से दूर रहकर कवि के सन्देश को ग्रहण करने के लिए उन्मुख बनाने की अनूठी शक्ति है। इन सब कवि-कर्मों पर कवि की अनायास स्वत: प्राप्ति की छाप है; और किंचित भी काव्य-सृष्टि में सम्भाव्य शब्द-चयन-पूर्व परिश्रम की छटपटाहट की आहट नहीं मिलती। कवि चाहे प्रपंच के पीछे क्रियाशील गम्भीर और अवार्य हेतु का वर्णन करते हों या जीवन महल के अन्तरतम कक्षाओं की झाँकी दिखा रहे हों, उनके छन्दों का लय पाठक के अवधान की अवधि को बढ़ाने में सफल रहता है। कम्बन के काव्य की 'इत्र' (सुगन्ध) ऐसी है कि तमिळ देशवासियों की सर्वसम्मति से वे कवि-चक्रवर्ती या काव्य-(साम्राज्य के) सम्राट् घोषित हो गये हैं।

एडवर्ड लूडर्स एक विख्यात अमरीकी कवि हैं। उन्होंने कम्बन के कुछ पदों का अनुवाद पढ़ा और बताया कि अपने काव्य में विश्वव्यापी रूपक रचना की कला में उनकी अनूठी पहुँच है और वह साफ रूप से उन उच्च और सूक्ष्म पदार्थों को शुद्ध मानवीय तत्त्वों से बाँध देती है। वे मानवीय अनुभवों के संसार में ही व्यवहार करते हैं। तो भी काव्यगान के उदात्तीकरण के द्वारा उन्हें वह साफल्य मिल जाता है जिसकी प्राप्ति के हेतु विश्व का सर्वश्रेष्ठ काव्य प्रयत्न करता है— और वह है कालातीत दिव्य (तत्त्व) का लौकिक और अनुभवगम्य के साथ परिणय।

श्री वी० वी० एस० अय्यर ने, जो लेटिन, ग्रीक, संस्कृत, फ्रेंच और अंग्रेज़ी के श्रेष्ठ विद्वान हैं, यों कहा है कि संसार के सबसे बड़े कवियों के संघ में कम्बन अति मुख्य स्थान के हकदार हैं।

आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस समुन्नत काव्य का हिन्दी में अनुवाद करके विशाल हिन्दी भाषी जगत और तमिळ के सर्वश्रेष्ठ कवि के मध्य एक साहित्यिक और बौद्धिक सेतु का निर्माण किया है। श्री शेषाद्रि हिन्दी के जानेमाने विद्वान हैं और अपनी त्रिभाषाई योग्यता और अनुवाद क्षेत्र में अपनी निपुणता के कारण वे कम्बन के हिन्दी अनुवाद के कार्य के लिए योग्य हो गये है। उनके इस अनुवाद द्वारा तुलनात्मक साहित्यिक खोजों के लिए नये क्षेत्र खुल गये हैं। उन्होंने उन पद्यों को नक्षत्रचिह्न से चिह्नित किया है, जिनको ही उत्तम काव्यमर्मज्ञ और कलाविद 'रसिकमणि' टी० के० चिदम्बरनाथ मुदलियार ने प्रामाणिक माना था। इसके लिए हम शेषाद्रि के विशेष रूप से आभारी हैं। इस कार्य से हिन्दी के विद्वान कम्बन की प्रतिभा और मेधा के मूल्यांकन में अप्रामाणिकता और अशुद्धियों से बच सकेंगे। श्री शेषाद्रि ने कम्बन के अनुवाद का परम कष्ट-साध्य कार्य सम्पन्न किया है, और एतद्द्वारा तमिळ लोगों पर बड़ा एहसान लाद दिया है। तदर्थ मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ।

भुवन वाणी ट्रस्ट के मुख्यन्यासी सभापति श्री नन्दकुमार अवस्थी ने संसार के अन्यतम ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत कर भारत में युगप्रवर्तक काम किया है। कोई भी अकेले व्यक्ति जो कर सकते हैं, उनसे कहीं अधिक उन्होंने साहित्य द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण के लिए ही नहीं बल्कि विश्वैक्यकरण के पवित्र कार्य के लिए अपना तन-मन-धन लगा लिया है। भगवान उनके इस स्तुत्य कार्य में सभी सफलताएँ प्रदान करें।

(ह०) जस्टिस् एस० महाराजन्

अध्यक्ष, तमिळ सरकारी ग्रन्थ अनुवाद विशेषज्ञ-समिति

व

अध्यक्ष, राज्य शासकीय भाषा (वैधानिक) कमीशन

मद्रास–600002

FOREWORD

I am asked to write a foreword to this translation of Kamba Ramayana in Hindi with transliteration of the original verses in Nagari script. I do so with pleasure.

Kamban has been an eternal and unfailing source of joy and elation to very many who know Tamil and who love literature. His beautiful language, brilliant delineation of the nature, captivating characterisation, amazing understanding of human feelings and sentiments, high moral purpose which runs through the entire work, his unique contribution to the concept of Godhood and the universal appeal which his philosophy makes, all combined together to make a unique impression on me. Reading of Kamban had always provided a rejuvenating relief from the routine of my work. Hence when I learnt that his work has been translated into Hindi, I felt delighted at the thought that a larger number of people whose mother tongue is not Tamil and who do not know Tamil can now enjoy and benefit by the study of Kamban.

चीफ् जस्टिस् एम० एम० इस्माइल

I learn that this translation is being published by Bhuvan Vani Trust, Lucknow, and the individual behind the effort is Shri Nandakumar Avasthee, its founder-President. Thanks to his untiring zeal and enthusiasm in the cause of emotional and national integration which he desires to bring about by making available translation and transliteration of classics in various languages into Hindi and Nagari script, 30 books including the Holy Quran from the Arabic and Bible from English and Thirukkural from Tamil have come in Hindi. Many more works are said to be in the offing. The Trust is also making transliteration and translation of good literature in Hindi into other languages.

The present translation work is being done by Shri T. Seshadri, Retired Professor of Hindi, who has to his credit a rich experience of translation work in three languages English, Hindi and Tamil. The

scheme of the present work is to give Kamban's verses in Hindi script and below the same to give the meanings for the Tamil words in Hindi in the prose order and thereafter to give a running meaning of each stanza in Hindi. Of course it is impossible to bring out completely the inherent beauty of a literature in one language by translating the same into any other language, whatever the efforts that may be taken in that behalf, since from the very nature of the case each language has got its own peculiarities acquired by centuries of use of its words in a particular sense and in a sense the words may even epitomize the entire culture and civilisation of the concerned people. However, Shri Seshadri has done all that is humanly possible within the limitations inherent in the task and his work deserves encouragement and praise.

I commend the work of the Trust and I wish the Trust all success in this noble endeavour of its.

(Sd.) M. M. Ismail.
Chief Justice, Tamil Nadu

Madras, 11th Jan. 1980

अनुवाद

मुझसे निवेदन किया गया कि कम्बन के इस लिप्यन्तरण-भाषान्तरण की भूमिका लिखूं और मैं सहर्ष यह भूमिका लिख रहा हूँ।

अनेकानेक तमिऴ ज्ञाता साहित्यप्रेमियों के लिए 'कम्बन' (का अध्ययन) आनन्द और चित्तोल्लास का अचूक और निरन्तर स्रोत रहता आया है। उसकी सुन्दर भाषा, प्रकृति का उज्ज्वल वर्णन, चित्तापहारी चरित्र-चित्रण, मानवीय भावों और भावनाओं के क्षेत्र में उसका विस्मयकारी संवेदन, उसकी सारी रचना में अंतर्निहित रहनेवाला नैतिक उद्देश्य, ईश्वर सम्बन्धी धारणा के क्षेत्र में उसके दर्शन का अनूठा योगदान, उसके दार्शनिक सिद्धान्त जिनका आकर्षण सार्वभौमिक है —इन सबने मिलकर मेरे मन पर अप्रतिम प्रभाव अंकित किया है। कम्बन का अध्ययन मुझे अपने दैनिक कार्य-भार के दबाव से यौवनोल्लासकारी मुक्ति दिलाता आया है। अतः जब मुझे मालूम हुआ कि इस काव्य का हिन्दी में अनुवाद हुआ है तो मुझे इस विचार को लेकर अति आनन्द हुआ कि अब अधिक संख्या में लोग, जिनकी मातृभाषा तमिऴ नहीं है और जो तमिऴ नहीं जानते, कम्बन का रस-भोग कर सकेंगे और लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

मुझे मालूम होता है कि यह अनुवाद लखनऊ के 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित हो रहा है और इस प्रयास के प्राण श्री नन्दकुमार अवस्थी हैं जो उस ट्रस्ट के संस्थापक-अध्यक्ष हैं। वे विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों के हिन्दी में लिप्यन्तरण-भाषान्तरण द्वारा राष्ट्रीय एकता और भावात्मक ऐकीकरण लाना चाहते हैं और इस दिशा में उनका अथक उत्साह और ज्वलन्त जोश धन्य है कि आज लगभग तीस अत्युत्तम ग्रन्थ हिन्दी में उपलब्ध हैं जिनमें अरबी का क़ुरान शरीफ़, अंग्रेजी से इंजील और तमिऴ से तिरुक्कुऱळ्

शामिल हैं। और भी अनेक ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं। ट्रस्ट हिन्दी के अच्छे ग्रन्थों का भी अन्य भाषाओं में लिप्यन्तरण-भाषान्तरण प्रस्तुत कर रहा है।

प्रस्तुत अनुवाद श्री ति० शेषाद्रि द्वारा किया जा रहा है। वे अवकाश-प्राप्त आचार्य हैं और उनका अंग्रेजी, तमिळ और हिन्दी में अनुवाद कार्य का समृद्ध अनुभव है। इस कृति की रचनाविधि यों है— पहले नागरी लिपि में कम्बन का मूल पद देना; बाद तमिळ के शब्दों का, अन्वय के क्रम से हिन्दी अर्थ देना, और उसके बाद धारावाही भावार्थ देना है। यह सिलसिला सभी पदों का रहेगा। यह तो सर्वविदित है कि एक भाषा के साहित्य के दूसरी भाषा में अनुवाद में सारी अन्तर्निहित खूबियाँ लाना-दरसाना असम्भव है; चाहे प्रयास कितने ही किये जाते हों! क्योंकि मामला ही कुछ ऐसा है कि हर भाषा की अपनी-अपनी विशिष्टताएँ हैं, जो उसे उसके शब्दों के सदियों के विशेष अर्थों में प्रयोग के दौरान मिल जाती हैं। एक तरह से शब्द सम्बन्धित लोगों की सारी सभ्यता व संस्कृति के सार-संक्षेप ही हो गये रहते। तो भी श्री शेषाद्रि ने कार्य की स्वाभाविक परिसीमाओं के अन्दर रहकर सारे प्रयत्न किये हैं जो मानवसाध्य हैं। और उन्हें प्रोत्साहन और प्रशंसा मिलनी चाहिए।

ट्रस्ट के सत्कार्य की मैं तहेदिल से ताईद करता हूँ और उसे इस सदिच्छापूर्ण कार्य में सफलता मिले —इसकी हार्दिक कामना करता हूँ।

(हस्ताक्षर) एम० एम० इस्माइल
प्रधान न्यायमूर्ति, तमिळ नाडु

मद्रास, ११ जनवरी, १९८०

प्रस्तावना

कम्बन् ऒरु कविञन्; महा कवि; कविच् चक्करवर्त्तति; ऎल्लावऱ्ऱिऱ्कुम् मेलाह अवन् कल्वियिऱ् चिऱन्दवन्. अवन् कल्लाद कलैयुम् वेदक्कडलुम् उलहिल् इल्लादन. आम्; अवन् कालत्तिल् इरुन्द वेदम्, उबनिडदम्, पुराणङ्गळ, इदिहासङ्गळ, तर्म शास्तिरङ्गळ, पल् वेऱु कलै नूल्हळ् आहियवऱ्ऱै आऴ्मुडन् कऱ्ऱुत् तेर्न्दिरुक्किऱान्. तमिऴ् शमस्किरुदम् इरण्डिलुम् पेराऱ्ऱल् पॆऱुम् बुलवनाय् इरुन्दिरुक्किऱान्. वेऱु शिल पिरान्दिय मॊऴिहळुम् अवनुक्कुत् तॆरिन्दिरुक्क वेण्डुम्.

कम्बन् अडिप्पॊडि सा० गणेशन्

इन्दिया ऒरु अकण्डमान तेयम्; इमयम् मुदल् कुमरि वरै इरु कडल् किऴक्कुम् मेऱ्कुम् करै तॊट्टु निऱ्क, विळङ्गुम् ऒरु पऴम् पॆरुम् देयम्! मॊऴियाल्, नागरिगत्ताल्, शीतोष्ण निलैयाल्, उणवुहळाल् वेऱु पट्ट निलैहळ् काणप् पट्टालुम्, अऱिवाल्, उणर्वाल्, नम्बिक्कैयाल् माऱु पडाद मक्कळैक् कॊण्ड ऒरे देयमाह विळङ्गुवदु नमदु बारद देयम्. वेद कालत्तिलिरुन्दु जम्बुत् तीवम् बारद वर्षम्, बरद कण्डम् विळङ्गि वरुहिन्ऱदु. अन्द ऐक्किय मनप् पान्मै तमिऴ् नाट्टिल् आयिरम् पल्लायिरम् आण्डुहळाह — वरलाऱ्ऱुक् कालत्तिलिरुन्दे — निलवि वन्दुळ्ळदु. पण्डैत् तमिऴ् नूल्हळुम्, पाडल्हळुम्, अहण्ड इन्दियावै अप्पडिये शॊर्चित्तिरमाहप् पडम् पिडित्तुक् काट्टुहिन्ऱन.

अन्दप् परम्बरैयिल् उदित्तवन् कविच् चक्करवर्त्तति; दॆय्वम् तॊऴिन्दवन्; कल्वि, अऱिवु, ऒऴुक्कम्, बक्ति, कवित्तुवम् निऱैन्दवन्. वान्मीहि, बोदायणन्, वशिट्टन् आहियोर् इयऱ्ऱिय इराम कादैहळै ईडुपट्टुक् कऱ्ऱिरुक्किऱान्. मूवरिलुम् मुन्तवरान वान्मीहियिन् इरामायणत्तिल् नॆञ्जैप् परि हॊडुत्तिरुक्किऱान्. अक् कवैयुम्, अक्कवैयिन् तलैमैप् पात्तिरमाहिय इरामनुम् कम्बन् उळ्ळत्तैप् पॆरिदुम् कवर्न्दवर्हळ्. इरामनुडैय कल्याण गुणङ्गळैक् कऱ्कक् कऱ्क इरामनुक्के कम्बन् आळाय् विट्टान्. इरामनै कम्बनिन् मुऴुमुदऱ् कडवुळाहवुम् आहि विट्टान्.

पल्वेऱु वहैयात परन्दु पट्ट कल्वियुम्, इराम बक्तियुम्, कविदा सन्नदमुम्, वळमान उलह अनुबवमुम्, "इरामावदारम्" ऎन्नुम् पारकावियत्तै अऱ्पुदमाहप् पडैक्कक् कम्बन् ऎन्ऱ कविच् चक्करवर्त्तिक्कुक् कै कॊडुत्तु उदवियिरुक्किन्ऱन. तिरुक्कुऱळ् पोन्ऱ ऒप्पऱ्ऱ अऱ नूल्हळिल् विदित्तुळ्ळ नॆऱि मुऱैहळुक्कु एऱ्प इरामकदैक् कट्टुक् कोप्पुम्, इरामन्, शीदै, इलक्कुवन्, बरदन्, अनुमन् मुदलिय पात्तिरङ्गळुम् अमैन्दिरुन्दमै कम्बनुक्कु इराम कादैप् पाडुवदऱ्कुप् पॆरिदुम् ऊक्कत्तैयुम् उऱ्चाहत्तैयुम् अळित्तिरुक्किऱदु.

कम्बऩ् सत्तियत्तै आशिरयित्तवऩ्, 'सत्तियमे इरामऩ्' ऎऩ्ऱ नम्बुबवऩ्. "अऱत्तिऩ् मूर्त्ति" ऎऩ्ऱु इरामऩैप् परवुवाऩ्. इरामऩ् ऎऩ्ऩुम् तऩदु वऴि पडु कडवुळुक्कुच् चमैत्त शॊऱ्कोयिलाहवे करुदि 'इरामावदारम' ऎऩ्ऩुम् पार कावियत्तैप् पक्ति शिरत्तैयोडु पडैत्तुळ्ळाऩ्. ताऩ् पडैत्त अन्द महा कावियत्तै शकाब्दम् ८०७ (ऎण्णूत्तु एऴि) ल्– अदावदु कि० पि० ८८६ (ऎण्णूत्तु ऎण्बत् ताऱु) पॆब्रुवरि, २३ (इरुपत्तु मून्ऱु) आऩ् देदि पुदऩ् किऴमै तुदियै तिदि अस्त नट्चत्तिरत्तिल् वॆण्णॆय्नल्लूरिल् अरङ्गेऱ्ऱिताऩ्. अदऩ् अरुमै पॆरुमैहळै मदित्तु अऱवोर्हळुम्, अऱिञर्हळुम् शेर्न्दु मुदऩ् मुदलाहक् "कविच् चक्करवर्त्ति" ऎऩ्ऩुम् पट्टत्तैक् कम्बऩुक्कुच् चूट्टि महिऴ्न्दऩर्.

वाऩ्मीह बगवाऩ् अरुळिय इरामायणत्तिऩ् कट्टुक् कोप्पैयुम् कदैयैयुम् कम्बऩ् अप्पडिये एऱ्ऱुक् कॊण्डिरुक्किऱाऩ्. ऎऩ्ऱालुम्, आङ्गाङ्गे कालत्तिऱ्कुम्, इडत्तिऱ्कुम् नागरिहप् पण्बाट्टिऱ्कुम् एऱ्ऱ शिऱ्चिल माऱ्ऱङ्गळैयुम् शॆय्दिरुक्किऩ्ऱ अरुमैप्पाट्टैक् काणलाम्. वाऩ्मीहत्तिल् इल्लाद इरण्य वदैप्पडलत्तैक् कम्बतिल् काणलाम्. अदिल् कम्बऩुडैय उबनिडद ञाऩम् ऒळिविडुवदैक् काणलाम्. वाऩ्मीहि पडैत्त माया रामप्पडलत्तै नीक्कि विट्टु माया जनहप् पडलत्तैप् पुहुत्तिय कम्बऩिऩ् मतत्तत्तुव (Psychological) अऱिवु पॆरिदुम् पाराट्टत् तहुम्. अप्पडिये वालि मोट्चम् ऎय्दि पिऩ् तारैयैच् चुक्किरीवऩिऩ् मनैवियाक्कामल् विदवैयाहवे वाळवैत्त नेर्त्तियुम् पॆरिवुम् महिऴत् तक्क माऱ्ऱमाहुम्. इङ्ङऩम् तमिऴ् इलक्कणम् वहुक्कुम् "पिऩ्ऩोर् वेण्डुम् विहऱ्पङ्गळै" ऎल्लाम् आङ्गाङ्गे पुहुत्तिय कम्बऩिऩ् पडैप्पाऱ्ऱलै ऎत्तुणैप् पुहऴिऩुम् तहुम्.

काळिदासऩै, बवबूदियै, हर्षऩै, बासऩै, इऩ्ऩुम् षेक्स्पियर्, मिल्टऩ्, बैरऩ्, षॆल्लि, कीत् पोऩ्ऱ वॆळिनाट्टुप् पुलवर् पॆरुमक्कळैयुम्, तुळसिदासर्, टाकुर् पोऩ्ऱ पिऱ्कालप् पुलवर्हळैयुम् तमिऴ् अऩ्बर्हळ् तम् मॊऴियिल् पॆयर्त्तुक् कऱ्ऱु महिऴ्हिऩ्ऱऩर्. अङ्ङऩमे तमिऴ् मॊऴियिल् उळ्ळ कम्बऩै, वळ्ळुवऩै, इळङ्गोवै, बारदियै ऎल्लाम् इन्दियप् पॊदु मॊऴियाहिय हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्त्तुप् पयऩ् तुय्क्क वेण्डुम्. अप्पॊऴुदु ताऩ् नाट्टिऩ् ऒरुमैप्पाडुम् परन्दडर्न्द पल् वेऱु कलै निलैहळुम् पुलप्पडुत्तप्पट्टु नलम् बयक्कुम्.

अन्द वहैयिल् वळ्ळुवप् पेराशाऩ् वऴङ्गिय तिरुक्कुऱळ् एऱ्कऩवे हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टु विट्टदु. वेऱु शिल शिऱ्ऱिलक्कियङ्गळ्, शिऱु कदैहळ्, तत्तिप्पाडल्हळ् हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टुळ्ळऩ. कविच् चक्करवर्त्तियिऩ् इरामावदारम् इप्पॊऴुदु मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टु वॆळि वरुहिऱदु. इदै मिक्क बक्ति शिरत्तैयुडऩ् वॆळिवरच् चॆय्बवर् श्रीजत् नन्दकुमार अवस्ति अवर्हळ् आवार्. अवर्हळिऩ् इराम बक्तियैयुम् इरामायण ईडुपाट्टैयुम् पॆरिदुम् पाराट्टि वाऴ्त्तुहिऱेऩ्; वणङ्गुहिऱेऩ्.

इन्दप् पॆरुङ्गाप्पियत्तैच् चॆम्मैयाहवुम्, शिऱप्पाहवुम् मॊऴि पॆयर्त्तवर् मदुरै हिन्दिप् पेराशिरियर् ति० शेषात्तिरि अवर्हळ्. मूल नूल् मॊऴियाहिय तमिऴिलुम् मॊऴि पॆयर्क्कप्पॆऱुम् मॊऴियाहिय हिन्दियिलुम् शिऱन्द पयिऱ्चियुम् पुलमैयुम् कॊण्डवर्; मॊऴि पॆयर्प्पाऱ्ऱल् मिक्कवर्; इरामकादैयिल् ईडुपाडु निरम्बियवर्; ऎल्लावऱ्ऱिऱ्कुम् मेलाह महा कविहळै मदित्तुप् पोऱ्ऱुम् पण्बाट्टाळर्. ऎऩवे मॊऴि पॆयर्प्पु मूल नूलिऩ् पॆरुमैयैक् कऱ्पोर् नऩ्गुणरप् पॆरिदुम् तुणै पुरियुम्.

इङ्ङऩम् इम् मॊऴि पॆयर्प्पुक्कुक् कारणर्हळायिरुन्द इरुवरैयुम् पलहालुम्

वाऴ्त्ति वणङ्गुहिऱेऩ्. इरुवर्क्कुम् अॅल्ला नलऩ्गळैयुम् अरुळवेण्डुमॅऩ्ऱु अॅऩ्तॅपिराऩ् कम्बतैयुम् अवऩ् पाडिय् परवुम् परम् बॊरुळाम् श्री रामच्चन्दिर मूर्त्तियैयुम् पिरार्त्तित्तु अमैहिऱेऩ्.

वाऴ्ह इरामावदारम् !
वळर्ह कम्बन् पुहऴ् ॥

कम्बन् कऴहम्
कारैक्कुडि.
१५-१०-१६७६

अन्बऩ्
कम्बन् अडिप् पॊडि.

अनुवाद

कम्बन एक कवि है; महाकवि; कविचक्रवर्ती; सबसे बढ़कर वह विद्या का सागर है। संसार में ऐसा "वेदसागर" या ऐसी "कला" (शास्त्र) नहीं हैं, जिनको उसने नहीं जाना था। हाँ ! उसके समय में वेद, उपनिषद, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र और अनेक विज्ञान (शास्त्र) के ग्रन्थ, जो भी प्रचार में थे, इन सबका उसने बहुत ही आतुरता के साथ अध्ययन कर लिया था। वह तमिऴ और संस्कृत दोनों का बड़ा ही विदग्ध और उद्भट विद्वान रहा है। अन्य कुछ देशी भाषाओं से भी उसका परिचय अवश्य रहा होगा।

भारत एक विशाल और अखण्ड देश है। हिमालय से कन्याकुमारी तक पूरब और पश्चिम में रहनेवाले समुद्रों के तीरों के छूते रहते, फैला रहनेवाला बड़ा प्राचीन देश है। भाषा, सभ्यता, शीतोष्ण स्थिति, भोजन, पोशाक आदि अनेक बातों में विभिन्नता के होते हुए भी वह ऐसे लोगों का राष्ट्र है जो बुद्धि, अनुभूति और विश्वासों के क्षेत्र में अविभाज्य एक हैं। वेदकाल से यह जम्बूद्वीप, भारतवर्ष या भरतखण्ड ऐसे ही रहता आया है। यह ऐक्यभाव अनेक सहस्र वर्षों से विद्यमान है। प्राचीन तमिऴ ग्रन्थ और तमिऴ के मुक्तक गीत इसी अखण्डित भारत का शब्दचित्र उपस्थित करते हैं।

उसी भाव-परम्परा में उत्पन्न था कविचक्रवर्ती— ईश्वर-विश्वासी, विद्या, बुद्धि, सदाचार, भक्ति और कवित्व से भरपूर कम्बन। उसने "वाल्मीकी बोधायन और वसिष्ठ" के द्वारा रचित रामगाथाओं को श्रद्धा के साथ सीखा है। उन तीनों में प्रथम मुनि वाल्मीकि के द्वारा रचित रामायण में उसने अपने मन को खो दिया है। वह चरित्र और चरितनायक दोनों ने उसके मन को एक दम लूट लिया है। श्रीराम के कल्याण-गुणों को पढ़ते-पढ़ते वह श्रीराम का दास बन गया और श्रीराम उसके आदि परमेश्वर बन गये।

विविध और विशाल ग्रन्थाध्ययन, श्रीराम-भक्ति, काव्य 'सन्नद्धता' (प्रतिभा), समृद्ध सांसारिक अनुभव आदि ने "इरामावदारम" नामक इस "पारकाव्य" (परकाव्य) की अद्भुत रचना में कवि को अपना हाथ बँटाया है। "तिरुक्कुऱळ्" आदि नीति ग्रन्थों में विहित नीतिमार्ग के अनुकूल रामचरित का प्रबन्ध और श्रीराम, सीतादेवी, लक्ष्मण, भरत, हनुमान आदि पात्र बने हैं। यह बात कम्बन को श्रीरामचरित्र-गान करने में अधिक उत्साह और उमंग दे सकी है।

कम्बन सत्याश्रयी है। "सत्य ही श्रीराम है" —इस पर विश्वास करनेवाला है। "कम्बन श्रीराम को धर्म-मूर्ति" (विग्रहवान धर्मः) —कहकर प्रशंसा करता है। अपने आराध्यदेव श्रीराम के लिए रचित काव्य-मन्दिर मानकर ही उसने "इरामावदारम" को भक्ति और श्रद्धा के साथ रचा है। स्वरचित महाकाव्य का उसने शकाब्द ८०७

में यानी सन् ८८६ ईसवी, फरवरी २३ तारीख, बुधवार द्वितीया, हस्त नक्षत्र में तिरुवेण्णॅय्नललूर में विद्वन्-मण्डली के सामने 'अरङ्गेट्रम" (प्रकाशन) किया। उस ग्रन्थ की श्रेष्ठता, महानता आदि से प्रभावित होकर साधु पुरुषों और विद्वानों ने पहले-पहल कविचक्रवर्ती की उपाधि से उसको भूषित किया और स्वयं आनन्द पाया।

कम्बन ने भगवान वाल्मीकी की रामायण के कथा-प्रबन्ध और चरित्र-प्रवाह को वैसे ही अपना लिया है। तो भी यत्र-तत्र काल, देश और सभ्यता-संस्कृति के अनुकूल आवश्यक परिवर्तन किये हैं। उनकी अपूर्व सुन्दरता को देखकर हम मुदित हो जाते हैं। वाल्मीकी में हिरण्यवध का चरित्र नहीं है। लेकिन कम्बन में है और उसमें उपनिषद ज्ञान अपनी छटा दिखा रहा है। वाल्मीकी में मायाराम का पटल है। कम्बन ने उसको हटाकर मायाजनक-पटल समाविष्ट किया है। उसमें कम्बन का मनोवैज्ञानिक ज्ञान खूब परिलक्षित होता है। वैसे ही वाली की मोक्ष-प्राप्ति के बाद तारा को सुग्रीव की पत्नी न बनाकर कम्बन ने उसको विधवा ही रहने दिया है। यह बहुत ही श्लाघनीय और मन को प्रसन्न करनेवाला परिवर्तन है। इस तरह तमिऴ के व्याकरण के नियमों के अनुकूल "आवश्यक विकल्प (परिवर्तन)" यत्र-तत्र करके काव्य-रचना करने की उसकी रचना-शक्ति की कितनी ही प्रशंसा क्यों न करो, वह उचित ही होगी।

तमिऴप्रेमी विद्वान कालिदास को, भवभूति, हर्ष, भास और शेक्स्पीयर, मिल्टन, बाइरन, शेल्ली, कीट्स, प्रभृति, विदेशी लेखकों और तुलसीदास, टैगोर आदि परवर्ती कवियों को अपनी भाषा में अनूदित कर रसास्वादन का मोद उठा रहे हैं। उसी तरह तमिऴ भाषा से कम्बन, वळ्ळुवन, इळंगो, भारती आदि की कृतियों का भी भारत की आम भाषा हिन्दी में अनुवाद कर उनके काव्य-रस का भोग करना चाहिए। तभी देश की एकता स्थिर होगी। पूर्णसम्पन्न और विविध कला-कृतियों की स्थिति का समाचार फैलेगा और मंगल होगा।

इस धारा में श्रेष्ठ आचार्य वळ्ळुवर का तिरुक्कुरळ् पहले ही हिन्दी में अनूदित हो गया है। अन्य लघु ग्रन्थ, गल्प और मुक्तक गीत भी हिन्दी में अनूदित हो गये हैं। कविचक्रवर्ती का रामावतार अब अनूदित होकर आ रहा है। इसके भक्ति, श्रद्धा के साथ प्रकाशन में लगे रहनेवाले श्रीयुत नन्दकुमार अवस्थी हैं। उनकी श्रीराम-भक्ति और रामायण में उनकी श्रद्धा की मैं खूब प्रशंसा करता हूँ और उनको नमस्कार करता हूँ।

इस महाकाव्य के श्रेष्ठ और सफल अनुवादक मदुरा के हिन्दी-आचार्य श्री ति० शेषाद्रि हैं। मूल ग्रन्थ की भाषा तमिऴ में और अनुवाद की भाषा हिन्दी में उनका अच्छा ज्ञान और उचित अभ्यास और विद्वत्ता है। अनुवाद-कला में उन्हें अच्छी दक्षता प्राप्त है। वे श्रीरामचरित्र पर विश्वास रखनेवाले हैं। इन सबके ऊपर वे महाकवियों का आदर करनेवाले सुसभ्य सज्जन हैं। इसलिए अनुवाद मूल ग्रन्थ की विशिष्टता को जानने में पाठकों को अवश्यमेव अच्छी सहायता देगा।

इस अनुवाद के कारणभूत दोनों सज्जनों को विविध प्रकार से बधाई देता हूँ और उनको नमन करता हूँ। दोनों को सभी सौभाग्य प्राप्त हों—इसकी अपने 'धातादेव' कम्बन से और उसके काव्य-विषय परवस्तु श्रीरामचन्द्रमूर्त्ति से प्रार्थना के साथ मैं विराम लेता हूँ।

जिए 'रामावतार'
पले 'श्रीरामकीर्ती'

कम्बन कऴहम,
कारैक्कुडि
१५-१०-७६

प्रिय,
कम्बन अडिप्पोडि
(कम्बन चरणरेणु)

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमरभारती सलिल-मञ्जु की 'तमिऴ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

विषय-प्रवेश

भगवति वाणी देवि नमस्ते ! लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् कार्य, अकिञ्चन ने १९४७ ई० में अपनाया था। उल्लेखनीय उपलब्धि और प्रशस्ति प्राप्त होने पर, १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना की; और तब से भारतीय और भारत में स्थायित्व-प्राप्त सभी प्रमुख भाषाओं के श्रेष्ठ और सदाचार-ग्रन्थों के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरणों से राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का श्रृंगार हो रहा है। विविध भाषाओं के विशाल ग्रन्थों के लिप्यन्तरित रत्नाभरणों से वाणी भगवति की साज-सज्जा हुई। अलौकिक रूप से शृङ्गारित और समलङ्कृत उसी 'अमरभारती' के मुकुटबन्धन का शुभ अवसर आज प्राप्त हुआ है।

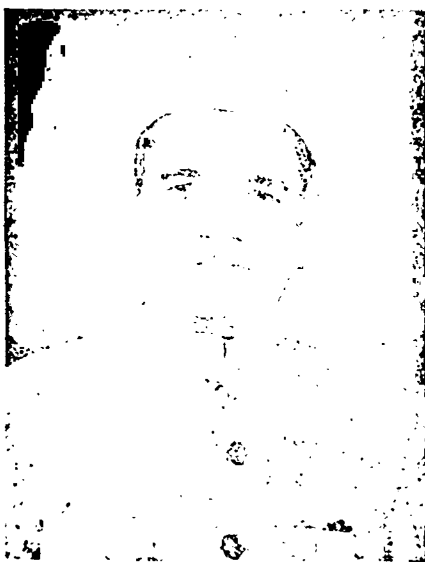

भारत की अञ्चलीय भाषाओं में तमिऴ को अति प्राचीन और सम्पन्न होने का गौरव प्राप्त है। तमिऴ की लिपि तो और भी विचित्र है। उसमें थोड़े से व्यञ्जन, वे भी स्थानभेद से भिन्न-भिन्न ध्वनि प्रकट करते हैं ! इस स्वल्प किन्तु जटिल वर्णाक्षरी की गागर में अपार तमिऴ साहित्य-सागर ! और उसका शीर्षस्थ ग्रन्थ 'कम्ब रामायण' का नागरी रूपान्तर मुकुटस्वरूप प्रस्तुत करते हुए हम आत्मविभोर हैं, कृतकृत्य हैं।

ग्रन्थोदय

इस अहोभाग्य के लिए परोक्षरूप नारायण को सराहा जाय अथवा प्रत्यक्ष नरनारायण को? विश्व-वाङ्मय के मूल स्रोत 'नारायण' की कृपा बिना यह प्रेरणा, यह साधन, यह सामर्थ्य, सुलभ कहाँ ? अतः कण-कण को गति देनेवाले अनन्तनारायण को नमन है। किन्तु अलक्ष्य नारायण पर कितने क्षण अकिञ्चन की दृष्टि टिकी रहेगी ? पार्थिव जगत् में ही नारायण की दिव्य ज्योति 'नरनारायण' को तलाश करना है। किनके आशीर्वाद से, किनके सहयोग से, किनके अथक श्रम से, और किनकी संस्तुति के बल पर कम्बर् के इस अद्भुत ग्रन्थ का नागरी-जगत् में उदय हुआ ?

ध्यान करने पर सर्वप्रथम हृदय नत होता है अनन्तश्रीविभूषित स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज पर। उनकी ही प्रेरणा और आशीर्वाद से इस अद्भुत और अतिकष्टसाध्य कार्य को पूर्ण करने की क्षमता और उत्साह, नागरी और हिन्दी रूपान्तरकार श्री ति० शेषाद्रि महोदय को प्राप्त हुआ। हम नारायण की ज्योति परमवैष्णव स्वामीचिन्मयानन्दजी को प्रणाम करते हैं।

श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०, ९९, भारती रोड, मदुरै (तमिळ्नाडु), तमिळ् एवं हिन्दी के लेखक, अनुवादक, प्रवक्ता, लगभग चार दशाब्दियों, यों कहिये कि आजीवन राष्ट्रभाषा के दक्षिण में प्रचारक, मदुरै कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक, गांधी-दर्शन के तत्त्वज्ञ शिक्षक, समाज-सेवादल के निदेशक, गुरुवर श्री चिन्मयानन्दजी के उपनिषद-वचनों के तमिळ् में अनुवादक, और सम्प्रति, मदुरै में हिन्दी प्रचारक विद्यालय के प्राचार्य हैं।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के प्रमुख अधिकारी विद्वान् श्री रा० शौरिराजन हमारे अतिशय धन्यवाद के पात्र हैं। तमिळ्-कम्बन के नागरी में प्रस्तुतीकरण की हमारी वर्षानुवर्ष की पिपासा, एक दिन उनके ही पत्र से शान्त हुई। श्री शेषाद्रि का परिचय उनसे ही प्राप्त होने पर हमारा अभीष्ट सिद्ध हुआ। कम्ब रामायण का अधिकांश कार्य श्री शेषाद्रि, न केवल पूरा कर चुके हैं, वरन् अब भुवन वाणी ट्रस्ट के वे आजीवन न्यासी भी हैं। वे ही इस महान् कार्य के यजमान हैं, पौरोहित्य भी उनका है, और ट्रस्ट के वाणीयज्ञ में 'कम्ब रामायण' रूपी साकल्य के आहुति-प्रदाता भी वे ही हैं। अकिञ्चन और सारा राष्ट्र उनका ऋणी रहेगा।

ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि कम्बन का जीवनकाल, विद्वज्जन ९वीं शताब्दी वि० तक ले जाते हैं। उनकी जीवनी और उनका यह अपौरुषेय-जैसा भक्तिमहाकाव्य, तमिळ् भाषा का विचित्र वर्ण-विन्यास और व्याकरण आदि पर शेषाद्रिजी की अवतरणिका पृ० १८ से ३६ पर अवलोकनीय है। पृष्ठ ३७-४० में विषय-सूची भी सविस्तार दी गई है।

तमिळ्—राष्ट्रभाषा के संदर्भ में

जहाँ तक दक्षिणी, और विशेष रूप से तमिळ् भाषा का सम्बन्ध है, लोगों में यह भ्रान्ति-सी हो गयी है कि वे भिन्न कुल की हैं। यह सही है कि अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में दक्षिणी भाषाओं में प्रवेश अपेक्षाकृत कुछ कठिन है। उनका उत्तर की भाषाओं से सम्बन्ध कुछ दूर का है। संसार की सभी भाषाओं में कुछ क्षेत्रीय उपज-विशेष होती है। इसके प्रभाव से 'तमिळ्' भी मुक्त नहीं है। अन्यथा जिस प्रकार विश्व के मानव-समूह के पीछे एक वृत्ति, सामर्थ्य, दुर्बलता, भावात्मकता, परिलक्षित होती है, उसी प्रकार आप 'भाषा' को कितने ही कुलों में बाँट लें, उनमें समीपियों में वैभिन्य और दूरस्थ में समता के दर्शन होंगे।

तमिऴ में व्यञ्जन २०-२२ मात्र हैं। वे भी स्थान-भेद से अलग-अलग ध्वनियों में बोले जाते हैं। इससे वे शब्द संस्कृत अथवा हिन्दी के तद्वत् होते हुए भी पहचान में नहीं आते और मूलत: भिन्न प्रतीत होते हैं। कुछ तमिऴ शब्दों के लेखन, कोष्ठकों में उच्चारण, और उनके राष्ट्रभाषाई रूपों में समानता का अवलोकन करें:—

मैऩ्तरुम् (मैऩ्दरुम्)–तरुण मानव; मऩमुम् चॅल्ल (मतमुज्जॅल्ल)–मन को चलाते हुए; कुयम्कऩ् (कुयम्हऩ्)–कुम्भकार (कुम्हार); तयिर् उऱु मत्तिऩ् (तयिरुऱु मत्तिऱ्)–दही में मथानी के समान; नॅट्टु कण् (नॅडुङ्गण्)–नेत्र कज्जल वाले; आरमुम्–हार (माला); इ–यह; उम्परो (उम्बरो)–उनके ऊपर भी; अङ्कुचम् (अङ्गुशम्)–अंकुश; चुऩ्तर (सुऩ्दर)–सुन्दर; वाचम् (वासम्)–वास (सुगन्ध); तण्टम् (ऱ्रण्डम्)–दण्डम्; चेऩै (शेऩै)–सेनाएँ; पकवन् (पहवन्)–भगवन् आदि।

इस प्रकार हज़ारों शब्द हैं, जिनमें तमिऴ के अक्षरों और उनके स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझ लेने के बाद, वे विराने से अपने अर्थात् सारे राष्ट्र की सम्पत्ति बन जाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि तमिऴ में मौलिक भिन्न शब्द नहीं हैं। यह तो एक से अनेकत्व को प्राप्त सृष्टि में आपको सर्वत्र दिखाई देगा। किन्तु प्रत्येक स्थान पर विभेद ही पर निगाह जाना घातक है; साम्य की तलाश में रहना श्रेयस्कर है। तमिऴ के अक्षर भी ब्राह्मी लिपि की देन हैं। भोजपत्र और ताळपत्र में लिखने की भिन्न परिस्थिति के कारण उत्तर भारत के अक्षर नुकीले पाईदार और दक्षिण भारत के गोलाकार हैं। शब्दों के साम्य की चर्चा ऊपर की जा चुकी है। वैषम्य की भावना को त्यागकर, और बिल्कुल 'अपना' समझकर तमिऴ के अलौकिक राष्ट्रभाषा-भण्डार का आनन्द लीजिये।

विद्वानों की संस्तुतियाँ

(१) हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० एस० शंकर राजू नायडू, एम० ए०, पीएच्० डी०, एफ़० आर० ए० एस० (लन्दन), हिन्दी विभागाध्यक्ष, मद्रास विश्वविद्यालय की विद्वत्तापूर्ण भूमिका; (२) कम्बन अडिप्पॉडि (कम्बन-चरण-रेणु) श्री सा० गणेशन (परिचय, पृष्ठ ३५) की ग्रन्थ पर शुभकामना; (३) तमिऴनाडु के जस्टिस श्री महाराजन तथा (४) चीफ़् जस्टिस श्री एम० ए० स्माइल —इन महानुभावों के प्रस्तुत नागरी संस्करण पर विस्तृत उद्गार, हमारे कार्य को गुरुत्व प्रदान करने के साथ ही, भाषा, धर्म, वर्ग और अञ्चलीय भेदभाव को चुनौती देते हुए, मानव को सन्तों की वाणी के माध्यम से विश्वबन्धुत्व की ओर उन्मुख करते हैं। हम इन महानुभावों के नितान्त आभारी हैं। हम उनके मूल पत्र (अंग्रेज़ी अथवा तमिऴ में), हिन्दी अनुवाद सहित, ग्रन्थ के आरम्भ में प्रस्तुत कर रहे हैं।

लोकप्रख्यात समाजसेवी, श्री के० सन्तानम् ने भी 'तमिऴ कम्ब रामायण' के नागरी रूपान्तर पर १-९-७९ को एक संस्तुति-पत्र भेजने

की कृपा की थी। उनके संस्तुति-पत्र को ग्रन्थारम्भ में प्रकाशित करने का एक ओर हमें सौभाग्य है, तो दूसरी ओर ग्रन्थ के प्रकाश में आने से कुछ दिवस ही पूर्व, ८५ वर्ष की आयु में, २८ फरवरी, १९८० को, उनके दिवंगत होने के समाचार से हम बिक्षुब्ध हो उठे हैं। हमें वेदना है कि ग्रन्थ पूरा होने पर उनके सम्मुख प्रस्तुत नहीं कर सके। १९२० ई० से अनवरत स्वतन्त्रता-सेनानी, संविधान सभा के सदस्य, अनेक केन्द्रीय मंत्रिपदों पर आसीन, अनेक पुस्तकों के लेखक, श्रीराजाजी के अभिन्न मित्र, अनेक प्रतिष्ठित पत्रों के सम्पादक, तमिळ और संस्कृत के समान रूपेण उद्भट विद्वान, वियुक्त श्री सन्तानम की पुण्यस्मृति में हम यह पावन रामायण-ग्रन्थ नागरी-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए, पुण्यप्रवर श्री के० सन्तानम के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं।

इस प्रकार अलक्ष्य और लक्ष्य, 'नारायण' और 'नरनारायण' सभी को नमन करते हुए, हम प्रार्थना करते हैं कि भाषा और लिपि के सेतुबन्धन द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण एवं विश्वबन्धुत्व का हमारा उद्देश्य और उपलब्धि उत्तरोत्तर फूलती-फलती रहे। ॐ नमो नारायण ! नमो नरनारायण !

आभार-प्रदर्शन

विशाल ग्रन्थ कम्ब रामायण का सानुवाद नागरी रूपान्तर, पाँच अथवा सात जिल्दों में प्रकाशित होकर सन् १९८१ ई० के अन्तर्गत विश्वनागरी-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत हो जायगा, ऐसी हम आशा रखते हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान् और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत सानुवाद लिप्यन्तरण के प्रकाशन में शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की विशेष सहायता निहित है। पिछले वर्षानुवर्ष से ट्रस्ट के इन कार्यों में केन्द्रीय शासन से प्राप्त उल्लेखनीय सहायता के फलस्वरूप नाना-भाषाई अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। हम प्रतिदान में यह आश्वासन देते हैं कि ट्रस्ट निरन्तर भाषा-सेतुबन्धन के पुनीत कार्य में रत रहेगा।

रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु, युगों के बीत जाने पर भी, आज अलक्ष्य होकर भी, राष्ट्र के सांस्कृतिक सेतु को बनाये हुए है। भुवन वाणी ट्रस्ट का विश्वनागरी सेतु, राष्ट्र क्या विश्व को एक सांस्कृतिक और भावात्मक स्नेह-बन्धन में उत्तरोत्तर आबद्ध करता रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त
(तमिऴ) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने २३-६-६६ में, प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था। मैंने उस पर आपत्ति करके 'ऴ' का सुझाव दिया था। तब से संभवत: और भी आपत्तियाँ 'निदेशालय' अवश्य पहुँची होंगी।

विदित हो कि ५-६ फरवरी, १६८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, यह निर्णय किया गया कि अब 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही प्रयुक्त किया जाय। आशा है लिप्यन्तरणकार इसका ध्यान रखेंगे।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ

ஃ अक्

க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ,ऴ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं।

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

अनुवादक की अवतरणिका

१ प्राक्कथन

आत्मविश्वास साधना-सागर-तरण की परमावश्यक तरी है। उसके बिना सिद्धि दुर्लभ है।

श्रीरामानुजाचार्य के भक्तिमार्ग के विशिष्टाद्वैत मत के प्रसिद्ध आचार्य, श्रीनिगमांतमहादेशिक वेंकटनाथार्य द्वारा प्रतिपादित, प्रवर्तित और विशदीकृत शरणागति या प्रपत्तिमार्ग के अनुयायियों के लिए यह आत्मविश्वास एक विशेष अर्थ रखता है; और वह है सर्वांगीण समर्पणमति और कैंकर्यवृत्ति। इसका साधारण शब्दों में अर्थ है— अनपायी दिव्य-दंपति श्रीलक्ष्मी-नारायण या सीता समेत प्रभु श्रीराम, एक मात्र जग-शरण्य का अनन्य शेष, नियंत्रित सेवक और दास रहना। अर्थात उनकी आज्ञा और उनकी प्रेरणा लेकर, उनकी कृपा को पुरस्सर करके, उनके मनोरंजन को ध्येय मानकर कार्यरत रहना और फल को उनको समर्पित करना —यही शरणागति की दासवृत्ति है।

अस्तु ! तमिऴ के कवि सार्वभौम कम्बन की दृहत् काव्यकृति रामायण का सानुवाद लिप्यंतरण अति असाधारण काम है। मेरे हिन्दी-गुरु के शब्दों में 'विचार ही भय उत्पन्न करनेवाला है'। फिर यह ज्यादती करने का साहस क्यों कर हुआ ? इसके पीछे एक रहस्य है।

गत लगभग पच्चीस सालों से मैं स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का शिष्य, उनके ग्रंथों का अनुवादक और उनके मिशन का एक सेवक रहता हूँ। स्वामी जी उत्तरकाशी के स्वामी तपोवनम के प्रमुख शिष्य, विश्वविख्यात गीता के प्रचारक, हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान में लगे रहनेवाले महान योगी और तपस्वी हैं। सन् १९७६, जुलाई-मध्य में उन्होंने एक पत्र, मेरे नाम, उत्तरकाशी से लिखा जिसका सार था— अब तुम्हारा संसार के प्रति कोई कर्तव्य शेष नहीं रह गया। सब कुछ छोड़कर यहाँ भाग आओ।

यह पत्र तब पहुँचा जब मैं मरण देवता के मुख से अभी-अभी छूटा था। मृत्यु ने मुझे अपने हाथ में लेकर भी क्यों छोड़ दिया ? —यह मेरे विस्मय का विषय रहा। मृत्यु-भय टल गया फिर भी मैं निर्बल और शय्याग्रस्त ही रहा। मैंने उन्हें अपनी हालत लिखी और कहा कि दो तीन साल मैं नहीं आ पाऊँगा। उत्तर तुरन्त आया कि ठीक है। पर जल्दी स्वस्थ हो जाओ। रोगी रहने का हमारा अधिकार नहीं है। क्योंकि हमें अभी कितनी ही सेवाएँ करनी बाकी हैं !

यह 'हम' देखकर मैं चकरा गया। उनकी बात ठीक है। वे तो हिन्दूद्धार में रात-दिन अपनी शक्ति खपा रहे हैं। पर मेरी क्या बिसात है ? मेरे सामने क्या कार्य है ? मैं वह अलौकिक शक्ति कहाँ से लाऊँ ?

पर प्रभु की आज्ञा देखिए। लखनऊ के विख्यात राष्ट्रलिपि-सेवी श्रीनंदकुमार जी अवस्थी का आदेश आया कि कम्बरामायण का सानुवाद लिप्यंतरण करो। सच मानिए। तब तक मुझे मालूम हीं नहीं था कि 'भुवन वाणी ट्रस्ट' नाम की एक संस्था है और उसके द्वारा भाषाई सेतुकरण का ध्येय लेकर इतना सारा अतुल महत्व का कार्य हो रहा है। इसे प्रभु का संकेत मानने के सिवा, उस स्थिति में, मेरे सामने और कोई चारा नहीं रह गया। यह मनोभाव दृढ़ रहे; मानवीय दुर्बलताएँ, जैसे अहंकार, प्रमाद, संशय, विस्मरण, अज्ञान, रोग आदि, मध्य में रोड़ा न बनें —इसकी सतत प्रार्थना के साथ इस शुभ कार्य को भगवत-कैंकर्य के रूप में मैंने आरम्भ किया।

२ संस्करण का चुनाव

तमिऴनाडु में अब कम्बन के तीन सटीक संस्करणों की चर्चा है। टीकाएँ, टीकाकार विद्वानों के विभिन्न मतों के आधार पर परस्पर विभिन्न भावों के संकलन हो रहती हैं। तो भी टीका के बिना कम्बन को पूर्ण रूप से समझना कठिन है। इस क्षेत्र में वै० मु० गोपाल कृष्णमाचार्य की (लगभग पचास साल पहले कृत) टीका सबका पथप्रदर्शक रही है। आठ जिल्दों में (भागों में) निकला यह संस्करण वैष्णवों के लिए अत्यन्त मान्य और उपादेय है। पीछे के अन्य संकलन-सम्पादनकर्ता उनका आभार मानते हैं। फिर अण्णामलै विश्वविद्यालय ने विद्वानों की एक गोष्ठी नियुक्त की और उनका प्रथम विचार था कि 'उ-वे-सु नूल् निलयम्' वालों के सहयोग के साथ कम्बन-संस्करण निकाला जाय। सुन्दरकाण्ड परस्पर सहयोग के साथ प्रकाश में आया भी। पीछे विश्वविद्यालय ने अपना संस्करण अलग ही निकालने का फैसला कर लिया। विश्वविद्यालय का वह संस्करण प्रकाशित हुआ। महामहोपाध्याय श्री उ-वे-स्वामीनाथय्यर (अब दिवंगत) के पवित्र नाम पर चलनेवाले नूल निलयम् वालों ने दस जिल्दों में एक संस्करण निकाला। इसमें श्रीअय्यर के जन्म-व्यापी अन्वेषणों का फल समाहित है।

इनमें गोपालकृष्णमाचार्य का संस्करण भक्ति की दृष्टि से साम्प्रदायिक तथ्यों के ज्ञान का कोष रहता है। उ-वे-सु नूल् निलयम् वालों का संस्करण शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। अण्णामलै-संस्करण खोज की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

इनके अलावा मद्रास के कम्बन कऴगम वालों ने एक मूल संस्करण निकाला है। एक ही जिल्द में कम्बरामायण के सारे पदों का (प्रामाणिकता की मुद्राप्राप्त और अतिरिक्त पदों के साथ) संकलन हुआ है। पर यह हमारे काम के लिए उपयोगी नहीं रहा, क्योंकि इसमें टीका नहीं है और दूसरा— संधि-विग्रह करके अलग-अलग शब्द दिये गये हैं, जिससे कविता का रूप बना नहीं रहा है।

खैर; सटीक संस्करणों में पूर्ण ग्रंथ न तो 'वै-मु-गो' का प्राप्य है, न अण्णामलै विश्वविद्यालय का। केवल उ-वे-सु का प्राप्य लगा और उसमें भी हमें एक ही सेट— पूर्ण रूप में —मिला। दूसरे सेट में अरण्यकाण्ड की प्रति बहुत बाद में मिली।

और एक महत्वपूर्ण संकलन है। वह भी अप्राप्य ही है तो भी उसकी चर्चा आवश्यक है। टी-के-चिदंबरनाथ मुदलियार ने कम्बर् तरुम् रामायणम् के नाम से तीन जिल्दों का एक संस्करण निकाला। उनमें सिर्फ १५१० पद संकलित हैं। उनकी चर्चा यथास्थान पीछे होनेवाली है। अब इतना कहकर यह अध्याय समाप्त करूँगा कि वह संकलन उपयोगी नहीं रहा। हम उ-वे-सु नूल निलयम् वालों के संस्करण के आधार पर ही यह लिप्यंतरित, अनूदित रामायण प्रकाशित कर रहे हैं।

३ संस्करणों में प्राप्त विभिन्नताएँ

कम्बरामायण की आज की हालत यह है कि उसका प्रामाणिक, व्यवस्थित और एक-सा रूप पाना दुर्लभ हो गया है। क्षेपक की बात सब मानते हैं पर प्रामाणिक पद और पाठ निर्धारित करने में सब अपनी-अपनी सूझ-बूझ के आधार पर कार्य करते हैं। हर संस्करण दूसरे से अनेक बातों में भिन्न बना रहता है। पटलों की संख्या, पटलों का नामकरण, पटल का आरम्भ और अन्त, कुल पदों की संख्या, और प्रामाणिक मानकर चुने गये पद और पंक्तियों का क्रम, पदों का क्रम —हर बात में विभिन्नता है। अलावा इनके पाठभेद लाखों की संख्या में हैं। कभी-कभी ये भेद आकाश-पाताल का अंतर ला देते हैं। अगर हिन्दीभाषी श्री न-वी-राजगोपाल द्वारा कृत और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा प्रकाशित कम्बरामायण का अनुवाद और हमारे इस अनुवाद की तुलना करेंगे तो इस बात की एक रूपरेखा मिल जायगी। किन्तु एक बात सामान्य रूप से हर संस्करण में यह पायी जाती है कि प्राप्य सभी पद हर संस्करण में मिल जाते हैं। जिनको संकलनकर्ता अप्रामाणिक मानते हैं, उनको वे अतिरिक्त पदों के तौर पर प्रस्तुत कर देते हैं। (टी-के-सी के संकलन में यह बात नहीं है।) वैसे ही पाठांतर भी दिये जाते हैं। कम्बन कऴगम के मूल रामायण के संग्रह

में १०३६८ पद और १२९३ अतिरिक्त पद दिये गये हैं। वै-मु-गो० के संस्करण में १०४९५ पद, अण्णामलै संस्करण में १०५०० से अधिक कुछ पद दिये गये हैं। उ-वे-सु के इस संस्करण में १०४१८ पद हैं। इन दोनों में अतिरिक्त पद भी दिये गये हैं।

४ इस संस्करण की विशेषताएँ

इस संस्करण की सारी सामग्री महामहोपाध्याय डॉ० उ-वे-सु (स्वामीनाथय्यर, तमिऴ में सुवामिनातय्यर लिखा जाता है; अतः उ-वे-सु कहा जाता है।) के द्वारा संग्रहीत थी। पर वे रामायण का संस्करण निकाल नहीं सके। तमिऴ के व्यास के रूप में मान्य इनके सामने और अन्य पुष्कल काम पड़े थे। इतना कहना काफी होगा कि वे तमिऴ के सर्वश्रेष्ठ, सर्वमान्य, सर्वप्रमुख महान विद्वान माने जाते हैं। उनकी संग्रहीत सामग्री का उपयोग करके, उनके सुपुत्र ने उनके पुनीत नाम पर स्थापित इस 'नूल निलयम्' द्वारा रामायण का यह उपादेय संस्करण निकाला।

इसमें कुल १०४१८ 'प्रामाणिक' पदों के अलावा अनेक अतिरिक्त पद भी दिये हैं। (उनमें कुछ पदों का सार यत्र-तत्र इस ग्रंथ में दिया जा रहा है।) बालकाण्ड में १३८९, अयोध्याकाण्ड में १२१०, अरण्यकाण्ड में ११९६, किष्किन्धाकाण्ड में १००४, सुन्दरकाण्ड में १०९६ और युद्ध में ४३२३ पद पाये जाते हैं। सारा संकलन दस जिल्दों में समाप्त हुआ है।

पहले पद दिया गया है। पद के चरणांशों के मध्य स्थान छोड़कर चरणांश (शीर्) अलग दिये गये हैं। पर शब्द संधियुक्त ही रखे गये हैं। उसके बाद शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ के साथ अन्वय दिये गये हैं। अन्त में टीकाएँ दी गयी हैं, जिनमें साहित्यिक, पौराणिक और ऐतिहासिक विवरण सविस्तार दिये गये हैं। उनसे शब्दों की व्याकरणगत विशेषताओं, विषयों के सम्बन्ध में तुलनात्मक समीक्षाओं का पुष्कल ज्ञान मिल जाता है। हर भाग के आरम्भ में पीठिका है जिसमें संकलन, संग्रह और संस्करण-सम्बन्धी सारे आवश्यक विवरण मिलते हैं। पुस्तक के अन्त में पदों की अकारादि सूची के साथ 'कठिन शब्दार्थ' भी दिये गये हैं। 'कठिन शब्दार्थ' में शब्दों के अर्थ मात्र नहीं दिये गये हैं। उदाहरणों से इसकी रीति साफ़ विदित होगी। उपमा शब्द के अधीन दिया गया विवरण यों है— खाँई की सेना के साथ तुलना (पदसंख्या ३१२); सन्ध्या-गगन की सर्प से उपमा (६२)......। उण्मैहळ् (तथ्य) के अधीन अविद्यानाश में ज्ञान का स्थान (१२३२); ....। इरामन —यह शब्द ४, १६९, ...। पदों में आया है; उनके अन्य नाम— अंजन वर्ण— ४६१,५५४ ....।

इस, हमारे सानुवाद लिप्यंतरण ग्रंथ में तमिऴ पद मूल रूप में नागरी

अक्षर में दिये गये हैं। उनके आगे शब्दार्थ सहित अन्वय आये हैं। अंत में भावार्थ सरल भाषा में दिये गये हैं। उनके ही अन्तर्गत कुछ आवश्यक टीकाएँ, विवरण आदि निहित कर दिये गये हैं।

लिप्यंतरण को और तमिऴ भाषागत और विषयगत कुछ विशिष्ट बातों को जानने में सहायता देने के लिए तमिऴ व्याकरण के भागों की कुछ मोटी-मोटी बातें नीचे दी जाती हैं। पाठक इन पर थोड़ा ध्यान दें।

५ तमिऴ व्याकरण—कुछ तत्व

१ ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२ है।

लब्धलिपि	ह्रस्वः— अ इ उ ॲ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)	—	1 मात्रा
	दीर्घः— आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
	"आय्दम" (उपस्वर)— ∴	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि	ह्रस्व— ऐ और औ	—	1 मात्रा
	ह्रस्व— उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
	ह्रस्व— 'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोटः— आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत पढ़ लें और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अतः बाद के पदों में ऐ कै…आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरंभ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षरः) मूल १८ हैं

लब्धलिपि	वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
	मॅल्लॅऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
	इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ळ ऴ

अलब्धलिपि: ह, ग, ज, ड, द, ब, । ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है । वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है । स्थान-भेद से यह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है । बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं । लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं ।

नोट— तमिऴ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं । हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है । हलंत व्यंजन से शब्द आरंभ नहीं होता ।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारंभ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद क ही रह जाता है— जैसे पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क ।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है— जैसे काहम् ।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है । उदा : चङ्कम् —शङ्गम् ।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता है । उदाहरण : अच्चु, शॉऱ्कुवै वॆट्चि । अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है । जैसे पा शम्, शदम् आदि । (अपवाद— संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है, जैसे कोसलै ।
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम —मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है ।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता । द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम् ।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है जैसे : तयरदन, शत्तम्, शक्ति । अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है — शन्दम्, परदन्, मोदल् ।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है । उदा : पडम्, कप्पल्, पॆट्पु, पॉऱ्पु, अन्यत्र यह 'ब' के समान ध्वनित है ।

विशेष: न् आदि के बाद यह कभी-कभी प ब दोनों से पृथक, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है । भेद नगण्य है । बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है ।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है ।

ऩ— यह भी दन्त्य है । पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है । इन दोनों में उच्चारण भेद नहीं के

वरावर है। पर शब्द के आरम्भ में न नहीं आता। न शब्द के मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारंभ में नहीं आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं, जैसे अरङ्गन्, इरागन् उरुन्निग्न्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारंभ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण: अरम्-रेती; अऱम्-धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ड़ और ल के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। ण और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रंथाक्षर का ईजाद हुआ है। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे जैसे निन्पॅरुञ् को निन्वॅरुञ् पढ़ना चाहिए पर निन्पॅरुञ् पाया जायगा तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर जोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नियम नहीं है। अत: इसमें कोई बड़ी गल्ती हो जाने की संभावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखंड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ में छंद-रचना की विशेषता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

२ संधि— संधि की अनेक विधियाँ हैं। उनका ज्ञान अब आवश्यक नहीं है। अन्वय पढ़ने से शब्दों के मूल रूप मिल जायँगे। मूल पढ़ने से संधि की रीतियाँ ज्ञात हो जायँगी। हाँ, पदखण्ड या चरणांश जानने के लिए छंद-रचना की रीति की दो एक मुख्य बात के बारे में जानकारी लाभकारी रहेगी।

३ छंद-रचना (याप्पु)— कम्बन के छंद विरुत्तम् कहे जाते हैं। (शायद वृत्त का तमिऴ रूप हो, विशेष, बदले हुए अर्थ में) इसके चार चरण होते हैं और हर चरण के चरणखण्डों की संख्या समान है। यह चरणखण्ड तमिऴ में 'शीर' कहा जाता है। शीर के अंग (अशै) होते हैं। चरण-खण्ड के एक, दो, तीन या चार अशै तक हो सकते हैं। (अशै को 'गण' कह सकते हैं। पर तमिऴ का गण निश्चित संख्या के अक्षरों का नहीं होता।) अशै दो होते हैं— नेर् और निरै।

नेर् की व्याख्या— अकेला दीर्घ अक्षर— उदाहरण: आ, मा, ना···।
या ह्रस्व अक्षर— उदाहरण: ळि, म, ळ···।
ह्रस्व अक्षर हलन्त सहित— उदाहरण: वॅळ्
दीर्घ अक्षर हलंत सहित– उदाहरण: तेर्, पेर्···।

निरै की व्याख्या—दो ह्रस्व— वॅट्रि
ह्रस्व दीर्घ— उदाहरण: कुरा (दीर्घ और ह्रस्व मिल नहीं सकते —तब वे दो नेर् बन जायँगे।)
दो ह्रस्व हलन्त— कडल्
ह्रस्व दीर्घ हलन्त— विळाम्

विरुत्त-भेद इन 'अशै' यों की संख्या पर बने शीरों की एक चरण में संख्या, उन शीरों के अंतिम और प्रथम ध्वनियों की संधि का क्रम आदि पर निर्भर है। एक चरण के दो से लेकर अनेक शीर हो सकते हैं। उदा०—

कम्बन का पहला पद:—

उल हम् या वयुम् ता मुळ वाक् कलुम्
निरै नेर् नेर् निरै नेर् निरै नेर् निरै—
निल पॅ ड्रत् तलु नीङ् गलु नीङ् गला
निरै नेर् नेर् निरै नेर् निरै नेर् निरै—

यही क्रम शेष दो चरणों में भी पाया जायगा।

नेर् निरै के अलावा एक से अधिक 'अशै' यों के बने शीरों के सम्बन्ध में छंद का नाम जानने के लिए उन्हें मा, विळम, काय्, कनि आदि के संकेतिक

नाम भी दिये गये हैं। अस्तु ! अब तक लिप्यंतरण के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातों की चर्चा की गयी।

४ अन्वय के सम्बन्ध में इतना कहना है कि अन्वय के शब्द तमिळ की लेखन-शैली के अनुसार ही लिखे गये हैं (कहीं अभ्यास-दोष के कारण 'ग' 'ह' आदि लिखे गये हों तो स्मरण कर लें कि इनका अलग लिपि-संकेत तमिळ में नहीं है।) और तमिळ शब्द अधिकांश अपने संयुक्त, रूपांतरित, यौगिक या समस्त रूप में ही लिखे गये हैं।

अनेक पदों के अन्वयों में अऩ्ऱु, मऱ्ऱु, ओ, आल आदि ध्वनियाँ नहीं पायी जायँगी जो मूल में रहेंगी। वे सब पूरक ध्वनियाँ हैं जो छन्द के व्याकरण के अनुसार मिलायी गयी हैं। वे अर्थयुक्त शब्द भी हों तो भी जहाँ वे पूरक ध्वनियों के ही रूप में प्रयुक्त हुए हैं, वहाँ उनको मैंने अन्वय में नहीं दिया है। कहीं-कहीं उल्लेख के साथ या उल्लेख-बिना कोष्ठकों के अन्दर मिलेंगी। पर वह स्थल कम ही होंगे।

अब काव्य के रूप में कम्बन की कृति को समझने के लिए आवश्यक बातों की चर्चा करूँगा।

५ पॉरुळ् (विषय)— तमिळ में काव्य-विषय पर भी व्याकरण बना हुआ है। साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब ही नहीं जीवन का पथप्रदर्शक और उन्नायक होता है। तमिळ लोगों का जीवन प्रकृति से अभिन्न रूप से सम्बद्ध था। भूमि के पाँच प्राकृतिक विभाग होते हैं— (१) पर्वत तथा पार्वत्य प्रदेश; (२) वन और वन्य प्रदेश; (३) खेत और खेतों व बागों का प्रदेश; (४) समुद्रतट और उसके आस-पास का प्रदेश और (५) मरु प्रदेश। उनके क्रमश. तमिळ नाम कुऱिञ्जि, मुल्लै, मरुदम, नॅय्दल और पालै हैं। पालै को कभी-कभी अलग भूभाग नहीं माना गया क्योंकि जलविहीन होने से मुल्लै और मरुदम प्रदेश पालै बन सकते हैं। अत: भूमि की चर्चा, इन चारों प्राकृतिक भागों की बनी रहने के कारण चतुर्विधा भूमि कहकर की है। इस रामायण में भी 'नाऩिलम' का शब्द बार-बार आया है।

तिणै— प्रकृति के साथ इस अभिन्न जीव-चर्या के कारण तमिळ लोगों के साहित्य की चर्चा भी प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति-सम्बन्धी नामों के अधीन करने की परिपाटी चली है। तिणै का शाब्दिक अर्थ भूमि है और लाक्षणिक अर्थ प्रवाह, प्रकरण या जीवन-चरित है।

काव्य-विषय को मोटे तौर से दो भागों में विभक्त किया जाता है। एक, अहम जिसका अर्थ आंतरिक या आत्मीय होता है। इस अहम साहित्य के अन्दर पूर्व-प्रेम का शृंगार तथा विवाहोत्तर प्रणय-वर्णन दोनों आ जाते हैं। यह पूर्व-प्रेम तमिळों के जीवन और साहित्य की विशिष्ट

रीति है, जिसमें उत्तरदायित्वपूर्ण युवक और युवती नायक और नायिका के रूप में विवाह के पहले मिलते थे और प्रेम बढ़ाते थे। जब प्रेम परिपक्वता को पहुँच जाता तब समाज उनका विवाह करा देता था।

इस 'अहम' साहित्य का प्रधान रूप से पाँच 'तिणै' यों में विभाजन है। यहाँ और एक बात: साहित्य को नदी से उपमित करना सर्वविदित बात ही है। नदी इन पाँचों भूभागों से होकर बहती है। वैसे ही साहित्य भी विविध प्रसंगों का वर्णन करता जाता है। अब देखिए। अनमेल प्रेम और एकदेशीय प्रेम ये दोनों असाधारण हैं। उनके अलग नामकरण हुए हैं— कैक्किळै और पॅरुन्तिणै, बाकी पाँच 'तिणै' यों के विषय विभाजन निम्न प्रकार हैं :—

कुरिञ्चि—	(पर्वत-प्रदेश)—	मिलन और मिलन-निमित्त।
मरुदम—	(खेत-प्रदेश)—	रूठन और रूठन-निमित्त।
मुल्लै—	(वन-प्रदेश)—	गृहस्थी और उसका निमित्त।
नॅय्दल—	(समुद्रतट-प्रदेश)—	विरह-विलाप और उसका निमित्त।
पालै—	(जंगल मरु-प्रदेश)—	विछोह और विछोह का निमित्त।

इसके अलावा हर 'तिणै' के वर्णन के सम्बन्ध में ये जीव और पदार्थ भी आवश्यक और योग्य अंग माने गये हैं: देव, उच्च लोग, नीच लोग, पक्षी, पशु, बस्तियाँ, जलाशय, फूल, पेड़, भोजन-पदार्थ, ढोल के प्रकार, याळ (वीणा का-सा वाद्य), राग और काम-धंधे सब अलग-अलग हैं। इनकी सूची विस्तार-भय से नहीं दी जाती। तिणै के वर्णन में मिश्रित-वर्णन भी साहित्य का अंग माना गया।

तुऱै— हर तिणै के विविध तुऱै होते हैं। तुऱै का अर्थ घाट भी है। घाट ही जल में पान या स्नान के लिए मनुष्य के सहायक होते हैं। साहित्य में तुऱै को उपप्रकरण या निहित उपांग मान सकते हैं।

ऐसे ही 'बाह्य साहित्य' (पुऱम) के भी तिणै और तुऱै निर्धारित हैं। वहाँ तिणै के नामकरण फूलों के नामों पर हुए हैं। 'अहम्' साहित्य के समान भूभागों के नामों पर नहीं हुए हैं। बाह्य साहित्य का प्रधान विषय युद्ध था। बाह्य (युद्ध-) साहित्य के अंगों के नामकरण देखिए—

फूलों के नाम	**युद्ध के अंग**
१ वॅट्चि—	गायों का हरना।
२ करन्दै—	गायों का छुड़ाना।
३ वञ्जि—	चढ़ाई।

४ कान्जि— युद्ध।
५ नोंच्चि— परकोटे के अन्दर से युद्ध करना।
६ उळिञै— घेराव डालना।
७ तुम्बै— घमासान युद्ध।
८ वाहै— विजय।

वीर लोग युद्ध के प्रकारों के या अंगों के अनुकूल फूल (असली या स्वर्ण के बने) पहनकर युद्ध करते थे।

कविगण (जिनको 'पुलवर' कहा जाता है) अभिभावकों की प्रशंसा में कविता या गीत बनाते थे। वे नीतिविषयक पर भी बनाते थे। ऐसे साहित्य पुऱम् के ही अंतर्गत लिये जाते हैं। उनमें प्रशंसा का 'तिणै' 'पाडाण्' कहा जाता है। इन सभी तिणैयों के भी 'तुऱै' होते हैं।

इस विषय-विचार का ज्ञान तमिऴ-काव्य को समझने में सहायक होगा, यद्यपि अब यह परिपाटी कम्बन की रामायण में भी पूर्ण रूप से निबाही नहीं गयी है क्योंकि आधार संस्कृत का काव्य है और लोगों की जीवन-रीतियों में परिवर्तन आ गये थे।

इतना जानने के बाद अब चलिए कम्बन व उसकी रचना पर एक विहंगम-दृष्टि डालें।

६ कम्बन का चरित्र

कम्बन के चरित्र में अत्यधिक परिमाण में दन्तकथाएँ मिल गयी हैं। वे कब पैदा हुए? कहाँ पैदा हुए? उनके पिता कौन थे? वे किस वंश के थे, किस जाति के? उनकी मृत्यु कहाँ हुई? आदि आवश्यक समाचार भी अनुमान और कल्पना के घने कुहरे में छिपे पड़े हैं। उन पर ऐतिहासिक और वैज्ञानिक रीति से विश्वास करना बड़ा कठिन लगता है।

संक्षेप में निम्नलिखित विषयों का प्रचार है। वे मायवरम के पास तिरुवऴुन्दूर नामक गाँव में उवच्च (पुजारी) जाति के किसी व्यक्ति के घर में जन्मे थे या पले थे। (कथा कही जाती है कि किसी ब्राह्मणी द्वारा जनन के बाद त्यक्त होकर कोई शिशु उवच्चन के हाथ लगा। वही कम्बन हैं!)

फिर वे तिरुवॆण्णॆय नल्लूर के दानी ज़मीनदार शडैयप्पन् के यहाँ रहे। शडैयप्पन की ही प्रेरणा से उन्होंने कम्बरामायण रची। रामायण में उन्होंने अपनी कृतज्ञता के प्रदर्शन में दस बारह स्थलों में शडैयप्पन का नाम अंकित कर उनकी प्रशंसा की है। अतः यह बात स्वतः प्रमाणित है।

वे कुलोत्तुंग राजा के दरबारी कवि थे। कभी-कभी मनमुटाव हो

जाता था क्योंकि दोनों का अपने-अपने पद का अहंभाव था। ऐसे एक संदर्भ में कम्बन यह कहकर चले गये कि मैं तुम्हारे दरबार में वापस आऊँगा नहीं। अगर आऊँगा तो तुमसे किसी बड़े राजा को अपना ताम्बूलपात्र-वाहक (पनबट्टा-वाहक) बना लेकर आऊँगा। वे पांडिय राजा के यहाँ गये। अपना असली नाम छिपाकर वे वहाँ रहे और अपनी विद्वत्ता के बल पर राजा के प्रिय मित्र बन गये। जब राजा को सच्चाई का पता लगा तो वे पछताने लगे। तब उन्हें अपना ताम्बूल-वाहक बना लेने का आश्वासन देकर कम्बन ने उनको सान्त्वना दी। इतने में चोळन ने उन्हें बुला भेजा। वे आये और पांडिय राजा पनबट्टा-वाहक का वेष धरकर उनके साथ आया। बाद भी कम्बन का दरबारी जीवन सुख से नहीं बीता। कम्बन का पुत्र अंबिकापति ने राजकन्या से प्रेम किया। यह बात खुलने पर राजा ने उसे प्राणदण्ड दे दिया। उधर राजा के पुत्र ने कम्बन की पुत्री पर कटाक्ष चलायी तो वह कोदों के ढेर में बैठ गयी और अन्दर धँसने से मर गयी। फिर कम्बन ने अपनी लोहे की लेखनी से राज-पुत्र का वध कर दिया। इसके बदले में राजा ने कम्बन को मार दिया।

चमत्कारों की कमी भी नहीं। उन्होंने सरस्वती के मुख से 'तुमि' नामक शब्द को ठीक साबित कराया। (यह शब्द युद्धकाण्ड में ६५७वें पद में पाया जाता है। ऑट्टक्कूत्तर नामक अन्य दरबारी कवि ने उसे तमिळ का शब्द नहीं माना था।) पांडिय राजदरबार में सरस्वती देवी के नूपुर को माँग लेकर फिर उन्हें समर्पित कर दिया। एक कविता के द्वारा उन्होंने ब्रह्मराक्षस को भगाया। फिर अपनी रामायण के नागपाश पटल से एक पद सुनाकर गरुड़ को बुलाया और उनके द्वारा विष हटाकर तिल्लै (चिदंबरम्) के एक मृत ब्राह्मण-बालक को जिलाया। एक पद सुनाकर एक अश्व को मरवाया और दूसरा पद सुनाकर उसको जिला दिया। ऐसी अनेक बातें हैं।

उनकी जाति के सम्बन्ध में वे ब्राह्मण, पुजारी और राजा भी कहे जाते हैं। उनकी अन्य रचनाओं के नाम भी गिनाये जाते हैं जिन पर बहुत विद्वान विश्वास नहीं करते। उनका आन्ध्र देश के राजा प्रतापरुद्र के दरबार में जा रहने की कथा भी प्रचलित है। चोळ राजा कुलोत्तुंग के स्थान पर वे आदित्य नामक चोळ राजा के मित्र भी बताये जाते हैं।

जो हो, शक्ति पदिप्पगम वालों के कथनानुसार निम्नलिखित बातें निर्विवाद हैं—

कम्बन तिरुवळुन्दूर में जन्मे थे।

तिरुवेंण्णॆय्नल्लर् (कदिरामंगलम) के ज़मीनदार शडैयप्पन उनके अभिभावक मित्र थे।

कम्बन ने रामायण लिखी।

उनके काव्य का प्रकाशन (तमिऴ वालों की रीति से 'अरङ्गेट्रम्' यानी विद्वत्-सभा में सुनाना और स्वीकृति की मुहर पा लेना) श्रीरंगनाथ के मंदिर में हुआ। वह मंदिर विख्यात श्रीरंगम क्षेत्र में स्थित महिमायुक्त और प्रसिद्ध मंदिर है या कदिरामंगलम में कोई मंदिर था जो अब नष्ट हो गया है ? इस बात में सन्देह है। उनकी समाधि नाट्टरशन कोट्टै नामक गाँव में है—यह माना जाता है।

७ कम्बन का काल

कम्बन के चरित्र की जो स्थिति है वही उनके काल की भी है। नवीं सदी, ग्यारहवीं सदी, बारहवीं सदी, चौदहवीं सदी और पन्द्रहवीं सदी —इनमें हर एक के पक्षपाती पाये जाते हैं। यह पुस्तक खोज का ग्रन्थ नहीं है। अत: विस्तार के साथ इन पर जाना नहीं चाहता। पर आज के तीन प्रमुख विद्वान और कऴगम (संघ) वाले ९वीं सदी के पक्ष में हैं। उनकी चर्चा यथास्थान होगी। इधर इतना कहना काफी होगा कि ९वीं सदी के समर्थकों का पक्ष प्रबल दिखता है।

आजकल मदुरै विश्वविद्यालय में अनेक विद्याव्यसनी जो खोज के कार्य में लगे हुए हैं, कम्बन-सम्बन्धी विषयों में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। आशा है उनकी खोजों के फलस्वरूप कुछ निर्धारण यथासमय मिल जायगा।

हाँ इन असंदिग्ध खोज के विषयों को एक ओर रखकर उस विषय की चर्चा करें जो ठोस रूप में हमारे सामने उपलब्ध हैं।

८ कम्बन का काव्य

वाग्देवी के पुष्कल प्रसाद के पात्र ये कवि सार्वभौम (कविचक्रवर्ती) विश्वकवियों में अग्रगण्य माने जाते हैं। इनके कारण तमिऴ भाषा की देवी का सिर गर्वोन्नत है। विद्वानों का खेदयुक्त विचार है कि अभी विश्व इनका महत्व पूर्ण रूप से जान नहीं पाया है।

कम्बन मेधावी और प्रतिभासंपन्न कवि थे। भाषा पर अधिकार और काव्य-कला की दक्षता उनकी अपूर्व थी और अलौकिक। मद्रास के कम्बन कऴगम द्वारा प्रकाशित रामायण-मूल ग्रन्थ के प्राक्कथन में यों कहा गया है—

विश्वमान्य काव्यकारों में कम्बन अग्रगण्य हैं। कम्बन ने अपने काव्य में अपने पूर्व के सभी कवियों की विशेषताओं का समावेश कर लिया है। वह इतना सर्वांगीण हो गया है कि पीछे के कवि उनसे आगे बढ़ नहीं पाये, वरन उनके सफल अनुकरण में ही अपना भाग्य मान लेते हैं।

कम्बन तत्वज्ञ, गणितशास्त्र-विद्, ज्योतिष-विज्ञान के ज्ञानी, शिल्प-शास्त्री सब कुछ हैं। उनमें संगीत, नाटक, नृत्य आदि कलाओं का प्रथम श्रेणी का ज्ञान था। इनका संस्कृत और तमिऴ भाषा —दोनों पर अपार अधिकार था। छन्द, अलंकार आदि के प्रयोग में और रस के आयोजन में उनको अलौकिक दक्षता प्राप्त थी। काव्य, शास्त्र के इन परम पण्डित ने तमिऴ के ही नहीं संस्कृत के भी ग्रन्थों के विषयों का ज्ञान अर्जित कर लिया था।

इसलिए शकाब्द ८०७ से (सन् ८८६ ई० से) लेकर कम्बन की रामायण उत्तरोत्तर अपनी लोकप्रियता में बढ़ रही है। विद्वानों के लिए 'कम्बनाडन' की कविता के समान मनोरंजन का साधन और कोई नहीं है, जो उनके मन को इतना आह्लादित करे!

यह रामचरित का ही काव्य है। वह वृहत्काव्य के आवश्यक लक्षणों से पूर्ण है। ऐसे काव्य में इन विषयों का होना आवश्यक माना गया है— नांदी (ईश्वर-स्तुति या विषय-कथन) अलौकिक या अप्रमेय किसी नायक का चरित्र, पर्वत, सागर, राज्य, राजधानी, नगर, ऋतुएँ, चन्द्र व सूर्योदय और उनका अस्त आदि के वर्णन हों। विवाह, मुकुट-धारण, पुत्र-जन्म आदि घटनाओं का समावेश हो। शृंगार में मिलन-वर्णन और रूठन आदि की चर्चा हो। विद्या-विनोद, आचरण के उपदेश, मंत्रणा, दौत्य, युद्ध, विजय आदि प्रकरण हों। संधि-सर्ग, उपसर्ग, परिच्छेद आदि की व्यवस्था पायी जाय। भावों और तत्वों का समावेश हो। कुल मिलाकर ग्रन्थ रस-भरा होने के साथ-साथ चारों पुरुषार्थों का प्रतिपादक और दायक हो। कम्बन सभी दृष्टियों से सर्वांगीण हैं।

कम्बन ने अपनी रामायण का नाम 'इरामावतारम्' ही रखा। पर अब वह कम्बरामायण के ही नाम से विख्यात है। इसका मूल वाल्मीकीय रामायण है, यद्यपि अध्यात्म रामायण और अन्य श्रीराम-सम्बन्धी कथाओं का प्रभाव यत्र-तत्र पाया जाता है। कम्बन के इस स्तुत्य कार्य से भारत में भावात्मक एकीकरण का और विश्व में भारतीय संस्कृति की उन्नति के प्रकाशन का अपूर्व कार्य सध गया। भारत के मनीषी कवि समन्वय तथा सामंजस्य के प्रबल समर्थक रहते आये हैं। कम्बन को उनमें अग्रश्रेणी में मानना चाहिए। शैव-वैष्णव, उत्तर-दक्षिण, संस्कृत-तमिऴ, आर्य-द्रविड़, बड़े-छोटे, विद्वान-पामर, धार्मिक-धर्मनिरपेक्ष, भक्त-नास्तिक, पूँजीपति-साम्यवादी, प्रदेशभक्ति-देशप्रेम, देशप्रेम-विश्वनागरिकता आदि कितने ही प्रकारों के समन्वय उनके काव्य द्वारा प्राप्य हो गये हैं!

यह वाल्मीकी का शब्दशः अनुवाद नहीं है। उपमाएँ आदि तो इनकी अपनी ही हैं। तमिऴ जनों की संस्कृति के परिचायक अनेक परिवर्तन

इसमें हो गये हैं। सीता-राम का विवाह-पूर्व 'कन्यामाडम्[1]' के पास परस्पर देख लेना उनका विरह-वर्णन, सीताजी को रावण का भूखण्ड, आश्रम के साथ उठा ले जाना आदि के अलावा चरित्र-चित्रण में भी उचित परिवर्तन हैं। कम्बन के इस महान प्रयत्न से रचित महत् काव्य के कारण वाल्मीकी और कम्बन दोनों का गौरव बढ़ा और इन दोनों के कारण भारत का गौरव साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उज्ज्वल हुआ।

कम्बन की अपनी तमिऴ-देशभक्ति, अपने अभिभावक शडैयप्पन के प्रति कृतज्ञता आदि बातें इस काव्य में परिलक्षित होती हैं।

कम्बन ने स्वयं अपनी कृति में काव्य का लक्षण और काव्य में प्रयुक्त शब्दों का लक्षण निम्न प्रकार से बताये हैं :—

नदी और काव्य में श्लेष के साथ बने इस पद में (अरण्यकाण्ड-शूर्पणखा पटल-पहला पद) कवि कहते हैं—

काव्य (और नदी) पृथ्वी का भूषण हो; बहुमूल्य और अत्युत्तम अर्थ दे; बुद्धि (भूमि) का पोषक हो; तापहारी 'तुरै' यों (घाटों या भाव-प्रसंगों) से युक्त हो; पाँचों 'तिणै' यों (भूभागों से या जीवन-व्यापारों) से होकर बहे; प्रकाशमय और स्वच्छ हो; और शीतल व प्रवहमान हो।

शब्दों के सम्बन्ध में उनका कथन है—

शब्द प्रसादगुणपूर्ण, मधुरतायुक्त, श्रेष्ठ अर्थबोधक, उत्तम श्रेणी के और तीक्ष्ण (सूक्ष्म) हों।

कहना नहीं है कि कवि ने अपने आदर्श खूब निबाहे हैं।

किं बहुना—वर्णन, प्रवाहमयता, रसभरितता, काव्यांग-निर्वाह, अलंकार-योजना, तथ्यों का निरूपण, धर्मों का उपदेश —सभी दृष्टियों से यह कांता-संहिता श्रीराम-काव्य सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोपयोगी कृति है। विद्वान लोग अनावश्यक तौर पर या झूठ-मूठ कम्बन को विश्वकवि नहीं मानते।

खैर, अब उन महानुभावों के प्रति हम अपनी कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि डालें, जिनकी वजह से हम आज कम्बन का काव्य-रसास्वादन कर पा रहे हैं।

६ कम्बन के भक्त, विद्वान, प्रचारक आदि

तमिऴनाडु में 'कम्बरामायण-विद्वानों' का बड़ा आदर रहा है। यद्यपि यह सत्य मानना पड़ेगा कि संस्कृतज्ञ वैष्णव भक्त ब्राह्मण लोग कम्बन को वाल्मीकी के समकक्ष मानने के पक्ष में नहीं हैं तो भी देश की

१ विवाह योग्य कन्याओं को अलग एक भवन में रखा जाता था। विवाह निश्चित होने के बाद विवाह के अवसर पर उन्हें राजमहल में लाया जाता था। उस भवन को कन्यामाडम् (प्रासाद) कहा जाता है।

अधिकांश जनता कम्बन के प्रति अधिक श्रद्धा रखती है। कहा जाता है— सप्रमाण कहा जाता है कि सन् १३७६ ई० से ही तमिऴनाडु में कम्बरामायणम् पर व्याख्यान देनेवालों के स्थान-स्थान पर जाकर भाषण देने की प्रथा है। सोलहवीं सदी के अंत में कुमर गुरुपरर् नामक मेधावी पुरुष काशी में दाक्षिणात्य मठ में रहकर कम्ब रामायण पर प्रवचन देते रहे। उनके व्याख्यान हिन्दी और संस्कृत में होते थे। ये संगीतज्ञ भी होते हैं और गंभीर विद्वान। अब हाल के और समकालीन कुछ विद्वानों की चर्चा करेंगे।

व-वे-सु अय्यर—ये तिलक के अनुयायी उग्र देशभक्त थे। इनके स्वतंत्रता-आन्दोलन में साहसपूर्ण कृत्यों से लोग मुग्ध हैं; उतने ही उनके अन्य साहित्यिक और समाजिक कार्य-कलापों से देश प्रभावित है। उन्होंने तिरुक्कुरळ् का अंग्रेजी में अनुवाद किया। कम्बन के कतिपय पदों का भी अनुवाद किया है। उस अनुवाद-संग्रह का प्राक्कथन अति महत्व का माना जाता है। उसमें विश्वकवियों से तुलना करके कम्बन को उन्होंने सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया है। अब वे दिवंगत हैं।

पि-श्री-आचार्य—ये वयोवृद्ध हैं और अपने गाँव में (सुदूर दक्षिण में) अस्वस्थ रहते हैं। उन्होंने प्रसिद्ध, लोकप्रिय साप्ताहिक 'आनंद विकटन' द्वारा कम्बन पर एक लेखमाला (बरसों निकलती रही) प्रकाशित कर तमिऴ-भाषियों में कम्बन के प्रति रुचि बढ़ायी।

वै-मु-गोपालकृष्णमाचार्य—इन्होंने पहले-पहल सटीक कम्बरामायण का आठ भागों में संकलन निकाला। वही सबका पथप्रदर्शक रहा; अब भी वह वैष्णव भक्तों के मध्य प्रामाणिक माना जाता है।

महामहोपाध्याय उ-वे-स्वामीनाथय्यर—ये तमिऴ के जाने-माने विद्वान हैं। उन्हीं के कारण तमिऴ भाषा का इतिहास जीवंत हुआ। अगर उन्होंने सारे देश में घूमकर ग्रंथों का, ताळपत्र-पांडुलिपियों का चयन और संग्रह न किया होता तो तमिऴ का सिलसिलेवार साहित्येतिहास के प्रमाण न मिलते। जीवन भर में वे कम्बरामायण पढ़ते, टीका-टिप्पणियों और अन्य सामग्रियों का संग्रह करते रहे। उन्हीं लेखों के आधार पर जो संस्करण छपा उसी का आधार लेकर यह प्रस्तुत ग्रंथ तैयार हुआ है।

टी-के-चिदम्बरनाथ मुदलियार—(टी-के-सी) ये राजाजी के परम मित्र थे। (राजाजी विख्यात देश-सेवक, गाँधीजी के समधी, मद्रास के भूतपूर्व मुख्यमंत्री, और आखिरी गवर्नर जॅनरल् थे।) ये तमिऴ-काव्य के प्रधानतया कम्बन के 'रसिक' थे। इनकी काव्य-मर्मज्ञता अद्वितीय थी। इनको ऐसा भाग्य प्राप्त था कि उन्होंने गाँधीजी को कम्बरामायण के अयोध्याकाण्ड के ५६१-५६२, ये दो पद सुनाये। यह वह प्रसंग है जिसमें श्रीराम सुमंत्र से

पूछते हैं कि क्या धर्म का पालन तभी हो जब उससे सुख मिलता है ? दुख हुआ तो धर्म त्याज्य हो जायगा ? 'रसिकमणि' उपाधिधारी, टी-के-सी के संगीतमय तर्ज में पद्य सुनाने के और अर्थ बताने के अतीव मनोहारी ढंग से गाँधीजी प्रभावित हुए और पूछा कि तमिळ के काव्य को मूल में ही पढ़कर रस का स्वादन करने के लिए कौन सा उपाय है ? झट उत्तर मिला—तमिळभाषी का जन्म लें ! सत्यवादी गाँधीजी उनकी स्पष्टवादिता से खुश हुए।

पूज्य विनोबा जी ने भी अपने एक पत्र में इन टी-के-सी महोदय को 'रसज्ञ-मर्मज्ञ' कहकर सराहा था।

टी-के-सी का अपनी काव्य-मर्मज्ञता पर अपार विश्वास था। एक तरह से अभिमान था। उन्होंने यह साहसपूर्ण काम किया कि १५१० पद को छोड़कर कम्बन के अन्य सारे पदों को अप्रामाणिक घोषित किया। तीन जिल्दों में उन्होंने रामायण का, 'कम्बन तरुम् रामायणम्' के नाम से जो संस्करण निकाला था (वह भी अब अप्राप्य है) उसमें उन्होंने वे ही १५१० पद संग्रह किये हैं। उसमें दी गयी टीकाएँ संक्षिप्त हैं पर सुमधुर, सुग्राह्य और आह्लादकारी हैं। मरते दम तक वे अपने मित्रों से याचना करते रहे कि कम्बन का नाम प्रशस्त करते रहो। इस ग्रंथ में तारे के चिह्न से जो पद चिह्नित हैं, वे उनके द्वारा प्रामाणिक और असंदिग्ध माने गये कम्बन के लिखे पद हैं।

टी-पी-मीनाक्षी सुन्दरम्—(टी-पी-एम) ये प्रख्यात भाषाविद्, आलोचक, काव्य-मर्मज्ञ और अनेक गंभीर ग्रंथों के प्रणेता, मदुरै विश्व-विद्यालय के (भूतपूर्व) प्रथम उपकुलपति (वाइसचान्सलर) थे। अब अपनी अतिवृद्ध अवस्था में महर्षि महेश योगी के ध्यान के प्रचार में लगे हैं। अब भी अति परिश्रमी साहित्य-स्रष्टा बने हुए हैं। उन्हीं की अध्यक्षता में मद्रास के कम्बन कळगम वालों ने पूर्वोक्त कम्ब रामायण मूल का संस्करण संपादित कर प्रकाशित कराया।

जस्टिस महाराजन—ये बहुत ही प्रसिद्ध तमिळ-भाषणकर्ता अनुवाद-कला-कुशल, साहित्य-मर्मज्ञ और मिलनसार सज्जन हैं। ये टी-के-सी के शिष्य हैं और इनके काव्य-प्रतिपादक भाषणों में टी-के-सी की रीति की झलक पायी जा सकती है। अब वे कम्बन के चुने हुए पदों का अंग्रेजी में नयी कविता की शैली पर अनुवाद कर रहे हैं। ये अवकाश प्राप्त जस्टिस हैं और संप्रति तमिळनाडु सरकारी अनुवाद विभाग के अध्यक्ष हैं।

जस्टिस इस्माइल—ये मद्रास हाईकोर्ट के सीनियर जस्टिस हैं। (अब प्रधान जस्टिस बननेवाले हैं।) उनका कम्बन-प्रेम इतना तीव्र था कि

उन्होंने कळगम की स्थापना मद्रास में की। ये स्वयं उसके अध्यक्ष हैं। सालाना उत्सव-सा मनाया जाता है, जब कम्बन पर भाषण, कविता-वाचन, विवाद-मंच (पट्टि मंडपम) पुरस्कार योजना आदि की विराट व्यवस्था रहती है। इनकी भी कम्बरामायण पर एक लेखमाला आनंदविकटन (साप्ताहिक) में निकली और वह बहुत लोकप्रिय रही और महत्वपूर्ण भी।

कम्बन अडिप् पोंडि—(कम्बन-चरण-रेणु—कारैक्कुडी शा० गणेशन जी) इन कम्बनभक्त-शिरोमणि का सचित्र परिचय आरंभ में दिया गया है। उनका कारैक्कुडी (रामनादपुरम जिले में एक मुख्य नगर) में स्थापित कम्बन कळगम सभी ऐसी संस्थाओं का मातृकळगम है। इकतालीस-बयालीस साल पहले बने इस संघ के चालन के अलावा ये और तीन बहुमूल्य कामों पर लगे हैं (१) कम्बन मणि मण्डपम का निर्माण (२) कम्बन के नाम पर एक उत्तर माध्यमिक (हायर सेकेंडरी) विद्यालय और (३) नाट्टरशन कोट्टाइ (एक बस्ती) में कम्बन-समाधि पर वार्षिक उत्सव का प्रबन्ध। उनकी ही प्रेरणा से तमिळनाडु भर में और मलाया में भी कम्बन पर व्याख्यानों की व्यवस्था के अलावा जयन्ती आदि उत्सव मनाये जा रहे हैं।

उनका इस ग्रंथ के लेखक के प्रति अगाध प्रेम और सद्भावना है।

वी-एस-मुदलियार— इनकी पुस्तक Kamba Ramayanam–A Condensed Version in English Verse and Prose कम्बरामायणम् अंग्रेजी पद्य और गद्य में सार-संग्रह भारत सरकार की आर्थिक सहायता लेकर सन् १९७० में प्रकाशित हुई। उसमें लगभग एक हज़ार चुने हुए सुन्दर पदों का अतुकांत नई कविता में अनुवाद है। कहानी की अविच्छिन्नता और प्रवाह गद्य-पद्य दोनों द्वारा रक्षित है।

डा० एस० रामकृष्णन— ये साम्यवादी लेखक, नेता और आचार्य हैं। मार्क्सवादी सिद्धांतों के वे गण्यमान्य तत्ववेत्ता हैं। उन्होंने अपने डाक्टर की उपाधि के लिए एक खोज-निबंध कम्बन और मिल्टन नाम से प्रस्तुत किया। वह अंग्रेजी में है। हाल में 'कम्बनुम् मिल्टनुम् ऑरु पुदिय पार्वै' (कम्बन और मिल्टन —एक नया अवलोकन) नाम से उन्होंने एक ग्रंथ लिखा है। उसमें उन्होंने कम्बन की कृति और मिल्टन की कृति (स्वर्ग-खोया हुआ) दोनों की तुलनात्मक समीक्षा की है। इनके ग्रंथ प्रामाणिक और मूल्यवान माने जाते हैं।

कितने ही अन्य विद्वान हैं! उनकी चर्चा विस्तारभय से अब हम छोड़ रहे हैं।

१० संस्थाएँ

आज कलकत्ता और मलाक्का (मलेशिया) के कम्बन कळगमों के अलावा तमिळनाडु में ३१ (इकतीस) स्थानों में कम्बन कळगम (कम्बन संघ) क्रियाशील हैं। उनका काम कम्बन की रामायण के वर्ग चलाना, भाषण, उत्सव आदि द्वारा उनका प्रचार करना आदि है।

उनमें प्रमुख कळगम मद्रास और कारैक्कुडी के हैं। ये दोनों बड़ी धूम-धाम से सालाना जयन्ती उत्सव मनाते हैं। कळगम के स्थापक और अध्यक्ष श्री कम्बन अडिप्पॉडि और जस्टिस इस्माइल प्रभृति महानुभाव इधर-उधर जाकर संघों के मध्य संपर्क चालू रखते हैं और उत्सवों में भाग लेकर कम्बन का नाम प्रशस्त कराते हैं।

११ उपसंहार

यह ग्रंथ बहुत परिश्रम और लगन के साथ किया जा रहा है। श्रीनंदकुमार जी को तो परिश्रम के साथ समुचित धनसंचय की भी कठिनाई का सामना पड़ता है। अतः आशा करता हूँ कि हिन्दीज्ञाता और प्रेमी विज्ञ पाठक इस ग्रंथ का समुचित स्वागत करेंगे और पठन से अपने को लाभान्वित कर लेंगे; हमें कृतार्थ बनायेंगे और श्री सीताराम की कृपा के पात्र बनेंगे।

इसके अध्ययन से श्रीराम के चरितामृत के स्वादन के साथ काव्यानंद-भोग का भी लाभ होगा। साथ-साथ तमिळ भाषा, भाषी, उनकी काव्य-प्रणाली, संस्कृति आदि की उत्कृष्टता का भी बोध मिलेगा। हाँ, एक शंका अवश्य है: मेरी हिन्दी शायद इन बातों की उपलब्धि कराने में पूर्ण रूप से सहायता न दे सके! तो भी विश्वास है कि विद्वान पाठक को कम्बन के भावों को समझने में कठिनाई नहीं होगी।

जो है वह बहुत ही है। इसका सारा श्रेय उन कर्मण्य, भाषाप्रेमी, भावैक्य के सबल समर्थक, भाषाई-सेतुकरण के अथक सेवाव्रती, उदात्तगुण-पूर्ण और उदारचेता श्रीनंदकुमार अवस्थी (पद्मश्री) जी को और उनके निदेश व मार्गदर्शन में सतत क्रियाशील रहनेवाले 'भुवन वाणी ट्रस्ट' और प्रेस के समर्थ और लगनशील कार्यकर्ताओं को है। प्रधानतया श्री विनयकुमार अवस्थी हमारी प्रशंसा के पात्र हैं। श्रीनन्दकुमार अवस्थी के चरणों में मेरा मस्तक विनत है! उन कार्यकर्ताओं के प्रति हमारा हार्दिक धन्यवाद है।

श्री सीताराम की जय हो।

६६, भारती रोड, मदुरै
६२५०११

ति० शेषाद्रि, एम० ए०

29/1928

विषय-सूची

कम्ब रामायणम्

तुदिप् पाडल्हळ् (स्तुति छंद)

ऑन्ऱा यिरण्डु शुडरायॅारु मून्ऱु माहिप्
पॉन्ऱाद वेद मॉरुनान्गॉडैम् बूद माहि
अन्ऱाहि यण्डत् तहत्ताहियप् पुऱत्तु माहि
निन्ऱा नॉरुव नवनीळ्कळल् नॅञ्जिल् वैप्पाम् 1

ऑन्ऱु आय्, इरण्टु चुटराय्, ऑरु मून्ऱुम् आकि, पॉन्ऱात वेतम् ऑरु नान्कोटु ऐम् पूतम् आकि अन्ऱाकि अण्टत्तु अकत्ताकि, अप्पुऱत्तुमाकि निन्ऱान् ऑरुवन्; अवन् नीळ् कळल् नॅञ्चिल् वैप्पाम् । १

जो एक वना, दो ज्योतियाँ वना, त्रिमूर्ति वना, अक्षय वेद चतुष्टय वना, पाँच भूत वना; इन सबका भी जो न वन, अण्ड के अन्दर का, अण्ड के बाहर का भी वना, (वह एक) रहता है। उस परमपुरुष के दीर्घ चरणों को हम अपने चित्त में धरें। १

ऑन्ऱायप् पलवा युळनायिल नायु रैप्पोर्क्
कन्ऱायप् परमा यरुवायुरु वाहि मेन्मै
कुन्ऱाद ञानक् कॉळुन्दाय्क्कुण मून्ऱुन् दन्दु
निन्ऱा नियाव नवनीळ्कळल् चॅन्नि वैप्पाम् 2

उरैप्पोरक्कु ऑन्ऱु आय्, पल आय् उळन् आय् इलन् आय्, अन्ऱु आय्, परम् आय्, अरु आय् उरु आकि मेन्मै कुन्ऱात ञान कॉळुन्तु आय् कुणम् मून्ऱुम् तन्तु निन्ऱान् इयावन् अवन् नीळ् कळल् चॅन्नि वैप्पाम् । २

कहने वालों के लिए (कठिन रूप से) एक है; कई हैं; उनका भाव है; अभाव भी; वर्तमान हैं, परे भी; अरूपी हैं, रूपवान हैं; अनुत्तम ज्ञान के किसलय (शिखर) हैं। (सत्व, रज और तम) तीन गुणदायी जो हैं उनके दीर्घ चरण सिर पर धरेंगे। २

तिरुमाल् (श्रीविष्णु की स्तुति)

नील माङ्गडल् नेमियन् दडक्कै, मालै मालहॅड वणङ्गुदु महिऴ्न्दे 3

नीलम् आम् कटल् नेमि अम् तटक्कै मालै माल् कॅट मकिऴ्न्तु वणङ्कुतुम् । ३

नीले रंग को प्राप्त क्षीर सागर (-शायी), चक्रधारी, सुन्दर विशाल हस्त, श्री विष्णु की, भ्रम निवारण के लिए आनन्द के साथ वन्दना करेंगे। ३

कायुम्वॆण् पिऱैनिहर् कडुवॊ डुङ्गॆयिऱ्, ऱायिरम् पणामुडि यनन्दन् मीमिशै
मेयनाल् मऱैतॊऴ विऴित्तु ऱङ्गिय, मायन्मा मलरडि वणङ्गि येत्तुवाम् 4

कायुम् वॆण् पिऱै निकर्, कट्टु ऒटुङ्कु ऎयिऱ्ऱु, आयिरम् पणा मुटि अनन्तन् मीमिचै मेय नाल् मऱै तॊऴ विऴित्तु उऱङ्किय मायन् मा मलर् अटि वणङ्कि एत्तुवाम् । ४

(चाँदनी) फैलाने वाले श्वेत चंद्र के सदृश, और विष से भरे दांतों और एक सहस्र फन वाले अनन्त (नाग) पर, श्लाघ्य चारों वेदों के स्तुति करते रहते, जागते हुए सोनेवाले (ज्ञान-निद्रा-रत) मायावी (विष्णु) के (कमल) फूल से चरणों की स्तुति करें । ४

इलक्कुमि (लक्ष्मी)

मादुळङ् गनियैच् चोदि वयङ्गिरु निदियै वाशत्
तादुहु नरुमॆन् शॆय्य तामरैत् तुणैमॆन् पोदै
मोदुपाऱ् कडलिन् मुन्नाण् मुलैत्तुनाऱ् करत्ति लेन्दुम्
पोदुता याहत् तोन्ऱुम् पॊन्नडि पोऱ्ऱि शॆय्वाम् 5

मातुळम् कनि ऐ चोति वयङ्कु इरु नितियै वाच तातु उकु नरु मॆन् चॆय्य तामरै तुणै मॆन् पोतै, मोतु पाऱ् कटलिन्, मुन्नाळ् मुळैत्तु नाल् करत्तिल् एन्तुम् पोतु तायाक तोन्ऱुम् पॊन् अटि पोऱ्ऱुवाम् । ५

अनार की कली को, ज्योतिर्मय बड़ी श्री को, सुगंधयुक्त पराग चूने वाले मृदु, और लाल कमल की साथिन कमल-कली को, तरंगाकुल सागर में उदित हो (विष्णु के) चार हाथों पर धृत होते समय जो (जगन्मयी) माता वनीं उन लक्ष्मी के चरणों की स्तुति करें । ५

इराम पिरान् (प्रभु श्रीराम)

परावरु मऱैपयिल् परमन् पङ्गयक्, करादल निऱैपयिल् करुणैक् कण्णिनान्
अरावणैत् तुयिऱुऱन् दयोत्ति मेविय, इरागवन् मलरडि यिरैञ्जि येत्तुवाम् 6

परावु अरु मऱै पयिल् परमन्, पङ्कयम् करातलम् निऱै पयिल् करुणै कण्णिनान् अरा अणै तुयिल् तुऱन्तु अयोत्ति मेविय इराकवन् मलर् अटि इरैञ्चि एत्तुवाम् । ६

स्तुत्य श्रेष्ठ वेदों से घोषित परब्रह्म, कमल से करतल वाले, करुणाक्ष शेषशय्या की निद्रा त्याग अयोध्या जो आये उन राघव के चरण कमल की, विनय कर, स्तुति करेंगे । ६

कलङ्गा मदियुङ् गदिरोन् बुरविप्, पॊलन्कान् मणित्तेरुम् पोहा—इलङ्गा
पुरत्तानै वानोर् पुरत्तेऱ विटट, शरत्तानै नॆञ्जे तरि 7

नॆञ्चे ! कलङ्का मतियुम् कतिरोन् पॊलन् का मणि तेरुम् पोका, इलङ्का पुरत्तानै वानोर् पुरत्तु एऱ विट्ट चरत्तानै तरि । ७

रे मन ! नियम न तोड़नेवाला चंद्र, और सूर्य का अश्वयुक्त स्वर्णमय रथ जिसके बीच में नहीं जा सकते, उस लंकापुरी के राजा को आकाश पर चढ़ाते (मारते हुए जिन्होंने) शर छोड़ा उनका स्मरण कर। ७

नाराय णाय नमवॆन्नु नन्नॆञ्जर्, पाराळुम् बादम् बणिन्देत्तु माऱ्ऱियेन्
कारारु मेनिक् करुणा हरमूर्त्तिक्, कारा दनैयॆन् नरि यामै योन्ऱुमे 8

नारायणाय नम ऍन्नुम् नल् नॆञ्चर् पार् आळुम् पातम् पणिन्तु एत्तुम् आऱु अऱियेन्। कार् आरुम् मेनि करुणाकर मूर्त्तिक्कु आरातनै ऍन् अऱियामै ऑन्ऱुमे। ८

नारायणाय नमः (यह मंत्र) जपने वाले सच्चित्तवालों के लोक के शासक चरणों की स्तुति करने की रीति नहीं जानता। अतः मेघ श्यामल देह के और करुणाकर देव की आराधना (का द्रव्य) मेरी अज्ञता मात्र ही है। ८

नम्माळ्वार् (प्रसिद्ध वैष्णव संत)

तरुहै नीण्ड तयरदन् ऱान्ऱरुम्, इरुहै वेऴत् तिरागवन् रन्गदै
तिरुहै वेलैत् तरैमिशैच् चॆप्पिडक्, कुरुहै नादन् कुरैहऴल् काप्पते 9

तरु कै नीण्ट तयरतन् तान् तरुम् इरु कै वेऴत्तु इराकवन् तन् कतै तिरुकु ऐ वेलै तरै मिचै चॆप्पिट कुरुकै नातन् कुरै कऴल् काप्पतु ए। ९

दानशील दशरथ के पुत्र, दो हाथों के हाथी (के समान रहनेवाले) श्रीराम का चरित, विविध तरह के सागरों से वलयित भूभाग में गाने के लिए कुरुकै (नामक क्षेत्र) के नायक शठकोप[1] के वीरतासूचक पायल से अलंकृत चरण रक्षक हैं। ९

आञ्जनेयर् (आंजनेय हनुमान)

अञ्जिले यॊन्ऱु पॆऱ्ऱा नञ्जिले यॊन्ऱैत् तावि
अञ्जिले यॊन्ऱा ऱाह वारियर् काह वेहि
अञ्जिले यॊन्ऱु पॆऱ्ऱ वणङ्गैक्कण् डयला रूरिल्
अञ्जिले यॊन्ऱु वैत्ता नवन्नॆम्मै यळित्तुक् काप्पान् 10

अञ्चिले ऑन्ऱु पॆऱ्ऱान् अञ्चिले ऑन्ऱैत् तावि अञ्चिले ऑन्ऱु आऱु आक, आरियर्कु आक एकि अञ्चिले ऑन्ऱु पॆऱ्ऱ अणङ्कै, अयलार् ऊरिल् कण्टु, अञ्चिले ऑन्ऱु वैत्तान्; अवन् ऍम्मै अळित्तु काप्पान्। १०

पांच (भूतों) में एक (वायु) का जना (हनुमान जो), पांच में एक (आकाश) के द्वारा आर्य श्री राम कार्य के हेतु जाते हुए पांच में एक (जल) को पार कर, पांच में एक (पृथ्वी) की सुता को अन्यों के देश में पाकर, उसमें पांच में एक (अग्नि) लगा दी (जिसने), वह हम पर कृपा कर हमारी रक्षा करेगा। १०

1 **शठकोप-नम्माळ्वार** जो वैष्णव भक्त **आळ्वारों** में प्रसिद्ध एक हैं।

ऍव्वि डत्तु मिरामन् शरिदयाम्, अव्वि डत्तिनु मञ्जलि यत्तनाय्प्
पव्व मिक्क पुहळ्त्तिरुप् पार्कडल्, दॆय्वत् तासनैच् चिन्दैशॆय् वामरो 11

एव्विटत्तुम् इरामन् चरितैयाम् अव्विटत्तितुम् अञ्चलि अत्तनाय् पव्व मिक्क पुकळ् तिरु पार् कटल् तॆय्व ताचनै चिन्तै चॆय्वाम् । अरो । ११

यत्र-यत्र रघुनाथ-कीर्तनम्, तत्र-तत्र अंजलि-हस्त हो (जो रहता है उस) पय-वहुल और प्रशंसित क्षीर-सागर-शायी देव के दास का (हनुमान का) स्मरण करेंगे । ११

कलैमहल् (सरस्वती)

पॊत्तहम् बडिह मालै कुण्डिहै पॊरुळ्शेर् ञान
वित्तहत् दरित्त शॆङ्गै विमलैयै यमलै तत्नै
मॊय्त्तकॊन् दळह पार मुहिळ्मुलैत् तवळ मेनि
मैत्तहु करुङ्गट् चॆव्वा यणङ्गिनै वणङ्गल् शॆय्वाम् 12

पॊत्तकम्, पटिक मालै कुण्टिकै, पॊरुळ् चेर् ञान वित्तकम् तरित्त चॆङ्कै, विमलैयै, अमलै तन्नै मॊय्त्त कॊन्तु अळक पारम् मुकिळ् मुलै, तवळ मेनि, मै तकु करुङ्कण्, चॆव्वाय् अणङ्किनै वणङ्कल् चॆय्वाम् । १२

पुस्तक, स्फटिक माला, कमण्डल, अर्थ-भरी ज्ञान मुद्रा, इनको रखने वाले लाल करतलों की स्वामिनी, विमल गुणों और अमल कृत्यों वाली, घने सुमन-गुच्छों से अलंकृत केशवाली, कमलकलियों के समान स्तनों वाली, धवल शरीर, अंजन लगी काली आंखों वाली, (और) लाल अधरों वाली (सरस्वती) देवी की वंदना करेंगे । १२

विनायकर् (विनायक)

तळैशॆविच् चिरुहट् टाळ्हैत् तन्दशिम् बुरमुन् दारै
मळैमदत् तरुहट् चित्र वारण मुहत्तु वाळ्वै
इळैयिडैक् कलशक् कॊङ्गै यिमगिरि मडन्दै यीन्र
कुळवियैत् तॊळुव नन्बार् कुरैवर निरैह वॆन्रे 13

तळै चॆवि, चिरु कण्, ताळ्कै तन्त चिन्तुरमुम्, तारै मळै मत, तरुकण् चित्र, वारण मुकत्तु वाळ्वै, इळै इटै, कलश कॊङ्कै, इमकिरि ईन्र कुळवियै अन्पाल् कुरै वर निरैक अॆन्रे तॊळुवम् । १३

बड़े कान, छोटी आँखें, लंबी सूंड, लाल दांत, बहनेवाला मद जल, बल आदि से युक्त, विचित्र हाथी-मुख (विनायक), हमारे जीवनाधार को, पतली कमर, और कलश (सम स्तन) वाली हिमगिरि संभूता के शिशु को प्यार से, "अभाव दूर हों और (सुख) भरते रहें" यह प्रार्थना करते हुए नमस्कार करूँगा । १३

अॅक्क णक्कु मिऱन्द पॆरुमयन्, पॊक्क णत्तन् पुलियद ळाडयन्
मुक्क णत्तन् वरम्बॆऱ्ऱ मूप्पनै, अक्क णत्ति नवनडि ताळ्न्दनम् 14

अॅ कणक्कुम् इऱन्त पॆरुमैयन्; पॊक्कणत्तन्; पुलि अतळ् आटैयन्; मुक्कणत्तन् वरम् पॆऱ्ऱ मूप्पन् ऐ अक्कणत्तिम् अवन् अटि ताळ्न्ततम् । १४

किसी भी गणना के परे रहनेवाले यश का स्वामी, (भव रोग के लिए) उत्तम औषध; व्याघ्र के चर्म का अंबरधारी, त्रि-नेत्र (शिव जी) के वर-प्राप्त (प्यारे) ज्येष्ठ पुत्र (हैं विनायक;) तत्क्षण उनके चरणों पर विनत होते हैं। १४

वाऴ्त्तु (स्वस्ति)

वान्वळञ् जुरक्क नीदि मनुनॆऱि मुऱैयॆम् नाळुम्
तान्वळरन् दिडुह नल्लोर् तङ्गिळै तळैत्तु वाऴ्ह
तेन्वळरन् दऱाद मालैत् तॆशरद रामन् शॆय्है
यानळन् दऱिन्द पाड लिडयऱा दॊलिर्ह वॆङ्गुम् 15

वान् वळम् चुरक्क; नीति मनु नॆऱि मुऱै अॅ(न्) नाळुम् तान् वळरन्तिटुक; नल्लोर् तम् किळै तळैत्तु वाऴ्क; तेन् वळर्न्तु अऱात मालै तॆचरत रामन् चॆय्कै यान् अळन्तु अऱिन्त पाटल् इटै अऱातु अॅङ्कुम् ऒळिर्क । १५

आकाश की समृद्धता (वर्षा) बढ़े ! नीति, मनु-धर्म-मार्ग पर सब दिन वर्धित हो; साधुओं का कुल वर्धित हो, जिए; मधुधारा जिसमें अटूट है उस माला के धारण करने वाले दशरथ (के पुत्र) श्रीराम का चरित्र (जो मैं अपनी बुद्धि के अनुसार) मापकर (समझकर) गाता हूँ, वह गीत निरंतर सर्वत्र प्रकाशमान रहे। १५

एह विरुत्त रामायणम् (एक वृत्त में रामायण)

परावरु मिरामन् मादो डिळवल्बिन् पडरक् कान्पोय्
विरादनैक् करनै मानैक् कवन्दनै वॆन्ऱि कॊण्डु
मरामरम् वालि मार्बु तुळैत्तणै वहुत्तुप् पिन्नर्
इरावणन् कुलमुम् पॊन्ऱ वॆय्दुड नयोत्ति वन्दान् 16

पराव अरु (या-परावरुम्) इरामन् मातु ओटु इळवल् पिन् पटर कान् पोय् विराततै, करनै, मानै, कवन्तनै वॆन्ऱि कॊण्टु, मरामरम् वालि मार्पु तुळैत्तु, अणै वकुत्तु पिन्नर् इरावणन् कुलमुम् पॊन्ऱ अॅय्तु उटन् अयोत्ति मीणदान् । १६

प्रशंसा करने के लिए असाध्य (या प्रशंसित) श्रीराम, देवी (सीता जी) के साथ, अनुज के उनका पीछा करते, जंगल गये; विराध, खर, मृग (मारीच) और कबंध को मारकर साल वृक्ष और वाली के वक्ष को बेधकर, सेतु बांधकर, फिर रावण के कुल का नाश करते हुए शर चलाकर शीघ्र अयोध्या आ गये। १६

पायिरम् (प्रशस्ति-पद)

ततियन्कळ् (मुक्तक)

कम्बनाडर् पॅरुमै (कम्बन की महिमा)

❀ नारणन् विळैयाट् टॅल्ला नारद मुनिवन् कूऱ
आरणक् कविदै शॅय्दा नऱिन्दवान् मीकि यॅन्बान्
शीरणि शोळ नाट्टुत् तिरुवळुन् दूरुळ् वाळ्वोन्
कारणि कॊडयान् कम्बन् ऱमिळिनाऱ् कविदै शॅय्दान् 17

नारणन् विळैयाट्टु अॅल्लाम् नारत मुनिवन् कूऱ अऱिन्त वान्मीकि अॅन्पान् आरण कवितै चॅय्तान् । चीर् अणि चोळ नाट्टु तिरु वळुन्तूरुळ् वाळ्वोन् कार् अणि कॊटैयान् कम्पन् तमिळिनाल् कवितै चॅय्तान् । १७

श्रीमन् नारायण की लीलायें सब नारद के वर्णित करते (उसे ग्रहण कर), जानकर वाल्मीकी नाम के ऋषि ने वेद सम पदों में काव्य रचा । श्री-संपन्न चोळ देश के तिरुअळुन्तूर के वासी, मेघ सम दानशील कम्बन ने तमिळ् में (उसका) काव्य रचा । १७

❀ अम्बिले शिलैयै नाट्टि यमरर्क् कन् ऱमुद मीन्द
तम्बिरा नॅन्नत् तानुन् दमिळिले तालै नाट्टिक्
कम्बना डुडैय वळ्ळल् कविच्चक्र वर्त्ति पार्मेल्
नम्बुपा मालै याले नरर्क्कुमिन् नमुद मीन्दान् 18

अम्पिले चिलैयै नाट्टि अमरर्क्कु अन्ऱु अमुतम् ईन्त तम्पिरान् अॅन्न, कम्प नाटु उटैय वळ्ळल् कवि चक्करवर्त्ति तानुम् तमिळिले तालै नाट्टि पार् मेल् नम्पु पा मालैयाले नरर्क्कुम् इन् अमुतम् ईन्तान् । १८

जल (सागर) में (मंदर) पर्वत गाड़कर (मथकर) देवों को जिन्होंने अमृत दिलाया उन विष्णुदेव के समान कम्ब देश के प्रभु कवि-चक्रवर्ती ने भी तमिळ् (सागर) में जिह्वा रूपी पर्वत खड़ा कर प्रिय पद्य-माला द्वारा इस पृथ्वी पर के नरों को (श्री रामकाव्य का) मधुर अमृत दिलाया । १८

आदवन् पुदल्वन् मुत्ति यऱिविनै यलिक्कु मैयन्
पोदव निराम कादै पुहन्ऱरुळ् पुनिदन् मण्मेल्
कोदवज् जऱ्ऱु मिल्लान् कॊण्डन्मा ऱन्नै यॊप्पान्
मादवन् कम्बन् शॅम्बॊन् मलरडि तॊळुदु वाळ्वाम् 19

आतवन् पुतल्वन्, मुत्ति अऱिवितै अळिक्कुम् ऐयन्, पोतवन् इराम कातै पुकन्ऱु अरुळ् पुनितन्, मण्मेल् कोतु अवम् चऱ्ऱुम् इल्लान्, कॊण्टल् माल् तन्नै ऒप्पान्, मातवन् कम्पन् चॅम्पॊन् मलर् अटि तॊळुतु वाळ्वाम् । १९

सूर्य वंशी, मुक्ति-(देनेवाले) ज्ञान को देनेवाले प्रभु, (सबके) हृदय-कमलवासी श्रीराम का चरित्र कहने की कृपा करनेवाला पवित्र पुरुष,

अपने पार्थिव जीवन में दोष हीन और अपकृति रहित, मेघ श्याम-समान, महान तपस्वी कंबन के सुन्दर और उज्ज्वल कमल-चरण की वन्दना करके जियें। १९

अम्बरा वणिशडै यरत्त यन्मुदल्, उम्बरान् मुनिवराल् योग रालुयर्
इम्बराड् पिणिक्करु मिराम वेळञ्जेर, कम्बराम् बुलवरैक् करुत्ति रुत्तुवाम् 20

अम्पु अरा अणि चटै अरन् अयन् मुतल् उम्पराल्, मुनिवराल्, योकराल्, उयर् इम्पराल्, पिणिक्करुम् इराम वेळम् चेर् कम्पराम् पुलवरै करुत्तु इरुत्तुवाम्। २०

गंगा जी और सर्प से अलंकृत जटाधारी, अज आदि देवों से, मुनियों से, योगियों द्वारा और उत्तम इहलोक वासियों से बंधन-अशक्य (जिनका ध्यान में धारण कठिन है वह) श्रीराम (रूपी) गज स्वयं जिसके पास जाता है उस (खंभे रूपी) कंब नाम के विद्वान का स्मरण धारण करेंगे। २०

शम्ब नाड नुमैशॅवि शारुरुपूङ्, कॉम्ब नाडन् कॉळुनत्ति रामप्पेर्
पम्ब नाडळैक् कुड्गदै पाच्चॅय्द, कम्ब नाडन् कळररलै यिऱ्कॉळ्वाम् 21

चम्पु अ नाळ् तन् उमै चॅवि चाऱ्ऱु, पू कॉम्पु अनाळ् तन् कॉळुनन् इराम पेर् पम्प नाळ् तळैक्कुम् कतै पा चॅय्त कम्प नाटन् कळल् तलैयिल् कॉळ्वाम्। २१

शंभु ने उस दिन अपनी उमा के कान में जो (नाम) कहा, और पुष्पलता सी देवी (सीता) के पति का श्रीराम जो नाम है उस नाम के व्यापने से नित नवीन रहनेवाले चरित्र को पद्यों में रचनेवाले कंब नाडन के चरण सिर पर धारण करेंगे। २१

इम्बरु मुम्बर् तामु मेत्तिय विराम कादै
तम्बमा मुत्ति शेर्दल् शत्तियम् शत्तियम्मे
अम्बरन् दन्निन् मेवु मादित्तन् पुदल्वन् ञानक्
कम्बन् शॅङ्गमल पादङ् गरुत्तुर विरुत्तु वामे 22

इम्परुम् उम्पर् तामुम् एत्तिय इरामकातै तम्पमा मुत्ति चेर्तल् चत्तियम् चत्तियम्मे। अम्परम् तन्निल् मेवुम् आतित्तन् पुतल्वन् ञानक् कम्पन् चॅम् कमल पातम् करूत्तु उर इरत्तुवाम्। ए। २२

इहलोकवासी और सुरलोकवासी इनका, स्तुत्य रामकथा का आधार ले, मुक्ति प्राप्त करना ध्रुव है, सत्य है। आकाश संचारी सूर्य के वंशस्थ श्रीराम का ज्ञान रखनेवाले कंबन के सुन्दर कमल-चरणों को चित्त में धारण करें। २२

वाळ्वार् तरुवॅण्णॅय् नल्लरच् चडैयप्पन् वाळ्त्तुप्परत्
ताळ्वा रुयरप् पुलवो रहविरु डानहलप्

पोळ्वार् कदिरि नुदित्तदॅय् वप्पुल मैक्कम्बनाट्
टाळ्वार् पदत्तैच्चिन् दिप्पवर्क् कियादु मरियदन्ऱे 23

वाळ्वु आर् तिरुवॅण्णॅय्नल्लूर चटॅयप्पन् वाळ्त्तु पॆऱ, ताळ्वार् उयर, पुलवोर् अक इरुळ् तान् अकल पोळ् वार् कतिरिन् उतित्त तॅय्व पुलमै कम्प नाट्टाळ्वार् पतत्तै चिन्तिप्पवर्क्कु यातुम् अरियतु अन्ऱे। २३

सुसंपन्न तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर् के वासी शडॅयप्पन् को कृतज्ञता भरा साधुवाद मिले; निम्नश्रेणी के लोग उन्नत हों; विद्वानों का मन का तम दूर हो; (यह साध्य करने) सर्वत्र बंधन कर फैलनेवाली किरणों के देव (सूर्य) के समान जनमे, दिव्य-विद्वत्ता प्राप्त कंब नाट्टाळ्वार् (कंब देश के साधू भक्त) के चरण-स्मरण करनेवालों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। २३

नूल् पाटिय कालम् (ग्रंथ रचनाकाल तथा स्थान)

❀ ऍण्णिय शहात्त मॅण्णूऱ् ऱेऴिन्मेऱ् चडॅयन् वाळ्वु
नण्णिय वॅण्णॅय् नल्लूर् तन्निले कम्ब नाडन्
पण्णिय विराम कादै पङ्गुनि यत्त नाळिऱ्
कण्णिय वरङ्गर् मुन्ने कवियरङ् गेऱ्ऱि नाने 24

कम्प नाटन्, चटॅयन् वाळ्वु नण्णिय वॅण्णॅय् नल्लूर् तन्निले, पण्णिय इरामकातै ऍण्णिय चकात्तम् ऍण्णूऱ्ऱु एऴिन् मेल् पङ्कुनि अत्त नाळिल् कण्णिय अरङ्कर् मुन्ने कवि अरङ्कु एऱ्ऱिनान्। २४

कंब नाडन ने, शडैयन का जीवन जहाँ चलता था उस (तिरु) वॅणूर्णय्नल्लूर में, स्वरचित रामगाथा की, (गणित) (काल-गणना के लिए) निर्मित शकाब्द आठ सौ सात में होनेवाले फालगुन के हस्त नक्षत्र के दिन आदरणीय श्री रंगनाथ के सामने कवि-सम्मेलन (में) 'सही' प्राप्त कर ली। २४

कवि वळम् (कवि की [प्रतिभा] संपन्नता)

कळ्ळन्द रायुन कळल्पणि यादवर कदिर्मणि मुडिमीदे
अळुन्द वाळिह डॉडुशिलै रागव वबिनव कविनादन्
विळुन्द आयिऱ दॅळुवदन् मुन्मरै वेदिय रुडन्नारायन्
दॅळुन्द आयिरु विळुवदन् मुन्कवि पाडिय दॅळुन्ऱे 25

कळुन्तराय् उन् कळल् पणियातवर् कतिर् मणि मुटि मीते अळुन्त वाळिकळ् तॊटु चिलै इराकव अपिनव कवि नातन् विळुन्त नायिऱु अतु ऍळुवतन् मुन् मऱै वेतियरुटन् आरायन्तु ऍळुन्त नायिऱु विळुवतन् मुन् कवि पाटिततु ऍळुन्ऱे। २५

जड़मति और श्रीराम के चरणों पर विनत न होनेवाले राक्षसों के उज्ज्वल रत्न-खचित किरीटधारी सिरों पर चुभाते हुए शरों को चलानेवाले

धनु के धारी श्रीराघव के नये काव्य के रचयिता, कविनाथ कम्बन के, अस्तंगत सूर्य के उदय के पहले (रात में) वेद-विप्रों के साथ रहते (ग्रंथों का) गुनन कर, उदित सूर्य के अस्त होने के पहले गाये गये पद, सात सौ हैं।२५

करैशॅरि काण्ड मेऴु[1] कदैहळा यिरत्तॅण् णूरु
परवुरु शमरम् बत्तुप् पडलनूऱ् ऱिरुवत् तॅट्टे
उरैशॅयुम् विरुत्तम् पन्नी रायिरत् तॊरुपत् ताऱु
वरमिहु कम्बन् शॊन्न वण्णमुन् दॊण्णूऱ् ऱाऱे 25a

करै शॅरि काण्टम् एऴु, कतैकळ् आयिरत्तु ऍण्णूरु, परवु उरु चमरम् पत्तु, पटलम् नूऱ्ऱु इरुपत्तु ऍट्टे; उरै चॅयुम् विरुत्तम् पन्नीरायिरत्तु ओरु पत्तु आऱु; वरम् मिकु कम्पन् चॊन्न वण्णमुम् तॊण्णूऱ्ऱु आऱु। २५ अ

सीमा निर्धारित काण्ड सात; गाथाएं एक हज़ार आठ सौ; विवरण सहित समर दस; पटल एक सौ अठाईस; काव्यवस्तु कहनेवाले वृत्त बारह हज़ार सोलह; (छंद) प्रकार छियानवे हैं। २५ अ

कावियप् पॅरुमै (काव्य-महिमा)

तरादलत्ति लुळ्ळ तमिऴ्क्कुऱ्ऱ मॅल्लाम्
अरावु मरमायिऱ् ऱन्ऱे - इरावणन्मेल्
अम्बुनाट् टाऴ्वा नडिपणियु मादित्तन्
कम्बनाट् टाऴ्वान् कवि 26

इरावणन् मेल् अम्पु नाट्टु आऴ्वान् अटि पणियुम् आतित्तन् कम्प नाट्टाऴ्वान् कवि, तरातलत्तिल् उळ्ळ तमिऴ् कुऱ्ऱम् ऍल्लाम् अरावुम् अरम् आयिऱ्ऱु अन्ऱु-ए। २६

रावण पर शर चलानेवाले दिवाकर (श्रीराम) के चरणों की वन्दना करनेवाले आदित्य-पुत्र कम्ब नाट्टाऴ्वान् का काव्य धरातल पर तमिऴ् भाषा की अशुद्धियों को रगड़ने (दूर करने) वाली रेती बना है। २६

---

1 इधर 'सात कांड' कहा गया है। पर उत्तर काण्ड का लेखक कम्बन नहीं था। ओट्टक्कूत्तर था—ऐसा कहा जाता है। ओट्टक्कूत्तर ने ईर्ष्यावश कम्बन से प्रयुक्त एक शब्द को गलत कह दिया [वह "तुमि" (बूंद) नामक शब्द है।] कम्बन ने कहा यह ग्वालिनों के यहां प्रचलित है। इसकी सत्यता जानने के लिए राजा और दोनों कवि ग्वालों की वीथी में गये। तब किसी घर में, जो एक ग्वालिन दही मथ रही थी, उसने अपने बच्चों को यह कहकर हटाया कि 'तुमि' (बूंदें) पड़ेंगी। हटो। ओट्टक्कूत्तर को मानना पड़ा। पीछे मालूम हुआ कि वह ग्वालिन साक्षात् सरस्वती देवी हैं। तब उसे दुगुना दुख हुआ। अतः वे अपनी लिखी रामायण को अग्नि को अर्पित करने लगे। छ कांड जल गये। सातवें काण्ड को भी जलानेवाले ही थे कि कम्बन आ गये। उन्होंने ओट्टक्कूत्तर से बहुत मिन्नत कर उसे बचा लिया और वादा किया कि रामायण का उत्तरकाण्ड मैं नहीं लिखूंगा। आपका ही चलेगा।

❀ इम्बर् नाट्टिऱ् चॆल्वमॆला मॆय्दि यरशाण् डिरुन्दालुम्
उम्बर् नाट्टिऱ् कऱ्पहक्का वोङ्गु नीऴ लिरुन्दालुम्
शॆम्बॊन् मेरु वनैय पुयत् तिऱल्शे रिरामन् ऱिरुक्कदै
कम्ब नाडन् कविदयिऱ्पोऱ् कऱ्ऱोर्क् किदयङ् गळियादे 27

इम्पर् नाट्टिल् चॆल्वम् ऍल्लाम् ऍय्ति अरचु आण्टु इरुन्तालुम्, उम्पर् नाट्टिल् कऱ्पक का ओङ्कुम् नीऴल् इरुन्तालुम्, चॆम्पॊन् मेरु अनैय पुय तिऱल् चेर् इरामन् तिरु कतैयिल् कम्प नाटन् कवितैयिऱ् पोल् कऱ्ऱोर्क्कु इतयम् कळियाते। २७

इह लोक में सारे धन प्राप्त कर राज करते रहें, चाहे स्वर्ग-भूमि पर उन्नत कल्पक तरु की छाया में रहें, तो भी लाल स्वर्णमय मेरु सम कंधों के, शक्तिशाली श्रीराम की गाथा संबंधी कंबनाडन की कविता में जैसा (मुदित होता है) विद्वानों का हृदय (वैसा) उल्लसित नहीं होता। २७

नारदन् करुप्पञ् जाऱाय् नल्लवान् मीहन् पाहाय्च्
चीरणि बोदन् वट्टाय्च् चॆय्तनन् काळि दासन्
पारमु दरुन्दप् पञ्ज दारैयाय्च् चॆय्दान् कम्बन्
वारमा मिराम कादै वळमुऱ् तिरुत्ति नाने 28

इराम कातै, पार् अमुतु अरुन्त नारतन् करुप्पम् चाऱाय्; नल्ल वान्मीकन् पाकाय्, चीर् अणि पोतन् वट्टाय्, काळिताचन् पञ्च तारैयाय् चॆय्तान्। कम्पन् वारम् आम् वळ मुऱ् तिरुत्तितान्। २८

श्रीरामचरित का, संसार अमृत की तरह पान करे, इस हेतु नारद ने इक्षुरस; साधु वाल्मीकी ने चाशनी; श्रेष्ठतायुक्त बोधायन ने खोआ, कालिदास ने गुड़ बनाया। कंबन ने क्षीरान्न, योग्य रीति से अति मधुर बनाया। २८

इराम नामत्तिन् पॆरुमै (श्रीराम नाम महिमा)

नन्मयुञ् जॆल्वमु नाळु नल्हुमे, तिन्मयुम् बावमुञ् जिदैन्दु तेयुमे
शॆन्ममु मरणमु मिन्ऱित् तीरुमे, इम्मये यिरामवॆन् ऱिरण्डॆ ळुत्तिनाल् 29

इ 'रा म' ऍन्ऱ इरण्टु ऍऴुत्तिनाल् इम्मैये नन्मैयुम् चॆल्वमुम् नाळुम् नल्कुम् तिन्मैयुम् पावमुम् चितैन्तु तेयुम्; चॆन्ममुम् मरणमुम् इन्ऱि तीरुम्। २९

रा और म दो अक्षरों (के जाप) से, इस जन्म में ही हित और धन दिनोंदिन बढ़ेंगे। अहित और पाप क्षीण हो मिट जायेंगे। जन्म और मरण का अभाव हो जायगा। २९

ओरायिर मकम्पुरि पयनै युय्क्कुमे, नरादिबर् शॆल्वमुम् बुहऴु नल्हुमे
विरायॆणुम् बवङ्गळै वेर ऱुक्कुमे, इरामवॆन् ऱॊरुमॊऴि यियम्बुङ् गालैये 30

इराम ऍन्ऱ ऒरु मॊऴि इयम्पुम् कालैये ओरायिरम् मकम् पुरि पयनै उय्क्कुम्। नरातिपर् चॆल्वमुम् पुकऴुम् नल्कुम्। विरायॆणुम् पवङ्कळै वेर् अऱुक्कुम्। ए। ३०

(राम) का एक शब्द कहते ही, सहस्र यज्ञ करने का फल मिल जायगा। नराधिपों का धन (बढ़ेगा) और कीर्ति बढ़ेगी। संख्या में बढ़नेवाले जन्मों (या पापों) की जड़ कट जायगी। ३०

इऱुव रम्बि लिरामवॆऩ् ऱारुम्बर्, निऱुव रॆऩ्बदु निच्चय मादलाल्
मऱुविऩ् माक्कदै केट्पवर् वैहुन्दम्, बॆऱुव रॆऩ्बदु पेशवुम् वेण्डुमो 31

इऱु वरम्पिल् इराम ऎऩ्ऱोर् उम्पर् निऱुवर् ऎऩ्पतु निच्चयम् आतलाल् मऱु इल् मा कतै केट्पवर् वैकुन्तम् पॆऱुवर् ऐऩ्पतु पेचवुम् वेण्टुमो ? ३१

अंतकाल में 'राम' कहनेवाले स्वर्ग में स्थायी रहेंगे—यह कहना ध्रुव (सत्य) है। अतः निर्दोष यह महान चरित्र सुननेवाले श्री बैकुंठ (परमपद) को प्राप्त होंगे—यह कहना भी चाहिए क्या ? ३१

इराम कादैयिऩ् पॆरुमैयुम् पयऩुम् (रामकथा की महिमा और फल)

वडहलै तॆऩ्गलै वडुहु कऩ्ऩडम्, इडमुळ पाडैया दॊऩ्ऱि ऩायिऩुम्
तिडमुळ रगुकुलत् तिरामऩ् ऱऩ्कदै, अडैवुडऩ् केट्पव रमर रावरे 32

वटकलै तॆऩ्कलै वटुकु कऩ्ऩटम्, इटम् उळ पाटै यातु ऒऩ्ऱिऩ् आयिऩुम् तिटम् उळ रकु कुलत्तु इरामऩ् तऩ् कतै अटै वुटऩ् केट्पवर् अमरर् आवर्। ए। ३२

उत्तरी भाषा (संस्कृत) दाक्षिणात्य भाषा (तमिळ), तेलुगु, कन्नड या किसी भी सशक्त भाषा में (रचित) स्थिर-कीर्ति, रघुकुलोत्पन्न श्रीराम की कथा को यथाक्रम श्रवण करनेवाले अमर बनेंगे। ३२

इत्त लत्ति लिरामाव तारमे, पत्ति शॆय्दु परिवुडऩ् केट्परेल्
पुत्ति रर्त्तरुम् पुण्णिय मुन्दरुम्, अत्त लत्ति लवऩ्पद मॆय्दुमे 33

इरामावतारमे पत्ति चॆय्तु परिवु उटऩ् केट्परेल् इत्तलत्तिल् पुत्तिरर् तरुम्, पुण्णियमुम् तरुम्; अत्तलत्तिल् अवऩ् पतम् ऎय्तुम्। ३३

श्री रामावतार चरित्र का भक्ति करके और चाहना के साथ श्रवण करेंगे तो वह इह लोक में पुत्र दिलायेगा। पुण्य भी दिलायेगा। उस (पर) लोक में उनके (श्रीराम के) चरण (या स्थान को) दिलायेगा। ३३

अऩ्ऩ दाऩ महिलऩर् ऱाऩङ्गळ्, कऩ्ऩि दाऩङ् गबिलयिऩ् ऱाऩमे
शॊऩ्ऩ दाऩप् पलऩॆऩच् चॊल्लुवार्, मऩ्ऩि राम कदैमऱ वार्क्करो 34

मऩ् इरामऩ् कतै मऱवार्क्कु अऩ्ऩ ताऩम्, नल् अकिल ताऩङ्कळ्, कऩ्ऩि ताऩम्, कपिलैयिऩ् ताऩम् चॊऩ्ऩ ताऩम् पलऩ् ऎऩ चॊल्लुवार्। ३४

(श्रेष्ठ) नायक श्रीराम चरित्र जो नहीं भूलते उन्हें, अन्नदान, अच्छा भूदान, कन्यादान, गोदान, स्वर्णदान सबका फल (प्राप्त होगा—यह लोग) कहते हैं। ३४

मर्रोरु तवमुम् वेण्डा मणिमदि लिलङ्गै मूदूर्
शॅर्रवन् विशयप् पाडल् तॅलिन्ददि लॉन्रु तन्नैक्
कर्रवर् केट्पोर् नॅञ्जिर् करुदुवो रिवर्हळ् पार्मेल्
उर्रर शाळ्वर् पिन्नु मुम्बराय् वीटटिर् चेर्वार् 35

मणि मतिल् इलङ्कै मूतूर् चॅर्रवन् विचयप् पाटल् तॅळिन्तु अतिल् ऑन्रु तन्नै कर्रवर्, केट्पोर् नॅञ्चिर् करुतुवोर् इवर्कळ् पार् मेल् उर्रु अरचु आळ्वर्; पिन्नुम् उम्पराय् वीट्टिर् चेर्वार्। मर्रु ऑरु तवमुम् वेण्टा। ३५

सुन्दर परकोटों वाली लंका के प्राचीन नगर को मिटाने वाले (श्रीराम) की विजय-गाथा को खूब समझकर, उसके पदों में एक को ही सही सीखनेवाले, सुननेवाले और चित्त में धारण करनेवाले—ये भूमि पर (राज) पाकर राज करेंगे; फिर स्वर्गगत हो मोक्ष पा लेंगे। (इसके लिये) और कोई तपस्या नहीं चाहिए। ३५

वॅन्रिशे रिलङ्गै यानै वॅन्रमाल् वीर मोद
निन्ररा माय णत्ति निहळ्न्दिडु कदेह डम्मिल्
ऑन्रिनैप पडित्तोर् तामु मुरेत्तिडक् केट्टोर् तामुम्
नन्रिदु वॅन्रोर् तामु नरहम दॅय्दि डारे 36

वॅन्रि चेर् इलङ्कै यान वॅन्र माल् वीरम् ओत निन्र रामायणत्तिल् निकळ्न्तिटु कतैकळ् तम्मिल् ऑन्रिनै पटित्तोर् तामुम्, उरेत्तिट केट्टोर् तामुम्, नन्रु इतु ऑन्रोर् तामुम् नरकम् अतु ऍय्तिटार् ए। ३६

विजयी लंकेश्वर को जीतनेवाले श्रीराम की वीरता के बखानने से जीवंत (हुई) रामायण में वर्तमान कथाओं में एक को पढ़नेवाले, सुनाते वक्त सुननेवाले, (और) 'यह अच्छा है।' यह कहनेवाले नरक (नामक स्थान) नहीं जायँगे। ३६

आदियरि योनम नरायणर् तिरुक्कदै यरिन्दनुदि नम्ब रवुवोर्
नीदियनु बोहनॅरि निन्रुनॅडु नाळदि निरन्दुशॅह दण्ड मुळ्ळुदुक्
कादिबर्ह ळायरशु शॅय्दुळ निनैत्तदु किडैत्तरुळ् पोरुत्तु मुडिविल्
शोदिवडि वायळिविल् मुत्तिपॅरु वारॅन उरैत्तशुरु दित्तो हैहळे 37

आति अरि ओ नम नारायणर् तिरु कतै अरिन्तु अनुतिनम् परवुवोर्, नॅटुनाळ् नीति अनुपोक नॅरि निन्रु अतिन् इरन्तु चकतण्टम् मुळुतुक्कु अतिपर्कळाय् अरचु चॅय्तु उळ निनैत्ततु किटैत्तु, अरुळ् पोरुत्तु, मुटिविल् चोति वटिवाय् अळिविल् मुक्ति पॅरुवार् ऍन चुरुतित् तोकैकळ् उरैत्त। ए। ३७

आरंभ में 'अरि (ओं) नमो' के साथ वन्द्य श्रीमन् नारायण की दिव्य कथा को जानकर दिने दिने गाने वाले, अनेक काल धर्म सम्मत भोग-मार्ग में रहने के बाद उससे छूटकर, जगदण्ड भर के शासक बनकर

राज्य करते; अपनी कामनायें प्राप्त करते; भगवान की कृपा का पात्र बनते और अन्त में अपार-ज्योति के रूप में अक्षर मोक्ष को पा जाते हैं। यह श्रुति-समूह घोषित करते हैं। ३७

इरागवन् कदैयि लॊरुकवि तन्नि लेहपा दत्तिनै युरैप्पोर्
परावरु मलरो नुलहिनि लवनुम् बन्मुरै वळुत्तवोर् रिरुन्दु
पुरादन मरैयु मण्डर् पॊर् पदमुम् पॊन्रुना ळदनिनुम् बॊन्रा
अरावणै यमल नुलहॆनुम् बरम पदत्तिनै यडैहुव रन्रे 38

इराकवन् कतैयिल् ऒरु कवि तन्निल् एक पातत्तिनै उरैप्पोर् परावु अरुम् मलरोन् उलकिनिल् अवनुम् पन्मुरै वळुत्त वीर्रू इरुन्तु, पुराततम् अरैयुम् अण्टर् पॊन् पतमुम् पॊन्रु नाळ् अतनिनुम् पॊन्रा अरा अणै अमलन् उलकु ऎनुम् परम पतत्तिनै अटैकुवर् अन्रु ए। ३८

श्रीराघव के चरित्र में एक पद्य के एक चरण को कहने वाले भी प्रशंसनीय ब्रह्मा के लोक में, उनके भी विविध रीति से स्तुति करते, (स्तुति के पात्र हो) कीर्ति के साथ रहने के बाद, प्राचीन कहलाने वाले देवों के सुन्दर लोकों के नाश होते समय भी (जो) नाश नहीं होता (और) शेषशायी विमल देव का लोक (जो) कहा जाता है उस परमपद में पहुँचेंगे। ३८

इनैयनर् कादै मुरुऱ् मॆळुदिनोर् वियन्दोर् कट्रोर्
अनैयदु तन्नैच् चॊल्वोर्क् करुम्बॊरुळ् कॊडुत्तुक् केट्पोर्
कनैहडर् पुडवि मीदु कावलर्क् करशाय् वाळ्न्दु
विनैयम दरुत्तु मेलाम् विण्णवर् पदत्तिर् चेर्वार् 39

इतैय नर्कातै मुरुम् ऎळुतिनोर्, वियन्तोर्, कट्रोर्, अतैयतु तन्नैच् चॊल्वोर्क्कु अरुम् पॊरुळ् कॊटुत्तु केट्टोर्, कतै कटल् पुटवि मोतु कावलर्क्कु अरचाय् वाळ्न्तु वितैयम् अतु अऱुत्तु मेलाम् विण्णवन् पतत्तिल् चेर्वार्। ३९

इतना हितकारी चरित्र, सारा, लिखनेवाले, (उसके) प्रशंसक, उसके कहनेवालों को श्रेष्ठ धन देकर सुननेवाले—ये सब घोषपूर्ण समुद्र-वलयित पृथ्वी पर राजाधिराज बनकर रहेंगे; बाद कर्म-बंधन काटकर उच्चदेव (श्री विष्णु) का (परम) पद प्राप्त करेंगे। ३९

नोट—चालीस पद्यों का यह अंश तमिळ् में **'शिऱप्पुप् पायिरम्'** कहा जाता है पायिरम का अर्थ भूमिका है और **'शिऱप्पु'** का विशेष। तब विशेष भूमिका या प्रस्तावना या प्राक्कथन हुआ। यह प्रस्तावना दो प्रकार की होती है—एक रचयिता जो स्वयं कहता है वह और योग्य विद्वान रचना, रचयिता आदि के संबंध में जो विवरण के साथ परिचय देकर रचना की खूबी बतलाते हैं—वह। इस भाग में इतर योग्य विद्वानों का वक्तव्य दिया गया है। दो एक कम्बन के से लगने वाले हैं।

इन पद्यों के क्रम बनाने में पृथक-पृथक संग्रहकर्ता अपनी अपनी रुचि का सहारा लेते हैं।

तऱ्चिऱप्पुप् पायिरम् (स्व-परिचयामुख)

परम्बॊरुळ् वणक्कम् (पर-तत्व की वन्दना)

❀ उलहम् यावयुन् दामुल वाक्कलुम्, निलॆपॆ ऱुत्तलु नीक्कलु नींगला
अलहि लाविळै यावट्टुडै यारवर्, तलैव रन्नवर्क् केशर णाङ्गळे[1] 1

उलकम् यावैयुम् तामुळ आक्कलुम् निलै पॆऱुत्तलुम् नीक्कलुम् नींकला, अलकु इला विळैयाट्टु उटैयार् अवर् तलैवर् अन्नवर्क्कु ए नाङ्कळ् चरण् ए। १

लोक समुच्चय को स्वयं उत्पन्न करना और स्थिति दिलाना और मिटाना—इस अविच्छिन्न (व) अनंत लीला के स्वामी (जो हैं) वे आदि देव हैं। उन्हीं की हम शरण हैं। १

शिऱ्कु णत्तर् तॆरिवरु नन्निलै, ऎऱ्कु णर्त्तरि दॊण्णिय मून्ऱनुळ्
मुऱ्कु णत्तव रेमुद लोरवर्, नऱ्कु णक्कड लाडुद नन्ऱरो २

ऒण्णिय मून्ऱन् उळ् मुन् कुणत्तवरे मुतलोर्; चिऱ् कुणत्तर् तॆरि अरु नल् निलै ऎऱ्कु उणर्त्तरितु। अवर् नल् कुणम् कटल् आटुतल् नन्ऱु (अरो)। २

गिने हुए तीन (सत्व, रज, तम) में प्रथम गुण के हैं वह आदिदेव। श्रेष्ठ ज्ञानी के लिए भी जानने में अशक्य (उनकी) उत्कृष्ट महिमा, मेरे लिए समझना कठिन है। उनके कल्याण-गुणों के अर्णव में अवगाहन शुभ है। २

आदि यन्द मरियॆन यावयुम्, ओदि नारल हिल्लन वुळ्ळन
वेद मॆन्बन मॆय्न्नॆऱि नोन्मयन्, पाद मल्लदु पऱ्ऱिलर् पऱ्ऱिलार् 3

आति अन्तम् अरि ऎन, अलकु इल्लन, उळ्ळन वेतम् ऎन्पन यावैयुम्, ओतिनार्, पऱ्ऱु इलार्, मॆय् नॆऱि नोन्मैयन् पातम् अल्लतु पऱ्ऱिलर्। ३

आदि और अंत में "हरि (ओं)' का उच्चारण कर अनंत तथा अमर वेदाख्यात सभी के पाठकर चुकनेवाले संग-रहित (विप्र) सन्मार्गव्रती (श्रीराम) के चरणों को छोड़ (और किसी में) मन नहीं लगाते। ३

अवैयडक्कम् (नम्रता निवेदन)

❀ ओशै पॆऱ्ऱुयर् पार्कड लुऱ्ऱॊरु, पूशै मुऱ्ऱवु नक्कुवु पुक्कॆन
आशै पऱ्ऱि यऱैयलुऱ् ऱेन्मऱ्ऱिक्, काशिल् कॊऱ्ऱत् तिरामन् कदैयरो 4

1 चरणंगळे ही ठीक हो सकता है—व्याकरण सम्मत विचार से—यह एक धारणा है।

ओशै पॅरुरु उयर् पाल् कटल् उऱ्रु, ऑरु पूशै, मुऱ्ऱवुम् नक्कुपु पुक्कु ॲन्न काशु इल् कोऱ्ऱतुतु इरामन् इ कतै, आशै पऱ्ऱि अरैयल् उऱ्रेन् मऱ्ऱु[1] अरो[2] । ४

शोर कर उठनेवाले (उठनेवाली तरंगों के) क्षीर सागर (पर) पहुँच, एक बिल्ली सारा (पय) चाट लेने को उद्यत हो जैसे, कलंकहीन विजयी श्रीराम की कथा कामना प्रेरित हो (मैं) कहने लगा । ४

नॊय्दि नॊय्यशॊ नूऱ्कलुऱ् रेन्नै, वॆद ववित् मरामर मेळ्तॊळ
ॲय्द वॆय्दवर्क् कॆय्दिय माक्कदै, शॆय्द शॆय्तवन् शॊन्निन्ऱ् तेयत्ते 5

वॆत वॆवित् मरा मरम् एळु तॊळै ॲय्त ॲय्तवर्क्कु ॲय्तिय माक्कतै चॆय्त चॆय्तवन् चॊल् निन्ऱ तेयतुतु, नॊय्तिन् नॊय्य चॊल् नूऱ्कल् उऱ्रेन्, ॲन्नै ? ५

दी गयी गाली[3] में ही, साल वृक्ष सातों को बेधते हुए शर चलाने वाले (श्रीराम जी) पर (जो) आगत (लागू) हुई (वह) कथा रचनेवाले तपस्वी (वाल्मीकि महर्षि) की वाणी जिस देश में स्थापित रहती है उस देश में अल्प से अल्प शब्द ले (मैं) ग्रंथ रचने चला—यह क्या (जड़ता) है ? ५

❀ वैय मॆन्नै यिहऴवु माशॆनक्, कॆय्द वुम्मि दियम्बुव दियादॆनिल्
पॊय्यिल् केळ्विप् पुलैमैयि नोन्पुहल्, दॆय्व माक्कदै माट्चि तॆरिक्कवे 6

वैयम् ॲन्नै इकळवुम् माचु ॲनक्कु ॲय्तवुम् इतु इयम्पुवतु यातु ॲन्निल् पॊय् इल् केळ्वि पुलैमैयितोन् पुकल् तेय्व माक्कतै माट्चि तॆरिक्क ए । ६

दुनिया मेरी निन्दा करेगी; और कलंक मुझ पर लगेगा । (तिसपर भी) यह कहता क्यों ? क्योंकि—शाश्वत श्रुति (वेद) के ज्ञानी (वाल्मीकि महर्षि द्वारा) रचित दिव्य महान चरित्र की महिमा का प्रचार हो । ६

❀ तुरैय डुत्त विरुत्तत् तॊहैक्कविक्, कुरैय डुत्त शॆविहळुक् कोदिल्याऴ्
नरैय डुत्त वशुणनन् माच्चॆविप्, परैय डुत्तदु पोलुमॆन् पावरो 7

ओतिल् तुरै अटुत्त विरुत्तम् तॊकै कविक्कु उरै अटुत्त चॆविकळुक्कु ॲत् पा याऴ्[4] नरै अटुत्त अचुणम्[5] नल् मा[6] चॆवि, परै अटुत्ततु पोलुम् (अरो) । ७

1,2 छंद की पूरक ध्वनियां । उनके विशेष अर्थ नहीं होते । उन्हें 'अशै' कहते हैं ।

3 बहुश्रुत विषय है : वाल्मीकी महर्षि ने क्रौंच मिथुन में एक को मारनेवाले निषाद से खीझकर एक श्लोक बनाया जिसका आशय श्रीराम की कथा का आधार बना ।
4 **याऴ्**—वीणा सा पुराना वाद्य विशेष । 5 अ**चुणम्**—कल्पित पशु या पक्षी जो याऴ् की ध्वनि सुन आह्लादित होता है और ढोल का शोर सुनकर मूर्च्छित हो गिर (मर भी) जाता कहा जाता है; 6 "मा" का अर्थ जानवर है । उस अर्थ में **अचुणम् नल मा चॆवि**—अचुणम् के अच्छे जानवर के कान; अचुणम् का अर्थ पक्षी हो तो अच्छा श्रेष्ठ कान होगा । तब, "मा" श्रेष्ठ या बड़ा है ।

अरे! (सच) कहा जाय तो, विविध अंगों सहित वृत्तों से भरे काव्य के आश्रय जो कान हैं उन कर्णों को, मेरी कविताएं याऴ् (की ध्वनिरूपी) मधु पड़े अशुण के अच्छे श्रेष्ठ कानों में परै (ढोल) के (नाद के) लगने के समान लगेंगी। ७

❁ **मुत्त मिऴ्त्तुऱै यिऩ्मुऱै पोहिय, उत्त मक्कवि ञर्क्कॊऩ् ऱुणर्त्तुवॆऩ्**
पित्तर् शॊऩ्ऩवुम् पेदैयर् शॊऩ्ऩवुम्, पत्तर् शॊऩ्ऩवुम् पऩ्ऩप् पॆऱुबवो 8

मुत् तमिऴ् तुऱैयिल् मुऱै पोकिय उत्तमम् कविञर्क्कु ऑन्ऱु उणर्त्तुवॆन्।
पित्तर् चॊऩ्ऩवुम् पेतैयर् चॊऩ्ऩवुम् पत्तर् चॊऩ्ऩवुम् पऩ्ऩप् पॆरुपवो ? ८

(गद्य, संगीत, नाटक की) त्रयी तमिष के अंगों में क्रमेण निपुणता प्राप्त उत्तम कवियों से एक बात निवेदन करूँगा। पागलों का कहा, अज्ञों का कहा और भक्तों का कहा (क्या) आलोच्य है ? ८

❁ **अऱैयु माडरङ् गुम्बडप् पिळ्ळैहळ्, तऱैयिऱ् कीऱिडिऩ् ऱच्चरुङ् गाय्वरो**
इऱैयुङ् गेऴ्वि यिलादवॆऩ् पुऩ्गवि, मुऱैयि ऩूलुणर्न् दारु मुऩिवरो ? 9

अऱैयुम् आटु अरङ्कुम् पट पिळ्ळैकळ् तऱैयिल् कीऱिटिल् तच्चरुम् काय्वरो ?
इऱैयुम् केळ्वि इलात ऎन् पुन् कवि मुऱैयिन् नूल् उणर्न् तारुम् मुनिवरो। ९

कमरे और रंगमंच दिखाते हुए बालक ज़मीन पर (लकीरें) खींचते हैं तो शिल्पी दुतकारेंगे ? कुछ भी (सुना) ज्ञान न रखनेवाले मेरी तुच्छ कविता पर (उचित) क्रम से ग्रंथ पढ़े लोग गुस्सा करेंगे ? (नहीं)। ९

नूल्वऴि (ग्रंथ-मूल)

देव पाडैयि ऩिक्कदै शय्दवर्, मूव राऩवर् तम्मुळ्ळु मुन्दिय
नावि ऩाऱै यिऩ्बडि नाऩ्ऱमिऴ्प्, पावि ऩालि दुणर्त्तिय पण्बरो 10

इ कतै तेव पाटैयिल् चॆय्तवर् मूवर्; आनवर् तम्मुळुम् मुन्तिय नावितार्
उऱैयिन् पटि नान् तमिऴ् पावितल् इतु उणर्त्तिय पण्पु अरो। १०

इस कथा के देवभाषा (संस्कृत) में रचयिता (वाल्मीकि, वशिष्ठ और बोधायन) तीन हैं उनमें आदि (वाल्मीकि) कवि के कथन का अनुसरण मेरा तमिऴ छंदों में समझाने का क्रम है। १०

नूल् शॆय्द इडम् (ग्रंथ रचना स्थल)

नडैयि ऩिऩ्ऱुयर् नायकऩ् ऱोऱ्ऱत्तिऩ्, इडैनि हऴ्न्द विरामाव तारप्पेरत्
तॊडैनि रम्बिय तोमऱु माक्कदै, शडैयन् वॆण्णॆय्नल् लूर्वयिऱ् ऱन्ददे 11

नायकन् तोऱ्ऱत्तिन् इटै निकऴ्न्त, नटैयिल् निन्ऱु उयर् इरामावतारम् पेर्
तॊडै निरम्पिय तोम् अऱु मा कतै चटैयन्[1] वॆण्णॆय् नल्लूर वयिन् तन्ततु ए। ११

---

1 **चटैयन् या** शडैयप्प वळ्ळल् (वळ्ळल = दाता) **तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर** के रहने-वाले थे। उन्होंने अनाथ बालक कम्बन को पाला था। कम्बन ने अपनी कृतज्ञता ग्रंथ में ही उनके नाम का उल्लेख कर जतायी है।

नाथ (श्री विष्णु) के अवतारों के मध्य हुए, सदाचारनिष्ट हो उन्नति को प्राप्त श्रीराम के अवतार की उत्कृष्ट पदावली भरी, दोषहीन महान कथा (श्रीमान्) शडैयप्पन् के तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर (ग्राम) में दी (रची) गयी। ११

नूऱ् पयन् (ग्रंथ फल)

नाडिय पॉरुळ्कै कूडुम् ञानमुम् बुहळुम् उण्डाम्
वीडियल् वऴिय दाक्कुम् वेरियङ् गमलै नोक्कुम्
नीडिय वरक्कर् शेनै नीऱुपट् टॊऴिय वाहै
शूडिय शिलैयि रामन् ऱोळ्वलि कूऱु वोर्क्के 12

नीटिय अरक्कर् चेनै नीऱु पट्टु ऑऴिय वाकै[1] चूटिय चिलै इरामन् तोळ् वलि कूऱुवार्क्के नाटिय पॉरुळ् कै कूटुम्; ञानमुम् पुकऴुम् उण्टाम्; अतु वीटु इयल् वऴि आक्कुम्। वेरि अम् कमलै नोक्कुम्। १२

विशाल राक्षस-सेना को राख बनाते हुए, नाशकर जयमाला पहने कोदण्ड-पाणि श्रीराम के भुजबल की स्तुति करनेवाले को ईप्सित वस्तुएँ प्राप्त हो जायँगी। ज्ञान और कीर्ति मिलेगी। वह (स्तुति) मोक्ष के रास्ते पर पहुँचायगी। (स्तोता पर) मधुमय सुन्दर कमल की देवी (कमला = लक्ष्मी) कृपादृष्टि फेरेंगी। १२

1 वाहै (वाकै)—एक पेड़ है; उसके फूल विजय के चिह्न के रूप में विजेताओं द्वारा पहने जाते हैं।

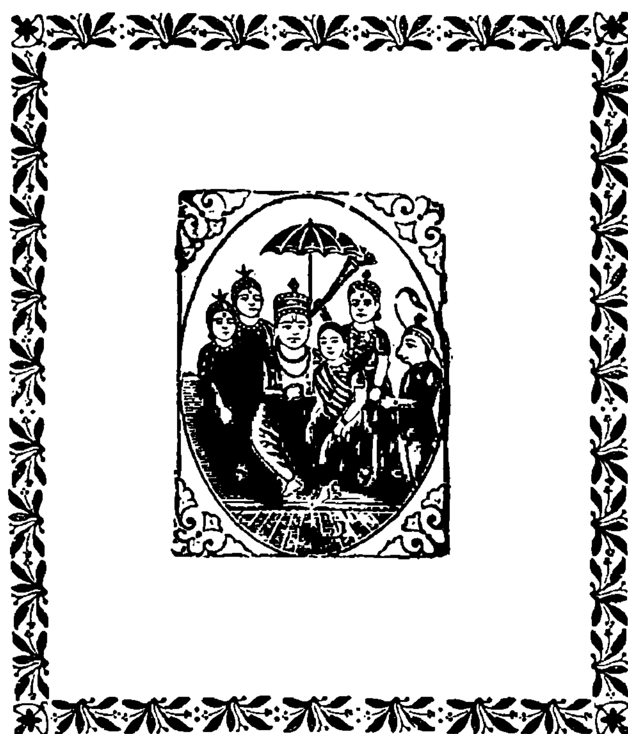

❀ श्री राम जयम् ❀

बाल काण्डम्

1. आऱ्ऱुप् पडलम् (नदी पटल)

आश लम्बुरि यैम्बॉऱि वाळियुम्, काश लम्बु मुलैयवर् कण्णॅनुम्
पूश लम्बु नॅऱियिन् पुऱञ्जॅलाक्, कोश लम्बुनै याऱ्ऱणि कूऱुवाम् 13

आचु अलम् पुरि—अपराध अधिक करनेवाले; ऐन्तु पॉऱि वाळियुम्—पाँच इंद्रियाँ रूपी शर, (और); काचु अलम्पु मुलैयवर्—स्वर्णहार (हमेल) (जिन पर) लहराते हैं (उन) स्तनों वालियों (के); कण् ॲनुम् पूचल् अम्पुम्—आँखें रूपी चोट करनेवाले अस्त्र; नॅऱियिन् पुऱम् चॅल्ला—(जहाँ) (सन्-) मार्ग से हटकर नहीं चलते (या चल नहीं सकते); कोचलम् पुनै आऱु अणि—कोशल (देश) को अलंकृत करनेवाली नदी की महिमा (यें); कूऱुवाम्—कहेंगे (हम)। १३

हम (कवि) अब सरयू नदी की महिमा बखानेंगे। सरयू कोशल देश को, जो स्वयं महान है, अलंकृत करती है। वहाँ न पुरुषों की पंचेंद्रिय कुमार्ग पर चलती हैं न स्त्रियों की आँखें; यद्यपि साधारण रूप से ये इंद्रियाँ भटकानेवाली होती हैं। १३

नीऱु णिन्द कडवु णिऱत्तवान्, आऱु णिन्दुशॅन् ऱार्कलि मेय्न्दहिल्
शेऱु णिन्द मुलैत्तिरु मङ्गैतन्, वीऱु णिन्दवन् मेनियिन् मीण्डवे 14

नीऱु अणिन्त—भभूत (जिन्होंने) धारण किया है; कटवुळ् निऱत्तु वान्—(उन) देव के रंग वाले मेघ; आऱु अणिन्तु चॅन्ऱु—(आकाश) मार्ग को अलंकृत करते हुये जाकर; आर् कलि मेय्न्तु—शब्द करनेवाले समुद्र (के जल) को पीकर; अकिल् चेऱु—अगरु का लेप; अणिन्त मुलै तिरु मङ्कै—धारण करनेवाले स्तनों की श्री-देवी (को); तन् वीऱु अणिन्तवन्—अपने वक्ष में धारण करनेवाले (के); मेनियिन्—शरीर के समान; मीण्टतु—लौट आये। १४

(पहले मेघों की चर्चा है।) जल-हीन मेघ जो सफ़ेद होते हैं वे समुद्र में जाकर जल पीते हैं, तब काले हो जाते हैं। पहले उनका रंग भस्मधारी शिव का सा था और बाद में श्री-निवास विष्णुदेव का सा हो गया। वे लौट आते हैं। १४

पम्बु मेहम् परन्ददु वानुवाल्, नम्बन् मादुलन् वॅम्मयै नण्णितान्
अम्बि नाऱुदु मॅन्ऱहन् कुन्ऱिन्मेल्, इम्बर् वारि यॅळुन्ददु पोन्ऱदे 15

पम्पु मेकम्–घने रूप से फैले मेघों का; परन्ततु–फैलना; नम्पन् मातुलन्–श्री शिवजी के ससुर; पातुवाल् वॅम्मैयै नण्णितान्–सूर्य से गर्मी को प्राप्त कर लिया; अम्पिन् आऱ्ऱुतुम् ॲन्ऱु–(अपने) जल से शांत करेंगे, यह सोचकर; इम्पर वारि–यहाँ का समुद्र; कुन्ऱिन् मेल् ॲऴुन्ततु पोन्ऱतु–पर्वत की तरफ चढ़ आया, ऐसा था। १५

वे मेघ उठकर आकाश में सर्वत्र फैलते हैं। तब ऐसा लगता है मानों यहाँ का समुद्र ही, इस विचार से कि श्रीशिव जी के ससुर हिमवान सूर्य से संतप्त हैं और हम उनको अपने जल से तापहीन कर दें, एकदम उठकर (हिम-) पर्वत की ओर उड़ता जाता है। १५

पुऴि मालवरै पॊन्नॆन नोक्किवान्, वॆळ्ळि वीऴिडै वीऴ्त्तॆनत् तारैहळ्
उळ्ळि युळ्ळवॆल् लामुवन् दीयुमव्, वळ्ळि योरिन् वऴङ्गिन मेहमे 16

मेकम्–मेघ; पुऴि–लक्ष्य; माल् वरै–श्रेष्ठ पर्वत; पॊन् ॲनल् नोक्कि–स्वर्ण-रूप है–यह देखकर; वान् वॆळ्ळि वीऴ्–श्रेष्ठ चांदी की तारें; इटै वीऴ्त्त ॲन–(उस के) मध्य लटकायीं, ऐसा; उळ्ळि–सोचकर; उळ्ळ ऐल्लाम्–पास रहे सब को; उवन्तु ईयुम्–प्रसन्न होकर देनेवाले; अव्वळ्ळियोरिन्–उन (ऐसे) दाताओं के समान्; तारैकळ्–धारें (बूँदों की तारें); वऴङ्गिन–बरसाये या बरसायीं। १६

मेघ बड़ी-बड़ी मोटी धारें गिराते हैं। वे धारें मानों चाँदी की तारें हैं जिनको मेघ स्वर्णमय हिमाचल पर लटकाकर उसे बाँधने का प्रयास करते हैं— शायद अपनी ओर खींचने के लिये। १६

मान नेऱ्न्दऱ नोक्कि मनुनॆऱि, पोन तण्कुडै वेन्दन् पुहऴॆन
ज्ञान मुन्निय नान्मऱै याळर्कैत्, तान मॆन्नत् तऴैत्तदु नीत्तमे 17

मानम् नेर्न्तु–मान (से) युक्त होकर; अऱम् नोक्कि–धर्म देखकर; मनु नॆऱि पोन–मनुनीति पर चला (चलने वाला); तण् कुडै वेन्तन्–शीतल छत्र (धारी) राजा (का); पुकऴ् ॲन–यश जैसा; नान्कु मऱै आळर् कै–चारों वेदों के अधिकारियों के हाथों में; तानम् ॲन्न–दान जैसा; नीत्तम् तऴैत्ततु–बाढ़ बढ़ी। १७

अब सरयू का प्रवाह देखिये। वह प्रतिष्ठित धर्मावलम्बी और मनु-नीति-शास्त्र-परख राजा (स्वयं दशरथ) के यश के समान फैलती है; और चतुर्वेदी ब्राह्मण को दान देने पर दाता को मिलनेवाले शुभफल के समान बढ़ती है। १७

तलैयु माहमुन् दाळुन् दऴीइयदिल्, निलैनि लादिऱै निन्ऱदु पोलवे
मलैयि नुळ्ळवॆ लाङ्गॊण्डु मण्डलाल्, विलैयिन् मादरै यॊत्तदव् वॆळ्ळमे 18

तलैयुम्–सिर को (और); आकमुम्–मध्य भाग (भागों) को; ताळुम्–पैरों (तलों) को; तऴीइ–लग कर; अतिल्–उसमें; निलै निलातु–स्थिर-रूप से न रुक कर; इऱै निन्ऱतु पोल–थोड़ा ठहरा, ऐसा (दिखाई देकर); मलैयिन् उळ्ळ ॲलाम्–पर्वत पर रहे सब को; कॊण्टु मण्टलाल्–लेकर सवेग जाने से; अ वॆळ्ळम्–वह बाढ़; विलैयिन् मातरै–बिकाऊ स्त्रियों (को) (वेश्यायों को); ऑत्ततु–की समानता की। १८

वह बाढ़ वारांगना सा बरताव करती है। वेश्या पुरुष के सिर का, शरीर का, आलिंगन करती है; पैरों तले भी लगती है। एक क्षण के लिए उसका प्रेम स्थिर-प्रेम सा दिखता है। पर वह चंचल है और धोखा देकर उसका सारा धन लूट लेती है। उस पुरुष जैसा ही हाल पर्वत का भी है। (वेश्या-सदृश) धारा पर्वत की सभी वस्तुएँ बहा ले जाती है। १८

मणियुम् पॊन्नुम् मयिर्रळैप् पीलियुम्, अणियु मानॆवॆण् कोडु महिलुन्दण्
इणैयि लारमु मिन्न कॊण् डेहलान्, वणिह माक्कळे यॊत्तदव् वारिये 19

मणियुम्–रत्नों को (और); पॊन्नुम्–स्वर्ण को; मयिल् तळै पीलियुम्–मोर के पंख-कलापों को; अणियुम् आनै वॆण् कोटुम्–सुन्दर, हाथियों के सफ़ेद दाँतों को; अकिलुम्–अगरु को; तण्–शीतल; इणै इल् आरमुम्–बेजोड़ चंदन (की लकड़ियों) को; इन्न–ऐसे और; कॊण्टु–लेकर; एकलान्–जाने से; अ वारि–वह प्रवाह; वणिक माक्कळ ऒत्ततु–वणिक लोगों से तुलता (मेल खाता) था। १९

वह प्रवाह रत्न, मयूर-पंख, हाथी दाँत, अगरु और चन्दन की लकड़ियाँ आदि बहुमूल्य वस्तुएँ बहा ले आता है। वह वणिकों के समान लगता है जो बहुत सामानों का क्रय-विक्रय करते हैं। १९

पूनि रैत्तुमॆन् ऱादु पॊरुन्दियुम्, तेन ळावियुञ् जॆम्बॊन् विरावियुम्
आनै मामद वाऱ्ऱॊ डळावियुम्, वान विल्लै निहर्त्तदव् वारिये 20

पू निरैत्तुम्–फूल, पंक्तियों में धारण करके; मॆन् तातु पॊरुन्तियुम्–कोमल पराग से मिलित; तेन् अळावियुम्–शहद से घुलकर और; चॆम् पॊन् विरावियुम्–लाल (चोखे) स्वर्ण से मिश्रित हो कर; आनै मा मत–हाथी के बहुत मद को; आऱ्ऱॊटु अळावियुम्–नदी से सम्मिलित होकर, और; अ वारि–वह बाढ़; वानविल्लै निकर्त्ततु–इंद्रधनुष की समानता करती थी। २०

उस प्रवाह में फूल तैरते हैं; पराग, शहद, चोखे स्वर्ण, गजों का मद-जल आदि मिले आते हैं। उनके विविध रंगों के कारण वह प्रवाह इन्द्र-धनुष के समान दिखाई देता है। २०

मलैयॆ डुत्तु मरङ्गळ् परित्तुमा, डिलैमु दऱ्पॊरुळ् यावैयु मेन्दलाल्
अलैह डऱ्ऱलै यन्ऱणै वेण्डिय, निलैयु डैक्कवि नीत्तमन् नीत्तमे 21

मलै ॲट्टुत्तु–पर्वत (खोद) लेकर; मरङ्कळ् परित्तु–पेड उखाड़ कर; माट्टु–पास के; इलै मुतल् पॊरुळ्–पत्ते आदि वस्तुएँ; यावैयुम्–सभी को; एन्तलाल्–उठाने से; अलै कटल तलै–लहरानेवाले समुद्र-तल (पर); अन्ऱु–उस दिन; अणै वेण्टिय–सेतु(-बन्धन) में लगे हुए; निलै उटै–स्थिति वाली; कवि नीत्तम् ए–वानर सेना ही। २१

वह प्रवाह चट्टानों को और तरुओं को उखाड़ लाता है; उस पर पत्ते वगैरह बहते आते हैं। उसको देखकर श्रीराम की वानर सेना की याद आती है जो समुद्र-तरण के लिये सेतु-बन्धन में लगी हुई थी। २१

ईक्कळ् वण्डॊडु मॊय्प्प वरम्बिहन्, दूक्क मेमिहुन् दुट्टॊळि विन्ऱियॆ
तेक्कॆ ऱिन्दु वरुदलिर् ऱीम्बुनल्, वाक्कु तेनुहर् माक्कळै मानुमे 22

तीम् पुनल्–मधुर जल (प्रवाह); ईक्कळ् वण्टॊटु मॊय्प्प–मक्खियों के भ्रमरों के साथ मंडराते; वरम्पु इकन्तु–सीमा लाँघ कर; ऊक्कमे मिकुन्तु–बल विक्रम में बढ़कर; तेक्कु–सागौन का पेड या डकार; ऍऱिन्तु–फेंकता हुआ (या फेंक कर); वरुतलिन्–आने से; वाक्कु–ढली हुई; तेन्–शहद या मधु; नुकर् माक्कळै मानुम्–पीने वाले लोगों की समता करता। २२

उस प्रवाह का जल मधुर है; अतः उस पर मक्खियाँ, भ्रमर आदि मँडराते हैं। प्रवाह की धारा प्रबल है; नयी बाढ़ है अतः जलमैला है (साफ़ नहीं है)। सागौन के पेड़ों को उछालता आता है। तब इसकी उपमा पियक्कड़ से हो जाती है। पियक्कड़ के मुख पर मक्खियाँ और भ्रमर मँडराते हैं; उसकी शक्ति बढ़ी हुई होती है। उसका अन्तःकरण (मन) साफ़ नहीं है। डकार लेता आता है। इसलिए दोनों में साम्य है। (डकार का अर्थ मद्यप के पक्ष में तेक्कु के अर्थ-श्लेष से सधता है।) २२

पणैमु हक्कळि यानैपन् माक्कळो, डणिव हुत्तॆन वीर्त्तिरैत् तार्त्तलिन्
मणियु डॆक्कॊडि तोन्ऱवन् दून्ऱलाल्, पुणरि मेऱ्पॊरप् पोवदुम् बोन्ऱदे 23

पणै मुकम्–पीन मुख का; कळि यानै–मत्त हाथी; पल माक्कळोटु–अनेक जानवरों को; अणि वकुत्तु–व्यूहों में बाँटकर मानों; ईर्त्तु–खींच लाकर; इरैत्तु आर्त्तलिन्–जोर से शोर मचाने से; मणि उटै–मणि (या सुन्दरता से) युक्त; कॊटि तोन्ऱ–ध्वजाओं (लताओं) के प्रकट होते; वन्तु ऊन्ऱलाल्–आकर डटने से, धकेलने से; पुणरि मेल्–समुद्र पर; पॊर–युद्ध करने के लिए; पोवतुम् पोन्ऱतु–जाता भी हो, ऐसा लगता है। २३

उस प्रवाह की सज-धज देखकर यह भाव मन में आता है कि वह समुद्र से लड़ने जानेवाली सेना हो। सेना में गज-दल हैं, अश्व-दल हैं। सेना चलती है तो बड़ा शोर होता है। उसमें सुन्दर ध्वजाएँ फहरती हैं। वह आकर शत्रु-दल के सामने डट जाती है। वैसे ही इस प्रवाह के साथ गज, और अन्य जानवर खिचकर आते हैं। शोर है, और लताएँ हैं जो ध्वजाओं का स्थान लेती हैं। (इस कॊडि शब्द में अर्थ-श्लेष है। कॊडि ध्वजा भी है, लता भी।) २३

***इरवि तन्कुलत् तॆण्णिल्पल् वेन्दर्लम्, बुरवु नल्लॊळुक् किन्पडि पूण्डदु**
सरयु वॆन्बदु तायमुलै यन्नदिव्, उरवु नीर्निलत् तोङ्गु मुयिर्क्केलाम् 24

चरयु ऍन्पतु–सरयू नाम की वह; इरवि तन् कुलत्तु–रवि-कुल के; ऍण्इल्–संख्या-हीन; पल् वेन्तर् तम्–अनेक राजाओं के; पुरवु–पालित; नल् ऒळुक्किन्–सदाचरण की; पटि पूण्टतु–अनुरूपता रखनेवाली है; अन्नतु–वह; इ उरवु नीर्

निलत्तु–इस समुद्र (वलयित) भूमि के; ओङ्कुम् उयिर्क्कु ॲलाम्–बढ़नेवाले जीव, सबों के लिए; ताय् मुलै अन्ततु–मातृ-स्तन के बराबर है। २४

सरयू का जल-तल विशाल है; उसकी धारा अविच्छिन्न है और पवित्र है। इन बातों में सरयू नदी रवि-कुल के राजाओं के सदाचरण की समता करती है। और वह जन-समाज के लिए मातृ-स्तन के समान जीवन-दायिनी और जीव-वर्धक है। २४

कौंडिच्चिय रिडित्त शुण्णङ् गुङ्गुमङ् गोट्ट मेलम्
नडुक्कुरु शान्दञ् जिन्दू रत्तॊडु नरन्द नाहम्
कडुक्कयार् वेङ्गै कोङ्गु पच्चिलै कण्डिल् वॅण्णॅय्
अडुक्कलि नडुत्त तोन्दे नहिलॊडु नारु मन्रे 25

कौटिच्चियर्–पर्वत प्रदेश की स्त्रियों का; इटित्त–कूटा; चुण्णम्–चूर्ण; कुङ्कुमम्–केसर; कोट्टम्–एक सुगन्धित द्रव्य; एलम्–इलायची; नटुक्कु उरु चान्तम्–कंपन देनेवाला चंदन; चिन्तूरत्तॊटु–सिंदूर के साथ; नरन्तम्–नरन्द (नामक घास); नाकम्–पुन्नाग; कटुक्कै–अमलतास; आर्–अगस्त्य; वेङ्कै–फूलदार वृक्ष-विशेष; कोङ्कु–सेमर; पच्चिलै–तमाल; कण्टिल् वॅण्णॅय्–कोई द्रव्य; अटुक्कलिन् अटुत्त–पर्वत के ढालों में मिलनेवाला; तोम् तेन्–मधुर शहद; नारुम्–सुगन्ध देंगे (या देगा)। २५

सरयू के प्रवाह में अनेक पर्वत-प्रदेशीय वस्तुएँ मिल गयी हैं; जैसे—कूटा चूर्ण, केसर, कोष्ट, चन्दन, सिन्दूर, नरन्द घास; पुन्नाग, अमलतास, अगस्त्य, वेंगै, सेमर आदि के फूल; और तमाल आदि। अतः उसमें से उनका सम्मिलित सुवास आता है। (यह कुरिंचि§ प्रदेश सम्बन्धी वर्णन है।) २५

ॲयिनर्वाऴ् शीरू रप्पु मारियि निरियल् पोक्कि
वयिन्वयि नॅयिऱरि मादर् वयिऱलैत् तोड वोट्टि
अयिन्मुहक् कणैयुम् विल्लुम् वारिक्कोण् डलैक्कु नीराल्
शॅयिर्दरुङ् गोऱ्ऱ मन्नर् शनैये मानु मन्रे 26

ॲयित्तर् वाऴ्–(जहाँ) ॲयित्तर् जाति के लोग रहते हैं (उन); चीऱूर्–छोटी बस्तियों (के वासियों) को; अप्पु मारियिन्–जल के प्रवाह से; इरियल् पोक्कि–डरा, भगाकर; वयिन्-वयिन्–स्थान-स्थान पर; ॲयिऱ्ऱि मातर्–ॲयित्तर् की स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु ओट–पेट पीटते भागते; ओट्टि–भगाकर; अयिल् मुकम् कणैयुम्–तीक्ष्णमुखी-शरों को; विल्लुम्–धनुषों को; वारि कॊण्टु–समेट लेकर; अलैक्कुम् नीराल्–सताने के प्रकार से; चॅयिर् तरुम्–युद्ध करनेवाले; कोऱ्ऱम् मन्नर्–विजयी राजाओं की; चेनैयै मानुम्–सेना की उपमा बनेगा। २६

§ तमिऴ् काव्य-लक्षण-शास्त्र के अनुसार विविध प्रदेशों से सम्बन्धित वर्णन-परिपाटी आदि की किञ्चित् विशेष जानकारी के लिए अवतरणिका में देखें।

यह प्रवाह मानों विजयी राजाओं की प्रबल सेना के समान है। उससे डरकर व्याध लोग अपनी बस्तियाँ छोड़ भाग जाते हैं। यत्र-तत्र व्याध-स्त्रियाँ, अपनी सम्पत्ति के नष्ट होने के कारण पेट पीटकर रोती हैं; व्याधों के अस्त्रों और धनुष प्रवाह में बहते हुए आते हैं। अतः इसके पास धनुष और शर हैं। और यह लोगों को त्रास देता है। सेना का वैसा ही काम है। (इसमें "पालै" यानी रेतीले, मरु प्रदेश से सम्बन्धित वर्णन है।) २६

शॅऱिनऱुन् दयिरुम् बालुम् वॅण्णॅयुञ् जेन्द नॅय्युम्
उऱियोडु वारि युण्डु कुरुन्दोडु मरुद मुन्दि
मऱिविऴि यायर् मादर् वळैतुहिल् कवरु नीराल्
पॉऱिवरि यरवि नाडुम् बुनिदनुम् बोन्ऱ दन्ऱे 27

चॅऱि—गाढ़ा; नऱु तयिरुम्—सुगन्धित दही को और; पालुम्—दूध को और; चेन्त—लाल; नॅय्युम्—घी को और; उऱि योटु—छीकों के साथ; वारि उण्टु—उठाकर खाकर; कुरुन्तोटु—'कुरुन्द' (वृक्ष-विशेष) के साथ; मरुतम् उन्ति—अर्जुन तरु को उखाड़ फेंक कर; मऱि विऴि—मृग-नयनी; आयर् मातर्—गोपांगनाओं के; वळै तुकिल्—कंकण और वस्त्र (को); कवरुम् नीराल्—हर लेने के गुण से; पॉऱि, वरि अरविन्—बिन्दियों और धारियों वाले सर्प पर; आटुम्—नाचनेवाले; पुनितनुम् पोन्ऱतु—पवित्र (पुरुष) के समान भी था। २७

इस पद्य में सरयू नदी और कालिय-दमन श्रीकृष्णचन्द्र का श्लेष है। दही, दूध, मक्खन आदि छीकों के साथ हर लेना; तरुओं को उखाड़ना, गोपांगनाओं के कंकणों और चीरों का हरण —ये काम सरयू नदी भी करती है और श्रीकृष्ण भी। (इसमें अरण्य प्रदेश सम्बन्धी वर्णन है।) २७

कदविनै मुट्टि मळ्ळर् कैयॅडुत् तार्प्प वोडि
नुदलणि योडै पॉङ्ग नुहर्वरि वण्डु किण्डत्
तदैमणि शिन्द वुन्दित् तऱियिरत् तडक्कै शाय्त्तु
मदमऴै यानै यॅन्न मरुदञ्जेन् ऱडैन्द दन्ऱे 28

कतविनै मुट्टि—कपाटों को ठेल कर; मळ्ळर्—कृषक लोग या वीर; कै अॅटुत्तु आर्प्प—हाथ उठाकर शोर करें-ऐसा; नुतल् अणि ओटै पॉङ्क—(१) सामने रहनेवाले तालाबों को भरते, (२) माथे पर पहने मुख-पट्ट के शोभायमान होते; नुकर् वरिवण्टु—(शहद या मदनीर) चूसने आये भौंरों के कुरेदते; ततै मणि, चिन्त—श्लिष्ट रहनेवाले रत्नों को छितराते हुए; उन्ति—फेंक कर; तऱि इऱ—खूँटों को या करि-पोत को तुड़ाते हुए; तट कै चाय्त्तु—विशाल लहरों या हाथों से गिराकर; मतम् मऴै यानै अॅन्न—मद-नीर को बारिश के समान बहानेवाले गज के समान; मरुतम्—खेतों और बागों के देश में; अटैन्ततु—जा पहुँचा। २८

यह नदी बाँधों में लगे कपाटों को ठेलती है; कृषक लोग हाथ उठाकर आनन्द-रव करते हैं। नदी के मार्ग में उसके सामने आनेवाले

तालाब आदि भर जाते हैं। उस पर बहते आनेवाले फूलों को भौंरे कुरेदते हैं। नदी अपनी तरंगें जब उछालती है तब रत्न आदि बिखर जाते हैं; और किनारे पर गड़े खूँटे उखड़ जाते हैं। ठीक उसी प्रकार मत्त गज भी अपने कठघरे के कपाट को तोड़ देता और भागने लगता है तो वीर हाथ उठाकर (लोगों को सावधान करने के लिए) शोर करते हैं; हाथी के मुख-पट्ट हैं जो दीप्तिमान हैं; मद-नीर के लिए भौंरे उनके कपोलों को कुरेदते हैं। वे अपने शरीर पर पहनाये गये, झूल आदि से रत्नों आदि को छितरा देते हैं और अपने बाँधने के खूँटों को उखाड़ देते हैं। (नदी के सम्बन्ध में जो तालाब सूचक शब्द आया है उसका मुख पट्ट दूसरा अर्थ है। इस अर्थ को लेकर यह श्लेष सधा है।) २८

मुल्लयैक् कुरिञ्जि याक्कि मरुदत्तै मुल्लै याक्किप्
पुल्लिय नॅय्द रत्नैप् पॉरुवरु मरुद माक्कि
अॅल्लयिल् पॉरुळ्ह ळॅल्ला मिडैतडु मारु नीराल्
शॅल्लुरु कदियिर् चॅल्लुम् विनैयॅनच् चेन्र दन्रे 29

मुल्लैयै—अरण्य प्रदेश को; कुरिञ्चि आक्कि—पर्वत-प्रदेश बनाकर; मरुतत्तै—खेतों और बागों के प्रदेश को; मुल्लै आक्कि—वन-प्रदेश बनाकर; पुल्लिय—अल्प (अनुर्वर); नॅयतल् तन्तै—समुद्र-तटीय प्रदेश को; पॉरु अरु—उपमा रहित; मरुतम् आक्कि—खेतों का प्रदेश बनाकर; अॅल्लै इल् पॉरुळ्कळ्—सीमा रहित (असंख्य) वस्तुएँ; अॅल्लाम्—सब; इटै तट्माखम् नीराल्—स्थानांतरित हो जाने के धर्म से; चॅल् उरु कतियिल् चॅल्लुम्—जाकर जन्म लेने की कर्मगति में साथ चलनेवाले; विनै अॅन—(पाप और पुण्य के) कर्मों के समान; चॅन्रतु—गया। (अन्रु ए—पूरक ध्वनियाँ)। २९

नदी अपनी गति में एक प्रदेश की वस्तुओं को दूसरे प्रदेश में लाकर छोड़ती हैं। तब प्रदेशों की प्रकृति बदल गयी हो ऐसा लगता है। वस्तुओं का स्थानान्तरण करती हुई जानेवाली नदी की गति कर्म-गति के समान है जिसके कारण जीव विविध योनियों में अटूट क्रम से जन्म लेते हैं और वहाँ भी कर्म के अनुसार ही पाप या पुण्य करते हैं। ये योनियाँ चार प्रकार की हैं— उद्भिज, स्वेदज, अण्डज और पिण्डज— चतुर्विध हैं। भूभाग के सम्बन्ध में भी चार तरह की भूमि की ही गणना है। २९

कोत्तकान् मळ्ळर् वॅळ्ळक् कलिप्पर्इ करङ्गक् कैपोय्च्
चेत्तनीर्त् तिवलै पॉन्नु मुत्तमुन् दिरैयिन् वीशि
नीत्तमान् रलैय वाहि निमिर्न्दुपार् किळिय नोण्डु
कोत्तका लॊन्रि नॊन्रु कुलमॅनप् पिरिन्द मादो 30

कोत्त काल्—(सरयू से) मिले नहर-नाले; नीत्तम् मिक्कु—जल बढ़कर; अलैय आकि—तरंगशील बनकर; पार् किळिय—भूमि का तल चिर जाय-ऐसा;

निमिर्न्तु नीण्टु—फैलकर, (बढ़कर); काल् कात्त मळ्ळर्—नाले की रखवाली करनेवाले कृषकों के; वॆळ्ळम् कलि पऱै करङ्क—बाढ़ (-सूचक और उच्चनादवाले) पऱै (एक तरह का ढोल) के बजते; कै पोय्—नालियों को पार कर जाकर; चेत्त नीर् तिवलै—लाल (मिट्टी के रंग की) जल (बिन्दुओं) को; पॊन्नुम् मुत्तमुम्—स्वर्ण और मोतियों को; तिरॆयिन् वीचि कुलम् अॆन—(मानव-) कुलों के समान; ऒन्ऱिन् ओन्ऱु पिरिन्त—एक से एक-(ऐसा) निकल कर विभक्त हुए। ३०

सरयू नदी से निकलनेवाले नहर-नालों में भी जल अधिक बढ़ जाता है। उनमें तरंगें उठने लगती हैं। जल ऐसा सवेग मानों भूमि को चीरकर बहता है। नालों की रखवाली करनेवाले कृषक ढोल पीटकर सूचना देते हैं कि नयी बाढ़ आ गयी। तरंगों से जल-कण ही नहीं, स्वर्ण और मोती भी बिखरते हैं। फिर सरयू नदी का सैकड़ों नहर-नालों में विभक्त होना एक मानव-कुल के हज़ारों (उप) कुलों में बँट जाने के समान है। ३०

कल्लिडैप् पिऱन्दु पोन्दु कडलिडैक् कलन्द नीत्तम्
ॲल्लयित् मऱैह ळालु मियंबरुम् बॊरुळि दॆन्नत्
तॊल्लयि नॊन्ऱे याहित् तुऱैतॊऱुम् बरन्द शूऴ्च्चिप्
पल्पॆरुञ् जमयञ् जॊल्लुम् बॊरुळुम्पोऱ् परन्द दन्ऱे 31

कल् इटै—पत्थर के मध्य; पिऱन्तु—पैदा होकर; पोन्तु—जाकर, बहकर; कटल् इटै—समुद्र मध्य; कलन्त नीत्तम्—[जो जा] मिला वह प्रवाह; ॲल्लै इल मऱैकळालुम्—अंत रहित [वेदों द्वारा भी; इयम्प अरु पॊरुळ् इतु ॲन्न—कहने के लिए कठिन वस्तु (अप्रतिपाद्य तत्व) यह ऐसा कहने योग्य; तॊल्लैयिल्—आदि में; ऒन्ऱे आकि—एक मात्र रहकर; तुऱै तॊऱुम्—अनेक घाटों में; परन्त चूऴ्च्चि—विशाल खोज (कर चुके जो); पल्पॆरु चमयम्—विविध धर्म (जो) बतलाते हैं; पॊरुळ् पोल्—(उस) तत्व के समान; परन्तत्तु—(विभक्त हो) फैल गया। ३१

यह नदी पर्वत में उद्भव पाती है; समुद्र में जाकर लय होनेवाली यह उपनदियों, नहरों नालों में बँट जाती है। वह ईश्वर-तत्व के समान है जो पहले एक ही है पर बाद में विविध धर्मों के देवताओं के रूप में अनेक हो गया। ३१

तादुह शोलै तोऱुञ् जण्बहक् काडु तोऱुम्
पोदविऴ् पॊय्है तोऱुम् पुदुमणऱ् ऱडङ्ग डोऱुम्
मादवि वेलिप् पूह वनन्दॊऱुम् वयल्ह डोऱुम्
ओदिय वुडम्बु तोऱु मुयिरॆन वुलाय दन्ऱे 32

ओतिय—(शास्त्र) उक्त; उटम्पु तोऱुम्—शरीर-शरीर में; उयिर् ॲन—जीव के समान; तातु उकु चोलै तोऱुम्—पराग चनेवाले बाग-बाग में; चण्पकम् काट तोऱुम्—(सभी) चंपा वनों में; पोतु—कलियाँ; अविऴ्—(जहाँ) खिलती

हैं; **पोय्कै तोरुम्—जलाशयों में; पुतु मणल् तटङ्कळ तोरुम्—नये (रूप से) बालू भरे पोखरों में; मातवि वेलि—माधवी लता से घिरे; पूकम् वनम् तोरुम्—सुपारी के वनों में; वयल्कळ् तोरुम्—खेतों में; उलायतु—व्याप्त हुआ। ३२**

सरयू-जल शास्त्र-निर्दिष्ट चारों प्रकार के शरीर-शरीर में व्याप्त जीव के समान सब जगह फैलकर प्रवेश करता है और व्याप्त रहता है। क्या उपवन, जहाँ पराग छूते हैं; क्या जलाशय जहाँ कलियाँ खिलती हैं; सुपारी के वन हैं जिसकी चहारदीवारी मालती-लतायें हैं। सब जगह वह जल अन्तर्व्याप्त है। ३२

आर्रुप् पडलम् मुर्रुम् (नदी पटल समाप्त)

2 नाट्टुप् पडलम् (देश पटल)

वाङ्गरुम् बाद नान्गुम् वहुत्तवान् मीकि अँन्बान्
तीङ्गवि शँविह ळारत् तवरुम् बरुहच् चेय्दान्
आङ्गवन् पुहळ्न्द नाट्टै यन्बॅनु नरव मान्दि
मूङ्गैयान् पेश लुर्रा नॅन्नयान् मौळिय लुर्रेन् 33

वाङ्कु—प्राप्त; अरु—अपूर्व; पातम्—चरण; नान्कुम् वकुत्त—चार-चार के विविध वृत्त (छंद) जिन्होंने आविष्कार किये; वान्मीकि अँन्पान्—वाल्मीकी नाम के (मुनि); तेवरुम् चॅविकळ् आर परुक—देव भी कान भर सुनें—यह साध्य करते हुए; तीम् कवि चॅय्तान्—मधुर काव्य बनाया; आङ्कु—उसमें; अवन् पुकळ्न्त नाट्टै—जिसकी प्रशंसा की उस देश को; यान्—मैं; अन्पु अँनुम् नरवम् मान्ति—प्रेम नाम की सुरा पान कर; मूङ्कैयान् पेचल् उर्रान् अँन—गूँगा बोलने लगा ऐसा; मौळियन् उर्रेन्—कहना आरम्भ किया (है)। ३३

कवि अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। यह बड़ों की विनयशीलता है। भगवान वाल्मीकि ने ही पहले पहल चार-चार चरण के श्लोकों का चलन चलाया। उन्हें रामायण की कथा स्वयं ब्रह्मा जी के मुख से मिली थी। उनका काव्य स्वयं देवों के लिए भी आस्वाद्य बना। उनके द्वारा प्रशंसित कोसल देश का वर्णन करने का बीड़ा दीन-हीन मैंने उठाया है। यह दुस्तर प्रयास ऐसा है जैसा कि एक गूंगा अपने भावों को दूसरे को बोली द्वारा समझाने लगे; तो भी, प्रेम की मैंने सुरा पी है। नशे के आलम में कोई कुछ भी कर बैठता है! । ३३

वरम्बॅला मुत्तन् दत्तु मडैयॅलाम् बणिल मानीर्क्
कुरम्बॅलाञ् जॅम्बॊन् मेदिक् कुळियॅलाङ् गळुनीर्क् कौळ्ळै
परम्बॅलाम् पवळञ् जालिप् परप्पॅला मन्नम् पाङ्गर्क्
करम्बॅलाञ् जॅन्देन् शन्दक् कावॅलाङ् गळिवण् डोट्टम् 34

तत्तु—(जल जहाँ) उछलता आता है; मटै—नालियाँ; ॲल्लाम्—सभी (में); पणिलम्—शंख; वरम्पु—मेड़; ॲल्लाम्—सभी में; मुत्तम्—मुक्ता; मा नीर् कुरम्पु ॲल्लाम्—बहुत जल (रोकने-) वाले बांधों में; चॅम्पॉन्—चोखा सोना; मेति—भैंसों के; कुऴि ॲल्लाम्—गड्ढों में; कळुनीर् कॉळ्ळै—कुमुदों की (लूट) भरमार; परम्पु ॲल्लाम्—(खेत के) पटे तल में सब; पवळम्—प्रवाल; चालि परप्पु ॲलाम्—धान के विस्तार-सब-में; पाङ्कर्—पास के; करम्पु—खाली स्थानों; ॲल्लाम्—सब (में); चॅम् तेन्—अच्छा शहद; चन्तम् का—सुन्दर बाग; ॲल्लाम्-सब में; कळि वण्टु ईट्टम्—मुदित भौंरों का जमघट। ३४

कोसल देश के खेती-प्रदेशों की समृद्धता देखिये— नालियों में शंख; मेड़ों पर मोती; बाँधों में सोने के ढेले; भैंसे जहाँ पैठती हैं उन पंकिल गड्ढों में कुमुद के फूलों की भरमार; खेतों में पाटा चलता है, वहाँ प्रवाल निकलते हैं; धान के खेतों में पौधों के बीच हंस ठहरे हैं; खेतों के पास भीटों पर शहद मिलता है। बागों में फूल अपार हैं और भौंरे शहद पीकर मत्त रहते हैं। ३४

आऱुपा यरव मळ्ळ रालैपा यमलै यालैच्
चाऱुपा योशै वेलैच् चङ्गिन्वायप् पॉङ्गु मोदै
एऱुपाय् दमर नीरि लॅरुमैपाय् तुळ्नि यिन्न
माऱुमा ऱाहित् तम्मिल् मयङ्गुमा मरुद वेलि 35

मा मरुतम् वेलि—विशाल खेत, प्रदेश की सीमाओं पर; आऱु पाय् अरवम्—नदी के बहने का रव; मळ्ळर्—कृषक; आलै पाय् अमलै—(इक्षु-रस निकालनेवाले) कोल्हू चलने का शोर; आलै चाऱु पाय् अमलै—कोल्हू से रस के बहने की ध्वनि; वेलै—किनारों पर; चङ्किन् वाय् पॉङ्कुम् ओतै—शंख-कीटों से बहती आनेवाली ध्वनि; एऱु पाय् तमरम्—बैलों के भिड़ने से उठता नाद; नीरिल्—जल में; ॲरुमै पाय् तुळ्नि—भैंसें पैठने की आवाज; इन्न—ऐसे अन्य; माऱु माऱु आकि—अलग और विपरीत होकर; तम्मिल् मयङ्कुम्—आपस में लय होते हैं। ३५

वहाँ उस प्रदेश की सीमाओं पर कितनी तरह के समृद्धि-सूचक शोर पाये जाते हैं! ऐसे शोर का 'धूम' का अर्थ भी निकल सकता है! नदी बहती है— उसका; कृषक गन्ने जिससे पेरते हैं—उन यन्त्रों का; गन्ने का रस नदी के समान बहता है— उसका; खेतों, और जलाशयों के किनारों पर शंख-कीट जो पड़े रहते हैं—उनका; बैल आपस में जो लड़ते हैं— उसका; पानी में भैंसें सवेग जो घुसती हैं —उसका और कितने ही अन्य नाद आपस में मिल जाते हैं। इस पद्य में ६ शब्द हैं जो 'शोर' के पर्यायवाची हैं। ३५

तण्डलै मयिलह ळाडत् तामरै विळक्कन् दाङ्गक्
कॉण्डल्हण् मुळवि नेङ्गक् कुवळैकण् विऴित्तु नोक्कत्
तॅण्डिरै एऴिनि काट्टत् तेम्बिऴि महर याऴिन्
वण्डुह ळिनिदु पाड मरुदम् वीऱ् ऱिरुक्कु मादो 36

तण्टलै—बागों में; मयिल्कळ् आट—मोर नाचते; तामरै—कमल; विळक्कम् ताङ्क—(पुष्परूपी) दीपक उठाते; कॊण्टल्कळ्—मेघ; मुळविन् एङ्क—मृदंग के समान ध्वनि करते; कुवळै—नीलोत्पल; कण् विळित्तु नोक्क—आँखें खोलकर देखते; तॆण् तिरै—साफ जल की तरंगें; ऑळित्ति काट्ट—पर्दे का दृश्य उपस्थित करते; वण्टुकळ्—भौंरें; तेम् पिळि मकर याळिन्—मधुर शहद सम मकर-याळ्—(नाम की वीणा का सा) गीत सुनाते; मरुतम्—खेतों का भूभाग; वीऱ्ऱु इरुक्कुम्—(राजा) विराज रहा होता है। ३६

खेतों का प्रदेश मानों राजा है जो दरबार में विराजमान है। उस सभा में मोर नाचते हैं; कमल के दीप रहते हैं; मेघ मृदंग बजाते हैं; नीलोत्पल दर्शक हैं— अपनी आँखें खोल देख रहे हैं; जलाशय की तरंगें यवनिका का काम दे रही हैं; भौंरे संगीत सुना रहे हैं। कितना सुहावना दृश्य है जो आँखों, श्रवणों और मन को लुभा रहा है। ३६

तामरैप् पडुव वण्डुन् दहैवरु तिरुवुन् दण्डार्क्
कामुहर्प् पडुव मादर् कण्गळुङ् गाम नम्बुम्
मामुहिऱ्प् पडुव वारिप् पवळमुम् वयङ्गु मुत्तुम्
नामुदऱ् पडुव मॆय्यु नामनूऱ् पॊरुळु मन्नो 37

तामरै—कमलों (के पुष्पों) पर; पटुव—वास करते हैं; वण्टुम्—भौंरे (और); तकै वरु तिरुवुम्—श्रीमती लक्ष्मी देवी; तण् तार् कामुकर्—शीतल माला (पहने हुए) कामुकों पर; पटुव—लगने (चुभने) वाले हैं; मातर् कण्कळुम् कामन् अम्पुम्—स्त्रियों की आँखें और मन्मथ के शर; मा मुकिल् पटुव—अधिक मेघों से (वारिश से) पैदा होनेवाले हैं; वारि पवळमुम् वयङ्कुम् मुत्तुम्—समुद्र के प्रवाल और बहुमूल्य मोती; ना मुतल् पटुव—(मनुष्यों की) जीभों पर बैठे हैं; मॆय्युम्—सत्य (वाणी) और; नामम् नूऱ् पॊरुळुम्—श्रेष्ट ग्रंथों के विषय। (मन् ओ—पूरक ध्वनियाँ।) ३७

कोसल देश मनोरम है और सर्व-समृद्ध थी। कमल-पुष्प श्रीलक्ष्मीदेवी का वासस्थान है। वे दौलत की देवी हैं। कोशल देश में कमल-पुष्पों की भरमार है। उन पर स्थूल-आँखों से भौंरे देखे जाते हैं। सूक्ष्म रूप से विचार करने पर सम्पत्ति की देवी का वास समझा जा सकता है। अतः कहा गया कि कमल-पुष्पों पर भौंरे और श्री दोनों पाये जाते हैं। यों तो इस छन्द में 'पटुव' शब्द के प्रयोग-वैविध्य का चमत्कार है। अतः कामुकों की बात उठायी गयी है। कामुकों ही पर (वेश्या) स्त्रियों की दृष्टि और कामदेव के शर लगते हैं। प्रचुर वर्षा के कारण समुद्र में से मूँगे और मोती खूब मिलते हैं। वहाँ के निवासी बोलते हैं तो सत्य और ग्रन्थ के विषय ही। ३७

नीरिडै युऱङ्गुज् जङ्ग निऴलिडै युऱङ्गु मेदि
तारिडै युऱङ्गुम् वण्डु तामरै युऱङ्गुज् जॆय्याळ

तूरिडै युऱङ्गु मामै तुऱैयिडै युऱङ्गु मिप्पि
पोरिडै युऱङ्गु मन्नम् पॊऴिलिडै युऱङ्गुन् दोहै 38

चङ्कम्—शंख-कीट; नीर् इटै उऱङ्कुम्—जलाशयों में आराम से रहते हैं; मेति—भैंसें; निऴल् इटै उऱङ्कुम्—छाँहों पर सोती हैं; वण्टु तार् इटै उऱङ्कुम्—भौंरे (फूलों के) गुच्छों पर; उऱङ्कुम्—ठहरे रहते हैं; चॆय्याळ्—श्री लक्ष्मी देवी; तामरै उऱङ्कुम्—कमल पर विराजमान रहती हैं; आमै—कछुए; तूर् इटै—तलौंछ-मध्य टिके रहते हैं; इप्पि तुऱै इटै उऱङ्कुम्—सीपियां घाटों पर पड़ी रहती हैं; अन्नम्—हंस; पोर् इटै—(खरहियों) धान के ढेरों पर; उऱङ्कुम्—विश्राम करते हैं; तोकै पॊऴिल् इटै उऱङ्कुम्—कलापी (मोर) उपवनों में आराम करते हैं। ३८

जलाशयों में शंख; छाँहों में भैंसें; फूलों के गुच्छों में भौंरे; कमल पर समृद्धि की देवी श्री लक्ष्मी; तलौंछ या कीचड़ में कछुए; घाटों पर सीपियाँ; धान के ढेरों पर हंस, बागों पर ढोर देखे जाते हैं। इसमें 'उरङ्कुम' शब्द का यह सामर्थ्य है कि इतना सब बताने के बाद वह समृद्धि की भी सूचना देता है। ३८

पडैयुऴ वॆऴुन्द पॊन्नुम् पणिलङ्ग ऴुयिर्त्त मुत्तुम्
इडऱिय परम्बिऱ् कान्दु मिन्नमणित् तॊहैयु नॆल्लिन्
मिडैपशुङ् गदिरु मीनु मॆन्ऱऴैक करुम्बुम् वण्डुम्
कडैशियर् मुहमुम् बोदुङ् गण्मलर्न् दॊऴिरु मादो 39

पटै उऴ—हल (के फाल) के जोतने से; ऍऴुन्त—निकला; पॊन्नुम्—स्वर्ण; पणिलङ्कळ—शंख; उयिर्त्त—जो पैदा किया वह; मुत्तु—मोती; उम्—और; परम्पिन् इटऱिय—पाटे द्वारा फेंके गये; कान्तुम्—उज्ज्वल; इन्नम् मणि—विविध रत्नों की; तॊकैयुम्—राशि और; नॆल्लिन् मिटै पचुमै कतिरुम्—धान (के दानों) की भरी सुनहली बालें; मॆल् तऴै करुम्पुम्—कोमल पत्तों वाले गन्ने; मीनुम्—मछलियाँ और; वण्टुकळुम्—भ्रमर और; पोतुम्—फूल और; कटैचियर् मुकमुम्—(कृषि)-श्रमिक स्त्रियों के मुख; कण् मलर्न्तु ऑऴिरुम्—(प्रसंगानुसार) शोभायमान हैं, आँखों को आकृष्ट करते हैं, आँखों के समान सुन्दर हैं, या आँखें सुन्दर रूप से खोले रहते हैं। ३९

किसान हल जोतते हैं तो सोना प्रकट हो आता है; शंख मोती देते हैं; पाटे के मार्ग से उज्ज्वल रत्न निकलते हैं; धान की बालें; कोमल पत्तों के ईख; मछलियाँ, भौंरे, फूल और खेत की मज़दूरिनों के मुख— ये सब मनोरम हैं। ('आँखें खोलकर शोभा देते हैं' इस वाक्यांश के शब्दों की अर्थ-विशेषता द्वारा यह एक वाक्यांश सभी वस्तुओं के लिए प्रयुक्त हो सका है।) ३९

तॆऴिविऴिच् चिऱियाऴ्प् पाणर् तेम्बिऴि नऱव मान्दि
वऴिविशि करुवि पम्ब वग्गिन्वयिन् वऴङ्गु पाडल्

वॆळ्ळिवॆण् माडत् तुम्बर् वॆयिल्विरि पशुम्पॊऱ् पळ्ळि
ॲळ्ळरुङ् गरुङ्कट् टोहै यिन्ऱुयि लॆळुप्पु मन्ऱे 40

तॆळ् विळि—स्पष्ट स्वरित; चिऱि याळ् पाणर्—छोटी वीणा के रखनेवाले (पाण जाति के) गवैये; तेम् पिळि नऱवम् मान्ति—शहद से मिश्रित ताड़ी (सुरा) पीकर; वळ् विचि करुवि पम्प—फीतों से कसे बाजे के (यानी मृदंग के) बजते; वयिन् वयिन्—स्थान-स्थान पर; वळङ्कु पाटल्—गाये जानेवाले गाने; वॆळ्ळि वॆण् माटत्तु—चाँदी (सम) श्वेत सौधों के; उम्पर्—ऊपरी भागों पर; वॆयिल् विरि—कांति बिखेरनेवाले; पचुम् पॊन् पळ्ळि—चोखे स्वर्ण से बने पलंग (पर); ॲळ् अरु—अनिन्द्य; करुमै कण्—काली आँख (वाली); तोकै—कलापिनियों (मोर सम स्त्रियों) को; इन् तुयिल् ॲळुप्पुम्—मीठी नींद से जगा देते हैं। ४०

पाणर् (भाट की तरह एक जाति के गवैये) याळ् (वीणा) बजाते हुए गाते हैं। वे शहद मिली सुरा पी चुके हैं— अतः मस्त हो गाते हैं। उनके साथ मृदंग बजानेवाले हैं। वे स्थान-स्थान पर जाकर गाते हैं। उनका गाना सौधों के ऊपर, स्वर्णमय पलंग पर सोनेवाली सुन्दर, (संभ्रांत) स्त्रियों को जगा देता है। ४०

आलैवाय्क् करुम्बिन् ऱेनु मरिदलैप् पाळैत् तेनुम्
शोलैवाय्क् कनियिन् ऱेनुन् दॊडैयिळि यिऱालिन् ऱेनुम्
मालैवा युहुत्त तेनुम् वरम्बिहन् दोडि वङ्ग
वेलैवाय् मडुप्प वुण्डु मीनॆलाङ् गळिक्कु मादो 41

आलै वाय्—(गन्ने के) कोल्हुओं के स्थानों में (मिलनेवाले); करुम्पिन् तेनुम्—रसरूपी शहद; अरि तलै पाळै तेनुम्—(नारियल, ताड़ आदि पेड़ों के) कटे डंठलों से निकलनेवाले ताड़ीरूपी शहद; चौलै वाय्—बागों में (प्राप्त होनेवाले); कनियिन् तेनुम्—फल-रस रूपी शहद; तॊटै इळि इऱालिन् तेनुम्—छत्तों से बहनेवाला शहद; मालै वाय्—(स्त्री-पुरुषों की पहनी हुई) मालाओं से चूनेवाला शहद; वरम्पु इकन्तु ओटि—सीमा तोड़ कर (अत्यधिक परिमाण में) बहकर; वङ्कम् वेलै वाय्—पोतोंवाले समुद्र में; मटुप्प—जा पहुँचता है (तब); मीन् ॲल्लाम्—मछलियाँ सब; उण्टु कळिक्कुम्—पीकर (खाकर) मस्त होते हैं। (तेन् शब्द का 'मधुर रस' अर्थ लिया गया है और वह सब जगह प्रयुक्त हुआ है।) ४१

कोल्हुओं से निकलनेवाला इक्षु-रस; ताड आदि पेड़ों के कटे डंठलों से बहनेवाला वृक्ष-रस; बागों में पेड़ों के फलों से निकलनेवाला फल-रस; मधु-छत्तों से बहनेवाला मधु-रस; स्त्री-पुरुषों की पहनी पुष्प-मालाओं से टपकनेवाला पुष्प-रस, ये सब मिलकर बड़ी धार बन जाते हैं। वह धार बहकर समुद्र में मिल जाती है। समुद्र में अनेक पोत आते-जाते रहते हैं। समुद्र में रहनेवाली मछलियाँ उस रस को पीकर मस्त रहती हैं। ४१

पण्गळ्वाय् मिळ्ऱु मिन्शॊऱ् कडैशियर् परन्दु नीण्ड
कण्कैकाल् मुहम्वा यॊक्कुङ् गळैयलाऱ् कलैयि लामै

उण्कळ्वार् कडैवाय् मळ्ळर् कळैहला दुलोवि निऱ्पार्
पॆण्कळ्पाल् वैत्त नेयम् बिळैप्परो शिऱियोर् पॆऱ्ऱाल् 42

वाय्–मुख से; पण्कळ मिळऱ्रुम्–धुन गुनगुनाती; इन् चॉल्–मधुर वाणी; कटैचियर्–कृषक स्त्रियों की; परन्तु नोण्ट कण्–विशाल, आयत आँखें,; कै काल् मुकम् वाय्–हाथ, पैर, आनन, और मुख; ऑक्कुम्–के समान रहनेवाले; कळै अलाल्–व्यर्थ-पौधों के सिवा; कळै इलामै–दूसरे व्यर्थ पौधों के न रहने से (यानी: हर पौधा स्त्रियों के किसी न किसी अंग की याद दिलाता है); उण्–पी हुई; कळ् वार्–ताड़ी (जिससे) बाहर स्रवती है वैसे; कटै वाय् मळ्ळर–मुख (के कोने) वाले कृषक; कळै कलातु–निराने का (उन पौधों को हटाने का) काम बंद कर; उलोवि निऱ्पर्–(उन पर) आसक्त हो खड़े रहते हैं; पॆणकळ् पाल् वैत्त नेयम्–स्त्रियों पर रखे प्रेम को; पॆऱ्ऱाल्–(स्मरण में) प्राप्त करने पर; पिळैप्परो–छूट सकते हैं क्या ? ४२

कृषक लोग खेत निराने जाते हैं। उनके मुख के कोने से ताड़ी स्रवती है; मतलब यह है कि खूब पिये हुए हैं। खेत में जल-पौधे हैं और फूल आदि। ये भ्रांत कृषक उनमें मधुरवाणी अपनी प्रियाओं की विशाल और दीर्घ आँखें, हाथ, पैर, आनन और मुख को देखते हैं, तो उनका मन नहीं होता कि इनको अलग कर दें। वे अपना काम नहीं करते क्योंकि उनका मन स्त्री-प्रेम के स्मरण में अटक गया है। नीच जाती के लोग हैं, अनपढ़ हैं। अत: स्त्री के स्मरण से उद्दीप्त प्रेम के मोह से छूट नही पाते ! । ४२

पुदुप्पुनल् कुडैयु मादर् पूवॊडु नावि पूत्त
कदुप्पुरु वॆऱियै नाऱुङ् गरुङ्गडर् ऱरङ्ग मॆन्ऱाल्
मदुप्पॊदि मळ्लैच् चॆव्वाय् वाट्कडैक् कण्णिन् मैन्दर्
विदुप्पुर् नोक्कु मिन्नार् मिहुदियै विळम्ब लामो 43

करु कटल् तरङ्कम्–नीले समुद्र की तरंगें; पुतु पुनल् कुटैयुम् मातर्–नयी बाढ़ (के जल में) स्नान करनेवाली स्त्रियों के; पूवॊटु नावि पूत्त–फूलों के साथ कस्तूरी-लेप-मिली; कतुप्पु उरु–(और) केशों में लगी; वॆऱियै नाऱुम्–सुगंधि देती हैं; ॲन्ऱाल्–यह कहा जाय तो; वाळ् कटै कण्णिन्–तलवार के समान तीक्ष्ण आँखों के कोर से; मैन्तर् वितुप्पु उऱ–जवान प्रेमासक्त हों ऐसा; नोक्कुम्–देखनेवाली; मतु पॊति मळ्लै–शहद के समान मधुर अस्पष्टता के साथ बोलनेवाली; चॆव्वाय्–लाल अधरोंवाली; मिन्नार्–विद्युल्लता सी स्त्रियों की; मिकुतियै विळम्पल् आमो–अधिकता कहना हो सकता है क्या ? ४३

सरयू की नयी बाढ़ के जल में स्त्रियाँ स्नान करती हैं। उनके केशों में लगे फूलों और कस्तूरी के लेप की सुगन्धि को नदी का जल ले जाकर समुद्र में पहुँचा देता है और समुद्र की लहरें तक सम्पूर्ण रूप से इस वास से सुवासित हो जाती हैं। तब कोशल देश की स्त्रियों की संख्या की गणना क्या हो सकती है ! यही नहीं; उनकी सुन्दरता भी कितनी ! आँखें तलवार के समान तीक्ष्ण हैं। अपनी आँखों के कोर से भी देखती हैं तो पुरुष

निहाल हो जाता है। उनके अधर लाल हैं और उनकी तोतली बोली भी मधु-सम मीठी है। ८२

वॅण्डळक् कलवैच् चेरुङ् गुङ्गुम विरॅमॅन् शान्दुम्
कुण्डलक् कोल मैन्दर् कुडैन्दनीर्क् कोळ्ळै शाऱ्ऱिल्
तण्डलैप् परप्पुञ् जालि वेलियुन् दळीइय वैप्पुम्
वण्डलिट् टोड मण्णु मदुहर मॉय्क्कु मादो 44

चाऱ्ऱिल्–कहें तो; कुण्टलम् कोलम् मैन्तर्–(कर्ण-) कुंडल पहने हुए सुन्दर तरुण लोग; कुटैन्त–जहाँ गोते लगाकर स्नान किये (वहाँ के); नीर् कॉळ्ळै–जल का प्रवाह; वॅण्मै तळम् कलवै चेरुम्–सफेद चंदन के लेप को और; कुङ्कुमम् विरॅमॅल् चान्तुम्–केसर के गंध-मिले लाल चंदन-लेप को (घोल कर ले जाते हुए); तण्टलै परप्पुम्–बागों के विस्तार (विस्तृत भूतल) में; चालि वेलियुम्–धान के खेतों में; तळीइय वैप्पुम्–पास के ऊँचे स्थलों में; वण्टल् इट्टु ओट–तलौंछ छोड़ता हुआ बहता है-अतः; मण्णुम्–मट्टी पर; मतुकरम् मॉय्क्कुम्–मधुकर मंडराते हैं। ४४

कुण्डलधारी तरुण लोग खूब मज्जन करते हैं तो उनके शरीरों में लिप्त चन्दन आदि जल में घुल-मिल जाते हैं। नदी उसको बहा ले जाती है और वह बागों में, खेतों में और कुछ ऊँची भूमि पर, सब जगह तलौंछ रूप में जम जाती है। उसकी गन्ध से आकृष्ट हो भौंरे सभी जगह मिट्टी पर मँडराते हैं। ८८

शेलुण्ड वॉण्ग णारिऱ् ऱिरिहिऩ्ऱ शङ्गा लन्नम्
मालुण्ड नळिऩप् पळ्ळि वळर्त्तिय मळ्ळैप् पिळ्ळै
कालुण्ड शेऱ्ऱु मेदि कन्ऱुळ्ळिक् कनैप्पच् चोर्न्द
पालुण्डु तुयिलप् पच्चैत् तेरैता लाट्टुम् पण्णै 45

पण्णै–खेतों में; चेल् उण्ट–चेल् (नामक मछलियों) के समान रहनेवाली; ऑळ् कण्णारिऩ्–कांति भरी आँखोंवालियों के समान; तिरिकिऩ्ऱ्–चलने-फिरनेवाले; चॅम् काल् अऩ्ऩम्–लाल पैरोंवाले हंस; माल् उण्ट–गौरवयुक्त; नळिऩम् पळ्ळि–कमल-पुष्प की शय्या पर; वळर्त्तिय–जिनको सुला चुके हैं उन्; मळ्ळै पिळ्ळै–बाल हंस; काल् उण्ट–पैरों पर लिप्त; चेऱु मेति–पंकवाली भैंस; कऩ्ऱु उळ्ळि–बछड़े का स्मरण कर; कऩैप्प–जब आवाज़ लगाती है (डोंकती है); चोर्न्त–जो स्रवता; पाल्–दूध; उण्टु–पीकर; तुयिल–सुलाते हुए; पच्चै तेरै–हरे (रंग के) दादुर; तालाट्टुम्–लोरी गाते हैं। ४५

खेतों में मीनाक्षी स्त्रियों के समान हंस संचार कर रहे हैं। वे अपने बच्चों को कमल-पत्र या पुष्पों पर सोने के लिए छोड़ गये हैं। वहाँ भैंसें अपने सावकों को याद करती हैं और आवाज़ देती हैं, तब उनके थन से खुद-ब-खुद दूध बहने लगता है। उस दूध को ये बाल-हंस पीते हैं। तब हरे रंग के दादुर बोलते हैं और ये हंस सो जाते हैं। दादुर का बोलना इनके लिए लोरी का काम देता है! । ४५

कुयिलिनम् वदुवै शॅय्यक् कॉम्बिडैक् कुनिक्कु मञ्ञै
अयिल्विळि महळि राडु मरंगिनुक् कळहु शॅय्यप्
पयिल्शिरै यरश वन्नम् पन्मलरप् पळ्ळि निन्रुम्
तुयिलॅळत् तुम्बि कालैच् शॅव्वळि मुरल्व शोलै 46

चोलै–बागों में; कुयिलिनम्–पिक के जोड़े; वतुवै चेय्य–विवाह करते (तब); कॉमपु इटै–डालियों पर; कुनिक्कुम् मञ्ञै–(रहकर) नाचनेवाले मोर; अयिल् विळि मकळिर्–तीक्ष्ण बर्छी सम आँखवाली नर्तकियों के; आटुम् अरङ्किनुक्कु–नृत्य-मंच से भी बढ़कर; अळकु तर–शोभा दिलाते; पयिल् चिरै–घने पंखोंवाला; अरच अन्नम्–राज-हंस को; पन् मलर् पळ्ळि तुयिल् निन्रु ॲळ–(श्रेष्ठ-)कथित कमल-पुष्प-शय्या पर नींद से जगाते हुए; तुम्पि–भ्रमर; कालै चेव्वळि मुरल्व–प्रातःकालीन राग गाते हैं। ४६

दो विनोदपूर्ण दृश्य देखिये। कोकिल और कोकिला विवाह-क्रिया में संलग्न हैं। उधर डालियों पर मोरों का नाच हो रहा है। मोरों का यह नृत्य-मंच और मोरों का यह नाच, सुन्दर बर्छी सी आँखवाली नर्तकियों का नाट्य-मंच, और उनका नाच, इनसे भी बढ़कर आकर्षक हैं— यहाँ तक मोर और डालियाँ नर्तकियों और नृत्य-मंच का भी शृंगार बन सकती हैं। दूसरी तरफ़, कमल-शय्या पर सुप्त राज-हंस को भौंरे प्रातः जागरण-गीत गाकर जगाते हैं। ४६

पॊरुन्दिय महळि रोडु वदुवैयिर् पॊरुन्दु वारुम्
परुन्दोडु निळल्शॅन् रन्न वियलिशैप् पयन्रुय्प् पारुम्
मरुन्दिनु मिनिय केळ्वि शॅवियुर मान्दु वारुम्
विरुन्दिनर् मुहङ्गण् डन्न विळावणि विरुम्बु वारुम् 47

पॊरुन्तिय–अपने योग्य; मकळिरोटु–स्त्रियों के साथ; वतुवैयिल् पॊरुन्तुवार् उम्–विवाह में लगे रहनेवाले; परुन्तोटु निळल् चेन्रु अन्न–(उड़नेवाले) चील के साथ उड़नेवाली छाया की तरह; इयल् इचै पयन् तुय्प्पारुम्–साहित्य और संगीत का मिला आनंद भोगनेवाले; मरुन्तिनुम् इनिय केळ्वि–अमृत से भी मधुर (सुखकारी) ग्रंथ-श्रवण का; चॅवि उर मान्तुवोरुम्–कर्ण-लाभ उठानेवाले; विरुन्तिनर् मुकम् कण्टु–अतिथियों का प्रसन्न मुख देखकर; अन्नम् विळा अणि विरुम्पुवारुम्–भोज देने का उत्सव (उचित उपचार के साथ करना) चाहनेवाले(-करने में लगे हुए)। ४७

कोसल देशवासियों के कार्य-कलाप देखिये। सब तरह से अपने योग्य वधुओं से विवाह-क्रिया में संलग्न हैं कुछ लोग; चील जब उड़ती है तब उसकी छाया भी नीचे-नीचे उसी का अनुकरण करती हुई चलती है। वैसे ही साहित्य (यानी गीत में वर्णित विषय) और संगीत (स्वर) दोनों में गहरा सम्बन्ध है। दोनों का सम्मिलित आनन्द उठा रहे हैं कुछ लोग; ग्रन्थ-श्रवण अमृताशन से भी लाभकारी है— उसका लाभ उठा रहे हैं कुछ

लोग; और कुछ लोग अतिथियों के तृप्त-मुख भाव को देखकर भोज के प्रबन्ध में लीन हैं। ८७

करुप्पुरु मनमुङ् गण्णिऱ् चिवप्पुरु शूट्टुङ् गाट्टि
उरुप्पुरु पडैयिऱ् ऱाक्कि युरुपहै यिन्ऱिच् चीऱि
वेरुप्पिल कळिप्पिन् वॅम्बोर् मदुहय वीर वाऴ्क्कै
मरुप्पड वावि पेणा वारणम् बॅारुत्तु वारुम् 48

उरु पकै इन्ऱि–पूर्व वैर के बिना; चीऱि—कोप कर; करुप्पु उरुम् मनमुम्–क्रोधयुक्त मन, और; कण्णिन् चिवप्पु उरु चूट्टुम् काट्टि–आँखों से लाल अपनी कलंगी को दिखाते हुए; उरुप्पु उरु पटैयिन्–(पैर के) अंग में बद्ध (छुरे) हथियार से; ताक्कि,–आक्रमण कर; वॅरुप्पु इल–(जिनमें) घृणा या उचाट नहीं; कळिप्पिन्–मस्ती के साथ; वॅम् पोर् मतुकैय–भयंकर युद्ध करने का साहस रखनेवाले; वीर वाऴ्क्कै–वीरता का जीवन; मरु पट–लांछित हो जाय तो; आवि पेणा–जीवन रखना न चाहनेवाले; वारणम्–मुर्गों को; पॅारुत्तुवारुम्–लड़ानेवाले। ४८

कुछ लोग मुर्गे लड़ाने में दिलचस्पी लेते हैं। वे मुर्गे बिना पूर्व-वैर के भी आपस में रोष दिखाते हैं। उनका मन काला (कोपाक्रांत) है। आँखें लाल हो गयी हैं। इस कोप और आँखों के ही समान लाल कलगी को प्रकट दिखाते हुए वे एक दूसरे पर झपटते हैं और अपने पैरों में बँधी छुरी से चोट कर देते हैं। वे थकते ही नहीं और उनका उत्साह बढ़ता जाता है। वे बड़े साहसी हैं और वीरता पर धब्बा लगा तो मरने को तैयार! ८८

ऍरुमैना हीन्ऱ शॅङ्ग णेर्ऱयो डेर्ऱै शीर्ऱत्
तुरुमिवै यॅन्नत् ताक्कि यूऴुऱ नॅरुक्कि यॅान्ऱाय्
विरियिरु ळिरण्डु कूराय् वॅहुण्डन वनैय नोक्कि
अरियिनङ् गुञ्जि यार्प्प मञ्जुऱ वार्क्किन् ऱारुम् 49

ऍरुमै नाकु ईन्ऱ–भैंस के जनाये; चॅम् कण्–लाल आँखोंवाले; एर्ऱैयोटु एर्ऱै–एक पाठे के विरुद्ध दूसरा पाठा; इवै चीर्ऱत्तु उरुम् अॅन्न–ये नाराज वज्र (गाज) हैं-ऐसा कहने योग्य रीति से; ताक्कि–टकराकर-(सींग मारकर); ऊऴ् उऱ नॅरुक्कि–बारी-बारी से दबोचकर; ऑन्ऱु आय् विरि इरुळ्–एकाकार फैला अंधकार; इरण्टु कूऱु आय् वॅकुण्टन–दो भागों में बंटकर (वे आपस में) रोष दिखाते हों; अनैय–ऐसे (उनको); नोक्कि–देखकर; कुञ्चि अरि इनम् आर्प्प–केशों पर बैठे भौंरों के कल्लोल के साथ उठते; मञ्चु उऱ–मेघमंडल तक (शब्द) पहुँचाते हुए; आर्क्किन्ऱारुम्–शोर मचानेवाले। ४९

कहीं भैंस के पाठों को लड़ाया जाता है और लोग देख रहे हैं। एक ठापा दूसरे पर क्रुद्ध वज्र के समान झपटता है; ज़ोर से सींग चलाता है; बारी-बारी से एक दूसरे पर हावी हो जाता है। उनको देखते समय ऐसा

लगता है मानों विशाल अंधकार के दो भाग हो गये और वे भाग आपस में गुथ रहे हैं। इसको देख लोग ऐसे उछलते और शोर करते हैं कि उनके सिर पर रहनेवाले पुष्प में बैठे भौंरों को उठकर उड़ जाना पड़ता है और उनका शोर मेघ-मण्डल तक पहुँच जाता है। ४९

मुळ्ळरै मुळरि वॆळ्ळि मुळैयिऱ् मुत्तुम् पॊन्नुम्
तळ्ळुऱ मणिहळ् शिन्दच् चलंजलम् पुलम्बच् चालिल्
तुळ्ळिमीन् ऱुडिप्प वामै तलैपुडै शुरिप्पत् तूम्बिन्
उळ्वरा लॊळिप्प मळ्ळ रुळुपह डुरप्पु वारुम् 50

मुळ् अरै मुळरि–कांटेनुमा (गाँठों से भरे) नालवाले कमलों को; वेळ्ळि मुळ इऱ्–श्वेत अंकुर तोड़ते हुए; मुत्तुम् पॊन्नुम्–मोती और स्वर्ण; तळ्ळुऱ–हटाये जायँ ऐसा; मणिकळ् चिन्त–रत्न छितर जायँ ऐसा (या रत्न छितराते हुए); चलञ्चलम् पुलम्प–चलंजल नामक शंख के चिल्लाते; चालिल् मीन् तुळ्ळि तुटिप्प–हल के कूणों में मछलियाँ तड़पें ऐसा; आमै–कछुए; तलै पुटै–सिर और पार्श्व के अंगों को; चुरिप्प–छिपा लें ऐसा; वराल्–'वराल' नामक मछलियों के; तूम्पिन् ऑळिप्प–नालियों के अंदर छिप जाते; मळ्ळर् उळु पकटु उऱप्पुवार् उम्–कृषक जो जोतनेवाले बैलों को हांकते हैं-और। ५०

कृषक लोग हल चलाने की क्रिया में रत हैं। हल जब चलता है तब कमल के अंकुर टूट जाते हैं; मोती और स्वर्ण दोनों ओर हटाये जाते हैं; शंख ध्वनि करते हैं; हल के कूणों पर. मछलियां, फाल के लगने से तड़पती हैं; कछुए अपने सिर, पैर छुपा लेते हैं। वराल नाम की मछलियाँ नालियों में छिप जाती हैं। कृषक जोर से बैल हांकते हैं। ५०

अॆऱिदरु मरियिन् शुम्मै यॆडुत्तुवा निट्ट पोर्हळ्
कुऱिकॊळुम् पोत्तिऱ् कॊल्वार् कॊन्ऱ नॆऱ्कुवैहळ् शॆय्वार्
वऱियवर्क् कुदवि मिक्क विरुन्दुण मनैयि नुय्प्पान्
नॆऱिहळुम् बुदैयप् पण्डि निऱैत्तुमण् णॊळिय वूर्वार् 51

अॆऱि तरुम्–पीटे हुए; अरियिन् चुम्मै अॆटुत्तु–धान के पौधों के मुट्ठों को लेकर; वान् इट्ट पोर्कळ्–आकाश को छूते हुए लगाये गये ढेर; कुऱि कॊळुम् पोत्तिन्–इंगित जानकर चलनेवाले बैलों से; कॊल्वार्–रौंदवाते हैं; कोन्ऱ नॆल्–मांड़ने से मिले धान के; कुवैकळ् चॆय्वार्–ढेर लगाते हैं; वऱियवरक्कु उतवि–दरिद्रों को दान कर; मिक्क–(जो) बचा उसको; विरुन्तु उण–अतिथियों को खिलाने; मनैयिन् उय्प्पान्–घर पहुँचाने के लिये; नॆऱिकळुम् पुतैय–सड़कें छिप जायँ (इतनी बड़ी संख्या में); पण्टि निऱैत्तु–छकड़ों में भर कर; मण् नॆळिय–धर्ती को धंसाते हुए; ऊर्वार्–चलाते हैं। ५१

कृषक लोग धान की फसल काटते हैं; क्रम से, पहले मुट्ठे बनाकर जमीन पर पीटकर धान अलग करते हैं; फिर बालें-सहित पौधों के ढेर

लगाकर मवेशी द्वारा माँडते हैं। तब जो धान मिल जाते हैं उनके ढेर लगाते हैं। बाद में वहाँ आनेवाले दरिद्र भिखमंगों को दान देकर बाकी को गाड़ियों में भरकर ले जाते हैं। गाड़ियों की संख्या इतनी है कि मार्ग छिप जाते हैं और उनके भार से मानों धरती लचक जाती है। ५१

कदिर्पडु वयलि नुळ्ळ कडिकमल् पॉळिलि नुळ्ळ
मुदिर्पयन् मरत्ति नुळ्ळ मुदिरैहळ् पुऱवि नुळ्ळ
पदिपडु कॉडिथि नुळ्ळ पडिवळर् कुळियि नुळ्ळ
मदुवळ मलरिर् कॉळ्ळुम् वण्डॆन मळळर् कॉळ्वार् 52

मळ्ळर्–कृषक; कतिर् पटु वयलिन् उळ्ळ–धान की वालों से भरे खेतों में मिलनेवाली (फसल की वस्तुएं); कटि कमळ् पॊळिलिन् उळ्ळ–खुशबूदार बागों से प्राप्त होनेवाली (वस्तुएँ); मुतिर् पयन् मरत्तिन् उळ्ळ–वृद्ध (और) फलदायी वृक्षों से पायी जानेवाली; मुतिरैकळ् पुऱविन् उळ्ळ–दालें जहाँ पैदा होती हैं उन स्थलों से प्राप्त होनेवाली (वस्तुएँ); पति पटु कॉटियिन् उळ्ळ–कलम गाड़कर उगायी जानेवाली लताओं से प्राप्य (वस्तुएँ); पटि वळर् कुळियिन् उळ्ळ–फैलकर धरती के अंदर फलनेवाली वस्तुएँ (-ये सब विविध प्रकार की फसलें); वळम् मलरिल् मतु कॉळ्ळुम् वण्टु अंत–पुष्ट फूलों से मधु ग्रहण करनेवाले भ्रमरों के समान; कॉळ्वार–संग्रह करते हैं। ५२

किसान लोग क्या-क्या फसलें संग्रह करते हैं ? —इसकी सूची दी जाती है। खेतों की, बागों की, वृक्षों की, दालों के खेतों की; लताओं की; धरती के अन्दर होनेवाली— कन्द-मूल आदि सभी वस्तुएँ इस तरह स्थान-स्थान से संग्रह करते हैं, जैसे भौंरे फूल-फूल से मधु संग्रह करते हैं। ५२

मुन्दुमुक् कनियि नाना मुदिरैयिन् मुळ्ळुत्त नॆय्यिल्
शॆन्दयिर्क् कण्डङ् गण्ड मिडैयिडै शॆऱिन्द शोऱ्ऱिल्
तन्दमि लिरुन्दु तामुम् विरुन्दोडुन् दमरि नोडुम्
अन्दणर् मुदलो रुण्डि यथिल्वुरु ममलैत् तॆङ्गुम् 53

ऍङ्कुम्–सर्वत्र; अन्तणर् मुतलोर्–ब्राह्मण आदि; तम् तम् इल् इरुन्तु–अपने अपने घरों में रहकर; मुन्तुम् मुक्कनियिन्–प्रथम (गणनीय कटहल, आम और केले के) फलों के साथ; नाना मुतिरैयिन्–नानाविध दालों के साथ; मुळ्ळुत्त नॆय्यिन्–भात को ढंकनेवाले (परिमाण में) घी के साथ; चॆम् तयिर् कण्टम्–लाल (पक्व) दही खण्डों के साथ; कण्टम्–खाण्ड; इटै इटै चॆऱिन्त चोऱ्ऱिन्–(इनके) बीच बीच में मिले हुए भात को; विरुन्तॊटुम्, तमरित्तोटुम्–अतिथियों और अपनों के साथ; तामुम् इरुन्तु–खुद रहकर (बैठे); अयिल्वुरुम्–खाते हैं-ऐसे; अमलैत्तु–संभ्रम का (है वह देश)। ५३

ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के लोगों के यहाँ भोजन की व्यवस्था बड़ी समृद्ध है। कटहल, आम और केले के, प्रधान रूप से मान्य, फलों को खाया जाता है। नाना विध दालें, और भात ऐसा कि उसके साथ प्रचुर परिणाम में घी, श्रेष्ठ दही, खाण्ड आदि मिले हुए हैं। वे लोग अकेले नहीं

खाते; सब बन्धु-बान्धवों और अतिथियों के साथ बैठकर जीमते हैं। उस कोशल देश में इस बात की बड़ी धूम है। ५३

मुऱैयरिन् दवावै नीक्कि मुनिवुळि मुनिन्दु वॅ.ःहुम्
इऱैयरिन् दुयिर्क्कु नल्हु मिशैकॅळु वेन्दन् काक्कप्
पॊऱैतविर्न् दुयिर्क्कुन् दॅय्वप् पूदल मदनिर् पॊन्निन्
निऱैपरञ् चॊरिन्दु वंग नॅडुमुदु हाऱ्ऱु नॅय्दल् 54

मुऱै अरिन्तु–नीति-रीति अच्छी तरह जान-समझकर; अवावै नीक्कि–इच्छाओं को दूरकर; मुनि उळि मुनिन्तु–कोप करने के (उचित) स्थान पर कोप दिखाकर; वॅ.ःकुम् इऱै अरिन्तु–स्वयं चाह के साथ प्रजा दे दे-वह कर (का परिमाण) जानकर (वसूली कर); उयिर्क्कु नल्कुम्–प्रजा का पालन करनेवाले; इचै कॅळु–यशस्वी; वेन्तन्–राजा (दशरथ) के; काक्क–शासन करते; पॊऱै तविर्न्तु–भार-निवृत्त हो; उयिर्क्कुम्–आश्वास की साँसें छोड़नेवाले (जहाँ हैं) उस; तॅय्वम् पूतलम् अतनिल्–दिव्य भूभाग में (कोशल देश में); नॅय्तल्–समुद्र तट पर; वङ्कम्–नावें; निऱै परम् चॊरिन्तु–अपना भरा भार उतरवाकर; नॅटु मुतुकु–बड़े पीठ के दर्द को; आऱ्ऱुम्–दूर कर रही हैं। ५४

राजा दशरथ श्रेष्ठ प्रजा-पालक थे; वे मनु-नीति से खूब अवगत थे। कामना-हीन (स्वार्थ-हीन) थे। आवश्यक होता था तभी दण्ड देते थे; कर का परिमाण ऐसा रखा कि प्रजा स्वयं अपनी इच्छा से दे देती थी; और प्रजा की रक्षा खूब करते थे। इसलिए उस दिव्य देश में सभी निश्चिन्तता की साँसें लेते थे; यहाँ तक नावें भी अपने भार उतारने के बाद अपनी पीठें ऊपर कर पड़ी रहती थीं, मानों आराम कर रही हों। (यहाँ प्रथा है कि नावें औंधी छोड़ी जाती हैं, जब मल्लाह घर में रहते हैं)। ५४

परुव मङ्गयर् पंगय वाण्मुहत्, तुरुव वुणगणै यॊण्पॆडै यामॆन्नक्
करुदि यन्बॊडु कामुऱ्ऱु वैहलुम्, मरुद वेलियिन् वैहिन्न वण्डरो 55

मरुतम् वेलियिन्–खेतों और बागों के भूभाग में; वण्टु–भौंरे; परुव मङ्कैयर्–सयानी हुई स्त्रियों के; पङ्कयम् वाण् मुकत्तु–पंकज-सम कांतियुक्त मुख की; उरुवम् उण् कण्णै–सुन्दर काजल-लगी आँखों को; पॆटैयाम् ॲन्न करुति–अपनी भौंरियाँ समझ कर; अन्पॊटु कामुऱ्ऱु–प्रेम के साथ आसक्त होकर; वैकलुम् वैकिन–हमेशा ठहर गये। अरो–पूरक ध्वनि। ५५

खेतों और बागों वाले प्रदेश में भौंरे हमेशा के लिए ठहर गये इसलिए कि स्त्रियों के मुखों को उन्होंने कमल समझ लिया और काजल-लगी आँखों को भौंरियाँ। बस, उनके पास रहना चाहते हुए वहीं सदा के लिए बस गये। ५५

वेळै वॆन्ऱ विळिच्चियर् वॆम्मुलै, आळै निन्ऱु मुनिन्दिडु मङ्गॊर्बाल्
पाळै तन्द मदुप्परु हिप्परु, वाळै निन्ऱु मदर्क्कु मरुङ्गॆलाम् 56

अङ्कु–उस भाग के; ऑरु पाल्–एक ओर; वेळै–कामदेव को; वॆन्ऱ विऴिच्चियर्–जीतनेवाली आँखों की स्त्रियों के; वॆम् मुलै–मन को अधीर करनेवाले स्तन; निन्ऱु–(अपने स्थान पर तन कर) खड़े होकर; आळै मुनिन्दिटुम्–कार्य-रत मनुष्य को डांटते हैं (अपने वश में कर लेते हैं); मरुङ्कु अॅलाम्–आस-पास सब जगह; परु वाळै–मोटे "वाळै" नाम के मीन; पाळै तन्त मतु–(ताड़ आदि के) कटे डंठलों के दिये रस को पीकर; निन्ऱु मतर्क्कुम्–अकड़कर मस्ती के साथ चलते-फिरते हैं। ५६

उस कृपि-योग्य प्रदेश में तरुण स्त्रियों की आँखें इतनी आकर्षक हैं कि जिस पुरुष पर मन्मथ का कुछ वश नहीं चल सकता वहाँ उनकी आँखें उसे आकृष्ट कर लेती हैं और रहा सहा काम उनके मनोरम स्तन (गुस्सा दिखा) कर लेते हैं और उन कठिन स्तनों के सामने आदमी झुक ही जाता है। आदमी को झुका देना या उसे अपने वश में कर लेना —यह भाव जताने के लिए स्तन गुस्सा दिखाते हैं या डाँटते हैं, ऐसा कहना कुछ विचित्र पर मन रमानेवाली कल्पना है। और पीन मीन नारियल के डंठलों से झरनेवाले रस को पीकर अकड़ जाते हैं। ५६

* ईर नीर्पडिन् दिन्निलत् तेशिल, कार्क ळॅन्न वरुङ्गरु मॅदिहळ्
ऊरि निन्ऱहन् ऱुळ्ळिड वुण्मुलै, तारै कॊळ्ळत् तळैप्पन शालिये 57

ईरम् नीर् पटिन्तु–ठंडे जल में पैठी रहकर; इ निलत्तुते–इस भूमि पर; चिल कार्कळ् अॅन्न वरुम्–कुछ मेघों के समान आनेवाली; करु मेतिकळ्–काली भैंसें; ऊरिल् नित्ऱ कन्ऱु उळ्ळिट–बस्ती में जो रह गये (उन) बछड़ों का स्मरण करने से; उण् मुलै तारै कॊळ्ळ–उन बछड़ों के पेय थन के दूध के भर कर बाहर निकल बहने से; चालि तळैप्पन–धान के पौधे पनपते हैं। ५७

ठंढे पानी में पैठी रहने के बाद भैंसें चली आती हैं— वे मानों काले मेघ हैं। वे जब अपने बछड़ों की याद करती हैं तब वे बोलने लगती हैं मानों उन्हें पुकार रही हों या उन्हें कुछ सुना रही हों। तब उनके थन से दूध स्वयं बहने लगता है और उस दूध की धारा खेतों में जाती है जहाँ धान के पौधे इससे पुष्ट हो जाते है। ५७

मुट्टि लट्टिन् मुळङ्गुऱ वाक्किय, नॅट्टु लैक्कळु नीर्नॅडु नीत्तन्दान्
पट्ट मॅन्गमु कोङ्गु पडप्पपोय्, नट्ट शॅन्नॅलि नाऱु वळर्क्कुमे 58

मुट्टु इल् अट्टिन्–सु संपन्न पाकशालाओं में; मुळङ्कु उऱ–संभ्रम के साथ; आक्किय–पके; नॅटु उलै–विपुल पाक-कार्य के लिये; कळु नीर्–चावल जिससे धोये गये उस जल का; नॅटु नीत्तम्–बड़ा प्रवाह; पट्टम् मॅल् कमुकु–उचित पर्व में उगाये गये कोमल सुपारी के छोटे वृक्ष; ओङ्कु पटप्पै पोय्–जहाँ बढ़ते हैं उस विस्तृत बाग से होकर; नट्ट–रोपे गये; चॅन् नॅलिन्–लाल धान के; नाऱु–बेढ़ों को; वळर्क्कुम्–बढ़ाता है। ५८

कोशल देश के घर समृद्ध हैं और लोग अतिथि-सत्कार में उत्साह रखते हैं। इसलिए उनकी पाक-शालायें हमेशा क्रिया-शील हैं। चावल

इतने पकते हैं कि पकाने से पहले जो जिस जल से इनको धोया जाता है वह जल नदी के समान बह चलता है; और क्रमुक-वन से होकर खेतों में वहता है और मेढों को बढ़ाता है। ५८

शूट्टु-डैत्तलैत् तूनिऱ वारणम्, ताट्टु णैक्कुडै यत्तहै शाल्मणि
मेट्टि मैप्पन मिन्मिनि यामॅनक्, कूट्टि लुय्क्कुङ् गुरुविक् कुळामरो 59

चूट्टु उटै तलै–कलगीवाले सिर; तू निऱ वारणम्–शुद्ध (सफेद) रंग के मुर्गे; ताळ् तुणै कुटै–चरणद्वय से (कड़े) कुरेदते (तब बाहर निकलते); अ तकै चाल् मणि–वे श्रेष्ठ रत्न; मेटु इमैप्पन–(कूड़ों के) ढेरों पर चमकते हैं (उनको); मिन् मिनि आम् ॲन–जुगनू हैं-समझकर; कुरुवि कुळाम्–चिड़ियों के दल; कूट्टिल् उय्क्कुम्–घोंसलों में पहुँचाते हैं। (अरो)। ५९

सफ़ेद रंग के और लाल कलगी वाले मुर्गे अपने पैर के नखों से घूर कुरेदते हैं तो उससे रत्न निकलते हैं। उन चमकदार रत्नों को चिड़ियाँ देखती हैं और अपने घोंसलों में, अपने बच्चों के मनोरंजनार्थ या खाने के लिए, उन रत्नों को उठा ले जाकर, रख लेती हैं। ५९

※ तोयुम् वॅण्डयिर् मत्तोलि तुळ्ळल्पोय्, माय वॅळ्वळै वाय्विट् टरऱ्ऱवुम्
तेयु नुण्णिडै शॅन्रु वणङ्गवुम्, आयर् मङ्गय रङ्गै वरुन्दुवार् 60

तोयुम् वॅण् तयिर्–(गाढ़ा) जमा सफ़ेद दही; मत्तु ऑलि तुळ्ळल्–(मथने की) मथानी का रह-रहकर उठता नाद; माय–छिपाते हुए; वॅळ् वळै–सफ़ेद (शंख-)कंकण; वाय् विट्टु अरऱ्ऱ उम्–मुख खोलकर चिल्लाते हैं, और; तेयुम् नुण् इटै–क्षीण होती (पतली) कमरें; चॅन्रु वणङ्कवुम्–आगे बढ़कर झुक (लचक) जाती हैं, ऐसा; आयर् मङ्कैयर्–अहीर स्त्रियाँ; अम् कै वरुन्तुवार्–सुन्दर हाथों से सायास (मथती) हैं। ६०

अहीर-रमणियाँ दही मथती हैं; तब उनके हाथों के शंख के बने सफ़ेद कंकण बोल उठते हैं। वह ध्वनि मथनी की ध्वनि को अपने में लीन कर लेती है। कंकणों का बोलना ऐसा लगता है मानों वे इन स्त्रियों की कमरों का झुकना और हाथों का दुखना देख, उनकी सहानुभूति में रोती-बिलखती हों। ६०

कुऱ्र पाहु कॉळिप्पन कोणॅरि, कऱ्रि लाद करुङ्ग णुळैच्चियर्
मुऱ्रि लार मुहन्दुत मुन्ऱिलिल्, शिऱ्रिल् कोलिच् चिदऱिय मुत्तमे 61

कोळ् नॅरि–बुरा आचरण; कऱ्रिलात–जो नहीं जानतीं; करु कण्–काली आँखोंवाली; नुळैच्चियर्–धीवर स्त्रियाँ (वालायें); मुऱ्रिल् आर–सूप भर कर; मुकन्तु–लेकर; तम् मुन्ऱिलिल्–अपने आंगनों में; चिऱ्रिल् कोलि–घरौंदे बनाते (वक्त); चितऱिय–(जो) विखर जाते हैं; कुऱ्र पाकु कॉळिप्पन–छिलके निकाले गये सुपारी-फलों से पछोरे जानेवाले हैं। ६१

चालाकी से दूर (गुण से सुन्दर) और काली आँखों वाली (रूप में भी सुन्दर) धीवर-बालायें अपने घरौंदे मोतियों के बनाती हैं, जिन्हें वे सूपों

में भर लाती हैं; और वे फिर उन्हें फेंक देती हैं। यह समुद्र-तट के प्रदेश की बात है। ये ही मोती नीचे जंगल-प्रदेश में पहुँच जाते हैं। वहाँ उनका मूल्य क्या है ? सुपारी के फलों के साथ ये मिल जाते हैं और वहाँ की स्त्रियाँ उन्हें पछोर देती हैं। ८१

तुरुवै मॆन्पिणै यीन्ऱ तुळक्किला, वरिम रुप्पिणै वन्ऱलै येऱ्ऱैवान्
उरुमि-डित्तॆनत् ताक्कुरु मॊल्लॊलि, वॆरुवि माल्वरैच् चून्मळै मिन्नुमे 62

मॆन् तुरुवै पिणै–मृदु स्वभाव की भेड़ों के; ईन्ऱ–जनाये; तुळक्कु इला–निडर; वरि मरुप्पु इणै–धारी-दार सींगों के जोड़े; वल् तलै–(जिन पर हैं उन) बलवान सिरों के; एऱ्ऱै–भेड़े; वान् उरुम् इटित्ततु ऎन–आकाश में वज्र ने घोष किया-ऐसा; ताक्कु उरुम्–भिड़ते हैं वह; ऑल ऑलि–उच्च नाद; वॆरुवि–डरकर; माल् वरै–बड़े पर्वत (पर के); चूल् मळै–(जल-) गर्भित मेघ; मिन्नुम्–चमकते हैं। ६२

जंगल-प्रदेश के आगे खेतों का प्रदेश है। वहाँ भेड़े आपस में भिड़ते हैं। वे निडर हैं, उनके सींग और सिर कठोर हैं। वे जब टकराते हैं तब वज्र-ध्वनि-सी ध्वनि निकलती है। इस ध्वनि के कारण पर्वतों पर रहनेवाले मेघ डरते हैं। और तब बिजली जो चमक जाती है, वह ऐसा लगता है मानो मेघ ने डर से अपना मुख खोला हो। ६२

तिनैच्चि लम्बुव तीञ्जॊ लिळङ्गिळि, ननैच्चि लम्बुव नाहिळ वण्डुपूम्
पुनैच्चि लम्बुव पुळ्ळिनम् वळ्ळियोर्, मनैच्चि लम्बुव मङ्गल वळ्ळये 63

तिनै चिलम्पुव–कोदों के बागों में बोलते हैं; तीम् चॊल्–मधुर बोलीवाले; इळम् किळि–बाल तोते; ननै चिलम्पुव–कलियों पर (बैठ) स्वर देते हैं; नाकु इळ वण्टु–बहुत छोटे भौंरे; पू पुनै–फूलों सहित जलाशयों में; चिलम्पुव पुळ् इनम्–बोलते हैं पक्षी समूह; वळ्ळियोर् मनै चिलम्पुव–उदार दाताओं के घरों में स्वरित होते हैं; मङ्कलम् वळ्ळै–मंगल सूचक विशिष्ट गाने (मूसल-गीत) जो धान कूटते वक्त गृहस्वामी की प्रशंसा में गाये जाते हैं। ६३

कोदों के बागों से तोतों का स्वर, कलियों से भौंरों का स्वर, फूलों सहित रहनेवाले जलाशयों से चिड़ियों का स्वर, दाता गृहस्थों के घरों से धान कूटते वक्त के विशिष्ट गीतों का स्वर— सब अपने-अपने स्थान की समृद्धि सूचित करते हैं। ६३

कन्ऱु डॆप्पिडि नीक्किक् कळिऱ्ऱिनम्, वन्ऱॊ डर्प्पडुक् कुम्वन वारिशूळ्
कुन्ऱु डॆक्कुल मळ्ळर् कुळूउक्कुरल्, इन्ऱु णैक्कळि यन्न मिरिक्कुमे 64

कन्ऱु उटै पिटि–कलभों सहित (रहनेवाली) हथिनियों को; नीक्कि–अलग कर के; कळिऱु इनम्–हाथियों के समूहों को; वल् तॊटर् पटुक्कुम् वनम्–कठोर बंधन के अंदर (जहाँ) लाया जाता है उस वन में; वारि चूळ्–गड्ढों से घिरे; कुन्ऱु उटै–पर्वत-वासी; कुलम् मळ्ळर्–व्याध-वीरों का; कुळु कुरल्–उठाया गया शोर; इन् तुणै कळि

अन्नम्–(नीचे के जंगल-प्रदेश में) अपनी प्रिय हंसिनी के साथ आनंदित रहनेवाले हंसों को; इरिक्कुम्–अलग कर भगा देता। ६४

पर्वत-प्रदेश की सीमाओं में व्याध लोग हाथी पकड़ते हैं। पहले वे हाथी को, उसकी हथिनियों और कलभों से अलग करते हैं। फिर उसे उन गड्ढों की ओर भगाते हैं, जो यहाँ-वहाँ बनाये गये हैं। तब वे बहुत शोर मचाते हैं। यह शोर नीचे जंगल-प्रदेश में आता है, जिसे सुनकर हंस डर जाते हैं और अपनी संगिनी हंसिनी को, जिसके साथ वह केलि में मग्न था, छोड़कर भाग जाता है। ६४

**वळ्ळि कॉळ्बवर् कॉळ्वन मामणि, तुळ्ळि कॉळ्वन तूङ्गिय माङ्गनि
पुळ्ळि कॉळ्वन पॊन्विरि पुन्नैहळ्, पळ्ळि कॉळ्वन पङ्गयत् तन्नमे 65**

वळ्ळि–शकरकन्द; कॉळ्पवर्–लेने (के लिए खोदने) वाले; कॉळ्वन–जो (साथ साथ) प्राप्त करते हैं; मा मणि–श्रेष्ठ मणियाँ; तुळ्ळि–कछुए; कॉळ्वन–जो प्राप्त करते हैं; तूङ्किय माङ्कनि–(नीचे) लटकनेवाले आम के फल; पुळ्ळि कॉळ्वन–गोल आकार वाले; पॊन् विरि–स्वर्ण-रंग (मकरंद) के साथ छिटके; पुन्नैकळ्–(फूलवाले) "पुन्नै" नाम के वृक्षों में; पळ्ळि कॉळ्वन–शयन करनेवाले हैं; पङ्कयत्तु अन्नम्–कमल पर सोने के आदी हंस। ६५

लोग कन्द-मूल के लिए खोदते हैं, तो उन्हें साथ-साथ रत्न भी मिल जाते हैं। आम की डालियाँ इतनी झुकी हुई हैं कि कछुए भी आम के फल पा लेते हैं। समुद्र-तटीय प्रदेश के विशेष तरु हैं— "पुन्नै"। उनके फूल गोल-गोल होते हैं और स्वर्ण रंग के केसर। उन पर आकर हंस, जो कमल पर सोने के आदी हैं, सो जाते हैं। (इसमें पर्वत, जंगल, समुद्र-तट) —तीनों प्रदेशों का मिश्रित वर्णन है। ६५

**कॊन्ऱै यङ्गुळल् कोवलर् मुन्ऱिलिल्, कन्ऱु रप्पुङ् गुरवै कडैशियर्
पुन्र लैप्पुनङ् गाप्पिडै पोदरच्, चॆन्ऱि शैक्कु नुळैच्चियर शॆव्वऴि 66**

कटैचियर् कुरवै–कृषक स्त्रियों के 'कुरवै' नाम के नाच के गीत; कॊन्ऱै अम् कुळल्–अमलतास के फलों के बने, वंशी के समान के वाद्य बजानेवाले; कोवलर् मुन्ऱिलिल् कन्ऱु–ग्वालों के आँगनों में (बँधे) बछड़ों को; उरप्पुम्–डराते हैं; नुळैच्चियर्–धीवर स्त्रियों के; चेव्वऴि–संध्या गीत; पुन् तलै पुनम् काप्पु–कम हरे बागों की रखवाली के काम में; इटै पोतर–बाधा डालते हुए; चॆन्ऱु इचैक्कुम्–जा सुनाई देते हैं। ६६

कृषक स्त्रियाँ नाचती-गाती हैं। उनके गाने के स्वर खेतों के प्रदेश के ग्वालों के आँगन में पड़े रहनेवाले बछड़ों को डराते हैं और उकसाते हैं। ये ग्वाल अमलतास के फलों की नली से बाँसुरी जैसा बाजा बना लेते हैं और बजाते हैं। उधर समुद्र-तटीय प्रदेश की धीवर-तरुणियाँ संध्या-गीत गाती

हैं और वह स्वर कोदों के बागों की रखवाली करनेवालों का ध्यान आकृष्ट कर लेता है और उनके काम में बाधा पड़ जाती है। ६६

शेम्बु कालिरुच् चॅड्गळु नीर्क्कुळत्, तूम्बु कालच् चुरिवळै मेय्वन
काम्बु काल्पॉरक् कण्णहन् मालवरैप्, पाम्बु नान्रॅनप् पाय्पशुन् देरले 67

कण् अकल् माल् वरै—विशाल काले पर्वत पर; काम्पु काल् पॉर—वंशी-वृक्षों के हवा के झोंकों के कारण, टकराने से; पाम्पु नान्रतु अॅन—साँप लटकता हो ऐसा; पाय् पचुमै तेरल—बहनेवाले ताजे शहद को; चॅङ्कळु नीर् कुळम् तूम्पु—लाल कमल वाले तालाब की (पानी भरने के लिये बनी) नाली का मुहाना; चेम्पु काल् इरु—जंगली अरवी के तनों को तुड़ाते हुए; काल—निकाल देता है, तब; चुरि वळै—आवर्तवाले शंख; मेय्वन—पीते ह। ६७

नीले पर्वतों पर हवा खूब बहती है और बाँस के पेड़ हिलकर मधु के छत्तों को बेध देते हैं। तब मधु की धारा गिरने लगती है, जिसे देखने पर लगता है कि साँप लटक रहा है। वह मधु बहता आता है। वह प्रवाह नालियों द्वारा इतने जोर से कमल-तालाबों में बहता है कि बीच में रहने-वाले अरवीनुमा पौधों के तने टूट जाते हैं। उस मधु को वहाँ, तालाब के पास रहनेवाले शंख पी लेते हैं। ६७

❀ **पॅरुन्द डङ्गट् पिरैनुद लार्क्कॅलाम्, पॉरुन्दु शॅल्वमुड् गल्वियुम् बूत्तलाल्**
वरुन्दि वन्दवर्क् कीदलुम् वैहलुम्, विरुन्दु मन्रि विळैवन यावये 68

पॅरु तट कण्—विशाल और आयत आँखें; पिरै नुतलार्क्कु—(बाल) चंद्र सम भाल वालियों को; अॅल्लाम्—सब को; पॉरुन्तु चॅल्वमुम्—स्थायी संपत्ति और; कल्वियुम्—शिक्षा; पूत्तलाल्—खूब प्राप्त रहने से; वैकलुम्—दिनों दिन; वरुन्ति वन्तवर्क्कु—आयास के साथ आये हुओं को; ईतलुम्—दान देना; विरुन्तुम्—अतिथि (सत्कार); अन्रि—इनके सिवा; विळैवन—(उनके) चाहे; यावै ?—(विषय) क्या हैं ? ६८

कोशल देश की स्त्रियाँ, जो सुन्दर विशाल आँखों वाली और अर्द्ध-चन्द्र सम भाल वाली हैं, अचल धनी भी हैं और शिक्षित भी। अतः वे दीन-हीन आगतों को उनकी चाही वस्तुएँ देना और अतिथियों का भोजन करवाना —इनके सिवा कुछ नहीं चाहतीं। ६८

पिरैमु हत्तलैप् पॅट्पि निरुम्बुपोळ्, कुरैक रित्तिरळ् कुप्पैप् परुप्पोडु
निरैवॅण् मुत्ति निरत्तरि शिक्कुवै, उरैव कॉट्टिन वूट्टिडन् दोरुमे 69

ऊट्टु इटम् तोरुम्—अन्न-सत्रों में; पिरै मुकम् तलै—अर्द्धचन्द्र के समान धार वाले; पॅट्पिन् इरुम्पु—(अच्छा रहने के कारण) प्रिय, तरकारी काटनेवाले लोहे के उपकरणों से; पोळ् कुरै—काटकर टुकड़े बनाये गये; करि तिरळ्—तरकारियों के ढेर; कुप्पै परुप्पोटु—ढेरों दालों के साथ; निरै वॅण् मुत्तिन् निरत्तु—खूब सफ़ेद मोती के-से रंग के; अरिचि कुवै—चावलों के ढेर; कॉट्टिन उरैव—उँड़ेल कर पड़े हैं। ६९

उस देश के अन्न-सत्रों में जाकर देखिये। वहाँ पकाने के लिए, लोहे के उपकरण (पीठिका पर स्थिर खड़ी की गई दराँती) तरकारियाँ काटकर जो टुकड़े बने हैं, वे ढेरों हैं; वैसे ही दालों के ढेर और श्वेत मोती के रंग के श्रेष्ठ चावलों के ढेर अपार रूप से लगे मिलते हैं। ६९

*कलञ्जु रक्कु निदियङ् गणक्किला, निलञ्जु रक्कु निरैवळ नन्मणि
पिलञ्जु रक्कुम् पॆऱ्ऱदऱ् करियदम्, कुलञ्जु रक्कु मॊऴुक्कङ् गुडिक्कॆलाम् 70

कुटिक्कु–प्रजा-जनों को; ॲल्लाम्–सब (को); कलम्–पोत (या नावें); कणक्कु इला–गणना-हीन यानी अत्यधिक; नितियम् चुरक्कुम्–निधियाँ दिलाती है; निलम्–ज़मीन; निरै वळम् चुरक्कुम्–अधिक (धानों की) समृद्धि दिलाती है; पिलम्–खानें; नल् मणि चुरक्कुम्–अच्छे रत्न दिलाती है; तम् कुलम्–उन उन के कुल; पॆऱुतऱ्कु अरिय–पाने में कठिन या दुष्प्राप्य; ऒऴुक्कम् चुरक्कुम्–सदाचरण (सिखा) देंगे। ७०

कोशल देश-वासियों को नावों द्वारा विविध सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं; ज़मीन से धान प्रचुर परिमाण में मिल जाते हैं; खानों से रत्न आदि मिल जाते हैं। अपने-अपने कुलों द्वारा सदाचरण की शिक्षा मिल जाती है। ७०

कूऱ्ऱ मिल्लयोर कुऱ्ऱमि लामयाल्, शीऱ्ऱ मिल्लैतञ् जिन्दयिन् शॆम्मयाल्
आऱ्ऱ नल्लऱ मल्लदि लामयाल्, एऱ्ऱ मल्ल दिऴितह विल्लये 71

ओर् कुऱ्ऱम् इलामैयाल्–(देशवासियों के पास) कोई दोष (अपराध) नहीं है, अतः; कूऱ्ऱम् इल्लै–अकाल-मृत्यु (की चिंता) नहीं रहती; तम् चिन्तैयिन् चॆम्मैयाल्–अपने अपने मन की नेकी के कारण; चीऱ्ऱम् इल्लै–क्रोध (प्रदर्शन का मौका) नहीं होता; आऱ्ऱल्–पालन (उनका); नल्लऱम् अल्लतु–सद्धर्मेतर का; इलामैयाल्–नहीं है अतः; एऱ्ऱम् अल्लतु–उन्नति के सिवा; इऴितकवु–अवनति; इल्लै–नहीं। (ए–पद्यांत में आनेवाली पूरक ध्वनि।) ७१

उस देश में कोई दुष्कृत्य नहीं करता; इसलिए अकाल मृत्यु का डर नहीं है। सभी अच्छे स्वभाव वाले हैं; अतः क्रोध के लिए स्थान नहीं रहता। सद्धर्म ही करते रहते हैं सब; अतः उन्नति ही होती है; अवनति की बात नहीं होती। कवि का चमत्कार है कि भावों (प्राप्त वस्तुओं) की बात कहने के बाद अभावों की भी सूची देता है। इन अभावों से श्रेय ही होता है, न कि हानि या दुख। ७१

नॆऱिक डन्दु परन्दन नीत्तमे, कुऱिय ऴिन्दन कुङ्कुमत् तोऴहळे
शिऱिय मङ्गैयर् तेयु मरुङ्गुले, वॆऱिय वुम्मवर मॆन्मलर्क् कून्दले 72

नॆऱि कटन्तु–मार्ग (सीमा) लाँघकर; परन्तन–फैल चले; वॆळ्ळमे–प्रवाह ही; कुऱि अऴिन्तन–चिह्न मिटे; कुङ्कुमम् तोळ्कळे–(स्त्रियों की) कुंकुम के चित्र

आदि से चित्रित भुजाओं के ही; चिऱिय–अल्प या छोटे; मङ्कैयर् तेयुम् मरुङ्कुले–स्त्रियों की (उत्तरोत्तर) क्षीण होती (सी लगनेवाली) कमर ही; वेॅऱियवुम्–सुगंधित या नशाग्रस्त हैं; अवर् मलर् मेॅन् कून्तले–उनके पुष्पालंकृत कोमल केश ही। ७२

देखिए, उस देश में सीमा का या मार्ग का उल्लंघन होता था तो प्रवाह वह काम करते थे, न कि मनुष्य। स्त्रियों के अंगों पर कुंकुम के लेप से चित्रकारी बनती है। धान के ढेरों पर पहचान के लिए निशान लगाये जाते हैं। चित्रकारी का निशान मिट जाता है, प्रेमियों के आलिंगन से; और धान वाले वे निशान नहीं मिटते, अपहारी के न होने के कारण। अल्प या क्षीण वहाँ और कोई चीजें नहीं थीं सिवाय स्त्रियों की कटियों के। गन्धयुक्त था स्त्रियों का केश ही! गन्धयुक्त के तमिऴ शब्द का श्लेष-अर्थ है नशाबाज या विक्षिप्त। अतः वहाँ नशाबाज या विक्षिप्त कोई दूसरा नहीं था। ७२

अहिलि डुम्बुहै यट्टिलि डुम्बुहै, नहलि नालै नरुम्बुहै नान्मरै
पुहलुम् वेॅळ्वियिऱ् पूम्बुहै योडळाय्, मुहिलिन् विम्मि मुयङ्गिन वेॅङ्गणुम् 73

इटुम् अकिल् पुकै–प्रज्वलित अगरु का धुआं; अट्टिल् इटुम् पुकै–रसोई-घरों में उठनेवाला धुआँ; नकल् इन् आलै नऱु पुकै–विशिष्ठ दिखनेवाले मधुर (गुड़ बनाने वाले) स्थानों में उठनेवाला धुआँ, और; नान्कु मऱै पुकलुम्–चार वेदों में विहित; वेॅळ्वियिल् पू पुकैयॊटु–यज्ञों में उठनेवाले पवित्र धुएँ के साथ; अळाय्–मिलकर; मुकिलिन् ॲङ्कणुम् विम्मि–मेघों के समान सब जगह फैलकर; मुयङ्कित–व्याप्त हुए। ७३

उस देश में घरों में पूजा के समय पर, या स्त्रियों के केशों को सुखाकर सुगन्धित करने के लिए अगरु का धुआँ लगाया जाता था। रसोईघरों से चूल्हों का धुआँ उठता था। गुड़ जहाँ बनाया जा रहा था वहाँ भट्ठियों से धूम्र उठता था। वेदविहित यज्ञ जहाँ हो रहे थे वहाँ होम-कुण्डों से धूम्र आ रहा था। सब धुआँ मिलकर मेघों के समान उठकर आकाश भर में व्याप्त हो गया। ७३

इयल्बुडै पॅयर्वन मयिल्मणि यिळैयिन्
वेॅयिलपुडै पॅयर्वन मिळिर्मुलै कुळलिन्
पुयल्पुडै पॅयर्वन पॊळिलवर् विळियिन्
कयल्पुडै पॅयर्वन कडिकमळ् कळनि 74

अवर्–उन (उस देश की स्त्रियों) की; इयल–छटा (के सामने); पुटै पॅयर्वन–हारकर एक ओर हटनेवाले; मयिल्–मोर; मिळिर् मुलै–सुन्दर दिखनेवाले स्तन (स्तनों पर के); मणि इळै–रत्नाभरण (के सामने); वॆयिल् पुटै पॅयर्वन–धूप हारकर एक ओर हट जाती है; कुळलिन्–केश के सामने; पुयल्–मेघ; पॊळिल् पुटै पॅयर्वन–बागों में (हार मानकर) जा छिपते हैं; अवर् विळियिन्–उनकी आँखों के

सामने; कयल्—मछलियाँ; कटि कमऴ् कऴनि–सुगंध बिखेरनेवाले खेतों में; पुटै पॅयर्वन–छिप जाती हैं। ७४

कोशल देश की स्त्रियों की शरीर-छवि के सामने मोर की छवि टिक नहीं पाती। उनके स्तनों पर आरूढ़ रत्नाभरणों के सामने (अचलारूढ़) सूर्य की रश्मि हार मान लेती है। उनके काले घने केशों के सामने मेघ हार ही नहीं मानते बल्कि जाकर उपवनों में छिप जाते हैं। ठीक उसी तरह मछलियाँ उनकी आँखों से हारकर खेतों में जाकर छिप जाती हैं। ७४

इडैयिड़ महळिर्ह ळॅरिपुनन् मऱुहक्, कुडैपवर् तुवरिद ऴलर्वन कुमुदम्
मडैपॅय रन्नमवर् मडनडै पयिलुम्, कडैशियर् मुहमॅन मलर्वन कमलम् 75

इटै इऱ–कमर टूट जाय, ऐसा; ॲरि पुनल् मऱुक–तरंग फेंकते हुए पानी विलोड़ित हो ऐसा; कुटैपवर्–स्नान करनेवाली; कटैचियर् मकळिर्–कृषक-रमणियों के; तुवर् इतऴ्–लाल अधरों की तरह; अलर्वन–खिलते हैं; कुमुतम्–कुमुद; मटै पॅयर् अनम्–नालियों में संचार करनेवाले हंस; अवर् मट नटै पयिलुम्–उनकी मृदु चाल का अनुकरण और अभ्यास करते; मुकम् ॲन–मुखों के समान; मलर्वन–खिलनेवाले; कमलम्–कमल हैं। ७५

स्त्रियों के अन्य अंग भी सुन्दर हैं। नदी में वे कमर मटकाती, जल को विलोडती स्नान करती हैं। तब कुमुद उनके लाल अधर देखते हैं और उन्हीं की नकल में खिलते हैं। नालियों में संचार करनेवाले हंस उनसे चाल सीखते हैं। कमल उनके मुखों को देखकर खिलते हैं। ७५

विदियिनै नहुवन वयिल्विऴि पिडियिन्, गदियिनै नहुवन ववर्नडै कमलप्
पॉदियिनै नहुवन पुणर्मुलै कलैवान्, मदियिनै नहुवन वनिदयर वदनम् 76

वनितैयर्–(वहाँ की) स्त्रियों की; अयिल् विऴि–तीक्ष्ण आंखें; वितियिनै नकुवन–विधाता का परिहास करनेवाली हैं; अवर् नटै–उनकी चाल; पिटियिन् कतियिनै–हथिनी की चाल का; नकुवन–परिहास करनेवाली है; पुणर्मुलै–सटे रहनेवाले स्तन; कमलम् पॉतियिनै–कमल-कलियों का; नकुवन–परिहास करनेवाले हैं; वतनम्–उनके वदन; कलै वान् मतियिनै नकुवन–कलापूर्ण श्वेत (राका) चंद्र का परिहास करनेवाले होते हैं। ७६

और; उनकी तीक्ष्ण आँखें ऐसी कि वे ब्रह्मा का भी उपहास कर सकती हैं। क्योंकि वह उनके उपमान-योग्य और कोई वस्तु सृजित नहीं कर सकते। उनकी चाल हथिनी की चाल को, उनके स्तन कमल-कलियों को, और उनका वदन राका को उपहसित कर देते हैं। ७६

पहलिनॊ डिहलुव पडुर्मणि मडवार्, नहिलिनॊ डिहलुव नळिवळ रिळनीर्
तुहिलिनॊ डिहलुव शुदैपुरै नुरैकार्, मुहिलिनॊ डिहलुव कडिमण मुरशम् 77

पटर् मणि–विविध मणियाँ; पकलिनॊटु इकलुव–सूर्य से प्रतिद्वन्द्विता करती हैं; नळि वळर् इळ नीर्–खूब समृद्ध डाभ; मटवार नकिलिनॊट इकलुव–तरुणियों के

स्तनों से प्रतिद्वन्द्विता करते हैं। चुतै पुरै नुरै–अमृत-सम जल पर उठनेवाले फेन; तुकिलिन्नोंटु इकलुव–उन स्त्रियों के वस्त्रों से प्रतियोगिता करते हैं। कटि मण मुरचङ्कळ–श्रेष्ठ (और) विवाह के समय बजनेवाले ढोल; कार् मुकिलिन्नोटु इकलुव–जल गर्भित मेघों से प्रतियोगिता करते हैं। ७७

(वर्णन में तुलना का बड़ा मूल्य रहता है। तुलना के प्रकार भी अनेक हैं। यहाँ दो वस्तुओं में प्रतियोगिता दिखायी जाती है और प्रस्तुत वस्तुएँ उस देश के वर्णन में शोभा की वृद्धि करनेवाली हैं।) उस देश के लोगों के आभूषणों में जड़े रत्नों (की कांति) और सूर्य (की ज्योति) में; पुष्ट डाभों और रमणियों के स्तनों में; अमृत सदृश जल के झाग और लोगों के वस्त्रों में; विवाह के अवसर में बजनेवाले मृदंग या ढोल और मेघों में प्रतियोगिता है। ७७

कारॊडु निहर्वन कटिपॊळिल् कळनिप्, पोरॊडु निहर्वन पॊलन्वरै यणैशूळ्
नीरॊडु निहर्वन निरैकड लिदिशाल्, ऊरॊडु निहर्वन विमैयव रूलहम् 78

कार्–मेघ; कटि पॊळिलॊटु निकर्वन–(उस देश के) उपवनों के समान हैं; पॊलन् वरै–स्वर्णमय (पर्वत) शिखर; कळनि पोर् ऑटु–खेतों के पास लगी खरहियों के साथ; निकर्वन–तुलना करते हैं। निरै कटल्–(जल) भरा समुद्र; अणै चूळ् नीरॊटु निकर्वन–बांध से बंधकर पड़े जल-विस्तार के साथ तुलना करता है; इमैयवर् उलकम्–देवों के लोक; निति चाल् ऊरॊटु–निधियों से पूर्ण बस्तियों की; निकर्वन–समता कर सकते हैं। ७८

(इस पद्य में समानता बतायी जाती है।) मेघों और घने अन्धकार-पूर्ण उपवनों में; स्वर्ण (पीले) रंग के पर्वत शिखरों और खेतों के पास लगी खरहियों या ढेरों में; समुद्र और बाँध के जल-विस्तार में; देव-लोक और समृद्ध नगरों या गाँवों में समानता पायी जाती है। ७८

नॆन्मलै यल्लन निरैवरु तरळम्, शॊन्मलै यल्लन तॊडुकड लमिर्दम्
नन्मलै यल्लन नदितरु निदियम्, पॊन्मलै यल्लन मणिपडु पुळिनम् 79

नॆल् मलै अल्लन–धानों के पर्वत (सम ढेर) नहीं हैं यदि; निरै वरु तरळम्–पंक्तियों में लगे मोतियों के ढेर; चॊल् मलै अल्लन–वाणी-गिरियाँ (शब्द-समूह) जो नहीं हैं वे; तॊटु कटल् अमिर्तम्–गहरे (क्षीर-) सागर का अमृत है; नल् मलै अल्लन–अच्छे पर्वत (जो) नहीं हैं वे; नति तरु नितियम्–नदियों से लायी गयी निधियाँ हैं; पॊन् मलै अल्लन–स्वर्ण-गिरियाँ जो नहीं हैं वे; मणि पटु पुळितम्–मणियों से मिश्रित बालू के ढेर हैं। ७९

वहाँ ढेर जो लगे हैं वे या तो धान के अम्बार हैं; या वे नहीं हैं तो मोतियों के ढेर हैं। वैसे ही रमणियों की मधुर बोली नहीं है; वह अमृत है। मामूली पर्वत यदि नहीं हैं, तो वे, समझिये, नदियों द्वारा लायी गयी निधियों के ढेर हैं; अगर ये ढेर नहीं है तो वे विविधि रत्नों से मिश्रित बालू के ढेर हैं। ७९

पन्दिऩै यिळैयवर् पयिलिड मयिलूर्, कन्दऩै यऩैयवर् कलैतॆरि कळहम्
शन्दऩ वऩमल शण्पक वऩमाम्, नन्दऩ वऩमल नऱैविरि पुऱवम् 80

इळैयवर् पन्तिऩै पयिल् इटम्–कन्याओं के गेंद खेलनेवाले स्थान; चन्तऩ वऩम् अल–चंदन-वन नहीं; चण्पक वऩम्–चंपा के वन (बन जाते) हैं; मयिल् ऊर्–मयूर-वाहन; कन्तऩै अऩैयवर्–स्कंददेव के समान रहनेवाले; कलै तॆरि कळकम्–कलाओं का अभ्यास करने के स्थान; नन्तऩ वऩम् अल–पुष्प वन नहीं; नऱै विरि पुऱवम्–सुवासपूर्ण चमेली की वाटिकायें हैं। ८०

उस देश में युवतियों के गेंद खेलने के स्थान, और स्कन्ददेव के समान सुन्दर और बलवान तरुणों के धनुर्विद्या आदि का अभ्यास करने के स्थान क्रमशः चन्दन वन नहीं, चम्पा वन है, और नन्दन वन नहीं, चमेली की वाटिकायें हैं। भाव यह कि स्त्रियों के शरीरों की गन्ध चम्पा की सी है और पुरुषों के शरीर की चमेली की सी। उन उद्यानों में इनके शरीरों की गन्ध उन उद्यानों के पुष्पों की गन्ध पर हावी आ जाती है। (इस पद्य की विशिष्टता उपर्युक्त उपमानों और उपमेयों को क्रमशः रखने में है)। ८०

कोकिल नविल्वऩ विळैयवर कुदलैर्, पाहियल् किळविक ळवर्पयि नडमे
केकय नविल्वऩ किळरिळ वळैयिऩ्, नाहुह ळुमिऴ्वऩ नहैपुरै तरळम् 81

कोकिलम् नविल्वऩ–कोकिल अभ्यास करते हैं; इळैयवर्–तरुणियों की; कुतलै पाकु इयल् किळविकल्–तोतली, चाशनी-सी बोलियों का; केकयम् नविल्वऩ–मोर अभ्यास करते हैं; अवर् पयिल् नटमे–उनसे अभ्यस्त नाच ही; किळर् इळ वळैयिऩ् नाकुकळ्–दर्शन-रम्य शंख की तरुणियां (सीपियां); उमिऴ्वऩ–प्रकट करती हैं; नकै पुरै तरळम्–(उनके) दांतों सदृश मोती। ८१

उस देश के कोकिल, स्त्रियों की तोतली, चाशनी सी मधुर बोली का अभ्यास करते हैं; मोर उनके विविधि नृत्यों का अभ्यास करते हैं। सीपियाँ जो मोती निकालती हैं वे उन स्त्रियों के दाँतों के समान हैं। ८१

पऴैयर्द मऩैयऩ पऴनऱै नुहरुम्, उऴवर्द मऩैयऩ वुऴुतॊऴिल् पुरियुम्
मऴवर्द मऩैयऩ मणवॊलि यिशैयिऩ्, किऴवर्द मऩैयऩ किळैपयिल् वळैयाऴ् 82

पऴैयर् तम् मऩैयऩ–मद्य-विक्रेताओं के घरों में मिलनेवाली हैं; नुकरुम् पऴ नऱै–पेय विविध तरह की ताड़ियां; उऴवर् तम् मऩैयऩ–कृषकों के घरों में मिलनेवाले हैं; उऴु तॊऴिल्–कृषि कर्म संबंधी सामान; मऴवर् तम् मऩैयऩ–तरुण पुरुषों के घरों में प्राप्य हैं; मण ऑलि–विवाहोचित मंगल स्वर; इचैयिऩ् किऴवर् तम् मऩैयऩ–गवैयों के घरों में प्राप्य हैं; किळै पयिल्–राग-उपरागों के अभ्यास-योग्य; वळै याऴ्–झुके दण्डवाली वीणा। ८२

ताड़ी बेचनेवालों के यहाँ पीने के लिए प्रचुर रूप से ताड़ी के कई प्रकार प्राप्य रहते हैं। कृषकों के घर में कृषि के सारे उपकरण और

ामान; विवाह करनेवाले तरुणों के यहाँ सब तरह के मंगल-वाद्यों का स्वर; गवैयों के यहाँ सुन्दर वीणा-वाद्य पाए जाते हैं। ८२

कोदैहळ् शॊरिवन कुळिरिळ नऱवम्, पादैहळ् शॊरिवन परुमणि कनहम्
ऊदैहळ् शॊरिवन उयिरुरु ममुदम्, कादैहळ् शॊरिवन शॆविनुहर् कनिहळ् 83

कोतैकळ्–मालायें; चॊरिवन–जो चूती हैं (बरसाती) हैं (वे); कुळिर् इळ नऱवम्–शीतल नव मधु (शहद) है; पातैकळ् चॊरिवन–मार्ग बरसाते हैं; परुमणि कनकम्–बड़े-बड़े रत्न और स्वर्ण; ऊतैकळ् चॊरिवन–ठंडी हवायें बरसाती (ला देती) हैं; उयिर् उरु अमुतम्–प्राणदायिनी जल (-बूँदें); कातैकळ्–गाथाएँ; चॊरिवन–बरसाती हैं; चॆवि नुकर् कनिकळ्–कानों से आस्वाद्य रसों का आनन्द। ८३

लोगों की पहनी पुष्प-मालाएँ शीतल नव मधु तथा जल और थल-मार्ग रत्न और स्वर्ण बरसाते हैं। दोनों प्रकार के मार्गों से सम्पत्ति खिचकर उस देश में आती है। शीतल पवन सीकर बरसाते हैं और गाथाएँ रस बरसाती हैं। ८३

इडङ्गॊळ् शायल्कण् डिळैञर् शिन्दैबोल्
तडङ्गॊळ् शोलैवाय् मलर्कॊय् ताळ्हुळल्
वडङ्गॊळ् पूण्मुलै मडन्दै मारॊडुम्
तॊडर्न्दु पोवन तोहै मञ्ञैये 84

इटम् कॊळ्–(स्त्रियों को) आश्रय बनाकर रही; चायल् कण्टु–छवि देखकर; इळैञर् चिन्तै पोल्–(जो पीछे-पीछे चलता है उस) तरुणों के मन के समान; तटम् कॊळ् चोलै वाय्–विस्तृत उपवन में; मलर् कॊय्–फूल चुननेवाली; ताळ् कुळल्–लंबी लटकनेवाली वेणी; वटम् कॊळ् पूण् मुलै–कई लड़ियों वाले हारों से शोभायमान स्तनोंवाली; मटन्तै मारॊटुम्–स्त्रियों के (साथ); तोकै मञ्ञै–कलापी मोर; तॊटर्न्तु पोवन–पीछे-पीछे चलते हैं। ८४

वहाँ की सुन्दरियों की सुन्दरता से खिचकर तरुणों का मन उनके पीछे-पीछे जाता है; और मोर भी उनके पीछे-पीछे, उनको मोरनियाँ समझकर चलते हैं, जब वे लम्बे लटकनेवाले केश, और आभरण-भूषित स्तन-वालियाँ उपवन में फूल चुनने जाती हैं। ८४

वण्मै यिल्लयोर् वऱुमै यिन्मयाल्, तिण्मै यिल्लनेर् शॆऱुन रिन्मयाल्
उण्मै यिल्लपॊय् युरयि लामयाल्, ऒण्मै यिल्लपल् केळ्वि योङ्गलाल् 85

ओर वऱुमै इन्मैयाल्–कोई दरिद्रता नहीं रहने से; वण्मै इल्लै–दानशीलता (देखने में आती) नहीं; नेर् चॆऱुनर् इन्मैयाल्–समक्ष समर करनेवाले नहीं, इसलिए; तिण्मै इल्लै–बल नहीं; पॊय् उरै इलामैयाल्–असत्य-कथन नहीं है, इसलिए; उण्मै इल्लै–सत्य (का विशेष महत्व) नहीं; पल् केळ्वि ओङ्कलाल्–अनेक (तरह के) श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान के (होने के) कारण; ऒण्मै इल्लै–ज्ञान का प्रकाश नहीं है। ८५

वहाँ कोई दरिद्र नहीं; इसलिए दानशीलता भी नहीं रहती। लड़नेवाले ही नहीं, तो वीरता (का प्रदर्शन) कैसे हो ? असत्य का कहीं नामोनिशान नहीं और इसलिए सत्य कथन की बात ही नहीं उठती। सब सुन-सुनकर अच्छे ज्ञानी हो रहते हैं; इसलिए ज्ञान की कोई महिमा चर्चित नहीं होती। ८५

ऍळ्ळु मॆन्नलु मिरुङ्गुञ् जामैयुम्, कॊळ्ळुङ् कॊळ्ळैयिऱ् कॊणरुम् बण्डियुम्
अळ्ळ लोङ्गळत् तमुदिन् पण्डियुम्, तळ्ळु नीर्मैयिऱ् ऱलैम यङ्गुमे 86

ऍळ्ळुम्—तिल; एन्नलुम्—लाल कोदों और; इरुङ्कुम्—ज्वार; चामैयुम्—मडुआ (और); कॊळ्ळुम्—कुलथी; कॊळ्ळैयिल्—अधिक परिमाण में; कॊणरुम् पण्टियुम्—(लाद) लानेवाली गाड़ियाँ और; अळ्ळल् ओङ्कु अळत्तु—बटोर लेने (के काम) अधिक जहाँ होते हैं उन लोनारों से; अमुतिन् पण्टियुम्—नमक (-लदी) गाड़ियाँ; तळ्ळुम् नीर्मैयिन्—ठेलने के सिलसिले में; तलै मयङ्कुम्—आपस में मिश्रित हो सट जाती हैं। ८६

उस देश के मार्गों में तिल, कोदों, ज्वार, मडुआ और कुलथी इन चीज़ों की भरी गाड़ियाँ, और नमक के उत्पत्ति-स्थानों से नमक लादे आनेवाली गाड़ियाँ इतनी संख्या में चलती है कि वे मिश्रित हो जाती हैं। ८६

उयरुञ् जार्विला वुयिर्हळ् शॆय्विनैप्, पॆयरुम् बल्कदिप् पिऱक्कु माऱुपोल्
अयिरुन् देनुमिन् पाहु मायरूर्त्, तयिरुम् वेरियुन् दलैम यङ्गुमे 87

उयरुम् चार्वु इला उयिर्कळ्—उद्गति पाने के साधन न रखनेवाले जीव; चॅय् वित्तै—अपने कृतकर्मों (के अनुसार); पॆयरुम् पल् कति—बदल बदलकर आनेवाले विविध शरीरों में; पिऱक्कुम्—जन्म लेने के; आऱु पोल्—प्रकार के समान; अयिरुम्—खाण्ड; तेनुम्—शहद और; इन्न पाकुम्—मधुर चाशनी और; आयर् ऊर् तयिरुम्—गोप-ग्रामों के दही; वेरियुम्—ताडी सब; तलै मयङ्कुम्—आपस में घुल-मिल जाते हैं। ८७

मोक्ष पाने का साधन जुटा न सकनेवाले जीव अपने कर्मों के बन्धन में पड़कर बारी-बारी से विविध शरीरों में जन्म लेते हैं। वैसे ही खाण्ड, शहद, चाशनी और दही स्थानांतरित हो जाते हैं यानी खाण्ड और चाशनी वन प्रदेश के हैं; शहद पर्वत प्रदेश का और दही खेती के प्रदेश का। वे सब अपने-अपने जन्म के प्रदेश से अन्य प्रदेशों में ले जाकर बेचे जाते हैं। ८७

कूऱु पाडलुङ् गुळलिन् पाडलुम्, वेऱु वेऱुनिन् ऱिशैक्कुम् वीदिवाय्
आऱु माऱुम्वन् दॆदिर्न्द दामॆनच्, चाऱुम् वेळ्वियुन् दलै मयङ्गुमे 88

कूऱु पाटलुम्—मौखिक गीत; कुळल् इन् पाटलुम्—बाँसुरी से बजाये जानेवाले गीत; वेऱु वेऱु निन्ऱु इचैक्किन्ऱ—अलग-अलग रहकर (जिन में) स्वरित होते हैं उन; वीतिवाय्—वीथियों में; आऱुम् आऱुम् वन्तु ऍतिर्न्तततु आम् ऍन्न—(दो) अलग-अलग नदियाँ आमने-सामने आ गयीं, ऐसे; चाऱुम्—देवोत्सव देखने आए लोगों की भीड़;

और; **वेंळ्वियुम्–विवाहोत्सव में शरीक होने आए हुओं की भीड़; तलै मयङ्कुम्–आपस में मिश्रित हो जाती हैं। ८८**

वीथियों में भी यह विनोद चलता है। वीथियों में मौखिक गीत और वाद्य-संगीत का अलग-अलग प्रबन्ध है। उन वीथियों में एक ओर से देवता के उत्सव देखनेवाले लोगों की भीड़ आती है। दूसरी ओर से विवाहोत्सव में भाग लेने आनेवालों की भीड़ आती है। दोनों, दो नदियों के समान आकर मिल जाती हैं। तब विवाहोत्सव वाला देवता के उत्सव की भीड़ में मिल गया और उसका इसमें। इस तरह मिश्रण हो जाता है। ८८

सूक्किऱ् ऱाक्कुरु मूरि नन्दुनेर्, ताक्किऱ् ऱाक्कुरु परैयुन् दण्णुमै
वीक्किऱ् ऱाक्कुरुम् विळियु मळ्ळर्तम्, वाक्किऱ् ऱाक्कुरु मॊलियिन् मायुमे 89

सूक्किल् ताक्कु उरुम्–'नाक' में फूककर; मूरि नन्तुम्–गंभीर, शंख-नाद; और ताक्किल्–चोब से; ताक्कुरु परैयुम्–प्रहारित डंके का नाद; तण्णुमै–मर्दल का; वीक्किल् ताक्कु उरुम् विळियुम्–डोरों से कसे होने के कारण स्पंदन के साथ उठनेवाला नाद; मळ्ळर् तम्–वीरों (सैनिकों) के; वाक्किल ताक्कु उरुम् मॊलियिन्–मुख से उठनेवाले नारों के नाद में; मायुम्–लीन हो जायँगे। ८९

उस देश में सभी तरह की ध्वनियाँ उठती हैं— शंख बजाने की ध्वनि, डंका बजाने की ध्वनि; मर्दल बजाने की ध्वनि और वीरों के नारे (या कृषकों के बैलों को हाँकने का शोर)। पर वीरों के नारों का शोर ही सबसे बलवान है और अन्य ध्वनियाँ उसमें लय हो जाती हैं। ८९

तालि यैम्बडै तळुवु मार्बिडै, मालै वायमु दॊळुहु मक्कळैप्
पालि नूट्टुवार् शॆङ्गै पङ्गयम्, वानि लावुरक् कुविदन् मानुमे 90

ऐम्पटै तालि तळुवुम् मार्पिटै–(श्रीविष्णु के) पंचायुध-(की नकल में बने स्वर्ण-चिह्न) बँधा मंगल-सूत्र जिस पर है उस वक्ष पर; मालै वाय् अमुतु ऒळुकुम् मक्कळै–माला की तरह (मुख से) लार टपकाने वाले नन्हे बच्चों को; पालिन् ऊट्टुवार् शॆङ्कै–दूध पिलानेवाली माताओं के लाल हाथ; वाल् निला उर–उज्ज्वल चाँदनी के लगने से; पङ्कयम् कुवितल् मानुम्–कमल के निमीलन की समता करता है। ९०

वहाँ की माताएँ अपने बच्चों को छाती पर लगाये, हाथ में दूध-भरा शंख ले उसके द्वारा उनको दूध पिला रही हैं। बच्चे की छाती पर हार है जिसमें श्रीविष्णु के पंचायुध की शकल में बने स्वर्ण-पदक आदि हैं। यह दोष-निवारक समझा जाता है। उनके मुख से लार टपकती है जो हार की तरह उनके वक्ष पर बहती है। माता का निमीलित लाल हाथ देख कमल का स्मरण होता है, जो चन्द्र को देख बन्द होता है। यहाँ शंख, चन्द्र है। ९०

पॊऱ्पि निऩ्ऱऩ पॊलिवु पॊय्यिला, निऱ्पि निऩ्ऱऩ नीदि मादरार्
अऱ्पि निऩ्ऱऩ वऱङ्ग ळऩ्ऩवर्, कऱ्पि निऩ्ऱऩ काल मारिये 91

पॊऱ्पिऩ्–आन्तरिक सुन्दरता (श्रेष्ठ गुण-पूर्णता) की ही तरह; पॊलिवु–बाहरी (शारीरिक) सुन्दरता भी; निऩ्ऱऩ–रही; पॊय्इला निऱ्पिऩ्–असत्य-रहित भाव के आधार पर; नीति निऩ्ऱऩ–नैतिकता खड़ी रही; अऱङ्कळ्–धार्मिक आचरण; मातरार् अऱ्पिऩ् निऩ्ऱऩ–स्त्रियों के प्रेम के कारण टिके रहे; अऩ्ऩवर्–उनके; कऱ्पिऩ्–सतीत्व के कारण; काल मारि–मौसमी वारिशें; निऩ्ऱऩ–(बराबर) होती रहीं। ए। ९१

उस देश के लोग शीलवान हैं; तभी उनके सौन्दर्य का महत्व है। असत्याचरण नहीं करते; इसलिए नैतिक व्यवहार स्थिर हैं; स्त्रियों के प्रेम के कारण धर्म-पालन उचित रूप से होता है। स्त्रियाँ सतीत्व का पालन करनेवाली होती हैं, इसलिए वक्त की वारिश होती है। ९१

शोलै मानिलन् दुरुवि यावरे, वेलै कण्डुता मीळ वल्लवर्
शालुम् वार्पुऩल् चरयु वुम्बल, कालि ऩोडियुङ् गण्ड दिल्लये 92

चोलै मा निलम्–बाग, बगीचों से भरे उस देश को; तुरुवि–खोजता जाकर; वेलै कण्टु मीळ वल्लवर्–सीमा देखकर लौट आ सकनेवाले; यावर्–कौन हैं; चालुम् वार् पुऩल् चरयुवुम्–वहु प्रवतहमान जल वाली सरयू ने भी; पल कालिऩ् ओटि–अनेक नालों (पैरों) में दौड़कर भी; कण्टतु इल्लै–देखा नहीं हैं; ए–ताम्। ९२

उस देश का सारा विस्तार देख आना कठिन है। बागों और उद्यानों से भरा वह देश इतना विशाल है कि कोई यह दावा नहीं कर सकता कि हम अन्वेक्षणार्थ गये और सीमायें देख आये। स्वयं सरयू भी अपने सैकड़ों नालों में (जो उसके पैर कहे जा सकते हैं) चलकर सीमा देख नहीं सकी है। ९२

वीडु शेरुनीर् वेलै काऩ्मडुत्, तूडु पेरिनु मुलैवि लानलम्
कूडु कोशल मॆऩ्ऩुङ् गोदिला, नाडु कूऱिऩा नहरङ् गूऱुवाम् 93

काल् मटुत्तु–(प्रलय-कालीन) पवन के झोंके खाकर; वीटु चेरुम् नीर् वेलै–तीर (मर्यादा) लांघकर आनेवाला समुद्र; ऊटु पेरिऩुम्–(उस देश के) ऊपर आ जाय तो भी; उलैवु इला नलम् कूटु–नष्ट न होने का स्वभाव-विशेष रखनेवाले; कोचलम् ऎऩ्ऩुम्–कोशल नाम के; कोतु इला–दोषहीन; नाटु कूऱिऩोम्–देश की बात कही; नकरम् कूऱुवाम्–नगर (अयोध्या) (की बात) कहेंगे। ९३

वह ऐसा विशिष्ट देश है जिसको प्रलयकाल में मर्यादा पार कर फैलने वाला समुद्र भी नष्ट नहीं कर सकता। उस देश का हमने वर्णन किया। अव अयोध्या के महानगर का वर्णन करेंगे। ९३

3 नहरप्पडलम् (नगर की महिमा)

'शॅव्विय मदुरञ् जेर्न्दनऱ् पॉरुळिऱ् चीरिय कूरिय तीञ्जॉल्
वव्विय कविञ्ञ रनैवरुम् वडनूल् मुनिवरुम् बुहळ्न्ददु वरम्बिल्
ॲव्वुल हत्तो रियावरुन् दवञ्जॅय् देरुवा नादरिक् किन्ऱ
अव्वुल हत्तो रिळिवदऱ् करुत्ति पुरिहिन्ऱ दयोत्तिमा नहरम् 94

अयोत्ति मा नकरम्–अयोध्या का महानगर; चॅव्विय–श्रेष्ठ; मतुरम् चेर्न्त–रसात्मक; नल् पॉरुळिल् चीरिय–अच्छे अर्थ देने में विदग्ध; कूरिय–सूक्ष्मता-क्षम; तीम् चॉल्–मधुर शब्दों पर; वव्विय–अधिकार रखनेवाले; कविञर् अनैवरुम्–कवि सब; वट नूल् मुनिवरुम्–उत्तरी भाषा (संस्कृत) के मुनिगण (द्वारा); पुकळ्न्ततु–प्रशंसित है; वरम्पु इल्–अपार; ॲव्वुलकत्तोर् यावरुम्–किसी भी लोक के सब; तवम् चॅय्तु–तपस्या करके; एरुवान् आतरिक्किन्ऱ–(जहाँ) चढ़कर प्रवेश करने की कामना करते हैं; अ उलकत्तोर्–उस लोक के वासी; इळिवतऱ्कु–उतर नीचे आने की; अरुत्ति पुरिकिन्ऱतु–कामना करने का लक्ष्य-स्थान रहता है। ९४

अयोध्यानगर की यह महिमा है कि, प्रसादगुण-पूर्ण, रससिक्त, अर्थ-गर्भित और सूक्ष्म भावों के द्योतक शब्दों को अपने वश में रखनेवाले सभी भाषाओं के कवियों ने उसकी प्रशंसा की है; संस्कृत के मुनियों ने उसको सराहा है। और स्वयं श्रीवैकुंठलोक के, जहाँ किसी भी लोक के लोग आरोहण करके प्रवेश पाने की कामना करते हैं, वासी भी अयोध्या में उतर आना चाहते हैं। ९४

निलमहण् मुहमो तिलहमो कण्णो निऱैनॅडु मङ्गल नाणो
इलहुपूण् मुलैमे लारमो वुयिरि निरुक्कयो तिरुमहट् किनिय
मलर्हॉलो मायोन् मारबिनन् मणिहल् वैत्तपॉऱ् पॅट्टियो वानोर्
उलहिन्मे लुलहो वूळियि निरुदि युऱैयुळो यादॅन वुरैप्पाम् 95

निलमकळ् मुकमो–क्या भूदेवी का मुख है; तिलकमो–तिलक; कण्णो–आँखें; पूण् इलकुम्–आभरण-विभूषित; मुलै मेल् आरमो–स्तनों पर (के) मुक्ताहार; निऱै–उत्तम; नॅटु–महिमामय; मङ्कल नाणो–मंगल-सूत्र; उयिरिन् इरुक्कैयो–प्राणों का वासस्थान; तिरु मकट्कु इनिय मलर् कॉल् ओ–श्री लक्ष्मीदेवी का प्रिय (कमल-)पुष्प; मायोन् मार्पिल्–मायावी (विष्णु देव) के वक्ष के; नल् मणिकळ् वैत्त पॉन् पॅट्टियो–श्रेष्ठ कौस्तुभ मणि आदि आभरण रखने का स्वर्ण-निर्मित सन्दूक; वानॉर् उलकिन् मेल् उलको–देवलोक से बढ़कर श्रेष्ठ (वैकुंठ) लोक; ऊळियिन् इऱुति उऱैयुळो–युगांत में सभी जीवों का आश्रय-स्थान (श्री विष्णु का उदर); यातु अॅन–कौन सा है, यह; उरैप्पाम्–कहें। ९५

क्या यह अयोध्या भूदेवी (श्रीमन्नारायण की दो देवियों में एक) का मुख है? उनके मुख का तिलक है? मुख की आँखें हैं? वक्ष पर रहनेवाले आभरणों में मुख्य मुक्ताहार है? या अन्य आभरणों को महिमा प्रदान करनेवाला मंगलसूत्र है? या उनका जीव-स्थान है?

या श्री लक्ष्मीदेवी (श्रीविष्णु की देवियों में दूसरी) का आसन, कमल है? या वह स्वर्ण-मंजूषा है जिसमें श्रीविष्णु के कौस्तुभमणि आदि आभूषण रक्षित किये गये हैं ? या स्वर्ग से ऊंचा या श्रेष्ठ श्रीवैकुंठलोक है ? या प्रलयकाल में, जहाँ सभी जीव समा लिये जाते हैं वह श्रीविष्णु का दिव्य उदर है ? क्या कहा जाय ? । ९५

उमैक्कोरु पाहत् तोरुवनु मिरुवरुक् कोरुतनिक् कोऴुननु मलर्मेल्
कमैप्पॅरुञ् जॅल्वक् कडवुळु मुवमै कण्डिल रङ्गदु काण्बान्
अमैप्परुङ् गाद लदुपिडित् तुन्द वन्दरञ् जन्दिरा दित्तर्
इमैप्पिलर् तिरिव रदुवला लिदनुक् कियम्बला मेदुमऱ् ऱियादो 96

उमैक्कु ओरु पाकत्तु ऑरुवनुम्–उमा को (शरीर) का एक भाग देनेवाले एक देव; इरुवर्क्कु ओरु तनि कोऴुनदुम्–दो (भूदेवी, श्रीदेवी) का एक पति और; अलर् मेल्–(श्री विष्णु के) नाभिकमल पर उद्भूत; कमै पॅरुम् चॅल्वम् कटवुळुम्–क्षमा-निधि (ब्रह्मा) देवता; उवमै कण्टिलर्–उस नगर की उपमा नहीं जानी है; अतु काण्पान्–उसको देखने के लिए; अमैप्पु अरु–अदम्य; कातल् अतु पिटित्तु उन्त–चाह की प्रेरणा से; चन्तिर आतित्तर्–चन्द्र और सूर्य; अन्तरम्–आकाश में; इमैप्पु इलर्–पलक मारे विना; तिरिवर्–घूमते हैं; इतनुक्कु इयम्पल् आम् एतु–इसका जो कहा जाय वह हेतु; अतु अल्लाल्–वह नहीं तो; मऱ्ऱु यातो–दूसरा है क्या ? । ९६

अयोध्या से उपमेय और कोई नगर कहीं नहीं है । स्वयं शिवजी, जिनका आधा अंग पार्वतीदेवी का हो गया, विष्णु जिनके दो देवियाँ हैं, और ब्रह्मा जो क्षमाशील हैं इसके सदृश किसी नगर को नहीं जानते । चन्द्र और सूर्य भी निद्रा त्याग कर उपमेय नगर ढूंढ निकालने के विचार से ही बराबर घूम रहे हैं । फिर क्या हेतु माना जाय उनके इस अटूट भ्रमण का ? । ९६

अयिन्मुहक् कुलिशत् तमरर्को नहरु मळहयु मॅन्ऱिवै ययनार्
पयिलुऱ वुऱ्ऱ पडिपॅरुस् पान्मै पहर्तिरु नहरिदु पडैप्पान्
मयन्मुदऱ् ऱॅय्वत् तच्चरुन् दत्त मनत्तॊऴि नाणिनर् मऱन्दार्
पुयऱोडु कुडुमि नॅडुनिलै माडत् तिन्नहर् पुहलु मारॅवनो 97

अयिल् मुक कुलिचत्तु–तीक्ष्ण-मुखी कुलिश (वज्र) के; अमरर् कोन् नकरुम्–देवेन्द्र का नगर, और; अळकैयुम्–अलकापुरी, और; ऍन्ऱ इवै–ये विख्यात नगर; अयनार्–अजदेव; पॅरुम् पान्मै पकर्–बहुत ही प्रशंसा (जिसकी) सब करते हैं; तिरुनकर् इतु–उस श्री सम्पन्न नगर इसको; पटैप्पान्–सृष्टि करने के लिए; पयिलुरवु उऱ्ऱपटि–पूर्वाभ्यास के प्रयत्न थे; मयन् मुतल् तॅय्व तच्चरुम्–मय आदि देव-शिल्पी भी; नाणिनर्–लज्जायुक्त हुए; तम् तम् मनम् तॊऴिल् मऱन्तार्–और अपनी-अपनी संकल्प-मात्र से निर्माण करने की शक्ति भूल गये; पुयल् तॊटु कुटुमि–

मेघ-स्पर्शी शिखरों के साथ; नॅट्ट निलै माटत्तु–ऊँचे सौधों से पूर्ण; इ नकर्–इस नगर की महिमा; पुकलुम् आरु ऍन्नन्–कहना किस प्रकार होगा ? । ९७

वज्र-पाणी इन्द्र की अमरावती, और कुबेर की अलकापुरी की सृष्टि, ब्रह्माजी ने इस अयोध्या नगरी के निर्माणार्थ अनुभव प्राप्त करने के लिए पूर्वाभ्यास के रूप में ही की थी; मय आदि देवशिल्पियों ने इसको देखा तो वे अवाक् रह गये। उन्हें लज्जा का अनुभव हुआ और वे संकल्पमात्र से नगर-निर्माण की विद्या-शक्ति भूल गये। ऐसी बात है तो उस अयोध्या की महिमा का बखान कैसे हो ? उसके अन्दर निर्मित भवन की चोटियाँ मेघमण्डल को छूती हैं। ९७

पुण्णियम् पुरिन्दोर् पुहुवदु तुरक्क मॅन्नुमी दरुमरैप् पॉरुळे
मण्णिडै यावर् इराहव नल्लरि मावर् अरत्तोडु वळरत्तार्
ऍण्णरुङ् गुणत्तिन् नवनिति दिरुन्दिव् वेळुल हाळिड मॅन्राल्
ऑण्णुमो वन्तिन् वेरॊरु पोह वुरैयिड मुण्डॅन वुरैत्तल् 98

पुण्णियम् पुरिन्तोर्–पुण्य-कर्म करनेवाले; पुकुवतु–पहुँचते हैं; तुरक्कम्–स्वर्गलोक; ऍन्नुम् ईतु–कथन यह; अरु मरै पॉरुळ–अपूर्व वेदों में कथित तथ्य है, अवश्य; मण्णिटै–भूतल में; इराकवन् अन्रि–श्री राघव के सिवा; यावर् ताम्–और किसने; अरत्तोटु मा तवम् वळरत्तार्–धर्म के साथ तपस्या का भी पालन किया; ऍण्ण अरु–गिनने (के लिए) अशक्य; कुणत्तिन् अवन्–गुणों के स्वामी वे; इनितु इरुन्तु–सुख से रहकर; इव् एळ् उलकु–इस सप्त-द्वीप वाले भू-लोक का; आळ् इटम्–जहाँ से शासन करते थे वह (राजधानी) स्थान है; ऍन्राल्–ऐसा है तो; पोकम् उरॅवु वेरु ऑरु इटम्–भोग-स्थान और कोई लोक; उण्टु ऍन उरॅत्तल्–है, ऐसा कहना; ऑण्णुमो–साध्य है क्या ? । ९८

यह अनोखी बात देखिए— पुण्यकर्म करनेवालों के लिए भोग-भूमि स्वर्ग माना जाता है। यह वेदों का कथन है अतः सत्य हो सकता है, पर स्वयं श्रीराम से बढ़कर धर्म और तप के पोषक कौन थे ? अनन्त कल्याण-गुण-पूर्ण वे स्वयं इसी नगर में रहकर तो, सहस्रों वर्ष सप्त-द्वीप-रूपी भूलोक का शासन करते रहे। फिर किसी दूसरे स्थान को स्वर्ग कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है ? । ९८

तङ्गुपे ररुळुन् दरुममुन् दुणैयात् तम्बहैप् पुलन्गळैन् दविक्कुम्
पॉङ्गुमा दवमु ञानमुन् बुणर्न्दोर् यावर्क्कुम् बुहलिड मान
शॅङ्गणमाल् पिरन्दाण् डळप्परुङ् गालन् दिरुविन्वीर् रिरुन्दन नॅन्राल्
अङ्गणमा ञालत् तन्नह रॊक्कुम् पॉन्नह रमरर्नाट् टियादो 99

तङ्कु पेर् अरुळुम्–जन्म-सिद्ध करुणा और; तरुममुम्–धर्म को; तुणै आक–साधन बनाकर; तम् पकै पुलन्कळ–अपने शत्रु, इन्द्रिय; ऐन्तु अविक्कुम्–पाँचों का दमन करके; पॉङ्कुम् मातवमुम्–बढ़ती जानेवाली तपस्या; ञानमुम्–और प्राप्त होनेवाला) तत्व ज्ञान; पुणर्न्तोर् यावर्क्कुम्–(इनमें) जो सिद्ध हो गये हैं,

(चाहे गृहस्थ हों या संन्यासी) उन सब के लिए; पुकलिटम् आत–आश्रय स्थान जो हैं; चॅम्मै कण् माल्–ताम्राक्ष श्री विष्णु; पिऱन्तु–जन्म ले, (अवतार कर); आण्टु–शासन कर; अळप्पु अरु कालम्–अगणित काल तक; तिरुविन्–श्री लक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ; वीऱ्ऱिरुन्ततन्–विराजते थे तो; अम् कण् मा ञालत्तु–सुन्दर और विशाल भूलोक के; इ नकर् ऑक्कुम्–इस नगर की समानता करनेवाला; पॊन् नकर्–श्रेष्ठ नगर; अमरर् नाट्टु यातु–देवों के लोक में कौन सा है ? (ओ–नकारात्मक अर्थ देनेवाली ध्वनि) । ९९

ये श्रीराम सब के शरण्य हैं। दया और धर्म का सहारा लेकर अपनी, शत्रुरूपिणी पंचेंद्रिय का दमन कर, तपस्या और तत्वज्ञान में बढ़ने-वालों के लिए, चाहे वे गृहस्थ हों, चाहे संन्यासी, ये ही पुण्डरीकाक्ष श्रीनारायण (जिनके अवतार श्रीराम हैं) प्राप्य स्थान हैं। वे स्वयं, श्रीलक्ष्मी-सीतादेवी के साथ अनन्तकाल तक यहीं अपना मंगलमय जीवन बिताते थे तो विशाल और सुन्दर, इस भूलोक के इस नगर अयोध्या की समता देवलोक में कौन सा नगर कर सकेगा ? । ९९

अरशॆला मवण वणियॆला मवण वरुम्बॆऱ्न् मणियॆला मवण
पुरशैमाल् कळिरुम् पुरवियुन् देरुम् बूदलत् तियावयु मवण
विरशुवार् मुनिवर् विण्णव रियक्कर् विज्जयर् मुदलिनो रॆवरुम्
उरैशॆय्वा राना रानपो दिदनुक् कुवमैदा नरिदर वुळदो 100

अरचु ऍलाम् अवण–राजा सब वहाँ; अणि ऍलाम् अवण–आभरण सब वहाँ; पॆऱल् अरु मणि ऍलाम् अवण–दुष्प्राप्य रत्न सब वहीं; पुरचै माल् कळिरुम्–गले में रस्सी-बँधे बड़े हाथी; कुतिरॆकळुम्–अश्व; तेरुम्–रथ (और); पूतलत्तु यावैयुम्–भूतल के अन्य सभी; अवण–वहाँ (प्राप्य); विरचुवार्–वहाँ आकर ठहरे हुए; मुनिवर्–मुनिगण; विण्णवर्–स्वर्गवासी देव; इयक्करुम्–यक्ष और; विज्चैयर्–विद्याधर; मुतलिनोर् ऍवरुम्–आदि सभी; उरै चॆय्वारानार्–प्रशंसाकारी हुए; आन पोतु–जब ऐसा हुआ; इततुक्कु उवमै अरितर उळतो ? – इसकी उपमा बोध-गम्य है ? (तान्–पूरक ध्वनि) । १००

उसी नगर में सभी देशों के राजा रहते हैं। जितने आभरण हो सकते हैं वे सब यहीं आ गये; अपूर्व मणियाँ सभी यहीं; बड़े-बड़े हाथी, श्रेष्ठ अश्व, अनेक रथ; और अन्य कितनी ही वस्तुएँ यहाँ आ चुकी हैं। वहाँ आकर ठहरे हुए मुनि, सुर, यक्ष, विद्याधर, आदि सभी उसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं तो उसकी उपमा, हमारी समझ में अन्यत्र कहाँ हो सकती है ? । १००

नाल्वहैच् चदुरम् विदिमुरै नाट्टि ननिदव वुयर्न्दन पनितोय्
माल्वरैक् कुलत्तिल् यावयु मिल्लै यादला लुवमैमर् ऱिल्लै
नूल्वरैत् तॊडर्न्दु बयत्तॊडु पळहि नुणङ्गिय नूलव रुणर्वे
पोल्वहैत् तल्ला लुयर्विनो डुयर्न्द दॆन्नलाम् पॊन्मदि निलैये 101

पत्ति तोय् माल् वरै कुलत्तिल्—हिमाच्छादित बड़े-बड़े पर्वतों की श्रेणियों में; नाल् चतुरम् वकै—चौकोर; वितिमुरै नाट्टि—(वास्तु-विद्या-) विधिवत् निर्मित; नतितव उयर्न्तन—बहुत ऊँचे बने (पर्वत); यावैयुम् इल्लै—कोई नहीं हैं; आतलाल्—इसलिए; पोन् मतिल् निलै—स्वर्णमय प्राचीरों के रूप की; उवमै मऱ्ऱु इल्लै—उपमा दूसरी नहीं है; नूल् वरै तोटर्न्तु—अनेक शास्त्र-पारंगत हो; पयत्तोटु पळ्कि—शास्त्राध्ययन के फलों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के अधिकारी बनकर, और; नुणङ्किय नूलवर्—सूक्ष्म ग्रन्थ-श्रवण से प्राप्त ज्ञान रखनेवाले विद्वज्जनों के; उणर्वे पोल् वकैत्तु—ज्ञान की श्रेणी के हैं; अल्लाल्—इसके अलावा; उयर्न्ततु एवऱ्ऱिलुम् उयर्न्ततु—उच्च सभी में सर्वोच्च है; ॲन्नलाम्—यह कहा जा सकता है। १०१

अब प्राचीरों की बात लीजिए। क्या कोई पर्वत है जो इतना ऊँचा चौकोर, और वास्तु-शास्त्र-सम्मत रीति से बना मिलता है? चाहे हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियों में ही ढूंढ क्यों न लें? इसलिए उसकी उपमा और कुछ नहीं है। उनकी ऊँचाई की बात लें तो उन लोगों का ज्ञान, जो सर्वशास्त्र-पारंगत है, जिनका श्रवण से प्राप्त ज्ञान गम्भीर है और जो अध्ययन के चारों (धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष) पुरुषार्थों के भोक्ता हो गए हैं, उनकी ऊँचाई की समता शायद कर सकता है तो कर सकता है। और कहना ही हो तो सर्वोच्च जितने भी हैं उनमें सबसे ऊँचे है ये प्राचीर। १०१

मेवरु मुणर्वु मुडिविला मैयिनाल् वेदमु मॉक्कुम्विण् पुहलाल्
तेवरु मॉक्कु मुनिवरु मॉक्कुन् दिण्बॊऱि यडक्किय शॅयलाल्
कावलिऱ् कलैयूर् कन्नियै यॉक्कुञ् जूलत्ताऱ् काळियै यॉक्कुम्
यावरुन् दन्नै यॅय्दुदऱ् करिय तन्मैया लीशनै यॉक्कुम् 102

मेवु अरुम् उणर्वुम्—किसी भी विषय में प्रविष्ट होकर उसको ग्रहण करनेवाली मति द्वारा भी; मुटिवु इलामैयाल्—पार पाना साध्य नहीं है, अतः; वेतमुम् ऑक्कुम्—वेदों की समानता करते हैं; विण् पुकलाल्—आकाश तक पहुँचने से; तेवरुम् ऑक्कुम्—देवों से तुलते हैं; तिण् पॊऱि अटक्किय चॅयलाल्—सशक्त इंद्रिय (घातक यन्त्र) वश में रखने के कृत्य से; मुनिवरुम् ऑक्कुम्—मुनियों की समता करेंगे; कावलिल्—रक्षा में; कलै ऊर् कन्नियै—हरिण-वाहना, कन्या देवता, दुर्गा के समान है; चूलत्ताल्—शूल (धारण) से; काळियै—कालिका के; ऑत्तिरुक्कुम्—समान बनाये हुए हैं; यारुम्—कोई भी; तन्नै ॲय्तुतर्कु अरिय तन्मैयाल्—अपने पास पहुँच जाय—यह कठिन है, इस धर्म से; ईचनै ऑक्कुम्—सर्वेश्वर के समान हैं। १०२

ये एक तरह से वेदों के समान कहे जा सकते हैं। प्राचीर, और वेद, दोनों का अन्त सूक्ष्म से सूक्ष्म मति भी नहीं पा सकती। आकाश में पहुँच गए हैं, अतः ये प्राचीर देवों के समान हैं; ये मुनियों के समान हैं क्योंकि मुनि अपनी बलवान इन्द्रियों को अपने वश में रखते हैं और प्राचीरों के वश में शत्रुघातक यन्त्र रखे रहते हैं। नगर की रक्षा करने के कारण प्राचीर और हरिणवाहना दुर्गा में साम्य है। लोहे के शूल प्राचीरों पर, गाज से रक्षा के लिए लगाये गये हैं और कालिकादेवी का आयुध त्रिशूल

है। इन दोनों में इसीसे साम्य माना जाता है। सर्वेश्वर और प्राचीर में यह साधर्म्य है कि इन दोनों के पास जाना सुलभ नहीं। १०२

पञ्जिवान् मदियै यूट्टिय वत्तैय पडरुहिर्प् पङ्गयच् चॅङ्गाल्
वञ्जिपोल् मरुङ्गुर् कुरुम्बैपोर् कॊङ्गै वयङ्गुवेय् वैत्तमॆन् पणैत्तोळ्
अञ्जॊलार् पयिलु मयोत्तिमा नहरि नळ्हुडैत् तोवॆन वरिवान्
इञ्जिवा नोङ्गि यिमैयव रुलहङ् गाणिय वॆळुन्ददीत् तुळदे 103

इञ्चि–प्राचीर; वान् मतियै–आकाश के चन्द्रों को; पञ्चि ऊट्टिय अत्तैय–महावर लगाकर लाल किया गया हो ऐसा; पटर् उकिर्–उज्ज्वल नखों वाले; पङ्कयम् चॆम् काल्–कमल जैसे लाल चरण; वञ्चि पोल् मरुङ्कुल्–लता के समान (महीन) कमर; कुरुम्पै पोल् कॊङ्कै–डाभ के समान स्तन; वयङ्कु वेय् वैत्त–छविमान बांस-सदृश रहनेवाली; मॆन् पणै तोळ–मृदुल सुडौल भुजाएँ; अम् चॊल्–सुन्दर वाणी; आर्–(इन से) युक्त स्त्रियों से; पयिलुम्–भरे रहनेवाले; अयोत्ति मा नकरिन्–अयोध्या-महानगर के समान; इमैयवर् उलकम्–देवों का लोक; अळकु उटैत्तो ऍन्न अरिवान्–सुन्दरता रखता है क्या, यह जानने के लिए; वान् ओङ्कि–आकाश में ऊँचा उठकर; काणिय–देखने के लिए; ऍळुन्तनु ऒत्तु उळतु–उठे से रहते हैं। १०३

प्राचीर की ऊँचाई देखकर कवि कल्पना करता है कि प्राचीर, "देव-लोक अयोध्या की समानता करनेवाला है क्या?" यह देखने के लिए बहुत-बहुत ऊपर उठे हुए हैं। अयोध्या में सुन्दर स्त्रियाँ बहुत हैं। उनके पैरों के नख लाली लगे चन्द्रों के समान हैं; पैर कमल के समान हैं; कमर वल्ली के समान पतली; डाभ के समान स्तन; बाँस के समान भुजाएँ हैं। वे सुन्दर और मधुर बोलनेवालियाँ हैं। इनके कारण अयोध्या सुन्दर बना है। प्राचीर यह जानने को उत्सुक हैं कि क्या देवलोकों की स्त्रियाँ ऐसी सुन्दर हैं और देवलोक अयोध्या के समान सुन्दर हैं? १०३

कोलिडै युलह मळत्तलिर् पहैञर् मुडित्तलै कोडलिन् मनुविन्
नूलिडै नडक्कुञ् जॆव्वयिन् यार्क्कु नोक्करुङ् गावलिन् वलियिन्
वेलॊडु वाळ्विर् पयिर्ऱलिन् वॆय्य शूळ्च्चियिन् वॆलर्करु नलत्तिन्
शालुडै युयर्विर् चक्कर नडत्तुन् दन्मैयिर् ऱलैवरॊत् तुळदे 104

उलकम्–देश को; कोल् इटै अळत्तलिन्–(राज) दण्ड से मापने में (शासित करने में); पकैञर्–शत्रुओं के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों को; कोटलिन्–वश में कर लेने में; मनुविन् नूल् इटै नटक्कुम् चॆव्वैयिन–मनु-धर्म-शास्त्र के अनुसार चलने के आर्जव में; यार्क्कु नोक्करुम् कावलिन्–किसी को भी देखने न देनेवाली रक्षा (के प्रबन्ध) से; वलियिन्–बल में; वेलॊटु, वाळ्, विल् पयिर्ऱलिन्–बर्छियाँ, तलवारें, धनुष आदि के व्यवहार करने में; वॆय्य चूळ्च्चियिन्–भयंकर (राज) तन्त्र में; वॆलर्कु अरु नलत्तिन्–अजेय बल-विक्रम में; चाल् उटै उयर्विन्–शीलवान बड़प्पन में; चक्करम् नटत्तुम् तन्मैयिन्–(आज्ञा) चक्र चलाने के धर्म में; तलैवर ऒत्तु उळतु–(अपने) स्वामियों (रविकुल के राजाओं) के समान थे। १०४

ये प्राचीर अपने ही मालिक रवि-कुल-राजाओं के समान हैं। कवि, शब्द-प्रयोग-चातुर्य से इसको सिद्ध करते हैं। राजा दण्ड द्वारा शासन का काम करते हैं; प्राचीर माप-दण्ड द्वारा नापे जाते हैं। राजा अपनी सेना के बल से और प्राचीर अपने रक्षकों द्वारा शत्रुओं के सिर गिरा देते हैं या झुका देते हैं। राजा, मनु के शास्त्र के अनुसार चलते हैं और प्राचीर भी मनु नामक देव-शिल्पी के लिखे शास्त्र के अनुसार बने हैं। राजा और प्राचीर दोनों को कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता, दोनों के रक्षा के प्रबन्ध प्रबल हैं। दोनों बलवान हैं। दोनों के पास बर्छे, तलवारें और धनुष आदि आयुध प्रयोग में हैं। राजाओं के पास राज-तन्त्र है और प्राचीरों के अन्दर गूढ़-यन्त्र हैं। दोनों अजेय हैं। राजा के पास श्रेष्ठ गुण है; प्राचीरों में गुप्त-मार्ग आदि विशेषतायें हैं। राजा आज्ञा-चक्र चलाते हैं; प्राचीरों से चक्रायुध चलते हैं। १०४

शिऩत्तयिल् कॉलैवाळ् शिलैमऴुत् तण्डु शक्करन् दोमर मुलक्कै
कऩत्तिडै युरुमिऩ् वॅरुवरुङ् गवण्ग लॅऩ्ऱिवै कणिप्पिल कॉदुहिऩ्
इऩत्तयु मुवणत् तिऱैयैयु मियङ्गु कालैयु मिदमल निऩैवार्
मनत्तयु मॅऱियुम् बॉऱियुळ वॅन्ऱाऩ् मऱ्ऱिऩि युणर्त्तुव दॅवऩो 105

कॉतुकिऩ् इऩत्तैयुम्–मच्छड़-कुल को; उवणत्तु इऱैयैयुम्–खग-पति (गरुड़) को और; इयङ्कु कालैयुम्–चंचल पवन को; इतम् अल निऩैवार् मनत्तैयुम्–हितेतर (अहित) सोचनेवालों के मन को; ऍऱियुम्–प्रहारित करनेवाले; चिऩत्तु अयिल्–कोपिष्ठ बर्छे; कॉलै वाळ्–घातिनी तलवारें; चिलै–धनुष; मऴु–परशु; तण्टु दण्डायुध; चक्करम्–चक्रायुध; तोमरम्–तोमर और; उलक्कै–मूसल और; कऩत्तु इटै उरुमिऩ्–मेघ-मध्य वज्र के समान; वॅरु वरुम् कवण्कल्–भयोत्पादक ढेले बाँस; ऍऩ्ऱ इवै–ऐसे और अन्य; कणिप्पु इल पॉऱि–गणनाहीन आयुध; उळ ऍऩ्ऱाल्–रहते हैं–(कह दिया) तो; मऱ्ऱु इऩि उणर्त्तुवतु ऍवऩ्–और कहने के लिए क्या है ? । १०५

उस परकोटे के अन्दर ऐसे आयुध हैं जो छोटे से छोटे मच्छड़ों को भी मार सकते हैं; और बड़े पक्षी गरुड़ को भी। सूक्ष्म और चंचल पवन को भी आहत कर सकती हैं; अहित सोचनेवाले मन को भी। उनके अन्दर बर्छे, तलवारें, धनुष, परशु, दण्ड, चक्र, तोमर, मूसल, वज्र-सम ढेलाबाँस; ऐसे अगणित हथियार हैं। इतना कह दिया गया तो फिर कहने को क्या बचा है ? । १०५

पूणितुम् बुहऴे यमैयुमॅऩ् ऱिऩैय पॉऱ्पिऩिऩ् ऱुयिर्नऩि पुरक्कुम्
याणरॅण् डिशैक्कु मिरुळऱ विमैक्कु मिरवितन् कुलमुद ऩिरुबर्
शेणैयुङ् गडन्दु दिशैयैयुङ् गडन्द तिहिरियुञ् जॅन्दऩिक् कोलुम्
आणैयुङ् गाक्कु मायिनु नहरुक कणियॅन वियऱ्ऱिय दऩ्ऱे 106

पूणितुम् पुकळे अणियुम्–आभरण से बढ़कर यश ही श्लाघ्य है; अन्नरु इत्तंय पोरुपिल् निन्नुरु–ऐसे इस सुन्दर सिद्धान्त पर स्थित होकर; उयिर् नत्ति पुरक्कुम्–(प्रजा-जनों) जीवों का परिपालन करनेवाले; याणर् अंण् तिचैक्कुम्–सुन्दर आठों दिशाओं में; इरुळ् अर्–अन्धकार हटाते हुए; इमैक्कुम्–प्रकाश देनेवाले; इरवि तन् कुलम्–रवि के कुल के; मुतल् निरुपर्–(राजाओं में) प्रथम गणनीय राजाओं के; चेणंयुम् कटन्त–आकाश-लोक को भी पार करके; तिचैयैयुम् कटन्त–दिशाओं को भी पार करनेवाले; तिकिरियुम्–(आज्ञा-) चक्र और; तन्नि चेङ्कोलुम्–अनुपम राजदण्ड; आणैयुम्–आज्ञायें; काक्कुम् आयिनुम्–रक्षा कर सकते हैं तो भी; नकरुक्कु अणि–नगर का शृंगार; अंन्न–समझकर; इयर्रियतु–निर्मित हैं (वे प्राचीर)। (अन्नरु–ए–पूरक ध्वनियाँ।)। १०६

ऐसे परकोटे के कारण ही वह अयोध्या सुरक्षित रही सो बात नहीं। स्वयं राजाओं का आज्ञाचक्र (जो शासन का प्रतीक है), राज-दण्ड (जो दण्ड-विधान का प्रतीक है) और उनकी आज्ञाओं के मौखिक वचन ही काफी थे। क्योंकि वे राजा, यश को ही अलंकार मानकर चलनेवाले थे। प्रजा-पालन में दक्ष थे। वे उस रवि के कुल के थे जिसका प्रकाश सर्वत्र और सभी दिशाओं का सारा अन्धकार दूर करता है। इसलिए उनकी आज्ञा सभी दिशाओं में मानी जाती थी। तो भी नगर के शृंगार को आवश्यक समझ, अलंकार के रूप में ये परकोटे बनाये गये थे। १०६

अन्नमा मदिलुक् काळिमाल् वरैयै यलैहडल् शूळ्न्दन्न वहळि
पोन्विलै महळिर् मनमॅनक् कोळ्पोय्प् पुन्कवि यॅनत्तॅळि विन्रिक्
कन्नियर् रल्हुर् उडमॅन यार्क्कुम् बडिवरुङ् गाप्पिन्न दाहि
नन्नॅरि विलक्कुम् बॉरियॅन वॅरियुङ् गरात्तदु नविललुर् उदुनाम् 107

आळि माल् वरैयै–विपुल चक्रवाल गिरि को; अलै कटल् चूळ्न्त अन्न–लहरानेवाले समुद्र ने घेर लिया, ऐसा; अन्न मा मतिलुक्कु अकळि–उस परकोटे की परिघा; पोन् विलै मकळिर् मनम् अन्न–वेश्या के मन के समान; कोळ् पोय्–नीचे जाकर (गहरी बनी); पुन् कवि अन्न–(प्रतिभा-हीन कवि की) हीन कविता के समान; तॅळिवु इन्रि–प्रसाद-गुण से रहित; कन्नियर्–कन्याओं के; अल्कुल् तटम् अन्न–जघन प्रदेश के समान; यार्क्कुम् पटिवु अरु–किसी के लिए भी अथाह; काप्पित्तु आकि–सुरक्षित हो; नल् नॅरि विलक्कुम् पॉरि अन्न–सन्मार्ग छोड़नेवाली इंद्रिय के समान; अॅरियुम्–हानि पहुँचानेवाले; करात्ततु–मगरों से भरी है; नाम् नविलल् उर्रतु–हम (जिसका) वर्णन करने चले। १०७

अब खाई का वर्णन है। पुराण बताते हैं कि सारी पृथ्वी को चारों ओर से चक्रवालगिरि घेरे रहती है और उस गिरि को एक 'वाह्य-महासागर' घेरे रहता है। अयोध्यानगर का परकोटा उस चक्रवाल के समान है और उसकी खाई उस महासागर के समान। वह गहरी है—वेश्या के मन के समान गहरी; क्षुद्र-कविकृत कविता के समान अस्पष्ट (मैली); कुलीन कन्या के अंगों के समान अथाह रूप से सुरक्षित; और

कुमार्गगामी इन्द्रियों के समान हिंस्र मगरों से युक्त है। उसी का कवि आगे भी वर्णन करता है। १०७

एहु हिन्र दङ्ग णङ्ग ळोडु मॅल्लै काण्गिला
नाह मॉन्ऱ हन्कि डङ्गै नाम वेलै यामॅना
मेह मॉण्डु कॉण्डॅ ळुन्दु विण्डॉ डर्न्द कुन्ऱमॅन्
ऱाह नॉन्दु निन्ऱु तारै यम्म दिर्कण् वीशुमे 108

मेकम्, अॅल्लै काण्किला–मेघ, (विस्तार) सीमा अदृश्य हो; नाकम् ऑन्ऱु–पाताल तक जाकर, रही; अकन् किटङ्कै–विस्तृत उस खाई को; नामम् वेलै आम् अॅना–डरावना समुद्र मानकर; एकुकिन्ऱ तम् कणङ्कळोटुम्–जानेवाले अपने समूहों के साथ (जाकर); मॉण्टु कॉण्टु–(जल) भर लेकर; अ मतिल् कण्–उस प्राचीर पर; आकम् नॉन्तु निन्ऱु–शरीर के थक जाने से, ठहर कर; विण् तॉटर्न्त कुन्ऱम् अॅन्ऱु–गगन-व्यापी पर्वत समझकर; तारै वीचुम्–धारे बरसा देते हैं। १०८

मेघ आते हैं। उस पाताल तक गहरी खाई को समुद्र ही समझ लेते हैं। बस, वहीं जल भर लेते हैं। ऊपर उठते हैं तो प्राचीर इतने ऊँचे हैं कि वे उन्हें पार कर नहीं पाते। थक जाते हैं और वहीं पानी गिरा देते हैं। यहाँ खाई का विस्तार, उसकी गहराई और प्राचीर की ऊँचाई—इनकी ओर संकेत है। १०८

अन्द माम दिऱ्पु ऱत्त हत्तॅ ळुन्द लर्न्दुनीळ्
कन्द नाऱु पङ्ग यत्त कान मान मादरार्
मुन्दु वाण्मु हङ्ग ळुक्कु डैन्दु पोन मॉय्म्बॅलाम्
वन्दु पोर्वि ळैक्क माम दिल्व ळैन्द दॉक्कुमे 109

अन्त मा मतिल् पुऱत्तु–उस महान प्राचीरों के पार्श्व में; अकत्तु अॅळुन्तु–खाई के अन्दर से उगकर; अलर्न्तु–खिलकर; नीळ् कन्तम् नाऱु–खूब महकनेवाले; पङ्कयत्त कानम्–(जो) पंकज-कानन (रहा वह); मानम् मातरार् वाळ्मुकङ्कळुक्कु–(उस नगर के) मान्य स्त्रियों के उज्ज्वल मुखों के सामने; उटैन्तु–हारकर; मुन्तु पोन मॉय्म्पु अॅल्लाम्–पहले (जो) खोयी (वह) शक्ति सारी; वन्तु–अब प्राप्त कर; पोर् विळैक्क–(उनसे फिर) युद्ध करने के लिए; मा मतिल् वळैन्तत्तु–प्राचीरों को घेर लिया; ऑक्कुम्–इसके समान है। १०९

उस खाई में सुगन्ध-पूर्ण कमल के फूल खिले हैं। कमलों का कहिए, कानन ही है। उनको देख ऐसा लगता है कि उन्होंने आकर किले के बाहर घेराव डाला है। कवि-कल्पना है कि वे अयोध्यानगर की सुन्दरियों के उज्ज्वल चेहरों के सामने हार मानकर चले गए थे। अब नया बल पाकर, आकर ललकार रहे हैं। १०९

शूळ्न्द नाञ्जिल् शूळ्न्द वारै शुऱ्ऱु मुऱ्ऱु पारॅलाम्
पोळ्न्द माहि डङ्गि डैक्कि डन्दु पॉङ्गि डङ्गर्मात्

ताळ्न्द वङ्ग वारि यिऱ्ऱ डुक्कॉ णाम दत्तिऩ्वीळ्न्
दाळ्न्द यानै मीदॅ ळ्न्द ळ्न्दु हिऩ्ऱ पॉलुमे 110

चूळ्न्त नाऴ्चिल्–खूब सोचकर बनाये गये भागों के साथ; चूळ्न्त–(नगर को) घेरकर रहनेवाले; आरॅ चुऱ्ऱम् मुऱ्ऱ पार् अॅल्लाम्–परकोटे के (चारों) ओर रही, घनी भूमि, सब खोदकर बनायी गयी; मा किटङ्कु इटॅ किटन्तु–बड़ी खाई में पड़े रहे; इटङ्कर् मा–मगर; ताळ्न्त वङ्क वारियिल्–प्रचुरता से नावें (जहाँ) रहती हैं उस समुद्र में; तटुक्क ऑणा मतत्तिऩ्–दुर्दम्य मत्तता के कारण; विळ्न्तु मुळ्किऩ–घुसकर पैठे रहे; यानैकळ्–हाथी; मीतु अॅळ्न्तु अळ्न्तुकिऩ्ऱ पोलुम्–ऊपर उठते; फिर नीचे जाते (उन हाथियों) के समान (दिखते) हैं। ११०

उस खाई में बड़े-बड़े मगर हैं। वह खाई परकोटे के चारों ओर की भूमि को खोदकर बनायी गयी है। उसमें दिखाई देनेवाले मगर उन्मत्त हाथियों के समान हैं जो अपनी अदम्य मस्ती के कारण समुद्र में घुसकर तैर रहे हों— कभी नीचे पैठते, कभी ऊपर आते हैं। ११०

ईरुम् वाळिऩ् वाल्वि दिर्त्तॆ यिऱ्ऱि ळम्बि ऱैक्कुलम्
पेर मिऩ्ऩ वाय्वि रित्तॆ रिन्द कट्पि ऱङ्गुदीच्
चोर वॉऩ्ऱॆ यॊऩ्ऱु मुऩ्ऱॊ डर्न्दु शीऱ्ऱि डङ्गर्मा
पोरु हन्दु शीऱु हिऩ्ऱ पोर रक्कर् पोलुमे 111

ईरुम् वाळिऩ्–आरे के समान रहनेवाली; वाल् वितिर्त्तु–पूँछ हिलाते हुए; अॅयिऱु इळम् पिऱै कुलम्–दाँत-रूपी बाल-चन्द्र-गण को; पेर मिऩ्ऩ–रह-रहकर चमकाते; वाय् विरित्तु–मुख खोलकर; अॅरिन्त कण् पिऱङ्ग ती चोर–जलती सी आँखों से प्रकाशमान कोपाग्नि प्रकट करते हुए; ऑऩ्ऱॆ ऑऩ्ऱु मुऩ् तॉटर्न्तु–एक के मुख के सामने दूसरे का मुख रहे ऐसा जाते हुए; चीऱु–नाराज़; इटङ्कर् मा–मगर; पोर् उकन्तु–युद्धकामना से; चीऱुकिऩ्ऱ–आपस में क्रोध दिखानेवाले; अरक्कर् पोलुम्–राक्षस के समान थे। १११

वे मगर अपने आरे के समान पूँछों को हिलाते हुए चलते हैं। बार-बार मुख खोलते हैं तो उनके दाँत, जो वक्र बाल-चन्द्र के समान हैं, रह-रहकर चमकते हैं। आँखों से चिनगारियाँ निकलती हैं। वे एक के सामने एक आपस में क्रोध दिखाते हुए चलते हैं तब वे राक्षसों के समान लगते हैं। १११

आळु मऩ्ऩम् वॅण्कु डैक्कु लङ्ग ळाव रुङ्गराक्
कोळॆ लामु लावु हिऩ्ऱ कुऩ्ऱ मऩ्ऩ यानयात्
ताळु लावु पङ्ग यत्त रङ्ग मेदु रङ्गमा
वाळुम् वेलु मीन माह मऩ्नर् शेनै मानुमे 112

आळुम् अऩ्ऩम्–वहाँ (मानों) राज करनेवाले हंस; वॅण् कुटै कुलङ्कळ् आ(क)–श्वेत छत्र हुए; अरु करा–अपूर्व मगर; कोळ् अॅलाम् उलावुकिऩ्ऱ–ग्रह जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुऩ्ऱम् अऩ्ऩ–(उस) मेरु के सदृश; यानै आ(क)–हाथी बने; ताळ्

उलावु–नालों पर हिलनेवाले; पङ्कयम् तरङ्कमे–कमल को झकझोरनेवाली तरंगें; तुरङ्कम् आ(क)–अश्व बनीं; मीनम् वाळुम् वेलुम् आक–मछलियाँ, तलवारें और बर्छियाँ बनीं, (ऐसी सजकर); मन्नर् चेन्नै मानुम्–राजा की सेना की समानता करती है। ११२

वह खाई राजाओं की सेना से उपमेय बनी है। इस सेना के उसमें पाए जानेवाले हंस श्वेत छत्र हैं; अपूर्व मगर हाथी हैं जो मेरु पर्वत के, जिसकी ग्रह परिक्रमा करते हैं, समान है। कमल-पुष्पों को झकझोरनेवाली तरंगें अश्व हैं; मछलियाँ तलवारें और शक्तियाँ हैं। ११२

विळिम्बु शुर्रु मुर्रु वित्तु वॆळ्ळि कट्टि युळ्ळुरप्
पळिङ्गु पॊर्र हट्टि नोड डुत्तु रप्प डुत्तलिन्
तळिन्द कर्र लत्तॊ डच्च लत्ति नैत्त नित्तुरत्
तॆळिन्दु णर्त्तु हिर्रु मॆन्र रेव रालु मावदे 113

चुर्रु–चारों ओर; विळिम्पु–किनारे को; वॆळ्ळि कट्टि–चाँदी से मढ़के; मुर्रुवित्तु–बना चुक कर; उळ्ळुर–अन्दर; पळिङ्कु पॊन् तकट्टिनोटुअटुत्तु उर पट्टुत्तलिन्–स्फटिक शिलाएँ, स्वर्ण-फलकों के साथ, पास-पास बिछायी गयी हैं, इसलिए; तळिन्त कल् तलत्तोटु अ चलत्तिनै–स्फटिक शिला की फर्श वाली उस जमीन को और जल को; तत्तित्तु उर तॆळिन्तु उणर्त्तुकिर्रुम् ॲन्रल्–अलग-अलग पहचनवा सकते हैं, यह कहना; तेवरालुम् आवते–क्या देवों के लिए भी शक्य है; (ए–नकारात्मक ध्वनि)। ११३

उस खाई के किनारे चाँदी से मढ़े हैं। अन्दर स्फटिक की ईंटों और स्वर्ण के फलकों को पास-पास रखकर तल बनाया गया है। तब पानी कहाँ है, तल कहाँ है? यह पहचानना देवों के लिए भी कठिन हो जाता है। ११३

अन्न नीर हन्गि डङ्गु शूळ्हि डन्द वाळियैत्
तुन्नि वेरु शूळ्हि डन्द तूङ्गु वीङ्गि रुट्पिळम्
बॆन्न लामि रुम्बु शूळ्हि डन्द शोलै यॆण्णिलप्
पॊन्निन् माम दिट्कु डुत्त नील वाडै पोलुमे 114

अन्न नीर्–इस प्रकार की; अकन् किटङ्कु–विशाल खाईं (रूपी); चूळ् किटन्त आळियै तुन्नि–चक्रवाल को घेरकर पड़े महासागर के एक तरफ़; वेरु चूळ् किटन्त–अलग-अलग पुंजीभूत रहे; तङ्कु वीङ्कु इरुळ् पिळम्पु ॲन्नल् आम्–अचल और विपुल अन्धकारघन, ऐसे मान्य; इरुम्पु चूळ् किटन्त–छोटे-छोटे वनों से पूर्ण; चोलै ॲण्णिल्–उद्यानों को सोचें तो; अ पॊन्निन् मा मतिट्कु उटुत्त–उस स्वर्णमय प्राचीर पर वेष्टित; नील आटै पोलुम्–काले वस्त्र के समान थे। ११४

परकोटे हैं; उनके चारों ओर खाई है और उसको घेरकर उपवन बने हैं। यह ऐसा है जैसे भूमि को घेरकर चक्रवाल; उसको घेरकर महासमुद्र और उससे सटकर अन्धकार पुंजीभूत होकर घेर रहा हो। ये उपवन

ऐसे भी लगते हैं मानों स्वर्णमय प्राचीरों को कुदृष्टि से बचाने के लिए उन पर नीला वस्त्र लपेट दिया गया हो। ११४

ॲल्लै निन्ऱ वॅन्ऱि यानै यॅन्न निन्ऱ मुन्नैमाल्
ऑल्लै युम्बर् नाड ळन्द ताळिन् मीदु यर्न्दुपोय्
मल्लन् ञालम् यावु नीदि माऱु राव ळक्किनाल्
नल्ल वाऱु शॉल्लुम् वेद नान्गु मन्न वायिले 115

मल्लल् ञालम् यावुम्–समृद्ध संसार के जीव सब; नीति माऱु उरा वऴक्किनाल्–न्याय मार्ग से परे न जायँ, इस प्रकार; नल्ल आऱु चॉल्लुम्–अच्छे मार्ग बतानेवाले; वेतम्–वेद; नालुम् अन्न–चारों के समान; वायिल्–गोपुर, (चारों); मुन्नै–पहले कभी; माल्–श्रीविष्णु के; उम्पर नाटु ऑल्लै अळन्त–(तिविक्रम बनकर) देवलोक को भी शीघ्र नापनेवाले; ताळिन्–चरणों से; मीतु उयर्न्तु–बढ़कर ऊँचे जाकर; ॲल्लै निन्ऱ–सीमाओं पर स्थित; वॅन्ऱि यानै ॲन्न–विजय-स्मारक गजों के समान; निन्ऱ–(शान के साथ) खड़े रहे। ११५

प्राचीरों में चारों दिशाओं में चार गोपुर बने हैं। गोपुर से मतलब नगर-द्वार या तोरण है। उन तोरणों पर शिल्पकारी के साथ पत्थर या ईंटों के बने, चौकोर और कुछ (सात) तल्लों के ऊँचे मेहराब से होते हैं। इन प्राचीरों के ये चारों द्वार चार वेदों के समान हैं जो सन्मार्ग के फाटक हैं। एक बार श्रीविष्णु ने जब सारे लोकों को दो ही श्रीचरणों के अन्दर नाप दिया तब उनका चरण देवलोक मापने ऊपर गया। वह जितना ऊँचा गया उससे बढ़कर ये गोपुर ऊँचे गए हैं। ये विजय-स्मारक राज-गजों के समान शान के साथ खड़े हैं। ११५

ताविल् पॉऱ्ऱ लत्ति नऱ्ऱ वत्ति नोर्ह ड‌ङ्गुताळ्
पूवु यिर्त्त कऱ्प हप्पॉ दुम्बर् पुक्कॉ दुङ्गुमाल्
आवि यॉत्त शेवल् कूव वन्बिन् वन्द णॅन्दिडा
दोवि यप्पु ऱाविन् माडि रुक्क वूडु पेडैये 116

आवि ऑत्त चेवल्–प्राण सम प्यारे अपने (पुरुष) कबूतर को; तान् अऴैक्क–अपने बुलाने पर; अन्पिन् वन्तु अणैन्तिटातु–प्यार के साथ आकर आलिंगन न करके; ओवियम् पुऱाविन् माटु इरुक्क–चित्र या प्रतिमा की कबूतरी के पास खड़ा रहता है (यह देख); ऊटु पेटै–रूठनेवाली कबूतरी; ता इल् पॉन् तलत्तिल्–निर्दोष स्वर्गलोक में; नल् तवत्तित्तोर्कळ् तङ्कु ताळ्–(जिनके पास) तपस्वी ठहरते हैं ऐसे तनों वाले, और; पू उयिर्त्त–(जो) फूल गिराते हैं; कऱ्पकम् पॉतुम्पर् पुक्कु–(उन) कल्पक-तरुओं के उपवनों में पहुँचकर; ऑतुङ्कुम्–छिप जाते हैं। (आल्)। ११६

इन गोपुरों की भित्तियों पर कबूतरों की प्रतिमाएँ या चित्र बने हैं। कबूतरी अपने प्रिय कबूतर को बुलाती है। वह नहीं आता पर चित्रार्पित कबूतरी के पास खड़ा रहता है। कबूतरी रूठती है और यों ही कलपक

वन में जाकर छिप जाती है। वह कलपक वन नन्दन वन है जहाँ तरु-तले ऋषि-मुनि हैं और फूल गिरे पड़े हैं। गोपुर की ऊँचाई की ओर और अयोध्या में प्राप्त चित्र-प्रतिमा और वास्तुकला की श्रेष्ठता की ओर संकेत है— इसमें। ११६

कल्ल डित्त डुक्कि दाय्प ळिङ्ग रिन्दु कट्टिमी
दॅल्लि डप्प शुम्बॊन् वॆत्ति लङ्गु पन्म णिक्कुलम्
विल्लि डक्कु यिऱ्ऱि वाळ्वि रिक्कुम् वॆळ्ळि मामरम्
पुल्लि डक्कि डत्ति वच्चि रत्त काल्बॊ रुत्तिये 117

पळिङ्कु कल् अटित्तु अट्टुक्कि—स्फटिक के, कटे पत्थर चुनकर; वाय् मीतु—सन्धि स्थलों में; ॲन् इट पचुम् पॊन् अरित्तु वॆत्तु—चमकदार चोखे स्वर्ण के पत्र रखकर; कट्टि—(भित्तियाँ) बनाकर; इलङ्कु—कांतियुत रहनेवाले; पल् मणि कुलम्—विविध मणि-समूहों को; ॲल् इट कुयिऱ्ऱि—वे चमकते रहें ऐसा जड़कर; वच्चिरत्त काल् पॊरुत्ति—हीरों के खम्भे खड़ाकर; वाळ् विरिक्कुम्—चमकनेवाले; वॆळ्ळि मा मरम्—चाँदी के धरन आदि; पुल्लिट किटत्ति—ठीक से लगाकर। ११७

११६ से ११८ तक तल्ले कैसे बने हैं और सबसे ऊपर कलश कैसे लगा दिए गए हैं, इसका विस्तृत वर्णन है। दीवारें स्फटिक-पत्थरों की चुनी हुई हैं। पत्थरों के सन्धि-स्थलों में सोने के खण्डित पत्र ठूँस दिए गए हैं और पंक्तियों के मध्य भी सोने के पत्र हैं। खम्भे हीरक के हैं और उन पर विविध रत्न जड़े हैं और वे चमकते हैं। बल्ले, धरन, शहतीर आदि चाँदी के हैं। ११७

मरक तत्ति लङ्गु पोति कैत्त लत्तु वच्चिरम्
पुरैत पुत्त डुक्कि मीतु पॊन्कु यिऱ्ऱि मिन्कुलाम्
निरैम णिक्कु लत्ति नाळि नीळ्व हुत्त वोळिमेल्
विरवु कैत्त लत्ति नुयत्त मेद हत्तिन् मीदरो 118

मरकतत्तु इलङ्कु पोतिकै तलत्तु—मरकत के साथ चमकनेवाले स्तम्भ-शीर्ष के ऊपर; वच्चिरम् पुरै तपुत्तु अट्टुक्कि—हीरक खण्ड काट-छाँटकर एक के ऊपर एक रखकर; मीतु पॊन् कुयिऱ्ऱि—उस पर स्वर्ण धँसाकर; मिन् कुलाम्—बिजली के समान चमकनेवाले; निरै मणि कुलत्तिन् वकुत्त—पंक्ति-बद्ध अनेक रत्नों की बनी; आळि—सिंह की मूर्तियों के साथ; नीळ् ओळि मेल् विरवु—लम्बी श्रेणियों पर लगे; कैतलत्तिन् उयत्त—शहतीरों के रूप में रहे; मेतकत्तिन् मीतु—गोमेद के बल्लों के ऊपर; (अरो)। ११८

खम्भे के ऊपर बल्ले के नीचे जो खम्भ-शिखर (कमलाकार के) लकड़ी के रखे जाते हैं उनकी जगह पर मरकत के बने स्तम्भ-शीर्ष हैं। छत को धारण करनेवाले आर-पार के बल्ले हीरक, स्वर्ण आदि के हैं और उनमें रत्नों से निर्मित सिंह आदि की प्रतिमाएँ हैं। बाद उनके ऊपर गोमेद के बल्लों की पंक्तियाँ हैं। ११८

एऴ्पॉ ऴिऱ्कु मेऴ्नि लैत्त लञ्ज मैत्त दॅन्ननूल्
ऊऴु ऱ्क्कु ऱित्त मैत्त वुम्बर् शॅम्बॉन् वेय्न्दुमीच्
चूऴ्शु डरच्चि रत्तु नन्म णित्त शुम्बु तोन्ऱलाल्
वाऴ्नि लक्कु लक्कॉ ऴुन्दै मौलि शूट्टि यन्नवे 119

एऴ् पॉऴिऱ्कुम्–सप्त लोकों में रहनेवाले सब लोगों के लिए; एऴ् निलै तलम् चमैत्तु अॅन्न–सात तल्ले बना लिए गए हों—ऐसा; नूल् ऊऴ् उऱ–शास्त्र-विहित प्रकार से; कुऱित्तु अमैत्त–खूब सोचकर बनाये गये (वे गोपुर); उम्पर् चॅम्पॉन् वेय्न्तु–सबके ऊपर चोखे स्वर्ण-पत्र छाकर; मी–उस पर; चूऴ् चुटर् चिरत्तु–चमकीले शिरो-भाग पर; नल् मणि तचुम्पु तोन्ऱलाल्–अच्छे रत्नमय कलश दिखते हैं, इसलिए; वाऴ् निलम् कुलम् कॉऴुन्तै–जीवन्त भूमि के कुल-किसलय को (भूमि की उत्कृष्ट सन्तान—अयोध्या नगर को); मौलि चूट्टिय अन्न–किरीट पहनाया गया हो, ऐसा है। (ए)। ११९

ऐसी दीवारों, खम्भों और छतों के सात तल्ले हैं, मानों ऊपर के सप्त लोकों में एक-एक के रहनेवालों के लिए एक-एक रचा गया हो। ये गोपुर शास्त्रविहित रीति से बने हैं। सबके ऊपर स्वर्ण की मेहराब की रचना है जिसपर रत्न-कलश पाए जाते हैं। इनको देखने पर ऐसा लगता है मानों भूदेवी के कुल-दीपक (संतान) अयोध्या के मुकुट हैं। ११९

❀ तिङ्गळुङ् गरिदॅन वॅण्मै तीऱ्ऱिय, शङ्गवॅण् शुदैयुडैत् तवळ माळिहै
वॅङ्गडुङ् गाल्पॉर मेक्कु नोक्किय, पॉङ्गिरुम् बाऱ्कडऱ् ऱरङ्गम् बोलुमे 120

तिङ्कळुम् करितु अॅन–चन्द्र मण्डल भी (इनके सामने) काला है—ऐसा कहने की स्थिति पैदा करते हुए; वॅण् चङ्कम् चुतै उटै–सफ़ेद शंख के बने चूने से; वॅण्मै तीऱ्ऱिय–सफेदी जिनपर पुती हो; तवळम् माळिकै–धवल सौध; वॅम् कटुकाल् पॉर–बलवान और वेगयुक्त पवन के झोंके से; मेक्कु नोक्किय पॉङ्कु–ऊपर की ओर उमड़ आये; इरुपाल् कटल् तरङ्कम् पोलुम्–विपुल क्षीरसागर की तरंगों के समान थे। ए। १२०

वे सौध सफ़ेद थे; इतने सफ़ेद कि स्वयं चन्द्र भी उनके सामने काला लगता था। उनपर सफ़ेदी भी पुती थी। उनको देखने पर ऐसा लगता था मानों प्रवल प्रभंजन के झोंकों से क्षीरसागर की उत्तुंग तरंगें उठी हुई हों। १२०

❀ पुळ्ळियम् बुऱविऱ् पॉरुन्दु माळिहै, तळ्ळरुन् दमनियत् तहडु वेय्न्दन
अॅळ्ळरुङ् गदिरव निळवॅ यिऱ्कुऴाम्, वॅळ्ळिवॅण् गिरियिडै विरिन्द पोलुमे 121

तळ्ळ अरु–अपृथक्करणीय; तमनियम् तकटु वेय्न्तन–स्वर्ण के पत्र मढ़े हुए; पुळ्ळि अम् पुऱवु पॉरुन्तुम्–विन्दियों वाले सुन्दर कबूतरों के रहने के दरबे जिनमें रहते हैं; माळिकै–वे प्रासाद; अॅळ्ळ उरु–अनिन्द्य; इळ वॅयिल् कुऴाम्–सूर्य की बाल-किरणों के जाल; वॅळ्ळि वॅण् किरियिन् इटै–सफेद धवल-गिरि पर; विरिन्त पोलुम्–फैल गये ऐसा लगता है। १२१

उस नगर के सफेद सौधों में विधिवत् कबूतरों के ठहरने के दर्वे बने हैं, जिन पर स्वर्ण-पत्र मढ़े हैं। यह धवल प्रासाद सूर्य की पीत किरणों से मण्डित श्वेत-गिरियों के समान दिखाई देते हैं। १२१

वयिरनऱ् कान्मिशै मरह दत्तुलाम्
शॆयिरऱु पोदिहै किडत्तिच् चित्तिरम्
उयिर्पॆऱक् कुयिऱ्ऱिय वुम्बर् नाट्टवर्
अयिर्वुऱ इमैप्पन वळविल् कोडिए 122

वयिरम् नल् काल् मिचै–हीरों से बने सुन्दर खम्भों पर; मरकतम् तुलाम्–मरकत के धरन; चॆयिर् अऱु पोतिकै–दोषहीन (कमलाकार के) खम्भ-शिखर; किटत्ति–रखकर; चित्तिरम् उयिर् पॆऱ कुयिऱ्ऱिय–मानों जीवित हो आये हों, ऐसे चित्रों (-प्रतिमाओं) से युक्त बनाकर; उम्पर् नाट्टवर्–देवलोकवासी; अयिर्वु उऱ–भ्रमित हो जायें, ऐसे; इमैप्पन–दीप्तिमान हैं जो; अळवु इल् कोटि–असंख्य करोड़ हैं। ए। १२२

प्रासादों के खम्भे हीरक-मय हैं। खम्भों के ऊपर औंधेकमल के आकार के स्तम्भ-सिर होते हैं। उन पर मरकत के धरन रखे गए हैं। उन प्रासादों में अनेक सजीव दिखनेवाले चित्र बने हैं। इन प्रासादों को देख, देव भ्रम में पड़ जाते हैं कि क्या ये हमारे विमान तो नहीं। ऐसे प्रासाद असंख्य करोड़ हैं। १२२

चन्दिर कान्दत्तिन् ऱलत्त शन्दनप्, पन्दिशॆय् तूणिन्मेऱ् पवळप् पोदिहैच्
चॆन्दम नियत्तुलाज् जॆऱित्त तिण्शुवर्, इन्दिर नीलत्त वॆण्णिल् कोडिए 123

चन्तिर कान्तत्तिन् तळत्त–चन्द्र-कान्त पत्थर की फर्श वाले; पन्ति चॆय् चन्तनत् तूणिन् मेल्–पंक्तियों में खड़े किए खम्भों के ऊपर; पवळम् पोतिकै–मूंगोंवाले खम्भ-शीर्षों पर; चॆम् तमनियम् तुलाम् चॆऱित्त–लाल सोने के बने धरन जिनपर लगे हैं, और; तिण् चुवर् इन्तिर नीलत्त–(जिनकी) भित्तियाँ इन्द्रनीलमणियों वाली हैं, (ऐसे प्रासाद); ऍण् इल् कोटि–असंख्यक करोड़ हैं। १२३

अन्य प्रासाद हैं, जिनकी फर्श चन्द्रकान्त पत्थरों की है। पंक्ति में स्थित खम्भे चन्दन के हैं। स्तम्भ-शीर्ष प्रवाल के हैं। धरन लाल स्वर्ण के; और दीवारें इन्द्र-नीलम की बनी हैं। ऐसे असंख्य करोड़ हैं। १२३

पाडहक् कालडि पदुमत् तेय्प्पन, शेडरैत् तळोइन शॆय्य वायिन
नाडहत् तॊऴिलिन नडुवु तुय्यन, आडहत् तोऱ्ऱत्त वळवि लादन 124

पाटकम् काल् अटि–घुंघरू पहने पैरों के निचले भाग; पतुमम् एय्प्पन–पद्म के समान हैं; चॆय्य वायिन–लाल-मुखी हैं; नटुवु तुय्यन–मध्यभाग रुई के अग्र के समान सूक्ष्म हैं; आटकम् तोऱ्ऱत्त–स्वर्णमय दृश्यवाले हैं, जो (वे चित्र); अळवु इलातन–असंख्यक हैं; चेटरै तळीइयिन–(कुछ) अपने पतियों का आलिंगन करने की मुद्रा में बने; नाटकम् तॊऴिलिन–(कुछ) नर्तन-कर्म-रत दिखाये गये हैं। १२४

अनेक प्रासादों में अनेक स्त्रियों के चित्र अंकित हैं। उनके घुंघरू वाले पैर पद्म के समान हैं। अधर लाल हैं। कटि भाग अति सूक्ष्म हैं। सोने के रंग के हैं। ऐसे वे असंख्यक हैं। उनमें कुछ अपने पतियों का आलिंगन करती दिखायी गयी हैं और कुछ नृत्यलीन। (इस पद्य में प्रासाद और नारियों में श्लेष का अर्थ निकालने का प्रयास भी किया जाता है; पर उसके लिए पाठ परिवर्तन की आवश्यकता पड़ जाती है। १२४

पुक्कवर् कण्णिमै पॉरुन्दु ऱादॉऴि
तॉक्कुडन् ऱयङ्गविण् णवरिऱ् ऱोन्ऱलाल्
तिक्कुऱ् निनैप्पिनिऱ् चॅल्लुन् दॅय्ववी
डोक्कनिन् ऱिमैप्पन वुम्बर् नाट्टिनुम् 125

पुक्कवर्–प्रविष्ट (हुए) लोग; कण्णिमै पॉरुन्तु उऱातु–पलक बन्द किये बिना ही; ऑळि तॉक्कु उटन् तयङ्क–उन (प्रासादों) की कान्ति के इनकी कान्ति के साथ मिलकर (फलस्वरूप); विण्णवरिन् तोन्ऱलाल्–देवों के समान दिखने से; निनैप्पिनिल्–संकल्प करते ही; तिक्कु उऱ चॅल्लुम्–सभी दिशाओं में जा सकनेवाले; तॅय्व वीटु ऑक्क निन्ऱु–देव-यानों के समान स्थित रहकर; उम्पर् नाट्टिनुम्–देव-लोक में भी; इमैप्पन–शोभा दिखानेवाले हैं। १२५

उनमें जो प्रवेश करते हैं वे विस्मय-विमूढ़ हो पलक नहीं गिराते। उन पर भवन की छवि पड़ती है अतः वे देवों के सदृश लगते हैं। तब वे प्रासाद इन देवनुमा लोगों के साथ, और अपनी ऊँचाई की वजह से भी देवयानों के समान, जो संकल्प मात्र से कहीं भी जा सकते हैं— लगते हैं। १२५

अणियिऴै महळिरु मलङ्गल् वीररुम्, तणिवन वऱनॅऱि तणिवि लादन
मणियिनुम् पॊन्निनुम् वनैन्द वल्लदु, पणिपिऱि दियन्ऱिल पहलै वॆन्ऱन 126

अणि इऴै मकळिरुम्–सुन्दर आभरण वाली रमणियों; अलङ्कल् वीररुम्–माला-धारी तरुणों; तणिवन–के आवास हैं; अऱनॅऱि तणिवु अलातन–धर्माचरण में कम नहीं होनेवाले; मणियितुम् पॊन्निनुम्–रत्न और स्वर्ण से; वनैन्त अल्लतु–बनने के सिवा; पिऱितु पणि इयन्ऱिल–अन्य वस्तुओं से बननेवाले नहीं; पकलै वॆन्ऱन–सूर्य को हरा चुके हैं। १२६

इनमें तरुणियाँ और तरुण रहते हैं। वे सब धर्मचारी हैं। इन पर स्वर्ण और रत्नों का ही अलंकार है; और किसी वस्तु का नहीं। वे सूर्य से भी बढ़कर उज्ज्वल हैं। (इस पद्य में 'तणिवन, तणिवलादन' दो शब्दों का प्रयोग है जिनमें परस्पर विरोध का आभास-सा लगता है। पर दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। पहले का— बसे हुए; दूसरे का— कम नहीं होनेवाले)। १२६

वानुर् निवन्दन वरम्बिल् शॅल्वत्त, तानुयर् पुहळॅनत् तयङ्गु शोदिय
ऊनमि लरनॅरि युर्र् वॅण्णिलाक्, कोनिहर् कुडिहडङ् कॉळ्हे शान्रन 127

वान् उर निवन्तन–आकाश तक ऊँचे गये हैं; वरम्पु इल् चॅल्वत्त–अपार सम्पत्तिवाले; उयर् पुकळ् अॅन–बढ़ते यश के समान; तयङ्कु चोतिय–दीप्तिमान ज्योतिवाले हैं; ऊनम् इल् अरम् नॅरि उर्र–कमी-हीन धर्म-मार्ग पर चलनेवाले; कोन् निकर्–राजा के समान; अॅण् इला कुटिकळ्–असंख्य (प्रजा-) जनों को; तम् कॉळ्क चान्रन–अपने (अधीन) में लेकर श्रेष्ठ बने हुए हैं। १२७

गगनोच्च, अपार धन भरे, उन्नत यश के समान शुभ्र, ये प्रासाद, निर्दोष, धर्म-पथ-चारी राजा के समान जिसके पालन के अधीन अनेक प्रजाजन हैं, अपने रक्षण में अनेक मनुष्यों को लिए रहते हैं। (यानी इन प्रासादों में असंख्यक लोग रहते हैं।)। १२७

अरुवियिन् ऱाळ्न्दुमुत् तलङ्गु तामत्त, विरिमुहिर् कुलमॅनक् कॉडिवि रावित
परुमणिक् कुवॅयिन पशुम्बॊन् कोडिय, वरुमयिर् कणत्तन मलैयुम् पोन्रन 128

अरुवियिन् ताळ्न्तु–सरिता के समान लटकते; अलङ्कु–हिलते; तामत्त–हारों के हैं (से अलंकृत हैं); विरिमुकिल् कुलम् अॅन–फैले श्वेत मेघ-समूहों के समान; कॉटि विरावित–ध्वजाओं से व्याप्त; परु मणि कुवॅयिन–बड़े रत्न-राशियों के हैं (से सज्जित); पचुम् पॊन् कोटिय–चोखे स्वर्ण से भरे; वरुम् मयिल् कणत्तन–पालित मयूर-समूह-युक्त; मलैयुम् पोन्रन–(इनके कारण) पर्वत-सम भी रहनेवाले, (प्रासाद)। १२८

अनेक सौध पर्वतों से साधर्म्य रखते है। पर्वतों में सरिताएँ ऊपर से नीचे वहती हैं; उन पर मेघ जमे हैं; रत्नों की राशियाँ हैं; स्वर्ण मिलता है; और मोर पलते हैं। उसी तरह इन प्रासादों में मोती-मालाएँ लटकायी गयी हैं, जो सरिताओं के समान हैं। मेघ के समान ध्वजायें फहरती हैं; रत्न और स्वर्ण की बात तो प्रसिद्ध ही है। और मोर पाले जाते हैं। १२८

अहिलिडु कॉळुम्बुहै यळायम यङ्गिन, मुहिलॊडु वेऱुमै तॅरिह लामुळुत्
तुहिलुडै नॅडुङ्गॊडिच् चूल मिन्नुव, पहलिडु मिन्नणिप् परप्पुप् पोन्रवे 129

अकिल् इटु कॉळु पुकै–अगर से निकला घना धुआँ; अळाय् मयङ्किन–फैलकर जमा है, ऐसे धूम जमे; मुकिलॊटु वेऱुमै तॅरिकला–मेघों से पृथकत्व (जिनका) मालूम नहीं हो पाता; मुळु तुकिल् उटै नॅटु कॉटि–महीन चीर की (बनी) लम्बी ध्वजाओं के मध्य; चूलम् मिन्नुव–शूल जो चमकते हैं वे; पकल् इटु–चमकनेवाले; मिन् अणि परप्पु पोन्रन–विद्युत के सुन्दर विस्तार के समान रहते हैं। १२९

उन प्रासादों पर जो महीन कपड़े की बनी पताकाएँ फहरती हैं उन पर अगरु धूम जमता है। इसलिए वे बिल्कुल मेघों के समान लगती हैं। उनके बीच वज्र के सीधे आघात से मकान को बचाने के लिए लोहे

के शूल रखे गये हैं और वे चमकदार हैं। वे मेघों के मध्य कौंधनेवाली बिजलियों के समान हैं। १२९

तुडियिडैप् पणैमुलैत् तोहै यन्ननवर्, अडियिणैच् चिलम्बुपूण् डरर्रु माळिहैक्
कॉडियिडैत् तरळवॅण् कोवै शूळ्वन, कडियुडैक् कर्पहक् कावॅप् पोन्रवे 130

तुटि इटै–डमरू (के सामन पतली) कमर; पणै मुलै–पीन स्तन; तोकै अन्नवर्–कलापियों सदृश (छटावाली स्त्रियाँ); अटि इणै–चरण द्वय (को); चिलम्पु पूण्टु अरर्रुम् माळिकै–नूपुर पकड़कर (जहाँ) क्वणन करते हैं उन प्रासादों में; कॉटि इटै–अनेक ध्वजाओं के मध्य; तरळम् वॅण् कोवै चूळ्वन–सफ़ेद मुक्ताहारों के लटकने के दृश्य; कटि उटै–श्रेष्ठ; कर्पकम् कावै पोन्र्–कल्पक वन के समान थे। १३०

वे प्रासाद जिनमें क्षीण-कटि, पीन-स्तन और कलापी-समाना रमणियाँ रहती हैं— ध्वजाएँ, मुक्ता-हार आदि के कारण कल्पक-वन के समान लगते हैं। १३०

काण्वरु नॅडुवरैक् कदलिक् कानम्बोल्, ताणिमिर् पदाहैयिन् कुळ्ानद ळैत्तन
वाणत्ति मळुङ्गिड मडङ्गि वैहलुम्, शेण्मदि तेय्वदक् कॉडिह डेय्क्कवे 131

काण् वरु–सुन्दर रूपवाले; नॅटु वरै–विशाल पर्वत पर के; कतलि कानम् पोल्–कदली वन के समान; ताळ् निमिर्–डाँडों पर फहरनेवाली; पताकैयिन् कुऴाम्–पताकाओं का समूह; तळैत्तन–(प्रासादों पर) भर-पूर रहा; चेण् मति–आकाश-चारी चन्द्र; मटङ्कि–बाधा पाकर; वाळ् नत्ति मळुङ्किट–प्रकाश में अधिक मन्द पड़ते हुए; वैकलुम् तेय्वतु–दिने-दिने क्षीण होना; अक् कॉटिकळ् तेय्क्कवे–उन ध्वजाओं के घर्षण के ही कारण। १३१

वे अपनी ध्वजाओं के कारण पर्वतों पर मिलनेवाले कदलीवन से मेल खाते हैं। ये ध्वजाएँ चन्द्र को रोकती ही नहीं पर उसे रगड़-रगड़कर धीरे-धीरे कांतिहीन भी बना लेती हैं। १३१

पॉन्ऱिणि मण्डप मल्ल पूत्तॉडर्, मन्रुह ळल्लन माड माळिहै
कुन्रुह ळल्लन मणिशॅय् कुट्टिमम्, मुन्ऱिलह ळल्लन मुत्तिन् पन्दरे 132

पॉन् तिणि मण्टपम्–स्वर्ण-कृतियों से भूषित मण्डप; अल्ल–जो नहीं हैं वे; पू तॉटर्–फूलों की छाजनवाले लता-कुंज हैं; मन्रुकळ्–आम सभा-मण्डप जो नहीं; माटम् माळिकै–माढोंवाले सौध हैं; कुन्रुकळ् अल्लन–छोटे पर्वत जो नहीं; मणि चॅय् कुट्टिमम्–रत्नों की बनी कृत्रिम गिरियाँ हैं; मुन्ऱिल्कळ्–रिक्त स्थान नहीं; मुत्तिन् पन्तरे–मोती-वितान हैं। १३२

उस नगर में या तो स्वर्ण-रचनाओं से भरे मण्डपों को, आम सभा-भवनों को, प्राकृतिक शैलों को देखते हैं या लताकुंज, माढोंवाले सौध, या कृत्रिम-क्रीड़ा-शैल। खाली मैदान के ऊपर भी मोती का वितान छाया मिलेगा। अर्थात् नगर किसी न किसी भवन से या रचना से पूर्ण है। १३२

❀ मिऩ्ऩॅऩ विळक्कॅऩ वॅयिऱ्पि ऴम्बॅऩत्, तुऩ्ऩिय तमऩियत् तॉऴिऱ् ऱॆत्तवक्
कऩ्ऩिऩऩ् ऩहर्निऴल् कदुव लालरो, पॊऩ्ऩुल हायदु पुलवर् वाऩमे 133

मिऩ् ऍऩ–बिजली के समान और; विळक्कु ऍऩ–दीप के समान, और; वॅयिल् पिऴम्पु ऍऩ–सूर्य-किरण-पुंज के समान; तुऩ्ऩिय–अधिक कांतियुक्त; तमऩियम् तॉऴिल् तऴॆत्त–स्वर्ण की कारीगरी जहाँ अधिक है; अ कऩ्ऩि नल् नकर् निऴल्–उस अक्षय नगर का प्रकाश; कतुवलाल्–जा लपेट लेता है, अतः; पुलवर् वाऩम्–देवों का स्वर्ग-लोक; पॊऩ् उलकु आयतु–स्वर्ण-लोक बना, (अरो)। १३३

देवलोक स्वर्णलोक कैसे बना ? कवि की कल्पना है कि अयोध्या की कांति उस पर फैली इसलिए वह वैसा बना। उस अक्षय नगर में स्वर्ण-कृतियों की भरमार है जिससे बिजलियों या सूर्य-किरणों का सा प्रकाश छिटकता है और वह देव-लोक पर फैल जाता है। १३३

ऍऴुमिडत् तहऩ्ऱिडै यॊऩ्ऱि ऍऱ्पडु, पॊऴुदिडैप् पोदलिऱ् पुरिशैप् पॊऩ्ऩहर्
अऴऩ्मणि तिरुत्तिय वयोत्ति याळुडै, निऴलॅऩप् पॊलियुमा ऩॅमि वाऩ्शुडर् 134

नेमि वाऩ् चुटर्–सूर्य-मण्डल की किरणें; ऍऴुम् इटत्तु–उगने के समय पर; अकऩ्ऱु–लम्बी होकर; इटै ऑऩ्ऱि–मध्याह्न में, घटकर; ऍल् पटु पॊऴुतु–अस्त के समय; पोतलिऩ्–छिप जाती हैं, इसलिए; अऴल् मणि–अग्नि के समान दीप्त रत्नों से अलंकृत; पुरिचै–प्राचीरोंवाली; पॊऩ्ऩकर्–स्वर्ण (सम) उज्ज्वल नगरी; अयोत्तियाळ् उटै–अयोध्या (देवी) के; निऴल् ऍऩ–प्रतिबिंब (या छाया) के समान; पॊलियुम्–सुन्दर दिखाई देता है (वह सूर्य-बिंब) (आल्)। १३४

सूर्य को अयोध्या नगर के प्रतिबिंब के रूप में देखते हैं कवि। उदय के समय पर उसकी किरणें दीर्घ, मध्याह्न में घटी हुई और अस्त के समय में ओझल हो जाती हैं। मणि-मणिक्यों के साथ निर्मित प्राचीरों वाली अयोध्या की परछाईं भी वैसे ही लम्बी, घटी और ओझल हो जाती है। यह तो सूर्य के कारण अयोध्या की परछाईं की यह हालत होती है। कवि इसका उल्टा बताकर अपनी चातुरी दिखाता है। १३४

आय्न्दमे हलैयव रम्बॊऩ् माळिहै, वॅय्न्ऩदका रहिऱ्पुहै युण्ड मेहम्बोय्त्
तोयन्दमा कडऩ्ऱुऩ् दूब नाऱुमेल्, पाय्न्दता रैयिऩिलै पहर वेण्डुमो 135

आयन्त मेकलै अवर्–ध्यान देकर बनायी गयी मेखला-धारिणी स्त्रियों के द्वारा; अम् पॊऩ् माळिकै–सुन्दर प्रासादों में; वेय्न्त–(प्रज्वलित अगरु से निकलकर) फैले; कार् अकिल् पुकै उण्ट मेकम्–काले अगरु-धूम से मिश्रित मेघ; पोय् तोयन्त मा कटल्–जिसपर जाकर (जल पीने के लिए) छाते हैं, वह विशाल सागर भी; नऱु तूपम् नाऱुमेल्–(अगरु-धूम की) सुगन्ध देता है तो; पाय्न्त तारैयिऩ् निलै–गिरती (वारिश-) धारों की स्थिति; पकर वेण्टुमो–कहना चाहिए क्या ? । १३५

प्रासादों में श्रेष्ठ मेखला-धारिणी स्त्रियाँ अगरु-धूम लगाती हैं। घने रूप से फैलनेवाला वह धुआँ मेघों में भी व्याप्त हो जाता है और मेघ

इतने सुवासित होते हैं कि वे समुद्र को भी, जल पीते वक्त, सुवासित कर देते हैं। फिर वे जो धारें वरसाते हैं वे भी सुवासित ही होंगी— यह भी कहना है क्या ? । १३५

कुऴलिशै मडन्दयर् कुदलै कोदयर्, मऴलयङ् गुऴलिशै महर याऴिशै
ॲऴिलिशै मडन्दय रिन्शॉ लिन्निशै, पऴयर्तञ् जेरियिर् पॊरुनर् पाट्टिशै 136

कुऴल् इचै मटन्तैयर्–(जिनके बाल अभी बढ़कर सम हुए जाते हैं उन) अलकाओं की; कुतलै–तोतली बोली का मधुर स्वर; कोतैयर्–घने केशवाली तरुणियों का; अम् कुऴल् इचै मऴलै–मीठी बाँसुरी (-स्वर सा) वाणी का स्वर; मकर याऴ् इचै–मकर वीणा का मनोरम स्वर; ॲऴिल् इचै–रम्यता-युक्त; मटन्तैयर् इन् चॊल् इन् इचै–उन्नीस-बीस वर्ष की युवतियों के मधुर वचनों का मीठा स्वर; पऴैयर् तम् चेरियिल्–मद्य-विक्रेताओं की गली में; पॊरुनर् पाट्टु इचै–नाचने-गानेवालों के गाने का स्वर। १३६

उस नगर के सब नाद संगीतमय हैं और सुरीले। अलकाओं (आठ-दस वरस की लड़कियों) की बोली; घने केशवाली बालाओं की बोली; वीणा की ध्वनि, तरुणियों की वोली, मद्य-विक्रय के स्थानों में नाचने-गानेवालों के गाने—सब तरह के मनोरम स्वर पाए जाते हैं। १३६

कण्णिडैक् कनल्शॊरि कळिरु काल्कॊडु, मण्णिडै वॆट्टुव वाट्कै मैन्दर्तम्
पण्णैहळ् पयिलिडम् कुऴिप डैप्पन, शुण्णमक् कुऴिहळैत् तॊडर्न्दु तूर्प्पन 137

वाळ् कै मैन्तर् तम् पण्णैकळ्–करवीर-हस्त युवकों के दल; पयिल् इटम्–(जहाँ तलवार चलाने आदि का) अभ्यास करते हैं उन स्थलों पर; कण् इटै कनल् चॊरि कळिरु–आँखों से अंगारे उगलनेवाले हाथी; काल् कॊटु मण् इटै वॆट्टुव–पैरों से जमीन काटते; कुऴि पटैप्पन–गड्ढे बना देते हैं; अ कुऴिकळै–उन गड्ढों को; चुण्णम्–युवकों (पट्ठों) के वक्षों और भुजाओं पर लगे चूर्ण, तॊटर्न्तु–लगातार गिरते और; तूर्प्पन–पाट देते हैं। १३७

अभ्यास-स्थलों में हाथियों के सामने नौजवान लोग तलवार चलाने का अभ्यास करते हैं। तब हाथी अपने पैरों से जमीन खरोंचते हैं जिससे गड्ढे पड़ जाते हैं। उनमें नौजवानों के अंगों से लिप्त लेप के चूर्ण गिरते हैं और उससे गड्ढे पट जाते हैं। १३७

पन्दुहण् मडन्दयर् पयिऱ्ऱु वारिडैच्, चिन्दिन मुत्तिन मवैति रट्टुवार्
अन्दमिल् शिलदिय राऱ्ऱु कुप्पैहळ्, चन्दिर नॊऴिकॆडत् तळैप्प तण्णिला 138

पन्तुकळ् पयिऱ्ऱुवार्–गेंद खेलनेवाली; मटन्तैयर इटै–युवतियों के बीच; चिन्तिन मुत्तु इतम् अवै–छितरे मोतियों की राशियों को; तिरट्टुवार्–बटोर लेने-वाले; अन्तम् इल् चिलतियर्–अनन्त दासियाँ; चॆय्युम् कुवियल्कळ्–(जो) लगाती हैं वे ढेर; चन्तिरन् ऒऴि कॆट–चन्द्र के प्रकाश को मन्द बनाते हुए; तण्निला तळैप्प–शीतल चाँदनी (सा प्रकाश) उगलते हैं। १३८

चाँदनी में युवतियाँ गेंद खेलती हैं। तब उनके शरीरों से मोती चू पड़ते हैं। उन मोतियों को बुहारकर दासियाँ उनके ढेर लगा देती हैं। वे ढेर इतना प्रकाश देते हैं कि चाँदनी मन्द पड़ जाती है। १३८

अरङ्गिडै मडन्दय राडु वारवर्, करुङ्गडैक् कण्णयिल् कामर् नॅञ्जितै
उरुङ्गुव मऱ्ऱव रुयिर्ह ळन्नवर्, मरुङ्गुल्पोर् रेय्वन वळर्व दाशये 139

अरङ्कु इटै–नाट्य मंचों पर; मटन्तैयर्–नर्तकियाँ; आटुवार्–नाचती हैं; अवर्–उनके; करु कटै कण् अयिल्–काली आँखों की तिरछी चितवनरूपी बर्छियाँ; कामर् नॅञ्चितै–कामियों के मनों को; उरुङ्कुव–खा लेती हैं; मऱ्ऱु–और (उससे); अवर् उयिर्कल्–उनके प्राण; अन्नवर् मरुङ्कुल् पोल्–उनकी कमरों के समान; तेय्वन–घटते जाते हैं; वळर्वतु–बढ़ता है; आचैये–उनका मोह ही। १३६

नाट्य-मंचों पर नर्तकियाँ नाचती हैं। उनकी तिरछी चितवन कामी दर्शकों के साथ बर्छी का काम करती है। कामियों के दिल उन स्त्रियों की कमरों के समान छीजते रहते हैं। जो वहाँ बढ़ता है वह बस उनका मोह ही। १३९

पॊऴिवन शोलैहळ् पुदिय तेन्शिल, विऴैवन तॆन्ऱलु मिञ्जिरु मॆल्लॆन
नुऴैवन वन्नवै नुऴैय नोवॊडु, कुऴैवन तणन्दवर् कॊदिक्कुङ् गॊङ्गये 140

चोलैकळ् पुतिय तेन् पॊऴिवन–उपवन नये फूलों का शहद बरसाते हैं; विऴैवन चिल–उसको चाहनेवालों में कुछ; तॆन्ऱलुम्–दक्षिणी (मलय) पवन; मिञ्जिरुम्–और भ्रमर; मॆल्लॆन नुऴैवन–धीरे-धीरे घुसते हैं; अन्नवै नुऴैय–उनके प्रवेश से; तणन्तवर्–पति-वियुक्त स्त्रियों के; कॊतिक्कुम्–तपनेवाले; कॊङ्कै–स्तन; नोवॊटु–वेदना के साथ; कुऴैवन–ढीले पड़ जाते हैं। १४०

उस नगर के उद्यानों में शहद चूता है। शहद और उसकी सुगन्धि से बड़ा प्रेम रखते हैं (एक जाति के) भौंरे, वे उनमें घुस आते हैं। साथ-साथ दक्षिणी पवन भी प्रवेश करता है। ये दोनों ही— भौंरे और मलय-पवन-कामवर्धक हैं। इसलिए वियोगिनी स्त्रियों को बहुत वेदना होती है जिससे उनके मनोरम सुघड़ स्तन तप्त और ढीले हो जाते हैं। १४०

इऱङ्गुव महरया ऴॆंडुतत विन्निशै, निऱङ्गिळर् पाडला निमिर्व वव्वऴिक्
कऱङ्गुव वळ्विशि करुवि कण्मुहिऴ्त्, तुऱङ्गुव महऴिरो डोदुङ् गिळ्ळये 141

इऱङ्कुव–धीमे स्वर में; मकर याऴ् ॲंटुतत इन् इचै–मकर-वीणा से उठे मधुर संगीत; निऱम् किळर् पाटलाल्–सुस्वरित गीतों के कारण; निमिर्व–और श्रेष्ठ बन जाते हैं; अव्वऴि–वहाँ; वळ्विचि करुवि–डोरे-बँधे (मृदंग आदि) वाद्य; कऱङ्कुव–अनुरूप बजते हैं; मकळिरॊटु ओतुम् किळ्ळै–स्त्रियों के साथ बोलते रहनेवाले शुक; कण् मुकिऴ्त्तु उऱङ्कुव–आँखें बन्द कर सोते हैं। १४१

किन्हीं भवनों में वीणा के साथ स्त्रियाँ गाती हैं। मृदंग भी बजता

है, समाँ बँध जाता है। इससे प्रभावित होकर, वहाँ उनसे पालित शुक सो जाते हैं। १४१

कुदैवरिच् चिलैनुदड् कॊव्वै वाय्च्चियर्, पदवुकैत् तॊळिल्कोडु पळिप्पि लादन्
तदैमलर्त् तामरै यन्न ताळिनाल्, उदैपडच् चिवप्पन वुरवुत् तोळ्हळे 142

कुतै वरि चिलै नुतल्–(डोरे बाँधने के) चिह्नों और बन्धनों से युक्त धनुष के आकार के भालों और; कॊव्वै वाय्च्चियर्–बिंब (-सम लाल) अधरोंवालियाँ; पतवु कैतॊळिल् कॊटु–श्रेष्ठ चित्रकारी की सजावट के साथ; पळिप्पु इलातन–दोष-हीन; ततै मलर् तामरै अन्न–दल-संकुल कमलों के समान; ताळिताल्–पैरों की; उतैपट–लातें खाने से; उरवु तोळ्कळ्–(पुरुषों के) बलिष्ठ कन्धे; चिवप्पन–लाल हो जाते हैं। १४२

कहीं स्त्रियों को अपने प्रेमियों पर गुस्सा हो जाता है। (प्रेमी पति माफी माँगते हैं, पर वे नहीं मानतीं।) उनके कंधों पर लात मार देती हैं। वे स्त्रियाँ ऐसी जिनके भाल धनुष के समान मनोरम और अधर बिंब-फलों के समान लाल हैं। अब पुरुषों के कंधे लाल हो जाते हैं। वह इस ताड़न के प्रभाव से नहीं; क्योंकि उनके पैर कमल के समान कोमल हैं। पर उनके पैरों में महावर लगी है और उसके कारण लाल निशान पड़ जाते हैं। १४२

पॊळुदुणर् वरियवप् पॊरुवित् मानहर्त्, तॊळुदकै मडनदयर् शुडर्वि ळक्कॆनप्
पळुदरु मेनियैप् पार्क्कु माशैकोल्, ॲळुदुचित् तिरङ्गळु मिमैप्पि लादवे 143

पॊळुतु उणर् अरिय–समय (दिन और रात) का भेद समझना जहाँ कठिन था; अ पॊरु इल् मा नकर्–उस उपमाहीन नगर (में रहनेवाली); तॊळु तकै मटनतैयर्–नमस्कृत होने योग्य (आदरणीय) स्त्रियों के; चुटर् विळक्कु अॆन–ज्योतिर्मय दीप के समान; पळुतु अरु मेनियै–जो कलंकहीन थे उन शरीरों को; पार्क्कुम् आचै कॊल्–(लगातार) देखते रहने की इच्छा ही से तो; ॲळुतु चित्तिरङ्कळुम्–अंकित चित्र भी; इमैप्पु इलात–निर्निमेष हैं। १४३

उस नगर का ठाट कुछ ऐसा है कि वहाँ रात और दिन का भेद नहीं जाना जाता। उस अनुपम नगर में घर-घर में चित्र अंकित हैं जिनकी मूर्तियाँ अपलक देखती सी हैं। वे शायद उन स्त्रियों को देखते ही रहना चाहती हैं जो अनिन्द्य-सुन्दरियाँ हैं और जिनके शरीरों की छवि दीप की ज्योति के समान है। १४३

तणिमलर्त् तिरुमह डयङ्गु माळिहै, इणरॊळि परप्पिनिन् ऱिरुडु रप्पन
तिणिचुडर् नॆय्युडैत् तीवि ळक्कमो, मणिविळक् कल्लन महळिर् मेनिये 14

तणि मलर् तिरुमकळ् तयङ्कुम्–शीतल कमल की (निवासिनी) श्री लक्ष्मी जहाँ सदा रहती थीं; माळिकै–(उन) प्रासादों में; इणर् ऑळि परप्पि निन्ऱु–किरण जाल फैलाते हुए रहकर; इरुळ् तुरप्पन–अन्धकार को दूर करनेवाले हैं; नॆय् उटै

घृत-युक्त; तिणि चुटर्–घने प्रकाशवाले; ती विळक्कमो–जलते दीप हैं; मणि विळक्को–रत्नों की चमक है; अल्लन–नहीं, वे; मकळिर् मेनिये–स्त्रियों के पवित्र शरीर ही हैं। १४४

इस छन्द में कवि एक अपूर्व संशय उठाते हैं। उन प्रासादों में जो श्रीलक्ष्मी के वास-स्थान हैं, प्रकाश जो पाया जाता है क्या वह जलते दियों का प्रकाश है या रत्नों की कांति है ? वह उत्तर देते हैं; नहीं तो, वह सुन्दरियों के शरीर की छवि है। १४४

पदङ्गळिर् ड्रण्णुमै पाणि पण्णुड्र, विदङ्गळिन् विदिमुड्रै शदिमि दिप्पवर्
मदङ्गिय रच्चदि वहुत्तुक् काट्टुव, शदङ्गह ळल्लन पुरवित् ताळ्हळे 145

तण्णुमै–मर्दल; पाणि–हाथ की ताली; पण्–गाने; उड्र–सबके समाँ बँधते; चति वितङ्कळिन् विति मुड्रै–पाद-मुद्राओं के शास्त्र के अनुसार; पतङ्कळ मितिप्पवर्–पैर रखकर नर्तन करनेवाली; मतङ्कियर्–नर्तकी स्त्रियाँ; अ चति वकुत्तु काट्टुव–उन चरण-मुद्राओं का प्रदर्शन करती हैं; चतङ्कै–उनकी झाँझें; अल्लन–या, वे नहीं तो; पुरवि ताळ्कळ्–अश्वों के पैर हैं (जो नाचने में निपुण हैं)। १४५

वहाँ नृत्य की पाद-मुद्राएँ उन नर्तकियों के घुंघरू पहचनवा देंगे, जो (नर्तकियाँ) मृदंग-नाद, तालियों, और गाने के अनुरूप नृत्य करती हैं; नहीं तो आप अश्वों के पैरों से भी जान सकते हैं। १४५

मुळैप्पन मुरुवलम् मुरुवल् वॅन्दुयर्, विळैप्पन वॅन्ड्रिये मॅलिन्दु नाडॊरुम्
इळैप्पन नुण्णिडै यिळैप्प मॅन्मुलै, तिळैप्पन मुत्तॊडु शॅम्बॊ नारमे 146

मुरुवल् मुळैप्पन–(उन नर्तकियों की कभी-कभी) मुस्कुराहट होती है; अ मुरुवल्–वह मुस्कुराहट; वॅम् तुयर् विळैप्पन–(कामुकों को) भयंकर पीड़ा देनेवाली होती है और यह; वॅन्ड्रिये–(मुस्कुराहट की) जीत है; नुण् इटै–(उनकी) पतली कमरें; नाळ् तॊरुम् मॅलिन्तु इळैप्पन–दिन-ब-दिन घटनेवाली हैं; इळैप्प–उनके क्षीण होते-होते; मॅल् मुलै–उनके कोमल स्तन; मुत्तॊटु चॅम्पॊन् आरम्–मुक्ताहारों और स्वर्णहारों को पहने हुए; तिळैप्पन–फूलते हैं। १४६

नर्तकियाँ मुस्कुराती हैं। उनका मन्दहास कामुक दर्शकों के मन में काम-वेदना पैदा कर देता है; और वे क्षीण होते जाते हैं। इसमें नर्तकियों के मन्दहास को गर्व है। वैसे ही उन नर्तकियों की कटियाँ क्षीण हैं; उस क्षीणता को देखकर उनके स्तन आभरणों से सजकर इतराते हैं। १४६

इडैयिडै यॅङ्गणुङ् गळिय ड्रादन, नडैयिळ वन्नङ्ग णळिन नीर्क्कयल्
पॅडैयिन वण्डुहळ् पिरश मान्दिडुम्, कडहरि यल्लन महळिर् कण्गळे 147

इटै इटै–अपने-अपने स्थान पर; ऍङ्कणुम्–हमेशा; कळि अड्रातन–जो मोद-रहित नहीं; नटै इळ अन्नङ्कळ्–सुन्दर चाल वाले तरुण हंस; नळिनम्–नलिन पुष्प;

नीर् कयल्–जलचर मीन; पॅटैयित्त वण्टुकळ्–भौंरियों के साथ रहनेवाले भौंरे; पिरचम् मान्तिटुम् कटकरि–सुरा पीनेवाले मत्तगज; अल्लातत्त–ये जो नहीं है तो (इनके सिवा); मकळिर् कण्कळे–तरुणियों की आँखें हैं। १४७

वहाँ सब सदा मुदित रहते हैं— सुन्दर चालवाले हंस, कमल, जलचर मछलियाँ, भौंरी-भौंरे और सुरापायी मत्तगज; उनके अलावा तरुणियों की आँखें भी। १४७

तळल्विळि याळियुन् दुणैयुन् दाळ्वरै
मुळैविळै गिरिनिहर् कळिऱ्ऱिन् मुम्मदम्
मळैविळुम् विळुन्दोरु मण्णुङ् गोळुऱक्
कुळैविळु मदिल्विळुङ् गॉडित्तिण् डेर्हळे 148

तळल् विळि याळियुम्–आग सी आँखों वाले शरभ (एक बलवान जानवर जो अब कहीं नहीं मिलता); तुणैयुम्–और उसकी स्त्री; ताळ् वरै मुळै विळै–जिस पर्वत-तल में रहनेवाली गुफ़ा को चाहते हैं (और जाकर ठहरते हैं); किरि निकर् कळिऱ्ऱिन्–ऐसे पर्वत-सदृश गजों के; मुम् मतम् मळै पॉळियुम्–(दोनों कपोलों से दो और 'बीज' एक) तीन (स्थानों का) मद जल वर्षा के समान बहता है; विळुम् तॉरुम्–जहाँ-जहाँ वह गिरता है; मण्णुम् कीळ् उऱ–गड्ढे बनते हैं और; कुळै विळुम्–पंक भर जाता है; अतिल्–उनमें; कॉटि तिण् तेर्कळ् विळुम्–ध्वजा सहित तगड़े (अनेक) रथ गिरते हैं। १४८

वहाँ के हाथी, उन पर्वतों के समान हैं जिनकी गुफा में शरभ के जोड़े प्यार के साथ रहते हैं; उन हाथियों के कपोलों से और बीज-कोष से मद-नीर निकलता है। वह दान-जल भूमि पर इतना गिरता है कि जगह-जगह पर गड्ढे बन जाते हैं और कीचड़ भर जाती है। फिर उनमें ध्वजा सहित रथ भी फिसलकर गिर जाते हैं। १४८

आडुवार् पुरवियिन् कुरत्तै याप्पन, शूडुवा रिहळ्न्दवत् तॉङ्गन् मालहळ्
ऑडुवा रिळुक्कुव वूड लूडुऱक्, कूडुवार् वनमुलै कॉळित्त शान्दमे 149

आटु–संचरणशील; वार् पुरवियिन् कुरत्तै–ऊँचे अश्वों के खुरों को; याप्पत–उलझकर रोकनेवाले; चूटुवार्–पहननेवालों द्वारा; इकळ्न्त–त्यक्त; तॉङ्कल् मालैकळ्–लटकनेवाले छोरों के हार और छोर-बन्द हार हैं; ओटुवार इळुक्कुव–दौड़नेवालों को फिसलाते हैं; ऊटल् ऊटु उऱ–रूठन छोड़ देने पर; कूटुवार्–(पतियों से) मिलनेवाली (स्त्रियों द्वारा); वत्तम् मुलै कॉळित्त चान्तम्–मनोरम स्तनों पर से पोंछकर फेंका गया चन्दन लेप। १४९

अयोध्या की वीथियों पर चलनेवाले अश्वों के पैरों से, लोगों द्वारा फेंकी गयी मालाएँ उलझ जाती हैं और चलनेवाले लोगों को, प्रणय कलह के शांत होने पर, स्त्रियाँ जो चन्दन आदि का लेप पोंछकर फेंक देती हैं उससे बना कीचड़ फिसला देता है। १४९

इळैप्परुङ् कुरङ्गळा लिवुळि पारितैक्
किळैप्पन वव्वळिक् किळर्न्द तूळियिन्
ऑळिप्पन मणियवै यौळिर मीदुतेन्
तुळिप्पन कुमरर्तन् दोळिन् मालये 150

इवुळि-कुतिरैकळ्, इळैप्पु अरु कुरङ्कळाल्–अथक खुरों से; पारितै–भूमि को; किळैप्पन–खरोंचते हैं; अव् वळि किळर्न्त–तब छिटक उठी; तूळियिन्–धूल से; मणि–रत्न; ऑळिप्पन–छिपाये जाते हैं; अवै ऑळिर–उनको धौत करते हुए; कुमरर् तम् तोळिन् मालै–(उन अश्वों पर सवार) नौजवानों की, कन्धों पर पहनी मालायें; मीतु तेन् तुळिप्पन–उनपर शहद टपकाती हैं। १५०

अश्वों के अपने खुरों के कुरेदने से उठी धूलिराशि, उन पर सवार नौजवानों के आभरणों की मणियों को छिपा लेती है। फिर उन जवानों की मालाओं से चूनेवाला शहद मणियों पर गिरकर उन्हें धौत कर देता है। १५०

विलक्करुङ् गरिमदम् वेङ्गै नारुव, कुलक्कॊडि मादर्वाय् कुमुद नारुव
कलक्कडैक् कणिप्परुङ् गदिर्ह णारुव, मलर्क्कडि नारुव महळिर् कून्दले 151

विलक्क अरु करि मतम्–दुर्निवार गज-मद; वेङ्कै नारुव–'वेंगै' वृक्ष के फूल के समान महकता है; कुलम् कॊटि मातर् वाय्–कुलीन, लता (सदृश) स्त्रियों के मुख; कुमुतम् नारुव–कुमुद पुष्पों की तरह महकते हैं; कलम् कटै–आभरण; कणिप्पु अरु कतिर्कळ्–अगणित किरणें; नारुव–छिटकाती हैं; मकळिर् कून्तल्–नारियों के केशों में; मलर् कटि नारुव–पुष्पों की सुगन्धि (महकती) है। १५१

गज-मद एक पुष्प-विशेष की सी गन्ध छिटकाता है; कुलीन स्त्रियों के मुख कुमुद की सी गन्ध छिटकाते हैं; लोगों के आभरण अपार कांति छिटकाते हैं; और स्त्रियों के केश पुष्पों की सी गन्ध छिटकाते हैं। १५१

कोवयि निदनॊडॆण् कुरिक्कि लादवत्, तेवरतन् नहरियैच् चॆप्पु हिन्ड्रदॆन्
यावयुम् विळङ्गिडत् तिहलि यिन्नहर्, आवणङ् गण्डपि नळहै तोऱ्ऱदे 152

अळकै–अलकापुरी; यावैयुम् विळङ्कु इटत्तु–सब तरह की समृद्धि शोभाओं में; इकलि–(अमरावती से) तुलना में बढ़कर; इ नकर् आवणम् कण्ट पिन्–इस नगर के वाणिज्य-स्थलों को देखने के बाद; तोऱ्ऱतु–हार मान बैठी; कोवैयिन्–(श्रेष्ठ नगरों की) शृंखला में; इतनॊटु ऍण् कुरिक्क इलात–इस (अयोध्या) के साथ रखकर जिसका नाम नहीं गिना जा सकता; अ तेवर् तम् नकरियै–उस देवेन्द्रलोक का; चॆप्पुकिन्ऱतु ऍन्–कहना क्या है ? । १५२

अमरावती (देवेन्द्रलोक) से अलकापुरी (कुबेर-लोक) अधिक समृद्ध और सुन्दर मानी जाती है। वह अलकापुरी भी, अयोध्या की दूकानों को देखते हुए हीन बन जाती है। तो अयोध्या के साथ रखकर भी जिसको गिना नहीं जा सकता, उस अमरावती का क्या कहना है ? । १५२

अदिर्कळ् ऑलिप्पन वयिलि मैप्पन, कदिर्मणि यणिवॅयिल् काल्व मान्मदम्
मुदिर्वुरक् कमळ्वन मुत्त मिन्नुव, मदुकर मिशैप्पन मैन्द रीट्टमे 153

मैन्तर् तम् ईट्टम्–नौजवानों की भीड़ जहाँ होती है वहाँ; अतिर् कळल् ऑलिप्पन–कँपानेवाले पायल बजते हैं; अयिल् इमैप्पन–शक्तियाँ चमकती हैं; कतिर् मणि–(उनके आभरणों के) उज्ज्वल-रत्न; अणि वॅयिल् काल्व–सुखद कांति छिटकाते हैं; मान् मतम्–कस्तूरी; मुतिर्वु उऱ–अधिकता के साथ; कमळ्वन–महकती है; मुत्तम् मिन्नुव–मोती कौंधते हैं; मतुकरम् इचैप्पन–भौंरे गूँजते हैं। १५३

वहाँ के संभ्रांत वीर नौजवानों के पैरों पर पायल थर्राते हुए बजते हैं। उनके हाथों में शक्तियाँ चमकती हैं; अंगों में आभरणों के उज्ज्वल रत्न सुखद धूप के समान कांति बिखेरते हैं; वक्ष और भुजाओं में कस्तूरी आदि का लेप खूब महकता है; हार के मोती विद्युत का-सा प्रकाश देते हैं। उनकी मालाओं पर भौंरे गूँजते हैं। १५३

वळैयॉलि वयिरॉलि मकर वीणयिन्
किळैयॉलि मुळ्वॉलि किन्न रत्तॉलि
तुळैयॉलि पल्लियन् दुवैक्कुञ् जुम्मयिन्
विळैयॉलि कडलॉलि मॅलिय विम्मुमे 154

वळै ऑलि–शंख-नाद; वयिर् ऑलि–शृंग-नाद; मकर वीणैयिन् किळै ऑलि–मकराकार की वीणा का स्वर; मुळ्वु ऑलि–मर्दल-नाद; किन्नरत्तु ऑचैयुम्–किन्नर नाम के वाद्य की ध्वनि और; तुळै ऑलि–रंध्रवाले वाद्यों का स्वर; चुम्मॅयिन् तुवैक्कुम्–एक साथ बजनेवाले; पल इयम् विळै ऑलि–चमड़े के बने, विविध बाजों का सम्मिलित स्वर; कटल ऑलि मॅलिय–समुद्र-ध्वनि दबाते हुए; विम्मुम्–विवृद्ध होते हैं। १५४

अयोध्या में विविध नादों का जमघट है; —शंखनाद, शृंगों द्वारा उत्पन्न स्वर; मकराकार की वीणा का स्वर; मर्दल का स्वर; किन्नर नाम के बाजे की ध्वनि; बाँसुरी आदि बाजों का नाद; और चमड़े के बने अनेक वाद्यों का सम्मिलित नाद। इनके सामने समुद्रघोष मन्द पड़ जाता है। १५४

मन्नवर् तरुतिऱै यळक्कु मण्डबम्, अन्नमॅन् नडैयव राडु मण्डबम्
उन्नरु मरुमऱै योदु मण्डबम्, पन्नरुङ् गलैतॅरि पट्टि मण्डबम् 155

मन्नवर् तरु तिऱै–राजाओं द्वारा लाया गया कर; अळक्कु मण्टपम्–मापनेवाले भवन; अन्नम् मॅल् नटै यवर् आटुम् मण्टपम्–हंसों की सी चालवालियों के नृत्य-भवन; उन्न अरु–अनन्त; मरु मऱै–पाठ-योग्य वेदों का; ओतुम् मण्टपम्–पारायण-भवन; पन् अरु कलै–बहुमानित अपूर्व शास्त्रों या कलाओं की; तॅरि–खोज के लिए बने; पट्टि मण्टपम्–विवाद-सभाएँ। १५५

उस नगर में अनेक मण्डप हैं। अधीन राजा लोग कर देते हैं;

उनको नापने के लिए बने भवन हैं। नृत्य-शालाओं के भवन हैं; वेद-पारायण के मण्डप हैं; और ऐसे सभा-भवन हैं जहाँ विद्वान बैठकर शास्त्रों (विद्याओं) की चर्चा करते हैं। १५५

इरवियिऱ् चुडरमणि यिमैक्कुन् दोरणत्
तॆरुविनिऱ् चिऱियन तिशैहळ् शेण्विळङ्
गरुवियिऱ् पॆरियन वानैत् तानङ्गळ्
परवयिऱ् पॆरियन पुरविप् पन्दिये 156

इरवियिन् चुटर् मणि—सूर्य के समान उज्ज्वल रत्न; इमैक्कुम्—चमकनेवाले; तोरणम्—गोपुरवाली; तॆरुविनिल्—वीथियों (से); तिचैकळ् चिऱियन—दिशाएँ छोटी हैं; आनै तानङ्कळ्—गजमद; चेण् विळङ्कु—दूर पर दिखनेवाले; अरुवियिल्—झरनों से; पॆरियन—अधिक हैं; पुरवि पन्ति—अश्वों की पंक्तियाँ; परवैयिल् पॆरियन—समुद्र से भी विशाल है (ए)। १५६

अयोध्या नगर की वीथियाँ दिशाओं से अधिक लम्बी हैं। गज-मद-प्रवाह बहुत दूर तक दिखनेवाले झरनों से भी बड़े हैं। पंक्तिबद्ध अश्वों का समूह समुद्र से भी विशाल है। १५६

शूळिहै मळैमुहि ऱीडक्कुन् दोरणम्
माळिहै मलर्वन महळिर् वाण्मुहम्
वाळिह ळन्नवै मलर्व मऱ्ऱवै
आळिह ळन्नवर् निऱत्ति लाळ्बवे 157

चूळिकै—सौधों के ऊपर बने मण्डप; मळै मुकिल् तीटक्कुम्—जल-गर्भित मेघों को रोकनेवाले हैं और; तोरणम्—बन्दनवारों से सजे हैं, (ऐसे मण्डपोंवाले); माळिकै—प्रासादों में; मकळिर् वाळ् मुकम् मलर्वन—स्त्रियों के सुशोभित मुख-कमल खिले हैं; अन्नवै—उनमें; वाळिकळ् मलर्व—आँखेंरूपी शर खिलते हैं; अवै—वे (नेत्रशर); आळिकळ् अन्नवर्—शरभों के समान पुरुषों के; निऱत्तिल्—वक्षों में; आळ्प—घुस जाते हैं, (ए—मऱ्ऱु)। १५७

उस नगर के प्रासाद अतिसम्पन्न हैं। उनके ऊपरी भागों में तोरणों से अलंकृत और मेघों को भी रोकनेवाले मण्डप बने हैं। उन प्रासादों में, सिंह-सदृश पुरुषों के वक्षों पर शर के समान चुभनेवाली आँखों, और उन आँखों के आश्रय, कमल-वदनोंवाली सुन्दरियाँ रहती हैं। १५७

मन्नवर् कळलॊडु माऱु कॊळ्वन, पॊन्नणि तेरॊलि पुरवित् तारॊलि
इन्नहै यवर्शिलम् बेङ्ग वेङ्गुव, कन्नियर् कुडैतुरैक् कमल वन्नमे 158

मन्नवर् कळलॊटु—राजाओं के पायलों की ध्वनि के; माऱु कॊळ्वन—मुकाबले में स्वरित होती हैं; पॊन् अणि तेर् ऒलि—स्वर्ण से अलंकृत रथों की (घंटियों की) ध्वनि, और; पुरवि तार् ऒलि—अश्वों के गले के हारों की ध्वनि; कन्नियर् कुटै तुऱै—

स्त्रियाँ जहाँ स्नान करती हैं, उन घाटों पर; इत्त नकैयवर् चिलम्पु एङ्क–मधुर हँसी वाली उनके नूपुर क्वणित होते हैं, (उसके मुकाबले में); कमलम् अन्तम् एङ्कुव–कमलों पर रहनेवाले हंस बोलते हैं। १५८

वहाँ राजाओं के पायलों की ध्वनि उठती है। अश्वों की किंकणी-ध्वनि और रथों की घंटिकाओं की ध्वनि उसका मुकाबला करती है। स्नानघाटों पर हंस-मुखी रमणियों के नूपुर की ध्वनि का मुकाबला कमल पर रहनेवाले हंस अपनी बोली से करते हैं। १५८

ऊडवुङ् गूडवु मुयिरि निन्निशै, पाडवुम् विऱलियर् पाडल् केट्कवुम्
आडवु महन्पुन लाडि यायमलर्, शूडवुम् पॉऴुदुपोज् जिलर्क्कत् तॊन्नहर् 159

अ तॊल् नकर्–उस प्राचीन नगर में; चिलर्क्कु–कुछ रमणियों का; ऊटवुम्–पतियों के साथ रूठने; कूटवुम्–मिलने; उयिरिन्–बहुत प्रिय; इन् इचै पाटवुम्–मधुर गीत गाने; विऱलियर् पाटल् केट्कवुम्–गायकियों का गाना सुनने में; अकन् पुनल् आटवुम्–विशाल जलाशयों में स्नान करने; आटि–स्नान करके; आय्मलर् चूटवुम्–श्रेष्ठ फूलों से सजा लेने में; पॉऴुतु पोम्–समय कटता है। १५९

आगे वहाँ संभ्रांत घरों के स्त्री-पुरुषों के कार्यकलाप का वर्णन है। कुछ स्त्रियाँ हैं जिनका सारा समय, प्रणय-कलह, संभोग, मधुर गायन, गायकियों का संगीत स्वादन, स्नान, पुष्पालंकार, इत्यादि कामों में व्यय हो जाता है। १५९

मुऴङ्गुतिण् कडहरि मॊय्म्बि नूरवुम्
ऎऴुङ्गुरत् तिवुळियो डिरद मेऱवुम्
पऴङ्गणो डिरन्दवर् परिवु तीर्दर
वऴङ्गवुम् पॉऴुदुपोज् जिलर्क्कम् माणहर् 160

अ माण् नकर्–उस महान नगर में; चिलर्क्कु–कुछ पुरुषों का; मुऴङ्कु तिण् कटम् करि–चिघाड़नेवाले, बलिष्ठ, मत्त गजों पर; मॊय्म्पिन् ऊरवुम्–साहस के साथ सवार होने (व उन्हें चलाने) में; ऎऴुम् कुरत्तु इवुळियॊटु–ऊपर को उठाये खुरोंवाले अश्वों के साथ; इरतम् एऱवुम्–रथों पर सवारी करने में; पऴङ्कणॊटु इरन्तवर्–दीन-दुखी हो आकर मांगनेवालों को; परिवु तीर् तर वऴङ्कवुम्–चिन्ता दूर करते हुए दान देने में; पॉऴुतु पोम्–समय व्यतीत होता है। १६०

उस महान नगर के कुछ पुरुष लोग अपना समय मत्त गजों की सवारी में, तीव्रगति वाले अश्वों और रथों के चलाने में और दीन-दुखी याचकों को मुँहमाँगा दान देने में बिताते हैं। १६०

करियॊडु करियॆदिर् पॊरुत्तिक् कैप्पडै
वरिशिलै मुदलिय वऴङ्गि वाळुळैप्

पुरवियिर् पॉरुविल्शॅण् डाडिप् पोर्क्कलै
तॅरिदलिर् पॉळुदुपोज् जिलर्क्कच् चेणहर् 161

अ चेण् नकर्–उस विशाल नगर में; चिलर्क्कु–कुछ पुरुषों का; करियोटु करि ऑतिर् पॉरुतुति–हाथी से हाथी लड़ाने में; कै पटै–(कुछ का) हाथ के शस्त्र; वरि चिलैमुतलिय–बन्धनयुक्त धनुष आदि चलाने में; वाल् उळै पुरवि–(कुछ का) शुभ्र अयालवाले अश्वों पर बैठकर; पॉरु इल् चॅण्टु आटि–अपूर्व रूप से नचाने में; पोर् कलै तॅरितलिल्–(कुछ का) युद्ध-विद्या सीखने में; पॉळुतु पोम्–समय-यापन होता है। १६१

उस विशाल नगर के कुछ पुरुष हाथी लड़ाते हैं; कुछ अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास करते हैं; कुछ अश्वों पर बैठकर उन्हें नचाते हैं। १६१

नन्दन वनत्तलर् कॉय्दु नव्विपोल्
वन्दिळै यवरॉडु वावि याडिवाय्च्
चॅन्दुव रळिदरत् तेरन् मान्दिच्चू
दुन्दलिर् पॉळुदुपोज् चिलर्क्कव् वॉण्णहर् 162

अ ऑळ् नकर्–उस ज्योतिर्मय नगर में; चिलर्क्कु–कुछ स्त्रियों का; नव्वि पोल् वन्तु–हरिणों के समान आकर; नन्तन वनत्तु अलर् कॉय्तु–सुन्दर उद्यानों में फूल चुनकर; इळैयवरोटु वावि आटि–नौजवान, अपने पतियों के साथ वापियों में स्नान कर; वाय् चॅम्मै तुवर् अळितर–अधरों की लालिमा को मिटाते हुए; तेरल् मान्ति–ताड़ी पीकर; चूतु उन्तलिल्–जुआ खेलने में; पॉळुतु पोम्–समय बीतता है। १६२

उस प्रकाशमय नगर में कुछ युवती स्त्रियों के पास हरिणियों के समान उछलती कूदती पुष्पोद्यानों में जाकर, पुष्प-चयन करने, तरुण पतियों के साथ तड़ागों में स्नान करने, अपने लाल अधरों को विवर्ण बनाते हुए सुरापान करने और जुआ खेलने के लिए ही समय है। १६२

नाना विदमा नळिमादिर वीदियोडि
मीनारु वेलैप् पुनल्वॅण्मुहि लुण्णु मापोल्
आनाद माडत् तिडैयाडु कॉडिहण् मीप्पोय्
वानारु नण्णिप् पुनल्वऱ्ऱिड नक्कु मन्नरे 163

नाना वितम् आम् वॅण् मुकिल्–नाना आकार के श्वेत मेघ; नळि मातिरम् वीति ओटि–विशाल आकाश-मार्ग पर जाकर; मीन् नारु वेलै पुनल् उण्णुमारु पोल्–मत्स्य-संकुल समुद्र का जल पीते हैं—जैसे; आनात माटत्तु इटै आटु कॉटिकळ्–अक्षुण्ण प्रासादों के ऊपर फहरनेवाली ध्वजाएँ; मी पोय्–ऊपर जाकर; वान् आरु नण्णि–आकाशगंगा पहुँचकर; पुनल् वऱ्ऱिट–जल को सोखते हुए; नक्कुम्–चाट लेती हैं। (अन्ऱु–ए)। १६३

वहाँ के नितनवीन प्रासादों की ध्वजाएँ मेघों के समान हैं। रंग

के वे दोनों सफ़ेद हैं। उनमें साधर्म्य भी है। मेघ आकाश मार्ग से जाकर समुद्र का जल पीते हैं। ध्वजाएँ भी आकाश में ऊँचे जाकर आकाशगंगा का जल पीती हैं। मेघों से वे ध्वजाएँ इस बात में आगे हैं कि उनके पीने के बाद आकाशगंगा सूख जाती है। १६३

वन्ऱो रणङ्गळ् पुणर्वायिलुम् वानि ऩ्ऱु
शॅन्ऱोङ्गु मेलो रिडमिन्ऱॅन्नच् चॅम्बॉ निऩ्ऱि
कुन्रोङ्गु तोळार् कुणङ्गूट्टिशैक् कुप्पै यॅन्ऩ
ऑन्ऱो डिरण्डु मुयर्न्दोङ्गिय वुम्बर् नाण 164

वल् तोरणङ्कळ् पुणर् वायिलुम्–सुदृढ़ तोरणों से युक्त गोपुर (और); चॅम्पॉन् इञ्चि ऑन्ऱोट्टु इरण्टुम्–लाल स्वर्ण से विभूषित प्राचीर, (बाहरी) एक और अन्दर दो, (तीनों); कुन्ऱु ओङ्कु तोळार्–पर्वतोच्च कंधोंवालों के; कुणम् कूट्टु–अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण संग्रहीत; इचै कुप्पै अॅन्न–यश-राशि के समान; वानिन् ऊटु चॅन्ऱु–आकाश में ऊँचे जाकर; मेल् ओङ्कु ओर् इटम् इन्ऱु ॲन–ऊपर जाने के लिए कुछ स्थान नहीं है—ऐसा; उम्पर् नाण–देवों को लज्जित करते हुए; उयर्न्तु ओङ्किय–ऊँचे उठे रहे। १६४

अयोध्या नगर के तीन प्राकार होते हैं; एक सब के बाहर और दो एक के बाद एक, अन्दर। उनके, चार-चार के हिसाब से तोरण से अलंकृत गोपुर भी हैं। वे आकाश में इतने ऊँचे उठे हैं कि आकाश में और ऊपर जाने के लिए स्थान नहीं है और देवगण उनको देख अपनी हीनता को लेकर लज्जित हैं। उनकी ऊँचाई की उपमा पर्वत सदृश कन्धों-वाले सूर्यकुल के राजाओं के, श्रेष्ठ गुणों के कारण प्राप्त, यश से दी गयी है। १६४

काडुम् बुनमुङ् गडलन्न किडङ्गु मादर्
आडुङ् गुळमु मरुविच्चुनैक् कुन्ऱु मुम्बर्
वीडुम् विरवु मणिप्पन्दरुम् वीणै वण्डु
पाडुम् बॉळिलु मलर्प्पल्लवप् पळ्ळि मन्नो 165

काटुम्–वनों (में); पुनमुम्–बागों में; कटल् अन्न किटङ्कुम्–समुद्र के समान रही खाईं के किनारों पर; मातर् आटुम् कुळमुम्,–स्त्रियों के स्नान करने के तड़ाग में; अरुवि चुनै कुन्ऱुम्–सरिताओं और झरनों से भरे पर्वतों में; उम्पर् वीटुम्–सौधों के ऊपरी गृहों में; मणि विरवु पन्तरुम्–मुक्ता और मणि-मिश्रित अलंकारवा वितानों में; वण्टु वीणै पाटुम् पॉळिलुम्–(जहाँ) भ्रमर, वीणा का सा नाद करते उन उद्यानों में; मलर् पल्लवम् पळ्ळि–पुष्पों और पल्लवों की बनी शय्यायें; मन्नु अधिक हैं। १६५

नगर के बाहर, भीतर सभी स्थानों पर पुष्प-पल्लव-बिछी शय्या बनी हैं। नगर की सुरक्षा के अर्थ बने वन, उपवन, खाईं, स्नान करने

जलाशय, सरिता सहित पर्वत, सौधों की छतें, मुक्ता-मणि-मण्डित वितान, भ्रमर-गुंजरित-बगीचे, सब जगह पलंगों की व्यवस्था है। १६५

तॆळ्वार् मळैयुन् दिरैयाळियु मुट्क नाळुम्
वळ्वार् मुरशम् मदिर्वार्नहर् वाळु माक्कळ्
कळ्वा रिलामैप् पॊरुळ्कावलु मिल्लै यादुम्
कॊळ्वा रिलामैक् कॊडुप्पार्हळु मिल्लै मादो 166

तॆळ्वार् मळैयुम्–शुद्ध जल बरसानेवाले मेघ; तिरै आळियुम्–तरंगवाला समुद्र और; उट्क–भीत हो जाएँ ऐसा; नाळुम्–हर दिन; वळ् वार् मुरचम्–चमड़े की डोरी से सुबद्ध नगाड़े; अतिर् मा नकर्–(जिस नगर में) जोर से बजते हैं उस नगर के; वाळुम् माक्कळ्–रहनेवाले लोगों में; कळ्वार् इलामै–चोरी करनेवाले कोई नहीं हैं, इसलिए; पॊरुळ् कावलुम् इल्लै–वस्तुओं की रक्षा (का प्रश्न) भी नहीं है; यातुम् कॊळ्वार् इलामै–किसी वस्तु को दान में लेनेवाले नहीं हैं, इसलिए; कॊटुप्पार्कळुम् इल्लै–दाता भी (कोई) नहीं है। १६६

राजधानी होने के नाते उस नगर में नगाड़े नियमानुसार बजाये जाते हैं। उसका तुमुल नाद सुनकर मेघ और समुद्र मानों डर जाते हैं। वहाँ न चोर हैं न याचक। अतः उस नगर में रक्षा की व्यवस्था नहीं है; न दान देनेवाले ही पाये जाते हैं। १६६

कल्लादु निऱ्पार् पिऱरिन्मयिऱ् कल्वि मुऱ्ऱ
वल्लारु मिल्लै यवैवल्लरल् लारु मिल्लै
ऎल्लारु मॆल्लाप् पॆरुञ्जॆल्वमु मॆय्द लाले
इल्लारु मिल्लै युडैयार्हळु मिल्लै मादो 167

कल्लातु निऱ्पार् पिऱर्–अनपढ़ रहनेवाले ऐसे पृथक; इन्मैयिल्–न रहने के कारण; कल्वि मुऱ्ऱ वल्लारुम् इल्लै–शिक्षा में पूर्ण रूप से दक्ष–ऐसे कोई नहीं हैं; अवै वल्लवर् अल्लारुम् इल्लै–उसमें अनिपुण भी कोई नहीं; ऎल्लारुम्–सभी के पास; पॆरुम् चॆल्वम् ऎल्लामुम् ऎय्तलाले–बड़ी सम्पदाएँ सभी रहीं, इसलिए; इल्लारुम् इल्लै–निर्धन भी नहीं हैं; उटैयार्कळुम् इल्लै–धनी भी नहीं हैं। १६७

उस नगर के लोग पूर्णरूप से शिक्षित थे; अनपढ़ कोई नहीं था। इसलिए अशिक्षित-शिक्षित का कोई विभाजन नहीं होता था। उसी तरह वे इतने सर्वसम्पन्न थे कि धनिक, निर्धन में कोई पृथक्करण नहीं हो सकता था। १६७

एहम्मुदऱ् कल्वि मुळैत्तॆळुन् दॆण्णिल् केळ्वि
आहम्मुदऱ् ऱिण्पणै पोक्कि यरुन्द वत्तिन्
शाहन्दळैत् तन्बरुम् बित्तरु मम्म लर्न्दु
पोहङ्गनि यीन्ऱु पळुत्तदु पोलुमन्ऱे 168

कल्वि एकम् मुतल्–शिक्षारूपी एक बीज; मुळैत्तु ॲळुन्तु–अंकुरित हो बढ़ा; अ मुतल्–उस तने से; ॲण् इल्–असंख्यक; केळ्वि आकुतिण् पणै पोक्कि–श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञानरूपी सुदृढ़ शाखाएँ फैलाकर; अरु तवत्तिन् चाकम् तळैत्तु–कठिन तपरूपी पत्ते निकालकर; अन्पु अरुम्पि–प्रेम की कलियाँ प्रकट करके; तरुमम् मलर्न्तु–धर्मरूपी फूलों का विकास कर; पोकम् कनि ऒन्ऱु पऴुत्ततु–भोग-(सुख-) रूपी एक फल पाक, ऐसा था वह नगर। (अन्ऱ ए)। १६८

उस अयोध्या नगर में विद्या और उससे प्राप्य सभी शुभ फल प्राप्त थे। एक सुन्दर सांगरूपक के द्वारा कवि विद्या को बीज बनाकर आनन्द को फल बताते हैं। विद्या बीज से उगे वृक्ष की, विविध श्रौत ज्ञान शाखाएँ थीं; तपरूपी पत्र बहुत हुए। प्रेम की कलियाँ खिलीं। वह धर्मरूपी पुष्पों से शोभायमान हुआ; उस पर भोग या आनन्द का फल फलित हुआ। १६८

4. अरशियर् पडलम् (राज्य शासन पटल)

अम्मा णहरुक् करशन्नर शर्क्क रशन्
शॅम्माण् डन्क्को लुलहेऴिनुञ् जॅल्ल निन्ऱान्
इम्माण् कदैक्को रिऱैयाय विराम नॆन्नुम्
मॊय्म्माण् कऴलोऱ् ऱरुनल्लऱ मूर्त्ति यन्नान् 169

अ माण् नकरुक्कु–उस महान नगर के; अरचन्–राजा; अरचर्क्कु-अरॆचन्–राजाओं के राजा हैं; उलकु एऴिनुम्–लोक, जो सप्त-द्वीप-समूह हैं, इस पर; चॆम्मै माण् तनि कोल् चॆल्ल निन्ऱान्–ऋजु और महान अपना अनुपम राज-दण्ड (शासन) चलाते रहे; इ माण् कतैक्कु–इस महान इतिहास के; ओर् इऱै आय–श्रेष्ठ नायक; इरामन् ऎन्नुम्–श्रीराम नाम के; मॊय् माण् कऴलोन्–गौरवपूर्ण पायलधारी महापुरुष को; तरु–दिलानेवाले; नल् अऱम् मूर्त्ति अन्नान्–श्रेष्ठ धर्म के (मानव) रूप के समान थे। १६९

उस महान नगर के राजा, दशरथ, राजाधिराज, सब तरह से योग्य, सीधे और भाग्यवान थे। सप्त-द्वीपीय इस भूलोक भर में उनका श्रेष्ठ शासन चलता रहा। वे इस काव्य के अनुपम नायक, वीरता के शृंगार, पायलों के धारक, श्रीराम को जन्म देनेवाले धर्मरूप थे। १६९

आदिम् मदियुम् मरुळुम्मऱ नुम्म मैवुम्
ऐदिन् मिडल्वी रमुमोहयु मॅण्णिल् यावुम्
नीदिन् निलैयु मिवैनेमियि नोर्क्कु निन्ऱ
पादिम् मुळ्ढु मिवर्केपणि केट्प मन्नो 170

आति–प्रथम श्रेणी की; मतियुम्–मति और; अरुळुम्–दया और; अमैवुम्–सन्तोष; एतु इल्–कमी हीन; मिटल् वीरमुम्–साहस के साथ वीरता और;

ईकैयुम्–दानशीलता और; नीति निलैयुम्–न्याय में स्थिति; इवै यावुम्–ये सब; अँण्णिल्–सोचने पर; नेमियिन्नोर्क्कु–(अन्य) राजाओं के पास; पाति निन्ऱ–आधा-आधा रहे; मुळ्ळुतुम्–पूर्णरूप से; इवर्के पणि केट्प–इन (दशरथ) के ही आज्ञाकारी में थे। १७०

उनकी प्रज्ञा, दया, धर्म, संतोष, अकलंक धैर्य वीरता, दान-शीलता; नीतिपरायणता, ये सब गुण, अन्य राजाओं के पास भी रहे; पर उनमें आधे-आधे थे। इनके पास परिपूर्ण थे। १७०

मॊय्यार् कलिशूळ् मुदुपारित् मुहन्द दानक्
कैयार् पुनला ननैयादन कैयु मिल्लै
मॆय्याय वेदत् तुऱैवेन्दरुक् केयन्द यारुम्
शॆय्याद याह मिवन् शॆय्दु मुडित्त मादो 171

मॊय् आर् कलि चूळ्–शक्ति-युत समुद्र से घिरि; मुतु पारिल्–प्राचीन इस भूमि पर; मुकन्त तानम् कै आर् पुनलाल्–अतिशय दान के साथ, (दान लेनेवाले के) हाथ में डाले गये जल से; ननैयातन–जो भीगे नहीं; कैयुम् इल्लै–वे हाथ नहीं थे; मॆय् आय–सच्चे; वेतम् तुऱै–वेद-मार्गी; वेन्तरुक्कु–राजाओं के लिए; एय्न्त–विहित; यारुम् चॆय्यात याकम्–(पर) (अन्य) किसी से न कृत यज्ञ; इवन् चॆय्तु मुटित्त–इनके द्वारा किये जा चुके। (मातो)। १७१

वे दान-धर्म और यज्ञ आदि खूब करते थे। उस नगर में कोई ब्राह्मण ऐसा नहीं था जिसका हाथ महाराज से दान नहीं ले चुका हो और जिसका हाथ दान देते वक्त विसर्जित जल से सिक्त नहीं हुआ हो। उसी प्रकार कोई यज्ञ ऐसा नहीं था, जो विहित था पर नहीं किया गया हो। उन्होंने ऐसे-ऐसे यज्ञ किये जिन्हें कोई दूसरा राजा कर नहीं पाया। १७१

तायॊक्कु मन्बिऱ् ऱवमॊक्कु नलम्ब यप्पिल्
शेयॊक्कु मुन्निन् ऱॊरुशॆल्हदि युय्क्कु नीराल्
नोयुऱ्ऱ दॆन्निन् मरुन्दॊक्कु नुणङ्गु केळ्वि
आयप् पुहुङ्गा लऱिवॊक्कु मॆवर्क्कु मन्नान् 172

अन्नान्–वे; ऍवर्क्कुम्–सब किसी के लिए; अन्पिल्–प्रेम में; ताय् ऒक्कुम्–माता के समान थे; नलम् पयप्पिल्–हित करने में; तवम् ऒक्कुम्–तप के समान थे; मुन् निन्ऱु–अग्रगामी रहकर; ऒरु चॆल् कति उय्क्कुम् नीराल्–गम्य मार्ग पर चलाने की वृत्ति के कारण; चेय् ऒक्कुम्–पुत्र के समान थे; नोय् उऱ्ऱतु ऍन्निल्–कोई रोग हुआ तो; मरुन्तु ऒक्कुम्–औषध के समान थे; आय पुकुम् काल्–अन्वेषण करने जायँ तब; नुणङ्कु केळ्वि–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान और; अऱिवु ऒक्कुम्–प्रज्ञा के समान थे। १७२

वे माता के समान सबसे प्रेम करते थे; सभी की इच्छाओं की पूर्ति करने में तपस्या के समान थे; अच्छे मार्ग पर लोगों को वे स्वयं उदाहरण

रूप में रहकर, चलाते थे। इस प्रवृत्ति में वे पुत्र के समान थे जो अपने धर्माचरण से पितृलोगों को सद्गति में पहुँचा देते हैं। वे रोग की औषधि के समान थे। खूब सोचकर देखें तो वे स्वयं प्रज्ञा और (श्रौत-) ज्ञान-रूप थे। १७२

ईन्दे कडन्दा ऩिरप्पोर्कड लॆण्णि ऩऩ्ऩूल्
आयन्दे कडन्दा ऩऱिवॆऩ्ऩु मळक्कर् वाळाल्
कायन्दे कडन्दाऩ् पहैवेलै करुत्तु मुऱ्ऱत्
तोयन्दे कडन्दाऩ् ऱिरुविऱ्ऱॊडर् पोह पौवम् 173

इरप्पोर् कटल्—याचकरूपी समुद्र; ईन्ते कटन्ताऩ्—दान देकर ही पार किया; अऱिवु अॆऩ्ऩुम् अळक्कर्—ज्ञानरूपी सागर; अॆण् इल् नल् नूल्—असंख्यक उच्च शास्त्र-ग्रन्थ; आय्न्ते कटन्ताऩ्—अन्वेषण करके ही पार किया; पकै वेलै—शत्रुरूपी उदधि को; वाळाल् काय्न्ते—तलवार से दमन करके ही; कटन्ताऩ्—पार किया; तिरुविल् तॊटर्—ऐश्वर्य से प्राप्य; पोक पौवम्—भोग का पयोधि; करुत्तु मुऱ्ऱ—जो भर; तोय्न्ते कटन्ताऩ्—भोग करके ही पार किया। १७३

अयोध्या में याचक नहीं थे। महाराज स्वयं विद्या पारंगत, शत्रुहीन और निस्पृह रहे। (कवि इसकी चर्चा कुछ अनोखी रीति से करते हैं।) याचकों का सागर उन्होंने दान द्वारा; ज्ञान-समुद्र शास्त्राध्ययन-गुनन द्वारा; शत्रु-सिन्धु को तलवार द्वारा और ऐश्वर्य-सुख-भोग के पयोधि को भोगकर ही पार किया। १७३

वॆळ्ळमुम् पऱवैयुम् विलङ्गुम् वेशैयर्
उळ्ळमु मॊरुवऴि योड निऩ्ऱवऩ्
तळ्ळरुम् पॆरुम्पुहऴ्त् तयर तप्पॆयर्
वळ्ळल्वळ् ळुऱैययिऩ् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩे 174

वळ् उऱै—चमड़े की बनी म्यान में रहनेवाली; अयिल् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्—तेज तलवार के धारी चक्रवर्ती; तळ्ळ अरु पॆरु पुकऴ्—अक्षय और विपुल यश के; तयरतऩ् पॆयर् वळ्ळल्—दशरथ नाम के वे नामी दानी; वॆळ्ळमुम्—नदी का प्रवाह और; पऱवैयुम्—पक्षी और; विलङ्कुम्—जानवर और; वेचैयर् उळ्ळमुम्—वेश्याओं का मन (और); ऒरु वऴि ओट—एक ही मार्ग पर चलें; निऩ्ऱवऩ्—ऐसा शासन करनेवाले (रहे)। १७४

चक्रवर्ती दशरथ वीर थे; यशस्वी थे और नामी दानी भी। उनके शासन की यह खूबी थी कि नदी का प्रवाह, पक्षी, जानवर और वेश्याओं का मन अपने-अपने एक ही मार्ग पर जाते थे। यानी कोई उच्छृंखल नहीं रहे। १७४

❀ नेमिमाल् वरैमदि लाह नीळ्पुऱप्, पाममा कडल्किडङ् गाहप् पऩ्मणि
वाममा ळिहैमलै याह मऩ्ऩर्कुप्, पूमियु मयोत्तिमा नहरम् पोऩ्ऱदे 175

मन्नुतर्कु—महाराज के लिये; नेमि माल् वरै—चक्रवाल गिरि; मतिल् आक—परकोटा बनी; नीळ् पामम् मा पुरम् कटल्—विशाल वाह्य-सागर ही; किटङ्कु आक—खाई बना; मलै—अन्य पर्वत; पल् मणि वामम् माळिकै आक—विविध रत्नों से अलंकृत सुन्दर महल बने; पूमियुम्—भूलोक सारा; अयोत्ति मा नकरम् पोन्नृतु—अयोध्या के विशाल नगर के समान बना। १७५

उनके लिए जैसी अयोध्या वैसी ही, चक्रवाल पर्वत रूपी प्राचीर, वाह्य-महासागर की खाई और कुल गिरियों के उन्नत सौधों से युक्त सारी पृथ्वी ही शासनाधीन भूमि थी। १७५

❀ यावरुम् वन्मैने रॅट्रिन्दु तीट्टलाल्, मेवरुङ् गैयडे वेलुन् देयुमाल्
कोवुडै नॅडुमणि महुड कोडियाल्, शेवडि यडैन्दपोंड् कळ्लुन् देयुमाल् 176

यावर् वन्मैयुम्—किसी के भी पराक्रम को; नेर् ॲट्रिन्तु—सामने जाकर (भाले को) फेंककर, दलित कर; तीट्टलाल्—बार-बार उस (कुंठित हुए) भाले को पैनाने से; कै अटै वेलुम् तेयुम्—हाथ में रहनेवाला भाला घिस जाता है; को उटै—(अधीनता स्वीकार कर विनत हुए) राजाओं के; नॅटु मणि मकुटम्—दीर्घ रत्नमय किरीट; कोटियाल्—असंख्यकों के (रगड़ने के) कारण; चेवटि अटैन्त—लाल चरणों में पहने हुए; पोन् कळ्लुम्—स्वर्ण पायल भी; तेयुम्—घिस जाते हैं। १७६

उनका भाला शत्रुओं पर प्रयोग करने से कुंठित हो जाता था और बार-बार उसे पैना करना पड़ता था; इसलिए वह घिसता गया। उसी प्रकार असंख्य राजाओं के मुकुट उनके स्वर्ण-पायल से घर्षण करते थे, उन राजाओं के, दशरथ के पैरों पड़ने से। तब उनका पायल घिस जाता था। १७६

❀ मण्णिडै युयिर्त्तोरुम् वळर्न्दु तेय्विन्ड्रित्
तण्णिळल् परप्पवु मिरुळैत् तळ्ळवुम्
अण्णल्तन् कुडैमदि यमैयु मादलाल्
विण्णिडै मदियिनै मिहैयि दॅन्बवे 177

मण् इटै—(इस) भूलोक में; तेय्वु इन्ट्रि वळर्न्तु—बिना घटे, बढ़कर; उयिर् तोरुम्—जीव-जीव पर; तण् निळल् परप्पवुम्—शीतल छाया फैलाने; इरुळै तळ्ळवुम्—अन्धकार दूर करने; अण्णल् तन्—महिमामय (दशरथ) का; कुटै मति अमैयुम्—छत्र-रूपी चन्द्र पर्याप्त था; आतलाल्—इसलिए; इटै विण् मतियिनै—(इसके सामने निरर्थक हुए) हारे, आकाश (-स्थित) चन्द्र को; इतु मिकै ॲन्प—यह फालतू है, कहते हैं (लोग)। १७७

लोग राजाधिराज दशरथ के श्वेत छत्र के सामने चन्द्र को फालतू समझने लगे हैं। छत्र, चन्द्र के समान बिना घटे ही, बढ़ा हुआ रहता है। वह शीतल छाया यानी रक्षा प्रदान करता है; (दुःख के) अन्धकार को दूर कर देता है। फिर उस आकाश के चन्द्र की आवश्यकता क्या रही? १७७

꙳ वयिरवान् पूणणि मडङ्गल् मॉयम्बितान्
उयिरॅलान् दन्नुयि रॉप्प वोम्बलाल्
शॅयिरिला वुलहितिड् चॅन्नृ निन्नृवाळ्
उयिरॅला मुरॅवदो रुडम्बु मायिनान् 178

वयिरम् वान् पूण् अणि–हीरे जड़े श्रेष्ठ आभरणों से अलंकृत; मटङ्कल् मॉयम्पितान्–सिंह सदृश बलशाली; उयिर् ॲलाम्–जीव सबको; तन् उयिर् ऑप्प–अपने प्राणों के समान; ओम्पलाल्–पालित करने से; चॅयिर् इला उलकितिल्–अपराध-हीन अपने राज्य में; चेन्नृ निन्नृ वाळ् उयिर् ॲलाम्–चर और अचर जीव-राशि सभी; उरॅवतु–जिसके अन्दर विद्यमान रही; ओर् उटम्पुम् आयिनान्–वह एक शरीर बने। १७८

कोई किसी वस्तु की सावधानी के साथ रक्षा करे तो कहा जाता है कि वह उसको अपने प्राण-सम रखता है। इधर कवि कहते हैं कि हीरे-जड़ित आभरणवाले वीर दशरथ शरीर हैं और उनके राज्य के चर और अचर, सब जीव प्राण हैं। (यह कवि का चमत्कार है)। १७८

कुन्नॅन वुयरिय कुववुत् तोळिनान्, वॅन्नृियन् दिहिरिवॅम् बरुदि यामॅन
ऑन्नॅन वुलहिडै युलावि मीमिशै, निन्नृनिन् रुयिर्तॊरु नॅडिदु काक्कुमे 179

कुन्नृ ॲन उयरिय–पर्वत के समान उन्नत; कुववु तोळिनान्–पुष्ट कन्धोंवाले के; वॅन्नृि अम् तिकिरि–विजयशील सुन्दर (आज्ञा) चक्र; वॅम् परुति आम् ॲन–उष्ण-किरण सूर्य (रूप) मान्य हो; मीमिचै निन्नृ निन्नृ–सबके ऊपर स्थित हो; उलकु इटै–भूमि पर; ऑन्नृ ॲन उलावि–अद्वितीय चलकर; उयिर् तॊरुम्–जीव जीव की; नॅटितु काक्कुम्–सब तरह से रक्षा करता था। १७९

पर्वत सम कन्धोंवाले राजाधिराज का आज्ञा-चक्र उष्ण किरण सूर्य के समान सबके चक्रों (शासनों) से ऊपर रहता है; सारे भूलोक में अकेला है। हर जीव उसके संरक्षण में आ जाता है। १७९

ॲय्यॅन वॅळुपहै यॅङ्गु मिन्मैयाल्, मॉय्पॅरात् तिनवुरु मुळवुत् तोळिनान्
वैयह मुळुवदुम् वरिञ नोम्बुमोर्, शॅय्यॅनक् कात्तिनि दरशु शॅय्हिन्नान् 180

ॲय् ॲन–शर के समान; ॲळु पकै–(अपने ऊपर) उठ आनेवाले शत्रु; ॲङ्कुम् इन्मैयान्–कहीं नहीं (हैं, इसलिए) रहने से; मोय् पॅरा तिनवु उरु–युद्ध के बिना, युद्ध के लिए खुजलानेवाली (आतुर रहनेवाली); मुळवु तोळिनान्–मर्दल के समान भुजाओं वाले; वैयकम् मुळुवतुम्–यह सारी पृथ्वी; वरिञन् ओम्पुम् ओर् चेय् ॲन–गरीब मनुष्य द्वारा पालित एक छोटे खेत के समान; इनितु कात्तु–सावधानी से पालन कर; अरचु चॅय्किन्नान्–शासन कर रहे हैं। १८०

शर के समान उनपर आक्रमण करने आनेवाला कोई शत्रु नहीं है। इसलिए युद्ध-प्रेमी उनकी भुजाओं में खुजली सी उठती है। मर्दल समान कन्धोंवाले वे, दरिद्र जितनी तत्परता और प्रयास के साथ अपने छोटे खेत

का पालन करेगा उसी तत्परता और लगन के साथ, भूमि का पालन करते हैं। १८०

5. तिरु अवदारप् पडलम् (श्री अवतार पटल)

आयव नौरुपह लयतै येनिहर्, तूयमा मुनिवरर् रोळ्दु तॉल्हुलत्
तायरुन् दन्दैयुन् दवमु मन्बिनाल्, मेयवान् कडवुळुम् पिर्वुम् वेरुनी 181

आयवन्–वे; ऑरु पकल्–एक दिन; अयत्तैये निकर्–अज ही के समान विद्यमान; तूय मा मुनिवरन्–पवित्र और उत्तम मुनिवर को; तॉळुतु–नमस्कृत कर; तॉल् कुलम्–(इस) प्राचीन कुल की; तायरुम्–मातायें (और); तन्तैयुम्–मेरे पिता; तवमुम्–तपस्या; अन्पिनाल् मेय–भक्ति द्वारा प्राप्य; वान् कटवुळुम्–श्रेष्ठ ईश्वर; पिर्वुम्–और अन्य सब; वेरु नी–(मेरे लिए) (उनसे) पृथक (उनके अलावा) आप ही हैं। १८१

उन्होंने (दशरथ ने) एक दिन ब्रह्माजी के ही समान रहनेवाले पवित्र और श्रेष्ठ मुनिवर का नमस्कार कर उनसे यह निवेदन किया। "मेरे लिए आप ही मेरे कुल में उत्पन्न माताएँ, पिता, तपस्या, भजनीय भगवान सवकुछ हैं। १८१

ऍङ्गुलत् तलैवर्ह ळिरवि तन्निनुम्
तङ्गुलम् विळङ्गिडत् तरणि ताङ्गिनार्
मङ्गुन रिलरॆन वरम्बिल् वैयहम्
इङ्गुनिन् नरुळिना लिनिदि नोम्बिनेन् 182

निन् अरुळिनाल्–आपके आशीर्वाद से; ऍम् कुलम् तलैवर्कळ्–मेरे कुल के राजा लोग; तम् कुलम्–अपना कुल; इरवि तन्निनुम् विळङ्किट–सूर्य से भी बढ़कर प्रकाशमान रहे, ऐसा; तरणि ताङ्कितार्–धरणी का पालन किया; इङ्कुम्–अब भी; निन् अरुळिनाल्–आपकी कृपा से; मङ्कुनर् इलर् ऍन–मन्द (प्रकाश) कोई नहीं, इस ख्याति के साथ; वरम्पु इल् वैयकम्–सीमा-हीन पृथ्वी को; इनितिन् ओम्पिनेन–सुखपूर्वक रक्षित करता आ रहा हूँ। १८२

"मेरे कुल के राजाओं ने अपने यश में सूर्य से भी बढ़कर प्रकाशमय बनकर भूमि का पालन किया। यह आपकी कृपा का फल था। आज भी आप ही की कृपा से, मैं उनके यश में कमी न लाते हुए इस निस्सीम धरणी का पालन करता हूँ। १८२

अरुपदि नायिर माण्डु माण्डुर, उरुपहै यॊडुक्कियिव् वुलह मोम्बिनेन्
पिरिदॊरु कुरैयिलै यॆर्पिन् वैयहम्, मरुहुरु मॆन्पदोर् मरुक्क मुण्डरो 183

अरुपतिनायिरम् आण्टु–साठ सहस्र वर्ष; माण्टु उर–पूरा करते हुए; उरु पकै ऑटुक्कि–आक्रामक सभी शत्रुओं को दूरकर; इ उलकम् ओम्पिनेन्–यह पृथ्वी

(मैंने) पाली; पिऱितु ऑरु कुऱै इलै–और कोई अपूरित इच्छा नहीं है; ॲन पिन्–मेरे बाद; वैयकम् मरुकु उऱुम्–यह भूमि (शासक के न होने के कारण) संकट-ग्रस्त होगी; ओर् मरुक्कम् उण्टु–यह एक मेरी चिन्ता बनी है। अरो। १८३

"मेरे शासन के साठ सहस्र वर्ष पूरे हो गये। सभी तरह के शत्रुओं का दमन किया; सुशासन करता आ रहा हूँ। मेरे मन में और कोई चिन्ता नहीं है सिवाय इसके कि, मेरे पश्चात संसार राजा के न रहने से दुखी होगा। यह दुख मुझे हो रहा है। १८३

अरुन्दव मुनिवरु मन्द णाळरुम्, वरुन्दुद लिन्ऱिये वाऴ्विन् वैहिनार्
इरुन्दुय रुळक्कुव रॆऱ्पि नॆन्बदोर्, अरुन्दुयर् वरुत्तुमॆन् नहत्तै यॆन्ऱनन् 184

वरुन्तुतल् इन्ऱिये–दुख के बिना ही; वाऴ्विन् वैकिनार्–जीवन जो भोगते रहे (वे); अरु तव मुनिवरुम्–कठिन तपस्वी मुनिगण; अन्तणाळरुम्–व ब्राह्मण; ॲन् पिन्–मेरे बाद; इरु तुयर् उऴक्कुवर् ॲन्पतु–बड़ा कष्ट उठयँगे; ओर् अरु तुयर्–यह एक कठोर चिन्ता; ॲन् अकत्तै वरुत्तुम्–मेरे मन को त्रस्त करती है; ॲन्ऱनन्–कहा। १८४

"अब तक ऋषि, मुनि, ब्राह्मण सब सुखपूर्वक अपना तपोनिरत जीवन सुख से चलाते रहे। मेरे मरण के पश्चात उनको बहुत कष्ट सहना पड़ेगा—यह चिन्ता मेरे मन को व्यथित कर रही है।" १८४

मुरशॆऱि शॆऴुङ्गडै मुत्त मामुडि, अरशर्तङ् गोमह ननैय कूऱलुम्
विरैशॆऱि कमलमॆन् पॊहुट्टु मेविय, वरशरो रुहन्महन् मनत्ति नॆण्णिनान् 185

मुरचु ॲऱि–नगाड़े बजनेवाले; चॆऴु कटै–समृद्ध गोद्वार वाले; मुत्तम् मा मुटि–मुक्ता-सज्जित उन्नत किरीटधारी; अरचर् तम् कोमकन्–राजाधिराज (के); अनैय कूऱलुम्–यों कहते ही; विरै चॆऱि–सुगन्धिपूर्ण; मॆल् कमलम् पॊकुट्टु–कोमल कमल के बीज में; मेविय–जाकर (जो) रहे; वरम चरोरुकन् मकन्–श्रेष्ठ सरोरुहासन (ब्रह्मा) के पुत्र (वसिष्ठ) ने; मनत्तिन्–अपने मन में; ॲण्णिनान्–सोचा। १८५

अयोध्या नगर के नगर द्वारों में नगाड़े बजते थे। ऐसे समृद्ध नगर के, मुक्ता-जड़ित किरीटधारी राजाधिराज ने यह निवेदन किया। तब कमल के बीज में रहनेवाले ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठजी ने अपने मन में सोचकर देखा। १८५

अलैकड नडुवणो रनन्दन् मीमिशै, मलैयॆन वरितुयिल् वळरु मामुहिल्
कॊलैतॊऴि लरक्करतङ् गॊडुमै तीर्प्पॆनॆन्, रुलैवुरु ममररुक् कुरैत्त वाय्मैयै 186

अलै कटल् नटवण्–लहरानेवाले समुद्र के मध्य; ओर् अनन्तन् मी मिचै–अनुपम अनन्तनाग पर; मलै ॲन–(नीले) पर्वत के समान; अऱितुयिल् वळरुम्–योग-निद्रा में रत रहनेवाले; मा मुकिल्–श्रेष्ठ मेघ (मेघ श्याम श्रीविष्णु) ने; कॊलै तॊऴिल् अरक्कर्तम्–हत्याकारी राक्षसों के; कॊटुमै–अत्याचारों का; तीर्प्पॆन् ॲन्ऱु–निवारण करूँगा—यह; उलैवु उऱुम् अमररुक्कु–दुख उठानेवाले सुरों के पास; उरैत्त वाय्मैयै–जो कहा उस प्रतिज्ञा के वचन को, (स्मरण किया)। १८६

तब उन्हें क्षीरसागर की तरंगों के मध्य, शेषनाग पर योग-निद्रा-रत रहनेवाले और नीले पर्वत के समान शोभायमान श्रीविष्णु का स्मरण हो आया। और उनकी यह प्रतिज्ञा याद आयी कि मैं राक्षसों के त्रास से पीड़ित देवों का कष्ट निवारण करूँगा। १८६

शुडुतॊळि लरक्कराऱ् ऱॊलैन्दु वानुळोर्, कडुवमर् कळत्तडि कलन्दु कूऱलुम्
पडुपॊरु ळुणर्न्दवप् परमन् यामिनि, अडुहिल मॆनमरुत् तवरॊ डेहिनान् 187

वान् उळोर्–स्वर्ग-वासी (सुर लोग); चुटु तॊळिल् अरक्करालू–क्रूर-कर्मी राक्षसों से; तॊलैन्तु–त्रस्त होकर; कटु अमर् कळत्–विष-कण्ठ (श्रीशिव जी) की; अटि कलन्तु–शरण में जाकर; कूऱलुम्–कहने पर; पटु पॊरुळ् उणर्न्त–आगामी विषय जाननेवाले; अ परमन्–वे रुद्र देव; याम् इनि अटुकिलम् अॆन मऱुत्तु–हम अब नहीं मारेंगे, ऐसा नकार कर; अवरॊटु एकिनान्–उनके साथ गये। १८७

आगे मन पटल पर, उस समय के सारे चित्र अंकित हुए। देवता सब रावणादि राक्षसों के क्रूरतापूर्ण अत्याचारों से पीड़ित होकर श्रीनीलकंठ देव के पास गये और उनसे अपने कष्टों का निवेदन किया। शिवजी ने भावी को जाना था। उनसे बोले कि उन्हें अब मार नहीं सकेंगे। फिर उनको लेकर वे चले। १८७

वडवरैक् कुडुमियि नडुवण् माशऱु, शुडर्मणि मण्डपन् दुन्नि नान्मुहक्
कडवुळै यडितॊळु दमरर् कण्डहर्, इडिनिहर् कॊडुमैय दियम्बि नाररो 188

अमरर्–देवगण; वटवरै कुटुमियिन् नटुवण्–उत्तर में स्थित (मेरु) पर्वत के शिखर पर रहनेवाले; माचु अऱु चुटर् मणि मण्टपम्–कलंकहीन, प्रकाशमान रत्न-(खचित) मण्डप; तुन्नि–पहुँचकर; नान् मुकम् कटवुळै–चतुर्मुख देव को; अटि तॊळुतु–चरण-वन्दना करके; कण्टकर्–निर्मम राक्षसों के; इटि निकर् कॊटुमै–वज्रपात समान क्रूर कार्यों को; इयम्पिनार्–बोले। १८८

वे सब उत्तर में स्थित मेरुपर्वत के एक शिखर पर, निर्दोष रत्नों से निर्मित एक मण्डप में आये। उन्होंने चतुर्मुख ब्रह्मा का नमस्कार कर लोक-कंटकों के वज्राघातों के समान पड़नेवाले अत्याचार बताये। १८८

पाहशा दनन्ऱनैप् पाशत् तार्त्तडल्, मेहना दन्पुहुन् दिलङ्गै मेयनाळ्
पोहमा मलरुऱै पुन्तिदन् मीट्टमै, तोहैपा हर्कुरच् चॊल्लि नानरो 189

अटल् मेकनातन्–अति बली मेघनाद; पाकचातनन् तनै–पाकशासन (देवेन्द्र) को; पाचत्तु आर्त्तु–पाश द्वारा बाँधकर; इलङ्कै पुकुन्तु मेय नाळ्–लंका में ले गया, (और इन्द्र वहाँ रहा) तब; मीट्टमै–उसको मुक्त कर लाने की बात; पोकम् मा मलर् उऱै–मनोरम कमल-पुष्प पर आसीन ब्रह्मा ने; तोकै पाकर्कु–अर्धनारीश्वर को; उऱ–खूब समझाकर; चॊल्लिनान्–सुनाई। १८९

तब ब्रह्मा ने अर्धनारीश्वर शिवजी से पाकशासन (इन्द्र) की बात

कही। वह मेघनाद द्वारा पाश-बद्ध होकर लंका में ले जाया गया। फिर स्वयं ब्रह्माजी किसी तरह मुक्त कराके उसे लाये थे। अब वे कुछ नहीं कर सकेंगे। १८९

इरुपदु करन्दलै यीरैन् दॆन्नुमत्
तिरुविलि तनैत् तॆरुञ् जॆयलिन् ड्रॆङ्गळाल्
करुमुहि लॆन्नवळर् करुणै यङ्गडल्
पॊरुतिडर् तणिक्किलुण् डॆनुम्बु णर्प्पिनार् 190

करम् इरुपतु–हाथ बीस; ईरैन्तु तलै ॲन्नुम्–दस सिर––इस ख्याति के; अ तिरु इलि तनै–उस श्री-हीन को; तॆरुम् चॆयल्–मारने का काम; ॲङ्कळाल् इन्रु–हम (दोनों) के वश का नहीं; करु मुकिल् ॲन्न–श्यामल मेघ की तरह; वळर्–योग-निद्रा-रत; करुणै कटल्–कृपा-सागर; पॊरुतु–युद्ध कर; इटर् तणिक्किल्–दुख दूर करेंगे, तभी; उण्टु–हो सकता है; ॲनुम् पुणर्प्पिनार्–इस विचार में एकमत होकर। १९०

"दस सिर और बीस हाथ वाले, दया-श्री से हीन रावण को मारना हमारे वश का नहीं। श्यामल मेघ के समान, क्षीरसागर पर योग-निद्रा में रहनेवाले दयासागर, श्रीविष्णु ही इसका उपाय कर सकते हैं।" ऐसा निश्चय कर; । १९०

तिरैतवऴ् पाऱ्कडऱ् ऱुयिलुन् देवनै, मरहद मलैयिनै वऴुत्ति नॆञ्जिनाल्
करकम लङ्गुवित् तिरुन्द कालैयिल्, परगति युणर्न्दवर्क् कुदवुम् बण्णवन्191

तिरै तवऴ्–लहरें जिस पर मन्द चलती हैं; पाल् कटल् तुयिलुम् तेवनै–उस क्षीरसागर पर योग-निद्रा करनेवाले; मरकत मलैयिनै–मरकत पर्वत को, (अर्थात् श्रीविष्णुदेव को); नॆञ्चिनाल् वऴुत्ति–मन से चिन्तन करके; कर कमलम् कुवित्तु–करकमल जोड़कर; इरुन्त कालैयिल्–रहते समय; उणर्न्तवर्क्कु–तत्वज्ञों को; परकति उतवुम् पण्णवन्–उत्कृष्ट परगति (मुक्ति) दिलानेवाले श्रीविष्णु भगवान। १९१

वे हाथ जोड़ क्षीरसागर की तरंगों के मध्य योग-निद्रा-रत मरकतपर्वत-सम विष्णुदेव का ध्यान करने लगे। तब तत्वज्ञों को मुक्तिपद अर्थात् अपना श्रीवैकुंठलोकवास, प्रदान करनेवाले विष्णुदेव, । १९१

करुमुहि ऱामरैक् काडु पूत्तुनी
डिरुशुड रिरुपुऱत् तेन्दि येन्दलर्त्
तिरुवॊडुम् बॊलियवोर् शॆम्बॊऱ् कुन्ऱिन्मेल्
वरुवपोऱ् कलुऴन्मेल् वन्दु तोन्ऱिनान् 192

करु मुकिल्–काला मेघ; तामरै काटु पूत्तु–कमल-कानन विकसित कर; नीळ् इरु चुटर्–दीर्घ दो प्रकाशपुंज; इरु पुऱत्तु एन्ति–दोनों पार्श्वों में धारण किये; अलर् ॲन्तु तिरुवॊटुम् पॊलिय–कमलासना श्रीलक्ष्मी के साथ शोभायमान होकर;

ओर् चॅम् पॊऩ् कुऩ्ऱिऩ् मेल्–एक लाल स्वर्णगिरि पर; वरुव पोल्–(विराजे) आये ऐसा; कलुळऩ् मेल् वन्तु–गरुड़ पर (आरूढ़ हो) आकर; तोऩ्ऱिताऩ्–प्रगट हुए। १९२

शंख और चक्र धारण कर, कमला, श्रीलक्ष्मीदेवी, के साथ गरुड़ारूढ़ आकर प्रकट हुए। यह ऐसा लगा मानों एक कमल-काननयुक्त नीला पर्वत, चन्द्र, सूर्य और श्रीलक्ष्मी के साथ स्वर्ण-पर्वत पर चढ़कर आया हो। १९२

ऍऴुन्दनर् कडवुळरक् किरैयुन् दामरैच्
चॅऴुन्दवि शुहन्दवत् तेवुञ् जॅन्ऱॅदिर्
विऴुन्दन रडिमिशै विण्णु ळोरॊडुम्
तॊऴुन्दॊरुन् दॊऴुन्दॊरुङ् गळितु ळङ्गुवार् 193

कटवुळर्क्कु इऱैयुम्–देवेन्द्र और; चॅऴु तामरै तविचु उकन्त–प्रफुल्लित कमल के आसन पर विराजमान; अ तेवुम्–वे देवता (ब्रह्मा) भी; ऍऴुन्तनर्–उठे; विण्णुळोरॊटुम्–अन्य देवताओं के साथ; ऍतिर् चॅन्ऱु–सामने जाकर; अटि मिचै विऴुन्तनर्–चरण तल पर विनत हुए; तॊऴुन्तॊरुम् तॊऴुन्तॊरुम्–ज्यों-ज्यों नमस्कार करते; कळि तुळङ्कुवार्–त्यों-त्यों आनन्दानुभव में बढ़ते हैं (उनका आनन्द वर्धित होता है)। १९३

उनको देखकर देवेन्द्र और कमलासन ब्रह्मा दोनों उठे और अन्य देवताओं को साथ ले उनके चरणों पर विनत हुए। अनेक बार उन्होंने नमस्कार किया। हर बार उनका आनन्द बढ़ा। १९३

आडिनर् पाडिन रङ्गु मिङ्गुमाय्
ओडिन रुवहैमा नऱवुण् डोर्हिलार्
वीडिन ररक्करॆन् ऱुवक्कुम् विम्मलाल्
शूडिनर् मुऱैमुऱै तुळवत् ताण्मलर् 194

उवकै मा नऱवु उण्टु–आनन्दरूपी अधिक सुरा पीकर; ओर्किलार्–किंकर्तव्य-मूढ़ होकर; आटिनर्–नाचे; पाटिनर्–गाये; अङ्कुम् इङ्कुमाय् ओटिनर्–इधर-उधर भागे; अरक्कर् वीटिनर् ऍन्ऱु–राक्षस मरे—यह निश्चय करके; उवक्कुम् विम्मलाल्–आनन्दवर्धन (वर्धित आनन्द) के साथ; तुळवम् ताळ्–तुलसी-दल-गन्ध-भूयिष्ट चरणों पर; मुऱै मुऱै–यथाक्रम; मलर् चूटिनर्–पुष्पार्चना की। १९४

उनको आनन्द का नशा सा हो गया। वे नाचे, गाये और इधर-उधर दौड़े। उनको निश्चय हो गया कि अब राक्षस मिट गये। इस विचार से उत्पन्न आदर और श्रद्धा के कारण उन्होंने विष्णुदेव के चरणों पर पुष्पार्चन किया। (देवता के एक-एक नाम उच्चारण करते हुए पुष्प अर्पण करना अर्चन कहा जाता है।)। १९४

पॊऩ्वरै यिऴिवदोर् पुयलिऱ् पॊऱ्पुऱ
अॆऩ्ऩैया ळुडैयवऩ् ऱोणिऩ् ऱॆम्बिराऩ्
शॆऩ्ऩिवाऩ् तडवुमण् डपत्तिऱ् चेर्न्दरि
तुऩ्ऩुपॊऱ् पीडमेऱ् पॊलिन्दु तोऩ्ऱिऩाऩ् 195

अॆम्पिराऩ्—मेरे भगवान; पॊऩ् वरै इऴिवतु ओर् पुयलिऩ्—स्वर्ण-पर्वत से उतरनेवाले एक मेघ के समान; पॊऱ्पु उऱ—शान के साथ; अॆऩ्ऩै आळुटैयवऩ् तोळ् निऩ्ऱु—मेरे शरण्य (भक्त गरुड़) के कन्धों पर से उतरकर; चेऩ्ऩि वाऩ् तटवु—जिसकी चोटी आकाश को स्पर्श करती रही उस; मण्टपत्तिल् चेर्न्तु—मण्डप के अन्दर जाकर; अरि तुऩ्ऩु पॊऩ् पीटम् मेल्—स्वर्ण सिंहासन पर; पॊलिन्तु तोऩ्ऱिऩाऩ्—ज्योतिस्वरूप विराजे। १६५

तब श्रीविष्णु, मेरे भगवान, स्वर्ण-पर्वत से उतरनेवाले एक मेघ के समान मेरे शरण्य गरुड़ से भव्य रूप से उतरे; और उस गगनस्पर्शी मण्डप के अन्दर श्रेष्ठ सिंहासन पर विराजे। (भक्तों के लिए भगवान से बढ़कर भगवान के सेवक अधिक श्रद्धेय हैं। अतः कम्बन गरुड़देव का नाम अधिक आदर से लेते हैं। १९५

विदियॊडु मुऩिवरुम् विण्णु ळोर्हळुम्
मदिवळर् शडैमुडि मऴुव लाळऩुम्
अदिशय मुडऩुवन् दयलि रुन्दुऴिक्
कॊदिकॊळ्वे लरक्कर्दङ् गॊडुमै कूऱुवार् 196

वितियॊटु मुनिवरुम्—विधाता के साथ मुनिगण; विण् उळोर्कळुम्—और, स्वर्गवासी देवता; मति वळर्—शुक्ल-पक्ष के चन्द्र का निलय; चटै मुटि—जटाधारी (चन्द्रशेखर); मऴु वल् आळऩुम्—तप्त लोहे का अस्त्र रखनेवाले; अतिचयमुटऩ् उवन्तु—अतिशय मुग्ध होकर; अयल् इरुन्तुऴि—समीप रहते समय; कॊति कॊळ् वेल्—तापक शक्ति के; अरक्कर् तम् कॊटुमै—(धारक) राक्षसों के क्रूर कार्यों को; कूऱुवार्—कहने लगे। १६६

उनके पास विधाता, ऋषिगण, आकाशलोकवासी, जटा में चन्द्र और हाथ में तप्त लोहे का हथियार धारण करनेवाले शिवजी इत्यादि बैठकर संतापक भालोंवाले राक्षसों द्वारा होनेवाले अत्याचारों का वर्णन करने लगे। १९६

ऐयिरु तलैयिऩो ऩऩुश ऩादियाम्
मॆय्वलि यरक्कराल् विण्णु मण्णुमे
शॆय्दव मिऴन्दऩ तिरुवि ऩायह
उय्तिऱ मिल्लैयॆऩ् ऱुयिर्प्पु वीङ्गिऩार् 197

तिरुविऩ् नायक—लक्ष्मीपति; ऐयिरु तलैयिऩोऩ्—पाँच के दो (दस) सिर वाले; अनुचऩ् आतियाम्—उसका अनुज आदि; मॆय्वलि अरक्कराल्—शरीर-बल रखनेवाले

राक्षसों द्वारा; विण्णुम्–देवलोक (वासी); मण्णुमे–भूलोक (वासी) भी; चॅय् तवम् इळन्तन–कर्तव्य तप आदि कर्म छोड़ बैठे; उय् तिरम् इल्लै–बचने का उपाय नहीं है; ॲन्ऱु–कहकर; उयिर्प्पु वीङ्किनार्–दीर्घ निश्वास छोड़ा। १९७

"हे श्रीलक्ष्मीपति ! दशग्रीव के अनुज आदि, अपार शरीर-बल से युक्त, राक्षसों के कारण, आकाशलोक और भूलोक तपस्या आदि सत्कर्मों से हीन हो गये। अब बचने का उपाय नहीं दिखता।" यह कहकर वे दीर्घ निश्वास छोड़ने लगे। १९७

ॲङ्गणीळ् वरङ्गळा लरक्क रॅन्ऱुळार्
पॉङ्गुमू वुलहैयुम् बुडैत्त ळित्तनर्
शॅङ्गणा यहविनित् तीर्त्त लिल्लैयेल्
नुङ्गुव रुलहैयोर् नॉडियि नॅन्ऱनर् 198

चॅम् कण् नायक–लाल आँखों वाले नायक; ॲङ्कळ् नीळ् वरङ्कळाल्–हमारे प्रदत्त बड़े वरों के कारण; अरक्कर् ॲन्ऱु उळ्ळार्–राक्षस नामधारी सब; पॉङ्कुम् मू उलकैयुम्–संवर्धनशील तीनों लोकों को; पुटैत्तु अळि त्तनर्–आहत कर मिटाते हैं; इनि–अब; तीर्त्तल् इल्लैयेल्–संहार नहीं हुआ तो; उलकै–सारे लोकों को; ओर् नॉटियिन्–एक क्षण में; नुङ्कुवर्–उदरस्थ कर लेंगे; ॲन्ऱनर्–ऐसा कहा। १९८

उन्होंने आगे कहा कि ताम्राक्ष ! हमसे प्राप्त वरों के दीर्घ प्रभाव के कारण, वे राक्षस संवर्धनशील तीनों भुवनों का नाश कर रहे हैं। अब उनका संहार नहीं होगा तो सारे लोकों को एक पल में खा जाएँगे। १९८

ॲन्ऱन रिडरुळन् दिरॅञ्जि येत्तलुम्
मन्ऱलन् दुळविनान् वरुन्दल् वञ्जहन्
तन्ऱलै यरुत्तिडर् तणिप्पॅन् ऱारणिक्
कॉन्ऱुनीर् केण्मेन वुरैत्तन् मेयिनान् 199

ॲन्ऱनर्–ऐसा कहनेवाले हो; इटर् उळन्तु–दुखतप्त होकर; इरॅञ्चि एत्तलुम्–विनत हो स्तुति करने पर; मन्ऱल् अम् तुळविनान्–सुगन्धित तुलसीमाला से अलंकृत (श्रीविष्णु) ने; वरुन्तल्–दुखी मत हों; वञ्चकन् तन् तलै अरुत्तु–वंचक का सिर काटकर; तारणिक्कु इटर् तणिप्पॅन्–धरणी का संकट हरण करूँगा; नीर् ऑन्ऱु केण्म् ॲन–आप लोग एक बात सुनें––यह बात कहकर; उरैत्तल् मेयिनान्–आगे कहने लगे। १९९

यह कहकर दुःख से पीड़ित उन्होंने भगवान की बहुप्रकार से विनय की। तब तुलसी-मालाधारी देव ने कहा कि आपलोग दुःख न करें। उस वंचक का सिर काटकर धरणी का दुःख दूर कर दूँगा। आप एक बात सुनिए। १९९

**वानुळो रतैवरुम् वान रङ्गळाक्, कानिनुम् वरैयिनुङ् गडिकॉळ् काविनुम्
शेनैयो डवदरित् तिडुमिन् शॅन्ऱॆन, आनन मलर्न्दन नरुळि नाळियान् 200**

वान् उळोर् अनैवरुम्–सुरलोकवासी आप सब; वानरङ्कळ् आ–वानर बनें; कानितुम्–वनों और; वरैयितुम्–पर्वतों; कटि कॉळ्–सुवासपूर्ण; कावितुम्–बागों में; चेनैयॉटु चॆन्ऱु अवतरित्तिटुमिन्–सेना के साथ जाकर अवतार लीजिए; ऍन–यह कहकर; अरुळिन् आळियान्–दयासागर ने; आननम् मलर्न्ततन्–श्रीमुख से शुभ उच्चारण किया। २००

आकाशलोकवासी आप सब वानर बनकर, जंगलों, पर्वतों और सुवासपूर्ण बागों में जाकर रहें। ऐसा उन्होंने अपने श्रीमुख से शुभ उच्चारण किया। २००

**मशरद मनैयवर् वरमुम् वाऴ्वुमोर्, निशरद कणैहळा नीऱु शॅय्ययाम्
कशरद तुरहवाट् कडल्हॉळ् कावलन्, दशरदन् मदलैयाय् वरुदुन् दारणि 201**

अनैयवर्–उनके; वरमुम्–वरों को; मचरतम् वाऴ्वुम्–'भूतरथ' के समान (माया-मय) जीवन को; ओर्–अनुपम; निचम् रतम् कणैकळाल्–अचूक और रक्त-पिपासू शरों से; नीऱु चेय्य–राख बनाने हेतु; याम्–हम; कचम्, रतम्, तुरकम्, आळ् कटल् कॉळ्–गज, रथ, तुरग पदाति, चतुरंग सेना-सागर के पति; कावलन् तचरतन्–चक्रवर्ती दशरथ के; मतलैयाय्–पुत्र के रूप में; तारणि वरुतुम्–पृथ्वी पर जन्म लूँगा। २०१

उन्होंने आगे कहा कि राक्षसों के वरों और उनके मायामय जीवन को हम अपने अमोघ और रक्तपिपासू शरों द्वारा खाक में मिलाने के लिए चतुरंगिनी सेना के स्वामी, राजा दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लेंगे। २०१

**वळैयॉडु तिहिरियुम् वडवै तीदर, विळैदरु कडुवुडै विरिहॉळ् पायलुम्
इळैयव रॅनवडि परव वेहिनाम्, वळैमदि लयोत्तियिल् वरुदु मॅन्ऱनन् 202**

वळैयॉटु तिकिरियुम्–शंख के साथ चक्र (और); वटवै ती तर–बड़वाग्नि को भी जलाते हुए; विळै तरु कटु–उत्पन्न होनेवाला विष जिसमें है; विरिकॉळ् पायलुम्–वह विशाल शय्या (शेषनाग); इळैयवर् ऍन अटि परव–अनुज बनकर मेरी सेवा करें, ऐसा; नाम् एकि–हम आकर; वळै मतिल् अयोत्तियिल्–बड़े प्राचीरों से घिरे अयोध्या नगर में; वरुतुम्–जन्म लेंगे। २०२

मेरे शंख, चक्र और शय्या का काम देनेवाले कठोर विषधर शेषनाग मेरे अनुजों के रूप में आकर मेरी सेवा करेंगे। हम अयोध्या में आकर प्रकट होंगे। २०२

**ऑन्ऱव नुरैत्तपो दॅऴुन्तु तुळ्ळिनार्, नन्ऱिकॉण् मङ्गल नादम् बाडिनार्
मन्ऱलन् जॅऴुन्दुळ वणियु मायनार्, इन्ऱमै यळित्तन रॅन्नु मेम्बलाल् 203**

ऑन्ऱु अवन् उरैत्तपोतु–ऐसा उन्होंने कहा, तब (देव लोग सब); मन्ऱल् अम् चॆऴ् तुळवु अणियुम् मायनार्–सुवासित, सुन्दर और प्रफुल्ल तुलसी-मालाधारी मायावी

(लीलाधर) देव; इन्ऱु ॲमै अळित्ततर्–आज हमको बचा चुके; ॲन्ऩुम् एम्पलाल्–इस आनन्द से; ॲळुन्तु तुळ्ळिऩार्–उठे और उछले; नन्ऱि कोळ्–कृतज्ञता-पूरित; मङ्कल नातम् पाटिऩार्–मंगलाशासन के (मंगल चाहनेवाले) गीत गाये। २०३

जब उन्होंने यह कहा तब वे देवता सब उठे और उछले। तुलसी-मालाधारी देव ने हमारा उद्धार किया—इस विचार से उत्पन्न कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनका मंगल-सूचक कीर्तन किया। २०३

पोयदॅम् बौरुम लॅन्ऩा विन्दिर नुवहै पूत्तान्
तूयमा मलरु ळोनुञ् जुडर्मदि शूडि नानुम्
शेयुयर् विशुम्बु ळोरुन् दीर्न्ददॅञ् जिरुमै यॅन्ऱार्
मायिरु ञाल मुण्डोन् कलुळ्न्मेर् चरणम् वैत्तान् 204

इन्तिरन्–देवेन्द्र; ॲम् पौरुमल् पोयतु–हमारा भय दूर हुआ; ॲन्ऩा–कहकर; उवकै पूत्तान्–मुदित हुआ; तूय मा मलर् उळोनुम्–पवित्र, श्रेष्ठ पुष्प (कमल) पर आसीन ब्रह्माजी भी; चुटर् मति चूटिनानुम्–द्युतिमान चन्द्र के धारक भी; चेय् उयर् विचुम्पु उळोरुम्–अत्युन्नत आकाश-लोक के वासी भी; ॲम् चिऱुमै तीर्न्ततु–हमारी अवनति दूर हुई; ॲन्ऱार्–कहा; मा इरु ञालम् उण्टोन्–बहुत बड़ा यह भूलोक उदरस्थ करनेवाले (श्रीविष्णुदेव) ने; कलुळन् मेल्–गरुड़ पर; चरणम् वैत्तान्–अपना श्रीचरण रखा। २०४

देवेन्द्र यह सोचकर कि हमारा भय अब दूर हुआ बहुत उल्लसित हुये। ब्रह्मा, चन्द्रशेखर शिवजी और अन्य देवता—सबों ने यह मान लिया कि अब हमारी अवनति दूर हो गयी। तब भूगर्भ (विष्णु) गरुड़ पर चढ़े, (गमन के विचार से)। २०४

ॲन्ऩैया ळुडैय वैयन् कलुळ्न्मे लॅळुन्दु पोय
पिन्ऩर्वा नवरै नोक्किप् पिदामहन् पेशु हिन्ऱान्
मुन्ऩरे यॅण्किन् वेन्तन् यानॅन मुडुहि नॅन्मर्
रन्ऩवा ऱॅवरु नीर्पो यवदरित् तिडुमि नॅन्ऱान् 205

ॲन्ऩै आळुटैय ॲयन्–मेरे नियामक देव (के); कलुळन् मेल् ॲळुन्तु पोय पिन्ऩर्–गरुड़ पर विराजकर जाने के पश्चात्; वानवरै नोक्कि–देवों को देख; पेचुकिन्ऱान् पिता मकन्–बोलनेवाले पितामह ने; मुन्ऩरे–पूर्व ही; यान्–मैं; ॲण्किन् वेन्तन् ॲन–रीछों के राजा के रूप में; मुटुकितेन्–जन्म ले चुका हूँ; अन्ऩवाऱु–उसी प्रकार; नीर् ॲवरुम्–तुम सब लोग; पोय् अवतरित्तिटुमिन्–जन्म ले लो; ॲन्ऱान्–कहा; (मऱ्ऱु)। २०५

मेरे (कम्बन के) नियामक श्रीमन्नारायण गरुड़ पर विराजे चले गये। उसके बाद ब्रह्मा ने देवताओं से कहा कि मैं पहले ही रीछों के राजा जाम्बवान के रूप में जन्म ले चुका हूँ। उसी प्रकार आपलोग भी बानर बनकर अवतरित हो जाइए। (वैष्णव सम्प्रदाय में शेष-शेषी भाव का

मुख्यत्व है—अर्थात् श्रीलक्ष्मीनारायण को सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र स्वामी, नियामक और सर्वशेषी मानना। भक्त अपने को पूर्णरूप से उनके अधीन मान लेता है।)। २०५

तरुवुडैक् कडवुळ् वेन्दन् शाऱ्ऱुवा नॆन्दुकूऱु
मरुवलर्क् कशनि यन्न वालियु महनु मॆन्न
इरविमऱ् ऱॆन्दु कूऱङ् गवऱ्किळै यवनॆन् ऱोद
अरियुमऱ् ऱॆन्दु कूऱु नीलनॆन् ऱुरैन्दिट् टानाल् 206

तरु उटै कटवुळ् वेन्तन्–(कल्पक) तरुओं के (स्वामी) देवेन्द्र; चाऱ्ऱुवान्–कहते हैं (कहनेवाले बनकर); ऍन्तु कूऱु–मेरा अंश; मरुवलर्क्कु–शत्रुओं को; अचनि अन्न–वज्र-सम; वालियुम्–वाली और; मकनुम् ऍन्न–उसका पुत्र है, यह कहने पर; इरवि–सूर्य; ऍन्तु कूऱु–मेरा अंश; अङ्कु अवऱ्कु इळैयवन्–कथित (उस) वाली का अनुज; ऍन्ऱु ओत–यह कहते; अरियुम्–अग्नि (ने) भी; ऍन्तु कूऱु नीलन् ऍन्ऱु अरैन्तिट्टान्–मेरा अंश नील है––यह कहा। २०६

नन्दन वन के स्वामी देवेन्द्र ने कहा कि, शत्रुओं के लिए वज्रतुल्य बाली और उसके पुत्र अंगद में मेरा अंश है। सूर्य ने कहा कि बाली का अनुज सुग्रीव मेरा अंश है। अग्निदेव ने बताया कि नील नामक वान मेरा अंश है। २०६

वायुमऱ् ऱॆन्दु कूऱु मारुदि यॆन्न मऱ्ऱोर्
कायुमऱ् कडङ्ग ळाहिक् काशिनि यदनिन्मीदु
पोयिडत् तुणिन्दो मॆन्ऱार् पुरारिमऱ् ऱियानुङ् गाऱ्ऱिन्
शेयॆनप् पुहन्ऱान् मऱ्ऱैत् तिशैयुळोर्क् कवदि युण्डो 20

वायु–पवनदेव (के); ऍन्तु कूऱु मारुति ऍन्न–मेरा अंश मारुति है, यह कह पर; मऱ्ऱोर्–अन्य (देवता लोग); कायुम् मऱ्कटङ्कळ् आकि–क्रोधी मर्कट बनकर काचिनि अतनिन् मीतु–भूमि पर; पोयिट तुणिन्तोम्–जन्म लेने का निश्चय किया (हमने); ऍन्ऱार्–बोले; पुरारि–त्रिपुरारि ने; यानुम्–मैं भी; काऱ्ऱिन् चेय वायुपुत्र (में मिला) रहूँगा; ऍन पुकन्ऱान्–ऐसा कहा; मऱ्ऱै–और दूसरे; ति उळ्ळोर्क्कु–नाना दिशाओं के रहनेवालों की; अवधि उण्टो–कोई सीमा है। २०७

वायुदेव ने मारुति को अपना अंश कहा। अन्य देवताओं ने भी कह कि हम सब क्रोधी बानरों के रूप में भूमि पर जाकर अवतरित होंगे तब त्रिपुरारी ने बताया कि मारुति में मेरा अंश भी मिला रहेगा कितने ही देवों का किस-किस दिशा में जन्म हुआ, इसका विवरण नहीं सकता। २०७

अरुडरु कमलक् कण्ण नरुण्मुऱै यलरु ळोनुम्
इरुडरु मिडऱ्ऱि नॊनु ममररु मिनॆय राहि

मरुडरु वनत्तिन् मण्णिल् वानर राहि वन्दार्
पोरुडरु मिरुवर् तन्द मुऱैविडज् जॅन्ऱु पुक्कार् 208

अरुळ् तरु-कृपालू; कमलम् कण्णन्-कमलाक्ष श्रीविष्णु के; अरुळ् मुऱै-आज्ञानुसार; अलर् उळोनुम्-पुष्पासन; इरुळ् तरु मिटऱ्ऱिनोनुम्-अन्धकारमय (नील) कण्ठवाले भी; अमररुम्-और अन्य देवता लोग; इत्तैयर् आकि-ऐसे संकल्पवाले बनकर; मरुळ् तरु वनत्तिल्-भयावने जंगलों में; मण्णिल्-अन्य स्थलों पर; वानरर् आकि वन्तार्-वानर बनकर पैदा हुए; पोरुळ् तरुम् इरुवर्-वरद दोनों (ब्रह्मा और रुद्र); तम् तम् उऱैविटम् चॅन्ऱु पुक्कार्-अपने-अपने निवासस्थान जा पहुँचे। २०८

वरदायी कमलाक्ष श्रीविष्णु भगवान की अनुज्ञा के अनुसार कमलासन, श्रीनीलकण्ठ और अन्य देवता, अंश में, बानर बनकर भयंकर काननों और पर्वतों पर जाकर रहे। वर-प्रदाता (ब्रह्मा और शिवजी) दोनों अपने-अपने निवास-स्थान सिधारे। २०८

ईदुमुन् निहळ्न्द वण्ण मॅन्नमुनि यिदयत् तॅण्णि
मादिरम् बॊरुद तिण्डोण् मन्ननी वरुन्द लेळेळ्
बूदल मुळ्दुन् दाङ्गुम् बुदल्वरै यळिक्कुम् वेळ्वि
तीदऱ मुयलि नैय शिन्दनोय् तीरु मॅन्ऱान् 209

ईतु-यह (वृत्तान्त); मुन् निकळ्न्त वण्णम् अॅन्-पहले घटित हुआ वृत्तान्त है--यह; मुनि-मुनिवर (वसिष्ठ) ने; इतयत्तु अॅण्णि-मन में सोचकर; मातिरम् पॊरुत-पर्वत का मुकाबला करनेवाले; तिण् तोळ् मन्न-सुदृढ़ कन्धोंवाले महाराज; नी वरुन्तल्-आप दुख न करें; एळ् एळ् पूतलम् मुळ्तुम् ताङ्कुम्-सात और सात लोकों का पालन करनेवाले; पुतल्वरै-पुत्रों को; अळिक्कुम् वेळ्वि-दिलानेवाला यज्ञ; तीतु अऱ मुयलित्-अपराध-हीन रीति से कर चुकेंगे तो; ऐय-महिमावान; चिन्तै नोय्-चिन्ता का रोग; तीरुम्-मिट जायगा; अॅन्ऱान्-ऐसा कहा। २०९

वसिष्ठ ने पूर्व-घटित यह वृत्तान्त अपने मन में सोचा। फिर उन्होंने दशरथ से कहा कि हे सशक्त कन्धोंवाले महाराज! आप चिन्ता मत कीजिए। सर्वलोक-शासन-समर्थ पुत्रों को दिलानेवाला एक यज्ञ है। उसको आप सफल रूप से कर चुकेंगे तो आपकी चिन्ता दूर हो जायगी। २०९

अॅन्ऱमा मुनिवन् कूऱ वॅळ्ळुन्दुपे रुवहै पॊङ्ग
मन्नवर् मन्न तन्द मामुनि शरणञ् जूडि
उन्नैये पुहल्पुक् केनुक् कुऱुहण्वन् दुरुव दुण्डो
अन्नदऱ् कडियेन् शॅय्युम् बणियितै यरुळु हॅन्ऱान् 210

अॅन्त-ऐसा; मा मुनिवन् कूऱ-महान मुनि के कहने पर; मन्नवर् मन्नन्-राजाधिराज; पेर् उवकै-बड़ा ही आनन्द; पॊङ्क-उमड़ते; अन्त-उन; मा मुनि चरणम् चूटि-महान मुनि के चरणों की वन्दना करके; उन्नैये पुकल् पुक्केनुक्कु-आप ही को शरण में आये हुए मुझे; उऱुकण् वन्तु उऱुवतु उण्टो-दुख मिलेगा क्या;

अन्ततर्कु–उस यज्ञ के लिये; अटियेन् चेय्युम् पणियितै–मुझसे करणीय काम को; अरुळुक–आज्ञा करने की कृपा कीजिए । २१०

महर्षि वसिष्ठ ने यह बात कही तो महाराज के आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे उठे और मुनिश्रेष्ठ के पैरों पर नमस्कार करके बोले कि मैं आपकी शरण में हूँ; मुझे दुःख ही नहीं हो सकता। आप कृपा कर बताइये कि उस यज्ञ को सुसम्पन्न करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए। २१०

माशरु शुरर्ह ळोडु मऱ्ऱुळोर् तमैयु मीन्ऱ
काशिब नरुळ् मैन्दन् विबाण्डहऩ् गङ्गै शूडुम्
ईशनुम् बुहळ्दऱ् कौत्तो निरुङ्गलै पिऱवु मॅण्णिन्
तेशुडैत् तन्दै यॉप्पान् ऱिरुवरुळ् पुनैन्द मैन्दन् 211

माचरु–कलंकहीन; चुरर्कळोटु–देवों को और; मऱ्ऱु उळोर् तममैयुम्–अन्य (दैत्य, मनुष्य, पक्षी, जानवर आदि) जीवों को; ईन्ऱ–जिन्होंने सृजित किया; काचिपन् अरुळुम् मैन्तन्–(उन) कश्यप (प्रजापति) जनित पुत्र; कङ्कै चूटुम् ईचनुम् पुकळ्तर्कु ओत्तोन्–गंगाधर श्रीशिव जी के लिए भी स्तुति करने योग्य; इरु कलै पिऱवुम्–गम्भीर शास्त्र-ज्ञान और विद्याओं में; ऍण्णिल्–सोचने पर; तेचु उटैय तन्तै ऑप्पान्–तेजस्वी अपने पिता की समानता करनेवाले; विपाण्टकन्–विभाण्डक मुनि के; तिरु अरुळ् पुनैन्त मैन्तन्–लोक-दया से जनित पुत्र। २११

वसिष्ठजी बोले। कश्यप प्रजापति के पुत्र विभाण्डक थे जो गंगाधर शिवजी के लिए भी स्तुत्य थे; सर्वशास्त्रज्ञ थे; विद्वान थे और अपने पिता के ही समान तेजोमय। उनके, कृपा-प्रदत्त पुत्र,। २११

वरुहलै यऱिवु नीदि मनुनॅऱि वरम्बु वाय्मै
तरुहलै मऱैयु मॅण्णिऱ् चतुमुकऩ् कुवमै शान्ऱोन्
तिरुहलै युडैय विन्दच् चॅहत्तुळोर् तन्मै तेरा
ऑरुहलै मुहच्चि रुङ्ग वुयर्दवन् वरुदल् वेण्डुम् 212

वरु कलै अऱिवु–विविध कलाओं के (विधाओं के) ज्ञान में; नीति मनु नॅऱि वरम्पु–नीतिशास्त्र, मनु-धर्म के विधि-विधानों में; वाय्मै तरु–तत्वबोधक; कलै मऱैयुम्–शाखा-विभक्त वेदों में; ऍण्णिल्–विचार करने पर; चतुमुकन्कु उवमै चान्ऱोन्–चतुर्मुख से उपमेय हैं; तिरुकलै उटैय–(स्त्री पुरुषादि) भेदयुक्त; इन्त चॅकत्तु उळोर् तन्मै–इस लोक के वासियों के रहस्यों को; तेरा–न जाननेवाले; ऑरु कलै चिरुङ्कम् मुकम्–अकेला शृंगवाला मुख जिनका है; उयर् तवन्–उन्नत तपस्वी; वरुतल् वेण्टुम्–(उनको) इधर आना चाहिए। २१२

ऋष्यशृंग हैं। वे सारी विद्याओं में पारंगत, मनु-धर्म-शास्त्र में निष्णात और अनन्त शाखाओं वाले वेदों के ज्ञान में, कहिए, स्वयं चतुर्मुख के समान हैं। वे स्त्री-पुरुष का भेद नहीं जानते और उनके सिर पर एक शृंग है। वे महान तपस्वी हैं। उनको इधर लिवा लाना होगा। २१२

पान्दळिन् मकुड कोडि परित्तपा रिदनिल् वैहुम्
मान्दरै विलङ्गॅन् ऱुन्नु मनत्तन्मा तवत्त नॅणणिऱ्
पून्दवि शुहन्दु ळोनुम् पुरारियुम् बुहळ्दऱ् कौत्त
शान्दनाल् वेळ्वि मुऱ्ऱिऱ् ऱनैयर्ह ळुळरा मॅन्ऱान् 213

पान्तळिन् मकुटम् कोटि–शेषनाग के अनेक (करोड़) फणों पर; परितृत–धृत; पार् इतनिल् वैकुम्–इस धरती पर बसनेवाले; मान्तरै–मनुष्यों को; विलङ्कु ॲन्ऱु उन्नुम् मनत्तन्–पशु समझनेवाले मन के; मा तवत्तन्–महान तपस्वी; ॲण्णिल्–विचार करने पर; पू तविचु उकन्तु उळ्ळोनुम्–(कमल) पुष्पासन-प्रिय ब्रह्मा; पुर अरियुम्–त्रिपुरांतक और; पुकळ्तऱ्कु ओत्त–(उनके लिए) स्तुति करने योग्य; चान्तनाल्–शांत स्वभाव के उन महर्षि (ऋष्यशृंग) द्वारा; वेळ्वि मुऱ्ऱिन्–यज्ञ सम्पन्न किया जाय तो; तनैयर्कळ् उळर् आम्–पुत्र होंगे; ॲन्ऱान्–(वसिष्ठजी ने) कहा। २१३

आदिशेष के अनेक फणों पर धृत इस भूमि पर रहनेवाले मनुष्यों को वे जानवर ही समझते हैं लेकिन बड़े तपस्वी हैं। मानिये तो वे कमलासन ब्रह्मा और त्रिपुरान्तक शिव द्वारा भी स्तोतव्य हैं। उन शान्त मुनि द्वारा यज्ञ-साधन होगा तो आप पुत्रवान बन जायँगे। २१३

आङ्गुरै यिनैय कूऱु मरुन्दवर्क् करशन् शॅय्य
पूङ्गळ ऱॉळुदु वाळ्त्तिप् पूदल मन्नर् मन्नन्
तीङ्गरु कुणत्तिन् मिक्क शॅळुन्दवन् याण्डै युळ्ळान्
ईङ्गियान् कॉणरुन् दन्मै यियम्बुदि यॅऩ्ऱॅ वॅन्ऱान् 214

आङ्कु–तब; पूतलम् मन्नर् मन्नन्–भूलोक के राजाओं के राजा; इनैय उरै कूऱुम्–ये बातें जिन्होंने बतायीं उन; अरु तवर्क्कु अरचन्–तपोधनों में (राजा) श्रेष्ठ (महर्षि) के; चॅय्य पू कळल्–लाल कमल-सम चरणों की; तॉळुतु–वन्दना करके; तुतित्तु–स्तुति करके; इऱैव–देव; तीङ्कु अऱु–(कामादि) दोष-रहित; कुणत्तिल् मिक्क–सद्गुणों में श्रेष्ठ; चॅळु तवन्–महान तपस्वी; याण्टु उळ्ळान्–कहाँ हैं; ईङ्कु यान् कॉणरुम् तन्मै–इधर उनको मेरे लिवा लाने का मार्ग; इयम्पुति–बताइयेगा; ॲन्ऱान्–यह विनय की। २१४

यह सुनकर राजाधिराज दशरथ ने मुनिवर का प्रणमन करके पूछा कि पवित्र गुणवाले महान तपस्वी कहाँ रहते हैं, उनको मैं कैसे लिवा लाऊँ, इसका उपाय बताइये। २१४

पुत्तान कॉडुविनैयो डरुन्दुयरम् बोयॉळिप्पप् पुवनन् दाङ्गुम्
सत्तान कुणमुडैयोन् ऱयैयोडुन् दण्णळियिन् शालै पोल्वान्
ॲत्तानुम् वॅलऱ्करियान् मनुकुलत्ते वन्दुदित्तो निलङ्गु मौलि
उत्तान पादनरु ळुरोमपद नॅन्ऱुळनिव् वुलहै याळ्वोन् 215

पुत् आन कॉटु विनैयोटु–पुत् आदि नरक पहुँचानेवाले भयंकर पाप; अरु तुयरम्–

और असहनीय दुख, ये; पोय् ऑळिप्प–जाकर छिप जायँ, ऐसा; पुवतम् ताङ्कुम्–भूमि का पालन करनेवाले; चत्तु आत कुणम् उटैयोऩ्–श्रेष्ठ (सत्व) गुणशील; तयैयोटुम् तण्णळियिऩ् चालै पोल्वाऩ्–दया और करुणा के निलय के समान रहनेवाले; ऍत्तातुम्–किसी भी उपाय से; वॅलऱ्कु अरियाऩ्–अजेय; मऩुकुलत्ते वन्तु उतित्तोऩ्–(स्वयंभुव) मनुकुल में उत्पन्न; इलङ्कु मौलि–द्युतिमान किरीटधारी; उत्तानपातऩ् अरुळ्–उत्तानपाद के पुत्र; उरोमपतऩ् ऍऩ्ऱु–रोमपाद नाम के; इ उलकै आळ्वोऩ्–इस भूमि में (अपने देश का) शासन करनेवाले; उळऩ्–हैं। २१५

वसिष्ठजी ने कहा कि स्वायंभुव मनु के वंश में उत्तानपाद नामक एक राजा हुए। उनके शासन में नरक में पहुँचानेवाले पाप नहीं होते थे और इसलिए किसी को कोई दुःख भी नहीं होता था। वे स्वयं गुणशील, दया आदि के आश्रय, और अजेय थे। उनके एक पुत्र हुए जो रोमपाद के नाम से अब राज्य कर रहे हैं। २१५

अऩ्ऩवऩ्ऱाऩ् पुरन्दळिक्कुन् दिरुनाट्टु ऍण्डुङ्गाल मळव दाह
मिऩ्ऩियॅऴु मुहिलिऩ्ऱि वॅन्दुयरम् पॅरुहुदलुम् वेद नऩ्ऩूल्
मऩ्ऩुमुऩि वरैयऴैत्तु मादानङ् गोडुक्कवुम्वाऩ् वऴङ्गा दाहप्
पिऩ्ऩुमऱै यवर्क्केट्पक् कलैक्कोट्टु मुऩिवरिऩ्वाऩ् पिलिऱ्ऱुमॅऩ्ऱार् 216

अऩ्ऩवऩ् पुरन्तु अळिक्कुम्–उनके द्वारा सुरक्षित; तिरुनाट्टुळ्–(अंग) देश में; नॅट्टु कालम् अळवु अतु आक–दीर्घकाल तक; मिऩ्ऩि ऍऴुम् मुकिल् इऩ्ऱि–बिजली के साथ उठनेवाले मेघों के बिना; वॅम् तुयरम् पॅरुकुतलुम्–भयंकर कष्ट फैल गया, तब; वेतम् नल् नूल् मऩ्ऩुम्–वेद-शास्त्रज्ञ; मुनिवरै अऴैत्तु–विप्रों को बुलाकर; मा तातम् कॉटुक्कवुम्–(राजा ने) बहुत दान दिये, तब भी; वाऩ् वऴङ्कताक–मेघ नहीं बरसे; पिऩ्ऩुम्–फिर भी; मऱैयवर् केट्प–वेदपाठियों से पूछने पर; कलैक्कोट्टु मुनि वरिऩ्–ऋष्यश्रृंग आएँगे तो; वाऩ् पिलिऱ्ऱुम् ऍऩ्ऱार्–मेघ बरसेगा—कहा। २१६

उनके शासित राज्य में दीर्घकाल से वर्षा नहीं हुई। लोग दुखी हो रहे। राजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर बहुत दान दिया। तो भी पानी नहीं गिरा। फिर विप्रों को बुलाकर पूछा तो उन्होंने कहा कि ऋष्यश्रृंग आवें तो बारिश होगी। २१६

ओदनॅडुङ् गडलाडै युलहिऩिल्वाऴ् मऩिदर्विलङ् गॅऩवे युऩ्ऩुम्
कोदिल्कुणत् तरुन्दवनैक् कॉणरुम्वहै यावदॅऩक् कुणिक्कुम् वेलै
शोदिनुदऱ् करुनॅडुङ्गट् टुवरिदऴ्वाय्त् तरळ नहैत् तुणैमॅऩ् कौङ्गै
मादरॅऴिन् दियामेहि यरुन्दवनैक् कॉणर्दुमॅन वणक्कज् जॅय्दार् 217

ओतम् नॅट्टु कटलाटै–तरंगायित समुद्र से वेष्टित; उलकितिल्–भूलोक में; वाऴ् मतितर्–वास करनेवाले मनुष्यों को; विलङ्कु ऍऩवे उऩ्ऩुम्–पशु ही समझनेवाले; कोतु इल् कुणत्तु अरु तवत्तै–अकलंक गुणी और श्रेष्ठ तपस्वी को; कॉणरुम् वकै यावतु ऍत–लिवा लाने का मार्ग क्या है, यह; कुणिक्कुम् वेलै–विचार करते समय; चोति नुतल्–उज्ज्वल ललाट; करु नॅट्टु कण्–काली लम्बी आँखें; तुवर् इतऴ् वाय्–प्रवाल

(लाल) अधर और मुँह; तरळम् नकै–मुक्ता से दाँत; मॅल् तुणै कोङ्कै–कोमल द्वय स्तन; मातर् अॅळुन्तु–(वार-) वनितायें उठकर; याम् एकि–हम गमन कर; अरु तवत्तै कोणर्तुम्–अपूर्व तपस्वी को ले आयँगी; ॲन–कहकर; वणक्कम् चॅय्तार्–नमस्कार किया। २१७

राजा को यह चिन्ता हुई कि समुद्र-वसना पृथ्वी के वासी, सब नर-नारियों को पशु समझनेवाले इन श्रेष्ठ तपस्वी को कैसे आमंत्रित किया जाय ? तब उनकी सभा में रही कुछ अति सुन्दर वारवनिताओं ने नमस्कार करके कहा कि हम जायँगी और उनको ले आयँगी। २१७

आङ्गवरम् मॊऴियुरैप्प वरशन्मकिऴ्न् दवर्क्कणितू शादि याय
पाङ्गुळमर् ऱवैयरुळिप् पनिप्पिरैयैप् पऴित्तनुदर् पणैत्त वेय्त्तोळ्
ॲङ्गुमिडै तडिक्कुमुलै यिरुण्डकुऴन् मरुण्डविऴि यिलवच् चॅव्वाय्प्
पूङ्गॊडियी रेहुमॅनत् तॊऴुदिरैञ्जि यिरदमिशैप् पोयि नारे 218

आङ्कु–वहाँ; अवर् अ मॊऴि उरैप्प–उनके वह वचन कहते; अरचन्–राजा; मकिऴ्न्तु–मुदित होकर; अवर्क्कु–उन्हें; अणि तूचु आति आय–आभरण वस्त्र इत्यादि; पाङ्कु उळ मऱ्ऱवै–उचित अन्य द्रव्य; अरुळि–देकर; पनि पिऱैयै पऴित्त नुतल्–शीतल अर्द्धचन्द्र का उपहास करनेवाली भौंहों; पणैत्त वेय् तोळ्–पुष्ट बांस सम कन्धों; एङ्कुम् इटै–क्षीण कमर; तटिक्कुम् मुलै–पीन स्तनों; इरुण्ट कुऴल्–अन्धकार-सम (काले) केश; इलवम् चॅम्मै वाय्–सेमर-पुष्प-सम लाल अधरोंवाली; पू कॊटियीर्–पुष्पलताओ; एकुम्–जाओ; ॲन–आज्ञा देने पर; तॊऴुतु इरैञ्चि–नमन और स्तुति करके; इरतम् मिचै–रथ पर; पोयिनार्–चलने लगीं। (ए)। २१८

यह सुनकर राजा ने बहुत सन्तुष्ट होकर उनको आभरण, वस्त्र और अन्य वस्तुएँ दीं; उनके अंग-लावण्य की सराहना की। और "शीतलचंद्र से भी अधिक सुन्दर ललाट, पुष्ट बांस के समान कंधे, क्षीण कमर; पीन उरोज, काला केशजाल, चकित आँखें, सेमर-सम लाल अधर-वाली पुष्पलताओ, जाओ" जाने की अनुमति दी। वे भी राजा का नमस्कार और स्तुति करके रथ पर बैठकर चल पड़ीं। २१८

ओशनै पलकडन् दिनियॊ रोशनै, एशरु तवनुऱै यिडम दॆन्ऱुऴिप्
पाशिळै मडन्तैयर् पन्न शालैशॆय्, दाशरु मरुन्दवत् तवरिन् वैहिनार् 219

पचुमै इळै–हरे (चोखे स्वर्ण के) आभरणों से अलंकृत (वे); मटन्तैयर्–नारियाँ; ओचनै पल कटन्तु–अनेक योजन पार कर; एचु अऱ्ऱ तवन् उऱै इटम् अतु–अनिंद्य तपस्वी का आश्रम; इति ओर् ओचनै ॲन्ऱ उऴि–(जहाँ से) आगे एक योजन पर था (वहाँ); पन्नचालै चॅय्तु–एक पर्णशाला बनाकर; आचु अऱ्ऱम् अरु तवत्तवरिन्–निर्दोष श्रेष्ठ तपस्वियों के समान; वैकिनार्–रहने लगीं। २१९

अनेक योजनों की दूरी पार कर वे उस स्थान पर पहुँचीं जहाँ से

विभांडक का आश्रम एक योजन दूर था। वहाँ उन्होंने एक पर्णशाला बना ली और वे तपस्विनियों की भाँति रहने लगीं। २१९

अरुन्दवन् रुन्दयै यर्र् नोक्किये, करुन्दडङ् गण्णियर् कलैव लाळनिल्
पॊरुन्दिनर् पॊरुन्दुळि विलङ्गॆं नाप्पुरिन्, दिरुन्दव रिवरॆन विनैय शॆय्दनन् 220

करु तट कण्णियर्–काली विशाल आँखों वालियाँ; अरुतवन् तन्तैयै–श्रेष्ठ तपस्वी के पिता को; अर्र्म नोक्किये–अनुपस्थिति जानकर; कलै वल् आळतिल् पॊरुन्तिनर्–वेद-विद्या-विशिष्ट ऋषि के पास आयीं; पॊरुन्तुळि–मिलने पर; विलङ्कु ॲन्ना–पशु न समझकर; पुरिन्त इरु तवर् ॲन–की हुई बड़ी तपस्यावाले हैं ये, मानकर; इनैय चॆय्ततन्–यों व्यवहार किया। २२०

फिर एक दिन, ऋष्यश्रृंग के पिता जब कहीं चले गये थे बत ऋष्य-श्रृंग को अकेले में पाकर वे उनके आश्रम में पहुँचीं। उनको देखकर ऋषि ने पशु नहीं समझा, वरन तपस्वी समझ लिया। इसलिए यथोचित सत्कार करने लगे। २२०

अरुक्किय मुदलिनो डाश नङ्गॊडुत्
तिरुक्कॆन विरुन्दपि निनिय कूर्लुम्
मुरुक्किदळ् मडन्दयर् मुनिव नैत्तॊळाप्
पॊरुक्कॆन वॆळुन्दुपोय्प् पुरैयुट् पुक्कनर् 221

अरुक्कियम् मुतलिन्नोटु–अर्घ्य आदि के साथ; आचनम् कॊटुत्तु–आसन देकर; इरुक्क ॲन–विराजिए––कहने पर; इरुन्त पिन्–बैठने के बाद; इनिय कूर्लुम्–मधुर उपचार-वचन कहते ही; मुरुक्कु इतळ् मटन्तैयर्–पलाशपुष्प सदृश अधरवाली नारियाँ; मुनिवनै तॊळा–मुनिवर्य का नमस्कार करके; पॊरुक्कु ॲन–झटित; ॲळुन्तु पोय्–उठकर गयीं और; पुरै उळ् पुक्कनर्–अपने आश्रम में घुस गयीं। २२१

ऋषि ने उन्हें अर्घ्य आदि दिया, आसन दिये, बिठाया और मधुर अभ्यर्थना के वचन कहे। वनिताओं ने इतना ही किया कि वे नमस्कार करके तुरन्त उठकर अपने आश्रम में चली आयीं। २२१

तिरुन्दिळै यवर्शिल दिनङ्ग डीर्न्दुळि
मरुन्दिनु मिनियन वरुक्कै वाळैमात्
तरुङ्गनि पलवॊडु ताळै यिन्कनि
अरुन्तव वरुन्दॆन वरुत्ति नारनो 222

चिल तिनङ्कळ् तीर्न्तुळि–कुछ दिनों के बीतने के पश्चात्; तिरुन्तु इळैयवर्–सुघड़ आभरण-शोभिताओं ने; मरुन्तिनुम् इनियन–अमृत से भी मधुर; वरुक्कै–कटहल; वाळै–केले; मा–आम; तरुम् कनि पलवॊटु–से मिलनेवाले अनेक फलों को; ताळै इन् कनि–मधुर नारियल को (ला देकर); अरु तव–श्रेष्ठ तपस्वी; अरुन्तु–भुगतिये; ॲन–कहकर; अरुत्तिनार्–खिलाया (फलों के साथ वे भक्ष्य मिठाइयाँ आदि बना लायीं––यह भाव भी बताया जा सकता है)। २२२

कुछ दिन बीते, फिर वे श्रेष्ठ आभरणों से भूषित होकर, कटहल, आम, केले आदि के फल और नारियल लेकर वहाँ पहुँचीं और उनको खिलाया। (वे मधुर भक्ष्य भी साथ लायीं।)। २२२

इन्नन	पलपह	लिड्न्द	पिन्दिरु
नन्नुदन्	मडन्दयर्	नवैयिन्	मादवन्
तन्नयॅम्	मिडत्तिनुज्	जार्दल्	वेण्डुमॅन्
ड्न्नवर्	तॉळुदलु	मवरॉ	डेहिनान् 223

इन्नन पल पकल्–ऐसे अनेक दिन; इरन्द पिन्–बीत जाने के पश्चात्; अन्नवर्–उन (के); तिरु नल् नुतल मटन्तैयर्–सुन्दर, अच्छे भालवालियों के; नवै इल् मातवन् तन्नै–आनिन्द्य और महान तपस्वी को; ॲम् इटत्तिलुम् चार्तल् वेण्टुम्–हमारे यहाँ भी पधारने की कृपा हो; ॲन्रु–कहकर; तॉळुतलुम्–नमस्कार करने पर (वे); अवरॉटु एकिनान्–उनके साथ सिधारे। २२३

ऐसे अनेक दिन व्यतीत हुए। एक दिन सुन्दर भालवाली उन योषिताओं ने उन निष्कपट तपस्वी से, विनय की कि महात्मन्! आप भी हमारे आश्रम को अपने पदार्पण से पवित्र कीजिए। महर्षि भी उनके साथ जाने को तैयार हो गये। २२३

विम्मुरु मुवहयर् वियन्द नॅञ्जिनर्, अम्मविव् विदुवॅन वहलु नीणॅरिच्
चॅम्मशेर् मुनिवरन् रॉडरच् चॅन्ड्नर्, तम्मन मॅन्नमरुट् टैय लार्हळे 224

तम् मनम् ॲन–अपने मन के समान; मरुळ्–भ्रमित; तैयलार्कळ्–वे नारियाँ; विम्मुरुम् उवकैयर्–प्रफुल्ल उल्लास के साथ; वियन्त नॅञ्चिनर्–चकित मन; अम्म–इधर देखिये; इव्वितु–यह, यही (हमारा आश्रम है); ॲन–ऐसा कहते हुए; अकलुम्–(अंग देश की ओर) जानेवाले; नीळ् नॅरि–दीर्घ मार्ग में; चॅम्मै चेर् मुनिवरन्–भोले महर्षि के; तॉटर–उनका अनुसरण करते; चॅन्ड्नर्–गयीं। (ए)। २२४

यह देखकर उनका मन भ्रमित हुआ। उनकी आँखों में भी भय-विस्मय का भाव प्रकटित हुआ। एक ओर संतोष दूसरी ओर विस्मय के साथ वे उनको, इधर-उधर का निर्देश करती हुई, अंग देश के मार्ग में बहुत दूर ले आ गयीं। २२४

वळनहर् मुनिवरन् वरुमुन् वानवन्, कळनमर् कडुवॅनक् करुहि वान्मुहिल्
शळशळ वॅनमळैत् तारै कान्ड्न, कुळत्तॉडु नदिकडङ् गुरैह डीरवे 225

मुनिवरन्–मुनिश्रेष्ठ (के); वळम् नकर् वरुमुन्–समृद्ध नगर आने के पहले; वान् मुकिल्–आकाश के मेघ (मेघों ने); वानवन् कळत् अमर्–शंकर देव के गले में रहनेवाले; कटु ॲन–विष के समान; करुकि–काले बनकर; कुळत्तॉटु नतिकळ्–तड़ागों और नदियों को; तम् कुरैकळ् तीर–उनकी रिक्तता को दूर करते हुए,

(भरते हुए); चळ चळ ॲन्त–'गुळ् गुळ्' का शब्द करते हुए; मळै तारै–वर्षा की धारायें; कान्ऱत–बरसायीं। (ए)। २२५

नगर अभी दूर था। तो भी महर्षि के उस देश की सीमा में प्रवेश करते ही नीलकण्ठ के विष के समान काले मेघ उमड़-घुमड़ आये। वर्षा खूब हुई। तालाब, नदियाँ आदि भर गयीं। २२५

पॅरुम्बुन नदिहळुङ् गुळनुम् बॅट्पुऱक्
करुम्बॊडु शॅन्नॅलुङ् गविन्कॊण् डोङ्गिड
इरुम्बुयल् कहनमी दिडॅवि डादॅळुन्
दरुम्बुनल् शॊरिन्तपो दरशु णर्न्दनन् 226

पॅरुम् पुनल् नतिकळुम् कुळनुम्–बहुत विशाल जलाशय, नदियाँ और तालाब; पॅट्पुउऱ–(जल से भरकर) सुशोभित हों; करुम्पु ओटु चॅम् नॅलुम्–ईख के साथ श्रेष्ठ धान के पौधे; कविन् कॊण्टु–चिकने बने बढ़ें, ऐसा; ककतम् मीतु–गगन पर; इरु पुयल् इटै विटातु एळुन्तु–घने मेघ निरन्तर उठे और फैले; अरुमै पुनल् चॊरिन्त पोतु–जब अपूर्व-प्राप्त जल बरसाया तब; अरचु–राजा रोमपाद ने; उणर्न्तनन्–(बात) समझ ली। २२६

विशाल जलाशय, नदी और तालाब सब भर गये; ईख, धान आदि खूब पनपने लगे। आकाश में मेघ लगातार फैले रहे और वर्षा होती रही। यह देखकर राजा रोमपाद समझ गये। २२६

काममुम् वॅहुळियुङ् गळिप्पुङ् गॆत्तेळु
कोमुनि यिवणडॅन् दनन्कॊल कॊव्वॅवायत्
तामरै मलर्मुहत् तरळवाणहैत्
तूममॆन् कुऴलियर् पुणर्त्त शूऴ्च्चियाल् 227

कॊव्वै वाय्–बिंबफल (सम लाल) मुख; तामरै मलर् मुकम्–लाल कमल सदृश आनन; तरळम् वाळ् नकै–मोती के समान धवल दाँत (वाली); तूमम् मॆल् कुऴलियर्–धूम्र लगे केश की गणिकाओं के; पुणर्त्त चूऴ्च्चियाल्–किये तन्त्र से; काममुम् वॅकुळियुम्–काम और क्रोध; कळिप्पुम्–और मोह; कॆत्तु ॲळु–त्याग कर श्रेष्ठ हुए; को मुनि–वरिष्ठ मुनि; इवण् अटैन्तनन् कॊल्–यहाँ पहुँच गये—शायद। २२७

रोमपाद ने सोचा—आश्चर्य है! काम, क्रोध और मोह को जीतकर जो महान हुए हैं क्या वे आ ही गये! बिंबाधर, कमलानन, मुक्ता-दाँत और अगरु-धूम लगे केश—इनसे युक्त ये नारियाँ किसी उपाय से उन्हें ला ही चुकी हैं तो!। २२७

ॲन्ऱॅळुन् दरुमरै मुनिवर् यारॊडुम्
शॅन्ऱिरण् डोशनै शॆन्ने शूऴ्तर

मन्ऱलङ् गुळ्लियर् नडुवण् मादवक्
कुन्ऱितै यॅदिर्न्दनन् कुववुत् तोळिनान् 228

ॲन्ऱु–यह सोचकर; कुववु तोळितान्–सुडौल कंधोंवाले (रोमपाद); अरु मऱै मुनिवर् यारोंटुम् ॲळुन्तु–उत्तम वेदज्ञ, सब ब्राह्मणों के साथ उठकर; चेतै चूळ्तर–सेना से घिरे हुए होकर; इरणुटु ओचत्तै चॅन्ऱु–दो योजन दूर चलकर; मन्ऱल् अम् कुळलियर् नटुवण्–सुवासित सुन्दर केश-वालियों के बीच; मातवम् कुन्ऱितै–बड़े तपस्या के पर्वत (के समान तेजोमय महर्षि) के; ॲतिर्न्तनन्–सम्मुख पहुँचे। २२८

ऐसा सोचकर सुडौल भुजावाले रोमपाद उठे और उनकी अगवानी करने के लिए जाने लगे। उनके साथ वेदपाठी विप्रगण गये और सेना भी उनको घेरते हुए गयी। वे दो योजन चले और उन गणिकाओं के मध्य तप के पर्वत के समान आनेवाले ऋष्यश्रृंग से मिले। २२८

वीळ्न्दनन् नडिमिशै विळिह णीर्दर
वाळ्न्दनॅन् ऩिनियॅन महिळ्न्दु जिन्दयान्
ताळ्न्दॅळु मादरार् तम्मै नोक्किनीर्
पोळ्न्ददॆ रॅन्तिडर् पुणर्प्पि नालॅन्ऱान् 229

इति वाळ्न्ततॅन् ॲन्त–अब तर गया––यह कहकर; मकिळुम् चिन्तैयान्–प्रफुल्लचित्त होकर; विळिकळ् नीर् तर–आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए; अटि मिचै वीळ्न्ततन्–चरणों पर गिरकर नमस्कार किया; ताळ्न्तु ॲळुम्–नमन कर उठनेवाली; मातरार् तम्मै–(गणिका) स्त्रियों को; नोक्कि–देखकर; नीर्, पुणर्प्पिताल्–तुमने उपाय करके; ॲन्तु इटर्–मेरा संकट; पोळ्न्ततिर्–मिटा दिया; ॲन्ऱान्–(प्रशंसा में) कहा। २२९

'अब मेरा उद्धार हो गया', यह कहते हुए, प्रसन्नचित्त राजा रोमपाद आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए महर्षि के चरणों पर नतमस्तक हुए। फिर उन नारियों को देखा जो उनके पैरों तले नमस्कार कर उठीं, और उनसे कहा कि तुम लोगों ने अपने प्रयास से मेरा संकट दूर कर दिया है। २२९

अरशनु मुनिवरु मडैन्द वायिडै, वरमुनि वञ्जमॅन् ऱुणर्न्द मालैवाय्
वॅरुविनर् विण्णवर् वेन्दन् वेण्डलाल्, करैयॅऱि यादलै कडलुम् पोन्ऱनन् 230

अरचतुम् मुनिवरुम्–राजा और ब्राह्मण लोग; अटैन्त आयिटै–जब आये तब; वञ्चम् ॲन्ऱु उणर्न्त मालै वाय्–कपट-व्यवहार समझ गये, उस स्थिति में; विण्णवर्–देवता लोग; वॆरुविनर्–भयभीत हुए; वेन्तन् वेण्टलाल्–राजा की विनत प्रार्थना से; करै ॲऱियातु–सीमा को लाँधकर न जानेवाले; अलै कटल् पोन्ऱनन्–तरंगायित समुद्र के समान (रुके हुए क्रोधवाले) हो गये। २३०

यह सब महर्षि ने देखा। राजा रोमपाद आये हैं, उनके साथ विप्रगण हैं और सेना भी। उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कोई कपट-व्यवहार हो

गया है। तब देवता भी डरने लगे कि इनको क्रोध हुआ तो अनर्थ हो जायगा। लेकिन राजा रोमपाद की विनय-याचना से, महर्षि का क्रोध मर्यादा-बद्ध तरंगाकीर्ण समुद्र के समान थमा रह गया। २३०

वळ्ळुरु वयिरवाण् मन्नन् पल्मुऱै, अॅळ्ळरु मुनिवनै यिऱैञ्जि यारिनुम्
तळ्ळरुन् दुयरमुञ् जमैवुञ् जाऱ्ऱलुम्, उळ्ळुरु वॆहुळिपो यॊळितत तामरो 231

वळ् उरु–धारदार; वयिरम् वाळ्–वज्र-सम खड्गधारी; मन्नन्–राजा के; अॅळ् अरु मुनिवनै–अनिन्द्य मुनि को; पल मुऱै इऱैञ्चि–अनेकबार नमस्कृत करके; यारिनुम तळ्ळ अरु तुयरमुम्–किसी से भी अनिवार्य दुख; चुमैवुम्–और उसका निवारण; चाऱ्ऱलुम्–बताने पर; उळ् उरु वॆकुळि–अन्तर्गत कोप; पोय् ओळितृततु–जाकर अदृश्य हो गया (बिल्कुल नहीं रहा); (आम् अरो)। २३१

वज्र-सम खड्गधारी रोमपाद ने अनिन्द्य महर्षि से बार-बार नमस्कार करके विनय की कि हमारे देश की घोर विपदा ऐसी थी कि कोई भी उसका निवारण नहीं कर सकता था। महर्षि, आपके आने से वह दूर हो सकी। यह सुनकर दयालू महर्षि ने अपना कोप त्याग दिया। २३१

अरुळ्शुरन् दरशनुक् काशि युङ्गॊडुत्
तुरुळुरु तेरिऩ्मी दॊल्लै येऱिनल्
पॊरुडरु मुनिवरुन् दॊडरप् पोयिनन्
मरुळॊळि युणर्वुडै वरद मादवन् 232

मरुळ् ऒळि उणर्वु–संशयहीन ज्ञानी; वरतन् मातवन्–वरदायी, श्रेष्ठ तपोधन; अरुळ् चुरन्तु–करुणा से भरकर; अरचनुक्कु–राजा रोमपाद को; आचियुम् कॊटुत्तु–आशीर्वाद भी प्रदान करके; उरुळ् उरु तेरिन् मीतु–त्वरितगामी रथ पर; ऒल्लै एऱि–सत्वर आरूढ़ होकर; नल् पॊरुळ् तरुम्–अच्छे उपदेष्टा; मुनिवरुम् तॊटर–मुनियों के अनुगमन करते; पोयिनन्–(नगर की तरफ) गये। २३२

अप्रमत्त ज्ञानी और वरप्रदायी तपोधन महर्षि ने करुणा-भूयिष्ट होकर राजा को आशीर्वाद दिया। फिर वे द्रुतगामी रथ पर आरूढ़ हो नगर की ओर जाने लगे। सदुपदेष्टा विप्रों ने भी उनका अनुगमन किया। २३२

अडैन्दनन् वळनह रलङ्ग रित्तॆदिर्
मिडैन्दिड मुनियॊडुम् वेन्दन् कोयिल्पुक्
कॊडुङ्गलिल् पॊऱ्कुळात् तुऱैयु ळॆय्दियोर्
मडङ्गला दनत्तिन्मेल् मुनियै वैत्तनन् 233

वेन्तन्–राजा रोमपाद; वळम् नकर्–भरे-पूरे नगर को; अलङ्करित्तु–सुसज्जित कर; ऍतिर् मिटैन्तिट–(लोग) सामने आये, तब; मुनियॊटुम् अटैन्तनन्–महर्षि के साथ पहुँचे; कोयिल् पुक्कु–राजमन्दिर में प्रवेश करके; पॊन् कुळात्तु–स्वर्ण की समृद्ध कारीगरी से युक्त; ऒटुङ्कल् इल् उऱैयुल् ऍय्ति–असंकीर्ण (विशाल)

भवन में आकर; मुनियै—महर्षि को; ओर् मटङ्कल् आतनत्तिन् मेल् वैत्तान्—एक सिंहासन पर आसीन कराया। २३३

नगर के लोगों ने नगर को खूब सजाया और वे उनके स्वागत के लिए आए। राजा ऋष्यश्रृंग के साथ नगर में आए और राजमहल में पहुँचे। उन्होंने एक विशाल भवन में, जो स्वर्ण की कारीगरी से जगमगा रहा था, एक उन्नत सिंहासन पर महर्षि को आसनस्थ कराया। २३३

अरुक्किय मुदलिय कडन्ग ळाऱ्ऱिवे, ऱुरैक्कुव दिलदॆन वुवन्दु तानरुळ्
मुरुक्किदऴ्च् चान्दया मुहन लाडनै, इरुक्कॊडु विदिमुऱै यिन्निदि नीन्दनन् 234

वेऱु उरैक्कुवतु इलतु—और कुछ कहने के लिए (प्रार्थनीय) नहीं है, ऐसा; उवन्तु—उत्साह के साथ; अरुक्कियम् मुतलिय कटन्कळ् आऱ्ऱि—अर्घ्य आदि उपचार करके; तान् अरुळ्—अपनी पुत्री; चान्तै आम्—शांता नाम की; मुरुक्कु इतऴ् मुकम् नल्लाळ् तनै—पलाशपुष्प-सदृश अधर और सुन्दर मुखवाली को; वितिमुऱै—विधिवत्; इरुक्कॊटु—वेद-मन्त्रों के साथ; इन्नितिन्—आनन्दपूर्वक; ईन्तान्—(कन्या-) दान किया। २३४

प्रसन्नचित्त राजा ने उनका अर्घ्यपाद्यादि उपचार बड़ी सावधानी से किया। फिर, उन्होंने, पलाशपुष्प सदृश अधरोंवाली और सुघड़ मुखवाली अपनी कन्या को, विवाहोचित, वेदविहित मन्त्रोच्चारण के साथ, उनको (कन्या) दान में दे दिया। २३४

वऱुमनोय् तणितर वान्व ळङ्गवे
उऱुदुयर् तविर्न्ददव् वुलहम् वेन्दरुळ्
शॆऱिकुऴल् पोऱ्ऱिडत् तिरुन्दु मादवत्
तऱिञनाण् डिरुक्कुन नरश वॆन्ऱनन् 235

वऱुमै नोय् तणितर—(अकालजनित) दरिद्रता और रोगों को दूर करते हुए; वान् वळङ्कवे—मेघ बरसे, इसलिए; अ उलकम्—वह देश; उऱु तुयर् तविर्न्ततु—बड़ी विपन्नता से छूटा; वेन्तु अरुळ्—राजा रोमपाद प्रदत्त; चॆऱि कुऴल्—घने केशवाली के; पोऱ्ऱिट—सेवा करते; तिरुन्तु मातवत्तु अऱिञन्—उत्कृष्ट महान तपस्वी और ज्ञानी (महर्षि); आण्टु—वहाँ; इरुक्कुनन्—रहते हैं; अरच—राजन; ॲन्ऱनन्—(वसिष्ठजी ने) कहा। २३५

विपन्नता और रोग, जो उस देश में फैला हुआ था वह सब वर्षा के खूब होने से दूर हो गया। अब वह देश दुःख-निवृत्त होकर सन्तुष्ट है। महर्षि शान्तादेवी की परिचर्या स्वीकार करते हुए वहीं रहते हैं। यह महर्षि वसिष्ठ ने राजा दशरथ से कहा। २३५

ॲन्ऱलुमे मुनिवरन्ऱ नडियिऱैञ्जि यीण्डेहिक् कॊणर्वॆ नॆन्नात्
तुन्ऱुकऴन् मुडिवेन्द रडिपोऱ्ऱच् चुमन्दिरनै मुदला वुळ्ळ

वन्ऱिरल्शे रमैच्चर्तोळ मामणित्ते रेरुदलुम् वानोर् वाळ्त्ति
इन्ऱैमदु विनैमुडिन्द दॆन्च्चॊरिन्दार् मलर्मारि यिडैवि डामल् 236

अॆन्ऱलुमे–ऐसा कहते ही, (दशरथ); मुनिवरन् तन् अटि इऱैञ्चि–मुनिवर (वसिष्ठजी) के पैरों पर नमन कर; ईण्टु एकि–अभी जाकर; कॊणर्वॆन् अॆन्ता–लिवा लाऊँगा, कहकर; तुन्ऱु कळल् मुटि वेन्तर्–(पैरों पर) सुगठित पायल और (सिरों पर) किरीट धारण करनेवाले राजाओं के; अटि पोऱ्ऱ–उनके पैरों पर (पड़कर) वन्दना करते; चुमन्तिरन् मुतला उळ्ळ–सुमंत्र आदि; वल् तिऱल् चेर् अमैच्चर्–अतिशय शक्ति-सम्पन्न मेधावाले मन्त्रियों के; तॊळ–स्तुति करते; मा मणि तेर्–श्रेष्ठ मणियों से अलंकृत रथ पर; एऱुतलुम्–आरूढ़ होते ही; वानोर्–आकाश-लोकवासी (देवताओं ने); इन्ऱु अॆमतु विनै मुटिन्ततु–आज हमारा पाप शांत हो गया; अॆन–यह मानकर; वाळ्त्ति–(दशरथ को) आशीर्वाद देकर; मलर् मारि–कल्पक पुष्पों की वर्षा; इटैविटामल्–निरन्तर; चॊरिन्तार्–बरसायी (वर्षा की)। २३६

वसिष्ठजी के यह कहते ही, राजा दशरथ झट उनके पैरों पर गिरे, और "उनको आमंत्रित कर लाऊँगा", यह कहकर तुरन्त जाकर रथ पर चढ़े। तब पायल और किरीटधारी राजा लोगों ने उनकी चरण-वन्दना की। सुमन्त्र आदि अति समर्थ मन्त्रियों ने अंजलिबद्ध होकर स्तुति की। देव लोगों ने निश्चय कर लिया कि अब हमारा दुर्भाग्य दूर हो गया; दशरथ की मंगल-कामना की और उनपर लगातार फूल बरसाये। २३६

काकळमुम् पल्लियमुङ् गनैहडलिन् मिहमुळङ्गक् कानम् बाड
मागदर्ह ळरुमऱैनूल् वेदियर्हळ् वाळ्त्तॆडुप्प मदुरच् चॆव्वायत्
तोहयर्पल् लाण्डिशैप्पक् कडऱ्ऱानै पुडैशूळ्च् चुडरो नॆन्न
ऐहियरु नॆऱिनीङ्गि युरोमपदन् ऱिरुनाट्टै यॆदिर्न्दा नन्ऱे 237

काकळमुम्–काहल (बड़ा ढोल) और; पल् इयमुम्–अनेक बाजे; कनै कटलिन्–गरजनेवाले समुद्र से भी अधिक; मिक मुळङ्क–शोर से बजते हैं; माकतर्हळ्–मागध (वंदी) लोग; कानम् पाटवुम्–गान करते हैं और; अरुमऱै नूल् वेतियर्हळ्–उत्तम वेदपाठी; वाळ्त्तु अॆटुप्प–मंगलाशासन करते हैं; मतुरम् चॆव्वाय्–मधुर-भाषिणी, लाल अधरोंवाली; तोकैयर्–कलापिनियाँ (मयूर सी स्त्रियाँ); पल्लाण्टु इचैप्प–'जुग-जुग जियो' वाले गीत गाती हैं; कटल् तानै पुटै चूळ्–सेना सागर घेरे रहती है, (इस साज-सज्जा के साथ); चुटरोन् अॆन्न–अंशुमाली के समान; एकि–जाकर; अरु नॆऱि नीङ्कि–कठिन मार्ग पार कर; उरोमपतन् तिरु नाट्टै अॆतिर्न्तान्–रोमपाद के श्रीसम्पन्न देश पहुँचे। २३७

राजा का रथ चलने लगा। काहल (बड़े ढोल) और अन्य बाजे समुद्र-घोष से भी अधिक शब्द करते हुए बजे। मागध जाति के वन्दी लोग मंगल-गीत गाते हुए चले। वेदपाठी ब्राह्मण लोगों ने वेद-मन्त्रों द्वारा राजा का मंगलाशासन किया। मधुर भाषिणी, बिंबाधरा, मयूराभा सुन्दर स्त्रियाँ, "अनेक वर्ष जियें", यह भाव-द्योतक गीत गाती हुई चलीं। और चतुरंगिणी सेना भी उन्हें घेरकर चली। इस राजकीय ठाट के साथ राजा

दशरथ सूर्य के समान अनेक योजन पार कर राजा रोमपाद के देश पहुँचे। २३७

कॉळुन्दोडिप् पडर्कीर्त्तिक् कोवेन्द लडैन्दमैशॅन् ऱॊऱ्ऱर् कूऱक्
कळुन्दोडुम् वरिशिलैक्कैक् कडऱ्ऱानै पुडैशूळक् कळऱ्काल् वेन्दन्
शॅळुन्दोडुम् पल्कलनुम् वॅयिल्वीश मागदर्हळ् तिरण्डु वाळ्त्त
ॲळुन्दोडु मुवहैयोडु मोशनैशॅन् ऱॆतिरशै यॅदिर्को ळॅण्णि 238

कॉळुन्तु ओटि पटर्–शाखा-प्रशाखाओं के साथ फैले हुए; कीर्त्ति–यशस्वी; को वेन्तन्–राजाधिराज का; अटैन्तमै–अपने नगर में आगमन; ऑऱ्ऱर् चॅन्ऱु कूऱ–गुप्तचरों (ने जाकर कहा), कहने पर; कळल् काल् वेन्तन्--पायल पहने चरणवाले राजा (रोमपाद); ॲतिर् कोळ ॲण्णि–अगवानी करने का विचार करके; कळुन्तु ओटुम्–सुगठित; वरि चिलै कै–बन्धनयुक्त धनुष के धारण करनेवाले हाथों के; कटल् तानै–सागर के समान सेना के सैनिकों के; पुटै चूळ–पार्श्व में आते; चॅळुमै तोटुम्–प्रकाशवहुल कर्णाभरणों और; पल कलनुम्–अन्य अनेक आभूषणों के; वॅयिल् वीच–कांति छिटकाते; माकतर्हळ् तिरण्टु वाळ्त्त–मागधों के, एकत्र होकर, स्तुति करते; ॲळुन्तु ओटुम् उवकैयोटुम्–उमड़कर बहनेवाले आनन्दप्रवाह के साथ; ओचनै चॅन्ऱतन्–एक योजन दूर चले। २३८

'राजाधिराज दशरथ, जिनकी कीर्तिलता शाखा-प्रशाखाओं के साथ बहुत बड़ी फैली थी, हमारे देश में पधारे हैं' —यह बात चरों ने आकर रोमपाद से कही। पायलधारी रोमपाद ने सामने जाकर उनकी अगवानी करने का निश्चय किया। इसलिए वे अपनी सेना, वन्दी मागध आदि के साथ, आभरण आदि से खूब अलंकृत होकर एक योजन तक चले। २३८

ॲदिर्हॊळ्वान् वरुहिन्ऱ वयवेन्दन् ऱनैक्कण्णुऱ् ऱॆळिलि नाण
अदिर्हिन्ऱ पॊलन्देर्निन् ऱिरशर्पिरा निळिन्दुळिच्चॆन् ऱडियिन् वीळ
मुदिर्हिन्ऱ पॆरुङ्गाद ऱळैत्तोङ्ग वॆडुत्तिऱुह मुयङ्ग लोडुम्
कदिर्हॊण्ड शुडर्वेलान् ऱनैनोक्कि यिवैयुरैत्तान् कळिप्पिन् मिक्कान् 239

ॲतिर् कॊळ्वान् वरुकिन्ऱ–अगवानी के लिए आनेवाले; वयम् वेन्तन् तनै विजयक (सदा जीतनेवाले) राजा को; अरचर पिरान् कण्णुऱ्ऱु–चक्रवर्ती (दशरथ) देखकर; ॲळिलि नाण अतिर्किन्ऱ–मेघों को भी लजाते हुए (मेघों से अधिक) शोर करनेवाले; पॊलम् तेर् निन्ऱु इळिन्तुळि–स्वर्णमय (अपने) रथ से ज्योंही उतरे त्योंही; चॅन्ऱु अटियिन् वीळ–रोमपाद जाकर पैरों पर गिरे (गिरने पर); मुतिर्किन्ऱ पॆरु कातल्–बढ़ते गम्भीर प्रेम के; तळैत्तु ओङ्क–अधिक उमड़ते; ॲटुत्तु–उठाकर; इऱुक मुयङ्कलोटुम्–कसकर आलिंगन करते ही; कळिप्पिल् मिक्कान्–अत्यानंदित (रोमपाद) ने; कतिर् कॊण्ट चुटर्–अंशुमाली सदृश; वेलोन् तनै–भालेवाले को; नोक्कि–देखकर; इवै उरैत्तान्–ये बातें कहीं। २३९

राजा दशरथ ने स्वागतार्थ आनेवाले रोमपाद को देखा तो वे स्वयं

रथ से उतर गये। राजा रोमपाद ने आकर दशरथ के चरणों पर नमस्कार किया। उमड़ते प्रेम के साथ उनको उठाकर जब दशरथ ने आलिंगन कर लिया, तब इनके प्रेम से प्रभावित राजा रोमपाद ने भालाधारी चक्रवर्ती से ये (निम्नलिखित) बातें कहीं। २३९

यान्शॅय्द मादवमो विव्वुलहज् जॅय्दवमो यादो विङ्गण्
वान्शॅय्द शुडर्वेलो यडॅन्ददॅन्न मिहमहिळा मणित्ते रेऱ्ऱित्
तेन्शॅय्द तार्मौलित् तेर्वेन्दॅच् चॅळुनहरिऱ् कॊणर्न्दान् ऱॅव्वर्
ऊन्शॅय्द शुडर्वडिवे लुरोमपद नॅन्नवुरॅक्कु मुरवुत् तोळान् 240

तॅव्वर् ऊन् चॅयत-(शत्रु-शरीर के) मांसयुक्त; चुटर् वटि वेल्-चमकीले और तीक्ष्ण भालेवाले; उरोमपतन् ॲन्न उरॅक्कुम्-रोमपाद कहलानेवाले; उरवु तोळान्-बलिष्ठ कन्धोंवाले; तेन् चॅयत तार् मौलि-शहद टपकनेवाली पुष्पमाला से अलंकृत किरीट (धारी) और; तेर्-रथ के (स्वामी); वेन्तॅ-राजा को (देख); वान् चॅयत-देवलोक को वनाये (नाश से बचाकर) रखनेवाले; चुटर् वेलोय्-सूर्य-सम दीप्त भालेवाले; इङ्कण् अटॅन्ततु-इधर (आपका) आगमन; यान् चॅयत मातवमो-हमारी की हुई महान तपस्या (का फल) है; इ उलकम् चॅय् तवमो-इस भूलोक का किया हुआ तप है; यातो-क्या है; ॲन्न-ऐसा कहकर; मिक मकिळा-अधिक प्रसन्न होकर; मणि तेर् एऱ्ऱि-रत्न-रथ पर आरूढ़ कराकर; चॅळु नकरिल् कॊणर्न्तान्-अपने सुसम्पन्न नगर में लिवा ले आये। २४०

शत्रु-शरीरों के मांस से युक्त भालाधारी, बलिष्ठ भुजाओंवाले रोमपाद (नामक) उन राजा ने, पुष्पमालाओं से अलंकृत किरीट को धारण कर रथ पर आये हुए चक्रवर्ती दशरथ को देखकर उचित अभ्यर्थना के ये वचन कहे कि देवों के लिए देवलोक की रक्षा करने में समर्थ और उज्ज्वल वेल् (भाला) के धारण करनेवाले महाराज! श्रीमान का इधर आगमन मेरी तपस्या का फल है? या इस देश ने उचित तपस्या की थी? बाद में उन्होंने चक्रवर्ती को रत्न-जड़ित रथ पर आसीन कराया और वे उनको अपने सुसमृद्ध नगर में लिवा लाये। २४०

आडहप्पॊऱ् चुडरिमैक्कु मणिमाडत् तिडॅयॊरुमण् डबत्तॅ यण्मिप्
पाडहच्चॅम् बदुममलर्प् पावैयर्पल् लाण्डिशैप्पप् पॅम्बॊऱ् पीडत्
तेडुतुऱ्ऱ वडिवेलान् ऱन्नैयिरुत्तिक् कडन्मुऱॅहळ् यावुज् जॅय्दु
तोडुतुऱ्ऱ मलर्त्तारान् विरुन्दळि्प्प विन्निदुहन्दान् सुरर्ना डीन्दान् 241

तोटु तुऱ्ऱ मलर् तारान्-दल-संकुल पुष्पों की (बनी) माला के धारी; आटकम् पॊन् चुटर्-"हाटक" -स्वर्ण की आभा से; इमैक्कुम्-दमकनेवाले; अणि माटत्तु इटॅ-सुन्दर सौध के अन्दर; ओरु मण्टपत्तॅ अण्मि-एक मण्डप में जाकर; पाटकम्-पाटक नामक पैंजनी पहनी हुई; चॅम् पतुमम् मलर्-लाल कमल के समान पैरोंवाली; पावैयर्-रमणियों के; पल्लाण्टु इचैप्प-'अनेक वर्ष जिएँ' वाला शुभगीत गाते; एटु तुऱ्ऱ-पुष्पमाला से अलंकृत; वटि वेलान् तन्नै-तीक्ष्ण शक्ति (बर्छी) के धारक दशरथ

को; पचुमै पोन् पीटत्तु इरुत्ति–हरे (सुभग) स्वर्ण के आसन पर विराजित कराके; कटन् मुरैकळ् यावुम् चॅय्तु–यथाक्रम उपचार के काम पूरा करके; विरुन्तु अळिप्प–भोजन कराने पर; सुरर् नाटु ईन्तान्–सुरों को जिन्होंने उनका राज्य दिलाया था, उन्होंने; इनितु उकन्तान्–आनन्द के साथ स्वीकार किया। २४१

घने रूप से पंखुड़ियों से युक्त पुष्प-माला के धारण करनेवाले राजा रोमपाद हाटक (-हाटक, जंबूनद, शुकपक्ष और जातरूप इन स्वर्ण के चार प्रकारों में एक) प्रकार के स्वर्ण की कारीगरी के साथ निर्मित एक मण्डप में राजा दशरथ को ले आये। तब पैंजनी-विभूषित लाल चरणोंवालियाँ 'अनेक वर्ष जिओ' आदि मंगलभाव-द्योतक गीत गाये। चक्रवर्ती स्वच्छ-स्वर्ण के पीठ पर आसनस्थ कर दिये गये। रोमपाद ने यथाक्रम उनका सभी तरह से सम्मान किया और भोजन कराया। देव-लोक-रक्षक चक्रवर्ती दशरथ ने उनके आतिथ्य को प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। २४१

शॅव्विनरुञ् जान्दळित्तुत् तेर्वेन्दन् ररै नोक्कि यिवणी शेर्न्द
कौवैयुरैत् तरुळुहॅन निहळ्न्दबॅला मरशर्पिरान् कळर लोडुम्
अव्वियनीत् तुयरन्दमनत् तरुन्दवनैक् कॉणर्न्दाङ्गण् विडुप्पॅ नान्र
शॅव्विमुडि योयॅनलुन् देरेरिच् चेनैयॉडु मयोत्ति शेर्न्दान् 242

चॅव्वि नङ चान्तु अळित्तु–नवीन, सुवासपूर्ण चन्दन (लेप) देकर; तेर् वेन्तन् ततै–(दशों दिशाओं पर चलनेवाले) रथी (दशरथ) चक्रवर्ती को देखकर; नी इवण् चेरन्त कौवै–श्रीमान के इधर पधारने का उद्देश्य; उरैत्तरुळुक–बताने की कृपा करें; ॲत–कहने पर; अरचर् पिरान्–चक्रवर्ती ने; निकळ्न्त ॲलाम्–जो घटा वह सब; कळरलोटुम्–(कहा–) कहते ही; आन्र चॅव्वि मुटियोय्–श्रेष्ठ, सुघड़ मुकुटधारी; अव्वियम् नीत्तु–मात्सर्य त्याग करके; उयरन्त मतत्तु–उत्कृष्ट मन हुए; अरु तवतै–महान तपस्वी (ऋष्य शृंग) को; कोणर्न्तु आङ्कण् विटुप्पॅन्–ले आकर वहाँ छोड़ूँगा; ॲतलुम्–यह कहने पर; तेर् एरि–रथ पर सवार होकर; चेतैयुटन्–सेना के साथ; अयोत्ति चेर्न्तान्–अयोध्या पहुँचे। २४२

भोजन के बाद चन्दन आदि, सेवा में प्रस्तुत कर रोमपाद ने, (दशों दिशाओं में जा सकनेवाले रथ के अधीश) दशरथ से प्रार्थना की कि श्रीमान इधर आगमन का हेतु बताने की कृपा करें। तब दशरथ ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। तब रोमपाद ने वादा किया कि सुन्दर और श्रेष्ठ किरीटधारी! मात्सर्यहीन उत्कृष्ट-मन उन महर्षि को मैं स्वयं वहाँ ले आऊँगा। राजा दशरथ अयोध्या लौट आये। २४२

मन्नर्पिरा नहन्रदर्पिन् वयवेन्द नरुमरैनूल् वडिवु कॉण्ड
दन्नमुनि वरन्रैयु डनैयणुहि यिणैयडित्ता मरैह ळम्बॉन्
मन्नुमणि मुडियणिन्दु वरन्मुरैशॅय् दिडविवणी वरुदर् केय्न्द
तॅन्नैयॅन वडियेर्कोर् वरमरुळु मडिहळॅन्न याव देन्रान् 243

मन्नर् पिरान्–चक्रवर्ती के; अकन्ऱतन् पिन्–हटने के बाद; वयम् वेन्तन्–विजयक राजा (रोमपाद); अरु मऱै नूल् वटिवु कॉण्टतु अन्न–श्रेष्ठ वेद-शास्त्र ने रूप धर लिया, ऐसा दिखनेवाले; मुनिवरन्–महर्षि के; उऱैयुळ् तनै अणुकि–निवास-स्थान में जाकर; इणै अटि तामरैकळ्–द्वय चरण-कमल; अम् पॊन्मन्नुम्–सुन्दर स्वर्ण-निर्मित; मणि मुटि–रत्न-जड़ित मुकुट; अणिन्तु–धारण कर; वरन् मुऱै–क्रमबद्ध उपचार; चॆय्तिट–करने पर; नी–आप (के); इवण् वरुतऱ्कु–यहाँ आने का; एय्न्ततु–जो कारण बना वह; ऎन्नै–क्या; ऎन–पूछने पर; अटिकळ्–स्वामी महाराज; अटियेऱ्कु ओर् वरम् अरुळुम्–मुझ दास को एक वर प्रदान करें; ऎन–प्रार्थना करने पर; यावतु–कौन सा; ऎन्ऱान्–पूछा। २४३

राजाधिराज के गमन के बाद, विजयी रोमपाद, वेद-स्वरूप मुनिवर के वासस्थान पर आये। चरणों पर अपना किरीट-शोभित सिर रखकर, नमस्कार करके यथोचित उपचार-कृत्य सम्पन्न किये। तब ऋषि ने प्रश्न किया कि क्या उद्देश्य लेकर आये हैं। राजा ने निवेदन किया कि एक वर माँगने आया हूँ। ऋषि ने कहा कहिये, कौन सा वर है? । २४३

पुरवॊन्ऱिन् पॊरुट्टाहत् तुलैपुक्क पॆरुन्दहैतन् पुहऴिऱ् पूत्त
अऱत्तॊन्ऱुन् दिरुमनत्ता नमरर्हळुक् किडर्विळैक्कु मवुण रायोर्
तिऱलुण्ड वडिवेलान् ऱशरदनॆन् ऱुयर्कीर्त्तिच् चॆङ्गोल् वेन्दन्
विऱल्कॊण्ड मणिमाड वयोत्तिनह रडैन्दिवणी मीड लॆन्ऱान् 244

पुऱवु ऒन्ऱिन् पॊरुट्टाक–एक कपोत (की रक्षा) के लिए; तुलै पुक्क–तुला पर बैठे; पॆरु तकै तन्–महान (चक्रवर्ती) के; पुकऴ् इल् पूत्त–प्रशंसित कुल में जनित; अऱन् ऒन्ऱुम् तिरु मनत्तान्–धर्मभृत मनवाले; अमरर्कळुक्कु–देवों को; इटर् विळैक्कुम्–कष्ट देनेवाले; अवुणर् आयोर्–दानवों का; तिऱळ् उण्ट–बल को हरनेवाले; वटिवेलान्–तीक्ष्ण भालावाले; तचरतन् ऎन्ऱ–दशरथ नाम के; उयर्कीर्त्ति–उन्नत कीर्ति के; चॆङ्कोल् वेन्तन्–अविचलित दण्डधर शासक के; विऱल् कॊण्ट–महिमायुक्त; मणिमाटम्–सुन्दर प्रासादों से पूर्ण; अयोत्ति नकर्–अयोध्या नगर; नी अटैन्तु–आप पहुँचकर; इवण् मीळ्तल्–फिर इधर लौट आना; ऎन्ऱान्–कहा। २४४

राजा ने कहा कि दशरथ नाम के चक्रवर्ती हैं। कपोत को बाज का ग्रास बनने से रक्षित करने के हेतु अपने शरीर को तोलकर चील के पास समर्पित करने के लिए तुला पर शिबि नामक राजा चढ़े थे। ये दशरथ उन उदार शिबि के प्रख्यात कुल में उत्पन्न, धर्मशील राजा हैं। उनके हाथ के भाले ने देवों का कष्ट और राक्षसों का पराक्रम दोनों का नाश किया था। वे स्वयं महान यशस्वी हैं और उनका राजदण्ड (शासन) कुटिल कभी नहीं हुआ। उनकी राजधानी, अत्यन्त शोभायुक्त प्रासादों से भरी अयोध्या है। वहाँ तक, महर्षि, आपको एक बार हो आने की कृपा करनी चाहिए। यही वर हम आपसे माँगते हैं। २४४

अव्वरन्दन् दनमिनित्तेर् कॉणर्दियॆन वरुन्दवत्तो नरुळ लोडुम्
वॆव्वरन्दिन् ऱ्यिल्पडैक्कुञ् जुडर्वेला नडियिऱैञ्जि वेन्दर् वेन्दन्
कव्वयॊळ्िन् दुयरन्दनॆन् ऱदिर्कुरऱ्ऱेर् कॉणर्न्दिदनिऱ् कलैव लाळन्
शॆव्विनुदऱ् ऱिरुविनॊडुम् पोन्देऱु हॆनवेऱिच् चिऱन्दान् मन्नो 245

अ वरम् तन्तनम्–वह वर दिया हमने; इति तेर् कॉणर्ति–अब रथ लाइये; ॲन–ऐसा; अरु तवत्तोन्–उत्तम तपस्वी (के); अरुळलोटुम्–वर-वचन कहते ही; वॆव् अरम् तिनुरु–भयंकर (रेती की) रगड़ खाकर; अयिल् पटैक्कुम्–तीक्ष्ण हुए; चुटर् वेलान्–उज्ज्वल भाला के धारी; अटि इऱैञ्चि–चरण-स्तुति करके; वेन्तर् वेनतन्–राजाधिराज; कव्वै ऑळिन्तु–दुख निवृत्त होकर; उयर्न्तनन्–उन्नत हुए; ॲन्ऱु–यह सोचकर; अतिर् कुरल् तेर्–घर्षण-शब्द करनेवाले रथ को; कॉणर्न्तु–लाकर; कलै वल् आळन्–विद्या-सम्पन्न; चॆव्वि नुतल् तिरुविनॊटुम् पोन्तु–सुन्दर ललाटवाली श्रीमती (शान्ता) के साथ आकर; इतनिल्–इस पर; एऱुक ॲन–आरूढ़ होइये, यह कहने पर; एऱि–सवार होकर; चिऱन्तान्–शोभायमान रहे। २४५

महर्षि कह उठे कि ठीक है ! वह वर दे दिया हमने। जाइये, रथ लाइये। अपूर्व तपस्वी के ऐसा कहते ही, बार-बार रेती से रगड़ खाकर तीक्ष्ण हुई बर्छीवाले राजा रोमपाद ने उनका कृतज्ञता के साथ प्रणमन किया। 'अच्छा, राजा दशरथ की चिन्ता मिटी; और वे सब तरह से सम्पन्न हो गये'। इस विचार से प्रसन्न होकर, वे घर्षण का शोर करते हुए जानेवाले रथ को लाये और ऋषि से बोले कि विद्यापूर्ण मुनिवर ! सुन्दर ललाटवाली शान्ता को साथ लेकर आप इस रथ पर आरूढ़ हो जाने की कृपा करें। तब महर्षि भी उनकी प्रार्थना मानकर सुन्दरी शान्ता के साथ आकर रथ पर सुशोभित हुए। २४५

कुनिशिलै वयवनुङ् गरङ्गळ् कूप्पिडत्, तुनियऱु मुनिवरर् तॊडर्न्दु शूळ्वर
वनिदयु मरुमऱै वडिवु पोन्ऱॊळिर्, मुनिवनुम् बॊऱिमिशै नॆऱियै मुन्निनार् 246

कुनि चिलै वयवन्–झुके धनुष के विजयक के; करङ्कळ् कूप्पिट–हाथ जोड़ते; तुनि अऱु मुनिवरर्–क्रोध-गुण-विमुक्त ऋषिगण; तॊटर्न्तु चूळ्वर–पीछे लगे आये; अरु मऱै वटिवु पोन्ऱु–उत्तम वेदस्वरूप (मूर्तवेद) सम; ऑळिर् मुनिवनुम्–तेजोमय महर्षि और; वनितैयुम्–देवी; पॊऱिमिचै–रथ पर; नॆऱियै मुन्निनार्–मार्ग पर बढ़े। २४६

विजयी वीर रोमपाद ने अंजलिबद्ध हो उनको विदा किया। क्रोध-जयी ऋषिगण भी ऋष्यश्रृंग के साथ निकले। वेद-स्वरूप (विद्यमान) ऋषि ने और शान्तादेवी ने अयोध्या की ओर प्रस्थान किया। २४६

अन्दर तुन्दुमि मुळक्कि याय्मलर्, शिन्दिनर् कळित्तन रऱमुन् देवरुम्
वॆन्दॆळु कॊडुविनै वीळ्क्कु मॆय्म्मुदल्, वन्दॆळ वरुडरु वानॆन् ऱॆण्णिये 247

अऱमुम् तेवरुम्–धर्मदेवता और अन्य देवता; वॆन्तु ॲळु कॊटु विनै–जल कर

बढ़नेवाले क्रूर पापों के; वीळ्कक्कुम्–नाशक; मॅय् मुतल्–सत्य, आदि हेतु (कारण, परब्रह्म, श्रीराम); वन्तु ॲळ–अवतरित हो आने के लिए; अरुळ् तरुवान्–कृपा करेंगे; ॲन्ऱु ॲण्णि–ऐसा सोचकर; कळित्ततर्–मुदित हुए; अन्तर तुन्तुमि–देव दुन्दुभी; मुळक्कि–वादन कर; आय्मलर्–चुने हुए (सर्वश्रेष्ठ) पुष्प; चिन्तितर्–बरसाये; (ए)। २४७

तब धर्मदेवता और अन्य देवता ने समझ लिया कि संतप्त कर उठनेवाले पापों का नाश करने के लिये आदि परब्रह्म (श्रीराम के रूप में) अवतरित होंगे; और ये ऋषि उसको साध्य बनाने की कृपा करेंगे। इसलिए उन्होंने बहुत आनन्द के साथ दुंदुभी बजायी और उत्तम कल्पक तरु के पुष्प बरसाये। २४७

तूवुव रव्वळि ययोत्ति तुन्निनार्, मादिरम् बॊरुदतोण् मन्नर् मन्ननन्मुन्
ओदिनर् मुनिवर वोद वेन्दनुम्, कादलॆन् ऱळवऱु कडलु ळाऴ्न्दनन् 248

अव्वळि–तब; तूतुवर्–दूत; अयोत्ति तुन्निनार्–अयोध्या आये; मातिरम् पॊरुत तोळ्–सभी दिशाओं में जाकर जो विजेता बन आये, उन कन्धोंवाले; मन्नर् मन्नतन् मुन्–चक्रवर्ती के सामने; मुनि वरवु–महर्षि का आगमन; ओतिनर्–किया; ओत–उनके समाचार देने पर; वेन्तनुम्–राजा भी; कातल् ॲन्ऱ–स्नेह के; अळवु अऱु कटलुळ्–निस्सीम सागर में; आऴ्न्तनन्–मग्न हुए। २४८

तब कुछ दूतों ने अयोध्या आकर दिग्विजयी भुजाओंवाले चक्रवर्ती से महर्षि के आगमन का समाचार निवेदन किया। उनके कहते ही राजा अथाह प्रेम-सागर में मग्न हो गये (बहुत प्रसन्न हुए)। २४८

ॲऴुन्दनन् पॊरुक्कॆन विरद मेऱिनन्, पॊऴिन्दन मलर्मऴै याशि पूत्तन
मॊऴिन्दन पल्लिय मुरश मार्त्तन, विऴुन्दन तीविनै वेरि नोडुमे 249

पॊरुक्कॆन ॲऴुन्तनन्–झट उठे; इरतम्–रथ पर; ॲऱिनन्–सवार हुए; मलर् मऴै पॊऴिन्तन–पुष्प वर्षा हुई; आचि पूत्तन–आशीर्वचन उच्चरित हुए; पल् इयम् मॊऴिन्तन–अनेक वाद्य बजे; मुरचम् आर्त्तन–ढोल बोल उठे; तीविनै–पाप; वेरिनोटुम् विऴुन्तन–जड़ों के साथ; विऴुन्तन–गिरे। २४९

वे झट उठे, अपने रथ पर सवार हुए। तब देवों ने पुष्प-वर्षा की। ब्राह्मणों ने आशीर्वाद के वचन कहे। अनेक वाद्य बज उठे। नगाड़े निनादित हुए। पाप सब उखड़ी जड़ों के साथ पतित हुए। २४९

पिदिर्न्ददॆन् मनत्तुयर्प् पिऱङ्ग लॆन्ऱुकॊण्
डदिर्न्दॊऴु मुरशुडै यरशर् कोमहन्
मुदिर्न्दवमा दवमुडै मुनियै यन्बिनो
डॆदिर्न्दनन् योशनै यिरण्डॊ डॆन्ऱिनै 250

अतिर्न्तु ॲऴु मुरचु उटै (य) अरचर् कोमकन्–गूँजनेवाले नगाड़ों के चक्रवर्ती;

अॅन् मतम् तुयर् पिरङ्कल्–मेरे मन की चिन्ता-पर्वत; पितिर्न्ततु–चूर्ण हो गया; अॅन्रु कोण्टु–ऐसा बूझकर; मुतिर्न्त मा तवम् उटैय–तपोवृद्ध; मुतियै–मुनिवर को; अन्पितोटु–प्रेम के साथ; योचनै इरण्टाटु ऑन्रिन्–योजन, दो जमा एक, (यानी, तीन) की दूरी में; अॅतिर्न्ततन्–जा मिले। २५०

ताड़न पाकर गूँजते हुए नर्दन करनेवाले नगाड़ोंवाले अधिपति दशरथ ने अपने मन में धारणा कर ली कि महर्षि के आगमन से मेरी पर्वत के समान बढ़ी व्यथा ढह गयी। मैं सुखी हो जाऊँगा। फिर उन्होंने तीन योजन आगे जाकर उनसे भेंट की। २५०

नर्रव मनैत्तुमोर् नवैयि लावुरुप्, पॅर्रिव णडैन्दॅनप् पिरङ्गु वान्रनैच्
चुर्रिय शीरैयु मुळैयित् रोर्रमु, मुर्रुरप् पॉलिदरु मूर्त्ति यान्रनै 251

नल् तवम् अनैत्तुम्–श्रेष्ठ तप सब; नवै इला–दोषहीन; ओर् उरु पॅर्रु–एक रूप लेकर; इवण् अटैन्ततु अॅन–इधर आ गया, ऐसा; पिरङ्कुवान् तनै–शोभनेवाले उनको; चुर्रिय चीरैयुम्–वेष्टित वल्कल; उळैयिन् तोर्रमुम्–हिरण का रूप भी; मुर्रुर पॉलि तरु–पूर्णरूप से प्रकट करनेवाले; मूर्त्तियान् तनै–आकार के उनको (मिले)। २५१

वे महर्षि ऐसे दर्शन देते थे मानों सभी श्रेष्ठ तप मिलकर साकार हो आये हों। वे वल्कलावृत्त थे और उनके सिर को हरिण का सा सींग सुशोभित कर रहा था। वे सौम्यमूर्ति थे। २५१

अण्डर्ह डुयरमु मरक्क रार्रलुम्, विण्डिडप् पॉलिदरु वितैव लाळनैक्
कुण्डिहै कुडैयॉडुङ् गुलवु नून्मुरैत्, तण्डॉडुम् बॉलितरु तडक्कै यान्रनै 252

अण्टर्कळ् तुयरमुम्–देवों का दुख व; अरक्कर् आर्रलुम्–राक्षसों का शौर्य; विण्टिट–नाश करते हुए; पॉलि तरु वितै–प्रभाव दिखानेवाले (यज्ञ-) कार्य में; वल्लाळनै–निपुण को; नूल् मुरै कुलवु–शास्त्रों में विहित रीति से; कुण्टिकै कुटै ऑटु–कमण्डल और छत्र के साथ; तण्टु ऑटुम्–दण्ड के साथ; पॉलि तरु–शोभायमान; तट कैयान् तनै–विशाल हाथवाले को (मिले)। २५२

देवों का दुःख और राक्षसों का शौर्य दोनों का एक साथ नाश करनेवाले यज्ञ की विद्या में वे दक्ष थे। शास्त्रोक्त रीति से वे अपने सुन्दर हाथों में कमण्डल और छत्र धारण किये हुए थे। राजा ने उनके, ऐसे रूप में दर्शन किये। २५२

इळिन्दुपो यिरदमाण् डिणैकॉ डाण्मलर्
विळुन्दलन् वेन्दरतम् वेन्दन् मेन्मयाल्
मॉळिन्दत ताशिहण् मुदिय नान्मरैक्
कॉळुन्दुमेर् पडर्तरक् कॉळुकॉम् बायिनान् 253

वेन्तर् तम् वेन्तन्–राजाओं के राजा; आण्टु–तब; इरतम् इळिन्तु पोय्–

रथ से उतरकर जाकर; इणै कॉळ् ताळ् मलर्–द्वय-चरण-कमलों पर; विळुन्तनन्–गिरे (नमस्कार किया); मुतिय–प्राचीन; नाल् मरै–चारों वेद; कॉळुन्तु–लता की शाखा; मेल् पटर् तर–अपने ऊपर चढ़कर फैले; कॉळुकॉम्पु–अवलम्ब-तरु; आयितान्–जो बने, (उन्होंने); मेन्मैयाल्–विशेष रूप से; आचिकळ् मॉळिन्तनन्–आशीर्वचन कहे। २५३

तब राजा दशरथ अपने रथ पर से उतरकर पैदल चले और महर्षि के चरणद्वय छूते हुए नमस्कार किया। महर्षि ने भी जो विवर्धित वेद-लता के अवलम्बतरु के समान थे (वेदों के अपार ज्ञाता थे) विशेष रूप से राजा का आशीर्वाद किया। २५३

**अयल्वरु मुनिवरु माशि कूरिडप्, पुयल्पॉरु तडक्कैयार् रॉळुदु पॊङ्गुनीर्क्
कयल्पॉरु विळियॉडुङ् गलैव लाळनै, इयल्बॊडु कॊणर्न्दनन् निरद मेर्रिये 254**

अयल् वरु मुनिवरुम्–पास आनेवाले ऋषियों ने भी; आचि कूरिट–आशीर्वाद दिया, तब; पुयल् पॊरु–(दानशीलता में) मेघों से मुकाबला करनेवाले; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; तॊळुतु–विनय समर्पित कर; पोङ्कुम् नीर्–उमड़ते आनन्दाश्रु-भरी; कयल् पॊरु विळियॊटुम्–मछली-समान आँखोंवाली (शान्तादेवी) के साथ; इरतम् एर्रि–रथ पर आरूढ़ कराकर; कलै वलाळनै–विद्या-सम्पन्न (मुनि) को; इयल्पॊटु–(यथोचित) प्रकार से; कॊणर्न्तनन्–लिवा लाये। २५४

उनके साथ आनेवाले ऋषियों ने भी राजा को आशीर्वाद दिया। राजा दशरथ ने अपने हाथ जोड़े। उनके हाथ दान करने में जलगर्भित मेघों का मुकाबला करते थे। फिर वे विद्याविदग्ध ऋषि को, और आनन्दाश्रु-भरी, मछली सी आँखोंवाली शान्ता को रथ पर आरूढ़ कराकर यथोचित रीति से अपने नगर में लिवा लाये। (शान्ता दशरथ महाराज की ही पुत्री थीं जिनको रोमपाद ने गोद लिया था। उनका अयोध्या में आते हुए, और अपने पति की महिमा को व्यक्त देखकर, आनन्द का आँसू बहाना स्वाभाविक ही था)। २५४

**अडिकुरन् मुरशदि रयोत्ति मानहर्, मुडियुडै वेन्दनम् मुनिव नोडुमोर्
कडिहयि नडैन्दनन् कमल वाण्मुह, वडिवुडै मडन्दयर् वाळ्त्तॆ डुप्पवे 255**

मुटि उटै वेन्तन्–किरीटधारी चक्रवर्ती; अ मुनिवनॊटुम्–उन मुनि के साथ; कमलम् वाळ् मुकम्–कमल-सम उज्ज्वल मुखोंवाली; वटिवु उटै–सुभग रूपवाली; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; वाळ्त्तु ॲटुप्प–मंगलगान करते; अटि कुरल् मुरचु–ताडन से निनादित होनेवाले ढोल; अतिर्–बजनेवाले; अयोत्ति मा नकर्–अयोध्या के महान नगर में; ओर् कटिकैयिन्–एक घटिका के अन्दर; अटैन्तनन्–पहुँचे। २५५

मुकुटधारी महाराज मुनि के साथ एक घटिका के अन्दर नगर पहुँच गये। तब कमल के समान मुखों से शोभित सुन्दरी स्त्रियों ने मंगलमय अभ्यर्थना के गीत गाये। ज़ोर के साथ नगाड़े बज उठे। २५५

**कशट्टुरु विनैत्तीॆळिर् कळव रायुळ्ळ्, अशट्टर्ह ळैवरै यरुव राक्किय
वशिट्टनु मरुमरै वऴ्क्कु नीङ्गला, विशिट्टरुम् वेत्तवै पॊलिय मेविनार् 256**

कचटु उरु विनै तॊळिल्–कलंकित पाप कर्मों के प्रेरक; **कळवराय् उळ्ळ्**–चोर के समान क्रियमाण रहनेवाली; **अचट्टर्कळ् ऐवरै**–बुद्धिहीन पाँचों (पंचेंद्रिय) को; **अरुवर् आक्किय**–निष्क्रिय जिन्होंने बनाया वे; **वचिट्टनुम्**–वसिष्ठ और; **अरु मरै वऴक्कु**–श्रेष्ठ वेद-मार्ग (से); **नीङ्कला**–न हटनेवाले; **विचिट्टरुम्**–विशिष्ट (ब्राह्मण) लोग; **वेनतु अवै पॊलिय**–राज-सभा को शोभायुक्त बनाते हुए; **मेविनार्**–आ विराजे। २५६

फिर महर्षि वसिष्ठजी और अनेक वेदमार्गानुयायी ब्राह्मण लोगों ने आकर राज-सभा को सुशोभित किया। वसिष्ठजी इन्द्रिय-निग्रही थे। (कम्बन इस बात की अपने अनोखे ढंग से चर्चा करते हैं। इन्द्रियों को चोर कहते हैं जो संख्या में पाँच हैं। तमिऴ भाषा में छ का द्योतक शब्द अरुवर् है। पर "अरुवर्" का अर्थ 'निष्क्रिय हुए' भी है। अतः 'पाँचों को छहों' बना दिया कहकर इन्द्रिय-निग्रही का अर्थ निकाला गया है)। २५६

**मामणि मण्डप मन्नि माशरु, तूमणित् तविशिडैच् चुरुदि येनिहर्
कोमुनिक् करशनै यिरुत्तिक् कॊळ्कटन्, ऐमुरत् तिरुत्तिवे रिनैय शॆप्पिनान्257**

मा मणि मणटपम् मन्नि–श्रेष्ठ रत्न-शोभित सभा-भवन आकर; **चुरुतिये निकर्**–वेदों के ही समान रहनेवाले; **को मुनिक्कु अरचनै**–श्रेष्ठ मुनियों के राजा (सर्वश्रेष्ठ महर्षि ऋष्य शृंग) को; **माचु अरु**–निर्दोष; **तू मणि**–स्वच्छ रत्न-खचित; **तविचु इटै**–आसन पर; **इरुत्ति**–आसीन कराकर; **कॊळ्कटन्**–स्वीकार्य उपचार-कृत्य; **एम् उर तिरुत्ति**–सन्तोषदायक प्रकार से करके; **वेरु**–फिर; **इनैय**–यों; **चॆप्पिनान्**–कहा। २५७

चक्रवर्ती मूर्तिमान वेद के समान रहे महर्षि ऋष्यशृंग को मणिमय सभा-भवन में लिवा लाए। दोषहीन रत्नों से छविमान एक आसन पर विराजित कराया। फिर यथोचित अभ्यर्थना के रस्म अदा किये। आगे यों निवेदन किया। २५७

**शान्ऱवर् शान्ऱव तरुम मादवम्, पोन्ऱॊळिर् पुनितनिन् नरुळिर् पूत्तवॆन्
आन्ऱतॊल् कुलमिनि यरशिन् वैहुमाल्, यान्ऱव मुडैमैयु मिऴप्पिन् ऱामरो 258**

चान्ऱवर् चान्ऱव–श्रेष्ठ से श्रेष्ठ; **तरुमम् मातवम् पोन्ऱु ऒळिर् पुनित**–धर्म और महान तप के ही समान दर्शन देनेवाले पवित्र पुरुष; **निन् अरुळिन् पूत्त**–आपकी कृपा से उत्फुल्ल; **ऎन् आन्ऱ तॊल् कुलम्**–मेरा श्रेष्ठ प्राचीन वंश; **इनि अरचिन् वैकुम्**–अब राजा-सहित हो जायगा; **यान् तवम् उटैमैयुम्**–मेरा पूर्व-कृत तप भी; **इऴप्पु इन्ऱु आम्**–खोया हुआ नहीं रहेगा; (आल् अरो)। २५८

सर्वश्रेष्ठ साधु महर्षे! धर्म और तप के मूर्तिमान तेजस्वी! आपकी कृपा से अब मेरा प्राचीन श्रेष्ठकुल राजकुल बना रहेगा। यह भी सिद्ध हो जायगा कि मैंने तपस्या की है और वह तपस्या विफल नहीं होगी। २५८

ॲन्नलु मुनिवर् निनिदु नोक्कुरा, मन्नवर् मन्नकेळ् वशिट्ट नॅन्नुमोर्
नन्नॅडुन् दवन्रुणै नवैयिल् शॅय्हय, निन्नैयिव् वुलहिनि निरुबर् नेर्वरे 259

ॲन्नलुम्–कहते ही; मुनिवरन्–मुनिवर; इनितु नोक्कुरा–स्निग्ध दृष्टि से देखकर; मन्नर् मन्न–राजाधिराज; केळ्–सुनिये; वचिट्टन् ॲन्नुम्–वसिष्ठ नाम के; ओर् नल् नॅट्टु तवन् तुणै–अनुपम, श्रेष्ठ, दीर्घकाल के तपस्वी के संग (पथ-प्रदर्शन) में; नवै इल् चॅय्कैय निन्नै–दोष-हीन कर्मों, आपकी; इ उलकिल्, निरुपर् नेर्वरो–इस संसार में, कोई राजा समानता कर सकेंगे, (नहीं)। २५६

महर्षि ने चक्रवर्ती की बातें सुनकर उनपर स्निग्ध दृष्टि फेरी और कहा कि महाराज ! वसिष्ठजी एक महान और दीर्घकाल के तपस्वी हैं। उनकी सहायता लेकर आप श्लाघनीय और पवित्र कार्य करते रहते हैं; आपकी, इस संसार में कौन राजा समता कर सकता है ? । २५९

ॲन्ड्रन परुपल विनिय कूरिनल्, कुन्रुरळ् वरिशिलैक् कुववुत् तोळिनाय्
नन्रिकों ळरिमह नडत्त वॅण्णियो, इन्रॅमै यळैत्तदिङ् गियम्बु वायॅन्रान् 260

ॲन्र् अन–ऐसा और; परुपल इनिय कूरि–विविध मधुर बातें कहकर; वरि चिलै–बन्धन- (गाँठों से) युक्त धनुर्धर; नल् कुन्रु उरळ्–अच्छे पर्वत-समान; कुववु तोळिनाय्–सुडौल भुजाओंवाले; इन्रु ॲनै इङ्कु अळैत्ततु–आज, मुझे, यहाँ आमंत्रित करना; नन्रि कॉळ्–मंगलदायक; अरि मकम्–अश्वमेध यज्ञ; नटत्त ॲण्णियो–करने के विचार से; इयम्पुवाय्–कहिये; ॲन्रान्–कहा (प्रश्न किया)। २६०

ऐसी मधुर बातें कहने के बाद महर्षि ने राजा से पूछा कि पर्वत समान सुडौल भुजावाले ! क्या आप अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करने की इच्छा से हमको इधर लाए हैं ?"। २६०

उलप्पिल्पल्	**लाण्डॅला**	**मुरुह**	**णिन्रिये**
तलप्पॊरै	**यार्रिनेन्**	**रनयर्**	**वन्दिलर्**
अलप्पुनी	**रुडुत्तपा**	**रळिक्कु**	**मैन्दरै**
नलप्पुहळ्	**पॅरुविनि**	**नल्ह**	**वेण्डुमाल् 261**

उलप्पु इल् पल् आण्टु ॲलाम्–अन्त-हीन (लगनेवाले) अनेक वर्ष भर; उरुकण् इन्रि–(किसी) कष्ट के बिना; तलम् पॊरै आर्रिनेन्–भू-भार वहन किया है; तनयर् वन्तिलर्–पुत्र नहीं जनमे; नलम् पुकळ् पॅर–श्रेष्ठ यश मिले, इसके निमित्त; अलम्पु नीर् उटुत्त पार्–तरंगायित समुद्र से वेष्टित इस भूमि का; अळिक्कुम्–पालन कर सकनेवाले; मैन्तरै–वीर पुत्रों को; इनि नल्क वेण्टुम्–अब प्राप्त कराने की कृपा (आपको) करनी चाहिए; (ए, आल्)। २६१

इसके उत्तर में महाराज ने कहा कि अनेक वर्षों से मैं, बिना किसी कष्ट के, इस भू-भार का सम्यक् रूप से वहन करता आ रहा हूँ। मेरे पुत्र कोई पैदा नहीं हुए। मैं ऐसे पुत्र प्राप्त करूँ जो इस तरंगायमान

सागर से घिरी भूमि का परिपालन करने में समर्थ हों; आप इसका उपाय करने की कृपा कीजिए। २६१

ऍन्ऱलु मरशनी यिरङ्ग लिव्वुल
हॊन्ऱुमो वुलहमी रेळु मॊम्बिडुम्
वन्ऱिऱन् मैन्दरै यळिक्कु मामहम्
इन्ऱुनी यियऱ्ऱुदर् कॆळुह वॊण्डॆन्ऱान् 262

ऍन्ऱलुम्—कहते ही; अरच—राजन्; नी इरङ्कल्—आप दुखी मत हों; इ उलकम् ऑन्ऱुमो—यह एक लोक ही क्या; उलकम्—भुवन; ईरेळुम्—दो के सातों (चौदहों) का; ओम्पिटुम्—परिपालन करनेवाले; वल् तिऱल् मैन्तरै—बहुत समर्थ वीर पुत्रों को; अळिक्कुम्—दिलानेवाले; मा मकम्—महान (अश्वमेध) यज्ञ को; इन्ऱु नी इयऱ्ऱुतऱ्कु—आज ही आप, करने के लिये; ईण्टु ऍळुक—अभी (तुरत) उपक्रम कीजिये; ऍन्ऱान्—कहा। २६२

उनके ऐसा कहने पर, ऋष्यशृंग ने कहा कि महाराज ! चिन्ता मत कीजिए; यह एक भुवन क्या चौदहों भुवनों का परिपालन करने में समर्थ पुत्र जिसके फलस्वरूप पैदा होंगे वैसा यज्ञ करेंगे। आप अभी प्रस्तुत हो जाइए। २६२

आयदऱ् कुरियन कलप्पै यावैयुम्
एयॆनक् कॊणर्न्दनर् निरुबरक् केन्दलुम्
तूयनऱ् पुनल्पडीइच् चुरुदि नन्मुऱै
शाय्वऱत् तिरुत्तिय शालै पुक्कनन् 263

आयतऱ्कु उरियन—उसके लिए आवश्यक; कलप्पै यावैयुम्—सामग्रियाँ सब; एयॆन कॊणर्न्तनर्—आज्ञा मिलते ही (सेवक) लाये; निरुपर्क्कु एन्तलुम्—राजाओं के राजा भी; तूय नल् पुनल्—पवित्र और श्रेष्ठ (सरयू) जल में; पटीइ—स्नान करके; चुरुति नल् मुऱै—श्रुति-विहित क्रम से; चाय्वु अऱ तिरुत्तिय—दोष-रहित, समुचित रीति से बने; चालै—यज्ञमण्डप में; पुक्कनन्—पहुँचे। २६३

राजा ने आज्ञा दी और सभी उपकरण और सामग्रियाँ आ गयीं। महाराज भी पवित्र सरयू-जल में स्नान करके, श्रुति-विधियों के अनुसार निर्मित यज्ञ-शाला में प्रविष्ट हुए। २६३

मुळङ्गळन् मुम्मैयु मुडुहि याहुदि
वळङ्गिये यीरऱु तिङ्गळ् वाय्त्तपिन्
तळङ्गिळ तुन्दुमि ताविल् वानहम्
विळङ्गिनर् त्रिण्णवर् वॆळियिन् ऱॆन्नवे 264

मुळङ्कु अळल् मुम्मैयुम्—शब्दायमान त्रिरग्नि; मुटुकि—प्रज्वलित करके; आकुति वळङ्कि—आहुतियाँ देकर; ईर् अऱु तिङ्कळ्—दो के छः (बारह) मास;

वाय्त्त पिन्–पूरा होने के बाद; तुन्तुमि–देव दुंदुभियाँ; तळङ्कित–बज उठीं; विण्णवर्–देवता लोग; ता इल् वान्–निर्मल आकाश में; वेळि इन्ऱु अॅन्ऱ–रिक्त स्थान नहीं हो, ऐसा; विळुङ्कितर्–खचाखच भर गये। २६४

(आहवनीय, गार्हपत्य, दक्षिणा की) त्रिरग्नि प्रज्वलित की गयी। उसमें उचित रीति से आहुतियाँ दी गयीं। ऐसे बारह महीने बीते। देवदुंदुभियाँ बज उठीं और देवता लोक आकाश को लीलते हुए (छिपाते हुए) आकर खचाखच भीड़ लगाकर खड़े हो गये। २६४

मुहमल रॉळिर्दर मॊय्त्तु वानुळोर्, तॊहैविरै नरुमलर् तूवि यार्त्तॅळत्
तहवुडै मुनियुमत् तळन्नि नाप्पणे, महवरु ळाहुदि वळङ्गि नानरो 265

वान् उळोर्–सुरलोकवासी; मुकम् मलर् ऑळि तर–मुख-कमलों को उज्ज्वल रखते हुए (प्रफुल्ल चित्त); मॊय्त्तु–भीड़ लगाकर; तॊकै विरै नरुमलर् तूवि–गुच्छों में, लगातार, सुवासित पुष्प बरसाकर; आर्त्तु अॅळ–आनन्दरव करते उछले; तकवु उटै मुनियुम्–सर्व-योग्यता-सम्पन्न ऋषि भी; अ तळलिन् नाप्पण्–उस यागाग्नि के मध्य; मकवु अरुळ् आकुति–पुत्र-दायक आहुति; वळङ्किनान्–प्रदान की। २६५

देवताओं के मुख-कमल प्रफुल्लित थे। वे सुगन्ध-पूर्ण कल्पकवन के पुष्प बरसाने लगे। सन्तोष के साथ उछले-कूदे। तब सर्व-योग्यता-सिद्ध महर्षि ने अग्नि में पुत्रेच्छा की पूर्ति करनेवाली आहुति छोड़ी। २६५

आयिडैक् कनलिनिन् ऱम्बॊर् ऱट्टमीत्, तूयनर् चुदैनिहर् पिण्ड मॊन्ऱुशळ्
तीयॅरि पङ्गियुञ् जिवन्द कण्णुमाय्, एयॅनप् पूदमॊन् ऱॅळुन्द देन्दिये 266

अ इटै–तब; कनलिन् निन्ऱु–उस अग्नि से; चूळ् अॅरि ती पङ्कियुम्–चारों ओर जलनेवाली आग के समान केश (और); चिवन्त कण्णुम् आय्–लाल आँखोंवाला बनकर; पूतम् ऑन्ऱु–एक भूत; अम् पॊन् तट्टम् मी–सुन्दर स्वर्ण-थाली पर; तूय नल् चुतै निकर्–पवित्र, श्रेष्ठ सुधा-सम; पिण्टम् ऑन्ऱु एन्ति–अन्न पिण्ड उठाते हुए; एय अॅन अॅळुन्ततु–सहसा उठ आया। २६६

तब उस अग्नि से एक भूत निकल आया। उसके केश जलती अग्नि के समान थे। आँखें लाल थीं। उसके हाथ में एक सोने की थाली थी और उस पर अमृत-सम अन्न का एक पिंड था। २६६

वैत्ततु तरैमिशै मऱित्तु मव्वळित्
तैत्तदु पूदमत् तवनुम् वेन्दनै
उय्त्तनल् लमिर्दिनै युरिय मादर्हट्
कत्तहु मरबिनि लळित्ति यालॅन्ऱान् 276

पूतम्–भूत (ने); तरै मिचै वैत्ततु–(थाली को) स्थल पर रखा; मऱित्तुम्–फिर; अ वळि तैत्ततु–उसी रास्ते (अग्नि में) प्रविष्ट (अन्तर्धान) हुआ; अ तवनुम्–उन तपोधन ने भी; वेन्तनै–राजा को; उय्त्त नल् अमिर्तिनै–भूत-दत्त श्रेष्ठ

अमृत (-सम अन्न) पिण्ड को; उरिय मातर्कट्कु–अपनी पत्नियों को; अ तकु मरपितिल्–उनके उचित क्रम के अनुसार; अळितूति–दीजिये; अॅन्ऱान्–आज्ञा की। २६७

उस भूत ने उस थाली को भूमि पर रखा और वह जैसे आया था उसी तरह अग्नि में घुसकर अदृश्य हो गया। महर्षि ने महाराज को आज्ञा दी कि आप इसको यथाक्रम अपनी रानियों में बाँट दीजिये। २६७

मामुनि यरुळ्वळि मन्नर् मन्नवन्, तूममॅन् शुरिकुळर् ऱॊण्डैत् तूयवाय्क्
कामरॊण् कौचलै करत्ति नोर्पहिर्, तामुऱ वळित्तनन् शङ्ग मार्त्तॅळ 268

मा मुनि अरुळ् वळि–महामुनि की आज्ञा के अनुसार; मन्नर्मन्नवन्–चक्रवर्ती; चङ्कम् आर्त्तु ॲळ–शंख बज उठे; तूमम् मॅल् चुरि कुळल्–धूम्र वासित, कोमल, काले घुंघराले केश और; तॊण्टै तूय वाय्–बिम्ब-सम लाल और पवित्र मुख (अधरों) और; कामर् ऑण्–मनोरम छटावाली; कौचलै करत्तिन्–कौशिल्यादेवी के हाथों में; ओर् पकिर्–एक अंश को; तामम् उऱ–(भूलोक को) प्रकाशमयता दिलाते हुए; अळित्तनन्–दिया। २६८

महर्षि की आज्ञा पाकर महाराज ने उसका एक भाग, धूपवासित कोमल केश, बिंबाधर, पवित्र मुख और मनोरम छटा—इनसे युक्त कौसल्यादेवी के हाथ में दिया। तब शंख बजाये गये। कौसल्यादेवी के इसे भक्षण कर लेने से संसार नया प्रकाश पानेवाला था। २६८

कैकयन् ऱनयैतन् करत्तु मम्मुऱैच्, चॅय्हयि नळित्तनन् ऱेव रार्त्तॅळप्
पॊय्हयु नदिहळुम् पॊळिलु मोदिमम्, वैहुऱु कोसल मन्नर् मन्नने 269

पॊय्कैयुम्–तालाबों में; नतिकळुम्–नदियों में; पॊळिलुम्–उद्यानों में; ओतिमम् वैकु उऱु–हंस (जिस देश में) वास करते हैं उस; कोचलम्–कोशल देश के; मन्नर् मन्नन्–(शासक) चक्रवर्ती (ने); तेवर् आर्त्तु ॲळ–देवों के आनन्दरव कर उठते; कैकयन् तनयै तन् करत्तुम्–केकय-पुत्री के हाथ में; अ मुऱै चॅय्कैयिन्–उसी क्रम से; अळित्तनन्–दिया। २६९

तब कोसलाधीश ने केकयपुत्री कैकेयी के हाथ में उसी प्रकार एक भाग दिया। राजा से परिपालित वह देश ऐसा था कि तालाबों, नदियों और बागों में हंस वास करते थे। (कवि इस देश की समृद्धता का स्मरण शायद इसलिए करते हैं कि कैकेयी के तनय इसके राजा बनेंगे)। २६९

नमित्तिरर् नडुक्कुऱु नलङ्गॊण् मॊय्म्बुडै
निमित्तिरु मरबुळान् मुन्नर् नीर्मयिन्
सुमित्तिरैक् कळित्तनन् सुरर्क्कु वेन्दिनिच्
चमित्तदेन् पहैयॅनत् तमरॊ डार्प्पवे 270

न मित्तिरर्–अमित्र; नटुक्कु उऱु–काँप जायँ, इसका हेतु जो है उस; नलम्

कोळ् मोयम्पु उटै–श्रेष्ठ बल से युक्त; निमि तरु मरपु उळ्ळान्–राजा निमि के वंश में उदित (दशरथ); चुरर्क्कु वेन्तु–सुरेन्द्र; ॲन् पकै इनि चमित्ततु ॲन–मेरा शत्रु अब मिट गया, यह निश्चय कर; तमरोंटु आर्प्प–अपनों के साथ कोलाहल मचा उठे––(यह साध्य करते हुए); मुन्नर् नीरमैयिन्–पहले के क्रम के अनुसार; चुमित्तिरैक्कु–सुमित्रादेवी को; अळित्तनन्–दिया। २७०

शत्रु को भयभीत करनेवाले वली निमि के वंशस्थ राजा दशरथ ने सुमित्रादेवी के हाथ में उसी प्रकार, जैसे कौसल्या और कैकेयी के सम्बन्ध में किया था, पिण्ड का एक भाग दिया। तब देवेन्द्र यह कहकर कि मेरा शत्रु अब मिटा, अपने साथियों के साथ हल्ला मचाकर उछल उठे। २७०

पिन्नरप् पॅरुन्दहै पिदिर्न्दु वीळ्न्ददु
तन्नयुञ् जुमित्तिरै तनक्कु नल्हिनान्
ऑन्नलर्क् किडमुरुवे उलहि नोङ्गिय
मन्नुयिर् तमक्कुनोळ् वलमुन् दुळ्ळवे 271

पिन्नर्–उसके बाद; अ पॅरु तकै–उन उदारचेता दशरथ ने; ऑन्नलर्क्कु–शत्रुओं के; इटमुम्–वाम अंग और; वेरु–उनसे परे; उलकिन् ओङ्किय–संसार में जीवन्त; मन् उयिर् तमक्कु–जीवों के; नीळ् वलमुम्–श्रेष्ठ दक्षिण अंग के; तुळ्ळ–फड़कते; पितिर्न्तु वीळ्न्ततु तन्नैयुम्–जो छितरकर बचा रहा, उसको भी; चुमित्तिरै तनक्कु–सुमित्रा को; नल्किनान्–(प्रेम के साथ) दिया। २७१

फिर, उन उदारचेता ने जो भाग करते वक्त बचकर रह गये उन कणों को एकत्र करके उसे सुमित्रा को दे दिया। तब शत्रु लोगों के वाम अंग फड़क उठे और अन्य जीवों के दाहिने अंग। (पुरुषों के लिए वाम अंगों का फड़कना अहित का सूचक है।)। २७१

वाम्बरि वेळ्वियु मकारै नल्हुव, ताम्बुरै याहुदि पिऱवु मन्दणन्
ओम्बिड मुडिन्दपि नुलहु कावलन्, एम्बलों डॅळुन्दनन् यारु मेत्तवे 272

वाम् परि वॅळ्वियुम्–लपकते चलनेवाले अश्व को लेकर किया जानेवाला यज्ञ; मकारै नल्कुवतु आम्–पुत्रोत्पादक (पुत्रकामेष्टि यज्ञ के); पुरै आकुति पिऱवुम्–योग्य आहुति आदि अन्य होम कार्य; अन्तणन् ओम्पिट–महर्षि ने सावधानी के साथ करके; मुटिन्त पिन्–सम्पूर्ण किया, करने के बाद; उलकु कावलन्–भूपति; यारुम् एत्त–सबके स्तुति करते; एम्पलोंटु–सन्तोष के साथ; ॲळुन्तनन्–उठ चले। २७२

अश्वमेध यज्ञ सफल रूप से सम्पन्न हो गया और पुत्रकामेष्टि के लिये उपयुक्त आहुतियाँ दी गयीं। यह सब महर्षि ने सावधानी से सम्पन्न किया। फिर दशरथ यज्ञशाला से बाहर आये। तब वे बड़े सन्तुष्ट थे और सबों ने उनकी, सम्मान के साथ स्तुति की। २७२

मुरुडरुम् बल्लिय मुळङ्गि यार्त्तन, इरुडरु मुलहमु मिडरि नीङ्गिन
तॅरुडरु वेळ्वियिन् कडन्ग डीर्न्दुळि, अरुडरु मवैयित्वन् दरश नॅय्दिनान् 273

तॆरुळ् तरु–(वेद) प्रकाशित; वेळवियिन् कटन्कळ्–यज्ञ-कर्म; तीर्न्तुळि–पूरा होने के बाद; मुरुटु–मर्दल; अरु पल् इयम्–और अपूर्व अन्य (मंगल) वाद्य; मुळङ्कि आर्त्तन–निनादित हुए; इरुळ् तरुम् उलकमुम्–दुख के अँधेरे में पड़े लोक भी; इटरिन् नीङ्कित्–कष्ट-निवृत्त हुए; अरचन्–महाराज भी; अरुळ् तरुम् अवैयिन्–दया-धर्म जहाँ से किया जाता है, उस सभा भवन में; वन्तु ऍय्तिनान्–आ विराजे। २७३

वेदोक्त यज्ञ के कर्म जब पूरे हुए, तब मर्दल और अन्य वाजे मंगल-नाद कर उठे। लोक सब दुखरूपी अँधेरे से विमुक्त हुए। महाराज सब को उपहार देने के लिए सभा-मण्डप में आये। २७३

शॆय्म्मुरैक् कडनवै तिरम्ब लिन्ऱिये
मॆय्म्मुरैक् कडवुळर्क् कीन्दु विण्णुळोर्क्
कम्मुरै यळित्तुनी डन्द णाळर्क्कुम्
कैम्मुरै पॊळिन्दनन् कनह मारिये 274

चॆय्मुरै कटन् अवै–यज्ञोत्तर (करणीय) हविदान आदि को; तिरम्पल् इन्ऱि–अपचार के विना; मेय् मुरै–यथोचित क्रम से; कटवुळर्क्कु ईन्तु–कुलदेवता विष्णुदेव आदि को देकर; विण् उळोर्क्कु–आकाशलोक वासियों को भी; अम्मुरै अळित्तु–यथाक्रम समर्पित कर; नीटु अन्तणाळर्क्कुम्–श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भी; कनकम् मारि–स्वर्णदान-वर्षा; कै मुरै पॊळिन्तनन्–अपने हाथों से बारी-बारी से बरसायी (प्रचुर परिमाण में स्वर्णदान किया)। २७४

यज्ञोतर कुछ कर्म थे। उनमें कुलदेवताओं और अन्य देवताओं की पूजा करना, भोग चढ़ाना आदि था। वह सब पूरा करके महाराज ने ब्राह्मणों पर अपने हाथ से, बारी-बारी से, मानों स्वर्ण की वारिश कर दी। २७४

वेन्दर्हट् करशोडु वॆरुक्कै तेर्परि
वायन्दनर् ऱुहिलॊडु वरिशैक् केऱ्पन
ईन्दनन् पल्लियन् दुवैप्प वेहिनीर्
तोयन्दनन् शरयुनऱ् ऱुऱैक्क णॆय्दिये 275

वेन्तर्कट्कु–राजाओं को; वरिचैक्कु एऱ्पन–उनके पदों के योग्य; अरचॊटु–शासन की भूमि के साथ; वॆरुक्कै–अर्थ; तेर्–रथ; परि–अश्व; वाय्न्त नल् तुकिलॊटु–उपयुक्त श्रेष्ठ वस्त्रों के साथ; ईन्तनन्–प्रदान किया; पल् इयम् तुवैप्प–विविध वाद्यों के वादन के साथ; एकि–जाकर; चरयुनल् तुऱैक्कण् ऍय्ति–सरयू नदी के श्रेष्ठ घाट पर जाकर; नीर् तोय्न्तनन्–स्नानरत हुआ। २७५

फिर राजाओं की बारी आयी। उनको जमीन दी; धन दिया। रथ, अश्व, वस्त्र आदि भी प्रदान किये गये। उसके वाद मंगलवाद्यों के वादन के साथ वे सरयू के श्रेष्ठ घाट पर गये और नहाये। २७५

मुरशितङ् गरङ्गिड मुत्त वॆण्कुडै, विरशिमे ल्तिऴऱ्ऱिड वेन्दर शूऴ्तर्
अरशवै यडैन्दुऴि ययनु नाणुऱ, उरैशॆऱि मुनिवन्ऱा ळिरैञ्जि योङ्गिनान् 276

मुरचु इतम्–विविध नगाड़े जैसे बाजों के; करङ्किट–बजते; मुत्तम् वॆण्कुटै–मोतियों से अलंकृत श्वेत-छत्रों के; मेल् विरचि निऴऱ्ऱिट–ऊपर फैलकर छाया करते; वेन्तर् चूऴ् तर–राजाओं के घेरकर आते; अरचु अवै अटैन्तुऴि–राजसभा में पहुँचने पर; अयन् नाण् उऱ–ब्रह्मा को भी लजाते हुए, (ब्रह्मा से भी अधिक); उरै चॆऱि–प्रकीर्तित; मुनिवन् ताळ्–वसिष्ठ महर्षि के चरणों की; इरैञ्चि–स्तुति करके; ओङ्कितान्–उन्नत हुए। २७६

बाद वे दरबार-भवन की ओर गये। तब ढोल, नगाड़े आदि निनादित हुए। श्वेत छत्र छाया देने लगे। राजा लोग भी घेरे हुए उनके साथ आए। सभा-भवन में, वसिष्ठजी विराजमान थे जिनकी ख्याति स्वयं ब्रह्माजी को भी लज्जायुक्त करती थी। राजा ने उनके चरणों पर नमस्कार किया और उनकी स्तुति की। २७६

अरियनऱ् ऱवमुडै वशिट्ट नाणैयाल्
इरलनऱ् चिरुङ्गमा मुनिवन् ऱाडॊळा
उरियनऱ् पलवुरै पयिऱ्ऱि युय्न्दनॆन्
पॆरियनऱ् ऱवमिनिप् पॆऱुव दियादॆन्ऱान् 277

अरिय नल् तवम् उटै–उत्तम और अच्छे तपस्वी; वचिट्टन् आणैयाल्–वसिष्ठ की आज्ञा से; इरलै नल् चिरुङ्कम्–हरिण के से सुन्दर सींग से शोभित; मा मुनिवन्–बड़े मुनि के; ताळ् तॊळा–चरण-वन्दना करके; उरिय पल नल् उरै–उचित अनेक अच्छे वचन; पयिऱ्ऱि–कहकर; उय्न्ततॆन्–तर गया; पॆरिय नल् तवम्–ऊँचे, तप के फल के रूप में; इति पॆऱुवतु यातु–इससे बढ़कर प्राप्य क्या है ? । २७७

तपस्वी वसिष्ठजी से संकेत पाकर महाराज ने ऋष्यश्रृंग को नमस्कार किया और प्रशस्ति के वचन निवेदन किये। कहा कि आपकी कृपा से मैं तर गया। इससे बढ़कर कौन सा तपस्या का फल है जो मैं पाना चाहूँगा ? । २७७

ऎन्दैनिन् नरुळिना लिडरि नीङ्गिये
उय्न्दनॆ नडियने नॆन्न वॊण्डवन्
शिन्दयुण् महिऴ्च्चियाल् वाऴ्त्तित् तेर्मिशै
वन्दमा दवरॊडुम् वऴिक्कॊण् डेहिनान् 278

ऎन्तै–श्रेष्ठ; निन् अरुळिनाल्–आपकी कृपा से; अटियनेन्–आपके इस दास ने; इटरिन् नीङ्कि–कष्ट से मुक्त होकर; उय्न्तनॆन्–उत्थित हुआ; ऎन्न–यह कहने पर; ऒळ् तवन–श्रेष्ठ तपस्वी; चिन्तै उळ् मकिऴ्च्चियाल्–मन के भरे आनन्द के साथ; वाऴ्त्ति–आशीर्वाद देकर; तेर् मिचै–रथ पर चढ़कर; वन्त मा तवरॊटुम्–अपने साथ आए हुए श्रेष्ठ मुनियों सह; वऴि कॊण्टु–मार्ग ग्रहण कर; एकितान्–चले। २७८

"भगवन् ! आपकी कृपा से संकट दूर हो गया; जीवन उत्कृष्ट हो गया।" दशरथ का यह कथन सुनकर ऋषि ऋष्यश्रृंग को हार्दिक आनन्द हुआ। वे उन्हें आशीर्वाद देकर, रथ पर चढ़कर मार्ग पर अग्रसर हुए। उनके साथ आये हुए मुनि भी उनके साथ गये। २७८

वाङ्गिय तुयरुडै मन्नन् पिन्नरुम्, पाङ्गुरु मुनिवर्ताळ् परवि येत्तलुम्
ओङ्गिय वुवहैय राशि योडॅळ्ळा, नीङ्गिन रिरुन्दन नेमि वेन्दने 279

वाङ्किय तुयर् उटै मन्नन्–निवृत्त-दुख महाराज ने; पिन्नरुम्–फिर भी; पाङ्कु उरु मुनिवर् ताळ्–वन्दनीय अन्य अनेक मुनियों के चरणों पर; परवि एत्तलुम्–विनत हो स्तुति करते हो; ओङ्किय उवकैयर्–उमड़ते हुए आनन्द से पूरित वे; आचियोटु–(राजा को) आशीर्वाद (देने) के साथ; ऍळ्ळा-उठकर; नीङ्किन्नर्–निकल पड़े; नेमि वेन्तन्–चक्रवर्ती; इरुन्तनन्–सुख से रहे। २७९

हृत-दुख राजा ने अन्य ऋषियों की भी स्तुति कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किये। वे भी विदा हुए। तदनन्तर राजा सुख से रहने लगे। २७९

तॅरिवयर् मूवरुञ् जिऱिदु नाट्चॅलीइ, मरुविय वयावोडु वरुत्तन् दुय्त्तवर्
पॉरुवरुन् दिरुमुह मन्ऱिप् पॉऱ्पुनी, डुरुवमु मदियमो डॉप्पत् तोन्ऱिनार् 280

तॅरिवैयर्–देवियाँ; मूवरुम्–तीनों भी; चिऱितु नाळ् चॅलीइ–कुछ दिन बीतने के बाद; मरुविय वयावोटु–(गर्भ धारण) सम्बन्धित क्लेश के साथ; वरुत्तम्–कष्ट; तुय्त्तवर्–सहती हुई; पॉरु अरुम् तिरु मुकम् अन्ऱि–अनुपम शोभाशाली मुखों से ही नहीं, बल्कि; पॉऱ्पु नीटु उरुवमुम्–छविपूर्ण शरीरों से भी; मतियमोटु ऑप्प–चन्द्र के समान; तोन्ऱिनार्–(श्वेत-वर्ण लिये हुए) दिखीं। २८०

तीनों महिषियों को गर्भधारण-सुलभ आयास होने लगा। उनके मुख और शरीर चन्द्र के समान श्वेत हो गये। २८०

आयिडैप् परुवम्वन् दडैन्द वॅल्लैयिन्
मायिरुम् बुविमहण् महिऴ्वि नोङ्गिड
वेय्पुनर् पूशमुम् विण्णु ळोर्पुहऴ्
तूयहर्क् कडहमु मॅऴुन्दु तुळ्ळवे 281

अ इटै–इस बीच; परुवम् वन्तु अटैन्त ऍल्लैयिल्–(पुत्र-जन्म का) समय जब आया तब; मा इरु पुवि मकळ्–श्रेष्ठ और विशाल भूमि की देवी; मकिऴ्विन् ओङ्किट–आनन्द में बढ़ी; वेय् पुनर्पूचमुम्–बाँस नाम का पुनर्वसु नक्षत्र; विण् उळोर् पुकऴ्–देवों से प्रशंसित; तूय करक्कटकमुम्–पवित्र कर्क राशि; ऍऴुन्तु तुळ्ळ–उठकर उछल पड़ी—तब। २८१

फिर शिशु-जन्म का समय आया। विशाल भूमि की (अधिष्ठात्री) देवी उल्लसित हुई। बांस या पुनर्वसु नक्षत्र और सुर-प्रशंसित पवित्र कर्क राशि उदीयमान हुई। (तमिऴ में बांस पुनर्वसु का पर्यायवाची समझा जाता है।)। २८१

शित्तरु मियक्करुन् दॆरिवै मार्हळुम्, वित्तह मुनिवरुम् विण्णु ळोर्हळुम्
नित्तरु मुरैमुरै नॆरुङ्गि यार्प्पुररत्, तत्तुर लॊळिन्दुनी डरुम मोङ्गवे 282

चित्तरुम्–सिद्ध और; इयक्करुम्–यक्ष और; तॆरिवै मार्कळुम्–यक्ष-स्त्रियाँ; वित्तक मुनिवरुम्–ज्ञानी मुनि लोग; विण् उळोर्कळुम्–सुरलोक वासी; नित्तरुम्–(श्रीमन्नारायण के वैकुंठलोक में नित्य उनके साथ रहनेवाले चरण-सेवी) गरुड़, विश्वक्सेन आदि नित्यसूरि; मुरै मुरै नॆरुङ्कि–पंक्तियों में इकट्ठा होकर; आर्प्पुर–आनन्द-घोष करते तब; नीळ् तरुमम्–प्राचीन धर्म; तत्तु उरल्–लड़खड़ाना; ऒळिन्तु–छोड़कर; ओङ्क–बढ़ा जब । २८२

सिद्ध, यक्ष, यक्षिणियाँ, ज्ञानी मुनि, देवता लोग, नित्यसूरि, गरुड़, विश्वक्सेन, आदि (जो श्रीवैकुंठलोक के श्रीमन्नारायण के अमर चरण-सेवी हैं) पंक्तियों में जुटकर आनन्द का कोलाहल मचाने लगे। धर्म भी अपनी शिथिलता छोड़कर बढ़ने लग गया। २८२

ऒरुपह लुलहॆला मुदरत् तुट्पॊदिन्
दरुमरैक् कुणर्वरु मवनै यञ्जनक्
करुमुहिर् कॊळुन्दॆळिल् काट्टुञ् जोदियैत्
दिरुवुरप् पयन्दन डिररङ्गॊळ् कोसलै 283

तिरम् कॊळ् कोचलै–उत्तम गुणशीला कौसल्या (ने); ऒरु पकल्–(पहले, प्रलय के) एक दिन; उलकु–लोक; ऎलाम्–सभी को; उतरत्तु उळ् पॊतिन्तु–उदरस्थ कर लिया, (जिन्होंने) उनको; अरुमरैक्कु उणर्वु अरुम्–समर्थ वेदों के लिये भी अग्राह्य; अवनै–उन देव को; अञ्चनम्–अंजन; करुमुकिल् कॊळुन्तु–काले मेघों की छटा; ऎळिल् काट्टुम्–इनकी सुन्दरता को अपने शरीर में दिखानेवाले; चोतियै–ज्योतिस्वरूप को; तिरु उर–(लोक-) कल्याण साध्य करते हुए; पयन्तनळ्–जन्म दिया। २८३

उस शुभ-लग्न में बड़ी भाग्यवती, और समर्थ देवी कौशल्या ने उनको, जिन्होंने सारे लोकों को एक दिन (प्रलय के अवसर पर) अपने उदर में छिपा रखा था; जिनको वेद भी प्राप्त नहीं कर पाते; और जो अंजन और काले मेघों की छटावाले हैं, उन ज्योतिर्मय देव को पुत्र के रूप में जन्म दिया। २८३

आशैयुम् विशुम्बुनिन् ररमर रार्त्तॆळ
वाशवन् मुदलिनर् वणङ्गि वाळ्त्तुरप्
पूशमु मीनमुम् पॊलिय नल्हिनाळ्
माशरु केहयन् मादु मैन्दनै 284

माचु अरु–अकलंक; केकयन्मातु–केकयतनया ने; अमरर्–देवगण; आचैयुम् विचुम्पुम् निन्ऱु–दिशाओं में और आकाश में खड़ा होकर; आर्त्तु ऎळ–शोर कर उठे; वाचवन् मुतलिनर्–वासव आदि; वणङ्कि वाळ्त्तुर–विनत हो स्तुति करें;

पूचमुम् मीनमुम्–पुष्य नक्षत्र और मीन राशि; पॊलिय–प्रकाशमान हों (ऐसा); मैन्तनै–पुत्र को; नल्किनाळ्–जन्म दिया। २८४

बाद में पुष्य नक्षत्र और मीन राशि के सुलग्न में अकलंक केकय-पुत्री कैकेयी ने एक बालक को जन्म दिया। तब देवगणों ने दिशा-दिशा में और आकाशभर में खड़े होकर आनन्दरव किया। वासव (इन्द्र) ने सिर नवाकर स्तोत्र पढ़ा। २८४

तळैयविऴ् तरुवुडैच् चैल कोपनुम्, किळैयुमन् दरमिशैक् कॊऴुमि आर्त्तॆऴ
अळैपुहु मरविनो डलवन् वाऴ्वुऱ, इळैयवर् पयन्दन ळिळैय मॆन्गॊडि 285

तळै अविऴ्–पंखुड़ियाँ खिले; तरु उटै–(पुष्पवाले) कल्पक-तरुओं (के वन के) स्वामी; चैलकोपनुम्–शैलकोप (इन्द्र); किळैयुम्–उनके बन्धु; अन्तरम् मिचै कॊऴुमि–आकाश में एकत्र होकर; आर्त्तु ऎऴ–शोर कर उठे; अळै पुकुम् अरविनोटु–बिल में घुसनेवाले सर्प (आश्लेषा नक्षत्र) के साथ; अलवन्–कर्क (राशि) भी; वाऴ्वुऱ–(उत्कृष्ट) जीवन पा जाये ऐसा; इळैय मॆन् कॊटि–छोटी और कोमल लता (समाना देवी) ने; इळैयवन्–अनुज (लक्ष्मण) को; पयन्तनळ्–जन्म दिया। २८५

छोटी रानी, सुन्दर लता-समान सुमित्रा ने एक शिशु को जनाया। तब नन्दनवन के स्वामी, शैलकोप इन्द्र और उसके साथी आकाश में एकत्र होकर आनन्द-घोष कर उठे। सर्पाकार के आश्लेषा नक्षत्र और कर्क राशि का भाग्य जागा क्योंकि उसी सुलग्न में सुमित्रादेवी के पहले पुत्र (लक्ष्मण) ने जन्म लिया था। २८५

पडङ्गिळर् प..ऱलैप् पान्दळेन्दु पार्
नडङ्गिळर् तरमऱै नविल नाडहम्
मडङ्गलु महमुमे वाऴ्वि नोङ्गिड
विडङ्गिळर् विऴियिनाण् मीट्टु मीन्ऱनळ् 286

पटम् किळर्–फन-फैलाये; पल् तलै–अनेक (सहस्र) सिरों के; पान्तळएनतु–शेषनाग से धृत; पार्–भूमि के; नटम् किळर्तर–(आनन्द का) नर्तन कर उठते; नाटु अकम्–देश भर में; मऱै नविल–वेद पारायण होते; मटङ्कलुम्–सिंह (राशि) और; मकमुम्–मघा (नक्षत्र); वाऴ्विन् ओङ्किट–जीवन में उत्थित हुए; विटम् किळर् विऴियिनाळ्–विष-सम काले नेत्रवाली (सुमित्रा) ने; मीट्टुम्–फिर एक (बार); ईन्ऱनळ्–(एक पुत्र को) जन्म दिया। २८६

सहस्र-फणी आदिशेषनाग से धृत यह भूमि आनन्द से नर्तन करने लगी; देश भर में वेद पारायण हुआ। सिंह राशि और मघा नक्षत्र के भाग्य को जगाते हुए सुमित्रा देवी ने और एक पुत्र को जन्म दिया। २८६

आडिन ररम्बय रमुद वेऴिशै, पाडिनर् किन्नरर् तुवैत्त पल्लियम्
वीडिन ररक्करॆन् ऱुवक्कुम् विम्मलाल्, ओडिन रुलाविन रुम्बर् मुऱ्ऱुमे 287

अरक्कर् वीटिऩर् ॲऩ्ऱु–राक्षस मर गये—यह निश्चय कर; उवक्कुम् विम्मलाल्–आनन्द की बढ़ती से; अरम्पैयर् आटिऩर्–अप्सराएँ नाचीं; किऩ्ऩरर्–किन्नर जाति के लोग; अमुतम् एळ् इचै–अमृत समान सप्तस्वरोंवाले मधुर गान; पाटिऩर्–गाये; पल इयम् तुवैत्त–अनेक वाद्य बज उठे; उम्पर् मुऱ्ऱुम्–देवता सब; ओटिऩर्–इधर-उधर दौड़े; उलाविऩर्–घूमे। २८७

इनके जन्म से सर्वत्र अपार आनन्द फैल गया। राक्षस अब अवश्य मिट जायेंगे—इस विश्वास से अप्सराएँ नाचने गाने लगीं। किन्नर सप्त-स्वर वाले अनेक गीत गाये। अनेक वाद्य बजाये। आकाश भर में देवों का कोलाहल और उनकी उछल-कूद मची रही। २८७

ओडिन ररशन्माट् टुवहै कूरिनिन्, ऱाडिनर् शिलदिय रन्द णाळर्हळ्
कूडिनर् नाळॉडु कोळु निन्ऱमै, नाडिन रुलहिनि नवैयिन् ऱॅन्ऱनर् 288

चिलतियर्–दासियाँ; अरचन् माट्टु–महाराज के पास; ओटिऩर्–दौड़ीं; उवकै कूऱि निऩ्ऱु–(अपना) सन्तोष बताकर, खड़ी हो; आटिऩर्–नाचीं; अन्तणाळर्कळ्–(पुरोहित आदि) ब्राह्मण; कूटिऩर्–एकत्र हुए; नाळॊटु कोळुम् निऩ्ऱमै–नक्षत्रों और ग्रहों की स्थिति; नाटिऩर्–शोध की; उलकु इऩि नवै इऩ्ऱु–संसार का अब कोई दुख नहीं; ॲऩ्ऱऩर्–कहा। २८८

तब दासियाँ महाराज के पास दौड़ीं। संतोष-समाचार कहते-कहते वे स्वयं अपने को भूलकर नाचने लग गयीं। पुरोहितों ने मिलकर जन्म-नक्षत्र, लग्न आदि का शोध किया और उनको विदित हुआ कि अब संसार को कोई दुख नहीं होगा। २८८

(इसके बाद दो अतिरिक्त पद हैं जिनका सार यों है— श्रीरामजन्म का मास मेष था; तिथि नवमी थी; नक्षत्र पुनर्वसु; लग्न मर्कट था; ग्यारहवें गृह में चार ग्रह उच्च थे। फिर जन्मपत्रियाँ तैयार हुईं। तमिळ्नाडु में क्रमशः मेष, ऋषभ, मिथुन आदि (राशियों के ही नाम) चैत्र आदि बारह मासों के स्थान पर प्रचलित हैं। ये संकल्प-मास कहे जाते हैं और सौर गणना के आधार पर हैं।)

मामुनि तन्नॊडु मन्नर् मन्नवन्, एमुरु पुनल्पडीई वित्तॊ डिन्पॊरुळ्
तामुर वळङ्गिवॆण् शङ्ग मार्प्पुरक्, कोमहार् तिरुमुहङ् गुरुहि नोक्किनान् 289

मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ्–राजाओं के राजा ने; एम् उऱु पुऩल् पटीइ–आनन्द-दायक (सरयू-) जल में स्नान करके; वित्तॊटु–बीज के साथ; इऩ् पॊरुळ् ताम्–सन्तोषप्रद वस्तुएँ; उऱ वळङ्कि–खूब दान देकर; वॆण् चङ्कम् आर्प्पुऱ–श्वेत शंखों के मंगलनाद करते; मा मुऩि तऩ्ऩॊटु–महान मुनि के साथ; कुऱुकि–जाकर; को मकार् तिरु मुकम्–राजपुत्रों के श्रीमुख; नोक्किऩाऩ्–निहारे। २८९

महाराज ने यह अत्यन्त आनन्ददायक समाचार सुना। वे जाकर सरयू के सुखावह जल में स्नान कर आये। फिर बीज (धान का) और

धन का दान दिया। शंख आदि मंगल वाद्यों के बजते राजा ने वसिष्ठ महर्षि को साथ ले जाकर राजकुमारों का मुख देखने का रस्म अदा किया। २८९

इरैतविर्न् दिडुहपार् याण्डॏ रेऴ्निदि, निरैदरु शालैता णीक्कि यावैयुम्
मुरैहॆड वऱियवर् मुहन्दु कॊळ्हॆना, अरैपरै यॆन्ऱन नरशर् कोमहन् 290

अरचर् कोमकन्–राजाधिराज; याण्टु ओर् एऴ्–सात सालों तक; पार्–राज्य भर में; इऱै तविर्न्तिटुक–राजकीय कर वसूले न जायँ; निति निऱै तरु चालै–निधियों से पूर्ण हमारे कोष; ताऴ् नीक्कि–ताला हटाकर; वऱियवर्–गरीब लोग; यावैयुम्–सब (धन) को; मुऱै कॆट–नियम तोड़कर; मुकन्तु कॊळ्क–उठा लें; ऎना–ऐसा; पऱै अऱै–ढिंढोरा पिटवा दो; ऎन्ऱनन्–(ढिंढोरा पीटनेवालों को) यह आज्ञा दिलायी। २९०

चक्रवर्ती ने जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में यह घोषणा करवा दी कि सात साल तक लगान की माफ़ी होगी। कोषों के ताले खोल दिये जायंगे; गरीब लोग नियमों का उल्लंघन करके जितना चाहे ले लें। २९०

पडैयॊऴिन् दिडुहदम् बदिह ळेयिनि, विडैपॆऱु हुहमुडि वेन्दर् वेदियर्
नडैयुरु नियममु नवैयिन् ऱाहुह, पुडैहॆऴु विऴावॊडु पॊलिह वॆङ्गणुम् 291

पटै ऒऴिन्तिटुक–अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग बन्द हो; मुटि वेन्तर्–(बन्दी बनाये गये) राजा लोग; इनि–अब; तम् पतिकळे विटै पॆऱुकुक–अपने-अपने देश (गमन) के लिए विदा ले लें; वेतियर्–वेदविप्रों के; नटै उऱु नियममुम्–आचरणों के नियम; नवै इन्ऱु आकुक–विना दोष के चलें; पुटै ऎङ्कणुम्–सभी ओर; कॊऴु विऴावॊटु–कोलाहलमय उत्सवों के साथ; पॊलिक–चमके। २९१

दशरथ ने और भी घोषणा करा दी कि हथियार (अस्त्र-शस्त्र) का व्यवहार बन्द रहे। बन्दी बने हुए राजा लोग मुक्त हो अपने राज्य में चले जायँ। वेदपाठी ब्राह्मणों के अनुष्ठान में कोई बाधा न पड़े। सब ओर उत्सव की चमक हो। २९१

आलयम् पुदुक्कुह वन्द णाळर्दम्, शालैयुम् चतुक्कमुञ् जमैक्क शन्दियुम्
कालयु मालैयुङ् गडवु ळोर्क्कणि, मालयुन् दूबमुम् वऴङ्ग वॆन्ऱनन् 292

आलयम्–मन्दिरों को; पुतुक्कुक–नवीन बनाओ; अन्तणाळर् तम् चालैयुम्–अग्रहारों (ब्राह्मणों की वीथियों) को; चतुक्कमुम्–चौकों को; चमैक्क–बनाओ; चन्तियुम्–संध्या समय; कालैयुम् मालैयुम्–प्रातः और शाम; कटवुळोर्क्कु–देवताओं के; अणि–अलंकार के लिये; मालैयुम्–पुष्प मालाओं को (और); तूपमुम्–धूप की सामग्रियों को; वऴङ्क–दो; ऎन्ऱनन्–कहा। २९२

देवालयों का सुधार-संस्कार हो; अग्रहारों की सड़कें दुरुस्त की जायं। प्रातः और सायं संध्याओं में देवताओं के अलंकार के लिये पुष्पमालाओं का और पूजा के धूप आदि का प्रबन्ध हो। २९२

अॅन्‌बुळि वळ्ळुवर् यानै मीमिशै
नन्‌बऱै यऱैतर नहर मैन्दरुम्
मिन्‌बिऱळ् नुशुप्पिनार् तामुम् विम्मलाल्
इन्‌बमॅन् रळक्करु मळक्क रॅय्दिनार् 293

अॅन्‌पुळि–(यह आज्ञा) कहते ही; वळ्ळुवर्–ढिंढोरा पीटनेवालों ने; यानै मीमिचै–हाथियों पर रख; नन् परै अऱैतर–खूब ढिंढोरा पीटा; नकर मैन्तरुम्–नगर के पुरुष, और; मिन् पिऱळ् नुचुप्पिनार् तामुम्–विद्युल्लता सी कमरवाली स्त्रियां; विम्मलाल्–आनन्दातिरेक से; इन्‌पम् अॅन्‌ऱ–सुख नाम के; अळक्क अरुम्–अथाह; अळक्कर्–समुद्र में; अॅय्तिनार्–मग्न हुए। २९३

ढिंढोरा पीटने वालों ने हाथी पर बैठ ढोल बजाकर यह मुनादी सुनायी तो नगर के पुरुष और स्त्रियाँ सब आनन्द-सागर-मग्न हुए। २९३

आर्त्तनर् मुऱैमुऱै यन्‌बि नालुडल्
पोर्त्तन पुळहम्वेर् पॉडित्त नोणिदि
तूर्त्तन रॅदिरॅदिर् शौल्लि नार्क्कॅलाम्
तीर्त्तनॅन् ऱऱिन्ददो ववर्तम् जिन्दैये 294

मुऱै मुऱै–दल बाँधकर; अन्‌पिनाल्–प्रेम से; आर्त्तनर्–शोरगुल मचाया; उटल्–उनके शरीर; पुळकम् पोर्त्तत–पुलक से ढँक गये; वेर्वै पॉटित्त–स्वेद कण उठे; अॅतिर् अॅतिर् चौल्लिनार्क्कु अॅलाम्–सामने आकर जिन किन्होंने समाचार सुनाया उन सब को; नीळ् निति तूर्त्तनर्–अधिक धन लुटाया; अवर् तम् चिन्तै–उनके मन ने; तीर्त्तन् अॅन्‌ऱु–स्वयं तीर्थंकर (विष्णु) हैं, यह; अऱिन्तते–जान लिया क्या शायद। २९४

वे प्रेम के कारण शोरगुल मचाने लगे। उनके शरीर पुलकित हुए। उनकी देह स्वेद-कण-भरी हो गयी। सामने आकर जिस किसी ने यह संतोष-समाचार सुनाया, उसे लोगों ने अत्यधिक दान दिया। (उन्होंने पहले ही यह समाचार जाना था लेकिन इससे उनका हाथ नहीं रुका)। २९४

पण्णयु मायमुन् दिरळुम् बाङ्गरुम्, कण्णहन् ऱिरुनगर् कळिप्पुक् कैमिहुन्
वॅण्णॅयुङ् गळबमु मिळ्दु नानमुम्, शुण्णमुन् दूविनर् वीदि तोऱुमे 295

कण् अकल् तिरुनकर्–विशाल, श्री-समृद्ध नगर में; कळिप्पु कैमिकुन्तु–आनन्द का ठिकाना नहीं रहा, इसलिए; पण्णैयुम्–नायिकाएँ (श्रेष्ठ स्त्रियाँ); आयमुम्–सखियाँ; तिरळ्–नायक (उच्चकुल के पुरुष); पाङ्करुम्–उनके सखा; अॅण्णॅयुम्–सुगन्धित तेल; कळपमुम्–चन्दन; इळुतुम्–घी और; नानमुम्–कस्तूरी; चुण्णमुम्–(सुगन्धित) चूर्ण को भी; वीति तोऱुम्–सड़क-सड़क पर; तूविनर्–छिड़का। २९५

उस विशाल नगर में, गली-गली में, लोगों ने मंगल द्रव्य छिड़के। समाज के नेता लोग और उनके सखा, नायिकाएँ और उनकी सखियाँ—सबों ने उमड़ते आनन्द के साथ जहाँ-तहाँ सुगन्धित तेल, चन्दन, कस्तूरी और गन्धचूर्ण छिड़के। २९५

इत्तहै मानह रीरु नाळुम्, शित्तमु रुड्गळि योडुशि उन्दे
तत्तमै यॉन्रु मुणर्न्दिलर् ताविन्, मॅय्त्तव नामम् विदिप्प मदित्तान् 296

मा नकर–महान नगर (के लोग); इ तकै–इस रीति से; ईर् अरु नाळुम्–दो के छः दिन; चितृतम् उरु–मन में हुये; कळियोटु–आनन्द के साथ; चिरन्तु–उत्कृष्ट बनकर; तम् तमै–अपनी-अपनी; ऑन्रुम् उणर्न्तिलर्–कुछ सुध नहीं रखी; ता इल्–अकलंक; मॅय तवन्–सत्यवान तपस्वी (वसिष्ठ) ने; नामम् वितिप्प–नामकरण करने की बात; मतित्तान्–सोची। २९६

उस नगर में बारह दिन तक ऐसे आनन्द का बोलवाला था कि लोग अपने को एकदम भूल गये। तब कर्तव्य-निष्ठ और सत्यवान वसिष्ठ जी ने निश्चय किया कि अब नामकरण का कर्म होना चाहिए। २९६

करामलै यत्तळर् कैक्किरि यॅय्त्ते, अरावणै यिर्रुयिल् वोयॅन वन्नाळ्
विरावि यळित्तरुण् मॅय्प्पॉरु ळुक्के, इराम नॅनप्पॅय रीन्दन नन्रे 297

करा मलैय–मगर के लड़ने से; तळर्–शिथिल हुए; कै किरि–गिरि सम गज; ऍय्त्तु–समझ-बूझकर; अरा अणै तुयिलवोय् ऍन–शेष-शय्या पर सोनेवाले, ऐसा पुकारने पर; अ नाळ्–उस दिन; विरावि–आकर; अळित्तरुळ–बचाया जिन्होंने उनको; एय्–योग्य रहनेवाले; इरामन् ऍन् अ पॅयर् ईन्ततन्–श्रीराम का वह नाम रखा। २९७

'शेष-शायी!' पुकारने पर जिन्होंने आकर, मगर-ग्रस्त और निर्बल हुए गजेन्द्र की रक्षा की थी उन्हीं के अवतार हैं—यह समझकर उन्होंने कौशल्या के पुत्र का श्रीराम का नाम धरा। २९७

करदल मुर्रॉळिर् नॅल्लि कडुप्प, विरद मर्रॅप्पॉरुण् मॅय्न्नॅरि कण्ड
वरद नुदित्तिडु मर्रैय वॉळियैप्, परद नॅनप्पॅयर् पन्नित नन्रे 298

विरतम् मर्रै पॉरुळ–यज्ञ-बोधक वेदों का अर्थ; करतलम् उर्रु ऑळिर्–करतल में साफ दिखनेवाले; नॅल्लि कटुप्प–आमलक के समान; कण्ट–(जिन्होंने) जाना था, उन; वरतन्–वरदायी ने; उतित्तिटुम्–उदित; मर्रैय–दूसरे; ऑळियै–प्रकाश-पुंज को; परतन् ऍन–भरत का; पॅयर् पन्नितन्–नाम दिया। (अन्रु, ए, निरर्थक ध्वनियाँ)। २९८

वसिष्ठ जी यज्ञादि कर्मों के विधायक वेदों के अर्थ को करतलामलक-वत जानते थे। अतः उन्होंने श्रीराम के जन्म के बाद पैदा हुए कैकेयी देवी के पुत्र को भरत नाम दिया। २९८

उलक्कुनर् वञ्जह रुम्ब रुयर्न्दार्, निलक्कॉडि युन्दुयर् नीत्तन ळिन्द
विलक्करु मोय्म्बिन् विळड्गॉळि नामम्, इलक्कुव नॅन्न विशैत्तन नन्रे 299

वञ्चकर् उलक्कुनर्–वंचक (राक्षस) मरनेवाले हो गये; उम्पर् उयर्न्तार्–देव उठे हुए (चिन्ताहीन) हो गये; निलम् कॉटियुम्–भूदेवी ने भी; तुयर् तीर्त्तनळ्–दुख त्याग दिया; विलक्क अरु–दुद्धर्ष; मॉय्म्पिन्–बली; इनृत विळक्कु ऑळि–

इस प्रकाशमान ज्योति-पुंज का; नामम्–नाम; इलक्कुवन्–लक्ष्मण है; अॅन्न–ऐसा; इचैत्ततन्–बतलाया (महर्षि ने)। २९९

राक्षसों का नाश निकट आ गया। अब देवगणों के दिन फिर गये। भूमिदेवी भी दुख-विमुक्त हुई। ऐसी स्थिति के लिये हेतु बनने वाले थे सुमित्रादेवी के पहले पुत्र, वसिष्ठ जी ने उन ज्योति-स्वरूप सुन्दर पुत्र को लक्ष्मण कहकर पुकारा। २९९

मुत्तुरुक् कॉण्डुशॅम् मुळरि यलरन्दाल्
ऑत्तिरुक् कुम्मॅळि लुडैयविव् वॉळियाल्
अॅत्तिरुक् कुड्गॅडु मॅन्बदै यॅण्णाच्
चत्तुरुक् कन्नॅन्च् चार्त्तिन नामम् 300

मुत्तु उरु कॉण्टु–मोती ने एक रूप धरा; चॅम्मुळरि–लाल कमल; अलर्न्ताल्–उस पर खिले; ऑत्तु इरुक्कुम्–वैसा रहनेवाली; ऍळिल्–सुन्दरता से युक्त; इ ऑळियाल्–इस ज्योति से; अॅ तिरुक्कुम् कॅटुम्–कोई भी शत्रु मिट जायगा; ऍन्पतै–इसको; ऍण्णा–मन में सोचकर; चत्तुरुक्कन् ऍन्न–शत्रुघ्न का; नामम् चार्त्तिनन्–नामकरण किया। ३००

उनके भाई भी बड़े सुन्दर ही नहीं, पराक्रमी भी दिखते थे। समझिये कि एक मोती ने सुन्दर शिशु का रूप लिया और उस पर लाल कमल के फूल खिले हैं। उस मोती के समान थे वह तेजोमय पुत्र। लक्षण ऐसे थे कि कोई भी शत्रु बच नहीं सकता था। इसलिए महर्षि ने उनका नामकरण 'शत्रुघ्न' किया। ३००

पॉय्वळि यिन्मुनि पुहऴरु मऱैयाल्, इव्वळि पॅयर्ह ळिशैत्तुळि यिरैवन्
कैवळि निदियॅनु नदिहलै मऱैयोर्, मॅय्वळि युवरिनि ऱैत्तन मेन्मेल् 301

पॉय्वळि–असन्मार्ग; इल् मुनि–(जिनका कभी) नहीं, वे मुनि; पुकल् तरु मऱैयाल्–सुप्रकीर्तित, वेद-मन्त्रोच्चारण के साथ; इ वळि पॅयर्कळ्–ऐसे नाम; इचैत्तुळि–जब रखे; इऱैवन्–चक्रवर्ती के; कैवळि निति अॅनुम् नति–हाथों द्वारा दान की हुई निधिरूपी नदियाँ; कलै मऱैयोर्–शास्त्रज्ञ वेदपाठियों के; मॅय् वळि उवरि–तत्वार्थ भरे (उनके) मनरूपी सागर को; मेल् मेल् निऱैत्तन–उत्तरोत्तर भरने लगीं। ३०१

महर्षि वसिष्ठ ने, जो भूलकर भी असत्याचरण नहीं करते थे, वेदोच्चारण के साथ (या वेद-विहित रीति से) राजकुमारों का नामकरण-संस्कार किया। तब राजा ने वेदशास्त्रियों को अर्थ (धन) दान दिया। अर्थ-दान क्या था, वह तो नदी थी जो ब्राह्मणों के हाथों से होकर बही और उसने उनके सच्चे अर्थों (तात्विक ज्ञान) से भरे मन को और भी पूरा किया। ३०१

कावियु मॉळिर्तरु कमलमु मॅन्तवे, ओविय वॅळ्ळिलुडै यॊरुवनै यलदोर्
आवियु मुडलमु मिलर्देन वरुळिन्, मेविन नुलहुडै वेन्दर्तम् वेन्दन् 302

उलकु उटैय–संसार को अपने अधीन रखनेवाले; वेन्तर्तम् वेन्तन्–राजाओं के राजा (ने); कावियुम्–कुवलय और; ऑळितरुम् कमलमुम् ॲन्न–(उनके मध्य) शोभायमान कमल हैं, ऐसे सुदर्शन; ओवियम् ॲळ्िल् उटैय–चित्र की सी सुन्दरता से युक्त; ऑरुवनै अलतु–अनुपम उनको (श्रीराम को) छोड़; ओर आवियुम् उटलमुम् इलतु–कोई प्राण नहीं, शरीर नहीं, ऐसा; अरुळिन् मेविनन्–प्रेम के साथ रहे। ३०२

नीलोत्पल और कमल पुष्पों के जमघट के समान और सुन्दर चित्र-सम रहे श्रीराम पर राजा दशरथ इतना प्रेम रखते थे मानों श्रीराम को छोड़ उनके अपने अलग प्राण या शरीर नहीं हों। ३०२

अमिर्दुहु कुदलैयॊ डणिनडै पयिलात्, तिमिरम तऱवरु तिनकर नॅनवुम्
तमरम दुडन्वळर् चतुमऱै यॅनवुन्, कुमरर्ह ळिलमहळ् कुऱैवऱ वळर्नाळ् 303

कुमरर्कळ्–कुमार; अमिर्तु उकु–अमृत उड़ेलनेवाली; कुतलैयॊटु–तुतली बोलियों के साथ; अणि नटै पयिला–सुन्दर लड़खड़ाती चाल (में चलने) का अभ्यास करते हुए; तिमिरम् अतु अऱ वरु–अन्धकार दूर करते आनेवाले; तिनकरन् ॲन्नवुम्–दिनकर के समान और; तमरम् अतु वळर्–(मौखिक रूप से) ध्वनि द्वारा ही बढ़नेवाले; चतुमऱै ॲन्नवुम्–चार वेदों के समान; निलमकळ् कुऱैवऱ–भूदेवी की चिन्ताएँ दूर करते हुए; वळर् नाळ्–जब बढ़ रहे थे उन दिनों। ३०३

वे राजकुमार अमृत-सम तोतली बोलियाँ बोलते हुए और सुन्दर अस्थिर चाल से चलना सीखते हुए, तिमिर-नाशक सूर्य के समान और "स्वरों" के साथ (श्रवण द्वारा) बढ़नेवाले चतुर्वेद के समान बढ़ने लगे। ३०३

चवुळमॊ डुपनय नमुमुऱै तरुहुऱ्, ऱिवळव दॆन्नवॊरु करैपिऱि दिलवाय्
उवळरु मऱैयिनॊ डॊळिवरु कलैयुम्, तवण्मदि पुनैयऱ निहर्मुनि तरवे 304

तवळ् मति पुनै–धवलचन्द्र-धर; अरन् निकर् मुनि–हर देव के सदृश; मुनि–मुनि (वसिष्ठ) ने; चवुळमॊटु–चूड़ाकरण के साथ; उपनयनमुम्–उपनयन संस्कार भी; मुऱै तरुकुऱ्ऱु–क्रम से कराकर; ऑरु करै पिऱितु इल आय्–सीमा रहित हो; उवळ्–विस्तृत; अरु मऱैयिनॊटु–उत्तम वेदों के साथ; ऑळिवु अऱु कलैयुम्–हितकारिणी अन्य विद्याएँ भी। ३०४

धवल-चन्द्र के धारण करनेवाले हरदेव-सदृश वसिष्ठ जी ने राजकुमारों के चूड़ाकरण, यज्ञोपवीत आदि संस्कार कराये। बाद अनन्त-विस्तृत वेदों का अभ्यास कराया। और अन्य आवश्यक विद्यायें भी सिखायीं। ३०४

यानैयु मिरदमु मिवुळियु मुदला, एनैय पिऱवुमव् वियल्विनि नडैवुऱ्
ऱुनुरु पडैपल शिलैयॊडु पयिला, वानवर् तनिमुदल् किळैयॊडु वळर 305

यानैयुम्–गज सवारी; इरतमुम्–रथ सारथ्य; इवुळियुम्–अश्वारोहण; मुतला एनैय–आदि, और ऐसी; पिऱवुम्–अन्य विद्याओं में; अ इयलपिनिन् अटैवु उऱ्ऱु–यथाक्रम सिद्धहस्त होकर; ऊन् उरु पटै–शत्रु-शरीर पर चुभनेवाले हथियार; पल–अनेक; चिलैयोटु–धनुर्विद्या के साथ; पयिन्ऱु–अभ्यास कर; वानवर तनिमुतल्–देवों के आदि हेतु (परम पुरुष); किळैयोटु वळर–अपने भाइयों के साथ बढ़ते रहे। ३०५

आदिदेव (के अवतार) श्रीराम ने गज, रथ, अश्व (आरोहण) और अन्य विद्याओं में यथा-विधि दक्षता प्राप्त कर ली। शत्रु-मांस-भक्षी अनेक हथियारों को चलाने की विद्या और धनुर्विद्या का भी अभ्यास करते हुए वे अपने भ्राताओं के साथ बढ़ रहे थे। ३०५

अरुमऱै मुनिवरु ममररु मवनित्, तिरुवुम नहरुऱै चॅनमुन मिडरो
डिरुविनै तुणितरु मिवर्हळि निवणित्, रॉरुपॉऴ्ु दहल्हिल मुरैयॅन वुरुवार् 306

अरु मऱै मुनिवरुम्–उत्तम वेदों के ज्ञाता मुनि और; अमररुम्–देव (और); अवनि तिरुवुम्–भूदेवी; इ नकर् उऱै चॅनमुम्–इस नगर में रहनेवाले जन भी; नम् इटरोटु–हमारे दुखों के साथ; इरु विनै–दोनों कर्म; इवर्कळिन् तुणि तरुम्–इनके द्वारा काटे जायँगे; इवण् निन्ऱु–यहाँ से; ऑरु पॉऴुतु–कभी भी; उऱै अकल्किलम्–रहना छोड़ेंगे नहीं; ॲन–ऐसा (निश्चय कर); उरुवार्–(वहीं) रहते हैं। ३०६

वेदज्ञ मुनि, अमर, भूदेवी और नगर के प्रजाजन सब यह विचार कर कि इन राजकुमारों के सान्निध्य से हमारे दुख और दुखों के कारणभूत कर्म कट जायेंगे; हम यहाँ से नहीं हटेंगे! निश्चिन्त रह गये। ३०६

ऐयनु मिळवलु मणिनिल महडन्, शॅय्दव मुडैमैह डॅरिदर नदियुम्
मैदवळ् पॉऴिल्हळुम् वावियु मरुवि, नॅय्हुळ लुरुमिऴै यॅननिलै तिरिवार् 307

ऐयनुम्–प्रभु और; इळवलुम्–अनुज; अणि निल मकळ् तन्–सुन्दर भूदेवी की; चॅय् तवम् उटैमैकळ्–की हुई तपस्या का अस्तित्व; तॅरि तर–सब पर प्रकट करते हुए; नतियुम्–नदियों पर; मै तवऴ् पॉऴिल्कळुम्–मेघ-संचरित उपवनों में; वावियुम्–तालाबों में; मरुवि–मिले-जुले; नॅय् कुऴल् उरुम्–बुनने की ढरकी में पड़े; इऴै ॲन–सूत के समान; निलै–पृथ्वी पर; तिरिवार्–घूमते रहे। ३०७

प्रभु श्रीराम और उनके लघुभ्राता लक्ष्मण नदियों के तटों पर, मेघ-संचरित उपवनों में और तालाबों के पास, ढरकी के तागे के समान, साथ-साथ घूमते दिखाई देते थे। उस दृश्य से यह प्रमाणित और प्रकट होता था कि पृथ्वी देवी ने बहुत अधिक तपस्या की थी। ३०७

परदनु मिळवलु मॉरुनॊडि पहिरा, तिरदमु मिवुळियु मिवरिनु मऱैनूल्
उरैतरु पॉऴुदिनु मॉऴिहिल रॅनैयाळ्, वरदनु मिळवलु मॅनमरु विनरे 308

परतनुम् इळवलुम्–भरत और उनके लघु भाई (शत्रुघ्न); ऑरु नॊटि पकिरातु–एक क्षण भी, अलग न होकर; इरतमुम् इवुळियुम्–रथ और अश्व (पर);

इवरितुम्–सवारी करते समय भी; मरै नूल् उरै तरु पॉळुतिलुम्–वेद शास्त्रार्थ सीखते समय भी; ऑळिकिलर्–अपृथक; अँतै आळ् वरतनुम्–मेरे स्वामी वरद (प्रभु श्रीराम) और; इळवलुम्–लघु भ्राता; अँत–समान; मरुवितर्–संयुक्त रहे। ३०८

उधर भरत और शत्रुघ्न भी इन्हीं भाइयों के समान सदा अपृथक (साथ-साथ) रहते थे। चाहे रथ या अश्व चालन का समय हो, या वेदशास्त्राध्ययन का; एक क्षण भी वियुक्त नहीं होते थे। ३०८

वीरनु मिळैञरुम् वॅऱिपॉळिल् कळिन्वाय्
ईरमॉ डुरैदरु मुनिवर रिडैपोय्च्
चीर्पॉळु दणिनहर् तुरुहुव रॅदिर्वार्
कार्वर वलर्पयिर् पॉरुवुवर् कळियाल् 309

वीरनुम्–वीर (श्रीराम) और; इळैञरुम्–उनके छोटे भाई; वॅऱि पॉळिल् कळिन् वाय्–सुगन्धपूर्ण उपवनों में; ईरमॉटु उरै तरु–स्नेह के साथ ठहरनेवाले; मुनिवरर् इटै पोय्–मुनियों के पास जाकर; चोर् पॉळुतु–(वहाँ रहकर) सूर्यास्त के समय; अणिनकर् तुरुकुवर्–सुन्दर नगर लौट आ जाते; अँतिर्वार्–समक्ष मिलनेवाले; कळियाल्–आनन्द से; कार् वर–मेघ के आगमन से; अलर् पयिर्–पनपनेवाले पौधों की; पोरुवुवार्–समानता करते। ३०९

ये पराक्रमी श्रीराम और उनके भाई सवेरे उन दयापूर्ण ऋषियों के पास जाते जो सुगन्धपूर्ण उपवनों (आश्रमों) में रहते थे और उनके सत्संग का लाभ उठाकर सूर्यास्त के समय लौट आते थे। रास्ते में जो भी उनके समक्ष मिलते वे मेघों को देखकर प्रफुल्लित होनेवाले पौधों के समान (आनन्दित हो) जाते थे। ३०९

एळैय रनैवरु मिवर्तड मुलैतोय्, केळ्हिळर् मदुहयर् किळैहळु मिळैयार्
वाळिय रॅनवर् मननुरु कडवुळ्, ताळ्हुवर् कवुशलै तयरद नॅनवे 310

एळैयर् अनैवरुम्–स्त्रियाँ, सभी; इवर् तट मुलै तोय्–इनके पीन स्तनों के भोगी; केळ् किळर्–खूब प्रवृद्ध; मतुकैयर् किळैकळुम्–बलशाली पुरुषों के समूह भी; कवुचलै तयरतन् अँत–कौसल्या और दशरथ के समान; इळैयार् वाळियर् अँत–ये कुमार चिरजीव हों, ऐसा; अवर् मनन् उरु कटवुळ्–अपने इष्टदेवों से; ताळ्कुवर्–नमस्कार कर (प्रार्थना करते)। ३१०

नगर की सभी स्त्रियाँ और उनके सुडौल स्तनों के भोगी पुरुष कौशिल्या और दशरथ के ही समान अपने इष्टदेवता से यह प्रार्थना करते कि ये राजकुमार चिरंजीव हों। ३१०

कडल्करु मुहिलॉळिर् कमलम दलरा, वडवरै युडन्वरु शॅयलॅन मरैयुम्
तडवुद लरिवरु तनिमुद लवनुम्, पुडैवरु मिळवलु मॅन्निहर् पुहल्वार् 311

मरैयुम्–वेदों के लिए; तटवुतल् अरिवु अरु–स्पर्श (प्रत्यक्ष) ज्ञान-अगम्य (अगोचर); तनि मुतल्वनुम्–अकेले (अद्वितीय) नायक और; पुटै वरुम् इळवलुम्–

पार्श्व में आनेवाले छोटे भाई; कटल्–समुद्र; करुमुकिल्–काले मेघ; ऑळिर् कमलम् अतु–सुन्दर कमल; अलरा–खिले फूलों के साथ; वट वरै उटन् वरु चॅयल्–उत्तरी पर्वत मेरु के साथ आने का काम; ॲन्न–ऐसा; निकर् पुकल्वार्–समानता बतलाते। ३११

वेदों के लिये भी अग्राह्य श्रीराम और लक्ष्मण को साथ-साथ आते हुए देखनेवाले लोग उपमा ढूँढ़ते और कहते कि विकसित कमलों से भरकर नीला सागर और श्यामल मेघ उत्तर के (मेरु) पर्वत के साथ मिलकर आ रहे हैं। ३११

ॲदिर्वरु मवर्हळै यॅमैयुडै यिऱैवन्, मुदिर्तरु करुणैयिन् मुहमल रॉळिर
ॲदुविनै यिडरिलै यिनिदुनु मनैयुम्, मदितरु कुमररुम् वलियर्कॉ लॅनवे 312

ॲमै उटै इऱैवन्–(मुझे अपना किंकर रखनेवाले) मेरे नायक; ॲतिर् वरुम् अवर्कळै–सामने आनेवाले उनको; मुतिर् तरु करुणैयिन्–अत्यन्त करुणा के साथ; मुकम् मलर् ऑळिर–मुख-कमल छिटकाते हुए; ॲतु विनै–क्या सेवायोग्य काम है; इटर् इलै–कोई कष्ट तो नहीं; नुम् मनैयुम्–आपकी पत्नियाँ और; मति तरु कुमररुम्–बुद्धिमान पुत्र; इनितु वलियर् कॉल्–दृढ़-स्वस्थ रहते हैं न; ॲन्न–यह पूछने पर। ३१२

हमारे नाथ श्रीराम अपने समक्ष मिलनेवालों से, बड़ी ही कृपा के साथ प्रफुल्ल-वदन होकर पूछते कि क्या कोई सेवा है जो मैं कर सकूँ? कोई कष्ट तो नहीं है ? आपकी पत्नी और होनहार (बुद्धिमान) पुत्र सुदृढ़ स्वस्थ हैं ? तब; । ३१२

अ.ः.दैय निन्नैयॅम दरशॅन्न बुडैयेम्, इ.ः.दॉरु पॉरुळल वॅमदुयि रुडनेळ्
महिदल मुळुदैयु मुरुहवि मलरोन्, उहुबह लळवॅन्न वुरैनन्नि पुहल्वार् 313

ऐय–प्रभु; अ.ः.तु–वह वैसा ही; निन्नै ॲमतु अरचु ॲन उटैयोम्–आपको हमने राजा के रूप में पाया है; इ.ः.तु–यह (कष्ट रहित रहना); ऑरु पॉरुळ् अल–कोई बात नहीं; ॲमतु उयिरुटन्–हमारे प्राणों के साथ; एळ् मकितलम् मुळुतैयुम्–सप्तद्विपीय भूलोक को; इ मलरोन् उकु पकल् अळवु–इन कमलासन (ब्रह्मा) के नाश होते दिन तक; उरुक–शासित करते रहें; ॲन्न–ऐसा; नन्नि उरै–अच्छा उत्तर; पुकल्वार–कहते। ३१३

वे समुचित उत्तर देते कि नाथ ! वैसे ही हैं। आपको शासक के रूप में पाने का हमारा भाग्य रहा। फिर इसका (कष्टभागी होने का) कोई प्रश्न ही नहीं (उठता) ! आप हमारे प्राणों और सप्तद्वीपीय इस महीतल पर ब्रह्मा के आयुकाल तक शासन करते रहें। ३१३

इप्परि शणिनह रुऱैयुम् यावरुम्, मॅय्प्पहळ् पुन्नैदर विळैय वीररुम्
तप्पऱ वडिमलर् तळुवि येत्तुड, मुप्परम् बॉरुळिनु मुदल्वन्न वेहुरुम् 314

मून्ऱु परम् पॉरुळिन्म्–तीनों परम देवों में; मुतल्वन्–प्रथम; इ परिचु–

इस प्रकार; अणि नकर्–सुन्दर नगर में; उरैयुम्–वास करनेवाले; यावरुम्–सभी; मॅय् पुकऴ्–सच्चा यश; पुनै तर–बखानते; इळैय वीररुम्–छोटे (भाई) वीर; अटि मलर्–चरण कमल; तऴुवि एत्तुर–लगकर स्तुति करते; वैकु उरुम्–वास करते थे । ३१४

इस प्रकार, सुन्दर अयोध्या नगर के सब वासियों द्वारा यथार्थ-स्तुति के पात्र बने, और अपने प्रतापी अनुजों की अपनी चरण-कमल वन्दना स्वीकार करते हुए तीनों आदिदेवों के आदि, परब्रह्म (के अवतार) श्रीराम सुख से जीवनचर्या चला रहे थे । ३१४

6. कैयडैप् पडलम् (हस्त घरन पटल)

अरशर्तम् बॅरुमह नहिलम् यावैयुम्, विरशुरु तनिक्कुडै विळङ्ग वॅन्ऱिशेर्
मुरशॊलि करङ्गिड मुनिव रेत्तुरक्, करैशॅय वरियदोर् कळिप्पिन् वैहुनाळ् 315

अरचर् तम् वॅरु मकन्–राजाधिराज; अकिलम् यावैयुम्–भूलोक सब में; विरचु उरु–व्याप्त; तनि कुटै–अकेला छत्र; विळङ्क–शोभायमान होते; वॅन्ऱि चेर्–विजयवाहक; मुरचु–नगाड़े के; ऑलि करङ्किट–स्वर के उठ फैलते; मुनिवर् एत्तु उर–मुनियों के प्रशंसा करते; करै चॅय अरियतु–अपार; ओर् कळिप्पिन्–अकथ आनन्द में; वैकुम् नाळ्–जब रहते थे तब । ३१५

राजाधिराज दशरथ समस्त विश्व को अपने सुयोग्य श्वेत-छत्र की छाया में सुरक्षित रखते हुए, विजयशील नगाड़ों के समुचित वादन के साथ, मुनियों द्वारा अपनी स्तुति सुनाते जाते हुए (साधुवाद के पात्र बनकर) अपार आनन्दमय स्थिति में रहते थे । तब एक दिन; । ३१५

❀ ननैवरु करपह नाट्टु नन्नहर्, वनैतॊऴिन् मदिमिहु मयर्कुम् जिन्तैयाल्
निनैयवु मरियदु विशुम्बि नीण्डदोर्, पुनैमणि मण्डवम् बॊलिय वॅय्दिनान् 316

ननैवरु–कलियों से पूर्ण; करपकम् नाटु नल् नकर्–कल्पतरुओं से शोभायमान श्रेष्ठ नगर (अमरावती) के; वनै तॊऴिल् मति मिकु–वास्तु-विद्या-विदग्ध; मयर्कुम्–मय के लिये भी; चिन्तैयाल् निनैयवुम् अरियतु–अचिन्त्य (रीति से सुन्दर); विचुम्पिन्–आकाश से बढ़कर; नीण्टतु–ऊँचा; ओर् मणि पुनै मण्टपम्–एक रत्न-शोभित सभा भवन को; पॊलिय ॲय्तिनान्–सुशोभित करते हुए पधारे । ३१६

वे अपने सभा-भवन में उसको सुशोभित करते हुए आये । वह सभा-भवन आकाश से भी ऊँचा और रत्नों की सजावट से युक्त था । उसका निर्माण इतने कलाकौशल के साथ हुआ था कि स्वयं मय भी, जो नन्दनवन से युक्त अमरावती नगर के नगर, भवन आदि के निर्माण के कार्य में कुशल थे, अपने मन में इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे । ३१६

❀ तूयमॆल् लरियणॆप् पॊलिन्दु तोन्ऱिनान्
शॆयिरु विशुम्बिडॆत् तिरियुञ् जारणर्
नायह निवन्कॊलॆन् ऱयिर्त्तु नाट्टमोर्
आयिर मिल्लैयॆन् ऱैय नीङ्गिनार् 317

तूय मॆल् अरि अणै–पवित्र, कोमल, सिंहासन पर; पॊलिन्तु तोन्ऱिनान्–शोभित हुए; चेय् इरु–ऊँचे और विशाल, विचुम्पु इटै–आकाश में; तिरियुम् चारणर्–संचार करनेवाले देव-चारण (देवों के वर्गों में एक वर्ग के); इवन् नायकन् कॊल्–ये क्या हमारे अधिपति हैं; ऍन्ऱु–ऐसा; अयिर्त्तु–संशय करके; नाट्टम् ओर् आयिरम् इल्लै–आँखें, एक सहस्र नहीं हैं; ऍन्ऱु–यह देख; ऐयम् नीङ्किनार्–सन्देह-विमुक्त हुए। ३१७

राजा दशरथ पवित्र और कोमल (गद्दीदार) सिंहासन पर सुशोभित हुए। तब आकाशचारी देव-चारणों को यह संशय होने लगा कि क्या ये हमारे स्वामी देवेन्द्र तो नहीं हैं? पर बाद देखा कि उनके सहस्र नयन नहीं हैं। तब उनका संदेह दूर हुआ। ३१७

❀ मडङ्गल्पोल् मॊय्म्बिनान् मुन्नर् मन्नुयिर्
अडङ्गलु मुलहुम्वे ऱमैत्तुत् तेवरो
डिडङ्गॊणान् मुहनैयुम् पडैप्पॆ नीण्डॆन्नात्
तॊडङ्गिय तुनियुरु मुनिवन् ऱोन्ऱिनान् 318

मटङ्कल् पोल् मॊय्म्पिनान्–सिंह सदृश बलिष्ठ; मुन्नर्–के समक्ष; मन् उयिर् अटङ्कलुम्–जीवराशियाँ सभी; उलकुम्–लोक; वेऱु अमैत्तु–अलग सृष्ट कर; इटम् कॊळ् नान्मुकनैयुम्–(उन्नत गौरव के) आश्रय चतुर्मुख को भी; पटैप्पॆन्–सृष्टि कर दूँगा; ईण्टु ऍन्ना–अब, यह कहकर; तॊटङ्किय–जिन्होंने आरम्भ किया वे; तुनि उऱु मुनिवन्–क्रोधी मुनि (विश्वामित्र); तोन्ऱिनान्–आ प्रकट हुए। ३१८

सिंह-बली उनके सामने क्रोधी स्वभाव के विश्वामित्र आकर प्रकट हुए। इन्हीं विश्वामित्र ने पहले कभी सभी जीवराशियों की और उनसे भरे लोक की अलग से सृष्टि करके, 'देवों की भी और चतुर्मुख की भी अब सृष्टि कर दूँगा—' यह कहकर उसका उपक्रम भी किया था। ३१८

❀ वन्दुमुनि यॆय्दुदलु मार्बिलणि यारम्
अन्दरत लत्तिरवि यञ्जवॊळि विञ्जक्
कन्दमल रिर्कडवु ळन्वरवु काणुम्
इन्दिरनॆ नक्कडितॆ ळुन्दडिप णिन्दान् 319

मुनि वन्तु ऍय्तलुम्–मुनि के आ पहुँचते ही; मार्पिल् अणि आरम्–वक्ष पर पहने हुए हारों के; अन्तर तलत्तु इरवि अञ्च–गगन प्रदेश के रवि को डराते हुए (रवि के प्रकाश से बढ़कर); ऒळि विञ्च–प्रकाश छिटकाते; कन्तम् मलरिल् कटवुळ्तन्–सुवासपूर्ण (कमल) पुष्प पर उदित देव का; वरवु काणुम्–आगमन

देखकर; इन्तिरन् ॲन्न–इन्द्र जैसा; कटितु ॲळुन्तु–सवेग उठकर; अटि पणिन्तान्–चरणों में नमस्कार किया। ३१९

विश्वामित्र के आते ही राजा कमलासन को देख इन्द्र जैसे तुरन्त उठे। उनके वक्षस्थल-भूषी हार सूर्य को भी डराते हुए (प्रकाश को मन्द करते हुए) हिलकर चमक उठे। वे विश्वामित्र के पैरों पर नत हुए। ३१९

*** पणिन्दुमणि शॅऱ्ऱुबु कुयिऱ्ऱियविर् पैम्बॊन्**
अणिन्ददवि शिट्टिनि दरुत्तियॊ डिरुत्ति
इणैन्दहम लच्चरण रुच्चनैशॅय् दिन्ऱे
तुणिन्ददॆन् विनैत्तॊड रॆन्नत्तॊऴुदु शॊल्लुम् 320

पणिन्तु–नमस्कार करके; मणि चॅऱ्ऱुपु कुयिऱ्ऱु–रत्नों को घने रूप से जड़कर; अविर् पैम्पॊन् अणिन्त–चोखे स्वर्ण (की कारीगरी) से युक्त तविचु इट्टु–आसन लगवाकर; इनितु अरुत्तियॊटु इरुत्ति–सुखपूर्वक, प्रेम के साथ आसीन कराकर; इणैन्त–जोड़े के; कमलम् चरण्–कमल चरणों की; अरुच्चनै–पूजा; चॅय्तु–करके; ॲन् विनै तॊटर्–मेरी कर्म परम्परा; इन्ऱे तुणिन्ततु–आज ही टूट गया; ॲन्न–ऐसा; तॊऴुतु–अंजलिबद्ध होकर; चॊल्लुम्–कहा। ३२०

नमस्कार करके, राजा ने खूब रत्नों से सज्जित एक स्वर्णमयी आसन लगाया और उस पर उनको सुख के साथ आसीन कराया। फिर उनके चरणद्वय में फूल-पूजा की। 'मेरा कर्म-वन्धन आज ही टूट गया' —यह कहते हुए अंजलिबद्ध हो आगे बोले। ३२०

**** निलञ्जॅय्दव मॆन्ऱुणरि नन्ऱुनॆडि योयॆन्**
नलञ्जॆय्विनै युण्डॆनिनु मन्ऱुनहर् नीयान्
वलञ्जॆय्दु वणङ्गवॊळि वन्दविदु मुन्दॆन्
कुलञ्जॆय्दव मॆन्ऱिनिदु कूऱमुनि कूऱुम् 321

नॆटियोय्–महात्मन्; नी–आप; यान् वलम् चॅय्तु वणङ्क–मैं परिक्रमा करके नमस्कार करूँ, ऐसा (यह सौभाग्य देते हुए); नकर्–इस नगर में; ॲळिवन्त इतु–सुगम रूप से पधारे, यह; निलम् चॅय्–देश का किया; तवम् ॲन्ऱु–तप है, यह; उणरिन्–मानें तो; अन्ऱु–ऐसा नहीं; ॲन् नलम् चॅय् विनै–मेरा हितकारी कृत्य; उण्टु ॲनिनुम्–है, तो भी; अन्ऱु–वह भी नहीं, (फिर); मुन्तु ॲन् कुलम्–प्राचीन मेरे कुल के; चॅय् तवम्–कृत तप हैं; ॲन्ऱु–ऐसा; इनितु कूऱ–मीठे ढंग से कहने पर; मुनि कूऱुम्–मुनि ने कहा। ३२१

महात्मन्! आप स्वयं, मेरे लिये आपकी परिक्रमा और प्रणमन सुलभ बनाते हुए अनायास पधारे हैं। इस भाग्य का हेतु, मेरे देश का किया तप है—यह कहूँ तो वह नहीं है। मेरा किया हितकारी पुण्य है? वह भी नहीं। पर मेरे प्राचीन कुल के पूर्वजों के किये सुकृत्यों का ही यह फल है! ये मधुर शिष्टता के वचन सुनकर मुनि ने यों कहा। ३२१

❀ ॲन्ननैय मुनिवर्हळु मिमैयवरु मिडैयूरॊन् ऱुडैय रानाल्
पन्नहमु नहुवॆळ्ळिप् पनिवरैयुम् पार्कडलुम् पदुम् पीडत्
तन्नहरुङ् गर्पहनाट् टणिनहरु मणिमाड वयोत्ति ॲन्नुम्
पॊन्नहरु मल्लादु पुहलुण्डो दिहल्हडन्द पुलवु वेलोय् 322

इकल् कटन्त–शत्रु संहारक; पुलवु वेलोय्–मांस-लिप्त भालेवाले; ॲन् अनैय मुनिवर्कळुम्–मेरे समान मुनि और; इमैयवर्कळुम्–देव भी; इटैयूरु–बाधा; ऒन्रु–कोई एक; उटैयर आनाल्–पा जावे तो; पल्नकमुम् नकु–अनेक पर्वतों का उपहास करनेवाले; पनि वॆळ्ळि वरैयुम्–हिम-श्वेत (कैलाश) पर्वत; पाल् कटलुम्–क्षीरसागर; पतुमम् पीटत्तिन्–पद्मासन का; नकरुम्–नगर व; कर्पकम् नाटु अणि नकरुम्–कल्प-तरुओं से शोभायमान (अमरावती) नगर; मणि माटम् अयोत्ति–रत्न-जड़ित प्रासादोंवाला; अयोत्ति ॲन्नुम् पॊन् नकरुम्–अयोध्या नाम का स्वर्ण-नगर; अल्लातु–के सिवाए; पुकल् उण्टो–शरण पाने का स्थान (दूसरा) है क्या ? । ३२२

शत्रु-संहारक मांस-वासित भालावाले ! मेरे समान ऋषियों पर और अमरों पर कोई संकट आवे तो, उनका दूसरा आश्रय कहाँ, सिवाय पर्वतों में श्रेष्ठ कैलाश, क्षीरसागर, ब्रह्मा का नगर, नन्दनवनवाली अमरावती और रत्नसज्जित सौधोंवाली अयोध्या—इनके ? । ३२२

❀ इन्रळिर्क्कर् पहनरुन्दे निडैतुळिक्कु निळलिरुक्कै यिळन्दु पोन्दु
निन्रळिक्कुन् दनिक्कुडैयि निळलॊदुङ्गिक् कुरैयिरन्दु निऱ्प नोक्किक्
कुन्रळिक्कुङ् गुलमणित्तोट् चम्परनैक् कुलत्तोडुन् दॊलैत्तु नीकॊण्
डन्रळित्त वरशन्रो पुरन्दरनिन् ऱाळ्हिन्र दरश वॆन्रान् 323

अरच–चक्रवर्ती; पुरन्तरन्–इन्द्र; इन् तळिर् कर्पकम्–मधुर पल्लवों से युक्त कल्पक तरुओं का; नरु तेन्–सुगन्धपूर्ण शहद; इटै तुळिक्कुम्–जिसके ऊपर यत्र-तत्र टपकता है उस; निळल्–छाया में; इरुक्कै इळन्तु–वास खोकर; पोन्तु–आकर; निन्रु अळिक्कुम्–एकरस रहकर लोक-पालन करनेवाले; तनि कुटै निळल्–अकेले आपके छत्र की छाया में; ऒतुङ्कि–त्राण पाकर; कुरै इरन्तु निऱ्प–अपनी प्रार्थना करते हुए खड़े रहने पर; नी आप; नोक्कि–देखकर; कुन्रु अळिक्कुम्–पर्वत-सम; कुलम् मणि तोळ्–श्रेष्ठ रत्नाभरणालंकृत कन्धोंवाले; चम्परनै–शंबरासुर को; कुलत्तोटुम् तॊलैत्तु–कुल के साथ नाश कर; कॊण्टु–इन्द्रलोक लौटा ले; अन्रु अळित्त–उस दिन (इन्द्र को) जो दिया; अरचु अन्रो–वह राज्य ही न; इन्रु–आज; आळ्किन्रतु–(इन्द्र) शासन कर रहा है; ॲन्रान्–कहा । ३२३

चक्रवर्ती ! पुरन्दर को जब पल्लवित कल्पक तरुओं की शीतल छाया को, जिस पर उन तरुओं के फूलों का शहद टपकता था, छोड़कर, आपके पास आकर आपकी विश्वरक्षक छत्र-छाया में आश्रय लेना पड़ा और उन्होंने आपसे मिन्नत की, तब आपने ही पर्वत-सम और रत्नमंडित भुजा-वाले शंबरासुर को उसके कुल सहित मारकर इन्द्र का राज्य जीता और पुन: देवेन्द्र को दिया; वही राज तो आज इन्द्र पाल (भोग) रहे हैं । ३२३

❀ उरैशॆय्द वळविलवऩ् मुहनोक्कि युळ्ळत्ति ऩॊरुव रालुम्
करैशॆय्य वरियदॊरु पेरुवहैक् कडल्पॊरुहक् करङ्गळ् कूप्पि
अरशॆय्दि यिरुन्दबय ऩॆय्दिऩॆऩ्मऩ् ऱिऩिच्चॆय्व दरुळु हॆऩ्ऱु
मुरशॆय्दु कडैत्तलैयाऩ् मुऩ्मॊऴियप् पिऩ्मॊऴियु मुऩिव ऩाङ्गे 324

उरै चॆय्त अळविल्–यह कथन करते ही; मुरचु ऍय्तु–तीन नगाड़े जहाँ बजते हैं; कटै तलैयान्–वैसे नगरद्वार वाले; उळ्ळत्तिल्–अपने मन में; ऑरुवरालुम्–किसी के द्वारा भी; करै चॆय्य–ठीक वर्णन करने; अरियतु–अनर्ह; ऑरु पेर् उवकै–एक अतिशय आनन्द के; कटल् पॊरुक–सागर के उमड़ते; अवऩ् मुकम् नोक्कि–उनका मुख देखकर; करङ्कळ् कूप्पि–हाथ जोड़कर; अरचु ऍय्ति इरुन्त पयऩ्–राजपदस्थ हो रहने का फल; ऍय्तिऩॆऩ्–(आज) प्राप्त किया; इऩि–अब; चॆय्वतु अरुळुक–(जो) करना (चाहिये) उसकी आज्ञा कीजिये; ऍऩ्ऱु मुऩ् मॊऴिय–ऐसा उनके पहले कहने पर; आङ्कु–तब; मुऩिवऩ् पिऩ् मॊऴियुम्–पीछे (उत्तर में) मुनि कहने लगे। ३२४

उनके यह कहते ही, दशरथ के, जिनके गढ़ के द्वार पर (दान, मंगल और विजय के सूचक) तीनों प्रकारों के ढोल बजते थे, मन में अपार आनन्द का सागर उमड़ आया। उन्होंने महर्षि से अंजलिबद्ध होकर निवेदन किया कि मुझे अपने शासन-भाग्य का सच्चा फल आज ही प्राप्त हुआ। अब मैं आपकी क्या सेवा करूँ? आज्ञा कीजिये। जब उन्होंने यह उत्तरापेक्षी कथन किया तो ऋषि उत्तर में कहने लगे। ३२४

❀ तरुवऩत्तुळ् याऩियऱ्ऱुम् दहैवेळ्विक् किडैयूऱात् तवञ्जॆय् वोर्हळ्
वॆरुवरच्चॆऩ् ऱडैहाम वॆहुळियॆऩ निरुदरिडै विलक्का वण्णम्
शॆरुमुहत्तुक् कात्तियॆऩ निऩ्शिऱुवर् नाल्वरिऩुङ् गरिय शॆम्मल्
ऑरुवऩैत्तन् दिडुदियॆऩ वुयिरिरक्कुङ् गॊडुङ्गूऱ्ऱि ऩुळैयच् चॊऩ्ऩाऩ् 325

तरु–(साधना का फल) देनेवाले; वऩत्तुळ्–(सिद्ध) वन में; याऩ् इयऱ्ऱुम्–जो मैं करनेवाला हूं; तकै वेळ्विक्कु–श्रेष्ठ यज्ञ को; इटैयूऱा (क)–बाधा बनकर; तवम् चॆय्वोर् कळ् वॆरुवर–तप करनेवालों को दहलाते हुए; चॆऩ्ऱु अटै–जाकर, अभिभूत करनेवाले; कामम् वॆकुळि ऍऩ–काम और क्रोध के समान; निरुतर्–राक्षस; इटै विलक्का वण्णम्–बीच में आकर न रोकें, इस प्रकार; चॆरु मुकत्तु कात्ति ऍऩ–समरांगण में सामने रहकर बचाओ, यह आज्ञा देकर; निऩ् चिऱुवर् नाल्वरिऩुम्–आपके पुत्र, चार में; करिय चॆम्मल् ऑरुवऩै–श्यामल प्रभु उन अद्वितीय को; तन्तिटुति ऍऩ–मेरे साथ भेजिये यह; उयिर इरक्कुम्–जान की याचना करनेवाले; कॊटुम् कूऱ्ऱिऩ्–क्रूर यम के समान; उळैय–मन को उद्वेलित करते हुए; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ३२५

सिद्धवन में मैं एक यज्ञ करने जा रहा हूँ। तपस्वियों को भयभीत करनेवाले काम और क्रोध के समान राक्षस आकर उसमें बाधा डालेंगे। उनसे युद्ध करके यज्ञ की रक्षा करने की आज्ञा देकर, आप अपने चार

पुत्रों में श्यामरंग के प्रभु श्रीराम को मेरे साथ भेजिये। महर्षि ने यह बात कही तो ऐसा लगा कि मानों स्वयं यमराज दशरथ से प्राणों की मांग कर रहे हों। राजा का दिल दहल उठा। (सिद्ध वन को कवि ने 'तरु' वन कहा है। तरु का अर्थ तप, यज्ञ आदि का फल देनेवाला है और वृक्ष भी)। ३२५

❀ अॅण्णिला वरुन्दवत्तो नियम्बियशोन् मरुमत्ति नॅरिवेल् पायन्द
पुण्णिलाम् पॅरुम्पुळैयिऱ् कन्नुळैन्दा लॅनचचॅवियिऱ् पुहुद लोडुम्
उण्णिला वियतुयरम् पिडितुन्द वारुयिर्निन् ऱुश लाडक्
कण्णिलान् पॅऱ्ऱिऴन्दा नॅनवुळन्दान् कडुन्दुयरङ् गाल वेलान् 326

अॅण् इला—जिनकी गणना नहीं; अरु तवत्तोन्—कठिन तपस्वी; इयम्पिय चॉल्—कहे वचन; मरुमत्तिन्—मर्मस्थान (वक्षस्थल) में; अॅऱि वेल् पाय्न्त पुण्णिल्—फेंके भाले के द्वारा लगे घाव के कारण; आम्—बने; पॅरु पुळैयिल्—बड़े गड्ढे में; कतल् नुळैन्ताल् अॅन—जलती हुई लकड़ी घुसी हो जैसे; चॅवियिल्—कानों में; पुकुतलोटुम्—घुसते ही; कालन् वेलान्—मृत्यु (सम) भालावाले; उळ् निलाविय—अन्तर्व्याप्त; तुयरम्—दुख के; पिटित्तु उन्त—पकड़कर बाहर ढकेलने से; आर् उयिर्—प्यारे प्राणों के; निन्ऱु ऊचल् आट—आते-जाते (झूलते) रहते; कण् इलान्—दृष्टि से हीन; पॅऱ्ऱु—प्राप्त कर; इऴन्तान् अॅन—फिर खो दी, जैसे; कटु तुयरम्—कठोर दुख (से); उळन्तान्—पीड़ित हुआ। ३२६

अनन्त और कठिन तपस्वी महर्षि की यह बात राजा के कानों में ऐसी घुसी मानों मर्मस्थान में लगे भाले के बने गहरे घाव में जलती लकड़ी घुसी हो। उनके प्राण मानों उस दुख के द्वारा बाहर निकाले जाने लगे। सुध खोते, फिर पाते ऐसी स्थिति में बहुत दुख उठाने लगे। उनकी स्थिति उस जन्मांध की सी हुई जिसने एक बार दृष्टि पाकर फिर खो दी हो। ३२६

(मूल में 'अॅण्णिला' है जिसका विग्रह 'अॅण् इला' करके अर्थ किया गया है। पर अॅण् इला के स्थान पर 'अॅण् निलावु' भी किया जा सकता सकता है जिसका अर्थ होगा— 'स्मरण जिन में रहा'। तब अॅण् निलावु काल वेलान् होगा। यम सम भालावाले जिनमें इस बात का स्मरण रहा। 'पुत्रवियोग से आपकी मृत्यु होगी'—यह ऋषिशाप था। इसकी कहानी अयोध्याकाण्ड में आती है। वह शाप राजा को स्मरण रहा। इसलिए राजा दशरथ को यह डर हो गया कि तनय राम अलग हो जायँगे तो मेरा मरण निश्चित है। अतः उनका दुख अपार बढ़ गया।)

❀ तॉडॅयूऱ्ऱिऱ् ऱेन्ऱुळिक्कु नऱुन्दारा नॉरुवण्णन् दुयर नीङ्गिप्
पडॅयूऱ्ऱ मिलन्शिऱिय निवन्पॅरियॉय पणियिदुवेल् पनिनीर्क् कङ्गै

पुडैयूऱ्ऱुञ् जडैयानु नान्मुहनुम् बुरन्दरनुम् बुहुन्दु शॆय्युम्
इडैयूऱ्ऱुक् किडैयूऱा यान्काप्पॆन् पॆरुवेळ्विक् कॆळुह वॆन्ऱान् 327

तॊट्टयूऱ्ऱिन्—(माला में) पिरोये जाने के कारण; तेन् तुळिक्कुम्—शहद बाहर करनेवाली; नऱु तारान्—सुवासित माला से अलंकृत; ऑरु वण्णम्—एक प्रकार से; तुयरम् नीङ्कि—दुख से छूटकर; पॆरियोय्—महात्मा; पणि इतुवेल्—काम यही है तो; इवन् चिऱियन्—यह छोटा है; पटै ऊऱ्ऱम् इलन्—अस्त्र-शस्त्र का अभ्यस्त नहीं; पनि नीर् कङ्कै—शीतल जलवाली गंगा जी को; पुटै ऊऱुम्—एक पार्श्व में बहानेवाले; चटैयानुम्—जटाधारी व; नान्मुकनुम्—ब्रह्मा व; पुरन्तरनुम्—इन्द्र भी; पुकुन्तु—आकर; पॆरु वेळ्विक्कु—बड़े यज्ञ को; चय्युम् इटैयूऱ्ऱुक्कुम्—जो करेंगे उस बाधा को भी; इटैयूऱु आक—बाधा करते हुए; यान् काप्पॆन्—मैं रक्षा करूँगा; ऍळुक—उठिये; ऍन्ऱान्—कहा। ३२७

मधु-युक्त, सुगन्धित पुष्प-माला के धारी राजा एक तरह से अपने दुख को दबाकर बोले। महात्मन्! यही सेवा है तो, देखिये, राम छोटा है। उसको अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास भी उतना अधिक नहीं है। मैं आऊँगा। चाहे शिवजी ही क्यों न आयें; चाहे ब्रह्माजी या इन्द्र; कोई भी आकर बाधा डालेंगे तो मैं उस बाधा की बाधा बनूँगा और आपके यज्ञ की रक्षा करूँगा। आप निश्चिन्त होकर प्रस्तुत हो जायँ। ३२७

ऍन्ऱननॆन् ऱ्लुमुनिवो डॆळुन्दनन्मण् पडैत्तमुनि यिऱुदिक् कालम्
अन्ऱॆनवा मॆनविमैयो रचिर्त्तनर्मेल् वॆयिल्हरन्द दङ्गु मिङ्गुम्
निन्ऱनवुन् दिरिन्दनमे निवन्दकॊळुङ् गडॆप्पुरुव नॆऱ्ऱि मुऱ्ऱच्
चॆन्ऱनवन् दननहैयुञ् जिवन्दनकण् णिरुण्डनपोय्त् तिशैह ळॆल्लाम् 328

ऍन्ऱनन्—ऐसा (दशरथ ने) कहा; ऍन्ऱलुम्—ज्योंही कहा त्योंही; मण् पटैत्त मुनि—पृथ्वी की सृष्टि करना जिन्होंने आरम्भ किया वे; मुनिवोटु—कोप के साथ; ऍळुन्तनन्—उठे; मेल् निवन्त—ऊपर उठी; कॊळु कटै पुरुवम्—घने कोनों की भौंहें; नॆऱ्ऱि मुऱ्ऱ—ललाट भर में; चॆन्ऱन—बिछ गयीं; नकैयुम् वन्तन—(अट्ट-) हास भी उठे; कण् चिवन्तन—आँखें लाल हुईं; तिचैकळ् ऍल्लाम्—दिशायें सारी; पोय् इरुण्टन—बहुत अँधेरी हो गयीं; मेल् वॆयिल् करन्ततु—आकाश का सूर्य भी छिप गया; अङ्कुम् इङ्कुम्—इधर-उधर को; निन्ऱनवुम्—स्थावर वस्तुएँ भी; तिरिन्तन—चंचल हुईं; इमैयोर्—देवता लोग; इऱुतिकालम्—संसार का अन्तिम काल; अन्ऱु आम्—आज ही हो जायगा; ऍन—ऐसा; अयिर्त्तनर्—संशयित हुए। ३२८

ज्योंही राजा के मुख से यह वचन निकला त्योंही महर्षि, जो कभी अलग लोकसृष्टि ही करने निकले थे, क्रोध के साथ उठे। उनकी घनी भौंहें तनकर ऊपर उठीं और ललाट ही उनके पीछे छिप गया। वे अट्टहास कर उठे; और उनकी आँखें लाल हुईं। उनकी क्रोधाग्नि से उठा धुआँ सारी दिशाओं में व्याप्त हुआ और सब जगह अन्धेरा छा गया। सूर्य भी छिप गया। स्थिर वस्तुएँ भी चंचल होकर घूमने लगीं। यह देखकर देवता लोग डर गये कि क्या युगांत आ गया है। ३२८

कुऱ्ऱ्त मामुनि करुत्तै युन्निनी, पॊऱुत्ति यॆन्ऱ्वर् पुहन्ऱु निन्महट्
कुऱ्ऱ्त लाहला वुऱुदि यॆय्दुनाळ्, मरुत्ति योवॆना वशिट्टन् कूऱुवान् 329

वचिट्टन्–वसिष्ठ; कुऱ्ऱ्त मा मुनि–कोपाक्रांत हुए महामुनि का; करुत्तै उन्नि–(आंतरिक) भाव सोचकर; अवन्–उनको; नी पॊऱुत्ति–आप क्षमा करें; ऍन्ऱु पुकन्ऱु–यह कहकर; निन् मकर्कु–आपके सुपुत्र के लिए; उऱ्ऱ्तल् आक अल्ला–(सुगम रूप से) जो प्राप्य हो नहीं सकता; उऱुति ऍय्तुम् नाळ्–हित के प्राप्त होने का दिन; मरुत्तियो–इनकार करेंगे; ऍना–यह कहकर; कूऱुवान्–कहने लगे। ३२९

तब वसिष्ठ जी ने क्रुद्ध विश्वामित्र जी के मन का भाव ताड़ लिया। उन्होंने महर्षि से, थोड़ा सब्र कीजिये—कहकर राजा से कहा कि महाराज! आपके पुत्र को दुष्प्राप्य हित मिलनेवाला समय आ गया है। उसको क्या आप रोक देंगे ? । ३२९

❀ पॆय्यु मारियार् पॆरुहु वॆळ्ळम्बॊय्, मॊय्कॊळ् वेलैवाय् मुडुहु माऱुपोल्
ऐय निन्महर् कळविल् विञ्जैवन्, दॆय्दु कालमिन् ऱॆदिर्न्द दॆन्नवे 330

ऐय–राजन्; पॆय्युम् मारियाल्–बरसनेवाली वर्षा से; पॆरुकु वॆळ्ळम्–बहनेवाली धारें; पोय्–जाकर; मॊय्कॊळ् वेलै वाय्–सशक्त समुद्र में; मुटुकुम् आऱु पोल्–तेज बहकर पहुँच जातीं जैसे; निन् मकर्कु–आपके सुपुत्र को; अळवु इल् विञ्चै–अगणित विधाओं के; वन्तु ऍय्तु कालम्–आकर मिलने का समय; इन्ऱु–आज; ऍतिर्न्ततु–आ साक्षात हुआ है; ऍन्न–यह कहने पर। ३३०

देखिये; ऐसी शुभ वेला आ गयी है जब वर्षा से उत्पन्न छोटी-छोटी धाराएँ मिलकर बड़ी नदी के रूप में सागर पहुँच जाती हैं—ऐसा आपके पुत्र को अनन्त विद्याएँ आकर प्राप्त होंगी। ३३०

कुरुविन् वाशहङ् गॊण्डु कॊऱ्ऱवन्, तिरुविन् केळ्वनैक् कॊणर्मिन् ऱॆन्ऱ्न
वरुह वॆन्ऱ्न वॆन्न लोडुम्वन्, दरुहु शार्न्दन् नऱिवि नुम्बरान् 331

कॊऱ्ऱवन्–विजयी; कुरुविन् वाचकम् कॊण्टु–गुरु का कथन मानकर; चॆन्ऱु–जाकर; तिरुविन् केळ्वनै–लक्ष्मीपति को; कॊणर्मिन् ऍन–लिवा लाओ, कहने पर; वरुक–आइये; ऍन्ऱनन्–कहा है; ऍन्नलोटुम्–कहने पर; अऱिविन् उम्परान्–ज्ञान के परे रहनेवाले; वन्तु–उनके साथ आकर; अरुकु चार्न्तनन्–समीप में पहुँचे। ३३१

अपने गुरु का उपदेश मानकर विजयी महाराज ने सेवक को आज्ञा दी कि जाओ लक्ष्मीपति को लिवा लाओ। सेवक ने जाकर श्रीराम जी से कहा कि आप पधारें। तब श्रीराम, जो ज्ञानातीत हैं, तुरन्त अपने पिता के पास पहुँच गये। (लक्ष्मण भी साथ आये यह कहने की आवश्यकता नहीं।)। ३३१

वन्द नम्बियैत् तम्बि तन्नॊंडुम्, मुन्दै नाल्मऱै मुनिक्कुक् काट्टिनल्
तन्दै नीतनित् तायु नीयिवर्क्, कॆन्दै तन्दनॆ नियैन्द शॆय्हॆन्ऱान् 332

तम्पि तन्नॊंटुम्–अपने छोटे भाई के साथ; वन्त नम्पियै–आये नायक (श्रीराम) को; मुन्तै नाल्मऱै–प्राचीन चारों वेदों के ज्ञाता; मुनिक्कु काट्टि–महर्षि को दिखाकर; ऍन्तै–तात; इवर्क्कु–इन बालकों को; नल् तन्तै नी–अच्छे पिता भी आप हैं; तनि तायुम् नी–अप्रतिम माता आप हैं; तन्तनॆन्–(आपके पास) दिया है; इचैन्त चॆय्क–जो उचित हो वह करने की कृपा कीजिये; ऍन्ऱान्–कहा। ३३२

महाराज ने भाई सहित श्रीराम को विश्वामित्र के हाथ में सौंप दिया और कहा कि महर्षे! आप ही इनके पिता हैं; और अनुपम माता भी आप ही हैं। आपके पास इन्हें सौंप दिया है। जो उचित हो वह कीजियेगा। ३३२

कॊडुत्त मैन्दरैक् कॊण्डु चिन्दैमुन्
ऍडुत्त शीऱ्ऱम्विट् टिनिदु वाऴ्त्ति मेल्
अडुत्त वॆळ्विपोय् मुडित्तु नामॆना
नडत्तन् मेयिना नवैक्क णीङ्गिनान् 333

चिन्तै मुन्तु ऍटुत्त चीऱ्ऱम् विट्टु–मन में पहले उठे क्रोध को छोड़कर; कॊटुत्त मैन्तरै–सौंपे गये कुमारों को; कॊण्टु–स्वीकार कर; नवै कण्–(क्रोध-संभवनीय) अपराध से बचे; इनितु वाऴ्त्ति–सुख से आशीर्वाद देकर; मेल्–उसके बाद; नाम् पोय्–हम जाकर; अटुत्त वेळ्वि मुटित्तुम्–निर्णीत यज्ञ सम्पन्न करें; ऍना–कहकर; नटत्तल् मेयिनान्–चलने लगे। ३३३

विश्वामित्र ने अपने सिपुर्द किये गये पुत्रों को अपने पास कर लिया। उनका क्रोध दूर हुआ और अच्छा हुआ; नहीं तो उनके क्रोध के कारण न जाने क्या-क्या अनर्थ हो गये होते। उन्होंने दशरथ को आशीर्वाद दिया और श्रीराम से कहा कि चलिये हम अपना यज्ञ करने चलें। फिर वे चले गये। ३३३

❀ वॆन्ऱि वाळ्पुडै विशित्तु मॆय्म्मैपोल्, अन्ऱुन् देय्वुऱात् तूणि यात्तिरु
कुन्ऱम् पोन्ऱुयर् तोळिऱ् कॊऱ्ऱविल्, ऒन्ऱु ताङ्गिना नुलहन् दाङ्गिनान् 334

उलकम् ताङ्कितान्–विश्वम्भर (विष्णु के अवतार); वॆन्ऱि–विजयशील; वाळ्–तलवार; पुटै विचित्तु–पार्श्व में बाँधकर; इरु कुन्ऱम् पोन्ऱु–दो पर्वतों के समान; उयर् तोळिल्–उन्नत स्कन्धों में; मॆय्म्मै पोल्–सत्य-सम; तेय्वुऱा–अक्षय; तूणि यात्तु–तूणीर लगाकर; कॊऱ्ऱम् विल् ऒन्ऱु–विजयदायी चाप धारण करनेवाले बने। ३३४

विश्वंभर के अवतार श्रीराम वीरोचित वेष में थे। विजयिनी तलवार पार्श्व में बंधी थी। दोनों पर्वत-सम उन्नत कंधों पर अक्षय तूणीर कसे थे। बायें हाथ में विजय-कोदण्ड था। ३३४

❀ अन्न तम्बियुन् दानु मैयनान्, मन्न निन्नुयिर् वळिक्कोंण् डालॆनच्
चॊन्न मादवर् रॊडर्न्तु शायैपोल्, पॊन्निन् मानहर्प् पुरिशै नीङ्गिनार् 335

अन्न तम्पियुम्–वैसे ही (सज्जित) भाई; तानुम्–और आप; ऐयन् आम् मन्नन्–पिता (दशरथ) महाराज के; इन् उयिर्–प्यारे प्राण; वळि कॊण्टाल् ॲन्न–मानों मार्ग तय कर रहे हों; चॊन्न मातवन्–(यज्ञ करने की बात) कह कर आनेवाले महान तपस्वी का; चायै पोल् तॊटर्न्तु–छाया के समान पीछा करते हुए; मा नकर्–बड़े नगर के; पॊन्निन् पुरिचै–स्वर्ण के प्राचीर (के द्वार) को; नीङ्किनार्–पार किया। ३३५

लक्ष्मण भी वैसे ही लैस थे। महर्षि ने कहा— चलो हम अब यज्ञ करने के लिए चलें। दोनों ने जैसे दशरथ के प्राण ही जा रहे हों ऐसा महर्षि का, उनकी छाया की तरह अनुगमन करते हुए नगर के स्वर्णमय प्राचीर को पार किया। ३३५

❀ वरङ्गण् माशरत् तवञ्जॆय् दोर्हळ्वाळ्
पुरङ्ग णेरिला नहर नीङ्गिप्पोय्
अरङ्गि नाडुवार् शिलम्बि नन्ननिन्
ऱिरङ्गु वार्पुनर् चरयु वॆय्दिनार् 336

वरङ्कळ् माचु अऱ–वर दोषहीन (श्रेष्ठ) हों, इतनी; तवम् चॆय्तोर्कळ्–तपस्या करनेवाले; वाळ्–(जहाँ) निवास करते हैं; पुरङ्कळ्–(अमरावती आदि) नगर; नेर् इला–(जिसकी) समता नहीं कर सकते; नकरम्–(उस) नगर (अयोध्या) को; नीङ्कि पोय्–छोड़कर जाकर; अरङ्किन्–नृत्य मंच पर; आटुवार्–नाचनेवालियों की; चिलम्पिन्–पैंजनी के समान; अन्नम् निन्ऱु इरङ्कु–हंस खड़े होकर (जहाँ) बोलते हैं; वार्पुनल्–प्रवहमान जलवाली; चरयु ॲय्तिनार्–सरयू नदी (तट) पर पहुँचे। ३३६

अमरावती आदि नगर हैं जिनमें जाकर वास करने का भाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है जो कठिन तपस्या करके श्रेष्ठ वर प्राप्त कर चुके हों। वे नगर भी अयोध्या की बराबरी नहीं कर सकते। ऐसे अयोध्या नगर को छोड़कर वे तीनों सरयू नदी के, जिसमें जल खूब बहता था और जिस पर हंस रहकर नृत्य-मंच पर नाचनेवाली नर्तकियों के नूपुर-की-सी ध्वनि करते हुए बोल रहे थे, तट पर आये। ३३६

करुम्बु काल्पॊरक् कमुहिन् वार्न्दतेन्, वरम्बु मीदिडु मरुद वेलिवाय्
अरुम्बु कॊङ्गैया रम्मॆ लोदिपोल्, शुरुम्बु शूळ्वदोर् शोलै वॆहिनार् 337

करुम्पु–ईखों के; काल् पॊर–हवा के कारण से टकराने से; कमुकिन् वार्न्त तेन्–सुपारी के पेड़ों पर (छत्तों) से बहनेवाला शहद; वरम्पु मीतिटु–मेड़ों को पार कर (जिस प्रदेश में) बहता है; मरुत वेलि वाय्–(उस) खेतों और बागों वाले भू भाग में; अरुम्पु–कली जैसे; कॊङ्कैयार्–स्तनोंवालियों के; अम् मॆल् ओति पोल्–

सुन्दर कोमल केश के समान; चुरुम्पु चूऴ्वतु–जहाँ भ्रमर मँडराते हैं; ओर् चोलै–एक उपवन में; वैकिनार्–ठहरे । ३३७

वे खेतोंवाले भूभाग के एक उपवन में आये। वह भूभाग ऐसा था जहाँ कमुक-तरुओं पर बने मधु के छत्तों से, तरुओं के, पवन में हिलाये जाकर, उकसाने से शहद बड़ी धारों में बहने लगता और वह प्रवाह खेतों की मेडों के ऊपर से भी बहता। उस उपवन में भ्रमर ऐसे मंडराते रहते थे मानों वे कमल-कलियों के समान स्तनवाली तरुणियों के मनोरम और कोमल केश पर मंडराते हों। (मूल पद्य का यह भी अर्थ निकल सकता है कि वे भ्रमर स्त्रियों के काले घुंघराले केश के समान थे।) वे रात में वहीं ठहरे। ३३७

ताऴ् मामऴै तऴुवु नॆऱ्ऱियाल्, शूऴि यानैपोऱ् ऱोऩ्ऱु माल्वरैप्
पाऴि मामुहट् टुच्चिप् पच्चैमा, एऴु मेऱ्प्पो याऱु मेऱिऩार् 338

ताऴुम् मा मऴै–नीचे उतरकर आनेवाले बड़े-बड़े मेघों से; तऴुवुम् नॆऱ्ऱियाल्–आवृत्त चोटियों के कारण; चूऴि यानै पोल्–मुख-पट्ट पहने हुए गजों के समान; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाले; माल् वरै–गरिमायुक्त (उदय-) गिरि की; पाऴि मा मुकट्टु उच्चि–दृढ़, ऊँची, चोटियों पर; पच्चै मा एऴुम् एऱ–हरे रंग के सातों अश्वों के चढ़ते; पोय्–जाकर; आऱुम् एऱिनार्–सरयू (पार करने के लिए नाव) पर चढ़े। ३३८

सवेरा हुआ। उदय-पर्वत अपने ऊपर घने फैले मेघों के साथ, मुखपट्ट के साथ दिखनेवाले हाथी के समान, दृश्य उपस्थित करता था। सूरज के रथ के (गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति दृष्टुप, जगती इत्यादि) छन्दरूपी सात हरे रंग के अश्व उस उदयाचल पर चढ़े। तब ये नाव पर चढ़कर नदी पार कर इस पार आये। ३३८

तेवु मादवऱ् ऱॊऴुदु देवर्तम्, नावु ळावुदि नयक्कुम् वेळ्विवाय्त्
तावु मापुहै तऴुवु शोलैकण्, डियाव दीदॆऩ्ऱा ऩॆवर्क्कु मेलिऩ्ऱाऩ् 339

ऍवर्क्कुम् मेल् निऩ्ऱाऩ्–परात्पर (श्रीराम); तेवर्–देवता; तम् ना उळ्–अपनी जिह्वाओं में; आवुति नयक्कुम्–आहुति का स्वाद भोगनेवाले; वेळ्वि वाय्–यज्ञ से; तावुम्–उठनेवाला; मा पुकै–घना (बहुत) धुआँ; तऴुवु चोलै–पूरित उपवन; कण्टु–देखकर; तेवु मा तवऩ्–दिव्य उत्तम तपस्वी को; तॊऴुतु–विनय करके; ईतु यावतु–यह कौन सा है; ऍऩ्ऱाऩ्–ऐसा पूछा। ३३९

वहाँ परात्पर भगवान (के अवतार) श्रीराम ने एक आश्रम को देखा। उसमें देवताओं को तृप्त करते हुए आहुतियाँ देनेवाले यज्ञ हो रहे थे। उनमें से अधिक धुआँ उठ रहा था। श्रीराम ने महान तपस्वी विश्वामित्र से, नमस्कार करके, पूछा कि यह कौन सा स्थान है? । ३३९

7. ताडहै वदैप्पडलम् (ताडका-वध पटल)

तिङ्गण्मे वुञ्जडैत् तेवन्मेन् मारवेळ्
इङ्गुनिन् ऱॅय्यवु मॅरिदरु नुदल्विऴिप्
पौङ्गुको पञ्जुडप् पूळैवी यन्नदन्
अङ्गमॅन् दन्ऱुतॉट् टनङ्गने यायिनान् 340

मार वेळ्–मार (मन्मथ) देव (के); इङ्कु निन्ऱु–यहाँ से; तिङ्कळ् मेवुम्–चन्द्राधार; चटै तेवन् मेल्–जटा-धारक (शिव) देव पर; ऍय्यवुम्–(पुष्प-बाण) चलाने पर; ऍरि तरु नुतल् विऴि–आग उगलनेवाले भाल-नेत्र से; पॊङ्कु–निकलनेवाली; कोपम् चुट–कोपाग्नि के जलाने से; पूळै वी अन्न–सेमर के फूलों के समान; तन् अङ्कम् वॅन्तु–अपने अंगों को (भस्म कराकर); अन्ऱु तॊट्टु–उसी दिन से; अनङ्कने आयिनान्–अनंग ही बन गया। ३४०

महर्षि ने उत्तर में कहा कि एकबार मारदेव ने चन्द्र-जटा-धारी शिवजी पर पुष्प-सायक चलाया। शिवजी कुपित हुए और उनके भालनेत्र से अग्नि-ज्वाला उठी। उसमें मन्मथ का शरीर सेमर के फूल के समान जल गया। तब से वह अनंग (अंग जिसके न हों) हो गया। ३४०

वारणत् तुरिवैयान् मदननैच् चिन्नवुनाळ्
ईरमऱ् ऱङ्गमिङ् गुहुदला लिवणॅलाम्
आरणत् तुऱैयुळा यङ्गना डिदुवुमक्
कारणक् कुऱियुडैक् कामनाच् चिरममे 341

आरणम् उऱैयुळाय्–हे वेदावास (वेद है आवास जिनका —परब्रह्म); वारणम् उरिवैयान्—गज-चर्म वस्त्रवेष्टित (श्रीशिव); मततनै चिनवुम् नाळ्–मदन को कोप से जलाया, उस दिन; अङ्कम्–अंग; ईरम् अऱ्ऱु–सूखकर; इङ्कु उकुतलाल्–यहाँ गिरने से; इवण् ऍलाम्–इधर सर्वत्र; अङ्क नाटु–अंगदेश (बना); इतुवुम्–इधर पास यह भी; अ कारणम् कुऱि उटैय–उसी कारण पर बना नाम वाला; कामन् आच्चिरममे–कामाश्रम ही है। ३४१

"वेदाश्रय भगवान! गजचर्माम्बर शिवजी ने जिस दिन मन्मथ पर कोप दिखाया उस दिन उसका शरीर सूख कर (चूर होकर) इसी प्रदेश में इधर-उधर गिरा। इसलिये यह अंग देश बना। उसी काम-दहन के संकेत में यह कामाश्रम कहलाता है। (दारुकावन के मुनियों ने एक दुष्ट गज को पैदाकर, शिवजी को मारने भेजा था। शिवजी ने उसे मारा और उसकी खाल उधेड़ कर ओढ़ लिया। इसलिये वे गजचर्मांबरधारी कहलाते हैं।)। ३४१

पऱ्ऱवा वेरॊडुम् बशैयऱ् पिऱविपोय्, मुऱ्ऱवा लुणर्वुमेन् मुडुहिना रऱिवुशॆन्
ऱुऱ्ऱवा नवनिरुन् दियोगुशॆय् दनॆनिल्, शॊऱ्ऱवा भळवदो मऱ्ऱिदन् ऱुय्मैये 342

परुरु अवा–(बाहरी) आकर्षण और (भीतरी) कामना; वेरोट्टम् पचै अर्–आमूल नाश कराने; पिरवि पोय् मुर्र्–जन्म (चक्र) अन्त करानेवाले; वाल् उणर्वु–तत्वज्ञान में; मेल् मुट्टकित्तार्–बढ़े हुओं की; अरिवु–भावना; चॆन्रु उर्र वाततवन्–जिनके पास जा पहुँचती है वे देव; इरुन्तु योकु चॆय्ततन्–यहाँ रहकर योग-साधना की; ऎनिल्–तो; इतन् तूय्मै–इसकी पवित्रता; चॊर्र आम् अळवतो–कहने योग्य परिमाण का है क्या। ३४२

स्वयं शिवजी ने यहाँ रहकर योग साधना की थी। शिव देव तो ऐसे ईश्वर हैं जिनकी प्राप्ति उन्हीं लोगों को सुलभ होती है जो कामना और आकर्षण त्याग कर, मुक्ति की इच्छा के साथ तत्व-ज्ञान में उच्च स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं। फिर इस आश्रम की पवित्रता का क्या पूछना ? । ३४२

ॲन्रवन् दणनियम् बलुम्वियन् दव्वयिन्
शॆन्रुवन् दॆदिर्कॊळुन् जॆन्नॆरिच चॆल्वरो
डन्रुरैन् दलर्हदिर्प् परुदिमण् डिलमहन्
कुन्रिन्वन् दिवरवोर् शुडुशुरङ् गुरुहिन्नार् 343

ॲन्रु–ऐसा; अ अन्तणन्–उन ऋषि (के); इयम्पलुम्–कहते ही; वियन्तु–विस्मित हुए; अव्वयिन् चॆन्रु–उस ओर जाकर; उवन्तु ऎतिर् कॊळुम्–चाह के साथ स्वागत करने आये हुए; चॆम्मै नॆरि चॆल्वरोटु–सन्मार्ग-धनियों के साथ; अन्रु उरैन्तु–उस दिन रहकर; अलर् कतिर् परुति मण्टिलम्–फैलती किरणोंवाले सूर्य-बिम्ब के; अकल् कुन्रिन् वन्तु इवर–विशाल (उदय-) गिरि पर आकर चढ़ते समय; ओर् चुटु चरम् कुरुकिनार्–एक गरम मरु प्रदेश में पहुँचे। ३४३

यह सुनकर दोनों भाई विस्मित हुए। वे तीनों वहीं गये। वहाँ के तपस्वी ऋषि-मुनियों ने उनका प्रेम व उत्साह के साथ स्वागत किया। रात उन्होंने वहीं काटी। दूसरे दिन सवेरे सूर्य के उदयाचल पर आते ही वे चले और एक अति-तप्त वालुका-प्रदेश में आये। उसका वर्णन सुनिये। ३४३

परुदिवा नवनिलम् पशैयरप् परुहुवान्
विरुदुमेर् कॊण्डुलाम् वेनिले यल्लदोर्
इरुदुवे रिन्मैया लॆरिशुडर्क् कडवुळुम्
करुदिन्वे मुळ्ळमुङ् गाणिन्वे नयनमुम् 344

परुति वानवन्–सूर्य देव; निलम् पचै अर–भूमि पर नमी कुछ न हो ऐसा; परुकुवान्–पीने (सोखने) के लिये; विरुतु मेर्कॊण्टु–विजय-चिह्न प्रदर्शित करते हुए; उलाम्–(जिस पर्व में) घूमता है; वेनिले अल्लतु–उस ग्रीष्म के सिवा; वेरु ओर् इरुतु इन्मैयाल्–कोई अन्य ऋतु के न होने से; ऎरि चुटर् कटवुळुम्–जलानेवाली ज्वाला के (अग्नि-) देव भी; करुतिन्–स्मरण करे; उळ्ळमुम् वेम्–(उसका) मन भी जल जाय; काणिन्–देखे तो; नयनमुम् नेत्र भी; वेम्–झुलस जायँ। ३४४

वहाँ उस प्रदेश में ग्रीष्म के अलावा कोई ऋतु ही नहीं होती थी। ग्रीष्म सूर्य की विजय ध्वजा है जो इस बात का निशान है कि उसकी गर्मी से भूमि बिलकुल सूख जाती है। इसलिये वहाँ की स्थिति कुछ ऐसी है कि स्वयं अग्निदेव भी सोचे तो उसका मन जल जाय। आँख उठाकर देखे तो नेत्र जल जायं। ३४४

पडियिन्मेल् वॅम्मैयैप् पहरिनुम् पहरुना
मुडियवे मुडियमू डिरुळुम्वान् मुहडुम्वेम्
विडियुमेल् वॅयिलुम्वे मळैयुम्वे मिन्निनो
डिडियुम्वे मॅन्निल्वे ऱियावैवे वादवे 345

पटियिन् मेल्–भूमि पर की; वॅम्मैयै–गर्मी को; पकरिनुम्–कहा जाय तो भी; पकरुम् ना–बोलनेवाली जिह्वा; मुटिय वेम्–पूरी जल जायगी; मुटिय मूटु इरुळुम्–पूर्ण रूप से (लोक भर को) ढकनेवाला अन्धकार भी; वान् मुकटुम्–आकाश की चोटी भी; वेम्—जल-भुन जायँ; विटियुमेल्–दिन हो जाय तो; वॅयिलुम् वेम्–दिनकर भी जल जाय; मळैयुम् वेम्–मेघ भी जल जायँ; मिन्निनोटु–विद्युत के साथ; इटियुम् वेम्–वज्र भी जल जाय; अॅन्निल्–वैसी स्थिति रही तो; वेवात–जो न जलें; वेऱु यावै–कौन अन्य (होंगे)। ३४५

उस प्रदेश की बात कोई कहने लगे तो जीभ जल जाय! रात में अण्ड भर में छानेवाला अंधकार और आकाश की चोटी भी जल जाय; सूर्योदय हुआ तो सूर्य जल जाय। मेघ, बिजली की चमक, वज्र-सब जल जायँगे, तो कौन सी वस्तु होगी जो न जले? । ३४५

विञ्जुवान् मळैयिन्मे लम्बुम्वे लुम्बडच
चॅञ्जॅवे शॅरुमुहत् तन्ऱिये तिऱनिला
वञ्जरती विनैहळान् मानमा मणियिळन्
दॅञ्जिनार् नॅञ्जुपो लॅन्ऱुमा ऱादरो 346

विञ्चु वान्–अधिक मेघों से; मळैयिन्–गिरनेवाली धारों के समान; अम्पुम् वेलुम्–शरों और बर्छियों के; मेल् पट–शरीर पर लगने से; चॅरु मुकत्तु–युद्धस्थल पर; चॅञ्चॅवे–सीधे; अन्ऱि–(लड़े) बगैर; तिऱन् इला–असमर्थ; वञ्चर्–कपटियों के; ती विनैकळाल्–धूर्त कार्यों से; मानम् आम्–मान-रूपी; अणि–श्रृंगार (धन); इळन्तु–खोकर; अॅञ्चिनार्–(जो जीवित) बच जाते हैं; नॅञ्चु पोल्–मन की तरह; अॅन्ऱुम्–सदा; आऱातु—ताप-हीन नहीं होता (कभी ठण्डा नहीं होता)। ३४६

यह मरुस्थल उन वीरों के चित्त के समान विदीर्ण और संतप्त है जिन पर युद्ध में प्रत्यक्ष रूप से, वर्षा के समान भाले व शर नहीं चलाये गये पर जिनको नीच, असमर्थ, धूर्तों के कपट के कारण मान खोना पड़ा और फिर भी जीवित रहना पड़ गया। ३४६

पेय्पिळन् दोक्कनिन् रुलर्पॆरुङ् गळ्ळियिन्
ताय्पिळन् दुक्कहा रकिल्हळुन् दळैयिला
वेय्पिळन् दुक्कवॆण् डरळमुम् विडवरा
वाय्पिळन् दुक्कशॆम् मणियुमे वनमॆलाम् 347

वनम् ॲलाम्–वन भर में; पेय् पिळन्ततु ओक्क–पिशाचों के चिरे शरीरों के समान; निन्रु–(चिर कर) खड़े होकर; उलर्–सूखनेवाले; पॆरु कळ्ळियिन्–बड़े सेंहुड के; ताय्–तने; पिळन्तु–फटे हैं, इसलिए; उक्क–छितरे; कार् अकिल् कळुम्–काले अगरु की लकड़ियाँ; तळै इला–पत्तों से रहित; वेय्–बाँसों के; पिळन्तु–फटने से; उक्क–छितरे; वॆण् तरळमुम्–सफ़ेद मोती; विटम् अरा–विषैले सर्पों के; वाय् पिळन्तु–मुखों के (फटने से) खुलने से; उक्क–बाहर उगले; चॆम्नै मणियुमे–लाल नग (माणिक्य) ही (थे)। ३४७

वहाँ सेंहुड़ पिशाचों के चिरे शरीरों के समान सूखे खड़े हैं। उनके तनों के फटने से अगरु के टुकड़े बिखरे पड़े हैं। बाँस सूख गये हैं और उनसे वंश-मुक्तायें निकलकर छितरी पड़ी है। विषैले सर्पों ने नाग-रत्न उगले हैं। वे छितरे पड़े हैं। ३४७

पारुमो डादुनी डॅन्नुम् बाल्दे, शूरुमो डादुक् डादरो शूरियन्
तेरुमो डादुमा माहमी देरिलेर्, कारुमो डादुनीळ् कालुमो डादरो 348

पारुम् ओटातु–भूमि (के जीव) भी नहीं जा सकते; नीटातु ॲन्नुम्–रह नहीं सकते इस; पालते–कारण से; चूरुम् ओटातु कूटातु–(मरुदेश की) कालिकादेवी भी नहीं भागे, यह नहीं हो सकता; चूरियन् तेरुम्–सूर्य का रथ भी; मा माकम् मीतु–विशाल आकाश के उच्च भाग पर; एरिन्–चढ़े तो भी; नेर् ओटातु–सीधे ऊपर नहीं दौड़ सकता; कारुम्–मेघ भी; ओटातु–(सीधे ऊपर) नहीं दौड़ (चल) सकते; नीळ् कालुम्–संचारशील हवा भी; ओटातु–नहीं चल सकती। ३४८

वहाँ संसार की वस्तुएँ जायं तो जल जायं। उस भूभाग की अधिष्ठात्री देवी काली को भी वहाँ से गये बगैर निस्तार नहीं। सूर्य का रथ आकाश पर चढ़कर उसके ठीक ऊपर नहीं चल सकता; मेघ उनके ऊपर से जा नहीं पाते; संचरणशील पवन भी वहाँ नहीं चल सकता। ३४८

कण्किऴित् तुमिळ्विडक् कनलरा वरशुहाल्
विण्किऴित् तॊळिरुमिन् ननैयपन् मणिवॆयिल्
मण्किऴित् तिडवॆळुन् जुडर्कणमण् महळुडर्
पुण्किऴित् तिडवॆळुङ् गुरुदिये पोलुमे 349

कण् किऴित्तु–(दर्शक की) आँखों को निस्तेज करनेवाला; उमिळ् विटम् कनल्–उगली विषरूपी अग्नि; अरा अरचु–नागों के राजा (नायक); काल्–जो उगले; विण् किऴित्तु–आकाश चीरते हुए; ऑळिरुम् मिन्–चमकनेवाली बिजली; अनैय–समान; पल मणि–अनेक (नाग-) रत्नों से; वॆयिल् मण् किऴित्तिट–धूप के

भूमि को चीर देने से; अॅळुम् चुटर्कळ्–(उन दरारों द्वारा) बाहर निकलनेवाली किरणें; मण् मकळ्–भूदेवी के; उटल् पुण्–शरीर के घावों के; किळितृतिट–(घावों के) खुलने से; अॅळुम्–बाहर निकलनेवाले; कुरुतिये पोलुम्–रक्त के समान ही हैं। (ए)। ३४९

तेज धूप से भूमि में गहरी और विशाल दरारें पड़ गयी हैं और भूमि के गर्भ में रहनेवाले विषैले सर्पों के उगले रत्नों से उन दरारों द्वारा प्रकाश छूट रहा है। उसको देखकर ऐसा लगता है कि भूमि के शरीर पर गहरे घाव पड़ गये हैं और उनसे रक्त बह रहा है। ३४९

पुळुङ्गुवॅम् वशियॉडुम् पुरळुम् पेररा
विळुङ्गवन् दॅळुन्दॅदिर् विरित्त वायिन्वाय्
मुलङ्गुतिण् करिपुहु मुडुहि मीमिशै
वळङ्गुवॅङ् गदिर्शुड मरॅवु तेडिये 350

मुळङ्कु तिण् करि–चिंघाड़नेवाला, ताकतवर हाथी; मीमिचै–आकाश से; वळङ्कु वॅम् कतिर्–आनेवाली संतापक धूप (के); चुट–जलाने से; मरॅवु तेटि–साया खोजकर; पुळुङ्कु वॅम् पचियॉटु–कचोटनेवाली भयंकर भूख के साथ; पुरळुम्–लोटनेवाले; पेर् अरा–बड़े साँप के; विळुङ्क–निगलने के लिए; वन्तु–आकर; अॅळुन्तु–सिर उठाकर; अॅतिर् विरित्त–सामने खुले; वायिन् वाय्–मुख के अन्दर; मुटुकि पुकुम्–सवेग घुस जाता है। ३५०

वहाँ हाथी कड़ी धूप की वजह से चिंघाड़ता हुआ भागता है। वह कहीं जाकर छिप जाने को, छाया पाने को लालायित है। तब वह देखता है कि अदम्य भुभुक्षा से तड़पनेवाले एक सर्प ने, किसी भी वस्तु को निगलने के इरादे से अपना मुख खोल रखा है। वह उसी के अन्दर बेतहाशा घुस जाता है। ३५०

ऐहवॅङ् गन्नलर शिरुन्द काट्टिडैक्, काहमुङ् गरिहळुङ् गरिन्दु शाम्बिन
माहवॅङ् गदिरॅनुम् वडवैत् तीच्चुड, मेहमुङ् गरिन्दिडै विळुन्द पोलुमे 351

एकम् वॅम् कनल्–अद्वितीय संतापी अग्निदेव; अरचु इरुन्त–(जहाँ) राज करते थे; काट्टिटै–(उस बालुकामय) जंगल में; करिन्तु चाम्पिन–झुलसे (काले हो) पड़े रहे; काकमुम् करिकळुम्–कौए और हाथी; माकम् वॅम् कतिर् अॅनुम्–आकाश (-स्थित) सूर्य-रूपी; वटवै ती चुट–वड़वाग्नि के जलाने से; मेकमुम्–मेघ भी; करिन्तु इटै विळुन्त पोलुम्–काले होकर उस भूमि पर गिरे (पड़े) से हैं। ३५१

उस जंगल में (जल-शून्य रेगिस्तान में), जिस पर अत्युष्ण अग्निदेव का एकछत्र राज था, कौए और हाथी झुलस कर गिरे थे। वे, छोटे बड़े मेघों के समान लगते थे, जो आकाश के अत्यन्त गरम सूर्य-रूपी वड़वाग्नि के जलाने से झुलसकर यत्र-तत्र गिरे पड़े हों। ३५१

कानहत् तियङ्गिय कळुदिन् ऱेर्क्कुलम्
तानहङ् गरिदलिऱ् ऱलैक्कॊण् डोडिप्पोय्
मेऩिमिर्न् दॆळुन्दिडिन् विशुम्बुम् वेमॆंना
वानवर्क् किरङ्गिनीर् वळैत्त दॊत्तदे 352

कानकत्तु इयङ्किय–(उस) वन में संचरणशील रहे; कळुतिन् तेर् कुलम्–पिशाच-रथ-समूह; तान् अकम् करितलिन्–उसके मध्य प्रदेश के झुलसने से; मेल् निमिर्न्तु–ऊपर मुख कर; ॲळुन्तिटिन्–उठे तो; विचुम्पुम्–आकाश भी; वेम् ॲंता–जल जायगा, इसलिए; वानवर्क्कु इरङ्कि–देवताओं के प्रति सहानुभूति करके; नीर्–वरुणदेवता; ओटि पोय्–भाग जाकर; तलै कॊण्टु–उसको व्याप्त कर; वळैत्तु ऑत्ततु–घेर लिया जा रहा। ३५२

उस जंगल में मरीचिकायें दिखायी देती हैं जो चंचल भी दिखती हैं। (मरीचिकाओं को तमिळ में भूत-रथ कहते हैं।) उनको देखने पर ऐसा लगता है कि जल के अधिपति वरुण देव ने, इस डर से कि यह गर्मी जंगल को राख बनाकर ऊपर उठेगी तो देवलोक भी जल जायगा; और देवताओं पर दया करके उस जंगल पर छाकर गर्मी को रोकते हुए जंगल को घेर लिया हो। ३५२

एय्न्दवक् कनलिडै यॆळुन्द कानऱ्ऱेर्
कायन्दवक् कडुवनङ् गाक्कुम् वेनिलिन्
वेन्दनुक् करशुवीऱ् ऱिरुक्कच् चॆय्ददोर्
पाय्न्दपॊऩ् कालुडैप् पळिक्कुप् पीडमे 353

एय्न्त–(सदा) लगी रही; अ कनल् इटै–उस अग्नि में; ॲळुन्त–उत्पन्न; कानल् तेर्–मरीचिका; काय्न्त अ कटु वनम् काक्कुम्–तप्त उस भयंकर (मरु) वन का पालन करनेवाले; वेनिलिन् वेन्तनुक्कु–ग्रीष्म के राजा को; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क–(उसके) राज-सभा में विराजने के लिए; चॆय्ततु–निर्मित; पाय्न्त पॊन्काल् उटै–ढले स्वर्ण से रचे पैरोंवाले; ओर् पळिङ्कु पीटमे–एक स्फटिक आसन ही है। ३५३

उन मृग-मरीचिकाओं को देखने पर, भ्रम में जल-विस्तार और प्रत्यक्ष किरणों की राशियाँ दिखायी देती हैं। दोनों मिलकर यह भ्रम पैदा करते हैं कि ढले स्वर्ण के पादोंवाले स्फटिक-सिंहासन डलवाये गये हों। कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि ये सिंहासन उस जंगल का शासन करनेवाले ग्रीष्म-राज के दरबार में उनके लिये डाले गये सिंहासन हैं। ३५३

ꕥ तावरु मिरुविनै शॆऱ्ऱुत् तळ्ळरु, मूवहैप् पहैयरण् कडन्दु मुत्तियिल्
पोवदु पुरिबवर् मनमुम् पॊन्विलैप्, पावैयर् मनमुम्बोऱ् पशैयुमऱ्ऱदे 354

ता वरुम्–दुखदायी; इरुविनै–दो (पाप व पुण्य) कर्म; चॆऱ्ऱु–नष्ट करके; तळ्ळ अरु–दुर्निवार; मूवकै–त्रिविध (काम, क्रोध, मोह); पकै–शत्रुरूपी; अरण्

कटन्तु–प्राचीर लाँघकर; मुत्तियिल् पोवतु वुरिपवर्–मुक्ति-प्राप्ति के मार्ग में अग्रसर; मतमुम्–(ज्ञानियों का) मन; पोन् विलै पावैयर्–(और) स्वर्ण-दाम लेनेवाली (वेश्या-) स्त्रियों के; मतमुम् पोल्–मन की भी तरह; पचैयुम् अऱ्ऱतु–नमी (आर्द्रता) से हीन था। ३५४

वह जंगल आर्द्रता से निपट शून्य था। उसकी शुष्कता की तुलना उन ज्ञानियों के, जो विषम पाप-पुण्य का कर्म काटकर, (काम क्रोध, मोह रूपी) तीनों प्रकार के अन्तः शत्रुरूपी प्राचीरों को लाँघकर मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हों, मन से ही हो सकती है; या उन वेश्याओं के, जो स्वर्ण (दाम) लेकर अपना सुख देती हैं, मन से। ३५४

पॉरिपरऱ् पडर्निलम् पॉडिन्दु कीऴुऱ्
विरिदलिऱ् पॅरुवऴि विळङ्गित् तोन्ऱलाल्
अरिमणिप् पणत्तरा वरशर् नाट्टिनुम्
ऑरिकदिर्क् किनदुपुक् कियङ्ग लायदे 355

पॉरि परल्–भुननेवाले कंकड़; पटर् निलम्–बिखरे (जहाँ थे वह) भूमि; पॉटिन्तु–चूर होकर; कीऴ् उऱ्–नीचे (पाताल) तक; विरितलिन्–फटी रहने से; ऍरि कतिर्क्कु–जलानेवाली (सूर्य) किरणों के लिए; अरि मणि पणत्तु अराअरचर्–लाल माणिक्य-युक्त फनोंवाले नागराज के; नाट्टिनुम्–देश में भी; इनितु पुक्कु–सुख से घुसकर; इयङ्कल् आयतु–संचार करना हो सका। ३५५

भुने कंकड़ों से भरे उस जंगल पर पड़नेवाली सूर्य किरणें अब नागराज के फनों के माणिक्य से प्रकाशित पाताल में भी निर्विघ्न पहुँच सकीं क्योंकि उसमें बड़ी-बड़ी और गहरी दरारें पड़ी हुई थीं जो पाताल तक गयीं थीं। ३५५

अरिन्देऴ कॉडुञ्जुर मिनैय दॅय्दलुम्
अरुन्दव निवर्पॅरि दळवि लाऱ्ऱलैप्
पॉरुन्दिन रायिनुम् पूविन् मॅल्लियर्
वरुन्दुवर् शिऱिदॅन मनत्ति नोक्किनान् 356

इनैयतु–ऐसे; ऍरिन्तु ऍऴु–जल उठनेवाले; कॉटु चुरम्–भयंकर मरु प्रदेश में; ऍय्तलुम्–पहुँचते ही; अरु तवन्–अतुल्य तपस्वी; इवर्–ये; अळविल् आऱ्ऱलै–अपार शक्ति को; पॅरितु पॉरुन्तिनर्–बहुत रखते हैं; आयिनुम्–तो भी; पूविन् मॅल्लियर्–फूल की तरह कोमल हैं; चिऱितु वरुन्तुवर्–थोड़ा दुखेंगे; ऍन–ऐसा; मनत्तिन् नोक्किनान्–चित्त में देखा (सोचा)। ३५६

ऐसे भयंकर रूप से तपनेवाले जंगल में जब तीनों आ पहुँचे तब महर्षि ने सोचा कि ये कुँवर बड़े शक्तिमान हैं सही। तो भी सुकुमार हैं; अतः इनको किंचित आयास होगा। ३५६

नोक्किऩ ऩवर्मुह नोक्क नोक्कुडैक्, कोक्कुम ररुमडि कुरुह नान्मुहन्
आक्किऩ विज्जैह ळिरण्डु मव्वयिऩ्, ऊक्किन ऩवैयव रुळ्ळत् तुळ्ळिऩार् 357

नोक्किनऩ्–सोचकर; अवर् मुकम् नोक्क–उनके मुख देखने पर; नोक्कु उटै(य)–इंगितज्ञ; को कुमररुम्–राजकुमार भी; अटि कुरुक–चरणों के पास आते (नमस्कार करते); अव् वयिऩ्–तव; नान्मुकऩ्–चतुर्मुख से; आक्किऩ–की गयी; विज्चैकल् इरण्टुम्–विद्याओं को, दोनों; ऊक्किनऩ्–सिखायीं; अवै–उनको; अवर्–उन (कुमारों) ने; उळ्ळत्तु उन्निनार्–मन में मनन (स्मरण) कर लिया। ३५७

इस विचार के साथ मुनि ने उनकी ओर दृष्टि फेरी। राजकुमार ताड़ गये और तुरन्त उनके चरणों के समीप आये। महर्षि ने चतुर्मुख-विरचित दो विद्याओं (बला, अतिबला) का उपदेश किया। श्रीराम और लक्ष्मण ने उनका मनन किया। ३५७

उळ्ळिय कालैयि लूऴित् तीयिनै, ऍळ्ळुरु कॉळुङ्गन लॅञ्जुम् वॅञ्जुरम्
तॅळ्ळुतण् पुनलिडैच् चेऱ लॊत्ततु, वळ्ळलु मुनिवनै वणङ्गिच् चॊल्लुवान् 358

उळ्ळिय कालैयिल्–मनन करते ही; ऊऴि तीयिनै–युगांतकालीन अग्नि को; ऍळ्ळुरु–उपहास करनेवाले; कॊळु कनल्–अत्यधिक अनल से; ऍञ्चुम्–युक्त; वॆम् चुरम्–भीषण मरु प्रदेश (में जाना); तॆळ्ळु तण् पुनल्–स्वच्छ शीतल जल; इटै–मध्य; चेरल् ऒत्ततु–चलना जैसा बन गया; वळ्ळलुम्–कृपालु भी; मुनिवनै वणङ्कि–मुनि का नमस्कार करके; चॊल्लुवान्–बोलने लगे। ३५८

उनके मनन करते ही प्रलयाग्नि से बढ़कर भयंकर आग से तप्त उस जंगल में चलना स्वस्थ शीतल जल में चलने के समान हो गया। तब उदार प्रभु श्रीराम ने मुनि का नमस्कार कर पूछा। ३५८

शुऴिपडु गङ्गैयन् दोङ्गन् मोलियान्, विऴिपड वॅन्ददो वेऱु तानुण्डो
पऴिपडर् मन्नवन् परित्त नाट्टिनी, दऴिवदॆन् कारण मऱिञ कूऱॆन्ऱान् 359

अऱिञ–ज्ञानी; ईतु–यह स्थान; चुऴि पदुम कङ्कै–भँवरों सहित गंगा और; अम् तोङ्कळ–सुन्दर मालाओं के; मेलियान्–जटाधारी (की); विऴि पट–दृष्टि लगने पर; वॆन्ततो–जला (क्या); वेऱु तान् उण्टो–अन्य भी है; पऴि पटर् मन्नन्–कुयशपूर्ण (अत्याचारी) राजा (के); परित्त नाट्टिन्–पालित देश के समान; अऴिवतु–उजड़ना; ऍन कारणम्–क्या कारण है; कूऱुक–बताइयेगा; ऍन्ऱान्–कहा। ३५९

ज्ञानवृद्ध! यह प्रदेश क्यों ऐसा है? कुयश आततायी राजा से पालित देश के समान उजड़ा पड़ा है। क्या यह आवर्त्त-भरी गंगा और सुन्दर मालाओं के धारण करनेवाले जटाधारी शिवजी के भाल-नेत्र (की अग्नि) के लगने से ऐसा जल गया? या दूसरा कोई कारण है। ३५९

ऍऩ्ऱलु मिरामऩै नोक्कि यिऩ्ऩुयिर्
कॊऩ्ऱुऴल् वाऴ्क्कैयळ् कूऱ्ऱिऩ् ऱोऱ्ऱत्तळ्
अऩ्ऱियु मैयिरु नूऱु मैयऩ्मा
ऑऩ्ऱिय वलियिऩा ळुरुदि केळॆऩा 360

ऍऩ्ऱलुम्–ऐसा कहते ही; इरामऩै नोक्कि–श्रीराम को देखकर; इऩ् उयिर्-कॊऩ्ऱु–प्रिय जीवों को मारकर; उऴल् वाऴ्क्कैयळ्–फिरनेवाली जीविकावाली; कूऱ्ऱिऩ् तोऱ्ऱत्तळ्–यम के समान आकारवाली; अऩ्ऱियुम्–और भी; ऐ इरु नूऱु–पाँच, दो, सौ (सहस्र); मैयल् मा–मत्त गजों (की); ऑऩ्ऱिय–मिली; वलियिऩाळ्–शक्तिवाली; उरुति केळ्–चरित्र सुनिये; ऍऩा–ऐसा। ३६०

उनके ऐसा पूछने ही, महर्षि ने राम से कहा कि सुनिये, एक स्त्री है जिसकी जीविका अच्छे अनेक जीवों को मारने फिरना है; जिसका यमदेव का-सा (भयंकर) रूप है; और जिसका सहस्र मद-मत्त-गजों के सम्मिलित बल से तुल्य बल है। उसका वृत्तांत सुनिये। ३६०

इयक्करत्तङ् गुलत्तुळा नुलह मॆङ्गणुम्
वियक्कुरु मॊय्म्बिऩा नॆरियिऩ् वॆम्मैयाऩ्
मयक्किलशर् चरॆऩ्ऩुम् वलत्ति ऩाऩरुळ्
तुयक्किलऩ् शुकेतुवॆऩ् ऱुळऩोर् तूय्मैयाऩ् 361

इयक्कर् तम्–यक्ष के; कुलत्तु उळाऩ्–कुल में उदित; उलकम् ऍङ्कणुम्-संसार भर को; वियक्कुरुम् मॊय्म्पिऩाऩ्–विस्मय में डालनेवाली शक्ति से युक्त; ऍरियिऩ् वॆम्मैयाऩ्–अग्नि-सम भयंकर; मयक्कु इल्–अभ्रांत; चर्चरऩ् ऍऩ्ऩुम्-चर्चर नाम के; वलत्तिऩाऩ्–प्रतापी; अरुळ्–जनाया; तुयक्कु इलऩ्–(अकंपन) स्थिर; चुकेतु ऍऩ्ऱु–सुकेतु नाम का; ओर् तूय्मैयाऩ्–एक पवित्र; उळऩ्–रहा। ३६१

सुकेतु नाम का एक यक्ष था जो अथक वीर था और पवित्र स्वभाववाला था। और जो यक्षकुल जात, विस्मयकारी बली, अग्नि के समान संतापी, अभ्रांत चर्चर (झर्झ ?) का पुत्र था। ३६१

अऩ्ऩवऩ् महविला दयरुञ् जिऩ्दैयाऩ्, मऩ्ऩॆडुन् दामरै मलरिऩ् वैहुरुम्
नऩ्ऩॆडु मुदल्वऩै वऴुत्ति नऱ्ऱवम्, पऩ्ऩॆडुम् बहलॆलाम् बयिऩ्ऱ पाऩ्मैयाऩ् 362

अऩ्ऩवऩ्–वह (सुकेतु); मक इलातु–पुत्र के विना; अयरुम् चिन्तैयाऩ्–आकुलित चित्तवाला; मऩ् नॆटु तामरै–स्थायी गौरव-युक्त कमल; मलरिऩ् वैकुरुम्–पुष्प पर रहनेवाले; नल् नॆटु मुतल्वऩै–दीर्घ यशस्वी आदिपुरुष को; वऴुत्ति–आराधना करके; पल् नॆटु पकल् ऍलाम्–बहुत अनेक दिनों; नल् तवम्-श्रेष्ठ तप; पयिऩ्ऱ–करने का; पाऩ्मैयाऩ्–गुणवान। ३६२

सुकेतु के संतान नहीं हुई। अतः उसने बहुत काल तक चतुर्मुख की पूजा करते हुए तपस्या की। ३६२

मुन्दिन् नरुमरैक् किळवन् मुरुनिन्, चिन्दतै यॅन्नॅन्च् चिरुव रिन्मैयाल्
नॉन्दनॅ नरुळ्हॅन नुणङ्गु केळ्वियाय्, मैन्दर्ह ळिलैयॊरु महळुण् डामॅन्रान् 363

अरु मरै किळवन्–श्रेष्ठ वेद-पति; मुन्तिनन्–सामने आये; मुरुम् निन् चिन्तनै–पूरने योग्य तुम्हारी इच्छा; ॲन्–क्या है; ॲन–पूछने पर; चिरुवर् इन्मैयाल्–पुत्रों के न होने से; नॉन्तनॅन्–दुखी हूँ; अरुळ्क–कृपा करें; ॲन–(यह) प्रार्थना करने पर; नुणङ्कु केळ्वियाय्–सूक्ष्म श्रवण (प्राप्त) ज्ञानी; मैन्तर्कळ् इलै–पुत्र नहीं; ऑरु मकळ्–एक पुत्री; उण्टाम्–पैदा होगी; ॲन्रान्–कहा। ३६३

अनमोल वेदों के आश्रय ब्रह्मा जी ने उसके सामने प्रकट होकर पूछा कि तुम्हारा अभीष्ट क्या है? सुकेतु ने उत्तर दिया कि मेरे पुत्र नहीं हुए और एतदर्थ मैं दुःखी हूँ। कृपा करके पुत्र-प्राप्ति का वर दीजिये। ब्रह्मा ने कहा—सूक्ष्म (श्रौत-) ज्ञानी! तुम्हारे पुत्र नहीं होंगे। किन्तु एक पुत्री होगी। ३६३

पूमड मयिलिनैप् पॊरुवुन् पॊर्पॊडुम्, एमुरु मदमलै यीरैञ् जूरुडैत्
तामुरु वलियॊडुन् दनयै तोन्रुनी, पोमदि यॅनजयन् पुहन्रु पोयिनान् 364

पू–कमलासना (सम); मटम् मयिलिनै पॊरुवुम्–नित्य यौवना मोर की सी छटावाली के समान; पॊर्पॊटुम्–सुन्दरता के साथ; एम् उरु–आनन्दयुत; मतम् मलै–मत्त (पर्वत) गज; ईर् ऐञ्जूरु–पाँच सौ के दो; उटैय–के वश के; उरु वलियॊटुम्–अधिक बल के साथ; तनयै तोन्रुम्–पुत्री पैदा होगी; नी पोमति–तुम जाओ; ॲन–कहकर; अयन्–अज; पुकन्रु–कहकर; पोयिनान्–गये। ३६४

और वह कमलासना के समान नित्य यौवना और कलापी-सी छटावाली होगी। सहस्र मत्त गजों की सम्मिलित बलवाली ऐसी एक तनया होगी; चलो। यह वर देकर अजदेव अन्तर्द्धान हो गये। ३६४

आयव नरुळ्वळिप् पिरन्द वायिळै, शॅयव ळॅनवळर् शेव्वि कण्डिवट्
कायवन् यार्कॊलॅन् ड्रायन्दु तन्किळै, नायहन् सुन्दनॅन् बवर्कु नल्हिनान् 365

आयवन्–उनके; अरुळ् वळि–आशिष से; पिरन्त–जनित; आय् इळै–चुने भूषणवाली (लड़की) (के); चेयवळ् ॲन–लक्ष्मी के समान; वळर् चॆव्वि–बढ़ने की रम्यता; कण्टु–देखकर; इवट्कु आयवन्–इसका पति; आर् कॊल्–कौन हो; ॲन्रु आय्न्तु–ऐसा खोजकर; तन्किळै नायकन्–अपने वर्ग के नायक; चुन्तन् ॲन्पवर्कु–सुन्द नामधारी को; नल्किनान्–विवाह में दिया। ३६५

उनके वर के फलस्वरूप सुकेतु के एक लड़की पैदा हुई। वह आभरण-भूषिता होकर लक्ष्मीदेवी के समान बढ़ने लगी। उसकी सुन्दर तरुणाई देखकर सुकेतु उसके सुयोग्य पति खोजने लगा और अपने कुल के नायक सुन्द के साथ उसका विवाह कर दिया। (सुन्द को झर्झपुत्र कहते हैं महर्षि वाल्मीकी।)। ३६५

कामनु मिरदियुङ् गलन्द काट्चियी
दामॅन वियक्कनु मणङ्ग नाळुम्वे
ऱियाममुम् पहलुमो रीऱिन् ऱॅन्नलाय्त्
तामुरु पॅरुङ्गळिच् चलदि मूळ्हिनार् 366

इयक्कनुम्–यक्ष (सुन्द) और; अणङ्कु अन्नाळुम्–देवी सी वह; ईतु–यह (मिलन); कामनुम् इरतियुम्–कामदेव और रति; कलन्त काट्चि–मिलाप का दृश्य; आम् अॅन्न–है, ऐसा मान्य (रीति से); वेऱु याममुम् पकलुम्–परस्पर भिन्न रातों और दिनों में; ओर् ईऱु इन्ऱु–एक अन्त नहीं; अॅन्नल् आय्–ऐसा लोग कहें, उस रीति से; उरु पॅरु–बहुत अधिक; कळि चलति–आनन्द-सागर में; मूळ्किनार्–डूबे। ३६६

यक्ष सुन्द और वह सुन्दरी इस तरह संयोग के साथ रहे कि देखने वाले कहते कि यह मन्मथ और रति का मेल है। वे रात और दिन को एक करते हुए आनन्द-सागर में मग्न रहे। ३६६

पऱ्पल नाट्चॅलीइप् पदुमै पोन्ऱॊळिर्
पॊऱ्पिनाळ् वयिऱ्ऱिडैप् पुवन मेङ्गिड
वॅऱ्पणि पुयत्तुमा रीच नुम्विऱल्
मऱ्पॊरु सुवाहुवुम् वन्दु तोन्ऱिनार् 367

पल् पल नाळ् चॅलीइ–अनेक दिनों के बीतते; पतुमै पोन्ऱु–लक्ष्मी-सम; ऑळिर् पॊऱ्पिनाळ्–भासमान सुन्दरी के; वयिऱु इटै–पेट में; पुवनम् एङ्किट–भुवनों को त्रस्त करते हुए; वॅऱ्पु अणि–पर्वत-सम; पुयत्तु–भुजावाले; मारीचनुम्–मारीच और; विऱल् मल् पॊरु–सशक्त मल्ल-युद्ध करनेवाले; चुवाकुवुम्–सुबाहु; वन्तु तोन्ऱिनार्–आ जनमे। ३६७

इस तरह अनेक दिन बीते। उस लक्ष्मी-सी सुन्दरी के गर्भ से पर्वत-सम कंधों वाले मारीच और मल्ल-युद्ध चतुर सुबाहु पैदा हुए। बस, सारा संसार इनको देखते ही भावी को सोचकर कांप उठे। ३६७

मायमुम् वञ्जमुम् वरम्बि लाऱ्ऱलुम्
तायिनुम् पळ्हिनार् तमक्कुन् देर्वॊणा
दायवर् वळर्वुऴि यवरै यीन्ऱवक्
काय्शिन वियक्कनुङ् गळिप्पिन् मॅन्मैयान् 368

आयवर्–वे (दोनों पुत्र); मायमुम्–माया और; वञ्चमुम्–वंचना में; वरम्पु इल्–सीमाहीन; आऱ्ऱलुम्–शक्ति में; तायिनुम् पळ्किनार् तमक्कुम्–माता से भी अधिक परिचितों के लिये भी; तेर्वु ऑण्णातु–जानना कठिन हो ऐसा; वळर्वुऴि–बढ़ते समय; अवरै ईन्ऱ–उनको जन्म देनेवाले; काय् चिनम्–जला सकनेवाले क्रोध के; अ इयक्कनुम्–वह यक्ष भी; कळिप्पिन् मेन्मैयान्–मद में बढ़ा होकर। ३६८

वे दोनों माया में, प्रवंचना में और अपार बाहु-बल में आगे इतने

बढ़े कि माता के समान हेल-मेल रखनेवाले भी विस्मय-विमूढ रहे। तब उनका जनक दाहक क्रोध-शील सुन्द मस्ती में आकर— । ३६८

तीदुरु मवुणर्हळ् तीमै तीर्दर, मोदुरु कडलॅला मौरुहै मॉण्डुणुम्
मादव नुरैविड मदनिल् वन्दुनीळ्, पादव मनैत्तैयुम् परित्तु वीशिनान् 369

तीतु उरुम्–दुराचारी; अवुणर्कळ्–असुरों से; तीमै तीर् तर–(की हुई) हानि दूर करने; मोतुरु–(तीर से) टकरानेवाले; कटल् ॲलाम्–समुद्र, सबको; ऑरु कै मॉण्टु–एक चुल्लू में भर ले; उणुम्–(जिन्होंने) पी लिया (उन); मातवन् उरैवु इटम्–महान तपस्वी के वासस्थान; अतनिल् वन्तु–में आकर; नीळ् पातवम्–दीर्घ पादप; अनैत्तैयुम्–सभी को; परित्तु वीचिनान्–उखाड़कर फेंका। ३६९ |

अगस्त्य के, जिन्होंने असुरों के अत्याचारों को मिटाने के लिये तीर से टकराने वाले सागर को एकदम अपने एक चुल्लू में भर कर पी लिया था, आश्रम में पहुँचा और उसने वहाँ रहे ऊँचे पादपों को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया।

(अगस्त्य का समुद्र-जल पीने का वृत्तांत—वृत्रासुर अपने सगे असुरों के साथ समुद्र के अन्दर जाकर छिप गया। इन्द्र उसको मारने का उपाय न पाकर क्षुब्ध रहा। तब अगस्त्य ने अपने तपोवल से सारे सागर को अपने एक चुल्लू में भर लिया और आचमन के रूप में पी लिया। फिर इन्द्र ने वृत्रादि असुरों को मार दिया। इसी वृत्र को मारने के लिए प्राणत्यागी दधीचि की रीढ़ का वज्र बना)। ३६९

विळैवुरु मादवम् वॅ∴कि नोर्विरुम्, बुळ्ळैकलै इरलैयै युयिरुण् डोङ्गिय
वळैमुदन् मरनॅला मडिप्प मादवन्, तळलॅळ विळित्तनन् शाम्ब रायिनान् 370

विळैवु उरु–अभीष्ट फलदायी; मा तवम्–महान तप; वॅ∴किनोर्–चाह के साथ करनेवाले; विरुम्पु–(जिनको) चाहते हैं; उळै–हरिणों; कलै–हरिणियों; इरलैयै–मृगों को और; उयिर् उण्टु–मारकर; ओङ्किय–उन्नत बढ़े; वळै मुतल्–'वळै' (नामक) तरु आदि; मरन्–वृक्ष; ॲल्लाम्–सबको; मटिप्प–नाश करने पर; मा तवन्–महान तपस्वी ने; तळल् ॲळ–अंगारे उगलते हुए; विळित्तनन्–तरेरा; चाम्पर् आयिनान्–(यक्ष) राख बना। ३७०

सुन्द ने और भी अभीष्ट फल-दायी तपस्या को मन लगाकर करने वाले ऋषि-मुनियों के प्रिय, विविध हरिणों को भी मारा। अलावा उसने "सुरपुन्नै" आदि तरुओं को भी तोड़ डाला। यह देख महान तपस्वी अगस्त्य ने उस पर आग्नेय दृष्टि फेरी और वह वहीं राख हो गया। ३७०

मर्रवन् विळिन्दमै मैन्दर् तम्मोडुम्, पोर्रोडि केट्टुवॅङ् गनलिर् पॉङ्गुरा
मुर्रुर मुडिक्कुवॅन् मुनियै यॅन्रॅळा, नर्रव नुरैविड मदनै नण्णिनाळ् 371

मऱ्ऱु–फिर; अवन् विळिन्ततै–उस (सुन्द) का मरना; पॊन् तॊटि–स्वर्ण-कंकणधारिणी; केट्टु–सुनकर; वॆम् कनलिन्–भयंकर अग्नि के समान; पॊङ्कुरा–कोप करके; मुनियै–मुनि को; मुऱ्ऱुऱ–पूर्णरूप से; मुटिक्कुवॆन्–नाश करूंगी; ऍन्ऱु–यह कहकर; मैन्तर् तम्मॊटुम् ऍळा–(दोनों) पुत्रों के साथ निकलकर; नल्तवन्–श्रेष्ठ तपस्वी के; उऱैविटम् अतनै–वासस्थान (को); नण्णिताळ्–पहुँची। ३७१

उसकी मृत्यु की बात उस स्वर्ण-कंकणधारिणी ने अपने दोनों पुत्रों के साथ सुनी; भयंकर आग के समान बिफर उठी। मुनि का काम तमाम कर दूँगी—यह कहती हुई वह अपने दोनों पुत्रों को साथ ले, तपोधन अगस्त्य के आश्रम में आयी। ३७१

इडियॊडु मडङ्गलुम् वळियु मेङ्गिडक्
कडिकॊड वमरर्हळ् कदिरु मुट्किडत्
तडियुडै मुहिऱ्कुलञ् जलिप्प वण्डमुम्
वॆडिपड वदिर्त्तॆदिर् विळित्तु मण्डवे 372

इटियॊटु–वज्र के साथ; मटङ्कलुम्–बड़वाग्नि; वळियुम्–युगांत पवन भी; एङ्किट–दहल जायँ, ऐसा; अमरर्कळ्–देवता लोग; कटि कॊट–निष्प्रभ हो जायँ, ऐसा; कतिरुम्–तेज पुंज (सूर्य व चन्द्र); उट्किट–डर जायँ; तटि उटै (य)–विद्युत सहित; मुकिल् कुलम्–मेघ-कुल (के); चलिप्प–चंचल होते; अण्टमुम्–अंड-गोल (के) भी; वॆटि पट–विदीर्ण होते; अतिर्त्तु–हा हू मचाते हुए; ऎतिर् विळित्तु–(मुनि को) उद्दिष्ट कर पुकारते हुए; मण्टवे–पास आये, तब। ३७२

वह भीषण ध्वनि में ललकारती हुई आयी। उसकी ध्वनि सुनकर वज्र, बड़वाग्नि और प्रलय-पवन भी डर गये। देवता लोग निष्प्रभ हो गये। सूर्य और चन्द्र भी भयभीत हुए और तडितावास मेघ भी थरथरा गये। अंडगोल फट गया। ३७२

तमिऴॆन्नु मळप्परुञ् जलदि तन्दवन्
उमिऴ्कनल् विऴिवऴि यॊऴुह वुङ्करित्
तऴिवन शॆय्दला लरक्क राहिये
इऴिहॆन वुरैत्तन नशनि यॆञ्जवे 373

तमिऴ् ऍनुम्–तमिऴ् कहलानेवाली; अळप्पु अरु–अकूत; चलति तन्तवन्–जलधि दिलानेवाले (की); उमिऴ् कनल–उगली आग (के); विऴि वऴि–आँखों द्वारा; ऒऴुक–निकलते; अचनि ऍञ्च–अशनि को निर्बल बनाते हुए; उङ्करित्तु–हुंकार कर; अऴिवन चॆय्तलाल्–मारक काम करने से; अरक्कर् आकि–राक्षस बनकर; इऴिक–पतित हो जाओ; ऍन उरैत्तनन्–ऐसा (शाप-वचन) कहा। ३७३

तमिऴ के अगाध सागर के देनेवाले अगस्त्य ने आँखों से अंगारे उगलते हुए वज्र-घोष से भी अधिक ऊँचे स्वर में हुंकार किया। और

श्राप दिया कि जीव-घातक काम करते हो, अतः राक्षस बनकर पतित हो जाओ। (अगस्त्य को 'तमिळ के देनेवाले' कहना औपचारिक कथन है। अगस्त्य ने तमिळ भाषा को व्याकरण आदि रचकर, सुबद्ध बनाया और उसका प्रचार किया। पाणिनी ने संस्कृत का प्रचार किया। अतः पौराणिक वृत्तांत है कि शिवजी ने पाणिनी को संस्कृत और अगस्त्य को तमिळ भाषा सिखाकर उनके द्वारा उन भाषाओं का प्रचार कराया। —मूल टीकाकार)। ३७३

वॅरुक्कॉळ	वुलहैयुम्	विण्णु	ळोरैयुम्
मुरुक्कियॅव्	वुयिरुमुण्	डुळ्लु	मूर्क्कराम्
अरक्कर्ह	ळायिऩ	रक्क	णत्तिऩिल्
उरुक्किय	शॅम्बॅऩ	वुमिळ्हट्	टीयिऩर् 374

अ कणत्तिऩिल्—उसी क्षण; उरुक्किय चॅम्पु अॅऩ—पिघले ताँबे के समान; कण् उमिळ्—आँखों से निकली; तीयिऩर्—आगवाले; उलकैयुम् इस लोक को (और); विण् उळोरैयुम्—आकाश-लोक-वासियों को; वॅरु कॉळ—भयभीत करते हुए; मुरुक्कि—मारकर; अॅ उयिरुम्—किसी भी जीव को; उण्टु उळ्लुम्—खाते हुए फिरनेवाले; मूर्क्कराम्—मूर्ख; अरक्कर्कळ् आयिऩर्—राक्षस बने। ३७४

ज्योंही शाप कहा गया त्योंही वे तीनों मूर्ख राक्षस बन गये। पिघले ताँबे के समान उनकी आँखों से कोपाग्नि निकलने लगी। वे पृथ्वी, और आकाश के लोकवासियों को डराते हुए किसी भी प्राणी को मार कर खाते हुए फिरने लगे। ३७४

आङ्गवऩ्	वॅहुळियु	मर्रॆऩ्द	शाबमुम्
ताङ्गिऩ	रॅदिर्शॅयुऩ्	दरुक्कि	लामैयिऩ्
नीङ्गिऩर्	सुमालियै	नेर्ऩ्दु	निर्कियाम्
ओङ्गिय	पुदल्वरॅऩ्	ऱुरवु	कूर्ऩ्दऩर् 375

आङ्कु—वैसा; अवऩ् वॅकुळियुम्—उन (अगस्त्य) का क्रोध और; अर्रॆऩ्त चापमुम्—कहे शाप; ताङ्किऩर्—पात्र (बने) वे; अॅतिर् चॅयुम् तरुक्कु—प्रति (हिंसा) करने की शक्ति; इलामैयिऩ्—न रहने के कारण; नीङ्किऩर्—हटे; चुमालियै नेर्ऩ्तु—सुमाली के पास जाकर; निर्कु—आपके; याम्—हम; ओङ्किय—उत्कृष्ट; पुतल्वर्—पुत्र हैं; अॅऩ्ऱु—ऐसा कहकर; उरवु कूर्ऩ्तऩर्—रिश्ता जोड़ा। ३७५

अगस्त्य के कोप और शाप के पात्र बने वे उनका कोई प्रतिकार करने में असमर्थ रहे। अतः वे (पुत्र) वहाँ से हटकर पाताल में सुमाली के पास पहुँचे और उससे हम आपके उत्कृष्ट संतान हैं कहकर नाता जोड़ लिया। (सुमाली रावण की माँ—केकशी का पिता था। माली और माल्यवान इसके सगे भाई थे। वे पहले लंका में रहे। उनके अत्याचारों से तंग

आकर श्रीविष्णु ने माली को मारा और बाकी दोनों भाई डरकर पाताल भाग गये। बहुत दिन बाद जब रावण राजा हुआ वे लंका में आ गये)। ३७५

अवनॊडुम् पादलत् तनेह नाट्चॅलीइत्
तवतुरु दशमुहन् उन्नक्कु मादुलर्
इवरॅनप् पुडैत्तळित् तुलह मॅङ्गणुम्
पवननिर् इरिहुवर् पदहि मैन्दर्हळ् 376

पतकि मैन्तर्कळ्—पातकी-पुत्र; पातलत्तु—पाताल में; अवनॊटुम्—उस (सुमाली) के साथ; अनेकम् नाळ्—अनेक दिन; चॅलीइ—बिताकर; तवन् उऱ—तपोबली; तचमुकन्—दशमुख; इवर् उन्नक्कु मातुलर्—ये मेरे मामा हैं; ऎन—ऐसा कहते; पुटैत्तु अऴित्तु—मारकर, मिटाकर; पवननिल्—(प्रलय) पवन के समान; उलकम्—लोक; ऎङ्कणुम्—सर्वत्र; तिरिकुवर्—घूमने लगे। ३७६

उस पातकी ताडका के पुत्र अनेक दिन पाताल में छिपे-लुके रहे। फिर वे तपोबली रावण के पास गये। रावण ने इनको मातुल कहकर अपनाया। उसकी प्रेरणा और उसका बल पाकर ये सारे संसार में प्रलयकालीन प्रभंजन के समान सबको मारकर खाते हुए विचर रहे हैं। ३७६

मिहुन्दिरन् मैन्दरै वेरु नीङ्गुरात्
तहुन्दॊऴिन् मुनिवरन् चलत्तै युन्नियॆ
वहुन्दुरु वशुवरि वदिन्द दिव्वनम्
पुहुन्दन ळळलॆनप् पुळुङ्गु नॆञ्जिनाळ् 377

तकुम् तॊऴिल्—सुयोग्य (तपो-) कर्मो; मुनिवरन् चलत्तै—मुनिवर के कोप को; उन्नियॆ—स्मरण करते हुए; अऴल् ऎन—अग्नि के समान; पुऴुङ्कुम् नॆञ्चिनाळ्—घुलनेवाले मन की; तिऱल् मिकु—शक्ति में अधिक; मैन्तरै—पुत्रों (से); वेऱु नीङ्कुऱा—अलग हटकर; वकुन्तु उऱ—(रहने का) रास्ता अपनाने के कारण; वच अरि वतिन्तनु—ज्वालायुत अग्नि से व्याप्त; इ वनम्—इस वन में; पुकुन्तनळ्—प्रविष्ट हुयी। ३७७

तपस्या के श्रेष्ठ सुयोग्य कार्य में लगे रहे अगस्त्य के कोप का सदा स्मरण करके आग के समान कुढ़ती रही ताड़का को अपने पराक्रमी पुत्र से अलग होकर रहना पड़ा। अतः वह लपटों के साथ जलनेवाली अग्नि के निलय, इस जंगल में आकर वास करने लग गयी। ३७७

❀ मण्णुरुत् तेडुप्पिनुम् कडलै वारिनुम्
विण्णुरुत् तिडिप्पिनुम् वेण्डिर् चॅय्हिर्पाळ्
ऒण्णुरुत् तॊरिवरुम् पाव मोण्डियोर्
पॆण्णुरुक् कॊण्डॆनत् तिरियुम् पॆर्रियाळ् 378

अँण् उरु—विस्तार (और) आकार; तॅरिवु अरु—जानने में अशक्य; पावम् ईण्टि—पाप मिलकर; ओर् पॅण् उरु—एक स्त्री का रूप; कॊण्टु—धरा; अँत—ऐसा; तिरियुम् पॅऱ्ऱियाळ्—घूमने की स्वभाववाली; मण् उरुत्तु अँटुप्पिनुम्—भूमि खोदकर निकालना हो; कटलै वारिनुम्—समुद्र को उठाकर पीना हो; विण् उरुत्तु इटिप्पिनुम्—आकाश को, कोप कर, ढहाना हो; वेण्टिन्—चाहेगी तो; चॅय्किऱ्पाळ्—कर चुकनेवाली है। ३७८

जिनकी संख्या जानी नहीं जा सकती और जिनके प्रकार भी कल्पना में नहीं आ सकते वे सब पाप एक स्त्री का रूप धरकर आ जावें तो कैसी रहेगी ? वैसी ही है वह। भूमि को खोद निकालना हो, या समुद्र को पी जाना हो या आकाश को तोड़कर गिराना हो—चाहेगी तो अनायास कर देगी। ३७८

पॅरुवरै यिरण्डॊडुम् बिऱन्द नञ्जॊडुम्
उरुमुऱळ् मुळक्कॊडु मूळित् तीयॊडुम्
इरुपिऱै शॅऱिन्दॅळु कडलुण् डामॅनिन्
वॅरुवरु तोऱ्ऱत्तळ् मेनि मानुमे 379

पॅरु वरै—बड़े पर्वत; इरण्टॊटुम्—दो के साथ और; पिऱन्त नञ्चॊटुम्—सहजात विष के साथ; उरुम् उऱळ्—वज्र से टक्कर लेनेवाले; मुळक्कॊटुम्—गर्जन के साथ; ऊळि तीयॊटुम्—युगांत (कालीन) आग के साथ; इरु पिऱै—दो अर्ध-चन्द्र; चॅऱिन्तु—सहित होकर; अँळु—उठ आनेवाला; कटल् उण्टु आम्—एक समुद्र है; अँनिन्—तो; वॅरुवरु तोऱ्ऱत्तळ्—डरावनी सूरतवाली (उसके); मेनि मानुम्—आकार की तुलना करेगा। ३७९

उस डरावनी मूरत की राक्षसी की देह की उपमा भयंकर समुद्र ही से हो सकती है जो दो पर्वतों (स्तनों की जगह में), सहजात विष (आँखों के स्थान में) वज्रसम घोष (जोर का शोर), प्रलयकालीन अग्नि (केशराशि की जगह पर), और दो अर्ध-चन्द्रों (मुख के कोनों से निकले लम्बे और वक्र दांतों के स्थान में) के साथ चलता आ रहा हो। ३७९

❀ शूडह वरवुऱळ् शूलक् कैयिनळ्
काडुऱै वाळ्क्कैयळ् कण्णिऱ् काण्बरेल्
आडवर् पॅण्मैयै यवावुन् दोळिनाय्
ताडहै अँन्पदच् चळक्कि नाममे 380

कण्णित्—आँखों से; काण्परेल्—देखें तो; आटवर्—पुरुष भी; पॅण्मैयै—स्त्रीत्व को; अवावुम्—चाहने लगें ऐसी; तोळिनाय्—भुजाओंवाले; चूटकम् अरवु—कंकणरूपी नाग; चूलम् उऱळ्—(और) शूल धरनेवाले; कैयितळ्—हाथोंवाली; काटु उऱै—वन में वास करने के; वाळ्क्कैयळ्—जीवनवाली; अ चळक्कि—उस दुराचारिणी (का); नामम्—नाम; ताटकै अँन्पतु—ताटका है। ३८०

हे सुन्दर-बाहु, जिसकी भुजाओं को देखकर पुरुष लोग भी स्त्रीत्व की इच्छा करेंगे ! वह अपने सर्प-कंकणधारी हाथ में त्रिशूल रखती है। वन-वासिनी है ! उस दुष्टा का नाम ताड़का है । ३८०

उळप्पॅरुम् पिणिप्पर्ा वुलोब मॊन्ऱुमे
अळप्परुङ् गुणङ्गळै यऴिक्कु मारुपोल्
किळप्परुङ् गॊडुमैय वरक्कि केडिला
वळप्पॅरु मरुदवैप् पऴित्तु माऱ्ऱिनाळ् 381

उळम् पॅरुम् पिणिप्पु—चित्त को अधिक बाँधने से; अरा—न चूकनेवाला; उलोपम् ऒन्ऱुमे—लोभ एक ही; अळप्प अरु—आँकने के लिये अशक्य; कुणङ्कळै—(अच्छे) गुणों का; अऴिक्कुम् आरु पोल्—नाश कर देगा, उसी तरह; किळप्पु अरु—अकथनीय; कॊटुमैय अरक्कि—अत्याचारिणी राक्षसी; केटु इला—अक्षय; वळम् पॅरु—समृद्ध; मरुतम् वैप्पु—खेत और बागों के भूभाग को; अऴित्तु—मिटाकर; माऱ्ऱिनाळ्—(ताड़का ने) परिवर्तित कर दिया । ३८१

यह सुन्दर खेतों और बागों का उर्वर प्रदेश था। (तमिऴ में इसे मरुतम् कहते हैं।) इस सारी भूमि को अकेली उसने दारुण और दाहक जंगल में वैसे बदल दिया जैसे अकाट्य लोभ का दुर्गुण अकेला ही अपरिमेय सद्‌गुणों का नाश कर डालता है। ३८१

इलङ्गैयर शन्पणिय मैन्दॊरिडै यूराय्
विलङ्गल्वलि कॊण्डॆनदु वेळ्विनलि हिन्ऱाळ्
अलङ्गन्मुहि लेयवळिव् वङ्गनिल मॆङ्गुम्
कुलङ्गळॊ डडङ्गनत्ति कॊन्ऱुतिरि हिन्ऱाळ् 382

अलङ्कल्—माला (युक्त); मुकिले—मेघ; अवळ्—वह; विलङ्कल् वलि—पर्वत की शक्ति; कॊण्टु—लेकर; इलङ्कै अरचन्—लंकाधिपति (की); पणि अमैन्तु—आज्ञा मानकर; ओर् इटैयूरु आय्—(बड़ी) एक बाधा बनकर; ऎन्तु वेळ्वि नलिकिन्ऱाळ्—मेरा यज्ञ बिगाड़ती है; इव् अङ्क निलम् ऎङ्कुम्—इस अंग भूमि भर में (सर्वत्र); कुलङ्कळॊटु अटङ्क—कुल सहित नाश करते हुए; नत्ति कॊन्ऱु—खूब मारती हुई; तिरिकिन्ऱाळ्—घूमती है । ३८२

माला-धारी, मेघ-सदृश, हे श्रीराम ! वह पर्वत का-सा भुज-बल रखती है। लंकाधिप की आज्ञाकारिणी है। बाधा बनकर मेरा यज्ञ रोकती है। और इस अंग देश भर में सबको सकुल मारकर खाती फिरती है। ३८२

※ मुन्नुल हऴित्तमुनि तन्दवुयि रॆल्लाम्
तन्नुण वॆनक्करुदु तन्मैयिनण् मैन्द

ऎऩ्ऩिऩि युणरत्तुव दिऩिच्चिऱिदु नाळिल्
मऩ्ऩुयि रऩैत्तैयुम् वयिऱ्ऱिलिडु मॆऩ्ऱाऩ् 383

मैन्त–(चक्रवर्ती-) पुत्र; मुऩ् उलकु अळित्त मुऩि–प्राचीन लोकों को सृजित करनेवाले ऋषि (ब्रह्मा) (के); तन्त उयिर् ऎलाम्–सृष्ट जीव सबों को; तऩ् उणवु–अपना भोजन; ऎऩ करुत्तु–ऐसा समझने का; तऩ्मैयिऩळ्–स्वभाववाली; इऩि चिऱितु नाळिल्–अब थोड़े दिनों में; मऩ् उयिर्–स्थायी जीव; अऩैत्तैयुम्–सबों को; वयिऱ्ऱिल् इटुम्–अपने उदर में डाल लेगी; इऩि ऎऩ् उणरत्तुवतु–आगे क्या समझना है; ऎऩ्ऱाऩ्—बोले। ३८३

चक्रवर्ती-कुमार ! प्राचीन सभी लोकों के सृष्टा (चतुर्मुख) के दिये सभी जीवों को वह अपना भोजन-पदार्थ समझती है ! अतः (अब मारी नहीं गयी तो) कुछ ही दिनों में लोकस्थ सभी जीवों को अपने उदरस्थ कर लेगी। आगे क्या कहा जाय ? । ३८३

❀ इङ्गुरुव निप्परि शुरैप्पवदु केळाक्
कॊङ्गुरै नऱैक्कुल मलर्च्चॆऩि तुळक्का
ऎङ्गुरैव दित्तॊऴि लियऱ्ऱुबव ळॆऩ्ऱाऩ्
शङ्गुरै करत्तॊरु तऩिच्चिलै तरित्ताऩ् 384

चङ्कु उऱै करत्तु–शंखधारी हस्त में; ऒरु तऩि चिलै तरित्ताऩ्–अद्वितीय और श्रेष्ठ धनु (कोदण्ड) धरनेवाले; इङ्कु–इधर; उऱुवऩ् इ परिचु उरैप्प–महर्षि के ऐसा कहने पर; अतु केळा–वह सुनकर; कॊङ्कु उऱै–सुवासित; नऱै कुलम् मलर्–शहद-पूर्ण पुष्प (अलंकृत); चॆ(ऩ्)ऩि–सिर को; तुळक्का–हिलाकर; इ तॊऴिल्–यह कृत्य; इयऱ्ऱुपवळ्–करनेवाली; उऱैवतु ऎङ्कु–रहती कहाँ; ऎऩ्ऱाऩ्–पूछा। ३८४

श्रीराम ने, जो पांचजन्य शंख धारण करनेवाले अपने हाथ में अब कोदण्ड लिये हुए थे, विश्वामित्र जी की ये बातें सुनकर, सुगन्धित और शहद भरे पुष्पों से अलंकृत अपने सिर को हिलाकर पूछा कि यह (भयंकर) कार्य करनेवाली रहती कहाँ है ? । ३८४

❀ कैवरै यॆऩत्तहैय काळैयुरै केळा, ऐवरै यहत्तिडै यडैत्तमुऩि यैय
इव्वरै यिरुप्पदव ळॆऩ्बदऩिऩ् मुऩ्बॊर्, मैवरै नॆरुप्पॆरिय वन्ददॆऩ वन्दाळ् 385

कैवरै ऎऩ तकैय–गज ही वर्ण्य; काळै उरै केळा–ऋषभ का कथन सुनकर; ऐवरै अकत्तिटै अटैत्त मुऩि–पाँच (इंद्रियों) को अन्दर ही दबाये रखनेवाले मुनि; ऐय–सुन्दर; अवळ् इरुप्पतु–उसका वासस्थान; इ वरै–यह पर्वत है; ऎऩ्पतऩिऩ् मुऩ्पु–यह कहने से पूर्व; ओर् मै वरै–एक काला पर्वत; नॆरुप्पु ऎरिय–आग के जलते (जलती आग के साथ); वन्ततु–(चलता) आया; ऎऩ–ऐसा; वन्ताळ्–आयी। ३८५

गज सन्निभ और ऋषभ-सम श्रीराम का वचन सुनकर इंद्रियजित

मुनि ने कहा कि प्रभु ! उसका वासस्थान यही पर्वत है। यह कह चुकने से पूर्व ही ताड़का उनके सामने, काला पर्वत जलता आ गया—ऐसा प्रकट होकर आने लगी। ३८५

शिलम्बुकोळ् शिलम्बिडै शॆऱ्ऱितकऴ् लोडुम्
निलम्बुह मिदित्तिड नॆळित्तकुऴि वेलैच्
चलम्बुह वनऱ्ऱुह णन्दहनु मञ्जिप्
पिलम्बुह निलैक्किरिहळ् पिन्ऱॊडर वन्दाळ् 386

इटै चॆऱ्ऱित्त–(यथा-) स्थान पहने; चिलम्पु कोळ्–गिरियों से (कंकड़ों के स्थान में) भरे; चिलम्पु–नूपुर; कळ्लोटुम्–(पर्वत-निर्मित) कड़ों के साथ; निलम् पुक–धरती धँसाते हुए; मितित्तिट–डग भरने से; नॆळित्त कुऴि–बने गड्ढों में; वेलै चलम् पुक–समुद्र जल आ भरा; अतल्–प्रज्वलित कोपवाले; तऱुकण्–निडर; अन्तकतुम्–यम (को) भी; अञ्चि–डरकर; पिलम् पुक–पाताल में पहुँचाते हुए; निलै किरिकळ्–अचल पर्वत भी; पिन् तॊटर–अनुगमन करते; वन्ताळ्–आयी। ३८६

वह अपने पैरों को जिनके नूपुरों के अंदर पर्वत ही कंकड़ों के रूप में भरे थे, इस तरह रखती आ रही थी कि भूमि में गड्ढे बन गये और उनमें समुद्रजल आकर भर गया। कोपाग्नि से युक्त निडर अंतक भी उससे डरकर पाताल में आकर छिप गया। स्थावर गिरियाँ भी चलायमान होकर इसके पीछे आ रही थीं। ३८६

❀ इऱैक्कडै तुडित्तपुरु वत्तळॆयि ऱॆन्नुम्
पिऱैक्कडै पिऱक्किड मडित्तपिल वायळ्
कऱैक्कडै यरक्किवड वैक्कनलि रण्डाय्
निऱैक्कडन् मुळैत्तॆन नॆरुप्पॆऴ विऴित्ताळ् 387

कऱै कटै अरक्कि–(संसार का) कलंक, नीच राक्षसी; कटै—कोनों में; इऱै तुटित्त–थोड़ा फड़कती; पुरुवत्तळ्–भौंहोंवाली; ऍयिऱु ऍन्नुम्–(वक्र-) दाँतरूपी; पिऱै–अर्धचन्द्रों को; कटै पिऱक्किट–(मुख के) कोनों से प्रकट करते हुए; मटित्त–बन्द किये हुए; पिलम् वायळ्–गुफ़ा सम मुखवाली; वटवै कतल्–बड़वाग्नि; इरण्टाय्–दो बनकर; निऱै कटल्–मर्यादाबद्ध समुद्र में; मुळैत्ततु–प्रकट हुई; ऍन–ऐसा; नॆरुप्पु ऍऴ–अंगारे निकालती हुयी; विऴित्ताळ्–घूरकर देखा। ३८७

लोक-कलंक, नीच, उस राक्षसी की भौहों के कोने किंचित कांपे। उसका मुख पर्वतगह्वर के समान था जिसको उसने बन्द किया था और जिसके कोनों से दो वक्र-दांत बाहर निकले हुए थे। उसने आँखों से बड़वानल दो भागों में मर्यादाबद्ध सागर मध्य निकल रहा हो ऐसा आग उगलती हुई तरेरा। ३८७

❀ कडङ्गलुळ् तडङ्गळिऱु कैयॊडुहै तॆऱ्ऱा
वडङ्गॊळ तुडङ्गुमुलै याण्मऱुहि वान्ऱोर्

इडङ्गळु नॆडुन्दिशैयु मेऴुलहु मॆङ्गुम्
अडङ्गलु नडुङ्गवुरु मञ्जनन्ति यार्त्ताळ् 388

कटम् कलुऴ्–मद जलस्रावी; तट कळिरु–बड़े गजों को; कै ऑटु कै तॆऱ्ऱा–सूँड से सूँड बाँधकर; वटम् कॊळ–हार के समान पहने रहने से; नुटङ्कुम्–डोलनेवाले; मुलैयाळ्–स्तनोंवाली; वानोर इटङ्कळुम्–देवों के स्थानों को; नॆटु तिचैयुम्–लम्बी दिशाओं को; एऴ् उलकुम्–सातों लोकों को; ऍङ्कुम्–और सब स्थानों को; अटङ्कलुम्–(उनके) सभी (जीवों) को; मरुकि नटुङ्क–डराते हुए; उरुम् अञ्च–वज्र डर जाय ऐसा; नन्ति आर्त्ताळ्–उच्च नर्दन किया। ३८८

उसने वक्ष पर मद-नीरस्रावी मत्त गजों की सूँड़ों को बटकर हार के रूप में पहन रखा था। इसलिए उसके स्तन दोलायमान थे। उसने ऐसा भीषण गर्जन किया कि गगन-लोक, लम्बी दिशाओं, भू आदि सातों लोकों में, सर्वत्र रहनेवाले सभी जीव थर्रा उठे और अशनि भी भयभीत हुआ। ३८८

आर्त्तवरै नोक्किनहै शॆय्दॆवरु मञ्जक्
कूर्त्तनुदि मुत्तलै ययिऱ्कॊडिय कूऱ्ऱैप्
पार्त्तॆयिऱु तिन्ऱुपहु वायमुऴै तिऱन्दोर्
वार्त्तैयुरै शॆय्दन ळिडिक्कुमऴै यन्नाळ् 389

इटिक्कुम् मऴै अन्नाळ्–गरजते मेघ समाना; आर्त्तु–दहाड़कर; अवरै–उनको; नोक्कि–देखकर; नकै चॆय्तु–ठठाकर; ऍवरुम्–कोई भी; अञ्च–डरे, ऐसा; कूर्त्त नुति–तीक्ष्ण नोकवाले; मुत्तलै अयिल्–त्रिशिरा शूल (रूपी); कॊटिय कूऱ्ऱै–भयंकर यम को; पार्त्तु–देखकर; ऍयिऱु तिन्ऱु–दाँत पीसकर; पकु वाय् मुऴै तिऱन्तु–मुख-गह्वर खोलकर; ओर् वार्त्तै–एक वार्त्ता; उरै चॆय्तनळ्–कही। ३८६

वज्र-नाद-युक्त मेघ के समान उसने गर्जन करके, तीनों को देखा; ठठाकर हंसी। सबको डरानेवाले तीक्ष्ण फलों के त्रिशूलरूपी भयंकर यम को देखते (दिखाते) हुए, दाँत पीसकर, मुख-गह्वर को खोलकर उसने एक बात कही। ३८९

*कडक्करुम् वलत्तॆनदु कावलिदिल् यावुम्
कॊडक्करु वरुत्तनॆ न्निच्चुवै किडक्कुम्
विडक्करिदॆ नक्करुदि योविदिकॊ डुन्दप्
पडक्करुदि योपहर्मिन् वन्दपरि शॆन्ऱाळ् 390

कटक्क अरु वलत्तु–अलंघ्य, क्षमता युक्त; ऍनतु कावल् इतिल्–मेरी रक्षा की इस भूमि में; यावुम् कॊट–सबका नाश करते हुए; करु अऱुत्तनॆन्–निर्मूल किया; इनि–अब; वन्त परिचु–आने का हेतु; चुवै किटक्कुम्–स्वादिष्ट; विटक्कु अरितु–मांस (मिलना मेरे लिए) कठिन है; ऍन करुतियो–यह समझकर क्या;

विति कोट्टु उन्त–विधि के प्रेरित करते; पट करुतियो–मरना चाहकर क्या; पकर्मित्–कहो; अँन्ड्राळ्–कहा (पूछा)। ३९०

अलंघ्य है मेरी शक्ति। मेरे शासनाधीन है यह स्थान। मैं यहाँ के सभी जीवों को निर्मूल कर चुकी। अब तुम आ गये हो! क्या यह खुद समझकर आये हो कि इसे अब स्वादिष्ट मांस मिलना असंभव हो गया है? या अपने प्रारब्ध की प्रेरणा से मेरे हाथों मरण का वरण करने आये हो? कौन सा कारण है? बताओ। ३९०

*** मेहमवै यिड्रुह विळित्तनळ् पुळुङ्गा**
माहवरै यिड्रुह वुदैत्तनण् मदित्तिण्
पाहमॅन्नु मुड्रॅयि ट्रुक्किययिल् पड्रा
आहमुड्र वुय्त्तॅरिवॅ नॅन्ड्रॅदि रळन्ड्राळ् 391

मेकम् अवै–मेघ समूह; इड्रु उक–चूर होकर गिरे, ऐसा; विळित्तनळ्–(आँखें फाड़कर) देखा; पुळुङ्का–क्रोध कर; माकम् वरै–आकाश-स्पर्शी पर्वत को; इड्रु उक–चूरकर छितराते हुए; उतैत्तनळ्–लात मारी; मति तिण् पाकम्–चन्द्र के कठोर भाग; अँन्नुम्–मान्य; मुड्रु अँयिड्रु–पूरे वढ़े (वक्र-) दाँतों को; अतुक्कि–पीसकर; अयिल् पड्रा–शूल पकड़कर; आकम् उड्र–वक्ष पर लगे ऐसा; उय्त्तु अँरिवॅन्–निशाना लगाकर फेंकूँगी; अँन्ड्रु–यह कहकर; अँतिर्–सामने (आकर); अळन्ड्राळ्–दहाड़ा। ३९१

उसने तरेरा-मेघ चूर होकर गिर गये। लात मारी-गगनचुम्बी पर्वत चूर हुआ। फिर पूरे वढ़े अपने अर्धचन्द्र-सम वक्र दाँतों को पीसते हुए हाथ में शूल संधाना। (इनकी) छाती पर लगे, ऐसा फेंकूँगी—यह कहते हुए उसने सामने खड़ी हो गुस्सा दिखाया। ३९१

*** अण्णन्मुनि वड्कदु करुत्तॅनिनु मावि**
उण्णॅन वडिक्कणै तॊडुक्किल नुयिर्क्के
तुण्णॅनुम् विनैत्तॊळि ड्रॊडङ्गियुळ ळेनुम्
पॅण्णॅन मनत्तिड्रै पॅरुन्दहै निनैन्दान् 392

मुनिवड्कु अतु करुत्तु–मुनि का वही विचार है; अँनिनुम्–तो भी; उयिर्क्के–प्राणों के लिए; तुण् अँनुम्–खतरे का; विनै तॊळिल्–कार्य करने का; तॊटङ्कि उळळ् एनुम्–आरम्भ कर चुकी, तो भी; अण्णल्–प्रभु (ने); आवि उण् अँन–प्राण हर लो, यह कहकर; वटि कणै–तोक्ष्ण शर; तॊटुक्किलन्–नहीं संधाना; पॅण् अँन–स्त्री है यह; पॅरुन्तकै मनत्तु–उदार मन में; इड्रै निनैन्तान्–जरा विचारा। ३९२

महर्षि विश्वामित्र की (उसके वध में) सम्मति थी और वह इनके प्राणों को खतरे में डालनेवाला काम भी करने लगी थी। तो भी प्रभु ने उसके प्राणों को हरने के अभिप्राय से शर संधान नहीं किया। वह स्त्री है यह किंचित संकोच उनके मन में उठा। ३९२

❀ वॆरिन्द शॆम्मयिर् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱाळयिल्
ऎरिन्दु कॊल्वॆनॆन् ऱॆऱ्कवुम् पारक्किलाच्
चॆरिन्द तारवन् शिन्दैक् करुत्तॆलाम्
अरिन्द नान्मऱै यन्दणन् कूऱुवान् 393

वॆरिन्त–बिखरे; चॆम्मयिर्–अरुण केश; वॆळ ऎयिऱ्ऱाळ्–सफेद (वक्र-) दाँतोंवाली (के); अयिल् ऎरिन्तु–शूल फेंककर; कॊल्वॆन्–मारूँगी; ऎन्ऱु–ऐसा कहकर; एऱ्कवुम्–सामने आने पर; पारक्किला–उसकी परवाह नहीं करते; चॆरिन्त तारवन्–धनी माला के धारण करनेवाले (का); चिन्तै करुत्तु ऎलाम्–मनोभाव सब; अरिन्त–जाननेवाले; नान् मऱै अन्तणन्–चतुर्वेद के ज्ञाता मुनि; कूऱुवान्–बोलने लगे। ३९३

बिखरे और लाल रंग के केश और श्वेत वक्र-दाँतोंवाली वह शूल फेंककर मार दूँगी—यह कहते हुए सामने आ रही थी; पर उसकी कोई परवाह न करते थे, घने रूप से गुँथी पुष्पमाला के धारण करनेवाले श्रीराम। ऋषि उनका अभिप्राय ताड़ गये। तब चारों वेदों के निष्णात ऋषि ने यों कहा—। ३९३

❀ तीदॆन् ऱुळ्ळवै यावैयुञ् जॆय्दॆमैक्, कोदॆन् ऱुण्डिल ळित्तनै येकुऱै
यादॆन् ऱॆण्णुव दिक्कॊडि याळैयुम्, मादॆन् ऱॆण्णुदि योमणिप् पूणिनाय् 394

मणि पूणिनाय्–रत्नाभरण भूषित; ऎमै–हमें; तीतु ऎन्ऱु उळ्ळवै–हानि कहलानेवाली; यावैयुम् चॆय्तु–सभी पहुँचाकर; कोतु ऎन्ऱु–थोथा मानकर; उण्टिलळ्–नहीं खाया है; इत्तनैये कुऱै–यही, बस, बाकी है; यातु ऎन्ऱु ऎण्णुवतु–क्या समझा जाय; इ कॊटियाळैयुम्–इस अत्याचारिणी को भी; मातु ऎन्ऱु ऎण्णुतियो–स्त्री (कहके) समझोगे। ३९४

रत्नाभरणधारी हे राम ! इसने हमें सब तरह का संकट दिया है; सिर्फ थोथा (या सीठी) समझकर नहीं खाया है। यही बाकी है। इसको क्या समझा जाय ? इस दुष्टा को भी स्त्री मानेंगे ? । ३९४

नाण्मै येयुडै यार्प्पिळैत् तान्हे, वाण्मै येयुडै वन्ऱिऱ लाडवर्
तोण्मै येयिवळ् पेर्शॊलत् तोऱ्कुमेल्, आण्मै ऎन्नुम दारिडै वैहुमे 395

नाण्मैये–लज्जाशीलता को ही; उटैयार्–श्रेष्ठ समझकर पालनेवाली (को); पिळैत्ताल्–मार डाला जाय तो; नकै–निन्द्य है; वाण्मैये उटैय–तलवार-कार्य अपनाये हुए; वन् तिऱल्–बहुत पराक्रमी; आटवर्–पुरुषों का; तोण्मैये–भुज-बल भी; इवळ् पेर् चॊल–इसका नाम कहते ही (सुनकर); तोऱ्कुमेल्–हार जायगा तो; आण्मै ऎन्नुम् अतु–पौरुष नाम की वह वस्तु; आर् इटै वैकुम्–किसके पास ठौर पायेगी। ३९५

स्त्री का श्रृंगार लाज है। लज्जाशील स्त्री को मारोगे तो वह परिहास का विषय होगा। तलवार चलानेवाले अति बलिष्ट वीर पुरुषों

का भुजबल भी इसका नाम सुनकर हार जायगा ! तो पुंसत्व किसके पास है ? । ३९५

इन्दि रन्निडैन् दानुडैन् दोडिन्नार्, तन्दि रम्बडत् तानवर् वानवर्
मन्द रम्मिव डोळॅनिन् मैन्दरो, डन्द रम्मिनि यादुकॊ लाण्मैये 396

इन्तिरन् इटैन्तान्–इन्द्र हारा; तानवर्–दानव; वानवर्–सुर; तन्तिरम् पट–सेना के नष्ट होते; उटैन्तु ओटिनार्–हारकर भागे; इवळ् तोळ्–इसके कंधे; मन्तरम्–मन्दर पर्वत है; ऎनिन्–तो; इनि–फिर; आण्मैयिल्–पुंसत्व में; मैन्तरोटु–वीर पुरुषों से; अन्तरम् यातु–अन्तर क्या है ? (ए) (चॊल्) । ३९६

इन्द्र इसके सामने हारा; दानवों और देवों की सेना मिटी और वे भाग गये। इसके कंधे मंदर पर्वत (सम कठोर) हैं। तो पुरुषों से इसमें अन्तर क्या है ? । ३९६

करङ्ग डऱ्ऱिहि रिप्पडि कात्तवर्
पिरङ्ग डैप्पॅरि योय्पॅरि योरॊडुम्
मरङ्गॊ डित्तरै मन्नुयिर् मायत्तुनल्
अरङ्गॊ डुत्तवट् काण्मैयुम् वेण्डुमो 397

करङ्कु–घूमनेवाले; अटल् तिकिरि–सक्षम (आज्ञा-) चक्र द्वारा; पडि कात्तवर्–भूमि का पालन करनेवालों (के); पिरङ्कटै–(सूर्यवंश के) वंशज; पॅरियोय्–महानुभाव; पॅरियोरॊटुम्–महात्माओं से; मऱम् कॊटु–वैर करके; इ तरै–इस भूमि के; मन् उयिर् मायत्तु–रहनेवाले जीवों को मारकर; नल् अऱम्–सद्धर्म (का); कॆटुत्तवट्कु–नाश करनेवाली (इस) के लिए; आण्मैयुम् वेण्टुमो–पुरुषत्व (पुरुषाकार) भी चाहिये क्या ? । ३९७

घूमने वाले अपने प्रतापी आज्ञा-चक्र से भूमि का पालन करनेवाले सूर्य-वंशी राजाओं के कुल में उत्पन्न हे राम ! साधुओं से वैर करके, इस पृथ्वी के रहनेवाले जीवों को मारकर इसने सद्धर्म को बिगाड़ दिया है। तब क्या इसके वध के लिये इसका पुरुष-शरीरी होना भी आवश्यक है ? । ३९७

शाऱ्ऱु नाळऱ्ऱ तॆण्णित् तरुमम्बार्त्
तेऱ्ऱुम् विण्णॆन्ब दल्ल दिवळैप्पोल्
नाऱ्ऱङ् गाण्डलुन् दिन्न नयप्पदोर्
कूऱ्ऱु मुण्डुकॊल् कूऱ्ऱुरळ् वेलिनाय् 398

कूऱ्ऱु उरळ्–यम की समता करनेवाला; वेलिनाय्–भालावाले; चाऱ्ऱुम् नाळ्–विधि-निर्णीत आयु; अऱ्ऱतु ऎण्णि–पूर्ण हुई जानकर; तरुमम् पार्त्तु–धर्म (या अधर्म कृत्य) देखकर; विण् एऱ्ऱुम्–स्वर्ग चढ़ायेगा; ऎन्पतु अल्लतु–इस बात के सिवा; इवळैप् पोल्–इसकी तरह; नाऱ्ऱम् काण्टलुम्–बू पाते ही; ति

नयप्पतु–खाना चाहनेवाली; ओर् कूऱ्ऱुम्–एक मृत्यु भी; उण्टु कॊल्–रहती है क्या ? । ३९८

मृत्यु (देव) के समान रहनेवाले भाले के धारक ! यम भी आयु का अन्त जानकर जीव के धर्म-अधर्म का हिसाब लगाकर ऊपर ले जाता है। इसके समान गंध पाते ही जीवों को मारकर खाना चाहनेवाला यम भी कहीं है ? ३९८

[इसके बाद चार अतिरिक्त पद कुछ प्राचीन संस्करणों में पाये जाते हैं। किसी-किसी में ये ३९६ वें पद के तुरन्त बाद भी पाये जाते हैं। उनका सार यों है—और भी एक बात है, सुनिये। इन्द्र ने सुमति (या कुमति) नाम की स्त्री को मार दिया क्योंकि वह सभी लोकों के वासियों को अपना आहार मानकर भक्षण कर लेती थी। भृगु की पत्नी ख्याति थी जो मीन के सदृश आँखोंवाली सुन्दरी थी। वह असुरों पर दया करके उनकी सहायता करती थी। चक्रपाणि विष्णु ने उसको मारा था। (वाल्मीकी उसको शुक्र माता और सुमति को विरोचन-सुता मंथरा कहते हैं।) इन हत्याओं से आखंडल और हरि की सुकीर्ति हुई या अपकीर्ति ? आप ही कहिये।]

*** मन्नुम् पल्लुयिर् वारित्तन् वाय्प्पॅय्दु, तिन्नुम् पुन्मैयिऱ् ऱीमैय तेतॅय**
पिन्नुन् ताऴ्हुऴऱ् पेदैमैप् पॅण्णिवळ्, ॲन्नुन् दन्मै यॅऴिमैयिन् पालदे 399

मन्नुम् पल् उयिर्—(संसार में) रहनेवाले अनेक जीवों को; वारि—समेटकर; तन् वाय् पॅय्तु–अपने मुख में भरकर; तिन्नुम् पुन्मैयिन्–खाने की नीचता से बढ़कर; तीमैयतु एतु—भयंकर काम कौन सा है; ऐय—प्रभु; इवळ्—यह; पिन्नुम् ताऴ् कुऴल्—गुंथी लम्बी वेणी की; पेतैमै पॅण्—अबोध स्त्री; ॲन्नुम् तन्मै—यह कहने का विषय; ॲऴिमैयिन् पालते—अज्ञता के पक्ष का ही होगा। ३९९

जीवित अनेक प्राणियों को समेटकर अपने मुख में डालकर खाने की नीचता से बढ़कर अधम क्रूरता क्या हो सकती है ? प्रभो ! इस दुष्टा को देखकर गुंथी हुई, नीचे लटकती मेढ़ीवाली, एक निश्छल स्त्री के रूप में मानना निपट नादानी होगी। ३९९

*** ईऱिऩ् नल्लऱम् पार्त्तिशैत् तेनिवट्, चीऱि निन्ऱिडु चॅप्पुहिन् ऱेन्लेन्**
आऱि निन्ऱ दऱनन् ऱरक्कियैक्, कोऱि यॅन्ऱेदि रन्दणन् कूऱिनान् 400

ईऱु इल्—शाश्वत; नल् अऱम्—अच्छे धर्म को; पार्त्तु—देखकर; इचैत्तेन्—यह बताया; इवळ्—इसके प्रति; चीऱि निन्ऱु—क्रोधी रह करके; इतु—यह; चॅप्पुकिन्ऱेन् अलेन्—कहता नहीं हूँ; आऱि निन्ऱतु—शांत हो रहना; अऱन् अन्ऱु—धर्म नहीं है; अरक्कियै कोऱि—राक्षसी को मारो; ॲन्ऱु—ऐसा; ॲतिर्—(श्रीराम के) सामने; अन्तणन्—महर्षि (ने); कूऱितान्—कहा। ४००

मैं जो कह रहा हूँ वह शाश्वत धर्म का विचार करके ही कह रहा हूँ। इस पर कोप करके नहीं। इसके सम्बन्ध में शांत होकर रहना धर्म नहीं होगा। इस राक्षसी का अभी वध कर दीजिए। महर्षि ने ऐसा श्रीरामके सामने कहा। ४००

ऐय नङ्गवै केट्टरु नल्लदुम्, ॲय्दि नालदु शॅय्हवॆन् ऱॆविनाल्
मॆय्य निन्नुरै वेद मॆनक्कॊड्, शॅय्है यन्ऱो वऱञ्जॆयु माऱॆन्ऱान् 401

ऐयन्—प्रभु; अङ्कु—तव; अवै केट्टु—वे (बातें) सुनकर; मॆय्य—सत्य-स्वरूप; अऱन् अल्लतुम्—धर्म जो नहीं हो; ॲय्तिनाल्—(वह भी आवश्यक) हो जाय; अतु चॆय्क—वह करो; ॲन्ऱु एविनाल्—ऐसा आज्ञा करें तो; निन् उरै—आपका वचन; वेतम् ॲन कॊट्टु—वेद है मानकर; चॆय्कै अन्ऱो—करना ही तो; अऱम् चॆय्युम् आऱु—धर्म-कृत्य का मार्ग है; ॲन्ऱान्—कहा। ४०१

महिमामय श्रीराम ने महर्षि का कथन सुनकर निवेदन किया कि हे सत्यस्वरूप ! धर्मेतर कार्य भी करना पड़ जाय तो आपकी आज्ञा पाने पर, आपकी बात को वेदवाक्य मानकर, करना ही न धर्म-पालन की रीति होगी ! । ४०१

※ गङ्गैत् तीम्बुन नाडन् करुत्तैयम्, मङ्गैत् तीयनै याळु मनक्कॊळाच्
चॆङ्गैच् चूलवॆन् दीयिनैत् तीयदन्, वॆङ्गट् टीयॊडु मेऱ्चॆल वीशिनाळ् 402

कङ्कै तीम् पुनल्—गंगा का मधुर जल (से); नाटन्—(सिंचित) देश के; करुत्तै—अभिप्राय को; अ मङ्कै—उस स्त्री (के रूप में); ती अनैयाळुम्—अग्नि के समान रही वह भी; मनम् कॊळा—मन में ले करके; चॆम्मै कै—लाल हाथ में रहे; चूलम् वॆम् तीयिनै—शूलरूपी भयंकर आग को; तीय—बुरी; तन् वॆम् कण् तीयॊटु—अपनी कठोर आँखों की अग्नि के साथ; मेल् चॆल—(श्रीराम) पर जाने के लिए; वीचिनाळ्—फेंका। ४०२

श्रीरामचन्द्र का, जिनके देश को पवित्र गंगा नदी उर्वर बना रही थीं, मनोभाव ताड़का को मालूम हो गया। तुरन्त उस स्त्रीरूपी अग्नि ने आँखों से दृष्टिरूपी अनल को और हाथ से त्रिशूलरूपी अग्नि को श्रीराम पर चलाया। उसने ही पहला प्रहार किया। क्रुद्ध-दृष्टि के साथ उसने त्रिशूल को फेंका। ४०२

पुदिय कूऱ्ऱनै याळ्पुहैन् दॆविय, कदिरकॊण् मूविलैक् कालवॆन् दीमुनि
विदियै मेऱ्कॊण्डु निन्ऱवन् मेलुवा, मदियिन् मेलवरुङ् गोळॆन वन्ददे 403

पुतिय कूऱ्ऱु अनैयाळ्—नवीन यम-तुल्य (उससे); पुकॆन्तु एविय—कोप के साथ प्रेषित; कतिर् कॊळ्—देदीप्यमान; मूविलै—त्रिपत्रवाली शूलरूपी; कालम् वॆम् ती—प्रलयाग्नि; मुनि वितियै—मुनि की आज्ञा को; मेल् कॊण्टु—धारण कर; निन्ऱवन् मेल्—स्थित (श्रीराम) पर; उवा मतियिन् मेल्—पूर्ण चन्द्र पर; वरुम् कोळ् अन—आनेवाले ग्रह के समान; वन्ततु—आया। ४०३

श्रीराम मुनिवर की आज्ञा मानकर ताड़का को मारने के लिये उद्यत खड़े रहे। उन पर नवीन-यम के समान ताड़का ने क्रोधोद्विग्न मन के साथ दीप्यमान त्रिशूल फेंका। वह त्रिशूल क्या था, प्रलय काल की भयंकर अग्नि थी। वह पूर्णचन्द्र को ग्रसने के लिये आनेवाले राहु ग्रह के समान आ रहा था। ४०३

❀मालु मक्कणम् वाळियैत् तॊट्टदुम्, कोल विऱ्काल् कुनित्तदुङ् गण्डिलर्
काल नॆप्परित् तक्कडि याळ्विट्ट, शूल मिऱ्ऱदन् तुण्डङ्गळ् कण्डनर् 404

मालुम्–श्रीविष्णु भी; अ कणम्–उसी क्षण; कोलम् विल्–सुन्दर धनुष के; काल् कुनित्ततुम्–बाजुओं को झुकाना और; वाळियै–शर को; तॊट्टतुम्–छोड़ना; कण्टिलर्–(किसी ने) न देखा; अ कटियाळ्–उस दुराचारिणी के; कालनै परित्तु–यम से छीनकर; विट्ट–फेंके गये; चूलम्–त्रिशूल (के); इऱ्ऱतन् तुण्टङ्कळ्–टूटे टुकड़े; कण्टनर्–देखे। ४०४

श्रीविष्णु के अवतार राम ने उसको एक शर से खण्डित कर दिया। वह इतनी तेजी से सम्पन्न हुआ कि किसी ने न उनका धनुष झुकाना देखा न शर संधानकर खींचना; पर सब ने शूल के टुकड़ों को नीचे भूमि पर पड़े हुए देखा। ४०४

❀ अल्लिन् मारि यनैय निऱत्तवळ्, शॊल्लु मात्तिरै यिऱ्कड ऱूर्प्पदोर्
कल्लिन् मारियैक् कैवहुत् ताळदु, विल्लिन् मारियिन् वीरन् विलक्किनान् 405

अल्लिल्–रात के; मारि अनैय–मेघ के समान; निऱत्तवळ्–रंगवाली; चॊल्लुम् मात्तिरैयिल्–एक शब्दोच्चारण की देरी में; कटल् तूर्प्पतु–समुद्र को भी पाट (सकने) वाली; ओर् कल्लिन् मारियै–एक प्रस्तर वर्षा को; कै वकुत्ताळ्–अपने हाथों से गिराया; अतु–उस (वर्षा) को; वीरन्–(रघु-) वीर ने; विल्लिन् मारियिन्–धनुष की शर वर्षा द्वारा; विलक्किनान्–हटाया। ४०५

रात के मेघ के समान काले रंग की ताड़का तब पत्थर उठाकर बहुत तेजी से फेंकने लगी। एक ही पल में वह इतने पत्थर बरसा चुकी कि समुद्र भी उनसे पट सकता था। श्रीराम ने अपने धनुष से शर वर्षा कर उनको रोका और अपने को बचा लिया। ४०५

❀ शॊल्लॊक्कुङ् गडिय वेहच् चुडुशरङ् गरिय शॆम्मल्
अल्लॊक्कु निऱत्ति नाण्मेल् विडुदलुम् वयिरक् कुन्ऱक्
कल्लॊक्कु नॆञ्जिऱ् ऱङ्गा दप्पुऱङ् गळन्ऱु कल्लाप्
पुल्लर्क्कु नल्लोर् शॊन्न पॊरुळॆनप् पोय दन्ऱे 406

करिय चॆम्मल्–श्यामल देव (के); चॊल् ऒक्कुम्–(महात्माओं के शाप के) वचन सम; कटिय वेकम्–अत्यन्त वेगवान और; चुटु–संतापी; चरम्–एक शर को; अल् ऒक्कुम्–अंधकार की समानता करनेवाले; निऱत्तिताळ् मेल्–रंगवाली

पर; विट्टतलुम्–चलाने पर; वयिरम् कुन्ऱम् कल्–वज्र-पर्वत-प्रस्तर; ऑक्कुम् नॅञ्चिल्–समान छाती में; तङ्कातु–न ठहरकर; अ पुऱम् कळन्ऱु–उस तरफ से निकलकर; कल्ला पुल्लर्क्कु–अपढ़ अल्पज्ञों को; नल्लोर् चॊन्न–साधुओं के कहे; पॊरुळ ऍन्न–उपदेश के समान; पोयतु–चला गया; (अन्ऱु, ए)। ४०६

फिर श्यामल भगवान ने एक शर छोड़ा। वह महात्माओं के शाप के समान सद्य प्रभावकारी शर था। अंधेरी रात के रंग की उस ताड़का पर छोड़ा वह शर वज्र-पर्वत के प्रस्तर-खण्ड के समान कठोर रही उसकी छाती में प्रवेश कर वहाँ न रुका; पर पीछे पीठ पर से निकलकर, इस प्रकार उड़ गया जिस प्रकार साधुजनों के अनपढ़ मूढ़ों को दिये उपदेश उनके मन में न ठहर कर निकल (लुप्त हो) जाते हैं। ४०६

पॊन्नॅडुङ् गुन्ऱ मन्नान् पुहर्मुहप् पहळि यॅन्नुम्
मन्नॅडुङ् गाल वन्काऱ् ऱडित्तलु मिडित्तु वानिल्
कन्नॅडु मारि पॅय्यक् कडॅयुहत् तॅळुन्द मेहम्
मिन्नॊडु मशनियोडुम् वीऴ्वदे पोल वीऴ्न्दाळ् 407

पॊन्–स्वर्ण के; नॅटु कुन्ऱम्–उन्नत पर्वत (मेरु); अन्नान्–सम रहनेवाले (के); पुकर् मुकम्–तीक्ष्ण-मुखी; पकळि ॲन्नुम्–शररूपी; मन्–दीर्घ; नॅटु कालम्–प्रलयकाल के; वल् काऱ्ऱु–प्रबल पवन (के); अटित्तलुम्–झोंके से; कटै युकत्तु–युगांत में; वानिल्–आकाश में; इटित्तु–वज्र कड़क कर; कल्–पत्थर की; नॅटु मारि पॅय्य–अधिक वर्षा करने; ॲऴुन्त–ऊपर उठे; मेकम्–मेघ; मिन्नॊटुम् अचनियोटुम्–विद्युत और अशनि के साथ; वीऴ्वते पोल–गिरे ऐसे; वीऴ्न्ताळ्–गिरी। ४०७

उन्नत और स्वर्णमय मेरु पर्वत के समान थे श्रीराम; उनके धनुष से निकला तीक्ष्ण अनीवाला शर युगांत का प्रभंजन था। उससे आहत होकर ताड़का का घोर आकार के दांतों और भयंकर गर्जन के साथ उछल कर भूमि पर गिरना उस मेघ के गिरने के समान था जो युगांत में प्रस्तर-वर्षा करने के लिए कड़कते हुए ऊपर उठे, पर विद्युत प्रकाश और वज्र की कड़क के साथ भूमि पर गिर जाय। ४०७

पॊडियुडैक् कान मॅङ्गुङ् गुरुदिनीर् पॊङ्ग वीऴ्न्द
तडियुडै यॅयिऱ्ऱुप् पेऴ्वायत् ताडहै तलैह डोरुम्
मुडियुडै यरक्कर् कन्नाळ् मुन्दियुऱ् पाद माहप्
पडियिडै यऱ्ऱु वीऴ्न्द वॅऱ्ऱियम् बदाहै यॊत्ताळ् 408

पॊटि उटै–धूल सहित; कानम् ऍङ्कुम्–जंगल भर में; कुरुति नीर् पॊङ्क–रक्त की बाढ़ के बढ़ते; वीऴ्न्त–गिरी हुई; तटि उटै ऍयिऱु–मांस युक्त दांतों; पेऴ्वाय्–खुले मुख (वाली); ताटकै–ताड़का; तलैकळ् तोऱुम्–हर सिर पर; मुटि उटै–(या) किरीट पहने; अरक्कर्क्कु–राक्षस (रावण) को; मुन्ति–पहले

के; उऱ्पातम् आक—उत्पात (दुःशकुन) बनकर; अ नाळ्—उस दिन; अऱ्ऱु—कटकर; पटि इटै—भूमि पर; वीऴ्न्त—गिरे; वॆऱ्ऱि पताकै ऒत्ताळ्—विजयी झण्डे की समानता करती थी। ४०८

ताड़का भूमि पर मरकर गिरी। उसके शरीर का रक्त उस जंगल में सर्वत्र फैल गया। उसके दाँतों के बीच मांस-खण्ड फँसे हुए थे। वह, उस विजय पताका के समान लगती थी जो मुकुटधारी दस सिर वाले रावण पर आनेवाले उत्पात की पूर्व-सूचना का दुःशकुन देते हुए कटकर गिरी हो। ४०८

❀ कान्ऱिरिन् दाऴि याहत् ताडहै कडिन मार्वत्
तून्ऱिय पहऴि वायू डॊऴुहिय कुरुदि वॆळ्ळम्
आन्ऱवक् कान मॆल्ला मायिन दन्दि मालैत्
तोन्ऱिय शॆक्कर् वानन् दॊडक्करुऱु वीऴ्न्द दॊत्ते 409

ताटकै—ताड़का की; कटिनम् मार्पत्तु—कठोर छाती में; ऊन्ऱिय—चुभे; पकऴि वाय् ऊटु—शर के बने घाव द्वारा; ऒऴुकिय—बहनेवाली; कुरुति वॆळ्ळम्—रक्तधारा; अन्ति मालै—संध्या (सायं) काल में; तोन्ऱिय—प्रकट; चॆक्कर् वानम्—लाल आकाश; तॊटक्कु अऱ्ऱु—ग्रहण (आधार) खोकर; वीऴ्न्तत्तु ऒत्तु—गिरा हो ऐसा गिरकर; कान् तिरिन्तु—जंगल (प्रकृति) बदलकर; आऴि आक—समुद्र बन जाय, ऐसा; आन्ऱ—विशाल; अ कानम् ऎल्लाम्—उस जंगल भर में; आयिन्तु—फैला। ४०९

ताड़का के वक्ष-स्थल के शर-विद्ध व्रण-मुख से जो रक्त बहा उसका फैलाव निराधार हो नीचे गिरे लाल गगन के समान लगा। वह रेतीले जंगल की प्रकृति को ही बदल कर रक्त-समुद्र बनाता हुआ सर्वत्र फैला। ४०९

❀ वाशनाण् मलरोनन्न मामुनि पणिम ऱाद
काशलाङ् गनहप् पॆम्बूण् काहुत्तन् कन्निप् पोरिल्
कूशुवा ळरक्कर् तङ्गळ् कुलत्तुयिर् कुडिक्क वञ्जि
आशया लुळलुङ् गूऱ्ऱुञ् जुवैशिऱि दऱिन्द दन्ऱे 410

वाचम्—सुगन्धपूर्ण; नाळ् मलरोन्—सद्य-विकसित कमलासन; अन्न मा मुनि—सम महर्षि के; पणि मऱात—आज्ञा माननेवाले; काचु उलाम्—रत्न-जड़ित; कनकम् पचुमै पूण्—चोखे स्वर्णाभरणवाले; काकुत्तन्—काकुत्स्थ (श्रीराम) के; कन्नि पोरिल्—सर्वप्रथम युद्ध में; कूचु वाळ् अरक्कर् तङ्कळ्—डरानेवाली तलवार रखनेवाले राक्षसों के; कुलत्तु—वर्गों के; उयिर् कुटिक्क—जीवों के प्राण पीने से; अञ्चि—डरकर; आचैयाल्—लोभ के साथ; उळलुम्—(मौके की ताक में) फिरनेवाले; कूऱ्ऱुम्—यम (ने) भी; चुवै चिऱितु अऱिन्तत्तु—स्वाद थोड़ा जाना; (अन्ऱु—ए)। ४१०

रावण के शासन काल में यम को न राक्षस-रक्त का पान मिला,

न राक्षस-मांस का खान; क्योंकि वह राक्षसों के तलवार आदि हथियारों से डरता था। फिर भी वह पिपासा लिये घूम रहा था। अब कमलासन ब्रह्मा के समान विश्वामित्र के आज्ञाकारी और रत्नजड़ित और स्वर्ण-निर्मित आभूषण-धारी श्री काकुत्स्थ (राम) ने अपने सर्वप्रथम युद्ध में उसे कुछ चखाया और उसे मांस का किंचित स्वाद मिला। ४१०

❀ यामुमॅम् मिरुक्कै पॅऱ्ऱे मुनक्किडै यूरु मिल्लैक्
कोमहऱ् किनिय दॅय्वप् पडैक्कलङ् गॉडुत्ति यॅन्ना
मामुनिक् कुरैत्तुप् पिन्नर् विऱ्कॉण्ड मळैयन् नान्मेऱ्
पूमळै पॉळिन्दु वाळ्त्ति विण्णवर् पोयिनारे 411

विण्णवर्–देवतागण लोग; यामुम्–हमने भी; ॲम् इरुक्कै पॅऱ्ऱेम्–अपना पद पाया; उनक्कुम् इटैयूरु इल्लै–आपको भी कोई बाधा नहीं (रहेगी); कोमकऱ्कु–चक्रवर्ती तनुज को; ड़निय तॅय्वम् पटै कलम्–श्रेष्ठ दिव्य अस्त्र-शस्त्र; कॉटुत्ति–दिलायें; ॲन्ना–ऐसा; मा मुनिक्कु उरैत्तु–महान मुनि को कहकर; पिन्नर्–पश्चात; विल् कॉण्ट–धनुर्धर (या इन्द्र-धनुषवाले); मळै अन्नान् मेल्–मेघ सदृश (श्रीराम) पर; पू मळै पॉळिन्तु–पुष्प-बारिश (बरसा) कर; वाळ्त्ति–बधाई देकर; पोयिनार्–चले। ४११

स्वर्गवासी देवतागण इस घटना से मुदित हुए। उन्होंने महर्षि से कहा कि हमें अपने पद फिर से मिल गये। आपको भी रुकावटें अब नहीं रहेंगी। आप चक्रवर्ती-सुतों को अस्त्रोपदेश दिला दें। पश्चात् वे धनुर्धर (या इन्द्रधनुष सहित) मेघ-सदृश श्रीराम को बधाई देकर, कल्पक-सुमनों की वर्षा करके लौट गये। ४११

8. वेळ्विप् पडलम् (यज्ञ पटल)

विण्णवर् पोय पिन्ऱै विरिन्दपू मळैयि नाले
तण्णॅनुङ् गान नीङ्गित् ताङ्गरुन् दवत्तिन् मिक्कोन्
मण्णवर् वरुमै नोय्क्कु मरुन्दन शडैयन् वॅण्णॅय्
अण्णऱन् शॉल्ले यन्न पडैक्कल मरुळिनाने 412

विण्णवर्–स्वर्गवासियों (के); विरिन्त पू मळैयिनाले–पुष्कल पुष्प-वर्षा से; तण् ॲनुम्–शीतल वने; कानम् नीङ्कि–जंगल को छोड़कर; पोय पिन्ऱै–जाने के बाद; ताङ्कु–सहनशील; अरु तवत्तिन् मिक्कोन्–तपस्या में उत्कृष्ट; मण्णवर्–पृथ्वी के वासियों के; वरुमै नोय्क्कु–दरिद्रता-रोग के लिए; मरुन्तु अ(न्)न–दवा के समान रहनेवाले और; वॅण्णॅय् अण्णल्–तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर के महिमायुक्त; चटैयन् तन्–शडैयप्पन के; चॉल्ले अन्न–वचन के ही सम, (अमोघ); पटैक्कलम्–(अनेक) अस्त्र; अरुळिनान्–(मन्त्र सहित) प्रदान किया। ४१२

देवों की पुष्प-वर्षा से वह जंगल शीतल वन गया। देव उस जंगल को छोड़कर चले गये। उनके जाने के वाद, अपार कष्ट सहकर की हुई वड़ी तपस्या से उत्कृष्ट (हुए) महर्षि ने श्रीराम को अनेक अस्त्र प्रदान किये। वे अस्त्र कवि के अभिभावक, वॅण्णॅय्नल्लूर के वासी, दरिद्रता के रोग की दवा के समान उदार दानी शडैयप्प वळ्ळल् के शब्द के समान अमोघ थे। (कवि ने अपने पोषक शडैयप्पन की कृतज्ञता के प्रदर्शन हेतु रामायण में अनेक स्थानों पर उनका नाम लेकर महिमा कही है।) ४१२

आऱिय वरिवन् कूऱि यळित्तलु मण्ण ऱन्बाल्
ऊऱिय वुवहै योडु मुम्बर्तम् पडैह ळॅल्लाम्
तेऱिय मनत्तान् शॅय्द नल्विनैप् पयन्ग ळॅल्लाम्
माऱिय पिऱप्पिऱ् ऱेडि वरुवपोल् वन्द वन्ऱे 413

आऱिय अरिवन्–दाँत (संयमी) ज्ञानी; उम्पर्तम्–देवताओं के; पटैकळ् ॲल्लाम्–अस्त्र सब; कूऱि–(विस्तार से) विवरण कर; अळित्तलुम्–देने पर; तेऱिय मनत्तान्–सुसंस्कृत विचारवाले के; चॅय्त–कृत; नल् विनै पयन्कळ्–सत्कर्मों के फल; ॲल्लाम्–सभी; माऱिय पिऱप्पिल्–अन्य जन्म में; तेटि वरुव पोल्–खोजकर (पहचानकर) आते हैं जैसे; अण्णल् तन् पाल्–सम्मान्य (श्रीराम) के पास; ऊऱिय उवकैयोटुम्–(उत्तरोत्तर) रसनेवाले (बढ़नेवाले) उमंग के साथ; वन्त–आ पहुँचे। ४१३

दाँत (संयमी) ऋषि विश्वामित्र ने अस्त्रों के साथ उनसे संबंधित मन्त्र, उनको चलाने और लौटाने के उपाय आदि के भी उपदेश दिये। वे अस्त्र भी किसी के पूर्वकृत सत्कर्म के फल जैसे दूसरे जन्म में उसके पास स्वयं जाकर मिलते हैं, वैसे ही श्रीराम के पास आ गये। ४१३

मेविनॅम् बिरिद लाऱ्ऱेम् वीरनी विदियि नॅम्मै
येविन शॅय्दु निऱ्ऱु मिळैयवन् पोल वॅन्ऱु
देवर्तम् बडैकळ् शॅप्पच् चॅव्विदॆन् ऱवनु नेरप्
पूवैपो निऱत्ति नाऱ्कुप् पुऱत्तॊळिल् पुरिन्द वन्ऱे 414

तेवर् तम् पटैकळ्–दिव्यास्त्र; मेविनॅम्–(आपके पास) आ गये; पिरितल् आऱ्ऱेम्–छोड़ना न सहेंगे; वीर–रघुवीर; नी–आप; वितियिन्–विधिवत्; ॲम्मै एविन–हमें जो सेवा बतलाते हैं वे; इळैयवन् पोल–आपके अनुज के समान; चॅय्तु निऱ्ऱुम्–करते रहेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा; चॅप्प–कहने पर; अवनुम्–वे (श्रीराम) भी; चॅव्वितु–श्रेष्ठ हैं; ॲन्ऱु नेर–कहकर स्वीकारने पर; पूवै पोल् निऱत्तितान् कु–(अतसी?) नील पुष्प से वर्णवाले की; अन्ऱे–तभी; पुऱम् तॊळिल्–बाहरी, छोटी-मोटी सेवायें; पुरिन्त–करने लगे। ४१४

उन देवास्त्रों ने श्रीराम के पास निवेदन किया कि हम आपके पास आ गये हैं। अलग होना हमें सह्य नहीं होगा। हे रघुवीर! विधिवत्

आप जो भी सेवा चाहेंगे वह सहर्ष, आपके अनुज के समान करते हुए आपके पास रहेंगे। यह सुनकर श्रीराम ने तथाऽस्तु कहकर स्वीकार कर लिया। तभी से वे अस्त्र अतसी पुष्प के रंगवाले श्रीराम की बहिरंग सेवा में लग गये। ४१४

इन्नैयत्त निहळ्न्द पिन्नर्क् कावद मिरण्डु शॆन्ऱार्
अन्नैयवर् केट्क वाण्डो ररवम्वन् दणुहित् तोन्ऱ
मुन्नैववी दियाव दॆन्ऱु मुन्नवन् विनवप् पिन्नर्
विन्नैयर् नोऱ्ऱु निन्ऱ मेलवन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 415

इन्नैयत्त–ये सब; निकळ्न्त पिन्तर्–घटने के बाद; कावतम्–(दस मील का) कोस; इरण्टु–दो; चॆन्ऱार्–गये; अन्नैयवर् केट्क–उनके कर्ण-गोचर होते हुए; आण्टु–वहाँ; ओर् अरवम्–एक ध्वनि; अणुकि वन्तु–पास आकर; तोन्ऱ–सुनायी देने पर; मुन्नवन्–ज्येष्ठ ने; मुनैव–श्रेष्ठ महानुभाव; ईतु यावतु ऎन्ऱु–यह क्या है ऐसा; विनव–पूछने पर; पिन्तर्–फिर; विनै अऱ–कर्मबन्धन काटकर; नोऱ्ऱु निन्ऱ–जो तप करके रहे; मेलवन्–उत्तम ऋषि; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४१५

यह सब होने के बाद वे तीनों आगे दो कोस दूर गये। तब उनके कानों में एक ध्वनि पड़ी। ज्येष्ठ श्रीराम ने महर्षि से पूछा कि हे महानुभाव! यह ध्वनि कौन सी है? उस पर कर्म-बंधन काटते हुए तपस्या करके उन्नत हुए विश्वामित्र यों कहने लगे। ४१५

मानस मडुविल् ऱोन्ऱि वरुदलाऱ् चरयु वॆन्ऱे
मेन्मुऱै यमरर् पोऱ्ऱुम् विळुनदि यदनि नोडुम्
आनको मदिवन् दॆय्दु मरवम दॆन्न वप्पाल्
पोनपिन् पवङ्ग डीर्क्कुम् पुनिदनीर् नदियै युऱ्ऱार् 416

मानच मटुविल्–मानस सरोवर से; तोन्ऱि वरुतलाल्–उत्पन्न होकर आने से; चरयु ऎन्ऱु–सरयू कहलाकर; मेल् मुऱै–उत्तम रीति से; अमरर् पोऱ्ऱुम्–देवताओं से प्रशंसित; विळु नति–श्रेष्ठ नदी; अतनितोटुम्–उसके साथ; आन–मिलनेवाली; कोमति वन्तु–गोमती (के) आकर; ऎय्तुम्–मिलने (गिरने) का; अरवम् अतु–ध्वनि, वह; ऎन्न–कहने पर; अप्पाल् पोन पिन्–आगे (कुछ दूर) जाने के बाद; पवङ्कळ् तीर्क्कुम्–भव-निवारक; पुनितम् नीर्–पवित्र जल वाली; नतियै–नदी पर; उऱ्ऱार्–आ पहुँचे। ४१६

मानस सरोवर से निकलकर आने से सरयू का नाम प्राप्त इस श्रेष्ठ नदी में, जिसकी देवता भी उत्तम रीति से प्रशसा करते हैं, गोमती नदी आकर मिलती है। वह उसी मिलन की ध्वनि है। फिर वे आगे बढ़े और भव-नाशक एक नदी के तीर पर आ पहुँचे। (यह नदी कौशिकी थी।)। ४१६

सुरर्दॊऴु दिरैञ्जर् कॊत्त तूनदि याव दॆऩ्ऱु
वरमुऩि तऩ्ऩै यण्णल् विऩवुर मलरुळ् वैहुम्
पिरमऩ् ऱऴित्त वॆऩ्ऱिप् पॆरुन्दहै कुशऩॆऩ् ऱोदुम्
अरशर्को ऩऴित्त मैन्द ररुमऱै यऩैय नाल्वर् 417

अण्णल्–सम्मानित (श्रीराम); सुरर्–सुरों के; तॊऴुतु–विनय कर; इरैञ्चर्कु ऒत्त–स्तुति करने योग्य; तू नति–पुनीत नदी; यावतु–कौन सी; ऎऩ्ऱु–ऐसा; वर मुऩि तऩ्ऩै–मुनिवर को; विऩवुर–पूछने पर; मलर् उळ्–(कमल-) पुष्प के अन्दर; वैकुम्–रहनेवाले; पिरमऩ्–ब्रह्मा (से); अऩ्ऱु अळित्त–उस दिन दत्त; वॆऩ्ऱि–विजय; पॆरु तकै–उत्तम गुणवाले; कुचऩ् ऎऩ्ऱु ओतुम्–कुश कहलानेवाले; अरचर् कोऩ्–राजाधिराज; अळित्त मैन्तर्–जनित पुत्र; अरु मऱै अऩैय–श्रेष्ठ वेदों के समान; नाल्वर्–चार (थे)। ४१७

सम्माननीय श्रीराम ने मुनिवर से प्रश्न किया कि सुर-स्तुत्य यह पवित्र नदी कैसी है ? तब उन्होंने विस्तार से निम्नलिखित वृत्तांत बखाना। कमलपुष्पवासी ब्रह्माजी ने कुश नामक राजाधिराज को जन्म दिया। वे विजयशील और उत्तम गुणवाले थे। कुश के (वैदर्भी नाम की पत्नी द्वारा) चार पुत्र पैदा हुए। ४१७

कुशऩ्कुश नाबऩ् कोदिल् गुणत्तिऩा दूर्त्तऩ् कॊऱ्ऱत्
तिशैक्कॊळु वशुवॆऩ् ऱोदु मिवर्पॆय रिवर्ह डम्मुळ्
कुशऩ्कवु शाम्बि नाबऩ् कुळिर्महो दयमा दूर्त्तऩ्
वशैयिऱऩ् मवऩ मऱ्ऱै वशुगिरि विरशम् वाऴ्न्दार् 418

इवर् पॆयर्–इनके नाम (थे); कुचन, कुचनापऩ् कोतु इल् कुणत्तिऩ् आतूर्त्तऩ्–कुश, कुशनाभ, अकलंक गुणों के आधूर्त; कॊऱ्ऱतु–विजयों के कारण; इचै कॊळु–कीर्ति में बढ़े; वचु ऎऩ्ऱु–वसु नाम से; ओतुम्–कहलानेवाले; इवर्कळ् तम्मुळ्–इनमें; कुचऩ्–कुश; कवुचाम्पि–कौशाम्बी (में); नापऩ्–(कुश-) नाभ; कुळिर् महोतयम्–शीतल महोदय (में); आतूर्त्तऩ्–आधूर्त; वचै इल्–अनिन्द्य; तऩ्म वऩम्–धर्म-वन में; मऱ्ऱै–अन्य; वचु–वसु; किरि विरचम्–गिरिव्रज (में); वाऴ्न्तार्–रहे। ४१८

ये, कुश, कुशनाभ, अकलंक गुणवाले आधूर्त और विजयी और कीर्तिमान वसु, चार थे। उनमें कुश कौशाम्बी नगर में, कुशनाभ शीतल महोदय नामक नगर में, आधूर्त अनिन्द्य धर्मवन में और अन्य वसु गिरिव्रज नामक नगर में (राजधानी बनाकर) रहते थे। ४१८

अवर्हळिऱ् कुशना बऱ्कॆ यॆयिरु पदिऩ्म रञ्जॊल्
तुवरिदऴ्त् तॆरिवै नल्लार् तोऩ्ऱिऩर् वळरु नाळिल्
इवर्पॊऴिऱ् ऱलैक्क णायत् तॆय्दुऴि वायु वॆय्दिक्
कवर्मऩत् तिऩऩा यन्दक् कऩ्ऩियर् तम्मै नोक्कि 419

अवर्कळिल्–उनमें; कुचनापर्के–कुशनाभ के ही; अम् चोल्–मधुर बोली; तुवर् इतळ्–प्रवाल (सम लाल) अधरोंवाली; तॅरिवै नल्लार्–सुन्दर कन्यायें; ऐइरु पतिन्मर्–पाँच दो दस, एक सौ; तोन्ऱिनर्–पैदा होकर; वळरुम् नाळिल्–बढ़ती रहीं—तब; इवर्–ये; आयत्तु–सखियों के साथ; पॉळिल् तलै कण्–एक उपवन में; ऍय्तुळि–(जब) जा पहुँचीं तब; वायु ऍय्ति–वायुदेव आकर; अन्त कन्नियर् तम्मै नोक्कि–उन कुमारियों को देखकर; कवर् मनत्तिनन् आय्–आकृष्ट-मन होकर। ४१९

उनमें कुशनाभ के ही एक सौ मधुर-भाषिणी, प्रवालाधरा कन्यायें पैदा हुई। वे जब बढ़ रही थीं तब एक दिन वे सखियों के साथ एक उपवन में क्रीडार्थ गयीं। वहाँ वायु देव ने उन्हें देखा और वे उनके प्रेम में पड़ गये। तब उनसे वे यों बोले। ४१९

कॉडित्तलै महरङ् गॉण्डोन् कुनिशिलैच् चरत्ता नॉन्देन्
वडित्तडङ् गण्णी रॅन्नै मणत्तिरॅन् ऱुरॅप्प वॅन्दै
अडित्तलत् तुरॅत्तु नीरो डळित्तिडि नणैदु मॅन्न
ऑडित्तनन् वॅरिनै वीळ्न्दा रॉळिवळै महळि रॅल्लाम् 420

वटि तट कण्णीर्–तीक्ष्ण विशाल आँखोंवालियो!; कॉटि तलै मकरम् कॉण्टोन्–मकरध्वज (मन्मथ) के; कुनि चिलै चरत्ताल्–झुके धनुष के शरों से; नॉन्तेन्–संतप्त हूँ; ऍन्नै मणत्तिर्–मेरे साथ विवाह कर लो; ऍन्ऱु उरॅप्प–ऐसा कहते समय; ऑळि वळै–कांतियुक्त कंकण (धारिणी); मकळिर् ऍल्लाम्–कन्यायें सब; ऍन्तै अटि तलत्तु उरॅत्तुम्–अपने पिता के चरणों में विनय करेंगी; नीरोटु अळित्तिटिन्–जल के साथ दान दे देंगे तो; अणैत्तुम्–(आप से) मिलेंगी; ऍन्न–ऐसा कहते समय; वॅरिनै–पीठ को; ऑटित्तनन्–तोड़ दिया; वीळ्न्तार्–(वे) गिर पड़ीं। ४२०

तीक्ष्ण और विशाल आँखवालियो! मकरध्वज मन्मथ ने मुझ पर अपना इक्षु-धनुष झुकाकर पुष्प-शर मारे हैं। मैं वेदना से तड़प रहा हूँ। तुम लोग मेरे साथ विवाह कर लो। यह सुनकर उज्ज्वल कंकणधारिणी कन्याओं ने एक साथ कहा कि हम अपने पितृ-चरण में यह निवेदन करेंगे। कन्यादान में आपको दे देंगे तो हम आप से विवाह कर लेंगी। वे, अगर, दान-कर्म की विधि के अनुसार आपके हाथ में जल के साथ हमें समर्पित कर देंगे तो हम आपसे विवाह कर लेंगी। यह सुनकर वायु देव क्रुद्ध हुए। उन्होंने उनकी पीठ की रीढ़ को तोड़ दिया। वे भी बल खाकर गिर पड़ीं। (दाता दान लेनेवाले के दाहिने हाथ में जल देता है, वह अर्पण का निशान है)। ४२०

शमिरण नहन्ऱ दर्पिन् ऱैयलार् तवळ्न्तु शॅन्ऱे
अमिर्दुह कुदलै माळ्हि यरशन्माट् टुरॅप्प वन्नान्

निमिर्हुळन् मादर्त् तेऱ्ऱि निऱैतवन् शूळि नलुहुम्
तिमिरऱु पिरम दत्तर्क् कळित्तनन् ऱिरुव नारै 421

चमिरणन्–समीरण के; अकन्ऱतन् पिन्–छोड़ जाने के बाद; तैयलार्–कन्याएँ; माळ्कि–घुलकर; तवळ्न्तु चैन्ऱु–रेंगती जाकर; अरचन् मादट्टु–राजा (कुशनाभ) के पास; अमिर्तु उकु कुतलै–अमृत चूनेवाली अस्पष्ट वाणी में, (तुतलाकर); उरैप्प–कहते वक्त; अन्तान्–उन्होंने; निमिर् कुळल्–लम्बे केश की; मातर्–कन्याओं को; तेऱ्ऱि–ढाढस देकर; तिरु अन्नारै–श्रीलक्ष्मी-सम उनको; निऱै तवन्–पूर्ण तपस्वी; चूळि नल्कुम्–चूली-जनित; तिमिर् अऱु–(अज्ञानरूपी) तिमिर के नाशक; पिरमतत्तर्कु–ब्रह्मदत्त को; अळित्तनन्–विवाह में दान कर दिया। ४२१

समीरण चले गये। फिर वे लड़कियाँ किसी तरह रेंगती हुई अपने पिता के पास गयीं और अपनी करुणार्द्र तुतली बोली में जो हुआ सो बोलीं। कुशनाभ एक ओर खुश हुए कि मेरी कन्यायें अपनी मर्यादा और उचित व्यवहार जानती हैं तो दूसरी ओर उनकी स्थिति देखकर दुख हुआ। उन्होंने उनका ब्रह्मदत्त के साथ विवाह कर दिया। ये ब्रह्मदत्त अज्ञान काट चुके ज्ञानी थे और पूर्ण तपस्वी चूली के पुत्र थे। ४२१

अवन्मलर्क् करङ्ग डीण्डक् कून्निमिर्न् दळहु वाय्त्तार्
पुवनमुऱ् ऱुडैय कोवुम् पुतल्वरिल् लामै वेळ्वि
तवननिऱ् पुरिद लोडुन् दहवुऱत् तळलि नाप्पण्
कवनवे हत्तु रङ्गक् कादिवन् दुदयञ् जॅय्दान् 422

अवन्–उनके; मलर् करङ्कळ् तीण्ट–कमल-हस्त-स्पर्श से (पाणिग्रहण करने पर); कून् निमिर्न्तु–ऐंठन (के) दूर होते; अळकु वाय्त्तार्–सुन्दरता पा गयीं; पुवनम् मुऱ्ऱु उटैय–भुवन भर के; कोवुम्–स्वामी राजा भी; पुतल्वर् इल्लामै–पुत्र के अभाव के कारण; तवननिल्–अग्नि में; वेळ्वि पुरितलोटुम्–याग करने पर; तळलिन् नाप्पण–अग्नि-मध्य से; तकवु उऱ–योग्यता के साथ; कवनम् वेकम्–गमन-गति में तीव्र; तुरङ्कम्–अश्वों की सेना (के स्वामी); काति–गाधि; वन्तु–आकर; उतयम् चैय्तान्–उदित (प्रकट) हुए। ४२२

ब्रह्मदत्त के, पाणिग्रहण के अवसर पर, कर-कमल-स्पर्श से वे कन्यायें स्वस्थ सुन्दरियाँ बन गयीं। राजा ने पुत्र की कामना से पुत्रकामेष्टि का यज्ञ किया। तो होम के अग्नि-मध्य से गाधि नाम के तेजस्वी पुत्र (उदय-सूर्य के समान) प्रकट हुए। उनकी तीव्रगामी अश्वसेना प्रसिद्ध थी। ४२२

अन्नवन् ऱनक्कु वेन्द नरशोँडु मुडियु मीन्दु
पोॅन्नह रडैन्द पिन्नरप् पुहळ्महो दयत्तिल् वाळुम्
मन्नवन् कादिक् कियानुङ् गौशिकि यॅन्नु मादुम्
मुन्नर्वन् दुदिप्प वन्द मुडियुडै वेन्दर् वेन्दन् 423

अन्तवन् ततक्कु–उन (गाधि) को; वेन्तन्–राजा (कुशनाभ); अरचोटु–राज्य के साथ; मुटियुम्–मुकुट भी; ईन्तु–देकर; पोन् नकर्–स्वर्गपुरी; अटैन्त पिन्तर्–पहुँचने के बाद; पुकळ् मकोतयत्तिल्–यश-प्राप्त महोदय में; मन्तवन् कातिक्कु–राजा गाधि के; यानुम्–मैं और; मुन्तर्–(उसके) पहले; कौचिकि ॲन्तुम् मातुम्–कौशिकी नाम की स्त्री; वन्तु उतिप्प–आकर जनमने पर; अन्त मुटि उटै (य)–वे किरीटधारी; वेन्तर् वेन्तन्–राजाधिराज । ४२३

कुशनाभ ने गाधि को मुकुट पहनाकर राजा बनाया। फिर वे स्वर्ग सिधारे। महोदय के राजा गाधि के दो संतानें हुयीं। एक मेरी वहन कौशिकी थी। दूसरा मैं हूँ (विश्वामित्र)। ४२३

पिरुहुविन् मदलै याय पेरुन्तहै पितावु मौव्वा
इरुशिह नॅन्ब वड्कव् वेन्दिळै याळै यीन्दान्
अरुमरै यवनुञ् जिन्ना ळरम्बौरु ळिन्ब मुर्रि
विरिमलरत् तविशोन् ऱन्पाल् विळुत्तवम् पुरिन्दु मीण्डान् 424

पिरुकुविन् मतलै आय–भृगु के पुत्र; पॅरु तकै–श्रेष्ठ; पितावुम् ऑव्वा–पिता से भी तुलना में बढ़े; इरुचिकन् ॲन्पवऱ्कु–ऋचीक नाम के (मुनि) को; अ एन्तु इळैयाळै–उस आभरण-भूषिता को; ईन्तान्–विवाह में दिया; अरु मऱै अवनुम्–अमूल्य वेदों के (ज्ञाता) वे भी; चिल नाळ्–कुछ समय; अऱम् पॉरुळ् इन्पम् मुऱ्ऱि–धर्मार्थकाम का साधन कर; विळु तवम् पुरिन्तु–श्रेष्ठ तपस्या करके; विरि मलर् तवचोन् तन् पाल्–विकसित कमल पर आसीन के पास; मीण्टान्–जा पहुँचे। ४२४

गाधी ने भृगु के पुत्र ऋचीक नामक ऋषि के साथ आभरण-भूषिता कौशिकी का विवाह कर दिया। ऋचीक बड़े योग्य वर थे और सदाचरण में उनके पिता भी उनकी समता नहीं कर सकते थे। ऋचीक ने कुछ काल गृहस्थ धर्म का, धमार्थकाम के संपादन में, उचित पालन किया। बाद वड़ी तपस्या करके ब्रह्म-लोक लौट गये। ४२४

कादलन् शेणि नीङ्गक् कौशिहि तरिक्क लाऱ्ऱाळ्
मीदुऱप् पडर्द लुऱ्ऱाळ् विळुनदि वडिव माहि
मादवर्क् करश नोक्कि मानिलत् तुरुह णीक्कप्
पोदुह नदिया यॅन्नाप् पूमह नुलहम् बुक्कान् 425

कातलन्–(प्रिय) पति (के); चेणिल् नीङ्क–आकाश (स्वर्ग) में जाने पर; कौचिकी–कौशिकी; तरिक्कल् आऱ्ऱाळ्–न सह सकी हो; विळु नति वटिवम् आकि–बड़ी एक नदी का रूप लेकर; मीतु उऱ–आकाश में बढ़कर; पटर्तल् उऱ्ऱाळ्–जाने लगीं; मा तवर्क्कु अरचन्–महान तपस्वियों में श्रेष्ठ; नोक्कि–देखकर; मा निलत्तु–विशाल पृथ्वी का; उऱुकण्–दुख; नीक्क–दूर करने; नति आय्–(यही) नदी बनकर; पोतुक–जाओ; ॲन्ना–ऐसा कहकर; पूमकन् उलकम्–ब्रह्मा के लोक में; पुक्कान्–प्रवेश किया। ४२५

कौशिकी ने पतिदेव को आकाश-मार्ग पर जाते हुए देखा। वह पति-वियोग सह न सकीं। अतः अपने सती-धर्म के पालनरूपी तपस्या से प्राप्त शक्ति के आधार पर नदी का रूप ले उनका पीछा करने लगीं। उन तपोधन ने अपनी पत्नी को देखकर यह उपदेश दिया कि तुम इसी नदी के रूप में रहकर भूलोक वासियों का ताप हरती रहो। बाद वे ब्रह्मा के लोक को चले गये। ४२५

ऍम्मुना णङ्गै यिन्द विरुनदि यायि नाळॅन्
ऱम्मुनि पुहलक् केळा वदिशय मिहवुन् दोन्ऱच्
चॅम्मलु मिळैय कोवुञ् जिऱिदिडन् दीर्न्द पिन्नर्
मैम्मलि पॊऴिल्या दॅन्न मादवन् कूऱ लुऱ्ऱान् 426

ऍम् मुन्ताळ्-मेरी पूर्वज; नङ्कै-देवी; इन्त इरु नति आयिताळ्-यह महा नदी बनीं; ऍन्ऱु-ऐसा; अ मुनि पुकल-उस मुनि के कहते; केळा-सुनकर; चॅम्मलुम् इळैय कोवुम्-पुरुषोत्तम और उनके भाई लघुराज; अतिचयम् मिकवुम् तोन्ऱ-विस्मय के अधिक होते; चिऱितु इटम्-थोड़ी दूर; तीर्न्त पिन्नर्-छूट जाने के बाद; मै मलि-अन्धकारमय; पॊऴिल् यातु-उपवन कौन सा; ऍन्न-पूछने पर; मा तवन्-महान तपस्वी; कूऱल् उऱ्ऱान्-कहने लगे। ४२६

मेरी पूर्वजा भगिनी यह महानदी बनीं। विश्वामित्र से यह सुनकर प्रभु श्रीराम और उनके अनुज लक्ष्मण विस्मित हुए। वे कुछ दूर आगे गये। तब एक घने रूप में अन्धकार से भरा उपवन आया। श्रीराम ने पूछा कि वह कौन सा आश्रम है। विश्वामित्र उत्तर में यों कहने लगे। ४२६

तङ्गणा यहरिऱ् ऱॅय्वन् दान्पिऱि दिन्ऱॅन् ऱॅण्णुम्
मङ्गैमार् शिन्दै पोलत् तूयदु मऱ्ऱुङ् गेळाय्
ऍङ्गणान् मऱैक्कुन् देव रऱिविऱ्कुम् पिऱर्क्कु मॅट्टाच्
चॅङ्गण्मा लिरुन्दु मेनाट् चॅय्दवञ् जॅय्द दन्ऱे 427

तङ्कळ् नायकरिन्-अपने पतियों के अलावा; तॅय्वम् तान्-दैव ही; पिऱितु इन्ऱु-अन्य नहीं हैं; ऍन्ऱु ऍण्णुम्-ऐसा सोचनेवाली; मङ्कैमार् चिन्तै पोल-स्त्रियों के मन के समान; तूयतु-पवित्र है; मऱ्ऱुम्-और भी; केळाय्-सुनिये; ऍङ्कळ् नाल् मऱैक्कुम्-हमारे चारों वेदों; तेवर् अऱिविऱ्कुम्-देवों की बुद्धि; पिऱर्क्कुम्-और अन्य किसी के लिए भी; ऍट्टा-अगम्य; चॅम्कण् माल्-राजीव-लोचन विष्णु; मेल् नाळ्-प्राचीनकाल में एक समय; इरुन्तु-यहाँ रहकर; चॅय् तवम्-उद्दिष्ट तप; चॅय्ततु-(जहाँ पर) किया, यह है। ४२७

यह आश्रम सती-साध्वी के, जो अपने पति-देव को छोड़ किसी अन्य देव को मानती ही नहीं, मन के समान पवित्र स्थान है। और भी इसकी

यह महिमा है कि वेद, देवों का ज्ञान, और अन्य किसी के लिये भी अगम्य राजीवलोचन श्रीविष्णु यहाँ रहकर कभी तपस्या कर चुके हैं। ४२७

पारिन्पाल् विशुम्बिन् पालुम् पर्र्र्प् पडिप्प दन्नान्
पेरॅन्बा नवन्शॅय् मायप् पॅरुम्बिणक् कॉरुङ्गु तेर्वार्
आरॅन्बा नमल मूर्त्ति करुदिय दरिद रेर्राम्
ईरैम्बा नूळिक् काल मिरुन्दव मियर्रि यिट्टान् 428

पारिन् पाल्–भूमि पर; **विचुम्पिन् पालुम्**–आकाश में भी; **पर्रु अर्**–ईषना काटने के लिए; **पटिप्पतु**–जप करना; **अन्नात् पेर्**–उनका नाम; **ॲन्पान्**–ऐसा निर्दिष्ट; **अवन् चॅय्**–उनसे किये जानेवाले; **मायम् पॅरु पिणक्कु**–माया के विषम जाल; **ऑरुङ्कु**–पूर्ण रूपेण; **तेर्वार् आर्**–समझते कौन हैं; **ॲन्पान्**–ऐसा कहलानेवाले; **अमलम् मूर्त्ति**–अमल देव; **करुतियतु**–संकल्प क्या किया यह; **अरितल् तेर्राम्**–हम जान-बूझ नहीं सकते; **ईर् ॲम्पान्**–दो पचास (सौ); **ऊळि कालम्**–कल्प काल; **इरु तवम्**–महान तपस्या; **इयर्रियिट्टान्**–कर चुके। ४२८

इह लोक और परलोक-दोनों के वासी अपना कर्म बंधन काटने के लिए जिनका नाम जपते हैं; और जिनके सम्बन्ध में यह विस्मय किया जाता है कि कौन इनकी माया-लीलाओं की विचित्रताएँ जान सकते हैं वे अमल देव, न जाने क्या उद्देश्य लेकर, इधर सौ कल्प-काल तक तपोलीन रहे। ४२८

✻ आनव निङ्गुरै हिन्र्वन् नाळ्वाय्, ऊनमिन् ञाल मॉडुङ्गु मॅयिर्रोर्
एनमॅ नुन्दिरन् मावलि यॅन्बान्, वानमुम् वैयमुम् वौवुदल् चॅय्तान् 429

आनवन्–वे; **इङ्कु उरैकिन्र्**–यहाँ रहते; **अ नाळ् वाय्**–उन दिनों; **ऊनम् इल्**–अखण्ड; **ञालम्**–लोक; **ऑटुङ्कुम् ॲयिरु**–जिनके अन्दर समाये रहा ऐसे दाँतोंवाले; **ओर् एनम् ॲनुम्**–अनुपम वराह (अवतार) है, ऐसा मान्य; **तिर्ल्**–पराक्रमी; **मा वलि ॲन्पान्**–महावलि नामधारी; **वैयमुम्**–भूलोक को और; **वानमुम्**–आकाश-(स्वर्ग) लोक को; **वौवुतल् चॅय्तान्**–अधीन कर लिया। ४२९

वे जब यहाँ तपस्या करते रहे तब महाबलि ने उन वराह मूर्ति के समान, जिन्होंने अपने लम्बे और वक्र दाँतों के बीच भूमि को उठा ले अपने वश में रखा था, भू-लोक और स्वर्ग लोक दोनों को अपने वश में कर लिया। यहाँ विष्णु-देव के वराहावतार की घटना की ओर संकेत है। हिरण्याक्ष भूमि को चटाई के समान लपेट कर उसके साथ समुद्र में जा छिपा। श्रीमन्नारायण ने वराह बनकर हिरण्याक्ष को मारा और भूमि को अपने दाँतों के ऊपर धर कर बाहर लाकर पूर्ववत स्थिर किया। उस वराह के समान महाबलि बलशाली था। ४२९

✻ शॅय्दवन् वानव रुञ्जॅय लार्रा, नॅय्तवळ् वॅळ्वियै मुर्रिड निन्रान्
ऐयमिल् शिन्दैय नन्दणर् तम्बाल्, वैयमुम् यावुम् वळङ्ग वलित्तान् 43

चॅय्तवन्–ऐसा किया, वह; ऐयम् इल् चिन्तैयन्–दृढ़चित्त होकर; वानवरुम् चॅयल् आऱ्ऱा–देवताओं के लिए भी अशक्य; नॅय् तवळ्–घृत हवनवाले; वेळ्वियै–यज्ञ को; मुऱ्ऱिट निन्ऱान्–सम्पन्न करने को उद्यत; वैयमुम्–धरणी को; यावुम्–और सबको; अन्तणर् तम् पाल्–ब्राह्मणों के पास; वळङ्क–दान में देने को; वलित्तान्–ठाना। ४३०

महावलि को दोनों लोकों को वश में करने के बाद अपनी शक्ति पर दृढ़ विश्वास हो गया। उसने संकल्प किया कि मैं घृत-होम का बड़ा यज्ञ करूँगा। और उसके अन्त में ब्राह्मणों को भूदान आदि दान करूँगा। ४३०

✻ आयद ऱिन्दनर् वानव रन्नाळ्, मायनै वन्दु वणङ्गि यिरन्दार्
तीयवन् वॅन्दॊऴि ऱीरॆन निन्ऱार्, नायह नुम्मदु शॆय्य नयन्दान् 431

आयतु–वह बात; वानवर्–देवता लोग; अऱिन्तनर्–जान गये; अन्नाळ्–तब; वन्तु–यहाँ आकर; मायनै वणङ्कि–मायावी का नमस्कार कर; तीयवन्–दुर्जन; वॅम् तॊऴिल्–बुरे प्रयत्न को; तीर् ऍन–विफल बनाइये; ऍन इरन्तार् निन्ऱार्–ऐसा याचना करते हुए खड़े रहे; नायकनुम्–नायक भी; अतु चॅय्य–वह करने का; नयन्तान्–कृत-निश्चय हुआ। ४३१

इसका संकल्प देवों पर प्रकट हो गया। वे इधर आये। उन्होंने श्रीविष्णु से विनय की कि दुराचारी असुर, महावलि का संकल्प चूर कर दें। जगन्नायक ने भी बात मान ली। ४३१

✻ काल नुनित्तुणर् काशिब नॆन्नुम्, वालऱि वर्कदि दिक्कॊरु महवाय्
नील निऱत्तु नॆडुन्दहै वन्दोर्, आलमर् वित्तिन् अरुङ्गुऱ ळानान् 432

नील निऱत्तु–श्याम रंग के; नॆटु तकै–महिमायुक्त विष्णु; कालम् नुनित्तु–कालगति को सूक्ष्म रूप से देखकर; उणर्–जाननेवाले; काचिपन् ऍन्नुम्–काश्यप नाम के; वाल् अऱिवर्कुम्–आत्मज्ञानी को; अतितिक्कुम्–अदिति को; ओर् मकवु आय्–एक पुत्र के रूप में; वन्तु–आकर; ओर् आल् अमर्–विशाल वटवृक्ष का आश्रय; वित्तिन्–बीज के समान; अरु कुऱळ्–बहुत ही छोटे रूप के; आनान्–हुए। ४३२

ऊँचे और श्याम रंग के श्रीविष्णु, जो सर्व-कल्याणगुण-संपन्न थे, त्रिकाल ज्ञानी काश्यप और उनकी पत्नी अदिति के पुत्र के रूप में अवतरित हुए। वट-वृक्ष के बीज के समान, जो बड़े वृक्ष को अन्दर छिपाये रखता है, वे बहुत ही छोटे वामन (बौने) थे। ४३२

✻ मुप्पुरि नूलिनन् मुञ्जियन् विञ्जै, कऱ्पदोर् नाविनन् पुऱ्पडु कैयन्
अऱ्पुद नऱ्पुद रॆय्दि युन्दन्, शिऱ्पद मॊप्पदोर् मॆय्क्कॊडु शॆन्ऱान् 433

अऱ्पुतन्–अद्भुत; मुप्पुरि नूलिनन्–यज्ञोपवीतधारी; मुञ्चियन्–मूँज की करधनीवाले; विञ्चै कऱ्पतु–वेदमन्त्र उच्चारण करनेवाली; ओर् नाविनन्–अद्वितीय जीभवाले; पुल् पटु कैयन्–कुश लिये हाथवाले; अऱ्पुतरे अऱियुम्–अद्भुत

ज्ञानी से ही जानने योग्य; चित् पतम् ऑप्पतु—ज्ञान-स्वरूप-सम; ओर् मॅय् कोट्टु—एक शरीर लेकर; चॅन्ऱान्—(महाबलि की) यज्ञशाला में गये। ४३३

वे अद्भुत देव, यज्ञोपवीत, और मूँज की करधनी पहने, मुख (जीभ) से वेद मन्त्र उच्चारण करते हुए, हाथ में कुश लिये अपने ज्ञानियों द्वारा ही ज्ञेय चिन्मय वामन रूप में महाबलि की यज्ञशाला में गये। ४३३

❀ अन्ऱवन् वन्द दरिन्दुल हॅल्लाम्, वॅन्ऱवन् मुन्दि वियन्दॅदिर् कॉण्डान्
निन्ऱुणै यन्दणरिल्लै निऱैन्दोय्, ऍन्ऱति नुयन्दवर् यारुळ रॅन्ऱान् 434

उलकु ऍलाम् वॅन्ऱवन्—भुवन सब जीतनेवाले; अन्ऱु अवन् वन्ततु अऱिन्तु—तब उनका आना जानकर; मुन्ति—आगे जाकर; वियन्तु—विस्मय करके; ऍतिर् कॉण्टान्—स्वागत किया; निऱैन्तोय्—(गुण-) पूर्ण; निन् तुणै अन्तणर् इल्लै—आपके समान ब्राह्मण नहीं हैं; ऍन् ततिन्—मुझ से बढ़कर; उयन्तवर्—उज्जीवित; यार् उळर्—कौन हैं; ऍन्ऱान्—(शिष्टाचार के) ये वचन कहे। ४३४

सभी लोकों को जीतनेवाले महावलि ने वामन देव का आगमन जाना तो विस्मय किया और उनके सामने जाकर उनका स्वागत किया। उसने शिष्टतापूर्ण निवेदन किया कि (सर्वगुण-) सम्पूर्ण विप्र! आपके समान कोई और ब्राह्मण इस विशाल विश्व में नहीं हैं। आप मेरे यहाँ आये हैं। अत: मुझसे वढ़कर भाग्यवान कृतकृत्य कौन होगा? (सर्वगुण-संपूर्ण का अर्थ देनेवाले तमिळ शब्द का 'सर्वव्यापी' अर्थ भी हो सकता है)। ४३४

❀ आण्डहै यवुरै कूऱ वऱिन्दोन्, वेण्डिनर् वेट्कैयिन् मेऱ्पड वीशि
नीण्डकै यायिनि निन्नुळै वन्दोर्, माण्डव रल्लवर् माण्बिल रॅन्ऱान् 435

आण् तकै—पुरुषश्रेष्ठ; अ उरै कूऱ—वह वचन कहते समय; अऱिन्तोन्—सर्वज्ञ; वेण्टिनर्—याचकों को; वेट्कैयिन् मेल् पट—माँगे से अधिक; वीचि—विना हिचक देकर; नीण्ट—(दान में) बड़े (बने); कैयाय्—हाथोंवाले; इनि—अब; निन् उळै—आपके पास; वन्तोर्—आगत; माण्टवर्—यश-प्राप्त हैं; अल्लवर्—(जो) न आये, वे; माण्पु इलर्—गौरव-वंचित हैं; ऍन्ऱान्—कहा। ४३५

महाबलि श्रेष्ठ पुरुष था। उसने जब यह शिष्ट वचन कहा तव सर्वज्ञ वामनदेव ने उत्तर में कहा कि आप के हाथ याचकों को अभीष्ट से भी अधिक, निस्संकोच देकर दीर्घ-यश हो गये हैं। आपके पास कुछ मांगते हुए आनेवाले को गौरव मिलता है। न आनेवाले गौरव से वंचित रह जाते हैं। ४३५

❀ शिन्दै युवन्दॅदि रॅन्शॅय वॅन्ऱान्, अन्दणन् मूवडि मण्णरु ळुण्डेल्
वॅन्दिऱ लोय्दर वॅण्डु मॅनामुन्, तन्दॅनॆ नॅन्ऱनन् वॆळ्ळि तडुत्तान् 436

चिन्तै उवन्तु—मन-मुग्ध होकर; ऍतिर्—उत्तर में; ऍन् चॅय—क्या करना

(है); ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा; अन्तणन्–ब्राह्मण; वॆम् तिऱलोय्–तापक शक्तिशाली; अरुळ् उण्टेल्–दया हो तो; मू अटि–तीन पादों की; मण् तर वेण्टुम्–भूमि देने की कृपा हो; ऍऩा मुऩ्–कहने से पहले; तन्तऩॆऩ्–दिया; ऍऩ्ऱतऩ्–कहा; वॆळ्ळि–शुक्र (ने); तटुत्ताऩ्–रोका। ४३६

महाबलि यह सुनकर मुदित हुआ। और पूछा कि अब क्या करना है? विप्र-वेषधारी वामन ने कहा कि परंतप बलवान! दया हो तो "पादत्रयाक्रांत" भूमि दे दीजिये। उनके कह चुकने के पहले ही महाबलि ने 'दे दिया' कह दिया। शुक्राचार्य ने उनको रोका और कहा—। ४३६

❀ कण्ड तिऱत्तिदु कैतव मैय, कॊण्ड तिऱक्कुऱ ळॆऩ्बदु कॊळ्ळेल्
अण्डमु मऱ्ऱै यहण्डमु मेऩाळ्, उण्डव ऩामिदु णर्न्तुहॊ ळॆऩ्ऱाऩ् 437

ऐय–नृप; कण्ट तिऱत्तु–प्रत्यक्ष; इतु–यह रूप; कैतवम्–कैतव है; कॊण्टल् निऱम्–मेघ-वर्ण; कुऱळ् ऍऩ्पतु–छोटे हैं, यह; कॊळ्ळेल्–मत समझिये; अण्टमुम्–यह अण्ड; मऱ्ऱै अकण्टमुम्–अन्य अखण्ड प्रपंच को; मेल नाळ्–पहले कभी; उण्टवन् आम्–(जिन्होंने) निगल लिया वे ही हैं; इतु–उणर्न्तु कॊळ्–यह समझ लीजिये; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ४३७

प्रभु! आप इनके हमारी आँखों के सामने रहनेवाले रूप को सच समझ रहे हैं। यह धोखा है। मेघ-श्याम के इस बौने रूप को सत्य न मानिये। ये वही हैं जिन्होंने कभी सारे अण्ड-पराण्डों को अपने उदरस्थ कर लिया था। ये स्वयं भगवान विष्णु हैं। जानिये। ४३७

❀ निऩैक्किलै यॆऩकै निमिर्न्दिड वन्दु, तऩक्किय लावहै ताळ्वदु ताविल्
कऩक्करि याऩदु कैत्तल मॆऩ्ऩिऩ्, ऍऩक्किदऩ् मेऩल मियादुकॊ लॆऩ्ऱाऩ् 438

तऩक्कु इयला वकै–अपने लिए अप्राकृत रूप से; वन्तु–आकर; ऍऩ् कै–मेरे हाथ; निमिर्न्तिट–ऊपर करके; ताळ्वतु–नीचा रहनेवाला; ता इल्–निर्मल; कऩम् करियाऩतु–मेघ-श्याम का; कै तलम्–हस्त-तल है; ऍऩ्ऩिऩ्–तो; ऍऩक्कु–मेरा; इतऩ् मेल्–इससे बढ़कर; नलम् यातु–हित क्या है; निऩैक्किलै–आपने ध्यान नहीं दिया; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ४३८

महाबलि ने उत्तर दिया—वैसा है तो यह उनके लिए असाधारण है। अगर ये जो मेरे हाथ को ऊपर और अपने हाथ को नीचे रखकर दान लेने आये हैं, स्वयं मेघवर्ण श्रीमन्नारायण हैं तो इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य क्या होगा? आपने यह बात नहीं सोची!। ४३८

तुऩ्ऩिऩर् तुऩ्ऩल रॆऩ्बदु शॊल्लार्, मुऩ्ऩिय नऩ्ऩॆऱि नूलवर् मुऩ्वन्
दुऩ्ऩिय दाऩ मुयर्न्दवर् कॊळ्ह, ऍऩ्ऩि इलिवऩ्ऱुणै याव रुयर्न्दार् 439

मुऩ्ऩिय–सम्मान्य; नल् नॆऱि–सन्मार्ग के; नूलवर्–शास्त्रज्ञ; मुऩ् वन्तु–आगे आकर; उऩ्ऩिय–उद्दिष्ट; तानम्–दान को; उयर्न्तवर्–(योग्य) श्रेष्ठ;

कॉळक–ले लें; ऍन्ऩतिल्–यह कहकर करेंगे तो; तुन्ऩिलर्–अपने; तुन्ऩलर्–पराये; ऍन्ऩपतु–हैं, यह; चॊल्लार्–नहीं बोलते; इवन् तुणै उयर्न्तार्–इनके समान उन्नत; यावर्–कौन हैं। ४३९

सम्मान्य धर्मशास्त्रज्ञ, जब यह देखते हैं कि दान देने को उद्यत होकर, कोई योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति आकर ले ले—यह घोषणा करके दान देने लगते हैं तब अपना-पराया यह बात नहीं करते। और भी इनके समान योग्य और उत्कृष्ट याचक कौन होंगे ? इनको आप देव (सुर-शत्रु) मानकर ऐसी बात न कहें। ४३९

वॆळ्ळियै यादल् विळम्बितै मेलोर्, वळ्ळिय राह वळङ्गुव दल्लाल्
ऍळ्ळुव वॆन्ऩिल विन्ऩुयि रेनुम्, कॊळ्ळुदल् तीदु कॊडुप्पदु नन्ऱाल् 440

वॆळ्ळियै आतल्–अल्प-बुद्धि हैं, इसलिए; विळम्पितै–आपने ऐसा कहा; वळ्ळियर् आक–दाता बनना हो तो; वळङ्कुवतु अल्लाल्–देते रहने के सिवाय; ऍळ्ळुव चिल–रोकने योग्य कुछ; ऍन्–क्या होंगे; इनिय उयिरे आयिनुम्–प्यारा प्राण भी हो तो; कॊळ्ळुतल्–माँग लेना; तीतु–बुरा है; कॊटुप्पतु–देना; नन्ऱु–अच्छा है; (आल्)। ४४०

आप शुक्र हैं—यानी निपट कोरे हैं। (असुर-गुरु हैं, हमारे पक्षपाती हैं।) इसलिए आपने ऐसा कहा। दानी बनना हो तो याचित सभी वस्तुओं को देने के सिवा, बचाये रखने योग्य कुछ हैं क्या ? प्राण भी हों—मांगना बुरा है; पर मांगने पर देना श्लाध्य और भला है। ४४०

❀ मायन्दवर् मायन्दव रल्लर्हण् माया, देन्दिय कैहॊ डिरन्दव रॆन्दाय्
वीन्दव रॆन्बवर् वीन्दव रेनुम्, ईन्दव रन्ऱि यिरुन्दवर् यारे 441

ऍन्ताय्–(मेरे) तात; मायन्तवर्–(जो) मरे वे सब; मायन्तवर् अल्लर्–मृतक नहीं हैं; मायातु–प्राण न त्यागकर; एन्तिय कै कॊटु–याचना के लिए बढ़े हाथ के साथ; इरन्तवर्–याचना करनेवाले ही; वीन्तवर्–मृतक (कहलाने योग्य) हैं; वीन्तवरेनुम्–मृतक भी; ईन्तवर् अन्ऱि–(याचित वस्तु) देनेवाले के सिवा; इरुन्तवर् यार्–(अमर) रहे कौन ? । ४४१

पितृतुल्य ! जो मरे हैं वे सचमुच मृतक नहीं हैं। पर जो बिना प्राण त्यागे दूसरों के सामने याचना करते हुए हाथ बढ़ाते फिरते हैं उनको मृतक कहना चाहिए। जो मर गये हैं वे भी अगर दानी रहे हों तो अमर (नाम) हो जाते हैं। उनको छोड़कर स्थायी रहनेवाले कौन हैं ? ४४१

अडुप्प वरुम्बळि शॆय्ञ्ञरु मल्लर्, कॊडुप्पवर् मुन्बु कॊडेलॆन निन्ऱु
तडुप्पव रेपहै तम्मैयु मन्ऩार्, कॆडुप्पव रन्ऩदॊर् केडिलै यॆन्ऱान् 442

अरु पळि अटुप्प–अमिट निंदा प्राप्त हो ऐसा; चॆय्ञ्ञरुम्–बुराई करनेवाले भी; अल्लर्–(शत्रु) नहीं; कॊटुप्पवर् मुन्पु निन्ऱु–दान देनेवाले के सामने खड़े होकर;

कॊटेल् ॲत–मत दो यह कहकर; तटुप्पवरे–रोकनेवाले ही; पकै–शत्रु हैं; अन्नार्–वे; तम्मैयुम्–अपने को भी; कॆटुप्पवर्–बिगाड़नेवाले होते हैं; अन्ततु–उसके समान; ओर् केटु इलै–कोई बुराई नहीं है; ॲन्ऱान्–कहा। ४४२

अमिट कलंक लेकर जो किसी की खुले रूप से हानि करते हैं, वे शत्रु नहीं हैं। पर दान देनेवालों के आड़े आकर 'मत दो', कहनेवाले ही उसके शत्रु हैं। ऐसा रोकनेवाले अपनी भी हानि करा लेते हैं। इससे बढ़कर अन्य कोई बुरा काम नहीं है। ४४२

कट्टुरै युत्तमर् कैत्तुळ पॊळ्दे, इट्टिशै कॊण्डऱ नॆय्द मुयन्ऱोर्क्
कुट्टॆऱु वॆम्बहै याव दुलोबम्, विट्टिड लॆन्ऱु विलक्किनर् मादो 443

कट्टुरै उत्तमर्–धर्मोपदेशक उत्तम लोग; कैत्तु उळ पॊळ्ते–अपने वश में सम्पत्ति के रहते समय ही; इट्टु–देकर; इचै कॊण्टु–यश पाकर; अऱन् ॲय्त–पुण्य प्राप्त करने का; मुयन्ऱोर्क्कु–प्रयत्न करनेवालों को; उळ् तॆऱु–अन्दर से बिगाड़नेवाला; वॆम् पकै–भयंकर शत्रु; आवतु–जो बनता है वह; उलोपम्–लोभ है; विट्टिटल्–दूर करो; ॲन्ऱु–कहकर; विलक्किनर्–त्याज्य किया। ४४३

धर्म के उपदेशक उत्तम लोगों ने लोभ को त्याज्य कहा है। उनका कहना है कि अपने वश में सपत्ति के रहते समय में ही दान करो; यश कमाओ और पुण्य भी बना लो। इसका प्रयत्न करनेवालों को उसके ही अन्दर से रोकनेवाला शत्रु लोभ है। उसको त्याग दो। ४४३

ॲडुत्तॊरुव रुक्कॊरुव रीवदनिन् मुन्नम्
तडुप्पदु निन्क्कळ्हि दोतहविल् वॆळ्ळि
कॊडुप्पदु विलक्कुकॊडि योर्तमदु शुऱ्ऱम्
उडुप्पदुवु मुण्बदुवु मिन्ऱियॊळि युङ्गाण् 444

ऒरुवरुक्कु–किसी को; ऒरुवर–कोई; ॲटुत्तु ईवतन् मुन्तम्–(याचित वस्तु) लेकर देने से पहले; तटुप्पतु–रोकना; निनक्कु अळकितो–आपको शोभा देता है क्या; तकवु इल् वॆळ्ळि–श्रेष्ठता शून्य शुक्र; कॊटुप्पतु–दान को; विलक्कु–रोकनेवाले; कॊटियोर् तमतु चुऱ्ऱम्–बुरे लोगों के परिवार भी; उटुप्पतुवुम् उण्पतुवुम् इन्ऱि–भोजन और वस्त्र के बिना; ऒळियुम्–बिगड़ जायेंगे; काण्–देखिये। ४४४

किसी को किसी दूसरे की याचित वस्तु लेकर देने के पहले ही उसको रोकना क्या आपके लिए शोभनीय है? श्रेष्ठता-शून्य शुक्राचार्य! दान को रोकनेवाले दुर्जनों के बंधु-बांधव भी भोजन और वस्त्र को तरसेंगे और नष्ट हो जायँगे। यह आप सोच लें। ४४४

※ मुडियविम् मौळियॆला मौळिन्दु मन्दिरि
कॊडियनॆन् ऱुरैत्तशॊ लॊन्ऱुङ् गॊण्डिलन्

अडियॊरु मून्ऱुनी यळन्दु कॊळ्हॆन्न
नॆडियवन् कुऱियहै नीरै नीट्टिनान् 445

इ मॊऴि ॲल्लाम्–यह कथन सब; मुटिय–पूर्ण रूप से (जी भरकर); मॊऴिन्तु–कहकर; मन्तिरि–मन्त्री (का); कॊटियन् ॲन्ऱ–'वंचक', ऐसा; उरॆत्त चॊल्–कहा वचन; ऒन्ऱुम् कॊण्टिलन्–कोई परवाह न करके; अटि ऒरु मून्ऱुम्–पाद तीन; नी अळन्तु कॊळ्क–आप माप लें; ॲन–ऐसा कहकर; नॆटियवन्–उन्नत देव के; कुऱिय कै–छोटे हाथ में; नीरै–दानोदक को; नीट्टिनान्–बढ़ाया (डाला)। ४४५

महाबलि ने यह सब तृप्ति-भर कहा; शुक्राचार्य ने वामन के सम्बन्ध में जो मायावी, वंचक कहा उसको कोई मूल्य नहीं दिया। उसने वामन से कह दिया कि आपही तीन पाद-मापों की भूमि नाप लें। दान को स्थिर करने के लिए उसने उनके हाथ में उदक भी डाल दिया। ४४५

❀ कयन्दरु नऱुम्बुनल् कैयिऱ् ऱीण्डलुम्
पयन्दवर् हळुमिहळ् कुऱळन् पार्त्तॆदिर्
वियन्दवर् वॆरुक्कॊळ विशुम्बि नॊङ्गिनान्
उयर्न्दवर्क् कुदविय वुदवि यॊप्पवे 446

कयम् तरु–सरोवर से प्राप्त; नऱुम् पुनल्–श्रेष्ठ (दान-) जल के; कैयिल् तीण्टलुम्–हाथ में लगते ही; पयन्तवर्कलुम्–जनकों (माँ-बाप) द्वारा भी परिहास्य; कुऱळन्–वामन-रूपधारी; ॲतिर्–सामने देख; वियन्तवर–विस्मयाभिभूतों (के); वॆरु कॊळ–भयभीत होते; उयर्न्तवर्क्कु उतविय–उत्तम पात्र को दी गयी; उतवि ऒप्प–सहायता के समान; विचुम्पिन् ओङ्कितान्–आकाश में उन्नत हो गये। ४४६

उस स्वच्छ सरोवर के उदक को वामनदेव के हाथ में पड़ना ही था कि वामनदेव, जिनका रूप देखकर स्वयं माता-पिता को भी हँसी आ सकती थी, देखनेवालों को पहले विस्मय में, वाद में, भय में डालते हुए आकाश में ऊँचे बढ़े और त्रिविक्रम वन गये। उनका बढ़ना, उत्तम लोगों के प्रति की हुई सहायता का फल जैसा उन्नति को प्राप्त करती है, वैसा था। ४४६

❀ निन्ऱकाल् मण्णॆला निरम्बि यप्पुऱम्, ऍन्ऱुपा वियदिलै शिऱिदु पारॆन्ना
ऒन्ऱवा नुलहॆला मॊडुक्कि युम्बरै, वॆन्ऱकाल् मीण्डदु वॆळिपॆ ऱामैये 447

निन्ऱ काल्–भूमि पर रहा श्रीपाद; मण् ॲलाम् निरम्पि–भूतल भर में फैलकर; पार् चिरितु ॲन्ना–धरती को छोटी मान कर; अप्पुरम्–परे; चॆन्ऱु पावियतु इलै–जाकर फैला नहीं; वातुलकु ॲलाम्–ऊपर के लोकों, सभी को; ऒन्ऱ ऒटुक्कि–अपने में अन्तरित कर; उम्परै वॆन्ऱ काल्–सुरलोक को अन्तरित करनेवाला श्रीचरण; वॆळि पॆऱामै–स्थल न पाने से; मीण्टतु–लौट आया। ४४७

भूमि पर रहा श्रीचरण भूलोक को नाप आया। भूमि छोटी रह

गयी; इसलिए ही वह लौट गया। वैसे ही सुरलोकों को पूर्णरूप से एक श्रीचरण ने, अन्तरित कर नाप लिया। आगे वहाँ भी स्थान नहीं रहा। ४४७

***उलहॅला मुळ्ळडि यडक्कि योरडिक्, कलहिला दव्वडिक् कन्बन् मॅय्यदेल्**
इलैहुलान् दुळाय्मुडि येह नायहन्, शिलैकुलान् दोळित्ताय् शिरियन् शालवे 448

उलकु ॲलाम्–लोक, सारे; उळ अटि–अपने (दोनों) चरणों के अन्दर; अटक्कि–नापकर; ओर् अटिक्कु–(बाकी) एक पग के लिए; अलकु इलातु–लोकों में स्थान न मिलने से; अ अटिक्कु–उस पग के लिए; अन्पन् मॅय् अतु–भक्त का शरीर (लक्ष्य) बना; एल्–तो; चिलै कुलावुम्–धनुष-शोभित; तोळित्ताय्–भुजावाले; इलै कुलावुम्–पत्रों सहित; तुळाय् मुटि–तुलसी की माला से शोभायमान किरीटधारी; एक नायकन्–अद्वितीय जगन्नाथ; चाल च्चिरियन्–बहुत ही छोटे हैं। ४४८

सारे लोकों को श्री त्रिविक्रमदेव ने दो पगों में नाप लिया। तीसरे चरण के लिये स्थान नहीं रहा। इसलिए उन्हें भक्त के शरीर को ही उसका स्थान बनाना पड़ा। यह बात है तो, हे धनुष से शोभित भुजावाले श्रीराम! श्री तुलसी-पत्र की माला से शोभित किरीटधारी श्रीविष्णु बहुत छोटे हैं न? उनकी महिमा का कैसे वर्णन हो? । ४४८

*** उरियदिन् दिरऱ्किदॅन् ऱुलह मीन्दुपोय्**
विरिदिरैप् पाऱ्कडऱ् पळ्ळि मेवितान्
करियव नुलहॅलाङ् गडन्द ताळिणै
तिरुमहळ् करन्दॊडच् चिवन्दु काट्टवे 449

करियवन्–श्यामल; इतु इन्तिरऱ्कु उरियतु–यह देवेन्द्र का स्वत्व है; ॲन्ऱु–यह कहकर; उलकम् ईन्तु–लोकों को देकर; विरि तिरै–विशाल तरंगोंवाले; पाल् कटल् पोय्–क्षीरसागर पर जाकर; उलकु ॲलाम् कटन्त–सारे लोकों को नापकर जो पार हुए; ताळ् इणै–उन चरण-द्वय के; तिरुमकळ् करम् तॊट–श्रीलक्ष्मी के हस्तों के स्पर्श से; चिवन्तु काट्ट–लाल हो दिखते; पळ्ळि–(नाग) शय्या पर; मेवितान्–चढ़े (योग-निद्रा में रत हुए)। ४४९

बाद श्याममूर्ति ने सारे लोकों को इन्द्र की संपत्ति मानकर उनके अधीन कर दिया। फिर वे क्षीरसागर पर जाकर शेषशायी बन गये। तब श्रीलक्ष्मीदेवी उनके पैर दबाने लगीं। आश्चर्य है कि सारे लोकों को नाप आनेवाले पैर श्रीलक्ष्मीदेवी के मृदुल कर-स्पर्श को भी सह नहीं सके। वे लाल हो गये। ऐसे कोमल पैर ही लोकों के ऊबड़-खावड़, ऊँच-नीच प्रदेशों पर फैले थे। कितना कष्ट हुआ होगा उन्हें? । ४४९

आदला लरुविनै यरुक्कु मारिय, कादलाऱ् कण्डवर् पिऱवि काण्गुरार्
वेदनून् मुऱैमैयाल् वॆळ्वि मुऱ्ऱुवेऱ्, कीदला दिल्लैवे ऱिरुक्कऱ् पालदे 450

आतलाल्–इन (कारणों) से; काततलाल् कण्टवर्–प्रेम से दर्शन करनेवालों का अरुवित्ते अरुक्कुम्–कठोर कर्म-बन्धन काट देगा; पिर्रवि काण्कुरार्–फिर जन्म न देखेंगे (लेंगे); आरिय–पूज्य; वेतम् नूल्–वेद-शास्त्र (विहित); मुर्रैमैयाल्–रीति से; वेळ्वि मुर्रुवेर्कु–याग करनेवाले मुझे; इरुक्कल् पालतु–रहने योग्य स्थान; ईतु अलातु–इसके सिवा; वेरु इल्लै–कोई दूसरा नहीं है। ४५०

इन सबसे आप जानते होंगे कि यह कितना पवित्र आश्रम है। इसके दर्शन करनेवालों का कर्मबंधन कट जायगा। फिर वे जन्म नहीं लेंगे। हे पूज्य श्रीराम ! मैं वेद और वेदसम्मत शास्त्रों की विधियों के अनुसार यज्ञ करना चाहता हूँ। मेरे लिए यही उत्तम स्थान है जहाँ रहकर यज्ञ करूँ। कोई दूसरा स्थान, इसके सिवा मान्य नहीं हो सकता। ४५०

ईण्डिरुन् दियर्रुवॆन् याहम् यानॆना, नीण्डपूम् बळ्वत्तै नॆर्रियि नॆय्दिप्पिन्
वेण्डुव कॊण्डुदन् वॆळ्वि मेविनान्, काण्डहु कुमररैक् काव लेवियै 451

ईण्टु इरुन्तु–यहाँ रहकर; यान्–मैं; याकम् इयर्रुवॆन्–यज्ञ करूँगा; ऎना–कहकर; नीण्ट–बड़े; पू पळ्वत्तै–फूलों के (तरुओं से भरे) उद्यान में; नॆर्रियिन् ऎय्ति–मार्ग से जा पहुँचकर; पिन्–बाद; वॆण्टुव कॊण्टु–आवश्यक (सामग्री) जुटाकर; काण् तकु कुमररै–दर्शनीय राजकुमारों को; कावल् एवि–रक्षा के लिए नियत कर; तन् वेळ्वि मेविनान्–अपने यज्ञ-कर्म में प्रवृत्त हुए। ४५१

महर्षि, यहीं रहकर यज्ञ करूँगा, —यह कहकर सही मार्ग पकड़कर फूलों के तरुओं से पूर्ण एक उद्यान में गये; यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्रियाँ जुटायीं और उन सुन्दर राजकुमारों को संरक्षण-कार्य में नियत किया। फिर वे यज्ञ-कार्य में प्रवृत्त हुए। ४५१

एण्णुदर् काक्करि दिरण्डु मून्रुनाळ्
विण्णवर्क् काक्किय मुनिवन् वेळ्वियै
मण्णिनैक् काक्किनर् मन्नन् मैन्दर्हळ्
कण्णिनैक् काक्किनर् विमैयिर् कात्तनर् 452

ऎण्णुतर्कु–सोचने के लिए; आक्क अरितु–करने के लिए दुस्तर; इरण्टु मून्रु नाळ्–दो के तीन (छः) दिन; मुनिवन्–मुनि; विण्णवर्क्कु आक्किय–देवों के निमित्त किये; वेळ्वियै–यज्ञ (की); मन्नन् मैन्तर्कळ्–राजा के पुत्रों ने; कण्णिणै–आँखों के जोड़े की; काक्किन्र–रक्षा करनेवाले; इमैयिन्–पलक-सम; कात्तनर्–रक्षा की। ४५२

वह यज्ञ इतना कष्ट-साध्य था कि करने की कौन कहे—सोचना भी कठिन था। मुनिवर ने देवताओं को तृप्त करते हुए छः दिन का वह यज्ञ किया। राजकुमारों ने भी उसका इस प्रकार संरक्षण किया जिस प्रकार पलकें नेत्रों की रक्षा करती हैं। पलकों के आँखों के संरक्षण करने का

यह अपमान बड़ा अर्थ-पुष्ट है। एक टीका यह है जो प्रसिद्ध है—श्रीराम यज्ञ-शाला के चारों ओर घूमते आ रहे थे। लक्ष्मण द्वार पर सतर्क खड़े थे। श्रीराम जब द्वार के पास आते तो लक्ष्मण को सचेत करते। श्रीराम ऊपर की पलक के समान हैं। वह पलक गिरती उठती है। जब वह गिरती है तब नीचे की पलक को, जो अचल है, स्पर्श करती है। वैसे ही श्रीराम लक्ष्मण को स्पर्श करके सचेत करते थे। और भी पलक-आँख का उदाहरण बिलकुल अचूक सचेतता का भी द्योतक है। ४५२

कात्तनर् तिरिहिन्ऱ काळै वीररिल्, मूत्तवन् मुळुदुणर् मुनियै मुन्निनी
तीत्तोळि लियऱ्ऱुव रॅन्ऱ तीयवर्, एत्तरुङ् गुणत्तिनाय् वरुव दॅन्ऱॅन्ऱान् 453

कात्तनर्–रक्षा करते हुए; **तिरिकिन्ऱ**–घूमनेवाले; **काळै वीररिल्**–ऋषभ-सम वीरों में; **मूत्तवन्**–ज्येष्ठ; **मुळुतु उणर् मुनियै**–सर्वज्ञ मुनि के; **मुन्नि**–समीप जाकर; **एत्तु**–स्तुत्य; **अरु**–श्रेष्ठ; **कुणत्तिनाय्**–गुणवाले; **नी**–आप (के); **ती तॊळिल् इयऱ्ऱुवर्**–दुष्कर्म करेंगे; **ऎन्ऱ तीयवर्**–ऐसे निर्दिष्ट अत्याचारी; **वरुवतु ऎन्ऱु**–आयेंगे कब; **ऎन्ऱान्**–यह पूछा। ४५३

जब ऋषभ-सम वे राजकुमार यज्ञ के संरक्षण में लगे घूमते थे तब ज्येष्ठ श्रीराम ने सर्वज्ञ मुनिवर के समीप जाकर संबोधन किया और पूछा कि हे स्तुत्य गुण-धन ! आपने दुष्कृत्य करनेवाले कहकर जिनका संकेत किया था वे दुराचारी राक्षस कब आवेंगे ? । ४५३

वाऱ्ऱैमा ऱुरैत्तिलन् मुनिवन् मौनियाय्प्
पोऱ्ऱॊळिर् कुमरनुन् दॊळुदु पोन्दपिन्
पाऱ्ऱनन् विशुम्बिनैप् परुव मेहम्बोल्
आऱ्ऱन रिडित्तन रशनि यञ्जवे 454

मुनिवन्–महर्षि ने; **मौनि आय्**–मौनव्रती थे, (अतः); **वाऱ्ऱै**–वचन; **माऱु**–उत्तर में; **उरैत्तिलन्**–नहीं कहा; **पोर् तॊळिल् कुमरनुम्**–युद्ध सन्नद्ध कुमार भी; **तॊळुतु**–नमस्कार करके; **पोन्त पिन्**–बाहर आये, बाद; **विचुम्पिनै**–आकाश की ओर; **पाऱ्ऱनन्**–देखा; **अचनि अञ्च**–अशनि को भयभीत करते हुए; **परुव मेकम् पोल्**–मौसमी मेघों के समान; **आऱ्ऱनर्**–शोर मचाते हुए; **इडित्तनर्**–गर्जन किया। ४५४

विश्वामित्र ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि वे यज्ञ-दीक्षित हो चुके थे इसलिए मौन-व्रती थे। बात समझकर युद्ध-सन्नद्ध श्रीराम ने बाहर आकर ऊपर देखा। तभी राक्षसों ने आकर अशनि के गर्जन को भी मन्द करते हुए हल्ला मचाया। ४५४

ऐयदन रॆऱिन्दन रॆरियु नीरुमाप्, पॆय्दनर् पॆरुवरै पिडुङ्गि वीशिनर्
वैदनर् तॊळित्तनर् मळुक्क ळोच्चिनर्, शॆय्दन रॆन्ऱल तीय मायमे 455

ऍय्ततर्–(शर) चलाये; ऍरिन्ततर्–(भाले आदि) फेंके; ऍरियुम् नीरुम् आक–आग और जल को; पॆय्ततर्–उँडेला; पॆरु वरै–बड़े पर्वतों को; पिटुङ्कि–उखाड़कर; वीचित्तर्–फेंका; वैततर्–गालियाँ दीं; तॆळित्ततर्–डाँटे; मळुक्कळ–ओच्चित्तर्–परशुओं को फेंका; ऑन्ऱु अल–एक नहीं, (अनेक); तीय मायम्–बुरे माया-कार्य; चॆय्ततर्–किये। ४५५

वही नहीं, वे शर, भाले, आग, जल, बड़े-बड़े पर्वत, और परशु आदि फेंकने लगे। साथ-साथ दुर्वचन कहकर डाँटते। उन्होंने अनेक माया-कृत्य किये। ४५५

ऊऩहु पडैक्कल मुरुत्तु वीशिऩ, काऩह मऱैत्तऩ काल मारिपोल्
मीऩहु तिरैक्कडल् विशुम्बु पोर्त्तॆऩ, वाऩह मऱैत्तऩ वळैन्द शेऩैये 456

कालम् मारि पोल्–पर्व-कालीन मेघों के समान; उरुत्तु वीचिऩ–कोप के साथ प्रेषित; ऊन् नकु पटैकलम्—मांस-लिप्त हथियार; कानकम् मऱैत्तऩ–वन को ढँक गये; वळैन्त चेनै–घेरनेवाली सेना; मीऩ नकु तिरै कटल्–मछलियों से भरा और लहरें मारनेवाला बड़ा सागर; विचुम्पु पोर्त्तततु–आकाश को छा गया, ऐसा; वान् अकम् मऱैत्तऩ–गगनमण्डल को ढाँप दिया। ४५६

क्रोध के साथ उन्होंने जो मांस-लगे हथियार, मेघ के समान बरसाये, उनसे वन ही ढँक गया। मन्त्र के बल के कारण वे नीचे आ नहीं सके। इसलिए वे आकाश में मछलियों और तरंगों से भरे समुद्र के समान छाये रहे। अतः आकाश भी ढँक गया। ४५६

विल्लॊडु मिन्नुवाण् मिडैन्दु लाविडप्
पल्लियङ् गडिप्पिऩि लिडिक्कुम् पल्पडै
ऑल्लॆऩ वुरऱिय वूऴिप् पेर्च्चियिन्
वल्लैवन् दॆळुन्ददोर् मळैयुम् बोऩ्ऱवे 457

विल्लॊटु–चमक के साथ; मिऩ्नुम् वाळ–कौंधनेवाली तलवारें; मिटैन्तु उलाविट–घने रूप से मिलकर दिखाई देती हैं, इसलिए; पल् इयम्–कई (ढोल आदि) बाजे; कटिप्पिनाल्–चोब (के प्रहार) से; इटिक्कुम्–वज उठे; पल् पटै–अनेक हथियार; ऊऴि पेर्च्चियिऩ्–युग के अन्त होते समय जैसे; ऑल् ऍऩ–ऊँचे घोष के साथ; उरऱिय–शब्द उत्पन्न किया; वल्लै वन्तु ऍळुन्ततु–सहसा आ उमड़े; ओर् मळैयुम् पोऩ्ऱ–अनुपम मेघजाल के समान भी लगे। ४५७

तलवारें बिजली की-सी चमक, और मारू बाजे और हथियार बिजली की-सी कड़क उत्पन्न कर रहे थे। अतः सेना मेघ की समानता करती थी। ४५७

कवरुडै यॆयिऱ्ऱिऩर् कडित्त वायिऩर्
तुवर्निऱप् पङ्गियर् शुळल्हट् टीयिऩर्

पवर्शडै यन्दणन् पणित्त तीयवर्
इवरॆन विलक्कुवर् किरामन् काट्टिनान् 458

कवर् उटै–दो नोकवाले; ऎयिऱ्ऱिनर्–(मुँह के कोरों के) दाँत वाले; कटित्त वायितर्–अधर मोड़कर दाँतों से दबाते रहे मुख वाले; तुवर् निऱ पङ्कियर्–लाल रंग के बालवाले; चुळल् कण् तीयिनर्–घूमनेवाली पुतली की आँखों से अग्नि प्रकट करनेवाले; इवर्–ये; पवर् चटै अन्तणन्–घने जटाधारी महर्षि; पणित्त–जिनके सम्बन्ध में कह चुके; तीयवर् ऎन–वे दुष्ट हैं, कहकर; इलक्कु वर्कु–लक्ष्मण को; इरामन्–श्रीराम ने; काट्टिनान्–दिखाया। ४५८

उन राक्षसों के मुख के कोरों के दाँत वक्र और दो नोक वाले थे। उन्होंने अपना अधर दाँतों से दबा रखा था। उनके बाल लाल थे। आँखें घूमती थीं और उनसे अंगारे से निकल रहे थे। उनको दिखाकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा देखो ये ही वे दुष्ट हैं जिनके संबंध में महर्षि ने हमें सावधान किया था। ४५८

कण्डवक् कुमरनुङ् गडैक्कण् डीयुह
विण्डनै नोक्कित्तन् विल्लै नोक्कुरा
अण्डर्ना यहकविनिक् काण्डि यीण्डिवर्
तुण्डम्वीळ् वनवॆनत् तॊळुदु शॊल्लिनान् 459

कण्ट अ कुमरनुम्–देखते हुए वह कुमार (ने) भी; कटै कण् ती उक–आँखों के कोनों से आग बरसाते हुए; विण् तनै नोक्कि–आकाश को देखकर; तन् विल्लै नोक्कुरा–अपने चाप को भी देखकर; अण्टर् नायक–अण्डों के नायक; इनि–अब; ईण्टु–इधर; इवर् तुण्टम्–इनके टुकड़े; वीळ्वन–गिरते हैं; काण्टि–देखो; ऎन–ऐसा; तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊल्लिनान्–कहा। ४५९

लक्ष्मण ने उनको देखा। उन्हें अपार क्रोध हुआ; आँखों के कोनों से आग-सी प्रकट हुई। राक्षसों को देखकर उन्होंने अपने धनुष को एक बार देखा। फिर उन्होंने श्रीराम का नमस्कार किया और कहा कि अब देखिये इनके शरीर के टुकड़े बनेंगे और वे टुकड़े भूमि पर गिरेंगे। ४५९

तूमवे लरक्कर्द निणमुञ् जोरियुम्, ओमवॆङ् गनलिडै युहुमॆन् ऱुन्नियत्
तामरैक् कण्णनुञ् जरङ्ग ळेकॊडु, कोमुनि यिरुक्कयोर् कूड माक्किनान् 460

अ तामरै कण्णनुम्–उन कमलाक्ष (ने) भी; तूमम् वेल् अरक्कर तम्–धुआँ छोड़नेवाले भालेवाले राक्षसों के; निणमुम् चोरियुम्–मांस और रक्त; ओमम् वॆम् कनल् इटै–होम के जलते अनल में; उकुम्–गिरेगा; ऎन्ऱु उन्नि–ऐसा सोचकर; कोमुनि इरुक्कै–मुनिश्रेष्ठ के स्थान के ऊपर; चरङ्कळे कॊटु–शरों से ही; ओर् कूटम् आक्किनान्–एक वितान बनाया। ४६०

राजीवलोचन श्रीराम ने सोचा कि धुआँ उगलने वाले भालों के धारक राक्षसों का मांस और रक्त होमाग्नि पर गिरेगा तो अनर्थ हो

जायगा। इसलिए उन्होंने जहाँ कौशिक बैठे यज्ञ कर रहे थे उस स्थान के ऊपर, वेदी आदि सभी की रक्षा में, शरों का एक वितान बना दिया। ४६०

नञ्जड वॅळ्दलु नडुङ्गि नाण्मदिच्, चॅञ्जडैक् कडवुळै यडैयुन् देवर् पोल्
वञ्जनै यरक्करै वॅरुवि मादवर्, अञ्जन वण्णनिन् नबयम् यामॅन्ऱार् 461

नञ्चु–विष (के); अट ॲळुतलुम्–मारने के लिए निकला; नटुङ्कि–काँपते हुए; नाळ् मति–(प्रथमातिथि की) एक कलावाला चन्द्र; चॅम् चटै–(और) लाल जटा के; कटवुळै अटैयुम–ईश्वर की शरण में गये; तेवर् पोल–देवों की तरह; मातवर–श्रेष्ठ तपस्वी लोग; वञ्चनै अरक्करै–वंचक राक्षसों से; वॅरुवि–डरकर; अञ्चन वण्ण–अंजनवर्ण; याम् निन् अपयम्–हम आपके उभयदान के प्रार्थी हैं; ॲन्ऱार्–कहा। ४६१

जब क्षीर-सागर-मन्थन हुआ तब पहले विष निकल आया। 'वह हमको जला देगा' —इस डर से देवगण प्रथमा की कला का चन्द्र और जटा धारण करनेवाले शिवजी की शरण में गये। उन्ही देवों के समान अब तपस्वी लोगों ने श्रीराम के पास आकर कहा— अंजनवर्ण। हम अभय चाहते हैं। ४६१

कवित्दनन् कैत्तलङ् गलङ्ग लीरॅन्नच्
चॅवित्तल निरुत्तिनन् शिलैयिन् ऱॅय्वनाण्
पुवित्तलङ् गुरुदियिन् पुणरि याक्किनन्
कुवित्तन नरक्करत्तञ् जिरत्तिन् कुन्ऱमे 462

कलङ्कलीर्–व्याकुल मत हों; ॲन–कहकर; कै तलम् कवित्तनन्–हाथ की अभय-मुद्रा बनायी; चिलैयिन् तॅय्वम् नाण्–धनुष का दैवी डोरा; चॅवि तलम् निऱुत्तिनन्–कर्ण तक खींचकर; पुवि तलम्–भूतल को; कुरुतियिन् पुणरि आक्किनन्–रक्त का प्रवाह बना दिया; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; चिरत्तिन् कुन्ऱम्–सिरों के ढेर; कुवित्तनन्–लगा दिये। ४६२

श्रीराम ने अभय-मुद्रा में हस्त उठाया और उनको आश्वासन दिया कि चिन्ताकुल मत होइये। फिर उन्होंने धनुष का दिव्य डोरा कानों तक खींचकर अस्त्र चलाये। उसके फलस्वरूप राक्षसों के शरीरों के रक्त से वहाँ प्रवाह बन गया; और कटे सिरों के ढेर बन गये। ४६२

तिरुमह णायहन् ऱॅय्व वाळितान्, वॅरुवरु ताडहै पयन्त वीरर्हळ्
इरुवरि लॉरुवनैक् कडलि लिट्टदव्, ऑरुवनै यन्दहन् पुरत्ति लुय्त्तदे 463

तिरुमकळ् नायकन्–श्रीलक्ष्मीपति के; तॅय्व वाळि–दिव्यास्त्र ने; वॅरु वरु–भयंकर; ताटकै पयन्त–ताडका-दत्त; वीरर्कळ् इरुवरिल्–वीर, दो में; ऑरुवनै–एक को; कटलिल् इट्टतु–समुद्र में डाल दिया; अ ऑरुवनै–उस दूसरे को; अन्तकन् पुरत्तिल्–यमलोक में; उय्त्ततु–पहुँचा दिया। ४६३

श्रीलक्ष्मीपति के एक अस्त्र से भयंकर ताड़का का एक पुत्र मारीच समुद्र में फेंक दिया गया। दूसरे अस्त्र ने सुबाहु को यमपुर पहुँचा दिया। ४६३

तुणर्त्तपून् दॊंडैयिनान् पहळि तूविनान्
कण्त्तिडै विशुम्बिनैक् कवित्तुत् तूर्त्तलाल्
पिणत्तिडै नडन्दिवर् पिडिप्प रीण्डॆना
उणर्त्तिन रोरुवर्मुन् नोरुव रोडिनार् 464

तुणर्त्त पू–गुच्छों में रहे फूलों की; नॊटैयितान्–मालाधारी (श्रीराम) ने; पकळि–शर; तूवितान्–बरसाये (और); कणत्तिटै–एक क्षण में; विचुम्पितै–आकाश को; कवित्तु–घेरकर; तूर्त्तलाल्–ढँक दिया, इसलिए; इवर्–ये; ईण्टु–अब; पिणत्तिटै–लाशों पर से भी; नटन्तु–चलते आकर; पिटिप्पर्–पकड़ लेंगे; ऍना–सोचकर; उणर्त्तितर्–(आपस में) समझाते हुए; ओरुवर् मुन् ओरुवर्–एक दूसरे के पहले; ओटितार्–भागे। ४६४

पुष्पमाला-धारी श्रीराम ने इतने शर छोड़े कि एक क्षण में सारा अन्तरिक्ष शरों से भर गया। राक्षसों ने सोचा कि वीर, लाशों के ढेरों पर चढ़कर आयेंगे और हमको पकड़ लेंगे; इसलिए आकाश में जाने पर भी बचाव नहीं होगा। इस डर से वे अपना-अपना बचाव करते हुए एक के पहले एक भागे। ४६४

ओडिन वरक्करै युरुमिन् वॆङ्गणै, कूडिन कुरैत्तलै मिरैत्तुक् कूत्तुनिन्
ऱाडिन वलहैयु मैयन् कीर्त्तियैप्, पाडिन परन्दन पऱवैप् पन्दरे 465

ओटित अरक्करै–भागते राक्षसों को; उरुमिन् वॆम् कणै–वज्र-सम भयंकर शर; कूटित–पीछा करते चले; कुऱै तलै–सिरहीन (कबंध); मिऱैत्तु निन्ऱु–तनकर खड़े होकर; कूत्तु आटित–नाचे; अलकैयुम्–भूतों ने भी; ऐयन् कीर्त्तियै–प्रभु की कीर्ति; पाटित–गायी; पऱवै पन्तर्–पक्षियों का (बना) वितान; परन्तत–तना। ४६५

वज्र से भी भयंकर शरों ने उनको नहीं छोड़ा। राम-बाण अमोघ होते हैं। युद्धभूमि में कबंध नाचे; भूतों ने प्रभु की कीर्ति गायी; दावत मिली थी, इसलिए। चील आदि पक्षियों का वितान सा तन गया। ४६५

पन्दरैक् किळित्तन परन्द पूमळै, अन्दरत् तुन्दुबि मुहिलि नार्त्तन
इन्दिरन् मुदलिय वमर रीण्डिनार्, सुन्दर विल्लियैत् तॊऴुदु वाऴ्त्तिनार् 466

परन्त पू मळै–अधिक गिरी पुष्पवर्षा (ने); पन्तरै–वितान को; किळित्तत–चीर दिया; अन्तर तुन्तुपि–देव-दुंदुभी; मुकिलिन्–मेघों के समान; आर्त्तत–निनादित हुए; इन्तिरन् मुतलिय–इन्द्र आदि; अमरर्–देव; ईण्टितार्–एकत्र हुए; चुन्तर् विल्लियै–सुन्दर कोदण्ड-पाणि को; तॊऴुतु–नमन कर; वाऴ्त्तितार्–बधाई दी। ४६६

तब मुदित देवों ने भी पुष्पवर्षा की। वे पुष्प पक्षियों के बने विस्तृत वितान को चीरते हुए यज्ञशाला में गिरे। देव दुंदुभियाँ मेघ-गर्जन के समान नाद कर उठीं। इन्द्र आदि देवों ने आकर श्रीराम का नमस्कार कर स्तोत्र किया। ४६६

पुनिद मादव राशियम् वूमऴै पॊऴिन्दार्
अनैय कानत्तु मरङ्गळु मलर्मऴै शॊरिन्द
मुनियु मव्वऴि वॆळ्वियै मुऱ्मैयिन् मुऱ्ऱि
इनिय शिन्दय निरामनुक् किनैयन विशैत्तान् 467

पुनितम् मा तवर्–पवित्र महातपस्वी; आचि–आशीर्वाद की; अम्पूमऴै–सुन्दर फूलों की वर्षा; पॊऴिन्तार्–की; अनैय काननत्तु–उस वन के; मरङ्कळुम्–तरुओं ने भी; अलर् मऴै–पुष्पवर्षा; चॊरिन्त–गिरायी; अव् वऴि–तब; मुनियुम्–महर्षि ने भी; वेळ्वियै–यज्ञ को; मुऱ्मैयिन् मुऱ्ऱि–यथाविधि पूर्ण कर; इनिय चिन्तैयन्–सन्तुष्ट-मन हो; इरामनुक्कु–श्रीराम से; इनैयन–यों; इचैत्तान्–बताया। ४६७

फिर वे चले गये। पवित्र आचरण वाले महान तपस्वियों ने श्रीराम को पुष्कल आशीर्वाद दिया। वहाँ के तरुओं ने भी उन पर फूल बरसाये। इस वातावरण में महर्षि ने यज्ञ पूरा किया और उनका मन कृतकृत्यता के संतोष से भर उठा। तब उन्होंने श्रीराम की प्रशंसा यों की। ४६७

पाक्कि यम्मॆनक् कुळदॆन निनैवुरुम् पान्मै
पोक्कि निऱ्किदु पॊरुळॆन वुणर्हिलॆन् बुवनम्
आक्कि मऱ्ऱवै यनैत्तयु मणिवयिऱ् ऱडक्किक्
काक्कु नीयॊरु वेळ्विहात् तनैयॆनुङ् गरुत्ते 468

पुवनम् आक्कि–सब भुवन (ब्रह्मा के रूप में) सृजन कर; मऱ्ऱु–फिर; अवै अनैत्तैयुम्–उन सब को; अणि वयिऱु अटक्कि–सुन्दर उदर में अन्तर्हित कर; काक्कुम्–रक्षा करनेवाले; नी ऒरु वेळ्वि कात्तनै–आपने एक यज्ञ पालन किया; ऎन्नुम् करुत्तु–यह बात; पाक्कियम् ऎनक्कु उळतु–भाग्य मेरा रहा; ऎन–ऐसा; निनैवु उऱुम्–मानने का; पान्मै पोक्कि–(एक सन्दर्भ देती है—) इस विचार को छोड़कर; निऱ्कु इतु पॊरुळॆन–आपके लिए यह (गौरव की) बात है; उणर्किलॆन्–नहीं मानता। ४६८

हे श्रीराम! आप ही सृष्टि-विधाता ब्रह्मा हैं। उस रूप में आप ही कलपारंभ में सारे लोकों की सृष्टि करते हैं। फिर कलपांत में आप सारी सृष्टि को अपने उदर के अन्दर रखकर उसकी रक्षा करते हैं। फिर आपने एक यज्ञ का संरक्षण किया —यह कहना आपकी कीर्ति को क्या बढ़ायेगा? हाँ, एक बात है। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि लोग

यह कहेंगे कि श्रीराम ने विश्वामित्र के यज्ञ का संरक्षण किया। इसको छोड़ मैं यह मानता नहीं कि यह आपके गौरव को किंचित अंश भी बढ़ाता है। ४६८

अॅऩ्ऱु कूऱिय पिऩ्ऩरव् वॅऴिऩ्मलर्क् काऩत्
तऩ्ऱु तानुवन् दरुन्दव मुऩिवरो डिरुन्द
कुऩ्ऱु पोऱ्कुणत् तानॅदिर् कोसलै कुरुशिल्
इऩ्ऱु यान्शॅयुम् पणियॅन्कोल् पणियॅन विशैत्तान् 469

अॅऩ्ऱु कूऱिय पिऩ्ऩर्–ऐसा कहने के बाद; अॅऴिल् मलर्–मनोरम सुमनों से भरे; अ काऩत्तु–उस (आश्रम-) वन में; अरु तव मुनिवरोटु–श्रेष्ठ तपस्वी मुनियों के साथ; उवन्तु इरुन्त–आनन्द के साथ रहे; कुऩ्ऱु पोल् कुणत्ताऩ्–पर्वत के समान उन्नत (अचल) गुण वाले; अॅतिर्–के सामने; कोचलै कुरुचिल्–कौसिल्या के पुत्र; इऩ्ऱु–आज; याऩ् चॅय्युम् पणि–मेरी करणीय सेवा; अॅऩ् कॊल्–क्या है; पणि अॅऩ–आज्ञा दें, ऐसा कहने पर; इचैत्ताऩ्–कहा। ४६९

इसके बाद श्रीराम ने ऋषि-मुनियों के साथ उसी पुष्प-तरुओं से भरे आश्रम में रात बितायी। सवेरे पर्वत के समान उन्नत और अचल गुणों से युक्त 'गुण-गिरि' महर्षि विश्वामित्र के सम्मुख जाकर श्रीराम ने पूछा कि आज मैं आपकी क्या सेवा करूँ? कृपया आज्ञा दीजिये। तब मुनिवर कहने लगे। ४६९

अरिय यान्शॉलि नैयनिऱ् करियदॊन् ऱिल्लै
पॅरिय कारिय मुळववै मुडिप्पदु पिऩ्ऩर्
विरियुम् वार्पुनन् मरुडञ्जूऴ् मिदिलयर् कोमान्
पुरियुम् वॅऴ्वियुङ् गाण्डुना मॅऴुहॅनप् पोऩार् 470

अरिय–कठिन काम (समझ); याऩ् चॉलिऩ्–मैं कहूँ तो; ऐय–प्रभु; निऱ्कु–आपके लिए; अरियतु ऒऩ्ऱु–कठिन कोई; इल्लै–नहीं है; पॅरिय कारियम् उळ–बड़े कार्य हैं; अवै मुटिप्पतु–उनको पूरा करना; पिऩ्ऩर्–बाद को; विरियुम् वार् पुऩल्–विस्तृत जल-समृद्ध; मरुतम् चूऴ्–खेतों और बागों से घिरा; मितिलैयर् कोमाऩ्–मिथिला के राजा से; पुरियुम्–किया जानेवाला; वेळ्वियुम्–यज्ञ भी; काण्टुम् नाम्–देखेंगे हम; अॅऴुक अॅऩ–उठें, कहने पर; पोऩार्–(तीनों) चले। ४७०

प्रभु! कौन-सा कठिन काम है जो मैं कहूँ, जिसे आप कर नहीं सकते? तो भी बड़े और लोकहितकारी काम कतिपय हैं। उन्हें बाद को करेंगे। अब हम उर्वर खेतों और बागों से भरे मिथिला देश चलें और मिथिलेश जनक एक यज्ञ कर रहे हैं, उसे भी देखें। चलिये। फिर वे तीनों रवाना हुये। ४७०

9. अहलिहैप् पडलम् (अहल्या पटल)

अलम्बु मामणि यारत्तो डहिलणि पुळिनम्
नलम्बॅय् पूणमुलै नाहिळ वञ्जिया मरुङ्गुल्
पुलम्बु मेहलैप् पुदुमलर्प् पुनैयरळ् कून्दल्
शिलम्बु शूळुङ्गाऱ् शोणयान् दॅरिवयॅच् चेरन्दार् 471

अलम्पु–धुले हुए; मा मणि–श्रेष्ठ रत्न; आरत्तोटु–चन्दन के साथ; अकिल्–अगरु; अणि–(इन से) अलंकृत; पुळिनम्–पुलिन; नलम् पॅय्–सुखावह; पूण् मुलै—आभरण-युक्त उरोज; नाकु इळ वञ्चि आम्–बहुत अल्प-वयस्क वल्लरी रूपी; मरुङ्कुल्–कमर; पुलम्पु–गुंजनशील; पुतु मलर् मेकलै–नये पुष्पों की पंक्ति की मेखला; पुनै अरल्–(पुष्प-) पहने हुए काले बाल रूपी; कून्तल्–केश; चिलम्पु चूळुम् काल्–नूपुर वलयित पैर (या पर्वत के चारों ओर बहनेवाले नाले) इनसे युक्त; चोणै आम्–शोण नामक; तॅरिवैयै–नारी के पास; चेरन्तार्–गये। ४७१

वे शोण नदी के तट पर आये। कवि काव्य-परम्परा-प्रणाली के अनुसार नदी को रमणी के रूप में वर्णित करते हैं। नदी के तल में पुलिन बने हैं। उन पर धुले हुए मणि, चंदन और अगरु की लकड़ियाँ आदि बहते आकर जमे रहते हैं। वे रत्नहार-भूषित अगरु-सुगन्ध-युक्त मनोरम उरोज हैं। अल्पवयस्क कोमल जल-लता कटि है। ताज़े फूल आकर पंक्तियों में पड़े हैं; वे मेखला हैं। काले बाल केश-जाल का स्थान लेते हैं। पर्वत के चारों ओर बहनेवाले उस नदी के नाले नूपुर-वलयित पैर है। ऐसी शोण-तरुणी के पास वे आये। इसमें अर्थश्लेष और शब्दश्लेष दोनों का प्रयोग चित्तहारी है। 'आरम' चन्दन भी है, हार भी; "चिलम्पु" पर्वत भी, नूपुर भी; और "काल्" नाले भी, पैर भी। ४७१

नदिक्कु वन्दब रॅय्दलु मरुणन्ऱ नयनक्
कदिक्कु मुन्दुरु कलिन्नमान् द्रॅरॉडुङ् गदिरोन्
उदिक्कुङ् गालयिऱ् ऱणमैशॅय् वान्ऱन दुरुविल्
कोदिक्कुम् वॅम्मयै याऱ्ऱुवान् पोऱ्कडऱ् कुळित्तान् 472

अवर्–वे; नतिक्कु वन्तु ॲय्तलुम्–नदी पर आ पहुँचे, तभी; कतिरोन्–अंशुमाली; उतिक्कुम् कालैयिल्–उदय के समय; तण्मै चॅय्वान्–शीतलता प्रदान करने के निमित्त; तनतु उरुविल्–अपने स्वभाव के; कॉतिक्कुम् वॅम्मैयै–तापक उष्ण को; आऱ्ऱुवान् पोल्–शान्त करनेवाला हो ऐसा; अरुणन् तन्–अरुण के; नयनम् कतिक्कुम्–दृष्टि की गति से भी बढ़कर; मुन्नुतु उरु–आगे जानेवाले; कलिन्नम् मान् तेरोटुम्–अश्वों के जुते रथ के साथ; कटल् कुळित्तान्–(पश्चिमी-) सागर में डूबे। ४७२

जब वे नदी पार आये तब सूर्यास्त हुआ। कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि अंशुमाली दूसरे दिन उदय के समय उनको शीतलता प्रदान करनेवाले

रहना चाहते थे। तदर्थ अपनी स्वाभाविक उष्णता को दूर करने के लिए पश्चिमी सागर में डूब गये। तब उनके सारथी अरुण भी, और रथ के अश्व भी जो नयनों की दृष्टि-गति से भी अधिक शीघ्र चलनेवाले थे, उनके साथ सागर में मग्न हुए। हाँ श्रीराम और लक्ष्मण सूर्यदेव के कुल के थे, इसलिए सूर्य का उन पर इतना प्रेम रखना स्वाभाविक ही था। ४७२

करङ्गु तण्पुनऱ् कडिनॅडुन् दाळुडैक् कमलत्
तरङ्गॊ णाण्मलर्क् कोयिल्ह ळिदळ्क्कद वडैप्पप्
पिरङ्गु तामरै वनम्विट्टुप् पॅडैयॊडुङ् गळिवण्
डुरङ्गु हिन्ऱदोर् नऱुमलर्च् चोलैपुक् कुऱैन्दार् 473

करङ्कु—कलकल वाले; तण् पुनल्—शीतल जल के; नॅटु ताळ् उटै—लम्बे नालों के; कमलत्तु—कमल के; नाळ् कटि मलर्—उसी दिन विकसित, सुवासित पुष्परूपी; अरम् कोळ् कोयिल्कळ्—धर्म के मन्दिर; इतळ् कतवु अटैप्प—दलरूपी किवाड़ बन्द कर देते हैं, तब; पॅटैयॊटुम्—भ्रमरियों के साथ; कळि वण्टु—क्रीड़ा मुदित भ्रमर; पिरङ्कु—शोभामय; तामरै वनम् विट्टु—कमल-कानन छोड़ जाकर; उऱङ्कुकिन्ऱतु—जहाँ सोते हैं उस; ओर् नऱु मलर् चोलै—एक सुगन्धित फूलों के बाग में; पुक्कु—प्रवेश कर; उऱैन्तार्—विश्राम किया। ४७३

वे रात को एक उद्यान में ठहरे। उस उद्यान में भ्रमर भी आकर ठहरे। भ्रमर क्यों आये? उनको, कमल के द्वार बन्द हो गये थे अतः, इधर आकर ठहरना पड़ा। कमल को कवि (पक्षियों के कारण या लहरों के कारण) कलरव-युक्त शीतल जल में लम्बे नालों पर रहनेवाले कमल को धर्माश्रय मन्दिर कहते हैं क्योंकि वे भौंरों के खाने और ठहरने के स्थान बनते हैं। इससे उन यात्रियों की ओर संकेत है जो दिन में अन्नसत्रों में भोजन करके रात में यात्रा करते हुए उद्यानों में ठहरते हैं। ४७३

इत्तैय शोलैयार् ऱियादॅन्न विराहवन् वित्तव
वित्तैयॅ लामऱ नोऱ्ऱवन् विळम्बुवान् मेन्नाळ्
तत्तैय रात्तवर्क् किरङ्गिये काशिबन् ऱन्नदु
मत्तैयु ळाडवम् बुरिन्दत्त ळिवणॅन्न वलित्तान् 474

इत्तैय चोलै यातु—यह उद्यान कौन सा है; ऍन्न—ऐसा; इराकवन् वित्तव—श्रीराघव के पूछने पर; वित्तै ऍलाम्—कर्म, सब; अऱ नोऱ्ऱवन्—काटते हुए तपस्या कर चुकनेवाले (ने); विळम्पुवान्—कहना आरम्भ किया; मेल् नाळ्—पहले किसी समय; काचिपन् तन् मत्तै उळाळ्—काश्यप की गृहिणी (दिति ने); तत्तैयर् आत्तवर्क्कु इरङ्कि—अपने पुत्रों के कारण दुखी हो करके; इवण्—इधर; तवम् पुरिन्तत्तळ्—तपस्या की; ऍन्न वलित्तान्—यह समझाया। ४७४

वहाँ पहुँचकर रघुकुलतिलक श्री राघव ने प्रश्न किया कि यह उद्यान कौन-सा है? महर्षि ने, जिन्होंने अपनी तपस्या से कर्मबंधन काट दिया

था, यह उत्तर दिया। पहले कभी यहाँ काश्यप की पत्नी दिति ने अपने पुत्रों के संबंध में उत्पन्न मानसिक क्लेश के कारण तय किया था। वह वृत्तांत आगे बताया जाता है। ४७४

अण्ड कोळहैक् कप्पुरत् तॅन्नैया ळुडैय
कॉण्ड नीळ्पदत् तॅय्दियोर् विज्जयर कोदै
पुण्ड रीहमॅन् बदत्तियैप् पुहळ्न्दनळ् पुहळ
वण्ड रामदु मालिहै कॉडुत्तनण् महिळ्न्दु 475

अण्ट कोळकैक्कु—अण्ड-गोलों के; अ पुरत्तु—उस पार; ॲन्नै आळ् उटैय—मुझ से कैंकर्य लेनेवाले (मेरे ईश्वर); कॉण्टल—मेघवर्ण (के); नीळ् पतत्तु—श्रेष्ठ स्थान श्री वैकुण्ठ को; ओर् विज्चैयर् कोतै ॲय्ति—एक विद्याधर स्त्री (जाकर); पुण्टरीकम् मॅल् पतत्तियै—कमलकोमल-चरणा की; पुकळ्न्तनळ्—स्तुति करने पर; मकिळ्न्तु—सन्तुष्ट होकर; वण्टु अऱा—भ्रमरों से अविमुक्त; मतु मालिकै—शहद चूनेवाली माला; कॉटुत्तनळ्—प्रदान की। ४७५

इन अण्डों के परे रहनेवाले परमपद मेघवर्ण श्रीमन्नारायण, मेरे नाथ, का लोक है। वहाँ एक विद्याधरी गयी। उसने कोमल कमलासना श्रीलक्ष्मी का यशोगान गाया। श्रीदेवी संतुष्ट हुई और उन्होंने एक नयी पुष्पमाला प्रदान की। उससे शहद चूता था और उस पर भ्रमर मंडराते रहे। ४७५

अन्न मालैयै याळिडैप् पिणित्तय नुलहम्
कन्नि मीडलुङ् गशट्टुडै मुनियॅदिर् काणा
ॲन्नै याळुडै नायहिक् किशैयॅडुप् पवळॅन्
ऱन्न डाळिणै वणङ्गिनिन् ऱेत्तुर वन्नैयाळ् 476

कन्नि—वह विद्याधर महिला; अन्न मालैयै—उस माला को; याळ् इटै पिणित्तु याळ्—(वीणा) से बाँधकर; अयन् उलकम्—ब्रह्मा के लोक को; मीटलुम्—लौट आते समय; कचटु उटै मुनि—मैले-कुचैले वस्त्र पहने (या दुर्गुणी) मुनि (दुर्वासा); ॲतिर् काणा—सामने देखकर; ॲन्नै आळ् उटै(य)—मेरा कैंकर्य लेनेवाली (मेरी ईश्वरी); नायकिक्कु—स्वामिनी श्रीलक्ष्मीदेवी को; इचै ॲटुप्पवळ् ॲन्ऱु—स्तुति गानेवाली (वंदिनी) जानकर; अन्नळ् ताळ् इणै—उसके चरण-द्वय पर; वणङ्कि निन्ऱु—नमस्कार करके स्थित होकर; एत्तुऱ—स्तोत्र करते समय; अन्नैयाळ—उसने। ४७६

उस विद्याधरी ने माला से अपनी वीणा को अलंकृत करके उसका सम्मान किया। फिर वह ब्रह्मलोक गयी। मार्ग में दुर्वासा ऋषि मिले। दुर्वासा अपने नाम के अनुसार कोप-रूपी दुर्गुण और मैले वस्त्र धारण करते थे। दुर्वासा ने देखा कि यह विद्याधरी श्रीलक्ष्मीदेवी की वंदिनी है। वे स्वयं वैष्णवभक्त थे अतः जैसे वैष्णवों में नियम हैं वैसे ही उन्होंने विष्णु-भक्ता विद्याधरी के पैर छुए और स्तुति की। ४७६

उलहम् यावैयुम् पडैत्तळित् तुण्डुमि ऴॊरुवन्
इलहु मार्बहत् तिरुन्दुयिर् यावैयु मीन्ऱ
तिलह वाणुदल् शॆन्नियिर् चूडिय तॆरियल्
अलहिन् मामुनि पॆरुहॆन वळित्तन ळळियाल् 477

उलकम्–लोक; यावैयुम्–सभी को; पटैत्तु–पैदा करके; अळित्तु–पालकर; उण्टु–उदरस्थ करके; उमिऴ्–(कल्पारम्भ में उगलने) प्रकट करानेवाले; ऑरुवन्–अप्रमेय श्रीविष्णु के; इलकुम् मार्पकत्तु इरुन्तु–शोभायमान वक्षस्थल में रहते हुए; उयिर्–जीव (सचराचर); यावैयुम्–सबको; ईन्ऱ–(जिन्होंने) जन्म दिया; तिलकम् वाळ् नुतल्–(वे) तिलक-शोभित उज्ज्वल ललाटवाली श्रीलक्ष्मीदेवी के; चॆन्तियिल् चूटिय–सिर पर पहनी; तॆरियल्–माला को; अलकु इल् मा मुनि–अनन्त महिमा-पूर्ण मुनिवर; पॆरुक ऍन–लीजिये कहकर; अळियाल्–प्रेम से; अळित्तनळ्–भेंट किया। ४७७

तब विद्याधरी ने सोचा कि यह श्रीनारायण की, जो प्रपंच की सृष्टि करते हैं, स्थिति दिलाते हैं और कल्पांत में अपने उदर में रखकर संरक्षण करके नये कलपारंभ में उनको फिर से प्रकट करनेवाले हैं, वक्ष-स्थल-वासिनी, जगज्जननी कमलादेवी की दी हुई माला है। यह ऋषि को अत्यन्त आदरणीय और प्रिय होगी। अतः उसने, 'ऋषि ! आप इसको लें' —यह कहते हुए उन्हें दे दिया। ४७७

दॆय्व नायहि शॆन्नियिर् चूडिय तॆरियल्
ऐय यान्पॆऱ्ऱप् पुरिन्ददॆत् तवमॆन वाडि
वॆय्य मामुनि शॆन्नियिर् चूडिये विनैपोय्
उय्यु मारिदॆन् ऱुवन्दुवन् दुम्बर्ना डुऱ्ऱान् 478

वॆय्य मा मुनि–चाहते हुए महामुनि; तॆय्व नायकि–दिव्य नायिका; चॆन्तियिल्–सिर पर; चूटिय तॆरियल्–पहनी माला; पॆऱ–प्राप्त करने; यान् पुरिन्ततु–मैंने जो किया; ऐय ऍ तवम्–ओह, कितना बड़ा तप; ऍन–कहकर; आटि–नाचकर; चॆन्तियिल् चूटि–(अपने) सिर पर धारण कर; विनै पोय्–कर्म-बन्धन से मुक्त हो; उय्युम् आऱु–तरने का मार्ग यह; ऍन्ऱु–समझकर; उवन्तु उवन्तु–बार-बार मुदित होकर; उम्पर् नाटु–देवताओं के लोक; उऱ्ऱान्–पहुँचे। ४७८

बहुत उत्कंठा के साथ ऋषि ने वह माला स्वीकार की। दिव्य नायिका कमलादेवी के सिर पर रही यह माला; मुझे यह मिली तो मैं कितना भाग्यवान हूँ ! मैंने कैसा तप किया है ? ऐसा सोचकर ऋषि ने उसे अपने सिर पर धारण किया। संतोष से वे नाच उठे। मेरा कर्म-बन्धन कट गया —ऐसा विश्वास करते हुए उन्हें अपार हर्ष हुआ। वे बढ़ते आनन्द के साथ देवलोक गये। ४७८

पॆय्यु मामुहिल् वॆळ्ळियम् पिऱङ्गन्मोप् पिऱळुम्
शॆय्य तामरै यायिर मलर्न्दुशॆङ् गदिरिन्

मॉय्हॉळ् शोदियै मिलैच्चिय मुऱैमैपोऩ् ऱॉळिरुम्
मॅय्यि ऩोडयि रावदक् कळिऱ्ऱिऩ्मेल् विळङ्ग 479

पॅय्युम् मा मुकिल्–बरसनेवाली घटा; वॅळ्ळि पिऱङ्कल् मी–चाँदी के पर्वत पर; पिऱळुम्–शोभायमान; चॅयय तामरै–लाल कमल; आयिरम्–सहस्र; मलर्न्तु–खिलकर; मॉय्कॉळ्–घने रूप से संकुलित; चॅम्मै कतिरिऩ्–लाल किरणों की; चोतियै–ज्योति को; मिलैच्चिय मुऱैमै पोऩ्ऱु–धारण कर रहा है, ऐसे; ऑळिरुम्–शोभनेवाले; मॅय्यिऩोटु–शरीर की कान्ति के साथ; अयिरावतम् कळिऱ्ऱिऩ् मेल्–ऐरावत (नाम) के गज पर; विळङ्क–दर्शन देते हुए। ४७९

तव देवेन्द्र धूम की यात्रा पर आ रहे थे। वे ऐरावत पर आरोह कर आ रहे थे। वे नीले जलगर्भित मेघ के समान लगते थे, जो एक चाँदी के पर्वत पर बैठा था; और जिस पर उनकी सहस्र आँखें हज़ार खिले कमलों के समान लगती थीं। उनके शरीर से तेज छूट रहा था, जो सूर्य की लाल किरणों के पुंज के समान था। ४७९

अरम्बै मेऩहै तिलोत्तमै युरुप्पशि यऩङ्गऩ्
शरम्बॅय् तूणियिऱ् ऱळिरडि नूपुरन् दळैप्पक्
करुम्बै युञ्जुवै कैप्पित्त शॉल्लियर् विळरि
निरम्बु पाडलो डाडिऩर् वीदिह ऑरुङ्ग 480

करुम्पॅयुम्–इक्षु को भी; कैप्पित्त–कड़आ बनानेवाले; चुवै चॉल्लियर्–मधुर-भाषिणी; अरम्पै, मेनकै, तिलोत्तमै, उरुप्पचि–रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी; अनङ्कऩ् चरम् पॅय्–अनंग के शर-पात्र; तूणियिऩ्–तूणीर के समान; तळिर् अटि—पल्लव-कोमल चरणों में; नूपुरम् तळैप्प–नूपुरों के मधुर नाद करते; विळरि निरम्पु पाटलोटु–विळरी राग के गानों के साथ; आटिऩर्–नाचते हुए; वीतिकळ्–वीथियों में; नॅरुङ्क–सटकर आती हैं, ऐसे। ४८०

उनके निकट पार्श्व में रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी नाम की अप्सराएँ जिनकी बोली इक्षु रस से भी मीठी थी, नाचती आ रही थीं। उनके पैर अनंग के तूणीर के समान थे। उनके पैरों में नूपुर झनझना रहे थे। वे "विळरि" राग के गीतों के साथ नाच रही थीं। ४८०

नील माल्वरैत् तवळ्दरु निऱैमदिक् कऱ्ऱै
पोल वेयिरु पुडैयिऩुञ् जामरै पुरळक्
कोल मामदि कुऱैवऱ निऱैन्दॉळि कुलावि
मेलु यर्न्दॅऩ वॅळ्ळियन् दनिक्कुडै विळङ्ग 481

नीलम् माल् वरै–नीले रंग के पर्वत पर; तवळ्तरु–धीरे रेंगते चलनेवाली; निऱैमति कऱ्ऱै पोल–पूर्णचन्द्र की किरणराशि के समान लगनेवाले; चामरै–चँवर; एय् इरु पुटैयिऩुम्–शोभायमान दोनों पार्श्वों में; पुरळ–डोलते; कोलम् आम् मति–सुन्दरतायुक्त चन्द्र; कुऱैवु अऱ–पूर्णरूप से; निऱैन्तु–खिलकर; ऑळि कुलावि–

प्रकाश से भर कर; मेल् उयर्न्ततु ऒन्न–ऊपर चढ़ा रहा, ऐसा; वॆळ्ळि तनि कुटै–चाँदी का उत्तम छत्र; विळङ्क–दर्शनीय बना रहा, ऐसा। ४८१

दोनों ओर चामर डुल रहे थे। वे काले पर्वत पर रेंगनेवाली चाँदनी का भ्रम पैदा कर रहे थे। ऊपर चाँदी का अनुपम छत्र शोभित था, जिसको देखकर सुन्दर राकापति और अधिक उज्ज्वल होकर उनके ऊपर रहकर छटा बिखेर रहे थे। ४८१

तळङ्गु पेरियुङ् गुरट्टॊडु पाण्डिलुञ् जङ्गुम्
वळङ्गु कम्बलै मङ्गल गीदत्तै मरैप्प
मुळङ्गु नान्मरै मूरिनीर् मुऴक्कॆन्न वुलहै
विळङ्ग मालवरुम् विऴावणि कण्डुळम् वियन्दान् 482

तळङ्कु–बजनेवाली; पेरियुम्–भेरी; कुरट्टॊटु–'कुरडु' नामक ढोल; पाण्टिलुम्–झाँझ; चङ्कुम्–शंख, और; वळङ्कु कम्पलै–देनेवाला नाद; मङ्कल कीतत्तै मरैप्प–मंगलगीतों को अपने में डुबाते हुए; मुऴङ्कु–उठनेवाला; नाल् मरै–चारों वेदों (के पारायण) की ध्वनि; मूरि नीर् मुऴक्कु ऎन्न–प्रबल समुद्र-गर्जन के समान; उलकै विळुङ्क–विश्व भर में व्याप्त हो; माल् वरुम्–इन्द्र के आने का; विऴा अणि कण्टु–(धूम की यात्रा के) उत्सव का वैभव देखकर; उळम् वियन्तान्–मन में विस्मय किया। ४८२

भेरी, ढोल, करताल, शंख आदि वाद्य बज रहे थे। साथ-साथ मंगलगीत भी गाये जा रहे थे। अनर्थ होनेवाला था, इसलिए शायद मंगलगीत को सुनाई देने से रोककर वाद्यों का नाद गीत के स्वर को लील गया। वेदों का पाठ हो रहा था। वह समुद्र-गर्जन के समान विश्व भर में व्याप रहा था। ४८२

तनैयॊव् वादवन् महिऴ्च्चियाल् वासवन् ऱन्कै
वनैयु मालैये नीट्टलुन् दोट्टियाल् वाङ्गित्
तुनैव लत्तयि रावदत् तॆरुत्तिडैत् तॊडुत्तान्
पनैशॆय् कैयिनार् परित्तडिप् पडुत्तदप् पहडु 483

तनै ऒव्वातवन्–अपनी बराबरी न रखनेवाले महर्षि; मकिऴ्च्चियाल्–सन्तोष से; वनैयुम् मालैयै–भूषक माला को; वाचवन् तन् कै–वासव के हाथ में; नीट्टलुम्–बढ़ाते ही; तोट्टियाल्–अंकुश से; वाङ्कि–ग्रहण कर; तुनै वलत्तु–तीव्रगति और बल से युक्त; अयिरावतत्तु ऎरुत्तिटै–ऐरावत के गले पर; तॊटुत्तान्–पहनाया; अ पकटु–उस गज ने; पनै चॆय् कैयिनाल्–ताड़-सम अपनी सूँड़ से; परित्तु–छीनकर; अटि पटुत्ततु–पैरों के नीचे डालकर रौंद दिया। ४८३

इस संभ्रम के साथ इन्द्र की यात्रा को देख विचित्र गुण में अपना समान न रखनेवाले दुर्वासा ने आनन्द से भरकर अपने पास रही भूषित करनेवाली माला को देवेन्द्र के हाथ में देने के विचार से बढ़ाया। देवेन्द्र

ने उसे अंकुश से ग्रहण कर हाथी के गले पर डाल दिया। ऐरावत ने उसे छीना और अपने पैरों के नीचे डाल कर रौंद दिया। ४८३

कण्ड मामुनि विऴिवऴि यॊऴुहुवॆङ् गनलाल्
अण्ड कूडमुञ् जाम्बरा यॊऴियुमॆन् ऱञ्जि
विण्डु नीङ्गिनर् विण्णव रिरुशुडर् विळङ्गा
दॆण्डि शामुह मिरुण्डन शुऴन्ऱदॆव् वुलहुम् 484

कण्ट–देखते रहे; मा मुनि–महर्षि (की); विऴि वऴि ऒऴुकु–(कोप के कारण) आँखों द्वारा निकलनेवाली; वॆम् कनलाल्–भयंकर आग से; अण्ट कूटमुम्–अण्ड के ऊपर भी; चाम्पर् आय् ऒऴियुम्–राख बनकर मिट जायगा; अॆन्ऱु–समझकर; अञ्चि–भीत होकर; विण्णवर्–सुरलोक-वासी; विण्टु नीङ्किनर्–अलग हट गये; इरु चुटर्–दोनों प्रकाश-गोल (सूर्य और चन्द्र) भी; विळङ्कातु–मन्द पड़ गये, इसलिए; अॆण् तिचा मुकम्–आठों दिशाएँ; इरुण्टन–अँधेरे में पड़ गयीं; अॆ अलकुम्–सभी लोक; चुऴन्ऱतु–घूमे। ४८४

इन्द्र और ऐरावत के कृत्य देखकर दुर्वासा अति क्रुद्ध हुए। देवों को उनकी आँखों से निकलनेवाली आग की ज्वाला से "हमारे अण्ड के ऊपर तक जलकर राख हो जायगा" —ऐसा लगा। इसलिए देवगण डर से अलग भाग गये। सूर्य और चन्द्र भी तेजहीन हो गये और दिशाएँ अन्धकारमय हो गयीं। सारे भुवन घूमने लगे। ४८४

पुहैयॆ ऴुन्दन वुयिर्त्तॊऱु मॆयिल्पॊडित् तवनिन्
नहैयॆ ऴुन्दन निवन्दन पुरुवनन् नुदलिल्
शिहैयॆ ऴुञ्जुडर् विऴियिन नशनियुन् दिहैप्प
मिहैयॆ ऴुन्दिडु शदमह केळॆन वॆहुण्डान् 485

उयिर्त्तॊऱुम्–हर श्वास के साथ; पुकै–धुएँ; ऎऴुन्तन–उठे; ऎयिल् पॊटित्तवनिन्–त्रिपुरांतक शिवजी के समान; नकै ऎऴुन्तन–अट्टहास कर उठे; पुरुवम् नल् नुतलिल् निवन्तन–भौंहें सुन्दर भाल पर चढ़ीं; चिकै ऎऴुम् चुटर्–शिखायुक्त अग्नि के समान; विऴियिनन्–आँखोंवाले बनकर; मिकै ऎऴुन्तिटु–अपराधकारी; चतमक–शतमख (इन्द्र); केळ्–सुनो; ऎन्न–कहकर; अचनियुम् तिकैप्प–अशनि को भी भ्रमित करते हुए; वॆकुण्टान्–कोप के साथ बोले। ४८५

महर्षि के श्वास के साथ धुँआ निकला; वे त्रिपुर जलानेवाले शिवजी के समान ठटाकर हँसे; उनकी त्यौरियाँ चढ़ गयीं। आँखों से ज्वालामयी आग सी निकालते हुए महर्षि ने गरजकर कहा—हे शतमख! तुमने गम्भीर अपराध किया है, सुनो। उनके स्वर के सामने वज्रनाद भी भय से ठहर नहीं सका। ४८५

पूद नायहन् पुविमह णायहन् पॊरुविल्
वेद नायहन् मार्बहत् तिनिदुवीऱ् ऱिरुक्कुम्

आदि नायहि विरुप्पुरु तॉडयल्हॉण् डणॅन्द
माद राळ्वयिऱ् पॅऱ्ऱनॅन् मुयन्ऱमा दवत्ताल् 486

पूतम् नायकन्—सर्व-भूत-नाथ; पुवि मकळ् नायकन्—भूदेवी के पति; पॅरु इल्—अप्रतिम; वेतम् नायकन्—वेदनायक; मार्पकत्तु—(के) वक्षस्थल में; इरुन्तु वीऱ्ऱिरुक्कुम्—सुख से आसीन; आति नायकि—आद्या देवी की; विरुप्पु उरु—प्रिय; तॉटॅयल्—माला को; कॉण्टु अणॅन्त—लेकर जो आयी थी; मातराळ् वयिन्—(उस) विद्याधरी स्त्री से; मुयन्ऱ मा तवत्ताल्—पूर्वकृत बड़े तप (के बल) से; पॅऱ्ऱनॅन्—प्राप्त किया। ४८६

आक्रोश के साथ दुर्वासा जी ने कहा—जगन्नाथ, श्रीनाथ, वेदनाथ श्रीमन्नारायण की वक्षस्थलवासिनी, आदिनायिका श्रीलक्ष्मीदेवी की प्रिय माला थी यह। उसे उनकी भक्ता एक विद्याधरी प्राप्त कर लायी थी। उस विद्याधरी से मुझे यह प्राप्त हुई। यह मेरी तपस्या का फल था। ४८६

इन्रु निन्पॅरुञ् जॅव्विकण् डुवहयि नीन्द
मन्ऱ लन्दॉडै यिहळ्न्दनै युन्दुमा निदियुम्
ऑन्ऱ लादपल् वळङ्गळु मुवरिपुक् कॉळिप्पक्
कुन्ऱि नीतुय रुरुहॅन वुरैत्तनन् कॉदित्ते 487

इन्रु—अब; निन् पॅरु चॅव्वि कण्टु—तुम्हारा बड़ा वैभव देखकर; उवकॅयिन्—आनन्द से; ईन्त—दिये; मन्ऱल् अम् तॉटै—सुवासित श्रेष्ठ हार को; इकळ्न्तनै—अनादर किया; उन्तु मा नितियुम्—तुम्हारी बड़ी निधि; ऑन्ऱु अलात—(दूसरों के लिए) असुलभ; पल् वळङ्कळुम्—अनेक समृद्ध सम्पदाएँ; उवरि पुक्कु—समुद्र में प्रवेश कर; ऑळिप्प—छिप जायँ, तब; नी कुन्ऱि—तुम निर्धन बनकर; तुयर् उरुक—दुख भोगो; ऍन—ऐसा; कॉतित्तु—खौलकर; उरैत्तनन्—(शाप) कहे। ४८७

अब मैंने तुम्हारा वैभव देखा; बड़ा आनन्दित हुआ। उसी आनन्द की प्रेरणा से मैंने यह सोचकर कि तुम इसके योग्य हो तुम्हें भेंट की। तुमने उसका घोर अनादर किया है। अब तुम्हारी निधियाँ, सारे सत्व और सारी संपदाएँ तुमसे छूटकर सागर में छिप जाएँगी। तुम अभावग्रस्त होकर दुख उठाओगे। ४८७

अरम डन्दॅयर् कऱ्पह नवनिदि यमिर्दच्
चुरबि वाम्बरि मदमलै मुदलिय तॉडक्कर्
ऱॊरुपॅ रुम्बॊरु ळिन्ऱिये युवरिपुक् कॉळिप्प
वॅरुवि योडिन वॅण्णॅय्वाळ् कण्णनमे वारिन् 488

अर मटन्तॅयर—सुर-स्त्रियाँ; कऱ्पकम्—कल्पक आदि वृक्ष; नव निति—नव-निधियाँ; अमिर्तम् चुरपि—अमृत (सा दूध देनेवाली) कामधेनु; वाम् परि—लपकनेवाला (उच्चैःश्रवा नाम का) अश्व; ‘ मतम् मलै—मत्त पर्वत (सम गज);

मुतलिय–आदि सभी; तोटक्कु अर्रु–(इन्द्र से) सम्बन्ध विच्छेद करके; ओर पेरु पोरुळ् इन्रि–एक भी श्रेष्ठ वस्तु न बचाकर; उवरि पुक्कु–समुद्र में घुसकर; ऑळिप्प–छिपने के लिए; वॅण्णय् वाळ्–तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर में रहनेवाले; कण्णन्–'कण्णन्' जिनका उपनाम है; मेवारिन्–उन (दाता) के शत्रुओं के समान; वॅरुवि ओटिन–डरकर भागे। ४८८

उस शाप के फलस्वरूप देवांगनाएँ; संतान, हरिचन्दन, मंदार, पारिजात, कलपक इत्यादि पाँच देवतरु-विशेष, शंख, पद्म, महापद्म, मकर कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, वर इत्यादि नवनिधियाँ, अमृत-सम दूध देनेवाली कामधेनु, तीव्रगामी उच्चैश्रवा नामक अश्व, पर्वताकार और मत्त गज, ऐरावत, इत्यादि सभी, विना एक अपवाद के इन्द्र का संबंध-विच्छेद करके भागे और समुद्र में ओझल हो गये। कवि अपने संकल्प के अनुसार अपने अभिभावक की कृतज्ञतापूर्ण स्मृति में इनके भागने की उपमा तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर के वासी, परमोदार, कण्णन् का उपनामवाले शडैयप्पन के शत्रुओं के भागने से देते हैं। वे शत्रु कहीं त्राण का स्थान न पाकर भागकर अदृश्य हो गये। ८८८

वॅय्य मामुनि वॅहुळियाल् विण्णह मुदलाम्
वैयम् यावयुम् वरुमैनॉय् नलियवा नोरुम्
शैय मीर्न्दिडुङ् गुलिशनुञ् जदुमुहत् तवनुम्
शॅय्य तामरैत् तिरुमरु मार्वनैच् चेर्न्दार् 489

वॅय्य मा मुनि वॅकुळियाल्–क्रोधी महामुनि के कोप (के प्रभाव) से; विण्णकम् मुतल् आम्–सुरलोक आदि; वैयम् यावॅयुम्–सभी लोकों को; वरुमै नोय्–अभाव के रोग के; नलिय–त्रस्त करते; वानोरुम्–देवगण और; चैयम् ईर्न्तिटुम्–पर्वत (-पंख) काटनेवाले; कुलिचनुम्–कुलिशधारी; चतुमुकत्तवनुम्–चतुर्मख और; चॅय्य तामरै तिरु–लाल कमल की श्रीलक्ष्मी और; मरु–श्रीवत्स से मिलित; मार्पनै–वक्षवाले के; चेर्न्तार्–पास गये। ४८९

क्रोधी स्वभाव के दुर्वासा महर्षि के कोप के प्रभाव से देवादि सभी लोकों में दरिद्रता छा गयी। क्योंकि इन्द्र त्रिलोकाधिपति थे, सब संकट ग्रस्त हो गये। तब देवता लोग, पर्वत-पंख-हर कुलिशपाणि इन्द्र और चतुर्मुख ब्रह्मा मिलकर, कमला और श्रीवत्स जिनके वक्ष को अलंकृत करते हैं, उन श्रीमन्नारायण के पास गये। ४८९

वॅञ्जॉन् मामुनि वॅहुळियाल् विळैन्दमै विळम्बिक्
कञ्ज नाण्मलर्क् किळवनुङ् गडवुळर् पिरुम्
तञ्ज मिल्लैनिन् शरणमे शरणॅनच् चलिया
दञ्ज लञ्जलॅन् ऱुरॅत्तन नुलहॅला मळन्दोन् 490

कञ्चम् नाळ् मलर्–कंज के नवीन पुष्प के; किळवनुम्–वासी ब्रह्मा और;

कटवुळर् पिररुम्–अन्य देवता; वॅम् चॉल् मा मुनि–परुष वचनवाले महर्षि के; वॅकुळियाल्–क्रोध से; विळैन्तमै–हुई बातों को; विळम्पि–वर्णन करके; तञ्चम् इल्लै–कोई शरण्य नहीं है; निन् चरणमे–आपके चरण ही; चरण् अॅन–शरण्य कहने पर; उलकु अॅलाम् अळन्तोन्–सारे लोकों के मापक; चलियातु–बिना खीजे; अञ्चल् अञ्चल्–मत डरो, मत डरो; अॅन्रु–कहकर; उरैत्तनन्–आगे बताया। ४६०

नवीन कमल-सुमन पर रहनेवाले ब्रह्मा जी और अन्य देवताओं ने भगवान विष्णु से आक्रोश-वचन दुर्वासा के शाप से घटित सारी बातों का विवरण दिया। उन्होंने विनय की कि अब हमारा कोई आश्रय नहीं। आपके ही दिव्य चरणों की शरण है। तब त्रिविक्रम के अवतार में जिन्होंने तीनों लोकों को नापा था वे भगवान बिना अन्यमनस्कता दिखाये यानी मन लगाकर बोले, तुम लोग चिन्ता मत करो। उन्होंने तीनों लोकों की सृष्टि की थी। फिर बलि से लेकर इन्द्र को दिया था। अतः उन्होंने सभी निधियों को प्राप्त करने का उपाय बताया। ४९०

मत्तु मन्दरम् वासुहि कडैहयि रडैतूण्
मॅत्तु चन्दिरन् शुराशुरर् वेरुवे रुळ्ळ
कौत्ति रण्डुपाल् वलिप्पव रोडदि कौडुत्तुक्
कत्तु वारिदि मरुहुर वमिळ्दॅळक् कडैमिन् 491

मन्तरम् मत्तु–मन्दर (पर्वत) मथानी; वाचुकि कटै कयिरु–वासुकि नेती; मॅत्तु चन्तिरन्–कलापूर्ण चन्द्र; अटै तूण्–स्थिर-थम्भ; वेरु वेरु उळ्ळ–अलग-अलग रहते; चर अचरर्–सुर और असुर; कॉत्तु–समूह; इरण्टु पाल्–दोनों तरफ़; वलिप्पवर्–खींचनेवाले; ओटति कॉटुत्तु–औषधि डालकर; कत्तु वारिति–गरजनेवाले (क्षीर) सागर को; मरुकु उर–क्षुब्ध करते हुए; अमिळ्तु अॅळ–अमृत निकालते (तक); कटैमिन्–मथो। ४६१

देखो। मन्दर पर्वत को मथानी बनाओ, वासुकी नाग को नेती बनाओ; पूर्णचन्द्र को थिर-थंभ के रूप में खड़ा करो। सुर एक तरफ़ और असुर एक तरफ़ रहकर रस्सी खींचो और मथानी को घुमाओ। समुद्र में औषधियाँ डालकर ऐसा मथो कि क्षीरसागर एकदम गम्भीर रूप से विलोडित हो जाय और अमृत निकल आवे। ४९१

यामु मव्वयिन् वरुदुनीर् कदुमॅन वॅळुन्दु
पोमि नॅन्ररुळ् पुरिदलु मिरैञ्जिनर् पुहळ्न्दु
नाम मिन्रॅनक् कुनित्तनर् नलुहर वॊळिन्द
दामॅ नुम्बॅरुङ् गळितुळक् कुरुत्तला लमरर् 492

अ वयिन्–उस तरफ़; यामुम् वरुतुम्–हम भी आयेंगे; नीर्–तुम लोग; कतुमॅन–झट; अॅळुन्तु पोमिन्–उठकर जाओ; अॅन्रु–ऐसा; अरुळ् पुरितलुम्–कृपा-वचन कहते ही; अमरर्–अमरों ने; इरैञ्चितर्–प्रणमन किया; पुळ्ळ्न्तु–

पूजा करके; नामम् इन्ऱु–डर नहीं; अॅन–यह सोचकर; नल्कुरवु–दरिद्रता; ऑळिन्ततु आम्–भाग गयी; अॅतुम्–ऐसा; पॅरु कळि–बड़े आनन्द के; तुळक्कु उऱुत्तलाल्–नचाने से; कुतित्ततर्–नाच उठे। ४९२

हम भी वहाँ आएँगे। तुम लोग सत्वर चलो। —यह वर-वचन सुनकर देवों ने भगवान का नमस्कार किया और स्तुति की। 'अब हमारी चिन्ता मिटी; भय भागा। दरिद्रता दूर हुई' —यह भाव उनके मन में उदित हुआ और उससे उत्पन्न आनन्द से प्रेरित होकर वे नाचे। ४९२

मलैपि डुङ्गिनर् वासुहि पिणित्तनर् मदियम्
निलैपॅ ऱुम्बडि नट्टन रोडदि निऱैत्तार्
अलैपॅ ऱुम्पडि पयोददि कडैन्दन रवनि
निलैत ळर्न्दिड वनन्दनुङ् गीऴुऱ नॅळिन्दान् 493

मलै पिटुङ्किनर्–(मन्दर-) पर्वत उखाड़ा; वाचुकि पिणित्तनर्–वासुकि को (उसपर) लपेटा; मतियम्–चन्द्र को; निलै पॅऱुम्पटि–स्थिर खड़ाकर; नट्टनर्–गाड़ा; ओटति–अमृतवल्ली नाम की ओषधि; निऱैत्तार्–भरपूर डाली; पयोतति–पयोदधि को; अलै पॅऱुम्पटि–खूब आकुलित कर; कटैन्तनर्–मथा; अवनि निलै तळर्न्तिट–भूमण्डल की स्थिति डोलायमान हुई; अनन्तनुम्–(भूभारधारी) अनन्त नाग भी; कीऴ् उऱ–भूमि के नीचे दबकर; नॅळिन्तान्–मरोड़ खाने लगा। ४९३

सुरों और असुरों ने मंदर-गिरि को उखाड़कर क्षीरसागर मे मथानी के रूप में रखा। वासुकी नाग को नेती (रस्सी) के रूप में लपेटा; फिर चंद्र को स्थिर-थंभ के रूप में गाड़ा; (अमृतवल्ली नाम की) ओषधियाँ डालीं। फिर पयोदधि को खूब मथने लगे। तब मंदर पर्वत के घूमने से अवनि डोलने लगी और उसके नीचे अनन्तनाग बल खाकर छटपटाने लगा। ४९३

तिऱल्कॉ ळामैयाय् मुदुहिनिन् मन्दरन् दिरिय
विऱल्कॉ ळायिरन् दडक्कहळ् परप्पि मीवलिप्प
मऱमु लामुनि वॅहुळियान् मऱैन्दन वरवे
अऱनि लार्मनत् तडैहला नॅडुन्दहै यमैन्दान् 494

अऱन् इलार् मनत्तु–धर्मविरुद्ध लोगों के मन में; अटैकला नॅटु तकै–जिनकी महिमा नहीं आ सकती (यानी मन जान नहीं सकता) ऐसे महिमामय भगवान; तिऱल् कॉळ् आमै आय्–सशक्त कूर्म बनकर; मन्तरम् मुतुकिनिल् तिरिय–मन्दरपर्वत को अपनी पीठ पर घूमने देकर; विऱल् कॉळ्—बल-युक्त; आयिरम् तट कैकळ्–सहस्र विशाल हाथों को; मी परप्पि–ऊपर फैलाकर; वलिप्प–मथने के लिए रस्सी खींचते हुए; मऱम् उलाम् मुनि–क्रोधी स्वभाव के ऋषि के; वॅकुळियाल्–कोप के (शाप के) प्रभाव से; मऱैन्तन–अदृश्य हुए सबको; वर अमैन्तान्–लौटा लेने का संकल्प किया। ४९४

तब महिमामय विष्णुदेव, जिनका ध्यान धर्म-रहित मनवाले नहीं धर पाते, बलवान कूर्म बने। वे अपनी पीठ पर घूमते मंदर पर्वत को धारण करते हुए अपने सहस्र हाथों से मंदर को घुमानेवाली वासुकी-रस्सी को खींचने भी लगे। यह अद्भुत कार्य भक्त लोग या धर्ममार्ग पर चलने वालों का मन ही समझ सकता है। उन्होंने समुद्र से उन सारी वस्तुओं को, जो मुनि-शाप से अदृश्य हो गयी थीं, निकाल देने का निश्चय किया। ४९४

इऱन्दु नीङ्गिन यावयु मम्बिरा नरुळाल्
पिऱन्द वव्वयिऱ् चुराशुरर् तङ्गळिऱ् पिणङ्गच्
चिऱन्द मोहिनि मडन्दैया लवुणर्तञ् जॆय्है
तुऱन्दु माण्डन रारमिर् दमरर्ह डुय्त्तार् 495

इऱन्तु नीङ्कित्त यावैयुम्–इन्द्र से छूटकर अलग हुए सब; ऍम्पिरान् अरुळाल्–मेरे आराध्य ईश्वर की कृपा से; पिऱन्त अ वयिन्–प्रगट हुए, उस समय; चुर अचुरर्–सुर और असुर; तङ्कळिल् पिणङ्क–आपस में लड़े, तब; चिऱन्त मोकिनि मटन्तैयाल्–उत्कृष्ट मोहनी स्त्री द्वारा; अवुणर्–दानव; तम् चॆय्कै तुऱन्तु–अपना काम छोड़कर; माण्टनर्–मरे; आर् अमिर्तु–इच्छित अमृत को; अमरर्कळ् तुय्त्तार्–देवों ने खा लिया। ४९५

उन्हीं के संकल्प के प्रताप से, वे सारी वस्तुएँ, जो इन्द्र से संबंध छोड़कर अदृश्य हो गयी थीं, फिर से प्रकट हो गयीं। तब सुर और असुरों में अमृत-पान के प्रश्न को लेकर भारी झगड़ा हो गया। श्रीविष्णु ने मोहनी स्त्री का रूप धरा और उस पर मोहित होकर असुरों ने अपना कार्य भुला दिया। वे देवों द्वारा मारे गये और देवों ने अमृत का अशन कर लिया। ४९५

अन्द वॆलैयिऱ् ऱिदिपॆरुन् दुयरुऴन् दऴिवाळ्
वन्दु काशिबन् मलरडि वणङ्गियॆन् मैन्दर्
इन्दि रादियर् पुणर्प्पिना लिऱन्दन रॆन्नक्कोर्
मैन्द नीयरु ळवर्तमै मडित्तलुक् कॆन्ऱाळ् 496

अन्त वेलैयिल्–उस समय; तिति–(दैत्यों की माता) दिति; पॆरु तुयर् उऴन्तु–बड़े दुख में कुढ़कर; अऴिवाळ्–मुरझानेवाली बनकर; वन्तु–आकर; काचिपन्–काश्यप के; मलर् अटि–कमलचरणों पर; वणङ्कि–नमस्कार करके; ऍन मैन्तर्–मेरे पुत्र; इन्तिरन् आतियर्–इन्द्र आदि के; पुणर्प्पिताल्–षड्यन्त्र से; इऱन्तनर्–हत हो गये; अवर् तमै–उनको; मटित्तलुक्कु–मारने के लिए; ऍनक्कु–मुझे; ओर् मैन्तन्–एक पुत्र; नी अरुळ्–आप प्रदान करें; ऍन्ऱाळ्–कहा। ४९६

उस समय दैत्यों की माता दिति को अपने पुत्रों की मृत्यु से अगाध

शोक हुआ। मनमारे वह काश्यप ऋषि के पास गयी। उनका नमस्कार करके उसने निवेदन किया कि देवों के षड्यन्त्र से मेरे सभी सुत मारे गये। अब देवों से बदला लेकर उनको मारना है। ऐसा कर सकनेवाला एक पुत्र मेरा पैदा हो। आप कृपा करें। ८९६

अॅन्ऱु कूऱलु महवुनक् कळित्तन मिनिनी
शॅन्ऱु पारिडैप् परुवमो रायिरन् दीर
निन्ऱु मादवम् पुरिदियेल् निनैवुमुऱ् ऱुदियॅन्
ऱन्ऱु कूऱिडप् पुरिन्दन ळरुन्दव मनैयाळ् 497

अॅन्ऱु कूऱलुम्–यह कहते ही; अन्ऱु–तब; मकवु–पुत्र; उनक्कु–तुम्हें; अळित्तनम्–दिलाया; इति–अब; नी पार् इटै चॅन्ऱु–तुम भूमि में जाकर; परुवम् ओर् आयिरम् तीर–वर्ष, एक सहस्र, के बीतने तक; निन्ऱु–स्थिर रहकर; मा तवम्–दीर्घ तप; पुरिितियेल्–करेगी तो; निनैवु मुऱ्ऱुति–इच्छा पूर्ण होगी; अॅन्ऱु कूऱिट–यह कहने पर; अनैयाळ्–उसने; अरु तवम्–कठिन तपस्या; पुरिन्तनळ्–(आरम्भ) की। ४९७

यह सुनकर मुनिवर ने कहा कि ठीक है। तुम्हें मैंने एक पुत्र दिया। अब तुम भूलोक पर जाओ और पूरे एक सहस्र वर्ष तपस्या करो। स्थिर-मति होकर कठोर तपस्या करो। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। उनकी आज्ञा के अनुसार वह तपस्या करने लगी। ४९७

केट्ट वासव नन्नवट् कडिमयिऱ् किडैत्तु
वाट्ट मादवत् तुणर्न्दवळ् वयिऱ्ऱुऱु महवै
वीट्टि येॅळु कूऱुशॅय् दिडुदलुम् विम्मि
नाट्ट नीर्दर मरुत्तॅनु नाममु नविन्ऱान् 498

केट्ट वाचवन्–इसको सुनकर, इन्द्र; अन्नवट्कु–उसको; अटिमैयिन् किटैत्तु–दास के रूप में प्राप्त होकर; मा तवत्तु–कठोर तपस्या के बीच; वाट्टम्–मूर्छित रहने का समय; उणर्न्तु–जानकर; अवळ् वयिऱु उऱु–उसके गर्भ में रहे; मकवै–शिशु को; वीट्टि–खण्डित कर; अॅळु कूऱु–सात भाग; चॅय्तिटलुम्–करते ही; विम्मि–सिसककर; नाट्टम् नीर् तर–आँखों से आँसू बहाने पर; मरुत् अॅनुम्–मरुत के; नाममुम्–नाम भी; नविन्ऱान्–कहे। ४९८

वासव (इन्द्र) ने यह बात चरों द्वारा सुनी। वह दिति के पास आये और उसके आज्ञाकारी और विश्वस्त सेवक बने और मौके की ताक में रहे। एक बार दिति तपस्या की विधियों के प्रतिकूल, तपस्या की कठोरता के प्रभाव से, दिन में थककर सो गयी। मौके की ताक में रहे इन्द्र ने सूक्ष्म रूप से उसके गर्भ में प्रवेश करके शिशु के सात टुकड़े कर दिये। जब दिति की मूर्छा छूटी तब उसे बड़ा दुख हुआ। इन्द्र ने उस

पर दया करके उन अंशों को जिलाया और उनका सप्त मरुद्गण नाम रखा। ४९८

आय दिव्विड मव्विड मविर्मदि यणिन्द
तूय वन्ऱनक् कुमैवयिऱ् ऱोन्ऱिय तॊल्लै
वायु वुम्बुनऱ् कङ्गैयुम् पॊऱुक्कला वलत्त
शेय्व ळर्न्दरुळ् शरवण मॆन्बदुन् दॆरित्तान् 499

आयतु इ इटम्–ऐसा है यह स्थान; अ इटम्–वह स्थान; अविर् मति अणिन्त–फैलानेवाली चाँदनी के चन्द्र को पहने हुए; तूयवन् तनक्कु–पवित्र ईश्वर शिवजी के; उमै वयिऱ् तोन्ऱिय–उमा से उत्पन्न; तॊल्लै वायुवुम्–प्राचीन वायु और; पुनल् कङ्कैयुम्—जल-रूपिणी गंगा से भी; पॊऱुक्क अला वलत्त–अधार्य बलशाली; चेय्–कार्तिककुमार; वळर्न्तरुळ्–जहाँ पले; चरवणम्–वह शरवण (सरकण्डों का वन) है; ऍन्पतुम्–यह वृत्तांत भी; तॆरित्तान्–बतलाया। ४९९

"यही वह पवित्र स्थान है। वही" —कहकर महर्षि ने और एक वृत्तांत कहा। चन्द्रशेखर ने, देवों की प्रार्थना मानकर, देव-सेनापति बनने योग्य एक पुत्र को देवी हैमवती उमा द्वारा जन्म दिया। उस तेज को वायु और गंगा दोनों धारण नहीं कर सके। उसके पहले अग्नि भी असमर्थ रहा। अग्नि ने वायु के पास रखा; वायु ने गंगा में छोड़ा। गंगा अधीर हुई और उसने उस तेज को शरवण में (सरकंडों के वन में) छोड़ दिया। (फिर कृत्तिकाओं ने उस तेज से उत्पन्न कार्तिकेय [स्कंद] को पाला।) यही वह 'शरवण' है जहाँ स्कंद कृत्तिकाओं द्वारा पालित हुए। (हिमवान की, उमा और गंगा, दोनों पुत्रियों का वृत्तांत, स्कंदोत्पत्ति का विवरण इत्यादि बातें इधर संक्षेप में बतायी गयी हैं। वालमीकी में किंचित अधिक विस्तार पाया जाता है। शर और वन, दो शब्दों का जब समास बनता है तब 'वन, वण' हो जाता है। अतः शरवण कहा गया है)। ४९९

कालन् मेनियिऱ् करुहिरुळ् कडिन्दुल हळिप्पान्
नील वार्हलित् तेरॊडु निऱैकदिर्क् कडवुळ्
मालिन् मामणि युन्दियिन् वळत्तॊडु वन्द
मूल तामरै मुळुमुदन् मुळैत्तॆन मुळैत्तान् 500

कालन् मेत्तियिन्–कालदेव की देह के समान; करुकु इरुळ्–काले अँधेरे को; कटिन्तु–दूरकर; उलकु अळिप्पान्–लोक रक्षा करनेवाले; निऱै कतिर् कटवुळ्–पुष्कल किरणों के देवता (सूर्य); मालिन् मा मणि उन्तियिन्–विष्णु की उत्तम और सुन्दर नाभी में; वळनॊटु वन्त–बहुत चिकने रूप से प्रकट हुए; मूल तामरै–(सृष्टि के आदि) हेतु कमल पर; मुळु मुतल्–सृष्टि के आदि कारण भूत; मुळैत्ततु ऍन–(ब्रह्मा) उत्पन्न हुए, ऐसे; नीलम् आर् कलि–नीले रंग के और गर्जनशील समुद्र-मध्य; तेरॊटु मुळैत्तान्–अपने रथ के साथ उदित हुए। ५००

अब सूर्योदय का समय आ गया। सूर्य नीले समुद्र-मध्य से अपने रथ के साथ ऊपर उठ आया। कवि उसकी उपमा श्रीविष्णु के नाभी-कमल से ब्रह्मा जी के प्रकट होने के दृश्य से देते हैं। समुद्र विष्णु से, रथ कमल से, और सूर्य ब्रह्मा से उपमित है। सूर्य उदित होकर यम-सम काले रंग के अंधकार को भगाकर लोक-संरक्षण में लग गया। ५००

अङ्गु	निऩ्ऱॆऴुन्	दयऩ्मुदऩ्	मूवरु	मऩैयार्
शॆङ्ग	णेऱ्ऱवऩ्	शॆंऱिशडैप्	पळुवत्तु	निऱैतेऩ्
पॊङ्गु	कॊऩ्ऱैयीर्त्	तॊऴुहलाऱ्	पॊऩ्ऩियैप्	पॊरुवुम्
गङ्गै	यॆऩ्ऩुमक्	करैपॊरु	तिरुनदि	कण्डार् 501

अयऩ् मुतल् मूवरुम् अऩैयार्–अज आदि आदिदेव, तीनों के समान रहे वे; अङ्कु निऩ्ऱु–वहाँ से; ऎऴुन्तु–उठ चलकर; चॆम् कण् एऱु अवऩ–लाल आँखवाले ऋषभ वाहन; चॆऱि चटै पवऴत्तु–जटा-जूटरूपी कानन से; निऱै तेऩ् पॊङ्कु–अधिक शहद भरे; कॊऩ्ऱै ईर्त्तु–अमलतास फूलों को खींचते हुए; ऒऴुकलाल्–बहने से; पॊऩ्ऩियै पॊरुवुम्–पॊऩ्ऩि नामधारिणी कावेरी की समानता करनेवाली; कङ्कै ऎऩ्ऩुम्–गंगा संज्ञित; अ–उस; करै पॊरु–तीरों पर लहरें मारनेवाली; तिरु नति–श्रेष्ठ नदी को; कण्टार्–देखा। ५०१

दूसरे दिन सबेरे वे तीनों, जो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर, त्रिदेव के समान थे, वहाँ से चलकर गंगा के तट पर आये। कौशिक की उपमा श्री ब्रह्मा जी से की गयी है दोनों ब्रह्मवित् हैं। श्रीराम तो विष्णु हैं ही। लक्ष्मण अपने क्रोधी स्वभाव में रुद्र की समानता करते हैं। गंगा नदी में शिव जी के जटा-जूट रूपी कानन से अमलतास के फूल बहते आते हैं। उस कारण वह पॊऩ्ऩि नाम की कावेरी नदी के समान, जो तमिऴनाडु में बहती है, है। (इधर ये बातें स्मरणीय हैं। कम्बन वैष्णव भक्त थे और तमिऴ देश पर उनका प्रेम अद्वितीय था। और दक्षिण के वैष्णवों में कावेरी को गंगा जी से अधिक श्रेष्ठ मानने का गुण है। कावेरी श्रीरंगम के वैष्णव-क्षेत्र के दोनों तरफ़ माला के समान दो भागों में विभक्त होकर बहती है। श्रीरंगम भूलोक में श्रीवैकुण्ठ तुल्य है। परमपद यानी श्रीवैकुण्ठ के मुक्तिलोक जाने से पहले मुक्त को विरजा नदी में स्नान करने की आवश्यकता पड़ती है। यह कावेरी विरजा नदी के स्थान में मानी जाती है। कावेरी का नाम इसलिए पॊऩ्ऩि पड़ा कि उसके जल में स्वर्ण-कण पाये जाते हैं। पॊऩ् का अर्थ स्वर्ण है। इसलिए भी वह पॊऩ्ऩि है कि उसका जल रंग में सुनहला है।)। ५०१

इन्द	मानदिक्	कुऱ्ऱुळ	तहैमय	यावुम्
ऎऩ्दै	कूऱुहॆऩ्	ऱिराहवऩ्	विनवुऱ	वऩैयाऩ्

मैन्द निन्ऱिरु मरबुळा नयोत्तिमा नहर्वाऴ्
विन्दै शॅर्पुयन् सगरनिम् मेदिनि पुरन्दान् 502

ॲन्तै–तात (पितृ-तुल्य); इन्त मा नतिक्कु–इस महानदी की; उऱ्ऱु उळ–प्राप्त रही; तकैमैय यावुम्–विशेषताएँ सब; कूऱुक–बताइये; ॲन्ऱु–ऐसा; इराकवन् वितवु उऱ–श्रीराघव के पूछते समय; अतैयान्–उन्होंने; मैन्त–वीरकुमार; निन् तिरु मरपु उळान्–आपके वंश में उदित; अयोत्ति मा नकर् वाऴ्–अयोध्या महानगर के वासी; विन्तै चेर् पुयन्–वीर्यलक्ष्मी-युक्त भुजोंवाले; चकरन्–सगर (ने); इ मेतिति–यह भूमि; पुरन्तान्–पाली। ५०२

तब श्रीराघव ने मुनिवर से प्रार्थना की कि इस गंगा की सारी महिमा बताइये। महर्षि ने सगर-वृत्तांत से आरम्भ किया। उन्होंने राम से कहा कि हे वीर-कुमार! आपके कुल में पहले सगर नाम के राजा हुए जो अयोध्या में रहकर राज करते थे। उनकी भुजाएँ वीर्य-लक्ष्मी की आश्रय थीं। वे अतुलित वीर थे। ५०२

विऱल्कॊळ् वेन्दनुक् कुरियव रिरुवरिल् विदर्प्पै
पॊऱैयि नल्हिय वशमञ्जर् कञ्जुमान पुदल्वन्
पऱवै वेन्दनुक् किळैयमॆन् शुमदिमुन् पयन्द
अऱनिन् मैन्दर्ह ळऱुपदि नायिरर् वलत्तार् 503

विऱल् कॊळ् वेन्तनुक्कु–विजयेश राजा की; उरियवर् इरुवरिल्–अपनी दो पत्नियों में; वितर्प्पै–विदर्भनरेश-कुमारी से; पॊऱैयिन् नल्किय–गर्भ-धारणकर जनित; अचमञ्चर्कु–असमञ्जस का; अञ्चुमान्–अंशुमान; पुतल्वन्–पुत्र था; पऱवै वेन्तनुक्कु–खगराज गरुड़ की; इळैय–छोटी बहन; मॆन् सुमति–कोमल सुमति के; मुन् पयन्त–पहले जनाये; अऱन् निल् मैन्तर्कळ्–धर्म-रत पुत्र; अऱुपतिनायिरर्–साठ सहस्र; वलत्तार्–अतिबली थे। ५०३

विजय-निलय राजा सगर के दो रानियाँ थीं। पहली वैदर्भ-दुहिता (केशिनी) थीं। उनके गर्भ से असमञ्जस नाम का पुत्र हुआ। उसका पुत्र अंशुमान था। खगपति गरुड़ की अनुजा सुमति दूसरी पत्नी थी और उसके गर्भ से साठ हज़ार धर्मपरायण और बलशाली पुत्र पैदा हुए। ५०३

(बालमीकी में ये बातें हैं। सुमति काश्यप और विनता की पुत्री थी। हिमालय-तट में राजा सगर ने अपनी दोनों पत्नियों के साथ पुत्र-कामना से भृगुदेव की आराधना की। उनकी तपस्या से संतुष्ट होकर भृगु ने एक के द्वारा एक पुत्र और दूसरी के द्वारा साठ सहस्र पुत्रों की उत्पत्ति का वर देकर उसको चुनने में उनको स्वतंत्रता दे दी। केशिनी ने एक पुत्र से तृप्त रहने की बात मानी क्योंकि उसके द्वारा वंशवृद्धि की संभावना थी। सुमति ने बलवान पुत्र चाहे। केशिनी के गर्भ से असमंजस पैदा हुआ। लेकिन वह बड़ा क्रूर निकला। वह निरीह

बच्चों को पकड़कर जल में डुबो देता और उनका मरण के समय छटपटाना देखने में रस लेता था। राजा ने उसको निर्वासित कर दिया। सुमति के गर्भ से एक पिंड बाहर आया जो साठ सहस्र अंशों में फटा और हर अंश से एक पुत्र पैदा हुआ। कहा जाता है कि असमंजस ने जंगल में जाकर कठिन तपस्या की जिससे प्राप्त योग-बल से सभी मरे हुए बच्चे जीवित हो उठे।)

तिण्डि ऱऱ्पुतै शगरनुन् दनयर्शे वहड्गळ्
कण्डु मुऱ्ऱिय वयमहम् बुरिदलुड् गनन्ऱु
वण्डु तुऱ्ऱुतार् वाशवर् कुणर्त्तिनर् वानोर्
ऑण्डि ऱऱ्परि कपिलन्न दिडैयिनि लौळित्तान् 504

तिण् तिऱल् पुतै–अधिक बल से युक्त; चकरनुम्–सगर भी; तनयर् चेवकङ्कळ् कण्टु–पुत्रों के साहस-कृत्य देखकर; मुऱ्ऱिय अयम् मकम् पुरितलुम्—विधि-सम्मत हय-यज्ञ करते समय; वानोर्–देवगण; कनन्ऱु–कुपित होकर; वण्टु तुऱ्ऱु तार्–भ्रमर-गुंजरित मालाधारी; वाचवर्कु उरैत्तनर्–वासव को बोले; ऑण् तिऱल्–आकर्षक और बलवान; परि–यज्ञाश्व को; कपिलननु इटैयिल्–कपिल के स्थान में; ऒळित्तान्–छिपा दिया। ५०४

सगर स्वयं अत्यन्त बलवान थे; उन्होंने देखा कि उनके पुत्र भी साहसपूर्ण थे। इसलिए उन्होंने अश्वमेधयज्ञ करने की बात सोची और उसका आरम्भ किया। देव लोग इसे देखकर कुपित हुए और भ्रमर-गुंजित माला से अलंकृत देवेन्द्र को समाचार दिया। इन्द्र ने अपनी माया से उस सुन्दर, तीव्रगामी, और शक्तिशाली अश्व को हर कर पाताल में कपिल (मुनि) के पीछे, जो तपोलीन थे, छिपा दिया। ५०४

वावु वाशिपिन् शॅन्ऱन नञ्जुमान् मऱुहिप्
पूवि लोरिड मिन्ऱिये नाडिनन् पहुन्दु
देवर् कोमहन् करन्दमै यरिन्दिलन् ऱिहैत्तु
मॅवु तादैतन् ऱादैपा लुरैत्तनन् मीण्डु 505

वावु–लपकते चलनेवाले; वाचि पिन्–वाजी (अश्व) के पीछे; चॅन्ऱतन्–जो गया वह; अञ्चुमान्–अंशुमान; मऱुकि–व्यथित होकर; तेवर कोन्–देवेन्द्र का; करन्तमै–छिपाना; अऱिन्तिलन्–न जान पाया; पूविल्–भूतल में; ओर् इटम् इन्ऱि–कहीं (एक स्थान) न छोड़कर; पुकुन्तु नाटिनन्–जाकर खोजा; तिकैत्तु–किंकर्तव्यविमूढ़ होकर; मीण्टु–लौट आकर; मेवु तातै तन् तातै पाल्–यागदीक्षित अपने पिता के पिता के पास; उरैत्तनन्–बताया। ५०५

यज्ञाश्व के पीछे अंशुमान जा रहा था। अकस्मात् उसे मालूम हुआ कि अश्व अदृश्य है। वह भौंचक्का रह गया। उसे इन्द्र की माया मालूम नहीं थी। वह सब स्थानों में खोजने लगा। अश्व दिखायी नहीं दिया।

किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वह अपने पितामह के पास लौट आया और समाचार कहा। ५०५

केट्ट	वेन्दनु	मदलैयर्क्	कम्मोळि	किळत्ति
वाट्ट	मीक्कोळच्	चकरर्कळ्	वडवैयिन्	मरुहि
नाट्टम्	वॅङ्गनल्	पॉळिदर	नानिलन्	दडवित्
तोट्टु	नुङ्गिनर्	पुविवियितैप्	पादलन्	दोन्ऱ 506

केट्ट वेन्तनुम्–जिन्होंने सुना वे राजा भी; अ मोळि–वह समाचार; मतलैयर्क्कु–अपने पुत्रों को; किळत्ति–देकर; वाट्टम् मी कोळ–अधिक दुखी हुए, तब; चकरर्कळ्–सगर-पुत्र; वटवैयिन् मरुकि–वड़वाग्नि के समान जलकर; नाट्टम्–आँखों से; वॅम् कनल्–कोपाग्नि को; पॉळि तर–बरसाते हुए; नाल् निलम् तटवि–चतुर्विधा भूमि टटोलकर; पुवियिनै–भूमि को; पातलम् तोन्ऱ–पाताल तक; तोट्टु नुङ्कितर्–खोदकर गहरा बनाया। ५०६

राजा सगर ने यह सुना तो वे क्लांत हुए। उन्होंने अपने पुत्रों से यह बात कही तो वे वड़वाग्नि के समान क्रोध से जलने लगे। फिर वे आँखों से क्रोधाग्नि प्रकट करते हुए निकल पड़े। सारा भूमंडल बीन डाला। फिर भूमि को खोदकर पाताल का मार्ग बना दिया। (भूमि को नानिलम् यानी चतुर्विधा भूमि कहते हैं। कारण; भूमि के पर्वत प्रदेश, जंगल प्रदेश, खेतों व बागों का प्रदेश और समुद्र-तटीय प्रदेश इत्यादि चार प्राकृत भेद हैं। पालै यानी रेतीले जंगल को अलग नहीं गिना जाता क्योंकि यह माना जाता है कि कोई भी भूप्रदेश वर्षा के न होते समय जंगल बन जाता है और वह बीहड़ भूमि पालै या मरुप्रदेश कही जाती है।) । ५०६

नूऱ्ऱु	योशनै	यहलमु	माळमु	नुडङ्गक्
कूऱु	शॅय्दन	रॅन्बराल्	वडगुण	दिशैयिन्
एऱु	मादवक्	कबिलन्बि	निवुळिकण्	डॅरियिन्
शीऱ्ऱि	वैदनर्	शॅरुक्कितर्	नॅरुक्किनर्	शॅरुत्तार् 507

वट कुण तिचैयिन्–उत्तर-पूर्व दिशा में; नूऱु योचनै अकलमुम् आळमुम् नुटङ्क–शत योजन चौड़ा और उतना गहरा गड्ढा बने, ऐसा; कूऱु चॅय्ततर्–खोद दिया; ॲन्पर्–(लोग) कहते हैं; एऱु–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; मातवम्–महान तप में लगे; कपिलन् पिन्–कपिलदेव के पीछे; इवुळि कण्टु–अश्व को देखकर; ॲरियिन् चीऱ्ऱि–आग के समान जलकर; चॅरुक्कित्तर्–गर्वीले; वैततर्–डाँटते; नॅरुक्कितर्–घेरकर; चॅरुत्तार्–संकट देने लगे। ५०७

कहा गया है (वालमीकी द्वारा) कि वे उत्तर-पूर्व दिशा में गये। वहाँ उन्होंने चौड़ाई में शतयोजन और गहराई में शतयोजन भूमि को खोदा। वहाँ पाताल में उन्होंने तपोमग्न कपिल को और उनके पीछे

यज्ञाश्व को देखा। उन्होंने कपिल देव को चोर समझा और वे आग के समान विफर कर उन्हें डाँटने और घेरकर सताने लगे। ५०७

मूळुम् वॆञ्जिनत् तरुन्दवन् मुनिन्दॆरि विळिप्पप्
पूळै शूडिद नहैयिनि लॆयिल्पॊडिन् दनपोल्
आळु मैन्दरा रयुदरुम् जाम्बरा यविन्दार्
वॆळ्वि कॊण्डनल् वेन्दनुक् कुरैत्तनर् वेय्हळ् 508

मूळुम् वॆम् चिनत्तु–उमड़ते हुए कठोर कोपवाले; अरु तवन्–उत्तम तपस्वी (के); मुनिन्तु–क्रोध करके; ऍरि विळिप्प–अग्नि उगलते हुए तरेरते समय; पूळै चूटि–पूळै नामक फूलों के धारक; तन् नकैयिनिल्–(शिव) के हास से; ऍयिल् पॊटिन्तत पोल्–त्रिपुर जल गये, ऐसा; आळुम् मैन्तर्–राजकुमार; आऱु अयुतरुम्–छः दस सहस्र सब; चाम्पर् आय्–भस्म बनकर; अविन्तार्–मिट गये; वेय्कळ्–गुप्तचरों ने; वेळ्वि कॊण्ट–याग दीक्षित; नल् वेन्तनुक्कु–अच्छे सगरराज से; उरैत्तनर्–यह बात कही। ५०८

तपस्वी महर्षि के मन में क्रोध उठा और बढ़ने लगा। उन्होंने आग्नेय आँखों से उनको तरेरा। बस, उनकी दृष्टि पड़ते ही वे वैसे ही भस्म होकर ढेर बन गये जैसे त्रिपुर फूलधर शिवजी के हाथ से जलकर भस्म हो गये थे। गुप्तचरों ने जाकर यह समाचार जान लिया और राजा को विदित किया। ५०८

उळैत्तु वॆन्दुयरक् कीरुकाण् किलनुणर् वळिया
अळैत्तु मैन्दन्रन् मैन्दनै यवर्कळिन् दनरेल्
इळैत्त वॆळ्वियिन् रिळप्पदो वॆनवव नॆळुन्दु
तळैत्त मादवक् कबिलन्वाळ् पादलञ् जार्न्दान् 509

उळैत्तु–दुखी होकर; वॆम् तुयर्क्कु–कठोर दुख का; ईऱु काण्किलन्–अन्त न पाकर; उणर्वु अळिया–सुध-बुध खोकर; मैन्तन् तन् मैन्तनै–पुत्र के पुत्र को; अळैत्तु–बुलाकर; अवर् कळिन्तनरेल्–वे मर गये, इस कारण; इळैत्त वेळ्वि–आरंभित यज्ञ को; इन्ऱु इळप्पतो–अब छोड़ना है क्या; ऍन–यह कहने पर; अवन् ऍळुन्तु–वह उठकर; तळैत्त मा तवम्–उत्कृष्ट महान तपोधन; कपिलन् वाळ्–कपिल के रहने के स्थान; पातलम् चार्न्तान्–पाताल पहुँचा। ५०९

राजा यह सुनकर असीम दुख में पड़ गये। सुध-बुध जाती रही। फिर उन्होंने अंशुमान को बुलाया और कहा कि पुत्र-मरण के कारण, आरंभित यज्ञ को रोकना उचित नहीं होगा। तब अंशुमान पाताल में कपिल के पास पहुँचा। ५०९

विण्डु नोङ्गिन रुडलुहु पिरङ्गल्वॆण् णीऱ्ऱैक्
कण्डु तुण्णॆन्तु मनत्तिनन् कपिलमा मुनितन्

पुण्ड रीहनऱ् ऱाडोळु वॆळुन्दनन् पुहऴ्क्
कॊण्डु पोहनिन् निवुळियॆन् ऱुऱ्ऱदुङ् गुरित्तान् 510

विण्टु नीङ्किनर्–मर कर गये हुए; उटल् उकु–शरीरों के गिरे; पिऱङ्कल–पर्वत-सम; वॆण् नीऱ्ऱै–श्वेत भस्म (राशि) को; कण्टु–देखकर; तुण् ऍन्नुम् मतत्तितन्–चौंकते मन का होकर; कपिल मा मुनि तन्–कपिल महामुनि के; पुण्टरीकम् नल् ताळ्–कमल-सम श्रेष्ठ चरणों पर; तॊऴुतु–नमस्कार कर; ऍऴुन्ततन्–उठा; पुकऴ्–स्तुति की; निन् इवुळि–अपना अश्व; कॊण्टु पोक–ले जाओ; ऍन्ऱु–कहकर; उऱ्ऱतुम्–घटित हुआ सब; कुरित्तान्–बताया। ५१०

अंशुमान ने अपने पिता के सौतेले भाइयों के शरीरों के बने भस्म-ढेर को देखा जो श्वेतपर्वत के समान था, वह दलक गया। फिर उसने कपिल के पैरों पर पड़कर स्नुति की। कपिल ने करुणा के साथ उससे कहा कि तुम अपना अश्व ले जाओ। उन्होंने उसे घटित समाचार भी कह सुनाया। ५१०

पऴुदि लादव नुरैत्तशॊऱ् केट्टलुम् परिवाल्
तॊऴुदु वाम्बरि कॊणर्न्दवि शुरर्हळुक् कीया
मुळुदुम् वॆळ्वियै मुऱ्ऱुवित् तरशनु मुडिन्दान्
ऍऴुदु कीर्त्तियाय् मैन्दनुक् करशिय लीन्दु 511

ऍऴुतु कीर्त्तियाय्–(कवि द्वारा) उल्लेखनीय कीर्तिवाले हे राम; पऴुतु इलातवन्–दोषहीन (के); उरैत्त–कहे; चॊल् केट्टलुम्–वचन सुनते ही; परिवाल् तॊऴुतु–आदर के साथ प्रणमन करके; वाम् परि कॊण्र्न्तु–लपक चलनेवाले अश्व को लाकर; अरचनुम्–राजा (सगर) भी; अवि–हवि; चुरर्कळुक्कु ईया–सुरों को देकर; वॆळ्वियै मुळुतुम् मुऱ्ऱुवित्तु–यज्ञ को निःशेष पूर्ण करके; मैन्तनुक्कु–पुत्र को; अरचियल् ईन्तु–शासनभार देकर; मुटिन्तान्–(अपनी इह-यात्रा) समाप्त की। ५११

कवियों द्वारा लिखने योग्य यशस्वी, हे राम! जिनका कोई कामादि दोष नहीं था (अतः इस काम में भी अपराध नहीं था) उन कपिलदेव का वचन सुनकर अंशुमान ने आदर के साथ उनकी वन्दना की। वह तीव्रगामी अश्व को यज्ञशाला में लाया। सगर ने देवों को हविर्भाग देकर यज्ञ को यथाविधि पूर्ण किया। फिर अंशुमान के पास राज्य का भार देकर उन्होंने अपनी इह-लीला सँवार ली। वे परमपद को प्राप्त हो गये। ५११

सगरर् तॊट्टलाऱ् चाहर मनप्पॆयर् तऴैप्प
महर वारिदि शिऱन्ददु महिदल मुऴुदुम्
निहरिन् मैन्दने पुरन्दन नवनॆडु मरबिल्
पहिर दन्नॆनुम् बार्त्तिबन् परुदियॊत् तुदित्तान् 512

चकरर् तॉट्टलाल्–सगर (-पुत्रों) द्वारा खुदे होने से; चाकरम् ॲन पॅयर् तळैप्प–सागर नाम के प्रथित होते; मकरम् वारिति–मकर-निलय वारिधि; चिऱन्ततु–उत्कृष्ट हुई; मकितलम् मुळुतुम्–महीतल सब को; निकर् इल् मैन्तत्ते–उपमाहीन कुमार (अंशुमान) ने ही; पुरन्तनन्–पालित किया; अवन् नॅटु मरपिल्–उसके बड़े वंश में; पकिरतन्–भगीरथ; ॲनुम्–संज्ञित; पार्त्तिपन्–पृथ्वीपति; परुति ऑत्तु–सूर्य के समान; उतित्तान्–पैदा हुए। ५१२

सगर-पुत्रों द्वारा खोदे जाने के कारण मकर-संकुल-वारिधि सागर कहलायी और प्रशंसित हो गयी। अंशुमान ने राज्य-संचालन किया। उसके प्रशंसित वंश में भगीरथ नाम के राजा सूर्य के समान तेजस्वी और यशस्वी पैदा हुए। (अंशुमान, दिलीप, भगीरथ यह क्रम है)। ५१२

उलहम् यावैयुम् पॉदुवऱत् तिहिरियै युरुट्टि
इलहु मन्नव निरुन्दुळि यिऱन्दवर् शरिदम्
अलहि रॉन्मुनि याङ्गवर् कुरैत्तिड वरशन्
तिलह मण्णुऱ वणङ्गिनिन् ऱॉरुमॉळि शॅप्पुम् 513

इलकुम् अन्नवन्–यश के साथ रहनेवाले वे; उलकम् यावैयुम्–सभी लोकों को; पॉतु अऱ–अविभक्त अधिकार का; तिकिरियै उरुट्टि–आज्ञाचक्र चलाते हुए; इरुन्तुळि–जब रहे तब; आङ्कु अवर्कु–वैसे उनको; इऱन्तवर् चरितम्–मृत पितरों का वृत्तान्त; अलकु इल् तॉल् मुनि–अत्यन्त प्राचीन (वयोवृद्ध) मुनिवर, वसिष्ठजी के; उरैत्तिट–कहते समय; अरचन्–राजा; तिलकम् मण् उऱ–भाल को भूमि पर टेकते; वणङ्कि–दण्डवत् करके; निन्ऱु–खड़े होकर; ऑरु मॉळि चॅप्पुम्–एक बात कही। ५१३

यशस्वी भगीरथ एक-छत्र राज करते थे। एक दिन अत्यन्त वयोवृद्ध महर्षि वसिष्ठ ने उनसे सगर-पुत्रों की मृत्यु का वृत्तान्त कहा। वह सुनकर राजा भगीरथ ने वसिष्ठ जी के सामने ललाट को भूमि पर लगाकर दण्डवत् किया और यों कहा। ५१३

कॉडिय मामुनि वॅहुळियिन् मडिन्दवॅङ् गुरवर्
मुडिय नीणिर यत्तिनि लळुन्दुरु मुरैमै
कडियु मारॅनक् करुन्दवममैहुरु करुमम्
अडिहळ् शाऱ्रुह वॅन्ऱलु मन्दण नरैवान् 514

मा मुनि–महर्षि (कपिल) के; कॉटिय वॅकुळियिन्–भयंकर क्रोध से; मटिन्त–मरे हुए; ॲम् कुरवर्–मेरे पूर्व-पुरुष; नीळ् निरयत्तिल्–बड़े नरक में; मुटिय अळुन्तुरुम् मुरैमै–सदा मग्न रहने के व्यवहार को; कटियुम् आऱु–काटने के उपाय में; अरु तवम्–कठिन तपस्या; अमैकुरु करुमम्–साध्य बनानेवाले कार्य को; ॲनक्कु–मुझे; अटिकळ्–महात्मन् आप; चाऱ्रुक–बता दें; ॲन्ऱलुम्–प्रार्थना करते ही; अन्तणन् अरैवान्–महर्षि ने कहा। ५१४

आपके वचन से विदित होता है कि कपिल महर्षि के कठोर शाप के कारण मेरे पूर्वजों को नित्य-निरय-वास मिल गया है। उसको बदल देना चाहता हूँ। उनको उद्गति दिलानी है। उसके निमित्त तपस्या करनी है। उसके लिए क्या करना चाहिए। कृपा करके आप बताइये। तब महर्षि ने कहा। ५१४

वैय माळुडै मन्ऩवर् मऩ्ऩव मडिन्दोर्
उय्य नीडव मॊऴिवरु पहलॅला मॊरुङ्गे
शॅय्य नाण्मलरक् किळवनै नोक्किनी शॅय्दि
नैय लॅन्ऱिनि दुरैत्तन नवैयरु मुनिवन् 515

वैयम् आळुटै—लोकपालक; मन्नवर् मन्नव—राजाधिराज; मटिन्तोर् उय्य—मृतों का उद्धार करने; ऒऴिवु अरु—निरन्तर; पकल् ऎलाम्—अनेक काल तक; ऒरुङ्के—एक साथ; चॆय्य नाळ् मलर्—लाल, नवीन कमल के; किळवनै—स्वामी (ब्रह्मा) को; नोक्कि—उद्दिश्य करके; नीळ् तवम् नी चॆय्ति—दीर्घ तपस्या आप कीजिये; नैयल्—क्लांत मत हो; ऎन्ऱु—ऐसा; नवै अरु मुनिवन्—निर्मल मुनि ने; इतितु उरैत्तनन्—मधुर वचन कहा। ५१५

हे पृथ्वीपति राजाधिराज! भगीरथ! शाप-हत सगर-पुत्रों को उद्गति में पहुँचाने के लिए दीर्घकाल तक निरन्तर कठोर तप करना है। ब्रह्मा को उद्दिश्य करके वह तपस्या कीजिये। चिन्ता में घुलने की आवश्यकता नहीं है। —यह निर्मल मुनिवर ने उपाय बताया। ५१५

ञालम् यावैयुज् जुमन्दिरऩ् ऱऩ्वयि ऩल्हिक्
कोलु मादवत् तिमगिरि मरुङ्गिनिऱ् कुरुहिक्
काल मोर्पदि ऩायिर मरुन्दवङ् गऴिप्प
मूल तामरै मुळुमुदऱ् किळवऩ् मुन्दिऩऩे 516

ञालम् यावैयुम्—भू (शासन) सब को; चुमन्तिरन् तन् वयिन्—सुमन्त्र के पास; नल्कि—सिपुर्द कर; कोलुम्—श्रेष्ठ; मातवत्तु—तपस्या के योग्य; इमकिरि मरुङ्किनिल्—हिमगिरि के पार्श्व में; कुऱुकि—जाकर; ओर् पतिनायिरम् कालम्—दस सहस्र वर्ष तक; अरु तवम् कऴिप्प—कठोर तपस्या करने पर; मूलम् तामरै—सृष्टि के मूल, (विष्णु के नाभी-) कमल पर उदित; मुळु मुतल् किळवन्—सृष्टि के आदि पुरुष; मुन्तिनन्—प्रकट हुए। ५१६

राजा भगीरथ यह सुनकर तत्पर हो गये। उन्होंने सुमंत के पास राज्य सौंपा। वे तपोनुकूल हिमालय की तलहटी में पहुँचे। दस सहस्र वर्ष तक उन्होंने कठोर तप किया। तब सृष्टि के आदिकर्ता, ब्रह्माजी ने, जो विष्णु के सुन्दर नाभी-कमल पर पहले प्रकट हुए थे, भगीरथ को दर्शन दिये। ५१६

नित्पॅ रुन्दव महिळ्न्दन्न नित्तदुनीळ् कुरवर्
मुन्बि ऱन्दन्न ररुन्दवन् मुनिविन्ना दलिन्नाल्
मन्बॅ रुम्बुवि यदनिल्वा न्नदिकडि दणुहि
ॲन्बु तॉयुमे लिरुङ्गदि पॅरुवरॅन् ऱिशैत्तान् 517

निन् पॅरु तवम्–तुम्हारी बड़ी तपस्या से; मकिळ्न्तनन्–हम बड़े सन्तुष्ट हुए। निनतु नीळ् कुरवर्–तुम्हारे अनेक पूर्वपुरुष; मुन्पु–पहले; अरु तवन् मुनिविन्–श्रेष्ठ तपस्वी के कोप से; इऱन्तनर्–मरे; आतलिन्नाल्–इसलिए; वान् नति–आकाश की गंगा; मन् पॅरु पुवि अतनिल्–बहुत विशाल इस भूतल पर; कटितु अणुकि–बहती हुई आकर; ॲन्पु तोयुमेल्–अस्थि पर जमेगी तो; इरु कति पॅरुवर्–उद्गति को प्राप्त होंगे; ॲन्ऱु इचैत्तान्–यह कहा। ५१७

उन्होंने भगीरथ को आश्वासन देते हुए कहा कि तुम्हारी कठोर और दीर्घ तपस्या से हम संतुष्ट हुए। तुम्हारे अधिक संख्या के पूर्वपुरुष कपिलदेव के कोप के शाप से मरे हैं। इसलिए सलिल-क्रिया सुरलोक की गंगा नदी के जल से ही करनी चाहिये। वह जल हड्डियों पर बहेगा तभी वे श्रेष्ठ गति को प्राप्त होंगे। ५१७

माह मानदि पुवियिडै नडक्किन्मऱ ऱवडन्
वेह माऱ्ऱुदल् विडैयवऱ् कन्ऱिवे ऱरिदाल्
तोहै पाहन्नै नोक्किनी यरुन्दवन् ऱॉडङ्गॅन्
ऱेहि नानुल हनैत्तुमॅव् वुयिर्हळु मीन्ऱान् 518

उलकु अनैत्तुम्–सारे लोकों को; ऍव् उयिर्कळुम्–सारे प्राणधारी जीवों को; ईन्ऱान्–सृष्ट करनेवाले; माकम् मा नति–आकाश की महानदी; पुवि इटै नटक्किन्–भूमि पर आयेगी तो; अवळ् तन्–उसका; वेकम्–वेग को; आऱ्ऱुतल्–धारण करना; विटैयवऱ्कु अन्ऱि–ऋषभवाहन शिव के सिवा; वेऱु अरितु आल्–अन्यों के लिए दुस्तर है इसलिए; नी–तुम; तोकैपाकन्नै नोक्कि–कलापी सी छटावाली पार्वती जिनका एक भाग है उनको उद्दिश्य करके; अरु तवम् तॉटङ्कु–कठिन तपस्या आरम्भ करो; ॲन्ऱु–यह कहकर; एकिनान्–चले गये (अदृश्य हो गये)। ५१८

सर्वलोक-पितामह, ब्रह्मा ने आगे कहा— महिमामयी आकाश-गंगा भूमि पर उतर आयेगी तो उसका वेग धारण करना सबके लिए असम्भव है। केवल ऋषभ-वाहन शिवजी उसको रोके रख सकते हैं। इसलिए कलापी-सी छटावाली सुन्दरी पार्वतीदेवी को अपने शरीर का आधा भाग देकर जो रखते हैं, उनका ध्यान करते हुए कठिन तपस्या करो। यह उपदेश देकर ब्रह्माजी तिरोभूत हो गये। ५१८

मङ्गै पाहन्नै नोक्किमुन्न मौळिन्दन्न वरुडम्
तङ्गु मादवम् बुरिदलुन् दळ्निऱक् कडवुळ्

अङ्गु वन्दुनिन् करुत्तिनै मुडित्तुमॆन् ऱहन्ऱान्
गङ्गै यैत्तॊऴक् कालमै यायिरङ् गऴित्तान् 519

मङ्कै पाकनै नोक्कि–देवी (पार्वती) जिनका एक भाग है उनको चिन्त्य बनाकर; मुन् मॊऴिन्तन वरुटम्–पूर्वोक्त (दस सहस्र) वर्ष; तङ्कुम्–अचंचल; मातवम्–घोर तपस्या करने पर; तऴल् निऱम् कटवुळ्–अग्निवर्ण ईश्वर शिव; अङ्कु वन्तु–उधर आकर; निन् करुत्तिनै मुटित्तुम्–तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे; ऍन्ऱु–कहकर; अकन्ऱान्–तिरोभूत हुए; कङ्कैयै तॊऴ–गंगा के दर्शनार्थ; कालम् ऐयायिरम्–काल पाँच सहस्र वर्ष; कऴित्तान्–(तपस्या में) व्यतीत किये। ५१६

अर्धनारीदेव का ध्यान कर, भगीरथ ने, फिर से दस सहस्र वर्ष तपस्या की। अग्नि-प्रभ ईश्वर ने भगीरथ को दर्शन दिये और, 'हम तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे', यह कहकर चले गये। फिर से भगीरथ ने गंगा के ध्यान में पाँच सहस्र वर्ष तपस्या की। ५१९

ऑरुम डक्कॊडि याहिवन् दुनदुमा दवमॆन्
पॊरुपु नऱ्कॊडि वरिन्वळ् वेहमार् पॊरुप्पार्
अरन् रैत्तशॊल् विनोदमऱ् ऱिन्ऱुनी यऱिन्दु
पॆरुहु नऱ्ऱवम् बुरिहॆन पॆयर्न्दाळ् 520
वरनदि

वरम् नति–वर नदी; ऑरु मट कोटि आकि वन्तु–एक बाल-लता सी कन्या बन के आकर; उनतु मा तवम् ऍन्–तुम्हारी बड़ी तपस्या काहे के लिए; पॊरु पुतल् कॊटि वरिन्–तरंगपूर्ण जल-धार आवे; अवळ् वेकम्–उसका वेग; पॊरुप्पार् आर्–(रोकनेवाले) धारण करनेवाले कौन हैं; अरन् उरॆत्त चॊल्–हर का कथन; विनोतम्–परिहास है; इन्ऱु नी अऱिन्तु–अब तुम समझो, और; पॆरुकु नल् नवम्–और भी अच्छा तप; पुरिक–करो; ऍन्–कहकर; पॆयर्न्ताळ्–अदृश्य हो गयी। ५२०

वर नदी गंगा इनके तप से संतुष्ट होकर एक बाल-लता-सी सुन्दरी कन्या के रूप में प्रकट हुई और बोलीं— तुम्हारी कड़ी और बड़ी तपस्या का क्या अर्थ है? गंगा का सवेग प्रवाह आयेगा तो उसको रोक सकेगा कौन? हर ने जो कहा वह परिहास था। तुम यह समझो और अधिक तपस्या करो। यह कहकर वह अदृश्य हो गयीं। ५२०

करन्दै मत्तमो डॆरुक्कलर् कूविळङ् गडुक्कै
निरन्द पॊऱ्चडै निन्मलक् कॊऴुन्दिनै निनैया
अरन्दै युऱ्ऱव निरण्डरै यायिर माण्डु
पुरिन्दु नऱ्ऱवम् पॊलिदर वरैमहळ् पुनिदन् 521

अरन्तै उऱ्ऱवन्–दुखी हुए; करन्तै–(शिव-) तुलसी (पत्र); मत्तमोटु–धतूरे (फूलों) के साथ; ऍरुक्कु अलर्–अर्क के फूल; कूविळम्–विलवपत्र; कटुक्कै–अमलतास के फूल; निरन्त–भरे; पॊन् चटै–सुनहली जटा वाले; निन्मलम्–निर्मल; कॊऴुन्तिनै–(अग्नि-) ज्वाला-सम (शिवजी) को; निनैया–ध्यान कर; इरण्टरै

आयिरम् आण्टु–ढाई सहस्र वर्ष; नल् तवम् पुरिन्तु–अच्छी तपस्या करके; पोलि तर–शोभायमान रहते (समय); वरै मकळ् पुनितन्–पर्वतकुमारी-पति, पवित्र ईश्वर। ५२१

भगीरथ यह सुनकर बहुत खिन्न हो गये। फिर उन्होंने ईश्वर शंकरजी के, जिनकी जटाएँ, (शिव-) तुलसी और बिल्व के पत्र, और धतूरे, अर्क और अमलतास के फूलों से अलंकृत और सुनहली रहती हैं और जो निर्मल अग्नि-ज्वाला के समान कांतियुक्त हैं, ध्यान में ढाई सहस्र वर्ष तप किया। तप से तेजोवान हुए उनके सामने पार्वती-पति प्रकट हुए। ५२१

ऍदिर्न्दु निन्निनै वॅन्नॅन्न विरैञ्जियॅम् बॅरुम
अदिर्न्दु गङ्गैयी दरैन्दन ळॅन्ऱलु मञ्जल्
पिदिर्न्दि डावहै कात्तुमॅन् ऱेहिय पिन्नै
मुदिर्न्द मादव मिरण्डरै यायिर मुडित्तान् 522

ऍतिर्न्तु–सामने आकर; निन् नितैवु ऍन् ऍत–तुम्हारी क्या इच्छा है, पूछते समय; इरैञ्चि–विनय करके; ऍम् पॅरुम–मेरे देव; कङ्कै–गंगाजी ने; अतिर्न्तु–(दिल) दहलाते हुए; ईतु अरैन्ततळ्–यह कहा; ऍन्ऱलुम्–कहते ही; अञ्चल्–मत डरो; पितिर्न्तिटा वकै–न छलके ऐसा; कात्तुम्–रोक लूंगा; ऍन्ऱु–कहकर; एकिय पिन्नै–जाने के पश्चात्; मुतिर्न्त–गम्भीर; मा तवम्–कठोर तपस्या; इरण्टरै आयिरम्–ढाई सहस्र (वर्ष); मुटित्तान्–कर चुके। ५२२

(भगीरथ के सामने प्रकट होकर) उन्होंने पूछा कि अब तुम क्या चाहते हो? भगीरथ ने विनय की कि मेरे देव! गंगाजी ने मेरा दिल तोड़ते हुए यह कह दिया कि आपका वचन परिहास में कहा वचन है। तब ईश्वर ने धैर्य दिलाते हुए कहा कि मत डरो। सचमुच हम रोकेंगे। वह थोड़ा भी छलक ही नहीं पायेगी। यह कहकर वे चले गये। पश्चात् भगीरथ ने और ढाई सहस्र वर्ष गंगाजी के प्रति तपस्या की। ५२२

पॅरुहु नीरॉडु पूदियुम् वायुवुम् बिऱङ्गु
शरुहम् वॅङ्गदि रॉळियैयुन् दुय्त्तदु तनैयुम्
परुह लिन्ऱियु मुप्पदि नायिरम् परुवम्
मुरुहु कादलिन् मन्नव नरुन्दव मुयन्ऱान् 523

मन्नवन्–राजा भगीरथ; पिऱङ्कु चरुकुम्–(हरीतिमा) बदलकर शुष्क बने पत्ते; पूतियुम्–भूति; पॅरुकुम् नीरॉटु–बहते जल के साथ; वायुवुम्–वायु को; वॅम् कतिर्–गरम सूर्य की; ऑळियैयुम्–किरणों को; तुय्त्तु–अशन कर; अतु तनैयुम् परुकल् इन्ऱियुम्–उसको भी खाये बिना; मुप्पतिनायिरम् परुवम्–तीस सहस्र संवत्सर; मुरुकु कातलिन्–वर्धनशील श्रद्धा के साथ; अरु तवम् मुयन्ऱान्–कठिन तपस्या पूरी की। ५२३

इस तरह भगीरथ ने कुल मिलाकर तीस सहस्र वर्ष तक तपस्या

की। ब्रह्मा, शिव, गंगा, फिर शिव, फिर गंगा को उद्देश्य बनाकर पाँच बारियों में तपस्या की। उनमें चार में क्रमशः सूखे पत्ते, धूलि और जल, वायु और सूर्य-किरणों का आश्रय लिया। पाँचवीं में कुछ भी नहीं लिया। यह कठोर तपस्या थी और उन्होंने श्रद्धा और चाह के साथ उसे पूरा किया। ५२३

उन्दि	यम्बुयत्	तुदित्तव	नुरैदरु	मुलहुम्
इन्दि	रादिय	रुलहमुम्	वॅरुवुऱ्	विरैत्तु
वन्दु	तोन्ऱिनळ्	वरनदि	मलैमहळ्	कॊऴ्नन्
शिन्दि	डादॊरु	शडैयिनिऱ्	करन्दनन्	शेर 524

वर नति–श्रेष्ठ नदी; उन्ति अम्पुयत्तु उतित्तवन्–श्रीविष्णु के नाभी-कमल पर उदित (ब्रह्माजी); उऱै तरुम् उलकुम्–जहाँ रहते हैं, उस लोक को (और); इन्तिर आतियर् उलकमुम्–इन्द्रादि देवों के लोकों को; वॅरुवु उऱ–डराते हुए; इरैत्तु–गर्जन करती हुई; वन्तु तोन्ऱिनळ्–आ अवतरित हुईं; मलै मकळ् कॊऴुनन्–गिरिजापति (ने); चेर चिन्तिटातु–बिल्कुल छलकने न देकर; ऑरु चटैयितिल्–एक जटा के अन्दर; करन्तनन्–छिपा लिया। ५२४

गंगाजी अवतरित हुईं। वह अहंकार-पूर्ण होकर इतने वेग और नर्दन के साथ उतरीं कि ब्रह्मा और अन्य सुरों के लोक डर गये। तब गिरिजापति ने उन्हें अपनी एक जटा के अन्दर निहित कर दिया। ५२४

पुन्नु	नित्तरु	पनियॆन	वानदि	पुनिदन्
शॆन्नि	यिऱ्करन्	दॊळित्तलुम्	वणङ्गिनन्	ऱिहैत्तु
मन्न	निऱ्रलुम्	वरुन्दनज्	जडैयळ्वा	नदियिन्
रॆन्न	विट्टन	नॊरुशिऱि	दवनिपोन्	दिऴिन्दाळ् 525

वान् नति–आकाशगंगा के; पुल् नुनि तरु पनि ऍन–घास की नोक पर पड़ी हुई ओस-बूंद के समान; पुनितन् चॆन्नियिल्–पवित्र ईश्वर की जटा में; करन्तु ऑळित्तलुम्–छिप जाते ही; मन्नन्–राजा; वणङ्किनन्–नत हुए; तिकैत्तु–भ्रमित; निऱ्ऱलुम्–खड़े होने पर; वरुन्तल्–दुखी मत; वान् नति–सुरनदी; इनृ–अब; नम् चटैयळ्–हमारी जटा की अन्तर्वासिनी है; ऍन्न–ऐसा कहकर; ऑरु चिऱितु विट्टनन्–थोड़ा बाहर छोड़ा; अवनि इऴिन्तु पोन्ताळ्–भूमि पर उतरकर आयीं। ५२५

गंगाजी केवल घास की नोंक पर की ओस-बिंदु के समान रह गयीं। शिवजी की जटा से बाहर दिखाई नहीं दीं। यह देख भगीरथ चित्त-भ्रमित हो गये। शिवजी का नमस्कार करके वे अचल खड़े रहे। तब शंकर जी ने अभय दिया। चिन्ता मत करो। देवनदी हमारी जटा-वासिनी हो गयी है, यह कहकर उन्होंने एक छोटा अंश बाहर निकाला, वह भूमि पर उतर आयीं। ५२५

इऴिन्द गङ्गैमुन् मन्नवन् विरैवोडु मेहक्
कऴिन्द मन्नवर् गतिपॅऱ मुडुहिय कदियाल्
अऴुन्दु मादवच् चन्नुवित् वेळ्वियै यऴिप्पक्
कॉळुन्दु विट्टॅरि वॅहुळियन् कुडङ्गयिऱ् कॉळ्ळा 526

इऴिन्त कङ्कै मुन्–निसृत गंगा के सामने; मन्नवन्–राजा; विरैवोटुम् एक–सवेग जाते थे तब; कऴिन्त मन्नवर् कति पॅऱ–मरे राजाओं के सद्गति पाने के लिए; मुटुकिय कतियाल्–द्रुत गति के कारण; अऴुन्तुम् मा तवम्–(याग-) चिन्तनमग्न, महान तपस्वी; चन्तुविन् वेळ्वियै–जह्नु के यज्ञ को; अऴिप्प–बिगाड़ते समय; कॉळुन्तु विट्टु–ज्वाला देकर; ऍरि–जलनेवाली अग्नि सम; वॅकुळियन्–क्रोधवाले बनकर; कुटङ्कैयिल् कॉळ्ळा–चुल्लू में भरकर । ५२६

नीचे उतरकर गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलने लगीं। भगीरथ अपने पितरों को सद्गति दिलाने की त्वरा में जा रहे थे। पीछे आती रही गर्वीली गंगा ने मार्ग में तपोमय जह्नु जो यज्ञ कर रहे थे उसको बिगाड़ दिया। महर्षि को अपने यज्ञ की स्थिति देखकर अपार क्रोध हुआ। उन्होंने गंगाजी को अपने चुल्लू में भरकर लिया। ५२६

उण्डु वन्दनन् मऱैमुनिक् कणङ्गळ्कण् डुवप्पक्
कण्डु वेन्दनुम् वणङ्गिमुन् निहळ्न्दन कळऱक्
कॉण्डु पोहॅनच् चॅविवऴिक् कॉडुत्तनन् कुदित्तु
विण्डु नीङ्गिन रुडलुहु पॉडियिन्मे विनळे 527

मऱै मुनि कणङ्कळ्–वेदविद्वान ऋषियों को आनन्द देते हुए; उण्टु उवन्तनन्–पीकर तृप्त हुए; वेन्तनुम् कण्टु–राजा भी देखकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; मुन् निकऴ्न्तन कळऱ–पहले घटित (समाचार) कहने पर; कॉण्टु पोक–ले जाओ; ऍन–कहकर; चॅवि वऴि–कर्ण द्वारा; कॉटुत्तनन्–जाने दिया; कुतित्तु–उछलकर; विण्टु नीङ्किनर्–प्राणों से अलग हो मरे हुओं के; उटल् उकु–शरीरों के बने; पॉटियिल्–भस्म पर (से); मेविनळ्–होती हुई बह चलीं । ५२७

उनके तप की महिमा से गंगाजी उतनी छोटी हो गयीं। महर्षि ने उसे आचमन कर लिया। वेदज्ञ ऋषि सब विस्मित खड़े रह गये। महर्षि भी शान्त और तृप्त हो गये। तब भगीरथ को अपनी चिन्ता थी। उन्होंने महर्षि का नमस्कार कर उनसे सारी वातें कहीं। महर्षि आर्द्र हुए। उन्होंने अपने कर्ण से गंगाजी को वाहर छोड़ा और कहा कि ले जाओ। बाद, गंगा वह चलीं और सगर-पुत्रों के शरीरों के बने भस्म पर से होती हुई आगे बहीं। (इससे गंगाजी जाह्नवी कहलाती हैं)। ५२७

निरैय मुऱ्ऱुळल् शहरर्ह ळॅडुङ्गदि शॅल्ल
विरैम लर्पॉऴिन् दार्त्तन्न विण्णवर् कुऴाङ्गळ्

मुरश मुऱ्ऱिय पल्लिय मुऱैमुऱै तुवैप्प
अरश नप्पॊऴुदणिमदि लयोत्तिमोण् टडैन्दान् 528

निरॅयम् उऱ्ऱु उऴल्–नरक में पड़कर संकट उठाते रहे; चकरर्कळ्–सगर-पुत्र; नॅट्टु कति चॅल्ल–अमर सद्गति में पहुँचे, तब; विण्णवर् कुऴाङ्कळ्–देवगणों ने; विरै मलर्–सुवासपूर्ण पुष्प; पॊऴिन्तु–वरसाकर; आर्त्तन–आनन्द-रव किया; अप्पॊऴुतु–तब; अरचन्–राजा भगीरथ; मुरचम्–भेरी; मुऱ्ऱिय पल् इयम्–पूर्ण रीति से विविध वाद्य; मुऱै मुऱै तुवैप्प–बारी-बारी से बजे, तब; मीण्टु–लौट आकर; अणि मतिल्–सुन्दर प्राचीरवाले; अयोत्ति अटैन्तान्–अयोध्यानगर पहुँचे। ५२८

भगीरथ के प्रयत्न से गंगाजी भूमि पर अवतरित हुई और सगर-पुत्र भयंकर नरक-वास छोड़कर अमर सद्गति को पहुँच गये। इसको देखकर देवगण ने सुमन-वर्षा करायी और वाहवाही मचायी। भेरी और अन्य समूचे वाद्यों के नाद के साथ भगीरथ सुन्दर प्राचीर वाले अयोध्या नगर आये। (प्राचीरों की महिमा के कारण अयोध्या तब तक सुरक्षित रही।)। ५२८

अण्ड कोळहैक् कप्पुऱत् तादियन् ऱळन्द
पुण्ड रीहमॅन् मलरडिप् पिऱन्दुपू महनार्
कॊण्ड तीर्त्तमाय्प् पहिरदन् ऱवत्तिनाऱ् कॊणर
मण्ड लत्तिन्वन् दडैन्ददिम् मानदि मैन्द 529

मैन्त–राजकुमार; इ मा नति–यह महानदी; अण्टम् कोळकैक्कु–अण्डगोल के; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़; आति–आदि पुरुषोत्तम (ने); अन्ऱु अळन्त–उस दिन (जिनसे) नापा; मॅल् पुण्टरीकम् मलर् इटै–(उन) कोमल कमल चरणों में; पिऱन्तु–उत्पन्न होकर; पू मकनार्–कमल-पुत्र, ब्रह्मा के; कॊण्ट–गृहीत; तीर्त्तम् आय्–तीर्थ बनकर; पकिरतन् तवत्तिनाल् कॊणर–भगीरथ के तपोबल से लाने के कारण; मण् तलत्तिन्–भूतल में; वन्तु–आकर; अटैन्ततु–पहुँची। ५२९

हे चक्रवर्ती-तनय! श्रीराम! यह महानदी विष्णु के त्रिविक्रमावतार के समय के उन चरणों से निकलती है, जिनसे भगवान ने लोकों को नापा था। इस अंडगोल के उस पार्श्व में इस नदी का जन्मस्थान है। फिर वह ब्रह्मा द्वारा अपने कमण्डल में गृहीत होकर पुण्य-सलिला बनीं। बाद, भगीरथ की तपस्या से वह भूतल में पहुँचीं। ५२९

सगरर् तम्बॉरुट् टरुन्दव नॅडुम्बह ऱऴिप्
पहिर दन्कॊणरन् दिडुदलाऱ् पहिरदि याहि
महित लत्तिडैच् चन्नुविन् शॅविवऴि वरलाल्
निहरिल् शान्नवि यॅन्नप्पॅयर् पडैत्तदिन् नीत्तम् 530

पकिरतन्–भगीरथ; चकरर् तम् पॊरुट्टु–सगरपुत्रों के वास्ते; नॅटु पकल्–अधिक लम्बे काल को; अरु तवम्–कठोर तपस्या में; तऴि–व्यतीत करके;

मकितलत्तु इटै कॊणरन्तिट्टुतलाल्–महीतल में लाये, इसलिए; इ नीत्तम्–यह धारा; पकिरति आकि–भागीरथी बनकर; चन्नुविन्–जह्नु के; चॆवि वऴि वरलाल्–कर्ण द्वारा आने से; निकर् इल् चानवी–अनुपम जाह्नवी; ॲत पॆयर्–इस नाम को; पटैत्ततु–धारिणी बनीं। ५३०

भगीरथ ने सगर-पुत्रों के उद्धारार्थ अनेक सहस्र वर्षों का समय तपस्या में व्यतीत किया; तब जाकर गंगाजी को वे महीतल पर ला सके। इस कारण वह भागीरथी बनीं। फिर जह्नु के कर्ण से बाहर आने के कारण उनका नाम जाह्नवी पड़ा। यह अनुपम जाह्नवी हैं। ५३०

ॲन्ऱु कूऱलुम् वियप्पित्तॊ डुवन्दन रिऱैञ्जिच्
चॆन्ऱु तीर्न्दनर् गङ्गैयै विशालैवाऴ् शिहरक्
कुन्ऱु पॊऱ्पुयत् तरशन्वन् दिणैयडि कुऱुह
निन्ऱु नल्लुरै विळम्बिमऱ् ऱवुवयि नीङ्गा 531

ॲन्ऱु कूऱलुम्–ऐसा वृत्तान्त कहने पर; वियप्पित्तॊटु–विस्मय के साथ; उवन्तनर्–आनन्दित हुए; कङ्कैयै इऱैञ्चि–गंगाजी की वन्दना करके; चॆन्ऱु–जाकर; तीर्न्तनर्–दूसरे पार गये; विचालै वाऴ्–विशालानगर में वास करनेवाले; चिकरम् कुन्ऱु पॊऱ् पुयत्तु—शिखर सह पर्वत-समान भुजावाले; अरचन् वन्तु–राजा (के) आकर; इणैयटि कुऱुक–चरण-द्वय पर नमस्कार करते समय; निन्ऱु–ठहरकर; नल् उरै विळम्पि–उपदेश के शब्द कहकर; मऱ्ऱु–बाद; अ वयिन्–उधर से; नीङ्का–चलकर। ५३१

महर्षि ने यह वृत्तान्त सुनाया तो श्रीराम और लक्ष्मण विस्मय और आनन्द से भर गये। उन्होंने गंगाजी की वन्दना की। फिर वे गंगा जी को पार कर विशाला नगर में आये। वहाँ उस नगर के पर्वत-सम भुजावाले राजा ने आकर मुनिवर के पैरों में नमस्कार किया। महर्षि रुके और उपदेश देकर राजकुमारों के साथ आगे बढ़े (इस पद में गंगा को दुबारा पार करने का उल्लेख आया है। पद्य ३३८ में सिर्फ़ नदी का ही उल्लेख है; नाम नहीं दिया गया है। वालमीकी सरयू-गंगा संगम पर गंगा को पार करने की बात कहते हैं। बालकाण्ड २४वाँ सर्ग श्लोक ५-१०। विशाला नगर के राजा का नाम सुमति था। इसका वंश बालमीकी में पूर्णतः वर्णित है)। ५३१

पळ्ळि नीङ्गिय पङ्गयप् पळ्ननन् नारै
वॆळ्ळ वान्कळै कळैवुरु कडैशियर् मिळिर्न्द
कळ्ळ वाणॆडुङ् गण्णिळल् कयलॆनक् करुदा
अळ्ळि नाणुरु महन्पणै विदेहना डणैन्दार् 532

पळ्नम्–खेतों में; पङ्कयम् पळ्ळि नीङ्किय–कमल-शय्या छोड़ जो उठे थे; नल् नारै–अच्छे सारस; वॆळ्ळम्–जल में; वान् कळै–दृढ़ निराने योग्य पौधों को;

कळैवु उऱ–निराती रही; कटैच्चियर्–कृषक स्त्रियों की; मिळिर्न्त–चंचल; कळ्ळम् वाळ्–चातुर्य भरी और तलवार-सम; नॅटुकण् निऴल्–आयत आँखों की परछाईं को; कयल् ॲन करुता–कयल् नाम की मछली समझकर; अऴ्ऴि–चोंच मारकर; नाण् उऱुम्–(असफल होकर) शरम खाते हैं, (ऐसे खेतों वाले); वितेक नाटु अणॅन्तार्–विदेह देश गये । ५३२

वे अब विदेह, जनक के देश में आ गये। पहले कवित्वपूर्ण मनोरंजक रीति से कवि, देश की सीमा पर रहनेवाले खेतों का वर्णन करते हैं। खेतों में कमल-शय्या पर से जाग उठे सारस पक्षी भूख मिटाने के लिए मछलियों की खोज में विचर रहे हैं। तब वहाँ खेत निराने के लिए कृषक-रमणियाँ आयी हैं। झुकी हुई उनकी तलवार सम आयत, वंचना- (चातुर्य-) भरी और सुन्दर आँखों की परछाई खेत के जल में पड़ती हैं। उनको सारस पक्षी भ्रम से कयल नाम की मछलियाँ समझ लेते हैं और उनको पकड़ने के लिये चोंच मारते हैं। पर चोंच में कुछ नहीं आता। अतः वे अपनी नासमझी और असफलता से लजा जाते हैं। ५३२

वरम्बिल् वान्शिरै मदहुहण् मुऴवॊलि वऴङ्ग
अरुम्बु नाण्मल रशोहुह ळलर्विळक् कॅडुप्प
नरम्बि नान्ऱतेन् ऱारैहॊ णऱुमलर् याऴिन्
शुरुम्बु पाण्शॅयत् तोहैनिन् ऱाडुव शोलै 533

चोलै–उद्यानों में; वरम्पु इल्–निस्सीम; वान् चिऱै मलकुकळ्–विशाल जलाशयों की नालियाँ; मुऴवु ऑलि वऴङ्क–मर्दल नाद के समान स्वर करते हैं; अरुम्पु नाळ् मलर्–तभी हुए नवीन फूलों वाले; अचोकुकळ–अशोकवृक्ष; अलर् विळक्कु ॲटुप्प–(ज्योति) छिटकनेवाले (फूलों के) दीप धारण करते हैं; नरम्पिन् नान्ऱ–तन्त्री के समान चूनेवाले; तेन् तारै कॊळ्–शहद की धारा से युक्त; नऱु मलर् याऴिन्–सुवासपूर्ण फूलरूपी याऴ् (वीणा) पर; चुरुम्पु पाण् चॅय–अमर गीत गाते हैं; तोकै–कलापी (मोर); निन्ऱु–खड़े होकर; आटुव–नाचते हैं। ५३३

वहाँ के उद्यान अनोखे नाट्य-मंच बने हैं। जलाशयों से नालियों द्वारा जब जल बहता है तब नाद उठता है। वह मर्दल-स्वर के समान है। अशोक वृक्ष अपने सद्य विकसित फूलों के दीप धरते हैं। फूलों के गुच्छे वीणा हैं और उनसे टपकनेवाले शहद की धारें तंत्रियों के समान हैं। भ्रमर उन पर बैठकर गुंजार करते हैं। उनको देखने पर ऐसा लगता है कि भ्रमर वीणावादन कर रहे हों। इतने वैभवों के साथ मोर नाचते हैं। ५३३

पट्ट वाणुदन् मडन्दैयर् पार्प्पॆतुन् दूदाल्
ॲट्ट वादरित् तुऴल्बव रिदयङ्गळ वॆरुप्प
वट्ट नाण्मरै मलरित्मेल् वयलिडै मळ्ळर्
कट्ट कावियङ् गट्किडै काट्टुव कळनि 534

पट्टम्–पटट पहने; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाटवाली; मटन्तैयर्–स्त्रियों की; पार्प्पु–दृष्टि; अँतुम् तूताल्–रूपी दैत्य से; अँट्ट आतरित्तु–(खिचकर) पास आना चाहते हुए; उळल्पवर्–फिरनेवाले (कामी) पुरुषों के; इतयङ्कळ् वॆरुप्प–मनों को खिझाते हुए; कळनि–खेतों के प्रदेश में; वयल् इटै मळ्ळर्–खेतों में काम करनेवाले कृषक (द्वारा); कट्ट कावि–निराये गये नीलोत्पल पुष्प; वट्टम् नाळ् मरै मलरिन् मेल्–गोल नवीन कमल-पुष्पों पर; अम् कण् किटै काट्टुव–सुन्दर आँखों का भ्रम देते हैं। ५३४

कामुक लोग शिरोभूषणधारिणी स्त्रियों की दृष्टि के दौत्य से खिंचकर उनके पास जाना चाहते हैं। खेतों से कृषकों ने नीलोत्पल के पौधों को उखाड़कर पास के तडागों में फेंक रखे हैं। वे नीलोत्पल के फूल कमल पुष्पों पर पड़े रहते हैं। उन दोनों को देखकर ये लोग रमणी के मुखों और उनकी आँखों के भ्रम में पड़ जाते हैं और समझ लेते हैं कि स्त्रियाँ अपनी आँखों से इशारा कर रही हैं। वे उत्साह के साथ पास आते हैं तब सत्य प्रकट हो जाता है। उनका मन घृणा और क्रोध से भर जाता है। ५३४

तूवि यन्नन्द मिन्मेन्रु नडैकण्डु तौडरक्
कूवु मॆन्कुयिड् कुदलैयर् कुडैन्दतण् पुनल्वाय्
ओविल् कुङ्गुमच् चुवडुर् वौन्रौडौन् रूडिप्
पूवु ऱङ्गिनुम् पुळ्ळुरङ् गादन पॊय्है 535

कूवुम् मॆन् कुयिल्–कूकनेवाली मृदुल कोकिला की सी; कुतलैयर्–(अस्पष्ट मधुर) तोतली बोली वाली स्त्रियों की; नटै कण्टु–चाल देखकर; तूवि अन्नम्–सुन्दर परों वाले हंस; तम् इतम्–'हमारा वर्ग'; अँन्रु–समझकर; तॊटर–अनुगमन करते; कुटैन्त–गोता लगानेवाले; पुतल् वाय्–जल में; पुळ्–पक्षीगण; ओवु इल्–न पोंछ सकने की रीति से; कुङ्कुमम् चुवटु उऱ–कुंकुम-चिह्नों के लग जाने से; ऑन्रॊटु ऑन्रु उटि–एक दूसरे के साथ झगड़कर; पू उऱङ्कितुम्–पुष्पों के निमीलित होने के बाद भी; उऱङ्कातत–नहीं सोते हैं (जिनमें); पॊय्कै–(ऐसे) जलाशय हैं। ५३५

कोकिलकंठी, तुतली बोलीवाली स्त्रियों की चाल देखकर हंस समझ लेते हैं कि ये हमारे ही वर्ग की हैं। वे स्त्रियाँ सरोवरों में स्नान करने जाती हैं तो ये हंस भी उनके पीछे-पीछे जाकर गोता लगा लेते हैं। तब स्त्रियों के शरीर का कुंकुम-लेप हंसों पर खूब लग जाता है और नहीं छूटता। इससे हंसों में आपसी कलह हो जाता है। हर पक्षी दूसरे पर लगा चिन्ह देखता है और समझता है कि वह अजनबी है। कलह मच जाता है, और हंसिनी और हंस में भी रार मच जाती है। इसलिए फूलों के बन्द हो जाने के बाद भी ये हंस विना सोये आपस में झगड़ा करते रहते हैं। वहाँ के जलाशयों की स्थिति यह है। ५३५

मुरैयि	निऩ्मुदु	मेदियिऩ्	मुलैवऴि	पालुम्
तुरैयि	नित्ऱुयर्	माङ्गऩि	तूङ्गिय	शाऱुम्
अरैयु	मॅऩ्करुम्	बाट्टिय	वमुदमु	मऴिदेम्
नरैयु	मल्लदु	नळिर्पुनल्	पॅरुहल	नदिहळ् 536

नतिकळ्–नदियों में; मुतु मेतियिऩ् मुलै वऴि पालुम्–वयस्क भैंसों के थन से स्रवनेवाला दूध; तुरैयिल् निऩ्ऱु–घाटों पर खड़े; उयर् मा कनि–ऊँचे आम्र तरुओं के फलों से; तूङ्किय चाऱुम्–टपकता रस; अरैयुम्–टुकड़ों में कटे; मॅऩ् करुम्पु–कोमल ईख को; आट्टिय अमुतमुम्–पीसने से निकला सुधासम रस; अऴि–(छतों के) टूटने से बहनेवाला; तेम् नरैयुम्–मीठा शहद; मुरैयिनिल्–एक के बाद एक के क्रम से; अल्लतु–इनके बहने के सिवा; नळिर् पुनल्–शीतल जल; पॅरुकल–प्रवाहित हो नहीं आता। ५३६

वहाँ की नदियों की बात विचित्र है। उसमें पैठनेवाली भैंसों का दूध, घाट पर खड़े आम्रवृक्षों के फलों का रस, इक्षु का रस और शहद, यह सब अधिकता से बहता है। कवि कहते हैं कि इसमें जल का प्रवाह नहीं है, इन्हीं का बारी-बारी से प्रवाह आता है। ५३६

इळैक्कु	नुण्णिडै	यिडैतर	मुहडुयर्	कॉङ्गै
मळैक्कण्	मङ्गैय	ररङ्गिनिल्	वयिरियर्	मुऴवम्
मुऴक्कु	मिऩ्निशै	वॅरुविय	मोट्टिळ	मेदि
उळक्क	वाळैहळ्	पाळैयिर्	कुदिप्पऩ	वोडै 537

ओटै–नालों में; इळैक्कुम्–तागे से भी; नुण्–पतली; इटै–कटि (को); इटैतर–दुखानेवाले; मुकटु उयर्–पर्वत-सम उन्नत; कॉङ्कै–उरोजों; मळै कण्–मोहक नेत्रोंवाली; मङ्कैयर–रमणियों के; अरङ्किनिल्–नाट्य मंच पर; वयिरियर्–वादक लोगों के; मुऴवम् मुऴक्कुम्–मृदंग बजाने से (उठे); इऩ् इचै–मधुर संगीत से; वॅरुविय–भयभीत; मोट्टु इळ मेति–तगड़ी और छोटी आयु की भैंसें; उळक्क–(घुसकर) क्षुब्ध करती हैं, (तब); वाळैकळ्–वाळै जाति की मछलियाँ; पाळैयिल्–नारियल, सुपाड़ी आदि पेड़ों की डंठलों पर; कुतिप्पऩ–उछल जाती हैं। ५३७

उस देश के नालों में ये दृश्य देखने को मिलते हैं। नाट्य-मंच पर मनोहारिणी अंगनाएँ अपनी सूत-सी पतली कटियों; पर्वत-सम उन्नत उरोजों जो उन कटियों को लचका देते हैं; और शीतल (स्नेहपूर्ण) नेत्रों के साथ नृत्य कर रही हैं। वहाँ मृदंग बजाया जाता है। उस शब्द से डरकर भैंसें भागती हैं और नालों में घुसकर जल को क्षुब्ध करती हैं। तब वाळै मछलियाँ उछलती हैं और किनारे पर उगे नारियल, सुपाड़ी आदि के पेड़ों के डंठलों पर जा बैठती हैं। वहाँ के मधु को पीकर मत्त बनती हैं। यह बात कोसल-देश-वर्णन में भी आयी है। सब जगह मत्तता है, समृद्धि है, यही इस पद का तात्पर्य है। ५३७

पडैनॅ डुङ्गण्वा ळुरॅपुहप् पडर्पुनऩ् मूऴ्हिक्
कडैय मुऩ्कडर् चॅळुऩ्दिरु वॅळुम्बडि काट्टि
मिडैयुम् वॅळवळै पुळ्ळॊडु मॊलिप्पमॅल् लियलार्
कुडैय वण्डिऩङ् गडिमलर् कुडैवऩ कुळङ्गळ् 538

कुळङ्कळ्–तालाबों में; मॅल् इयलार्–सुकुमारियाँ; मिटैयुम् वॅळ् वळै–पहनी हुई शंख की चड़ियों के; पुळ्ळॊटुम् ऑलिप्प–पक्षियों के साथ कलनाद करते; नॅटु कण् वाळ् पटै–दीर्घ नेत्ररूपी तलवारों के अस्त्रों के; उऱै पुक–(पलकों के) म्यान में घुसते; पटर् पुऩल् मूऴ्कि–विशाल तल के जल में डूबकर; मुऩ् कटल् कटैय–प्राचीन समय में सागर मंथन करते समय; चॅळु तिरु–मनोहारिणी श्रीदेवी के; ऍळुम् पटि काट्टि–उठ आने के प्रकार से; कुटैय–घुसकर तैरती उतराती हुई स्नान करती है, तब; वण्टु इऩम्–मधुमक्खियाँ; कटि मलर् कुटैवऩ–सुगन्धित फूलों में घुसकर कुरेदती हैं। ५३८

तालावों की बात देखिये। कोमलांगी स्त्रियाँ उनमें स्नान करती हैं। तब उनके हाथ की श्वेत चूड़ियाँ खनखना उठती हैं। वह खनक पक्षियों की कल-कल ध्वनि के समान है। वे गोता लगाते समय आंखें मूंद लेती हैं। उसको देखकर कवि कल्पना करते हैं कि वे अपनी आयत आँखोंरूपी तलवारों को पलकरूपी म्यानों के अन्दर रख लेती हैं। जब वे स्नान करके ऊपर उठती हैं तब वे श्रीलक्ष्मीदेवी के समान लगती हैं जो क्षीरसागर-मंथन के अवसर पर प्रकट हुई थीं। वे जब जल में पैठती हैं और जल को खूब हिला देती हैं तब मधुमक्खियाँ फूलों में घुसकर शहद के लिए खूब कुरेद देती हैं। ५३८

इऩैय नाट्टिडै यिऩिदुचॅऩ् रिञ्जिशूऴ् मिदिलैप्
पुऩैयु नीळ्कॊडिप् पुरिशैयिऩ् पुऱत्तुवन् दिऱुत्तार्
मनैयिन् माट्चियै यऴित्तुयर् मादवऩ् पऩ्नि
कनैयु मोट्टुयर् करुङ्गलोर वॅळ्ळिडैक् कण्डार् 539

इऩैय नाटु इटै–ऐसे देश में; इऩितु चॅऩ्ऱु–रमते हुए जाकर; इञ्चि चूऴ्–प्राचीर-वलयित; मितिलै–मिथिला की; पुऩैयुम् नीळ् कॊटि–अलंकृत उच्च पताकाओं वाले; पुरिचैयिऩ् पुऱत्तु–प्राचीर के इस पार; वन्तु इऱुत्तार्–आकर ठहरे; ओर् वॅळ् इटै–एक मैदान में; मनैयिऩ् माट्चियै अऴित्तु–गृहस्थी की गरिमा मिटाकर; उयर् मातवऩ् पऩ्ऩि–श्रेष्ठ महातपस्वी की पत्नी (अहल्या) के; कनैयुम् मोट्टु उयर्–कठोर और उन्नत; करुङ्कल्–काले प्रस्तर-रूप को; कण्टार्–देखा। ५३९

इस देश से होकर वे तीनों प्राचीरों से घिरी हुई मिथिला नगरी के पास पहुँच गये। उनको यात्रा बड़ा सुख दे रही थी। वे प्राचीर के इस तरफ़ ठहरे। तब वहाँ खुले मैदान में उन्होंने एक उन्नत कठोर प्रस्तर की मूर्ति पड़ी देखी। वह श्रेष्ठ तपोधन गौतम की पत्नी का शाप-प्राप्त

रूप था, क्योंकि अहल्यादेवी ने गृहस्थी की गरिमा को बिगाड़ते हुए अपना चरित्र खोया था। ५३९

कण्ड कन्मिशैक् काहुत्तन् कऴऱ्ऱुहळ् कदुव
उण्ड पेदैमै मयक्कऱ् वेरुपट् टुरुवम्
कोण्डु मॆय्युणर् बवन्कळल् कूडिय दॊप्पप्
पण्डै वण्णमाय् निन्ऱनण् मामुनि पणिप्पान् 540

कण्ट कल् मिचै–दृष्ट प्रस्तर पर; काकुत्तन् कऴल् तुकळ्–काकुत्स्थ की चरण-धूलि के; कतुव–लगने पर; मॆय् उणर्पवन्–सत्यद्रष्टा; उण्ट पेतैमै मयक्कु–सहज अविद्या के भ्रम के; अऱ–दूर होने पर; वेऱु पट्ट उरुवम् कॊण्टु—अविद्या-प्राप्त रूप से विभिन्न अपना सच्चा रूप लेकर; कऴल् कूटियतु ऒप्प–ईश्वरचरण प्राप्त हुआ जैसा; पण्टै वण्णम् आय्–पुराना रूप बनकर; निन्ऱनळ्–खड़ी हुई; मा मुनि–महिमावान ऋषि; पणिप्पान्–बोलने लगे। ५४०

उस प्रस्तर पर काकुत्स्थ की चरण-धूली लगी। लगते ही अहल्या अपने पूर्व-रूप में आकर खड़ी हो गयीं। उनकी वह स्वरूप-प्राप्ति ऐसी थी जैसे अविद्या-प्राप्त मिथ्या-रूप को छोड़कर ज्ञानी आत्म-रूप पा गये हों और अपने भगवान के चरणारविन्दों पर आये हों। तब कौशिक श्रीराम से कहने लगे। ५४०

मायिरु विशुम्बिऱ् कङ्गै मण्मिशै यिऴित्तोन् मैन्द
मेयिन वुवहैयोडु मिन्नॆन वॊडुङ्गि निन्ऱाळ्
तीविनै नयन्दु शॆय्द तेवर्को मार्कुच् चॆङ्गण्
आयिर मळित्तोन् पन्नि यहलिहै याहु मॆन्ऱान् 541

मा इरु विचुम्पिल्–बहुत बड़े आकाशलोक में रही; कङ्कै–गंगा को; मण् मिचै–भूतल पर; इऴित्तोन्–उतारनेवाले (भगीरथ) के; मैन्त–वंशज कुमार; मेयित उवकैयोटुम्–उत्पन्न आनन्द के साथ; मिन् ॲंत–विद्युल्लता के समान; ऒटुङ्कि निन्ऱाळ्–विनत होकर खड़ी रहनेवाली (ये); तीविनै नयन्तु चॆय्त–दूषित काम चाहकर जिन्होंने किया; तेवर् कोमाऱ्कु–उन देवराज को; आयिरम् चॆम् कण्–सहस्र सुन्दर नेत्र; अळित्तोन्–दिलानेवाले की; पन्नि–पत्नी; अकलिकै–अहल्या; आकुम्–हैं। ५४१

आकाशगंगा को भूमि पर उतार लानेवाले राजा भगीरथ के वंशज, हे श्रीराम! ये जो आनन्द के साथ विनत होकर आपके सामने खड़ी हैं गौतम ऋषि की पत्नी हैं। इन्द्र ने जानबूझकर अपराध किया था जिसके फलस्वरूप गौतम ने उन्हें सहस्र सुन्दर नेत्र प्रदान किये थे। (कौशिक जी के इस कथन में कवि का चातुर्य देखने की वस्तु है। सचमुच अहल्या और देवेन्द्र का कार्य गर्ह्य था। तो भी कवि विश्वामित्र के मुख से अशिष्ट बातें नहीं करवाते।)। ५४१

पॊन्नैयेय् शडैयान् कूऱक् केट्टलुम् बूमिकेळ्वन्
ऎन्नैये यॆन्नै येयिव् वुलहिय लिरुन्द वण्णम्
मुन्नैयूळ् विनैयिनालो नडुवॊन्ऱु मुडिन्त दुण्डो
अन्नैये यनैयाट् किव्वा ऱडुत्तवा ऱरुळुहॆन्ऱान् 542

पॊन्नैये एय्–स्वर्ण की ही समता (रंग में) करनेवाली; चटैयान्–जटा-भूषित (ऋषि) के; कूऱ–कहते; केट्टलुम्–सुनने पर; पूमि केळ्वन्–महीपति (श्रीराम) ने; ई उलकु इयल्–इस लोक की प्रकृति; इरुन्त वण्णम्–रहने का रंग-ढंग भी; ऎन्नै ऎन्नै–कैसा है, कैसा; अन्नैये अनैयाट्कु–(लोक-) माता-सी इनकी; इव्वाऱु अटुत्त आऱु–यह स्थिति होने का कार्य; मुन्नै ऊळ् विनैयिनालो–पूर्वकृत प्रारब्ध कर्म से; नटु ऒन्ऱु–मध्य में कोई; मुटिन्ततु उण्टो–घटा कुछ है; अरुळुक–कहने की कृपा करें; ऎन्ऱान्–पूछा। ५४२

सुनहली जटा से शोभित मुनि का यह कथन सुनकर महीपति श्रीराम को अपार आश्चर्य हो गया! उन्होंने कहा— संसार की गति भी कितनी विचित्र है! इसका रंग-ढंग कितना अनोखा है! ये तो लोकमाता-सदृश हैं। इनकी क्यों ऐसी स्थिति हुई? यह इनके प्रारब्ध का फल है या इस जन्म में कोई ऐसा अपराध हो गया? कृपा कर बताइये। ५४२

अव्वुरै यिरामन् कूऱ वऱिज्ञनु मवनै नोक्किच्
चॆव्वियोय केट्टि मेनाट् चॆऱिशुडरक् कुलिशत्तण्णल्
अव्विय मवित्त शिन्दै मुनिवनै यऱ्ऱ नोक्कि
नव्विपोल् विळियि नाडन् वनमुलै नयत्त लुऱ्ऱान् 543

इरामन् अ उरै कूऱ–श्रीराम (के) वह वचन कहने पर; अऱिज्ञनुम्–त्रिकालज्ञ (कौशिक) ने; अवनै नोक्कि–उनको देखकर; चॆव्वियोय्–सद्गुण सम्पन्न; केट्टि–सुनिये; मेल् नाळ्–पुराने समय में; चॆऱि चुटर्–अधिक प्रकाशमय; कुलिचत्तु अण्णल्–कुलिश के धारक (ने); अव्वियम् अवित्त चिन्तै–(कामादि) दुर्गुण-विमुक्त-चित्त; मुनिवन्–महर्षि की; अऱ्ऱम् नोक्कि–अनुपस्थिति जानकर; नव्वि पोल्–मृग की सी; विळियिनाळ् तन्–आँखोंवाली इनकी; वनम् मुलै–मनोरम् उरोजों के; नयत्तल्—संस्पर्श-सुख की चाह; उऱ्ऱान्–की। ५४३

श्रीराम के इस प्रश्न के उत्तर में त्रिकालज्ञ मुनि विश्वामित्र ने कहा— हे सद्गुणपूर्ण! (संकेत है कि श्रीराम अपराधों से अनभिज्ञ हैं क्योंकि अच्छे गुणों को ही जानते हैं।) पुराने समय में एक बात हुई— उज्ज्वल कुलिशपाणि इन्द्र ने दुर्गुण-विमुक्त व संयम-चित गौतम की मृगनयनी पत्नी का, उनकी अनुपस्थिति के समय, स्तन-संस्पर्श-सुख भोग करना चाहा। ५४३

तैयला णयन वेलुन् दनिमदन् शरमुम् बाय
उयला मुऱुदि नाडि युळ्ल्बव नॊरुना ळुऱ्ऱ
मैयला लरिवु नोङ्गि मामुनिक् कऱ्ऱञ् जॆय्दु
पॊय्यिला वुळ्ळत् तान्ऱ नुरुवमे कॊण्डु पुक्कान् 544

तैयलाळ्–स्त्री के; नयतम् वेलुम्–नयनरूपी भाले; तति–अनुपम; मतन् चरमुम्–मन्मथ के शर (के); पाय–लगकर अशान्त करने से; उय्यल् आम्–छूटने का; उऱुति नाटि–उपाय ढूँढते; उळल्पवन्–फिरनेवाले; ऒरु नाळ्–एक दिन; उऱ्ऱ मैयलाल्–उत्पन्न काम-मोह से; अऱिवु नीङ्कि–बुद्धि खोकर; मा मुतिक्कु–महामुनि को; अऱ्ऱम् चॆय्तु–अनुपस्थिति कराके; पॊय् इला–असत्य-रहित; उळ्ळत्तान् तन्–मन के मुनि का; उरुवमे कॊण्टु–वेष धरकर; पुक्कान्–(आश्रम में) प्रविष्ट हुए। ५४४

सुन्दरी स्त्री के नयनों के भाले और अद्वितीय अनर्थकारी मन्मथ के शर से आहत वे, उस पीड़ा से छूटने का उपाय ढूँढ़ते फिरे। काम-मोहित उनकी बुद्धि भ्रष्ट हुई। उन्होंने गौतम को आश्रम से हटाने का उपाय किया। (अबेर में मुर्गे के समान बांग दी और ऋषि स्नान-वेला समझकर नदी पर चले गये।) उनकी अनुपस्थिति में देवेन्द्र अनिन्द्य गौतम मुनि का वेष धरकर आश्रम में प्रविष्ट हो गये। ५४४

पुक्कव ळोडुङ् गामप् पुदुमण मदुविन् ऱेऱल्
ऒक्कवुण् डिरुतत लोडु मुणर्न्दत ळुणर्न्द पिन्नुम्
तक्कदन् ऱॆन्नत् तेऱा डाळ्न्दत ळिरुप्पत् ताळा
मुक्कण नतैय वाऱ्ऱन् मुतिवनु मुडुहि वन्दान् 545

पुक्कु–प्रवेश करके; अवळोटुम्–उन (अहल्या) के साथ; कामम् पुतु मणम्–काम-वासना-प्रेरित अपूर्व संगमरूपी; मतु इन् तेऱल्–मधुर छनी हुई शराब; ऒक्क–एकसम; उण्टु इरुत्तलोटुम्–भोगते रहते समय; उणर्न्ततळ्–समझ गयीं; उणर्न्त पिन्नुम्–समझने के बाद भी; तक्कतु अन्ऱु–उचित नहीं; ऎन्न–ऐसा; तेऱाळ्–नहीं सोचा (सँभली नहीं); ताळ्न्ततळ्–मग्न; इरुप्प–रह गयीं, तब; मुक्कणन् अतैय–त्रिलोचन-सम; आऱ्ऱल् मुतिवनुम्–शक्तियुत मुनि भी; ताळा–विना दूरी किये; मुटुकि–सवेग; वन्तान्–आये। ५४५

दोनों, देवेन्द्र और अहल्या, संभोग में लग गये। कामोद्दीप्त यह संगम अपूर्व था और उसने मधुर सुरा के समान उनको नशे में चूर कर दिया। दोनों समान रूप से आनन्दानुभव कर रहे थे। तब अहल्या देवी सत्य जान गयीं; तो भी संभल नहीं पायीं और मग्न रह गयीं। उसी समय त्रिलोचन शिवजी के समान शक्ति रखनेवाले महर्षि गौतम त्वरित गति से लौटकर आ गये। ५४५

शरन्दरु शाप मल्लाऱ् ऱडुप्परुञ् शाबम् वल्ल
वरन्दरु मुतिव नॆय्द वरुदलुम् वॆरुवि माया
निरन्दर मुलहि ऩिऱ्कु नॆडुम्बळि पूण्डा णिऩ्ऱाळ्
पुरन्दर नडुङ्गि याङ्गोर् पूशैयाय्प् पोह लुऱ्ऱान् 546

वरम् तरु चापम्–शर-प्रेरक चाप; अल्लाल्–के सिवा; तटुप्पु अरु–दुर्निवार; चापम् वल्ल–शाप दिला सकनेवाले; वरम् तरु–वरदायी; मुतिवन्–महर्षि;

अॅयृत वरुतलुम्–पास आये, तव; माया–अमर; निरन्तरम्–स्थिर; उलकिल् निऱ्कुम्–संसार में टिकनेवाली; नॅट्टु पऴि–दीर्घ निन्दा; पूण्टाळ्–प्राप्त करनेवाली (अहल्या); वॅरुवि–भीत होकर; नित्ऱाळ्–खड़ी रहीं; पुरन्तरऩ्–पुरन्दर; नटुङ्कि–थर्राकर; आङ्कु–तब; ओर् पूचै आय्–एक बिल्ली का रूप लेकर; पोकल् उऱ्ऱात्–जाने लगे। ५४६

गौतम मुनि के वचन, वर हो या शाप, दोनों तरह के, अचूक होते थे। शर-प्रेरक चाप का निवारण संभव था; लेकिन इनका शाप रोकना असम्भव था। वैसे ही उनके दिये वर भी सफल होते थे। गौतम को देखकर अमर स्थायी निन्दा का पात्र बनी अहल्या भयभीत हो एक ओर खड़ी रहीं। देवेन्द्र भी डर गये और एक बिल्ली का रूप लेकर भागने लगे। (तमिऴ में चाप, शाप दोनों एक ही तरह चापम् लिखा जाता है। यहाँ इस शब्द के तमिऴ और संस्कृत दोनों अर्थों में प्रयुक्त कर कवि ने चातुर्य दिखाया है)। ५४६

तीविऴि शिन्द नोक्किच् चॅय्ददै युणर्न्दु शॅय्य
तूयव नवनै नित्कैच् चुडुशर मनैय शॉल्लाल्
आयिर मादर्क् कुळ्ळ वरिहुरि युनक्कुण् डाहॅन्
ऱेयिन नवैयॅ लाम्वन् दियैन्दन विमैप्पिन् मुन्नर् 547

चॅय्य–आर्जवयुक्त; तूयवन्–पवित्र स्वभाववाले (ने); चॅय्ततै उणर्न्तु–(इन्द्र का) कृत्य जानकर; अवनै–उनको; विऴि ती चिन्त–आँखों से आग निकालते हुए; नोक्कि–देखकर; निन् कै–आपके हाथ के; चटुचरम् अनैय–संतापी शर के समान; चॉल्लाल्–(अमोघ) शब्दों में; मातर्क्कु उळ्ळ–स्त्रियों के शरीर में रहनेवाले; अरि कुरि–लिंग-चिह्न; आयिरम्–एक सहस्र; उनक्कु उण्टाक–तुम्हें लग जायँ; अॅन्ऱु–ऐसा; एयितन्–आज्ञा सुनायी; इमैप्पिन् मुन्नर्–पलक मारने से पहले; अवै अॅलाम्–वे सब (अवयव); वन्तु इयैन्तन–आकर लग गये। ५४७

गौतम पवित्र और न्यायी ऋषि थे। उन्होंने इन्द्र का अपराध जान लिया। कुपित आँखों से देखकर, हे राम! आपके शर के समान, अमोघ शाप दिया कि तुम्हारे शरीर पर सहस्र योनियाँ उत्पन्न हो जायँ। पलक मारती देर के अन्दर उनका शरीर उनसे युक्त हो गया। ५४७

अॅल्लैयि नाण मॅय्दि यावर्क्कु नहैवन् दॅय्दप्
पुल्लिय पऴियि नोडुम् पुरन्दरन् पोय पिन्नै
मॅल्लिय लाळै नोक्कि विलैमह ळनैय नीयुम्
कल्लिय लादि यॅन्ऱान् करुङ्गलाय् मरुङ्गु वीऴ्वाळ् 548

पुरन्तरन्–पुरन्दर; अॅल्लै इल् नाणम् अॅय्ति–निस्सीम लज्जा प्राप्त कर; यावर्क्कुम्–किसी को भी; नकै वन्तु अॅय्त–(इनकी निन्दा में) हँसी करने का मौका देते हुए; पुल्लिय पऴियिनोटुम्–निम्न अपयश के साथ भी; पोय पिन्नै–जाने के

पश्चात्; मॅल् इयलाळै नोक्कि–कोमल स्वभाव वाली को देख; विलै मकळ् अतैय–वेश्या-समान; नीयुम्–तू भी; कल् इयल् आति–प्रस्तर की प्रकृति को प्राप्त हो; ॲन्ऱान्–(शाप) कहा; करुङ्कल् आय्–कठोर प्रस्तर बनकर; मरुङ्कु वीऴ्वाळ्–नीचे गिरनेवाली (गिरते-गिरते)। ५४८

पुरन्दर अपार शरम से भर गये। कोई भी उनको देखनेवाले हँसते थे और उनको बहुत ही घृणित निन्दा लग गयी। इसके साथ वे चले गये। तब मुनि ने मृदुल स्वभाववाली अहल्या को देखकर कहा— वेश्या के समान बरताव कर चुकी तू पत्थर की बन जा। वे पत्थर बनकर गिर रही थीं कि उन्होंने कहा— । ५४८

पिऴैत्तदु पॊऱुत्त लॆन्ऱुम् वॆरियवर् कडनॆ यॆन्बर्
अऴऱ्ऱु कडवु ळन्नाय् मुडिवॆनक् करुळु हॆन्नत्
तळैत्तुवण् डिमिरुन् दण्डाऱ्त् तयरद राम नॆन्बान्
कळऱ्ऱुहळ् कदुव विन्दक् कल्लुरुत् तविरु मॆन्ऱान् 549

अऴल् तरु कटवुळ् अन्नाय्–अग्नि निकालनेवाले (शिव) देव सम (मुनिवर); पिऴैत्ततु–अपराध को; पॊऱुत्तल्–क्षमा करना; ॲन्ऱुम्–सदा; वॆरियवर् कटनॆ–बड़ों का कर्तव्य है; ॲन्पर्–कहते हैं; अतक्कु मुटिवु अरुळुक–मेरा (शाप-) मोचन बतलाइये; ॲन्न–कहने पर; वण्टु तळैत्तु इमिरुम् तण्–भ्रमर-गुंजरित शीतल; तार्–मालाधारी; तयरत रामन् ॲन्पान्–दशरथ के पुत्र श्रीराम नामी; कऴल् तुकळ् कतुव–पाद-धूलि लगते समय; इन्त कल् उरु तविरुम्–यह प्रस्तर-शरीर छूट जायगा; ॲन्ऱान्–बोले। ५४९

आग्नेय नेत्रवाले शिव-सम महर्षि! लोगों का कहना है कि अपराध क्षमा करना बड़ों का कर्तव्य है! आप मुझे शाप-मोचन का उपाय बताइये। मुनि शांत हो रहे थे। उन्होंने अहल्या से कहा— भ्रमर-गुंजरित शीतल माला से अलंकृत, चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र श्रीराम की पाद-धूलि तुझ पर लगेगी, तब तू पत्थर के रूप से छूटकर अपना रूप ले लेगी। ५४९

अन्दविन् दिरनैक् कण्ड वमरर्हळ् पिरमन् मुन्ना
वन्दुको दमनै वेण्ड मऱ्ऱवै तविर्त्तु माऱाच्
चिन्दैयिन् मुनिवु तीर्न्दु शिऱन्दवा यिरङ्ग णाक्कत्
तन्दम दुलहु पुक्कार् तैयलुङ् गिडन्दाळ् कल्लाय् 550

अन्त इन्तिरनै कण्ट–उन इन्द्र को देखकर; अमरर्कळ्–देव सब; पिरमन् मुन् आक–ब्रह्मा को पुरस्सर कर; वन्तु–आकर; कोतमनै–गौतम को; वेण्ट–याचना करने पर; चिन्तैयिल् मुनिवु तीर्न्तु–मन के कोप-रहित होकर; अवै तविर्त्तु–उन (अवयवों) को हटाकर; माऱा–उनके बदले में; चिऱन्त आयिरम् कण् आक्क–सुन्दर सहस्र नेत्र बनाये, तब; तम् तमतु उलकु–अपने-अपने लोक;

पुक्कार्–चले गये; तैयलुम्–देवी (अहल्या) भी; कल्लाय्–पत्थर बन; किटन्ताळ्–पड़ी रहीं। ५५०

वहाँ देवलोक में शाप-प्रभावित इन्द्र को देखकर देवता लोग चुप नहीं रह सके। वे ब्रह्माजी को आगे करके गौतम जी के पास आये। उन्होंने मुनि से प्रार्थना की कि इनका शाप दूर किया जाय। तब तक मुनि शांत हो गये थे। इसलिए उन्होंने उन अवयवों को सुन्दर सहस्र नेत्रों में बदल दिया। देवी अहल्या पत्थर की मूर्ति बनी पड़ी रहीं। ५५०

इव्वण्ण निहऴ्न्द वण्ण मिनियिन्द वुलहुक् कॅल्लाम्
उय्वण्ण मन्ऱि मऱ्ऱोर् तुयर्वण्ण मुरुव दुण्डो
मैवण्णत् तरक्कि पोरिन् मऴैवण्णत् तण्ण लेयुन्
कैवण्ण मङ्गुक् कण्डेन् काल्वण्ण मिङ्गुक् कण्डेन् 551

निकऴ्न्त वण्णम्–(पूर्व-) घटित घटना; इ वण्णम्–इस प्रकार की है; मऴै वण्णत्तु–मेघ-वर्ण के; अण्णले–प्रभु; मै वण्णत्तु–अंजन-वर्ण की; अरक्कि पोरिल्–राक्षसी के युद्ध में; अङ्कु–वहाँ; उन् कै वण्णम् कण्टेन्–आपके हाथ की महिमा देखी; इङ्कु–यहाँ; काल् वण्णम्–चरण-महिमा; कण्टेन्–देखी; इति–आगे; इन्त उलकुक्कु ॲल्लाम्–इन सभी लोकों के लिए; उय् वण्णम्–तरने का उपाय (हो गया); अन्ऱि–इसके सिवा; तुयर् वण्णम्–दुख का व्यवहार; उरुवतु उण्टो–होगा क्या। ५५१

अहल्या देवी का पूर्व वृत्तांत यही है। मेघ-वर्ण प्रभु श्रीराम! अंजन-वर्ण (काले रंग) की ताडका से आपने जो युद्ध किया उसमें मैंने आपका हस्तकौशल देखा। यहाँ आपके श्रीचरणों की तारक-शक्ति की महिमा देखी। (इनसे आपके दुष्ट-निग्रह और शिष्ट-परिपालन की महिमा मालूम हो गयी है।) अब आपकी उपस्थिति से सारे लोक सुखी हो जायँगे; दुख का कोई मौका नहीं आयगा। (इस पद में प्रयुक्त वण्णम् शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जैसे, रंग, प्रकार, कौशल, शक्ति, व्यवहार, व्यापार, मौका इत्यादि)। ५५१

तीदिला वुदवि शॅय्द शेवडिक् करिय शॅम्मल्
कोदिलाक् कुणत्तान् शॉन्न पॉरुळॅला मनत्तुट् कॉण्डु
मादव नरुळुण् डाह् वऴिपडु पडरु ऱादे
पोदुनी यन्नै यॅन्नप् पॉन्नडि वणङ्गप् पोनाळ् 552

तीतु इला–अहित-रहित; उतवि चॅय्त–हित करनेवाले; चॅम्मै अटि–श्रेष्ठ चरणों के; करिय चॅम्मल्–श्यामल प्रभु; कोतु इला कुणत्तान्–दोष से अमिश्रित (निर्मल) गुणवाले से; चॉन्न पॉरुळ् ॲलाम्–कथित बातें सब; मनत्तुळ् कॉण्टु–ध्यान में रखकर; अन्नै–माताजी; मा तवन्–महा तपस्वी; अरुळ् उण्टाक–कृपा-पात्र बनने के लिए; वऴि पटु–सेवा कीजिए; पटर् उऱाते–बीती बातों की

चिन्ता मत कीजिए; नी पोतु–(हमारे साथ) आप आइए; ॲन्न–कहकर; पोन् अटि–स्वर्ण-सम चरणों पर; वणङ्क–नमस्कार किया और; पोनाळ्–(वे भी) गयीं। ५५२

अहल्या-हित-कारी श्रीराम के हित-कार्य से सबका हित हुआ; किसी का अहित नहीं। उन श्यामल प्रभु ने साधु विश्वामित्र के कहे समाचारों को ध्यान से सुना। फिर अहल्या देवी को देखकर उनसे कहा— माता जी! श्रेष्ठ तपस्वी गौतम की परिचर्या करके उनकी कृपा का पात्र बनिये। बीती बातों की चिन्ता मत कीजिये। आप हमारे साथ आयें। यह कहकर उन्होंने देवी का नमस्कार किया। फिर वह उनके साथ गयीं। ५५२

अरुन्दव नुरैयु ळुन्नै यनैयव रणुह लोडुम्
विरुन्दिनर् तम्मैक् काणा विम्मलाल् वियतत नॆञ्जन्
परिन्दॆदिर् कॊण्डु पुक्कुक् कडन्मुरै पळुदु रामल्
पुरिन्दपिन् कादि शॆम्मल् पुनिदमा दवनै नोक्कि 553

अनैयवर्–उनके; अरु तवन् उरैयुळ् तन्नै–श्रेष्ठ तपस्वी (गौतम) के आश्रम में; अणुकलोटुम्–आते ही; विरुन्तिनर् तम्मै–अतिथियों को; काणा–देखकर; विम्मलाल् वियनत नॆञ्चन्–आनन्द और विस्मय से भरे मन वाले हो; परिन्तु ऍतिर् कॊण्टु पुक्कु–स्नेह के साथ स्वागत करके ले जाकर; कटन् मुरै–कर्तव्य आतिथ्य-क्रम; पळुतुरामल्–भंग न करके; पुरिन्त पिन्–(उपचार) करने के बाद; काति चॆम्मल्–गाधी के श्रेष्ठ पुत्र ने; पुनितम् मा तवनै नोक्कि–पवित्र महर्षि को देखकर। ५५३

वे श्रेष्ठ तपस्वी गौतम के आश्रम गये। महर्षि ने उनको दूर से देख लिया। वे स्वागतार्थ आये और अच्छे अतिथियों को पाकर विस्मित और मुदित हुए। यथाक्रम अर्घ्य-पाद्यादि से सत्कार किया। तब गाधी-पुत्र विश्वामित्र ने यों कहा। ५५३

अञ्जन वण्णत् तान्ऱ नडित्तुहळ् कदुवा मुन्नम्
वञ्जिपो लिडैयाळ पण्डै वण्णत्त ळाहि निन्ऱाळ्
नॆञ्जिनाऱ् पिळैप्पि लाळै नीयळित् तिडुदि यॆन्नक्
कञ्जमा मलरोनन्न मुनिवनुङ् करुत्तुट् कॊण्डान् 554

अञ्चन वण्णत्तान्तन्–अंजनवर्ण श्रीराम (की); अटि तुकळ् कतुवा मुन्नम्–चरणधूली के लगते ही; वञ्चिपोल् इटैयाळ्–वल्लरी सम कमर वाली; पण्टै वण्णत्तळ्–पूर्व-रूप-धारिणी हो; आकि निन्राळ्–उठ खड़ी हो गयीं; नॆञ्चिनाल् पिळैप्पु इलाळै–मन से अपराध न करनेवाली इन पर; नी अळित्तिटुति–आप कृपा करें; ॲन्न–कहने पर; कञ्चम् मा मलरोन्–कमल के श्रेष्ठ पुष्प पर आसीन; अन्न–(ब्रह्मा के) समान; मुनिवनुम्–ऋषि भी; करुत्तु–(उनके) अभिप्राय को; उळ् कॊण्टान्–सकारा। ५५४

महर्षि ! अंजनवर्ण श्रीरामचन्द्र प्रभु के श्रीचरणों की धूलि लगने ही वाली थी कि इसके पहले ये देवीस्वरूप में आ गयीं। अतः साफ़ है कि वह पवित्र और निर्दोष मन वाली थीं। इसलिए आप इन्हें स्वीकार करने की कृपा कीजिये। कमलासन ब्रह्माजी के समान गौतम ने भी विश्वामित्र की बात मन से मान ली। ५५४

कुणङ्गळा लुयर्न्द वळ्ळल् कोदमन् कमल पादम्
वणङ्गिनन् वलङ्गोंण् डेत्ति माशरु कर्पिन् मिक्क
अणङ्गिनै अवन्कै यीन्दाण् डरुन्दव नोडुन् दूय
मणङ्गिळर् शोलै नीङ्गि मणिमदिन् मिदिलै कण्डार् 555

कुणङ्कळाल्–अपने (श्रेष्ठ) गुणों से; **उयर्न्त वळ्ळल्**–उत्तम बने हुए प्रभु; **कोतमन् कमलम् पातम्**–गौतम के कमल-चरण; **वणङ्कितन्**–नमन कर; **वलम् कोण्टु**–परिक्रमा करके; **एत्ति**–स्तुति करके; **माचु अरु कर्पिल् मिक्क**—निर्दोष पति-परायणता के कारण श्रेष्ठ बनी हुई; **अणङ्कितै**–देवी को; **अवन् कै ईन्तु**–उनके हाथ में प्रदान कर; **आण्टु**–तब; **अरु तवनोटुम्**–उत्तम तपस्वी के साथ; **तूय**–पवित्र; **मणम् किळर् चोलै**–सुवास-पूरित आश्रम को; **नीङ्कि**–छोड़कर; **मणि मतिल्**–सुन्दर प्राचीरवाले; **मितिलै कण्टार्**–मिथिला नगर को; **कण्टार्**–देखा। ५५५

गुण-पूर्ण और उत्तम श्रीराम ने गौतम के पैरों में दण्डवत किया; उनकी परिक्रमा करके स्तुति की। फिर अकलंक पतिपरायणा अहल्या को उनके हाथ में सौंपा। उसके बाद वे तपोधन विश्वामित्र के साथ, उस सुगन्धपूर्ण आश्रम को छोड़कर सुन्दर प्राचीरवाले मिथिला नगर की ओर गये। (कवि अहल्या को अकलंक पतिव्रता कहते हैं। उससे मानना पड़ेगा कि अहल्या अचल पतिपरायणा थीं। देवेन्द्र सम्बन्धी कार्य में देवेन्द्र का और स्त्री-सुलभ चापल्य का दोष है। अपने चापल्य का प्रायश्चित्त उन्होंने अनेक साल पत्थर रहकर किया। यह उनका पति का शाप मानकर प्रायश्चित करना इस बात का प्रमाण है कि वे अपने पति पर श्रद्धा रखती थीं। अहल्या का यह नया 'जन्म' श्रीराम का प्रसाद था। इसलिए वे पितृतुल्य हो गये। अतः उचित ही है कि कवि ईन्त-शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसका प्रयोग बड़ों के छोटे के हाथ में दान देते समय किया जाता है)। ५५५

10. मितिलैक् काट्चिप् पडलम् (मिथिलादृश्य-दर्शन पटल)

मैयरु मलरि नीङ्गि यान्शॅय्मा दवत्तिन् वन्दु
शॅय्यव ळिरुन्दा ळॅन्रु शॅळ्ळमणिक् कॊडिह ळॅन्तुम्
कैहळै नीट्टि यन्दक् कडिनहर् कमलच् चॅङ्गण्
ऐयनै योल्लै वावॆन् ड्ळैप्पदु पोन्र दन्रे 556

अन्त कटि नकर्–वह श्रेष्ठ नगर; यान् चॅय् मा तवत्तिन्–मेरे किये हुए बड़े तप के फलस्वरूप; चॅय्यवळ्–श्री लक्ष्मीदेवी; मै अरु–निर्मल; मलरिन् नीङ्कि–(कमल) पुष्प से अलग होकर; वन्तु इरुन्ताळ्–आ ठहरी हैं; ॲन्रु–यह कहते हुए; कमलम् चॅम् कण् ऐयनै–कमलदल-सम लाल आँख वाले को; चॅळुमणि–सुस्वर वाली घंटियाँ-बँधी; कॊटिकळ् ॲन्नुम्–ध्वजाएँ रूपी; कैकलै नीट्टि–हाथों को बढ़ाकर; ऒल्लै वा–शीघ्र आइये; ॲन्रु–कहकर; अळैप्पतु पोन्रतु–बुलाता-सा है। ५५६

इस पद में मिथिला नगर के प्रासादों पर फहरनेवाली ध्वजाओं का वर्णन है। वे ध्वजाएँ उस नगर के हाथों के समान हैं। ये ध्वजाएँ जब फहरती हैं और उनमें बंधी घण्टियाँ बजती हैं तब ऐसा लगता है कि वह नगर अपने हाथों से कमलाक्ष श्रीराम को यह कहते हुए बुला रहा है कि मेरे तपोबल के कारण श्रीलक्ष्मीदेवी, निर्मल कमल-पुष्प को छोड़कर यहीं आकर बस रही हैं। आप शीघ्र आ जायँ। ध्वजाएँ ऊपर फहर रही हैं, अतः वे ही पहले दृश्यमान हैं। ५५६

निरम्बिय माडत् तुम्बर् निरैमणिक् कॉडिह ळॆल्लाम्
तरम्बिऱ रिन्मै युन्नित् तरुममे तूदु शॆल्ल
वरम्बिल्पे रळ्हिताळै मणञ्शॅय्वान् वरुहिन् ऱानॆन्
ऱरम्बयर् विशुम्बि नाडु माडलि नाडक् कण्डार् 557

निरम्पिय माटत्तु उम्पर्–(सुन्दरता और श्रेष्ठता-) पूर्ण प्रासादों के ऊपर; निरै मणि कॊटिकळ् ॲल्लाम्–पंक्तिबद्ध सुन्दर ध्वजाएँ सब; तरम् पिरर् इन्मै उन्ति–योग्य कोई दूसरा नहीं, यह सोचकर; तरुममे तूतु चॅल्ल–धर्म ही दूत होकर गया, उस पर; वरम्पु इल्–सीमा-हीन; पेर् अळकिताळै–बहुत सुन्दरतावाली को; मणम् चॅय्वान्–विवाहने के लिए; वरुकिन्रान्–आते हैं; ॲन्रु–यह सोचकर (आनन्द से); अरम्पैयर्–देवांगनाओं के; विचुम्पिन् आटुम् आटलिन्–आकाश में किये हुये नृत्य के समान; आट–फहरती थीं, यह; कण्टार्–देखा। ५५७

और भी उन ध्वजाओं का हिलना देवांगनाओं के अत्यन्त संतोष के साथ नाचने के समान था। शोभा और समृद्धि से भरे उन प्रासादों के ऊपर फहरनेवाली ध्वजाओं को देवांगनाओं के समान यह आनन्द था कि सीताजी के योग्य वर श्रीराम के सिवा दूसरे नहीं हैं; मानों धर्म स्वयं दूत के रूप में जाकर अत्यन्त सुन्दरी सीतादेवी को विवाहित करने के लिए उनको बुला ला रहा है। (प्रेमी-प्रेमिका मिलन में दौत्य का स्थान मुख्य और उत्कृष्ट है। इधर धर्म के हाथ में कवि वह काम सौंप देते हैं। इस मिलन का शुभ फल देवताओं के लिए हितकारी है। अतः देवांगनाएँ नाचती हैं। ध्वजाओं पर उनके नृत्य की साम्यता आरोपित है)। ५५७

पहऱ्कदिर् मरैय वानप् पाऱकडल् कडुप्प नीण्ड
तुहिऱ्कॊडि मिदिलै माडत् तुम्बरिऱ् ऱुवन्ऱि निन्ऱ

मुहिऱ्कुलन् दडवुन् दोऱु नऩैवऩ मुहिलिऱ् चूऴ्न्द
अहिऱ्पुहै कदुवुन् दोऱु पुलर्वऩ वाहक् कण्डार् 558

पकल्कतिर् मऱैय–दिन की किरणें छिप गयीं, तब; वाऩम्–आकाश; पाल् कटल् कटुप्प–क्षीरसागर के समान दिखायी दे; मितिलै माटत्तु उम्परिल्–मिथिला के सौधों के ऊपर; तुवऩ्ऱि निऩ्ऱ–संकुलित रही; नीण्ट तुकिल् कोटि–ऊँची चीर की ध्वजाएँ; मुकिल् कुलम्—मेघ-कुल को; तटवुम् तोऱुम्—ज्यों-ज्यों सहलाती हैं; नऩैवऩ–भीग जानेवाले और; मुकिलिऩ् चूऴ्न्त–मेघों के समान फैले हुए; अकिल् पुकै—अगरु-धुआँ; कतुवुम् तोऱुम्—ज्यों-ज्यों जम जाता है; उलरवऩ–सूखनेवाले; आक–बने; कण्टार्–यह देखा। ५५८

इसमें भी ध्वजाओं का वर्णन है। सूर्य छिप गये। इन ध्वजाओं ने आकाश को क्षीरसागर के समान श्वेत बना दिया। वे ध्वजाएँ मेघ-कुल से सम्बन्ध पाकर भीग जाती हैं। पर मेघों के समान प्रासादों के अन्दर से उठ आनेवाले अगरु-धुएँ के लगने पर सूख जाती हैं। इस विनोद को विश्वामित्र, श्रीराम और लक्ष्मण तीनों ने देखा। ५५८

आदरित् तमुदिऱ् कोऱोय्त् तवयव ममैक्कुन् दऩ्मै
यादॆऩत् तिहैप्प दल्लाल् मदऩऱ्कु मॆऴुद लाहाच्
चीदैयैत् तरुद लाले तिरुमह ळिरुन्द चॆय्य
पोदॆऩप् पॊलिन्दु तोऩ्ऱुम् पॊऩ्मदिऩ् मिदिलै पुक्कार् 559

मतऩऱ्कुम्–मदन के लिए भी; आतरित्तु–मन से चाहते हुए; कोल्–तूलिका को; अमुतिल् तोयत्तु–अमृत में डुबोकर, (चित्र बनाते समय); अवयवम् अमैक्कुम् तऩ्मै–अवयव बनाने का प्रकार; यातु ऎऩ–कैसा, सोचते हुए; तिकैप्पतु अल्लाल्–चकित खड़ा रहने के सिवाय; ऎऴुतल् आका–नहीं अंकित कर सकता है ऐसी; चीतैयै–सीतादेवी को; तरुतलाले–दिलाने से; तिरुमकळ् इरुन्त—श्रीलक्ष्मीदेवी-बसित; चॆय्य पोतु ऎऩ–लाल (कमल-) फूल के समान; पॊलिन्तु तोऩ्ऱुम्–शोभायमान दिखनेवाले; पॊऩ् मतिल्–स्वर्ण के प्राचीरवाले; मितिलै पुक्कार्–मिथिला में (तीनों ने) प्रवेश किया। ५५६

स्वयं मदन भी बड़ी लगन के साथ तूलिका में अमृत लेकर सीताजी का चित्र बनाने का प्रयत्न करे तो भी सीताजी के दैवी-सुन्दरता-युक्त अवयवों को अंकित नहीं कर पायेगा और निष्क्रिय होकर चकित रह जायगा। ऐसी अप्रतिम और अनिन्द्य सुन्दरी देवी सीता इस मिथिला में आकर वास कर रही हैं। इसलिए यह नगर स्वर्णमय प्राचीरों के साथ श्रीलक्ष्मीदेवी का पीठ, दलयुक्त कमल के समान शोभायमान है। उस नगर में उन तीनों ने प्रवेश किया। ५५९

शीऱ्कलै मुऩिव ऩुण्ड शुडर्मणिक् कडलुन् दुऩ्ऩि
अऱ्कलन् दिलङ्गु पऩ्मी ऩरुम्बिय वाऩुम् बोल

विऱ्कलै नुदलि नारु मैन्दरुम् वॆरुत्तु नीत्त
पॊऱ्कलन् किडन्द माड नॆडुन्दॆरु वरिदिऱ् पोनार् 560

चॊल् कलै मुनिवन् उण्ट-(तमिळ-) भाषा के व्याकरण शास्त्र के निर्माता (अगस्त्य) से पिया हुआ; चुटर् मणि कटलुम्-उज्ज्वल रत्नों से भरे सागर (के समान) और; अल्-रात में; तुन्नि-घने रूप से; कलन्तु इलङ्कु-मिले हुए चमकनेवाले; पल्मीन् अरुम्पिय-अनेक नक्षत्रों से पूरित; वानुम् पोल-आकाश के समान; किटन्त-पड़े हुए; विल् कलै नुतलिनारुम्-धनुष और चन्द्रकला-सदृश भालवालियाँ और; मैन्तरुम्-तरुण पुरुष; वॆरुत्तु नीत्त-उपेक्षित कर जिनको फेंक चुके हैं; पॊन् कलन् किटन्त-वे स्वर्णाभरण जिन पर पड़े हैं, और; माटम्-बड़े-बड़े प्रासादों वाले; नॆटु तॆरु-लम्बे (राज-) मार्ग से होकर; अरितिन्-सपरिश्रम; पोनार्-चले। ५६०

वे वीथियों से होकर चले। एक लम्बी वीथी, जिसमें बड़े-बड़े प्रासाद हैं, अनेक रत्नों से भरे समुद्र के समान है, उस रत्नाकर के समान जो शब्द-शास्त्र- (व्याकरण-) कार अगस्त्य के जल को पी जाने से सारे प्रकाशमय रत्नादि को प्रकट करता हुआ सूखा पड़ा था। वह रात में अन्धकार के समय के आकाश के समान भी है जिसमें अनेक नक्षत्र चमकते हैं। वीथी-समुद्र में या वीथी-रूपी आकाश में रत्नों या नक्षत्रों के स्थान में वे स्वर्णाभरण पड़े हैं, जिनको प्रणय-व्यापार में लगे तरुण और तरुणियों ने, रूठन के अवसर पर उतार फेंक दिया था। चलते हुए इस बात की सावधानी रखनी पड़ती थी कि वे आभरण उनके पैरों में चुभ न जायँ। इसलिए वे सश्रम जाते थे। ५६०

ताऱुमाय् तरुहट् कुन्ऱन् दडमद वरुवि ताऴ्प्प
आऱुमाय्क् कलिन मावि लाऴियु मिऴिन्दो राऱायच्
चेऱुमाय्त् तेर्हऴ ओडत् तुहऴुमा यॊन्ऱो डॊन्ऱु
माऱुमा ऱाहि वाळा किडक्किला मरुहिऱ् चॆन्ऱार् 561

ताऱु माय्-अंकुश तोड़नेवाले; तरुकण् कुन्ऱम्-निडर पर्वत (-सम गज); तटमत अरुवि ताऴ्प्प-अधिक मद नीर बहाते हैं, तब; आऱुम् आय्-नदी बनकर; कलिनम् मा-लगामवाले घोड़ों का; विलाऴि इऴिनतु-झाग गिरकर; ओर् आऱु आय् उम्-(दूसरी) एक नदी बनकर; तेर्कळ् ओट-रथ दौड़ते हैं, तब; चेऱुम् आय्-पंक बनकर; तुकळुम् आय्-धूलि बनकर; ऑन्ऱॊटु ऑन्ऱु माऱु माऱु आकि-एक दूसरे से विपरीत बनकर; वाळा किटक्क इला-चुप (एक रस) न रह सकनेवाले; मऱुकिल् चॆन्ऱार्-बड़े मार्ग पर चले। ५६१

और दूसरी वीथी देखिये। अंकुश तोड़नेवाले मद-मत्त गज मद-नीर बहाते हैं उससे वह वीथी नदी (के समान) बन जाती है। लगाम-युक्त अश्वों के मुख से इतना झाग बहता है कि दूसरी नदी बन जाती है। रथ चलते हैं और कीचड़ भी बन जाती है। फिर वह सूखकर धूलि बन जाती है। इस तरह वीथी, नदी में, पंक में और धूलि में बदलती रहती है और कभी भी एक सी नहीं रहती। ५६१

तण्डुद लिऩ्ऱि यॉऩ्ऱित् तलैत्तलै शिऱन्द कादल्
उण्डपिऩ् कलविप् पोरि लॉशिन्दमॅऩ् महळि रेपोल्
पण्डरु किळवि यार्तम् पुलवियिर् परिन्द कोदै
वण्डॉडु किडन्दु तेऩ्शोर् मणिनॆड्डुन् दॅरुविर् चॆऩ्ऱार् 562

तलै तलै चिऱन्त कातल्–परस्पर बढ़नेवाले प्रेम में; तण्टुतल् इऩ्ऱि ऑऩ्ऱि–बिना बाधा के संगम कर; उण्ट पिऩ्–भोग चुकने के बाद; कलवि पोरिल्–प्रणय-समर में; ऑचिन्त–थकी हुई; मॆल् मकळिरे पोल्–सुकुमारियों की ही तरह; पण् तरुन् किळवियार्–संगीत के समान बोलीवालियों से; तम् पुलवियिल्–अपनी रूठन के अवसर पर; परिन्त कोतै–उतारकर फेंकी गयी मालाएँ; वण्टोटु किटन्त–भ्रमरों के साथ पड़ी रहीं; तेऩ् चोर्–और शहद बहाती रहीं (जिन पर); मणि नॆटु तॆरुविल्–उन मनोरम दीर्घ मार्ग पर; चॆऩ्ऱार्–चले । ५६२

वे तीसरी वीथी पर से चलते हैं। उसमें वे पुष्पमालाएँ पड़ी हैं जिनको प्रासादों के अन्दर से सुमधुर-संगीत के समान बोली वाली स्त्रियों ने उतार कर फेंक दिया था। उन पर शहद की बूँदें पायी जाती हैं और भ्रमर मँडराते रहते हैं। ये मालाएँ उन्हीं स्त्रियों के समान हैं जिन्होंने अपने प्रियतमों के साथ अन्योन्यसम बढ़ते उत्साह के साथ अबाध संगम किया था और प्रणय-समर में शक्ति खोकर निर्बल हो पड़ी थीं। (उनके माला के समान सुकुमार शरीरों के ऊपर के स्वेदकण शहद की बूँदें हैं और उन पर पतियों की दृष्टि भ्रमरों के समान मँडरा रही है)। ५६२

नॆय्दिर णरम्बिर् ऱन्द मळलयि ऩियऩ्ऱ पाडल्
तॆवरु महर वीणै तण्णुमै तळुवित् तूङ्गक्
कैवळि नयऩम् जॆल्लक् कण्वळि मऩमुम् जॆल्ल
ऐयनुण् णिडैया राडु माडह वरङ्गु हण्डार् 563

नॆय् तिरळ् नरम्पिऩ् तन्त–घी-लगी तन्त्री से उत्पन्न; मळलैयिऩ् इयऩ्ऱ पाटल्–मधुर, तोतली बोली के समान गीत; तॆवरुम्–गाने योग्य; मकर वीणै–मकर वीणा और; तण्णुमै–मृदंग; तळुवि तूङ्क–लय के साथ स्वर देते; कै वळि–हस्तमुद्रा के मार्ग पर; नयऩम् चॆल्ल–दृष्टि भेजती हुयी; कण् वळि–आँखों के अनुगमन में; मऩमुम् चॆल्ल–मन को चलाते हुए; ऐयम् नुण् इटैयार्–अस्तित्व के सम्बन्ध में संशय पैदा करनेवाली पतली कमरों की नर्त्तकियों के; आटकम् अरङ्कु–स्वर्णमय नृत्यमंच; कण्टार्–(तीनों ने) देखे। ५६३

उन्होंने एक नाट्यमंच देखा। वहाँ मकर-वीणा का वादन हो रहा था। उस वीणा की तंत्रियाँ घी आदि के लगे रहने से बहुत ही मनोरम सुस्वर निकाल रही थीं। मर्दल बज रहा था। दोनों में लय था। तब हाथों पर नयन चलाते हुए और उन नयनों के पीछे अपना मन लगाते हुए, अस्तित्व के सम्बन्ध में संशय पैदा करनेवाली बहुत पतली कमरवाली नर्त्तकियाँ नाच रही थीं। (मकर के आकार की होने से यह मकर-वीणा

कहलायी। हाथों पर दृष्टि रखना और दृष्टि के पीछे मन का लगा रहना— इसका अर्थ है कि नर्त्तकी की हस्तादि मुद्राएँ उसके मनोभावों को पूर्णरूप से परिलक्षित करती थी। मर्दल = मृदंग सा एक बाजा)। ५६३

पूशलि नॆळ्ळुन्द वण्डु मरुङ्गिनुक् किरङ्गिप् पॊङ्ग
माशुरु पिऱवि पोल वरुवतु पोव दाहिक्
काशरु पवळच् चॆङ्गाय् मरकतक् कमुहिर् पूण्ड
ऊशलिन् महळिर् मैन्दर् शिन्दैयो डुलवक् कण्डार् 564

माचु उरु पिऱवि पोल—वासना (दोष) के कारण होनेवाले जन्मों के समान; वरुवतु पोवतु आकि—(पेंग मारनेवाले) आने-जानेवाले होकर; काचु अरु—निर्दोष; पवळम् चॆम् काय्—प्रवाल-सम लाल फलों के साथ; मरकतम्—मरकत-रंग के; कमुकिल् पूण्ट—गुवाक वृक्षों पर बँधे हुए; ऊचलिन्—झूलों में; मकळिर्—रमणियाँ; पूचलिन् अॆळुन्त वण्टु—कलरव के साथ उठे भ्रमर; मरुङ्कितुक्कु—उनकी कमर की सहानुभूति में; इरङ्कि पॊङ्क—द्रवित होकर शोर मचावें, ऐसा; मैन्तर् चिन्तैयोटु—तरुण पुरुषों के मनों के साथ; उलव—झूलते; कण्टार्—देखा। ५६४

उनके मार्ग पर ऐसा स्थान आया जहाँ तरुणी रमणियाँ झूले झूल रही थीं। झूले सुपारी के वृक्षों पर बँधे झूलते थे। वे वृक्ष मरकत-रंग के थे और उनके फल सुडौल और प्रवाल सम लाल थे। (या प्रवालों के बने फलों से युक्त मरकत-निर्मित तरु के समान बने खम्भे थे।) वे झूले ऊपर-नीचे पाप-पुण्य कर्मानुसार होनेवाले जीव-जन्म के समान नीचे-ऊपर आ-जा रहे थे। जब वे स्त्रियाँ पेंग भर रही थीं तब उनके ऊपर से (धरी मालाओं से) भ्रमर उठते और ऊँचे स्वर करते मानों वे उन स्त्रियों की कमर का बल खाना देखकर सहानुभूति-जनित पीड़ा से कुछ कह रहे हों। उन स्त्रियों का झूलना जो तरुण देख रहे थे उनके मन भी झूल रहे थे। (यानी विविध भावाकुल मन के साथ उनको देख रहे थे)। ५६४

वरप्परु मणियुम् बॊन्नु मारमुङ् गवरि वालुम्
शुरप्पुडै यहिलु मञ्ञैत् तोहैयुन् दुम्बिक् कॊम्बुम्
कुरप्पणै निरप्पु मळ्ळर् कुविप्पुरक् करैह डोरुम्
परप्पिय पॊन्नि यन्न वावणम् बलवुङ् गण्डार् 565

वरम्पु अरु—मापहीन; मणियुम्—रत्न; पॊन्नुम्—स्वर्ण; आरमुम्—चन्दन-काष्ठ; कवरिवालुम्—चामर; चुरम् पुटै अकिलुम्—जंगल के भागों से प्राप्त अगरु; मञ्ञै तोकैयुम्—मयूरपंख, (और); तुम्पि कॊम्पुम्—गजदन्त (इनके); कुरम्पु अणै निरप्पुम्—खेतों के मेड़ बनानेवाले; मळ्ळर्—कृषक (द्वारा); कुविप्पु उर—ढेर लगाये जाते हैं, (ऐसा खेतों की भूमि में) और; करैकळ् तोरुम् परप्पिय—तीरों पर बिखेरती छोड़ चलनेवाली; पॊन्नि अन्न—कावेरी के समान; आवणम् पलवुम्—दूकानों की अनेक वीथियाँ; कण्टार्—देखीं। ५६५

अब वे बाज़ार में आ गये। वहाँ रत्न, स्वर्ण, चन्दन व अगरु के काष्ठ-खण्ड, चामर, मोर के पंख, हाथी-दाँत इत्यादि बहुमूल्य वस्तुएँ ढेरों में भी पड़ी रहीं और यत्र-तत्र भी पड़ी मिलीं। दोनों किनारों की दूकानों के साथ वह वीथी कावेरी (पॊन्नि-स्वर्णमयी) नदी के समान लगी जो मणि, स्वर्ण आदि वस्तुएँ बहा ले आती हैं; जो किनारों पर ही नहीं, पास के खेतों की भूमि में भी पहुँचकर पड़ी रहती हैं। जब कृषक खेत में काम करते हैं तब मेड़ बनाते वक्त इनको उठाकर उनके ढेर लगा देते हैं। (व्यापारी और कृषक में तुलना है; कावेरी और वीथी में तुलना है। सामान दोनों के लिए साधारण है)। ५६५

कॊट्पुरु कलिऩप् पाय्माक् कुयमहऩ् मुडुक्कि विट्ट
मट्कलत् तिहिरि पोल वाळियिऩ् वरुव मेलोर्
नट्पिऩि लिडैय ऱाद जाऩिह ळुणर्वि ऩॊऩ्ऱायक्
कट्पुलत् तिऩैय वॆऩ्ऱु तॆरिविल तिरियक् कण्डार् 566

कॊट्पु उरु—दत्त-चित्तता के साथ; कलिऩम् पाय् मा—लगाम में दौड़नेवाले अश्व; कुयम्कऩ् मुट्कुकु विट्ट—कुम्हार से घुमाये गये; मण्कलम् तिकिरि पोल—घड़े बनानेवाले चाक के समान; वाळियिऩ् वरुव—गोल पथ पर जो दौड़ते हैं; मेलोर् नट्पिऩिल्—बड़े मनुष्यों की मित्रता के समान; ञाऩिकळ् इटै अऱात—ज्ञानियों के अबाध; उणर्विऩ्—मनोभाव समान; ऒऩ्ऱु आय्—एकरस होकर; कण् पुलत्तु—दृक् इन्द्रिय के लिए; इऩैय ऎऩ्ऱु—क्या है, यह; तॆरिवु इल—ज्ञात नहीं होकर; तिरिय—घूमते हैं, यह; कण्टार्—देखा। ५६६

एक स्थान में घुड़दौड़ का दृश्य है। अश्व-गोल मार्ग में दौड़ाये जाते हैं। वे अश्व कुलाल (कुम्हार) के चक्र के समान बहुत तेजी से, मानों निराधार, घूमते हैं, उनकी गति बड़ों की मित्रता या ज्ञानियों के मनोभाव के समान समरस है। वे इतनी तीव्र गति से दौड़ते हैं कि आँखों को यह भ्रम हो जाता है कि ये कौन सी चीज़ है? । ५६६

तयिरुरु मत्तिऩ् काम शरम्पडत् तलैप्पट् टूडुम्
उयिरुरु काद लारि ऩॊऩ्ऱॊऩ्ऱु ऱोरुव हिल्ला
शॆयिरुरु मऩत्त वाहित् तीत्तिरळ् शॆङ्गण् शिऩ्द
वयिरवाऩ् मरुप्पि याऩै मलैयॆऩ मलैव कण्डार् 567

तयिर् उरु मत्तिऩ्—दही में मथानी के समान; काम चरम्—मन्मथ शर; पट—लगे, तब; तलैप्पट्टु—(संगम में) उतारू होकर; ऊटुम्—(सुख-वर्धन के लिए) रूठनेवाले; उयिर् उरु कातलारिऩ्—प्राणप्यारे प्रणयी-प्रणयिनियों के समान; वयिरम् वाल् मरुप्पु याऩै—वज्रकठोर, सफेद दाँतवाले गज; ऒऩ्ऱु ऒऩ्ऱु उरुवकिल्ला—एक दूसरे से बचकर अलग न हो पाकर; चॆयिर् उरु मऩत्त आकि—कोपाक्रांत मन होकर; चॆम् कण्—लाल आँखों द्वारा; ती तिरळ् चिऩ्त—अग्नि-राशि निकालते हुए; मलै ऎऩ—पर्वतों के समान; मलैव—भिड़ते हैं; कण्टार्—(उनको) देखा। ५६७

उन्होंने एक स्थान पर हाथियों की लड़ाई देखी। दो हाथी आपस में गुँथ रहे हैं। वे प्रणय-व्यापार-रत, परस्पर अत्यन्त प्राण-सम प्रिय पुरुष-स्त्री के जोड़े के समान भिड़ते हैं जो मदन-शर का लक्ष्य बनकर संगम में लग जायँ और बीच-बीच में सुख-संवर्धनकारी रूठन से किंचित अलग हो जायँ। वे हाथी पर्वत के समान हैं और उनके दाँत वज्र-सम कठोर और श्वेत रंग के हैं। वे वैर के साथ आँख से अंगारों की झड़ी-सी निकालते हुए टकरा रहे हैं। वे चाहते हुए भी अलग हो नहीं पाते। ५६७

वाळरम् बॊरुद वेलु मन्मदन् शिलैयुम् वण्डिन्
केळॊडु किळैत्त नीलच् चुरुळुञ्जॆङ् गिडैयुङ् गॊण्डु
नीळिरुङ् गळङ्ग नीक्कि निरैमणि माड नॆऱ्‌ऱिच्
चाळरन् दोरुन् दोन्ऱुञ् जन्दिर वुदयङ् गण्डार् 568

वाळ् अरम् पॊरुत वेलुम्—तीक्ष्ण रेती से रगड़कर सान-धरे भाले; मन्मतन् चिलैयुम्—मदन का चाप; वण्टिन् केळॊटु—भ्रमर-कुलों के साथ; किळैत्त—ऊपर छिटके; नीलम् चुरुळुम्—नीले छल्लों; चॆम् किटैयुम्—लाल खुखड़ी-खण्ड; कॊण्टु—साथ लेकर; नीळ् इरु कळङ्कम् नीक्कि—दीर्घकाल का कलंक दूरकर; निरै मणि माटम् नॆऱ्‌ऱि—पंक्ति-बद्ध रत्नमय सौधों के ऊपर; चाळरम् तोऱुम् तोन्ऱुम्—हर झरोखे पर दिखनेवाले; चन्तिर् उतयम्—चन्द्रों के उदय; कण्टार्—देखे। ५६८

किसी वीथी में जाते समय उनको मणिमय प्रासादों के ऊपर झरोखों से स्त्रियों के सुन्दर मुख दिखाई दिये। रेती से सान-चढ़े दो भाले, मन्मथ-चाप, भ्रमर, नीले छल्ले, लाल खुखड़ी (एक जल-पौधा जिसका तना काग के समान मृदु है) के खण्ड— इनके साथ, अपना दीर्घ-कालीन कलंक को धुलाकर चन्द्र उदित हुआ, ऐसा लगनेवाले मुख थे वे। भाले (नोक की तीक्ष्णता के कारण) आँखों के उपमान बने; भ्रमर और नीले छल्ले, घुँघराले बालों के; धनुष भाल का; और खुखरी-खण्ड अधर के उपमान हैं। ५६८

पळिक्कुवळ् ळत्तु वाक्कुम् पशुनऱुन् देऱल् मान्दि
वॆळिप्पडु नहैयवाहि वॆऱियन मिळऱ्‌ऱु हिन्ऱ
ऒळिप्पिनु मॊळिक्क वॊट्टा वूडलै युणर्त्तु मापोल्
कळिप्पिनै युणर्त्तुञ् जॆव्विक् कमलङ्गळ् पलवुङ् गण्डार् 569

पळिङ्कु वळ्ळत्तु—स्फटिक के कटोरों में; वाक्कुम्—भरी गयी; पचु नऱु तेऱल् मान्ति—ताजी और सुगन्धित ताड़ी पीकर; वॆळिप्पटु नकैय आकि—प्रकटित हासवाले होकर; वॆऱियन मिळऱ्‌ऱु किन्ऱ—नशे में अर्थहीन शब्दों को तुतलानेवाले बन; ऊटलै—रूठन को; ऒळिप्पितुम्—छिपाना चाहने पर भी; ऒळिक्क ऒट्टा—न छिपा सक कर; उणर्त्तुम् आ(रु) पोल्—वह प्रकट हो ही जाती है ऐसा; कळिप्पितै—

(सुरापान-जनित) मोद को; उणर्तुतुम्–प्रकटित कर देनेवाले; चॅव्वि कमलङ्कळ् पलवुम्–सुन्दर कमल (-मुख) अनेक; कण्टार्–देखे (तीनों ने)। ५६९

स्त्रियाँ स्फटिक चषकों में ताड़ी ढालकर पी चुकी थीं। अतः उनके मुखों पर उल्लास के हास प्रकट हो रहे थे और मुखों से अनर्गल शब्द तुतली बोली में निकल रहे थे। इनके द्वारा उनको पीने से जो आनन्द प्राप्त हुआ वह प्रकट ही हो रहा था, यद्यपि वे उसको छिपाना चाहती थीं। यह वैसा ही था जैसे रूठन के अवसर पर हुई बातों को गोप्य रखने के प्रयास करने पर भी वे प्रकट हो ही जाती हैं। ऐसे उल्लसित कमल (मुख) उनमें अनेक के थे। (ये उच्चकुलवालियों की बातें नहीं हैं)। ५६९

वळ्ळुहिर्त् तळिर्क्कै नोव माडहम् पऱ्ऱि वार्न्द
कळ्ळॅन्न नरम्बु वीक्किक् कैयॊडु मनमुङ् गूट्टि
वॅळ्ळिय मुऱुव ऱोन्ऱ विरुन्देन्न महळि रीन्द
तॅळ्विळिप् पाणित् तीन्देन् शॅविमडुत् तिनिदु शॅन्ऱार् 570

मकळिर्–तरुणियाँ; वळ् उकिर्–नुकीले नखों और; तळिर् कै–पल्लव-कोमल हाथों को; नोव–दुखाते हुए; माटकम् पऱ्ऱि–कील घुमाकर; वार्न्त कळ् अॅन्न–धार के रूप में गिरनेवाले शहद के समान; नरम्पु वीक्कि–तन्त्री को सहलाकर; कैयॊटु मनमुम् कूट्टि–हाथ के साथ मन को भी लगाकर; वॅळ्ळिय मुऱुवल् तोन्ऱ–सफेद (दाँतों के) प्रकाश छिटकाकर मुस्कुराती हुई; विरुन्तु अॅन्न–दावत के समान; ईन्त–दी गयी; तॅळ् विळिपाणि–साफ़ सुन्दर मौखिक गीतरूपी; तीम् तेन्–मधुर शहद को; चॅवि मटुत्तु–कानों से सुनते हुए; इनितु चॅन्ऱार्–सुख से चले। ५७०

उन्हें श्रवणों का आनन्द भी प्राप्त हुआ। कुछ स्त्रियाँ अपनी उँगलियों से, जो इतनी सुकुमार थीं कि कील को घुमाने में भी दुख होता था, मधु-धारा सम वीणा-तंत्रियों को सहलाकर, हाथ की गति पर मन का ध्यान लगाकर स्वर उठाते हुए वीणा वादन कर रही थीं और उसके साथ मंदहास छिटकाते हुए गा भी रही थीं। उस श्रुति-मधुर संगीत का आस्वादन करते हुए वे तीनों आगे बढ़े। (यहाँ, इस पद में, जैसे अन्य स्थलों में भी, याऴ शब्द आया है जिसका अर्थ वीणा दिया गया है। याऴ वीणा की ही तरह का एक वाद्य है जो अब प्रचलन में नहीं है। कहा जाता है कि याऴ चार तरह के थे)। ५७०

मॅय्वरुम् बोह मॊक्क वुडनुण्डु विलैयुङ् गॊळ्ळुम्
पैयर वल्हु लार्त मुळ्ळमुम् बळिङ्गुम् बोल
मैयरि नॅडुङ्ग णोक्कम् बडुदलुङ् गरुहि वन्दु
कैपुहच् चिवन्दु काट्टुङ् गन्दुहम् बलवुङ् गण्डार् 571

मॅय् वरुम् पोकम्–शारीरिक सुख-भोग; ऑक्क–(पुरुष के ही) समान; उटन् उण्टु–साथ-साथ प्राप्त करके; विलैयुम् कॊळ्ळुम्–उसका दाम भी लेनेवाली; पै अरव

मै–सर्प के फन के समान; अलकुलार् उळ्ळमुम्–अधनप्रदेश की (वेश्या) के मन और; पळिङ्कुम् पोल–और स्फटिक के समान; मै, अरि, नॅटु कण्–अंजनवाली, डोरे सहित, आयत आँखें; पट्टुतलुम्–पड़ने पर; करुकि–काले रंग के बने; वन्तु; पुक–उनके हाथ में आ जाते ही; चिवन्तु–लाल बने; काट्टुम्–दिखनेवाले कन्तुकम् पलवुम् कण्टार्–अनेक कंदुक भी देखे। ५७१

उन्होंने कंदुक-क्रीड़ारत नारियों को देखा। वे कंदुक उन वेश्याओं के मन के समान, जो पुरुष के साथ-साथ, पुरुष का शारीरिक सुख जितना प्राप्त करती हैं, फिर भी दाम भी ले लेती हैं, और स्फटिक के समान रंग बदलते थे। वे स्त्रियों के हाथ में रहते वक्त लाल लग रहे थे; उनके हाथों से ऊपर जाते वक्त उनकी डोरे सहित आयत आँखों के काजल का रंग प्रतिबिंबित करते हुए काले हो जाते थे। (कम्बन वेश्याओं की उपमा अनेक जगह पर देते हैं। इधर उनका और एक तरह का व्यवहार बताया गया है। वे अपने पास आये पुरुष के अनुरूप अपने भाव बदल लेती हैं पर उनका मन निर्लिप्त है। स्फटिक भी पारदर्शी है और पास की वस्तुओं का रंग उसमें प्रतिलक्षित होता है)। ५७१

पङ्गयङ् गुवळै याम्बल् पडर्कॉडि वळ्ळै नीलम्
शॅङ्गिडै तरङ्गङ् गॅण्डै शितैवरा लितैय तेम्बत्
तङ्गळो डुवमै यिल्ला ववयवत् तहैमै शालुम्
मङ्गयर् विरुम्बि याडुम् वाविहळ् पलवुङ् गण्डार् 572

पङ्कयम्–कमल-पुष्प; कुवळै–कुवलय; आम्पल–लाल कुमुद; पटर कॉटि वळ्ळै–फैलनेवाली लता वळ्ळै के पत्र; नीलम्–नीलोत्पल; चॅम् किटै–लाल खुखड़ी (एक जल-बेल); तरङ्कम्–तरंगें; कॅण्टै–कॅण्टै मछलियाँ; चितै वराल्–गाभिन वराल नाम की मछलियाँ; इतैय–और ऐसे; तेम्प–व्याकुल हों; तङ्कळोटु–अपने; उवमै इल्ला–उपमान-हीन; अवयवम् तकैमै चालुम्–अवयव-सौष्ठव में श्रेष्ठ; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; विरुम्पि आटुम्–उत्कण्ठित हो स्नान करनेवाली; वाविकळ् पलवुम्–वापियाँ, अनेक भी; कण्टार्–देखीं। ५७२

विश्वामित्र और श्रीराम और लक्ष्मण ने अनेक वापियाँ देखीं। उनमें सुन्दरी स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं। उनके आनन, आँखें, मुख, कान, केश, अधर, त्रिबलियाँ और पिंडलियाँ आदि अवयव इतने सुडौल और सुघड़ थे कि उनको देखकर क्रमशः कमल, नील कुमुद, लाल कुमुद पुष्प; फैलकर बढ़नेवाली "वळ्ळै" के पत्ते; नीलोत्पल, व मछलियाँ, लाल खुखड़ी और गाभिन "वराल" मीन आदि इस बात को लेकर रोते थे कि हम उन अवयवों के समान सुन्दर नहीं बने हैं। ५७२

कडहमुङ् गुळैयुम् बूणुम् मारमुङ् गलिङ्ग नुण्णूल्
वडहमु महर याळुम् वट्टिनि कॉडुत्तु वाशत्

तॉडैयलङ् गोदै शोरप् पळिक्कुनाय् शिवप्पत् तॉट्टुप्
पडैनॅडुङ् गण्णार् वट्टाट् टाडिडम् बलवुङ् गण्डार् 573

कटकमुम्–कंकण; कुळै–कुंडल; पूणुम्–और अन्य आभरण; आरमुम्–रत्नहार; नुण् नूल कलिङ्कम्–पतले सूत के बने वस्त्र; (नुण् नूल्) वटकमुम्–(महीन सूत के) उत्तरीय; मकर याळुम्–मकर वीणा; वट्टिनि कॉट्टुत्तु–दाँव पर चढ़ाकर; वाचम् तॉटॅयल्–सुवासित माला से अलंकृत; अम् कोतै–सुन्दर केश के; चोर–खुलकर लटकते; पळिङ्कु नाय् चिवप्प–स्फटिक की गोटी के लाल होते; तॉट्टु–(उसको) हाथ में लेकर; पटै नॅटु कण्णार्–हथियार सम आयत आँखों की स्त्रियाँ; वट्टु आट्टु–जुआ खेल के; आटु इटम् पलवुम्–खेलनेवाले अनेक स्थानों को; कण्टार्–देखा। ५७३

कहीं-कहीं स्त्रियाँ जुआ खेल रही थीं। वे अपने कंकण, कर्ण-कुंडल, अन्य आभूषण, रत्नहार, वस्त्र, उत्तरीय और मकर वीणा तक को दाँव पर चढ़ा देती थीं और इतनी तत्परता के साथ खेलती थीं कि उनके पुष्पालंकृत केश खुलकर लटकने लगे। गोटियाँ स्फटिक की थीं और उनको वे स्त्रियाँ इस तरह कसकर पकड़ती थीं कि उनकी हथेली लाल हो जाती और गोटी भी लाल रंग की लगने लगतीं। ५७३

इयङ्गुरु पुलन्ग ळङ्गु मिङ्गुङ्गॊण् डेह वेहि
मयङ्गुपु तिरिन्तु निन्रु मरुहुरु मुणर्वि दॅन्नप्
पुयङ्गळिऱ् कलवैच् चानदुम् बुणर्मुलैच् चुवडु नीङ्गा
वयङ्गॊळिऱ् कुमरर् वाळाट् टाडिडम् पलवुङ् गण्डार् 574

इयङ्कु उरु पुलन्कळ्–सदा चलन-शील इन्द्रिय; अङ्कुम् इङ्कुम् कॊण्टु एक–इधर-उधर खींच ले जाने से; एकि–जाकर; मयङ्कुपु–भ्रमित होकर; तिरिन्तुम् निन्रुम्–घूमते-फिरते या खड़े रहकर; मरुकु उरुम् उणर्वु इतु–आकुलित रहनेवाली बुद्धि की स्थिति, यह; अॅन्न–ऐसा मानने योग्य; वयङ्कु ऑळिल्–शोभायमान सुन्दरता के; कुमरर्–पट्ठे; पुयङ्कळिल्–अपनी भुजाओं में; कलवै चान्तुम्–सुगन्धित द्रव्य-मिश्रित चन्दन का लेप; पुणर् मुलै चुवटुम्–अन्तर-हीन रीति से सटे हुए स्तनों के (आलिंगन से प्राप्त) चिह्न; नीङ्का–बिना पोंछे; वाळ् आट्टु–खड्ग-अभ्यास; आटु इटम् पलवुम्–करनेवाले अनेक स्थान; कण्टार्–देखे। ५७४

पट्ठे कहीं-कहीं खड्ग का अभ्यास कर रहे थे। वे उस बुद्धि के समान पैंतरे बदलते रहते थे जो चंचल इन्द्रियों के पीछे जाकर भ्रम में पड़कर कहीं इधर जाती, कहीं उधर; और कहीं धक्का खाकर खड़ी रहती और आकुल हो जाती। उन युवकों के शरीर पर चन्दन के लेप के साथ आलिंगन के अवसर पर लगे प्रियाओं के मांसल स्तनों से अंकित चिह्न भी हैं। ५७४

वञ्जुड रुरुवुऱ् ऱन्न मेन्नियर् वॅण्डिऱ् ऱीयुम्
नॅञ्जिन रोशन् कण्णि नॅरुप्पुरा वनङ्ग नन्नार्

शॆञ्जिलैक् करत्तर् मादर् पुलविह डिरुत्तिच् चॆन्द
कुञ्जियर् शुळला निन्ऱ मैन्दर्दङ् कुळाङ्गळ् कण्डार् 575

वॆम् चुटर् उरु उऱ्ऱतु अन्न–गरम सूर्य ने रूप लिया, ऐसे; मेनियर्–शरीरवाले; वेण्टिऱ्ऱ–माँगी गयी वस्तु को; ईयुम् नॆञ्चिनर्–देनेवाले स्वभाव के; ईचन् कण्णिन् नॆरुप्पु उऱा–परमेश्वर की भाल की आँख की अग्नि से जो न जला; अनङ्कन् अन्नार्–अनंग-सम; चॆम् चिलै करत्तर्–सुघटित धनुषवाले हस्तों के; मातर् पुलविकळ् तिरुत्ति–प्रेमिकाओं की रूठन शांत करके, (उस प्रयत्न में उनके महावर लगे पैरों की लात खाकर, उस कारण); चॆन्त कुञ्चियर्–लाल (रंजित) हुए केश वाले; चुळला निन्ऱ–घूम फिरनेवाले; मैन्तर् तम् कुळाङ्कळ्–पट्ठों के समूहों को; कण्टार्–देखा। ५७५

उन्होंने अनेक सुन्दर युवकों के समूह देखे। वे सूर्य के रूपों के समान तेजोमय थे। वे याचक के प्रति दयालु थे। वे उन अनंगों के समान लगते थे जिनको परमेश्वर के भाल-नेत्र की अग्नि नहीं जला पायी है। उनके हाथ में धनुष थे, उनके केश लाल थे, क्योंकि उन पर उनकी प्रियतमाओं की लातें पड़ी थीं जब वे उनकी रूठन को दूर करने के प्रयास में लगे थे, और पैरों में लगा महावर केश को लाली दे गया। ५७५

पाक्कॊक् कुञ्जॊर् पैङ्गिळि यॊडुम् बलपेशि
माहत् तुम्बर मङ्गयर् नाण मलर्कॊय्युम्
तोहैक् कॊम्बिन् नन्नवर्क् कन्न नडैतोऱ्ऱुप्
पोहक् कण्डे वण्डिन मार्क्कुम् पॊळिल् कण्डार् 576

पचुमै किळियोटुम्–हरे (रंग के) शुकों के साथ; पाकु ऒक्कुम् चॊल्–चाशनी के समान मधुर बातें; पल–अनेक; पेचि–बोलती (करती) हुई; माकत्तु–स्वर्ग की; उम्पर मङ्कैयर्–देवांगनाएँ; नाण–लजा जायँ, ऐसे; मलर् कॊय्युम्–पुष्प चयन करनेवाली; तोकै, कॊम्पु, अन्नवर्क्कु–मयूर व पुष्पलता के समान (छविमय और कोमल और सुन्दर) रहनेवाली स्त्रियों से; अन्नम्–हंसों (को); नटै तोऱ्ऱु–चाल में हारकर; पोक कण्टु–(उनके) पीछे जाते हुए देखकर; वण्टु इनम्–भ्रमर-कुल; आर्क्कुम्–जहाँ गुंजार करते थे; पॊळिल्–उस फुलवारी को; कण्टार्–देखा। ५७६

वे राजमहल के पास आ गये। महल को घेरती हुयी खाई पड़ी है। उसके पास एक फुलवारी रही। उसमें कुछ रमणियाँ फूल चुन रही हैं। वे शुकों के साथ चाशनी के समान बोली में बोल रही हैं। उनको देखकर देवांगनाएँ भी लजा जाती हैं। वे मोरों के समान छविमय हैं और पुष्पलताओं के समान कोमल और मनोहर। उनकी चाल के सामने हंस हार मानकर उनके पीछे-पीछे चलते हैं। स्त्रियों की जीत पर भ्रमर वाहवाही करते गुंजार करते हैं। ५७६

उम्बर्क् केयुम् माळिहै योळि निळल्पाय
इम्बर्त् तोन्ऱुम् नाहर्द नाट्टिन् नलिल्काट्टिप्
पम्बिप् पोंङ्गुङ् गङ्गैयि नाळ्न्दु पडैमन्नन्
अम्बोर् कोयिर् पोन्मदिल् शुर्रुम् महळ्कण्डार् 577

उम्पर्क्कु एयुम्–देवों के लिए भी योग्य; माळिकै ओळि–प्रासादों की पंक्तियों की; निळल् पाय–परछाईं के पड़ने से; इम्पर् तोन्ऱुम्–इस लोक में आकर दिखनेवाले; नाकर् तम् नाट्टु–देवलोक की; इन् ऍळिल् काट्टि–रमणीय सुन्दरता प्रदर्शित कर; पम्पि पोंङ्कुम्–तरंगित होकर उमड़ती आनेवाली; कङ्कैयिन् आळ्न्तु–गंगा के समान गहरी बनकर; पटै मन्नन्–सेना-बहुल राजा (जनक) के; अम् पोन् कोयिल्–सुन्दर स्वर्णमय राजमहल के; पोन् मतिल् चुर्रुम्–स्वर्णमय प्राचीरों को घेरनेवाली; अकळ् कण्टार्–खाई देखी। ५७७

(अब खाई का वर्णन है) खाई में देवों के लिए भी रहने योग्य मिथिला के प्रासादों की परछाईं पड़ती हैं। इससे यह खाई ऐसा भ्रम पैदा करती है कि देवलोक इधर आ गया है। तरंगों के साथ उमंग भर कर बहनेवाली गंगा के समान वह गहरी है। वह महाराज जनक के स्वर्णमय महल के स्वर्णमय प्राचीरों को घेरकर पड़ी है। उस खाई को उन्होंने देखा। ५७७

पोन्निन् शोदि पोदिनि नार्रम् पोलिवेपोल्
तेन्नुण् डेनिर् ऱीञ्जुवै शेञ्जोर् कवियिन्बम्
कन्निम् माडत् तुम्बरिन् माडे कळिपेडो
डन्नम् माडुम् मुन्ऱुरै कण्डङ् गयनिन्ऱार् 578

पोन्निन् चोति–(श्रेष्ठ) स्वर्ण की आभा; पोतिन् इन् नार्रम्–फूल की सुगन्ध; तेन् उण् तेनिल्–मधुमक्खियों से खाद्य शहद का; तीम् चुवै–मीठा स्वाद (जिसमें रहता, उस); चॅम् चोल् कवि इन्पम्–सुस्पष्ट शब्दों की बनी कविता का आनन्द, (इन सबकी); पोलिवे पोल्–उज्ज्वल व्याख्या के समान; कन्नि–कन्या सीतादेवी के; माटत्तु उम्परिन् माटु–प्रासाद के ऊपरी भाग में एक ओर; अन्नम्–हंसों के; कळि पेटोटु आटम्–अपनी प्यारी हंसिनियों के साथ क्रीड़ा करने के लिए बने; मुन् तुरै कण्टु–जलकुण्ड के साथ रहे सहन को देखकर; अङ्कु–वहाँ; अयल्–उस प्रासाद के पास; निन्ऱार्–खड़े रहे। ५७८

वे उस प्रासाद के पास आये जहाँ सीताजी रहती थीं। (विवाह होते तक कन्याओं को अलग भवन में रखने की प्रचलित प्रथा के अनुसार उस प्रासाद में वास कर रही थीं। उसको कन्या-सौध या कन्या-माढा कहा जाता है।) राजकुमारी, सीताजी स्वर्ण की आभा, पुष्प की सुगन्ध, मधुर-मधु सम शब्दों की बनी कविता का काव्यानन्द आदि की साक्षात् जीवित व्याख्या के समान छविमयी, सुगन्धित शरीरवाली और कविता के समान बोलनेवाली थीं। उनके प्रासाद की ऊपरी छत पर एक जलकुंड

वना था जिसमें हंस अपनी प्रिय हंसिनियों के साथ केलि करते थे। उस कुंड के पास खुला सहन भी था। उन सबको देखकर वे तीनों यात्री खड़े हो गये। ५७८

शॅप्पुङ् गालैच् चॆङ्गम लत्तोन् मुदल्यारुम्
ऑप्पॆण् पालुङ् कॊण्डुव मिप्पो रुवमिक्कुम्
अप्पॆण् डाने यायिन पोदिङ् गयल्मर्रोर्
ऑप्पॆङ् गेकॊग् डॆव्वहै नाडि युरैशॆय्हेन् 579

चॆम्मै कमलत्तोन् मुतल्–लाल कमल पर आसीन (ब्रह्मा) आदि; यारुम्–सभी; चॆप्पुम् कालै–चर्चा करते समय; उवमिप्पोर्–उपमा-कथन के समय; ऑप्पु ऑण् पालुम् कॊण्टु–उपमा-योग्य वस्तु को आठों दिशाओं में ढूँढकर; उवमिक्कुम्–अन्त में उपमित (जिनसे) करते हैं; अ पॆण् ताने–वह देवी स्वयं; इङ्कु आयितपोतु–यहाँ सीता बनी आ रहीं, तब; अयल्–अलग; ओर् ऑप्पु–एक उपमा; ऍङ्के–कहाँ; ऍव्वकै–कैसे; नाटि–परखकर; कॊण्टु–लेकर; उरै चॆय्केन्–कहूँगा। ५७९

सीता के वर्णन में किसकी उपमा दी जाय? ब्रह्मा से लेकर सभी लोग स्त्रियों की उपमा आठों दिशाओं में ढूंढकर आखिर श्रीलक्ष्मी को ही लेते हैं। वही श्रीलक्ष्मी तो सीताजी हैं। कवि पूछते हैं कि इनकी उपमा कहाँ, कैसे ढूंढ लाऊं? । ५७९

पॊन्शेर् मॆन्काऱ् किण्किणि मार्वम् बुनैयारम्
कॊन्शे रल्हुन् मेहलै ताङ्गुङ् गॊडियन्नार्
तन्शॆर् कोलत् तिन्नॆऴिल् काणच् चदकोडि
मिन्शे विक्क मिन्नर शॆन्नुम् बडिनिन्ऱाळ् 580

पॊन् चेर्–सौष्ठव-युक्त; मॆन्काल्–कोमल पैरों में पहना हुआ; किण्किणि–पैर का आभरण (घुंघरू); मार्पम् पुनै आरम्–वक्ष पर पहना हुआ हार आदि; कॊन् चेर्–सुडौल; अल्कुल्–कटिप्रदेश में पहनी; मेकलै–मेखला; ताङ्कुम्–इनको धारण करनेवाली; कॊटि अन्नार्–पुष्पलता-समान सखियों को; तन् चेर् कोलत्तु–अपने स्वाभाविक रूप की; इन् ऍऴिल् काण–मनोरम सुन्दरता दिखाती हुई; चतम् कोटि मिन् चेविक्क–शत कोटि बिजलियों से सेवित; मिन् अरचु–विद्युतों में राजा (रानी); ऍन्नुम् पटि–है, ऐसा वर्णनीय रीति से; निन्ऱाळ्–(प्रासादों के ऊपर (हंसों के जलकुंड के पास) खड़ी रहीं। ५८०

सीताजी आकर उस खुली छत पर खड़ी हो गयीं। उनके साथ चेरियाँ खड़ी थीं जो पैरों में घुंघरू, वक्षों में हार आदि और कमरों में मेखला पहने हुए थीं। इन आभरणों से सज्जित, लताओं के समान रही वे भी इनकी स्वाभाविक सुन्दरता से मुग्ध होकर सीताजी को निहार रही थीं। तब सीताजी विद्युतों के समूहों से सेवित विद्युत्राज के समान शोभायमान खड़ी रहीं। ५८०

उमैया ळोंक्कुम् मङ्गय रुच्चिक् करम्वैक्कुम्
कमैयाण् मेनि कण्डवर् काट्चिक् करैकाणार्
इमैया नाट्टम् बेंट्रिल मॅन्ड्रा रिरुकण्णाल्
अमैया दॅन्ड्रा रन्दर वानत् तवरॅल्लाम् 581

उमैयाळ् ओंक्कुम्–उमादेवी सदृश; मङ्कैयर्–देवियों से भी; करम् उच्चि वैक्कुम्–हाथ सिर पर रखकर (सम्माननीय); कमैयाळ्–क्षमाशीला; मेनि–रूप-सौंदर्य; कण्टवर्–देखनेवालों ने; काट्चि करै काणार्–दर्शन, पूर्णरूप से कर, पार न पानेवाले (तृप्त न) होकर; इमैया नाट्टम्–पलक-हीन आँखें; पॅट्रिलम्–प्राप्त नहीं की हैं; ॲन्ड्रार्–कहा; अन्तरम् वानत्तवर् ॲल्लाम्–आकाश के सुर लोग सब; इरु कण्णाल् अमैयातु–दो आँखों से नहीं बन सकता; ॲन्ड्रार्–बोले। ५८१

उमादेवी की समानता करनेवाली श्रेष्ठ देवियाँ भी सीताजी को देखकर इनका महत्व मानती हैं और सम्मान में अपने सिरों पर हाथ जोड़े रख लेती हैं। सीताजी क्षमा आदि उत्तम गुणों से भी भूषित हैं। इनका रूप-सौन्दर्य देखकर आँखें नहीं अघातीं। मानव की आँखें पार नहीं पातीं और अतृप्त होकर मानव कहते हैं कि हमारा भाग्य नहीं रहा और हमें ऐसी आँखें मिली हैं जिनको पलकें झपककर बन्द कर देती हैं और हम लगातार देख नहीं पाते। निर्निमेष आँखोंवाले देवता लोग भी अतृप्त हैं कि हमारे तो दो ही आँखें हैं और इनका सौन्दर्य पूर्णरूप से देखने के लिए दो आँखें यथेष्ट नहीं हैं। ५८१

वॅन्ड्रम् मानैक् कायथिल् वेलुङ् गॉलैवाळुम्
पिन्ड्रम् मानप् पेर्कय लज्जप् पिरळ्कण्णाळ्
कुन्ड्रम् माडक् कोवि नळिक्कुङ् गडलन्ड्रि
अन्ड्रम् माडत् तुम्ब रळिक्कुम् ममुदन्नाळ् 582

अ मानै वॅन्ड्रु–उस (उपमान की) हरिणी को जीतकर; काय् अयिल् वेलुम्–संहारक तीक्ष्ण भाले; कॉलै वाळुम्–और घातिनी तलवार को; पिन्ड्र–(स्पर्धा में) पीछे छोड़कर; मानम् पेर् कयल् अज्च–मान और चंचलता से युक्त कयल् मछलियाँ डरें, ऐसा; पिरळ् कण्णाळ्–चंचल आँखों वाली; कुन्ड्रम् आट–मन्दर पर्वत के घूमने से; कोविन् अळिक्कुम्–श्रीविष्णु द्वारा दत्त; कटल् अन्ड्रि–क्षीरसागर के अतिरिक्त; अ माटत्तु उम्पर्–उस प्रासाद की छत (के); अन्ड्रु अळिक्कुम्–तभी दिये हुए; अमुतु अन्नाळ्–अमृत के समान थीं। ५८२

सीताजी की आँखें अति सुन्दर हैं। उनके सामने अधीरता, तीक्ष्णता, आयतता आदि के कारण उपमित मृग, भाला, तलवार आदि वस्तुएँ टिक नहीं सकतीं। सौन्दर्य-स्पर्द्धा में देवी की आँखें इनको बहुत पीछे छोड़ आयी हैं। ऐसी सीताजी को छत पर देखकर यह भ्रम होता है कि ये अमृत हैं; लेकिन वह अमृत नहीं जिसको मंदर पर्वत को घुमाकर

बहुत परिश्रम के बाद पाया गया। यह अमृत कन्या-सौध ने अपनी छत पर अनायास अभी प्रकट किया है। ५८२

पॆरुन्दे निऩ्शॊऱ् पॆण्णिव ळॊप्पा ळॊरुपॆण्णैत्
तरुन्दा नॆन्ऱा नाऩ्मुह निऩ्ऩुन् दरलामो
अरुन्दा वन्दत् तेव रिरन्दा लमुदॆऩ्ऩुम्
मरुन्दे यल्ला दॆऩ्ऩिनि नल्हुम् मणियाऴि 583

मणि आऴि–रत्नाकर (समुद्र); अरुन्ता अन्त तेवर्–(अमृत छोड़) किसी वस्तु को जिन्होंने नहीं खाया था, वे देव; पॆरु तेऩ् इऩ् चॊल्–बहुप्रशंसित शहद सम मधुर-वाणी की; पॆण् इवळ्–देवी, इनकी; ऒप्पाळ् ऒरु पॆण्ण्–समानता करनेवाली एक स्त्री की; इरन्ताल्–याचना करें तो; तरलामो–दे सकता है क्या; अमुतु ऎऩ्ऩुम् मरुन्ते अल्लातु–अमृत नामक (अमरता-प्रदायी) औषध के सिवा; इनि ऎऩ् नल्कुम्–और क्या दे सकता है; इऩ्ऩुम्–और भी; नाऩ्मुकऩ् तान् तरुम्–ब्रह्मा भी देना (चाहें) तो भी; तरल् आमो–दे सकते हैं क्या। ५८३

ऐसी देवी को अब न तो ब्रह्मा सृष्ट कर सकते हैं, न रत्नों का आगर क्षीरसागर ही दे सकता है। चाहें तो सागर अमृत के सिवा अन्य कुछ न रखनेवाले देवों के माँगने पर फिर से अमृत उत्पन्न कर सकता है; पर ऐसी सुन्दरी कन्या को नहीं दे सकता। (ब्रह्मा शायद अमृत भी नहीं दिला सकते।) सीतादेवी स्वयंभूता हैं। ५८३

अऩैयाण् मेऩि कण्डपि ऩण्डत् तरशाऴुम्
विऩैयोर् मेवुम् मेऩकै यादिम् मिऴिर्वेऱ्कण्
इऩैयो रुळ्ळत् तिऩ्ऩलि ऩोर्तम् मुहमॆऩ्ऩुम्
पऩितोय् वाऩिऩ् वॆण्मदिक् कॆन्ऱुम् पहलॆऩ्ऱे 584

अण्टत्तु अरचु आळुम् विऩैयोर्–देवलोक के शासनकर्ता (इन्द्र आदि) से; मेवुम्–आदृत; मिऴिर् वेल् कण्–प्रकाशमय, शक्ति-सम आँखोंवाली; मेऩकै आति इऩैयोर्–मेनका आदि ऐसी अप्सराएँ; अऩैयाळ् मेऩि कण्टपिऩ्–इनका रूप (-सौंदर्य) देखने के बाद; तम् मुकम् ऎऩ्ऩुम्–अपने मुखरूपी; पऩि तोय्–शीतल (मनोरम); वाऩ् इऩ् वॆण् मतिक्कु–छबिमान, सुखद श्वेत चन्द्र के लिए; ऎऩ्ऱुम्–हमेशा; पकले ऎऩ्ऱु–दिन ही है, समझकर; इऩ्ऩलिऩोर्–उदास हैं। ५८४

मेनका आदि ऐसी स्त्रियाँ हैं जिनका देवेन्द्र आदि भी, उनके सौन्दर्य के कारण आदर करते हैं। बर्छी-सम आँखोंवाली वे भी सीताजी को देखकर इस बात से उदास हैं कि हमारे मुख-चन्द्र के लिए सदा के लिए दिन ही दिन हो गया है, यानी हमारे मुखों की आकर्षकता कम हो गयी है। ५८४

मलर्मे निऩ्ऱिम् मङ्गैयि वैयत् तिडैवैहप्
पलहा लुन्दम् मॆय्न्निऩ्ऩि वाडुम् बडिनोऱ्ऱार्

अलहो विल्ला वन्दण रोनल् लऱमेयो
उलहो वानो उम्बर्को लोवी दुणरेमाल् 58

इ मङ्कै–यह देवी; मलर्मेल् निन्ऱु–कमलपुष्प पर से; इ वैयत्तु इटै वैक- इस धरणी में (आकर) ठहरीं, इसके लिए; तम् मॅय्–अपना शरीर; नति वाटुम्पटि- शरीर को खूब क्लेश देते हुए; पल कालुम् नोऱ्ऱार्–दीर्घकाल तक तपस्या करनेवाले अलकु ओवु इल्ला अन्तणरो–(क्या) अगणित ब्राह्मण हैं; नल् अऱमेयो–श्रेष्ठ धर्मदेवत ही; उलको–यह पृथ्वी; वानो–देवलोक; उम्परो–उनके भी ऊपर के लोक ईतु उणरेम्–यह नहीं जानते। ५८५

यह देवी कमल का वास छोड़कर इस भूमि में वास करने पधारी हैं तो यह किसकी तपस्या का अनुग्रह है? क्या अगणित ब्राह्मणों ने अपने शरीर को क्लेश देते हुए लम्बे काल तक तपस्या की थी? या स्वयं धर्म देवता ने व्रत रखा था? या इस लोक ने; या देवलोक ने; या उनके ही ऊपर के लोकों के वासियों ने तप किया? यह हम नही जानते। ५८५

तन्ने रिल्ला मङ्गयर् शॅङ्गैत् तळिर्माने
अन्नै तेने यारमु देॅन्ऱ् ऱडि पोऱ्ऱ्
मुन्ने मुन्ने मॉय्म्मलर् तूवि मुऱैशारप्
पॉन्ने शूळ्म् बूवि नॉदुङ्गिप् पॉलिहिन्ऱाळ् 58

तम् नेर् इल्ला–अपनी सानी न रखनेवाली; मङ्कैयर्–सखियाँ; चॅम् कै तळिर् अरुण—पल्लव-सम हाथ वाली; माने–मृगी; अन्ने–माता; तेने–शहद; आर् अमुते–अपूर्व अमृत; ऍन्ऱु–कहकर; अटि पोऱ्ऱ्–चरणों की रक्षा में; मुन्ने मुन्ने–(पग धरने के) पूर्व, पूर्व ही; मॉय् मलर् तूवि–घने रूप से पुष्पजाल बिछाती; मुऱैचार्–क्रम से पास-पास आती हैं, ऐसा; पॉन् चूळ्म् पूविन्–स्वर्णरंग के मकरंद भरे फूलों पर; ऑतुङ्कि–चलती हुई; पॉलिकिन्ऱाळ्–कांतिमय दर्शन देती हैं। ५८६

सीताजी के साथ उनकी चरण-सेवा-रत, सुन्दरी सखियाँ रहती हैं। जब सीताजी चलने लगती हैं तब उनके पैर को कठोर भूमि पर लगने से पीड़ा न हो, इस वास्ते सखियाँ आगे-आगे पुष्प-राशि बिखराती जाती हैं। सीताजी मकरन्द-भरे पुष्प-समूहों पर पर रखती चलती हैं। सखियाँ उनको पल्लव-कोमल-हस्ते, मृगनयनी, माते, मधुतुल्ये, अपूर्व अमृतोपमे आदि शब्दों से सम्बोधित करती हैं। ५८६

कॉल्लुम् वेलुङ् गूऱ्ऱमु मॅन्नुम् मिवैयॅल्लाम्
वॅल्लुम् वल्लुम् मॅन्न मदर्क्कुम् विळिकॉण्डाळ्
शॉल्लुन् दन्मैत् तन्ऱदु कुन्ऱुञ् जुवरुन्दिण्
कल्लुम् बुल्लुङ् कण्डुरु हप्पॅण् कनिनिन्ऱाळ् 587

कॉल्लुम्–मारक; वेलुम् कूऱ्ऱमुम्–भाला, यम; ऍन्नुम् इवै ऍल्लाम्–संज्ञित इन सब को; वॅल्लुम् वॅल्लुम् ऍन्न–जीतेगा, जीतेगा अवश्य, यह मानना पड़े ऐसा;

मतर्क्कुम् विऴि कॉण्टाळ्—विजय-गर्व-शालिनी आँखों वाली; पॅण् कत्ति–स्त्रीत्व जिनमें पूर्णता को प्राप्त है उनको; कुन्ऱम्–पर्वत और; चुवरुम्–दीवारें; तिण् कल्लुम्–कठोर प्रस्तर और; पुल्लुम्–(कोमल) घास; कण्टु–देखकरु; उरुक– पसीज जाते हैं, ऐसा; निन्ऱाळ–आ स्थित हुई; अतु–वह (सुन्दरता); चॉल्लुम् तन्मॅत्तु अन्ऱु–कहने योग्य नहीं (मुझ में सामर्थ्य नहीं है)। ५८७

"मारक भाला और कालदेव —इनको भी हम मात दे देंगी। वे चलकर पीड़ा देते हैं। हम अपनी जगह पर रहकर पुरुषों को विह्वल करा देंगी।" ऐसा गर्व करती सी दिखनेवाली आँखें लेकर और स्त्रीत्व के सारे (रूप-गुण) ऐश्वर्य से पूरित सीताजी खड़ी थीं। उनका रूप देखकर अचेतन वस्तुएँ भी जैसे दूर के गिरि, पास की दीवार, कठोर प्रस्तर और कोमल तृण भी द्रवीभून हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में खड़े होने की मुद्रा की सुन्दरता वर्णनीय नहीं रही, यानी हमारी वर्णनशक्ति के वाहर की है। ५८७

वॅङ्गळि विऴिक्कॉरु विऴवु मायवर्, कण्कळिऱ् काणवे कळिप्पु नल्हलान्
मङ्गयर्क् कित्तियदोर् मरुन्दु मायवळ्, एङ्गणा यहर्किनि यावदाङ् गॉलो 588

मङ्कैयर्क्कु–स्त्रियों के लिए; अवर् कण्कळिन् काणवे–उनकी आँखों से देखते ही; कळिप्पु नल्कलान्–परमानन्द देने से; वॅम् कळि विऴिक्कु–प्यारी मत्त आँखों के लिए; ऑरु विऴवुम् आय्–एक 'उत्सव' बनकर; इत्तियतु–मधुर, ओर् मरुन्तुम्– अनुपम अमृत भी; आयवळ्–जो बनीं वे; इत्ति–आगे; ॲङ्कळ् नायकर्कु–हमारे नायक के लिए; यावतु आमो–क्या बनेंगी। ५८८

देवी सीता को जब स्त्रियाँ देखती हैं तब वे सहसा मन खो बैठती हैं। उनकी प्यारी आँखों में देवी सीता प्रमोदाधार उत्सव और संजीवनी अमृत लगती हैं। तो हमारे प्रभु श्रीराम को क्या लगनेवाली हैं ? । ५८८

*** इऴैहळुङ् गुऴैहळु मिन्न मुन्नमे, मऴैपॉरु कण्णिणै मडन्दै मारॉडुम्**
पऴहिय वॅन्निनुमिप् पावै तोन्ऱलाल्, अऴहॅनु मवैयुमो रऴहु पॅऱ्ऱवे 589

कुऴैकळुम्–कुंडल आदि आभरण; इऴैकळुम्–हार आदि आभरण; इन्न मऴै पॉरु–ऐसे मेघ सम (शीतल, मधुर); कण् इणै–चक्षुद्वय वाली; मटन्तै मारॉटुम्– रमणियों के साथ; पऴकिय ॲन्निनुम्–अभ्यस्त हैं तो भी; इ पावै तोन्ऱलाल्–इस प्रतिमा (सम सुघड़) देवी के प्रकट होने से; अऴकु ॲनुम् अवैयुम–अन्धकार कहलाने- वाले वे भी; ओर अऴकु पॅऱ्ऱ–विलक्षण अलंकार (सुन्दरता) पा गये। ५८६

सीताजी की देह पर रहनेवाले कुंडल, हार, आदि आभरणों ने अभूतपूर्व सुन्दरता प्राप्त की है। ये आभरण पहले भी अभ्रशीतल (ताप- हारिणी) आँखों की स्त्रियों से सम्पर्क पा चुके हैं। तब वे उनका अलंकार बनते थे। सीताजी के जन्म के बाद सीताजी इनकी अलंकार बन गयी हैं। इसलिए उनके सौंदर्य को सुन्दरता मिल गयी। ५८९

❀ अॅण्णरु	नलत्तिना	ळिनैय	निन्ऱुऴि
कण्णॉडु	कण्णिणै	कदुवि	यॉन्ऱैयॊन्
ऱुण्णवु	निलैपॅऱा	दुणर्वु	मॊन्ऱिड
अण्णलु	नोक्किना	नवळु	नोक्किनाळ् 59

अॅण् अरु नलत्तिताळ्—अकल्पनीय (रूप गुण-) सौष्ठव वाली; इनैयळ् निन्ऱुऴि- इस प्रकार खड़ी रहीं, उस समय; कण्णॊटु कण् इणै—चक्षुद्वय के साथ चक्षुद्वय ऑन्ऱै ऑन्ऱु कतुवि—एक दूसरे का स्पर्श कर; उण्ण—अंगीभूत करने (पीने) लगे, तो उणर्वुम्—मन की सुधें भी; निलै पॅरातु—(अपने-अपने स्थान पर) रह न पाकर ऑन्ऱिट—मिल गये उस स्थिति में; अण्णलुम्—प्रभु ने भी; नोक्किनान्—दृ डाली; अवळुम् नोक्किनाळ्—उन्होंने (सीताजी ने) भी देखा। ५६०

अचिंत्य रूप-गुण-समृद्ध सीतादेवी खड़ी थीं। तब श्रीराम ने उन पर दृष्टि गड़ायी। सीताजी ने भी उनको देखा, तब आँखों के दो जोड़े एक दूसरे को पकड़ कर निगलने (अंगीभूत करने) लगे और (श्रीराम और सीता) दोनों की भावनाएँ (सुधियाँ) आपस में मिलकर एक हो गयीं। उनमें दृष्टि-स्पर्श और मन-संगम दोनों एक साथ हो गये। ५९०

नोक्किय नोक्कॅनु नुदिकॊळ् वेलिणै, आक्किय मदुहयान् ऱोळि लाऴ्न्दन
वीक्किय कऴैकऴल् वीरन् शॅङ्गणुन्, दाक्कणङ् गनैयवळ् तनत्तिऱ् ऱैत्तवे 59

नोक्किय नोक्कु ऍन्नुम्—देखनेवाली आँखें रूपी; नुति कॊळ्—नुकीले; वेल् इणै- भाले का जोड़ा; आक्किय मतुकैयान्—अति बलशाली (श्रीराम) के; तोळिल्- भजाओं में; आऴ्न्तन—गहरे पैठे; वीक्किय—बद्ध; कऴै कऴल् वीरन्—स्वरित पायल-धारी वीर की; चॅम् कण्णुम्—लाल (-कमल सी) आँखें भी; ताक्कु अणङ्गु अनैयवळ्—श्रीलक्ष्मीदेवी (सम) सीताजी के; तनत्तिल्—उरोजों में; तैत्त—ज लगीं। ५६१

सीताजी ने दृष्टि श्रीराम की आँखों से हटाकर उनकी बलशाली भुजाओं पर बछियों के समान गाड़ी। श्रीरामजी की दृष्टि सीतादेवी के उरोजों पर पड़ी। कवि सीताजी की दोनों आँखों को दो बछियाँ कहते हैं, क्योंकि श्रीराम की भुजाएँ सुदृढ़ थीं। सीताजी के, जो श्रीलक्ष्मी की अवतार थीं, उरोज मृदुल थे इसलिए श्रीराम की आँखें कमल-दल के समान थीं। और भी, श्रीराम की भुजाओं पर सीताजी की दृष्टि चुभी या गड़ी। इधर श्रीराम की आँखें सीताजी के उरोजों पर लगीं। कितना सरस वर्णन है! और कैसा अर्थपूर्ण! । ५९१

❀ परुहिय	नोक्कॅनुम्	बाशत्	ताऱ्पिणित्
तॊरुवरै	यॊरुवर्त	मुळ्ळ	मोर्त्तलाल्
वरिशिलै	यण्णलुम्	वाट्क	णङ्गैयुम्
इरुवरु	माऱिप्पुक्	किदय	मॆय्दिनार् 592

परुकिय नोक्कु–(रूप-सुधा को) पीनेवाली दृष्टि; अँतुम् पाचत्ताल्–रूपी पाश से; पिणित्तु–बाँधकर; ऑरुवर् तम् उळ्ळम्–एक का मन; ऑरुवरै–दूसरे को; ईर्त्तलाल्–खींचने से; वरि चिलै अण्णलुम्–बन्धनयुक्त धनुष के धारक प्रभु; वाळ् कण् नङ्कैयुम्–तलवार-सम आँखोंवाली देवी; इरुवरुम्–दोनों; इतयम् मारि पुक्कु–मन बदलकर प्रवेश कर; ॲय्तिनार–बस गये। ५६२

आपस का देखना क्या था मानों उनकी दृष्टियाँ पाश के समान थीं। श्रीराम की दृष्टि ने सीता को बाँधकर खींचा और सीताजी की दृष्टि ने श्रीराम को। वे अब एक दूसरे के हृदय में स्थान बदलकर बस गये। यानी श्रीराम के हृदय में तलवार सम आँखोंवाली सीताजी का रूप आ गया और सीताजी के हृदय में श्रीराम का धनुर्धारी रूप। ५९२

*** मरुङ्गिला नङ्गयुम् वशैयि लैयनुम्**
ऑरुङ्गिय विरण्डुडर् कुयिरॉन्ऱायिनार्
करुङ्गडर् पळ्ळियिऱ् कलवि नीङ्गिप्पोय्प्
पिरिन्दवर् कूडिनाऱ् पेशल् वेण्डुमो 593

मरुङ्कु इला नङ्कैयुम्–कटि-हीन (क्षीण-कटि) देवी; वचै इल् ऐयन्–अनिन्द्य प्रभु; इरण्टु उटऱ्कु–दो शरीरों के लिए; ऑरुङ्किय–सम्मिलित; उयिर् ऑन्ऱु–एक प्राण; आयिनार्–बन गये; करु कटल् पळ्ळियिल्–विशाल क्षीरसागर-शय्या से; कलवि–संग; नीङ्कि पोय्–अलग हो, जाकर; पिरिन्तवर्–जो अलग हुए; कूटिनाल्–(वे) मिलें तो; पेचल् वेण्टुमो–वर्णन करना भी चाहिए क्या। ५६३

अब दोनों एक-प्राण हो गये। दोनों एक-एक अभाव के कारण मनोरम बने हैं। श्रीराम में अपयश का अभाव था, तो सीता में कटि की क्षीणता थी। ये दोनों अनपायी (नित्य) दम्पति हैं जो क्षीरसागर में एक साथ हैं, वे ही अलग-अलग जाकर जन्मे थे। अब वे फिर मिल रहे हैं। तब कहने को क्या है? (इस पद्य में क्षीरसागर का 'करु' विशेषण दिया गया है। तमिऴ में करु का अर्थ विशाल भी है, काला या नीला भी। क्षीरसागर मेघ-श्याम विष्णु के रंग के प्रतिफल में नीला दिखता है।) ५९३

*** अन्दमि ल्नोक्किमै यणैहि लामैयाल्, पैन्दॉडि योवियप् पावै पोन्ऱनळ्**
शिन्दैयु निऱैयुमॅय्न् नलनुम् पिन्शॅल, मैन्दनु मुनियॊडु मऱैयप् पोयिनान् 594

पैन्तॊटि–चोखे स्वर्ण के आभरण धारण करनेवाली; अन्तम् इल् नोक्कु–अनन्त लौट न आनेवाली दृष्टि के कारण; इमै अणैकिलामैयाल्–पलकें नहीं झपकीं, इसलिए; ओवियम् पावै पोन्ऱनळ्–चित्र-लिखित सुन्दरी के समान हो गयीं; चिन्तैयुम्–मन; निऱैयुम्–और संयम; मॅय् नलनुम्–शरीर की दृढ़ता; पिन् चॅल–साथ-साथ पीछे आने देते हुए; मैन्तनुम्–कुमार भी; मुनियॊटु–मुनि (विश्वामित्र) के साथ; मऱैय–अदृश्य; पोयिनान्–चले गये। ५६४

सीताजी की कामना भी अपूर्ण रह गयी। वे आँखें फाड़े, बिना

पलक गिराये देखती रहीं। तब वे चित्र में लिखित बाला के समान लगीं। श्रीराम विश्वामित्र के साथ चले गये और अदृश्य भी हो गये। उनके पीछे-पीछे सीताजी का मन और संयम भी चले गये। श्रीराम इनको भी लेकर अदृश्य हो गये —यह कहना भी ठीक है। ५९४

❀ पिऱैयॆन्नु नुदलवळ् पॆण्मै यॆन्पडुम्, नऱैकम ऴलङ्गला नयन कोशरम्
मऱैदुलु मतमॆनु मत्त यानयिन्, निऱैयॆनु मङ्गुश निमिर्न्दु पोयदे 595

नऱै कमऴ् अलङ्कलान्–सुवासपूर्ण मालाधारी; नयन कोचरम् मऱैतलुम्–नयन-गोचर दूर से बाहर जाने पर; मतम् ॲनुम् मत्त यानैयिन्–मनरूपी मत्त हाथी का; निऱै ॲनुम् अङ्कुचम्–संयम रूपी अंकुश; निमिर्न्तु पोयतु–सीधा हो गया; पिऱै ॲनुम् नुतलवळ्–चन्द्रकला-सम ललाटवाली के; पॆण्मै–स्त्रीत्व (क्रीड़ा आदि गुण); ॲन् पटुम्–क्या (किस काम का) होगा। ५९५

संयम का धैर्य ही चला गया तो स्त्री-सुलभ लज्जा आदि गुण किस काम का? ज्योंही स्वरित पायलधारी श्रीराम नयन-पथ से अदृश्य हो गये त्योंही सीता के मनरूपी मत्तगज का संयमरूपी अंकुश सीधा होकर बेकार हो गया। वे बेहद विह्वल हो गयीं। ५९५

मालुऱ वरुदलु मनमु मॆय्युन्दन्, नूलुऱु मरुङ्गुल्पो नुडङ्गु वाणॊडुङ्
गालुऱु कण्वऴिप् पुहुन्त कामनोय्, पालुऱु पिऱैयॆनप् परन्द दॆङ्गुमे 596

माल् उऱ वरुतलुम्—काम-मोह के बढ़ते ही; मतमुम्–मन और; मॆय्युम्–शरीर; तन् नूल् उऱु मरुङ्कुल् पोल्–अपनी सूत्र-क्षीण कटि के समान; नुटङ्कुवाळ्–मुरझानेवाली (सीताजी) की; काल् उऱु नॆटु कण् वऴि–मार्ग बनी दीर्घ आँखों से होकर; काम नोय्—इच्छा-रोग; पाल् उऱु पिऱै ॲन–दूध में पड़े मोर की बूंद (जामन) के समान; ॲङ्कुम् परन्ततु–(शरीर में) सर्वत्र फैल गया। ५९६

काम-मोह बढ़ता गया। इसलिए सीताजी का शरीर और मन उनकी कटि के समान बलहीन हो गये। उनकी आँखों के द्वारा अन्दर आया काम-रोग, दही में पड़े (जामन) खटाई के दही की बूंद का सा काम कर गया। सारे शरीर में वह रोग व्याप्त हो गया। ५९६

नोमुऱु नोय्निलै नुवल हिऱ्ऱिलळ्, ऊमरिन् मनत्तिडै युन्नि विम्मुवाळ्
कामनु मॊरुशरङ् गरुत्ति नॆय्दनन्, वेमॆरि यदनिडै विऱहिट् टेन्नवे 597

नोम्–पीड़ित हैं; उऱु नोय् निलै–पीड़क रोग की स्थिति; नुवलकिऱ्ऱिलळ्–नहीं कहतीं; ऊमरिन्–गूँगों के समान; मनत्तु इटै–मन में ही; उन्नि–सोचकर; विम्मुवाळ्–तरसतीं; कामनुम्–मन्मथ भी; वेम् ॲरि अतन् इटै–जलनेवाली अग्नि में; विऱकु इट्टतु ॲन्न–ईंधन दिया, ऐसा; ऑरु चरम्–एक (कमल-) शर को; करुत्तिन्–उनके अन्तःकरण में; ॲय्तनन्–चलाया। ५९७

सीताजी काम-वेदना से पीड़ित रहीं, पर उन्होंने किसी से उसकी चर्चा नहीं की। गूँगों के समान मन में ही महसूस करती घुलने लगीं। तब

कामदेव ने भी, जलती आग में ईंधन डालने के समान उनके स्तनों पर एक शर छोड़ा। (यह शर कमल-पुष्प शर था जो कामोत्तेजक बताया जाता है।) ५९७

निळ्ळिडु कुण्डल मदनि नॆय्दिडा
अळ्ळिडा मिळिर्न्दिडु मयिल्हॊळ् कण्णिनाळ्
शुळ्ळिडु कून्दलुन् दुहिलुज् जोर्दरत्
तळ्ळिडु वल्लिये पोलच् चाम्बिनाळ् 598

निळल् इटु–कांति विकीर्ण करनेवाले; कुण्टलम् अतनिन् ऎय्तिटा–कुंडलों तक जाकर; अळल् इटातु मिळिर्न्तिटुम्–बिना आग में डाले ही चमकनेवाले; अयिल् कॊळ्–भाले के समान; कण्णिनाळ्–आँखों वाली; चुळल् इटु कून्तलुम्–सिरे पर घुंघराले बने केश और; तुकिलुम्–वस्त्र; चोर्तर–खिसक पड़े; तळल् इटु–आग में पड़ी; वल्लिये पोल–पुष्पलता के समान; चाम्पिनाळ्–मुरझायीं। ५९८

उनकी आँखें कानों और कानों के उज्ज्वल कुंडलों तक गयी थीं; बर्छी-सदृश तीक्ष्ण थीं। उनके घुंघराले केश खुलकर विखर गये और वस्त्र खिसकने लगे। वे भी अग्नि में डाली गयी पुष्पवल्ली के समान मुरझा गयीं। ५९८

तळङ्गिय कलैहळु निऱैयुज् जङ्गमुम्, मळुङ्गिय वुळ्ळमु मऱिवु मामैयुम्
इळन्दव ळिमैयवर् कडैय यावैयुम्, वळङ्गिय कडलॆन वऱिय ळायिनाळ् 599

तळङ्किय कलैकळुम्–मधुर ध्वनि उठानेवाले मेखला आदि आभरण; चङ्कमुम्–शंख-कंकण; निऱैयुम्–संयम का धैर्य; मळुङ्किय उळ्ळमुम्–निस्तेज मन; अऱिवुम्–बुद्धि; मामैयुम्–और शरीर की छवि; इळन्तवळ्–खोयी हुयी; इमैयवर् कटैय–देवों के मथने से; यावैयुम् वळङ्किय–(अपने पास के) सबको दे चुका, उस; कटल् ऎन–(क्षीर-) सागर के समान; वऱियळ् आयिनाळ्–निर्धन (निस्सार) बन गयीं। ५९९

अब उनसे मेखला आदि आभरणों, शंख-कंकण आदि के साथ संयम की दृढ़ता, पहले ही कुंठित पड़ा हुआ मन, बुद्धि, शरीर की कांति सब छूट गये। और वे उस क्षीरसागर के समान निर्धन (निस्सार) हो गयीं, जिसको मथकर देवों ने सारी वस्तुएँ निकाल ली थीं। ५९९

कलङ्गुळैन् दुहनॆडु नाणुङ् गण्णऱ
नलङ्गुळै तरनहिल् मुहत्ति लेवुण्डु
मलङ्गुळै यॆनवुयिर् वरुन्दिच् चोर्दरुम्
पॊलङ्गुळै मयिलक्कोण् डरिदिऱ् पोयिनार् 600

कलम् कुळैन्तु उक–आभरण खिसककर गिरते हैं; नॆटु नाणुम्–गरिमा देनेवाली लज्जा भी; कण् अऱ–हटती जाती है; नलम् कुळै तर–देह की कांति छूटती जाती है; नकिल् मुकत्तिल्–उरोज-मुखों पर; ए उण्टु–मन्मथशर खाकर; मलङ्कु

उळ्ळै अॅऩ वरुन्ति–आहत हरिणी के समान वेदना पाकर; उयिर् चोर् तरुम्–प्राण-विकलित हुई; पॉलम् कुळ्ळैमयिलै–स्वर्ण कुंडल-धारिणी, मयूर-सम छवि वाली को; अरितिऩ् कॉण्टु पोयिऩार्–सायास अन्दर ले गयीं। ६००

सखियों ने देखा कि सीताजी बेहाल हो रही हैं। आभरण खिसक-कर गिर चुके। लाज छूटती जा रही थी। शरीर की कांति मन्द पड़ गयी थी। वे शराहत हरिणी के समान स्तनों पर मन्मथ के कमल-शर की चोट खाकर प्राणविह्वल हो रही हैं। तब वे स्वर्णकुंडल-धारिणी और मोर सी छटावाली, उनको सायास अन्दर ले गयीं। (कुंडल नहीं गिरे थे, क्योंकि वे कानों में गुँथे हुए थे)। ६००

कादॉडुङ् गुळ्ळैपॉरु कडैक्क णङ्गैतऩ्
पादमुङ् गरङ्गळु मऩैय पल्लवम्
तादॉडुङ् गुळ्ळैयॉडु मडुत्त तण्पऩिच्
चीदनुण् डुळिमल रमळिच् चेर्त्तिऩार् 601

कुळ्ळै–कुंडलों को; कातॉटुम् पॉरु–कानों से टकरानेवाली; कटै कण्–आँखों की कोर से देखनेवाली; नङ्कै तऩ्–देवी के; पातमुम् करङ्कळुम् अऩैय–चरण और हाथ की समानता करनेवाले; पल्लवम्–पल्लवों को; तातॉटुम् कुळ्ळैयॉटुम् अटुत्त–परागों और पुष्प-दलों के सहित; तण्चीतम्–अधिक शीतल; नुण् पऩि तुळि–सूक्ष्म ओस की सी सीकरों से सिंचित; मलर् अमळि–पुष्प-शय्या पर; चेर्त्तिऩार्–लिटाया। ६०१

वे कर्णों और कर्ण-कुंडलों तक जानेवाली अपनी आँखों की कोरों से देख रही थीं। उनको सखियों ने पल्लव-शय्या पर लिटा दिया। वह देवी के हाथ और पैरों के ही समान, पल्लव-पुष्प आदि की बनी और अति शीतल हिम-सीकरों से सिंचित शय्या थी। ६०१

नाळरा नरुमल रमळि नण्णिऩाळ्, पूळैवी पुरैपऩिप् पुयऱ्कुत् तेम्बिय
ताळता मरैमलर् तदैन्द पॉय्हैयुम्, वाळरा नुङ्गिय मदियुम् पोलवे 602

नाळ् अरा–नवीन; नऱु मलर् अमळि–सुगन्धित पुष्प-शय्या (को); पूळै वी पुरै–सेमर के फूलों के सदृश; पऩि पुयल् कु तेम्पिय–ओस की वर्षा से मुरझाये; ताळ तामरै मलर् ततैन्त–तालों सहित कमल-पुष्पों से संकुलित; पॉय्कैयुम्–तड़ाग और; वाळ् अरा नुङ्किय–भयंकर सर्प (राहु) निगलित; मतियुम् पोल–चन्द्र के समान बनाते हुए; नण्णिऩाळ्–गयीं (शय्या पर बैठीं)। ६०२

जब सीताजी उस शय्या पर बैठीं तब वह नवीन और सुवासित फूलों वाली शय्या पाले के कारण कमल के फूलों के झड़ने पर केवल नालों से भरे रहनेवाले सरोवर के समान और राहुग्रस्त चन्द्र के समान हो गयी। पुष्प और पल्लव सीताजी के ताप से मुरझाकर काले हो गये। कुहरा जो फैलता आया वह उड़नेवाले सेमर के फूलों के घने विस्तार के समान था। ६०२

मलैमुहट् टिडत्तुह मळैक्क णालिपोल्
मुलैमुहट् टुदिर्न्दन नॅडुङ्गण् मुत्तिनम्
शिलैनुदर् कडॅयुरच् चॅरिन्द वेर्वुतन्
उलैमुहप् पुहैनिह रुयिर्प्पिन् मायन्ददे 603

मलै मुकटु इटत्तु उकु–पर्वत-शिखर पर गिरनेवाले; मळै कण् आलि पोल्–मेघों की बूंदों के समान; मुलै मुकटु—उरोज-सिरों पर; नॅटु कण् मुत्तु इतम्–आयत आँखों के मोती-समान अश्रुकण; उतिर्न्तन–गिरे; चिलै नुतल् कटै–धनुष समान ललाट पर; उऱ चॅरिन्त वेर्व–उठे संकुलित स्वेदकण; उलै मुकम् पुकै निकर्–(लुहार की) भट्ठी से निकलनेवाले धुएँ के समान; तन् उयिर्प्पिन्–उनके दीर्घ निश्वास से; माय्न्ततु–सूख गये। ६०३

वे आँखों से मोती के समान आँसू गिरा रही थीं। वे आँसू की बूंदें स्तनों के अग्रभागों पर गिरीं, जैसे मेघों से जल-कण पर्वत-शिखरों पर गिरते हैं। चाप के समान ललाट पर स्वेदकण प्रकट होते थे पर उनके तप्त निश्वास में वे सूख भी जाते थे। ६०३

कम्बमिल् कॉडुमनक् कान वेडन्कै
अम्बॉडु शोर्वदोर् मयिलु मन्नवळ्
वॅम्बुरु मनत्तनल् वॅदुप्प मॅन्मलर्क्
कॉम्बॅन कुळैन्दु वमळियिर् शाय्न्दनळ् 604

कम्पमिल्–अकंपित (दयाहीन); कॉटुमनम्—क्रूर-मन के; कातम् वेटन् कै अम्पॉटु–जंगली व्याध के हाथ के शर से; चोर्वतु ओर् मयिलुम् अन्नवळ्–लटनेवाले मोर के भी समान (विकल) हुई वे; वॅम्पु उऱु मनत्तु–झुलसनेवाले मन की; अनल् वॅतुप्प–आग के जलाने से; मॅल् मलर् कॉम्पु अॅन–कोमल पुष्पलता के समान; कुळैन्तु–मुरझाकर; अमळियिल्–शय्या पर; चाय्न्तनळ्–गिरीं। ६०४

वे उस मोर के समान वेदना का अनुभव कर रही थीं, जिस पर निर्दयी क्रूर मनवाले वन्य व्याध का घातक शर लगा। अन्तर की कामाग्नि से झुलस कर वे अग्नितप्त पुष्पलता के समान शय्या पर लेटीं। ६०४

शॉरिन्दन नऱुमलर् शुरुक्कॉण् डॅरिन
पॉरिन्दन कलवैहळ् पॉरियिर् चिन्दिन
ॲरिन्दवॅङ् गनलशुड विळैयिर् कोत्तनूल्
परिन्दन करिन्दन पल्ल वङ्गळे 605

ॲरिन्त वॅम् कनल् चुट–जलानेवाली भयंकर कामाग्नि के ताप से; चॉरिन्तन नऱु मलर्–फैले रहे पुष्प; चुऱु कॉण्टु ॲरित–काँटे बनकर चुभे; पल्लवङ्कळ्–पल्लव; करिन्तन–(सूखकर) काले हो गये; कलवैकळ्–(चन्दनादि के) लेप; पॉरिन्तन–भनकर; पॉरियिन्–लाजे के समान; चिन्तिन–झड़ गये; इळैयिल् कोत्त नूल्–हारों में लगे सूत्र; परिन्तन–टूट गये। ६०५

शय्या के फूल तप्त होकर काँटे बने और उनके अंगों में चुभे। पल्लव झुलसकर काले पड़ गये। चन्दन-लेप भुन गया और उनके कण लाजों के समान चू गये। आभरणों को पोहनेवाला सूत्र भी जलकर टूट गया। ६०५

तादियर् शॅविलियर् तायर् तव्वयर्, मादुय रुळन्दुळन् दळुङ्गि माळ्हिनार्
यादुकॉ लिदुवॅन वॅण्ण ऱेऱ्ऱलर्, पोदिनो डयिनिनीर् शुळऱ्‌रिप् पोक्किनार् 606

तातियर्–चेटियाँ; चॅविलियर्–दाइयाँ; तायर्–माताएँ; तव्वैयर्–बड़ी बहनों के स्थान में रहनेवालियाँ; मातुयर् उळन्तु उळन्तु–बड़ी ही वेदना में कुढ़-कुढ़कर; अळुङ्कि–डर कर; माळ्कितार्–व्याकुल होती हुईं; इतु यातु कॉल्–यह भी क्या है; ॲन–यह; ॲण्णल् तेऱ्ऱलर्–समझ नहीं पायीं; पोतिनॊट–पुष्पों के साथ; अयिनि नीर्–नीराजन; चुळऱ्ऱि–घुमाकर; पोक्कितार्–नजर उतारी। ६०६

देवी की यह दशा देखकर, चेरियाँ, दाइयाँ, माताएँ और बड़ी दीदियाँ सब डर गयीं। वे दुखी हो संकट उठाने लगीं। कारण न जान पाकर उन्होंने नीराजन घमाकर दृष्टि-दोष उतारा। (लड़के लड़कियों की पाँच तरह की, जैसे स्नान कराना, खिलाना, सुलाना, बोली सिखाना, रक्षा करना आदि की, परिचर्या करनेवालियों को दाइयाँ कहा जाता है। उनकी पुत्रियों को जो उम्र में बड़ी हैं, तव्वयर्—दीदियाँ कहा जाता है।) ६०६

अरुहुनिन् ऱशैक्किन्ऱ वाल वट्टक्काल्
ॲरियिनै मिहुत्तिड विळैयु मालैयुम्
करिहुव तोहुव कनल्व काट्टलाल्
उरुहुपॊन् पावैयु मॊत्तुत् तोन्ऱिनाळ् 607

अरुकु निन्ऱु–पास खड़ी होकर; अचैक्किन्ऱ–(सखियों द्वारा) डुलाये जानेवाले; आलवट्टम् काल्–पंखों की हवा; ॲरियितै मिकुत्तिट–जलन को बढ़ाती गयी, तब; इळैयुम्–आभरण; मालैयुम्–हार; करिकुव–झलसते हैं; तीकुव–तपते हैं; कनल्व–अधिक तपते हैं; काट्टलाल्–इस प्रकार दिखाई देते हैं, अतः; उरुक–पिघलनेवाली; पॊन् पावै ऑत्तुम्—स्वर्ण-प्रतिमा के समान भी; तोन्ऱिताळ्–दिखाई दीं। ६०७

पास खड़ी होकर चेरियाँ पंखे झलती हैं। उससे जो हवा आती है वह देह-ताप को अधिक करा देती है। तब देवी के शरीर के आभरण तपते, लाल बनते और जलते से दीखते हैं। उस स्थिति में स्वयं देवी स्वर्ण-प्रतिमा के समान लगती हैं, जिसे आग में डालकर पिघलाया जाता हो। ६०७

अल्लिनै वहुत्तदो रलङ्गर् काडॅनुम्
वल्लॅळु वल्लवेन् मरह दप्पॅरुङ्
कल्लॅनु मिरुपुयङ् कमलङ् गण्णॅनुम्
विल्लॊडु मिळिन्ददोर् मेह मॅन्नुमाल् 608

अल्लितै वकुत्तु—अन्धकार से निर्मित; अलङ्कल्—मालाधारी; ओर् काटु अँतुम्—एक बन, कहती; इरु पुयम्—दो कन्धे; वल् अँऴु—सुदृढ़ लौह-स्तम्भ; अल्लवेल्—नहीं तो; मरकतम् पॆरु कल्—मरकत का पर्वत; अँतुम्—कहतीं; कण्—आँखें; कमलम्—कमल; अँतुम्—कहतीं; विल्लोटुम् इऴिन्तत्तु ओर् मेकम्—(इन्द्र-) धनुष के साथ उतर आया एक मेघ; अँतुम्—कहतीं। ६०८

सीताजी आप ही आप बोल रही हैं। कहती हैं कि (श्रीराम का केश) अंधकार-निर्मित और मालालंकृत वन है; कंधे लौहस्तंभ हैं या मरकत-गिरियाँ; आँखें कमल हैं। उनका रूप इन्द्रधनुष के साथ उतरकर आया हुआ मेघ है। ६०८

नॆरुक्कियुट्	पुहुन्दरु	निऱैयुम्	पॆण्मयुम्
उरुक्कियॆन्	नुयिरोडु	मुण्डु	पोयिनान्
पॊरुप्पुरऴ्	तोऴ्पुणर्	पुण्णि	यत्तदु
करुप्पुविल्	लन्ऱवन्	काम	नल्लने 609

उऴ् नॆरुक्कि पुकुन्तु—मेरे अन्दर बलात् प्रविष्ट होकर; अरु निऱैयुम्—स्थिर संयम-धैर्य को; पॆण्मैयुम्—और स्त्रीत्व को; उरुक्कि—द्रवीभूत कर; अॆन् उयिरोटुम्—मेरे प्राणों के साथ; उण्टु पोयिनान्—जो खा (हर ले) गये (उनके); पॊरुप्पु उरऴ् तोऴ्—पर्वत से टकरानेवाले कन्धों से; पुणर् पुण्णियत्तु—संश्लेष रखने का सुकृतवाला; करुप्पु विल् अन्ऱु—ईख का चाप नहीं; अवन् कामन् अल्लन्—वह कामदेव नहीं है। ६०९

वे आगे कहती हैं। उनके, जो मेरे अंदर बलात् घुसकर, मेरा संयम, स्त्री-गुण आदि को गलाकर मेरे प्राणों के साथ पीकर (हर कर) चले गये, कंधों पर लगा रहने का सुकृत वाला धनुप ईख का नहीं लगा। इसलिए वे कामदेव नहीं थे। ६०९

उरैशॆयिऱ् ऱेवर्त मुलहु ळान्लन्, विरैशॆऱि तामरै यिमैक्कुम् मॆय्म्मयाल्
वरिशिलैत् तडक्कयन् मार्बि नूलिनन्, अरशिळङ् गुमरने यादल् वॆण्डुमाल् 610

उरै चॆयिल्—कहूँ तो; विरै चॆऱि तामरै—सुवास-पूर्ण कमल (-सदृश आँखें); इमैक्कुम् तन्मैयाल्—पलकें मारने के व्यवहार से; तेवर् तम् उलकु उळान्—देवलोक में रहनेवाले; अलन्—नहीं; वरि चिलै तट कैयन्—बन्धन-युक्त धनुर्धर विशाल-हस्त; मारपिल् नलिनन्—वक्ष में यज्ञोपवीत धारण करनेवाले (इसलिए); अरच इळङ्कुमरने आतल् वेण्टुम्—तरुण राजकुमार ही हैं। ६१०

फिर कौन हैं ? सोचती हूँ तो उनकी सुवासित कमल-सम आँखों की पलकें गिरती-उठती थीं। इसलिए वे देवलोकवासी नहीं हैं। वे अपने विशाल हाथ में धनुष रखते थे और वक्ष पर यज्ञोपवीत धारण किए हुए थे। इसलिए वे तरुण राजकुमार ही हैं। ६१०

पंण्वऴि नलत्तोंडुम् पिऱन्द नाणोंडुम्
ऑण्वऴि युणर्वुना नेंङ्गुङ् गाण्गिलेन्
मण्वऴि नडन्दडि वरुन्दप् पोनवन्
कण्वऴि नुऴैयुमोर् कळ्वने कॉलाम् 611

पॅण् वऴि नलत्तोंटुम्–स्त्रियोचित गरिमा के साथ; पिऱन्त नाणोंटुम्–सहज लज्जा के भी साथ; ऑण् वऴि उणर्वुम्–विचारक विवेक; ऍङ्कुम् नान् काणकिलेन्–कहीं नहीं देखती; अटि वरुन्त–चरणों को दुख देते हुए; मण् वऴि–धरती पर; नटन्तु पोनवन्–चलते जो गये वे; कण् वऴि नुऴैयुम्–आँखों के मार्ग से घुसनेवाले; ओर् कळ्वन् आम् कॉल्–एक चोर हैं क्या ? । ६११

और भी; मेरी सहज सुन्दरता, लज्जा, विवेक सब मुझे छोड़कर चले गये। कहीं ढूंढे नहीं मिलते। इसलिए चरणों को दुख देते हुए भूमि पर जो पैदल चलते गए वे अवश्य कोई विचित्र चोर होंगे जो देखनेवालों की आँखों के मार्ग से उनके हृदय में प्रवेश कर जाते हैं। (इधर तुलसीदास की सीता ने अपने "लोचन मगु रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी"। अब कहिये दो में से कौन चोर है ?)। ६११

※ इन्दिर नीलमॊत् तिरुण्ड कुञ्जियुम्, चन्दिर वदनमुन् दाऴ्न्द कैहळुम्
सुन्दर मणिवरैत् तोळु मेयल, मुन्दियॆन् नुयिरैयम् मुऱुव लुण्डदे 612

इन्तिर नीलम् ऑत्तु–इन्द्रनील के समान; इरुण्ट कुञ्चियुम्–काले केश और; चन्तिर वतनमुम्–चन्द्र-वदन; ताऴ्न्त कैकळुम्–(आजानु) लंबित हाथ; चुन्तर–सुन्दर; मणि वरै–नील-मणि पर्वत सम; तोळमे अल्ल–कन्धे, ये ही नहीं; ऍन् उयिरै–मेरे प्राणों को; मुन्ति–सबसे पहले; अ मुऱुवल्–उस मन्दहास ने; उण्टतु–पी लिया। ६१२

उनके अंगों का स्मरण करती हुई वे आगे कहती हैं कि इन्द्र-नील (के समान) केश, चंद्र-वदन, सुन्दर नील-मणि पर्वत-सम कंधे—केवल इन्हीं ने नहीं, इनके पहले उनके मंद-हास ने मेरी सुध हर ली। ६१२

※ पडर्न्दोळि परन्दुयिर् परुहु माहमुम्, तडन्दरु तामरैत् ताळु मेयल
कटन्दरु मामदक् कळिनल् यानैपोल्, नडन्ददु किडन्ददॆन् नुळ्ळ नण्णिये 613

पटर्न्त–विस्तृत हो; ऑळि परन्तु–तेजोमय; उयिर् परुकुम्–प्राण पीनेवाला; आकमुम्–वक्षस्थल; तटम् तरु–भव्य; तामरै ताळुमे–कमल-चरण ही; अल–नहीं (बल्कि); कटम् तरु मा मतम्–गण्ड से बहनेवाला मदजल; कळि–मत्तता (इनसे युक्त); नल् यानै पोल्–अच्छे हाथी के समान; नटन्ततु–चलने का दृश्य; ऍन् उळ्ळम् नण्णि–मेरे मन में पैठकर; किटन्ततु–पड़ा रहता है। ६१३

मेरे मन में उनका विशाल तेजोमय और चित्तहारी वक्षस्थल, और गरिमामय चरण-कमल, इनकी स्मृति बनी तो रहती है। पर मदनीर

बहाने वाले मत्त गज की सी जो उनकी चाल रही वह अधिक गहरे रूप से अमिट बनी रहती है। ६१३

पिऱन्दुडै	नलनिऱै	पिणित्त	वॆन्दिरम्
कऱङ्गुपु	तिरियुमॆन्	कन्ऩि	मामदिल्
ऍऱिन्दवक्	कुमरनै	यिन्नुङ्	गण्णिऱ्कण्
डऱिन्दुयि	रिळक्कवु	माहु	मेकॊलाम् 614

पिऱन्तु उटै–मेरे सहजात; नलम् पिणित्त(स्त्रियोचित) गुणों की रखवाली करनेवाला; निऱै ऍन्तिरम्—संयम-धैर्यरूपी यन्त्र; कऱङ्कुपु तिरि–(जिसमें) घूमता रहता है; ऍन् कन्ऩि मा मतिल्–उस मेरे, कन्यात्वरूपी प्राचीर को; ऍऱिन्त–तोड़नेवाले; अ कुमरनै–उन तरुण कुमार को; इन्ऩुम्–और एक बार; कण्णिन् कण्टु–आँखों से देखकर; अऱिन्तु–परिचय पाकर; उयिर इळक्क–(बाद) प्राण खोना; आकुमे–प्राप्त होगा क्या। ६१४

मेरा कन्यात्व प्राचीर था, जिसमें मेरा सहज संयमरूपी यंत्र (चक्रायुध) प्रबल रूप से घूमता था। पर इस अभेद्य प्राचीर को भी उन कुमार ने भेद दिया। कितना चाहती हूँ कि उनको फिर एक बार देख लूँ और उनकी सुन्दरता का मैं अधिक परिचय प्राप्त करूँ। मरना निश्चित सा लगता है। उनको देखने के बाद मर जाऊँ—ऐसा भाग्य होगा क्या ? । ६१४

ऍन्ऱिवै यनैयन वियम्बुम् वन्दॆदिर्, निन्ऱन निवणॆनुम् नीङ्गि नानॆनुम्
कन्ऱिय मनत्तुरु काम वेट्कयाल्, ऒन्ऱल पलनिनैन् दुणङ्गु कालये 615

ऍन्ऱ–ऐसे; इवै अनैयन–और इनके समान; इयम्पुम्–(आगे भी) कहती हैं; इवण् वन्तु ऍतिर निन्ऱनन्–यहाँ आकर सामने खड़े रहते हैं; ऍनुम्–कहतीं; नीङ्कितान्–हट गये; ऍनुम्–कहतीं; कन्ऱिय मनत्तु–उत्तप्त मन में; उरु कामम् वेट्कैयाल्–बढनेवाली कामेच्छा से; ऒन्ऱु अल–एक नहीं; पल निनैन्तु–अनेक (तरह के विचार) सोचकर; उणङ्कु कालै–धुलते समय। ६१५

इनके अतिरिक्त भी कहने लगीं— इधर देखो वे मेरे सामने आकर खड़े हैं। बाद कहा कि ये तो हट गये। इस तरह मिलन की विफल-लालसा से उत्तप्त मन में कामेच्छा के बढ़ने के कारण वे विविध बातें सोचती और कहती हुई मुरझाने लगीं। तब, । ६१५

अन्नमॆन्	नडैयवट्	कमैन्द	कामत्ती
तन्नैयुज्	जुडुवदु	तरिक्कि	लानॆन
नन्नॆडुङ्	गरङ्गलै	नडुक्कि	योडिप्पोय्
मुन्नैवॆङ्	गदिरवन्	कडलिन्	मूळ्हिनान् 616

मुन्नै वॆम् कतिरवन्–प्राचीन और गरम किरणमाली; अन्नम् मॆल् नटैयवट्कु–हंस-मृदु-गमनी को; अमैन्तु–हुई; कामम् ती–कामाग्नि (का); तन्नैयुम्–अपने को भी;

चुटुवतु–दाहना; तरिकिकिलात् अंत–सह नहीं पाते, ऐसा; नल् नॆटु करङ्कळै–उत्तम लम्बे कर रूपी किरणों को; नटुक्कि–(भय के कारण) कँपाते (से) हुए; ओटि पोय–भागते जाकर; कटलिल् मूळ्कितान्–समुद्र में डूब गये। ६१६

सूर्य डूब गये। वे शायद इस डर में डूब गये कि हंस-गमनी सीता देवी की कामाग्नि हमको भी जला देगी! वे स्वयं गरम किरणों वाले थे। तो भी डर से काँप गये। समुद्र में डूबते समय उनकी किरणें लहरों के कारण काँपती सी लगती थीं। ६१६

विरिमलर्त् तॆन्र्लाम् वीशु पाशमुम्
अॆरिनिरच् चॆक्करु मिरुळुङ् गाट्टलाल्
अरियवट् कन्ररु मन्दि मालयाम्
करुनिरच् चॆम्मयिर् कालन् रोन्रिनान् 617

विरि मलर् तॆन्र्ल् आम्—सुविकसित-फूलों की सुगन्ध से भरा मलयपवन-रूपी; वीचु पाचमुम्–(किसी पर) फेंककर बद्ध करनेवाला पाश; अरि निरम्–आग के रंग का; चॆक्करुम्–केश; इरुळुम्–अन्धकार (शरीर); काट्टलाल्–(इनको) दिखाने के साथ; अरियवट्कु–अनुपम देवी को; अतल् तरुम्—काम-ताप देनेवाले; अन्ति मालै आम्—सायं-संध्या-रूपी; करु निरम्–काले रंग का; चॆम्मयिर्–लाल बालों का; कालन् तोन्रिनान्–यम प्रकट हुआ। ६१७

संध्या आ गई। सायं-संध्या का समय सीता को यम के समान लगता है। फूलों की सुगंधि से भरा मलयपवन उस यम का पाश बना; लाल संध्या-गगन उसका लाल केश बना; अंधकार उसका काला रूप बना। वह यम उत्तम सीता देवी का ताप बढ़ाता हुआ आया। ६१७

मीदरै पऱवयाम् परैयुङ् गोळ्विळि, ऒदमॆन् शिलम्बॊडु मुदिरच् चॆक्करुम्
पादह विरुळ्शॆय्कञ् जुहमुम् पऱ्ऱलार्, चादह मॆन्नवुन् दहैत्तम् मालये 618

मीतु अरै–ऊपर (आकाश में) बोलनेवाले; परवै आम् परैयुम्—पक्षी-रूपी ढोल; कोळ् विळि–नीचे (भूमि पर) शब्द करनेवाले; ओतम् अॆन् चिलम्पॊटुम्—समुद्र-रूपी नूपुर के साथ; उतिरम् चॆक्करुम्–रक्तारुण संध्या (रूपी केश); पातकम्–पीड़क; इरुळ् चॆय् कञ्चुकमुम्–अन्धकार कृत कंचुक; पऱ्ऱलाल्–धारण करने से; अ मालै–वह संध्या-समय; चातकम् अॆन्नवुम् तकैत्तु–भूत के समान ही रहा। ६१८

वह समय भूत के समान भी था। आकाश में (उसके ऊपर) पक्षियों का बोलना ढोल का काम दे रहा था। भूमि पर समुद्र-गर्जन नूपुर का काम दे रहा था। लाल साँझ-गगन उसका केश बना। वेदना को उत्तेजित करनेवाला अंधकार काला कंचुक था। ६१८

कयङ्ग ळॆन्नुङ् गनऱोय्न्दु कडिनाण् मलरिन् विडम्बूशि
इयङ्गु तॆन्रन् मन्मदवे ळॆय्द पुण्णि निडैनुळैय

उयङ्गु मुणर्वु नऩ्ऩलमु मुरुहिच् चोर्वा ऴुयिरुण्ण
मयङ्गु मालै वरनोक्कि यिदुवो कूऱ्ऱिऩ् वडिवॆऩ्ऱाळ् 619

कयङ्कळ् ॲऩ्ऩुम् कऩल् तोय्न्तु—तालाब-रूपी आग में तपकर; नाळ् मलरिऩ्—नव-विकसित फूलों की; कटि विटम् पूचि—सुगन्धि-रूपी विष मलकर; इयङ्कु तॆऩ्ऱल्—संचार करनेवाला मलयपवन; मऩ्मतवेळ् ॲय्त—मन्मथ-शर-चालन से बने; पुण्णिऩ् इटै–व्रण में; नुऴैय-(बर्छी के समान) घुसा, तो; उयङ्कुम् उणर्वुम्–मन्द पड़ती सुधि; नल् नलमुम्–और अच्छे स्वस्थ गुण; उरुकि–गलते हैं और; चोर्वाळ्–मुरझानेवाली देवी; उयिर् उण्ण–प्राण खाने के लिए; मयङ्कुम् मालै–(दिन और रात के) संक्रमण की संध्या वेला का; वरल् नोक्कि–आना देखकर; कूऱ्ऱिऩ् वटिवु–मृत्यु का रूप; इतुवो–क्या यही है; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ६१९

मलय पवन का शरीर पर लगना उन्हें काम-शर-विद्ध व्रण में बर्छी के घुसने के समान था। वह बर्छी भी तालाबरूपी अग्नि-पुंजों में तप कर, नव विकसित कुसुमों की सुगंधिरूपी विष से लिप्त होकर आई थी। तब सुध-बुध खोती रही देवी ने प्राण खाता सा आनेवाला संध्या-समय देखकर डर से पूछने लगीं कि क्या यही मौत का रूप है ? । ६१९

कडलो मऴैयो मुऴुनीलक् कल्लो काया नरुम्बोदो
पडर्पूङ् गुवळै नाण्मलरो नीलोर् पलमो पानलो
इडर्शेर् मडवा रुयिरुणब देदो वॆऩ्ऱु तळर्वाण्मुऩ्
मडलशेर् तारा निऱम्बोलु मन्दि मालै वन्ददुवे 620

इटर् चेर मटवार्—दुख-पीड़ित स्त्रियों के; उयिर् उण्पतु–प्राण खाना; कटलो–समुद्र है क्या; मऴैयो–मेघ; मुऴु नीलम् कल्लो–पूर्ण नीला पत्थर; नऱु काया पोतो–सुवासपूर्ण 'काया' (अतसी ?) पुष्प; पटर् पू–विशाल (और) सुन्दर; कुवळै नाळ् मलरो–कुवलय का नवीन पुष्प; नीलोर्पलमो–नीलोत्पल; पानलो–नीला कुमुद; एतो–कौनसी; ॲऩ्ऱु–तर्क कर; तळर्वाळ् मुऩ्–शिथिल पड़नेवाली के सामने; मटल् चेर् ताराऩ्—पुष्प-संकुल मालाधारी के; निऱम् पोलुम्–रंग के समान; अन्ति मालै—सायं-संध्या (का समय); वन्ततु–आया। ६२०

अब वे सायं-संध्या के आगमन से अवगत होती हैं। उसका अंधकार देखकर वे श्रीराम का और उनके साथ उनके वर्ग की अन्य वस्तुओं का स्मरण करके व्याकुल होती हैं। बिरह-पीड़ित स्त्रियों का प्राण हरने जो आता है वह क्या है ? काला मेघ है ? नीला समुद्र है ? नीलमणि पर्वत ? सुगंधित अतसी पुष्प ? कुवलय पुष्प ? नीलोत्पल ? नीला कुमुद ? ऐसे-ऐसे तर्क करती हुई लटनेवाली उनके सामने पुष्प-माला-अलंकृत श्रीराम के वर्ण की संध्या आई। ६२०

मैवा निऱत्तु मीऩॆयिऱ्ऱु वाडै युयिर्प्पिऩ् वळर्शॆक्कर्प्
पैवा यन्दिप् पडवरवे यॆऩ्ऩै वळैत्तुप् पहैत्तियाल्

ऑय्वा नॊरुवन् कैयोया नुयिरु मॊन्ऱे यिन्नियिल्लै
उय्वाऴ् वऴियिड् पऴिपूण वॆन्नो डुनक्कुप् पहयुण्डो 621

वान् मै निऱत्तु–आकाश का काला रंग; मोन् ऍयिऱु–नक्षत्र-रूपी दाँत; वाट्ं उयिर्प्पिन्–उदीची (जाड़े की) हवा श्वास है; वळर् चॆक्कर्–अत्यधिक लालिमा; पैं वाय्–विष-भरा मुख, (इनके साथ); अन्ति–सायंकाल रूपी; पटम् अरवे–फणी सर्प; ऍय्वान् ऒरुवन्–(शर) चलानेवाला एक (मन्मथ); कै ओयान्–नहीं रुकता; उयिरुम् ऒन्ऱे–प्राण एक ही; इन्ि इल्लै–अब (वह भी) नहीं (रहेगा); ऍन्नै वळैत्तु–आ घेरकर हो; पकैत्ति–शत्रुता दिखाते हो; उय्वाऴ् वऴियिल्–बचना चाहनेवाली, मेरे मार्ग पर; पऴि पूण–बुरा नाम कमाने के लिए; ऍन्तोटु–मेरे साथ; उनक्कु पकै उण्टो–तुम्हारा विरोध है क्या। ६२१

वह उसको संबोधित करती हैं। हे सध्या ! तू सर्प है। आकाश का रंग तेरा काला रंग है। नक्षत्र तेरे दाँत हैं। उदीची हवा तेरी साँस है। लाल संध्या गगन तेरा विष-भरा मुख है। फन फैलाकर आनेवाले भयंकर सर्प ! पहले ही मन्मथ मुझ पर शर मार रहा है। वह रुकता नहीं दिखता। मुझे मार कर ही छोड़ेगा। मेरे दो प्राण भी नहीं। एक ही है; वह मन्मथ के शरों से निकल जायगा। इस स्थिति में तू मुझे घेरकर क्यों आता है? क्यों वैर दिखाता है ? मैं मन्मथ से बचने के प्रयास में लगी हूँ। ऐसी-मेरे मार्ग में आड़े आकर बुरा नाम कमाता क्यों है ? क्या मेरे साथ कोई पूर्व विरोध है ? । ६२१

आल मुलहिड् परन्तदुवो आऴि किळर्न्द दोववर्तम्
नील निऱत्तै यॆल्लारुम् निनैक्क वदुवाय् निरम्बियदो
काल निऱत्तै यञ्जनत्तिड् कलन्दु कुऴैत्ता कायत्तिन्
मेलु निलत्तु मॆऴुहियदो वॆय्य विरुळाय् विळैन्ददुवे 622

वॆय्य इरुळाय् विळैन्ततु–भयंकर अन्धकार बना यह; आलम् उलकिल् परन्ततुवो–हलाहल संसार में व्याप्त हुआ; आऴि किळर्न्ततो–समुद्र उमड़ा; अवर् तम् नील निऱत्तै–उनके (श्रीराम के) नीले रंग को; ऍल्लोरुम् निनैक्क–सब के स्मरण करने; अतु आय्–वही (विस्तृत) बनकर; निरम्पियतो–भर गया; कालन् निऱत्तै–यम के रंग को; अञ्चनत्तिल् कलन्तु कुऴैत्तु–अंजन से मिलाकर खूब घोलकर; आकायत्तिन् मेलुम्–आकाश पर; निलत्तुम्–और भूमि पर; मॆऴुकियतो–लीपा गया। ६२२

यह अंधकार जो भयंकररूप से फैलता आ रहा है वह क्या है ? हलाहल है जो व्याप रहा है ? समुद्र उमड़ता आया ? या सब के मन में श्रीराम का स्मरण स्थिर करने के लिए उनका रंग इस तरह छाता आया ? कालदेव का रंग और अंजन को मिलाकर उस मिश्रण से आकाश और भूमि पर लीपा गया है ? । ६२२

वॆऴिनिऩ् ऱवरो पोय्मरैन्दार् विलक्क वॊरुवर् तमैक्काणेऩ्
ऒऴियळ् पॆण्णॆऩ्ऱ् ऱिरङ्गादे यॆल्लि यामत् तिरुळ्ऊडे
ऒऴियम्बॆय्यु मऩ्मदऩा रुऩक्किम् माय मुरैत्तारो
अऴियॆऩ् शॆय्द तीविऩैये यऩ्ऱिऱ् लाहि वन्दायो 623

वॆऴि निऩ्ऱवरो–मेरी दृष्टि के सामने खड़े रहे वे तो; पोय् मरैन्तार–जा छिप गये; विलक्क–रोकने (वाले); ऒरुवर् तमै काणेऩ्–किसी को नहीं देखा; ऒऴियळ्–दीन; पॆण्–स्त्री; ऎऩ्ऱु–समझकर; इरङ्काते–बिना दया किये; ऎल्लि यामत्तु इरुळ् ऊटे–रात के घने अन्धकार में; ऒऴि अम्पु ऎय्युम्–छिपे-छिपे बाण छोड़नेवाले; मऩ्मतऩार्–कामदेव ने; उऩक्कु–तुम्हें; इ मायम्–यह छल-माया; उरैत्तारो–सिखायी क्या; अऴियॆऩ्–दयनीय मेरा; चॆय्त तीविऩैये–(पूर्व जन्म-) कृत पाप ही; अऩ्ऱिल् आकि वन्तायो–क्रौंच पक्षी बनकर आये क्या ? । ६२३

क्रौंच पक्षी को संबोधित करके वे कहती हैं। मेरी दृष्टि के सामने उनका रूप आया। पर वे अब चले गये। उनको रोककर मेरी सहायता करनेवाला कोई नहीं रहा। मैं दीन हूँ, स्त्री हूँ। इसका भी लिहाज़ न करके मन्मथ रात के वक्त, छिपे-छिपे मेरे ऊपर अपने बाण छोड़ रहा है। क्या उसी ने यह वंचना-पूर्ण काम तुझे भी सिखा दिया है ? हे क्रौंच खग ! क्या मेरे पूर्व-कृत कर्म का तू रूप है जो अब सताने आया है ? । ६२३

आण्डङ् गऩैया ळिऩैयनिऩैन् दऴुङ्गुम् वेलै यहल्वाऩैत्
तोण्ड निमिर्न्द पॆरुङ्गोयिऱ् चीद मणियिऩ् वेदिहैवाय्
नीण्ड शोदि नॆय्विळक्कम् वॆय्य वॆऩ्ऱङ् गवैनीक्कित्
तूण्डल् शॆय्या मणिविळक्किऩ् चुडरा लिरवैप् पहल्शॆय्दार् 624

आण्टु अङ्कऩैयाळ्–वहाँ अंगना (सीताजी); इऩैय निऩैन्तु–ऐसा-ऐसा सोचकर; अऴुङ्कुम् वेलै–दुख-मग्न रहते समय; अकल्–दूर के; वाऩै तोण्ट निमिर्न्त–आकाश को स्पर्श करते हुए उन्नत बने; पॆरु कोयिल्–बड़े कन्या-सौध में; चीतम्–मणियिऩ् वेतिकै वाय्–शीतल (चन्द्रकान्त) मणि की वेदिका पर; नीण्ट चोति नॆय् विळक्कम्–अति प्रकाशमय, घृत के दीप; वॆय्य ऎऩ्ऱु–गरम समझकर; अवै नीक्कि–उनको हटाकर; तूण्टल् चॆय्या–अनुद्दीप्य; मणि विळक्किऩ् चुटराल्–रत्नरूपी दीपों के प्रकाश से; इरवै–रात को; पकल् चॆय्तार्–दिन बनाया (चेटियों ने) । ६२४

वे इस तरह छटपटा रही थीं। उस गगनस्पर्शी सौध में चेरियों को दीप जलाने की बेला आ गई। घृत के दीये गर्मी को और उत्तेजित करेंगे—यह सोचकर उन्होंने उज्ज्वल रत्नों को चन्द्रकांत मणि की वेदिका पर रखा। जिनको उकसाने की आवश्यकता नहीं थी, उन मणियों के प्रकाश से रात, दिन के समान प्रकाश-पूर्ण हो गई। ६२४

पॆरुन्दि ऩॆडुमाल् वरैनिऱुविप् पिणितत पाम्बिऩ् मणित्ताम्बाल्
विरिन्द तिवलै पोदिन्दमणि विशुम्बिऩ् मीऩिऩ् मेल्विळङ्ग

अरुन्द वमरर् कलक्कियना ळमुद निऱैन्द पॊऱ्कलशम्
इरुन्द दिडैवन् दॆळुन्ददॆन वॆळुन्द ताळि वॆण्डिङ्गळ् 625

पॆरु तिण नॆट्टुमाल्–आदरणीय और बलवान श्रीत्रिविक्रम; वरै निऱुवि–(मन्दर-) पर्वत गाड़कर; पिणित्तु–उस पर लपेटे; पाम्पिन् मणि ताम्पाल्–(वासुकी नाम के) सर्प-रूपी रस्से से; विरिन्त तिवलै–बिखरी बूंदें; पॊलिन्त मणि–भरे रहे रत्न; विचुम्पिल् मीतिन्–आकाश में नक्षत्रों के समान; मेल् विळङ्क–ऊपर शोभायमान रहे, ऐसा; अमरर् अरुन्त–देवों के अशन के लिए; कलक्किय नाळ्–मन्थन (जिस दिन) किया उस दिन; इट्टे इरुन्ततु–सागर में रहा; अमुतम् निऱैन्त पॊन् कलचम्–अमृत-भरा स्वर्णकलश; ऎळुन्तु वन्ततु ऎन–ऊपर उठ आया, ऐसा; आळि वॆण् तिङ्कळ्–गोल श्वेत चन्द्र; ऎळुन्ततु–उठ आया। ६२५

तब चन्द्र उग आया। वह वर्तुल चन्द्र उस अमृतकलश के समान लगा जो क्षीर-सागर-मध्य से तब उठ आया था जब श्रीत्रिविक्रम (विष्णु) ने मंदरपर्वत को मथानी के रूप में गड़वाकर, वासुकी को लपेटवाकर सागर को मथवाया था। और तारे तब उठकर बिखरे जल-बिंदुओं और उनके अंदर रही मणियों के समान थे। (श्री विष्णु की बात उठाये बिना ही तमिळ के मूल पद्य का अर्थ किया जा सकता है। तब पर्वत के विशेषण बढ़ेंगे।)। ६२५

वण्डा ययनान् मऱैपाड मलर्न्द शॆन्दा मरैप्पोदु
पण्डा लिलैयिन् मिशैक्किडन्दु पारु नीरुम् पशित्तान्पोल्
उण्डा नुन्दिक् कडल्पूत्त दोदक् कडलुन् दान्वेऱोर्
वॆण्डा मरैयिन् मलर्पूत्त दॊत्त दाळि वॆण्डिङ्गळ् 626

पण्टु–पहले; आल् इलैयिन् मिचै किटन्तु–वट-पत्र-शायी होकर; पचित्तान् पोल्–भूखे के समान; पारुम् नीरुम् उण्टान्–पृथ्वी और समुद्र को जिन्होंने खाया उन श्रीविष्णु के; उन्ति कटल्–नाभी समुद्र (ने); वण्टु आय्–भ्रमर बनकर; अयन् नाल् मऱै पाट–अज (ब्रह्मा) के चतुर्वेद पढ़ते; मलर्न्त–विकसित हुए; चॆन्तामरै पोतु–लाल कमल को; पूत्ततु–(पैदा कर) विकसित कराया; ओतम् कटलुम्–तरंगायित समुद्र (ने) भी; तान्–स्वयं; वेऱु–पृथक; ओर् वॆण् तामरैयिन् मलर्–एक श्वेत कमल का पुष्प; पूत्ततु ऒत्ततु–खिलाया, ऐसा लगा; आळि वॆण् तिङ्कळ्–गोल श्वेत चाँद। ६२६

वह चन्द्र एक श्वेत कमल के समान लगा जिसको लवण-सागर ने पद्मनाभ श्रीविष्णुदेव की नाभीरूपी सागर की स्पर्द्धा में पैदा किया। सृष्टि के आरंभ में वट-पत्र में योग-निद्रा में लीन रहे श्रीविष्णु की, जिन्होंने मानों भूखे हों ऐसा भूतल और सागर को खा-पी लिया था (उदरस्थ कर लिया था), नाभी से एक लाल कमल उत्पन्न हुआ। तब ब्रह्माजी भ्रमर के रूप में चतुर्वेद गान कर रहे थे। इसको देखकर लवण-समुद्र ने अपनी ओर से श्वेत-कमल यानी चन्द्र को उत्पन्न किया। (कवि की इस उत्प्रेक्षा और

उपमा-मिश्रित कविता में अनुपम रस घुला है। नाभी को समुद्र का रूपक देना कमल की उत्पत्ति के लिए आवश्यक था। भूतल और समुद्र को उन्होंने उदरस्थ किया, भूख के कारण नहीं पर अपनी लीला के सिलसिले में, इसलिए कहा गया "मानों भूखे" थे। भोजन के लिए ठोस पदार्थ और जल दोनों की आवश्यकता है। अतः भूतल और समुद्र दोनों के भक्षण की बात कही गई। स्पर्द्धा में काम करनेवाला कुछ अंतर भी दिखाना चाहता है। इसलिए नाभी-सागर के लाल कमल के स्थान में लवण-सागर ने श्वेत कमल उत्पन्न किया। ब्रह्मा उधर भ्रमर रहे तो कलंक को इधर भ्रमर माना जा सकता है)। ६२६

पुळ्ळिक् कुऱियिट् टॅऩप्पऩ्मीऩ् पूत्त वाऩम् पॉतिकङ्गुल्
नळ्ळिऱ् चॅऱिन्द दिरुट्पिळम्बै नक्कि निमिरु निलाक्कऱ्ऱै
किळ्ळैक् किळविक् कॅऩ्ऩाङ्गॉल् कीळ्पाऱ् ऱिशयिऩ् मेलवैत्त
वॅळ्ळिक् कुम्बत् तिळङ्गमुहिऩ् पाळै पोऩ्ऱु विरिन्दुळदाल् 627

पुळ्ळि कुऱि इट्टतु ॲॅऩ्–विन्दियों से चित्रित; पल मीऩ् पूत्त–अनेक नक्षत्र-भरे; वाऩम् पॉति–आकाश को ढँकनेवाली; कङ्कुल नळ्ळिल्–रात्रि-मध्य; इरुळ् पिळम्पै–अन्धकार-पुंज को; नक्कि निमिरुम्–चाटकर उठनेवाली; निला कऱ्ऱै–चाँदनी का समुच्चय; कीळ् पाल् तिचैयिऩ्–पूर्वदिशा में; मेल् वैत्त–ऊपर रखे हुए; वॅळ्ळि कुम्पत्तिऩ्–चाँदी के कुंभ में; कमुकिऩ् इळम् पाळै पोऩ्ऱु–पूग के नवीन डण्ठल (बाल) के समान; विरिन्तु उळतु–खुला हुआ है; किळ्ळै किळविक्कु–शुक-बयनी को; ॲॅऩ् आम् कॉल्–क्या होगा (उनका क्या अहित करेगा)? । ६२७

कवि उस चन्द्र को पूर्ण कलश (मंगल घट) के रूप में देखते हैं जो मंगल-कार्यों के अवसर पर वरुण-पूजा के लिए स्थापित किया जाता है। अर्ध-रात्रि का समय आ गया। अनेक नक्षत्र चित्र-विंदियों के समान आकाश का शृंगार कर रहे थे। तब अंधकार उसको छिपा रहा था। उस अंधकार को (चाटते हुए) दूर करते हुए चन्द्र गगन में पूर्व दिशा में ऊपर उठता आ रहा था। उसकी चांदनी मंगल-घट पर रखे हुए क्रमुक-डंठल के समान थी जिसकी बालियाँ बिखरी थीं (कवि पूछते हैं कि यह मंगल-घट शुक-वयनी सीता का क्या करेगा? मतलब है कि उन्हें दुख देगा)। ६२७

*** वण्ण मालैक् कैपरप्पि युलहै वळैत्त विरुळॅल्लाम्**
उण्ण वॅण्णित् तण्मदियत् तुदयत् तॅऴुन्द निलाक्कऱ्ऱै
विण्णु मण्णुन् दिशैयनैत्तुम् विळुङ्गिक् कॉण्ड विरिनत्तोर्प्
पण्णै वॅण्णॅय्च् चडैयन्ऱन् पुहऴ्पो लॆङ्गुम् बरन्दुळदाल् 628

वण्णम्–रंगीन; मालै कै परप्पि–संध्यारूपी बल को फैलाकर; उलकै वळैत्त–विश्व को आवृत्त करनेवाले; इरुळ् ॲॅल्लाम्–सब अन्धकार को; उण्ण ॲॅण्णि–लीलने के लिए; तण् मतियत्तु–शीतल चन्द्र का; उतयत्तु ॲॅऴुन्त–उदय से

विकीर्ण; निला कर्रै–प्रकाश; विरि नल् नीर् पण्णै–समृद्ध, उत्तम जल प्लावित खेतों वाले; वॅण्णॅय्–वॅण्णॅय् नल्लूर के; चटैयन् तन्–शडैयप्पन् की; विण्णुम्–स्वर्ग और; मण्णुम्–भूलोक को; तिच अनैत्तुम्–सारी दिशाओं को; विळुङ्कि कॉण्ट–अन्तर्निहित करनेवाली; पुकळ् पोल्–सुकीर्ति के समान; अँङ्कुम् परन्तु उळतु–सर्वत्र फैला रहता है। ६२८

चन्द्र की चांदनी सब जगह फैली। वह वॅण्णॅय् नल्लूर के (कवि के अभिभावक) दानी शडैयप्पन की सुकीर्ति के समान फैली। अंधेरा अपनी संध्या वेला का हाथ फैलाकर समस्त विश्व को आच्छादित कर रहा था। उसको निगलने के लिए चन्द्र उदित हुआ। उस शीतल चन्द्र से छिटकनेवाली चांदनी आकाश, भूमि, सभी क्षेत्रों में फैल गई। शडैयप्पन का यश स्वर्ग लोक तक फैला हुआ था, भूलोक की बात कौन कहे! (कवि के कृतज्ञता-प्रदर्शन का यह और एक स्थल है।)। ६२८

नीत्त मदनिन् मुळैत्तॅळुन्द नॅडुवॅण् डिङ्ग ळॅनुन्दच्चन्
मीत्तन् करङ्ग ळवैपरप्पि विरिन्द निलविन् वॅण्शुदैयाल्
कात्त कण्णन् मणियुन्दिक् कमल नाळत् तिडैप्पण्डु
पूत्त वण्डम् पळैयदॅनप् पुदुक्कु वानुम् पोन्ऱुळदाल् 629

नीत्तम् अतनिल्–(समुद्र-) जल राशि से; मुळैत्तु अॅळुन्त–उग आया; वॅण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; नॅटु तच्चन्–कुशल शिल्पी; कात्त कण्णन्–(विश्व-) गोप्ता श्रीविष्णु के; मणि उन्ति कमलम् नाळत्तु इटै–सुन्दर नाभी में उगे कमल के नाल पर; पण्टु पूत्त अण्टम्–प्राचीनकाल में उत्पन्न यह अण्ड; पळैय अॅन–पुराना (मन्द-प्रभ) हो गया, यह समझकर; तन् करङ्कळ् अवै मी परप्पि–अपने हाथों को उस पर फैलाकर; निलविन् वॅण् चुतैयाल्–चन्द्रिकारूपी श्वेत सुधा (चूने) से; पुतुक्कुवान् पोन्ऱुम्–नया सा; उळ्ळतु–लगता है। ६२९

(उस चन्द्र और चांदनी को देखकर कवि निम्नोक्त कल्पना करते हैं—) चन्द्र समुद्र से उठ आया शिल्पी या कारीगर है। विष्णुदेव की सुन्दर नाभी से निकले कमल के नाल में से संलग्न यह विश्व पुराना पड़ गया था। अब यह कारीगर उसको नयी रौनक देने के लिए, अपने हाथों में चन्द्रिका-रूपी सुधा (चूना) लेकर उस पर पुताई कर रहा है। वही चूना चन्द्रिका है। ६२९

विरैशॅय् कमलप् पॅरुम्बोदु विरुम्बिप् पुहुन्द तिरुविन्नॉडुम्
कुरैशॅय् वण्डिन् कुळामिरियक् कूम्बिच् चाम्बिक् कुविन्दुळदाल्
उरैशॅय् तिहिरि तनैयुरुट्टि यॊरुहो लोच्चि युलहाण्ड
अरैश नॊदुङ्गत् तलयॅडुत्त कुरुम्बर् पोन्ऱ वरक्काम्बल् 630

विरै चॅय्–सुगन्धपूर्ण; कमलम् पॅरु पोतु–कमल के उत्तम पुष्प; विरुम्पि पुकुन्त–चाहकर अपने में आयी हुई; तिरुविन्नॉटुम्–लक्ष्मी (श्री) के साथ; कुरै

चॅय् वण्टिन् कुळाम्–गुंजार करनेवाले भ्रमर कुल; इरिय–छोड़कर चले जायें, यह स्थिति पैदा करते हुए; कूम्पि––दल-जुटे होकर; चाम्पि–निष्प्रभ होकर; कुविन्तु उळतु–बन्द हुए हैं; अरक्कु आम्पल्–लाल कुमुद; उरै चॅय्–प्रकीर्तित; तिकिरि तत्तै––आज्ञा-चक्र; उरुट्टि–चलाते हुए; ऑरु कोल् ओच्चि–एक (राज-) दण्ड (शासन) धारण करते हुए; उलकु आण्ट अरैचन्–भूतल पालनेवाले राजा के; ऑतुङ्क–अलग हो जाने से; तलै ॲटुत्त–सिर उठानेवाले; कुऱुम्पर् पोन्ऱ–अधीन छोटे राजाओं के समान बने। ६३०

अब कमल बंद हो गये। उन पर रहनेवाली श्री भी अदृश्य हो गई। भ्रमर हट गये। तब कुमुद विकसित हुए। कुमुदों का वैभव के साथ विकास देखकर उन अधीन राजाओं का सिर उठाना याद आता है जो एक छत्र, प्रबल आज्ञाचक्र और शासनदण्ड रखनेवाला चक्रवर्ती (के प्रताप) के हट जाने पर होता है। ६३०

नीङ्गा मायै यवर्तमक्कु निऱमे तोऱ्ऱुप् पुऱमेपोय्
एङ्गा निन्ऱ वॅऱिकडऱ्कु मॅन्नक्कु मिहला यॅय्दिन्नैयो
ऑङ्गा निन्ऱ विरुळाय्वन् दुलहै विळुङ्गि मेन्मेलुम्
वीङ्गा निन्ऱ करुनॅरुप्पि निडैये यॅळुन्द वॅण्णॅरुप्पे 631

ओङ्का निन्ऱ–बहुत घना; इरुळ् आय् वन्तु–अन्धकार बन आकर; उलकै विळुङ्कि–विश्व को लील कर; मेन्मेलुम् वीङ्का निन्ऱ–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; करु नॅरुप्पिन्–काली (अन्धकार-रूपी) आग के; इटैये ॲळुन्त–बीच में से उठी; वॅळ् नॅरुप्पे–सफ़ेद आग; नीङ्का मायै–अनिवार्य माया (में कुशल); अवर तमक्कु–उनके सामने; निऱमे तोऱ्ऱु–वर्ण के कारण हारकर; पुऱमे पोय्–बाहर जाकर; एङ्का निन्ऱ–तरसनेवाले; ॲऱि कटऱ्कुम्––तरंग-संकुल (या गरजनेवाले) समुद्र का; ॲन्तक्कुम्–और मेरा; इकल् आय्–शत्रु होकर; ॲय्तिनैयो–आये क्या? । ६३१

देवी चांद को संबोधित करती हैं। अंधकार आया, विश्व को लील कर घना होता गया। वह काली आग थी। उसमें से तुम निकले हो— श्वेत अग्नि के समान! और समुद्र निरंतर माया-कार्य करनेवाले श्रीराम से रूप-रंग में हारकर बाहर जा पड़ा है और तरंग-रूपी हाथों से (छाती) पीटकर दहाड़ मार रहा है। उसके और मेरे दोनों के शत्रु बनकर तुम आये हो! (चन्द्र को समुद्र का दुश्मन इसलिए कहा गया कि पूर्णिमा के दिन समुद्र उमंग पर आता है और अधिक गर्जन करने लगता है।)। ६३१

कॊडियै यल्लैनी यारैयुङ् गॊल्हिलाय्, वडुवि लिन्नमु दत्तॊडुम् वन्दनै
पिडियिन् मॅन्नडैप् पॅण्णॊडॆन् ऱालेन्नैच्, चुडुदि योकडऱ् रोन्ऱिय तिङ्कळे 632

कटल् तोन्ऱिय–सागरोत्थित; तिङ्कळे–चन्द्र; नी कॊटियै अल्लै–तुम अत्याचारी नहीं हो; यारैयुम् कॊल्किलाय्–किसी को नहीं मारोगे; वटुइल् इन् अमुतत्तॊटुम्–अवगुणहीन मधुर अमृत के साथ; पिटियिन् मॅल् नटै–हथिनी के समान मृदु-चाल वाली;

पॆण्णॊटुम्–देवी लक्ष्मी के साथ; वन्तनै–पैदा हुए; अॆन्राल्–तब; अॆत्तै–(दीना) मुझे; चुटुतियो–ताप दोगे (क्यों) ? । ६३२

वह आगे चन्द्र से थोड़ी नरमी से बात करती हैं। सागर से (पहले क्षीरसागर से, अब समुद्र पर से) उदित चांद! तुम तो क्रूर नहीं हो। किसी को मार नहीं सकते क्योंकि तुम अवगुण-रहित अमृत और हथिनी के समान चालवाली लक्ष्मीदेवी के भाई हो। फिर मुझे सताना तुमको शोभा देता है क्या ? । ६३२

मीदु मॊय्त्तॆळु वॆण्णिल विन्कदिर्, मोदु मत्तिहै मॆन्मुलै मेऱ्पड
ओदि मप्पॆडै वॆङ्गन लुऱ्ऱॆनप्, पोदु मॊय्त्तम ळिप्पुरण् डाळरो 633

मीतु–ऊपर; मॊय्त्तॆळु–गाढ़े रूप से उठी; वॆळ् निलविन् कतिर्–श्वेत चन्द्र की किरणें (रूपी); मोतु मत्तिकै–पीटनेवाला हथौड़ा; मॆल् मुलै मेल् पट–कोमल उरोजों पर जब लगा; ओतिमम् पॆटै–हंसिनी; वॆम् कनल् उऱ्ऱतु अॆन–जलानेवाली आग में गिर गयी जैसी; पोतु मॊय्त्त अमळि–कमल-पुष्प-संकुल शय्या पर; पुरण्टाळ्–तड़फड़ाने लगीं। ६३३

उनके मृदुल स्तनों पर चांदनी क्या पड़ी, वह पीटनेवाले हथौड़े की सी चोट करती रही। उससे वे बेचारी जलानेवाली आग में पड़ी हंसिनी के समान तड़फड़ाने लगीं। ६३३

❀ नीक्क मिन्ऱि निरन्द निलाक्कदिर्, ताक्क वॆन्दु तळर्न्दु शरिन्दनळ्
शेक्कै याहि मलर्न्दशॆन् दामरैप्, पूक्कळ् पट्टन पूवयुम् पट्टनळ् 634

नीक्कम् इन्ऱि–अविच्छिन्न रूप से; निरन्त–विकीर्ण; निला कतिर्–चन्द्र-किरणें; ताक्क–(निरन्तर) आघात (करतीं) करने से; वॆन्तु–मुरझाकर; तळर्न्तु–शिथिल होकर; चरिन्तनळ्–नीचे गिरीं; चेक्कै आकि–वासस्थान-भूत; मलर्न्त–विकसित; चॆन्तामरै पूक्कळ्–लाल कमल के फूल; पट्टन–जिस स्थिति को प्राप्त हुए; पूवैयुम् पट्टनळ्–सारिका-सम कोमलांगी (देवी) भी उस स्थिति को प्राप्त हुईं। ६३४

वह चांदनी बराबर फैलती हुई उनको ताप देती रही। इसलिए वह शिथिल होकर नीचे गिर गयीं। सारिका-सम कोमलांगी, उनकी स्थिति कमल के समान बनी जो पहले उनका आवास बनकर चन्द्र के उदय पर मुरझा गया और अब उनकी शय्या पर रहकर चन्द्रिका द्वारा उत्तेजित विरह-ताप तप्त हुआ। ६३४

❀ वाश मॆन्कल वैक्कळि वारिमेल्, पूशप् पूशप् पुलर्न्दु पुळुङ्गिनाळ्
वीश वीश वॆदुम्बिन मॆन्मुलै, आशै नोय्क्कु मरुन्दुमुण् डाङ्गॊलो 635

वाचम् मॆन् कलवै कळि–सुवासित मृदु चन्दन के लेप को; वारि मेल् पूच पूच–लेकर उन पर लगाते-लगाते; पुलर्न्तु–सूखकर; पुळुङ्किनाळ्–मुरझाईं; वीच

वीच—ज्यों-ज्यों (पंखा) झलती हैं; मॅल् मुलै वॅतुम्पित—कोमल उरोज झुलसे; आचै नोय्क्कु—प्रेम के रोग की; मरुन्तुम् उण्टो—दवा भी है। ६३५

चेरियों ने उन पर सुवासित द्रव्य मिला चंदन का लेप लगाया। पर वह भुन गया और देवी पीड़ित हुई। इधर चेरियाँ पंखा झलतीं, उधर उनके स्तन मुरझाते। काम-रोग के लिए दवा कहाँ बनी थी? । ६३५

ताय रिऱ्परि शेडियर् तादुहु, वीग रित्तळिर् मॅल्लणै मेनियिल्
कायॅ रिक्करि यक्करि यक्कॊणर्न्, दाधि रत्ति निरट्टिय डुक्किनार् 636

तातु उकु वी—पराग चूने वाले फूलों की; अरि तळिर्—कोमल पल्लवों की वनी; मॅल् अणै—मृदुल शय्या; मेनियिल् काय् ऍरि—(सीताजी के) शरीर पर की जलानेवाली (विरह की) आग से; करिय करिय—ज्यों-ज्यों झुलसी, (त्यों-त्यों); तायरिऩ्-परि चेटियर्—माता से भी प्यारी चेटियाँ; आयिरत्तिऩ् इरट्टि—सहस्रों के दुगुने (अत्यधिक); कॊणर्न्तु—लाकर; अटुक्किनार्—डालकर नयी (शय्या) बनायी। ६३६

शय्यार्पित पल्लव ज्यों-ज्यों झुलसे त्यों-त्यों माता से भी प्यारी चेरियों ने पुराने पल्लव हटाकर नये-नये पल्लव और फूल डालकर नयी-नयी शय्या बनाई। ६३६

कऩ्ऩि नऩ्मनै यिऱ्कमऴ् शेक्कयुळ्, अऩ्ऩ मिऩ्ऩण मायिऩ ळऩ्ऩवळ्
मिऩ्ऩिऩ् मिऩ्ऩिय मेऩिकण् डाऩॆऩच्, चॊऩ्ऩ वण्णलुक् कुऱ्ऱदु शॊल्लुवाम् 637

नल्ल कऩ्ऩि मनैयिल्—अच्छे कन्या-महल में; कमऴ् चेक्कयुळ्—सुवासित पुष्प-शय्या पर; अऩ्ऩम्—हंसिनी (समान वे); इऩ्ऩणम् आयिनळ्—इस तरह (विरह तप्त) हुईं; अऩ्ऩवळ्—उनकी; मिऩ्ऩिऩ्—विद्युत समान; मिऩ्ऩिय मेनि—चमकने-वाली देह-कांति को; कण्टान् ऍन चॊऩ्ऩ—देखा था, जिनके सम्बन्ध में हमने ऐसा कहा था, उन; अण्णलुक्कु उऱ्ऱतु—प्रभु पर क्या बीता; चॊल्लुवाम्—कहेंगे। ६३७

इधर कन्या-महल में, सुगंधित फूल-पल्लवों की शय्या में पड़ी देवी की यह स्थिति रही। उधर उन प्रभु का जिनके संबंध में, हमने सीताजी की "विद्युत-सम देह की कांति देखी"—यह कहा था, हाल कहेंगे। ६३७

एहि मऩ्ऩऩैक् कण्डॆदिर् कॊण्डवऩ्, ओहै योडु मिऩिदुकॊण् डुय्त्तिडप्
पोह बूमियिऱ् पॊऩ्ऩह रऩ्ऩदोर्, माह माडत् तनैयवर् वैहिऩार् 638

अनैयवर्—(विश्वामित्र, श्रीराम-लक्ष्मण) वे; एकि—जाकर; मऩ्ऩनै कण्टु—(जनक) महाराज से मिले; अवऩ् ओकैयोटुम्—वे उत्साह के साथ स्वागत कर; पोक पूमियिल्—भोग-लोक में; पॊऩ् नकर् अऩ्ऩतु—स्वर्णमय प्रासाद के समान; ओर् माकम् माटत्तु—एक आकाश-स्पर्शी सौध में; इनितु कॊण्टु उय्त्तिट—प्रसन्नता के साथ ले पहुँचाते समय; वैकिनार्—ठहरे। ६३८

वे तीनों, महर्षि विश्वामित्र, श्रीराम और लक्ष्मण, गये और राजा जनक से मिले। राजा जनक ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उनका स्वागत

किया। उनको सुख से ले जाकर एक गगनस्पर्शी महल में, जो भोग-भूमि, स्वर्ग के एक स्वर्गमहल के समान था, ठहराया। वे वहीं रहे। ६३८

वैहु मव्वळि मादवम् यावुमोर्, शॅय्है कॉण्डु नडन्दॅन्नत् तीदरु
मॉय्कॉळ् वीरन् मुळरियन् दाळिनाल्, मॅय्कॉण् मङ्गै यरुण्मुनि मेविन्नान् 639

वैकुम अ वळि–(जहाँ वे) ठहरे थे वहाँ; मा तवम् यावुम्–श्रेष्ठ तप सब; ओर् चॅय्कै कॉण्टु नटन्ततु–एक रूप धरकर चला आया; ॲन्न–ऐसा; तीतु अऱ–निर्दोष; मॉय् कॉळ् वीरन्–बलशाली वीर (श्रीराम) की; मुळरि अम् ताळिन्नाल्–सुन्दर कमल-चरण (की धूली) से; मॅय् कॉळ्–(जिन्होंने अपना निजी) रूप प्राप्त किया; अरुळ्–उनके पुत्र; मुन्नि–मुनि शतानन्द; मेविन्नान्–पधारे। ६३९

जब वे वहाँ रहे तब महान् तपोमूर्ति शतानंदजी आये। वे उन अहल्या देवी के पुत्र थे जो निर्दोष वीर श्रीराम की चरण-धूली के प्रताप से अपने निजी रूप में आकर शापमुक्त हुई थीं। शतानंदजी को देखने पर ऐसा लगता था मानों सभी तपों ने मिलकर उनका रूप ले लिया हो। ६३९

वन्दॅ दिर्न्द मुनिवन्नै मैन्दरुम्, शिन्दै यार वणङ्गळुम् जॅन्ऱॅदिर्
अन्द मिल्कुणत् तान्ॅडुत् ताशिहळ्, तन्दु कोशिहन् ऱन्मरुङ् गेय्दिन्नान् 640

वन्तु ॲतिर्न्त मुनिवन्नै–आकर दर्शन देनेवाले मुनि को; मैन्तरुम्–कुमार दोनों ने; ॲतिर् चॅन्ऱु–सामने जाकर; चिन्तै आर वणङ्कलुम्–हार्दिक आदर के साथ नमस्कार करने पर; अन्तम् इल् कुणत्तान्–अननुमित सद्गुणों से पूर्ण; ॲटुत्तु उठाकर; आचिकळ् तन्तु–आशीर्वाद देकर; कोचिकन् तन् मरुङ्कु ॲय्तिन्नान्–कौशिक जी के पास गये। ६४०

श्रीराम और लक्ष्मण ने आदर और श्रद्धा सहित आगत मुनि को नमस्कार किया। अनंत सद्गुणी महर्षि ने उनको उठाया और आशीर्वाद दिया। फिर वे विश्वामित्रजी के पास आये। ६४०

कोद मन्ऱरु कोमुनि कोशिह, माद वन्ऱनै वाण्मुह नोक्कियिप्
पोदु नीयिवण् पोदविप् पूदलम्, एदु शॅय्द तवमॅन् ऱियम्बिन्नान् 641

कोतमन् तरु कोमुन्नि–गौतम के दिलाये (सुपुत्र) मुनिराज (शतानन्द) ने; कोचिक मातवन् तन्नै–महर्षि कौशिक को; वाळ् मुकम् नोक्कि–तेजोमय मुख निहारते हुए; इ पोतु–अब; नी इवण् पोत–आप यहाँ पधारे, इसका हेतु; इ पूतलम् चॅय्त–इस भूतल की, की हुई; तवम् एतु–तपस्या क्या है; ॲन्ऱु इयम्पिन्नान्–यह कहा। ६४१

गौतम-पुत्र ने तपोधन विश्वामित्र से शिष्टाचार-पूर्ण वचन कहे। तेजोमय उनका मुख निहार कर शतानंदजी ने कहा— इस भूमि ने क्या तपस्या की है कि आपके पधारने का भाग्य हमें मिला ? । ६४१

पून्दण् शेक्कॅप् पुन्निदन्नै येपॉरु, एय्न्द केण्मैच् चदानन्द नॅन्ऩुरै
वाय्न्द मादवन् मामुह नोक्किनूल्, तोय्न्द शिन्दैक् कवुशिहन् शॊल्लुवान् 642

पू तण् चेक्कै–कमल का शीतल (सुखद) आसन पर रहनेवाले; पुनितन्नैये पोरु–पवित्र ब्रह्मा जी के ही सदृश; एय्न्त केण्मै–(जीव मात्र से) स्नेह रखनेवाले; चतानन्तन् अन्रु–शतानन्द नामी; उरै वाय्न्त–प्रकीर्तित; मा तवन्–महान तपस्वी के; मा मुकम् नोक्कि–श्रीयुत मुख देखकर; नूल् तोय्न्त चिन्तै–शास्त्र-ज्ञान-मग्न मन के; कौचिकन्–कौशिक जी; चॉल्लुवान्–बोले। ६४२

शतानंद कमलासन ब्रह्माजी के ही सदृश पवित्र थे और भूत-दया-संपन्न थे। वे प्रथित तपस्वी थे। उनसे, शास्त्र-पारंगत कौशिक ने कहा। ६४२

वडित्त मादव केट्टियिव् वळ्ळराल्
इडित्त वॅङ्गुरऱ् ऱाडहै याक्कयुम्
अडुत्त वेळ्वियु मिन्नै शाबमुम्
मुडित्तॅ नॅञ्जत् तिडर्मुडित् तानॅन्ऱान् 643

वटित्त मातव–उत्कृष्ट महान तपस्वी; केट्टि–सुनिये; इ वळ्ळल ताल्–इन उदार प्रभु ने ही; इटित्त वम् कुरल्–वज्रघोष-कण्ठ; ताटकै योक्कैयुम्–ताड़का का शरीर (जीवन); अटुत्त वेळ्वियुम्–मेरा आरम्भित यज्ञ और; निन् अन्नै चापमुम्–आपकी माता का शाप; मुटित्तु–समाप्त कर; अन् नॅञ्चत्तु इटर् मुटित्तान्–मेरे मन की चिन्ता दूर की। ६४३

उत्कृष्ट तपस्वी ! सुनिये। इन्हीं प्रभु ने वज्र-नर्दन-कारिणी ताड़का को मारा; मेरा आरंभित यज्ञ पूरा कराया और आपकी माता को शाप-मुक्ति दिलायी, और इस प्रकार मेरे मन की चिंताओं को दूर कर दिया। ६४३

ॲन्ऱु कोशिहन् कूऱिड नीऱिला, वन्ऱ पोदनन् मादव निन्नरुळ्
इन्ऱु नन्गुळ देलरि दियादिन्द, वॅन्ऱि वीरर्क् कॅनवुम् विळम्बिमेल् 644

ॲन्ऱु–यह; कोचिकन् कूऱिट–कौशिक जी के कहने पर; ईऱु इला वल् तपोतनन्–अनन्त व कठोर तपस्वी; मातव–महर्षि; निन् अरुळ् नन्कु उळतेल्–आपकी कृपा खब रही तो; इन्त वॅन्ऱि वीरर्क्कु–इन विजयी वीरों के लिए; इन्ऱु अरितु यातु–अब दुस्तर क्या है ? ; ॲनवुम् विळम्पि–यह कहकर और; मेल्–आगे भी। ६४४

अति दीर्घ कठिन तपस्या में तप्त तपोधन, शतानंद ने कहा— महर्षि, आपकी कृपा इन पर परिपूर्ण रही तो इनके लिए दुस्तर कार्य क्या है ? फिर (अतिरिक्त पद—अतसी पुष्प, इन्द्रनीलमणि समुद्र, मेघ-जाल, नीलोत्पल-सदृश श्रीराम का चन्द्रमुख देखकर) वे बोले। ६४४

नऱुम लर्त्तॉडै नायह नानुनक्, करिवु ऱुत्तुवॅन् केळिव् वरुन्दवन्
इऱॅयॅ नप्पुविक् कीऱिल्पल् याण्डॅलाम्, मुऱैयि निऱ्पुरन् देयरुण् मुऱ्ऱिनान् 645

नऱु मलर् तॉटै–सुगन्धित पुष्पमाला-धारी; नायक–जगन्नायक; नान् उनक्कु

अऱिवरुत्तुवॆन्–मैं आपको बताऊँगा; केळ्–सुनिये; इ अरु तवन्–ये श्रेष्ठ तपस्वी; पुविक्कु इऱै अन्त–भूमि के पालक के रूप में; ईऱु इल् पल् याण्टु–गणनाहीन अनेक वर्ष भर; मुऱैयिऩिल् पुरन्तु—धर्म-सम्मत रीति से पालन कर; एय् अरुळ्–(जीवों पर) उद्‌बुद्ध दया में; मुऱ्ऱिनान्–बढ़े रहे। ६४५

सुगंधित-पुष्पमाला-धारी जगन्नाथ ! मैं आपको एक वृत्तांत सुनाऊँगा। सुनिये। ये पहले भूपति थे और अनेक वर्ष राज करते रहे। ये अत्यंत दयावान थे। ६४५

अरशिन् वैहि यऱनि नमैन्दुळि, विरशु कानिडैच् चॆन्ऱनन् वेट्टैमेल्
उरैशॆय् मादवत् तोङ्गु वशिट्टनाम्, परशु वानवन् पालणैन् दानरो 646

अरचिन् वैकि–राज कार्य में रत; अऱनिन् अमैन्त उळि–धर्मचारी रहते समय; वेट्टै मेल्–आखेट पर; विरचु कान् इटै–घने अरण्य में; चॆन्ऱनन्–गये; उरै चॆय् मा तवत्तु ओङ्कु–प्रकीर्तित तपोराशि; वचिट्टन् आम्–वसिष्ठ संज्ञित; परचुवान् अवन् पाल्–सम्मान्य (उन) के पास; अणैन्तान्–गये। ६४६

वे राज-काज धर्म-संवर्धक रीति से करते रहे। एक समय वे आखेट के लिए घने वन में गये। वहाँ तपोराशि श्रीमहर्षि वसिष्ठ के पास पहुँचे। ६४६

अरुन्ददि कणवन् वेन्दऱ् करुङ्गडन् मुऱैयि नाऱ्ऱि
इरुन्दरु ळॆन्न विरुन्दुळि यिनिदु निऱ्कु
विरुन्दिनि यमैप्पॆ नॆन्नाच् चुरबियै विळित्तु नीये
शुरन्दरु ळमिर्द मॆन्न वरुण्मुऱै शुरन्द दन्ऱे 647

अरुन्तति कण्वन्–अरुन्धती-पति ने; वेन्तऱ्कु–राजा के; अरुकटन्–श्रेष्ठ (आतिथ्य-) कर्तव्य; मुऱैयिन् आऱ्ऱि–यथाक्रम सम्पन्न करके; इरुन्तु अरुळ् तरुति–विराजिए, कृपा कीजिए; ॲन्न–यह कहा, तव; इरुन्तुळि–(विश्वामित्र) आसीन हुए तब; इति–अब; निऱ्कु–आपको; इनितु विरुन्तु अमैप्पन्–उत्तम भोज का प्रबन्ध करूँगा; ॲन्ना–कहकर; चुरपियै विळित्तु–कामधेनु को बुलाकर; नीये अमिर्तम् चुरन्तु अरुळ्–तुम ही अमृत (सम भोज्य पदार्थ) निकालकर दे दो; ॲन्न–आज्ञा देने पर; अरुळ् मुऱै–आज्ञा के अनुसार; अन्ऱे चुरन्तनु–तभी निकाल दिये। ६४७

अरुन्धती के पति वसिष्ठजी ने उनका स्वागत किया; यथाविधि सत्कार करके आसनस्थ कराया। आपको भोज दूँगा, स्वीकार कीजिए—कहकर वसिष्ठजी ने कामधेनु (शवला) को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम्हीं इनको और इनके साथ आई सेना को भोजन देने का प्रबंध करो। सुरभी ने भी उनकी आज्ञा के अनुसार अमृत-सम भोज्य-पदार्थों को अपने ही शरीर से सृष्ट किया। ६४७

अरुशुवैत् ताय वुण्डि यरशनिन् ननिहत् तोडुम्
पॆऱुहॆन वळिप्प वेन्दो डियावरुन् दुयत्त पिन्ऱै

नऱुमलर्त् तारुम् वाशक् कलवयु नल्ह लोडुम्
उऱुतुयर् तणिन्दु मन्न नुय्त्तुणर्न् दुरैक्क लुऱ्ऱान् 648

अरच–राजन; निन् अनिकत्तोटुम्–अपने अनीक के साथ; अऱु चुवैत्तु आय–षड्रस-पूर्ण; उण्टि पॅरुक–भोजन कर लीजिये; ॲन–कहकर; अळिप्प–खिलाने पर; वेन्तोटु यावरुम्–राजा के साथ सब के; तुय्त्त पिन्नरै–भोजन करने के बाद; नऱु मलर् तारुम्–सुवासपूर्ण पुष्प-मालाएँ और; वाचम् कलवैयुम्–सुगन्धि मिलित चन्दन; नल्कलोटुम्–देने पर; मन्नन्–राजा; उऱु तुयर् तणिन्तु–विश्रांत होकर; उय्त्तु उणर्न्तु–(कामधेनु की विशेषता) अनुभव द्वारा जानकर; उरैक्कल् उऱ्ऱान्–बोलने लगे। ६४८

वसिष्ठजी ने राजा कौशिक से कहा— षड्रसपूर्ण भोजन प्रस्तुत है। आप अपनी सेना सहित भोजन कीजिए। उनकी बात मानकर राजा के साथ सब वीरों ने भोजन किया। भोजन के उपरांत उन्हें पुष्पमाला और चंदन भी दिया गया। राजा विश्रांत होकर इस आश्चर्य के बारे में सोचने लगे। कामधेनु के विशिष्ट कौशल को देखकर वे मन में कुछ विचार करके महर्षि से बोले। ६४८

मादव वॅळुन्दि लायनी वन्दवॅम् बडैहट् कॅल्लाम्
कोदऱ वमुद मिक्को वुदविय कॉळ्है तन्नाल्
तीदऱु कुणत्तान् मिक्क शॅळुमऱै तॅरिन्द नूलोर्
मेदहु पॉरुळ्हळ् यावुम् वेन्दरुक् कॅन्नगै तन्नाल् 649

मा तव–महातपस्वी; नी ॲळुन्तिलाय्–आप (अपनी जगह पर से) नहीं उठे; वन्त ॲम् पटैकट्कु ॲलाम्–मेरे साथ आयी सेना-सकल को; इ को–यह सुरभी; कोतु अऱ–बिना त्रुटि के; अमुतम् उतविय कॉळकै तन्नाल्–स्वादिष्ट भोजन दे सकी, इस विशिष्ट गुण के कारण; तीतु अऱु–निर्दोष; कुणत्ताल् मिक्क–विशिष्ट गुणों से सुसम्पन्न; चॅळु मऱै–अर्थ-पुष्ट वेदों; नूल्–और शास्त्रों को; तॅरिन्तोर्–जाननेवाले; मेतक पॉरुळ्कळ् यावुम्–सभी उत्तम वस्तुएँ; वेन्तरुक्कु–राजा की; ॲन्नकै तन्नाल्–यह कहते हैं, इससे। ६४९

तपोधन! आप तो अपने स्थान से उठे ही नहीं। पर इस सुरभी ने हमको, हमारी सेना को, बिना किसी त्रुटि के भोजन करा दिया। इससे साबित है कि यह विलक्षण और उत्तम गाय है। फिर सद्गुणोत्कृष्ट वेद-शास्त्रज्ञों का कहना है कि सभी श्रेष्ठ वस्तुएँ राजा की हैं। इन दो कारणों से,। ६४९

निऱ्किदु तहुव दन्ऱा नीडरुञ् जुरबि तन्नै
ॲऱ्करु ळॅन्ऱ लोडु मियम्बलन् यादुम् पिन्नर्
वऱ्कलै युडैयॅन् यानो वळङ्गलॅन् वरुव दाहिल्
कॉऱ्कॉळ्वे लुळव नीये कॉण्डहल् हॅन्ऱु कऱ 650

निऱ्कु इतु तकुवतु अन्ऱु–आपके लिए यह युक्त नहीं है; नीटु अरु चुरपि तन्नै–बहुत विलक्षण इस सुरभी को; अऱ्कु अरुळ्–मुझे सौंप देने की कृपा करें; अन्ऱलोटुम्–कहने पर; यातुम् इयम्पलन्–(सहसा) कुछ नहीं कहा; यात्तो वऱ्कलै उटैयेन्–हम तो वल्कलधारी हैं; वळङ्कलॅन्–दान दे नहीं सकता; कोल् कोळ् वेल् उळव–संहारक भाले के प्रयोगी; वरुवतु आकिल्–वह आयँगी तो; नीये कोण्टु अकल्क–आप ही ले जाइये; अन्ऱु कूऱ–यह कहा, तब। ६५०

यह गाय आपके पास रहने योग्य नहीं; आप तापस हैं। इसलिए आप उसे हमें सौंप दीजिये। यह सुनकर वसिष्ठजी कुछ देर सन्न रह गये। बाद, बोले कि हे संहारक भाला-कृषक! हम वल्कलधारी हैं। हम दान देने के अर्ह नहीं हैं। इसलिए आपही अगर वह गाय आपके साथ जायगी तो ले जाइये। (तमिळ में एक विशेष प्रयोग है, भाला-कृषक! उसका विस्तार यों होगा—भाला-रूपी हल चलाकर शत्रु-रूपी खेत में हलचल मचानेवाला। वैसे ही लेखनी-कृषक का भी प्रयोग है)। ६५०

पणित्तदु पुरिवॅ नॅन्नाप् पार्त्तिब नॅळुन्दु पॉङ्गिप्
पिणित्तनन् शुरबि तन्नैप् पॅयर्वुळिप् पिणियै वीट्टि
मणित्तडन् दोळि नाऱ्कुक् कॉडुत्तियो मऱैहळ् यावुङ्
गणित्तवॅम् बॅरुम वॅन्नक् कलैमऱै मुनिवन् शॊल्वान् 651

पार्त्तिपन्–पृथ्वीपति ने; पणित्ततु पुरिवॅन्–आज्ञानुसार करूँगा; अन्ना–कहकर; पॊङ्कि ॲळुन्तु–उमंग के साथ उठकर; चुरपि तन्नै–धेनु को; पिणित्ततन्–बाँधा; पॅयर्वुळि–जाते समय; पिणियै वीट्टि–बन्धन छुड़ाकर; मऱैकळ् यावुम् कणित्त–वेद सब जाननेवाले; ॲम् पॅरुम–मेरे नायक; मणि तटम् तोळिनाऱ्कु–सुन्दर विशाल भुजावाले (इन) को; कॊटुत्तियो–मुझे दे दिया क्या; अन्न–पूछने पर; कलै मऱै मुनिवन्–शास्त्रों और वेदों के ज्ञाता; चॊल्वान्–बोले। ६५१

राजा कौशिक यह सुनकर आनंद-विभोर हुए। उत्साह के साथ आपके कहे अनुसार करूँगा—यह कहते हुए वे उठे। उन्होंने जाकर कामधेनु को पकड़ा। वे उसको खींचते ले जाने लगे। सुरभी (शवला) ने अपने को बंधन से छुड़ा लिया और वसिष्ठजी के पास जाकर पूछा कि क्या आपने मुझे दीर्घ-बाहु राजा के हाथ में सौंप दिया है? । ६५१

कॊडुत्तिलॅन् यान्ने मऱ्ऱक् कुरैकळल् वेन्दन् ताने
पिडित्तहल् वुऱ्ऱा नॅन्नप् पॅरुञ्जिनङ् गदुवु नॅञ्जो
डिडित्तॅळु मुरश वॅन्दन् शेनैयै याने यिन्ऱु
मुडिक्कुवॅन् काण्डि यॅन्ना मॊय्म्मयिर् शिलिर्त्त दन्ऱे 652

याने कोटुत्तिलॅन्–मैंने स्वयं नहीं दिया; अ कुरै कळल् वेन्तन्–वह क्वणनशील पायलधारी; ताने पिटित्तु–खुद पकड़कर; अकल्वुऱ्ऱान्–जाने लगे; अन्न–कहने पर; पॅरु चिनम् कतुवुम् नॅञ्चोटु–बड़े क्रोधाक्रांत मन से; इटित्तु ॲळुम्–गरज उठनेवाले; मुरचम् वेन्तन्–ढोलवाले राजा की; चेनैयै–सेना को; याने

इन्रु मुटिक्कुवॅन्–आज ही समाप्त करूँगी; काण्टि–देखिए; ॲन्ता–कहके; मॉय् मयिर्–घने बालों को; चिलिर्त्ततु–पुलकित कराया; अन्रे–तभी। ६५२

मैंने तो दिया नहीं। वे शब्दायमान पायलालंकृत राजा बलात् ले जा रहे हैं। यह सुनकर कामधेनु को बड़ा क्रोध हुआ। उसने आक्रोश के साथ कहा कि मैं स्वयं इन नगाड़ेवाले राजा की सेना का संहार कर दूँगी। आप देखिये। यह कहकर उसने अपने रोंगटे पुलकित किये। तभी; । ६५२

पप्परर् यवन्नर् शीन्नर् शोनकर् मुदल पल्लोर्
कैप्पडै यदनि नोडुङ् गबिलैमाट् टुदित्तु वेन्दन्
तुप्पुडैच् चेनै यावुन् दुणित्तन्नर् तुणित्त लोडुम्
वॅप्पुडैक् कॉडिय मन्नन् रुनैयर्हळ् वॅहुण्डु मिक्कार् 653

पप्परर्–पप्लव; यवन्नर्–यवन; चीन्नर्–चीनी; चोनकर्–शोनक; मुतल–आदि; पल्लोर्–अनेक; कै पटै अतनितोटुम्–हाथों में हथियारों के साथ; कपिलै माट्टु उतित्तु–श्वेत धेनु द्वारा सृष्ट होकर; वेन्तन्–राजा की; तुप्पु उटैय–शक्तिमान; चेनै यावुम्–सब सेना को; तुणित्तन्नर्–काट गिराया; तुणित्तलोटुम्–संहार करते ही; मन्नन्–राजा के; वॅप्पु उटैय कॉटिय तनैयर्कळ्–क्रोधी, क्रूर पुत्र; वॅकुण्टु–कोप करके; मिक्कार्–बढ़े। ६५३

पप्लव, यवन और चीन, शोनक आदि म्लेच्छ वीर हाथों में हथियारों के साथ उस गाय से बाहर आये। उन वीरों ने राजा की सबल सेना का संहार कर दिया। इसको जानकर राजा के क्रोधी और क्रूर पुत्र फड़क उठे और वसिष्ठ की तरफ बढ़ आये। ६५३

शुरबियिन् वलियि दन्राङ् चुरुदि नूलुणर वल्ल
वरमुनि वञ्ज मॅन्ना मऱ्ऱिवन् शिरत्तै यिन्नॆ
अरिहुदु मॅन्नप् पॉङ्गि यडर्न्दन्न रडर वन्नान्
ऍरियॅऴ् विऴित्त लोडु मॅरिन्दन्नर् कुमर रॅल्लाम् 654

कुमरर् ॲल्लाम्–सब कुमारों ने; इतु चुरपियिन् वलि अन्रु–यह गाय का सामर्थ्य नहीं; चुरुतिनूल् उणर वल्ल–वेद और शास्त्र के ज्ञानी; वरन् मुनि वञ्चम्–मुनिवर की वंचना है; ॲन्ना–सोचकर; इन्रे–अभी; इवन् चिरत्तै–इसका सिर; अरिकुतुम्–काट लेंगे; ॲन्न–कहकर; पॉङ्कि–जोश के साथ उठकर; अटर्न्तन्नर्–घेरकर आये; अन्नान्–उनके; ॲरि ॲऴ–आग उगलते; विऴित्तलोटुम्–तरेरते ही; ॲरिन्तन्नर्–जलकर भस्म हो गये। ६५४

उन कुमारों ने सोचा कि यह इस मामूली गाय का शौर्य नहीं है। यह, वेद और शास्त्रों के ज्ञानी, मुनि वसिष्ठजी की माया है। अब उनका सिर काटकर वध करेंगे। वे आवेश के साथ उनको घेरते आये। महर्षि ने उन पर आग्नेय-दृष्टिपात किया। वे वहीं जलकर भस्म हो गये। ६५४

ऐयिरु पदिऩ्मर् मैन्द रविन्दमै यरशऩ् काणा
नॅय्शॊरि कऩलिऩ् कान्दि नॅडुङ्गॊडित् तेर्ह डाविक्
कैतॊडर् कणैयि ऩोडुङ् गार्मुहम् वळैय वाङ्गि
ऎय्दऩऩ् मुऩियुन् दऩ्कैत् तण्डिऩै यॆदिर्ह वॆऩ्ऱाऩ् 655

मन्ऩऩ्–राजा; मैन्तर्–पुत्र; ऐ इरु पतिऩ्मर्–पाँच के दो के दस (एक सौ) का; अविन्तमै काणा–जलना देखकर; नॅय् चॊरि कऩलिऩ् कान्ति--घृत-प्राप्त आग के समान जलकर; कॊटि नॅटु तेर्–ध्वजा सहित बड़े रथ को; कटावि–चलाते हुए आकर; कै तॊटर् कणैयिऩोटुम्–हाथ में लिये हुए शर का उतना लम्बा; कार् मुकम् वळैय वाङ्कि–धनुष को झुकाते हुए डोरा खींचकर; ऎय्तऩऩ्–(शर) चलाये; मुऩियुम्–मुनिवर ने भी; तऩ् कै तण्टिऩै–अपने हाथ के योगदण्ड को; ऎतिर्क–सामना करो, यह; ऎऩ्ऱाऩ्–आज्ञा दी। ६५५

कौशिक ने जाना कि मेरे एक सौ-पुत्र एक साथ जल गये। घी के अर्पण से आग जिस तरह भभक कर उठती है वैसे ही वे क्रोधोन्मत्त हो उठे। ध्वजा से अलंकृत अपने बड़े रथ पर बैठकर वे वसिष्ठजी के सामने आये। धनुष पर शर चढ़ाकर, डोरा खूब खींचा और तड़ातड़ छोड़ने लगे। महर्षि वसिष्ठ ने अपने योगदण्ड को आज्ञा दी कि तुम उनका सामना करो। ६५५

कडवुळर् पडैह ळीऱाक् कऱ्ऱऩ पडैहळ् यावुम्
विडविड मुऩिवऩ् ऱण्डम् विळुङ्गिमेल् विळङ्गल् काणा
वडवरै विल्लि तऩ्ऩै वणङ्गिये वळ्ळुत्त वीशऩ्
अडलुरु पडैयॊऩ् ऱीय वऩ्ऩव ऩाऱ्ऱ लोडुम् 656

कटवुळर् पटैकळ् ईऱाक–दैवी अस्त्रांत; कऱ्ऱऩ पटैकळ् यावुम्–अभ्यस्त सभी आयुधों को; विट विट—ज्यों-ज्यों चलाया; मुऩिवऩ् तण्टम्–मुनि का दण्ड; विळुङ्कि–कवलित कर; मेल् विळङ्कल् काणा–(उसका) अधिक तेजोमय दिखना, देख; वटवरै विल्लि तऩ्ऩै--मेरु-धन्वा को (शिवजी को); वणङ्कि वळ्ळुत्त–विनय कर स्तुति करने पर; ईचऩ्–ईश्वर (के); अटल् उरु पटै ऒऩ्ऱु ईय–सशक्त एक अस्त्र देने पर; अऩ्ऩवऩ् आऱ्ऱलोटुम्–उन (रुद्र) के (मन्त्र-) बल के साथ। ६५६

ज्यों-ज्यों कौशिक साधारण अस्त्रों से लेकर देवों के अस्त्रों तक अपने अभ्यस्त अस्त्रों को छोड़ते गये, त्यों-त्यों महर्षि के ब्रह्मदण्ड ने उनको निगल कर शांत कर दिया और वह उत्तरोत्तर तेजोमय दिखने लगा। तब कौशिक ने मेरुधन्वा, शिवजी की प्रार्थना की। उन्होंने राजा को एक बलवान अस्त्र दिया। शिवजी संबंधी मंत्र के बल का अवलंबन कर; । ६५६

विट्टऩऩ् पडैयै वेन्दऩ् विण्णुळो रुलहै यॆल्लाम्
शुट्टऩ ऩॆऩ्ऩ वञ्जित् तुळङ्गिऩर् मुऩियुन् दोऩ्ऱिक्
किट्टिय पडैयै युण्डु विळङ्गिऩऩ् किळरु मेऩि
मुट्टिवॆम् पॊऱिहळ् शिन्दप् पॊरुपडै मुरणुन् दीर 457

वेन्तन् पटैयै विट्टनन्–राजा (कौशिक) ने अस्त्र को प्रेरित किया; विण् उळोर्–देवता लोग; उलकं ॲल्लाम् चुट्टनन् ॲन्न–सभी लोकों को जला देगा, यह समझकर; अन्चि तुळङ्किनर्–भय से काँप उठे; मुनियुम्–महर्षि (ने); तोन्रि–सामने आकर; किट्टिय पटैयै उण्टु–समीप आये अस्त्र को निगल लिया; किळरुम् मेति–तेजोमय शरीर के अन्दर; पोरु पटै मुट्टि—युद्ध-प्रवण अस्त्र के टकराने से; वॆम् पोरिकळ् चिन्त–गरम अंगारे निकले, ऐसा; मुरणुम् तीर–(और) शक्ति नष्ट करके; विळङ्किनन्–शोभित रहे। ६५७

राजा ने उस रुद्रास्त्र को प्रेरित किया। देवता लोगों ने समझ लिया कि अब यह सारे लोकों को जला डालेगा। वे भय से काँप उठे। पर वसिष्ठ ने आगे आकर स्वयं उसको निगल लिया। युद्ध-प्रवृत्त अस्त्र था, उनके अंदर जाकर टकराया तो उनके शरीर से तेज फूटने लगा। वह शांत हो गया। वसिष्ठ दीप्तिमंत दिखाई दिये। (वाल्मीकी में रुद्र की पूजा के स्थान पर लंबे अरसे की तपस्या कही गई है। और उन्होंने रुद्र से देवास्त्र पाये। उनको लेकर वे आये और पुनः अस्त्र चलाना आरम्भ हुआ। सब अस्त्र व्यर्थ गये तो ब्रह्मास्त्र की बारी आई। उसको मुनि ने शांत कर दिया।) । ६५७

कण्डन नरशन् कण्णार् कलैमरै यवर्हट् कल्लाल्
तिण्डिरल् वलियुन् देशु मुळवॆनल् शीरि दन्राल्
मण्डल मुळ्दुङ् गाक्कुम् मॊय्म्बॊरु वलनन् रॆन्ना
ऒण्डवम् बुरिय वुन्नि युम्बरकोन् रिशैयै युऱ्ऱान् 658

अरचन् कण्णाल् कण्टनन्–राजा ने प्रत्यक्ष देखा; कलै मरैयवर्कट्कु अल्लाल्—वेद-विप्रों के सिवा; तिण् तिरल् वलियुम्–अति धैर्य का बल; तेचुम् उळ ॲनल्–तेज है (अन्यों के पास), यह कहना; चीरितु अन्रु–मान्य नहीं है; मण्टलम् मुळ्तुम् काक्कुम् मॊय्म्पु–भूमण्डल सारा पालन करने की शक्ति; ओरु वलन् अन्रु–एक (प्रशंसनीय) बल नहीं है; ॲन्ना–समझकर; ऒण् तवम् पुरिय उन्नि–प्रबल तपस्या करना चाहकर; उम्पर् कोन्–देवेन्द्र की; तिचैयै–(पूर्व) दिशा को; उऱ्ऱान्–जा पहुँचे। ६५८

राजा ने प्रत्यक्ष देख लिया कि समस्त विश्व का शासन करते हुए भी क्षत्रिय-बल कोई बल नहीं है। ब्रह्मतेजोबल के सिवा किसी और के शारीरिक, अस्त्र या मनोबल को बल मानना ही श्लाघ्य नहीं है। इसलिए वे तपस्या करने का संकल्प लेकर देवेन्द्र की पूर्वी दिशा में गये। ६५८

माण्डमा दवत्तोन् शॆय्द वलत्तैये मनत्ति नुन्निप्
पूण्डमा दवत्त नाहि यरशरकोन् पॊलियु नोर्मै
काण्डलु ममरर् वेन्दन् रुणुक्कुरु करुत्ति नोडुम्
तूण्डिन नरम्बै मारुट् टिलोत्तमै यॆनुञ्जोन् मानै 659

माण्ट मातवत्तोन्–महिमामय तपश्रेष्ठ (वसिष्ठ) का; चॅय्त वलत्तैये–कृत बल-प्रदर्शन ही; मतत्तिन् उन्नि–मन में सोचकर; पूण्ट मातवत्तन् आकि–सन्नद्ध तपस्वी होकर; अरचर् कोन्–राजाधिराज के; पॉलियुम् नीर्मै–शोभित रहने के प्रकार को; अमरर् वेन्तन् काण्टलुम्–देवेन्द्र (ने देखा उस) के देखते ही; तुणुक्कुउऱु करुत्तिनोटुम्–भयभीत मन से; अरम्पै मारुळ्–रम्भा आदि अप्सराओं में; तिलोत्तमै ॲनुम्–तिलोत्तमा नाम की; चॉल् मातै–प्रथित मृग-नयनी को; तूण्टिनन्–प्रेषित किया। ६५९

वे तपोराशि महान् वसिष्ठ के प्रताप को भूल नहीं सके। उसी का स्मरण करते हुए वे तपस्या करने लगे। (यह ईर्ष्या का भाव था और वह उत्तम तपोबल में बाधा डालने वाली है।) राजा कठोर तपस्या कर रहे हैं, यह देवेन्द्र ने जाना; (उनको डर हुआ कि कठोर तप के कारण तपस्वी के सिर से कपालाग्नि उठकर देवलोक को भी जला देगी।) भय खाकर उन्होंने रंभा आदि अप्सराओं में सुन्दरी, मृग-नयनी तिलोत्तमा को कौशिक की तपस्या में विघ्न डालने के हेतु प्रेरित किया। ६५९

अन्नवण् मेनि काणा वनङ्गवेळ् शरङ्गळ् पायत्
तन्नुणर् वळिन्दु कादऱ् चलदियि नळुन्दि वेन्दन्
पन्नरुम् बहऱीर् वुऱ्ऱुप् परुणिदर् तॅरिन्द नूलिन्
नन्नय मुणर्न्दो नाहि नञ्जॅनक् कनन्ऱु नक्कान् 660

अन्नवळ् मेनि काणा–उसका रूप-लावण्य देख; अनङ्कवेळ् चरङ्कळ् पाय–अनंग के शरों के लगने से; तन् उणर्वु अऴिन्तु–अपनी (संयम-) बुद्धि खोकर; कातल् चलतियिल् अऴुन्ति–प्रेम-समुद्र में डूबकर; पन् अरुम् पकल्–अकूत (अनेक) दिनों तक; तीर्वुऱ्ऱु–व्यतीत करने के बाद; परुणितर्–परिणत (शिष्ट) लोगों के; तॅरिन्त–गम्भीर अध्ययन के बाद कृत; नूलिन् नल् नयम्–शास्त्रों की श्रेष्ठ शिक्षाप्रद बातें; तॅरिन्तोन् आकि–जाननेवाले बनकर; नञ्चु ॲन–(कामेच्छा को) विष समझकर; कनन्ऱु–घृणा करके; नक्कान्–(अपनी भूल पर) हँसे। ६६०

कौशिक ने उसको देखा। तभी मन्मथ-शर उन पर लगे। वे अपना धैर्य खो गये। फिर उनके अनेक दिन उसके साथ प्रेम-सागर में मग्न रहने में बीत गये। तब जाकर उनको चेतना हुई। परिणत शिष्ट लोगों के अनुभव-भूत शास्त्रों के उपदेश मन में जागे। उनको अपना काम निन्द्य लगा। उसे विष-समान त्यागकर अपनी ही भूल पर स्वयं हँसे। ६६०

विण्मुळु दाळि शॅय्द विनैयॅन वॅहुण्डु नीपोय्
मण्मह ळादि यॅन्ऱु मडवर ऱन्नैच् चीऱिक्
कण्मलर् शेप्प वुळ्ळङ् गरुप्पुऱक् कडिदि नेहि
ॲण्मरिन् वलिय नाय यमन्ऱिशै यदनै युऱ्ऱान् 661

विण् मुळुतुम् आळि चॅय्त–सब देवलोकों का शासन करनेवाले इन्द्र की, की हुई; वितै अँत–वंचना (का कार्य) यह जानकर; वॅकुण्टु–कुपित होकर; मटवरल् तन्नै–दयिता (तिलोत्तमा) को; नी पोय् मण् मकळ् आ (कु)–तुम जाकर मानव-स्त्री बन जाओ; अँन्ऱु चीऱि–यह शाप देकर; कण् मलर् चेप्प–आँखें लाल करते हुए; उळ्ळम् करुप्पु उऱ–मन को काला बनाते हुए (गुस्से के साथ); कटितिन् एकि–सत्वर जाकर; अँण्मरिन्–आठ (दिग्पालकों) में; वलियन् आय–अधिक बलशाली; यमन् तिचै अतनै–यम की (दक्षिण) दिशा को; उऱ्ऱान्–गये। ६६१

विश्वामित्र समझ गये कि यह देवलोकों के अधिपति इन्द्र का यह वंचक काम था। उन्होंने कोप करके तिलोत्तमा को शाप दिया कि तू मानवी स्त्री हो जा। क्रोध से लाल हुई आँखों और "काला हुआ मन" (=कोप कलुषित मन) के साथ जल्दी वहाँ से चले और प्रवल यम की दक्षिणी दिशा में पहुँचे। ६६१

तॅन्ऱिशै यिरुन्दु मन्नन् शॅय्दवञ् जॅय्यु नाळिल्
वन्ऱिऱ लयोत्ति वाळु मन्ऱिरि शङ्गु वॅन्बान्
तन्ऱुणैक् कुरुवै नण्णित् तनुवोडु तुऱक्क मॅय्द
इन्ऱॅनक् करुळु हॅन्न यान्ऱिन् दिलॅन दॅन्ऱान् 662

मन्नन्–राजा (कौशिक); तॅन् तिचै इरुन्तु–दक्षिण दिशा में रहकर; चॅय् तवम् चॅय्युम् नाळिल्–कर्तव्य (प्रकार से) तपस्या करते रहते समय; अयोत्ति वाळुम्–अयोध्यावासी; वन् तिऱल् मन्–अधिक प्रतापी राजा; तिरिचङ्कु अँन्पान्–त्रिशंकु नामी; तन् तुणै कुरुवै नण्णि–अपने सहायक और गुरु के पास जाकर; तनुवोटु तुऱक्कम् अँय्त–तन के साथ स्वर्ग जाने के निमित्त; इन्ऱु अँनक्कु अरुळुक–मुझ पर कृपा कीजिए; अँन्न–प्रार्थना करने पर; अतु–वह; यान् अरिन्तिलॅन्–मैं नहीं जानता; अँन्ऱान्–कहा। ६६२

जब वे राजा दक्षिण दिशा में रहकर तपस्या करते थे तब अयोध्या में त्रिशंकु नाम के बहुत प्रतापी राजा राज करते थे। वे अपने गुरु हित-साधक वसिष्ठ के पास जाकर बोले कि मैं सशरीर स्वर्ग जाना चाहता हूँ। कृपा करके उसका उपाय कीजिए। वसिष्ठजी ने उत्तर दिया कि मैं उसका उपाय नहीं जानता। ६६२

निन्नक्कोला दाहि नैय नीणिलत् तियाव रेनुम्
मन्नक्किनि यारै नाडि वहुप्पल्यान् वेळ्वि यॅन्नच्
चिन्नक्कोडुन् दिऱलोय् मुन्नैत् तेशिहऱ् पिळैत्तु वेऱोर्
निन्नक्किद नाडि निन्ऱाय् नीशनाय् विडुदि यॅन्ऱान् 663

ऐय–महर्षे; निन्नक्कु ऑल्लातु आकिन्–आप से सम्भव नहीं तो; नीळ् निलत्तु–विशाल विश्व में; यावरेनुम् मनक्कु इनियारै नाटि–मनोनुकूल किसी को खोजकर; यान् वेळ्वि वकुप्पल् अँन्न–मैं यज्ञ करूँगा, कहने पर; चिनम् कॉटु तिऱलोय्–क्रोधी और क्रूर बल युक्त; मुन्नै तेचिकन् पिळैत्तु–प्राचीन अपने गुरु का अपराध करके;

वेरु ओर् नित्तक्कु इतन्–दूसरे किसी हितकारी को; नाटि निन्ड्राय्–खोजते खड़े हो; नीचन् आय् विटुति–नीच (चण्डाल) बन जाओ; ॲन्ड्रान्–यह (शाप) कहा। ६६३

तब राजा ने कहा कि आप असमर्थ हैं तो मैं जाऊँगा और अपने मनोनुकूल किसी को खोज पाकर उसकी सहायता के साथ अपना मनोभीष्ट साधन के उपाय-रूपी यज्ञ को पूरा करूँगा। यह सुनकर वसिष्ठजी को क्रोध आ गया। उन्होंने उसको शाप दिया कि अपने प्राचीन गुरु के प्रति अपराध करते हो क्योंकि दूसरे हितकारी गुरु की खोज करना चाहते हो। इसलिए तुम नीच (चंडाल) बन जाओ। ६६३

मलरुळोन् मैन्दन् शीड्रि वळङ्गिय शाबम् दन्नाल्
अलरियोन् ड्रानु नाणु मॉळियिळन् दरशर् कोमान्
पुलरियङ् गमलम् पोलु मुहत्तिनिड्र् पॉलिवु नीङ्गिप्
पलरुमाङ् गिहळ्दड्र् कौत्त पडिवभ्वन् दुड्र् दन्ड्रे 664

मलरुळोन् मैन्तन्–कमल-निवास (ब्रह्मा) के पुत्र (वसिष्ठ) के; चीड्रि–कोप करके; वळङ्किय चापम् तन्नाल्–दिये शाप से; अरचर् कोमान्–राजाधिराज ने; अलरियोन् तानुम् नाणुम्–सूर्य भी देखकर (जिस प्रभा के सामने) लजाते थे; ऑळि इळन्तु–देह-कांति खोकर; पुलरि अम् कमलम् पोलुम्–सूर्योदय में विकसनेवाले कमल का सा; मुकत्तिनिल् पॉलिवुम् नीङ्कि–मुख-कांति भी खोकर; पलरुम् इकळ्तर्कु ऑत्त पटिवम्–बहु-निन्द्य रूप; अन्ड्रे वन्तु उड्रतु–तभी आ मिल गया। ६६४

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठजी ने शाप दिया तो उसके प्रभाव से राजा का रूप-रंग बदल गया। देह की सूर्य-निंदक कांति और मुख की नव-विकसित कमल की सुन्दरता नष्ट हो गयी। सबसे निन्दनीय चंडाल का रूप मिल गया। ६६४

काशॉडु मुडियुम् पूणुङ् गरियदाङ् गनहम् बोन्रु
तूशॉडु मुन्नून् मालै तोड्रुन् दोड्र माह
माशॉडु करुहि मेन्नि वन्नप्पळिन् दिडवूर् वन्दान्
शीशियॅन् ड्राड्र मॅळ्ळत् तिहैप्पॉडु पळुवत् जेर्न्दान् 665

काचॉटु–रत्नहारों के साथ; मुटियुम्–मुकुट और; पूणुम्–और आभरण; करियतु आम् कनकम् पोन्ड्रु–काले स्वर्ण (लोहे) के से हुए; तूचॉटु–वस्त्रों के साथ; मुन्नूल्–तीन तागों का यज्ञोपवीत; मालै–पुष्पमाला; तोल् तरुम् तोड्रम् आक–चमड़े के से दिखते; मेन्नि–शरीर; माचॉटु करुकि–गन्दा और काला बना; वनप्पु अळिन्तिट–सुन्दरता खो गया; ऊर् वन्तान्–(इस स्थिति में) पुरी में आये; आरुम्–सभी (किसी ने); ची ची ॲन्ड्रु–छिः छिः कहकर; ॲळ्ळ–निन्दा की, तो; तिकैप्पॉटु–घबराकर; पळुवम्–वन में; चेर्न्तान्–पहुँच गये। ६६५

उनके रत्नहार, किरीट और अन्य आभरण लोहे के हो गये। वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्पमालाएँ आदि चमड़े की हो गयीं। शरीर गंदा और काला

पड़ गया। इस स्थिति में वे अपने पुर में आये। सभी ने छिः छिः ! कहकर निन्दा की। वे भौचक हो गये और वन में चले गये। ६६५

कान्इडैच् चिऱिदु वैहल् कऴित्तोर्नाट् कौशि हप्पेर्क्
कोन्इरुन् दवञ्जॅय् शोलै कुरुहिनन् कुरुह वन्नान्
ईन्नी याव नॅन्नै नेर्न्ददिव् विडैयि नॅन्न
मेन्इहऴ् पॉरुळ्हळ् यावुम् विळम्बिनन् वणङ्गि वेन्दन् 666

कान् इटै–वन में; चिऱितु वैकल् कऴित्तु–कुछ समय व्यतीत करके; ओर् नाळ्–एक दिन; कौचिकन् पेर् कोन्–कौशिक संज्ञित राजा (के); इरु तवम् चॅय् चोलै–कठोर तपस्या करनेवाले आश्रम में; कुरुकिनन्–पहुँचकर; कुरुक–उनके पास गये, तब; अन्नान्–उन्होंने; ईनन् नी–चण्डाल तुम; यावन्–कौन हो; इ इटैयिल्–इस स्थान में; नेर्न्तु अॅन्नै–(तुम्हारा) आना क्योंकर; अॅन्न–पूछने पर; वेन्तन्–राजा त्रिशंकु ने; वणङ्कि–नमन कर; मेल् निकऴ् पॉरुळ्कळ् यावुम्–पहले बीती सब बातें; विळम्पिनन्–बताईं। ६६६

अटवी में कुछ समय बिताने के बाद, एक दिन वे कौशिकजी जहाँ तपस्या कर रहे थे उनके आश्रम में आये और उनके सम्मुख गये। कौशिक ने उनको देखकर विस्मय से पूछा कि तुम कौन हो नीच ! यहाँ आये क्यों ? राजा त्रिशंकु ने आप-बीती सारी बातें कह सुनायीं। (त्रिशंकु जान बूझकर कौशिक के पास गये क्योंकि वे वसिष्ठजी के शत्रु थे और त्रिशंकु को वसिष्ठजी से मनमुटाव था।)। ६६६

इऱ्ऱिदो वॅन्न नक्किङ् गियानिरु वॅळ्वि मुऱ्ऱित्
तुऱ्ऱिय तनुवि नोडु मेऱ्ऱुवॅन् सुवर्क्क मॅन्ना
मऱ्ऱुमा दवरैक् कूव वन्दनर् वशिट्टन् मैन्दर्
कऱ्ऱिल मरशन् वॅळ्वि कनऱ्ऱुरै पुलैयऱ् कीवान् 667

इऱ्ऱितो–इतना ही; अॅन्न–कहकर; नक्कु–हँसकर; इङ्कु–अब; यान्–मैं; इरु वेळ्वि मुऱ्ऱि–बड़ा यज्ञ करके; तुऱ्ऱिय तनुवितोटुम्–प्राप्त इस तन के साथ ही; चुवर्क्कम् एऱ्ऱुवॅन्–स्वर्गारोहण करा दूँगा; अॅन्ना–कहकर; मऱ्ऱुम् मातवरै कूव–और महा तपस्वियों को आमन्त्रित करने पर; वन्तनर्–(अनेक) आये; वचिट्टन् मैन्तर्–वसिष्ठ के पुत्र; अरचन्–राजा (क्षत्रिय); कनल् तुरै वेळ्वि–अग्नि-मुख यज्ञ (फल) को; पुलैयर्कु ईवान्–चण्डाल को देगा; कऱ्ऱिलम्–(यह यज्ञ-कार्य हम ने) नहीं सीखा है। ६६७

उनकी बातें सुनकर कौशिक 'इतनी सी बात' कहकर हँसे। फिर धीरज दिया कि मैं एक प्रबल यज्ञ करूँगा और तुम्हें सशरीर स्वर्ग पर चढ़ा दूंगा। उन्होंने तपस्वियों को बुला भेजा। अनेक आये भी। पर वसिष्ठ-जी के पुत्रों ने निन्दा की कि वाह ! एक क्षत्रिय राजा यज्ञ करता है और उसका फल चंडाल को मिलेगा ! ऐसा यज्ञ-कार्य हमने नहीं सीखा है। ६६७

अॅन्ऱुरैत् तियाङ्ग ळोल्लो मॅन्ऱन रॅन्ऩप् पोंङ्गिप्
पुन्ऱोंळिऱ् किराद राहिप् पोॅहॅन्ऩप् पुहल लोडुम्
अन्ऱव रॅयिन राहि यडविह डोरुञ् जॅन्ऱार्
निन्ऱुवेळ् वियैयु मुऱ्ऱि निराशनर् वरुह वॅन्ऱान् 668

अॅन्ऱु उरैत्तु–यह कहकर; याङ्कळ् ऑल्लोम्–हम सहमत नहीं होंगे; अॅन्ऱऩर्–यह कहा; अॅन्ऩ–कहने पर; पोंङ्कि–क्रोधोत्तप्त होकर; पुन् तॉळिल् किरातर् आकि–नीचकर्मी किरात बनकर; पोक–चलो; अॅन्ऩ पुकललोटुम्–यह कहने पर; अन्ऱु–तभी; अवर–वे वसिष्ठ-पुत्र; अॅयिनर् आकि–किरात बनकर; अटविकळ् तोऱुम् चॅन्ऱार्–अटवी-अटवी में घूमने लगे; निन्ऱु–(कौशिक) स्थिर रहकर; वेळ्वियैयुम् मुऱ्ऱि–यज्ञ को पूरा करके; निराचनर्–निरशन देवता; वरुक–आइये; अॅन्ऱान्–कहकर निमन्त्रित किया। ६६८

उन्होंने यह कहकर कि हम सहमत नहीं हैं साफ़ इनकार कर दिया। विश्वामित्र को उनकी बातें जानकर बड़ा क्रोध आ गया। तुरंत शाप दिया कि तुम सब नीच कर्म करनेवाले किरात बन जाओ। वे भी विराध बनकर अटवी-अटवी घूमने लग गये। फिर कौशिक जी ने अपने वचन पर अटल रहकर यज्ञ संपन्न किया और देवताओं को 'आओ' कहकर निमंत्रित किया। ६६८

अरशनिप् पुलैयऱ् कॅन्ऩे यनऱ्ऱुऱै मुऱ्ऱि यॅम्मै
विरशुह वल्लै यॅन्ऱल् विळुमिदॅन् ऱिहळ्न्दु नक्कार्
पुरशमा कळिऱ्ऱिन् वेन्दैप् पोहनी तुऱक्कम् याने
उरैशॅय्देन् ऱवत्ति नॅन्ऩ वोङ्गिनन् विमानत् तुम्बर् 669

अॅन्ऩे–यह क्या (अन्याय है); अरचन्–राजा; इ पुलैयऱ्कु–इस चण्डाल के लिए; अनल् तुऱै मुऱ्ऱि–अग्नि-कर्म (यज्ञ) सम्पन्न कर; अॅम्मै–हमें; वल्लै–शीघ्र; विरचुक–आना; अॅन्ऱल्–कहना; विळुमितु–श्रेष्ठ है; अॅन्ऱु–कहकर; इकऴ्न्तु–निन्दा करके; नक्कार्–हँस उठे; पुरचै मा कळिऱ्ऱिन्–रस्सी-बँधे गलों के बड़े हाथियों वाले; वेन्तै–राजा को; नी तुऱक्कम् पोक–तुम स्वर्ग जाओ; तवत्तिन्–तपोबल से; याने उरै चॅय्तॅन्–मैंने कहा; अॅन्ऩ–यह आज्ञा देने पर; विमानत्तु–विमान पर; उम्पर् ओङ्किनान्–आकाश में उड़े। ६६९

देवता लोग कौशिक की निन्दा करके हँसने लगे। यह क्या विपरीत बात चलती है! अग्निकर्म प्रधान यज्ञ एक राजा करे, वह भी एक चंडाल के हित में; तिस पर हमको भी 'हविर्भाग लेने के लिए तुरत आना' यह आज्ञा दी जाय! वे नहीं आये। कौशिक ने हाथियोंवाले राजा से कहा कि अब अपने तपोवल के आधार पर कहता हूँ। तुम जाओ स्वर्ग में। तव एक विमान आया। वह त्रिशंकु को लेकर ऊपर स्वर्ग की ओर उड़ा। ६६९

आङ्गवन् ऱुऱक्क मॅय्द वमरर्हळ् वॅहुण्डु नीशन्
ईङ्गुवन् दडैव दॅन्ऩै यिरुनिलत् तिळिह वॅन्ऩत्

ताङ्गुद लिन्ऱि वीऴ्वान् ऱापद शरण मॆन्ऩ
ओङ्गिनी निल्लु निल्लॆन् ऱुरैत्तुरु मॊक्क नक्कान् 670

आङ्कु–तब; अवन् तुरक्कम् ऎय्त–उनके स्वर्ग जाने पर; अमरर्कळ्–अमर लोगों के; वॆकुण्टु–कोप करके; नीचन्–चण्डाल; ईङ्कु वन्तु–यहाँ आकर; अटैवतु–पहुँचोगे; ऎन्नै–यह क्या है; इरु निलत्तु इऴिक–विशाल भूमि पर गिर जाओ; ऎन्न–कहने पर; ताङ्कुतल् इन्ऱि–निराधार होकर; वीऴ्वान्–(औंधे) गिरनेवाले; तापत चरणम्–तापस, शरण; ऎन्न–चिल्लाने पर; ओङ्कि–हाथ ऊँचे उठाकर; नी निल् निल् ऎन्ऱु–तुम रुको, रुको कहकर; उरुम् ऒक्क–वज्र के समान; उरैत्तु–(उच्च स्वर में) कहकर; नक्कान्–हँसे। ६७०

जब त्रिशंकु स्वर्ग में पहुँचे तब देवों ने क्रोध के साथ कहा— नीच, तुम इधर आओगे कैसे ? यह नहीं होने का। चलो; गिरो भूमि पर। इस पर त्रिशंकु निराधार होकर औंधे नीचे गिरने लगे। तब वे घबड़ाकर चिल्लाये कि हे तापस ! मैं गिर रहा हूँ। कोई रक्षक नहीं। आप ही मेरे शरण्य हैं। तब कौशिक ने हाथ ऊपर उठाकर वज्रघोष-सम उच्च स्वर में आज्ञा दी कि रुको, रुको वहीं, और वे ठठाकर हँसे। यह क्रोध की हँसी थी। ६७०

पेणल रिहऴ्न्द विण्णोर् पॆरुम्बद मुदला मऱ्ऱैच्
चेण्मुऴु दमैप्प लॆन्ऩाच् चॆऴुङ्गदिर् कोणा डिङ्गळ्
माणॊळि कॆडादु तॆऱ्कु वडक्कदाय् वरुह मऱ्ऱैत्
ताणुवो डूर्व यावुज् जमैक्कुवॆ ऩॆन्ऩुम् वेलै 671

पेणलर्–न माना; इकऴ्न्त–निन्दा करनेवाले; विण्णोर्–देवों के; पॆरुपतम् मुतलाक–उन्नत पद आदि; मऱ्ऱै चेण् मुऴुतुम्–अन्य सब देवलोक; अमैप्पल्–सृष्ट करूँगा; ऎन्ऩा–कहकर; चॆऴु कतिर्–संकुल किरणोंवाले सूर्य; तिङ्कळ्–चन्द्र; कोळ्–ग्रह; नाळ्–तारे; माण् ऒळि कॆटातु–महाप्रकाश बिना खोये; तॆऱ्कु वटक्कु अतु आय्–दक्षिण से उत्तर की ओर; वरुक–संचार करेंगे; मऱ्ऱै–इनके अलावा; ताणुवोटु–स्थावरों के साथ; ऊर्व–जंगम भी; यावुम्–सभी को; चमैक्कुवॆन्–सिरजूंगा; ऎन्ऩुम् वेलै–कहकर (आरम्भ करते) समय। ६७१

कौशिक ने प्रतिज्ञा की। देवों ने मेरा अनादर किया; त्रिशंकु को निंदा करके गिरा दिया। अब नये देवता और नये देव-लोकों की सृष्टि कर दूंगा। सूर्य, चन्द्र अन्य ग्रह, नक्षत्र आदि सभी नये बनेंगे। सूर्य और चन्द्र दक्षिण से उत्तर जायँगे। नये सूर्य और चन्द्र आदि प्रकाश में कम नहीं रहेंगे। उन्होंने सृष्टि आरम्भ भी कर दी। तब; । ६७१

नऱ्ऱुत्तरु वुडैय कोनु नान्मुहक् कडवु ळानुम्
कऱ्ऱैत्तरु कळनु मऱ्ऱैक् कडवुळर् यारुन् दॊक्कुप्
पॊरुत्तरुण् मुनिव निन्नैप् पुहल्पुहन् दवनैक् कात्तल्
अऱत्तिऱ ऩॆन्ऱुन् दारा कणत्तव ऩमर वॆन्ऱार् 672

नऱै तरु उटैय कोतुम्—सुगन्धपूर्ण कल्पादि तरुओं के स्वामी, देवेन्द्र; नाल् मुकम् कटवुळ् तानुम्—चतुर्मुख देव; कऱै तरु कळतुम्—और नीलकण्ठ (शिवजी); मऱ्ऱै कटवुळर्—अन्य देवता; यारुम्—सभी; तोक्कु—जमा होकर; तोक्कु—एकत्र होकर; मुनिव—मुनिवर; पोऱुत्तरुळ्—क्षमा कीजिये; निन्नै पुकल् पुकुन्तवर्नै—आपकी शरण में आगत को; कात्तल्—रक्षित करना; अऱम् तिऱन्—धर्म-कर्म है; अवन् ऎन्ऱुम्—वे हमेशा; ताराकणत्तु अमर—तारागणों में मिलित रहें; ऎन्ऱार्—कहा। ६७२

नंदनवन के स्वामी इन्द्र, चतुर्मुख ब्रह्मा, नीलकंठ शिवजी और अन्य देवता मिले। मुनिवर के सामने आकर प्रार्थना की। मुने! क्षमा करें। हम मानते हैं कि शरणागत की रक्षा करना धर्म-कार्य है। अत: त्रिशंकु का नक्षत्रगण में स्थान हो। ६७२

अरशमा दवनी यादि यैन्दुना डन्पाल् वनुदुन्
पुरैविळक् किडुह वॆन्नाक् कडवुळर् पोय पिन्नर्
निरैदवन् विरैवि नॆहि नॆडुङ्गडऱ् करशन् वैहुम्
उरविड मदनै नण्णि युरुदव मुजऱ्ऱुङ् गालै 673

कटवुळर्—देवों ने; नी अरच मातवन् आति—आप राजर्षि हो जायें; ऐन्तु नाळ्—पाँच तारे; तॆन् पाल् वन्तु—दक्षिण में आकर; उन् पुरै विळक्किटुक—आपकी महिमा प्रकट करते रहें; ऎन्ना—कहकर; पोय पिन्नर्—जाने के बाद; निरै तवन्—बारी-बारी से (दिशाओं में) तपस्या करते आनेवाले; विरैविन् एकि—शीघ्र जाकर; नॆटु कटल् कु अरचन् वैकुम्—विशाल सागर के अधिदेव वसित; उरम् इटम् अतनै—सबल स्थान (पश्चिम दिशा) में; नण्णि—पहुँचकर; उरु तवम् उजऱ्ऱुम् कालै—(अपेक्षाकृत) अधिक कठिन तपस्या करते समय। ६७३

उन्होंने आगे कहा— राजन्! आप भी राजर्षि कहलायेंगे। आपने पाँच नक्षत्र जो सिरजे हैं वे दक्षिण में रहकर आपकी कीर्ति प्रकट करते रहें। यह वर देकर वे चले गये। अब कौशिक को यथार्थ वस्तु-स्थिति याद आयी। उनका तप पूर्ण नहीं हुआ। वे दो दिशाओं में तप कर चुके थे। अब समुद्र के अधिष्ठाता देवता, वरुण की प्रसिद्ध पश्चिम दिशा में गये और कठोर तपस्या में लग गये। उस समय; । ६७३

कुदैवरि शिलैवाट् टानैक् कोमह नम्ब रीडन्
शुदैतरु मॊऴियान् वैयत् तुयिर्क्कुयि राय तोन्ऱल्
वदैपुरि पुरुड मेदम् वहुप्पवोर् मैन्दर् कॊळ्वान्
शिदैविल कनहन् देर्कॊण् डडविह डुरुविच् चॆन्ऱान् 674

कुतै वरि चिलै—दाँता-बन्धन सहित धनुष; वाळ्—तलवारें; तानै—सेना, इनके पति; चुतैतरु मॊऴियान्—सुधा-सम वचनवाले; वैयत्तु उयिर्क्कु उयिर् आय—जग के जीवों के प्राण-सम; तोन्ऱल्—श्रेष्ठ; कोमकन् अम्परीटन्—राजा अम्बरीष; पुरुट वतै पुरिमेतम् वकुप्प—नरमेध यज्ञ करने के निमित्त; ओर् मैन्तन् कॊळ्वान्—एक

युवा को खरीदने के विचार से; तेर्–रथ पर; कनकम्–स्वर्ण; चितैवु इल कोण्टु–अक्षय राशि लेकर; अटविकळ्–अनेक वनों में; तुरुवि चॆन्ऱान्–खोजते हुए चले। ६७४

राजा अंबरीष अयोध्या में राज कर रहे थे। वे श्रेष्ठ धनुर्धर, तलवार के धनी और श्रेष्ठ सेना के स्वामी थे। मधुर-भाषी भी थे। पृथ्वी के सारे जीवों को प्राण-सम प्रिय थे। (उन्होंने कोई यज्ञ किया। यज्ञ-पशु को इन्द्र ने चुराकर छिपा दिया। पुरोहितों ने कहा कि किसी कुमार की ही वलि देकर यज्ञ को पूरा कीजिए, नहीं तो वड़ा अनर्थ हो जायगा—वालमीकी) वे नर-मेध-यज्ञ करने के विचार से एक कुमार की खोज में, अपने रथ पर अपार धनराशि लेकर, वनों में घूमने लगे। (इस पद में 'कुतै', एक शब्द आया है। उसके दो अर्थ पाये जाते हैं। एक धनुष के अंत में डोरा वांधने का दाँता; दो : डोरे में तीर टिकाने के लिए वनी गाँठ; शायद गुत्थी का तमिऴ रूप है ?)। ६७४

नऱ्ऱव रिशिकन् वैकुम् नऩैवरुम् पऴुव नण्णिक्
कॊऱ्ऱवन् विऩव लोडु मिशैन्दऩर् कुमरर् तम्मुळ्
पॆऱ्ऱव ळिळव लॆऩ्ऱे यॆऩ्ऱऩळ् पिदामु ऩॆऩ्ऱान्
मऱ्ऱैय मैन्द ऩक्कु मऩ्ऩवऩ् ऱऩ्ऩै नोक्कि 675

कॊऱ्ऱवन्–राजा; नल् तवम् रिचिकन् वैकुम्–श्रेष्ठ तपस्वी, ऋचीक जहाँ रहते थे उस; नऩै वरुम् पऴुवम्–पुष्प वृक्षाकीर्ण आश्रम में; नण्णि–पहुँचकर; विऩवलोटुम्–पूछने पर; कुमरर् तम्मुळ् इचैन्तऩर्–ऋषि-पुत्र आपस में सहमत हो गये; पॆऱ्ऱवळ्–माता (कौशिकी) ने; इळवल्–कनिष्ठ; ऎऩ्के–मेरा ही (नहीं दूँगी); ऎऩ्ऱतळ्–कहा, पिता-पिता ने; मुत् ऎऩ्ऱान्–ज्येष्ठ (मेरा), कहा; मऱ्ऱैय मैन्तन्–बाकी रहा पुत्र, (शुनःशेप); नक्कु–हँसते हुए; मऩ्ऩवन् तऩ्ऩै–राजा को; नोक्कि–देखकर। ६७५

वे ऋचीक मुनि के आश्रम में आये। राजा ने उनसे पूछा। वे मधुर-भाषी तो थे ही। ऋचीक के तीनों पुत्र उद्यत हो गये। पर उनकी माता ने कहा कि मैं कनिष्ठ पुत्र को नहीं दूँगी, वह मुझे अत्यंत प्यारा है। पिता ऋचीक ने ज्येष्ठ पुत्र को रख लिया। तव जो वचा था वह (शुनःशेप) हँसा। उसने राजा से कहा। ६७५

कॊडुत्तरुळ् वॆरुक्कै वेण्डिर् ऱॊऱ्कमाम् विऴुमङ् गुऩ्ऱ
ऎंडुत्तेऩै वळर्त्त तादैक् कॆऩ्ऱवर् ऱॊऴुदु वेन्दन्
तडुप्परुन् देरि लेऱित् तडैयिलर् पडर्द लोडुम्
शुडर्क्कदिर्क् कडवुळ् वाऩत् तुच्चियिऩ् जूऴल् पुक्कान् 676

ऎंतै ऎंटुत्तु वळर्त्त–मुझे जन्म देकर जिन्होंने पाला; तातैक्कु–उन पिता को; ऒऱ्कम् आम् विऴुमम् कुऩ्ऱ–दरिद्रतारूपी दुख दूर करते हुए; वेण्टिरु वॆरुक्कै कॊटुत्तु अरुळ्–यथेष्ट धन देने की कृपा करें; ऎऩ्ऱु–कहकर; अवन् तॊऴुतु–उन

(पिता) का नमस्कार करके (उनसे विदा लेकर); वेन्तन्–राजा के; तट्पुपु अरुम् तेरिल् एरि–दुर्दम रथ पर चढ़कर; तटै इलर्–अबाध हो; पटर्तलोटुम्–जाते रहे, तब; चुटर् कतिर् कटवुळ्–उज्ज्वल अंशुमाली; वानत्तु–आकाश के; उच्चि चूळल् पुक्कान्–मध्यप्रदेश में आये। ६७६

राजन्! मैं माता-पिता, दोनों से त्यक्त हो गया हूँ। उनकी इच्छा मुझे याग-पशु के रूप में देने की है। इसलिए मैं आपके साथ आऊँगा। आप मेरे पिता की दरिद्रता को दूर कर सकने वाली धनराशि दे दीजिये। फिर उसने अपने पिता को नमस्कार करके विदा ली। राजा और वह, राजा के शीघ्रगामी रथ पर सवार हो गये। रथ बिना किसी बाधा के चलने लगा। रास्ते में मध्याह्न हो गया। ६७६

अव्वयि निळिन्दु वेन्द नरुङ्गडन् मुऱैयि नाऱ्ऱच्
चॅव्विय कुरिशि ञानुम् जॅन्ऱन नियमञ् जॅय्वान्
अव्वियम् अवित्त शिन्दै मुनिवनै याण्डुक् काणाक्
कव्वयि नोडुम् बाद कमलम दुच्चि शेर्त्तान् 677

अवयिन्–उस (मध्याह्न-) समय; वेन्तन्–राजा (अम्बरीष); इळिन्तु–(रथ से) उतरकर; अरुकटन्–अतिशय (प्रभावक) आह्निक कर्म; मुऱैयिन् आऱ्र–सही प्रकार से करने गये, तब; चॅव्विय कुरिच्चिल् तानुम्—सीधा-सादा और श्रेष्ठ कुमार भी; नियमम् चॅय्वान्–नित्यनियम करने के लिए; चॅन्ऱनन्–गया; आण्टु–वहाँ; अव्वियम् अवित्त चिन्तै–ईर्ष्या (आदि दुर्गुणों) का अभाव जिसमें हो गया हो, ऐसे मनवाले; काणा–देखकर; कव्वैयित्तोटुम्–आकुलता के साथ; पात कमलम् अतु–उनके चरणकमल; उच्चि चेर्त्तान्–अपने सिर पर लगा लिये। ६७७

तब राजा अंबरीष रथ से उतरकर नित्य-कर्म करने में लगे। सदाचारी ऋषिपुत्र भी नियत कर्म करने गया। वहाँ उसने अपने मामा, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों के विजयी कौशिक को देखा। उनको देखते ही वह अपना दुख छिपा नहीं सका और रोते हुए उनके पैरों पर सिर रखकर दंडवत् किया। ६७७

विऱप्पॉडु वणक्कञ् जॅय्द विडलैयै यिनिदु नोक्किच्
चिऱप्पुडै मुनिव नॅन्नै तॅरुमरल् शॅप्पु हॅन्न
अऱप्पॉरु ळुणर्न्द मेलो यन्नैयु मत्तन् ऱानुम्
उऱप्पॉरुळ् कॉण्डु वेन्दर् कुदविन रॅन्नै यॅन्ऱान् 678

विऱप्पॉटु–(मृत्यु-) भय के साथ; वणक्कम् चॅय्त–विनत; विटलैयै–छोटे लड़के को; चिऱप्पु उटै(य) मुनिवन्–तपोविशिष्ट मुनि ने; इनितु नोक्कि–स्नेह के साथ देखकर; तॅरुमरल् ॲन्नै–संकट क्या; चॅप्पुक–बताओ; ॲन्न–कहा, तब; अऱम् पॉरुळ् उणर्न्त–धर्मार्थ जाननेवाले; मेलोय्–उत्तम; अन्नैयुम् अत्तन् तानुम्–मेरी माता और पिता स्वयं; उऱ पॉरुळ् कॉण्टु–खूब धन लेकर; वेन्तर्कु–

(अम्बरीष) राजा को; अॅन्नै उनविन्नर्–मुझे दे दिया; अॅन्ऱान्–(शुनःशेप ने) कहा। ६७८

भयभीत हो अपने चरणों पर पड़े लड़के को देखकर कौशिक ने आर्द्र-दृष्टि के साथ पूछा कि लड़के ! क्या बात है ? यह घबड़ाहट क्यों ? बोलो। तब शुनःशेप ने कहा— धर्म की गति-विधि जाननेवाले महात्मा ! मेरी माता और मेरे पिता ने यथेष्ट धन लेकर मुझे राजा अंबरीष के हाथ में बेच दिया है। ६७८

मैत्तुन तोडु मुन्नोळ् वळङ्गिय माऱ्ऱङ् गेळात्
तत्तुर ऑोऴिनी यानें तडुप्पॅनिन् नुयिरै यॅन्नाप्
पुत्तिरर् तम्मै नोक्किप् पोहवेन् ऱोडु मॅन्न
अत्तहु मुनिवन् कूऱ अवर्मरुत् तहऱल् काणा 679

अत्तकु मुनिवन्–उस श्रेष्ठ मुनि ने; मुन्नोळ्–बड़ी भगिनी; मैत्तुनर्तोडु–और उसके पति के; वळङ्किय–दे देने का; माऱ्ऱम्–समाचार; केळा–सुनकर; नी तत्तुउरल् ऑोऴि–तुम घबड़ाना छोड़ दो; याने–मैं स्वयं; निन् उयिरै–तुम्हारे प्राणों को; तडुप्पॅन्–रोकूँगा; अॅन्ना–कहकर; पुत्तिरर् तम्मै–पुत्रों को; नोक्कि–देखकर; वेन्तोडुम् पोक–राजा के साथ जाओ; अॅन्न कूऱ–यह कहने पर; अवर्–उनका; मऱुत्तु–नकार कर; अकऱल्–हटना; काणा–देखकर। ६७९

इन श्रेष्ठ राजर्षि ने अपनी बहन और अपने बहनोई के पुत्र-विक्रय की बात सुनकर उसको आश्वासन दिया कि तुम चिंता करना छोड़ दो। मैं तुम्हारे प्राण अवश्यमेव बचा लूँगा। फिर उन्होंने अपने पुत्रों से कहा कि तुममें कोई इसके स्थान में जाओ। लेकिन पुत्रों में कोई भी सहमत नहीं हुआ। वे इनकार करके हट गये। ६७९

अॅऴुङ्गदि रवनु नाणच् चिवन्दन निरुह णॅञ्जम्
पुळुङ्गिनन् वडवै तीय मयिर्प्पुरम् पॉऱियिर् ऱुळ्ळ
अऴुङ्गलिल् शिन्दै यालो रडविह डोरुञ् चॅन्ऱे
ऑऴुङ्गरु पुळिन राहि युरुतुय ररुह वॅन्ऱान् 680

अॅऴुम् कतिरवनुम् नाण–उदय सूर्य को भी लज्जित करते हुए; इरु कण् चिवन्तनन्–दोनों आँखों को लाल किया; नॅञ्चम् पुळुङ्किनन्–खिन्नमन हुए; वटवै तीय–वड़वा को भी झुलसाते हुए; मयिर् पुरम् पॉऱियिन् तुळ्ळ–रोंगटे अंगारों से भरे; अऴुङ्कल् इल् चिन्तैयाल्–सहानुभूति-रहित चित्त के कारण; नीर्–तुम; ऑोऴुङ्कु अऱु–व्यवस्थाहीन; पुळिनर् आकि–व्याध बनकर; अटविकळ् तोऱुम् चॅन्ऱु–जंगल-जंगल घूमकर; उऱु तुयर् उऱुक–अधिक कष्ट उठाओ; अॅन्ऱान्–कहा। ६८०

उनका काम देखकर राजर्षि को इतना क्रोध आया कि आँखें उदय-सूर्य से भी अधिक लाल हो गयीं। मन उत्तप्त हो गया। बड़वाग्नि को भी जला दे, ऐसी आग के अंगारे रोम-कूपों में भर गये। अपने पुत्रों को

शाप देते हुए ऋषि ने कहा— निष्ठुर चित्तवाले हो, तुम लोग। व्यवस्था-हीन (दुराचारी) व्याध बन जाओ और वन-वन में भटक कर संकट भोगो। ६८०

मामुनि वॅहुळि तन्नान् मडिहला मैन्दर् नाल्वर्
तामुरु शवर राहच् चवित्तॅदिर् चलित्त शिन्दै
एमुरु लॉळिह विन्ने पॅरुहॅन विरण्डु विज्जै
कोमरु हनुक्कु नल्हिप् पिन्नरुङ् गुरिक्क लुर्रान् 681

मामुनि वॅकुळि तन्नाल्—महर्षि (वसिष्ठ जी) के कोप से; मटिकला—जो तब बिना मरे (बचे); नाल्वर् मैन्तर्—(उन) चारों पुत्रों को; ताम् उरु चवरर् आक चपित्तु—नीच शवर बनने का शाप देकर; ऍतिर्—सामने रहे; चलित्त चिन्तै—अधीरमन; को मरुकनुक्कु—उत्तम गुणी भांजे से; एम् उरल् ऑळिक—दुख करना छोड़ दो; इरण्टु विज्चै इन्ने पॅरुक—दो विद्याएँ आज ही प्राप्त कर लो; ऍन—कहकर; नल्कि—देकर; पिन्नरुम् कुरिक्कल् उर्रान्—आगे भी बोलने लगे। ६८१

विश्वामित्र जी के अन्य एक सौ पुत्र पहले ही वसिष्ठजी की आँखों की अग्नि से जल गये थे। चार ही बचे थे। वे चारों पुत्र नीच शवर बन गये। उनको ऐसा शाप देकर चिंताकुल भांजे से ऋषि ने कहा। चिंता छोड़ दो। मैं तुमको दो विद्याओं का उपदेश दूंगा। उन्होंने उसे दो विद्यायें (मंत्र) सिखायीं और आगे कहा। ६८१

अरशनो डेहि यूपत् तणैयुङ्गान् मरैयै योदिन्
विरशुवर् विण्णु ळोरुम् विरिञ्जन्माल् विडैव लानुम्
उरैशॅरि वेळ्वि मुर्रु मुनदुयिरक् कीरुण् डाहा
पिरशमॅन् रारा यॅन्नप् पळिच्चॉडुम् बॅयर्न्दु पोनान् 682

पिरचम् मॅन् ताराय्—मधुस्रावी कोमल पुष्पमाला-धारी; अरचनोटु एकि—राजा के साथ जाकर; यूपत्तु अणैयुम् काल्—यूपस्तम्भ से बाँधते समय; मरैयै ओतिन्—ये मन्त्र जपो तो; विरिञ्चन्—विरंचि; माल्—विष्णु; विटै वलानुम्—और ऋषभ-वाहन; विण्णुळोरुम्—स्वर्गवासी देवता; विरचुवर्—आ जायेंगे; उरै चॅरि वॅळ्वि—प्रकीर्तित वह यज्ञ भी; मुर्रुम्—सम्पूर्ण होगा; उनतु उयिर्क्कु—तुम्हारे प्राणों को; ईरु उण्टाकातु—हानि नहीं होगी; ऍन्न—कहने पर; पळिच्चॉटुम्—स्तुति करके; पॅयर्न्तु पोनान्—उठ चला। ६८२

शहद चूनेवाले कोमल पुष्पों की माला पहने हुए वत्स! तुम राजा के साथ जाओ। (माला पहने हुए) तुमको यूपस्तंभ में बाँधा जायगा। तब तुम यह मंत्र जपो। ब्रह्मा, महाविष्णु, ऋषभवाहन शिवजी और अन्य देवता यज्ञशाला में आयेंगे। उनकी कृपा से राजा का बहुप्रशंसित यज्ञ भी पूरा होगा और तुम्हारे प्राण भी बच जायेंगे। यह सुनकर शुनःशेप कौशिक की, कृतज्ञता के साथ, स्तुति करके चला गया। (इस पद्य में पुष्पमाला-धारी का संबोधन आया है। वह शुनःशेप का हो सकता है जो विश्वामित्र ने किया, या श्रीराम का हो सकता है, शतानंद द्वारा किया हुआ।)। ६८२

मऱैमुनि युरैत्त वण्ण महत्तुऱै मैन्द नायच्
चिऱैयुरु कलुळ नन्नज् जॅमुदऱ् पिऱवु मूरुम्
इऱैवर्तोक् कमरर् चूळ विळवऱन् नुयिरुम् वेन्दन्
मुऱैतरु महमुङ् गात्तार् वडदिशै मुनियुज् जॅन्ऱान् 683

मैन्तन्–कुमार (शुनःशेप); मकम् तुऱै–यागशाला में; मुनि उरैत्त वण्णम्–महर्षि के कहे अनुसार; मऱै आय–वेदमन्त्र जपा, तब; चिऱै उऱु कलुळन्–उत्तम पक्षीराज गरुड़; अन्नम्–हंस; चे–और ऋषभ; मुतल्–आदि; पिऱवुम्–अन्य वाहनों पर; ऊरुम्–आरूढ़; इऱैवर–देवताओं ने; अमरर् चूळ–अन्य देवताओं के घेरकर आते; तोक्कु–एकत्र होकर; इळवल् तन् उयिरुम्–बालक की जान; वेन्तन्–राजा अम्बरीष के; मुऱै तरु–विधि-विहित; मकमुम्–मख को भी; कात्तार–रक्षित किया; मुनियुम्–ऋषि भी; वट तिचै–उत्तर की दिशा में; चॅन्ऱान्–गये। ६८३

वेदज्ञ विश्वामित्र की सीख के अनुसार शुनःशेप ने यागवेदी पर मंत्र-जप किया तो पक्षीराज गरुड़ारूढ़ महाविष्णु, हंसारूढ़ ब्रह्मा, ऋषभारूढ़ शिवजी और अपने-अपने वाहनों पर अन्य प्रधान देवता अन्य देवताओं के साथ आये। शुनःशेप के प्राण और राजा के यज्ञ की रक्षा हो गई। इसके बाद राजर्षि कौशिक उत्तर दिशा में तप करने पहुँच गये। ६८३

वडादिशै मुनियु नण्णि मलर्क्कर नाशि वैत्ताङ्
गिडावुपिङ् गलैता नैय विदयत्तु डॅळुत्तोन् ऱैण्णि
विडादुपल् परुव निऱ्प मूलमा मुहडु विण्डु
तडादिरुट् पडल मूडच् चलित्तदॅत् तलमुन् दावि 684

मुनियुम्–मुनि भी; वट तिचै नण्णि–उत्तर दिशा में जाकर; आङ्कु–वहाँ; मलर् करम् नाचि वैत्तु–कमलहस्त (की उँगलियाँ) नासिका पर रखकर; इटावु पिङ्कलै ताम् नैय–(श्वास को) ईडा, पिंगला (द्वारा जाना) रोककर; इतयत्तु ऊटु–मन में; ऍळुत्तु ऑन्ऱु–एक अक्षर (ओं) का; ऍण्णि–ध्यान कर; विटातु पल् परुवम् निऱ्प–निरन्तर अनेक काल खड़े रहे, तब; मूलम्–मूलाग्नि से; मा मुकटु विण्टु–श्रेष्ठ कपाल फटा तब; इरुळ् पटलम्–अन्धकार के समान धुआँ का पुंज; तटातु तावि मूट–अबाधगति से सर्वत्र छाकर ढाँप गया तो; ऍ तलमुम् चलित्ततु–सब लोक विचलित हुए। ६८४

वहाँ उन्होंने नासिका पर उंगली रखकर प्राणायाम करके इड़ा, पिंगला में जानेवाले श्वास को रोका और उन नाड़ियों को क्रिया-हीन बनाया। ओंकार के ध्यान में निरंतर अनेक वर्ष एक ही प्रकार खड़े रहे। फलस्वरूप मूलाग्नि ऊपर को उठी और सिर को भेद गई। तब जो धुआँ उठा वह विश्व भर में व्याप गया। सभी लोक विचलित हुए। ६८४

ऍयिलॅ रित्तवन् यानयु रित्तुमॅय्, पयिलु ऱत्तनि पोर्त्तनन् पण्बॅनप्
पुयल्वि रित्तॅळुन् दालॅनप् पूदलम्, कुयिलु ऱुत्तिक् कॉळुमबुहै विम्मवे 685

ऐयिल् ऎरित्तवन्–त्रिपुर जलानेवाले (शिवजी) ने; यानै उरित्तु–गज-चर्म उधेड़कर; मॆय् पयिलुर–शरीर से लगाकर; तनि–विशिष्ट रीति से; पोर्त्त–ढँक लिया, उस; नल् पणपु ऎन–भले प्रकार से; पुयल्–मेघ; विरित्तु ऎळुन्ताल् ऎन्न–छा उठे, ऐसे; कॊळु पुकै–पुंजीभूत धुआँ; पूतलम्–भूतल को; कुयिल् उरुत्ति–अपने अन्दर समा लेकर; विम्म–विस्तृत हुआ। ६८५

वह अंधकार ऐसा छाया जैसे शिव के शरीर पर उनका उधेड़ा गज-चर्म वेष्टित हुआ। और मेघों के फैलने के समान भी फैला। उस धुएँ में सारा विश्व छिप गया। ६८५

तमन्दि रण्डुल हियावैयुन् दावुर, निमिर्न्द वॆङ्गदिर्क् कर्रैयु नीङ्गुरक्
कमन्द मादिरक् कावलर् कण्णॊडुम्, शुमन्द नाहमुङ् गण्शुम् बुलित्तवे 686

तमम् तिरण्टु–तम मिलकर; उलकु यावैयुम् तावुर–लोक भर में फैला, तव; निमिर्न्त–घनीभूत; वॆम् कतिर् कर्रैयुम्–गरम किरणों की राशि भी; नीङ्कुर–छिप गयी, तो; कमन्त–दायित्वपूर्ण; मातिरम् कावलर्–दिग्पालकों की; कण्णॊटुम्–आँखों के साथ; चुमन्त–(भूमि का भार) वहन करनेवाले; नाकम् कण्णुम्–हाथियों की आँखें भी; चुम्पुळित्त–झप गईं। ६८६

तम के सर्वत्र छाने से सूर्य की रश्मि का जाल भी लुप्त हो गया। दायित्वपूर्ण रीति से दिशाओं की रक्षा करनेवाले दिग्पालों और भूमि के भार को उठानेवाले दिग्गजों की भी आँखें झप गयीं। ६८६

तिरिव निर्प शॆहदलत् तियावैयुम्, वॆरुव लुर्रन वॆङ्गदिर् मीण्डन
करुवि युर्र कहनमॆ लाम्बुहै, उरुवि युर्रिड धुम्बर्तु ळङ्गिनार् 687

करुवि उर्र–मेघाच्छादित; ककनम् ऎलाम्–गगन सब; पुकै उरुवि उर्रिट–धुआँ व्याप्त होकर फैल गया; चॆकतलत्तु–जगतीतल पर; तिरिव निर्प–चर-अचर; यावैयुम्–सभी; वॆरुवल् उर्रन–डर गये; वॆम् कतिर्–गरम किरणें; मीण्टन–(भेद न सकने के कारण) लौट गयीं; उम्पर् तुळङ्किनार्–आकाशलोक-वासी भयभीत हुए। ६८७

प्राणदायी मेघों के भरे आकाश में सर्वत्र धूम व्याप गया। इसलिए भूतल के सभी चर-अचर भयभीत हो गये। सूर्य-किरणें भी उस धुएँ के पटल को भेद नहीं पायीं। देवता लोग भी भयाक्रांत हो गये। ६८७

पुण्ड रीहनुम् पुट्टरु पाहनुम्, कुण्डै यूर्दि कुलिशियु मर्रुळ
अण्डर् तामुम्वन् दव्वयि नॆय्दिवे, रॆण्ड पोदनन् रन्नै यॆदिर्न्दनर् 688

पुण्टरीकनुम्–कमलासन और; पुळ् तरु पाकनुम्–गरुड़वाहन (विष्णु) और; कुण्टै ऊर्ति–ऋषभ-वाहन (शिवजी); कुलिचियुम्–कुलिशपाणी इन्द्र; मर्रु उळ–अन्य; अण्टर् तामुम्–देव सब (ने); अ वयिन् वन्तु ऎय्ति–वहाँ आ पहुँचकर; वॆरु ऎण्–विशेष रूप से मान्य; तपोतनन् तन्नै–तपोधन से; ऎतिर्न्तनर्–भेंट की। ६८८

तब पुण्डरीक-रूप ब्रह्मा, खगराज गरुड़स्थ विष्णु, ऋषभारूढ़ शिव, कुलिशभृत इन्द्र और अन्य देवता वहाँ आ पहुँचे, और मुनियों में विलक्षण-भूत कौशिक के सामने प्रकट हुए। ६८८

पादि मामदि शूडियुम् पैन्दुळाय्च्, चोदि यानुमत् तूय्मल राळियुम्
वेद पारहर् वेरिलर् निन्नलाल्, माद पोदन वॅन्न वळङ्गिनार् 689

मा–महामान्य; पाति मति चूटियुम्–अर्धचन्द्र-धारी और; पचुमै तुळाय् चोतियातुम्–हरे तुलसीपत्र-मालाधारी और; अ तूय् मलर् आळियुम्–उन पवित्र कमल पर उद्भूत (ब्रह्मा); मा तपोतन–महान तपोधन; वेत पारकर्–वेद पारंगत; निन् अल्लाल्–आपको छोड़कर; वेरु इलर्–कोई नहीं; ॲन्न–ऐसा; वळङ्किनार–(अभिनन्दन वचन) बोले। ६८९

पूज्य अर्धचन्द्रधारी शिवजी, हरी तुलसी-माला से अलंकृत ज्योतिर्मय विष्णुदेव, पवित्र कमल पर आसीन ब्रह्मा—इन्होंने कौशिकजी से उनके सम्मान में कहा—महिमामय तपोधन ! आपको छोड़कर और कोई वेद-पारंगत नहीं है। (वाल्मीकी में, तपस्या के वृत्तांत में थोड़ा अंतर है। इस स्थल में भी यह वृत्तांत है—ब्रह्माजी ने उनको ब्रह्मर्षि मान लिया, पर विश्वामित्र ने चाहा कि 'ओंकार, वषटकार और वेद मुझे वरण करें और ब्रह्मऋषि वसिष्ठ अपनी ओर से मान लें। वही हुआ और विश्वामित्र तृप्त हुए। इस पद में जो 'वेदपारंगत' शब्द आया है उसके विस्तार में यह वृत्तांत भी अंतर्गत माना जा सकता है।)। ६८९

अन्न वाशकङ् केट्टुण रन्दणन्, शॅन्नि ताळ्त्तिरु शॅङ्गर मुङ्गुवित्
तुन्नु नल्विनै युर्रदॅन् रोङ्गिनान्, तुन्नु तेवर्दम् जूळ्लिर् पोयिनार् 690

अन्त वाचकम् केट्टु–वे वचन सुनकर; उणर्–ज्ञानी; अन्तणन्–ब्राह्मणत्व प्राप्त (कौशिक जी); चॅन्नि ताळ्त्तु–सिर नवाकर; इरुचॅम् करमुम् कुवित्तु–दोनों सुन्दर हाथ जोड़कर; उन्नुम् नल् विनै–इच्छित सुकृत; उऱ्ऱतु–मिल गया; अॅन्ऱु–कहकर; ओङ्कितान्–आनन्द में बढ़े; तुन्नु तेवर्–एकत्र देव; तम् चूळ्लिल् पोयितार्–अपने-अपने स्थान गये। ६९०

उनके वचन सुनकर ब्रह्मर्षि ने अपना सिर झुकाया और तृप्ति के साथ हाथ जोड़कर कहा कि मेरा मनोरथ सफलीभूत हुआ और मैं सौभाग्य-वान हुआ। उनका आनंद उमड़ आया। फिर देवता लोग चले गये। ६९०

ईदु मुन्न निहळ्न्द दिवन्रुणै, माद वत्तुयर् माण्बुडै यारिलै
नीदि वित्तहन् रुन्नरु णेर्न्दनिर्, यादु मक्करि दॅन्ऱन नीरिलान् 691

मुन्नम् निकळ्न्ततु ईतु–पहले घटित हुआ यही; इवन् तुणै–इनके समान; मातवत्तु उयर्–महा तपस्या में उत्कृष्ट; माण्पु उटैयार्–गौरवशाली; इलै–(कोई दूसरे) नहीं; नीति वित्तकन्–अनुष्ठान और ज्ञान के; अरुळ् नेर्न्ततिर्–(इनकी)

कृपा के आप पात्र बने हैं; उमक्कु अरितु यातु–आपके लिए दुर्लभ क्या है; ऍन्ऱतन्–कह चुके; ईऱ इलान्–(तप आदि में) अपार ऋषि। ६९१

यह सब विस्तार से वर्णन करके तपोराशि और गुणपूर्ण शतानंद ने श्रीराम और लक्ष्मण से कहा— यही बीता वृत्तांत है। महान् तप में उन्नत इनके समान और कोई नहीं मिलेंगे। आप इनकी कृपा के पात्र बने हैं। अब आपके लिए अप्राप्य कुछ भी नहीं है। ६९१

ऍन्ऱु कोतमन् कादलन् कूऱिड, वॅन्ऱि वीरर् वियप्पॊ डुवन्दॆळा
ऒन्ऱु मादवन् ऱाडॊळु दोङ्गिय, पिन्ऱै येत्तिप् पॆयर्न्दनन् ऱन्ऩिडम् 692

ऍन्ऱु–यह; कोतमन् कातलन्–गौतम के प्रिय (पुत्र) के; कूऱिट–कहने पर; वॅन्ऱि वीरर्–विजयी वीर; वियप्पॊटु उवन्तु–विस्मय के साथ आनन्दानुभव करके; ऍळा–आसन से उठकर; ऒन्ऱुम् मातवन्–(तपस्या के फल से) युक्त महातपस्वी (शतानन्द के); ताळ्–पैरों में; तॊऴुतु–नमस्कार कर; ओङ्किय पिन्ऱै–उठने के बाद; एत्ति–आशीर्वाद देकर; तन् इटम्–(शतानन्द) अपने स्थान; पॆयर्न्ततन्–चले। ६९२

शतानंद के मुख से विश्वामित्र की महिमामय कहानी सुनकर श्रीराम और लक्ष्मण विस्मय और आनंद से फूल उठे। वे शतानंद जी के चरणों में नमस्कार कर उठे। शतानंद उनको आशीर्वाद देकर चले गये। ६९२

❀ मुनियुन् दम्बियुम् बोय्मुऱै याऱ्ऱमक्, किनिय पळ्ळिह ळॆय्दिय पिन्ऩिरुट्
कनियुम् बोल्बवन् कङ्गुलुन् दिङ्गळुम्, तनियुन् दानुमत् तैयलु मायिनान् 693

मुनियुम् तम्पियुम् पोय्–मुनि (कौशिक) और छोटे भ्राता, जाकर; मुऱैयाल्–क्रम से; तमक्कु इनिय पळ्ळिकळ्–अपनी-अपनी सुखद शय्या पर; ऍय्तिय पिन्–लेटने के बाद; इरुळ् कनि पोल्पवन्–अन्धकार घन-सम (श्रीरामचन्द्र); कङ्कुलुम्–रात और; तिङ्कळुम्–चन्द्र और; तनियुम्–विविक्तता; तानुम्–और स्वयं; अ तैयलुम्–वे देवी (सीता); आयितान्–बने। ६९३

महर्षि विश्वामित्र और श्रीराम के भाई लक्ष्मण यथाक्रम अपनी-अपनी शय्या पर लेट गये। (यह क्रम तुलसीदास द्वारा स्पष्ट रूप से वर्णित है। श्रीराम ने विश्वामित्र के चरण चांपे। उनसे आज्ञा लेकर वे अपनी शय्या पर गये। उनके भाई लक्ष्मण उनके पाँव पलोटने लगे। पर श्रीराम को नींद नहीं आयी। उन्होंने श्रीलक्ष्मण को निद्रा करने भेज दिया।) श्रीराम सोये नहीं और सीताजी की याद में समय काटने लगे। (कवि इस बात को चातुरी से कहते हैं कि) घनीभूत अंधेरा-सम रंगवाले श्रीराम, रात, चन्द्र, एकांतता और स्वयं और सीताजी (की स्मृति या मिथ्या-दृश्य) इनके साथ रह गये। उन दोनों के लिए शय्या सुखद थी। पर इनके लिए नहीं थी। ६९३

❀ विण्णि नीङ्गिय मिन्नुरु विम्मुरै, पॅण्णि नन्नलम् पॅऱ्ऱुदुण् डेहॊलाम्
ॲण्णि नीदल दॆण्णऱि येनिरु, कण्णि नुळ्ळुङ् गरुत्तिनुङ् गाण्बॆनाल् 694

विण्णिन् नीङ्किय–आकाश से निकली; मिन्–बिजली; इ मुऱै–इस प्रकार; इन् नल् नलम् पॅण् उरु–मनोरम श्रेष्ठ सुन्दर स्त्री का रूप; पॅऱ्ऱतु उण्टे आम्–प्राप्त कर आयी, वही है; ॲण्णिन्–सोचना है; ईतु अलतु–तो इसके सिवा; ॲण्ण अऱियेन्–सोचना नहीं जानता; इरु कण्णिन् उळ्ळुम्–दोनों आँखों के अन्दर; करुत्तिनुम्–और मन में; काण्पॅन्–देखता हूँ। ६९४

श्रीराम विचार करते हैं कि वह अवश्य एक विद्युल्लता है जो मेघ से छूटकर सुन्दर, सुखद और शालिनी रमणी का श्रेष्ठ रूप लेकर आयी थीं। कितना ही सोचता हूँ, पर वही भावना उठती है। वही रूप मेरी आँखों में और मन में अंकित रहता है। ६९४

वळ्ळऱ् चॅक्कैक् करियवन् वैहुमव्
वॅळ्ळप् पाऱ्कडल् पोन्मिळिर् कण्णिनाळ्
अळ्ळऱ् पूमह ळाहुङ्गॊ लोवॆन
दुळ्ळत् तामरै युळ्ळुरै निन्ऱदाल् 695

वळ्ळल् चेक्कै–उदार (शेष-) शायी; करियवन्–श्यामल प्रभु; वैकुम्–जहाँ रहते हैं उस; अ वॅळ्ळम् पाल् कटल् पोल्–जल-विस्तार क्षीरसागर के समान; मिळिर्–भासमान; कण्णिनाळ्–आँखोंवाली; ॲनतु उळ्ळम्–मेरे हृदयरूपी; तामरै उळ्–कमल में; उऱैकिन्ऱताल्–ठहरती हैं, इसलिए; अळ्ळल् पू मकळ्–पंकज-सुमन की देवी; आकुम् कॊल्ओ–हैं क्या। ६९५

उनकी आँखें शेषशायी, कृष्णवर्ण श्रीविष्णु का वासस्थल, क्षीरसागर के समान प्रकाशमान थीं। (क्षीरसागर आँखों के श्वेत भागों की उपमा है; शेषशय्या काले भाग की। शेष, भगवान के रंग से प्रभावित होकर काला दिखता है। श्रीविष्णु ही आँख की पुतली हैं। सागर की तरंगें सीताजी के मन के भावों की प्रतिछाया हैं। क्षीरसागर से मारक विष और संजीवनी अमृत, दोनों निकले, पर अलग-अलग प्रकट हुए। पर देवी की आँखें श्रीराम के लिए स्वयं विष भी हैं और अमृत भी।) वे मेरे हृदय कमल पर आकर विराजमान हैं। तब क्या वे पंकज, कमल-निवासिनी श्री (लक्ष्मी) देवी हैं? । ६९५

अरुळि लाळॆनि नुम्मनत् ताशैयाल्
वॆरुळु नोय्विडक् कण्णिन् विळ्ङ्गलाल्
तॆरुळि लावुल हिऱ्चॆन्ऱु निन्ऱुवाळ्
पॊरुळॆ लामवळ् पॊन्नुरु वायवे 696

अरुळ् इलाळ्–अकरुण है; ॲनिनुम्–तो भी; मनत्तु आचैयाल्–मन में उत्पन्न प्रेम का; वॆरुळुम् नोय्विट–भयोत्पादक रोग दूर हो; कण्णिन् विळ्ङ्कलाल्–इस

हेतु अपनी आँखों से (उसके रूप को) निगलने से; तॅरुळ् इला उलकिल्–अस्पष्ट (दिखनेवाले) इस संसार में; चॅन्ऱु निन्ऱ वाळ् पॉरुळ् ॲलाम्–चर, अचर सभी पदार्थ; अवळ् पॉन् उरु–उनके स्वर्ण-रंग के रूप के समान; आय–बन गये। ६६६

वे मेरे प्रति करुणा-हीन हैं। (क्योंकि वे मेरा प्रेम और उससे उत्पन्न वेदना का ख्याल करके, मेरे पास आकर, मेरा ताप नहीं हरतीं।) तो भी ताप-रोग को दूर करने के हेतु मैंने उनको अपनी आँखों से दवा के रूप में निगल लिया। (मन में उनका रूप बिठाया है।) इसलिए अस्पष्ट इस संसार के चर, अचर सब पदार्थ उन्हीं के से स्वर्ण रंग के दिखाई देते हैं। (यानी अंदर, बाहर, सर्वत्र, सदा उन्हीं का रूप दिखाई देता है। संसार को अस्पष्ट कहते हैं, क्योंकि उनका मन भावाकुल है और चिंतन-शक्ति स्पष्ट नहीं है।)। ६९६

पूणु लाविय पॉऱ्कल शङ्गळॅन्, एणि लाहत् तॅळ्ळुदल्ल वॅन्निनुम्
वाणि लामुऱु वऱ्कनि वाय्मदि, काण लावदॊर् कालमुण् डाङ्गॊलो 697

पूण् उलाविय–जिन पर आभरण डोलते हैं उन; पॉन् कलचङ्कळ्–स्वर्णकलश (स्तन); ॲन्–मेरे; एण् इल् आकत्तु–अभागे वक्ष पर; ॲळ्ळुतल ॲन्नितिनुम्–(गाढ़े रूप से) नहीं लगे तो भी; वाळ् निलाम् मुऱुवल्–दीप्तियुत मन्दहास के; कनि वाय्–(बिम्ब-) फल सदृश मुख से शोभायमान; मति–मुख (-चन्द्र) को; काणल् आवतु ऑरु कालम्–देखने का एक अवसर; उण्टु आम् कॊल् ओ–मिल सकेगा क्या। ६६७

श्रीराम अपने सामने रिक्त आकाश में सीताजी का मिथ्या रूप देखते; उसका आलिंगन करने के लिए बढ़ते तो वह अदृश्य हो जाता। (तब वे कहते—) उनका आलिंगन, जिससे, उनके स्वर्णाभरणों को अपने स्पंदन से हिलानेवाले, स्वर्ण-घट सदृश उरोज मेरे भाग्यहीन वक्ष को मर्दित कर दें, प्राप्य न हो सका। तो भी क्या कम से कम उनके, मनोरम, हास और बिम्बारुण अधरों से युक्त मुख को देखने का सौभाग्य नहीं मिलेगा। ६९७

॥ वण्ण मेहलैत् तेरॊन्ऱु वाणॆडुङ्, गण्णि रण्डु कदिमुलै तामिरण्
डुण्ण वन्द नहैयुमॆन् रॊन्ऱुण्डाल्, ॲण्णुङ् गूऱ्ऱिनुक् कित्तनै वेण्डुमो 698

ॲण्णुम्–(मेरे प्राण हरना) सोचनेवाले; कूऱ्ऱितुक्कु–यम के लिए; वण्णम् मेकलै–सुभग मेखला से अलंकृत; तेर् ऑन्ऱु–(नितम्बरूपी) रथ एक; वाळ् नॆटु कण् इरण्टु–तलवार सी आयत आँखें, दो; कति मुलै इरण्टु–पीन उरोज दो; उण्ण वन्त–(और) प्राण खाने आयी; नकै ॲन्ऱ ऑन्ऱु उम्–मन्द हँसी नाम का एक; उण्टु–है; इत्तनै वेण्टुमो–इतने चाहिए क्या ?। ६६८

. (श्रीराम सीताजी के रूप को यमराज कहते हैं।) मेरे प्राण हरने की चाह के साथ आनेवाला रूप स्वयं वह काम करने के लिए पर्याप्त समर्थ है। तो भी उसके साथ रथ के स्थान में मेखला-वलयित जघन प्रदेश है;

तलवारों के समान दो आँखें हैं; और पीन दो उरोज हैं। इनके अलावा, प्राणघाती हँसी भी है। इतने साधनों की भी आवश्यकता है क्या ? वे भी एक साथ क्यों ? । ६९८

कन्तल् वार्शिलै काल्वळैत् तेमदन्, पौन्नै मुन्निय पूङ्गणै मारियाल्
ॲन्नै यॅय्दु तौलैक्कुमॅन् ऱालिनि, वन्मै यॅन्नुमि दारिडै वैहुमो 699

मतन्–मदन; कन्नल् वार् चिलै–(इक्षु के) लम्बे धनुष को; काल् वळैत्तु–पैरों से दबाकर, उसे झुकाकर; पौन्नै मुन्निय–स्वर्ण-सी उस देवी को पुरस्सर करके; पू कणै मारियाल्–पुष्पशर-वर्षा से; ॲन्नै ॲय्तु तौलैक्कुम्–मुझे आहत कर देता है; ॲन्राल्–तो; इनि–अब; वन्मै ॲन्नुम् इतु–पौरुष नामक वह; आर् इटै वकुमो–किसके पास रहेगा। ६९९

मदन अपने इक्षु-धनुष के सिरे को पैर के नीचे दबाकर, धनुष को झुकाकर, उन स्वर्ण-प्रभ सुन्दरी को मेरे ध्यान का विषय बनाकर, मुझ पर लगातार पुष्प-शर चला रहा है, और मुझे धैर्य-हीन बनाने में सफल हो गया है। तो पुरुषोचित (मनो) बल किसके पास पाया जायगा ? । ६९९

❀ **कौळ्ळै कौळ्ळक् कौदित्तॅळु पार्कडल्, पळ्ळ वॅळ्ळ मॅनप्पड रुन्निला**
उळ्ळ मुळ्ळुऱ् ऱुयिरैत् तुरुवुमाल्, वॅळ्ळै वण्ण विडमुमुण् डाङ्गौलो 700

कौळ्ळै कौळ्ळ–(मेरा प्राण) लूट मारने के हेतु; कौतित्तु ॲळु–क्रोधी हो उठनेवाले; पाल् कटल् पळ्ळम् वॅळ्ळम्–क्षीरसागर-जलप्रवाह; ॲन पटरुम्–समान फैलनेवाली; निला–चाँदनी; उळ्ळम् उळ्ळुऱु–मेरे मन के अन्दर घुसकर; उयिरै तुरुवुम्–प्राणों को धीरे-धीरे मार देता है; वॅळ्ळै वण्णम् विटमुम्–श्वेतवर्ण विष भी; उण्टु कौल ओ–रहता है क्या। ७००

मेरे प्राणों को हरने के लिए, रुष्ट हो उठनेवाले, गहरे क्षीर-सागर के अत्यधिक पय के समान यह चन्द्रिका मेरे मन में घुसकर तिल-तिल कर काट रही है। क्या यह विष है ? विष तो काला होता है ! तो क्या सफ़ेद रंग का विष भी होता है ? । ७००

आहु नल्वळि यल्वळि यॅन्मनम्, एहु मोविदु वॅय्दिय कारणम्
पाहु शेर्मौळिप् पैन्दौडि कन्नियॆ, आहुम् वेऱिदऱ् कैयुऱ विल्लयॆ 701

आकुम् नल् वळि–अभ्युदय के सन्मार्ग से; अल् वळि–इतर मार्ग में; ॲन् मनम्–मेरा मन; एकुमो–जायगा क्या (नहीं); इतु ॲय्तिय कारणम्–(प्रेम) इसके होने का कारण; पाकु चेर् मौळि–चाशनी सी बोलीवाली; पचुमै तौटि–चोखे स्वर्ण के आभूषण-भूषित वे; कन्नियॆ आकुम्–(राज) कुमारी, कन्या ही होगी; इतऱ्कु–इसमें; वेऱु–दूसरा; ऐयुऱवु–संशय; इल्लै–नहीं। ७०१

(अब श्रीराम जी के थोड़ा स्वस्थ हुए मन में एक खटका उठा।) मैं उनसे प्रेम करने चला। क्या वह मेरे योग्य कन्या होगी ? मेरा शिष्ट मन, भला मार्ग छोड़, अन्यत्र जानेवाला नहीं। स्वर्णकंकण-धारिणी, और

मधुर-भाषिणी वे अवश्य राज-कन्या ही होंगी। तभी मेरा मन उनके प्रेम में फँसा है। '७०१

कऴिन्द कङ्गु लरशन् कदिर्क्कुडै, विऴुन्द दॆन्नवु मेऱ्ऱिशै याऴ्शुडर्क्
कॊऴुन्दु शेर्नुदऱ् कोदऱु शुट्टिपोय्, अऴिन्द दॆन्नवु माऴ्न्ददु तिङ्गळे 702

कऴिन्त–गत; कङ्कुल्–रात के; अरचन्–राजा के; कतिर् कुटै–उज्ज्वल छत्र; विऴुन्ततु–गिरा (राज दूर हो गया); ॲन्नवुम्–वैसा और; मेल् तिचैयाळ्–पश्चिमी दिशा (रूपी) स्त्री का; चुटर् कॊऴुन्तु चेर्–सुन्दर आभा-युक्त; कोतु अऱ्नुतल् चुट्टि–अकलंक भाल का जेवर; पोय् अऴिन्ततु–जाकर नष्ट हुआ; ॲन्नवुम्–वैसा; तिङ्कळ्–चन्द्र; आऴ्न्ततु–(समुद्र में) मग्न हुआ। ७०२

चन्द्रास्त हो गया। चन्द्र रातरूपी राजा का छत्र था; और पश्चिमी दिशारूपी रानी का झूमर अब वह लुप्त हो गया। राजा दिवंगत हो गया। इसलिए छत्र भी लुप्त हो गया और रानी का अलंकार भी हटा दिया गया। ७०२

वीशु हिन्ऱ निलाच्चुडर् वीऴ्न्ददाल्, ईश नामदि येहलुञ् जोहत्ताल्
पूशु मॆन्कल वैप्पुनै शान्दिनै, आशै माद रऴित्तन रॆन्नवे 703

ईचन् आम् मति एकलुम्–पति यानी चन्द्र के जाने पर; आचै मातर्–उसकी प्रिय दिशारूपी नायिकाओं ने; चोकत्ताल्–शोक से; पुनै पूचुम्–अलंकार के हेतु जो लगाया गया था; मॆन् कलवै चान्तिनै–मनोज्ञ सुगन्धयुक्त चन्दन को; अऴित्तनर् ॲन्न–पोंछ दिया, ऐसा; वीचुकिन्ऱ–फैली रही; निला चुटर्–चाँदनी का प्रकाश; वीऴ्न्ततु–दूर हो गया; (आल्–पूरक ध्वनि)। ७०३

दिशाएँ रातराज की प्यारी रानियाँ हैं। राजा चला गया। इसलिए रानियों ने अपने शरीरों पर लगे हुए सुगंधित चंदन-लेप को पोंछ दिया। चंदनलेप चंद्रिका है। अब दिशाएँ चाँदनी-हीन हो गयीं। (तमिऴ में आशै का अर्थ प्यारा भी है और दिशा भी। उस विशेषण के कारण 'प्यारी दिशाएँ रूपी रानियाँ' अर्थ हो जाता है।)। ७०३

तदैयुमलर्त् तारण्ण लिव्वण्ण मयलुऴन्दु तळरुम् वेलै
शिदैयुमनत् तिडरुडैयच् चॆङ्गमल मुहमलरच् चॆय्य वॆय्योन्
पुदैयिरुळि नॆदिर्हिन्ऱ पुहर्मुहया नयिनुरिवैप पोर्वै पोर्त्त
उदयगिरि यॆनुङ्गडवु णुदल्किऴित्त विऴिपोल वुदयञ् जॆय्दान् 704

ततैयुम् मलर्–घने रूप से पुष्प-गुँथी; तार् अण्णल्–माला के धारण करनेवाले प्रभु; इ वण्णम्–इस प्रकार; मयल् उऴन्तु–उत्कट प्रेमवेदना से पीड़ित होकर; तळरुम् वेलै–श्रांत हो रहे थे, उस समय; चॆय्य वॆय्योन्–लाल किरणमाली; चितैयुम् मनत्तु इटर् उटैय–शिथिल मन के (श्रीराम के) दुख को दूर करते हुए; चॆम् कमलम् मुकम् मलर–अरुण कमल-मुख को प्रफुल्ल करते हुए; पुतै इरुळिन् एतिर्किन्ऱ–गाढ़े

अन्धकार के रूप में आक्रमण करने आये हुए; पुकर् मुकम् पर्तैयिन्-(लाल) बिन्दियों से युक्त मुख के गज (हाथी) के; उरिवै पोर्वै-चर्मरूपी ओढ़ना; पोर्त्त-ओढ़े हुए; उतय किरि अँतुम् कटवुळ्—उदयाचल-रूपी शिवदेव के; नुतल् किळित्त-भाल चीरते हुए; विळिपोल-नेत्र के समान; उतयम् चॆय्तान्-उदित हुआ। ७०४

ऊपर लिखे प्रकार से घनी पुष्पमाला से शोभित श्रीराम प्रेमातुरता से व्याकुल रहकर थोड़ी देर किसी तरह सो पाये। तभी सूर्य उदित हुए, मानों वे शोकतप्त श्रीराम के मन की व्यथा को दूर कर, उनके मुख-कमल को खिलाना चाहते थे। वे सूर्य उदयाचल पर श्रीशिव जी के भाल पर प्रकट अग्नि-नेत्र के समान लगे। काला अंधकार रुद्र-मूर्ति का ओढ़ा हुआ गजचर्म-सा था। गजचर्म पर लाल बिंदियाँ श्रेष्ठ लक्षण समझी जाती हैं। सूर्योदय के समय उदयाचल पर काले आकाश में डूबनेवाले नक्षत्र आदि दिखाई दिये। उदयाचल-शिव, अंधकार-गजचर्म, नक्षत्र-बिंदियाँ और सूर्य-नेत्र और लाल-किरण, नेत्राग्नि की यह रूपकमाला काव्यरस-पूर्ण है। ७०४

विशैयाडर् पशुम्पुरविक् कुरमिदिप्प वुदयगिरि विरिन्द तूळि
पशैयाह मऱैयवर्कैम् मलर्नऱैयु निऱैपुनलुम् परन्दु पाय
अशैयाद नॆडुवरैयित् मुहडुतॊरु मिळङ्गदिर्शॆन् ऱणैन्दु वॆय्योन्
तिशैयाळु मदहरियैच् चिन्दूर मप्पियपोऱ् ऱिहळु मादो 705

विचै आटल्—वेग और विजयशील; पचुमै पुरवि—हरे रंग के अश्व; कुरम् मितिप्प—खुर रखते हैं इसलिए; उतयकिरि विरिन्त तूळि—उदयाचल पर उठकर फैली हुई धूलि; पचै आक—गीली करते हुए; मऱैयवर्—ब्राह्मणों का; कैमलर् नऱैयुम्—हाथों में लिये गये फूलों का शहद; निऱै पुनलुम्—(हाथों में) पूर कर लिया (अर्घ्य-जल); परन्तु पाय—विस्तृत रूप से बह गया, तब; अचैयात नॆटु वरैयिन्—अचल, ऊँचे पर्वत के; मुकटु तॊऱुम्—शिखर-शिखर पर; इळ कतिर् चॆन्ऱु अणैन्त—बाल-किरणों के जाकर लगने से; वॆय्योन्—सूर्य; तिचै आळुम् मतम् करियै—पूरब की दिशा की रक्षा करनेवाले गज पर; चिन्तूरम् अप्पियतु पोल्—सिंदूर का लेप लगाया हो, ऐसा; तिकऴुम्—विद्यमान है; (मातु ओ—पूरक ध्वनियाँ)। ७०५

सूर्य-रथ के हरे रंग के अश्व बड़े वेगवान और विजयी हैं। उनके खुरों से उदयगिरि पर धूलि उठती है। ब्राह्मण लोग सूर्य को संध्या-पूजामध्य अर्घ्य देते हैं। अर्घ्यजल में फूल हैं। उन फूलों से बहनेवाला शहद और यह जल दोनों मिलकर उस धूलिपटल को गीला कर लेप बना देता है। उस लेप को सूर्य अपनी किरणरूपी हाथों से लेकर पूर्व दिशारूपी मस्त हाथी के मस्तक पर लगा देते हैं। (सूर्योदय पर पूरब का दृश्य और ब्राह्मणों का मन्देह-असुरों को सूर्य के मार्ग से हटाने के लिए दिया जानेवाला अर्घ्यदान, दिशा की लाली आदि का सम्मिलित वर्णन रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के सहारे से बड़ा ही मनोहारी हुआ है)। ७०५

**पण्डुवरुङ् गुऱिपहर्न्दु पाशरैयिऱ् पॊरुळ्वयिनिऱ् पिरिन्दु पोन
वण्डुतॊडर् नऱुन्दॆरिय लुयिरनैय कॊळुनर्वर मणित्ते रोडुङ्
गण्डुमनङ् गळिशिऱप्प वॊळिशिऱन्दु मॆलिवहलुङ् गऱ्पि नार्पोल्
पुण्डरिह मुहमलर वहमलर्न्दु पॊलिन्दनपूम् बॊय्है यॆल्लाम् 706**

पण्टु–पहले ही; वरुम् कुऱि पकर्न्तु–लौट आने का समय बताकर; पाचऱैयिन्–खेमों की ओर (युद्ध पर); पॊरुळ् वयितिन्–(या) धनार्जन के हेतु; पिरिन्तु पोन–जो बिछुड़ गया; वण्टु तॊटर्–भ्रमर-मण्डरित; नऱु तॆरियल्–सुवासपूर्ण माला धारण करनेवाले; उयिर् अनैय कॊळुनर्–प्राणप्यारे पतियों के; मणि तेरोटुम् वर–घण्टियों-सहित सुन्दर रथों पर आने पर; कण्टु–देखकर; मनम् कळि चिऱप्प–मन में मोद के उमड़ते; ऑळि चिऱन्तु–रौनक बढ़कर; मॆलिवु अकलुम्–मलिनता-विमुक्त; कऱ्पिनार् पोल्–पत्नियों के समान; पू पॊय्कै ऍल्लाम्–फूलों से भरे तालाब सब; पुण्टरिकम् मुकम्–कमलरूपी मुखों के; मलर–विकसित होते; अकम् मलर्न्तु–अन्दर भी कांति पाकर; पॊलिन्तन–शोभायमान रहे। ७०६

सूर्य के उदय पर कितने जादू होते हैं। तड़ागों में कमल-पुष्प विकसित होते हैं। यह कैसा है? तमिऴ साहित्य में पुरुष स्त्री से तीन कारणों से अलग जा सकते हैं। युद्ध के लिए, धनार्जन के लिए, या वेश्या के पास। यहाँ तीसरा कारण छोड़ दिया गया है। धनार्जन या युद्ध के लिए प्यारा, भ्रमराकीर्ण, मालाधारी बाहर गये हुए थे। जाते समय वे लौटने का समय भी निश्चित कर गये थे। उसी वचन के अनुसार वे अपने सुन्दर रथों पर बैठकर आ गये। उनको देख सती नायिकाएँ मन और तन में प्रफुल्लित हो जाती हैं। उनकी क्षीणता दूर हो जाती है। वैसे ही तड़ागों के कमल सूर्य को देख प्रफुल्लित हो खिले। ७०६

**ॐ ऑण्णरिय मऱैयिनॊडु किन्नरर्ह ळिशैपाड वुलह मेत्त
विण्णवरु मुनिवररुम् वेदियरुङ् गरङ्गुपिप्प वेलै यॆन्नुम्
मण्णुमणि मूळ्वदिर वानरङ्गि नडम्बुरिवा ळिरवि यॆन्नुम्
कण्णुदल्वा नवन्कनहच् चडैविरिन्दा लॆनविरिन्द कदिर्ह ळॆल्लाम् 707**

ऑण् अरिय मऱैयिनॊटु–अनन्त (या अतुलनीय) वेदों के साथ; किन्नरर्कळ्–किन्नर नाम की देवजाति के लोग; इचै पाट–(वेद) गान करते हैं, तब; उलकम् एत्त–लोक स्तुति करते हैं; विण्णवरुम्–देवता लोग; मुनिवररुम्–मुनिगण; वेतियरुम्–वेदज्ञ ब्राह्मण; करम् कुविप्प–हाथ जोड़ते हैं, तब; वेलै ऍन्नुम्–समुद्ररूपी; मण्णुम् अणि मुऴवु–मट्टी का काला लेप जिस पर लगा है उस मर्दल के; अतिर–बजते; वान् अरङ्किल् नटम् पुरि–आकाश के रंगमंच पर नर्तन करनेवाले; वाळ् इरवि आन–उज्ज्वल रवि रूपी; कण्णुतल् वानवन्–भालनेत्र (शिवजी) देवता की; कनकम् चटै विरिन्ताल् ऍन–कनकवर्ण जटा-जूट बिखरीं, ऐसा; कतिर्कळ् ऍल्लाम्–सभी किरणें; विरिन्त–बिखरीं। ७०७

सूर्य जब उदित हुए, तब किन्नर वेद-गान करने लगे; लोक में श्रेष्ठ लोगों ने सूर्य-वंदना की। देवता लोग, मुनिवर और ब्राह्मण लोग, अंजलि-बद्ध

हुए। सागर कोलाहल करने लगा। किरणें सब ओर व्यापने लगीं। इस तरह सूर्य आकाश पर दिखाई देते हैं। उनको देखकर नटराज भालनेत्र शिवजी का नर्तन याद आता है। जब वे नाचने लगे तो किन्नर, देव, आदि सब स्तुति करते थे। मर्दल जो बजता था वह सागर-गर्जन है। आकाश रंगमंच है। किरणें उनकी कनक-वर्ण जटाएँ हैं। ७०७

※ कॊल्लाऴि नीत्तङ्गोर् कुनिवयिरच् चिलैतडक्कैक् कॊण्ड कॊण्डल्
ऍल्लाऴित् तेरिरवि यिळङ्गरत्ता लडिवरुडि यनन्द ऱीर्प्प
अल्लाऴिक् करैकण्डा नायिरमा मणिविळ्क्क मऴलुज् जेक्कैत्
तॊल्लाऴित् तुयिलादे तुयराऴि नॆडुङ्कडलुट् टुयिल्हिन्ऱ ऱाने 708

तट कै—आजानु-लम्बित हाथ से; कॊल् आऴि नीत्तु—संहारक चक्रायुध दूर करके; अङ्कु—उसमें; ओर् कुनि वयिरम् चिलै—एक झुका हुआ और कठोर धनु (कोदण्ड) को; कॊण्ट—धारण करनेवाले; कॊण्टल्—मेघवर्ण; आयिरम् आम्—सहस्र गणित; मणि विळक्कम्—रत्नदीप; अऴलुम्—प्रकाश जहाँ देते हैं; चेक्कै—उस (शेष) शय्यावाले; तॊल् आऴि—प्राचीन (क्षीर-) सागर में; तुयिलाते—बिना निद्रा किये; तुयर् आऴि—दुखपूर्ण; नॆटुकटलुळ्—विशाल सागर में; तुयिल्किन्ऱान्—जो मग्न हैं वे श्रीराम; ऍल् आऴि तेर इरवि—प्रकाशमान एक-चक्र रथ के पति रवि के; इळम् करत्ताल्—अपने बाल-करों (किरणों) से; अटि वरुटि—पाँव दाबकर; अनन्तल् तीर्प्प—मोह (तंद्रा) दूर करते; अल् आऴि—रातरूपी सागर का; करै कण्टान्—तीर पाया (पार किया)। ७०८

श्रीराम श्रीविष्णु हैं। उनके हाथ में (दुष्ट-) संहारक चक्रायुध था। उसको छोड़कर अब कोदण्ड ले लिया है। पहले क्षीरसागर पर शयन करते थे। जहाँ अनंतनाग अपने सहस्र फणों के रत्नों द्वारा प्रकाश कर रहा था। अब दुःख-सागर में सो (मग्न हो) रहे हैं। सूर्य अपने मंद, सुखद किरणों से उनका पैर सहला रहे हैं। तब बेसुध पड़े श्रीराम जागे और रात्रिरूपी सागर के पार गये। सूर्य ने अपने वंशज को दिन-चर्या के लिए जगाया। ७०८

ऊऴिपॆयरन् ऱॆनक्कङ्गु लॊरुवण्णम् बुडैपॆयर वुरक्क नीत्त
शूऴिया नयिनॆळुन्दु तॊन्नियमत् तुऱैमुडित्तुच् चुरुदि यन्न
वाऴिमा दवऩ्पणिन्दु मनक्किनिय तम्बियॊडुम् वम्बिन् मालै
ताऴुमा मणिमौलित् तार्च्चनकन् पॆरुवेळ्विच् चालै शार्न्दान् 709

ऊऴि पॆयरन्ततु ऍन—एक युग ही बीत गया, ऐसा; कङ्कुल्—रात; ऒरु वण्णम्—एक तरह से; पुटै पॆयर—अलग हटी, तब; उऱक्कम् नीत्त—निद्रा से जागे हुए; चूऴि यानैयिन्—मुखपट्ट से अलंकृत गज के समान; ऍऴुन्तु—(श्रीराम) उठकर; तॊल् नियमम् तुऱै मुटित्तु—परम्परागत नियमानुष्ठान पूरा करके; चुरुति अन्न—वेदमूर्ति; मा तवन्—महातपस्वी (कौशिक जी) के सामने; पणिन्तु—नमस्कार करके; मनक्कु इनिय—हृदयप्रिय; तम्पियॊटुम्—भाई के साथ और (ऋषि के साथ);

वम्पु इन्‌ मालै–सुवासित मनोरम सुमनमाला; ताळुम्–जिस पर से लटकती है; मामणि मौलि–उस श्रेष्ठ रत्नकिरीट के; तार्–वक्ष पर हार धारण करनेवाले; चनकन्–जनक महाराज के; पॅरु वेळ्वि चालै–बड़ी यज्ञशाला में; चार्न्तान्–पधारे। ७०९

एक युग-सी थी रात। वह लम्बी रात किसी प्रकार बीत गयी। श्रीराम मुखपट्ट पहने हाथी के समान (चुस्त हो) जाग उठे। नित्य-कर्म का अनुष्ठान पूरा किया। फिर साक्षात्‌ वेदाकार विश्वामित्र को नमस्कार किया। फिर वे उनके और अपने प्यारे भाई के साथ उन जनक की यज्ञशाला में गये, जिनका रत्न-जटित किरीट सुगंधित, मनोरम और लटकनेवाली पुष्पमालाओं से युक्त था; और जिनके वक्ष पर पुष्पमालाएँ शोभायमान थीं। ७०९

11. कुलमुरै किळत्तु पडलम्‌ (वंशक्रम-परिचय पटल)

मडिच्चनहर् पॅरुमान्‌ मुरैयाले पॅरुवेळ्वि मुर्रिच् चुर्रुम्
इडिक्कुरलिन्‌ मुरशियम्ब विन्दिरनिर् चन्दिरन्रोय्‌ कोयि लॅय्दि
ॲडुत्तमणि मण्डबत्तु ळॅण्डवत्तोन्‌ मुनिवरॊडु मिरुन्दान्‌ पॅन्दार्
वडित्तकुनि वरिशिलैक्कै मैन्दनुन्दम्‌ बियुमरुङ्गि निरुप्प मादो 710

मुटि चनकर् पॅरुमानुम्–किरीटी जनक के कुल के श्रेष्ठ (महाराज) जनक भी; मुरैयाले–विधि के अनुसार; पॅरु वेळ्वि मुर्रि–बड़ा यज्ञ सम्पन्न करके; चुर्रुम्–चारों ओर; इटि कुरलिन्–वज्रघोष के साथ; मुरचु इयम्प–ढोल के नर्दन (बड़ा शोर) करते; इन्तिरनिन्–देवेन्द्र के समान; चन्तिरन्‌ तोय्‌ कोयिल्‌ ॲय्ति–चन्द्रसंचरित (ऊँचे) मन्दिर में आकर; ॲटुत्त–शान से बने; मणि मण्टपत्तुळ्–मणियों से सज्जित मण्डप में; ॲण्‌ तवत्तोन्–सम्मान्य तपोधन; पचमै तार्–नवीन फलों की माला धारण करनेवाले; वटित्त–सुगठित; कुनि वरि चिलै कै–झुका, बन्धनयुक्त धनुष वाले हाथ के; मैन्तनुम्–कुँअर; तम्पियुम्–और उनके लघु भ्राता; मरुङ्किन्‌ इरुप्प–पार्श्व में विराजे, ऐसा; मुनिवरॊटुम्–अन्य मुनियों के साथ; इरुन्तान्–आसीन रहे। ७१०

किरीटी जनक वंश के नायक राजा जनक उत्तम यज्ञ को वेद विहित रीति से सुसंपन्न करके महल में आये। तब चारों ओर ढोल वज्रघोष के समान नर्दन कर उठे। महल इतना ऊँचा था कि चन्द्र उसमें आकर संचार कर सकते। उस महल में एक शानदार, रत्नसज्जित मंडप था जहाँ उनकी सभा होती थी। वे वहाँ आये और सिंहासन पर आसीन हुए। उनके पार्श्व में सम्मानित तपस्वी कौशिकजी और कोदण्डपाणी श्रीराम और उनके लघुभ्राता लक्ष्मण विराजे। अन्य मुनि भी सभा में आसीन रहे। ७१०

❀ इरुन्दकुलक् कुमरर्तमै यिरुकण्णान् मुहन्दळहु परुह नोक्कि
अरुन्दवनै यडिवणङ्गि यारिवरै युरैत्तिडुमि नडिह ळॆन्न
विरुन्दिनर्ह णिन्नुडैय वॆळ्विका णियवन्दार् विल्लुङ् गाण्बार्
पॆरुन्दहैमैत् तयरदन्ऱन् पुदल्वरॆन्न ववर्तहैमै पेश लुऱ्ऱान् 711

इरुन्त–(जनक) पास रहे; कुलम् कुमरर् तमै–कुलीन कुँअरों को; इरु कण्णाल्–(दोनों) आँखों से; अळकु मुकन्तु–सौन्दर्य को उठाकर; परुक नोक्कि–पीते से देखकर; अरु तवनै अटि वणङ्कि–श्रेष्ठ तपस्वी (कौशिक) के चरणों की पूजा करके; अटिकळ्–नमनीय चरण; इवर् यार्–ये कौन हैं; उरैत्तिटुमिन्–बतलाइये; ॲन्न–यह पूछने पर; विरुन्तितर्कळ्–अतिथि; पॆरु तकैमै तयरतन् तन्–उत्तम महिमामय दशरथ के; पुतल्वर्–तनय हैं; निन्नुटैय–आपका; वेळ्वि–यज्ञ; काणिय–देखने के लिए; वन्तार्–आये हैं; विल्लुम्–धनु को भी; काण्पार्–देखेंगे (आज़माएँगे); ॲन्न–कहकर; अवर् तकैमै–उनकी महिमाएँ; पेचल् उऱ्ऱान्–बखानने लगे। ७११

राजा जनक ने उन दोनों उच्चकुलीन कुंअरों को अपनी आँखों से ऐसा देखा मानों वे अपनी आँखों से उनकी सुन्दरता को उठाकर पान कर रहे हों। फिर उन्होंने विश्वामित्र के चरणों पर विनत होकर विनय की—हे पूजार्हचरण ! ये कौन हैं ? बताने की कृपा करें। महर्षि ने कहा कि ये अतिथि (अतिथि का अर्थ जिनकी तिथि नहीं यानी जो अप्रत्याशित रूप से आ जायँ—नवागंतुक) बड़े ही महिमावान दशरथ के सुपुत्र हैं। वे आपका यज्ञ देखने आये। अब आपका वह धनुष भी देखेंगे जिसको सीताविवाहेच्छुक के लिए परीक्ष्य विषय बना रखा है। ७११

आदित्तन् कुलमुदल्वन् मनुविनैया रऱियादार्
वेदित्त वुयिरनैत्तुम् पॆरुम्बशियाल् वरुन्दामल्
शोदित्तन् वरिशिलैया निलमडन्दै मुलैशुरप्पच्
चादित्त पॆरुन्दहैयु मिवर्कुलत्तोर् तरापदिकाण् 712

आतित्तन् कुलम् मुतल्वन्–आदित्यवंशी प्रथम पुत्र; मनुविनै अऱियातार् यार्–मनु को न जाननेवाले कौन हैं; वेतित्त–परस्पर विभिन्न; उयिर् अनैत्तुम्–जीवराशि, सबको; पॆरु पचियाल् वरुन्तामल्–बड़ी भूख से बिना पीड़ित हुए; तन् चोति वरि चिलैयाल्–अपनी ज्योतिर्मय बन्धनयुक्त धनु द्वारा; निलम् मटन्तै–भूमि की देवी को; मुलै चुरप्प–स्तनों से (औषधियाँ आदि) निकालने को विवश करके; चातित्त–जिन्होंने साध लिया था; पॆरु तकैयुम्–बड़े महिमावान (पृथु) भी; इवर् कुलत्तु ओर् तरापति–इनके वंश के एक धराधिप हैं; काण्–जानिये। ७१२

(अब विश्वामित्र सूर्यवंश के राजाओं की महिमा का वर्णन करते हैं। वाल्मीकी में धनुर्भंग के बाद यह चर्चा आती है।) आदित्यवंश के प्रथम पुत्र (वैवस्वत) मनु को न जाननेवाले कौन हैं ? उनके वंश में एक राजा हुए जिन्होंने भूदेवी को, जो गाय के रूप में अपने अंदर ओषधियाँ सब

छिपा लेकर भागने लगी थी, अपने थन द्वारा सबको निकालने को विवश किया। (यह राजा पृथु हैं।) उससे विविध जीवराशियों की भुभुक्षा मिटी। उनके बंधनयुक्त धनु के प्रताप से भूमि वश में आयी। (पृथु के पहले 'वेन' नामक राजा था, जो अत्याचारी था। भूदेवी ने उसके अत्याचारों से तैश में आकर सभी वृक्ष, लता आदि औषधियों को अपने अंदर छिपा लिया। महर्षियों ने मिलकर वेन को मरवाकर पृथु को राजा बनाया। राजा पृथु ने भूमि पर धावा बोल दिया तो वह गाय का रूप लेकर भागी। फिर राजा पृथु के धनु के प्रताप के सामने हार मान गयी।)। ७१२

❀ पिणियरङ्ग विनैयहलप् पॆरुङ्गालन् दवम्पेणि
मणियरङ्ग नॆडुमुडियाय् मलरयनै वऴिपट्टुप्
पणियरङ्गप् पॆरुम्बायऱ् परञ्जुडरै याङ्गाण
अणियरङ्गन् दन्दानै यऱियादा रऱियादार् 713

मणि अरङ्कु—मणिमण्डित; अम् नॆट्टु मुटियाय्—सुन्दर उन्नत किरीट के धारण करनेवाले; पिणि अरङ्क—रोग दूर करने; विनै अकल—(रोगों का कारण) प्रारब्ध कर्म दूर करने; मलर् अयनै—कमलभव अज को; वऴि पट्टु—पूजा करके; पॆरु कालम् तवम् पेणि—लम्बे काल तक तप करके; पणि अरङ्कम् पॆरु पायल्—आदिशेष रूपी विशाल शय्या (शायी); परम् चुटरै—परमज्योति को; याम् काण—हमारे दर्शनार्थ; अणि अरङ्कम् तन्तानै—सुन्दर रंग-विमान के साथ इस दुनिया में लानेवाले (इक्ष्वाकु) को; अऱियातार्—जो नहीं जानते; अऱियातार्—(वे लोग) अज्ञ हैं ही। ७१३

नवरत्न जड़ित उन्नत किरीटवाले जनक! इनके वंश के एक राजा (इक्ष्वाकु) ने ब्रह्माजी की लंबी तपस्या की। उन्हें कष्ट और भव-बाधा हरण के लिए ब्रह्मा ने शेषशायी श्रीविष्णुदेव का विग्रह रंगविमान के साथ प्रदान किया। उन्हीं इक्ष्वाकु की तपस्या और करुणा से भूलोकवासियों को वह देव सुलभ हुए। उन इक्ष्वाकु को कौन नहीं जानता? (यहाँ विश्वास किया जाता है कि वही रंगविमान सहित श्रीमन्नारायण इक्ष्वाकु कुल में कुल-देवता के रूप में पूजे जाते थे। श्रीराम ने उन्हें विभीषण को दिया था। विभीषण उन्हें लेकर लंका जा रहे थे। लेकिन बीच में ही देव ने श्रीरंगम क्षेत्र को (जो तमिऴनाडु में तिरुच्चिनापल्ली के पास कावेरी और कॊळ्ळिडम् नदियों के बीच में है) अपना वासस्थान बना लिया। विभीषण के तृप्त्यर्थ उन्होंने वादा किया कि मैं दक्षिण की तरफ मुख करके शयन करता रहूँगा और मेरी कृपादृष्टि श्रीलंका पर रहेगी। इस रंगविमान के पीछे ही वह श्रीरंगम नाम पड़ा और यह क्षेत्र वैष्णवों के लिए परमपद से भी श्रेष्ठ है।)। ७१३

तान्ऱनक्कु वॅलऱ्करिय तानवरैत् तलैतुमित्तॅन्
वान्ऱरुहिऱ् ऱिहॊलॅनक् कुऱैयिरप्प वरङ्गॊडुत्ताङ्
गेन्ऱॅडुत्त शिलैयिनना यिहल्पुरिन्द विवरकुलत्तोर्
तोन्ऱलैप्पण् डिन्दिरने कॊल्लेऱाच् चुमन्दान्काण् 714

तान्-(इन्द्र) आप; तनक्कु वॅलऱ्कु अरिय-खुद हराने में अशक्य; तानवरै-दानवों को; तलै तुमित्तु-सिर काटकर; ऍन् वान्-मेरे स्वर्ग को; तरुकिऱ्ऱि कॊल्-लौटा दे सकेंगे क्या; ॲन-यह; कुऱै इरप्प-अपनी प्रार्थना निवेदन करने पर; वरम् कॊटुत्तु-वर देकर; आङ्कु एऩ्ऱु-वहीं सन्नद्ध होकर; ऍटुत्त चिलैयिननाय्-धनुर्हस्त होकर; इकल् पुरिन्त-युद्ध (जिन्होंने) किया; इवर् कुलत्तु ओर् तोन्ऱलै-(उन) इनके वंशज एक राजा को; पण्टु-पूर्वकाल में; इन्तिरने-स्वयं इन्द्र ही; कॊल् एऱु आकि-बलवान बैल बनकर; चुमन्तान्-ढोये (काण्)। ७१४

इसके बाद एक राजा आये। (उनका नाम ककुत्स्थ था।) एक वार इन्द्र ने आकर उनसे कहा कि असुरों के सिर काट कर मेरा स्वर्ग लौटा दे सकते हैं क्या ? यह प्रार्थना सुनते ही राजा ने वर दिया और युद्धतत्पर हुए। उन्होंने जीत भी पायी। जब वे लड़ाई पर गये तब इन्द्र ने बैल बनकर अपने ककुद पर उन्हें धारण किया था। (ककुद = बैल का कुब्बड़) वैसे पराक्रमी थे वे राजा; वे इन्हीं के पूर्वज थे। ७१४

अरशववन् पिन्नोरै यॅन्नालु मळप्परिदाल्
उरैकुरुह निमिर्कीर्त्ति यिवर्कुलत्तो रॊरुवन्काण्
नरैतिरैमूप् पिवैयॅय्दि यिन्दिरनु नन्दामल्
कुरैहडलै नॅडुवरैयाऱ् कडैन्दमुदङ् गॊडुत्तानुम् 715

अरच-राजन्; अवन् पिन्नोरै-उनके बाद आये हुए अनेक की महिमाएँ; ऍन्नालुम् अळप्पु अरितु-मुझसे भी अवर्ण्य हैं; इन्तिरनुम्-देवेन्द्र (और अन्य देव भी); नरै-बाल का पकना; तिरै-चमड़े का संकोच; मूप्पु-जरा; इवै ऍय्ति-इन्हें प्राप्त करके; नन्तामल्-मरे बिना रहने के लिए; कुरै कटलै-सघोष (क्षीर-) सागर को; नॅटु वरैयाल्-ऊँचे पर्वत से; कटैन्तु-मथकर; अमुतम् कॊटुत्तानुम्-अमृत दिलानेवाले भी; उरै कुऱुक निमिर् कीर्त्ति-अभिव्यंजना को असमर्थ बनाती हुई बढ़नेवाली कीर्ति के; इवर-इन कुंअरों के; कुलत्तोन् ऒरुवन् काण्-वंशज एक (राजा) थे, जानें। ७१५

महाराज ! उनके बाद जो इनके कुल में उत्पन्न हुये, उनकी महिमा मेरे लिए भी अवर्णनीय है। एक आये जिन्होंने गरजनेवाले दुग्धसागर को मेरु पर्वत से मथकर देवों को जरा आदि से विमुक्त अमर बनाने के लिए अमृत निकाल कर दिया था। वे भी इन्हीं अकथनीय यशस्वी श्रीराम और लक्ष्मण के पूर्वज थे। (इनका नाम वाल्मीकी में नहीं पाया जाता, अन्यत्र भी नहीं मिलता। इसमें 'उरै कुरुक निमिर्' कीर्ति का जो विशेषण

आया है वह सुन्दर शब्द-योजना है। भाषा-शक्ति को असमर्थ बनाकर बढ़ा हुआ यश— इसका अर्थ है।)। ७१५

करुदरिय पॅरुङ्गुणत्तो रिवर्पिन्नु कणक्किरन्दोर्
तिरिबुवन मुळुदाण्डु शुडर्नेमि शॅलनिन्रार्
पॊरुदुरैशेर् वेलिनाय् पुलिप्पोत्तुम् पुल्वायुम्
ऑरुतुरैयि नीरुण्ण वुलहाण्डो नॊरुवनुळन् 716

पॊरुतु उरै चेर् वेलिनाय्–युद्ध करके कोश में गये हुए भाला वाले; **करुत अरिय**–अशोच्य; **पॆरु कुणत्तोर्**–श्रेष्ठ गुणोंवाले; **इवर् पिन्पु**–इनके बाद; **तिरिपुवनम् मुळुतुम्**–सारा त्रिलोक; **आण्टु**–शासन करके; **चुटर् नेमि**–प्रतापी (आज्ञा) चक्र; **चॆल निन्रार्**–चलाते जा रहे; **कण्क्कु इरन्तोर्**–वे असंख्यक हैं; **पुलि पोत्तुम्**–(मर्द) व्याघ्र; **पुल् वायुम्**–तृणमुख हरिण; **ऒरु तुरैयिल् नीर् उण्ण**–एक ही घाट पर जलपान करें, ऐसा; **उलकु आण्टोन् ऒरुवन्**–लोकपालक एक; **उळन्**–है। ७१६

शत्रु संहार करके कोश में रखा गया भालावाले! उन राजा के बाद असंख्य राजा आये जो अकल्पित उत्तम गुणों के थे; जो त्रिभुवन पर एकछत्र राज करके अपना आज्ञाचक्र चलाते थे; उनमें एक थे जिनके राज में व्याघ्र और हरिण एक ही घाट पर जल पीते थे। (ये माँधाता थे, ये बड़े ही नीतिमान थे और उनके राज्य में बली दुर्बल को सता नहीं पाते थे।)। ७१६

मरैमन्नु मणिमुडियु मारमुमा ळॊडुमिन्नप्
पॊरैमन्नु वानवरुन् दानवरुम् पॊरुमॊरुनाळ्
विरन्मन्नर् तॊळुकळला यिवर्कुलत्तोन् विर्पिडित्त
अरमॆन्न वॊरुतनिये यमैन्दमरर् पतिकात्तान् 717

मरै मन्नुम्–शास्त्र के अनुसार निर्मित; **मणि मुटियुम्**–रत्नकिरीट; **आरमुम्**–और हार; **वाळॊटु मिन्न**–कांतिसहित चमकते हैं, और; **पॊरै मन्नु वानवरुम्**–क्षमाशील देव भी; **दानवरुम्**–दानव भी; **पॊरुम् ऒरु नाळ्**–जब लड़े तब एक दिन; **विरल् मन्नर् तॊळु कळलाय्**–प्रतापी राजाओं से पूजित चरणवाले; **इवर् कुलत्तोन्**–इनके वंश के एक ने; **विल् पिटित्त अरम् अन्न**–धनुर्हस्त धर्मदेवता के समान; **ऒरु तनिये अमैन्तु**–एकाकी (सहायक) रहकर; **अमरर् पति कात्तान्**–अमरावती की रक्षा की। ७१७

प्रवल राजाओं से पूजित चरणों के जनक! एकवार आभरण-निर्माण विद्या के अनुसार रचित किरीट, हार आदि से अलंकृत और क्षमाशील देवों और असूया करनेवाले दानवों में युद्ध छिड़ा। तब इनके एक पूर्वज (मुचुकुंद) ने अकेले ही, धनुर्हस्त धर्मदेवता के समान देवताओं की सहायता करके दानवों को हराया और अमरावती (इन्द्र के नगर) को बचाया। ७१७

इऩ्ऩुयिर्क्कु मिऩ्ऩुयिरा यिरुनिलमुऩ् कात्तळित्त
पॊऩ्ऩुयिर्क्कुङ् गळलवरै याम्बोलुम् पुहळ्हिर्पाम्
मिऩ्ऩुयिर्क्कु नॆडुवेला यिवर्कुलत्तोऩ् मॆऩ्बुऱविऩ्
मऩ्ऩुयिर्क्कुत् तऩ्ऩुयिरै माऱाह वळङ्गिऩऩाल् 718

मिऩ् उयिर्क्कुम्–बिजली के समान कांति बिखेरनेवाली; नॆटु वेलाय्–लंबी शक्तिधारी; इऩ् उयिर्क्कुम् इऩ् उयिराय्–प्रिय प्राणियों के प्रिय प्राण रहकर; इरु निलम्–इस विशाल भूमि को; मुऩ् कात्तु अळित्त–पूर्वकाल में जिन्होंने पाला; पॊऩ् उयिर्क्कुम् कळल् अवरै–उन स्वर्ण वर्ण (स्वर्ण-निर्मित) पायलधारी राजाओं की; याम् पुकळ्किर्पाम् पोलुम्–हम प्रशंसा करने में समर्थ होंगे (क्या); इवर् कुलत्तोऩ्–इनके वंशज; मॆऩ् पुऱविऩ्-कोमल कपोत के; मऩ् उयिर्क्कु–स्थायी प्राण के; माऱाक–बदले में; तऩ् उयिरै वळङ्किऩऩ्–अपने प्राण दे गये। ७१८

बिजली के समान चमकनेवाला भालावाले ! इनके वंश के राजाओं की, जिन पायलधारी शासकों को सभी प्राणों के प्यारे जीव प्राणसम प्यारे थे, कैसी प्रशंसा करूँ ? उनकी संख्या और हर एक की महिमा इतनी बड़ी है कि वह काम दुस्साध्य है। उस कुल के एक राजा कपोत की जान बचाने के हेतु, अपनी ही जान देने के लिए, तुला पर चढ़े थे। (वे राजा शिवि हैं।)। ७१८

इडऱोट्ट विऩ्ऩॆडिय वरैयुरुट्टि यिव्वुलहम्
तिडऱोट्ट मॆऩक्किडऩ्द वहैतिऱम्पत् तॆव्वेन्दर्
उडऱोट्ट नॆडुवेला यिवर्कुलत्तो रुवरिनीर्क्
कडऱोट्टा रॆऩिऩ्वेऱोर् कट्टुरैयुम् वेण्डुमो 719

तॆव् वेन्तर्–शत्रु राजाओं के; उटल् तोट्ट–शरीरों को भेदनेवाले; नॆटु वेलाय्–लम्बे भालेवाले; इवर् कुलत्तोर–इनके वंश के राजा लोगों ने; इटरु ओट्ट–(राजा सगर के यज्ञ में हुई) बाधा को दूर करने के लिए; इ उलकम्–यह भूतल; तिटल् तोट्टम् ॲऩ–ऊबड़-खाबड़ जो रहा; किटन्त वकै तिऱम्प–उस स्थिति को बदलकर; इऩ्ऩम् नॆटिय वरै उरुट्टि–विशाल पर्वतराशियों को तोड़-फोड़कर; उवरि नीर् कटल् तोट्टार्–लवणजल समुद्र खोदा; ॲऩिऩ्–तो; वेऱु ओर् कट्टुरैयुम्–दूसरा कोई प्रमाण-वचन; वेण्टुमो–चाहिए क्या ? । ७१९

शत्रु-शरीरों को भेदनेवाला भालावाले जनक ! इनके वंश के पूर्वजों में एक दल ने (सगर-पुत्रों ने) अपने पिता के यज्ञ में हुई बाधा के निवारणार्थ इस ऊबड़-खाबड़ भूमि की प्रकृति को बदल कर नमकीन जलवाला समुद्र बना दिया। उस प्रयत्न में उन्होंने बड़े-बड़े पहाड़ों को भी चूर-चूर कर दिया। फिर और भी विस्तार की आवश्यकता है क्या ? । ७१९

तूनिऩ्ऱ शुडर्वेला यऩ्ऩ्दऩक्कुञ् जॊलर्करिदेल्
यानिऩ्ऱु पुहळ्न्दुरैत्तर् कॊळिदोवे डविळ्कोऩ्ऱैप्

पूनिऩ्ऱ मवुलियैयुम् पुक्कळैन्द पुऩऱ्कङ्गै
वाऩिऩ्ऱु कॊणर्न्दाऩु मिवर्कुलत्तोर् मऩ्ऩवऩ्गाण् 720

तू निऩ्ऱ–सुदृढ़; चुटर् वेलाय्–दीप्त भालावाले; अऩन्तऩुक्कुम्–अनन्तनाग के लिए भी; चॊलऱ्कु अरितेल्–(इनकी कुल महिमा) वर्णन कठिन है तो; याऩ्–मेरे; इऩ्ऱु–आज (एक दिन में); पुकळ्न्तु उरैत्तऱ्कु–प्रशंसा कहने के लिए; ऎळितो–सुलभ है क्या; एट्टु अविऴ्–दल-प्रफुल्ल; कॊऩ्ऱै पू निऩ्ऱ–अमलतास के फूलों से भरी; मवुलियैयुम्–जटा-जूट में; पुक्कु अळैन्त पुऩल्–प्रवेश कर जो (गंगा-) जल घूमता रहा; कङ्कै–उस जल की गंगा को; वाऩ् निऩ्ऱु–आकाश से; कॊणर्न्ताऩुम्–(भूमि पर) लानेवाले भी; इवर् कुलत्तु ओर् मऩ्ऩवऩ्–इनके वंश के ही एक राजा हैं। ७२०

मांसलिप्त दीप्तिमान भालावाले! इनकी कुलमहिमा आदिशेष अनन्तनाग के लिए भी (जिनके सहस्र जिह्वाएँ हैं) बखानना कठिन है। तो (एक ही जीभवाला) मैं एक दिन में कथन करके पार पाऊँ, क्या यह संभव है? अमलतास के दलसंकुल पुष्पों से भूषित शिवजी की जटा-जूट में जिन गंगाजी का जल घुसकर घूमता था, उस पवित्र जलवाली गंगाजी को इस धरती पर लानेवाले भी इन्हीं के पूर्वज (भगीरथ) थे। ७२०

कयऱ्कडलशू ऴुलहॆल्लाङ् गैनॆल्लिक् कऩियाक्कि
इयऱ्कैनॆऱि मुरैयाले यिन्दिरऱ्कु मिडरियऱ्ऱ
मुयऱ्करैयिऩ् मदिक्कुडैया यिवर्कुलत्तोऩ् मुऩ्ऩॊरुवऩ्
शॆयऱ्करिय पॆरुवेळ्वि यॊरुनूऱुञ् शॆय्दमैत्ताऩ् 721

मुयल् करै इल् मति कुटैयाय्–शशक के आकार का कलंक जिसमें नहीं हो ऐसे (पूर्ण, अकलंक) चंद्र सदृश छत्रवाले; मुऩ्–प्राचीन दिनों में; इवर् कुलत्तोऩ् ऒरुवऩ्–इनके कुल के एक राजा; कयल् कटल् चूऴ्–मकरालय-मेखला; उलकु ऎल्लाम्–सम्पूर्ण वसुधा को; कै नॆल्लि कऩि आक्कि–करतलामलक के समान अपने वश में करके; इन्तिरऱ्कुम् इटर् इयऱ्ऱ–इन्द्र को भी भय देते हुए; चॆयऱ्कु अरिय पॆरु वेळ्वि–दुष्कर बड़े यज्ञ; ऒरु नूऱुम्–एक सौ पूरा; इयऱ्कै नॆऱि मुरैयाले–प्रकृत वेद-विधि-विहित प्रकार से; चॆयतु अमैत्ताऩ्–सम्पन्न किये। ७२१

शशकरूप के कलंक से रहित (कलंकहीन) चन्द्र सदृश श्वेत-छत्र के अधिपति जनक महाराज! इनके पूर्वज एक राजा थे, जिन्होंने सागर-मेखला पृथ्वी को करतलामलक के समान अपने वश में करके विधिवत एक सहस्र दुष्कर अश्वमेध यज्ञ सुसंपन्न किये; जिससे देवेन्द्र भी भयभीत हो उठे थे। (ये कौन हैं, विदित नहीं होता। सूर्यकुल में एक नहुष हो गये थे और शायद उनकी इसमें चर्चा है। वाल्मीकी में नहुष, अंबरीष के पुत्र कहे गये हैं)। ७२१

चन्दिरनै वॆन्ऱानु मुरुत्तिरनैच् चायत्तानुम्
तुन्दुवॆनुन् दानवनैद् चुडुशरत्तार् ऱुणित्तानुम्
वन्दकुलत् तिडैवन्द रगुवॆन्बान् वरिशिलैयाल्
इन्दिरनै वॆन्ऱुदिशै यिरुनान्गुज् जॆरुवॆन्ऱान् 722

चन्तिरनै वॆन्ऱानुम्–चन्द्र को युद्ध में जीतनेवाले एक राजा; उरुत्तिरनै–रुद्र को; चायत्तानुम्–हरानेवाले एक; तुन्तु ऍनुम् तानवनै–"धुन्धु" नामक दानव को; चटचरत्ताल् तुणित्तानुम्–आग्नेय अस्त्रों से खण्डित कर मिटानेवाले; वन्त कुलत्तिडै–ये जिस कुल में आये, उस कुल में; वन्त–जो जनमे; रकु ऍन्पान्–रघु संज्ञित राजा; वरि चिलैयाल्—बन्धन-युक्त अपने धनुष से; इन्तिरनै वॆन्ऱु–इन्द्र को हराकर; तिचै इरु नान्कुम्–दिशायें, दो के चार, (आठों) में; चॆरु वॆन्ऱान्–युद्ध में विजय पायी। ७२२

इनके पूर्वज चन्द्रजित दिलीप थे; रुद्रविजयी भगीरथ थे। धुंधु नामक राक्षसहन्ता धुंधुमार और अष्ट-दिग्विजयी और इन्द्र को हरानेवाले रघु भी इन्हीं के वंश में जनमे थे। (चन्द्र ने देवगुरु बृहस्पति की पत्नी के साथ दुर्व्यवहार किया। असुर चन्द्र के साथी बने। देवों ने उनके साथ युद्ध किया तो उनको हारकर भागना पड़ा। तब दिलीप ने देवों के पक्ष में मिलकर असुरों को हराया। चन्द्र को जीतकर चन्द्रजित बने। स्कन्द-पुराण की सनत्कुमार-संहिता में उक्त वृत्तांत के अनुसार रुद्र-विजयी राजा भगीरथ थे। भगीरथ ने अश्वमेध यज्ञ के सिलसिले में अश्व को भ्रमण के लिए भेजा। षण्मुख ने उसे हर लिया और उनके पिता रुद्र उनके साथ मिल आये। भगीरथ ने उनको हरा दिया। धुंधु एक राक्षस था जो महर्षि उत्तंग को कष्ट देता रहा। कुवलयाश्व नामक राजा ने 'धुंधु' को मारा और धुंधुमार की संज्ञा के अधिकारी बने। रघु ने आठों दिशाओं में जाकर विजय पायी थी। उसी क्रम में रघु ने पूरवी दिशा के पालक इन्द्र को भी हराया। ७२२

※ विल्लॆन्नु नॆडुवरैयाल् वेन्वॆन्नुङ् गडल्कलक्कि
ऍल्लॆन्नु मणिमुरुव लिन्दुमदि यॆनुन्दिरुवै
अल्लॆन्नु मणिनिऱत्त वरियॆन्न वयनॆन्बान्
मल्लॆन्नुन् दिरळ्पुयत्तुक् कणियॆन्न वैत्तानै 723

अयन् ऍन्पान्–अज नामधारी राजा के; विल् ऍन्नुम् नॆटु वरैयाल्–धनुषरूपी बड़े (मन्दर) पर्वत से; वेन्तु ऍन्नुम् कटल् कलक्कि–राजाओं के समूहरूपी (क्षीर-) सागर को मथकर; ऍल् ऍन्नुम् मणि मुरुवल्–उज्ज्वल मुक्ता सदृश दाँतोंवाली; इन्तुमति ऍनुम् तिरुवै–इन्दुमति नामक श्री (सदृश) देवी को; अल् ऍन्नुम् अणि निऱत्त—अन्धकार-सम सुन्दरवर्ण; अरि ऍन्न–हरि के समान; मल् ऍन्नुम् तिरळ् पुयत्तुक्कु–मल्लयुद्धाकांक्षी अपनी भुजाओं के लिए; अणि ऍन्न–शृंगार के रूप में; वैत्तान्–(रानी बनाकर) रख लिया। ७२३

फिर अज नाम के राजा भी इनके ही कुल के थे। उन्हें स्वयंवर में इन्दुमती ने वरा। पर राजा लोग लड़ने आये। अज ने उनको हरा दिया। राजा ने क्षीरसागर के समान राजाओं के समूह को मथकर (तितर-बितर कर) जैसे विष्णु ने सागरोद्भवा लक्ष्मी को अपनाया, वैसे ही इन्दुमती को अंगीकृत कर लिया। (अज ब्रह्मा का भी नाम है; विष्णु का भी)। ७२३

अयन्पुदल्वन् ऱयरदन्नै यऱियादा रिल्लयवन्
पयन्दकुलक् कुमररिवर् तमैयुळ्ळ परिशॆल्लाम्
नयन्दुरैत्तुक् करैयेऱ नान्मुहऱ्कु मरिदाम्बल्
इयन्तुवैत्त कडैत्तलैया याऩऱिन्द पडिकेळाय् 724

पल् इयम् तुवैत्त–विविध वाद्य जहाँ बज रहे हैं; कटै तलैयाय्–वैसे राजद्वार वाले; अयन् पुतल्वन्–अज के पुत्र; तयरतनै–दशरथ को; अऱियातार्–न जानने-वाले; इल्लै–नहीं हैं; अवन् पयन्त–उनके जनाये; कुलक् कुमरर् इवर् तमै–कुलदीपक इनके सम्बन्ध में; उळ्ळ परिचु ॲलाम्–विद्यमान सब विशिष्टताएँ; नयन्तु उरैत्तु–चाव के साथ वर्णन कर; करै एऱल्–पार पाना; नान् मुकऱ्कुम् अरितु आम्–चतुर्मुख के लिए भी कठिन है; यान् अऱिन्तपटि–(जिस प्रकार) मैं जानता हूँ उस प्रकार (कहता हूँ); केळाय्–सुनिये। ७२४

हे जनक, जिनके राजद्वार पर विविध वाद्य बजते हैं! राजा अज के पुत्र दशरथ हैं; उनके सम्बन्ध में अज्ञ कोई नहीं है। उनके श्रेष्ठ पुत्र, इनकी महानताएँ, पूर्णरूप से, ध्यान के साथ वर्णन करना हो तो, उस कार्य में पार पाना चतुर्मुख के लिये भी दुस्साध्य है। जैसे मैं जानता हूँ, वैसे कहता हूँ, सुनिये। ७२४

❀ तुऩियिऩ्ऱि युयिर्कळिप्पच् चुटराऴिप् पडैवॆय्योन्
पऩिवॆऩ्ऱ पडियॆन्नप् पहैवॆन्ऱु पडिहाप्पोन्
तऩुवऩ्ऱित् तुणैयिल्लान् ऱरुमत्तिन् कवचत्तान्
मनुवॆऩ्ऱ नीदियान् महविऩ्ऱि वरुन्दुवान् 725

तरुमत्तिन् कवचत्तान्–धर्म ही जिनका कवच था या (जो धर्म के कवच थे); मनु वॆऩ्ऱ नीतियान्–मनु से भी श्रेष्ठ नीतिमान; तनु अन्ऱि तुणै इल्लान्–धनु के अलावा कोई और सहायता (जिनको) नहीं (आवश्यक) थी; चुटर् आऴि पटै वॆय्योन्–किरणरूपी चक्रायुध वाले; पनि वॆन्ऱ पटि ॲन्न–(जिस तरह) हिम को हराते हैं उसी प्रकार; पकै वॆन्ऱु–शत्रुओं को हराकर; उयिर् तुनि इन्ऱि कळिप्प–जीवों को (प्रजाजनों को) बिना दुख के सुख-भोगी रहने देकर; पटि काप्पोन्–पृथ्वी का पालन करनेवाले; मक इन्ऱि वरुन्तुवान्–बिना पुत्र के दुखी थे। ७२५

ये दशरथ धर्म-रक्षक और धर्म-रक्षित (धर्म-कवच) हैं। मनु से भी बढ़कर (या मनु ही कहलाने योग्य) नीतिमान हैं। अप्रतिम धनुर्धर हैं।

किरणमाली के उठते ही जैसे कुहरा लुप्त हो जाता है वैसे ही इनके युद्ध के लिए उठते ही शत्रुगण भाग जाते हैं। उनके पालन में राज्य के सभी जीव विना किसी दुख के, सुख से रहते हैं। लेकिन वे पुत्र-भाग्य के विना दुखी थे। ७२५

शिलैक्कोट्टु नुदऱ्कुदलैच् चॅङ्गनिवाय्क् करुनॆडुङ्गण्
विलैक्कोट्टुम् पेरल्हुल् मिन्नुडङ्गु मिडैयारै
मुलैक्कोट्टु विलङ्गॆन्ऱु तॊडर्न्दणुहि मुन्वन्द
कलैक्कोट्टुप् पॆयर्मुनियाऱ् ऱुयर्नीङ्गक् करुदिनान् 726

चिलै कोटु नुतल्–धनु के समान (वक्र) आकारवाला ललाट; चॅम् कनि वाय्–लाल (बिंब) फल सदृश मुख (अधर); करु नॆटु कण्–काली, लम्बी आँखें; विलैक्कु ओट्टुम् पेर् अलकुल–दाम पर दिया जानेवाला विशाल भग; मिन्नुटङ्कुम् इटैयारै–बिजली के समान लचकनेवाली कटि, इनसे युक्त (वेश्या) स्त्रियों को; मुलै कोटु विलङ्कु ॲन्ऱु–स्तनरूपी सींगों के जानवर, समझकर; तॊटर्न्तु अणुकि–पीछा करते हुए पास आकर; मुन् वन्त–(राजा रोमपाद) के सामने आये हुए; कलै कोटु पॆयर् मुनियाल्—हरिण-शृंग के कारण प्रसिद्ध महर्षि (ऋश्यशृंग) द्वारा; तुयर् नीङ्क करुतिनान्—चिन्ताविमुक्त होना चाहा। ७२६

तब उन्होंने सोचा—धनुसमललाट, बिंबाधर, और काली आयत आँखें इनसे युक्त सर्वांगसुन्दरी और विक्रेय जघनवाली वेश्याओं को सींगों वाले जानवर समझकर, उनके साथ जो रोमपाद के राज्य में आये थे उन ऋष्यशृंग ऋषि द्वारा पुत्रकामेष्टि कराऊँ। ७२६

तार्हात्त नऱुङ्गुञ्जित् तनयर्हळॆन् ऱवमिन्मै
वार्हात्त वनमुलैयार् मणिवयिऱु वाय्त्तिलराल्
नीर्हात्त कडल्पुडैशूळ् निलङ्गात्ते नॆन्निऱ्पिन्
पारहात्तऱ् कुरियारैप् पणिनीयॆन् ऱडिपणिन्दान् 727

तार् कात्त नऱु कुञ्चि–(पुष्प-)माला से अलंकृत सुगन्धित केशवाले; तनयर्कळ्–पुत्र (प्राप्त करना); ॲन् तवम् इन्मै–मेरे (तप-प्राप्त) भाग्य में नहीं है; वार् कात्त वनम् मुलैयार्—कंचुकी-बद्ध उरोजोंवाली मेरी पत्नियाँ; मणि वयिऱु वाय्त्तिलर्–(गर्भ-धारणकर) सुन्दर पेटवाली नहीं बनीं; नीर् कात्त—नीर-रक्षित; कटल् पुटै चूऴ्–समुद्र से घिरी हुई इस भूमि की; कात्तेन्–रक्षा करता रहा; ॲन्निन् पिन्–मेरे बाद; पार् कात्तऱ्कु उरियारै–पृथ्वी का पालन करनेवाले पुत्रों को; नी पणि ॲन्ऱु–आप प्राप्त करायें, ऐसा; अटि पणिन्तान्–चरणों पर विनत हुए। ७२७

राजा दशरथ ने उनसे प्रार्थना की, मैंने योग्य तप नहीं किया है। अतः पुत्रवान होने का मेरा भाग्य नहीं रहा। उसी कारण मेरी कंचुकीवद्ध उरोजोंवाली पत्नियाँ गर्भ धारण नहीं करतीं। मैं बहुत दिनों से इस समुद्र-मेखला पृथ्वी का परिपालन करता आया हूँ। मेरे

बाद इसका पालन करने के लिए योग्य पुत्र पैदा हों—इसकी कृपा कीजिये। यह कहकर राजा ने उनके चरणों पर नमस्कार किया। ७२७

अव्वुरैकेट् टम्मुनियु मरुळ्शुरन्द वुवहैयनाय्
इव्वुलह मन्ऱिमऱ् ऱॅव्वुलह मिनिदळिक्कुम्
शॅव्विियिळञ् जिऱुवर्हळैत् तरुहिन्ऱे निनित्तेवर्
वव्विनुहर् पॅरुवेळ्विक् कुरियवॅलाम् वरुहॅन्ऱान् 728

अ उरै केट्टु—वह कथन सुनकर; अ मुनियुम्—वह मुनि भी; अरुळ् चुरन्त—कृपापूर्ण; उवकैयन् आय्—आनन्दयुक्त होकर; इ उलकम् अन्ऱि—इस लोक के अलावा; मऱ्ऱु अ उलकुम्—अन्य सभी लोकों को; इतितु अळिक्कुम्—सुखपूर्वक परिपालित करनेवाले; चॅव्वि इळम् चिऱुवर्कळै—योग्य बालकों को; तरुकिन्ऱेन्—दिला दूंगा; तेवर् वव्वि नुकर्—देव (जिसमें) हविर्भाग लेकर अशन करें उस; पॅरु वेळ्विक्कु—बड़े यज्ञ (को करने) के लिए; उरिय अलाम्—आवश्यक सभी (सामग्रियाँ); इति वरुक—अभी आ जायँ; ऍन्ऱान्—कहा। ७२८

ऋषि ने राजा की प्रार्थना सुनी तो उन्हें आनन्द हुआ। करुणा उपजी। 'यह एक लोक क्या ? सभी लोकों के रक्षण में समर्थ और योग्य पुत्र पैदा होंगे। इसका मैं उपाय करूँगा। अब एक बड़े यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्रियाँ अभी मँगाइये। उस यज्ञ में हम देवों को हवि देंगे जिसको वे स्वीकार करेंगे'। ७२८

कादलरैत् तरुवेळ्विक् कुरियवॅलाम् कडिदमैप्प
मादवरिऱ् पॅरियोनु मऱ्ऱदनै मुऱ्ऱुवित्तान्
शोदिमणिप् पोऱ्कलत्तिऱ् चुदैयनैय वॅण्शोऱोर्
बूदगणत् तरशेन्दि यननिन्ऱुम् बोन्ददाल् 729

कातलरै तरु वेळ्विक्कु उरिय ऍलाम्—पुत्र दिलानेवाले यज्ञ के लिए आवश्यक सब; कटितु अमैप्प—शीघ्र व्यवस्था करके; मऱ्ऱु—उसके बाद; मा तवरिल् पॅरियोनुम्—महान तपस्वियों में श्रेष्ठ, (ऋष्यश्रृंग) ने भी; अतनै मुऱ्ऱुवित्तान्—उसको सुसम्पन्न कराया; ओर् पूत कणत्तु अरचु—एक भूत-गण-राज; चोति मणि पॊन् कलत्तिल्—उज्ज्वल मणिमय स्वर्ण-पात्र में; चुतै अनैय—सुधा सदृश; वेण् चोऱु—श्वेत अन्न को; एन्ति—लेकर; अनल् निन्ऱुम्—यज्ञाग्नि से; पोन्ततु—बाहर आया। ७२९

पुत्रेष्टि के लिए सभी (स्थान, वस्तुएँ आदि का) प्रबंध शीघ्र किया गया। ऋष्यश्रृंग ने यज्ञ संपन्न कराया। तब यज्ञाग्नि से एक भूत-राज अपने हाथ में एक स्वर्ण-मणि-पात्र लेकर प्रकट हुआ। उस पात्र में अमृत के समान श्वेत अन्न था। ७२९

पॊन्निन्मणिप् परिहलत्तिऱ् पॊलिहिन्ऱ विन्नमुदॆप्
पन्नुमऱैप् पॊरुडेरन्द पॆरियोन्ऱन् पणियिनाल्

तन्ननैय निरैकुणत्तुत् तयरदनु मुरैयाले
नन्नुदलार् मूवरुक्कु नालुकू रिट्टळित्तान् 730

तन् अनैय–अपने समान जो स्वयं ही थे; निरै कुणत्तु–सम्पूर्ण सद्गुणी; तयरततुम्–दशरथ भी; पन्नुम्—पाठ-योग्य; मरै पॉरुळ् तेर्न्त–वेदों के अर्थ को खूब जाननेवाले; पॅरियोन् तन् पणियिन्नाल्–महात्मा की आज्ञा के अनुसार; पॉन् इन् मणि परिकलत्तिल्–स्वर्णरचित मनोरम मणि-जड़ित पात्र में; पॉलिकिन्र–रहनेवाले; इन् अमुतै–मधुर उस अन्न को; मुरैयाले–यथाक्रम; नल् नुतलार् मूवरुक्कुम्–मनोहर ललाटवाली तीनों रानियों को; नालु कूरु इट्टु–चार भाग बनाकर; अळित्तान्–दिया। ७३०

वेदज्ञ ऋषि ने सर्व-गुण-संपन्न महाराजा दशरथ से, जिनके समान जो स्वयं हैं, बताया कि इसे अपनी पत्नियों को दीजिये। महाराज ने भी उसको चार भागों में बाँटकर सुन्दर ललाटवाली अपनी पत्नियों को उनके पद के अनुसार यथाक्रम प्राशन करा दिया। ७३०

❀ विरिन्दिडुती विनैशॅय्द वॅव्वियती विनैयालुम्
अरुङ्गडयिन् मरैयरैन्द वरञ्जॅयद वरत्तालुम्
इरुङ्गडहक् करतलत्तिव् वॅळुदरिय तिरुमेतिक्
करुङ्गडलैच् चॅङ्गनिवायक् कवुशलैयॅन् पाळ्पयन्दाळ् 731

विरिन्तिट्टु–व्याप्त; तीविनै–बुरे पाप के; चॅय्त–कृत; वॅव्विय तीविनैयालुम्–भयंकर बुरे कर्म (पाप) के कारण; अरु–श्रेष्ठ; कटै इल्–अनन्त; मरै अरैन्त–वेदों में कथित; अरम् चॅय्त अरत्तालुम्–पुण्य के किये पुण्य-प्रताप से; इरु कटकम् कर तलत्तु–श्रेष्ठ बाहुवलयधारी; ॲळुत अरिय तिरुमेनि–जिनका चित्र बनाना दुर्लभ है, ऐसे श्रीशरीर वाले; इ करु कटलै–इन नीलेसागर (सागरोपम) को; चॅम् कनि वाय्–लाल बिम्बफल-सम मुखवाली; कवुचलै ॲन्पाळ्–कौसिल्या नाम की देवी ने; पयन्ताळ्–जनाया। ७३१

इसके फलस्वरूप अरुणबिंबाधरा कौसिल्या देवी ने सुन्दर और श्रेष्ठ बाहुवलयधारी, चित्रणदुर्लभ सुन्दर रूपधर, और नीलसागरोपम श्रीरामचंद्र को जन्म दिया। श्रीराम का जन्म, पाप को दूर करने और धर्म के संस्थापनार्थ हुआ है। अब संसार में व्याप्त रहे पापों को अपने पाप का फल भुगतना पड़ेगा और अनंतवेदोक्त धर्मों को अपने सुकृत पुण्य का फल भोगने का समय आ गया था। ७३१

❀ तळ्ळरिय पॅरुनीदित् तनियारु पुहमण्डुम्
पळ्ळमॅनुन् दहैयानैप् परदनॅनुम् पॅयरानै
ॲळ्ळरिय गुणत्तालु मॅळिलालु मिव्विरुन्द
वळ्ळलैये यनैयानैक् केहयर्होन् महळ् पयन्दाळ् 732

तळ्ळ अरिय–दुर्निवार; पॅरु नीति–श्रेष्ठ नीतिरूपी; तनि आरु–अनुपम नदियों

के; पुक–गिरने से; मण्टुम्–भरे रहे; पळ्ळम् ॲन्नुम् तकैयात्तै–महासागर कहलाने योग्य; ॲळ्ळ अरिय–अनिन्द्य; कुणत्तालुम्–श्रेष्ठ गुणों में; ॲऴिलालुम्–(और) सुन्दरता में; इव् इरुन्त–यहाँ विराजमान; वळ्ळलैये अन्नैयात्तै–उदार प्रभु (श्रीराम) के ही सदृश; परतन् ॲन्नुम् पॆयरात्तै–भरत नामधारी को; केकयर् कोन् मकळ् पयन्ताळ्–केकयतनया ने जनाया। ७३२

भरत नाम के पुत्र को केकयपुत्री ने जन्म दिया। वे भरत ऐसे सागर (के समान) कहे जा सकते हैं जिनमें जाकर समस्त अटल नीति-नदियाँ मिल जाती हैं। (प्रकीर्तित नीतिमान थे भरत।) वे अपने अनिन्द्य सद्गुणों और सुन्दरता में इन उदार प्रभु श्रीरामचन्द्र के ही समान हैं। ७३२

अरुवलिय तिऱलिन्नरा यऱङ्गॊडुक्कु मडलरक्कर्
वॆरुवरुतिण् डिऱलारै विल्लेन्दि वरुमेरुप्
परुवरैयु नॆडुवॆळ्ळिप् परुप्पदमुम् बोल्वार्हळ्
इरुवरैयु मिव्विरुवर्क् किळैयाळु मीन्ऱॆडुत्ताळ् 733

अरु–दुर्द्धर्ष; वलिय तिऱलिन्नराय्–अति बलिष्ठ; अऱम् कॆटुक्कुम्–धर्मनाशक; अटल् अरक्कर्–विरोधी राक्षस; वॆरुवरु–जिनसे भयभीत हैं; तिण् तिऱलारै–उन सुदृढ़ बलवानों को; विल् एन्ति वरुम्–धनुष लेकर आनेवाले; मेरु परु वरैयुम्–मेरु के बड़े पर्वत को; नॆटु वॆळ्ळि परुप्पतमुम्–(और) बड़े चाँदी के पर्वत को; पोल्वार्कळ्–समानता करनेवालों को; इरुवरैयुम्–दोनों को; इ इरुवर्क्कु इळैयाळुम्–(कौसिल्या, कैकेयी) दोनों की छोटी (सुमित्रा) ने; ईन्ऱु ऍटुत्ताळ्–जन्म दिया। ७३३

कौशल्या और कैकेयी दोनों से छोटी रानी सुमित्रा ने अजेय और बलिष्ठ शत्रु राक्षसों के मन में भय उत्पन्न कर सकनेवाले, धनुर्धर मेरु पर्वत और कैलाश पर्वत के समान दिखनेवाले लक्ष्मण और शत्रुघ्न दोनों को जन्म दिया। (धनुर्धर पर्वत-अप्राप्य, कल्पित उपमा है। इससे लगता है कि लक्ष्मण स्वर्ण वर्ण थे और शत्रुघ्न श्वेत रंग के।)। ७३३

कलैयायुम् पेरुणर्विऱ् कलैमहट्कुन् दलैवराय्च्
चिलैयायुन् दनुवेदन् दॆव्वरैप्पोऱ् पणिशॆय्यक्
कलैयाऴिक् कदिर्त्तिङ्ग ळुदयत्तिऱ् कलित्तोङ्गुम्
अलैयाऴि यॆन्नवळर्न्दार् मऱैनान्गु मन्नैयार्हळ् 734

मऱै नान्कुम् अन्नैयार्कळ्–वेद चतुष्टय सदृश वे; कलै आयुम् पेर् उणर्विल्–शास्त्रान्वेषण के श्रेष्ठ विवेक में; कलैमकट्कुम्–सरस्वतीदेवी के भी; तलैवर् आय्–गुरु होकर; चिलै आयुम् तनुवेतम्–धनुर्विद्या का प्रतिपादक धनुर्वेद (के); तॆव्वरै पोल्–विजित शत्रु के समान; पणि चॆय्य–सेवा-टहल करते; कलै आऴि–कलायुक्त वर्तुल; कतिर् तिङ्कळ्–उज्ज्वल चन्द्र के; उतयत्तिन्–उदय पर; कलित्तु ओङ्कुम्–गर्जन के साथ उठनेवाली; अलै आऴि ॲन्न–लहरोंवाले सागर के समान; वळर्न्तार्–बढ़े (चन्द्रोदय-गुरु की कृपा, उससे वे शास्त्रविद्या और धनुर्विद्या के ज्ञान में बढ़े।) ७३४

वे चारों पुत्र चारों वेदों के समान पले। शास्त्रानुशीलन में वे सरस्वती देवी के भी नायक (गुरु) हैं। धनुर्विद्या के विषय में स्वयं धनुर्वेद ही विजित शत्रु के समान उनकी सेवा करता है। ऐसे वे, पूर्ण कलाओं के साथ वर्तुल और प्रकाशमय चन्द्र के उदय होने पर जैसे समुद्र गरजते हुये बढ़ता है वैसे (गुण, सुन्दरता, आकार, कुशलता आदि में) वर्धित हुए। (ध्वनि से चंद्र गुरु की कृपा और गुरु का सान्निध्य है।)। ७३४

तिऱैयोडु मरशिऱैञ्जुञ् जऱिहऴऱ्काऱ् ऱयरदऩाम्
पॊऱैयोडुन् दॊडर्मऩत्ताऩ् पुदल्वरॆऩुम् पॆयरेकाण्
उऱैयोडु नॆडुवेला युबनयऩ विदिमुडित्तु
मऱैयोडु वित्तिवरै वळर्त्तातुम् वशिट्टऩ्गाण् 735

उऱै ओटम्–म्यान में रहनेवाले; नॆट्टु वेलाय्–लम्बे भालेवाले; अरचु–अनेक राजा; तिऱैयोटुम्–राजस्व-सह; इऱैञ्चुम्–जिन (चरणों) की वन्दना करते हैं; चॆऱि कऴल् काल्–उन वीरता-प्रदर्शक पायलवाले चरणों के; तचरतऩ् आम्–दशरथ नामधारी; पॊऱैयोटुम् तॊटर् मऩत्ताऩ्–क्षमाशील मन के राजा के; पुतल्वर् ऍऩुम् पॆयरे–पुत्र, नाममात्र के लिए; उपनयऩम् विति मुटित्तु–उपनयन संस्कार कराकर; मऱै ओटुवित्तु–वेदाध्ययन कराकर; इवरै वळर्त्ताऩुम्–इनके पालन-पोषण करनेवाले; वचिट्टऩ्–वसिष्ठ जी (ही थे)। ७३५

कोश-निहित भालाधारी जनक! (शत्रु नहीं रहे, इसलिए भाला कोश के अन्दर ही रहता है।) ये पुत्र, दशरथ के, जिनके पायलधारी चरणों में अनेक राजा आकर दण्डवत करते हैं और जो क्षमाशील हैं, पुत्र तो हैं पर वह दायित्व नाम मात्र का रह गया। क्योंकि विधिवत उपनयन आदि संस्कार पूरा करके वेदाध्ययन आदि कराकर इनको पालनेवाले तो वसिष्ठ जी ही हैं। ७३५

ईङ्गिवरा लॆऩ्वेळ्विक् किडैयूऱु कडिदियऱ्ऱुम्
तीङ्गुडय कॊडियोरैक् कॊल्विक्कुञ् जिऩ्दयऩायप्
पूङ्गऴला युडऩ्कॊण्डु वऩम्बुक्केऩ् पुहामुऩ्ऩम्
ताङ्गरिय पेराऱ्ऱऱ् ऱाडहैये तलैप्पट्टाळ् 736

पू कऴलाय्–सुन्दर पायलधारी; ऍऩ् वेळ्विक्कु–मेरे यज्ञ के लिए; इटैयूऱु कटितु इयऱ्ऱुम्–बाधाएँ, सहसा डालनेवाले; तीङ्कु उटैय–दुष्टतापूर्ण; कॊटियोरै अत्याचारी (राक्षसों) को; ईङ्कु–यहाँ के; इवराल्–इनके द्वारा; कॊल्विक्कुम् चिन्तैयऩ् आय–मरवाने का विचार रखनेवाला बनकर; उटऩ् कॊण्टु–साथ लेकर; वऩम् पुक्केऩ्–वन में आया; पुका मुऩ्ऩम्–प्रवेश करने के पहले ही (करते-करते); ताङ्क अरिय–दुर्वह; पेराऱ्ऱल्–बड़ी बलशालिनी; ताटकैये–ताड़का ही; तलैप्पट्टाळ्–पहली विरोधिनी बनी सामने आयी। ७३६

सुन्दर पायलधारी जनक! अपने यज्ञ को अनेक तरह की बाधाएँ

पहुँचानेवाले दुष्कर्मी क्रूर राक्षसों को इनके द्वारा मरवाने का विचार करके मैं दशरथ के पास गया। उनकी अनुमति से इन्हें लेकर वन में आया। ज्योंही मैंने वन में प्रवेश किया त्योंही सबसे पहले दुर्द्धर्ष बलशालिनी ताड़का ही सामने आयी। ७३६

※ अलैयुरुवक् कडलुरुवत् ताण्डहैतन् नीण्डुयरन्द
निलैयुरुवप् पुयवलियै नीयुरुव नोक्कैया
उलैयुरुवक् कनलुमिळ्हद् टाडहैतन् नुरमुरुवि
मलैयुरुवि मरमुरुवि मण्णुरुविर् ऱोरुवाळि 737

ऐया–राजन्; अलै उरुवु–लहर-व्याप्त; अ कटल् उरुवत्तु–उस सागर-सम रूपवान; आण् तकै तन्–पुरुषश्रेष्ठ के; नीण्टु उयरन्त–लम्बी और उन्नत; निलै उरुवम्–अचल सुन्दर; पुयम् वलियै–भुजाओं के प्रताप को; नी उरुव नोक्कु–आप खूब ध्यान देकर देखिये; ओरु वाळि–एक बाण; उलै उरुवम्–भट्ठी की सी दीप्त; कनल् उमिळ्–आग उगलनेवाली; कण्–आँखों की; ताटकै तन् उरम् उरुवि–ताड़का का वक्ष भेदकर; मलै उरुवि–पर्वत भेदकर; मरम् उरुवि–वृक्ष भेदकर; मण् उरुविऱ्ऱु–पृथ्वी में घुसा। ७३७

महाराज! तरंगों से व्याप्त सागर के रंगवाले इन पुरुषश्रेष्ठ की लम्बी उन्नत, मनोरम और सुगठित भुजाओं के बल की महिमा देखिये। इनका एक ही शर, भट्ठी की जलती आग के समान आँखोंवाली ताड़का के वक्ष में घुसा; उसको भेदकर बाहर निकला, फिर वह सामने के पर्वत को और वृक्ष को भेदकर बाहर आया और धरती में घुस गया। ७३७

शॅक्कर्निऱत् तॅरिहुञ्जिच् चिरक्कुवैहळ् पॊरुप्पॅन्न
उक्कनवो मुडिविल्लै योरम्बि नॊडुमरक्कि
मक्कळिलङ् गॊरुवन्बोय् वान्पुक्कान् मऱ्ऱॊरुवन्
पुक्कविड मऱिन्दिलेन् पोन्दनॅन्न् विन्नैमुडित्ते 738

चॅक्कर् निऱत्तु–लाल रंग के; ऍरि कुञ्चि–जलती आग के समान केशवाले; चिरम् कुवैकळ्–शिरों की राशियाँ; पॊरुप्पु ऍन्न–पर्वतों के समान; उक्कनवो–जो कटकर गिरे; मुटिवु इल्लै–(उनका) अन्त तो नहीं; अङ्कु–वहाँ; अरक्कि मक्कळिल्–राक्षसी के पुत्रों में; ऑरुवन्–(सुबाहु) एक; ओर् अम्पिनॊटुम्–एक शर से; पोय्–मरकर; वान् पुक्कान्–परलोक पहुँच गया; मऱ्ऱॆयवन्–दूसरा (मारीच); पुक्क इटम् अऱिन्तिलेन्–प्रवेश-स्थान मैंने नहीं जाना; ऍन् विनै मुटित्तु–अपना (यज्ञ-)कार्य पूरा कर; पोन्तनॅन्–इधर आया (मैं, इनके साथ)। ७३८

राजकुमार राम के शरों से जो अग्नि-सम लाल शिखावाले राक्षसों के सिर कट कर गिरे, और जिन सिरों की पर्वत-सम राशियों के ढेर हुए, उनका अन्त ही नहीं था। उनके एक शर से ताड़का का एक पुत्र सुबाहु मरकर आकाशलोक चला गया। दूसरा कहाँ गया! मैं नहीं जानता। मेरा यज्ञ पूरा हुआ और मैं इनके साथ यहाँ आया। ७३८

आयन्दोर्क्कु मुणर्वरिय वयर्केयु मऱिवरिय
कायन्देवि नुलहनैत्तुङ् गडलोडु मलैयोडुम्
तीयन्देरच् चुडुहिर्कुम् पडैक्कलङ्गळ् शॆय्दवत्ताल्
ईन्देनुम् मननुमुट्क विवर्केवल् शॆय्हुन्वाल् 739

आयन्तोर्क्कुम्–(युद्ध-विद्या-) विशारदों के लिए भी; उणर्वु अरिय–जो ज्ञान-गम्य नहीं; अयर्क्कुम्–ब्रह्मा के लिए भी; अऱिवु अरिय–समझने में दुर्लभ; कायन्तु एविन्–कोप करके चलाने पर; उलकु अनैत्तुम्–सारे लोकों को; कटलोटुम् मलैयोटुम्–समुद्रों और पर्वतों के साथ; तीयन्तु एऱ–पूर्णरूप से भस्म करते हुए; चुटुकिर्कुम्–जला सकनेवाले; पटैक्कलङ्कळ्—अस्त्र-शस्त्र (जो मैंने तप करके प्राप्त किये थे); चॆय् तवत्ताल्–अपने कृत तप के कारण; ईन्तेनुम्–प्रदान करनेवाला मैं भी; मनम् उट्क–लज्जित होऊँ ऐसा; इवर्कु–इनको; एवल् चॆय्कुन–सेवा करते हैं। ७३९

इनको मैंने अपने सारे अस्त्र दे दिये। वे अस्त्र मुझे अपनी तपस्या के प्रभाव से ही मिले थे। मैंने उनको दिया—वह भी अपने तप की महिमा के कारण ही। वे अस्त्र-शस्त्र धनुर्विद्या-विशारदों के लिए भी अगम हैं। ब्रह्मा के लिए भी दुर्गम हैं। वैर के साथ चलाने पर वे सारे संसार को मय समुद्र व पर्वत के जला सकनेवाले हैं। वे उनकी जैसी सेवा करते हैं उसको देखकर स्वयं मुझे लज्जा होती है। मैं उनका इतना अच्छा प्रयोग नहीं जानता था। (जनक के मन में जो सुकुमार राजकुमार के धनुर्बल में शंका हो सकती थी उसके निवारणार्थ महर्षि ने यह बात कही।)। ७३९

❀ कोदमन्ऱन् पन्निक्कु मुन्नैयुरुक् कॊडुत्तदिवन्
पोदुवॆन्ऱ वॆन्नप्पॊलिन्द पॊलङ्गळऱ्कार् पॊडिहण्डाय्
कादलॆन्ऱ नुयिर्मेलु मिक्करियोन् पालुण्डाल्
ईदिवन्ऱन् वरलाऱुम् पुयवलियु मॆन्नवुरैत्तान् 740

कोतमन् तन् पन्निक्कु–गौतम की पत्नी को; मुन्नै उरु कॊटुत्ततु–पूर्वरूप दिया; इवन्–इनके; पोतुवॆन्ऱतु ऎन्न–कमल को हराया, ऐसा; पॊलिन्त–शोभित; पॊलम् कळल्—स्वर्ण-पायल-धारी; काल्–चरणों की; पॊटि–धलि; कण्टाय्–जान लीजिये; ऎन् तन् उयिर् मेलुम्–अपने प्राणों से बढ़कर; इ करियोन् पाल्–इन नील-वर्ण प्रभ पर; कातल् उण्टु–प्रेम (भक्ति) है; इवन् तन् वरलाऱुम्–इनका चरित्र; पुयम् वलियुम्—भुज-बल भी; ईतु–उपरोक्त यह है; ऎन्न उरैत्तान्–यह कहा। ७४०

जनक! गौतम की पत्नी देवी अहिल्या का प्रस्तर-रूप दूरकर पूर्व निजी रूप दिया, इन्हीं के सुन्दर कंकणधारी चरणों की धूलि ने ही, वह भी ध्यान कर लीजिये। इन पर मुझे अपने प्राणों से अधिक प्यार है, मेरी इन पर भक्ति है। इनका वृत्तांत, और भुजबल मैंने आपको

बता दिया। विश्वामित्र ने अपनी बात समाप्त की। (महर्षि ने क्रम से श्रीराम की महत्ता बताकर अन्त में उनके अवतार-रहस्य की ओर भी संकेत कर दिया।)। ७४०

12. कार्मुहप्पडलम् (कार्मुक पटल)

***माऱ्ऱम्या दुरैप्पदु माय विऱ्कुनाऩ्, तोऱ्ऱवा वॆंतमऩऩ् दुळङ्गु हिऩ्ऱदाल्**
नोऱ्ऱऩ णङ्गयु नॉय्दि तैयऩ्विल्, एऱ्ऱुमे लिडर्क्कड लेऱ्ऱ मॆंऩ्ऱऩऩ् 741

माऱ्ऱम् यातु उरैप्पतु–उत्तर क्या देना है; मायम् विल्कु–मायापूर्ण इस धनु से; नाऩ् तोऱ्ऱवाऱु–मैं हार गया; अंत–यह सोच; मतम् तुळङ्कुकिऩ्ऱतु–मेरा मन अधीर है; ऐयऩ्–ये प्रभु; विल् नॉय्तिऩ् एऱ्ऱुमेल्–धनुष को अनायास चढ़ा देंगे; इटर् कटल् एऱ्ऱुम्–(तो मुझे) संकट-सागर के तीर पर चढ़ा देंगे; नङ्कैयुम् नोऱ्ऱतळ्–कुमारी भी सफलव्रता होगी; अंऩ्ऱतऩ्–कहा। ७४१

जनक ने अपनी चिन्ता कही। महर्षे! मैं क्या उत्तर दूँ? मैं इसी धनुष के कारण विफल-संकल्प हो गया। यह धनुष मायावी लगता है (क्योंकि कोई अब तक यह धनुष उठाकर झुका नहीं पाया है) यह सोचकर मेरा मन अधीर है। हाँ, आपके श्रीराम इसको अनायास चढ़ा देंगे तो (आपके कथनों से ऐसा लगता है) मैं भी चिन्ता-सागर पार कर जाऊँगा और मेरी पुत्री सीता भी सफलव्रत हो जायगी। ७४१

***अंऩ्ऱऩ तॆऩ्ऱुदऩ् ऩॆंदिर्निऩ् ऱारैयक्, कुऩ्ऱुऱऴ् वरिशिलै कॊणर्मि ऩीण्डॆंऩ**
नऩ्ऱॆंऩ वणङ्गिऩर् नाल्व रोडिऩर्, पॊंऩ्ऱिणि कारमुहच् चालै पुक्कऩर् 742

अंऩ्ऱतऩ्–यह कहकर; एऩ्ऱु–संकल्प करके; तऩ् ॲतिर् निऩ्ऱारै–अपने सामने खड़े रहे लोगों को; अ–उस; कुऩ्ऱु उऱऴ्–पर्वततुल्य; वरि चिलै–बन्धनयुक्त धनु को; ईण्टु कॊणर्मिऩ्–यहाँ ले आओ; अंत–आज्ञा देने पर; नाल्वर्–चार सेवक; नऩ्ऱु अंत–अच्छा कहकर; वणङ्कितर्–नमस्कार करके (जय जीव कहकर); ओटितर्–भागे; पॊंऩ् तिणि–स्वर्णमय; कार्मुकम् चालै–कार्मुकागार में; पुक्कऩर्–पहुँचे। ७४२

जनक ने यह कहकर, धनु को मँगाने के इरादे से, सामने स्थित सेवकों से कहा कि पर्वततुल्य उस कार्मुक को इधर ले आओ। चार आज्ञाकारी सेवकों ने जो वहाँ खड़े थे, जय जीव कहकर नमस्कार किया और वे दौड़े और स्वर्णमय धनु के आगार में पहुँचे। ७४२

पुक्कऩ रवर्हळैप् पॊरुन्द नोक्कियिम्
मुक्कणऩ् विल्लिऩै मॊय्म्बि नाऱ्ऱलो
डिक्कणत् तळित्तिरॆंऩ् ऱॆम्मै याळुडै
मिक्कुऱु शऩहऩुम् विळम्बि ऩाऩॆंऩ्ऱार् 743

पुक्कतर्–पहुँचे वे; अवर्कळै–उनको (जो वहाँ रहे); पॊरुन्त नोक्कि–अर्थ के साथ देखकर; ऎम्मै आळ् उटै(य)–हमारे स्वामी; मिक्कु उरु चतकन्–सम्मान्य जनक ने; इ मुक्कणन् विल्लिनै–इस त्रिनेत्र (शिवजी) के धनु को; मॊय्म्पिन् आऱ्ऱलोटु–बल लगाकर कुशलता के साथ; इ कणत्तु–इसी क्षण; अळित्तिर्–ले आओ; ऎन्ऱु–यह; विळम्पितान्–(आज्ञा) कही; ऎन्ऱार्–बोले। ७४३

वहाँ पहुँचकर उन्होंने वहाँ रहे वीरों को राजा की आज्ञा सुनायी। "हमारे स्वामी, सम्मान्य राजाधिराज, जनकजी ने, इस त्रिनेत्र परमेश्वर के धनुष को बल लगाकर कौशल के साथ अभी वहाँ ले आने की आज्ञा दी है"। ७४३

❀उरुवलि यानैयै यॊत्त मेनियर्, शॆऱिमयिर्क् कल्लॆनत् तिरण्ड तोळिनर्
अऱुपदि नायिर रळवि लाऱ्ऱलर्, तऱिमडुत् तिडैयिडै तण्डिऱ् ऱाङ्गिनर् 744

उरु वलि–अति बलिष्ठ; यानैयै ऒत्त मेनियर्–गज-सम शरीरवाले; चॆऱि मयिर्–घने रोंगटोंवाले; कल् ऎन तिरण्ट–प्रस्तर के समान (कठोर) पुष्ट; तोळिनर्–हाथवाले; अळवु इल् आऱ्ऱलर्–अपार शक्तिवाले; अरुपतिनायिरर्–साठ सहस्र; इटै इटै तऱि मटुत्तु–बीच-बीच में बल्ले देकर; तण्टिन्–उन डाँडों के सहारे; ताङ्कितर्–ढो लाये। ७४४

उनकी बात सुनकर साठ सहस्र वीर उद्यत हो गये। वे अति बली गज के समान शरीरवाले थे और रोंगटे भरे और प्रस्तर-सम कठोर हाथों-वाले थे। अपार शक्तिशाली वे, धनुष के नीचे यत्र-तत्र बड़े डाँड लगाकर उनके सहारे धनु को ढोकर ले गये। (वाल्मीकी में पाँचसहस्र वीरों की बात ही है और वे 'अष्टचक्रा मंजूषा' में धनुष को लाये। तमिऴ में अरु पतिनायिरम् का— "आधा दस हज़ार" अर्थ भी लगाया जा सकता है। तब पाँच सहस्र ठीक हुआ। लेकिन साठ सहस्र वाले अर्थ को ही अधिक मान्यता दी जाती है।)। ७४४

❀नॆडुनिल महण्मुदु हाऱ्ऱ निन्ऱुयर्, तडनिमिर् वडवरै तानु नाणुऱ
इडमिलै युलहॆन्न वन्द वॆङ्गणुम्, कडलपुरै तिरुनह ररैत्तुक् काणवे 745

नॆटु निलम् मकळ्–विशाल भूमि की देवी (के); मुतुकु आऱ्ऱ–पीठ का दर्द दूर करते; निन्ऱु उयर्–स्थिर और उन्नत; तटम् निमिर्–गरिमापूर्ण; वट वरै तानुम्–मेरुपर्वत भी; नाण् उऱ–लजाता; कटल् पुरै तिरुनकर्—सागर-सम (विशाल और समृद्ध) श्रीनगर; ऎङ्कणुम्–सब जगह; इरैत्तु–गर्जन करते हुए; काण–देखते; उलकु इटम् इलै ऎन–संसार में स्थान नहीं हो ऐसा; वन्तत्तु–(वह धनुष) आया। ७४५

धनुष वहाँ से हटा तो भूदेवी को पीठ की पीड़ा से निवारण मिला। उस धनु को देखकर स्वयं मेरु पर्वत भी (जिसका ही बना यह शिवधनुष है) लाज का अनुभव करने लगा। विशालता और समृद्धता में सागर के समान रहनेवाली उस मिथिला-नगरी में सभी लोग कोलाहल मचाते हुए

आकर देखने लगे। संसार में स्थान कहाँ है? ऐसा संदेह उत्पन्न करते हुए वह धनुष आया। ७४५

शङ्गॉडु शक्करन् दरित्त शॅङ्गयच्, चिङ्गवे ऱल्लनॆ लिदनैत् तीण्डुवान्
ॲङ्गुळ नॊरुवनिन् ऱेऱ्ऱि निच्चिलै, मङ्गैतन् ऱिरुमणम् वाळ्ळु मालॆन्बार् 746

चङ्कोटु चक्करम् तरित्त–शंख के साथ चक्र धारण करनेवाले; चॅम् कै–सुन्दर बाहु; अ–वे; चिङ्कम् एऱु अल्लनॆल्–पुरुषसिंह (श्रीविष्णु) नहीं तो; इतनै तीण्टुवान्–इसका स्पर्श करनेवाले; ॲङ्कु उळन्–कहाँ हैं; ऑरुवन् निन्ऱु–वही एक खड़े होकर; इ चिलै एऱ्ऱिन्–यह धनुष (पर डोरी) चढ़ायेंगे तो; मङ्कै तन् तिरुमणम्–कुमारी जी का विवाह; वाळ्ळुम्–सम्पन्न होगा; ॲन्पार्–(कुछ लोग) कहते। ७४६

लोग आपस में बोलने लगे। कुछ लोगों ने कहा कि पाञ्चजन्य शंख और सुदर्शन चक्र के धारण करनेवाले नरकेसरी श्रीविष्णु के सिवा, इस धनु को झुकानेवाले कौन हैं, कहाँ हैं? वे स्वयं आकर धनुष पर डोरी चढ़ा लेंगे, तभी कुमारी सीताजी का विवाह सम्पन्न होगा। (साफ़ है कि लोगों के मन में दिव्यदंपती का भान हो गया है। तो भी मानवीय अज्ञता स्वाभाविक है और वह आशंका और संशय की जननी है।)। ७४६

कैदवन् दनुवॆन्नल् कनहक् कुन्ऱॆन्बार्
शॅय्ददत् तिशैमुहन् ऱीण्डि यन्ऱुतन्
मॊय्दवप् पॅरुमयिन् मुयऱ्चि यालॆन्बार्
ॲय्दवन् यावनो वेऱ्ऱिप् पण्डॆन्बार् 747

तनु ॲन्नल्–(इसको) धनु कहना; कैतवम्–कैतव है; कनकम् कुन्ऱु–कनक (मेरु) पर्वत है; ॲन्पार्–कहते; अ तिचै मुकन्–वह दिशामुख (ब्रह्मा); चॅय्ततु–निर्मित है; तीण्टि अन्ऱु–हाथ लगाकर नहीं; तन्–अपने; मॊय्तवम्–पूर्ण तपस्या; पॅरुमैयिन् मुयऱ्चियाल्–और बहुत प्रयत्न से; ॲन्पार्–कहते; पण्टु–प्राचीन समय में; एऱ्ऱि–इस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर; ॲय्तवन् यावनो–चलानेवाला कौन था; ॲन्पार्–कहते। ७४७

कुछ लोग कहते कि इसको धनुष कहना धोखा है। 'यह स्वर्णमेरु है'। "ब्रह्मा का, विना हाथ से स्पर्श किये, निर्मित है; उनकी पूर्ण तपस्या और गुरु प्रयत्न के प्रभाव से रचा है।" "पहले इसको लेकर प्रत्यंचा चढ़ायी किसने थी?"। ७४७

❀ तिण्णॆण्डु मेरुवैत् तिरट्टिऱ् ऱोवॆन्बार्
अण्णल्वा ळरविनुक् करश नोवॆन्बार्
वण्णवान् कडल्पण्डु कडैन्द मत्तॆन्बार्
विण्णिड नॆडियविल् वीळ्न्द दोवॆन्बार् 748

तिण् नॅटु मेरुवै–सुदृढ़ और बड़े मेरुपर्वत को; तिरट्टिऱ्ऱो–उठाकर धनु बनाया गया क्या; अण्णल् वाळ अर विनुक्कु–गौरव और शोभायुक्त सर्पों का; अरचत्तो–राजा है क्या; ऍन्पार्–कहते; पण्टु–पहले; वण्णम् वान् कटल्–(श्वेत-) रंग के विशाल सागर को; कटैन्त मत्तु–जिससे मथा गया वह मथानी; ऍन्पार्–कहते; विण् इटु–आकाश में बननेवाला; नॅटिय विल्–लम्बा (इन्द्र-) धनुष; वीऴ्न्ततो–(भू पर) गिर पड़ा क्या; ऍन्पार्–कहते। ७४८

"क्या यह सुदृढ़ और बड़े मेरु पर्वत का धनुष-रूप है ?" "श्रेष्ठ और भासमान उरगों का राजा है ?" "क्या यह वह मथानी है जिसके सहारे क्षीरसागर मथा गया था ?" "क्या आकाश से दीर्घ इन्द्रधनुष नीचे गिरा पड़ा है ?"। ७४८

※ ऍन्निदु	कॉणर्हवॅन्	ऱियम्बि	नानॅन्बार्
मन्नव	रुळर्कॉलो	मदिकॅट्	टारॅन्बार्
मुन्नैयूऴ्	विनैयिनान्	मुडिक्क	लामॅन्बार्
कन्नियु	मिच्चिलै	काणु	मोवॅन्बार् 749

इतु कॉणर्क–यह लाओ; ऍन्ऱु इयम्पिनान्–यह राजा ने कहा; ऍन्–क्यों; ऍन्पार्–कहते; मति कॅट्टार्–बुद्धिहीन; मन्नवर् उळरो–(दूसरे) राजा हैं क्या; ऍन्पार्–कहते; मुन्नै ऊऴ् विनैयिनाल्–पूर्वपुण्य से; मुटिक्कलाम्–यह सम्पन्न किया जा सकता है; ऍन्पार्–कहते; इ चिलै–यह धनुष; कन्नियुम् काणुमो–कन्या (सीता) देख चुकी होगी क्या; ऍन्पार्–कहते। ७४९

"राजा ने इसे लाने की आज्ञा अब क्यों दी है ?" "हमारे राजा के समान जड़मति कोई है ?" "क्या यह कभी झुकाया जा सकता है ?" "हाँ, विधि प्रबल रही तो कोई उठा सके !" "क्या इसको सीताजी ने देखा होगा" ? ('जड़मति' उनके उद्देश्य में भी कहा जा सकता है जो धनुष उठाकर वीर्यशुल्का सीताजी को प्राप्त करने की इच्छा से आ गये हों। क्या सीताजी ने देखा होगा ? —इसका मतलब है सीता इस धनु की दुर्द्धर्षता देखकर क्या-क्या समझती होंगी ? या क्या सीताजी इस धनुष को उठते देखेंगी भी ?)। ७४९

इच्चिलै	युदैत्तकोऌ	किलक्कम्	यादॅन्बार्
नच्चिलै	नङ्गैमे	ऌाट्टुम्	वेन्दॅन्बार्
निच्चय	मॅडुक्कुङ्गॉ	ऌेमि	यानॅन्बार्
शिऌ्चिलर्	विदिशॅय्द	तीमै	यामॅन्बार् 750

इ चिलै–इस धनु के; उतैत्त कोल् कु–प्रेषित शर के लिए; इलक्कम् यातु–निशान क्या है; ऍन्पार्–कहते; वेन्तु–हमारे राजा (ने); न चिलै–गुरु धनुष को; नङ्कै मेल् नाट्टुम्–राजकुमारी के दाँव के रूप में रखा है; ऍन्पार्–कहते; नेमियान्–चक्रधारी; निच्चयम् ऍटुक्कुम् कोल्–अवश्य आरोपण कर लेंगे क्या;

ऍन्पार्–कहते; चिऱ्चिलर्–अन्य कुछ; विति चॅय्त तीमै आम्–विधि की बुराई है; ऍन्पार्–कहते । ७५०

"इस धनुष से निकले बाण का लक्ष्य क्या हो सकता है ?" "राजा ने इस गुरु-धनु को सीताजी के लिए दाँव रखा कैसे ?" "क्या चक्रपाणी भी इसको झुका सकेंगे, निश्चित रूप से ?" इस तरह कई एक कई प्रकार से बोल रहे थे। और कुछ लोगों ने कहा कि "यह विधि की करतूत है।" । ७५०

❀ मॉय्त्तनर् रॅन्नण मॉऴिय मन्नन्मुन्
उय्त्तनर् निलमुडु हुळुक्किक् कीऴुऱ
वॅत्तनर् वाङ्गुनर् याव रोवॅन्नाक्
कैत्तलम् विदिर्त्तनर् कण्ड वेन्दरे 751

मॉय्त्तनर्–जुटे आये; इन्नणम् मॉऴिय–(लोग) ऐसा कहते, तब; मन्नन् मुन्–राजा के सामने; उय्त्तनर्–लाकर; निलम् मुतुकु–भूमि की पीठ; उळुक्कि–धँसकर; कीऴ् उऱ–नीची हो जाय, ऐसा; वॅत्तनर्–(वीरों ने) रखा; कण्ट वेन्तर्–देखनेवाले राजाओं ने; वाङ्कुनर् यावरो–आरोपण करनेवाले कौन हैं; ऍन्ना–यह सोचकर; कैतलम् वितिर्त्तनर्–करतल पटके । ७५१

इस तरह कहते हुए लोग एकत्र हो आये। तब वीरों ने उस धनुष को ले जाकर राजा के सामने रखा। भूतल भी उसके भार से धँस गया। इस धनुष को देख राजा लोगों ने 'इसको कौन उठा सकेगा ?' यह कहा और नैराश्य प्रकट करते हुए अपने हाथ पटके । ७५१

❀ पोतह मन्नैयवन् पॉलिवु नोक्कियव्, वेदनै तरुहिन्ऱ विल्लै नोक्कित्तन्
मादिनै नोक्कुवान् मनत्तै नोक्किय, कोदमन् कादलन् कूऱन् मेयिनान् 752

पोतकम् अन्नैयवन्–कलभसदृश (श्रीराम) को; पॉलिवु नोक्कि–शालीनता देखकर; वेतनै तरुकिन्ऱ–वेदना देनेवाले; अ विल्लै–उस धनुष को; नोक्कि–देखकर; तन् मातितै–अपनी पुत्री (की स्थिति); नोक्कुवान्–सोचनेवाले को; मनत्तै नोक्किय–मन को देखनेवाले; कोतमन् कातलन्–गौतम के प्रिय (पुत्र) ने; कूऱल् मेयिनान्–कहना प्रारम्भ किया । ७५२

तब राजा जनक ने कलभसम श्रीराम की उत्फुल्ल शोभा देखी; सबमें खटका उत्पन्न करते रहे धनुष को देखा और अपने मन में सीता के भाग्य के सम्बन्ध में सोचा। तब उनकी दृष्टि और चिन्ता का तात्पर्य समझकर गौतम के पुत्र शतानन्दजी बोले । ७५२

इमैयविल् वाङ्गिय वीशन् पङ्गुऱै, उमैयिनै यिहऴ्न्दन नॆन्न वोङ्गिय
कमैयऱु शिनत्तनिक् कार्मु हङ्गॉळाच्, चमैयुऱु तक्कनार् वेळ्वि शारवे 753

इमैयम् विल् वाङ्किय–हिमालय को धनु बनाकर लेनेवाले; ईचन्–शिव;

पङ्कु उऱै–अपने एक पार्श्व में रही; उमैयिनै–उमादेवी को; इकऴ्न्ततन्–अपमानित किया (दक्ष ने); ॲन्ऩ–यह सोचकर; ओङ्किय–उठे हुए; कमै अऱ्ऱ चिनत्तन्–अक्षम क्रोधी बनकर; इ तत्ति कार्मुकम् कॊळा–इस अद्वितीय कार्मुक को लेकर; चमै उऱु–कलुषमन; तक्कऩार्–दक्ष प्रजापति की; वेळ्वि—यागशाला में; चार–पहुँचे, तब । ७५३

"हिमालय (मेरु) पर्वत का ही धनु बनाया गया था। 'मेरे ही शरीर के एक भाग, देवी उमा को दक्ष ने अपमानित किया था' यह सुनकर परमेश्वर इस अद्वितीय धनुष को लेकर उनकी यज्ञशाला में गये। दक्ष प्रजापति के मन में शिवजी के प्रति कलुष था। ७५३

उक्कन पल्लॊडु करङ्ग ळोडिऩर्, पुक्कऩर् वाऩवर् पुहाद शूऴल्हळ्
तक्कऩल् वेळ्वियिऱ् ऱळलु माऱिऩ, मुक्कणॆण् डोळवन् मुनिवु माऱिऩान् 754

तक्कन् नल् वेळ्वियिल्–दक्ष के उत्कृष्ट यज्ञ में; वाऩवर्–देवों के; पल्लॊटु–दांतों के साथ; करङ्कळ् उक्कन–हाथ टूटकर गिरे; ओटिऩर्–भागे; पुकात चूऴल्कळ्–अप्रविष्ट स्थानों में; पुक्कऩर्–जाकर घुसे; तऴलुम् माऱिऩ–अग्नियाँ नष्ट हुयीं; मुक्कण्–तीन नेत्र; ॲण् तोळ्–आठ हस्तवाले; अवन्–वे देव; मुनिवु माऱिऩान्—क्रोध-विमुक्त हुए। ७५४

शम्भु ने देवों पर प्रहार किया। अनेक के हाथ और दाँत टूटकर गिर गये। वे भागे और जहाँ साधारण रूप से वे प्रवेश नहीं कर सकते थे उन स्थानों में जाकर छिप गये। अग्नि भी नष्ट हो गयी। पश्चात् त्रिनेत्री और अष्टहस्त शिवजी का क्रोध शान्त हुआ। ७५४

ताळुडै वरिशिलै शम्बु वुम्बर्तम्, नाळुडै मैयिऩवर् नडुक्क नोक्कियिक्
कोळुडै विडैयऩान् कुलत्तुट् टोन्ऱिय, वाळुडै युऴवनोर् मन्ऩन् पाल्वैत्तान् 755

उम्पर्–देवता लोग; तम् नाळ् उटैमैयिन्–अपने जीवन के दिन शेष रहने के कारण; अवर् नटुक्कम् नोक्कि–उनका विकम्पन देखकर; चम्पु–शिवजी ने; ताळ् उटै–श्रेष्ठ डाँड़ के; वरि चिलै–और बन्धनयुक्त धनुष को; इ–इन; कोळ् उटै विटै–वलयुक्त ऋषभ के; अऩ्ऩान् कुलत्तुळ्–समान (जनक) के कुल में; तोन्ऱिय–जनमे; वाळ् उटै उऴवन्–तलवार के कृषक; ओर् मन्ऩन् पाल्–एक राजा के पास; वैत्तान्–सौंप दिया। ७५५

तब शम्भु ने देवों को इस धनुष से डरते हुए देखकर उसको पुरुष-ऋषभ इन महाराजा जनक के पूर्वज, एक राजा के पास सौंप दिया। देवों की आयु शेष थी। अतः शिवजी का क्रोध थमा! (वाळ् उटै उऴवन्-तलवार का कृषक—यह प्रयोग तमिळ में प्रचलित है। वैसे ही शब्द-कृषक भी कहते हैं। अर्थ क्रमशः तलवार का धनी और कवि है। वाल्मीकी में कार्मुक-वृत्तान्त को जनकजी कहते हैं। यह भी बताया गया है कि शिवजी ने उस धनुष को जनक के पूर्वज देवरात के हाथ में दिया। उस

कार्मुक के सम्बन्ध में ऐसा भी वृत्तान्त है—विश्वकर्मा ने दो धनुष गुरु-प्रयत्न के द्वारा बनाये। एक शिवजी के हाथ लगा और दूसरा विष्णु के पास पहुँचा। शिव ने उसी के सहारे त्रिपुर को जलाया था। फिर बल-परीक्षा में शिव और विष्णु प्रवृत्त हुए। विष्णु के एक हुँकार से शिव के धनुष में हल्का दर्रा पड़ गया। वही देवरात के पास आया।)। ७५५

कार्मुह वलियैयान् कऴरल् वेण्डुमो, वार्शडै यरनिहर् वरद नीयलाल्
यारुळ रऱिबव रिवऱ्कुत् तोन्ऱिय, तेर्मुह वल्हुलाळ् शॅव्वि केळॅन्ना 756

कार्मुकम् वलियै–कार्मुक की शक्ति को; यान् कऴरल् वेण्टुमो–मुझे कहना चाहिए क्या; वार् चटै–लम्बी जटावाले; अरन् निकर् वरत—हर-सदृश वरद; नी अलाल्–आपको छोड़कर; अऱिपवर् यार् उळर्–जान सकनेवाले (दूसरे) कौन हैं; इवन् कु–इनको; तोन्ऱिय–(पुत्री के रूप में) प्रकट हुई; तेर् मुकम् अल्कुलाळ्–रथ-मध्य सम नितंबों वाली; चॅव्वि–(सीताजी का) सुवृत्तांत; केळ्–सुनिये; ॲन्ना–कहकर। ७५६

शम्भु के इस धनुष की शक्ति के बारे में मैं क्या कहूँ? लम्बी जटावाले शिवजी सदृश वरद मुनिवर! आपको छोड़ उसका महत्व कौन जान सकता है? रहा वह; अब जनक की पुत्री के रूप में जो प्रकट हुई, इन सुन्दर नितंबिनी सीताजी का वृत्तान्त सुनिये। ७५६

इरुम्बनैय करुनॅडुङ्गोट् टिणैयेऱ्ऱिन् पणैयेऱ्ऱ
पॅरुम्बियलिऱ् पळिक्कुनुहम् पिणैत्तदनो डिणैत्तीर्क्कुम्
वरम्बिन्मणिप् पॊऱ्कलप्पै वयिरत्तिन् कॊळुमडुत्तिट्
टुरम्बॊरुवि निलम्वॆळ्विक् कलहिल्पल शालुळुदेम् 757

वेळ्विक्कु–यज्ञ के लिए; इरुम्पु अनैय—लौहसम; करु नॅटु कोट–बलिष्ठ और दीर्घ सींगों के; इणै एऱ्ऱिन्–(जोड़े के) दो बैलों के; पणै एऱ्ऱ–पीन; पॅरु पियलिल्–बड़े कन्धों पर; पळिङ्कु नुकम्–स्फटिक जुआ; पिणैत्तु–जोतकर; अततोटु इणैत्तु ईर्क्कुम्–उसके साथ मिलकर खिचनेवाले; वरम्पु इल्–असंख्यक; मणि पॊन् कलप्पै–रत्नजड़ित स्वर्ण हल में; वयिरत्तिन् कॊळु–हीरे की फाल; मटुत्तिट्टु–लगाकर; उरम् पॊरु इल् निलम्–कठिनता में बेजोड़ भूमि को; अलकु इल्–संख्याहीन; पल चाल्–अनेक बार; उळुतेम्–जोतीं। ७५७

हमने यज्ञ करना चाहा। उसके लिए, लौहसम सुदृढ़ सींगोंवाले ऋषभद्वय के पीन कंधों पर स्फटिक का जुआ रखकर, उस जुए से अपार मणिमंडित स्वर्ण-हल बाँधा। उस हल के नोक में हीरे की फाल लगी थी। भूमि बड़ी कठोर थी। अतः हमने कई बार जोता। ७५७

❀ उऴहिन्ऱ कॊळुमुहत्ति नुदिक्किन्ऱ कदिरिन्नॊळि
पॊळिहिन्ऱ पुविमडन्दै युरुवॆळिप्पट् टॆन्नप्पुणरि

ऑळुहिन्ऱ दॅळ्ळमुदो डॅळुन्दवळु मिळिन्दोदुङ्गित्
तॉळुहिन्ऱ नन्नलत्तुप् पॅण्णरशि तोन्ऱिनाळ् 758

उळुकिन्ऱ कॉळु मुकत्तिन्–जोतती फाल के समक्ष; उतिक्किन्ऱ कतिरिन्–उदीयमान सूर्य की सी; ऑळि पॉळिकिन्ऱ–कांति बिखेरनेवाली; पुवि मटन्तै उरु–भूदेवी का रूप; वॅळिप्पट्टतु अॅन–प्रकट हुआ, ऐसा; पुणरि अॅळुकिन्ऱ–(क्षीर-) सागर से निकलनेवाली; तॅळ् अमुतोटु अॅळुन्तवळुम्–स्वच्छ अमृत के साथ उत्पन्न (श्रीलक्ष्मी) भी; इळिन्तु–घटकर; ऑतुङ्कि–हटकर; तॉळुकिन्ऱ–नमस्कार जिनका करें; नल् नलत्तु–श्रेष्ठ सुन्दरता की; पॅण् अरचि–वे स्त्रियों में रानी (हमारी सीता); तोन्ऱिनाळ्–अवतरित हुयीं। ७५८

हल की फाल के सामने से सीताजी प्रकट हुयीं। उनका मानों उदीयमान-सूर्य की कांति के साथ प्रकट होनेवाली भूदेवी का सा रूप था। उस दिन क्षीरसागर में जो लक्ष्मी देवी उदित हुयी थीं, वे भी इनके सामने अपनी कांति में घटी सी लगतीं; हटकर दूर से इनकी विनय करतीं— ऐसी सुन्दरी और गुणपूर्णा हैं ये। ७५८

गुणङ्गळॆयॅन् कूरुवदु कॉम्बिनैच्चेर्न् दवैयुय्यप्
पिणङ्गुवन बळहिवळैत् तवञ्जॅय्दु पॅऱ्ऱदुकाण्
कणङ्गुळैया ळॅळुन्ददऱ्पिन् कदिर्वानिऱ् कङ्गैयॅनुम्
अणङ्गिळियप् पॊलिविळिन्द वाऱॊत्तार् वेऱुऱ्ऱार् 759

कुणङ्कळै–गुणों का; अॅन् करुवतु–क्या कहना; अवै–वे; कॉम्पिनै चेर्न्तु–तरुशाखा (सीता) से मिलकर; उय्य–तरने के लिए; पिणङ्कुवन–आपस में स्पर्धा करते हैं; अळकु–सुन्दरता; तवम् चॅय्तु–तपस्या करके; इवळै पॅऱ्ऱतु–इन्हें (आश्रय के रूप में) पायी; कणम् कुळैयाळ्–पृथुल कुण्डल-धारिणी; अॅळुन्ततन् पिन्–प्रकट हुई, उसके बाद; वेऱु उऱ्ऱार्–अन्य जो हैं (स्त्रियाँ); कतिर् वानिल्–सूर्य-संचार के आकाश में से; कङ्कै अॅनुम् अणङ्कु इळिय–गंगा नाम की देवी के उतर जाने पर; पॊलिवु इळन्त–शोभाविमुक्त; आऱु ऑत्तार्–नदियों के समान हो गयीं। ७५९

उनके गुणों का भी कैसा वर्णन किया जाय ? सारे अच्छे गुण, उनसे संपर्क पाकर उन्नत होने की उत्कट चाह से आपस में स्पर्द्धा कर रहे हैं। सुन्दरता ने बहुत तपस्या की तभी जाकर उसे इनका आश्रय मिला है। भारी कुण्डलधारिणी इन सीता देवी के अवतार के बाद पृथ्वी की सारी स्त्रियाँ आकाशगंगा के अवतार के बाद भूलोक की अन्य नदियों के समान प्रभाविहीन पड़ गयीं। ७५९

शित्तिरमिङ् गिदुवॊप्प दॅङ्गुण्डु शॅय्विनैयाल्
वित्तहमुम् विदिवशमुम् वॅव्वेऱे पुऱङ्गिडप्प
अत्तिरुवै यमरर्कुल मादरित्त दॅनवऱिञ
इत्तिरुवै निलवेन्द रॅल्लारु मादरित्तार् 760

अरिञ-सर्वज्ञ; चॅय् विलैयाल्-अपने करतूत से; वितृतकमुम्--विद्या-कौशल (प्रदर्शन); विति वचमुम्-विधि की अधीनता, दोनों; वेऱु वेऱे-अलग-अलग; पुऱम् किटप्प-दूर रहते हैं, तब; निलम् वेन्तर् ॲल्लारुम्-भूमिपति सब; अमरर् कुलम् अ तिरुवै आतरित्ततु-देवगणों ने उन श्रीलक्ष्मी को चाहा; ॲन्न-ऐसा; इ तिरुवै आतरित्तार्-इन (सीताजी) श्री को चाहते थे; इतु ऑप्पतु चित्तिरम्-इसके समान विचित्र बात; इङ्कु अङ्कु उण्टु-यहाँ कहाँ होगी। ७६०

सर्वज्ञ ! सभी राजाओं ने इनको प्राप्त करना चाहा। धनु लेकर कौशल दिखाना एक बात है; भाग्यवान होना दूसरी बात है। ये दोनों एक दूसरे से बिलकुल दूर हैं। यह राजा लोग नहीं मानते थे। जैसे उस दिन देवों ने श्रीलक्ष्मी देवी को प्राप्त करना चाहा वैसे ही ये राजा इनको प्राप्त करने की कामना करने लगे। यह भी कितनी विचित्र बात है ? इसके समान और कोई विचित्रता होगी क्या ? । ७६०

कलित्तानैक् कडलोडुङ् गैत्तानक् कळिऱ्ऱरशर्
ऑलित्ताळि यॅन्नवन्तु मणमॊळिन्दार्क् कॅदिरुरुत्त
पुलित्तानैक् कळिऱ्ऱुरिवैप् पोर्वैयान् पोर्विल्लै
वलित्तानॆ मङ्गैतिरु मणत्तानॆन् ऱियाम्वलित्तेम् 761

कै तातम् कळिऱु अरचर्-सूँड़ व मदजल से युक्त हाथियों के पति, राजा लोग; कलि तानै कटलोटुम्-शोरयुक्त सेना-सागर के साथ; ऑलित्तु-कोलाहल मचाते हुए; आळि ॲन्न वन्तु-सिंहों के समान आकर; मणम् मॊळिन्तार्क्कु-विवाह की बात करने लगे, उन्हें; ॲतिर्-उत्तर में; उरुत्त पुलि तानै-क्रुद्ध बाघ के चर्म को; कळिऱु उरिवै पोर्वैयान्-गजचर्म को ओढ़े हुए (शिवजी) के; पोर् विल्लै-युद्धधनु को; वलित्तानॆ-झुकानेवाले ही; मङ्कै-सीता से; तिरुमणत्तान्-विवाहनेवाले; ॲन्ऱु-यह; याम् वलित्तेम्-हमने निर्धारित कर दिया। ७६१

अनेक राजा लोग जिनके पास मत्तगज अधिक थे, अपनी सागर-सम और शोरभरी सेनाओं के साथ सिंहों के समान आये। हमने कटि में वाघ के चर्म को और उत्तरीय के रूप में गज-चर्म को धारण करनेवाले श्री शिवजी के इस धनुष को सामने रखा और निश्चित रूप से कह दिया कि इस युद्ध-चाप को जो झुकायेंगे वे ही हमारी सीता के पति बन सकेंगे। ७६१

वल्विल्लुक् काऱ्ऱार्कण् मारवेळ् वळैकरुम्बिन्
मॅल्विल्लुक् काऱ्ऱारायत् तामॅम्मै विळिहुऱ्ऱार्
कल्विल्लो डुलहळित्त कनङ्गुळैयैक् कादलित्तुच्
चॊल्विल्ला लुलहळिप्पाय् पोर्शॅय्यत् तॊडङ्गिनार् 762

चॊल् विल्लाल् उलकु अळिप्पाय्-वचनधनु से लोक-रक्षा करने में समर्थ; वल् विल्लुक्कु-कठोर धनु के सामने; आऱ्ऱार्कळ्-असमर्थ रहे; कल् विल्लोटु-इस

पर्वत-सम धनु के साथ; उलकु अळितत्त–भूमि पर घोषित; कनम् कुळैयै–भारी कुण्डलधारिणी को; कातलित्तु–चाहने से; मार वेळ् वळै–कामदेव के झुकाये; मॅल् करुम्पिऩ् विल्लुक्कुम्–कोमल इक्षु-धनु के सामने भी; आऱ्ऱार् आय्–हारकर; ताम् ॲम्मै विळिकुऱ्ऱार्–खुद हमें (युद्ध के लिए) आह्वान किया; पोर् चॅय्य तॉटङ्किऩार्–युद्ध करने लगे । ७६२

अपने वचन के प्रभाव से अनुग्रह (या निग्रह) कर सकनेवाले महर्षि! वे राजा इस शिव-धनुष को हिला नहीं सके। उसके सामने वे हार गये। इसके साथ, धनुरारोहण के शुल्क के रूप में जो सीता ठहरायी गयी थीं उनके प्रति प्रेम वे भूल नहीं सके। कामदेव के शर के आघात से वे तिलमिला उठे और उन्होंने हमको (हमारे महाराजा को) युद्ध के लिए ललकारा। ७६२

इम्मऩ्ऩऩ् पॅरुञ्जेऩै यीवदऩै मेऱ्कॊण्ड
शॅम्मऩ्ऩर् पुहऴ्वेट्ट पॊरुळेपोऱ् ऱेय्न्ददाल्
पॊम्मॅन्ऩ वण्डलम्बुम् पुरिहुऴलैक् कादलित्त
अम्मऩ्ऩर् शेऩैतम दाशैपो लायिऩवाल् 763

इ मऩ्ऩऩ् पॅरु चेऩै–इन (जनक) महाराज की विशाल सेना; ईवतऩै मेऱ्कॊण्ट–दानव्रती; पुकऴ् वेट्ट–(और उससे) कीर्ति चाहनेवाले; चॅम्मै मऩ्ऩर्–अच्छे राजा के; पॊरुळे पोल्–धन के समान; तेय्न्ततु–क्षीण हो गयी; वण्टु–भ्रमर; 'पॊम्' ॲऩ्ऩ–"भन, भन" की गुंजार के साथ; अलम्पुम्–जिसपर गुंजार करते हैं; पुरि कुऴले–बटे केशवाली (सीता) पर; कातलित्त अ मऩ्ऩर्–आसक्त उन राजा लोगों की; चेऩै–सेना; तमतु आचै पोल् आयिऩ–अपनी (उनकी) कामना के समान (वर्धित) बनी। ७६३

उस युद्ध में महाराज की विशाल सेना यशार्थी दाता राजा के अर्थ के समान क्षीण हो गयी। उन राजाओं की, जो भ्रमरावृत्त केशवाली सीता के प्रेम में मत्त थे, सेना उनकी ही कामना के समान अधिक बढ़ने लगी। (इस पद की उपमाओं से यह संकेत मिलता है कि जनक धर्म पर दृढ़ थे और सीताजी को चाहनेवाले राजाओं की संख्या अनगिनत थी।)। ७६३

मऱ्काक्कु मणिप्पुयत्तु मऩ्ऩऩिवऩ् मऴविडैयोऩ्
विऱ्काक्कुम् वाळमरिऩ् मॅलिहिऩ्ऱा ऩॆऩविरङ्गि
ॲऱ्काक्कु मुडिविण्णोर् पडैयोन्दा रॆऩ्ऩवेन्दर्
अऱ्काक्कै कूहैयॆक्कण् डञ्जिऩवा मॅऩवहऩ्ऱार् 764

मल् काक्कुम्–बलसंरक्षित; मणि पुयत्तु मऩ्ऩऩ् इवऩ्–सुन्दर भुजावाले ये महाराज (जनक); मऴविटैयोऩ्–ऋषभवाहन शिव के; विल् काक्कुम्–धनु के संरक्षण के हेतु; वाळ् अमरिऩ्–भयंकर युद्ध में; मॅलिकिऩ्ऱाऩ्–दुर्बल होते हैं; ॲऩ्ऩ–यह

समझ; इरङ्कि–सहानुभूति करके; ऑल् काक्कुम् मुटि विण्णोर्–प्रकाशमान किरीटधारी देवों ने; पटै ईन्तार् ऑत–सेना दिलाई तो; वेन्तर्–राजा लोग; काक्कै–कागदल; अल् कूकैयै कण्टु–रात में उल्लू दल को देखकर; अञ्चित आम् ऑत–डर गये जैसे; अकन्ऱार्–छोड़कर भागे। ७६४

सबल भुजाओंवाले राजा जनक ऋषभवाहन शिवजी के धनुष के गौरव के संरक्षण के हेतु युद्ध करते हैं और उसमें वे निस्सहाय हो गये हैं— यह देखकर उज्ज्वल किरीटधारी देवों ने सहायतार्थ सेना भेजी। नयी देव-सेनाओं को देखकर वे राजा, रात में उल्लू को देखकर कौओं के दल जैसे भाग जाते हैं, वैसे मैदान छोड़कर भाग गये। ७६४

अन्ऱुमुद लिन्ऱळवु मारुमिन्दच् चिलैमरुङ्गुच्
चॅन्ऱिलर् पोयॊळित्त तेरवेन्दर् तिरिन्दुमिलर्
ऑन्ऱुमिनि मणमिल्लै यॅन्ऱिरुन्दे मिवनेऱ्ऱिन्
नन्ऱुमलर्क् कुळऱ्चीदै नलम्बळुदा हादॅन्ऱान् 765

अन्ऱु मुतल् इन्ऱु अळवुम्–उस दिन से आज तक; आरुम्–कोई भी; इन्त चिलै मरुङ्कुम् चॅन्ऱिलर्–इस धनु के पास तक नहीं भटका; पोय् ऑळित्त–जाकर छिपे; तेर् वेन्तर्–रथपति राजा भी; तिरिन्तुम् इलर्–लौट भी नहीं आये; इनि मणम् ऑन्ऱुम् इल्लै–अब विवाह कभी नहीं होगा; ऑन्ऱु–यह समझकर; इरुन्तेम्– (चिन्तामग्न बैठे) रहे; इवन् एऱ्ऱिन्–ये आरोपण कर देंगे तो; नन्ऱु–मंगल होगा; मलर् कुळल्–पुष्पकेशवाली; चीतै–सीता का; नलम्–यौवन (भाग्य); पळुतु आकातु–व्यर्थ नहीं होगा; ऑन्ऱान्–(शतानन्द ने) कहा। ७६५

तब से आज तक कोई भी धनुष के पास नहीं गये। (भुक्तभोगी भी और समाचार श्रोता लोग भी भूल कर भी नहीं आये।) वे भी जो भागकर छिप गये लौटकर नहीं आये। हम चिन्तित थे कि शायद सीताजी का विवाह होगा ही नहीं। अब ये श्रीराम पधारे हैं। ये अगर धनु पर प्रत्यञ्चा चढ़ा देंगे तो सब मंगल हो जायगा। सीताजी भी विवाहिता हो जायेंगी और उनका यौवन निरर्थक नहीं होगा। ७६५

नित्तैन्दुमुनि पहर्न्दवॅला नॅऱियुन्नि यऱिवनुन्दन्
पुत्तैन्दशडै मुडितुळक्किप पोरेऱ्ऱिन् मुहम्बार्त्तान्
वत्तैन्दत्तैय तिरुमेनि वळ्ळलुमम् मादवत्तोन्
नित्तैन्ददत्तै नित्तैन्दन्द नॅडुञ्जिलैयै नोक्किनान् 766

मुनि नित्तैन्तु पकर्न्त ऑल्लाम्–(शतानन्द) मुनि ने जो सोच-समझकर कहा वह सब; अऱिवनुम्–बहुज्ञ (विश्वामित्र) ने भी; नॅऱि उन्नि–यथोचित ध्यान देकर; तन् पुत्तैन्त–अपनी शोभनेवाली; चटै मुटि तुळक्कि–जटा से अलंकृत सिर को हिलाकर; पोर् एऱ्ऱिन्–युद्ध-चतुर ऋषभ (सदृश श्रीराम) का; मुकम् पार्त्तान्–मुख निहारा; वत्तैन्त अत्तैय–चित्रलिखित से; तिरुमेनि–श्रीशरीर वाले; वळ्ळलुम्–प्रभु ने भी;

मा तवत्तोऩ्–महान तपस्वी के; नितैन्ततनै–विचार को; नितैन्तु–समझकर; अन्त नॅटु चिलैयै–उस दीर्घ धनुष को; नोक्किनाऩ्–देखा। ७६६

शतानन्द ने यह सारी अर्थगर्भित बातें खूब सोच समझकर कहीं। ज्ञानी विश्वामित्र जी ने भी पर्याप्त ध्यान देकर क्रमवार ये बातें सुनीं। उनका संकेत भी समझा। सुन्दर जटा से आवृत्त अपना सिर हिलाते हुए उन्होंने योद्धाऋषभ के समान विराजमान श्रीरामचंद्र के मुख पर भावपूर्ण दृष्टि दौड़ायी। चित्रलिखित के समान सुन्दररूप प्रभु श्रीराम ने भी उन महान तपस्वी के मन की बात ताड़ ली। तब उन्होंने उस दीर्घ धनुष को निहारा। ७६६

※पॊऴिन्दनॅय् याहुदि वाय्वऴि पॊङ्गि, ऍऴुन्द कॊऴुङ्गन लॅन्ऩ वॅऴुन्दाऩ्
अऴिन्ददु विल्लॅन्ऩ विण्णव रार्त्तार्, मॊऴिन्दन राशिहळ् मुप्पहै वॅन्ऱार् 767

आकुति नॅय–आहुति का घी; पॊऴिन्त वाय् वऴि–जहाँ गिरा उस स्थान से; पॊङ्कि ऍऴुन्त–प्रज्वलित उठी; कॊऴु कतल् ऍन्ऩ–घनी आग के समान; ऍऴुन्ताऩ्–उठे; विण्णवर्–देवता लोग; विल् अऴिन्ततु ऍन्ऩ–धनुष गया, कहकर; आर्त्तार्–कोलाहल कर उठे; मुप्पकै वन्ऱार्–त्रिशत्रुजयी मुनियों ने; आशिकळ् मॊऴिन्तनर्–आशीर्वचन कहे। ७६७

श्रीराम झट उठे। उनका उठना आहुति का घी पाकर अग्नि का वहीं उठना सा था। तब देवों ने, 'अब धनुष न रहेगा' यह कहकर आनन्द भरे शोर मचाये। काम क्रोध मोह-रूपी तीन शत्रुओं के विजयी मुनियों ने आशीर्वचन कहे। ७६७

※ तूय तवङ्ग डॊडङ्गिय तॊल्लोऩ्, एयवऩ् वल्वि लिऱुप्पदऩ् मुऩ्ऩम्
शेयिऴै मङ्गयर् शिन्दैतॊ ऱॅय्या, आयिरम् वल्वि लनङ्ग निऱुत्ताऩ् 768

तूय तवङ्कळ् तॊटङ्किय–पवित्र तपों को जिन्होंने अनेक बार आरम्भ किया था; तॊल्लोऩ्–उन प्राचीन (तपोवृद्ध) ऋषि से; एयवऩ्–प्रेरित श्रीराम; वल् विल्–सुदृढ़ धनुष को; इऱुप्पतऩ् मुऩ्ऩम्–तोड़ने के पूर्व; अनङ्कऩ्–मन्मथ ने; चॅम्मै इऴै–श्रेष्ठ आभरणवाली; मङ्कैयर् चिन्तै तॊऱुम्–स्त्रियों के हृदय-हृदय में; ऍय्या–(पुष्प शर) फेंकते-फेंकते; अयिरम् वल् विल्–सहस्रों प्रबल (इक्षु-) धनुओं को; इऱुत्ताऩ्–तोड़ा। ७६८

विश्वामित्र, बड़े ही उद्यमी ऋषि थे। कितनी ही बार उन्हें तप नये सिरे से आरम्भ करना पड़ा था। तपोवृद्ध उन्होंने श्रीराम को प्रेरित किया और वे धनु को भंग करने गये। उनके उसको भंग करने से पहले कामदेव को वहाँ उपस्थित सुन्दर और श्रेष्ठ आभरणालंकृता स्त्रियों पर पुष्पबाण चलाते-चलाते अनेक इक्षु-धनु तोड़ने पड़ गये। (यानी वहाँ रही रमणियाँ प्रेम विह्वल हो गयीं।)। ७६८

❀ काणु नॆंडुञ्जिलै कालवलि दॆन्बार्, नाणुडै नङ्गै नलङ्गिळर् शॆङ्गेळ्प्
पाणि यिवन्पडर् शॆङ्गै पडादेल्, वाणुदल् मङ्गैयुम् वाळ्विल ळॆन्बार् 769

काणुम् नॆंटु चिलै—हमारा देखा यह बड़ा धनु; **काल् वलितु**—कठोर बाजुओं का है; **ॲन्पार्**—कहते; **नाण् उटै नङ्कै**—लज्जा-शृंगारिता सीताजी के; **नलम् किळर्**—मनोरम; **चॆम् कॆळ् पाणि**—लाली लिए हुए हाथ; **इवन्**—इनके; **पटर् चॆम् कै**—विशाल सुन्दर हाथ; **पटातेल्**—स्पर्श नहीं करेंगे तो; **वाळ् नुतल् मङ्कैयुम्**—उज्ज्वल ललाटवाली सीताजी भी; **वाळ्वु इलळ्**—मंगलमय जीवन नहीं पायेंगी; **ॲन्पार्**—कहतीं। ७६९

वे भावना प्रभावित स्त्रियाँ कई प्रकार के भाव प्रकट करने लगीं। 'देखो, इस धनुष के बाजू कितने लम्बे हैं ?' "लज्जाशील सीताजी के सुन्दर कोमल पाणि का, इनके विशाल हाथ ग्रहण नहीं करेंगे (यानी इन दोनों का विवाह नहीं होगा) तो सीताजी का जीवन निरर्थक हो जायगा"। ७६९

करङ्गळ् कुवित्तिरु कण्गळ् पनिप्प, इरुङ्गळि ऱिच्चिलै येऱ्ऱिल नायिन्
नरन्द नरैक्कुळ् नङ्गैयु नामुम्, मुरुङ्गॆरि युट्पुह मुळ्हुदु मॆन्बार् 770

इरु कण्कळ् पतिप्प—दोनों आँखों में आँसू ढलकाते हुए; **करङ्कळ् कुवित्तु**—हाथ (अपने इष्टदेव के सामने) जोड़कर; **इरु कळिऱ्**—श्रेष्ठ गज (सदृश ये); **इ चिलै**—यह धनु; **एऱ्ऱिलन् आयिन्**—नहीं चढ़ायेंगे तो; **नरन्तम् नरै कुळल्**—कस्तूरी-गन्ध भरे केश की; **नङ्कैयुम् नामुम्**—देवी सीता और हम; **मुरुङ्कु ॲरि उळ् पुक**—सर्व-भस्मकारी अग्नि में घुसकर; **मूळ्कुतुम्**—मग्न हो जायेंगी; **ॲन्पार्**—कहतीं। ७७०

सीताजी की बहुत निकट की सखियाँ आँखों में आँसू ढलकाती हुयी हाथ जोड़कर कहतीं— ये गज-सदृश श्रीराम इस धनुष पर प्रत्यंचा न चढ़ायेंगे तो कस्तूरी लगे केशवाली सीताजी के साथ हम भी अग्नि-प्रवेश कर जायेंगी। ७७०

❀ बळ्ळल् मणत्तै महिळ्न्दनॆ नॆन्ऱाल्, कॊळ्ळॆन मुन्बु कॊडुप्पदै यल्लाल्
वॆळ्ळ मणैत्तवन् विल्लै यॆडुत्तिप्, पिळ्ळैमु निट्टदु पेदमै यॆन्बार् 771

वळ्ळल्—वदान्य ने; **मणत्तै**—विवाह को; **मकिळ्न्ततन्**—पसन्द किया; **ॲन्ऱाल्**—तो; **कॊळ् ॲन्न**—लो, कहकर; **मुन्पु**—पहले ही; **कॊटुप्पतै अल्लाल्**—देना छोड़कर; **वॆळ्ळम् अणैत्तवन्**—(गंगा की) बाढ़ को रोकनेवाले (शिवजी) का; **विल्लै ॲटुत्तु**—धनु लेकर; **इ पिळ्ळै मुन् इट्टतु**—इस बालक के सामने (झुकाने के हेतु) डालना; **पेतैमै**—जड़ता; **ॲन्पार्**—कहते। ७७१

कुछ (प्रौढ़ा) स्त्रियाँ कहतीं, दानी जनक ने सीताजी का विवाह सचमुच संपन्न करना चाहा तो करना यही चाहिए था कि उनके माँगने के पूर्व ही "ग्रहण कर लीजिये", कहकर उन्हें कन्यादान कर देते। इसके विपरीत गंगा की बाढ़ रोकनेवाले शिवजी के धनुष को विवाह की शर्त

के रूप में, बालक के सामने डालना कहाँ की बुद्धिमानी है ? यह तो निरी जड़ता है।" ('वदान्य' श्रीराम के पक्ष में भी लिया जा सकता है। 'श्रीराम यह विवाह चाहते हैं—यह जानकर कन्यादान कर देना ही बुद्धिमत्ता है।' "वॆळ्ळमणैत्तवन" का पाठांतर वॆळ्ळैमनत्तवन् है। उसका अर्थ अबोध होगा। वह जनक पर लागू है।)। ७७१

ञान मुनिक्कॊरु नाणिलै यॆन्बार्, कोनिव निऱ्कॊडि योरिलै यॆन्बार्
मानव निच्चिलै काल्वळै यानेल्, पीन तनत्तवळ् पेऱिल ळॆन्बार् 772

ञानम् (ज्ञानम्) मुनिक्कु—ज्ञानी मुनि की; ऒरु नाण् इलै—शरम कुछ नहीं है; ऍन्पार्—कहते; कोन् इवनिल्—राजा (जनक) इनसे बढ़कर; कॊटियोर् इलै—क्रूर नहीं; ऍन्पार्—कहते; मानवन्—सम्मान्य ये; इ चिलै काल् वळैयानेल्—इस धनुष के बाजू को नहीं झुकायेंगे तो; पीनम् तनत्तवळ्—पीनस्तनी (सीता); पेऱु इलळ्—भाग्यहीना हैं; ऍन्पार्—कहते। ७७२

कुछ स्त्रियाँ विश्वामित्र की निन्दा करतीं— 'ये ज्ञानी हैं पर इनमें लज्जा नहीं है'। (इतने छोटे बालक को इतने बड़े धनुष को तोड़ने के कार्य में प्रवृत्त कराते हैं।) कुछ जनकजी के प्रति रुष्ट हैं। "इनसे बढ़कर क्रूर कोई नहीं होगा।" और कुछ पछतातीं— हाय ! सम्मान्य ये श्रीराम इस धनुष को नहीं झुका पायँगे तो पीनस्तनी सीताजी सौभाग्य से वंचित हो जायँगी ! । ७७२

ॐ तोहय रिन्नन शॊल्लिड नल्लोर्, ओहै विळम्बिड वुम्ब रुवप्प
माह मडङ्गलु माल्विडै युम्बॊन्, नाहमु नाहमु नाण नडन्दान् 773

तोकैयर् इन्नन चॊल्लिट—मयूर-छटा स्त्रियाँ इस तरह कह रही थीं, तब; नल्लोर्—साधु लोगों ने; ओकै विळम्पिट—सन्तोष-वचन कहा, तब; उम्पर् उवप्प-देवगण मुदित हुए, तब; माकम् मटङ्कलुम्—शानदार सिंह; माल् विटैयुम्—श्रेष्ठ ऋषभ; पॊन् नाकमुम्—स्वर्णपर्वत (मेरु) और; नाकमुम्—गज; नाण—लजा जायें, ऐसा; नटन्तान्—डग भरे। ७७३

स्त्रियाँ ऐसी ऐसी कह रही थीं। साधु लोग संतोष के साथ उत्साह-वर्धक आशीर्वाद दे रहे थे। देवता लोग आनन्द का अनुभव कर रहे थे। तब श्रीराम शानदार केसरी, भव्यऋषभ, स्वर्णमेरु और गज को लजाते हुए आगे बढ़े। (सिंह और मेरु रूप सौष्ठव के लिए उपमायें हैं और ऋषभ गज चाल के लिए)। ७७३

ॐ आडह माल्वरै यन्नदु तन्नैत्, तेडरु मामणि शीदैयॆ नुम्बॊऱ्
चूडह वाल्वळै शूट्टिड नोट्टुम्, ऍडविळ् मालयि दॆन्नवॆ डुत्तान् 774

माल् आटकम् वरै अन्नतु तन्नै—भव्य स्वर्ण (मेरु) पर्वत सदृश उस (धनु) को; पॊन् चूटकम्—स्वर्ण की चूड़ियाँ; वाल् वळै—और उज्ज्वल (शंख के) कंकण पहनी हुई; चीतै ऍन्नुम्—सीता नाम की; तेट अरु मामणि—ढूँढकर प्राप्त न होने योग्य श्रेष्ठ

(कन्या-) रत्न को; चूट्टिट–पहनाने के लिए; नीट्टुम्–बढ़ाई हुई; एटु अविऴ् मालै इतु–विकसित दलवाली (पुष्पों की) माला है यह; ऍऩ्ऩ–मानों यह कहते हुए; ऍटुत्ताऩ्–उठाया । ७७४

वे धनुष के पास पहुँच चुके । वह धनुष स्वर्णपर्वत मेरु के समान (ललकारता हुआ) पड़ा था । लेकिन श्रीराम ने उसे इस तरह अनायास उठा लिया मानों वे स्वर्ण की चूड़ियों और शंख-कंकणों से अलंकृत दुर्लभ कन्यारत्न सीता देवी के गले पर डालने के लिए विकसित दलवाले पुष्पों की गुंथी माला को उठाकर बढ़ा रहे हों । ७७४

❀ तडुत्तिमै याम लिरुन्दवर् ताळिऩ्, मडुत्तदु नाणुदि वैत्तदु नोक्कार्
कडुप्पिऩिल् यारु मऱिन्दिलर् कैयाल्, ऍडुत्तदु कण्डऩ रिऱ्ऱदु केट्टार् 775

कैयाल् ऍटुत्ततु कण्टऩर्–हाथ से लेना देखा (जिन्होंने वे); तटुत्तु–रोककर; इमैयामल् इरुन्तवर्–पलक नहीं मारे रहे, उनमें; ताळिऩ् मटुत्ततुम्–पैरों के नीचे (एक सिरे का) रखना; नाण् नुति वैत्ततुम्–डोरे को दूसरे सिरे से बाँधना; कटुप्पिऩिल्–(कार्य के) वेग के कारण; यारुम् नोक्कार्–कोई नहीं देखते; अऱिन्तिलर्–न समझते थे; इऱ्ऱतु केट्टार्–टूटना सुना । ७७५

श्रीराम को धनुष को उठाते हुए लोगों ने देखा । वे निर्निमेष देखते ही रहे क्योंकि यह वड़ा ही विस्मयकारी कार्य हो गया था। तो भी वे, उनका उसके एक सिरे को अपने पैर के नीचे दबाना, दूसरे सिरे पर प्रत्यंचा लगाना इत्यादि काम नहीं देख पाये । क्योंकि वह सब बहुत वेग के साथ हो गया था । (वे कल्पना भी नहीं कर सके; समझ भी नहीं सके कि क्या हो रहा था ।) उन्होंने उसका टूटना ही सुना । ७७५

आरिडैप् पुहुदु नामॅन् ऱमरर्हळ् कमलत् तोन्ऱन्
पेरुडै यण्ड कोळम् पिळन्ददॆन् ऱॆङ्गि नॆन्दार्
पारिडै युऱ्ऱ तन्मै पहर्वदॆन् वारैत् ताङ्गि
वेरॅऩक् किडन्द नाह मिडियॆन्न वॆरुविऱ् ऱन्ऱे 776

अमरर्कळ्–देवता लोग; कमलत्तोऩ् तऩ् पेर् उटै(य)–कमलनिवास (ब्रह्मा) के नाम पर प्रचलित; अण्ट कोळम् पिळन्ततु–अण्ड गोल फट गया; नाम् आर् इटै पुकुतुम्–हम किनके पास शरण पायँगे; ऍऩ्ऱु–सोचकर; एङ्कि–चिन्तित होकर; नॆन्तार्–दुखी हुए; पारै ताङ्कि–भूमि का भार वहन कर; वेर् ऍऩ्ऩ किटन्त–जड़ के समान पड़ा रहा; नाकम्–शेषनाग भी; इटि ऍऩ्ऩ–वज्रपात समझकर; वॆरुविऱ्ऱु–डर गया; पार् इटै उऱ्ऱ तन्मै–भूमि पर जो हुआ उसकी स्थिति; पकर्वतु ऍऩ–कहना क्या । ७७६

घोर धनुर्भंगनाद सुनकर देव डर गये । उनको ऐसा लगा कि ब्रह्मांड ही फूट गया है । उनको इस बात की चिन्ता हो गयी कि हम किनके पास जाकर त्राण पायँगे ? उधर पाताल में रहकर भूमि को जो ढो

रहा था वह शेषनाग भी वज्रपात समझकर भयाहत हो गया। (आकाश और पाताल की यह हालत रही तो) भूलोक की बात क्या कही जाय ? (तीनों लोक डर गये)। ७७६

पूमऴै शॊरिन्दार् विण्णोर् पॊन्मऴै पॊऴिन्द मेहम्
पाममा कडल्हळ् ॲल्लाम् पन्मणि तूवि यार्त्त
कोमुनिक् कणङ्ग ळॆल्लाङ् गूऱिन वाशि कॊऱ्ऱ
नामवेऱ् चनह निन्ऱॆ नल्विनै पयन्द दन्ऱान् 777

विण्णोर्–आकाशवासियों ने; पू मऴै चॊरिन्तार्–पुष्पवर्षा कराई; मेकम् पॊन् मऴै पॊऴिन्त–मेघों ने स्वर्णवर्षा कराई; पामम् मा कटल्कळ् ॲल्लाम्–विशाल और श्रेष्ठ सभी सागरों ने; पल मणि तूवि–अनेक रत्न-राशियाँ बिखेरकर; आर्त्त–उच्चनाद कराया; को मुनि कणङ्कळ् ॲल्लाम्–अग्रगण्य सभी मुनिवरों ने; आचि कूऱिन–आशीर्वाद (के वचन) कहे; कॊऱ्ऱम्–विजयी और; नामम्–आतंकदायक; वेल्–भाले के; चनकन्–जनक ने; इन्ऱु–आज; ॲन् नल् विनै–मेरे सुकृत्य ने; पयन्ततु–फल दिया; ॲन्ऱान्–कहा। ७७७

देवों ने पुष्प वर्षा की; मेघों ने स्वर्ण बरसाये और विशाल समुद्र रत्न बिखेर कर गरज उठे। अग्रगण्य मुनि लोगों ने आशीर्वाद दिया। विजयशील और शत्रुभयकारी भालाधारी जनक ने राहत की सांस ली कि आज मेरे सुकृत सफलीभूत हुए। ७७७

मालैयु मिऴैयुञ् जान्दुञ् जुण्णमुम् वास नॆय्युम्
वेलैवॆण् मुत्तुम् पॊन्नुङ् गाशुनुण् डुहिलुम् वीशप्
पाल्वळै वयिर्ह ळार्प्पप् पल्लियन् दुवैप्प मुन्नीर्
ओल्हिळर्न् दुवावुऱ् ऱॆन्न वॊण्णहर् किळर्न्द दन्ऱे 778

ऑळ्नकर्–प्रकाशमय नगर (भर) में; पाल् वळै–श्वेत शंख; वयिर्कळ्–शृंग; आर्प्प–निनादित किए गए; पल् इयम्–विविध वाद्य; तुवैप्प–बज उठे; मालैयुम्–पुष्पमालाएँ; इऴैयुम्–और आभरण; चान्तुम्–चन्दन; चुण्णमुम्–सुगन्धचूर्ण; वाचम् नॆय्युम्–फुलेल; वेलै वॆण् मुत्तुम्–समुद्र से प्राप्त श्वेत मोती; पॊन्नुम्–स्वर्ण; काचुम्–रत्न; नुण् तुकिलुम्–महीन वस्त्र; वीच–अधिकता से देते-लेते हुए; उवा उऱ्ऱु–पूर्णचन्द्र के उगने पर; मुन्नीर्–विजली समुद्र; ओल् किळर्न्ततु ॲन्न–सघोष उठा सा; किळर्न्ततु–(संतोषनाद) खिल उठा। ७७८

नगर में भी आनन्द की लहर बढ़ चली। नगर प्रकाशमान हो गया। शंख और शृंगवाद्य स्वरित हुए। अनेक वाजे बज उठे। लोगों ने मालाएँ, आभरण, चन्दन, गुलाल, फुलेल, मोती, स्वर्ण, रत्न, महीन वस्त्र, इत्यादि वस्तुएँ वितरित कीं। पूर्ण चन्द्र के उगने पर सागर जैसे गर्जन कर उमड़ता है वैसे उस नगर भर में आनन्दरव भर उठा। ७७८

नल्लियन् महर वीणै तेनुह नहैयुन् दोडुम्
विल्लिड वाळुम् वीश वेल्हिडन् दनैय नाट्टत्
तॅल्लियन् मदिय मन्न मुहत्तिय रॅळिलि तोन्ऱच्
चॊल्लिय परुव नोक्कुन् दोहैयि नाडि नारे 779

वेल् किटन्त अनैय–वेल् (भाला) पड़ा रहा, ऐसा दिखनेवाली; नाट्टत्तु–आँखें; ॲल् इयल् मतियम् अन्न–उज्ज्वल पूर्णचन्द्र-सम; मुकत्तियर्–आननवालियाँ; नल् इयल्–सुरचित; मकर वीणै–मकराकार की वीणा के; तेन् उक–मधुर शहद (नाद) देते; नकैयुम् तोटुम्–दन्तावली और कर्णाभरणों के; विल् इट–कान्ति बिखेरते; वाळुम् वीच–तलवारों के चमकते; चॊल्लिय परुवम्–(वर्षा के लिए) कथित मौसम में; ॲळिलि तोन्ऱ–मेघों के प्रकट होने पर; नोक्कुम् तोकैयिन्–उनको देखनेवाले मोरों के समान; आटिनार्–नाचे। ७७९

स्त्रियाँ, जिनकी आँखें "वेल्" (शक्ति) के समान थीं और आनन पूर्णचन्द्र के समान थे, सुरचित वीणाएँ बजाती हुयी मेघाविर्भाव पर नाचने वाले मयूरों के समान नाच उठीं। तब उनके दांत और कर्णाभरण चमक रहे थे। उनकी आँखें भी तलवारों के समान दमक रही थीं। ७७९

उण्णऱ वरुन्दि नारिऱ् चिवन्दॊळिर् करुङ्गण् मादर्
पुण्णुऱु पुलवि नीक्किक् कॊळुनरैप् पुल्लिक् कॊण्डार्
वॆण्णिऱ मेह मेन्मेल् विरिहडल् परुहु मापोल्
मण्णुऱु वेन्दन् शॆल्वम् वऱियवर् मुहन्दु कॊण्डार् 780

उण् नऱवु–अशनयोग्य सुरा; अरुन्तिनारिन्–जो पी चुके हों उनके समान; चिवन्तु ऑळिर्–लाल होकर चमकनेवाली; करुमै कण् मातर्–काली आँखोंवाली स्त्रियाँ; पुण् उऱ पुलवि–वेदनादायक रूठन; नीक्कि–छोड़कर; कॊळुनरै–अपने पतियों को; पुल्लिक् कॊण्टार्–आलिंगनबद्ध कर लिया; वॆण् निऱम् मेकम्–श्वेत रंग के (जल-हीन) मेघ; विरि कटल्–विस्तृत सागरजल; मेल् मेल् परुकुम् आ(ऱ) पोल्–उत्तरोत्तर पीते से; वऱियवर्–अभावग्रस्त लोगों ने; मण्–इस भूमि में; उऱ–प्राह्य; वेन्तन् चॆल्वम्–राजा के धन को; मुकन्तु कॊण्टार्–बटोर लिया। ७८०

स्त्रियों की काली आँखें, सुरापीत कामातुरा होने के कारण या सुरापीत कामातुरा स्त्रियों की आँखों के समान लाली मिश्रित हो गयी थीं। उन्होंने अपने प्रेमी पतियों को पीड़ा देनेवाली अपनी रूठन को त्याग दिया और प्रेमियों को अपने आलिंगन में ले लिया। याचक लोगों ने राजा के धन-द्रव्यों को अपनी इच्छा के अनुसार, सागरजल पीनेवाले जलहीन मेघों के समान उठा लिया। ७८०

वयिरियर् मदुर गीदम् मङ्गय रमुद गीदम्
शॆयिरियर् महर याळिन् तेम्बिळि दॆय्व गीदम्

पयिर्हिळै वेयिन् गीद मॅन्ऱिवै परुहि विण्णोर्
उयिरुडै युडम्बु मॅल्ला मोवियि मॉप्प निन्ऱार् 781

वयिरियर्–गवैयों के; मतुरम् कीतम्–मधुर गीत; मङ्कैयर्–(गायिका) स्त्रियों के; अमुतम् कीतम्–सुधा-सम गीत; चॅयिरियर्–वीणावादकों के; मकर याऴ्–मकराकार की वीणा के; इऩ् तेम् पिऴि–मधुर शहद निकला सा; तॅय्वम् कीतम्–दिव्य संगीत; पयिर् किळै–नाद-जाल निकालनेवाली; वेय् इऩ् कीतम्–बाँसुरी का मधुर संगीत; अऩ्ऱ इवै–ऐसे ये; विण्णोर् परुकि–देवगण (पीकर) सुनकर; उयिर् उटै (य) उटम्पुम्–जीवंत शरीरी होकर भी; ॲल् आम् ओवियम् ऑप्प निन्ऱार्–दीप्तिमान चित्र के समान, खड़े रहे। ७८१

गवैयों का मधुर संगीत, गायिकाओं का सुधा सम संगीत, वीणावादकों का मधुर मधु सम दिव्य संगीत, विविधराग अलापनेवाली बाँसुरी का रम्य-संगीत-इन सबको ऊपर से देवों ने सुना तो निस्पंद खड़े हो गये। जीवंतशरीरी होने पर भी वे चित्रलिखित कांतियुत प्रतिमाओं के समान अचल खड़े रहे। ७८१

ऐयन्विल् लिरुत्त वाऱ्ऱल् काणिय वमरर् नाट्टुत्
तैयला रिऴिन्दु पारिन् महळिरैत् तऴुविक् कॉण्डार्
शॅय्हैयिन् वडिवि नाडल् पाडलिऱ् ऱॅळिद ऱॅऱ्ऱार्
मैयरि मलर्क्क णोक्कि यिमैत्तलु मयङ्गि निन्ऱार् 782

अमरर् नाटु तैयलार्–देवलोक की अप्सराएँ; ऐयन्–प्रभु के; विल् इऱुत्त आऱ्ऱल्–धनु तोड़ने का कौशल; काणिय–देखने के लिए; इऴिन्तु–उतरकर; पारिल् मकळिरै–भूलोक की स्त्रियों को; चॅय्कैयिन्–कृत्यों में; वटिविऩ्–रूपों में; आटल् पाटलिऩ्–नाच-गान में; तॅळितल् तेऱ्ऱार्–(पृथक) पहचान नहीं सकीं; तऴुविक् कॉण्टार्–(उनको देवांगनाएँ समझ) गले लगा लिया; मै अरि मलर् कण्–(उनकी) काजल लगी लाल डोरे युक्त आँखें; नोक्कि–देखकर; इमैत्तलुम्–पलकों के गिरते ही; मयङ्कि निन्ऱार्–चकित खड़ी रहीं। ७८२

देवांगनाएँ धनुर्भंग देखने की इच्छा से ऊपर से उतर कर मिथिला में आयी थीं। उन्होंने भूलोक की रमणियों को देखा। उनके काम में, रूप में, नाच-गाने में किसी में भी अपने से कोई पृथकत्व नहीं देख सकीं। इसलिए भ्रम में पड़कर देवांगनाएँ उनको आलिंगन कर गयीं। तब उन्होंने उनकी आँखों पर दृष्टि डाली तो पलकें गिरती उठती थीं। उसको देखकर अपनी भूल समझ गयीं और ठिठककर खड़ी रह गयीं। ७८२

तयरदन् पुदल्व नॅन्बार् तामरैक् कण्ण नॅन्बार्
पुयलवन् मेनि यॅन्बार् पूवैयुम् पौरुवु मॅन्बार्
मयलुडैत् तलह मॅन्बार् मानुड नल्ल नॅन्बार्
कयल्पौरु कडलुळ् वैहुङ् गडवुळे काणु मॅन्बार् 783

तयरतन् पुतल्वन् ऍन्पार्–दशरथ के पुत्र, कहते; तामरै कण्णन्–पुण्डरीकाक्ष; ऍन्पार्–कहते; अवन् मेति पुयल्, ऍन्पार्–उनका शरीर मेघ है कहते; पूवैयुम् पोरुवुम्, ऍन्पार्–अतसी पुष्प भी योग्य है (उपमा के लिए) कहते; मानुटन् अल्लन्–मानव नहीं; ऍन्पार्–कहते; कयल् पोरु कटलुळ् वैकुम्–मछलियों से भरे (क्षीर) सागर में रहनेवाले; कटवुळे–देवता (श्रीमन्नारायण) हैं; ऍन्पार्–कहते; उलकम् मयल् उटैत्तु–संसार भ्रम में पड़ा है; ऍन्पार्–कहते।७८३

लोग आपस में बातें करने लगे। 'दशरथ के पुत्र हैं' 'पुण्डरीकाक्ष हैं' 'मेघ श्याम हैं', 'अतसीसम हैं' "इनको संसार मनुष्य समझता है तो वह भ्रम में है", 'ये मानव नहीं हैं', "क्षीरसागर-शायी महाविष्णु ही हैं।" ऐसे अनेक विचार व्यक्त कर रहे थे। ७८३

नम्बियैक् काण नङ्गैक् कायिर नयनम् वॆण्डुम्
कॊम्बिनैक् काणुन् दोरुङ् गुरिशिऱ्कु मन्न देयाल्
तम्बियैक् काण्मि नॆन्बार् तवमुडैत् तुलह मॆन्बार्
इम्बरिन् नहरिऱ् ऱन्द मुनिवनै यिऱैञ्जु मॆन्बार् 784

नम्पियै काण–पुरुषश्रेष्ठ को देखने के हेतु; नङ्कैक्कु–हमारी नायिका के लिए; आयिरम् नयनम् वेण्टुम्–सहस्र नेत्र चाहिए; कॊम्पिनै–सुमन शाखा सी सीताजी को; काणुम् तोऱुम्–हर देखती बार; कुरिचिऱ्कुम्–राजकुमार के लिए भी; अन्नतते–वही स्थिति; तम्पियै काण्मिन्–छोटे भ्राता को देखो; ऍन्पार्–कहते; उलकम् तवम् उटैत्तु–संसार ने खूब तपस्या की है; ऍन्पार्–कहते; इम्पर्–इस लोक में; इ नकरिल् तन्त–इस पुरी में जो (इनको) लाए; मुनिवनै–महर्षि को; इऱैञ्चुम्–नमस्कार करो; ऍन्पार्–कहते। ७८४

कुछ लोग कहते-पुरुषोत्तम को तृप्ति भर देखना चाहेंगी तो सीताजी को सहस्रनयना होना होगा! क्या जानकी भी कम हैं? "पुष्पलता (सी) जानकी को देखने के लिए प्रभु श्रीराम को एक सहस्र नहीं, जितनी बार देखते हैं उतने सहस्र नेत्र चाहिए।" "छोड़ो वह बात! उनके छोटे भाई को भी देखो।" "संसार ने खूब तपस्या की है। तभी ये इस लोक में जन्म ले आये हैं।" कुछ लोग कहते—यह सब सही है। पर उन महर्षि को नमस्कार कहो जो इनको इधर लिवा लाये!। ७८४

इऱ्ऱिव णिन्न दाह मदियॊडु मॆल्लि नीङ्गप्
पॆऱ्ऱुयिर् पिन्नुङ् गाणु माशैयिऱ् चिऱिदु पॆऱ्ऱ
शिऱ्ऱिडैप् पॆरिय कॊङ्गैच् चेय्यरिक् करिय वाट्कट्
पॊऱ्ऱॊडि मडन्दैक् कप्पा लुऱ्ऱदु पुहल लुऱ्ऱाम् 785

इवण्–यहाँ; इऱ्ऱु इन्नतु आक–यह बात ऐसी रही तब; ऍल्लि–रात; मतियॊटुम्–चन्द्र के साथ; नीङ्कपपॆऱ्ऱु–बीत गई, पाकर; पिन्नुम् काणुम् आचैयिन्–(श्रीराम को) फिर एक बार देख लेने की अभिलाषा से; उयिर् चिऱितु पॆऱ्ऱु–प्राणों को थोड़ा पुनः पाकर; चिऱ्ऱ इटै–पतली कमर; पॆरिय कॊङ्कै–पृथुल उरोज; चेय्

मरि–लाल डोरों के साथ; करिय वाळ् कण्–काली तलवार सी आँखें; पॊन् तॊटि–स्वर्णकंकण, इनसे युक्त; मटन्तैक्कु–देवी का; अप्पाल् उऱ्ऱतु–तदनन्तर हुआ हाल; पुकलल् उऱ्ऱाम्–कहने लगे। ७८५

यहाँ ऐसी बातें हो रही थीं। अब सीताजी की बात देखें। रात बीत गयी। चन्द्र भी अस्त हो गया। श्रीरामदर्शनाभिलाषा ने सीताजी को थोड़ा प्राणदान दिया। उन, लघुकमर, पीनस्तनी, अरुण रेखांकित असितेक्षणा सीताजी पर क्या बीता— वह हाल अब कहेंगे। ७८५

ऊशला डुयिरि ऩोडु मुरुहुपूम् बळ्ळि नीङ्गिप्
पाशिळै महळिर् शूळप् पोयॊरु पळिक्कु माडत्
तेशिऱा मरैयिन् पॊय्हैच् चन्दिर कान्द मीऩ्ऱ
तेशुनी रळिक्कु मॆन्बूञ् जेक्कयै यरिदिऱ् चेर्न्दाळ् 786

ऊचल् आटु–झूलनेवाले; उयिरिऩोटुम्–प्राण के साथ; उरुकु–पिघलानेवाली (तपानेवाली); पू पळ्ळि नीङ्कि–पुष्पशय्या छोड़कर; पचुमै इऴै–चोखे स्वर्ण के बने आभरणोंवाली; मकळिर् चूऴ पोय्–सखियों से घिरी हुई जाकर; ऒरु पळिङ्कु माटत्तु–एक स्फटिक-प्रासाद में; एचु इल् तामरै–अमल कमल से भरे; इऩ् पॊय्कै–सुखद तड़ाग के पास; चन्तिर कान्तम् ईऩ्ऱ–चन्द्रकान्त निसृत; तेचु नीर्–स्वच्छ जल से; अळिक्कुम्–सिंचित रहनेवाली; मॆऩ् पू चेक्कैयै–कोमल सुमनशय्या में; अरितिऩ् चेर्न्ताळ्–स-आयास पहुँची। ७८६

देवी के प्राण संकट में (दोलायमान) थे। पुष्पशय्या उनको बहुत ताप दे रही थी। वे उस पर से उठीं। उनकी सखियाँ (दासियाँ) उनको घेर कर आयीं। वे धीरे-धीरे चलीं और एक स्फटिक-प्रासाद में, अमल कमलों के तड़ाग के पास बनी पुष्पशय्या पर जा लेटीं। उस शय्या को चन्द्रकांतमणि—निसृत स्वच्छ जल शीतल कर रहा था। ७८६

पॆण्णिव ळुऱ्ऱ वाऱु पेणिये करुमै यात
वण्णमु मिलैहळाले काट्टलाल् वाट्टन् दीर्न्देन्
तण्णरुङ् गमलङ्गाळॆन् ऱळिरनिऱ मुण्ड कण्णिन्
ऒण्णिऱङ् काट्टि ऩीरॆन् ऩुयिर्तर वुलोवि ऩीरे 787

तण् नऱु कमलङ्काळ्–शीतल सुगन्धित कमल; पॆण्–स्त्री में; इवण् उऱ्ऱवाऱु पेणि–(जिस हाल को) अब पहुँच गई वह हाल देखकर; करुमैयात वण्णम्–(उनका) श्यामल रंग; उम् इलैकळाले काट्टलाल्–अपने पत्रों द्वारा दिखाते हो, इसलिए; वाट्टम् तीर्न्तेऩ्–(थोड़ी) व्यथा छोड़ी; ऎऩ् तळिर् निऱम् उण्ट–मेरी आम्रपल्लव सदृश छटा पी ले, जो गई; कण्णिऩ् ऒळ् निऱम्–(उनकी उन) आँखों का सुन्दर रंग; काट्टिऩीर्–(अपने पुष्पों में) दिखाते हो; ऎऩ् उयिर् तर–मेरे प्राणों (सम उन) को देने में; उलोविऩीरे–कृपणता (क्यों) दिखाते हो। ७८७

तब सीता देवी यों कहने लगीं। शीतल और सुगन्धित कमल

लताओ ! तुमने मेरी स्थिति पर, मुझे स्त्री समझकर, रहम खायी है ! अपने पत्तों में मेरे प्रिय के रंग की छटा दिखाती हो। मैं थोड़ा स्वस्थ हुई। अपने फूलों में उनकी आँखों की शोभा दिखाती हो, जो मेरे आम्र-पल्लव के से रंग को हर ले गयीं। (उनको देखने के बाद, असफल हुयी प्रेम-मिलन की इच्छा की व्यथा से, मेरा शरीर अपना रंग खो गया।) इससे भी मेरा मन कुछ धीरज पा सका। इतना जो किया, तुम उनको लाकर, मेरे प्राणों को पूरा लौटाने में कंजूसी और आनाकानी क्यों करती हो ? । ७८७

नाणुलावु मेरुवोड़ु नाणुलावु पाणियुम्
तूणुलावु तोळुम्वाळि यूडुलावु तूणियुम्
वाणिलावि नूलुलावु मालेमार्बु मीळवुम्
काणलाहु माहिन्नावि काणलाहु मेकोलाम् 788

नाण् उलावुम् मेरुवोटु–(कन्धों की सुन्दरता के सामने) लजानेवाले मेरुपर्वत (समान धनुष के) साथ; नाण्–(और) प्रत्यंचा के साथ; उलावु–व्यवहार करनेवाले; पाणियुम्–श्रीहस्त; तूण् उलावु तोळुम्–स्तम्भ-सम कन्धे; वाळि ऊटु उला तूणियुम्–बाण जिसके अन्दर हैं, वह तूणीर; वाळ् निलाविन्–श्वेतचन्द्र-सम; नू उलावुम्–यज्ञोपवीत जिसपर डोलते हैं वह; माले मारपुम्–मालाशोभित वक्षस्थल; मीळवुम् काणल् आकुम्–पुनः देखना हो सके; आकिन्–तो; आवि–मेरा प्राण; काणल् आकुमे–देखा जा सकता है। ७८८

वे हाथ, जो उनके कंधों से लजानेवाले मेरु के समान रहनेवाले धनुष और उसकी प्रत्यंचा के साथ व्यवहार करते हैं, वे स्तंभसदृश कंधे; वह बाण भरा तरकस, वह मालायुक्त वक्षस्थल जिस पर उपवीत हिल रहा है इनको फिर देख सकूँ तो मैं जीवित रह सकती हूँ। वे ही मेरे प्राण हैं, उनको पाऊँ तभी मेरा प्राण भी पुनः मुझे मिलेगा। (सीताजी के ध्यान में श्रीराम के पृष्ठभाग की सुन्दरता अंकित है। अतः तरकस की बात कहती हैं।) । ७८८

❀ विण्डलङ्ग लन्दिलङ्गु तिङ्गळोडु मीदुशूळ्
वण्डलम्ब लङ्गरङ्गु पङ्गियोडुम् वार्शिलैक्
कॊण्डलन्ऱ्रि रण्डुकण्णिन् मॊण्डुकॊण्डॆ नावियै
उण्डदुण्डॆ नॆञ्जिनिन्रु मुण्डदॆन्रु मुण्डरो 789

विण् तलम्–आकाश तल में; कलनतु इलङ्कु–मिलकर रहनेवाले; तिङ्कळोटु–चन्द्र के साथ; मीतु चूळ्–ऊपर मँडरानेवाले; वण्टु अलमपु–भ्रमर जिसपर गुंजा करते हैं उस; अलङ्कल तङ्कु–माला का आश्रय; पङ्कियोटुम्–केश के साथ वार् विलै–लम्बे धनुष के रखनेवाले; कॊण्टल्–मेघ (सदृश) वे; अन्ऱु–उस दिन इरण्टु कण्णिन्–अपनी दोनों आँखों से; ॲन् आवियै–मेरे प्राणों को; मॊण्

ऑण्टु उण्टतु उण्टु–उठाकर पी लिया, यह सत्य है; अतु–वह; ॲन् नॅञ्चिन्–मेरे चित्त में; इन्रुम् उण्टु–अब भी (याद) है; ॲन्रुम् उण्टु–सदा (याद) रहेगा। ७८६

यह सत्य है कि उन्होंने मेरे प्राण ही पी लिये। आकाशवासी चन्द्र-समान आनन, भ्रमर जिस पर मँडराते गुंजन करते हैं, उस पुष्पमाला से अलंकृत केश, दीर्घ धनुष इनसे सुशोभित हो, श्याममेघ समान उन्होंने जिस दिन मुझे अपनी आँखों से देखा उसी घड़ी यह मेरे प्राणों का पान करने का काम हुआ। वह मुझे खूब याद है। वह हमेशा याद रहेगा भी। (मेघ हैं; प्राण-जल को पी गये —यह रूपक की सार्थकता है।)। ७८९

पञ्जरङ्गु तोयितावि पऱ्ऱनोडु कॉऱ्ऱविल्
वॅञ्जरङ्ग णॅञ्जरङ्ग वॅय्यकाम नॅय्यवे
शञ्जलङ्ग लन्दपोदु तैयलारै युय्यवन्
दञ्जलञ्ज लॅन्गिलाद वाण्मयॅन्न वाण्मैयॆ 790

वॅय्य कामन्–क्रूर मन्मथ; नीटु कॉऱ्ऱम् विल्–बड़े, विजयी धनुष द्वारा; पञ्चु अरङ्कु तोयिन्–रुई को जलानेवाली आग के समान; आवि पऱ्ऱ–प्राण पर लग गया; नॅञ्चु अरङ्क–मन को आहत करके; वॅम् चरङ्कळ्–भयंकर शरों को; ऍय्यवे–चलाता है, अतः; चञ्चलम् कलन्त पोतु–चित्त आकुल होता है, तब; तैयलारै–स्त्रियों को; उय्य वन्तु–बचाने के लिए आकर; अञ्चल् अञ्चल् ॲन्किलात–डरो मत, डरो मत यह न कहनेवाला; ॲन्न आण्मै–पौरुष क्या है। ७९०

(सीताजी श्रीराम के पुरुषत्व की निन्दा करती हैं) क्रूर मन्मथ अपना दीर्घ और विजयशील धनुष पर शर रखकर मुझ पर चलाता है। वह शर रुई पर लगी आग के समान मेरे प्राणों में लग जाता है। मेरा मन चोट खाकर छटपटाता है। बिल्कुल अधीर हो गयी हूँ। ऐसी हालत में पड़ी स्त्रियों को ढाढस बँधाना ही पुरुषोचित काम है। उनका पौरुष भी कैसा जो ऐसी अबला को बचाने के लिए पास आकर "डरो मत, मत डरो" कहकर धीरज नहीं बँधाता ? । ७९०

इळैक्कलाद कॉङ्गैहाळॆ ळुन्दुविम्मि यॅन्शॅय्दीर्
मुळैक्कलाम दिक्कॉळुन्दु पोलुम्वाण्मु हत्तिनान्
वळैक्कलाद विऱ्कैयाळि वळ्ळन्माऱ्बि नुळ्ळुऱत्
तिळैक्कलाहु माहिलान् शॅय्दवङ्गळ् शॅय्मिनॆ 791

इळैक्क अल्लात कॉङ्कैकाळ्–क्षीण न होनेवाले उरोज; विम्मि ॲळुन्तु–उभर उठकर; ॲन् चॅय्तीर्–(तुमने) क्या किया (पाया); मुळैक्क अल्ला–आकाश में जो उदित नहीं होता; मति कॉळुन्तु पोलुम्–उस बाल चन्द्रसम; वाळ् मुकत्तिनान्–तेजोमय आननवाले; वळैक्क अल्लात–(आसानी से) न झुकनेवाले; विल् कै आळि–

धनुर्हस्त; वळ्ळल्–दानी स्वभाव के (उनके); मार्पिन् उळ् उऱ–वक्ष के अन्दर घुस जाओ, ऐसा; तिळैक्कल् आकुम्–अतिशय सुख भोग करना हो; आकिल्–तो; आन–आवश्यक; चॅय्तवङ्कळ्–कर्तव्य तप; चॅय्म्मिन्–करो। ७६१

(सीताजी अपने उरोजों को उलाहना देती हैं।) "हे मूर्ख उरोज! कृश न होकर उभरकर सिर उठाये खड़े हो! इसका क्या लाभ है? अस्त होकर उदय न होनेवाले (हमेशा प्रकाशमान रहनेवाले) बालचन्द्र के समान जिनका तेजोमय वदन है, और जिनके हाथ में ऐसा कठोर धनु है जिसको कोई दूसरा झुका नहीं सकता, और जो दानी स्वभाव के हैं उनके वक्ष में धँसकर सुखानुभव प्राप्त करते रहना चाहते हो न! तब यह अकड़ किसी काम की नहीं होगी। झुको, क्षीण हो जाओ और आवश्यक तपस्या करो।" (भगवान के वक्षस्थल पर न लग जाने की हालत में उरोज की रम्यता का क्या मूल्य?)। ७९१

ॲङ्गुनिन्ऱॅ ळुन्ददिन्द विन्दुवन्दॅ नॅञ्जुलाय्
अङ्गियन्ऱ नङ्गनॅय्द वम्बिन्वन्द शिन्दनोय्
पॉङ्गुहिन्ऱ कॉङ्गैमेल्वि डम्बॉळिन्द दॅन्तितुम्
कङ्गुल्वन्द तिङ्गळन्ऱ हङ्गळङ्ग मिल्लये 792

अनङ्कन्–कामदेव; ॲन् नॅञ्चु उलाय्–मेरे मन में व्याप्त हो; अङ्कु इयन्ऱ–वहाँ स्थित रहकर; ॲय्त–जो चलाता है उन; अम्पिन् वन्त–शर द्वारा प्राप्त; चिन्तै नॉय्–मन की व्याधि; पॉङ्कुकिन्ऱ कॉङ्कै मेल्–उभरने के स्थान, उरोजों पर; इन्त इन्तु–यह चन्द्र (सूर्य या श्रीराम का मुख); वन्तु–आकर; विटम् पॉळिन्ततु–विष बरसाया; ॲन्तितुम्–तो भी; कङ्कुल् वन्त तिङ्कळ् अन्ऱ–कल रात (जो) आया (वह) चन्द्र नहीं; अकम् कळङ्कम् इललै–अन्दर कलंक नहीं है; ॲङ्कु निन्ऱु–कहाँ से; ॲळुन्ततु–(यह) उग आया। ७६२

सीताजी को श्रीरामचन्द्र का वदनचन्द्र दिखाई देता है। (उसको देखकर कहती हैं।) मन्मथ मेरे मन में अड्डा जमाकर शर चलाता है। उससे पीड़ा का रोग जो हुआ वह मेरे स्तनों पर अत्यधिक प्रभाव दिखाता है। उन स्तनों पर यह नया चन्द्र, जो दिन में उग आया है, आकर विष ढाल रहा है। तो भी यह चन्द्र कल रात का चन्द्र नहीं दिखता। क्योंकि उसमें कलंक था। इसमें कलंक नहीं है। (सूर्य को देवी ने चन्द्र मान लिया। —यह भाव भी लिया जा सकता है)। ७९२

अडर्न्दुवन्द नङ्गनॅञ्ज ळन्ऱुशिन्दु मम्बॅनुम्
विडङ्गुडॅन्द मॅय्युणिन्ऱु वॅन्दिडादॅ ळुन्दुवॅम्
कडन्दुदॅन्द कारियानै यन्नकाळै कालडैन्
दुडन्ऱॉडर्न्दु पोन्वावि वन्दवावॅ नुळ्ळमे 793

ॲन् उळ्ळमे–मेरे मन; अनङ्कन्–मन्मथ; अटर्न्तु वन्तु–अति समीप आकर;

नॆञ्चु अऴन्ऱु चिन्तुम्–मन को तप्त करते हुए जो शर बरसाये उन; अम्पु ऎंतुम् विटम्–शररूपी विष से; कुटैन्त–विद्ध; मॆय् उळ् निन्ऱु–शरीर के अन्दर रहकर; वॆन्तिटातु–बिना जले; ऎऴुन्तु–निकलकर; वॆम् कटम् तुतैन्त–गरम मद जल प्लावित; कार् यातै अन्न–काले गज के समान; काळै–उन तरुण ऋषभ की; काल् अटैन्तु–शरण में जाकर; उटन् तॊटर्न्तु पोत आवि–उनके पीछे जो गया वह मेरा प्राण; वन्तवाऱु–लौट आया कैसा। ७६३

मेरे मन ! यह क्या आश्चर्य है ! मनोज ने पास आकर मुझ पर शर मारा। उससे मेरा मन मुरझाने लगा। वह शररूपी विष मेरे शरीर को भेदकर अन्दर गया और उसको जलाने लगा। तब ये प्राण अन्दर रहकर नहीं जले पर काले मत्त गज के समान जो जा रहे थे उन पुरुषऋषभ की शरण में गये। फिर वे कब लौट आये ? कैसे आ गये ? (स्वयं उनको आश्चर्य है कि वे जीवित हैं। व्यथा इतनी भारी है।)। ७९३

विण्णुळॆऴॆ ऴुन्दमेह मार्बिन्लिन् मिन्नॊडिम्
मण्णुळॆयि ऴिन्ददॆन्न वन्दुपोन मैन्दनार्
ऎण्णुळॆयि रुन्दपोदुम् यावरॆन्ऱु तेर्हिलेन्
कण्णुळॆयि रुन्दपोदु मॆन्गोल्काण्कि लादवे 794

विण् उळ्ळे ऎऴुन्त मेकम्–गगन में उठा मेघ; मार्पिल् नूलिन् मिन्नॊटु–वक्ष में उपवीत रूपी बिजली के साथ; इ मण् उळ्ळे इऴिन्ततु–इस पृथ्वी में उतर आया हो; ऎन्न–ऐसा; वन्तु पोत–आकर जो गये; मैन्तनार्–राजकुमार; ऎण् उळ्ळे इरुन्त पोतुम्–विचार में रहने पर भी; यावर् ऎन्ऱु तेर्किलेन्–कौन हैं, यह नहीं जानती; कण् उळ्ळे इरुन्त पोतुम्–आँखों के अन्दर रहने पर भी; काण् किलातवे–वे उन्हें नहीं देखतीं; ऎन् कॊल्–यह क्या है। ७६४

आकाश का श्यामल मेघ बिजली के साथ भूमि पर उतर आया ऐसा वे मेघश्याम वक्ष पर उपवीत के साथ मेरे सामने आये पर झट अदृश्य हो गये। तो भी वे हमेशा मेरे ध्यान में ही रहते हैं। पर वे वीर राजकुमार कौन हैं यह मैं जान नहीं पाती। आँखों के अन्दर ही हैं पर आँखें देख नहीं पातीं। कितनी विचित्र और वेदना देनेवाली दशा है ! । ७९४

❀ पॆय्कडऱ्पि ऱन्दयऱ्पॆ ऱऱ्कोणाम रुन्दुपॆऱ्
ऱैयपोऱ्क लत्तॊडङ्गै विरुट्टिरुन्द वादर्पोल्
मोय्किडक्कु मण्णऱोण्मु यङ्गिडादु मुन्नमे
कैक्कडक्क विट्टिरुन्दु कट्टुरॆप्प दॆन्कॊलो 795

पॆय् कटल् पिऱन्तु–(सब समृद्धि-द्रव्य) देनेवाले सागर में जन्म ले; अयल् पॆऱऱ्कु–अन्यत्र प्राप्ति में; ऒण्णा–अगम; मरुन्तु पॆऱ्ऱु–देवामृत को पाकर भी; ऐय पॊन्

कलत्तोटु–सुन्दर स्वर्णघट के साथ; अम् कै विट्टु इरुन्त–हाथ से छोड़कर जो रहे; आतर् पोल्–उन मूर्खों के समान; मुन्नमे–पहले तभी; अण्णल्–पुरुषोत्तम के; मोय् किटक्कुम् तोळ्–वल का आश्रय, भुजाओं से; मुयङ्किटातु–न लिपटकर; कै कटक्क विट्टु–हाथ से (मौका) जाने देकर; इरुन्तु–चुप रहकर; कट्टुरैप्पतु ऍन्–अब बातें बनाने से क्या (लाभ) है। ७६५

मेरी स्थिति उस मूर्ख के समान है जिसके हाथ में सभी द्रव्य देने में समर्थ क्षीरसागर से निकला, और अन्यत्र दुर्लभ, अमृत लगा था, पर जिसने उसको स्वर्णघट के साथ खो दिया है ! जब वे दृष्टिगोचर हुए तभी उनके बलिष्ठ भुजाओं से लिपट जाना था। तब मूर्ख मैंने मौका हाथ से निकलने दिया। बैठी रह गयी। अब बातें बना रही हूँ। क्या लाभ है ? । ७९५

ऍन्ऱुकॊण्डु णैन्दुनैन्दि रङ्गिविम्मि विम्मिये
पॊन्ऱिणिन्द कॊङ्गैमङ्गै यिडरिन्मूळ्हु पोळ्दिन्वायक्
कुन्ऱमन्न चिलैमुऱिन्त कॊळ्हैकॊण्डु कुळिर्मनत्
तोन्ऱुमुण्कण् मदिमुहत्तॊ रुत्तिशॆय्द दुरैशॆय्वाम् 796

ऍन्ऱु–कहती हुई; कॊण्टु–(श्रीराम का) चिन्तन करके; उळ् नैन्तु नैन्तु–चित्त गल गल कर; इरङ्कि–रोकर; विम्मि विम्मि–सिसक-सिसककर; पॊन् तिणिन्त कॊङ्कै–स्वर्णरंग व्याप्त स्तनोंवाली; मङ्कै–देवी; इटरिल् मूळ्कु पोळ्तिन् वाय–दुख में मग्न रहते समय; कुन्ऱम् अन्न चिलै–पर्वताकार धनुष के; मुऱिन्त कॊळ्कै कॊण्टु–टूटने का समाचार लेकर; कुळिर् मनत्तु ऒन्ऱुम्–(सीताजी के प्रति) आर्द्र मनवाली; उण् कण्–काजल-युक्त आँखोंवाली; मति मुकत्तु–चन्द्र-सम वदनवाली; ऒरुत्ति–एक सखी (का); चॆय्तत्तु–कृत्य; उरै चॆय्वाम्–कहेंगे। ७६६

इस तरह विक्षिप्त सी बातें करती हुयी सीता देवी कुढ़ रही थीं, घुल रही थीं। रोती सिसकती रही। उनके वक्षस्थल में और स्तनों पर स्वर्ण-रंग फैला हुआ था। (तमिळ साहित्य में इस रंग को 'तेमल्' कहते हैं जो सुन्दरियों के शरीरों के कुछ अंगों पर विशेषकर वक्ष पर यौवन की अवस्था में फैलता है और सौन्दर्य में चार चाँद लगा देता है।) वे जब इस तरह दुखसागर में डूब रही थीं तब काजलयुक्त आँखोंवाली और चन्द्रसम वदनवाली (उनकी) एक प्रिय सखी धनुर्भंग का समाचार ले आयी। उसकी बात अब करेंगे। ७९६

❀ वडङ्गळुङ् गुळ्हळुम् वान विल्लिडत्
तॊडर्न्दुपूङ् गुळ्ल्हळुन् दुहिलुञ् जोरतर
नुडङ्गिय मिन्नॆन नॊय्दि नॆय्दिनाळ्
नॆडुन्दडङ् गिडन्दकण् णील मालये 797

तटम् किटन्त–विस्तारयुक्त; नॆटु कण्–आयत आँखोंवाली; नीलमालै–

नीलमाला नाम की; वटङ्कळुम्–रत्नहार व; कुऴैकळुम्–कुण्डलों के; तोटर्न्तु–लगातार; वान विल् इट–इन्द्रधनु के समान रंगीन प्रकाश बिखेरते; पू कुऴल्कळम्–पुष्पालंकृत केशजाल के; तुकिलुम्–और वस्त्र के; चोर् तर–खुलकर खिसकते; नुटङ्किय मिऩ् अॅऩ–लचकनेवाली बिजली के समान; नोय्तिऩ्–सत्वर; अॅय्तिऩाळ–आ पहुँची। ७९७

वह विशाल और आयत आँखोंवाली, नीलमाला नाम की सखी इस तरह दौड़ी आयी कि उसके रत्नहार, कुण्डल आदि आभरण हिलते थे और उनके रंगीन प्रकाश भूमि पर छिटककर इन्द्रधनुष सा बना रहे थे। उसका पुष्पालंकृत केश खुलकर बिखर गया। वस्त्र खिसकने लगा। वह ससंभ्रम आ पहुँची। ७९७

*** वन्दडि वणङ्गिलळ् वळङ्गु मोदयळ्**
अन्दमि लुवहय ळाडिप् पाडिऩळ्
शिन्नदयुण् महिऴ्च्चियुम् पुहुन्द शॅय्दियुम्
सुन्दरि शॊल्लॅनत् तॊऴुदु शॊल्लुवाळ् 798

वन्तु–आकर; अटि वणङ्किलळ्–चरणों पर नहीं झुकी; वळङ्कुम् ओतैयळ्–शोर मचानेवाली; अन्तम् इल उवकैयळ्–असीम आनन्दवाली; आटि पाटिऩळ्–नाची, गाई; चुन्तरि–सुन्दरी; चिन्तै उळ् मकिऴ्च्चियुम्–मन का आनन्द; पुकुन्त चॅय्तियुम्–वह देनेवाली बात; चॊल् अॅऩ–कहो, पूछने पर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; चॊल्लुवाळ्–बोलने लगी। ७९८

आकर उसने नियमानुसार नमस्कार नहीं किया। हल्ला मचाती है; असीम आनन्द के साथ गाती नाचती है। यह देख सीताजी ने उसको रोका और पूछा कि सुन्दरी! तुम्हारे मन का आनन्द और उस आनन्द का कारण क्या है? बताओ। तब वह देवी को नमस्कार करके कहने लगी। ७९८

*** कयरद तुरहमाक् कडलऩ् कल्वियऩ्**
तयरद नॆनुम्बॅयर्त् तऩिच्चॅ नेमियाऩ्
पुयल्पॊऴि तडक्कयाऩ् पुदल्वऩ् पूङ्गणै
मयरुरु मदऩरुकुम् वडिवु मेऩ्मयाऩ् 799

कयम् रतम् तुरकम्–गज, रथ, तुरग; मा कटलऩ्–बड़ा (सेना-) सागरवाले; कल्वियऩ्–विद्यापूर्ण; पुयल् पॊऴि तट कैयाऩ्–मेघ के समान दान देनेवाले विशाल हाथों के; तयरतऩ् अॅऩुम् पॅयर्–दशरथ नामधारी; तऩि चॅल् नेमियाऩ्–अकेला आज्ञाचक्र चलानेवाले; पुतल्वऩ्–(राजा के) पु; पू कणै–पुष्पशरों से; मयल् तरु–काम, मोह दिलानेवाले; मतऩऩ् कु उम्–मदन से भी बढ़कर; वटिवु मेऩ्मैयाऩ्–रूपसौंदर्य में अधिक हैं। ७९९

(उत्सुकता को बढ़ाती रीति से उसने कहानी कहना आरम्भ किया)

गज, रथ, तुरंगादि बड़ी सेना के सागर के पति, विद्या सम्पन्न, और विश्रुत मेघ सम दानी, दशरथ नाम के जो एकछत्र चक्रवर्ती हैं, उनके पुत्र, पुष्पशरों द्वारा लोगों को काममोहित करनेवाले मन्मथ से भी बढ़कर रूप में, सुन्दर; । ७९९

❀ मरामर मिवैयॅन वळर्न्द तोळिनान्
अरावणै यमलनॆन् उयिर्क्कु माऱ्ऱलान्
इरामनॆन् बदुपॅय रिळैय कोवॊडुम्
परावरु मुनियॊडुम् पदिवन् दॅय्दिनान् 800

मरामरम् इवै–ये सालवृक्ष हैं; ऍन–ऐसा कहने योग्य; वळर्न्त–वर्धित; तोळिनान्–भुजावाले; अरा अणै अमलन् ऍन्ऱु–शेषशायी विमल देव, समझ; अयिर्क्कुम्–संशय करने योग्य; आऱ्ऱलान्–शक्ति सम्पन्न; इळैय कोवॊटुम्–अपने लघु भाई युवराज के साथ; परावु वरुम् मुनियॊटुम्–और बहु प्रशंसित मुनि के साथ; पति वन्तु ऍय्तिनान्–हमारे नगर में आ पहुँचे हैं; इरामन् ऍन्पतु पॅयर्–'श्रीराम' नाम है । ८००

सालवृक्ष के समान दीर्घ और बलिष्ठ भुजाओंवाले, शेषशायी भगवान विष्णु के समान शक्ति सम्पन्न, एक राजकुमार अपने छोटे भ्राता युवराज और बहुविश्रुत आदरणीय विश्वामित्र के साथ हमारे नगर में आये हैं। (सुना ?) उनका नाम श्रीराम है । ८००

❀ पूणियन् मॊय्म्बिनन् पुनिद नॆय्दविल्, काणिय वन्दन नॆन्नक् कावलन्
आणयि नडॆन्दविल् लदनै याण्डहै, नाणिनि देऱ्ऱिन नडुङ्गिऱ् ऱुम्बरे 801

पूण् इयल् मॊय्म्पिनन्–बाहुवलय सहित भुजावाले वे; पुनितन् ऍय्त विल्–पुनीत रुद्रदेव से व्यवहृत उस धनुष को; काणिय वन्तनन्–देखने आये; ऍन्न–यह (विश्वामित्र के) कहने पर; कावलन् आणॆयिन्–हमारे महाराज की आज्ञा से; अटॆन्त विल् अतनै–सभा में आये धनु, (उस) पर; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; इनितु–सुखपूर्वक; नाण् एऱ्ऱिनन्–प्रत्यंचा चढ़ायी; उम्परे–देवलोक भी; नटुङ्किऱ्ऱु–काँपने लगा । ८०१

विश्वामित्र मुनि भी उनके साथ आये हैं। उन्होंने कहा— बाहु-वलयधारी ये पुनीत ईश्वर रुद्र के उपयोग में रहे इस धनुष को आजमाने आये हैं। यह सुनकर हमारे महाराज जनक ने उस धनुष को सभा में ले आने की आज्ञा दी। धनुष आया। तब हमारे राजकुमार ने बड़े ही सुख से धनु की डोरी चढ़ा दिया। तब देखो ! सारा देवलोक ही थर्रा गया । ८०१

❀ मात्तिरै यळविऱ्ऱाण् मडुत्तु मुन्बयिल्
शूत्तिर मिदुवॆनत् तोळिन् वाङ्गिनान्

एत्तिन रिमैयव रिऴिन्द पूमऴै
वेत्तवै नडुक्कुऱ मुऱिन्दु वीऴ्न्ददे 802

मात्तिरै अळविल्—एक मात्रा के समय भर में; ताळ् मट्टुत्तु—पैर के नीचे (एक सिरा) दबाकर; मुन् पयिल्—पूर्व अभ्यस्त; चूत्तिरम् इतु अँत—साधन यह है, यह समझने देते हुए; तोळिन् वाङ्कित्तान्—(उन्होंने) भुज-बल से झुकाया; वेन्तु अवै—राजा सभा; नट्कक्कु उऱ—काँप उठे, ऐसा; मुऱिन्तु वीऴ्न्ततु—टूटकर गिरा; इमैयवर् एत्तित्तर्—देवों ने स्तुति की; पू मऴै इऴिन्त—पुष्पवर्षा गिरी। ८०२

एक ही माता (क्षण) के समय में उन्होंने धनु के एक सिरे को पैर के नीचे दबा लिया और उस धनुप को इस प्रकार झुकाया कि देखनेवाले यही समझें कि यह धनु तो इन्हीं के उपयोग में पहले से रहा मालूम पड़ता है। तभी वह सभा में रहे राजाओं को कंपाते हुए टूटकर गिर गया। देवता लोग उनकी स्तुति करते हुए फूल बरसाये। ८०२

❀ कोमुनि युडन्वरु कॉण्ड लॅन्ऱपिन्, तामरैक् कण्णिना नॅन्ऱ तन्मयाल्
आमव नेकॉलॅन् ऱैय नीङ्गिनाळ्, वाममे कलैयिऱ वळर्न्द दल्हुले 803

को मुनियुटन् वरु—ऋषिराज के साथ आये; कॉण्टल अॅन्ऱ पिन्—मेघश्याम, यह कहने के बाद; तामरै कण्णित्तान्—पुण्डरीकाक्ष; अॅन्ऱ तन्मैयाल्—यह भी कहने के कारण से; अवत्ते आम् अॅन्ऱु—हाँ वही हैं, समझ; एयम् नीङ्कित्ताळ्—संशय छोड़ दिया (सीताजी ने निश्चय कर लिया); अल्कुल—कटि प्रदेश; वामम् मेकलै इऱ—सुन्दर मेखला को तोड़ते हुए; वळर्न्ततु—बढ़ गया। ८०३

(सीताजी ने सखी की बात सुनी।) 'ऋषिराज के संग आये; मेघ के समान श्यामल थे; और नीरजाक्ष थे', इस विवरण से वे समझ गयीं कि वे ही होंगे जिन्होंने मेरे मन में इतनी बड़ी आँधी मचा दी है। उनको अब कोई संशय नहीं रह गया। तब आनन्द से उनका शरीर बढ़ गया। कटि भाग सहसा इतना बढ़ा कि मेखला ही टूट गयी। ८०३

इल्लये नुशुप्पॅन्बा रुण्डुण् डॅन्नवुम्
मॅल्लियन् मुलैहळुम् विम्म विम्मुवाळ्
शॊल्लिय कुऱियिनत् तोन्ऱ लेयवन्
अल्लने लिऱप्पनॅन् ऱहत्तु ळुन्निनाळ् 804

नुचुप्पु—कमर; इल्लैये अॅन्पार्—है ही नहीं, कहते थे (जो) वे; उण्टु उण्टु—है, है; अॅन्नवुम्—कहने लगें, ऐसा (कमर बढ़ी); मॅल् इयल् मुलैकळुम्—मृदु प्रकृति के स्तन भी; विम्म—फूल उठे; विम्मुवाळ्—इस तरह आनन्द-भरित होकर; चॊल्लिय कुऱियिन्—इसके कहे लक्षणों से; अ तोन्ऱले—वे ही राजकुमार हैं; अवन् अल्लतेल्—वे नहीं (साबित) हुये तो; इऱप्पॅन् अॅन्ऱु—मर जाऊँगी, यह; अकत्तुळ् उन्नित्ताळ्—मन में (सीताजी ने) सोचा। ८०४

सीताजी की कमर भी बढ़ गयी। पहले जो स्त्रियाँ संदेह करती

थीं कि इनके कटि नहीं है अब कहने लगीं कि इनके कटि है। वैसे ही सीताजी के मृदु प्रकृति के स्तन भी फूल उठे। देवी भी आनन्द से भर गयीं। तब उन्होंने सोचा कि इसके बताये लक्षणों से यही लगता है कि धनुर्भंग करनेवाले वे ही राजकुमार हैं जिनसे विवाह की कामना कर रही हूँ। अगर पीछे ऐसा कुछ मालूम हो गया कि वे नहीं हैं, तो मैं मर जाऊँगी। ८०४

❀ आशया लयर्बव ळन्न ळायित्ळ्
पाशडैक् कमलत्तोन् पटैत्त विल्लिरुम्
ओशयिड् पॅरियदो रुवहै यॅय्दियक्
कोशिहड् कौरुमॊळि शनकन् कूरुवान् 805

आचैयाल् अयर्पवळ्–कामना से व्यथित वह; अन्नळ् आयित्ळ्–वैसी बनीं; चनकन्–जनक ने; पचुमै अटै कमलत्तोन्–हरे पत्तोंवाले कमल के फूल पर आसीन (ब्रह्मा) से; पटैत्त–रचित; विल् इरुम् ओचैयिन्–धनु के भंग से उठी ध्वनि से भी; पॅरियतु ओर् उवकै–बड़ा एक सन्तोष; अॅय्ति–प्राप्त कर; अ कोचिकड्कु–उन कौशिक से; ओरु मॊळि–एक वार्ता; कूरुवान्–कही। ८०५

इधर प्रेम-प्राप्ति की आतुरता से सीताजी इस तरह व्यथित हो रही थीं। तब उधर जनक ने, जिनका आनन्द हरे पत्तोंवाले कमल के फूल पर आसीन ब्रह्मा से रचित रुद्र के धनु के टूटते वक्त उठे शब्द से भी बड़ा था, महर्षि कौशिक से एक वार्ता कही। ८०५

❀ उरैशॆयॆम् बॆरुमवुन् पुदल्वन् वेळ्वितान्
विरैविनिन् रॊरुपहन् मुडित्तल् वेट्कयो
मुरशॆऱिन् ददिर्कळल् मुळङ्गु तानैयव्
वरशयु मिव्वळि यळैत्तल् वेट्कयो 806

ॲम् पॅरुम–मेरे वन्द्य; उन् पुतल्वन्–आपके (ज्ञान-) पुत्र यानी शिष्य के; वेळ्वि–विवाह को; विरैविन्–सत्वर; इन्रु ओरु पकल्–इसी दिन में; मुटित्तल्–सम्पन्न करना; वेट्कैयो–इच्छित है; मुरचु ॲऱिन्तु–ढोल पीटकर घोषणा करके; अतिर्कळल्–बजनेवाले पायल; मुळङ्कु तानै–गरजती सेना (के सागर) के; अ अरचैयुम्–पति उन चक्रवर्ती को भी; इ वळि अळैत्तल्–इस स्थान को आमंत्रित करना; वेट्कैयो–इच्छित है; उरै चॆय्–कृपा कर बतलाइये। ८०६

मेरे वन्दनीय महाराज! आपके (शिष्य) पुत्र का विवाह आज ही हो? या विस्तृत रीति से ढिंढोरा पिटवाकर, वीरपायलधारी, सघोष सेना के पति चक्रवर्ती दशरथ को भी आमंत्रित करूँ, तब विवाह हो? आप क्या चाहते हैं? कृपाकर बताइये। (गुरु-शिष्य के नाते शिष्य को पुत्र, ज्ञान-पुत्र और गुरु को ज्ञान-पिता कहने की प्रथा है। इसलिए जनकजी विश्वामित्र से श्रीराम के सम्बन्ध में, 'आपके पुत्र……' कहते हैं।) । ८०६

❀ मल्वला नव्वुरै पहर मादवन्, ऑल्लयि लवनुम्वन् दुरुद नन्रॅन
ॲल्लयि लुवहैयि निशैन्द वारलाम्, शॊल्लुहॅन् रोलयुन् दूदुम् पोक्किनान् 807

मल् वल्लान्–मल्लयुद्ध-चतुर जनक (के); अ उरै पकर–वह वचन कहने पर; मा तवन्–महा तपस्वी; ऑल्लैयिल्–अतिशीघ्र; अवनुम्–उनका भी; वन्तु उरुतल्–आ पहुँचना; नन्रु–अच्छा होगा; ॲन–बोले, तब; ॲल्लै इल् उवकैयिन्–अपार मोद के साथ; इचैन्त आरु ॲल्लाम्–यहाँ घटी हुई सभी बातें; चॊल्लुक–जाकर निवेदन करो; ॲन्रु–कहकर; तूतुम्–दूतों को भी; ओलैयुम्–विवाह-निमन्त्रणपत्र भी; पोक्किनान्–प्रेषित किया। ८०७

मल्लवीर जनक ने यह प्रश्न किया तो महातपस्वी ने उत्तर दिया कि दशरथ भी शीघ्र आ जायँ, यही श्रेष्ठ है। महाराज जनक को भी वह बात अपार आनन्दवर्धक रही। उन्होंने दूतों को बुलाकर विवाह-निमंत्रणपत्र और 'वहाँ जाकर यहाँ का सारा हाल कहो'— यह संदेशा दिया और उनको अयोध्या भेजा। ८०७

13. ॲऴुच्चिप् पडलम् (प्रस्थान पटल)

❀ कडुहिय तूदरुङ् गालिऱ् कालिऱ्चॅन्
रिडिकुरन् मुरशदि रयोत्ति यॅय्दिनार्
अडियिणै तॊऴविड मिन्रि मन्नवर्
मुडियॊडु मुडिपॊरु वायिन् मुन्निनार् 808

कटुकिय तूतरुम्–शीघ्रगामी दूत भी; कालिन्–वाहन पर; कालिन् चॅन्रु–वायुवेग से जाकर; इटि कुरल् मुरचु–वज्र के समान नाद करनेवाले ढोल; अतिर्–जहाँ बजते हैं; अयोत्ति ॲय्तिनार्–अयोध्या आये; मन्नवर्–अनेक राजा; अटियिणै तॊऴ–(दशरथ के) चरण-द्वय की वन्दना करने के लिए; इटम् इन्रि–स्थान न होने के कारण; मुटियॊटु मुटि पॊरु–जहाँ मुकुट से मुकुट टकराते थे उस; वायिल्–द्वार पर; मुन्निनार्–पहुँचे। ८०८

त्वरितगामी दूत पैदल या उचित वाहन पर वायु-वेग के साथ अयोध्या में आये। वहाँ नगाड़े वज्र के से नाद के साथ बज रहे थे। दूत राजद्वार पर आये। वहाँ चक्रवर्ती से भेंट करने और उन्हें नमस्कार करने के लिए आगत राजाओं की इतनी भीड़ थी कि उनके मुकुट आपस में टकराते थे। ८०८

❀ मुहन्दनर् तिरुवरुण् मुरैयि नॅय्दिनार्
तिहऴ्न्दॊऴिर् कऴलिणै तॊऴुदु शॅल्वनैप्
पुहऴ्न्दनर् ररशनिन् पुदल्वर् पोयपिन्
निहऴ्न्ददै यिदुवॆन नॆडिदु कूरिनार् 809

तिरु अरुळ् मुकन्ततर्–चक्रवर्ती की कृपा के पात्र (उठानेवाले) वनकर; मुऱैयिन् ऎय्तित्तार्–उचित प्रकार से (चक्रवर्ती के सामने) गये; तिकऴ्न्तु ऒऴिर्–बहुत शोभायमान; कऴल् इणै तॊऴुतु–पायलों से अलंकृत चरणद्वय पर नमस्कार करके; चॆल्वर्तै–ऐश्वर्यवान की; पुकऴ्न्ततर्–स्तुति की; अरच–चक्रवर्ती; निन् पुतल्वर्–आपके पुत्रों के; पोयपिन्–यहाँ से जाने के बाद; निकऴ्न्ततु इतु–जो हुआ वह यह है; ऎन–कहकर; नॆटितु कूऱिनार्–विस्तार से बयान किया। ८०९

(समाचार अन्दर गया और उन्हें अन्दर आने की अनुमति मिल गयी। उन्हें चक्रवर्ती की विशेष कृपा प्राप्त हो गयी थी।) चक्रवर्ती की कृपा के पात्र हुए वे राजसभा में बरतने योग्य शिष्टाचार के साथ राजा के सामने गये। उनके शोभायमान पायल पहने पैरों पर नमस्कार किया। उचित रीति से उनकी संस्तुति की। उन्होंने राजा के पुत्र श्रीरामचन्द्र जी संबंधी वृत्तान्त, उनके अयोध्या छोड़ने से लेकर मिथिला में आने तक का, कह सुनाया। ८०९

※ कूऱिय तूदरुङ् कॊणर्न्द वोलैयै, ईऱिल्वण् पुहऴिना यिदुव वॆन्ऱनर्
वेऱोरु पुलमहन् विरुम्बि वाङ्गिनान्, माऱदिर् कऴलिनान् वाशि यॆन्ऱनन् 810

कूऱिय तूतरुम्–कहकर दूतों ने भी; कॊणर्न्त ओलैयै–(अपने साथ) लाये विवाहपत्र को; ईऱु इल्–असीम; वण् पुकऴिताय्–समृद्ध यशस्वी; इतु अतु–यही वह (विवाह-निमन्त्रणपत्र) है; ऎन्ऱनर्–कहा; वेऱु ऒरु पुलम् मकन्–(उसके लिए अलग) नियत दूसरे पण्डित ने; विरुम्पि–चाह के साथ; वाङ्कितान्–ले लिया; माऱु अतिर् कऴलितान्–बारी-बारी से मुखरित होनेवाले पायलों को पहने हुए चक्रवर्ती ने; वाचि–पढ़ो; ऎन्ऱनन्–कहा। ८१०

वह सारा वृत्तान्त विस्तार से सुनाकर दूतों ने विवाह-निमन्त्रणपत्र बढ़ाया और निवेदन किया कि यही वह पत्र है जिसे हमारे महाराजा ने सेवा में भेजा है। उस पत्र को पत्र-वाचन के लिए नियत पंडित ने अपने हाथ में लिया। बारी-बारी से मुखरित होनेवाली पायलों से अलंकृत चरणों के दशरथ ने आज्ञा दी कि 'पढ़ो'। (बारी-बारी से पायलों का क्वणित होना— राजसभा के शिष्टाचारबद्ध महाराज की उतावली का संकेत देता है जिसके कारण वे पैरों की स्थिति को बदल देते थे। पहले पद्य (८०९) में केवल पायलों की शोभा बतायी गयी है; यहाँ उसका स्वर। —यह देखने योग्य है।)। ८१०

※ इलैमुहप् पडत्तव नॆऴुदिक् काट्टिय
तलैमहन् शिलैत्तॊऴिल् शॆवियिऱ् चार्दलुम्
निलैमुह वलयङ्ग णिमिर्न्तु नीङ्गिड
मलैयॆन वळर्न्दन वयिरत् तोळ्हळे 811

इलै मुकम् पटत्तु–ताल-पत्र-पट पर; अवन्–उन जनक से; ऎऴुति काट्टिय–चित्रण कर दिखाया गया; तलै मकन्–ज्येष्ठ पुत्र के; चिलै तॊऴिल्–धनु सम्बन्धी

कृत्य; चेविथिल् चार्तलुम्–कानों में पड़े, त्योंही; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्रसम कन्धे; निलै मुकम् वलयङ्कळ्–पहने हुए वलयों को; निमिर्न्तु नीङ्किट–सन्धिस्थान पर तोड़कर दूर करते हुए; मलै अन्न वळर्न्तनन्–पर्वत के समान वर्धित हुए। ८११

जनक ने तालपत्र को पट बनाकर महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के धनुर्विद्या-कौशल का बड़ा ही प्रभावपूर्ण (शब्द-) चित्रण लिखा था। उसको पढ़कर (पढ़ते सुनकर) महाराज को इतना आनन्द हुआ कि उनके कंधे पर्वतों के समान फूल उठे और बाहुवलय टूट कर अलग हो गये। ८११

※ वॆऱ्ऱिवेन् मन्नवन् ऱक्कन् वेळ्वियिल्
कऱ्ऱैवार् चडैमुडिक् कणिच्चि वानवन्
मुऱ्ऱवे ऴुलहयुम् वॆन्ऱ मूरिविल्
इऱ्ऱपे रौलिकोलन् ऱिडित्त दीङ्गॆन्ऱान् 812

वॆऱ्ऱि वेल् मन्नवन्–विजयी शक्ति के चक्रवर्ती; अन्ऱु ईङ्कु इटित्ततु–उस दिन यहाँ वज्रघोष सा सुनाई दिया; तक्कन् वेळ्वियिल्–दक्ष यज्ञ में; कऱ्ऱै वार् चटै मुटि–पुष्ट और लम्बी जटाजूट; कणिच्चि–तप्त लौहायुधवाले (या परशुधर); वानवन्–रुद्रदेव (के); एऴु उलकैयुम् मुऱ्ऱ वॆन्ऱ–(जिससे) सातों लोकों पर पूर्णरूप से विजय पाई उस; मूरि विल्–सुदृढ़ धनुष के; इऱ्ऱ पेर् ऑलि कोल्–टूटने का बड़ा नाद था क्या; ऎन्ऱान्–कहा। ८१२

विजयी शक्ति (बर्छी) के धारण करनेवाले दशरथ ने आनन्दातिरेक से उद्गार निकाली— ओफ़! उस दिन जो एक अत्युच्च ध्वनि सुनाई दी क्या वह इसी धनु के भंजन की ध्वनि थी? वह धनुष साधारण धनुष नहीं था। इसी से तो तप्तलौहायुध (या परशु) के धारण करनेवाले जटाधर, रुद्रमूर्ति ने दक्ष-यज्ञ के अवसर पर सातों लोकों पर विजय पायी थी। वह तो बड़ा ही बलवान धनुष था! । ८१२

※ ऎन्ऱुरैत् तॆदिरॆदि रिडैवि डादुनेर्, तुन्ऱिय कनैकऴऱ् ऱूदर् कॊळ्हॆनाप्
पॊन्ऱिणि कलन्गळुन् दूशुम् पोक्किनान्, कुन्ऱॆन वुयरिय कुववुत् तोळिनान् 813

कुन्ऱु अन्न उयरिय—पर्वत-समान उन्नत; कुववु तोळिनान्–पुष्ट कन्धोंवाले (दशरथ) ने; ऎन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; पॊन् तिणि कलन्कळुम्–स्वर्णरचित आभरण; तूचम्–और (जरीदार) वस्त्र; ऎतिर् ऎतिर्–एक के पहले एक; इटै विटातु–निरन्तर; नेर् तुन्ऱिय–अपने सामने आ जुटे; कनै कऴल् तूतर्–क्वणनशील पायलधारी दूत; कॊळ्क–ले लें; ऎना–कहकर; पोक्किनान्–दिलाया। ८१३

दशरथ के कंधे जो पहले बढ़े थे अब और भी बढ़े। उन्होंने आज्ञा दी कि इन्हें देने के लिए पुरस्कार लाओ। स्वर्ण-रचित आभरण और जरीदार वस्त्र एक के बाद एक नहीं, एक के पहले एक (यानी इतनी तेजी से) आकर एकत्र हुए। राजा ने कहा कि दूत आकर इन्हें ले लें।

दूत बारी-बारी से आये तब उनकी पायलें बज उठती थीं। उन्होंने वह सब ग्रहण किया। ८१३

❀ वाऩवऩ् कुलत्तॅमर् वरत्ति ऩाल्वरुम्
वेऩिल्वे ळिरुऩ्दवम् मिदिलै नोक्किनम्
शेऩयु मरशरुञ् जॅल्ह मुऩ्दॅऩा
आऩमे लणिमुर शऱैहॅऩ् ऱेविऩाऩ् 814

वानवऩ् कुलत्तु–सूर्यकुल के; अॅमर् वरत्तिऩाल्–मेरे पूर्वजों के पुण्य से; वरुम्–उत्पन्न; वेऩिल् वेळ्–बसन्तपति (मन्मथ) सम श्रीराम; इरुन्त–जहाँ रहते हैं; अ मितिलै नोक्कि–उस मिथिला को उद्देश्य करके; नम् चेऩैयुम्–हमारी सेना और; अरचरुम्–राजा लोग; मुन्तु चॅल्क अॅऩा–आगे जायँ, यह; आऩैमेल्–हाथी पर; अणि मुरचु–आलंकारिक ढोल; अरैक–पिटवाओ; अॅऩ्ऱु–यह; एविऩाऩ्–प्रेरित किया (आज्ञा दी)। ८१४

तब राजा ने यह आज्ञा दी कि श्रीराम जहाँ हैं, उस मिथिला में हमारी सेना, सामंत, राजा आदि जायँ। श्रीराम हमारे सूर्यकुल के पूर्व पुरुषों के पुण्य के बल से मेरे पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए हैं। कूच की मुनादी पिटवा दो। ढिंढोरा बहुत सुन्दर और सजा हुआ हो और वह हाथी पर रखकर पीटा जाय। ८१४

वाम्बरि वरूदिऩिक् कडलिऩ् वळ्ळुवऩ्
तेम्बॉऴि तुळाय्मुडिच् चॅङ्गण् मालवऩ्
आम्बरि शुलहॅला मळन्दु कॉण्डनाळ्
शाम्बुवऩ् ऱिरिन्दॅऩत् तिरिन्दु शाऱ्ऱिऩाऩ् 815

तेम् पॉऴि तुळाय् मुटि–शहद स्रवित करनेवाली तुलसीजी की माला से अलंकृत मुकुटवाले; चॅम् कण् माल् अवऩ्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु भगवान ने; आम् परिचु–योग्य प्रकार से; उलकु अॅलाम् अळन्तु कॉण्ट नाळ्–(जिस दिन) सारे लोकों को अपने चरणों से नापा था, उस दिन; चाम्पुवऩ् तिरिन्ततु अॅऩ–जाम्बवान (जिस प्रकार) घूमा उस प्रकार; वळ्ळुवऩ्–ढिंढोरा पीटनेवाला; वाम्परि वरूतिऩि कटलिऩ्–दुलकी वाले (त्वरितगामी) अश्वों की सेना के सागर में; तिरिन्तु–घूम-घूमकर; चाऱ्ऱिऩाऩ्–घोषणा कराई। ८१५

वळ्ळुवन ने (ढिंढोरा पीटनेवाली जाति का आदमी) जिस सेना में अतिवेगगामी अश्व थे उस सागर सम विपुल सेना के बीच चारों ओर घूमकर राजाज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया। उसको देखकर जाम्बवान की याद आती थी जिन्होंने उस अवसर पर घूम-घूम कर ढिंढोरा पिटवाया था जब तुलसीदलों की माला से अलंकृत श्रीविष्णु ने त्रिविक्रमावतार लेकर सारे लोकों को अपने पैरों से नाप लिया था। ८१५

❀ शाऱ्ऱिय मुरशॊलि शॆवियिऱ् चारुमुन्
कोऱ्ऱॊडि महळिरुङ् गोल मैन्दरुम्
वेऱ्ऱरु कुमररुम् वॆन्ऱि वेन्दरुम्
काऱ्ऱॆरि कडलॆनक् कळिप्पि नोङ्गिनार् 816

चाऱ्ऱिय मुरचु ऑलि–पिटे ढिंढोरे की ध्वनि; चॆविपिल् चारुम् मुन्–कानों में पड़ने के पूर्व ही; कोल् तॊटि मकळिरुम्–स्थूल कंकणधारिणी स्त्रियाँ और; कोलम् मैन्तरुम्–सुन्दर पुरुष; वेल् तरु कुमररुम्–भाला चलाने में चतुर जवान; वॆन्ऱि वेन्तरुम्–विजयी राजा (सामन्त) लोग; काऱ्ऱु ऎरि कटल् ऎन–पवनोद्वेलित सागर के समान; कळिप्पिन् ओङ्कितार्–सन्तोष में बढ़े। ८१६

ज्योंही घोषणा सुनाई दी त्योंही मोटी-मोटी चूड़ियाँ पहने हुई स्त्रियाँ, सुन्दर पुरुष, भाला चलाने में चतुर पट्ठे, विजयी सामंत, राजा, सब आनन्द में पवनोद्वेलित सागर के समान उमगे। ८१६

विडैपॊरु नडैयिनान् शेनै वॆळ्ळमोर्, इडैयिलै युलहिनि लॆन्न वीण्डियक्
कडैयुह मुडिविनि लॆवैयुङ् काऱ्पडप्, पुडैपॆयर् कडलॆन वॆळुन्दु पोयदे 817

विटै पॊरु नटैयितान्–ऋषभ समान चालवाले (दशरथ) की; चेनै वॆळ्ळम्–सेना का सागर; उलकितिल् ओर् इटै–संसार में कोई स्थान; इलै ऎन्न–नहीं है, यह स्थिति बनाते हुए; ईण्टि–एकत्र होकर; कटै युकम् अ मुटिवितिल्–कल्पांत के उस अन्तिम समय में; ऎवैयुम्–(चराचर) सभी को; काल् पट–अपने (पैर के) नीचे दबाते हुए; पुटै पॆयर् कटल् ऎन–उमड़कर आनेवाले बहिस्सागर के समान; ऎळुन्तु पोयतु–उठकर चला। ८१७

ऋषभ समान चालवाले दशरथ की विश्वव्यापी सेना उठ चली। सेना क्या थी वह उस युगांतकालीन बाह्य-सागर के समान थी जो अपने अन्दर चर-अचर सभी को समा लेते हुए प्रचंडरूप से उमड़ आता है। ८१७

शिल्लिड मुलहॆनच् चॆऱ्ऱिन्द तेर्हडाम्
पुल्लिडु शुडरॆनप् पॊलिन्द वेन्दराल्
ऎल्लिडु कदिर्मणि यॆऱ्ऱिक्कु मोडयाल्
विल्लिडु मुहिलॆनप् पॊळिन्द वेळमे 818

उलकु चिल् इटम्–संसार छोटा स्थान है; ऎन–यह स्थिति बनाते हुए; चॆऱ्ऱिन्त तेर्कळ् ताम्–जुटे हुए रथ; वेन्तराल्–राजाओं के कारण; पुल्लिटु चुटर् ऎन–सूर्य सहित रहने से; पॊलिन्त–भासमान रहे; वेळम्–हाथी; ऎल् इटु कतिर् मणि–ज्वलन्त सूर्य-सम रत्नों के; ऎऱ्ऱिक्कुम् ओटैयाल्–प्रकाशित मुख-पट्टों के कारण; विल् इटुम् मुकिल् ऎन पॊलिन्त–इन्द्रधनुष सहित मेघ के समान शोभित रहे। ८१८

रथ इतने अधिक जुट आये कि संसार में स्थान का अभाव सा लगता था। उन पर विराजमान राजे इतने दीप्तिमान थे कि वे सूर्य के समान लगे और उनके रथ सूर्य सहित सूर्य के रथों के समान लगे। हाथियों के

मुखपट्टों में विविध उज्ज्वल रत्न थे। वे इन्द्रधनुष के समान लगे और ये गज इन्द्रधनुष सहित मेघों के समान। ८१८

कालविरिन् दौंळिर्हुडै कण्क्कि लोदिमम्
पाल्शिऱै विरित्तुविण् पऱ्प्प पोन्ऱत
मेल्विरित् दॅळुहौडिप् पडलम् विण्णॅलाम्
तोलुरिन् दुहुवन पोन्ऱ तोन्ऱुमे 819

काल् विरिन्तु औळिर् कुटै–डण्डे के ऊपर फैलकर प्रभा देते रहनेवाले छत्र; कणक्कु इल् ओतिमम्–असंख्य हंस; पाल् चिऱै विरित्तु—दुग्ध-सम पक्ष खोलकर; विण् पऱप्प पोन्ऱत–आकाश में उड़ते से हैं; मेल् विरिन्तु ऍऴु–ऊपर फैलकर उठी; कॉटि पटलम्–पताकाओं का समूह; विण् ऍलाम्–सारा आकाश; तोल् उरिन्तु–चमड़ा उधेड़कर; उकुवत पोन्ऱु–गिरा रहा हो ऐसा; तोन्ऱुम्–दिखता है। ८१९

अनेक श्वेतछत्र खुले थे। वे ऐसे लगते थे मानों अनेक हंस अपने पंख फैलाते हुए आकाश में उड़ रहे हों। आकाश में अनेक पताकाएँ झलमलाती फहर रही थीं। उनको देखकर ऐसा भास हो रहा था कि सर्प-सम (नीला) आकाश श्वेत उज्ज्वल केंचुलियाँ उतारकर गिरा रहा हो। ८१९

नुडङ्गिय तुहिर्कॉडि नूळैक् कैम्मलैक्, कङ्गलुळ् शेत्तयैक् कडलि दामॅत
इडम्बड वॅङ्गणु मॅळुन्द वॅण्मुहिल्, तडम्बुनल् परुहिडत् ताळ्व पोन्ऱवे 820

नुटङ्किय–(हाथियों पर) फहरनेवाली; तुकिल् कॉटि–वस्त्र की बनी ध्वजाएँ; इटम् पट–विस्तृत प्रदेश में; ऍङ्कणुम् ऍऴुन्त–सर्वत्र व्याप्त हो उठे; वॆळ् मुकिल्–श्वेत मेघ; कटम् कलुळ्–मदजल बहानेवाले; नूळै कै मलै चेतैयै–नासिकाछिद्र सहित रहनेवाली सूँडों के, पर्वत-सम गजों की सेना का; इतु कटल् आम् ऍत–यह समुद्र है, समझकर; तट पुतल् परुकिट–अधिक जल पीने के लिए; ताऴ्व पोन्ऱ–नीचे उतर आते से हैं। ८२०

हाथियों पर झंडे फहर रहे थे। वे चीर के झंडे थे। उनको देखकर ऐसा भ्रम होता था कि सर्वत्र फैले श्वेत मेघ जल पीने के लिए, गजसेना को समुद्र समझकर उस पर उतर आये हों। ८२०

इळैयिडै यिळवॅयि लॅरिक्कु मव्वॅयिल्, तळैयिडै निळल्कॅडत् तवळु मत्तळै
मळैयिडै यॅळिल्कॅड मलरु मम्मळै, कुळैवुऱ मुळङ्गिडुङ् गुळाङ्गॉळ् बेरिये 821

इळै इटै–(लोगों के) आभरणों के मध्य; इळवॅयिल् ऍरिक्कुम्–सवेरे की धूप के समान प्रकाश छिटकता है; अ वॅयिल्–वह बालधूप; तळै इटै निऴल् कॅट–मोर-छत्रों की छटा को कम करते हुए; तवऴुम्–धीरे-धीरे फैलती है; अ तळै–वे मोरछत्र; मऴै इटै ऍऴिल् कॅट–मेघों की छटा को कम करती हुई; मलरुम्–फैले रहते हैं; कुळाम् कॉळ् पेरि–समूहों में (अधिक संख्या में) रहनेवाली भेरियाँ; अ मऴै कुऴैवु उऱ–उन मेघों को अवनत करते हुए; मुऴङ्किटुम्–बज उठती हैं। ८२१

सेना में जानेवालों के आभूषण प्रातः सूर्य की मन्दधूप की तरह सुखद प्रकाश बिखेरते हैं। वह प्रकाश मोरपंखों के वने छत्रों की छटा को मन्द कर देता है। वे छत्र इन्द्रधनुष के साथ भासमान मेघों की आभा को कम करते हुए फैले रहते हैं और भेरियों का समूह उन मेघों के गर्जन को फीका करते हुये नर्दन करता है। (इसमें एकावली अलंकार है।)। ८२१

मऩ्मणिप् पुरविहण् महळि रूर्वऩ, अऩ्ऩमुऩ् दियदिरै याऱु पोऩ्ऱऩ
पॊऩ्ऩणि पुणर्मुलैप् पुरिमॆऩ् कूऩ्दलार, मिऩ्ऩॆऩ मडप्पिडि मेहम् पोऩ्ऱवे 822

मकळिर् ऊर्वऩ–स्त्रियों की सवारियाँ; मऩ् मणि पुरविकळ्–घुंघरू पहने हुए अश्व; अऩ्ऩम् उऩ्तिय तिरै–हंसों को ढोती हुई हिलनेवाली तरंगों की; आऱु पोऩ्ऱऩ–नदियों के समान हैं; पॊऩ् अणि—स्वर्णाभरण-भूषित; पुणर् मुलै–सटे हुए स्तन; पुरि मॆल् कूऩ्तलार्–(और) गुँथी हुई वेणीवाली स्त्रियाँ (जो हाथियों पर सवार थीं); मिऩ् अऩ–बिजली के समान लगीं; मट पिटि, मेकम् पोऩ्ऱ–छोटी आयु की हथिनियाँ, मेघों के समान थीं। ८२२

अनेक स्त्रियाँ अश्वों पर आरोहण करके जा रही हैं। उनको देखकर ऐसा लगता है मानों सेनारूपी नदी की अश्वरूपी लहरों के ऊपर स्त्रीरूपी हंस थिरक रहे हों। अश्वों के पैरों में घुँघरू बँधे हैं। (वे झंकृत होकर हंसों का-सा नाद पैदा करते हैं।) और अनेक स्त्रियाँ, जो विजलियों के समान हैं, हथिनियों पर बैठी जा रही हैं। वे हथिनियाँ विद्युतवाही मेघों के समान हैं। वे स्त्रियाँ स्वर्णालंकृता और मेढीभूषिता हैं। (स्वर्ण आभरण का भी द्योतक है; और फलनेवाले स्वर्ण-वर्ण के चर्म-रंग का भी। इसको तमिऴ में 'तेमल्' कहते हैं। यह यौवन के आकर्षण में चार चाँद लगा देता है। यह युवतियों के शरीर में, विशेषकर वक्ष-प्रदेश में फैलता है।)। ८२२

इणैयडुत् तिडैयिडै नॆरुक्क वॆळ्ळियर्
तुणैमुलैक् कुङ्कुमच् चुवडु माडवर्
मणिवरैप् पुयङ्गळिऱ् चाऩ्दु माहिमॆल्
अणैयॆऩप् पॊलिन्ददक् कडल्शॆ लाऱरो 823

अ कटल् चॆल् आऱु–उस सेनासागर के चलने के मार्ग में; इटै इटै–यत्रतत्र; इणै अटुत्तु—पास-पास होकर; नॆरुङ्कि–सटे हुए जाने से; एळैयर्–कोमलांगियों के; तुणै मुलै–जोड़े के स्तनों पर लिप्त; कुङ्कुमम् चुवटुम्–कुंकुम के सूखकर गिरने का चिह्न; आटवर्–पुरुषों के; मणि वरै पुयङ्कळिल् चान्तुम् आकि–सुन्दर गिरिसम भुजाओं के चन्दन के लेप के गिरने का चिह्न मिलकर; अणै अऩ–तोशक के समान; पॊलिन्ततु–दिखे। ८२३

उस सेना में स्त्रियों और पुरुषों की संख्या अत्यधिक है। वे परस्पर सटे हुये जाते हैं। तब स्त्रियों के स्तनद्वयों पर लगा हुआ कुंकुम का सूखा

लेप और पुरुषों की पर्वतोन्नत भुजाओं पर लगा चन्दन का लेप चूर्ण होकर गिर जाते हैं। उस चूर्ण का इतना भारी परिमाण है कि भूमि पर तोशक बिछे से जान पड़ते हैं। ८२३

मुत्तिनाऩ् मुळुनिला वॆऱिक्कु मॊय्म्मणिप्
पत्तिया लिळवॆयिल् परप्पुम् बाहिऩुम्
तित्तिया निऩ्ऱशॊऱ् चिवन्द वाय्च्चियर्
उत्तरा शङ्गमिट् टॊळिक्कुङ् गूऱ्ऱमे 824

पाकिऩुम्–चाशनी से बढ़कर; तित्तिया निऩ्ऱ चॊल्–मधुर बोलीवाली; चिवन्द वाय्च्चियर्–(बिंब-सम) लाल मुखवाली स्त्रियों के; उत्तराचङ्कम् इट्टु–ओढ़नी लगाकर; ऑळिक्कुम्–छिपाये गये; कूऱ्ऱम्–मृत्यु (-रूपी स्तन); मुत्तिनाल्–मुक्तामालाओं द्वारा; मुळु निला ऎऱिक्कुम्–सम्पूर्ण चाँदनी-सा प्रकाश बिखेरते हैं; मॊय्मणि पत्तियाल्–संकुल रत्नराशियों द्वारा; इळवॆयिल् परप्पुम्–बालधूप फैलाते हैं। ८२४

चाशनी समान मधुर बोली बोलनेवाली, लाल अधरों की स्त्रियों ने अपनी ओढ़नी से ढँके हुए, यमसम उरोजों पर मुक्ताहार और रत्नहार पहन रखे हैं। मुक्ताहारों से चाँदनी सी द्युति और रत्नहारों से धूप की सी काँति छूटती है। (स्तन को यम कहना साहित्यिक परिपाटी है क्योंकि वे पुरुषों के मनों को अत्यधिक अधीर कर देते हैं।)। ८२४

विल्लिऩर् वाळिऩर् वॆऱित्त कुञ्जियर्
कल्लिऩैप् पळित्तुयर् कऩहत् तोळिऩर्
वल्लियिऩ् मरुङ्गुलार् मरुङ्गु माप्पिडि
पुल्लिय कळिऱॆऩ मैन्दर् पोयिऩार् 825

वॆऱित्त कुञ्चियर्–सुवासपूर्ण केशवाले; कल्लिऩै पळित्तु–पर्वत का उपहास करके; उयर्–उन्नत हुए; कऩकम् तोळिऩर्–स्वर्ण-सम कन्धोंवाले; मैन्तर्–पराक्रमी तरुण लोग; विल्लिऩर्–धनुर्हस्त; वाळिऩर्–और तलवारहस्त बनकर; मा पिडि पुल्लिय कळिऱु ऎऩ–श्रेष्ठ हथिनियों को पास लेते हुए जानेवाले हाथियों के समान; वल्लियिऩ् मरुङ्कुलार् मरुङ्कु–लता-सी कमरवालियों के पास-पास; पोयिऩार्–चले। ८२५

पुष्प-वासित केशवाले, और पर्वतनिंदक कंधोंवाले जवान वीर धनुष और तलवार से लैस होकर, हथिनियों को अपने संरक्षण में लेते चलनेवाले बड़े-बड़े हाथियों के समान, लता-सी महीन कमरवाली स्त्रियों के साथ लगे-लगे जाते हैं। ८२५

मऩ्ऱलम् पुदुमलर् मळैयिऱ् चूळ्न्दॆऩत्
तुऩ्ऱिरुङ् कून्दलार् मुहङ्ग डोऩ्ऱलाल्

ऑन्ऱल पलमदि यूरु मानम्बोल्
शॅन्ऱन तरळवान् शिविहै योट्टमे 826

तरळम् वान् चिविकै ईट्टम्–श्रेष्ठ मुक्ता शिविकाओं का जमघट; मन्ऱल् अम् पुतु मलर्–सुवासित सुन्दर नवीन पुष्प; मळैयिल् चूळ्न्ततु ऍन–मेघों पर छा गये, ऐसा; तुन्ऱु–पुष्पबहुल; इरु कून्तलार्–काले केशवाली स्त्रियों के; मुकङ्कळ् तोन्ऱलाल्–मुखों के दिखाई देने से; ऑन्ऱु अल–एक नहीं; पल मति ऊरुम्–अनेक चन्द्रारोहित; मानम् पोल्–देवयानों के समान; चॅन्ऱन–चले। ८२६

(संभ्रांत कुल की या राजकुल की स्त्रियाँ शिविकाओं पर जा रही हैं। शिविकाओं पर परदे लगे हैं। वे कभी-कभी परदा हटाकर बाहर झाँकती हैं तब उनके मुखचन्द्र बाहर दिखाई देते हैं।) पुष्पावृत्त मेघों के समान काले केशवाली स्त्रियों के कारण शिविकायें अनेक विमानों के समान लगती हैं जिनमें पूर्णचन्द्र सवार हों। ८२६

मॉय्दिरैक् कडलॅन मुळङ्गि मूक्कुडैक्
कैहळिऱ् ऱिशैनिलैक् कळिऱ्ऱै याय्वन
मैयलुऱ् ऱिऴिमद मळैय ऱामयाल्
तॉय्यलैक् कडन्दिल शूळि यानये 827

इऴि मतम् मऴै–ढलनेवाला मदजल प्रवाह; इटै अऱामैयाल्–निरन्तर बहने से; तोय्यलै कटन्तिल–वने पंक को पार करने में अशक्य; चूऴि यानै–मुखपट्ट से अलंकृत हाथी; मैयल् उऱ्ऱु–मदमत्त होकर; मॉय् तिरै कटल् ऍन–संकुलित तरंगोंवाले समुद्र के समान; मुळङ्कि–चिंघाड़ते हुए; मूक्कु उटैय कैकळिऱ्–नाक का भी काम देनेवाली सूंडों से; तिचै निलै कळिऱ्ऱै–दिशाओं में स्थित हाथियों को (दिग्गजों को); आय्वन–टटोलते हैं। ८२७

गजों का मदनीर इतना बहता है कि पंक बन जाता है। मुख-पट्ट पहने हाथी उनमें फँस जाते हैं। तब वे मदमत्त होकर चिंघाड़ते हैं और अपनी सूँड़ों को बढ़ाकर दिग्गजों को ढूँढ़ते हैं। (हाथी की सूँड़ ही उसकी नाक का भी काम देती है। इसलिये कवि उसको नासिकायुक्त सूँड़वाले गज कहते हैं)। ८२७

शूरुडै निलैयॅनत् तोय्न्तुन् दोय्हिला, वारुडै वनमुलै महळिर् शिन्दैपोल्
तारॉडुञ् जदियॉडुन् दावु मायिनुम्, पारिडै मिदित्तिल परियिन् पन्दिये 828

परियिन् पन्ति–अश्वों की पंक्तियाँ; तारॉटुम्–घंटिका भरे दामों के साथ; चतियोटुम्–और टाप के साथ; तोय्न्तुम् तोय्किला–(शरीर से) बँधकर भी (मन से) न बँधकर; वार् उटै–कंचुकी बद्ध; वनम् मुलै मकळिर्–मनोरम उरोजोंवाली वेश्याओं के; चिन्तै पोल्–(चंचल) मन के समान; तावुम् आयिनुम्–फाँदकर चलते हैं तो भी; चूर् उटै निलै ऍन–भूतों (या देवों) के समान; पार् इटै मितित्तिल–भूमि पर पैर रखनेवाले नहीं हैं। ८२८

अश्व अपनी किंकिणी-ध्वनि के साथ बहुत तेज दौड़ते हैं। उनकी गति में एक समरसता है। अश्वों का लपकना वेश्याओं के मन के समान अस्थिर है। (वेश्या शरीर से मिलकर भी मन से दूर है। वह अपना लगाव बदलती ही रहती है।) अश्वों के पैर भूमि पर लगते नहीं दीखते। इसलिए वे भूत या देव के समान लगते हैं जिनके पैर भूमि पर नहीं पड़ते। ८२८

ऊडिय मन्नत्तिन्न रुऱाद नोक्किनर्, नोडिय वुयिर्प्पिनर् नॅरिन्द नॅऱ्ऱियर्
तोडविऴ् कोदैयुन् दुऱन्द कून्दलर्, आडव रुयिरॅन वरुहु पोयिनार् 829

ऊटिय मनत्तिनर्–रुष्टमना कुछ स्त्रियाँ; उऱात नोक्किनर्–सीधे पति को नहीं देखती हुई; नीटिय उयिर्प्पिनर्–दीर्घ निःश्वास छोड़ती हुई; नॅरिन्त नॅऱ्ऱियर्–संकुचित ललाटवाली; तोटु अविऴ् कोतैयुम्–विकसित दलवाले पुष्पों की वनी मालाओं से भी; तुऱन्त कून्तलर्–विमुक्त केशवाली; आटवर् उयिर् अॅन–पुरुषों के प्राणों के समान; अरुकु पोयिनार्–(उनके पास-पास) जा रही थीं। ८२९

(कुछ स्त्रियाँ अपने पतियों से मान करके रुष्ट थीं। उसी स्थिति में उनको राजाज्ञा से जानेवाले पतियों के साथ जाना पड़ा। वे कैसे जाती हैं? —इसका स्वाभाविक वर्णन है।) रुष्ट वे रमणियाँ अपने पति की ओर दृष्टि ही नहीं फिरातीं; दीर्घ निश्वास छोड़तीं; भौंहों के तनने से ललाट संकुचित हो गया था। केश पर पुष्प भी नहीं था क्योंकि वह रुष्ट होने के कारण उतार कर फेंक दिया गया था। वे पुरुषों के प्राणों के समान उनके साथ-साथ चल रही थीं। (जो हो वे पतिप्राणा थीं। इसलिए जा रही थीं।)। ८२९

माऱॅन्नत् तडङ्गळैप् पोरुदु मामरम्, ऊरुपट् टिडविडै यॊडित्तुच् चाय्त्तुराय्
आऱॅन्च् चॅन्ऱन वरुवि पाय्हवुळ्, ताऱॅनक् कनलुहु तरुहण् यानये 830

अरुवि पाय् कवुळ्–नदी के समान जिनपर मदजल वहता है उन गालों के; ताऱ् ॲन–अंकुश का नाम लेते ही; कनल् उकु–कोपाग्नि उगलनेवाले; तऱुकण्–निर्भय; यानै–हाथी; माऱु अॅन–बाधा समझकर; तटङ्कळै–टीलों को; पॊरुतु–टकराकर, ढहकर; मा मरम्–बड़े-बड़े वृक्षों को; ऊऱु पट्टिट–नाश करते हुए; इटै ऒटित्तु–बीच से तोड़कर; चाय्त्तु–समूल उखाड़कर; उराय्–उनसे रगड़कर; आऱु अॅन–नदी के समान; चॅन्ऱन–चले। ८३०

हाथी जा रहे हैं। उनके गण्डस्थलों पर मदजल नदी के समान बह रहा था। वे ऐसे निडर थे कि अंकुश का नाम सुनते ही आँखों से कोप के अंगारे निकालते। वे मार्ग में बाधा देनेवाले टीलों को दूर करते हुए, बड़े-बड़े वृक्षों को तोड़कर, या उखाड़कर उनसे रगड़ते हुये जा रहे थे। किनारों को ढहाता हुआ, और वृक्षों को तोड़ गिराता हुआ जाना हाथियों और प्रवाह के मध्य साधर्म्य है। अतः वे नदी के समान जाते थे। ८३०

उऴुन्दिड विडमिलै युलह मॅङ्गणुम्
अऴुन्दलि लुयिर्क्कॅलाङ् गॉऴुहॉम् बान्वन्
ऍऴुन्दिल नॅऴुन्दिडैप् पडरुज् जेन्नयिन्
कॉऴुन्दुपोय्क् कॉडिमदिन् मिदिलै कूडिऱ्ऱे 831

उलकम् ॲङ्कणुम्–(अपने राज्य के) सारे प्रदेश में; उयिर्क्कु ॲलाम्–सभी जीवों के लिए; अऴुन्तल् इल्–निराधारता नाशक; कॉऴुकॉम्पु–अवलम्बतरु (आधार); आऩवऩ्–जो थे; ऍऴुन्तिलऩ्–(वे चक्रवर्ती दशरथ) अभी नहीं निकले; ऍऴुन्तु–(उनकी आज्ञा से) निकलकर; इटै पटरुम् चेऩैयिऩ्–मार्ग पर चलती रही सेना का; कॉऴुन्तु–अग्रभाग; पोय्–जाकर; कॉटि मतिल्–ध्वजाओं सहित प्राचीरों के; मितिलै कूटिऱ्ऱु–मिथिला नगर पहुँचा; उऴुन्तु इट–उड़द रखने को; इटम् इलै–स्थान नहीं। ८३१

अपने देश के सभी जीवों के लिए सहारा देनेवाले (लताओं के) अवलंबतरु के समान रहनेवाले दशरथ अभी नहीं निकले थे। क्योंकि सेना, जो उनसे पहले निकली थी, इतनी विशाल और लम्बी है कि उसका अग्रभाग मिथिला में है। और बीच में उड़द डालने की उतनी जगह भी नहीं थी। (तिल रखने को जगह नहीं— यही मसल तमिऴ में भी प्रचलित है पर तिल पितृकार्य में काम आनेवाला है। कवि विवाह के अवसर पर उसका नाम नहीं लेना चाहते। इसलिए उड़द की चर्चा की है। कवि ने अग्रभाग को "पल्लव (सेना पल्लव)" कहा है। यह प्रचलित प्रयोग है। उससे बड़ा ही गम्भीर भाव घोषित होता है।)। ८३१

कण्डवर् मनङ्गळ्कै कोप्पक् कादलिन्, वण्डिमिर् कोदयर् वदन राशियाल्
पण्डिहळ् पण्डिहळ् परिशिऱ् चॅल्वन, पुण्डरी हत्तडम् पोव पोन्ऱवे 832

कण्टवर् मनङ्कळ्–दर्शकों के मनों को; कातलिऩ् कॅकोप्प–अनुरक्त कर अपनी ओर खींचनेवाली; वण्टु इमिर् कोतैयर्–(गाड़ियों पर बैठी) भ्रमरगुंजित केशवाली स्त्रियों की; वतऩ राचियाल्–वदनराशि के कारण; परिचिऩ् चॅल्वऩ–विशिष्टता लिए चलनेवाले; पण् तिकऴ् पण्टिकळ्–आकर्षक कलाकारिता से युक्त गाड़ियाँ; पुण्टरीकम् तटम्–कमलपुष्प भरे तड़ाग; पोव पोऩ्ऱ–चलते जैसे दिखीं। ८३२

कलाकारियों सहित गाड़ियों में स्त्रियाँ जा रही थीं। उनके अत्याकर्षक वदन कमल के समान थे। उनके केशों पर भ्रमर मँडरा रहे थे। इसलिए गाड़ियों को देखने से ऐसा लगता था मानो कमलिनियाँ (कमल भरे तालाब) ही चल रही हों। ८३२

पाण्डिलिन् वैयत्तोर् पावै तन्नॉडुम्, ईण्डिय वन्बिन नेहु वानिडै
काण्डलु नोक्किय कडैक्क णञ्जनम्, आण्डहैक् किनियदो रमुद मायदे 833

पाण्टिल् इऩ् वैयत्तु—बैल-जुती एक गाड़ी में; ओर् पावै तऩ्ऩॊटुम्–चित्रप्रतिमा सी एक रमणी के साथ; ईण्टिय अऩ्पिऩऩ्–गम्भीर प्रेम लेकर; एकुवाऩ्–जो जाता

रहा उस एक तरुण ने; इटै काण्टलुम्–बीच में उस पर दृष्टि गड़ायी, तब; नोक्किय–(तरुण को) जवाब में देखनेवाली उसको; कटै कण् अञ्चतम्–आँखों के कोर से गलकर रसनेवाला काला अंजन; आण् तकैक्कु–पट्ठे को; इत्तियतु ओर् अमुतम्–मीठा, अनुपम अमृत; आयतु–बना। ८३३

एक गाड़ी में एक सुन्दरी जा रही है। वह चित्रप्रतिमा के समान मनमोहक है। उसके साथ-साथ उसका प्रेमी भी जा रहा है। वह उसको देखता है और वह प्रेयसी भी उसकी ओर देखती है। तब उसकी आँखों के कोरों से गलकर रसनेवाला काला अंजन भी अमृत-सम लगता है। (प्रेम के जादू से विष भी अमृत हो जाता है; असुन्दर भी सुन्दर दीखता है।)। ८३३

पिळ्ळैमा नोक्कियैप् पिरिन्दु पोहिन्ड्रान्
अळ्ळनीर् मरुदवैप् पदनि नन्नमाम्
पुळ्ळुमॆन् ड्रामरैप् पूवु नोक्कितान्
उळ्ळमुन् दानुन्निन् रूश लाडिनान् 834

पिळ्ळै मान् नोक्कियै–बालहरिण की सी दृष्टिवाली (प्रिया) को; पिरिन्तु पोकिन्ड्रान्–छोड़कर जानेवाला एक; अळ्ळल् नीर्–पंक और जल से भरी; मरुतम् वैप्पु अततिल्–खेतों की भूमि में; अन्नम् आम् पुळ्ळुम्–हंस पक्षियों को; मॆल् तामरै पूवुम्–कोमल कमल-पुष्पों को; नोक्कितान्–देखता है, तब; उळ्ळमुम् तानुम् निन्ड्रु–अपना मन और आप रुककर; ऊचल् आटितान्–अधीर बना। ८३४

एक प्रेमी को अपनी बालमृगनयनी प्रेमिका को छोड़कर जाना पड़ गया। मार्ग में जब वह खेतों के प्रदेश में हंस पक्षी, कोमल कमल-सुमन आदि को देखता तो (अपनी प्रेयसी के कमल-चरण और हंसगति की याद में) तड़पकर निष्क्रिय खड़ा रह जाता था। ८३४

अङ्गण् ञालत् तरशर् मिडैन्दवर्, पॊङ्गु वॆण्कुडै शामरै पोर्त्तलाल्
गङ्गै याऱु कडुत्तदु कारॆन्नच्, चङ्गु पेरि मुळङ्गिय तानये 835

चङ्कु–शंख; पेरि–भेरियाँ; कार् ॲन्न मुळङ्किय–जिसमें मेघों के समान नर्दन करती थीं उस; तानै–(विशाल) सेना में; अम् कण्–सुन्दर, विशाल; ञालत्तु–भूमि के; अरचर् मिटैन्तु–राजा लोग आकर एकत्र हुए, इसलिए; अवर्–उनके; पॊङ्कु वॆण् कुटै–(आकर्षण में) बढ़े श्वेत छत्र; चामरै–चामर; पोर्त्तलाल्–आच्छादन करते रहे, इस कारण; कङ्कै आऱु कट्टुत्ततु–(वह सेना) गंगा नदी से तुलती थी। ८३५

उस सेना में शंख और भेरियाँ बज रही थीं। अनेक देशों के राजे जो आये थे उनके श्वेतछत्र और चामर ऊपर फैलते हुये सेना को ढक रहे थे। इसलिए वह सेना (लहरों और ध्वनियों के साथ) गंगा नदी के समान लगती थी। ८३५

अमर रञ्जॉ लणङ्गनै यारुयिर्, कवरुङ् कूर्नुदिक कण्णॅनुङ् कालवेल्
कुमरर् नॅञ्जु कुऴिप्प वऴङ्गलाल्, शमर बूमियु मॊत्तदु तानये 836

अम् चॊल्–मनोरम वचनवाली; अमरर् अणङ्कु अनैयार्–देवांगनाएँ-सम स्त्रियाँ; उयिर् कवरुम्–प्राणहारी; कण् ॲनुम्–नयनरूपी; कूर् नुति कालन् वेल्–नुकीले, यम के से, भालों को; कुमरर् नॅञ्चु कुऴिप्प–तरुणों के वक्षों में धँसाते हुए; वऴङ्कलाल्–चलाने से; तानै–वह सेना; चमरम् पूमियुम् ऑत्ततु–समरभूमि से भी तुलती थी। ८३६

उसमें जानेवाली, मधुर-भाषिणी, देवांगनासम स्त्रियाँ, प्राणघातिनी (मनमोहनकारी) आँखोंरूपी अतितीक्ष्ण, यम के से भालों को पट्ठों के हृदयों पर गाड़ देती थीं। अतः वह समरभूमि से भी तुलती थी। (समरभूमि भी कहना इसलिए आवश्यक हुआ कि पहले पद में उसे गंगाजी से तोला गया है।)। ८३६

तोण्मि डैन्दन तूण मिडैन्दॅन, वाण्मि डैन्दन वान्मिन् मिडैन्दॅनत्
ताण्मि डैन्दन तम्मिन् मिडैन्दॅन, आण्मि डैन्दन वाऴि मिडैन्दॅन 837

आऴि मिटैन्त ॲन–सिंह एकत्र हुए से; आळ् मिटैन्तन–पदाति वीर एकत्र हुए; तम्मिल् मिटैन्तॅन–आपस में जुटकर जाने से; ताळ् मिटैन्तन–उनके पैर परस्पर उलझे; तूणम् मिटैन्त ॲन–स्तम्भ सटे से; तोळ् मिटैन्तन–भुजाएँ सटीं; वान् मिन् मिटैन्त ॲन–मेघों में बिजलियाँ संकुलित हुईं जैसे; वाळ् मिटैन्तन–तलवारें सटीं। ८३७

(सेना में रहे लोगों की संख्या अति अपार है।) पदाति वीर इतने जुटे थे कि उनको सटकर जाना पड़ता था। पैरों से पैर, स्तंभसम भुजाओं से भुजाएँ; मेघ में बिजलियों के समान तलवारों से तलवारें; सट गयीं। ८३७

वार्हु लामुलै वैत्तकण् वाङ्गिडप्, पेर्हि लादु पिऱङ्गु मुहत्तिनान्
तेर्हि लानॅऱि यन्दरिर् चॅन्ऱॊरु, मुरि मामद यानयै मुट्टिनान् 838

वार् कुला(वु)म् मुलै–(एक स्त्री के) कंचुकी-बद्ध स्तनों पर; वैत्त कण्–रखी दृष्टि को; वाङ्किट पेर्किलातु–हटाने में असमर्थ; पिऱङ्कुम्–प्रफुल्ल; मुकत्तिनान्–आननवाला (एक तरुण); नॅऱि तेर्किलान्–मार्ग न जानता हुआ; अन्तरिन् चॅन्ऱु–अन्धा-सा जाकर; ऑरु मूरि मा मतम् यानैयै–एक बलिष्ठ, बड़े, मत्त, गज से; मुट्टिनान्–टकराया। ८३८

एक वीर ने अपनी प्रेयसी के कंचुकीबद्ध स्तनों पर दृष्टि डाली तो वह अपनी दृष्टि को वहाँ से नहीं हटा सका। मुख कांतियुक्त हुआ पर मन धूमिल पड़ गया। अन्धा सा, मार्ग भूल गया और एक बलिष्ठ बड़े मत्तगज से जाकर टकराया। ८३८

शुळिहॊळ् पाय्परि तुळ्ळवोर् तोहयाळ्
वळुवि वीळ्दलुऱ् ऱाळयोर् वळ्ळऱान्
ऍळुवि नीळ्पुयत् तालॆडुत् तेन्दिये
तळुवि निन्ऱदल् लाऱ्ऱरै मेल्वयात् 839

चुळि कॊळ्–भली भौंरियों वाले; पाय् परि–दुलकीवाले एक अश्व के; तुळ्ळ–भड़कने से; ओर् तोकैयाळ्–एक मयूरछटा स्त्री; वळुवि वीळ्तल् उऱ्ऱाळै–फिसलकर गिरी, उसको; ओर् वळ्ळल्–एक उपकारी; तान्–स्वयं ही; ऍळुविन् नीळ् पुयत्ताल्–लौहस्तम्भ-सम अपनी दीर्घ भुजाओं से; एन्ति ऍटुत्तु–उठा लेकर; तळुवि निन्ऱतु अल्लाल्–अंक में भरकर खड़ा रहा, वह छोड़कर; तरै मेल् वैयान्–(उसे) भूमि पर नहीं उतारता। ८३९

भली भौंरियों के एक श्रेष्ठ अश्व से, जो फांदकर चलता था, एक सुन्दरी खिसक कर गिर गयी। उस मयूराभा सुन्दरी को एक उदार वीर ने अपनी लौहस्तंभसम बलिष्ठ भुजाओं पर उठा लिया। पर उसको अंक में भरकर वैसे ही खड़ा रहा; उसे नीचे भूमि पर उतार नहीं दिया। (उसकी बलिष्ठ भुजाएँ हैं— वह कैसे उतरतीं ? शरीर और मन दोनों जो फँसे हुये हैं ! न ही वह उतारता क्योंकि वह उदार मनुष्य है !)। ८३९

तुणैत्त तामरै नोवत् तॊडर्न्दिडै, कणैक्क रुङ्गणि नाळैयोर् काळैतान्
पणैत्त वॆम्मुलैप् पाय्मद यानैयै, अणैक्क नङ्गैक् कहलिड मिल्लॆन्ऱान् 840

तुणैत्त तामरै नोव–जोड़े के कमल (चरण) दुखाते हुए; तॊटर्न्तु इटै–अपना अनुगमन करके श्रमित होती; कणै करु कण्णिनाळै–शर-सम (और) काली आँखोंवाली (एक) दयिता को (उद्देश्य करके); ओर् काळै–एक पट्ठे ने; नङ्कैक्कु–इस तरुणी के; पणैत्त वॆम् मुलै–पीन और आकर्षक स्तनरूपी; पाय् मतम् यानैयै–(पुरुषों के मनों पर) आक्रमण करनेवाले गजों को; अणैक्क–रोकने का; अकल् इटम् इल्–विशाल स्थल (वक्ष में) नहीं है; ऍन्ऱान्–कहा। ८४०

कुछ पुरुष छेड़-छाड़ का मनोरंजन करते हुए जा रहे थे। अपने सुन्दर जोड़े के कमल से चरणों को दुख देते हुए एक सुन्दरी एक पुरुष के पीछे-पीछे बहुत श्रम के साथ जा रही थी। उसको देखकर वह सुन्दर युवक कहता है कि इनके स्तन मत्तगज के समान बड़े और प्यारे हैं। वे मानों पुरुषों (के मनों पर) आक्रमण करते से लगते हैं। इनको बाँध रखने के लिए इनका वक्ष-प्रदेश पर्याप्त नहीं है। ८४०

शुळियुङ् गुञ्जि मिशैच्चुरुम् बार्त्तिडप्
पॊळियु मामद यानैयिऱ् पोहिन्ऱान्
कळिय कूरिय वॆन्ऱोरु कारिहै
विळियै नोक्कित्तन् वेलैयु नोक्किनान् 841

चुळियुम् कुञ्चि मिचै–घुंघराले बालों पर; चुरुम्पु आर्त्तिट–भ्रमर भनभनाते

हैं; मा मतम् पॉऴियुम्–अधिक मदजल बहानेवाले; यातैयिऩ्–गज के समान; पोकिऩ्ऱाऩ्–जाते रहे (एक युवक) ने; और कारिकै विऴियै नोक्कि–एक सुन्दरी की आँखों को देखकर; कऴिय कूरिय–अत्यधिक तीक्ष्ण हैं; अऩ्ऱु–कहकर; तऩ् वेलैयुम् नोक्किऩाऩ्–अपनी बर्छी को भी देखा। ८४१

एक युवा वीर जा रहा है। उसके केश के ऊपर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। इस कारण वह मत्तगज के समान है (जिसके मदनीर पर भौंरे मँडराते हैं)। वह एक स्त्री की आँखों को देखता है। उसके मन में प्रश्न उठता है कि हमारी बर्छी अधिक तीक्ष्ण है या इसकी आँखें। इसलिए वह अपनी बर्छी को देखता है मानों तुलना कर रहा हो। ८४१

तरङ्ग वार्कुऴऱ् ऱामरैच् चीऱडिक्, करुङ्गण् वाळुडै याळैयोर् काळैताऩ्
नॅरुङ्गु पूण्मुलै नीळ्वळैत् तोळिऩीर्, मरुङ्गु लॅङ्गु मऱन्दुवन् दीरॅन्ऱाऩ् 842

तरङ्कम् वार् कुऴल्–लघु लहरों के समान छल्लेदार और लम्बे केश; तामरै चिऱ अटि–कमल-सम, छोटे चरण; वाळ् करु कण्–तलवार के समान काली आँखें; उटैयाळै–इनकी स्वामिनी एक को देख; ओर् काळै–एक युवक ने; नॅरुङ्कु पूण् मुलै–सटे हुए और आभरणमण्डित स्तन; नीळ वळै तोळिऩ्–लम्बे और कंकण सहित हाथ-वाली; नीर्–आप; मरुङ्कुल–कमर को; ऍङ्कु–कहाँ; मऱन्तु–भूलकर; वन्तीर्–आईं; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा। ८४२

एक अति सुन्दर स्त्री जा रही है। उसके केश लहरों के समान घुंघराले हैं। पैर छोटे और कमल के समान हैं। आँखें काली और तलवार के समान हैं। उसको देखकर एक पट्ठा पूछता है कि आभरण-भूषित पीन-स्तनी और कंकण-हस्ता! आप अपनी कमर को कहाँ भूल से छोड़कर आयी हैं?। ८४२

कूऱ्ऱम् बोलुङ् गॉलैक्कणणि ऩालऩ्ऱि, माऱ्ऱम् पेशुहि लाळैयोर् मैन्दऩ्ऱाऩ्
आऱ्ऱु नीरिडै यङ्गैह ळालॅडुत्, तेऱ्ऱु वारुमै यावर्हॉ लॅॅन्ऱाऩ् 843

कूऱ्ऱम् पोलुम्–यम के समान; कॉलै कण्णिताल् अऩ्ऱि–घातक आँखों (के संकेत) के सिवा; माऱ्ऱम् पेचुकिलाळै–भाषण न करनेवाली (एक) युवती को (देख); ओर् मैन्तऩ्–एक जवान पुरुष; आऱ्ऱु नीर् इटै–नदी के प्रवाह में; उमै–आपको; अम् कैकळाल्–सुन्दर हाथों से; ऍटुत्तु–उठाकर; एऱ्ऱुवार् यारो–पार लगानेवाले कौन हैं, तो; ऍऩ्ऱाऩ्–यह पूछा। ८४३

एक स्त्री लज्जाशीला है। वह मुख खोलकर बात करने से भी लजाती है। अपनी आँखों के, जो मृत्युदेव के समान प्राणघातिनी हैं, इशारे से ही जवाब देती है। उससे एक पुरुष पूछता है कि नदी पार करने का मौका आयगा तब आपको अपने भाग्यवान सुन्दर हाथों में लेकर कौन उस पार उतार देगा? (तब बोलना ही पड़ेगा न? और बोलने से

शरमानेवाली कैसे छूने देंगी ? नहीं छूने देंगी तो नदी पार करना कैसा ?) । ८४३

तळ्ळरुम् परन् दाङ्गिय वॉट्टहम्, तॅळ्ळु तेङ्गुळै यावैयुन् दिन्गिल
उळ्ळ मॅन्नत्तम् वायु मुलर्न्दन, कळ्ळुण् मान्दरिर् कैप्पन तेडिये 844

तळ्ळ अरुम्–उतारने में अशक्य; परम् ताङ्किय–बड़ा भार ढोनेवाले; ऑट्टकम्–उष्ट्र (ऊँट); तॅळ्ळु तेम् कुळै यावैयुम् तिन्किल–अच्छे मीठे पत्ते कुछ नहीं खाकर; वाय् कैप्पन तेटि–मुख को कड़ुए लगनेवाले पत्ते खोजकर (खाकर); कळ् उण् मान्तरिन्–ताड़ी के पियक्कड़ों के समान; तम् उळ्ळम् अॅन्न–अपने ही मन के समान; वायुम् उलन्तन–मुख के भी शुष्क बने । ८४४

उस भीड़ में ऊँट भी जा रहे हैं। उनका स्वभाव विचित्र है। बहुत भारी सामान का बोझा उठाते चलनेवाले वे मीठे पत्ते नहीं खाते। कड़ुए, नीम के पत्ते जैसे, पत्तों को ही ढूँढ़कर खाते हैं। उनका यह पियक्कड़ों का सा स्वभाव है जो दूध आदि अच्छे पदार्थ नहीं पीते पर ताड़ी पीते हैं जिसके फलस्वरूप मुख सूखा सा रहता है और मन भी कालांतर में शुष्क यानी गुणहीन हो जाता है । ८४४

अरत्त नोक्किन रर्ऱिरुण् मेनियर्, परित्त काविनर् पप्पर रेहिनार्
तिरुत्तु कूडत्तंत् तिण्कणै यत्तॉडुम्, ॲरुत्तिन् माल्हळि रॆन्दिय दॆन्नवे 845

अरत्तम् नोक्कित्तर्–रक्तवर्ण नयन; अल् तिरळ् मेनियर्–अन्धकार जमा हो ऐसा शरीरवाले; पप्परर्–पप्पर (पल्पव ?) जाति के लोग; माल् कळिऱु–मत्तगज; तिरुत्तु कूटत्तै–जहाँ बाँध रखकर अभ्यास दिया जाता है उस गजशाला को ही; तिण् कणैयत्तॉटुम्–सुदृढ़ आलान के साथ; ॲरुत्तिन् एन्तियतु–गर्दन पर ढो लिया; ॲन्न–ऐसे; परित्त कावित्तर्–काँवर उठाते हुए; एकित्तर्–चले । ८४५

पप्परर् जाति के लोग उनके साथ जाते थे । (वाल्मीकी रामायण में 'पप्लव' नाम आया है। वह उस संदर्भ में आया है जब वसिष्ठजी की सुरभी ने वीरों को उत्पन्न किया। शायद वही पप्लव ये पप्पर हों। उन लोगों को राजा लोग कुलियों के रूप में नियत करते थे।) उनकी आँखें रक्तसम लाल थीं; शरीर घना अन्धेरा सा काला था। काँवर ढोते जाते हुये उनको देखते समय वे उन गजों के समान लगते थे जो आलान के साथ गजशाला को ही उखाड़कर उठा लिये जा रहे हों। ८४५

पित्त यानै पिणङ्गिप् पिडियिऱ्कै, वैत्त मेलिरुन् दञ्जिय मङ्गयर्
ॲय्त्ति डुक्कणुर् ऱार्पुदैत् तार्क्किरु, कैत्त लङ्ळिर् कण्णडङ् गामये 846

पित्त यानै–मद-मस्त एक हाथी ने; पिणङ्कि–(महावत की आज्ञा) नहीं मानकर (बिगड़कर); पिटियिल् कै वैत्ततु–हथिनी पर अपनी सूँड़ रखी; मेल् इरुन्तु–उस पर बैठी रही; अञ्चिय मङ्कैयर–डरनेवाली स्त्रियाँ; कण् पुतैत्तार्क्कु–आँखों को (अपने हाथों से) मूँदने जो लगीं; इरु कैत्तलङ्कळिल्–दोनों हथेलियों के

अन्दर; अटङ्कामै–नहीं समायीं, इसलिए; ॲय्तुतु–मन घबड़ाकर; इट्कण् उऱ्ऱार्–संकट में पड़ (भयातुर हो) गईं। ८४६

एक मदमस्त हाथी ने पीलवान से बिगड़कर एक हथिनी की ओर अपनी सूँड़ बढ़ायी। तब उसके ऊपर बैठी हुई कुछ प्रमदाओं ने अपनी आँखें अपनी हथेलियों से मूँद लीं। पर उनकी आँखें इतनी बड़ी थीं कि वे हथेलियों के अन्दर समा नहीं पायीं। उनका डर दूर नहीं हुआ और उनको डर से बड़ा संकट हुआ। (इसमें स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन है और उनकी आँखों की विशालता बतायी गयी है।)। ८४६

वाम मेहलै यारिडै वालदि, पूमि तोय्पिडिच् चिन्दरुम् बोयिनार्
कामर् तामरै नाण्मलर्क् कानत्तुळ्, आमै मेल्वरुन् देरयि नाङ्गरो 847

वामम् मेकलैयार् इटै–सुन्दर मेखला-धारिणी स्त्रियों के बीच में; वालति पूमि तोय्–(जिनकी) पूँछें भूमि को स्पर्श करती थीं; पिटि–उन नाटी हथिनियों पर; कामर् तामरै नाळ् मलर् कानत्तु उळ्–मनोरम कमल के नवीन पुष्पों के मध्य; आमै मेल्–कछुओं पर; वरुम् तेरैयिन्–बैठकर आनेवाले दादुरों के समान; चिन्तरुम् पोयिनार्–नाटी स्त्रियाँ भी गईं। ८४७

चित्ताकर्षक मेखलाधारिणी स्त्रियों के बीच में छोटे कद की औरतें उनके अनुकूल छोटे कद की हथिनियों पर बैठी जा रही हैं। उन हथिनियों की पूँछें लम्बी है और भूमि को स्पर्श करती हैं। (छोटे कद की औरतों को 'चिन्तर्' व "कुऱळर्" कहते हैं। "कुऱळर्" दो फुट की लम्बी और "चिन्तर्" तीन फुट की लम्बी होती हैं। उनको महलों में सेवा टहल के लिए नियुक्त किया जाता था।) उनको देखने पर ऐसा लगता है कि कमल वन के बीच कछुओं पर बैठकर दादुर जा रहे हों। (अन्य स्त्रियाँ नवविकसित कमल हैं। छोटे कद की हथिनियाँ कछुए हैं और बौनियाँ दादुर हैं।)। ८४७

इम्बर् नाट्टिन् ऱरमल्ल ळीङ्गिवळ्, उम्बर् कोमहऱ् कॅन्गिन्ऱ दोक्कुमाल्
कम्ब मावरक् काल्हळ् वळैत्तोरु, कॊम्ब नाळैक्कोण् डोडुङ् गुदिरये 848

ओरु कॊम्पु अन्नाळै कॊण्टु–एक पुष्पलता सदृश सुन्दरी को ढोकर; काल्कळ् वळैत्तु–पैरों को झुकाकर; कम्पम् मा वर–हाथी (पीछे आए, उस) के आगे; ओटुम् कुतिरै–दौड़नेवाला एक अश्व; ईङ्कु इवळ्–यहाँ की (मेरे ऊपर बैठी) यह; इम्पर् नाट्टिन्–इह लोक के लिए; तरम् अल्लळ्–योग्य नहीं है, (यानी यह धरती इसके योग्य नहीं है); उम्पर् कोमकऱ्कु–देवेन्द्र के लिए; ॲन्किन्ऱतु–मानो कह रहा हो; ऒक्कुम्–ऐसा लगता है। ८४८

एक अश्व एक पुष्पलता सदृश सुन्दरी स्त्री को अपनी पीठ पर लिये पैरों को झुका-झुकाकर अतिवेग से दौड़ रहा है। उसके पीछे एक हाथी आ रहा है। (उस अश्व को देखकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि) 'यह

सुन्दरी इस धरती पर रहने के लिए अर्ह नहीं है— देवेन्द्र के लिए ही अर्ह है' ऐसा अश्व कह रहा यानी ऐसा समझकर उसको लिये जा रहा है। ८४८

**❀शन्द वार्हुळल् शोर्न्दवै ताङ्गलार्, शिन्दु मेहलै शिन्दयुञ् जॅय्हिलार्
ॲन्दै विल्लिरुत् तानॅनु मिन्शॊलै, मैन्दर् पेश मनङ्गळित् तोड्वार् 849**

ॲन्तै–मेरे पिता (भगवान); विल् इरुत्तान्–धनु तोड़ चुके; ॲनुम्–यह; इन् चॊल्लै–मधुर समाचार को; मैन्तर् पेच–पुरुषों के कहने पर; मनम् कळित्तु–मन में आनन्दित होकर; चोर्न्तवै–खुलकर लटकनेवाले; चन्तम् वार् कुळल्–मनोरम लम्बे केशजाल को; ताङ्कलार्–उठाकर नहीं बाँधतीं; चिन्तुम् मेकलै–टूटकर गिरनेवाली मेखला की लड़ियों को; चिन्तैयुम् चॅय्किलार्–परवाह नहीं करतीं; ओट्टुवार–भागतीं। ८४६

पुरुष आपस में कह रहे थे कि हमारे तात श्रीराम ने धनु तोड़ लिया। यह सुनकर स्त्रियों में आनन्द और उत्साह भर गया। वे तेजी से चलने लगीं। उनके सुगन्धपूर्ण बाल खुलकर बिखरे; उनको नहीं संभाला। मेखला की लड़ियाँ टूटीं और गुरियाँ गिरने लगीं। उसकी भी उन्होंने परवाह नहीं की। ८४९

**कुडैयर् कुण्डिहै तूक्किनर् कुन्दिय, नडैयर् नाशि पुदैत्तकै नाऱ्ऱलर्
कडह ळिऱ्ऱैयुङ् कारिहै यारैयुम्, अडैय वञ्जिय वन्दणर् मुन्दिनार् 850**

कटम् कळिऱ्ऱैयुम्–मत्तगजों को; कारिकैयारैयुम्–स्त्रियों को; अटैय अञ्चिय–नियराने से डरनेवाले (संकोच करनेवाले); अन्तणर्–ब्राह्मण लोग; कुटैयर्–छत्र रखनेवाले; कुण्टिकै तूक्किनर्–कमण्डलधारी; कुन्तिय नटैयर्–उचकती चालवाले; नाचि पुतैत्त कै–नासिका पर (श्वास रोकने के हेतु) रखे हाथ को; नाऱ्ऱलर्–नीचे नहीं लटकाते; मुन्तिनार्–आगे चले। ८५०

उस बारात के साथ ब्राह्मण भी गये। उनका वर्णन देखिये। वे हाथियों (से डरकर) और प्रमदाओं से (शंकित हो उनसे) दूर जाते थे। उनके एक हाथ में छाता था और कमंडल भी। दायाँ हाथ जो प्राणायाम करने के लिए नासिका पर रखने के व्यवहार में आता था, वे नीचे नहीं लटका रहे थे। (बार-बार प्राणायाम या धूल से बचने के लिए नासिका पर रखना पड़ता था; या पूर्णरूप से लटकाना पुनीतता में बाधा डाल सकता था।) वे उचक-उचक कर चल रहे थे। ८५०

**नाऱु पूङ्गुळ नङ्गयर् कण्णिनीर्, ऊऱ नेर्वन् दुरुवु वॅळिप्पड
माऱु कॊण्डनै वन्दनै याहिल्वन्, देऱु तेर्ॅनक् कैह ळिरैञ्जुवार् 851**

नाऱु पू कुळल्–सुवासित पुष्पालंकृत केशवाली; नङ्कैयर–कुछ तन्वियाँ; कण् इन् नीर् ऊऱ–अपनी आँखों से सुख का अश्रु निकालता हुआ; उरुवु–(श्रीराम का) रूप; नेर् वन्तु वॅळिप्पट–प्रत्यक्ष दिखाई दिया, तब; माऱु कॊण्टनै–सामने मिलने;

वन्ततै आकिल्–आये हैं तो; वन्तु तेर् एरु–आकर रथ पर चढ़ जाइए; अॅन–कहकर; कैकळ् इरैञ्चुवार्–हाथ जोड़कर विनती की। ८५१

सुवासित पुष्पों से अलंकृत केशवाली कुछ स्त्रियाँ, जो रथों पर जा रही हैं, अपनी आँखों के सामने श्रीरामचन्द्र के रूप को देखती हैं। (यह मायारूप है।) तब उनकी आँखों से आनन्दाश्रु बहने लगता है। वे श्रीराम (के रूप) से हाथ जोड़कर विनय करती हैं कि आप सचमुच हमारे समक्ष आ गये हैं तो आप हमारे साथ रथ पर चढ़कर विराजिये। (पाठांतर से यह भी अर्थ किया जाता है कि कुछ स्त्रियाँ, जिनके पुरुष उनसे रुष्ट होकर दूर चले गये हैं, अपने प्रेमियों के रूप को सामने भ्रांति में देखकर उनको बुला रही हैं।)। ८५१

कुरैत्त तेरुङ् कळिरुङ् गुदिरैयुम्, निरैत्त वार्मुर शुन्निरैन्द् दॅङ्गणुम्
इरैत्त पेरॉलि यालिडै यावरुम्, उरैत्तु णर्न्दिल रूमरि नेहिनार् 852

कुरैत्त तेरुम्–गड़गड़ानेवाले रथ; कळिरुम्–हाथी; कुतिरैयुम्–अश्व; निरैत्त वार् मुरचुम्–पंक्तियों में रहे, डोरे-कसे ढोल, (सब ने); अॅङ्कणुम् निरैन्तु–सर्वत्र भरकर; इरैत्त पेर् ऑलियाल्–जो उठाया उस बड़े शोर से; इटै–वहाँ; यावरुम्–सभी; उरैत्त उणर्न्तिलर्–बात (करते) नहीं (सुन) समझ सके; ऊमरिन् एकितार्–गूँगे के समान चलते रहे। ८५२

लोग आपस में नहीं बोलते और गूँगों के समान चुपचाप चल रहे हैं। क्योंकि रथ, गज, तुरंग, भेरियाँ— आदि सभी सर्वत्र अपार नाद कर रहे हैं और उस शोर में कोई किसी का सुन नहीं पाता, समझ नहीं पाता। ८५२

नुट्चि लम्बि वलन्दन नण्डुहिल्, कट्चि लम्बु करुङ्गुळ लार्हुळु
उट्चि लम्बु शिलम्बवॉ दुङ्गलाल्, पुट्चि लम्बिडु पॉय्हयुम् पोन्रदे 853

नुण् चिलम्पि–छोटे मकड़े के; वलन्त अन्न–बुने जाल के समान; नुण् तुकिल्–महीन वस्त्र; कळ् चिलम्पु—भ्रमर-गुंजित; करु कुळ्लार्–काले बालवाली स्त्रियों का; कुळु–समूह; चिलम्पु उळ्–नूपुरों के अन्दर के कंकड़ों को; चिलम्प–झनकाते हुए; ऑतुङ्कलाल्–चलती हैं, इसलिए; पुळ् चिलम्पिटु—पक्षी-रव-भरित; पॉय्कै पोन्रतु–तालाब के समान था। ८५३

स्त्रियों का समूह तालाब का दृश्य उपस्थित करता है जिसमें हंस पक्षी कलरव करते हुए पाये जाते हैं। उनका मकड़ी के जाले का सा महीन वस्त्र जल विस्तार है; उनके केशों पर पुष्प और उन पर भ्रमर जो पाये जाते हैं वे तालाब के फूल और भ्रमरों का दृश्य उपस्थित करते हैं। उनके नूपुरों के अन्दर के कंकण बज उठें, ऐसा वे चलती हैं। वह हंसों का बोलना सा है। कुल मिलाकर वैसे तालाब का दृश्य बन जाता है। ८५३

तॆण्डि रैप्पर वैत्तिरु वन्ननवर्, नुण्डि रैप्पुरै नोक्किय नोक्किनैक्
कण्डि रैप्पन वाडवर् कण्कळि, वण्डि रैप्पन वानै मदङ्गळे 854

तॆण् तिरै–साफ़ लहरोंवाले; परवै–(क्षीर) सागर (में उत्पन्न); तिरु अन्नवर्–लक्ष्मी सदृश स्त्रियाँ; नुण् तिरै पुरै–झीने परदे के छेदों द्वारा; नोक्किय नोक्कितै–जो दृष्टि डालती रही उसको; आटवर् कण्–पुरुषों की आँखें; कण्टु–देखकर; इरैप्पत–मोहवश हुईं; आनै मतङ्कळ्–(मत्त) गजों के मदजल (प्रवाह) पर; कळि वण्टु इरैप्पत–मस्त भ्रमर गुंजार करते हैं। ८५४

पुरुष की आँखें स्वच्छ-तरंग सागरोत्पन्न लक्ष्मीदेवी सदृश स्त्रियों की आँखों को जो झीने पर्दों के अन्दर से उनको देखती हैं, देखकर विह्वल हो जाती हैं। मत्त भ्रमर गजमद जल को पीकर विह्वल हो जाते हैं और गुंजार करते हैं। (इस पद में 'इरैप्पन' शब्द के दो अर्थ— मोह-गद्‌गद होना और गुंजार करना लेकर भ्रमर और पुरुष की आँखों में श्लेष स्थापित किया गया है।)। ८५४

उळैक लित्तन वॆन्न वुयिर्त्तुणै, नुळैक लिक्करुङ् कण्णियर् नूपुरम्
इळैक लित्तन विन्निय मावॆळु, मळैक लित्तॆन वाशिक लित्तवे 855

उळै कलित्तत अॆन्न–मृग मस्ती के साथ उठे से; उयिर् तुणै–मर्म तक; नुळै–घुसनेवाली; कलि करु कण्णियर्–प्रभावक काली आँखों की स्त्रियों के; नपुरम् इळै–नूपुर (रूपी) आभरण; इन् इयम् आ (क) कलित्तन–(श्रुति) मधुर वाद्य के रूप में बजे; वाचि–अश्व; अॆळु मळै कलित्त अॆत–सातों मेघ गरज उठे से; कलित्त–हिनहिनाये। ८५५

इधर स्त्रियों की नूपुरध्वनि मधुर वाद्य-नाद के समान उठी और वाजियों का हिनहिनाना सातों मेघों के गर्जन के समान नाद करता था। स्त्रियाँ भी कैसी ? मृग के से मस्त काले और रोबीले नयनों की; जो नयन पुरुषों के मर्मस्थान तक दृष्टि गाड़ सकते हैं। (सात-मेघ संवर्त, आवर्त, पुष्कलावर्त, गंगारित, द्रोण, काळमुखी और नीलवर्णी)। ८५५

मण्क ळिप्प नडप्पवर् वाण्मुह, उण्क ळिक्कम लङ्गळि नुळ्ळुरै
तिण्क ळिच्चिरु तुम्बियॆ नच्चिलर्, कण्क ळिप्पन कामन् कळिक्कवे 856

मण् कळिप्प नटप्पवर्–धरती को आनन्द देते हुए चलनेवाली (कुछ स्त्रियों के); वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुखरूपी; उण् कळि कमलङ्कळिन् उळ्–(सुरा-) पान की मत्तता दिखानेवाले कमलों में; उरै–(वास करने) रहनेवाले; तिण् कळि चिरु तुम्पि–बहुत मोदपूर्ण छोटे भ्रमररूपी आँखें; अॆन–(पुरुषों को देखकर नन्दित होतीं) उसी तरह; चिलर् कण्–कुछ पुरुषों की आँखें; कामन् कळिक्क–मदन को आनन्द करने का मौका देते हुए; कळिप्पत–(स्त्रियों के मुखों को देखकर) उल्लसित हैं। ८५६

पुरुष और स्त्रियों की परस्पर आँखें लड़ रही हैं। स्त्रियाँ ऐसी चलनेवाली हैं जिसके मृदु-पद पात से धरती दुखती नहीं वरन सुख का

अनुभव करती है। उनके सुन्दर मुख सुरापान के आनन्द की छटा दिखाते हैं और कमल के समान हैं। उन कमलरूपी मुखों में अतिमुग्ध, मस्ती से भरी, भ्रमरों सदृश आँखें पुरुषों को देखकर मुदित होती हैं। वैसे ही पुरुषों की आँखें भी इन आँखों को देखकर मोदमग्न हो जाती हैं। यह देखकर मन्मथ को भी संतोष होता है कि हमारा अब मौका मिल गया। (यानी परस्पर देखते वक्त दोनों के मन में एक दूसरे पर प्रेम पैदा हो जाता है।)। ८५६

ऍण्णु मात्तिर मुम्मरि दामिडै, वण्ण मार्त्त तुवर्क्कनि वाय्च्चियर्
तिण्ण मार्त्तॊळिर् शॆव्विळ नीरिऴि, शुण्ण मार्त्तन तूळियु मार्त्तवे 857

ऍण्णुम् मात्तिरमुम्–भावना के लिए भी; अरितुआम्–अशक्य; इटै–कमर; वण्णम् आर्त्त–सुन्दरतापूर्ण; तुवर् कनि–बिम्बफलारुण; वाय्च्चियर्–मुख (अधर) वाली तरुणियों के; तिण्णम् आर्त्तु–खूब कसकर बद्ध होकर; ऑळिर्–मनोरम लगनेवाले; चॆव्विळनीर्–कच्चे नारियल के फलों (सम उरोजों) से; इऴि–गिरनेवाले; चुण्णम्–चूर्ण; आर्त्तन–सर्वत्र भरे; तूळियुम् आर्त्त–धूलियाँ भी भरीं। ८५७

भावना के लिए भी अशक्य महीन कटि, सुन्दर बिम्बफल सम लाल मुख (अधरों) से युक्त स्त्रियों के कंचुकी के अन्दर खूब कसकर बँधे हुये, नारियल सदृश स्तनों पर लिप्त चन्दन सूख गया और चूर्ण बनकर गिरने लगा। वे चूर्ण सर्वत्र भर गये। धूल भी भर गयी। ८५७

शित्ति रत्तडन् देर्मैन्दर् मङ्गयर्, उय्त्तु रैप्प निनैप्प उलप्पिलर्
इत्ति ऱत्तिन रॆत्तनै योपलर्, मॊय्त्ति रैत्तु वऴिक्कॊण्डु मुन्नितार् 858

चित्तिरम् तट तेर्–सुडौल, विशाल रथों में जानेवाले; मैन्तर् मङ्कैयर्–पुरुष और स्त्रियाँ; उय्त्तु उरैप्प–अनुमान लगाकर कहने में; निनैप्प–सोचने में; उलप्पु इलर्–असंख्यक हैं; इ तिऱत्तिनर्–इस हैसियतवाले; ऍत्तनैयो पलर्–अन्य कितने ही अनेक; मॊय्त्तु–जुटकर; इरैत्तु–शोर मचाते हुए; वऴि कॊण्टु–मार्ग पकड़कर; मुन्नितार्–(मिथिलानगर की ओर) बढ़े। ८५८

विशाल रथों पर चलनेवाले पुरुष और स्त्रियों की संख्या का अनुमान करना या कहना असंभव था। इन (रथों के सवारों) के अलावा अन्य अनेक लोग मिलकर जा रहे थे। वे आपस में खूब हल्ला मचाते हुये मिथिला के मार्ग में आगे बढ़े। (हैसियत का विचार छोड़कर सब मिलकर उत्साह के साथ जा रहे थे।)। ८५८

कुशैयुऱु परियुन् देरुम् वीररुङ् गुऴुमि यॆङ्गुम्
विशैयॊडु कडुहप् पॊङ्गि वीङ्गिय तूळि विम्मिप्
पशैयुऱ तुळियिन् ऱारेप् पशुन्दॊळै यडैत्द मेहम्
तिशैतॊऱु निन्ऱ यानै मदत्तॊळे शॆम्मिड् ऱन्ऱे 859

कुचै उरु परियुम्–लगाम लगे घोड़े; तेरुम्–रथ; वीररुम्–और पदाति; अँङ्कुम् कुळुमि–सर्वत्र दल बाँधकर; विचैयॉटु कटुक–वेग के साथ जाने से; पोङ्कि वीङ्किय तूळि–उठकर फैली धूलिराशि ने; विम्मि–भरकर; मेकम्–मेघों के; पचै उरु–गीली; तुळियिन् तारै–जलधारा के; पचुमै तॉळै–सिक्त रंध्र; अटैत्त–बन्द करा दिये; तिचै तॉरुम् निन्ऱ यानै–दिशा-दिशा में खड़े गजों के; मतम् तॉळै–मद-नीर रंध्रों में भी; चॅम्मिऱ्ऱु–(धूलि) भर गई। ८५९

लगाम लगे अश्व, रथ, पदाति, आदि इतनी बड़ी संख्या में चले कि धूलि की विपुल राशि उठकर फैली। वह मेघों की धारा के रंध्रों में भी भर गयी और हर दिशा के दिग्गज के मदजल के रंध्रों को भी अवरुद्ध कर गयी। ८५९

केडहत् तडक्कै याले किळरॉळि वाळुम् बऱ्ऱिच्
चूडहत् तळिर्क्कै मऱ्ऱैच् चुडर्मणित् तडक्कै पऱ्ऱि
आडहत् तोडै यानै यळिमदत् तिळुक्क लाऱ्ऱिल्
पाडहक् कालि नारैप् पयप्पयक् कॉण्डु पोनार् 860

केटकम् तट कैयाले–ढाल-धरे विशाल (बायें) हाथ में ही; किळर् ऑळि–छिटकती कान्तिवाली; वाळुम् पऱ्ऱि–तलवार भी लेकर; चुटर् मणि–दीप्त कंकण पहने हुए; मऱ्ऱै तट कै–दूसरे (दायें) विशाल हाथ से; चूटकम् तळिर् कै पऱ्ऱि–(पत्नियों के) चूड़ियोंवाले पल्लवमृदु हाथ पकड़कर; आटकत्तु ओटै–स्वर्णनिर्मित मुखपट्टधारी; यानै–गजों से; अळि मतत्तु–झरनेवाले मदजल के कारण; इळुक्कल् आऱ्ऱिल्–फिसलन-युक्त मार्ग में; पाटकम् कालितारै–'पाटकम्' नाम के नूपुर-विशेष से शोभित पैरवालियों को; पय पय–धीरे-धीरे; कॉण्टु पोनार्–ले चले। ८६०

अनेक वीर एक ही हाथ में (बायें हाथ में) ढाल और तलवार लेकर दूसरे कंकण-भूषित हाथ से अपनी पत्नियों को सहारा देकर धीरे-धीरे ले जा रहे थे क्योंकि स्वर्ण-मुखपट्ट से अलंकृत गजों के मदजल प्रवाह के कारण मार्ग में फिसलन पड़ गयी थी। ८६०

शॅय्हळिन् मडुवि नन्नीर्च् चिऱैहळि निऱैयप् पूत्त
नॅय्दलुङ् गुमुदप् पूवु नॅहिळ्न्दशॅङ् गमलप् पोदुम्
कैहळु मुहमुम् वायुङ् कण्गळुङ् काट्टक् कण्डु
कॉय्दिवै तरुह वॅन्ऱु कॉळुनरैत् तॉळुहिन् ऱाराल् 861

चॅय्कळिल्–खेतों में; मटुविल्–छोटे सरोवरों में; नल् नीर् चिऱैकळिल्–अच्छे जल के जलाशयों में; निऱैय पूत्त–अधिकता से फूलित; नॅय्तलुम्–नीलोत्पल; कुमुतम् पूवुम्–कुमुद पुष्प; नॅकिळ्न्त चॅम् कमलम् पोतुम्–खिली लाल कमल की कलियाँ; कैकळुम्–हाथ; मुकमुम्–और मुख; कण्कळुम्–आँखें; काट्ट–दिखातीं, तो; कण्टु–देखकर; इवै कॉय्तु तरुक–इनको तोड़कर ला दो; ऎन्ऱु–कहकर; कॉळुनरै–पतियों से; तॉळुकिन्ऱार्–विनय करती हैं। ८६१

मार्ग में स्त्रियों ने खेतों, तालाबों और अन्य जलाशयों में नीलोत्पल,

कुमुद और कमल आदि फूल देखे। उनको वे अपने ही अवयवों के समान लगे। (वे उन्हें हाथ में लेकर मनोरंजन कर लेना चाहती थीं इसलिए—) वे अपने पतियों से नमस्कार करके विनय करने लगीं कि उनको तोड़कर ला दो। ८६१

पन्दियम् पुरवि निन्ऱुम् पारिडै यिऴिन्दोर् वाशक्
कुन्दळ पारञ् जोरक् कुलमणिक् कलन्गळ् शिन्तच्
चन्दनुण् डुहिलुञ् जोरत् तळिर्क्कैया लणैत्तुच् चार
वन्ददु वेॅऴ मेॅन्न मयिलेॅन विरियल् पोवार् 862

पन्ति अम् पुरवि निन्ऱुम्—श्रेणियों में जानेवाले अश्वों पर से; पार् इटै इऴिन्तोर्—भूमि पर उतरी हुई कुछ स्त्रियाँ; वेऴम् चार वन्ततु ऍन्न—हाथी हमारी ओर आ रहे हैं, यह जानकर; वाचम् कुन्तळ पारम् चोर—सुवासित केशभार के खुलकर लटकते; कुलम् मणि कलङ्कळ् चिन्त—श्रेष्ठ रत्नाभरण के गिरते; चन्तम् नुण् तुकिलुम् चोर—सुन्दर महीन (अधो) वस्त्र के खिसकते; तळिर् कैयाल् अणैत्तु—पल्लव-सम हाथों से पकड़कर; मयिल् ऍन—मोरों के समान; इरियल् पोवार—अस्तव्यस्त हो अलग भागतीं। ८६२

पंक्तियों में अश्व जा रहे थे। उन पर स्त्रियाँ बैठी जा रही थीं। आराम के लिए वे नीचे उतरीं। तब किसी ने कह दिया कि हाथी आ रहे हैं और पास आ गये हैं। यह समाचार सुनते ही वे मोरों के समान छटा दिखाते हुये ससंभ्रम भागने लगीं। तब उनके सुवासपूर्ण केशजाल खुलकर बिखर गये। रत्नाभरण खुलकर गिर गये। महीन अधोवस्त्र भी खिसक गये। वे उन वस्त्रों को हाथ से सम्हालकर पकड़ती हुयी भागीं। ८६२

कुडैयॊडु पिच्चन् दॊङ्गड् कुळाङ्गळुङ् कॊडियिन् काडुम्
इडैयिडै मयङ्गि यॆङ्गुम् वॆळिहरन् दिरुळैच् चॆय्यप्
पडैहळु मुडियुम् पूणुम् पडर्वॆयिल् परप्पिच् चॆल्ल
इडैयॊरु कण्त्ति नुळ्ळे यिरवुण्डु पहलु मुण्डे 863

कुटैयॊटु—छत्रों के साथ; पिच्चम्—मोरछत्र; तोङ्कल् कुळाङ्कळुम्—मोरछल का समूह; कोटियिन् काटुम्—ध्वजाओं का वन; इटै इटै मयङ्कि—आपस में मिश्रित होकर; ऍङ्कुम् वॆळि करन्तु—सर्वत्र आकाश को छिपाकर; इरुळै चय्य—अंधेरा कर देते हैं, तब; पटैकळुम्—(तलवार, भाले) आदि हथियार; मुटियुम्—रत्नकिरीट; पूणुम्—अन्य आभरण; पटर् वॆयिल् परप्पि चॆल्ल—फैलती धूप (प्रकाश) करते जाते हैं; इटै—(सेना के मार्ग के) स्थानों में; ऒरु कणत्तिन् उळ्ळे—एक ही क्षण में (एक साथ); इरवु उण्टु—रात भी है; पकलुम् उण्टु—दिन भी है। ८६३

छत्र, मोरपंखछत्र, मोरछल, ध्वजाओं के समूह, ये सब आपस में मिश्रित होकर, आकाश को ढँककर सर्वत्र अंधेरा बना रहे थे। उसी

समय तलवार आदि अस्त्र, रत्नकिरीट आदि प्रकाश भी फैलाये जा रहे थे। इस तरह वह सेना जहाँ भी जा रही थी वहाँ एक ही समय में रात (का अंधेरा) भी होता था; दिन (की धूप) भी होता था। ८६३

मुरुक्किदऴ् मुत्त मूरल् मुरुवलार् मुहङ्ग ळॅन्नुम्
तिरुक्किळर् कमलप् पोदिर् ड़ीट्टिन किडन्द कूर्वाळ्
नॅरुक्किडै यरुक्कु नीविर् नीङ्गुमि नीङ्गु मॅन्ड्रॅन्
ड्रुरुक्कति लॉळिरु मेति याडव रहलप् पोवार् 864

अरुक्कतिल् ऑळिरुम् मेति–सूर्य के समान कान्तियुत शरीरोंवाले; आटवर्–पुरुष; मुरुक्कु इतऴ्–(काँटेदार तनों और डालों के) 'मुरुङ्ग' वृक्ष के फूलों के रंग के (अति लाल) अधर; मुत्तम् मूरल्—मुक्ता-सम दन्तपंक्ति; मुरुवलार्–मन्दहास (इनके साथ शोभायमान) स्त्रियों के; मुकङ्कळ् ॲन्नुम्–मुखरूपी; तिरु किळर् कमलम् पोतिल्–शोभायुक्त कमल के फूलों पर; तोट्टिय किटन्त–(रहनेवाली) पैनाई गई; कूर्वाळ्–तीक्ष्ण तलवारें; नॅरुक्कु इटै अरुक्कुम्–(हमारी) भीड़ को बीच से काट लेंगी; नीविर् नीङ्कुमिन्–तुम लोग हटो; नीङ्कुम्–हटो; ॲन्रु ॲन्रु–ऐसा कहते हुए; अकल पोवार्–दूर हट जाते। ८६४

(पुरुषों का एक दल खड़ा है। स्त्रियाँ आती हैं। तब पुरुष शिष्टाचारवश मार्ग छोड़कर अलग हट जाते हैं। कवि की उत्प्रेक्षा देखिये।) सूर्य के समान तेजोमय रूपवाले पुरुष, "काँटेदार" मुरुङ्गै वृक्ष के फूलों के समान लाल अधर, मुक्ता के समान दंतपंक्ति और मन्दहास— इनके साथ मनोरम लगनेवाली स्त्रियों के सुन्दर कमल-पुष्पों के समान मुखों में जो तीक्ष्ण तलवारें (यानी आँखें) हैं, वे हमारी भीड़ को बीच से चीरते हुए चली जायँगी; इसलिए हट जाओ; हट जाओ, रास्ता दे दो! यह कहते हुये हट जाते हैं। ८६४

नीन्दरु नॅऱियि नुऱ्ऱ नॅरुक्किनाऱ् चुरुक्कुण् डऱ्ऱुक्
कान्दिन मणियु मुत्तुञ् जिन्दिन कलाबञ् जूऴ्न्द
पान्दळि नलहु लार्दम् परिपुरम् बुलम्बु पादप्
पून्दळि रुऱैप्प माऴ्हिप् पोक्करि दॅन्न निऱ्पर् 865

नॅऱियिन् उऱ्ऱ–मार्ग में बनी; नीन्त अरु–दुर्गम; नॅरुक्किनाल्–भीड़ से; चुरुक्कुण्टु–उलझकर; अऱ्ऱु–कटने से; कान्तु इनम–दीप्त और समूह के; मणियुम् मुत्तुम्–रत्न और मोती; चिन्तिन–जो गिरकर छितरे पड़े थे वे; कलापम् चूऴ्न्त–कलाप वलयित; पान्तळिन् अल्कुलार् तम्—सर्प-फन समान वरांगवाली स्त्रियों के; परिपुरम् पुलम्पु—नूपुर-झंकृत; पातम् पू तळिर्—चरण-पल्लवों में; उऱैप्प–चुभते हैं, इसलिए; माऴ्कि–लड़खड़ाकर; पोक्कु अरितु ॲन्न–जाना असम्भव है, कहकर; निऱ्पार्–खड़ी हो जाती हैं। ८६५

मार्ग में इतनी भीड़ है कि आपस में टकराते वक्त रत्नहार, मोती की मालाएँ आदि आपस में उलझकर कट जाती हैं और कांतियुक्त रत्न

और मोती छितरे पड़े हैं। स्त्रियाँ, जिनकी कमर को कलाप (सोलह लड़ियोंवाली करधनी) घेरकर, उनके सर्पफन के समान जघन को अलंकृत कर रहे हैं और जिनके पैरों पर नूपुर झंकृत हो रहे हैं, जब मार्ग में जाती हैं तो वे रत्न और मोती उनके पैरों में चुभते हैं और अपने पैरों को बचाते-बचाते लड़खड़ा जाती हैं। आगे जाना कठिन है, यह कहती हुयी वे खड़ी हो जाती हैं। ८६५

कॊऱ्ऱनल् लियङ्ग ळॆङ्गुङ् कॊण्डलिऱ् ऱुवैप्पप् पण्डिप्
पॆऱ्ऱवे ऱन्नप् पुळ्ळिऱ् पेदयर् वॆरुवि नीङ्ग
मुऱ्ऱुरु परङ्ग ळॆल्ला मुऱैमुऱै पाशत् तोडुम्
पऱ्ऱऱ वीशि येहि योहियिऱ् परिवु तीर्न्द 866

कॊऱ्ऱम् नल् इयङ्कळ्–श्रेष्ठ विजय वाद्य; ऍङ्कुम्–चारों ओर; कॊण्टलिन् तुवैप्प–मेघों के समान बजते हैं, तब; पण्टि पॆऱ्ऱ एरु–छकड़ों में जुते बैल; मुऱ्ऱु उरु–पूर्णरूप से चढ़ाये गए; परङ्कळ् ऍल्लाम्–बोझ (पदार्थ) सब; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; पाचत्तोटुम्–रस्सी के साथ; पऱ्ऱु अऱ वीचि–बन्धन तोड़ फेंककर; पेतैयर्–स्त्रियाँ; वॆरुवि–डरकर; अन्नम् पुळ्ळिन्–हंस पक्षियों के समान; नीङ्क–अलग हो जायें, ऐसा; एकि–दौड़कर; योकियिन्–योगियों की तरह; परिवु तीर्न्त–संकटमुक्त हुए। ८६६

अनेक श्रेष्ठ और प्रतापी वाद्य, मेघों के समान गर्जन के साथ बज उठते थे। इसलिए छकड़ों में जुते बैलों ने अपना बंधन तोड़कर सारे बोझों को छितरा दिया। अब वे बंधनमुक्त योगियों के समान, स्त्रियों को भयातुर कर भगाते हुए भागे और स्वच्छन्द तथा भारनिवृत्त हो गये। (योगी का उपमान चिन्तन योग्य है। योगी सांसारिक भार उतारकर फेंक देते हैं। विशेषकर स्त्रियों का सम्पर्क छोड़ देते हैं। फिर वे सभी तरह के भवबंधन से छूटकर मुक्तजीवन बिताते हैं।)। ८६६

काऱ्चॆऱि वॆहप् पाहर् कार्मुह वुण्डै पारा
वार्च्चॆऱि कॊङ्गै यन्न कुम्बमु मरुप्पुङ् गाणप्
पाऱ्चॆऱि कडलुट् टोन्ऱुम् पणैक्कैमाल् यानै यॆन्न
नीऱ्चिऱै पऱ्ऱि यॆऱा निन्ऱकुन् ऱनैय वेळम् 867

कुन्ऱु अनैय वेळम्—पर्वत-सम (कुछ) गज; नीर् चिऱै पऱ्ऱि–जलाशय में पैठकर; पाकर्–पीलवानों के; काल् चॆऱि वेकम्—वायु-वेग से; कार्मुकम् उण्टै–कमान से प्रेषित मट्टी के गोलों (गुलेलों) की; पारा–परवाह न करते; वार् चॆऱि कॊङ्कै अन्न–चोली के अन्दर कसे कुचों के समान; कुम्पमुम्–कुम्भों और; मरुप्पुम्–दाँतों को; काण–बाहर प्रकट करते हुए; पाल् चॆऱि कटलुळ् तोन्ऱुम्–क्षीरसागर से निकल आनेवाले; पणै कै माल् यानै अन्न–मोटी सूँड़वाले, उत्तम (ऐरावत) गज के समान; एऱा–बिना तीर पर चढ़े; निन्ऱ–(जल में ही) खड़े रहे। ८६७

(बैलों का हाल देखा; उधर गजों का हाल देखिये।) गिरि के

समान वे हाथी जलाशय देखकर उसमें जाकर पैठ जाते हैं। महावत वेग के साथ कमानों से मिट्टी के गोलों (गुलेलों) से मारते हैं। वे हाथी उनकी परवाह नहीं करते। उन्नत कुचों के समान अपने कुंभों और दाँतों (भर) को जल के बाहर प्रकट होने देते हुए सुख से पैठे रहते हैं। किनारे आने का नाम ही नहीं लेते। जलमग्न वे हाथी तब क्षीरसागर से निकले ऐरावत गज के समान दीखते हैं। ८६७

अऱलियर् कून्दल् वाट्क णमुदुहु कुदलैच् चॅव्वाय्
विऱलिय रोडु नल्याऴ्च् चॅयिरियर् पुरवि मेलार्
नऱॅशॅविप् पॅय्वा रॆन्न नैवळ मुऴुदुम् पाडि
मुऱैमुऱै नणुहप् पोनार् किन्नर मिदुन मॊप्पार् 868

किन्नरम् मितुनम् ऑप्पार्–किन्नर मिथुन-सम; अऱल् इयल् कून्तल्–काले बालू के समान केश; वाळ् कण्—तलवार-सी आँखें; अमुतु उकु–अमृत बरसानेवाले; कुतलै–मधुर भाषण करनेवाला; चॅव् वाय्–लाल मुख, इनसे युक्त; विऱलियरोटु–गायिकाओं सह; नल् याऴ् चॅयिरियर्–श्रेष्ठ वीणावादक गवैये; पुरवि मेलार्–अश्वों पर सवार होकर; नऱै चॅवि पॅय्वार् ऍन्न–श्रवणों में मधु ढालते; नै वळम् मुऴुतुम्–"पालै" राग सभी (मार्गगमन सम्बन्धी राग); मुऱै मुऱै पाटि–यथाक्रम गाते हुए; नणुक पोनार्—पास-पास गये। ८६८

वीणावादक गवैये और गायिकाएँ किन्नर मिथुनों के समान गाकर मनोरंजन करते हुये गये। उन "विऱलि" (वंदिनी गायिका) स्त्रियों के वाल काले बालू के समान थे। आँखें तलवारों के समान तीक्ष्ण थीं। वे सुधा सम मधुर-भाषिणी थीं। ये और वाणजाति के वे वीणावादक गवैये अश्वों पर सवार होकर 'पालै' के विविध रागों के गाने गाते जा रहे थे। (बालों को बालू से उपमित करने की प्रथा है। नदी के तल में जब जल नहीं है और तल गीला है तव देख सकते हैं कि बालू का रंग और लहरों का-सा उनका तल वेणी के समान लगता है। "विऱलियर्" और "चॅयिरियर" विशेष जातियों का स्त्री और पुरुष नाम है। 'पालै' (यानी 'रेगिस्तान') तमिऴ साहित्यिक काव्य शास्त्र में मार्ग गमन का द्योतक है। प्रस्थान और प्रवास सम्बन्धी गानों के लिए जो तानें निर्धारित हैं वे 'पालै पण्' कहलाती हैं।) किन्नर देवजातियों में एक है। (कभी-कभी वह विशेष पक्षी जाति भी वताया जाता है।)। ८६८

अरुविपॅय् वरैयिऱ् पॊङ्गि यङ्गुश निमिर वॆङ्गुम्
इरियलिऱ् चनङ्गळ् चिन्द विळङ्गळिच् चिरुकण् यानै
वरिशिऱैत् तुर्म्बि योट्टम् वारमदन् दोय्न्दु मादर्
शुरिकुऴऱ् पडिय वेरुम् पिडियुन् दॊडर्न्दु शॆल्व 869

इळम् कळि–तरुण और मस्त; चिऱु कण् यानै–छोटी आँखोंवाले कलभ;

अङ्कुचम् निमिर–अंकुश को सीधा करके (बेकार कर); अरुवि पॆय् वरैयिन्–झरनों को बहानेवाले गिरियों के समान; पॊङ्कि–विफरकर; चत्तङ्कळ्–जन; इरियलिन्, अॆङ्कुम् चिन्त–भागकर तितर-बितर हो जायँ; वरि चिऱै–धारीदार पंखों के; तुम्पि ईट्टम्–भ्रमरों के समूह; वार् मतम् तोय्न्तु–ढलनेवाले मदजल में पैठकर; मातर् चुरि कुऴल् पटिय–(फिर) स्त्रियों के घुँघराले बालों पर जा ठहर जायें, ऐसा; एऱुम् पिटियै–(स्त्रियों से) आरोहित हथिनियों को; तॊटर्न्तुम् चॆल्व–अनुसरण करते गये। ८६९

(एक मत्त हाथी की करतूत देखिये।) मत्त गज के बलात खींचते हुए जाने से अंकुश अपनी वक्रता खोकर सीधा हो गया और बेकार भी। हाथी के मस्तक से मदजल नदियों के समान वह रहा था। तब वह झरनों सहित पर्वत के समान लगता था। उसको देखकर सभी लोग डरकर तितर-बितर हो गये। भ्रमर उस मदजल पर बैठकर उठे और स्त्रियों के घुँघराले केशों पर बैठे क्योंकि वह उसी हथिनी का पीछा करने लगा जिस पर स्त्रियाँ सवार होकर जा रही थीं। ८६९

निऱैमदित् तोऱ्ऱङ् गण्ड नीनॆडुङ् गडलि दॆऩ्ऩ
अऱैपऱै तुवैप्पत् तेरु मालैयु माडऩ् मावुम्
कऱैहॆऴु वेऱ्क णारु मैऩ्दरुङ् कविऩि यॊल्लै
नॆऱियिडैप् पडर वेन्द ऩेयमङ् गैयरॆ ऴुन्तार् 870

निऱै मति–पूर्णचन्द्र के; तोऱ्ऱम् कण्ट–उदयदर्शी; नील् नॆटु कटल्–नीला विशाल समुद्र; इतु ऍऩ्ऩ–यह है ऐसा; अऱै पऱै तुवैप्प–पिटकर बजनेवाले (चमड़े-मढ़े) वाद्य बज उठे; तेरुम् आतैयुम्–रथ और गज; आटल् मावुम्–विजयी अश्व; कऱै कॆऴु–(रक्त) चिह्न लगे; वेल् कण्णारुम्–भाले के समान आँखोंवाला स्त्रियाँ; मैन्तरुम्–पुरुष लोग, सब; कविऩि–मनोहर ढंग से मिलकर; नॆऱि इटै–मार्ग पर; ऑल्लै–शीघ्र; पटर–जाते हैं, तब; वेन्तन् नेयम् मङ्कैयर्–चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ; ऍऴुन्तार्–निकलीं (रवाना हुईं)। ८७०

(अब महिषियों की बारी है।) पूर्णचन्द्र के उदय पर जैसे नीला समुद्र गरज उठता है वैसे भेरियाँ आदि वाद्य पिटकर बज उठे। रथ, गज, तुरग, रक्त के धब्बे सहित वेल् (शक्ति) के समान तीक्ष्ण आँखोंवाली स्त्रियाँ और पुरुष ये सब बड़े सुन्दर ढंग से मिलकर मार्ग पर आगे गये। तभी चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ रवाना हुयीं। ८७०

पॊय्हयङ् गमलक् काऩिऱ् पॊलिवदो रऩ्ऩ मॆऩ्ऩक्
कैहयर् वेऩ्दऩ् पावै कणिहैय रणियि नीट्टम्
ऐयिरु नूऱु चूऴ वाय्मणिच् चिविकै तऩ्मेल्
दॆय्वमङ् गैयरु नाणत् तेऩिशै मुरलप् पोऩाळ् 871

कैकयर् वेन्तन् पावै–केकय राजा की तनया; कणिकैयर् अणियिन्–दासियों की श्रेणियों का; ईट्टम्–समूह; ऐ इरु नूऱु चूऴ–पाँच के दो सौ (हज़ार) साथ आये;

आय् मणि–चुने हुए रत्न जड़े; चिविकै तन् मेल्–शिविका पर; पॉय्कै–तडाग में विकसित; अम् कमलम्–सुन्दर कमलों के; कानिल्–वन में; पॉलिवतु–शोभायमान; ओर् अन्नम् अँन्न–एक हंस के समान; तॅय्व मङ्कैयरुम् नाण–देवांगनाओं को भी लजाते हुए; तेन् इचै मुरल–मधुभ्रमरों के श्रुति मधुर राग गाते; पोनाळ्–गईं। ८७१

(पहले केकय राजकुमारी की चर्चा है।) एक सहस्र दासियाँ गयीं। उनके बीच में केकयराजतनया चुने हुये रत्नों से सज्जित एक शिविका पर बैठकर गयीं। कमलवन के मध्य एक हंस के समान, देवांगनाओं को भी शान व मान में हराती हुयी रानी कैकेयी जा रही थीं। ८७१

विरिमणित् तार्हळ् पूण्ड वेशरि वॅरिनिऱ् ऱोन्ऱुम्
अरिमलर्त् तडङ्ग णल्ला रायिरत् तिरट्टि चूळक्
कुरुमणिच् चिविहै तन्मेऱ् कॉण्डलिन् मिन्निॅ दॅन्न
इरुवरैप् पयन्द नङ्गै याळिशै मुरलप् पोनाळ् 872

विरि–विस्तृत; मणि तार्कळ्–रत्न दाम; पूण्ट–पहने हुए; वेचरि वॅरिनिल्–खच्चरों पर; तोन्ऱुम्–बैठी दिखाई देनेवाली; अरि–लाल डोरों सहित; मलर्–कुमुद-सम; तट कण्–विशाल आँखों की; आयिरत्तु इरट्टि नल्लार्–हज़ार के दो (दो सहस्र) स्त्रियों के; चूळ–घेरते आते; कुरु–रंगीन; मणि–रत्नमय; चिविकै मेल्–शिविका पर; कॉण्टलिन् मिन्–मेघ में विजली; इतु अँन्न–(यह है, ऐसा) के समान; याळ् इचै मुरल–वीणावादन के होते; इरुवरै पयन्त नङ्कै–दो पुत्रों की प्रसविनी (सुमित्रा) पॉनाळ्–गईं। ८७२

मणियों की लड़ियों की बनी मालाओं से अलंकृत खच्चरों पर दो सहस्र दासियाँ, जिनकी आँखें लाल डोरों के साथ कुमुद के समान शोभायमान थीं, जा रही थीं। उनके बीच रत्नमय शिविका में मेघ मध्य बिजली के समान लक्ष्मण और शत्रुघ्न दो पुत्रों की प्रसविनी देवी सुमित्रा गयीं। वीणा वादन हो रहा था और वे उसका आस्वादन करती हुई जा रही थीं। ८७२

वॅळ्ळॅयिऱ् ऱिलवच् चॅव्वाय् मुहत्तॅवॅण् मदिय मॅन्ऱु
कॉळ्ळयिऱ् ऱिरळ्वान् मीन्गळ् कुळुमिय वन्नैय वूर्दित्
तॅळ्ळरिप् पाणडिऱ् पाणिच् चॅयिरिय रिशैत्तेन् शिन्द
वळ्ळलैप् पयन्द नङ्गै वानवर् वणङ्गप् पोनाळ् 873

वॅळ् अँयिऱु–सफ़ेद दाँत; इलवम् चॅव्वाय्–सेमर के समान मुख (अधर) शोभित; मुकत्तै–मुख को; मतियम् अँन्ऱु–पूर्णचन्द्र समझ; कॉळ्ळैयिल् तिरळ्–अधिकता से जमा हुए; वान् मीन्कळ्–आकाश के तारे; कुळुमिय–एकत्र हुए से; अनैय–दिखनेवाले; उर्ति–यान पर; वळ्ळलै पयन्त–प्रभु को प्रसव करनेवाली; नङ्कै–देवी कौसिल्या; तॅळ्–स्वच्छ; अरि–कोमल; पाण्टिल् पाणि—ताल-लय के साथ गाने में चतुर; चॅयिरियर्–गवैयों के; इचै तेन् चिन्त–संगीतरूपी शहद बहाते; वानवर् वणङ्क–देवों के स्तुति करते; पोनाळ्–गईं। ८७३

श्वेत दंतपंक्ति और सेमर के लालफूल की-सी अरुण अधरोंवाली कौसल्या देवी एक सुन्दर यान पर बैठी जा रही थीं। उनका यान चन्द्र के समान था और उसमें जड़ित मणियाँ नक्षत्रों के समान थीं। वह ऐसा लगता था मानों नक्षत्र चन्द्र समझकर इनको घेर आये हों। प्रभु श्रीराम की माता के साथ श्रेष्ठ गवैये, जो ताल लय शुद्ध रीति से संगीत सुनाने में कुशल थे; गाते हुए गये। देवगण माता कौसल्या की स्तुति कर रहे थे। ८७३

शॅङ्गयिन् मञ्ञै यन्नम् जिरुकिळि पूवै पावै
शङ्गुरै कळित्त वन्न चामरै मुदल ताङ्गि
इङ्गल दॅण्णुङ् गान्मऱ् ऱॅळुदिरै वळाहत् तङ्गुम्
मङ्गय रिल्लै यॅन्न मडन्दयर् मरुङ्गु पोनार् 874

ॲण्णुम् काल्–समीक्षण करने पर; ॲळु तिरै वळाकत्तु–सात समुद्रों से घिरे इस भूमण्डल में; इङ्कु अलतु–यहाँ (अयोध्या) के सिवा; मऱ्ऱु ॲङ्कुम्–अन्यत्र कहीं; मङ्कैयर् इल्लै–स्त्रियाँ (हैं ही) नहीं; ॲन्न–इस कथन को साबित करते हुए; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; चम्कैयिल्–लाल (कोमल) हाथों में; मञ्ञै–मोर; अन्नम्–हंस; चिऱु किळि–छोटे शुक; पूवै–सारिकाएँ; पावै–प्रतिमाएँ; चङ्कु उऱै कळित्त अन्न–शंखों के समान जो अभी-अभी आवरण से बाहर निकाले गये हों; चामरै मुतल–चामर आदि; ताङ्कि–धारण करके; मरुङ्कु पोनार्–रानियों के पार्श्व में गईं। ८७४

अनेक स्त्रियाँ उनके पार्श्व में जा रही थीं। उनकी संख्या गिन कर देखें तो ऐसा कहा जा सकता है कि सप्तसमुद्रवलयित भूमंडल में अन्यत्र कहीं स्त्रियाँ हैं ही नहीं। वे अपने हाथों में मोर, हंस, छोटे शुक, सारिकाएँ, प्रतिमाएँ, नवीन शंख के समान श्वेत चामर आदि पदार्थ लेती गयीं। ८७४

कारण मिन्ऱि यॅयुङ् कनलॅळ विळिक्कुङ् गण्णार्
वीरवेत् तिरत्तार् ताळ्न्तु विरिन्तकञ् जुकत्तु मॅय्यार्
तारणि पुरवि मेलार् तलत्तुळार् कदित्त शॊल्लार्
आरणङ् गनैय माद रडिमुऱै कात्तुप् पोनार् 875

कारणम् इन्ऱि येयुम्–अकारण ही; कनल् ॲळ विळिक्कुम्–अंगारे उगलते हुए तरेरनेवाली; कण्णार्–आँखों के; वीरम् वेत्तिरत्तार्–वीर वेत्रधर; ताळ्न्तु विरिन्त–आपादलम्बित और ढीले; कञ्चकत्तु मॅय्यार्–अँगरखा पहने शरीरोंवाले; कतित्त चॊल्लार्–डाँटते हुए बोलनेवाले, (कंचुकी, अनेक); तार् अणि पुरवि मेलार्–हारों से अलंकृत अश्वों पर सवार; तलत्तु उळ्ळार्–और भूमि पर (पैदल) चलनेवाले; मुऱै–क्रम से; आर् अणङ्कु अनैय–सुन्दर देवांगनाओं के सदृश; मातर् अटि–रानियों के चरणतल में; कात्तु पोनार्–संरक्षण करते हुए गये। ८७५

उनकी रक्षा में कंचुकी भी जा रहे थे। उनकी आँखें अकारण क्रोध

के अंगारे उगलनेवाली थीं। उनके हाथ में वीरवेत्र थे। वे आपादलंवित और ढीले अंगरखे पहने हुये थे। डांट डपट से ही बात करते थे। उनमें अश्वों पर सवार भी थे, पैदल चलनेवाले भी। वे देवांगनाओं के समान उन रानियों की चरण-सेवा में उनकी रक्षा करते हुये जा रहे थे। ८७५

कूऩॊडु कुऱळुम् जिऩ्दुम् जिलदियर् कुऴामुङ् गॊण्ड
पालिऱप् पुरवि यऩ्ऩप् पुळ्ळॆऩप् पारिऱ् चॆल्लत्
तेऩॊडु ञिमिऱुम् वण्डुन् दुम्बियुम् बन्दर् चॆय्यप्
पूनिऱै कूऩ्दल् मादर् पुडैमडप् पिडियिऱ् पोऩार् 876

कूनॊटु कुऱळुम् चिन्तुम्–कुवड़े, "कुरळ्" और "चिन्त" ठिंगने और बौने; चिलतियर् कुऴामुम्–दासियों के समूह; कॊण्ट–ढोनेवाले; पाल् निऱम् पुरवि–दुग्धवर्ण अश्व; अऩ्ऩपपुळ् अॆऩ–हंस पक्षी के समान; पारिल् चॆल्ल–भूमि पर आये; तेऩॊटु–मधु-भ्रमर; ञिमिऱुम्–अलि; वण्टुम्–अन्य भौंरे; तुम्पियुम्–और काले भ्रमर; पन्तर् चय्य–ऊपर वितान सा बनाते हुए; पू निऱै कूऩ्तल् मातर्–पुष्पालंकृत कुंतलवाली स्त्रियाँ; पुटै–पार्श्व में; मट पिटियिल्–छोटी आयु की हथिनियों पर; पोनार–गईं। ८७६

कुवड़े, बौने, ठिंगने, दासियाँ, आदि सभी दुग्धवर्ण अश्वों पर, जो हंसों के समान भूमि पर चल रहे थे, बैठकर गये। उनके पार्श्व में अनेक स्त्रियाँ छोटी आयु की हथिनियों पर सवार हो, जा रही थीं। उनके केशों पर फूल सजे थे और उन फूलों के ऊपर मधुभ्रमर, अलिभ्रमर और काले भौंरे वितान सा बनाते हुये मँडरा रहे थे। ८७६

तुप्पिऩिऩ् मणियिऱ् पॊऩ्ऩिऱ् चुडर्मर हदत्तिऩ् मुत्तिऩ्
ऒप्पऱ वमैत्त वैय मोवियम् पोल वेऱि
मुप्पदिऱ् ऱिरट्टि कॊण्ट वायिर मुहिऴ् मॆऩ् कॊङ्गैच्
चॆप्परुन् दिरुवि ऩल्लार् तॆरिवयर् शूऴप् पोऩार् 877

मुकिऴ् मॆऩ् कॊङ्कै–(कमल) कली से कोमल स्तनोंवाली; चॆप्प अरु–अवर्ण्य; तिरुविन् नल्लार्–लक्ष्मी से भी अधिक श्रेष्ठ; मुप्पतिऱ्ऱु इरट्टि कॊण्ट–तीस के दुगुने; आयिरम्–(साठ) सहस्र; तॆरिवैयर्–कोमलांगियाँ; तुप्पितिऩ्–प्रवाल से; मणियिऩ्–माणिक से; पॊऩ्ऩिऩ्–स्वर्ण से; चुटर् मरकतत्तिऩ्–कान्तिमान मरकत से; मुत्तिऩ्–मोतियों से; ऒप्पु अऱ–अनुपम रीति से; अमैत्त वैयम्–बनी बन्द गाड़ियों में; ओवियम् पोल एऱि–चित्र के समान चढ़कर; चूऴ–(रानियों को) घेरती हुई; पोऩार्–चलीं। ८७७

इनके अलावा साठ सहस्र स्त्रियाँ प्रतिमाओं की तरह बन्द गाड़ियों पर सवार होकर जा रही थीं। वे कमलकलियों के समान स्तनोंवाली थीं और देवी लक्ष्मी से भी अधिक सुष्ठ थीं। उनकी गाड़ियाँ, प्रवाल, मणि-माणिक, स्वर्ण, कांतिमान मरकत, मोती आदि से सज्जित थीं और अनुपम

रीति से अति सुन्दर रची गयी थीं। (ये शायद चक्रवर्ती की अन्य पत्नियाँ थीं।)। ८७७

शॅविवयि नमुदक् केळ्वि तॅविट्टिनार् तेवर् नाविन्
अविहयि नळिक्कु नीरा रायिरत् तिरट्टि शूळ्क्
कविहयि नीळ्ड् कट्पि नरुन्ददि कणवन् वॅळ्ळैच्
चिविहयि नन्न मूरुन् दिशैमुह नॅन्नच् चॅन्ड्रान् 878

चॅवि वयिन्–श्रवणों से; अमुतम् केळ्वि–अमृत-सम श्रुति को; तॅविट्टितार्–सुन-सुनकर जो तृप्त हो चुके हैं; तेवर् नाविन् अवि–देवों के जिह्वा से आस्वाद्य हवि को; कैयिन्–अपने हाथ से; अळिक्कुम् नीरार्–(यज्ञाग्नि द्वारा) दिलाने की योग्यता रखनेवाले; आयिरत्तु इरट्टि–सहस्र के दुगुने; चूळ–घेरते आये; कट्पिन् अरुन्तति–सती अरुन्धती के; कणवन्–पतिदेव; अन्तम् ऊरुम्–हंसवाहन; तिचै मुकन्–दिशामुख (ब्रह्मा); ॲन्त–के समान; वॅळ्ळै चिविकैयिन्–श्वेत शिविका पर; कविकैयिन्–नीळल्–छत्र की छाया में; चॅन्ड्रान्–गये। ८७८

सती अरुन्धती के पति वसिष्ठजी रवाना हुये। उनके साथ दो सहस्र ब्राह्मण गये जिनके कान श्रुतियाँ सुनते-सुनते तृप्त हो चुके थे; और जो देवताओं को अपने हाथ से अग्निमुखेण हवि देनेवाले यज्ञ करने में दक्ष थे। वसिष्ठजी एक मोती की श्वेतवर्ण शिविका में हंसवाहन ब्रह्मा के समान लगते थे। ८७८

पॉरुहळि रिवुळि पॉट्रेर् पॉलङ्गळ्ड् कुमरर् मुन्नीर्
अरुवरै शूळ्न्द दॅन्न वरुहमुन् पिन्नुञ् जॅल्लत्
तिरुवळर् मार्बर् दॅय्वच् चिलैयिनर् तेरर् वीरर्
इरुवरु मुनिपिन् पोन विरुवरु मॅन्नप् पोनार् 879

पॉरु कळिरु–युद्धगज; इवुळि–अश्व; पॉन् तेर्–स्वर्णरथ; पॉलम् कळल् कुमरर्–स्वर्ण-पायलधारी पदाति वीर; मुन्नीर्–समुद्र; अरु वरै–दुर्गम पर्वत को; चूळ्न्तनु ॲन्त–घेर गया हो ऐसा; अरुकु–पार्श्व में; मुन् पिन्नुम्–आगे और पीछे; चॅल्ल–जाते हैं; तिरुवळर् मार्पर–श्रीशोभित वक्षवाले; तॅय्वम् चिलैयितर्–दिव्य धनुर्धर; वीरर्–प्रतापी; इरु वरुम्–(भरत और शत्रुघ्न) दोनों कुमार; मुति पिन् पोत–(जो विश्वामित्र) महर्षि के पीछे गये; इरुवरुम् ॲन्त–उन दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) के समान; तेरर् पोतार्–रथ पर सवार होकर गये। ८७९

(भरत और शत्रुघ्न की चर्चा है) युद्ध गज, अश्व, स्वर्णरथ और स्वर्णपायलधारी पदाति वीर—ये चार सेनाएँ उनको घेरकर जा रही थीं। भरत और शत्रुघ्न श्रीशोभित विशाल वक्षवाले थे। उनके धनु दिव्य धनु थे। उनके रथ दुर्गम पर्वत के समान थे और सेनाएँ उनको घेरे रहनेवाले समुद्र के समान थीं। वे वीर कुमार बिलकुल उन श्रीराम और लक्ष्मण के समान थे, जो विश्वामित्र के पीछे गये थे। ८७९

नित्तिय नियम मुऱ्ऱि नेमियान् पादञ् जॅन्ऩि
वैत्तपिन् मऱैवल् लोर्क्कु वरम्बऱु मणियुम् पॉन्ऩुम्
पत्तिया ऩिरैयुम् पारुम् परिवॊडु नल्हिप् पोऩान्
मुत्तणि वयिरप् पूणान् मङ्गल मुहिऴ्त्त नन्ऩाळ् 880

मुत्तु—मोती; अणि वयिरम्—सुन्दर हीरे; पूणान्—इनके बने आभरणोंवाले (चक्रवर्ती); मङ्कलम् मुकिऴ्त्तम् नल् नाळ्—मंगल मुहूर्त के दिन में; नित्तिय नियमम् मुऱ्ऱि—नित्यानुष्ठान पूरा करके; नेमियान् पातम्—चक्रपाणि (अपने कुल देवता) के पैरों को; चॅन्ऩि वैत्त पिन्—अपने सिर पर धारण करने के अनन्तर; मऱै वल्लोर्क्कु—वेद-विद्वानों (ब्राह्मणों) को; वरम्पु अऱ मणियुम्—अपार रत्न; पॉन्ऩुम्—स्वर्ण; पत्ति आन् निरैयुम्—पंक्तियों में गायों के समूह; पारुम्—और भूमि; परिवॊटुम् नल्कि—प्रेम के साथ दान करके; पोऩान्—चले। ८८०

(अब चक्रवर्ती ने भी प्रस्थान किया) उस दिन, जिसमें प्रस्थान का मंगल मुहूर्त पड़ता था चक्रवर्ती ने अपना नित्यकर्मानुष्ठान क्रम से पूरा किया। चक्रपाणि श्रीरंगनाथ उनके कुलदेवता थे। (ब्रह्मा से इक्ष्वाकु महाराज को वह विग्रह मिला और तब से वह अयोध्या में पूजित होता आता था) महाराज ने उनके पैरों को अपने सिर पर धारण किया (यानी दण्डवत की)। फिर वेदज्ञ विप्रों को अपार रत्न, मणि, माणिक्य, स्वर्ण, पंक्तियों में गायों के समूह, और भूमि—यह सब श्रद्धा के साथ दान दिया। खुद मोतियों और रत्नों के आभूषणों से अलंकृत होकर चल पड़े। (दान देना मंगलदायक रस्म है। मोती और हीरे शुभालंकार हैं।)। ८८०

इरुपिऱप् पाळ रॅण्णा यिरर्मणिक् कलश मेन्दि
अरुमऱै वरुक्क मोदि यरुहुनीर् तॅळित्तु वाऴ्त्त
वरन्मुऱै वन्दार् कोडि मङ्गयर् मऴलैच् चॅव्वायप्
परुमणिक् कलाबत् तार्पल् लाण्डिशै परविप् पोऩार् 881

ॲण्णायिरर्—आठ सहस्र; इरु पिऱप्पाळर्—द्विज; मणिकलचम् एन्ति—सुन्दर पूर्णकुम्भ लेकर; अरु मऱै वरुक्कम् ओति—श्रेष्ठ वेदमन्त्र स्तवन गान करते हुए; अऱुकु नीर् तॅळित्तु—दुर्वादल से, मन्त्रित जल लेकर चक्रवर्ती पर प्रोक्षण कर; वाऴ्त्त—आशीर्वाद देते; वरल् मुऱै वन्तार्—वन्दी परम्परा में आये; मऴलै चॅव्वाय्—मधुर तुतली बोली बोलनेवाले लाल अधरों की; परुमणि कलापत्तार्—स्थूल मणियों के कलाप से अलंकृत; कोटि मङ्कैयर्—करोड़ स्त्रियाँ; पल्लाण्टु इचै—जयजीव के गीत; परवि पोऩार्—गाती हुई चलीं। ८८१

आठ सहस्र द्विजों ने पवित्र जल भरे रत्नकलश हाथों में लेकर वेद-मंत्र पढ़े। उस तरह मंत्रित जल को पवित्र दूर्वादल द्वारा लेकर उन्होंने चक्रवर्ती पर प्रोक्षण किया। फिर वन्दिनी के कुल में आयी करोड़ सुन्दरी स्त्रियों ने, जो मधुरभाषी लाल मुखोंवाली और कलापालंकृत थीं

"जयजीव" के गीत गाये और राजा की स्तुति की। (मेखला शायद वस्त्र के अंदर और कलाप आदि वस्त्रों के ऊपर पहने जाते हैं) । ८८१

कण्डिल ऍन्नै यॆन्बार् कण्डन ऍन्नै यॆन्बार्
कुण्डलम् वीऴ्न्द दॆन्बार् कुरुहरि दिनिच्चॆन् ऱॆन्बार्
उण्डुहॊ लॆऴुच्चि यॆन्बा रॊलित्तदु शङ्ग मॆन्बार्
मण्डल वेन्दर् वन्दु नॆरुङ्गिनर् मरुङ्गु मादो 882

मण्टल वेन्तर्—अनेक मण्डलाधिप; मरुङ्कु वन्तु—पास आकर; नॆरुङ्कितर्—जमा हो गये; चङ्कम् ऑलित्ततु ऍन्पार्—शंख बजा, कहते; ऍऴुच्चि उण्टु कॊल्—कहीं प्रस्थान है क्या; ऍन्पार्—कहते; ऍन्नैक् कण्टिलन्—मुझे नहीं देखा; ऍन्पार्—कहते; ऍन्नै कण्टनन्—मुझको देखा; ऍन्पार्—कहते; कुण्टलम् वीऴ्न्ततु—कर्णकुण्डल गिर गये; ऍन्पार्—कहते; इनि कुरुकु—अब पास जाना; अरितु—कठिन है; ऍन्पार्—कहते। ८८२

अनेक मंडलाधिपति चक्रवर्ती से भेंट करने आये थे। (उनको शायद विदित नहीं था कि चक्रवर्ती मिथिला जा रहे हैं) कुछ ने कहा—'शंख बजता है' तब क्या चक्रवर्ती कहीं प्रस्थान करनेवाले हैं?—कुछ ने पूछा, कुछ आगे गये पर लौट आये और बोले कि मुझपर उनकी दृष्टि पड़ी ही नहीं। कुछ राजा लोगों ने कहा कि उन्होंने मुझे निहारा। भीड़-भम्भड़ में कुछ राजाओं के कर्णकुण्डल खुलकर गिर गये। उन्होंने शिकायत की कि कुण्डल कहीं गिर गये। कुछ राजाओं ने कहा कि अब चक्रवर्ती के पास पहुँचना असाध्य है। ८८२

पॊऱ्ऱॊडि महळि रूरुम् पॊलङ्गॊडारप् पुरवि वॆळ्ळम्
शुऱ्ऱुवु कमलम् पूत्त तॊडुकडऱ् ऱिरैयिऱ् चॆल्लक्
कॊऱ्ऱवेन् मन्नर् शॆङ्गैप् पङ्गयक् कुळाङ्गळ् कूम्ब
मऱ्ऱॊरु कदिरो नॆन्न मणिनॆडुन् देरिऱ् पोनान् 883

पॊन् तॊटि मकळिर्—स्वर्ण-कंकणधारिणी स्त्रियों की; ऊरुम्—सवारी के; पॊलम् कॊल् तार्—स्वर्ण के बने, हारोंवाले; पुरवि वॆळ्ळम्—अश्व का बड़ा दल; चुऱ्ऱुपु—चारों ओर घेरकर; कमलम् पूत्त—कमल पुष्पित; तॊटु कटल् तिरैयिन् चॆल्ल—(सगरपुत्र खनित) सागर की तरंगों के समान चलते; कॊऱ्ऱम् वेल् मन्नर्—विजयी भालेवाले राजाओं के; चॆम् कै—लाल हाथरूपी; पङ्कयम् कुळाङ्कळ्—कमल-समूह; कूम्प—बन्द होते; मऱ्ऱु ऑरु कतिरोन् ऍन्न—अन्य एक अंशुमाली के समान; मणि नॆटु तेरिल्—रत्नखचित, उन्नत रथ पर; पोनान्—गये। ८८३

राजा दशरथ एक दूसरे विचित्र सूर्य के समान हैं। स्वर्ण कंकण-धारिणी स्त्रियाँ जिन पर बैठी हुयी जाती हैं वे स्वर्ण दामों से भूषित अश्व, सागर की तरंगों के समान चलते हैं। उन तरंगों पर स्त्रियाँ विकसित कमलों के समान हैं। दूसरी ओर विजयिनी शक्तियाँ धारण करनेवाले

राजाओं के लाल हाथरूपी कमल बंद हो जाते हैं। (यानी वे हाथ जोड़े हुये हैं, विनय प्रदर्शन के हेतु) (एक ही समय पर कुछ कमल विकसित होते हैं और कुछ अन्य कमल उन्मीलित। यही विचित्रता है) ऐसा वे एक रत्नखचित रथ पर सवार हो जा रहे थे। ८८३

आर्त्तदु विशुम्बै मुट्टि मीण्डहन् ऱिशैह ळॅङ्गुम्
पोर्त्तदङ् गॊरुवर् तम्मै यॊरुवर्हट् पुलङ्गॊ ळामैत्
तीर्त्तदु शॅऱिन्द दोडित् तिरैनॆडुङ् गडलै यॆल्लाम्
तूर्त्तदु सगर रोडुम् पहैत्तॆनत् तूळि वॆळ्ळम् 884

तूळि वॆळ्ळम्–धूलि की विपुल राशि; आर्त्ततु–उठ, फैलकर; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; मीण्टु–लौटी; अकल् तिचैकळ् ऍङ्कुम्–लम्बी, दिशाओं भर में; पोर्त्ततु–ढाँप गई; अङ्कु–वहाँ; ऑरुवर् तम्मै ओरुवर्–एक को दूसरे को; कण् पुलम् कॊळ्ळामै–आँख नहीं देख सके, ऐसा; तीर्त्ततु–कर दिया; चॆऱिन्तवु ओटि–घने रूप से जाकर; चकररोटुम् पकैत्ततु ऍन्न–सगरपुत्रों से शत्रुता करती सी; तिरै नॆटु कटलै ऍल्लाम्–तरंग-संकुल विशाल सागर, सब को; तूर्त्ततु–पार दिया। ८८४

धूलि की विपुल राशि उठी और उसने गजब कर दिया। वह आकाश से टकराकर लौटी; सारी दिशाओं में भरी उसने एक दूसरे को आँखों से देखना असाध्य कर दिया। फिर वह गयी, और मानो सगर-पुत्रों से वैर निवाह रही हो, उसने तरंगसंकुल विशाल समुद्र को पाट दिया। ८८४

शङ्गमुम् पणैयुङ् गॊम्बुन् दाळमुङ् गाळत् तोडु
मङ्गल बेरि शॅय्द पेरॊलि मळैयै योट्टत्
तॊङ्गलुङ् गुडैयुन् दोहैप् पिच्चमुञ् जुडरै योट्टत्
तिङ्गळ्वॆण् कुडैकण् डोडत् तेवरु मरुळच् चॆन्ऱान् 885

चङ्कमुम्–शंख; पणैयुम्–बाँसुरियाँ; कॊम्पुम्–शृंग; काळत्तोटु–काहल; ताळमुम्–ताल और; मङ्कल पेरि–मंगल भेरियाँ; चॆय्त पेर् ऑलि–इनसे उत्पन्न बड़ा शोर; मऴैयै ओट्ट–मेघ-गर्जन को भगाता है; तॊङ्कलुम्–(मोरपंख के बने) झालर; कुटैयुम्–रेशम के आतपत्र; तोकै पिच्चमुम्–मोरपंख के छाते; चुटरै ओट्ट–धूप को भगाते; वॆण्कुटै कण्टु–श्वेत छत्र देखकर; तिङ्कळ्–चन्द्र; ओट–हारकर भाग गया; तेवरुम् मरुळ–देव चकित हुए; चॆन्ऱान्–(राजा इस ठाट के साथ) गये। ८८५

शंख, बाँसुरियाँ, शृंगियाँ, ताल, मंगलभेरियाँ, इसके नाद के सामने मेघ गर्जन डरकर भाग गया (कुछ नहीं था)। मोरपंख के झालर, रेशमी आतपत्र, मोरपंख के छाते; ये धूप को भगा देते थे (छिपा देते थे)। श्वेत छत्र के सामने चंद्र भाग गया। देव चक्रवर्ती के इतने वैभव

को देखकर चकित हो गये। इस ठाट के साथ चक्रवर्ती गये। (राजा का कूच है; इनकी विजय और शत्रुओं की हार शोभा देती है। अतः हारी हुई वस्तुओं की चर्चा है।)। ८८५

मन्दिर गीद वोदै वलम्बुरि मुळङ्गु मोदै
अन्दण राशि योदै यार्त्तॆळु मुरशि नोदै
कन्दडु कळिऱ्ऱि नोदै कडिहयर् कविथि नोदै
इन्दिर तिरुवन् शॆल्ल वॆळुन्दन तिशैह ळॆल्लाम् 886

इन्तिर तिरुवन्—इन्द्र-सम श्रीमान; चॆल्ल—जाते रहे, तब; मन्तिरम् कीतम् ओतै—वेदमन्त्र के गायन का स्वर; वलम्पुरि मुळङ्कुम् ओतै—दक्षिणावर्त शंख के बजने का नाद; अन्तणर् आचि ओतै—ब्राह्मणों के मंगलाशासन की ध्वनि; आर्त्तु ऍळुम्—घर्राकर उठनेवाला; मुरचिन् ओतै—ढोल का नर्दन; कन्तु अट्—आलान तोड़नेवाले; कळिऱ्ऱिन् आतै—गजों का शब्द; कटिकैयर्—"घटिकों" का (समय का ज्ञान देनेवाले लोगों का); कवियिन् ओतै—कविता में वाचन का स्वर; तिचैकळ् ऍल्लाम्—सभी दिशाओं में; ऍळुन्तन—प्रतिध्वनित होते हुए उठे। ८८६

कितनी ही तरह के नाद सुनाई देते हैं। चक्रवर्ती इंद्र समान श्रीमंत थे। जब वे जाते रहे तब वेदमंत्र गायन का नाद, दक्षिणावर्त शंख का नाद, विप्रों का मंगलाशासन नाद, ढोलों का तुमुल नाद, गजों के खूंटे तोड़ने का और चिघाड़ने का नाद, समय का ज्ञान दिलानेवाले घटिक जो कविता सुनाते हैं उसका नाद ये सब सारी दिशाओं में गूंजते हुए उठे। ८८६

नोक्किय दिशैह डोरुन् दन्नये नोक्किच् चॆल्लुम्
वीक्किय कळऱ्काल् मन्नर् विरिन्दकैम् मलर्हळ् कूप्पत्
ताक्किय कळिरुन् देरुम् पुरवियुम् पडैञर् ताळुम्
आक्किय तूळि विण्णु मण्णुल हाक्कप् पोनान् 887

नोक्किय तिचैकळ् तोऱुम्—जिस-जिस दिशा में वे देखते हैं उस-उस में; तन्नैये नोक्कि—उनको देखते हुए; चॆल्लुम्—जानेवाले; वीक्किय कळल् काल् मन्नर्—कसकर बँधे पायलोंवाले राजा लोग; विरिन्त कै मलर्कळ् कूप्प—खुले हस्तकमलों को उन्मीलित कर (हाथ जोड़कर); ताक्किय—परस्पर टकरानेवाले; कळिऱुम्—गज; तेरुम्—और रथ; पुरवियुम्—अश्व; पटैञर् ताळुम्—पदाति वीरों के पैर; आक्किय तूळि—(उनसे) उठी धूलि; विण्णुम्—आकाश को भी; मण्णुलकु आक्क—भूलोक बनाती रही, ऐसा; पोनान्—गये। ८८७

महाराज के साथ अन्य राजा भी जाने लगे। जहाँ कहीं चक्रवर्ती दृष्टि दौड़ाते वहाँ पायलधारी राजा लोग हाथ जोड़े दिखाई देते थे। रथ, गज, तुरग और पदाति वीरों के चलने के कारण जो धूलि उठी उसने आकाश को भी भूलोक (की तरह धूलि भरा) बना दिया। ८८७

वीररुङ् कळिरुन् देरुम् पुरवियु मिडैन्द शेनै
पेर्विड मिल्लै मऱ्ऱो रुलहिल्लै पॅयर्व दाह
नीरुडै याडै याळु नॅळित्तनण् मुदुहै यॅन्ऱाल्
पार्पॉऱै नीक्कि नानॅन् ऱुरैत्तदॅप् परिशु मन्नो 888

वीररुम्–पदाति के वीर; कळिरुम्–गज; तेरुम्–और रथ; पुरवियुम्–अश्व; मिटैन्त चेनै–मिलित सेना; पेर्वु इटम् इल्लै–हटने के लिए स्थान नहीं है; पॅयर्वतु आक–जहाँ हटकर जाये ऐसा; मऱ्ऱु ओर् उलकु इल्लै–अन्य लोक नहीं है; नीर् उटै आटैयाळुम्–समुद्र-वसना ने भी; मुतुकै नॅळित्ततळ्–पीठ को बल देती है; ॲन्ऱाल्–तो; पार् पॉऱै नीक्कितात्–भूभार निवारण किया (चक्रवर्ती ने); ॲन्ऱु उरैत्ततु–यह प्रशंसा-कथन; ॲ परिचु–कैसा (ठीक है)। ८८८

पदाति, गज, रथ, और तुरग की चतुरंगिनी सेना के लिए इस लोक में स्थान नहीं रहा। दूसरे लोक में जाना चाहे तो ऐसा कोई दूसरा लोक नहीं है। समुद्र-वसना पृथ्वी की पीठ पर इस सेना के भार के कारण बल पड़ गया। इस स्थिति में राजा चक्रवर्ती का "भूभार निवारक" का यशस्वी नाम कैसे उचित माना जाय ? (इन्हीं की सेना का भार तो भूमि के लिए भारी हो रहा !)। ८८८

इन्नण मेहि मन्नन् योशनै यिरण्डु शॅन्ऱान्
पॉन्मलै पोलु मिन्दु शयिलत्तिन् शारल् पुक्कान्
मन्मदक् कळिऱु मादर् कॉङ्गयु मार नम्बुम्
तॅन्वरैच् चान्दु नाऱच् चेनयु मिऱुत्त दन्ऱे 889

मन्नन्–राजा (दशरथ); इन्नणम् एकि–इस तरह जाकर; योचनै इरण्टु चॅन्ऱान्–दो योजन दूर गये; पॉन् मलै पोलुम्–स्वर्णमय (मेरु) पर्वत सदृश; इन्तु चयिलत्तिन् चारल् पुक्कान्–इन्दुशैल पर्वत की तलहटी में जा पहुँचे; मन्मतन् कळिऱुम्–मन्मथ का गज; नाऱ–फैल आया, तब; मातर् कॉङ्कैयुम्–स्त्रियों के स्तन; मारन् अम्पुम्–मदन के शर (फूल); तॅन् वरै चान्तुम्–और दक्षिणी (मलय) पर्वत के चन्दन; नाऱ–गन्ध फैलाते हैं; चेनैयुम् इऱुत्ततु–सेना भी वहीं पड़ाव डाल गई। ८८९

चक्रवर्ती इस ठाट के साथ जाकर चंद्रशैल (एक कल्पित) पर्वत की तराइयों में पहुँचे। तब "मन्मथ का गज" कहलानेवाला अंधकार फैला। स्त्रियों के स्तन, मार के शररूपी फूल (स्त्रियों के सिरों पर के और वहाँ रहे उपवनों उद्यानों के) और मलय पर्वत के चंदन आदि के गंध भी फैले। सेना ने वहीं पड़ाव डाला। (मन्मथ का गज स्त्रियों का केश भी कहा जाता है। तब केश से फूलों का और स्तनों से चंदन का गंध फैला—यह अर्थ किया जा सकता है। ८८९

14. वरैक् काट्चिप् पडलम् (शैल दर्शन पटल)

[चंद्रशैल नाम के पर्वत का कहीं कोई अस्तित्व असल में नहीं है न मूल (वाल्मीकीय) रामायण में इसका नाम है। यह पूर्णरूपेण कम्बन् की कपोल कल्पना है। इस पटल और आगे के तीन पटलों में उस पर्वत पर लोगों ने अपना मन कैसे वहलाया, इसका सरस वर्णन है। काव्य में सभी मानवीय व्यापारों का वर्णन अपेक्षित है, और सफल कवि के लिए किसी भी वस्तु और किसी भी घटना में कविता मिल जाती है। इन चारों अध्यायों में शृंगार रस की बातें खूब आती हैं। पाठक देख सकते हैं कि शृंगार में काव्य है और कम्बन् के शृंगार में काव्य अपने सबसे मनोरम रूप में है।]

अलहि लामद यानयु मवड्रॊडु मिडैन्द
तिलह् वाणुदड् पिडिहळुड् गुरुळयुञ् जॆरिन्द
उलवै नीळ्वनत् तूदमे यॊत्तन यूदत्
तलैव नेयॆंन्प् पॊलिन्ददु चन्दिर शयिलम् 890

अलकु इला–असंख्यक; मतम् यानैयुम्–मत्तगज; अवर्रॊटु मिटैन्त–उनके साथ मिली; तिलकम् वाळ् नुतल्–तिलक सहित शोभित भालवाली; पिटिकळुम्–हथिनियाँ; कुरुळैयुम्–कलभ (गजशावक); चॆरिन्त–मिले हुए झुण्ड; उलवै नीळ् वनत्तु–तरुसंकुलित विशाल वन के; ऊतम् ऑत्तन–जंगली गजसमूह के समान लगे; चन्तिर चयिलम्–चन्द्रशैल गिरि; यूतत् तलैवन् अॆन्न पॊलिन्ततु–यूथपति के समान लगा। ८६०

चंद्रशैल पर्वत पर हाथियों का बड़ा जमघट हो गया। उसमें बड़े-बड़े हाथी थे, तिलक सहित सुन्दर हथिनियाँ थीं और छोटे-छोटे हाथी के बच्चे थे। ये राजा के हाथी थे। उधर शैल पर भी जंगली हाथी पहले से थे। चंद्रशैल पर्वत उन गजयूथों के पति के समान लगता था। ८९०

कोवै यार्वड कॊळ्ळुङ्गुव डॊडिदर निवन्द
आवि वेट्टन वरिशिलै यनङ्गन्मेड् कॊण्ड
पूवै वाय्च्चियर् मुलैशिलर् पुयत्तोडुम् पूट्टत्
तेव दारत्तुञ् जन्दिनुम् पूट्टिन शिनमा 891

पूवै वाय्च्चियर्–सारिकाओं की सी बोलीवाली; कोवै आर्–हारों से अलंकृत (गगनस्पर्शी); वट कॊळ्ळु कुवटु–उत्तर के उर्वर पर्वत को (वट वृक्ष की उर्वर डालों को); ऑटित्तर–लजाते हुए (तोड़ते हुए); निवन्त–उन्नत; आवि वेट्टन–प्रेमियों के प्राणग्राहक (जलाशय चाहनेवाले); वरिचिलै अनङ्कन्–बन्धनयुक्त धनुर्धर अनंग; मेल् कॊण्ट–जिनको साधन बनाता है (पुरुषों की कामोत्तेजना को तीव्र करने के लिये); मुलै–(वे) स्तन; चिलर् पुयत्तॊटुम् पूट्ट–कुछ पुरुषों की भुजाओं से गुंथ गये; चितम् मा–क्रोधी गज; तेवतारत्तुम्–देवदारों से; चन्तितुम्–और चन्दन (तरुओं) से; पूट्टिन–बाँधे गये (स्तन में और गज में श्लेष है। अतः गज सम्बन्धी अर्थ कोष्टक के अन्दर दिये गये हैं)। ८६१

पुरुषों ने स्त्रियों को हाथियों की पीठ पर से नीचे उतारा। तब उनके स्तन पुरुषों की भुजाओं से चिपटे। (उन स्तनों और हाथियों में श्लेष है) उन मधुर बयनियों के स्तनों पर हार थे; हाथी आकाश छूते हुए ऊँचे थे। स्तन उत्तर के मेरुपर्वत को तोड़ते हुये (झुकाते हुये)— यानी मेरुपर्वत से भी उन्नत थे; हाथी बट वृक्षों की डालों को तुड़ा दें इतने ऊँचे थे। स्तन पुरुषों के प्राणहरण के इच्छुक थे (यानी स्तनों को देखकर पुरुष सुध-बुध खोकर अधीर हो जाते हैं); हाथी प्यास से जलाशय के इच्छुक थे। स्तन वे साधन (वाहन) हैं जिनको मन्मथ पुरुषों के मन को कामोत्तेजित बनाने के लिये अपना लेता है। हाथी मन्मथ-सदृश पुरुषों के वाहन हैं। वे पुरुष अपनी प्रेयसियों को इस तरह उतारकर जिससे उनके स्तन इनकी भुजाओं से चिपट जायें, बाद में हाथियों को देवदारु और चंदन-तरुओं से बाँध देते हैं। (तब वे हाथी क्रुद्ध हो जाते हैं।)। ८९१

नेरॊ डुङ्गलिल् पहैयित्तै नीदियाल् वंल्लुम्
शोर्वि डम्बॆंऱा वुणर्वित्तऩ् शूऴ्च्चिये पोलक्
कारॊ डुऩ्दोंडर् कवट्टॆऴिऩ् मरामरक् कुवट्टै
वेरॊ डुङ्गॊंडु गिरियॆऩ नडऩ्ददोर् वेऴम् 892

ओर् वेऴन्–एक हाथी; नेर् ऑटुङ्कल् इल्–सीधे अदम्य; पकैयित्तै–शत्रु को; नीतियाल् वॅल्लुम्–(सामदानादि) उपायों द्वारा हराने की; चोर्वु इटम् पॅऱा–अप्रमत्त; उणर्वितऩ्–बुद्धिशाली (के); चऴ्च्चिये पोल–उपाय के समान; कारॊटुम् तॊटर्–मेघमण्डल स्पर्शी; कवटु–डालों सहित; ॲऴिल्–सुन्दर; मरामरम् कुवट्टै–साल वृक्ष के तने को; वेरॊटुम् कॊटु–जड़ के साथ उखाड़ लेकर; किरि ॲऩ नटन्ततु–पर्वत के समान चला। ८९२

एक हाथी मेघमंडलस्पर्शी डालों के एक साल वृक्ष से बँधा हुआ था। उसने मुक्त होने की इच्छा में एक उपाय किया। वह उस पेड़ को ही समूल उखाड़ लेकर पर्वत के समान चला गया। तब वह उस राजा के समान था जिसकी बुद्धि इतनी सूक्ष्म और तीव्र है कि वह सीधे रास्ते से काबू में न आनेवाले शत्रु को दूसरा उपाय करके हरा देता है और अपनी इष्ट सिद्धि करा लेता है। ८९२

तिरण्ड ताणॆंडुञ् जॆरिपणै मरुदिडै यॊडियप्
पुरण्डु पिऩ्वरु मुरलॊडु पोहुमाल् पोल
उरुण्डु काऱॊडर् पिऱहिडु तऱियॊडु मॊरुङ्गे
इरण्डु मामर मिडैयिऱ नडऩ्ददोर् यानै 893

तिरण्ट ताऴ्–पुष्ट तने; नॅटु चेरि पणै–लम्बे और घने डालोंवाले; मरुतु इटै–अर्जन तरुओं के मध्य से; ऑटिय–उनको तुड़ाते हुए; पिऩ् पुरण्टु वरुम् उरलॊट–पीछे लुढ़कती आती ओखली के साथ; पोकुम् माल् पोल–जो गये उन विष्णु (श्रीकृष्ण)

के समान; ओर् यातै–एक हाथी; उरुण्ट काल्तॉटर् पिऱ्किट्टु–लुढ़कते हुए, पैरों से लगे, पीछे आनेवाले; तऱियॉट्टुम्–खूँटे के साथ; इरण्टु मा मरम् ऑरुङ्के इऱ्–दो बड़े पेड़ों को एक साथ तुड़ाते हुए; इटै नटन्ततु–उन पेड़ों के बीच से चला। ८६३

एक हाथी ने अपना खूँटा तुड़ाया और वह उसको पीछे घसीटते हुए दो बड़े वृक्षों के बीच से गया। तब वे दोनों वृक्ष उखड़कर गिर गये। वह आगे भी जाता रहा और खूँटा उसके पैरों के पीछे लुढ़कता जाता था। उस दृश्य को देखकर श्रीकृष्ण की याद आती है। कृष्णचंद्र ओखली से बँधे थे। वे उसको खींचते हुए दो अर्जुनवृक्षों के बीच से गये। तब वे दोनों वृक्ष उखड़कर गिर गये। ८९३

कदङ्गॉळ् शीऱ्ऱत्तै याऱ्ऱुवा ऩिऩियऩ कळ्ऱिप्
पदङ्गॉळ् पाहऩ्ु मन्दिरि यॉत्ततऩ् पऩ्ऩूल्
विदङ्ग ळावऩ यावयु मॅल्लॅऩ विळम्बुम्
इदङ्गळ् कॉळ्हिला विऱैवऩै यॉत्तदोर् याऩै 894

ओर् यातै–एक गज; पल वितङ्कळ् आवत–विविध प्रकार के; नूल् यावैयुम्–सभी नीतिशास्त्र (के आधार पर); मॅल्लॅऩ विळम्पुम्–(मन्त्री जो) धीरे-धीरे मधुर ढंग से कहता है; इतङ्कळ्–उन हितू वचनों को; कॉळ्किला–न माननेवाले; इऱैवतै ऑतुततु–राजा के समान था; कतम् कॉळ् चीऱ्ऱत्तै–भागने की प्रेरणा देनेवाले क्रोध को; आऱ्ऱुवान्–शान्त करने के लिए; इतियत–मधुर बातें; कळ्ऱि–कहकर; पतम् कॉळ्–वश में लाने के लिए; पाकतुम्–महावत भी; मन्तिरि ऑतुतान्–मन्त्री सम हुआ। ८६४

एक हाथी उस राजा के समान उदण्ड था जो अपने मंत्री के हित-वचन नहीं सुनता था, यद्यपि मंत्री नीतिशास्त्रों के आधार पर धीरे-धीरे मधुर ढंग से राजा के ही हित के लिए कहता था। हाथी का महावत उस मंत्री के समान रहा। यानी हाथी पीलवान की बात नहीं माना और खूँटा तोड़कर भागा। ८९४

माऱु काण्किल दाय्निऩ्ऱु मळैयॅऩ मुळङ्गुम्
ताऱु पाय्हरि वऩकरि दण्डत्तैत् तडविप्
पाऱु पिऩ्शॅलक् कालॅऩच चॅल्वदु पण्डोर्
आऱु पोहिय वाऱुपो माऱुपोऩ् ऱुदुवे 895

माऱु काण्किलताय्–शत्रु न पाकर; निऩ्ऱु–अतृप्त होकर; मळै ॲत मुळङ्कुम्–मेघ के समान गरजनेवाला; ताऱु पाय् करि–अंकुश चभा एक हाथी; वनम् करि–जंगली हाथी के; तण्टत्तै तटवि–रास्ते को (गन्ध से) जानकर; पाऱु पिऩ् चॅल–बाजों को पीछे-पीछे आकृष्ट करता हुआ; काल् ॲत चॅल्वतु–वायु के समान (वेग से) जाता है, वह; पण्टु ओर् आऱु पोकिय–पहले एक नदी के गमन के; आऱु–मार्ग में; पोम्–जानेवाली; आऱु पोऩ्ऱतु–नदी के समान था। ८६५

एक हाथी था, जो युद्ध में जाने का अभ्यासी था। यहाँ किसी शत्रु

के न होने से वह अतृप्त और झुंझलाहट-भरा था। उसको वश में लाने के लिए महावत ने अंकुश का प्रयोग किया। वह और भी भड़क उठा। तब किसी जंगली हाथी के आगे जाने का भान उसे मिल गया। वह उसी के रास्ते पर, अपने मद जल से और रास्ते में जीवों को हत करके जाने से, बाजों और चीलों को आकृष्ट करता हुआ चला। तब ऐसा लगा कि एक नदी के रास्ते पर दूसरी नदी की धारा बहती जा रही हो। ८९५

पात्त यानैयिन् पदङ्गळिऱ् पडुमद नाऱ्क्
कात्त वङ्गुश निमिर्न्दिडक् काल्पिडित् तोडिप्
पूत्त वेऴिलैप् पालैयैप् पोंडिप्पोंडि याहक्
कात्ति रङ्गळाऱ् ऱलत्तोंडुन् दॆय्त्ततोर् कळिऱु 896

पात्त–पंक्तिबद्ध; यानैयिन्–गजों के; पतङ्कळिल् पटुम्–बीच से उत्पन्न होनेवाली; मतम् नाऱ्–मदजल गन्ध के आने पर; ओर् कळिऱु–एक गज; कात्त अङ्कुचम् निमिर्न्तिट–वशीकारक अंकुश को सीधा करते हुए (बेकार बनाकर); काल् पिटित्तु ओटि–(गन्ध की दिशा को) हवा के सहारे जानते हुए भागकर; पूत्त एऴिलै पालैयै–पुष्पित सप्तपर्णी वृक्ष को; पॊटि पॊटि आक–बुकनी करते हुए; कात्तिरङ्कळाल्–अपने अगले पैरों से; तलत्तॊटुम् तेय्त्त–भूमि पर रौंद दिया। ८९६

सप्रपर्णी वृक्ष पुष्पित थे। (उनसे गजमद का-सा गंध आता था) एक मत्त गज ने उसको सूंघकर समझा कि पंक्तियों में गज बंधे हैं। वह भागने लगा। महावत ने अंकुश लगाया तो अंकुश का वक्रभाग सीधा हो गया। वह बेकार हो गया। पर हाथी भागा और पेड़ों के पास आ गया। उसने गुस्से में उन पेड़ों को तहस-नहस कर दिया। ८९६

तरुण्ड मेलवर् शिऱियवर्च् चेरिनु मवर्तम्
मरुण्ड पुन्मयै माऱ्ऱुव रॆन्नुमिदु वऴक्के
उरुण्ड वाय्तोऱुम् पॊन्नुरु ळुरैत्तुरैत् तोडि
इरुण्ड कल्लयुन् दन्निऱ माक्किय विरदम् 897

तॆरुण्ट–सुलझी हुई बुद्धिवाले; मेलवर्–बड़े लोग; चिऱियवर् चेरिनुम्–छोटों के साथ मिलें तो भी; अवर् तम् मरुण्ट पुन्मैयै–उनकी भ्रमित नीचता को माऱ्ऱुवर्–बदल देंगे; ऍनुम् इतु–बात यह; वऴक्के–मसल है; इरतम्–(रथ) ने; पॊन् उरुळ्–स्वर्णचक्र; उरुण्ट वाय् तॊऱुम्–जहाँ-जहाँ घूमे वहाँ; उरैत्तु उरैत्तु ओटि–सोना घिस जाये ऐसा घूमकर; इरुण्ट कल्लैयुम्–काले पत्थर को भी तम् निऱम् आक्किय–अपने रंग का बना दिया। ८९७

यह मसल मशहूर है कि सुलझे हुये विवेकशील महानपुरुष अपने संपर्क में आनेवाले नीचों की नीचता को बदल देते हैं। उसी प्रकार रथ अपने पहियों के स्वर्ण द्वारा, जहाँ-जहाँ वह जाता था, वहाँ रहनेवाले पत्थरों पर घिस-घिसकर उस पत्थर को स्वर्ण-वर्ण बना देता था। ८९७

कॉव्वै नोक्किय वाय्हळै यिन्दिर कोपम्
कव्वि नोक्किन वॅन्रुहोल् काट्टिन मयिल्हळ्
नव्वि नोक्कियर् नलङ्गोण्मे कलैपॉलज् जायऱ्
चॅव्वि नोक्किय वरुवन पोल्वन तिरिन्द 898

काटु इनम् मयिल्कळ्—जंगल में रहनेवाले झुण्डों के मोर; नव्वि नोक्कियर्—मृगनयनी स्त्रियों के; कॉव्वै नोक्किय वाय्कळै—बिम्बफल-समान मुखों को (देख); इन्तिर कोपम् कव्वि नोक्कित—बीरवहूटियाँ पकड़कर आश्रय देख रही हैं; ॲन्रु कोल्—यह समझकर, शायद; नलम् कॉळ् मेकलै—सुचारु मेखलाओं और; पॉलम् चायल् चॅव्वि—स्वर्णकान्ति की सुन्दरता को; नोक्किय वरुवन पोल्वत—देखने के लिए आते-जाते से; तिरिन्त—घूमे । ८९८

जंगली मोर मानो मृगनयनी स्त्रियों के सौंदर्य की छवि को देखने की इच्छा से आते जाते हैं, उनके सामने घमे। (किन्तु असली कारण दूसरा था) उन स्त्रियों के बिंबफल के समान अरुण अधर और ओष्ठ मोरों को बीरबहूटियों (लाल बरसाती कीड़े जिन्हें इंद्रगोप भी कहते हैं) के समान दिखे और उन्होंने सोचा कि वे स्त्रियों के मुखों में आश्रय ढूंढ रहे हैं। (बीरबहूटियाँ स्त्रियों के अधरों की सुन्दरता को देखती सी वहाँ आश्रय ढूँढ रही थीं— ऐसा समझकर मोर उनकी छटा को देखते से उनके सामने घूम रहे थे। दूसरों को बहानेबाज़ समझने वाले खुद बहानेबाजी करते हैं।)। ८९८

उय्क्कुम् वाशिह ळिळिन्दिळ वन्नत्ति नॊदुङ्गि
मॅय्क्क लाबमुङ् गुळैहळु मिळैहळुम् विळङ्गत्
तॊक्क मॅन्मर निळल्पडत् तुवन्ऱिय शूळल्
पुक्क मङ्गयर् पूत्तकॊम् बामॅनप् पॊलिन्दार् 899

उय्क्कुम वाचिकळ्—अपनी सवारी के अश्वों पर से; इळिन्तु—उतरकर; इळ अन्नत्तिन् ऒतुङ्कि—बाल हंसों के समान पग रखकर; मॅय्—शरीर के; कलापमुम्—कलाप और; कुळैकळुम्—कुण्डल और; इळैकळुम्—अन्य आभरण; विळङ्क—भासमान हैं, तब; तॊक्क मॅल् मरम्—झुण्ड के कोमल तरु; निळल् पट—जो छाया देते हैं; तुवन्ऱिय चूळल्—उनसे भरे स्थान में; पुक्क—प्रविष्ट; मङ्कैयर्—स्त्रियाँ; पूत्त कॊम्पु आम् ॲत—पुष्पित डालों के समान; पॊलिन्तार्—भासमान रहीं। ८९९

स्त्रियाँ अश्वों पर से उतरीं, बालहंस के समान पग धरती हुयीं घनी छाया फैलाने वाले तरुओं के झुंड में गयीं। तब उनके शरीर पर कलाप, हार, कुंडल और अन्य आभरण प्रकाशमान थे; इस कारण वे पुष्प-भरी डालों या लताओं के समान लगीं। ८९९

तळङ्गॊ डामरै यॅनत्तळि रडियिनु मुहत्तुम्
वळङ्गॊण् मालैवण् डलमर वळिवरुन् दिन्नराय्

विळङ्गु तम्मुरुप् पळिङ्गिडै वळिप्पड वेऱोर्
तुळङ्गु पाऱैयिड् ऱोऴिय रयिर्त्तिडत् तुयिन्ऱार् 900

वऴि वरुन्तित्तराय्–पथश्रान्त; तळिर् अटियित्तुम्–पल्लव चरणों और; मुकत्तुम्–मुखों को; तळम् कोळ् तामरै अँत–दलयुक्त कमल समझकर; वळम् कोळ्–हृष्ट-पुष्ट; मालै वण्टु–और श्रेणीबद्ध भ्रमर; अलमर–मँडराते हैं, ऐसे; विळङ्कु तम् उरु–शोभायमान उनके रूप; पळिङ्कु इटै–स्फटिक मध्य प्रतिबिम्बित हों; वेऱु ओर्–अन्य; तुळङ्कु पाऱैयिल्–जिसमें उनका प्रतिबिम्बित है उस शिला पर; तोऴियर् अयिर्त्तिट–सखियाँ भ्रमित हो जायें, ऐसा; तुयिन्ऱार्–सोईं। ९००

लंबी यात्रा के कारण स्त्रियाँ श्राँत हो गयी थीं। जाकर स्फटिक शिला पर लेट गयीं। तब उनके चरणों और मुखों पर भ्रमर उनको कमल समझकर झुंडों में मँडराने लगे। उनका रूप उन शिलाओं पर प्रतिबिंबित होता था जिन पर वे लेटीं थीं; और पास रही स्फटिक शिलाओं पर भी। उन प्रतिबिंबों को देखकर उनकी सखियाँ भ्रम में पड़ गयीं कि यह हमारी नायिका इधर कहाँ आ लेटी है। ९००

पिडिपुक् कायिडै मिन्नॊडुम् पिऱङ्गिय मेहम्
पडिपुक् कालॆन्नप् पडितरप् परिपुरम् पुलम्बत्
तुडिपुक् कायिडैत् तिरुमह डामरै तुऱन्दु
कुडिपुक् काळॆनक् कुडिलपुक्कार् कॊडियिडै मडवार् 901

मिन्नॊटुम् पिऱङ्किय मेकम्–बिजली से प्रकाशित मेघ; पटि पुक्काल् अँत–पृथ्वी पर आ गये हों, ऐसे; पिटि–हथिनियाँ (जिनपर बिजली-सम स्त्रियाँ बैठी आई थीं); आयिटै पुक्कु–उस तलहटी में आकर; पटि तर–(उनको उतरने देने के लिए) भूमि पर बैठती हैं तब; कॊटि इटै मटवार्—लता-सी लचकती कमरवाली स्त्रियाँ; परिपुरम् पुलम्प–नूपुरों को झंकृत करते हुए; तुटि पुक्कु–डमरू आकर; आय् इटै–तुले ऐसी कमर को; तिरु मकळ्–श्री लक्ष्मीदेवी; तामरै तुऱन्तु–(अपना निवास-स्थान) कमल त्यागकर; कुटि पुक्काळ् अँत–आकर वास करने लगीं, ऐसा; कुटिल् पुक्कार्–अपने झोपड़ों में प्रविष्ट हुईं। ९०१

हथिनियाँ अपने ऊपर सवार रही स्त्रियों के साथ मेघों के सदृश दिखती थीं। वे, उस तराई में आकाश के मेघ जैसे भूमि पर आ गये हों, ऐसे आयीं। वहाँ आने पर वे स्त्रियों को उतरने देने के लिए भूमि पर बैठ गयीं। तब लता सी लचकनेवाली कमरवाली स्त्रियाँ उतरीं। फिर चलने लगीं तो नूपुर नाद कर रहे थे और कटि डमरू के समान लगी। डमरू के समान कटिवाली श्रीलक्ष्मीदेवी मानो अपना वासस्थान कमल छोड़कर इन खेमों में जाकर ठहर गयी हों, ऐसी एक-एक स्त्री चलकर अपने-अपने खेमे में घुस गयी। ९०१

उण्णमु दरुत्तियिळै योर्नहर् कॊणरन्द
तुण्णॆन्नु मुळ्क्किन्न तुरुक्कर्तर वन्द

मण्महड़न् मार्बिन्नणि वन्ननशर मॅन्नप्
पण्णुरु वयप्पुरवि पन्दियि न्निरैत्तार् 902

तुरुक्कर् तर वन्त–तुरुष्कों द्वारा लाये गये; इळैयोर्–दासों के द्वारा; उण् अमुतु अरुत्ति–सुखाद्य चारा खिलाकर; नकर् कोणर्न्त–नगर से इधर लाये गये; तुण् अॅतुम् मुळक्कित्–दिल दहलाते हुए हिनहिनानेवाले; पण् उरु–(और) खूब सजे; वयम् पुरवि–विजयशील अश्वों को; मण् मकळ् तन्–भूमि की देवी के; मार्पिन् अणि–वक्ष पर पहनाये गये; वन्नम् चरम् अॅन्त–रंग-बिरंगे रत्नहारों के समान; पन्तियिन्–पंक्तियों की; निरैत्तार्–श्रेणियों में बाँधा। ९०२

(अब घोड़ों की पंक्तियों की चर्चा है) वे घोड़े, जो अयोध्या से आये थे, तुरुष्कों द्वारा अयोध्या में लाये गये थे। उनकी देखभाल उनके लिए नियत दासों द्वारा होती थी; वे सुखाद्य चारा खिलाकर पाले गये थे। वे जब हिनहिनाते तब दिल दहल जाता था। वे कोतल घोड़े अनेक रंगों के थे। उनको श्रेणीबद्ध पंक्तियों में जब बाँधा गया तब देखने पर ऐसा लगता था मानो भू देवी के वक्ष पर हार पहनाये गये हों। (तुरुष्कों को ही शायद पहले 'शोनक' कहा गया है—६५३वाँ पद।)। ९०२

नीरतिरै निरैत्तदॅन्न नीडिरै निरैत्तार्
आर्हलि निरैत्तवॅन्न वावण निरैत्तार्
कार्निरै यॅन्नक्करिहळ् काविडै निरैत्तार्
मारुद निरैत्तदॅन्न वाशिह णिरैत्तार् 903

नीर तिरै निरैत्ततु अॅन्–जल की लहरों को पंक्तियों में रखा हो ऐसा; नीळ् तिरै निरैत्तार्–लम्बे चीर (के पर्दे) बाँधे; आर्किल निरैत्त अॅन्–गर्जनयुक्त समुद्रों को पंक्तियों में सजाया हो ऐसा; आवणम् निरैत्तार्–हाटों की वीथियाँ बनायीं; कार निरै अॅन्न–मेघमालाओं के समान; करिकळ्–गजों को; का इटै निरैत्तार्–उपवनों में श्रेणीबद्ध बाँधा; मारुतम् निरैत्ततु अॅन्–पवन को पंक्तियों में बाँध दिया गया हो ऐसा; वाचिकळ् निरैत्तार्–अश्व बाँध रखे। ९०३

पड़ाव डाला गया। स्त्रियों के डेरों के चारों ओर सफ़ेद पर्दे बाँधे गये। वे वीचियों की पंक्तियों के समान लग रहे थे। हाटों की पंक्तियाँ समुद्र की पंक्तियों के समान लगीं। उनमें सभी पदार्थ मिलते थे। उपवनों में हाथी पंक्ति में बाँधे गये थे; वे मेघमालाओं के समान दिखाई दिये। मानो पवन को ही पंक्तियों में बाँध दिया गया हो वैसे ही अश्व भी बाँधे गये थे। अश्व वायुसम वेगवान थे; अब बद्ध और अधीर थे। ९०३

नडिक्कुमयि लॅन्नवरु नव्विविऴि यारुम्
वडिक्कुमयिल् वीररु मयङ्गिन्नर् तिरिन्दार्

इडिक्कुमुर शक्कुरलि नॆड्ङगुमुरल् शङ्गिन्
कॊडिक्कळि नुणर्न्दरशर् कोनह रडैन्दार् 904

नटिक्कुम् मयिल् अन्न–नर्तनशील मोरों के समान; वरुम्–आनेवाली; नव्वि विऴियारुम्–मृगनयनी स्त्रियाँ और; वटिक्कुम् अयिल् वीररुम्–पैनाये गये तीक्ष्ण भालोंवाले वीर; मयङ्कित्तर्–आपस में मिश्रित होकर; तिरिन्तार्–घूमे; अरचर्–(चक्रवर्ती के दर्शनार्थी) राजा; अङ्कुम् इटिक्कुम्–सर्वत्र ध्वनित होनेवाले; मुरचम् कुरलिन्–मंगल ढोल के नाद से; मुरल् चङ्किन्–होनेवाली शंखध्वनि से; कॊटिक्कळिन्–ध्वजाओं से; को नकर् उणर्न्तु–चक्रवर्ती का मुकाम जानकर; अटैन्तार्–पहुँचे। ९०४

स्त्री और पुरुष मिलकर घूम रहे थे। स्त्रियों का रूप नर्तनशील मयूरों का-सा था और आँखें हरिण की-सी थीं। पुरुष तीक्ष्णशूल-धारी थे। अनेक राजा चक्रवर्ती के मुकाम को ढोल का नाद, शंख की ध्वनि और ध्वजाओं के अस्तित्व से समझकर वहाँ पहुँचे। नहीं तो सब खेमे एक समान सुन्दर थे। ९०४

मिदिक्कनिमिर् तूळियिन् विळक्कमरु मॆय्यैच्
चुदैक्कणुरै यैप्पॊरुवु तूशुकॊडु तूय्दा
उदिर्त्तलि निळङ्गुमर रोवियरि नोवम्
पुदुक्किन रॆनत्तरुण मङ्गयर् पॊलिन्दार् 905

इळङ्कुमरर्–नौजवान लोग; मितिक्क निमिर्–(हाथी आदि के) पदछाप से उठी; तूळियिन्–धूल की वजह से; विळक्कम् अरु–प्रभाहीन; मॆय्यै–(अपनी प्रेयसियों की) देहों को; चुतै कण् नुरैयै पॊरुवु–दूध की साड़ी (या झाग) सम; तूच कॊटु–महीन वस्त्र से; तूय्तु आक–स्वच्छ बनाते हुए; उतिर्त्तलिन्–पोंछने से; तरुणम् मङ्कैयर्–वे तरुण स्त्रियाँ; ओवियर् इन् ओवम् पुतुक्कितर्–चित्रकारों ने सुन्दर चित्र को नवीन किया हो; अन–ऐसा; पॊलिन्तार्–शोभीं। ९०५

हाथी, अश्व आदि के चलने के कारण उठी हुई धूलि तरुण स्त्रियों पर लगी थी; अतः उनके शरीर की काँति मंद पड़ गयी थी। उनके प्रेमियों ने दूध की साड़ी (या झाग) के समान महीन वस्त्रों से उस धूल को पोंछ लिया। तब वे ऐसी चमक उठीं मानो पुराने, मंदप्रभ चित्रों में कुशल चितेरे ने नया रंग लगाकर रौनक भर दी हो। ९०५

ताळुयर् तडक्किरि यिऴिन्दुतरै शारुम्
कोळरि यॆनक्करिहळ् कॊऱ्ऱव रिऴिन्दार्
पाळैविरि यॊत्तुलवु शामरै पडप्पोय्
वाळॆळ् निरैत्तपड माडमवै पुक्कार् 906

कॊऱ्ऱवर्–राजा लोग; ताळ् उयर्–ऊँची तलहटीवाले; तट–बड़े; किरि इऴिन्तु–पर्वत से उतरकर; तरै चारुम् कोळरि अन–मैदान पर आनेवाले सिंहों के समान; करिकळ् इऴिन्तार्–हाथी से उतरे; पाळै विरि ऒत्तु–बाल बिखरे डण्ठलों

के समान; उलवु–डुलनेवाले; चामरै पट–चामरों का उपचार पाते हुए; पोय्–जाकर; वाळ् ॲळ निरॅत्त–चमक-दमक के साथ पंक्तियों में निर्मित; पटम् माटम् अवै–पटमण्डपों में; पुक्कार्–प्रवेश कर ठहरे। ९०६

राजा लोग हाथियों पर बैठे आये थे। वे हाथी पर्वत के समान थे। जब वे उनसे उतरे तो वे पर्वत से नीचे समतल में उतर आनेवाले सिंह के समान थे। उनके दोनों तरफ़ बिखरे नारियल के डंठलों के समान चँवर डुलाये जा रहे थे। वे शान के साथ अपने-अपने उज्ज्वल खेमों में जाकर घुस गये। वे खेमे पंक्ति में निर्मित थे। (खेमे सिंहों की माँदों के समान थे —यह भाव भी प्राप्त किया जा सकता है।)। ९०६

तूशिनॅडु वॅण्पड मुडॅक्कुडिल्ह डोरुम्
वाशमलर् मङ्गयर् मुहङ्गण्मळै वानिन्
माशिन्मदि यिन्कदिर् वळङ्गु निळलॅङ्गुम्
वीशुदिरै वॅण्बुनल् विळुङ्गियदु पोलुम् 907

नॅटु वॅळ् तूचिन्–लम्बे श्वेत चीर के; पटम् उटय–ध्वजासहित; कुटिल्कळ् तोरुम्–खेमे-खेमे में; वाचम् मलर् मङ्कैयर् मुकङ्कळ्–सुवासित पुष्प पहनी हुई स्त्रियों के मुख; मळै वानिन्–मेघमण्डित आकाश में; माचु इल्–अकलंक; मतियिन्–चन्द्र के; कतिर् वळङ्कुम् निळल्–प्रकाशमान प्रतिबिम्बों को; ॲङ्कुम्–वहाँ सर्वत्र; तिरै वीचु वॅण् पुनल्–तरंगायित श्वेत (समुद्र-) जल ने; विळुङ्कियतु पोलुम्–मानों अन्तस्थ कर लिया। ९०७

सुन्दरी स्त्रियों के पटमंडप सफ़ेद वस्त्र के बने हुये थे। उनके ऊपर विरुदपट बाँधे गये थे। उनके अंदर रहनेवाली स्त्रियों के मुख चंद्रबिंबों के समान थे। अतः सारा दृश्य ऐसा लगता था, मानों समुद्रजल की तरंगों के अंदर चंद्र के असंख्यक बिंब दिखाई दे रहे हों। ९०७

मण्णुऱ विळुन्दुनॅडु वानुऱ वॅळुन्दु
कण्णुदल् पॉरुन्दवरु कण्णनिन् वरुङ्गार्
उण्णिऱ नऱुम्पॉडियै वीशियॉरु पाहम्
वॅण्णिऱ नऱुम्पॉडिपु नैन्दमद वेळम् 908

मण् उऱ विळुन्तु–धरती पर लोटकर; नॅटु वान् उऱ–ऊँचे आकाश को छूते हुए; ॲळुन्तु–उठकर; कार् उण्–काले रंग को ढँकनेवाली; निऱम् नऱु पॉटियै–(श्वेत) रंग की सुगन्धित धूलि को; (ऑरु पाकम्) वीचि–एक भाग पर से हटाकर; ऑरु पाकम्–दूसरे भाग पर; वॆळ् निऱम्–सफ़ेद रंग की; नऱु पॉटि–सुगन्धित धूलि; पुनैन्त–लगाये; मतम् वेळम्–(रहनेवाला) एक मत्तगज; कण्णुतल् पॉरुन्त वरु–भालनेत्र शिवजी को अर्धांग बनाकर आनेवाले; कण्णनिन् वरुम्–श्रीविष्णु के समान आता है। ९०८

एक हाथी शरीर का दर्द दूर करने के लिए धूल पर लोटकर उठा।

सफ़ेद रंग की धूलि उस पर लग गयी थी। हाथी ने एक ओर की धूलि झाड़ दी। पर दूसरे भाग में धूलि लगी थी। वह धूलि सुगंधित थी। अब वह ऐसा लगता है, मानों श्रीकृष्ण (विष्णु) शिवजी को अपना अर्धांगी बना लेकर आ रहे हों। (श्रीकृष्ण काले हैं और शिवजी भभूत मले सफ़ेद हैं।)। ९०८

तीयवरॊ डॊऩ्ऱिय तिऱत्तरु नलत्तोर्
आयवरै यऩ्निलै यऱिन्दनर् तुऱन्दाङ्
गेयवरु नुण्पॊडि पडिन्दुड ऩॆऴुन्दे
पाय्परि विरैन्दुदऱि निऩ्ऱऩ परन्दे 909

तीयवरॊटु ऒऩ्ऱिय–बुरे व्यक्तियों के साथ मिले हुए; अरु तिऱत्तु नलत्तोर्–श्रेष्ठ चतुर सज्जन; आयवरै–उन बुरों को; अ निलै–उस अल्पकाल में ही; अऱिन्ततर्–पहचानकर; तुऱन्त आङ्कु–(उनका साथ) छोड़ देंगे, उसी तरह; पाय् परि–फाँदकर चलनेवाले अश्व; एय वरु नुण् पॊटि–शरीर पर जमा होनेवाली महीन धूलि में; पटिन्तु–लोटकर; उटऩ् ऎऴुन्तु–झट उठकर; विरैन्तु उतऱि–तुरन्त झटकारकर; परन्तु निऩ्ऱऩ–अलग-अलग खड़े रहे। ९०९

घोड़े भी धूल पर लोटकर अपना दर्द निवारण करते हैं। वे भूमि पर पड़े, लोटे, और उठे; उन्होंने अपने शरीर पर लगी धूल को झाड़ दिया। फिर वे हटकर अलग हो गये। वह ऐसा है मानो श्रेष्ठ गुणवाले साधु पुरुष ने किसी कारणवश बुरे आदमी से मैत्री कर ली हो। कुछ ही समय के अन्दर साधु पुरुष उसका असली गुण पहचान लेते हैं और उसी क्षण उसका साथ छोड़कर अलग हट जाते हैं। ऐसे ही अश्व ने धूल को झटकार दिया। ९०९

मुम्मपुरि वऩ्कयिऱु कॊय्युनॆऱि मुऩ्ऩित्
तम्मयुमु णर्न्दुतरै कण्डुविरै हिऩ्ऱ
अम्मयित्ती डिम्मैयै यऱिन्दुनॆऱि शॆल्लुम्
शॆम्मयव रॆऩ्ऩनऩि शॆऩ्ऱऩ तुरङ्गम् 910

अम्मैयित्तॊटु इम्मैयै–पर के साथ इह को भी; अऱिन्तु–जानकर; नॆऱि चल्लुम्–(श्रेष्ठ परगति दिलानेवाले) सन्मार्ग पर जानेवाले; चॆम्मैयवर् ऎऩ्ऩ–साधु ज्ञानियों के समान; तुरङ्कम्–कुछ तुरग; तरै कण्टु–मैदान देखकर; विरैकिऩ्ऱ–वहाँ जाने की त्वरा दिखलाते हुए; तम्मैयुम् उणर्न्तु–अपनी (बन्धन की) स्थिति विचारकर; मुम्मै पुरि वऩ् कयिऱु–तीन तागों में पूरी गई तगड़ी रस्सी को; कॊय्युम् नॆऱि मुऩ्ऩि–तोड़ने का उपाय सोचकर; नऩि चॆऩ्ऱऩ–(तोड़कर) यथेच्छ चले। ९१०

कुछ घोड़े थे जो अपनी तीनगुणों की बटी हुई रस्सी तुड़ाकर मैदान में यथेच्छ भाग गये। उन घोड़ों की उन ज्ञानियों से तुलना की जाती है जो इह-पर की स्थिति जानकर उत्तम गति दिलानेवाले मार्ग को अपनाते हैं

और तदर्थ ईषणात्रयरूपी बन्धन तुड़ा देते हैं। (तीन गुणोंवाली रस्सी भूमि, स्त्री और स्वर्ण की ईषणाओं का मोह है। साधु लोग सोचते हैं और अपनी स्थिति, बन्धन की शक्ति आदि खूब तोलकर बन्धन तोड़ने का उपाय अपनाते हैं। वैसे ही अश्व ने किया। यह कवि का कथन है।)। ९१०

विळ्ुन्दपनि यन्नतिरै वीशुपुरै तोरुम्
कळ्ङ्गुपयिन् मङ्गयर्ह रुङ्गण्मिळिर् हिन्ऱ्
तळ्ङ्गुवळै शिन्दुदर ळम्बयि ऱरङ्गत्
तॅळ्न्दिडै पिऱ्ळ्न्तॊळिर्कॊ ळ्ुङ्गयल्ह ळॅन्न 911

विळ्ुन्त–गिरकर फैलनेवाले; पनि अन्न–कुहरे के समान; तिरै–पर्दे; वीशु–जिनमें हिलते हैं उन; पुरै तोरुम्–सभी खेमों में; कळ्ङ्कु पयिल् मङ्कैयर्–"कळ्ङ्कु" के बीजों को गोटी के रूप में लेकर खेलनेवाली स्त्रियों की; करु कण्–काली आँखें; तळ्ङ्कु वळै–शब्द करनेवाले शंखों से; चिन्तु–निकले; तरळम् पयिल्–मोती जिनके मध्य फेंके जाते हैं; तरङ्कत्तु इटै–उन तरंगों के मध्य; ॲळ्न्तु पिऱ्ळ्न्तु ऑळिर्–उछलकर, तड़पकर चमकनेवाले; कॊळ्ु कयल्कळ् ॲन्न–हृष्ट-पुष्ट मछलियों के समान; मिळिर्किन्ऱ–भासमान हैं। ६११

स्त्रियाँ डेरों के अन्दर बैठी 'कळ्ङ्कु' के बीजों को गोटियाँ बनाकर खेल रहीं हैं। (ये कळ्ङ्कु नाम की लता के बीज होते हैं। वे आकार-प्रकार में बहुत बड़े मोती के समान लगते हैं।) कुहरे के समान झीने परदे हिल रहे हैं। तब उन स्त्रियों की आँखें उन मछलियों के समान दिखाई देती हैं जो शंख-जनित मोती बिखेरनेवाली तरंगों के बीच तड़पती, छटपटाती और चमकती हैं। (परदों का हिलना लहरों का भ्रम पैदा करता है। गोटियाँ मोतियों के स्थान में और आँखें मछलियों के स्थान में ली जायँ।)। ९११

वॅळ्ळनॅडु वारियऱ वीशियुळ वेन्नुम्
किळ्ळवॅळ्ु हिन्ऱपुनल् केळिरिन् विरुम्बित्
तॅळ्ळुपुन लाऱुशिऱि देयुदवु हिन्ऱ
उळ्ळदु मऱादुदवु वळ्ळलैयु मॊत्त 912

तॅळ्ळु पुनल् आऱु–स्वच्छ जलवाली नदियाँ; वॅळ्ळम् नॅटु वारि–प्रवाहित अधिक जल को; अऱ–कुछ न रखते हुए; वीचि उळवेन्नुम्–दे चुकीं, तो भी; किळ्ळ ॲळ्ुकिन्ऱ पुनल्–अब खोदने पर निकल आनेवाला जल; केळिरिन्–सगे-सम्बन्धियों के समान; विरुम्पि–स्नेह के साथ; चिऱिते उतवुकिन्ऱ–थोड़ा ही सही, देते हैं; उळ्ळतु मऱातु उतवु–(वे नदियाँ) अपने पास जो भी है उसको 'नाहीं' न कहकर दान करनेवाले; वळ्ळलै ऑत्त–उदार दानी के समान थीं। ६१२

चन्द्रशैल की नदियाँ उदार दानियों के समान हैं जो अपने पास कुछ

भी नहीं रखते। और सब दान में दे देते हैं। इन नदियों ने अपना सारा जल पहले ही बहा दिया है; अब वे सूखी पड़ी हैं। उस स्थिति में भी उसे खोदें तो जल स्रव कर आयेगा और वे नदियाँ उसको सगे सम्बन्धियों के समान प्यार के साथ दान कर देंगी। ९१२

तुऱ्ऱिनॆऱि पङ्गिहडु ळङ्गवळ लोडुम्
मिऩ्ऱिरिव वॆऩ्ऩमणि यारमिळिर् मार्बर्
मऩ्ऱऩ्मण नाऱुपड माडनुऴै हिऩ्ऱार्
कुऩ्ऱिऩ्मुऴै तोऱुनुऴै कोळरियै यॊत्तार् 913

तुऱ्ऱि नॆऱि पङ्किकळ्–घने घुँघराले केश को; तुळङ्क–(हवा में) हिलते देते हुए; अळलोटुम्–आग के साथ; मिऩ् तिरिव अॆऩ्ऩ–बिजलियाँ घूमती हों, ऐसा; मणि आरम्–रत्नहार; मिळिर्–(जिनपर) दमकते हैं; मार्पर्–उन वक्षवाले; मऩ्ऱल् मणम् नाऱु–नवीन गन्ध से युक्त; पटम् माटम्–पटमण्डपों में; नुऴैकिऩ्ऱार्–प्रवेश करनेवाले वीर; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वतों की; मुऴै तोऱुम्–गुफ़ा-गुफ़ा में; नुऴै–घुसनेवाले; कोळ् अरियै–संहारक सिंहों के; ऑत्तार्–समान थे। ९१३

वीर सुवासपूर्ण वस्त्र-भवनों में प्रवेश करते हैं। उनके सिर के घने बाल हवा में हिलते हैं। वक्षों पर बिजली चमकती हो और आग दमकती हो, ऐसे रत्नहार शोभित हैं। तब वे गुफाओं में घुसनेवाले खूनी सिंहों के समान लगते हैं। (वीरों के बाल की सिंहों के अयाल से उपमा है।)। ९१३

नॆरुङ्गयि लॆयिर्ऱिणैय शॆम्मयिरि ऩॆऱ्ऱिप्
पॊरुङ्गुलिह मप्पियऩ पोर्मणिह ळार्प्प
पॆरुङ्गळि ऱलैप्पुऩल् कलक्कुवऩ पॆट्टुक्
करुङ्गडल् कलक्कुमदु कैडवरै यॊत्त 914

नॆरुङ्कु—पास-पास रहे; अयिल्–तीक्ष्ण; ऍयिऱु इणैय–दन्तद्वय वाले; चॆम्मयिरिऩ् नॆऱ्ऱि–लाल बालों के माथों पर; पॊरुम् कुलिकम् अप्पियऩ–सुरुचियुक्त रीति से इंगुलिक से लिप्त; पोर् मणिकळ् आर्प्प—बारी-बारी से बजनेवाली घंटियोंवाले; पॆरु कळिऱु—बड़े-बड़े गज; अलै पुऩल् कलक्कुवऩ—तरंग-समुद्र को आकुलित करनेवाले; करु कटल्–(प्रलयकाल के) नीले सागर को; पॆट्टु–चाहकर कलक्कुम्–आलोड़ित करनेवाले; मतु कैटवरै ऑत्त–मधुकैटभ के समान थे। ९१४

हाथी जलाशयों में पैठे हैं। उनके दो तीक्ष्ण भाले के समान दाँत हैं। लाल रोम से भरे माथों पर इंगुलिक लगी है। दोनों ओर घंटियाँ लटकती हैं जो बारी-बारी से मानो प्रतिस्पर्द्धा में बजती हैं। वे जलाशयों में उतरकर जल को आलोडित करते हैं। वे मधुकैटभ के समान लगते हैं। (मधु और कैटभ दो असुर थे जो ब्रह्मा से वेदों को चुरा ले जाकर समुद्र के नीचे पाताल में रहे। ब्रह्माजी की प्रार्थना से श्रीविष्णु ने अपने वेद-गान से उन्हें बहकाकर अलग किया और वेद को ले आकर ब्रह्माजी

के पास दे दिया। असुर वेदों को न पाकर समुद्र को उद्वेलित करते हुए श्रीविष्णु के पास आये। श्रीविष्णु ने उनसे उन्हींको मारने का वर लेकर उनको मारा।)। ९१४

ऑक्कमिशै युय्प्पव रुरैत्तकुऱि कॉळ्ळा
पक्कमिन मोत्तय ललैक्कनत्ति पारा
मैक्कळि मदत्तवरै मादर्कलै यल्हुल्
पुक्कवरै यॉत्तन पुनऱ्चिऱैह ळेऱा 915

कळि मतत्त–मदमत्त; मै वरै–काले पर्वत (के समान गज); ऑक्क–उचित रीति से; मिचै उयप्पवर्–ऊपर बैठकर चलानेवाले; उरैत्त कुऱि–(जो संकेत वचन) कहते हैं उन आज्ञाओं को; कॉळ्ळा–न मानकर; पक्कम्–दोनों ओर; इतम्–उन्हीं की जाति के हाथी; ऑत्तु–(उन पीलवानों से) समरस होकर; अयल् अलैक्क–बाहर आने पर मजबूर करें; नत्ति पारा–तो भी उसकी परवाह न करके; मातर्–स्त्रियों के; कलै अल्कुल् पुक्कवरै–मेखला-भूषित भग (के मोह) में मग्न (कामुकों); ऑत्तत–के समान बनकर; पुतल् चिऱैकळ् एऱा–जलाशयों से बाहर तीर पर नहीं आते। ६१५

और कुछ मदमत्त हाथी हैं जो स्त्री (के मेखला-भूषित जघन-प्रदेश) के मोह में मग्न कामुकों के समान जलाशय में पैठे हैं और तीर पर आने का नाम नहीं लेते। पीलवान की आज्ञा नहीं मानते, पार्श्व में रहे हाथियों के उसे बाहर निकालने के प्रयास को व्यर्थ बनाते और जलाशय में ही पैठे रहते। (कामुक, गुरु या बड़ों का उपदेश नहीं सुनते; न सगे सम्बन्धियों या मित्रों की निन्दा की परवाह करते हैं।)। ९१५

तुहिलिडै मडन्दयरॉ डाडवर् तुवन्ऱिप्
पहलिडैय वट्टिलिन् मडुत्तॅरि परप्पुम्
अहिलिडु कॉळुम्बुहै यळुङ्गलिन् मुळङ्गा
मुहिल्पडु नॅडुङ्गडलै यॉत्तुळदम् मूदूर् 916

तुकिल् इटै मटन्तयरॉटु–(महीन और श्रेष्ठ) वस्त्र से अलंकृत कटिवाली स्त्रियों के साथ; आटवर्–पुरुष भी; तुवन्ऱि–साथ मिलकर; पकल् इटैय–दिन को सारहीन (मन्द) करते हुए; अट्टिलिल्–पाकशालाओं में; मटुत्तु–ले आकर; ॲरि परप्पुम्–जलाई जानेवाली; अकिल् इटु–अगरु की लकड़ियों का; कॉळु पुकै–घना धुआँ; अळुङ्कलिन्–भर जाने से; अ मूतूर–वह 'प्राचीन' नगर; मुळङ्का मुकिल् पटु–जो नहीं गरजे ऐसे मेघों से आवृत्त; नॅटु कटलै ऑत्तु उळतु–विशाल समुद्र की तरह है। ६१६

सुन्दर वस्त्रधारिणी कमरवाली स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर पाकशालाओं में अगरु की लकड़ियाँ जला रहे हैं। उनसे इतना प्रकाश होता है जिससे दिन भी मन्द दीखता है। उनसे घना धुआँ उठता है। यह

सारा दृश्य ऐसा लगता है मानो विशाल समुद्र ऐसे मेघों से आच्छादित हो जो नहीं गरजते। (पड़ाव को कवि 'मूदूर' प्राचीन नगर कहते हैं क्योंकि वह प्राचीन नगर के समान सब तरह से सम्पन्न है। वह समुद्र के समान है। समुद्र सब निधियों का आकर है। "धुआँ" न गरजनेवाला या मौन मेघ है। यह सुन्दर शब्दयोजना है।)। ९१६

कमरुऱु पॉरुप्पिऩ् वाऴुम् विञ्जयर् काण वन्दार्
तमरयु मऱियार् निऩ्ऱु तिहैप्पुऱु तहैमै शाऩ्ऱ
कुमररु मङ्गै मारुङ् गुऴुमलाल् वऴुवि विण्णिऩ्
ऱमरर्ना डिऴिन्द दॅऩ्ऩप् पॊलिन्ददव् वऩीह वॆळ्ळम् 917

कमर् उऱु–घाटियों सहित; पॉरुप्पिऩ्–पर्वतों में; वाऴुम्–रहनेवाले; विञ्चैयर्–विद्याधर; काण वन्तार्–जो देखने आये; तमरैयुम् अऱियार्–अपनों को भी नहीं पहचानते; निऩ्ऱु–खड़े होकर; तिकैप्पु उऱु–भ्रमित हो जावें; तकैमै चाऩ्ऱ–ऐसा रहनेवाले; कुमररुम्–नौजवान पुरुष; मङ्कैमारुम्–और स्त्रियाँ; कुऴुमलाल्–वहाँ जुटे रहे, इसलिए; अव् अनीक वॆळ्ळम्–वह सेना सागर; अमरर् नाटु–देवलोक; विण् निऩ्ऱु–आकाश से; वऴुवि–खिसककर; इऴिन्ततु अॅऩ्ऩ–गिर गया हो, ऐसा; पॊलिन्ततु–प्रकाशमय रहा। ९१७

(पड़ाव के पुरुष और स्त्री बने-ठने और बड़े ही सुन्दर और उत्साहशील थे।) दर्रों सहित उस पर्वत में रहनेवाले विद्याधर उस स्थान को देखने आये। वे यह नहीं पहचान सके कि (अपने) विद्याधर कौन हैं और अन्य कौन हैं ? वे चकित रह गये। इस प्रकार सुन्दर वीर पुरुषों और स्त्रियों की वह सेना सागर आकाश से खिसककर नीचे गिरे हुए स्वर्गलोक के समान रहा। ९१७

वॆयिलिऩ्ऱङ् गुऱैयच्चोदि मिऩ्ऩिऴल् परप्प मुऩ्ऩाळ्
तुयिलऱु शॅव्वि योरुम् दुऩियुऱु मुऩिवि ऩोरुम्
कुयिलॊडु मिऩिदु पेशिच् चिलम्बॊडु मिऩिदु कूवि
मयिलिऩम् दिरिव दॅऩ्ऩत् तिरिन्दऩर् महळि रॅल्लाम् 918

मुऩ् नाळ्–पिछले दिन (रात); तुयिल् अऱु–निद्राहीन रही; चॆव्वियोरुम्–सुन्दरियाँ; तुऩि उऱु मुऩिविऩोरुम्–रूठने से उत्पन्न रोषवालियाँ; मकळिर् अॅल्लाम्–ऐसी सभी स्त्रियाँ; वॆयिल् निऱम् कुऱैय–धूप की कान्ति को मन्द करते हुए; चोति–अपनी देह कान्ति (आभूषण की चमक) द्वारा; मिऩ् निऴल् परप्प–बिजली के समान प्रकाश छिटकाती हुई; कुयिलॊटुम् इऩितु पेचि–कोयलों के साथ मधुर रीति से बोलती हुई; चिलम्पॊटुम्–पर्वतों से (प्रतिध्वनि बनाते हुए); इऩितु कूवि–चाह के साथ पुकार मचाती हुई; मयिल् इऩम् तिरिव अॅऩ्ऩ–मयूरदल घूमता हो, ऐसा; तिरिन्तऩर्–घूमीं। ९१८

(रात बीत गयी। सवेरा हो गया।) पिछली रात कुछ स्त्रियों की

नींद हराम हो गयी थी। कुछ स्त्रियों की रूठन क्रोध में बदल गयी थी। ऐसी स्त्रियाँ अब अधिक सुन्दर लग रही थीं। पर्वत के दृश्यों से आकृष्ट होने से उनमें नया उत्साह भर गया। अतः वे सजधज कर बाहर आयीं। उनकी देहों की और उनके आभरणों की कांति इतनी चमकती थी कि धूप भी निष्प्रभ हो जाती थी। वे कोयलों के समान कूकती हुयी और पर्वत से प्रतिध्वनि पैदा करके उसका आनन्द उठाती हुयी मयूरों के दल के समान घूमीं। ९१८

ताळिडैक् कळल्ह ळार्प्पत् तारिडै यळिह ळार्प्प
वाळ्पुडै यिलङ्गच् चॅङ्गेळ् मणियणि वलयमिन्नत्
तोळॅन वुयरन्द कुन्ऱिन् शूळल्ह ळिनिदु नोक्कि
वाळरि तिरिव वॅन्नत् तिरिन्दनर् मैन्द रॅल्लाम् 919

मैन्तर् ॲल्लाम्–वीर कुमार सब; ताळ् इटै–पैरों में; कळल्कळ् आर्प्प–पायलों को क्वणित करते हुए; तार् इटै–मालाओं में; अळिकळ् आर्प्प–अलियों को गुंजारने देते हुए; वाळ् पुटै इलङ्क–तलवारों को पार्श्व में झलकाते हुए; चॅम् केळ् मणि अणि–सुरुचिपूर्ण रंग के रत्नों के बने; वलयम् मिन्न–बिजायटों को चमकाते हुए; तोळ् ॲन उयर्न्त–अपने कन्धों के समान उन्नत; कुन्ऱिन् चूळल्कळ्–पर्वत के स्थानों में; इतितु नोक्कि–सुख से संदर्शन करते हुए; वाळ् अरि–उज्ज्वल सिंह; तिरिव ॲन्न–घूमते हैं ऐसे; तिरिन्तनर्–घूमे। ६१६

पुरुष भी सैर कर दृश्य देखने निकले। उनके पैरों पर पायलें नाद कर रही थीं। उनकी मालाओं पर भ्रमर गुंजार कर रहे थे। पार्श्वों में तलवारें शोभा दे रही थीं। विजायटों की रंगीन मणियाँ चमक रही थीं। उनके ही कंधों के समान पर्वत के शिखर ऊँचे थे। ऐसे पर्वत के स्थानों पर वे प्रभापूर्ण सिंहों के समान घूमे। ९१९

शुऱ्ऱिय कडल्ह ळॅल्लाञ् जुडर्मणिक् कनहक् कुन्ऱैप्
पऱ्ऱिय वळैन्द वॅन्नप् परन्दुवन् दिऱुत्त शेनैक्
कॊऱ्ऱवर् दैवि मार्हण् मैन्दर्हळ् कॊम्ब नार्वन्
दुऱ्ऱवर् काण लुऱ्ऱ वरैनिलै युरैत्तु मन्नो 920

चुऱ्ऱिय–(भूलोक) घेरते रहे; कटल्कळ् ॲल्लाम्–सभी सागरों ने; चुटर् मणि–दीप्त रत्नोंवाले; कतकम् कुन्ऱै–कनकमय पर्वत को; पऱ्ऱिय–ग्रसने के लिए; वळैन्त ॲन्न–घेर लिया हो, ऐसा; परन्तु वन्तु–विस्तार से आकर; इऱुत्त चेनै–जुटी सेना के; कॊऱ्ऱवर्–राजा लोग; तेविमार्कळ्–उनकी रानियाँ; मैन्तर् कळ्–सैनिक वीर पुरुष; कॊम्पु अन्नार्–पुष्पशाखा सदृश स्त्रियाँ; वन्तु उऱ्ऱवर्–जो आये; काणल् उऱ्ऱ–उनके द्वारा दृष्टव्य; वरै निलै–चन्द्रशैल पर्वत की स्थिति आदि; मन् उरैत्तुम्–विस्तार से कहेंगे। ६२०

भूमि को घेरे रहनेवाले सभी समुद्रों ने आकर मेरु को घेर लिया हो,

ऐसे सेना-सागर ने आकर चन्द्रशैल (गिरि) को घेर लिया। उसके राजा लोग, उनकी रानियाँ, वीर सैनिक और पुष्पलता-सी सुन्दरी स्त्रियाँ उस पर्वत के दृश्यों का आनन्द उठाने के लिए निकलीं। उस पर्वत और उन दृश्यों का अब हम (कवि) विस्तार के साथ वर्णन करेंगे। ९२०

पम्बुतेऩ् मिञिऱु तुम्बि परऩ्दिशै पाडि याड
उम्बर्वा ऩहत्तु निऩ्ऱ वौऴितरु तरुवि ऩोङ्गुम्
कौम्बुहळ् पनैक्कै नीट्टिक् कुळैयोडु मौडित्तुक् कोट्टुत्
तुम्बिह ळुयिरे यऩ्ऩ तुणैमडप् पिडिक्कु नल्हुम् 921

कोट्टुम्पिकळ्–दाँतोंवाले (पुरुष) हाथी; पम्पु–अधिकता से; तेऩ्–मधुमक्खियाँ; मिञिऱु–अलि; तुम्पि–काले भ्रमर; परऩ्तु–फैलकर; इचै पाटि–गीत गाते हुए; आट–मँडराते हैं, तब; उम्पर् वाऩ् अकत्तु–ऊपर के आकाशलोक तक जाकर; निऩ्ऱ–स्थित; ऑळि तरु तरुविऩ्–शोभा देनेवाले वृक्षों की; ओङ्कुम् कॊम्पुकळ्–ऊँची डालों को; पत्तै कै नीट्टि–तालवृक्षों के समान सूँड़ों को बढ़ाकर; कुळैयोटुम् ऑटित्तु–पत्तों के साथ तुड़वाकर; उयिरे अऩ्ऩ–प्राणों के ही समान; तुणै–संगिनी; मटम् पिटिक्कु–छोटी आयु की हथिनियों को; नल्कुम्–देते हैं। ९२१

उस पर्वत में स्वर्गोन्नत आकाशव्यापी वृक्ष हैं। उन पर मधुमक्खियाँ आदि विविध भौंरे गुंजार करते हुए मँडरा रहे हैं। वहाँ दाँतवाले हाथी उन वृक्षों की डालों को पत्तों सहित तोड़कर अपनी संगिनी हथिनियों को खिलाते हैं। ९२१

पण्मलर् पवळच् चॆव्वाय्प् पऩिमलर्क् कुवळै यऩ्ऩ
कण्मलर् कॊडिच्चि मार्क्कुक् कणित्तॊऴिल् पुरियुम् वेङ्गै
उण्मलर् वॆऱुत्त तुम्बि पुदियतेऩ् ऱुदवु नाहत्
तण्मल रॆऩ्ऩ वाऩत् तारहैत् तावु मऩ्ऱे 922

पण् मलर्–संगीत के समान (मधुर शब्द) प्रकट करनेवाले; पवळम् चॆव् वाय्–प्रवाल-सम अरुण मुख; पऩि कुवळै मलर् अऩ्ऩ–शीतल कुवलय पुष्प के समान; कण् मलर्–प्रफुल्लित आँखोंवाली; कॊटिच्चि मार्क्कु–"कॊटिच्चि" (पार्वत्य प्रदेश की जाति की) स्त्रियों के लिये; कणि तॊऴिल् पुरियुम्–ज्योतिषी का काम करनेवाले; वेङ्कै–"वेङ्कै" तरुओं के; उण् मलर् वॆऱुत्त–शहद पीकर पुष्प को जो त्याग चके वे; तुम्पि–काले भ्रमर; वाऩम् तारकै–आकाश के नक्षत्रों को; पुतिय तेऩ् उतवुम्–नया शहद देनेवाले; नाकम् तण् मलर् ऍऩ्ऱु–पुन्नाग के शीतल फूल समझकर; तावुम्–उनकी ओर उछलते हैं; (अऩ्ऱु–ए)। ९२२

पर्वत प्रदेश की स्त्रियाँ "कॊटिच्चि" कही जाती हैं। मधुर-भाषिणी उनके अधर प्रवालसम लाल हैं। आँखें कुवलय पुष्प सदृश हैं। वेंगै वृक्ष उनके लिए ज्योतिषी का काम देते हैं। (जब वे फूलते हैं तब पर्वत प्रदेश के लोग खेती आरम्भ करते हैं। उनके विवाह आदि मंगल-कार्य

किये जाते हैं। वे वेंगै वृक्ष को देखकर ऋतु, सुमुहूर्त आदि का निर्धारण कर लेते हैं।) "वेंगै" वृक्ष के फूलों से भ्रमर शहद चूस चुके। फिर वे ऊपर देखते हैं तो नक्षत्र दिखाई देते हैं। वे भ्रमर उनको पुन्नाग वृक्ष के फूल समझकर नया शहद पाने की आशा से उन पर लपकते हैं। ९२२

मीनॅनुम् पिडिह ळोडुम् विळङ्गुवॅण् मदिनल् वेळम्
कूत्तलवान् कोडु नीट्टिक् कुत्तिडक् कुमुऱिप् पायुम्
तेनुहु मडैयै माऱ्ऱिच् चॅन्दिन्नैक् कुऱवर् मुन्दि
वानॅनी राऱु पाय्च्चि यॅवन्नम् वळर्प्पर् मादो 923

मीन् अॅनुम् पिटिकळोटुम्–नक्षत्ररूपी हथिनियों के साथ; विळङ्कु–शोभनेवाले; वॅळ् मति नल् वेळम्–श्वेत चन्द्ररूपी श्रेष्ठ हाथी; कूत्तल् वान् कोटु–वक्र, उज्ज्वल दाँतों को; नीट्टि–बढ़ाकर; कुत्तिट–(छत्तों में) खोंसने से; कुमुऱि पायुम्–शब्द के साथ बहनेवाले; तेन् उकु मटैयै–शहद के नाले को; चॅम् तिनै कुऱवर्–सुनिर्मित कोदों की खेतीवाले "कुरव" (पार्वत्य) लोग; माऱ्ऱि–मार्ग बदलकर; मुन्ति–पहले; वान आऱु नीर् पाय्च्चि–आकाशगंगा का जल सींचकर; अॅवनम् वळर्प्पर्–जंगली धान पालते हैं। ६२३

पर्वत प्रदेश के "कुऱ" लोग कोदों की खेती करनेवाले हैं। उसके लिए अधिक जल की आवश्यकता नहीं है। पर जंगली धान के लिए आवश्यक है। चन्द्ररूपी हाथी, जो नक्षत्ररूपी हथिनियों के साथ आकाश में घूमता है अपने दाँतोंरूपी नोकों से शहद के छत्तों को छेद कर उकसा देता है। उससे शहद की धार बहने लगती है। ("कुऱवों" की कोदों की खेती पहले ही हो चुकी) अब वे इस शहद की धारा को मार्ग बदलकर आकाशगंगा के जलमार्ग द्वारा जंगली धान के खेतों को ले जाकर सींचते हैं और धान पालते हैं। ९२३

कुप्पुऱर् करुमै यालक् कुलवरैच् चारल् वैहि
ऑप्पुरत् तुलङ्गु हिन्नऱ वुडुपति याडि यिन्कण्
इप्पुऱत् तेयुङ् गाण्बार् कुऱत्तिय रियॅन्द कोलम्
अप्पुरत् तेयुङ् गाण्बा ररम्बय रळहु मादो 924

कुप्पुऱऱ्कु अरुमैयाल्–पार कर जाना कठिन है, इसलिए; अ कुलम् वरै–उस श्रेष्ठ पर्वत के; चारल् वैकि–पार्श्व में ही ठहरकर; ऑप्पु उऱ–(दोनों ओर) समरूप; तुलङ्कुकिन्नऱ–रहनेवाले; उटुपति–उडुपति; आटियिन् कण्–(रूपी) आइने के; इ पुऱत्तेयुम्–इस तरफ़; कुऱत्तियर्–पार्वत्य स्त्रियाँ; इयॅन्त कोलम् काण्पार्–अपना सजा हुआ का रूप देखती हैं; अ पुऱत्तेयुम्–उस तरफ़; अरम्पॅयर्–अप्सराएँ; अऴकु काण्पार्–अपना रूप निहार लेती हैं। ६२४

चन्द्र उस पर्वत को पार कर नहीं जा सका और उसी पर ठहर गया। चन्द्र दोनों ओर समतल है और आइने के समान है। आइने के

इस तरफ़ में "कुऱ" स्त्रियाँ अपना रूप-प्रतिबिम्ब देख लेती हैं और उस तरफ से अप्सराएँ अपना रूप-प्रतिबिम्ब । ९२४

उदियुऴ तुरुत्ति यूदु मुलैयुऴ तीयुम् वायिऩ्
अदिविड नीरु नॅय्यु मुण्गिला दावि युण्णुम्
कॉदिनुऩै वेऱ्कण् मादर् कुऱत्तियर् नुदलि ऩोडु
मदियिऩै वाङ्गि यॉप्पुक् काण्गुवर् कुऱवर् मावो 925

उति उऴ–(भाथी से) निकलनेवाली; तुरुत्ति ऊतुम्–भाथी की निकाली गयी; उलै उऴ तीयुम्–भट्ठी की अग्नि और; वायिऩ्–(मुख) नोक पर; अति विटम् नीरुम्–अति विषैला जल; नॅय्युम्–और घी; उण्किलातु–न खाकर (लगाया जाकर); आवि उण्णुम्–प्राण हर सकनेवाले; कॉति नुऩै वेल् कण्–संतापी सिरे के भाले के समान आँखोंवाली; कुऱत्तियर् मातर्–'कुऱ' स्त्रियों के; नुतलिऩोटु–भाले के साथ; मतियिऩै वाङ्कि–चन्द्र को रखकर; कुऱवर्–'कुऱ' पुरुष; ऑप्पु काण्कुवर्–तुलनाकर देखते; (मातु–ओ) । ६२५

भाला साधारणतः भट्ठी पर भाथी द्वारा निसृत हवा के सहारे जलनेवाले अंगारों पर तपाकर तेज किया जाता है। फिर उसके अग्रभाग (मुख) पर विष लगा दिया जाता है; उसे अचूक घातक बनाने के हेतु। जंग न लगे, इस निमित्त घी लगाया जाता है। पर किसी ऐसे प्रयत्न के विना ही 'कुऱ' स्त्रियों की आँखें पुरुषों के प्राण को हर सकनेवाली (मन को मोह लेनेवाली) हैं। ऐसी स्त्रियों के भालों को चन्द्र के पास रखकर पुरुष लोग उपमा की परीक्षा करते हैं। (चन्द्र इतने पास है क्योंकि वह पर्वत बहुत ऊँचा है) । ९२५

पेणुदऱ् करिय शीयक् कुरुळैयुम् पिडिह ळीऩ्ऱ
काणुदऱ् किऩिय वेऴक् कऩ्ऱॊडु कळिक्कु मुऩ्ऱिल्
कोणुदऱ् कुरिय तिङ्गट् कुऴवियुङ् गुऱवर् तङ्गळ्
वाणुदऱ् कॉडिच्चि मार्द महवॊडु तवऴु मऩ्ऱे 926

कुऱवर् तङ्कळ् मुऩ्ऱिल्–'कुऱ' लोगों के (झोपड़ों के) आँगन में; पेणुतऱ्कु अरिय–पालने के लिए श्लाध्य; चीयम् कुरुळैयुम्–सिंह के शावक; पिटिकळ् ईऩ्ऱ–हथिनियों के जाये; काणुतऱ्कु इऩिय–दर्शनीय; वेऴम् कऩ्ऱॊटु–हाथी के बच्चों के साथ; कळिक्कुम्–केलि करते; वाळ् नुतल् कॉटिच्चिमार्–उज्ज्वल ललाटवाली 'कॉटिच्चि' यों के; तम् मकवॊटु–बच्चों के साथ; कोण् नुतऱ्कु उरिय–अराल भाल से उपमेय; तिङ्कळ् कुऴवियुम्–बालचन्द्र भी; तवऴुम्–घुटनों के बल रेंगकर खेलता है । ६२६

(पार्वत्य) "कुऱ" जाति के लोगों के आँगनों में वे सिंहशावक, जिन्हें वे चाव से पालते हैं, और हथिनियों के सुन्दर कलभ साथ-साथ खेलते हैं। उज्ज्वल ललाटवाली 'कुऱ' स्त्रियों के बच्चों के साथ उन्हीं के भाल से उपमेय चन्द्र घुटनों चलकर मन बहलाता है । ९२६

अञ्जनक् किरियि नन्न वळिहवुळ् याने कॊन्ऱ
वॆञ्जिनत् तरियिन् रिण्काऱ् चुवट्टॊडु विञ्जे वेन्दर्
कुञ्जियन् दलत्तु नीलक् कुलमणित् तलत्तु मादर्
पञ्जियङ् कमलम् बूत्त पशुञ्जुव डुडेत्तु मन्नो 927

कुलम् नील मणि तलत्तुम्–श्रेष्ठ नीली मणियों से भरे तल में; विञ्चै वेन्तर्–विद्याधर राजाओं के; अम् कुञ्चि तलत्तुम्–सुन्दर केश जाल में; अञ्चनम् किरि अन्न–अंजन पर्वत-सम; अळि कवुळ्–मदजल प्रवाही गालों के; यानै कॊन्ऱ–हाथियों के मारक; वॆम् चिनत्तु–कठोर वैर वाले; अरियिन्–सिंह के; तिण् काल् चुवट्टॊटु–गम्भीर चरण-चिह्नों के साथ; मातर्–विद्याधर स्त्रियों के; पञ्चि अम् कमलम् पूत्त–महावर लगे चरणकमलों के लगने से बने; पचुमै चुवटु–गीले चिह्न; उटैत्तु–(उनसे पर्वत) अंकित था। ६२७

उस पर्वत की श्रेष्ठ नीली मणियों से आकीर्ण भूमि पर, और विद्याधरों के सुन्दर केशों पर क्रमशः मदनीर बहानेवाले गण्डस्थल के और अंजनगिरि सम काले हाथियों को मारकर जो चला उस भयंकर क्रोधी सिंह के पैरों के (रक्त के) लाल चिह्न और विद्याधरियों के लाक्षारस चर्चित चरणों के गीले चिह्न पाये जाते हैं। (इस पद में क्रमशः का प्रयोग कर स्थलों और चिह्नों को क्रमवार कहा गया है। यह 'यथा-संख्य' अलंकार है। स्त्रियों की रूठन शांत करने के लिए पुरुषों का सिर नवाना और स्त्रियों का लात मारना शृंगार-वर्णन का अंग समझा जाता है।)। ९२७

शॆङ्गय लन्नयनाट्टञ्ज जॆविपुहा मुऱुव ऱॊन्ऱा
पॊङ्गिरुङ् गून्दल् शोरा पुरुवङ्ग नॆरिया पूविन्
अङ्गयु मिडऱुङ् गूट्टि नरम्बुळऱ्न् दमुद मूऱुम्
मङ्गयर् पाडल् केट्टुक् किन्नर मयङ्गु मादो 928

चॆम् कयल् अनैय नाट्टम्–सुन्दर 'कयल्' मछली-सी दृष्टि; चॆवि पुका–आँख तक नहीं जाती (चंचल नहीं बनती); मुऱुवल् तोन्ऱा–दाँत प्रकट नहीं होते; पॊङ्कु इरुङ्कून्तल्–बहुत रहनेवाला काला केश; चोरा–नहीं खलता; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; नॆरिया–कुंचित नहीं होतीं; पूविन् अम् कैयुम्–कमल-सम हाथों की मुद्राएँ और; मिटऱुम्–कण्ठस्वर भी; कूट्टि–मेल बिठाकर; नरम्पु उळऱ्न्तु–तन्त्री झंकृत कर; अमुतम् ऊऱुम्–अमृत ढालनेवाला; मङ्कैयर् पाटल्–स्त्रियों का संगीत; केट्टु–सुनकर; किन्नरम्–किन्नर भी (देवजाति के गवैये या गायक पक्षी); मयङ्कुम्–मुग्ध रहते हैं। ६२८

'कुऱ' स्त्रियों का गाना इतना मोहक है कि किन्नर भी मुग्ध हो जाते हैं। जब वे गाती हैं तो भद्दी अंग चेष्टाएँ नहीं करतीं; मछली सम आँखें चंचल नहीं बनतीं; दांत प्रकट नहीं होते; केशजाल खुलकर नहीं बिखरता; और भौंहें ऊपर नहीं चढ़तीं। हस्तमुद्राएँ और कंठस्वर में मेल

रहता है। तंत्रियों को झंकृत कर वे देवामृत ढलता हो, ऐसा संगीत गाती हैं। ९२८

कळ्ळविऴ् कोदै मादर् कादोडु मुऱवु शॆय्युम्
कॊळ्ळैवाट् कण्णि ऩार्दङ् गुङ्गुमक् कुऴम्बु तङ्गुम्
तॆळ्ळिय पळिक्कुप्पाऱैत् तॆळिशुनै मणियिऱ् चॆय्द
वळ्ळमु नऱवु मॆऩ्ऩ वरम्बिल पॊलिव मऩ्ऩो 929

कातोटुम् उऱवु चॆय्युम्–श्रवणों तक आयत; कॊळ्ळै–(पुरुषों के प्राण-) हारी; वाळ् कण्णिऩार्–तलवार-सी आँखोंवाली; कळ् अविऴ् कोतै मातर् तम्–शहद बहानेवाले केशवाली स्त्रियों के; कुङ्कुमम् कुऴम्पु–कुंकुम के लेप; तङ्कुम्–जिसमें जम गये हैं उस; तॆळ्ळिय पळिङ्कु पारै–स्वच्छ स्फटिकशिला पर; तॆळि चुनै–स्वच्छ सरोवर; वरम्पु इल–असंख्यक हैं; वळ्ळमुम्–मधुचषक और; नऱवुम् ऎऩ्ऩ–मधु के समान; पॊलिव–शोभित हैं। ६२६

स्फटिक शिलाओं पर जल के सरोवर हैं। उनमें स्त्रियाँ स्नान करती हैं तब कर्णों तक आयत तलवार सम आँखोंवाली, और मधु-मिश्रित कुंतलवाली उन स्त्रियों के कुंकुम का लेप उस जल में गलकर जल को गाढ़ा लाल बना देता है। तब वे सरोवर मधुचषक के समान और जल मधु के समान लगता है। ऐसे सरोवर असंख्यक हैं। ९२९

आडव रावि शोर वञ्जऩ वारि शोर
ऊडलिऱ् चिवन्द नाट्टत् तुम्बर्द मरम्बै मादर्
तोडलर् कोदै निऩ्ऱुन् दुऱन्दमन् दार मालै
वाडल नऱव ऱाद वयिऩ्वयिऩ् मयङ्गु मादो 930

उम्पर् तम्–देवों के योग्य; अरम्पै मातर्–अप्सराएँ; आटवर् आवि चोर–(अपने) पुरुषों के प्राणों को अधीर करते हुए; ऊटलिऩ्–रूठती हैं, इसलिए; चिवन्त नाट्टत्तु–लाल बनी आँखों से; अञ्चतम् वारि–अंजनमिश्रित अश्रु; चोर–ढलकता है; कोतै निऩ्ऱु तुऱन्त–केश से उठाकर फेंकी गई; तोटु अविऴ् मन्तार मालै–दलविकसित मन्दार मालाएँ; वाटल–नहीं सूखीं; नऱव अऱात–शहद से हीन नहीं हुईं; वयिऩ् वयिऩ्–(ऐसी मालाएँ) यत्र-तत्र; वयङ्कुम्–शोभा के साथ पड़ी थीं। ६३०

अप्सराएँ रूठ गयीं। उससे देवगण बहुत अधीर हो रहे। अप्सराओं की आँखें लाल हो गयीं। काजल को पिघलाते हुये अश्रु बहे। उन्होंने अपने केशों से विकसित दलवाले मंदार पुष्पों की बनी मालाओं को निकाल कर फेंक दिया। वे मालाएँ यत्र-तत्र शोभा देती हुई पड़ी हैं क्योंकि देवलोक के पुष्प सदा नवीन रहते हैं और शहद भरे रहते हैं। ९३०

मान्दळि रऩैय मेऩिक् कुऱत्तियर् मालै शूट्टिक्
कून्दलङ् गमुहिऩ् पाळै कुऴलिऩो डॊप्पुक् काण्बार्

ऑन्दिळै यरम्बै माद रॅळिन्मणिक् कडहम् वाङ्गिक्
कान्दळम् बोदिर् पॅय्दु कैहळो डोप्पुक् काण्बार् 931

मा तळिर् अन्नैय मेनि–आम्र-पल्लव सदृश देहवाली; कुरत्तियर्–'कुर' स्त्रियाँ; कून्तल् कमुकिन्–'कुंतलकमुक' नाम की विशेष जाति के कमुक पेड़ों के; पाळै–बालों सहित डण्ठलों पर; माले चूट्टि–मालाएँ डालकर; कुळलित्तोटु ऑप्पु काण्पार्–अपने कुंतलों से तुलना कर देखतीं; एन्नु इळै अरम्पै मातर्–श्रेष्ठ आभरण-भूषित अप्सराएँ; ऑळिल् मणि कटकम् वाङ्कि–सुन्दर रत्नकंकण उतारकर; कान्तळ् अम् पोतिल् पॅय्तु–"कान्तळ्" के फूलों पर (जो स्त्रियों की अँगुलियों के समान पाँचदलीय हैं) पहनाकर; कैकळोटु ऑप्पु काण्पार्–अपने हाथों की समानता देखते। ९३१

वहाँ की "कुर" स्त्रियाँ जो आम्रपल्लव सम देहकांतिवाली हैं, 'कुंतल-क्रमुक' तरुओं के बालों सहित डंठलों पर मालाएँ पहनाती हैं और यह देखती हैं कि हमारे केश में और उनमें कैसी समता है। श्रेष्ठ आभरण-धारिणी अप्सराएँ "कांतळ्" पुष्पों को अपने रत्न कंकण पहनाकर अपने हाथों की समता परखती हैं। (कुंतल-क्रमुक क्रमुक जाति का एक विशेष तरु है जिसके बालों सहित डंठल स्त्रियों के केशों से उपमित किये जाते हैं। कांतळ् के पुष्प पाँच दल के होते हैं और वे स्त्रियों के हाथों से या सर्प के फन से उपमित होते हैं।) । ९३१

शरम्बयिल् शाप मन्न पुरुवङ्ग डम्मि लाड
नरम्बिन्नो डिन्दिु पाडि नाडह मयिलों डाडुम्
अरम्बयर् वॅरुत्तु नीत्त वविर्मणिक् कोवै यारम्
मरम्बयिल् कडुवन् पूण मन्दिकण् डुवक्कु मादो 932

नरम्पिनोटु इनितु पाटि–वीणा की तन्त्रियों के स्वर के साथ मेल बिठाकर गाकर; मयिलोटु नाटकम् आटुम्–मोरों के साथ नाचनेवाली; अरम्पैयर्–देवांगनाएँ; चरम् पयिल् चापम् अन्न–शरसंनद्ध चाप के समान; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; तम्मिल् आट–परस्पर (अनुरूप) फड़कने देती हुई; वॅरुत्तु नीत्त–झुंझलाकर जिनको उतार फेंका है; अविर् मणि कोवै–उन कान्ति छिटकनेवाले रत्नहारों को; आरम्–और मुक्ता-मालाओं को; मरम् पयिल् कटुवन्–तरुओं पर घूमनेवाले बन्दर; पूण–लेकर (बंदरियों को) पहनाते हैं, तब; मन्ति–बँदरियाँ; कण्टु–देखकर; उवक्कुम्–मुदित होती हैं; (मातु, ओ) । ९३२

अप्सराएँ वीणा के साथ गातीं और मोर के साथ नाचतीं। उनको अपने प्रेमियों से मान हो गया। उनकी भौंहें फड़क उठीं और रुष्ट होकर उन्होंने रत्नहार, मुक्ता-मालाएँ आदि आभरण उतार कर फेंक दिये। तब पेड़ों पर विचरनेवाले वानरों ने उनको उठाया और अपनी वानरियों को पहना दिया। वानरियाँ उनको देखती मनोरंजन करने लगीं। ९३२

शान्दुयर् तडङ्ग डोरुन् दादुरा हत्तुच् चार्न्द
कून्दलम् बिडिह ळॅल्लाङ् गुङ्गुम मणिन्द पोलुम्

कान्दिन मणियिन् शोदिक् कदिरॊडुङ् गलन्दु मूशच्
चेन्दुवा नहमॆप् पोदुम् जॆक्करै यॊक्कु मन्ऱे 933

चान्तु उयर्–चन्दन के तरु जहाँ उन्नत उगे हैं; तटङ्कळ् तोऱुम्–उन स्थल-स्थल पर; तातुराकत्तु चार्न्त–धातुराग (गैरिक) के रंग के लगने से; कून्तल् अम् पिटिकळ् ऍल्लाम्–सारी लोम-भरी सुन्दर हथिनियाँ; कुङ्कुमम् अणिन्त पोलुम्–कुंकुममण्डित-सी लगती हैं; कान्तु इनम् मणियिन्–चमकदार श्रेष्ठ पद्मराग के पत्थरों की; चोति कतिरॊटुम् कलन्तु–अधिक लाल रंग से मिलकर; मूच–फैलती है, इसलिए; वान् अकम् चेन्तु–आकाश लाल हो जाता है, और; ऍप्पोतुम् चॆक्करै ऑक्कुम्–सदा लाल-संध्यागगन के समान रहता है। ६३३

चन्दन तरुओं से लसित उस पर्वत प्रदेश में धातुराग (गैरिक) पाया जाता है। उसके कारण रोम-भरे शरीरवाली हथिनियों के ऊपर वह रंग लग जाता है। ऐसा लगता है कि उनके ऊपर कुंकुम का लेप लगाया गया है। पद्मराग के नग बिखरे पड़े हैं। उनकी ज्योति गैरिक की लाल बुकनियों के साथ मिलती है और आकाश में भर जाती है। इसलिए आकाश हमेशा संध्यागगन के समान लाल बना रहता है। ९३३

निलमहट् कणिह ळॆन्न निरैहदिर् मुत्तम् जिन्दि
मलैमहळ् कॊऴुनन् चॆन्नि वन्दुवीऴ् गङ्गै पोन्ऱ
अलहिल्पॊन् नलम्बि यारम् जार्न्दुवी ऴरुवि मालै
उलहळन् दवन्ऱन् मार्बि नुत्तरी यत्तै यॊत्त 934

अलकु इल् पॊन् अलम्पि–अपरिमेय स्वर्ण छितराती हुई; आरम् चार्न्तु–मुक्तामिलित; वीऴ् अरुवि मालै–गिरनेवाली सरिताओं की पंक्तियाँ; निलम् मकटकु–भूमिदेवी के; अणिकळ् ऍन्न–आभरण होंगे, यह मानकर; निऱै कतिर् मुत्तम् चिन्ति–उज्ज्वल मोतियों को बहाती हुई; मलैमकळ् कॊऴुनन्–पर्वतराजकुमारी (पार्वतीदेवी) के पति (शिवजी) की; चॆन्नि वन्तु वीऴ्–जटा पर से नीचे सरकनेवाली; कङ्कै पोन्ऱ–शाखाओं सहित गंगा नदी के समान रहीं; उलकु अळन्तवन् तन् मार्पिन्–त्रिलोक नापनेवाले त्रिविक्रम देव के वक्ष के; उत्तरीयत्तै ऑत्त–उत्तरीय के समान भी थीं। ६३४

उस पर्वत पर सरिताएँ अत्यधिक मात्रा में स्वर्ण और मोती बहाती हुयी बहती थीं। जब वे झरनों के रूप में गिरती थीं तब वे पार्वतीपति श्रीशिव जी की जटाजूट से गिरनेवाली अनेक धाराओं की गंगाजी के समान थीं; पर्वत के निचले भाग में सरिताओं के रूप में बहती थीं तब त्रिलोकमापक त्रिविक्रमदेव के उत्तरीय के समान लगती थीं। ९३४

कोडुला नाहप् पूवो डिलवङ्ग मलरुङ् गूट्टिच्
चुडुवार् कळिवण् डोच्चित् तूनरुन् देऱल् कॊळ्वार्
केडिला महर याऴिङ् किन्नर मिदुनम् पाडुम्
पाडला लूड नीङ्गुम् परिमुह मादर्क् कण्डार् 935

कोट्टु उलाम्–डालों पर पुष्पित; नाकम् पूवॊट्टु–पुन्नाग पुष्पों के साथ; इलवङ्कम् मलरुम्–लवंगपुष्पों को; कूट्टि–गूँथकर; चूट्टुवार्–पहननेवाली; कळि वण्टु ओच्चि–मत्त भ्रमरों को भगाकर; तू नऱु तेऱल् कॊळ्वार्–स्वच्छ सुवासपूर्ण शहद लेनेवाली स्त्रियाँ; केट्टु इला–निर्दोष; मकर याऴिऩ्–मकराकार वीणा के स्वर के सदृश; किन्नर मिथुनम्–किन्नर जोड़ियों के; पाटुम् पाटलाल्–गाये गये गानों से; ऊटल् नीङ्कुम्–रूठन छोड़ती हैं जो; परि मुकम् मातर्–अश्वमुखी देवियों को; कण्टार्–देखा। ९३५

वहाँ अश्वमुखी किन्नर (देवता) लोग रहते थे। राजा दशरथ की सेना में रहनेवाली स्त्रियाँ, ऊँची डालों से पुन्नाग पुष्प और लवंग पुष्प चयन कर उनकी माला बनातीं; मधुमक्खियों को उड़ाकर शुद्ध, सुगंधित शहद को पी लेतीं। ऐसा करती हुयी घूमनेवाली उन्होंने किन्नर जाति की स्त्रियों को देखा, जो किन्नर-मिथुन के गाने सुनकर रूठन छोड़ देती थीं। ९३५

पॆरुङ्गळि ऱॆयु मैन्दर् पेरॆऴि लाहत् तोडुम्
पॊरुन्दुणैक् कॊङ्गै यऩ्ऩ पॊरुविल्कोङ् गरुम्बिऩ् माडे
मरुङ्गॊनक् कुऴैयुङ् गॊम्बिऩ् मडपपॆडै वण्डुन् दङ्गळ्
करुङ्गुऴऱ् कळिक्कुम् वण्डुम् कडिमणम् पुणर्दल् कण्डार् 936

पॆरु कळिऱु एयुम् मैन्तर्–बड़े गजों के सदृश रहनेवाले वीर तरुणों के; पेर् अऴिल् आकत्तोटुम्–बहुत ही सुन्दर वक्षस्थलों से; पॊरुम्–मुकाबला कर सकनेवाले; तुणै कॊङ्कै अऩ्ऩ–जोड़े के स्तनों के समान; पॊरु इल्–अनुपमेय; कोङ्कु अरुम्पिऩ् माटु–सेमर की कलियों पर; मरुङ्कु ऒत्त कुऴैयुम्–अपनी कमर के समान लचकनेवाली; कॊम्पिऩ्–पुष्पशाखाओं पर की; मट पॆटै वण्टुम्–बाला भौंरियाँ; तङ्कळ् करु कुऴल्–अपने काले केशों पर; कळिक्कुम् वण्टुम्–भनभनाती हुई मोद करनेवाले भौंरे (दोनों को); कटि मणम् पुणर्तल्–सुखमय प्रेम-व्यवहार करते; कण्टार्–(कुछ ने) देखा। ९३६

कुछ स्त्रियों ने एक सरस दृश्य देखा। 'कोंगु' (सेमर की जाति का एक तरु विशेष) की कलियों के पास भौंरियाँ और भौंरे सुखमय संभोग में लगे थे। वे कलियाँ स्त्रियों के सुदृढ़ स्तन-द्वय के, जो बड़े-बड़े हाथियों के समान बलवान वीर पुरुषों के वक्ष-स्थल के साथ टकरा सकते थे, समान थीं और उन कलियों की अन्य कोई उपमा नहीं हो सकती है। वे भौंरियाँ उन पुष्पलताओं पर, जो स्त्रियों की कमर के समान लचीली हैं, ठहरने के स्वभाववाली थीं और भौंरे स्त्रियों के केशों पर आनन्द के साथ मँडराने के आदी थे। ९३६

पडिहत्तिऩ् ऱलमॆऩ् ऱॆण्णिप् पडर्शुनै मुडुहिप् पुक्क
शुडिहैप्पूङ् गमल मऩ्ऩ शुडर्मणि मुहत्ति ऩार्तम्
वडहत्तो डुडुत्त तूशु माशिऩीर् नऩैप्प नोक्किक्
कडहक्कै यॆरिन्दु तम्मिऱ् करुङ्गळल् वीरर् नक्कार् 937

पटर् चुनै–विशाल सरोवर को; पटिकत्तिन् तलम् ऍन्ऱु–स्फटिक तल यह; ऍण्णि–मानकर; मुट्कि पुक्क–सवेग जो उतरीं; चुटिकै–झूमर पहनी हुई; पू कमलम् अन्न–नवीन कमलपुष्प सदृश; चुटर् मणि मुकत्तितार् तम्–उज्ज्वल मुखोंवाली स्त्रियों के; वटकत्तोटु–ओढ़नी के साथ; उटुत्त तूचुम्–अधोवस्त्र को; मासु इल् नीर् ननैप्प–निर्मल जल ने गीला कर दिया, तब; नोक्कि–उसको देखकर; कऱु कऴल् वीरर्–सुडौल पायलधारी वीर; कटकम् कै ऍरिनुतु–कटक शोभित (हाथ पीटकर) ताली बजाकर; तम्मिल् नक्कार–अपने में हँसे। ६३७

स्वच्छ जल का छोटा तालाब पड़ा था। स्त्रियों ने उसको भ्रम से स्फटिक-तल मान लिया। वे तुरन्त उसमें घुस पड़ीं। झूमर-भूषित, उत्साह से उत्फुल्ल मुखवाली, उनके उत्तरीय और अधोवस्त्र दोनों निर्मल जल से गीले हो गये। उसको देखकर वीरपायलधारी तरुण अपने में मिलकर कंकणशोभित अपने हाथों से ताली बजाकर हँसे। ९३७

पूवणै पलवुङ् गण्डार् पॉन्नरि मालै कण्डार्
मेवरुङ् गोब मन्न वॅळ्ळिलैत् तम्बल् कण्डार्
आवियि निनिय कॉण्गरप् पिरिन्दरि वळिन्द विञ्जैप्
पावयर् वैहत् तीय्न्द पल्लव शयनङ् गण्डार् 938

पू अणै–पुष्पशय्याएँ; पलवुम्–अनेक; कण्टार्–देखीं; पॉन्नरि मालै कण्टार्–कण्ठियाँ देखीं; मेवरुम् कोपम् अन्न–आकर्षक वीरवहूटियों की तरह दिखनेवाली; वॅळ् इलै तम्पल–तांबूल की पीक; कण्टार्–देखी; आवियिन् इतिय–प्राणों से भी प्यारे; कॉण्कर् पिरिनुतु–पतियों के वियोग से; अरिवु अऴिन्त–मूर्छित; विञ्चै पावैयर् वैक–विद्याधर महिलाओं के शयन करने से; तीय्न्त–झुलसे हुए; पल्लव चयनम् कण्टार्–पल्लवों की शय्या देखी। ६३८

(शैल पर सैर करनेवालों ने कैसे-कैसे दृश्य देखे!) उन्होंने यत्र-तत्र फूल की सेजें देखीं। उन पर "पॉन्नरि" नाम की हँसुलियाँ या कंठियाँ देखीं। उनको उन शय्याओं पर जो रात को लेटी रहीं उन्हीं ने उतार रख छोड़ा था। सेजों के पास इन्द्रगोप नामक लाल कीड़ों की तरह थूकी गयी पान की पीकें देखीं। कुछ पल्लवों की बनी शय्यायें भी देखीं जिनके पल्लव झुलसे नज़र आये। अपने प्राण-प्यारे प्रेमियों के वियोग-जनित ताप के कारण विद्याधरियों के शरीर गरम हो गये थे और उनके लेटे रहने से वे पल्लव सूख गये थे। ९३८

पानलङ् कण्ग ळाडप् पवळवाय् मुरुव लाडप्
पीनवॅम् मुलैयि निट्ट पॅरुविलै यार माडत्
तेन्मुरन् ऱळहत् ताडत् तिरुमणिक् कुऴैह ळाड
वानवर् महळि राडुम् वाशना रूशल् कण्डार् 939

पातल् अम् कण्कळ् आट–नीलोत्पल सी आँखें चंचल हैं; पवळम् वाय्–प्रवाल सम अधरों पर; मुऱुवल् आट–हँसी खिलती हैं; पीतम्–पीन; वॅम् मुलैयिन् इट्ट-

आकर्षक उरोजों पर पहने हुए; पॅरु विलै आरम् आट–अत्यधिक मूल्य के हार हिलते हैं; अळकत्तु–केश पर; तेन् मुरन्रु आट–मधुमक्खियाँ भनभनाती मँडराती हैं; तिरु मणि कुळैकळ् आट–उत्तम मणिमय कुण्डल झूमते हैं; वातवर मकळिर आटुम्–(इस साज के साथ) अप्सराएँ जिनपर झूलती हैं उन; वाचम् नाऱ–सुगन्धपूर्ण; ऊचल् कण्टार्–झूलों को देखा। ९३९

कुछ देवांगनाएँ झूलों पर झूलती थीं। तव उनकी कुवलयसम आँखें चलित होती थीं। प्रवालसम अधरों पर हँसी खेलती थी। पीन और मनोरम उरोजों पर मूल्यवान हार झूम रहे थे। उनके केशों पर भ्रमर भनभनाते मँडराते थे। श्रेष्ठ मणिमय कुंडल कानों पर झूम रहे थे। उनके झूले सुगन्धपूर्ण थे। ('आड' शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त है।) ९३९

सुन्दर वदन मादर् तुवरिदळ्प् पवळ वायुम्
अन्दमिल् शुरुम्बुन् देनु मिञ्जिरुमुण् डल्हुल् विऱ्कुम्
पैन्दॉडि महळिर् कैत्तोर् पशैयिल्लै यॅन्न विट्ट
मैन्दरि नीत्त तीन्देन् वळ्ळङ्गळ् पलवुङ् गण्डार् 940

अल्कुल् विऱ्कुम्–भोग्य अंग को बेचनेवाली; पचुमै तॉटि मकळिर्–चोखे स्वर्ण के कंकण पहनी हुई (वार-) नारियाँ; ओर् पचै इल्लै–(अब इसके पास) कोई 'लसी' (आकर्षक धन) नहीं है; ॲन्न–यह जानकर; कैत्तु विट्ट–जिनको त्याग चुकीं उन; मैन्तरिन्–तरुण पुरुषों के समान; चुन्तर वतनम् मातर्–सुन्दरवदना स्त्रियों के; तुवर् इतळ् पवळम् वायुम्–लाल अधरोंवाले प्रवाल-सम मुखों से; अन्तम् इल्–अनन्त; चुरुम्पुम् तेनुम् मिञ्जिरुम्–मधुमक्खियों, भ्रमरों और काले भ्रमरों से; उण्टु नीत्त–पान कर त्यक्त; तीम् तेन् वळ्ळङ्कळ्–मधुर मधुपात्र; पलवुम्–अनेक; कण्टार्–देखे। ९४०

यत्र-तत्र रिक्त मधुपात्र अनेक देखे जाते हैं। उनको सुन्दरवदना स्त्रियों ने मधु पीकर, रिक्त करके फेंक दिया था। फिर उन पर भ्रमर बैठे और रहा सहा चूसकर उनको बिल्कुल नमीहीन कर दिया। उनको देखने पर उन नौजवानों की याद आती है जिनको, दाम लेकर सुख देनेवाली वारवनिताओं ने, इनके पास कोई "लसी" (चिपकानेवाली धनरूपी आकर्षक वस्तु) नहीं है— यह जानकर (बिल्कुल कंगाल बनाकर) घृणा के साथ त्याग दिया है! (इसमें भ्रमर के तीन नाम आये हैं। वे भ्रमर की ही विभिन्न जातियों के नाम हैं)। ९४०

अऱ्पह लाक्कुञ् जोदिप् पळिक्करै यमळिप् पाङ्गर्
मऱ्पह मलर्न्द तिण्डोळ् वानवर् मणन्द कोल
विऱ्पहै नुदलि नार्तङ् गलवियिन् वॅरुत्तु नीत्त
कऱ्पह मीन्ऱ माले कलनीडुङ् गिडप्पक् कण्डार् 941

अल् पकल् आक्कुम् चोति–रात को दिन में बदलनेवाली ज्योतिवाले; पळिक्कु

अऱै–स्फटिक के कमरे के अन्दर; अमळि पाङ्कर्–शय्या के पास; मल् पक–मल्लों को भी डरा भगानेवाली; मलर्न्त तिण् तोळ्–विशाल भुजाओं के; वानवर् मणन्त–देवपुरुषों से जिन्होंने प्रणय किया था, उन; विल् पकै नुतलितार्–धनु से लड़नेवाले (समानता रखनेवाले) ललाट सहित देवांगनाओं से; तम् कलवियिन्–अपनी रतिवेला में; वॆरुत्तु नीत्त–(बाधा समझकर) झुंझलाते हुए त्यक्त; कऱ्पकम् ईन्ऱ मालै–कल्पक तरुओं से दी हुई मालायें; कलत्तॊटुम्–आभरणों के साथ; किटप्प–पड़ी हुई; कण्टार्–देखीं। ६४१

कहीं-कहीं स्फटिक-शिला के कमरे मिले। उनके अन्दर ऐसा प्रकाश पाया गया जिसने रात को दिन में बदल दिया था। उसमें शय्या बिछी थी। उसके पास कल्पकमालाएँ और हार आदि आभरण बिखरे पड़े थे। उनको, उन सुन्दर धनुसम ललाटवाली देवांगनाओं ने, जो मल्ल-विजयी भुजाओंवाले देवपुरुषों के साथ रमी थीं, संभोग के अवसर पर बाधा समझकर झुंझलाहट के साथ निकालकर फेंक दिया था। ९४१

कैयॆन मलर वेण्डि यरुम्बिय कान्द णोक्किप्
पैयर विदुवॆन् ऱञ्जिप् पडैक्कणगळ् पुदैक्किन् ऱारुम्
नॆय्तिरळ् वयिरप् पाऱै निऴलिडैत् तोन्ऱुम् बोदैक्
कॊय्दिवै तरुदि यॆन्ऱु कॊऴुनरैत् तॊऴुहिन् ऱारुम् 942

कै ऑत मलर वेण्टि–(स्त्रियों के) हाथ के समान विकसित होना चाहकर; अरुम्पिय कान्तळ्–लगा 'कान्तळ्' पुष्प देखकर; इतु पै अरवु ऎन्ऱु अञ्चि–'यह फन फैला साँप है' समझकर, डरकर; पटै कण्कळ्–भालारूपी हथियार-सम आँखों को; पुतैक्किन्ऱारुम्–बन्द कर लेने वालियाँ, और; नॆय् तिरळ्–मक्खन के समान राशिकृत; वयिरम् पाऱै निऴल् इटै–हीरे की चट्टानों के प्रकाश में; तोन्ऱुम् पोतै–दिखनेवाले; पुष्पों को; इवै कॊय्तु तरुतिर् ऎन्ऱु–'इनको तोड़कर दीजिए', कहकर; कॊऴुनरै–पतियों को; तॊऴुकिन्ऱारुम्–प्रार्थना करनेवालियाँ। ६४२

(कुछ स्त्रियों की चेष्टाएँ बतायी जाती हैं।) "कांतळ्" के फूल स्त्रियों की हथेलियों से उपमित किये जाते हैं। वे फन फैलाये रहनेवाले सर्प के समान भी दीखते हैं। वे "कांतळ्" पुष्प स्त्रियों के हाथों की समानता करने की इच्छा लेकर ही जन्म ले चुके हैं। उनको देखकर स्त्रियाँ सर्प समझकर डर जाती हैं और उनकी प्रकृति के अनुसार (जो भय उत्पन्न होने पर आँखों को हाथ से मूँदने की है) शूल सदृश आँखों को अपने हाथों से मूँद लेती हैं। कहीं स्फटिक शिला के अन्दर फूलों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। उनको देखकर कुछ स्त्रियाँ भ्रमवश उनको असली पुष्प समझ लेती हैं और अपने पतियों से प्रार्थना करती हैं कि इनको तोड़कर ला दो। ९४२

पिन्नङ्ग ळुहिरिऱ् चॆय्दु पिण्डियन् दळिर्हैक् कॊण्ड
चिन्नङ्गण् मुलैयि नप्पित् तेमलर् कॊय्हिन् ऱारुम्

वऩ्ऩङ्गळ् पलवुन् दोऩ्ऱ मणियॊळिर् मयिलि ऩल्लार्
अऩ्ऩङ्गळ् पुहुन्द वॆऩ्ऩ वहऩ्ऱुऩै कुडैहिऩ् ऱारुम् 943

वऩ्ऩङ्कळ् पलवुम् तोऩ्ऱ–कई रंगों को प्रकट करते हुए; मणि ऑळिर्–आभरणों की मणियाँ कान्ति बिखेरती हैं, उन आभरणों से शोभित; मयिलिऩ् नल्लार्–मयूर से भी अधिक छविवाली स्त्रियाँ; पिण्टि अम् तळिर्–अशोक के कोमल पल्लवों को; उकिरिऩ् पिऩ्ऩङ्कळ् चॅय्तु–नखों से नोचकर खण्ड-खण्ड बनाकर; कै कॊण्ट–अंजलि में भरकर; चिऩ्ऩङ्कळ्–उन टुकड़ों को; मुलैयिऩ् अप्पि–स्तनों पर लगाकर; तेम् मलर् कॊय्किऩ्ऱारुम्–शहद भरे फूल तोड़नेवालियाँ, और; अऩ्ऩङ्कळ् पुकुन्त ऍऩ्ऩ–हंस वहाँ आ गये हों, ऐसा; अकऩ् चुऩै–विशाल तालों में; कुटैकिऩ्ऱारुम्–स्नान करनेवालियाँ। ९४३

मयूरों की-सी छटावाली स्त्रियाँ सर्वालंकारभूषित थीं। उनके रत्न आदि नगों से रंग-बिरंगा प्रकाश छूट रहा था। वे अशोक के पल्लवों को नाखूनों से नोचकर खण्ड-खण्ड करके उन टुकड़ों को अपने स्तनों पर चिपकाये हुए थीं। वे शहद भरे नवीन फूल चुन रही थीं। ऐसी कुछ स्त्रियाँ पायी गयीं। और कुछ स्त्रियाँ नवागत हंसपक्षियों के समान पहाड़ी तालाबों में घुसकर गोते लगा रही थीं। ९४३

ईऩु माळै यिळन्दळि रेयॊळि, ईऩु माळै यिळन्दळि रेयिडै
माऩुम् वॆळमु नाहमु मादरतोळ्, माऩुम् वेळमु नाहमु माडॆलाम् 944

माटु ऍलाम्–(पर्वत-) तटों में; माळै इळम् तळिरे–कोमल आम्रपल्लव ही; ऑळि ईऩुम्–प्रकाश छिटकाते हैं; माऩुम्–हरिण; वेळमुम्–हाथी; नाकमुम्–वानर; मातर् तोळ् माऩुम्–स्त्रियों के कन्धों की समानता करनेवाले; वेळमुम्–बांस; नागमुम्–सुरपुन्नाग सब कहीं पाये जाते हैं; इटै–मध्य भागों में; ईऩुम्–उस पर्वत से उत्पन्न; माळै इळम् तळिरे–कोमल स्वर्ण-पत्र ही। ९४४

(इसको मिलाकर आगे नौ पद हैं जो यमकालंकार के सुन्दर नमूने हैं। पर भाव में कोई विशेषता नहीं पायी जायगी। तो भी अर्थ भरे पद बने हैं।) उस पर्वत के सभी भागों में आम के कोमल पल्लव सुन्दर शोभा देते हैं। हरिण, हाथी, वानर, स्त्रियों के कंधों से तुलनेवाले बांस, 'सुरपुन्नाग' —सब (दिखाई देते) हैं। मध्य-मध्य में उस पर्वत पर मिलता है स्वर्ण का पतला पत्र। ९४४

पुहलुम् वाळरिक् कण्णियर् पॊऱ्पुयम्, पुहलुम् वाळरिक् कण्णियर् पूण्मुलै
अहिलु मारमु मारवङ् गोङ्गुमे, अहिलु मारमु मारवङ् गोङ्गुमे 945

पुकलुम्–प्रकीर्तित; वाळ् अरिक्कु अण्णियर्–भयंकर सिंहों के सदृश वीरों के; पॊऩ् पुयम्–सुशोभित कन्धे; वाळ् अरि कण्णियर्–तलवार-सम और डोरों से युक्त आंखोंवालियों के; पूण् मुलै–आभरणभूषित स्तनों को; पुकलुम्–(चाव के साथ) आलिंगन करते हैं; अकिलुम्–अगरु लेप; आरमुम्–चन्दन का लेप; अङ्कु आर–उनपर जम जाता है; ओङ्कुम्–और सुगन्ध में बढ़ जाता है; अकिलुम् आरमुम्–अगरु

के तरु और चन्दन वृक्ष; मारवम्–कुंकुमवृक्ष; कोङ्कुम्–सेमर के पेड़; मे–विशिष्ट रूप से शोभित थे। ६४५

प्रथित, सिंहसम वीरों की स्वर्णप्रभ भुजाएँ, तलवार-सी और लाल रेखाओं से युक्त आँखों वाली स्त्रियों के आभरणालंकृत स्तनों का आलिंगन करती हैं। उससे अगरु और चन्दन का लेप उन भुजाओं पर लग जाता है और वे भुजाएँ सुगन्धमय हो जाती हैं। उस पर्वत पर अगरु, चन्दन, "कुंकुम" (केसर) और सेमर आदि के पेड़ विशिष्ट स्थान पाते हैं (यानी अत्यधिक पाये जाते हैं)। ९४५

तुन्न रम्बै नॆरुङ्गिय तॊल्वरै, तुन्न रम्बय रूरुविर् ऱोन्ऱुमाल्
किन्न रम्बयिल् कीदङ्ग ळॆन्नवाङ्, गिन्न रम्बयिल् हिन्ऱन रेऴैमार् 946

तॊल् वरै–प्राचीन उस पर्वत पर; नॆरुङ्किय–घने रूप से उगे; तुन् अरम्पै–पत्तों से भरे केले के पेड़; तुन्–वहाँ आनेवाली; अरम्पैयर् ऊरुविल् तोन्ऱुम्–अप्सराओं के ऊरुओं के समान दिखाई देते हैं; एऴै मार्–स्त्रियाँ; आङ्कु–वहाँ; किन्नरम् पयिल् कीतङ्कळ् ऎन्न–किन्नरों के गाये गीतों के समान; इन् नरम्पु अयिल्किन्ऱनर्–मधुर वीणास्वर सुनती हैं। ६४६

प्राचीन उस पर्वत पर घने रूप से पाये जानेवाले केले के पेड़ वहाँ आनेवाली अप्सराओं की जंघाओं के समान सुन्दर हैं। स्त्रियाँ वहाँ वीणा का वादन कर रही हैं और वह संगीत किन्नरमिथुनों के संगीत के समान मनोरम है। ९४६

तिमिर मावुडऱ् कुङ्गुमच् चेदहम्, तिमिर मावॊडुञ् जन्दॊडुन् देय्क्कुमाल्
अमर मादरै यॊत्तॊऴि रञ्जॊलार्, अमर मादरै योत्तदव् वानमे 947

तिमिरम् मा उटल्—अन्धकार-सम काले जंगली सुअरों के शरीरों पर; कुङ्कुमम् चेतकम् तिमिर–कुंकुम का जो लेप मला है, उसको; मावॊटुम्–आम के पेड़ों; चन्तॊटुम् तेय्क्कुम्–और चन्दन के वृक्षों से मल देते हैं; अमर मातरै ऒत्तु ऒऴिर्–देवस्त्रियों के समान शोभायमान; अम् चॊल्लार्–सुन्दरभाषिणी स्त्रियाँ; अमर–वहाँ विराजमान हैं, इसलिए; मा तरै–श्रेष्ठ वह स्थल; अ वानमे ऒत्ततु–उस देवलोक के समान ही था। ६४७

स्त्रियाँ अपने शरीर से कुंकुम का लेप निकालकर फेंक देती हैं और वह अंधेरे के समान काले शरीरवाले जंगली सुअरों पर जम जाता है। वे आम और चन्दन के पेड़ों से अपने शरीरों को रगड़ते हैं। वहाँ देवाँगनाओं के समान स्त्रियाँ बैठी रहती हैं; इसलिए वह श्रेष्ठ पर्वत प्रदेश देवलोक की समानता करता है। ९४७

पेर वावॊडु माशुणम् बेरवेय्, पेर वावॊड् माशुणम् बॆरुमाल्
आर वारत्ति नोडु मरुवियॆ, आर वारत्ति नोडु मरुवियॆ 948

पेर् अवावोंटु–बहुत चाह के साथ; माचुणम्–बड़े अजगर; पेर–रेंगते हैं, इसलिए; वेय् पेर्–बाँस गिर जाते हैं; आवोंटु–जंगली गाय के साथ; मा चुणम् पेरुम्–बड़ी धूल उड़ती है; अरुवि–सरिताएँ; आर–बहुत; आरत्तितोंटु–मोतियों के साथ; मरुवि–मिलकर; आरवारत्तिन् ओटुम्–बड़े शोर के साथ; ओटुम्–बहती हैं। ६४८

(चारे की खोज में) बड़ी चाव के साथ अजगर रेंगने लगता है तब बाँस के वृक्ष उखड़कर गिर जाते हैं। उससे डरकर जंगली गाय भागने लगती हैं और बड़ी धूल भी उठती है। सरिताएँ खूब मोती बहाती हुयी बड़े शोर के साथ बह रही हैं। ९४८

ऊरु माहड मावुरु वूङ्गॅलाम्, ऊरु माहड मामद मोङ्गुमे
आरु शेर्वन मावरै याडुमे, आरु शेर्वन मावरै याडुमे 949

ऊङ्कु ऍलाम्–उस पर्वत प्रदेश में; मा कट मा ऊरु उर–बड़ी जंगली गायों को बाधा देते हुए; मा कटम् मा–बड़े हाथियों का; ऊरुम् मतम्–स्रवनेवाला मद जल; ओङ्कुम्–बढ़कर बहता है; आरु चेर्वन–मार्ग में पड़े; मा–आम्रवृक्ष और; वरै–बाँस; आटुम्–चलित हो जाते हैं; मा–(कुछ) जानवर; वरै आटुम्–पर्वतीय बकरियाँ; आरु चेर्वन–उन नदियों पर आ जाते हैं। ६४६

वहाँ सर्वत्र बड़ी-बड़ी जंगली गायों के भी मार्गगमन में बाधा देता हुआ बड़े हाथियों का मदजल बहा करता है। उस प्रवाह के मार्ग में रहनेवाले आम के और बाँस के पेड़ चलित हो जाते हैं। कुछ पहाड़ी जानवर और पहाड़ी बकरे उधर (प्रवाह में जल पीने के लिए) आ जाते हैं। ९४९

कल्लि यङ्गु करुङ्गुरु मङ्गयर्, कल्लि यङ्गहळ् कामर् किळङ्गॅडा
वल्लि यङ्ग णॅरुङ्गु मरुङ्गॅलाम्, वल्लि यङ्ग णॅरुङ्गि मयङ्गुमे 950

कल् इयङ्कु–पर्वत में रहनेवाले; करु कुरु मङ्कैयर्–काली 'कुरु' स्त्रियाँ; अङ्कु–वहाँ; कल्लि अकळ्–खोदकर लिया जानेवाला; कामर् किळङ्कु–श्रेष्ठ कंदों को; ऍटा–लेने के लिए; वल्लियङ्कळ् नॅरुङ्कुम्–बाघ जहाँ अधिक संचार करते हैं उन; मरुङ्कु ऍलाम्–सभी स्थानों में; वल् इयङ्कळ्–उच्च शोर मचानेवाले चमड़े के वाद्य; नॅरुङ्कि मयङ्कुम्–खूब मिश्रित होकर नाद करते हैं। ६५०

उस पर्वत पर रहनेवाली काले रंग की "कुरु" स्त्रियाँ भूमि खोद कर कन्द निकालने जाती हैं। पर वहाँ बाघ आते-जाते हैं। ये स्त्रियाँ बिना भय के खोदें— इस वास्ते चमड़े के वाद्य बजाये जाते हैं। ९५०

कोळि पङ्गय मूळ्हक् कुळिर्हयम्, कोळि पङ्गय मूळ्हक् कुलैन्दवाल्
आळि पॉङ्गु मरम्बय रोदिये, आळि पॉङ्गु मरम्बय रोदिये 951

कुळिर् कयम्–शीतल जलाशयों में; कोळ् इपम्–बलिष्ठ गज; कयम्–कलभ; मूळ्क–गोते लगाते हैं, इसलिए; कोळि–वट वृक्ष; पङ्कयम्–कमल; ऊळ्क

कुलैन्त–डील खोकर विध्वस्त हुए; आळि पोंङ्कुम्–शेर जहाँ गरजकर उठते हैं; मरम् पैयर् ओति–उन तरुसंकुल प्रदेश के उस पर्वत में; अरम्पैयर् ओति–अप्सराओं के केश पर; आळि पोंङ्कुम्–अलि उमंग के साथ मँडराते हैं। ९५१

शीतल जलाशय में बलिष्ठ हाथी और कलभ आकर गोते लगाते हैं। इसलिए तट पर रहनेवाले वट वृक्ष और जलस्थ कमल नष्ट हो जाते थे। शेर जिस प्रदेश में दहाड़ते हुए झपटते हैं उस प्रदेश में रहनेवाली अप्सराओं के केश पर अलि मुदित होकर मँडराते हैं। ९५१

आह मालय माहवु ळाळ्पोंलि, वाह मालय निऩ्ऱॅऩ लाहुमाल्
मेह् मालै मिडैन्दऩ मेलॅलाम्, मेह् मालै मिडैन्दऩ कीऴॅलाम् 952

मेल् ॲलाम्–ऊपर के तलों में; मेकम् मालै–मेघमालायें; मिटैन्तत–खूब भरी हुई थीं; कीऴ् ॲलाम्–निचले तलों में; मे कम् मालै–उत्तम आकाशलोक की मालाएँ; मिटैन्तत–भरी पड़ी हैं; आकम् आलयमाक उळाळ्–वक्षनिवासिनी (श्रीलक्ष्मी) के; पोलिवु आक–शोभित रहने के लिए; माल् अयल् निऩ्ऱतु–श्रीविष्णु के पास खड़ी हैं; ॲतल् आम्–ऐसा कल्पना करने योग्य था। ९५२

ऊपरी भाग पर मेघ-मालाएँ पायी जाती हैं। नीचे उत्तम देवलोक में मिलनेवाले पुष्पों की मालाएँ तितर-बितर पड़ी हैं। यह दृश्य ऐसा लगता है मानो मेघवर्ण श्रीविष्णु के पास लक्ष्मीदेवी खड़ी हों। (यहाँ तक के नौ पदों में भावछटा से अधिक यमक की सज्जा है।)। ९५२

पोंङ्गु तेऩुहर् पूमिञ्ञि ऱामॅऩ, ॲङ्गु मादरु मैन्दरु मीण्डियत्
तुङ्ग मालवरैच् चूऴल्हळ् यावयुम्, तङ्गि नीङ्गलर् तामिऩ्ऩि दाडिऩार् 953

पू पोंङ्कु तेऩ् नुकर्–फूलों से ढलकनेवाले शहद के पान में लीन; मिञ्ञिऱ् आम् ॲऩ–भ्रमरों के समान; मातरुम् मैन्तरुम्–स्त्रियाँ और पुरुष; ॲङ्कुम् ईण्टि–सर्वत्र मिलकर घूमकर; अ तुङ्कम् माल् वरै–उस उत्तुंग और गुरु पर्वत के; चूऴल्कळ् यावैयुम्–सभी स्थानों में; तङ्कि–ठहरकर; नीङ्कलर्–नहीं हटते; इऩितु आटिऩार्–सुख से क्रीडा करते रहे। ९५३

शहद झरनेवाले फूलों पर जैसे भ्रमर, वैसे ही स्त्रियाँ और पुरुष उस उन्नत पर्वत पर सर्वत्र इकट्ठा होकर, मनोरम हरे-भरे स्थानों में बैठकर, अलग होने का नाम न लेते हुए खूब क्रीडामग्न रहे। ९५३

इऱक्क मॅन्बदै यॅण्णल रऩ्ऩदु, पिऱक्क लऩ्ऩदोर् पीऴय दाहलिऩ्
तुऱक्क मॅय्दिय तूयव रॅयॅऩ, मऱक्क हिऱ्ऱिल रऩ्ऩदऩ् माण्बॅलाम् 954

तुऱक्कम् ॲय्तिय तूयवरे ॲऩ–स्वर्गप्राप्त पवित्र जीवों की ही तरह; अऩ्ऩतऩ् माण्पु ॲलाम्–उसकी सारी विशेषताओं को; मऱक्ककिऱ्ऱिलर्–भूल नहीं सके; इऱक्कम् ॲऩ्पतै–उतरने का नाम; ॲण्णलर्–नहीं सोचते; अऩ्ऩतु–उतरना; पिऱक्कल् अऩ्ऩतु–जन्म लेने की सी; ओर् पीऴैयतु आतलिऩ्–पीड़ा देनेवाली बात है। ९५४

उस पर वे सब स्वर्ग में पहुँचे हुए पवित्र जीवों के समान रहे। वे उस पर्वत पर की सुखद मनोरंजन देनेवाली विशेषताएँ नहीं भूल सके (छोड़ जाना नहीं चाहते थे)। नीचे उतरने का नाम लेना भी उन्हें असह्य लगा क्योंकि वह स्वर्गवासी के लिए जन्म लेने की पीड़ा के समान लगता था। ९५४

मञ्जार्मलै वारण मौत्तदु वानि लोडुम्
वॅञ्जायै युडैक्कदि रङ्गदन् मोदु पायुम्
पञ्जानन मौत्तदु मऱ्ऱदु पाय वेऱुम्
शॅञ्जोरि यॅन्नप्पोलि वुऱ्ऱदु शॅक्कर् वानम् 955

मञ्चु आर् मलै–सुन्दरतापूर्ण अस्ताचल; वारणम् ऑत्तदु–हाथी के समान था; वानिल् ओटुम्–आकाश में सवेग जानेवाले; वॅम् चायै उटै (य) कतिर्–गरम किरणों-वाले सूर्य; अङ्कु–वहाँ; अतन् मीतु पायुम्–उस (पर्वत पर) झपटनेवाले; पञ्चाननम् ऑत्तदु–पंचानन के समान हैं; अतु पाय–उसके झपटने से; एऱुम्–निकलकर फैलनेवाले; चॅम् चोरि ऍन्न–लाल रक्त के समान; चॅक्कर् वानम्–सांध्यगगन; पॉलिवुऱ्ऱतु–रागरंजित रहा। ६५५

तब सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। वह अस्ताचल हाथी के समान था। उस ओर जानेवाला गरम अंशुमाली उस पर झपटने वाले पंचानन (सिंह) के समान था। उसके झपटने पर हाथी का सिर फटा और चारों ओर रक्त फैला-सा संध्या-गगन का रंग दिखाई दिया। ९५५

तिणियार्शिनै मामरम् यावयुञ् जॅक्कर् पायत्
तणियाद नऱुन्दळि रीन्ऱन पोन्ऱ ताऴ
अणियारौळि वन्दु निरम्बलि नङ्ग मॅङ्गुम्
मणिया लियन्ऱ मलैयौत्तदम् मैयिल् कुन्ऱम् 956

तिणि आर् चिनै–घनी डालोंवाले; मा मरम्–बड़े पेड़ों; यावैयुम्–सभी पर; चॅक्कर् पाय–सायं संध्या का लाल रंग छा गया, तब; तणियात–अक्षय; नऱु तळिर्–सुवासपूर्ण पल्लवों को; ईन्ऱत पोन्ऱ–अभी उत्पन्न किया हो, ऐसा; ताऴ–झुके हुए थे; अणि आर् ऑळि–मनोरम वह लालिमा; अङ्कम् ऍङ्कुम्–सभी अंगों में; वन्तु निरम्पलिन्–आकर फैल गई, इसलिए; अ–वह; मै इल् कुन्ऱम्–निर्दोष (चन्द्रशैल) पर्वत; मणियाल् इयन्ऱ–मणिक नगों के बने; मलै ऑत्ततु–पर्वत के समान लगा। ६५६

घनी डालों से युक्त सभी आम के पेड़ों पर वह लालिमा छायी थी। इसलिए सभी पत्ते नये पल्लवों के समान लगे। उनका प्रकाश पर्वत के सभी भागों में बिखरा था। इसलिए वह पर्वत माणिक्य के पत्थरों का बना हुआ-सा दिखाई दिया। ९५६

कण्णुक्किनि दाहि विळङ्गिय काट्चि यालुम्
ऑण्णरुक्करि दाहि यिलङ्गुशि रङ्ग ळालुम्
वण्णक् कॊऴुञ्जन् दनच्चेदह मारप णिन्द
अण्णऱ् करियान् ऱनैयॊत्तदव् वाशिल् कुन्ऱम् 957

अव् आचु इल् कुन्ऱम्–वह निर्दोष पर्वत; कण्णुक्कु इनितु आकि विळङ्किय–आँखों को सुखद रखनेवाले; काट्चियालुम्–रूप सौष्ठव से और; ऑण्णरुकु अरितु आकि–अशोच्य बनकर; इलङ्कु–प्रकाशमय रहनेवाले; चिरङ्कळालुम्–शिखरों के कारण; वण्णम्–सुचारु रंग के; कॊऴु चन्तनम् चेतकम्–गाढ़े चन्दन के लेप से; मारपु अणिन्त–चर्चित वक्षवाले; अण्णल् करियान् तनै–पूज्य श्यामल (श्री विष्णुदेव) के समान था। ९५७

उस पर्वत पर आँखों को सुख देनेवाले अनेक दृश्य थे। उसका स्वरूप भी स्वतः रम्य था। अगणित और शोभायमान शिखर थे। इनके कारण वह नीलमेघश्याम श्रीविष्णु के समान लगता था, जिनका वक्ष चंदन के गाढ़े लेप से चर्चित हो। (इधर श्रीविष्णु का "सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष, सहस्रपात" —रूप इंगित है।)। ९५७

ऊनुम्मुयि रुम्मनै यारॊरु वर्क्कॊरुवर्
तेनुम्मिञि रुञ्जिरु तुम्बियुम् बम्बि यार्प्प
यानै यिनमुम् पिडियुम्मिह लाळि येरुम्
मानुङ् गलैयु मॆनमाल्वरै वन्दि ऴिन्दार् 958

ऑरुवर्क्कु ऑरुवर्–परस्पर; ऊनुम् उयिरुम् अनैयार्–शरीर और प्राण-सम (प्यारे) रहनेवाले; तेनुम् मिञिरुम् चिरु तुम्पियुम् पम्पि आर्प्प–मधुमक्खियाँ, काले भ्रमर और छोटे अलियों के आकार गुँजार करते; यानै इनमुम् पिटियुम्–हाथी के समूह और हथिनियाँ; इकल् आळि–वलिष्ठ शेरनियाँ और; एरुम्–शेर; मानुम् कलैयुम्–हरिणियाँ और हरिण; ऎन–जैसे; माल् वरै इऴिन्तु–श्रेष्ठ पर्वत से उतरकर; वन्तार्–आये। ९५८

(ऊपर घूमने जो गये थे वे स्त्री-पुरुष नीचे उतर आये।) परस्पर प्राणसम प्यार करनेवाले स्त्री और पुरुष उस श्रेष्ठ पर्वत से नीचे उतर आये। तब उनके केशों पर भ्रमर आकर गुंजार के साथ मँडराने लगे। वे हथिनी और हाथी के समान, शेरनी और शेर के समान तथा हरिणी और हरिण के समान दिखाई दिये। (रूप, बल, छटा आदि के साधर्म्य के कारण उन जानवरों में और इन स्त्री-पुरुषों में तुलना की गयी है।)। ९५८

काल्वानहत् तेरुडै वॆय्यवन् कायह डुङ्गण्
कोलमाय्क्कदिरप् पुल्लुळैक् कॊलशिनक् कोळ रिम्मा

मेल्पाल्	मलैयिऱ्	पडवीङ्गिरुळ्	वेऱि	रुन्द
माल्यानै	यीट्ट	मॅन्नवन्दु	परन्द	दन्ऱे 959

काल्–(एक) चक्रवाले; वानकम् तेर् उटै–आकाशचारी रथ के स्वामी; वैय्यवन्–सूर्यरूपी; काय् कटु कण्–जलानेवाली भयंकर आँख; कोलमाय्–शरों को छिपा सकनेवाला; कतिर् पुल् उळै–किरणोंरूपी अयालवाला; कोल् चिनम्–संहारक क्रोधी; कोळ् अरि मा–शानदार सिंह; मेल् पाल् मलैयिल् पट–पश्चिमी पर्वत के पीछे छिप जाने से; वेरु इरुन्त–अलग छिपे रहे; वीङ्कु इरुळ्–घना विशाल अन्धकार; माल् यानै ईट्टम् अॅन–बड़े गजदलों के समान; वन्तु परन्ततु–आकर छा गया (इसमें श्लेष भी है। सिंह सम्बन्धी अर्थ करते वक्त यों विग्रह करना पड़ेगा— काल् वाल् नकत्तु एर् उटै–पैरों में सफ़ेद नाखूनों की शोभा जिसकी हो; वैय्य वन् काय् कटु कण्–भयंकर, और अचल सुदृढ़ दृष्टि और; कोल् माय् कतिर् पुल् उळै–शर छिपा सकनेवाले उज्ज्वल अयालवाला; कोल चिनम् कोळरि मा–घातक क्रोध का शानदार सिंह।)। ६५६

एकचक्ररथी सूर्य सिंह था जो अस्ताचल के पीछे छिप गया। तब अंधकाररूपी गज जो अब तक कहीं छिपे रहे प्रकट हो आये और सर्वत्र फैल गये। (संधिविग्रह के चातुर्य से सूर्य और सिंह दोनों के लिए प्रयुक्त होनेवाली शब्दयोजना है। सूर्य के पक्ष में— एकचक्र, आकाशचारी रथ के स्वामी किरणमालीरूपी, जला सकनेवाली भयंकर आँखें; शरों को छिपा दें ऐसी किरणोंरूपी अयाल; संहारक क्रोध इनसे युक्त शानदार सूर्यरूपी सिंह। शेर के पक्ष में— पैरों में नाखूनों की शोभा से युक्त; क्रूरता और भयंकर आँखों का; और शर प्रेषित हों तो वे जाकर छिप जायँ ऐसे अयालों का; घातक क्रोधी सिंह।)। ९५९

मन्दार	मुन्दु	महरन्द	मणङ्गु	लावुम्
अन्दा	ररशर्क्	करशन्ऱ	नत्तीक	वॅळ्ळम्
नन्दा	दॊलिक्कु	नरलैप्पॅरु	वेलै	यॅल्लाम्
शॅन्दा	मरैपूत्	तॅन्नत्तीब	मॅडुत्त	वन्ऱे 960

मन्तारम् उन्तु–मन्दार सुमनों के बने; मकरन्तम् मणम् कुलावुम्–मकरन्दगन्ध-मिश्रित; अम् तार्–सुन्दर मालाधारी; अरचर्क्कु अरचन् तन्–राजाधिराज (दशरथ) की; अत्तीकम्–सेना; वॅळ्ळम्–का समूह; नन्तातु ऑलिक्कुम्–अक्षय रूप से गरजनेवाले; नरलै पॅरु वेलै ऍल्लाम्–बड़े शोर-युक्त सागर भर में; चॅन्तामरै पूत्त–लालकमल विकसित हुए; अॅन्न–ऐसा; तीपम् अॅटुत्त–दीप (जल उठे) जलाये गये। ६६०

(रात हो गयी और दीप जलाये गये— वह दृश्य कैसा था?) मंदारमकरंद से वासित मालाधारी चक्रवर्ती दशरथ की सेना विशाल सागर है जो अक्षय रूप से गरजती (शोर मचाती) रहती है। उस पर अनेक कमल खिले हों, ऐसे अनेक दीप जलाये गये। (मंदार—देवलोक तरु का पुष्प।)। ९६०

कण्णुक्किनि दाहि विळङ्गिय काट्चि यालुम्
ऑण्णर्करि दाहि यिलङ्गुशि रङ्ग ळालुम्
वण्णक् कॊळुञ्जन् दन्नच्चेदह मार्प णिन्द
अण्णऱ् करियान् ऱनैयॊत्तदव् वाशिल् कुन्ऱम् 957

अव् आचु इल् कुन्ऱम्–वह निर्दोष पर्वत; कण्णुक्कु इनितु आकि विळङ्किय–आँखों को सुखद रखनेवाले; काट्चियालुम्–रूप सौष्ठव से और; ऑण्णर्कु अरितु आकि–अशोच्य बनकर; इलङ्कु–प्रकाशमय रहनेवाले; चिरङ्कळालुम्–शिखरों के कारण; वण्णम्–सुचारु रंग के; कॊळु चन्तनम् चेतकम्–गाढ़े चन्दन के लेप से; मार्पु अणिन्त–र्चाचत वक्षवाले; अण्णल् करियान् तनै–पूज्य श्यामल (श्री विष्णुदेव) के समान था। ६५७

उस पर्वत पर आँखों को सुख देनेवाले अनेक दृश्य थे। उसका स्वरूप भी स्वतः रम्य था। अगणित और शोभायमान शिखर थे। इनके कारण वह नीलमेघश्याम श्रीविष्णु के समान लगता था, जिनका वक्ष चंदन के गाढ़े लेप से र्चाचत हो। (इधर श्रीविष्णु का "सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष, सहस्रपात" —रूप इंगित है।)। ९५७

ऊनुम्मुयि रुम्मनै यारॊरु वर्क्कॊरुवर्
तेनुम्मिञि रुञ्जिरु तुम्बियुम् बम्बि यार्प्प
यानै यिनमुम् पिडियुम्मिह लाळि येऱुम्
मानुङ् गलैयु मॆनमाल्वरै वन्दि ऴिन्दार् 958

ऑरुवर्क्कु ऑरुवर्–परस्पर; ऊनुम् उयिरुम् अनैयार्–शरीर और प्राण-सम (प्यारे) रहनेवाले; तेनुम् मिञिरुम् चिऱु तुम्पियुम् पम्पि आर्प्प–मधुमक्खियाँ, काले भ्रमर और छोटे अलियों के आकार गुंजार करते; यानै इनमुम् पिटियुम्–हाथी के समूह और हथिनियाँ; इकल् आळि–वलिष्ठ शेरनियाँ और; एऱुम्–शेर; मानुम् कलैयुम्–हरिणियाँ और हरिण; ऎन–जैसे; माल् वरै इऴिन्तु–श्रेष्ठ पर्वत से उतरकर; वन्तार्–आये। ६५८

(ऊपर घूमने जो गये थे वे स्त्री-पुरुष नीचे उतर आये।) परस्पर प्राणसम प्यार करनेवाले स्त्री और पुरुष उस श्रेष्ठ पर्वत से नीचे उतर आये। तब उनके केशों पर भ्रमर आकर गुंजार के साथ मँडराने लगे। वे हथिनी और हाथी के समान, शेरनी और शेर के समान तथा हरिणी और हरिण के समान दिखाई दिये। (रूप, बल, छटा आदि के साधर्म्य के कारण उन जानवरों में और इन स्त्री-पुरुषों में तुलना की गयी है।)। ९५८

काल्वानहत् तेरुडै वॆय्यवन् काय्ह डुङ्गण्
कोलमाय्कदिरप् पुल्लुळैक् कॊलशिनक् कोळ रिम्मा

मेल्पाल् मलैयिऱ् पडवीङ्गिरुळ् वेऱि रुन्द
माल्यानै यीट्ट मॅनवन्दु परन्द दन्ऱे 959

काल्–(एक) चक्रवाले; वानकम् तेर् उटै–आकाशचारी रथ के स्वामी; वॅय्यवन्–सूर्यरूपी; काय् कट्टु कण्–जलानेवाली भयंकर आँख; कोल्माय्–शरों को छिपा सकनेवाला; कतिर् पुल् उळै–किरणोंरूपी अयालवाला; कोल् चिनम्–संहारक क्रोधी; कोळ् अरि मा–शानदार सिंह; मेल् पाल् मलैयिल् पट–पश्चिमी पर्वत के पीछे छिप जाने से; वेरु इरुन्त–अलग छिपे रहे; वीङ्कु इरुळ्–घना विशाल अन्धकार; माल् यानै ईट्टम् ॲन–बड़े गजदलों के समान; वन्तु परन्तु–आकर छा गया (इसमें श्लेष भी है। सिंह सम्बन्धी अर्थ करते वक्त यों विग्रह करना पड़ेगा— काल् वाल् नकत्तु एर् उटै–पैरों में सफ़ेद नाखूनों की शोभा जिसकी हो; वॅय्य वन् काय् कट्टु कण्–भयंकर, और अचल सुदृढ़ दृष्टि और; कोल् माय् कतिर् पुल् उळै–शर छिपा सकनेवाले उज्ज्वल अयालवाला; कॉल चिनम् कोळरि मा–घातक क्रोध का शानदार सिंह।)। ६५६

एकचक्ररथी सूर्य सिंह था जो अस्ताचल के पीछे छिप गया। तब अंधकाररूपी गज जो अब तक कहीं छिपे रहे प्रकट हो आये और सर्वत्र फैल गये। (संधिविग्रह के चातुर्य से सूर्य और सिंह दोनों के लिए प्रयुक्त होनेवाली शब्दयोजना है। सूर्य के पक्ष में— एकचक्र, आकाशचारी रथ के स्वामी किरणमालीरूपी, जला सकनेवाली भयंकर आँखें; शरों को छिपा दें ऐसी किरणोंरूपी अयाल; संहारक क्रोध इनसे युक्त शानदार सूर्यरूपी सिंह। शेर के पक्ष में— पैरों में नाखूनों की शोभा से युक्त; क्रूरता और भयंकर आँखों का; और शर प्रेषित हों तो वे जाकर छिप जायँ ऐसे अयालों का; घातक क्रोधी सिंह।)। ९५९

मन्दार मुन्दु महरन्द मणङ्गु लावुम्
अन्दा ररशर्क् करशन्ऱ नीक वॅळ्ळम्
नन्दा दॊलिक्कु नरलैप्पॅरु वेलै यॅल्लाम्
शॅन्दा मरैपूत् तॅन्नत्तीब मॅडुत्त वन्ऱे 960

मन्तारम् उन्तु–मन्दार सुमनों के बने; मकरन्तम् मणम् कुलावुम्–मकरन्दगन्ध-मिश्रित; अम् तार्–सुन्दर मालाधारी; अरचर्क्कु अरचन् तन्–राजाधिराज (दशरथ) की; अतीकम्–सेना; वॅळ्ळम्–का समूह; नन्तातु ऑलिक्कुम्–अक्षय रूप से गरजनेवाले; नरलै पॅरु वेलै ॲल्लाम्–बड़े शोर-युक्त सागर भर में; चॅन्तामरै पूत्त–लालकमल विकसित हुए; ॲन–ऐसा; तीपम् ॲटुत्त–दीप (जल उठे) जलाये गये। ६६०

(रात हो गयी और दीप जलाये गये— वह दृश्य कैसा था?) मंदारमकरंद से वासित मालाधारी चक्रवर्ती दशरथ की सेना विशाल सागर है जो अक्षय रूप से गरजती (शोर मचाती) रहती है। उस पर अनेक कमल खिले हों, ऐसे अनेक दीप जलाये गये। (मंदार—देवलोक तरु का पुष्प।)। ९६०

तण्णक् कडलिऱ् ऱळिशिनदु तरङ्ग नोङ्गि
विण्णिऱ् चुडर्वॆण् मदिवन्ददु मीऩ्गळ् चूऴ
वण्णक् कदिर्वॆण् णिलविऩ्ऱिरळ् वालु हत्तो
डॊण्णित् तिलमोऩ् ऱॊळिर्वाल्वळै यूर्वदोत्ते 961

वॆळ् मति–श्वेत चन्द्र; तण्णम् कटलिल्–शीतल समुद्र में; तळि चिन्तु तरङ्कम् नीङ्कि–सीकरें बिखेरनेवाली तरंगों से छूटकर; वण्णम् कतिर्–सुभग, श्वेत; वॆळ् निलवु ईऩ्–चाँदनी के समान प्रकाश देनेवाले; तिरळ् वालुकत्तोटु–राशिकृत बालुकाओं के साथ; ऑळिर् वाल् वळै–दीप्तिमान शंख; ऑळ् नित्तिलम् ईऩ्ऱु–उज्ज्वल मोतियों को जनाते हुए; ऊर्वतु ऑत्तु–रेंगता है, जैसे; विण्णिल्–आकाश में; चुटर् मीऩ्कळ् चूऴ–उज्ज्वल नक्षत्रों से घिरा हुआ; वन्ततु–उदित हो आया। ९६१

चंद्र उदित होकर आकाश पर धीरे-धीरे चलने लगा। वह जैसे जलबिंदुएँ बिखेरनेवाली तरंगों से छूटकर आया हो ऐसा लगा। मनोरम-गति से चलनेवाला वह उस श्वेतवर्ण शोभायुक्त शंख के समान रहता है जो बालुका में दीप्तियुत मुक्ताओं को उत्पन्न करता हुआ संचार कर रहा हो। चंद्र के चारों ओर जो नक्षत्र थे वे ही मोतीरूप थे। ९६१

मीऩाऱ वेलै यॊरुवॆण्मदि यीऩुम् वेलै
नोऩा ददऩै नुवलऱ्करुङ् गोडि वॆळ्ळम्
वाऩा डियरिऱ् पॊलिमादर् मुहङ्ग ळॆऩ्ऩुम्
आऩा मदियङ् गण्मलर्न्द दऩीह वेलै 962

मीऩ् नाऱु वेलै–मछलियों की गन्ध जिसमें महकती है उस समुद्र ने; ऑर वॆळ् मति ईऩुम् वेलै–एक श्वेत चन्द्र उत्पन्न किया, तब; अतऩै नोऩातु–उसका सहन न करके; अऩीकम् वेलै–(चक्रवर्ती की) सेना के सागर ने; वाऩ् नाटियरिल् पॊलि–देवांगनाओं के समान आभायुक्त; नुवलऱ्कु अरु–अगण्य; कोटि वॆळ्ळम् मातर्–करोड़ों सागर (एक वृहत् संख्या) स्त्रियों के; मुकङ्कळ् ऍऩ्ऩुम्–मुखरूपी; आऩा मतियङ्कळ्–पूर्ण कलावाले (निष्कलंक) चन्द्रों को; मलर्न्ततु–पैदा कर विकसित कराया। ९६२

मछलियों की गंध से युक्त सागर से वह चंद्र ऊपर आया। यह चंद्र सागर ने उत्पन्न किया हो ऐसा लगता था। चक्रवर्ती की सेना के सागर को यह असह्य हो गया। उसने अनेक अनोखे चंद्र पैदा कर दिये। (वे कौन चंद्र थे) वे देवाँगनाओं के समान लगनेवाली कोटि-कोटि स्त्रियों के मुखचंद्र हैं, जिनमें कलंक नहीं है। ९६२

मण्णुम् मुऴविऩ् ऩॊलिमङ्गयर् पाड लोदै
पण्णुन् नरम्बिऱ् पयिलवारिशै पाणि योदै
कण्णुम् मुडवे यिशैकण्णुळ राड ऱोदम्
विण्णुम् मरुळुम् बडिविम्मि यॆऴुन्द वन्ऱे 963

कण्णुळर् आटल् तोऱुम्–नर्तकों का नाच जहाँ-जहाँ होता था वहाँ; मण् मुऴव् इन् ओलि–मृतिकाचेप लगे हुए मर्दल की सुमधुर ध्वनि; मङ्कैयर् पाटल् ओतै–स्त्रियों की संगीत ध्वनि; पण्णुम् नरम्पिल् पयिल्वार्–योग्य रीति से बनी तन्त्रियों को झंकृत कर (वीणा का) स्वर उठानेवालियों का; इचै–संगीत; पाणि ओतै–करताल का स्वर; कण् उटै वेय् इचै–रन्ध्रसहित बाँसुरियों की ध्वनि; विण्णुम् मरुळुम् पटि–देवों को भी मोहित करते हुए; विम्मि ॲऴुन्त–भर उठे। ९६३

सेना के पड़ाव में कई तरह के संगीत के स्वर उठे। नाच जहाँ हो रहे थे वहाँ मर्दलों का मधुर नाद उठ रहा था। स्त्रियाँ गा रही थीं। वीणा आदि तंत्रीवाद्यों का वादन हो रहा था। करताल की ध्वनि भी सुनाई देती थी। बाँसुरियाँ भी बज रही थीं। यह सब नाद मिल-कर देवों को भी मोहित कर रहे थे। ९६३

मणियिन्नणि नीक्कि वयङ्गॊळि मुत्तम् वाङ्गि
अणियुम्मुलै यारहि लावि पुलर्त्तु नल्लार्
तणियु मदुमल् लिहैत्तामम् वॆरुत्तु वाशन्
दिणियु मिदऴ्प्पित् तिहैक्कत्तिहै शेर्त्तु वारुम् 964

मणियित् अणि नीक्कि–रत्नाभरणों को हटाकर; वयङ्कु ऑळि–दीप्त प्रकाश-वाले; मुत्तम् वाङ्कि–मोतियों (की मालाओं) को भी दूर करके; अणियुम् मुलै–चित्रकारी से सुन्दर बने स्तनों को; आर् अकिल् आवि–श्रेष्ठ अगरु के धुएँ से; पुलर्त्तुम्–सुखानेवाले; नल्लार्–योषिताएँ; तणियुम् मतु–शहदहीन (पुरानी); मल्लिकै तामम् वॆरुत्तु–मल्लिका की मालाएँ हटाकर; वाचम् तिणियुम् इतऴ्–सुगन्ध-पूर्ण दलों के; पित्तिकै कत्तिकै–"करुमुहै" नामक (या चमेली ?) पेड़ के फूलों के गजरे; चेर्त्तु वारुम्–जिन्होंने पहन लिए वे। ९६४

(स्त्रियाँ रात के जीवन के लिए तैयारी कर रही हैं।) रत्नाभरण मुक्ताहार आदि उन्होंने निकाल दिया। स्तनों पर चित्रकारी की सजावट हुई। उसको सुखाने के लिए अगरु का धुआँ किया गया। फिर जिनमें शहद का स्रवना कम हो गया हो (यानी जो पुरानी पड़ गयी हो) उन मल्लिका पुष्पों की मालाओं को उतारकर चमेली ("करुमुकै" नाम के पेड़ के) फूलों के गजरे पहन लिये। ९६४

पुदुक्कॊण्ड वॆऴम् पिणिप्पोर्पुनै पाड लोदै
मदुक्कॊण्ड मान्दर् मडवारिन् मिऴट्रु मोदै
पॊदुप्पॆण्डि रल्हुट् पुनैमेहलैप् पूश लोदै
कदक्कॊण्ड यानै कळियाट्कळिक् किन्ऱ वोदै 965

पुतु कॊण्ट वेऴम्–अभी नये पकड़कर लाये गये हाथी को; पिणिप्पोर्–बन्धन में लानेवाले लोगों के; पुनै–रचकर; पाटल् ओतै–गाये जानेवाले गीतों का स्वर; मतु कॊण्ट मान्तर्–सुरा पिये हुए पुरुषों के; मटवारित्–स्त्रियों के पास; मिऴट्रुम् ओतै–(काम-) प्रलाप करने का स्वर; पॊतु पॆण्टिर्–वेश्याओं के; अल्कुल् पुनै–

जघन भाग पर पहने हुए; मेकलै–मेखला आदि आभरणों के; पूचल् ओतै–झंकृत होने का नाद; कतम् कोण्ट यातै–मदमत्त गजों का; कळियाल्–मत्तता के कारण; कळिक्कितृर ओतै–चिंघाड़ने का स्वर। ९६५

(वहाँ अनेक तरह के नाद सुनाई दे रहे थे।) हाथी जो नया पकड़ा गया था उसको बन्धन में लाने के प्रयास में लोग नये सिरे से रचकर गाना गा रहे थे। खूब ताड़ी पीकर कुछ लोग स्त्रियों के साथ कामवासना के उकसे प्रलाप कर रहे थे। कहीं वेश्याओं की मेखलाएँ क्वणित होती थीं। मत्तगज मस्ती के साथ चिंघाड़ रहे थे। (इस पद में "स्वर" संज्ञा है पर कोई क्रिया पद नहीं है। संकेत है कि अन्य प्रकार के नाद भी उठते थे।)। ९६५

उण्णावमु दन्न कलैप्पोरु ळुळ्ळ दुण्डुम्
पॆण्णारमु दम्मनै यार्मनत् तूडल् पेर्त्तुम्
पण्णात पाडल् शॆविमान्दिप् पयन्कॊ ळाडल्
कण्णा नन्तितुयक् कवुङ्गङ्गुल् कळिन्द दन्रे 966

उण्णा अमुतु अन्न–जो खाया नहीं जाता (वरन भोगा जाता है) उस अमृत के समान; कलै पोरुळ् उळ्ळतु—काम-कला का विषय जो है उस रति-भोग को; उण्टुम्–भुगतकर; पॆण् आर् अमुतम् अनैयार्–स्त्रियों में अमृत समान जिनको मानते हैं उन (अपनी) प्रियाओं के; मनत्तु ऊटल् पेर्त्तुम्–मन का मान दूर करके; पण् आत पाटल्–रागयुक्त गीतों को; चॆवि मान्ति–श्रवण से सुनकर; पयन् कॊळ् आटल्–अर्थयुक्त नाच को; कण्णाल् नन्ति तुय्क्कवुम्–आँखों से खूब देखने का आनन्द उठाकर; अन्रु कङ्कुल्–उस दिन की रात; कळिन्ततु–बीत गई थी। ९६६

(लोगों ने वह रात कैसे बितायी? उनके कार्यों का वर्णन है।) रति भोग ऐसा अमृत है जो मुख से नहीं खाया जाता। कोकशास्त्र के उस विषय को कार्यान्वित कर लोग आनन्द उठा रहे थे; या रूठी हुई अपनी प्रेयसियों के मान को दूर करने में व्यस्त थे। उन्हें उनकी प्रेयसियाँ स्त्रियों में अमृत के समान थीं यानी वे संजीवनी शक्ति रखती थीं। लोग राग के साथ गाये गये गीत सुनते थे या अर्थयुक्त नाच देखते थे। ऐसे कामों में लोगों का उस रात का समय बीता। ९६६

15. पूक्कॊय् पडलम् (सुमन-संग्रह पटल)

मीनुडै यॆयिऱ्ऱुक् कङ्गुऱ् कनहनै वॆहुण्डु वॆय्य
कानुडैक् कदिर्हॊ ळॆन्नु मायिरङ् करङ्ग ळोच्चित्
तानुडै युदय मॆन्नुन् दमनियत् तऱियि निन्ऱु
मानुड मडङ्ग लॆन्नत् तोन्ऱिनन् वयङ्गु वॆय्योन् 967

वयङ्कु वॅय्योन्–(प्रकाशपूर्ण) विद्यमान सूरज; मीन् ॲयिरु उटॅय–नक्षत्ररूपी दाँतों के साथ; कङ्कुल कनकनै–रात्रिरूपी कनक कशिपु पर क्रोध करके; कान् उटॅ (य)–घनी; वॅय्य–गरम; कतिर्कळ् ॲन्नुम्–किरणें रूपी; आयिरम् करङ्कळ् ओच्चि–सहस्र हाथ बढ़ाते हुए; तान् उटॅ (य)–अपने; उतयम्–ॲन्नुम्–उदयाचल रूपी; तमनियम् तरियिन् निन्ऱु–स्वर्णस्तंभ से; मानुट मटङ्कल् ॲन्न–नरसिहमूर्ति के समान; तोन्ऱिनन्–प्रकट हुआ। ६६७

सूर्य उदित हुये। वह नृसिंहमूर्ति के समान जो स्वर्ण के खम्भे के अन्दर से उसको चीर कर निकले थे, उदयाचल को भेदकर बाहर निकले। उनके दाँत नक्षत्र थे। हिरण्यकश्यप के स्थान में अंधेरा था। सूर्य की तापक किरणें उनके सहस्र कर थीं। (हिरण्यकश्यप यद्यपि कनकवर्ण था तो भी साधारणरूप से राक्षस काले ही समझे जाते हैं। उस न्याय के अनुसार कनककश्यप को कवि ने अंधेरे का रंग दिया। इस पद्य में उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार हैं।)। ९६७

मुऱॅयॅला मुडित्त पिन्नर् मन्ननु मूरित् तेर्मेल्
इऱॅयॅलाम् वणङ्गप् पोना नॅळुन्दुडन् शेनै वॅळ्ळम्
कुऱॅयॅलाञ् जोलै याहिक् कुळियॅलाङ् गळुनी राहित्
तुऱॅयॅलाङ् कमल मान शोणया ऱडॅन्द दन्ऱे 968

मुऱॅ ॲलाम् मुटित्त पिन्नर्–नित्य कर्मों का अनुष्ठान पूरा करने के बाद; मन्ननुम्–चक्रवर्ती भी; मूरि तेर् मेल्–बड़े रथ पर चढ़कर; इऱॅ ॲलाम् वणङ्क–सभी राजाओं को नमस्कार करने देते हुए; पोनान्–गये; चेनै वॅळ्ळम्–सेना सागर भी; उटन् ॲळुन्तु–साथ निकलकर; कुऱॅ ॲलाम्–(जिसके) सब कछारों या पुलिनों या तटों पर; चोलै आकि–वन बने थे; कुळि ॲलाम्–गहरे भागों में; कळुनीर आकि–लाल कुमुद उगे थे; तुऱॅ ॲलाम् कमलम् आन–घाटों में कमल थे; चोण आऱु–(उस) शोण नदी पर; अटॅन्तनु–पहुँचा। ६६८

प्रातःकाल के कर्मानुष्ठान यथाविधि पूरा करके चक्रवर्ती दशरथ प्रस्थानोन्मुख हुए। तब राजा लोगों ने उनकी अभ्यर्थना की। वे सुदृढ़ रथ पर आरूढ़ हो चलने लगे। सेना का सागर भी आगे बढ़ने लगा। वे शोण नदी के तट पर आ पहुँचे। शोण के तटों पर घने उपवन थे; घाटों में (जल में) कमल का वन था। कुछ गहरे जल में लाल कुमुद उगे थे। (नदी सागर को जाती है; यह प्राकृतिक है। यहाँ सागर नदी पर जाता है। यह विशेषता है!)। ९६८

अडॅन्दव णिरुत्त पिन्न ररुक्कनु मुम्बर् शार
मडन्दयर् कुळाङ्ग ळोडु मन्नरु मैन्दर् तामुम्
कुडॅन्दुवण् डुऱॅयु मॅन्बूक् कॊय्दुनी राड मैतीर्
तडङ्गळु मडुवुञ् जूळ्न्द तण्णऱुञ् जोलै शार्न्दार् 969

अटैन्तु–पहुँचकर; अवण् इरुत्त पिन्तर्–वहाँ ठहरे, बाद; अरुक्कतुम्–सूर्य भी; उम्पर् चार–आकाशमध्य पहुँचा; मन्तरुम्–राजा लोग और; मैन्तरुम्–वीर लोग; मटन्तैयर् कुऴाङ्कळोटु–स्त्रियों के दलों के साथ; वण्टु कुटैन्तु उऱैयुम्–जिनपर भ्रमर कुरेदते हुए ठहरे थे; मॆन् पू कॊय्तु–(उन) कोमल सुमनों को चुनने; नीर् आट–व स्नान करने के लिए; मै तीर्–निर्मल; तटङ्कळुम्–बड़े तालावों और; मट्टुवुम्–छोटे तालाबों से; चूऴ्न्त–घिरे हुए; तण् नऱु चोलै–शीतल व सुगन्धित उपवनों में; चार्न्तार्–पहुँचे। ६६६

वहाँ पहुँच कर सेना ने पड़ाव डाला। तब तक सूर्य आकाश-मध्य पहुँच गये। (मध्याह्न हो गया) राजा लोग और सेना-वीर अपनी-अपनी स्त्री के साथ पुष्प चयन करने और स्नान आदि करने को उद्यत हो उठे। वे उन उद्यानों की तरफ़ गये जिनके फूलों पर भ्रमर बैठकर कुरेद रहे थे और जिनके चारों ओर निर्मल छोटे-बड़े सरोवर थे। ९६९

तिण्शिलै पुरुव माहच् चेयरिक् करुङ्ग णम्बाल्
पुण्शिल शॅय्व रॅन्ऱु पोवन्न पोन्ऱ मञ्ञै
पण्शिलम् बणिवा यार्प्प नाणिनार् पऱन्द किळ्ळै
ऑण्शिलम् बरऱ्ऱ माद रॊदुङ्गुदो ऱॊदुङ्गु मन्नम् 970

मञ्ञै–मोर; पुरुवम्–भौंहों को; तिण् चिलै आक–सुदृढ़ धनुष बनाकर; चेय् अरि करु कण्–लाल डोरोंवाली काली आँखों के; अम्पाल्–शरों द्वारा; पुण् चिल चॅय्वर् ऎन्ऱु–हमें आहत करेंगे, समझकर; पोवन्न पोन्ऱ–हट जाते से लगे; पण् चिलम्पु–संगीत के समान स्वर देनेवाले; अणिवाय्–सुन्दर मुखों से; आर्प्प–(जब स्त्रियाँ) बोलीं, तब; किळ्ळै–शुक; नाणिनाल्–लाज से; पऱन्त–उड़ गये; मातर्–स्त्रियाँ; ऒण् चिलम्पु अरऱ्ऱ–उज्ज्वल नूपुर को झंकृत करते हुए; ऒतुङ्कु तोऱुम्–(जब) चलती थीं, तब; अन्नम्–हंसपक्षी; ऒतुङ्कुम्–(खुद वैसे ही) चलते हैं (या उनसे हट जाते)। ६७०

जब स्त्रियाँ उन उद्यानों में पहुँचीं तब मोर यह समझकर कि इन स्त्रियों की भौंहोंरूपी धनुष से लाल रेखायुक्त काली आयत आँखों की दृष्टिरूपी शर निकल कर हमें आहत करेंगे, हट गये। जब वे संगीत के समान मधुर भाषण करने लगीं तब शुक लजाकर उड़ गये। जब वे नूपुरों की झंकार के साथ पग रखकर चलने लगीं तो हंस-कुल उनकी देखा-देखी चलने लगे (या एकदम वहाँ से भाग गये)। (स्त्रियों की आभा, बोली और चाल क्रमशः मोर की छटा, शुक की बोली और हंस की चाल से उपमित की जाती हैं। इसका कवि अनोखे रूप से चित्रण करते हैं।)। ९७०

शॅम्बॊन्शॅय् शुरुळुन् दॅय्वक् कुऴैहळुञ् जेर्न्दु मिन्नप्
पम्बुते नलम्ब वॊल्हिप् पण्णयि नाड नोक्किक्

कॉम्बॊडुङ् गॉडिय नारैक् कुऱिप्पऱिन् दुणरद ऱॆऱ्ऱार्
वम्बवि ऴलङ्गन् मार्बिन् मैन्दरु मयङ्गि निन्ऱार् 971

चॆम् पॊन् चॆय्–चोखे स्वर्ण से रचित; चुरुळुम्–'तालपत्र' नाम के कर्णाभरण और; तॆय्वम् कुळैक्कळुम्–दिव्य कुण्डल; चेर्न्तु मिन्न–मिलकर चमकते हैं ऐसा; पम्पु तेन् अलम्प–भीड़ लगाकर बैठे भ्रमर गुंजार करते हैं; ऑल्कि–लचक-लचककर; पण्णॆयिन्–दल बाँधकर; आटल् नोक्कि–क्रीड़ा (रत हैं यह) देखकर; वम्पु अविऴ्–सुगन्धि देनेवाली; अलङ्कल् मार्पिन्–(पुष्प-)माला से अलंकृत वक्षवाले; मैन्तरुम्–तरुण लोग; कॉम्पॊटुम्–पुष्पलताओं और; कॉटि अन्नारै–पुष्पलता सदृश स्त्रियों में; कुऱिप्पु अऱिन्तु–भेद जानकर; उणर्तल् तेऱ्ऱार्–पहचान नहीं पाकर; मयङ्कि निन्ऱार्–चकित खड़े हैं। ६७१

(पुरुष स्त्रियों को देखते हैं लेकिन उनको पुष्प-लताओं से अलग करना नहीं जानते।) स्त्रियों के कानों में "तालपत्र" और कुंडल के स्वर्णनिर्मित आभरण हैं। वे चमकते हैं। उनके चारों ओर भ्रमर गुंजार करते हुए मँडराते हैं। जब वे चलती हैं तब उनके शरीर लचकते हैं। वे इस ठाट के साथ क्रीडा करती रहती हैं। तब सुवासित मालाधारी पुरुष उनको देखते हैं तथा पुष्पलताओं के समान रहनेवाली उनको अलग पहचान नहीं पाते और ठगे से खड़े रह जाते हैं। (इसका यह अर्थ भी किया जा सकता है कि स्त्रियों की भीड़ में पुरुष अपनी-अपनी प्रियाओं को अलग पहचान नहीं पाते हैं।)। ९७१

पाशिऴैप् परवै यल्हुर् पण्डरुङ् गिळवित् तण्डेन्
मूशिय कून्दन् मादर् मॊय्त्तपे रमलै केट्टुक्
कूशिन् वल्ल पेश नाणिन् कुयिल्ह ळॆल्लाम्
वाशहम् वल्लार् मुन्निन् ऱियावर्वाय् तिऱक्क वल्लार् 972

पचुमै इऴै–चोखे स्वर्ण के बने आभरण सज्जित; परवै अलकुल्–विशाल नितंब; पण् तरुम् किळवि–संगीत-सम बोली; तण् तेन्–शीतल शहद से; मूचिय कन्तल्–(पहने हुए पुष्पों से) स्रवित करनेवाले केश; मातर्–(इनसे युक्त) स्त्रियाँ; मॊय्त्त–वहाँ आकर जमा हुईं, इसलिए; पेर् अमलै–निकला बड़ा शोर; केट्टु–सुनकर; कुयिल्कळ्–कोयलें; ऍल्लाम्–सभी; कूचिन् अल्ल–डरीं नहीं; पेच नाणिन–बोलने में लजाईं; वाचकम् वल्लार् मुन् निन्ऱु–बोलने में समर्थ के सामने खड़े होकर; वाय् तिऱक्क वल्लार्–मुख खोल सकनेवाले (बोलने की हिम्मत करनेवाले); यावर्–कौन हैं ? । ६७२

उन स्त्रियों के रूप-लक्षण बड़े आकर्षक थे। वे चोखे स्वर्ण से रचित आभरण पहने हुए थीं। नितम्ब, विशाल और मनोरम थे। उनकी बोली बड़ी मधुर थी। उनके केश पर पुष्प थे जिन पर भ्रमर मँडराते और गुंजार करते थे। उन स्त्रियों की उधर भीड़ लगी और शोरगुल मचा तो वहाँ की कोयलें चुप रह गयीं। डर से नहीं, वरन

उनकी बोली सुनकर अपने स्वर की हीनता समझकर वे चुप्पी साध गयीं। हाँ, वाक्‌समर्थ के समक्ष कौन अपना मुख खोलने (बोलने) की हिम्मत करेगा ? (इसमें अर्थान्तरन्यास है।)। ९७२

नञ्जिनुङ् गॉडिय नाट्ट ममुदॅन्न नयन्दु नोक्किच्
चॅञ्जॅवे कमलक् कैयाऱ् ऱीण्डलु नीण्ड कॊम्बुम्
तञ्जिलम् बडियिन् मॅन्पूच् चोरिन्दिडै ताऴ्न्द वॅन्ऱाल्
वञ्जिपोन् मरुङ्गु लार्माट् टियावरे वळैहि लादार् 973

नञ्चितुम्–विष से भी; कॊटिय नाट्टम्–क्रूर (हानिकारक) दृष्टि से; अमुतु ॲन्न–(यह) अमृत (है) कहलाने योग्य रीति से; नयन्तु नोक्कि–चाह के साथ देखकर; कमलम् कैयाल्–अपने कमलकरों से; चॅञ्चॅवे तीण्टलुम्–यों ही पकड़ते ही; नीण्ट कॊम्पुम्–लम्बी शाखायें भी; तम् चिलम्पु अटियिल्–(उनके) नूपुर शोभित चरणों पर; मॅन् पू चॊरिन्तु–मृदु सुमनों को गिराकर; इटै ताऴ्न्त–उनके चरणों पर नत हुईं; ॲन्ऱाल्–तो; वञ्चि पोल्–लता सदृश; मरुङ्कुलार् माट्टु–कमरवालियों (स्त्रियों) के प्रति; वळैकिलातार्–न झुकनेवाले; यावर्–कौन हैं ? । ९७३

स्त्रियाँ पुष्पित शाखाएँ झुकाती हैं। वे झुक ही नहीं जातीं बल्कि फूल भी गिरा देती हैं। क्योंकि वे स्त्रियाँ अपनी आँखों में जो पुरुषों के लिए विष से भी घातक लगतीं, चाह भर लेती हैं; अत: उनकी दृष्टि अमृत-सम मोहक हो जाती है।। उनके स्पर्श मात्र से ही वे डालें झुक गयीं। अपने फूल उनके नूपुरार्पित चरणों पर अर्पित करके (मानो पूजा में) उन चरणों पर लग भी गयीं। हाँ, लता-सी कमरवालियों के सामने कौन नहीं झुकेगा ? डालें भी झुक जाती हैं तो मनुष्यों के झुकने में क्या आश्चर्य है ? । ९७३

अम्बुयत् तणङ्गि नन्ना रम्मलर्क् कैह डीण्ड
वम्बवि ऴलङ्गर् पङ्गि वाळरि मरुळुङ् गोळार्
तम्बुय वरैहळ् वन्दु ताऴ्वन्न दळिर्त्त मॅन्पूङ्
गॊम्बुह डाऴु मॅन्ऱल् कूऱलान् तहैमैत् तॊन्ऱो 974

अम् पुयत्तु अणङ्कु अन्नार्–कमला श्रीलक्ष्मीदेवी के सदृश (जो) रहीं (उन) स्त्रियों के; अम्मलर् कैकळ् तीण्ट–सुन्दर पुष्पकरों के स्पर्श से; वम्पु अविऴ्–सुगन्ध बिखेरनेवाली; अलङ्कल् पङ्कि–पुष्पमाला से अलंकृत केश; वाळ् अरि मरुळुम्–(जिनका देखकर) भयंकर सिंह भी डरते हैं उन; कोळार्–बलिष्ठ पुरुषों की; पुयम् वरैकळ्–भुजाएँरूपी पर्वत ही; वन्तु ताऴ्वन्न–आकर झुक जाते हैं, (तो); तळिर्त्त–नवीन; मॅन् पू कॊम्पुकळ्–मृदु पुष्पलताएँ; ताऴुम् ॲन्ऱल्–झुकेंगी, कहना; कूऱल् आम् तकैमैत्तु ऒन्ऱो–कहने योग्य कोई बात है क्या ? । ९७४

(कवि इस पद में उसी बात को लेकर और एक कल्पना करते हैं।) कमलोद्भवा श्रीलक्ष्मीदेवी के समान हैं— वे स्त्रियाँ। उनके कर-स्पर्श से

सुगन्धित पुष्पमालाओं से अलंकृत केशवाले, सिंहभयदायी पुरुषों के भुजा पर्वत ही झुक जाते हैं तो कोमल पुष्पलताएँ झुक जाती हैं यह बात उल्लेख योग्य भी है क्या? (इसमें आश्चर्य क्या है?)। ९७४

नदियिनुङ् गुळत्तुम् पूवा नळिनङ्गळ् कुवळै योडु
मदिनुदल् वल्लि पूप्प नोक्किय मळलैत् तुम्बि
अदिशय मॅय्दिप् पुक्कु वीळ्न्दन वलैक्कप् पोहा
पुदियन कण्ड पोदु विडुवरो पुदुमै पारप्पार् 975

मति नुतल् वल्लि–चन्द्र सदृश ललाटवाली लताएँ (लता सदृश स्त्रियाँ); नतियित्तुम्–नदियों और; कुळत्तुम्–तालाबों में; पूवा–जो नहीं खिले थे; नळिनङ्कळ्–उन कमलपुष्पों को; कुवळैयोटु पूप्प–कुवलयों के साथ विकसित; नोक्किय–देखनेवाले; मळलै तुम्पि–मधुरालापी भ्रमर; अतिचयम् ऍय्ति–विस्मित होकर; पुक्कु वीळ्न्तन–जाकर पिल पड़े; अलैक्क–(उनको हटाने के लिए) हाथ हिलाने पर भी; पोका–नहीं गये; पुतुमै पारप्पार्–नवीन वस्तुओं को देखने को उत्सुक लोग; पुतियन कण्ट पोतु–नवीन वस्तुओं को देखने पर; विटुवरो–उनको छोड़ेंगे क्या? । ९७५

मधुरालापी भ्रमर स्त्रियों के मुखों के पास भीड़ लगाकर मँडराते हैं। स्त्रियाँ उनके निवारणार्थ हाथ हिलाती हैं पर वे अलग नहीं हटते। इसका एक कारण है। चन्द्रसदृश ललाटों की लतासमान स्त्रियों के मुख कमलों के समान हैं और आँखें कुवलय के समान हैं। तथा ये नदियों और तालाबों (आदि जलाशयों) में उत्पन्न पुष्प नहीं हैं। यह भ्रमर के लिए नयी बात है। भ्रमर नवीनता के प्रेमी हैं। इस नवीन, अन्यत्र अप्राप्य वस्तु को पाने के बाद वे क्यों कर हटेंगे? । ९७५

उलन्दरु वयिरत् तिण्डो ळोळ्हिवा रॊळिकॊण् मेति
मलर्न्दपून् दॊडैयन् मालै मैन्दरपाल् मयिलि नन्नार्
कलन्दवर् पोल वॊल्हि यॊशिन्दन शिलहै वाराप्
पुलन्दवर् पोल निन्रु वळैहिल पूत्त कॊम्बर् 976

उलम् तरु–चट्टान के समान; वयिरम् तिण् तोळ्–और हीरे के सदृश कठोर कन्धे; ऒळुकि–सीधे बढ़कर; वार् ऒळि कॊळ्–अतिशय उज्ज्वल; मेति–शरीर; मलर्न्त पू तॊटैयल् मालै–(और) विकसित पुष्पों की गुंथी मालाओं के; मैन्तर् पाल्–नौजवानों के पास; कलन्तवर्–मिली हुई; मयिल् अन्नार् पोल–मोर की-सी छटावाली स्त्रियों के समान; पूत्त कॊम्पर् चिल–पुष्पडालों में कुछ; ऒल्कि ऒचिन्तन–लचककर झुक गईं; चिल–कुछ; कैवारा–वश में न आकर; पुलन्तवर् पोल–(मान न छोड़कर) रुष्ट हो रही स्त्रियों के समान; निन्रु–तनकर; वळैकिल–नत नहीं हुईं। ९७६

(स्त्रियों की उपमा लताओं या पुष्पशाखाओं के साथ दी जाती है। अब पुष्पशाखाएँ स्त्रियों के साथ विशेषधर्म के आधार पर उपमित की

जाती हैं।) कुछ पुष्पशाखाएँ झुक गयीं और शिथिल लगीं। कुछ तनकर खड़ी रहीं। जो स्त्रियाँ चट्टान के समान कठोर और हीरे के समान दृढ़ भुजाओं, सीधे और शोभाशाली शरीरों और पुष्पितमालाओं वाले अपने प्रेमियों के साथ रतिक्रीडा में मग्न रहने के बाद थककर म्लान हो जाती हैं, उनके समान कुछ लताएँ रहीं। कुछ स्त्रियाँ अपना मान किसी भी तरह नहीं छोड़तीं, पतियों की मिन्नत नहीं मानतीं और उनके वश में नहीं आतीं। वैसे ही कुछ लताएँ जो स्त्रियों की पकड़ में नहीं आयीं, तनकर सीधी और ऊँची खड़ी रहीं। ९७६

पूवॅलाङ् गॉय्दु कॉळ्ळप् पॉलिविल तुवळ नोक्कि
यावदाङ् गणवर् कण्णुक् कळहिल विवॅयॅन् ड्रॅण्णिक्
कोवयुम् वडमु नाणुङ् गुळैहळुङ् गुळैयप् पूट्टिप्
पावयर् पणिमॅन् कॉम्बै नोक्किनर् परिन्दु निन्ऱार् 977

पू ॲलाम् कॉय्तु कॉळ्ळ–सारे पुष्प तोड़ लेने से; पॉलिवु इल—(पुष्प-शाखाएँ) शोभाहीन होकर; तुवळ–शिथिल हुई; नोक्कि–देखकर; पावैयर्–प्रतिमा-सी तन्वियाँ; अऴकु इल इवै–असुन्दर ये; कणवर् कण्णुक्कु–हमारे पतियों की आंखों में; यावतु आम्–कैसे लगेंगी; ॲन्ऱु ॲण्णि–यह सोचकर; कोवैयुम्–अपनी मणिमालाओं और; वटमुम्–मुक्ताहारों को; नाणुम्–स्वर्ण की लड़ को; कुऴै कळुम्–कर्णकुण्डलों को; कुऴैय पूट्टि–भारावनत करके पहनाकर; पणि मॅन् कॉम्पै–झुकी पुष्पशाखा को; परिन्तु नोक्किनर्–चाव के साथ देखती हुई; निन्ऱार्–खड़ी रहीं। ६७७

कुछ पुष्पलताओं के सारे पुष्प चुन लिये गये। वे लताएँ शोभा खोकर म्लान रहीं। उनको देखकर कुछ स्त्रियों ने सहानुभूति के साथ सोचा कि हमारे पति देखेंगे तो क्या सोचेंगे? इसलिए उन्होंने अपने कुण्डल, मणि-मालाएँ, मुक्ताहार, सोने की करधनी आदि उतारकर उनको पहना दिया। फिर वे भारावनत उन लताओं को चाव के साथ देखती खड़ी रहीं। ९७७

तुरुम्बो दिनिऱ्ऱेन् ऱुवैत्तुण्डुऴ ऱुम्बि यीट्टम्
नऱुङ्गोदै योडु नळिर्शिन्नमु नीत्त नल्लार्
वॅरुङ्गून्दन् मॉय्क्किन् ऱुऩ्वेण्डल वेण्डु पोदुम्
उरुम्बोह मॅल्ला नलनुऴ्वळि युणव रन्ऱे 978

तुरुम् पोतितिल्–घनी, बड़ी कलियों में; तेऩ्–शहद को; तुवैत्तु उण्टु–रौंदकर, खोलकर पीकर; उऴल्–फिरनेवाले; तुम्पि ईट्टम्–भ्रमरों का झुण्ड; नल्लार्–स्त्रियों के; नऱु कोतैयोटु–सुगन्धित पुष्पहारों से; नळिर् चिन्नमुम्–और छुट्टे फूलों से; नीत्त–विमुक्त; वॅऱुम् कन्तल्–रिक्त केशों पर; मॉय्क्किन्ऱत–मँडराते, बनकर; वेण्टु पोतुम्–अपने प्रिय पुष्पों को भी; वेण्टल–पसन्द नहीं करते;

नलन् उळ् वळि—अच्छा-भला जहाँ मिलता है वहाँ; उरुम् पोकम् ॲल्लाम्–भोग्य भोग सब; उण्पर् अन्ऱे–(बुद्धिमान लोग) भोगते हैं न। ९७८

भ्रमर खूब समृद्ध कलियों पर बैठे, उन्हें रौंदकर खोला और शहद पी लिया। फिर स्त्रियों के केश पर जाकर बैठे। केश पर न मालाएँ थीं न छुट्टे फूल ही। केश की सुगन्ध स्वाभाविक सुगन्ध थी। वह उन्हें नयी लगी। उसी पर आसक्त होकर वे स्त्रियों के सिर पर टिक गये। उन्हें अन्य फूलों से प्रेम नहीं रहा। हाँ, बुद्धिमान लोग, जहाँ भोग के साथ हित भी मिलता है वहीं रहकर भोग्य सभी भोगों को भुगतते हैं। वैसे ही ये भ्रमर केश पर ही मँडराते रहे। (अर्थान्तरन्यास है।)। ९७८

मॅय्प्पोदि नङ्गैक् कणियन्नवळ् वॅण्ब ळिङ्गिल्
पॉय्प्पोदु ताङ्गिप् पॉलिहिन्ऱतन् मेनि नोक्कि
इप्पावै यॅङ्गोऱ् कुयिरन्नव ळॅन्न वुन्निक्
कैप्पोदि नोडु नॅडुङ्गण्पनि शोर निन्ऱाळ् 979

मॅय्–रूप में; पोतिल् नङ्कैक्कु–कमला श्रीलक्ष्मीदेवी के लिए भी; अणि अन्नवळ्–शृंगार बन सकनेवाली एक; वॅण् पळिङ्किल्–श्वेत स्फटिक शिला पर; पोतु ताङ्कि पॉलिकिन्ऱ–पुष्पालंकृत होकर शोभा देनेवाले; तन् पॉय् मेनि–अपना छाया-रूप; नोक्कि–देखकर; इ पावै–यह प्रतिमा (-सी स्त्री); ॲम् कोन्कु–मेरे राजा (सजन) को; उयिर् अन्नवळ्—प्राण-सम प्यारी; ॲन्न उन्नि–यह सोचकर; कै पोतिनोटु–हाथ में रक्षित पुष्पों के साथ; नॅटु कण् पनि चोर–अपनी विशाल आँखों से अश्रु बहाती हुई; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। ९७९

एक तरुणी ने, जो रूप में श्रीलक्ष्मी के समान थी, स्फटिक शिला में अपना प्रतिबिम्ब देखा। वह फूलों से अलंकृत थी। उसने भ्रम में सोच लिया कि यह (प्रतिमा-सी) सुन्दरी मेरे पति की प्यारी हो जायगी! वह अपने हाथ में फूल ले आयी थी। उनको वैसे ही लेकर वह आँखों से आँसू बहाती हुयी खड़ी रही। ९७९

कोळुण्ड तिङ्गण् मुहत्ताळॊरु कॊम्बर् मन्नन्
तोळुण्ड मालै यॊरुतोहैयैच् चूट्ट नोक्कित्
ताळुण्ड कच्चिऱ् ऱहैयुण्डन तनङ्गण् मीदु
वाळुण्ड कण्णीर् मळैयुण्डॆन वार निन्ऱाळ् 980

कोळ् उण्ट–मेघावृत्त; तिङ्कळ् मुकत्ताळ्–चन्द्रवदना; ऒरु कॊम्पर्–पुष्पलता सदृश एक स्त्री; मन्नन् तोळ् उण्ट मालै–अपने प्रिय के कन्धों को अलंकृत जो करती रही उस माला को; ऒरु तोकैयै चूट्ट–मयूर की छटावाली एक को पहनाने पर; नोक्कि–देखकर; ताळ् उण्ट कच्चिन्–गाँठ सहित रहनेवाली अंगिया से; तकैयुण्टन–बद्ध; तनङ्कळ् मीतु–उरोजों पर; वाळ् उण्ट कण्–तलवार-सी आँखों से; कण् नीर् मळै उण्टु ऍन्न वार–अश्रु को धारा के समान बहने देती हुई; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। ९८०

एक पुरुष के दो स्त्रियाँ थीं। उसने एक स्त्री को अपने वक्ष पर से एक माला निकालकर पहना दिया। इसको दूसरी पत्नी देख रही थी। उसका केश मेघ के समान था और मुख चन्द्र के समान। उसके मन में अपार ईर्ष्या और ग्लानि पैदा हो गयी। उसकी तलवार सदृश आँखों से अश्रुधारा बही और स्तनों के अग्रभाग पर गिरी। वे स्तन खूब कसकर अँगिया के अन्दर बाँधे गये थे। ९८०

मयिल्पोल् वरुवाण् मनङ्गाणिय कादन् मन्नन्
शेयिर्तीर् मलर्क्काविन्नीर् मादविच् चूऴल् शेरप्
पयिल्वा ळिऱैपण्डु पिरिन्दऱि याळ्प दैत्ताळ्
उयिर्नाडि योंळ्हुम् मुडल्पोलल मन्दु ळन्ऱाळ् 981

मयिल् पोल् वरुवाळ्–मोर के समान आनेवाली (अपनी प्रेमिका) का; मनम् काणिय–मनोभाव परखने के लिए; कातल् मन्नन्–उसका प्रिय प्रेमी; चॅयिर् तीर् मलर् काविन्–निर्मल पुष्पोद्यान के; ओर् मातवि चूऴल् चेर–एक माधवी लताकुंज में छिप गया; पयिल्वाळ्–संगिनी; पण्टु–इसके पहले कभी; इऱै पिरिन्तु अऱियाळ्–कुछ देर के लिए भी जो अलग नहीं हुई थीं; पतैत्ताळ–(उसकी प्रेमिका) तड़प गई; उयिर् नाटि–प्राण की खोज में; ओंल्कुम् उटल्पोल्–व्याकुलित शरीर के समान; अलमन्तु उऴन्ऱाळ्–भ्रमित होकर भटकने लगी। ६८१

एक स्त्री जो मोर के समान सुन्दरी थी, अपने पति की खोज में गयी। उसका पति उसका मन परखने के लिए उस निर्मल उद्यान के माधवी-कुंज में छिप गया। वह स्त्री अपने पति से कभी अलग नहीं हुई थी। अब अपने पति को न पाकर तड़प गयी और अत्यन्त दुखी होकर भटकने लगी। वह ऐसा था जैसे शरीर प्राण को न पाकर छटपटा रहा हो। (यह एक अनोखा कल्पित उदाहरण है)। ९८१

शॅम्मान्द तॅङ्गि निळनीरैयोर् शॅम्म नोक्कि
अम्माविवै मङ्गयर् कोंङ्गैह ळाहु मॅन्न
ॲम्मादर् कोंङ्गैक् किवैयोंप्पन वॅन्ऱॆ रेळै
विम्मा वॅदुम्बा वॅयरामुहम् वॅय्दु यिर्त्ताळ् 982

ओर् चॅम्मल्–एक नायक (के); चॅम्मान्त तॅङ्किन्–ऊँचे बढ़े नारियल के; इळनीरै नोक्कि–कच्चे फलों को देखकर; इवै मङ्कैयर् कोंङ्कैकळ् आकुम्–स्त्रियों के स्तन के समान हैं; ॲन्न–कहने पर; ओर् एऴै–एक स्त्री; ॲ मातर् कोंङ्कैक्कु–किस (पर-) स्त्री के स्तनों के; इवै ओंप्पन–ये समान हैं; ॲन्ऱु–कहकर; वॅतुम्पा–दुखी होकर; विम्मा–सिसककर; मुकम् वॅयरा–स्वेद भरे मुख की होकर; वॅय्तु उयिर्त्ताळ्–गरम निश्वास छोड़ने लगी। ६८२

एक नायक ने ऊँचे एक नारियल के पेड़ पर पुष्ट डाभों को (कच्चे नारियल-फलों को) देखकर अकस्मात कहा कि ये नारी-स्तन के समान हैं।

पास खड़ी रही उसकी नायिका को संशय हो गया कि ये किस नारी के उरोजों की याद कर रहे हैं ? उसका मन ईर्ष्या और दुख से आक्रांत हो गया। सिसकियाँ भरने लगी; उसका मुख पसीने से तर हो गया; और वह गरम निश्वास भरने लगी। ९८२

मैताळ् करुङ्गण्गळ् शिवप्पुऱ वन्दोर् मादु
नॅय्तावु वॅला नॉडुनॅञ्ञु पुलन्दु नित्ऱाळ्
ॲय्दादु नित्ऱ मलर्नोक्कि यॅन्तक्कि दीण्डुक्
कॉय्दीदि यॅन्ऱोर् कुयिलैक्करङ् गूप्पु हित्ऱाळ् 983

नॅय् तावु वेलानॊट्टु—घी लगा भालावाले (सजन) के साथ; नॅञ्चु पुलन्तु नित्ऱाळ्—मन रुष्ट करके जो रही; ओर् मातु—एक स्त्री; मै ताळ् करु कण्कळ्—अंजन लगी अपनी काली आँखों के; चिवप्पु उऱ—लाल बनते; वन्तु—सामने आकर; ॲय्तावु नित्ऱ मलर् नोक्कि—पहुँच के बाहर रहनेवाले एक फूल को देखकर; ओर् कुयिलै—एक कोयल से; ॲन्तक्कु इतु ईण्टु कॉय्तु—मुझे यह अब तोड़कर; ईति—दिला दो; ॲन्ऱु करम् कूप्पुकित्ऱाळ्—कहकर हाथ जोड़ती है (विनय करती है)। ९८३

एक रूठी हुई नायिका की विशिष्ट दशा और व्यवहार देखिये। वह अपने घृतलिप्त भालाधारी वीर नायक से रूठी हुयी थी। उसी मान की स्थिति में वह अपने पति के सामने आकर खड़ी हुयी। उसके अंजनांकित काले नेत्र लाल हो गये थे। उसने एक फूल को देखा जो उसकी पहुँच के ऊपर था और वहाँ रही एक कोयल के सामने हाथ जोड़कर उस कोयल से विनती की कि अभी यह फूल तोड़कर मुझे दो। ९८३

पोरॅन्ऩ वीङ्गुम् पॉरुप्पन्ऩ पॉलङ्गॉ डिण्डोळ्
मारन् ऩनैयान् मलर्कॉय्दिरुन् दानै वन्दोर्
कारन्ऩ कून्दऱ् कुयिलन्ऩवळ् कण्पु दैप्प
आरॅन्ऩ लोडु मनलॅन्ऩ वयिर्त्तु यिर्त्ताळ् 984

ओर् कार् अन्ऩ कून्तल्—एक, मेघ समान कुंतल व; कुयिल् अन्ऩवळ्—पिक-सम (वचन वाली स्त्री) ने; वन्तु—आकर; पोर् ॲन्ऩ—युद्ध का नाम सुनते ही; वीङ्कुम्—फूल उठनेवाले; पॉरुप्पु अन्ऩ—पर्वत-सम; पॉलम् कॉळ् तिण् तोळ्—शोभायुक्त सुदृढ़ कन्धोंवाले; मारन् अनैयान्—कामदेव सदृश (अपने पति की जो); मलर् कॉय्तिरुन्तानै—फूल तोड़ रहा था; कण् पुतैप्प—आँखों को बन्द किया; आर् ॲन्ऩलोटुम्—(तब) उसके 'कौन' पूछते ही; अयिर्त्तु—ठिठककर; अनल् ॲन्ऩ—आग के समान; उयिर्त्ताळ्—लम्बा निश्वास छोड़ा। ९८४

एक नायिका ने, जिसका केश मेघ के समान काला और घना था और बोली कोयल की-सी मधुर थी, आकर अपने नायक की, जिसके कंधे युद्ध का नाम सुनते ही फूल उठनेवाले और पर्वतसम सुदृढ़ थे और जो कामदेव के समान सुन्दर था, (यानी जो साहसी, वीर, सुगठित शरीरवाला

और आकर्षक रूपवान था) आँखें बंद कर दीं। तब वह फूल तोड़ रहा था। उसने पूछा कि कौन है ? इससे नायिका के मन में संशय पैदा हो गया इसलिए गुस्से के साथ वह गरम निश्वास छोड़ने लगी। ९८४

ऊऱ्ऱार् नऱैनाण् मलर्माद रॊरुङ्गु वाशच्
चेऱ्ऱाल् विळैयाद शॆन्दामरैक् कैह णीट्टि
ऎऱ्ऱार्क् कुदवा तिडैयेन्दिन निन्ऱॊ ळिन्दान्
माऱ्ऱा नुदवा नॆडुवच्चयन् पोलॊर् मन्नन् 985

ओर् मन्नन्–एक राजा (नायक); ऊऱ्ऱु आर्–स्रोत-सम बहनेवाले; नऱै नाळ् मलर्–शहद से पूर्ण नवीन फूलों को; मातर्–अपनी दो नायिकाओं; ऒरुङ्कु–एक साथ; वाचम्–सुगन्धित; चेऱ्ऱाल् विळैयात–पंक में जो नहीं उपजे थे उन; चॆन्तामरै कैकळ् नीट्टि–लालकमल से अपने हाथों को बढ़ाकर; एऱ्ऱार्क्कु–माँगनेवाले को; उतवात्–न देकर; माऱ्ऱान्–(जो याचक को) नहीं नकारता; उतवान्–न ही देता; नॆटु वच्चैयन् पोल्–उस बड़े कृपण के समान; इटै–बीच में; एन्तितन्–धारण करके; निन्ऱॊळिन्तान्–खड़ा ही रह गया। ९८५

एक नायक शहद-भरे नवीन पुष्प लेकर अपनी पत्नियों के पास गया। उसकी दोनों पत्नियाँ एक साथ थीं। दोनों ने अपने सुन्दर हाथ, जो वे कमल थे, जो पंक से उत्पन्न नहीं हुए थे (यानी कमल के समान थे पर पंक से उत्पन्न नहीं हुए थे) बढ़ाकर फूल माँगा। नायक असमंजस में पड़ गया और विना किसी को दिये खड़ा ही रह गया। तब वह उस कृपण प्रभु के समान था जो याचक को न 'नाहिं' कहता, न कुछ देता है। ९८५

तैक्किन्ऱ वेनोक् किनडन्नुयि रन्न मन्नन्
मैक्कोण्ड कण्णा ळॆदिर्माऱ्ऱवळ् पेर्वि ळम्ब
मॆय्क्कोण्ड मातन् दलैक्कोण्डिड वॆदुम्बि मॆन्बूक्
कैक्कोण्डु मोन्दा ळुयिर्प्पुण्डु करिन्द दन्ऱे 986

तैक्किन्ऱ वेल्–चुभनेवाले भाले के समान; नोक्किनळ्–आँखोंवाली एक; तन् उयिर् अन्न–अपने प्राण-सम (प्यारे); मन्नन्–राजा (नायक) को; ऎतिर्–अपने सामने; माऱ्ऱवळ् पेर् विळम्प–अपनी सौत का नाम कहते सुनकर; मै कॊण्ट कण्णाळ्–अंजनयुक्त आँखवाली; मॆय् कॊण्ट–सच्चा; मानम् तलै कॊण्टिट–मान सिर पर चढ़ जाने से; वॆतुम्पि–दुखी होकर; मॆन् पू कै कॊण्टु–मृदु सुमन को हाथ में लेकर; मोन्ताळ्–सूंघा; उयिर्प्पु उण्टु–श्वास की हवा लगकर; करिन्ततु–झुलस गया। (अन्ऱे)। ९८६

(इस पद में भी एक नायक की चर्चा है जिसके दो नायिकाएँ हैं।) चुभनेवाले भाले के समान तीक्ष्ण आँखोंवाली एक नायिका के पति ने उसके सामने ही दूसरी नायिका का नाम ले लिया। वह अंजन-लगी आँखोंवाली

रुष्ट हो गयी। मान सिर पर चढ़ गया। उसने एक मृदु सुमन को हाथ में लेकर सूँघा। बस, वह फूल झुलस गया। (इसमें स्त्रीस्वभाव का बहुत ही स्वाभाविक और सरस वर्णन है।)। ९८६

तिण्डो ळरशन् नॉरुवन्कुलत् तेवि मार्दम्
ऑण्डा मरैवाण् मुहत्तुण्मिळि रॉण्ग णॅल्लाम्
कण्डा दरिक्कत् तिरिवान्मदङ् कव्वि युण्ण
वण्डा दरिक्कत् तिरिमामद यानै यॊत्तान् 987

कुलम् तेवि मार्तम्—उच्च कुल की अपनी देवियों के; ऑळ् तामरै—सुन्दर कमल-सम; वाळ् मुकत्तुळ्—मनोरम वदनों में; मिळिर्—विद्यमान; ऑण् कण् ऍल्लाम्—उज्ज्वल आँखें, सभी; कण्टु आतरिक्क—उनको चाव से देखती रहें, ऐसा; तिरिवान्—घूमनेवाला; तिण् तोळ् अरचन् ऑरुवन्—बलिष्ठ भुजावाला एक राजा (नायक); मतम् कव्वि उण्ण—मदनीर पीने के लिए; वण्टु आतरिक्क—भ्रमरों को चाव के साथ मँडराने देते हुए; तिरि—घूमनेवाले; मा मत यानै ऑत्तान्—बड़े मत्तगज के समान रहा। ९८७

एक नायक के कई स्त्रियाँ थीं। वह सब उच्चकुल संभूताएँ थीं। उस पर उन सबको गर्व था। जब वह चलता था तब कमलसम उनके आननों में विद्यमान उनकी भ्रमर-सी आँखें उसको चाव के साथ देखती रहतीं। वह सबल कंधोंवाला नायक उस मत्तगज के समान फिरता था जिसका मदजल पीने की इच्छा से भ्रमर उस पर मँडराते फिरते थे। (नायिकाओं की आँखें भ्रमर हैं और नायक का रूप मदजल है।)। ९८७

सन्दिक् कलावॅण् मदिवाणुद लाड नक्कुम्
वन्दिक्क लाहु मडवाट्कुम् वहुत्तु नल्हि
निन्दिक्क लाहा वुरुवत्तिन निऱ्क मॅन्बूच
चिन्दिक् कलाब मयिलिऱ्कण् शिवन्दु पोऩार् 988

चन्ति—संध्या के; कला वॅण् मति—कलायुक्त श्वेत चन्द्र-सम; वाळ् नुतलाळ्—उज्ज्वल ललाटवाली; नक्कुम्—एक नायिका को; वन्तिक्कल् आकुम्—(उसके चरित्र के कारण) वन्द्य; मटवाट्कुम्—(दूसरी) नायिका को; निन्तिक्कल् आका उरुवत्तिनन्—अनिन्द्य रूपवान नायक; मॅन् पू—(अपने हाथ में रहे) कोमल सुमनों को; वकुत्तु नल्कि—बाँटकर देकर; निऱ्क—तृप्त खड़ा रहा; कण् चिवन्तु—(दोनों) आँखें लाल करके; चिन्ति—फूलों को नीचे डालकर; कलापम् मयिलिन्—कलापी मोर के समान; पोऩार्—झट हटकर चली गईं। ९८८

एक नायक के दो स्त्रियाँ थीं। एक का ललाट संध्याकाल के कलाचंद्र के समान उज्ज्वल तथा मनोरम था। (वह रूपवती थी।) दूसरी अपने पातिव्रत के लिए वन्द्य थी। (यह गुणवती थी।) वह नायक भी लक्षणयुक्त अनिन्द्य रूपवान था। वह अपने हाथ में कोमल फूल ले

आया। उसने उन्हें बराबर-बराबर बाँटकर दोनों के हाथों में दे दिया। (वह सोचता रहा कि हमारे कार्य से दोनों खुश होंगी।) पर दोनों को गुस्सा हो आया क्योंकि हर एक सोचती थी कि नायक हमसे दूसरी से अधिक प्यार करता है। दोनों की आँखें लाल हो गयीं। दोनों झट वहाँ से हट गयीं। (९८५वें पद में 'नायक फूल को अपने हाथ में धरे ही कृपण के समान खड़ा रहा' कहा गया है। यह पद उसकी टीका-सा है।)। ९८८

वन्दॅङ् गुन्दम् मन्नुयि रेयो पिऱिदॊन्ऱो
कन्दन् दङ्गुम् जोर्हुऴल् काणार् कलैपेणार्
अन्दन् दोरुम् मऱ्ऱुहु मुत्तम् मवैपारार्
शिन्दुम् जन्दत् तेमलर् नाडित् तिरिहिन्ऱार् 989

कन्तम् तङ्कुम्–सुगन्ध का आवास; चोर् कुऴल्–बिखरते केश के; काणार्–नहीं देखतीं (सम्हालतीं); कलै पेणार्–(खिसकते) वस्त्र नहीं बचातीं; अन्तम् तोरुम्–सन्धियों में; अऱ्ऱु उकुम्–टूटकर गिरनेवाले; मुत्तम् अवै पारार्–मुक्ताहारों की परवाह नहीं करतीं; तेम् चिन्तुम् चन्तम् मलर्–शहद की बूँदें टपकानेवाले सुन्दर फूल; नाटि–खोजते हुए; ॲङ्कुम् वन्तु–सर्वत्र आकर; तिरिकिन्ऱार्–(नायिकायें) घूमती-फिरती हैं; तम् मन् उयिरेयो–(फूल) अपने स्थायी प्राण हैं; पिऱितु ऒन्ऱो–दूसरी वस्तु है। ९८९

पुष्पचयन में उन स्त्रियों का प्रेम कितना रहा। स्वाभाविक सुगंधि से युक्त लट खुलकर बिखर रहा था; उन्होंने उसको फिर से बाँधने की कोशिश नहीं की। वस्त्र खिसक रहे थे, उसको नहीं सम्हाला। मुक्ताहार की लड़ियाँ, संधि-स्थल पर टूटकर गिरने लगीं, उनकी परवाह नहीं की। सुन्दर सुगंधित फूलों को खोजते हुए वे इधर-उधर भटक रही थीं। क्या फूल उनके प्यारे प्राण थे? या अन्य कोई वस्तु जो उनको उतनी ही प्यारी थी? ९८९

याऴॊक् कुञ्जॊर् पॊन्नने याळो रिहन्मन्नन्
ताऴत् ताऴा डाऴ्न्द मनत्ता डळर्हिन्ऱाळ्
आऴत् तुळ्ळुङ् गळ्ळ निनैप्पा ळवनिन्ऱ
शूऴर् केदन् किळ्ळैयै येवित् तॊडर्वाळुम् 990

याऴ् ऒक्कुम् चॊल्–वीणानाद-सी बोलीवाली; पॊन् अनैयाळ्–लक्ष्मी-समान एक नायिका; ओर इकल् मन्नन्–अनुपम वीर नायक के; ताऴ्–(माननिवारणार्थ) विनय करने पर भी; ताऴाळ्–मानविमुक्त नहीं हुई; ताऴ्न्त मनत्ताळ्–(उसके चले जाने पर) झुका मनवाली होकर; तळर्किन्ऱाळ्–पछताने लगी; आऴत्तु उळ्ळुम्–मन की गहराई में; कळ्ळम् निनैप्पाळ्–कपट सोचती हुई; अवन् निन्ऱ–जहाँ वह रहा (उस); चूऴलकु–स्थान को; तन् किळ्ळैयै एवि–अपने शुक को भेजकर; तॊटर्वाळुम्–उसके पीछे-पीछे गई, वह और। ९९०

एक मानिनी ने, जो लक्ष्मी के समान रूपवती थी और जिसकी बोली वीणा के स्वर के समान थी, जब उसके पति ने मिन्नत की तब भी मान नहीं छोड़ा। वह बेचारा चला गया। फिर वह चुप नहीं रही। उसके मन की गहराई में कपट था, संदेह था। इसलिए उसने शुक को उसके पीछे भेजा और वह भी उसके पीछे चली गयी। (यहाँ से अलग-अलग स्त्री-पुरुषों का विवरण है। इसलिए पूर्ण विराम का क्रिया पद नहीं देकर-जानेवाली और-कहा गया है।) । ९९०

अन्दा	राहत्	तैङ्गणै	नूऱा	यिरमाहच्
चिन्दा	निन्ऱ	शिन्दयि	नान्शॅय्	हुवदोरान्
मन्दा	रङ्गोॅण्	डीहुदि	योमा	दवियॅन्ऱोर्
शन्दार्	कोॅङ्गैत्	ताळ्हुळ्	लाळ्पाऱ्	ऱळर्वानुम् 991

अम्तार् आकत्तु–सुन्दर मालाभूषित वक्ष पर; ऐङ्कणै–(मन्मथ के) पंच बाण; नरु आयिरम् आक–बहुत अनेक; चिन्ता निन्ऱ–आकर लगे, उससे; चिन्तैयितान्–(कामविचलित) मनवाला; चॅय्कुवतु ओरान्–क्या करना है, यह नहीं जानता; मातवि–माधवी लता; मन्तारम् कोॅण्टु ईकुतियो–मन्दार ला दोगी क्या; ॲन्ऱु–कहता हुआ; ओर् चन्तु आर्–अनुपम चन्दनचर्चित; कोॅङ्कै–स्तनोंवाली; ताळ् कुळ्ललाळ्–लम्बी लटकनेवाली केशलता की; पाल्–(स्त्री) पर; तळर्वानुम्–(प्रेम के कारण) म्लान होनेवाला, और । ९९१

एक मनोरम मालाधारी नायक के वक्ष पर मन्मथ के पंचशर (पंचशर–आम्र-मोहन की दशा देनेवाला; अशोक-उन्माद की; कमल-तपन की; नीलोत्पल-शोषण की; और नवमल्लिका-द्रवण की दशा देनेवाला) शतसहस्र (असंख्यक) रूप में लग गये। उसका मन कामविचलित हुआ। "अब क्या किया जाय,?" यह निश्चय नहीं कर पाया। एक माधवी लता से पूछने लगा कि हे माधवी लता ! क्या तुम मंदार पुष्प लाकर दे सकोगी ? उसके मन में चंदनचर्चित स्तनों और लंबी लटकती वेणीवाली का स्मरण रहा और वह स्मरण उसे सता रहा था। ऐसा वह और । ९९१

नाडिक्	कोॅण्डाळ्	कुऱ्ऱ	नयन्दाण्	मुनिवाऱाळ्
ऊडिक्	काट्टक्	काणु	नलत्ता	ळुडनिल्लान्
तेडित्	तेडिच्	चेर्त्त	शॆळुम्बू	नरुमालै
शूडिच्	चूडिक्	कण्णडि	नोक्कित्	तुवळ्वाळुम् 992

ऊटि–रूठकर; काट्ट–(पति का) मनाना; काणुम्–देखना; नलत्ताळ्–चाहनेवाली एक ने; कुऱ्ऱम्–(अपने पति का) कोई दोष; नयन्ताळ् नाटि कोॅण्टाळ्–जान-बूझकर कल्पित कर लिया; मुनिवु आऱाळ्–कोप नहीं छोड़ा; उटन् निल्लान्–उससे वह संग छोड़ चला गया; तेटि तेटि चेर्त्त–(तब) उसके स्थान-स्थान पर

ढूंढकर लाये; चॆळ्ळुम् पू–पुष्ट फूलों की; नरु मालै–सुवासित माला को; चूटि चूटि–विविध प्रकार से पहन-पहनकर; कण्णटि नोक्कि–आइना देखती और; तुवळ्वाळुम्–मलिन होती जो —वह और। ९९२

एक नायिका की यह इच्छा हुयी कि मैं मान करूँ और वे, मेरे स्वामी, मनायें और उसका मजा लूटूँ। उसने कोई अपराध कल्पित कर उसपर लगाया और वह रूठने लगी। नायक ने मनाया पर वह रूठन को लंबा करती गयी। उसने रोष नहीं छोड़ा तो वह नायक चला गया। तब उसे बहुत पछतावा हुआ और जो मालाएँ उसने बड़े परिश्रम से अनेक स्थानों पर जाकर फूल चुन लाकर, बनायीं और अपनी प्रेयसी को पहनायी थीं उसको वह उठाती, पहनती फिर निकालती फिर दूसरे ढंग से पहनती और आइने में देखती— ऐसा करती हुई म्लान हो रही। वह स्त्री और। ९९२

मऱलिक् कूणा डुङ्गदिर् वेला ऩिडैयेवन्
दुऱविक् कोलम् पॆऱ्ऱिल दॆऩ्ऱा लुडल्वाळ्विप्
पिऱविक् केला दॆऩ्ॉय्व दिप्पे रणियॆऩ्ऩा
विऱलिक् कीवा ळोत्तिळै यॆल्लाम् विडुवाळुम् 993

इ कोलम्–यह साज-शृंगार; मऱलिक्कु–यम के लिए; ऊण् नाट्टम्–आहार खोजकर देनेवाले; कतिर् वेलात्–चमकदार भाले के स्वामी (मेरे नायक); इटैये वन्तु–अभी आकर; उऱ पॆऱ्ऱिलतु–मुझसे मिलें, यह सौभाग्य नहीं दिला सका तो; इ पिऱविक्कु–इस जन्म में; उटल् वाळ्वु–इस शरीर के साथ जीना; एलातु–ठीक नहीं होगा; इ पेर् अणि–यह असाधारण अलंकार; चॆय्वतु ऎऩ्–करेगा क्या; ऎऩ्ऩा–कहकर; विऱलिक्कु ईवाळ् ऒत्तु–गानेवाली वन्दिनी को दे देगी, ऐसा; इऴै ऎल्लाम्–आभरण, सभी को; विटुवाळुम्–निकालनेवाली और। ९९३

एक नायिका ने खूब अपने को अलंकृत कर लिया। सोचने लगी कि यम की, माँस को खोज करके दिलाकर सहायता करनेवाला भाला रखनेवाले मेरे स्वामी अब आकर मुझसे नहीं मिलेंगे तो इस साज-शृंगार का लाभ क्या रहा? यह सौभाग्य नहीं प्राप्त होगा तो इस शरीर में जीना निरर्थक है! यह सोचकर वह अपने आभरण सब निकालने लगी मानो उसने उन सबको वंदिनी गायिका ("विऱलि") को दे देने का निश्चय कर लिया हो। ९९३

तऩ्ऩैक् कण्डाण् मॆऩ्ऩडै कण्डा डमर्पोलत्
तुऩ्ऩक् कण्डा डोळ्मै यॆऩ्ऱा डुणैयॆऩ्ऱाळ्
उऩ्ऩैक् कण्डा रॆळ्ळुवर् पॊल्ला दुडुनोयॆऩ्
ऱऩ्ऩक् कऩ्ऩिक् काडै यळिप्पा ऩमैवाळुम् 994

तन्नै कण्टाळ्–हंस को उसने देखा; मॅल् नटै कण्टाळ्–उसकी मन्द चाल देखी; तमर् पोल–अपनों के समान; तुन्नल–पास आते; कण्टाळ्–देखा; तोळुमै ॲन्राळ्–'अपनी सखी' समझा; तुणै ॲन्राळ्–तुम मेरी साथिन हो, कहा; उन्नै कण्टार् ॲळ्ळुवर्–तुमको देखनेवाले हँसी करेंगे; पॊल्लातु–(यह, नंगा रहना) बुरा है; नी उटु ॲन्रु–तुम पहन लो कहकर; अन्नम् कन्निक्कु–उस हंस-कन्या को; आटै अळिप्पान्–वस्त्र देने; अमैवाळुम्–जो उद्यत हुई, वह और। ९९४

एक नायिका ने एक मराली को देखा, उसकी चाल देखी और अपने पास उसको आते देखकर समझा कि वह मेरी मित्रता चाहती है। उसने उसको अपनी सखी मान लिया। फिर कहने लगी कि तुम नंगी हो, लोग देखेंगे तो हँसी उड़ायेंगे। नंगा रहना भी मेरे ऊपर अपराध है! इसलिए यह वस्त्र पहन लो। यह कहकर वह उस मराली को वस्त्र देने को उद्यत हो गयी। ऐसी एक नायिका, और। ९९४

पाहॊक् कुञ्जॊन् नुण्गलै याडन् पडरल्हुल्
आहक् कण्डो राडर वामॅन् ऱयनण्णुम्
तोहैक् कञ्जिक् कॊम्बि नॊदुङ्गित् तुणरीन्ऱ
शाहैत् तङ्गैक् कण्गळ् पुदैत्ते तळर्वाळुम् 995

पाकु ऒक्कुम् चॊल्–चाशनी-समान मधुर बोलीवाली; नुण् कलैयाळ् तन्–महीन वस्त्रधारिणी एक के; पटर् अल्कुल–विस्तृत जघन प्रदेश को; आक कण्टु–सीधे देखकर; ओर् आटु अरवु आम्–एक फन फैलाया सर्प है; ॲन्रु–कहकर; अयल् नण्णुम्–पास आनेवाले; तोकैक्कु अञ्चि–मोर से डरकर; कॊम्पिन् ऒतुङ्कि–पुष्पलता के पास छिपी; तुणर् ईन्ऱ चाकैत्तु–फूलों का गुच्छा फैला जैसा जो रहीं; अङ्कै–उन हथेलियों से; कण्कळ् पुतैत्तु–आँखें मूँदकर; तळर्वाळुम्–म्लान होनेवाली और। ९९५

चाशनी समान मधुर बोलीवाली एक नायिका महीन वस्त्र पहने हुए थी। उसका विशाल वराँग दिखाई दे रहा था। एक मोर ने उसे देखकर समझ लिया कि एक सर्प फन फैलाये हुए नाच रहा है। वह उसे पकड़ने उसके पास जाने लगा तो वह नायिका डरकर एक पुष्पलता के पीछे छिप गयी। उसने डालों सहित पुष्पलता समान अपनी हथेलियों से आँखें मूँद ली। घबड़ानेवाली वह, और। ९९५

वम्बिऱ् पॊङ्गुङ् कॊङ्गै शुमक्कुम् वलियिन्ऱिक्
कम्बिक् किन्ऱ नुण्णिडै नोवक् कशिवाळुम्
पॅम्बॊऱ् किण्णम् मॅल्विर ऱाङ्गिप् पयिल्हिन्ऱ
कॊम्बिऱ् किळ्ळैप् पिळ्ळै यॊळिक्कक् कुलैवाळुम् 996

वम्पिल् पॊङ्कुम्–अंगिया के अन्दर से (न समाकर) उभरनेवाले; कॊङ्कै–उरोजों का भार; चुमक्कुम् वलि इन्ऱि–ढोने की शक्ति न रखकर; कम्पिक्किन्ऱ–

कम्पनशील; नुण् इटै नोव–क्षीण कटि के दुखने से; कचिवाळुम्–स्वयं दुख उठाने वाली, और; किळळै पिळळै–शुक शावक के; पयिल्किनृर् कोम्पिल्–सटी रह शाखाओं में; ऑळिक्क–छिपने से; पचुमै पॉन् किण्णम्–चोखे स्वर्ण के कटोरे को मॅल् विरल् ताङ्कि–कोमल हाथ में ढोती हुई; कुळैवाळुम्–लोचभरी वाणी में पुकारने वाली, और। ९९६

एक स्त्री है जिसके उरोज अंगिया के अन्दर नहीं समाते। उनका भार वहन करने में असमर्थ उसकी कमर दुखती है। और एक स्त्री है जो हाथ में स्वर्ण के कटोरे में शुक का आहार लिए हुए उसको आतुरता से बुला रही है और वह शुक घनी पुष्पशाखाओं में छिपा हुआ है। ९९६

पॉन्ने	**तेने**	**पूमह**	**ळेका**	**ऍन्नैयॅन्नात्**
तन्ने	**रिल्ला**	**नङ्गॉरु**	**कॉय्पून्**	**दळैमूळ्ह**
इन्ने	**यॅन्नैक्**	**काणुदि**	**नीयॅन्**	**ऱिहलित्तन्**
नन्नी	**लक्कण्**	**कैयिन्**	**मऱैत्ते**	**नहुवाळुम् 997**

तन् नेर् इल्लान्–अपनी सानी न रखनेवाला एक नायक; पॉन्ने–स्वर्ण (समाना !); तेने–शहद; पू मकळे–कमलभवा लक्ष्मी; ऍन्नै काण् ऍन्ना–मुझे देखो कहकर; अङ्कु–वहाँ; ऑरु कॉय् पू तळै–चयनयोग्य कोमल पल्लवों से भरे एक स्थान में; मूळ्क–छिप गया, तब; इकलि–रुष्ट होकर; इन्ने–अभी; नी ऍन्नै काणुति–तुम मुझे ढूँढ पकड़ो; ऍन्रु–कहकर; तन् नल् नीलम् कण्–अपनी सुन्दर नीलोत्पल-सी आँखों को; कैयिन् मऱैत्तु–हाथों से मूंदकर; नकुवाळुम्–हँसनेवाली और। ९९७

आत्मोपम एक वीर ने अपनी प्रेयसी को स्वर्ण, शहद आदि कहकर संबोधित किया और 'मुझे ढूँढ लो' कहकर घने झुरमुट में जाकर छिप गया। उसकी प्रेयसी उससे सहमत नहीं हुयी। उसने कहा कि तुम मुझे ढूंढकर पहचानो ! यह कहकर उसने अपनी नीलोत्पलसम आँखें अपने हाथ से मूँद ली। फिर वह हँसी। ऐसी एक और। (आँखें मूँद लेने से अदृश्य हो रहेगी— यह सोचना उसकी नादानी है और वह नादानी रसीली है !)। ९९७

विल्लिऱ्	**कोदै**	**नाणुऱ**	**मिक्को**	**निहलङ्गम्**
पुल्लिक्	**कॉण्ड**	**तामरै**	**मॅन्बू**	**मलर्ताङ्गि**
अल्लिऱ्	**कोदै**	**मादर्**	**मुहमा**	**मरविन्दच्**
चॅल्वक्	**कानिऱ्**	**चॅङ्गदि**	**रॅन्नत्**	**तिरिवानुम् 998**

मिक्कोन्–अतिश्रेष्ठ नायक; विल्लिल् नाण् कोतै उऱ–धनुष की डोरी (बायें हाथ के) हस्तत्राण पर लेकर; इकल् अङ्कम्–बलिष्ठ दाहिने हाथ पर; पुल्लिक् कॉण्ट–शोभित; तामरै मॅन् पू मलर् ताङ्कि–कमल का कोमल फूल लेकर; अल्लिल् कोतै–अन्धकार-सम (काले) केशवाली; मातर्–स्त्रियों के; मुकम् आम्–मुखरूपी;

वॅल्वम् अरविन्तम् कात्तिल्—पुष्ट कमलों के वन में; चॅम् कतिर् अन्न—सुन्दर किरणमाली के समान; तिरिवात्तुम्—फिरता है, वह, और। ६६८

एक नायक ने डोरी-चढ़ा धनुष बायें हाथ में लिया। बायें हाथ में चमड़े का दस्ताना था। दायें हाथ में एक सुन्दर कमल का फूल ले लिया। वह छैला स्त्रियों के मध्य सूर्य के समान घूम रहा था जिसको देखकर स्त्रियों के कमलमुख खिल उठे। उन स्त्रियों का केश अंधेरे के समान काला था। ९९८

शोलैत्	**तुम्बि**	**मॅन्गुळ**	**लूदत्**	**तॉडैमेवुम्**
कोलैक्	**कॉण्ड**	**मन्मद**	**वायन्**	**कुऱियुय्प्प**
नीलत्	**तुणगण्**	**मङ्गयर्**	**शूळ**	**निरैयाविन्**
मालैप्	**पोदिन्**	**माल्विडै**	**यॅन्न**	**वरुवारुम् 999**

मालै पोतिल्—सायंकाल में; चोलै तुम्पि—उपवन के भ्रमर; मॅन् कुळल् ऊत—हल्की बांसुरी सी ध्वनि करते हैं; तॉटै मेवुम्—चढ़ाने योग्य; कोलै कॉण्ट—तीरों को हाथ में लिए हुए; मन्मतन् आयन्—मन्मथ-ग्वाला; कुऱि उय्प्प—संकेत स्थलों को भिजवाता है; नीलम् उण् कण् मङ्कैयर्—नीलोत्पल सी आँखवाली नायिकाएँ; निरै आविन् चूळ—समूहवद्ध गायों से घिरकर; माल् विटै अॅन्न—शानदार ऋषभों के समान; वरुवारुम्—आनेवाले (नायक), और। ६६६

(ग्वाले लोग शाम को बांसुरी बजाकर गायों और बछड़ों को इकट्ठा करते हैं। पुष्पालंकृत बेंत का प्रयोग करके उन्हें उनके स्थानों को भेज देते हैं। इस पद में मन्मथ को ग्वाला, स्त्रियों को गायें, पुरुषों को बैल और भ्रमरों को बांसुरी बनाकर कवितापूर्ण प्रकार से बताया गया है कि—) शाम का समय आया। उद्यान में भ्रमरों ने बांसुरी का-सा नाद किया। मन्मथरूपी ग्वाले ने, जिसके हाथ में शर सन्नद्ध थे; स्त्रियों और पुरुषों को उनके स्थानों को जाने के लिये प्रेरित किया। तब नायक उत्तम ऋषभों के समान जाने लगे और उनको घेरकर नीलोत्पल सदृश आँखोंवाली स्त्रियाँरूपी गायें चलीं। (लोगों के मनों में कामेच्छा पैदा हुई और वे उचित स्थानों को जाने लगे।) ऐसे पुरुष और। ९९९

शॅय्यिड्	**कॉळ्ळुन्**	**दॅळ्ळमु**	**दच्चॅञ्**	**जिलैयॉन्ऱुम्**
कैयिड्	**पॅय्यिड्**	**कामनु**	**नाणुङ्**	**गविन्नार्तम्**
मैयड्	**पेदै**	**मादर्**	**मिळऱ्ऱुम्**	**मळ्लैच्चॉल्**
दॅय्वप्	**पाडड्**	**चॉऱ्कलै**	**वेण्डित्**	**तिरिवारुम् 1000**

चॅय्यिल् कॉळ्ळुम्—खेतों से ग्रहीत; तॅळ् अमुतम्—स्वच्छ अमृत के समान; चॅम् चिलै ऑन्ऱुम्—रस भरे सुन्दर (इक्षु के) धनुष को ही (केवल); कैयिल् पॅय्यिन्—हाथ में दे दिया तो; कामतुम् नाणुम्—कामदेव को भी लजानेवाली; कविन्नार्—सुन्दरता रखनेवाले; तम् मैयल् पेतै मातर्—अपनी प्यारी अबोध स्त्रियों की; मिळऱ्ऱुम्—

तुतलाती; मळ्ळै चॉल्-मधुर बोली रूपी; चॉल्-प्रथित; तॅय्वम् पाटल् कलै वेदवचन को; वेण्टि-सुनने की चाह लेकर; तिरिवारुम्-भटकते हैं, वे और। १००

(इस पद में कुछ अन्य पुरुषों का चित्रण है।) कुछ पुरुष बड़े ही सुन्दर हैं। वे स्त्रियों की मधुर तुतली बोली सुनने की चाह लेकर जा रहे हैं। उनमें और मन्मथ में इतना ही भेद है कि मन्मथ के हाथ में ईख का जो खेतों में पैदा होता है और जिसमें अमृत-सा रस है, धनु है और इनके हाथ में वह नहीं है। बल्कि इनके हाथ में भी धनु दिया जाय तो वे मन्मथ से भी बढ़कर सुन्दर लगेंगे। मन्मथ वेदगान सुनना चाहता है; पर इनके लिए अपनी अबोध स्त्रियों की मधुर अस्पष्ट बोली ही वेदगान है! वे उसी को सुनने की चाह लेकर चल रहे हैं। ऐसे, और। १०००

ऊक्क मुळ्ळत् तुडैय मुनिवराल्, काक्क लावदु कामनर्गै विल्लॅनुम्
वाक्कु मात्तिर मल्लदु वल्लियिऱ्, पूक्कॉय् वाळ्पुरु वक्कडै पोदुमे 100

उळ्ळत्तु-मन में; ऊक्कम् उटैय मुनिवराल्-(तपस्या में) साहस रखनेवा मुनियों से; कामन् कै विल्-कामदेव के हाथ के धनुष के कार्य से; काक्कल् आव ॲन्नुम्-अपने को बचाने का; वाक्कु मात्तिरम् अल्लतु-केवल वचन छोड़कर (का में नहीं है); वल्लियिन्-लता के समान; पू कॉय्वाळ्-(एक) पुष्पचयन करनेवाल की; पुरुवम् कटै (ए)-भौंहों का कोना ही; पोतुम्-(मुनि के धैर्य को तोड़ने के लिए पर्याप्त है। १००१

कहा जाता है कि तपोत्साही मुनि मन्मथ के धनु के आघात से बच सकते हैं, पर यह कथनमात्र ही है। मन्मथ के धनु की बात क्या पुष्पचयन करनेवाली एक सुन्दरी की भौंह का कोना ही पर्याप्त है, उनके मन को अधीर करने के लिए। (मुनियों की बात ऐसी है तो साधारण गृहस्थ का मन स्त्री-प्रेम में चंचल हो— यह स्वाभाविक ही है। इसको अपराध या हेय मानना ठीक नहीं है। यह कवि की अपनी सफ़ा है।)। १००१

नाऱु पूङ्गुळ नन्नुदल् पुन्नैमेल्, एऱि नान्मनत् तुम्बर्शॅन् ऱेऱिनाळ्
ऊऱु ञानत् तुयर्न्दव रायिनुम्, वीऱु शेर्मुलै मादरै वॅल्वरो 100

नाऱु पू कुळल् नल् नुतल्-सुवासित पुष्प से अलंकृत केश और सुन्दर ललाटवाल एक; पुन्नै मेल् एऱितान्-"पुन्नै" के वृक्ष पर जो चढ़ा; मनत्तु उम्पर चॅन्ऱु उसके मन के ऊपर जाकर; एऱिनाळ्-चढ़ बैठी; ऊऱुम् ञानत्तु-उत्तरोत्तर विकासशी ज्ञान के; उयर्न्तवर् आयिनुम्-उत्कृष्ट भी हों; वीऱु चेर् मुलै-गर्वोन्नत उरोजों की मातरै-स्त्रियों पर; वॅल्वरो-विजय पावेंगे क्या। १००२

एक प्रेमी कदंब (पुन्नै) के पेड़ पर चढ़ा। सुवासपूर्ण केश औ सुन्दर ललाटवाली उसकी प्रेयसी उसके मन पर चढ़कर बैठ गयी। (यानी उसके मन में प्रेयसी का स्मरण रहा और वह उसे प्रेरित कर रहा था।

इसमें क्या आश्चर्य है ? उत्तरोत्तर बढ़नेवाले ज्ञान के साधु भी तो गर्वोन्नत स्तनों के आकर्षण को जीत नहीं पाते ! । १००२

शित्तैयिऩ् मेलिरुन् दानुरुत् तेवराल्, वत्तैय वुम्मरि याळ्वत्तप् पित्तलै
नित्तैवु नोक्कमु नीक्कलन् कैहळाल्, नत्तैयु नाण्मुरि युङ्गॊय्दु नल्हिऩाऩ् 1003

चित्तैयिन् मेल् इरुन्तान्—डाली पर बैठा था जो वह; उरु—(जिसका) रूप; तेवराल् वत्तैय अरियाळ्—देव भी खींच नहीं सकते, ऐसी सुन्दरी के; वत्तप्पित् तलै—लावण्य के; नित्तैवुम्—स्मरण और; नोक्कमुम्—(उसपर गई) दृष्टि को; नीक्कलन्—नहीं हटा सका; कैकळाल्—अपने हाथों से; नत्तैयुम्—कलियों और; नाळ् मुऱियुम्—नवीन पल्लवों को; कॊय्तु नल्कितान्—तोड़कर देता रहा। १००३

एक नायक पुष्प-चयन के लिए डाल पर चढ़ा। वहाँ भी, देवों से भी चित्रित करने के लिए जो कठिन हो, ऐसे मनोरम रूपवाली उसकी प्रिया का रूप न उसके स्मरण से हटा, न आँखों के सामने से। इसलिए वह फूल छोड़कर कलियों और नवीन पल्लवों को तोड़कर देता रहा। १००३

वण्डु वाळ्कुऴ लाण्मुह नोक्कियोर्, तण्डु शेरपुयत् तान्ऱडु माऱिऩाऩ्
उण्डु कोबमॆन् ऱुळ्ळत् तुणर्न्दवळ्, तॊण्डै वायिर् ऱुडिप्पॊऩ्ऱु शॊल्लवे 1004

ओर् तण्टु चेर् पुयत्तान्—दण्ड (आयुध) के समान भुजावाला एक; वण्टु वाळ्—जिसपर भ्रमर मँडरा रहे थे उस; कुऴलाळ् मुकम्—केशवाली का मुख; नोक्कि—देखकर; उळ्ळत्तु—उसके मन में; कोपम् उण्टु—कोई गुस्सा है; ऎन्ऱु—यह; अवळ् तॊण्टै वायिल्—उसके बिंबाधर के; तुटिप्पु ऒन्ऱु चॊल्ल—फड़कने के संकेत से; उणर्न्तु—जानकर; तटुमाऱितान्—गड़बड़ाने लगा। १००४

दंडायुध समान भुजावाला एक नायक, अपनी प्रिया का, जिसके केश पर भ्रमर मँडरा रहे थे, मुख देखकर, उसके अधरों के फड़कने की रीति से यह जानकर कि वह किसी कारण रुष्ट है, घबड़ाने लगा। (वह शायद पुष्प आदि उपहार किसी दूसरी को देकर रिक्तहस्त इसके सामने प्रेम की याचना ले आया था !) । १००४

एयुन् दन्मय रिव्वहै यारॆलाम्, तूय वॊण्मलर्च् चोलैत् तुऱुमलर्
वेयुज् जॆय्है वॆऱुत्तनर् वॆण्डिरै, पायुन् दीम्बुनऱ् पण्णैशॆन् ऱॆय्दिनार् 1005

एयुम् तन्मैयर्—(ऐसे मनोरंजनों में) लगे रहे; इ वकैयार् ऎल्लाम्—ऐसे स्त्री, पुरुष सब; तूय ऒळ्—पवित्र और प्रकाशमान (मन को आनन्द देनेवाले); मलर् चोलै—पुष्पोद्यान में; तुऱुम् मलर—घनी पुष्प मंजरियों को; वेयुम् चॆय्कै—(चयन कर) पहनने के काम से; वॆऱुत्तनर्—ऊबकर; वॆण् तिरै पायुम्—श्वेत लहरें जिसमें लहर रही थीं उस; तीम् पुनल् पण्णै—सुखमय जल में क्रीडा चाहकर; चॆन्ऱु ऎय्तितार्—(जलाशयों में) जा पहुँचे। १००५

इस तरह पुष्प-चयन के मनोरंजन में पुरुष और स्त्रियाँ लगी रहीं। उस पवित्र और मन को आनन्द का प्रकाश देनेवाले उद्यान में पर्याप्त समय व्यतीत करने के पश्चात उनका मन पुष्प-चयन-धारण के काम से उचट गया। तब वे जलाशयों में जाकर जल-क्रीडा करने की इच्छा से वहाँ से हटे और तीरों पर लहरें मारते रहनेवाले सरोवरों में गये। १००५

16. नीर् विळैयाट्टुप् पडलम् (जल-क्रीडा पटल)

पुन्नैमलर्त् तडङ्गणोक्किप् पूशल्वण् डार्त्तुप् पोङ्ग
विन्नैयरु तुऱक्क नाट्टु विण्णवर् कणमु नाण
अनहरु मणङ्ग नारु मम्मलर्च् चोलै निन्ऱुम्
वनहरि पिडिह ळोडुम् वरुवन पोल वन्दार् 1006

विन्नै अऱु तुऱक्कम् नाटु—कर्म-मुक्ति के स्वर्गलोक के; विण्णवर् कणमुम्—देवगण भी; नाण—लज्जित हों, ऐसा; अनकरुम्—अनघ (सुयोग्य) पुरुष; अणङ्कु अन्नारुम्—देवांगनाओं के समान स्त्रियाँ; अ मलर् चोलै निन्ऱुम्—उस पुष्पोद्यान से; वनम् करि—जंगल के हाथी; पिटिकळोटुम्—हथिनियों के साथ; वरुवन पोल—जो आते हैं उनके समान; पूचल् वण्टु—गुँजार करने के स्वभाववाले भ्रमरों के; आर्त्तु पोङ्क—गुँजार करते हुए उठते; पुन्नै मलर् तटङ्कळ्—अलंकृत करनेवाले फूलों से भरे तडागों को; नोक्कि—उद्देश्य करके; वन्तार्—आये। १००६

(पिछले अध्याय के अन्त में कही हुयी बात इस पद में अनुवाद और विस्तार से कही गयी है।) अनघ (पुण्यात्मा) पुरुष लोग और सुरबाला-सम स्त्रियाँ, सब पुष्पोद्यान से, जहाँ फूल तोड़ने आदि मनोरंजन के काम में लगे रहे, वहाँ से निकलकर सरों पर आये, जिनको सुन्दर सुमन समूह और सुन्दर बना रहे थे। उन लोगों को देखकर पाप-विमुक्त-देवलोक के वासी भी लज्जित होते थे। (पुण्यात्मा की बात इसलिए की गयी कि देवलोक के वासी पाप-विमुक्त हैं। उनसे बढ़कर श्रेष्ठ कहलानेवाले लोगों को 'अनघ' रहना आवश्यक था।) वे जंगली हथिनियों और उनके साथ आने वाले हाथियों के समान लगते थे और उनके आने पर मधुकर गुंजार करते हुए उठे। १००६

अङ्गवर् पण्णैनन्नी राडुवा नमैन्द तोऱ्ऱम्
गङ्गैवार् शडैयो नन्न मामुनि कन्नल मेन्नाळ्
मङ्गैमार् कूट्टत्तोडुम् वानवर्क् किऱैवन् शॅल्वम्
पॊङ्गुपार् कडलुट्पोहुन् दोऱ्ऱमे पोनऱ दन्ऱे 1007

अङ्कु अवर्—वहाँ (आकर) वे; पण्णै नल् नीर् आटवान् अमैन्त तोऱ्ऱम्—क्रीडा के साथ निर्मल जल में स्नान करने को उद्यत हुए, वह दृश्य; मेल् नाळ्—प्राचीन-काल में; कङ्कै वार् चटैयोन् अन्न—गंगा-सहित लम्बी जटावाले (रुद्र) सदृश;

मा मुति–बड़े मुनि (दुर्वासा) के; कतल–कोप करने से; वानवर्क्कु इरैवन्–देवेन्द्र की; चॅल्वम्–निधियाँ; मङ्कैमार् कूट्टत्तोटुम्–अप्सराओं और अन्य देवांगनाओं के समूहों के साथ; पॉङ्कु पाल् कटलुळ्–सब निधियों से भरे क्षीरसागर में; पोकुम् तोऱ्ऱमे–जो गईं उस दृश्य ही के; पोन्ऱतु–समान था; (अन्ऱे)। १००७

उनके उधर आकर जलक्रीडा करने के लिए उद्यत होने का वह दृश्य देवेन्द्र की निधियों और देवांगनाओं के, गंगाधर शिवजी सदृश ऋषि दुर्वासा के शाप के कारण सर्वसमृद्ध क्षीरसागर में प्रवेश करने के समय के दृश्य के ही समान था। (यह घटना तब घटी थी जब दुर्वासा ने इन्द्र को शाप दिया था। दुर्वासा ने लक्ष्मीदेवी की प्रसादरूप प्राप्त माला को देवेन्द्र को भेंट की और उसने उसे अपने हाथी पर डाला। हाथी ने उसे अपने पैरों के नीचे डालकर कुचल दिया। दुर्वासा को देवेन्द्र का यह धनमदमत्त अभद्र व्यवहार बुरा लगा।)। १००७

मैयवाङ् गुवळै यॅल्ला मादरकण् मलर्हळ् पूत्त
कैयवा मुरुवत् तार्दङ् गण्मलर् कुवळै पूत्त
शॅय्यता मरैहळॅल्लान् दॅरिवयर् मुहङ्गळ् पूत्त
तैयलार् मुहङ्ग ळॅल्लान् दामरै पूत्त वन्ऱे 1008

मैय आम् कुवळै ॲल्लाम्–काले रंग के कुवलय सब; मातर् कण् मलर्कळ् पूत्त–स्त्रियों के अक्षसुमनों के समान फूले; कै अवाम्–(सामुद्रिका-) लक्षण के अनुसार सृष्ट; उरुवत्तार् तम्–रूपवाली उन स्त्रियों के; कण् मलर्–अक्षसुमन; कुवळै पूत्त–उन कुवलयों के समान शोभे; चॅय्य तामरैकळ् ॲल्लाम्–लाल कमल सब; तॅरिवैयर् मुकङ्कळ् पूत्त–उन स्त्रियों के मुखों के समान फूले; तैयलार् मुकङ्कळ् ॲल्लाम्–दयिताओं के मुख, सब; तामरै पूत्त–लालकमल के समान शोभे; (अन्ऱे)। १००८

नीले रंग के कुवलय पुष्प स्त्रियों की आँखरूपी पुष्पों के समान खिले थे; और सुलक्षणा स्त्रियों के नेत्र इन कुवलय पुष्पों के समान शोभायमान थे। सरोवर के लाल कमल के फूल उन दयिताओं के मुखों के समान खिले थे और उन स्त्रियों के मुख उन लाल कमलों के समान प्रफुल्ल थे। (सब फूल ही फूल हो गये।)। १००८

वण्डुणक् कमळुञ् जुण्णम् वाशनॅय् नानत् तोडुम्
कॉण्डॅदिर् वीशु वारुङ् गोदैहॉण् डोच्चु वारुम्
तॉण्डैवाय्प् पॅय्द तूनीर् कॉळुनर्मेऱ् ऱूहिन् ऱारुम्
पुण्डरी हक्कै कूट्टिप् पुनन्मुहन् दिऱैक्किन् ऱारुम् 1009

वण्टु उण–भ्रमर आकर चूस लें; कमऴुम्–ऐसा, सुवासित; चुण्णम्–सुगन्धचर्ण; वाचम् नॅय्–सुगन्धित तेल; नानत्तोटुम्–कस्तूरी के साथ; कॉण्टु–लेकर; ऎतिर् वीचुवारुम्–आमने-सामने छिटकानेवाले; कोतै कॉण्टु–पुष्पमालाएँ लेकर;

ओच्चुवारुम्–फेंकनेवाले; तोण्टै वाय् पॅय्त–बिंबसमान मुख में भरे; तू नीर्–निर्मल जल को; कोऴुनर् मेल्–पतियों पर; तूकिन्ऱारुम्–उलीचनेवाले; पुण्टरीकम् कै कूट्टि–कमल सदृश हाथ जोड़कर; पुनल् मुकन्तु–पानी भर लेकर; इऱैक्किन्ऱारुम्–उछालनेवाले। १००६

स्त्री और पुरुष अपने आनन्दातिरेक में एक दूसरे पर सुगन्धित चूर्ण, तेल, कस्तूरी आदि लेकर फेंकने लगे। कुछ लोगों ने एक दूसरे पर पुष्पमालाएँ फेंकीं। कुछ स्त्रियों ने अपने बिंबारुण मुखों में शुद्ध जल भर कर अपने पतियों पर फेंका। और कुछ लोगों ने अपनी अँजुलियों में जल लेकर उलीचा। १००९

ताळैयेय् कमलत् ताळिन् मार्बुऱत् तऴुवु वारुम्
तोळैये पऱ्ऱि वॆऱ्ऱित् तिरुवॆन्नत् तोन्ऱु वारुम्
पाळैवी विरिन्द दॆन्नप् परन्दनी रुन्दुवारुम्
वाळैमी नुहळ वञ्जि मैन्दरैत् तऴुवु वारुम् 1010

ताळै एय् कमलत्ताळिन्–नालयुक्त कमल की निवासिनी कमला सी; मार्पु उऱ तऴुवुवारुम्–(अपने प्रेमी के) वक्ष को अपने गले से कसकर लगानेवालियाँ और; तोळैये पऱ्ऱि–भुजाओं को ही पकड़े; वॆऱ्ऱि तिरु ऑन्न–विजयश्री के समान; तोन्ऱु वारुम्–दिखाई देनेवालियाँ; पाळै वी विरिन्तु ऑन्न–डण्ठल की बालों से फूल बिखेरकर गिरते हों ऐसा; परन्त नीर्–विस्तृत जल को; उन्तुवारुम्–उछालनेवालियाँ; वाळै मीन् उकळ–'वाळै' मछलियों के फड़फड़ाने पर; अञ्चि–भयभीत होकर; मैन्तरै–पतियों से; तऴुवुवारुम्–बाँध लेनेवालियाँ। १०१०

कुछ रमणियाँ नालयुक्त कमल की देवी कमला के समान (जो अपने पति श्रीविष्णु के वक्ष से लगी हुयी हैं) अपने पतियों के वक्ष से चिपकी-सी लगी हुयी दिखाई देती हैं। कुछ सुन्दरी बालाएँ अपने पतियों के कंधों से चिपटी हुयी हैं और वे विजयलक्ष्मी (जो वीरों के भुजबल की प्रतीक हैं) के समान दिखाई दे रही हैं। कुछ स्त्रियाँ अपने हाथों से अधिक जल लेकर उछाल रही हैं और वह जल नारियल के डंठलों के बालों के समान छिटक रहा है। कुछ भीरु स्त्रियाँ हैं जो मछलियों को उछलते लोटते देखकर डर जाती हैं और अपने पतियों का आलिंगन कर लेती हैं। १०१०

मिन्नॊत्त विडैयि नारुम् विडमॊत्त विऴियि नारुम्
शिन्नत्ति नळह पन्दि तिरुमुहम् मऱैप्प नीक्कि
अन्नत्तै वरुह वॆन्नो डाडवॆन् ऱऴैक्किन् ऱारुम्
पॊन्नॊत्त मुलैयिन् वन्दु पूवॊत्त वुळैहिन् ऱारुम् 1011

मिन् ऑत्त इटैयिनारुम्–बिजली के समान कमर और; विटम् ऑत्त विऴियिनारुम्–विष सरीखे नेत्रोंवालियाँ (जो); चिन्नत्तिन् अळकम् पन्ति–छुट्टे फूलों से अलंकृत केशजाल को; तिरु मुकम् मऱैप्प–जो उनके सुन्दर मुखों को छिपाता है;

नीक्कि–उसको हटाकर; अन्ततुतै–हंसों को; ऍन्तोटु आट वरक–मेरे साथ खेलने आओ; ऍन्रु–इति; अळैक्किन्राऱुम्–बुलाती हैं; पोन् ऑत्त मुलैयिन्–(यौवनावस्था के कारण चर्म पर फैले पीले वर्ण के कारण) स्वर्णसम लगनेवाले स्तनों पर; पू वन्तु ऑत्त–फूल के स्पर्शमात्र करने पर; उळैकिन्राऱुम्–तड़पनेवालियाँ। १०११

उनमें कुछ स्त्रियाँ हैं जिनकी कटि बिजली के समान है, कुछ हैं जिनके नेत्र विष के समान (पुरुषों के लिए मर्मपीडक) हैं। और कुछ स्त्रियाँ हैं जो अपने मुख पर बिखरते हुए केशजाल को हटाकर हंसों को अपने पास बुला रही हैं। कुछ कोमलांगी स्त्रियाँ हैं जिनके स्वर्णसम (फैलते पांडु रंग के कारण) लगनेवाले स्तन पर फूल स्पर्श करता है तो (उस मृदुस्पर्श मात्र से) एकदम असह्य पीड़ा का अनुभव करती हैं। १०११

पण्णुळ पवळन् दॊण्डै पङ्गयम् बूत्त दन्न
वण्णवाय्क् कुवळै युण्गण् मरुङ्गिलाक् करुम्बि नन्नार्
उण्णिरै कयलै नोक्कि योडुनीर्त् तडङ्गट् कॊल्लाम्
कण्णुळ वाङ्गॊ लॆन्रु कणवरै विनवु वारुम् 1012

पण् उळ–संगीत मधुर और; पवळम् तोण्टै पूत्ततु पङ्कयम् अन्न–प्रवाल बिंबफल और खिला कमल —इनसे तुल्य; वण्णम् वाय्–लाल अधर (मुख); कुवळै उण् कण्–कुवलय सदृश और अंजनयुक्त नेत्र; मरुङ्कु इला–क्षीण कटि; करुम्पिन् अन्नार्–(इनसे युक्त और अपने पतियों के लिए) इक्षु सदृश स्त्रियाँ; उळ् निरै कयलै नोक्कि–सरोवर में भरी मछलियों को देखकर; ओटुम् नीर् तटङ्कट्कु ॲल्लाम्–बहते जलवाले सारे तडागों के; कण् उळ आम् कॊल्–आँखें भी होती हैं क्या; ऍन्रु–यह; कणवरै–पतियों को; विनवुवारुम्–पूछनेवालियाँ, और। १०१२

कुछ अबोध स्त्रियाँ भी हैं, जिनके मुख प्रवाल और बिम्बफल तथा विकसित कमल के समान लाल हैं, और संगीतसम (या और) मधुर वचन के प्रकटन के स्थान हैं; जिनकी कुवलय के सदृश आँखों में अंजन लगाया गया है, जिनकी कमर नहीं के बराबर है और जो अपने पतियों के लिए ईख के समान प्यारी हैं। वे सरोवरों के जल में कयल जाति की मछलियों को देखकर अपने पतियों से पूछ बैठती हैं कि क्या जल से लबालब भरे तालाबों के भी आँखें होती हैं? । १०१२

तेनहु नऱव मालैच् चॆरिहुळल् ऱॆय्व मन्नाळ्
तानुडैक् कोल मेनि तडत्तिडैत् तोन्र नोक्कि
नानह नहुहिन् ऱाळिन् नन्नुदल् तोळि यामॆन्
रूनमिल् मुलैयि नार मुळङ्गुळिर्न् दुदवु वाळुम् 1013

तेन् नकु–शहद सहित; नऱवम् मालै–सुगन्धित माला से अलंकृत; चॆरि कुळल्–घने केशवाली; तॆय्वम् अन्नाळ्–देवनायिका तुल्य एक स्त्री, (जो); तान् उटै (य) कोलम् मेनि–अपना सुन्दर रूप; तटत्तु इटै तोन्र–तालाब के जल में दिखाई देने पर;

नोक्कि–देखकर; इ नल् नुतल्–यह सुन्दर भालवाली; नान् नक नकुकिन्ऱाळ्–मेरे हँसने पर हँसती है; तोऴि आम्–मेरी सखी है; अॅन्ऱु–यह कहकर; ऊनम् इल् मुलैयिन् आरम्–निर्दोष, अपने स्तन पर के (वक्ष के) हार को; उळम् कुऴिर्न्तु–स्नेहार्द्र मन के साथ; उतवुवाळुम्–दे देती है, वह और। १०१३

एक वाल-स्वभाव की स्त्री है। उसका केश घना है और शहद सहित पुष्पों की माला से अलंकृत है। देव-कन्या-सी वह अपने प्रतिबिम्ब को जल में देखती है। "यह सुन्दर ललाटवाली रमणी, जब मैं हँसती हूँ तब हँसती है। इसलिए यह मेरी सखी है।" यह कहकर वह अपने स्तनों पर से एक अनिन्द्य हार उतारकर रीझ कर दे देती है। १०१३

कुण्डलन् दिरुविल् वीशक् कुलमणि यारमिन्न
विण्डॉडु वरैयिन् वैहु मॅन्मयिऱ् कणङ्गळ् पोलुम्
वण्डुळर् कोदै मादर् मैन्दर्तम् वयिरत् तिण्डोळ्
तण्डुहळ् तऴुवु माशै याऱ्करै शार्हिन् ऱारुम् 1014

वण्टु उळर् कोतैमातर्–जिस पर भ्रमर मँडराते हैं, ऐसे केशवाली (कुछ) रमणियां; मैन्तर् तम्–अपने पतियों को (जो तीर पर है); वयिरम् तिण् तोळ् तण्टुकळ्–वज्र-सम कठोर भुजदण्डों को; तऴुवुन् आचैयाल्–आलिंगन करने की इच्छा से; विण् तॉटु वरैयिन् वैकुम्–गगनस्पर्शी पर्वत पर रहनेवाले; मॅल् मयिल् कणङ्कळ् पोलुम्–कोमल मोरों के समान; कुण्टलम् तिरुविल् वीच–कुण्डलों को अधिक प्रकाश बिखेरने देते हुए; कुलम् मणि आरम् मिन्न–श्रेष्ठ रत्नहारों को चमकने देते हुए; करै चार् किन्ऱारुम्–तीर पर जा रही हैं, वे और। १०१४

कुछ स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं। उनके केश पर भ्रमर मँडरा रहे थे। अकस्मात उनकी इच्छा हुयी कि तीर पर रहे अपने पतियों के वज्र-सम भुजदण्डों से लिपट जायँ। वे ऐसे चली आयीं जैसे गगनस्पर्शी पर्वत पर रहनेवाले मोर चले आते हों। तब उनके कर्णकुंडलों से प्रकाश फैल रहा था और उनके श्रेष्ठ रत्नहार झिलमिला रहे थे। १०१४

अङ्गिडै युऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावदॅन् ऱऱिद ऱेऱ्ऱाम्
शॅङ्गय लनैय नाट्टञ् जिवप्पुऱच् चीऱिप् पोन
मङ्गयोर् कमलच् चूऴन् मऱैन्दनण् मऱैय मैन्दन्
पङ्गय मुहमॅन् ऱोरा दैयुऱ्ऱुप् पार्क्किन् ऱानुम् 1015

अङ्कु–वहाँ; इटै–क्रीडा के मध्य; उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्–हुआ अपराध; यावतु ॲन्ऱु–कौन सा था, यह; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सके: चॅम् कयल्–सुघड़ 'कयल' मछलीतुल्य; नाट्टम्–आँखें; चिवप्पु उऱ–लाल करते हुए; चीऱि पोत–(अपने पति से) गुस्सा करके जानेवाली; मङ्कै–एक बाला; कमलम् चूऴल्–कमलों से भरे एक स्थान में; मऱैन्तनळ्–छिप गई; मऱैय–छिपने पर; मैन्तन्–उसका पति; पङ्कयम् मुकम् ॲन्ऱु–यह पंकज, यह मुख ऐसा; ओरातु–न परख

पाकर; ऐयुट्रु–संशयोद्विग्नता के साथ; पार्क्किन्ड्रान्–ढूंढता (जो) है, वह, और। १०१५

वहाँ अकस्मात क्या अपराध हो गया? नहीं जानते। पर एक तरुणी की "कयल" (मछली) -सी सुन्दर आँखें (गुस्से से) लाल हो गयीं और वह कुपित हो वहाँ से चली और कमलों के बीच में जा छिप गयी। छिपने पर उसका नायक कमल-फूलों और उसके मुख में भेद न जान सकने के कारण संशय से उद्वेलित होकर ढूंढता रहा। वह—और। १०१५

पोंऱ्ऱोडि तळिर्क्कैच् चङ्गम् वण्डोडु पुलम्बि यार्प्प
ऎऱ्ऱिनीर् कुडैयुन् दोऱु मेन्दुपे रल्हु नित्तम्
कऱ्ऱैमे कलैह णीङ्गिच् चीऱडि कौवक् कालिऱ्
चुऱ्ऱिय नाह मॆन्ऱु तुणुक्कत्ताऱ् ऱुवळ्हिन् ऱारुम् 1016

तळिर् कै–(कुछ रमणियाँ) अपने पल्लवकरों में; चङ्कम्–शंखकंगन; पोन् तोटि–स्वर्ण की चूड़ियां; वण्टोटु–अन्य वलय; पुलम्पि आर्प्प–स्वरित-क्वणित करने देते हुए; नीर् ऎऱ्ऱि–जल उछालते हुए; कुटैयुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों स्नान करतीं; एन्तु पेर् अल्कुल् नित्तम्–उन्नत विशाल नितम्बों से; कऱ्ऱै मेकलैकळ् नीङ्कि–कई लड़ियों की मेखलाएँ अलग हो जातीं; चिऱु अटि कौव–और उनके छोटे पैरों में उलझ जाती हैं, तब; कालिल् चुऱ्ऱिय नाकम् ऎन्ऱु–पैरों को वलयित करता हुआ सर्प, समझ; तुणुक्कत्ताल्–डर से; तुवळ्किन्ऱारुम्–कांपनेवाली, और। १०१६

कुछ स्त्रियाँ खूब गोते लगाकर तैरकर जल में क्रीडा करती हुयी स्नान कर रही थीं। तब उनके हाथों के शंख-कंकण, स्वर्णकंकण और अन्य चूड़ियाँ स्वरित हो रही थीं। तब उनके उन्नत नितम्बों पर से कई लड़ियों-वाली मेखलाएँ अलग हुयीं और खिसककर उनके पैरों से लिपट गयीं। उन्होंने समझा कि साँप आकर हमारे पैरों से उलझ गये हैं। तब वे डरीं और काँपने लगीं। वे, और। १०१६

कुडैन्दुनी राडु मादर् कुळाम्बुडै शूळ वाळित्
तडम्बुयम् पॊलिय वाण्डोर् तार्हॊळु वेन्द निन्ऱान्
कडैन्दना ळमुदि नोडुङ् गडलिडै वन्दु तोन्ऱुम्
मडन्दयर् शूळ निन्ऱ मन्दर मलैयै यॊत्तान् 1017

नीर् कुटैन्तु आटुम्–जल में तैरते हुए क्रीडा करनेवाली; मातर् कुळाम्–स्त्रियों का समूह; पुटै चूळ–(उनको) घेरे रहा; आळि तट पुयम्–बाहुवलय से अलंकृत विशाल भुजाओं को; पॊलिय–शोभने देते हुए; आण्टु निन्ऱान्–(जो) वहाँ खड़ा रहा; तार् कॊळु ओर् वेन्तन्–(वह) मालाधारी एक राजा; कटल् इटै–क्षीरसागर मध्य; कटैन्त नाळ्–जिस दिन मथन हुआ उस दिन; अमुतिनोटुम् वन्तु तोन्ऱुम्–अमृत के साथ जो ऊपर आये; मटन्तैयर् चूळ–उन सुरबालाओं के बीच; निन्ऱ–जो खड़ा रहा उस; मन्तर मलैयै–मन्दरपर्वत के; ऒत्तान्–सदृश रहा। १०१७

विजायट पहने हुए एक सुन्दर राजा खड़ा है। उसके चारों ओर सुन्दर स्त्रियाँ हैं। उस दृश्य को देखकर ऐसा लगता है कि वह मंदर पर्वत है, जलाशय क्षीरसागर है और वे स्त्रियाँ अमृत-मंथन के दिन जो अमृत के साथ आकर प्रकट हुयीं उन सुरस्त्रियों के समान हैं। (पहले १००७वें पद में कहा गया कि इन लोगों के जल-क्रीडा के लिए उन्मुख होने का दृश्य उस दिन देवलोक की निधियों और स्त्रियों के क्षीरसागर में जाने के दृश्य के समान रहा।)। १०१७

तॉडियुलाङ् गमलच् चॅङ्गैत् तूनहैत् तुवर्त्त शॅव्वाय्क्
कॉडियुला मरुङ्गु नल्लार् कुऴात्तॊरु कुरिशि निऩ्ऱाऩ्
कडियुलाङ् गमल वेलिक् कण्णहत् गाऩ यार्ऱुप्
पिडियॅलाञ् जूऴ निऩ्ऱ पॅय्मद याऩै यॊत्ताऩ् 1018

तॉटि उलाम्–कंकण शोभित; कमलम् चॅम् कै–पंकज-सम सुन्दर हाथों; तू नकै–पवित्र मुस्कराहट सहित; तुवर्त्त चॅव्वाय्–प्रवाल-सम लाल अधरों; कॉटि उलाम्–लता समान; मरुङ्कुल–कमरोंवाली; नल्लार् कुऴात्तु–स्त्रियों के समूह में; निऩ्ऱाऩ् ऑरु कुरिचिल्–खड़ा था एक नायक; कटि उलाम् कमलम् वेलि–सुगन्धियुक्त कमलों के घेरे के अन्दर; कण् अकल्–विस्तृत तल की; कात्त याऱु–जंगली नदी में; पिटि ऍलाम् चूऴ–हथिनियों से घिरा हुआ; निऩ्ऱ–शान के साथ जो खड़ा रहा उस; पॅय् मतम् यानै ऑत्ताऩ्–मदस्रावी गज के समान रहा। १०१८

इसमें एक नायक श्रेष्ठ का वर्णन है। वह सुन्दर स्त्रियों के मध्य खड़ा था। उन स्त्रियों के लाल कमल सरीखे हाथों में उत्तम कंकण आदि थे। उनके मुख पवित्र मुस्कुराहट के साथ प्रवाल सदृश लाल थे। उनकी कटि लताओं के समान लचीली थी। वह उस हाथी के समान लगा जिसके कपोल से मदजल वह रहा था और जो उस जंगली सरिता में, जिसके किनारों के पास कमल थे, अनेक हथिनियों के मध्य खड़ा हो। १०१८

काऩमा मयिल्ह ळॅल्लाङ् गळिहॅडक् कळिक्कुञ् जायल्
शोनैवार् कुऴलि ऩार्तङ् गुऴात्तॊरु तोऩ्ऱ निऩ्ऱाऩ्
वाऩया ऱुदनै नण्णि वयिऩ् वयिऩ् वयङ्गित् तोऩ्ऱुम्
मीऩॅलाञ् जूऴ निऩ्ऱ विरिहदिर्त् तिङ्ग ळॊत्ताऩ् 1019

काऩम् मा मयिल्कळ् ऍल्लाम्–जंगल में रहनेवाले सभी उत्तम मोर; कळि कॅट–अपनी अकड़ भूल जायँ ऐसी; कळिक्कुम्–मदवाली; चायल्–छटा; चोनै वार्–लगातार बरसनेवाले मेघ सम व लम्बे; कुऴलिऩार्–केशवाली स्त्रियों के; कुऴात्तु–समूह मध्य; निऩ्ऱाऩ् ऑरु तोऩ्ऱल्–खड़ा (जो) रहा एक नायक (वह); वयिऩ् वयिऩ्–यत्र-तत्र; वयङ्कि तोऩ्ऱुम्–शोभायमान रहनेवाले; मीन् ऍलाम् चूऴ–सभी नक्षत्रों के घेरे में; वाऩम् याऱु अतनै नण्णि निऩ्ऱ–आकाशगंगा में जाकर जो स्थित

रहा उस; विरि कतिर् तिङ्कळ्-विस्तृत किरणोंवाले चन्द्र के; ओत्ताळ्-समान रहा। १०१९

और एक नायक का चित्रण : वह उन सुन्दर स्त्रियों के मध्य था जिनकी आभा जंगली मोरों की छटा के गर्व को तोड़ सकती थी और जिनके केश लगातार बरसनेवाले मेघ के समान काले और लम्बे थे। वह मानो चन्द्र के समान लगा जो खूब चाँदनी छिटकाते हुए, आकाशगंगा में जाकर सभी नक्षत्रों के मध्य खड़ा हो। १०१९

मेवलान् दहैमैत् तल्लाल् वेळविर् ऱडक्कै वीरऱ्
केवॅलाङ् गाट्टु हिन्ऱ विणॅनॅडुङ् गण्णी रेळै
पावैमार् परन्द कोलप् पण्णयिऱ् पॉलिवाळ् वण्णप्
पूवॅला मलर्न्द पॉय्हैत् तामरै पॉलिव दोत्ताळ् 1020

मेवल् आम् तकैमैत्तु अत्लाल्-आकर्षकता के अलावा; वेळम् विल्-ईख के धनुर्धर; तटक्कै वीरर्कु-विशालहस्त मन्मथ के; ए ऍल्लाम्-कार्य सब; काट्टुकिन्ऱ-कर दिखानेवाले; इणै नॅटु कण्-जोड़े के विशाल नेत्रोंवाली; ओर् एळै-एक स्त्रीरत्न; पावै मार् परन्त-जहाँ अनेक स्त्रियाँ खड़ी रहीं वहाँ; कोलम् पण्णैयिल्-उस सुन्दर भीड़ में; पॉलिवाळ्-शोभायमान; वण्णम् पू ऍल्लाम्-रंग-बिरंगे अनेक जलपुष्प; मलर्न्त पॉय्कै-जिसमें खिले थे उस तालाब में; तामरै पॉलिवतु ओत्ताळ्-कमल शोभायमान रहता जैसे, (शोभित) थी। १०२०

इसमें एक नायिकारत्न का चित्रण है। मन्मथ के पाँच शर— आम्र, अशोक, कमल, नीलोत्पल और नवमल्लिका हैं और वे क्रमशः मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण और द्रवण के काम करनेवाले हैं। इस नायिका के मनोरम नेत्र उन पाँचों शरों के पाँचों कृत्य एक साथ करनेवाले हैं। स्त्रियों के मध्य वह रंग-बिरंगे फूलों से भरे तड़ाग में उनके बीच रहनेवाले कमलपुष्प के समान लगी। १०२०

मिडलुडैक् कॉडिय वेले यॅन्नवाण् मिळिर्व वॅन्नच्
चुडर्मुहत् तुलवु कण्णा डोहैयर् शूळ निन्ऱाळ्
मडलुडैप् पोदु काट्टुम् वळर्कॉडि पलवुञ् जूळक्
कडलिडैत् तोन्ऱु मॅन्बूङ् गऱ्पह वल्लि यॉत्ताळ् 1021

मिटल् उटैय-बलयुक्त; कॉटिय वेले ऍन्न-भयंकर भाले के ही समान; मिळिर्व वाळ् ऍन्न-चमचमानेवाली तलवारों के सदृश; चुटर् मुकत्तु उलवु कण्णाळ्-प्रभापूर्ण मुख में शोभित आँखोंवाली एक नायिका; तोकैयर् चूळ निन्ऱाळ्-स्त्रियों के बीच में खड़ी रही; मटल् उटै-पुष्ट पंखड़ियों सहित; पोतु काट्टुम्-पुष्पों को उत्पन्न करनेवाली; वळर् कॉटि पलवुम् चूळ-अनेक उर्वर लताओं के मध्य; कटल् इटै तोन्ऱुम्-(क्षीर-) सागर में उत्पन्न; मॅन् पू-कोमल फूलों की; कऱ्पक वल्लि ऑत्ताळ्-कल्पलता के सदृश दिखाई दी। १०२१

(और एक नायिका का चित्रण है इस पद में।) एक नायिका मयूराभा स्त्रियों के मध्य थी। उसकी आँखें शक्तियुक्त शक्ति के समान हैं और चमचमानेवाली तलवार के समान चमकीली। वह क्षीरसागरोत्पन्न कल्पलता के समान लगती है जिसमें अनेक पुष्प लगे हों और जो अनेक पुष्पोत्पादक और पलनेवाली लताओं के मध्य रहती हो। १०२१

तेरिडैक् कॉण्ड वल्हु ट्रॅङ्गिडैक् कॉण्ड कॉङ्गै
आरिडैच् चॅन्रुङ् गॉळ्ळ वॉण्गिला वळ्हु कॉण्डाळ्
वारिडैत् तन्नमी दाड मूळ्हिन्नाळ् वदन मैदीर्
नीरिडैत् तोन्रुन् दिङ्ग णिळ्लॅन्नप् पॉलिन्द दन्रे 1022

तेर इटै कॉण्ट अलकुल–मानो रथ से (रूप लावण्य) लिया गया है, ऐसा कटिप्रदेश; तॅङ्कु इटै कॉण्ट कॉङ्कै–मानो नारियल के फलों से रूप प्राप्त कर लिया गया हो, ऐसे स्तन; आर् इटै चॅन्रुम्–किसी के पास जाने पर भी; कॉळ्ळ ऑण्किला–प्राप्त न हो सकनेवाले; अळ्कु कॉण्टाळ्–रूप-लावण्यवाली; वार् इटै तनम्–कंचुकी के अन्दर के उरोजों को; मीताट–बाहर दिखने देते हुए; मूळ्किन्नाळ्–जो स्नान कर रही थी उसका; वतनम्–वदन; नीर् इटै तोन्रुम्–जलमध्य दिखनेवाले; मै तीर् तिङ्कळ् निळल् अॅन्न–अकलंक चन्द्र के प्रतिबिंब के समान; पॉलिन्ततु–शोभा; (अन्रु, ए)। १०२२

एक नायिका का कटिप्रदेश ऐसा था मानो उसने वह रूप रथ से पा लिया हो। उसके उरोज नारियल के फलों का रूप रखते थे। पर उसका रूप-लावण्य ऐसा था जो कहीं भी, किसी से भी प्राप्त नहीं हो सकता था। वह स्नान करने जल में पैठी तो उसके स्तन गीले अंगिया के अन्दर से साफ़ दिखाई दिये। जल के मध्य उसका मनोरम मुख अकलंक चंद्र के प्रतिबिम्ब-सा शोभित था। १०२२

मलैह डन्द पुयङ्गण् मडन्दैमार्, कलैह डन्दह लल्हुल् कडम्बडु
मुलैह डन्दमिन् मुन्दि नॅरुङ्गलाल्, निलै कटन्दु परन्ददु नीत्तमे 1023

मलै कटन्त पुयङ्कळ्–पुरुषों की (कठिनता और आकार में) पर्वत विजयी भुजाएँ; मटन्तैयर्–रमणियों; कलै कटन्तु अकल्–वस्त्रों का उल्लंघन करके बढ़े हुए; अल्कुल्–नितम्ब; कटम् पटु मुलैकळ्–घट समान उरोज; तम् तम्मिल्–आपस में; मुन्ति–स्पर्द्धा करके; नॅरुङ्कलाल्–भर गये, इसलिए; नीत्तम्–सरोवर का जल; निलै कटन्तु–तीर का उल्लंघन करके; परन्ततु–फैल गया। १०२३

जल में पुरुष और स्त्रियाँ अधिक संख्या में स्नान कर रहे थे। पुरुषों के पर्वतसम कंधे, स्त्रियों के वस्त्रविस्फारक नितम्ब; और घटसम स्तन एक से एक बढ़कर जल में भर गये तो जल सरोवर का तीर पारकर सब ओर फैलने लग गया। १०२३

शॅय्य वाय्वॅळुप् पक्कण् शिवप्पुउ, मॅय्य राह मळियत् तुहिलॅहत्
तॉय्यिन् मामुलै मङ्गैयर् तोय्दलाल्, पॉय्है कादर् कॉळुनरॅप् पोन्ऱदे 1024

तॉय्यिल् मा मुलै–चित्रकारी से सज्जित बड़े स्तनों की; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; चॅय्य वाय् वॅळुप्प–लाल अधर श्वेत हो जाय; कण् चिवप्पु उऱ–आँखें लाल करके; मॅय् अराकम्–शरीर का अंगराग; अळिय–मिट जाय, ऐसा; तुकिल् नॅक–वस्त्र ढीला हो जाय, ऐसा; तोय्तलाल्–नहाती हैं, (मिलती हैं) इसलिए; पॉय्कै–वह तालाब; कातल् कॉळुनरै पोन्ऱतु–प्रेमी पतियों के समान है। १०२४

वे सरोवर प्रेमी पतियों से तुलनीय हो गये। पतियों से मिलते समय स्त्रियों के लाल अधर श्वेत हो जाते हैं; अंगराग मिट जाता है। वस्त्र हट जाते हैं। वही हाल स्नान करते समय भी चित्रकारी से अंकित स्तनवाली नारियों का हो जाता है। (इसलिए सरोवर और पति में साम्य बताया गया है।) तोय्तल के दो अर्थ हैं— एक स्नान करना; दूसरा मिलना (संभोग करना)। १०२४

आन्न तूयव रोडुड नाडिन्नार्, ज्ञान नीरव राहुवर् नन्ऱरो
तेनु नावियुन् देक्कहि लावियुम्, मीनु नाऱिन वेऱिनि वॅण्डुमो 1025

आन्न तूयवरोटु–पवित्र ज्ञानियों के साथ; उटन् आटिनार्–सहचर रहनेवाले; नन्ऱु ञान नीरवर् आकुवर्–बहुत ज्ञानी-स्वभाव हो जाते हैं; मीनुम्–मछलियाँ भी; तेनुम्–शहद का; नावियुम्–कस्तूरी का; तेक्कु अकिल् आवियुम्–अधिक अगरु के धुएँ का; नाऱिन–सुगन्ध देने लगीं; इनि–इसके अलावा; वेऱु वेण्टुमो–दूसरा उदाहरण चाहिए क्या? । १०२५

ज्ञानियों के साथ मिलने पर अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाते हैं। उसी न्याय के अनुसार सरोवरों में रहनेवाली मछलियों की दुर्गंध छिप गयी और उनसे शहद, कस्तूरी, अगरु का धुआँ आदि की सुगन्धि आने लगी थी। इससे बढ़कर दूसरा उदाहरण उस न्याय के स्पष्टीकरण के लिए क्या चाहिये? । १०२५

मिक्क वेन्दर्तम् मॅय्यळि शान्दॉडुम्
पुक्क मङ्गैयर् कुङ्गुमम् पोर्त्तलाल्
ऑक्क नील मुहिऱ्ऱलै योडिय
शॅक्कर् वान्नह मॉत्तदत् तीम्बुन्नल् 1026

मिक्क वेन्तर् तम्–गौरव में बढ़े राजाओं के; मॅय् अळि चान्तॉटुम्–शरीरों से गलकर जल में मिले चन्दन लेप के साथ; पुक्क मङ्कैयर् कुङ्कुमम्–एकत्रित स्त्रियों के कुंकुम का लेप; ऑक्क पोर्त्तलाल्–एक साथ भर जाने से; अ तीम् पुन्नल्–वह मधुर जल; नीलम् मुकिल् तलै ओटिय–नीले मेघों पर व्याप्त; चॅक्कर् वानकम् ऑत्ततु–लाल संध्यागगन सा लगा। १०२६

जल पर राजाओं (नायकों) के शरीर का चन्दन धुल गया। स्त्रियों

के कुंकुम का लेप भी धुल गया। तब वह ऐसा दिखने लगा मानो नीले मेघों पर सांध्य-गगन की लाली पुत गयी हो। १०२६

काह् तुण्ड नऱुङ्गल वैक्कळि, आह मुण्ड दडङ्गलु नीङ्गलाल्
पाह् डर्न्द पत्तिमॊऴि वाय्च्चियर्, वेह डञ्जॆय् मणियॆन्न मिन्निन्नार् 1027

आकम् उण्टतु–शरीर पर लिप्त; काकतुण्टम्–अगरु लेप मिश्रित; नऱु कलवै कळि–सुगन्धियुक्त चन्दन का लेप; अटङ्कलुम् नीङ्कलाल्–पूरा-पूरा धुल गया, इसलिए; पाकु अटर्न्त–चाशनी की सी मधुरता भरी; पत्तिमॊऴि वाय्च्चियर्–शीतल बोली बोलनेवाले मुखों की स्त्रियाँ; वेकटम् चॆय् मणि अॆन्न–तराशी हुई मणि के समान; मिन्निनार्–चमकीं। १०२७

स्त्रियों के स्नान करने से अगरु, चन्दन आदि लकड़ियों का घिसा लेप सारा का सारा धुल गया। अब वह चाशनी-सी मधुर बोली के मुखवालियाँ नयी तराशी हुयी मणियों के समान (अपनी प्राकृतिक सुन्दरता में) शोभीं। १०२७

पाय रित्तिऱ लान्पशुञ् जान्दिनाल्, तूय पॊऱ्पुयत् तुप्पॊदि तूक्कुऱि
मीय रित्तु विळक्कवॊर् मॆल्लियल्, शेय रिक्करुङ् गण्गळ् शिवन्दवे 1028

पाय् अरि तिऱलान्–झपटनेवाले सिंह सदृश बली (अपने नायक) के; तूय पॊन् पुयत्तु–पवित्र स्वर्णस्कन्धों पर; पचुमै चान्तिनाल्–गीले चन्दन-चेप से; पॊति तूकुऱि–लिखित उत्तम चित्रकारी; मी अरित्तु विळक्क–जल गलाकर पोंछ देता है, इससे; ओर् मॆल् इयल्–एक कोमलांगी के; चेय् अरि करु कण्कळ्–लाल डोरेयुत काले नेत्र; चिवन्त–लाल हुए। १०२८

एक रमणी ने अपने झपटनेवाले सिंह तुल्य पति के स्वच्छ स्वर्ण-स्कंधों पर गीले चन्दन के चेप से रेखाओं के चित्र बनाये थे। अब वह स्नान करने से धुल गये थे। इसको देखकर उस रमणी को क्रोध आ गया और उसके लाल डोरों से युक्त सुन्दर नेत्र लाल हो गये थे। १०२८

कदम्ब नाळ्विरै कळ्ळविळ् तादॊडुम्
तदुम्बु पून्दिरैत् तण्बुनल् शुट्टदाल्
निदम्ब बारत्तॊर् नेरिऴै कामत्ताल्
वॆदुम्बु वाळुडल् वॆप्पम् वॆदुप्पवे 1029

कामत्ताल्–काम की गर्मी से; वॆतुम्पुवाळ्–तपनेवाली; नितम्प पारत्तु–नितंब भाराक्रांत; ओर् नेर् इऴै–एक सुन्दर आभरणभूषिता स्त्री के; उटल् वॆप्पम् वॆतुप्प–शरीर की गर्मी के तपाने से; कतम्पम्–सुगन्धचूर्ण; नाळ्विरै–ताजा चन्दन लेप; कळ्–फूल का शहद; अविऴ् तातॊटुम्–चूने वाले मकरन्द के साथ; ततुम्पु–भरा हुआ; पू तिरै–मनोरम तरंगों का; तण् पुनल्–शीतल जल; चुट्टतु–खौल गया। १०२९

एक कामातुरा कामवेदना मे तप्त थी। नितम्बभाराक्रांता उसके शरीर की गर्मी से, सुगन्धचूर्ण, नवीन चन्दनलेप, शहद, मकरन्द आदि से मिश्रित और मनोरम लहरों से भरा उस जलाशय का शीतल जल भी खौल उठा। १०२९

तॅय लाळैयोर् तारणि तोळिनान्, नॅय्हों ळोदियि नीर्मुहन् दॅऱ्ऱिनान्
शॅय्य तामरैच् चॅल्वियैत् तीम्बुनल्, कैयि नाट्टुङ् गळिऱ्ऱर शॅन्नवे 1030

चॅय्य तामरै चॅव्वियै–लाल कमल की देवी (श्रीलक्ष्मी) को; **कैयिन्**–अपनी सूंड़ों से; **तीम् पुनल् आट्टुम्**–मधुर जल से स्नान करानेवाले; **कळिऱु अरचु अॅन्न**–गजराज के समान; **ओर् तार् अणि तोळिनान्**–एक मालाधारी स्कन्धोंवाले ने; **तॅयलाळै**–अपनी प्रेमिका के; **नॅय् कोंळ् ओतियिन्**–घी (कस्तूरी)-लगे केश पर; **नीर् मुकन्तु अॅऱ्ऱिनान्**–जल उलीचकर उछाला। १०३०

एक मालाधारी नायक ने अपनी प्रेमिका के कस्तूरी लगे केश पर अपने हाथ से जल उछाला। वह दृश्य गजराज के श्रीलक्ष्मी का अभिषेक कराने के दृश्य के समान रहा। १०३०

शुळियु मन्नडै तोऱ्क नडन्दवर्, ऑळिहोंळ् शीऱडि यॊत्तन वामॅन
विळिवु तोन्ऱ मिदिप्पन पोन्ऱन, नळिन मेऱिय नाहिळ वन्नमे 1031

नळिनम् एऱिय–कमल पर बैठे हुए; **नाकु इळ अन्नम्**–बहुत छोटे हंस; **चुळियुम्**–भिन्न; **मॅल् नटै तोऱ्क**–(हमारी) मृदु चाल को हराते हुए; **नटन्तवर्**–सुन्दर चाल चलनेवाली स्त्रियों के; **ऑळि कोंळ् चिऱु अटि**–उज्ज्वल छोटे चरणों; **ऑत्तन**–के समान; **आम् ॲन**–हैं, यह समझकर; **विळिवु तोन्ऱ**–कोप प्रकट करके; **मितिप्पन पोन्ऱन**–रौंदते से हैं। १०३१

हंस (के पोटे) कमलों पर खड़े होकर उनको रौंदने लगे। शायद इस कोप के कारण कि स्त्रियों की चाल के सामने उनकी चाल हार गयी। उनको इस बात का विश्वास था कि ये कमल उन स्त्रियों के छोटे मनोहर चरणों के समान हैं और हम इन पर अपना गुस्सा उतारेंगे। १०३१

ॲरिन्द शिन्दय रॅत्तनै यॅन्गॅनो, अरिन्द कूरुहि रालळि शान्दुपोय्त्
तॅरिन्द कोङ्गहळ् शॅव्विय नूल्पुडै, वरिन्द पोऱ्कल शङ्गळै मानवे 1032

कोङ्कैकळ्–स्तन; **अळि चान्तु पोय्**–गलकर सारा चन्दन लेप धुल गया इसलिए; **अरिन्त कूर् उकिराल्**–कटे नाखूनों से बने (नख-) क्षतों के साथ; **चॅव्विय नूल् पुटै वरिन्त**–श्रेष्ठ सूत्र-लपेटे; **पोन् कलचङ्कळै मान तॅरिन्त**–स्वर्णकलशों के समान दिखे; **ॲरिन्त चिन्तैयर्**–(उनको देखकर) कामतप्त मनवाले; **ॲत्तनै ॲन्कॅन्**–कितने कहूँ। १०३२

कुछ स्त्रियों के स्तनों पर के चन्दन लेप के धुल जाने से उनपर उनके प्रेमियों के नखदाँत भी दिखाई देने लगे। स्तनों पर का वस्त्र भी इधर-उधर हो गया था। इसलिये वे सूत्र-लपेटे स्वर्णकलश के समान लगे।

उनको देखकर कितनों के मन में विवाह, प्रेम आदि का स्मरण हो आया, वासना जगी और पीड़ा का उवाल हुआ और मन जलने लगे। १०३२

ताऴ् नित्र् तहैमलर्क् कैयिताल्
आऴि मन्नॊरु वन्नुरैत् तानदु
वीऴि यित्कनि वायॊरु मॆल्लियल्
तोऴि कण्णिऱ् कडैक्कणिऱ् चॊल्लिताऴ् 1033

आऴि मन् ऑरुवन्–आज्ञाचक्रधारी राजा एक; ताऴ्निन्ऱ–लम्बे अपने; तकै मलर् कैयिताल्–श्रेष्ठ अपने कमलहस्त (के संकेत) से; उरैत्तान्–(प्रेम) जताया; अतु–उस (के उत्तर) को; वीऴि इन् कनि वाय्–"विऴुति" के सुरम्य फल के समान लाल मुखवाली; ऑरु मॆल्लियल्–एक कोमलांगी; तोऴि कण्णिल्–अपनी सखी की आँखों में; कटै कण्णिल् चॊल्लिताऴ्–अपने 'कटाक्ष' से बताया। १०३३

आज्ञाचक्र चलानेवाले एक राजा ने अपनी आजानु लम्बी कर कमल के संकेत द्वारा अपने मन की कामना जतायी। उसके उत्तर में "विऴुति" के लाल फल के सदृश मुखवाली ने अपनी आँखों के कोर से अपनी सखी की आँखों में अपनी सम्मति जतायी। (पाठांतर एक है जिसके अनुसार राजा ने अपने सखा के द्वारा अपनी कामना प्रकट करायी।)। १०३३

तऴऴि योडि यलैतडु माऱलाल्, तॆळ्ळु नीरिडै मूऴ्हुशॊन् दामरै
पुळ्ळि मानते यार्मुहम् बोल्हिला, दुळ्ळ नाणि यॊळिप्पत्र पोन्ऱवे 1034

अलै तऴऴि ओटि–लहरों से वहाया जाकर; तटुमाऱलाल्–लड़खड़ाने से; तॆळ्ळुम् नीर् इटै–स्वच्छ जलमध्य; मूऴ्कु–मग्न होनेवाले; चॆन्तामरै–लाल कमल; पुळ्ळिमान् अतैयार्–चितकबरे हरिणों के समान स्त्रियों के; मुकम् पोल्किलातु–मुख की तुलना न कर सकने से; उळ्ळम् नाणि–मन में लज्जा का अनुभव करके; ऑळिप्पत पोन्ऱत–छिपते से हैं। १०३४

लहरें कमलों को अस्त-व्यस्त कर रही थीं। कमल लड़खड़ाते और लहरों में छिप जाते थे। उसको देखकर लगता है कि कमल यह सोचता है कि हम उन चितकबरे हरिणों के समान रहनेवाली स्त्रियों के मुखों की तुलना नहीं कर सकते। उन्हें लज्जा का अनुभव हुआ और वे लहरों में छिप रहे थे। १०३४

इनैय वॆय्द विरुम्बुन लाडिय, वनैह रुङ्गळन् मैन्दरु मादरुम्
अनैय नीर्वऱि दाहवन् देऱिये, पुनैन ऱुन्दुहिल् पूणॊडुन् दाङ्गिनार् 1035

इनैय ऍय्त–इन सब के होते; इरु पुतल् आटिय–बड़े जलाशयों में जिन्होंने स्नान किया; वनै करु कऴल् मैन्तरुम्–सुसज्जित श्रेष्ठ पायलधारी वीर पुरुष; मातरुम्–और स्त्रियाँ; अनैय नीर् वऱितु आक–उन जलाशयों को शोभारिक्त करते हुए; वन्तु एऱि–तीर पर चढ़कर; पुनै नऱु तुकिल्–पहनने योग्य सुन्दर वस्त्रों को; पूणॊटुम्–आभरणों के साथ; ताङ्कितार्–पहन लिया। १०३५

उपर्युक्त प्रकार से जो वीर वलयधारी पुरुष और सुन्दर स्त्रियाँ जलक्रीडा कर रही थीं, वे तीर पर चढ़ आये। तब जलाशय शोभाहीन हो गये। उन्होंने मनमोहक वस्त्र और आभरण पहन लिये। १०३५

मेवि नार्पिरिन् दारन्द वीड्गुनीर्, तावु तण्मदि तन्नोडुन् दारहै
ओवु वानमु मुण्णिरै तामरैप्, पूवॅ लाड्गुडि पोनदुम् बोन्रदे 1036

मेविनार् पिरिन्तार्–(जो वहाँ) आये थे (वे सब) चले गये; अन्त वीड्कुनीर्–वे जलाशय; तावु तण् मति—मन्द-मन्द चलायमान शीतल चन्द्र और; तारकै–तारकों से; ओवु–रिक्त हुए; वानमुम्–आकाश व; उळ् निरै–अपने अन्दर भरे रहे; तामरैप्पू ऍल्लाम्–कमलपुष्प सब; कुटि पोनतुम्–(जिससे) अलग हो गये उसके; पोन्रतु–समान रहा। १०३६

उनके चले जाने के बाद वे जलाशय धीरे-धीरे चलनेवाले चन्द्र से और तारकों से हीन आकाश के समान हो गये। वही नहीं; उनमें जो रहे उन कमलों से भी रिक्त हो गये हों, ऐसे लगे। १०३६

मानि नोक्कियर् मैन्दरो डाडिय, आन नीर्विळै याडलै नोक्किनान्
तानु मन्नदु कादलित् तानॅन, मीन वेलैयै वॅय्यव नॅय्दिनान् 1037

मानिन् नोक्कियर्–मृगलोचनियाँ; मैन्तरोटु आटिय–वीर पुरुषों के साथ जो नहाती थीं उस; आन नीर् विळैयाटलै–उत्तम जल क्रीडा को; नोक्किनान् वॅय्यवन्–(जिसने) देखा वह सूर्य; तानुम् अन्नतु कातलित्तान्–खुद वही (स्नान करना) चाहता था जैसे; मीनम् वेलैयै–मकरालय को (पश्चिमी सागर); ऍय्तिनान्–पहुँचा। १०३७

सूर्य उन मृगलोचनियों और सुन्दर पुरुषों की जलक्रीडा देख रहा था तो उसे भी मानो नहाने की इच्छा हो गयी। इसलिए वह भी पश्चिमी सागर में जिसमें मकर भरे थे डूब गया। १०३७

आऱ्ऱ लिन्मैयि नालळिन् देयुमव्, वेऱ्ऱु मन्नवर् मेल्वरुम् वेन्दर्पोल्
एऱ्ऱु मादर् मुहड्गळो डॅङ्गणुन्, दोऱ्ऱ शन्दिरन् मीळवुन् दोऱ्ऱिनान् 1038

आऱ्ऱल् इन्मैयिनाल्–शक्ति न रहने से; अळिन्तेयुम्–हार गये तो भी; अ वेऱ्ऱु मन्नर् मेल्–उन शत्रु राजाओं पर; वरुम्–पुनः धावा बोलनेवाले; वेन्तर् पोल्–राजाओं के समान; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; मातर् मुकङ्कळोटु एऱ्ऱु–स्त्रियों के मुखों से टकराकर; तोऱ्ऱ चन्तिरन्–(जिसने) हार मान लिया वह शशांक; मीळवुम् तोऱ्ऱितान्–फिर से प्रकट हो आया। १०३८

अब चन्द्र उग आया। कुछ राजा लोग शक्तिहीनता के कारण शत्रु राजाओं के सामने हार जाते हैं। फिर भी वे पुनः उन शत्रु राजाओं पर चढ़ आते हैं। उन राजाओं के समान यह चन्द्र भी जो स्त्रियों के मुखों के सामने टिक न सका और हार गया था, फिर प्रकट हुआ। १०३८

17. उण्डाट्टुप् पडलम् (पान-क्रीडा पटल)

वॆण्णिऱ् नऱवुपाय् वॆळ्ळ मॆन्नवुम्
पण्णिऱञ् जॆऱिन्दिडै परन्द दॆन्नवुम्
उण्णिऱै काममिक् कॊळ्हिड् ऱॆन्नवुम्
तण्णिऱै नॆडुनिलात् तळैत्त दॆङ्गुमे 1039

तण् निऱै–शीतलता भरी; नॆटु निला–विस्तृत चाँदनी; वॆळ् निऱम्–श्वेतवर्ण; नऱवु पाय् वॆळ्ळम्–सुरा की प्रवाहित धारा; ऎन्नवुम्–है, ऐसा और; पण्–संगीत; निऱम् चॆऱिन्तु–(रूप-) रंग लेकर; इटै परन्तु ऎन्नवुम–सर्वत्र फैला हो, ऐसा; उळ् निऱै कामम्–मानव मन के अन्दर व्याप्त कामवासना; मिक्कु ऒळ्किऱ्‌ऱु–बढ़कर फैली हो; ऎन्नवुम्–ऐसा; ऎङ्कुम् तळैत्ततु–सर्वत्र फैल गयी। १०३९

(इस अध्याय में मद्यपान और प्रेम-लीलाओं का सरस वर्णन है।) शीतल चाँदनी सब जगह खूब फैली। वह श्वेतवर्ण सुरा की प्रवाहशील धारा के समान और रूप-रंग से युक्त होकर फैलनेवाले संगीत के समान और सभी जीवों की आंतरिक कामेच्छा मानो रूप-रंग धारणकर छलक रही हो ऐसा लगी। १०३९

कलन्दवर्क् किनियदोर् कळ्ळु माय्प्पिरिन्
दुलन्दवर्क् कुयिर्शुडु विडमु मायुडन्
पुलन्दवर्क् कुदविशॆय् पुदिय तूदुमाय्
मलर्न्ददु नॆडुनिला मदनन् वेण्डवे 1040

नॆटु निला–विस्तृत चाँदनी; कलन्तवर्क्कु–संयोग में रहनेवालों को; इतियतु ओर् कळ्ळुम् आय्–मीठा सुरा भी बनकर; पिरिन्तु उलन्तवर्क्कु–वियोग के दुखियों को; उयिर् चुटु विटमुम् आय्–प्राणतापी विष भी बनके; उटन् पुलन्तवर्क्कु–साथ रहकर भी रूठन में रहनेवालों के लिए; उतवि चॆय्–सहायता देनेवाले; पुतिय तूतुम् आय्–नवीन दूत भी बनकर; मतनन् वॆण्ट–मदन की प्रार्थना पर; मलर्न्ततु–फैलती हुई आई। १०४०

वह चाँदनी संयोग में रही प्रेमिका व प्रेमी के लिए मधुर सुरा के समान रही। वियोग में संतप्त रहनेवालों के लिए प्राणतापक विष के समान रही। रूठनेवालों के लिए सहायता करनेवाला नया दूत बनी। वह मानो मन्मथ की प्रार्थना मानकर फैली। (चाँदनी मन्मथ का छत्र मानी जाती है और उसकी विजय की सहायिका है।)। १०४०

आऱॆलाङ् गङ्गये याय वाळिदाम्, कूऱुपाऱ् कडलये यॊत्त कुन्ऱॆलाम्
ईऱ्‌ऱिलात् कयिलये येय्न्द वॆन्निनि, वेऱियाम् बुहल्वदु निलविन् वीक्कमे 1041

आऱु ऎलाम्–सभी नदियाँ; कङ्कैये आय–गंगा (श्वेतवर्ण) बन गईं; आऴि ताम्–(नीले) सागर; कूऱु–प्रथित; पाल् कटलैये ऒत्त–क्षीरसागर के समान बने;

कुऩ्ऱु ॲलाम्–पर्वत सब; ईऱु इलाऩ्–अनन्त ईश्वर के; कयिलैये एय्ऩ्ऩ–कैलास सदृश बने; निलविऩ् वीक्कम्–चाँदनी का विस्तार; याम् इऩि वेऱु–हम अब और; पुकल्वतु–कहें; ॲऩ्–क्या। १०४१

चाँदनी के प्रसार से सभी नदियाँ (यमुना जैसी काले रंग के जलवाली नदियाँ भी) गंगाजी के समान (श्वेतवर्ण) हो गयीं। सभी नीले सागर क्षीरसागर सदृश दिखे। सभी पर्वत अनंत ईश्वर शिवजी के कैलासपर्वत से बन गये। फिर चाँदनी की विपुलता के सम्बन्ध में कहने को क्या है ? । १०४१

ॲळ्ळरुन् दिशैहळुम् यारुम् यावयुम्
कॉळ्ळैवॆण् णिलविऩाऱ् कोलङ् गोडलाल्
वळ्ळुऱै वयिरवाण् महर केदऩऩ्
वॆळ्ळणि यॊत्तदु वेलै ञालमे 1042

ॲळ् अरु तिचैकळुम्–अनिन्द्य दिशाएँ; यारुम्–सभी मनुष्य; यावैयुम्–सभी जीव; कॊळ्ळै वॆण् निलविऩाल्–अत्यधिक चाँदनी के कारण; कोलम् कोटलाल्–अनोखा रूप धर गये, इसलिए; वेलै ञालम्–समुद्र वलयित भूतल; वळ् उऱै–तीक्ष्ण; वयिरम् वाळ्—वज्र-(कठिन) तलवार (के धारक); मकरम् केतऩऩ्–मकरकेतु की; वॆळ् अणि ऒत्ततु–श्वेतवर्दी पहने वीरों की सेना के समान लगते थे। १०४२

अनिन्द्य सारी दिशाएँ, सब मानव, सब मानवेतर जीव और वस्तुएँ इस अत्यधिक चाँदनी के कारण नये सुन्दर (श्वेतवर्ण) रूप धर गयीं। इसलिए समुद्रमेखला भूमि पर के सारे पदार्थ, तीक्ष्ण तलवारधारी मकर-केतन (मन्मथ) की श्वेतवर्ण वर्दी से लैस सेना के व्यूहों के समान लगे। १०४२

तयङ्गुदा रहैपुरै तरळ नीळ्ळुम्
इयङ्गुहार् मिडैन्दका वॆळ्ळिऩिच् चूळ्ळुम्
कयङ्गळ्पोऩ् ऱॊळिर्पळिङ् गडुत्त कानमुम्
वयङ्गुपूम् पन्दरु महळि रॆय्दिऩार् 1043

मकळिर्–स्त्रियाँ; तयङ्कु तारकै पुरै–भासमान ताराओं से तुल्य; तरळम् नीळ्ळुम्–मोतियों से सज्जित वितानों में; इयङ्कु कार्–संचरणशील मेघ; मिटैन्त का–जहाँ आ जुटे उन उद्यानों में; ॲळिऩि चूळ्ळुम्–पर्दों से आवृत्त जैसे रहनेवाले स्थानों में; कयङ्कळ् पोऩ्ऱु–जलाशयों के समान; ऒळिर्–लगनेवाले; पळिङ्कु अटुत्त–स्फटिक की चट्टानों के पास के; कानमुम्–उद्यानों में; वयङ्कु पू पन्तरुम्–सुशोभित पुष्पलताकुंजों में; ॲय्तिऩार्–जा पहुँचे। १०४३

स्त्रियाँ मोतियों से सज्जित कृत्रिम मंडपों, संचरणशील मेघों से भरे उपवनों में मानो पर्दों से आवृत्त गुप्त स्थानों, जलाशय समान दिखनेवाले

स्फटिक-चट्टानों के पास रहनेवाले पुष्पोद्यानों, और पुष्पलता भवनों में जा पहुँचीं। १०४३

पूक्कम ऴोदियर् पोतु पोक्किय
शेक्कयिऩ् विळैशॅरुच् चॅरुक्कुऴ् जिऩ्दयर्
आक्किय वमुदॅऩ वम्बॊऩ् वळ्ळत्तु
वाक्किय पशुनऱा माऩ्दऩ् मेयिऩार् 1044

पू कमऴ् ओतियर्–पुष्पवासित केशवाली स्त्रियाँ; पोतु पोक्किय चेक्कयिऩ्–पुष्पबहुल शय्या पर; विळै–होनेवाले; चॅरु–(रति के) उलझन में; चॅरुक्कुम् चिन्तैयर्–आनन्द लूटने का मन करके; आक्किय अमुतु अॅऩ–नवनिर्मित अमृततुल्य; अम्पॊऩ् वळ्ळत्तु–सुन्दर स्वर्णचषकों में; वाक्किय–ढला हुआ; पचु नऱा–गाढ़ा सुरा; माऩ्तऩ् मेयिऩार्–पीने लगीं। १०४४

पुष्पों की सुगन्धि से सुवासित केशवाली स्त्रियों ने पुष्प-बहुल शय्याओं पर अपने प्रेमियों के साथ रति में उलझकर आनन्द लूटना चाहा। इसलिए उन्होंने स्वर्णचषकों (सुरा पात्रों) में नवीन अमृत के समान ढली हुयी गाढ़ी सुरा पी ली। १०४४

मीऩुडै विशुम्बिऩार् विञ्जै नाट्टवर्, ऊऩुडै युडम्बिऩा रुरुव मॊप्पिलार्
माऩुडै नोक्किऩार् वायिऩ् माऩ्दिऩार्, तेऩुडै मलरिडैत् तेऩ्बॆय् दॆऩ्ऩवे 1045

मीऩ् उटै विचुम्पिऩार्–नक्षत्र भरा आकाशवाले (देवगण); विञ्चै नाट्टवर्–विद्याधर लोकवासी; उरुवम् ऑप्पु इलार्–जिनकी, रूपसौंदर्य में समानता नहीं कर सकते वे; माऩ् उटै नोक्किऩार्–मृग की-सी दृष्टिवाली; ऊऩ् उटै उटम्पिऩार्–मांसल शरीरवाली उन स्त्रियों ने; तेऩ् उटै मलर् इटै–शहद सहित पुष्पों में; तेऩ् पॆय्तवु अॆऩ्ऩ–और मधु डाला जाय ऐसा; वायिऩ् माऩ्तिऩार–मुख में (सुरा) ढालकर पी। १०४५

ये स्त्रियाँ अवश्य मानव थीं और मांसपिण्ड थीं। तो भी नक्षत्र भरे आकाशलोक की वासिनियाँ ही क्यों, विद्याधर लोक की वासिनियाँ भी इनकी समानता नहीं कर सकती थीं; ये मृगलोचनियाँ इतनी रूपवती थीं। इन्होंने अपने मुख में सुरा ढालकर पी। वह ऐसा लगता था मानो मधु भरे पुष्प पर और भी मधु ढाला जाता था। (स्त्रियों के मुख पुष्प हैं और उनके मुख से जो जल (लार) स्रवता है उसका श्रृंगारशास्त्र में मधु-सा महत्व है। अतः शहद भरे पुष्प के साथ मुख की तुलना की गयी है।)। १०४५

उक्कपाल् पुरैनऱा वुण्ड वुळ्ळमुम्
कॆक्कवि नॊॅळिपडच् चिवन्दु काट्टत्तऩ्
मैक्कणुऴ् जिवन्दवोर् मडन्दै वाय्वऴिप्
पुक्कदे नमुदमाय्प् पुहुन्द पोदिऩ् 1046

ओर् मटन्तै–एक दयिता के; कै कविन् ऑळि पट–हाथ के सुन्दर प्रकाश के पड़ने से; उक्क पाल् पुरै नरा–(स्फटिक प्याली में) ढली दूध सम सुरा; उण्ट वळ्ळमुम्–उसको धरनेवाली प्याली भी; चिवन्तु काट्ट–लाल बनी दिखीं; वाय् वळि पुक्क तेन्–उसके मुख के अन्दर (जो) सुरा गयी वह; अमुतम् आय्–अमृत बनकर; पुकुन्त पोतिन्–(पेट में) गयी तब; तन् मै कण्णुम्–उसके अंजनयुक्त नेत्र भी; चिवन्त–लाल बने। १०४६

एक सुन्दरी के हाथ में स्फटिकप्याली थी। उसमें दूध सदृश मद्य भरा था। उस पर उस सुन्दरी के हाथ की छाया पड़ी तो प्याली और मदिरा दोनों लाल बन गयी। इसलिए उसके पेट में जो मद्य अमृत-सा बनकर गया उससे अंजन लगे नेत्र भी लाल हो गये। १०४६

ताममु नानमुन् ददैन्द तण्णहिल्, तूममुण् कुळ्लिय रुण्ड तूनऱै
ओमवॆङ् गुळियुहु नॆय्यि नुळ्ळुऱै, कामवॆङ् गनलिनैक् कनऱ्ऱिक् काट्टिऱ्ऱे 1047

तामममुम्–पुष्पहार; नानमुम्–(बिलाव-) कस्तूरी; ततैन्त–खूब मिश्रित; तण्–शीतल; अकिल् तूमम् उण्–अगरु के धुएँ से रमाये हुए; कुळ्लियर्–केशवालियों से; उण्ट–पीत; तू नऱै–अच्छी सुरा ने; वॆम् ओमम् कुळि–गरम होमकुण्ड में; उकुम् नॆय्यिन्–डाले गये घृत के समान; उळ् उऱै–अन्दर रहे; कामम् वॆय् कनलित–कामरूपी गरम आग को; कनऱ्ऱि काट्टिऱ्ऱु–उभाड़कर दिखाया। १०४७

स्त्रियाँ स्वत: रूपवतियाँ थीं। उस पर अलंकार भी खूब किया गया था। उनके केश पर पुष्पहार लगे थे। मुश्कबिलाव से प्राप्त कस्तूरी लगी थी। अगरु का धुआँ भी लगा था। उन्होंने जो ताड़ी पी उसने जैसे होमकुंड में डाला गया घी अग्नि को उभाड़ देता है वैसे ही उनकी आंतरिक कामाग्नि को उभाड़ दिया। १०४७

विडऩॊक्कु नॆडिय नोक्कि ऩमुदॊक्कु मिऩ्शॊ लाऱ्दम्
मडऩॊक्कु मडनु मुण्डो वाणुद लॊरुत्ति काणाच्
चडऩॊक्कु निळलैप् पॊऩ्शेय् तण्णरुन् देऱल् वळ्ळत्
तुडऩॊक्क वुवन्दु नीयु मुण्णुदि तोळि यॆऩ्ऱाळ् 1048

वाळ् नुतल् ऑरुत्ति–प्रकाशमय ललाटवाली एक ने; पॊन् चॆय्–स्वर्णरचित; तण् नऱु तेऱल् वळ्ळत्तु–शीतल, सुगन्धित मधु के प्याले में; चटन् ऑक्कुम् निळलै काणा–अपने आकार के बराबर एक (प्रतिबिंब-) रूप को देखकर; तोळि–सखि; नीयुम्–तुम भी; उटन् ऑक्क–साथ-साथ; उवन्तु उण्णति–प्रसन्नता के साथ पिओ; ऎन्ऱाळ्–कहा; विटन् ऑक्कुम्–विष सम; नॆटिय नोक्किन्–आयत आँखें; अमुतु ऑक्कुम्–अमृत सम; इन् चॊल्लार् तम्–मधुरभाषिणी स्त्रियों की; मटन् ऑक्कुम्–नादानी से तुल्य; मटनुम्–नादानी; उण्टो–है क्या? । १०४८

एक सुन्दर ललाटवाली ने शीतल, सुगन्धित ताड़ी से भरी प्याली में अपना-सा एक रूप देखा। समझी कि वह उसकी सखी है। उसने उसे अपने साथ आकर मद्य पीने का निमन्त्रण दिया। यह भी क्या नादानी

है ? विष तुल्य आयत आँखों, और सुधासम बोलीवाली स्त्रियों की अज्ञता के समान कोई नादानी भी कहीं होती है ? यह विचित्र नादानी है। १०४८

अच्चनुण् मरुङ्गु लाळो रणङ्गना ळळह पन्दि
नच्चुवेऱ् करुङ्गट् चॅव्वाय् नहैमुह नऱवुट् टोन्ऱप्
पिच्चिनी यॅन्शॅय् दायिप् पॅरुनऱ विरुक्क वाळा
ऍच्चिलै नुहर्दि योवॅन् ऱॅयिऱ्ऱरुम् बिलङ्ग नक्काळ् 1049

अच्चम् नुण् मरुङ्कुलाळ्-(टूट जाने का) भय दिखानेवाली पतली कमर की; ओर् अणङ्कु अन्नाळ्-एक देवबाला सदृश स्त्री के; अळकम् पन्ति-केशजाल; नच्चु वेल्-विष लगे भाले के समान; करु कण्-और काले नेत्र; चॅव्वाय्-लाल मुख इनसे युक्त; नकै मुकम्-उज्ज्वल आनन; नऱवु उळ् तोन्ऱ्-सुरा के अन्दर दिखा, तो; पिच्चि-री पगली; नी ऍन् चॅय्ताय्-यह तुमने क्या किया; इ पॅरु नऱवु इरुक्क-इधर (इस सुराही में) इतनी अधिक सुरा के होते; वाळा-व्यर्थ; ऍच्चिल् नुकर्तियो-उच्छिष्ठ पिओगी; ऍन्ऱु-कहकर; ऍयिऱु अरुम्पु-दन्तकलियों को; इलङ्क-प्रकट करते हुए; नक्काळ्-हँसी। १०४९

एक अप्सरातुल्य स्त्री थी, जिसकी कमर इतनी पतली थी कि हमेशा उसकी स्थिति में डर बना रहता था। उसने प्याली में देखा तो घना केश, विषसिक्त भाले-सी काली आँखें, लाल अधर— इनके साथ शोभायमान एक मुख दिख रहा है। वह उसके ही मुख का प्रतिबिम्ब था। समझी कि वह मेरी सखी है। उसने कहा— री पगली ! सुरापात्र में बहुत सुरा है ! तो भी तुमने यह क्या किया ? व्यर्थ ही उच्छिष्ठ का पान करने चली ? यह कहकर वह अपनी कलियों सदृश दंतपंक्ति प्रकट करते हुए हँसी। १०४९

पुऱमॅला नहैशॅय् देशप् पॉरुवरु मेन्नि वेऱोर्
मऱमुलाङ् गॉलैवेऱ् कण्णाण् मणियित्वळ् ळत्तु वॅळ्ळै
निऱनिलाक् कदिर्हळ् पाय निऱैन्ददु पोन्ऱु तोन्ऱ
नऱविला ददनै वायित् वैत्तन णाणुट् कॉण्डाळ् 1050

पॉरु अरु मेनि-अनुपम रूप; वेऱु ओर् मऱम् उलाम्-कुछ अन्य तरह की क्रूरतावाले; कॉलै वेल् कण्णाळ्-घातक भाले-सी आँखोंवाली (एक ने); मणियिन् वळ्ळत्तु-स्फटिक प्याली में; वॅळ्ळै निऱ-श्वेत रंग की; निला कतिर्कळ् पाय-चन्द्र की किरणों के लगने से; निऱैन्तत्तु पोन्ऱु-भर गई सी; तोन्ऱ-दिखी, तो; पुऱम् ऍलाम् नकै चॅय्तु एच-पास वाले सब हँसकर हँसी उड़ाएँ, ऐसा; नऱवु इलाततै-सुरा से खाली, उसको; वायिन् वैत्तनळ्-मुख पर रख लिया; नाण् उळ् कॉण्टाळ्-लाज से भर गई। १०५०

एक अनुपम सुन्दरी की बात देखिये। उसकी आँखें भाले के समान घातक तो थीं पर अनोखे ढंग से ये आँखें अपने स्थान पर रहकर भी पुरुषों

के मर्म पर आघात कर सकती थीं। उसके हाथ में स्फटिक की खाली प्याली थी। उस पर श्वेत रंग की चाँदनी पड़ी तो लगा कि प्याली भर गयी। उसने पीने के विचार से उस प्याली को अपने ओठों पर लगाया। यह देखकर पास रहनेवालों को हँसी आ गयी। तब तक उसे भी मालूम हो गया कि वह प्याली खाली है। वह लाज से भर गयी। १०५०

याऴ्क्कुमिऩ् कुऴऱ्कु मिऩ्ब मळित्तऩ विवैया मॆऩ्ऩक्
केट्कुमॆऩ् मऴलैच् चॊल्लोर् किञ्जुहङ् गिडऩ्द वायाऴ्
ताट्करुङ् गुवळै तोय्न्द तणणऱ्च् चाडि युट्टऩ्
वाट्कणि निऴलैक् कण्डाऴ् वण्डॆऩ वोच्चु हिऩ्ऱाऴ् 1051

याऴ्क्कुम्–याऴ् (वीणा का पुराना रूप) को; इऩ् कुऴऱ्कुम्–मधुर बाँसुरी को; इऩ्पम् अळित्तल–मिठास देनेवाले; इवै आम् ऎऩ–ये ही हैं, ऐसा कहने योग्य; केट्कुम्–स्वरित होनेवाले; मॆल् मऴलै चॊल्–कोमल तोतले वचनवाली; ओर् किञ्चुकम् किटन्त वायाऴ्–किंशुक सम लाल मुख की एक ने; ताळ् करु कुवळै तोय्न्त–जिसमें नाल के साथ नीलोत्पल डाले गये थे उस; तण् नऱै चाटियुळ्–शीतल सुगन्धयुक्त सुराही में; तऩ् वाळ् कण्णिऩ्–अपनी तलवार-सी आँखों का; निऴलै कण्टाऴ्–प्रतिबिंब देखा; वण्टु ऎऩ–भौंरे समझकर; ओच्चुकिऩ्ऱाऴ्–उड़ाती है। १०५१

एक स्त्री ने ताड़ी की सुराही के अन्दर देखा। वह बड़ी ही मीठी और तुतलाती हुयी बोलनेवाली थी। उसका स्वर इतना मधुर था कि वीणा और बाँसुरी की मधुरता इसी की देन समझी जा सकती थी। उसका मुख किंशुकपुष्प के समान लाल था। ताड़ी की सुराही में नीलोत्पल नालों के साथ डाल रखे गये थे। जब उसने उस सुराही के अन्दर देखा तो उसकी आँखों का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। उसने समझ लिया कि वे भ्रमर हैं। उनको उड़ाने लगी। १०५१

कळित्तहण् मदर्प्प वाङ्गोर् कऩङ्गुऴै कळ्ळि ऩुळ्ळे
वॆळिप्पडु हिऩ्ऱ काट्चि वॆण्मदि निऴलै नोक्कि
अळित्तनै नवयम् वाऩत् तरविनै यञ्जि नीवन्
दॊळित्तनै नडुङ्ग लॆऩ्ऱाङ् गिऩियऩ वुणर्त्तु हिऩ्ऱाऴ् 1052

आङ्कु–वहाँ; ओर् कऩम् कुऴै–स्वर्णकुण्डलधारिणी एक; कळित्त कण्–मोदपूर्ण आँखों को; मतर्प्प–मस्ती दिलाते हुए; कळ्ळिऩ् उळ्ळे–सुरा के अन्दर; वॆळिप्पटुकिऩ्ऱ काट्चि–दृश्यमान; वॆण् मति निऴलै–श्वेतचन्द्र के प्रतिबिंब को; नोक्कि–देखकर; नी वाऩत्तु अरविनै अञ्चि–तुम आकाश के सर्प (राहु) से डरकर; वन्तु ऒळित्तनै–इधर आकर छिपे हुए हो; अपयम् अळित्तऩॆऩ्–अभय दिलाया; नटुङ्कल्–मत काँपो; ऎऩ्ऱु आङ्कु–ऐसे और अन्य; इऩियऩ–मधुर (धीरज के) वचनों से; उणर्त्तुकिऩ्ऱाऴ्–समझाती है। १०५२

एक स्वर्णकुण्डलधारिणी ने ताड़ी के पात्र के अन्दर झाँका। उसकी मत्त आँखें और भी मस्त हुयीं। क्योंकि उसके अन्दर चन्द्र (का प्रतिविम्व) दिखाई दिया। वह उससे कहने लगी कि तुम शायद स्वर्ग के राहु (सर्प) से डरकर इधर आकर छिपे बैठे हो! मैंने तुमको अभयदान किया। मत डरो। (यद्यपि तुमसे स्त्रियों को, विशेषकर विरहिणियों को दुख होता है, तो भी शरण में आये हो, तुम्हारी हानि नहीं कराऊँगी।) ऐसी वार्ते कहकर उसने उसे ढाढस बँधाया। १०५२

कण्मणि वळ्ळत् तुळ्ळे कळिक्कुन्दन् मुहत्तै नोक्कि
विण्मदि मदुवि नाशै वीऴ्न्ददॆन् ऱॊरुत्ति युन्नि
उण्महिऴ् तुणैव नोडु मूडुनाळ् वॆम्मै नीङ्गित्
तण्मदि यादि याहिऱ् ऱरुवॆनिन् नऱवै यॆन्ऱाळ् 1053

ऑरुत्ति–एक बाला ने; कळ् मणि वळ्ळत्तु उळ्ळे–सुरा के स्फटिक प्याले के अन्दर; कळिक्कुम्–मोदभरे; तन् मुकत्तै नोक्कि–अपने मुख को देखकर; विण् मति–आकाश का चन्द्र; मतुविन् आचै–सुरा की कामना से; वीऴ्न्ततु–गिर गया; ऍन्ऱु उन्नि–यह समझकर; उळ् मकिऴ् तुणैवनोटुम्–मेरे मन के प्यारे प्रेमी के साथ; ऊटुम् नाळ्–रूठने के दिन में; वॆम्मै नीङ्कि–अपनी गर्मी त्यागकर; तण् मति आदि आकिल–शीतल हिमांशु बनोगे तो; इ नऱवै तरुवॆन्–यह सुरा दूँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। १०५३

एक बाला ने सुरा के स्फटिकप्याले में अपना मस्त मुख देखा। समझा कि आकाश का चन्द्र इसमें गिर गया है। शायद वह सुरापान के मोह से इस तरह गिरा है। तब वह शर्त लगाकर कहती है कि अगर तुम, जब मैं अपने प्यारे पति से रूठूँगी, तब गरम होकर ताप देना छोड़कर सचमुच हिमांशु रहने का वादा करोगे तो मैं तुमको पान करने दूँगी। १०५३

ऍळ्ळॊत्त कोल मूक्कि नेन्दिऴै यॊरुत्ति पूङ्गै
तळ्ळत्तण् णऱवै यॆल्लान् दविशिडै युहुत्तुन् देऱाळ्
उळ्ळत्तिन् मयक्कन् दन्ना लुप्पुऱत् तुण्डॆन् ऱुन्नि
वळ्ळत्तै मऱित्तु वाङ्गि मणिनिऱ विदऴिन् वैत्ताळ् 1054

ऍळ् ऑत्त–तिल के फूल सदृश; कोलम् मूक्किन्–सुन्दर नासिकावाली; एन्तु इऴै–धृत आभरणोंवाली; ऑरुत्ति–एक नारी ने; पू कै तळ्ळ–फूल से हाथ के कम्पन से; तण् नऱवै ऍल्लाम्–शीतल सुरा को; तविचु इटै उकुत्तुम्–आसन पर गिरा दिया, तब; उळ्ळत्तिल्–मन में; मयक्कम् तन्नाल्–भ्रांति से; तेऱाळ्–न जानकर; उ पुऱत्तु उण्टु–(प्याले के) उस तरफ़ होगा; ऍन्ऱु उन्नि–यह समझकर; वळ्ळत्तै–प्याले को; मऱित्तु वाङ्कि–उलट लेकर; मणि निऱम् इतऴिन्–(लाल) मणि सदृश लबों पर; वैत्ताळ्–लगाया। १०५४

तिल के फूल के समान सुन्दर नासिकावाली, आभरणभूषिता एक

स्त्री के हाथ नशे के कारण उत्पन्न कंपन से प्याले की सारी सुरा आसन पर ढलक गयी। नशे के आलम में उसने सोच लिया कि उसने गलत तरीके से प्याला पकड़ा है। इसलिए उसने प्याले को उलटाकर अपने ओठों पर रख लिया। १०५४

वाऩ्ऱतैप् पिरिद लाऱ्ऱा वण्डिऩम् वच्चै माक्कळ्
एऩ्ऱमा निदियम् वेट्ट विरवल रॅऩ्ऩ वार्प्पत्
तेऩ्ऱरु कमलच् चॅव्वाय् तिऱन्दुते नुहर नाणि
ऊऩ्ऱिय कळुनीर् नाळत् ताळिऩा लॊरुत्ति युण्डाळ् 1055

वाऩ् तत्तै–आकाश में मँडराना; पिरितल् आऱ्ऱा–त्याग न सकने वाले; वण्टु इऩम्–भ्रमरकुल; वच्चै माक्कळ् एऩ्ऱ–कृपण लोगों से रक्षित; मा नितियम् वेट्ट–बड़े धन को पाना चाहनेवाले; इरवलर् अॅऩ्ऩ–याचकों के समान; आर्प्प–शब्द कर रहे थे, तब; ऑरुत्ति–एक; तेन् तरु कमलम्–शहद सहित कमल के सदृश; चॅव्वाय्–लाल मुख; तिऱन्तु–खोलकर; तेन् नुकर नाणि–सुरा पीने से संकोच करके; ऊऩ्ऱिय–(पात्र में) डाले गये; कळुनीर् नाळम् ताळिऩाल्–कुवलय के नाल की नली से; उण्टाळ्–चूसा। १०५५

सुरा के पात्र के ऊपर भ्रमर मँडरा रहे थे और वहाँ से हटते ही नहीं थे मानो वे मँडराना नहीं छोड़ सकते हों। वह याचकों का कृपण लोगों से धन पाने की इच्छा में उनके पास घूमते रहने के समान था। एक स्त्री को इन भ्रमरों को न हटते देखकर पात्र से प्याले में ढालने से संकोच हो गया। यह डर रहा कि भ्रमर प्याले में गिरकर मुख के अन्दर भी चले जायँगे। इसलिए उसने कुवलय के नाल की नली द्वारा सीधे सुरापात्र से ही चूसकर पी ली। १०५५

पुळ्ळुऱै कमल वाविप् पॊरुहयल् वॅरुवि योड
वळ्ळुऱै कळित्त वाळ्बोल् वशियुऱ वयङ्गु कण्णाळ्
कळ्ळुऱै मलर्मॆऩ् कून्दऱ् कळियिळ मञ्ञै यऩ्ऩाळ्
उळ्ळुऱै यऩ्ब नुणणा ऩॆऩ्ऩऱ वुण्ण लॊण्णाळ् 1056

पुळ् उऱै–पक्षियों से भरे; कमलम् वावि–कमलवापी की; पॊरु कयल्–संघर्षशील मछलियाँ; वॅरुवि ओट–डरकर भाग जायँ, ऐसी; वळ् उऱै कळित्त–दृढ़ म्यान से निकाली गई; वाळ् पोल्–तलवार के समान; वचि उऱ वयङ्कु–तीक्ष्ण रहनेवाली; कण्णाळ्–आँखों की; कळ् उऱै मलर् मॆऩ् कून्तल्–मधुयुक्त पुष्पालंकृत केशवाली; कळि इळ मञ्ञै अऩ्ऩाळ्–मत्त बालमयूर-सी छटावाली; उळ् उऱै अऩ्पऩ्–मन में रहनेवाले प्रेमी पति; उण्णाऩ् अॆऩ–सुरापान नहीं करता, इससे; नऱवु उण्णल् ऒण्णाळ्–सुरा पान करने का मन नहीं करती। १०५६

एक स्त्री थी, जिसकी आभा मोर की छटा के समान थी। उसकी आँखें, कमलसर की संघर्षशील मछलियों से भी अधिक सुन्दर और चंचल

थीं। मछलियाँ लाज से डरकर भाग जायँ इतनी सुन्दर थीं। साथ-साथ वे म्यान से बाहर निकली तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके केश पर पुष्प सज्जित थे और उन पुष्पों पर भ्रमर मँडरा रहे थे। वह स्त्री अपने प्यारे पति की सहधर्मचारिणी थी। उसने सुरापान नहीं किया क्योंकि उसने सोचा कि मेरे पति नहीं पीते, इसलिए मैं भी नहीं पिऊँगी। पति तो उसके मन में बैठा हुआ था। १०५६

अऴिहिऩ्ऱ वऱिवि ऩालो पेदैमै यालो वाऱुच्
चुऴियौऩ्ऱि निऩ्ऱ वॅऩ्ऩु मुऩ्दिया ळौरुत्ति शॅऩ्देऩ्
पॉऴिहिऩ्ऱ पूविऩ् वेय्ऩ्द पऩ्दरैप् पुरैत्तुक् कोऴ्वऩ्
दिऴिहिऩ्ऱ कॉऴुनि लावै नऱवॅऩ वळ्ळत् तेऱ्ऱाळ् 1057

आऱु चुऴि–नदी की भँवर; ऑऩ्ऱि निऩ्ऱतु–(इसके साथ) लगी रहती है; ॲऩ्ऩुम्–ऐसी; उऩ्दियाळ् ऑरुत्ति–नाभीवाली एक ने; अऴिकिऩ्ऱ् अऱिविनालो–नष्ट चेतना के कारण; पेतैमैयालो–(या) अज्ञता के कारण; चॅऩ्तेऩ् पॉऴिकिऩ्ऱ–अच्छा शहद ढलकनेवाले; पूविऩ् वेय्ऩ्त–पुष्पों से भरे; पऩ्तरै–लतावितान को; पुरैत्तु–चीरते हुए; कीऴ् वऩ्तु इऴिकिऩ्ऱ–नीचे आ पड़नेवाली; कॉऴु निलावै–घनी चाँदनी को; नऱवु ॲऩ–सुरा समझकर; वळ्ळत्तु एऱ्ऱाळ्–प्याले में भरा। १०५७

एक स्त्री ने, जिसकी नाभि नदी की भँवर आकर लगी हो ऐसी थी, एक विचित्र काम किया। उसने नशे के आलम में किया या मूर्खतावश पता नहीं। लता कुंज में, जहाँ मधुस्रावी पुष्प सर्वत्र भरे थे, जाकर उसने अपने प्याले में, वितान के छिद्रों से आनेवाली चाँदनी को सुरा मानकर ग्रहण किया। (पकड़ने का प्रयास किया)। १०५७

मिऩ्ऩॅऩ नुडङ्गु हिऩ्ऱ मरुङ्गुला ळौरुत्ति वॅळ्ळै
इऩ्ऩमु दऩैय तीञ्जॉ लिडॅतडु माऱि येय्ऩ्द
वऩ्ऩमे कलैयै नीक्कि मलर्त्तॊडै यलहुल् शूऴ्न्दाळ्
पॊऩ्ऩरि मालै कॊण्डु पुरिहुऴल् पुऩैय लुऱ्ऱाळ् 1058

मिऩ् ॲऩ–बिजली सी; नुटङ्कुकिऩ्ऱ–लचकनेवाली; मरुङ्कुलाळ् ऑरुत्ति–कमरवाली एक; वॅळ्ळै–श्वेतवर्ण; इऩ् अमुतु अऩैय–मधुर सुधा सम; तीम् चॉल्–मधुर वचन; इटै तटुमाऱि–बोलने में लड़खड़ाती थी; अल्कुल् एय्ऩ्त वऩ्ऩम्–नितम्बभूषी अनेक रंगों की; मेकलैयै नीक्कि–मेखला को दूरकर; मलर् तॊटै–पुष्पमाला; चूऴ्न्ताळ्–लपेट ली; पॊऩ्ऩरि मालै–स्वर्ण (रचित) पुष्पों को (कण्ठ की) माला को; कॊण्टु–लेकर; पुरि कुऴल्–जूड़े को; पुऩैयल् उऱ्ऱाळ्–अलंकृत किया। १०५८

एक बिजली-सी क्षीण-कटि वाली नशे की स्थिति में क्या-क्या करती है। उसके दुराव-रहित और अमृत-सम मधुर वचन अस्पष्ट और खण्डित शब्दों का जल्प हो गये। नितम्बों पर से उसने अपनी मेखला हटा ली और

पुष्पों की माला लपेट ली। गले के, स्वर्णपुष्पों के हार को उतारकर उससे जूड़ा अलंकृत किया। १०५८

कूऱ्ऱुऱऴ् नयनङ्गळ् शिवप्पक् कूऩुदल्
ऐऱ्ऱिवा ळॅयिऱुह ळदुक्कि यिऩ्ऱळिर्
माऱ्ऱरुङ् गरदल मऱिक्कु मादीरु
शीऱ्ऱमा मविनयन् तॅरिक्किन् ऱारिऩे 1059

ओरु मातु—एक स्त्री; चीऱ्ऱम् आम्—क्रोध का; अविनयम् तॅरिक्किऩ्ऱारिऩ्—अभिनय करनेवालों के समान; कूऱ्ऱु उऱऴ्—मृत्यु सरीखी; नयनङ्कळ् चिवप्प—आंखों को लाल करके; कूऩ् नुतल एऱ्ऱि—वक्र भौंहों को भाल पर चढ़ाकर; वाळ् ऍयिऱ्कळ् अतुक्कि—उज्ज्वल दाँत पीसकर; इऩ् तळिर् माऱ्ऱ—मनोहर पल्लव विजयी; अरु करतलम्—श्रेष्ठ हथेलियों से; मऱिक्कुम्—निवारण (का अभिनय) करती है। १०५६

एक स्त्री नशे में अकारण क्रोध से भर गयी। उसकी मृत्यु-सी आँखें लाल हो गयीं। टेढ़ी भौंहें भाल पर चढ़ गयीं। उसने सुन्दर दाँत पीसे। अपने पल्लव विजयी हाथों को किसी अप्रकट वस्तु के निवारण की मुद्रा में हिलाया। १०५९

तुडित्तवाऩ् ऱुवरिदळ्त् तॉण्डै तूनिलाक्
कडित्तवा लॅयिऱुह ळदुक्किक् कण्गळाम्
वडित्तवॅङ् गुरुदिवेल् विऴिक्कु मादर्मॅय्
पॉडित्तवेर् पुऱत्तुहु नऱवम् बोऩ्ऱदे 1060

तुटित्त—फटक रहे; वाऩ् तुवर् इतऴ्—अधिक लाल अधररूपी; तॉण्टै—बिंबफल को; तू निला कटित्त—शुद्ध (सफेद) चाँदनी को हरानेवाले; वाल् ऍयिऱ्कळ्—उज्ज्वल दांतों से; अतुक्कि—काटते हुए; कण्कळ् आम्—आँखें रूपी; वटित्त वॅम् कुरुति वेल्—पैनाये गये रक्तसिक्त भाले से; विऴिक्कुम् मातर्—दृष्टि चलानेवाली एक स्त्री; मॅय् पॉटित्त वेर्—देह पर निकले स्वेदकण; पुऱत्तु उकु नऱवम् पोऩ्ऱतु—बाहर टपकनेवाले मद्य के समान थे। १०६०

और एक ने फड़कते लाल अधररूपी बिम्वफल को उज्ज्वल चाँदनी-विजयी दाँतों से दबाया। दृष्टिरूपी तीक्ष्ण और क्रूर भाला फेंकती-सी भयंकर रूप से घूरने लगी। उसके शरीर पर स्वेदकण जो प्रकट हुये वे मानो बाहर ढलकनेवाली सुरा की बूंदों के समान थे। १०६०

कऩित्तिर ळिदऴ्पॉदि शॅम्मै कण्बुह
निऩैप्पदीऩ् ऱुरैप्पदीऩ् ऱामॊर् नेरिऴै
तऩित्तड मरॅमलर् मुहत्तुच चावमुम्
कुऩित्ददु पऩित्तदु कुऴवित् तिङ्गळे 1061

ओर् नेर् इऴै—उत्तम आभरणधारिणी एक; कति तिरळ्-इतऴ्—बिंबफल सम व पुष्ट अरधों की; पॉति चॅम्मै—भरी लालिमा के; कण् पुक—आँखों में प्रवेश कर जाने

से; तति तटम् मरै मलर् मुकत्तु–अनुपम, विशाल कमल-मुख का; चापमुम् कुनित्तु–धनुष भी झुका; कुऴवि तिङ्कळ् पनित्तु–बालचन्द्र (भाल) पसीने से भरा; निनैप्पतु ऒन्ऱु–सोचती एक; उरैप्पतु ऒन्ऱु आम्–बोलती (दूसरा) एक। १०६१

एक उत्तम आभरणों की धारिणी की, बिम्बफलाधरों की घनी लालिमा उसकी आँखों में पहुँच गयी। उसके अप्रतिम और बड़े कमल के समान जो था उस मुख का चाप भी झुका। यानी भौंहें टेढ़ी हो गयीं। बालचन्द्र भी जलसीकरयुक्त हो गया; यानी उसके भाल पर स्वेद झलक आया। वह सोचती एक और कहती एक—बकने लगी। १०६१

इलविदऴ् तुवर्विड वॆयिऱु तेऩुह
मुलैमिशैक् कच्चॊडु कलैयु मूट्टऱ
अलैहुऴल् शरिदर वशदि याडलाल्
कलविशॆय् कॊऴुनरुङ् कळ्ळु मॊत्तवे 1062

इलवु इतऴ्–सेमर के फूलों के समान अधर; तुवर् विट–लाल रंग छोड़ गये; ऎयिऱु तेन् उक–दाँतों ने मधु स्रवा; मुलै मिचै कच्चॊटु–स्तनों पर बँधे हुए अँगिये के साथ; कलैयुम्–वस्त्र भी; मूट्टु अऱ–बन्धन-मुक्त हुए; अलै कुऴल्–बिखरा केश; कुलैय–अस्त-व्यस्त हुआ; अचति आटलाल्–थकावट हुई, इसलिए; कलवि चॆय् कॊऴुनरुम्–सम्भोग करनेवाला पति और; कळ्ळुम्–सुरा; ऒत्त–एकसम हुए। १०६२

शराबी स्त्रियों के लिए सम्भोग करनेवाले पति और मद्य दोनों समान रूप हो जाते हैं, क्योंकि पतिप्रसंग पर सेमर से लाल अधर लालिमा छोड़ जाते हैं; दाँतों से लार (रूपी) शहद रसता है; स्तनों पर से अँगिया और शरीर पर से वस्त्र बन्धन खोलकर हटा दिये जाते हैं। शरीर थक जाता है। वे ही कार्य मद्यपान से भी सम्पादित हो जाते हैं। १०६२

कनैहऴऱ् कामनाऱ् कलक्क मुऱ्ऱदै
अननहनुक् कऱिवियॆन् ऱऱियप् पोक्कुमोर्
इननमणिक् कलैयिना डोऴि नीयुमॆन्
मननमॆनत् ताऴ्दियो वरुदि योवॆन्ऱाळ् 1063

कनै कऴल्–बजनेवाली पायलधारी; कामनाल्–कामदेव से; कलक्कम् उऱ्ऱतै–अशान्त रहना; अनकनुक्कु–अनघ (मेरे पति) को; अऱिवि–समझाओ; ऎन्ऱु–कहकर; अऱिय–समझाने के लिए; पोक्कुम्–दूती को भेजनेवाली; ओर् इनम् मणि कलैयिनाळ्–श्रेष्ठ विभिन्न रत्नों की मेखलाधारिणी एक ने; तोऴि–सखि; नीयुम्–तुम भी; ऎन् मनम् ऎन–मेरे मन के जैसे; ताऴ्तियो–ठहर जाओगी; वरुतियो–(या) आ जाओगी; ऎन्ऱाळ्–कहा। १०६३

नादयुक्त पायलधारी कामदेव के कारण एक (कामातुरा) स्त्री को बहुत बेचैनी हुई थी। श्रेष्ठ रत्नों की बनी मेखलाधारिणी उसने वह बात

अपने प्रेमी से कहने के लिए एक दूती को भेजा। भेजते समय उसने सखी से संशय भरा प्रश्न किया कि सखि ! तुम वहाँ मेरे मन के समान, जो उनके पास ही ठहर गया है, ठहर जाओगी या जल्दी आ जाओगी ?। १०६३

मानमर् नोक्कियोंर् मङ्गै वेन्दन्वाल्
आनतन् पाङ्गिय रायि नारॅलाम्
पोनवर् पोनवर् तोंडरप् पोक्किनाळ्
तानुमङ् गवर्पिन्ने तमिय ळेहिनाळ् 1064

मान् अमर् नोक्कि ओर् मङ्कै–हरिणी की-सी आँखवाली एक स्त्री ने; वेन्तन् पाल्–नायक के पास; आन–अनुकूल; तन् पाङ्कियर् आयिनार् ऍल्लाम्–अपनी सभी सखियों को; पोनवर् पोनवर् तोंटर–एक के पीछे एक जाये, ऐसा; पोक्किनाळ्–भेजा; अङ्कु अवर् पिन्ने–उनके पीछे; तानुम् तमियळ् एकिनाळ्–वह अकेली चली। १०६४

मृगनैनी एक की बेचैनी की स्थिति देखिये। उसने अपने नायक के पास एक-एक करके सभी सखियों को भेजा। फिर वह खुद उठकर उसके पास अकेली चली गई। १०६४

मन्ऱना ऱोरुशिऱै यिरुन्दोर् वाणुदल्
तन्ऱुणैक् किळ्ळयैत् तळीयियॅन् नावियै
इन्ऱुपोय्क् कोणर्हिलै यॅन्शॅय् वायॅनक्
कन्ऱिलो डोंत्तियॅन् ऱळुदु शीऱिनाळ् 1065

ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाटवाली; मन्ऱल् नाऱु–जहाँ सुगन्ध फूट रही थी; ओरु चिऱै इरुन्तु–एक ऐसे स्थान में रहकर; तन् तुणै किळ्ळैयै–अपने साथी शुक को; तळीइ–गले से लगाकर; इन्ऱु पोय्–आज जाकर; ऍन् आवियै–मेरे प्राण (-सम पति) को; कोणर्किलै–नहीं लाये; ऍन् चॅय्वाय्–फिर क्या करोगे; ऍनक्कु–मेरे लिए; अन्ऱिलोटु ओत्ति–क्रौंच पक्षी के बराबर हो गये; ऍन्ऱु–कहकर; अळुतु–रोती हुई; चीऱिनाळ्–गुस्सा किया। १०६५

उज्ज्वल ललाटवाली एक प्रेमिका ने जो पी चुकी थी, सुगन्धपूर्ण एक स्थान पर रहकर अपने साथी शुक को गले लगाती हुई उलाहना दी कि तुम जाकर मेरे प्राणों को (प्यारे को) नहीं बुला लाये। फिर तुम मेरे लिए क्या करनेवाले हो। अब तुम शुक नहीं रहे— क्रौंच पक्षी बन गये हो। क्रौंच पक्षी ही अपने स्वर से वियोगिनियों के दिल को दुखाता है। तुम अब उनकी अनुपस्थिति में उनका नाम ले लेकर, मुझे पीड़ा पहुँचा रहे हो ! (साधारण रूप से शुक का नायक नाम सम्बोधन नायिकाओं को आनन्द देता है। कभी-कभी वह दुखदायी भी होता है, जैसे इस नायिका को होता है।)। १०६५

विरैशॅय्पूळ् जेक्कयान् दप्प मीमिशैक्
करैशॅया वाशयङ् गडलु ळाळॊरु
पिरैशमॅन् कुदलैयाळ् कॊऴुनन् पेरॅलाम्
उरैशॅयुङ् गिळ्ळैयै युवन्दु पुल्लिनाळ् 1066

करै चॅया आचै–अपार प्रेम के; कटल्–सागर में; विरै चॅय्–सुगन्धि देनेवाली; चेक्कै आम् तॅप्पम् मी मिचै–शय्या रूपी बेड़े पर; उळाळ्–रहनेवाली; ओरु पिरैचम मॅन् कुतलैयाळ्–शहद सम मीठी तोतली वाली एक ने; कॊऴुनन् पेर् ॲलाम्–पति के नाम सब; उरै चॅयुम् किळ्ळैये–कहनेवाले शुक को; उवन्तु पुल्लिनाळ्–अनुराग के साथ गले लगा लिया। १०६६

अपार कामना के सागर में सुवासित पुष्पशय्या को बेड़ा बनाकर एक मधु-सम मधुरवयनी तैर रही थी। उसके शुक ने उसके नायक के सारे नाम दुहराकर सम्बोधन किया तो उसे बड़ा आनन्द हुआ और उसने चाव के साथ उस शुक को गले लगाया। (पिछले पद में कभी-कभी होनेवाली शुक-सम्बन्धी बात कही गई थी। इसमें सामान्य बात कही गई है।)। १०६६

वळैपयिन् मुन्गयोर् मयिल नाट्कुत्तन्
इळैयवळ् पॅयरिनैक् कॊऴुन नीदलुम्
मुळैयॅयि ऱिलङ्गिड मुरुवल् वन्दडु
कळकळ वुदिर्न्दन कयर्क णालिये 1067

वळै पयिल् मुन् कै–कंकणों से अलंकृत कलाईवाली; ओर् मयिल् अन्नाट्कु–एक मयूराभा को; कॊऴुनन्–पति के; तन् इळैयवळ्–अपनी छोटी सौत के; पयरि नाम को; ईतलुम्–लेने पर; मुळै ॲयिऱु इलङ्किट–अंकुर सदृश दाँतों को प्रकट करते हुए; मुरुवल् वन्ततु–(क्रोध की) हँसी आई; कयल् कण्–मछली-सी आँखे से; आलि–अश्रु; कळ कळ–टप-टप; उतिर्न्तन–गिरे। १०६७

कंकणभूषित हाथोंवाली एक मयूराभा नायिका के पति ने उसकी छोटी सौत का नाम ले लिया तो बीजांकुर के समान दाँत प्रकट करते हुए हँसी और उसकी मछली-सी आँखों से अश्रु टप-टप गिरने लगे। (हँसी क्रोध की हँसी थी। उसे एक साथ क्रोध भी आया और दुख भी हुआ।)। १०६७

शॅऱ्ऱमुऱ् ऱेहवोर् शॅम्मल् वॅम्मयाल्
पऱ्ऱलु मलहुलिऱ् परन्द मेहलै
अऱ्ऱुहु मुत्तिन्मुन् बवनि शेर्न्दन
पॊऱ्ऱॊडि यॊरुत्तिकण् पॊऴिन्द मुत्तमे 1068

पॊन् तॊटि ऒरुत्ति–स्वर्णकंकणधारिणी एक; चॅऱ्ऱम् उऱु एक–रूठकर जाने लगी तब; ओर् चॅम्मल्–श्रेष्ठ (उसके) नायक के; वॅम्मैयाल्–(मनाने की) इच्छ

से; अल्कुलिल् परन्त–नितम्बों पर ढीली पड़ी रही; मेकलै पऱ्ऱलुम्–मेखला को पकड़ने पर; अऱ्ऱु उकु–टूटकर गिरनेवाले; मुत्तिन् मुन्पु–मोतियों के पहले; कण् पॉऴिन्त मुत्तम्–आँखों से गिरे (अश्रु-) मोती; अवनि चेर्न्तत–भूमि पर जा पड़े। १०६८

स्वर्णकंकणालंकृत एक नायिका रूठकर अपने पति से अलग जाने लगी। नायक ने उसे मनाने की इच्छा से उसकी, नितम्बों पर की मेखला को पकड़ लिया तो वह कट गई और उसके मोती गिरने लगे। वे मोती भूमि पर जा लगें, इसके पहले ही उसकी आँखों से निकले मोती (अश्रुकण) भूमि पर गिर गये। (गुस्सा भी नहीं गया और दुख भी हो गया)। १०६८

तोडविऴ् कून्दला ळौरुत्ति तोन्ऱलो, डूडुहॅ नोवुयि रुरुहु नोय्हॅडक्
कूडुहॅ तोववन् गुणङ्गळ् वीणयिल्, पाडुहॅ तोवॅनप् पलवुम् बन्निनाळ् 1069

तोटु अविऴ् कून्तलाळ्–विकसित दलवाले पुष्पों से अलंकृत केशवाली; ऑरुत्ति–एक स्त्री; तोन्ऱलोटु–अपने नायक (राजा) के साथ; उटुकॅन् ओ–रूठूंगी; उयिर् उरुकुम् नोय् कट–प्राणद्रावक रोग दूर करते हुए; कूटकॅन् ओ–मिलूंगी; अवन् कुणङ्कळ्–उनके गुणों को; वीणॅयिल् पाटुकॅन् ओ–वीणा पर गाऊँगी; ऍन–ऐसा; पलवुम्–अनेक प्रकार से; पन्निनाळ्–सोचा। १०६९

एक स्त्री, जिसके केश के फूल पूर्णरूप से विकसित थे, मन में तर्क-वितर्क करने लगी। मेरे पति आ जायँगे तो उनसे रूठी बैठी रहूँ ? या अपने प्राणों को पिघलानेवाला जो वियोग-रोग है उसको दूर करते हुए उनसे मिल जाऊँ ? या वीणा लेकर उनके श्रेष्ठ गुणों के वर्णन करनेवाले गाने गाऊँ ? वह इस तरह अनेक प्रकार से सोच रही थी। १०६९

माडहम् बऱ्ऱिय महर वीणैतन्
तोडविऴ् मलर्क्करत् जिवप्पत् तॉट्टनळ्
पाडिन् ळौरुत्तितन् पाङ्गु ळार्हळो
डूडिन् दुरैसॆया ळुळ्ळत् तुळ्ळदे 1070

ऑरुत्ति–एक बाला ने; ऊटिततु–अपना रूठना; तन् पाङ्कु उळार्कळोटु–अपनी अनुकूल सखियों से; उरै चॅयाळ्–नहीं बताया; माटकम् पऱ्ऱिय–(तन्त्री को लम्बाई को कम या अधिक करने के लिए लगाई गई) पेचवाली; मकर वीणै–मकराकार की वीणा को; तन्–अपने; तोटु अविऴ् मलर् करम्–दल खुले कमलतुल्य करों को लाल करते हुए; तॉट्टनळ्–हाथ में लेकर; उळ्ळत्तु उळ्ळतु–मन में जो रहा वह भाव; पाटिनाळ्–गाने के द्वारा प्रकट किया। १०७०

एक स्त्री ने अपनी अनुकूल सखियों से अपने रूठने की बात साफ़-साफ़ तो नहीं कही। पर उसने वीणा ली। पेच को, अपने हाथ को

दुखाकर लाल करते हुए घुमाया और तन्त्री को उचित तनाव दिया। फिर वह गाने लगी तो उसके आन्तरिक भाव प्रकट हो गये। १०७०

कुऴैत्तमॆन् कॊम्बना ळॊरुत्ति कूडलै
इऴैत्तन ळदुवव ळिऴैत्त पोदॆलाम्
पिऴैत्तलु मनङ्गवेळ् पिऴैप्पि लम्बोडुम्
उऴैत्तन ळुयिर्त्तन ळुयिरुण् डॆन्नवे 1071

कुऴैत्त–पल्लवित; मॆन् कॊम्पु अन्नाळ्–कोमल पुष्पलता सदृश; ऒरुत्ति–एक ने; कूटलै इऴैत्तनळ्–"शकुनवृत्त" बनाये; अतु–वह; अवळ् इऴैत्त पोतॆल्लाम्–उसके बनाने के हर अवसर पर; पिऴैत्तलुम्–(सिरे न मिलकर पूर्ण न बना) गलत निकला; अनङ्कवेळ्–(तव) अनंग देव के; पिऴैप्पु इल् अम्पॊटुम्–अचूक शर के कारण; उऴैत्तनळ्–पीड़ित होकर; उयिर् उण्टु ऎन्न–जीवित तो है यह कहा जाय ऐसा; उयिर्त्तनळ्–साँस लेती रही। १०७१

एक पल्लव व फूलों से भरी पुष्पलतातुल्य दयिता ने शकुन देखना चाहा कि पति आयेगा कि नहीं। वह वृत्त बनाने लगी। (यानी बालू फैलाकर आँखें मूँदकर अपनी उँगली से वृत्त या गोल खींचा। अगर दोनों सिरे मिल गये और वृत्त पूर्ण हुआ तो निश्चित है कि वह आयेगा।) पर हर बार वृत्त नहीं बना, सिरे नहीं मिले। इसलिए उसका मन कामवेदना से भर गया। ज्यों-ज्यों वृत्त गलत हुआ, त्यों-त्यों काम का अचूक शर उसको उत्तरोत्तर अधिक वेदना देने लगा। वह सिर्फ़ साँस लेती रही इसलिए लोगों ने जाना कि वह जीवित है। अन्यथा उसके शरीर में कोई स्पंदन या जीवन के चिह्न नहीं दिखाई दिये। १०७१

पन्दणि विरलिना ळॊरुत्ति पैयुळाल्
सुन्दर नॊरुवन्पाऱ् ऱूदु पोक्किनाळ्
वन्दन नॆनक्कडै यडैत्तु माऱ्ऱिनाळ्
शिन्दनै तॆरिन्दिलऩ् जिवन्द नाट्टमे 1072

पन्तणि विरलिनाळ्–कंदुक शोभावर्द्धिनी उँगलियोंवाली; ऒरुत्ति–एक स्त्री ने; पैयुळाल्–(वियोग-) दुख से; चुन्तरन् ऒरुवन् पाल्–सुषमायुक्त अपने अद्वितीय नायक के पास; तूतु पोक्किनाळ्–दूत भेजा; वन्तनन् ऎन–आया तो; कटै अटैत्तु–द्वार बन्द करके; माऱ्ऱिनाळ्–रास्ता रोका; नाट्टम् चिवन्त–आँखें लाल हुईं; चिन्तनै तॆरिन्तिलम्–अभिप्राय नहीं जानते। १०७२

कंदुक की शोभा को अपनी उँगलियों से बढ़ानेवाली एक स्त्री ने, वियोग-दुख सहन न करके अपने परम सुन्दर नायक के पास सन्देश भेजा। वह भी आ गया। पर इसका मन बदल गया। (उसको अपने झुकने के कारण झुँझलाहट और पति के सन्देशा पाते तक रह जाने से गुस्सा हुआ।) इसलिए उसकी आँखें लाल हुईं और उसने द्वार बन्द कर उसको

अन्दर आने से रोक लिया। हम यह नहीं बता सकते कि अब उसका अभिप्राय क्या है ? । १०७२

उय्त्तपूम् बळ्ळियि नूड नीङ्गुवान्
शित्तमुण् डोरुत्तित तन्नबन् ट्रेर्हिलान्
पॉय्त्तदोर् मूरिया निमिर्न्दु पोक्कुवाळ्
ॲत्तनै यिऱन्दन कडिहै योण्डॆन्ऱाळ् 1073

उय्त्त पू पळ्ळियिन्–(सखियों द्वारा) बिछाई गई पुष्पशय्या पर; ऊटल् नीङ्कुवान्–रूठना छोड़ने का (प्रिय से मिलने का); चित्तम् उण्ट–विचार रखनेवाली; ऑरुत्ति तन् अन्पन्–एक का पति; तेर्किलान्–उसका मन नहीं समझा; पोक्कुवाळ्–समझाने के लिए; पॉय्त्ततु–झूठी; ओर् मूरियाल्–एक अँगड़ाई लेकर; निमिर्न्तु–सीधी होकर; ईण्टु–अब; ॲत्ततै कटिकै–कितनी घड़ियाँ; इऱन्तत–बीतीं; ॲन्ऱाळ्–पूछा। १०७३

एक स्त्री अपनी सखियों से निर्मित पुष्पशय्या पर लेटी थी। उसकी रूठन दूर हो गई और पतिसंयोग की इच्छा हुई। पति वह बात नहीं समझ सका। वह उसे जताना चाहती थी पर खोलकर तो नहीं कह सकी। इसलिए उसने एक झूठी अँगड़ाई ली; फिर शरीर को सीधा किया। बाद में पूछा कि अब कितनी घड़ियाँ वीत गईं ? (मानो वह सो गई थी और अभी-अभी जागी हो।)। १०७३

विदैत्तमॆन् कादलिन् वित्तु मॆय्न्निरै
मुदैप्पुन ननैत्तिड मुळैत्त वेयॆनप्
पदैत्तन ळोरुवन्मे लॊरुत्ति पञ्जडि
उदैत्तलुम् पॊडित्तन वुरोम राशिये 1074

ऑरुत्ति–एक; पतैत्तनळ्–आकुलित हुई; ऑरुवन् मेल्–एक (अपने नायक) पर; पञ्चु अटि उतैत्तलुम्–महावर लगे पैरों से लात मारी, तब; मॆय्–उसका शरीर; निरै मुतै पुनम्–(रूपी) उर्वर खेत को; ननैत्तिट–सिंचित करने से; वितैत्त–बोये गये; मॆन् कातलिन् वित्तु–कोमल प्रेम के बीज; मुळैत्त ॲन–उग आये ऐसा; उरोमराचि–रोम समूह; पॊटित्तन–पुलकित हुए। १०७४

एक स्त्री ने व्याकुल अवस्था में अपने प्रेमी पर लात मारी। उसके रोंगटे खड़े हो गये। कवि की कल्पना है कि प्रेमी का शरीर एक उर्वर खेत था; लाक्षारससिक्त पैरों की लात सिंचन थी और रोमहर्षण प्रेम के बीजों के अंकुर हैं। १०७४

एय्न्दपे रॆळ्ळिलिना नीरुव नॆय्दिनान्
वेय्न्दपो लॆङ्गणु मनङ्गन् वॆङ्गणै
पाय्न्दपूम् बळ्ळियिड् पडुत्त पल्लवम्
तीय्न्दवा नोक्किनान् ऱळिर्क्कुञ् जिन्दयान् 1075

एय्न्त पेर् ॲऴिलित्तान् ऒरुवन्–संभूत बड़ी सुषमाशाली एक; ॲय्तित्तान्–(अपनी प्रेयसी के पास) पहुँचकर; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; अनङ्कन् वॆम् कणै–अनंग के प्यारे शर-पुष्प; वेय्न्त पोल्–बिछाये गये ऐसा; पाय्न्त–विस्तृत; पू पळ्ळियिल्–पुष्पशय्या पर; पट्टुत्त–बिछाये गये; पल्लवम्–पल्लव; तीय्न्तवाऱु–झुलसे रहे, यह प्रकार; नोक्कित्तान्–देखा; तळिर्क्कुम् चिन्तैयान्—उत्फुल्ल-चित्त हुआ। १०७५

संभूत परम सौंदर्य का स्वामी एक था। वह अपनी प्रेयसी के पास आया। वह एक पुष्पों की, जो अनंग के प्यारे शर हैं, बनी शय्या पर लेटी थी। प्रेमी ने देखा कि उस शय्या के फूल और पत्ते कैसे झुलसे हैं। (समझ गया कि नायिका वियोगतप्त है और यह मिलन के लिए युक्त अवसर है।) उसका मन प्रफुल्लित हुआ। १०७५

पॊलिन्दवाण् मुहत्तिनान् पॊङ्गित् तन्नैयुम्
मलिन्दपे रुवहयन् माऱ्ऱु वेन्दरै
नलिन्दवा ळुळवनोर् नङ्गै कॊङ्गैपोय्
मॆलिन्दवा नोक्कित्तन् पुयङ्गळ् वीङ्गिनान् 1076

माऱ्ऱु वेन्तरै नलिन्त–शत्रु राजाओं के त्रासक; वाळ् उळवन्–तलवार कृषक (वीर); ओर् नङ्कै कॊङ्कै–एक (अपनी नायिका) के स्तनों के; पोय् मॆलिन्त आऱु नोक्कि–क्षीण हुए रहने की स्थिति देखकर; पॊङ्कि–उमंगित होकर; तन्नैयुम् मलिन्त पेर् उवकैयन्–अपने से भी अधिक प्रसन्नचित्त और; पॊलिन्त वाळ् मुकत्तितान्–दृश्यमान उज्ज्वल मुखवाला होकर; तन् पुयङ्कळ्–अपनी भुजाओं को; वीङ्कितान्–फुलाया। १०७६

एक राजा ने, जो तलवार का कृषक था, यानी तलवार का धनी था, अपनी प्रेयसी के स्तनों को देखा कि वे किस प्रकार क्षीण हुए हैं। (समझ गया कि ऐन मौका है। अतः) आनन्द से आपे से बाहर हो गया। उसका मुख खिल गया। उसकी भुजाएँ फूल उठीं। १०७६

ऊट्टिय शान्दुवॆन् दुलरुम् वॆम्मयान्
नाट्टिनै यळित्तिनी यॆन्ऱु नल्लवर्
आट्टुनीर्क् कलशमे यॆन्न लायवोर्
वाट्टॊऴिन् मैन्दऱ्कोर् मङ्गै कॊङ्गये 1077

ऊट्टिय चान्तु–(शरीर पर) चर्चित चन्दन; वॆन्तु उलरुम् वॆम्मैयान्–गरमी पाकर सूख जाय, इतना गरम शरीर के; ओर् वाळ् तॊऴिल् मैन्तऱ्कु–एक तलवार-कार्य-कुशल नायक को; ओर् मङ्कै कॊङ्कै–एक नायिका (उसकी प्रिया) के स्तन; नाट्टितै अळित्ति नी–देश का अच्छा परिपालन करो, तुम; ऎन्ऱु–यह कहकर; नल्लवर्–उत्तम लोगों द्वारा; आट्टुम्–अभिषेक कराने के निमित्त; नीर् कलचम् ऎन्नल् आय–(अभिमंत्रित) जल के स्वर्ण कलश कहलाने योग्य बने। १०७७

एक तलवार के धनी वीर की कामवासना इतनी तीव्र थी कि उसका शरीर इतना गरम हो गया कि चर्चित चन्दन भी सूख गया। उसके लिए उसकी नायिका के स्तन उन स्वर्णकलशों के समान थे जिनमें उत्तम शास्त्रज्ञों द्वारा अभिमंत्रित जल भरा हो और जो 'तुम इस देश की खूब रक्षा करो' इस आशीर्वाद के साथ अभिषेक करने के लिए प्रस्तुत कर रखे गये हों। (अब प्रेम का राज्य उसके अधीन हो गया —यह सूचना दी गयी।)। १०७७

पयिरुरु किण्किणि परन्द मेकलै, वयिरवान् पूणवै वाङ्गि नीक्किनाळ्
उयिरुरु तलैवन्बाऱ् पोह वुन्निनाळ्, शॅयिरुरु तिङ्गळैत् तीय नोक्किनाळ् 1078

उयिर् उरु तलैवन् पाल्–प्राण सम नायक के पास; पोक उन्निनाळ्–जाने का विचार करके एक ने; पयिर् उरु–झनझनानेवाले; किण्किणि–"किण्किणि" नामक पैर के आभरण; परन्त मेकलै–(कमर पर की) ढीली मेखला और; वयिरम् वान् पुण् अवै–हीरे के उज्ज्वल अन्य आभरणों को; वाङ्कि नीक्किनाळ्–उतारकर हटाया; चॅयिर् उरु तिङ्कळै–अपराधी चन्द्र को; तीय नोक्किनाळ्–(मानो) जला देगी ऐसा देखा। १०७८

एक नायिका ने नायक के पास (अभिसारिका हो) जाना चाहा। इसलिए उसने पैर की पैंजनी (तमिऴ में 'किणकिणी' कहा जाता है) कमर की मेखला और अन्य हीरे के उज्ज्वल आभरण उतारकर दूर किये। (ये उसके रहस्य को खोल सकते थे।) तब उसने देखा चाँद अपराधी है। चाँदनी में वह गुप्तरूप से कैसे जा सकेगी ? इसलिए उसने चाँद के प्रति आग्नेय दृष्टि फेरी। १०७८

एलुमिव् वन्मयै यॅन्नॅन् रुन्नुदुम्
आलैमॅन् करुम्बन्ना नॊरुवऱ् काङ्गॊरु
शोलमॅन् कुयिलन्नाळ् शुऱ्ऱि वीक्किय
मालयै निमिर्न्दिल वयिरत् तोळ्हळे 1079

आलै मॅन् करुम्पु अन्नान्–(ईख के) कोल्हू में पिसनेवाले कोमल ईख के सदृश रहे; ऑरुवऱ्कु–एक नायक के; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्र कठोर कंधे; आङ्कु–वहाँ; ऑरु चोलै मॅन् कुयिल् अन्नाळ्–एक उपवन की कोमल कोयल तुल्य एक (नायिका) द्वारा; चुऱ्ऱि वीक्किय–लपेटकर बाँधी गई; मालैयै–माला को; निमिर्न्तिल–तोड़ नहीं सके; एलुम् इ वन्मैयै–(माला को) प्राप्त इस शक्ति का; ऎन् ऎन्ऱु उन्नुतुम्–क्या कहकर माना जाय। १०७९

एक नायक था, बेचारा ! वह कोल्हू में पिसनेवाले ईख के समान हो गया था। उसकी वज्र कठोर भुजाओं को एक उद्यानवासिनी कोमल कोकिलातुल्य स्त्री (नायिका) ने पुष्पमाला से बाँध दिया। वह उस बन्धन से अपनी भुजाओं को मुक्त नहीं करा सका। उस माला के बल का क्या सोचा जाय ? (प्रेम की विचित्र दशा का विदग्ध चित्रण है।)। १०७९

शोर्हुऴ लॊरुत्तिदऩ् वरुत्तम् जॊल्लुवाऩ्
मारऩै नोक्कियोर् मादै नोक्किऩाळ्
कारिहै यवळिवळ् करुत्तै नोक्कियोर्
वेरियन् दॆरियलाऩ् वीडु नोक्किऩाळ् 1080

चोर् कुऴल् ऒरुत्ति–बिखरे केशवाली एक ने; तऩ् वरुत्तम्–अपने वियोग-दुख को; चॊल्लुवाऩ्–जताने के लिए; मारऩै नोक्कि–(चित्रार्पित) मार को देखकर; ओर् मातै नोक्किऩाळ्–एक (सखी) स्त्री को देखा; कारिकै अवळ्–सखी, उसने; इवळ् करुत्तै नोक्कि–इसका आशय समझकर; ओर् वेरि अम् तॆरियलाऩ्–सुवासपूर्ण सुन्दर मालाधारी एक अप्रतिम (नायक) के; वीटु नोक्किऩाळ्–घर की तरफ़ गई। १०८०

एक वियोग-दुखिनी नायिका ने, जिसका कुंतल खुलकर बिखर रहा था, अपनी सखी को अपनी स्थिति जताना चाहा। सीधे शब्दों में कह नहीं सकी। इसलिए उसने मारदेव के चित्र को देखा, फिर अपनी सखी पर दृष्टि डाली। सखी समझ गई और नायक के घर की तरफ़ उसने प्रस्थान किया। (नोक्कु–'देख' शब्द, देख, संकेत बता, संकेत समझ, की तरफ़ जा —इन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।)। १०८०

शिऩङ्गॊळु वेऱ्कयोर् शॆम्मल् पालॊरु
कऩङ्गुऴै मयिलऩाळ् कडिदु पोयिऩाळ्
मऩङ्गुऴै नऱवमो मालै ताऩ्गॊलो
अऩङ्गऩो यार्हॊलो वऴैत्त तूदरो 1081

चिऩम् कॊळु वेल् कै–कोपिष्ट, भालाधारी हस्त के; ओर् चॆम्मल्–एक नायक; पाल्–के पास; ऒरु कऩम् कुऴै–एक स्वर्णकुण्डलधारिणी; मयिल् अऩ्ऩाळ्–मोर सी छटावाली; कटितु पोयिऩाळ्—जल्दी-जल्दी जाने लगी; अऴैत्त तूतु–(उसको उस तरह) बुलानेवाला दूत; मऩम् कुऴै नऱवमो–मन को द्रवित करनेवाली सुरा; मालै ताऩ् कॊल्लो–संध्या का समय ही; अनङ्कऩो–(या) अनंग ही; यार् कॊलो–कौन है तो (हम नहीं जानते)। १०८१

एक स्वर्णकुंडलधारिणी नायिका अपने क्रोधी भालाधारी नायक के पास स्वयं त्वरित गति से जाने लगी। यह क्यों? उसको किस बात ने 'दूत' सदृश प्रेरित किया, जाने को मजबूर किया? उसने जो सुरा पी थी जिसके कारण उसका मन लालायित हो गया, वह? सन्ध्या समय जो कामोत्तेजक ही नहीं, स्थल को गुप्त भी रखता है? या स्वयं कामदेव? कौन जाने?। १०८१

तॊहुतरु कादऱ्कुत् तोऱ्ऱ शोऱ्ऱत्तोर्
वहिरमदि नॆऱ्ऱियण् मऴैक्क णालिवन्

दुहदलु मुऱ्ऱदॆऩ् ऩॆऩ्ऱु कॊऱ्ऱवऩ्
नहुदलु नक्कऩ णाणु नीक्किऩाळ् 1082

तॊकुतरु कातलकु तोऱ्ऱ–गम्भीर प्रेम के सामने हारने के कारण; चीऱ्ऱतु–उत्पन्न क्रोध की; ओर् वकिर्मति नॆऱ्ऱियळ्–एक कलाचन्द्र सदृश ललाटवाली की; मळै कण्–शीतल आँखों से; आलि वन्तु उकुतलुम्–अश्रु के गिरते; कॊऱ्ऱवऩ्–विजयी (उसका नायक); उऱ्ऱतु ऍन्–हुआ क्या; ऍन्ऱु–कहकर; नकुतलुम्–हँसा तो; नक्कतळ्–हँस दी; नाणुम् नीक्कित्ताळ्–लाज (संकोच) छोड़ दी। १०८२

उस नायिका का प्रेम बड़ा गहन था। इसलिए पति के पास आते ही उसके प्रेम से हारकर अपना गुस्सा भूल गई। चन्द्रकला (अर्धचन्द्र) समान ललाटवाली उसकी आँखों से आँसू आये। अब क्या हो गया ? —यह प्रश्न करके पति हँसा तो वह भी हँस दी। साथ-साथ लाज भी छूट गयी। (इस पद में नायक को 'विजयी' कहा गया है क्योंकि आसानी से उसे नायिका के प्रेम में जीत मिल गई।) । १०८२

पॊय्त्तलै मरुङ्गुला ळॊरुत्ति पुल्लिय
कैत्तल नीक्किऩळ् करुत्तै नोक्किऩाळ्
शित्तिरम् बोऩ्ऱवच् चॆयलॊर् तोऩ्ऱऱ्कुच्
चत्तिर मार्बिडैत् तैत्त दॊत्तदे 1083

पॊय्त्तु अलै–नहीं रहकर, संकट उठानेवाली; मरुङ्कुलाळ्–कमर की; ऒरुत्ति–एक; पुल्लिय–आलिंगन करनेवाले; कै तलम् नीक्किऩळ्–(पति के) करतल को हटाया; करुत्तै नोक्किनाळ्–और उसके मन को देखा (परखा); चित्तिरम् पोऩ्ऱ अ चॆयल्–विचित्र वह काम; ओर् तोऩ्ऱल् कु–एक राजा के लिए; मार्पु इटै–वक्षमध्य; चत्तिरम् तैत्ततु–शस्त्र का गड़ना; ऒत्ततु–सा लगा। १०८३

एक स्त्री ने, जिसकी कमर के होने में सन्देह थी, तो भी जो ग्रस्त होकर संकट पा रही थी, अपने पति के आलिंगनरत हाथ को हटा दिया। वह यह देखना चाहती थी कि उसके मन की दशा क्या होगी ? पर इस विचित्र कार्य पर उसे ऐसा लगा मानो शस्त्र आकर लग गया हो। १०८३

मॆल्लिय लॊरुत्तिदाऩ् विरुम्बुञ् जेटियैप्
पुल्लिय कैयिऩळ् पोदि तूदॆऩच्
चॊल्लुदऱ् किशैन्दुपिऩ् ऩाणिच् चॊल्ललळ्
ऍल्लयिल् पॊळुदॆला मिरुन्दु विम्मिऩाळ् 1084

मॆल् इयल् ऒरुत्ति–मृदुस्वभाव की एक; ताऩ् विरुम्पुम् चेटियै–अपनी प्यारी दासी को; पुल्लिय कैयिऩळ्–उसका हाथ पकड़कर; तूतु पोति–दूती बनकर जा; ऍऩ्ऱ चॊल्लुतऱ्कु इचैन्तु–यह कहने को जाकर; पिऩ् नाणि–फिर लजाकर; चॊल्ललळ्–नहीं कहा; ऍल्लै इल् पॊळुतु ऍल्लाम्–अन्त न होनेवाली रात भर रहकर; विम्मिताळ्–दुख में बढ़ती रही। १०८४

मृदु स्वभाववाली एक योषिता ने अपनी प्यारी चेरी के हाथ को अपने हाथ में लिया। वह उसे दूती बनाकर भेजना चाहती थी। पर लाज के मारे उसने कुछ नहीं कहा। फिर वह रात भर, जो अन्त होने को नहीं आती-सी लगती थी, दुख में रही। १०८४

ऊरुपे रऩ्बिऩा ळॊरुत्ति तऩ्ऩुयिर्, मारिलाक् कादलऩ् शॅय्है मऱ्ऱॊरु
नाऱुपूङ्गोदैपा ऩविल नाणुवाळ्, वेऱुवे ऱुऱच्चिल मॊऴिवि ळम्बिऩाळ् 1085

ऊरु–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; पेर् अऩ्पिऩाळ्–बड़े प्रेमवाली; ऒरुत्ति–एक; तऩ् उयिर्–अपने प्राण (सम); माऱु इला–अविरोधी; कातलऩ् चॆय्कै–प्रेमी के (दूर रहने के) कृत्य को; मऱ्ऱु ऒरु–दूसरी एक; नाऱु पू कोतै–सुगन्धित पुष्पों से अलंकृत केशवाली को; नविल नाणुवाळ्–कहने से लजाती है; वेऱु वेऱु उऱु–परस्पर विपरीत रहनेवाली; चिल मॊऴि–कुछ बातें; विळम्पिऩाळ्–कहीं। १०८५

एक नायिका का अपने पति से प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता था। वह उसे प्राण मानती थी और पति ने भी कोई अप्रिय या विरोध नहीं किया था। पर अब उसके हाथ नायिका के प्रति अपराध हो गया। (वह अब दूर रह गया था।) उसने उसके सम्बन्ध में अपनी सखी से, जिसके केश पर सुवासित पुष्प थे, कहना तो चाहा, पर लाज ने आकर रोक दिया। इसलिए उसने उससे परस्पर विपरीत कुछ बातें कहीं। १०८५

उरुत्तॆरि तऩ्मैय दुयिरु मॊऩ्ऱुतम्, अरुत्तियु मत्तुणै याय नीरिऩार्
ऒरुत्तियु मॊरुवऩु मुडलु मॊऩ्ऱॆऩप्, पॊरुत्तिऩ रिवरॆऩप् पुल्लि ऩाररो 1086

उरु तॆरि तऩ्मैयतु–(दो) रूप दिखनेवाली; उयिरुम्–(दोनों की) जान; ऒऩ्ऱु–एक है; तम् अरुत्तियुम्–(दोनों की) इच्छा भी; अ तुणै आय–उसी प्रकार की; नीरिऩार्–ऐसे थे जो; ऒरुत्तियुम् ऒरुवऩुम्–एक (नायिका) और एक (नायक); इवर् उटलुम् ऒऩ्ऱु ऎऩ–दोनों के शरीर भी एक हों, इसीलिए; पॊरुत्तिऩर्–सटा लिया; ऎऩ–ऐसा सब कहें, इस तरह; पुल्लिऩर्–आलिंगनबद्ध हो गये। १०८६

प्रेमी-प्रेमिका का एक जोड़ा था। दोनों की जानें एक थीं, दोनों की इच्छा भी एक थी। अब दोनों ने अपने शरीरों को भी एक बनाया हो, ऐसा वे गाढ़े रूप से आलिंगनबद्ध हो गये। १०८६

वॆदिर्पॊरु तोळिऩा ळॊरुत्ति वेन्दऩ्वऩ्
दॆदिर्दलुऩ् दऩ्मऩ मॆळ्ऩ्दु मुऩ्शॆलक्
कदुमॆऩक् कैयुऱ वणङ्गि ऩाळ्दु
पुदुमया दलिऩवर् कच्चम् बूत्तदे 1087

वॆतिर् पॊरु तोळिऩाळ् ऒरुत्ति–बाँस के समान भुजावाली एक ने; वेन्तऩ् वऩ्तु ऎतिर्तलुम्–राजा के आकर प्रकट होते ही; तऩ् मऩम्–उसका मन; मुऩ्

ऍळ्ळुनतु चॅल्ल–पहले निकलकर चला और; कतुम् ॲत्त–झट; कै उऱ् वणङ्कित्ताळ्–हाथ जोड़कर नमस्कार किया; अतु पुतुमै आतलिऩ्–वह अनोखा था, इसलिए; अवऩ्कु–उसे; अच्चम् पूत्ततु–भय हुआ । १०८७

वाँस सदृश भुजावाली एक स्त्री ने (जो नशे में थी) पति के आते ही झट हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उसका मन तो पहले ही उसके पास पहुँच गया। पर पति क्या जाने ? यह काम विचित्र और अभूतपूर्व था। अतः उसे संशय हुआ और उससे एक तरह का भय भी हुआ। (पूत्ततु का अर्थ 'विकसित हुआ' है। वह शब्द विशेष अर्थगर्भित हुआ है।)। १०८७

तुऩिवरु नलत्तॉडुञ् जॊर्हिऩ् ऱाळॊरु
कुऩिवरु नुदलिक्कुक् कॊळ्ळुन ऩिऩ्ऱियॆ
तऩिवरुन् दोळियुन् दायु मॊत्तन
इऩियपून् दॆऩ्ऱलु मिरवु मॆऩ्बवे 1088

कॊळ्ळुनन् इऩ्ऱि–पति के (पास) न रहने से; तुऩि वरुम्–मान के कारण उत्पन्न; नलत्तॊटुम्–सुन्दरता के साथ; चोर्किऩ्ऱाळ्–जो म्लान है उस; ऒरु कुऩि वरु नुतलिक्कु–एक कुटिल ललाटवाली को; इऩिय पू तॆऩ्ऱलुम्–सुखद पुष्पगन्ध भरा मन्द मलयपवन और; इरवुम्–रात; ॲऩ्प–जो कहे जाते हैं वे; तऩि वरु तोळियुम्–क्रमशः (असफल हो) अकेली आनेवाली सखी और; तायुम्–माता के; ऒत्तन–समान थे। १०८८

एक वियोगिनी है। रूठन का सौंदर्य उसमें मिल गया है। उस कुटिल (बंकिम) ललाटवाली के लिए सुखद पुष्पगन्ध भरा मन्द पवन दूत-कार्य पर जाकर असफलता के साथ अकेली आनेवाली सखी-सा बन जाता है और रात माता के समान। (दोनों अब व्यर्थ हैं।)। १०८८

आक्किय कादला ळॊरुत्ति यन्दियिल्
ताक्किय दॆय्वमुण् डॆऩ्ऩुन् दऩ्मैयळ्
नोक्किऩ णिऩ्ऱऩ णुवल लोर्हिलळ्
पोक्किऩ तूदिऩो डुणर्वुम् बोक्किऩाळ् 1089

आक्किय कातलाळ् ऒरुत्ति–वर्धित प्रेम की एक ने; पोक्किऩ–जिसको भेजा; तूतिऩॊटु–उस दूत के साथ; उणर्वुम्–अपनी सुध भी; पोक्किऩाळ्–भेज दी; अन्तियिल्–संध्या वेला में; ताक्किय तॅय्वम् उण्टु–दुर्दैव-(भूत-) ग्रस्त है; ॲऩ्ऩुम् तऩ्मैयळ्–ऐसी स्थिति की हो गई; नोक्किऩळ्–देखती हुई; निऩ्ऱऩळ्–खड़ी रही; नुवलल् ओर्किलळ्–बोलने की सुध नहीं रखती थी। १०८९

एक सुन्दरी, अपने पति पर अपार प्रेम रखती थी। अब उसने उसको बहुत बढ़ा दिया। इच्छा दुर्वह हो गई। उसने दूत भेजा। सुधि भी खो दी, मानो वह दूत के साथ भी चली गई। अब वह ऐसा व्यवहार करने लगी, मानो सन्ध्याकाल में भूतग्रस्त हो गई हो। घूरती खड़ी रही और कुछ बोली नहीं जैसे बोलना नहीं जानती थी। १०८९

मऱ्प्पिलळ् कॊऴुनर्नै वरवु नोक्कुवाळ्
पिऱप्पिनॊ डिऱप्पॆन्नप् पॆयरुञ् जिन्दैयाळ्
तुऱप्परु मुहिलिडैत् तोन्ऱु मिन्नॆन्नप्
पुऱप्पडुम् बुहुमीरु पूत्त कॊम्बन्नाळ् 1090

ऒरु पूत्त कॊम्पु अन्नाळ्–एक पुष्प-भरी शाखा सी (स्त्री); कॊऴुनर्नै मऱप्पु इलळ्–पति को न भूल पाकर; वरवु नोक्कुवाळ्–आने की राह देख रही थी; पिऱप्पिनोटु इऱप्पु ॲन्न—जन्म-मरण के समान; पॆयरुम् चिन्तैयाळ्–चक्रवत आनेवाले विचारों की होकर; तुऱप्पु अरु–अनिवार्य; मुकिल् इटै तोन्ऱुम्–मेघमध्य चमकनेवाली; मिन् ॲन्न–बिजली के समान; पुऱप्पटुम्–(पटगृह से) बाहर निकलती और; पुकुम्–घुस जाती। १०९०

बहुपुष्पित लता के समान एक स्त्री की बात देखिए। वह अपने पति को भूल न सककर उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह बिजली के समान जो मेघों से अलग नहीं हो सकती है, पटगृह के बाहर निकलती, फिर अन्दर घुस जाती —इस तरह करती रही। उसके विचार जन्म-मरण के चक्र के समान बारी-बारी से बदलते रहे। १०९०

ॲऴुदरुङ् गॊङ्गैमे लनङ्ग नॆय्दवम्
बुऴुदवॆम् बुणगळिल् वळैक्कै यॊऱ्ऱिनाळ्
अऴुदनळ् शिरित्तन ळऱ्ऱञ् जॊल्ललळ्
तॊऴुदन ळॊरुत्तियैत् तूदु वेण्डिये 1091

(एक) ॲऴुत अरु कॊङ्कै मेल्–जिनके चित्र बनाना कठिन है उन स्तनों पर; अनङ्कन् ॲय्त अम्पु–अनंगप्रेषित शर के; उऴुत वॆम् पुण्कळिल्–बनाये गये पीडक व्रणों में; वळै कै ऒऱ्ऱिनाळ्–कंकणभूषित हाथ धीरे रखे; अऴुतनळ्–रोयी; चिरित्तनळ्–हँसी; अऱ्ऱम्–शिकायत; चॊल्ललळ्–नहीं कहती; ऒरुत्तियै–एक सखी के सामने; तूतु वेण्टि–दौत्य की प्रार्थना में; तॊऴुतनळ्–हाथ जोड़े। १०९१

एक ने अपने बहुत ही सुन्दर, इतने सुन्दर कि उनका चित्रण ही नहीं हो सकता था, स्तनों पर अपने कंकणभूषित हाथ रखे, मानो वह अनंगशर के बने व्रणों को सेंक रही हो। फिर वह हँसी, फिर रोई और बिना उलाहना कहे ही उसने अपनी सखी के सामने इस अर्थ में हाथ जोड़े कि दूत बनकर जाओ। १०९१

आर्त्तियु मुऱ्ऱदु मऱिजरक् कऱ्ऱन्दन्
वार्त्तयि नुणर्त्तुदल् वऱिदन् ऱॆन्न
वेर्त्तनळ् वॆंदुम्बिनण् मॆलिन्दु शाय्न्दनळ्
पार्त्तन ळॊरुत्तिदन् पाङ्गि नाळैये 1092

ऒरुत्ति–एक; उऱ्ऱतुम्–आपबीती बात; आरत्तियुम्–और व्यथा को; अऱिजर्क्कु–जाननेवालों से; अऱ्ऱम्–शिकायत को; तन् वार्त्तैयिन्–अपने मुख से

(शब्दों द्वारा); उणर्त्तुतल्–समझाना; वरितु अनृरो–व्यर्थ तो नहीं; अँत–समझकर; वेतुम्पिनळ्–व्याकुल हुई; वेर्त्तनळ्–स्वेदयुक्त हो गई; मॅलिन्तु चाय्न्त्तनळ्–थककर लेट गई; तन् पाङ्किनाळै–अपनी सखी को; पार्त्तनळ्–अर्थ भरी दृष्टि से देखा। १०६२

एक वियोगिनी ने सोचा कि जो मेरी या मुझपर बीती बात और मुझे होनेवाली व्यथा जानते हैं, उन जानकार से उतने शब्दों में अपनी शिकायत को प्रकट करना व्यर्थ है। इसलिए वह मन ही मन कुढ़ी; उसके शरीर से पसीने निकल आये। वह थककर शय्या पर लेट गई। तब उसने अपनी सखी की आँखों में आँखें डालीं। (उसका अर्थ है कि तुम जाकर उन्हें जल्दी बुला लाओ।)। १०९२

तनङ्गळि निळैयवर् .तम्मित् मुम्मडि
कनङ्गळि यिडैयिडै कळिक्कुङ् गळ्वनाय्
मनङ्गळि नुळैन्दवर् मान्दु तेऱलै
अनङ्गनु मरुन्दिना नादल् वेण्डुमाल् 1093

अनङ्कनुम्–मन्मथ भी; तनङ्कळित् इळैयवर् तम्मित्–(मनोरम) उरोजों की तरुणियों से; मुम्मटि कनम् कळि–तिगुना बड़ा आनन्द; इटै इटं कळिक्कुम्–(उन स्थानों में) अनुभव करता है; कळ्वन् आय्–चोर बनकर; मनङ्कळिल्–मनों के अन्दर; नुळैन्तु–घुसकर; अवर् मान्तु तेऱलै–उनसे पीत सुरा को; अरुन्तिनान् आतल् वेण्टुम्–पिया हुआ होना चाहिए। १०६३

जहाँ-जहाँ सुरापायी तरुणियाँ, जिनकी उदासीनता के कारण उनके मनोरम उरोज अपनी सम्पूर्ण मनोहारिता को ले प्रकट दिखाई देते हैं, सुख-भोग कर रही थीं, वहाँ मन्मथ भी तिगुना आनन्द भोग रहा था। क्या यह इसलिए कि उसने चोर बनकर उनके मन में बैठकर उनसे पीत सुरा को स्वयं भी पिया? वही होना चाहिए। (मद्यपान का नशा और कामकेलि दोनों का निकट सम्बन्ध है।)। १०९३

नऱैकम ऴलङ्गन् मालै नळिनरुङ् गुञ्जि मैन्दर्
तुऱैयऱि कलविच् चॅव्वित् तोहैयर् तूशु वीशि
निऱैयह लल्हुल् पुल्हुङ् गलन्कळित् तहल नीत्तार्
अऱैपऱै यनैय नीरा ररुमऱैक् काव रोतान् 1094

नऱै कमळ्–सुगन्ध छिटकानेवाली; अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली मालाधारी; नळि नऱु कुञ्चि–(और) घना अच्छा केशवाले; मैन्तर्–वीर तरुण; तुऱै अऱि–(काम-) शास्त्र शिक्षित; कलवि चॅव्वि–सम्भोग योग्य; तोकैयर्–तरुणियों के; तूचु वीचि–वस्त्र हटाकर; निऱै अकल्–(सौंदर्य-) भरा विशाल; अल्कुल् पुल्कुम्–जघन को अलंकृत करनेवाले; कलन्–आभरण को; कळित्तु–निकालकर; अकल नीत्तार्–दूर फेंक दिया; अऱै पऱै अनैय नीरार्–पिटकर बजनेवाले ढोल के स्वभाववाले; अरु मऱैक्कु आवरो–मुख्य रहस्यों में साथ रखने योग्य हैं क्या। १०६४

सुवासित मालाधारी तरुण जब कोकशास्त्र के अनुसार उसके लिए योग्य तरुणियों से प्रसंग करते हैं, तब पहले वे उनके वस्त्र हटा देते हैं। बाद में सुन्दर विशाल नितम्बों को लपेटे रहनेवाले आभरणों को भी उतारकर दूर रख देते हैं। वे आभरण शब्द करने लगेंगे तो रहस्य, रहस्य नहीं रह जायगा। ढोल के समान मुखर लोग रहस्य के लिए योग्य नहीं हैं। (यह अर्थान्तरन्यास है।)। १०९४

पोंऩ्ऩरुङ् गलऩुन् दूशुम् पुऱत्तुळ दुऱत्तल् पोह
नऩ्ऩुद लॊरुत्ति तऩ्बा लहत्तुळ नाणु नीत्ताळ्
उऩ्ऩरुन् दुऱवु पूण्ड वुरऩुडै यॊरुव ऩ्ऩॊपोल्
तऩ्ऩयुन् दुऱक्कुन् दऩ्मै कामत्ते तङ्गिऱ् ऱऩ्ऱे 1095

नल् नुतल् ऒरुत्ति–सुन्दर ललाटवाली एक; पॊन् अरु कलनुम्–स्वर्ण के अच्छे आभरण; तूचुम्–(और) वस्त्र; पुऱत्तु उळ–बाहर के; तुऱत्तल्–दूर करना; पोक–एक ओर रहे; तन् पाल्–अपने पास; अकत्तु उळ–अन्तस्थ; नाणुम् नीत्ताळ्–लाज भी छोड़ दी; उन् अरु तुऱवु पूण्ट–जो सोचना भी कठिन है वह संन्यास जिसने लिया है; उरन् उटै ऒरुवन् पोल्–उस साहसी एक पुरुष के समान; तन्नैयुम् तुऱक्कुम् तन्मै–अपने (अहंकार) को भी त्यागने का गुण; कामत्तु तङ्किऱ्ऱु अन्ऱे–काम में भी होता है न। १०९५

सुन्दर ललाटवाली एक स्त्री ने प्रसंग के अवसर पर स्वर्णाभरण और वस्त्र दूर किये। यह तो बाह्य वस्तुएँ हैं। उसने अपने अन्तर की बात, लाज को भी त्याग दिया। संन्यासी ही आपा त्याग देते हैं। काम में भी यह आपा छोड़ देने की प्रवृत्ति है, यह बड़ा आश्चर्य है। १०९५

पॊरुवरु मदऩऩ् पोल्वा ऩॊरुवऩुम् पूविऩ् मेलत्
तिरुविऩुक् कुवमै शाल्वा ळॊरुत्तियुञ् जेक्कैप् पोरिल्
ऒरुवरुक् कॊरुवर् तोला रॊत्तऩ रुयिरु मॊऩ्ऱे
इरुवर्द मुणर्वु मॊऩ्ऱे यॆऩ्ऱपो दियावर् वॆल्वार् 1096

पॊरुवु अरु–उपमाहीन; मतनन् पोल्वान्–मदन सम एक; पूविन् मेल्–(कमल-) पुष्प पर विराजनेवाली; अ तिरुविनक्कु–उस श्रीदेवी की; उवमै–उपमा; चाल्वाळ् ऒरुत्तियुम्–बन सकनेवाली एक स्त्री; चेक्कै पोरिल्–रतिसमर में; ऒरुवरुक्कु ऒरुवर् तोलार–परस्पर नहीं हारे; ऒत्तनर्–समान रहे; इरुवर् तम् उयिरुम् ऒन्ऱे–दोनों की जानें एक हैं; उणर्वुम् ऒन्ऱे–मनोभाव एक हैं; ऎन्ऱ पोतु–ऐसी स्थिति में; वॆल्वार् यावर्–जीतेंगे कौन। १०९६

स्वोपम सुन्दर और मन्मथ तुल्य एक पुरुष और कमला तुल्य एक स्त्री रतिसमर में लगे। दोनों में एक भी नहीं हारा; दोनों समान रहे। हाँ, दोनों की जानें एक हैं; मनोभाव एक हैं। फिर जीतेगा कौन ?। १०९६

कॊळ्ळैप्पोर् वाट्क णाळङ् गॊरुत्तियोर् कुमर नऩ्ऩाऩ्
वळ्ळत्ता रहलन् दऩ्ऩै मलर्क्कैयाऩ् मऱैप्प नोक्कि
उळ्ळत्ता रुयिर ऩाण्मे लुदैपडु मॆऩ्ऱु नीर्नुङ्
गळ्ळत्ताऱ् पुदैत्ती रॆऩ्ऩा मुऩ्ऩैयिऱ् कतऩ्ऱु मिक्काळ् 1097

अङ्कु–वहाँ; कॊळ्ळै पोर्–जानें लूटनेवाले युद्ध में प्रयुक्त; वाळ् कण्णाळ्–तलवार सदृश आँखोंवाली; ओर् कुमरन् अऩ्ऩाऩ्–एक कार्तिकेय सम (उसके नायक) के; वळ्ळम्–पुष्ट; तार् अकलम् तऩ्ऩै–(अपने) मालाधारी वक्षस्थल को; मलर् कैयाल् मऱैप्प–पुष्प-सम हाथों से ढँक लेने पर; नोक्कि–देखकर; उळ्ळत्तु–दिल में; आर–रहनेवाली; उयिर् अऩ्ऩाळ् मेल्–प्राण सम (अन्य नायिका) पर; उतै पटुम् ऎऩ्ऱु–लात पड़ेगी, समझकर; नुम् कळ्ळत्ताल्–अपनी प्रवंचना से; नीर् पुतैत्तीर्–तुमने छिपाया; ऎऩ्ऩा–कहकर; मुऩ्ऩैयिन्–पहले से भी अधिक; कतऩ्ऱु मिक्काळ्–क्रोधशील हुई। १०९७

उधर युद्ध में वीरों को बड़ी संख्या में मारनेवाली तलवार के समान आँखों की एक नायिका ने रूठकर अपने प्रेमी के विशाल सुन्दर वक्षस्थल पर लात मारी। उसने अपने कमल-करों से वक्ष को छिपा लिया। यह देखकर नायिका को पहले से अधिक रोष आ गया। उसने उलाहना किया कि तुम्हारे हृदय में चोर नायिका है। उस पर लात पड़ेगी, उसे रोकना चाहिए, इसीसे तुमने अपने वक्ष को ढँक लिया। १०९७

पालुळ पवळच् चॆव्वाय्प् पणैमुलै निहर्त्त मॆऩ्ऱोळ्
वेलुळ नोक्कि ऩाळोर् मॆल्लियल् वेलैयऩ्ऩ
मालुळ शिन्दै याऩोर् मळैयुळ तडक्कै याऱ्कु
मेलुळ वरम्बै माद रॆऩ्बदोर् विरुप्पै यीन्दाळ् 1098

पाल् उळ–दुग्धरुचियुक्त; पवळम् चॆम्मै वाय्–प्रवाल सम लाल मुख; पणै मुलै–पीन स्तन; निकर्त्त–परस्पर सम; मॆल् तोळ्–(स्पर्श-) मृदु स्कन्ध; वेल् उळ–भाले का सा कृत्य करनेवाली; नोक्किऩाळ्–आँखों की; ओर् मॆल् इयल्–एक मृदु स्वभाववाली ने; वेलै अऩ्ऩ–सागर के समान; माल् उळ–(बड़े) प्रेम के; चिन्तैयाऩ्–मन के; ओर् मळै उळ–एक मेघ समान; तट कैयाऩ्कु–(दानशील) विशाल हाथवाले को; मेल् उळ–स्वर्गवासिनी; अरम्पैमातर् ऎऩ्पतु ओर् विरुप्पै–अप्सरा ही माननेयोग्य विशिष्ट प्रेम-सुख; ईन्ताळ्–दिया। १०९८

एक नायिका अति सुन्दर थी। उसके लाल अधरों में दूध का-सा स्वाद था; स्तन पीन थे। कंधे परस्पर सम थे और स्पर्श करने में मृदु और सुखद थे। उसकी आँखें भाले का-सा काम करनेवाली थीं। वह रति-कला चतुर भी थी। उसका प्रेमी सागर-सम अत्यधिक राग रखता था। वह मेघ-सम दानशील हाथ वाला था। उस नायिका ने उसे इतनी और ऐसी तृप्ति दी कि वह समझने लगा कि यह अप्सरा है!

(नायक की दानशीलता और अप्सरा की बात से अनुमान किया जा सकता है कि वह वार वनिता है) । १०९८

पुन्नत्तुरै मयिलन्नाळ् कॊऴुनन् पॊय्युरै, निनैत्तनळ् शीरुवा ळॊरुत्ति नीडिय
शिनत्तिनैक् कादलन् शेक्कैप् पोरिडै, मनत्तुरै कादले वाहै कॊण्डदे 1099

कॊऴुनन्–पति के; पॊय् उरै निनैत्तनळ्–असत्य भाषण सोचकर; चीऱ्वाळ्–गुस्सा करनेवाली; पुन्नत्तु उरै–पर्वत के क्षेत्रों के वासी; मयिल् अन्नाळ्–मोर के समान रहनेवाली; ओरुत्ति–एक के; नीटिय चिनत्तिनै–दीर्घ क्रोध को; कातलन् चेक्कै पोर् इटै–प्रेमी पति के साथ प्रसंग-कार्य के अवसर पर; मनत्तु उरै कातले–मन के प्रेम ने ही; वाकै कॊण्टतु–जीत लिया । १०९९

पर्वत के प्रदेशों में रहनेवाले मोर की-सी छटावाली एक नायिका को अपने प्रेमी के झूठ बोलने से गुस्सा हुआ । लेकिन उसके मन में प्रेमी के प्रति और उससे मिलने में बड़ा अनुराग था । उसी ने उसके दीर्घ क्रोध को जीत लिया । मिलनेच्छा क्रोध पर हावी हो गयी । १०९९

कॊलैयुरु वमैन्दॆन्नक् कॊडिय नाट्टत्तोर्
कलैयुरु वल्हुलाळ् कणवर् पुल्हुवाळ्
शिलैयुरु वळितरच् चिऱन्द मार्बिऱ्ऱन्
मुलैयुरु विन्नवॆन्न मुदुहै नोक्किनाळ् 1100

कॊलै–वधकर्म ने; उरु अमैन्ततु अॆन्न–रूप धर लिया हो ऐसा; कॊटिय नाट्टत्तु–भयंकर नेत्रों के साथ; ओर् कलै उरुवु अल्कुलाळ्–वस्त्र के बाहर दिखनेवाले जघन को एक ने; कणवन् पुल्कुवाळ्–पति का आलिगन करके; चिलै उरु–पर्वत की सौम्यता; अऴि तर–हराते हुए; चिऱन्त मार्पिल्–उत्कृष्ट हुए (उसके) वक्ष में; तन् मुलै–अपने स्तन; उरुवित अॆन्न–घुस आये, यह जानने के लिए; मुतुकै नोक्किनाळ्–पीठ को देखा । ११००

एक नायिका के अंग बड़े ही सुगठित और सुघड़ थे । आँखें थीं जो मृत्यु का ही दूसरा रूप था । वह महीन वस्त्र पहने थी जिसके द्वारा जघनप्रदेश बाहर दिखाई देता था । (वह अपने अंगों के विशेष आकर्षण से अभिज्ञ भी थी । उसे उन पर गर्व था ।) उसने अपने पति का सामने से आलिगन किया । उसके स्तन उसके प्रेमी के पर्वत विजयी, सुगठित वक्ष में घुसे से लगे । उसने प्रेमी की पीठ पर यह जानने को देखा कि क्या वे बाहर दिखाई देते हैं । ११००

कुङ्गुम मुदिर्न्दन्न कोदै शोर्न्दन्न, शङ्गिन मुरन्ऱन्न कलैयुम् जारिन्न
पॊङ्गिन शिलम्बुहळ् पूश लिट्टन, मङ्गैय रिळनल मैन्द रुण्णवे 1101

मङ्कैयर्–बालाओं के; इळनलम्–यौवनरस को; मैन्तर् उणण–जब पट्ठों ने

स्वादन किया; कुङ्कुमम्–तब कुंकुम; उतिर्न्तत–चू गये; कोतै चोर्न्तत–केश बिखरे; चङ्कु इलम् मुरन्र्न–शंखकंकण क्वणित हुये; कलैयुम् चारि्त–वस्त्र खिसक गये; चिलम्पुकळ्–नूपुरों ने; पोङ्कित पूचल् इट्टत–अत्यधिक शब्द किया। ११०१

जब हृष्ट-पुष्ट तरुण लोग तरुणियों के यौवन-सुख का भोग करते हैं तब क्या-क्या होते हैं, इनका सम्मिलित स्वाभाविक चित्रण है। कुंकुम की चित्रकारी मिट जाती है और कुंकुम झर जाता है; केश बिखर जाते हैं। शंख-कंकण, चूड़ियाँ आदि शब्द करते हैं। वस्त्र हट जाते हैं। नूपुर अत्यधिक स्वर उठाते हैं। ११०१

तुन्नियुरु पुलवियैक् कादर् चूळ्शुडर्
पनियॅनत् तुडॅत्तलुम् बदॅक्कुश् शिन्दॅयाल्
पुनैयिळै यॊरुमयिल् पॊय्यु ऱङ्गुवाळ्
कनवॅनु नलत्तिनार् कणवर् पुल्लिनाळ् 1102

पुतै इळै ऑरु मयिल्–शोभा देनेवाले आभरणों से भूषित एक मयूराभा के; तुन्नि उरु पुलवियै–(पति के लिए) त्रासक रूठन को; कातल्–कामेच्छा रूपी; चूळ् चुटर्–किरणमाली; पति अन्न–ओस को जैसे (अदृश्य कर देता है); तुटैत्तलुम्–पोंछ लेने पर (दूर करने पर); पतैक्कुम् चिन्तैयाल्–उतावली से भरे मन से; पॊय् उऱङ्कुवाळ्–झूठी निद्रा वाली; कनवु ऍनुम् नलत्तिनाल्–स्वप्न के अच्छे बहाने से; कणवन् पुल्लिनाळ्–पति का आलिंगन कर लिया। ११०२

शोभा देनेवाले आभरण-धारिणी और मयूर छटावाली एक स्त्री की, पति को त्रास देनेवाली रूठन रूपी ओस को प्रसंगलालसा रूपी किरणमाली ने दूर कर दिया। यानी उसके मन में रति की तीव्र इच्छा जाग उठी। वह झूठी नींद सो रही थी, सोने का बहाना कर रही थी। अब उचित स्वप्न का अच्छा बहाना किया और अपने पति को हाथों के पाश में ले लिया। ११०२

वट्टवाण् मुहत्तॊरु मयिलु मन्ननुम्
किट्टिय पोदुडल् किडॅक्कप् पुल्लिनार्
विट्टिलर् कङ्गुलिन् विडिवु कण्डिलर्
ऑट्टिय वुडल्पिरिप् पुणर्हि लामैयाल् 1103

वट्टम्–गोल; वाळ् मुकत्तु–उज्ज्वल मुखी; ऑरु मयिलुम्–एक मयूराभा स्त्री और; मन्ननुम्–एक राजा (नायक); किट्टिय पोतु–जब (प्रसंग में) मिले; उटल् किटैकक–शरीर को मिलाते हुए; पुल्लिनार्–परस्पर बाहुपाश में बाँध लिया; ऑट्टिय उटल्–जुड़े हुए शरीरों को; पिरिप्पु–अलग करना; उणर्किलामैयाल्–(जानने) चाहने के कारण; विट्टिलर्–(परिरम्भण को) नहीं छोड़ा; कङ्कुलिन् विटिवु–रात का अन्त होना भी; कण्टिलर्–न जाना। ११०३

गोल आकार का और उज्ज्वल मुख और मयूर की आभा वाली एक

नायिका और राजा नायक मिले। दोनो ने अपने दो शरीरों को परिरंभण में (मानो) एक बना लिया। जुड़े उनको अलग करने की सुधि ही नहीं हुयी। उसी स्थिति में रात बीत गयी। वह भी वे जान नहीं पाये। ११०३

अरुङ्गळि माल्हळि ऱनैय वीरर्क्कुम्
करुङ्गुऴन् महळिर्क्कुङ् गलविप् पूशलाल्
नॅरुङ्गिय वनमुलै शुमक्क नेर्हला
मरुङ्गॅनत् तेय्न्ददम् मालैक् कङ्गुले 1104

अरु कळि–उन्मत्त; माल् कळिऱु अनैय–मस्ती भरे हाथी के समान; वीरर्क्कुम्–वीरों में; करु कुऴल् मकळिर्क्कुम्–और काले केशवाली स्त्रियों में; कलवि पूचलाल्–(हुए) प्रणय कलह में ही; अ मालै कङ्कुल्–वह उपयुक्त रात; नॅरुङ्किय वनमुलै–सटे हुए सुन्दर उरोजों को; चुमक्क नेर्कला–वहन न कर सकनेवाली; मरुङ्कु अॅन्न–कमर के समान; तेय्न्ततु—क्षीण-हीन हुई। ११०४

मुदित, मद-मत्त गज तुल्य वीरों और काले केशवाली उनकी प्रेयसियों के लिए प्रसंग के युद्ध (उलझन) में ही रात ऐसे क्षीण और हीन हो गयी जैसे स्त्रियों की कमर सटे हुए सुन्दर उरोजों का भार वहन कर न सकने से छीज जाती है। ११०४

कडैयुऱ नन्नॅऱि काण्गि लादवर्क्
किडैयुऱु तिरुवॅन विन्दु नन्दिनान्
पडर्दिरैक् करुङ्गडऱ् परमन् मार्बिडैच्
चुडर्मणिक् करशॅन विरवि तोन्ऱिनान् 1105

नल् नॅऱि–पुण्य कार्य; कटै उऱ–अन्त तक; काण्किलातवर्क्कु–न करनेवालों की; इटै उऱु–मध्य में मिली; तिरु अॅन्न–सम्पत्ति की तरह; इन्तु नन्तितान्–चन्द्र अदृश्य हुआ; परमन् मार्पु इटै–परमेश्वर श्रीविष्णु के वक्ष-मध्य; चुटर्–भासमान; मणिक्कु अरचु अॅन्न–मणिराज (कौस्तुभ) के समान; इरवि–रवि; पटर् तिरै–फैलनेवाली तरंगों के; करु कटल्–नीले सागर में; तोन्ऱितान्–उदय हुआ। ११०५

आखिर तक जो पुण्य-कार्य नहीं करते उनकी, मध्य में प्राप्त संपत्ति जैसे मिटकर लुप्त हो जाती है वैसे ही इन्दु भी अस्त हो गया। परब्रह्म श्रीविष्णु के वक्ष में भासमान रहनेवाले मणियों में श्रेष्ठ कौस्तुभमणि के समान सूर्य विस्तृत तरंगोंवाले नीले सागर में से उग आये। (चन्द्र घटता और बढ़ता है और उसका प्रकाश प्रतिफलित प्रकाश है। इस तरह अधूरे पुण्यकृतों की संपत्ति अपूर्ण है।)। ११०५

18. ऍदिर्कोळ् पडलम् (अगवानी पटल)

अडानॆंरि यडॆदल् शॆल्ला वरुमरै यरैन्द नीदि
विडानॆरिप् पुलमैच् चॆङ्गोल् वॆण्कुडै वेन्दर् वेन्दन्
पडामुह मलैयिर् ड्रोन्रिप् परुवमुर् ड्रुवि नल्हुम्
कडानिरै यारु पायुङ् कडलॊडुङ् गङ्गै शेर्न्दान् 1106

अटा नॆरि अटॆतल् चॆल्ला—धर्म-विरुद्ध मार्ग पर न चलनेवाले; अरु मरै अरैन्त—असाधारण (श्रेष्ठ) वेदों में उक्त; नीति विटानॆरि—नीतिसम्मत साधु व्यवहार; पुलमै—विद्वत्ता; चॆङ्कोल्—निर्दोष राज्यशासन; वॆण् कुटै—श्वेतछत्र; वेन्तर् वेन्तन्—(इनके) राजाधिराज; पटाम् मुकम्—मुखपट्टधारी (हाथियों के); मलैयिल् तोन्रि—पर्वतों पर उत्पन्न होकर; परुवम् उर्रु—प्रवाहस्थिति को प्राप्त; अरुवि नल्कुम्—नदियाँ बनकर आनेवाली; कटाम् निरै—मदनीर भरी; आरु पायुम्—नदियाँ जिसमें आकर मिलती हैं उस; कटलॊटुम्—(सेना-)सागर के साथ; कङ्कै चेर्न्तान्—गंगातट पर पहुँचे। ११०६

राजाधिराज दशरथ की सेना गंगा नदी के तट पर आ पहुँची। दशरथ धर्मविरुद्ध मार्ग पर न चलनेवाले, वेदोक्त नीति-परायण, शास्त्र ज्ञानी, सुशासक और श्वेतछत्रधारी थे। उनकी सेना सागर-सम थी तो मुखपट्ट पहने हुए हाथीरूपी पर्वतों से निकलकर मदजल की धाराएँ जो मिलकर नदियों में बढ़ गयीं वे नदियाँ थीं जो इस सेना-सागर में आकर संगमित हुयीं। (इसमें दो ध्यान योग्य बातें हैं— सेना को सागर कहने पर नदियों की योजना और सागर का नदी से जाकर मिलना।)। ११०६

कप्पुडै नावि नाह रुलहमुङ् गण्णिर् ड्रोन्रत्
तुप्पुडै मणलिर् राहिक् कङ्गनीर् शुरुङ्गिक् काट्ट
अप्पुडै अनिक वेलै यकन्पुनल् मुहन्दु मान्द
उप्पुडैक् कडलुन् दॆण्णी रुण्णशै युर्र दन्रे 1107

कङ्कै—गंगानदी; कप्पु उटॆय—दो नोक वाली; नाविन्—जीभ के; नाकर् उलकमुम्—नागों का लोक भी; कण्णिल् तोन्र—आँखों में दिखे, ऐसा; नीर् चुरुङ्कि—जल रिक्त होकर; तुप्पु उटै(य)—शुद्ध; मणलिरु आकि—बालू वाली होकर; काट्ट—दिखे, ऐसा; अ पुटै अनिकम् वेलै—वहाँ जो आया वह सेना-सागर; अकन् पुनल्—विपुल जल को; मुकन्तु मान्त—उठाकर पी गया इससे; उप्पु उटै(य) कटलुम्—नमकीन सागर भी; अन्रु—उस दिन; तॆळ् नीर् उण्—शुद्ध जल पीने को; नचै उर्रतु—इच्छा करने लगा। ११०७

सेना के वीरों ने गंगा के जल को लेकर पान कर लिया तो नदी ही सूख गयी। द्विरसना सर्पों का पाताललोक नज़र आने लगा। तल के शुद्ध बालू भी दिखाई देने लगे। नमकीन समुद्र भी शुद्ध जल पीने को तरसने लग गया। ११०७

आण्डुनिऩ् ऱॆऴुन्दु पोहि यहऩ्पणै मिदिलै यॆऩ्ऩुम्
ईण्डुनीर् नहरिऩ् पाङ्ग रिरुनिलक् किऴव ऩॆय्दऩ्
ताण्डुमाप् पुरविऩ् ताऩैत् तण्णळिच् चऩह ऩॆऩ्ऩुम्
तूण्डरु वयिरत् तोळाऩ् शॆय्ददु शॊल्ल लुऱ्ऱाम् 1108

इरु निलम् किऴवन्–विशाल भूमि के स्वामी; आण्टु निऩ्ऱु ऍऴुन्तु–वहाँ से निकलकर; पोकि–जाकर; अकऩ् पणै–विस्तृत खेतों और बागों से आवृत; मितिलै ऍऩ्ऩुम्–मिथिला नाम की; ईण्टु नीर्–जल समृद्ध; नकरिऩ् पाङ्कर्–नगर के निकट; ऍय्त–पहुँचे, तब; ताण्टु मा पुरवि–सरपट दौड़नेवाले बड़े-बड़े अश्वों की सेना; तण् अळि–और शीतल करुणा के स्वामी; चऩकऩ् ऍऩ्ऩुम्–जनक नाम के; तूण् तरु वयिरम् तोळाऩ्–(लौह-) स्तंभ सदृश कठोर कंधोंवाले का; चॆय्ततु–कृत्य; चॊल्लल् उऱ्ऱाम्–कहेंगे। ११०८

विशाल भूमि के पति चक्रवर्ती दशरथ वहाँ से निकलकर अपनी विपुल सेना के साथ मिथिला नगर के पास पहुँचे। वह नगर जल-समृद्ध था और उसके चारों ओर खेतों और बागों की उर्वर भूमि थी। तव सरपट दौड़नेवाले अश्वों की सेना के स्वामी, शीतल करुणानिधान, लौहस्तम्भ समान बाहुवाले जनक नामक महाराज ने क्या किया उसका वर्णन करेंगे। ११०८

वन्दऩ ऩरश ऩॆऩ्ऩ मऩत्तॆऴु मुवहै पॊङ्गक्
कन्दडु कळिऱुन् देरुङ् गलिऩमाक् कडलुञ् चूऴच्
चन्दिर ऩिरवि तऩ्ऩैच् चार्वदोर् तऩ्मै तोऩ्ऱ
इन्दिर ऩिरुवन् ऱऩ्ऩै यॆदिर्हॊळ्वा ऩॆऴुन्दु वन्दाऩ् 1109

अरचऩ् वन्तऩऩ् ऍऩ्ऩ–राजा आये, यह (चरों ने) कहा, तब; मऩत्तु ऍऴुम्–मन में उठा; उवकै–आनन्द; पॊङ्क–उमड़ आया; कन्तु अटि–खूँटा तोड़नेवाले; कळिऱुम्–गजों और; तेरुम्–रथों और; कलिऩम् मा कटलुम्–बागडोर वाले अश्वों की सेना के सागर के; चूऴ–घेरते आते; चन्तिरऩ्–चन्द्र; इरवि तऩ्ऩै–सूर्य के पास; चार्वतु ओर् तऩ्मै–गया, यह विचित्र हालत; तोऩ्ऱ–(हो गई हो ऐसा) दृश्य पैदा करते हुए; इन्तिर तिरुवऩ् तऩ्ऩै–इन्द्रतुल्य लक्ष्मीवान (दशरथ) को; ऍतिर् कॊळ्वाऩ्–सामने मिलकर ले आने के लिए; ऍऴुन्तु वन्ताऩ्–निकलकर आये। ११०९

'राजाधिराज दशरथ आ गये,' यह समाचार चरों ने राजा जनक को दिया। राजा के मन में अपार आनन्द उमड़ आया। इन्द्र समान श्रीमंत चक्रवर्ती के स्वागत के लिए रवाना हो गये। तब उनके साथ खूँटे तोड़नेवाले गज, रथ और बागडोर सहित अश्वों की सेना के सागर चले। उनका जाना ऐसा एक अनोखा और अप्राप्य दृश्य उपस्थित करता था जिसमें चन्द्र सूर्य से मिलने चले। (दशरथ सूर्यकुल के थे और जनक चन्द्रकुल के।)। ११०९

गङ्गनीर् नाडन् शेनै मऱ्ऱुळ कडलृह ऴॅल्लाम्
शङ्गिन मार्प्प वन्दु शार्वन पोलच् चारप्
पङ्गयत् तिरुवैत् तन्द पाऱ्कड लॅदिर्व देपोल्
मङ्गैयैप् पयन्द मन्नन् शेनैवन् दॅदिर्न्द दन्ऱे 1110

कङ्कै नीर् नाटन्–गंगाजल सिंचित देश के पति की; चेतै–सेनाएँ; मऱ्ऱ उळ कटल्कळ् ॲल्लाम–(क्षीरसागर से) इतर सागर सब; चङ्कु इनम् आर्प्प–शंखगणों के नाद करते; वन्तु चार्वन पोल्–आ मिले, ऐसा; चार–आ रही थीं, तब; पङ्कयम् तिरुवै–कमला श्रीलक्ष्मी का; तन्त पाल्कटल्–जनक क्षीरसागर; ॲतिर्वतु पोल्–सामने आ मिले, जैसा; मङ्कैयै पयन्त–(सीता) देवी के जनक; मन्नन् चेतै–महाराज की सेना; वन्तु ॲतिर्न्ततु–आ मिली। १११०

उनकी सेनाओं का आना कैसा था। दशरथ की विपुल सेनाएँ लवण, इक्षु, सुरा, घृत, दधि और जल के छः सागर शंखध्वनि के साथ आ रहे हों, ऐसी आ रही थीं। देवी सीता के जनक, जनक महाराज की सेना, श्रीलक्ष्मी देवी के जनक, क्षीरसागर के समान आकर उनसे मिली। १११०

इलैकुला वयिलिना ननिकमे ऴॅनवुलाय्
निलैकुला महरनीर् नॅडियमा कडलॅलाम्
अलहिन्मा कळिऱुतेर् पुरविया ऴॅनविराय्
उलहॅला निमिर्वदे पॉरुवुमो रुवमये 1111

इलै कुलावु–पत्र के आकार का; अयिलिनान्–भालाधारी की; अनिकम्–सेना; ॲऴु ॲन–सातवें (क्षीर-) सागर के समान; उलाय्–आयी, तो; निलै कुलाम्–स्थायी रूप से रहनेवाले; मकरम्–मकरों से भरे; नीर् नॅटिय–विपुल जलराशि के; मा कटल् ॲल्लाम्–बड़े समुद्र, सभी (सातों समुद्र); अलकु इल्–अकूत; मा कळिऱु ॲन–बड़े गजों; तेर् ॲन–रथों; पुरवि–अश्वों; आळ् ॲन–और पदातियों का रूप लेकर; विराय्–मिलकर; उलकु ॲलाम् निमिर्वते–संसार भर में आ व्याप्त हो गये, यही; पॉरुवुम् ओर् उवमै–योग्य एक उपमा है। ११११

पत्र के आकार के नोक वाले भाले के धारक जनक की सेना सातवें सागर के समान आकर मिल गयी तो सारी सेना सम्मिलित सभी (सातों) सागरों के समान लगी, जो असंख्यक गजों, रथों, अश्वों और पदातियों का रूप धारणकर संसार भर में व्याप्त हो गई। यही उपमा उपयुक्त हो सकती है। ११११

तोंङ्गलवॅण् कुडैतोहैप् पिच्चमुट् पडविराय्
ऑङ्गुम्विण् पुदैदरप् पहन्मऱैन् दिरुळॅळप्
पङ्गयज् जॅय्यवुम् वॅळियवुम् पलपडत्
तङ्गुदा मरैयुडैक् कानमे शालुमे 1112

तॉङ्कल्–मालायुक्त; वॅण् कुटै–श्वेतछत्र; तॉकै पिच्चम् उट्पट–झण्डों के मोरपंख छत्र, पंखे, चामर मिलाकर; विराय्–सबने मिलकर; ॲङ्कुम् विण् पुतै तर–सर्वत्र आकाश को छिपा दिया, तब; पकल् मरैन्तु–सूर्य की धूप छिप गई; इरुळ् ॲळु–अन्धकार छाया; चॅय्यवुम् वॅळियवम्–लाल और श्वेत; पङ्कयम्–कमलों के; पल पट तङ्कु–अत्यधिक भरे; तामरै उटै कातम्—कमल-कानन; चालुम–के समान था। १११२

मालाओं से अलंकृत श्वेतछत्र, मोरपंखछत्र, पंखे, चामर आदि जो उस सेना में अत्यधिक संख्या में थे, सर्वत्र आकाश को ढँकते रहे। तब धूप छिप गयी और अन्धेरा फैल गया। जहाँ सेना रही वह स्थान लाल और श्वेत कमलों से भरे कमल-कानन के समान लगा। १११२

कॉडियुळा ळोतनिक् कुडैयुळा ळोकुलप्
पडियुळा ळोकडङ् पडैयुळा ळोपहर्
मडियिला वरशितान् मार्बुळा ळोवळर्
मुडियुळा ळॊतॆरिन् दुणर्हिला मुळरियाळ् 1113

तॆरिन्तु उणर्किला–सोचकर न समझी जा सकी जो; मुळरियाळ्–वह जयश्री; पकर् मटि इला–(बुरी बात) कहलानेवाला आलस्य जिनमें नहीं था; अरचितान्–उन शासक के; मार्पु उळाळो–वक्ष पर रहती हैं; वळर् मुटि उळाळो–उन्नत किरीट में हैं; कॉटि उळाळो–विजय पताका पर हैं; तनि कुटै उळाळो—एक-छत्र पर हैं; कटल् पटै उळाळो–सागर-सम सेना में हैं; कुलम् पटि उळाळो–कुल परम्परा में हैं। १११३

दशरथ की विजयश्री किस पर अवलंबित है, यह जानकर बताना कठिन है। क्या वह बड़ों से त्याज्य गुण जो कहा गया है उस आलस्य से दूर रहनेवाले दशरथ के वक्ष पर है; गौरवयुक्त किरीट पर; विजयध्वजा पर; अप्रतिम श्वेतछत्र पर; सागर-सम सेना पर; या उनकी कुल परम्परा पर ? (विजय के सारे प्रतीक उनके पास हैं। वे सब प्रकारों से विजयी हैं।)। १११३

वार्मुहङ् गॆळुवुकॊङ् गयर्करुङ् गुळलिन्वण्
डेर्मुळङ् गरवमे ळिशैमुळङ् गरवमे
तेर्मुळङ् गरवम्वॆण् डिरैमुळङ् गरवमे
कार्मुळङ् गरवम्वॆङ् गरिमुळङ् गरवमे 1114

वार् मुकम्–अँगिया में; कॅळुवु–भरपूर; कॊङ्कैयर्–स्तनोंवाली (स्त्रियों) के; करु कुळलिन्–काले केशों पर (मँडरानेवाले); वण्टु–भ्रमर; एर् मुळङ्कु अरवम्–जो करते हैं वह मधुर रव; एळ् इचै मुळङ्कु अरवमे–सप्तस्वर वाले संगीत का ही नाद है; तेर् मुळङ्कु अरवम्–रथों का बड़ा शोर; वॅण् तिरै मुळङ्कु अरवमे–श्वेत तरंगोंवाले समुद्र का बड़ा गर्जन ही है; वॆम् करि मुळङ्कु अरवम्–भयंकर गजों की चिंघाड़ का शब्द; कार् मुळङ्कु अरवमे–मेघगर्जन का शोर है। १११४

अँगियों के अन्दर मचलनेवाले स्तनों की स्त्रियों के केशों पर भ्रमर जो नाद कर रहे थे वह सप्तस्वरों पर आधारित संगीत के रव से बढ़कर था। रथों के शोर (झाग के कारण) श्वेत (दिखनेवाली) तरंगों के सागर के गर्जन ही थे। भयंकर गजों की चिघाड़ मेघ-गर्जन ही थी। (दशरथ की सेना में ये शोर उठे।)। ११९४

शूळ्मा	कडल्हळुन्	दिडर्पडत्	तुहडवळ्न्
देळुपा	रहमुमुर्	रुळदॅनर्	कॅळिदरो
आळ्यिा	नुलहळन्	दन्रुताळ्	शॅन्रवप्
पूळैयू	डेपॉडित्	तप्पुरम्	पोर्त्तते 1115

तुकळ्–धूल; चळुम्–(भूलोक को) घेरते रहे; मा कटल्कळुम–बड़े सागरों को भी; तिटॅर पट–मैदान बनाकर; तवळ्न्तु–फैली, इसलिए; एळु पार् अकमुम्–सप्तदीप यह भूलोक; उरु उळतु–बराबर हो गया; ॲन्तल् कु–यह कहने को; ॲळितु–आसान है; आळ्यिान्–चक्रधर श्रीविष्णु ने; उलकु अळन्त अन्रु–(जब) लोकों को नापा उस दिन; ताळ् चॅन्र–चरण (जिससे) गया; पूळै ऊटे–उस छेद के द्वारा; पॉटित्तु–ऊपर जाकर; अ पुरम् पोर्त्ततु–अण्डों के उस ओर भी व्याप गयी थी। ११९५

उनकी सेना के कारण जो धूल उठी उसने समुद्रों को मैदान बना दिया। इसलिए सातों द्वीप मिल गये। भूतल बराबर स्थल बन गया। यह कोई असम्भव या कठिन बात नहीं है। उस दिन, जब चक्रधर श्रीविष्णु ने त्रिविक्रमदेव बनकर लोकों को नापा था, उनका पैर अंड को भेदकर ऊपर गया। तब जो छेद बना उससे होकर धूल ऊपर गयी और अण्ड के बाहर के सब स्थलों में व्याप गयी। धूल, जिसने उस दिन उतना किया आज इतना नहीं कर सकेगी ?। ११९५

मन्नॅडुङ्	कुडॅमिडॅन्	दडॅयवान्	मरॅदरत्
तुन्निडुन्	निळल्वळङ्	गिरुडुरप्	परिदरो
पोन्नॅडुम्	पूणिडुम्	पुनॅमणिक्	कुलमॅलाम्
मिन्निडुम्	विल्लिडुम्	वॅयिलिडुन्	निलवॉडे 1116

पोन् नॅटु पूण्—स्वर्ण-निर्मित श्रेष्ठ आभरण; इटुम्–(सेना में रहनेवालों के) पहने हुए; पुनॅ मणि कुलम्–शोभित करनेवाले रत्नसमूह; ॲलाम्–सब एक साथ; मिन् इटुम्–बिजली के समान चमकते हैं; विल् इटुम्–इन्द्रधनुष के समान कांति देते हैं; निलवॉटु वॅयिल् इटुम्–चाँदनी और धूप (सा प्रकाश) बिखेरते हैं; मन् नॅटु कुटॅ मिटॅन्तु–अधिक (संख्या में) बड़े-बड़े छत्र मिलकर; वान् अटॅय मरॅ तर–आकाश भर को छिपा देते हैं, इसलिए; तुन्निटुम्–घने रूप से फैली हुई; निळल् वळङ्कुम्–छाया से उत्पन्न; इरुळ्–अन्धकार को; तुरप्पु अरितु–दूर करना कठिन है। ११९६

उस सेना के लोगों के स्वर्णाभरण और रत्नहारों ने बिजली के समान

और इन्द्रधनुष के समान कांति बिखेरी। वे चाँदनी के समान भी प्रकाश देते थे, धूप के समान भी। इतना होते हुए भी, बड़े-बड़े छत्रों की विपुल राशि अपनी छाया के कारण जो अन्धेरा उत्पन्न कर रही थी वह अन्धेरा दूर करना कठिन रहा। १११६

ताविन्मन् न्नवर्पिरान् वरमुरट् चत्तहन्नाम्
एवरुञ् जिलैयिन्ना नॅदिर्वरु नॅरियॅलाम्
तूवुतण् शुण्णमुङ् गत्तहनुण् डूळियुम्
पूविन्मॅन् ऱादुहुम् पॉडियुमे पॉडियॅलाम् 1117

ता इल्–अकलंक; मन्नवर् पिरान्–राजाधिराज; वर–आये, तब; मुरण्–बलवान; चत्तकन् आम्–जनक जो; ए वरुम चिलैयिन्नान्–शरप्रेरक धनुर्धर हैं, उनके; ॲतिर् वरुम् नॅरि ॲलाम्–सामने से स्वागतार्थ आने के मार्ग पर; पॉटि ॲल्लाम्–धूलि सब; तूवु तण् चुण्णमुम्–छिड़के हुए शीतल चूर्ण; कत्तकम् नुण् तूळियुम्–स्वर्ण के छोटे कण; पूविन् मॅन् तातु–फूलों के कोमल मकरंदों की; उकुम् पॉटियुमे–चूनेवाली धूल ही (भरी थी)। १११७

अकलंक दशरथ की सेना इस तरह आती रही। उससे धूल उठती थी न? स्वागतार्थ आनेवाले, शरप्रेषक धनुर्धर जनक जो थे उनकी सेना की क्या हाल थी? उनके मार्ग पर सुगन्धित चूर्ण, स्वर्ण चूर्ण और मकरंद चूर्ण ही थे जो लोगों ने छिटके थे। (यह मंगल सूचक है।)। १११७

नऱुविरैत् तेनुना वियुनऱुङ् गुङ्गुमत्
तॅऱियहिऱ् ऱेय्वैयुम् मान्मदत् तॅक्करुम्
वॅऱियुडैक् कलवैयुम् विरवु शॅञ्जान्दमुम्
शॅऱिमदक् कलुऴिपाय् शेऱुमे शेऱॅलाम् 1118

चेऱु ॲलाम्–कीच जो बनी वह सब; नऱु विरै तेनुम्–अच्छा सुगन्धयुक्त शहद; नावियुम्–बिलावकस्तूरी; नऱु कुङ्कुमत्तु–सुगंधित कुंकुम के साथ मिला हुआ; ॲऱि अकिल् तेय्वैयुम्–कटे अगरु के टुकड़ों का घिसा लेप; मान् मतत्तु–मृगकस्तूरी का चेप; विरवु वॅऱि उटै–(विविध वस्तुओं का) मिला हुआ, सुगंधित; कलवैयुम्–मिश्रित चेप; चॅम् चान्तमुम्–लाल चन्दन का लेप; चॅऱि मतम् कलुऴि–अधिक मदजल के; पाय् चेऱुमे–बहने से उत्पन्न कीच ही। १११८

वह मार्ग कीचड़ भरा हो गया। कौन-सा कीच? सुगंधपूर्ण शहद, बिलाव-कस्तूरी, कुंकुम, अगरु का पिसा लेप आदि का मिश्रण, मृगमद, अनेक सुगंध-पदार्थों का मिश्रित लेप, लाल चन्दन और अधिक (गजों के) मदजल के प्रवाह से बना कीचड़ —ये ही उस मार्ग के कीचड़ बने। १११८

मन्ऱलङ् गोदयार् मणियितुम् पॉन्निनुम्
शॅन्ऱुवन् दुलवुमच् चिदैविला निऴलुनेर्

वॆऩ्ऱतिण् कॊडियॊडुम् नॆडुविता ऩमुम्विराय्
निऩ्ऱवॆण् कुडॆहळिऩ् निऴलुमे निऴलॆलाम् 1119

मऩ्ऱल् अम् कोतैयार्–सुवासपूर्ण सुन्दर केशवाली राजकुमारियों के; मणियिऩुम्–रत्नाभरणों; पॊऩ्ऩिऩुम्–और स्वर्णाभरणों से; चॆऩ्ऱु वनतु उलवुम्–रह-रहकर आनेवाली; अ चितैवु इला–वह निरंतर; निऴलुम्–झाँई और; नेर्–उनसे मिल; वॆऩ्ऱ् तिण् कॊटियॊटुम्–सुदृढ़ विजयपताकाओं के साथ; नॆट्टु वितातमुम्–और ऊँचे वितानों के साथ; विराय्–मिलकर; निऩ्ऱ–खुले रहे; वॆण् कुटैकळिऩ् निऴलुमे–श्वेतछत्रों की छाया ही; निऴल् ऍलाम्–छाया सब थी। १११६

वहाँ छाया किसकी होती थी? सुवासित केशवाली राजकुल की स्त्रियों के स्वर्णाभरणों और रत्नहारों से रह-रहकर छिटकनेवाली उस निरन्तर आभा की छाया, उससे युक्त विजयपताकाओं, उन्नत वितानों और श्वेत छत्रों की छाया ही वहाँ की छाया थी। (ये छायाएँ अन्धेरी छायाएँ नहीं, वरन मनोरम शीतल प्रकाश हैं।)। १११९

माऱिला मदुहयान् वरुपॆरुन् दाऩमेल्, ऊऱुपे रुवहया ऩिहम्वन् दुऱ्ऱपो
दीऱिलो दयिनुला मॆऱिदिरैप् परववाय्, आऱुपाय् हिऩ्ऱदो रमलपो लाऩदे 1120

माऱु इला–अनुपम; मतुकैयान्–वीर (दशरथ) की; वरु पॆरु तानै मेल्–उत्तरोत्तर बढ़ आनेवाली बड़ी सेना के सामने; ऊऱु पेर् उवकैयान्–उमँगनेवाले बड़े आनन्द से पूरित (जनक) की; अनिकम्–सेना; वन्तु उऱ्ऱ पोतु–जब आ पहुँची, तब; ईऱु इल् ओतैयिन्–निस्सीम शोर के साथ; उलाम्–उठनेवाली; ऍऱि तिरै–तीर से टकराती हुई लहरों के; परवै वाय्–समुद्र में; आऱु पाय्किन्ऱतु ओर् अमलै पोल्–नदी आकर जो गिरती है उस शोर के समान; आनतु–हुआ। ११२०

अप्रतिम वीर दशरथ की विपुल सेना के साथ, वर्धनशील उमंगवाले जनक की सेना जब आ मिली तब जो कोलाहल मचा वह उस समय के शोर के समान था जब एक नदी निस्सीम गरज के साथ, तीर से टकराती रहने वाली लहरोंवाले समुद्र से मिलती है। ११२०

कन्दये पॊरुहरिच् चऩहनुङ् गादले
उन्दवो दरियदोर् पॆरुमयो डुलहुळोर्
तन्दये यनैयवऩ् तहविनान् मुऩ्बुऩन्
शिन्दये पॊरुनॆडुन् देरिन्वन् दॆय्दिनान् 1121

कन्तैये पॊरु करि–खूँटे को ही तोड़नेवाले हाथी सेना के; चनकनुम्–जनक भी; कातल् उन्त–(दर्शन-) लालसा की प्रेरणा से; ओत अरियतु–अकथनीय; ओर् पॆरुमैयोटु–एक गौरव के साथ; उलकु उळोर्–लोकवासियों के; तन्तैये अनैय–पितृतुल्य; अ तकवितान् मुन्पु–उन सर्वगुणपूर्ण के सामने; तन् चिन्तैये पॊरु–अपने ही मन से तुल्य; नॆट्टु तेरिन्–(वेगवान) बड़े रथ पर; वन्तु ऍय्तितान्–आ पहुँचे। ११२१

आलान को भी तोड़नेवाले गजों की सेना के पति जनक, दशरथ के दर्शन की उतावली के कारण, एक अकथनीय शान के साथ जो सर्वलोक पिता तुल्य थे उन श्रेष्ठतायुक्त दशरथ के सामने अपने ही मन की गति से उपमेय वेग के साथ बड़े रथ पर सवार हो आये। ११२१

ऍय्दलुन् दिरुनॅडुन् देरिऴिन् दिऩियतऩ्
मॊय्कॊडिण् शेनैपिन् निऱ्कमुन् शॆऱ्लुम्
कैयिऩ्वन् देऱॆक् कडिदिऩ्वन् देऱिऩाऩ्
ऐयतुम् मुहमलर्न् दहमुऱत् तऴुविऩाऩ् 1122

ऍय्तलुम्–पहुँचने पर; तिरु नॆट्टु तेर् इऴिन्तु–सुन्दर बड़े रथ से उतरकर; तन्–अपनी (उनकी); इऩिय–प्यारी; मॊय्कॊऴ्–वलवती; तिण् चेतै–विशाल सेना; पिऩ् निऱ्क–पीछे खड़ी हो गई, तब; मुऩ् चॆऱ्लुम्–आगे गये, और; ऐयतुम्–प्रभु, चक्रवर्ती दशरथ भी; मुकम् मलर्न्तु—प्रसन्न-मुख होकर; कैयिऩ्–अपने हाथ से; वन्तु एऱु–आकर आरोहण कीजिए; ऍऩ–कहने पर; कटितिऩ् वन्तु एऱिऩाऩ्–जनक भी आकर सवार हुए; अकम् उऱ तऴुविऩाऩ्–(दशरथ ने) गले से लगा लिया। ११२२

जब रथ दशरथ के समक्ष आया तब जनक उस सुन्दर बड़े रथ पर से उतरे। उनकी वलवती बड़ी सेना पीछे खड़ी रह गयी। वे आगे पैदल चले। चक्रवर्ती ने उन्हें देखा तो उन्हें बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने जनक को अपने रथ पर आरोहण करने का हाथ से संकेत करके निमंत्रण दिया। जनक भी उस पर चढ़े। चक्रवर्ती ने खूब उन्हें गले से लगा लिया। ११२२

तऴुविनिऩ् ऱवनिरुङ् गिळैयैयुन् दमरयुम्
वऴुविल्शिन् दऩैयिऩाऩ् वरिशयिन् ऩळवळाय्
ऍऴुहमुन् दुऱ्वॆऩा विऩिदुहन् दॆय्दिऩाऩ्
उऴुवैमुन् दरियऩा ऩॆवरिनुम् मुयरिऩाऩ् 1123

उऴुवै मुन्तु–बाघों के सामने; अरि अऩ्ऩाऩ्–सिंह सम; ऍवरिऩुम्–हर किसी से; उयरिऩाऩ्–बढ़कर श्रेष्ठ; तऴुवि निऩ्ऱवऩ्–अपने आलिंगित जनक के; इरु किळैयैयुम्–विस्तृत परिवारों का; तमरैयैम्–मित्रों का; वरिचैयिऩ्–यथाक्रम; वऴु इल् चिन्तऩैयिऩाऩ्—कपट-रहित मन से; अळवळाय्–कुशलक्षेम पूछकर; मुन्तु उऱ ऍऴुक–आगे बढ़ चलें; ऍऩा–कहकर; इऩितु उकन्तु–तृप्त सुख के साथ; ऍय्तिऩाऩ्–गये। ११२३

बाघों के सामने सिंह सदृश, सर्वश्रेष्ठ राजा दशरथ ने अपने आलिंगित राजा जनक से निष्कलंक मन के साथ उनके विशाल परिवार के बन्धु-बान्धवों और मित्रों का यथाक्रम कुशल-समाचार पूछा। फिर, 'हम बढ़ें' यह कहकर उत्साह के साथ नगर में गये। ११२३

इन्नवा इरुवरुम् मिनियवा ऱेहवत्
तुन्नुमा नहरिनिन् ऍदिर्वरत् तुन्निनात्
तन्नये यनयवन् ऱळलये यनयवन्
पॊन्निन्वार् शिलैयिऱप् पुयनिमिर्त् तरुळिनान् 1124

इन्नवाऱु–इस प्रकार से; इरुवरुम्–दोनों; इनियवाऱु एक–सुख से जब जाते रहे, तब; तन्नये अनैयवन्–स्वोपम (आप ही अपने से उपमेय); तळलये अनैयवन्–अग्नि के ही समान; पॊन्निन् वार् चिलै–(शिवजी के) स्वर्णरचित लम्बे धनुष के; इऱ–भंजक; पुयम् निमिर्त्तरुळि नान्–हाथ जिन्होंने बढ़ाने की कृपा की वे (श्रीराम); तुन्नुम्–सर्वसमृद्ध; मा नकरिन् निन्ऱु–बड़े नगर (मिथिला) से; ऍतिर् वर–स्वागत करने के लिए; तुन्निनान्–आये। ११२४

जब ये सुखपूर्वक इस प्रकार जाते रहे तब आप ही अपना उपमेय रहनेवाले श्रीराम जिन्होंने अपने हाथ में अग्नि-वर्ण तेजस्वी रुद्रदेव के स्वर्ण के लम्बे धनुष का भंजन किया था, उस सर्वसमृद्ध मिथिला नगर से अपने पिता के स्वागतार्थ निकलकर आये। ११२४

तम्बियुन् दानुमत् तानैमन् नवनहर्प्
पम्बुतिण् पुरवियुम् बडैञरुम् पुडैवरच्
चॆम्बॊनिन् पशुमणित् तेरिन्वन् दॆय्दिनान्
उम्बरुम् मिम्बरुम् मुरहरुन् दॊळुवुळान् 1125

उम्परुम्–स्वर्गलोकवासी और; इम्परुम्–इहलोकवासी; उरकरुम्–नागलोकवासी; तॊळ उळान्–(तीनों के) वन्द्य; तम्पियुम् तानुम्–आप और उनके लघु भ्राता; अ तानै मन्नवन् नकर्–उन सेना विशिष्ट राजा के नगर से; पम्पु तिण् पुरवियुम्–अधिक संख्या के ताकतवर अश्व; पटैञरुम्–पैदल वीर; पुटै वर–इनके (उन्हें) घेरे आते; चॆम् पॊन्निन्–श्रेष्ठ स्वर्ण के; पचुमणि–उत्तम मणिमंडित; तेरिन् वन्तु–रथ पर सवार होकर; ऍय्तिनान्–आ पहुँचे। ११२५

देवलोक, भूलोक और (नागों का) पाताललोक— इन तीनों लोकों के वासियों के वन्द्य (श्रीविष्णु के अवतार) श्रीराम, अपने प्रिय लघु भ्राता श्रीलक्ष्मण के साथ, एक स्वर्णनिर्मित श्रेष्ठ मणिमंडित रथ पर आये। उनके साथ, सेना के कारण कीर्तिप्राप्त जनक के नगर से अधिक संख्या में बलवान अश्वों की सेना और पैदल सेना आई। ११२५

यानयो पिडिहळो विरदमो विवुळियो, आनपे रुरैयिला निरैवया रिरुहुवार्
तानयेर् चनहने वलिनॆट्टुन् दादैमुन्, पोनपे रिरुवर्तम् पुडैवरुम् पटैयिने 1126

नॆट्टु तातै मुन् पोन–गौरवोन्नत पिता के स्वागतार्थ जो गये; पेर् इरुवर् तम् पुटै–उन उत्तम दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) को घेरकर; तानै एर् चनकन्–श्रेष्ठ सेना के स्वामी जनक की; एवलिन् वरुम्–आज्ञा से जानेवाली; पटैयिन्–सेना-समूह में; यानैयो–हाथी; पिटिकळो–हथिनियाँ; इरतमो–रथ; इवुळियो–अश्व, इनकी;

आत–प्राप्य; पेर् उरै इला–बड़े से बड़े अदद से भी न गणनीय; निरैवै–अधिकता को; यार् अऱिकुवार्–कौन जान सकता है । ११२६

अपने गौरवोन्नत पिता के समक्ष जो गये उन दोनों के साथ जो सेना गयी वह जनक की आज्ञा से ही गयी । उसके हाथियों, हथिनियों या अश्वों की संख्या गिनने के लिए कोई अदद ही नहीं था । फिर उसकी सही संख्या कौन जाने ? । ११२६

कावियुङ् गुवळयुङ् कडिहॊळ्हा यावुमॊत्
तोवियज् जुवैहॅडप् पॊलिवदो रुरुवॊडे
तेवरुन् दॊळुहळऱ् चिरुवन्मुन् पिरिवदोर्
आविवन् दॆन्नवन् दरशन्मा डणुहिनान् 1127

कावियुम्–नीलोत्पल; कुवळैयुम्–और कुवलय (नीलकमल); कटि कॊळ्–(वर्ण-) विलक्षण; कायावुम्–अतसी; ऒत्तु–तुल्य रहकर; ओवियम्–चित्र को भी; चुवै कॅट–(अपने सामने) रूपहीन बनाकर; पॊलिवतु–जो शोभायमान था उस; ओर् उरुवॊटे–अप्रतिम रूपसौंदर्य के साथ; तेवरुम् तॊऴु कऴल्–देवपूज्यचरण; चिऱुवन्–चक्रवर्तीकुमार; मुन् पिरिवतु–पहले जो अलग हुआ; ओर् आवि–वह कोई प्राण; वन्ततु ऎन्न–फिर आ गया हो; वन्तु–ऐसा आकर; अरचन् माट्टु–राजा के पास; अणुकितान्–आये । ११२७

श्रीराम, जिनका वर्ण नीलोत्पल, नीलकुमुद (कुवलय) और सुन्दर रंग वाले अतसी का-सा था, जिनका रूप सौन्दर्य किसी भी कल्पित चित्र को मूल्यहीन बना सकता था और जो सर्वदेववन्द्यचरण थे, तथा जो चक्रवर्ती तनुज थे, अपने पिता के पास ऐसे गये मानो चक्रवर्ती का प्राण जो पहले उनके शरीर को छोड़ गया था अब लौट आकर मिल रहा हो । ११२७

अन्िहम्वन् दडितॊळक् कडिदुशॆन् ऱरशर्होन्
इन्ियपॆङ् कळल्पणिन् दॆळुदलुन् दळुविनान्
मनुवॆन्तुन् दहैयन्मार् बिडैमऱैन् दन्मलैत्
तन्िनॆडुञ् जिलैयिऱत् तवळ्दडङ् गिरिहळे 1128

अन्िकम् वन्तु अटि तॊऴ–(चक्रवर्ती की) सेना ने आकर उनके चरणों में नमस्कार किया; कटितु चॆन्ऱु–(वे) जल्दी जाकर; अरचर्कोन्–राजाओं के राजा के; इऩिय पचुमै कऴल्–प्यारे, श्रेष्ठ स्वर्ण के (बने) पायलधारी चरणों पर; पणिन्तु ऎऴुतलुम्–नमस्कार कर (उठे), उठने पर; तऴुवितान्–बाहुपाश में लिया; मनु ऎन्तुम् तकैयन्–मनु मान्य उनके; मार्प् इटै–वक्षस्थल में; मलै तन्ि नॆटु चिलै–पर्वतसम अप्रतिम दीर्घ धनुष को; इऱ–तोड़ते हुए; तवऴ्–उसके साथ जिन्होंने लीला की; तट किरिकळ–वे विशालगिरियाँ (बाहुएँ); मऱैन्तत–अन्तर्निहित हो गये । ११२८

जब वे जा रहे थे तब उनकी सेना ने उनके चरणों पर नमन किया ।

वे स्वीकार करते हुये शीघ्र गये और अपने पितृदेव के श्रेष्ठ स्वर्ण के बने पायलधारी चरणों पर नमस्कार करके उठे। तब चक्रवर्ती ने उनको गले लगा लिया। उस समय श्रीराम के विशाल हाथ भी, जिन्होंने पर्वत-सम, अप्रमेय और बड़े धनुष को तोड़ने का दुस्तर काम किया था, चक्रवर्ती के विशाल वक्षस्थल में समा गये थे। ११२८

इळैयपैङ् गुरिशिल्वन् दडिपणिन् दॅऴुदलुम्
तळैवरुन् दॉडयल्मार् बुऱमिहत् तऴुविनान्
कळैवरुन् दुयरऱक् कगनमॅण् डिशैयॅलाम्
विळैतरुम् बुहऴिना नॅवरिनुम् मिहुदियान् 1129

कळैवु अरुम्–दुर्निवार; तुयर्–(शंबरासुर से मिले) संकट; अऱ–दूर करके; ककनम्–आकाशलोक में; ऍण् तिचै ऍल्लाम्–आठों दिशाओं भर में; विळैतरुम्–होकर बढ़नेवाली; पुकऴिनान्–कीर्तिवाले; ऍवरिनुम् मिकुतियान्–सब (किसी) से बढ़कर श्रेष्ठ; इळैय पैङ्कुरिचिल् वन्तु–छोटे, स्वर्णवर्ण के राजकुमार (लक्ष्मण) के आकर; अटि पणिन्तु–चरणों पर नमन करके; ऍऴुतलुम्–उठने पर; तळै वरुम् तॊटैयल्–गुँथी हुई मालाधारी; मार्पु उऱ–वक्ष से लगाकर; मिक तऴुविनान्–खूब आलिंगन कर लिया। ११२९

शंबरासुर का वध करके, उसका त्रास दूर करने के कारण दशरथ की महिमा स्वर्गलोक में फैली थी। उनकी कीर्ति दिशा-दिशा में व्याप्त थी। वे सब (किसी) से श्रेष्ठ थे। उनके चरणों पर लघुराज श्रीलक्ष्मण ने भी आकर नमस्कार किया। नमस्कार कर उठते ही दशरथ ने उनको अपने माला से अलंकृत सुन्दर वक्ष से खूब कसकर लगा लिया। ११२९

कऱ्ऱैवार् शडैयिनान् कैक्कॊळुन् दनुविऱक्
कॊऱ्ऱनीळ् पुयनिमिर्त् तरुळुमक् कुरिशिऱान्
पॅऱ्ऱदा यरैयुमप् पॅऱ्ऱियिऱ् ऱॊऴुदॅऴुन्
दुऱ्ऱपो दवर्मनत् तुवहया रुरैशॅय्वार् 1130

कऱ्ऱै वार्–घनी मिली हुई और लम्बी; चटैयिनान्–जटाधारी; कै कॊळ्ळुम् तनु–अपने हाथ में जिसको रखते थे वह धनु; इऱ–टूट जाय, ऐसा; कॊऱ्ऱम् नीळ् पुयम्–विजयिनी और लम्बी भुजाएँ; निमिर्त्ततरुळम्–जिन्होंने बढ़ाने की कृपा की; अ कुरिचिल्–वे प्रभु श्रीराम; पॅऱ्ऱ तायरैयुम्–जननियों को; अ पॅऱ्ऱियिन्–उसी प्रकार से; तॊऴुतु–नमस्कार करके; ऍऴुन्तु–उठकर; उऱ्ऱपोतु–उनके समीप गये, तब; अवर् मनत्तु उवकै–उनके मन का आनन्द; उरै चॅयवार् यार्–वर्णन कर सकेंगे कौन। ११३०

जटाजूटधारी श्री शिवजी के धनु को तोड़ने के लिए जिन्होंने अपने विजयशील दीर्घ हाथ बढ़ाये थे उन (धनुभंजक) श्रीराम ने अपनी तीनों माताओं के चरणों पर नमस्कार किया। जब वे उनके पास गये तब

उनके (माताओं के) मन में जो आनन्द हुआ उसका वर्णन कौन कर सकेगा ? । ११३०

उऩ्ऩुपे रऩ्बुमिक् कॊऴुहियॊत् तॊण्गणीर्
पऩ्ऩुता रैहडरत् तॊऴुदॆऴुम् बरदऩैप्
पॊऩ्ऩिऩ्मार् बुऱवणैत् तुयिरुऱप् पुल्लिऩाऩ्
तऩ्ऩैयत् तादैमुऩ् ऱऴुविऩा लॆऩ्ऩवे 1131

उऩ्ऩु पेर् अऩ्पु–सदा स्मरण करनेवाला उत्कट प्रेम; मिक्कु ऒऴुकि (यतु) ऒत्तु–बढ़कर, छलककर बाहर आया, ऐसा; ऒण् कण्–उज्ज्वल आँखों ने; नीर् पऩ्ऩु–अश्रुजल भरी; तारैकळ् तर–धाराएँ बहाईं; तॊऴुतु ऎऴुम्–नमस्कार करके जो उठे; परतऩै–उन भरत को; पॊऩ्ऩिऩ् मार्पु उऱ–स्वर्णसम अपने वक्ष से कसकर; अणैत्तु–लगाकर; अ तातै–उन पिता ने; तऩ्ऩै–अपने को; मुऩ् तऴुविऩाल् ऎऩ्ऩवे–पहले जैसे आलिंगन किया, उसी प्रकार; उयिर् उऱ–प्राणों से लगाकर; पुल्लिऩाऩ्–बाहुपाशबद्ध किया —(श्रीराम ने) । ११३१

फिर भरत श्रीराम के चरणों में पड़े । उनकी आँखों से प्रेमाश्रु बह रहा था, मानो सदा स्मरण के साथ बढ़नेवाला वह प्रेम दिल के अन्दर समा नहीं सका और छलककर बाहर निकल आया हो । श्रीराम ने उनका ऐसा गाढ़ा आलिंगन किया जैसे उनके पिता ने उनका किया था । ११३१

करियवऩ् पिऩ्बुशॆऩ् ऱवऩरुङ् गादलिऩ्
पॆरियवऩ् ऱम्बियॆऩ् ऱॆवरुम् दुदिशॆय्दार्प्
पॊरुवरुङ् कुमरर्तम् पुऩैनऱुङ् गुञ्जियाल्
इरुवर्पॆङ् गऴलुम्वऩ् दिरुवरुम् वरुडिऩार् 1132

करियवऩ् पिऩ्पु चॆऩ्ऱवऩ्–नीलवर्ण (श्रीराम) के अनुगामी; अरुम् कातलिऩ्–गम्भीर प्रेम में; पॆरियवऩ् तम्पि–बड़े हुए (भरत) का छोटा भ्राता; ऎऩ्ऱु–कहकर; एवरुम् तुति चॆय्–सबसे प्रकीर्तित; तार्–पुष्पमालाधारी; पॊरु अरु कुमरर् इरुवरुम्–अनुपम दोनो कुमारों (लक्ष्मण और शत्रुघ्न) ने; वन्तु–आकर; इरुवर् पॆङ्कऴलुम्–(भरत और श्रीराम) दोनो के श्रीचरणों को; तम् पुऩै नऱु कुञ्चियाल्–अपने अलंकृत और सुगन्धपूर्ण केशवाले सिरों से; वरुटिऩार्–सहलाया (चरणों पर सिर लगाये) । ११३२

"लक्ष्मण नीलवर्ण श्रीराम के अनुगामी हैं; और शत्रुघ्न श्रीरामभक्ति में उत्कृष्ट भरत के ही अनुज हैं ।" ऐसे दोनों प्रकीर्तित थे । श्रीलक्ष्मण ने आकर भरत की दण्डवत की और शत्रुघ्न ने श्रीराम के चरणों पर नमस्कार किया । (लक्ष्मण भगवत-सेवा में और शत्रुघ्न भागवत-सेवा में लीन परम भक्त थे ।) । ११३२

कोलवरुञ् जॆम्मयुङ् कुडैवरुम् दण्मयुम्
शालवरुञ् शॆल्वमॆऩ् ऱुणर्वॆरुम्ल् दादैपो

मेलवरुन् दहैमयान् मिहविळङ् गिऩर्हडाम्
नाल्वरुम् बॉरुविऩात् मरैयॅऩ्न् नडैयिऩार् 1133

ताम् नाल्वरुम्–वे चारों; पॉरु इल् नाल् मरै–अप्रमेय चारों वेद हैं; ॲऩ्म् नटैयिऩार्–ऐसा कहने योग्य आचरणवाले; कोल् वरुम् चॅम्मैयुम्–ऋजु दण्ड (नेक शासन) के लिए आवश्यक नीति; कुटै वरुम् तण्मैयुम्–छत्र (पालक धर्म) के लिए आवश्यक करुणा ही; चाल् वरुम् चॅल्वम्–श्रेष्ठ धन हैं; ॲऩ्ऱ उणर्—ऐसा माननेवाले; पॅरु तातै पोल्–गौरवयुक्त पिता के समान; मेल् वरुम् तकैमैयाल्–माननीय सुयोग्यता के साथ; मिक विळङ्किऩर्कळ्–बहुत शोभायमान रहे। ११३३

वे चारों पुत्र चारों वेदस्वरूप मान्य उत्तम आचरणवाले थे। वे अपने ही पिता के समान जो नेकशासन के लिए आवश्यक नीतिपरायणता और प्रजापालन के लिए आवश्यक करुणा —इनको ही श्रेष्ठ निधियाँ मानते थे, सुयोग्य रूप से शोभायमान थे। ११३३

शाऩ्ऱॅऩत् तहैयशॅङ् गोलिऩा नुयिर्हडाम्
ईऩ्ऱनर् ऱायॅनक् करुदुपे ररुळिऩान्
आऩ्ऱविच् चॅल्वमत् तऩैयुमॊय्त् तरुहुऱत्
तोऩ्ऱलैक् कॊण्डुमुर् चॅल्हॅऩच् चॊल्लिऩान् 1134

चाऩ्ऱ ॲन तकैय–उदाहरण के रूप में मान्य; चॅङ्कोलिऩान्–ऋजु राजदण्ड वाले (नेक शासक); उयिर्कळ् ताम्–प्रजाजन; ईऩ्ऱ नल् ताय् ॲन करुतु–जननी, अच्छी माता, ऐसा माने; पेर् अरुळिऩान्–इतने बड़े करुणामय; आऩ्ऱ इच् चॅल्वम् अत्तऩैयुम्–श्रेष्ठ ये धन (सेना, छत्र, ध्वजाएँ) सब; मॊय्त्तु–घने रूप में एकत्र होकर; अरुकु उऱ–पास आये, तब; तोऩ्ऱलै कॊण्टु–राजकुमार को (अगुआ) बनाकर; मुन् चॅल्क–आगे बढ़ो; ॲन चॊल्लिऩान्–यह आज्ञा दी। ११३४

दशरथ ऐसे थे जो नेकशासन के लिए उदाहरण-स्वरूप थे। प्रजा सारी, उन्हें अपनी जननी माँ मानती थी, वे इतने करुणामय थे। उन्होंने, अपने पास आये राजवैभव, यानी सेना के वीर, छत्र, पताका आदि को आज्ञा दी कि श्रीराम को पुरस्सर करके आगे बढ़ो। ११३४

कादलो वऱिहिलङ् गरिहळॆप् पॉरुविऩार्
तीदिला वुवहयुञ् जिऱिदरो पॅरिदरो
कोदैशूऴ् कुञ्जियक् कुमरऩ्वन् दॅय्दलुम्
तादयो डॊत्तदत् ताऩयिऩ् ऱऩ्मये 1135

करिकळै पॉरुविऩार्–गजोपम; कातलो अऱिकिलम्–(वीरों के श्रीराम पर) प्रेम (की मात्रा); अऱिकिलम्–नहीं जान सकते; तीतु इला उवकैयुम्–निर्दोष उत्साह; चिऱितो–छोटा (नहीं) है; पॅरितु–बड़ा है; कोतै चूऴ् कुञ्चि–पुष्पमाला से अलंकृत केशवाले; अ कुमरऩ्–वे राजकुमार; वन्तु ॲय्तलुम्–आ (पहुँचे), पहुँचते ही; अ तातैयिऩ् तऩ्मै–उस सेना की (मानसिक) स्थिति; तातैयोटु ऑत्ततु–उनके पिता की-सी हो गई। ११३५

सेना के वीर श्रीराम पर कितना प्रेम रखते थे इसकी मात्रा हम जान नहीं सकते। वे इतना गहरा और अधिक प्रेम करते थे। उनका निर्दोष उत्साह भी कम नहीं था; बहुत बड़ा था। जब पुष्पमाला से अलंकृत केशवाले श्रीराम उनके पास आये तब उनकी स्थिति श्रीराम के पिता दशरथ की सी हो गयी। उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। ११३५

तॉऴुदिरण् डरुहुमऩ् पुडैयतम् बियर्तॉडरऩ्
दऴिविल्शिन् दयिऩॊडु माडऩ्मा मिशैवरत्
तऴुवुशङ् गुडऩॆडुम् पणैतळङ् गिडवॆऴुन्
दॆऴुदरुन् दहैयदोर् तेरिऩ्मे लेहिऩाऩ् 1136

इरण्टु अरुकुम्–दोनो पार्श्वों में; अऩ्पु उटैय तम्पियर्–प्यारे छोटे भाई; अऴिवु इल् चिन्तैयिऩॊटुम्–सतर्क मन होकर; आटल् मा मिचै–विजयी अश्वों पर; तॊऴुतु तॊटर्न्तु वर–विनय के साथ पीछे आये; तऴुवु चङ्कुटऩ्–मंगलसूचक शंखनाद के साथ; नॆटु पणै तळङ्किट–बड़े ढोलों के नाद के साथ; ॲऴुन्तु–इस प्रकार उठकर; ॲऴुत ऒरु तकैयतु–चित्र जिसका बनाना कठिन है, ऐसे; ओर् तेरिऩ् मेल्–एक रथ पर; एकिऩाऩ्–(श्रीराम) चले। ११३६

श्रीराम एक बहुत ही सुन्दर रथ पर, जो, उसका सफल चित्रकार भी चित्र न बना सके, उतना सुन्दर था, आरूढ़ होकर चले। तब उनके पार्श्व में, पर उनके पीछे ही उनके प्यारे अनुज सतर्कता के साथ विजयी अश्वों पर सवार होकर गये। मंगलसूचक शंख ढोल आदि बजे। ११३६

पञ्जिशूऴ् मेल्लडिप् पावैमार् पण्णयिन्
मञ्जुशूऴ् नॆडियमा ळिहैयिनिन् ड्रिडैविराय्
नञ्जुशूऴ् विऴिहळ्पू मऴैयिन्मेल् विऴनडन्
दिञ्जिशूऴ् मिदिलैमा वीदिशॆन् ड्रॆय्दिऩाऩ् 1137

पञ्चि चूऴ् मॆल् अटि–महावर लगे कोमल चरणों वाली; पावै मार पण्णै–स्त्रियों के दल; इऩ् मञ्चु चूऴ्–सुहावने मेघों से आवृत; नॆटिय माळिकैयिऩ् निऩ्ड्र–उन्नत सौधों में से; इटै विराय्–(उनके) द्वारों पर आ लगें (खड़े रहें); नञ्चु चूऴ् विऴिकळ्–(उनकी) विषसिक्त आँखें; पू मऴैयिऩ्–पुष्पवर्षा के साथ; मेल् विऴ–अपने (श्रीराम के) ऊपर आ गिरें, ऐसा; नटन्तु–चलकर; इञ्चि चूऴ् मितिलै–प्राचीर वलयित मिथिला नगर की; मा वीति–राजवीथी में; चॆऩ्ड्रु ॲय्तिऩाऩ्–जा पहुँचे। ११३७

जब श्रीराम रथ पर आरूढ़ हो जा रहे थे तब मेघों से आवृत (उतने ऊँचे) सौधों से महावर लगे कोमल चरणोंवाली स्त्रियों के दल द्वार पर आकर खड़ी हो गयीं। उन्होंने आँख भर उनको देखा और उन पर पुष्प वर्षा की। विष लगी सी दृष्टियाँ और कोमल फूल दोनों उन पर एक

साथ गिरे। उनका निशान बने हुए श्रीराम प्राचीर-वलयित मिथिला नगरी की राजवीथी में पहुँचे। ११३७

शूडहन्	दुयल्वरक्	कोदेशोर्	दरमलर्प्
पाडहम्	बरदनूल्	पहरवेड्	कडहरिक्
कोडरङ्	गिडवॅळुङ्	गुवितडङ्	गोङ्गयार्
आडरङ्	गल्लवे	यणियरङ्	गयलॅलाम् 1138

अणि अरङ्कु अयल् ॲलाम्–सुन्दर सौधों के सामने के सब आँगनों में एकत्रित; वॅम् कटम् करि कोट्टु–भयंकर मत्तगजों के दाँतों के गर्व को; अरङ्किट–चूर करते हुए; ॲळुम्–उगे हुए; कुवि–पुष्ट; तट कोङ्कैयार्–विशाल स्तनवालियों के; चूटकम् तुयल् वर–(हाथ के) कंकण हिले और स्वरित हुए; कोतै चोर् तर–केश की माला खुलकर बिखरे; मलर् पाटकम्–(चरण) कमलों के "पाटकम" नाम के (घुंघुरू) आभरणों ने; परतनूल् पकर–भरतशास्त्र (भरतनाट्यम्) के अनुसार नृत्यमुद्राओं का स्वर उठाया; आट्टु अरङ्कु अल्लवे–नाट्यमंच तो नहीं। ११३८

सौधों के सामने के आँगनों में स्त्रियाँ आकर जुट गयीं। उनके उन्नत पुष्ट और विशाल स्तन भयंकर मत्त गजों के दाँतों के गर्व को भी चूर कर सकते थे। वे कंकणों को खनकाते हुये, केश की माला को खुलकर गिरने देते हुये, और पैरों के घुँघुरुओं को भरतशास्त्र (भरतनाट्यम) के अनुसार झनझनाते हुए (स्वतः उनकी चाल नृत्यगति के समान थी।) आकर एकत्र हुयीं। कवि विस्मय करते हैं कि वे नाट्यमंच तो नहीं थे! । ११३८

पेदमार्	मुदल्कडॅप्	पेरिळम्	पॅण्गडाम्
एदियार्	मारवे	ळॅय्यवन्	दॅय्दिनार्
आदिवा	नवर्पिरा	नणुहला	लणिकॊळ्हार्
ओदियार्	वीदिवा	युर्रवा	र्रैशॅय्वाम् 1139

आति वानवर् पिरान्–आदि देवदेव (परब्रह्म श्रीराम); अणुकलाल्–पास आते हैं, इसलिए; एति आर् मारवेळ–अस्त्रयुक्त मन्मथ के; ॲय्य–शर चलाने से; पेतै मार् मुतल्–बालाओं से लेकर; पेरिळम् पॅण्कळ् कटै–वृद्धाएँ तक; वन्तु ॲय्तिनार्–आ जुटीं; अणि कॊळ्–सुन्दर; कार् ओतियार्–काले केशवाली वे; वीतिवाय्–वीथी में; उर्र आऱु–(जिस स्थिति को) पहुँचीं वह स्थिति; उरै चॅय्वाम्–कहेंगे। ११३९

आदिदेव, परब्रह्म श्रीराम जब वीथी में आये तब मन्मथ के शर चलाने से आहत होकर, यानी कामासक्त होकर बालाओं से लेकर वृद्धाएँ तक आकर वीथी के किनारे जुट गयीं। काले (या मेघों सदृश) केशवाली स्त्रियों का वीथी में क्या हाल हुआ, उसका वर्णन अब हम करेंगे। ११३९

19. उलावियर् पडलम् (वीथि-भ्रमण पटल)

❀ मानितम् वरुव पोन्ऱु मयिलिनन् दिरिव पोन्ऱुम्
मीनिन मिळिर्व पोन्ऱुम् मिन्निन मिडैव पोन्ऱुम्
तेनिनज् जिलम्बि यार्प्पच् चिलम्बिनम् पुलम्ब वेंङ्गुम्
पूनतै कोदै मादर् पॉम्मॅनप् पुहुन्दु मॉय्त्तार् 1140

पू नतै कोतै मातर्–पुष्पों के कारण ठण्डे बने केशवाली स्त्रियाँ; तेन् इनम्–भ्रमर दल; चिलम्पि आर्प्प–गुंजार करें, ऐसा; चिलम्पु इनम् पुलम्प–नपुरों की राशि के झनझन शब्द करते; मान् इनम् वरुव–हरिणदल आते हों; पोन्ऱुम्–जैसे; मयिलिनम्–मोर के समूह; तिरिव पोन्ऱुम्–फिरते हों जैसे; मीन् इनम् मिळिर्व पोन्ऱुम्–तारों के समूह चमकते हों जैसे; मिन् इनम् मिटैव पोन्ऱुम्–बिजलियों के समूह जमा होते हों जैसे; पॉम् ॲन पुकुन्तु–शीघ्र आकर; ॲङ्कुम् मॉय्त्तार्–सर्वत्र भर गईं। ११४०

[तमिळ में स्त्रियों को वय के अनुसार सात वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है— पेतै-सात साल की; पॅदुम्बै-ग्यारह साल की; मङ्गै-१३ साल की; मडन्दै-१९ साल की; अरिवै-२५ साल की; तॅरिवै-२६-३० साल की; और पेरिळ मङ्गै—चालीस साल और उससे ऊपर की वृद्धाएँ। इनमें हर नाम स्त्री साधारण के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। वृद्धा के लिए जो पेरिळमङ्गै का नाम दिया गया है वह कवितापूर्ण है। उसका अर्थ है "बड़ी बाला" श्रीराम के प्रति प्रेम को भक्ति के रूप में लेना चाहिये।]

स्त्रियाँ झट आकर जुट गयीं। उनके केश पुष्प-मधु से गीले थे। उनके सिरों पर भ्रमर गुँजार कर रहे थे, और पैरों पर नूपुर झनझना रहे थे। वे मानो हरिण-दल आ रहे हों, मोर के समूह विचरण कर रहे हों, नक्षत्र चमक रहे हों या बिजलियाँ एकत्र हो आ रही हों, ऐसे आकर सर्वत्र भर गयीं। ११४०

विरिन्दुवीऴ् कून्दल् पारार मेकलै यऱ्ऱ नोक्कार्
शरिन्दपून् दुहिल्ह डाङ्गा रिडैतड मारुत् ताळार्
नॅरुङ्गिनर् नॅरुङ्गिप् पुक्कु नीङ्गुमि नीङ्गु मॅन्ऱॅन्
ऱुरुङ्गल मनैय मादर् तेनुह रळियिन् मॉय्त्तार् 1141

अरु कलम् अनैय मातर्–(उस नगर के) श्रेष्ठ शृंगार-मान्य स्त्रियाँ; विरिन्तु वीऴ्–खुलकर लटकनेवाले; कून्तल् पारार्–केश नहीं देखतीं; मेकलै अऱ्ऱ नोक्कार्–मेखला टूटीं, उसको नहीं देखतीं (उस पर ध्यान नहीं देतीं); चरिन्त–खिसके हुए; पू तुकिल्कळ्–झीने (रेशमी) वस्त्रों को; ताङ्कार्–नहीं सँभालतीं; इटै तट्माऱ–कमर झुक-झुककर दुख देती थी; ताळार्–(विश्रांति के लिए नहीं रुकीं; नॅरुङ्किनर्–पास आईं; नीङ्कुमिन्–हटो जी; नीङ्कुम्–हटो; ॲन्ऱु ॲन्ऱु–यह दुहराती हुईं; नॅरुङ्कि पुक्कु–अतिनिकट पहुँचकर; तेन्नुकर् अळियिन्–शहद पीने के लिए जुटनेवाले भ्रमरों के समान; मॉय्त्तार्–पिल पड़ीं। ११४१

वे स्त्रियाँ मानो मिथिला का शृंगार थीं। अपनी उतावली में उन्होंने खुले-बिखरते केश का ख्याल नहीं किया; मेखला टूट गयी; उसकी परवाह नहीं की। महीन और रेशमी वस्त्र खिसक रहे थे उनको नहीं संभाला। कमर झुक-झुककर दुख देती थी लेकिन विश्रांति के लिए नहीं रुकीं। चलो, हटो, कहती हुयी वे शहद पीने आनेवाले भ्रमरों के समान पिल पड़ीं। ११४१

* पळ्ळत्तुप् पायु नऩ्ऩी रऩैयवर् पाऩल् पूत्त
वॆळ्ळत्तुप् पॆरिय कण्णार् मॆऩ्शिलम् बलम्ब मॆऩ्बूत्
तळ्ळत्तम् मिडैह णोवत् तमैवलित् तवऩ्बाऱ् चॆल्लुम्
उळ्ळत्तैप् पिडित्तु नामॆऩ् ऱोडुहिऩ् ऱाऱ मॊत्ताऱ् 1142

मॆऩ् चिलम्पु अलम्प–सुहावने नूपुर झनझना उठे; मॆऩ् पू तळ्ळ–कोमल पुष्प (चरण) लड़खड़ाये; तम् इटैकळ् नोव–उनकी कमरें दुखीं, ऐसे; पळ्ळत्तु पायुम्–गड्ढे की ओर बहनेवाले; नल् नीर् अऩैयवर्–शुद्ध जल के समान (जो दौड़ीं) वे; पाऩल् पूत्त–कुवलयों के समान प्रफुल्लित; वॆळ्ळत्तु पॆरिय–(और) सागर-सम विशाल; कण्णार्–आँखोंवाली वे; तमै वलित्तु–अपने को खींचते हुए; अवऩ् पाल् चॆल्लुम्–उनके (श्रीराम के) पास जानेवाले; उळ्ळत्तै–मन को; पिटित्तुम् नाम् ऎऩ्ऱु–पकड़ेंगे हम, ऐसा कहकर; ओटुकिऩ्ऱारुम्–मानो दौड़ते हों; ऒत्तार्–ऐसी लगीं। ११४२

वे नीची भूमि (गड्ढे) की ओर बहनेवाले शुद्ध जल के समान मानो खिचकर आयीं। उनके पैरों के नूपुर शब्द कर रहे थे, चरण लड़खड़ा रहे थे, कमर दुखती थी। इस प्रकार, कुवलय के समान उत्फुल्ल और सागर-समान विशाल आँखोंवाली वे उन स्त्रियों की तरह दौड़ीं जो अपने को खींचते हुए श्रीराम के पास जानेवाले मन को 'पकड़ लेंगीं' कहते हुए दौड़ रही हों। ११४२

कण्णिऩाऱ् काद लॆऩ्ऩुम् पॊरुळैये काण्गिऩ् ऱोमिप्
पॆण्णिऩीर् मैयिऩा लॆय्दुम् पयऩिऩ्ऱु पॆऱुदु मॆऩ्बार्
मण्णिऩी रुलर्न्दु वाऩ मऴैयऱ वऱन्द कालत्
तुण्णुनीर् कण्डु वीऴु मुऴैक्कुलम् बलवु मॊत्तार् 1143

कण्णिताल्–अपनी आँखों से; कातल् ऎऩ्ऩुम् पॊरुळैये–प्रेमरूप वस्तु को ही; काण्किऩ्ऱोम्–देखते हैं; इ पॆण्णिऩ् नीर्मैयिताल्–इस स्त्री जन्म के भाव से; ऎय्तुम् पयऩ्–प्राप्य फल को; इऩ्ऱु पॆऱुतुम्–आज पा जायँगे; ऎऩ्पार्–यह कहती हुई; मण्णिल् नीर् उलर्न्तु–भूतल में जल सूखकर; वाऩम् मऴै अऱ–आकाश से वारिश भी न रहने पर; वऱन्त कालत्तु–सर्वत्र सूखा पड़ गया, तब; उण्णुम् नीर् कण्टु–पेय जल (का स्थान) देखकर; वीऴुम्–उधर पिल पड़नेवाले; उऴै कुलम् पलवुम्–हरिण-कुल अनेक के; ऒत्तार्–समान बनीं। ११४३

"हम अपनी आँखों से प्रेम का मूर्तरूप ही देखती हैं। स्त्री-जन्म को

आज सफल वनायेंगी" यह कहते हुए वे उन हरिण-दलों के समान टूट पड़ीं जो, शुष्क भूमि और मेघहीन आकाशवाले अकाल में कहीं पेय जल का भास पाकर टूट पड़ते हों। ११४३

अरत्तमुण् डनैय मेनि यहलिहैक् कळित्त ताळुम्
विरैक्करुङ् गुळलिक् काह विल्लिऱ निमिर्न्दु वीङ्गुम्
वरैत्तडन् दोळुङ् गाण मरुहिनिल् वीळु मादर्
इरैत्तुवन् दमिळ्दिन् मॉय्क्कु मीयिन मॅन्न लानार् 1144

अरत्तम् उणट अनैय मेनि–लाल रंग भर दिया गया हो, ऐसे शरीरवाली (गोरे शरीरवाली); अकलिकैक्कु–अहल्या पर कृपा जिन्होंने की थी; ताळुम्–उन श्रीचरणों को, और; विरै करु कुळलिक्कु आक–सुगन्धित काले केशवाली (सीता) के (विवाह) के लिए; विल् इऱ–शिवधनु को तोड़ते हुए; निमिर्न्तु वीङ्कुम्–दीर्घ और पुष्ट जो रहे उन; वरै तट तोळुम्–पर्वतोपम वड़े हाथों को; काण–देखने के लिए; मरुकिनिल् वीळुम् मातर्–वीथी में बराबर आनेवाली स्त्रियाँ; इरैत्तु वन्तु–शोर मचाते आईं और; अमिळ्तिल् मॉय्क्कुम्–अमृत पर जमा हुए; ई इनम् अन्नतल् आनार्–मक्खियों के वृन्द कहलाने योग्य बनीं। ११४४

श्रीराम के चरण और हाथ दोनो विशेप महत्व के थे। चरणों ने लाल (गोरा) रंगवाली अहल्या पर कृपा की। हाथ जो थे, वे काले केशवाली सीता पर कृपा करने के लिए शिवधनु तोड़नेवाले दीर्घ और पुष्ट पर्वतसम थे। उनके दर्शन के लिए स्त्रियाँ, अमृत पर मक्खियों के समान कोलाहल के साथ आ जुटीं। ११४४

वीदिवाय्च् चॅल्हिन् ऱान्बोल् विळित्तिमै यादु निन्ऱ
मादरार् कण्ग ळूडे वावुमान् ऱेरिऱ् पोनान्
यादिनु मुयर्न्दोर् तन्नै यावर्क्कुङ् गण्ण नॅन्ऱे
ओदिय पॅयर्क्कुत् ताने युरुपॉरु ळुणर्त्ति विट्टान् 1145

वीतिवाय् चॅल्किन्ऱान् पोल्–वीथी में जाते हुए से; विळित्तु इमैयातु निन्ऱ– आँखें फाड़कर देखती हुई जो खड़ी रहीं उन; मातरार् कण्कळ् ऊटे–स्त्रियों की आँखों में से होकर; वावुम् मान् तेरिल्–सरपट दौड़नेवाले अश्वों के जुते रथ में; पोनान्– जो गये; यातिनुम् उयर्न्तोर्–सर्वश्रेष्ठ महात्मा लोग; यावर्क्कुम् कण्णन्–सबके नेत्र (में रहनेवाले) या सब जिनके नेत्रों में हैं); ॲन्ऱु–जो कहते हैं उस; तन्नै ओतिय पॅयर्क्कु–अपने लिए दिये गये नाम के; उरु पॉरुळ्–सही अर्थ; ताने उणर्त्तिविट्टान्–स्वयं साबित कर दिया। ११४५

श्रीराम वीथी में सरपट दौड़नेवाले अश्वों के जुते रथ पर आरूढ़ होकर जो गये तो उन स्त्रियों की निर्निमेष आँखें इतनी तन्मयता के साथ देख रही थीं कि वह उनके दृष्टि-पथ में गये —ऐसा कहा जा सकता था। इसके आधार पर जो सर्व प्रकार से श्रेष्ठ महात्मा लोगों ने उन्हें "कण्णन्"

(नेत्री) नाम दिया उसको उन्होंने स्वयं सार्थक साबित कर दिया। कण्णन् का अर्थ है— वह जो सबकी आँखें हैं, या जिनकी आँखों में सब हैं, या जो सबकी आँखों में हैं। ११४५

ऍण्कडन् दलहि लादिन् ऱेहुरु मिवन्ऱे ऱॆन्ऱु
पॆण्गडन् दम्मि नॊन्दु पेदुरु हिन्ऱ वेलै
मण्गडन् दमरर् वैहुम् वान्गडन् दानैत् तान्ऱन्
कण्गड वामऱ् कात्त कारिहै पॆरिय ळेकाण् 1146

इन्ऱु–आज; इवन् तेर्–इन (श्रीराम का) रथ; ऍण् कटन्तु–मनोगति को पारकर; अलकु इलातु–अपार (वेग के साथ); एकुरुम् ऍन्ऱु–भागता है, यह; पॆण्कळ्–बालाएँ; तम् तम्मिल्–आप अपने साथ; नॊन्तु–दुखी होकर; पेतु उऱुकिन्ऱ वेलै–(जब) व्यथित हो रही थीं, उस समय; मण् कटन्तु–(त्रिविक्रम के अवतार में) भूमि नापकर; अमरर् वैकुम् वान् कटन्तानै–देवों के (वासस्थान) स्वर्ग को भी जिन्होंने पार किया था, उनको; तान्–अकेली उन्होंने (सीताजी ने); तन् कण् कटवामल्–अपनी दृष्टि से बाहर जाने न देकर; कात्त–रोक रखा; कारिकै–वे ललित सीताजी; पॆरियळे–अवश्य बड़ी (सामर्थ्यशीला) हैं। ११४६

(कवि का कथन है—) आज स्त्रियों की शिकायत है कि श्रीराम का रथ मनोगति से भी बढ़कर अपार तीव्रगति से भागता है। उनको दुख है कि वे उनको अपनी दृष्टि में रोक (ध्यान में ले) नहीं पातीं। वे क्षुब्ध थीं। लेकिन उस दिन इह-परलोकों को अपने चरणों से नापने वाले त्रिविक्रम देव के इन अवतार श्रीराम को एक ही क्षण के लिए सीताजी ने देखा। तो भी उन्होंने, "आँखों से होकर घुसनेवाले चोर को", "पलक-कपाट देकर" सुरक्षित कर लिया था। अवश्य वे सबसे अधिक चतुर हैं। ११४६

पयिरॊन्ऱु कलैयुञ् जङ्गुम् पळिप्परु नलनुम् पण्बुम्
शॆयिरिन्ऱि यलर्न्द पॊऱ्पुञ् जिन्दयु मुणर्वुन् देशुम्
वयिरञ्जॆय् पूणु नाणु मडनुन्द निऱैयु मऱ्ऱुम्
उयिरॊन्ऱु मॊळिय वॆल्ला मुहुत्तॊरु तॆरिवै निन्ऱाळ् 1147

ऒरु तॆरिवै–एक तरुणी; तन् उयिर् ऒन्ऱुम् ऒळिय–अपना प्राण, एक, छोड़कर; निऱैयुम्–संयम; मटनुम्–संकोच (अबोधता); नाणुम्–और लाज; पयिर् ऒन्ऱु कलैयुम्–(नया होने के कारण) फरफर शब्दयुक्त वस्त्र; चङ्कुम्–शंखकंकण; पळिप्पु अऱु नलनुम्–अनिन्दनीय श्रेष्ठ कार्य; पण्पुम्–श्रेष्ठगुण और; चॆयिर् इन्ऱि अलर्न्त पॊऱ्पुम्–निर्दोष शोभा की सुन्दरता; चिन्तैयुम्–मन (विवेक) और; उणर्वुम्–प्रज्ञा; तेचुम्–तेज; वयिरम् चॆय् पूणुम्–हीरे के आभरण; मऱ्ऱुम् ऍल्लाम्–अन्य (स्त्रियोचित) सभी; उकुत्तु–गिराकर (छोड़कर); निन्ऱाळ्–(निष्क्रिय) खड़ी रही। ११४७

एक युवती स्त्री श्रीराम को देखने आयी। श्रीराम का रथ चला गया। वह उसको पीछे से देखती हुयी निष्क्रिय खड़ी रह गयी। अब उसके पास सिर्फ़ प्राण थे। बाकी सब स्त्रियोचित गुण और अलंकार हट गये। संयम, संकोच या अबोधता नहीं रही। वस्त्र खिसक गये। शंखकंकण गिर गये। हीरे के आभरण गिर गये। वह उचित कार्य भूल गयी। उसके श्रेष्ठ गुण हट गये। उसकी अनिन्द्य सुन्दरता, विवेक, प्रज्ञा, तेज सब नहीं रह गये। ११४७

कुऴैयुऱा मिळिरुङ् गॅण्डै कॉण्डलि ऩालि शिऩ्दत्
तऴैयुऱाक् करुम्बिऩ् शाबत् तऩङ्गवेळ् शरङ्गळ् पायॖन्द
इऴैयुऱाप् पुण्ण ऱाद विळमुलै यॊरुत्ति शोर्न्दु
मऴैयुऱा मिऩ्ऩि ऩऩ्ऩ मरुङ्गुल्पो नुडङ्गि निऩ्ऱाळ् 1148

तऴै उऱा–पत्तों से हीन; करुम्प चापत्तु–ईख के धनुर्धर; अनङ्कवेळ्–अनंगदेव के; चरङ्कळ् पाय्न्त–शरकृत; पुण् अऱात–व्रण सहित; इऴै उऱा–सूत्रांतर भी न रखनेवाले (सटे हुए); इळ मुलै ऑरुत्ति–तरुणस्तनी एक; कुऴै उऱा मिळिरुम्–कुण्डलों तक पहुँचनेवाली; कॅण्टै–"कॅण्डै" नाम की मछलियों (सी आँखों) से; कॉण्टलिऩ्–मेघों के समान; आलि चिन्त–अश्रुधारा बहाते हुए; चोर्न्तु–बहुत श्रांत होकर; मऴै उऱा मिऩ् अऩ्ऩ–मेघेतर (स्थान की) बिजली के समान; मरुङ्कुल् पोल्–कमर के समान; नुटङ्कि निऩ्ऱाळ्–लचक खाती खड़ी रही। ११४८

एक ललितांगी जिसके स्तनों के बीच सूत्र भी नहीं जा सकता था, और जो कामशर से आहत थे, अपनी कर्णकुंडल तक गयी हुयी आयत मछली-सी आँखों से मेघ के समान अश्रुकण बरसाती हुयी उसी की उस कमर के समान, जो मेघों में न पायी जानेवाली (विलक्षण) बिजली सदृश थी, बल खाती रही। ११४८

पञ्जिवर् विरलि ऩार्तम् पडैनॆडुङ् गण्ग ळॆल्लाम्
शॆञ्जॆवे यॆयऩ् मॆय्यिऱ् करुमैयैच् चेर्न्त वोदाम्
मञ्जऩ मेऩि यान्ऱऩ् मणिनिऱ माद रार्तम्
अञ्जऩ नोक्कम् पोर्क्क विरुण्डदो वऱिहि लेमाल् 1149

पञ्चु इवर्–महावर से अलंकृत; विरलिऩार् तम्–आँखोंवालियों की; पटै नॆटु–(तलवार या भाले के) अस्त्रसम और दीर्घ; कण्कळ् ऍल्लाम्–आँखें सब; चॆञ्चॆवे–खूब; ऐयऩ् मॆय्यिल् करुमैये–प्रभ के शरीर की नीलिमा को; चेर्न्तवो–प्राप्त कर गई; मञ्चु अऩ्ऩ मेऩियाऩ् तऩ्–या मेघसम शरीरवाले का; मणि निऱम्–वह सुन्दर रंग; मातरार् तम्–स्त्रियों के; अञ्चऩ नोक्कम्–अंजनयुक्त नेत्र; पोर्क्क–लगे, इसलिए; इरुण्टतो–नीला हो गया; अऱिकिलेम्–नहीं जानते। ११४९

स्त्रियों की आँखें काली हैं और श्रीराम का शरीर भी काला या नीला है। अब लाक्षारसलिप्त उँगलियोंवाली उन स्त्रियों की, तलवार

या भाले जैसे हथियार-सदृश आँखों में श्रीराम के शरीर का नीला रंग आकर लग गया ? या श्रीराम के शरीर पर उन अंजनलिप्त आँखें जाकर लगीं; इस कारण उनका शरीर काला हो गया ? कौन जाने ? । ११४९

मान्दळिर् मेन्नि याळोर् वाणुदन् मदन् तॅङ्गुम्
पून्दुणर् वाळि मारि पॊऴिहिन्ऱ पूश ऩोक्कि
वेन्दर्को ऩाणै नोक्कान् वीरन्वि लाण्मै पारान्
एन्दिऴैयारै यॅय्वान् यावनो वॊरुव ऩॆन्ऱाळ् 1150

मा तळिर् मेन्नियाळ्–आम्रपल्लव सदृश शरीरवाली; ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाट की स्त्री; मतनन्–मदन के; अॅङ्कुम्–सर्वत्र; पू तुणर् वाळि मारि–पुष्पशर वर्षा; पॊऴिकिन्ऱ–करने का; पूचल्–टंटा; नोक्कि–देखकर; वेन्तर्कोन् आणै नोक्कान्–राजाधिराज की आज्ञा नहीं देखता; वीरन्–(श्रीराम) वीर का; विल् आण्मै पारान्–धनुकर्म पौरुष नहीं देखता; एन्तु इऴैयारै–आभरणभूषित स्त्रियों पर; अॅय्वान् ऒरुवन्–अस्त्र चलाता है एक; यावनो–कैसा है वह; अॅन्ऱाळ्–कहा । ११५०

आम्रपल्लव-सी सुन्दरांगी एक ने देखा कि मन्मथ सब पर अपना पुष्पशर बरसा रहा है । (सभी स्त्रियाँ कामप्रेरित हो अकुलाहट दिखा रही थीं ।) यह टंटा देखकर वह पूछने लगी कि यह कौन है जो राजाधिराज (जनक या दशरथ) की आज्ञा को अनसुनी करके और वीर कुमार श्रीरामचन्द्र के धनु-पराक्रम का ख्याल किये विना इस तरह आभरणधारिणी स्त्रियों पर अपने शर फेंक रहा है ? वह कैसा शख्स है ? । ११५०

विऱ्ऱङ्गु पुरुव नॅऱ्ऱि वॅयर्वरप् पशलै विम्मिच्
चुऱ्ऱॅङ्गु मॅऴिप्प वुळ्ळञ् जोरवोर् तोहै निन्ऱाळ्
कॊऱ्ऱञ्जॅय् कॊलैवे लॅन्नक् कूऱ्ऱॅनक् कॊडिय कण्णाळ्
मऱ्ऱॊन्ऱुम् गाण्गि लादाळ् तमियनो वळ्ळ लॆन्ऱाळ् 1151

कॊऱ्ऱम् चॅय्–विजयदायक; कॊलै वेल् अॅन्न–संहारक भाले के सदृश; कूऱ्ऱु अॅन–और यम सदृश; कॊटिय कण्णाळ्–निर्मम आँखोंवाली; ओर–एक; तोकै–मयूराभा स्त्री; विल् तङ्कु पुरुवम् नॅऱ्ऱि–धनुसम भौंहों से युक्त ललाट में; वॅयर् वर–पसीना होने से; पचलै विम्मि–विवर्णता फैली; चुऱ्ऱु अॅङ्कुम् अॅऴिप्प–और चारों ओर अपनी सुन्दरता बिखेरती; उळ्ळम् चोर–मन मारकर; निन्ऱाळ–खड़ी रही; मऱ्ऱु ऒन्ऱुम्–और किसी को; काण् किलाताळ्–नहीं देखती; वळ्ळल् तमियनो–क्या उदार प्रभु अकेले हैं; अॅन्ऱाळ्–कहा । ११५१

एक स्त्री के जिसकी आँखें विजयी और संहारक भाले के समान और यम जैसी थीं और रूप मोर की-सी आभा लिये हुये था, धनु-सम भौंहों के ललाट में स्वेदकण निकल आया । उसके शरीर भर में (विरहताप से फैलनेवाली) अनोखी, सुन्दर विवर्णता फैल गयी । उसका मन दुखाक्रान्त

था। वह अपने चारों ओर श्रीराम के सिवा और किसी को नहीं देखती थी। इसलिए उसने पूछा कि उदार प्रभु (मुझ पर कृपा करने के लिए) आये हैं? वह भी अकेले? । ११५१

तॉऩ्ऩयन् दॉडर्न्द कामच् चुवैययो रुरुव माक्कि
इऩ्ऩयन् दॅरिय वल्ला नॅळ्ळुदिय दॅऩ्ऩ निऩ्ऱाळ्
पॊऩ्ऩयम् बॊरुवु नीराळ् पुऩैन्दऩ वॆल्लाम् बोहत्
तऩ्ऩयुन् दाङ्ग लादा डुहिलॊऩ्ऱुन् दाङ्गिक् कॊण्डाळ् 1152

इऩ् नयम् तॅरिय वल्लाऩ्–मनोहरता की श्रेष्ठता को पहचानने में कुशल चितेरे ने; तॊऩ्नयम् तॊटर्न्त–प्राचीन (आरम्भ) काल से ही विशिष्टता प्राप्त; कामम् चुवैयै–श्रृंगार रस को; ओर् उरुवम् आक्कि–एक (स्त्री का) रूप देकर; ॲळुतियतु ॲऩ्ऩ–बनाया है, ऐसी; निऩ्ऱाळ्–खड़ी थी (जो); पॊऩ्नयम् पॊरुवुम् नीराळ्–स्वर्ण की श्रेष्ठता की समानता करनेवाली, विलक्षणतावाली एक; पुऩैन्तऩ ॲल्लाम् पोक–अलंकार की सभी चीजें छूटने देकर; तऩ्ऩैयुम् ताङ्कलाताळ्–अपने को भी सँभाल न पाकर; तुकिल् ऑऩ्ऱुम्–वस्त्र एक (केवल); ताङ्किक् कॊण्टाळ्–सँभाल लिया। ११५२

एक स्वर्ण-सम श्रेष्ठ सुन्दरी, जो उस चित्र के समान थी जिसको रम्यता का लक्षण परखनेवाले चतुर चित्रकार ने पुरातन काल से श्रेष्ठ माने जानेवाले श्रृंगार-रस का मानवीय रूप देकर रचा था, वहाँ खड़ी थी। उस पर श्रृंगार का कोई साधन नहीं रह गया था। वह अपने को भी सम्हाल नहीं पाती थी। मुश्किल से केवल वस्त्र को गिरने से रोक रख सकी थी। ११५२

मैक्करुङ् गूऩ्दऱ् चॆव्वाय् वाणुद लॊरुत्ति युळ्ळम्
नॆक्कऩ ळुरुहु हिऩ्ऱा णॆञ्जिडै वञ्जऩ् वन्दु
पुक्कऩऩ् पोहा वण्णङ् कण्णॆऩुम् पुलङ्गॊळ् वायिल्
शिक्कॆऩ वडैत्तेऩ् ऱोळि शेरुदुममळि यॆऩ्ऱाळ् 1153

मै करु कून्तल्–अंजन-सम काला केश; चॆव्वाय्–लाल मुख; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाट; ऑरुत्ति–(इनकी) एक; उळ्ळम् नॆक्कऩळ्–मन अनुरक्त होकर; उरुकुकिऩ्ऱाळ्–पिघलती है; तोळि–सखि; वञ्चऩ्–वंचक; वन्तु–(आँखों द्वारा) आकर; नॆञ्चु इटै पुक्कऩऩ्–मन में घुस गये; पोका वण्णम्–जाने न पावे इस प्रकार; कण् ॲऩुम्–आँख रूपी; पुलम् कॊळ् वायिल्–आनेजाने का मार्ग देनेवाले द्वार को; चिक्कॆऩ अटैत्तेऩ्–दृढ़रूप से बन्द कर दिया; अमळि चेरुतुम्–शय्या को जायेंगे; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ११५३

एक सुन्दरी थी जिसका केश काला, मुख लाल, और ललाट उज्ज्वल था। उसका मन श्रीराम के प्रेम में द्रवीभूत हो गया। उसने अपनी सखी से कहा— सखि! मायावी (श्रीराम) ने आँखों के मार्ग से मेरे मन

के अन्दर प्रवेश किया। मैंने उस मार्ग को रोक दिया है। अब वह बाहर जा नहीं सकेंगे। चलो हम अब अपनी शय्या की ओर चलें। ११५३

ताक्कणङ् गनैय मेन्ति तैत्तवेळ् शरङ्गळ् पाराळ्
वीक्किय कलैयुन् दूशुम् वेरुवे ऱान दोराळ्
आक्किय पावै यन्ना ळोरुत्तिबाण् डमलन् मेनि
नोक्कुहिन् ऱारै यॆल्ला मॆरियॆळ नोक्कि निन्ऱाळ् 1154

आण्टु–वहाँ; आक्किय पावै अन्नाळ् ऑरुत्ति–(चतुर शिल्पी द्वारा खूब सोचकर) निर्मित एक प्रतिमा-सी एक; ताक्कु अणङ्कु अनैय–मन को पीड़ा देनेवाली मोहनी देवता के से; मेनि तैत्त–(उसके) शरीर पर चुभे; वेळ् चरङ्कळ्–काम के शरों का; पाराळ्–विचार नहीं करती; वीक्किय–कमर पर बँधे; तूचुम्–वस्त्र और; कलैयुम्–मेखला; वेऱु वेऱु आनतु–अलग-अलग हो गई; ओराळ्–इसकी सुध नहीं ली; अमलन् मेनि नोक्कुकिन्ऱारै–निर्मल श्रीराम के रूप के दर्शकों को; ऍरि ऍळ–अंगारे उगलते हुए; नोक्कि निन्ऱाळ्–(क्रोध से) देखती खड़ी रहती है। ११५४

एक स्त्री थी जिसकी बनावट उस शिल्प के समान थी जिसको बहुत ही कुशल शिल्पी ने बहुत यत्न से बनाया था। उसका मोहनी देवी का सा रूप था जो किसी को भी प्रेमदग्ध कर सकता था। वह अपनी कामशरतप्त हालत की भी परवाह नहीं करती; वस्त्र और मेखला अलग-अलग हो गयी; उसका भी विचार नहीं करती। पर अति ईर्ष्यालू और ऐकांतिक प्रेमवाली वह श्रीराम को जो भी देख रही थी उसको क्रोध के साथ घूरती थी, वह समझती थी कि उन पर अकेले मेरा अधिकार है और उन पर अन्यों के देखने से बुरी नज़र पड़ जायगी। ११५४

कळिप्पन मदर्प्प नीण्डु कदुप्पिनै यळप्प कळ्ळम्
ऑळिप्पन वॆळिप्पट् टोडप् पार्प्पन शिवप्पु ळूर
वॆळुप्पन करुप्प वान वेऱ्कणा ळोरुत्ति युळ्ळम्
कुळिर्प्पॊडु काणवन्दाळ् कॊदिप्पॊडु कोयिल् पुक्काळ् 1155

कळिप्पन–मोद भरी; मतर्प्प–मस्ती भरी; नीण्टु–लम्बी बनकर; कतुप्पिनै अळप्प–केश को नापनेवाली; कळ्ळम् ऑळिप्पन–वंचना को छिपाये रखनेवाली; वॆळिप्पट्टु–कभी (मन की बात को) प्रकट करके; ओट पार्प्पन–दृष्टि चलाकर देखनेवाली; चिवप्पु उळ् ऊर–लालिमा को अन्दर रखकर; वॆळुप्पन–सफेद रहनेवाली; करुप्प आन–कहीं काली रहनेवाली; वेल् कण्णाळ्–भाला-सी आँखोंवाली; ऑरुत्ति–एक; उळ्ळम् कुळिर्प्पॊटु–मन में उमंग के साथ; काण वन्ताळ्–दर्शन करने आई; कॊतिप्पॊटु–ताप के साथ; कोयिल् पुक्काळ्–अपने भवन में चली। ११५५

एक सुन्दरी थी जिसकी आँखें विलक्षण थीं। वे मोदभरी थीं और मस्ती लिये थीं। वे इतनी लम्बी थीं कि लगता था कि वे केश को नापती थीं। उनके अन्दर मोहकता छिपी थी इसलिए उनमें वंचना भरी थी।

कभी-कभी वह मोहकता प्रकट भी हो जाती और वे लोगों पर दौड़तीं। लाल डोरों के साथ सफ़ेदी और काले रंग से युक्त थीं। आकार और कृत्य में भाला-सी थीं। ऐसी आँखोंवाली बड़ा उत्साह लेकर श्रीराम के दर्शन करने के लिए आई। पर दर्शन मिल नहीं सका तो क्रोध और काम के कारण ताप लेकर लौटी। ११५५

करुङ्गुळऱ् पारम् वार्हॊळ् कत्तमुलै कलैशू ऴलहुल्
नॆरुङ्गित मऱैप्प वाण्डोर् नीक्किडम् बॆऱादु विम्मुम्
पॆरुन्दडङ् गण्णि काणुल् पेरॆळि लाशै तूण्ड
मरुङ्गुलिन् वॆळिह ळूडे वळ्ळल नोक्कु हिन्ऱाळ् 1156

करु कुळल् पारम्–काले केशजाल; वार् कॊळ्–अँगिया-बद्ध; कत्तम् मुलै–पीन स्तन; कलै चूळ्–वस्त्रवेष्टित; अलकुल्–नितम्ब; नॆरुङ्कित–भीड़ लगाकर; मऱैप्प–रास्ता रोकते हैं, इसलिए; आण्टु–वहाँ; ओर् नीक्कु इटम् पॆऱातु–कहीं दृष्टि-मार्ग न पाकर; विम्मुम्–दुखपूरित; पॆरु तट कण्णि–विशाल और आयत आँखोंवाली एक; पेर् ऍळिल् काणुम्–अत्यधिक सुन्दरता को देखने की; आचै तूण्ट–इच्छा से प्रेरित होकर; वळ्ळलै–प्रभु को; मरुङ्कुलिन् वॆळियिन् ऊटे–(उन स्त्रियों की) कटि के बीच के स्थान से; नोक्कुकिन्ऱाळ्–देखती है। ११५६

एक स्त्री ने पीछे रहकर श्रीराम को देखना चाहा पर काले केश, कंचुकीबद्ध पीनस्तन, वस्त्रावृत नितम्ब, ये सब घने रूप से सटे रहकर दृष्टिमार्ग को रोक रहे थे। पर दर्शन की लालसा अदम्य थी। प्रभु श्रीराम को वह स्त्रियों की क्षीण कटियों के मध्य जो स्थान पाया गया उसके मार्ग से देखने लगी। ११५६

वरिन्दवा ळनङ्गन् वाळि मनङ्गळन् ऱुनवु मादर्
ऎरिन्दपू णितमुङ् गॊङ्गै वॆयर्त्तपो दिळिन्द शान्दुम्
शरिन्दमे हलैयु मुत्तुञ् शङ्गमुन् दाळ्न्द कून्दल्
विरिन्दपून् दॊडैयु मन्ऱि वॆळ्ळिडै यरिदव् वीदि 1157

अव्वीति–मिथिला की वीथियों में; वरिन्त वाळ्–तलवार बाँधे; अनङ्कन् वाळि–अनंग के शर; मनम् कळन्ऱुत्तवुम्–जो (स्त्रियों के मनों को निफरकर निकले और भूमि पर गिरे थे; मातर्–उन स्त्रियों के; ऎरिन्त–(आग के समान) प्रदीप्त; पूण् इत्तमुम्–आभरणसमूह; कॊङ्कै वॆयर्त्त पोतु–जब स्तनों पर पसीना हुआ; इळिन्त चान्तुम्–तब गिरा चन्दन (लेप); चरिन्त मेकलैयुम्–खिसककर गिरी मेखलाएँ; मुत्तुम्–मुक्ताहार; चङ्कमुम्–शंखकंकण; ताळ्न्त कून्तल्–लटकनेवाले केश की; विरिन्त–विस्तृत रूप से जो पहनी गई थीं; पू तॊटैयुम् अन्ऱि–उन पुष्पमालाओं के अलावा; वॆळ् इटै अरितु–रिक्त स्थान नहीं था। ११५७

मिथिला की 'उन वीथियों में, जहाँ श्रीराम का रथ जा रहा था, तलवारवाले अनंग के शर जो स्त्रियों के मनों को निफरकर निकले और

भूमि पर गिर गये थे, उन स्त्रियों के दीप्त आभरण, स्तनों के स्वेद से नीचे गिरा हुआ चंदन, कटिप्रदेश से गिरी हुयी मेखलाएँ, और शंखकंकण तथा केशों से गिरी मालाएँ— ये ही भरी थीं। कोई रिक्त स्थान नहीं था। ११५७

*** तोळ्कण्डार् तोळेकण्डार् तॉडुकळऌर् कमलमन्न**
ताळ्कण्डार् ताळेकण्डार् तडक्कंकण् डारुम.·.दे
वाळ्कॉण्ड कण्णार्यारे वडिविनै मुडियक्कण्डार्
ऊळ्कॉण्ड शमयत्तन्ना नुरुवुकण्डारै यॉत्तार् 1158

वाळ् कॉण्ट कण्णार्—तलवार-सी आँखोंवाली उन स्त्रियों में; तोळ् कण्टार्—जिन्होंने (श्रीराम की) भुजाएँ देखीं; तोळे कण्टार्—उन्होंने भुजाएँ ही देखीं; तॉटु कळऌल्—कसे हुए पायल के; कमलम् अन्न—कमल के समान; ताळ् कण्टार्—श्रीचरण जिन्होंने देखे; ताळे कण्टार्—उन्होंने श्रीचरण ही देखे; तट कं कण्टारुम्—विशाल हस्तदर्शक की भी; अ.·.ते—वही स्थिति थी; वटिविनै—उनके सौम्य रूप को; मुटिय कण्टार् यार्—पूर्णरूप से देखा किसने था; ऊळ् कॉण्ट समयत्तु—प्रौढ़ता प्राप्त मतों में; अन्नान् उरुवु—उन परब्रह्म का रूप; कण्टारै—जिन्होंने जाना था; ऑत्तार्—उनके समान थीं (ये स्त्रियाँ)। ११५८

(यह पद बहुप्रशंसित पद है—) संसार में जो अनेक प्रौढ़ताप्राप्त धर्म या संप्रदाय हैं उनमें हर एक की परब्रह्म संबंधी कल्पना भिन्न-भिन्न है। हर मतावलम्बी उस मत के द्वारा निर्दिष्ट रूप को ही देखता है और उसी में रम जाता है। इसी प्रकार उस दिन जिन स्त्रियों ने श्रीराम के दर्शन किये उनमें जिन्होंने उनकी भुजाएँ देखीं वे उसी में रम गयीं। जिनको वीर कंकणधारी के श्रीचरणों के दर्शन मिले वे उन्हीं पर ध्यान दिये रह गयीं। विशाल हाथों का दर्शन जिन्हें प्राप्त हुआ उनकी भी वही दशा हुयी; अर्थात वे उन्हीं में दृष्टि दिये रह गयीं। उनमें कौन ऐसी थी जिसने उनका संपूर्ण रूप देखा ? कोई नहीं। वे मतावलम्बियों के समान रहीं जो परब्रह्म के अपने-अपने मत के द्वारा निर्दिष्ट रूप को ही देखते हैं, समूचा रूप नहीं देख पाते। (श्रीराम का हर अंग बड़ा सुन्दर था।)। ११५८

तैयल् शिऱ्ऱिडै याळॊरु ताळ्कुळल्, उय्य मऱ्ऱव ळुळ्ळत् तॊडुङ्गिनान्
वैय मुऱ्ऱुम् वयिऱ्ऱि नडक्किय, ऐय निऱ्पॆरि यारिनि यावरे 1159

ताळ् कुळल्—लम्बा केश; चिऱु इटैयाळ्—क्षीण कटिवाली; ऑरु तैयल—एक नारी; उय्य—जी जाय, इसलिए; अवळ् उळ्ळत्तु—उसके मन में; ऑटुङ्किनान्—बस गये; वैयम् मुऱ्ऱुम्—सारी सृष्टि को; वयिऱ्ऱिन् अटक्किय—अपने पेट में समा लेनेवाले; ऐयनिन्—प्रभु से बढ़कर; पॆरियार्—महिमावान; इनि यावर्—अब कौन हैं ? ११५६

एक लम्बा केश और छोटी कमरवाली स्त्री आयी। उसका जीवन बचाने के लिए श्रीराम उसके मन में समाहित हो गये। (उस स्त्री ने बाहर न देखकर अन्तस्तल में ही श्रीराम के रूप की कल्पना कर ली।) सारे लोकों को उन्होंने अपने पेट के अन्दर समाहित कर लिया था। उनसे बड़े कौन हो सकते ? वे भी आज एक छोटी स्त्री के छोटे मन में समा गये। ११५९

अलम्बु पारक् कुळ्लियॉ रायिळै
शिलम्बु मेहलै युञ्जिलम् बत्तनि
नलम्बॅय् कॉम्बि नडन्दुवन् दॅय्दिन्नाळ्
पुलम्बु शेडियर् कैमिशैप् पोयिन्नाळ् 1160

अलम्पु–हिलनेवाले; पारम्–भारी; कुळ्लि–केशवाली; ओर् आय् इळै–चुने हुए आभरणों से भूषित एक स्त्री; चिलम्पुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–मेखला को; चिलम्प–बजने देते हुए; तनि–अकेली (स्वयं); नलम् पॅय् कॉम्पिन्–सुष्ठ पुष्पशाखा के समान; नटन्तु वन्तु ॲय्तिन्नाळ्–चलती हुई आई; पुलम्पु–प्रलाप करनेवाली; चेटियर् कै मिचै–चेरियों के हाथों पर; पोयिन्नाळ्–गई। ११६०

हिलते केशभाराक्रान्ता और उत्तम आभरणभूषिता एक स्त्री मेखला और नूपुर के नाद के साथ स्वतः विना किसी को साथ लिए पुष्पशाखा के समान 'अपने चरणों पर' (पैदल चलती) आयी। पर (श्रीराम को न पाकर) वह चेरियों के 'हाथों पर' (सहारे) लौटी। (उसकी स्थिति ऐसी हो गई कि चेरियों को सहारा देकर उसको उसके भवन में ले जाना पड़ा।)। ११६०

अरुप्पु मॅन्मुलै याळङ्गॊ रायिळै
इरुप्पु नॅञ्जिन्नै यॅनुमो रेळैक्काप्
पॉरुप्पु विल्लैप् पॉडिशॅय्द पुण्णिया
करुप्पु विल्लिरुत् ताट्कॉण्डु कावॅन्ड्राळ् 1161

अङ्कु–वहाँ; अरुम्पु मॅन् मुलैयाळ्–कोंगु (सेमर) की कली के समान स्तनवाली; ओर् आय् इळै–चुने हुए आभरणों से अलंकृत एक स्त्री; ओर् एळैक्काक–एक अबला के लिए; पॉरुप्पु विल्लै–एक पर्वत-सम धनु को; पॉटि चॅय्त–चूर करनेवाले; पुण्णिया–पुण्यकर्मी; इरुम्पु नॅञ्चिन्नै येनुम्–लोहे का मन वाले हो तो भी; करुम्पु विल् इरुत्तु–ईख का धनु तोड़कर; आळ् कॉण्टु–मुझे दासी बना लेकर; का–मेरी रक्षा करो; ॲन्ड्राळ्–कहा। ११६१

सेमरकली-सम स्तन और चुने हुए आभरणवाली एक स्त्री ने श्रीराम से मन ही मन पूछा— कि आपने एक स्त्री के लिए पर्वतसम धनु को चूर किया। ऐसे पुण्यमूर्ति आप अब, हमारी ओर से विमुख,

लौह-दिलवाले हों तो भी मन्मथ का ईख का धनु तोड़कर हमें दासी बनाइये और हमारी जान बचाइए। ११६१

मैद वळ्नद करुङ्गणोर् वाणुदल्, शॅय्द वन्ऱनित् तेर्मिशैच् चेऱल्विट्
ऍय्द वन्दॅदिर् निन्ऱमै तानिदु, कैद वङ्गॊल् कनवुहॊ लोवॅन्ऱाळ् 1162

मै तवळ्न्त–अंजन से युक्त; करु कण्–काली आँखों की; ओर् वाळ् नुतल्–(और) उज्ज्वल ललाटवाली एक स्त्री; चॅय् तवन्–सफल तपस्वी श्रीराम; तनि तेर् मिचै–अनुपम रथ पर; चेऱल् विट्टु–जाना छोड़कर; ऍय्त वन्तु–मेरे पास पहुँचकर; ऍतिर् निन्ऱमै इतु–सामने खड़े रहे, यह बात; कैतवम् कॊल्–माया है क्या; कनवु ओ–या स्वप्न है; ऍन्ऱाळ्–कहा। ११६२

अंजनलगी आँखों और उज्ज्वल ललाटवाली को भ्रम हो गया कि श्रीराम उसके सामने आ उपस्थित हैं। उसे संदेह भी हो रहा था। उसने कहा कि श्रीराम ने पूर्वजन्म में बड़ी तपस्या की होगी। तभी सीता का और मेरा मन उनके मोह में पड़ गये हैं। अब वे रथ पर जाना छोड़कर मेरे सामने आकर खड़े हैं। यह माया है या मेरा स्वप्न ही है ?। ११६२

मादॊ रुत्ति मनत्तिनै यल्लदोर्, तूदु पॅऱ्ऱिल ळिन्नुयिर् शोर्हिन्ऱाळ्
पोद रिक्कट् पॊलङ्गुळैप् पूण्मुलैच्, चीदै यॆत्तवञ् जॅय्दन ळॊवॅन्ऱाळ् 1163

मातु ऒरुत्ति–एक दयिता; मनत्तिनै अल्लतु–मन के सिवा; ओर् तूतु पॆऱ्ऱिलळ्–एक दूत नहीं पा सकी; इन् उयिर् चोर्किन्ऱाळ्–प्यारे प्राण लट जाते हैं; पोतु अरि कण्–पुष्पतुल्य डोरेयुक्त आँखें; पॊलम् कुळै–स्वर्णकुण्डल; पूण् मुलै–आभरण-शोभित स्तन; चीतै–सीतादेवी ने; ऍ तवम् चॅय्तनळ्ओ–कैसी तपस्या की है (कि इन्हें पति के रूप में पा सकीं); ऍन्ऱाळ्–कहा। ११६३

एक स्त्री थी जिसके पास अपने मन के सिवा कोई दूत नहीं था। बेचारी वह आप ही आप अपनी व्यथा कहकर घुल रही थी। उसने कहा कि पुष्पसदृश डोरे युक्त आँखों, स्वर्णकुण्डलों और आभरणमंडित स्तनोंवाली सीता ने कैसी तपस्या की है ? (कि उन्हें श्रीराम जैसे पति मिल गये। उसके अंग कृतकृत्य हो गये कि श्रीराम उनको भोगेंगे।)। ११६३

पऴुदि लादवोर् पावयन् ऩाळ्पदैत्
तऴुदु वॅय्दुयिर्त् तन्बुडैत् तोऴियैत्
तॊऴुदु शोर्न्दयर् वाळिन्दत् तोन्ऱलै
ऍऴुद लाहुङ्गॊन् मन्मद नालॆन्ऱाळ् 1164

पऴुतु इलाततु–दोष-रहित; ओर पावै अन्नाळ्–चित्र प्रतिमा-सम एक; पतैत्तु–अकुलाकर; अऴुतु–रोकर; वॆय्तु उयिर्त्तु–गरम निश्वास छोड़कर; चोर्न्तु–थककर; अयर्वाळ्–दुखती जो थी; अन्पु उटै(य) तोऴियै–प्यारी सखी को; तॊऴुतु–नमस्कार कर; इन्त तोन्ऱलै–इन पुरुषोत्तम को; मन्मतनाल्–मन्मथ से भी; ऍऴुतल् आकुम् कॊल्–चित्रार्पित कर सकता है क्या। ११६४

दोषहीन चित्र के समान सुन्दर एक तरुणी अत्यधिक प्रेम से व्याकुल हुयी। रोने और लम्बी साँसें भरने लगी। शिथिल और श्रांत होकर उसने अपनी सखी से नमस्कार करके कहा कि इन पुरुषोत्तम (श्रीराम) का मन्मथ भी चित्र बना सकता है क्या ? । ११६४

वण्ण वायॉरु वाणुदल् मातिडरक्, कॅण्णुङ् गालिव् विलक्कण मॅय्दिड
ऑण्णु मोवॉन् रुणर्त्तुहिन् ड्रेनिवन्, कण्ण नेयिदु कण्डिडुम् बिन्नॅन्ड्राळ् 1165

वण्णम् वाय्–सुन्दर मुख; ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाटवाली ने; ऍण्णुङ्काल्–सोचने पर; मानि टर्क्कु–मनुष्यों में (किसी को भी); इव् इलक्कणम्–ये लक्षण; ऍय्तिट ऑण्णुमो–प्राप्त हो सकते हैं क्या; ऑन्रु उणर्त्तुकिन्रेन्–एक बात समझाऊँगी; इवन् कण्णन्–ये कण्णन् ही (श्रीनारायण ही) हैं; इतु पिन् कण्टिटुम्–यह पीछे जान लोगी; ऍन्राळ्–कहा। ११६५

मनोहर मुख और मनोरम ललाटवाली एक ने अपने पास रहने-वालियों से यों कहा। "सोचकर देखो, मनुष्यों में किसी के पास ये दैवी लक्षण प्राप्त हो सकते हैं क्या ? नहीं। इसलिए कहती हूँ, एक बात, यह कि ये वे ही कण्णन् (श्रीमन्नारायण) है। पीछे तुम भी यह समझ लोगी।" । ११६५

कनह नूपुरङ् गैवळै योडुह, मनॅ हुम्बडि वाडियॉर् वाणुदल्
अनह निन्नह रॅय्दिय दादियिर्, चनहन् शॅय्द तवप्पय नामॅन्ड्राळ् 1166

ओर् वाळ् नुतल्–मनोरम भालवाली एक ने; कनकम् नूपुरम्–स्वर्णनूपुर को; कै वळैयॉटु–हाथ के कंकणों के साथ; उक–खिसककर गिरने देते हुए; मनम् नॅकुम्पटि वाटि–(देखनेवाले का) मन द्रवित हो, ऐसा मुरझाकर; अनकन्–अनघ का; इ नकर् ऍय्तियतु–इस नगर में पधारना; चनकन् आतियिल् चॅय्त–जनक महाराज ने जो पहले किया है; तवम् पयन् आम्–उस तपस्या का फल है; ऍन्राळ्–कहा। ११६६

मनोरम ललाटवाली, बेचारी एक कनक नूपुर और हाथों के कंकणों को खिसककर गिरने देकर ऐसी खड़ी रही कि देखनेवाले का मन द्रवित हो जाय। उसने कहा— ये निर्मलदेव इस नगर में आये, सो महाराजा जनक की पूर्वकृत तपस्या का फल होना चाहिए। ११६६

ननिव रुन्दि नलङ्गुडि पोयिडप्, पनिव रुङ्गणीर् पाशिळै यल्हुलाळ्
मुनिव रुङ्गुल मन्नरु मॉय्प्पर्त्, तनिव रुङ्गॉल् कनविन् ड्रलयॅन्ड्राळ् 1167

नलम् कुटि पोयिट–शोभा अलग हो जाय, ऐसा; नति वरुन्ति–बहुत दुख कर; पनि वरुम् कण्–आँसू बहानेवाली आँखों; पचुमै इळै–और स्वर्णाभरणों से भूषित; ओर् अल्कुलाळ्–एक जघनवाली ने; मुनिवरुम्–(अनेक) मुनियों; कुलम् मन्नरुम्–और भीड़ के राजाओं के; मॉय्प्पु अर–घेरने से छूटकर; तनि–एकाकी हो; कनविल् तलै–स्वप्न में ही सही; वरुम् कॉल्–आयेंगे क्या; ऍन्राळ्–कहा। ११६७

वियोग के कारण शोभाहीन बनी हुयी एक आँखों से आँसू बहाती हुयी खड़ी रही। स्वर्णाभरणभूषित कटिवाली उसने पूछा कि क्या ये श्रीराम, इन मुनियों और राजाओं की भीड़ को छोड़कर अकेले, स्वप्न में ही सही, मेरे पास आयेंगे ? । ११६७

पुनङ्गॉळ् कार्मयिल् पोलुमोर् पॉऱ्ऱॉडि
मनङ्गॉळ् कादन् मऱैत्तलै यॆण्णिनाळ्
अनङ्ग नन्न दऱिन्दन नऱ्ऱन्दान्
मनङ्गळ् पोल मुहमु मऱैक्कुमो 1168

पुनम् कॉळ्–पर्वत के बागों के वासी; कार् मयिल् पोलुम्–मेघ से मुदित मोर के समान; ओर् पॉन् तॉटि–एक स्वर्णकंकणधारिणी; मनम् कॉळ् कादल्–मन में (श्रीराम के प्रति उत्पन्न) प्रेम को; मऱैत्तलै–छिपाना; ऍण्णिनाळ्–चाहती थी; अनङ्कन् अन्नतु अऱिन्ततन्–अनंग ने वह जान लिया; अऱ्ऱम्–रहस्य को; मनङ्कळ् पोल–मन के समान; मुकमुम् मऱैक्कुमो–वदन भी छिपा सकते हैं क्या। ११६८

पर्वतवनवासी, मेघ से मुदित एक मोर तुल्य, और स्वर्णकंकण-धारिणी एक स्त्री ने अपने श्रीराम-प्रेम को मन में ही छिपाना चाहा। पर उसे अनंग ने समझ लिया। वह उसे सताने लगा तो मुख पर उसका प्रेम प्रकट हो ही गया। मन छिपा सकता है पर क्या मुख वह काम कर सकता है ? । ११६८

इणैनॆ डुङ्गणॊ रेन्दिळै येन्दुपू, अणैय णैन्दिडि युण्डव रावॆनप्
पुणर्न लङ्गिळर् कॊङ्गै पुळुङ्गिड, उणर्व ळुङ्ग वुयिर्त्तन ळाविये 1169

इणै नॆट्टु कण्–परस्पर सम लम्बी आँखों वाली; ओर एन्तु इऴै–एक आभरण-शोभिता; एन्तु पू अणै अणैन्तु–पुष्प भरी शय्या में लेटकर; पुणर्–परस्पर सटे हुए; नलम् किळर्–ललामी लिए रहे; कॊङ्कै पुळुङ्किट–स्तनों पर पसीना प्रकट करते हुए; उणर्वु अऴुङ्क–सुधि को क्षीण होने देते हुए; इटि उण्ट अरा ऍन–वज्राहत सांप के समान; आवि उयिर्त्तनळ्–लम्बी साँसें छोड़ीं। ११६९

परस्पर सम और लम्बी आँखोंवाली आभरणालंकृत एक युवती पुष्पशय्या पर जा लेटी। श्रीराम-प्रेम उसको चैन नहीं दे रहा था। उसके परस्पर सटे हुए सुन्दर स्तनों पर पसीना बहने लगा। सुधि मन्द होती रही। वज्राहत नाग के समान वह लम्बी साँसें भरने लगी। ११६९

आम्ब लॊत्तमु दूरुशॆव् वायच्चियर्, ताम्ब दैत्तुयि रुट्टडु माऱुवार्
तेम्बु शिऱ्ऱिडैच् चीदैयैप् पोर्चिऱि, तेम्ब लुऱ्ऱिल रॆङ्ङन मुय्वरो 1170

आम्पल् ऑत्तु–लाल कुमुद से तुलकर; अमुतु ऊऱु–(और) अधरामृत स्रवनेवाले; चॆव्वायच्चियर्–लाल अधरोंवाली स्त्रियाँ; पतैत्तु–तड़पकर; उळ् उयिर् तट्टुमाऱुवार्–अन्तस्थ प्राणों के छूटते, वापस आते, दोलायमान थीं; तेम्पु–(शरीर के भार से)

दबनेवाली; चिऱु इटै–क्षीण कटिवाली; चीतैयै पोल्–सीता की तरह; चिऱितु ऐम्पल् उऱ्ऱिलर्–कुछ भी सन्तोष नहीं पा सकीं; ॲङ्ङनम् उय्वरो–कैसे जीवित रहेंगी ? । ११७०

लाल कुमुदसम और अमृतस्रावी अधरोंवाली स्त्रियाँ तड़प रही थीं। उनके प्राण दोलायमान हुये। सीताजी को जिनकी पतली कमर शरीर के भार से संकट उठा रही थी, आनन्द मिल गया। इनको तो कुछ भी आश्वासन नहीं मिल रहा था। बेचारियों की जानें कैसे बचेंगी ? । ११७०

वेर्त्तु मेनि तळर्न्दुयिर् विम्मलो
डार्त्ति युऱ्ऱ मडन्दय रारयुम्
तीर्त्त नित्तनै शिन्दयिर् चॅङ्गणिऱ्
पार्त्ति लानुट् परिविलनो वॅन्ऱाळ् 1171

मेनि वेर्त्तु–शरीर पसीने से भर गया; उयिर् तळर्न्तु–प्राण शिथिल हो गया; विम्मलोटु–तरस के साथ; आर्त्ति उऱ्ऱ–दुखी जो हुईं; मटन्तैयर्–उन स्त्रियों में; आरॅयुम्–किसी को भी; तीर्त्तन्–तीर्थ श्रीराम ने; चॅम् कण्णिल्–अपनी मनोरम आँखों से; चिन्तैयिन्–(और) मन से; इत्तनै–इतना भी (बहुत कम भी); पार्त्तिलान्–नहीं देखा; उळ्–मन में; परिवु इलनो–करुणाहीन है क्या; ॲन्ऱाळ्–कहा। ११७१

एक स्त्री यों कह रही है। इधर इतनी स्त्रियाँ पसीने बहाती हुयी, प्राण संकट में रहने देकर, तरस के साथ दुख उठा रही हैं। उनमें एक पर भी श्रीराम ने अपनी आँखें नहीं डालीं; न मन ही लगाया। क्या उनके मन में करुणा नामक गुण है ही नहीं ? । ११७१

वैयम् वऱ्ऱिय मङ्गय रॅण्णिलार्, ऐयन् पॉऱ्पुक् कळविलै यादलाल्
ॲय्युम् वॊऱ्चिलै मारनु मॅन्शॅय्वान्, कैयम् बऱ्ऱुडै वाळिनुङ् गैवैत्तान् 1172

वैयम् पऱ्ऱिय मङ्कैयर्–(श्रीराम के) रथ को लक्ष्य बनाकर जो आईं वे स्त्रियाँ; ॲण् इलार्–असंख्यक हैं; ऐयन्–प्रभु श्रीराम की; पॊऱ्पुक्कुम्–सुन्दरता की भी; अळवु इल्लै–सीमा नहीं है; आतलाल्–इसलिए; ॲय्युम्–शर चलानेवाले; पॊन् चिलै–सुन्दर धनुर्धर; मारनुम्–कामदेव भी; ॲन् चॅय्वान्–क्या करेगा; कै अम्पु अऱ्ऱु–हाथ शरों से रिक्त हो गये, तब; उटै वाळिनुम्–करवाल पर (केवड़े के फूल पर) भी; कै वैत्तान्–प्रयोग के लिए हाथ रखा। ११७२

श्रीराम के रथ को लक्ष्य बनाकर जो आयी हैं उनकी संख्या अपार है। श्रीराम का सौन्दर्य भी अपार है। इसलिए पुष्पशर चलानेवाले सुन्दर धनुर्धर का काम भी अपार रूप से बढ़ गया। उसके सारे शर खर्च हो गये। अब उसको लाचार होकर अपने करवाल (केवड़े के फूल) को प्रयोग करना पड़ा। (अर्थात स्त्रियों की दशा बिलकुल शोचनीय हो रही थी।) । ११७२

नान वार्हुळ् नारिय रोडलाल्, वेनल् वेळोंडु मेलुरै वार्हळो
डान पूश लरिन्दिल मम्बुपोय्, वान नाडियर् मार्बिनुन् दैत्तवे 1173

नानम् वार् कुळल्—कस्तूरी-लिप्त लम्बे केशवाली; नारियरोटु अल्लाल्—(भूलोक की) स्त्रियों के अलावा; वेनल् वेळोंटु—वसन्तकाल के राजा मन्मथ के साथ; मेल् उरैवार्कळोटु—स्वर्ग-वासिनियों का; आन पूचल्—(जो) हुआ (वह) झगड़ा; अरिन्तिलम्—नहीं जानते; अम्पु पोय्—उसके शर जाकर; वानम् नाटियर् मार्पितुम्—देवलोक वासिनियों के वक्षों में भी; तैत्त—चुभे। ११७३

कस्तूरी-लगे केशवाली, भूलोकवासिनी स्त्रियों की हालत तो हम देखते रहते हैं। देवलोक की नारियों के साथ वसंतकाल के राजा मन्मथ के टंटे का क्या हाल रहा? हम नहीं जानते। अवश्य मन्मथ के शर उनके हृदय पर भी जा लगे। (समर या झगड़ा इसलिए कहते हैं कि प्रेम और लोकलाज में संघर्ष होता है। शायद देवलोक की नारियाँ सुगम रूप से मन्मथ के शिकार हो गयी!)। ११७३

मरुण्म यङ्गु मडन्दयर् माट्टॊरु, पॊरुण यन्दिलन् पोहिन्र् देयिवन्
करुणै यॆन्बदु कण्डरि यान्बॆरुम्, वरुणि दन्कॊल् पडुकॊलै यानॆन्राळ् 1174

इवन्—ये राम; मरुळ् मयङ्कुम्—अपने प्रति मोहमुग्ध; मटन्तैयर् माट्टु—स्त्रियों से; ओरु पॊरुळ् नयनतिलन्—एक भी वस्तु न चाहते हुए; पोकिन्रते—(उदासीन हो) जाते हैं (क्या उचित है); करुणै ऍन्पतु—करुणा नाम की वस्तु; कण्टु अरियान्—कहीं देखी-जानी नहीं है; परुणितन् कॊल्—"परिणत" (ज्ञानवृद्ध वैरागी) हैं क्या; पटु कॊलैयान्—निपट हत्यारे हैं; ऍन्राळ्—कहा एक (अबला ने)। ११७४

एक स्त्री निष्ठुरता से शिकायत करने लगी। मोह मुग्ध इतनी नारियाँ इधर हैं। श्रीराम इनसे किसी भी वस्तु की अपेक्षा नहीं करते हुये अपने रास्ते जा रहे हैं। क्या यह उचित है? क्या वे करुणा नामक वस्तु क्या है यह नहीं जानते? या कहीं देखी भी नहीं है? क्या वे ज्ञान-वृद्ध वैरागी हो गये हैं? न! वे निपट हत्यारे हैं!। ११७४

तॊय्यिल् वॆय्य मुलैत्तुणै यालुर्, नैयु नॊय्य मरुङ्गुलॊर् नङ्गैतन्
कैयु मॆय्यु मुणर्न्दिलळ् कण्डवर्, उय्यु मुय्यु मॆनत्तळर्न् दोय्वुर्राळ् 1175

तॊय्यिल्—चित्रकारी से युक्त; वॆय्य—तप्त; मुलै तुणैयाल्—स्तनद्वय से; उऱ्‍ नैयुम्—वहुत त्रस्त; नॊय्य मरुङ्कुल—क्षीण कटिवाली; ओर् नङ्कै—एक युवती; तन् कैयुम्—अपने (कंकण-हीन) हाथों को; मॆय्युम्—(शिथिल) शरीर को; उणर्न्तिलळ्—भूलकर; कण्टवर्—देखनेवाले; उय्युम् उय्युम्—जो जायगी, जो जायगी; ऍन—कहें, ऐसा; तळर्न्तु—श्रांत होकर; ओय्वु उऱ्‍ऱाळ्—निस्पन्द हुई। ११७५

क्षीणकटि एक स्त्री ने, जिसकी कमर चित्रकारीयुक्त और तप्त स्तन-द्वय के भार से आक्राँत थी, अपने कंकणहीन हाथों और शिथिल शरीर की

सुध नहीं ली। वह इतनी श्रांत और क्लाँत हो रही कि देखनेवालों को उसके जीने में संदेह हुआ और कुछ 'जी जायगी' यह कहकर ढाढस दे रही थीं। ११७५

पूक वूशल् पुरिबवर् पोलॊरु, पाहु पोन्मॊळि याण्मलर्प् पादङ्गळ्
शेहु शेर्दरच् चेवहन् ऱेरिन्बिन्, एहु मीळुमि दॆन्शॆय्द वाऱ्ऱो 1176

ऒरु पाकु पोल् मॊळियाळ्–एक चासनी-सी बोलीवाली; पूकम् ऊचल् पुरिपवर् पोल्–पूगतरु से बँधे झूले में झूलनेवाली के समान; मलर् पातङ्कळ्–कमलचरणों पर; चेकु चेर् तर–(घर्षण चिह्न) घट्ठा लग जायँ, ऐसा; चेवकन् तेरिन् पिन्–वीर श्रीराम के रथ के पीछे; एकुम–जाती; मीळुम्–लौट आती (ऐसा बार-बार करती थी); इतु चॆय्त आऱु–यह करने का प्रकार; ऎन्–क्या है। ११७६

चाशनी-सी बोलीवाली एक, पूगतरु से बँधे झूले में झूलनेवाली के समान (ऊपर-नीचे) आगे-पीछे जाती रहती है, श्रीरघुनाथ के रथ के पीछे जाती, फिर वापस आती। वह ऐसा बार-बार क्यों करती थी जिसके फलस्वरूप उसके पैरों में घट्ठा पड़ गया था? । ११७६

पॆरुत्त कादलिऱ् पेदुरु मादरिल्, ऒरुत्ति मऱ्ऱङ् गॊरुत्तियै नोक्कियॆन्
करुत्तु मव्वळिक् कण्डदुण् डोवॆन्ऱाळ्, अरुत्ति युऱ्ऱपि नाणमुण् डाहुमो 1177

पॆरुत्त कातलिन्–अत्यधिक (श्रीराम-) प्रेम के कारण; पेतुरुम् मातरिल् ऒरुत्ति–चक्रित स्त्रियों में एक; अङ्कु–वहाँ; मऱ्ऱॊरुत्तियै–दूसरी को; नोक्कि–देखकर; ऎन् करुत्तुम्–मेरे मन को; अव् वळि–उस स्थान में; कण्टतु उण्टो–देखा था क्या; ऎन्ऱाळ्–पूछा; अरुत्ति उऱ्ऱपिन्–अनुराग होने के बाद; नाणम् उण्टु आकुमो–लाज रहती होती क्या। ११७७

श्रीराम पर अपार प्रेम के कारण जो चक्रित हो गयी थीं उनमें एक ने श्रीराम के रथ की ओर से लौट आनेवाली एक स्त्री से पूछा कि क्या वहाँ तुमने मेरे मन को देखा! अनुरागी वनने के बाद लाज कहाँ रहेगी? । ११७७

नङ्गै यङ्गॊरु पॊन्नयन् दारुयत्, तङ्ग ळिन्नुयि रुङ्गॊडुत् तार्दमर्
ऎङ्ग ळिन्नुयि रॆङ्गळुक् कीहिला, वॆङ्ग णॆङ्ङन् विळैन्द दिवर्कॆन्ऱाळ् 1178

अङ्कु ऒरु पॊन् नङ्कै–वहाँ, श्रीलक्ष्मी तुल्य स्त्री; तमर्–इनके लोगों ने (पूर्वजों ने); नयन्तार् उय्य–अपने पास प्रेम के साथ आये हुओं का जीवन बचाने के लिए; तङ्कळ् इन् उयिरुम् कॊटुत्तार्–अपने प्यारे प्राण दे दिए; ऎङ्कळ् इन् उयिर्–हम स्त्रियों के प्यारे प्राणों को ही; ऎङ्कळुक्कु ईकिला(त)–हमें न देनेवाले; वॆम् कण्–कठोर स्वभाव को; इवर्कु–इनके पास; ऎङ्ङन् विळैन्ततु–कैसे उत्पन्न हुआ। ११७८

श्रीलक्ष्मी तुल्य एक स्त्री पूछती है— इनके पूर्वजों ने अपने पास प्रेम के

साथ आनेवालों की जान बचाने के लिए अपने प्राण तक दे दिये थे। अब ये तो हमारे ही प्राणों को (मन को) हमारे पास नहीं देते। इतनी निर्ममता इनके पास कहाँ से आयी? (यह उनको विरासत में तो नहीं मिल सकती थी।)। ११७८

नामत् तालळि वाळॉरु नन्नुदल्, शेमत् तार्विल् लिऱुत्तदु तेरुङ्गाल्
तूमत् तार्हुळ्र्‌ इरुंगोळित् तोहैबाल्, कामत् तालन्ऱु कल्वियि नालॆन्ऱाळ् 1179

नामत्ताल् अळिवाळ्–नामस्मरण के साथ अकुलानेवाली एक ने; ऑरु नल् नुतल्–एक सुन्दर ललाटवाली; चेमत्तु आर् विल्–(हमारे महाराज की) सुरक्षा में जो रहा उस धनुष को; इऱुत्ततु–तोड़ने का काम; तेरुम् काल्–सोचने पर; तूमत्तु आर् कुळल्–(अगरु का) धुआँ जिसमें रमाया गया, उस केश की; तू मॊळि–और पवित्र बोलीवाली; तोकै पाल्–मयूराभा सीता के प्रति; कामत्ताल् अन्ऱु–प्रेम के कारण नहीं (किया श्रीराम ने); कल्वियिनाल्–धनुर्विद्या (के प्रेम) से ही; ऍन्ऱाळ्–कहा। ११७९

श्रीराम का नाम बराबर लेते हुये एक स्त्री अकुला रही थी। सुन्दर ललाटवाली उसे सन्देह हो गया कि श्रीराम सीता पर भी आसक्ति नहीं रखेंगे! वह कहती है कि श्रीराम ने महाराजा जनक की सुरक्षा में रहे धनुष को सीताजी के निमित्त तोड़ा नहीं है; वह तो अपनी धनुर्विद्या (में दक्षता) के प्रदर्शन के लिए ही किया होगा। ११७९

आर मुन्दुहि लुङ्गल नियावयुम्, शोर विन्नुयिर् शोरवॊर् शोरहुळल्
कोर विल्लिमुन् नेयॆनैक् कॊल्हिन्ऱाल्, मार वेळिन् वलियवर् यारॆन्ऱाळ् 1180

ओर् चोर् कुळल्–खुलकर बिखरे केश की एक; आरमुम्–हार; तुकिलुम्–वस्त्र; कलन् यावैयुम्–आभरण सब; चोर–गिरने देते हुए; इन् उयिर् चोर–प्यारे प्राणों को भी छूटने देते हुए; कोर विल्लि मुन्ने–घोर धनुर्धर (श्रीराम) के सामने ही रहकर; ऍनै कॊल्किन्ऱान्–मुझे मार रहा है जो; मार वेळिन्–उस कामदेव से बढ़कर; वलियवर् यार्–बलवान कौन है। ११८०

एक स्त्री के केश खुलकर लटक रहे थे। हार, वस्त्र और आभरण सब तो खिसके हुए थे, प्राण भी छूटते से लगते थे। वह मन्मथ की वीरता की सराहना करने लगी। श्रीराम बड़े ही घोर धनुर्धर हैं। उनके ही सामने यह मन्मथ मुझ पर अपना शर चलाकर सता रहा है। इससे बढ़कर साहसी कौन हो सकता है?। ११८०

※माद रिन्नण मॆय्त्तिड वळ्ळल्पोय्क्, कोदिल् शिन्दै वशिट्टनुङ् गोशिह
वेद पारनु मेविय मण्डबम्, एदिन् मन्नर् कुळात्तॊड् मॆय्दिनान् 1181

मातर् इन्नणम् ऍय्त्तिट–जब नारियाँ इस तरह संकट उठा रही थीं, तब; वळ्ळल्–उदार प्रभु; एतिल् मन्नर् कुळात्तॊटुम्–पराये (राज्यों के) राजाओं के

समूह के साथ; पोय्–(रथ पर) जाकर; कोतु इल् चिन्तै–अकलंक (पवित्र) मन; वचिट्टनुम्–महर्षि वसिष्ठ और; कोचिकन्–कौशिक; वेत पारनुम्–(जो) वेदपारंगत (थे वे भी); मेविय–जहाँ आसीन थे; मण्टपम्–विवाह-मण्डप; अॅय्तिनान्–पहुँचे। ११८१

स्त्रियाँ जब इस तरह व्याकुल हो रही थीं तब उदार प्रभु श्रीराम उस मंडप में जा पहुँचे जहाँ अकलंक पवित्र मन वाले वसिष्ठजी और वेद-पारंगत कौशिकजी विराजमान थे। उनके साथ पराये राज्यों के अनेक राजा भी गये। ११८१

* तिरुवि नायकन् मिन्तिरिन् दालॅनत्, तुरुविन् मामणि यारन् दुयल्वरप्
परुव मेहम् पडिवदु पोऱ्पडिन्, दिरुवर् ताळ् मुऱैयि निऱैञ्जिनान् 1182

तिरुविन् नायकन्–श्रीलक्ष्मीपति ने; तुरु इल् मा मणि आरम्–दोष-हीन श्रेष्ठ रत्नहार; मिन् तिरिन्ताल् अॅन्न–बिजली चमकती हो जैसे; तुयल् वर–चमके तब; परुव मेकम्–(वर्षा-) कालीन मेघ; पटिवतु पोल्–विनत हुआ जैसे; पटिन्तु–दण्डवत कर; इरुवर् ताळुम्–(वसिष्ठ और कौशिक) दोनों के चरणों पर; मुऱैयिन् इऱैञ्चिनान्–यथाक्रम नमस्कार किया। ११८२

श्रीलक्ष्मीपति (श्री रामजी) ने वसिष्ठजी और कौशिकजी के चरणों पर यथावत दण्डवत की। तब वे भूमि पर पड़नेवाले वर्षाकाल के मेघ के समान लगे। उनके वक्ष पर जो श्रेष्ठ रत्नहार हिलते थे वे चमकने वाली विजलियों के समान थे। ११८२

* इऱैञ्ज वन्नव रेत्तिन रेववोर्
निऱैञ्ज पून्दवि शेऱि निऴल्हऴ्पोल्
पुऱञ्जॅय् तम्विय रुट्पॉलिन् दानरो
अऱञ्जॅय् कावर् कयोत्तियुट् टोन्ऱिनान् 1183

अऱम् चॅय् कावल् कु–धर्मरक्षण के लिए; अयोत्ति उळ् तोन्ऱिनान्–अयोध्या में जो अवतरित हुए; इऱैञ्च–उन श्रीराम ने उक्त दोनों का नमस्कार किया, करने पर; अन्नवर्–उन दोनों ने; एत्तिनर्–आशीर्वाद दिये; एव–(फिर) आज्ञा दी, तब; ओर् निऱैञ्च पू तविचु–एक खूब सजावट भरे, सुन्दर आसन पर आसीन होकर; निऴल्कळ् पोल्–छाया की तरह; पुऱम् चॅय्–(निरन्तर) रक्षण की सेवा करनेवाले; तम्पियर् उळ्–लघु भ्राताओं के मध्य; पॉलिन्तान्–शोभे। ११८३

धर्मरक्षणार्थ जो अयोध्या में अवतार ले आये थे उनके नमस्कार करने पर, दोनों, वसिष्ठजी और कौशिकजी ने आशीर्वाद दिये। फिर आज्ञा दी कि आसन पर विराजें। सजावट से भरपूर एक श्रेष्ठ आसन पर श्रीराम विराजे और उनके पार्श्व में निरन्तर उनके रक्षणकार्य में लगे रहनेवाले उनके लघुभ्राता उनको मध्य में रखकर आसनस्थ हुये। ११८३

❀ आन मामणि मण्डब मन्नदु, तानै मन्नन् उमरोडुम् जार्न्दनन्
मीनॅ लान्दन पिन्वर वॅण्मदि, वानि लावुऱ वन्ददु मानवे 1184

वॅण्मति–श्वेतवर्ण चन्द्र; मीन् ऍलाम्–सब नक्षत्र; तन पिन् वर–अपने पीछे आयें, ऐसे; वान् निला उऱ–आकाश को प्रकाशमान करते हुए; वन्तनु मान–आया हो जैसे; तानै मन्नन्–बड़ी सेना के स्वामी (दशरथ); तमरोटुम्–अपनों (समान राजाओं) के साथ; आन–उपरोक्त; मा मणि मण्टपम् अन्नतु–उत्तम रत्नों से शोभायमान मण्डप में; चार्न्ततनन्–आ पहुँचे। ११८४

वहाँ उस श्रेष्ठ रत्नमय मंडप में राजा दशरथ भी आ पहुँचे। उनके साथ उनके अपने राजा लोग भी आये। उनका राजाओं के साथ आना चन्द्र के, आकाश को शोभायमान करते हुए, नक्षत्रों के साथ आने के समान था। ११८४

❀ वन्दु मादवर् पादम् वणङ्गिमेल्, शिन्दु तेमलर् मारि शिऱन्दिड
अन्द णाळर्ह ळाशियॉ डाशनम्, इन्दि रन्मुह नाणुऱ वेऱिनान् 1185

वन्तु–आकर; मा तवर् पातम् वणङ्कि–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; मेल् चिन्तु–(उनके) ऊपर गिरनेवाले; तेम् मलर् मारि–शहद सहित पुष्पों की वर्षा; चिऱन्तिट–सम्मान बढ़ावे, ऐसा; अन्तणाळर्कळ्–ब्राह्मणों के; आचियॊटु–आशीर्वाद के साथ; इन्तिरन् मुकम् नाणुऱ–इन्द्र के मुख को लाज-भरा करते हुए; आचनम् एऱिनान्–अपने आसन पर विराजे। ११८५

मण्डप में आकर राजा ने महान तपस्वियों, वसिष्ठजी और कौशिकजी, के चरणों पर नमस्कार किया। तब उन पर शहद भरे पुष्पों की वर्षा खूब हुयी। वेद-विप्रों ने आशीर्वाद दिये। उनका वैभव देखकर इन्द्र भी लजा गये थे। वे शान के साथ अपने आसन पर आसीन हुए। ११८५

गङ्गर् कॉङ्गर् कलिङ्गर् तॅलुङ्गर्हळ्, शिङ्ग ळादिबर् शेरलर् तॅन्नवर्
अङ्ग राशर् कुलिङ्ग रवन्दिकर्, वङ्गर् माळवर् शोळर् मराडरे 1186

कङ्कर्–गंग देश का राजा; कॊङ्कर्–कोङ्ग देश का राजा; कलिङ्कर्–कलिंगपति; तॅलुङ्कर्कळ्–तॅलुगु देश का राजा; चिङ्कळ अतिपर्–सिंहल देश का राजा; चेरलर्–चेर देशाधिपति; तॅन्नवर्–पांडिय; अङ्क राचर–अंग राज; कुलिङ्कर्–कुलिंग का शासक; अवन्तिकर्–अवन्तिकाधिप; वङ्कर–बंगदेश नरेश; माळवर्–मालवाधिपति; चोळर्–चोळपति; मराटर्–महाराष्ट्र नरेश। ११८६

गंग देशाधिप, कोंग देश के राजा, कलिंग, तेलुगु, सिंहल, चेर, पांडिय, अंग, कुलिंग आदि देश के राजा अवंतिका, बंग, मालव, चोल और महाराष्ट्र देश के राजा लोग; । ११८६

मान माहदर् मच्चर् मिलेच्चर्हळ्, एनै वीर विलाडर् विदर्प्पर्हळ्
शोनर् शेहुणर् शिन्दियर् शोमहर्, शोन केशर् तुरुक्कर् कुरुक्कळे 1187

मात्तम् माकतर्–सम्मानित मागधराज; मच्चर्–मच्छदेश नरेश; मिलेच्चर्–म्लेच्छ; एत्तै–और अन्य; वीर इलाटर्–वीर लाटदेशवासी; वितर्प्परकळ्–विदर्भ लोग; चीत्तर्–चीनी; चेकुणर्–चेकुण; चिन्तियर्–सिंधी; चोमकर्–सोमक; चोतक ईचर्–शोनकेश; तुरुक्कर्–तुरुष्क; कुरुक्कळ्–कौरव। ११८७

सम्मान्य मागध, मच्छ, म्लेच्छ और लाट देश के, विदर्भवासी, चीनी, छेगुण (?) सिन्धी, शोमक आदि नरेश; सोनकेश, तुरुष्क और कौरव लोग। ११८७

एदि यादव रेऴ्दिरऱ् कॊङ्गणर्, शेदि राशर्ह ळुट्पडच् चेण्विळङ्
गादि वानङ् गवित्त ववनिवाऴ्, शोदि नीण्मुडि मन्नरुन् दुन्निनार् 1188

एति यातवर्—अस्त्र-शस्त्र चतुर यादव; एऴ् तिऱल् कॊङ्कणर्–सप्त विभाग के कोंकण देश के पराक्रमी; चेतिराचर्कळ् उळ् पट–चेदि राजाओं के साथ; चेण् विळङ्कु—दूर-दूर तक रहनेवाले; अति–आदिभूत; वानम् कवित्त–आकाश जिनको ढँके रहता है; अवनि वाऴ्–इस लोक में रहनेवाले; चोति नीळ् मुटि मन्तरुम्–ज्योतित और उन्नत किरीटधारी राजा लोग; तुन्निनार्–आ एकत्र हुए। ११८८

अस्त्र-चतुर, यादव सप्त-खण्ड कोंकण और चेदि के राजाओं के साथ, दूर-दूर तक विद्यमान आदिम भूत, आकाश से आच्छादित इस भुवन में रहनेवाले उज्ज्वल उन्नत (या दीर्घकाल से राजा रहनेवाले के वंश के) किरीटधारी राजा आकर एकत्र हुए। ११८८

*** तीङ्ग रुम्बिनुन् दित्तिक्कु मिन्शॊलार्, ताङ्गु शामरै माडु तयङ्गुव**
ओङ्गि योङ्गि वळर्न्दुयर् कीर्त्तियिन्, पूङ्गॊ ऴुन्दु पॊलिवन पोन्ऱवे 1189

तीम् करुम्पिनुम्–मधुर इक्षुरस से भी; तित्तिक्कुम्–मधुर; इन् चॊल्लार्–मोहक बोलीवाली स्त्रियाँ; ताङ्कु–जिनको ले (डुला) रही हैं वे; चामरै–चामर; माटु तयङ्कुव–पार्श्व में जो डुलते हैं वे; ओङ्कि ओङ्कि वळर्न्तु–उत्तरोत्तर ऊँचा बढ़कर; उयर्–उन्नत हुई; कीर्त्तियिन्–कीर्ति के; पू कॊऴुन्तु–सुन्दर पल्लव जो; पॊलिवन–शोभायमान हों, उनके; पोन्ऱ–समान थे। ११८९

मधुर ईख से भी बढ़कर मीठी, मनोरम बोली बोलनेवाली स्त्रियाँ जो चामर ले डुलाती थीं, वे दोनो तरफ शोभायमान थे। और वे उत्तरोत्तर बढ़नेवाली, चक्रवर्ती की कीर्ति के पल्लवों के समान शोभायमान थे। ११८९

शुऴलुम् वण्डु मिजिरुञ् जुरुम्बुञ्जऴन्, दुऴलुन् दुम्बियुम् बम्बऱ् लोदियर्
कुऴलि नोडुऱक् कूरुपल् लाण्डॊलि, मऴलै याऴिशै यॊडु मलिन्दवे 1190

चऴलुम्–मँडरानेवाले; वण्टुम् मिजिऱुम् चुरुम्पुम्–(इन) तीनो तरह के भ्रमरों के साथ; चूऴन्तु उऴलुम्—घूम-घूमकर मँडरानेवाले; तुम्पियुम्–काले भौंरे; पम्पु–जिन पर जुटे हैं; अऱल् ओतियर्–उन काले बालू समान केशोंवाली स्त्रियां;

कुऴलिऩोटु उऱ–बाँस के नाद से मिलकर; कूऱु–(जो गीत) गाती हैं; पल्लाण्टु ऑलि–उन "पल्लाण्डु" (अनेक वर्ष जियो) वाले गीतों के स्वर; मऴलै याऴ् इचैयोटुम्–श्रुतिमधुर वीणा के स्वर के साथ मिलकर; मलिन्त–(मण्डप में) भरे। ११९०

मँडरानेवाले भौंरे, भौंरियाँ, (चार तरह की) जिनके ऊपर मँडरा रही थीं, वे वालूसम केशवाली स्त्रियाँ बाँसुरी की ध्वनि के साथ, 'जयजीव' (अनेक वर्ष जिओ) भाव देनेवाले गीत गा रही थीं। उनके साथ मधुर वीणा का स्वर भी मिला था और वह सम्मिलित स्वर उस मण्डप में भर गया। ११९०

वॆङ्ग णाऩयऩ् ताऩ्ऱऩि वॆण्कुडै, तिङ्ग डङ्गळ् कुलक्कॊडि शीदयाम्
मङ्गै मामणङ् गाणिय वन्दरुळ्, पॊङ्गि यॊङ्गित् तळैप्पदु पोऩ्ऱदे 1191

वॆम् कण्–(क्रोध के) लाल आँखोंवाले; आऩै अऩ्ऩाऩ्–गज के समान (दशरथ) के; तऩि वॆण् कुटै–अद्वितीय श्वेतछत्र (राजा के रक्षण का प्रतीक); तिङ्कळ्–चन्द्र; तङ्कळ् कुलम् कॊटि–अपने कुल की लता (सन्तान); चीतै आम् मङ्कै–सीतादेवी के; मा मणम्–श्रेष्ठ उद्वाह को; काणिय वन्तु–देखने के लिए आकर; अरुळ् पॊङ्कि ओङ्कि–करुणा अधिक करके; तळैप्पतु पोऩ्ऱतु–शीतलता फैलाता-सा लगा। ११९१

क्रोध के कारण लाल हुई आँखोंवाले गज सदृश चक्रवर्ती दशरथ का एकश्वेतछत्र ऐसा भासमान था, मानो चन्द्र अपने कुल की फैलनेवाली लता (सन्तान) सीता नाम की पुत्री के श्रेष्ठ उद्वाह को देखने के लिए आकर करुणा और शीतलता फैला रहा हो। ११९१

ऊडु पेर्विड मिऩ्ऱियॊऩ् ऱाम्वहै, नीडु माहडऱ् ऱाऩैनॆ रुङ्गलाल्
आडऩ् माहळि याऩैच् चऩहऱ्होऩ्, नाडॆ लामॊरु नऩ्ऩह रायदे 1192

ऊटु–मध्य में; पेर्वु इटम् इऩ्ऱि–(जिसमें) पग धरने की जगह न हो ऐसी; नीटु मा कटल् ताऩै–लम्बे, विशाल सागर सदृश (दशरथ की) सेना; ऒऩ्ऱु आम् वकै–सम रूप से; नॆरुङ्कलाल्–भरी रही, इसलिए; आटल् मा–विजयी अश्व सेना; कळि याऩै–मत्तगजों की सेना; चऩकऱ् कोऩ्–(इनके स्वामी) महाराज जनक का; नाटु ऍलाम्–सारा देश; ऒरु नल् नकर् आयतु–एक बड़ा नगर-सा बन गया। ११९२

चक्रवर्ती दशरथ की सेना बहुत बड़ी थी। उसमें हाथी, वीर आदि खचाखच भरे थे। वह विस्तृत सागर-समान सेना देश भर में फैल गयी थी। इसलिए विजयी अश्वों और मत्तगजों की सेनावाले महाराजा जनक का सारा देश एक नगर के समान बन गया। ११९२

ऑऴिन्द दॆऩ्ऩिऩि यॊण्णुद ऱादॆदऩ्
पॊऴिन्द काद ऱॊडरप् पॊरुळॆलाम्
अऴिन्दु वन्दुहॊण् डाडलि ऩऩ्बुदाऩ्
इऴिन्दु ळाऱ्क्कु मिरामऱ्कु मॊत्तदे 1193

ऑळ् नुतल् तातै–उज्ज्वल ललाटवाली सीता के पिता; **तन् पॉऴिन्त कातल्**–अपने बढ़ते प्रेम के; **तॉटर**–उत्तरोत्तर बढ़ते; **पॉरुळ् ॲलाम् अऴिन्तु**–अपना सारा धन व्यय करके; **उवन्तु**–आनन्द करते हुए; **कॉण्टाटलिन्**–जो सत्कार करते रहे उस क्रम में; **अन्पु**–उनका प्रेम; **इऴिन्तु उळार्क्कुम्**–नीचे पद में रहनेवालों और; **इरामन् कु उम्**–श्रीराम के प्रति; **ऑत्ततु**–समान रहा; **इनि**–आगे; **ऑऴिन्ततु ॲन्**–(कहने से) छूट गया क्या (वर्णन)। ११९३

उज्ज्वल ललाटवाली सीताजी के पिता महाराजा जनक का प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। इसलिए उन्होंने अपना सारा धन व्यय करके अतिथियों का सत्कार किया। उस सत्कार के क्रम में नीचे पद में रहनेवालों और स्वयं श्रीराम में वे कोई भेद नहीं करते थे। फिर महाराजा जनक के प्रेम के सम्बन्ध में कहने के लिए छूटा क्या है ? । ११९३

20. कोलङ्गाण् पडलम् (शृंगार-सज्जा पटल)

देवियर् मरुङ्गु शूऴ विन्दिर निरुक्कै शेर्न्द
ओविय मुयिर्पॅट्र् ऱॅन्न वुवन्दवै यिरुन्द कालैत्
ताविल्वॅण् कविहैच् चॅङ्गोऱ् चनहनै यिनिदु नोक्कि
माविय नोक्कि नाळैक् कॉणर्हॅन वशिट्टन् शॊन्नान् 1194

इन्तिरन् इरुक्कै चेर्न्त–(सुधर्मा नाम की) इन्द्र सभा में बनी रही; **ओवियम्**–चित्र प्रतिमाएँ; **उयिर् पॅट्र् ॲन्न**–मानो जीवित हो गई हों, ऐसे; **उवन्त अवै**–आनन्ददायक सभा में; **तेवियर् मरुङ्कु चूऴ**–देवियों (रानियों) के पार्श्व में घेरे रहते; **इरुन्त कालै**–जब चक्रवर्ती विराजमान रहे, तब; **वचिट्टन्**–वसिष्ठजी ने; **ता इल्**–निर्मल; **वॅण् कविकै**–श्वेत छत्र; **चॅङ्कोल्**–राजदण्ड धर; **चनकनै**–महाराज जनक को; **इनितु नोक्कि**–स्नेह से देखकर; **मा इयल नोक्किनाळै**–श्रीलक्ष्मी सदृश रूप, गुणवाली सीताजी को (मृगनयनी को, आम की फाँक-सी आँखोंवाली, या बड़ी आँखोंवाली); **कॉणर्क ॲन**–लाने को कहो, यह; **चॊन्नान्**–कहा। ११९४

चक्रवर्ती दशरथ राजसभा में देवेन्द्र के समान विराजमान थे। उनकी रानियाँ, इन्द्रसभा की प्रतिमाएँ जीवित हो आयी हों, ऐसे उनको घेरे आसीन थीं। तब वसिष्ठजी ने निर्मल श्वेतछत्रधर (श्रेष्ठपालनकर्ता) और ऋजु राजदण्डधर (उत्तम शासक) जनक को देखकर आज्ञा दी कि श्रीलक्ष्मीदेवी सदृश सीताजी को लिवा लाने का प्रबन्ध करें।

[माइयल् नोक्किनाळ् का अर्थ— मृगनयनी, आम की फाँक-सी आँखोंवाली, या बड़ी आँखोंवाली भी किया जा सकता है।] । ११९४

उरैशॅयत् तॊऴुद कैय नुवन्दवुळ् ळत्तन् पॅण्णुक्
करैशियैत् तरुदि रॊण्डॅन् ऱायिऴै यवरै येवक्

करैशॅयऱ् करिय कादल् कडाविडक् कडिदु शॅन्ऱार्
पिरैशमॊत् तिनिय शॊल्लार् पेदैता दियरिऱ् चॊन्नार् 1195

उरैचॅय–(वसिष्ठजी के) कहने पर; तॊळुत कैयन्–अंजलिबद्ध हो; उवन्त उळ्ळत्तन्–आनन्दमन (जनक के); आय् इळैयवरै–सुरुचिपूर्ण आभरणधारिणी (चेरियों को देखकर); पॆण्णुक्कु अरॆचियै–स्त्रियों में रानी (सीता) को; ईण्टु तरुतिर्–यहाँ लिवा लाओ; ॲन्ऱु एव–यह आज्ञा देने पर; पिरॆचम् ऒत्तु–शहद से तुलकर; इनिय चॊल्लार्–मधुर बोलीवाली वे; करै चॅयऱ्कु अरिय–तट बनाने के लिए कठिन; कातल् कटाविट–प्यार के प्रेरित करते; कटितु चॆन्ऱार्–सवेग गईं; पेतै तातियरिल् चॊन्नार्–सीताजी की चेटियों से बात कही। ११९५

वसिष्ठजी के वैसी आज्ञा देने पर जनक ने अंजलि करके, अधिक आनन्द के साथ पास खड़ी जो रहीं उन उत्तम आभरणधारिणी चेरियों को आज्ञा दी कि जाकर स्त्रियों में रानी मान्य सीता को लिवा लाओ। शहद-सी मधुर बोलीवाली वे निस्सीम प्रेम के उत्साह के साथ शीघ्र गयीं और उन्होंने सीताजी की चेरियों को जनक की आज्ञा बतायी। ११९५

अमिऴ्मैत् तुणैहळ् कण्णुक् कणियॆन वमैक्कु मापोल्
उमिऴ्शुडरक् कलन्ग णङ्गै युरुविनै मऱैप्प दोरार्
अमिऴ्दिनैच् चुवैशॆय् दॆन्न वऴहिनुक् कऴहु शॆय्दार्
इमिऴ्दिरैप् परवै ञाल मेऴमै युडैत्तु मादो 1196

अमिऴ्–(आँखों को) छिपानेवाली; तुणै इमैकळ्–दो पलकें; कण्णुक्कु अणि ॲॆत–आँखों का अलंकार मानकर; अमैक्कुम् आ(ऱु) पोल्–प्रकृति ने बनाई हैं, ऐसे; उमिऴ् चुटर् कलत्कळ्–कांति छिटकानेवाले आभरण; नङ्कै उरुविनै–नायिका के रूप (-सौंदर्य) को; मऱैप्पतु–छिपाते हैं, यह; ओरार्–नहीं देखतीं; अमिऴ्तितै–अमृत को; चुवै चॆय्तन्न–और मधुर बनाया हो ऐसा; अऴकितुक्कु अऴकु चॆय्तार्–"सुन्दरता कहँ सुन्दर करई"; इमिऴ् तिरै परवै–गर्जनशील लहरों के सागर वाला; ञालम्–यह लोक; एऴैमै उटैत्तु–अज्ञता-भरा है (मातु ओ)। ११९६

(चेरियों ने सीताजी का शृंगार करना आरम्भ किया।) प्रकृति ने आँखों का अलंकार समझकर पलकें देकर आँखों को छिपा दिया है; सुन्दरता कम कर दी है। वैसे ही ये भी, काँतिपूर्ण आभरण सीताजी के प्राकृतिक रूपसौन्दर्य को छिपा लेते हैं, यह न जान सकीं। अमृत को और मधुर बनाने का प्रयास करनेवालों के समान उन्होंने सुन्दर को और सुन्दर बनाना चाहा। गरजती लहरों के सागर से वलयित भूमि भी कितनी अज्ञता भरी है! । ११९६

कण्णन्ऱन् निऱन्द नुळ्ळक् करुत्तिनै निऱैत्तु मीदिट्
टुण्णिन्ऱुङ् गॊडिह ळोडि युलहॆङ्गुम् बरन्ददन्न

वण्णत्तॅय् कून्दऱ् पार वळयत्तु मऴैयिऱ् ऱोन्ऱुम्
विण्णिन्ऱ मदियिन् मॅन्बूच् चिहऴिहैक् कोदै वेय्न्दार् 1197

कण्णन् तन् निऱम्–कण्णन (कमलाक्ष) का वर्ण; तन् उळ्ळम् करुत्तिनै–देवी के मन की चिन्ता भर में; निऱैत्तु–भरकर; उळ् निन्ऱुम् मीतु इट्टु–अन्दर से बाहर निकलकर; कॊटिकळ् ओटि–लताओं के रूप में चलकर; उलकु अङ्कुम् परन्तततु अन्न–लोक भर में फैल गया, ऐसा; वण्णम् चॆय्–रंग और रूप में श्रेष्ठ; कून्तल् पारम् वलयत्तु–केश-भार के जूड़ाओं में; मऴैयिल् तोन्ऱुम्–मेघ में प्रकट; विळ् निन्ऱ मतियिन्–(किरणें) बिखेरते रहे चन्द्र के समान; मॆन् पू–कोमल फूलों की; चिकऴिकै कोतै–'शिखळिका' नाम के गजरे को; वेय्नतार्–पहनाया। ११९७

लोकनेत्राधार, कण्णन, कमलाक्ष के (नीलवर्ण) रंग ने मानो सीताजी के मन में भरकर, वहाँ से बाहर छलक निकलकर लताओं के रूप में लोक भर में व्यापकर स्त्रियों के केश का रूप ले लिया —ऐसा दिखनेवाले (यानी केश के रूप में सर्वत्र व्याप्त सीताजी के मन में भरे रहे श्रीराम के रंग से शोभित) रूप और रंग के जूड़े में, मेघों पर दिखनेवाले चन्द्र के समान शिखळिका नामक फूल का गजरा उन्होंने पहनाया। ११९७

विदियदु वहैयाल् वानमीनिनम् पिऱैयै वन्दु
कदुवुरु हिन्ऱ दॅन्नक् कॊऴुन्दोळि कजलत् तूक्कि
मदियिनै नक्क मेह मरुङ्गुना वळैप्प दॅन्नप्
पॊदियिरु ळळह पन्दि पूट्टिय पूट्टि विट्टार् 1198

विति अतु वकैयाल्–विधि के विधान से; वानम् मीन् इनम् वन्तु–आकाश के नक्षत्र-समूह आकर; पिऱैयै कतुवुरुकिन्ऱतु–कलाचन्द्र को पकड़ रहे हों, ऐसे; कॊऴुन्तु–झूमर को; ऑळि कजल–कांति बिखेरने देते हुए; तूक्कि–भाल पर लटकाकर; मेकम्–मेघ; मतियिनै नक्क–चन्द्र को चाटने के लिए; मरुङ्कु–उसके ऊपर; ना वळैप्पतु अन्न–जिह्वा को निकाल घुमाया हो, ऐसा; इरुळ् पॊति–अन्धकार भरे (काले); अळकम् पन्ति–सामने के बालों की राशि में; पूट्टिय–पहनाने योग्य आभरण; पूट्टि विट्टार्–पहना दिये। ११९८

उन्होंने भाल पर झूमर पहनाया। वह ऐसा लगता था, मानो विधि के विशेष विधान से नक्षत्र आकर चन्द्र को पकड़ रहे हों। और सिर के सामने के भाग पर अन्य आभरण पहनाये जिनको देखने पर यह भ्रम होता था कि मेघ चन्द्र को चाटने के लिए जीभ निकाल रहा हो। ११९८

वॆळ्ळत्तिन् शटिलत् तान्ऱन् वॆञ्जिलै यिऱुत्त वीरन्
तळ्ळत्तन् नावि शोरत् तनिप्पॆरुम् बॆण्मै तन्नै
अळ्ळिक्कॊण् डहन्ऱ काळै यल्लन्कॊ लाङ्गॊ लॆन्बाळ्
उळ्ळत्ति नूश लाडुङ् गुळैनिळ लुमिऴ विट्टार् 1199

वॆळ्ळत्तिन् चटिलत्तान् तन्–जल (गंगा)-धर जटाजूट वाले (शिव) के; वॆम् चिलै–भयंकर धनु को; इऱुत्त वीरन्–(जिन्होंने) तोड़ा, (वे) वीर; तन् आवि तळ्ळ–अपने (सीताजी के) प्राणों को दोलायमान करके; चोर–(उनको) क्लेश देकर; तनि पॆरु पॆण्मै तन्नै–उनके श्रेष्ठ स्त्री-सहज संयम को; अळ्ळिक् कॊण्टु अकन्ऱ–लूट ले चले जो; काळै अल्लन् कॊल्–पुरुष ऋषभ नहीं हैं; आम् कॊल्–वही क्या; ॲन्पाळ्–(संशय से) कहनेवाली के; उळ्ळत्तिन्–मन के समान; ऊचल् आटुम्–झूलनेवाले; कुऴै–कुण्डलों को; निऴल् उमिऴ–ज्योति बिखेरने देते हुए; इट्टार्–पहनाया। ११६६

अपनी जटाजूट में जो जल (गंगा) को धारण कर रहे हैं उनके धनु के भंजक श्रीराम क्या वही वीर कुमार हैं जो उस दिन मेरे प्राणों को खतरे में डालकर, मुझे अधिक क्लेश देकर मेरे स्त्रीसहज संयम को भी हर ले गये थे ? वही होंगे ? या नहीं ? इस तरह सीताजी का मन परस्पर विरोधी मान्यताओं के बीच झूल रहा था। ऐसे ही झूलनेवाले कुण्डलों को चेरियों ने उनके कानों में पहनाया। ११९९

कोन̱णि शङ्गम् वन्दु कुडियिरुन् दन̱ैय कण्डत्
तन̱िमिल् कलन्ग डम्मि लियैवन̱ वणिदल् शॆय्दार्
मान̱णि नोक्कि नार्तम् मङ्गलक् कऴुत्तुक् कॆल्लाम्
तान̱णि यॆन्̱ऱ पोदु तन̱क्कणि यादु मादो 1200

कोन् अणि चङ्कम्–जगन्नायक श्रीविष्णु के हाथ में शोभित (पाञ्चजन्य) शंख; वन्तु–आकर; कुटियिरुन्त अन̱ैय–बसा हो, ऐसा; कण्टत्तु–कण्ठ में; ईन̱म् इल् कलन्कळ् तम्मिल्–कोई कमीहीन आभरणों में; इयैवन̱–जो फबते हैं उनको; अणितल् चॆय्तार्–पहनाया; मान् अणि नोक्किनार् तम्–मृगलोचनी स्त्रियों के; मङ्कलम् कऴुत्तुक्कु–मंगलसूत्र वाले कण्ठों; ॲल्लाम्–सभी के लिए; तान् अणि ॲन्̱ऱ पोतु–स्वयं जो शृंगार हैं, तो; तन̱क्कु अणि यातु–उनके लिए शृंगार क्या हो। १२००

जगन्नाथ श्रीविष्णु के हाथ को भूषित करनेवाले पाँचजन्य नाम के शंख ने आकर इनके कंठ का स्थान ले लिया है, ऐसा मान्य शंखसम कण्ठ-वाली सीताजी थीं। उसमें श्रेष्ठ आभरणों से सर्वश्रेष्ठ और युक्त आभरणों को चुनकर चेरियों ने पहना दिया। श्रीलक्ष्मी देवी स्वयं सौभाग्यवती मृगनयनियों (स्त्रियों) का कंठाभरण मानी जाती हैं। उनके मंगलसूत्र में श्रीलक्ष्मी देवी का रूपांकित स्वर्णपदक बाँधा जाता है। ऐसा उनके कण्ठ का आभरण कौन हो सकता है ? । १२००

कोणिला वान̱ मीन्̱ग ळियैवन̱ कोत्त दॆन्̱गो
वाणिला वयङ्गु शॆव्वि वळर्पिऱै वहिर्न्द दॆन्̱गो
नाणिला नहैयि न̱िन्̱ऱोर् नळिर्निलात् तवऴ्न्द दॆन्̱गो
पूणिला मुलैमे लार मुत्तयान् पुहल्व दॆन्̱गो 1201

पूण् निलावुम् मुलै मेल्–आभूषणभूषित स्तनों पर के; आरम् मुत्तै–मोतियों के हार को; वानम् मीन्कळ्–आकाश के नक्षत्र; कोण् इला इयैवन–भेदरहित (एक सम) जो युक्त हों उनको; कोत्तनु अँन्को–गूँथा है, कहूँ; वाळ् निला वयङ्कु–बहुत कांति देनेवाले; चॅव्वि–सुन्दर; वळर् पिरै–शुक्लपक्ष के चन्द्र को; वकिर्न्तनु अँन्को–दो भागों में विभक्त कर रखा है, कहूँ; नाण् निलावु–व्रीडायुक्त; नकैयिन् निन्ऱु–(देवी के) मन्दहास से; ओर् नळिर् निला–एक शीतल ज्योति; तवळ्न्तनु अँन्को–फैली, कहूँ; यान् अँन् पुकल्वतु–मैं क्या कहूँ। १२०१

उस मुक्ताहार को जो उनके स्तनों पर शोभायमान था, क्या कहा जाय? उन नक्षत्रों को जो समरूप और समशोभित थे गूँथकर बनाया गया हार कहा जाय? शुक्लपक्ष के चन्द्र को दो भागों में विभक्त कर बनाया गया, कहा जाय? या स्वयं सीताजी के व्रीडा सहित मन्दहास से एक शीतल किरणराशि निकलकर वक्ष पर शोभित रही —यह कहा जाय? कवि कहते हैं— मैं क्या कहूँ? । १२०१

मॉय्ह्ॉळ्शी ऱडियैच् चेर्न्द मुळरिक्कुञ् जॅम्मै यीन्द
तैयला ळमिऴ्द मेनित् तयङ्गॉळि तऴुविक् कॉऴ्ळ
वॅय्यपूण् मुलैयिऱ् चेर्न्द वॅण्मुत्तञ् जिवन्द वॅन्ऱाल्
शॅय्यवर्च् चेर्न्दु ळारुञ् जॅय्यरायत् तिहऴ्व रन्ऱे 1202

मॉय् कॉळ्–गौरव युक्त; चीऱटियैच् चेर्न्त–लघुचरणों से मिले; मुळरिक्कुम्–कमल को भी; चॅम्मै ईन्त–ललाई जिन्होंने प्रदान की; तैयलाळ्–उन श्रीलक्ष्मी (सीता) देवी के; अमिऴ्तम् मेनि–सुधा-सम शरीर की; तयङ्कु ऑळि–दीप्त शोभा के; तऴुविक्कॉळ्ळ–लग जाने से; वॅय्य–चाहनीय; पूण्–आभरणभूषित; मुलैयिल् चेर्न्त–स्तनों पर पड़े; वॅण् मुत्तम्–श्वेत मोती भी; चिवन्त अँन्ऱाल्–लाल हो गये तो; चॅय्यवर्–साधु लोगों के साथ; चेर्न्तु उळ्ळारुम्–मिलकर रहनेवाले भी; चॅय्यर् आय्–श्रेष्ठगुणवाले बनकर; तिकऴ्वर्–रहेंगे; अन्ऱे–न। १२०२

कमल को श्रीलक्ष्मी ने ही अपने पैर की ललाई प्रदान की क्योंकि कमल उनके चरणों से लग गया था। ऐसी देवी के शरीर की ललाई ने ही उनके आभरणालंकृत स्तनों पर लगे श्वेत मोतियों को भी लाल बना दिया। इससे यह कथन साबित हो जाता है कि जो उत्तम गुणों के साधुओं से मिले रहते हैं वे भी उत्तम गुणोंवाले हो जाते हैं। १२०२

कॉमैयुऱ वीङ्गुहिन्ऱ कुलिहच्चॅप् पनैय कॉङ्गैच्
चुमैयुऱ नुडङ्गुहिन्ऱ नुशुप्पिनाळ् पूण्पॅय् तोळुक्
किमैयुऱ विमैक्कुञ् जॅङ्गे ऴिन्मणि मुत्ति नोडुम्
अमैयिडै यमैव दुण्डा माहिन्ऱॅप् पाहु मन्ऱे 1203

कॉमै उऱ–पुष्टियुक्त; वीङ्कुकिन्ऱ–फूल उठे; कुलिकम् चॅप्पु अनैय–इंगुरौटी (या इंगुर के बने कलश) सम; कॉङ्कै–स्तनों के; चुमै उऱ–भार के लगने से;

नुटङ्कुकिन्र–लचकनेवाली; नुचुप्पिन्राळ्–कमर से शोभित देवी के; पूण् पॅय् तोळुक्कु–आभरणभूषित भुजाओं की; इमै उऱ–आँखें चौंधिया जायें, ऐसा; इमैक्कुम्–चमकनेवाले; चॅम् केळ्र इतम् मणि–लाल रंग के पद्मराग रत्न; मुत्तिन्तोटुम्–मोतियों के साथ; अमै इटै–बाँस पर; अमैवतु उण्टु आम् आकिल्–शोभित मिल सकें तो; ओप्पु आकुम्–उपमा बन सकता है (वह बाँस); (अन्ऱु–ए)। १२०३

पुष्ट, प्रवृद्ध और इंगुरौटी-सम सुन्दर स्तनों के बोझ से आक्रांत होकर लचकनेवाली कमर थी, देवी की। उनकी भुजाओं की तुलना किससे की जाय ? अगर ऐसा बाँस मिले जिस पर, आँखें चौंधिया जायँ, ऐसे चमकदार लाल रंग के पद्मराग के साथ मोतियों का अलंकार हुआ है तो उस बाँस के साथ उनकी भुजाओं की तुलना की जा सकेगी। (वह तुलनाहीन है।)। १२०३

तळैयविऴ् कोदैयोदिच् चानहि तळिर्क्कै यॅन्नुम्
मुळरिह ळिरामन् चॅङ्गै मुऱैमैयिऱ् ऱोण्ड नोऱ्ऱ
अळियन कङ्गुऱ् पोदुङ् गुवियल वाहु मॅन्ऱाङ्
गिळवॅयिल् शुऱ्ऱि यन्न वॅरिमणिक् कडह मिट्टार् 1204

तळै अविऴ्–विकासशील; कोतै ओति–पुष्पों की माला से अलंकृत केशवाली; चानकि–जानकीजी के; तळिर् कै अॅन्नुम्–पल्लवहस्तरूपी; मुळरिकळ्–कमलपुष्पों ने; इरामन् चॅम् कै–श्रीराम के उत्तम हाथों से; मुऱैमियिन्–(वेदोक्त) क्रम से; तोण्ट–गृहीत होने के लिए; नोऱ्ऱ–तपस्या की है; कङ्कुल् पोतुम्–रात को भी; कुवियल आकुम्–उन्मीलित नहीं होनेवाले; अळियत–(इसलिए) सुरक्षायोग्य हैं; ॲन्ऱु–कहकर; आङ्कु–उन में; इळवॅयिल् चुऱ्ऱियतु अन्न–बालधूप घेर गई हो ऐसा; ॲरि मणि कटकम्–दीप्तिमान रत्नकंकण; इट्टार्–पहनाये। १२०४

विकासशील पुष्पों की माला सीताजी के केश को अलंकृत कर रही थी। चेरियों ने उनके पल्लवसम सुन्दर हाथों में कंकण पहनाये। 'इन हस्त-कमलों ने श्रीरामचन्द्र प्रभु के उत्तम हाथों के पाणिग्रहण का भाग्य पाने के योग्य तपस्या की है। ये कमल रात को भी बन्द नहीं होनेवाले हैं। इसलिए इनको खूब सुरक्षित करना आवश्यक है।' ऐसा सोचकर चेरियों ने बालातप के समान मनोरम कांतिवाले कंकण पहनाये। (कंकण अमंगल-परिहार या मंगलसाधन का चिह्न है।)। १२०४

चिल्लिय लोदि कॊङ्गैत् तिरण्मणिक् कनहच् चॅप्पिल्
वल्लियु मनङ्गन् विल्लु मान्मदच् चान्दिऱ् ऱीट्टिप्
पल्लिय नॅरियिऱ् पार्क्कुम् बरम्बॊरु ळॅन्न यार्क्कुम्
इल्लैयुण् डॅन्न निन्ऱ विडैयिनुक् किडुक्कण् शॅय्दार् 1205

चिल् इयल् ओति–कुछ विभिन्न प्रकार से अलंकार-योग्य केशवाली सीताजी के; कॊङ्कै–स्तनरूपी; मणि–मणि जड़ित; तिरळ्–पुष्ट; कनकम् चॅप्पिल्–कनक कलश पर; वल्लियुम्–कल्पलता का चित्र; अनङ्कन् विल्लुम्–अनंग का

धनुष; मान् मतम् चान्तिल्–मृगमद लेप से मिश्रित चन्दन से; तीट्टि–लिखकर; पल् इयल् नॆरियिऩ्–बहुप्रकार रहनेवाले मतों द्वारा; पार्क्कुम्–अन्वेषित; परम् पॊरुळ् ऎऩ्ऩ–परब्रह्म के समान; यार्क्कुम्–सब के लिए; इल्लै उण्टु–नहीं, हां, कहलाते हुए; निऩ्ऱ–(दृष्टिगोचर नहीं होते हुए) रहनेवाली; इटैयितुक्कु–कमर को; इटुक्कण् चॆय्तार्–कष्ट दिलाया। १२०५

देवी विभिन्न प्रकार से (जैसे, गाँठ, चूड़ा, वेणी आदि के रूप में) अलंकृत करने योग्य केशवाली थीं। उनके एक-एक मणि (चूचुक) से अलंकृत कनककलश के समान स्तनों पर चेरियों ने कस्तूरी-मिश्रित चंदन के चेप से कल्पलता, कामधनु (ईख) आदि की चित्रकारी बनायी। इससे उन्होंने उनकी कमर को कष्ट दिलाया। वह कमर सभी धर्मों में अन्वेषण का विषय बनकर अनुमान द्वारा "हैं" प्रत्यक्ष रूप से "नहीं" का संशय उत्पन्न करते हुए अदृश्य रहनेवाले परब्रह्म के समान थी। (केश पाँच तरह से अलंकृत किया जा सकता है। अतः उसे पंचालंकार केश भी कहा जाता है।)। १२०५

निऱञ्जॆय्को शिकनुण् डूशु नीविनी वाद वल्हुऱ्
पुऱञ्जॆय्मे हलयु मारत् तारहैच् चुमैयुम् बूट्टित्
तिऱञ्जॆय्हा शोऩ्ऱ शोदि पेदैशे यॊळियिऱ् ऱीऱ्ऩ्द
कऱङ्गुपु तिरिय याऱुङ् गण्वळुक् कुऱ्ऱु निऩ्ऱार् 1206

निऱम् चॆय्–(मनोरम) रंगवाले; नुण् कोचिकम् तूचु–महीन कौशेय वस्त्र के; नीवि नीवात–नीवि (कटि वस्त्रबंध) से अलग न होनेवाली; अल्कुल् पुऱम् चॆय्–कटिप्रदेश को अलंकृत करनेवाली; मेकलैयुम्–मेखला को; आरम्–मोती के; तारकै चुमैयुम्–"तारकभार" नामक आभरण को; पूट्टि–पहनाकर; तिऱम् चॆय्–अनेक प्रकार के; काचू ईऩ्ऱ–उनके रत्नों से जनित; चोति–प्रकाश; पेतै चॆय् ऒळियिऩ्–बाला (सीताजी) की ललाई से; तीऱ्ऩ्त–विपरीत; कऱङ्कुपु तिरिय–पार्श्व में छिटका, इसलिए; याऱुम्–सभी; कण् वळुक्कु उऱ्ऱु–(आँखें) चौंधियाकर; निऩ्ऱार्–खड़ी रही। १२०६

चेरियों ने सुचारु रंग का कौशेय वस्त्र पहनाया। उसकी नीवि से बाँधकर मेखला और मोती के "तारकभार" नामक आभरण से कमर को अलंकृत किया। उन आभरणों के रत्नों से जो कांति छूट रही थी वह सीताजी की देह-कांति से भिन्न थी। सब कांतियाँ इस तरह बिखरीं कि पास खड़ी रहनेवालियों की आँखें चौंधिया गयीं। १२०६

ऐयवा यनिच्चप् पोदि ऩदिहमु नॊय्य वाडल्
पॆयर वल्हु लाडऩ् पञ्जिऩ्ऱिप् पळुत्त पादच्
चॆय्यपूङ् गमल मऩ्ऩच् चेर्त्तिय चिलम्बु शाल
नॊय्यवे नॊय्य वॆऩ्ऱो पलपड नुवल्व दम्मा 1207

आटल्–फन फैलाकर नाचनेवाले; अरवु पै अलकुलाळ् तन्–सर्प के फन सरीखे वरांगवाली के; ऐय आय्–सुन्दर बनकर; अनिच्चम् पोतिन्–'अनिच्च' नामक (लजालु) पुष्प से बढ़कर; अतिकमुम् नॉय्य–अधिक कोमल; पञ्चु इन्रि पळ्ळुत्त–महावर के बिना ही लाल; पातम्–चरणरूपी; चॅय्य पू कमलम्–लाल कमलपुष्पों पर; मन्न चेर्त्तिय–फबनेवाली रीति से पहनाये गये; चिलम्पु–नूपुर; पल पट नुवल्वतु–विविध शब्द जो करते हैं; चाल नॉय्यवे नॉय्यवे–बहुत कोमल हैं कोमल; ॲन्रो–ऐसा क्या; अम्मा–री माँ। १२०७

सीताजी के चरण-कमलों में चेरियों ने नूपुर पहनाये। सर्प के फैलाये गये फन के समान जिनका वरांग था उन सीता के चरण 'अनिच्च' नाम के फूल से भी, जो सूँघने पर मुरझा जाता है, कोमल थे। और वे महावर लगे बिना ही लाल थे। उन चरणों के नूपुर जब नाद करते थे तब ऐसा लगता था, मानो वे यह कह रहे हों कि ये चरण अवश्य कोमल और छोटे हैं, कोमल और छोटे हैं। १२०७

नञ्जिनो डमुदङ् गूट्टि नाट्टङ्ग ळान वॆन्नच्
चॆञ्जॆवे नीण्डु मीण्डु शेयरि शिदरित् तीय
वञ्जमुङ् गळवु मिन्रि मळैयॆन मदर्त्त कण्गळ्
अञ्जन निऱमो वण्णल् वण्णमो वरिद ऱेऱ्ऱाम् 1208

नञ्चिनोटु अमुतम् कूट्टि–विष के साथ अमृत मिलकर; नाट्टङ्कळ् आन–आँखें बनीं; अन्न–ऐसी; चॆञ्चॆवे–सीधी; नीण्टु–लम्बी (दूर) जाकर; मीण्टु–लौटकर; चेय् अरि चितरि–लाल डोरों से युक्त होकर; तीय वञ्चमुम्–बुरा कपट; कळवुम्–और चोरी के; इन्रि–विना; मळै ॲन–मेघ-सम (शीतल); मतर्त्त–पुष्ट; कण्कळ्–आँखों का रंग; अञ्चनम् निऱमो–अंचन का रंग है; अण्णल् वण्णमो–प्रभु श्रीराम का रंग है; अरितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सके। १२०८

सीताजी की आँखें लम्बी थीं और कान तक गयी थीं। वे विष और अमृत दोनो, की बनी-सी लगती थीं। (वे दोनो श्रीलक्ष्मी के साथ सागर से निकले थे। आँख का सफेद अंश अमृत-सा था और काला अंश विष के समान था।) उन आँखों में लाल डोरे पाये जाते थे। उनमें न कपट था न चोरी। वे पुष्ट और मनोरम थीं। उनका काला रंग कहाँ से आया? अंजन जो लगा हुआ था उससे मिल गया? या श्रीराम का रूप उनमें भरा था, उनका रंग उन आँखों में दिखता था? हम जान नहीं पाते। १२०८

मॊय्वळर् कुवळै पूत्त मुळरियिन् मुळैत्त मुन्नाळ्
मॆय्वळर् मदियि नाप्पण् मीनुण्डे लन्नैय देय्प्प
वॆयह मडन्दै मार्क्कु नाहरको दयर्क्कुम् वानत्
तॆय्वमङ् गयर्क्कु मेलान् दिलकत्तैत् तिलकञ् जेर्त्तार् 1209

मॉय् वळर्–(दल) लसे और विकसित; कुवलै पूत्त–कुवलय जिसपर खिले हों; मुळरियिन्–(उस) कमलपुष्प पर; मुळैत्त–उदित; मून्ऱु नाळ् मॅय् वळर्–तीन दिन के बढ़े हुए; मतियिन् नाप्पण्–(तीज के) चाँद में; मीन्–नक्षत्र; उण्टेल्–हो तो; अनैयतु एय्प्प–उसके समान; वैयकम् मटन्तै मार्क्कुम्–भूलोक की स्त्रियों से; नाकर् कोतैयर्क्कुम्–नाग-(पाताल) लोक की नारियों से; वानम्–सुरलोक की; तैय्व मङ्कैयर्क्कुम्–देव स्त्रियों से; मेल् आम्–बढ़कर श्रेष्ठ; तिलकत्तै–तिलक समान देवी को; तिलकम् चेर्त्तार्–तिलक लगाया। १२०९

एक कल्पित चित्र है। दो पुष्ट कुवलय एक कमल में खिले हैं। उस कमल में तीज का चाँद उदित है। उस चाँद में एक तारा है। ऐसा कोई कमल मिले वह सीताजी के श्रीमुखमण्डल की उपमा बन सकता है। (कमल मुख है; कुवलय आँखें; चन्द्र ललाट है और तिलक तारा है।) ऐसे मुखवाली सीताजी के, जो भूलोक, देवलोक और पाताललोक की वासिनियों की तिलक थीं, भाल में तिलक लगाया गया। १२०९

शिन्नप्पूच् चॅरुहु मॅन्बूच् चेहरप् पोदु कोदिल्
कन्नप्पूक् कज़ल मीदु कऱ्पहक् कॉऴुन्दि यावुम्
मिन्नप्पूञ् जुरुम्बुम् वण्डु मिजिऱुन्दुम् बिहळुम् बम्बप्
पुन्नैप्पून् दादु मानुम् पॊऱ्पॊडि यप्पि विट्टार् 1210

चिन्नम् पू–छुट्टे फूल; चॅरुकुम् मॅन् पू–सिर पर खोंसने के कोमल फूल; चेकरम् पोतु–चोटी पर रखने के फूल; कोतु इल्–निर्मल; कन्नम् पू–कर्णमूल में रखने के पुष्प; कज़ल्–शोभित रहे; मीतु–ऊपर; कऱ्पकम् कॊऴुन्तु यावुम्–कल्पपल्लव-सम सभी पल्लव; मिन्न–भासमान रहे, ऐसा; चुरुम्पुम् वण्टुम् मिजिऱुम् तुम्पिकळुम्–चारों तरह के भौंरे; पम्प–मँडरायें; पुन्नै पू तातु मानुम्–कदम्ब के फूल के मकरन्द के समान; पॊन् पॊटि–(अंगराग) स्वर्णचूर्ण; अप्पिविट्टार्–लगा दिया। १२१०

चेरियों ने सीताजी का पुष्पों से श्रृंगार किया। छुट्टे फूल, केशों में खोंसनेवाले फूल, चोटी पर पहनाया जानेवाला फूल, निर्मल कर्णमूल पर रखनेवाले फूल इनसे अलंकृत कर पल्लवों से भी सजाया। उनके ऊपर सब तरह के भौंरे मँडराने लगे। इसके बाद उन्होंने कदम्ब के सुमनों के मकरन्द के समान स्वर्णरंग के अंगराग से उबटन कराया। (ये फूल प्राकृतिक फूल भी हो सकते थे या स्वर्ण के बने फूलों के रूपवाले भी। पल्लवों की भी वही बात है।)। १२१०

नॅय्वळर् विळक्क माट्टि नीरॉडु पूवुन् दूवित्
तॅय्वमुम् परावि वेद पारकर्क् कोन्दु शॅम्बॊन्
ऐयवि यरुहु शेर्त्ति याय्निऱ वयिनि शुऱ्ऱिक्
कैवळर् मयिल नाळै वलञ्जॅय्दु काप्पु मिट्टार् 1211

नॅय् वळर् विळक्कम् माट्टि–घी डालकर दीप जलाकर; नीरॊटु पूवुम् तूवि–जल और फूल (बलि के रूप में) छिड़काकर; तॅय्वमुम् परावि–इष्टदेवों की पूजा

करके; वेत पारकर्क्कु–वेद पारंगतों को; चॅम् पॉन् ईन्तु–स्वर्णदान करके; ऐयवि
मङ्कु चेर्त्ति–पीली सरसों और दूर्वा घास को सिर पर डालकर; आय् निऱम्
प्रयिऱ्–सुन्दर लाल रंग के अन्न-मिश्रित जल का नीराजन करके; कै वळर् मयिल्
अन्नाळै–अपने हाथों पालित मोर-सी छटावाली सीता को; वलम् चॅय्तु–परिक्रमा
करके; काप्पुम् इट्टार्–(धाइयों ने उनके भाल में) रक्षण का टीका लगाया। १२११

इतना होने के बाद धाइयों ने कुदृष्टि से बचाने के लिए कुछ 'दृष्टि-परिहार' के कार्य किये। घी का दिया जलाया, फूलों के साथ जल छिड़का। इष्टदेवों की पूजा करायी गयी और वेदपारगों को स्वर्ण का दान किया गया। पीली सरसों और दूब की घास को सीताजी के सिर पर डाला। एक थाली में लाल गरं के अन्न के साथ जल लेकर आरती उतारी गयी। फिर अपने हाथों जो मोर के समान पली थीं उन सीता के भाल में धाइयों ने आरती के जल की बिन्दु अमंगल-परिहारार्थ लगायी। १२११

कञ्जत्तुक् कळिक्कु मिन्ऱेन् कवर्न्दुणुम् वण्डु पोल
अञ्जॊऱ्कळ् किळ्ळैक् कॅल्ला मरुळुवा ळऴहै मान्दित्
तञ्जॊऱ्कळ् कुळऱित् तत्तन् दहैतडु माऱि निन्ऱार्
मञ्जर्क्कु माद रार्क्कु मनमॊन्ब दॊन्ऱे यन्ऱो 1212

किळ्ळैक्कु ॲल्लाम्–सब तोतों को; अम् चॊऱ्कळ् अरुळुवाळ्–मधुर बोली (सिखा) देनेवाली; अऴकै–(देवी की) सुन्दरता को; कञ्चत्तु–कंज में; कळिक्कुम् इन् तेन्–मस्ती देनेवाले मधुर शहद को; कवर्न्तु उणुम्–लूटकर खानेवाले; वण्टु पोल–भ्रमरों के समान; मान्ति–(आँखों से) मानो पीकर; तम् चॊऱ्कळ्–वचन; कुळऱि–अस्पष्ट करके; तम् तम् तकै तटुमाऱि–अपनी-अपनी स्थिति भुलाकर; निन्ऱार्–(स्त्रियाँ) खड़ी रहीं; मञ्चर्क्कुम्–पुरुषों के लिए और; मातरार्क्कुम्–स्त्रियों के लिए; मतम् ॲन्पतु–मन का करण; ऒन्ऱे अन्ऱो–एक ही (सा) है न। १२१२

देवी का शृंगार करके धाइयाँ और चेरियाँ उनके दिव्यसौन्दर्य को देखकर एकदम मुग्ध हो गयीं। शुकों को मधुर बोली सिखानेवाली, यानी शुक से बढ़कर मधुर बोली बोलनेवाली देवी के रूप-सौन्दर्य को वे कमल के शहद को चूसनेवाले भ्रमरों के समान अपनी आँखों से मानो पीने लगीं। तब एक तरह का मोह और मस्ती उत्पन्न हो गयी। इसलिए बोलने में अस्थिरता और अस्पष्टता आ गयी। हम स्त्री हैं, यह भी भूल गयीं। हाँ, पुरुष हों, चाहे स्त्री, दोनो का मन तो एक ही बनावट या प्रकार का है न ? । १२१२

इऴैहुला मुलैयि नाळै यिडैयुवा मदियि नोक्कि
मऴैहुला मोदि नल्लार् कळिमयक् कुऱ्ऱु निन्ऱार्
उऴैहुला नयनत् तार्माट् टॊन्ऱॊन्ऱे विरुम्बर् कॊत्त
दऴैहुला मॊरुङ्गे कण्डाल् यावरे याऱ्ऱ वल्लार् 1213

मऴै कुलाम् ओति—मेघ-सम केशवाली; नल्लार्—स्त्रियाँ; इऴै कुलाम् मुलैयिऩाळै—आभरण को शोभा देनेवाले उरोजोंवाली को; उवा मतियिऩ् नोक्कि—पूर्णचन्द्र सदृश देखकर; कळि मयक्कु उऱ्ऱु निऩ्ऱार्—मोदमुग्ध खड़ी रहीं; उऴै कुलाम् नयत्तताऱ् माट्टु—मृगनयनी स्त्रियों में; ऑऩ्ऱु ऑऩ्ऱे—एक न एक अंग ही; विरुम्पऱ्कु ऑत्ततु—आकर्षक रहता है; अऴकु ऎलाम्—सारा सौंदर्य; ऑरुङ्के कण्टाळ्—एक ही स्थान में दिखाई दे तो; आऱ्ऱ वल्लार् यावरे—अपने को सम्हाल सकनेवाले कौन हैं। १२१३

मेघसम केशवाली सब उनको, पूर्णचन्द्र के समान, आभरण-शोभित स्तनोंवाली देवी को देखते हुये, मुग्ध और चकित खड़ी रहीं। मृग-नयनियों में एक-एक का एक अंग सुन्दर होता है। जिस एक ही स्त्री के सारे अंग सुन्दर हैं, उस सर्वांगसुन्दरी को देखकर किसका मन वश में रहेगा ? । १२१३

शङ्गङ्गै युडैम यालुम् तामरैक् कण्ण दालुम्
ऎङ्गॆङ्गुम् बरन्दु पल्वे ऱुळ्ळत्तु मॆऴुदिऱ् ऱॆऩ्ऩ
अङ्गङ्गे तोऩ्ऱ लालु मरुन्ददि यनैय कऱ्पिऩ्
नङ्गयु नम्बि यॊत्ता णामिनिप् पुहल्व दॆऩ्नो 1214

चङ्कु अम् कै उटैमैयालुम्—शंख (पाञ्चजन्य) हाथ में रखने से; कण् अतु तामरै आलुम्—आँखें कमल (सी) हैं, इसलिए; ऎङ्कु ऎङ्कुम्—सब कहीं; परन्तु—व्यापकर; पल् वेऱु उळ्ळत्तुम्—अत्यधिक लोगों के मनों में; ऎऴुतिऱ्ऱु—(रूप) लिखा गया; ऎऩ्ऩ—सा; अङ्कु अङ्के तोऩ्ऱलालुम्—यत्रतत्र दिखाई देने से; अरुन्तति अनैय कऱ्पिऩ्—अरुंधती के समान पातिव्रत्यवाली; नङ्कैयुम्—देवी सीताजी; नम्पि—प्रभु (नायक) के; ऑत्ताळ्—समान बनीं; नाम् इऩि पुकल्वतु ऎऩ्ऩो—आगे हमें कहने को क्या है। १२१४

श्रीराम के हाथ में (विष्णुदेव के होने के नाते) पाँचजन्य नामक शंख है; सीताजी के हाथों में शंख (कंकण) हैं; आँखें श्रीराम की कमल के समान हैं। सीताजी (लक्ष्मीदेवी होने के नाते) भी कमल पर रहने वाली हैं। दोनों सर्वत्र व्याप्त हैं। अनेक लोगों के मनों में उनकी कल्पना के अनुसार रूपों में दिखाई देते हैं। इसलिए अरुंधतीतुल्य सीताजी पुरुषों में श्रेष्ठ नायक श्रीराम के समान ही रहीं। इससे बढ़कर सीताजी की महिमा कैसे कही जाय ? । १२१४

परन्दमे हलयुङ् गोत्त पादशा लहमु नाहच्
चिरज्जॆय्न् बुरमुम् वण्डुम् शिलम्बॊडु शिलम्बि यार्प्पप्
पुरन्दरऩ् ऱुनक्कुऱ् ऱाळै यरम्बयर् पुडैशूऴ्न् दॆऩ्ऩ
वरम्बऱु मऴलैत् तीज्जॊऩ् मडन्दयर् तॊडर्न्दु शूऴ्न्दार् 1215

वरम्पु अऱु—असंख्य; तीम् मऴलै चॊल् मटन्तैयर्—मधुर तुतली बोली बोलनेवाली

स्त्रियाँ; परन्त मेकलैयुम्–(कमर में) ढीली पहनी हुई मेखला; कोत्त–(सुन्दर रूप से) गुँथी हुई; पातचालकमुम्–"पाद जाल" नामक पैंजनी; नाकम् चिरम् चेय् नूपुरमुम्–सर्पसिर-सम सिरेवाला नूपुर; चिलम्पॉटु–पायलें; वण्टुम्–और हाथ के कंकण (या भ्रमर); चिलम्पि आर्प्प–अधिक बज उठे; तॉटर्न्तु–साथ लगे; पुरन्तरन् ततक्कु उऱ्ऱाळै–इन्द्र की प्यारी (शची देवी) को; अरम्पैयर् पुटै चूळ्न्तु अॅन्न–अप्सराएँ घेरकर आती हों, ऐसा; चूळ्न्तार्–घेर गईं। १२१५

सभी स्त्रियाँ सीताजी को घेरकर आयीं। वे सब मधुर रूप से तुतलाती बोलनेवालियाँ थीं। उनकी कटि में मेखलाएँ और पैरों में पादजाल, सर्पसिर के समान सिरेवाले नूपुर और पायलें आदि विविध आभरण झनझना रहे थे। वे इन्द्र की देवी शची को अप्सराएँ घेरकर आयी हों, ऐसा सीताजी के चारों ओर आकर खड़ी हुयीं। १२१५

शिन्दोंडु कुऱळुङ् गूनुञ् जिलदियर् कुळामुन् दॅऱ्ऱि
वन्दडि वणङ्गिच् चुऱ्ऱ मणियणि विदान नोळल्
इन्दुविन् कॉळुन्दु विण्मी निनत्तोडुम् वरुवदॅन्न
नन्दलिल् विळक्क मन्न नङ्गयु नडक्क लुऱ्ऱाळ् 1216

चिन्तॉटु–ठिंगनियाँ; कुऱळुम्–और बौनियाँ; कूनुम्–कुब्जाएँ; चिलतियर् कुळामुम्–चेरियों के समूह; तॆऱ्ऱि वन्तु–बहुत निकट आकर; अटि वणङ्कि–पैरों पर विनत होकर; चुऱ्ऱ–घेरकर आईं; मणि अणि–रत्नालंकृत; वितानम् नीळल्–वितान के नीचे; इन्तुविन् कॉळुन्तु–बालचन्द्र; विण्मीन् इनत्तुटन्–आकाश के ताराकुल के साथ; वरुवतु अॅन्न–आ रहा हो, ऐसा; नन्तल् इल्–निर्मल; विळक्कम् अन्न–दीप के समान; नङ्कैयुम्–नायिका भी; नटक्कल् उऱ्ऱाळ्–चलने लगीं। १२१६

उनमें ठिंगनी स्त्रियाँ (तीन फुट की), (दो फुट की) बौनी स्त्रियाँ, और कुब्जाएँ थीं। चेरियों का समूह था। वे सीताजी के पैरों पर नमस्कार करके उनके साथ जाने लगीं। सीताजी के सिर के ऊपर रत्नालंकृत वितान तना हुआ आ रहा था। निर्दोष दीपक के समान भासमान वे नायिका, तारों के बीच जानेवाले चन्द्र के समान चलने लगीं। १२१६

वल्लियै युयिर्त्तनिल मङ्गयिवळ् पादम्
मॅल्लिय वुऱैक्कुमॅन वञ्जिवॅळि यॅङ्गुम्
पल्लव मलर्त्तोहै परप्पिन ळॅनत्तन्
नल्लणि मणिच्चुडर् तवळ्न्दिड नडन्दाळ् 1217

वल्लियै–लता (सी सीता) को; उयिर्त्त–जन्म देनेवाली (प्रकट करानेवाली); निल मङ्कै–भू की देवी; इवळ् पातम्–इनके चरण; मॅल्लिय–कोमल हैं; उऱैक्कुम्–दुखेगी (धरती); अॅन्ऱु–ऐसा; अञ्चि–डरकर; वॆळि अङ्कुम्–सभी स्थलों पर;

पल्लवम्–कोमल पत्तों; मलर् तोकै–और पुष्पकुल को; परप्पितऴ् ॲन–मानो (भूमि ने) बिछाया हो, ऐसा; तन् नल् अणि मणि चुटर्–उनके श्रेष्ठ आभरणों की मणियों की ज्योति को; तवऴ्न्तिट–छिटकने देते हुए; नटन्ताळ्–(देवी) चलीं। १२१७

जब वे चलीं तब उनके आभरणों की मणियों की कांति भूमि पर गिरती फैलती आ रही थी। उसको देखकर ऐसा लगता था, मानो सीताजी को प्रकट करनेवाली भूमिदेवी ने, इस डर से कि देवी के कोमल चरण धरती पर पड़ने से दुखेंगे, सर्वत्र पल्लव और फूल बिछाये हैं। १२१७

तॉऴुन्दहय मॅन्नडै तॉलैन्दुकळि यन्नम्
ॲऴुन्दिडै विऴुन्दयर्व दॅन्नवय लॅङ्गुम्
कॉऴुन्दुडैय शामरै कुलाववॊर् कलावम्
वऴङ्गुनिऴल् मिन्नवरु मञ्ञैयॅन वन्दाळ् 1218

कळि अन्नम्–मुदित हंस; तॉऴुम् तकैय–सबसे प्रशंसनीय; मॅल् नटै–मन्द (सुन्दर) चाल के सामने; तॉलैन्तु–हारकर; ॲऴुन्तु–उठते; इटै विऴुन्तु–गिरते; अयर्वतु ॲन्न–म्लान होते हैं, जैसे; अयल् ॲङ्कुम्–सब ओर; कॉऴुन्तु उटैय–पल्लव मृदुल; चामरै कुलाव–चामर डुलते हैं; कलावम् वऴङ्कुम्–(पंख) कलाप से निकलनेवाली; निऴल्–आभा; मिन्न वरुम्–बिजली के समान फैलाते आनेवाले; ओर् मञ्ञै ॲन–एक मोर के समान; वन्ताळ्–आईं। १२१८

सीताजी के चारों ओर चामर डुल रहे थे। वे उन हंसों के समान लगते थे जो अपनी प्रशंसित हंसगति के सीताजी की चाल के सामने मूल्य खो देने से दुखी होकर उठते, चलते और लड़खड़ाकर गिर जाते थे। वे अपने कलाप आदि आभरणों के साथ कलाप खोलकर आकर्षक ढंग से छटा बिखेरते आनेवाले मोर के समान चलती गईं। १२१८

❀ मण्मुद लनैत्तुलहिन् मङ्गयर्ह ळॅल्लाम्
कण्मणि यॅनत्तहय कन्नियॅऴिल् काण
अण्णन्मर बिऱ्चुड ररुत्तियॊडु तानव्
विण्णिऴिव दॊप्पदॊर् विदाननिऴल् वन्दाळ् 1219

मण् मुतल्–भूलोकादि; अनैत्तु उलकिल्–सभी लोकों में रहनेवाली; मङ्कैयर्कळ् ॲल्लाम्–सभी स्त्रियाँ; कण् मणि ॲन तकैय–अपनी आँखों का तारा मानें, इस योग्य; कन्नि–कन्या; ॲऴिल् काण–(का) सौंदर्य देखने के लिए; अण्णल् मरपिल् चुटर्–(श्रीरामचन्द्र) प्रभु के वंश के आदि पुरुष, सूर्य; अरुत्तियॊटु–चाव के साथ; अव् विण् इऴिवतु–उस आकाश से उतरते हों; ऒप्पतु–ऐसा; ओर् वितानम् निऴल्–एक वितान के नीचे; वन्ताळ्–आईं। १२१९

सीताजी के ऊपर रत्नमंडित एक वितान ले आया जा रहा था। वह सूर्य के समान लगता था, जो श्रीराम के वंश के आदि पुरुष थे और जो भूलोक आदि सभी लोकों की सुन्दरियों से आँखों के तारे के समान मान्य सीताजी के सौन्दर्य को देखने के लिए उतरकर आ रहे हों। १२१९

कट्ट्रैविरि पॉऱ्चुडर् पयिऱ्ऱुरु कलाबम्
शुऱ्ऱुमणि पुक्कविळ्ळै मिक्किडै तुवन्ऱि
विऱ्ऱवळ वाण्मिळिर मॅय्यणिहण् मिन्नच्
चिऱ्ऱिडै नुडङ्गवॉळिर् शीऱडि पॅयर्त्ताळ् 1220

कट्ट्रै विरि–किरणजाल बिखेरनेवाला; पॉन् चुटर् पयिऱ्ऱु उरु–स्वर्ण की कांति से युक्त; कलाप–कलाप नामक कटि का आभरण; चुऱ्ऱुम्–और कमर को वलयित कर पहने जानेवाले; मणि पुक्क इळै–रत्नखचित आभरण; मिक्कु–अधिक; इटै तुवन्ऱि–आपस में मिलकर; विल् तवळ–धनु के समान टेढ़ा प्रकाश फैलाते थे; वाळ् मिळिर–तलवार के समान भी फैलाते थे; मॅय्–उनकी देह और; अणिकळ्–आभरण भी; मिन्नत–बिजली के समान चमकते; चिऱ् इटै–छोटी कमर; नुटङ्क–झुक जाती; ऑळिर् चिऱु अटि–उज्ज्वल अपने छोटे (चरण) डग; पॅयर्त्ताळ्–(देवी ने) (बारी-बारी से) भरे। १२२०

सीता के शरीर पर अनेक आभरण थे। कमर में कलाप, (सोलह लड़ियोंवाली मेखला) और अन्य रत्नमय आभरण थे। उनका प्रकाश धनुष और तलवार के समान भूमि पर पड़ता था। उनकी देह की काँति बिजली के समान चमकती थी। पतली कमर झुक-झुक जा रही थी। वे अपने छोटे सुन्दर चरणों को बारी-बारी से रखते हुये आ रही थीं। १२२०

पॉन्निन्नॉळि पूविन्वॅऱि शान्दुपॉदि शीदम्
मिन्निन्निळ लन्नवडन् मेन्नियदु मान
अन्नमु मरम्बयरु मारमिळ्दु नाण
मन्नवै यिरुन्दमणि मण्डब मणैन्दाळ् 1221

पॉन्नतिन् ऑळि–सोने की कांति; पूविन् वॅऱि–फूलों की सुगन्ध; चान्तु पॉति–चन्दन की; चीतम्–शीतलता; मिन्नतिन् निळल्–बिजली की दमक; अन्नवळ् तन् मेनि–उनके शरीर पर (मिले थे); अतु–उससे; मान–तुल्य रीति से; अन्नमुम्–(चाल से) हंस; अरम्पैयरुम्–(सुन्दरता से) अप्सराएँ; आर् अमिळ्तुम्–(वचन-मधुरिमा में) श्रेष्ठ अमृत; नाण–लजा जायँ, ऐसा (चलकर); मन् अवै इरुन्त–जहाँ राजसभा लगी थी उस; मणि मण्टपम्–रत्नमण्डप में; अणैन्ताळ्–पहुँचीं। १२२१

उनके शरीर में स्वर्ण की आभा, फूल की सुगन्धि, चन्दन की शीतलता और बिजली की दमक —ये सब मिले हुये थे। वे हंसों को (चाल में), अप्सराओं को (रूप में), अमृत को (वचन-मधुरिमा में) हराकर उनको लज्जित करते हुये सभा मंडप में गयीं जिसमें सभी राजा लोग आसीन थे। १२२१

शमैत्तवरै यिन्मैमरै तानुमॅन लामच्
च्चुमैतिरण् मुलैत्तॅरिवै तूयवडिवु कण्डोर्

अमैत्तिरळ्हों डोळियरु माडवरु मॅल्लाम्
इमैत्तिल रुयिर्त्तिलर्हळ् शित्तिर मॅन्नत्ताम् 1222

चमैत्तवरै इन्मै–सर्जक के न होने के कारण; तानुम् मऱै ॲन्नल् आम्–स्वयं वेद जो माने जा सकते थे; चुमै–(वे) भारी; तिरळ् मुलै–पुष्ट स्तनोंवाली; तॅरिवै–कन्यारत्न का; तूय् वटिवु कण्टार्–पवित्ररूप का दर्शन जिन्होंने किया उन; अमै तिरळ् कॊळ्–बाँस की-सी सुन्दरता से युक्त; तोळियरुम्–भुजाओंवाली स्त्रियाँ और; आटवरुम्–पुरुष; ॲल्लाम्–सभी ने; चित्तिरम् ॲन्न–चित्र के समान; इमैत्तिलर्–पलकें नहीं मारीं; उयिर्त्तु इलर्कळ्–साँस नहीं छोड़ी; (ताम्)। १२२२

सीताजी स्वयंभू थीं। अतः उनका शरीर वेदों के समान, जो अपौरुषेय हैं, पवित्र था। मनोरम पीन उरोजों से शोभित उनको देखकर बाँस-सम भुजावाली स्त्रियाँ और पुरुष सब चित्रों के समान निस्पंद रह गये। उनका विस्मय इतना था कि उनकी आँखें नहीं झपकीं और साँसें भी रुकी रह गईं। १२२२

❀ अन्नवळै यल्लळॆन वामॆन वयिर्प्पान्
कन्नियमिळ् दत्तयॅदिर् कण्डकडल् वण्णन्
उन्नुयिर् निलैप्पदों रुत्तियों डुळैन्दाण्
डिन्नमु दॆळक्कळिहों ळिन्दिरनै यॊत्तान् 1223

कन्नि अमिळ्तत्तै–सुधा-सम कन्यारत्न को; ॲतिर् कण्ट–सामने जिन्होंने देखा; कटल् वण्णन्–समुद्रवर्ण (नीले) श्रीराम; अन्नवळै–उनको (उनके सम्बन्ध में); अल्लळ्–वे नहीं; ॲन–ऐसा; आम् ॲन–होंगी वही, ऐसा; अयिर्प्पान्–संशयग्रस्त रहे; उन्नु–(श्रेष्ठ)मान्य; उयिर्–प्राणों को; निलैप्पतु ओर् अरुत्तियॊटु–अमर बनाने की इच्छा से; उळैत्तु–बहुत परिश्रम करके; आण्टु–वहाँ (क्षीरसागर में); अमुतु ॲळ–अमृत के प्रकट होने पर; कळि कॊळ्–आनन्दपूरित; इन्तिरनै–(जो हुए) उन इन्द्र के; ऑत्तान्–समान हुए। १२२३

उनको देखने पर प्रभु श्रीराम की क्या हालत हुयी? उनको देखने से पहले सागरवर्ण श्रीराम के मन में संशय बना हुआ था। धनुर्भंग के फलस्वरूप जो उनके साथ विवाहनेवाली थीं वे क्या वही हैं जिनको मैंने उस दिन देखा था? वे कभी सोचते कि हाँ वही होंगी, कभी सोचते कि नहीं हों, शायद। संशयसागर में डूबते उतराते थे। अब उनको देखकर वे इन्द्र के समान जो अमर बनने की इच्छा से बहुत परिश्रम से सागरमंथन कराकर अमृत के प्रकट होने पर बहुत आनन्द मग्न हुये थे, हो गये (बहुत आनन्दित हो गये)। १२२३

नऱत्तुऱै मुदिर्च्चियुरु नल्लमुदु पिलहुर्
ऱऱत्तिन्विळै वॊत्तुमुह डुन्दियरु हुय्क्कुम्

निऱत्तुव रिदऴक्कुयि नित्तैप्पिनिडै यल्लाल्
पुऱत्तुमुळ ळोवॆन मनत्तॊडु पुहन्ऱान् 1224

नऱत्तु उऱै–शहद में स्थित; मुतिर्च्चि उऱु–(स्वाद में) वर्धित; नल् अमुतु–अच्छी सुधा को; पिल्कु उऱ्ऱु–बहाते हुए; अऱत्तिन् विळैवु–धर्म के फल से; ऒत्तु–तुल्य होकर; मुकडु उन्ति–चोरी से लाकर; अरुकु उय्क्कुम्–पास में प्राप्त की हुई; निऱम्–सुचारु रंगवाली; तुवर् इतऴ्—प्रवाल-सम मुख; कुयिल्–कोयल (-बयनी) ये; नित्तैप्पिन् इटै अल्लाल्–केवल मेरे मन की (स्मरण की) न होकर; पुऱत्तुम् उळळो–बाहर भी रहती है क्या; ऎन–ऐसा; मनत्तॊटु–मन के साथ; पुकन्ऱान्–कहा। १२२४

"मधु-मिश्रित अत्यन्त रुचिपूर्ण अच्छे पीयूष को बरसाते हुये, धर्म के फल के समान (मुझे अत्यन्त प्यारी बनकर), उस कन्यासौध के शिखर से इधर निकट आगत, ये प्रवालाधरा और कोकिल वाणी (सीताजी) मेरे मन में (अन्दर) रहने के अलावा बाहर भी हैं क्या?" श्रीराम ने आप से आप ऐसा आश्चर्य करते हुए कहा। १२२४

❀ ऎङ्गळ्शॆय् तवत्तिनि लिरामनॆन वन्दोन्
शङ्गिनॊडु शक्कर मुडैत्तनि मुदऱ्पेर्
अङ्गणर शादलिनव् वल्लिमलर् पुल्लुम्
मङ्गैयिव ळामॆन वशिट्टन्महिऴ् वुऱ्ऱान् 1225

वचिट्टन्–वसिष्ठजी ने; ऎङ्कळ् चॆय् तवत्तितिल्–हमारी पूर्वकृत तपस्या से; इरामन् ऎन वन्तोन्–श्रीराम के रूप में जो (अवतरित हो) आये; चङ्कितॊटु चक्करम् उटैय–शंख चक्रधर; तनि मुतल्–अद्वैत ब्रह्म; पेर् अम् कण् अरचु–बड़ी आँखोंवाले सुन्दर जगन्नाथ ही हैं; आतलिन्–इसलिए; इवळ्–ये; अल्लि मलर् पुल्लुम्–कमलपुष्प पर रहनेवाली; अ मङ्कै आम् ऎन–वही (कमला) देवी हैं यह समझकर; मकिऴ्वु उऱ्ऱान्–आनन्द अनुभव किया। १२२५

उनको देखकर वसिष्ठजी को अपार आनन्द हुआ। उनको विदित था कि श्रीराम जो हमारी पूर्वकृत तपस्या के कारण अवतार ले आये हैं शंख चक्रधर, अद्वितीय परब्रह्म, विशालाक्ष, जगन्नाथ श्रीमन्नारायण ही हैं। अतः ये सीताजी स्वयं श्रीलक्ष्मी देवी हैं—यह जानकर वे आनन्दमग्न हो गये। १२२५

❀ तुन्ऱुपुरि कोदॆय्ळिल् कण्डुलहु शूऴ्वन्
दॊन्ऱुपुरि कोलॊडु तनित्तिहिरि युय्प्पान्
ऎन्ऱुमुल हॆळुमर शॆय्दियुळ तॆनुम्
इन्ऱुतिरु वॆय्दिय दॆनक्कॆन निनैत्तान् 1226

उलकु चूऴ् वन्तु–लोक भर में भ्रमण करके आकर; ऒन्ऱु पुरि कोलॊटु–एक-सम शासन करनेवाले राजदण्ड (नीति) के साथ; तनि तिकिरि उय्प्पान्–एक

(आज्ञा-) चक्र चलानेवाले; तुऩ्ऱु पुरि कोतै–घने घुँघराले बाल वाली (सीताजी) का; ॲऴिल् कण्टु–सौंदर्य देखकर; उलकु एऴुम्–सातों लोकों पर; ॲऩ्ऱुम्–सदा; अरचु ॲय्ति उळतेऩुम्–राज्य करता रहा, तो भी; ॲंतक्कु तिरु ॲय्तियतु–मैं श्रीमान हुआ; इऩ्ऱु ॲंत–आज ही, यह; निऩैत्ताऩ्–सोचा। १२२६

दशरथ का भी मन अत्यन्त मुदित हुआ। चक्रवर्ती ने जो सारे लोक पर एक ही सम (तटस्थ रहकर) राजदण्ड धारणकर अकेला आज्ञाचक्र चलाते रहे, सुलक्षणा, घने केशवाली सीताजी को देखा तो समझ लिया—कि इतने दिन सातों लोकों को शासित कर रहा था तो क्या हुआ ? आज ही मैं सचमुच श्रीमान हुआ कि मेरे राज्य में लक्ष्मीदेवी आईं। १२२६

❀ नैवळ नविऱ्ऱु मॊऴि नण्णवर लोडुम्
वैयनुहर् कोऱ्ऱवनु मादवरु मल्लार्
कैहडलै पुक्कन करुत्तुळवै यॆल्लाम्
दॆय्वमॆन वुऱ्ऱवुडल् शिन्दैवश मऩ्ऱो 1227

नैवळम् नविऱ्रुम्–'नैवळम्' नाम के राग के समान मधुर वचनवाली सीताजी; नण्ण वरलोटुम्–पास आईं, त्योंही; वैयम् नुकर् कोऱ्ऱवतुम्–लोकरंजक श्रीराम; मातवरुम् अल्लार्–और (वसिष्ठ विश्वामित्र प्रभृति) महान तपस्वियों से इतर सबों के; कैकळ्–हाथ; तलै पुक्कन–सिरों के ऊपर अंजलिबद्ध हो गये; करुत्तु उळ अवै ॲल्लाम्–उनके मन आदि अन्तःकरणों ने; तॆय्वम् ॲंत उऱ्ऱत–(आद्या) देवी को पहचान लिया; उटल् चिन्तै वचम् अऩ्ऱो–शरीर मन का वशवर्ती है न। १२२७

'नैवळम्' (तमिऴ का एक राग है। वह "पालै" प्रदेश, मरुप्रदेश से संबंध रखता है। वह बहुत ही मोहक राग समझा जाता है। इसी काण्ड के ८६८वें पद में भी इसकी चर्चा आयी है।) की सी मधुर-बयनी सीताजी जब पास आ गईं तब लोकरंजक रामचन्द्रजी (या भूपति दशरथ या भूप जनक —या तीनों) को और महान तपस्वियों (वसिष्ठजी विश्वामित्र प्रभृति महर्षियों) को छोड़कर अन्य सबके हाथ आप ही आप अपने-अपने सिरों के ऊपर अंजलिबद्ध हो गये। उनके मन ने उन्हें पहचनवा दिया कि वे आद्यादेवी, भगवती हैं। शरीर तो मन का आज्ञाकारी है ! (इस पद में सिर्फ एक राजा की चर्चा बिना नाम के आयी है। अतः अर्थ करने में कठिनाई महसूस की जाती है।)। १२२७

❀ मादवरै मुऱ्कॊळ वणङ्गिनॆडु मऩ्ऩऩ्
पादमल रैत्तॊऴुदु कण्गळ्पनि पायुम्
तादैयरु हिट्टतवि शिऱ्ऱनि यिरुन्दाळ्
पोदिऩै वॆऱुत्तरशर् पॊऩ्मनै पुहुन्दाळ् 1228

पोतिऩै वॆऱुत्तु–(कमल) पुष्प से घृणा करके (त्याग कर); अरचर् पॊऩ् मऩै–(जनक) महाराज के स्वर्णमहल में; पुकुन्ताळ्–जो (प्रवेश करने) आईं;

मातवरै–(उन सीतादेवी ने) तपोधनों का; मुन्‌ कोळ वणङ्कि–पहले नमस्कार करके; नॅट्टु मन्‌नन्‌–चक्रवर्ती के; पातमलरै तॊळुतु–चरणकमलों की पूजा करके; कण्कळ्‌ पनि पायुम्‌–आँखों में (आनन्द के) अश्रु बहाते हुए; तातै अरुकु–(विराजमान) पिता के पास; इट्ट तविचिल्‌–डले रहे आसन पर; तनि इरुन्ताळ्‌–शालीन रूप से आसीन हुई। १२२८

कमलपुष्प का अपना वासस्थान छोड़कर जो राजा जनक के स्वर्ण-महल में अपनी इच्छा के साथ आयी थीं उन सीतादेवी ने पहले महात्मा तपोधनों को नमस्कार किया। बाद श्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ को नमस्कार किया। इसको राजा जनक आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुये देख रहे थे। उनके पास ही सीताजी के लिए उत्तम आसन डलवा दिया गया था। सीताजी उस पर आकर आसीन हुईं। १२२८

* अच्चिलै युणर्न्दमुद लन्दण नितैन्दान्‌
पच्चिलैयै यॊत्तपडि वत्तडलि रामन्‌
नच्चिलै ययिर्कण्मलर्‌ नङ्गैयिव ळॆन्ऱाल्‌
इच्चिलै किडक्कमलै येळैयुमि ऱानो 1229

अ चिलै उणर्न्त–उन दिव्यमूर्ति का पारलौकिक सौंदर्य जो पहले ही पहचान गये, वे; मुतल्‌ अन्तणन्‌–अग्रगण्य महर्षि; नच्च–आकर्षणयुक्त; इलै अयिल्‌ कण्‌–पत्र के आकार (का सिरवाला) भाला-सी आँखवाली; मलर्‌ नङ्कै–कमलादेवी; इवळ्‌ ॲन्ऱाल्‌–ये हैं तो; पच्चिलैयै ऒत्त पटिवत्तु–तमाल समान रंगवाले; अटल्‌ इरामन्‌–बली श्रीराम; इ चिलै किटक्क–यह शिव-धनुष रहे एक ओर; मलै एळैयुम्‌–सातों गिरियों को; इऱातो–नहीं तोड़ेंगे क्या; नितैन्तान्‌–ऐसा मन में सोचा। १२२९

विश्वामित्रजी ने अब श्रीलक्ष्मी को साक्षात देखा। उनकी दिव्य मूर्ति के पारलौकिक सौन्दर्य से अवगत उन्होंने मन में सोचा कि भाला-सी आँखवाली ये कमला हैं; तो तमालवर्ण और बली श्रीराम इनको पाने के लिए यह एक धनुष क्या, सातों कुलगिरियों को नहीं तोड़ेंगे क्या ? । १२२९

* ऐॅय्यविल्‌ वळैत्तदु मिऱुत्तदु मुरैत्तुम्‌
मॅय्विळै यिडत्तुमुद लैयम्विड लुऱ्ऱाळ्‌
ऐयनै यहत्तुवडि वेयल पुऱत्तुम्‌
कैवळै तिरुत्तुबु कडैक्कणि नुणर्न्दाळ्‌ 1230

ऍय्य–शर चलाने; विल्‌ वळैत्ततुम्‌–धनुष झुकाना और; इऱुत्ततुम्‌–उसका भंजन करना; उरैत्तुम्‌–लोगों ने कह दिया था, तो भी; मुतल्‌ ऐयम्‌–पहले उठे सन्देह को; मॅय् विळैवु इटत्तु–सत्य जानने पर; विटल्‌ उऱ्ऱाळ्‌–(अभी) दूर करके; ऐयनै–सुन्दर प्रभु को; अकत्तु वटिवे अलतु–मन में (ध्यान करने) देखने के साथ-साथ; पुऱत्तुम्‌–बाहर भी; कै वळै–हाथों के कंकणों को; तिरुत्तुपु–ठीक करने के बहाने; कटै कण्णिन्‌–अपाँग से; उणर्न्ताळ्‌–देख, पहचान लिया। १२३०

श्री सीताजी को चेरियों ने श्रीराम का शर चलाने के उद्देश्य से धनु लेना, फिर उसका भंग करना आदि समाचार बतलाया था। उनके मन में पूर्णरूप से विश्वास नहीं हुआ था कि ये वही हैं जिनको वे ध्यान में रख रही हैं। अब सामने देख लिया तो सन्देह दूर हो गया। तो भी ध्यान के रूप से सामने के रूप को मिलाते हुए वे अपने कंकणों को ठीक करने के बहाने अपने अपांग से उन्हें खूब देख कर आश्वस्त हो गईं। १२३०

❀ करुङ्गडै नॆडुङ्गणॊळि यारुनिरै कण्णप्
पॆरुङ्गडलिन् मण्डवुयिर् पॆऱ्ऱिलि दुयिर्क्कुम्
अरुङ्गल तणङ्गरशि यारमिळ्द दतॆत्तुम्
ऑरुङ्गुड नरुन्दिनरै यॊत्तुड ऱडित्ताळ् 1231

करु नॆटु कटै कण् ऑळि–काली दीर्घ अपांग की दृष्टिरूपी; आऱु–नदी के; निरै–(सुन्दरता से) भरपूर; कण्णन् पॆरु कटलिल–सबके नेत्र (श्रीराम) रूपी बड़े सागर में; मण्ट–सवेग जाकर मिलने से; उयिर् पॆऱ्ऱु–प्राण पाकर; इत्तु उयिर्क्कुम्–सन्तोष की साँस लेती (हैं, जो); अरु कलन्–श्रेष्ठ गुणों का आगार; अणङ्कु अरचि–स्त्रियों में रानी, सीताजी; आर् अमिळ्तु अतॆत्तुम्–सारा दुष्प्राप्य अमृत; ऑरुङ्कु उटन्–अकेले एक साथ; अरुन्तिनरै ऑत्तु–(जिसने) पिया (हो उसके) समान; उटल् तटित्ताळ्–मोटे शरीर की हुई। १२३१

वे आनन्द से फूल उठीं। उनकी काली लम्बी आँख की कनखी-दृष्टि रूपी नदी कण्णन (लोकनेत्र) श्रीराम रूपी सौन्दर्य-सागर की ओर सवेग बही। तब सीताजी के प्राण लहलहा उठे। वे सुख-सन्तोष की साँसें छोड़ने लगीं। श्रेष्ठ गुणों का आगार, स्त्रियों में रानी देवी सीताजी उस मनुष्य के समान फूल उठीं जिसने सारा प्राप्य अमृत अकेला और एक साथ अशन कर लिया हो। १२३१

कणङ्गुळै करुत्तिलुऱै कळ्वनॆन लानान्
वणङ्गुवि लिऱुत्तव नॆनत्तुयर् मऱन्दाळ्
अणङ्गुरु मविज्जैकॆड विज्जयि नहम्बा
डुणर्न्दरिवु मुऱ्ऱुपय नुऱ्ऱवरै यॊत्ताळ् 1232

कणम् कुळै–स्थूल कर्णकुण्डल धारिणी; करुत्तिल् उऱै कळ्वन्–मन में आकर घुसा चोर; ॲनल् आतान्–कहाने योग्य जो बने; वणङ्कु विल् इऱुत्तवन्–वे ही झुके धनुष को तोड़नेवाले हैं; ॲन–यह जानकर; तुयर् मऱन्ताळ्–दुख भूलीं; अणङ्कु उरुम्–(जन्म लेने का) दुखदायी; अविज्जै कॆट–अविद्या का नाश करके; विज्जैयिन्–आत्मविद्या से; अकम् पाटु उणर्न्तु–अन्तरात्मा को जानकर; अऱिवु मुऱ्ऱु पयन्–ज्ञान के विकास का परिणाम (मुक्ति); उऱ्ऱवरै–जिन्होंने पाया हो; ऑत्ताळ्–उनके समान हुईं। १२३२

जब बड़े-बड़े कुण्डलों की धारिणी सीता को दृढ़ विश्वास हो गया

कि जो पहले अपने (सीताजी के) मन में प्रविष्ट होकर 'चोर' कहने योग्य थे वे ही अपने सामने जो "झुका" उस धनु के भंजक श्रीराम हैं। अब चोर के समान रहने की आवश्यकता नहीं रही। इसलिए वे चिन्ता से विमुक्त हुईं। अविद्या जन्म का कारण है। आत्मविद्या-प्राप्त मनुष्य का अविद्यानाश हो जाता है और उस विद्या या ज्ञान का परिणाम मुक्ति है। सीताजी उस मुक्तिप्राप्त मनुष्य के समान हुईं। १२३२

कॊल्लुयर् कळिऱ्ऱरशर् कोमहऩ्ऩव् वेलै
कल्विकरै युऱ्ऱमुऩि कौशिकऩै मेलोय्
वल्लिपॊरु शिऱ्ऱिडै मडऩ्दैमण नाळाम्
ऎल्लयि नलत्तपह लॆऩ्ऩुरैशॆ यॆऩ्ऱाऩ् 1233

अव् वेलै–उस समय; कॊल् उयर् कळिऱ–मारने के काम में अभ्यस्त हाथियों (की सेना) के; अरचर् कोमकन्–(पति) राजाधिराज (दशरथ) ने; कल्वि करै उऱ्ऱ–विद्या-पारंगत; मुनि–मुनि; कौचिकनै–कौशिक को देखकर; मेलोय्–महात्मा; वल्लि पॊरु–लता-तुल्य; चिऱ इटै–पतली कमरवाली; मटन्तै–कन्या, सीताजी का; मणम् नाळ् आम्–विवाह का दिन जो; ऎल्लै इल् नलत्त–अपार मंगलदायक; पकल्–दिन (होगा); ऎन्ऩु–कौन-सा दिन है; उरै चॆय्क–बताइये; ऎन्ऱान्–पूछा। १२३३

तब घातक हाथियों की सेना के स्वामी दशरथ ने सर्वविद्यापारंगत महर्षि कौशिक से पूछा कि महर्षि! लता-सी पतली कमरवाली सीताजी के विवाह का शुभ दिन, जो सर्वमंगलदायी दिन है, कौन-सा निश्चित है? । १२३३

वाळैयुह ळक्कयल्हळ् वाविपडि मेदि
मूळैमुदु हैक्कदुव मूरिय वराऩ्मीऩ्
पाळैविरि यक्कुदिहॊळ् पण्णैवळ नाडा
नाळैयॆऩ्ऩ वुऱ्ऱपह नऱ्ऱव ऩुरैत्ताऩ् 1234

वावि–वापियों में; वाळै उकळ–वाळै नाम की मछलियाँ उछलती हैं; पटि मेति–जलमग्न भैंसों के; मूळै मुतुकै–मेजा (सिर) और पीठ को; कयल्कळ् कतुव–"कयल" मछलियाँ कुरेदती हैं; मूरिय वराल् मीन्–मोटी "वराल्" नामक मछलियाँ; पाळै विरिय–(क्रमुक, नारियल आदि के डण्ठलों के) बालों को खोलते हुए; कुतिकॊळ्–(उतना ऊँचा) उछलती हैं जहाँ; पण्णै वळम्–(उस) खेतों और बागों के उर्वर; नाटा–देशाधिपति; उऱ्ऱ पकल्–(विवाह के) योग्य दिन; नाळै–कल; ऎन्न–यह; नल् तवन् उरैत्तान्–महान तपस्वी ने कहा। १२३४

उत्तम तपस्वी विश्वामित्र ने उत्तर दिया कि हे कोशल देश के, राजा दशरथ! उस कोशल देश के जिसकी वापियों में 'वाळै' मछलियाँ उछलती

रहती हैं, जलमग्न भैंसों के सिरों और पीठों को 'कयल' मछलियाँ काटती हैं और वराल नामक मछलियाँ इतना ऊँचा उछलती हैं कि वे तट में रहने वाले नारियल और पूग के पेड़ों पर डंठलों में कूदकर बालों को खोल देती हैं, और जो खेतों और बागों की भूमि है, विवाह का दिन कल होगा। १२३४

❀ **शोऱ्ऱपॊऴ्दु दत्तरशर् कैदॊऴु वॆऴुन्दान्**
ऒऱ्ऱवयि रच्चुरिकॊऴ् शङ्गिनॊलि पॊङ्गप
पॊऱ्ऱड मुडिप्पुदु वॆयिऱ्पॊऴि तरप्पोय्
नऱ्ऱवरनुच् चैयॊडु नन्मनै यडैन्दान् 1235

चॊऱ्ऱ पॊऴुतत्तु–(उनके) कहते समय; ऎऴुन्तान्–(चक्रवर्ती) उठे; अरचर् कै तॊऴ–(अन्य) राजाओं के विनय करते; ऒऱ्ऱै–अनुपम; वयिरम्–हीरे की शामी से युक्त; चुरि कॊऴ्–आवर्तनयुक्त; चङ्किन् ऒलि–शंख का नाद; पॊङ्क–हुआ, तब; पॊन् तट मुटि–स्वर्ण के बड़े किरीट से; पुतु वॆयिल् पॊऴितर–(सूर्य की) मन्द धूप का-सा प्रकाश छिटका, तब; नल् तवर् अनुच्चैयॊटु–श्रेष्ठ तपस्वियों की आज्ञा लेकर; पोय्–जाकर; नल् मनै अटैन्तान्–उत्तम भवन में पहुँचे। १२३५

यह सुनकर चक्रवर्ती उठे और राजाओं का नमस्कार स्वीकार करते हुए, और अप्रतिम, शामीदार, आवर्तनयुक्त शंख का नाद सुनते हुये, और स्वर्णनिर्मित ऊँचे किरीट से प्रकाश फैलाते हुये, महर्षियों की आज्ञा लेकर अपने लिए नियत उत्तम महल में पहुँचे। १२३५

अन्नमरि दिऱ्पिरिय वण्णलु महन्ऱोर्
पॊन्निनॆडु माडमनै पुक्कनन् मणिप्पूण्
मन्नवर् पिरिन्दनर्हण् मादवर्हळ् पोनार्
मिन्नुशुड रादवनु मेरुविन् मऱैन्दान् 1236

अन्नम्–हंसिनी सदृश सीताजी; अरितिन् पिरिय–बिना इच्छा के वहाँ से गईं, तब; अण्णलुम्–प्रभु ने भी; अकन्ऱु–वहाँ से हटकर; ओर्–अप्रतिम एक; पॊन्निन् नॆटु माटम्–स्वर्ण के बड़े माढ़ेवाले; मनै–भवन में; पुक्कनन्–प्रवेश किया; मणि पूण् मन्नवर्–रत्नाभरणधारी राजा लोग भी; पिरिन्तनर्कळ्–वहाँ से हट चले; मातवर्कळ् पोनार्–बड़े तपस्वी भी गए; मिन्नु चुटर् आतवनुम्–दीप्त किरणोंवाले सूर्य भी; मेरुविल् मऱैन्तान्–मेरु के पीछे छिप गये। १२३६

पश्चात सीताजी, जो हंसिनी सदृश थीं, चलीं। उनको जाने की इच्छा ही नहीं होती थी। प्रभु श्रीराम भी वहाँ से हटकर एक माढ़ा वाले बड़े, स्वर्णमय सौध में गये। रत्नाभरणधारी राजा चले। महान तपस्वी लोग भी चले। किरणमाली सूर्य भी मेरु के पीछे छिप चला। १२३६

21. कडिमणप् पडलम् (शुभ-विवाह पटल)

इडम्बडु पुहळ्च्चनहर् कोनितिडु पेणक्
कडम्बडु कळिर्र्रश रादियिडै कण्डोर्
तिडम्बडु तिर्त्तशिरु कम्मियर्हळ् कारुम्
उडम्बोडु तुरक्कनह रुर्रवरै यौत्तार् 1237

इटम् पटु पुकळ्–विस्तृत यशस्वी; चत्तकर् कोन्–जनक महाराज के; इत्तिु पेण–खब सत्कार करने से; कटम्पटु कळिरु–मदजलस्रावी गजों वाले; अरचर् आति–राजा आदि; इटै कण्टोर्–मध्य स्थिति के मन्त्री; तिटम् पटु तिर्त्तत–शारीरिक बल और कुशलतायुक्त; चिरु कम्मियर्कळ् कारुम्–छोटे कारीगरों तक; उटम्पोटु तुरक्क नकर् उर्रवरै–शरीर के साथ स्वर्ग जो पहुँचे हों; ऑत्तार्–उनके समान बने। १२३७

विस्तृत यशस्वी जनक ने सभी अतिथियों का खूब सत्कार किया। सत्कार में कोई भेद नहीं दिखाया गया। मत्तगजों की सेना वाले उच्च राजा से लेकर, मध्य में रहनेवाले अमात्यों के साथ, श्रमिकों तक, जो शरीर की शक्ति और शारीरिक सामर्थ्य का अवलम्ब ले जीते थे, सभी उनके सत्कार से तृप्त हुए। वे सब ऐसा अनुभव करने लगे मानो सशरीर वे स्वर्ग पहुँच गये हों। (स्वर्ग भोग-भूमि कहा जाता है।)। १२३७

तेडरु नलत्तपुन लाशैतॅर लुर्रार्, माडोर्तड मुर्रदनै यॅय्दुम्वळि काणा
दीडळि वुर्त्तळर्वॊ डेमुरुव रत्रे, आडह वळैक्कुयिलु मन्निलय ळानाळ् 1238

तेटु–अन्वेषित; अरु नलत्त पुनल् आचै–आवश्यक अच्छे जल की इच्छा से; तॅरल् उर्रार्–कष्ट उठानेवाले; माटु–एक ओर; ऑर् तटम् उर्रु–एक तालाब देखकर भी; अततै ऍय्तुम् वळि काणातु–उसके पास जाने का मार्ग न पाकर; ईटु अळिवु उर–अपना सारा बल खोकर; तळर्वॊटु–शिथिलता के साथ; एम् उरुवर् अत्रे–क्षुब्ध होंगे न; आटकम् वळै–श्रेष्ठ सोने के कंकणवाली; कुयिलुम्–कोकिला (सी बोलीवाली) भी; अ निलॅयळ्–उस स्थिति को पहुँची हुई; आताळ्–बनीं। १२३८

(सीताजी की विरह-वेदना फिर जाग्रत हो गई। स्वर्णकंकण-धारिणी और कोकिल-बयनी उनकी स्थिति कैसी थी ?) समझिये कि स्वच्छ अच्छे जल के अन्वेषण में कोई संकटग्रस्त है। उसे कहीं एक ओर तालाब दिखाई दे रहा है। पर उसके पास जाने का मार्ग नहीं मिलता। तब वह क्लान्त और श्रान्त होकर विक्षुब्ध हो जायगा न ? देवी उसकी वैसी हालत को पहुँच गईं। १२३८

उरवेदुमि लारुयि रीर्दुमॅनाक्, करवेपुरि वारुळ रोकदिरोन्
वरवेयॅनै याळुडै यान्वरुमे, इरवेकॊडि याय्विडि यायॅनुमाळ् 1239

उरवु एतुम् इलार्–बल कोई जिनमें न हो, उन (अबलाओं) के; उयिर् ईर्तुम् ॲत्ता–प्राण हर लेंगे, कहकर; करवे पुरिवार्–प्रवंचना करनेवाले; उळरो–हैं क्या (नहीं हैं); इरवे–हे निशा; कॉटियाय्–तू क्रूर है; कतिरोन् वरवे–(कल) सूर्य के (उदय हो) आते ही; ॲन्नै आळ् उटैयान्–मुझे अपनानेवाले स्वामी; वरुमे–आ जायेंगे; विटियाय्–तू चली नहीं जाती; ॲनुम्–कहतीं। १२३९

(निशा का उपालम्भ) री रजनी ! निर्बल अबलाओं की जान हर लेंगे यह संकल्प लेकर प्रवंचना करनेवाले भी संसार में कहीं हैं ? तुम ही क्रूर हो ! कल सूर्य के उदय के साथ मेरे स्वामी मुझे अपना लेंगे। तुम अन्त नहीं होतीं और प्रभात को आने नहीं देतीं। यह कैसा स्वभाव है —देवी ने रात्रि को यह उपालम्भ दिया। १२३९

करुनायिरु पोल्ववर् कालॊंडुपोय्, वरुनाळय लेवरु वाय्मनने
पॅरुनाळुड नेपिरि यादुळल्वाय्, ऑरुनाडरि यादॊऴि वारुळरो 1240

मनने–हे मेरे मन; करु नायिरु पोल्पवर्–नीलमेघ श्यामल, सूर्य के समान ज्योतिपुंज श्रीराम के; कालॊटु पोय्–श्रीचरणों से लगकर (उनके साथ) जाकर; वरुम् नाळ्–उनके आते दिन; अयले वरुवाय्–उनके साथ आते हो; पॅरु नाळ्–अनेक दिन तक; उटने–मेरे साथ; पिरियातु उळल्वाय्–बिना बिछुड़े रहोगे; ऑरुनाळ् तरियातु–एक दिन भी सहन न करके; ऑऴिवार्–छोड़ जानेवाले; उळरो–(तुम्हारे समान) कोई हैं। १२४०

(अपने मन से) रे मेरे मन ! नीले सूर्य सम श्रीराम के चरणों के साथ गया; फिर उनके साथ लौट आया। विवाह के बाद से, जब हम मिल रहेंगे तब तू मेरे साथ रहनेवाला है। फिर इस एक रात का वियोग सह नहीं सकता क्या ? इस तरह एक दिन का भी बिछोह न सह सकनेवाला कोई और है ? । १२४०

कनैयेऴ्हडल् पोल्करु नाऴिहैतान्, विनैयेन्विनै याल्विडि याविडिनी
तनियेपऱ वाय्दह वेदुमिलाय्, पनैमेलुऱै वाय्पऴि पूणुदियो 1241

पनै मेल् उऱैवाय्–तालवृक्ष पर रहनेवाले पक्षी; नी तनिये पऱवाय्–तुम अकेले नहीं उड़ते; कनै एऴ् कटल् पोल्–गर्जनशील सात समुद्र के समान; करु नाऴिकै–(दीर्घ) रात्रि; विनैयेन् विनैयाल्–मुझ पापी के पाप से; विटिया विटिन्–अन्त न हो जाय तो; तकवु एतुम् इलाय्–नेकी कुछ न रखनेवाले; पऴि पूणुतियो–व्यर्थ निंदा पाओगे क्या। १२४१

(पपीहे से) ताल-तरुवासी पपीहा ! तू कभी (संगिनी को छोड़) अकेले कहीं नहीं उड़ता (जाता)। सातों गरजनेवाले समुद्रों के समान यह रात जो लम्बी होती जा रही है अगर अन्त नहीं होगी तो, तू अपनी बोली से मुझे मरवा देगा। फिर बड़ा अपयश तुझ पर लगेगा। तू यह अपयश क्यों लेना चाहता ?

(पपीहा या चकवा या क्रौंच पक्षी तालतरु में रहनेवाला समझा जाता है और उसका स्वर विरहिणियों को बड़ा दुख पहुँचाता है।)। १२४१

अयिल्वेलनल् काल्वन वानिऴलाय्, वॅयिलेयॅन नीविरि वाय्निलवे
शॅयिरेदुमि लारुड ऱेय्वुरुवार्, उयिर्कोऴुरु वारुळ रोवुरैयाय् 1242

अनल् काल्वन आम्–आग उगलनेवाले; अयिल् वेल् निऴलाय्–तीक्ष्ण भाले के समान चाँदनीवाले; निलवे–चन्द्र; नी–तुम; वॅयिले ॲन–धूप के समान; विरिवाय्–फैले हो; चॅयिर् एतुम् इलार्–अपराधहीन; उटल् तेय्वु उऱुवार्–उत्तरोत्तर क्षीण-देह होनेवाले की; उयिर्–जान को; कोऴ् उरुवार्–हरने के काम में प्रवृत्त; उळरो–और कोई है क्या; उरैयाय्–तुम बोलो। १२४२

(चाँदनी से) हे चाँद! आग उगलनेवाले भाले के समान किरणों वाली चाँदनी के चाँद! तुम धूप के समान फैले हो और मुझे जला रहे हो। बिना किसी अपराध के, और जो पहले ही क्षीण होते रहते हैं उन लोगों के प्राण लेने के लिए तत्पर होनेवाले तुमको छोड़ और कोई हैं क्या? । १२४२

मन्ऱऱ्कुळिर् वाशम्व यङ्गनल्वाय्, मिन्ऱॊत्तु निलानहै वीऴ्मलयक्
कुन्ऱिऱ्कुल मामुळै यिऱ्कुडिवाऴ्, तॅन्ऱऱ्पुलि येयिरै तेडुदियो 1243

मन्ऱल्–(नायक के साथ) संयोग समय में आनन्ददायक; कुळिर् वाचम्–शीतल सुगन्धरूपी; वयङ्कु अनल्–दीप्त आग उगलनेवाला; वाय्–मुख, और; मिन् तोत्तु–प्रकाशपुंज; निला नकै–चाँदनीरूपी दाँत; वीऴ्–मनोरम; मलयम् कुलम् कुन्ऱिल्–मलय संज्ञित श्रेष्ठ पर्वत की; मा मुळैयिल्–बड़ी गुफ़ा में; कुटि वाऴ्–बसनेवाले; तॅन्ऱल् पुलिये–दक्षिणोपवन-रूपी बाघ; इरै तेटुतियो–आहार की खोज में हो क्या। १२४३

(मलयपवन का उपालम्भ) हे मलयपवन! तुम बाघ हो। साथ रहनेवाले प्रेमी-प्रेमिका को आनन्द देनेवाला शीतल सुगन्ध जो तुम्हारा है वह अब अग्नि बरसानेवाला तुम्हारा मुख है। प्रकाशपुंज जो चाँदनी है वह तुम्हारे दाँत हैं। और जो मलयपर्वत सबके लिए प्यारा है उसकी एक बड़ी गुफ़ा में तुम्हारा वास है। वहाँ से निकलकर अब तुम (आहार) शिकार की खोज में फिर रहे हो क्या? । १२४३

तॅरुवेतिरि वारॊरु शेवहनार्, इरुपोदुम् विडारिदु वॅन्नैकॊलाम्
करुमामुहिल् पोल्बवर् कन्नियर्पाल्, वरुवारुळ रोकुल मन्नवरे 1244

करु मा मुकिल् पोल्पवर्–काले, बड़े सुन्दर मेघ के समान; तॅरुवे तिरिवार्–वीथी में सैर करनेवाले; ऒरु चेवकनार्–अनुपम वीर नायक; इरु पोतुम् विटार्–(दिन और रात) दोनों जून नहीं छोड़ते; इतु ॲन्नै आम्–यह क्या (नीति) है; कुल मन्नवर्–उच्च कुल के राजा; कन्नियर् पाल् वरुवार्–अविवाहित कन्या के पास आनेवाले; उळरो–कोई हैं क्या? । १२४४

(सीताजी के सामने श्रीराम का छायारूप उनके भ्रम के कारण दिखाई देता है।) सीताजी कहती हैं कि काले, सुन्दर मेघ सम वे (श्रीराम) वीथियों में सैर करते थे। अप्रमेय वे वीर हमेशा मेरी आँखों के सामने आते रहते हैं। चाहे दिन हो, चाहे रात। यह कैसा न्याय है ? वे राजकुमार हैं। उनको राजकुल-मर्यादा मालूम है ! 'कन्याभवन' के अन्दर रहनेवाली अविवाहित कन्या के सामने जाना अपराध है। ऐसे कोई राजकुमार कभी कन्या के सामने आयेंगे क्या ? । १२४४

तॆरुळाविन्नै तीयवर् शेरलर्तोळ्, अरुळानॆरि योडुम वावदुवो
करुळार्कड लोकरै काणरिदाल्, इरुळामिदु तानॆन्नै यूऴिकॊलाम् 1245

तॆरुळा–दृढ़ विवेचनहीन; विनै तीयवर्–हानिकारक काम करनेवाले (वे नायक); तोळ् चेरलर्–(मेरी) भुजाओं में नहीं लगते; अवा अतुवो–(मेरी) इच्छा तो; अरुळा नॆरि ओटुम्–जो वे कृपा नहीं करते, उसी मार्ग पर चलती है; इरुळ् आम् इतु–रातरूपी यह; करुळ् आर् कटलो–कालिमा-युक्त सागर है क्या; करै काण अरितु–पार पाना दुर्लभ है; ऎन्नै ऊऴि आम् कोल्–कितने कल्प तक यह स्थिति रहेगी; (आल् तान्–पूरक ध्वनियाँ)। १२४५

(वे रात की निन्दा करती हैं।) वे (श्रीराम), लगता है कि दृढ़ विवेकी नहीं हैं। मुझे संकट देकर निवारण का कोई काम नहीं करते। वे मेरी भुजाओं के आलिंगन में नहीं आते। तो भी मेरी कामना तो उन्हीं के प्रति लगी रहती है। रात कालिमायुक्त सागर है क्या ? इसको पार करना दुस्तर लगता है। यह स्थिति कितने कल्पकाल तक बनी रहेगी ? । १२४५

पण्णोवॊऴि यापह लोपुहुता, दॆण्णोदवि राविर वोविडिया
तुण्णोवॊऴि यावुयि रोवहला, कण्णोतुयि लाविदु वोकडन्नै 1246

पण्णो ऒऴिया–संगीत के स्वर तो थमते नहीं; पकलो पुकुतातु–दिन आता नहीं लगता; ऎण्णो तविरा–चिन्ताएँ दूर नहीं होतीं; इरवो विटियातु–रात प्रभात पर नहीं आ रही; उळ् नो ऒऴिया–मानसिक क्लेश नहीं मिटते; उयिरो अकला–प्राण नहीं छोड़ जाते; कण्णो तुयिला–आँखें नहीं सोतीं; कटन् इतुओ–कर्तव्य (भाग्य) यही है क्या। १२४६

(सीताजी के विवाह के उपलक्ष्य में नगर में आनन्द कोलाहल मचा है। सब ओर संगीत का प्रबन्ध है। सीताजी की वेदना को वह बढ़ाता है।) वे कहती हैं कि संगीतस्वर बन्द नहीं होता; दिन (प्रभात) आता नहीं दिखता। मेरा मन चिंता करना नहीं छोड़ता। रात पूरी नहीं होती। आन्तरिक वेदना जारी है। प्राण भी नहीं छूटते। कम से कम नींद आवे तो छुटकारा होगा। वह भी नहीं आती, आँखें नहीं झपतीं। फिर क्या यह वेदना सहता रहना ही अब मेरा काम है ? । १२४६

इडैयेवळै शौरवॆ ळुनदुविळुन्, दडलेय्मद नन्शर मञ्जिनैयो
उडलोय्वुर् नाळुमु रुङ्गलैयाल्, कडलेयुरै नीयुमोर् कन्निकौलाम् 1247

कटले–सागर; इटैये–तुम में से; वळै चोर–शंख गिरते हैं, ऐसे; ऍळुन्तु–उठते; विळुन्तु–और गिरते; उटल् ओय्वु उऱ–शरीर थकाते हुए; नाळुम्–अहोरात्र; उऱङ्कलै–सोते नहीं हो; नीयुम् ओर् कन्नि आम् कोल्–तुम भी एक कन्या हो; अटल् एय्–मारक स्वभाव-युक्त; मतनन् चरम्–मदन के शरों से; अञ्चिनैयो–डरे हुए हो; उरै–कहो। १२४७

(वे सागर में अपनी-सी स्थिति देखती हैं। वे क्षीण हो गई हैं, अतः हाथ से शंख (कंकण) छूटकर गिर गये हैं। नींद नहीं आती, अतः वे उठती बैठती विलाप रही हैं और बेचैन हैं। सागर की भी वही हालत समझकर वे कह रही हैं कि) सागर! तुमसे शंख छूट रहे हैं। उठते, गिरते थक जाते हो। दिन रात सोते नहीं हो। तब क्या तुम भी एक अविवाहित कन्या हो और तुम पर भी काम के शर लग गये हैं। मनमथ भयंकर मारक है। उनके शर से तुम भी डरे हुए हो? कहो तो। १२४७

ऍन्नविन्नन पन्नियि रुन्दुळैवाळ्, तुन्नियुन्निम नत्तोडु शोर्वुरुहाल्
मनैतन्निन्व यङ्गुरु वैहिरुळ्वाय्, अनहन्निनै हिन्ऱन यामरैवाम् 1248

ऍन्न–ऐसा; इन्नन पन्नि–ऐसी बातें कहकर; इरुन्तु–जागती रहकर; उळैवाळ्–क्लांत होनेवाली बनकर; तुन्नि उन्नि–अपने दुख का स्मरण करते हुए; मनत्तोटु–मन के साथ; चोर्वु उऱु काल्–जब व्याकुल थीं, तब; मनै तन्निन्–अपने भवन में; वयङ्कुरु वैकु इरुळ् वाय्–स्थिर अँधेरे में; अनकन्–अनघ श्रीराम; निनैक्किन्ऱन–जो बातें सोचते थे, उनको; याम् अऱैवाम्–हम कहेंगे। १२४८

कवि कहते हैं कि अब तक हम सीताजी की स्थिति का वर्णन करते रहे। सीताजी ऐसी बातें ऐसा कहते हुए, निद्राहीन रहकर दुख का ही स्मरण करनेवाले मन के साथ वेदना से तड़प रही थीं। तब अनघ श्रीराम उस घने अन्धकार की रात में अपने भवन में रहकर क्या-क्या सोच रहे थे? अब उनका हाल बतायेंगे। १२४८

मुन्कण्डु मुडिप्परु वेट्कयिनाल्, ऍन्कण्डुणै कोण्डिद यत्तॆळुदिप्
पिन्कण्डुमोर् पॆण्करै कण्डिलॆनाल्, मिन्कण्डव रॆङ्गरि वार्विनैये 1249

मुन् कण्टु–पहले एक बार देखकर; मुटिप्पु अऱु–अन्तहीन; वेट्कैयिनाल्–अनुराग के साथ; ऍन् कण् तुणै कोण्टु–(अपनी) मेरी आँखों की सहायता लेकर; इतयत्तु ऍळुति–अपने हृदय में (रूप) अंकित करके; पिन् कण्टुम्–फिर से देखने के बाद भी; ओर् पॆण्–अप्रमेय स्त्रीरूपी सागर का; करै कण्टिलॆन् नान्–पार कर नहीं पाता मैं; मिन् कण्टवर्–बिजली को जो पास से देख चुके हैं वे; विनै ऍङ्कु अऱिवार्–काम कहाँ जानेंगे। १२४९

(श्रीराम कहते हैं कि उनकी (सीताजी की) ज्योती से मेरी आँखें

चौंधिया गई। और मैं कोई काम करने योग्य नहीं रह गया।) मैंने उनको उस दिन मिथिला प्रवेश के समय 'कन्याभवन' की छत पर देखा। अगाध प्रेम उत्पन्न हुआ और उसके कारण मैंने अपनी आँखों की कूँची से अपने हृदय पर उनका चित्र बना लिया। फिर आज एक बार देखा। तो भी उनका पूर्णरूप मेरे मन में नहीं समाता। मैं उस रूप को धारण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। हाँ! बिजली को जिसने पास से देखा है वह किस काम के लायक होगा? । १२४९

तिरुवेयनै याण्मुह मेतॅरियिन्, करुवेहन्ि येविळै कामविदैक्
कॅरुवेमदि येयिदु वॅन्शॅय्दवा, ऑरुवेनॉडु नीयुरु वाहलयो 1250

मतिये–हे चन्द्र; तॅरियिन्–सोच-समझने पर; विळै कामम् वितैक्कु–आनन्द-दायक काम के बीज के लिए; ॲरुवे–खाद; करुवे–अंकुर; कन्ियै–और उसका फल हो; तिरुवे अनैयाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी ही से तुल्य सीताजी के; मुकमे–मुखमण्डल (सदृश) हो; इतु चॅय्त आरु–यह करने का धर्म; ॲन्–क्या है; ऑरुवेनॉट्–(उनसे वियुक्त मुझ) एक के; नी उरवु आकलैयो–तुम बन्धु न बनोगे। १२५०

(वे चन्द्र से अपनी वेदना कहते हैं।) हे चन्द्र! खूब सोच विचार-कर देखें तो तुम आनन्दप्रसू कामेच्छा के बीज की खाद हो, फिर उसका अंकुर भी तुम ही हो और उसका फल भी तुम ही हो! तुम श्रीलक्ष्मी देवी सदृश सीताजी के मुख के ही समान हो। तो भी मुझे अत्यन्त पीड़ा दे रहे हो। यह क्यों? मैं उनके संग के बिना दुखी हूँ। दुख में तुम मेरे सहायक नहीं बनोगे? । १२५०

कळियावुयिर् वव्विय कारिहैदन्, विळिपोल विळैन्ददु वीहिलदाल्
अळिपोरिरै वन्बड वञ्जियवन्, पळिपोल वळर्न्ददु पायिरुळे 1251

पाय् इरुळ्–सर्वत्र फैला हुआ यह अन्धकार; कळिया उयिर्–शरीर से न छुटे हुए मेरे प्राण को; वव्विय–जिसने हर लिया; कारिकै तन् विळि पोल–उस अंगना की आँखों के समान; विळैन्ततु–आया है; वीकिलतु–दूर होता नहीं; अळि पोर्–संहारक समर में; इरैवन् पट–अपने राजा को छोड़कर; अञ्चियवन्–अपने प्राणों के लिए डरकर भागे हुए एक सेनापति के; पळि पोल–अपयश के समान; वळर्न्तु–बढ़ा है; (आल्, ए)। १२५१

(श्रीराम रात्रि का उपालम्भ करते हैं।) यह जो अन्धकार फैला है वह उस अंगना, सीता की आँखों के समान, जिन्होंने मेरे, मुझसे न छूटने वाले प्राण को हर लिया है, फैला है। वह मिटता नहीं दीखता। वह उस सेनापति के अटल अपयश के समान बढ़ा हुआ और स्थिर है जो संहारक युद्ध में ऐन अवसर पर अपने स्वामी राजा को मरने देकर अपने प्राण लेकर भागा हो। १२५१

नितैयायॊरु कालॆंडि दोनॆंड्रिदान्, वितैवादवर् पाल्विडै कॊण्डिलयो
पुतमानतै यारॊडु पोयितवॆन्, मततॆयॆतै नीयु मऱन्दतयो 1252

पुतम् मान् अतैयारॊडु–वन के हरिण के समान सुन्दर उस बाला के साथ; पोयित–जो गया; ऍन् मतते–मेरे मन; ऒरु काल् नितैयाय्–एक बार भी मेरा स्मरण नहीं करते; नॆंड्रि तान् नॆंटितो–मार्ग लम्बा है क्या; वितवातवर् पाल्–तुम से कुछ न पूछनेवाले उससे; विटै कॊण्टिलैयो–उत्तर में कुछ नहीं पाया; ऍतै नीयुम् मऱन्ततैयो–क्या मुझे तुम भी भूल गये हो। १२५२

(श्रीराम अपने मन को उपालम्भ देते हैं।) हे मेरे मन, जो वनचारी मृग-समान रहनेवाली उस कन्या के साथ गया है। एक बार भी तू मेरा स्मरण नहीं करता है। क्या मार्ग लम्बा है कि लौट आया नहीं ? या तेरी सुध ही नहीं लेनेवाली से उत्तर पाने की प्रतीक्षा में खड़ा है और अब तक कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ ? या क्या तू भी मुझे भूल गया ?। १२५२

तन्नोक्कॆरि काऱहै वाळरविन्, पन्नोक्किय वॆन्बदु पण्डुहॊलाम्
ऍन्नोक्किनु नॆञ्जिनु मॆन्ऱुमुळार्, मॆन्नोक्किन देहडु वल्विडमे 1253

कटु वल् विटम्–भयंकर और प्रभावक विष; तन् नोक्कु ऍरि काल्–अपनी आँखों से आग उगलनेवाले; तकै–स्वभाव के; वाळ् अरविन्–क्रूर सर्प के; पल् नोक्कियतु–दाँत में है; ऍन्पतु–यह कथन; पण्टु आम्–पहले से प्रचलित (सत्य) है; ऍन् नोक्कितुम्–मेरी आँखों और; नॆञ्चितुम्–मन में; ऍन्ऱुम् उळार्–जो सर्वदा संस्थित हैं, उस देवी की; मॆल् नोक्कितते–मृदु कनखी में है। १२५३

(श्रीराम देवी की आँखों के बारे में क्या कहते हैं ? देखिये।) वे कहते हैं कि पहले से यह कथन प्रचलित है और वह सत्य भी है कि आँख से आग निकालनेवाले सर्प के दाँतों में भयंकर, प्रभावक विष रहता है। पर अब मैं देखता हूँ कि विष उस देवी की, जो मेरी दृष्टि के सामने और मेरे मन में सदा संस्थित है, मृदु कनखी में है। १२५३

वल्लार्पुनै माळिहै वार्पॊऴिलो, डॆल्लामुळ वायिनु मॆन्मनमो
कल्लोडुऱऴ नॆञ्जुरु कन्नियराम्, मॆल्लोदियर् ताम्विळै याडिडमे 1254

वल्लार् पुनै–चतुर (शिल्पी) से निर्मित; माळिकै–भवन; वार् पॊऴिलॊटु–बड़ी फुलवारियाँ और; ऍल्लाम्–अन्य सभी स्थान; उळ आयितुम्–विद्यमान हैं, तो भी; कल्लोटु उऱऴ्–प्रस्तर-सम; नॆञ्चु उऱु–चित्तवाली; कन्नियर् आम्–कन्या जो; मॆल ऒतियर्–कोमल केशवाली है, उसका; ताम् विळैयाटु इटम्–अपने विहार का स्थल जो बना है; ऍन् मनमो–क्या मेरा मन है। १२५४

(देवी के सम्बन्ध में और शिकायत देखिये।) वे कहते हैं कि उसके विहार के लिए चतुर शिल्पी से रचित बड़े महल हैं; बड़े-बड़े उपवन हैं, फुलवारियाँ हैं। और अन्य स्थान भी हैं। पर प्रस्तर मन उसने, उनको छोड़कर जिसे अपना प्रिय विहारस्थल चुना है वह मेरा मन है क्या ?। १२५४

वानवर् पॅरुमानुम् मननिनैवि ननाहत्
तेनमर् कुऴलाडन् ऱिरुमण विनैनाळै
पूनहु मणिवाशम् पुनैनह रणिवीरॅन्
ऱानयिन् मिशैयाण रणिमुर शऱैहॅन्ऱान् 1255

वानवर् पॅरु मानुम्—देव देव; मनन् इनैवु इनन् आक—मन से इस तरह दुखग्रस्त रहे, तव; तेन् अमर् कुऴलाऴतन्—भ्रमर-मोहक केशवाली सीताजी का; तिरुमणम् विनै नाळै—विवाह-दिन कल है; पू—फूलों से; नकु मणि—दीप्त रत्न; वाचम्—और वस्त्र से; पुनै नकर्—सुन्दर हमारे नगर को; अणिवीर्—सजा दें; ऍन्ऱु—ऐसा; याणर् अणि मुरचु—खूब अलंकृत ढोल को; यानैयिन् मिचै—हाथी के ऊपर रखकर; अऱैक—पिटवा दो; ऍन्ऱान्—आज्ञा दी (जनक ने)। १२५५

देवदेव श्रीराम इस तरह व्याकुलता का अनुभव कर रहे थे। उधर महाराजा जनक ने आज्ञा दिला दी कि मुनादी पिटवा दो कि कल मधु-केशिनी के उद्वाह का दिन है। इसलिए फूलों, श्रेष्ठ कांतिमय रत्नों और चीरों से हमारे सुन्दर नगर को सजा दो। ढोल जो उपयोग किया जाता है वह खूब अलंकृत हो और उसे हाथी पर चढ़ाकर पिटवा दिया जाय। १२५५

मुरशऱै दलुमान मुदियरु मिळैयोरुम्
विरैशॅरि कुऴलारुम् विरविनर् विरैहिन्ऱार्
उरैशॅरि किळयोडु मुवहयि नुयर्हिन्ऱार्
करैदॆरि वरिदाहु मिरवॊरु करैहण्डार् 1256

मुरचु अऱैतलुम्—ढिंढोरा पीटने पर; मानम् मुतियरुम्—सम्मान्य वृद्ध लोग और; इळैयोरुम्—युवा लोग; विरै चॅरि कुऴलारुम्—सुवासित केशवाली स्त्रियाँ; विरवितर्—आपस में मिलकर; विरैकिन्ऱार्—(नगर का अलंकार करने के लिए) शीघ्र गये; उरै चॅरि किळैयोटुम्—संभाषणप्रिय बान्धवों के साथ; उवकैयिन् उयर्किन्ऱार्—आनन्द में बढ़े; करै तॆरिवु अरितु आकुम् इरवु—जिसका (अन्त) तीर देखना दुर्लभ है उस रात के सागर का; ऒरु करै कण्टार्—एक अन्त पाया। १२५६

ढिंढोरा पीटते ही आदर योग्य वृद्ध, तरुण ऋषभ सम युवक लोग, और सुवासित केशवाली स्त्रियाँ, सब आपस में मिलकर नगर सजाने दौड़े। उद्वाह सम्बन्धी संभाषण में लगे उनको अपार आनन्द हुआ। वे इन कार्यों में लगे रहे और रात व्यतीत हो गयी। वे दुस्तर रातरूपी सागर के उस पार पहुँच गये। १२५६

अञ्जन वॊळियानु मलर्मिशै युऱैवाळुम्
ऍञ्जलिन् मणनाळैप् पुणर्हुव रॅननोडुम्
शॅञ्जुड रिरुऴ्हीऱित् तिनहर नीरुतेर्मेल्
मञ्जनै यणिहोलङ् काणिय वॅनवन्दान् 1257

अञ्चनम् ऒळियानुम्—अंजनवर्ण श्रीराम और; अलर् मिचै उऱैवाळुम्—कमल

पर रहनेवाली श्रीसीताजी; नाळै–कल; अॅञ्चल् इल्–निर्मल; मणम् पुणर्कुवर्–उद्वाह कर लेंगे; अॅन्नलोटुम्–यह जानते ही; तिनकरन्–दिनकर; चॅम् चुटर्–लाल किरणों (हाथों) से; इरुळ् कीरि–अन्धकार चीरकर; ओरु तेर् मेल्–एकचक्र अपने अनुपम रथ पर; मञ्चनै–(अपने कुल के) कुमार को; अणि कोलम् काणिय अॅन–अलंकृत दूल्हावेश में देखने के लिए; वन्तान्–(उदय हो) आये। १२५७

सूर्य उदित हुये। 'कल अंजन वर्ण प्रभु, हमारे कुलदीप, श्रीराम और कमलवासिनी सीताजी का उद्वाह होगा। कुमार को दूल्हे के वेश में देखूँगा।' मानो इस विचार से सूर्य, अपनी किरणरूपी हाथों से अंधकार को चीरते हुए अपने एकचक्र-रथ पर बाहर आये। १२५७

तोरण नडुवारुन् दूणुरै यिडुवारुम्
पूरण कुडङ्गङ्गुम् पुनैतुहिल् पुनैवारुम्
कारणि नॅडुमाडङ् गदिर्मणि यणिवारुम्
आरण मरैवाणर्क् कमुदिनि दडुवारुम् 1258

तोरणम् नट्टु वारुम्–तोरणस्तम्भ गाड़नेवाले; तूण उरै इट्टु वारुम्–खम्भों पर खोल चढ़ानेवाले; अॅङ्कुम्–सब स्थानों में; पूरण कुटम्–पूर्ण कुंभों से; पुनै तुकिल्–चित्रमय वस्त्रों से; पुनै वारुम्–सजानेवाले; कार् अणि नॅटु माटम्–मेघस्पृष्ट ऊँचे प्रासादों को; कतिर् मणि अणि वारुम्–श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत करनेवाले; आरणम् मरै वाणर्क्कु–अनेक शाखाओं वाले वेद के मार्गों पर चलनेवाले विप्रों को; इनितु अमुतु अट्टुवारुम्–(भोज कराने के लिए) मधुर अन्न पकानेवाले। १२५८

नगर के लोग किसी न किसी काम में प्रवृत्त दिखाई दिये। तोरण बाँधने के लिए खम्भे गाड़नेवाले; स्तम्भों पर खोल चढ़ानेवाले; सब जगह पूर्णकलशों और चित्रमयी वस्त्रों से सजानेवाले; मेघस्पृष्ट प्रासादों के ऊपरी भागों में कांतिपूर्ण रत्नों को सजानेवाले; वेदमार्गानुयायी ब्राह्मणों को भोज देने के लिए मधुर अन्न पकानेवाले पाये गये। १२५८

अन्नमॅ नडैयारु मळविडै यनैयारुम्
कन्निन नहर्वाळै कमुहोडु नडुवारुम्
पन्नरु निरैमुत्तम् परियन तॅरिवारुम्
पोन्नणि यणिवारुम् मणियणि पुनैवारुम् 1259

कन्नि नल् नकर्–नितनवीन उस नगर में; अन्नम् मॅल् नटै यारुम्–हंस की-सी चालवालियाँ और; मळ् विटै अनैयारुम्–तरुण ऋषभ-सम पुरुष लोग; वाळै–केले के पेड़ों को; कमुकोटु–पूग तरुओं के साथ; नटुवारुम्–गाड़नेवाले; पन्न अरु–(मूल्य) कहने में कठिन; निरै मुत्तम्–मोती की लड़ियों में से; परियन तॅरिवारुम्–सबसे स्थूल को खोज लेनेवाले; पोन् अणि अणिवारुम्–स्वर्णाभरण पहननेवाले; मणि अणि पुनैवारुम्–रत्नाभरणों से अपने को सजा लेनेवाले। १२५९

और भी लोग जिनमें हंसगामिनी स्त्रियाँ थीं और तरुण ऋषभ समान युवा थे, केले सुपाड़ी आदि के पेड़ गाड़ने लगे। कुछ लोग स्थूल से स्थूल

मोतियों की माला चुनने में लगे रहे। कुछ श्रेष्ठ स्वर्णाभरण धारण करने में प्रवृत्त हुये। कुछ लोग रत्नाभरण पहनने में लगे। १२५९

शन्दत्त महित्तारुञ् जान्दोंडु तॅरुवॆङ्गुम्
शिन्दित्तर् तिरिवारुञ् जॆळ्ळुमलर् शॊरिवारुम्
इन्दिर तनुनाणु मॆरिमणि निरैमाडत्
तन्दमिल् विलैयारक् कोवैह ळणिवारुम् 1260

तारुम्–सुगन्ध फैलानेवाले; चन्ततम्–चन्दन को; अकिल् चान्तोंटु–अगरु के चेप के साथ; तॅरु अॅङ्कुम्–सभी वीथियों में; चिन्तित्तर् तिरिवारुम्–छिड़कते हुए घूमनेवाले; चॅळ्ळुमलर्–पुष्ट फूलों को; चॊरिवारुम्–ले आकर जमा करनेवाले; इन्तिर तनु नाणुम्–इन्द्रधनुष को लजाते हुए; ॲरि मणि–दीप्त (रंग-बिरंगी) मणियों से युक्त; निरै माटत्तु–पंक्तियों में रहनेवाले प्रासादों के ऊपरी भागों में; अन्तम् इल् विलै–अपार मूल्य की; आरम् कोवैकळ्–मोतीमालाओं से; अणिवारुम्–सजानेवाले। १२६०

लोग ये जो चन्दन और अगरु का घिसा चेप वीथियों में छिड़क रहे थे। और उनमें पुष्ट फूलों को लाकर ढेर लगानेवाले, इन्द्रधनुष की आभा को हरानेवाली रीति से ज्यातित रत्नों से भरे प्रासादों के ऊपरी भागों में मोतीमालाएँ लटकानेवाले थे। १२६०

तळङ्गिळर् मणिहालत् तवळ्शुड रुमिळ्दीबम्
इळङ्गुळिर् मुळैयार्नऱ् पालिहै यित्तमॆङ्गुम्
विळिम्बुपॊन् नॊळिनाऱ वॆयिलॊडु निलवीनुम्
पळिङ्गुडै युयर्तिण्णैप् पत्तियिऩ् वैप्पारुम् 1261

अॅङ्कुम्–सब जगह; तळम् किळर्–छतों पर अधिक रहनेवाले; मणि काल–रत्नकांति बिखेरते हैं; विळिम्पु–किनारों पर; पॊन् ओळि–(जो बनी है उस) स्वर्ण की (कारीगरी की) ज्योति; नाऱ–फैलती है; वॅयिलॊटु–धूप के समान प्रकाश के साथ; पळिङ्कु उटै निलवु–फ़र्श के स्फटिक पत्थर की चाँदनी-सा प्रकाश; ईतुम्–बिखेरनेवाले; उयर् तिण्णै–ऊँची वेदिकाओं पर; तवळ् चुटर्–विस्तृत प्रकाश; उमिळ् तीपम्–देनेवाले दीपों; इळम् कुळिर् मुळै आर्–छोटे शीतल अंकुरों से भरे; नल् पालिकै इत्तम्–मंगलमय "पालिका" नामक मिट्टी के छोटे बरतनों को; पत्तियिन् वैप्पारुम्–पंक्तियों में रखनेवाले। १२६१

सर्वत्र प्रासादों की छतों से रत्न अपनी कांति बिखेर रहे थे। वहाँ वेदिकायें बनी थीं। वेदिकाओं के किनारे स्वर्णनिर्मित थे। उनसे निकलनेवाली कांति धूप समान थी। तल स्फटिक-पत्थरों का था। उनसे चाँदनी का-सा प्रकाश छूट रहा था। लोग उन वेदिकाओं पर विशाल प्रकाश देनेवाले दीपों और छोटे और मनोरम अंकुरों से भरी

पालिकाओं को पंक्तियों में सजा रहे थे। (पालिका मट्टी का छोटा चुक्कड़-सा बरतन है जिसमें बालू या मट्टी भरकर नवधान्य उगाये जाते हैं। ये दीपक और पालिकाएँ मंगलचिह्न माने जाते हैं। पालिकाएँ शुभ कार्य पूरा होने के वाद मंगलवाद्यों के वादन के साथ जुलूस बाँधकर ले जायी जाती हैं और नदियों या तालावों में छोड़ दी जाती हैं।)। १२६१

मन्दर मणिमाड मुन्ऱिलिन् वयिनॅङ्गुम्
अन्दमि लॉळिमुत्ति नहनिरै यौळिवीश
अन्दर नॅडुवान मीनलर् हुवदॅन्नप्
पन्दरि निळल्वीशिप् पडर्वॅयिल् कडिवारुम् 1262

मन्तरम् मणि माटम्–मन्दरपर्वत-समान (उन्नत) सुन्दर सौधों के; मुन्ऱिलिन् वयिन्–आँगनों में; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; अन्तरम्–ऊपर के; नॅटु वातम्–विशाल आकाश में; मीन् अलर्कुवतु ॲन्न–तारे जैसे छिटके रहते हैं; अन्तम् इल् ऑळि–(वैसे) अनन्त प्रकाशमय; मुत्तिन् अकल् निरै–मोतीमालाओं की विपुल राशियों का; ऑळि वीच–प्रकाश फैलानेवाले; पन्तर् इन् निळल् वीचि–पण्डालों की सुखद छाया बनाकर; पटर् वॅयिल् कटिवारुम्–(जो) फैली रही उस धूप की उग्रता को कम करनेवाले। १२६२

कुछ लोग मंदर पर्वत के समान रहनेवाले प्रासादों के सामने आँगनों में पंडाल बना रहे हैं। उन पंडालों में मोती की मालाएँ लटकायी गयी हैं जिनसे मनोरम प्रकाश छूट रहा है, इसलिए पंडाल नक्षत्र-खचित आकाश के समान दिखाई दे रहे हैं। उन पंडालों के कारण धूप की उग्रता से लोग बच पाते हैं। १२६२

वयिरमि नॊळियीनु मरहद मणिवेदिच्
चॅयिरऱ वॊळिर्दीबङ् जिलदियर् कॊणर्वारुम्
वॅयिल्विर वियपॊन्निन् मिडैकोडि मदितोयुम्
ऍयिलिनि नडुवारु मॅरियहि लिडुवारुम् 1263

वयिरम्–हीरे; मिन् ऑळि ईनुम्–(जिन पर) बिजली के समान प्रकाश देते हैं; मरकतम् वणि वेति–उन मरकतों की सुन्दर वेदी पर; चिलतियर्–दासियाँ; चॅयिर् अऱ ऑळिर्–निर्मल प्रकाशवाले; तीपम् कॊणर्वारुम्–दीप लाकर रखनेवालियाँ; वॅयिल् विरविय पॊन्निन्–कांतिमय स्वर्ण दण्ड की; मिटै कोटि–बहुत पास-पास रहनेवाली पताकाओं को; मति तोयुम्–चन्द्र जिन पर आ ठहरता है उन; ऍयिलिनिल्–प्राचीरों पर; नटुवारुम्–गाड़नेवाले; अकिल् ऍरि इटुवारुम्–अगरु को जलानेवाले। १२६३

विवाहोत्सव मनाने के लिए नगर सजानेवालों में वे दासियाँ हैं जो मरकत की वेदिकाओं पर, जिन पर जड़े हीरों से विद्युत का-सा प्रकाश विकीर्ण होता है, सजाने के लिए निर्मल दीप जलाकर ले आ रही हैं। वे

हैं जो चन्द्रस्पर्शी प्राचीरों पर कांतिमय स्वर्ण के डण्डवाली ध्वजाएँ गाड़ रही हैं। और वे लोग हैं जो अगरु को जलाकर धुआँ उत्पन्न कर रहे हैं। १२६३

पण्डियि निऱैवाशप् पनिमलर् कॊणर्वारुम्
तण्डलै यिलैयोडुङ् गनिपल तरुवारुम्
कुण्डल मॊळिवीशक् कुरवैहळ् पुरिवारुम्
उण्डैकॊण् मदवेऴत् तोडैहळ णिवारुम् 1264

पण्टियिल्–गाड़ियों में; निऱैवाचम्–अधिक सुगन्धित; पनिमलर्–शीतल पुष्प; कॊणर्वारुम्–लानेवाले; तण्टलै–बागों से; इलैयोटुम्–(पान और केले के) पत्तों के साथ; कति पल–विविध फल; तरुवारुम्–लानेवाले; कुण्टलम् ऒळि वीच–कुण्डलों का प्रकाश फैलाते हुए; कुरवैकळ् पुरिवारुम्–"कुरवै" नामक (रास) नाच करनेवालियाँ; उण्टै कॊळ्–अन्नपिण्डों को खानेवाले; मतम् वेऴत्तु–मत्तगजों को; ओटैकळ् अणिवारुम्–मुखपट्ट पहनानेवाले। १२६४

गाड़ियों पर सुवासित पुष्प भरकर लानेवाले, बागों से केले, पान आदि के पत्ते लानेवाले और फल लानेवाले पाये जाते हैं। कुछ स्त्रियाँ अपने कर्णकुंडलों से कांति बिखेरते हुए "कुरवै" का (रास-) नृत्य कर रही हैं। कुछ लोग अन्नकवल खानेवाले हाथियों को मुखपट्ट से अलंकृत कर रहे हैं। १२६४

कलवैहळ् पुनैवारुङ् गलैनल तॆरिवारुम्
मलर्हुऴऩ् मलैवारुम् मदिमुह मणियाडित्
तिलदमु निडुवारुञ् जिहऴिहै यणिवारुम्
इलविदऴ् पॊलिहोल मॆऴिल्पॆऱ विडुवारुम् 1265

कलवैकळ् पुनैवारुम्–चन्दन लगा लेनेवाले; कलैनल्ल तॆरिवारुम्–वस्त्र खूब चुनकर पहननेवाले; मलर् कुऴल् मलैवारुम्–केश पर फूल का अलंकार कर लेने वालियाँ; अणि आटि मुऩ्–सुन्दर मुकुर के सामने; मति मुकम्–अपने चन्द्रमुखों पर; तिलतम् इटुवारुम्–तिलक लगा लेनेवालियाँ; चिकऴिकै अणिवारुम्–चोटी पर गजरे पहन लेनेवाले (या केश का अलंकार कर लेनेवाले); इलवु इतऴ्–सेमर के फूलों के समान अधरों पर; ऎऴिल् पॆऱ–अधिक सुन्दर करने के लिए; पॊलि कोलम्–सुशोभित रंग का अलंकार; इटुवारुम्–करनेवालियाँ। १२६५

चन्दन लगाने के काम में प्रवृत्त, वस्त्र चुनकर पहनने के काम में प्रवृत्त, केश में फूल लगाने में संलग्न और सुन्दर मुकुर के सामने खड़े होकर तिलक लगा लेने में लगे हुए पुरुष या स्त्रियाँ; केशालंकार, अधर-रंगान आदि श्रृंगार के काम में लगी हुई स्त्रियाँ —ये सब उनमें हैं। १२६५

तप्पिऩ् मणिकाशुञ् जङ्गमु मयिलऩ्ऩार्
ऒप्पनै पुरिपोदु मूडलि नुहुबोदुम्

तुप्पुरळ् निऱैवाशच् चुण्णमु मुदिर्तादुम्
कुप्पैह ळॅन्वारिक् कॊण्डयल् कळैवारुम् 1266

मयिल् अन्नार्—मोर-सी छटावाली स्त्रियाँ; ऑप्पनै पुरि पोतुम्—जब अपना शृंगार करती हैं तब, और; ऊटलिन् उकु पोतुम्—रूठकर अलंकार हटाती हैं, तब; तप्पित—जो नीचे छितरे; मणि—उन रत्नों और; काचुम्—स्वर्ण के सिक्कों और; चङ्कमुम्—(उतारे गये) शंखकंकणों; तुप्पु उरळ्—प्रवाल की समानता करनेवाले (लाल); निऱै वाचम् चुण्णमुम्—अधिक सुगन्ध का चूर्ण; उतिर् तातुम्—जो गिरे हैं उन मकरन्दों को; कुप्पैकळ् ॲन—कूड़ा जैसे; वारि कॊण्टु—बटोर लेकर; अयल् कळैवारुम्—बाहर (अलग) फेंकनेवालियाँ। १२६६

मयूरनिभ मानिनियाँ जब शृंगार कर लेती हैं तब, या अपने पतियों से रूठकर अलंकार उतारकर दूर कर देती हैं तव भी रत्न, हमेल के स्वर्ण-सिक्के, शंखकंकण, प्रवालसम लाल, सुवासित अंगराग के चूर्ण, पुष्पों का पराग आदि विखर जाते हैं। उनको कूड़ों के समान बटोर ले जाकर जो बाहर फेंक आती हैं वे दासियाँ, और; । १२६६

मन्नवर् वरुवारुम् मऱैयवर् निऱैवारुम्
इन्निशै मणियाळि निशैमदु नुहर्वारुम्
शॅन्नियर् तिरिवारुम् विऱलियर् शॅऱिवारुम्
कन्नलिन् मणवेलैक् कडिहैह ळॅरिवारुम् 1267

मन्नवर्—राजा; वरुवारुम्—जो आते हैं; मऱैयवर्—ब्राह्मण लोग; निऱैवारुम्—जो आकर इकट्ठे होते हैं; इन् इचै—मधुर संगीत; मणि याळिन् इचै मतु—और सुन्दर वीणा का संगीतमधु; नुकर्वारुम्—स्वादन करनेवाले; चॅन्नियर् तिरिवारुम्—बन्दी (बाण कहलानेवाले) गायक जो घूमते हैं; विऱलियर् चॅऱिवारुम्—चारण गायिकाएँ जो एकत्र होती हैं; कन्नलिन्—समयसूचक जल-यंत्र द्वारा; मणम् वेलै कटिकैकळ् तॆरिवारुम्—विवाहमुहूर्त के समय की प्रतीक्षा करनेवाले। १२६७

राजा लोग जो आते हैं, ब्राह्मण जो एकत्र होते हैं, संगीत, वीणा-वादन आदि के सुननेवाले, चारण, चारणियाँ जो घूम-घूमकर गाना सुनाती हैं—ऐसे लोग हैं। १२६७

कणिहैयर् तॊहुवारुङ् गलैपल पयिल्वारुम्
पणिपणि यॆन्लोडुम् पलविरु निलमन्नर्
अणिनॆडु मुडियॊन्ऱॊन् ऱुरैदलि नुहुमम्बॊन्
मणिमलै यॆनमन्न वायिलिन् मिडैवारुम् 1268

कणिकैयर्—गणिकाएँ (नाटक आदि ६४ कलाओं की जानकार); तॊकुवारुम्—जो एकत्र हुईं; कलै पल पयिल्वारुम्—विविध कलाओं का अभ्यास करनेवालियाँ; पल इरु निल मन्नर्—अनेक विशाल राज्य के राजा (जो); पणि पणि ॲन्लोटुम्—आज्ञा हो, सेवा करें—कहते हुए; अणि नॆटु मुटि—सुन्दर ऊँचे किरीटों को; ऑन्ऱु

ऑन्ऱु अरैतलिऩ्–एक से एक टकराने से; उकुम्–छूटकर गिरनेवाले; अम् पॊऩ् मणि–सुन्दर स्वर्ण-मणियों को; मलै ऑन्न मन्त्त–पर्वत के समान ढेर कराते हुए; वायिलिल् मिटैवारुम्–राजद्वार में सटे हुए आनेवाले। १२६८

चौंसठ कलाओं में निपुण गणिकाएँ जो एकत्र होती हैं; कलाप्रदर्शन करनेवाली पेशेवर स्त्रियाँ; अनेक विशाल भूखण्डों के राजा लोग जो हमारी योग्य सेवा कहिए, सेवा कहिए कहते हुए राजद्वार में इतनी बड़ी संख्या में आपस में अपने सुन्दर दीर्घ किरीटों को टकराते हुए एकत्र होते हैं कि उनसे गिरनेवाले स्वर्ण और रत्न पर्वत के समान ढेर के ढेर बन जाते हैं। १२६८

केडहम् वॆयिल्वीशक् किळरयि निलवीतक्
कोडुयर् नॆडुविऴ्जॆक् कुञ्जर मदुपोल
आडवर् तिरिवारु मरिवयर् कळिहूरुम्
नाडह नविल्वारुम् नहैयुयिर् कवर्वारुम् 1269

आटवर्–पुरुष, जो; केटकम्–ढालों के; वॆयिल् वीच–धूप-सा प्रकाश देते; किळर् अयिल्–(दूसरे हाथ में) रहनेवाली तलवार के; निलवु ईत्त–चाँदनी-सा प्रकाश फैलाते; कोटु उयर्–उन्नत दाँतों वाले; नॆटु विऴ्चॆ–खूब युद्धविद्या में अभ्यस्त; कुञ्चरम् अतु पोल–गजों के समान; तिरिवारुम्–घूमनेवाले; अरिवैयर्–(नाटक-) गणिकाएँ; कळि कूरुम्–मनोरंजक; नाटकम् नविल्वारुम्–नाटक प्रदर्शन करनेवालियाँ; नकै–मन्दहास से; उयिर् कवर्वारुम्–(पुरुषों के प्राण) हरनेवालियाँ (चित्त झकझोरनेवालियाँ)। १२६९

कुछ पुरुष पाये जाते हैं जो बायें हाथ में ढाल लिए, जिससे धूप-सा प्रकाश छूटता है और दायें हाथ में तलवार लिए, जिससे चाँदनी-सा प्रकाश छिटकता है बड़े दाँतों वाले गजों के समान जो युद्धविद्या में खूब अभ्यस्त हैं, घूमते हैं। कुछ गणिकाएँ नाटक का प्रदर्शन कर रही हैं जिनसे खूब मनोरंजन होता है। उनका मन्दहास पुरुषों के मनों को एकदम झकझोर देता है। १२६९

कदिर्मणि यॊळिकालक् कवर्पॊरु ळॆरियावा
ऱॆदिरॆदिर् शुडर्विम्मुॆऱ् ऱॆळुदलि निळैयोरुम्
मदुविरि कुळलारु मदिलुडॆ नॆडुमाडम्
अदुविदु वॆन्वोरा ऱलमर लुऱुवारुम् 1270

कतिर् मणि ऑळि काल–कांतियुक्त रत्नप्रकाश छिटकाते हैं, इसलिए; कवर् पॊरुळ् तॆरिया आऱु–दृष्टि को आकृष्ट करनेवाली वस्तुएँ साफ दिखाई देने न देते हुए; ऍतिर् ऍतिर्–(वीथियों के दोनों किनारों से) आमने-सामने; चुटर्–चमक-दमक; विम्मुऱु ऍऴुतलिऩ्–अत्यधिक उठती है, इसलिए; इळैयोरुम्–तरुण पुरुष; मतु विरि कुळलारुम्–(पुष्पों पर के) शहद से भरे केशवाली (स्त्रियाँ); मतिल् उटै नॆटु माटम्–

चहारदीवारी वाले बड़े सौध (जिनमें उनको प्रवेश करना है); अतु इतु अॅन्त ओरार्—वह था यह —यह नहीं जान पातीं; अलमरल् उऱुवारुम्—गड़बड़ानेवालियाँ। १२७०

वीथियों के दोनों किनारों पर आमने-सामने रहनेवाले सौधों से रत्न, स्वर्ण आदि वस्तुएँ इतने प्रकाश उगलती हैं कि आँखें चौंधिया जाती हैं। इसलिए वीथियों में तरुण और पुष्प-शहद-भरे केशवाली तरुणियाँ पायी जाती हैं जो यह निश्चय नहीं कर पातीं कि हमें इस सौध में प्रवेश करना है या उसमें; और गड़बड़ाती हैं। १२७०

तेर्मिशै वरुवारुञ् जिविहयिल् वरुवारुम्
ऊर्दियिल् वरुवारु मौळिमणि निरैयोडैक्
कार्मिशै वरुवारुङ् गरिणियिल् वरुवारुम्
पार्मिशै वरुवारुम् पण्डियिल् वरुवारुम् 1271

तेर्मिचै वरुवारुम्—रथों पर आनेवाले; चिविकैयिल् वरुवारुम्—शिविकाओं पर आनेवाले; ऊर्तियिल् वरुवारुम्—(अश्व, ऊँट आदि) सवारियों पर आनेवाले; ऑळि मणि निरै ओटै—कान्त रत्न-सज्जित मुखपट्टधारी; कार् मिचै वरुवारुम्—मेघों (सदृश गजों) पर आनेवाले; करिणियिल् वरुवारुम्—हथिनियों पर आनेवाले; पार् मिचै वरुवारुम्—(पैदल) भूमि पर आनेवाले; पण्टियिल् वरुवारुम्—गाड़ियों पर आनेवाले। १२७१

लोग कितने ही प्रकार के वाहनों पर आ रहे हैं। रथ, शिविकाएँ, अश्व, ऊँट आदि सवारियाँ, हाथी जिनके कांतियुक्त रत्नों के मुखपट्ट हैं और जो मेघ के समान हैं; हथिनियाँ, गाड़ियाँ —इन सबों पर सवार होकर लोग आ रहे हैं। इनके अलावा पैदल आनेवाले भी हैं। १२७१

मुत्तणि यणिवारुम् मणियणि मुनिवारुम्
पत्तियि नविर्शॆम्बॊन् पल्हलन् महिळ्वारुम्
तॊत्तुरु तॊळिन्माले शुरिहुळ लणिवारुम्
शित्तिर निरैतोयुञ् जॆन्दुहिल् पुनैवारुम् 1272

मुत्तु अणि अणिवारुम्—मुक्ताभरण धारण करनेवाले; मणि अणि मुनिवारुम्—(पहने हुए) रत्नाभरणों से गुस्सा करनेवाले (उनको उतार देनेवाले); पत्तियिन्—पंक्ति में; अविर् चॆम् पॊन्—उज्ज्वल श्रेष्ठ स्वर्ण के; पल कलन्—अनेक आभरण; मकिळ्वारुम्—आनन्द के साथ पहननेवाले; चुरि कुळल्—घुँघराले केश में; तॊत्तु उऱु तॊळिल्—गुच्छों वाली और विशिष्टता से गुँथी हुई; मालै अणि वारुम्—मालाएँ पहननेवाले; चित्तिरम् निरै तोयुम्—चित्र-पंक्तियों से सज्जित (कढ़ाई द्वारा); चॆम् तुकिल् पुनैवारुम्—लाल कौशेय वस्त्र पहननेवाले। १२७२

शृंगार में लगे हुए लोगों को देखिये। स्त्रियाँ पायी जाती हैं या पुरुष पाये जाते हैं जो मुक्ताभरण पहन रहे हैं। कुछ रत्नाभरण उतार रहे हैं। कुछ पंक्तियों में, आलोकमय स्वर्णाभरण पहन रहे हैं। कुछ

लोग सुन्दर गुच्छों को कलापूर्ण ढंग से गूँथकर उन मालाओं को अपने केशों में पहन रहे हैं। कुछ वस्त्र पहनने में लगे हुए हैं जिन वस्त्रों पर कई चित्रों की कढ़ाई हुई है। १२७२

विडनिहर् विऴियारु ममुदॅन्नु मॊऴियारुम्
किडैपुरै यिदऴारुङ् गिळर्नहै यॊळियारुम्
तडमुलै पॅरियारुन् दनियिडै शिऱियारुम्
पॅडैयॅन्न नडैयारुम् पिडियॅन्न वरुवारुम् 1273

विटम् निकर् विऴियारुम्–विषसदृश दृष्टि वालियाँ; अमुतु ऍन्नुम्–सुधा-सम; मॊऴियारुम्–बोली वालियाँ; किटै पुरै इतऴारुम्–(खुखरी ?) "किटै" नाम की जललता-सम अधरवालियाँ; किळर् नकै ऑळियारुम्–उज्ज्वल दन्तावली की शोभावालियाँ; तट मुलै पॅरियारुम्–विशाल और पीन स्तनोंवालियाँ; तनि इटै चिऱियारुम्–अनुपम और छोटी कमरवालियाँ; पॅटै अन्नम् नटैयारुम्–स्त्री हंस के समान चालवालियाँ; पिटि ऍन्न वरुवारुम्–हथिनी-सी गति के साथ आनेवालियाँ। १२७३

स्त्रियाँ जिनकी आँखें विष के समान (काली और प्राणहारी) हैं; स्त्रियाँ जो सुधा सम बातें करती हैं, जिनके अधर "किटै" (खुखरी ?) नाम की अत्यन्त लाल जललता के समान हैं; स्त्रियाँ जो आकर्षक मन्दहास-वालियाँ हैं, या उज्ज्वल दन्तावली वालियाँ हैं; स्त्रियाँ जिनके स्तन मूल में विस्तार के साथ पुष्ट भी हैं; स्त्रियाँ जिनकी कमरें छोटी या क्षीण हैं; स्त्रियाँ जो हंसिनियों के समान चलती आती हैं, या स्त्रियाँ जो हथिनी की चाल चलती आती हैं —ये सब हैं। (यहाँ तक के पद्यों में कर्ता ही हैं। क्रिया नहीं है। "एक सूची दी गयी है उसमें लोग किन-किन कामों में लगे हुए थे, यह बताया गया है।" आशय है कि हर कोई किसी न किसी काम में लगा हुआ था।)। १२७३

उण्णिऱैनिमिर् शॅल्वत् तुळवियल् पदैनाडिक्
कण्णुऱ् लरिदॅन्निऱ् कळ्ऱुद लॅळिदामो
ऑण्णुरु शुडर्वानत् तिन्दिरन् मुडिशूडुम्
मण्णुरु तिरुनाळे यॊत्तद मणनाळे 1274

उळ् निऱै निमिर् चॅल्वत्तु–नगर के अन्दर के भरे व उन्नत वैभव का; उळ इयल्पु अतै–सच्ची स्थिति को; नाटि कण्णुऱल् अरितु–अन्वेषण कर देखना ही कठिन है; ऍन्निऱ्–तो; कळ्ऱुतल् ऍळितु आमो–वर्णन करना सुलभ है क्या; अ मणम् नाळ्–वह विवाह-दिन; ऑण् उरु–गौरव समेत; चुटर् वानत्तु–उज्ज्वल आकाश में; इन्तिरन् मुटि चूटुम्–देवेन्द्र के किरीट–धारण के; मण्णुरु तिरुनाळे–अभिषेक के दिन के ही; ऒत्ततु–समान रहा। १२७४

उस नगर के अन्दर का सारा वैभव देखना ही दुस्तर है। तो विवरण कैसे दिया जायगा ? संक्षेप में कहा जाय तो वह सीता-राम का

उद्वाह-दिन स्वर्गलोक के देवेन्द्र के मुकुटधारण के अंगीभूत अभिषेक के दिन के समान कोलाहलमय था और उमंगभरे उत्साह का प्रदर्शन खूब होता था। १२७४

करैत्तॆरि वरियदु कनहम् वेय्न्ददु
वरैयॆन्न वुयर्न्ददु मणियिऱ् चॆय्ददु
निरैवळै मणविऩै निरप्पु मण्डबम्
अरैशर्त मरशनु मणुहऩ् मेयिऩाऩ् 1275

करै तॆरिवु अरियतु–अन्त पाना (जिसका) कठिन है; वरै ऍन उयर्न्ततु–पर्वत-समान (जो) ऊँचा था; कतकम् वेय्न्ततु–चाँदी से (जो) मढ़ा हुआ था; मणियिन् चॆय्ततु–रत्नों की कारीगरी से (जो) युक्त था; निरै वळै–श्रेणी में कंकण (जो) पहने हुई थी, उन सीताजी का; मणविनै–विवाहोत्सव; निरप्पुम् मण्टपम्–(जहाँ) सुसम्पन्न होनेवाला था (उस) भवन में; अरैचर्तम् अरचतुम्–राजाधिराज भी; अणुकल् मेयिनान्–आने को हुये। १२७५

विवाहमण्डप इतना विशाल था कि अन्त देखना कठिन था। वह पर्वत के समान ऊँचा था। उस पर सोने की चादर मढ़ी हुई थी और रत्न जड़े हुए थे। उसी में सीताजी का, जो अपने हाथों में पंक्तिबद्ध प्रकार से चूड़ियाँ पहने हुए थीं, विवाहसंस्कार होनेवाला था। दशरथ उस मण्डप में पधारने को उद्यत हो निकले। १२७५

वॆण्गुडै यिळनिला विरिक्क मिऩ्ऩॆऩक्
कण्गुडै मणियिळ वॆयिलुङ् गाऩ्ऱिडप्
पण्गुडै वण्डिऩम् बाड वाडऩ्मा
मण्गुडै तूळिविण् मऱैप्प वेहिऩाऩ् 1276

वॆण् कुटै–श्वेत छत्र; इळ निला विरिक्क–मन्द चाँदनी-सा प्रकाश फैलाता; मिन् ऍन–बिजली के समान; कण् कुटै–आँखों में कौंधनेवाले, मणि-रत्न आदि; इळ वॆयिलुम् कान्ऱिट–बालधूप फैलाते; कुटै वण्टु इनम्–फलों को कुरेदनेवाले भ्रमर कुल; पण् पाट–संगीत (सा) नाद करते हैं; आटल् मा–विजयी अश्वों की; मण् कुटै–धरती को कुरेदने से उठी; तूळि–धूली; विण् मऱैप्प–आकाश को छिपा देती; एकिनान्–(इस ठाट के साथ) वे आये। १२७६

तब श्वेतछत्र मन्द चाँदनी (सा प्रकाश) फैला रहे थे। किरीट आदि के रत्न बिजली के समान दर्शकों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करते हुए धूप-सी कांति बिखेर रहे थे। पुष्पों पर कुरेदते रहनेवाले भ्रमर संगीत की (सी) ध्वनि उत्पन्न कर रहे थे। अश्वों के टाप से धूलि उठी और उसका पटल आकाश को छिपा रहा था। इस ठाट से राजा चले। १२७६

**मङ्गल मुरशिऩ मळैयि ऩार्त्तऩ, शङ्गिऩ मुळङ्गिऩ तारै पेरिहै
पोङ्गिऩ मऱैयवर् पुहलु नाऩ्मऱै, कङ्गुलि ऩॊलिक्कुमा कडलुम् बोऩ्ऱदे 1277**

मङ्कलम् मुरचु इतम्–मंगलसूचक ढोल; मऴैयिऩ् आर्त्तत–मेघ के समान नर्दन कर उठे; चङ्कु इतम् मुऴङ्कित–शंख वाद्य-समूह बज उठे; तारै–शृंगियाँ; पेरिकै–नगाड़े; पोङ्कित–बज उठे; मऱैयवर् पुकलुम्–ब्राह्मणों द्वारा पारायण किये जानेवाले; नाल् मऱै–चारों वेदों की ध्वनि; कङ्कुलिऩ् ओलिक्कुम्–रात में नाद करनेवाले; मा कटल् पोऩ्ऱतु–बड़े समुद्र की-सी थी। १२७७

और मंगलसूचक ढोल मेघों के गर्जन के समान नर्दन कर रहे थे। शंख, तुरहियाँ, भेरियाँ आदि क्वणित हो उठीं। वेदज्ञ ब्राह्मण वेद का पारायण करते हुए जा रहे थे। वह शब्द रात में समुद्र-गर्जन के समान सुनाई दिया। १२७७

परन्दतेर् कळिऱुपाय् पुरवि पण्णयिल्, तरन्दर नडन्दऩ तातै वेन्दऩै
निरन्दरन् दॊऴुदॆऴु नेमि मऩ्ऩवर्, पुरन्दरऩ् पुडैवरु ममरर् पोऩ्ऱऩर् 1278

परन्त तेर्–विस्तृत स्थल पर आनेवाले रथ; कळिऱु–गज; पाय् पुरवि–सरपट दौड़नेवाले अश्व; पण्णयिल्–अनेक दलों में आनेवाले; तरम् तरम् नटन्तत–श्रेणी बाँधकर चले; तातै वेन्तऩै–सेना के स्वामी दशरथ को; निरन्तरम् तॊऴुतु ऎऴुम्–निरन्तर नमस्कार कर उठनेवाले; नेमि मऩ्ऩवर्–आज्ञाचक्रधारी राजा लोग; पुरन्तरऩ् पुटै वरुम्–पुरन्दर के साथ आनेवाले; अमरर् पोऩ्ऱऩर्–देवतुल्य थे। १२७८

विस्तृत थल में रथ, गज और सरपट दौड़नेवाले अश्व समूहों में और श्रेणीवद्ध हो चले जा रहे थे। सेना के स्वामी चक्रवर्ती की निरन्तर सेवा में लगे रहने के कारण जो उन्नत हो गये थे, वे राजा पुरन्दर के साथ देवों के समान दशरथ को घेरते हुए चले। १२७८

अऩैयवऩ् मण्टब मणुहि यम्बॊऩिऩ्, पुऩैमणि यादऩम् पॊलियत् तोऩ्ऱिऩाऩ्
मुऩैवरु मऩ्ऩरु मुऱैयि ऩेऱिऩार्, शऩहऩुन् दऩ्किळै तऴुव वेऱिऩाऩ् 1279

अऩैयवऩ्–वे; मण्टपम् अणुकि–मण्डप में पहुँचकर; अम् पॊऩ्ऩिऩ्–श्रेष्ठ स्वर्ण के; मणि पुऩै–रत्नसहित निर्मित; आतऩम्–आसन पर; पॊलिय–उसको शोभित करते हुए; तोऩ्ऱिऩाऩ्–विराजे; मुऩैवरुम्–मुनिगण; मऩ्ऩरुम्–राजा लोग भी; मुऱैयिऩ् एऱिऩार्–यथाक्रम अपने-अपने आसन पर आसीन हुए; चऩकऩुम्–जनक भी; तऩ्किळै तऴुवु–अपने बन्धु-बान्धवों के मध्य; एऱिऩाऩ्–आसनस्थ हुए। १२७९

वे दशरथ उस मण्डप में आकर स्वर्ण और रत्नों से निर्मित एक शानदार आसन पर विराजमान हुए। मुनिगण और राजा लोग अपने-अपने क्रम में अपने-अपने निर्दिष्ट आसन पर आसीन हुए। राजा जनक भी आसनस्थ हुए और उनको घेरकर उनके बन्धु-बान्धव विराजे। १२७९

मऩ्ऩरु मुऩिवरु मऱ्ऱु ळोर्हळुम्
अऩ्ऩमॆऩ् ऩडैयणङ् गऩैय मादरुम्
तुऩ्ऩिऩर् तुवऩ्ऱलिऱ् चुडर्हळ् शूऴ्वरुम्
पॊऩ्मलै यॊत्तदप् पॊरुविल् कूडमे 1280

मन्नरुम्–राजा लोग; मुनिवरुम्–मुनिगण; मऱ्ऱु उळोर्कळुम्–अन्य जो वहाँ रहे, वे पुरुष; अन्नम् मॅल् नटै–हंस की-सी मृदु चालवाली; अणङ्कु अनैय–श्रीलक्ष्मीदेवी सदृश; मातरुम्–स्त्रियाँ; तुन्निनर् तुवन्ऱलिन्–जो खचाखच भरी थीं, उनकी भीड़ से; अ पॉरु इल् कूटम्–वह अनुपम भवन; चुटर्कळ् चूऴ् वरुम्–ग्रह और नक्षत्रों से भरे; पॉन् मलै ऑत्ततु–मेरुपर्वत के समान रहा। १२८०

वह मण्डप राजा लोग, मुनिगण, अन्य पुरुष और हंस की-सी चाल वाली स्त्रियाँ —इन सब से खचाखच भर गया। तब वह मेरुपर्वत के समान जिसकी परिक्रमा ग्रह और नक्षत्र करते रहते हैं दिखाई दिया। १२८०

पुयलुळ मिन्नुळ पॉरुविन् मीनुळ
इयन्मणि यिनमुळ शुडरि रण्डुळ
मयन्मुदर् ऱिरुत्तिय मणिशॅय् मण्डबम्
अयन्मुदर् ऱिरुत्तिय वण्ड मॊत्तदे 1281

मयन्–मय ने (देवशिल्पी); मुतल् तिरुत्तिय–जिसका पहले निर्माण किया था; मणिचॅय् मण्टपम्–नवरत्न-खचित उस मण्डप में; पुयल् उळ–मेघ हैं; मिन् उळ–बिजली है; पॉरुविल् मीन् उळ–अनुपम नक्षत्र हैं; इयल् मणि इतम् उळ–कांतियुक्त मणिकुल (तारागण) हैं; चुटर् इरण्टुम् उळ–(सूर्य-चन्द्र) दोनों प्रकाशपुंज हैं; अयन् मुतल् तिरुत्तिय–ब्रह्मा ने जो पहले सृजित किया था उस; अण्टम् ऑत्ततु–अण्डगोल के समान था। १२८१

ब्रह्मा ने जो अण्ड पहले बनाया उसमें मेघ है, बिजली है, ग्रह और नक्षत्र पाये जाते हैं और तारागण हैं। सूर्य और चन्द्र हैं। इस मय-निर्मित मण्डप में भी मेघ, बिजली और तारों के स्थान में स्त्रियों के केश, शरीर और आँखें हैं। ग्रह (अन्य राजा) सूर्य और चन्द्र के स्थान में ज्योतिपुंज के समान दशरथ (सूर्यकुल के राजा) और जनक (चन्द्रकुल के राजा) हैं। अतः यह मण्डप भी ब्रह्म-रचित अण्ड के समान है। १२८१

ऑण्डव मुनिवरु मिऱैवर् यावरुम्
अण्डरुम् बिऱरुमबुक् कडङ्गिऱ् ऱादलाल्
मण्डबम् वैयमुम् वानुम् वाय्मडुत्
तुण्डवन् मणियणि युदरम् बोन्ऱदे 1282

ऑण् तवम् मुनिवरुम्–(श्रेष्ठ) मान्य तपस्वी; इऱैवर् यावरुम्–(दिग्पालक आदि) सभी राजा; अण्टरुम्–देवता लोग; पिऱरुम्–अन्य; पुक्कु अटङ्किऱ्ऱु–प्रवेश कर समाहित हो गये; आतलाल्–इसलिए; मण्टपम्–वह मण्डप; वैयमुम् वानम्–भूलोक और स्वर्गलोक को; वाय् मटुत्तु–अपने मुख में डालकर; उण्टवन्–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था उन श्रीविष्णु के; मणि अणि उतरम् पोन्ऱतु–मणि-सम सुन्दर उदर सदृश था। १२८२

जो तपस्या श्रेष्ठ मानी जाती है उस तपस्या के धनी मुनिगण, लोकपालक (दिग्पालक और राजा लोग), देवता लोग और अन्य, सभी

लोगों को उस मण्डप ने समा लिया। इस कारण वह श्रीमन्नारायण के, जिन्होंने आकाश और भूमि सबको अपने मुख में डालकर निगल लिया था, सुन्दर उदर से तुल्य था। १२८२

तरादल	मुदलुल	हनैत्तुन्	दळ्ळुऱ
विराविन	कुविन्दन	विळम्ब	वेण्डुमो
अरावणै	तुऱन्दुपोन्	दयोत्ति	मेविय
इराहवन्	शॅय्दियै	यियम्बु	वामरो 1283

तरातलम् मुतल्–धरातल से लेकर; उलकु अनैत्तुम्–सभी लोकों के वासी; तळ्ळुऱ–(विवाह देखने की इच्छा से) प्रेरित हो; विराविन कुविन्तन–मिलकर आये और एकत्रित हुए; विळम्प वेण्टुमो–(फिर) भीड़ की हालत कहना चाहिए क्या; अरा अणै तुऱन्तु–शेष शयन त्यागकर; पोन्तु–जाकर; अयोत्ति मेविय–अयोध्या में जो (अवतार लेकर) पहुँचे; इराकवन् चॅय्तियै–उन श्रीराघव का समाचार; इयम्पुवाम्–कहेंगे। १२८३

धरातल से लेकर सभी लोकों के वासी, श्री सीताराम विवाह के दर्शन करने की अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर वहाँ आकर मिल गये। फिर भीड़ की स्थिति या विशालता का क्या कहना ? अब हम श्रीरामचन्द्र का जो शेषशय्या त्यागकर अयोध्या में आकर अवतरित हुए थे, वृत्तान्त कहेंगे। १२८३

शङ्गिनन्	दवऴ्हड	लेऴिऱ्	ऱन्दवुम्
शिङ्गलि	लरुमऱै	तरिन्द	तीर्त्तङ्गळ्
गङ्गये	मुदलवुङ्	गलन्द	नीरिनाल्
मङ्गल	मञ्जन	मरबि	नाडिये 1284

चिङ्कल् इल्–अक्षय; अरु मऱै तॅरिन्त–श्रेष्ठ वेदों में उक्त; तीर्त्तङ्कळ्–पवित्रजल; कङ्कै मुतलवुम्–गंगा आदि का; चङ्कु इनम् तवऴ्–शंख कुल जहाँ रेंगते रहते हैं उन; कटल् एऴिल् तन्तवुम्–सातों समुद्रों से लाया हुआ जल; कलन्त नीरिनाल्–(दोनों के) मिश्रित जल से; मङ्कलम् मञ्चनम्–मंगलकर पवित्र मज्जन (स्नान); मरपिन् आटि–यथोक्त रीति से करके। १२८४

अक्षय वेदों में उक्त प्रकार से गंगा आदि पवित्र नदियों का जल लाया गया। फिर उन सातों समुद्रों का, जिनमें पवित्र शंख आदि जलचर रहते हैं, पुनीत जल भी लाया गया। उन दोनों के मिश्रित और सुवासित जल से श्रीराम ने मुकुटधारण उत्सव के अंग के रूप में यथोक्त रीति से अभिषेक किया। १२८४

कोदऱु	तवत्तुत्तङ्	गुलत्तु	ळोर्त्तॊऴुम्
आदियञ्	जोदियै	यडिव	णङ्गिनान्

कादियल् कयल्विलिक् कन्नि मार्हळै
वेदियर्क् करुमर्रै विदियि नल्हिये 1285

कातु इयल् कयल् विऴि–कर्ण तक आयत मछली-सी आँखों वाली; कन्निमार्कळै–कन्याओं को; वेतियरक्कु–वेदज्ञ विप्रों को (अविवाहित ब्रह्मचारियों को); अरु मर्रै वितियिन् नल्कि–श्रेष्ठ वेदोक्त रीति से; नल्कि–दान करके; कोतु अऱ्ऱ तवत्तु–निर्मल तपस्या के; तम् कुलत्तु उळोर्–अपने कुल के पूर्वजों से; तॊऴुम्–परम्परा से पूजित; आति अम् चोतियै–आदि परमज्योति श्रीरंगनाथ को; अटि वणङ्कितान्–चरण-पूजा की। १२८५

फिर वेदोक्त रीति से वेदपाठी ब्राह्मण ब्रह्मचारियों को कन्यादान किया गया। वे कन्यायें सुन्दर थीं, जिनकी मछली-सी आँखें कर्ण तक लम्बी थीं। फिर उन्होंने आदि परम ज्योति, श्रीरंगनाथदेव की, जिनकी आराधना उनके वंश के राजा परम्परा से करते आ रहे थे, चरण-पूजा की। १२८५

अऴिवरु तवत्तिनो डऱत्तै याक्कुवान्
ऒऴिवरुङ् गरुणयो रुरुवु कॊण्डॆन
ऎऴुदरु वडिवुडॊण् डिरुण्ड मेहत्तैत्
तऴुविय निलवॆनक् कलवै शात्तिये 1286

अऴिवरु–'ग्लानिगत'; तवत्तिनोटु–तपस्या के साथ; अऱत्तै–धर्म को; आक्कुवान्–स्थापित करने के लिए; ऒऴिवु अरु करुणै–अमर करुणा (निधि) ने; ओर् उरुवु कॊण्टतु–एक (मानव-) रूप ले लिया; ऎन–ऐसा; ऎऴुत अरु वटिवु कॊण्टु–(चि) लिखने के लिए कठिन सौंदर्य लेकर; इरुण्ट मेकत्तै तऴुविय–काले मेघ को अपने आलिंगन में जिसने ले लिया है; निलवु ऎन–उस चाँदनी के समान; कलवै चात्ति–चन्दन का लेप लगाकर। १२८६

(इस पद से श्रीराम के शृंगार का वर्णन है। पहले चन्दन लगाने का शृंगार बताया जाता है।) तप और धर्म क्षीण हो रहे थे उनको फिर से स्थापित करने के लिए मानो अक्षय करुणा ने मानव रूप धर लिया हो ऐसा था श्रीराम का रूप। और उनका सौन्दर्य इतना महान था कि चित्रण कठिन है। उन्होंने अपने शरीर पर चन्दन की चर्चा कर ली थी। तब ऐसा लगा मानो मेघ पर चाँदनी लग गई है। १२८६

मङ्गल मुऴुनिला मलर्न्द तिङ्गळैप्
पॊङ्गिरुङ् गरुङ्गडल् पूत्त दामॆनच्
चॆङ्गिडैच् चिहऴिहैच् चॆम्बॊन् मालयुम्
तॊङ्गलुन् दुयल्वरच् चुऴियत् जूडिये 1287

पॊङ्कु इरु करु कटल्–ज्वार में उठनेवाले विशाल और नीले सागर ने; मङ्कलम्–मंगलमय; मुऴु निला मलर्न्त तिङ्कळै–सारी कलाओं के साथ उत्फुल्ल चन्द्र

को; पूत्ततु आम्–अपने में रख लिया हो ऐसा; चॅम् किटै चिकऴिके–लाल "किडै" (नामक जल-लता खुखरी के तने) से बनी हुई "शिकऴिका" (नाम की माला) पर; चॅम् पॊन् मालैयुम्–लाल स्वर्ण की माला और; तॊङ्कलुम्–पुष्पों की मालाएँ; तुयल् वर–झूलते हुए; चुऴियम् चूटि–"चुऴियम्" (नाम का) शिरोभूषण पहनकर। १२८७

केशालंकार का वर्णन है। उनके केश पर पहले 'चिकऴिक' नाम का वलय पहनाया गया। (वह लाल किटै खुखरी ? नाम की जल-लता के तने का बना हुआ होता है। फूलों का भी बनता है— ११९७वाँ पद देखें।) उनका केश नीला सागर-सा था और यह आभूषण पूर्णचन्द्र के समान था। उसके बाद ऊपर "चुऴियम्" नाम का रत्नों का बना आभरण पहनाया गया। उससे स्वर्ण और पुष्प की मालाएँ लटक रही थीं। १२८७

एदमि लिरुकुऴै यिरवु नन्बहल्
कादल्हण् डुणर्न्दन कदिरुन् दिङ्गळुम्
शीदैतन् करुत्तिनैच् चॅवियि नुळ्ळुरत्
तूदुशॅन् ऱुरैप्पन पोन्ऱु तोन्ऱवे 1288

इरवु नन् पकल्–रात और अच्छे दिन में; चीतै तन् कातल्–सीताजी के प्रेम (की वेदना की स्थिति) को; कण्टु उणर्न्तन–देखकर जिन्होंने समझ लिया है; कतिरुम् तिङ्कळुम्–वे सूर्य और चन्द्र; तूतु चॅन्ऱु–दूत बनकर आये; करुत्तिनै–सीताजी के मन की बात को; चॅवियिन् उळ् उर–कानों में, अन्दर; उरैप्पन पोन्ऱु–कहते हों, जैसे; एतम् इल् इरु कुऴै–दोषहीन दो कुण्डल; तोन्ऱ–शोभा दे रहे थे। १२८८

उनके उज्ज्वल कर्णकुण्डल सूर्य और चन्द्र के समान थे, जो सीताजी की विरह-कथा देख जानकर, दूतों के रूप में, श्रीराम के कानों में वह समाचार कह रहे हों। १२८८

कार्विडक् करैयुडैक् कणिच्चि वानवन्
वार्शडैप् पुडैयिनोर् मदिमि लैच्चवत्तान्
शूर्शुडर्क् कुलमॅलाञ् जूडि नानॅन
वीरपट् टत्तॊडु तिलह मिन्नवे 1289

कार् विटम् करै उटै(य)–काले विष की कालिमा कण्ठ में धारण करनेवाले; कणिच्चि वानवन्–परशुधर देव (शिवजी) ने; वार् चटै पुटैयिन्–लम्बी जटाजूट पर; ओर मति मिलैच्च–चन्द्र की एक कला को धारण किया है, (मानो स्पर्द्धा में); चूर् चुटर् कुलम् ऎल्लाम्–दिव्य ज्योतिमण्डलों, सबों, को; तान् चूटिनान्–खुद धारण कर लिया हो; ऎन–ऐसा; वीर पट्टत्तॊटु–वीरता-सूचक पट्टी के साथ; तिलकम्–तिलक के; मिन्न–चमकते। १२८९

श्रीराम ने पट्टी और तिलक धारण कर ली। (यह पट्टी वीरतासूचक आभरण है।) पट्टी इतनी कांतियुत थी मानो सभी दिव्य ज्योतिमण्डल

एक साथ मिल गये हों और उस समूह को श्रीराम ने धारण कर लिया हो। नीलकंठ, परशुधर श्री शिवजी ने एक ही कलावाले चन्द्र को अपनी जटाजूट पर धारण कर लिया था। उसकी तुलना में श्रीराम की पट्टी जो स्वर्ण की बनी थी और जिसमें श्रेष्ठ रत्न आदि जड़ित थे, लाखों, करोड़ोंगुना श्रेष्ठ और शोभायमान रही। तिलक भी मिल गया, फिर क्या पूछना! । १२८९

शक्करत् तयल्वरुम् जङ्ग मामॆन्
मिक्कॊळिर् कळुत्तणि तरळ वॆण्गॊडि
मॊय्क्करुङ् गुळलिनाळ् मुरुव लुळ्ळुऱप्
पुक्कन निऱैन्दुमेऱ् पॊडिप्प पोन्ऱवे 1290

चक्करत्तु अयल् वरुम् चङ्कम् आम् ॲन–चक्रायुध के पास रहनेवाले शंख के समान; मिक्कु ऑळिर्–अधिक उज्ज्वल; कळुत्तु अणि–कण्ठ में पहने गये; वॆण् तरळम् कोटि–श्वेत मुक्ताओं के हार; मॊय् करु कुळलिनाळ्–घने काले केशवाली सीताजी की; मुरुवल्–मुस्कुराहट; उळ् उऱ पुक्कन–जो (श्रीराम के) मन में खूब पैठ गई थी वह; निऱैन्तु–वहाँ खूब भरने के बाद; मेल् पॊटिप्प पोन्ऱ–ऊपर छलक आयी हो ऐसे लगे। १२६०

श्रीराम का मुख चक्र-समान है तो कण्ठ उस चक्र के पास रहनेवाले शंख के समान। उस कण्ठ को उन्होंने मुक्ताहारों से अलंकृत कर लिया था और वे उनके श्रीवक्ष पर डोल रहे थे। उनको देखकर ऐसा लगता था मानो घने केशवाली सीताजी के हास, जो श्री रामजी के हृदय में (स्मृति के रूप में) थे वे छलककर बाहर आकर दिख रहे हों। १२९०

पन्दिशॆय् वयिरङ्गळ् पॊऱियिऩ् पाडुऱ
अन्दमिल् शुडर्मणि यळलिऩ् ऱोन्ऱलाल्
सुन्दरत् तोळणि वलयन् दॊल्लैनाळ्
मन्दरञ् जुऱ्ऱिय वरवै मानुमे 1291

पन्ति चॆय् वयिरङ्कळ्–पंक्तियों में जड़े हुए हीरे; पॊऱियिन् पाटु उऱ–सर्प की बिन्दियों के समान लगते; अन्तम् इल् चुटर् मणि–अपार कांति के माणिक्य; अळलिन् तोन्ऱलाल्–अग्नि के समान दिखाई देते, अतः; चुन्तरम् तोळ् अणि वलयम्–सुन्दर भुजाओं के बाहुवलय; तॊल्लै नाळ्–कभी पुराने दिनों में; मन्तरम् चुऱ्ऱिय–(क्षीरसागर मन्थन के अवसर पर) मन्दरपर्वत पर लपेटा हुआ; अरवै मानुम्–(वासुकी) सर्प-सम थे। १२६१

(अब बाहुवलय की बात आती है।) बाहुवलयों में बहुमूल्य हीरे जड़े हैं। वे सर्प के चमड़े की बिन्दियों के समान लगते हैं। रत्न हैं जो अंगारों के समान ज्वलंत हैं। इसलिए वे सुन्दर बाहुवलय उस वासुकी के समान लगते हैं जिसको अमृतमंथन के दिन मंदरपर्वत पर लपेटा गया था। (श्रीराम की भुजाएँ मेरु के समान थीं।) । १२९१

को; पूत्तत्तु आम्–अपने में रख लिया हो ऐसा; चॅम् किटै चिकऴिके–लाल "किडै" (नामक जल-लता खुखरी के तने) से बनी हुई "शिकऴिका" (नाम की माला) पर; चॅम् पॊन् मालैयुम्–लाल स्वर्ण की माला और; तॊङ्कलुम्–पुष्पों की मालाएँ; तुयल् वर–झूलते हुए; चुऴियम् चूटि–"चुऴियम्" (नाम का) शिरोभूषण पहनकर। १२८७

केशालंकार का वर्णन है। उनके केश पर पहले 'चिकऴिक' नाम का वलय पहनाया गया। (वह लाल किटै खुखरी ? नाम की जल-लता के तने का बना हुआ होता है। फूलों का भी बनता है— ११९७वाँ पद देखें।) उनका केश नीला सागर-सा था और यह आभूषण पूर्णचन्द्र के समान था। उसके बाद ऊपर "चुऴियम्" नाम का रत्नों का बना आभरण पहनाया गया। उससे स्वर्ण और पुष्प की मालाएँ लटक रही थीं। १२८७

एदमि लिरुकुऴै यिरवु नन्बहल्
कादल्हण् डुणर्न्दन कदिरुन् दिङ्गळुम्
शीदैतन् करुत्तिनैच् चॅवियि नुळ्ळुरत्
तूदुशॅन् ऱुरैप्पन पोन्ऱु तोन्ऱवे 1288

इरवु नन् पकल्–रात और अच्छे दिन में; चीतै तन् कातल्–सीताजी के प्रेम (की वेदना की स्थिति) को; कण्टु उणर्न्तन–देखकर जिन्होंने समझ लिया है; कतिरुम् तिङ्कळुम्–वे सूर्य और चन्द्र; तूतु चॅन्ऱु–दूत बनकर आये; करुत्तिनै–सीताजी के मन की बात को; चॅवियिन् उळ् उऱ–कानों में, अन्दर; उरैप्पन पोन्ऱु–कहते हों, जैसे; एतम् इल् इरु कुऴै–दोषहीन दो कुण्डल; तोन्ऱ–शोभा दे रहे थे। १२८८

उनके उज्ज्वल कर्णकुण्डल सूर्य और चन्द्र के समान थे, जो सीताजी की विरह-कथा देख जानकर, दूतों के रूप में, श्रीराम के कानों में वह समाचार कह रहे हों। १२८८

कार्विडक् करैयुडैक् कणिच्चि वानवन्
वार्शडैप् पुडैयिनोर् मदिमि लैच्चतान्
शूर्शुडर्क् कुलमॅलाज् जूडि तानॅन
वीरपट् टत्तॊडु तिलह मिन्नवे 1289

कार् विटम् करै उटै(य)–काले विष की कालिमा कण्ठ में धारण करनेवाले; कणिच्चि वानवन्–परशुधर देव (शिवजी) ने; वार् चटै पुटैयिन्–लम्बी जटाजूट पर; ओर मति मिलैच्च–चन्द्र की एक कला को धारण किया है, (मानो स्पर्द्धा में); चूर् चुटर् कुलम् ॲल्लाम्–दिव्य ज्योतिमण्डलों, सबों, को; तान् चूटितान्–खुद धारण कर लिया हो; ॲन–ऐसा; वीर पट्टत्तॊटु–वीरता-सूचक पट्टी के साथ; तिलकम्–तिलक के; मिन्न–चमकते। १२८९

श्रीराम ने पट्टी और तिलक धारण कर ली। (यह पट्टी वीरतासूचक आभरण है।) पट्टी इतनी कांतियुत थी मानो सभी दिव्य ज्योतिमण्डल

एक साथ मिल गये हों और उस समूह को श्रीराम ने धारण कर लिया हो। नीलकंठ, परशुधर श्री शिवजी ने एक ही कलावाले चन्द्र को अपनी जटाजूट पर धारण कर लिया था। उसकी तुलना में श्रीराम की पट्टी जो स्वर्ण की बनी थी और जिसमें श्रेष्ठ रत्न आदि जड़ित थे, लाखों, करोड़ोंगुना श्रेष्ठ और शोभायमान रही। तिलक भी मिल गया, फिर क्या पूछना! । १२८९

शक्करत् तयल्वरुञ् जङ्ग मामॆऩ
मिक्कॊळिर् कळुत्तणि तरळ वॆण्गोडि
मॊय्क्करुङ् गुळ्लिनाण् मुरुव लुळ्ळुऱप्
पुक्कऩ निऱैन्दुमेऱ् पॊङिप्प पोन्ऱवे 1290

चक्करत्तु अयल् वरुम् चङ्कम् आम् ॲन–चक्रायुध के पास रहनेवाले शंख के समान; मिक्कु ऑळिर्–अधिक उज्ज्वल; कळुत्तु अणि–कण्ठ में पहने गये; वॆण् तरळम् कोटि–श्वेत मुक्ताओं के हार; मॊय् करु कुळ्लिनाळ्–घने काले केशवाली सीताजी की; मुऱुवल्–मुस्कुराहट; उळ् उऱ पुक्कन–जो (श्रीराम के) मन में खूब पैठ गई थी वह; निऱैन्तु–वहाँ खूब भरने के बाद; मेल् पॊटिप्प पोन्ऱ–ऊपर छलक आयी हो ऐसे लगे। १२६०

श्रीराम का मुख चक्र-समान है तो कण्ठ उस चक्र के पास रहनेवाले शंख के समान। उस कण्ठ को उन्होंने मुक्ताहारों से अलंकृत कर लिया था और वे उनके श्रीवक्ष पर डोल रहे थे। उनको देखकर ऐसा लगता था मानो घने केशवाली सीताजी के हास, जो श्री रामजी के हृदय में (स्मृति के रूप में) थे वे छलककर बाहर आकर दिख रहे हों। १२९०

पन्दिशॆय् वयिरङ्गळ् पॊऱियिन् पाडुऱ
अन्दमिल् शुडर्मणि यळ्लिऱ् ऱोन्ऱलाल्
सुन्दरत् तोळणि वलयन् दॊल्लैनाळ्
मन्दरञ् जुऱ्ऱिय वरवॆ मानुमे 1291

पन्ति चॆय् वयिरङ्कळ्–पंक्तियों में जड़े हुए हीरे; पॊऱियिन् पाटु उऱ–सर्प की बिन्दियों के समान लगते; अन्तम् इल् चुटर् मणि–अपार कांति के माणिक्य; अळ्लिन् तोन्ऱलाल्–अग्नि के समान दिखाई देते, अतः; चुन्तरम् तोळ् अणि वलयम्–सुन्दर भुजाओं के बाहुवलय; तॊल्लै नाळ्–कभी पुराने दिनों में; मन्तरम् चुऱ्ऱिय–(क्षीरसागर मन्थन के अवसर पर) मन्दरपर्वत पर लपेटा हुआ; अरवॆ मानुम्–(वासुकी) सर्प-सम थे। १२६१

(अब बाहुवलय की बात आती है।) बाहुवलयों में बहुमूल्य हीरे जड़े हैं। वे सर्प के चमड़े की बिन्दियों के समान लगते हैं। रत्न हैं जो अंगारों के समान ज्वलंत हैं। इसलिए वे सुन्दर बाहुवलय उस वासुकी के समान लगते हैं जिसको अमृतमंथन के दिन मंदरपर्वत पर लपेटा गया था। (श्रीराम की भुजाएँ मेरु के समान थीं।)। १२९१

कोवयिऩ् पॅरुवड मुत्तङ् गोत्तऩ, कावलशॅय् तडक्कयि ऩडुवट् काऩ्दुव
मूवहै युलहिऱ्कु मुदल्व ऩामॅऩ, एवरुम् पॅरुङ्गुऱि यिट्ट पोऩ्ऱवे 1292

कावल् चॅय्–सर्वलोक पालन करनेवाले; तट कैयिऩ् नटुवण्–विशाल हाथों के मध्य; काऩ्तुव–दीप्ति देनेवाले; मुत्तम् कोत्तऩ–मोतियों को गूँथकर बनायी गई; कोवै इऩ् पॅरु वटम्–सुगठित मनोरम बड़ी-बड़ी लड़ियाँ; मू वकै उलकिऱ्कुम्–तीनों वर्ग के लोकों के; मुतल्वऩ् आम् ऍऩ–आदि नायक हैं, यह; एवरुम्–सब से; पॅरु कुऱि इट्ट पोऩ्ऱ–उत्कृष्ट प्रतीक लगा रखा हो, ऐसी लगीं। १२९२

हाथों में (कुहनियों के ऊपर) मध्य स्थान पर मोती की लड़ियाँ श्रीराम ने पहन ली थीं। वे हाथ लोकरक्षक हाथ हैं और मुक्तालड़ियों का यह आभरण उस बात का सूचक चिह्न है। वह त्रिलोकाधिपतित्व का सर्वसम्मत निशान-सा था। १२९२

माण्डपॊऩ् मणियणि वलयम् वऩ्दॆदिर्
वेण्डिऩर्क् कुदवुवाऩ् वेण्डिक् कऱ्पहम्
ईण्डुतऩ् कॊम्बिडै योऩ्ऱदा मॆऩक्
काण्डहु तडक्कयिऱ् कडक मिऩ्ऩवे 1293

कऱ्पकम्–कल्पतरु ने; ऍतिर् वऩ्तु वेण्टिऩर्क्कु–सामने आकर याचना करनेवालों को; उतवुवाऩ् वेण्टि–दान देने के लिए; ईण्टु तऩ् कॊम्पिटै–यहाँ अपनी शाखा पर; माण्ट पॊऩ् मणि अणि वलयम्–चोखे स्वर्ण और रत्नों से निर्मित कंकण; ईऩ्ऱतु आम ऍऩ–पैदा करके रख लिया हो, जैसे; काण् तकु–दर्शनीय; तट कैयिल्–विशाल हाथों में; कटकम् मिऩ्ऩ–कंकण चमकते हैं। १२९३

कलाई के ऊपर स्वर्ण-रत्न-कंकण थे। हाथों में कंकण देखकर ऐसा लगता था मानो कल्पतरु ने अपने सामने आनेवाले याचकों की प्रार्थना पूरी करने के लिए अपनी एक शाखा पर ऐसे कंकणों को उत्पन्न कर रख लिया हो, ऐसा लगता था। १२९३

तेऩुडै मलर्मह डिळैक्कु मार्बिऩिल्, ताऩिडै विळङ्गिय तहैयि ऩारऩ्दाऩ्
मीऩॊडु शुडर्विड विळङ्गु मेहत्तु, वाऩिडु विल्लॆऩ वयङ्गिक् काट्टवे 1294

तेऩ् उटै मलर् मकळ्–मधुसहित कमलपुष्प की वासिनी श्रीलक्ष्मीदेवी; तिळैक्कुम् मार्पिऩिल्–जहाँ आनन्द करती है उस श्रीवक्ष में; इटै विळङ्किय–(मोतियों के हारों के) मध्य ज्वलन्त; तकै इऩ् आरम्–श्रेष्ठ नवरत्नहार; मीऩ् चुटर् विट–नक्षत्रज्वलित; विळङ्कुम् मेकत्तु–विद्यमान मेघों में; वाऩ् इटु विल् ऍऩ–(उद्भूत) इन्द्र-धनुष के समान; वयङ्कि काट्ट–शोभासहित दिखता। १२९४

श्रीराम के वक्ष पर, जो कमलाजी का आनन्दमय निवासस्थान है, मुक्ताहारों के मध्य एक नवरत्न हार था। वह मनोरम हार उस मेघ के बीच, जिसमें नक्षत्र चमक रहे हों, उत्पन्न इन्द्रधनुष के समान था। १२९४

नणुहवु मरियदा नडक्कु ज्ञानत्तर्
उणर्वॅन वॉळिर्तरु मुत्त रीयन्दान्
कणिवरुङ् गरुणयान् कळुत्तिड् चात्तिय
मणियुमिळ् कदिरॅन मार्बिर् ड़ोन्ऱवे 1295

नणुकवुन् अरियतु आक–दुर्गम; नटक्कुम्–(ज्ञान-मार्ग में) चलनेवाले; ज्ञानत्तर्–ज्ञानी के; उणर्वु ॲन–पवित्र ज्ञान के समान; ऑळिर् तरुम्–ज्वलनशील; उत्तरीयम्–उत्तरीय; कणिवु अरु करुणैयान्–अगण्य करुणानिधि श्रीराम के; कळुत्तिल् चात्तिय मणि–गले में पहने हुए मुक्ताहारों से; उमिळ् कतिर् ॲन–निःसृत प्रकाश के समान; मार्पिल् तोन्ऱ–वक्ष पर शोभित हैं। १२६५

उनका उत्तरीय अगम ज्ञानमार्गी ज्ञानी के ज्ञान के समान पवित्र था। वह उन मुक्ताहारों से, जिनको अपार करुणा के स्वामी श्रीराम ने पहन रखे थे, निःसृत ज्योति के समान लगा। १२९५

मेवरुञ् जुडरॉळि विळङ्गु मार्बिनूल्
एवरुन् दॅरिन्दिनि दुणर्मि नीण्डॅनत्
तेवरु मुनिवरुन् दॅरिक्क लामुदल्
मूवरुन् दानॅन मुडित्त दॉत्तते 1296

मेव अरु–पास जाने में अशक्य; चुटर् ऑळि विळङ्कुम्–(सूर्य, चन्द्र, अग्नि–तीन) ज्योति-पुंजों के समान दीप्तियुत; मार्पिन् नूल्–श्रीवक्ष का त्रिसूत्री यज्ञोपवीत; तेवरुम् मुनिवरुम्–देवों और मुनियों से भी; तॅरिक्क अला–जानने के लिए दुर्लभ; मुतल् मूवरुम्–आदिदेव, त्रिमूर्ति; तान् ॲन–मैं हूँ, यह; ईण्टु–यहाँ; एवरुम्–सब कोई; तॅरिन्तु इतितु उणर्मिन्–जानकर आनन्द का अनुभव कर लो; ॲन–ऐसा कहकर; मुटित्ततु–एक साथ बाँधा गया हो; ऑत्ततु–ऐसा लगा। १२६६

श्रीरामचन्द्र के श्रीवक्ष में त्रिसूत्री यज्ञोपवीत कैसी शोभा दे रहा था? वह सूर्य, चन्द्र और अग्नि तीनों की एकत्रित ज्योति के समान था। "देव और मुनिगण भी जिनको जान नहीं पाये हैं वे तीनों आदि त्रिमूर्ति मैं ही हूँ, सब समझकर उसका लाभ उठाइये।" श्रीराम की ओर से यह सूचित करते हुए तीनों की एक गाँठ बाँधी गई हो ऐसा वह लगता था। १२९६

शुऱ्ऱुनी डमनियच् चोदि पॉङ्गमेल्, ऑऱ्ऱैमा मणियुमि ळुदर बन्दनम्
मऱ्ऱुमो रण्डमु मयनुम् वन्दॅळप्, पॉऱ्ऱडन् दामरै पूत्त दॉत्तदे 1297

चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; नीळ् तमनियम् चोति पॉङ्क–श्रेष्ठ स्वर्ण की कांति के उभर आते; मेल् ऑऱ्ऱै मा मणि–सामने मध्य में जड़ित एक बड़े रत्न से; उमिळ्–निकला प्रकाशयुक्त; उतर पन्ततम्–उदर बन्धन; मऱ्ऱुम् ओर् अण्टमुम्–दूसरा एक अण्डगोल और; अयतुम्–उसके सर्जक ब्रह्मा को; वन्तु ॲळ–उत्पन्न करने के लिए; पॉन् तट तामरै–स्वर्ण के बड़े कमल को; पूत्ततु–(श्रीराम की नाभी ने) खिलाया था; ऑत्ततु–जैसा था। १२६७

(उदरबन्धन पेट को लपेटकर पहनाये जानेवाला एक आभरण है। वह स्वर्ण से निर्मित किया जाता है और उसके मध्य सामने एक बड़ा नीला रत्न रखा जाता है।) उदरबंधन के स्वर्ण की कांति खूब छिटकती थी। नीला रत्न ज्वलंत था। वह एक नये कमलपुष्प के समान था जिस पर एक नये ब्रह्मा, जो नया अण्डगोल सृष्ट करेंगे, उदित होंगे। १२९७

मण्णुरु शुटर्मणि वयङ्कित् तोन्ऱिय
कण्णुरु करुङ्गड लदनैक् कैवळर्
तण्णिऱप् पाऱ्कड ऱ्ळीइय दामॅन
वॅण्णिऱप् पट्टॊळि विळङ्गच् चात्तिये 1298

मण् उरु–जल धौत; चुटर् मणि–उज्ज्वल रत्नों के साथ; वयङ्कि तोन्ऱिय–शोभायमान दिखनेवाले; कण् उरु–दर्शनीय; करु कटल् अतनै–नीले सागर को; कै वळर्–अधिक लहरों से युक्त; तण्णिऱम्–शीतल (मनोरम) रंगवाले; पाल् कटल् तळीइयतु–क्षीरसागर ने लपेट लिया; आम् ॲन–जैसे; वॅळ् निऱम् पट्टु–श्वेत कौशेय वस्त्र; ऑळि विळङ्क–शोभा बढ़ाते हुए; चात्ति–पहनकर। १२६८

जगन्नाथ ने कौशेय वस्त्र धारण कर लिया। नीले सागर सम उनके शरीर पर यह श्वेत कौशेय वस्त्र मनोरम तरंगों वाले क्षीरसागर के समान लगा जो जलधौत रत्नों के आगार, विशाल नीले सागर को लपेटे रहता है। १२९८

शलम्वरु तरळमुन् दयङ्गु नीलमुम्
अलम्वरु निळ्लुमि ळ्म्बॊर् कच्चिनाल्
कुलम्वरु कनहवान् कुन्ऱॆ निन्ऱुडन्
वलम्वरु कदिरॆन वाळुम् वीक्किये 1299

तयङ्कुम् नीलमुम्–कांत नीलमणियाँ; चलम वरु तरळमुम्–उसके विपरीत (रंगवाले) मोती; अलम् वरु निळल् उमिळ्–जिसमें रहकर परस्पर विपरीत प्रकाश छिटकाते हैं; अम् पॊन् कच्चिनाळ्–उस सुन्दर स्वर्णिम कमरबन्द से; कुलम् वरु–गौरवयुक्त; कनकम् वान् कुन्ऱॆ–स्वर्णमय, बड़े (मेरु) पर्वत को; वलम् वरु कतिर्–परिक्रमा करनेवाले सूर्य; उटन् निन्ऱु ॲन–उसी के साथ खड़े हो गये हों, ऐसा; वाळुम् वीक्कि–तलवार बाँधकर। १२६६

उदरबंधन के नीचे कमरबंद लगा लिया गया और उसमें तलवार बाँध दी गई। कमरबंद में नीले रत्न और उनके विपरीत प्रकाश को देनेवाले मोती सजाये गये थे। वह कमरबन्द भी सोने का था। उनकी तलवार सूर्य के समान लगी जो स्वर्णमय मेरु की परिक्रमा करना रोककर एक स्थान पर मेरुपर्वत से लगकर रुक गये हों। श्रीराम की देह मेरु से उपमित है। यद्यपि वह स्वतः स्वर्णिम नहीं थी, पर सोने के आभरणों के कारण वह मेरु के समान मानी गई। १२९९

मुहैविरि शुडरॊळि मुत्तिन् पत्तियाल्
तॊहैविरि पट्टिहैच् चुडरुञ् जुऱ्ऱिडत्
तहैयुडै वाळॆन्न् दयङ्गु वॆय्यवन्
नहैयिळ वॆयिलॆनत् तॊङ्ग नाऱ्ऱिये 1300

मुकै विरि–(कुंद) कलियों की-सी छटावाले; चुटर् ऑळि–कांत; मुत्तिन् पत्तियाल्–मोती की पंक्तियों से; तोकै विरि–जिसपर प्रकाश अधिक है; पट्टिकै चुटरुम्–कमरपट्टिका के प्रकाश से भी; चुऱ्ऱिट–आवृत्त; तयङ्कु–विद्यमान; तकै–सुन्दरतायुक्त; उटैवाळ् ॲनुम्–कटाररूपी; वॆय्यवन्–सूर्य की; नकै इळ वॆयिल् ॲन–भासित बालधूप-सा; तॊङ्कल् नाऱ्ऱि–लड़ियाँ लटकाकर। १३००

उसके बाद कमर में कमरपट्टिका पहनी गई उसमें कटार बाँधी गई। उस पट्टिका में कुन्दकलियों की आभावाले मोतियों की लड़ियाँ पाई गईं। कटार सूर्य के समान थी और उसके लाल धूप की झड़ियों के समान माणिक की लड़ियाँ कमरपट्टिका से लटकती रहीं। १३००

काशॊडु कण्णिळल् कञलक् कैवित्तै
एशलिल् किम्पुरि यॆयिऱु वॆण्णिला
वीशलिन् महरवाय् विळङ्गु वाण्मुहम्
आशयै यॊळिहळा लळन्दु काट्टवे 1301

कै वित्तै–हस्तकौशल की; एचल् इल्–जिसमें कमी नहीं; किम्पुरि–वह "किंपुरी" (ऊरु के आभरण) के; काचॊटु कण् निऴल्–रत्नजड़ित आँखों की कांति के; कञल्–बिखरते; ॲयिऱु–दाँत; वॆळ् निला वीचलिन्–श्वेत चाँदनी-सा प्रकाश फैलाते हैं, इसलिए; मकर वाय् विळङ्कुम्–मकरमुख-सा बना हुआ; वाळ् मुकम्–उज्ज्वल अग्रभाग; ऑळिकळाल्–अपनी विविध कांति की किरणों से; आचैयै अळन्तु काट्ट–दिशाओं को माप लेता है। १३०१

(इसमें किंपुरी नामक ऊरु के आभरण का वर्णन है। उसका मुख या अग्रभाग मकर के मुख के समान बनाया जाता है। मकर का मुख खुला रहता है। उसकी आँखों और दाँतों के स्थान पर रत्न, मोती आदि जड़े जाते हैं।)।

प्रभु श्रीराम ने "किंपुरी" पहनी। उसकी रचना बहुत सूक्ष्म और कुशल और विस्मयकारी कारीगरी के साथ हुई थी। उसकी रत्नजड़ित आँखें कान्ति थीं। दाँत चाँदनी-सा प्रकाश उगल रहे थे। मकर के मुख से जो प्रभा छूट रही थी वह दिशा-दिशा में इतनी दूर गई मानो दिशाओं को ही नाप रही हो। १३०१

इऩ्ऩिप्परन् दुलहिऩै यळप्प दॆङ्गॆनत्
तऩित्तऩि तडुप्पऩ पोलुञ् जाल्बिऩ

नुतिप्परु नुण्विनैच् चिलम्बु नोन्कळल्
पनिप्परुन् दामरैप् पादम् बऱ्ऱवे 1302

परन्तु–विशाल बनकर; उलकिनै अळप्पतु–लोकों को मापना; इनि ऍङ्कु–अब कहाँ; ऍन–कहकर; तनि तनि—अलग-अलग; तटुप्पन पोलुम्–रोकते से; चाल्पिन–प्रकृतिवाले; नुतिप्पु अरु–सूक्ष्म रूप से देखने पर भी जानने में कठिन; नुण् विनै–सूक्ष्म कारीगरी से युक्त; चिलम्पु–नूपुर और; नोन् कळल्–वीरतासूचक पायल; पनिप्पु अरु–न मुरझानेवाले; तामरै पातम् पऱ्ऱ–कमलचरणों को घेरते हैं। १३०२

नूपुर और पायलों का श्रृंगार देखिये। "अब फिर से दूर-दूर तक फैलकर लोकों को नापना कहाँ?" यह कहते हुए नूपुर उनके पैरों को अलग-अलग रोक रहे हों ऐसा वे उनके पैरों को लपेटे हुए थे। पायलों की भी वही बात थी। वे चरण-कमल कभी मुरझानेवाले नहीं थे। (नूपुर और पायल को अलग-अलग आभरण भी माना जा सकता है या चिलम्पुम् का अर्थ "झनझनानेवाले" लेकर "झनझनानेवाली पायल" भी कहा जा सकता है।)। १३०२

इन्नन पॊलिदर विमैय वर्क्कॆलाम्
तन्नये यॊप्पदोर् कोलन् दाङ्गिनान्
पन्नह मणिविळक् कळ्लुम् बायलुळ्
अन्नवर् तवत्तिना लनन्द नीङ्गिनान् 1303

इमैयवर्क्कु ऍलाम्–सभी देवों के लिए; अन्नवर् तवत्तिताळ्–उनकी तपस्या के फलस्वरूप; मणि विळक्कु अळ्लुम्—रत्न-दीपों की ज्योति देनेवाले; पन्नकम् पायलुळ्–पन्नगशय्या में; अनन्तल् नीङ्कितान्–निद्रा जिन्होंने त्याग दी, वे; इन्नतम् पॊलितर–इस तरह शोभायमान रहे; तन्नैये ऑप्पतु–अपने समान आप ही होनेवाले; ओर् कोलम् ताङ्कितान्–एक अनुपम रूप (बनाव) धर लिया। १३०३

श्रीराम श्रीविष्णु हैं। वे उस पन्नग को, जिसके रत्न दीपक-सा प्रकाश दे रहे थे, अपनी शय्या बनाकर निद्रा करते हैं। वे, वह शय्या छोड़कर देवों के हितार्थ, और उनकी तपस्या के फलस्वरूप अयोध्या में आकर अवतरित हुए थे। वे अब इस नये श्रृंगार में स्वोपम एक रूप में शोभे। १३०३

मुप्परम् बॊरुळुक्कु मुदलै मूलत्तै, इप्परन् दुडैत्तव रॆय्दु मिन्बत्तै
अप्पनै यप्पिनु ळमुदॆत् तन्नये, यॊप्पनै यॊप्पनै युरैक्क वॊण्णुमो 1304

मुप्परम् पॊरुळुक्कु–आदि त्रिमूर्ति के; मुतलै–आदि के; मूलत्तै–सृष्टि के आधार के; इ परम् तुटैत्तवर्–यह भवभार जिन्होंने दूर कर लिया है उन ज्ञानियों के; ऍय्तुम्–प्राप्य; इन्पत्तै–सुख रूप के; अप्पनै–जगत्पिता के; अप्पिनुळ् अमुतै–पय (क्षीरसागर) से उत्पन्न सुधा समान; तन्नैये ऑप्पनै–अपनी समता आप

ही करनेवाले श्रीराम के; ऒप्पत्तै–अलंकार की महिमा को; उरैक्क ऒण्णुमो–वर्णन कर सकते हैं क्या। १३०४

उनके अलंकार का कैसे वर्णन किया जायगा ? वे तीनों आदि देवों, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के भी आदि भगवान, जगत के मूल, भवभार-विमुक्त ज्ञानी के प्राप्य सुखस्वरूप, जगतपिता, क्षीरसागर से उत्पन्न अमृत से तुल्य, अपनी उपमा आप ही करनेवाले भगवान हैं। उन्होंने जो शृंगार कर लिया वह कैसे हम जैसों से वर्णित हो सकता है ? । १३०४

पल्पदि नायिरम् पशुवुम् पैम्बॊन्नुम्
ऎल्लयि निलत्तॊडु मणिहळ् यावयुम्
नल्लवर्क् कुदविना नविलु नान्मऱैच्
चॆल्वर्हळ् वाऴ्त्तुउऱत् तेर्वन् देऱिनान् 1305

पल् पत्तिनायिरम्–अनेक दस सहस्र; पचुवुम्–गायों को; पैम् पॊन्नुम्–उत्तम स्वर्ण को; ऎल्लै इल् निलत्तॊटु–अमाप भूमि के साथ; मणिकळ् यावैयुम्–नवरत्नों को; नल्लवर्क्कु–योग्य अच्छे व्यक्तियों को; उतवितान्–दान में देकर; नविलुम्–प्रकीर्तित; नाल् मऱै–चारों वेदों के; चॆल्वर्कळ्–धनी ब्राह्मणों के; वाऴ्त्तुउऱ–वेदमन्त्रों के साथ मंगलाशासन प्राप्तकर; वन्तु–आकर; तेर् एऱिनान्–रथ पर चढ़े। १३०५

अलंकृत होकर वे रथ पर आरूढ़ हुए। रथारोहण के पहले उन्होंने अनेक दस सहस्र गायों, स्वर्ण, नवरत्न और भूमि का योग्य अच्छे व्यक्तियों को दान दिया। प्रकीर्तित चारों वेदों के धनी ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर वे आकर रथ पर सवार हुए। १३०५

पॊऱ्ऱिर ळच्चदु वॆळ्ळिच् चिल्लिपुक्, कुऱ्ऱदु वयिरत्ति नुऱ्ऱ तट्टदु
शुऱ्ऱुरु नवमणि शुडरुन् दोऱ्ऱत्त, दॊऱ्ऱया ळिक्कदिरत् तेरॊ डॊत्तदे 1306

पॊन् तिरळ् अच्चतु–स्वर्णनिर्मित और स्थूल धुरवाला; वॆळ्ळि चिल्लि–चाँदी के चक्र; पुक्कु उऱ्ऱतु–सहित जो था; वयिर्त्तिन् उऱ्ऱ–हीरों से निर्मित; तट्टतु–पीठ का; चुऱ्ऱु उरुम्–चारों ओर जड़ित; नममणि चुटरुम्–नवरत्नों की कांति से ज्योतित; तोऱ्ऱत्ततु–रूपवाला; ऒऱ्ऱै आऴि–एक चक्र के; कतिर्–सूर्य के; तेरॊटु–रथ से; ऒत्ततु–तुल्य था। १३०६

उस रथ का धुर स्वर्ण का बना था और सुदृढ़ और स्थूल था। चक्र चाँदी के थे। पीठ पर हीरे जड़े थे। चारों ओर नवरत्न खचित हुए थे। वह सूर्य के एकचक्र-रथ के समान था। १३०६

नूल्वरुन् दहयन नुनिक्कु नोन्मय, शाल्पॆरुञ् जॆव्विय तरुम मादिय
नालयु मनयन पुरवि नान्गॊरु, पालमै पुणर्न्दन पक्कम् बूण्डवे 1307

नूल् वरुम् तकैयत्त–अश्वशास्त्र में उक्त प्रकार के लक्षणोंवाले; नुनिक्कुम् नोन्मैय–सारथी का इंगित समझनेवाले; चाल् पॅरु चॅव्विय–पूर्ण सुन्दर; तरुमम् आतिय नालैयुम् अत्तैय–धर्म आदि चारों पुरुषार्थों के समान रहनेवाले; नान्कु ऑरु पालमै पुणर्न्तन–चारों एकसम रहनेवाले; पुरवि–अश्व; पक्कम् पूण्ट–उस रथ में जुते हुए थे। १३०७

उसके अश्व कैसे थे ? वे अश्वशास्त्रों में कथित लक्षणों से युक्त थे। सारथी का इंगित जानने की शक्ति रखते थे। देखने में बड़े ही सुडौल और सुघड़ थे। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चार पुरुषार्थों के समान लगते थे। चारों एक ही सम दर्शनीय, शक्ति और स्वभाव के थे। ऐसे अश्व उस रथ के साथ जुते हुए थे। १३०७

अत्तैयदोर् तेरिनि लरुण निन्ऱॅनप्
पनिवरु मलर्क्कणप् परदन् कोल् कॉळक्
कुनिशिलैत् तम्बिय रिरुव रुङ्गुळैन्
दिनियपॉऱ् कवरिहा लियक्क वेहिनान् 1308

अत्तैयतु ओर् तेरितिल्–उस तरह के एक रथ पर; अरुणन् निन्ऱ ॲन–अरुण खड़ा हो, ऐसा; पनि वरु मलर् कण्–(आनन्द के) अश्रु सहित विकसित आँखों वाले; अ परतन्–उन भरत ने; कोल् कॉळ–वेत्र लिये (सारथ्य किया); कुनि चिलै–झुके धनुष लिये हुए; तम्पियर् इरुवरुम्–दोनों (लक्ष्मण और शत्रुघ्न) भाइयों ने; कुळैन्तु–विह्वल होकर; इनिय पॉन् कवरि–सुखद स्वर्ण-चामर लेकर; काल् इयक्क–हवा की, ऐसे; एकिनान्–(श्रीराम मनोरम रीति से) गये। १३०८

ऐसे रथ पर भरत जी, सूर्य के रथ में अरुण के समान, हाथ में वेत्र लेकर सारथी बने थे। उनकी आँखें अश्रु के साथ आनन्द से उत्फुल्ल थीं। अन्य दोनों भाई, लक्ष्मण और शत्रुघ्न, एक हाथ में झुके हुए धनुष को लिए हुए, दूसरे हाथ से स्वर्णदण्ड वाले चामर से हवा कर रहे थे। १३०८

अमैवरु मेनिया नऴहि नायदो, कमैयुरु मनत्तिनाऱ् करुद वन्ददो
शमैवुऱ वरिन्दिलन् दक्क दाहुह, इमैयव रायिना रिङ्गु ळारुमे 1309

अमैवु अरु मेनियान्–अप्राकृत शरीरी श्रीराम के; अऴकिन्–रूपलावण्य से; आयतो–(वह स्थिति) बनी; कमै उऱु मनत्तिताल्–धृतिसहित मन से; करुत–ध्यान करने से; वन्ततो–वह बनी; चमैवु उऱ–निश्चित रूप से; अऱिन्तिलम्–नहीं जाना; तक्कतु आकुक–जो सही हो, वही हो; इङ्कु उळारुम्–यहाँ रहनेवाले भी (भूलोकवासी भी); इमैयवर् आयिनार–देव (पलकहीन) हो गये। १३०९

अप्राकृत शरीरी श्रीराम की अपूर्व सुन्दरता के दर्शन से, या उस सुन्दरता के, क्षान्ति के साथ, ध्यान या चिन्तन में रत रहने से लोग बिना पलकें मारे खड़े रह गये। वे देवों के समान हो गये। पर उन दो में सही कारण कौन-सा था ? हम नहीं जान पाये। जो सही हो वही हो। (देवों की पलकें नहीं गिरतीं।)। १३०९

वरम्बरु मुलहितै वलिनुदु मायविन्ऱित्
तिरम्बयि लरक्करदम् वरुक्कन् देय्विन्नि
निरम्बिय वॆन्क्कोडु निऱैन्द तेवर्हळ्
अरम्बयर् कुळात्तॊडु माडन् मेयिनार् 1310

अरम्पैयर् कुळात्तॊटु–देवांगनाओं के समूहों के साथ; निऱैन्त तेवर्कळ्–भीड़ लगाकर जो आये वे देव; वरम्पु अऱ्ऱम्–असीम; उलकितै वलिन्तु–लोकों को त्रस्त कर; माय्वु इन्ऱि–विना नाश के; तिरम् पयिल्–जो रहते हैं, उन; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षसों के वर्ग का; तेय्वु–नाश; इन्नि निरम्पियतु–अब निश्चित हो गया; ऍन्न कॊंटु–यह मानकर; आटल् मेयिनार्–आनन्दनृत्य करने लगे। १३१०

देवता लोग सुरस्त्रियों के साथ आकाश में आकर एकत्र हो गये। उनको विश्वास हो गया था कि अब राक्षसों का, जो विशाल लोकों को हानि पहुँचाते हुए सकुशल रह रहे हैं, उनके वर्गों के साथ नाश निश्चित है। इसलिए वे नाचने लग गये। १३१०

शॊरिन्दनर् पूमळै शुण्णन् दूविनर्
विरिन्दॊळिर् काशुपॊन् तूशु वीशिनर्
परिन्दन रळ्हिनैप् परुहिनार् कॊलाम्
तॆरिन्दिलन् दिरुनहर् महळिर् चॆय्हये 1311

तिरु नकर् मकळिर्–उस श्रीमिथिला नगरी की अंगनाओं ने; पू मऴै–पुष्पवर्षा; चॊरिन्तनर्–बरसाई; चुण्णम् तूविनर्–सुगन्धचूर्ण छिड़का; विरिन्तु ऑळिर्–विकसित दीप्ति के; काचु–रत्नों; पॊन्–स्वर्ण; तूचु–और वस्त्रों को; वीचिनर्–बिखेरा; चॆय्कै तॆरिन्तिलम्–कृत्य (का कारण) नहीं समझते (हम); अऴकितै–श्रीराम की सुन्दरता को; परिन्तनर्–चाव के साथ; परुकितार् आम् कॊल्–पी लिया शायद। १३११

श्रीरामचन्द्र को देखकर उस श्रीमंत नगर की स्त्रियों ने पुष्प, सुगंध-चूर्ण, कान्तियुत रत्न, स्वर्ण और वस्त्रों को बरसाया। वे क्यों ऐसा करती हैं? हम प्रेरणा का मूल नहीं जानते। उन्होंने शायद श्रीराम की दिव्य सुन्दरता का आँखों द्वारा पान किया था। १३११

वळ्ळलै नोक्किय महळिर् मेन्नियिन्
एळ्ळरुम् पूणॆला मिरिय निऱ्किन्ऱार्
उळ्ळन यावयु मुदविप् पूण्डवुम्
कॊळ्ळयिर् कॊळ्हॆनक् कॊडुक्किन् ऱारिनै 1312

उळ्ळन यावैयुम् उतवि–अपने पास रहे सब को दान में देकर; पूण्टवुम्–जो पहने थे उन आभरणों को भी; कॊळ्ळैयिन् कॊळ्क–लुटा लें; ऍन्न–ऐसा कहकर; कॊटुक्किन्ऱारिन्–देनेवालों के समान; वळ्ळलै नोक्किय मकळिर्–श्रीराम की दर्शक स्त्रियाँ; मेन्नियिन्–अपने शरीर के; ऍळ्ळ अरु पूण् ऍल्लाम्–अनिंद्य आभरण,

सब को; इरिय–खिसककर गिरने देते हुए; निऱ्किन्ऱार्–(अचल) खड़ी रहती हैं। १३१२

उन स्त्रियों के पास (शरीर के बाहर) जितने थे उन सबको दे दिया। अब वे मानो अपने आभरणों को लुटा लेने दे रही हों ऐसा लगती हैं क्योंकि प्रेमातुरता से शरीर क्षीण हो गये और आभरण स्वतः सरक गये। अब वे उन उदार दानियों के समान थीं जो बाह्य वस्तुओं को दान कर देने के बाद अपने पहने हुए आभरणों को भी "लूट लो" कहकर लुटा रही हों। १३१२

ऍञ्जलि लुलहत् तळ्ळ वॅरिपडै यरश वॆळ्ळम्
कुञ्जरक् कुळात्तिऱ् चुऱ्ऱक् कॊऱ्ऱव निरुन्द कूडम्
वॆञ्जिनत् तनुव लानु मेरुमाल् वरैयिऱ् चेरुम्
शॆञ्जुडर्क् कडवु ळॆन्नत् तेरिन्मेऱ् चॆन्ऱु शेऱ्न्दान् 1313

ॲञ्चलिल्–अक्षय; उलकत्तु उळ्ळ–भूलोक में रहनेवाले; ॲरि पटै–अस्त्र-शस्त्रधारी; अरच वॆळ्ळम्–राजाओं की भीड़ के; कुञ्चरम् कुळात्तिन्–कुंजर झुण्ड के समान; चुऱ्ऱ–अपने को घेरे रहते; कॊऱ्ऱवन् इरुन्त–(जहाँ) चक्रवर्ती (दशरथ) रहे उस; कूटम्–मण्डप को; वॆम् चिनम्–भयंकर क्रोध (कर सकनेवाले); तनु वल्लानुम्–धनुर्द्धर श्रीराम भी; मेरु माल् वरैयिल् चेरुम्–मेरु नाम के बड़े पर्वत पर पहुँचनेवाले; चॆम् चुटर् कटवुळ् ॲन्न–लाल किरणोंवाले (सूर्य) देव के समान; तेरिन् मेल् चॆन्ऱु–रथ पर जाकर; चेर्न्तान्–पहुँचे। १३१३

श्रीराम चलते हुए महामेरु पर जानेवाले सूर्य के समान उस विवाह-मंडप में पहुँच गये, जिसमें राजा दशरथ विराजमान थे और उनको घेरकर गजदलों के समान शस्त्रधारी राजा लोग आसीन थे। वे राजा अत्यन्त विशाल भूमि के विभिन्न राज्यों के शासक थे। श्रीराम शत्रुओं पर भयंकर क्रोध कर सकते थे और वे धनुर्विद्या समर्थ थे। यानी वे पराक्रमी और परंतप थे। १३१३

इरदमाण् डिऴिन्द पिन्न रिरुमरुङ् गिरण्डु कैयुम्
बरदनु मिळैय कोवुम् परिन्दन रेन्दप् पैन्दार्
वरदनु मॆय्दि मैतीर् मादवर्त् तॊऴुदु नीदि
विरदमॆय्त् तादै पादम् वणङ्गिमा डिरुन्द वेलै 1314

पैन्तार् वरतनुम्–नवीन पुष्पमालाधारी वरद (श्रीराम) भी; आण्टु–वहाँ; इरतम् इऴिन्त पिन्नर्–रथ से उतरने के बाद; इरु मरुङ्कु–दोनों पार्श्व में; इरण्टु कैयुम्–दोनों हाथों को; परतनुम् इळैय कोवुम्–भरत और लघुराज लक्ष्मण के; परिन्तनर् एन्त–स्नेह के साथ सहारा देते; ॲय्ति–अन्दर जाकर; मै तीर्–निर्मल; मातवर् तॊऴुतु–महर्षियों (वसिष्ठ, कौशिक, शतानन्द आदि) का नमस्कार करके; नीति विरतम्–नीतिपरायण; मॆय्ताते–सत्यसंध पिता के; पातम् वणङ्कि–चरणों पर नत होकर; माटु इरुन्त वेलै–पास विराजे, तब। १३१४

नूतन पुष्पों की बनी माला के धारक वरद प्रभु श्रीराम मण्डप के सामने रथ से उतरे। दोनो भाई, भरत और लघुराज लक्ष्मण, पार्श्वों में हाथों का सहारा देते आये। श्रीराम ने मंडप के अन्दर आकर, अकलंक महर्षि वसिष्ठ, कौशिक, और शतानन्द को नमस्कार किया। पश्चात नीतिव्रती, सत्यसंध अपने पिता दशरथजी के चरणों की वन्दना करके, श्रीराम उनके पास विराजे। १३१४

शिलैयुडेक् कयल्वाट् टिङ्ग ळेन्दियोर् शेम्बोऱ् कोम्बर्
मुलैयिडै मुहिऴ्प्पत् तेरिन् मीमिशै मुळैत्त दन्नाळ्
अलैहडऱ् पिऱन्दु पिन्नै यवनियिऱ् ऱोन्ऱि मीळ
मलैयिडै युदिक्किन् ऱाळ्पोन् मण्डब मदनिल् वन्दाळ् 1315

ओर् चॆम् पॊन् कॊम्पर्–एक लाल, स्वर्णवर्ण पुष्पलता; चिलै उटै(य) कयल्–दो धनुओं को अपने ऊपर लेकर, दो कयल मछलियाँ; वाळ् तिङ्कळ्–उज्ज्वल पूर्ण चन्द्र को; एन्ति–उठाते हुए; मुलै इटै मुकिऴ्प्प–चमेली की कलियों को मध्य में पैदा कर लेकर; तेरिन् मी मिचै–रथ पर; मुळैत्ततु–उत्पन्न हो आई; अन्नाळ्–ऐसा रूप वाली देवी; अलै कटल् पिऱन्तु–तरंगसहित क्षीरसागर में जन्म लेकर; पिन्नै अवनियिल् तोन्ऱि–बाद धरती पर अवतार लेकर; मीळ–फिर से; मलै इटै–पर्वतमध्य; उतिक्किन्ऱाळ्–प्रकट होती हों; पोल–जैसे; मण्टपम् अतनिल् वन्ताळ्–विवाह-मण्डप में आई। १३१५

तब सीताजी भी आई। कवि की कल्पना देखिए। एक पुष्पलता एक उज्ज्वल चन्द्र को, जिसमें दो कयल मछलियाँ और उन पर दो धनुष थे, उठाते हुए रथ पर बैठे आती हो, और उसमें चमेली की कलियाँ लगी हों—ऐसा वे आई। और भी पहले जो सागरोद्भवा थीं वह अवनिजा हुई। अब वह फिर से अद्रिजा बन आयी हो, ऐसे आई। १३१५

नन्ऱिवा नवरॆला मिरुन्द नम्बियैत्
तुन्ऱिरुङ् गरुङ्गड ऱुवैप्पत् तोन्ऱिय
मन्ऱलङ् गोदयाण् मालै शूट्टिय
अन्ऱिनु मिन्ऱुडैत् तळहॆन् ऱाररो 1316

नन्ऱि वानवर् ऎल्लाम्–कृतज्ञ देवगण सब; इरुन्त नम्पियै–वहाँ विराज रहे नायक श्रीराम को; तुन्ऱु इरु करु कटल्–समृद्ध बड़े क्षीरसागर को; तुवैप्प–मथने से; तोन्ऱिय–वहाँ उदित; मन्ऱल् अम् कोतैयाळ्–सुगन्धित केश वाली श्रीलक्ष्मीदेवी ने; मालै चूट्टिय अन्ऱितुम्–जिस दिन (विवाह की) वरमाला पहनाई उस दिन से; इन्ऱु–बढ़कर आज; अऴकु उटैत्तु–अधिक सुन्दरता से युक्त हैं; ऎन्ऱार्–बोले। १३१६

कृतज्ञतापूर्ण देवों ने वहाँ विराजमान नायक को देखकर सोचा कि आज का दिन उस दिन से, जिस दिन विशाल क्षीरसागर के मथने से

उत्पन्न, सुवासित केशिनी श्रीलक्ष्मी के गले में उन्होंने विवाह-माला पहनायी थी, आज का दिन अधिक मनोरम है। १३१६

ऑलिहड लुलहिऩि लुम्बर् नाहरिल्
पॉलिवदु मऱ्ऱिवळ् पॊऱ्पॆऩ् ऱालिवळ्
मलिदरु मणम्बडु तिरुवै वायिऩाल्
मॆलिदरु मुणर्विऩे ऩॆऩ्वि ळम्बुहेऩ् 1317

ऑलि कटल्–गर्जनशील सागर की; उलकिऩिल्–इस भूमि में; उम्पर्–देवलोक में; नाकरिल्–और नाग (पाताल) लोक में; पॉलिवतु इवळ् पॊऱ्पु–विशिष्ट शोभाशालिनी है इनकी सुन्दरता; ॲऩ्ऱाल्–तो; मणम् पटु–विवाह के समय में प्रफुल्लित; मलि तरु तिरुवै–अत्यधिक रहनेवाली सौंदर्यश्री को; मॆलि तरुम् उणर्विऩेऩ्–अल्पबुद्धि मैं; वायिऩाल् ॲऩ् विळम्पुकेऩ्–अपने मुख से क्योंकर वर्णित करूँ। १३१७

श्री सीताजी गर्जनशील सागर वलयित इस भूलोक में ही क्या, पाताललोक और देवलोक में भी उनकी ही सुन्दरता (की महिमा) है। और आज तो उनका विवाह-दिन है। कन्याएँ विवाह के अवसर पर कई गुना सौन्दर्यवती हो जाती हैं। सीताजी का सौन्दर्य बहुत बढ़ गया। ऐसी स्थिति में अल्पबुद्धि मैं अपने मुख से उनकी सुन्दरता का कैसे वर्णन करूँगा ? । १३१७

इन्दिरऩ् शशियॊडु मॆय्दि ऩाऩिळम्, चन्दिर मौलितऩ् ऱैय लाळॊडुम्
वन्दऩऩ् मलरयऩ् वाक्कि ऩाळुडऩ्, अन्दरम् पुहुन्दऩ ऩऴहु काणवे 1318

अऴकु काण–(उत्सव-वैभव) ठाट देखने के लिए; अन्तरम्–आकाश में; इन्तिरऩ् चचियॊटुम् ॲय्तिऩाऩ्–इन्द्र शची के साथ पधारे; इळम् चन्तिर मौलि–बालचन्द्रमौलि (शिवजी); तऩ् तैयलाळॊटुम्–अपनी पत्नी (देवी पार्वती) के साथ; वन्तऩऩ्–पधारे; मलर् अयऩ्–कमलज अज; वाक्किऩाळुटऩ्–वाग्देवी के साथ; पुकुन्तऩऩ्–आ पहुँचे। १३१८

इस विवाहोत्सव की छटा, वैभव और सौन्दर्य देखने के लिए आकाश में इन्द्र शची के साथ, चन्द्रमौलि (शिवजी) देवी पार्वती के साथ और कमलज वाग्देवी के साथ पधारे। १३१८

नीन्दरुङ् गडलॆऩ निऱैन्द वेदियर्
तोय्न्दनूऩ् मार्बिऩर् शुऱ्ऱत् तॊऩ्ऩॆऱि
वाय्न्दनल् वॆळ्विक्कु वशिट्टऩ् मैयऱ
एय्न्दऩ कलप्पयो डिऩिदि ऩॆय्दिऩाऩ् 1319

नीन्त अरु कटल् ॲऩ–तरणदुस्तर सागर-सम; निऱैन्त–एकत्रित; वेतियर्–वेदज्ञ; तोय्न्त नूल् मार्पिऩर्–यज्ञोपवीतधारी वक्षवाले; चुऱ्ऱ–उनके चारों ओर घेरे आए; वचिट्टऩ्–वसिष्ठ; तॊल् नॆऱि वाय्न्त–प्राचीन परिपाटी के अनुसार;

नल् वेळ्विक्कु–श्रेष्ठ विवाह-यज्ञ के लिए; मै अऱ–दोषहीन; एय्न्तन–और आवश्यक; कलप्पॅयोटु–सामग्रियों के साथ; इन्तिन् ॲय्तिनान्–प्रसन्नता के साथ पधारे। १३१९

वसिष्ठजी पधारे। उनके साथ, तरणदुर्लभ सागर के समान विस्तृत वेदों के ज्ञाता यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण भी अधिक संख्या में आये। इस वेदोक्त, प्राचीन परिपाटी के अनुसार होनेवाले विवाह-यज्ञ के लिए आवश्यक साधन, उपकरण और सामग्रियाँ भी वसिष्ठजी अपने साथ लाये। १३१९

तण्डिलम् विरित्तनन् तरुप्पै शार्त्तिनन्
मण्डलम् विदिमुऱै वहुत्तु वॅण्मलर्
कॉण्डनल् शॉरिन्दॅरि कुळुम मूट्टिनन्
पण्डुळ मऱैनॅऱि परविच् चॅय्दनन् 1320

तण्टिलम् विरित्तनन्–("स्थण्डिलं स्थापयित्वा") बालू को चौकोर फैलाकर; तरुप्पै चार्त्तिनन्–दर्भ (यथोक्त प्रकार से) रखे; मण्टलम्–(अग्नि स्थापना के) गोल स्थल; विति मुऱै–विधि के अनुसार; वकुत्तु–ठीक करके; वॅळ् मलर् कॉण्टु–श्वेत पुष्प उचित स्थानों पर रखे; अनल् चॉरिन्तु–अग्नि स्थापित कर; ॲरि कुळुम–जले, ऐसा; मूट्टिनन्–प्रज्वलित किया; पण्टु उळ मऱै नॅऱि परवि–प्राचीन परम्परा के अनुसार मन्त्रों का प्रयोग कर; चॅय्तनन्–होमकर्म किया। १३२०

वसिष्ठजी ने स्थंडिल (बालू का चौकोर विस्तार) फैलाकर उसके ऊपर दर्भ रखे। फिर अग्निस्थापना का स्थल नियत किया। उस पर श्वेत पुष्पों को यथास्थान वितरित किया। उसके बाद अग्नि प्रज्वलित की और वह अग्नि जल उठी। तब वसिष्ठजी ने वेदमन्त्र उच्चरित करके होम कार्य किया। १३२०

❀ मन्ऱलिन् वन्दु मणत्तवि शेर्रि, वॅन्ऱि नॅडुन्दहै वीरनु मार्वत्
तिन्तुणै यन्नमु मॅय्दि यिरुन्दार्, ऑन्ऱिय बोहमुम् योहमु मॉत्तार् 1321

वॅन्ऱि–विजय; नॅट्टकै–व श्रेष्ठ गुण; वीरनुम्–(इनसे) युक्त वीर श्रीराम और; आर्वत्तु–(उनको) प्यार करनेवाली; इन् तुणै–प्रिय संगिनी (बनने को जो थीं वे); अन्नमुम्–हंसिनी (सीताजी) भी; मन्ऱलिन् वन्तु–विवाह मण्डप में आकर; मणम् तविचु एऱि–विवाह मंच पर चढ़कर; ॲय्ति इरुन्तार्–पास-पास आसीन हुए; ऑन्ऱिय–युक्त; पोकमुम्–भोग (मोक्ष का भोग); योकमुम्–और योग; ऑत्तार्–के समान रहे। १३२१

विजयशील और श्रेष्ठगुणी श्रीराम और उनसे प्यार करनेवाली, उनकी निर्णीत संगिनी सीताजी जो हंसिनी के समान चालवाली थीं, दोनों विवाहमंच पर आकर पास-पास आसीन हुए। तब वे सिद्धिभूत मोक्षभोग और उपायभूत योग के समान लगे। १३२१

❀ कोमहऩ् मुऩ्शऩ हऩ्गुळिर् नऩ्नीर्, पूमह ळुम्बॊरु ळुम्मॆऩ नीयॆऩ्
मामह ळऩ्ऩॊडु मऩ्ऩुदि यॆऩ्ऩात्, तामरै यऩ्ऩ तडक्कयि ऩीन्दाऩ् 1322

चऩकऩ्–जनक; कोमकऩ्मुऩ्–चक्रवर्ती तनुज के सामने आकर; पू मकळुम् पॊरुळुम् ॲऩ–कमला और परवस्तु (परब्रह्म) श्रीमन्नारायण जैसे; नी ॲऩ् मा मकळ् तऩ्ऩॊटु–आप मेरी उत्तम कन्या के साथ; मऩ्ऩुति–मिलकर रहिए; ॲऩ्ऩा–यह कहकर; तामरै अऩ्ऩ–कमल सदृश; तट कैयिऩ्–विशाल हाथ में; कुळिर् नल् नीर्–शीतल पवित्र जल को; ईन्ताऩ्–ढाला। १३२२

तब महाराज जनक चक्रवर्तीतनुज के सामने आये। कमला और परब्रह्म श्रीनारायण के समान आप मेरी उत्तम कन्या के साथ मिले रहिये। यह कहकर उन्होंने श्रीराम के कमलहस्त में जल ढाला। १३२२

❀ अन्दण राशि यरुङ्गल मिऩ्ऩार्, तन्दप लाण्डिशै तार्मुडि मऩ्ऩर्
वन्दऩै मादवर् वाळ्त्तॊलि पोल, मुऩ्दिऩ शङ्ग मुळङ्गिऩ मादो 1323

अन्तणर् आचि–ब्राह्मणों के आशीर्वचन; अरु कलम् मिऩ्ऩार्–अपूर्व आभरण-धारिणी (मंगलसूत्रधारिणी) सधवा स्त्रियों के; तन्त–गाये हुए; पल्लाण्टु इचै–"अनेक वर्ष मंगल हो" वाले गीत; तार् मुटि मऩ्ऩर्–माला से अलंकृत किरीटधारी राजाओं की; वन्तऩै–वन्दना; मातवर् वाळ्त्तु ऑलि–बड़े तपस्वियों की बधाई का नाद; पोल–इनके समान; मुऩ्तिऩ चङ्कम्–मंगल सूचना के लिए श्रेष्ठ मान्य शंख; मुळङ्किऩ–निनादित हो उठे; (मातो)। १३२३

उस अवसर पर ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया। मंगलसूत्रधारिणी सधवाएँ "जीव" गीत गाने लगीं। माला से युक्त किरीटधारी राजा लोगों ने वन्दना के वचन कहे। महान तपस्वियों, जैसे वसिष्ठ, कौशिक, शतानन्द आदि ने बधाई दी उन सबका स्वर भर उठा। उसी सम्मिलित स्वर के समान मंगलवाद्य शंख भी बजाये गये और वह नाद भी भर उठा। १३२३

❀ वाऩवर् पूमळै मऩ्ऩवर् पॊऩ्पू, एऩयर् तूवु मिलङ्गॊळि मुत्तम्
ताऩहु नाण्मल रॆऩ्ऱिवै तम्माल्, मीऩहु वाऩिऩ् विळङ्गिय दिप्पार् 1324

वाऩवर् पू मळै–सुरों की पुष्पवर्षा; मऩ्ऩवर् पॊऩ् पू–राजाओं की स्वर्णवर्षा; एऩैयर् तूवुम्–अन्यों के द्वारा बरसाये गये; इलङ्कु ऑळि मुत्तम्–भासमान मोती; ताऩ् नकु नाळ् मलर्–स्वविकसित नवीन फूल; ॲऩ्ऱ इवै तम्माल्–ऐसे इनसे; इ पार्–यह भूतल; मीऩ् नकु–नक्षत्रखचित; वाऩिऩ् विळङ्कियतु–आकाश-सम शोभित था। १३२४

देवों के बरसाये कल्पलता के फूल, राजाओं के बरसाये स्वर्ण के फूल, अन्यों के बरसाये मोती, स्वयं विकसित फूल —इन सबसे भरकर भूलोक नक्षत्रसंकुल आकाश के समान शोभायमान हुआ। १३२४

वॆय्य कनट्ट्रलै वीरनु मन्नाळ्, मैयरु मन्दिर मुऱ्ऱुम् वळङ्गा
नॆय्यमै यावुदि यावयु नेऱ्न्दान्, तैय ऱळिर्क्कै तडक्कै पिडित्तान् 1325

अन् नाळ्–उस दिन (सवेरे); वीरनुम्–वीर राघव ने; वॆय्य कनल् तलै–कांक्षनीय अग्नि-मुख में; नॆय् अमै आवुति यावैयुम्–घी के साथ होनेवाले सभी होमकार्य को; मै अऱु–दोषरिक्त; मन्तिरम् मुऱ्ऱुम्–मन्त्र सब; वळङ्का–कहकर; नेर्न्तान्–करके; तैयल् तळिर् कै–कन्या का पल्लवहस्त; तट कै पिटित्तान्–अपने विशाल हाथ से ग्रहण किया। १३२५

उस दिन सवेरे वीर राघव ने कांक्षणीय अग्निमुख में घी के साथ होनेवाले सभी होम किये; सम्पूर्ण मन्त्र श्रद्धा के साथ पढ़े और सीताजी के पल्लव-सम पाणी को अपने विशाल पाणी से ग्रहण किया। १३२५

इडम्बडु तोळव नोडियै वेळ्वि, तॊडङ्गिय वॆङ्गनल् शूळ्वरु पोदिन्
मडम्बडु शिन्दयण् माऱु पिऱप्पिन्, उडम्बुयि रैत्तॊडर् हिन्ऱदै यॊत्ताळ् 1326

मटम् पटु चिन्तैयळ्–स्त्रियोचित संकोचशील मनवाली; इयै वेळ्वि तॊटङ्कि–युक्त विवाह कार्य प्रारम्भ कर; इटम् पटु तोळवनोटु–विशाल कन्धे वाले श्रीराम के साथ; अ वॆम् कनल् चूळ् वरु पोतिन्–कमनीय होमाग्नि की परिक्रमा करते समय; माऱु पिऱप्पिन् उटम्पु–दूसरे जन्म का शरीर; उयिरै तॊटर्किन्ऱतै–प्राणों (आत्मा) को अनुगमन करता; ऒत्ताळ्–जैसा लगी। १३२६

स्त्रीसहज संकोचशील स्वभाव वाली सीताजी ने भी अपना कर्तव्य रस्म अदा किया। विशाल कंधे वाले श्रीराम के साथ जब वे अग्नि की परिक्रमा करने लगीं तब ऐसा लगा मानो बाद के जन्म का शरीर पिछले जन्म के जीव (आत्मा) का अनुगमन करता हो। [यही धारणा सर्वसम्मत है कि जीव (आत्मा) शरीर से आकर लग जाता है। इधर विपरीत बात कही गयी है। तो भी सोचने पर यह भी ठीक लगेगा क्योंकि भगवान को शरीरी, अन्तर्यामी, और जीव को शरीर माना जाता है। यही वैष्णवसिद्धान्त है।]। १३२६

वलङ्गॊंडु तीयै वणङ्गिनर् वन्दु
पॊलम्बॊरि शॆय्वन शॆय्पॊरुण् मुऱ्ऱि
इलङ्गॊळि यम्मि मिदित्तॆदिर् निन्ऱ
कलङ्गलिल् कऱ्पि नरुन्ददि कण्डार् 1327

तीयै वलम् कॊंटु–दोनों ने अग्नि की परिक्रमा करके; वन्तु–आकर; वणङ्किनर्–नमस्कार किया; पॊलम् पॊरि चॆय्वन–कमनीय लाजा-होम; चॆय् पॊरुळ्–और कर्तव्य सब; मुऱ्ऱि–पूर्ण करके; इलङ्कु ऒळि–कांति सहित विद्यमान; अम्मि मितित्तु–सिल पर चरण रखने का रस्म (वधू का) अदा किया; ऎतिर् निन्ऱ–सामने स्थित; कलङ्कल् इल् कऱ्पिन्–अचल पतिव्रता; अरुन्तति कण्टार्–अरुन्धती का दर्शन किया। १३२७

दोनो ने होमाग्नि की परिक्रमा की। फिर लाजाहोम और अन्य कर्तव्य क्रियाएँ कीं। बाद वधु द्वारा सिल पर चरण रखने का कार्य हुआ और सामने दिखाई देनेवाली अरुन्धती को देखने का रस्म भी अदा किया गया। (ये दोनो कार्य दक्षिण में विवाह के मुख्य अंग माने जाते हैं। इनका तात्पर्य है कि पतिव्रता धर्म का पालन न करने से पत्थर --जैसे अहल्या बनी थीं— बनना पड़ेगा और पतिव्रता धर्मपालन के लिए अरुन्धती का उदाहरण सामने रखा जाय। अरुन्धती श्री वसिष्ठजी की पत्नी हैं। दोनो नक्षत्र के रूप में विद्यमान हैं। दिन में अरुन्धती देखना कठिन है। तो भी औपचारिक रीति से उस दिशा में दृष्टि करके तृप्ति कर ली जाती है। सीताजी के विषय में तो देवी अरुन्धती सामने ही थीं।)। १३२७

❀ मऱ्ऱुळ शॅय्वन शॅय्दु महिऴ्न्दार्
मुऱ्ऱिय मादवर् ताण्मुऱै शूडिक्
कॊऱ्ऱ्र वनैक्कऴल् कुम्बिड लोडुम्
पॊऱ्ऱॊडिक् कैक्कॊडु पॊन्मनै पुक्कान् 1328

चॆय्वत मऱ्ऱु उळ–करणीय अन्य सब; चॆय्तु–सुसम्पन्न करके; मकिऴ्न्तार्–हर्षित हुए वे; मुऱ्ऱिय मातवर् ताळ्–पूरा किये हुए तप वाले (वसिष्ठ आदि) महर्षियों के चरणों पर; मुऱै चूटि–यथोचित क्रम से सिर नवाकर (दण्डवत करके); कॊऱ्ऱवनै–चक्रवर्ती को भी; कऴल् कुम्पिटलोटुम्–दण्डवत करने के बाद; पॊन् तॊटि कै कॊटु–स्वर्णकंकणधारिणी सीताजी का हाथ पकड़े हुए; पॊन् मनै पुक्कान्–कमनीय अपने महल में प्रविष्ट हुए। १३२८

अन्य कर्तव्य कार्य भी पूरा करके मुदितमन श्रीराम ने वसिष्ठ आदि महर्षियों को दण्डवत की; फिर चक्रवर्ती के चरणों पर सिर धरकर नमस्कार किया। फिर श्रीराम स्वर्णकंकणधारिणी देवी सीता के साथ अपने भवन में पधारे। १३२८

आर्त्तन पेरिह ळार्त्तन शङ्गम्
आर्त्तन नान्मऱै यार्त्तनर् वानोर्
आर्त्तन पल्हलै यार्त्तन पल्लाण्
डार्त्तन वण्डिन मार्त्तन वण्डम् 1329

पेरिकळ् आर्त्तन–भेरियाँ बज उठीं; चङ्कम् आर्त्तन–शंखध्वनि हुई; नाल् मऱै आर्त्तन–चारों वेद उद्घोषित किये गये; वानोर् आर्त्तनर्–आकाशलोकवासियों ने आनन्दरव मचाया; पल् कलै–विविध कलाएँ; आर्त्तन–मुखरित हुईं; पल्लाण्टु आर्त्तन–'जयजीव' के गीत सुनाई दिये; वण्टु इनम् आर्त्तन–भ्रमर कुल ने गुंजार किया; अण्टम् आर्त्तन–सारे अण्डगोल आनन्दनाद कर उठे। १३२९

विवाह के सारे रस्म पूरा होने के बाद भेरियाँ नर्दन कर उठीं। शंख बजाये गये। चारों वेदों का घोष किया गया। सुरों ने आनन्दनाद

किया। विविध कलाएँ (संगीत आदि) या शास्त्र मुदित हुए। 'जयजीव' के गीत सुनाई दिये। भ्रमरकुल ने गुंजार किया। सारे अण्डों ने संतोष का हल्ला मचाया। सब जगह आनन्दनर्दन भरा रहा। १३२९

केहयन् मामहळ् केळ्हिळर् पादम्, तायिनु मन्बोंडु ताळ्न्दु वणङ्गि
आयद नन्नै यडित्तुणं शूडित्, तूय शुमित्तिरै ताडोळ् लोडुम् 1330

केकयन् मा मकळ्–केकयराज की मान्य पुत्री के; केळ् किळर् पातम्–आदरणीय चरणों पर; तायिनुम् अन्पोटु–माता के प्रति होनेवाले प्रेम से अधिक प्रेम के साथ; ताळ्न्तु वणङ्कि–भूमि पर पड़कर नमस्कार करके; आय–वात्सल्य भरी; तन् अन्नै–अपनी माता के; तुणं अटि चूटि–चरणद्वय सिर पर लगा लेकर (दण्डवत करके); तूय–पवित्रमना; चुमित्तिरै ताळ् तोळ्लोटुम्–सुमित्रादेवी के पैर स्पर्श करने पर। १३३०

श्रीराम ने केकयराजकुमारी (कैकेयी) के उज्ज्वल चरणों पर, जननी माता (कौसिल्या) से (जितना, उतने से भी) अधिक मातृ-प्रेम के साथ नमस्कार किया। फिर क्रम से उन्होंने अपनी माता के पैर सिर पर धारण किये। और पवित्र मन वाली सुमित्रा देवी के पैरों पर नमस्कार किया। १३३०

अन्नमु मन्नव रम्बोन् मलर्त्ताळ्
शॅन्नि पुनैन्दनळ् शिन्दै महिळ्न्दार्
कन्नि यरुन्ददि कारिहै काण
नन्मह नुक्किव णल्लणि यॅन्ड्रार् 1331

अन्नमुम्–हंसिनी (सीता) ने भी; अन्नवर्–उन (तीनों) के; अम् पॊन् मलर् ताळ्–सुन्दर श्रेष्ठ कमल चरणों को; चॅन्नि पुनैन्तनळ्–सिर पर लगा लिया; चिन्तै मकिळ्न्तार्–प्रसन्नचित्त होकर (उन्होंने); कन्नि अरुन्तति–अचल पातिव्रत्य वाली अरुन्धती (सम) इसकी; कारिकै काण–मनोहारिणी शोभा देखने से; इवळ्–ये; नल् मकनुक्कु–सर्वगुणपूर्ण हमारे पुत्र की; नल् अणि–उत्तम आभूषण होगी; ॲन्ड्रार्–कहा। १३३१

तब हंसिनी (सदृश) सीता ने भी उनके सुन्दर उज्ज्वल चरणों को अपने सिर पर धरकर प्रणाम किया। तब माताओं ने सन्तोष के साथ उनकी प्रशंसा की कि अचल पातिव्रत्य की देवी अरुन्धती तुल्य इसको देखने पर (यह विश्वास हो जाता है कि) यह हमारे सुपुत्र के लिए श्रेष्ठ भूषण होगी। १३३१

शङ्गव ळैक्कुयि लैत्तळि निन्ड्रार्, अङ्गण नुक्कुरि यारुळ रावार्
वॆण्ग ळिनिप्पिऱ राऱुळ रॆन्ड्रार्, कण्गळ् कळिप्प मतङ्गळ् कळिप्पार् 1332

चङ्कम् वळै कुयिलै–शंखकंकणहस्ता कोकिलवाणी का; तळि निन्ड्रार्–(अलग-अलग) गले लगाकर; अम् कणनुक्कु–सुन्दर और कृपाल (श्रीराम) के; उरियार्

उळर्–योग्य; आवार् पॅण्कळ्–रहनेवाली कन्यायें; इति पिऱर् आर् उळर्–इसके सिवा कौन हो सकती हैं; ॲन्ऱार्–कहकर; कण्कळ् कळिप्प–आँखों से आनन्द प्रकट करते हुए; मतङ्कळ् कळिप्पार्–मन में भी मुदित हुईं। १३३२

उन तीनो सासों ने बारी-बारी से शंखकंकणधारिणी, कोकिलबयनी, उन सीताजी को गले लगाया। और आँखों में तृप्ति प्रतिफलित करते हुए और मन में प्रसन्नता के साथ उन्होंने उद्‌गार निकाली कि हमारे सुन्दराक्ष और कृपालु श्रीराम के योग्य वधू इनसे बढ़कर कौन है ? । १३३२

ॲण्णिल कोडिपॉ नॅल्लयिल् कोडि, वण्ण वरुङ्गल मङ्गयर् वॅळ्ळम्
कण्णह नाडुयर् काशॊडु तूशुम्, पॅण्णि नणङ्गनै याळ्पॅरु हॅन्ऱार् 1333

ॲण् इल कोटि पॊन्–असंख्य करोड़ अशर्फियों को; ॲल्लै इल् कोटि–अपार करोड़; वण्णम् अरु कलम्–अनेक वर्णों के अपूर्व आभरणों को; मङ्कैयर् वॅळ्ळम्–(दासी-) स्त्रियों की भीड़ को; कण् अकल् नाटु–विस्तृत भूप्रदेश; उयर् काचॊटु–श्रेष्ठ रत्नों के साथ; तूचुम्–वस्त्रों को; पॅण्णिन् अणङ्कु अनैयाळ्–स्त्रियों में देवी-सी ये; पॅरुक ॲन्ऱार्–प्राप्त करें (भेंट में); ॲन्ऱार्–(सासों ने) कहा। १३३३

(नमस्कार करनेवालों को पुरस्कार देना सामान्य प्रथा है। उसके अनुसार—) सासों ने, "असंख्य करोड़ स्वर्ण की अशर्फ़ियाँ, अपार करोड़, विविध प्रकार के गहने, अनेक (दासी-)स्त्रियों का दल, विस्तृत भू-प्रदेश, बहुमूल्य रत्न, और श्रेष्ठ वस्त्र, तुम्हें प्राप्त हों।" —कहा (और दिला दिये।) । १३३३

नूऱ्कड लन्ऩवर् शॊऱ्कड नॊक्कि
माऱ्कडल् पॊङ्गु मनत्तव ळॊडुम्
काऱ्कडल् पोऱ्करु णैक्कडल् पण्डॆप्
पाऱ्कड लॊप्पदॊर् पळ्ळि यणैन्दान् 1334

करुणै कटल्–करुणासागर (श्रीराम); नूल् कटल् अन्नवर् चॊल्–शास्त्रों के सागर-सम बड़ों से विहित; कटन् नॊक्कि–अनुष्ठान के अनुसार कार्य करके; माल् कटल् पॊङ्कुम् मनत्तवळॊटुम्–जिनका मन प्रेम से सागर के समान उमंगता था उन सीताजी के साथ; काल् कटल् पोल्–हवा से उद्वेलित समुद्र के समान (आनन्दोमंग के साथ); पण्टै पाल् कटल् ऑप्पतु–प्राचीन क्षीरसागर तुल्य; ओर् पळ्ळि–एक शय्या पर; अणैन्तान्–विराजे। १३३४

करुणा के समुद्र (-स्वरूप) श्रीराम ने, दिन में शास्त्रों के समुद्र (स्वरूप) आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट कार्य पूरा करके, रात को, सीताजी के साथ, जिनके मन में प्रेम का सागर उमड़ रहा था, स्वयं पवनोत्तेजित समुद्रसम उत्साह लेकर शय्या पर गये। वह शय्या प्राचीन क्षीरसागर के समान (स्वच्छ और शुभ्र) थी। १३३४

[इधर विवाह-कार्य चार दिन तक करने की प्रथा है। हर दिन दिन में होम आदि होता है। रात में वर और वधू शयनगृह में साथ रहते हैं। इसको समावेशन कहा जाता है। इस पद में सागर शब्द बार-बार आया है।]

पङ्गुनि युत्तर मान् पहऱ्पो
दङ्ग विरुक्किनि लायिर नामच्
चिङ्ग मणत्तॊळिल् शॆय्द तिऱत्ताल्
मङ्गल वङ्गि वशिट्टन् वहुत्तान् 1335

वचिट्टन्—मुनिवर वसिष्ठ ने; पङ्कुनि उत्तरम् आन्—(मीन) फाल्गुन मास की उत्तराफाल्गुनी के; पकल् पोतु—दिन में; अङ्कम् इरुक्किनिल्—अंग-उपांग सहित वेदों में उक्त; आयिरम् नामम्—सहस्र नामधारी; चिङ्कम्—केसरी श्रीराम का; मणम् तॊळिल्—विवाह कार्य; चॆय्त तिऱत्ताल्—जैसे किया उसी क्रम से; मङ्कलम् अङ्कि—कल्याणोचित अग्निकार्य; वकुत्तान्—(अन्य दिनों में भी) किया। १३३५

वसिष्ठजी ने फालगुन (मीन) मास के उत्तराफालगुनी नक्षत्र के दिन, अंग-उपांग सहित वेदों में प्रशंसित सहस्रनामधारी केसरी सदृश श्रीराम से जो विवाहोचित होम-कार्य आदि कराया, उसी प्रकार (अन्य तीनो दिनों में) कराके (शेष-होम के साथ) विवाह-संस्कार पूरा किया। १३३५

वळ्ळ ऱनक्किळै योऱ्ह डमक्कुम्, ऍळ्ळलिल् कॊऱ्ऱवन् यान्पि नळित्त
अळ्ळन् मलर्त्तिरु वन्नवर् तम्मैक्, कॊळ्ळु मॆनत्तम रोडु कुऱित्तान् 1336

ऍळ्ळल् इल् कॊऱ्ऱवन्—अनिन्द्य विजयी जनक ने; वळ्ळल् तनक्कु—प्रभु श्रीराम के छोटे भाइयों के लिए; यान् पिन् अळित्त—मेरे और मेरे अनुज द्वारा जनित; अळ्ळल् मलर्—पंक से उत्पन्न (पंकज) की; तिरु अन्नवर् तम्मै—श्रीलक्ष्मी सदृश दुहिताओं को; कॊळ्ळुम्—स्वीकार कीजिए; ऍन—कहकर; तमरोडु—अपने समधी लोगों के साथ; कुऱित्तान्—(विवाह सम्बन्धी) बात चलाई। १३३६

अनिन्द्यविजयी जनक ने दशरथजी आदि समधियों से अपनी दूसरी दुहिता और अपने अनुज की दो दुहिताओं के विवाह की बात चलायी। उन्होंने कहा कि मेरे दूसरी पुत्री है। और मेरे अनुज के दो पुत्रियाँ हैं। वे तीनों पंकजा श्रीलक्ष्मी देवी के समान (शोभापूर्ण) हैं। उनको प्रभु (श्रीराम) के तीनों अनुजों की वधुओं के रूप में स्वीकार कीजिए। १३३६

कॊय्न्निऱै तारन् कुशत्तुव शप्पेर्, नॆय्न्निऱै वेलवन् मङ्गयर् नेर्न्दार्
मैन्निऱै कण्णिनर् वानुऱ नीरार्, मॆय्न्निऱै मूवरै मूवरुम् वेट्टार् 1337

कॊय् निऱै तारन्—चुने हुए पुष्पों की माला के धारक (जनक) की; कुचत्तुवचन् पेर्—कुशध्वज नाम के; नॆय् निऱै वेलवन्—घृतलगा भालाधारी की; मङ्कैयर्—दुहिताएँ; नेर्न्तार्—बहुएँ मनोनीत गईं; मै निऱै कण्णिनर्—अंजन लगी आँखों वालियाँ; वान्

उरु नीरार्–देवलोकवास योग्य; मॅय् निरै–और उचित वय वालियाँ; मूवरै–उन तीनो को; मूवरुम्–श्रीराम के तीनो भाइयों ने; वेट्टार्–विवाह लिया। १३३७

चुने हुए पुष्पों की माला से भूषित जनक की पुत्री, उर्मिला, और घी-लगा भालाधारी कुशध्वज नामक जनक के भाई की पुत्रियाँ, माण्डवी और श्रुतकीर्ति वधुएँ मनोनीत हुई। अंजनशोभित आँखों वाली, देवांगना सम गुणवाली और युक्त आयुवाली उन तीनो को (श्रीराम के अनुज) तीनो ने (क्रमश: लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने) विवाहा। १३३७

वेट्टवर् वेट्टपिऩ् वेन्दनु मेनाळ्
कूट्टिय शोर्त्ति कॊडुत्तिल नल्लाल्
ईट्टिय मॅय्प्पॊरु ळुळ्ळन वॅल्लाम्
वेट्टवर् वेट्कयिऩ् मेऱ्पड वीन्दाऩ् 1338

अवर्–उन (वरों) के; वेट्टु–परस्पर चाह करके; वेट्टपिऩ्–विवाह कर लेने के पश्चात; वेन्तनुम्–चक्रवर्ती ने; मेल् नाळ्–अनेक दिनो से; कूट्टिय–अर्जित; चीर्त्ति–यश को; कॊट्टुत्तिलऩ् अल्लाल्–नहीं दिया, नहीं तो; ईट्टिय–अर्जित; मॅय् पॊरुळ्–सच्चे अर्थ; उळ्ळन ॲल्लाम्–जो उनके पास रहे, उन सबको; वेट्टवर्–माँगनेवालों को; वेट्कैयिऩ् मेल्पट–याचित परिमाण से अधिक; ईन्ताऩ्–दिया। १३३८

चारों के चाह के साथ विवाह कर लेने के बाद चक्रवर्ती ने यथारीति दान दिया। उन्होंने बहुत दिनों से अर्जित अपना यश नहीं दिया, बस। अन्य सभी धन जो अपने पास थे उन्होंने याचकों को उनकी प्रतीक्षा से भी अधिक तृप्त करते हुए लुटा दिया। १३३८

ईन्दळ विल्लदो रिऩ्ब नुहर्न्दे, आय्न्दुणर् केळ्वि यरुन्दव रोडुम्
वेन्दॊडु मन्नहर् वैहिऩऩ् मॅळ्ळत्, तेय्न्दऩ नाळ्शिल शॅय्द दुरैप्पाम् 1339

ईन्तु–बड़ा दान देकर; आय्न्तु उणर् केळ्वि–अन्वेषण के साथ श्रौतज्ञान के रखनेवाले; अरु तवरोटुम्–उत्तम तपस्वियों के साथ; वेन्तॊटुम्–जनक के साथ; अळवु इल्लतु–अमाप; ओर–अद्वितीय; इऩ्पम् नुकर्न्तु–आनन्दानुभव करते हुए; अ नकर् वैकिऩऩ्–उस नगर में (चक्रवर्ती) रहे; नाळ् चिल मॅळ्ळ तेय्न्तऩ–कुछ दिन धीरे-धीरे व्यतीत हुए; चॅय्ततु–बाद जो किया; उरैप्पाम्–वह कहेंगे। १३३९

दान देने के बाद चक्रवर्ती शास्त्र के अध्ययन और अनुशीलन से प्राप्त ज्ञान के धनी, उत्तम तपस्वियों और राजा जनक के साथ वार्तालाप का अपार आनन्द उठाते हुए उस नगर में ठहरे। धीरे-धीरे कुछ दिन बीत गये। उसके बाद क्या हुआ वह वृत्तांत हम अब कहेंगे। १३३९

22. परशुरामप् पडलम् (परशुराम पटल)

❀ तान्ाहिय तहैमैप्पॉरुळ् शनहन्कुयि लुडने
नानाविद विरुबोहमु नुहर्हिन्रवन् नाळ्वाय्
आनामरै नॅरिमादव मुनिकोशिक नरुळिप्
पोनान्वड दिशैवायुयर् पॉन्मालवरै पुक्कान् 1340

तान् आकिय–स्वोपम; तकैमै पॉरुळ्–श्रेष्ठ आदि तत्व, परब्रह्म के अवतार श्रीराम; चनकन् कुयिलुटने–जनक की पुत्री, कोकिलवाणी, सीताजी के साथ; नानावितम्–नानाविध; इरु पोकमुम्–दोनो तरह के भोग; नुकर्किन्र अ नाळ् वाय्–भोगते रहे, तब एक दिन; मातव मुनि कोचिकन्–महान तपस्वी, मुनिवर कौशिक; आना मरै नॅरि अरुळि–अक्षय वेदों में प्रतिपादित नीतिमार्ग का उपदेश देकर; पोनान्–वहाँ से निकलकर; वट तिचै वाय्–उत्तर दिशा में स्थित; उयर्–अत्युन्नत; पॉन् माल् वरै–स्वर्णमय हिमगिरि पर; पुक्कान्–पहुँचे। १३४०

अपनी उपमा स्वयं आप ही जो रहे (स्वोपम या स्वेच्छा से ग्रहीत अवतार वाले) श्रीराम जनक की दुहिता, कोकिलवाणी श्री सीताजी के साथ (अशन और शयन के) दोनो प्रकार के नानाविध भोग उचित रीति से भोगते रहे। उन दिनों महान तपस्वी कौशिक, श्रीराम को अक्षयवेद-विहित नीतियों का उपदेश देकर वहाँ से चले। वे उत्तर दिशा में स्थित उन्नत स्वर्णिम हिमपर्वत पर पहुँचे। १३४०

अप्पोदिनिन् मुडिमन्नव नणिमानहर् शॅलवे
इप्पोदुन मनिहन्दुणै यॅळुहॅन्रिनि दिशैयाक्
कैप्पोदह निहर्कावलर् कुळुवन्दडि कदुव
ऑप्पोदरु तेर्मीदिनि लिनिदेरिन नुरवोन् 1341

अप्पोतितिल्–तब (एक दिन); उरवोन्–पराक्रमी; मुटि मन्नवन्–किरीटधारी चक्रवर्ती; अणि मा नकर् चॅल–कमनीय श्रेष्ठ नगर अयोध्या जाने के लिए; इप्पोतु–अब; नम् अनिकम्–हमारी सेना; तुणै–और साथ आये सब; ऍळुक–उठें; ऍन्रु–यह; इनितु इचैया–मधुर ढंग से कहकर; कै पोतकम् निकर्–सूँडवाले गजों के समान; कावलर् कुळु वन्तु–राजाओं के दल के आकर; अटि कतुव–चरणस्पर्श करते; ऑप्पु ओत–उपमा कहने के लिए; अरु तेर् मीतितिल्–दुस्साध्य एक श्रेष्ठ रथ पर; इनितु एरिनन्–आरोहित हुए। १३४१

तब एक दिन शक्तिमान और किरीटधारी (श्रीमान) चक्रवर्ती दशरथ, मधुर ढंग से यह आज्ञा देकर कि अब हमारे सुन्दर नगर अयोध्या को, हमारी सेना और हमारे संग आये हुए सभी प्रस्थान करें, स्वयं एक अनुपमेय उत्तम रथ पर आरोहित हुए। तब हाथी-सम राजाओं ने आकर उनका चरण स्पर्श कर नमस्कार किया। १३४१

तन्मक्कळु मरुमक्कळु नतिदन्कळ् ऱ्ळुव
मन्मक्कळु मयन्मक्कळुम् वयिन्मॉय्त्तिड मिदिलैत्
तॊन्मक्कड मनमुक्कुयिर् पिरिवॆन्बदोर् तुयरिन्
वन्मक्कडल् पुहवुय्प्पदोर् वऴिपुक्कन नुरवोन् 1342

उरवोन्–(तन और मन के) बली चक्रवर्ती; तन् मक्कळुम्–अपने पुत्रों के और; मरुमक्कळम्–बहुओं के; नति तन् कळल्–श्रद्धा के साथ अपने (राजा के) चरणों को; तळुव–वन्दना करके साथ-साथ आते; मन् मक्कळुम्–राजकुमारों और; अयल् मक्कळुम्–अन्य लोगों के; वयिन् मॉय्त्तिट–पार्श्व में जुटते आते; मितिलै तॊल् मक्कळ–मिथिला की प्राचीन प्रजा के; तम् मतम् उक्कु–अपना मन विदीर्ण होने से; उयिर् पिरिवु ॲन्पतु ओर्–प्राण छूट जायँगे, ऐसी स्थिति के; तुयरिन् वन्मम् कटल् पुक–दुख के प्रबल सागर में डूबते; उय्प्पतु ओर् वऴि–अपने नगर को जानेवाले मार्ग में; पुक्कतन्–जाने लगे। १३४२

चक्रवर्ती के सुपुत्र और पुत्रवधुएँ उनको नमस्कार कर, उनके साथ आईं। अन्य राजकुमार और दूसरे लोग भी उनके चारों ओर मिलकर आये। मिथिला नगर के प्राचीन प्रजाजन विदीर्णमन हो गये। "अब उनके प्राण छूट जायँगे क्या ?" यह डर पैदा करनेवाली एक विषम स्थिति में रहे वे दुख के अपार सागर में डूब गये। इस परिस्थिति में राजा दशरथ, अयोध्या (जाने के) मार्ग में जाने लगे। १३४२

मुन्नॆन्ड्ु मुडिमन्नवन् मुऱैयिऱ्चॆल मिदिलै
नन्मानह रुऱैवार्मन ननिपिन्शॆल नडुवे
तन्नेर्बुरै तरुतम्बियर् तळुविच्चॆल मळैवाय्
मिन्नेयॆनु मिडैयाळॊडु मिनिदेहिनन् वीरन् 1343

नॆट्ु मुटि मन्नवन्–बड़े किरीट के चक्रवर्ती; मुऱैयिन्–यथा मर्यादा; मुन्ने चॆल–आगे-आगे गये, तब; मितिलै नल् मानकर् उऱैवार्–मिथिला के श्रेष्ठ नगर वासियों के; मनम्–मन; नति पिन् चॆल–उनके खब पीछे चले, तब; वीरन्–वीर (श्री रघुराम); नटुवे–मध्य में; तन् नेर्–अपनी समानता; पुरै तरु–करनेवाले; तम्पियर् तळुवि चॆल–छोटे भाइयों के साथ लगे आते; मऴै वाय् मिन्ने–मेघमध्य विद्युत ही सम; ॲनुम्–मान्य; इटैयाळॊटुम्–कमर वाली (श्री सीताजी) के साथ; इतितु एकिनन्–सुख से गये। १३४३

सबसे आगे, यथोचित प्रकार से दीर्घ-किरीटधारी दशरथ जाते रहे। पीछे मिथिला के अच्छे नगर के वासियों के मन आ रहे थे! श्रीराम इन दोनो के मध्य जा रहे थे। मेघ में बिजली के समान कमरवाली सीताजी उनके साथ थीं और आप समान प्यारे भाई उनके पास आ रहे थे। श्रीराम सुख से जा रहे थे। १३४३

एहुम्मळ	वयित्वन्दऩ	वलमुम्मयि	लिडमुम्
काहम्मुद	लियमुन्दिय	तडैशॅय्वऩ	कण्डाऩ्
नाहम्मऩ	ऩिडैयिङ्गुळ	दिडैयूऱॆऩ	नडवाऩ्
माहम्मणि	यणितेरॊडु	निऩ्ऱाऩॆऱि	वन्दाऩ् 1344

एकुम् अळवैयिऩ्–उनके चलते समय; मयिल् वलमुम् वन्तत–मोर दायें आये; काकम् मुतलिय–कौए आदि; इटमुम् मुन्तिय–बायें गये (अपशकुन); तटै चॅय्वत–और अवरोध करनेवाले बने; कण्टाऩ्–देखकर; नाकम् अऩ्ऩऩ्–पर्वत-सम (दृढ़-) मन; नॆऱि वन्ताऩ्–सन्मार्गानुयायी चक्रवर्ती; इङ्कु–अब; इटै–मार्ग में; इटैयूऱु उळतु ॲऩ–कोई बाधा है, यह सोचकर; नटवाऩ्–आगे नहीं गये; माकम् अणि–आकाशस्पर्शी; अणि तेरॊटुम्–शोभामय रथ के साथ; निऩ्ऱाऩ्–रुक गये। १३४४

जब वे जाते रहे तब चक्रवर्ती ने देखा कि मोर (बायें से) दाहिनी ओर गये। यह शुभ शकुन था। और यह भी देखा कि कौए आदि बायें गये और यह अशुभ शकुन था जो मार्ग का अवरोधक था। चक्रवर्ती पर्वतसम दृढ़ मन थे और सन्मार्गगामी थे। वे यह देखकर सोचने लगे कि कोई बाधा होनेवाली है। इसलिए वे अपने रथ को रोककर रुक गये। १३४४

निऩ्ऱॆनॆऱि	यऱिवाऩॊरु	निनैवाळनै	यळैया
नऩ्ऱोपळु	दुळदोनय	मुरैनीनडु	वॆऩ्ऩक्
कुऩ्ऱेपुरै	तोळाऩॆदिर्	पुळ्ळिऩ्कुऱि	कॊळ्वाऩ्
इऩ्ऱेवरु	मिडैयूऱदु	नऩ्ऱाय्विडु	मॆऩ्ऱाऩ् 1345

निऩ्ऱु–स्थित होकर; नॆऱि अऱिवाऩ्–शकुनशास्त्र जाननेवाले; ऒरु निऩैवाळऩै–एक शोधक को; अळैया–बुलाकर; नऩ्ऱो पळुतु उळतो–भला है या हानि की सम्भावना है; नयम्–फल; नी नटु उरै ॲऩ्ऩ–तुम तटस्थ रहकर कहो, कहने पर; कुऩ्ऱे पुरै–पर्वत-सम; तोळाऩ् ॲतिर्–कन्धों वाले के सामने; पुळ्ळिऩ् कुऱि कॊळ्वाऩ्–पक्षी-शकुन समझनेवाले ने; इऩ्ऱे इटैयूऱु वरुम्–अभी बाधा आयगी; अतु नऩ्ऱु आय् विटुम्–वह भला हो जायगी; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। १३४५

रुककर उन्होंने एक शकुन-शास्त्रज्ञ शोधक को बुलाया। उससे पूछा कि क्या भला होनेवाला है या बुरा ? इस शकुन का फल, शोध करके, तटस्थ रहकर बताओ। पक्षी-शास्त्रज्ञ ने पर्वतसम कंधों वाले दशरथ को उत्तर में बताया कि अभी बाधा आयेगी। पर वह भला बन जायगी। १३४५

ॲऩ्ऩुम्मळ	वयिऩवाऩह	मिरुणिऩ्ऱदु	वॆळियाय्
मिऩ्ऩुम्बडि	पुडैवीशिय	शडैयाऩ्मळु	वुडैयाऩ्
पॊऩ्ऩिऩ्मलै	वरुहिऩ्ऱदु	पोल्वाऩऩल्	काल्वाऩ्
उऩ्ऩुऩ्ऩुळल्	विळियाऩुरु	मदिर्हिऩ्ऱदो	रुरैयाऩ् 1346

अॅऩ्ऩुम् अळवैयिऩ्–(उसके) यह कहते ही; वाऩकम् निऩ्ऱतु इरुळ्–आकाश में व्याप्त अन्धकार; वॅळि आय्–प्रकाश बना; मिऩ्ऩुम् पटि–और चमका, जैसे; पुटै वीचिय–चारों ओर (प्रकाश) फैलानेवाली; चटैयाऩ्–जटाधारी; मऴु उटैयाऩ्–परशु रखनेवाले; पॊऩ्निऩ् मलै वरुकिऩ्ऱतु पोल्वाऩ्–स्वर्णपर्वत आता जैसा दिखनेवाले; अऩल् काल्वाऩ् उऩ्ऩुम्–आग उगलती हुई; चुऴल् विऴियाऩ्–घूमनेवाली आँखों के; उरुम् अतिर्किऩ्ऱतु–गाज का-सा; ओर् उरैयाऩ्–वचन कहनेवाले। १३४६

शकुन-शास्त्रज्ञ यह कह ही रहा था कि परशुराम आ गये। (परशुराम कैसे थे और कैसे आये इसका विवरण इस पद को मिलाकर नौ पदों में दिया जाता है।) आकाश के अन्धकार को प्रकाश में बदलते हुए (उनके पार्श्व में) हिलती रहनेवाली जटाओं वाले; परशु के धारक; स्वर्णपर्वत के समान आनेवाले; आग उगलने को उद्यत और चंचल आँखों वाले; गाज के समान वचनवाले—। १३४६

कम्बित्तलै	यॅऱिनीरुऱ	कलमॊत्तुल	हुलैयत्
तम्बित्तुयर्	दिशैयाऩैह	डळरक्कडल्	शलिया
वॅम्बित्तिरि	तरवाऩवर्	वॅरुवुऱ्ऱिरि	तरवोर्
शॅम्बॊऱ्चिलै	तॅऱियावयिऩ्	मुहवाळिह	डॅरिवाऩ् 1347

अलै ऍऱि नीर्–तरंग फेंकनेवाले सागर जल में; उऱुम् कलम् ऒत्तु–पड़े पोत के समान; उलकु कम्पित्तु उलैय–लोक को काँपकर थर्राते हुए; उयर् तिचै याऩैकळ्–श्रेष्ठ दिग्गजों को; तम्पित्तु तळर–स्तंभित और भीत कराते हुए; कटल्–सारे समुद्र; चलिया–क्षुब्ध होकर; वॅम्पि–तप्त होकर; तिरितर–चंचल हों, ऐसा करते हुए; वाऩवर्–देवगण; वॅरु उऱ्ऱु इरि तर–डरकर भाग जायँ, ऐसा; ओर् चॅम्पॊऩ् चिलै–विशिष्ट एक स्वच्छस्वर्ण के धनुष (के डोरे) को; तॅऱिया–टंकारते हुए; अयिल् मुकम् वाळिकळ् तॅरिवाऩ्–तीक्ष्णमुखी शर चुननेवाले। १३४७

(उनके आते समय) तरंगाकुल सागर-जल में ग्रस्त पोत के समान लोक कंपित होकर चंचल हुए। बड़े-बड़े दिग्गज स्तंभित और श्रांत हो गये। सारे समुद्र उद्वेलित होकर तप्त और अस्थिर हुए। देवगण भयभीत होकर भागे। (ऐसा आये) अप्रतिम एक स्वर्णधनु की डोरी टंकारकर तीक्ष्ण शर को चुन लेते हुए (परशुरामजी)। १३४७

विण्कीऴुऱ	वॅऩ्ऱोपडि	मेल्पालुऱ	वॅऩ्ऱो
ऍण्कीऱिय	वुयिर्यावयुम्	यमऩ्वायिड	वॅऩ्ऱो
पुण्कीऱिय	कुरुदिप्पुऩल्	पॊऴिहिऩ्ऱदु	पुरैयक्
कण्कीऱिय	कऩलाऩ्मुऩि	वियाद्रॅऩ्ऱयल्	करुद 1348

पुण् कीऱिय–व्रण के मुख से; कुरुति पुऩल्–रक्त द्रव; पॊऴिकिऩ्ऱतु पुरैय–बहता जैसे; कण् कीऱिय–कऩलाऩ्–आँखों से निकलनेवाली आग सहित (इनका); मुऩिवु–कोप; विण् कीऴ् उऱ अॅऩ्ऱो–आकाशलोक को नीचे लाने के लिए; पटि मेल्

पाल् उर अॅन्ऱो–भूमि को आकाश में पहुँचाने के लिए; अॅण् कोरिय उयिर् यावैयुम्–संख्या लाँघनेवाले (असंख्यक) सारे जीवों को; यमन् वाय् इट अॅन्ऱो–यम के मुख में डालने के लिए; यातु–क्या; अॅन्ऱु–ऐसा; अयल् करुत–पास में रहनेवाले सोचें, ऐसा। १३४८

खुले व्रण से रक्त बहता-सा आँखों से आग निकल रही थी। इतना इनका कोप आकाश को भूमि पर गिराने के लिए है ? या भूमि को आकाश में पहुँचाने के लिए ? या संख्या की सीमा लाँघकर जो जीव यहाँ हैं उनको यम के मुख का ग्रास बनाने के लिए ? यह कैसा कोप है —ऐसा पास रहने वाले विचार करने लग गये। (इस प्रकार वे आये।) । १३४८

पोरिन्मिशै यॅऴुहिन्ऱदोर् मऴुविन्शिहै पुहैयत्
तेरिन्मिशै मलैशूऴ्वरु कदिरुन्दिशै तिरिय
नीरिन्मिशै वडवैक्कन नॅडुवानुऱ मुडुहिप्
पारिन्मिशै वरुहिन्ऱदोर् पडिवॅम्जुडर् पडर 1349

पोरिन् मिचै अॅऴुकिन्ऱतु–युद्ध में उत्तेजित हो जानेवाले; ओर् मऴुविन् चिकै–उनके विशिष्ट परशु का सिर; पुकैय–धुआँ देने लगा; तेरिन् मिचै–(एक चक्र) रथ पर; मलै चूऴ् वरु–(मेरु) पर्वत को घूमकर आनेवाले; कतिरुम्–सूर्य भी; तिचै तिरिय–दिशा छोड़कर भटकने लगे; नीरिन् मिचै–सागर-जल-मध्य; वटवै-कनल्–बड़वाग्नि; नॅटु वान् उऱ–ऊँचे आकाश में पहुँचने के लिए; मुटुकि–वेग के साथ; पारिन् मिचै वरुकिन्ऱतु–भूमि पर आती हो; ओर् पटि–इस रीति से; वॅम् चुटर् पटर–(उनके शरीर से) गरम ज्योति फैलाते हुए। १३४६

युद्धोत्साही उनके परशु पर धुआँ उठ रहा था। अपने एक-चक्र रथ पर मेरु पर्वत की परिक्रमा करनेवाले सूर्य भी अपनी गति छोड़कर गड़बड़ाने लगे। परशुरामजी के शरीर से गरम प्रकाश फैल रहा था और ऐसा लगा कि सागर-जल में रहनेवाली बड़वाग्नि ऊँचे आकाश में पहुँचने के इरादे से भूमि पर आ रही हो। १३४९

पाऴिप्पुय मुयर्दिक्किडै यडैयप्पुडै पडरच्
चूऴिच्चडै मुडिविण्डोड वयल्वॅणमदि तॊत्त
आऴिप्पुनल् लॅरिकानिल माहायमु मऴियुम्
ऊऴिक्कडै मुडिविऱ्ऱिरि युमैकेऴ्वनै यॊप्प 1350

पाऴि पुयम्–कठोर भुजाएँ; उयर् तिक्कु इटै–दीर्घ दिशाओं में; अटैय–व्याप्त होकर; पुटै पटर–पार्श्व में हिलें, ऐसा; चटै मुटि चूऴि–जटा-मुकुट की शिखा; विण् तॊट–आकाश स्पर्श करने देते हुए; अयल्–उसके एक पार्श्व में; वॅण् मति तॊत्त–श्वेतचन्द्र, पकड़कर लटकता; आऴि पुनल्–समुद्र (संज्ञित) जल; अॅरि–अनल; काल्–अनिल; निलम्–पृथ्वी; आकाचमुम्–और आकाश, इन पाँचों भूतों को; अऴियुम्–मिटानेवाले; ऊऴि कटै मुटिविल्–कल्पांत में; तिरि–घूमकर

(ताण्डव) करनेवाले; उमै केळ्वत् ऑप्प–उमापति नटराज के समान दिखाई देते हुए। १३५०

उनकी बलवान भुजाएँ ऊँची दिशाओं को स्पर्श करते हुए उनके पार्श्व में ऊपर नीचे हिल रही थीं। जटाजूट के ऊपर की चोटी आकाश को छू रही थी। उसके एक ओर चन्द्र उससे लगकर लटक रहा था। वे उमापति के समान जो, (सागर रूपी) जल, थल, अनल, अनिल और आकाश वगैरह पाँचों भूतों के विलयनकारी कल्पांत में घूमकर तांडव करते हैं। (ऐसे परशुराम)। १३५०

अयिर्तुर्रिय कडन्मानिल मडयत्तनि पडरुम्
शॅयिर्शुर्रिय पडयानडन् मऱमन्नवर् तिलकन्
उयिरुर्रदोर् मरमामॆन वोरायिर मुयर्तोळ्
वयिरप्पणै तुणियत्तॊडु वडिवाय्मळु वुडयान् 1351

अयिर् तुर्रिय–बारीक बालुओं से भरे; कटल् मा निलम् अटैय–समुद्र से वलयित इस भूतल भर में; तनि पटरुम्–अपनी समानता न रखते हुए छानेवाली; चॅयिर् चुर्रिय–और क्रोधशील; पटैयान्–सेना वाले; अटल् मऱम् मन्नवर् तिलकन्–वीरता और साहस से भरे राजाओं में तिलक (कार्त्तवीर्य-सहस्रार्जुन) को; उयिर् उर्रतु ओर् मरम् आम् ॲन–जीवित वृक्ष के समान बनाते हुए; ओर् आयिरम् उयर् तोळ् वयिरम् पणै–एक सहस्र हस्तरूपी वज्र (सम) शाखाओं को; तुणिय–काटने को; तॊटु–चलाये गये; वटिवाय् मळु उटैयान्–तीक्ष्ण मुख वाले परशु के रखनेवाले। १३५१

कार्तवीर्य वीरतापूर्ण और साहसी राजाओं में तिलक (सर्वश्रेष्ठ) था। उसकी क्रोधी सेना, बारीक बालुओं से युक्त इस समुद्र से वलयित भूतल पर कहीं भी बेरोकटोक छा जाने की शक्ति रखती थी। इस कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) ने परशुराम के पिता जमदग्नि के पास उनकी कामधेनु चुरा ली। इस अपराध से क्रुद्ध होकर परशुराम ने ऐसे प्रतापी कार्तवीर्य की सेना का नाश किया और उसकी विशाल और उन्नत भुजाओं को शाखाओं की तरह अपने परशु की तीक्ष्ण धार से काट गिराया और उसे शाखाहीन कर जीवित ठूँठ के समान बना दिया। ऐसे धारदार परशु के धारक आये। १३५१

निरुबरक्कॊरु पळिपर्रिड निलमन्नवर् कुलमुम्
करुवर्रिड मळुवाळ्कॊडु कळैकट्टुयर् कवरा
इरुबत्तॊरु पडिहालिमिळ् कडलॊत्तलै यॅरियुम्
कुरुदिप्पुन लदनिर्पुह मुळुहित्तनि कुडैवान् 1352

निरुपर्क्कु–(क्षत्रिय) राजाओं को; ओरु पळि पर्रिट–एक अपयश हो जाय, ऐसा; निलम् मन्नवर् कुलमुम्–भूपति कुल, सारा; करु अर्रिट–निर्मूल नष्ट करके; मळु वाळ् कॊटु–परशु के अस्त्र से; इरुपत्तॊरु काल् पटि–इक्कीस पीढ़ियों तक;

उयिर् कवरा–प्राणहरण कर; कळै कट्टु–(भूपों का) कलंक मिटाकर; इमिळ् कटल् ऑतुतु–गर्जनशील सागर से तुलकर; अलै ऍरियुम्–तरंग उछालनेवाले; कुरुति पुनल् अतनिल्–रक्त के जल में; पुक मुळुकि–खूब पैठकर मग्न होकर; तनि कुटैवान्–अकेले (अभूतपूर्व रीति से) जिन्होंने स्नान किया वे। १३५२

(परशुराम के काम से कार्तवीर्य के पुत्रों को गुस्सा आया और उन्होंने परशुराम की अनुपस्थिति में जमदग्नि को मार दिया। जमदग्नि की पत्नी रेणुका अत्यन्त दुःखिता होकर इक्कीस बार छाती पीटकर रोयीं। इससे प्रभावित परशुराम ने बदला लेने के लिए, इक्कीस पीढ़ियों तक के भूपालों को मारने का निश्चय किया।) तदनुसार— परशुराम ने भूपति राजाओं को इक्कीस पीढ़ियों तक मारकर, राजाओं को अपयश दिलाते हुए भू पर से राजारूपी कलंक को धुला दिया। फिर उन मृत राजाओं के शरीरों के रक्त मे जो तरंगायमान सागर के समान रक्त का विस्तार बना उसमें उतरकर गोते लगाये। यह अभूतपूर्व अनोखा स्नान करनेवाले (आये)। १३५२

कमैयॊप्पदोर् तवमुञ्जुडु कनलॊप्पदोर् शिनमुम्
शमैयप्पॆरि दुडैयार्नॆरि तळ्ळुड्डॆदिर् तळरुम्
अमैयत्तयर् पऱवैक्किनि दाऱाम्वहै शीऱाच्
चिमैयक्किरि युरुवत्तनि वडिवाळिह डॆरिवान् 1353

कमै ऑप्पतु ओर् तवमुम्–मूर्तिमान क्षमा बनने योग्य श्रेष्ठ तपस्या; चुटु कनल् ऑप्पतु–जलानेवाली आग-सा; ओर् चिनमुम्–अपार कोप; चमैय–दोनों को एक साथ युक्त; पॆरितु उटैयान्–अधिक परिमाण में रखनेवाले; उयर् पऱवैक्कु–श्रेष्ठ (हंस) पक्षियों के; ऍतिर् नॆऱि तळ्ळुऱ्ऱु–सामने के मार्ग के अवरोध से; तळरुम् अमैयत्तु–श्रांत होते समय; आऱु इनितु आम् वकै–मार्ग सुखावह हो, ऐसा; चीऱा–कुपित हो; चिमैयम् किरि उरुव–ऊँचे शिखर वाले पर्वत (क्रौंच पर्वत) के मध्य से निफरते हुए जानेवाले; तनि वटि वाळिकळ्–विशिष्ट तीक्ष्ण शरों को; तॆरिवान्–चुनकर जिन्होंने चलाया, वे। १३५३

उनकी तपस्या उनकी धृति और क्षमा का ज्वलन्त उदाहरण थी। वह उनमें खूब थी। साथ-साथ अग्निसम क्रोध भी उनमें था। यह अनोखा सामंजस्य उनमें था। एक बार सामने मार्ग को अवरुद्ध पाकर संकट में पड़े हुए श्रेष्ठ हंसों को मार्ग बनाने के लिए परशुराम ने उन्नत शिखरों वाले क्रौंच पर्वत को बेधनेवाले अनुपम तीक्ष्ण शर छोड़े थे। [सन्दर्भ इस प्रकार है— परशुराम और कार्तिकेय (षणमुख) दोनो ने श्री शिवजी के पास धनुर्विद्या सीखी। क्रौंच पर्वत को बेधने की परीक्षा हुई। षणमुख हारे और परशुराम जीत गये। तब उस पर्वत के दक्षिण में रहने वाले हंसों को अपनी इच्छा के अनुसार उत्तर में स्थित मानसरोवर जाने

को मार्ग मिल गया। इसके बाद झुँझलाकर षणमुख ने अपनी शक्ति (भाले) से उस पर्वत को ही खण्ड-खण्ड तोड़ दिया।] ऐसे शर चलाने वाले परशुधर आये। १३५३

शॆयम्बुह	निमिरक्कड	ऱ्ऴुवुम्बडि	शमैवान्
मैयिऩ्ऩुयिर्	मलैनूऱिय	मऴुवाळवऩ्	वन्दान्
ऐयऩ्ऱतै	यरिदिऱ्ऱरु	मरशऩ्ऩदु	कण्डान्
वॆय्यऩ्वर	निबमॆऩ्ऩैहॊ	लॆऩवॆय्दुरु	मॆल्लै 1354

चॆयम् पुक-पर्वतों को अपने अन्दर समा लेते हुए; निमिर् अ कटल्-उछलनेवाले समुद्र से भी; तऴुवुम्पटि चमैवान्-जिन्होंने अपनी आज्ञा मनवाई; मैयिन् उयर् मलै-मेघमण्डल तक उन्नत (क्रौंच) पर्वत का; नूऱिय-(गर्व) तोड़नेवाले; मऴुवाळ् अवऩ्-परशुधर (परशुराम); वन्तान्-आ रहे थे; ऐयन् तनै-नायक (श्रीराम को); अरितिल् तरुम् अरचु-बहुत असाधारण रूप से (तपस्या करके क्लेश आदि सहकर) जिन्होंने जन्म दिया था उन चक्रवर्ती ने; अन्ततु कण्टान्-उनका वैसा आना देखा; वॆय्यन्-क्रूर, इनके; वर-अब आने का; निपम् ऎन्नै कोल् ऎन-कारण क्या है, यह सोचकर; वॆय्तुरुम् ऎल्लै-शोकपूर्ण हुए, तब। १३५४

परशुराम का प्रताप असीम था। उन्होंने पर्वत को अपने अन्दर समा लेनेवाले समुद्र से भी अपनी आज्ञा मनवा ली थी। (सन्दर्भ यों है—परशु उनका विशिष्ट हथियार था जो उन्हें शिवजी से मिला था। राजाओं को मारकर भूमि जो ग्रहण की गयी, उसको परशुराम ने काश्यप ऋषि को दान कर दी। बाद उन्होंने यह सोचा कि उनके राज्य में रहना अनुचित है। इसलिए उन्होंने पर्वत पर चढ़कर अपना परशु समुद्र में फेंका। जहाँ परशु गिरा वहाँ तक भूमि निकल आयी और समुद्र उससे बाहर हट गया। वह परशुरामक्षेत्र कहलाया— जो आज का केरल बताया जाता है।) ऐसे समुद्रशासक और (क्रौंच-) पर्वतगर्वभंजक परशुधर उनके सामने आये। चक्रवर्ती ने उनको आते देखा तो, प्रभु श्रीराम को बहुत कष्ट के बाद पुत्र के रूप में प्राप्त करनेवाले दशरथ दहल उठे। क्रूर, ये परशुराम, अब क्यों इधर आते हैं? कारण क्या हो सकता है? वे बहुत चिंतित हुए। १३५४

पॊङ्गुम्बडै	यिरियक्किळर्	पुरुवङ्गडै	नॆरिय
वॆङ्गण्पॊऱि	शिदऱक्कडि	दुरुमेऱॆन	विडैयाच्
चिङ्गम्मॆन	वुयर्देर्वरु	कुमरन्ऩॆदिर्	शॆन्ऱान्
अङ्गण्णऴ	हऩुमिङ्गिव	ऩारॊवॆनु	मळविल् 1355

पॊङ्कुम् पटै-(चक्रवर्ती की) विपुल सेना को; इरिय-(भय से) भगाते हुए; किळर् पुरुवम्-ऊपर उठी भौंहों को; कटै नॆरिय-छोरों पर टेढ़ी करते हुए; वॆम् कण्-कठोर आँखों से; पॊऱि चितऱ-अंगारे बरसाते हुए; उरुम् एऱु ऎन-अशनि के

समान; कटितु विटैया–अत्यधिक क्रोध के साथ अकड़कर; उयर् तेर्–उन्नत रथ पर; चिङ्कम् अँन वरु–सिंह सदृश आनेवाले; कुमरन् अँतिर् चॅन्ऱान्–कुमार (श्रीराम) के सामने गये; अङ्कण्–तब; अऴकनुम्–सुन्दरमूर्ति भी; इङ्कु इवन् आरो–यहाँ आनेवाले ये कौन हैं; अँनुम् अऴवित्–सोचते समय। १३५५

तब उनकी विपुल सेना भयभीत होकर भागने लगी। परशुराम की भौंहें टेढ़ी हो गयीं। आँखों से अंगारे निकल आये। अशनि के समान क्रोध दिखाते हुए वे उन्नत रथ पर आसीन हो सिंह-समान आनेवाले राजकुमार श्रीराम के सामने गये। श्रीराम सोचने लगे कि इधर अब ये कौन आये? तब। १३५५

अरैशन्नव निडैवन्दिनि दारादनै पुरिवान्
विरैशॅयमुडि पडिमेलुऱ वडिमीदिनिल् विऴवुम्
करैशॅन्ऱिल ननैयानॅडु मुडिविन्कनल् काल्वान्
मुरैशिन्कुरल् पडवीरन दॅदिर्निन्ऱिवै मॊऴिवान् 1356

अरैचु–चक्रवर्ती ने; अन्नवन् इटै वन्तु–उन (परशुराम) के पास आकर; इतितु आरातनै पुरिवान्–खूब संस्तुति करते हुए; विरै चॅय् मुटि–सुवासित अपने सिर को; पटि मेल् उऱ–भूमि पर लगाते हुए; अटि मीतितिल्–उनके चरणों पर; विऴवुम्–गिरकर नमस्कार किया, तब; अनैयान्–(परशुराम) वे; करै चॅन्ऱिलन्–कोप पार नहीं गये (गुस्सा नहीं छोड़ा); नॅटु मुटिविन्–कल्पान्त की-सी; कनल् काल्वान्–अग्नि बरसाते हुए; वीरनतु अँतिर् निन्ऱु–वीर (राघव) के सामने खड़े होकर; मुरैचिन् कुरल् पट–ढोल के स्वर में; इवै मॊऴिवान्–ये बातें कहने लगे। १३५६

चक्रवर्ती दशरथ परशुराम के पास आये। खूब संस्तुति करके उनके पैरों पर गिरे। तब भी परशुराम का क्रोध शान्त नहीं हुआ। वे कल्पांत की अग्नि के समान आग उगलते हुए, वीर श्रीराम के सामने जा खड़े हुए और ढोल के नाद के समान उच्च स्वर में ये बातें कहीं। १३५६

इऱ्ऱोडिय शिलैयिन्ऱिऱ मऱिवेनिनि यानुन्
पॊऱ्ऱोळ्वलि निलैशोदनै पुरिवान्नशै युडैयेन्
शॆऱ्ऱोडिय तिरडोळुऱु तिनवुऱ्ऱिशि दुडैयेन्
मऱ्ऱोर्पॊरु ळिलैयिङ्गिदॅन् वरवॆन्ऱन नुरवोन् 1357

उरवोन्–बलिष्ठ परशुराम ने; इऱ्ऱु ओटिय चिलैयिन् तिऱम्–टूट गया (जो) उस धनु की प्रकृति; यान् अऱिवॆन्–मैं जानता हूँ; इति–अब; उन् पॊन् तोळ्–तुम्हारे शोभायमान हाथों की; वलि निलै–शक्ति की स्थिति; चोतनै पुरिवान्–परीक्षा करने की; नचै उटैयेन्–इच्छा रखता हूँ; चॆऱ्ऱु ओटिय–(राजाओं को) हराकर बढ़े हुए; तिरळ् तोळ्–पुष्ट मेरे कन्धों की; उऱु तिनवुम्–उठी हुई खुजली भी (युद्ध-लिप्सा); चिरितु उटैयेन्–थोड़ा रखता हूँ; इङ्कु अॅन् वरवु इतु–यहाँ मेरा आना इसी हेतु है; मऱ्ऱु ओर् पॊरुळ् इलै–दूसरा कोई कारण नहीं; अॅन्ऱनन्–कहा। १३५७

बलिष्ठ परशुराम बोले। "हे राम ! जो धनु तुम्हारे हाथ के लगते ही टूटकर गिर गया उसकी सच्ची स्थिति मैं जानता हूँ। (वह पहले ही टूटा हुआ था।) अब मैं तुम्हारी मनोरम भुजाओं के बल की परीक्षा लेने की इच्छा रखता हूँ। साथ-साथ अनेक राजाओं को हराकर बढ़ी हुई मेरी भुजाओं में खुजली (युद्धलिप्सा) थोड़ा पैदा हो गई है। यही मेरे इधर आने का कारण है। दूसरा कोई नहीं।"। १३५७

अवन्̮तदु पहरुम्मळ वयिन्̮मन्̮नव नयर्वान्̮
पुवनम्मुळु वदुम्वॅन्̮ऱोरु मुनिवर्करुळ् पुरिवाय्
शिवनुम्मय नरियुम्मलर् शिरुमानिडर् पॉरुळो
इवनुम्मॅन̮ दुयिरुम्मुन̮ दबयम्मिनि यन्̮ऱान्̮ 1358

अवन्̮–उन (परशुराम) के; अन्̮ततु पकरुम् अळवॅयिन्̮–वह कहते समय; मन्̮नवन्̮–चक्रवर्ती ने; अयर्वान्̮–दुखी होकर; पुवनम् मुळुवतुम् वॅन्̮ऱु–भुवन भर जीतकर; ऑरु मुनिवर्कु अरुळ् पुरिवाय्–एक मुनि के पास देने की कृपा करनेवाले कृपालू; चिवनुम्–शिवजी; अयन्̮ अरियुम्–अज और हरि भी; अलर्–(आपके सामने कोई पदार्थ) नहीं होंगे तो; चिरु मानिटर् पॉरुळो–छोटे मनुष्य कोई पदार्थ होंगे क्या; इनि–अब; इवनुम्–यह (बालक) और; ऍन̮तु उयिरुम्–मेरे प्राण; उन̮तु अपयम्–आपके अभयदान के प्रार्थी हैं; ऍन्̮ऱान्̮–कहा। १३५८

जब वे श्रीराम से ऐसा कह रहे थे तब दशरथ को वह सुनकर बहुत भय और दुख हुआ। उन्होंने परशुराम से विनय की। "आपने सारी भूमि जीतकर एक महर्षि को दान में देने की कृपा की थी। ऐसे कृपालू हैं आप ! शिवजी, ब्रह्माजी और विष्णुदेव भी आपके सामने कोई वस्तु नहीं तो हम जैसे छोटे मनुष्य क्या हो सकते हैं ? अब ये बालक श्रीराम और मेरे प्राण आपके अभयदान के याचक हैं। १३५८

विळिवार्विळि वदुतीविनै विळैवारुळै यन्̮ऱो
कळियालिव नयर्हिन्̮ऱवु मुळवोकन̮ लुमिळुम्
ऑळिवाय्मळु वुडैयाय्पॉर वुरियारिडै यल्लाल्
ऍळियारिडै वलियार्वलि यॅन्̮नाहुव दॅन्̮ऱान्̮ 1359

कनल् उमिळुम्–अग्निवर्षक; ऑळि वाय् मळु उटैयाय्–बहुत उज्ज्वल परशु के धारक; विळिवार् विळिवतु–क्रोधशीलों का क्रोध करना; तीविनै–अपराध; विळैवार् उळै अन्̮ऱो–इच्छा के साथ करनेवालों के प्रति (न) होना चाहिए; इवन्̮–इस (राम) के; कळियाल्–(विद्या, धन, बल आदि के) मद के कारण; अयर्किन्̮ऱवुम्–भूल से किये हुए; उळवो–(अपराध) हैं क्या; वलियार् वलि–बलवान का बल; पॉर उरियार् इटै अल्लाल्–सामना कर सकनेवालों के प्रति नहीं तो; ऍळियार् इटै–बलहीनों के प्रति; ऍन्̮ आकुवतु–किस काम का; ऍन्̮ऱान्̮–कहा। १३५९

"अग्निवर्षक, उज्ज्वल परशुधर ! क्रोधशील मनुष्य उन्हीं पर क्रोध

करते हैं जो गम्भीर अपराध जान बूझकर करते हैं। क्या इस बालक के हाथ, (धन, यौवन, बल, विद्या, इनके) मद के कारण अनजाने कोई अपराध हो गया है ? बली लोग अपना पराक्रम उन्हीं लोगों पर प्रयोग करते हैं जो उनसे टकराने का सामर्थ्य रखते हैं। निर्बलों पर बल प्रयोग का क्या महत्त्व या मूल्य रह जायगा ? । १३५९

नन्िमादव मुडैयायिदु पिडिनीयॅन्न नल्हुम्
तन्िनायह मुलहेळ्ळेयु मुडैयायिदु तविराय्
पन्िवार्कडल् पुडैशूळ्ळ्पडि नरपालरै यरुळा
मुन्िवारिन्नै मुन्िहिन्ऱदु मुऱैयोवॅन्न मौळिवान् 1360

नन्ि मातवम् उटैयाय्–अति महान तपस्वी; इतु पिटि नी–आप इसे ग्रहण कर लें; ॲन्न–कहकर; उलकु एळ्ळैयुम्–(काश्यप के पास) सातों लोकों को; नल्कुम्–दान करनेवाले; तन्ि नायकम् उटैयाय्–अद्वितीय नेतृत्व वाले; इतु तविराय्–यह (कोप) छोड़ दीजिए; पन्ि वार् कटल्–शीतल और विशाल समुद्र से; पुटै चूळ्ळ् पटि–वलयित इस भूतल पर के; नरपालरै अरुळा–नृपों के प्रति दया करके; मुनिवु आरिन्नै–कोप शांत कर लिया; मुन्िकिन्ऱतु–अब क्रोध करना; मुऱैयो–उचित है क्या; ॲन्न–कहकर; मौळिवान्–आगे बोले । १३६०

"बहुत बड़े तपस्वी ! आपने काश्यप को, 'यह आप ग्रहण कीजिए', कहकर सातों लोकों को दान में दिया था। ऐसे नेता हैं आप ! आपको यह कोप शोभा नहीं देता। आप यह क्रोध त्याग दें। शीतल समुद्र जिसके चारों ओर घेरे हुए हैं उस भूमि पर के पालकों पर आपने कृपा की थी। आपने अपना क्रोध शान्त कर लिया था। ऐसे आपका अब श्रीराम पर क्रोध करना उचित है क्या ?" राजा ने इतना कहकर आगे भी कहा। १३६०

पुऱन्िन्ऱव रिहळ्ळुम्बडि नडुविन्ऱले पुणरात्
तिऱन्िन्ऱुयर् वलियॅन्नदो ऱऱन्िन्ऱहु शॅयलो
अऱन्िन्ऱद न्िलैनिन्ऱुयर् पुहळ्ळोन्ऱुव दन्ऱो
मऱनॅन्बदु मऱवोयिदु पळ्ळियॅन्बदु मदियाय् 1361

मऱवोय्–पराक्रमी; पुऱन् निन्ऱवर्–आस-पास रहनेवाले; इकळ्ळुम् पटि–निंदा करें, ऐसा; नटुविन् तलै पुणरा तिऱन् निन्ऱु–तटस्थता से अयुक्त स्थिति में रहकर; उयर् वलि ॲन्–उससे बढ़नेवाले बल की क्या महिमा है; अतु–वह (बल-प्रदर्शन); ओर् अऱन्िन् तकु चॅयलो–धर्मोचित एक काम है क्या; मऱन् ॲन्पतु–वीरता; अऱन् निन्ऱ तन् निलै निन्ऱु–धर्म सम्मत स्थिति में रहकर; उयर् पुकळ्ळ् ऑन्ऱुवतु अन्ऱो–उत्कृष्ट यश की प्राप्ति नहीं क्या; इतु–यह (जो आप करने जाते हैं); पळ्ळि–निन्द्य कर्म है; ॲन्पतु–यह; मतियाय्–सोचिए । १३६१

"पराक्रमी ! पास रहनेवालों की निन्दा का विषय बनकर, तटस्थता

के विपरीत गति में जाकर बढ़े हुए बल की क्या महिमा है ? ऐसा करना क्या धर्मोचित काम होगा ? क्या सच्ची वीरता वह नहीं है जो धर्मसम्मत मार्ग पर जाकर उत्कृष्ट कीर्ति प्राप्त करे ? यह, जो आप करने जाते हैं, निन्द्य काम है, समझ लीजिए। १३६१

शलत्तोडियै विलन्नॆन्मह ननैयानुयिर् तबुमेल
उलत्तोडॅदिर् तोळायॆन दुरवोडुयि रुहुवेन्
निलत्तोडुय रहल्वानुर नॆडियायुन दडियेन्
कुलत्तोडर मुडियेलिदु कुरैकॊण्डनॆ नॆन्ऱान् 1362

उलत्तोटु ऍतिर् तोळाय्–पत्थर के खम्भे की टक्कर के कन्धे वाले; निलत्तोटु–इस भूमि के साथ; उयर् अकल् वान् उर–उन्नत, विशाल आकाश तक व्याप्त; नॆटियाय्–दीर्घ यश के स्वामी; ऍन् मकन्–मेरा पुत्र; चलत्तोटु इयैवु इलन्–आपके साथ शत्रुता से सम्बन्ध नहीं रखता; अलैयान् उयिर् तपु मेल्–उसकी जान जायगी तो; ऍन्तु उरवोटु–अपने (पितृत्व) के नाते; उयिर् उकुवेन्–प्राण भी त्याग दूंगा; उन्तु अटियेन्–आपका दास, मुझे; कुलत्तोटु–कुल के साथ; अर मुटियेल्–निर्मूल करते हुए उसको मत मारिए; इतु कुरै कॊण्टतन्–यह विनय याचना करता हूँ। १३६२

"स्थूल प्रस्तर के खम्भे से टक्कर लेनेवाले कंधों के बलशाली ! भूतल के साथ आकाश में भी व्याप्त कीर्तिमान ! मेरा पुत्र आपसे शत्रुता का कोई सम्बन्ध नहीं रखता। उसकी जान चली जायगी तो उसके पिता के नाते मैं भी अपने प्राण त्याग दूँगा। आप उसको मारकर, आपके दास, मुझे मेरे कुल के साथ मत मिटाइये। यही आपसे मेरी याचना है।"। १३६२

ऍन्नावडि विऴुवानैयु मिहऴावॆरि विऴियाप्
पॊन्नार्शिलै युरवोनॆदिर् पुहुवानिलै युणरात्
तन्नालीरु शॅयलिन्मयै निनैयावुयिर् तळरा
मिन्नालयर् वुरुवाळर वॆनवॆन्दुय रुऱ्ऱान् 1363

ऍन्ना–यह सब कहके; अटि विऴुवानैयुम्–चरणों पर पड़नेवाले का; इकऴा–अनादर करके; ऍरि विऴिया–आग्नेय दृष्टि के साथ तरेरकर; पॊन् आर् चिलै–सुन्दर, विशिष्ट धनु के; उरवोन् ऍतिर्–शक्तिमंत वीर के सामने; पुकुवान् निलै–जानेवाले की मनोगति को; उणरा–समझकर; तन्ताल् ऑरु चॆयल् इन्मैयै–अपने से कुछ न होगा, इस लाचारी को; निनैया–(सोच-) जानकर; उयिर् तळरा–विकल प्राण हो; मिन्नाल् अयर्वु उरुम्–वज्रपात से शिथिल होनेवाले; वाळ् अरवु ऍन–उज्ज्वल साँप के समान; वॆम् तुयर् उऱ्ऱान्–कठोर दुख से पीड़ित हुए। १३६३

ऐसा कहते हुए दशरथ उनके चरणों पर पड़े। लेकिन परशुराम ने उसकी उपेक्षा कर दी। आग्नेय आँखों से तरेरते हुए परशुराम सुन्दर और श्रेष्ठ धनुष के प्रतापी श्रीराम के सामने जाने लगे। उनकी मनोगति

दशरथ पर प्रकट हो गयी। उनको लगा कि अब हमारे किये कुछ नहीं हो सकता। इसलिए विकल-प्राण होकर दशरथ वज्राहत उज्ज्वल सर्प के समान अत्यन्त भयंकर पीड़ा का अनुभव करने लगे। १३६३

मातम्मणि मुडिमन्नवन् मदिशोरवु मदियान्
तानन्निलै यळिवानुरु विनैयुण्डदु तविरान्
आनम्मुडै युमैयण्णलै यन्नाळुरु शिलैतान्
ऊनम्मुळ ददन्मॅय्न्नॅरि केळॆन्रुरै पुरिवान् 1364

मातम् अणि–गौरव को आभूषण माननेवाले; मुटि मन्नवन्–चक्रवर्ती के; मति चोरवुम्—सुध-बुध खोने की भी; मतियान्–गणना नहीं करते; तान् अ निलै–खुद की उन्नत स्थिति को; अळिवान् उरु–मिटाने के लिए प्रबुद्ध; विनै उण्टतु–प्रारब्ध के ग्रास को; तविरान्–निवारित कर न सकनेवाले; आनम् उटै–आनक (डमरू) धारी; उमै अण्णलै–उमापति श्रीशिवजी के पास; अ नाळ् उरु चिलै–कभी का रहा वह धनुष; ऊनम् उळतु–भग्न था; अतन् मॅय् नॅरि–उसकी सच्ची गति; केळ्–सुनो; ऍन्रु–कहकर; उरै पुरिवान्–कहने लगे। १३६४

गौरव को ही आभरण माननेवाले चक्रवर्ती अपनी सुध-बुध खोकर गिर गये। परशुराम ने उसकी बिल्कुल परवाह नहीं की। उनको उनकी सम्मान्य स्थिति से नीचे गिराने का संकल्प लेकर प्रारब्ध क्रियाशील होने लगा था। परशुराम ने उससे बचने का उपाय भी नहीं किया। वे श्रीराम से बोले— "(आनक) डमरूधारी उमानाथ श्री शिवजी के हाथ में जो धनुष उन प्राचीन दिनों में था, वह भग्न हो चुका था। उसका सच्चा वृत्तान्त सुनाता हूँ। सुनो।" १३६४

ऒरुकाल्वरु कदिरामॆन वॊळिकाल्वन वुलैया
वरुकार्तवळ् वडमेरुविन् वलिशाल्वन मनताल्
अरुहाविनै पुरिवानुळ नवनालमै वनवाम्
इरुकार्मुह मुळयावयु मेलादन मेनाळ् 1365

ऒरु काल् वरु कतिर् आम् ॲन–एकचक्र रथ पर आनेवाले सूर्य के समान; ऒळि कालवन–कांति बिखेरनेवाले; वरुकार् तवळ्–अधिक मेघों से व्याप्त; वट मेरुविन्–उत्तर के मेरुपर्वत के समान; उलैया वलि चाल्वन–अचल कठोरता से युक्त; यावैयुम् एलातन–अन्य किसी भी धनुष की समानता को न सह सकनेवाले (अनुपम); मनताल्–मन के संकल्प से ही; अरुका विनै पुरिवान् उळन्–त्रुटिहीन निर्माण कार्य करनेवाले; अवनाल्–उस (विश्वकर्मा) के द्वारा; अमैवन आम्–निर्मित; इरु कारमुकम्–दो कार्मुक; मेल् नाळ् उळ–प्राचीनकाल से रहते हैं। १३६५

"प्राचीनकाल में दो कार्मुक थे। दोनो एकचक्ररथ वाले सूर्य के समान कान्तिमय थे। मेघों से आवृत्त मेरु के समान, जो उत्तर में है, अचल दृढ़ता और बल रखनेवाले थे। कोई भी अन्य धनुष इनकी

समानता नहीं कर सकता था। विश्वकर्मा ने, जिनके संकल्प मात्र से निर्माण कार्य हो जाते थे, इनको निर्मित किया था। १३६५

ऑऩ्ऱिऩै युमैयाळ् केळ्व ऩुहन्दऩऩ् मऱ्ऱै यॊऩ्ऱै
निऩ्ऱुल हळन्द नेमि नॅडियव ऩॅऱियिऩ् कॊण्डाऩ्
ॲऩ्ऱिदु वुणर्न्द विण्णो रिरण्डिनुम् वऩ्मै यॅय्दुम्
वॆऩ्ऱिय दियाव दॆऩ्ऱु विरिञ्जऩै विऩव वऩ्नाळ् 1366

ऑऩ्ऱिऩै–(उन में) एक को; उमैयाळ् केळ्वऩ्–उमानाथ ने; उकन्तऩऩ्–पसन्द कर लिया; मऱ्ऱै ऑऩ्ऱै–दूसरे (एक) को; निऩ्ऱु उलकु अळन्त–ऊँचे बनकर जिन्होंने लोकों को नापा; नेमि नॅटियवऩ्–उन चक्रधारी त्रिविक्रम देव ने; नॅऱियिऩ्–क्रम के अनुसार; कॊण्टाऩ्–(अपने लिए) लिया; ॲऩ्ऱ इतु–इससे; उणर्न्त विण्णोर्–अवगत देवों ने; इरण्टिनुम्–इन दो में; वऩ्मै ॲय्तुम् वॆऩ्ऱियतु–बल से प्राप्य विजयशील; यावतु ॲऩ्ऱु–कौन होगा, यह; विरिञ्चऩै विऩव–ब्रह्मा से पूछा; अन्नाळ्–उस समय। १३६६

"उन दो में एक को उमानाथ शिवजी ने पसंद करके ले लिया। जो बचा रहा उस दूसरे धनुष को लोकमापक त्रिविक्रमदेव ने क्रमागत प्रकार से अपने लिए लिया। देवों ने यह वृत्तान्त जाना तो ब्रह्माजी के पास जाकर पूछा कि इन दो में अपने बल-पराक्रम के कारण कौन-सा धनुष विजयशील होगा ?। १३६६

शीरिदु तेवर् तङ्गळ् शिन्दऩै यॅऩ्ब दुऩ्ऩि
वेरियङ् गमलत् तोऩु मियैवदोर् विनयन् दऩ्ऩाल्
यारिनु मुयर्न्द मूलत् तॊरुवरा मिरुवर् तम्मै
मूरिवॆंज् जिलैमे लिट्टु मॊय्यमर् मूट्टि विट्टाऩ् 1367

वेरि अम् कमलत्तोनुम्–सुवासपूर्ण कमल पर आसीन ब्रह्मा ने भी; तेवर् तङ्कळ्–देवों का; चिन्तऩै चीरितु ॲऩ्पतु उऩ्ऩि–विचार श्रेष्ठ है, यह मानकर; इयैवतु ओर् विनयम् तऩ्ऩाल्–युक्त एक उपाय द्वारा; यारितुम् उयर्न्त–सर्वश्रेष्ठ; मूलत्तु ऑरुवर् आम्–मूल में एक जो; इरुवर् तम्मै–(स्थिति आदि कार्य के कारण) दो रूप हैं उनके बीच; मूरि वॆम् चिलै मेल् इट्टु–सुदृढ़ भयंकर धनुषों के बहाने; मॊय् अमर् मूट्टि विट्टाऩ्–प्रबल युद्ध आयोजित करा दिया। १३६७

"कमलासन ब्रह्मा ने भी सोचा कि देवों का प्रश्न ठीक है। इसलिए उन्होंने एक सफल उपाय किया। उससे उन दो देवों के बीच, जो मूल में (कारण रूप में) एक थे पर कार्य रूप में दो ईश्वर थे उन (सारयुक्त) बलवान और भयंकर धनुषों के व्याज से घमासान युद्ध छिड़ गया। १३६७

इरुवरु मिरण्डु विल्लु मेऱ्ऱिऩ रुलह मेळुम्
वॆरुवर तिशैहळ् पेर वॆङ्गऩल् पॊङ्ग मेऩ्मेल्

शरुमलै हिन्ऱ पोदु तिरिपुर मॅरित्त तेवन्
वरिशिलै यिऱ्ऱदाह मऱ्ऱवन् मुनिन्दु मन्ऩो 1368

इरुवरुम्–दोनो (शिव और विष्णु) ने; इरण्टु विल्लुम् एऱ्ऱिलर्–दोनो धनुषों पर प्रत्यंचा चढ़ाई; उलकम् एळुम् वॅरुवर–सातों लोक भयभीत हुए, ऐसा; तिचैकळ् पेर–दिशाएँ अस्त-व्यस्त हों, ऐसा; वॅम् कतल् मेल् मेल् पॉङ्क–भयंकर (कोप) ज्वालाओं के उत्तरोत्तर बढ़ते; चॅरु मलैकिन्ऱपोतु–(जब वे दोनों) निरन्तर लड़ते रहे, तब; तिरिपुरम् ऍरित्त तेवन्–त्रिपुरदाहक देव (शिवजी) का; वरिचिलै–बन्धन-युक्त धनुष; इऱ्ऱु आक–भग्न हो गया; मऱ्ऱु–उस पर; अवन् मन् मुनिन्तु–रुद्र बहुत गुस्सा करके। १३६८

"दोनो ने अपना-अपना धनुष झुकाकर प्रत्यंचा चढ़ायी। सातों लोक भयभीत हो गये। दिशाएँ चंचल हुईं। उनकी कोपाग्नि उत्तरोत्तर बढ़ती गई। ऐसा भयंकर युद्ध हो रहा था। तब त्रिपुर-दाहक शिवजी का धनुष भग्न हो गया। रुद्र को उस पर अपार कोप हुआ। १३६८

मीट्टुम्बोर् तॊडङ्गुम् वेलै विण्णवर् विलक्क वल्विल्
नीट्टिनन् ऱेवर् कोन्गै नॅऱ्ऱियिऱ् कण्णन् वीरम्
काट्टिय करिय मालुङ् गार्मुह मदनैप् पारिल्
ईट्टिय तवत्तिन् मिक्क विरिशिहऱ् कीन्दु पोनान् 1369

मीट्टुम् पोर् तॊटङ्कुम् वेलै–जब फिर से युद्ध प्रारम्भ करने लगे; विण्णवर् विलक्क–देवों ने रुकवा दिया; नॅऱ्ऱियिल् कण्णन्–भालनेत्र (शिवजी); वल् विल्–बलयुक्त उस धनुष को; तेवर् कोन् कै नीट्टिनन्–देवेन्द्र के हाथ में बढ़ाया (दिया); वीरम् काट्टिय करिय मालुम्–वीरताप्रदर्शक श्यामल विष्णु; कार्मुकम् अतनै–(अपने) कार्मुक, उसको; पारिल्–भूलोक में; ईट्टिय तवत्तिल् मिक्क–अर्जित तपस्या के धनी; इरिचिकऱ्कु–ऋचीक को; ईन्तु पोनान्–देकर चले। १३६९

"वे आगे फिर से युद्ध करने निकले। तब देवों ने बीच में पड़कर युद्ध रुकवा दिया। तब भालनेत्र रुद्रदेव ने अपना धनुष देवेन्द्र के हाथ में दे दिया। वीरता प्रदर्शित करनेवाले श्यामवर्ण श्री विष्णुदेव ने अपने कार्मुक को लोक भर में कीर्तिप्राप्त और तपस्या में सर्वश्रेष्ठ ऋचीक के पास देकर विदा ली। १३६९

इरिशिह नॅन्दैक् कीय वॅन्दयु मॅनक्कुत् तन्द
वरिशिलै यिदुनी नॉय्दिन् वाङ्गुदि यायिन् मन्न
कुरिशिलह णिन्नो डॊप्पा रिल्लैयान् कुऱित्त पोरुम्
पुरिहिलॅ निन्नो डिन्नम् पुहल्वदु केट्टि यॅन्ऱान् 1370

इरिचिकन् ऍन्तैक्कु ईय–ऋचीक ने मेरे पिता को दिया, तब; ऍन्तैयुम्–मेरे पिता ने; ऍनक्कु तन्त वरिचिलै–मुझे जो दिया वह बन्धनयुक्त धनुष; इतु–यह है; मन्न–राजन; नी नॉय्तिन् वाङ्कुति आयिन्–आप आसानी से (इसको) झुका सकोगे

तो; निन्तोटु ऒप्पार्–आप से तुल्य; कुरिचिल्कळ् इल्लै–राजा नहीं हैं; निन्तोटु यान् कुऱित्त पोरुम्–आप से जिसकी मैंने चर्चा की, वह युद्ध भी; पुरिकिलॅन्–नहीं करूँगा; इन्तम् पुकल्वतु केट्टि–आगे का कहना भी सुनिए। १३७०

"ऋचीक ने वह धनुष मेरे पिताजी (जमदग्नि) के पास सौंपा। मेरे पिता ने वह मुझे दिया। अगर आप बन्धनयुक्त इस चाप को आसानी से लेकर झुका सकेंगे तो, राजन्, आपके समान कोई राजा नहीं होंगे। यह मैं मान लूँगा और जिस युद्ध की चर्चा मैंने पहले की थी, उसको भी नहीं करूँगा। यह भी सुनिए। १३७०

ऊत्तविल् लिऱुत्त मॊय्म्बै नॊक्कुव दूक्क मन्ऱाल्
मात्तव मऱ्ऱुङ् गेळाय् मन्नुयिर्क् किदमे शॆय्युम्
ईत्तमि लॆन्दै शीऱ्ऱ नीक्किना तवनै मुन्नोर्
तात्तव नत्तैय मन्नन् कॊल्लयान् शलित्तु मेनाळ् 1371

ऊतम् विल् इऱुत्त मॊय्म्पै–भग्न धनु-भंजन की वीरता को; नोक्कुवतु–(गर्व के साथ) देखना; ऊक्कम् अन्ऱु–उत्साहवर्धक नहीं होगा; मात्तव–हे मनु के वंशज; मऱ्ऱुम् केळाय्–और भी सुनिए; मन् उयिर्क्कु–स्थायी जीवों को; इतमे चॆय्युम्–हितकारक; ईतम् इल्–अपराधहीन; ऎन्तै–मेरे पिताजी; चीऱ्ऱम् नीक्किनान्–(किसी से) क्रोध करने से दूर रहे (शांत स्वभाव थे); अवनै–उनको; मुन्–पहले कभी; तानवन् अनैय ओर् मन्नन्–दानव का-सा व्यवहार करनेवाले एक राजा ने; कॊल्ल–मार दिया, तो; यान् चलित्तु–मैं कुपित होकर; मेल् नाळ्–(उस दिन से) बहुत दिनों तक। १३७१

"पहले ही भग्न धनुष को तोड़कर उस बल पर इतराना उत्साहदायी नहीं होगा। हे मनुकुलश्रेष्ठ! सुनिये। मेरे पिताजी सर्वभूतहितरत थे। कोई बुराई न करनेवाले निरपराध थे। कोपविमुक्त शान्तगुण के थे। उनको, पहले कभी, दानव-सा व्यवहार करनेवाले एक राजा ने (कार्तवीर्य ने या उसके एक पुत्र ने) मार दिया। उससे कुपित होकर तब से आगे बहुत काल,। १३७१

मूवॆळु मुऱैमै पारिन् मुडियुडै वेन्दै यॆल्लाम्
वेवॆळु मळुविन् वायाल् वेरऱक् कळैकट् टन्नार्
तूवॆळु कुरुदि वॆळ्ळत् तुऱैयिडै मुळुहि यॆन्दैक्
कावन् कडन्ग णेर्न्दे नरुञ्जित्त मडक्कि निन्ऱेन् 1372

मू ऎळु मुऱैमै–तीन के सात (इक्कीस) पीढ़ियों के; पारिल् मुटि उटैय वेन्तै ऎल्लाम्–भूलोक में किरीटधारी सभी राजाओं को; वेवु ऎळु मळुविन् वायाल्–जलाकर उठनेवाले परशु की धार से; वेर् अऱ–मूल तक मिटाते हुए; कळै कट्टु–निराने योग्य पौधों के समान उखाड़कर हटाकर; अन्नार्–उनके; तू ऎळु–मांस से निसृत; कुरुति वॆळ्ळम् तुऱै इटै मुळुकि–रक्त नदी के घाट पर स्नान करके; ऎन्तैक्कु आवन–

अपने पिता के प्रति कर्तव्य; कटऩ्कळ् नेऱ्ऩ्तेऩ्–पितृकर्म किये; अऱ चिऩम् अटक्कि निऩ्ऱेऩ्–अदम्य कोप को शान्त करके रहा। १३७२

"मैंने इक्कीस पीढ़ियों तक के किरीटधारी राजाओं को अपने उग्र परशु की धार से मरवा डाला। (कोई भी राजा उनके सामने अपना किरीट उतार देता। १३५६वें पद में कहा गया है कि दशरथ ने भी अपना सुवासित केशवाला सिर नवाया। दशरथ के सम्बन्ध में यह भी बताया जाता है कि परशुराम नवविवाहित राजाओं को मारते नहीं थे—यह जानकर दशरथ हर वर्ष एक विवाह कर लेते थे।) मैंने राजाओं का एकदम ऐसा उन्मूलन कर दिया जैसे खेतों में व्यर्थ के पौधे निराये जाते हैं। बाद उनके रक्त से बनी नदी के घाट पर स्नान करके पितृकर्म किये। तभी जाकर मैंने अपना कोप शान्त कर लिया। १३७२

उलहॅला मुऩिवऱ् कीऩ्दे ऩुरुपहै यॉडुक्किप् पोऩ्देऩ्
अलहिऩ्मा तवङ्गळ् शॅय्दे यरुवरै यिरुऩ्दे ऩाण्डच्
चिलैयॅनो यिऱुत्त वोशै शॅवियुऱच् चीऱि वऩ्देऩ्
मलैहुवॅऩ् वल्लै याहिल् वाङ्गिडिच् चिलैयै यॅऩ्ऱाऩ् 1373

उलकु ऍलाम्–सारे लोक को; मुनिवऱ्कु ईन्तेऩ्–(काश्यप) मुनि को दे दिया; उऱुपकै ओट्टुक्कि–अन्तःशत्रु को जीत कर; अलकु इल् मातवङ्कळ् चॅय्तु–(अत्यधिक) अपार, विविध प्रकार की बड़ी तपस्याएँ करके; अरु वरै इरुन्तेऩ्–उत्तम महेन्द्र पर्वत पर रहा; आण्टु–तब (उधर); अ चिलैयै–उस (शिव-) धनु को; नी इऱुत्त ओचै–आपके तोड़ने का शब्द; चॅवि उऱ–कानों में पड़ा, इसलिए; चीऱि वन्तेऩ्–कोप करके आया; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; इ चिलैयै वाङ्किटु–इस धनुष को झुका लीजिए; मलैकुवॅऩ्–(नहीं तो) लड़ूँगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १३७३

"फिर मैंने सारी जीती हुई भूमि काश्यप मुनि को दान कर दी। उसके बाद काम क्रोधादि अन्तःशत्रुओं का दमन करके अपार और विविध व्रताधारित तपस्या करते हुए श्रेष्ठ महेन्द्र पर्वत पर रहता था। तब आपके धनुष तोड़ने का शब्द उधर आकर कानों में पड़ा तो पुनः कोप आ गया। अगर सामर्थ्य है तो पकड़िये यह धनुष और झुका लीजिये। तो मैं आपसे लड़ूँगा।" (कम्बन के पहले पद्यों के अनुसार "नहीं तो मैं लड़ूँगा" होना चाहिए क्योंकि परशुराम ने कहा था कि— देखिये पद्य १३७०— आप धनुष चढ़ा देंगे तो चर्चित युद्ध की बात छोड़ दूँगा। पर वाल्मीकी के आधार पर कहा गया है कि आप चढ़ा देंगे तो मैं आपके साथ द्वन्द्वयुद्ध करूँगा।) । १३७३

ऍऩ्ऱऩ ऩॅऩ्ऩ निऩ्ऱ विरामऩु मुऱुव लॅय्दि
नऩ्ऱॊळिर् मुहत्त ऩाहि नारणऩ् वलियि ऩाण्ड

वॆन्ऱिविऱ् ऱुरुह वॆन्तक् कॊडुत्तनन् वीरन् कॊण्डान्
तुन्ऱिरुञ् जडैयो नञ्जत् तोळुऱ वाङ्गिच् चॊल्लुम् 1374

ऍन्ऱ़तन्–परशुराम कह चुके; ऍन्न–उनका यों कहने पर; निन्ऱ इरामनुम्–(जो सुनते) खड़े रहे (उन) श्रीराम ने भी; मुऱुवल् ऍय्ति–मन्दहास युक्त होकर; नन्ऱु ऒळिर् मुकत्तन् आकि–बहुत ही प्रसन्नमुख हो; नारणन्भ्वलियिन्–श्रीमन्नारायण के, अपनी शक्ति के साथ; आण्ट वॆन्ऱि विल्–प्रयुक्त विजयी धनुष; तरुक–दीजिए; ऍन्न–कहा, तब; कॊटुत्ततन्–दिया; वीरन् कॊण्टान्–वीर ने लिया; तुन्ऱु इरु चटैयोन्–घनी लम्बी जटाधारी भी; अञ्च–डर जायँ, ऐसा; तोळ् उऱ वाङ्कि–कंधे तक खींचकर; चॊल्लुम्–कहने लगे। १३७४

परशुराम ने ऐसा कहा। श्रीराम उनके सामने, यह सब सुनते हुए खड़े रहे। मन्दहास के साथ, मुख से प्रसन्नता का प्रकाश प्रकट करते हुए उन्होंने परशुराम से वह धनुष माँगा। "उस धनु को दीजिये जिसका श्रीनारायण ने अपने बल का प्रयोग करके उपयोग किया था।" परशुराम ने धनु को बढ़ाया। वीर श्रीराम ने उसे लिया और प्रत्यंचा चढ़ाई। फिर शर संधान कर परशुराम से बोले। स्वयं परशुराम भयभीत हो गए। १३७४

पूदलत् तरशै यॆल्लाम् पॊन्ऱुवित् तनैयॆन् ऱालुम्
वेदवित् ताय मेलोन् मैन्दनी विरदम् बूण्डाय्
आदलिऱ् कॊल्ल लाहा दम्बिदु पिऴैप्प दन्ऱाल्
यादिदऱ् किलक्क माव दियम्बुदि विरैवि नॆन्ऱान् 1375

पू तलत्तु अरचै ऍल्लाम्–भूतल के सभी राजाओं को; पॊन्ऱु वित्ततै–मरवा दिया (आपने); ऍनऱालुम्–तो भी; वेत वित्तु आय मेलोन्–वेदवित श्रेष्ठ (जमदग्नि) के; मैन्तन्–पुत्र हैं; विरतम् पूण्टाय्–अब (तपो-) व्रती हैं; आतलिन्–इसलिए; कॊल्लल् आकातु–मारना उचित नहीं है; अम्पु इतु–शर यह (जो मैंने डोरी पर चढ़ाया है); पिऴैप्पतु अन्ऱु–अचूक है; इतऱ्कु इलक्कम् आवतु–इसका लक्ष्य बनेगा; यातु–क्या; विरैविन् इयम्पुति–सत्वर बताइये; ऍन्ऱान्–कहा। १३७५

"आपने भूतल के सारे राजाओं को मरवाया। (यह बड़ा अपराध है।) तो भी आप वेदवित और श्रेष्ठ जमदग्नि के पुत्र हैं। और आप अब तपोव्रती भी हैं। इसलिए आपका प्राण लेना धर्म नहीं होगा। पर यह शर भी व्यर्थ नहीं जायेगा। इसका लक्ष्य क्या हो —यह बताइये तुरन्त।"। १३७५

नीदियाय् मुनिन्दिडे नीयिङ् गियावर्क्कुम्
आदिया यऱिन्दनै नलङ्ग नेमियाय्
वेदिया विरुवदे यन्ऱि वॆण्मदिप्
पादियान् पिडित्तविल् पऱ्ऱप् पोदुमो 1376

नीतियाय्–नीतिमूर्ति; मुनिन्तिटेल्–कोप मत करें; नी इङ्कु यावर्क्कुम्–आप इन लोकों के सभी वासियों के; आतियाय्–आदिपुरुष हैं; अरिन्ततॅन्–समझ लिया (मैंने अब); अलङ्कल् नेमियाय्–प्रकाशमान चक्रधारी; वेतिया–वेदोक्त ब्रह्म; वॅण्मति पातियान्–श्वेत अर्धचन्द्रधर; पिटित्त विल्–शिवग्रहीत धनुष; इऱ्वते अन्ऱि–टूटेगा ही, नहीं तो; पऱ्ऱ पोतुमो–(आप उसको) पकड़कर (झुकायें) इसकी शक्ति रखता है क्या। १३७६

(परशुराम समझ गये कि ये स्वयं विष्णु हैं।) वे बोले। "नीति के मनुष्यरूप! आप मुझ पर क्रोध न करें। मैं समझ गया कि आप ही सर्वलोकमहेश्वर, आदि परब्रह्म हैं। दीप्तिमन्त चक्रधारी! वेदों के आधार! अर्धचन्द्रधर शिवजी का धनुष टूटा, यह ठीक ही है। उसको टूटना ही था। उसमें आपके हाथ की शक्ति को सम्हालने की शक्ति कहाँ रही? । १३७६

पॊन्नुडै वनैकळऱ् पॊलङ्गॊ डाळिनाय्
मिन्नुडै नेमिया नादन् मॆय्म्मयाल्
ॲन्नुडैत् तुलहिनि यिडुक्कण् यान्ऱन्द
उन्नुडै विल्लुमुन् नुरत्तुक् कीडन्ऱाल् 1377

पॊन् उटै–पीताम्बर; वनै कळल्–कारीगरीयुक्त पायलधारी; पॊलम् कॊळ्–सुन्दर; ताळिनाय्–चरण वाले; मिन् उटै(य) नेमियान्–उज्ज्वल चक्रधारी; आतल् मॆय्म्मैयाल्–हैं, यह सत्य है, इसलिए; उलकु इनि–संसार अब; ॲन् इटुक्कण् उटैत्तु–किस संकट का भागी होगा; यान् तन्त–मुझ से दिया गया; उन्नुटैय विल्लुम्–वह आपका धनुष भी; उन् उरत्तुक्कु ईटु अन्ऱु–आपकी शक्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। १३७७

"हे पीताम्बरधारी! सुन्दर कारीगरी से युक्त पायलधारी चरणों वाले! आप चमकदार चक्र के धारक श्रीविष्णु देव हैं। यह अब साबित है। फिर इस लोक की कौन हानि हो सकती है? असल में जो धनुष अब मैंने आपको दिया उसमें भी आपकी शक्ति सहने का पर्याप्त बल नहीं होगा। १३७७

ॲय्दवम् बिडैपळु दॆय्दि डामलॆन्, शॆय्दवम् यावैयुज् जिदैक्क वेयॆनक्
कैयव नॊहिळ्त्तलुङ् गणयुञ् जॆन्ऱवन्, मैयऱु तवमॆलाम् वारि मीण्डदे 1378

ॲय्त अम्पु–आपका संधानित शर; इटै पळुतु ॲय्तिटामल्–बीच में व्यर्थ न हो जाय, इसलिए; ॲन् चॆय् तवम् यावैयुम्–मेरी की हुई तपस्या का सारा संग्रह; चितैक्क ॲन–हर ले; ॲन–ऐसा कहने पर; अवण्–वहाँ; कै नॆकिळ्त्तलुम्–हाथ छोड़ने पर; कणैयुम् चॆन्ऱु–शर भी चलकर; अवन्–उन (परशुराम) के; मै अऱु तवम् ॲलाम्–निर्दोष सारी तपस्या के फल को; वारि–उठा लेकर; मीण्टतु–लौट आया। १३७८

"आपने जो शर चढ़ाया है वह बीच में व्यर्थ न हो, इसलिए मैं अपने सब तपोबल को उसका लक्ष्य समर्पित कर देता हूँ। वह उस सबको हर ले। श्रीराम ने यह सुनकर अपनी पकड़ ढीली की तो वह शर परशुराम की सारी तपस्या का फल ग्रहण कर लेकर लौट आया और तूणीर में प्रविष्ट हो गया।" । १३७८

ऍण्णिय पॉरुळॅला मितिदु मुऱ्ऱुह, मण्णिय मणिनिऱ वण्ण वण्डुळाय्क्
कण्णिय यावर्क्कुङ् गळैह णाहिय, पुण्णिय विडैयॅनत् तॊऴुदु पोयिनान् 1379

मण्णिय मणि निऱ वण्ण–शुद्धिकृत मणि के वर्ण वाले; वण् तुळाय् कण्णिय–पुष्ट तुलसी की मालाधारी; यावर्क्कुम् कळै कण् आकिय–सब किसी के लिए आधार; पुण्णिय–पुण्यस्वरूप; ऍण्णिय पॉरुळ् ऍलाम्–जो चाहेंगे, वे सब कार्य; इनितु मुऱ्ऱुक–सुख से पूर्ण हों; विटै–विदा; ऍन्न–यह कहकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोनान्–चले गये। १३७९

परशुराम ने श्रीराम की स्तुति की। "शुद्धिकृत नीलमणिवर्ण ! पुष्ट तुलसीदलों की बनी मालाधारी ! सर्वाधार पुण्यमूर्ति ! आपका सब संकल्प सफल हो। अब मैं बिदा लेता हूँ।" यह कहकर वे लौट चले। १३७९

अऴिन्दवन् पोयपि नमल नैयुणर्वु
ऑऴिन्दुतन् नुयिरुलैन् दुरुहु तन्दयैप्
पॊऴिन्दपे रन्बिनाऱ् ऱॊऴुदु मुन्बुपुक्
किऴिन्दवान् ऱुयर्क्कडऱ् करयि नेऱ्ऱिनान् 1380

अवन् अऴिन्तु पोय पिन्–उनके सर्वस्व खोकर जाने के बाद; अमलन्–निर्मल श्रीराम ने; तन् ऐ उणर्वु ऑऴिन्तु–अपने पंचेंद्रिय की शक्ति खोकर; उयिर् उलैन्तु–विकल-प्राण होकर; उरुकुम्–घुलनेवाले; तन्तैयै–पिता दशरथजी के; पॊऴिन्त पेर् अन्पिनाल्–उमंगनेवाले बड़े प्रेम के साथ; मुन्पु पुक्कु–सामने जाकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; इऴिन्त–(जिसमें वे) मग्न थे; वान् तुयर् कटलिन्–उस विशाल दुख के सागर के; करै एऱ्ऱिनान्–पार लगाया। १३८०

अपना सर्वस्व खोकर परशुराम के चले जाने के बाद श्रीराम अपने पिता के पास आये। चक्रवर्ती दशरथ की पाँचों इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। प्राण विकल हुए थे। वे अन्दर ही अन्दर घुल रहे थे। निर्मल स्वभाव वाले श्रीराम ने उमगनेवाले बड़े प्रेम के साथ पिता के सामने आकर उनको नमस्कार किया। तब जाकर चक्रवर्ती का दुख दूर हुआ। श्रीराम ने अपने पराक्रम से परशुराम को हराकर चक्रवर्ती को दुख-सागर के पार लगा दिया। १३८०

वॆळिप्पडु मुणर्विनन् विळुम नीङ्गिडत्
तळिर्प्पुरु मदहरित् तानै यानिडैक्
कुळिप्पुरुन् दुयर्क्कडर् कोडु कण्डवन्
कळिप्पॆनुङ् गरैयिलाक् कडलु ळाळ्न्दनन् 1381

वॆळिप्पटुम् उणर्वितन्–स्वस्थ होनेवाली सुधि के बनकर; विळुमम्–दुख के; नीङ्किट–दूर होने से; तळिर्प्पु उरुम्–आह्लादयुक्त हो; मतम् करि तानैयान्–मत्तगजों की सेनावाले; इटै कुळिप्पु उरुम्–बीच में जिसमें मग्न थे; तुयर् कटल्–उस दुख समुद्र का; कोटु कण्टवन्–तीर (अन्त) देखनेवाले; कळिप्पु ॲनुम्–सन्तोष रूपी; करै इला कटलुळ्–बेलाहीन (तीर रहित) समुद्र में; आऴ्न्ततन्–डूब गये। १३८१

(श्रीराम के ढाढस देने पर) दशरथजी की बेहोशी दूर हुई और चेतना वापस आई। दुख से विमुक्त हुए। मन उल्लसित हुआ। मत्तगजों की सेना वाले वे दुख-सागर से ऊपर तीर पर आये; अब बेलाहीन सुख-सागर में डूब गए। १३८१

परिवरु शिन्दयप् परशु रामन्कै
वरिशिलै वाङ्गियोर् वशैये नल्हिय
ऒरुवनैत् तळुविनित् रुच्चि मोन्दुतन्
अरुवियङ् गण्णॆनुङ् गलश माट्टिनान् 1382

परिवु अरु चिन्तै–अकरुणमन; अ परचुरामन् कै–उन परशुराम के हाथ के; वरि चिलै वाङ्कि–बन्धनसहित धनुष लेकर; ओर् वचैयै नल्किय–एक अपयश (उन्हें) दिलानेवाले; ऒरुवनै–अनुपम (श्रीराम) को; तऴुवि नितुरु–गले लगाकर; उच्चि मोन्तु–सिर सूंघकर; तन्–अपनी; अरुवि कण् ॲनुम्–नदी के समान अश्रु बहानेवाली आँखों रूपी; कलचम्–कलशों से; आट्टितान्–अभिषिक्त करा दिया। १३८२

श्रीराम ने अकरुणमन परशुराम के हाथ से धनुष लिया और उन्हें बदले में अपयश दिया। ऐसे अनुपम वीर का दशरथ ने आलिंगन किया; सिर को सूँघा और अपनी अश्रुनदी बहानेवाली आँखों रूपी कलशों से उन्हें अभिषिक्त करा दिया। (इस पद में धनुष लेकर अपयश देने का भाव "परिवर्तनालंकार" के अन्तर्गत लिया जायगा— मूल टीकाकार।)। १३८२

पॊय्म्मैयिल् शिऱुमयिर् पुरिन्द वाण्डॊऴिल्
मुम्मैयि नुलहित्तान् मुडिक्क लावदो
मॆय्म्मैयिच् चिऱुवनै विनैशॆय् दोर्हळुक्
किम्मैयु मरुमयु मीयु मॆन्ऱनन् 1383

पॊय्म्मै इल् चिऱुमैयिल्–कपटहीन (नादान) इस छोटी आयु में; पुरिन्त आण् तॊऴिल्–जो (इसने) किया वह पौरुष का कार्य; मुम्मैयित् उलकित्तार्–तीनों लोकों के वासियों से; मुटिक्कल् आवतो–किया जा सकता है क्या; मॆय्म्मै–सत्य तो;

इ चिरुवतॆ–यह बालक; विनै चॆय्तोर्कळुक्कु–सुकृतों को; इम्मैयुम् मरुमैयुम्–इह पर सुख; ईयुम्–दिला देनेवाला है; ॲन्ऱरतन्–संस्तुति की। १३८३

दशरथ ने उनकी प्रशंसा की। कपटहीन इस छोटी आयु में श्रीराम ने जो पौरुष का काम किया है वह तीनों लोकों में किसी के हाथ हो सकेगा क्या? नहीं। सच्ची बात तो यही है कि ये बालक श्रीराम सुकृतों को उनके कर्मानुसार इह-पर सुख देनेवाले 'कर्मफलदाता' भगवान हैं। १३८३

पूमऴै पॊऴिन्दनर् पुहुन्द तेवर्हळ्, वामवेल् वरुणनै मान वॆञ्जिलै
शेमियॆन् ऱळित्तनन् शेनै यार्त्तॆऴ, नामनी रयोत्तिमा नहर नण्णिनान् 1384

पुकुन्त तेवर्कळ्–आकाश में एकत्र देवों ने; पू मऴै पॊऴिन्तनर्–पुष्पवर्षा की; वामम् वेल् वरुणनै–मनोरम भालाधारी वर्ण को (बुलाकर); मानम् वॆम् चिलै चेमि–आदरणीय और भयंकर धनुष को सुरक्षित रखो; ॲन्ऱु–कहकर; अळित्तनन्–उसके पास दिया और; चेनै आर्त्तु ॲऴ–सेना के कोलाहल के साथ उठते; नामम् नीर्–भय दिलानेवाले खाई के जल से आवृत्त; अयोत्ति मा नकरम् नण्णिनान्–अयोध्या के महान नगर पधारे। १३८४

(आकाश में देव जुट गये। उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा।) देवों ने कल्पक तरुओं के पुष्प की वर्षा की। तब श्रीराम ने सुन्दर सांगधारी वरुण को आमंत्रित किया और उनके हाथ में उस आदरणीय आतंक मचाने वाले धनुष को दिया और कहा कि इसको सुरक्षित रखिये। अपनी उस सेना के साथ जो कोलाहल करते हुए रवाना हुई वे भयावनी खाई के जल से वलयित अयोध्या के महानगर में पधारे। १३८४

नण्णिन रिऩ्बत्तु वैहु नाळिडै, मण्णुरु मुरशिनम् वयङ्गु तानयान्
अण्णलप् परदनै नोक्कि याण्डहै, ॲण्णरुन् दहयदोर् पॊरुळि यम्बुवान् 1385

नण्णिनर्–(अयोध्या में) आगत सब; इऩ्पत्तु वैकुम् नाळ् इटै–सुख से रहते थे, तब उस मध्य; आण् तकै–पौरुषयुक्त; मण् उरु–मृण्लेप वाले; मुरचु इनम्–ढोल के समूह; वयङ्कुम्–जहाँ बजते थे; तानैयान्–उस सेना के स्वामी ने; अण्णल् अ परतनै नोक्कि–महिमावान भरत को देखकर; ॲण्ण अरु तकैयतु–वह जिसको सोच भी नहीं सकते थे, ऐसा; ओर् पॊरुळ्–एक (आदेश-) समाचार; इयम्पुवान्–कहा। १३८५

अयोध्या में आकर सब सुख से रहने लगे। तब राजा दशरथ ने, जो अपार पौरुष रखनेवाले थे और जिनकी सेना में अनेक ढोल बजते थे (इन ढोलों के चमड़े में मट्टी का बना लेप लगाया जाता है ताकि चमड़ा चोट पाकर खूब थर्रा उठें और जोर का शब्द हो), महिमावान भरत से ऐसी बात कही जिसे स्वयं भरत भी नहीं सोच सकता था (क्योंकि राम से अलग रहना उन्हें सह्य नहीं हो सकता था।)। १३८५

आणयि निन्दुमू दादै येयनिर्, काणिय विऴैवदोर् करुत्त नादलाल्
केणियिल् वळैमुरल् केह यम्बुहप्, पूणियन् मार्बनी पोदि यॆन्ऱनन् 1386

ऐय–तात; आणैयिन्–शासनकर्त्ता; नित्तु मूतातै–तुम्हारे मातामह; निन्काणिय–तुमको देखने की; विऴैवतु–इच्छा करनेवाले; ओर् करुत्तन्–मन के हैं; आतलाल्–इसलिए; पूण् इयल् मार्प–आभूषणभूषित वक्षवाले; नी–तुम; केणियिल् वळै मुरल्–जहाँ तालाबों में शंख बोलते रहते हैं; केकयम् पुक–(उस) केकय देश जाने के लिए; पोति–रवाना हो जाओ; ऍन्ऱनन्–यह आज्ञा सुनाई। १३८६

दशरथ ने आज्ञा दी कि तात ! तुम्हारे मातुल, जो प्रतापी शासक हैं, तुमको देखने की इच्छा रखते हैं। आभरणभूषित वक्ष वाले भरत ! तुम केकय देश को, जिसके तालावों में शंख बोलते रहते हैं (जो देश जल-समृद्ध है), जाने के लिए प्रस्तुत हो जाओ। १३८६

एवलु मिऱैञ्जिप्पो यिरामन् शेवडिप्, पूवितैच् चॆन्नियिऱ् पुनैन्दु पोयिनान्
आवियङ् गवनल दिल्लै यादलान्, ओवलि लुयिर्पिरिन् दुडल्शॆन् ऱॆन्नवे 1387

एवलुम्–आज्ञा देते ही; इऱैञ्चि–पिता का नमस्कार करके; पोय्–जाकर; ईरामन् चे अटि पूवितै–श्रीराम के अरुण चरणपद्मों को; चॆन्नियिल् पुनैन्तु–सिर पर धारण करके; आवि–प्राण; अङ्कु–उधर; अवन् अलतु–उनके सिवा; इल्लै–नहीं; आतलान्–इसलिए; ओवल् इल् उयिर् पिरिन्तु–अपृथक्करणीय प्राणों को छोड़कर; उटल् चॆन्ऱतु ऍन्न–शरीर जाता हो जैसे; पोयितान्–चले। १३८७

भरत उन्हीं की आज्ञा के कारण चल पड़े। पहले उन्होंने पिताजी को नमस्कार किया। वाद श्रीराम के चरणों पर अपना सिर रखकर दण्डवत की। उनके प्राण या आत्मा श्रीराम के सिवा दूसरे नहीं थे। वे उन्हें इतना प्यार करते थे। इसलिए जब वह चले तो ऐसा लगा कि शरीर आत्मा को छोड़कर जा रहा हो। १३८७

उळैविरि पुरवित्ते रुदाशित् तॆन्ऱॆणुम्
वळैमुरल् शेनयान् मरुङ्गु पोदप्पोय्
इळैयवन् ऱन्नॊडु मेऴु नाळिडै
नळिर्पुनर् केहय नाडु नण्णिनान् 1388

उताचित्तु ऍन्ऱु ऍणुम्–युधाजित नाम से प्रख्यात; वळै मुरल् चेनैयान्–शंखध्वनि वाली सेना के स्वामी के; मरुङ्कु पोत–साथ आते; इळैयवन् तन्तॊटुम्–अनुज (शत्रुघ्न) के साथ; उळै विरि–अयाल मण्डित; पुरवि तेर्–अश्व-जुते रथ पर; एऴु नाळ् इटै–सात दिनों में; नळिर् पुनल् केकय नाटु–शीतल जल से भरे केकय देश में; नण्णितान्–पहुँचे। १३८८

भरत के साथ युधाजित नाम के उनके मातुल अपनी शंखध्वनि सहित

तमिऴ

कम्ब रामायण

अयोध्या-
अरण्यकाण्ड

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी रूपान्तर पर

प्रशस्तियाँ :—

कम्बरामायण के नागरी लिप्यन्तरण के हिन्दी में अर्थ और टीका सहित इस प्रकाशन के लिए भुवनवाणी ट्रस्ट के श्रीनन्दकुमार अवस्थी बधाई के पात्र हैं।

रामायण भारत भर में, पीढ़ी दर पीढ़ी, करोड़ों लोगों के मन में प्रेरणा भरती आ रही है। उसकी छाप न केवल हमारी संस्कृति और सभ्यता की बिनावट में देखी जा सकती है, वरन् हमारे दैनिक जीवन में भी वह दृष्टि-गोचर होती है। अन्यान्य भाषाओं में रामायण के अनेक अनुवादान्तर हैं; और यह बात इस ऐतिहासिक ग्रन्थ की महत्ता में चार चाँद लगा देती है। कम्बन महाकवि था। उसकी (रचित) तमिऴ रामायण ने, जिसका कम्ब रामायण ही सर्वप्रिय प्रचलित नाम है, तमिऴ-भाषी पण्डित और पामर—दोनों के मन को समान रूप से प्रभावित किया है। उसका सौन्दर्य विविध घटनाओं के वर्णन और पात्रों के चरित्र-चित्रण के अनूठेपन में है।

श्री प्रभुदास बी पटवारी

तमिऴ पाठ को हिन्दी में रूपान्तरित करना किसी भी हिसाब से सुगम काम नहीं। इसके लिए दोनों भाषाओं पर अधिकार अपेक्षित है। आचार्य शेषाद्रि ने हर पद्य का लिप्यन्तरण और उसका अर्थ देकर प्रशंसनीय काम किया है। हिन्दी भाषा-भाषी के, कम्बन को और उसके अक्षय काव्यसौष्ठव की छटा को अच्छी तरह से जानने-मानने में, यह प्रकाशन बड़ा सहायक रहेगा।

एक और मुख्य कारण से भी मैं इस प्रकाशन का स्वागत करता हूँ। भारत की आधारभूत सांस्कृतिक एकता को अक्षुण्ण रखने के लिए, और हमारी राष्ट्रीय एकता को सुरक्षित रखने हेतु भी, इस बात का प्रयत्न

करना आवश्यक है कि भाषाएँ लोगों में फूट न डालें, वरन् एकता के स्थापन तथा वर्धन में सबल साधनों के रूप में प्रयुक्त हों। यह इस कार्य से सर्वाधिक साध्य होगा कि एक प्रान्तीय भाषा की अमर कृतियों के अनुवाद भारत की अन्य भाषाओं में प्रस्तुत किये जाएँ ताकि भारत की अन्य सभी भाषाएँ उन्नति करें और हमारी एकता को सुदृढ़ बनाएँ। इस दृष्टि से भी भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ और श्रीशेषाद्रि के प्रयत्न सराहनीय हैं।

इस प्रयत्न की सफलता तथा इस कृति के विस्तृत प्रसार की कामना करता हूँ।

राजभवन, मद्रास,
२६-५-८०

ह० प्रभुदास बी पटवारी
राज्यपाल, तमिळ्नाडु

[दिनांक ६-७-८०, रविवार को मद्रास की साहित्यानुशीलन समिति के द्वारा आयोजित बैठक में तमिळ्नाडु के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम श्री प्रभुदास पटवारी द्वारा 'कम्ब रामायण—बालकाण्ड' का विमोचन।]

(१) अध्यक्ष श्री एन० वेंकटेश्वरन् (२) हस्ताक्षर करते हुए महामहिम राज्यपाल प्रभुदास बी० पटवारी (३) कम्ब रामायण के हिन्दी रूपान्तरकार आचार्य ति० शेषाद्रि।

[श्री ना० म० र० सुब्बरामनजी इस समय ७५ वर्ष की पुण्यायु में चल रहे हैं। गांधीजी के अनन्य भक्त तथा अक्षरश: अनुयायी, रामकृष्ण परमहंस एवं विवेकानन्द के विचारों के माननेवाले, प्रेम और दया के प्रतीक, संयम और सिद्धान्तों पर अटल, विवाहित होने पर भी गांधीजी के अनुसरण पर ब्रह्मचर्यव्रत के व्रती, भारत की इन सौजन्यमय विभूति के जन्म से तमिळ्नाडु के राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक और चारित्रिक जीवन को अपरिमित मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। अनेक मूर्धन्य राष्ट्रनेता, गांधीजी, नेहरूजी इनके निवास पर अतिथि रह चुके हैं। स्वतन्त्रता संग्राम के जेलयात्री, राष्ट्रभाषा के अनन्य प्रेमी व प्रचारकों के सहायक, अहंशून्य और सहृदय दानी श्रीसुब्बरामन ने भुवनवाणी ट्रस्ट के आजीवन न्यासी आचार्य ति० शेषाद्रि से ट्रस्ट के भाषाई सेतुबन्धन का कार्यकलाप सुनते ही स्वत: १०००.०० रुपया की दानराशि ट्रस्ट के 'भुवनवाणी मन्दिर' के निर्माण हेतु भेज देने का अनुग्रह किया।

श्रीसुब्बरामन, तमिळ्नाडु गांधी स्मारकनिधि के प्रथम अध्यक्ष, हरिजन सेवा संघ के अध्यक्ष, वेदारण्यक के कन्यागुरुकुल के सञ्चालक मण्डल के सदस्य, मदुरै निगम के अध्यक्ष, तमिळ्नाडु की विधानसभा एवं केन्द्र की लोकसभा के माननीय सदस्य रह चुके हैं। भूदान यज्ञ में आपने अपनी सबसे उर्वर भूमि को दान में दे दिया।

प्रस्तुत कम्बरामायण के नागरी रूपान्तर पर ऐसे सदाशय महानुभाव की संस्तुति पाकर हम गौरवान्वित और परम उत्साहित हैं।]

—नन्दकुमार अवस्थी

मेरे मित्र, आचार्य ति० शेषाद्रि बहुभाषाविद हैं। वे तमिळ, अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी में प्रवीण हैं।

उन्होंने गान्धीय ग्रन्थों का गहरा अध्ययन किया है और विद्यार्थियों और युवकों को उन्हें समझने और उनके अनुसार चलने में सहायता दिलाई है।

वे स्वामी चिन्मयानन्द के श्रद्धावान शिष्य हैं और वे गीता और उपनिषदों के अच्छे जानकार हैं। वे जनता में आध्यात्मिक विचारों के प्रचार में काफ़ी सराहने योग्य काम करते रहते हैं।

श्री ना० म० र० सुब्बरामन

एक दिन उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि वे शरीर-विहीन चेतना रूप रह गए। तब उन्हें इच्छा हुई कि कोई उपयोगी और चिरस्थायी कार्य करना चाहिए। तमिळ और हिन्दी की सेवा करने की अन्त:प्रेरणा का अनुभव भी करते थे। मित्रों ने अनुवाद कार्य में प्रोत्साहित किया और लखनऊ भुवनवाणी ट्रस्ट के श्रीनन्दकुमार अवस्थी ने कम्बरामायण के अनुवाद का काम सौंपा। इनके फलस्वरूप उन्होंने कम्बरामायण के नागरी लिप्यन्तरण और हिन्दी अनुवाद के इस

हिमालय जैसे महान और कष्टसाध्य काम में हाथ लगाया। प्रभु की कृपा से उन्होंने इसे बड़ी श्रद्धा से किया है।

(हिन्दीभाषी और) हिन्दी जाननेवालों को इस प्रकाशन द्वारा तमिऴ-संस्कृति की झाँकियाँ लेने का लाभ मिलेगा और प्रो० शेषाद्रि ने इस दिशा में कवि भारती के स्वप्न और उनकी अभिलाषा को बहुत हद तक कार्यरूप दिया है। यह प्रयत्न अवश्य हिन्दी भाषा-भाषियों और जानकारों द्वारा सराहा जायगा और उसे प्रोत्साहन दिया जायगा।

ऐसी चिरस्मरणीय सेवा इनके द्वारा होती रहे— भगवान उन पर कृपा रखें।

मदुरै, १-५-८०　　　　　　　　ह० ना० म० र० सुब्बरामन

प्रिय शेषाद्रि जी,

आप साहित्यिक क्षेत्र में बहुमूल्य कार्य कर रहे हैं और कम्ब रामायण का सांगोपांग, मूल सहित अनुवाद कर रहे हैं। यह तो एक महान कार्य है। कंबर अद्वितीय कवि था और उसकी प्रतिभा वाल्मीकि तथा तुलसी से भी बढ़ी-चढ़ी थी। भाषा, भाव तथा कवित्व शक्ति में कंबर की तुलना का अन्य कोई कवि नहीं हुआ। आप उनकी रचना का नागरी लिपि में मूल, एवं हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी तथा तमिऴ दोनों की अमूल्य सेवा कर रहे हैं। भगवान आपको इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता दे। मुझे प्रसन्नता है कि इस वृहत् ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के संस्थापक श्रीनन्दकुमार अवस्थी आपको प्राप्त हुए हैं।

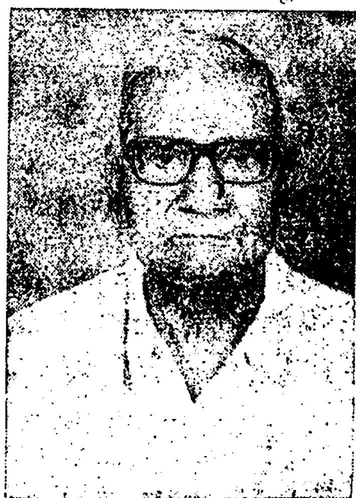

श्री अवधनन्दन

प्रिय श्रीनन्दकुमार जी,

मदुरा के श्री ति० शेषाद्री के पत्र से यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपकी संस्था 'भुवन वाणी ट्रस्ट' कम्ब रामायण का समूल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रही है। अब तक हम हिन्दी वालों ने दक्षिण भारत के साहित्य की उपेक्षा की थी। आपके इस प्रयत्न से दक्षिण के लोग तो प्रसन्न होंगे ही, हिन्दी

भाषाभाषी क्षेत्र को भी लाभ पहुँचेगा। कम्ब रामायण का बालकाण्ड खण्ड प्राप्त हुआ। उसके लिए अनेकानेक धन्यवाद। मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी के मेरे दो छात्र श्री ति० शेषाद्री और श्री सौर्यराजन आपके अभूतपूर्व और अद्भुत कार्य में आपके साथ सहयोग कर रहे हैं। दोनों मेरी बधाई के पात्र हैं।

श्रीबनारसीदास चतुर्वेदी जी की कलम से आपका विस्तृत परिचय पढ़कर मैं आश्चर्यचकित रह गया। हिन्दी जगत में आपके जैसे कर्मठ व्यक्ति भी हैं, इसका पता शायद हिन्दी जगत के थोड़े ही लोगों को है। यह बड़े खेद की बात है कि आपके जैसे साहित्यसेवी और त्यागी व्यक्ति का परिचय पाने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सिफ़ारिश की आवश्यकता पड़े। आपकी कीर्ति तो हिन्दी-संसार में सूर्य की भाँति प्रकाशित होना चाहिए। पर यह दुर्भाग्य का विषय है कि हिन्दी-जगत इतना विशाल होते हुए भी उसमें साहित्य-प्रेमियों और पाठकों का अभाव है। तमिळनाडु, केरल, महाराष्ट्र, बंगाल आदि राज्यों में अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। तमिळ के "आनन्द विकटन" साप्ताहिक पत्रिका की कापी प्रत्येक भाषाभाषी के घर में पहुँचती है —वह तमिळनाडु में हो या बम्बई, पटना या दिल्ली में। जिस दिन वह पत्रिका प्रकाशित होती है उस दिन पत्रिका बेचनेवालों की दूकानों पर खरीदारों की कतारें बँध जाती हैं। हिन्दी-संसार में प्रतिष्ठित व पुरानी सरस्वती, माधुरी आदि का स्थान सिनेमा और सेक्स-प्रधान पत्रिकाओं ने ले लिया है। इस सुखद स्थिति में भी आप जो समन्वयकारी कार्य कर रहे हैं उसके लिए मेरी हार्दिक बधाई है और मैं हृदय से आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

[पटना (बिहार) के निवासी श्री अवधनन्दन (जन्म २५ दिसम्बर १६०० ई०) गांधीयुग के आदिम हिन्दी प्रचारकों में से मूर्धन्य हैं। उनके अनेक शिष्य, जिनमें प्रस्तुत कम्ब रामायण के नागरी एवं हिन्दी रूपान्तरकार आचार्य ति० शेषाद्रि भी हैं, दक्षिण में राष्ट्रभाषा के प्रचार में अनवरत-रत अब वयोवृद्ध हो चुके हैं। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के साहित्यमंत्री, शिक्षामंत्री, संयुक्तमंत्री आदि पदों पर रहकर राष्ट्रभाषा की सेवा करते रहे। ओड़िसा, आन्ध्र और विशेष रूप से तमिळनाडु में उन्होंने शिक्षण हेतु अनेक अध्यापक तैयार किए एवं पाठ्य पुस्तकों की रचना की। सन् ३०-३१ में नमक आन्दोलन में भाग लेकर आपने जेलयात्रा भी की। श्री शेषाद्रि से कम्ब रामायण के नागरी रूपान्तर का समाचार प्राप्त होने पर श्री अवधनन्दन जी के उदार पत्र श्रीशेषाद्रि और मेरे पास आये, उनका सार इस प्रकार उद्धृत है।]

—नन्दकुमार अवस्थी

अधिकांश प्राचीन तमिळ्ग्रन्थों ने राष्ट्रीय एकात्मभाव, भारती प्रजा का सर्वजनीन चरित्र तथा सामासिक संस्कृति के 'अविभक्तम् विभक्तेषु'-वाले समवेत का समर्थन किया है। वायुपुराण की यह वाणी—

"उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमवद्-दक्षिणं च यत्।
वर्षं तत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा॥"

श्री रा० शौरिराजन

तमिळ् के संघकालीन (ई० पूर्व शती से ई० प्रारम्भिक शती तक) ग्रन्थ पुऱनानूऱु के एक कवि के इस उद्‌गार में भी मुखरित हुई है— "......यादुम् अरे यावरुम् केळिर् (सारे प्रदेश हमारे भूभाग हैं और समस्त प्रजा हमारा बन्धुवर्ग है)।"

दक्षिण प्रारम्भ से उत्तरायण के प्रति समादर एवं सद्‌भाव रखता आया था। शिलप्पधिकारम्, मणिमेखलै आदि प्राचीन तमिळ् काव्यों में उत्तरदिशा को पुण्यदिशा, उत्तरभूमि को 'तॉन् मूदाट्टि' (वृद्धा देवी), उत्तरापथ को 'मऱैयोर् देयम्' (वेद-विदों का प्रदेश) कहा गया है। तमिळ् के प्राचीनतम लक्षणग्रन्थ 'तॉल्काप्पियम्' (ई० पूर्व शती) के रचयिता तॉल्काप्पियर् अगस्त्य मुनि के शिष्य थे। अगस्त्य उत्तर और दक्षिण के मध्य समन्वयकारी सेतुबन्ध थे। तमिळ् भाषा के प्रथम वैयाकरण के रूप में भी अगस्त्य विख्यात हुए। आर्य तथा द्रविड़ संस्कृतियों के समन्वयकर्ता भी ये ही थे। अगस्त्य के नाम से एक वंश परम्परा पायी जाती है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रणेता कविचक्रवर्ती कम्बर् के पूर्व भी सीता-रामकथा तमिळ् के पद्यों में, लघु प्रबन्धों में तथा चारण कवियों के गीतों में वर्णित हुई है। अतः जनमानस में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम तथा पतिव्रता देवी सीता के प्रति अगाध श्रद्‌धा बनी रही। कविवर कम्बर् को यह भी एक प्रेरणा-स्रोत रहा था।

कम्ब रामायणम् का बालकाण्ड (नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद सहित) पढ़ने का सौभाग्य मिला, जो भुवन वाणी ट्रस्ट (न्यास), लखनऊ द्वारा प्रकाशित, आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए० द्वारा अनूदित है।

प्रभु रामचन्द्रजी का परम अनुग्रह है कि इस महानतम कार्य के लिए सारस्वत तपस्वी श्रीनन्दकुमार अवस्थीजी (मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट) प्रकाशक के रूप में, तथा शुभचिन्तक, विद्वान् एवं संस्कारशील लेखक आचार्य श्री ति० शेषाद्रि अनुवादक के रूप में मिले हैं। ये दोनों महानुभाव वन्दनीय हैं और प्रोत्साहनीय हैं।

'भुवन वाणी न्यास' का वाणीयज्ञ 'सदा (आ) ह्वनीय' है। भारत की समस्त भाषाओं में से उत्तम सांस्कृतिक ग्रन्थों को चुनकर उनको हिन्दी रूपान्तर तथा लिप्यन्तरण के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस न्यास का मासिक पत्र 'वाणी सरोवर' अद्भुत समन्वय-प्रयास है। पूरे भारत में इस प्रकार की समन्वय-साधना एवं सारस्वत सेवा न भूतो न भविष्यति। साधकवर्म अवस्थीजी की वाणी-उपासना श्रमसाध्य है, विघ्न-बाधाओं से बाधित भी है। फिर भी वे संकल्पजयी, समर्पित उद्यमी, धीरपुरुष हैं; अपौरुषेय प्रभु की प्रेरणा तथा कृपा उनके साथ हैं।

महर्षि कम्बर् के रामायण महाकाव्य का यह हिन्दी रूपान्तर, इसका अध्ययन-अवगाहन करने के लिए सुशिक्षा, संस्कार, सुचिन्तन, उदार चरित्र और राष्ट्रीय सुदृष्टि की नितान्त आवश्यकता है। हाथों-हाथ बिकनेवाली रचना का न होना ही इस ग्रन्थ का गौरव है। मुझे विश्वास है कि इस महानतम सारस्वत समन्वय-प्रयास का उचित आदर देने में सारा देश उन्मुख होगा। क्या सारा राष्ट्र इस दिशा में उदारतापूर्वक सोचेगा, अपनी राष्ट्रीय चेतना के परिणामस्वरूप इस वाणीयज्ञ की आह्वनीयाग्नि को निरन्तर प्रज्वलित रखेगा ?

[श्री रा० शौरिराजन (मद्रास) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख और पुराने अधिकारी हैं। तमिऴ और हिन्दी के समान रूपेण विद्वान् और राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य प्रचारक हैं। वे हिन्दी प्रचार समाचार के सम्पादक मण्डल के एक वरिष्ठ सदस्य हैं। तमिऴ के महाकाव्य "कम्ब रामायण" का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण के लिए समुचित विद्वान् की बहुत समय से तलाश थी। मैंने श्री शौरिराजन जी को पत्र लिखा। उनके ही सुझाव पर आचार्य श्री ति० शेषाद्रिजी से ट्रस्ट का सम्पर्क हुआ, जिसके फलस्वरूप यह जटिल किन्तु मनोरम कार्य का अवतार हुआ। इस महान कार्य के लिए हम श्री रा० शौरिराजन जी के अत्यन्त आभारी हैं।]

—श्री नन्दकुमार अवस्थी

तमिळ्नाडु की मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं की संस्तुतियाँ :—

"दिनमणि कदिर" (तमिळ्नाडु)–५ सितम्बर, १९८०
(एक्सप्रेस परिवार की प्रमुख पत्रिका)

विनायक का मन्दिर बनानेवालों और कार्तिकेय (मुरुगन) का मन्दिर बनानेवालों को और वैसे ही अन्य मन्दिर बनानेवालों के सम्बन्ध में हमने सुना है। पर 'राष्ट्रीय एकता का मन्दिर' —ऐसा एक मन्दिर बनाने की बात आपने सुनी है क्या ? वैसा ही एक मन्दिर को बनाने चला है लखनऊ का 'भुवन वाणी ट्रस्ट'।

श्रीनन्दकुमार अवस्थी को मुख्यन्यासी सभापति तथा संस्थापक के रूप में उस ट्रस्ट ने पाया है। ट्रस्ट के आयोजित उस मन्दिर का नाम है "भुवनवाणी मन्दिर"। भुवनवाणी मन्दिर में प्रस्तर-प्रतिमाएँ देवताओं के रूप में विराजमान नहीं रहेंगी। पर विश्व की भाषाओं की वर्णमालाओं की प्रस्तर-शिलाएँ प्रतिमा के स्थान में स्थापित रहेंगी।

अब कम्ब रामायण हिन्दी के अक्षरों में आएगी। आचार्य ति० शेषाद्रि के लिप्यन्तरण, प्रतिपदार्थ और भावानुवाद के साथ बालकाण्ड आ चुका है। अन्य काण्ड अति शीघ्र आ रहे हैं।

मदुरै (तमिळ्नाडु) 'दिनमणि'–दैनिक (५ अगस्त, १९८०)

लखनऊ के भुवन वाणी ट्रस्ट की हमको यह जानकारी प्राप्त है:—

विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के मध्य सद्भावना और परस्पर स्नेह पैदा करने के उद्देश्य से स्थापित एक संस्था है उत्तर प्रदेश, लखनऊ का 'भुवन वाणी ट्रस्ट'।

इसके संस्थापक श्रीनन्दकुमार अवस्थी जी हैं, जो श्रेष्ठ देशभक्त हैं और महर्षि विनोबा जैसों के प्रेम के पात्र हैं। उन्होंने अपना मन, अपना बल और अपना धन— सारा लगाकर यह संस्था स्थापित की है।

इसके द्वारा पहले चरण के रूप में वे हमारे देश में प्रचलित पंजाबी, बँगला, असमिया से लेकर मलयाळम, तमिळ्नद की भाषाओं के रामायण जैसे सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थों के सलिप्यंतरण अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं। अरबी से क़ुर्आन शरीफ़ के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण को मिलाकर अब तक तीस ग्रन्थ प्रकाश में आ गए हैं।

तमिळ् से तिरुक्कुरळ् का अनुवाद पूरा करने के बाद अब कम्ब रामायण का कार्य चल रहा है। नागरी लिपि में मूल पाठ, हिन्दी में प्रतिपदार्थ और भावानुवाद सहित प्रकाशमान इस ग्रन्थ में बालकाण्ड (७१० पृ० का) प्रकाशित हो गया है। अयोध्या और अरण्य दोनों मिलाकर (१०२० पृष्ठों का) एक भाग और तैयार है। यह मदुरै के श्री ति० शेषाद्रि कर रहे हैं।

दूसरा चरण है एक मन्दिर बनाने का कार्यक्रम, जिसका नाम 'भुवनवाणी मन्दिर' (विश्व भर की वाणियों का) है। इस नवीन मन्दिर में विग्रह (प्रतिमा) के स्थान पर सकल विश्व की लिपियों का खुदा हुआ प्रस्तर होगा। अलावा, मुद्रणालय, कार्यालय, भाषाओं का शिक्षणालय, विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानों के ठहरने के कमरे, भाषण-मंच हाल आदि रहेंगे।

यह योजना बिल्कुल क्रान्तिकारी है। बहुत ही उत्तम विचारों के आधार पर बनी है। इस संस्था की सहायता या सेवा करना चाहनेवाले भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३ को पत्र लिखकर जानकारी प्राप्त करें।

सर्वोदय पत्र "राम-राज्यम्"–१५ अगस्त, १९८० का विशेषांक (तमिळनाडु)

भाषा द्वारा राष्ट्रीय एकता का एक अनोखा मार्ग ! मदुरै के आचार्य ति० शेषाद्रि का अद्भुत उपाय ! !

भाषा का आविष्कार ही एक दूसरे को जानने-समझने के लिए हुआ। परस्पर स्नेह के लिए हुआ। पर कालान्तर में परस्पर झगड़े का भी वही वाइस बन गया। भाषा के मौलिक गुण हैं प्रेम और एकता। उसकी ओर संकेत करते रहनेवाले मनुष्य की आवश्यकता है। भाषा द्वारा एकता पर ज़ोर डालने के लिए आन्दोलन आवश्यक है।

लखनऊवासी श्रीनन्दकुमार अवस्थी जी का हम इधर परिचय दे रहे हैं। वे एक शान्तिमय क्रान्ति कर रहे हैं। भारत में प्रचलित सभी भाषाओं के शीर्षस्थ ग्रन्थों का लिप्यंतरण कर रहे हैं। इसके निमित्त उन्होंने एक 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना की है। वे अपना सारा तन-मन-धन उसे अर्पित कर चुके हैं।

वहाँ 'भुवनवाणी मन्दिर' की स्थापना करने की योजना उनकी बनी है। वहाँ लिपियों की एक शिला का दरबार रहेगा। विश्व की सभी भाषाएँ उसके प्राकारों में प्रतिष्ठित होंगी। उसके अन्दर विविध भाषा-कालेज, पुस्तकालय आदि होंगे। यह एकता-स्थापना का एक नवीन अनोखा उपाय है।

तमिळनाडु में इस ट्रस्ट के एक आजीवन न्यासी के रूप में आचार्य ति० शेषाद्रि कार्य कर रहे हैं। कम्ब रामायण के प्रकाशन में वे इस संस्था की सहायता कर रहे हैं। बालकाण्ड छप गया और अन्य काण्ड यन्त्रस्थ चल रहे हैं।

आचार्य ति० शेषाद्रि मदुरा कालेज के भूतपूर्व हिन्दी के आचार्य हैं। आध्यात्मिक सर्वोदयी कार्यों में श्रद्धा रखनेवाले हैं। कर्मठ एवं प्रेम-हृदय हैं। उन्होंने अपने को इस कार्य में अर्पित कर रखा है।

इस कार्य को सन्त विनोबा के आशीर्वाद प्राप्त हैं। उन्होंने इस संस्था को रुपये भी दिये— तो उससे इस संस्था का महत्त्व ज़ाहिर है। राष्ट्रीय एकता और भाषा-विकास में विश्वास रखनेवाले सभी इसके सहायक रहेंगे ही। वे और जानना चाहें तो ४५ पैसे के टिकट-लगे लिफ़ाफ़े के साथ श्री ति० शेषाद्रि, ९९, भारती रोड, मदुरै (पिन-कोड ६२५०११) को पत्र लिखें।

सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

अनुवादक की अवतरणिका

(बालकाण्ड से आगे)

बालकाण्ड की भूमिका (अनुवादक की अवतरणिका) में पृ० २६ में अन्वय की चर्चा के अन्तर्गत यह वाक्य आया है— और तमिऴ शब्द अधिकांश अपने संयुक्त यौगिक या समस्त रूप में ही लिखे गये हैं। इसको और स्पष्ट करना चाहता हूँ।

अन्वय (तमिऴ शब्द और हिन्दी अर्थ-सहित) लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि हिन्दी (अर्थ) अंश के कुल शब्दों को मिलाने पर यथासाध्य सुव्यवस्थित, शुद्ध और अर्थपूर्ण वाक्य बन जाएँ और अर्थ अविच्छिन्न, पूर्ण और स्पष्ट हो। इस कारण तमिऴ भाग में शब्द-निर्धारण व चयन और अर्थ भाग में उनके अर्थ-कथन में कुछ अनिवार्य बेमेलपन आ जाते हैं। एक उदाहरण देकर इसे स्पष्ट करूँगा।

अयोध्याकाण्ड का पहला (ईश्वर-वन्दना का) पद लीजिए। इसमें—

१ कूत्तुम्— एक ही शब्द दिया गया है, पहले तमिऴ अंश में। पर दूसरे अंश में तीन शब्द— चिऱियं को तायुम् हैं।

२ कूत्तुम्— एक शब्द नहीं है। कूत्तु+उम् (समुच्चयबोधक इडच्चॊल्) दोनों के सन्धि से बने शब्द को दिया गया है। पर 'वानिन्-ऱिऴिन्दु' को वान्+निन्ऱु+इऴिन्दु में सन्धि-विग्रह करके तीनों शब्द अलग-अलग दिये गये हैं।

[कम्ब रामायण-बालकाण्ड में, सानुवाद लिप्यन्तरणकार आचार्य श्री ति० शेषाद्रि ने पृष्ठ १८-३६ में एक विशद भूमिका प्रस्तुत की है। उस भूमिका में १ प्राक्कथन, २ संस्करण का चुनाव, ३ संस्करणों में व्याप्त विभिन्नताएँ, ४ इस संस्करण की विशेषताएँ, ५ तमिऴ-व्याकरण— कुछ तत्त्व, ६ कम्बन का चरित्र, ७ कम्बन का काल, ८ कम्बन का काव्य, ९ कम्बन के भक्त, विद्वान् प्रचारक आदि, १० संस्थाएँ, ११ उपसंहार —इन शीर्षकों से कवि और काव्यग्रन्थ का परिचय तथा तमिऴ भाषा के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। किन्तु तमिऴ भाषा जितनी जटिल है, उतनी ही मृदुल है। लेखन और उच्चारण शैली में भेद, संधि और संधि-विच्छेद, शब्द एवं अर्थ की दृष्टि से विविध अलङ्कार, आदि अनेक ऐसे विषय हैं जिन पर कम्ब रामायण के प्रत्येक खण्ड में ज्ञातव्य सामग्री प्रकाश में आती जायगी। इस प्रकार कम्ब रामायण के खण्डों में क्रमशः प्रस्तुत होनेवाली "अनुवादक की अवतरणिका", अन्त में पुस्तक के सदृश पूर्ण होकर, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ, वरन् तमिऴ भाषा और तमिऴ काव्य पर एक स्वयंशिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी-पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। पाठकवृन्द आद्योपान्त सभी खण्डों में क्रमशः उपलब्ध इस अवतरणिका को तमिऴ भाषा एवं काव्य पर एक ज्ञानकोश मानकर लाभान्वित हों।]

—नन्दकुमार अवस्थी

३ कून्— का शाब्दिक अर्थ कुब्ज या कूबड़ है। पर यहाँ तमिऴ-व्याकरण के अनुसार यह आहुपॅयर् बन गया है। (आहुपॅयर्=अर्थान्तर संज्ञा या लक्ष्यार्थ या ध्वन्यार्थ से प्राप्त संज्ञा है।) तब उसका अर्थ कुब्जा भी हो सकता है या कुबड़ा भी। यहाँ "कुब्जा" है।

४ कून्— का अर्थ कुब्जा हुआ, पर यहाँ "मन्थरा" भी अर्थ में साथ दिया गया है।

५ कोल्— का अर्थ दण्ड है। पर यहाँ राजदण्ड दिया गया है। उसका लक्ष्यार्थ शासन है।

६ चिऱ्िय को तायुम्—का अर्थ 'और छोटी राजमाता'—इतना ही है। पर अर्थभाग में 'कैकेयी' और 'के' साथ दिये गये हैं।

७ कोत्ताय्— का इधर सन्धि-विग्रह कर दिया गया है। तो भी 'कोत्ताय्' व्याकरण के अनुसार समस्त शब्द है।

८ अॅय्तिऩाऩ्— का अर्थ इधर "पहुँचे" (आदरसूचक बहुवचन) है। पर शाब्दिक अर्थ "पहुँचा" (एक वचन) ही है।

९ अॅय्तिऩाऩ्— का पाँचवें पद में 'पधारे' अर्थ दिया गया है।

१० अॅऩ्ब— भविष्यत्काल द्योतक है। अर्थ 'कहेंगे' है। पर इधर 'कहते हैं' दिया गया है।

११ कडलुम्— में कडल् कर्ताकारक में है, पर अर्थ कर्मकारक में है।

इस भाँति वाक्यरचना और मुहावरे आदि विषयों में दोनों भाषाओं में काफ़ी अन्तर है। इस कारण अन्वय में ये वैचित्र्य और बेमेलपन आ जाते हैं। इस हालत में तमिऴ के मूल शब्द को छाँट लेने में कठिनाई अवश्य महसूस होगी। तमिऴ की शब्द-रचना के प्रकारों को जानें तभी इन वैचित्र्यों के बीच से तमिऴ-रचना को समझ सकेंगे। इस विचार से प्रेरित होकर यहाँ जिज्ञासु अध्येताओं के लाभार्थ कुछ मुख्य-मुख्य तथ्यों की ओर इशारा भर किया जाता है।

शब्द-विचार

१ तमिऴ शब्दों के आरम्भ में और अन्त में कौन से अक्षर आ सकते हैं (कौन से नहीं आ सकते); मध्य में कौन दो अक्षर साथ-साथ आकर मिल सकेंगे —इसके निश्चित नियम हैं। जैसे—

(१) आरम्भ में— (क) बारह स्वर; (ख) क् च् त् न् प्, म् ब् य्, ञ् और ङ् की बारह खड़ी ही हो सकती है। (र, ट, ल आदि आरम्भाक्षर नहीं हो सकते। इसी कारण इरामत्, इलक्कुवन् आदि लिखा जाता है।)

(२) अन्त में— (क) व्यंजन-सहित या अकेले बारह स्वर; (ख) ञ्, ण्, न् म्, ऩ्, य्, र्, ल्, व्, ऴ् और ळ् —ये व्यंजन; और (ग) ह्रस्व उ —ये ही हो सकते हैं।

(३) वैसे ही मध्य में— साथ-साथ रखे जानेवाले अक्षरों के सम्बन्ध में विस्तृत नियम हैं।

२ भाषा-विकास के अनुसार तमिऴ के शब्द चार प्रकार के होते हैं—

(१) इयऱ्चॊल् (प्राकृत तमिऴ शब्द)— ये तमिऴ देश के अपने मौलिक शब्द हैं, जिन्हें पण्डित और पामर समान रूप से व्यवहार में लाते हैं।

(२) तिरि शॊल् ('संस्कृत' कृत्रिम या पण्डितरचित शब्द)— इन्हें विद्वान् पण्डित लोग ही व्यवहार में लाते हैं। ये सामान्य शब्दों के पर्यायवाची होते हैं।

(३) तिशैच्चॊल् (देशान्तर या दिशान्तर)— ये दो प्रकार के होते हैं— (क) वे शब्द जो तमिऴ-कुल की ही उपभाषाओं, जैसे कन्नड, मलयाळम्, तुळु आदि से आये हैं और (ख) वे शब्द जो तमिऴेतर देशों की भाषाओं से आ मिले हैं।

(४) वडशॊल् (उत्तरी शब्द)— ये संस्कृत भाषा से आये हुए तत्सम या तद्भव शब्द हैं। तमिऴ में संस्कृत को उत्तरी भाषा और तमिऴ को दक्षिणी भाषा कहने की प्रथा है।

नोट : अन्य भाषाओं से शब्द जब तमिऴ में लिये जाते हैं, तब निश्चित नियमों के अनुसार ही रूप में परिवर्तन करके लिये जाते हैं। तमिऴभाषी परुष, घोष आदि नादों से अपरिचित है। अतः आवश्यक परिवर्तन किये जाते हैं और नियम इसलिए कि झट मालूम हो कि अमुक शब्द 'अतिथि शब्द' है।

३ तमिऴ के शब्द प्रकृति के अनुसार दो प्रकार के होते हैं—

(१) विकारी; (२) अविकारी (आगे उदाहरण हैं)।

४ प्रयोग के अनुसार शब्द चार प्रकार के हैं :—

(१) पॆयर्च्चॊल् (संज्ञा शब्द); (२) विनैच्चॊल् (क्रिया शब्द) —ये दोनों विकारी हैं। (३) उरिच्चॊल् (विशेषण शब्द) और (४) इडैच्चॊल् (उपशब्द) —ये दोनों अविकारी हैं।

नोट— (क) सर्वनाम भी संज्ञाओं के अन्तर्गत लिये जाते हैं; (ख) विशेषण शब्दों के अन्दर क्रियाविशेषण भी आ जाते हैं; (ग) समुच्चयबोधक अव्यय, कारक चिह्न, सम्बन्धसूचक

अव्यय आदि 'इडैच्चॉल्' की श्रेणी में आते हैं। इनका विस्तार आगे किया जायगा।

५ व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द दो प्रकार के हैं—

(१) पहाप्पदम् (अविग्रहसाध्य— मूल या रूढ़ शब्द धातु या प्रातिपदिक)।

(२) पहुपदम् (विग्रहसाध्य— यौगिक, समस्त संयुक्त या संश्लिष्ट)।

नोट— पहुपदम् को "शब्द" और पहाप्पदम् को "पद" कहेंगे तो सुविधा रहेगी।

६ पहाप्पदम्— दो प्रकार के हैं— (१) पॅयर्प् पहुपदम् (संज्ञा शब्द); (२) विन्नैप् पहुपदम् (क्रिया शब्द)।

७ पहुपदम्— के कम से कम दो अंश और अधिक से अधिक छः अंश होते हैं— (१) पहुदि (प्रकृति)— शब्द का मूल अंश या पद; (२) विहुदि (विकृति ?)— रूपान्तरित संज्ञा या क्रिया के अन्त में आनेवाले अंश। ये तिणै (वर्ग), ऍण् (वचन), पाल् (लिंग) और इटम् (पुरुष) आदि के द्योतक होते हैं; (३) इडै निलै (अन्तस्थ अंश)— यह पहुदि और विहुदि के बीच में आता है। जैसे— अऱि+ञ्+अन्=अऱिञन् में अऱि— पहुदि है; ञ्— इडैनिलै है और अन्— विहुदि है; (४) शारियै (उपध्वनि)— इडैनिलै और विहुदि के मध्य में आनेवाला शब्दांश; (५) शन्दि (सन्धि)— यह पहुदि और इडैनिलै को मिलानेवाला स्वर या अक्षर है; (६) विहारम् (विकार)— सन्धिजनित स्वर का विकार।

सम्पूर्ण उदाहरण : नडन्दनन् (पैदल चला) में— (१) पहुदि–नड; (२) विहारम्–न्; (३) शन्दि–त् (द्); (४) इडैनिलै–त्; (५) शारियै–अन्; (६) अन्–नड+न्+त्(द्)+त्(द्)+अन्+अन्।

नोट : सभी शब्दों के छहों अंश हों —इसकी आवश्यकता नहीं है। पहुदि और विहुदि अत्यावश्यक अंश हैं; जैसे— पॊन्+अन्= पॊन्नन् (स्वर्ण वाला)। पहुदि, विहुदि और इडैनिलै –ये तीनों अधिकांश शब्दों में मिलते हैं; जैसे— अऱि+ञ्+अन्= अऱिञन् (बुद्धिमान); ओदु+व्+आन्–ओदुवान् (पढ़ेगा)।

पॅयर्च्चॉल्

८ पॅयर्च्चॉल्— (संज्ञा शब्द या नाम शब्द) किसी पदार्थ, भाव (गुण), स्थान आदि का नाम होता है। उनके रूप तिणै (वर्ग), पाल् (लिंग), ऍण् (वचन), इडम् (पुरुष) और वेट्रुमै (कारक या विभक्ति) से प्रभावित होते हैं।

९ पॅयर् (संज्ञा या नाम)— छः प्रकार के होते हैं—

(१) पॉरुट् पॅयर् (पदार्थ संज्ञा) जैसे— पॉन्नन्; कल् (पत्थर); नूल (ग्रन्थ)।

(२) इडप्पॅयर् (स्थान या स्थानिक संज्ञा) जैसे— विण्णवन् (आकाशवासी); पळ्ळि (पाठशाला)।

(३) कालप्पॅयर् (काल या कालिक संज्ञा) जैसे— वेनिलान् (ग्रीष्म वाला); वॅळ्ळिक् किळमै (शुक्रवार)।

(४) शिनैप्पॅयर् (अंग या अंगसम्बद्ध संज्ञा) जैसे— शॅङ्गण्णन् (अरुणाक्ष); तलै (सिर)।

(५) कुणप्पॅयर् (गुण या गुणी संज्ञा) जैसे— कून् (कुबड़ा); वॅण्मै (सफ़ेदी); वॅहुळि (क्रोध)।

(६) तॉळिऱ् पॅयर् (कर्म संज्ञा) जैसे— पडित्तल् (पढ़ना या पढ़ाई); उडुप्पु (पहनना या पहनावा)।

१० विनैयाल् अणैयुम् पॅयर् (कर्मकृत संज्ञा)— तीनों कालों की पूर्णक्रियाएँ संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होती है; जैसे—

	(भूतकाल)	(वर्तमानकाल)	(भविष्यत्काल)
उत्तम पुरुष	कऱ्ऱेन्	कऱ्किऱेन्	कऱ्पेन्
मध्यम पुरुष	कऱ्ऱाय्	कऱ्किऱाय्	कऱ्पाय्
अन्य पुरुष	कऱ्ऱान्	कऱ्किऱान्	कऱ्पान्

११ आहुपॅयर् (अर्थान्तरित या लक्ष्यार्थ संज्ञा)— इसमें एक वस्तु का नाम उससे सम्बन्धित दूसरी वस्तु का नाम वन जाता है। और यह रूढ़ बन गया है।

(१) पॉरुळाहु पॅयर्— पूर्ण वस्तु का नाम अंग का बन जाता है; जैसे— आम्बल् (कुवलय) लता का नाम पुष्प का बन गया।

(२) इडवाहु पॅयर्— स्थान का नाम स्थानिक का हो जाता है; जैसे— उलहम् (लोक) का अर्थ लोकवासियों का समुदाय है।

(३) काल आहु पॅयर्— काल या ऋतु का नाम उस ऋतु में प्राप्त

वस्तु का हो जाता है; जैसे— कूतिर् वीशुम्=शिशिर (पवन) बहता है। ऋतु वायु का नाम बन गया।

(४) शिनैयाहु पॅयर्— अंग का नाम पूर्ण वस्तु का वन जाता है। मरु कॉळुन्दु नट्टाऩ्–'मरु' पौधे (के पल्लव) को रोपा। कॉळुन्दु–पल्लव है, वह पौधे का नाम बना।

(५) गुणवाहु पॅयर्— गुण गुणी का बन जाता है। वॅळ्ळै अणिन्दाऩ् (सफ़ेदी पहनी) सफ़ेदी वस्त्र का गुण है। वह वस्त्र बन गया।

(६) तॉऴिलाहु पॅयर्— कर्म ही कर्ता बन जाता है। याक्कै–बाँधना संघात बनाना है। उसका अर्थ शरीर बन गया।

(७) अळवैयाहु पॅयर्— माप तोल का नाम ही उन वस्तुओं का हो जाता है।

(अ) ऐन्दडक्कल्— पाँचों का दमन पाँचों इन्द्रियों का दमन है। इधर गिनती का अर्थ अन्तरित हो गया।

(ब) एक किलो खरीदो— किलो का अर्थ किलोग्राम चना या अन्य सामग्री के स्थान पर आ गया। यह तोल का अर्थ अन्तरित हो गया।

(स) चार "मीटर" खरीदो— चार मीटर कपड़ा खरीदो। इधर नाप ही नाप की हुई वस्तु बन गया।

(८) शॉल्लाहु पॅयर्— शब्द ही अर्थ के स्थान पर आता है। उन् उरै सरि (तुम्हारा कहना ठीक है) 'कहना' का अर्थ "कहने का विषय" हो जाता है। ऐसे ही तानियाहु पॅयर्, करुवियाहु पॅयर् आदि अनेक आहुपॅयर् हैं।

१२ विनैच्चॉल् के निम्नलिखित प्रकार हैं:—

(१) तॅरिनिलै विनै (स्पष्टवाची क्रिया)— जो शॅय्बवन् (कर्ता); करुवि (करण); निलम् (स्थान); शॅयल् (कर्म); कालम् (काल) और शॅय्पॉरुळ् (क्रियाफल) आदि छहों तथ्यों को स्पष्ट रूप से द्योतित करते हैं। (२) कुऱिप्पु विनै (सूचक क्रिया)— जो पॉरुळ् (पदार्थ); इडम् (स्थान); कालम् (काल); शिनै (अंग); कुणम् (गुण) और तॉऴिल् (कृत्य) —इन छः से सम्बद्ध होकर उपरोक्त कर्ता आदि छः तत्त्वों में केवल कर्ता को द्योतित करते हैं। (३) तन् विनै (स्वक्रिया);

(४) पिऱ विनै (प्रेरणार्थक क्रिया); (५) विदि विनै (सीधी-क्रिया-सूचक); (६) ऍदिर् मऱ विनै (नकारात्मक क्रिया); (७) शॅय्विनै (कर्तृवाच्य क्रिया); शॅय्प्पाट्टु विनै (कर्मवाच्य क्रिया)।

नोट— एक ही धातु से सभी क्रियाएँ बनायी जाती हैं। यानी ये सब रूपान्तर ही हैं।

१३ क्रिया शब्द के— (१) मुऱ्ऱु विनै (पूर्णक्रिया) और (२) ऍच्च विनै (अपूर्ण क्रिया) दो रूप हैं।

१४ ऍच्च विनै दो तरह से प्रयुक्त किये जाते हैं—

(१) (संज्ञा के विशेषण के रूप में) पॅयरॅच्चम्; जैसे— वन्द (जो आया), पैयन् (वह लड़का)।

(२) पूर्वकालिक क्रिया के रूप में) विनैयॅच्चम्; जैसे— वन्दु पोनान् (आकर गया)।

नोट— ऍच्च विनै के अन्तिम प्रत्यय ये होंगे : तु, पु, आ, ऊ, ऍन, अ, यिय, यियर्, वान्, पाक्कु।

इडैच्चॊल् (उपशब्द या प्रत्यय)

१५ इडैच्चॊल्— संज्ञा या क्रिया के बीच के शब्द हैं, संज्ञा या क्रिया के साथ लगे रहते हैं और कविता आदि में ध्वनि या स्वर पूरक के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जब उनका विशेष अर्थ नहीं होता।

१६ इडैच्चॊल् के ये वर्ग हैं—

(१) विभक्ति या कारक-चिह्न; (२) क्रिया शब्द के विहुदि या इडैनिलै; (३) अन् आन् आदि शारियै के अंश; (४) उपमा-सूचक शब्द या शब्दांश और (५) ए, ओ, उम्, मन्, कॊल्, मऱ्ऱु, अम्म; और (६) विस्मयादिबोधक अव्यय।

१७ कुछ "इडैच्चॊल्"लों का विवरण—

(१) 'ए' का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में होता है:—

(क) पिरिनिलै (पृथकत्व) जैसे— अवने कॊण्डान् (उसी ने लिया, अन्य ने नहीं); (ख) विना (प्रश्न) जैसे— अवने कॊण्डान्? (क्या उसने लिया?); (ग) ऍण् (गिनती) जैसे— निलने, नीरे, तीये, वळियॆ (एक स्थल, दूसरा जल··· आदि); (घ) ईऱ्ऱश (पूरक ध्वनि) जैसे— काडिऱन्दारे;

(ङ) तेर्ट्रम् (निश्चय-कथन) जैसे— अवने कॉण्डान् (उसने अवश्य लिया); (च) इशै निर्ऱै (संगीत में स्वर-भर्ती) आदि।

(२) उम् (और) का प्रयोग निम्नलिखित अर्थ देता है:—

(क) ऍदिर्मर्ऱै (विपरीतार्थक); (ख) शिर्ऱप्पु (विशेषता-सूचक); (ग) ऐयम् (सन्देह); (घ) ऍच्चम् (अपूर्णता); (ङ) मुर्ऱु (पूर्णता); (च) अळवै (संख्या); (छ) तॅरिनिलै (स्पष्टीकरण) और (ज) आक्कम् (बनना)।

(३) वेर्ऱुमै उरुबु (कारक प्रत्यय):—

(क) मुदल् वेर्ऱुमै (पहली विभक्ति) प्रत्यय नहीं। कर्ता संज्ञा ही। (ख) ऐ; (ग) आल्, आन् (ओडु, उडन्); (घ) कु (आक); (ङ) इन्, इल् (इरुन्दु, काट्टिलुम्); (च) अदु, उडैय; (छ) इल् इडत्तिल् कण्; और (ज) ए, आ आदि —ये क्रमश: इरण्डाम् (दूसरी); मून्ऱाम् (तीसरी); नान्गाम् (चौथी); ऐन्दाम् (पाँचवीं); आऱाम् (छठी); एळाम् (सातवीं) और ऍट्टाम् (आठवीं) विभक्तियाँ हैं।

नोट— हिन्दी की और तमिळ की विभक्तियों के प्रयोग में कहीं-कहीं अन्तर भी है। और तत्पुरुष समास बनाने का नियम भी है। (इनका उपयोग और अर्थ आगे दिये जाते हैं।)

उरिच्चॉल्

१८ उरिच्चॉल्— विविध गुणों को बताते हैं। वे संज्ञाओं या क्रियाओं के साथ लगे रहते हैं। उनमें पर्यायवाची शब्द और अनेकार्थक शब्द होते हैं।

ये उरिच्चॉल् हैं : शाल, उरु, नऩि··· (पर्यायवाची) =खूब; (अनेकार्थक शब्द) कडि=अधिक, तेज, खुशबूदार आदि।

विषय-सूची

अयोध्याकाण्ड

अरण्यकाण्ड

6 खर-वध पटल 671-747

7 शूर्पणखा-षड्यन्त्र पटल 747-820

8 मारीच-वध पटल 820-854

9 जटायु-प्राणत्याग पटल 854-945

रावण की निन्दा करना; रावण का कोप और स्वरूप में आ जाना; सीता का भय; रावण के मधुर वचन और सीता द्वारा तिरस्कार और रुदन; रावण का सीता को भूमि के साथ उठा ले जाना; सीता-विलाप; रावण का सीताजी को ताना देना और सीता का उसकी निन्दा करना; जटायु-आगमन; जटायु का सीता को आश्वासन देकर रावण पर क्रोध दिखाना; रावण-जटायु का युद्ध; रावण का चन्द्रहास तलवार द्वारा जटायु का पंख काटना; जटायु का बेहोश होकर गिर जाना; रावण का आगे जाना; सीता-विलाप; जटायु की बेबसी; रावण का लंका में ले जाकर सीता को रखना; लक्ष्मण-श्रीराम-मिलन; श्रीराम का लक्ष्मण के आने का कारण पूछना; दोनों का सन्देह और भय; सीता के अभाव से श्रीराम का दुःखी होना; दोनों का दक्षिण दिशा में प्रस्थान; मार्ग में रावण के किरीट आदि को पड़ा हुआ देखकर लक्ष्मण का अनुमान कि रावण और किसी में लड़ाई हुई है; जटायु को देखकर सविलाप रोना; जटायु का चेतना में आना; लक्ष्मण से समाचार सुनकर उन्हें ढाड़स देना; श्रीराम का कोप और जटायु की सान्त्वना; जटायु की मृत्यु और श्रीराम का दुःख; लक्ष्मण के आश्वस्त करने के बाद जटायु की अन्त्यक्रिया; सूर्यास्त।

10 अयोमुखी पटल 945-985

श्रीराम-लक्ष्मण का एक पर्वत पर पहुँचना और अन्धकार का छा जाना; श्रीराम का निद्रारहित स्थिति में क्लेश; चाँदनी में भी श्रीराम का विरह-ताप; सूर्योदय होते दोनों का खोज में निकल जाना; सूर्यास्त; एक स्फटिक गुफा में ठहरना; श्रीराम का प्यास का अनुभव और लक्ष्मण को जल लाने भेजना; अयोमुखी का लक्ष्मण को देखकर आसक्त होना; अयोमुखी का रूप-वर्णन; अयोमुखी की लक्ष्मण से प्रेम-याचना; करना लक्ष्मण का अयोमुखी को डाँटना; अयोमुखी का लक्ष्मण पर मोहिनी डालकर उन्हें उठा ले जाना; श्रीराम का लक्ष्मण को नहीं आते देखकर दुःख करना और आत्म-हत्या को तैयार हो जाना; तभी लक्ष्मण के हाथ अंग-भंग होकर अयोमुखी का चिल्लाना; श्रीराम का आग्नेयास्त्र के प्रयोग से प्रकाश बनाकर लक्ष्मण की खोज में जाना; श्रीराम का लक्ष्मण को पाकर आलिंगन; लक्ष्मण का कृत्य जानकर श्रीराम द्वारा उनकी प्रशंसा; श्रीराम का विरह; सूर्योदय-वर्णन।

11 कबन्ध-वध पटल 985-1009

श्रीराम-लक्ष्मण की अन्वेषण-यात्रा; कबन्धवन में प्रवेश और कबन्ध के कुकृत्यों का वर्णन; श्रीराम और लक्ष्मण का कबन्ध के हाथों के घेरे के अन्दर फँस जाना; कबन्ध का रूप-वर्णन; उसे देखकर विस्मय; कबन्ध का ग्रास बनने को दोनों का आतुर रहना और परस्पर रोकना; दोनों का कबन्ध के कन्धों को काटना; कबन्ध का स्वरूप पाकर श्रीराम की स्तुति; कबन्ध का अपना वृत्तान्त कहना; फिर शबरी के पास जाने का उपाय बतलाकर स्वर्ग जाना; श्रीराम-लक्ष्मण का मतंगाश्रम आना।

12 शबरी-जन्म-निवारण पटल 1009-1013

शबरी का अतिथि-सत्कार; सुग्रीव के पास जाने की सलाह देकर ऋष्यमूक पर्वत का मार्ग बताना; शबरी का मोक्षलोक-गमन और श्रीराम-लक्ष्मण का आगे जाना।

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमर भारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिऴ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

पृष्ठभूमि

वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार है। किष्किन्धा - सुन्दर की तीसरी वृहद् जिल्द यन्त्रस्थ प्रकाशोन्मुख है। इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम पुनः और बारम्बार नमन करते हैं। तमिऴ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और ट्रस्ट के विद्वानों एवं शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति —इस बल पर हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं।

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ई० से अकिञ्चन की साधना; १९६९ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का शृंगार; विशेष रूप से तमिऴ लिपि की

जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिळ ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस० शंकर राजू नायडू; कम्बन्चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिळनाडु के चीफ़ जस्टिस श्री एम० ए० स्माइल; जस्टिस श्री महाराजन; स्व० श्री० के० सन्थानम्, आदि के प्राक्कथन; और सर्वोपरि, आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद —यह सब बालकाण्ड में अक्षरश: मुद्रित हैं।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है। आवाज़ए खल्क़, नक़्क़ारए ख़ुदा! चारों ओर से इस प्रयास की प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रहीं। विशेष रूप से तमिळनाडु में ही, ग्रन्थ और ग्रन्थकार एवं ट्रस्ट के आजीवन न्यासी आचार्य ति० शेषाद्रि का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। एक स्थल पर, उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिळनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन!

अयोध्या-अरण्यकाण्ड

श्री प्रभुदास बी० पटवारी, तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत् कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं तत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा॥" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छबि को निखारा है। गांधीयुग से अद्यावधि निरन्तर राष्ट्रसेवी तमिळनाडु के जाने-माने महापुरुष श्री० ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने

वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हजार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया है। एक्सप्रेस परिवार की तमिळ्नाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। ग्रन्थ में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले सभी (लगभग पाँच) खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिळ्भाषा और तमिळ्काव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिळ्-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी।

महर्षि कम्बर्

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर ग्रन्थकार का नाम मैंने 'महर्षि कम्बर्' दिया है। कई शुभचिन्तकों को कम्बर् के लिए 'महर्षि' शब्द उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ। "कम्बर् विवाहित गृहस्थ था, कम्बर् के वंश-परिवार पर विपरीत किम्बदन्तियाँ भी हैं, आदि-आदि।" मेरा नम्र निवेदन है कि ऋषि-महर्षि प्रायः सब पुत्र-कलत्र वाले हुए हैं। महर्षि होने के लिए अविवाहित होगा, ऐसा कोई विधान नहीं है। रहा लोक-आक्षेप, तो उस त्रास से गोस्वामी तुलसीदास, सन्त एकनाथ, सन्त ज्ञानेश्वर जैसे भी नहीं बच पाये। देवभाषा संस्कृत के अतिरिक्त, एक देशज भाषा 'तमिळ्' में रामचरित की रचना ! यही क्या कम अपराध था कम्बर् का। शुद्धाशुद्ध का तथ्य तो अतीत के अन्तराल में है। हमारे सामने तो प्रेरणा-स्रोत की महत्ता प्रधान है। नागरी लिपि की सार्वभौमिकता का उद्‌घोष करनेवाले जस्टिस शारदा-चरण मित्र मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं। 'वंदेमातरम्' मंत्र के मूलस्रोत बंकिम ऋषि कहे जाते हैं। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का शंख-नाद करनेवाले तिलक 'भगवान्' पदवी से प्रख्यात हुए।

कम्बर्-काव्य को, विद्वान् १२०० वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं। तब से तमिळ् का यह जीवन्त अद्‌भुत महाकाव्य, जनता और विद्वानों, सभी में शीर्षस्थ सम्मान-प्राप्त है। और आज १२०० वर्षों के बाद, वह नागरीलिपि का नव-कलेवर धारण कर, न केवल अखिल राष्ट्र, वरन् विश्व में भारतीय वाङ्‌मय की छटा बिखेरने जा रहा है। हम गौरवान्वित हैं,

आत्मविभोर हैं, उस युगपुरुष के लिए नत-मस्तक हैं। कम्ब को 'महर्षि' सम्बोधित करने के लिए और चाहिए क्या ?

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०२४ पृष्ठों का द्वितीय खण्ड प्रस्तुत है। शेष तीन खण्ड लगभग, ४००० पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति न्त्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष नसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के दचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ रूपी शिला र शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त हीं है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरीलिपि और राष्ट्रभाषा माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का स्थापन, और राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन।

विश्ववाङ्मय से निस्रित अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी - पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ–३

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

(तमिऴ) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था। मैंने उस पर आपत्ति करके 'ऴ' का सुझाव दिया था। तब से संभवत: और भी आपत्तियाँ 'निदेशालय' अवश्य पहुँची होंगी।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, यह निर्णय लिया गया कि अब 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही प्रयुक्त किया जाय। आशा है लिप्यन्तरणकार भविष्य में इसका ध्यान रखेंगे।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ, ऴ	ள ळ
ற ऱ, ऱ़	ன ऩ, ऩ़	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं।

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

अयोध्या काण्डम्

ईश्वर वन्दना

❀ वानिन् रिळिन्दु वरम्बिहन्द माबू दत्तिन् वैप्पॅङ्गुम्
ऊनु मुयिरु मुणर्वुम्बो लुळ्ळुम् बुऱत्तु मुळत्तॆन्ब
कूनुञ् जिऱिय कोत्तायुङ् गॊडुमै यिळैप्पक् कोऱुऱन्दु
कानुङ् कडलुम् कडन्दिमैयो रिडुक्कण् डीर्त्त कळल्वेन्दै 1

कूनुम्–कुब्जा मन्थरा और; चिऱिय को तायुम्–छोटी रानी और माता कैकेयी के; कॊडुमै इळैप्प–अनिष्ट करने से; कोल्–राज-दण्ड (शासन के अधिकार) को; तुऱन्तु–छोड़कर; कानुम्–जंगल और; कटलुम्–समुद्र को; कटन्तु–पार करके; इमैयोर्–देवों का; इटुक्कण्–संकट; तीर्त्त–(जिन्होंने) दूर किया (उन); कळल् वेन्तै–पायलधारी राजा (श्रीराम) को; वान् निन्ऱु इळिन्तु–आकाश से उतरकर; वरम्पु इकन्त–सीमा पार; मा पूतत्तिन्–पाँच महाभूतों के बने; वैप्पु ऍङ्कुम्–प्रपंच भर में; ऊनुम् उयिरुम् उणर्वुम् पोल्–शरीर, प्राण और आत्मा के समान; उळ्ळुम् पुऱत्तुम्–अन्दर और बाहर; उळन्–रहनेवाले; ऍन्प–कहते हैं। १

कुब्जा मंथरा और श्रीराम की छोटी माँ, रानी कैकेयी दोनो ने निष्ठुरता के साथ अहित किया और उससे श्रीराम को राज्य त्यागकर जंगल, समुद्र आदि पार कर जाना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने देवताओं का संकट दूर किया। ऐसे, पायलधारी राजा राम को (ज्ञानी लोग) पंचभूतों से बने इस पंच भर में, शरीर, आत्मा और अहंकार के समान अन्दर और बाहर रहनेवाले (तत्व) कहते हैं। (शरीर, आत्मा और अहंकार के जैसे का अर्थ करना कुछ कठिन है। एक अर्थ है— शरीर और अहंकार के समान भगवान क्रमशः सृष्टि के बाहर भी हैं और अन्दर भी, और आत्मा के समान एक साथ बाहर और अन्दर भी)। १

1. मन्दिरप्पडलम् (मन्त्रणा पटल)

❀ मण्णुरु मुरशित मळैयि ऩार्प्पुरप्, पण्णुरु पडर्शिऩप् परुम यातयाऩ्
कण्णुरु कवरियिऩ् कर्रै शुर्रुर, ऍण्णुरु शूळ्व्चियि ऩिरुक्कै यॆय्दिऩाऩ् 2

पण् उरु–अलंकृत; पटर् चिऩम्–वर्धनशील कोप; परुमम्–और हौदे वाले; यातैयाऩ्–गजों के स्वामी (दशरथ); मण् उरु–मिट्टी का लेप-लगे; मुरचु इऩम्–भेरियों की राशि के; मळैयिऩ्–मेघों के समान; आर्प्पु उर–नर्दन करते; कण् उरु–दर्शनीय; कवरियिऩ् कर्रै–सुरागाय की पूँछ के बने चामरों के; चुर्रु उर–पार्श्व में डुलते; ऍण् उरु–मन्त्रणा के लिए बने; चूळ्च्चियिऩ् इरुक्कै–मन्त्रणागृह में; ऍय्तिऩाऩ्–पहुँचे। २

[किसी-किसी संस्करण में दो अतिरिक्त पद पाये जाते हैं। उनका सार यह है— राजा के कर्णमूल में एक बाल श्वेत बन गया मानो उसने राजा को समझाया कि राजा! राज्य को पुत्र को सौंपकर वन में जाकर आपका तपस्या करने का समय आ गया। रावण के पाप ही वहाँ एक पके केश के रूप में आये हों, ऐसा वह बाल पका था। उसको राजा ने मुकुट में देखा।]

चक्रवर्ती मंत्रणा-गृह में आ पहुँचे। वे अलंकृत, क्रोधशील और हौदेदार गज के स्वामी थे। जब वे आये तब वे ढोल मेघों के समान बज उठे जिनके चमड़े पर मिट्टी का बना लेप लीपा गया था। दर्शनीय चामर भी डुलवाये गये। वे कुछ मंत्रणा करने आये। २

❀ पुक्कपिऩ् ऩिरुबरुम् पॊरुविल् शुर्रमुम्
पक्कमुम् पॆयर्हॆऩप् परिवि ऩीक्किऩाऩ्
ऒक्कनिऩ् ऱुलहळित् तियोगि ऩॆय्दिय
शक्करत् तवऩॆऩत् तमिय ऩायिऩाऩ् 3

पुक्क पिऩ्–प्रवेश के बाद; निरुपरुम्–नृप; पॊरु इल्–श्रेष्ठ; चुर्रमुम्–बन्धु; पक्कमुम्–और प्रिय मित्र; पॆयर्क–यहाँ से हट जायँ; ऍऩ–कहकर; परिविऩ्–स्नेह के साथ; नीक्किऩाऩ्–अलग किया; ऒक्क निऩ्रु–समरस और तटस्थ रहकर; उलकु अळित्तु–लोक-पालन करके; योकिऩ् ऍय्तिय–योग-निद्रा में लीन रहनेवाले; चक्करत्तवऩ् ऍऩ–चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; तमियऩ् आयिऩाऩ्–एकाकी हुए। ३

वहाँ आने के बाद उन्होंने बहुत मीठे ढंग से आज्ञा दी कि राजा लोग, श्रेष्ठ बन्धु-बान्धव सब वहाँ से हट जायँ। फिर वह उन चक्रधारी भगवान विष्णु के समान एकाकी हुए जो समरसता के साथ लोकों का पालन करते हुए योगनिद्रा में लीन हैं। (आज्ञाचक्र चलाने, लोकपालन करने और अकेले रहने के धर्मों के कारण चक्रवर्ती विष्णु तुल्य बताये गये हैं।)। ३

❀ शन्दिरर् कुवमैशॅय् तरळ वॅण्गुडै, अन्दरत् तळवुनिन् र्ळिक्कु माणैयान्
इन्दिरर् किमैयवर् गुरुवै येयन्ददन्, मन्दिरक् किळवरै वरुहॅन् र्रेविनान् 4

चन्तिरर्कु उवमै चॅय्–चन्द्र से उपमित करने योग्य; तरळम्–मुक्ताओं का; वॅण् कुटै–श्वेत छत्र; अन्तरत्तु अळवु निन्ऱु–आकाश तक उन्नत रहकर; अळिक्कुम्–पालन करनेवाले; आणैयान्–आज्ञापक; इन्तिरर्कु–देवराज के; इमैयवर् कुरुवै एय्न्त–देवगुरु बृहस्पति के समान; मन्तिरम् किळवरै–मन्त्रीमण्डल को; वरुक ऍन्ऱु–आयँ, ऐसी; एविनान्–आज्ञा की। ४

राजा का चंद्र-सम मुक्तामंडित श्वेत छत्र आकाश तक व्याप्त था। यानी उनका पालन का काम स्वर्ग में भी व्याप्त था। जैसे देवेन्द्र के बृहस्पति थे वैसे इनके भी गुरु अमात्यादि मंत्रीगण थे। चक्रवर्ती ने उनको आने की आज्ञा दिलायी। ४

❀ पूवरु पॉलङ्गळर् पॉरुविन् मन्नवन्, कावलि नाणैशॅय् कडवु ळामॅन्न्
तेवरु मुनिवरु मुणरुन् देवर्हळ्, मूवरि नाल्वना मुनिवन् दॅय्दिनान् 5

पू वरु–शोभायुक्त; पॉलम् कळल्–स्वर्णपायलधारी; पॉरुवु इल् मन्नन्–उपमाहीन चक्रवर्ती के; कावलिन्–शासन कार्य में; आणै चॅय्–आज्ञा देनेवाले; कटवुळ् आम् ऍन्न–ईश्वर हैं ऐसा; तेवरुम् मुनिवरुम् उणरुम्–देव और मुनि जिनके सम्बन्ध में अनुभव करते हैं उन; तेवर्कळ् मूवरिन्–(अज, हरि, हर) तीन की श्रेणी में; नाल्वन् आम्–चौथे के रूप में माननीय; मुनि–महर्षि (वसिष्ठ); ऍय्तिनान्–पधारे। ५

पहले वसिष्ठजी पधारे। उज्ज्वल पायलधारी और अप्रमेय चक्रवर्ती दशरथ के शासन में उनका नियंता का (ईश्वर का-सा) विशिष्ट स्थान था। वे देवताओं के और मुनियों के ज्ञात त्रिदेव— अज, हरि और हर —के साथ चौथे ईश्वर के रूप में सम्मानित थे। ५

❀ कुलमुदर् रॉन्मयुङ् गलैयिन् कुप्पयुम्, पलमुदर् केळ्वियुम् पयनु मॅय्दिनार्
नलमुद नलियिनु नडुवु नोक्कुवार्, शलमुद लरुत्तरुन् दरुमन् दाङ्गिनार् 6

कुलम् मुतल् तॉन्मैयुम्–कुल के क्रम में प्राचीनता; कलैयिन् कुप्पैयुम्–शास्त्रों की ज्ञानराशि; पल मुतल् केळ्वियुम्–अनेक श्रेष्ठ श्रौतज्ञान; पयनुम्–उनका लाभ; ऍय्तिनार्–जो पा चुके थे (वे मन्त्रीगण); नलम् मुतल् नलियिनुम्–अपना हित आमूल नष्ट हो जाय तो भी; नटुवु नोक्कुवार्–तटस्थता बरतनेवाले; चलम् मुतल् अऱुत्तु–क्रोधादि काटकर; अरु तरुमम् ताङ्किनार्–उत्तम धर्मावलम्बी। ६

बाद अमात्य आये। उनके पास कुल की प्राचीनता थी; शास्त्रों की ज्ञानराशि थी। अनेक विषयों पर प्रथम श्रेणी का श्रुत-ज्ञान था। वही नहीं; इन सबका प्रभाव भी उन पर खूब पड़ा था। चाहे उनका हित बिलकुल नष्ट हो जाय तो भी वे तटस्थता से हटनेवाले नहीं थे। क्रोध आदि को उन्होंने दूर किया था और उत्तम धर्मावलंबी थे। ६

उऱ्ऱतु कॊण्डु मेल्वन् दुरुपॊरु ळुणरुङ् गोळार्
मऱ्ऱदु वितैयित् वन्द दायिनु माऱ्ऱ लाऱ्ऱुम्
पॆऱ्ऱियर् पिऱप्पित् मेन्मैप् पॆरियव ररिय नूलुम्
कऱ्ऱवर् मान नोक्किऱ् कवरिमा वनैय नीरार् 7

उऱ्ऱतु कॊण्टु–जो हो गया उसको शोधकर; मेल् वन्तु उरु पॊरुळ्–आगे जो होगी उस बात को; उणरुम्–बुद्धि द्वारा समझनेवाले; कोळार्–चातुर्य रखनेवाले; अतु–वह बात; वितैयित् वन्ततु आयिनुम्–प्रारब्ध कर्म से हो गई तो भी; माऱ्ऱल् आऱ्ऱुम्–बदल सकने की; पॆऱ्ऱियर्–शक्ति रखनेवाले; पिऱप्पित् मेन्मै पॆरियवर्–कुल-जन्म के अनुरूप गौरवशाली; अरिय नूलुम् कऱ्ऱवर्–सूक्ष्म ग्रन्थों के अध्येता; मानम् नोक्कित्–अपने मान के विचार में; कवरि मा अनैय नीरार्–चामर हिरन के-से स्वभाव वाले। ७

वे संभूत काम देखकर भविष्य को समझने का चातुर्य रखनेवाले और प्रारब्ध-कर्म के कारण कुछ हो भी जाय तो उसका परिहार जाननेवाले, अपने कुल की मर्यादा और गौरव उनमें यथेष्ट था। साथ-साथ सूक्ष्म ग्रंथों का अध्ययन कर चुके थे। जहाँ तक गौरव का सम्बन्ध था वे चामर-मृग (सुरा गाय ?) के स्वभाव के थे, जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि एक बाल भी खोना पड़ा तो वह अपनी जान दे देगा। (यानी अपमान हो जाने के पहले अपना प्राण दे देनेवाले थे।)। ७

कालमु मिडनु मेऱ्ऱ करुवियुन् दॆरियक् कऱ्ऱ
नूलुऱ नोक्कित् तॆय्व नुनित्तरङ् गुऱित्त मेलोर्
शीलमुम् पुहऴ्क्कु वेण्डुञ् जॆय्हयुन् दॆरिन्दु कॊण्डु
पाल्वरु मुरुदि यावुन् दलैवऱ्क्कुप् पयक्कु नीरार् 8

एऱ्ऱ कालमुम् इटनुम् करुवियुम्–उचित काल, स्थान और साधन को; कऱ्ऱ नूल् उऱ–अपने पठित ग्रन्थों के अनुकूल; तॆरिय नोक्कि–खूब समझकर; तॆय्वम् नुनित्तु–ईश्वर का ध्यान करके; अऱम् कुऱित्त मेलोर्–धर्म में आचरण वाले श्रेष्ठों के बताये; चीलमुम्–शील और; पुकऴ्क्कु वेण्टुम् चॆय्कैयुम्–यश देनेवाले कार्यों को; तॆरिन्तु कॊण्टु–जानकर; पाल् वरुम् उऱुति यावुम्–इनके हक में आनेवाले सारे शुभ फलों को; तलैवऱ्कु–अपने स्वामी, राजा को; पयक्कुम्–प्राप्त करानेवाले; नीरार्–स्वभाव वाले। ८

वे उचित काल, स्थान और साधनों का विचार कर, शास्त्र के प्रमाणों को भी लेकर, धर्म के आचार्यों के भी शील और प्रशंसा योग्य सम्बन्धी उपदेशों का लाभ उठाते हुए ऐसे काम करते जिससे सुफल अपने नायक को मिल जायँ। ८

तम्मुयिर्क् कुऱुदि यॆण्णार् तलैमहन् वॆहुण्ड पोदुम्
वॆम्मयैत् ताङ्गि नीदि विडादुनिन् ऱुरैक्कुम् वीरर्

शॅम्मयिर् ऱिऱम्बल् शॅल्लात् तेऱ्ऱत्तार् तॅरियुङ् गालम्
मुम्मयु मुणर वल्लो रॊरुमये मॊऴियुम् नीरार् 9

तलै मकऩ्–राजा के; वॅकुण्ट पोतुम्–कुपित होने पर भी; तम् उयिर्क्कु–अपने प्राणों का; उऱुति अॅण्णार्–हित नहीं सोचते; वॅम्मैयै ताङ्कि–(कोप की) गर्मी को सहकर; विटातु निऩ्ऱु–कर्तव्य न छोड़ते हुए अचल रहकर; नीति उरॅक्कुम्–नीति समझानेवाले; वीरर्–वीर हैं; चॅम्मैयिल्–नेकनीयती से; तिऱम्पल् चॅल्ला–हटकर न जानेवाले; तोऱ्ऱत्तार्–समझदार हैं; तॅरियुम्–शास्त्रज्ञान से ज्ञातव्य; कालम् मुम्मैयुम्–भूत, वर्तमान और भविष्य (के व्यापारों) को; उणरवल्लोर्–समझ सकनेवाले; ऑरुमैये मॊऴियुम्–स्थिर रूप से एक ही बात कहने का; नीरार्–स्वभाव वाले। ९

जब राजा या नायक कोप करते तब ये अपने प्राणों की परवाह नहीं करते। पर कोप की आँच (उग्रता का) सहन करके, अपने अभिप्राय में अचल रहकर नीति बताने से पीछे न हटनेवाले वीर थे। उनकी बुद्धि इतनी सुलझी हुई थी कि नेक रास्ते से वे कभी नहीं हटते। ग्रंथों, अनुमान आदि से ज्ञातव्य भूत, वर्तमान और भविष्य के कार्यों को समझने की शक्ति के साथ वे स्थिर रूप से असंदिग्ध एक ही बात कहने का स्वभाव भी रखते थे। ९

❀ नल्लवुन् दीयवु नाडि नायहर्, कॅल्लैयिन् मरुत्तुव रियल्बि नॅण्णुवार्
ऑल्लैवन् दुऱुवन वुऱ्ऱ पॅऱ्ऱियिन्, तॊल्लैनल् विनैयॅन वुदवुञ् जूऴ्च्चियार् 10

नायकर्कु–अपने नायक का; नल्लवुम् तीयवुम् नाटि–हित, अहित सोचकर; ॲल्लैयिल्–अन्त में; मरुत्तुवर् इयल्पिऩ्–वैद्यों के-से गुण के साथ; अॅण्णुवार्–(नायक का हित ही) सोचते; ऑल्लै वन्तु उऱुवऩ–अकस्मात आनेवाली हानियाँ; उऱ्ऱ पॅऱ्ऱियिऩ्–जब आ जाती हैं; तॊल्लै नल् विनै अॅऩ–पूर्वकृत पुण्य के समान; उतवुम् चूऴ्च्चियार्–सहायक उपाय बतानेवाले। १०

नायक के लिए क्या हित है क्या अहित है —यह खूब सोचकर अच्छे वैद्य के समान जो रोगी के हित की दवा देते हैं, उनका हित ही करनेवाले थे। अकस्मात आई हुई हानि के सम्बन्ध में भी वे पूर्वकृत पुण्य के समान आकर कोई न कोई उपाय करके उसको दूर करने का सामर्थ्य रखते थे। १०

❀ अऱुपदि नायिर रॅन्निनु माण्डहैक्
कुऱुदियि नॊन्ऱिवर्क् कुणर्वॅन् ऱुन्नलाम्
पॅऱलरुञ् जूऴ्च्चियर् तिरुविन् पॅट्पिनर्
मऱिदिरैक् कडलॅन वन्दु शुऱ्ऱिनार् 11

तिरुविन् पॅट्पिनर्–श्री समन्वित हैं; अऱुपतिनायिरर् ॲनितुम्–(संख्या में) साठ हज़ार थे तो भी; आण् तकैक्कु–पुरुष श्रेष्ठ (दशरथजी) को; उऱुतियिन्–भला

पहुँचाने में; इवर्क्कु उणर्वु ऑन्ऱु–इनका चित्त एक है; ऍन्ऱु–यह; उन्न आम्–मान सकते हैं ऐसा; पॅरल् अरुम्–(पाने में) दुर्लभ; चूऴ्च्चियर्–मतिमान हैं मऱि तिरै कटल् ऍन–मुड़ आनेवाली लहरों वाले सागर के समान; वन्तु चुऱ्ऱिऩर्–(वे आकर घेरे रहे। ११

वे साठ हज़ार थे। तो भी अपने नायक के हितचिंतन में मान वे सब मिलकर एक ही मन रखते थे, ऐसे सलाहकारिता में अपूर्व दक्षत दिखाते थे। वे मुड़-मुड़कर लहरानेवाली तरंगों से युक्त समुद्र के समान आकर उनको घेर गये। ११

*** मुऱैमयि ऩॆय्दिऩर् मुऩ्दि यऩ्दमिल्, अऱिवऩै वणङ्गित्तम् मरशैक् कैदॊऴु**
दिऱैयिडै वरऩ्मुऱै येऱि येऱ्ऱशॊल्, तुऱैयऱि पॅरुमया ऩरुळुम् जूडिऩार् 1

मुऱैमैयिल्–यथाक्रम; ऍय्तिऩर्–आकर; अऩ्तम् इल् अऱिवऩै–अनन्त बुद्धिमा वसिष्ठ को; मुन्ति वणङ्कि–प्रथमतः नमस्कार करके; तम् अरचै कै तॊऴुतु–अप राजा को अंजलि समर्पित करके; इऱै इटै–आसनों पर; वरल् मुऱै–अपने पदों अनुसार; एऱि–(चढ़कर) आसीन होकर; एऱ्ऱ चॊल् तुऱै–उचित शिष्ट वचन क रीतियों के; अऱि पॅरुमैयान्–ज्ञाता, गौरवान्वित दशरथ की; अरुळुम्–कृपादृष्टि भी चूटिऩार्–(उन्होंने) प्राप्त की। १२

वे यथाक्रम आये। पास आकर उन्होंने अथाह बुद्धिमान वसिष्ठजी को नमस्कार किया और फिर राजा को अंजलि समर्पित की। बाद में वे अपने-अपने उचित आसन पर आसीन हुये। राजा ने, जो योग्य शिष्टाचार के वचन कहने में समर्थ थे उचित रूप से स्वागत किया। उन्हें राजा की कृपादृष्टि मिल गई। १२

*** अऩ्ऩव ररुळमैन् दिरुन्द वाण्डयिल्, मऩ्ऩनु मवरमुह मरबि ऩोक्किऩान्**
उऩ्ऩिय दरुम्बॅऱ लुऱुदि यॊन्ऱुळ, दॆऩ्ऩुणर् वऩैयनी रिऩिदु केट्कॆना 13

अऩ्ऩवर्–(जब) वे; अरुळ् अमैन्तु–कृपाप्राप्त हो; इरुन्त आण्टैयिऩ्–आसीन रहे तब; मऩ्ऩतुम्–चक्रवर्ती भी; अवर् मुकम्–उनके मुखों को; मरपिऩ्–क्रम से; नोक्किऩाऩ्–देखकर; उऩ्ऩियतु–मेरा सोचा; पॅऱल् अरुम्–दुर्लभ; उऱुति ऑन्ऱु– हितकार्य एक; उळतु–है; ऍऩ् उणर्वु अऩैय नीर्–मेरी ही प्रज्ञा रहनेवाले आप लोग; इऩितु केट्क–सन्तोष से सुनिये; ऍऩा–कहकर आगे। १३

जब वे राजा की कृपादृष्टि प्राप्त करके अपने-अपने आसन पर बैठे थे तब राजा ने उन सबके मुखों को उचित क्रम से देखा। "मैंने एक पुरुषार्थ का काम सोचा है। आप मेरी ही मतिवत हैं। आप संतोष के साथ सुनिये।" —यह कहकर आगे बोले। १३

*** वॆय्यवऩ् कुलमुदल् वेन्दर् मेलवर्, शॆय्हयि ऩॊरुमुऱै तिऱम्ब लिऩ्ऱिये**
वैयमॆऩ् पुयत्तिडै नुङ्गण् माट्चियाल्, ऐयिरण् डायिरत् ताऱु ताङ्गिऩेऩ् 14

नुङ्कळ् माट्चियाल्–आप लोगों (की सलाह) की महिमा से; वॆय्यवन् कुलम्–सूर्यकुल के; मुतल् वेन्तर्–अग्रगण्य राजा; मेलवर्–मेरे पूर्वजों के; चॆय्कैयिन्–कार्यों (की पद्धति) से; ऑरु मुऱै–किसी विधि; तिऱम्पल् इन्ऱि–हटे बिना; वैयम्–भूमि का; ऐ इरण्टु आयिरत्तु आऱु–(५×२×१०००×६) साठ सहस्र वर्ष; ऎन् पुयत्तिटै–अपनी भुजाओं पर; ताङ्कितेन्–धारण किया। १४

आपकी संगति के महत्व के कारण मैंने साठ सहस्र वर्ष इस भूमि को अपनी भुजाओं में धारण किया। उसमें सूर्यकुल के मेरे पूर्वजों ने जो नीति-रीति अपनायी थी उससे थोड़ा भी विचलित न हुआ। १४

❀कन्नियर्क् कमैवरुङ् गऱ्पिन् मानिलम्, तन्नैयित् तकैयदात् तरुमङ् गैदर
मन्नुयिर्क् कुरुवदे शॆय्तु वैहिनेन्, ऎन्नुयिर्क् कुरुवदुञ् जॆय्य वॆण्णिनेन् 15

कन्नियर्क्कु–कन्याओं के लिए; अमैवरुम्–उचित; कऱ्पिन्–चरित्र के समान; मा निलम् तन्नै–इस विशाल भूमि को; इ तकैयता–यह स्थिति देते हुए; तरुमम् कै तर–धर्म ने भी हाथ बँटाया, इसलिए; मन् उयिर्क्कु–स्थायी जीवों को; उरुवतु–हितकारी काम; चॆय्तु वैकितेन्–करता रहा; ऎन् उयिर्क्कु–अपनी आत्मा के लिए; उरुवतुम्–हितकारी काम; चॆय्य ऎण्णितेन्–करना चाहा। १५

इस भूमि को इस रीति से पाला कि यह भूमि कन्योचित पातिव्रत्य व्रतशीला-सी रही। यानी उसके दो स्वामी नहीं रहे। धर्म ने भी साथ दिया और अब तक मैं प्रजाजन का हित करता रहा। अब मैं अपनी आत्मा का हितकारी कार्य करना चाहता हूँ। १५

❀ विरुम्बिय मूप्पॆनुम् वीडु कण्डयान्
इरुम्बिय लनन्दनु मिनत्त यानैयुम्
पॆरुम्बॆयर्क् किरिहळुम् पॆयरत् ताङ्गिय
अरुम्बॊऱै यिनिच्चिऱि दाऱ्ऱ वाऱ्ऱलेन् 16

विरुम्पिय–(मैंने जो) चाहा; मूप्पु ऎनुम्–वह वार्द्धक्य रूपी; वीटु–स्वतन्त्रता; कण्ट यान्–देखकर मैं; इरु पियल् अनन्तनुम्–विशाल गर्दन वाला अनन्तनाग; इनत्त यानैयुम्–एक ही जाती के (दिग्-) गज; पॆरु पॆयर् किरिकळुम्–बड़े ही प्रसिद्ध (अष्ट) कुलशैल; पॆयर–इनको छुट्टी देकर; ताङ्किय अरुपॊऱै–जो मैंने धारण किया उस भार को; इनि चिऱितु–अब जरा भी; आऱ्ऱ–भरण करने में; आऱ्ऱलेन्–समर्थ नहीं हूँ। १६

मैं इस वार्द्धक्य की प्रतीक्षा में था ताकि मुझे स्वतंत्रता मिले। वह अब आ गया। इसलिए विशाल गर्दन वाला अनंत नाग, अष्ट दिग्गज, सप्तकुल शैल —इनको अपने काम से छुट्टी देकर मैं भू-भार वहन करता रहा। अब सोचता हूँ कि आगे किंचित भी वह भार सह नहीं सकूँगा। १६

❀ नङ्गुलक् कुरवर्ह णवैयि नीङ्गिनार्
तङ्गुलप् पुदल्वरे तरणि ताङ्गप्पोय्
वॆङ्गुलप् पुलन्कॊंड वीडु नण्णिनार्
ऎङ्गुलप् पुरुवरॆन् ऱॆण्णि नोक्कुहेन् 17

नम् कुलम् कुरवर्कळ्–मेरे कुल के पूर्वज; नवैयिन् नीङ्कितार्–(जो) दुर्गुण-त्यागी (थे); तरणि–भूमि को; तम् कुलम् पुतल्वरे–अपने श्रेष्ठ पुत्रों के; ताङ्क–पालन करने (देकर); पोय्–जाकर; वॆम् कुलम् पुलन् कॊंट–अत्याचारी इन्द्रियों के कुल को दमन करके; वीटु नण्णिनार्–मोक्ष को प्राप्त हुए; ऎङ्कु उलप्पु उरुवर्–कहाँ जा के (संख्या में) अन्त होंगे; ऎन्रु–यह सोचकर; नोक्कुकेन्–(मैं भी वह पुरुषार्थ) खोजता हूँ। १७

मेरे कुल के पूर्वजों ने काम, क्रोध और मोह के दोषों से निवृत्त होकर अपने-अपने पुत्रों के पास राज्य-भार सौंपकर वनवास किया और इंद्रियों का दमन करके तपस्या की। फिर वे मुक्ति को प्राप्त हुए। ऐसे राजाओं की गणना का अंत कहाँ? असंख्यक उनका अनुकरण करके मैं भी मुक्ति के पुरुषार्थ-साधन में लग जाना चाहता हूँ। १७

❀ वॆळ्ळनी रुलहिनिल् विण्णि नाहरिल्
तळ्ळरुम् बहैयॆलान् दविर्त्तु निन्ऱयान्
कळ्वरिऱ् करन्दुऱै काम मादियाम्
उळ्ळुरु पहैवरुक् कॊदुङ्गि वाळ्वॆनो 18

वॆळ्ळम् नीर् उलकिनिल्–अपार (सागर) जल से घिरी हुई भूमि में; विण्णिल्–आकाश में; नाकर् इल्–नागलोक में; तळ्ळ अरुम् पकै ऎल्लाम्–दूर (जिनको) करना कठिन है उन शत्रुओं को; तविर्त्तु निन्ऱ–हराकर (जो) रहा; यान्–(वह) मैं; कळ्वरिल्–चोरों के समान; करन्तु उऱै–छिपकर रहनेवाले; कामम् आति आम्–काम आदि; उळ् उरु पकैवरुक्कु–अन्तःशत्रुओं से; ऒतुङ्कि वाळ्वॆनो–(हार मानकर) दूर रहूँगा क्या। १८

इस भूलोक में, जिसे विपुल जलराशि, सागर घेरे रहता है, आकाश के सुरलोक में और नाग-(पाताल-)लोक में जितने भी शत्रु थे उन सब पर मैंने विजय पा ली है। ऐसा मैं क्या उन कामादि अंतश्शत्रुओं से हार मानकर बैठा रहूँगा जो चोरों के समान मेरे ही अंदर छिपे रहते हैं। १८

❀ पञ्जिमॆन् ऱळिरडिप् पावै कोल्हॊळ
वॆञ्जिनत् तवुणर्देर् पत्तुम् वॆन्ऱुळेऱ्
कॆञ्जलिन् मनमॆनु मिळुदै येऱिय
अञ्जुतेर् वॆल्लुमा दरुमै यावदो 19

पञ्चि–महावर लगे; मॅल् तळिर् अटि—पल्लव-मृदु-चरण; पावै—प्रतिमा-सी कैकेयी के; कोल् कॉळ–(सारथी का) वेत्र हाथ में लेते (सारथ्य में); वॅम् चिन्तुतु—भयंकर क्रोधी; अवुणर् तेर् पत्तुम्–असुरों के दशों रथों को; वॅन्रुळेर्कु–जिसने हराया उस मुझे; ऑञ्चल् इल् मनम् ॲतुम्–अथक मनरूपी; इळुतै एऱिय–भूत जिन पर चढ़ा है उन; अञ्चु तेर्–(इन्द्रिय रूपी) पाँच रथों को; वॅल्लुम् ईतु–जीतने का यह काम; अरुमै आवतो–कठिन हो जायगा। १६

(शम्बरासुर दस रूप लेकर दस रथों पर सवार हो आया।) उसके साथ मैंने लड़ाई की। मेरी पत्नी लाक्षारसरंजित, पल्लव समान मृदु चरण वाली कैकेयी ने हाथ से चाबुक लेकर सारथ्य किया। मैंने दसों रथों पर विजय पायी और दानवों का नाश किया। उधर तो दस रथ थे, इधर इंद्रियरूप में पाँच ही रथ हैं जिन पर मन भूत के समान सवार है। क्या दस के विजयी के लिए पाँच पर विजय पाना कठिन है? । १९

❀ ऑट्टिय पहैञर्वन् दुरुत्त पोरिडैप्
पट्टव रल्लरेऱ् परम ञानम्बोयत्
तॅट्टव रल्लरेऱ् चॅल्व मीण्डॅन
विट्टव रल्लरेल् यावर् वीडुळार् 20

वनु्तु ऑट्टिय–आकर टकरानेवाले; पकैञर्–शत्रु; उरुत्तपोर् इटै–(जो) करते हैं, उस लड़ाई में; पट्टवर्–मर चुके; अल्लरेल्–नहीं तो; परम ञानम्—परम-ज्ञान के; पोय्–अधिक होने पर; तॅट्टवर्–समझदार हुए हैं; अल्लरेल्–नहीं तो; चॅल्वम् ईण्टु ॲन–अर्थ आदि यहीं तक, यह जानकर; विट्टवर्–छोड़ चुके हैं; अल्लरेल्–वे नहीं तो; वीटु उळार् यावर्–मुक्ति के अधिकारी कौन हैं। २०

मुक्ति के अधिकारी तीन तरह के लोग ही होते हैं। शत्रुओं के साथ युद्ध में मरनेवाले; या परम ज्ञान प्राप्त करके आत्म-अनात्म-विवेक जो पा चुके वे; ये दोनो नहीं हों तो "यहाँ का धन आदि इसी भूमि में रहते समय तक हमारा साथ दे सकता है" यह जानकर जो मोह छोड़ चुके हैं वे —ये तीनो ही वे अधिकारी हैं। इन तीनो में नहीं है तो कौन मुक्ति पाने के योग्य हो सकता है? । २०

इऱप्पॅनु मॅय्म्मयै यिम्मै यावर्क्कुम्
मऱप्पॅनु मदनि्न्मेऱ् केडु मऱुण्डो
तुऱप्पॅनुन् दॅप्पमे तुणैय् याविडिन्
पिऱप्पॅनुम् बॅरुङ्गडल् पिळैक्क लावदो 21

यावर्क्कुम्–सब किसी के लिए; इऱप्पु ॲतुम् मॅय्म्मैयै–मृत्यु है इस तथ्य को; इम्मै–इस जन्म में; मऱप्पु ॲतुम्–भूल जाने का; अतति्न् मेल्–जो है उससे बढ़कर; मऱु–अन्य; केटु उण्टो–हानि है क्या; तुऱप्पु ॲतुम् तॅप्पमे–संन्यास नाम की डोंगी ही; तुणै–चॅय्या विटिन्–सहायता न करे तो; पिऱप्पु ॲतुम् पॅरु कटल्–जन्म नामक बड़ा सागर; पिळैक्कल् आवतो–बचाना हो सकता है क्या। २१

किसी के लिए इस बात को भूल जाने से कि मरण ध्रुव है, अधिक हानिकारक कोई चीज़ नहीं है। वैराग्य की डोंगी का सहारा न लिया जाय तो जन्म नामक विपुल सागर का तरण संभव है क्या ? । २१

अरुऴ्जिऱप् पमैवरुन् दुऱवु मव्वऴित्
तॆरिञ्जुऱ वॆतमिहुन् दॆळिवु माय्वरुम्
पॆरुऴ्जिऱै युळवॆनिऱ् पिऱवि यॆऩ्ऩुमिव्
विरुऴ्जिऱै कडत्तलि ऩिऩिय दियावदो 22

अरुम् चिऱप्पु–श्रेष्ठ (मोक्ष का) गौरव; अमैवरुम् तुऱवुम्–दिलानेवाला वैराग्य; अ वऴि तॆरिञ्चु–वह मार्ग जानकर; उऱवु अॆन–उसका सहायक रहनेवाला; तॆळिवुम्–तत्वज्ञान-विवेक; आय् वरुम्–ऐसे रहनेवाले; पॆरु चिऱै उळ अॆनिल्–बड़े पक्ष हैं तो; पिऱवि अॆऩ्ऩुम्–जन्म नाम के; इ इरु चिऱै–इस बड़ी कारा को; कटत्तलिऩ् इऩियतु–पार करके जाने से सुखद; यावतो–कौन सी वस्तु है। २२

मानव जीवन की गरिमा मुक्ति पाना है। उसका हेतु वैराग्य है। उसका सहायक है आत्म-अनात्म-विवेक। वैराग्य और विवेक दो पंख हैं। अगर ये दोनो पंख हों तो जन्म नाम की कारा से छूटना आसान हो जायगा। इस कारा से छूटने से बढ़कर सुखद क्या हो सकता है ? । २२

इऩियतु पोलुमिव् वरशै यॆण्णुमो, तुऩिवरु पुलऩॆऩत् तॊडर्न्दु तोऱ्कला
नऩिवरु पॆरुम्बहै नवैयि नीङ्गिय, तऩियर शाट्चियिऱ् ऱाऴु मुळ्ळमे 23

तुऩिवरु–दुखदायक; पुलन् अॆन–इन्द्रियों के रूप में; तॊटर्न्तु–जीवन में अनुवर्ती बनकर; तोऱ्कला–कभी न हारकर; नऩिवरु–अधिक आनेवाली; पॆरुम् पकै–बड़ी शत्रुता से उत्पन्न; नवैयिऩ् नीङ्किय–दोषों से दूर; तऩि अरचाट्चियिल्–विशिष्ट (मोक्ष-)साम्राज्य में; ताऴुम्–मग्न; उळ्ळम्–मेरा मन; इऩियतु पोलुम्–सुखद दिखनेवाले; इव्वरचै–इस राज्य को; अॆण्णुमो–(कोई वस्तु) मानेगा क्या। २३

मेरा मन अब मोक्ष-साम्राज्य में लग गया है। वह दुखदायी इंद्रियों रूपी अक्षय और अजेय रूप से सतानेवाले बड़े शत्रुओं के कारण हो जानेवाले दोषों से छूटने पर प्राप्त होती है। उसमें लगा मेरा मन अब क्या दिखावे के सुख वाले इस राज्य को कोई (मूल्यवान) पदार्थ मानेगा ? नहीं। २३

❀ उम्मैया नुडैमयि नुलहम् यावैयुम्, चॆम्मैयि नोम्बिनल् लऱमुञ् जॆय्दऩॆऩ्
इम्मैयि नुदवियॆऩ् ऩिशैन डायनीर्, अम्मैयु मुदवुदऱ् कमैय वॆण्डुमाल् 24

याऩ्–मैं; उम्मै उटैमैयिऩ्–आप लोगों को (मन्त्रियों के रूप में) प्राप्त किए रहने के कारण; उलकम् यावैयुम्–सारे लोकों को; चॆम्मैयिऩ्–ठीक तरह से; ओम्पि–रक्षित करके; नल् अऱमुम् चॆय्तऩॆऩ्–अच्छे धर्म-कार्य भी कर चुका; इम्मैयिऩ् उतवि–इह जीवन में मेरी सहायता करके; अॆन् इचै नटाय–मेरी कीर्ति को फैलानेवाले;

नीर्–आप लोग; अम्मैयुम् उतवुतर्कु–परलोक जीवन में भी सहायता देने को; अमैय वेण्टुम्–सम्मन हों। २४

आपको मैंने अपने मंत्रियों के रूप में पाया। इसीलिए मैं भूमि का ठीक तरह से पालन करके अच्छे धार्मिक कार्य पूरा कर सका। इह-जीवन में सहायक रहकर मेरी कीर्ति को बढ़ाने के आप ही हेतु रहे। ऐसे आप मेरे पारलौकिक जीवन में भी भला दिलाने में सहायक बनने की इच्छा करें। २४

इळैत्ततोल् विनैययुङ् गडक्क वॆण्णुदल्
तळैत्तपे रुरुळुडैत् तवत्ति नाहुमेल्
कुळैत्तदो रमुदिनैक् कोड नीङ्गिवे
ऱळैत्तती विडत्तिनै यरुन्द लाहुमो 25

इळैत्त–(पूर्व-)कृत; तॊल् विनैयैयुम्–प्राचीन कर्मों के फल को; कटक्क–लाँघने के लिए; ऍण्णुतल्–विचार करना; तळैत्त–अधिक; अरुळ् उटै तवत्तिन्–भूत-दया पर आधारित तपस्या से; आकुमेल्–सफल हो सकता है तो; कुळैत्ततु ओर् अमुतिनै–औषधि डालकर, मथकर निकाले गये अमृत को; कोटल् नीक्कि–लेना छोड़कर; वेरु अळैत्त–दूसरी रीति से प्राप्त; ती विटत्तिनै–भयंकर विष को; अरुन्तळ् आकुमो–खाना ठीक हो सकता है क्या। २५

प्रारब्ध (संचित) कर्म भी भूत-दया से प्रभावित तपस्या के फलस्वरूप काट लिया जा सकता है। तब औषधि-सहित सागर-मथन से प्राप्त अमृत को छोड़कर विष पीने को उद्यत होना कहाँ तक उचित है? (तपस्या अमरता देगी। जीवन भोग कर्म को बढ़ायेगा, अतः वह विषतुल्य है।) । २५

कच्चयङ् गडहरिक् कळुत्तिन् कण्णुऱप्
पिच्चमुङ् गविहयुम् बॆय्यु मिन्निळल्
निच्चय मन्ऱॆनि नॆडिदु नाळुण्ड
ऍच्चिलै नुहरुव दिन्ब माहुमो 26

कच्चै–रस्सी बँधे; अम कटम् करि–सुन्दर मत्तगज के; कळुत्तिन् कण् उऱ–गर्दन पर बैठे; पिच्चमुम्–मोरछल; कविकैयुम्–श्वेतछत्र; पॆय्युम्–जो देते हैं उस; इन् निळल्–सुखद छाया में रहनेवाला जीवन; निच्चयम् अन्ऱु ऍतिन्–शाश्वत नहीं है तो; नॆटितु नाळ् उण्ट ऍच्चिलै–दीर्घकाल से खाये हुए जूठन को; नुकरुवतु–भोगता रहना; इन्पम् आकुमो–सुख हो सकता है क्या। २६

गले में बँधी रस्सी के साथ रहनेवाले मत्त गज पर सवारी और मोरछल, श्वेतछत्र आदि की छाया, अर्थात राजा का जीवन शाश्वत नहीं है। यह जानकर भी जूठन के भोग में लगा रहना आनन्ददायक हो सकता है क्या? यह भोग भी काफ़ी दिनों तक भोगा जा चुका है! । २६

मैन्दरै यिन्मयिऩ् वरम्बिल् कालमुम्
नॊन्दऩॆऩ् तिरामऩॆऩ् ऩोवै नीक्कुवाऩ्
वन्दऩ ऩवनिऩि वरुन्द याऩ्पिळैत्
तुय्न्दऩॆऩ् पोवदो रुऱुदि यॆण्णिऩेऩ् 27

मैन्तर् इऩ्मैयिऩ्–सन्तान के न होने से; वरम्पु इल् कालमुम्–असीम काल तक; नॊन्तऩॆऩ्–दुखी रहा; ॲऩ् नोयै नीक्कुवाऩ्–मेरा (दुख-) रोग दूर करने; इरामऩ् वन्तऩऩ्–श्रीराम आया है; इऩि–अब; अवऩ् वरुन्त–वह कष्ट उठावे; याऩ्–मैं; पिळैत्तु उय्न्तऩॆऩ् पोवतु–बचकर तर जाने का; ओर् उऱुति–एक हित; ॲण्णिऩेऩ्–सोचा। २७

मैं सन्तान के न होने से कितने ही वर्षों से (असीम काल तक) दुखी रहा। मेरे दुख-रोग को दूर करने के लिए राम आकर पैदा हो गया। अब वह भार अपने ऊपर ले लेगा और मैं इससे मुक्त हो जाऊँ —यह हित-साधन करने की बात मैंने सोची है। २७

इऱन्दिलऩ् शॆरुक्कळत् तिरामऩ् ऱादैदाऩ्
अऱन्दलै निरम्बमूप् पडैन्द पिऩ्ऩरुम्
तुऱन्दिल ऩॆऩ्बदोर् शॊल्लुण् डाऩपिऩ्
पिऱन्दिल ऩॆऩ्बदिऱ् पिऱिदुण् डाहुमो 28

इरामऩ् तातै–राम का पिता; चॆरुक्कळत्तु इऱन्तिलऩ्–समरभूमि में न मरा; ताऩ् मूप्पु अटैन्त पिऩ्ऩरुम्–वार्द्धक्य प्राप्त करने के बाद भी; अऱम् तलै निरम्प–धर्म के पूर्ण-साधन में; तुऱन्तिलऩ्–विरक्त नहीं हुआ; ॲऩ्पतु ओर् चॊल्–ऐसी एक (निन्दा की) बात; उण्टाऩ पिऩ्–हो जाने के बाद; पिऱन्तिलऩ् ॲऩ्पतिऩ्–जन्म नहीं लिया, इस (अपयश) के सिवा; पिऱितु उण्टाकुमो–और कुछ हो सकता है क्या। २८

अब भी मैं वानप्रस्थ न बनूँ तो अपयश हो जायगा। लोग कहने लगेंगे कि बूढ़ा दशरथ न किसी समर में मरा; न वार्द्धक्य प्राप्त करने के बाद पूर्ण धर्म साधनार्थ उसने संन्यास लिया। ऐसी अपकीर्ति हो गई तो मानव-जन्म व्यर्थ गया। इसके अतिरिक्त क्या मिल सकता है ?। २८

❀ पॆरुमह ऩॆऩ्वयिऱ् पिऱक्कच् चीदयाम्
तिरुमहण् मणविऩै तॆरियक् कण्ड याऩ्
अरुमह ऩिऱैकुणत् तवऩि मादॆऩुम्
ऒरुमहण् मणमुडिगण् डुवप्प वॆण्णिऩेऩ् 29

पॆरुमकऩ्–पुरुषोत्तम (राम); ॲऩ् वयिऩ् पिऱक्क–मेरा पुत्र पैदा हुआ और; चीतै आम् तिरुमकळ्–सीता नाम की लक्ष्मीदेवी के साथ (उसका); मणविऩै–विवाह हुआ, उसको; तॆरिय कण्ट याऩ्–प्रत्यक्ष देखा मैंने, ऐसा मैं; अरु मकऩ्–श्रेष्ठ पुत्र का; निऱै कुणत्तु–पूर्ण-गुण वाली; अवऩि मातु ॲऩुम्–भूमि देवी रूपी; ऒरु

मकळ् मणमुम्–एक देवी के साथ विवाह भी; कण्टु उवप्प–देखकर आनन्दित होने की बात; ॲण्णितेन्–सोची । २८

राम पुरुषोत्तम है । वह मेरा पुत्र पैदा हुआ । उसका श्रीलक्ष्मी देवी और भूदेवी दोनो के साथ परिणय हो, यही उचित है । सीता के साथ उसका विवाह कराकर मैंने अपनी आँखों से लक्ष्मी का विवाह देख लिया । अब सर्वगुणसम्पन्न भूदेवी से भी उसका विवाह देखकर आनन्द पाना चाहता हूँ । (श्रीविष्णु के दो देवियाँ मानी जाती हैं— श्रीदेवी और भूदेवी । श्रीराम विष्णु के अवतार थे । इसलिए भूदेवी से उनके ब्याह की बात उचित है । अलावा साहित्य में राजा को भूमि का पति मानना प्रचलित है ।) । २९

निवप्पुरु निलन्ॅनु निरम्बु नङ्गयुम्
शिवप्पुरु मलर्मिशैच् चिरन्द शॅल्वियुम्
उवप्पुरु कणवनै युयिरि नॅय्दिय
तवप्पयन् ऱाऴ्प्पदु दरुम मन्ऱरो 30

निवप्पु उरु–उत्कृष्ट; निलन् ॲतुम्–भूमि रूपी; निरम्पु नङ्कैयुम्–सर्वगुणपूर्णा देवी भी; चिवप्पु उरु मलर् मिचै–ललाई लिए रहनेवाले (कमल) फूल पर; चिरन्त–शोभने वाली; चॅल्वियुम्–श्रीदेवी; उवप्पु उरु–मन भानेवाले; कणवतै–नायक को; उयिरिन्–अपने प्राणों के समान; ॲय्तिय तवम् पयन्–प्राप्त करानेवाले तप के फल की प्राप्ति को; ताऴ्प्पतु–स्थगित कराना; तरुमम् अन्ऱु–धर्म नहीं होगा । ३०

अब दोनो देवियाँ— उत्कृष्ट भूमि की देवी और लाल-कमल-निवासिनी श्रीदेवी अपनी इच्छा-योग्य पति को, जो उनके प्राणों के समान उन्हें प्यारा है, अपनी तपस्या के फल के आधार पर पानेवाली हैं । उसमें देरी कराना धर्म नहीं होगा । ३०

❀ आदला लिरामनुक् करशै नल्हियिप्
पेदमैत् तायवरुम् बिऱप्पै नीक्कुवान्
मादवन् दॉडङ्गिय वत्तत्तै नण्णुवेन्
यादुनुङ् गरुत्तॅन वित्तैय कूऱिनान् 31

आतलाल्–इसलिए; अरचै–राज को; इरामतुक्कु नल्कि–राम को देकर; पेतैमैत्तु आय् वरुम्–अविद्या से प्राप्य; पिऱप्पै–जन्म को; नीक्कुवान्–रोकने के लिए; मा तवम् तॉटङ्किय–बड़ी तपस्या करने के हेतु; वत्तत्तै नण्णुवेन्–वन में जाऊँगा; नुम् करुत्तु यातु–आपकी राय क्या है; ॲन्–ऐसा; इतैय कूऱितान्–ये बातें कहीं, (दशरथ ने) । ३१

इसलिए राज्य को राम के पास सौंपकर, अविद्याजन्य जन्म को रोकने

के हेतु बड़ी तपस्या करने की इच्छा से मैं वन में जाना चाहता हूँ। इसमें आपकी राय क्या है ? दशरथ ने सारी बातें कहकर यह प्रश्न किया। ३१

तिरण्ड तोळिऩ् ऩिप्पडिच् चॆप्पवुञ् जिन्दै
पुरण्डु मोदिडप् पॊङ्गिय वुवहय राङ्गे
वॆरुण्डु मऩ्ऩवऩ् पिरिवॆऩ्ऩुम् विम्मुरु निलैयाल्
इरण्डु कऩ्ऱिऩुक् किरङ्गुमो रावॆऩ् विरुन्दार् 32

तिरण्ट तोळिऩऩ्–पुष्ट कन्धों वाले (दशरथ) के; इप्पटि चॆप्पवुम्–ऐसा कहने पर; चिन्तै–मन में; पुपण्टु मीतु इट–उठकर ऊपर; पॊङ्किय–उमड़ते हुए; उवकैयर–आनन्द से पूरित हो; आङ्के–तभी; मऩ्ऩवऩ् पिरिवु ऍऩ्ऩुम्–राजा का बिछोह रूपी; विम्मुरु निलैयाल्–दुखदायक स्थिति से; वॆरुण्टु–घबड़ाकर; इरण्टु कऩ्ऱितुक्कु–दो बछड़ों के बीच; इरङ्कुम् ओर् आ ऍऩ–स्नेहार्द्र गाय के समान; इरुन्तार्–रह गये। ३२

पुष्ट कंधों वाले दशरथ के यों कहने पर मन्त्री लोगों के मन में अपार हर्ष उमड़ आया। लेकिन तभी राजा का बिछोह भी उन्हें खलने लगा। तब वे उस गाय की-सी दशा में पड़ गये जो दो बछड़ों से स्नेह करके असमंजस में पड़ जाती हो। वे भ्रमित रह गये। ३२

अऩ्ऩ रायिनु मरशऩुक् कदुवल्ल दुरुदि
पिऩ्ऩ रिल्लॆऩक् करुदियुम् बॆरुनिल वरैप्पिऩ्
मऩ्ऩु मऩ्ऩुयिर्क् किरामऩिऩ् मऩ्ऩव रिल्लै
ऍऩ्ऩ वुऩ्ऩियुम् विदियदु वलियिनु मियैन्दार् 33

अऩ्ऩर् आयितुम्–वैसी दशा में रहने पर भी; अरचऩुक्कु–राजा का; पिऩ्ऩर् उऱुति–पर-जीवन-हित; अतु अल्लतु इल्–वह (तपस्या) छोड़ दूसरा नहीं; ऍऩ करुतियुम्–यह सोचकर, और; पॆरु निल वरैप्पिल्–विशाल भूतल में; मऩ्ऩुम्–रहनेवाले; मऩ् उयिर्क्कु–अक्षय जीवों के लिए; इरामऩिऩ्–श्रीराम के समान; मऩ्ऩवर्–राजा; इल्लै–नहीं मिलेंगे; ऍऩ उऩ्ऩियुम्–यह भी सोचकर; वितियतु वलियितुम्–और विधि के प्रभाव से; इयैन्तार्–सहमत हुए। ३३

दशरथ-वियोग को दुख मानते हुए भी उन्होंने उनके सुझाव को सहमति दी क्योंकि दशरथ का हित तपस्या को छोड़ और किसी में नहीं था। विशाल भूमि पर रहनेवाले सभी अक्षय जीवों के लिए श्रीराम के समान कोई भला राजा नहीं मिल सकता था। उन्होंने यह सोचा और प्रबल विधि का भी विधान वही था। ३३

❀ इरुन्द मन्दिरक् किळवर्द मॆण्णमु महत्पाल्
परिन्द शिन्दयम् मऩ्ऩवऩ् करुदिय पयऩुम्

पॊरुन्दु मन्नुयिर्क् कुरुदियुम् पॊदुवुर नोक्कित्
तॆरिन्द नाल्मरैत् तिशैमुहन् ऱिरुमहन् चॊप्पुम् 34

तॆरिन्त नाल् मरै–पठित चारों वेदों का ज्ञान रखनेवाले; तिचैमुकन् तिरु मकन्–चतुर्मुख के पुत्र; इरुन्त–(सभा में) रहनेवाले; मन्तिरम् किळवर् तम् ऎण्णमुम्–(मन्त्रणा देनेवाले) मन्त्रियों का विचार और; मकन् पाल्–अपने पुत्र पर; परिन्त–वात्सल्य रखनेवाले; चिन्तै–मन के; अ मन्नवन्–उन राजा (दशरथ) के; करुतिय–सोचे हुए; पयत्तुम्–सुफलदायी कार्य को; मन् उयिर्क्कु–(और उससे) स्थायी प्रजाजनों को; पॊरुन्तुम् उऱुतियुम्–प्राप्य भले को; पॊतु उऱ नोक्कि–तटस्थता से देखकर; चॊप्पुम्–बोले। ३४

तब वसिष्ठजी बोले। वेदज्ञ और ब्रह्मा के पुत्र उन्होंने सभी सलाहकार मन्त्रियों का विचार, अपने पुत्र पर अगाध वात्सल्य रखनेवाले दशरथ का सोचा हुआ शुभकार्य, और अक्षय प्रजाजनों का हित —इन सब पर तटस्थता से विचार किया। उन्होंने यों कहा। ३४

[तमिळ् में "मन् उयिर" कहने की परिपाटी है। जीवात्मा भी परमात्मा के समान शाश्वत है, यह हिन्दू धर्म में जाना जाता है। दूसरा जब तक लोक है तब तक जीव रहेंगे ही]।

❀ निरुब निन्कुल मन्नवर् नेमिपण् डुरुट्टिप्
पॆरुमै यॆय्दिनर् यावरे यिरामनैप् पॆऱ्ऱार्
करुम मुम्मिदु कऱ्ऱुणर्न् दोर्हट्कुक् कडव
दरुम मुम्मिदु तक्कदे निनैन्दनै तहवोय् 35

तकवोय्–महिमावान; निरुप–नृप; पण्टु–पहले; नेमि उरुट्टि–(आज्ञा-) चक्र चलाकर; पॆरुमै ऎय्तितोर्–कीर्ति प्राप्त; निन् कुलम् मन्नवर्–आपके कुल के राजाओं में; यावर् इरामनै पॆऱ्ऱार्–किसने राम को (पुत्र के रूप में) पाया; करुममुम् इतु–कर्म यही है; कऱ्ऱुणर्न्तोर्कट्कु–धर्मशास्त्र का अध्ययन कर जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें; कटव–कर्तव्य; तरुममुम् इतु–धर्म भी यही है; तक्कते निनैन्तनै–उचित ही (आपने) सोचा है। ३५

हे महिमावान! आपका भाग्य अभूतपूर्व है। आपके पहले जितने भी राजा आज्ञाचक्र चलाकर गौरवान्वित हुए उनमें किसका भाग्य था कि श्रीराम उसके पुत्र पैदा होते? अब यही यानी तप करना आपका श्रेष्ठ कर्म भी है; और शास्त्रज्ञों का कर्तव्य धर्म भी है। आपने बहुत ही उचित बात सोची है!। ३५

पुण्णि यम्बुरि वेळ्विहळ् यावयुम् बुरिन्द
अण्ण लेयिनि यरुन्दव मियऱ्ऱवु मडुक्कुम्
वण्ण मेहलै निलमहण् मऱुनैप् पिरिन्दु
कण्णि ळन्दिल ळॆन्नच्चॆयु नीतन्द कळलोन् 36

पुण्णियम् पुरि–पुण्यकारी; वेळ्विकळ् यावैयुम्–(कर्तव्य) सभी यज्ञ; पुरिन्त–(जो) कर चुके; अण्णले–हे महिमावान; इनि–आगे; अरु तवम्–उपादेय तप; इयर्र्वुम् अटुक्कुम्–करना भी उचित ही होगा; वण्णम् मेकलै–सुन्दर मेखलाधारिणी (समुद्र-मेखला); निलम् मकळ्–पृथ्वी देवी; उनै पिरिन्तु–आपको छोड़कर; कण् इळन्तिलळ्–आँखों से हीन नहीं हुई; ॲन–ऐसा; नी तन्त कळलोन्–आपके (पुत्र) पायलधारी श्रीराम; चॅयुम्–(कार्य) करेंगे। ३६

पुण्यप्रद सभी यज्ञों के याजी ! अब तपस्या करना भी उपयुक्त ही है। सुन्दर (समुद्र–)मेखला पृथ्वी आपसे बिछुड़ने से आँखों से हीन नहीं हो जाय यह व्यवस्था आपके पुत्र वीर पायलधारी श्रीराम कर देंगे। ३६

❀ पुर्तु नामॊरु पॊरुळिनिप् पुहल्हिन्र् दॆवनो
अर्त्तिन् मूर्त्तिवन् दवदरित् तानॆन्ब दल्लाल्
पिर्त्ति यावयुङ् गात्तवै पिन्निन्र् तुडैक्कुम्
तिर्त्तिन् मूवरुन् दिरुत्तिन तिरुत्तुमत् तिर्लोन् 37

अर्त्तिन् मूर्त्ति–धर्मस्वरूप परात्पर; वन्तु–(स्वेच्छा से) आकर; अवतरित्तान् ॲन्पतु अल्लाल्–अवतरित हुए हैं, इसके सिवा; पुर्त्तु–और; नाम–हम; ओरु पॊरुळ्–कोई बात; पुकल्किन्र्तु ॲवन्–कहें क्या; यावैयुम् पिर्त्तु–सबको उत्पन्न करके; पिन् निन्र् कात्तु–बाद उन सब की रक्षा कर; अवै तुटैक्कुम्–उन सब को मिटाने का; तिर्त्तिन् मूवरुम्–सामर्थ्य रखनेवाले तीनों के; तिरुत्तिन–कृत्यों को; अ तिर्लोन्–वह सर्वशक्तिमान; तिरुत्तुम्–स्वयं अकेले पूरा करेंगे। ३७

'स्वयं परात्पर भगवान, धर्ममूर्ति अपनी इच्छा से अवतरित हुए हैं' इसके अलावा हम और क्या कह सकेंगे ? सृष्टि, स्थिति और संहार के तीनो के कर्ता ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तीनो जो करने का सामर्थ्य रखते हैं उन तीनो के कार्य को ये अकेले ही कर चुकेंगे। ३७

पॊन्नु यिर्त्तपू मडन्दयुम् बुवियॆन्नुन् दिरुवुम्
इन्नु यिर्त्तुणै यिवनॆन निनैक्किन्र् विरामन्
तन्नु यिर्क्कॆन्गै पुल्लिदु तर्पयन् दॆडुत्त
उन्नु यिर्क्कॆन नल्लन्मन् नुयिर्क्कॆला मुरवोय् 38

उरवोय्–शक्तिमन्त; पॊन् उयिर्त्त–सुन्दरता की जननी; पू मटन्तैयुम्–कमला श्रीदेवी; पुवि ॲन्नुम् तिरुवुम्–और भूदेवी; इवन् इन् उयिर् तुणै–ये हमारे प्यारे प्राणाधार हैं; ॲन निनैक्किन्र्–ऐसा (जिनको) मानती हैं; इरामन्–वे श्रीराम; तन् उयिर्क्कु–मेरे प्राणों का; (नल्लन्–हितकारी); ॲन्कै पुल्लितु–कहना छोटी बात है; (अवन्) तन् पयन्तु ॲटुत्त–उनको जिन्होंने जन्म दिया; उन् उयिर्क्कु ॲन–उन आपके प्राणों के लिए, जैसे; मन् उयिर्क्कु ॲल्लाम्–अक्षय सभी जीवों के लिए; नल्लन्–हित् हैं। ३८

शक्तिमान ! शोभाशालिनी श्रीदेवी और भूदेवी दोनो इनको अपने-अपने प्राण-प्यारे नाथ समझती हैं। ऐसे श्रीराम को आप अपने प्राणों का

हितकारी समझते हैं, यह छोटा विचार है। उनके जन्मदाता आपके लिए जैसे वे हितरक्षक हैं उतने ही सभी जीवों के धाता हैं। ३८

वार मॅन्निनिप् पहर्वदु वैहलु मनैयान्
पेरि नाल्वरु मिडरॅलाम् बॅयर्हिन्ऱ पयत्ताल्
वीर निन्कुल मैन्दनै वेदियर् मुदलोर्
यारुन् दाज्जॅय्द नल्लऱप् पयनॅन विरुप्पार् 39

वीर–प्रतापी; वैकलुम्–रोज; अनैयान्–उनके; पेरिनाल्–नामस्मरण से; वरुम् इटर् ॲलाम्–आनेवाले संकट सब; पॅयर्किन्ऱ पयत्ताल्–हट जाते हैं, इस फल से; निन् कुलम् मैन्तनै–आपके उत्तम पुत्र को; वेतियर् मुतलोर् यारुम्–वेदज्ञ ब्राह्मण आदि सब; ताम् चॅय्त नल् अऱम् पयन् ॲन–हमारे किये श्रेष्ठ धर्मों का फल समझते; इरुप्पार्–रहते हैं; वारम्–प्रजाजनों का; ॲन् इति पकर्वतु–आगे क्या कहा जाय। ३९

हे वीर! आनेवाले सभी संकट श्रीराम के दैनिक नामस्मरण से दूर हो जाते हैं। इस कारण वेदज्ञ विप्र सब श्रीराम को अपने सुकृतों का सुफल जानकर उनसे भक्ति करते रहेंगे। तो मामूली प्रजाजनों की वात कहने की आवश्यकता है क्या? वे भी उन पर अगाध भक्ति रखेंगे। ३९

मण्णि नुन्नल्लण् मलर्महळ् कलैमहळ् कलैयूर्
पॅण्णि नुन्नल्लळ् पॅरुम्बुहळ्च् चनहियो नल्लळ्
कण्णि नुन्नल्लन् कऱ्ऱवर् कऱ्ऱिला दवरुम्
उण्णु नीरिनु मुयिरिनु मवनैये युहप्पार् 40

मण्णिलुम् नल्लळ्–(क्षमा में) पृथ्वी से अधिक भली; मलर् मकळ्–कमला; कलैमकळ्–सरस्वती; कलै ऊर पॅण्णितुम्–हरिणवाहना (सती) देवी से; नल्लळ्–(क्रमशः सौंदर्य, बुद्धिशक्ति और चारित्र्य में) अधिक श्रेष्ठ; चनकियाम् नल्लळ्–जानकी जो उत्तम है, उनकी; कण्णितुम् नल्लन्–आँखें भी श्रेष्ठ हैं; कऱ्ऱवर् कऱ्ऱिलातवरुम्–शिक्षित और अशिक्षित; उण्णुम नीरितुम्–पेय जल से भी; उयिरितुम्–अपनी जान से भी; अवनैये उकप्पर्–उनको चाहते हैं। ४०

सीताजी क्षमा में पृथ्वी से, सौन्दर्य में कमला से, बुद्धि-शक्ति में सरस्वती से और सतीत्व में स्वयं सतीदेवी से बढ़कर भली हैं। उनकी भी आँखों में श्रीराम श्रेष्ठ हैं। शिक्षित और अशिक्षित सभी लोग उन्हें अपने पेय जल से भी अधिक, अपने प्राणों से भी अधिक मानकर आनन्द अनुभव करेंगे। ४०

मनिदर् वानवर् मऱ्ऱुळो रऱ्ऱङ्गात् तळिप्पार्
इनिय मन्नुयिर्क् किरामनिऱ् चिऱन्दव रिल्लै
अनैय नादलि नरशनिऱ् कुरुपॊरु ळऱियिन्
पुनिद मादव मल्लदॊन् ऱिल्लॅनप् पुहन्ऱान् 41

अरच–राजन; मनितर्–मनुष्य; वानवर्–देव; मर्रु उळ्ळोर–अन्य सबों के; इनिय मन् उयिर्क्कु–प्रिय और शाश्वत जीव (आत्मा) को; अर्रम् कात्तु हानियों से बचाकर; अळिप्पार्–सुरक्षित करनेवाले; इरामनिन्–श्रीराम से बढ़कर; चिरन्तवर् इल्लै–श्रेष्ठ (कोई) नहीं है; अनैयन् आतलिन्–वैसे हैं, इसलिए; निन्कु उरु पॉरुळ् अरियिन्–आपका हित सोचें तो; पुनितम् मातवम् अल्लतु–पवित्र तप का आचरण छोड़कर; ऑन्रु इल् ॲन–दूसरा कोई नहीं है, यह; पुकन्रान्–कहा। ४१

राजन् ! मानव हों, सुर हों या अन्य; सभी प्राणियों को हानि से बचाकर अपनी कृपा का पात्र बनाकर पालन करनेवाले, श्रीराम से बढ़कर कोई नहीं मिल सकते। चूँकि वे ऐसे हैं, आपको अपने हित में पवित्र तपस्या करने जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा कर्तव्य नहीं है। —महर्षि वसिष्ठजी ने यों कहा। ४१

❀ मर्र	वन्शॉन्न	वाशहङ्	गेट्टलु	महनैप्
पॅर्र	वन्रिनुम्	बिज्जहन्	पिडित्तवप्	पॅरुविल्
इर्र	वन्रिनु	मॅरिमळु	वाळव	निळुक्कम्
उर्र	वन्रिनुम्	पॅरियदो	रुवहैय	नानान् 42

अवन् चॉन्न वाचकम् केट्टलुम्–उनके वचन सुनते ही; मकनै पॅर्र अन्रिनुम्–उनके जन्म के दिन से; पिञ्जकन् पिटित्त–शिवगृहीत; अ पॅरु विल्–उस बड़े चाप के; इर्र अन्रिनुम्–भंजन के दिन से; ॲरि–फेंके जानेवाले; मळु वाळवन्–परशुशस्त्रधारी परशुराम; इळुक्कम् उर्र अन्रिनुम्–(जब) परास्त हुए उस दिन से भी; पॅरियतु ओर्–अधिक बड़ा; उवकैयन् आनान्–आनन्दित हुए। ४२

दशरथ ने उनके कथन सुने तो उन्हें अपार हर्ष हुआ। पुत्र-जन्म के दिन, शिवचाप-भंजन के दिन, और परशुरामगर्व-भंग के दिन, जो आनन्द उन्हें हुआ था उससे कई गुना अधिक आनन्द अब हुआ। ४२

अनय	दाहिय	वुवहयन्	कण्गणी	ररुम्ब
मुनिवन्	मामलर्प्	पादङ्गण्	मुरैमैयि	निरैञ्जि
इनिय	शॉल्लिनै	यॅम्बॅरु	मानरुळ्	वळियिन्
तनिय	नानिलन्	दाङ्गिय	दवर्कदु	तहादो 43

अनैयतु आकिय–उस प्रकार के; उवकैयन्–आनन्दयुक्त दशरथ; कण्कळ् नीर् अरुम्प–आँखों में (अश्रु-) जल के ढलकते; मुनिवन्–मुनिवर के; मा–उत्तम; मलर् पातङ्कळ्–कमल चरणों को; मुरैमैयिन् इरैञ्चि–उचित रीति से वन्दना करके; ॲम् पॅरुमान्–मेरे नाथ; इनिय चॉल्लिनै–हितवचन कहे; वळियिन्–(आप से निर्दिष्ट) मार्ग पर; तनियन्–(चलकर) अकिंचन मैंने; नानिलम् ताङ्कियतु–भूमि का भरण किया; अरुळ् वळियिन्–आपके कृपा से निर्दिष्ट मार्ग से ही; अतु–वह (मार्गदर्शन की कृपा); अवर्कु–श्रीराम को भी; तकातो–प्राप्य नहीं होगा क्या। ४३

ऐसे आनन्द से भरकर राजा ने अश्रुमय आँखों के साथ-साथ मुनिवर के कमल-चरणों की यथाविधि वन्दना की। "मेरे नाथ! आपने बहुत ही हित-वचन कहे। आपके निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर ही, अकिंचन मैंने भू-भार वहन किया। अब वही आपकी मार्गदर्शन की कृपा श्रीराम को भी प्राप्य नहीं होगी क्या? अवश्य होगी। वह भी उसके योग्य रहेगा। ४३

अॅन्दै नीयुवन् दिदञ्जॉल वॅङ्गुलत् तरशर्
अन्द मिल्लदोर् पॅरुम्बुह ळवनियि निरुत्ति
मुन्दु वेळ्वियु मुडित्तुत्तम् मिरुविनै मुडित्तार्
वन्द दव्वरु ळॅनक्कुमॅन् ऱुरैशॅय्दु महिळ्न्दान् 44

अॅन्तै–पितृतुल्य; अॅम् कुलत्तु अरचर्–मेरे कुल के राजाओं ने; नी उवन्तु इतम् चॉल–आपके सन्तुष्ट होकर हितोपदेश करते; अवत्तियिल्–अवनि में; अन्तम् इल्लतु–सीमाहीन; ओर् पॅरु पुकळ् निऱुत्ति–एक बड़ा यश स्थापित करके; मुन्तु वेळ्वियुम् मुटित्तु–पहली श्रेणी के अनेक यज्ञ पूरा करके; तम् इरु वित्तै मुटित्तार्–अपने दोनो कर्म-(वासना-)क्षय कर लिया; अ अरुळ्–वह कृपा; अॅतक्कुम् वन्ततु–मुझे भी मिली; अॅन्ऱु उरै चॅय्तु–ऐसा कथन करके; मकिळ्न्तान्–आनन्दमग्न हुआ। ४४

मेरे पितृतुल्य! मेरे पूर्वजों ने आपके तत्व-हितोपदेश के कारण भूमि पर बड़ा यश अर्जित कर स्थायी बनाया; अनेक श्रेष्ठ यज्ञ सम्पन्न किये और अपने पाप-पुण्य दोनो कर्मों का क्षय करा लिया (मुक्ति के योग्य बने)। वह कृपा मुझे भी प्राप्त हुई।" —यह दशरथ ने सानन्द कहा। ४४

❀ पळुदिन् मादवन् पित्तॉन्ऱुम् पणित्तिल निरुन्दान्
मुळुदु मॅण्णुरु मन्दिरक् किळवर्तम् मुहत्ताल्
अॅळुदि नीट्टिय विङ्गिद मिऱैमहऱ् केऱत्
तॊळुद कैयितन् सुमन्दिरन् मुन्निन्ऱु शॊल्लुम् 45

पळुतु इल् मातवन्–निर्मल और महान तपस्वी; पिन् ओन्ऱुम् पणित्तिलन्–फिर कुछ नहीं बोले; इरुन्तान्–चुप रह गये; मुळुतुम् अॅण्णुरु–सभी ओर से (बात का) विचार करनेवाले; मन्तिरम् किळवर्–परामर्शदाता मन्त्रियों के; तम् मुकत्ताल् अॅळुति नीट्टिय–अपने-अपने मुखों (भावप्रदर्शन) से लिखकर बढ़ाये हुए (प्रकट किये गये); इङ्कितम्–इंगित को; इऱै मकऱ्कु–राजा को; एऱ–समझाते हुए; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; मुन् निन्ऱु–सामने खड़े होकर; तॊळुत कैयितन्–हाथ जोड़कर; चॉल्लुम्–कहने लगे। ४५

पवित्र और महान तपस्वी वसिष्ठजी ने आगे कुछ नहीं कहा। वे मौन रह गये। तब मन्त्रिमण्डल के सभी सदस्यों की सम्मिलित राय को,

उनके मुखों पर अंकित भावों के प्रतिफलन से समझकर सुमंत्र नाम के मन्त्री हाथ जोड़कर खड़े हो गये और दशरथ के सामने निम्नलिखित वचन कहने लगे। ४५

※ उऱत्त हुम्मर शिरामऱ्कॅऩ् ऱुवक्किऩ्ऱ मऩत्तैत्
तुऱत्ति नीयॅऩुञ् जॊऱ्चुडु मुऩ्गुलत् तॊल्लोर्
मऱत्तल् शॅय्हलात् तरुमत्तै मऱप्पदुम् वऴक्कऩ्
ऱऱत्ति ऩूङ्गिऩिक् कॊडिदॆऩ लावदॊऩ् ऱियादे 46

अरचु इरामऱ्कु उऱ तकुम्–राज्य श्रीराम का होना उपयुक्त है; ॲऩ्ऱु–ऐसा; उवक्किऩ्ऱ मऩत्तै–मोद करनेवाले मन को; नी तुऱत्ति–आप वैराग्य ले रहे हैं; ॲऩुम् चॊल्–यह कथन; चुटुम्–जलाता है (क्लेश देता है); उऩ् कुलम् तॊल्लोर्–आपके कुल के पूर्वजों ने; मऱत्तल् चॅय्कला–(जिसको) नहीं भुलाया; तरुमत्तै–उस धर्म को; मऱप्पतुम्–(आपका) भूल (छोड़) जाना भी; वऴक्कु अऩ्ऱु–योग्य नहीं है; इऩि–अब; अऱत्तिऩ् ऊङ्कु–धर्म से बढ़कर; कॊटितु ॲऩल् आवतु–क्रूर (दुख देनेवाला) कहलाने योग्य; ऒऩ्ऱु यातु–एक क्या है। ४६

श्रीराम को राज मिलेगा और वे उसके परम योग्य हैं —इस विचार से हुलसित-मन आप संन्यास ले लेंगे —यह बात सुनकर मन विदग्ध हो जाता है। आपके पूर्वजों ने ज्येष्ठ पुत्र को राज देकर स्वयं तपस्या करने की परिपाटी चलाई है और वह अचूक चलती है। उसको भुलाना भी सही नहीं होगा। धर्म भी कितना निष्ठुर है! उससे बढ़कर निर्मम कौन सी वस्तु है? । ४६

पुरैशै माल्करि निरुबरुम् बुरत्तुऱै वोरुम्
उरैशॅय मऩ्दिरक् किऴवरु मुऩिवरु मुवप्प
मुरैश मार्प्पनिऩ् मुदऩ्मणिप् पुदल्वऩै मुऱैयाल्
अरैश ताक्किय पिऩ्बुऩक् कडुत्तदु पुरिवाय् 47

पुरैचै माल् करि–रस्सी सहित बड़े गजों के; निरुपरुम्–स्वामी राजा लोग और; पुरत्तु उऱैवोरुम्–नगरवासी; उरै चॅय् मन्तिरम् किऴवरुम्–परामर्श देनेवाले मन्त्रीगण; मुनिवरुम्–मुनि; उवप्प–इनको आनन्द देते हुए; मुरैचम् आर्प्प–भेरियों के नर्दन के साथ; निऩ्–आपके; मुतल् मणि पुतल्वऩै–ज्येष्ठ नीलोमणि-सम पुत्र को; मुऱैयाल्–वेदोक्त रीति से; अरचऩ् आक्किय पिऩ्पु–राजा बनाने के बाद; अटुत्ततु–अपना उपयुक्त (तप का) कार्य; पुरिवाय्–कीजिए। ४७

आप कृपया एक काम कीजिये। पहले आप वेदोक्त रीति से अपने ज्येष्ठ पुत्र, नीलमणिवर्ण श्रीराम को राजा बना दीजिए ताकि गजपति राजा लोग, नगरवासी, मन्त्रीगण, मुनि, सबको सन्तोष हो जाय। फिर आप तपस्या करने जाइये। ४७

❀ ऍन्ऱ् वाशहज् जुमन्दिर नियम्बलु मिऱैवन्
नन्ऱु शॉल्लिनै नम्बियै नळिमुडि शूट्टि
निन्ऱु निन्ऱदु शय्वदु विरैविनि नीये
शॅन्ऱु कॉण्डणै तिरुमहळ् कॉळुननै ऍन्ऱान् 48

ऍन्ऱ् वाचकम्–ऐसे वाक्य; चुमन्तिरन् इयम्पलुम्–सुमन्त्र के कहने पर; इऱैवन्–राजा ने; नन्ऱु चॉल्लिनै–भला कहा; नम्पियै–नायक को; नळि मुटि चूट्टि निन्ऱु–गौरवपूर्ण मुकुट पहना चुककर; निन्ऱतु चॅय्वतु–बचा रहा काम करना; नीये–आप ही; विरैविनिल् चॅन्ऱु–सत्वर जाकर; तिरुमकळ् कॉळुननै–श्रीपति को; कॉण्टु अणै–ले आइये; ऍन्ऱान्–कहा। ४८

सुमंत्र के ये वचन सुनकर राजा ने उनसे कहा कि आपने ठीक कहा। श्रीराम को श्रेष्ठ गौरव बढ़ानेवाले मुकुट पहनाने के बाद ही दूसरा कार्य करूँगा। आप ही सत्वर जाकर श्रीपति को ले आयें। ४८

❀ अलङ्गन् मन्ननै यडित्तॊळु दवन्मन मनैयान्
विलङ्गन् माळिहै वीदियिन् विरैवॊडु शॆन्ऱान्
तलङ्गळ् यावयुम् पॆऱ्ऱनन् ऱानॆनत् तळिर्प्पान्
पॊलङ्गॊ डेरॊडु मिराहवन् तिरुमनै पुक्कान् 49

अवन् मनम् अनैयान्–उनके ही मन के समान मन वाले; अलङ्कल् मन्ननै–मालाभूषित राजा के; अटि तॊळुतु–चरणों पर प्रणाम करके; तलङ्कळ् यावैयुम्–भूतल सब; तान् पॆऱ्ऱनन् ऍन–खुद प्राप्त कर लिया जैसे; तळिर्प्पान्–हुलसकर; पॊलम् कॊळ् तेरॊटु–स्वर्णनिर्मित रथ के साथ; विलङ्कल् माळिकै–पर्वत-सम सौधों वाले; वीतियिन्–मार्गों में; विरैवॊटु–सत्वर; चॆन्ऱान्–गये; इराकवन् तिरुमनै–श्रीराघव के महल में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। ४९

राजा के मन के अनुकूल ही सुमंत्र का मन भी सोचने का आदी था। उन्होंने मालाधारी राजा दशरथ के चरणों पर प्रणमन करके श्रीराम के महल की ओर प्रस्थान किया। उनके मन में ऐसा आनन्द उमड़ा मानो उन्हीं को सारी भूमि पर अधिकार मिल गया हो। वे रथ पर गये और रथ उस राजमार्ग पर गया जिसके दोनो किनारों पर पर्वत के समान उन्नत प्रासाद बने थे। स्वर्णमय रथ श्रीराम के महल को पहुँचा और सुमंत्र श्रीराम के महल के अन्दर प्रविष्ट हुए। ४९

❀ पॆण्णि नॆन्नमु दन्नव डन्नॊडुम् बिरिया
वण्ण वञ्जिलैक् कुरिशिलु मरुङ्गिनि दिरुप्प
अण्ण लाण्डिरुन् दानॆळु हरुनॆऱ् वॆनत्तन्
कण्णु मुळ्ळमुम् वण्डॆनक् कळिप्पुऱक् कण्डान् 50

अण्णल्–पुरुष श्रेष्ठ; पिरिया–अपने से कभी अलग न होनेवाले; वण्णम् वॆम् चिलै कुरिचिलुम्–सुन्दर और भयंकर धनुष के लघराज (लक्ष्मण) के; मरुङ्कु इनितु

इरुप्प–पार्श्व में सुख से रहते; पॅण्णित्–स्त्रियों में; इऩ् अमुतु अऩ्तवळ् तऩ्ऩॊटुम्–प्रिय सुधासम देवी (जानकी) के साथ; आण्टु–वहाँ; इरुन्ताऩ्–विराजे रहे; अऴकु–उनके सौंदर्य को; अरु नऱवु अॅऩ्–अपूर्व शहद के समान; वण्टु अॅऩ्–भ्रमर जैसे; तऩ् कण्णुम् उळ्ळमुम्–आँखें और मन; कळिप्पु उऱ–आनन्द से पूर्ण हो जायँ, ऐसा; कण्टाऩ्–दर्शन किया। ५०

वहाँ श्रीराम अपनी पत्नी सीताजी के साथ, जो स्त्रियों में अमृत के समान श्रेष्ठ थीं, विराजमान थे। उनके पास लघुराज लक्ष्मण भी, जो उनसे कभी अलग नहीं जाते थे, विराजमान थे। श्रीराम का सौन्दर्य सुमंत्र के नेत्रों और मन के लिए श्रेष्ठ शहद के समान साबित हुआ। सुमंत्र ने मन में उल्लास के साथ उनको देखा। ५०

❀ कण्डु कैतॊऴु दैयविक् कडलिडैक् किऴवोऩ्
उण्डोर् कारियम् वरुहॆऩ वुरैत्तऩ ॆऩलुम्
पुण्ड रीकक्कट् पुरवलऩ् पॊरुक्कॆऩ वॆऴुन्दोर्
कॊण्डल् पोऱ्चॆऩ्ऱु कॊडिनॆडुन् देर्मिशैक् कॊण्डाऩ् 51

कण्टु–देखकर; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; ऐय–मेरे नाथ; इ कटल् इटै–इस समुद्र-मध्य; किऴवोऩ्–(भूमि के) पति ने; ओर् कारियम् उण्टु–एक कार्य है; वरुक अॅऩ–आओ, यह; उरैत्तऩऩ्–कहा; अॅऩलुम्–कहते ही; पुण्टरीकम् कण् पुरवलऩ्–पुण्डरीकाक्ष प्रभु; पॊरुक्कॆऩ–झट; अॅऴुन्तु–उठकर; ओर् कॊण्टल् पोल् चॆऩ्ऱु–एक मेघ समान चलकर; कॊटि नॆटु तेर् मिचै–ध्वजायुक्त व उन्नत रथ पर; कॊण्टाऩ्–सवार हुए। ५१

सुमंत्र ने श्रीराम के दर्शन करके हाथ जोड़कर नमस्कार किया। बाद सन्देश सुनाया कि समुद्रमध्यस्थ पृथ्वी के पति, आपके पिता ने यह कहला भेजा है कि कोई काम है, आओ। यह कहते ही, पुण्डरीकाक्ष, प्रभु श्रीराम तुरत उठे। मेघ जैसे चलकर ध्वजायुक्त ऊँचे रथ पर आरोहण किया। ५१

❀ मुऱैयिऩ् मॊय्म्मुहि लॆऩ्ऩमुर शार्त्तिड मडवार्
इऱैह ळऩ्ऱशङ् गार्त्तिड विमैयव रॆङ्गळ्
कुऱैमु डिन्ददॆऩ् ऱार्त्तिडक् कुञ्जियैच् चूऴ्न्त
नऱैय लङ्गल्वण् डार्त्तिडत् तेर्मिशै नडन्दाऩ् 52

मुऱैयिऩ्–क्रमेण; मॊय् मुकिल् अॅऩ्–लसे मेघों के समान; मुरचु–ढोल; आर्त्तिट–बज उठे, तब; मटवार्–स्त्रियों के; इऱै कऴऩ्ऱ–हाथों से खिसके; चङ्कु–कंकण; आर्त्तिट–शब्द कर उठे; इमैयवर्–देवता लोग; अॅङ्कळ् कुऱै–हमारा संकट; मुटिन्ततु अॅऩ्ऱु–मिटा, यह कहकर; आर्त्तिट–हल्ला मचा उठे; कुञ्चियै चूऴ्न्त–केश को आवृत्त करनेवाली; नऱै अलङ्कल्–शहद ढलकनेवाली मालाओं पर के; वण्टु–भ्रमर; आर्त्तिट–गुंजार उठे, तब; तेर् मिचै नटन्ताऩ्–रथ पर गये। ५२

जब वे वीथी पर चलने लगे तब मर्यादा के अनुसार क्रम से ढोल बज उठे। स्त्रियों के हाथों से खिसककर गिरनेवाले कंकण स्वर कर उठे। देवता लोग, हमारा संकट मिट गया, यह कहते हुए शोर मचाने लगे। श्रीराम के केश पर माला का वलय था; उससे शहद झरता था। उस पर मँडरानेवाले भ्रमरों ने गुंजार किया। इस रीति से श्रीराम रथ पर बढ़ते गये। ५२

पणैनि रन्दऩ पाट्टॉलि निरन्दऩ वऩङ्गऩ्
कणैनि रन्दऩ नाणॊलि करङ्गिऩ निरैप्पेर्
अणैनि रन्दऩ वऱिवॆंऩुम् पॆरुपुऩ लऩैयार्
पिणैनि रन्दॆऩप् परन्दऩर् नाणमुम् बिरिन्दार् 53

पणै–ढोल (-नाद); निरन्तऩ–(फैल) भर गये; पाट्टु ऑलि–संगीत-नाद; निरन्तऩ–फैल गया; अऩङ्कऩ् कणै–अनंग-शर; निरन्तऩ–व्याप गये; नाण् ऑलि–(अनंगचाप की) प्रत्यंचा का नाद; करङ्किऩ–सुनाई दिया; अऱिवु ऍंऩुम्–बोध रूपी; पॆरु पुऩल्–विपुल जलराशि; निऱै–संयम रूपी; पेर् अणै–बड़े बाँध को; निरन्तऩ–लाँघकर बह गई; अऩैयार्–वे; नाणमुम् पिरिन्तार्–लाज खोकर; पिणै निरन्त ऍंऩ–हरिणियाँ जमा हुईं, जैसे; परन्तऩर्–आ जमा हुईं। ५३

श्रीराम के चलते समय राजमार्ग पर ढोल-नाद फैला; संगीत का नाद फैला; अनंग शर (अंगनाओं के मनों में) भरे; अनंग के चाप की प्रत्यंचा (भ्रमरों) का टंकार (गुंजार) भरा। स्त्रियों को श्रीराम का बोध रहा और तदुत्पन्न प्रेमाधिक्य की जलराशि संयम रूपी बाँध को लाँघकर बहने लग गई। स्त्रियों का संयम छूट गया और उनकी लाज भी तिरोहित हो गई। वे धैर्य और लाज खोकर भाग आईं और वीथी में हरिणियों के समान जुट गईं। ५३

❀ नीळॆ ळुत्तॊडर् वायिऩुङ् गुळैयॊडु नॆहिऴ्न्द
आळ हत्तिऩो डरमियत् तलत्तिऩु मलर्न्द
वाळ रत्तवेल् वण्डॊडु कॆण्डैहण् मयङ्गच्
चाळ रत्तिऩुम् बूत्तऩ तामरै मलर्हळ् 54

नीळ् ऍंळु तॊटर् वायिऩुम्–दीर्घ स्तम्भों वाले (प्रासादों के) द्वारों पर; अरमियम् तलत्तिऩुम्–चन्द्रशालाओं पर; कुळैयॊटुम्–कर्णकुण्डलों के साथ, और; नॆकिऴ्न्त–खुले; अळकत्तिऩोटुम्–केश के साथ; तामरै मलर्कळ्–(मुख-) कमल; अलर्न्त–खिले; चाळरत्तिऩुम्–गवाक्षों में भी; वाळ् अरत्तम्वेल्–तलवारों और रक्तरंजित भालों और; वण्टॊटु कॆण्टैकळ्–भ्रमरों के साथ कॆण्टै नाम के मीन; मयङ्क–मिश्रित; पूत्तऩ–खिले। ५४

उन प्रासादों के द्वारों पर, जिनके खंभे अत्युन्नत थे, और उन प्रासादों की चन्द्रशालाओं में कमल विकसित दिखे। वे कमल कुंडलों और बिखरे

केश के साथ खिले थे। वैसे ही गवाक्षों में भी कमल खिले थे और वे तलवारों, रक्तरंजित भालों, भ्रमरों और कॅण्टै नाम की मछलियों से युक्त रहे। वे विचित्र कमल स्त्रियों के मुख थे। तलवारें, भाले, भ्रमर और मीन उनके नेत्र थे। ५४

मण्ड लन्दरु मदिहॆ़ळु मळैमुहि लनैय
अण्डर् नायहत् वरैपुरै यहलत्तु ळलङ्गल्
तॊण्डै वाय्च्चियर् निरैयॊडु नाणॊडुन् दॊडर्न्द
कॅण्डै युम्मुळ किळैपयिल् वण्टॊडु किडन्द 55

मण्तलम् तरु–भूतलदत्त; मति कॊ़ळु–चन्द्रयुक्त; मळैमुकिल् अनैय–काले मेघ के समान; अण्टर् नायकन्–देवों के नायक, श्रीराम के; वरै पुरै अकलत्तुळ्–पर्वत-सम वक्ष पर शोभित; अलङ्कल्–मालाएँ; तॊण्टै वाय्च्चियर्–बिंब(-फल) सदृश अधरों वाली प्रमदाओं के; निरैयॊटुम्–संयम और; नाणॊटुम्–लाज के साथ; तॊटर्न्त–अनुगमन करते हुए; कॅण्टैयुम् उळ–कॅण्टै नाम के मीन भी हैं; किळै पयिल् वण्टॊटु–'कैकिळै' नाम की तान अलापनेवाले भ्रमरों के साथ; किटन्त–पड़ी रहीं। ५५

श्रीरामचन्द्र के वक्ष पर माला शोभित थी। उस पर स्त्रियों की आँखें लगी हुई थीं। कवि का वर्णन देखिये। भूतल पर अपूर्व रीति से उत्पन्न, चन्द्र सहित मेघ के समान थे श्रीराम। उनका श्रीवक्ष पर्वत के समान था। उनके वक्ष की माला पर स्त्रियों के संयम और लाज का पीछा करते आनेवाली कॅण्टै नाम की मछलियाँ भी पाई जाती थीं और 'कैकिळै' नाम का राग अलापनेवाले भ्रमर भी थे। (भ्रमरों को अभिधा अर्थ में भ्रमर भी ले सकते हैं या लक्षणा द्वारा प्राप्त आँख के अर्थ में भी ले सकते हैं।)। ५५

शरिन्द पूवुळ मळैयॊडु कलैयुऱत् ताळ्प्
परिन्द पूवुळ पऩिक्कडै मुत्तिनम् बडैप्प
ऎरिन्द पूवुळ विळमुलै यिळैयिडै नुळैय
विरिन्द पूवुळ वन्दर वाऩिऩ्ऱु वीऴ 56

मळैयॊटु–मेघों (रूपी केशों) और; कलै–पूर्णचन्द्र (मुखों) के; उऱ ताळ–(लाज से) खूब झुकने से; चरिन्त पू–(केशों से) छूटकर गिरे पुष्प; उळ–रहते हैं; पऩि–शीतल; कटै–(स्त्रियों के) अपांगों के; मुत्तु इऩम्–मोती (अश्रु) समूह को; पटैप्प–सृजित करते हुए; परिन्त–उनसे त्यक्त; पू उळ–पुष्प भी हैं; इळ मुलै–युवतियों के स्तनों के; इळै इटै नुळैय–आभरणों के मध्य घुस जाने से; ऎरिन्त–(स्तनों के ताप से) जलकर गिरे हुए; पू उळ–पुष्प हैं; अन्तरम् वाऩ् निऩ्ऱु–आकाश मध्य से; वीऴ–गिरने पर; विरिन्त पू–विकसित पुष्प; उळ–रहते हैं (वीथी पर ये सब बिछे रहते हैं)। ५६

उस मार्ग पर फूल बिछ गये। वे कैसे फूल थे और कहाँ से आ गिरे ? प्रासादों के ऊपर स्थित स्त्रियों ने लाज से अपने मुख झुकाये। तब उनके मेघसम केश और चन्द्रसम मुख नीचे झुके। उस समय केशों की मालाओं से पुष्प छूटकर गिर गये। उन्होंने अपने अपांगों से मोतीसम अश्रुकण बरसाते हुए (प्रेमाधिक्य के कारण) स्वयं फूलों को उतार फेंका। वे फूल भी बिछे रहे। उनके युवास्तन तप्त रहे और जब वे मालाओं के मध्य प्रविष्ट हुए तब स्तनताप से माला के फूल झुलस कर गिर गये। देवलोक के, जो आकाश-मध्य है, देवता लोगों ने फूल बरसाये। वे मार्ग पर गिरकर खूब खिले हुए थे। इन सब तरह के फूल वहाँ पड़े रहे। (यह अशुभशकुन है।)। ५६

वळ्ळ्	उैहळ्ळित्	ऑळिर्वन्न	वाण्मिळिर्	मदियम्
तळ्ळु	उच्चुमन्	दॆळ्ळुतरु	तमनियक्	कॊम्बिऱ्
पुळ्ळि	नुण्पनि	पॊडिप्पन्न	पॊऩ्निनिऱ्	पॊदिन्द
ॲळ्ळु	डैप्पॊरि	विरविन्न	वुळशिल	विळनीर् 57

वळ् उऱै कळ्ळित्तु–(पलकें रूपी) मोटी म्यानें निकालकर; ऑळिर्वन वाळ्–चमकती (आँख रूपी) तलवारों के साथ; मिळिर् मतियम्–प्रकाश देनेवाले चाँद को; तळ्ळुऱ चुमन्तु–लड़खड़ाते हुए ढोकर; ॲळ्ळुतरु तमनियम् कॊम्पिल्–उठनेवाली (प्रमदाएँ रूपी) स्वर्णलताओं पर; चिल इळनीर्–कुछ (जोड़ों के) डाभों पर; नुण् पनि–हल्के और शीतल; पुळ्ळि पॊटिप्पन्न–(पसीने के) कण बिन्दियों के समान लगते हैं; पॊऩ्निनिल् पॊतिन्त–स्वर्ण (पीले) रंग की चित्तियों से भरे हैं; ॲळ् पॊरि विरविन्न उळ–तिल भी बीच-बीच में दिखाई देते हैं। ५७

श्रीराम को देखकर जो स्त्रियाँ लड़खड़ाती हुई आई उनके चन्द्रमुख पर म्यान-विमुक्त तलवारें (आँखें) चमक रही थीं। वे स्वर्ण-लताओं के समान थीं जिन पर दो-दो कच्चे नारिकेल पाये जाते थे। उन स्तनों पर ओसकण के समान स्वेदकण झलक आये थे और पीले रंग के धब्बे काले रंग के तिलों के साथ उनकी शोभा बढ़ा रहे थे। (पीला रंग या स्वर्ण-वर्ण चमड़े पर जो धब्बों के रूप में पाया जाता है वह जवानी की शोभा समझा जाता है। वह कभी विरह से भी उत्पन्न होता है जो पीले से अधिक सफेद रहता है। तिल भी सुन्दरता के चिह्न माने जाते हैं।)। ५७

❀ आय	दव्वळि	निहळ्ळ्दर	वाडव	रॆल्लाम्
तायै	मुन्निय	कन्ऱॆन्न	निन्ऱुयिर्	तळिर्प्पत्
तूय	तम्बियुन्	दानुमच्	चुमन्दिरन्	उरॆमेल्
पोय	हङ्गुळिर्	पुरवल	निरुन्दुळिप्	पुक्कान् 58

आयतु–(जो उन नारियों पर) बीता; अव्वळि–ऐसा; निकळ्ळ्तर–होता रहा, तब; आटवर् ॲल्लाम्–पुरुष सब; तायै मुन्निय कन्ऱ् अन्न–माता गाय का

स्मरण करनेवाले बछड़ों के समान; निन्रु उयिर् तळिर्प्प–खड़े रहकर प्राण-पुलकित होते हैं, ऐसी रीति से; तूय तम्पियुम् तानुम्–पवित्र भाई और स्वयं; अ चुमन्तिरन् तेर् मेल् पोय्–उस सुमन्त्र के रथ पर जाकर; अकम् कुळिर्–(शीतल-) प्रफुल्लमन; पुरवलन्–धाता (दशरथ); इरुन्त उळि–(जहाँ) रहे (उस) स्थान में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। ५८

स्त्रियों की हालत यह रही। उधर पुरुष लोग भी माता गाय को देखकर हुलसित होनेवाले बछड़ों के समान लहलहाये खड़े रहे। तब श्रीराम अपने लघुभाई, पवित्रमन लक्ष्मण के साथ सुमंत्र के रथ पर जाकर उस मण्डप में पहुँचे जहाँ दशरथ रहे। दशरथ का मन बहुत स्नेहार्द्र था। ५८

❀ माद वन्रनै वरन्मुरै वणङ्गिवा ळुळवन्
पाद पङ्गयम् पणिन्दनन् पणिदलु मनैयान्
कादल् पॊङ्गिडक् कण्बनि युहुत्तिडक् कनिवाय्च्
चीदै कॊण्गनैत् तिरुवुरै मार्बहत्ञ् जेर्त्तान् 59

वरल् मुरै–परम्परागत रीति से; मातवन् तनै वणङ्कि–महान तपस्वी को नमस्कार करके; वाळ् उळवन्–तलवार 'जोता'; पातपङ्कयम्–पादपंकजों पर; पणिन्तनन्–विनत हुए; पणितलुम्–नमस्कार करने पर; अनैयान्–उन्होंने; कातल् पॊङ्किट–वात्सल्य के उमड़ते; कण् पनि उकुत्तिट–आँखों से अश्रु बहाते हुए; कनिवाय् चीतै–(बिंब-) फलाधरा सीता के; कॊण्कनै–पति (श्रीराम) को; तिरु उरै मार्पु अकम्–श्रीमन्त अपने वक्ष से; चेर्त्तान्–लगा लिया। ५९

वहाँ पहुँचकर श्रीराम ने परंपरागत क्रम के अनुसार महान तपस्वी वसिष्ठजी को नमस्कार किया। फिर वे तलवार 'जोता' (तलवार के धनी) दशरथ के चरण-कमलों पर विनत हुए। तब दशरथ ने उमड़ते वात्सल्य के साथ, आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए बिंबफलाधरा श्री सीताजी के भर्त्ता श्रीराम को अपने श्रीविलसित वक्ष से लगा लिया। ५९

❀ नलङ्गॊण् मैन्दनैत् तळुविन नॆन्बदॆन् तळिनीर्
निलङ्ग डाङ्गुरु निलैयिनै निलैयिड निनैन्दान्
विलङ्ग लन्नतिण् डोळैयु मॆय्त्तिरु विरुक्कुम्
अलङ्गन् मार्बयुन् दनदुतोण् मार्बुकॊण् डळन्दान् 60

नलम् कॊळ् मैन्तनै–सभी अच्छाइयों से पूर्ण अपने पुत्र को; तळुवितन् ॲन्पतु–आलिंगन किया कहना; ॲन्–क्या (मतलब) रखता है; नळि नीर् निलङ्कळ्–विशाल जलाशय, सागर से वलयित भूमि को; ताङ्कु उरु–भरण करने की; निलैयिनै–स्थिति को; निलै इट–परखने का; निनैन्तान्–संकल्प करके; विलङ्कल् अन्न–पर्वतसदृश; तिण् तोळैयुम्–बलवान कन्धों; मॆय् तिरु इरुक्कुम्–सच्ची विजयश्री का निलय; अलङ्कल् मार्पैयुम्–मालाभूषित वक्ष को; तनतु–अपने; तोळ मार्पु कॊण्टु–भुजाओं और वक्ष से; अळन्तान्–नापकर देखा। ६०

सारी अच्छाइयाँ जिनके पास थीं उन श्रीराम का दशरथ ने आलिंगन कर लिया —यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता। असल में दशरथ ने उनकी लोक-भरण शक्ति की परीक्षा ली। विशाल सागर-मेखला, भूमि को पालने की शक्ति श्रीराम की भुजाओं और वक्ष में है क्या? इसको आजमाने के लिए दशरथ ने अपनी भुजाओं और वक्ष से श्रीराम के पर्वततुल्य कंधों और सच्ची श्री का वासस्थान— उनके श्रीवक्ष को नापकर देखा। ६०

❀ आण्ड्ड तऩ्मरुङ् गिरीइयुवऩ् दऩ्बुऱ नोक्किप्
पूण्ड पोर्मऴु वुडैयव नॆंडुम्बुहऴ् कुऱुह
नीण्ड तोळिऩाय् निऩ्पयऩ् दॆंडुत्तया ऩिऩ्ऩै
वेण्डि यॆय्दिड विऴैवदोऩ् ऱुळदॆंऩ विळम्बुम् 61

आण्टु–तब; उवऩ्तु–(बहुत) मुदित होकर; तऩ् मरुङ्कु इरीइ–अपने पास बिठाकर; अऩ्पु उऱ नोक्कि–प्रेम के साथ देखकर; पोर् पूण्ट–युद्ध सन्नद्ध; मऴु उटैयवऩ्–परशुधर की; नॆंटु पुकऴ् कुऱुक–दीर्घ कीर्ति को कम करके; नीण्ट तोळिऩाय्–उठे हुए कन्धों वाले; निऩ् पयऩ्तु ऍटुत्त याऩ्–तुमको जन्म देनेवाले मैं; निऩ्ऩै वेण्टि–तुमसे माँगकर; ऍय्तिट विऴैवतु–प्राप्त करने की इच्छा करूँ; ऒऩ्ऱु उळतु–ऐसी एक बात है; ऍऩ–कहकर; विळम्पुम्–(आगे) बोले। ६१

फिर, उन्होंने श्रीराम को, बहुत आनन्द के साथ अपने पास बिठा लिया। वात्सल्यपूर्ण आँखों से उनको देखा। युद्धसन्नद्ध, परशुधर की कीर्ति को मिटानेवाले वीरबाहु! तुम्हारे जनक, पिता —मेरी तुमसे एक प्रार्थना है। ६१

ऐय शालवु मलशिऩ् ऩॆरुम्बॆरु मूप्पु
मॆय्य दायदु पियलिडम् बॆरुम्बरम् विशित्त
तॊय्यऩ् मानिलच् चुमैयुऱुम् जिऱैतुऱऩ् दिऩियाऩ्
उय्य लावदोर् नॆऱिपुह वुदविड वेण्डुम् 62

ऐय–तात; अरु पॆरु मूप्पु मॆय्यतु आयतु–कष्टकर और आदर योग्य बुढ़ापा शरीर को मिल गया; चालवुम् अलचिऩ्ऩॆऩ्–बहुत जर्जर हो गया; पियल् इटम्–गर्दन पर; पॆरुम् परम्–बड़ा भार; विचित्त–जो बँधा हुआ है; तॊय्यल्–दुखदायी; मा निलम् चुमै उऱुम्–विशाल भूमि रूपी उस भार से युक्त; चिऱै–बद्ध जीवन से; याऩ् इति तुऱन्तु–मैं अब विमुक्त होकर; उय्यल् आवतु–उज्जीवन के; ऒर् नॆऱि पुक–एक (तप के) मार्ग में प्रवेश करूँ, इसमें; उतविट वेण्टुम्–तुमको मेरी सहायता करनी चाहिए। ६२

हे तात! दुर्वह पर आदरणीय वार्द्धक्य मेरे शरीर को ग्रस गया है। मैं बहुत जर्जर हो गया हूँ। गर्दन पर बड़ा भू-भार बँधा हुआ है। यह कारा है जिस स्थिति से छूटकर मैं वैकुण्ठप्राप्ति के उज्जीवन का मार्ग अपनाना चाहता हूँ। उसमें तुम्हें मेरी सहायता करनी चाहिए। ६२

उरिमै	मैन्दरैप्	पॅरुहिऩ्ऱ	दुरुतुयर्	नीङ्गि
इरुमै	युम्बॅऱ्ऱ्	कॅऩ्बदु	पॅरियव	रियऱ्कै
दरुम	मऩ्ऩनिऱ्	ऱन्दयाऩ्	रळर्वदु	तहवो
करुम	मॅऩ्वयिऱ्	चॅय्यिऩॅऩ्	कट्टुरै	कोडि 63

उरिमै मैन्तरै पॅऱुकिऩ्ऱतु—स्वकीय पुत्रों को प्राप्त करना; उरु तुयर् नीङ्कि—दुख-निवारण पाकर; इरुमैयुम् पॅऱ्ऱ्कु—इह-पर (सुख) लाभार्थ है; ऍऩ्पतु—यह; पॅरियवर् इयऱ्कै—बड़ों का सिद्धान्त है; तरुमम् अऩ्ऩ निऩ्—धर्म देवता सदृश तुम्हें; तन्त याऩ्—(जन्म) दिया (जिसने वह) मैं; तळर्वतु तकवो—(वंचित रहकर) क्लेश उठाना उचित है क्या; ऍऩ् वयिऩ् करुमम्—मेरे प्रति कर्तव्य; चॅय्यिऩ्—तुम करना चाहो तो; ऍऩ् कट्टुरै कोटि—मेरा हित-वचन मान लो। ६३

बड़ों के बताये सिद्धांत के अनुसार स्वकीय पुत्रों का प्राप्त करना कठोर दुखों से निवृत्त होकर इह-पर दोनो सुखों का लाभ करने के लिए ही है। धर्मदेवता सदृश तुम्हें पुत्र के रूप में प्राप्त करने के बाद मेरा संकट में रहना उचित है क्या ? मेरे प्रति तुम अपना कर्तव्य करना चाहो तो मेरा हितवचन मान लो। ६३

❀ मैन्द	नङ्गुल	मरबिऩिल्	वन्दरुळ्	वेन्दर्
तन्द	मक्कळे	कडैमुऱै	नॅडुनिलन्	दाङ्ग
ऐन्दॊ	डाहिय	मुप्पहै	मरुङ्गऱ	वहऱ्ऱि
उय्न्दु	पोयिऩा	रुळिनिऩ्	ऱॅण्णिनु	मुलवार् 64

मैन्त—पुत्र; नम् कुलम् मरपिऩिल्—हमारे कुल की परम्परा में; वन्तरुळ् वेन्तर्—क्रमागत राजा लोग; कटै मुऱै—अपने अन्तिम काल में; नॅटु निलम्—विशाल भू (भरण के) भार को; तम् तम् मक्कळे ताङ्क—अपने पुत्रों को ही वहन करने देकर; ऐन्तॊटु आकिय—पाँच (इन्द्रियों) से सम्बन्धित; मुप्पकै—(काम, क्रोध, लोभ) तीन शत्रुओं को; मरुङ्कु अऱ—पूर्णरूप से काटते हुए; अकऱ्ऱि—हटाकर; उय्न्तु पोयिऩार्—(जो) तर गये; ऊळि निऩ्ऱु ऍण्णिनुम्—कल्पकाल तक रहकर गिनें तो भी, (वे); उलवार्—गिने नहीं जा सकते। ६४

हे मेरे पुत्र ! हमारे कुल में पैदा होकर जो राजा अपने अंतिम समय में विशाल भूमि के शासन का भार अपने पुत्रों को उठाने देकर, इंद्रिय-सम्बद्ध काम, क्रोध और मोह रूपी तीनो शत्रुओं को मिटाते हुए तर गये उनकी संख्या, युग भर रहकर गिनें तो भी पूरी नहीं हो सकती। ६४

मुऩ्ऩै	यूळ्विऩैप्	पयत्तिऩु	मुऱ्ऱिय	वेळ्विप्
पिऩ्ऩै	यॅय्दिय	नलत्तिऩु	मरिदिऩिऱ्	पॅऱ्ऱेऩ्
इऩ्ऩम्	याऩिन्द	वरशिय	लिडुम्बय	नॅऩ्ऱाल्
निऩ्ऩै	यीऩ्ऱुळ	पयत्तिऩि	ऩिरम्बुव	दियादो 65

मुऩ्ऩै–पूर्व के; ऊऴ्विऩै पयत्तित्तुम्–कर्मों के फल से; पिऩ्ऩै–बाद के (इस जीवन में); मुऱ्ऱिय–पूरा किये हुए; वेळ्वि–यज्ञों से; ॲय्तिय नलत्तिऩुम्–प्राप्त सुफल से; अरितिऩिल् पॆऱ्ऱेऩ्–दुर्लभ तुमको (मैंने पुत्र के रूप में) पाया है; याऩ्–मैं; इऩ्ऩम्–आगे भी; इऩ्त अरचियल् इटुम्पैयऩ्–इस राज्य की झंझट का भागी रहूँ; ॲऩ्ऱाल्–तो; निऩ्ऩै–तुमको; ईऩ्ऱ उळ पयत्तिऩिऩ्–जन्म देने के फलस्वरूप; निरम्पुवतु यातो–दूर हुई कमी कौन सी। ६५

मेरे प्राचीन कर्म प्रबल थे। इस जन्म में भी मैंने कठिन यज्ञादि किये। उसी का शुभफल था कि मैंने तुम्हें पुत्र पाया। अब भी शासन के झंझट से मुक्त न हुआ तो तुम्हारे पैदा होने से क्या लाभ हुआ? कौन सी कमी पूरी हुई? । ६५

ऑरुत्त लैप्परत् तॊरुत्तलैप पङ्गुवि ऩ्ऱ्दि
ॲरुत्ति ऩीङ्गुनिऩ् ऱियल्वरक् कुळैन्दिड ळक्कुम्
वरुत्त नीङ्गियव् वरम्बऱ तिरुविऩै मरुवुम्
अरुत्ति युण्डॆऩक् कैयवी दरुळिड वेण्डुम् 66

ऑरु तलै–एक ओर; परत्तु–भार; ऑरु तलै–दूसरी ओर; पङ्कुविऩ्–पंगु रहनेवाले; ऊर्ति ॲरुत्तिऩ्–सवारी के बैल के समान; ईङ्कु निऩ्ऱु–यहाँ से; इटर् इयल् वर कुळैन्तु–अवश्यम्भावी कष्ट उठाकर; चुमन्तु–भार ढोते हुए; इटर् उळक्कुम्–क्लेश सहने के समान; वरुत्तम्–(राज्य-भार की) झंझट से; नीङ्कि–मुक्त होकर; अ वरम्पु अऱ्ऱ तिरुविऩै–उस निस्सीम (मोक्ष-) साम्राज्य-श्री को; मरुवुम् अरुत्ति–पाने की प्रबल इच्छा; ॲऩक्कु उण्टु–मुझे है; ऐय–तात; ईतु–यह माँग; अरुळिट वेण्टुम्–तुमको पूरी करने की कृपा करनी चाहिए। ६६

मैं उस लँगड़े बैल के समान हूँ जो एक ओर पंगुता और दूसरी ओर बोझ का भार वहन करते हुए बड़ा संकट उठा रहा है। उस दुखदायक स्थिति से छूटकर निस्सीम मोक्ष-साम्राज्य को प्राप्त करने की मेरी बलवती इच्छा हो गयी है। तात! यह माँग पूरी करो। ६६

आळु नऩ्ऩॆऱिक् कमैवरुममैदियिऩ् ऱाह
नाळु नङ्गुल नायह ऩऱैविरि कमलत्
ताळि ऩल्हिय गङ्गयैत् तऩ्दुतऩ् दयरै
मीळ्वि लावुल हेऱ्ऱिऩा ऩॊरुमहऩ् मेऩाळ् 67

मेल् नाळ्–पहले एक दिन; ऑरु मकऩ्–उत्तम एक पुत्र (भगीरथ); आळुम् नल् नॆऱिक्कु–भोग्यमान (मुक्ति के) श्रेष्ठ मार्ग के लिए; अमैवरुम्–आवश्यक; अमैति–योग्यता; इऩ्ऱु आक–नहीं हो जाने से; नाळुम्–सदा; नम् कुलम् नायकऩ्–हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के; नऱै विरि कमलम् ताळिऩ्–शहद बहानेवाले कमल के समान चरणों से; नल्किय–(उनके द्वारा) दी गई; कङ्कैयै–(आकाश-) गंगा को; तन्तु–(इस भूमि में) लाकर; तऩ्तैयरै–अपने पितरों को; मीट्पु इला उलकु–(जहाँ से) पुनः आना नहीं है उस (मोक्ष) लोक को; एऱ्ऱिऩाऩ्–पहुँचा दिया। ६७

तुम्हें मालूम है। सगर-पुत्रों को मोक्षप्राप्ति की योग्यता का अभाव हो गया था। तब हमारे कुल के एक श्रेष्ठ पुत्र (भगीरथ) कड़ी तपस्या करके हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के चरणों से निःसृत गंगाजी को भूमि पर लाये। जिससे सगर-पुत्र तरे और श्रीवैकुंठ गये जहाँ से पुनरावृत्ति नहीं होती (फिर से जन्म लेना नहीं होता)। ६७

मऩ्ऩ रानव रल्लर्मेल् वाऩवर्क् करशाम्
पॊऩ्ऩिऩ् वार्हऴऱ् पुरन्दरऩ् पोलिय रल्लर्
पिऩ्ऩु मादवऩ् दॊडङ्गिनोऩ् पिऴैत्तव रल्लर्
शॊऩ्म ऱामहप् पॆऱ्ऱव रेतुयर् तुऱन्दार् 68

तुयर् तुऱन्तार्—दुख-मुक्त; मऩ्ऩर् आऩवर् अल्लर्—राजा जो बने हैं, वे नहीं हैं; मेल्—ऊपर (परलोक में); वाऩवर्क्कु अरचु आम्—देवों का राजा; पॊऩ्ऩिऩ् वार् कऴल्—स्वर्णरचित और लम्बी पायल के (धारक); पुरन्तरऩ् पोलियर् अल्लर्—पुरन्दर सदृश लोग भी नहीं; पिऩ्ऩुम्—और; मातवम् तॊटङ्कि—महान तपस्या आरम्भ करके; नोऩ्पु इऴैत्तवर् अल्लर्—अनेक व्रतों का पालन (जिन्होंने) किया, वे भी नहीं; चॊल् मऱा—आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले; मकवु पॆऱ्ऱवरे—पुत्र प्राप्त ही हैं। ६८

सचमुच (जन्म-मरण के) संकट से मुक्त होनेवाले नरपति नहीं हैं; स्वर्ण-पायलधारी देवेन्द्र-सम लोग भी नहीं हैं। महान तपस्वी और अटलव्रती भी नहीं हैं। पर वे ही पिता दुख-मुक्त होते हैं जिनके आज्ञाकारी (पिता की आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले) पुत्र पैदा हुए हैं। ६८

❀ अऩैय दादलि ऩरुन्दुयरप् पॆरुम्बर मरशऩ्
विऩैयि ऩॆऩ्वयिऩ् वैत्तऩ ऩॆऩक्कॊळल् वेण्डा
पुऩैयु मामुडि पुऩैन्दिन्द नल्लऱम् बुरक्क
निऩैयल् वेण्डुम्या ऩिऩ्वयिऱ् पॆऱुवदी दॆऩ्ऱाऩ् 69

अऩैयतु आतलिऩ्—(धर्म की रीति) ऐसी है, इसलिए; अरु तुयर् पॆरु परम्—अतिशय दुखदायी इस बड़े भार को; विऩैयिऩ्—(कपट) नीति से; अरचऩ्—राजा ने; ऍऩ् वयिऩ्—मेरे ऊपर; वैत्तऩऩ्—लाद दिया; ऍऩ—ऐसा; कॊळल् वेण्टा—मत लेना चाहिए; पुऩैयुम् मा मुटि—धार्य श्रेष्ठ किरीट को; पुऩैन्तु—धारण करके; इन्त नल् अऱम्—इस श्रेष्ठ (पिता के प्रति) धर्म का; पुरक्क निऩैयल् वेण्टुम्—पालन करने को सोचना चाहिए; निऩ् वयिऩ्—तुम्हारे पास; याऩ् पॆऱुवतु—मेरी याचना; ईतु—यही; ऍऩ्ऱाऩ्—कहा। ६९

श्रीराम! धर्म की यही रीति है। इसलिए तुम पीछे यह मत कहो कि शासन का भार मेरे ऊपर कपटनीति से लाद दिया गया। धार्य-मुकुट का धारण यही धर्मनिर्वाहार्थ है। यह सोचना चाहिए। यही मेरी तुमसे याचना है। —दशरथ ने इतना कहा। ६९

❀ ताद यप्परि शुरैशॅयत् तामरैक् कण्णन्
काद लुऱ्ऱिल निह़ळ्न्दिलन् कडनिदॅन् ऱुणर्न्दुम्
यादु कॉऱ्ऱव नॆविय ददुशॅय लन्ऱो
नीदि यॅऱ्कॅन निनैन्दुमप् पणितलै निन्ऱान् 70

तातै–पिता (के); अ परिचु उरै चॅय–ऐसा कहने पर; तामरै कण्णन्–पुण्डरीकाक्ष ने; कातल् उऱ्ऱिलन्–स्पृहा न की; इकळ्न्तिलन्–न उपेक्षा की; कटन् इतु–कर्तव्य यह; ऍन्ऱु उणर्न्तुम्–ऐसा सोचकर और; कॉऱ्ऱवन् एवियतु–राजा द्वारा आज्ञापित; अतु चॅयल् अन्ऱो–वह करणीय है न; ऍऱ्कु नीति–मेरा धर्म; ऍन निनैन्तुम्–ऐसा समझकर; अ पणि तलै निन्ऱान्–उस सेवा को शिरोधार्य किया। ७०

पिता के इतना कहने पर पुंडरीकाक्ष श्रीराम सहमत हुए; इसलिए नहीं कि उनमें राज्य की स्पृहा थी। न ही उन्होंने उसकी उपेक्षा की। "यह हमारा कर्तव्य है" —उनमें यह भाव था। साथ-साथ "चक्रवर्ती की आज्ञा का पालन करना ही मेरा धर्म है" —यह भी विचार था। अतः उन्होंने उस सेवा को शिरोधार्य मान लिया। ७०

❀ कुरुशिल् शिन्दयै मनक्कॊण्ड कॉऱ्ऱवॆण् गुडैयान्
तरुदि यिव्वर मॅनच्चॉल्लि युयिरुऱत् तळुविच्
चुरुदि यन्नदन् मन्दिरच् चुऱ्ऱमुञ् जुऱ्ऱप्
पॉरुविन् मेरुवुम् पॉरुवरुङ् गोयिल्पोय्प् पुक्कान् 71

कुरुचिल् चिन्तैयै–श्रीराम के मन को; मनम् कॉण्ट–जो जान गये वे; कॉऱ्ऱम् वॆण् कुटैयान्–विजयी (श्वेत-) छत्रधारी; इ वरम् तरुति–यह वर दो; ऍन चॉल्लि–यह कहकर; उयिर् उऱ तळुवि–प्राणों से प्राण मिलाते हुए आलिंगन करके; चुरुति अन्न–वेद-सम; तन् मन्तिरम् चुऱ्ऱमुम्–अपने मन्त्रीमण्डल के; चुऱ्ऱ–घेरे आते; पोय्–जाकर; पॉरु इल् मेरुवुम्–उपमाहीन मेरु भी; पॉरुवु अरु–जिसकी उपमा नहीं बन सकता (उस) अपूर्व; कोयिल्–पुक्कान्–महल में पहुँचे। ७१

विजयी छत्रधारी दशरथ ने श्रीराम का मन जान लिया। इसलिए उन्होंने फिर से कहा कि 'यह वर दो मुझे'। उनको मानो अपने प्राणों से उनके प्राण मिला रहे हों, ऐसा आलिंगन किया। फिर वे अपने महल की ओर जाने लगे। वेदसम उनके मंत्रियों का मंडल भी उनके साथ गया। वे अनुपम मेरु से भी अनुपमेय अपने महल में पहुँचे। ७१

❀ निवन्द वन्दणर् नॆडुन्दहै मन्नवर् नहरत्
तुवन्द मैन्दरहण् मडन्दय रुळैपुळै तॊडरच्
चुमन्दि रन्ऱडन् देर्मिशैच् चुन्दरत् तिरडोळ्
अमैन्द मैन्दनुन् दन्नॆडुङ् गोयिल्शॅन् ऱडैन्दान् 72

चुन्तरम्–सुन्दर (और); तिरळ् तोळ् अमैन्त–पुष्ट कन्धों से युक्त; मैन्तनुम्–राजकुमार (श्रीराम) भी; निवन्त अन्तणर्–उत्कृष्ट ब्राह्मण; नॅटु तकै मन्नवर्–श्रेष्ठतायुक्त राजा लोग; नकरत्तु–नगर के; उवन्त मैन्तर्कळ्–प्रसन्नता से पूरित तरुण लोग; मटन्तैयर्–ऐसी ही स्त्रियाँ; उळै उळै तॉटर–पास-पास आते; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र (चालित); तट तेर् मिचै–विशाल रथ पर; चॅन्ऱु–जाकर; तन् नॅटु कोयिल् अटैन्तान्–अपने बड़े भवन में पहुँचे। ७२

बाद श्रीराम भी उठकर सुमंत्र-चालित उन्नत रथ पर सवार हुए। रथ जाने लगा। उनके साथ उत्कृष्ट ब्राह्मण लोग, श्रेष्ठ राजा लोग, प्रसन्न तरुण लोग और स्नेहार्द्र रमणियाँ भीड़ लगाकर चलीं। वे अपने श्रेष्ठ महल में पहुँचे। ७२

❀ वॅन्ऱि वेन्दरै वरुहॅन वुवणम्वीऱ् ऱिरुन्द
पॊन्ऱि णिन्दतोट् टरुम्बॅऱ लिलच्चिनै पोक्कि
नन्ऱु शित्तिर नळिमुडि कवित्तऱ्कु नल्लोर्
शॅन्ऱु वेण्डुव वरन्मुऱै यमैक्कॅनच् चॅप्प 73

वॅन्ऱि वेन्तरै–विजयशील राजाओं को; वरुक ऍन–आइए, कहकर; उवणम् वीऱ्ऱिरुन्त–गरुड़ांकित; पॊन् तिणिन्त तोटु–स्वर्णमय पत्र पर; अरु पॅऱल्–(दूसरों के लिए) अप्राप्य; इलच्चिनै पोक्कि–लांछन लगाकर, भिजवाकर; नल्लोर्–साधुश्रेष्ठ; चॅन्ऱु–जाकर; चित्तिरम् नळि मुटि–चित्र और बहुमूल्य किरीट को; नन्ऱु–भली रीति से; कवित्तऱ्कु–(श्रीराम के सिर पर) धराने के लिए; वेण्टुव–जो आवश्यक है; वरल् मुऱै–परम्परा के अनुसार; अमैक्क–वह प्रबन्ध कीजिए; ऍन चॅप्प–यह कहने पर। ७३

चक्रवर्ती ने गरुड़ांकित स्वर्णमय पत्र पर राजा के स्वत्व का लांछन लगाकर निमंत्रण लिखा कि सब पधारें। फिर वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि साधु महात्मा! आप जाकर अलंकारयुक्त श्रेष्ठ किरीट को श्रीराम के सिर पर लगाने के लिए (मुकुट धारण के उत्सव के लिए) आवश्यक प्रबंध यथाक्रम करने की कृपा कीजिए। तब; । ७३

❀ उरिय मादव नॊळ्ळिदॅन् ऱुवन्दनन् विरैन्दोर्
पॊरुवि ऱेर्मिशै यन्दणर् कुळात्तॊडुम् बोह
निरुबर् केण्मिन्ग ळिरामऱ्कु नॅऱिमुऱै यदनाल्
तिरुवुम् बूमियुज् जिन्दयिऱ् चिऱन्दन वॅन्ऱान् 74

उरिय–(मुकुट लगाने के) अधिकारी; मातवन्–महान तपस्वी; ऑळ्ळितु–सही है; ऍन्ऱु–कहकर; उवन्तनन्–मुदित हुए; विरैन्तु–सत्वर; अन्तणर् कुळात्तॊटुम्–विप्रसमूह के साथ; पॊरु इल्–उपमारहित; ओर् तेर् मिचै–एक रथ पर; पोक–गये, तब; निरुपर्–राजे; केळ्मिन्कळ्–सुनें; तिरुवुम्–(राज्य) श्री और; पूमियुम्–राज्य; इरामऱ्कु–श्रीराम के; नॅऱि मुऱै–(कुल गत) परम्परा के अनुसार; चिन्तैयिल्–मेरे मन में; चिऱन्तन–श्रेष्ठ हैं; ऍन्ऱान्–कहा। ७४

वसिष्ठजी ही मुकुट धराने का अधिकार रखते थे। वे महान तपस्वी राजा से, 'बहुत अच्छा' कहकर बहुत ही आनन्द के साथ अनुपम एक रथ पर आरूढ़ होकर श्रीराम के पास जाने लगे। तब विप्रों का समूह भी उनके साथ गया। चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा कि राजा लोग ! सुनिये। श्रीराम राज्य की संपत्ति और शासन की भूमि दोनो का अधिकारी है। इसलिए मेरे मन में वे ही विशेष रूप से चिन्त्य रहती हैं। ७४

❀ इऱैवन् शॊल्लॆन्नु मित्तऱ् वरुन्दित्तर् यारुम्
मुऱैयि नित्तिलर् मुन्दुरु कळियिडै मूऴ्हि
निऱैयु नॆञ्जिडै युवहैपोय् मयिर्वऴि निमिर
उऱैयुम् विण्णह मुडलॊडु मंय्दिन रॊत्तार् 75

इऱैवन् चॊल् ऎन्नुम्–दशरथ के वचन रूपी; इन् नऱवु–मधुर मधु को; अरुन्तित्तर् यारुम्–(जिन्होंने) भोगा वे सब; मुन्तु उरु कळि इटै–अतिशय आनन्द रूपी प्रवाह में; मूऴ्कि–डूबकर; नॆञ्चु इटै–मन में; निऱैयुम् उवकै–भरा वह आनन्द; पोय्–(पार) जाकर; मयिर् वऴि निमिर–रोमकूपों में प्रकट हुआ तो; उऱैयुम् विण् अकम्–(पीछे जाकर जहाँ) रहेंगे उस स्वर्गलोक को; उटलॊटुम् ऎय्तित्तर्–सशरीर पहुँच गये; ऒत्तार्–ऐसे होकर; मुऱैयिन् नित्तिलर्–अपने-अपने मर्यादित स्थान में नहीं रह पाये। ७५

राजा का वचन मधुर मधु-सम था। राजा लोगों ने मानो उसको पीकर अपार आनन्द पाया। वह आनन्द मानो उनके हृदय से छलककर रोमकूपों में भर गया, ऐसा उनके रोम पुलकित हो गये। सशरीर तभी स्वर्ग पहुँच गये हों, ऐसा वे आनन्द भरे हो गए। इस मोद-मोह के कारण वे अपनी व्यवस्था और मर्यादा भी भूलकर, ठीक स्थान में खड़े नहीं रह पाये। ७५

ऒत्त शिन्दय रुवहयि नॊरुवरि नॊरुवर्
तत्त मक्कुऱ्ऱ वरशॆन्त तऴैक्किन्ऱ मनत्तार्
मुत्त वॆण्गुडै मन्नतै मुऱैमुऱै तॊऴुदार्
अत्त नन्ऱॆन वन्बिनो डऱिविप्प दानार् 76

उवकैयिन्–आनन्द के कारण; ऒरुवरिन् ऒरुवर्–परस्पर; ऒत्त चिन्तैयर्–समचित्त होकर; तम् तमक्कु–अपने, अपने को; अरचु उऱ्ऱ ऎन–राज्य मिल गया हो, ऐसा; तऴैक्किन्ऱ मनत्तार्–लहलहानेवाले मन के हुए; मुत्तम् वॆण् कुटै मन्नतै–मोतियों से अलंकृत श्वेतछत्र वाले चक्रवर्ती को; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तॊऴुवार्–नमस्कार करके; अत्त–पितृतुल्य; नन्ऱु ऎन–आपका अभिप्राय सही है, यह; अन्पितोटु–प्रेम के साथ; अऱिविप्पतु आतार्–(अपने-अपने विचार) प्रकट करने लगे। ७६

श्रीराम के राज्याभिषेक के सम्बन्ध में उनका एकसम विचार था। खुद उन्हें राज्य मिल गया हो, ऐसे वे संतोष से भर गये। उनके मन लहलहा उठे। वे बारी-बारी से, मोतियों से सज्जित श्वेत छत्रधारी दशरथ को नमस्कार कर उनको पितृतुल्य —ऐसा सम्बोधित करके प्यार के साथ यों बोले। ७६

मूॅवॅऴु मुऱैमयॅङ् गुलङ्गण् मुऱ्ऱुऱप्, पूवॅऴु मऴुविऩाऱ् पॊरुदु पोक्किय
शेवहऩ् शेवहत्ताॅहुत्त शेवहऱ्, कावदिव् वुलहमी दऱऩॅन्ऱाररो 77

मू ॲऴु मुऱैमै–तीन के सात (इक्कीस) पीढ़ियाँ; ॲम् कुलङ्कऴ्–हमारे कुल; मुऱ्ऱु उऱ–नाश करके; पू ॲऴु मऴुविनाल्–तीक्ष्ण परशु से; पॊरुतु–युद्ध करके; पोक्किय–(जिन्होंने) निर्मूल किया; चेवकऩ् चेवकम्–उन वीर की वीरता को; चॅकुत्त–परास्त करनेवाले; चेवकऱ्कु–वीर राघव की; इ उलकम् आवतु–यह भूमि हो; ईतु–यह; अऱऩ्–धर्मसम्मत ही; ॲऩ्ऱार्–कहा। ७७

आपने श्रीराम को राजा बनाने का विचार किया है। श्रीराम ने उन परशुराम की वीरता को परास्त किया जिन्होंने हम क्षत्रियकुल के राजाओं की इक्कीस पीढ़ियों से परशु लेकर युद्ध करके उनको मारा था। यह अवश्यमेव धर्म-सम्मत कार्य है। ७७

वेऱिला मऩ्ऩरुम् विरुम्बि यिऩ्ऩदु, कूऱिऩा रदुमऩङ् गॊण्ड कॊऱ्ऱवऩ्
ऊऱिय वुवहयै यॊळिक्कुञ् जिन्दयाऩ्, माऱुमो रळवैशाल् वाय्मै कूऱिऩाऩ् 78

वेऱु इला मऩ्ऩरुम्–असमान विचार न रखनेवाले वे राजा भी; विरुम्पि–चाहकर; इऩ्ऩतु कूऱिऩार्–ऐसा बोले; अतु मऩम् कॊण्ट कॊऱ्ऱवऩ्–उसको मन में धरकर चक्रवर्ती; ऊऱिय उवकैयै–उमड़ते आनन्द को; ऒळिक्कुम् चिन्तैयाऩ्–छिपाने का विचार करके; माऱुम्–फिर भी; ओर् अळवै चाल् वाय्मै–थाह लेने की एक वार्ता; कूऱिऩाऩ्–कही। ७८

आपस में विचारवैषम्य न रखनेवाले राजाओं ने यह बात सच्चे प्यार के मन से कही। चक्रवर्ती ने यह जान भी लिया। तो भी दशरथ ने उमड़ते आनन्द को छिपाने का संकल्प करके उसे प्रकट नहीं होने दिया। उनके मन की और थाह लेने के विचार से एक वार्ता कही। ७८

महऩ्वयि ऩऩ्बिऩाऩ् मयङ्गि याऩिदु, पुहलनीर् पुहऩ्ऱविप् पॊम्मल् वाशहम्
उहवयिऩ् मॊऴिऩ्ददो वुळ्ळ नोक्कियो, तहवॅऩ निऩैन्ददो तऩ्मै यादॅऩ्ऱाऩ् 79

मकऩ् वयिऩ् अऩ्पिऩाल्–(अपने) पुत्र के प्रति प्रेम के कारण; मयङ्कि–मोहित होकर; याऩ् इतु पुकल–मेरे इस प्रकार कहने से; नीर् पुकऩ्ऱ–आपके (उत्तर में) कहे हुए; इ पॊम्मल् वाचकम्–ये प्रकाशमय (मोदपूर्ण) वचन; उकवैयिऩ् मॊऴिऩ्ततो–

सन्तोष से कहे हुए; उळ्ळम् नोक्कियो–(या) मेरा रुख देखकर; तकवु ॲन्न निन्नैन्ततो– उचित ही समझने के कारण; तन्मै यातु–प्रकार क्या है; ॲन्ऱान्–पूछा। ७९

चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि मेरे अपने पुत्र के प्रेम के मोह में यह कहने पर आपने यह उत्साहवर्धक उत्तर यों ही अपने मौज में कहा है? या मेरा मन रखने के लिए? या आपने सचमुच इसको उचित समझा है? कैसा है? —यह वता दें। ७९

इव्वहै युरैॅय विरुन्द वेन्दर्हळ्, शॅव्वियोय् निन्ऱिरु महर्कुत् तेयत्तोर्
अव्ववर्क् कव्ववर्क् कमैन्द वारुरुम्, ॲव्वमि लन्बिन्नै यिन्ऩिदु केळॅन्ना 80

इ वकै उरैॅय–ऐसा कहने पर; इरुन्त वेन्तर्कळ्–(वहाँ जो) रहे (वे) राजा लोग; चॅव्वियोय्–नेक चक्रवर्ती; निन् तिरु मकर्कु–आपके श्रीमान पुत्र के प्रति; तेयत्तोर्–देशवासियों में; अव्ववर्क्कु अव्ववर्क्कु—उन-उन के; अमैन्तवारु–योग्य रीति से; उरुम्–होनेवाले; ॲव्वम् इल् अन्पिन्नै–निर्दोष प्रेम को; इन्निदु केळ्–प्रसन्नता से सुनिए; ॲन्ना–कहकर। ८०

दशरथ के ये वचन सुनकर राजाओं ने उत्तर में कहा कि नेक चक्रवर्ती! इस देश के वासी आपके पुत्र श्रीराम पर अपनी-अपनी मर्यादा और स्थिति के अनुसार कैसा प्रेम रखते हैं? उस निर्मल प्रेम की बात कहते हैं, सुनिये। ८०

दानमुन् दरुममुन् दहवुन् दन्मशेर्, ञानमु नल्लवर्प् पेणु नन्मयुम्
मानमु मैयनिन् महर्कु वैहुमाल्, ईन्नमिल् शॅल्वम्वन् दियैव ॲन्नवे 81

ऐय–प्रभु; निन् मकर्कु–आपके पुत्र के प्रति; ईनम् इल् चॅल्वम्–अनिन्द्य (राज्य) श्री; वन्तु इयैवतु ॲन्न–आ मिल जाय, इस योग्य; तानमुम्–दान; तरुममुम्–धर्मपरायणता; तकवुम्–शील; तन्मै चेर् ञानमुम्–श्रेष्ठ तत्व-ज्ञान; नल्लवर् पेणुम् नन्मैयुम्–साधुओं का त्राण करने का अच्छा स्वभाव; मानमुम्–और मान; वैकुम्–(उन्हें) प्राप्त हैं। ८१

प्रभु! आपके पुत्र में अक्षय राज्यश्री की प्राप्ति के लिए आवश्यक और अनुकूल सारे गुण हैं। दानशीलता, धर्मपरायणता, शील, श्रेष्ठ तत्वज्ञान, साधुत्राण का स्वभाव, मान —ये सब उनमें हैं। ८१

ऊरुणि निरैयवु मुदवु माडुयर्, पार्नुहर् पयन्मरम् पळुत्त दाहवुम्
कारमळै पॊळियवुङ् गळनि पायनदि, वार्पुनल् पॆरुहवु मरुक्किन् ऱार्हळ् यार् 82

ऊरुणि निरैयवुम्–(बस्ती के) तालाब के भरने पर; उतवुम् माडु–सब के लिए सहायक (सुगम) स्थान में; उयर्–खूब बढ़े हुए; पार् नुकर् पयन् मरम्–लोक-खाद्य फलों वाले वृक्ष; पळुत्तनु आकवुम्–फलदार होने पर; कार् मळै पॊळियवुम्–मेघ वर्षा करने पर; कळनि पाय् नति–खेतों को सींचनेवाली नदी में; वार् पुनल् पॆरुकवुम्–अधिक जल के बहने पर; मरुक्किन्ऱार्कळ–इनकार करनेवाले; यार्–कौन। ८२

बस्ती में सर्वभोग्य तालाब में जल भर जाय, आम स्थल में रहनेवाले फलवृक्ष फलें, वर्षाकालीन मेघ बरसें, खेती को सींचनेवाली नदी में धार बढ़ जाय तो इनका सभी स्वागत करेंगे। कौन होगा जो इनसे अतृप्त होगा ? । ८२

पन्नैयवा नॆंडुङ्गरप् परुम यानैयाय्, निन्नैयवान् दहैयनाय् निमिर्न्द मन्नुयिर्क्
कॆन्नैयवा रन्बिन निराम नीण्डवर्, कन्नैयवा रन्बिन ववैयु मॆन्ऱनर् 83

पनै अवाम् नॆंटु करम्–ताड़ के पेड़ के समान लम्बी सूँड़ और; परुमम्–हौदे से युक्त; यानैयाय्–राजगज वाले; इरामन्–श्रीराम; निनै अवाम् तकैयन् आय्–आपके समान योग्यता वाले होकर; निमिर्न्त–संसार में भरे; मन् उयिर्क्कु–अक्षय जीवों पर; ऎनैय आऱु अन्पिनन्–जिस प्रकार का प्रेम रखते हैं; अनैय आऱु–उसी प्रकार के; अवैयुम्–वे भी; अवर्कु–उन पर; ईण्टु अन्पिन–खूब प्रेम करनेवाले हैं; ऎन्ऱनर्–कहा। ८३

उस गजराज के स्वामी जिसकी सूँड़ लंबे ताल-वृक्ष के समान है और जो हौदे से सजा है, आपके पुत्र आपके ही समान योग्यता और श्रेष्ठता रखते हैं। वे लोकों के अक्षय जीवों पर जितना स्नेह रखते हैं उतने ही वे जीव भी इनसे खूब प्रेम करते हैं। ८३

मॊऴिन्ददु　केट्टलु　मॊय्त्तु　नॆञ्जिनैप्
पॊऴिन्दपे　रुवहयन्　पॊङ्गु　कादलन्
कऴिन्ददोर्　तुयरिनन्　कऴिक्कुञ्　जिन्दयन्
वऴिन्दकण्　णीरिनन्　मन्नन्　कूऱुवान् 84

मॊऴिन्ततु केट्टलुम्–(राजाओं का) कथन सुनने पर; मन्नन्–चक्रवर्ती; नॆञ्चिनै मॊय्त्तु–मन में भरकर; पॊऴिन्त–छलकनेवाले; पेर् उवकैयन्–बड़े आनन्द से युक्त होकर; पॊङ्कु कातलन्–उमड़ते प्रेम वाले बनकर; कऴिन्ततु ओर् तुयरिनन्–(जो) छूट गया (उस) दुख वाले होकर; कऴिक्कुम् चिन्तैयन्–उमड़नेवाले चित्त के; वऴिन्त कण् नीरिनन्–बहनेवाले अश्रु की आँखों के बनकर; कूऱुवान्–बोलने लगे। ८४

राजाओं ने जब यह कहा तब दशरथ के मन में इतना आनन्द उमड़ आया कि वह उसमें नहीं समा सका। वात्सल्य बढ़ा। उनकी चिंता दूर हुई। प्रसन्नमन हुए। उनकी आँखों से आनन्द के आँसू ढलक आये। वे बोले। ८४

शॆम्मयिर्　ऱुमत्तिर्　चॆयलिऱ्　ऱीङ्गिन्बाल्
वॆम्मयि　नीऴुक्कत्तिन्　मेन्मै　मेविनीर्
ऎम्मह　नॆन्बदॆन्　नॆऱियि　नीङ्गिवन्
नुम्महन्　कैयडै　नोक्कु　मीङ्गॆन्ऱान् 85

चॅम्मैयिल्–पक्षपात रहित रहने में; तरुमत्तिल्–और धर्मपालन में; चॅयलिल्–अच्छे कार्यों में; तीङ्किन् पाल् वॅम्मैयिन्–अन्याय के प्रति क्रोध में; ऑळुक्कत्तिन्–श्रेष्ठ आचरण में; मेन्मै मेवितोर्–उन्नत हुए लोगों; इवन्–यह श्रीराम; ईङ्कु–आगे; ॲम् मकन् ॲन्पतु–मेरा पुत्र है, यह कहना; ॲन्–क्या (अर्थ रखता है); नॅऱियिन्–क्रम से; नुम् मकन्–आपका पुत्र है; कैयटै–आपका धरोहर है; ईङ्कु नोक्कुम्–उसी दृष्टि से देखिए; ॲन्ऱान्–कहा। ८५

(उन्होंने राजाओं से कहा—) निष्पक्षता में, धर्मपालन में, अच्छे कामों में, अन्याय के प्रति क्रोध की गर्मी दिखाने में, और आचरण में बढ़े हुए राजाओ! आगे श्रीराम को मैं अपना ही पुत्र मानूँ इसका कोई अर्थ नहीं रहेगा। वह आपका ही पुत्र है। उसे आपका धरोहर मानता हूँ। आप भी उसी दृष्टि से उसको देखिये। —दशरथ ने यह कहा। ८५

अरचरै विटुत्तबि नाणै मन्नवन्, पुरैतबु नाळोडुम् बॊळुदु नोक्कुवान्
उरैतॆरि कणिदरै यॊरुङ्गु कॊण्डोरु, वरैपॊरु मण्डब मरुङ्गु पोयिनान् 86

अरचरै विटुत्तपिन्–राजाओं को बिदा देने के बाद; आणै मन्नवन्–आज्ञापक चक्रवर्ती; पुरै तपु–निर्दोष; नाळोटु–नक्षत्र के साथ; पॊळुतु–मुहूर्त को; नोक्कुवान्–शोधने के लिए; उरै तॆरि–शास्त्रज्ञ; कणितरै–ज्योतिषियों को; ऑरुङ्कु कॊण्टु–साथ लेकर; वरै पॊरु–पर्वततुल्य; ओरु मण्टपम् मरुङ्कु–एक मण्डप में; पोयितान्–पहुँचे। ८६

आज्ञापक चक्रवर्ती ने उनको बिदा दिया। फिर वे निर्दोष नक्षत्र और मुहूर्त शोध लेने के विचार से, ज्योतिषियों को साथ लेकर एक पर्वततुल्य बड़े भवन में गये। ८६

*** आण्ड वन्निलै याह वऱिन्दवर्, पूण्ड कादलर् पूट्टविळ् कॊङ्गयर्**
नीण्ड कून्दलर् नीळ्हलै ताङ्गलर्, ईण्ड वोडिन रिट्टिडै यिऱ्ऱिलर् 87

आण्टु–वहाँ; अवन् निलै आक–उनकी यह स्थिति रही तब; अऱिन्तवर्–समाचार को जानकर (कुछ स्त्रियाँ); पूण्ट कातलर्–प्रेम-भरी; पूट्टु अविळ् कॊङ्कैयर्–(जिनका) अँगिया खुल गया, ऐसे स्तनों वाली; नीण्ट कून्तलर्–मुक्तकेश; नीळ् कलै ताङ्कलर्–ढीले पड़े वस्त्र को न सँभालनेवाली; ईण्ट–सत्वर; ओटितर्–(कौसिल्या के पास) भागीं; इट्टु–भाग्य की बात थी; इटै इऱ्ऱिलर्–भग्नकमर नहीं हुईं। ८७

राजा का समाचार यह रहा। तब कुछ चार स्त्रियों ने यह समाचार पाया तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। आनन्दातिरेक में उन्होंने अपने स्तनों का अँगिया के खुलने से बाहर प्रकट होना नहीं जाना, केश खुल गया उसकी परवाह नहीं की, वस्त्र ढीले होने लगे उनको नहीं संभाला, वे बहुत तेजी से भागीं। भाग्य था कि उनकी कमरें नहीं टूटीं। ८७

❀ आडु हिन्ऱनर् पण्णडै विन्ऱियेे, पाडु हिन्ऱनर् पार्त्तवर्क् केकरम्
शूडु हिन्ऱनर् शॉल्लुव दोरहिलार्, माडु शॅन्ऱनर् मङ्गयर् नाल्वरे 88

मङ्कैयर नाल्वर्–वे स्त्रियाँ चार थीं, वे; आटुकिन्ऱतर्–नाचतीं; पण् अटैवु इन्ऱिये–राग शुद्धि के बिना ही; पाटुकिन्ऱतर्–गातीं; पार्त्त वर्क्कु–सामने जिनको देखती हैं, उन सबको; करम् चूटुकिन्ऱतर्–हाथ जोड़तीं; चॊल्वतु ओर्किलार्–क्या कहना, नहीं जानतीं; माटु चॆन्ऱतर्–पास गईं। ८८

वे नाचतीं, बिना राग की दुरुस्ती के ही गातीं। जो भी सामने आते उनके आगे हाथ जोड़तीं। उनसे क्या बात करती हैं—यह भी नहीं जानतीं। इस स्थिति में वे कौसल्यादेवी के पास पहुँचीं। ८८

❀ कण्ड मादरैक् कादलि नोक्कित्ताळ्, कॊण्डल् वण्णनै नल्हिय कोशलै
उण्डु पेरुव हैप्पॊरु ळन्नदु, ऍण्डै वायिनिर् शॊल्लुमि नॆण्डॆन्ऱाळ् 89

कॊण्टल् वण्णतै–मेघवर्ण (श्रीराम को); नल्किय–देनेवाली; कोचलै–कौसल्यादेवी (ने); कण्ट मातरै–अपने सामने दृष्ट उन स्त्रियों को; कातलिन् नोक्कित्ताळ्–स्नेह से देखकर; तॊण्टै वायित्तीर्–(बिंब-) फल-सम अधर वालियों; पेर् उवकै पॊरुळ् उण्टु–(इस) बड़े आनन्द का अर्थ होगा; अन्नतु–उसको; ईण्टु कूऱुमिन्–यहाँ बताओ; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८९

कौसल्या ने अपने सामने आई उन सबको स्नेह से देखा। मेघ वर्ण श्रीराम की माता ने उनसे पूछा। तुम्हारे आनन्दप्रदर्शन का कोई महत्वपूर्ण अर्थ अवश्य होगा। वह क्या है—बताओ। ८९

❀ मन्नॆ डुङ्गळल् वन्दु वणङ्गिडप्, पन्नॆ डुम्बहल् पारळिप् पायॆन
निन्नॆ डुम्बुदल् वन्ऱनै नेमियान्, तॊन्नॆ डुम्मुडि शूट्टुहिन् ऱानॆन्ऱार् 90

नेमियान्–आज्ञाचक्र चलानेवाले (चक्रवर्ती) ने; मन् वन्तु–राजाओं के आकर; नॆट्टु कळल् वणङ्किट–सम्मान्य पायलधारी पैरों पर नमस्कार करते; पल नॆट्टु पकल्–अति दीर्घकाल तक; पार् अळिप्पाय्–भूमि का पालन करो; ऍन–ऐसा; निन् नॆट्टु पुतल्वन् तन्नै–आपके श्रेष्ठ पुत्र को; तॊल् नॆट्टु मुटि–प्राचीन और उत्कृष्ट किरीट; चूट्टुकिन्ऱान्–पहनायेंगे; ऍन्ऱार्–कहा। ९०

उन्होंने उत्तर दिया। आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती आपके पुत्र के सिर पर प्राचीन और गौरवान्वित किरीट पहनायेंगे। श्रीराम राजा राम बनेंगे। सभी राजा लोग उनके सम्मान्य पायलधारी चरणों पर अपने शीश नवावेंगे। "चिरकाल तक इस रीति से शासन करो" —यह चक्रवर्ती ने श्रीराम से कहा है। ९०

❀ शिऱक्कुज् जॆल्व महऱ्कॆन्नच् चिन्दयिल्, पिऱक्कुम् पेरुव हैक्कडल् पॆट्पऱ
वऱक्कु मावड वॆक्कन लानदाल्, तुऱक्कु मन्नव नॆन्नुन् दुणुक्कमे 91

मकर्कु–पुत्र को; चॅल्वम् चिरक्कुम् ॲत–राज्यश्री पाने का गौरव मिलेगा, यह सोच; चिन्तैयिल् पिरक्कुम्–मन में उत्पन्न; पेर् उवकै कटल्–बड़े प्रेम के सागर को; पॅट्पु अऱ्–अनचाहे रूप से; वऱक्कुम्–सुखानेवाली; मा वटवै कनल्–बड़ी बड़वाग्नि सी; मन्नवन् तुऱक्कुम्–राजा वानप्रस्थ होंगे; ॲन्नुम्–इससे; तुणुक्कम्–(मिलनेवाला) भय; आनतु–हुआ। ९१

कौसल्या के मन में यह सुनकर बड़ा आनन्द हुआ कि मेरे पुत्र को राज्य मिलेगा और वह सम्मानित बनेगा। वह बड़ा सागर-सा उमड़ा तो भी उसको अनचाहे रूप से सुखानेवाली बड़वाग्नि बना, यह डर कि राजा वानप्रस्थ होंगे और विरक्त बनेंगे। ९१

❀ अन्न ळायु मरुम्बॅऱ् लारमुम्, नन्नि दिक्कुवै युम्बल नल्हित्तन्
तुन्नु कादर् चुमित्तिरै योडुम्बोय्, मिन्नु नेमियन् मेविड मेविनाळ् 92

अन्नळ् आयुम्–वैसी होने पर भी; आरमुम्–हार; नन् निति कुवैयुम्–धनराशि को; पल नल्कि–बहुत देकर; तन् तुन्नु कातल्–अपने अधिक प्यार का पात्र; चुमित्तिरैयोटुम्–सुमित्रा के साथ; पोय्–जाकर; मिन्नुम् नेमियन् मेवु इटम्–दीप्तिमान चक्रधारी (श्रीरंग जी) के श्रेष्ठ मन्दिर में; मेविनाळ्–पहुँचीं। ९२

मन की यह (मिश्रित) स्थिति होने पर भी कौसल्यादेवी ने उन्हें अनेक हार और धनराशि इनाम में दी। उन्हें विदा देकर वे अपनी प्यारी सौत सुमित्रा के पास आईं। उनको भी साथ लेकर वे दीप्तिमान चक्रधारी श्री रंगजी के मंदिर में पहुँचीं। ९२

❀ मेवि मॅन्मल राणिल मादॅनुम्, तेवि मारॊडुन् देवर्हळ् यावर्क्कुम्
आवि युम्मऱि वुम्मुद लायवन्, वावि मामलर्प् पादम् वणङ्गिनाळ् 93

मेवि–पहुँचकर; मॅल् मलराळ्–कोमल कमला श्री देवी; निल मातु–भूदेवी; ॲनुम्–इति; तेवि मारॊटुम्–दो पत्नियों के साथ; तेवर्कळ्–देवों के और; यावर्क्कुम्–सभी के; आवियुम्–प्राण; अऱिवुम्–प्रज्ञा; मुतल्–और आदि; आयवन्–जो बने हैं; वावि मा मलर् पातम्–(उनके) तालाब में अभी खिले कमल के समान चरणों की; वणङ्किनाळ्–पूजा की (कौसल्या ने)। ९३

वहाँ पहुँचकर उन श्रीमन्नारायण के तालाब में विकसित कमलों के समान चरणों की पूजा की जो कोमल कमलजा श्रीदेवी और भूदेवी, दोनो पत्नियों के साथ शोभायमान थे और जो देवों और अन्य सभी जीवों के प्राण और प्रज्ञा थे और आदि कारण थे। ९३

❀ ॲन्व यिऱ्ऱु मैन्दर् किनियरुळ्, उन्व यत्तवॅन् ऱाळुल हियावयुम्
मन्व यिऱ्ऱि लडक्किय मायनैत्, तन्व यिऱ्ऱि लडक्कुन् दवत्तिनाळ् 94

उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; मन् वयिऱ्ऱिल् अटक्किय–वन्द्य अपने उदर में (जिन्होंने) रख लिया है; मायनै–उन मायावी श्रीमन्नारायण को; तन् वयिऱ्ऱिल्–

अपने गर्भ में; अटक्कुम्–रखने का; तवत्तिऩाळ्–जिन्होंने तप (भाग्य) किया था, उन कौसल्या ने; ॲऩ् वयिऩ् तरुम् मैन्तऱ्कु–आपकी कृपा से मेरे द्वारा उत्पन्न पुत्र (श्रीराम) को; इऩि अरुळ्–अब सौभाग्य देना; उऩ् वयत्ततु–आपका ही काम है; ॲऩ्ऱाळ्–विनय की। ९४

फिर उन्होंने जिनका भाग्य इतना था कि सारी सृष्टि को उदर में समाये रखनेवाले श्रीमन्नारायण को अपने गर्भ में धारण किया था, उनसे प्रार्थना की कि आपने श्रीराम को मेरे पेट से जन्म दिलाने की कृपा की थी। अव उन्हें सारे सौभाग्यों को दिलाने की कृपा करना भी आपके ही वश का है। ९४

ॲऩ्ऱि ऱैञ्जियव् विन्दिरै केळ्वऩुक्, कॊऩ्ऱु नाऩ्मऱै योदिय पूशऩै
नऩ्ऱि ळैत्तव णल्ल तवर्क्कॅलाम्, कऩ्ऱु डैप्पशु विऩ्कड ऩल्हिऩाळ् 95

अवळ्–उन्होंने; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इऱैञ्चि–प्रार्थना करके; अ इन्तिरै केळ्वऩुक्कु–उन इन्दिरापति की; ऑऩ्ऱु–युक्त; नाल् मऱै ओतिय–चतुर्वेदविहित; पूचऩै नऩ्ऱु इळैत्तु–पूजा खूब करके; नल्ल तवर्क्कु ॲलाम्–अच्छे सभी तपस्वियों को; कऩ्ऱु उटै(य) पचुविऩ् कटऩ्–बछड़ों सहित गोदान; नल्किऩाळ्–किया। ९५

यह प्रार्थना करके देवी कौसल्या ने उन इन्दिरापति की युक्त चारों वेदों में कथित रीति से पूजा संपन्न करके, सभी तपस्वियों को बछड़ों के साथ गायों का दान किया। ९५

पॊऩ्ऩु मामणि युम्बुऩै शान्दमुम्, कऩ्ऩि मारॊडु काशिऩि यीट्टमुम्
इऩ्ऩ यावयु मीन्दऩ ळन्दणर्क्, कऩ्ऩ मुन्दळि राडयु नल्हिऩाळ् 96

अन्तणर्क्कु–विप्रों को; पॊऩ्ऩुम्–स्वर्ण; मा मणियुम्–बहुमूल्य रत्न; पुऩै चन्तनमुम्–चर्चायोग्य चन्दन; कऩ्ऩि मा रॊटु–कन्याओं के साथ; काचिऩि ईट्टमुम्–भूमि की राशि; इऩ्ऩ यावैयुम्–ऐसी (दान की) वस्तुएँ; ईन्तऩळ्–दीं; अन्नमुम्–भोजन और; तळिर् आटैयुम्–कदलीपल्लव मृदुल वस्त्र भी; नल्किऩाळ्–दिये। ९६

बाद ब्राह्मणों को स्वर्ण, रत्न, चंदन, कन्यायें और भूमि के खण्ड तथा अन्य वस्तुओं का दान किया। भोजन और कदलीपत्र के समान शोभित वस्त्र भी दिया। ९६

नल्हि नायह ऩाण्मलरप् पादत्तैप्
पुल्लिप् पोऱ्ऱि वणङ्गिप् पुरैयिलाळ्
मल्लऩ् मामणिक् कोयिल् वलङ्गॊळात्
तॊल्लै नोऩ्बुहळ् यावुन् दॊडङ्गिऩाळ् 97

पुरै इलाळ्–अनिन्द्य; नल्कि–दान करके; नायकऩ्–भगवान के; नाळ् मलर् पातत्तै–नवविकसित कमल चरण; पुल्लि–पकड़कर; पोऱ्ऱि वणङ्कि–स्तुति और नमस्कार करके; मल्लल्–समृद्ध; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत; कोयिल्–

मन्दिर की; वलम् कोंळा–परिक्रमा करके; तॊल्लै–प्राचीन; नोन्पुकळ् यावुम्–सभी व्रत; तॊटङ्कित्ताळ्–रखना आरम्भ किया। ६७

निर्मल स्वभाव वाली कौसिल्या ने यह सब दान करके भगवान के नवविकसित कमल-सम चरण पकड़कर स्तुति और दण्डवत की। फिर खूब श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत उस बड़े मन्दिर की परिक्रमा की। बाद वे प्राचीन अनेक व्रतों का पालन करने लगीं। ९७

2. मन्दरै शूळ्च्चिप् पडलम् (मन्थरा षडयन्त्र पटल)

कडिहमऴ् तारित्तान् कणित माक्कळै
मुडिवुर् नोक्कियोर् मुहमन् कूरिप्पिन्
वडिमऴु वाळवर् कडन्द मैन्दर्कु
मुडिपुनै कडिहैनाण् मॊऴिमि नॆन्ऱनन् 98

कटि कमऴ् तारित्तान्–सुगन्धि छिटकती माला के धारी ने; कणित माक्कळै–ज्योतिषी लोगों को; मुटिवु उर् नोक्कि–पूर्णरूप से देखकर; ओर् मुकमन् कूरि–युक्त शिष्ट वचन कहकर; पिन्–पश्चात; वटि मऴुवाळन्–तीक्ष्ण परशु के रखनेवाले (परशुराम) के; कटन्त–विजयी; मैन्तर्कु–वीर राघव को; मुटि पुनै–किरीट पहनाने योग्य; कटिकै नाळ–मुहूर्त के दिन को; मॊऴिमिन्–कहिये; ॲन्ऱनन्–कहा। ६८

सुवासित पुष्पों की माला से अलंकृत चक्रवर्ती ने अपने सामने रहे सभी ज्योतिषियों पर खूब दृष्टि डाली। अवसरानुकूल शिष्ट वचन कहे। फिर उनसे कहा कि तीक्ष्ण परशु के धारण करनेवाले परशुराम के जयी श्रीराम को किरीट पहनाने के लिए योग्य मुहूर्त और दिन शोध करके बताइये। ९८

पॊरुन्दुना ळैयुन् पुदल्वर् कॆन्ऱलुम्
तिरुन्दिना रितियशॊर् केट्ट शॆय्हऴर्
पॆरुन्दिण्मा लियानैयान् पिऴैप्पिल् शॆय्दव
मरुन्दिनान् वरुहॆन वशिट्ट नॆय्दिनान् 99

उन् पुतल्वर्कु–आपके पुत्र के लिए; पॊरुन्तु नाळ्–अच्छे मेल का दिन; नाळै–कल ही; ॲन्ऱलुम्–कहते ही; तिरुन्तिनार्–(ज्योतिष शास्त्र में) कुशलता प्राप्त उनके; इनिय चॊल् केट्ट–मधुर (सुखद) वचन सुना (जिन्होंने) उन; चॆय् कऴल्–भूषक पायलधारी; पॆरु तिण् माल् यानैयान्–बड़े, बलिष्ठ और मत्तगजों के स्वामी, (दशरथ) के; पिऴैप्पु इल्–दोषहीन; चॆय्तवम्–कृततप; मरुन्तु अन्नान्–अमृत सम (वसिष्ठजी); वरुक ॲन–आजायँ, कहने पर; वचिट्टन्–वसिष्ठ; ॲय्तिनान्–पधारे। ६६

ज्योतिषियों ने खूब परीक्षा करके बताया कि आपके पुत्र के मुकुट-धारण के लिए योग्य दिन कल ही है। ज्योतिषशास्त्र में निपुण उनके सुखद वचन सुनकर भूषक पायलधारी गजपति दशरथ ने इच्छा प्रकट की कि निर्दोष तपस्वी श्री वसिष्ठजी इधर आ जायँ। वसिष्ठ भी पधारे। ९९

नल्लियऩ् मङ्गल नाऴु नाळैयव्
विल्लिय ऱोळवर् किऩ्ऱु वेण्डुव
ऑल्लयि ऩियऱ्ऱिनल् लुरुदि वाय्मयुम्
शॊल्लुदि पॆरिदॆऩत् तॊऴुदु शॊल्लिऩाऩ् 100

नल् इयल्–भलाइयों से युक्त; मङ्कल नाऴुम्–शुभ दिन भी; नाळै–कल ही है; अ–उस; विल् इयल् तोळवर्कु–धनु से अभ्यस्त भुजा वाले; इऩ्ऱु–आज ही; वेण्टुव–आवश्यक कार्य; ऑल्लैयिऩ् इयऱ्ऱि–सत्वर सम्पन्न करके; उऱुति नल् वाय्मैयुम्–हितोपदेश भी; पॆरितु चॊल्लुति–विशद रूप से करें; ऎऩ–ऐसा; तॊऴुतु चॊऩ्ऩाऩ्–नमस्कार करके कहा। १००

चक्रवर्ती ने वसिष्ठजी से कहा— सभी प्रकार से मंगलमय दिन कल ही है। इसलिए उस कोदण्डपाणी द्वारा जो भी वैदिक कर्म कराना है शीघ्र कराइये और आवश्यक हितोपदेश विस्तार से कीजिए। १००

मुऩिवऩु मुवहैयुन् दाऩु मुऩ्दुवाऩ्
मऩुकुल नायकऩ् वायिऩ् मुऩ्ऩिऩाऩ्
अऩैयवऩ् वरवुकण् डलङ्गऩ् मार्बऩुम्
इऩिदॆदिर् कॊण्डुदऩ् निरुक्कै यॆय्दिऩाऩ् 101

मुऩिवऩुम्–मुनिवर भी; उवकैयुम् ताऩुम् मुऩ्तुवाऩ्–आनन्द के साथ शीघ्र जाकर; मऩुकुलम् नायकऩ्–मनुकुलनायक के; वायिल्–(महल के) द्वार पर; मुऩ्ऩिऩाऩ्–पहुँचे; अऩैयवऩ् वरवु कण्टु–उनका आगमन देखकर; अलङ्कल् मार्पऩुम्–माला से अलंकृत श्रीवक्षवाले श्रीराम भी; इऩितु ऎतिर् कॊण्टु–आदर के साथ अगवानी करके; तऩ् इरुक्कै ऎय्तिऩाऩ्–(उनके साथ) अपने स्थान गये। १०१

मुनिवर भी बहुत आनन्द के साथ शीघ्र गमन कर मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम के महल के द्वार पर पधारे। श्रीराम ने उनका आगमन देखा तो वे स्वयं अगवानी के लिए आये और उनको लेकर अन्दर अपने स्थान पर गये। १०१

ऑल्हि लात्तवत् तुत्तम ऩोदुनूल्, मल्हु केळ्वियव् वळ्ळलै नोक्किये
पुल्हु कादर् पुरवलऩ् पोर्वलाय्, नल्हु नाऩिल नाळै निऩक्कॆऩ्ऱाऩ् 102

ऑल्कु इला–अचंचल; तवत्तु उत्तमऩ्–तपस्या के उत्तम मुनि; ओतुम् नूल्–अध्ययन योग्य शास्त्रों का ज्ञान; मल्कु केळ्वि–व भरपूर श्रौतज्ञान रखनेवाले;

अ वळ्ळलै नोक्कि–उन प्रभु (श्रीराम) को देखकर; पोर् वलाय्–युद्धचतुर; पुल्कु कातल्–(आप पर) रखे प्रेम के; पुरवलन्–चक्रवर्ती; नाळै–कल; नितक्कु–आपको; नाल् निलम् नल्कुम्–चतुर्विध भूमि दिला देंगे; ऍन्ऱान्–बोले। १०२

वसिष्ठजी अचंचल तपोधन थे। श्रीराम अध्ययन और श्रवण के भरपूर ज्ञान के ज्ञानी थे। वसिष्ठ ने उनसे कहा कि हे युद्धनिपुण श्रीराम! आप पर गंभीर स्नेह रखनेवाले चक्रवर्ती कल आपके पास राज्य का अधिकार सौंपेंगे। १०२

ऍन्ऱु पिन्नुम् इरामनै नोक्किनान्, ऑन्ऱु कूऱुव दुण्डुऱु दिप्पॉरुळ्
नन्ऱु केट्टुक् कडैप्पिडि नन्ऍन्ऱान्, तुन्ऱु तारवन् चॊल्लुदल् मेयिनान् 103

ऍन्ऱु–यह कहकर; पिन्नुम् इरामनै नोक्कि–और श्रीराम को देखकर; नान् कूऱुवतु–मेरा कहा जानेवाला; उऱुतिप्पॉरुळ् ऑन्ऱु उण्टु–हित उपदेश एक है; नन्ऱु केट्टु–उसको ध्यान से सुनकर; नन्कु कटैप्पिटि–भलीभाँति (उसका) अनुसरण करो; ऍन्ऱा–ऐसा; तुन्ऱु तार् अवन्–घनी पुष्पमालाधारी श्रीराम से; चॊल्लुतल् मेयितान्–कहने लगे। १०३

और भी आगे कहा। मुझे आपसे एक हितकारिणी बात कहनी है। आप उसे ध्यान से सुनिये और उस पर खूब अमल कीजिए। घनी माला-धारी श्रीराम से यह कहकर वे आगे बोले। १०३

करिय मालिनुङ् गण्णुद लानिनुम्, उरिय तामरै मेलुऱै वानिनुम्
विरियुम् बूदमॊ रैन्दिनु मॆय्यिनुम्, पॆरिय रन्दणर् पेणुदि युळ्ळत्ताल् 104

करिय मालितुम्–श्यामलवर्ण तिरुमाल (श्रीनारायण) से भी; कण् नुतलानितुम्–भालनेत्र (शिवजी) से भी; उरिय–स्वत्व के; तामरै मेल्–कमल पर; उऱैवानितुम्–रहनेवाले (ब्रह्मा) से भी; विरियुम् पूतम् ओर् ऐन्तितुम्–विस्तारशील पाँचों भूतों से; मॆय्यितुम्–सत्य से भी; अन्तणर् पॆरियर्–ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं; उळ्ळत्ताल् पेणुति–(उनका) मन से आदर कीजिये। १०४

श्यामल श्रीविष्णु, भालनेत्र श्रीशिव, कमलासन ब्रह्माजी, विस्तृत पाँच भूत, सत्य —इन सबसे ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं। उनका मन से आदर कीजिए। १०४

अन्द णाळर् मुनियवु माङ्गवर्, शिन्दै यालरुळ् शॆय्यवुन् देवरुळ्
नॊन्दु ळारयु नॊय्दुयरन् दारयुम्, मैन्द वॆण्ण वरम्बुमुण् डाङ्गॊलो 105

मैन्त–पुत्र; अन्तणाळर् मुनियवुम्–ब्राह्मणों के कोप करने पर; आङ्कु–उसी प्रकार; अवर्–उनके; चिन्तैयाल् अरुळ् चॆय्यवुम्–मन से अनुग्रह करने पर; तेवरुळ्–देवों में भी (सही); नॊन्तु उळारैयुम्–(क्रम से) दुखी हुओं को; नॊय्तु उयर्न्तारैयुम्–शीघ्र उन्नति प्राप्त लोगों को; ऍण्ण–गिनने की; वरम्पुम् उण्टो–सीमा है क्या। १०५

पुत्र ! ब्राह्मणों के कोप का पात्र बनकर देवों में भी कितने अवनति को और दुख को प्राप्त हो गये ! उनकी कृपा का पात्र बनकर कितने ही उन्नत और सुखी हो गये ! उनकी संख्या का अंत भी है क्या ? नहीं। उनकी संख्या अनंत है। (इस पद में यथाक्रम अलंकार है।) । १०५

अनैय रादलि नैयवव् वॅय्यती, विनैयि नीङ्गिय मेलवर् ताळिणै
पुनैयुम् जॅन्नियै याय्प्पुहळ्न् देत्तुदि, इनिय कूरिनिन् रेयिन शॅय्दियाल् 106

ऐय–तात; अनैयर् आतलिन्–वे ऐसे हैं, इसलिए; वॅय्य–क्रूर; ती वितैयिन् नीङ्किय–पापों से मुक्त; अ मेलवर्–उन उत्तम लोगों के; ताळ् इणै–चरणद्वय को; पुनैयुम् चॅन्नियै आय्–धारण करनेवाले सिर के होकर; पुकळ्न्तु एत्तुति–गुणवर्णन और स्तुति कीजिये; इनिय कूरि–मधुर भाषण करके; निन्रु–उनके बताये मार्ग में स्थित होकर; एयिन चॅय्ति–उनकी आज्ञा का पालन कीजिये। १०६

तात ! ब्राह्मण लोग ऐसे महिमावान हैं। इसलिए आप निष्पाप उन महानों के चरणद्वय को अपने सिर पर धारण कीजिए। सदा उनका गुणगान कीजिए और स्तुति कीजिए। उनसे मधुर भाषण कीजिए और उनके बताये मार्ग पर रहकर उनकी आज्ञा का अनुसरण कीजिये। १०६

आव दर्कु मळिवदर् कुम्मवर्, एव निर्कुम् विदियुमॅन् रालिनि
आव दॅप्पॊरु ळिम्मयु मम्मयुम्, देव रैप्पर वुन्दहै शीर्त्तदे 107

वितियुम्–(अकाट्य) विधि भी; आवतर्कुम्–बनाने और; अळिवतर्कुम्–बिगाड़ने की; अवर् एव–उनकी आज्ञा पर; निर्कुम् ॲन्राल्–(अधीन) रहेगी तो; इनि–अब; आवतु ॲ पॊरुळ्–(सहायक) रहेगी कौन सी वस्तु; इम्मैयुम्–ऐहिक जीवन के लिए हो; अम्मैयुम्–परलोक के लिए हो; तेवरै परवुम् तकै–भूसुरों का आदर करने की प्रवृत्ति; चीर्त्तते–श्रेष्ठ है। १०७

दुर्द्धर्ष विधि भी उनकी आज्ञा पाकर बनाती है या बिगाड़ती है। फिर उनकी आज्ञा से बढ़कर हितैषिणी वस्तु क्या है ? ऐहिक जीवन के लिए हो चाहे पारलौकिक जीवन के लिए, भूसुरों का आदर करना श्रेष्ठ है। १०७

उरुळु नेमियु मॊण्गव रॅःकमुम्, मरुळिल् वाणियुम् वल्लवर् मूवर्क्कुम्
तॅरुळु नल्लर मुम्मनच् चॅम्मयुम्, अरुळु नीत्तपि नावदुण् डाहुमो 108

उरुळुम् नेमियुम्–सर्वत्र चलनेवाला चक्रायुध; ऑण्–उज्ज्वल; कवर्–(तीन) काँटोंवाले; ॲःकमुम्–शूल और; मरुळ् इल्–असंदिग्ध; वाणियुम्–वाणी में; वल्लवर्–समर्थ; मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों का भी; तॅरुळुम् नल् अरमुम्–शुद्ध सद्धर्म; मनम् चॅम्मैयुम्–मन की नेकी; अरुळुम्–कृपा; नीत्तपिन्–छोड़ देने के बाद; आवतु–(उनसे) होनेवाला; उण्टु आकुमो–कुछ हो सकता है क्या। १०८

चक्रायुध (विष्णु देव) त्रिशूलभृत (शिवजी) पवित्र वाणी को अस्त्र के रूप में प्रयोग करनेवाले (वाणीपति) ब्रह्मा —ये भी शुद्ध धर्म, मन का आर्जव और दया को छोड़ देंगे तो उनसे किसी का कोई हित नहीं हो सकता। (ऐसी स्थिति में राजा के लिए ये गुण परमावश्यक हैं।)। १०८

शूदु मुन्दुऱच् चॊल्लिय मात्तुयर्, नीदि मैन्द नित्तक्किलै यायिनुम्
एद मॅन्बन यावयु मॆय्दुदर्, कोदु मूल मवैयॆन वोर्दिये 109

नीति मैन्त–नीतिमान सुत; चतु मुन्तु उऱ–कपट आदि; चॊल्लिय–कथित; मा तुयर्–बड़े दुखदाई दुष्कर्म; नित्तक्कु इलै–आपके पास नहीं है; आयिनुम्–तो भी; एतम् ऎन्पन यावैयुम्–अपराध कहे जानेवाले सभी को; ऎय्तुतऱ्कु–प्राप्त करने के लिए; ओतुम्–(नीतिशास्त्रों में) कथित; मूलम् अवै ऎन–हेतु वे ही हैं, यह; ओर्ति–जान लीजिये। १०९

नीतिमान कुमार ! कामादि बड़े दुखदायी गुण और कर्म आपके पास नहीं है। तो भी यह स्मरण रखें कि वे ही सभी अपराधों के मूल हैं। यह शास्त्रों का कथन है। १०९

यारॊ डुम्बहै कॊळ्ळल नॆन्ऱपिन्, पोरॊ डुङ्गुम् पुहऴॊडुङ् गादुतन्
तारॊ डुङ्गल्चॆय् यादतु तन्दपिन्, वेरॊ डुङ्गॆड वेण्डलुण् डाहुमो 110

यारॊटुम् पकै कॊळ्ळलन्–किसी से शत्रुता नहीं रखता; ऎन्ऱ पिन्–ऐसी स्थिति होने के बाद; पोर् ऒटुङ्कुम्–युद्ध नहीं रह जायगा; तन् तार्–उसकी सेना; ऒटुङ्कल् चॆय्यातु–कम नहीं होगी; पुकऴ् ऒटुङ्कातु–यश कम नहीं होगा; अतु तन्त पिन्–(ऐसी) वह स्थिति बना लेने के बाद; वेरॊटुम् कॆट वेण्टल्–जड़ के साथ नाश होने की स्थिति; उण्टाकुमो–होगी क्या। ११०

कोई राजा किसी का शत्रुत्व नहीं मोल लेता और उसके कोई शत्रु न रहे —ऐसी स्थिति हो जायगी तो उससे बड़े लाभ होते हैं। युद्ध नहीं होता और सेना नहीं घटती। यश भी कम नहीं होता। उस स्थिति में जड़ से नष्ट होने की दशा उत्पन्न होगी क्या ? नहीं होगी। ११०

कोळु मैम्बॊऱि युङ्गुऱै यप्पॊरुळ्, नाळुङ् गण्डु नडुवुऱु नोन्मयिन्
आळु मव्वर शेयर शन्नदु, वाळिन् मेल्वरु मादव मैन्दने 111

मैन्तने–वीर कुमार; ऐन्तु पॊऱियुम्–पाँच इन्द्रिय; कोळुम्–और उनके ग्राह्य (विषय); कुऱैय–कम हो तो; पॊरुळ् नाळुम् कण्टु–अर्थ (धार्मिक रीति से) रोज अर्जन करके; नटु उऱु नोन्मैयिन्–निष्पक्ष मनोभाव के साथ; आळुम्–शासन करने का; अ अरचे–वह राज्य ही; अरचु–सही शासन है; अन्नतु–वह शासन; वाळिन् मेल् वरुम्–तलवार की धार पर किया जानेवाला; मातवम्–महान तप है। १११

वीर सुत ! इन्द्रियों और विषय-भोग की आसक्ति को दमन किया गया तो अर्थार्जन खूब होगा। दिनोंदिन सम्पत्ति बढ़ेगी। निष्पक्ष

मनोभाव के साथ शासन होगा। ऐसा शासन ही सच्चा शासन है। वह शासन तलवार की धार पर किया जानेवाला तप है। (वह उतना कठिन भी है।)। १११

उमैक्कु नादऱ्कु मोङ्गुपुळ् ळूर्दिक्कुम्, इमैप्पि नाट्टमो रॅट्टुडै यानुक्कुम्
शमैत्त तोळ्वलि ताङ्गिन रायिनुम्, अमैच्चर् शौलवऴि याऱ्ऱ्द लाऱ्ऱले 112

उमैक्कु नातऱ्कुम्–उमापति का; ओङ्कु पुळ् ऊर्तिक्कुम्–श्रेष्ठ पक्षी (गरुड़) पर आरूढ़ (विष्णु) का; इमैप्पु इल् नाट्टम्–पलक न मारनेवाली आँखें; ओर् ऍट्टु उटैयातुक्कुम्–एक आठ रखनेवाले ब्रह्माजी का; चमैत्त–मिला हुआ; तोळ वलि–भुजबल; ताङ्कितर् आयितुम्–रखनेवाले भी हों; अमैच्चर् चॊल् वऴि–मन्त्रियों की बात पर; आऱ्ऱुतले–कर्म करना ही; आऱ्ऱल्–बल है। ११२

समझिए कि कोई राजा उमापति शिवजी, ऊँचा उड़नेवाले गरुड़ पर आरूढ़ विष्णु और आठ अप्रमत्त दृष्टि वाले ब्रह्मा —इनका-सा भुजबल रखता है। तो भी मन्त्रियों की सलाह पर चलना ही सच्चा बल होगा। ११२

ऍन्बु तोलुडै यार्क्कुमॅल् लार्क्कुन्दम्, वन्ब हैप्पुल माशऱ मायप्पदॅन्
मुन्बु पिन्बिन्ऱि मून्ऱुल हत्तिनुम्, अन्बि नल्लदो राक्कमुण् डाहुमो 113

ऍन्पु तोल् उटैयार्क्कुम्—अस्थि-चर्ममय (मुनि) के लिए भी; ऍल्लार्क्कुम्–(क्यों) सभी के लिए; तम्–उनके; वन् पकै पुलम्–प्रबल शत्रु, इन्द्रियों को; आचु अऱ–अशेष; मायप्पतु–दमन करना; ऍन्–किस काम का; मुन्पु पिन्पु इन्ऱि–पहले, बाद का, यह भेद छोड़ (सर्वदा); मून्ऱु उलकत्तितुम्–तीनो लोकों में; अन्पिन् अल्लतु–(पवित्र) प्रेम के सिवा; ओर् आक्कम्–एक उन्नति का हेतु; उण्टाकुमो–हो सकता है क्या। ११३

केवल अस्थिपंजर-से दिखनेवाले मुनियों के लिए क्या, सभी लोगों के लिए पाँचों इन्द्रियों का संपूर्णतः दमन करने से भी क्या मिलनेवाला है? पीछे या बाद की बात नहीं— सदा और सर्वत्र, तीनों लोकों में, पवित्र प्रेम को छोड़कर कोई हितकारी वस्तु हो सकती है क्या? नहीं हो सकती। ११३

वैय मन्नुयि राहवम् मन्नुयिर्, उय्यत् ताङ्गु मुडलन्न मन्ननुक्
कैय मिन्ऱि यऱङ्गड वादरुळ्, मॅय्यि निन्ऱपिन् वेळ्वियुम् वेण्डुमो 114

वैयम्–प्रजाजन; मन् उयिराक–अक्षय जीव हैं, मानकर; अ मन् उयिर् उय्य–उन अक्षय जीवों के भले के लिए; ताङ्कुम्–उनको धारण करनेवाला; उटल् अन्न–शरीर-सम; मन्नतुक्कु–राजा के लिए; अऱम् कटवातु–धर्म का उल्लंघन न करके; अरुळ्–दया; मॅय्यिन्–और सत्य के मार्ग में; ऐयम् इन्ऱि निन्ऱ पिन्–असंदिग्ध रूप से रहकर व्यवहार करेगा तो; वेळ्वियुम् वेण्टुमो–यज्ञ भी चाहिए क्या। ११४

प्रजाजन अक्षय जीव या प्राण हैं। उन जीवों का भर्त्ता शरीर-सम राजा है। अगर वह धर्म का उल्लंघन नहीं करके करुणा और सत्य के मार्ग पर, संशयहीन प्रकार से स्थिर रहेगा तो कोई यज्ञ भी करना चाहिए क्या ? (नहीं।)। ११४

इऩिय शॊल्लिऩ ईहय नॆण्णिऩऩ्, विऩयऩ् तूयऩ् विऴुमियऩ् वॆऩ्ऱियऩ्
निऩयु नीदि नॆऱिहड वाऩॆनिऩ्, अऩय मऩ्ऩऱ् कऴिवुमुण् डाहुमो 115

इऩिय चॊल्लिऩऩ्–मधुर भाषी; ईकैयऩ्–दानी; ऍण्णिऩऩ्–विवेकी; विऩैयऩ्–और कार्यकुशल; तूयऩ्–पवित्र; विऴुमियऩ्–उत्कृष्ट विचार वाला; वॆऩ्ऱियऩ्–और विजयी; निऩैयुम्–सबसे प्रशंसित; नीति नॆऱि कटवाऩ्–नीति मार्ग न छोड़नेवाला हो; ऍऩिल्–तो; अऩैय मऩ्ऩऱ्कु–ऐसे राजा का; अऴिवुम् उण्टाकुमो–नाश (पतन) भी होगा क्या। ११५

कोई राजा मधुरभाषी, दानी, विवेकशील, कर्मण्य, विजयशील, प्रकीर्तित और नीतिमार्ग न त्यागनेवाला हो तो उसकी कोई हानि हो सकती है क्या ?। ११५

शील मल्लऩ नीक्किच्चॆम् बॊऱ्ऱुलैत्, ताल मऩ्ऩ तऩिनिलै ताङ्गिय
ञाल मऩ्ऩऱ्कु नल्लवर् नोक्किय, काल मल्लदु कण्णुमुण् डाहुमो 116

चीलम् अल्लऩ नीक्कि–सदाचार जो नहीं हैं, उनको हटाकर; चॆम् पॊऩ् तुलै–उत्तम स्वर्ण-तुला के; तालम् अऩ्ऩ–(जीभ) काँटे के समान; तऩि निलै ताङ्किय–श्रेष्ठ निष्पक्ष स्थिति को अपनाकर रहनेवाले; ञालम् मऩ्ऩऱ्कु—देश-शासक राजा के; नल्लवर् नोक्किय–अच्छे मन्त्रियों द्वारा निर्दिष्ट; कालम् अल्लतु–काल के सिवा; कण्णुम् उण्टाकुमो–आँखें हो सकती हैं क्या। ११६

जो राजा कुचाल को हटाकर बहुमूल्य स्वर्ण-तुला के काँटे के समान उत्तम निष्पक्षता का आलंबन करके राज करेगा उसे अच्छे अमात्य जो काल बतावेंगे उसके सिवा उसके कोई आँख है क्या ? (इस पद्य में आँख का विचित्र प्रयोग हुआ है। राजा के शासन-कार्य में काल का बड़ा महत्व है। अमात्य लोग जब काल-निर्धारण करेंगे तब अच्छा राजा उसका ध्यान रखेगा। वह अपने तर्क या विवेक की आँख का भरोसा नहीं करेगा। इस अर्थ में यहाँ आँख विवेक या तर्क की शक्ति का संकेत करती है।)। ११६

ओर्वि ऩल्विऩै यूऱ्ऱत्ति ऩारुरै, पेर्वि ऩॊल्विदि पॆऱ्ऱुळ दऩ्ऱरो
तीर्वि लऩ्बु शॆलुत्तलिऩ् चॆव्वियोर्, आर्व मऩ्ऩवर् कायुदमावदे 117

ओर्विऩ्–तर्कबुद्धि के साथ; नल्विऩै ऊऱ्ऱत्तिऩार्–सत्कर्मों में स्थिर रहनेवालों के; उरै–वचन की शक्ति; पेर्वु इल्–अचल; तॊल् विति–प्राचीन विधि ने भी; पॆऱ्ऱुळतु अऩ्ऱु–नहीं पाई है; तीर्वु इल् अऩ्पु चॆलुत्तलिऩ्–निरन्तर प्रेम करने से;

चॅव्वियोर् आर्वम्–उन उत्तम लोगों की सदिच्छा; मन्नवर्कु–राजा के लिए; आयुतम् आवतु–(शत्रुसंहारक) अस्त्र बनेगी (अरो)। ११७

तर्क और विवेक के साथ जो सोच-समझकर काम करते हैं उनकी वाणी में जो शक्ति है वह अकाट्य प्राचीन विधि में भी नहीं है। अडिग प्रेम रखने के कारण उन कर्मठ अमात्यों का सौजन्य राजा की, अस्त्र के समान शत्रु-हनन में सहायता करेगा। ११७

तूम केदु पुविक्कॅन्नत् तोन्ऱिय, वाम मेकलै मङ्गय राल्वरुम्
काम मिल्लै यॅन्तिऱ्कडुङ् गेडॅन्नुम्, नाम मिल्लै नरहमु मिल्लये 118

पुविक्कु तूमकेतु अॅन्न–पृथ्वी के लिए धूमकेतु (नाशक ग्रह) के समान; तोन्ऱिय–जो पैदा हुई हैं उन; वामम् मेकलै–सुन्दर मेखलाधारिणी; मङ्कैयराल्–स्त्रियों के कारण; वरुम्–उत्पन्न; कामम् इल्लै अॅन्निल्–काम नहीं रहा तो; कटुम् केटु अॅन्नुम् नामम्–कठोर आफ़त का नाम भी; इल्लै–नहीं रहेगा; नरकमुम् इल्लै–नरक भी नहीं है। ११८

मनोरम मेखलाधारिणी स्त्रियों के प्रति जो कामातुरता पैदा होकर बढ़ती है वह पृथ्वी को संकट देनेवाला धूमकेतु है। अगर वह नहीं होगी तो कष्ट का नाम तक नहीं रहेगा। नरकवास का मौका भी नहीं आयेगा। ११८

एनै नीदि यिन्नैयन वैयहप्, पोन हर्कु विळम्बिप् पुलङ्गोळोई
आन वन्नॉडु मायिर मौलियान्, तान नण्णिनन् ऱत्तुव नण्णिनान् 119

तत्तुवम् नण्णितान्–तत्वदर्शी वसिष्ठ; वैयकम् पोन्कर्कु–विश्वगर्भ श्रीराम को; इत्तैयन–ऐसी; एनै नीति–अन्य नीतियाँ; विळम्पि–बताकर; पुलम् कोळोइ–ज्ञान उद्‌बुद्ध करके; आनवनॊटुम्–उनके साथ; आयिर मौलियान् तानम्–सहस्रशीर्ष श्रीरंगनाथ के मन्दिर को; नण्णितान्–पधारे। ११९

तत्वदर्शी ने भूगर्भ श्रीराम को ऐसे और अन्य उपदेश दिये। श्रीराम को ज्ञान दिया। फिर वे श्रीराम को साथ लेकर सहस्रशीर्ष भगवान श्रीरंगनाथ के मंदिर में गये। ११९

नण्णि नाहणै वळ्ळलै नान्मऱैप्, पुण्णि यप्पुन लाट्टिप् पुलमयोर्
अॅण्णु नल्विनै मुऱ्ऱुवित् तेऱ्ऱिनान्, वॅण्णि ऱत्त तरुप्पै विरित्तरो 120

नण्णि–पहुँचकर; नाकम् अणै वळ्ळलै–शेषशायी भगवान को; नाल् मऱै–चतुर्वेदमन्त्रों से; पुण्णियम् पुनल् आट्टि–पवित्रीकृत जल से अभिषिक्त करके; पुलमैयोर् अॅण्णुम्–विद्वानों से आवश्यक माने जानेवाले; नल् विनै–वैदिक कर्मों को; मुऱ्ऱुवित्तु–सम्पूर्ण कराकर; वॅण् निऱत्त–श्वेतवर्ण; तरुप्पै विरित्तु–कुश डसाकर; एऱ्ऱिनान्–उस पर आसीन कराया। १२०

वहाँ उन्होंने चतुर्वेद के मंत्रों से पवित्रीकृत पुण्यजल से श्रीराम

का मज्जन कराया। विद्वानों द्वारा अनुशासित सभी वैदिक कर्मों का श्रीराम से अनुष्ठान करवाया। फिर श्वेतवर्ण कुश बिछाकर उन पर उन्हें आसीन कराया। १२०

❀ एऱ्ऱिड वाण्डहै यिऩिदि रुन्दपिऩ्, नूऱ्ऱड मार्बऩु नोय्दि ऩॆय्दप्पोय्
आऱ्ऱल्शाल् मऩ्ऩवर्क् कऱिवित् तावऩ्, शाऱ्ऱुह नहरणि शमैक्क वॆऩ्ऱऩऩ् 121

एऱ्ऱिट–आसीन कराने पर; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; इऩितु इरुन्त पिऩ्–सुख से (ध्यान मग्न) रहने के बाद; नूल्–यज्ञोपवीतधारी; तटमार्पऩुम्–विशाल वक्ष वाले वसिष्ठजी; नोय्तिऩ्–शीघ्र; ऎय्त पोय्–जा पहुँचे और; आऱ्ऱल् चाल्–प्रतापी; मऩ्ऩवर्कु–चक्रवर्ती के पास; अऱिवित्ताऩ्–समाचार दिया; अवऩ्–राजा ने; नकर् अणि चमैक्क–नगर का अलंकार करने का; चाऱ्ऱुक ऎऩ्ऱतऩ्–ढिंढोरा पिटवाओ, यह आज्ञा दी। १२१

श्रीराम दर्भासिन पर बैठकर ध्यान करने लगे। तब यज्ञोपवीतधारी विशाल श्रीवक्ष के ऋषि वसिष्ठ शीघ्र शक्तिमान प्रतापी चक्रवर्ती के पास पधारे और सभी बातें सुनायीं। तब राजा ने आज्ञा दी कि नगर सजाने की आज्ञा की मुनादी हो जाय। १२१

❀ एविय वळ्ळुव रिराम ऩाळये, पूमहळ् कॊळुनऩाय्प् पुऩैयु मोलियिक्
कोनह रणिहॆऩ्क् कॊट्टुम् बेरिहै, तेवरुङ् गळिहॊळत् तिरिन्दु शाऱ्ऱिऩार् 122

एविय वळ्ळुवर्–आज्ञापित "वळ्ळुव" लोगों ने; इरामऩ्–श्रीराम; नाळैये–कल ही; पू मकळ् कॊळुनऩ् आय्–भूमिपति होकर; मोलि पुऩैयुम्–मुकुट धरेंगे; इ को नकर्–इस राजधानी नगर को; तेवरुम् कळि कॊळ–देवों को भी आनन्द देते हुए; अणिक–सजाओ; ऎऩ–ऐसा; तिरिन्तु–घूम-घूमकर; कॊट्टुम् पेरिकै–ढोल पीटकर; चाऱ्ऱिऩार्–घोषणा की। १२२

राजाज्ञा पाकर वळ्ळुव (ढिंढोरा पीटनेवाले, विशिष्ट जाति के) लोगों ने सब जगह घूमकर ढिंढोरा पिटवाया कि श्रीराम कल ही भूपति होंगे और किरीटधारण करेंगे। लोग इस राजधानी नगर को ऐसा सजायें कि देव लोग भी विस्मित हो जायँ। १२२

❀ कवियमै कीर्त्तियक् काळै नाळये, पुवियमै मणिमुडि पुऩैयु मॆऩ्ऱशॊऱ्
चॆवियमै नुहर्च्चिय दॆऩिऩुन् देवर्तम्, अवियमु दाऩदन् नहरु ळार्क्कॆलाम् 123

कवि अमै कीर्त्ति–काव्य-योग्य यशस्वी; अ काळै–वे (पुरुष-) ऋषभ; नाळैये–कल ही; पुवि अमै–भूमि को अपने शासनाधीन करने के निशान रूपी; मणि मुटि पुऩैयुम्–रत्नकिरीट पहनेंगे; ऎऩ्ऱ चॊल्–यह समाचार; चॆवि अमै नुकर्च्चियतु–श्रुति द्वारा ग्रहण करने योग्य बात ही थी; ऎऩिऩुम्–सो भी; अ नकर् उळ्ळार्क्कु ऎल्लाम्–उस नगर के सभी वासियों के लिए; तेवर् तम् अवि–देवों का खाद्य; अमुतु आततु–अमृत-सा (भोग्य) बन गया। १२३

जिन पर काव्य की रचना हो सकती है ऐसे यशस्वी नरपुंगव श्रीराम कल ही भूमि के शासन के अधिकार को अपनाने का निशानरूपी मुकुट धारण करेंगे —यह घोषणा कानों में पड़नेवाली बोली मात्र है। पर अयोध्यानगर-वासियों के लिए यह केवल समाचार सुनना नहीं था। किन्तु देवों का भोग्य अमृत ही हो गया। वे बहुत आनन्दित हो गये। १२३

❀ आर्त्तनर् कळित्तन राडिप् पाडिनर्
वेर्त्तनर् तडित्तनर् शिलिर्त्तु मॅय्म्मयिर्
पोर्त्तनर् मन्ननैप् पुहऴ्न्दु वाऴ्त्तिनर्
तूर्त्तन रिरुनिदि शॊल्लि नार्क्कॅलाम् 124

आर्त्तनर् कळित्तनर्–हल्ला मचाया, मोद दिखाया; आटि पाटिनर्–गाये, नाचे; वेर्त्तनर्–पसीना हुए; तटित्तनर्–मोटे हुए; मॅय् मयिर् चिलिर्त्तु–बाल पुलकित हुए; पोर्त्तनर्–शरीर पुलक भरे हो गये; मन्ननै–चक्रवर्ती को; पुकऴ्न्तु–तारीफ़ करके; वाऴ्त्तिनर्–स्तुति की; चॊल्लिनार्क्कु ॲल्लाम्–समाचार देनेवाले सभी को; इरु निति तूर्त्तनर्–बड़ा धन दिया। १२४

नगरवासियों ने आनन्दारव किया। सब तरह से मोद प्रदर्शित किया। कुछ गाये, कुछ नाचे। कइयों के शरीर स्वेद से भर गये। लोगों के शरीर फूल गये। उनके शरीर के बाल पुलकित हो गये और सारे शरीर पुलक से भर गये। वे राजा की प्रशंसा करने लगे। उनकी संस्तुति की। जो भी आकर समाचार कहता (यद्यपि पहले ही उन्हें मालूम था तो भी) उसे अपार धन भेंट करते। १२४

❀ तिणिशुड रिरवियैत् तिरुत्तु माऱुनऱ्
पणियिडैप् पळ्ळियान् परन्द मार्बिडै
मणियिनै वेहडम् वहुक्कु माऱुम्बोल्
अणिनह रणिन्दन ररुत्ति माक्कळे 125

अरुत्ति माक्कळ्–उत्साहपूर्ण उन लोगों ने; तिणि चुटर्–घनी किरणों वाले; इरवियै–सूर्य को; तिरुत्तुम् आऱुम्–माँज लिया, ऐसा और; नल् पणि इटै–श्रेष्ठ शेषनाग पर; पळ्ळियान्–शयन करनेवाले (परमपुरुष) के; परन्त मार्पिटै–विशाल वक्षस्थल में रहनेवाले; मणियिनै–कौस्तुभमणि को; वेकटम् वकुक्कुम् आऱुम् पोल्–सान पर तराशकर और चमकदार बना रहे हों, इस प्रकार; अणि नकर्–सुन्दर नगर को; अणिन्तनर्–सजाने लगे। १२५

वे नगर को अलंकृत करने लगे। उनका प्रयास ऐसा रहा मानो अंशुमाली को नयी रौनक दी जा रही हो; या श्रेष्ठ शेषनाग-शायी श्रीविष्णु भगवान के विशाल वक्ष को भूषित करनेवाली कौस्तुभ मणि सान पर धरकर तराशी जा रही हो! अयोध्या नित्यसुन्दर नगर है। उसे और भी सुन्दर बनाया गया। १२५

❀ वॆळ्ळिय करियऩ शॆय्य वेरुळ
कॊळ्ळवाऩ् कॊडिनहर्क् कुळाङ्गॊण् डाडुव
कळ्ळविळ् कोदयाऩ् शॆल्वङ् गाणिय
पुळ्ळॆलाऩ् दिरुनहर् पुहुन्द पोऩ्ऱवे 126

वॆळ्ळिय–श्वेत रंग की; करियऩ–काले रंग की; चॆय्य–लाल; वेऱु उळ–अन्य विविध रंगों की; नकर्–नगर भर में; कॊळ्ळै कॊण्टु–बहुत बड़ी राशि में; आटुव–हिलनेवाली; वाऩ् कॊटि–श्रेष्ठ पताकाएँ; कळ् अविळ् कोतैयाऩ्–शहद के साथ खिले पुष्पों की माला के धारी श्रीराम का; चॆल्वम् काणिय–श्रीयुक्त होना देखने के लिए; पुळ् ऍलाम्–पक्षीगण सब; तिरुनकर्–श्रीसम्पन्न नगर में; पुकुन्त पोऩ्ऱ–आ जुटे हों, ऐसा लगीं। १२६

कई पताकाएँ फहरायी गईं। वे सफ़ेद, काली, लाल और अनेक रंगों की थीं। उनको देखकर ऐसा लगा मानो सारे खगगण शहद के साथ खिले पुष्पों की माला से शोभायमान श्रीराम का श्रीयुक्त होने का वैभव देखने आ पहुँचे हों। १२६

मङ्गयर् कुऱङ्गॆऩ वहुत्त वाऴैहळ्, अङ्गवर् कऴुत्तॆऩक् कमुह मार्न्दऩ
तङ्गॊळि मुरुवलिऱ् ऱाम नाऩ्ऱऩ, कॊङ्गयि ऩिरैत्तऩ कऩह कुम्बमे 127

अङ्कु–वहाँ; मङ्कैयर् कुऱङ्कु ऍऩ–रमणियों के ऊरुओं के समान; वाऴैकळ्–कदलीवृक्ष; वकुत्त–(यत्रतत्र) लगाये गये; अवर् कऴुत्तु ऍऩ–उनके कण्ठों के समान; कमुकम्–पूग के वृक्ष; आर्न्तऩ–(गाड़कर) भर गये; ऒळि तङ्कु–प्रकाशमान; मुऱुवलिऩ्–(उनके) दाँतों के समान; तामम् नाऩ्ऱऩ–मोतियों की मालाएँ लटकाई गईं; कॊङ्कैयिऩ्–उनके स्तनों के समान; कऩकम् कुम्पम्–स्वर्णकलश; निरैत्तऩ–पंक्ति में रखे गये। १२७

उस नगर में कदली वृक्ष और पूग वृक्ष यत्रतत्र गाड़े गये। मुक्ता-मालाएँ लटकायी गईं। पूर्णकलश पंक्तियों में रखे गये। वे क्रमशः रमणियों की जाँघों, कंठों, दंतावलियों और स्तनों के समान थे। १२७

मुदिरॊळि युयिर्त्तऩ मुडुहिक् कालयिऱ्, कदिरवऩ् वेऱॊरु कविऩ्कॊण् डाऩॆऩ
मदितॊड निवन्दुयर् महर तोरणम्, पुदियऩ वलर्न्दऩ पुदव राशिये 128

पुतियऩ–नवीन; मति तॊट–चन्द्रमण्डल को छूते हुए; निवन्तु उयर्–उन्नत बड़े ऊँचे; मकर तोरणम्–मकर तोरण; अलर्न्तऩ–जिन पर बने; पुतवम् राशि–वे नगरद्वार; कालैयिल् कतिरवऩ्–उदय सूर्य ने; मुटुकि–सत्वर आकर; वेऱु ऒरु कविऩ् कॊण्टाऩ्–दूसरा एक सुन्दर रूप धर लिया; ऍऩ–ऐसा; मुतिर् ऒळि उयिर्त्तऩ–अतिशय प्रकाश देने लगे। १२८

नगर द्वारों में नये मकर-तोरण बनाये गये। वे चंद्रमंडल को छूते-से उन्नत बनाये गये। वे ऐसे प्रकाश देने लगे मानो उदय सूर्य ने शीघ्र आकर अभूतपूर्व सुन्दर रूप धर लिया हो। १२८

तुऩियरु शॆम्मणित् तूण नीऱ्तोय्, वऩिदयोर् कूऱिऩऩ् वडिवु काट्टिऩ
पुऩैतुहि लुऱैतोऱुम् बॊलिन्दु तोऩ्ऱिऩ, पऩिपॊदि कदिरॆऩप् पवळत् तूण्गळे 129

पुऩै तुकिल् उऱै तोऱुम्–अलंकृत वस्त्र की बनी खोलों के; तुऩि अऱु–निर्मल; चॆम्मणि तूणम्–माणिकमय खम्भों ने; नीऱु तोय्–भभूतधारी; वऩितै ओर कूऱिऩऩ्–और अर्धनारीश्वर के; वटिवु–रूप को; काट्टिऩ–दिखाया; पवळम् तूण्कळ्–मूंगे के खम्भे; पऩि पॊति कतिर् ॲऩ–हिमाच्छादित सूर्य के समान; पॊलिन्तु तोऩ्ऱिऩ–सुन्दर दिखे। १२६

खंभों के ऊपर नवीन (श्वेत) वस्त्र की खोलें चढ़ायी गईं। कुछ खंभे माणिक्य-सज्जित थे। वे भभूतधारी अर्धनारीश्वर श्री शिवजी के समान लगे। कुछ लाल प्रवाल के खंभे थे। वे उस सूर्य के समान सुन्दर थे जिसको हिम ढँक रहा था। [वस्त्र की खोल भभूत (भस्म) और हिम से उपमित है और खंभे शिवजी और अंशुमाली से उपमित हैं।]। १२९

मुत्तिऩाऩ् मुळुनिला वॆऱिप्प मॊय्म्मणिप्
पत्तियि ऩिळवॆयिल् परप्प नीलत्तिऩ्
तॊत्तिऩ मिरुळ्वरत् तूण्डच् चोदिड
वित्तहर् विरित्तना ळॊत्त वीदिये 130

वीति–वीथियाँ; मॊय्मणि पत्तियिऩ्–पास-पास रखी गई लाल मणियों की पंक्तियों के कारण; इळ वॆयिल् परप्प–बाल धूप छिटकाती हैं; तॊत्तु नीलत्तिऩ् इऩम्–झुरमुटों में रहे नीले रत्न; इरुळ् वर तूण्ट–अन्धकार को उकसाते हैं; मुत्तिऩाऩ्–मोतियों से; मुळुनिला ऎऱिप्प–पूर्णचाँदनी फैलती है; चोतिटम् वित्तकर्–ज्योतिष शास्त्र विद्वानों के; विरित्त–वर्णित; नाळ् ऒत्त–दिन के समान थीं। १३०

वीथियाँ रत्न, नीली मणियाँ, मोती आदि से भरी थीं। रत्नों से मंद धूप-सा प्रकाश, नीली मणियों से अंधकार-सा और मोतियों से चंद्रिका का प्रकाश छूटता था। इसलिए वे वीथियाँ ज्योतिष-शास्त्रियों से वर्णित दिन के समान थीं। एक ही दिन में सूर्य की धूप, अंधकार और चाँदनी तीनों पायी जाती हैं। वैसे ही वीथियों में तीनों पाये जाते थे। तिथि, नक्षत्र, योग आदि की गणना ज्योतिषी करते हैं। १३०

❀ आडऩ्माऩ् ऱेर्क्कुळा मवऩि काणिय
वीडॆऩु मुलहिऩ्वीळ् विमाऩम् बोऩ्ऱऩ
ओडॆवॆङ् गडहळि ऱुदय मालवरै
तेडरुङ् गदिरॊडुन् दिरिव पोऩ्ऱवे 131

आटल्माऩ्–नर्तनशील अश्वों के; तेर् कुळाम्–(जुते) रथों का समूह; अवऩि काणिय–इस अवनी को देखने के लिए; वीटु ॲऩुम् उलकिल्–मुक्ति के स्वर्ग के लोक से; वीळ्–उतरकर आये हुए; विमाऩम् पोऩ्ऱऩ–देवयानों के समान थे; ओटै–मुखपट्ट पहने हुए; वॆम् कटम् कळिऱु–भयंकर मदमत्त गज; उतयम् माल् वरै–गुरु

उदयपर्वत अनेक; तेट अरु कतिरोंटुम्–अलभ्य सूर्यों के साथ; तिरिव पोऩ्ऱ–घूमते जैसे थे। १३१

नाचते-से सुन्दर चाल के साथ दौड़नेवाले अश्वों से जुते रथ पृथ्वी के दर्शनार्थ आगत देवयानों के समान लगे जो पापपुण्य-मुक्त स्वर्गलोक से चाव के साथ उतर आये थे। उज्ज्वल मुखपट्टों के साथ जो भयंकर मदमत्त गज घूमते थे वे अनेक उदयगिरियों के समान लगे जो अलभ्य अंशुमालियों के साथ आ रहे हों। १३१

वळङ्गॅळ्ळु तिरुनहर् वैहुम् वैहलुम्
पळिङ्गुडै नॅडुञ्जुव रडुत्त पत्तियिल्
किळर्न्दॅळ्ळु शुडर्मणि यिरुळैक् कीऱलाल्
वळर्न्दिल विरिन्दिल शॅक्कर् वाऩमे 132

वळम् कॅळु तिरुनकर्–सर्वसमृद्ध श्रीमन्त नगर में; वैकुम् वैकलुम्–वास के हर दिन; पळिङ्कु उटै(य)–स्फटिक की; नॅटु चुवर्–ऊँची दीवारों पर; पत्तियिल् अटुत्त–श्रेणियों में जड़ित; किळर्न्तु ॲळु चुटर्–छिटक उठनेवाली किरणों के; मणि–रत्न; इरुळै कीऱलाल्–अँधेरे को चीर देते हैं, इसलिए; वळर्न्तिल–नहीं बढ़ता; चॅक्कर् वाऩम्–लाल गगन; विरिन्तिल–नहीं फैलता। १३२

सर्वसमृद्ध उस नगर की स्फटिकमय दीवारों पर अनेक रत्न जटित थे। उनसे लगातार विपुल किरणराशि छूट रही थी। उसने अँधेरे को मिटाया। इसलिए किसी भी दिन न अन्धकार रहा, न (सांध्य-) गगन की लालिमा विस्तृत हुई। (न अँधेरा हुआ न संध्या आई)। दिन और रात एक समान थे। १३२

❀ पूमळ्ळै पुऩऩ्मळ्ळै पुदुमॅऩ् शुण्णत्तिऩ्
तूमळ्ळै तरळत्तिऩ् ऱोमिल वॅण्मळ्ळै
तामिळ्ळै नॅरिदलिऱ् ऱहर्न्द पॊऩ्मळ्ळै
मामळ्ळै निहर्त्तऩ माड वीदिये 133

माटम् वीति–प्रासादों से भरी वीथियों में; पू मळ्ळै–पुष्पों की वर्षा; पुऩल् मळ्ळै–(धूल थमाने के लिए सिंचित) सुवासित जल की वर्षा; तूम्–छिड़के हुए; पुतु मॅऩ् चुण्णत्तिऩ् मळ्ळै–नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा; तोम् इल–निर्मल; वॅण् तरळत्तिऩ् मळ्ळै–श्वेतमुक्ता के चूर्ण की वारिश; इळ्ळै ताम् नॅरितलिऩ्–आभरणों के, भीड़ के कारण, आपस में टकराने से; तकर्न्त पॊऩ् मळ्ळै–टूटकर गिरे स्वर्ण की वर्षा; मा मळ्ळै निकर्त्तऩ–(सब मिलकर) विपुल वर्षा-सी बन गई। १३३

प्रासादों से भरी अयोध्या की वीथियों में पुष्पों की वर्षा, सुवासित जल की वर्षा, नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा, निर्मल मोतियों की वर्षा, भीड़ के कारण आपस में टकराकर आभरणों ने जो स्वर्णकण गिराये उनकी वर्षा—सब मिल गई और बड़ी भारी वर्षा-सी हो गई। १३३

कारॊडु तॊडर्मदक् कळिरु शॆन्ऱन, वारॊडु तॊडर्हऴन् मैन्द रामॆन्नत्
तारॊडु नडन्दन पिडिह डाऴ्हलैत्, तेरॊडु नडक्कुमत् तॆरिवै मारिने 134

कारॊटु तॊटर्–मेघों से तुलनेवाले; मतम् कळिरु–मत्तगज; वारॊटु तॊटर्–तस्मे से बँधी; कऴल्–पायलधारी; मैन्तर् आम् ऍन–पट्ठों के समान; चॆन्ऱन–चले; पिटिकळ्–हथिनियाँ; ताऴ् कलै–लटकते वस्त्रों से आवृत; तेरॊटु नटक्कुम्–रथों (नितम्बों) के साथ चलनेवाली; अ तॆरिवै मारिन्–उन स्त्रियों के समान; तारॊटु नटन्तन–कण्ठहार के साथ चलीं। १३४

वहाँ हाथी और हथिनियाँ घूम रही थीं। मेघसम वे हाथी तस्मों पर बँधी घुँघुरुओं की बनी पायल के धारी पट्ठों के समान घूमे। हथिनियाँ अपने गले के हारों के साथ उन स्त्रियों के समान घूमीं जो ढीले वस्त्रों से आवृत नितंबों के साथ घूम रही थीं। १३४

❀ एय्न्दॆऴु शॆल्वमु मऴहु मिन्वमुम्, तेय्न्दिल वनैयदु तॆरिहि लामयाल्
आय्न्दनर् पॆरुहवु ममर रिम्बरिर्, पोन्दवर् पोन्दिल मॆन्नुम् बुन्दियाल् 135

एय्न्तु ऍऴु चॆल्वमुम्–लगी रहकर बढ़नेवाली सम्पत्ति; अऴकुम्–और सौंदर्य; इन्पमुम्–आनन्द; तेय्न्तिल–घटे नहीं; अतैयतु–उसको; तॆरिकिलामैयाल्–न जानने से; इम्परिल् पोन्तवर्–इस लोक में आगत; अमरर्–सुर लोग; पोन्तिलम् ऍन्नुम् पुन्तियाल्–अभी नहीं पहुँचे, इस बोध से; पॆरुकवुम् आय्न्तनर्–बहुत सोच-विचार करने लगे। १३५

उस नगर में संपत्ति, सौन्दर्य और आनन्द हमेशा लगे रहे; कभी कम नहीं हुए। यह तथ्य सुर लोग नहीं जानते थे। इसलिए वे, जो अभिषेक के दर्शनार्थ आये थे, अयोध्या में पहुँचकर भी यह समझे कि हम अभी नहीं पहुँचे हैं— अपने देवलोक में ही हैं। इसलिए वे सोच-विचार में पड़ गये। १३५

❀ अन्नह रणिवुरु ममलै वानवर्, पॊन्नह रिदुवॆनप् पॊलियु मेल्वयिल्
इन्नलशॆ यिरावण निऴैत्त तीमैपोल्, तुन्नरुङ् गॊडुमनक् कूनि तोन्ऱिनाऴ् 136

अ नकर्–वह नगर; अणिवु उरुम् अमलै–जो सजाया जा रहा था, उस शोर-गुल में; वानवर् पॊन् नकर् इतु ऍन–देवों की स्वर्णपुरी यह है, ऐसा; पॊलियुम् ऍल्वैयिल्–जब शोभित रहा, तब; इन्नल् चॆय् इरावणन्–(लोक-) हानिकारक रावण के; इऴैत्त तीमै पोल्–किये दुष्कर्मों के रूप के समान; तुन्न अरु–अचिन्त्य; कॊटु मनम्–क्रूर मन की; कूनि–कुब्जा (मंथरा); तोन्ऱिनाऴ्–प्रकट हुई। १३६

अयोध्या में अलंकार के कार्यों के कारण बड़ा शोरगुल मचा हुआ था। वह देवों की स्वर्णनगरी के ही समान शोभापूर्ण था। उस समय कुब्जा मंथरा प्रकट हुई। वह साक्षात उस आततायी रावण के सभी दुष्कर्मों के मूर्तरूप के समान थी। उसका मन अत्यंत और अचिंत्य रीति से क्रूर था। १३६

❀ तोन्ऱिय कूनियुन् दुडिक्कु नॅञ्जिनाळ्
ऊन्ऱिय वॅहुळिया ळुळैक्कु मुळ्ळत्ताळ्
कान्ऱॅरि नयनत्ताळ् कलिक्कुञ् जॊल्लिनाळ्
मून्ऱुल हिऩुक्कुमो रिडुक्कण् मूट्टुवाळ् 137

तोन्ऱिय कूनियुम्–प्रकट जो हुई वह कुब्जा; मून्ऱु उलकिनुक्कुम्–तीनो लोकों को; ओर् इट्टुक्कण् मूट्टुवाळ्–एक आफत मचानेवाली; तुटिक्कुम् नॅञ्चित्ताळ्–उद्विग्न मन वाली; ऊन्ऱिय वॅकुळियाळ्–गम्भीर क्रोध वाली; उळैक्कुम् उळ्ळत्ताळ्–(क्रोध से) आक्रांत मन वाली; कान्ऱु ॲरि नयनत्ताळ्–क्रोध से जलती-सी आँख वाली; कलिक्कुम् चॊल्लिनाळ्–उच्च स्वर वाली। १३७

जो सामने प्रकट होकर आई वह मंथरा तीनों लोकों पर सितम ढानेवाली थी। उसका मन उद्विग्न था; गंभीर क्रोध घर किये था। उसका चित्त क्रोधाक्रान्त था। उसकी आँखें जलती आग के समान थीं और वाणी उग्र थी। १३७

❀ तॊण्डवाय्क् केहयन् ऱोहै कोयिन्मेल्
मण्डिनाळ् वॅहुळियिन् मडित्त वायिनाळ्
पण्ड(य्)ना ळिराहवन् पाणि विल्लुमिळ्
उण्डयुण् डदनैत्तन् नुळ्ळत् तुळ्ळुवाळ् 138

पण्टै नाळ्–पूर्व समय में; इराकवन् पाणि–श्रीराम के हाथ के; विल् उमिऴ् उण्टै–चाप से निकले गुलेले (मिट्टी की गोलियाँ); उण्टतै–खाने (मारे जाने) को; तन् उळ्ळत्तु उळ्ळुवाळ्–अपने मन में स्मरण करती; वॅकुळियिन्–उस कोप से; मटित्त वायिनाळ्–(अधर मोड़े) होंठ चबाती हुई; तॊण्टै वाय्–बिबाधरा; केकयन् तोकै–केकय की मयूराभा पुत्री, कैकेयी के; कोयिल् मेल्–महल पर; मण्टिनाळ्–प्रचण्डवेग से आई। १३८

पहले कभी श्रीराम उस पर गुलेले (चाप से मिट्टी की गोलियाँ) मारते थे। उसे वह याद करती थी। उससे क्रोधोन्मत्त हुई। वह होंठ चबाते हुए केकयराजतनया, मयूराभा कैकेयी के महल पर प्रचंड गति से गई। (यह गुलेला मारने की बात वाल्मीकि ने नहीं कही है। लेकिन तमिळ् के वैष्णव संतों की कृतियों में इसका उल्लेख है।)। १३८

❀ नाऱ्कडऱ् पडुमणि नळिनम् बूत्तदोर्
पाऱ्कडऱ् पडुदिरैप् पवळ वल्लियै
पोऱ्कडैक् कण्णरुळ् पॊऴियप् पॊङ्गणै
मेऱ्किडन् दाडनै विरैवि नॅय्दिनाळ् 139

नाल् कटल् पट्टु मणि–चारों ओर के समुद्र से प्राप्त रत्नों के साथ; नळितम् पूत्ततु–कमल खिला हो जैसे; ओर् पाल् कटल् पटु तिरै–अनुपम क्षीरसागर की तरंगों के बीच रहनेवाली; पवळ वल्लियै पोल्–प्रवाललता के समान; पॊङ्कु अणै मेल्–

उन्नत एक शय्या पर; कटै कण् अरुळ् पॊऴिय–अपांगों से कृपा प्रकट करते हुए; किटन्ताळ् तत्तै–लेटी हुई कैकेई को; विरैविन् ॲय्तिन्ताळ्–शीघ्र नियराई। १३९

कैकेयी शय्या पर शयन करती सो रही थीं। वह रत्नाकरों से प्राप्य रत्नों के साथ खिले कमल के समान लगीं। और उस प्रवाल-वल्लरी के समान भी लगीं जो क्षीरसागर की तरंगों के मध्य फैली हो। कुब्जा उनके पास अति वेग से गई। १३९

❀ ॲय्दियक् केहयन् मडन्द येडविऴ्
नॊय्दलर् तामरै नोऱ्ऱु नोऩ्बिताऱ्
शॆय्दपे रुवमैशाल् शॆम्बॊऱ् चीऱडि
कैहळिऩ् ऱीण्डिनळ् कालक् कोळऩ्ताळ् 140

कालम् कोळ् अऩ्ऩाळ्–बुरा काल उत्पन्न करनेवाले बुरे ग्रह के समान वह; ॲय्ति–पास पहुँचकर; अ केकयन् मटन्तै–उन केकयपुत्री के; एटु अविऴ्–खुली पंखुड़ियों के साथ; नॊय्तु अलर्—मृदु-विकसित; तामरै–कमलपुष्प; नोऱ्ऱु नोऩ्पित्ताल्–अपनी की हुई तपस्या से; चॆय्त–प्राप्त; पेर् उवमै चाल्–श्रेष्ठ उपमा के योग्य (जिससे) बना; चॆम्पॊऩ् चिऱु अटि–उत्तम स्वर्णाभूषण शोभित लघु चरण को; कैकळिऩ् तीण्टिऩाळ्–हाथों से स्पर्श किया। १४०

बुरे काल के बुरे ग्रह के समान उस मंथरा ने उनके पास पहुँचकर कैकेयी के उस मृदु चरण का स्पर्श किया जिसकी उपमा पाने के लिए कमल ने तपस्या की थी। वह चरण पुष्ट पंखुड़ियों के व विकासशील कमल के पुष्प के समान था। १४०

❀ तीण्डलु मुणर्न्दत् तॆय्वक् कऱ्पिनाळ्
नीण्डकण् णऩ्ऩदलु नीङ्गु हिऱ्ऱिलळ्
मूण्डॆऴु पॆरुम्बऴि मुडिक्कुम् वल्वित्तै
तूण्डिडक् कट्टुरै शॊल्लऩ् मेयिऩाळ् 141

तीण्टलुम्–स्पर्श करते ही; उणर्न्त–निद्रामुक्त; अ–वे; तॆय्व कऱ्पिऩाळ्–दैवी पातिव्रत्यवती; नीण्ट कण्–लम्बी आँखों में; अऩ्ऩ्तलुम् नीङ्कुकिऱ्ऱिलळ्–तन्द्रा छुड़ा नहीं पाईं; मूण्टु ॲऴु–उठकर फैलनेवाले; पॆरु पऴि–बड़े निन्द्य काम को; मुटिक्कुम्–करा चुकनेवाली; वल् वित्तै तूण्टिट–बलवान विधि की प्रेरणा से; कट्टुरै–अपनी वार्ता को; चॊल्लल् मेयिऩाळ्–(मंथरा) कहने लगी। १४१

स्पर्श होते ही उन दैवी पतिव्रता ने निद्रा त्यागी। पर अभी उनकी आँखों से तन्द्रा न छूटी थी। पीछे बड़ा अपयश लानेवाला कार्य होने को था। उसकी विधि की प्रबल प्रेरणा थी। इसलिए कुब्जा अपने मन की सोची बात यों कहने लगी। १४१

❀ अणङ्गुवाळ् विडवरा वणुहु मॅल्लयुम्
गुणङ्गॅडा दॉळिविरि कुळिर्वॅण् डिङ्गळ्पोल्
पिणङ्गुवान् पेरिडर् पिणिक्क नण्णवुम्
उणङ्गुवा यल्ल(य्)नी युऱङ्गु वायॅन्ऱाळ् 142

अणङ्कु–पीडक; वाळ् विटम्–भयंकर विषैला; अरा–राहु सर्प; अणुकुम् ऍल्लैयुम्–अपने पास आते तक; कुणम् कॅटातु–(शीतलता का) स्वभाव न खोकर; ऑळि विरि–प्रकाश देनेवाले; कुळिर् वॅण् तिङ्कळ् पोल्–शीतल श्वेत चन्द्र के समान; पिणङ्कु–विपरीत; वान् पेर् इटर्–बहुत बड़ा दुख; पिणिक्क नण्णवुम्–आपको ग्रसने आ रहा है, तो भी; उणङ्कुवाय् अल्लै–दुख नहीं समझतीं; नी उऱङ्कुवाय्–तुम सोओगी; ऍन्ऱाळ्–पूछा । १४२

पीड़ा देनेवाले विष से युक्त राहु-सर्प जब आपको ग्रसने आता है तब भी चन्द्र अज्ञ रहकर अपना स्वभाव न छोड़कर प्रकाश देता रहता है। उस शीतल श्वेत राकापति के समान आप भी इस बात को नहीं समझतीं कि बड़ी विपदा आपको ग्रसने आ रही है। आप दुख का अनुभव नहीं करतीं। आप सोती रहती हैं। १४२

❀ वॅव्विड मत्तयवळ् विळम्ब वेऱ्कणाळ्
तॅव्वडु शिलैक्कयॅन् शिऱुवर् शॅव्वियर्
अव्ववर् तुऱैतॉऱु मऱन्दि ऱम्बलर्
ऍव्विड रॅनक्कुवन् दडुप्प दीङ्गॅन्ना 143

वॅम् विटम् अन्नैयवळ्–भयंकर विषतुल्य उसके; विळम्प–कहने पर; वेल् कण्णाळ्—शक्ति-सम नेत्र वाली; तॅव् अटु–शत्रुसंहारक; चिलै कै–धनुर्हस्त; ऍन् चिऱुवर्–मेरे पुत्र (चारों); चॅव्वियर्–बलवान हैं; अव् अवर् तुऱै तॉऱुम्–उनके अपने-अपने क्षेत्रों में; अऱम् तिऱम्पलर्–धर्मविमुख न होनेवाले; ईङ्कु–तब यहाँ; ऍव् इटर्–कौन सी विपदा; ऍनक्कु वन्तु अटुप्पतु–मेरे पास आ लगेगी; ऍन्ना–यह कहकर। १४३

भयंकर विष-सी मंथरा ने जब यह बात कही तो शक्ति (बर्छी-) सी आँख वाली कैकेयी ने पूछा कि क्या बात कहती हो ? मेरे चार पुत्र हैं जो शत्रुसंहारक धनुर्धर हैं। वे प्रतापी हैं और अपने-अपने मार्ग के धर्म से हटनेवाले नहीं हैं। उनके रहते मुझ पर क्या विपदा आयेगी ? । १४३

❀ परावरुम् पुदल्वरॅप् पयक्क यावरुम्
उरावरुन् दुयर(य्)विट् टुऱुदि काण्बराल्
विरावरुम् बुविक्कॅलाम् वेद मेयत्त
इरामन्नैप् पयन्दवॅर् किडरुण् डोवॅन्ऱाळ् 144

यावरुम्–सभी कोई; परावु–जिनकी प्रशंसा करते हैं; अरु पुतल्वरै पयक्क–श्रेष्ठ पुत्र को पाने पर; उरावु–कठोर; अरु तुयरै विट्टु–और कठिन दुखों से छूटकर;

उरुति काण्पर्–श्रेष्ठ भलाई पायेंगे; विरावु–विविध जीवों से मिश्रित; अरु पुविक्कु ॲल्लाम्–उत्तम सभी लोकों के लिए; वेतमे अऩ्ऩ–वेदों के ही समान; इरामऩै पयन्त ॲऩ्कु–श्रीराम को पुत्र रूप में जिसने पाया है, उस मुझे; इटर् उण्टो–आफत होगी क्या; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १४४

संसार में कोई भी हों, उसके यशस्वी पुत्र पैदा हो जायँ तो वे प्रबल दुखों से निवृत्त हो जाते हैं और उनका परम सौभाग्य हो जाता है। मेरे तो श्रीराम पुत्र हैं जो विविध जीवों से भरे सभी लोकों के लिए वेद समान है। फिर मुझे भी कोई विपदा होगी क्या ? (वेद धर्मशास्त्र के मूल हैं जो विधि-निषेधों द्वारा मनुष्य को मार्ग बताते हैं। श्रीराम भी धर्मानुयायी ही नहीं धर्मप्रवर्तक भी हैं। वे "विग्रहवान धर्म" भी कहे जाते हैं।)। १४४

❀ आऴ्न्दपे रऩ्बिऩा ळऩैय कूऱलुम्
शूऴ्न्दती विऩैनिहर् कूऩि शॊल्लुवाळ्
वीऴ्न्ददु निऩ्ऩलन् दिरुवुम् वीन्ददु
वाऴ्न्दऩळ् कोसलै मदियि ऩालॆऩ्ऱाळ् 145

आऴ्न्त पेर् अऩ्पिऩाळ्–गम्भीर तथा अतिशय वात्सल्यशीला के; अऩैय कूऱलुम्–ऐसा कहते ही; चूऴ्न्त–आवृत; ती विऩै निकर्–बुरे कर्म के समान; कूऩि–कुब्जा; चॊल्लुवाळ्–फिर से कहनेवाली बनकर; निऩ् नलम् वीऴ्न्ततु–आपका भाग्य मिट गया; तिरुवुम् वीन्ततु–वैभव भी मिट गया; कोचलै–कौसल्या; मतियिऩाल् वाऴ्न्तऩळ्–बुद्धिचातुर्य से खुशहाल हो गई; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १४५

श्रीराम पर गंभीर और अतिशय प्रेम रखनेवाली कैकेयी ने यह बात कही तो मंथरा चुप नहीं रही। वह तो बुरे कर्म के समान उन्हें घेर आई थी। उसने कहा— आपका सौभाग्य मिट गया। आपका विभव मिट गया। कौसल्या अपनी बुद्धि-चातुर्य से उत्कर्ष पा गई। १४५

❀ अऩ्ऩशॊ लऩैयव ळुरैप्प वायिऴै
मऩ्ऩवर् मऩ्ऩनेर् कण्वऩ् मैन्दनेर्
पऩ्ऩरुम् बॆरुम्बुहऴ्प् परदऩ् पार्दऩिल्
ॲऩ्ऩिदऩ् मेलवट् कॆय्दुम् वाऴ्वॆऩ्ऱाळ् 146

अऩैयवळ्–उस (मंथरा) के; अऩ्ऩ चॊल् उरैप्प–वे शब्द कहने पर; आय् इऴै–चुने हुए श्रेष्ठ आभरणभूषित कैकेयी; कणवऩ्–(कौसल्या के) पति; मऩ्ऩवर् मऩ्ऩऩेल्–राजाओं के राजा हैं; पऩ्ऩ अरु–अवर्ण्य; पॆरु पुकऴ्–बड़े यशस्वी; परतऩ्–भरत; मैन्तऩेल्–पुत्र हैं; पार् तऩिल्–(तब) इस पृथ्वी पर; इतऩ् मेल्–इससे बढ़कर; अवट्कु ॲय्तुम् वाऴ्वु–उनको मिलनेवाला सौभाग्य; ॲऩ्–क्या है; ॲऩ्ऱाळ्–पूछा। १४६

श्रेष्ठ आभरणधारिणी कैकेयी ने इसके उत्तर में पूछा— कौसल्या के

पति राजाधिराज दशरथ हैं। अवर्ण्य यश के भागी भरत उनका पुत्र है। क्या यह कम है ? इससे बढ़कर कौन सा उत्कर्ष उन्हें मिलनेवाला है ? (कौसल्या भरत पर और कैकेयी राम पर समान प्रेम रखती थीं।)। १४६

❀ आडवर् नहैयुऱ वाण्मै माशुऱत्, ताडहै यॆन्नुम्बॆयरत्त् तैय लाळ्पडक्
कोडिय वरिशिलै यिरामन् कोमुडि, शूडुव नाळैवाळ् विदॆन्नच् चॊल्लिनाळ् 147

आटवर् नकैयुऱ–पुरुष लोग परिहास करें; आण्मै माचु उऱ–पुंसत्व कलंकित हो जाय, ऐसा; ताटकै ॲन्नुम् पॆयर्–ताड़का नाम की; तैयलाळ् पट–स्त्री को मारने के लिए; कोटिय–झुकाये गये; वरि चिलै–बन्धनयुक्त धनु के; इरामन्–(धारण करनेवाले) श्रीराम; नाळै–कल; को मुटि चूटुवन्–राजमुकुट धारण करेगा; वाळ्वु इतु–(कौसल्या का) जीवनोत्कर्ष यही; ॲन्–ऐसा; चॊल्लिनाळ्–कहा (मंथरा ने)। १४७

मंथरा ने कहा— पूछती हैं ? उनका पुत्र जो सब तरह से अयोग्य है कल राजमुकुट पहनेगा। ताड़का नाम की एक स्त्री पर उसने अपना धनुष झुकाकर बाण फेंका और उसे मारा। पुरुष लोग उसकी निन्दा करते हैं। पुंसत्व ही उसके इस काम से कलंकित हो गया। वह राम राजा बनेगा ! यही कौसल्या का उत्कर्ष है ! । १४७

❀ माऱ्ऱमह(क्) (त्)तुरैशॆय मङ्गै युळ्ळमुम्
आऱ्ऱल्शाल् कोशलै यऱिवु मॊत्तवाल्
वेऱ्ऱुमै युऱ्ऱिलळ् वीरन् ऱादैपुक्
केऱ्ऱव ळिदयत्ति निरुक्क वेकॊलाम् 148

माऱ्ऱम् अ.:तु–उत्तर में वह; उरै चॆय–कहने पर; मङ्कै उळ्ळमुम्–देवी (कैकेयी) का मन; आऱ्ऱल् चाल् कोचलै अऱिवुम्–और सुदृढ़ कौसल्या की बुद्धि; ऒत्त–एक सम थी; वेऱ्ऱुमै उऱ्ऱिलळ्–भेद नहीं मानती थीं; वीरन् तातै–वीरराघव के पिता; अवळ् इतयत्तिन् पुक्कु–उसके हृदय में प्रवेश कर; एऱ्ऱु–वासस्थान मानकर; इरुक्कवे कॊल् आम्–वास करते थे, शायद उससे। १४८

यह सुनकर कैकेयी के मन में कोई वैषम्य उदित नहीं हुआ। उनके हृदय में दशरथजी वास करते थे। शायद उस कारण से उनका मन और कौसल्या की दृढ़ बुद्धि दोनों श्रीराम पर समान प्रेम रखते थे। इस पद में एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक बात कही गयी है। कैकेयी का राम पर प्रेम मन का और कौसल्या का भरत पर प्रेम बुद्धि पूर्वक था। इसका भेद हम पीछे देखते हैं। कैकेयी का राम-प्रेम चलित हो गया और कौसल्या का भरत-प्रेम अडिग रहा। १४८

❀ आयपे रन्बॆनु मळ्क्क रात्तॊळत्
तेय्विला मुहमदि विळङ्गित् तेशुऱत्

तूयव ऴवहैपोय् मिहच्चु डर्क्कॅलाम्
नायह मनैयदोर् मालै नल्हिनाळ् 149

तूयवळ्-पवित्र मन वाली; आय-अपने मन में रहे; पेर् अऩ्पु ऍऩुम् अळक्कर्-बड़े प्रेमसागर के; आर्त्तु ॲळ-गर्जन कर उठते; मुकम्-मुख रूपी; तेय्वु इला मति-अक्षय चन्द्र के; विळङ्कि तोऩ्ऱ-अधिक शोभायमान होते; तेचु उऱ-तेज से भर जाते; उवकै पोय् मिक-उल्लास के बढ़ते; चुटर्क्कु ऍल्लाम्-सभी ज्योतियों के; नायकम् अऩैयतु-नायक जैसा (श्रेष्ठ); ओर् मालै-एक स्वर्णहार को; नल्किऩाळ्-उपहार में दिया। १४८

पवित्र मन वाली कैकेयी के मन में जो प्रेम उठा वह समुद्र-सम कोलाहल के साथ उमड़ने लगा। उनका मुख अक्षय चन्द्र के समान अधिक शोभा। उसमें एक नया तेज स्फुरित हुआ। आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। तब उन्होंने ग्रह और नक्षत्र आदि ज्योतियों से भी बढ़कर तेजोमय एक स्वर्णहार उठाकर मंथरा को उपहार में दिया। १४९

❀ तॅऴित्तऩ ऴरप्पिऩळ् शिरुकण् डीयुह
विऴित्तऩळ् वैदऩळ् वॅय्दु यिर्त्तऩळ्
अऴित्तऩ ळऴुदऩ ळम्बॊऩ् मालयाल्
कुऴित्तऩ णिलत्तैयक् कॊडिय कूऩिये 150

अ कॊटिय कूऩि-वह क्रूर कुब्जा; तॅऴित्तऩळ्-चिल्लाई; उरप्पिऩळ्-डाँटा; चिरु कण् ती उक-छोटी आँखों से आग उगलती हुई; विऴित्तऩळ्-तरेरा; वैतऩळ्-गाली दी; वॅय्तु उयिर्त्तऩळ्-गरम साँस छोड़ी; अऴित्तऩळ्-अपना अलंकार बिगाड़ लिया; अऴुतऩळ्-रोयी; अम् पॊऩ् मालैयाल्-उस स्वर्णहार से; निलत्तै कुऴित्तऩळ्-(पटककर) भूमि पर गड्ढा बना दिया। १५०

अब मंथरा का क्रोध सीमा पार हो गया। वह क्रूर कुब्जा यह देखकर चिल्ला उठी। उसने डाँटा, अपनी छोटी आँखों से अंगारे भरकर तरेरा, गाली दी, अपने अलंकार को बिगाड़ लिया। वह खुलकर रोई। उसने उस हार को ऐसा जोर से पटका कि भूमि पर छोटा गड्ढा ही बन गया। १५०

❀ वेदऩैक् कूऩिपिऩ् वॅहुण्डु नोक्किये
पेद(य्)ऩी पित्तिनिऱ् पिऱन्द शेयॊडु
मादुयर्प् पडुहना नॆडिदुऩ् माऱ्ऱवळ्
तादियर्क् काट्चॆयत् तरिक्कि लेऩ्ऩ्राळ् 151

वेतऩै कूऩि-वेदनाविद्ध कुब्जा ने; पिऩ्-और; वॅकुण्टु नोक्कि-क्रोध के साथ देखकर; नी पेतै-आप अज्ञ हैं; पित्ति-पागल हैं; निऩ् पिऱन्त चेयॊटु-अपने जनाये पुत्र के साथ; नॆटितु-दीर्घकाल तक; मा तुयर् पटुक-विपुल दुख उठाइए; नाऩ्-मैं; उऩ् माऱ्ऱवळ्-आप की सौत के; तातियर्क्कु आळ् चॆय-दासियों की दासता करना; तरिक्किलेऩ्-सह नहीं सकूँगी; ऍऩ्ऱाळ्-कहा। १५१

वेदनाविद्ध कुब्जा ने कैकेयी को क्रोध की दृष्टि से देखा। फिर कहा— आप मूर्ख हैं। आप पागल हैं। अपने पुत्र के साथ दीर्घकाल तक अत्यधिक संकट उठाइये। मैं आपकी सौत की दासियों की दासी बनकर जीना सह न सकूँगी। १५१

शिवन्दवाय्च् चीदयुङ् गरिय शॅम्मलुम्
निवन्दवा शनत्तिनि दिरुप्प निन्महन्
अवन्दनाय् वॅरुनिलत् तिरुक्क लानपो
दुवन्दवा ऍन्निदर् कुरुदि यादॅन्राळ् 152

चिवन्त वाय् चीतैयुम्–लाल मुख वाली सीता और; करिय चॅम्मलुम्–काला प्रभु; निवन्त आचनत्तु–उन्नत सिंहासन पर; इनितु इरुप्प–सुख से रहेंगे, तब; निन् मकन्–आपका पुत्र; अवन्तन् आय्–अवन्द्य बनकर; वॅरुम् निलत्तु इरुक्कल्–कोरी भूमि पर (खड़ा) रहेगा, यह स्थिति; आनपोतु–हो गई, तब; इतर्कु–इस पर; उवन्त आरु–आनन्दित होने का हेतु; ऍन्–क्या; उरुति यातु–लाभ क्या है; ऍन्राळ्–पूछा। १५२

और भी पूछा— लाल मुख वाली सीता और काला रंग वाला राम दोनों ऊँचे सिंहासन पर बैठेंगे। तब आपका लाडला भरत अवन्द्य होकर कोरी ज़मीन पर खड़ा रहेगा। स्थिति ऐसी हो गई है। तो भी आप आनन्द भरी हैं, सो कैसा? इसमें आप क्या लाभ देखती हैं?। १५२

❀ मऱन्दिलळ् कोशलै युरुदि मैन्दनुम्
शिऱन्दनन् ऱिरुविनिऱ् ऱिरुवि नीङ्गिनान्
इऱन्दिल निरुन्दन नॅन्शॅय् दाऱ्ऱुवान्
पिऱन्दिलन् बरदनी पॅऱ्ऱ दालॅन्राळ् 153

कोचलै–कौसल्या; उरुति मऱन्तिलळ्–अपना हितसाधन नहीं भूलीं; मैन्तनुम्–उनका पुत्र भी; तिरुविनिन् चिऱन्तनन्–विशेष श्रीमान हो गया; परतन्–भरत; नी पॅऱ्ऱताल्–आपका पुत्र होने से; तिरुविन् नीङ्किनान्–निर्धन हो गया; इऱन्तिलन् इरुन्तनन्–मरा नहीं, इतना ही, मृतक समान रह गया; ऍन् चॅय्तु–क्या उपाय करके; आऱ्ऱुवान्–धैर्य धरेगा; पिऱन्तिलन्–पैदा नहीं हुआ; ऍन्राळ्–कहा। १५३

कौसल्या हमेशा सतर्क रहीं और अपना हितसाधन कभी नहीं भूलीं। अब उनका पुत्र राजा बनता है और श्रीमान होता है। इसके विपरीत असावधान आपका पुत्र निर्धन हो गया। मरा नहीं पर मृतक से कोई भेद नहीं रखता। अब क्या उपाय करके वह धैर्य धारण करेगा? वह जन्मा ही नहीं। ऐसा ही मानना चाहिए। उसका जन्म निरर्थक है क्योंकि वह आपका पुत्र जन्मा है। १५३

शरदमिप् पुवियॅलान् दम्बि योडुमव्
वरदऩे काक्कुमेल् वरम्बिल् कालमुम्
बरदऩु मिळवलुम् बदियि ऩीङ्गिप्पोय्
विरदमा दवञ्जॅय विडुद नऩ्ऱॆऩ्ऱाळ् 154

वरतऩे–वरद श्रीराम ही; तम्पियोटुम्–अपने लघु भाई के साथ; इ पुवि ऍलाम्–यह भूमि सब की; वरम्पु इल् कालमुम्–असीम काल तक; काक्कुमेल्–रक्षा करेगा तो; चरतम्–सचमुच; परतऩुम् इळवलुम्–भरत और उसका छोटा भाई; पतियिऩ् नीङ्कि–नगर से निकलकर; पोय्–(वन) जाकर; विरतम् मातवम् चॅय विटुतल्–व्रतसहित बड़ी तपस्या करने देना; नऩ्ऱु ऍऩ्ऱाळ्–भला है, कहा। १५४

आगे वरद राम अपने लघुभ्राता लक्ष्मण के साथ असीम काल सारी भूमि का शासन करता रहेगा। सच कहती हूँ, उस स्थिति में भरत को अपने भ्राता शत्रुघ्न के साथ नगर छोड़कर जंगल में जाकर लंबी तपस्या करने के लिए भेजना ही श्रेयस्कर है! —मंथरा ने कहा। १५४

पण्णुरु कडहरिप् परदन् पार्महळ्
कण्णुरुङ् गविऩ्ऱा यिऩिदु कात्तवम्
मण्णुरु मुरशुडै मऩ्ऩर् मालयिल्
ऍण्णुरप् पिऱन्दिल निऱत्त नऩ्ऱॆऩ्ऱाळ् 155

पण् उरु–अलंकृत; कटम् करि–मत्तगज का पति; परतऩ्–भरत; पार् मकळ् कण् उरुम्–भूमि देवी की आँखों में खुभनेवाले; कवितर् आय्–सौंदर्यवान बनकर; इनितु कात्त–जो पालन करते थे; अ–उन; मण् उरु मुरचु उटै(य)–मृण्लेप लगे ढोल वाले; मऩ्ऩर्–राजाओं की; मालैयिल् ऍण् उर–श्रेणी में गिने जाने के लिए; पिऱन्तिलऩ्–पैदा नहीं हुआ; इऱत्तल् नऩ्ऱु–मरना ही श्रेष्ठ है; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। १५५

भरत इक्ष्वाकुकुल में पैदा तो हुआ पर अलंकृत मत्त गजपति हमारा भरत उन राजाओं की श्रेणी में, जो भूमि देवी की आँखों में खुभकर उसका भरण करते थे, गिने जाने को पैदा नहीं हुआ! इसलिए उसका मर जाना ही अच्छा है। १५५

※ पाक्कियम् बुरिन्दिलाप् परदन् ऱऩ्ऩैप्पण्
डाक्किय पॊलङ्गऴ लरश ऩाणयाल्
तेक्कुयर् कल्लदर् कडिदु शेणिडैप्
पोक्किय पॊरुळॅऩक् किऩ्ऱु पोन्ददाल् 156

पाक्कियम् पुरिन्तु इला–जिसने पुण्य नहीं किया है; परतऩ् तऩ्ऩै–उस भरत को; पॊलम् आक्किय कऴल् अरचऩ्–स्वर्णपायलधारी राजा; पण्टु–पहले ही; तेक्कु उयर् कल् अतर्–सागौन के तरुओं से पूर्ण और पथरीले मार्ग के; चेण् इटै–दूर के (केकय) देश को; आणैयाल्–आज्ञा द्वारा; कटितु पोक्किय पॊरुळ्–शीघ्र जो भेजा, उसका अर्थ; ऍऩक्कु–मुझे; इऩ्ऱु पोन्ततु–आज विदित हुआ। १५६

अब एक बात सूझती है। स्वर्णपायलधारी राजा ने आज्ञा देकर इस अभागे भरत को सुदूर उस केकय देश में भेजा जिसका लंबा मार्ग सागौन के तरुओं से पूर्ण और कंकड़ीला है। उसके पीछे जो रहस्यमय आशय था वह अभी मुझे मालूम हो रहा है!। १५६

❀ मन्दरै	पिन्नरुम्	वहैन्दु	कूरुवाळ्
अन्दरन्	दीर्न्दुल	हळिक्कु	नीरिनाल्
तन्दयुङ्	गॉडियनर्	ऱायुन्	दीयळाल्
ऍन्दये	बरदने	यॅन्शॅय्	वायॅन्ऱाळ् 157

मन्तरै–मंथरा; पिन्नरुम्–आगे भी; वकैन्तु–गढ़कर; कूऱुवाळ्–बोली; अन्तरम् तीर्न्तु–निष्पक्षता छोड़कर; उलकु–राज्य को; अळिक्कुम् नीरिनाल्–(श्रीराम के पास) देने की रीति से; तन्तैयुम्–पिता भी; कॉटियन्–निष्ठुर बने; नल् तायुम्–जननी भी; तीयळ्–क्रूरी बनीं; ऍन्तैये–मेरे तात; परतने–भरत; ऍन् चॅय्वाय्–क्या करोगे; ऍन्ऱाळ्–कहा। १५७

मंथरा आगे भी बात गढ़कर बोली— निष्पक्षता छोड़कर राजा ने राज्य को श्रीराम के पास दिया और यह साबित कर दिया कि वह, हे भरत! तुम्हारे प्रति क्रूर है। तुम्हारी माता भी क्रूर है! तो मेरे तात! तुम क्या करोगे? —उसने ऐसा नाटकीय ढंग से प्रलाप किया। १५७

❀ अरशरिऱ्	पिऱन्दुपिन्	नरश	रिल्वळर्न्
दरशरिऱ्	पुहुन्दुपे	ररशि	यानऩी
करय्शॅयऱ्	करुन्दुयर्क्	कडलिल्	वीऴ्हिन्ऱाय्
उरय्शॅयक्	केट्किलै	युणर्दि	योवॅन्ऱाळ् 158

अरचर् इल् पिऱन्तु–राजघराने में जन्म लेकर; पिन् अरचर् इल् वळर्न्तु–फिर राजा के घर में पलकर; अरचर् इल् पुकुन्तु–राजा के घर में (व्याही हो) प्रवेश करके; पेर् अरचि आन नी–महिषी जो बनीं वह आप; करै चॅयऱ्कु अरु–तीर (जिसका) देखना दुस्तर है, ऐसे; तुयर् कटलिल्–दुखसागर में; वीऴ्किन्ऱाय्–गिरने को हैं; उणर्तियो–समझती हैं क्या; उरै चॅय–मैं समझाती हूँ तो भी; केट्किलै–सुनती नहीं हैं; ऍन्ऱाळ्–कहा। १५८

आप राजघराने में पैदा हुईं; फिर राजा के घर में ही पलीं। राजा के घर में बहू बनकर आईं और महिषी भी बन गईं। फिर अब अनंत दुखसागर में गिरने को हैं। यह बात आप समझतीं क्या? मैं समझाती हूँ तब भी बात नहीं समझतीं। मंथरा ने ऐसा कहा। १५८

कल्वियु	मिळमैयुङ्	गणक्कि	लाऱ्ऱलुम्
विल्विनै	युरिमयु	मळ्हुम्	वीरमुम्
ऍल्लयिल्	गुणङ्गळुम्	बरदऱ्	कॅय्दिय
पुल्लिडै	युहुत्तनल्	लमुदम्	बोलुमाल् 159

कल्वियुम्—शिक्षा; इळमैयुम्—और यौवन; कणक्किल् आऱ्ऱलुम्—असीम शौर्य; विल् वित्तै उरिमैयुम्—धनु के प्रयोग में निपुणता; अऴकुम्—सौंदर्य और; वीरमुम्—वीरता; ॲल्लै इल् कुणङ्कळुम्—अपार अच्छे गुण; परतऱ्कु ॲय्तिय—सभी भरत को प्राप्त; पुल् इटै उकुत्त—तृण भरे गन्दे स्थान पर डाले गये; नल् अमुतम् पोलुम्—उत्तम अमृत के समान हो गये। १५६

भरत के पास विद्या है, यौवन है, निस्सीम शौर्य (या कौशल) है, धनु चलाने की कुशलता है, सौंदर्य, वीरता और अनंत अच्छे गुण प्राप्त हैं। पर ये सब अब तृणयुक्त गन्दे स्थान पर डाला हुआ श्रेष्ठ अमृत-सम हो गये। १५९

❀ वाय्क यप्पुऱ मन्दरै वळङ्गिय वॆञ्जोल्
काय्ह तऱ्ऱलै नॆय्शॊरिन् दॆत्तक्कदङ् गत्तऱ्ऱक्
केह यर्क्किऱै तिरुमहळ् किळरिळ वरिहळ्
तोय्ह यऱ्कण्गळ् शिवप्पुऱ नोक्कित्तळ् शॊल्लुम् 160

मन्तरै—मंथरा; वाय् कयप्पु उऱ—मुख भी कड़ुआ हो, ऐसा; वळङ्किय—एक दम लगातार कहे हुए; वॆम् चॊल्—निष्ठुर वचन; काय् कत्तल् तलै—जलती आग में; नॆय् चॊरिन्तत्तु ॲत्त—घी डाला गया, जैसे; कतम् कत्तऱ्ऱ—क्रोधाग्नि को उभाड़ते; केकयर्क्कु इऱै—केकयराजा की; तिरुमकळ्—श्रीतनया; किळर् इळ वरिकळ् तोय्—सुन्दर हल्की लकीरों से युक्त; कयल् कण्कळ्—मछली-सी आँखों को; चिवप्पु उऱ—(क्रोध से) लाल करते हुए; नोक्किनाळ्—देखती हुई; चॊल्लुम्—बोलीं। १६०

मंथरा की ये बातें स्वयं उसके मुख को भी कड़ुआ बनानेवाली थीं; उसने यह सब धड़ाधड़ कह दिये। उन सब वचनों ने जलती आग में पड़े घी के समान कैकेयी के क्रोध को उभाड़ दिया। केकयराजकुमारी की शोभायमान हल्के डोरों से युक्त मछली-सी आँखें लाल हो गईं। मंथरा पर कुपित दृष्टि डालती हुई वह बोलीं। १६०

वॆयिऩ्मु ऱैक्कुलत् तिऱैयवन् मुदलिय मेलोर्
उयिर्मु दऱ्पॊरु डिऱम्बिऩ् मुऱैतिऱम् बादोर्
मयिऩ्मु ऱैक्कुलत् तुरिमयेय् मऩुमुदऩ् मरबैच्
चॆयिरु ऱप्पुलैच् चिन्दया लऩ्शॊऩाय् तीयोय् 161

तीयोय्—क्रूरी; वॆयिल् मुऱै कुलत्तु—सूर्यवंश में उत्पन्न; इऱैयवऩ् मुतलिय मेलोर्—हमारे राजा आदि श्रेष्ठ; उयिर् मुतल् पॊरुळ्—प्राण आदि सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ; तिऱम्पित्तुम्—नष्ट हो जायँ तो भी; उऱै तिऱम्पातोर्—वचन तोड़नेवाले नहीं हैं; मयिल् मुऱै कुलत्तु—मोर के जैसे (स्वभाव वाले) कुल की; उरिमै एय्—रीति से युक्त; मऩु मुतल् मरपै—मनु से आनेवाले इस कुल को; चॆयिर् उऱ—कलंक लगाते हुए; पुलै चिन्तैयाल्—निकृष्ट बुद्धि के कारण; ॲऩ् चॊऩ्ऩाय्—क्या ही कह गई हो। १६१

री क्रूरी! सूर्यवंश के मेरे पति आदि सभी राजा, प्राण भी या अन्य ऐसी बहुमूल्य वस्तुएँ चली जायँ तो भी वचन छोड़नेवाले नहीं हैं। मोर

के कुल का-सा सम्प्रदाय है मनुकुल का सम्प्रदाय। इस पर कलंक लगाते हुए तुमने अपनी नीच बुद्धि के कारण क्या-क्या बातें कह डालीं ? १६१

[इसमें मयूरकुल की बात कही गई है। इस पर सालों से चर्चा है। कहा जाता है कि मोर के कुटुंब में अनेक अंडों से एक साथ शावक उत्पन्न होने पर भी सबसे ज्येष्ठ मोर के ही सबके पहले पंख लगते हैं। यह एक टीका है। यह भी कहा जाता है कि जब एक ही माता से उत्पन्न अनेक मोर एक जगह पर रहते हैं तब सबसे वड़ा मोर ही पहले अपने पंख खोलता है, वाद ही अन्य। इनसे अलग एक टीका भी है। कैकेयी के कुल में भी यही रिवाज था कि ज्येष्ठ पुत्र ही राजा बनता है। इसके आधार पर उस पंक्ति का ऐसा अर्थ किया जाता है कि केकय, यह शब्द 'केकी' से बना है, कुल की जैसी रीति मनुकुल की भी है। उस कुल पर कलंक लानेवाली ऐसी बात क्यों करती हो ?]

※ ॲन्तक्कु नल्लयु मल्लैनी यॅन्महन् बरदन्
तन्तक्कु नल्लयु मल्लैयत् तरुममे नोक्किन्
उन्तक्कु नल्लयु मल्लैवन् दूऴ्विनै तूण्ड
मन्तक्कु नल्लन शॊल्लिनै मदियिला मनत्तोय् 162

नी–तुम; ॲन्तक्कु नल्लैयुम् अल्लै–मेरी हितकारिणी नहीं हो; ॲन् मकन्–मेरे पुत्र; परतन् तन्तक्कु–भरत की भी; नल्लैयुम् अल्लै–हितू नहीं हो; अ तरुममे नोक्किन्–उस राजधर्म को देखें तो; उनक्कु नल्लैयुम् अल्लै–अपने लिए भी हित करनेवाली नहीं हो; मति इला मनत्तोय्–बुद्धिहीन चित्त वाली; ऊऴ् विनै तूण्ट–पूर्व कर्म की प्रेरणा से; वन्तु–इधर आकर; मनक्कु नल्लन–अपने मन में जो भला लगा; चॊल्लिनै–वह बोलीं। १६२

कैकेयी ने और भी कहा— तुम मेरा हित नहीं करतीं; न मेरे पुत्र भरत की। राजधर्म की दृष्टि में तुम अपना भी हित नहीं करतीं। बुद्धि से वियुक्त चित्त वाली! विधि की प्रेरणा से जो भी तुम अपने मन में सोचती हो उसे अच्छा समझकर बक रही हो। १६२

पिऱन्दि इऱन्दुपोय्प् पॅऱुवदु मिऴप्पदुम् बुहऴे
निऱन्दि ऱम्बिनु नियायमे तिऱम्बिनु नॅऱियिन्
तिऱन्दि ऱम्बिनुज् जॆय्दवन् दिऱम्बिनुज् जॆयिर्दीर्
मऱन्दि ऱम्बिनुम् वरन्मुऱै तिऱम्बुदल् वऴक्को 163

पिऱन्तु–पैदा होकर; इऱन्तु पोय्–मर जाकर; पॅऱुवतुम्–पाना; इऴप्पतुम्–या खोना; पुकऴे–कीर्ति ही है; निऱम् तिऱम्पिनुम्–स्वभाव बदल जाय; नियायमे तिऱम्पिनुम्–(अन्य) न्याय भी टल जायँ; नॅऱियिन् तिऱम् तिऱम्पिनुम्–मार्ग की दिशा भी बदल जाय; चॆय् तवम् तिऱम्पिनुम्–पूर्वकृत तपस्या का फल चाहे न मिले; चॆयिर् तीर्–निर्दोष; मऱम् तिऱम्पिनुम्–वीरता भी निष्फल हो जाय; वरन् मुऱै–परम्परागत धर्म को; तिऱम्पुतल्–छोड़ना; वऴक्को–उचित है क्या। १६३

आखिर जन्म और मरण का मूल्य कीर्ति पाने या खोने पर ही आँका जाता है। चाहे स्वभाव छोड़ना पड़े, चाहे कोई न्याय-मार्ग की दिशा बदलनी पड़े, चाहे तपस्या का फल त्यागना पड़े; चाहे निर्दोष वीरता भी निरर्थक हो जाय, कुल के परंपरागत सम्प्रदाय को छोड़ना उचित है क्या ? । १६३

❀ पोदि यॅन्नॅदिर् निन्ऱुनिन् पुन्बॉरि नावैच्
चेदि यादिदु पॊऱुत्तनॅन् पुऱञ्जिल रऱियिन्
नीदि यल्लवु नॅऱिमुऱै यल्लवु निनैन्दाय्
आदि यादलि नऱिविलि यडङ्गुदि यॅन्ऱाळ् 164

अऱिवु इलि–बुद्धिहीन; ऍन् ऍतिर् निन्ऱुम् पोति–मेरे सामने से चली जा; निन् पुन् पॉरि नावै–तुम्हारी नीच इन्द्रिय जीभ को; चेतियातु–काटे बिना; इतु पॊऱुत्तनॅन्–इसको सह लिया; पुऱम् चिलर् अऱियिन्–बाहर के कुछ लोग जान जायँ तो; नीति अल्लवुम्–जो नैतिक नहीं; नॅऱि मुऱै अल्लवुम्–उचित धर्मसम्मत नहीं; नितैन्ताय् आति–वह करने की अपराधिनी मानी जाओगी; आतलिन्–इसलिए; अटङ्कुति–बस करो; ऍन्ऱाळ्–कहा। १६४

बुद्धिहीन ! चलो, हटो मेरे सामने से। तुम्हारी नीच वागिन्द्रिय काटनी थी, पर मैं वह किये बिना सब्र कर चुकी हूँ। बाहर वाले किसी के कानों में बात पड़ गई तो तुम अनैतिक और अधार्मिक बुरा काम सोचने का अपराध करनेवाली बन जाओगी। इसलिए बस करो। —यह कहा। १६४

❀ अञ्जि मन्दरै यहन्ऱिल ळम्मॉऴि केट्टुम्
नञ्जु तीर्क्किनुन् दीर्हिला दुनलिन् दॅन्नत्
तञ्ज मेयुनक् कुऱुपॊरु ळुणर्त्तुहै तविरेन्
वञ्जि पोलियॅन् ऱडिमिशै वीऴ्न्दुरै वऴङ्गुम् 165

नञ्चु–विष; तीर्क्कितुम्–(जादू की क्रिया आदि से) निवारण करने का प्रयास करने पर भी; तीर्किलातु–प्रभावहीन न होकर; अतु–वह; नलिन्ततु ऍन्न–पीड़ा देता रहा हो, ऐसा; मन्तरै–मंथरा; अ मॉऴि केट्टुम्–वह (डाँट) वचन सुनकर भी; अञ्चि अकन्ऱिलळ्–डरकर नहीं हटी; वञ्चि पोलि–हे लता-समाना; तञ्चमे–मेरी शरण्या; उनक्कु उऱु पॊरुळ्–आपके हित की बात; उणर्त्तुकै तविरेन्–समझाना नहीं छोड़ूँगी; ऍन्ऱु–कहकर; अटि मिचै विऴुन्तु–पैरों पर गिरकर; उरै वऴङ्कुम्–अपनी (हाँक चलाने लगी) बात कहने लगी। १६५

मंथरा इससे न डरी, न हटी। वह उस विष के समान थी जो जादूक्रिया आदि चिकित्सा करने पर भी अपना प्रभाव नहीं छोड़ता और कष्ट देता रहता है। वह कहने लगी— लतासमाना ! मेरी शरण्या ! मैं कैसे हटूँगी ? आपका जो हित है वह समझाने से मैं नहीं

रुकूँगी। वह उनके पैरों पर गिरकर नमस्कार कर उठी और बोली। १६५

मूत्त वऱ्कुरित् तरशॅनु मुऱैमैयि नुलहम्
कात्त मन्ननि निळैयनन् ऱोकडल् वण्णन्
एत्तु नीण्मुडि पुनैवदऱ् किशैन्दन नॅन्ऱाल्
मीत्तरुञ् जॅल्वम् बरदनै विलक्कुमा ऱॅवनो 166

मूत्तवऱ्कु उरित्तु अरचु–सबसे बड़े के अधिकार का है राज; ॲन्नुम् मुऱैमैयिन्–इस रीति से; उलकम् कात्त मन्नतिन्–भूपालक हमारे राजा से; कटल् वण्णन् इळैयन् अन्ऱो–समुद्रवर्ण श्रीराम छोटा है नहीं; एत्तुम् नीळ् मुटि–प्रथित दीर्घ किरीट; पुनैवतऱ्कु–धारण करने को; इचैन्तनन्–सहमत हुए; ॲन्ऱाल्–तो; मीतरुम् चॅल्वम्–गौरवपूर्ण राज्यश्री को प्राप्त करने से; परतनै विलक्कुम्–भरत को रोकने का; आऱु ॲवनो–प्रकार (या धर्म) क्या है। १६६

आप कहती हैं कि आपके कुल में उम्र में सबसे बड़े का ही राज्य पर अधिकार होगा। उस रीति से देखा जाय तो अब राज्य का शासन जो कर रहे हैं उन दशरथ से समुद्रवर्ण श्रीराम छोटे हैं न ? उनको यह गौरवपूर्ण मुकुट पहनाने को ये राजा सहमत हो गये हैं। फिर भरत कैसे वर्ज्य हुआ ? उसको इस वैभवयुक्त राज्यश्री को प्राप्त करने से रोकनेवाली कैसी रीति है ? । १६६

❀ अऱनि रम्बिय वरुळुडै यरुन्दवर्क् केनुम्
पॅऱल रुन्दिरुप् पॅऱ्ऱपिन् शिन्दनै पिऱिदाम्
मऱनि नैन्दुमै वलिहिल रायिनु मनत्ताल्
इऱलु ऱुम्बडि यियऱ्ऱुव रिडैयऱा विन्नल् 167

अऱम् निरम्पिय–संन्यास धर्म में बढ़े हुए; अरुळ् उटै–कृपायुक्त; अरुतवर्क्केनुम्–उत्तम तपस्वियों का भी; पॅऱल् अरु–दुष्प्राप्य; तिरु पॅऱ्ऱ पिन्–बड़े धन को प्राप्त करने पर; चिन्तनै पिऱितु आम्–मन विकृत हो जायगा; मऱम् नितैन्तु–आपकी हानी सोचकर; उमै वलिकिलर्–आपको नहीं सताया; आयितुम्–तो भी; मतत्ताल् इऱल् उऱुम्पटि–मन मारकर मर जायँ, ऐसा; इटै अऱा इन्नल् इयऱ्ऱुवर्–निरन्तर (आपको और भरत को, कौसल्या और राम) दुख देंगे। १६७

देखिए ! संन्यास धर्म अपनाकर उसमें उन्नति जो कर चुके उन कृपालू तपस्वियों का मन भी दुष्प्राप्य बड़े धन को पाकर बिगड़ जायगा। कौसल्या और राम आपका अहित सोचते तो हैं पर अब तक आपकी कोई हानि नहीं की है। पर आगे वे आपको ऐसे दिक करेंगे कि आपको मन मारकर प्राण छोड़ने के सिवा दूसरा चारा नहीं रहेगा। १६७

❀ पुरियुन् दन्महन् ऱरशॅनिऱ् पूदल मॅल्लाम्
ॲरियुञ् जिन्दनैक् कोशलैक् कुडैमैया मॅन्ऱाल्

परियु निन्कुलप् पुदल्वर्कु निनक्कुमिप् पार्मेल्
उरिय दॅन्नव ळुदविय वॊरुपॊरु ळल्लाल् 168

ऍरियुम् चिन्तै कोचलैक्कु–जलनेवाले मन की कौसल्या का; तन् मकन् अरचु पुरियुम् ऍनिन्–उनका पुत्र राज करेगा तो; पूतलम् ऍल्लाम् उटैमै आम्–भूतल सब पर आधिपत्य हो जायगा; ऍन्राल्–तो; इ पार् मेल्–इस भूमि पर; परियुम् निन्कुलम् पुतल्वर्कुम्–दयनीय, आपके अच्छे पुत्र को; निनक्कुम्–और आपको; अवळ् उतविय ऒरु पॊरुळ् अल्लाल्–उनके, सहायता में दिये गये पदार्थ के सिवा; उरियतु ऍन्–अपना क्या होगा। १६८

कौसल्या का मन पहले से ही जलता रहता है। उनका पुत्र राजा बनेगा तो भूतल सब उनके अधिकार में आ जायगा। फिर आपकी और भरत की स्थिति दयनीय हो जायगी। दया करके जो भी वे देंगी उसको छोड़कर किस वस्तु पर आपका हक रहेगा ? । १६८

❀ तूण्डु मिन्नलुम् वरुमैयुन् दॊडर्दरत् तुयराल्
ईण्डु वन्दुन् यिरन्दवर्क् किरुनिदि यवळै
वेण्डि योदियो वॆळहुदि योविम्म नोयाल्
माण्डु पोदियो मरुत्तियो वॆङ्ङनम् वाळ्दि 169

तूण्टुम् इन्नलुम्–(माँगने के लिए) प्रेरित करनेवाली (भूख की) पीड़ा और; वरुमैयुम्–अभाव; तॊटर् तर–अपना पीछा करते; तुयराल्–वेदना के साथ; ईण्टु वन्तु–यहाँ आकर; उन् इरन्तवर्क्कु–आपसे याचना करनेवालों को; इरु निति–बड़े धन को; अवळै वेण्टि ईतियो–उनसे माँग लाकर दिलायँगी; वेळ्कुतियो–शरमायँगी; मरुत्तियो–या इनकार करेंगी; विम्मल् नोयाल्–अपमान के दुख के रोग से; माण्टु पोतियो–मर जायँगी; ऍङ्ङनम् वाळ्ति–किस तरह जीवित रहेंगी। १६९

और भी सोचिये। आपके पास याचक भूख और अभाव के कारण कुछ माँगने आयेंगे। आप उनको अधिक धन देना चाहेंगी। तब आप क्या कौसल्या से माँग लाकर इन्हें देंगी ? या अपनी स्थिति पर शरम खाकर चुप रह जायँगी ? या साफ़ इनकार कर सकेंगी ? या अपमान के दुख से प्राणत्याग कर लेंगी ? कहिए आप किस प्रकार जीवित रहेंगी ? । १६९

शिन्दै यॆन्शॆयत् तिहैत्तनै यिन्निच्चिल नाळिल्
तन्द मिन्मयु मॆळिमयु निर्कॊण्डु तविर्क्क
उन्दै यन्नैयुन् किळैञर्मर् रुन्गुलत् तुळ्ळोर्
वन्दु काण्बदुन् मार्रवळ् शॆल्वमो मदियाय् 170

ऍन् चॆय–क्या करने; चिन्तै तिकैत्तनै–चित्तभ्रमित हैं; इन्नि चिल नाळिल्–आगे कुछ दिनों में; उन्तै–आपके पिता; अन्नै–माता; उन् किळैञर्–आपके

बन्धुबान्धव; मऱ्ऱु उन् कुलत्तु उळ्ळोर्–अन्य आपके कुल के लोग; तम् तम् इऩ्मैयुम्–अपना-अपना अभाव; ऍळिमैयुम्–दीनता को; निऩ् कॊण्टु–आपके द्वारा; तविर्क्क–दूर करने के विचार से; वन्तु–इधर आने पर; काण्पतु–जो देखेंगे वह; उन् माऱ्ऱवळ् चॆल्वमो–आपकी सौत का वैभव क्या; मतियाय्–सोचिए। १७०

क्या करने के विचार से आप भ्रमित खड़ी रहती हैं? आगे कुछ ही दिनों में आपके पिता, आपकी माता, आपके बन्धु-बान्धव और आपके कुल के अन्य लोग अपने अभाव और अपनी दीनता को आपकी सहायता से दूर करने के विचार से आपको देखने आयेंगे। तब वे आपकी सौत का वैभव देखें —क्या यही स्थिति हो? । १७०

काद लुऩ्बॆरुङ् गणवऩै यञ्जियक् कऩिवाय्च्
चीदै तऩ्दयुत् ऱादयैत् तॆरुहिल ऩिरामऩ्
मादु लऩ्ऩव ऩुऩ्दय्क्कु वाळ्विऩि युण्डो
पेदै युऩ्ऱुणै यारुळर् पळिबडप् पिऱन्दार् 171

अ कऩिवाय् चीतै तऩ्तै–उस (बिम्ब-)फल-सम मुख (होंठ) वाली सीता के पिता; उन् पॆरुम् कातल् कणवऩै अञ्चि–आपके बहुत प्यारे पति से डरकर; उन् तातैयै तॆऱु किलऩ्–आपके पिता को मिटा नहीं पाये; अवऩ् इरामऩ् मातुलऩ्–वे श्रीराम के मातुल (ससुर) हैं; उऩ्तैक्कु–आपके पिता को; इनि वाळ्वु उण्टो–आगे जीवन (सकुशल) रहेगा क्या; पेतै–नादान; पळि पट–निंदा सह लेने के लिए; पिऱन्तार्–उत्पन्न; उन् तुणै यार् उळर्–आपके समान कौन हैं। १७१

बिम्बफल-सी होंठ वाली उस सीता के पिता जनक ने आपके प्रिय पति से डरकर आपके पिता को नहीं मारा है। वे श्रीराम के ससुर हैं। (तमिऴ् में मामा कहते हैं ससुर को भी।) इस स्थिति में आपके पिता का (सुखमय) जीवन कहाँ? अबोध! आपके समान ऐसा कौन इस संसार में जन्मा है जिससे उसका और उसके अपनों का निन्दनीय जीवन हो गया? । १७१

मऱ्ऱु ऩुऩ्दैक्कु वाऩ्बहै पॆरिदुळ माऱ्ऱार्
शॆऱ्ऱ पोदिवर् शॆऩ्ऱुद वारॆऩिऱ् चॆरुविऱ्
कॊऱ्ऱ मॆऩ्बदोऩ् ऱॆव्वळि युण्डदु कूऱाय्
शुऱ्ऱ मुङ्गॆडक् कडुन्दुयर्क् कडल्वीऴत् तुणिन्दाय् 172

नुन्तैक्कु–आपके पिता को; मऱ्ऱुम् वान् पकै पॆरितु–और भी बड़े शत्रु; उळ–हैं; माऱ्ऱार्–वे शत्रु; चॆऱ्ऱपोतु–जब लड़ने आएँगे तब; चॆरुविल्–उस युद्ध में; इवर् चॆन्ऱु उतवार् ऍनिल्–ये जाकर सहायता नहीं करेंगे तो; कॊऱ्ऱम् ऍऩ्पतु ऒऩ्ऱु–विजय नामक कोई चीज; ऍव्वळि उण्टु–किस प्रकार मिलेगी; अतु कूऱाय्–वह कहिए; चुऱ्ऱमुम् कॆट–अपने परिवार को नाश होने देते हुए; कटु तुयर् कटल्–भयंकर दुखसागर में; विऴ तुणिन्ताय्–गिरने का निश्चय कर चुकी हैं। १७२

आपके पिता के, पहले ही से अनेक प्रबल शत्रु हैं। समझिए कि वे शत्रु उन पर युद्ध करने आते हैं। उस युद्ध में ये (श्रीराम) जाकर आपके पिता की सहायता नहीं करेंगे तो उन्हें विजय का गौरव मिलेगा कैसा ? आप ही कहिए। अपने बन्धुजनों को मटियामेट करते हुए आपने दुख-सागर में डूबने का निश्चय कर लिया न ! । १७२

कॅडुत्तॉ ऴिन्दनै युतक्करुम् बुदल्वनैक् किळर्नीर्
उडुत्त पारह मुडैयव नॉरुमहर्क् कॅन्नवे
कॉडुत्त पेरर शवन्गुलक् कोमयन्दर् तमक्कुम्
अडुत्त तम्बिक्कु माम्पिर्र्क् काहुमो वॅन्राळ् 173

उतक्कु अरु पुतल्वनै–अपने प्यारे पुत्र को; कॅट्टुत्तॉऴिन्तनै–आपने बिल्कुल मिटा दिया है; किळर् नीर् उटुत्त–विपुल जल (सागर-)वसना; पारकम् उटैयवन्–भूमि के पति (हमारे राजा); ऑरु मकर्कु ॲन्नवे कॉटुत्त–एक पुत्र को जो देते हैं; पेर् अरचु–वह बड़ा राज्य; अवन् कुलम् को मैन्तर् तमक्कुम्–उसके वंश के राजकुमारों का; अटुत्त तम्पिक्कुम्–और उसके साथ के भाई का; आम्–होगा; पिर्र्क्कु आकुमो–दूसरों का होगा क्या; ॲन्राळ्–कहा। १७३

आपने अपने पुत्र की स्थिति बिगाड़ दी। समुद्रवसना भूमि को उसके राजा, हमारे दशरथजी ने अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र को दिया तो वह विशाल राज्य उसका होगा, उसके कुल में उत्पन्न राजकुमारों का होगा और उसके साथी छोटे भाई का होगा। दूसरे का होगा क्या ? —यह पूछा। १७३

❀ तीय मन्दरै यिव्वुरै शॅप्पलुन् देवि
तूय शिन्दयुन् दिरिन्ददु शूऴ्च्चियि न्मैयोर्
मायै युम्मवर् पॅर्र्नल् वरमुण्मै यालुम्
आय वन्दण रियर्रिय वरुन्दवत् तालुम् 174

तीय मन्तरै–क्रूर मंथरा के; इ उरै चॅप्पलुम्–यह वचन कहने पर; इमैयोर् मायैयुम्–देवों की माया से (और); अवर् पॅर्र–उनके (श्रीविष्णु से) प्राप्त; नल् वरम् उण्मैयालुम्–श्रेष्ठ वर भी था, इसलिए; आय–विश्वासी (आस्तिक); अन्तणर् इयर्रिय–ब्राह्मणों का किया हुआ; अरु तवत्तालुम्–कठिन तप, उससे; तेवि तूय चिन्तैयुम्–देवी कैकेयी का पवित्र मन; चूऴ्च्चियिन्–(मंथरा के) षडयन्त्र के वचन से; तिरिन्ततु–विकृत हुआ। १७४

दुर्गुण क्रूरी मंथरा ने इतना कहा तो देवी कैकेयी का पवित्र मन विकृत हो गया। देवों की माया, उनका श्रीविष्णु से प्राप्त वर, तपस्वी ब्राह्मणों का तप और मन्थरा का षडयन्त्रभरा वाद —इन सबके कारण वे पलटा खा गईं। १७४

अरक्कर् पावमु मल्लव रियऱ्ऱिय वऱमुम्
तुरक्क नल्लरु ड्डुऱन्दन डूमौऴि मडमान्
इरक्क मिन्मयन् ऱोविन्ऱिव् वुलहङ्ग ळिरामन्
परक्कुन् दौल्पुह ऴमुदिनैप् परुहनिन् ऱ्ऱुवे 175

अरक्कर् पावमुम्–राक्षसों का पाप और; अल्लवर्–अन्यों का; इयऱ्ऱिय–किया; अऱमुम्—धर्म-फल; तुरक्क–(दोनो की) प्रेरणा से; तू मौऴि–पवित्र वाणी; मटम् मान्–बाल मृगी (सी कैकेयी); नल् अरुळ् तुऱन्ततळ्–अपनी कृपा से बिछुड़ गईं; इरक्कम् इन्मै अन्ऱो–उनकी करुणाहीनता से तो; इ उलकङ्कळ्–ये सब लोक; इमामन्–श्रीराम की; परक्कुम्–सर्वव्यापी; तौल् पुकऴ् अमुतिनै–प्राचीन कीर्ति रूपी अमृत को; इन्ऱु परुक निन्ऱतु–आज पान करते हुए स्थित हैं। १७५

राक्षसों का पाप, अन्यों का धर्म-प्रभाव इन दोनों की प्रेरणा भी थी कि पवित्रवाणी वालमृगी-सी कैकेयी ने अपनी कृपा को त्याग दिया। लेकिन, जो आज सारे लोक श्रीराम के विशाल और प्राचीन यश के अमृत को भोग रहे हैं तो वह क्या उनकी करुणाहीनता के ही कारण नहीं ? । १७५

❀ अतैय तन्मय ळाहिय केहय न्नन्नम्
वितैनि रम्बिय कूनियै विरुम्बिन णोक्कि
ॲतैयु वन्दनै यिनिययॅन् महनुक्कु मतैयान्
पुनैयु नीण्मुडि पॅऱुम्बडि पुहलुदि यॅन्ऱाळ् 176

अतैय तन्मैयळ् आकिय–ऐसी (विकृतमन और करुणात्यक्त) जो बन गई उन; केकयन् अन्नम्–केकयराज की हंसिनी-सी पुत्री ने; वितै निरम्पिय—कृत-कृत्य हुई; कूनियै–कुब्जा को; विरुम्पिनळ् नोक्कि–स्नेह के साथ देखकर; ॲनै उवन्ततै–मुझे चाहती हो; ॲन् मकनुक्कुम् इनियै–मेरे पुत्र की भी हितैषिणी हो; अतैयान्–वह (भरत); पुनैयुम् नीळ् मुटि–धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पॅऱुम् पटि–प्राप्त करने का उपाय; पुकलुति–कहो; ॲन्ऱाळ्–पूछा। १७६

ऐसी, मन-बदली कैकेयी ने अब मन्थरा को बहुत स्नेहार्द्र दृष्टि से देखा। मंथरा सफल-मनोरथ हो गई। केकयराज की पुत्री हंसिनी के समान दृश्यमान कैकेयी ने मन्थरा से कहा कि मन्थरा तुम कितनी अच्छी हो ! मेरी हितैषिणी और मेरे पुत्र का हित चाहनेवाली हो ! अब बताओ कि किस उपाय से मेरा पुत्र भरत, उसको जो मिलना चाहिए वह श्रेष्ठ राजमुकुट पा सकता है ? । १७६

❀ माऴै यॊण्गणि युरैशॆयक् केट्टमन् दरैयॆन्
तोऴि वल्लळॆन् ऱुणवल्ल ळॆन्ऱडि तॊऴुदाळ्
ताऴु मॆन्तिनि यॆन्नुरै तलैनिऱ्पि नुलहम्
एऴु मेऴुमु नीरुमहऱ् काक्कुवॆ नॆन्ऱाळ् 177

माळै ऑण् कण्णि–टिकोरे की फाँक के समान आँखों वाली ने; उरै चॅय–यह वचन कहा, उसको; केट्ट–जिसने सुना वह; मन्तरै–उस मंथरा ने; ऍन् तोऴि वल्लळ्–मेरी (प्यारी) सखी समर्थ है; ऍन् तुणै वल्लळ्–मेरी संगिनी समर्थ है; ऍन्ऱु–(प्रशंसा) कहकर; अटि तॊऴुताळ्–चरणों पर प्रणमन किया; ऍन् उरै तलै निऱ्पिन्–मेरे कहे अनुसार करेंगी तो; इनि ऍन् ताऴुम्–अब क्या देरी होगी; उलकम् एऴुम् एऴुम्–लोक सात और सात (चौदहों); उन् ओरु मकऱ्कु–आपके श्रेष्ठ पुत्र के; आक्कुवेन्–(अधीन) बना लूँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। १७७

(आम के) टिकोरे की फाँक-सम आँख वाली कैकेयी ने यह कहा तो मन्थरा का मन कृतार्थता की तृप्ति से भर गया। उसने वात्सल्य के साथ कैकेयी की, "मेरी सखी है न, बड़ी चतुर है!, मेरी साथिन है न, बड़ी समर्थ है", यह कहकर प्रशंसा की। फिर उसने उनके चरणों पर गिरकर नमस्कार करके कहा कि आप मेरे कहे अनुसार निश्चित रूप से चलेंगी तो अब देरी क्या? ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों भुवन अब आपके अपने एकाकी पुत्र भरत के हो जायँगे। १७७

❀ नाडि यॊन्ऱुनत् गुरैशॅय्वॅ नळिर्मणि नहैयाय्
तोडि वर्न्दतार्च् चम्बरन् ऱॊलैवुऱ्ऱ वेलै
आडल् वॅन्ऱिया नरुळिय वरमवै यिरण्डुम्
कोडि यॅन्ऱऩ ळुळ्ळमुङ् गोडिय कॊडियाळ् 178

उळ्ळमुम् कोटिय–मन भी (जिसका) कुटिल (था) उस; कॊटियाळ्–क्रूरी मंथरा ने; नळिर् मणि नकैयाय्–शीतल (मनोरम) मोती समान दाँत वाली; नन्कु नाटि–खूब सोचकर; ऑन्ऱु उरै चॅय्वॅन्–एक बात कहूँगी; तोटु इवर्न्त तार्–पुष्पलसी मालाधारी; चम्परन्–शम्बरासुर; तॊलैवुऱ्ऱ वेलै–जब मिटा तब; आटल् वॅन्ऱियान्–युद्धविजयी आपके पति के; अरुळिय–दत्त; वरम् अवै इरण्टुम्–वर हैं दो, उनको; कोटि (अब) माँग लो; ऍन्ऱऩळ्–कहा। १७८

मन्थरा का शरीर कुटिल था, उसका मन भी कुटिल था। उस क्रूर स्वभाव वाली ने आगे कहा— शीतल मुक्ता-सम दाँत वाली! मैं खूब सोच-विचारकर एक बात कहूँगी। आप सुन लीजिए। जब घने पुष्पों की मालाधारी शंबरासुर का वध हुआ तब उस युद्ध में विजयप्राप्त आपके नायक ने आपको दो वर दिये थे। उन दोनों वरों को आज माँग लीजिए। १७८

❀ इरुव रत्तिनु ळॊन्ऱिना लरशुकॊण् डिरामन्
पॅरुव नत्तिडै येऴिरु परुवङ्गळ् पॅयर्न्दु
तिरिदरच् चॅय्व दॊन्ऱिनार् चॅऴुनिल मॅल्लाम्
ऑरुव ऴिप्पडु मुन्महऱ् कुवाय मॊदॅन्ऱाळ् 179

इरु वरत्तिनुळ्–दो वरों में; ऑन्ऱिनाल्–एक से; अरचु कॊण्टु–भरत के लिए राज्य लेकर; ऑन्ऱिनाल्–दूसरे (एक) से; इरामन्–श्रीराम को; पॅयर्न्तु–

(राज्य से) निकलकर; एळ् इरु परुवङ्कळ्–सात के दो (चौदह) साल; पॅरुवनत्तिटै–विशाल वन में; तिरि तर चॅय्वतु–भटकने देना; चॅळ्ळु तिलम् ॲल्लाम्–समृद्ध देश सब; उन् मकर्कु–आपके पुत्र का; ओरु वळि पटुम्–एक साथ मिले, इसका; उपायम् ईतु–उपाय यही; ॲन्राळ्–कहा। १७९

दो वरों में एक के द्वारा भरत को राज्य माँग लीजिए। दूसरे वर से श्रीराम को राज्य छोड़कर घने वन में भटकने के लिए भिजवा देने की व्यवस्था कर लीजिए। यह सारी समृद्ध भूमि आपके पुत्र की सम्पत्ति हो, उसका यही उपाय है। —मन्थरा ने कहा। १७९

❀ उरैत्त कूनियै युवन्दन ळुयिरुरत् तळुवि
निरैत्त मामणि यारमु निदियमु नीट्टि
इरैत्त वेलय्शू ळुलहमॅन् नॉरुमहर् कीन्दाय्
तरैक्कु नायहन् ऱायिनि नीयॅनत् तणिया 180

उरैत्त कूनियै–(उपाय जिसने) बताया उस कुब्जा को; उवन्तनळ्–प्रसन्न होकर; उयिर् उर तळुवि–प्राणों से मिलाकर गले लगाती हुई; मा मणि निरैत्त–बहुमूल्य रत्नजटित; आरमुम्–हार; नितियमुम्–और धन; नीट्टि–उपहार में देकर; इरैत्त वेलै चूळ् उलकम्–गर्जनशील समुद्रवलयित भूमि को; ॲन् ओरु मकर्कु ईन्ताय्–मेरे एकाकी पुत्र को दिया; इनि–आगे; नी–तुम; तरैक्कु नायकन् ताय्–भूपाल की माता; ॲन–कहकर; तणिया–सन्तुष्ट हुई। १८०

मन्थरा ने यह उपाय बताया तो कैकेयी बहुत मुदित हो गई। उन्होंने मन्थरा को खूब कसकर हृदय से (मानो प्राणों से) लगा लिया। फिर उसे रत्नहार, धन आदि उपहार दिये। फिर उससे कहा कि गर्जनशील समुद्र से घिरी हुई इस भूमि को तुम्हीं ने मेरे भरत को दिया। इसलिए तुम्हीं राजमाता हो। वह अत्यन्त तृप्त हुई। १८०

❀ नन्रु शॊल्लिनै नम्बियै नळिमुडि शूट्टल्
तुन्रु कानहत् तिरामनैत् तुरत्तलिव् विरण्डुम्
अन्र दामॅनि लरशन्मु नारुयिर् तुरन्दु
पॊन्रि नीङ्गुदल् पुरिवॅन्यान् पोदिनी यॅन्राळ् 181

नन्रु चॊल्लिनै–अच्छा कहा; नम्पियै–कुमार भरत का; नळि मुटि चूट्टल्–श्रेष्ठ मुकुट पहनाना; इरामनै–राम को; तुन्रु कानकत्तु–घने वन में; तुरत्तल्–भिजवा देना; इ इरण्टुम्–ये दोनों कार्य; अन्रु आम् ॲनिल्–नहीं होंगे तो; यान्–मैं; अरचन् मुन्–राजा के सामने ही; आर् उयिर् तुरन्तु–अपने मूल्यवान प्राण त्यागकर; पॊन्रि नीङ्कुतल्–मर जाने का काम; पुरिवॅन्–कर लूँगी; नी पोति–तुम जाओ; ॲन्राळ्–कहा। १८१

उन्होंने आगे यह भी कहा। तुमने बड़ा अच्छा उपाय बताया। भरत का मुकुटधारण, राम का वनगमन —ये दोनों हो नहीं सकेंगे तो मैं राजा के सामने ही अपना प्राणत्याग कर लूँगी। तुम जाओ। १८१

❀ कूऩि पोऩपिऩ् कुलमलर्क् कुप्पयुनिऩ् ड्रिऴिन्दाळ्
शोऩै वार्हुऴऱ् कऱ्ऱयिऱ् चोरुहिय मालै
वाऩ मामऴै नुऴैदरु मदिपिदिर्प् पाळ्पोल्
तेऩ वावुरुम् वण्डिऩ मलमरच् चिदैत्ताळ् 182

कूऩि पोऩ पिऩ्–कुब्जा के जाने के बाद; कुलम् मलर् कुप्पै निऩ्ऱु–श्रेष्ठ पुष्पों से सज्जित पलंग पर से; इऴिन्ताळ्–उतरकर; चोनै–काले मेघ के समान; वार् कुऴल् कऱ्ऱैयिल्–लम्बी केशराशि में खोंसे हुए; मालै–हार को; वानम्–आकाश में; मा मऴै नुऴै तरु–बड़े मेघ-मध्य प्रविष्ट; मति–चाँद को; पितिर्प्पाळ् पोल्–छीनकर पटकती-सी; तेन् अवा उरुम्–शहद चाहनेवाले; वण्टु इनम्–भ्रमरकुल; अलमर–घबड़ा जायँ ऐसा; चितैत्ताळ्—छिन्न-भिन्न कर दिया। १८२

(मन्थरा निश्चिन्त होकर चली गई।) उसके जाने के बाद कैकेयी पुष्पसज्जित पलंग से उतरीं। अपने लम्बे केश में खोंसी हुई पुष्पमाला को मानो आकाश के मेघमध्य से चन्द्र को छीन लेती हो ऐसा झट से छीना तो उस पर शहद की इच्छा से बैठे हुए भ्रमर घबड़ाकर उड़ने लगे। उन्होंने उस माला को छिन्न-भिन्न कर दिया। १८२

❀ विळैयुन् दऩ्बुहऴ् वल्लियै वेररुत् तॆऩ्ऩक्
किळय्हॊण् मेहलै शिन्दिऩळ् किण्किणि योडुम्
वळैदु ऱन्दऩण् मदियिनिऩ् मरुत्तुडैप् पाळ्पोल्
अळह वाणुद लरुम्बॆऱऱ् ड्रिलहमु मऴित्ताळ् 183

विळैयुम्–वर्धनशील; तन् पुकऴ् वल्लियै–अपनी कीर्ति-लता को; वेर् अऱुत्तु ॲन्ऩ–जड़ से काट देती-सी; किळै कॊळ्–लड़ियाँ रूपी शाखाओं से युक्त; मेकलै–मेखला को; चिन्तिनाळ्–तोड़कर फेंक दिया; किण्किणि योटुम्–पैंजनियों के साथ; वळै–हाथ के कंकणों को भी; तुऱन्तनळ्–हटा दिया; मतियितिल् मरु–चन्द्रमध्य कलंक को; तुटैप्पाळ् पोल्–पोंछती-सी; अळकम्–सामने के बाल (अलक) जिस पर पड़े रहते हैं, उस; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाट पर के; पॆऱल् अरुम्–दुष्प्राप्य (मंगल-चिह्न); तिलकमुम्–तिलक भी; अऴित्ताळ्–मिटा दिया। १८३

उन्होंने लड़ियों सहित अपनी मेखला को भी तोड़ दिया मानो अपनी ही बढ़ती कीर्तिलता को जड़ से काट रही हो! फिर पैर के नूपुर, हाथ के कंकण —उनको भी उतार फेंका। फिर अलकमण्डित भाल पर से मंगल-सूचक चिह्न को इस प्रकार पोंछा मानो चन्द्र से उसका कलंक हटा रही हो! वह तिलक भी कितना मूल्यवान था! उसको पोंछ दिया। १८३

❀ ताविऩ् मामणिक् कलऩ्मऱ्ऱुन् दऩित्तऩि शिदऱि
नावि योदियै नाऩिलऩ् दैवरप् परप्पिक्
कावि युण्डकण् णञ्जऩङ् गाऩ्ऱिडक् कलुऴाप्
पूवु दिर्त्तदोर् कॊम्बॆऩप् पुविमिशैप् पुरण्डाळ् 184

ता इल्–निर्दोष; मा मणि कलन्कळ्–श्रेष्ठ रत्नाभरणों को; मरुङम्–और अन्य अलंकारों को; तत्ति तत्ति चितरि–अलग-अलग फेंककर; नावि ओतियै–कस्तूरी-लगे केश को; नाल् निलम् तैवर परप्पि–भूमि पर लगाते बिछाकर; कावि उण्ट कण्–नीले पुष्प के समान आँखों के; अञ्चनम् कान्रिट–अंजन को गलकर रसने देते हुए; कलुळा–आँसू बहाते हुए; पू उतिर्न्ततु ओर् कॊम्पु–पुष्पत्यक्त एक लता; अॆन्न–के समान; पुवि मिचै पुरण्टाळ्–भू पर लोटीं। १८४

अनेक निर्दोष रत्नाभरणों और अन्य अलंकारों को उन्होंने उठाकर अलग-अलग फेंक दिया। नीचे लेट गईं और कस्तूरी लगे अपने केशजाल को खोलकर भूमि पर फैला दिया। आँखों से अंजन को अश्रु से गलाकर बहाते हुए वे एक पुष्पों से विमुक्त हुई लता के समान भूमि पर लोटीं। १८४

नव्वि वीऴ्न्दॆन्न नाडह मयिरुयिन् ड्रॆन्नक्
कव्वै कूर्तरच् चन्हियाङ् गडिहमऴ् कमलत्
तव्वै नीङ्गुमॆन् ड्रयोत्तिवन् दडैन्दवम् मडन्दै
तव्वै यामॆन्नक् किडन्दनऴ् केहयन् ड्रनयै 185

केकयन् तनयै–केकयतनया; नव्वि वीऴ्न्ततु अॆन्न–मृगी गिर गई, जैसे; नाटकम् मयिल्–नाचनेवाला मोर; तुयिन्रतु अॆन्न–सो गया हो जैसे; कव्वै कूर् तर–दुख के तेज बनते; चनकि आम्–जानकी रूपी; कटि कमऴ् कमलत्तु–सुवासित कमल की; अव्वै–देवी (श्री); नीङ्कुम् अॆन्रु–छोड़ जाएगी, यह जानकर; अयोत्ति वन्तु अटैन्त–अयोध्या में जो आ पहुँची; अ मटन्तै तव्वै आम्–उन देवी की ज्येष्ठा है; अॆन्न–ऐसा; किटन्तनळ्–पड़ी रहीं। १८५

उनको देखने पर ऐसा लगा मानो हरिण चौकड़ी भरना छोड़कर म्लान पड़ा हो; या नाचनेवाला मयूर थक कर सो रहा हो। वे ज्येष्ठा (लक्ष्मी की बड़ी बहन जो दरिद्रता, अभाव और संकट की देवी मानी जाती हैं) के समान लगीं जो यह जानकर उधर आई हों कि सुवास-पूर्ण कमलपुष्प पर रहनेवाली जानकी नाम की देवी कमला, बढ़ते दुख के साथ, अयोध्या छोड़ जायेगी और हमारा अब यहाँ स्थान हो गया है। वे निश्चेष्ट पड़ी रहीं। १८५

3. कैकेयी शूऴ् विनैप् पडलम् (कैकेयी दुष्कर्म पटल)

❀ नाऴिहै कङ्गुलि नळ्ळ डैन्द वेलै
याऴिशै यञ्जिय वञ्जॊ लेऴै कोयिल्
वाऴिय वॆन्रयन् मन्नर् तुन्न वन्दात्
आऴि नॆडुङ्गै मडङ्ग लाऴि यन्नान् 186

आऴि नॆटुङ्कै–आज्ञा का चक्र धारण करनेवाले लम्बे हाथ का; आऴि मटङ्कल् अन्नान्–पुरुष केसरी सदृश दशरथ; कङ्कुलिन् नाऴिकै–रात का समय; नळ् अटैन्त

वेलै–जब मध्य में आया तब; वाऴिय ॲन्ऱु–जयजीव, ऐसा विरुद कहते हुए; मन्नर् अयल् तुन्ऩ–राजा लोगों के पार्श्व में आते; याऴ् इचै–वीणा का संगीत; अञ्चिय अम् चोल्–जिससे डरता है, उस मधुर वचन की; एऴै कोयिल्–स्वामिनी देवी के महल में; वन्तान्–आये। १८६

रात अपनी मध्यवेला पर आ गई। तब आज्ञाचक्रधर, दीर्घबाहु दशरथ कैकेयी के महल की तरफ़ चले आये। उनके साथ राजा लोग 'जयजीव' का विरुद कहते आये। कैकेयी मधुरभाषिणी थीं और उनकी वाणी की मधुरता के सामने वीणा का स्वर भी डरता था। तो भी वे अबोध थीं। (उनकी मधुर बोली का याद दिलाना इसलिए कि अब उनकी वाणी कठोर रहनेवाली है और अबोध इसलिए कि वह अपनी बुद्धि से कार्य करनेवाली नहीं थीं।)। १८६

❀ वायिलिन् मन्नर् वणङ्गि निऱ्प वन्दाङ्
गेयिन शॅय्यु मणङ्गिनर् शूऴ वेहिप्
पाय रुऱन्द पडैत्त डङ्गण् मॅन्ऱोळ्
आयिऴै तन्नै यडैन्दन नाऴि मन्नन् 187

आऴि मन्नन्–चक्रवर्ती; मन्नर्–राजाओं को; वणङ्कि–हाथ जोड़कर; वायिलिन् निऱ्प–द्वार पर खड़े होने देकर; आङ्कु–वहाँ; एयिन चॅय्युम्–आज्ञाएँ बजा लानेवाली; अणङ्कित्तर्–दासियाँ; वन्तु चूऴ–जब आकर घेर गईं, तब; एकि–जाकर; पायल् तुऱन्त–शय्या त्यागकर; पटै तट कण्–अस्त्र-सम विशाल आँखें और; मॅन् तोळ्–कोमल कंधे वाली; आय् इऴै तन्नै–चुने हुए (श्रेष्ठ) आभरणधारिणी के पास; अटैन्तनन्–पहुँचे। १८७

राजा लोग कैकेयी के महल के द्वार पर ही हाथ जोड़े रुक गये। चक्रवर्ती आगे जाने लगे तो वहाँ आज्ञाकारिणी दासियाँ साथ लग गईं। वे उन कोमलांगी बर्छी-सम नेत्र वाली कैकेयी के पास पहुँचे जो पलंग त्यागकर नीचे भूमि पर लेटी थीं। १८७

❀ अडैन्दन नोक्कि यरन्दै यॅन्कोल् वन्दु
तीडर्न्द दॅन्नत्तुयर् कॊण्डु शोरु नॅञ्जन्
मडन्दयै मानै यॅडुक्कु मानै येपोल्
तडङ्गैहळ् कॊण्डु तऴीइ यॅडुक्क लुऱ्ऱान् 188

अटैन्तनन्–पास जाकर; नोक्कि–उनकी स्थिति देखकर; वन्तु तॊटर्न्ततु–इसे आ लगा; अरन्तै ॲन् कोल्–दुख क्या है; ॲन–सोचकर; तुयर् कॊण्टु–व्याकुल होकर; चोरुम् नॅञ्चन्–खिन्नमन हो; मटन्तैयै–रमणी को; मानै ॲटुक्कुम् आनैये पोल्–हरिण को उठानेवाले गज के समान; तट कैकळ् कॊण्टु तऴीइ–विशाल, लम्बे हाथों से बाँधकर; ॲटुक्कल् उऱ्ऱान्–उठाने लगे। १८८

चक्रवर्ती ने उनकी हालत देखी तो वे बड़े व्याकुल हुए और सोचने लगे

कि इन्हें क्या हो गया है ? खिन्नमन होकर उन्होंने उन्हें अपने दोनों पुष्ट हाथों से बाँधकर ऐसा उठाने का प्रयास किया जैसे एक हाथी एक हरिणी को उठा रहा हो। १८८

❀ निऩ्ऱु तोंडर्न्द नेंडुङ्गै तम्मै नीक्कि
मिऩ्ऱुवळ् हिऩ्ऱदु पोल मण्णिल् वीऴ्न्दाळ्
ओऩ्ऱु मियम्बल णीडु यिर्क्क लुऱ्ऱाळ्
मऩ्ऱ लरुन्दोंडै मऩ्ऩ ऩावि यऩ्ऩाळ् 189

मऩ्ऱल् अरु तोंटै मऩ्ऩऩ्–सुगन्धयुक्त अतिसुन्दर मालाधारी राजा की; आवि अऩ्ऩाळ्–प्राणसमाना; निऩ्ऱु–स्थिर रहकर; तोंटर्न्त–(दशरथ के) बढ़े हुए; नेंटु कै तम्मै–दीर्घ भुजाओं को; नीक्कि–हटाकर; मिऩ् तुवळ्किऩ्ऱतु पोल–मानो बिजली लचकती हो ऐसा; मण्णिल् वीऴ्न्ताळ्–भूमि पर गिरीं; ओऩ्ऱुम् इयम्पलळ्–कुछ नहीं बोलीं; नीटु उयिर्क्कल् उऱ्ऱाळ्–लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। १८९

सुवासपूर्ण मालाधारी चक्रवर्ती की वे प्राण-सम प्यारी थीं। वे अब अपनी स्थिति में अटल रहीं। उन्होंने दशरथ के बढ़े हुए हाथों को निवारित किया और तड़पती बिजली के समान भूमि पर लचकती हुई गिरीं। वे कुछ नहीं बोलीं; पर लम्बी-लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। १८९

❀ अऩ्ऩदु कण्ड वलङ्गऩ् मऩ्ऩ ऩञ्जि
एँऩ्ऩै निहऴ्न्ददिव् वेऴु ञालम् वाऴ्वार्
उऩ्ऩै यिहऴ्न्दवर् माऴ्व रुऱ्ऱ देल्लाम्
शोऩ्ऩपि ऩ्ऩेँऩ्शेयल् काण्डि शोल्लि डेऩ्ऱाऩ् 190

अऩ्ऩतु कण्ट–उस (कार्य) को देखकर; अलङ्कल् मऩ्ऩऩ्–मालाशोभित राजा; अञ्चि–डरकर; निकऴ्न्ततु एँऩ्ऩै–घटित हुआ क्या; इ एऴु ञालम्–इन सातों लोकों में; वाऴ्वार्–रहनेवालों में; उऩ्ऩै इकऴ्न्तवर्–तुम्हारी निंदा करनेवाले; माऴ्वर्–मर जायँगे; उऱ्ऱतु एँल्लाम्–जो भी हुआ वह सब; चोऩ्ऩ पिऩ्–तुम कहो, उसके बाद; एँऩ् चेयल् काण्टि–मेरा कृत्य देखो; चोल्लिटु–कहो जल्दी; एँऩ्ऱाऩ्–कहा। १९०

यह देखकर चक्रवर्ती दशरथ डर गये। माला से शोभित राजा ने उनसे पूछा कि हुआ क्या ? तुम्हारी निन्दा करनेवाले इन सातों लोकों के वासियों में कोई भी हों, वे मेरे हाथों मारे जायँगे। घटित सब बातें बताओ पहले; पीछे मेरा कृत्य देखो। कहो जल्दी। १९०

❀ वण्डुळर् तारवऩ् वाय्मै केट्ट मङ्गै
कोण्ड नेंडुङ्गणि ऩालि कोङ्गै कोप्प
उण्डुहो लामरु ळेँऩ्ग णुण्मै नाट्टिऩ्
पण्डय विऩ्ऱु परिन्द ळित्ति येँऩ्ऱाळ् 191

वण्टु उळर् तारवन्–भ्रमरनुची मालाधारी राजा के; वाय्मै–वचनों को; केट्ट मङ्कै–जिन्होंने सुना वे देवी; नॆट्टुम् कण्–दीर्घ आँखों रूपी; कॊण्टलिन् आलि–मेघों के जल (अश्रु) कण; कॊङ्कै कोप्प–स्तनों पर गिराते हुए; ऎन् कण्–मुझ पर; अरुळ् उण्टु आम् कॊल्–दया भी है क्या; उण्मै नाट्टिन्–उसका रहना स्थापित करना चाहते हों तो; पण्टैय–पहले के (वादों को); इन्ऱु–आज ही; परिन्तु अळित्ति–प्रेम के साथ दे दीजिए; ऎन्ऱाळ्–कहा। १९१

भ्रमर जिनको नोच रहे थे उन पुष्पों की माला से अलंकृत राजा के निश्चयपूर्ण वचन सुनकर कैकेयी ने अपने नेत्र रूपी मेघ से आँसू के जल कणों को अपने स्तनों पर बरसाते हुए कहा कि क्या मुझ पर आपकी दया भी है ? अगर सचमुच है तो उन दो वरों को, जिनका वादा आपने पहले किया था, अभी दीजिए और स्नेह के साथ दीजिए। १९१

❀ कळ्ळविऴ् कोदै करुत्तुण राद मन्नन्
वॆळ्ळ नॆडुञ्जुडर् मिन्निन् मिन्न नक्कान्
उळ्ळ मुवन्ददु शॆय्वॆ नॊन्ऱु लोवेन्
वळ्ळ लिरामनुन् मैन्द नाणै यॆन्ऱान् 192

कळ् अविऴ् कोतै–शहद बरसानेवाले (पुष्पों से अलंकृत) केश वाली के; करुत्तु उण्रात–मन से अनभिज्ञ; मन्नन्–राजा; वॆळ्ळम् नॆटु चुटर्–अतिशय प्रकाश वाली; मिन्निन्–बिजली के समान; मिन्न–प्रकाशमय रीति से; नक्कान्–हँसकर; उळ्ळम् उवन्ततु चॆय्वॆन्–तुम्हारे मन की चाह पूरा करूँगा; ऒन्ऱुम् उलोवेन्–कुछ भी लोप नहीं करूँगा; उन् मैन्तन्–तुम्हारे पुत्र; वळ्ळल्–वदान्य; इरामन् आणै–राम की कसम; ऎन्ऱान्–बोला। १९२

राजा ने कैकेयी का, जिसके केश पर शहद रस रहा था, आन्तरिक अभिप्राय नहीं जाना। यह सुनकर वे हँस उठे और उनके दाँतों ने अतिशय प्रकाश वाली बिजली से भी अधिक चमक दिखाई। उन्होंने वादा किया कि तुम जो चाहोगी वह अवश्य करूँगा। कुछ भी लोप नहीं करूँगा। हाँ, राम की सौगन्ध ! । १९२

❀ आन्ऱव नव्वुरै कूऱ वैय मिल्लाळ्
तोन्ऱिय पेरव लन्दु डैत्त लुण्डेल्
शान्ऱिमै योर्कुल माह मन्न मुन्नी
एन्ऱ वरङ्ग ळिरण्डु मीदि यॆन्ऱाळ् 193

आन्ऱवन्–गुणश्रेष्ठ के; अ उरै कूऱ–वह वचन कहने पर; ऐयम् इल्लाळ्–संशय-छूटी; मन्न–राजन; तोन्ऱिय–उत्पन्न; पेर् अवलम्–मेरा बड़ा दुख; तुटैत्तल् उण्टेल्–दूर करना हो; मुन्–पहले; इमैयोर् कुलम् चान्ऱु आक–देवगणों को साक्षी बनाकर; नी एन्ऱ वरङ्कळ् इरण्टुम्–आपने जो वादे किये वे दो वर; ईति–अब दीजिए; ऎन्ऱाळ्–कहा। १९३

जब राजा ने राम की सौगन्ध खाई तो कैकेयी को विश्वास हो गया कि अब मनोरथ पूरा हुआ। संशय सब जाता रहा। तब उन्होंने कहा— हे राजन्! अगर आप मेरा कठोर दुख दूर करना चाहेंगे तो आपने पहले किसी दिन, देवता लोगों को साक्षी बनाकर दो वर देने का जो वादा किया था, उन दोनों वरों को अभी दीजिए। १९३

❀ वरङ्गॉळ वित्तुणै मम्म रल्ल लॅय्दि
इरङ्गिड वेण्डुव दिल्लै योव नॅन्बाल्
परङ्गॅड विप्पॉळ्ळु देव हर्न्दि डॅन्ड्रान्
उरङ्गॉण् मनत्तवळ् वञ्ज मोर्हि लादान् 194

उरम् कॉळ् मनत्तवळ्—कठोरता से भरे मन की; वञ्चम्—वंचना का; ओर्किलातान्—जो अनुमान नहीं कर सके, उन दशरथ ने; वरम् कॉळ—वर लेने के लिए; इत्तुणै मम्मर् अल्लल् ऍय्ति—इतनी घबड़ाहट और इतना संकट पाकर; इरङ्किट वेण्टुवतिल्लै—दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी; ऍन् पाल् परम् कॅट—मेरा भार दूर हो जाय ऐसा; इ पॉळुते ईवॅन्—अभी दे दूँगा; पकर्न्तिटु—बताओ; ऍन्ड्रान्—कहा। १९४

राजा ने अब भी कठोरता से भरे कैकेयी का सच्चा मनोभाव नहीं जाना। उन्होंने कहा कि मुझसे वर लेने के लिए इतनी घबड़ाहट, इतना संकट क्यों? इतना दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी। अभी कहो। अपना भार हल्का करते हुए तुम्हें अभी दे दूँगा। १९४

❀ एय वरङ्ग ळिरण्डि नॉन्ड्रि नालॅन्
शेयुल हाळ्वदु शीदै केळ्व नॉन्ड्राल्
पोय्वन माळ्व दॅनप्पु हन्रु निन्ड्राळ्
तीयवै यावयि नुञ्जि ड्रन्द तीयाळ् 195

तीयवै यावैयितुम्—सभी क्रूर बातों से; चिड्रन्त तीयाळ्—बढ़कर अधिक क्रूरता वाली; एय वरङ्कळ् इरण्टिन्—सहमत दो वरों में; ऑन्ड्रिताल्—एक से; ऍन् चेय्—मेरा पुत्र; उलकु आळ्वतु—लोकशासन करे; ऑन्ड्राल्—(दूसरे) एक से; चीतै केळ्वन्—सीता का पति; पोय्—(राज्य छोड़) जाकर; वनम् आळ्वतु—वन का पालन करे; ऍन पुकन्रु—यह कहकर; निन्ड्राळ्—अचल रही। १९५

दुनिया में जो भी निष्ठुर और निर्मम चीजें हैं उन सबसे क्रूर निकलीं कैकेयी। उन्होंने कहा कि आपने दो वर देने की सम्मति दी है। उनमें एक से मेरा पुत्र भरत राज्य का शासन करे; दूसरे से सीता का पति राज्य छोड़कर जाए और जंगल का शासन करे। यह कहते हुए वे काँपीं नहीं। अचल और अकम्पित रहीं। १९५

❀ नाह मॅनुङ्गॉडि याड नावित् वन्द
शोह • विडन्दॉड रत्तु णुक्क मॅय्दि

आह मडङ्गलुम् वॅन्द ळिन्द राविऩ्
वेह मडङ्गिय वॅळ मॅन्त वीऴ्न्दाऩ् 196

नाकम् अॅतुम्—सर्प-सम; कॉटियाळ् तऩ्—निष्ठुर कैकेयी की; नाविऩ् वन्त—जीभ से निकले; चोक विटम् तॉटर—शोकोत्पादक विष के लगने से; तुणुक्कम् अॅय्ति—दहलकर; आकम् अटङ्कलुम्—शरीर भर में; वॅन्तु—जलकर; अळिन्तु—निर्बल होकर; अराविऩ्—विषैले सर्प के (डसने के) कारण; वेकम् अटङ्किय—शक्ति खाये हुए; वेऴम् अॅन्त—हाथी के समान; वीऴ्न्ताऩ्—(भूमि पर) गिरे। १९६

कैकेयी सर्प बन गई और उनकी जीभ से शब्द नहीं निकले, पर विष ही निकला। शोकोत्पादक उस विष के लगने से दशरथ दहल उठे। सारा शरीर तप्त हो गया और वे निर्बल हो गये। सर्प-दंशन से शक्ति के क्षीण होने से जैसे हाथी गिर जाता है वैसे राजा भी भूमि पर गिर पड़े। १९६

❀ पूदल मुऱ्ऱद तिऱ्पु रण्ड मऩ्ऩऩ्
मादुय रत्तिनै यावर् शॉल्ल वल्लार्
वेदनै मुऱ्ऱहम् वॅन्दु वॅन्दु कॉल्लऩ्
ऊदुलै यिऱ्कन लॅन्न वॅय्दु यिर्त्ताऩ् 197

पूतलम् उऱ्ऱु—भूमि पर गिरकर; अतऩिल् पुरण्ट—उस पर लोटनेवाले; मऩ्ऩऩ्—राजा के; मा तुयरत्तिनै—महान दुख को; चॉल्ल वल्लार् यावर्—बता सकनेवाले कौन हैं; वेतनै मुऱ्ऱु अकम्—वेदना भरे मन के; वॅन्तु वॅन्तु—बहुत तप्त होकर; कॉल्लऩ् ऊतु उलैयिल्—लुहार की भाथी के द्वारा हवा पाकर जलनेवाली भट्ठी की आग के समान; वॅय्तु उयिर्त्ताऩ्—गरम श्वास छोड़े। १९७

चक्रवर्ती भूमि पर गिरकर लोटने लगे। उनके महान दुख का वर्णन कर सकनेवाला कौन है? मन असीम वेदना से भर गया। अत्यन्त दुख-तप्त हो गया। इसलिए उन्होंने जो साँसें छोड़ीं वे लुहार की उस भट्ठी की आग के समान गरम थीं जिसे भाथी द्वारा लुहार हवा देकर जलाता रहता है। १९७

उलर्न्ददु नावुयि रोड लुऱ्ऱ दुळ्ळम्
पुलर्न्ददु कण्गळ् पॉडित्त पॉङ्गु शोरि
शलन्दलै मिक्कदु तक्क दॅऩ्गॉ लॅन्ऱॅऩ्
ऱलन्दलै युऱ्ऱ वरुम्बु लन्ग ळैन्दुम् 198

तक्कतु अॅन् कॉल् अॅन्ऱु अॅन्ऱु—(अब) उचित क्या है, यह सोच-सोचकर; ना उलर्न्ततु—जीभ (मुख) सूख गई; उयिर् ओटल् उऱ्ऱतु—प्राण निकलने को हुए; उळ्ळम् पुलर्न्ततु—मन मुरझा गया; कण्कळ्—आँखों ने; पॉङ्कु चोरि पॉटित्त—अधिक रक्त बहाया; चलम् तलै मिक्कतु—कोप सिर पर चढ़ा; अरु पुलऩ्कळ् एन्तुम्—श्रेष्ठ पाँचों इंद्रिय; अलन्तलै उऱ्ऱ—अस्तव्यस्त हुईं। १९८

'अब क्या करना उचित होगा ?' यह सोचते-सोचते चक्रवर्ती की जिह्वा सूख गई। प्राण निकलने को हो गये। मन मुरझा गया। आँखों से मानो रक्त के कण बरसने लगे। गुस्सा सिर पर चढ़ आया। श्रेष्ठ पाँचों इन्द्रियाँ अस्तव्यस्त हो गईं। १९८

❀ मेवि निळत्ति लिरुक्कु निऱ्कुम् वीऴुम्
ओविय मॉप्प वयिऱ्प्प डङ्गि योयुम्
पाविय युऱ्ऱॅदिऱ् पऱ्ऱि यॅऱ्ऱ वॅण्णुम्
आवि पदैप्प वलक्क णॅय्दि नित्ऱाऩ् 199

आवि पतैप्प–प्राण छटपटाते; अलक्कण् ॲय्ति नित्ऱान्–कठोर दुख से पीड़ित जो रहे वे; निलत्तिल् मेवि इरुक्कुम्–(कुछ देर) भूमि पर बैठे रहते; निऱ्कुम्–(बाद) खड़े हो जाते; वीऴुम्–(फिर) गिरते; ओवियम् ऑप्प–चित्र की तरह; उयिर्प्पु अटङ्कि–साँस रोककर; ओयुम्–शिथिल रहते; पाविय़ै–पापिन को; ॲतिर् उऱ्ऱु–सामने जाकर; पऱ्ऱि–पकड़कर; ॲऱ्ऱ ॲण्णुम्–पटकना चाहते। १९९

वे ऐसे दुखी हुए कि प्राण छटपटाने लगे। वे कुछ देर भूमि पर बैठे रहते, फिर उठकर खड़े होते। फिर भूमि पर गिर जाते। चित्र के समान साँस रोके निस्पंद खड़े रहते। पापिनी कैकेयी को सामने जाकर पकड़कर एक दम पटकने का विचार करते। १९९

पॅण्णॅऩ्ऱ वुट्कुम् पॅरुम्ब ऴिक्कु नाणुम्
उण्णिऱै वॅप्पॉ डुयिर्त्तु यिर्त्तु लावुम्
कण्णिल नॉप्प वयर्क्कुम् वऩ्गै वेल्वॅम्
पुण्णुऴै · हिऱ्क वुऴैक्कु मानै पोल्वाऩ् 200

वन् कै वेल्–वलिष्ट हाथ से प्रेषित बर्छी के; वॅम् पुण् नुऴैकिऱ्क–पीडक व्रण में घुसने से; उऴैक्कुम्–लटनेवाले; आनै पोल्वान्–हाथी समान राजा; पॅण् ॲन्त–स्त्री समझकर; उट्कुम्–संकोच करते; पॅरुम् पऴिक्कु–(स्त्री-हत्या से होनेवाली) बड़ी निंदा से; नाणुम्–शरम खाते; उळ् निऱै वॅप्पॊटु–आन्तरिक सन्ताप से; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–निश्वास छोड़ते, छोड़ते; उलावुम्–(इधर से उधर और उधर से इधर) चलते; कण्णिलन् ऑप्प–आँखों से हीन के समान; अयर्क्कुम्–निस्पन्द खड़े रहते। २००

फिर सोचते कि वह स्त्री है। उन्हें उतनी पीड़ा हुई जितनी बलवान हाथ से प्रेषित भाले के पके व्रण में घुसने से हाथी को होती है। तो भी वे सोचते हैं कि वह स्त्री है। इसलिए उन्हें मारने से डरते; स्त्रीहत्या का बड़ा दोष और उसकी बड़ी निन्दा होगी, इस बात से शरमाते। दुखतप्त मन के साथ वे बेचैन होकर इधर से उधर और उधर से इधर चलते थे। कुछ देर अन्धे के समान थके खड़े रहते। २००

कम्ब नॆडुङ्गळि यानै यन्न मन्नन्
वॆम्बि विऴुन्दयर् विम्मल् कण्डु वॆय्दुर्
रुम्बर् नडुङ्गिन रूऴि पेर्व दॊत्त
दम्बन् कण्णव ळुळ्ळ मन्न देयाल् 201

कम्पम्–खूँटे से बँधे; नॆट्टु कळि यानै अन्न–अत्यन्त मदमत्त गज के समान; मन्नन्–राजा; वॆम्पि–दुखतप्त होकर; विऴुन्तु अयर् विम्मल्–गिरकर शिथिल होते हैं, यह दशा; उम्पर् कण्टु–देवता लोग देखकर; वॆय्तुर्रु–दुखी होकर; नटुङ्किनर्–काँप उठे; ऊऴि पेर्वतु ऒत्ततु–युगान्त हो गया, ऐसा लगा; अम्पु अन्न कण्णवळ् उळ्ळम्–(तब भी) शरसम आँख वाली का हृदय; अन्नते–वैसा ही (रहा)। २०१

आलान के साथ बँधे हुए अति मदमत्त हाथी की-सी स्थिति में पड़कर राजा मन मारकर लड़खड़ाते हैं, शिथिल पड़ जाते हैं —यह स्थिति देखकर देवों को दुख और डर हो गया। उन्हें लगा कि प्रलय का समय आ गया है। इतना होने पर भी शर-सम निर्मम आँखों वाली कैकेयी का मन टस से मस नहीं हुआ। वैसे ही निर्मम बना रहा। २०१

अञ्जल ळैयन्न दल्लल् कण्डु मुळ्ळम्
नञ्जिल णाणिल ळॆन्न नाण मामाल्
वञ्जनै पण्डु मडन्दै वेड मन्रो
तञ्जॆन मादरै युळ्ळ लार्ह डक्कोर् 202

ऐयन्तु अल्लल् कण्टुम्–नायक का दुख देखकर भी; अञ्चलळ्–न डरी; उळ्ळम् नञ्चिलळ्–आर्द्रमना नहीं हुई; नाणिलळ्–न शरमाई; ऎन्न–(उनकी यह स्थिति) कहते; नाणम् आम्–हमें लज्जा होती है; पण्टु–पहले से ही; वञ्चनै–वंचकता; मटन्तै वेटम् अन्रो–स्त्रीरूप ही रही है न; तक्कोर्–योग्य बड़े लोग; मातरै–स्त्रियों को; तञ्चु ऎन्न–सहायक; उळ्ळलार्कळ्–नहीं मानते। २०२

अपने ही पति की वेदना देखकर भी कैकेयी नहीं डरीं; न उनका मन ही नरम हुआ। वे नहीं लजाईं। उनकी यह स्थिति कहते हुए हमें लज्जा होती है! हाँ, पहले से ही वंचना स्त्रीरूपधारिणी ही रहती आई है। योग्य और विद्वान बड़े लोग स्त्री को कभी विश्वसनीय सहायक नहीं मानते। २०२

❀ इन्निलै निन्रव डन्नै यॆय्द नोक्कि
नॆय्न्निलै वेलव नीदि शैत्त तुण्टो
पॊय्न्निलै योर्हळ् पुणर्त्त वञ्जमुण्डो
उन्निलै शॊल्लॆन दाणै युण्मै यॆन्रान् 203

नॆय्निलै वेलवन्—घृत-लगा भालाधारी; इ निलै निन्रवळ् तन्नै–इस स्थिति में रहीं उनको; ऎय्त नोक्कि–खूब देखकर; नी तिचैत्ततु उण्टो–तुम भ्रम में पड़

गई हो; पॉय् निलैयोर्कळ्–मिथ्याचारी; पुणर्त्त–कल्पित; वञ्चम् उणर्टो–वंचना है; ऍन्ततु आणै–मेरी शपथ; उन् निलै उण्मै चॊल्–अपनी इस स्थिति की सच्चाई कहो; ऍन्रान्–कहा। २०३

घी-लगे भाले के दशरथ ने इस स्थिति में खड़ी रही कैकेयी को घूर कर देखा। फिर प्रश्न किया कि क्या तुम्हारा मन भ्रमित हो गया? या मिथ्यावादी किन्हींने आकर तुम्हें गढ़कर वंचना बताई है? मेरी सौगन्ध! तुम अपनी इस स्थिति का असली कारण सच-सच बताओ। —दशरथ ने कहा। २०३

❀ तिशैत्तदु मिल्लै यॅनक्कु वन्दु तीयोर्
इशैत्तदु मिल्लैमु न्नीन्द वरङ्ग ळॅन्बाल्
कुशैप्परि योय्तरि निन्रु कॊळ्वॅ नन्रेल्
वशैत्तिर निन्वयि निऱ्क माळ्व नॆन्राळ् 204

कुचै परियोय्–रासदार अश्वों के स्वामी; तिचैत्ततुम् इल्लै–भ्रमित होने की बात नहीं; तीयोर्–बुरे लोगों ने; ऍनक्कु वन्तु इचैत्ततुम् इल्लै–मेरे पास आकर गढ़न्त नहीं कहा है; मुन् ऍन् पाल् ईन्त वरङ्कळ्–पहले मुझे दिये गये वर; इन्रु तरिन्–आज देंगे तो; कॊळ्वॅन्–लूँगी; अन्रेल्–नहीं तो; वचै तिरम् निन् वयिन् निऱ्क–अपयश का हेतु आपके पास छोड़कर; माळ्वॅन्–मर जाऊँगी; ऍन्राळ्–कहा। २०४

कैकेयी ने अप्रमत्त रूप से उत्तर दिया। भ्रमित होने की कोई बात नहीं है! न किन्हीं बुरों ने आकर गढ़कर बातें बताई हैं। रासदार अश्वों के स्वामी! आपने पहले जो दो वर देने का वादा किया था, उन दोनो वरों को आज देंगे, तो लूँगी। नहीं तो आपको अपयश उठाने देते हुए प्राण त्याग दूँगी। २०४

❀ इन्द नॅडुञ्जॊलव् वेळै कूऱ मुन्नॆ
वॆन्द कॊडुम्बुणिल् वेनु ऴैन्द दॊप्पच्
चिन्दै तिरिन्दु तिहैत्त यर्न्दु वीऴ्न्दान्
मैन्द नलादुयिर् वेऱि लाद मन्नन् 205

इन्त नॅटुम् चॊल्–यह बड़ी बात; अ एऴै कूऱ–(उन) अबोध नारी के कहने पर; मैन्तन् अलातु–पुत्र के सिवा; उयिर् वेऱु इल्लात मन्नन्–प्राण जो अलग नहीं रखते थे, वे राजा; मुन्ने वॆन्त कॊटुम् पुण्णिल्–पहले ही अग्नि के लगने से बने व्रण में; वेल् नुऴैन्ततु ऒप्प–भाला घुस गया, ऐसा; चिन्तै तिरिन्तु–मन अस्त-व्यस्त होकर; तिकैत्तु–भ्रमित होकर; अयर्न्तु–निर्बल होकर; वीऴ्न्तान्–भूमि पर गिरे। २०५

यह बड़ा निष्ठुर वचन था। कैकेयी ने यह कह दिया तो राजा का मन टूट गया। उनके तो श्रीराम ही प्राण थे। श्रीराम से अलग उनके प्राण

रह ही नहीं सकते थे। उन्हें ऐसा लगा मानो अग्नि के लगने से उत्पन्न व्रण में भाला घुसेड़ दिया गया हो। वे भ्रमित हो गये और थककर भूमि पर गिर गये। २०५

❀ आकॊडि	यायॆनु	मावि	कालु	मन्दो
ओकॊडि	देयऱ्	मॆन्नु	मुण्मै	यॊन्ऱुम्
शाहवॆ	नावॆऴु	मॆय्त	ळाडि	वीऴुम्
माहमु	नाहमु	मण्णुम्	वॆन्ऱ्	वाळान् 206

माकमुम्–आकाशलोक को; नाकमुम्–और पाताललोक को; मण्णुम्–भूलोक को; वॆन्ऱ् वाळान्–जीतनेवाली तलवारधारी; आ कॊटियाय् ऎन्नुम्–हाय क्रूर (नारी) कहते; आवि कालुम्–प्राणाकुलित हो जाते; अन्तो–हाय; अऱम् ओ कॊटिते–धर्म अत्यन्त निर्मम है; ऎन्नुम्–कहते; उण्मै ऒन्ऱुम्–सत्य नाम का वह; चाक ऎन्ना–मर जाय, कहकर; ऎऴुम्–उठते; मॆय् तळ्ळाटि–शरीर के लड़खड़ाने से; वीऴुम्–गिर जाते। २०६

चक्रवर्ती विख्यात वीर थे। उनकी तलवार को आकाश, भूलोक और पाताललोक तीनो को जीतने का गौरव प्राप्त था। वे प्रलाप कर उठे— हाय क्रूर नारी! उनके प्राण सूख-से गये। "हाय! धर्म भी अत्यन्त निर्मम है! सत्य नामक तथ्य का नाश हो!" —यह कहते हुए वे उठे। लड़खड़ाकर गिर गये। २०६

❀ नारिय	रिल्लयिञ्	ञाल	मॆङ्गु	मॆन्नक्
कूरिय	वाळ्कॊडु	कॊन्ऱु	नीक्कि	यानुम्
पूरिय	रॆण्णिडै	वीऴ्वॆ	नॆन्ऱु	पॊङ्गुम्
वीरियर्	वीरम्	विऴुङ्गि	निन्ऱ्	वेलान् 207

वीरियर् वीरम्–श्रेष्ठ वीरों की वीरता; विऴुङ्कि–कवलित करके; निन्ऱ्–रहनेवाला; वेलान्–भालाभृत; इ ञालम् ऎङ्कुम्–इस भूतल भर में; नारियर् इल्लै ऎन्न–स्त्रियाँ नहीं हों; कूरिय वाळ् कॊटु–तीक्ष्ण तलवार से; कॊन्ऱु नीक्कि–(इस तरह) मारकर हटाकर; यानुम्–मैं भी; पूरियर् ऎण्णिटै–नीच लोगों की गिनती में; वीऴ्वॆन् ऎन्ऱु–पतित हो जाऊँगा, कहकर; पॊङ्कुम्–विफर उठते। २०७

उनका भाला बड़े-बड़े सभी वीरों की वीरता को कवलीकृत कर रहनेवाला था। उनका क्रोध भड़क उठा। "संसार भर में नारियाँ ही न हों, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए अपनी तलवार से सभी नारियों को मारकर मिटा दूंगा। नीच लोगों की श्रेणी में गिना जाऊँगा तो कोई बात नहीं है।" । २०७

❀ कैयॊडु	कैयेप्	पुडैक्कुम्	वाय्क	डिक्कुम्
मॆय्युऱ	कुऱ्ऱ	मॆनप्पु	ऴुङ्गि	विम्मुम्

नॆय्यॆरि युऱ्ऱॆन नॆञ्ज ऴिन्दु शोरुम्
वैयह मुऱ्ऱु नडन्द वाय्मै मन्नन् 208

वैयकम् मुऱ्ऱुम्–पृथ्वी भर में; नटन्त–व्याप्त; वाय्मै मन्नन्–सत्यव्रती के यश वाले; (चिनत्ताल्–क्रोध से;) कैयॊटु कैयै–हाथ से हाथ; पुटैक्कुम्–जोर से बजाते; वाय् कटिक्कुम्–होंठ चबाते; मॆय् उरै कुऱ्ऱम्—सत्य-कथन अपराध है; ऍन–यह सोचकर; पुऴुङ्कि–मनतप्त होकर; विम्मुम्–सिसकते; ऍरि नॆय् उऱ्ऱतु ऍन–आग में घी पड़ गया जैसे; नॆञ्चु अऴिन्तु–मन पिघलाकर; चोरुम्–लट जाते। २०८

दशरथ की सत्यवादिता का यश संसार भर में व्याप्त था। उन्होंने क्रोध से एक हाथ से दूसरे हाथ को जोर से मारा। होंठ चबाये। 'सत्य बोलना भी अपराध हो गया!' यह देखकर उनका मन संतप्त हुआ। सिसकियाँ भरने लगे। आग में लगे घी के समान उनका मन क्षीण हो गया। वे थक गये। २०८

ऑऱुप्पिनु मन्दर मुण्मै यॊन्ऱु मोवा
मऱुप्पिनु मन्दर मॆन्ऱ वाय्मै मन्नन्
पॊऱुप्पिनु मन्निलै पोहि लाऴै यावि
इऱुप्पिनु माव दिरप्प वॆन्ऱॆ ऴुन्दान् 209

ऑऱुप्पितुम्–इसे दण्डित करूँ तो भी; अन्तरम्–बुरा है; उण्मै ऑन्ऱुम् ओवा–सत्य से हटकर; मऱुप्पितुम्–वर देने से इनकार कर दूँ तो भी; अन्तरम्–बुरा ही; ऍन्ऱ–ऐसा सोचकर; वाय्मै मन्नन्–सत्यव्रती चक्रवर्ती; पॊऱुप्पितुम्–कितना भी सब्र करने पर भी; अ निलै पोकिलाऴै–उस स्थिति से न हटनेवाली उनको; आवि इऱुप्पितुम्–मारने से; इरप्पतु–याचना करना; आवतु–(लाभदायक) हो सकता है; ऍन्ऱु–सोचकर; ऍऴुन्तान्–उठे। २०९

राजा सोचने लगे। 'इसे दण्ड दूँ तो भी बुरा है। सत्य से हटकर वर देने से इनकार कर दूँ तो भी बुरा है।' सत्यसंध राजा ने यह निर्णय किया कि कितना भी सब्र के साथ इससे तर्क करूँ तो भी वह अपनी स्थिति को बदलनेवाली नहीं है। इसलिए उसको मारने से उससे प्रार्थना करना अच्छा है। यह सोचकर वे उठे। २०९

❀ कोन्मेऱ् कॊण्डुङ् गुऱ्ऱ महऱ्ऱक् कुऱिकॊण्डार्
पॊन्मे लुऱ्ऱ दुण्डॆनि नन्ऱाम् पॊऱैयॆन्नाक्
कान्मेल् वीऴ्न्दान् कन्दुहोल् यानैक् कऴन्मन्नर्
मेन्मेल् वन्दु मुन्दि वणङ्ग मिडैताळान् 210

कन्तु कॊल् यानै–आलानभंजक हाथी वाले; कऴल्–पायलधारी; मन्नर्–राजा लोग; मेल् मेल् मुन्ति वन्तु–उत्तरोत्तर बढ़ते हुए आकर; वणङ्क मिटै–नमस्कार करने के लिए जिनके पास जुटते हैं; ताळान्–उन चरणों वाले; कोल् मेल्

कॉण्टुम्–राजदण्ड रखते हुए भी; कुऱ्ऱम् अकऱ्ऱ–दोष से बचने का; कुऱि कॉण्टार् पोल्–लक्ष्य रखनेवाले के समान; मेल् उऱ्ऱतु उण्टु ऎंतिऩ्–आगे भला होगा तो; पॉरै नऩ्ऱु आम्–क्षमाशीलता अच्छी है; ऎऩ्ऩा–सोचकर; काल् मेल् वीऴ्न्ताऩ्–कैकेयी के चरणों पर गिरे। २१०

राजा बड़े प्रतापी थे। वे खूँटे तोड़ सकनेवाले गजों के स्वामी थे। उनके चरण ऐसे थे कि राजा लोग "मैं, मैं पहले," यह कहते हुए एक से पहले एक आकर उन पर नमस्कार करते थे। उनके हाथ में राजदण्ड, आज्ञा देने का अधिकार था। तो भी उन्होंने शायद सोचा कि हमारा व्यवहार दोष रहित होना चाहिए। 'आगे भला होगा तो क्षमा माँगना श्रेयस्कर है', यह विचार कर राजा कैकेयी के चरणों पर गिरे। २१०

❀ कॉळ्ळा निऩ्शे यिव्वर शऩ्ऩाऩ् कॉण्डालुम्
नळ्ळा दिन्द नाऩिल ञालन् दऩिलॆंऩ्ऱुम्
उळ्ळा रॆल्ला मोद वुवक्कुम् पुहऴ्हॊळ्ळा
दॆळ्ळा निऱ्कुम् वऩ्बऴि कॉण्डॆन् पयनॆऩ्ऱाऩ् 211

निऩ् चेय्–तुम्हारा पुत्र; इव् अरचु कॉळ्ळाऩ्–यह राज नहीं लेगा; अऩ्ऩाऩ् कॉण्टालुम्–वह ले भी तो; इन्त नाल् निलम्–यह चतुर्विधा भूमि; नळ्ळातु–सम्मत नहीं होगी; ञालम् तऩिल् उळ्ळार् ऎल्लाम्–संसार के सभी वासी; ऎंऩ्ऱुम् ओत–सदा कहते हैं उससे; उवक्कुम्–चाहनीय बने; पुकऴ् कॉळ्ळातु–यश को न लेकर; ऎळ्ळा निऱ्कुम्–सब (जिसको) निकृष्ट मानेंगे उस; वऩ् पऴि कॉण्टु–प्रबल अपयश प्राप्त कर; ऎंऩ् पयऩ्–क्या लाभ होगा; ऎंऩ्ऱाऩ्–कहा। २११

उन्होंने कैकेयी को समझाया कि देखो, तुम्हारा पुत्र भरत राज्य नहीं लेगा। अगर वह ले भी तो यह भूमि सम्मत नहीं होगी यानी प्रजा उसे राजा नहीं मानेगी। यश इसलिए चाहनीय है कि दुनिया के सारे लोग उसका बखान करेंगे। वह यश न अर्जन कर तुम सर्वनिन्द्य प्रबल अपयश लेने का प्रयास क्यों करती हो ?। २११

वाऩोर् कॉळ्ळार् मण्णव रुय्या रिऩिमऱ्ऱॆंऩ्
एऩोर् शॆय्है यारॊडु नीयिव् वरशाळ्वाय्
याऩे शॊल्लक् कॉळ्ळ विशैन्दाऩ् मुऱैयाले
ताऩे नल्हु मुऩ्महऩ् ऱुक्कुत् तरैयॆंऩ्ऱाऩ् 212

वाऩोर् कॉळ्ळार्–देवता उसको नहीं मानेंगे; मण्णवर् उय्यार्–पार्थिव लोग (श्रीराम को छोड़कर) प्राणधारण नहीं करेंगे; एऩोर् चॆय्कै–इनसे परे (जो पाताल-लोकवासी हैं), उनका काम; इऩि मऱ्ऱु ऎंऩ्–अब दूसरा क्या होगा; यारॊटु नी इ अरचु आळ्वाय्–किनके साथ रहकर तुम यह राज्य करोगी; याऩे चॊल्ल–मेरे ही कहने पर; मुऱैयाले–उचित क्रम था इसलिए; कॉळ्ळ इचैन्ताऩ्–(राम) लेने को

सहमत हुआ; उन् मकनुक्कु–तुम्हारे पुत्र को; तान्ने तरै नल्कुम्–(तुम्हारी इच्छा मालूम होगी तो) खुद भूमि को दे देगा; ऍन्ऱान्–कहा। २१२

तुम्हारी बात देवता नहीं मानेंगे। इस पृथ्वी के लोग श्रीराम से बिछुड़कर जीवित नहीं रहेंगे। अन्य जो पातालवासी हैं, उनका क्या कहा जाय ? वे भी सहमत नहीं होंगे। फिर किनको साथ रखकर शासन करोगी ? राम ने मेरे कहने से और यही उचित समझकर अपनी सम्मति दी। अब उसे मालूम हो जाय कि तुम्हारी इच्छा यही है तो वह स्वयं राज्य को भरत के पास सौंप देगा। दशरथ ने यह कहा। २१२

कण्णे वेण्डु मॆन्ऩिनु मीयक् कडवेनॆन्
उण्णे रावि वेण्डिनु मिन्ऱे युनदन्ऱो
पॆण्णे वण्मैक् केहयन् मान्ने पॆऱुवायेल्
मण्णे कॊण्णी मऱ्ऱय दॊन्ऱुम् मऱवॆन्ऱान् 213

पॆण्णे–रमणी; वण्मै केकयन् मान्ने–उदार केकयराज की मृगी-सी तनया; कण्णे वेण्टुम् ऍन्ऩिनुम्–आँखों को ही चाहोगी तो; ईय कटवेन्–देने का मेरा कर्तव्य है; ऍन् उळ् नेर् आवि वेण्टिनुम्–मेरे अन्दर के रहनेवाले प्राणों को चाहो तो भी; इन्ऱे उनतु अन्ऱो–वे आज ही तुम्हारे हैं न; नी पॆऱुवायेल्–तुम लेना ही चाहो; मण्णे कॊळ्–भूमि को लो; मऱ्ऱैयतु ऑन्ऱुम्–दूसरा जो एक है; मऱ–उसे भूल जाओ; ऍन्ऱान्–कहा। २१३

दशरथ ने आगे कहा कि रमणी ! उदार केकयराजतनया ! मृगी-सी सुन्दरी ! मेरी आँखें ही चाहो तो दे दूँगा, यह मेरा कर्तव्य है। मेरे प्राण भी माँगो तो अभी वे तुम्हारे हो जायँगे। इसलिए तुम मुझसे वर लेना चाहो तो दया करो राज्य को लो, दूसरे एक वर को भूल जाओ। २१३

वाय्तन् देनॆन् ऱेतिनि यान्नो वदुमाऱ्ऱेन्
नोय्दन् दॆन्नै नोवन शॆय्दु नुवलादे
ताय्दन् दॆन्नत् तन्नै यिरन्दाऱ् ऱळल्वॆङ्गट्
पेय्दन् दीयु नीयिदु तन्दाऱ् पिळैयामो 214

यान्नो वाय् तन्तेन् ऍन्ऱेन्–मैंने तो वचन दे दिया कि वर दे दिये; इति अतु माऱ्ऱेन्–अब उससे नहीं मुकरूँगा; नोय् तन्तु–बड़ा रोग (सम दुख) देकर; ऍन्नै नोवन चॆय्तु–मुझे वेदना देनेवाला काम करके; नुवलाते–ऐसी बातें मत कहो; तळल् वॆम् कण् पेय्–आग-सी आँखों वाले भूत; तन्नै इरन्ताल्–आपसे याचना करने पर; ताय् तन्तनु ऍन्न–माता ने दिया जैसे; तन्तु ईयुम्–(माँगी चीज) दे देगा; इतु तन्ताल्–यह (मेरी अर्थना) दोगी तो; पिळै आमो–अपराध होगा क्या। २१४

देखो। मैंने वचन दे दिया कि वर तुम्हें दे दिये। अब उससे नहीं मुकरूँगा। तुम मुझे दुख का रोग दिया, फिर मुझे वेदना देने का काम भी किया; तिस पर पीड़क बातें भी मत कहो। आग-सी आँखों वाला भूत

भी याचक के सामने माता-सा नरमदिल बन जाता है और माँगी चीज़ प्यार के साथ दे देता है। तो तुम यह छोटा-सा वर दे दो तो वह क्या तुम्हारे लिए अपराध हो जायगा ? । २१४

❀ इन्ऩे यिर्न्ऩ पन्ऩि यिरन्दा निहल्वेन्दन्
तन्ऩे रिल्लात् तीयव ळुळ्ळन् दडुमाऱाळ्
मुन्ऩे तन्दा यिव्वर नल्हाय् मुनिवायेल्
अॅन्ऩे मन्ऩा यारुळर् वाय्मैक् किनियॅन्ऱाळ् 215

इकल् वेन्तन्–शक्तिमान चक्रवर्ती ने; इन्ऩे–ऐसी; इन्ऩ–और इसी तरह की बातें; पन्ऩि—बार-बार कहकर; इरन्ताऩ्–प्रार्थना की; तन् नेर् इल्ला–अपनी सानी न रखनेवाली; तीयवळ्–अत्याचारिणी; उळ्ळम् तटुमाऱाळ्–कम्पितमन नहीं हुई; मन्ऩा–राजा; इ वरम् मुन्ऩे–ये वर पहले ही; तन्ताय्–दे दिये; नल्काय्–अब न देकर; मुनिवायेल्–कोप करेंगे तो; अॅन्ऩे–यह क्या है; वाय्मैक्कु–सत्यपालन के लिए; इनि–अब; यार् उळर्–कौन हैं; अॅन्ऱाळ्–कहा। २१५

शक्तिमान राजा ने ये बातें कहीं; ऐसी ही बहुत सी बातें कहकर मिन्नत की। पर कैकेयी तो क्रूरता में अपनी सानी रखनेवाली नहीं थीं। उस अत्याचारिणी ने निर्ममता से बात काटकर कहा कि देखिए राजा ! देने का वादा कर चुके हैं। अब बिना वर दिये कोप दिखाएँगे तो क्या होगा ? फिर सत्यपालन के लिए दुनिया में रहेगा कौन ? । २१५

अच्चॉर् केळा वावि पुऴुङ्गा वयर्हिन्ऱान्
पॉय्च्चॉर् पेणा वाय्मॊऴि मन्ऩन् पॊऱैकूर
नच्चुत् तीये पॅण्णुरु वन्ऱो वॅन्ननाणा
मुच्चर् ऱार्पोऱ् पिन्ऩु मिरन्दे मॊऴिहिन्ऱान् 216

पॉय् चॉल् पेणा–असत्य वचन कभी न कहनेवाले; वाय् मॊऴि मन्ऩन्–सत्य ही बोलनेवाले राजा; अ चॉल् केळा–(कैकेयी का) वह कथन सुनकर; आवि पुऴुङ्का–प्राण संतप्त होकर; अयर्किन्ऱान्–क्लांत हो जाते; पॊऱै कूर–सहनशील बनकर; नच्चु तीये–विष और अनल; पॅण् उरु अन्ऱो–स्त्री रूप में आये; अॅन–यह सोचकर; नाणा–शरम का अनुभव करते हुए; मूच्चु अऱ्ऱार् पोल्–(योगी) वेहोशों के समान; पिन्ऩुम्–(कुछ देर) रहने के बाद; इरन्ते मॊऴिकिन्ऱान्–प्रार्थना करते ही बोले। २१६

राजा असत्यवाचन को कभी स्थान देनेवाले नहीं थे। सदा सत्यवादी थे। उन्हें कैकेयी के वचन सुनकर अपार दुख हुआ। प्राण सूखने-से लगे। थक गये। तो भी सहनशीलता को अपनाकर वे कुछ देर चुप रहे मानो वे वेहोश या साँस रोके पड़े हों। उन्हें इस बात से शरम होती थी कि विष और आग दोनों मिलकर (इस) स्त्री के रूप में आये हैं। फिर वे बोलने लगे; तब भी प्रार्थना के स्वर में ही बोले। २१६

❀ निन्मह नाळ्वा नीयिनि दाळ्वाय् निलमॅल्लाम्
उन्वय मामे याळुदि तन्दे नुरैहुन्ड्रेन्
ॲन्मह नॅन्ग णॅन्नुयि रॅल्ला वुयिर्हट्कुम्
नन्मह निन्द नाडिर् वामे नयवॅन्ड्रान् 217

निलम् ॲल्लाम् तन्तेन्–भूमि सब मैंने दिला दी; उरै कुन्ड्रेन्–वचन नहीं टालूँगा; उन् वयमे आम्–(राज्य) तुम्हारे वश में हो जायगा; निन् मकन् आळ्वान्–तुम्हारा पुत्र शासन करे; नी इनितु आळ्वाय्–या तुम ही सुख से पालन करो; आळुति–आज्ञा चलाओ; ॲन् मकन्–मेरा पुत्र; ॲन् कण्–मेरा नेत्र; ॲन् उयिर्–मेरा प्राण (राम); ॲल्ला उयिर्कट्कुम्–सभी जीवों के लिए; नल् मकन्–अच्छा पुत्र; इन्त नाटु इऱवामै–इस देश से बाहर न जाए; नय–यह वर दो; ॲन्ड्रान्–कहा। २१७

उन्होंने याचना की— मैंने अपना सारा राज्य दे दिया। अब वचन नहीं टालूँगा। राज्य तुम्हारा हो जायगा। तुम्हारा पुत्र भरत शासन करे; चाहे तुम ही सुख से शासन करो। मेरा पुत्र, मेरी आँख का तारा, मेरी जान, सभी जीवों के लिए अच्छा पुत्र (सम मित्र) इस देश को छोड़कर न जाए —यह वर दे दो। २१७

मॅय्ये यॅन्ड्रन् वेरर् नूऱुम् विनैनोक्कि
नैया निन्ड्रे नावु मुलर्न्दे नळिनम्बोर्
कैया निन्ड्रॅन् कणॅदिर् निन्ऱुङ् गळिवानॅल्
उय्ये नङ्गा युन्नब यम्मॅन् नुयिरॅन्ड्रान् 218

नङ्काय्–(देवी) नायिका; मॅय्ये–सत्यपालन ही; ॲन्ड्रन् वेर् अर्–मेरा मूल काटकर; नूऱुम्–नाश करता है; विनै नोक्कि–ऐसा कर्म देखकर; नैया निन्ड्रेन्–दुखी हूँ; नावुम् उलर्न्तेन्–मेरी जीभ भी सूख गई; नळिनम् पोल् कैयान्—कमल-सम हाथ वाला राम; इन्ऱु–अब; ॲन् कण् ॲतिर् निन्ऱुम्–मेरी आँख के सामने से; कळि वानॅल्–अलग हो जायगा तो; उय्येन्–जीवित नहीं रहूँगा; ॲन् उयिर् उन् अपयम्–मेरी जान तुम्हारे अधीन है; ॲन्ड्रान्–कहा। २१८

देवी ! मेरा कर्म-भाग्य ऐसा हो गया कि मेरा सत्य ही मुझे निर्मूल करके नाश कर रहा है। यह देखकर मैं वेदना-विद्ध हो रहा हूँ। तुमसे याचना करते-करते मेरी जीभ सूख गई है ! कमल-हस्त श्रीराम अब मेरे सामने से दूर हो जायगा तो मेरे प्राण नहीं रहेंगे। अब मेरे प्राण तुम्हारे अधीन, धरोहर, हैं। —दशरथ ने यह कहा। २१८

❀ इरन्दान् शॉल्लु मिन्नुरै कॉळ्ळाण् मुनिवञ्जाळ्
मरन्दा नॅन्नु नॅञ्जिन णाणाळ् वशैपाराळ्
शरन्दाळ् विल्लाय् तन्द वरत्तैत् तविर्हॅन्ड्रल्
उरन्दा नल्ला नल्लर् मामो वुरैयन्ड्राळ् 219

मरम् तान्–काठ ही; ॲन्नुम् नॆञ्चिन्नळ्–कहलाने योग्य (कठोर) चित्त वाली; इरन्तान् चॊल्लुम्–प्रार्थना करनेवाले के कहे; इन् उरै–मधुर वचन; कॊळ्ळाळ्–मन में नहीं लेतीं; मुनिवु अञ्चाळ्–उनके कोप से नहीं डरतीं; नाणाळ्–अपनी करनी पर नहीं शरमातीं; वचै पाराळ्–(आनेवाला) अपयश नहीं देखतीं; चरम् ताळ् विल्लाय्–शरनिलय चाप वाले; तन्त वरत्तै–दिये गये वरों को; तविर्क ॲन्ऱल्–छोड़ दो कहना; उरम अल्लाल्–साहस होगा, नहीं तो; नल् अऱम् आमो–सद्धर्म होगा क्या; उरै–आप ही कहिए; ॲन्ऱाळ्–कहा। २१९

कैकेयी का हृदय तो, काठ का है, ऐसा कहाने योग्य हो गया था। उन्होंने प्रार्थना करनेवाले दशरथ की स्निग्ध बात पर ध्यान नहीं दिया। न वह उनके सम्भवनीय कोप से डरीं। न ही वह अपनी करनी पर शरमाईं। उन्होंने राजा से कहा कि हे शरनिलय धनुर्धर! पहले वचनदत्त वरों को छोड़ दो कहना साहस का काम हो सकता है। पर वह धार्मिक हो सकता है क्या? आप ही बतायें! २१९

❀ कॊडिया ळिन्न कूऱिनळ् कूऱक् कुलवेन्दन्
मुडिशू डामल् वॆम्बरत् मॊय्हा निडैमॆय्ये
नॆडियो नीङ्गु नीङ्गुमॆ नावि यिनियॆन्ना
इडिये ऱुण्ड माल्वरै पोन्मण् णिडैवीऴ्न्दान् 220

कॊटियाळ्–निर्मम कैकेयी ने; इन्न कूऱिनळ्–ऐसा कहा; कूऱ–कहने पर; कुलम् वेन्तन्–उत्तम राजा; नॆटियोन्–त्रिविक्रम श्रीराम; मुटि चूटामल्–मुकुट पहने बिना; मॆय्ये–सचमुच; वॆम् परल्–भयंकर कंकड़ों से; मॊय–भरे; कान् इटै–जंगल में; नीङ्कुम्–चला जायगा; इनि–आगे; ॲन् आवि नीङ्कुम्–मेरे प्राण चले जायँगे; ॲन्ना–यह समझकर; इटि एऱु उण्ट–अशनीप्रहत; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; मण् इटै वीऴ्न्तान्–भूमि पर गिरे। २२०

निर्मम कैकेयी ने ऐसा कह दिया। चक्रवर्ती को विश्वास हो गया कि अब त्रिविक्रम (विष्णु का) अवतार राम मुकुट-धारण न करके घने कंकड़ों से भरे जंगल में चला जायगा। मेरे प्राण भी चले जाएँगे। यह सोचकर राजा अशनि से आहत बड़े पर्वत के समान नीचे गिरे। २२०

❀ वीऴ्न्दान् वीऴा वॆन्दुय रत्तिन् कडल्वॆळ्ळत्
ताऴ्न्दा नाऴा वक्कड लुक्कोर् करैकाणान्
शूऴ्न्दा डुन्ब मक्कॊडि याळ्शॊर् कॊडुशित्तम्
पॊऴ्न्दा ळुळ्ळप् पुन्मयै नोक्किप् पुरळ्हिन्ऱान् 221

वीऴ्न्तान्–जो गिरे वे; वीऴा वॆम् तुयरत्तिन्–अनभ्यस्त भयंकर दुख के; कटल् वॆळ्ळत्तु–सागर के प्रवाह में; आऴ्न्तान्–मग्न हो गये; आऴा–मग्न होकर; अ कटलुक्कु–उस सागर का; ओर् करै काणान्–एक तीर (अन्त) नहीं देखते; तुन्पम् चूऴ्न्ताळ्–अपने को दुख देनेवाली; चॊल् कॊटु–वचन (अस्त्र) से; चित्तम्

पोळ्न्ताळ्–अपने मन को चीरनेवाली; अ कॉटियाळ्–उन निर्मम कैकेयी के; उळ्ळम् पुन्मैयै–मन की नीचता को; नोक्कि–देखकर; पुरळ्किन्ऱान्–लोटने लगे। २२१

राजा नीचे क्या गिरे, अब तक अननुभूत दुख के सागर में गिर गये। उसमें मग्न उन्हें न ओर दिखाई दिया, न छोर! वे उन कैकेयी के मन की नीचता पर, जिन्होंने उन्हें अत्यन्त दुख देने का संकल्प करके वचन रूपी तलवार से उनके हृदय को विदीर्ण कर दिया, अफ़सोस करते हुए लोटने लगे। २२१

❀ ऑन्ऱा निन्ऱ आरुयि रोडु मुयर्हेळ्वर्
पॉन्ऱा मुन्नम् पॉन्ऱिन रॅन्नुम् पुहळ्ळ्लाल्
इन्ऱोर् काऱु मॅल्वळै यार्दम् मिऱैयोरैक्
कॉन्ऱा रिल्लैक् कॉल्लुदि योनी कॉडियोळे 222

ॲल् वळैयार्–प्रकाशमान चूड़ाधारिणी स्त्रियाँ; ऑन्ऱा निन्ऱ–अपने बने रहनेवाले; आर् उयिरॊटुम् उयर्–मूल्यवान प्राणों के समान श्रेष्ठ; केळ्वर्–पतियों के; पॉन्ऱा मुन्नम्–मरने के पहले; पॉन्ऱिनर्–मर गईं; ॲन्नुम्–यह; पुकळ् अल्लाल्–यश छोड़कर; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; तम् इऱैयोरै कॉन्ऱार्–अपने पतियों को मारनेवालियाँ; इल्लै–नहीं (पाई जातीं); कॉटियाळे–क्रूर नारी; नी कॉल्लुतियो–तुम मार दोगी क्या। २२२

उन्होंने कैकेयी से कहा। उज्ज्वल कंकणधारिणी स्त्रियाँ अपने प्राणप्यारे पतियों के मरने से पहले मरकर यश प्राप्त करती हैं। इसके अलावा हमने कहीं सुना नहीं है कि अपने भर्त्ताओं को मारनेवाली स्त्रियाँ भी इस लोक में हैं। पर तुम हो ऐसी! मुझे मारकर ही छोड़ोगी क्या? २२२

एवम् बारा यिन्मुऱै नोक्का यऱमॅण्णाय्
आवॅन् बायो वल्लै मनत्ता लरुळ्होन्ऱाय्
नावम् बालॅन् नारुयि रुण्डा यिनिञालम्
पावम् बारा दिन्नुयिर् हॉळ्ळप् पडुहिन्ऱाय् 223

एवम् पाराय्–मेरा दुख नहीं देखतीं; इल् मुऱै नोक्काय्–इस कुल का गौरव नहीं देखतीं; अऱम् ॲण्णाय्–धर्म नहीं सोचतीं; आ ॲन्पायो अल्लै–हाय कहकर सहानुभूति नहीं दिखातीं; मनत्ताल् अरुळ् कॊन्ऱाय्–अपने मन में दया का हनन कर दिया; ना अम्पाल्–जीभ के शर से; ॲन् अरु उयिर् उण्टाय्–मेरा प्यारा प्राण (चूस) हर लिये; इनि–अब; ञालम्–इस लोक के वासियों द्वारा; पावम् पारातु–पाप का विचार त्यागकर; इन् उयिर् कॊळ्ळ पटुकिन्ऱाय्–प्यारे प्राणों को हरने से मारी जानेवाली हो। २२३

तुम मेरी वेदना नहीं देखतीं। इस कुल की गौरव परम्परा का विचार नहीं करतीं। धर्म भी नहीं सोचतीं। "हाय!" करके दुख या सहानुभूति

भी प्रदर्शित नहीं करतीं। अपने मन में दया का नाम ही मिटा चुकी हो। अपनी जीभ रूपी शर से मेरे प्राणों को हर चुकी हो। इनका फल क्या होगा, जानती हो? लोकवासी स्त्रीहत्या के पाप की परवाह न करके तुमको मार देंगे और तुम अपने प्यारे प्राणों को छोड़ दोगी! । २२३

एण्बा लोवा नाण्मड मच्च मिवयेतम्
पूण्बा लाहक् काण्बवर् नल्लार् पुहळ्पेणि
नाण्बा लोरार् नङ्गयर् तम्बा नणुहारे
आण्बा लारे पॅण्बा लारो डडैवम्मा 224

एण्पाल् ओवा–स्त्रियोचित विशिष्टता से अवियुक्त; नाण् मटस् अच्चम् इवैये–लाज, संकोच, डर ये ही; तन् पूण् पाल् आक–अपने अलंकार का अंश; काण्पवर्–समझनेवालियाँ; नल्लार्–श्रेष्ठ स्त्रियाँ हैं; पुकळ् पेणि–अपने यश का संरक्षण करके; नाण् पाल् ओरार्–लाज का अंश न माननेवाली; नङ्कैयर् तम् पाल् नणुकार्–स्त्रियों की श्रेणी में नहीं जायेगी; आण् पालारे–पुरुष श्रेणी में भी गण्य हैं; पॅण् पालारोटु अटैवु–स्त्रियों की श्रेणी में केवल रूप के कारण कोष्ठबद्ध की जाती हैं। २२४

स्त्रियों के विशेष गुण हैं, लाज, संकोच और भय, जो उन्हें शक्ति और गौरव देते हैं। श्रेष्ठ स्त्रियाँ वे गुण रखनेवाली हैं। अपना यश चाहकर जो लाज को त्याग देती हैं वे स्त्रियों की श्रेणी में गिनी नहीं जायेंगी चाहे वे रूप के कारण स्त्रियों से कोष्ठबद्ध कर दी जाती हैं! । २२४

❀ मण्णाळ् हिन्ऱा रादि वलत्तान् मदियाल्वैत्
तॅण्णा निन्ऱा रियारयु मॅल्ला विहलालुम्
विण्णोर् काऴुम् वॅन्ऱ वॅन्क्कॅन् मनैवाळुम्
पॅण्णाल् वन्द तन्दर मॅन्नप् पॅरुवेनो 225

मण् आळ्किन्ऱार् आति–भूमि के शासकों से लेकर; विण्णोर् काऴुम्–देवलोकवासियों तक; वलत्ताल्–बल में; मतियाल्–और बुद्धिचातुर्य में; वैत्तु ऍण्णा निन्ऱार्–श्रेष्ठ माने जानेवालों पर; ऍल्ला इकलालुम्–सभी तरह की शक्ति से; वॅन्ऱ ऍन्तकु–विजय पाये हुए मुझे; ऍन् मनै वाळुम्–मेरे घर में रहनेवाली; पॅण्णाल्–स्त्री द्वारा; अन्तरम् वन्तत्तु–अन्त आ गया; ऍन्ऩ पॅरुवेनो–ऐसा कहा जाऊँगा क्या। २२५

हाय! भूमि के राजाओं से लेकर सुरलोकवासियों तक शारीरिक या बौद्धिक बल में बड़े समझे जानेवाले सभी को सभी रीतियों से मैंने हराया है। वैसे मेरा, मेरे ही घर की स्त्री से अन्त हो गया—इस लोकनिन्दा का भोगी हो जाऊँगा क्या? । २२५

❀ ऍन्ऱॅन् ऱुन्नुम् वन्नि यिरङ्गु मिडर् तोयुम्
ऑन्ऱोन् ऱॉव्वा विन्न लुळक्कु मुयिरुण्डो

इन्रिन् ऍन्नुम् वण्ण मयङ्गु मिडैयुम्बीन्
कुन्रॊन् ऱॊन्ऱो डॊन्ऱिय ऍन्नक् कुवितोळान् 226

पॊन् कुन्ऱु ऑन्ऱु–स्वर्णपर्वत एक; ऑन्ऱॊडु–दूसरे से; ऑन्ऱियतु ऍन्न–जुड़ गया जैसे; कुवि तोळान्–पुष्ट कन्धों वाले; ऍन्ऱु ऍन्ऱु उन्नुम्–ऐसा-ऐसा सोचते हैं; पन्नि–कहकर; इरङ्कुम्–व्याकुल होते; इटर् तोयुम्–पीड़ामग्न हो जाते; ऑन्ऱु ऑन्ऱु ऑव्वा–परस्पर भिन्न; इन्नल्–शोक के विचारों से; उळक्कुम्–विक्षुब्ध होते; उयिर् उण्टो–प्राण हैं क्या; इन्ऱु इन्ऱु–नहीं, नहीं; ऍन्नुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य प्रकार से; मयङ्कुम्–बेसुध हो जाते; इटैयुम्–क्लांत हो जाते। २२६

दशरथजी के कन्धे ऐसे पुष्ट और शोभायमान थे जैसे दो स्वर्णपर्वत एक स्थान पर आकर मिले हों। वे ऐसी-ऐसी बातें सोचते और कहते हुए दुखी हो रहे। व्याकुलता के सागर में डूबे; अनेक तरह के शोकों से उद्विग्न हुए। ऐसे थक कर बेहोश हो गये कि प्राण हैं या नहीं यह संशय होने लगा। २२६

* आळिप् पॊऱ्ऱेर् मन्नव निव्वा ऱयर्वॆय्दिप्
पूळिप् पॊऱ्ऱोण् मुऱ्ऱु मडङ्गप् पुरळ्पोदिल्
ऊळिऱ् पॆऱ्ऱा यॆन्ऱुरै यन्ऱे लुयिर्माय्वॆन्
पाळिप् पॊऱ्ऱार् मन्नव वॆन्ऱाळ् पशैयऱ्ऱाळ् 227

आळि पॊऩ्तेर्–चक्रों से युक्त स्वर्णरथ के स्वामी; मन्नवन्–चक्रवर्ती; इव्वाऱु–इस प्रकार; अयर्वु ऍय्ति–श्रांत होकर; पॊन् तोळ् मुऱ्ऱुम्–स्वर्णमय कंधों पर; पूळि अटङ्क–धूलि को लगने देकर; पुरळ् पोळ्तिल्–जब लोटे तब; पचै अऱ्ऱाळ्–स्निग्धतामुक्त कैकेयी; पाळि–गरिमामय; पॊन् तार्–स्वर्णहारधारी; मन्नव–राजा; ऊळिल् पॆऱ्ऱाय्–(वर को) उचित रीति से प्राप्त किया; ऍन्ऱु उरै–ऐसा कहिए; अन्ऱेल्–नहीं तो; उयिर् माय्वॆन्–प्राणहीना हो जाऊँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। २२७

पहियों वाले स्वर्णमय रथ के स्वामी दशरथ क्लांत होकर भूमि पर लोटे जिससे उनके स्वर्णमय कन्धों पर धूलि लग गई। तब स्नेहहीना कैकेयी ने ये वचन कहे— मूल्यवान स्वर्णहारधारी राज्यपति! आप अपने मुख से साफ़ कहिए कि 'तुमने उचित क्रम से ही वर पाये हैं।' नहीं तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। २२७

अरिन्दान् मुन्नोर् मन्नव नन्ऱे यरुमेनि
वरिन्दार् विल्लाय् वाय्मै वळर्प्पान् वरनल्हिप्
परिन्दा लॆन्ना मॆन्ऱतळ् पायुङ् गनलेपोल्
ऍरिन्दा ऱादे यिन्नुयि रुण्णु मॆरियन्नाळ् 228

पायुम् कनल् पोल्–फैलती आग के समान; ऍरिन्तु आऱाते–जलकर ठण्डा पड़े बगैर; इन् उयिर् उण्णुम्–प्यारी जान को खानेवाली; ऍरि अन्नाळ्–आग के समान

कैकेयी; वरिन्तु आर् विल्लाय्–वन्धन से युक्त धनुर्धर; मुन् ओर् मन्नवन्–(आपके कुल में) पहले एक राजा ने; वाय्मै वळर्प्पान्–सत्यपालन के हेतु; अरु मेत्ति–अपने मूल्यवान शरीर को; अरिन्तान् अन्ऱे–काटकर दिया न; वरम् नल्कि–वर देकर; परिन्ताल्–अब पछताइये तो; ॲन् आम्–क्या होगा; ॲन्ऱनळ्–कहा। २२८

कैकेयी एक विचित्र आग बनी थीं जो नहीं फैलती और जलाकर शान्त होती पर केवल जला सकती थी! उन्होंने राजा को याद दिलाया कि वन्धनयुक्त धनुर्धर! क्या आपके कुल में पहले एक राजा (शिवि) नहीं हुए थे जिन्होंने वचन पालन के लिए अपने ही शरीर को काटकर दिया था? ऐसे वंश में उत्पन्न आप पहले वर दें और अब पछताने लगें—यह क्या? । २२८

❀ वीन्दा ळेयिव् वॅय्यव ळॅन्ना मिडल्वेन्दन्
इन्दे नीन्दे निव्वर मॅन्शेय् वनमाळ
मायन्दे नान्पोय् वानर शाळ्वॅन् वशैवॅळ्ळम्
नीन्दाय् नीन्दाय् निन्महनोडु नॅडिदॅन्ऱान् 229

मिटल् वेन्तन्–शक्तिमान राजा; वॅय्यवळ्–यह निर्मम स्त्री; वीन्ताळे–(वर न दूँ तो) मर जायगी; ॲन्ना–यह समझकर; इ वरम्–इस वर को; ईन्तेन्–दिया; ॲन् चेय् वनम् आळ–मेरा पुत्र जंगल का पालन करे; नान् मायन्तु पोय्–मैं मरकर, जाकर; वान् अरचु आळ्वॅन्–स्वर्ग का राज करूँगा; निन् मकनोटुम्–अपने पुत्र के साथ; वचै वॅळ्ळम्–निंदा की धार में; नॅटितु–दीर्घ काल तक; नीन्ताय् नीन्ताय्–तैरती रहो, तैरती रहो; ॲन्ऱान्–कहा। २२९

यह सब सुनकर राजा ने विश्वास कर लिया कि ये वर नहीं दूँ तो अपने प्राण छोड़ देंगी। इसलिए उन्होंने दुख के साथ कह दिया कि अच्छा मैंने वर दे दिये। मेरा पुत्र वन में जाकर उसका परिपालन करे। मैं भी स्वर्ग जाकर उसका शासन करूँगा (वहाँ का सुख भोगूँगा।) तुम अपने पुत्र को साथ लेकर लोकनिन्दा के प्रवाह में तैरती रहो— बहुत काल तक! । २२९

❀ कूऱा मुन्नम् कूऱु पडुक्कुङ् गॉलैवाळिन्
एऱा मॅन्नुम् वन्तुय राहत् तिडैमूळ्हत्
तेऱा नाहिच् चॅय्है मऱन्दान् शॅयन्मुऱ्ऱि
ऊऱा निन्ऱ शिन्दयि नाळुन् दुयिल्वुऱ्ऱाळ् 230

कूऱा मुन्नम्–(दशरथ के) कहने के साथ-साथ; कूऱु पटुक्कुम्–खण्ड-खण्ड करनेवाली; कॉलै वाळिन् एऱु आम्–घातक तलवारों के राजा से काटे गये; ॲन्नुम्–जैसे; वन् तुयर्–प्रचण्ड पीड़ा के; आकत्तु इटै मूळ्क–हृदयमध्य पैठते; तेऱान् आकि–बेसुध होकर; चॅय्कै मऱन्तान्–निष्क्रिय हो गये; चॅयल् मुऱ्ऱि–अपना मनोरथ

पूर्ण होने से; ऊरा नित्रु चिन्तैयिताळुम्–(संतोष) उमड़ता मन वाली भी; तुयिल्वु उर्राळ्–नींद में मग्न हो गई। २३०

दशरथ यह 'वर दिया' कहने के पूर्व ही (कहने के साथ-साथ) वेसुध हो गये क्योंकि उनके हृदय में ऐसा आघात लगा मानो काटकर खण्ड-खण्ड वनानेवाली अति तीक्ष्ण तलवार उनके हृदय को चीर गई हो! वे एक दम निस्पन्द पड़े रह गये। उधर कैकेयी के मन में पूर्ण-मनोरथ होने के कारण आनन्द उमड़ आया। निश्चिन्त होकर वे सो गईं। २३०

❀ **शेणु लाविय नाळॅ लामुयि रॉन्रु पोल्वन्न शॅय्दुपिन्**
एणु लाविय तोळि नान्निड रॅय्द वॉन्रु मिरङ्गिला
वाणि लानहै माद राळ्शॅयल् कण्डु मैन्दर्मु निर्कवुम्
नाणि नाळॅन्न वेहि नाणळिर् कङ्गु लाहिय नङ्गये 231

चेण् उलाविय–लम्बे अरसे के; नाळ् ऍलाम्–सभी दिन; उयिर् ऑन्रु पोल्वन्न–एक ही प्राण सम; चॅय्तु–व्यवहार करते रहकर; पिन्–फिर; एण् उलाविय तोळिनान्–सबल कंधों वाले पति को; इटर् ऍय्त–बहुत वड़ा दुख देते हुए; ऑन्रुम् इरङ्कला–कुछ भी दया न करनेवाली; वाळ् निला नकै मातराळ्–उज्ज्वल दाँतों वाली स्त्री (कैकेयी) का; चॅयल् कण्टु–काम देखकर; नळिर् कङ्कुल् आकिय नङ्कै–शीतल रात्रि रूपी स्त्री; मैन्तर् मुन् निर्कवुम् नाणिनाळ्–पुरुषों के सामने खड़ा रहने से लजाती; ऍन्न–जैसे; एकिनाळ्–हट गई। २३१

विवाह से लेकर इतने लम्बे काल तक कैकेयी और दशरथ एकप्राण रहे और वैसे ही व्यवहार करते रहे। अब सबल भुजाओं वाले दशरथ दुखी हैं, पर चन्द्रकला सदृश दाँत वाली कैकेयी कुछ भी नहीं पछताती। उनका यह काम देखकर शीतल रात्रि रूपी रमणी मानो लज्जित होकर, पुरुषों के सामने रहना नहीं चाहा हो, ऐसा हट गई। २३१

ऍण्ड रुङ्गडै शॅन्र याम मियम्बु हिन्रन वेळ्याल्
वण्डु तङ्गिय तॉङ्गल् मार्बन् मयङ्गि विम्मिय वारॅलाम्
कण्डु नॅञ्जुक लङ्गि यञ्जिरै यान कामर्दु णॅक्करम्
कॉण्डु तम्वयि रॅर्रि यॅर्रि विळिप्प पोन्रन कोळियेे 232

ऍण् तरुम्–गिना जानेवाला; कटै चॅन्र याम्म्–दिन का आखिरी पहर; इयम्पुकिन्रन–बतानेवाले; कोळि–कुक्कुट; एळैयाल्–अबला द्वारा; वण्टु तङ्किय तॉङ्कल् मार्पन्–भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले; मयङ्कि–भ्रमित हो; विम्मिय आरु ऍलाम् कण्टु–सिसकने का प्रकार सब देखकर; नॅञ्चु कलङ्कि–चिन्ताकुल होकर; अम् चिरै आन–सुन्दर पंख रूपी; कामर् तुणै करम् कॉण्टु–मनोरम हस्तद्वय से; तम् वयिरु ऍर्रि ऍर्रि–अपना पेट पीट-पीटकर; विळिप्प पोन्रन–मानो रोते थे। २३२

दिन के गिने हुए आठ यामों के अन्तिम याम को अपनी बाँग द्वारा

लोगों पर प्रकट करनेवाले मुर्गे अपने पंखों को जोर से मारने लगे। उसे देखकर ऐसा लगा कि नारी, कैकेयी, के कारण भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले दशरथ व्यथितमन होकर जो सिसक रहे थे उसको देखकर ये कुक्कुट दुखी होकर अपने सुन्दर पंख रूपी हाथों से छाती पीटते हुए रुदन कर रहे हों। २३२

तोय्ह यत्तु मरत्तु मॅन्शिरै तुऴि मीदॅळु पुळ्ळॅलाम्
तेय्ह(य्) यॊत्त मरुङ्गुन् मादर् शिलम्बि निन्रु शिलम्बुव
केह यत्तर शन्ब यन्द विडत्तै यिन्नदोर् केडुशूळ्
माह यत्तियै युट्कॊ दित्तु मनत्तु वैवन पोन्रवे 233

तोय् कयत्तुम्–(पक्षी जहाँ) ठहरते हैं, उन तालाबों में; मरत्तुम्–तरुओं पर; मॅन् चिरै तुऴि–कोमल पंखों को पटकते हुए; मीतु ऍळु–ऊपर उठनेवाले; पुळ् ऍलाम्–सभी पक्षी; तेय्कै ऑत्त मरुङ्कुल्–दिने-दिने क्षीण होती-सी लगनेवाली कमरों की; मातर्–स्त्रियों के; चिलम्पिन्–नूपुरों के समान; निन्रु चिलम्पुव–जो बोलते हैं; केकयत्तु अरचन् पयन्त–केकयराज जनित; विटत्तै–विष-सी; इन्नतु ओर् केटु चूळ्–ऐसे एक क्रूर काम करनेवाली; मा कयत्तियै–बहुत नीच गुण वाली कैकेयी पर; मनत्तुळ्–मन में; कॊतित्तु–क्रोध से जलकर; वैवन पोन्र–गाली देते-से लगे। २३३

जलाशयों में और तरुओं पर खगगण बोलने लगे। वे अपने कोमल पंख फड़काते हुए क्षीणकटि नारियों के नूपुरों की-सी ध्वनि में बोले। उनकी वह बोली ऐसी लगती थीं मानो वे दशरथ को इतना बड़ा दुख देनेवाली, विषसमाना केकयराजतनया नीच कैकेयी को कुढ़कर गालियाँ दे रहे हों। २३३

शेम मॅन्बन पऱ्ऱि यन्बु तिरुन्द विन्रुयिल् शॅय्दपिन्
वाम मेहलै मङ्गै योडु वनत्तुळ् यारुम ऱक्कला
नाम नम्बि नडक्कु मॅन्रु नडुङ्गु हिन्ऱ मनत्तवाय्
यामु मिम्म णिऱत्तु मॅन्बन पोलॅ ळुन्दन यानये 234

यानै–गज; चेयम् ऍन्पन–सुरक्षित मान्य शालाओं में; अन्पु पऱ्ऱि–चाह के साथ; तिरुन्त इन् तुयिल् चॅय्त पिन्–खूब, सुखमय नींद सोने के बाद; यारुम् मऱक्क अल्ला–किसी के लिए भी अविस्मरणीय; नामम् नम्पि–नामी नायक; वामम् मेकलै मङ्कैयोटु–सुन्दर मेखलाधारिणी बाला (सीता) के साथ; वनत्तुळ् नटक्कुम् ऍन्ऱु–जंगल में चले जायँगे, यह जानकर; नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपते; मनत्त आय्–मन वाले हो; यामुम् इ मण् इऱत्तुम्–हम भी इस स्थल से चले जायँ; ऍन्पन पोल्–कहते जैसे; ऍळुन्तन–उठ खड़े रहे। २३४

हाथी अपनी गजशालाओं में रात भर सुख से सोने के बाद ऐसे उठे मानो वे 'सबसे अविस्मरणीय नामधारी श्रीराम सुन्दर मेखलाधारिणी

सीताजी के साथ जंगल चले जायँगे' —इस विचार से दहलते मन के साथ, 'हम भी इस स्थल को छोड़ जायँगे' —यह संकल्प करके उठे हों। २३४

❀ शिरित्त पङ्गय मीत्त शॅङ्गणि राम नैत्तिरु मालयक्
करिक्क रम्बॊरु कैत्त लत्तुयर् काप्पु नाणणि दऱ्कुमुन्
वरित्त तण्गदिर् मुत्त दाहियिम् मण्ण नैत्तु निऴऱ्ऱमेल्
विरित्त पन्दर् पिरित्त दामॆन मीन्नॊ ळित्तन वानमे 235

चिरित्त पङ्कयम् ऒत्त–हँसते से कमल-सम; चॆम् कण्–लाल आँखों वाले; तिरुमालै–श्रीराम के; करि करम् पॊरु–गज की सूँड़ के समान; अ कै तलत्तु–उस सुन्दर हाथ में; उयर् काप्पु नाण्–श्रेष्ठ रक्षाबन्धन; अणितऱ्कु मुन्–पहनने के पूर्व; इ मण् अनैत्तुम् निऴऱ्ऱ–इस भूतल भर में छाया करने के लिए; मेल् वानम्–ऊपर आकाश में; वरित्त–बनाया गया; तण् कतिर् मुत्ततु आकि–शीतल मुक्ताओं से निर्मित; विरित्त–विस्तृत; पन्तर्–पण्डाल को; पिरित्ततु आम् ऍन–खोलकर हटा दिया गया हो, जैसे; मीन् ऒळित्तन–नक्षत्र छिप गये। २३५

आकाश के नक्षत्र ओझल हो गये। नक्षत्रशून्य आकाश को देखकर यह भास होता था कि विकसितपुण्डरीक-सम आँखों वाले श्रीराम के करिशुण्ड-से हाथ में मंगलसूचक रक्षाबन्धन के पहले इस भूतल भर में छाया देने के लिए जो शीतल प्रकाशमय मोती का पण्डाल लगाया गया था वह विस्तृत पण्डाल अब उठा दिया गया हो। २३५

नाम विऱ्कै यिराम नैत्तॊऴु नाळ डैन्द दुमक्कॆलाम्
काम विऱ्कुडै कङ्गुन् मालै कऴिन्द दॆन्बदु कऱ्पियात्
तामॊ लित्तन पेरि यव्वॊलि तारै मारि तऴङ्गलाल्
माम यिऱ्कुल मॆन्न वुळ्ळ मलर्न्दॆ ऴुन्दनर् मादरे 236

उमक्कु ऍलाम्–तुम सभी को; कामन् विऱ्कु उटै–काम-धनुष से पीड़ित करनेवाली; कङ्कुल मालै कऴिन्ततु–रात की बेला बीत गई; नामम् विल् कै–(शत्रु-) भयंकर धनुर्हस्त; इरामनै तॊऴुम् नाळ्–श्रीराम को नमस्कार करने का दिन; अटैन्ततु–आ गया; ऍन्पतु–यह समाचार; कऱ्पिया–देते हुए; पेरि ऒलित्तन–भेरियाँ बज उठीं; अ ऒलि–वह ध्वनि; तारै मारि तऴङ्कलाल्–जलमेघ के शोर के समान रही, इसलिए; मा मयिल् कुलम् ऍन्न–श्रेष्ठ मयूर-समूह सम; मातर्–स्त्रियों का; उळ्ळम् मलर्न्तु–चित्त फूलकर; ऍऴुन्ततर्–उठीं। २३६

भेरियाँ नर्दन कर उठीं। वे मानो स्त्रियों को यह बता रही थीं कि रात, जिसमें तुम लोग मन्मथ के धनु के सामने हार मानकर संकट उठाती रहीं, अब दूर हो गई और शत्रुपीडक धनुर्धर श्रीराम के दर्शन करने का दिन उदय हो गया। वह ध्वनि मेघध्वनि के समान रही और स्त्रियाँ मोरों के समान प्रसन्नमन होकर उठ गईं। २३६

इऩम लर्क्कुलम् वाय्वि रित्तिळ वाश मारुदम् वीशमुऩ्
पुऩैतु हिड्कलै शोर नॆञ्जु पुऴुङ्गि ऩार्शिल पूवैमार्
मऩव ऩुक्कम् विडत्त ऩित्तऩि वळ्ळ लैप्पुणर् कळ्ळविऩ्
कऩवि ऩुक्किडै यूऱ् डुक्क मयङ्गि ऩार्शिल कऩ्ऩिमार् 237

इऩम्–विविध; मलर् कुलम्–पुष्प-समूह को; वाय् विरित्तु–मुख खोलते हुए; वाचम् इळम् मारुतम् वीच–सुवासित मन्द पवन के बहने से; चिल पूवैमार्–कुछ रमणियाँ; मुऩ् पुऩै–पहले वेष्टित; तुकिल् कलै चोर–वस्त्र और मेखला के खिसकते; नॆञ्चु पुऴुङ्किऩार्–मन में (कामज्वर के कारण) तप्त हुईं; चिल कऩ्ऩिमार्–कुछ कन्याएँ; मऩम् अऩुक्कम् विट–मन का रंज दूर करके; तऩि तऩि–अलग-अलग; वळ्ळलै पुणर्–(श्रीराम) प्रभु को मिलकर सुख उठाने का; कळ्ळम् इऩ् कऩवुक्कु–झूठे और मधुर जो था, उस स्वप्न में; इटैयूऱु अटुक्क–बाधा पड़ने से; मयङ्किऩार्–व्याकुल हुईं। २३७

सवेरे की सुगन्धित मन्द हवा कलियों को खिलाती हुई बहने लगी तो विवाहित स्त्रियों में कुछ लोगों को उससे वेदना हुई। उनके वस्त्र और मेखला ढीली हो गई थी। उनको खेद इसलिए हुआ कि जल्दी दिन हो गया और उनकी प्रणयेच्छा पूर्ण नहीं हुई थीं। कुछ कन्याओं को इसलिए दुख हुआ कि वे श्रीराम के संग समय बिताने के स्वप्न में मग्न हो रही थीं। उस मधुर और झूठे स्वप्न में बाधा पड़ गई। वे बहुत व्याकुल हुईं। २३७

शाय डङ्ग नलङ्ग लऩ्दु तयङ्गु तऩ्कुल नऩ्मयुम्
पोय डङ्ग नॆडुङ्गॊ डुम्बऴि कॊण्ड रुम्बुहऴ् शिऩ्दुमत्
तीय डङ्गिय शिऩ्दै याळ्शॆयल् कण्डु शीरिय नङ्गैमार्
वाय डङ्गिऩ वॆऩ्ऩ वऩ्दु कुविऩ्द वण्कुमु दङ्गळे 238

चाय् अटङ्क–अपना गौरव खोते हुए; नलम् कलऩ्तु तयङ्कुम्–श्रेष्ठता के साथ रहनेवाले; तऩ् कुलम् नऩ्मैयुम्–अपने कुल का भी गौरव; पोय् अटङ्क–नष्ट हो जाय, ऐसा; नॆटु कॊटु पऴि कॊण्टु–दीर्घ और भयंकर अपयश लेकर; अरु पुकऴ् चिन्तुम्–श्रेष्ठ यश को दे देनेवाली; अ–उन; ती अटङ्किय चिन्तैयाळ्–अग्निगर्भित मन वाली कैकेयी का; चॆयल् कण्टु–काम देखकर; चीरिय नङ्कैमार् वाय्–श्रेष्ठ स्त्रियों के मुख; अटङ्किऩ ऎऩ्ऩ–बन्द हो गये, जैसे; वण् कुमुतङ्कळ्–प्रफुल्ल लाल कुमुद; वऩ्तु कुविऩ्तऩ–दलों को समेटकर बन्द हुए। २३८

दिन के आने से लाल कुमुद बन्द हुए। वे उन कुलीना स्त्रियों के मुखों के समान बन्द हुए जो, अपने और अपने कुल के गौरव का नाश करते हुए यश के बदले दीर्घ और कठोर अपयश मोल लेनेवाली, अग्निमय मन वाली कैकेयी का अनुचित कार्य देखकर लज्जा के कारण अपने मुख बन्द कर लेती हों। २३८

मॉय्य राह निरम्ब वाशै मुरुङ्गु तीयिन् मुळ्ङ्गमेल्
वैय राविय मारन् वाळियुम् वान् लानॅडु वाडयुम्
मॅय्य राविड वावि शोर वॅदुम्बु मादर्द मॅन्शॅविप्
पैय रानुळै हिन्र पोन्रन पण्क निन्दॅळु पाडले 239

मॉय् अराकम् निरम्प–घना राग (काम) भरा, तो; आचै–वह इच्छा; मुरुङ्कु तीयिन्–अन्दर की आग के समान; मुळ्ङ्क–बहुत जली, अतः; मेल्–ऊपर; वै अराविय मारन् वाळियुम्–तराशे गये और तीक्ष्ण मन्मथ-शर; वान् निला–श्वेत चाँदनी; नॅटु वाटैयुम्–और लगातार बहनेवाली उदीची हवा (जाड़ा); मॅय् अराविट–(इनके) शरीरों को दुख देने से; आवि चोर–प्राण चलते से लगे; वॅतुम्पुम्–तप्त; मातर् तम्–स्त्रियों के; मॅन् चॅवि–कोमल कानों में घुसनेवाले; पण् कनिन्तु अॅळुम् पाटल्–रागयुक्त गाने; पै अरा–फन वाले सर्प; नुळैकिन्र पोन्रन–घसते जैसे लगे। २३९

प्रातःकालीन गीत गाये जा रहे थे। वे गीत उन स्त्रियों के कर्ण-विवर में फणी सर्प के समान घुसे जिनके अन्दर काम आग के समान ज्वर दे रहा था और बाहर कामदेव के पैनाये गये शर, चाँदनी और निरन्तर बहनेवाली उदीची (ठंडी) हवा उन्हें तंग करके प्राणों को थका रही थी। २३९

आळि यान्मुडि शूडु नाळिडै यान पाविथि दोरिरा
ऊळि यायिन वारॅ नावुयर् पोदिन् मेलुरै पेदयुम्
एळु लोहमु मॅण्ड वज्जॅय्द कण्णु मॅङ्गण् मनङ्गळुम्
वाळु नाळि दॅनावॅ ळुन्दनर् मञ्जु तोय्बुय मैन्दरे 240

मञ्चु तोय् पुयम्–सुन्दरता भरे कंधों के; मैन्तर्–पुरुष लोग; आळियान्–चक्रधारी; मुटि चूटुम् नाळ् इतु–मुकुट धारण करेंगे, आज का दिन; पोतिन् मेल् उरै पेतैयुम्–कमल पर रहनेवाली देवी भी; ऑण् तवम् चॅय्त–(आवश्यक) मान्य तपस्या करनेवाले; एळु लोकमुम्–सातों लोक; अॅङ्कळ् कण्णुम्–और हमारी आँखें; मनङ्कळुम्–मन भी; वाळुम् नाळ् अॅना–जीवन (कृतकृत्य) पाने का दिन है; इटै आन पावि–आड़े आई पापिनी; इतु ओर् इरा–यह एक रात्रि; ऊळि आयिन् आरु–युग समान लम्बी हो गई, किस प्रकार; अॅन–कहते हुए; अॅळुन्तनर्–उठे। २४०

मनोरम भुजा वाले पुरुष लोग यह कहते हुए उठे कि चक्रधारी विष्णु भगवान के अवतार, श्रीराम के मुकुट-धारण का दिन आज है; आज ही कमलनिवासिनी (राज्य) लक्ष्मी के लिए, उन सातों लोकों के लिए जिन्होंने श्रीराम को राजा के रूप में पाने का उद्देश्य लेकर तपस्या की थी, और इनके साथ हमारी आँखों और मनों के लिए सौभाग्य का दिन है; और बीच में पड़ी रात भी एक युग के समान कितनी लम्बी हो रही! । २४०

ऐयु रुञ्जुडर् मेनि यानॅळिल् काण् मूळु मवाविनाल्
कॉय्यु रुङ्गुल माम लर्क्कुवै निन्रॅ ळुन्दनर् कूर्मैकूर्

नॆय्यु रुऱ्‌ुडर् वेऩ् डुङ्गण् मुहिऴ्त्तु नञ्जि ऩिऩैप्पॊडुम्
पॊय्यु रुङ्गु मडन्दै मार्हुऴल् वण्डु बॊम्मॆऩ विम्मवे 241

कूर्मै कूर्–अति तीक्ष्ण; नॆय् उरुम्–और घी लगे; चुटर् वेल्–उज्ज्वल भाले-समान; नॆटुकण्–आयत आँखों को; मुकिऴ्त्तु–बन्द करके; नॆञ्चिल् निऩैप्पॊटुम्–मन में (श्रीराम के) स्मरण के साथ; पॊय् उऱङ्कु मटन्तैमार्–झूठी नींद सोनेवाली स्त्रियाँ; ऐ उरुम् चुटर् मेऩियाऩ्–विस्मयकारी कांतिवाले शरीर के श्रीराम की; ऎऴिल् काण–रूप-वैभव देखने के लिए; मूळुम् अवाविऩाल्–उमड़नेवाले अनुराग के कारण; कॊय् उरुम् कुलम् मा मलर् कुवै निऩ्ऱु–(ढेंपुनी तोड़कर) चुनकर लाये गये विविध फूलों की शय्या से; कुऴल् वण्टु पॊम् ऎऩ विम्म–केश के भ्रमरों को गुंजार के साथ उठने देते हुए; ऎऴुन्तत्र्–उठीं। २४१

स्त्रियाँ जो तीक्ष्ण और घी-लगे भालों के समान तीक्ष्ण और आयत आँखों को बन्द किये मन में श्रीराम का ध्यान करते हुए झूठी निद्रा सो रही थीं, विस्मयविमूढ करनेवाली देह कान्तियुक्त श्रीराम के किरीट-धारण के वैभव को और उनकी सुन्दरता को देखने की प्रवल इच्छा से ढेंपुनी रहित पुष्पों की शय्या से उठीं, तो उनके केशों पर लगे रहे भ्रमर भी 'भनभन' गुंजार कर उठे। २४१

आड हन्दरु पूण ळुन्दिड वञ्जि यञ्जि यऩन्दराल्
एड हम्बॊदि तार्पॊ रुन्दिड याम पेरि यिशैत्तलाल्
शेड हम्बुऩै कोदै मङ्गयर् शिन्दै यिऱ्चॆऱि तिण्मयाल्
ऊडल् कण्डवर् कूडल् कण्डिलर् नैयु मैन्दर्ह ळुय्यवे 242

चेटु अकम् पुऩै कोतै–मनोहारिणी रीति से गुँथी हुई मालाधारिणी; मङ्कैयर्–(पत्नी-) स्त्रियाँ; चिन्तैयिऩ् चॆऱि तिण्मैयाल्–मन की दृढ़ता से; ऊटल् कण्टु–रूठती हैं, यह देखकर; नैयुम् मैन्तर्कळ्–संकटग्रस्त पुरुष लोग; आटकम् तरुम् पूण्–स्वर्णनिर्मित आभूषण; अळुन्तिट अञ्चि अञ्चि–(स्त्रियों के वक्ष में) दर्द करेंगे, इस डर से; अऩन्तराल्–भ्रम के कारण; एटु अकम् पॊति तार् पॊरुन्तिट–पुष्पों की माला पहनते हैं, तब; यामम् पेरि इचैत्तलाल्–याम के बीतने का संकेत देनेवाली भेरी के बज उठने से; उय्य–(नैराश्य से) बच जाएँ, ऐसा; अवर्–वे; कूटल् कण्टिलर्–मिलन का आनन्द नहीं पा सके। २४२

रात को कितने ही दम्पतियों के यहाँ प्रणय-कलह हो गया था। मनोरम पुष्पमाला से अलंकृत स्त्रियाँ रूठ गईं। उनकी दृढ़ता देखकर पुरुष घबड़ा उठे और उनको मनाने के अनेक उपाय किये। उन्हें यह बात सूझी कि हमारे स्वर्णहार पत्नियों के वक्ष को दुख देंगे, इसलिए उन्हें उतारकर उन्होंने फूलों की माला पहन ली। तभी याम का संकेत देनेवाली भेरी वज गई। बेचारे अपनी पत्नियों से समागम कर नहीं पाये और उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई जिससे उनका दुख दूर नहीं हुआ। २४२

कऴैयों लित्तन वण्डों लित्तन कारों लित्तन बेरियाम्
मुऴवों लित्तन तेरों लित्तन मुत्तों लित्तन मल्हुपेर्
इऴैयों लित्तन पुऴ्ळों लित्तन याऴों लित्तन वॅङ्गणुम्
मऴैयों लित्तन पोलों लित्त मनत्तिन् मुन्दुरु वाशियें 243

ऍङ्कणुम्–सब जगह; कऴै ऑलित्तन–बाँसुरियाँ बजीं; वण्टु ऑलित्तन–भ्रमर गुंजार कर उठे; कार् ऑलित्त अन्न–मेघ गरजे, जैसे; पेरि आम् मुऴवु ऑलित्तन–भेरियाँ रूपी बाजे बजे; तेर् ऑलित्तन–रथों की ध्वनि गूँज उठी; मुत्तु ऑलित्तन–मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए; मल्कु पेर् इऴै–बहुतायत से पाये जानेवाले आभरणों ने; ऑलित्तन–नाद किया; पुऴ् ऑलित्तन–पक्षीगण बोल उठे; याऴ् ऑलित्तन–वीणाएँ बजीं; मनत्तिन् मुन्तु उरु–मन से भी अधिक वेग के साथ जानेवाले; वाचि–अश्व; मऴै ऑलित्तन पोल–मेघ गरजे जैसे; ऑलित्त–हिनहिनाये। २४३

नगर में अनेक प्रकार के नाद हुए। विविध बाँसुरियाँ बजीं। भ्रमर गुंजार करते थे। मेघ समान भेरियाँ बजीं। रथों की घरघराहट उठी। मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए। बहुमूल्य आभरणों के आपस में टकराने से शब्द हुआ। पक्षीगण बोले। मनोवेग से अधिक तेज चलनेवाले अश्व मेघ-गर्जन के समान हिनहिनाये। २४३

वैय मेऴुमो रेऴु मारुयि रोडु कूड वऴङ्गुमम्
मॅय्यन् वीररुळ् वीरन् मामहन् मेल्वि ळैन्दॅऴु कादलाल्
नैय नैय नलम्बु लन्गळ विन्द डङ्ग नडुङ्गुवान्
दॅय्व मेनि पडैत्त शेयोळि पोन्म ऴुङ्गिन दीबमे 244

वैयम्–भुवन; एऴुम् ओर् एऴुम्–चौदहों को; अरु उयिरोटु कूट–अपने मूल्यवान प्राणों के साथ; वऴङ्कुम्–जिन्होंने दिया; अ मॅय्यन्–वे सत्यसंध; वीररुळ् वीरन्–वीरों के वीर; मा मकन् मेल्–अपने महान पुत्र पर; विळैन्तु ऍऴु कातलाल्–उठकर बढ़ते प्रेम के कारण; नैय नैय–अधिक व्यथित होने से; पुलन्कळ्–इन्द्रिय; नलम् अविन्तु–अपनी स्वस्थता खोकर; अटङ्क–निस्तेज हो गईं; नटुङ्कुवान्–काँपनेवाले दशरथ के; तॅय्वम् मेनि पटैत्त–दिव्य शरीर को उपलब्ध; चेय् ऑळि पोल्–श्रेष्ठ दीप्ति (मन्द होती) जैसे; तीपम् मऴुङ्कित्त–दीप मन्द पड़ गये। २४४

चौदहों भुवनों को और अपने प्राणों को देनेवाले सत्यसंध और बड़े से बड़े वीर दशरथ अपने पुत्र पर अत्यधिक प्रेम रखते थे। इसलिए उनके वन में जाने की मजबूरी जो हो गई उसको लेकर वे बहुत दुखी हो गये। इसलिए उनकी इन्द्रियाँ निस्तेज हो गईं। वे काँपते थे। उनके दिव्य शरीर की कान्ति जैसे मन्द हुई उसी तरह दीप भी मन्दप्रभ हो गये। २४४

वङ्गि यम्बल तेन्वि ळम्बिन वाणि मुन्दिन पाणियिन्
पङ्गि यम्बर मॅङ्गुम् विम्मिन पम्बै पम्बिन पल्वहैप्

पोङ्गि यम्बल वुङ्ग ऱङ्गिन नूबु रङ्गळ्पु लम्बवॆण्
शङ्गि यम्बिन कॊम्ब लम्बिन साम गीद निरन्दवे 245

वङ्कियम् पल–विविध वेणुवाद्य, अनेक से; तेन् विळम्पिन–मधु (-सम) संगीत उठे; वाणि मुन्तिन–उनसे पहले मौखिक जय-गीत आये; पाणियिन् पङ्कि–विविध तानों की राशियाँ; अम्परम ॲङ्कुम्–आकाश (भर) में सर्वत्र; विम्मिन–भर गईं; पम्पै पम्मिन–"पम्पै" (नामक बाजा-दुंदुभी ?) नर्दित हुए; पल् वकै–अनेक प्रकार के; पॊङ्कु इयम् पलवुम्–नाद देनेवाले बाजे, अनेक; करङ्किन–बजाये गये; नूपुरङ्कळ् पुलम्प–नूपुर क्वणित हुए; वॆण् चङ्कु इयम् पिन–श्वेत शंख बजाये गये; कॊम्पु अलम्पिन–तुरहियाँ बजीं; चाम कीतम् निरन्त–सामवेद के गीत गाये गये। २४५

फूँककर बजानेवाले अनेक वाद्यों का मधुर संगीत, मौखिक संगीत, बधाई के गीतों का संगीत सब सभी दिशाओं में भर गये। 'पम्पै' नाम का (दुन्दुभी ?) बाजा बजाया गया। विविध उच्च स्वर के बाजे बजे। नूपुर और शंख की चूड़ियाँ खनखना उठीं। शृंगियों का नाद उठा। सामवेद के गीत भी गाये गये। २४५

❀ तूब मुऱ्ऱिय कारि रुट्पहै तुळ्ळि योडिड वुळ्ळॆळुम्
दीब मुऱ्ऱु मॊळितृत हन्ऱन शेय दारुयिर् तेयवॆम्
बाब मुऱ्ऱिय पेदै शॆय्द पहैत्ति ऱत्तिनिल् वॆय्यवन्
कोब मुऱ्ऱि मिहच्चि वन्दन नॊत्त नन्गुण कुन्ऱिन्मेल् 246

चेयतु–अपने कुल के पुत्र दशरथ के; अरु उयिर् तेय–मूल्यवान प्राणों के क्षीण होने देते हुए; वॆम् पापम्–कठोर पाप-कर्म; मुऱ्ऱिय पेतै–पूर्ण जो कर चुकीं उन अबोध कैकेयी के; चॆय्त–किये हुए; पकै तिऱत्तितिल्–शत्रुकृत्य से; कुण कुन्ऱिन् मेल्–उदयाचल पर; वॆय्यवन्–किरणमाली; कोपम् मुऱ्ऱि–क्रोध में बढ़कर; मिक चिवन्तनन्–अधिक लाल हो गये, ऐसा; ऒत्तनन्–लगे; तूपम् मुऱ्ऱिय–धुएँ के समान सर्वत्र व्याप्त; कार् इरुळ् पकै–काला अन्धकार-शत्रु; तुळ्ळि ओटिट–लपककर भाग जाय; उळ् ॲळुम्–(घरों के) अन्दर जले (जो); तीपम् मुऱ्ऱुम्–सभी दीप; ऒळित्तु अकन्ऱन–गुल हो गये। २४६

उदयगिरि पर जो सूरज उग आया उसको देखकर ऐसा लगा मानो वह क्रोध से लाल हो गया हो। उसे कैकेयी के सूर्यवंशज दशरथ के प्रति शत्रु का-सा काम करने पर कोप हुआ था। उसके उदय होने पर धुएँ के समान जो अँधेरा सर्वत्र फैला था वह भाग गया! घरों के अंदर जो दीप जलते थे वे भी बुझ गये। २४६

मूव रायमुद लाहि मूलमु माहि आलमु माहुमत्
तेव देवर् पिडित्त पोर्वि लॊडित्त शेवहन् शेणिलम्
कावन् मामुडि शूडु मारॆळिल् काण लामॆनु माशॆकूर्
पावै मार्मुह मॆन्न मुन्न मलर्न्द पङ्गय राशिये 247

मूवर् आय्–तीन (त्रिदेव) बनकर; मुतलाकि–उनके आदि बनकर; मूलमुम् आकि–सबका आधार बनकर; ञालमुम् आकुम्–प्रपंच भी जो बने रहते हैं; अ तेव तेवर्–और उन देवाधिदेव (शिवजी) का; पिटित्त–हस्तगृहीत; पोर् विल्–युद्धधनु को; ऑटित्त–जिन्होंने तोड़ा वे; चेवकन्–बड़े वीर; चेण् निलम् कावल्–विस्तृत भूमि का पालन करने के लिए; मा मुटि चूटुम्–महत्वपूर्ण किरीट धारण के; अरु ऍऴिल्–अपूर्व वैभव को; काणलाम् ऍन्नुम्–देख सकेंगे, यह; आचै कूर्–आशायुक्त; पावैमार् मुकम् ऍन्न–स्त्रियों के मुखों के समान; पङ्कयम् राचि–पंकज समूह; मुन्नम् मलर्न्त–पहले खिल गये। २४७

सूरज के उगने पर कमल के पुष्प स्त्रियों के मुखों के समान खिल गये। स्त्रियों के मुख क्यों खिले? जो त्रिदेव, त्रिदेव के प्रधान, और त्रिदेव के आदि और प्रपंच के आधार देवाधिदेव और श्री शिवजी के युद्ध-धनुष को तोड़नेवाले श्रीराम के, विस्तृत भूमि के पालन के लिए किरीट-धारण करने की शोभा और वैभव को देखने की आशा से स्त्रियों के मुख खिले थे। २४७

इन्न वेलयि नेऴु वेलयु मॊत्त पोल विरैत्तॆऴुन्
दन्न मानहर् मैन्दन् मामुडि शूडुम् वैह लिदामॆनात्
तुन्नु काद रुरप्प वन्दवै शॊल्ल लाम्वहै यॆम्मनोर्क्
कुन्न लावन वल्ल वॆन्निनु मुऱ्ऱ पॆऱ्ऱि युणर्त्तुवाम् 248

इन्न वेलैयिन्–ऐसी बेला में; मैन्तन्–कुमार के; मा मुटि चूटुम् वैकल्–श्रेष्ठ मुकुटधारण करने का दिन; इतु आम् ऍन्ना–आज ही है, इसको; तुन्नु कातल्–भरी उमंग के; तुरप्प–प्रेरित करने से; अन्न मा नकर्–उस बड़े नगर के सभी वासी; एऴु वेलैयुम् ऑत्त पोल–सातों समुद्र मिल गये जैसे; इरैत्तु ऍऴुन्तु–आनन्दरव करते हुए उठकर; वन्तवै–जो आये उसका; चॊल्लल् आम् वकै–(विस्तार से) कहने का प्रकार; ऍम्मनोर्क्कु–हम जैसों के लिए; उन्नल् आवन अल्ल–सोचने के लिए सुलभ नहीं है; ऍन्निनुम्–तो भी; उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–भरसक; उणर्त्तुवाम्–समझायेंगे। २४८

ऐसी स्थिति में उस महान नगर के वासी आकर भीड़ लगाने लगे। चक्रवर्ती के पुत्र श्रीराम मूल्यवान किरीट को आज ही धारण करेंगे—यह जानकर उस उत्सव को देखने की इच्छा से प्रेरित होकर, सातों समुद्रों के मिल आने के समान, शोरगुल के साथ उनका एकत्र होना, कवि कहते हैं, हमारे लिए वर्णनातीत है! तो भी भरसक उसका वर्णन करेंगे। २४८

कुञ्जर मनैयार् शिन्दय्हॊ ळिळैयार्, पञ्जिह ळणिवार् पाल्वळै तॆरिवार्
अञ्जन मॆन्नवा ळम्बुह ळिडये, नञ्जिनै यिडुवार् नाण्मलर् पुनैवार् 249

कुञ्चरम् अनैयार्–गज-सम (मत्त) पुरुषों के; चिन्तै कॊळ्–मन हरनेवाली; इळैयार्–तरुण रमणियाँ; पञ्चिकळ् अणिवार्–लाक्षारस लगाती हैं; पाल् वळै तॆरिवार्–दुग्ध-सम श्वेत चड़ियाँ चुनकर पहनती हैं; अञ्चनम् ऍन्न–अंजन के नाम

से; वाळ् अम्पुकळ् इटै–तलवारों और बाणों (सी आँखों) में; नञ्चित्तै इट्टुवार्–विष लगा लेती हैं; नाळ् मलर् पुतैवार्–उसी दिन खिले फूल पहनतीं। २४९

तरुणियों का व्यवहार देखिये। कुंजर-सम तरुणों के मन को हरनेवाली तरुणियों ने पैरों में महावर लगाया। शंख की बनी चूड़ियाँ चुनकर पहनीं। अंजन कहकर विष को तलवारों और शरों के समान अपनी आँखों में लगा लिया। उसी दिन विकसित पुष्प पहन लिये। २४९

पॊङ्गिय वुवहै वॆळ्ळम् पॊऴितरक् कमलम् पूत्त
शङ्गयिन् मुहत्तार् नम्बि तम्बिय रनैय रानार्
शॆङ्गय नऱव मान्दिक् कळिप्पन शिवणुङ् गण्णार्
कुङ्गुमच् चुवडु नीङ्गाक् कुववुत्तोट् कुमर रॆल्लाम् 250

नऱवम् मान्ति–मधु पीकर; कळिप्पन–मुदित; चॆम् कयल् चिवणुम् कण्णार्–अच्छी ("कयल" की) मछली-सम मत्त आँखों वालियों का; कुङ्कुमम् चुवटु नीङ्का–कुंकुम का लगा चिह्न जिनसे धुला नहीं है; कुववु तोळ्–वे पुष्ट कंधों वाले; कुमरर् ॲल्लाम्–तरुण पुरुष, सब; कमलम् पूत्त–कमल-सम प्रफुल्लित; चङ्कं इल् मुकत्तार्–कपट-रहित मुख वाले होकर; पॊङ्किय–उमड़ा हुआ; उवकै वॆळ्ळम्–आनन्द का प्रवाह; पॊऴि तर–अश्रु के रूप में बहाते हुए; नम्पि–नायक श्रीराम के; तम्पियर् अनैयर् आनार्–छोटे भाइयों के समान हो गये। २५०

तरुण लोग ऐसे थे जिनके कंधों से कुंकुम का चिह्न नहीं छूटा था। शहद पीकर मत्त रहनेवाली 'कयल' नामक मछलियों के समान जिनकी आँखें थीं उन तरुणियों के वक्ष पर लगा था वह कुंकुम! वे पुष्ट कंधों वाले तरुण लोग निष्कपट मुख और आनन्दाश्रु बहानेवाली आँखों के साथ श्रीराम के छोटे भाइयों के समान बन गये (अत्यन्त आनन्दित हो गये।)। २५०

❀ मादर्हळ् कऱ्पिन् मिक्कार् कोशलै मनत्तै यॊत्तार्
वेदियर् वशिट्ट नॊत्तार् वेऱुळ माद रॆल्लाम्
शीदयै यॊत्ता रन्ना डिरुवितै यॊत्ता ळव्वूरच्
चादुहै मान्द रॆल्लान् दयरदन् ऱन्नै यॊत्तार् 251

अ ऊर्–उस (अयोध्या) नगर में; कऱ्पिल् मिक्कार् मातर्कळ्–विवाहिता वड़ी उम्र की स्त्रियाँ; कोचलै मनतै ऑत्तार्–कौसल्यादेवी के-से मन वाली हो रहीं; वेऱु उळ मातर् ॲल्लाम्–अन्य सभी (कन्या) स्त्रियाँ; चीतैयै ऑत्तार्–सीताजी के समान हो गईं; अन्नाळ्–वे सीता; तिरुवित्तै ऑत्ताळ्–लक्ष्मीदेवी के समान हो गईं; चातुकै मान्तर् ॲल्लाम्–साध (उम्र में बड़े) पुरुष सभी; तयरतन् तन्नै–दशरथ से; ऑत्तार्–तुल्य रहे; वेतियर् वचिट्टर् ऑत्तार्–वेदज्ञ विप्र वसिष्ठ से तुले। २५१

उमर में बढ़ी सभी गृहिणियाँ (सधवाएँ) कौसल्यादेवी के समान

(मुदित) हुईं। अन्य कन्याएँ सीता-सम हुईं। वे सीता भगवती श्रीलक्ष्मी के समान शोभीं। वयोवृद्ध साधू लोग दशरथ के समान रहे। और वेदपाठी सभी ब्राह्मण लोग वसिष्ठजी के समान हो रहे थे। २५१

❀ इमिऴ्तिरैप् परवै ञाल मॆङ्गणुम् वऱुमै कूर
उमिऴ्वदौत् तुदवु काद लुन्दिड वन्द दन्ऱे
कुमिऴ्मुलैच् चीदै कॊण्गन् कोमुडि पुनैदल् काण्बान्
अमिऴ्दुणक् कुऴुमु हिन्ऱ वमररि नरश वॆळ्ळम् 252

अरच वॆळ्ळम्—राजाओं की बड़ी भीड़; कुमिऴ् मुलै चीतै कॊण्कन्—कलशस्तनी सीता के पति के; को मुटि पुनैतल् काण्पान्—राजमुकुट धारण करने को देखने के लिए; उमिऴ्वतु ऒत्तु—बाहर प्रकट होते से; उतवु कातल्—उमड़ते प्रेम के; उन्तिट—प्रेरित करने से; इमिऴ् तिरै परवै ञालम् ऍङ्कणुम्—ध्वनियुक्त लहरों वाले समुद्र से वलयित पृथ्वी के सभी स्थानों को; वऱुमै कूर—रिक्त बनाकर; अमिऴ्तु उण—अमृत अशन करने; कुऴुमुकिन्ऱ अमररिन्—एकत्र होनेवाले देवों के समान; वन्ततु—आने लगी। २५२

राजाओं की भीड़ अत्यधिक थी। उनके मन में मनोरम उरोज वाली सीताजी के पति, श्रीराम के मुकुटधारण के उत्सव को देखने की प्रवल लालसा रही। उससे प्रेरित होकर वे आ गये। संसार के अन्य भाग सभी रिक्त हो गये। वे राजा लोग उन देवों के समान अयोध्या में आने लगे जो अमृत का अशन करने के लिए क्षीरसमुद्र पर गये थे। २५२

पाहियल् पवळच् चॆव्वायप् पणैमुलैप् परवै यल्हुल्
तोहयर् कुऴामु मैन्दर् शुम्मयुन् दुवन्ऱि यॆङ्गुम्
एहुमि न्हेहु मॆन्ऱॆन् रिडैयिडै निऱ्ऱ लल्लाल्
पोहलर् मीळ्ह लिल्लार् पॊन्नहर् वीदि यॆल्लाम् 253

पॊन् नकर्—लक्ष्मी के (वासस्थान, उस) नगर में; वीति ऍल्लाम्—सभी सड़कों पर; पाकु इयल्—चाशनी का मधुर स्वभाव; पवळम् चॆम् वाय्—और प्रवाल-सी लालिमा से युक्त मुख; पणै मुलै—पीन स्तन; परवै अलकुल्—विशाल नितम्ब; तोकैयर् कुऴामुम्—कलापी-सी आभावाली स्त्रियों की भीड़ और; मैन्तर् चुम्मैयुम्—पुरुषों की भीड़; ऍङ्कुम् तुवन्ऱि—सर्वत्र भरकर; एकुमिन् एकुम्—चलिए, चलो; ऍन्ऱु ऍन्ऱु—कहते-कहते; इटै इटै निऱ्ऱल् अल्लाल्—यत्र-तत्र खड़ी ही रहती है, उसके सिवा; पोकलार्—आगे बढ़ नहीं पाते; मीळ्कल् इल्लार्—पीछे भी मुड़कर जा नहीं पाते। २५३

श्रीलक्ष्मी के वास के उस नगर की वीथियों में स्त्रियों और पुरुषों की बड़ी भारी भीड़ लग गई। स्त्रियाँ सुन्दर थीं। वे चाशनी-सम मधुर बोली वाली और प्रवाल-सम लाल अधर-होंठ वाली रमणियाँ थीं। उनके स्तन पीन थे और नितम्ब-प्रदेश विशाल। भीड़ के लोग कहते कि

"वढ़ो आगे, स्थान दो"; पर वे न आगे बढ़ पाते हैं, न पीछे मुड़ पाते हैं। उनको खड़ा रहना ही पड़ता है। इतनी भारी भीड़ थी। २५३

❀ वेन्दरे पॅरिदॅन् बारुम् वीररे पॅरिदॅन् बारुम्
मान्दरे पॅरिदॅन् बारु महळिरे पॅरिदॅन् बारुम्
पोन्ददे पॅरिदॅन् बारुम् पुहुवदे पॅरिदॅन् बारुम्
तेऱ्न्ददे तॅरिव दल्लाल् यावरे तॅरिय वल्लार् 254

वेन्तरे पॅरितु ॲन्पारुम्–राजाओं की संख्या ही अधिक है, कहनेवाले; वीररे पॅरितु ॲन्पारुम्–और वीरों की भीड़ ही बड़ी, कहनेवाले; मान्तरे पॅरितु–पुरुषों की भीड़ बड़ी; ॲन्पारुम्–कहनेवाले; मकळिरे पॅरितु–स्त्रियों का समूह ही विशाल है; ॲन्पारुम्–कहनेवाले; पोन्तते पॅरितु–आगत लोगों की संख्या बड़ी; ॲन्पोरुम्–कहनेवाले; पुकुवते पॅरितु ॲन्पारुम्–आनेवाले लोग ही अधिक कहनेवाले; तेऱ्न्तते तॅरिवतु अल्लाल्–अपने देखे हुओं को ही जानते हैं, उसको छोड़; तॅरियवल्लार् यावर्–संपूर्णता जाननेवाले कौन हैं। २५४

उस भीड़ को देखकर लोग कहते हैं कि राजाओं की भीड़ ही बड़ी है। सेना-वीरों की संख्या अधिक है; पुरुष लोगों की भीड़ बड़ी है; स्त्रियों का समूह ही विशाल है; जो आ चुके उनकी भीड़ भारी है; नहीं-नहीं जो आनेवाले हैं उनकी संख्या ही अधिक है। इस तरह लोग अपनी-अपनी जानकारी के आधार पर अनुमान लगा रहे थे। वहाँ कौन थे जो संपूर्ण भीड़ को देखकर बता सकें? । २५४

❀ कुवळयि ऍ़ळिलुम् वेलिन् कॉडुमयुङ् गुळैत्तुक् कूट्टित्
तिवळुमञ् जनमॅन् ऱेय्न्द नञ्जिनैत् तॅरियत् तीट्टित्
तवळवॊण् मदियिन् वैत्त तन्मशा ऱडङ्ग णल्लार्
तुवळुनुण् णिडया राडुन् दोहयिन् कुळात्तिऩ् ऱॊक्कार् 255

कुवळैयिन् ऍळिलुम्–नील कुवलय की छटा; वेलिन् कॉटुमैयुम्–भाले की क्रूरता; कुळैत्तु कूट्टि–मिलाकर घोलकर; तिवळुम–बने रहे; अञ्चनम् ॲन्ऱु एय्न्त–'अंजन' नाम के साथ, रहनेवाले; नञ्चिनै–विष को; तॅरिय तीट्टि–दरसाते हुए लगाकर; तवळम् ऑळ् मतियिन् वैत्त–श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जड़ित-सी; तन्मैचाल्–दृश्यवाली; तटम् कण्–विशाल आँखों की; नल्लार्–स्त्रियाँ; तुवळुम् नुण् इटैयार्–लचकती पतली कमरवालियाँ; आटुम् तोकैयिन् कुळात्तिन्–पंख फैलाकर नाचनेवाले मोरों के झुण्डों के समान; तॊक्कार्–आ एकत्र हुई। २५५

पतली कमर वाली स्त्रियाँ नाचते मोरों के समान आ जुट गईं। उनका श्रृंगार देखिये। नील कुवलय का रूप और भाले की क्रूरता से युक्त अंजन नामक विष को उन्होंने अपनी आँखों में लगा लिया है! उनको एक श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जटित कर लिया हो ऐसा उनका मुख है। उन आँखों की वे स्त्रियाँ अपनी कमर लचकाती आई हैं। २५५

नलङ्गिळर् बूमि यॅन्नु नङ्गयै नरुन्दु ळायिन्
अलङ्गलान् पुणरुम् जॅल्वङ् गाणवन् दडैन्दि लादार्
इलङ्गयि न्रिुद रेमर् ड्रीरॅळु पुवनत् तुळ्ळ
विलङ्गलु मरमु मादि वेरुळ पौरुळ्ह ळॅल्लाम् 256

नलम् किळर्–अच्छाइयों से युक्त; पूमि ॲन्नुम् नङ्कैयै–भूमि रूपी देवी को; नरु तुळायिन् अलङ्कलान्–सुगन्धित तुलसी-मालाधारी; पुणरुम्–जो मिलते हैं उस; चॅल्वम् काण–वैभव को देखने के लिए; वन्तु अटैन्तिलातार्–जो अभी तक नहीं आ पहुँचे; इलङ्कैयिल् निरुतरे–लंका के राक्षस ही; मर्रु–उनके अलावा; ईर् एळु पुवनत्तु–दो के सात (चौदह) भुवनों के; उळ्ळ–रहनेवाले; विलङ्कलुम् मरमुम् आति–पर्वत, पादप आदि; वेरु उळ–(मानव देवादि से) भिन्न; पौरुळ्कळ् ॲल्लाम्–निर्जीव पदार्थ सभी। २५६

इस बड़ी भीड़ में दुनिया के सभी थे। पर कौन नहीं थे? सौभाग्य-दायिनी पृथ्वीदेवी को तुलसीमाला-धारी श्रीराम वरमाला पहनानेवाले हैं। उस उत्सव को देखने के लिए जो नहीं आये, वे लंका के राक्षस ही थे। उनके अलावा चौदहों भुवनों के पर्वत और वृक्ष नहीं आये क्योंकि वे स्थावर थे। २५६

चन्दिरर् कोडि यॅन्नत् तरळवॅण् कविहै योङ्ग
अन्दरत् तन्न मॅल्ला मार्न्दॅनक् कवरि तुन्न
इन्दिरर् कुवमै शालु मिरुनिलक् किळव रॅल्लाम्
वन्दनर् मवुलि शूट्टु मण्डब मरबिर् पुक्कार् 257

इन्तिरर्कु उवमै चालुम्–इन्द्र से उपमेय; इरु निलम् किळवर् ॲल्लाम्–बड़े पृथ्वी भागों के अधिपति लोग; चन्तिरर् कोटि ॲन्न–करोड़ों चन्द्र हों ऐसे; तरळम् वॅण् कुटैकळ् ओङ्क–मोती के छत्रों के ऊपर रहते; अन्तम् ॲल्लाम्–संसार के सभी हंस; अन्तरत्तु आर्न्त–आकाश में भर गये; ॲन्न–ऐसा; कवरि तुन्न–चामरों के साथ; वन्तनर्–आये; मवुलि चूट्टुम् मण्टपम्–मुकुट-धारण के मण्डप में; मरपिन् पुक्कार्–क्रम के अनुसार पहुँचे। २५७

सभी महीपति अभिषेक के मण्डप में आ पहुँचे। उनके आने का ठाठ कैसा था? उनके करोड़ों छत्र, करोड़ों चंद्रों के समान थे। चामरों की संख्या इतनी थी और उनका डुलना ऐसा लगता था मानो संसार भर के हंस उधर आ गये हों। उन राजाओं से इन्द्र भी उपमित हो सकते थे! वे सब अपनी-अपनी मर्यादा के क्रम के अनुसार आ पहुँचे। २५७

मुर्पयन् दॅडुत्त कादर् पुदल्वनै मुरैयि नोडुम्
इर्पयन् शिर्प्पिप् पारि नीण्डिय वुवहै तूण्ड
अर्पुदन् रिुवैच् चेरु मरुमणङ् गाणप् पुक्कार्
नर्पयन् रवत्ति नुय्क्कु नान्मरैक् किळव रॅल्लाम् 258

तवत्तिन्–तपोबल से; नल् पयन् उय्क्कुम्–श्रेष्ठ उपकार (संसार को) करनेवाले; नाल् मऱै किऴवर् ॲल्लाम्–चारों वेदों के ज्ञाता सभी ब्राह्मण; मुन् पयन्तु ॲट्टुत्त–पहले जनाये; कातल् पुतल्वनै–प्यारे पुत्र को; मुऱैयित्तोट्टुम्–विधिवत; इल् पयन् चिऱप्पिप्पारिन्–गृहस्थ धर्म में (प्रवेश कराके) गौरव दिला रहे हों, जैसे; ईण्टिय उवकै तूण्ट–उमड़नेवाले प्रेम से प्रेरित होकर; अऱ्पुतन्–अद्भुत कुमार श्रीराम के; तिरुवै चेरुम्–(राज्य-) श्री के साथ मिलने के; अरु मणम्–श्रेष्ठ विवाह को; काण पुक्कार्–देखने के लिए (मण्डप में) पहुँचे । २५८

वेदपाठी ब्राह्मणों का आनन्द भी अधिक था। अपनी तपस्या के फल को लोक-हितार्थ समर्पण करनेवाले वे ऐसे आनन्दित हुए मानो वे अपने ज्येष्ठ पुत्र को वैवाहिक जीवन में प्रवेश करा रहे हों जिससे उसका और लोक का सौभाग्य बढ़े ! वे भी श्रीराम तथा भूमिदेवी का विवाह (राज्याभिषेक) देखने की इच्छा से प्रेरित होकर मण्डप में आ पहुँचे। २५८

विण्णवर् विशुम्बु तूर्त्तार् विरितिरै युडुत्त कोल
मण्णवर् तिशैह डूर्त्तार् मङ्गल मिशैक्कुज् जङ्गम्
कण्णहन् मुरशित्तोदै कण्डवर् शॅविह डूर्त्त
ॲण्णरुङ् गन्नह मारि यॅऴुतिरैक् कडलुन् दूर्त्त 259

विण्णवर् विचुम्पु तूर्त्तार्–देवों से आकाश भर गया; विरि तिरै उट्टुत्त–विस्तृत सागर वेष्टित; कोलम्–सुन्दर; मण्णवर्–पृथ्वी के लोगों ने; तिचैकळ् तूर्त्तार्–दिशाओं को भर दिया; मङ्कलम् इचैक्कुम्–मंगलस्वन; चङ्कम्–शंख; कण् अकल्–विशाल "आँख" के; मुरचिन् ओतै–ढोल का नाद; कण्टवर् चॅविकळ् तूर्त्त–(इन्होंने) दर्शन करने के लिए आगतों के कान भर दिये; ॲण्ण अरु–अमाप; कन्नकम् मारि–कनक वर्षा; ॲऴुतिरै–उठनेवाली लहरों से पूर्ण; कटलुम् तूर्त्त–समुद्र को भर गई। २५९

आकाश देवों से भर गया। सागरवसना भूमि के लोगों से दिशाएँ भर गईं। मंगलमय शंखनाद और विशाल चमड़े के ढोलों के नाद से आगतों के कान भर गये। कनक-वर्षा जो लोगों के द्वारा की गई उससे लहरसंकुल (या सातों) सागर भर गये। २५९

विळक्कॉळि मऱैत्तु मन्नर् मिन्नॉळि महुड कोडि
तुळक्कॉळि विशुम्बि नूरुञ् जुडरयु मऱैत्तुच् चूऴ्न्द
अळक्कर् वॅण् मुत्त मूरन् मुरुवला रणियिन् शोदि
वळैक्कला मॅन्ऱव् वानोर् कण्णयु मऱैत्त वन्ऱे 260

मन्नर्–महीपतियों के; मिन् ऑळि–विद्युत-सी छटा वाले; मकुटम् कोटि–करोड़ों किरीटों के; तुळक्कु ऑळि–हिलने से उत्पन्न प्रकाश; विळक्कु ऑळि मऱैत्तु–दीपों का प्रकाश मन्द करके; विचुम्पिन् ऊरुम्–आकाशचारी; चुटरैयुम् मऱैत्तु–सूर्य को भी छिपाते हुए; चऴ्न्त–(सर्वत्र) फैल गया; अळक्कर्–समुद्र में उत्पन्न;

वॆण् मुत्तम् मूरल्–श्वेत मुक्ता-सम दाँतों और; मुरुवलार्–मन्दहास वाली स्त्रियों के; अणियिऩ् चोति–आभरणों की दीप्ति ने; वळैक्कलाम् ॲऩ्ऱु–उनको भी घेर लेंगे, इस विचार के साथ; अ वाऩोर् कण्णैयुम्–उन देवों की आँखों को भी; मऱैत्त–चौंध से भर दिया। २६०

आगत करोड़ों राजाओं के मुकुटों का हिलनेवाला प्रकाश दीपों को निस्तेज बनाते हुए, आकाशचारी सूर्य की प्रभा को भी छिपाते हुए सर्वत्र फैल गया। उन मुक्तादाँत वाली मंदहासिनी स्त्रियों के आभरणों की उन्मुक्त आभा ने देवों को भी घेर लेती हुई उनकी आँखों को मीच दिया। २६०

❀ आयदो रमैदि यिऩ्ग णैयऩै महुडञ् जूट्टऱ्
केयुमङ् गलङ्ग ळाऩ यावयु मियैयक् कॊण्डु
तूयनाऩ् मऱैहळ् वेद पारहर् शॊल्लत् तॊल्लै
वायिल्हह् ऩॆरुक्क नीङग मादवक् किळवन् वन्दान् 261

आयतु ओर् अमैतियिऩ् कण्–ऐसे समय में; मा तवम् किळवऩ्–महान तपोधन वसिष्ठ; ऐयऩै–प्रभु श्रीराम को; मकुटम् चूट्टऱ्कु एयुम्–मुकुट धारण करने के लिए योग्य; मङ्कलङ्कळ् आऩ यावैयुम्–मंगल द्रव्य सब; इयैय कॊण्टु–उचित प्रकार से लेकर; वेतम् पारकर्–वेदपारगों के; तूय नाल् मऱैकळ् चॊल्ल–पवित्र वेदों का पाठ करते; तॊल्लै वायिल्कळ्–प्राचीन द्वारों में; नॆरुक्कम् नीङ्क–भीड़ के स्थान देते; वन्ताऩ्–आये। २६१

ऐसे समय में महान तपोधन वसिष्ठजी श्रीराम के मुकुटधारण के कार्य के लिए आवश्यक और योग्य मंगलपदार्थ लेते हुए मंडप में आये। उनके साथ वेदपारंगत ब्राह्मण आये। द्वारों में जो भीड़ थी उसने इनके लिए रास्ता छोड़ा। २६१

❀ गङ्गये मुदल वाहक् कऩ्ऩियी ऱाय तीर्त्त
मङ्गलप् पुऩ्लु नालु वारियि ऩीरुम् बूरित्
तङ्गियिऩ् विऩैहट् केऱ्ऱ यावयु ममैत्तु वीरच्
चिङ्गवा दऩमुम् वैत्तुच् चॆय्वऩ पिऱवुञ् जॆय्दान् 262

कङ्कैये मुतलवाक–गंगा से लेकर; कऩ्ऩि ईऱु आय–"(कुमारी) कन्या" नदी तक के; तीर्त्तम्–नदियों के; मङ्कलम् पुऩलुम्–पुण्यसलिल को; नालु वारियिऩ् नीरुम्–चारों ओर के समुद्रजल को; पूरित्तु–घटों में भरकर; अङ्कियिऩ् विऩैकट्कु–(अग्नि) होम-कार्य के लिए आवश्यक सब; अमैत्तु–सँभालकर; वीरम् चिङ्क आतनम्–वीरसिंहासन भी; वैत्तु–लगाकर; चॆय्वऩ पिऱवुम्–करणीय सब; चॆय्ताऩ्–किया (वसिष्ठजी ने)। २६२

वसिष्ठजी ने गंगा (यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी) और कुमरी (दक्षिण की नदी जो, कहते हैं, समुद्र के अन्दर समा

गई है) की नदियों के जल, और चारों दिशाओं के समुद्रों के जल को कलशों में भर रखा। होम-कार्य के लिए (अक्षत, दर्भ, समित, घी, कलछी आदि) उपकरण संभालकर रखा। फिर एक वीरोचित सिंहासन डलवाकर अन्य आवश्यक तैयारियाँ कीं। २६२

ꕥ कणिदनू लुणर्न्द मान्दर् कालम्वन् दड्डुत्त दॅन्नप्
पिणियऱ् नोऱ्ऱु निन्ऱ पॅरियवन् विरैवि नॅय्दि
मणिमुडि वेन्दन् ऱन्नै वल्लयिऱ् कॉणर्दि यॅन्नप्
पणिदलै निन्ऱ कादर् चुमन्दिरन् परिविऱ् चॅन्ऱान् 263

कणितम् नूल् उणर्न्त मान्तर्–ज्योतिष-शास्त्री (लोगों के); कालम् वन्तु अटुत्ततु–मुहूर्त आ गया; अॅन्न–कहने पर; पिणि अऱ्–(भव-) रोग से मुक्ति पाने के लिए; नोऱ्ऱु निन्ऱ–तपस्या करके रहनेवाले; पॅरियवन्–महात्मा के; विरैविन् अॅय्ति–सत्वर जाकर; मणि मुटि वेन्तन् तन्नै–रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती को; वल्लैयिल् कॉणर्ति–शीघ्र लिवा लाइए; अॅन्न–कहने पर; पणि तलै निन्ऱ–आज्ञा शिरोधार्य करके; कातल् चुमन्तिरन्–सबके स्नेहपात्र सुमन्त्र; परिविन् चॅन्ऱान्–श्रद्धा के साथ गये। २६३

ज्योतिष-शास्त्रियों ने सावधान किया कि मुहूर्त आ गया है। तब भव-रोग-मुक्ति के लिए जिन्होंने तपस्या की उन वसिष्ठजी ने सुमन्त्र से कहा कि जल्दी चलिए और रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती दशरथ को यहाँ लिवा लाइए। सबके स्नेह-पात्र सुमन्त्र भी उस शासन को शिरोधार्य करके बड़ी उमंग के साथ गये। २६३

ꕥ विण्डोंड निवन्द कोयिल् वेन्दर्दम् वेन्दन् ऱन्नैक्
कण्डिलन् विनवक् केट्टान् कैहयळ् कोयि नण्णिक्
तॊण्डैवाय् मडन्दै मारिऱ् चॊल्लमर् ऱवरुज् जॊल्लप्
पॆण्डिरिऱ् कूऱ्ऱ मन्नाळ् पिळ्ळैयैक् कॊणर्ह वॆन्ऱाळ् 264

विण् तॊट निवन्त–आकाश को छूता उन्नत; कोयिल्–महल में; वेन्तर् तम् वेन्तन् तन्नै–राजाधिराज को; कण्टिलन्–न पाकर; विनव–पूछने पर; केट्टान्–(उनका उत्तर) सुनकर; कैकयळ् कोयिल् नण्णि–कैकेयी के महल में जाकर; तॊण्टैवाय् मटन्तै मारिल्–बिंबफलाधरा दासियों से; चॊल्ल–(सूचना देने को) कहा, तब; अवरुम्–उन्होंने भी; चॊल्ल–(कैकेयी के पास) कहा, तब; पॆण्टिरिल् कूऱ्ऱम् अन्नाळ्–स्त्रियों में यमदेव-सी उन्होंने; पिळ्ळैयै कॊणर्क–सुत को लाओ; अॅन्ऱाळ्–कहा। २६४

सुमन्त्र पहले दशरथ के आकाशस्पर्शी महल में गये। वे वहाँ नहीं मिले। वहाँ रहनेवालों से पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया। उसको सुनकर वे कैकेयी के महल में गये। द्वार पर रुककर उन्होंने बिम्बफलाधरा दासियों द्वारा अन्दर समाचार भेजा। स्त्रियों में यम के समान जो रहीं उन कैकेयी ने आज्ञा सुनाई कि सुत को यहाँ ले आइए। २६४

❀ ॲन्ऱऩ ळॅन्ऩक् केट्टा नॅळुन्दपे रुवहै पॊङ्गप्
पॊन्ऱिणि माड वीदि पॊरुक्कॅन्न नीङ्गिप् पुक्कान्
तन्ऱिरु वुळ्ळत् तुळ्ळे तन्नये निनैयु मऱ्ऱक्
कुन्ऱिवर् तोळि नानैत् तॊळुदुवाय् पुदैत्तुक् कूऱुम् 265

ॲन्ऱनळ्–कहा तो; ॲन्न केट्टान्–उतना सुनकर; ॲळुन्त पेर् उवकै–उठा बड़ा आनन्द; पॊङ्क–उमड़ आया, तव; पॊन् तिणि माटम् वीति–स्वर्णनिर्मित सौधों से भरी वीथी में; पॊरुक्कॅन–झट से; नीङ्कि–पार करके; पुक्कान्–(श्रीराम के महल में) प्रविष्ट हुए; तन् तिरु उळ्ळत्तु उळ्ळे–अपने मन में; तन्नैये निनैयुम्–आत्मा का ध्यान लगाते हुए रहनेवाले (स्वात्मध्यान-मग्न); अ कुन्ऱु इवर् तोळिनानै–गिरितुल्य कंधे वाले को; तॊळुतु–नमस्कार करके; वाय् पुतैत्तु–मुख पर हाथ रखकर; कूऱुम्–बोले। २६५

सुमन्त्र ने उतना सुना तो समझ लिया कि श्रीराम को मुकुटधारण के लिए ही बुलाया जा रहा है। उन्हें अपार आनन्द हुआ। वे बहुत शीघ्र स्वर्णमय सौधों से शोभित राजमार्ग पार करके श्रीराम के भवन में पहुँचे। वहाँ श्रीराम आत्मध्यानमग्न थे। उन गिरितुल्य कंधों वाले श्रीराम को नमस्कार करके सुमन्त्र अपने मुख पर उँगलियाँ रखते हुए (मुख के सामने हाथ रखना विनय प्रदर्शन का शिष्टाचार है) बोले। २६५

❀ कॊऱ्ऱवर् मुनिवर् मऱ्ऱुङ् गुवलयत् तुळ्ळा रुन्नैप्
पॅऱ्ऱवन् ऩन्नैप् पोलप् पॅरुम्बरि वियऱ्ऱि निन्ऱार्
शिऱ्ऱवै तानु माङ्गे कॊणर्हॅनच् चॅप्पि नाळप्
पॊऱ्ऱड महुडञ् जूडप् पोदुदि विरैवि नॅन्ऱान् 266

कॊऱ्ऱवर्–राजा लोग; मुनिवर्–मुनिगण; मऱ्ऱुम्–और; कुवलयत्तु उळ्ळार्–भूतलवासी; उन्नै पॅऱ्ऱवनै पोल–आपके जनक पिता के समान; पॅरु परिवु इयऱ्ऱि–बड़े प्रेम के साथ; निन्ऱार्–खड़े हैं; चिऱु अव्वैयुम्–छोटी माता भी; आङ्कु कॊणर्क ॲन्न–वहाँ लिवा लाने को; चॅप्पिनाळ्–कहा है; अ पॊन् तट मकुटम् चूट–उस स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करने के लिए; विरैविन् पोतुति–शीघ्र आइए; ॲन्ऱान्–(सुमन्त्र ने) कहा। २६६

राजकुमार! वहाँ राजा लोग, मुनिगण, और संसार के सभी लोग आपके ही पिता के समान आनन्दभरे होकर आपकी प्रतीक्षा में खड़े हैं। आपकी छोटी (सौतेली) माता ने आपको लिवा लाने की आज्ञा दी है। इसलिए उस बड़े स्वर्णमुकुट के धारण करने के हेतु आप पधारिए —यह सुमन्त्र ने विनय के साथ कहा। २६६

❀ ऐयनु मच्चॊर् केळा वायिर मौलि यानैक्
कैतॊळु दरशर् वॅळ्ळङ् गडलॅनत् तॊडर्न्दु शुऱ्ऱत्

तॆय्वगी दङ्गळ् पाडत् तेवरु महिऴ्न्दु वाऴ्त्तत्
तैयला रिरैत्तु नोक्कत् तारणि तेरिऱ् पोऩाऩ् 267

ऐयतुम्–प्रभु (सुन्दर राज) श्रीराम भी; अ चॊल् केळा–वह वचन सुनकर; आयिरम् मौलियाऩै–सहस्रशीर्ष (श्रीरंगजी) का; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर नमस्कार करके; अरचर् वॆळ्ळम्–राजाओं की भीड़ के; कटल् ऎऩ–सागर के समान; तॊटर्न्तु चुऱ्ऱ–पीछे और पार्श्व में आते; तॆय्व कीतङ्कळ् पाट–ईश्वर-स्तुति के गीत (गवैयों के) गाते; तेवरुम्–(आकाशस्थित) देवों के; मकिऴ्न्तु वाऴ्त्त–आनन्द के साथ बधाई कहते; तैयलार्–स्त्रियों के; इरैत्तु नोक्क–आनन्दनाद करते उनको देखते; तार् अणि तेरिल्–मालाओं से अलंकृत रथ पर; पोऩाऩ्–गये। २६७

सुन्दरराज प्रभु श्रीराम ने वह सुनकर सहस्रशीर्ष श्रीरंगजी को नमस्कार किया। फिर वे पुष्पमालाओं से अलंकृत रथ पर बैठकर जाने लगे। तब सागर के समान राजसमूह उनके पीछे और पार्श्व में लगे गये। गवैये प्रार्थना और मंगलगीत गाते गये। देव आकाश में स्थित होकर बधाई के वचन बोले। स्त्रियाँ आनन्दघोष करती हुई उनको देख रही थीं। २६७

तिरुमणि महुडञ् जूडच् चेवहऩ् शॆल्हिऩ् ऱाऩॆऩ्
ऱॊरुवरि ऩॊरुवर् मुन्दिक् कादलो डुवहै युन्द
इरुहयु मिरैत्तु मॊय्त्ता रिऩ्नुयिर् यार्क्कु मॊऩ्ऱाय्प्
पॊरुवरु तेरिऱ् चॆल्लप् पुऱत्तिडैक् कण्डार् पोल्वार् 268

चेवकऩ्–प्रतापी वीर; तिरु मणि मकुटम् चूट–उत्तम मणिमुकुट धारण करने; चॆल्किऩ्ऱाऩ् ऎऩ्ऱु–जाते हैं, यह जानकर; कातलोटु उवकै उन्त–भक्ति के साथ आनन्द के प्रेरित करते; ऒरुवरिऩ् ऒरुवर् मुन्ति–एक के पहले एक बढ़कर; इरु कैयुम् इरैत्तु मॊय्त्तार्–दोनो किनारों पर कोलाहल के साथ जो एकत्र हुए वे सब; यार्क्कुम् इऩ् उयिर्–सभी की प्यारी जानें; ऒऩ्ऱु आय्–एक (श्रीरामरूप) होकर; पॊरु अरु तेरिल्–अनुपम रथ पर; पुऱत्तु इटै–बाहर (वीथी में); चॆल्ल कण्टार् पोल्वार्–जाती हैं, यह देखते से अनुभव करने लगे। २६८

श्रीवीरराघव मंगलमय मणिमुकुट धारण करने जा रहे हैं। यह जानने पर लोगों के मन में अपार हर्ष और प्रेम उत्पन्न हुए। उनकी प्रेरणा से वे एक से पहले एक आकर मार्ग के दोनो ओर एकत्र हो गये। उनको ऐसा लगा कि हम सबकी जानें मिलकर एक रूप लेकर जा रही हैं। वे ऐसा उनको देख रहे थे। २६८

तुण्णॆऩुञ् जॊल्लाळ् शॊल्लच् चुडर्मुडि तुऱन्दु तूय
मण्णॆऩुन् दिरुवै नीङ्गि वऴिक्कॊळा मुऩ्ऩम् वळ्ळल्
पण्णॊऩुञ् जॊल्लि ऩार्तन् दोळॆऩुम् पणैत्त वेयुम्
कण्णॆऩुङ् गाल वेलु मिडैनॆडुङ् गाऩम् बुक्काऩ् 269

तुण् ॲंतुम् चॉल्लाळ्-भय-चकित करनेवाले वचन की; चॉल्ल-(कैकेयी के) कहने से; वळ्ळल्-उदार प्रभु; चुटर् मुटि तुरन्तु-दीप्त मुकुट त्यागकर; तूय मण् ॲंतुम् तिरुवै-पवित्र भूश्री से; नीङ्कि-बिछुड़कर; वळि कॉळा मुन्नम्-(वन का) मार्ग अपनाने से पहले; पण् ॲंतुम् चॉल्लितार् तम्-संगीत-सम बोली वाली स्त्रियों के; तोळ् ॲंतुम् पणैतूत वेयुम्-पुष्ट कंधों रूपी बाँसों; कण् ॲंतुम्-आँखें रूपी; कालन् वेलुम्-यम से भालों के; मिटै-भरे; नॅटु कातम् पुक्कान्-विस्तृत वन में घुसे। २६६

श्रीराम-दिल दहलानेवाली बात कहने को जो प्रस्तुत थीं उनके कहने से शोभायमान मुकुट और राज्यश्री को छोड़कर वन में जाने से पहले ही एक विचित्र वन में घुस गये। इस विशाल वन में संगीतसम मधुरभाषिणी स्त्रियों के कंधे रूपी बाँस और उनकी आँखें रूपी घातक भाले भरे थे। २६९

चुण्णमु मलरुञ् जान्दुङ् गनहमुन् दूव वन्दु
वण्णमे हलैयु नाणुम् वळैहळुम् जिन्दु वारुम्
पुण्णुरु वनङ्गन् वाळि पुळैत्तदम् बुणर् मॅन् कॉङ्गै
कण्णुरुप् पॉळिन्द काम वॅम्बुनल् कळुवु वारुम् 270

चुण्णमुम्-गन्धचूर्ण; मलरुम्-और पुष्प; चान्तुम्-और चन्दन; कनकमुम्-स्वर्ण (के सिक्के); तूव वन्तु-बरसाने के लिए आकर; वण्णम् मेकलैयुम्-सुन्दर मेखलाएँ; नाणुम्-और लाज; वळैकळुम्-करकंकणों को; चिन्तुवारुम्-गिरानेवालियाँ; अनङ्कन् वाळि-मन्मथशर; पुण् उरु-व्रण बनाते हुए; पुळैत्त-जिन पर चुभ गये; तम् पुणर् मॅन् कॉङ्कै-उन अपने सटे हुए स्तनद्वय को; कण् उरुपॉळिन्त-आँखों से खूब बहनेवाले; काम वॅम् पुनल्-कामोत्तेजित गरम आँसुओं से; कळुवुवारुम्-धुलानेवालियाँ बन के। २७०

स्त्रियाँ रास्ते में सुगन्धचूर्ण, पुष्प, चन्दन और कनककण बरसाने आईं। पर वह भूल गईं। उसके बदले उन्होंने अपनी मेखलाएँ, लाज और हाथ के कंकण गिरा दिये। मन्मथ ने अपने शरों से जिन स्तनों को विद्ध कर दिया उनको वे अपनी आँखों से बहनेवाली कामतप्त अश्रुधारा से धुलाने लग गईं। ऐसी—। २७०

अङ्गण नवनि कात्तर् कामिव नॅन्न लामो
नङ्गणन् बिलनॅन् रुळ्ळन् दळ्ळुर नडुङ्गि नैवार्
शॅङ्गणुङ् गरिय कोल मेनियुन् देरु माहि
ॲङ्गणुन् दोन्रु हिन्रा नॅनैवरो विराम रॅन्बार् 271

अम् कण्णन्-सुन्दराक्ष; नम् कण् अन्पु इलन्-हमारे प्रति प्रेम नहीं रखते; इवन् अवनि कात्तर्कु आम्-यह भूमि का पालन करने योग्य हैं; ॲन्तल् आमो-कह सकते हैं क्या; ॲन्रु-ऐसा सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुर-मन के अस्तव्यस्त होते; नटुङ्कि-काँपकर; नैवार्-मुरझातीं; चॅम् कण्णुम्-लाल आँखें; करिय कोलम् मेनियुम्-नीला सुन्दर शरीर; तेरुम् आकि-और रथ बनकर; ॲङ्कणुम् तोन्रु

किन्ऱान्–सर्वत्र दिखाई देते हैं; इरामर्–श्रीराम; ऍत्तैवरो–कितने ही हैं; ऍन्पार्–कहतीं । २७१

वे स्त्रियाँ कहतीं— सुन्दराक्ष ये राम हम पर किंचित भी स्नेह नहीं दिखाते । ऐसे ये अवनि की रक्षा कर सकेंगे —यह विश्वास करना उचित होगा क्या ? देखिये— ललाई लिये ललचानेवाली आँखें और नीले और रूपवान शरीर और रथ बनकर सर्वत्र वे ही दिख रहे हैं ! श्रीराम भी कितने हैं ? अनेक हैं क्या ? । २७१

इन्नैयरा महळि रॅल्ला मिरैत्तनर् निरैत्तु मॊय्त्तार्
मुन्नैवरु नहर मूदूर् मुदियरु मिळैजर् तामुम्
अन्नैयवन् मेनि कण्डा रन्बिनुक् कॅल्लै काणार्
निन्नैविनर् मनत्ताल् वाया निहळ्न्ददु निहळ्त्त लुऱ्ऱाम् 272

इन्नैयर् आम् मकळिर् ऍल्लाम्–ऐसी सभी स्त्रियाँ; इरैत्तनर्–शोर मचाते हुए; निरैत्तु मॊय्त्तार्–दल के दल पिल पड़ीं; मुन्नैवरुम्–मुनिगण भी; नकरम् मुतु ऊर्–प्राचीन बड़े नगर के; मुतियरुम्–वृद्ध लोग; इळैजर् तामुम्–युवा भी; अन्नैयवन् मेनि कण्टार्–उनका रूप-सौंदर्य देखकर; अन्पितुक्कु–अनुराग की; ऍल्लै काणार्–सीमा नहीं देखते; मनत्ताल् निन्नैवित्तर्–अपने मन में अनेक तरह की भावनाएँ करने लगे; वायाल् निकळ्न्ततु–मुख खोलकर जो उन्होंने कहा; निकळ्त्तल् उऱ्ऱाम्–हम कहने लगे । २७२

इस रीति से स्त्रियाँ आनन्द का शोर मचाती हुई दल के दल पिल पड़ीं । इनकी बात छोड़िये । निर्लिप्त मुनिगण, प्राचीन उस अयोध्या नगर के साधू, वृद्ध लोग और स्वयं युवक भी उनका दिव्य रूप-लावण्य देखकर असीम भक्ति से भर गये । तब उनके मन में अनेक भाव उठे । हम उनको नहीं जान सकते । पर मुख खोलकर जिन भावों को उन्होंने शब्दों द्वारा प्रकट किया उनको हम कहने की कोशिश करेंगे । २७२

❀ उय्न्ददिव् वुलह मॅन्बा रूळिहाण् गिऱ्पा यॅन्बार्
मैन्दनी कोडि यॆङ्गळ् वाळ्क्क(य्)नाळ् यावु मॅन्बार्
ऐन्दवित् तरिदिऱ् चॅय्द तवमुनक् काह वॅन्बार्
पैन्दुळाय्त् तॅरिय लाय्क्के नल्विनै पयक्क वॅन्बार् 273

इ उलकम् उय्न्ततु ऍन्पार्–यह लोक तर गया, कहते; ऊळि काण्किऱ्पाय्–युगांत देखेंगे (आप) कहते; मैन्त–प्रभु; ऍङ्कळ् वाळ्क्कै नाळ् यावुम्–हमारी आयु के दिन सभी; नी कोटि–आप लीजिए; ऍन्पार्–कहते; ऐन्तु अवित्तु–पाँच (इन्द्रियों का) दमन करके; अरितिन् चॅय्त तवम्–कष्ट के साथ किया तप (फल); उनक्कु आक–आपको मिले; ऍन्पार्-कहते; पचु तुळाय् तॅरियलार्क्के–हरी तुलसीमाला पहननेवाले आपको; नल् वित्तै पयक्क–मेरे सब सुकृतों का फल मिले; ऍन्पार्–कहते । २७३

लोग नानाविध बातें कहते थे। "यह संसार दुखविमुक्त हो तर गया; वीर! आप युगांत देखें। तात! हमारे आयु के पूरे दिन आप ले लीजिए।" ये उनमें कुछ विचार थे। कुछ लोगों ने कहा— पाँचों इन्द्रियों का दमन करके जो हमने तप किये हैं, उनका सारा फल आपको मिल जाय। कुछ लोगों ने कहा कि तुलसीमाला-धारी! हमारे सभी सुकृतों का पुण्य आपका हो जाय। २७३

❀ उयररु ळॊण्ग णॊक्कुन् दामरै निऱत्तै यॊक्कुम्
पुयल्पॊऴि मेह मॆन्न पुण्णियञ् जॆय्द वॆन्बार्
शॆयलरुन् दवङ्गळ् शॆय्दिच् चॆम्मलैत् तन्द शॆल्वत्
तयरदऱ् कॆन्न कैम्मा ऱुडयम्यान् दक्क वॆन्बार् 274

उयर् अरुळ्–उच्च करुणामयी; ऑण् कण् ऑक्कुम् तामरै–उज्ज्वल आँखों से तुल्य कमल; निऱत्तै ऑक्कुम्–रंग से तुल्य; पुयल् पॊऴि मेकम्–जल बरसाते मेघ; ॲन्न पुण्णियम् चॆय्त–क्या ही पुण्य कर गये हैं; ॲन्पार्–कहते; चॆयल् अरु तवङ्कळ् चॆय्तु–करने में कठिन तपस्याएँ करके; इ चॆम्मलै तन्त–इन महानुभाव को (राजा के रूप में) जिन्होंने दिया; चॆल्वम् तयरतऱ्कु–उन धनी दशरथ का; तक्कतु–योग्य; ॲन्न कैम्माऱु–कौन सा प्रत्युपकार; याम् उटैयम्–हमारे पास हैं; ॲन्पार्–कहते। २७४

कुछ लोग कहते कि कमल और काले जलवर्षी मेघ ने क्या ही पुण्य किया है कि कमल उनकी श्रेष्ठ, करुणामयी तेजपूर्ण आँखों की और मेघ उनके वर्ण की उपमा पा सके! कुछ लोग कहते कि दशरथ ने कितना दुस्तर तप करके इन नायक को हमारे राजा के रूप में हमें दिया है। उनका प्रत्युपकार करने के लिए हमारे पास क्या है? । २७४

❀ वारण मऴैक्क वन्दु महरङ्गोळ् विडुत्त नेमि
नारण नॊक्कु मिन्द नम्बितन् करुणै यॆन्बार्
आरण मऱिद ऱॆऱ्ऱा वैयनै यणुहि नोक्किक्
कारण मिन्ऱि येयुङ् गण्गणीर् कलुऴ निऱ्पार् 275

इन्त नम्पि तन् करुणै–इन नायक की करुणा; वारणम् अऴैक्क–गजराज के पुकारने पर; वन्तु–तुरत पधारकर; मकरम् कोळ् विटुत्त–मकरग्राह से बचानेवाले; नेमि नारणन् ऑक्कुम्–चक्रधारी भगवान नारायण (की करुणा) के समान है; ॲन्पार्–कहते; आरणम् अऱितल् तॆऱ्ऱा–वेदों से भी अज्ञात; ऐयनै–प्रभु को; अणुकि नोक्कि–खूब तृप्ति भर देखकर; कारणम् इन्ऱियेयुम्–निर्हेतुक रूप से भी; कण्कळ् नीर् कलुऴ–आँखों को आँसू बहाने देते हुए; निऱ्पार्–अवश खड़े रहते। २७५

इनकी करुणा उन भगवान नारायण की करुणा (सम) ही है जिन्होंने गजराज के पुकारने पर सत्वर आकर उसे ग्राह से छुड़ाया था। कुछ लोग वेदों को भी अज्ञात उनके अति समीप आकर देखते और निर्हेतुक रीति से गद्गद् होकर आँसू बहाते। २७५

नीलमा मुहिलन् ऩाऩ्ऱ ऩिऱैविऩो डरिवु निऱ्क
शीलमार्क् कुण्डु कॅट्टेऩ् ऱेवरि ऩडङ्गु वाऩो
कालमाक् कणिक्कु नुण्मैक् कणक्कयुङ् गडन्दु निऩ्ऱ
मूलमाय् मुडिवि लाद मूर्त्तियिम् मुऩ्ब ऩॆऩ्बार् 276

नीलम् मा मुकिल् अऩ्ऩाऩ् तऩ्–नीले बड़े मेघसम इनकी; निऱैविऩोटु–गम्भीरता के साथ; अऱिवुम्–बुद्धि; निऱ्क–एक ओर रहे; चीलम् आर्क्कु उण्टु–इनका-सा शील (सदाचार) किसके पास है; इ मुऩ्पऩ–ये मुखिया; तेवरिऩ् अटङ्कुवाऩो–देवों के अन्दर आयँगे; कालम् आक कणिक्कुम्–काल के माप की; नुण्मै कणक्कैयुम्–सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणना को भी; कटनतु निऩ्ऱ–पार कर रहनेवाले; मूलम् आय्–मूलवस्तु होकर; मुटिवु इल्लात मूर्त्तिये–अनन्त मूर्ति ही; कॅट्टेऩ्–(अब तक बिना जाने) नष्ट हो गया; ॲऩ्पार्–कहते। २७६

वड़े, नीले मेघ के समान रंग वाले इनकी गम्भीरता और मेधा की वात छोड़ दीजिए। इनका-सा शील, सदाचार किसके पास है! क्या ये अग्रणी देवों की श्रेणी के अन्दर गिने जा सकते हैं? नहीं। काल के सूक्ष्मातिसूक्ष्म माप से भी परे रहनेवाले (कालातीत) मूलतत्व हैं! अनंत परब्रह्म हैं। इतने दिन तक मैंने यह नहीं जाना। जन्म व्यर्थ कर दिया —ऐसा कुछ लोग कहते। २७६

❀ आर्हलि यहऴ्न्दोर् गङ्गै यवऩियिऱ् ऱन्दोर् मुन्दैप्
पोर्हॅऴु देवर्क् काहि यशुररैप् पॊरुदु वॆऩ्ऱोर्
पेर्हॅऴु शिऱप्पिऩ् वन्द पॅरुम्बुहऴ् निऱ्प दैयऩ्
तार्हॅऴु तिरडो डन्द पुहऴिनैत् तऴुवि यॆऩ्बार् 277

मुन्तै–पहले; आर् कलि अकऴ्न्तोर्–सागर जिन्होंने खना वे सगरपुत्र; कङ्कै अवऩियिल् तन्तोर्–गंगा जो भूमि पर लाये वे (भगीरथ); पॊर् कॅऴु तेवर्क्कु आकि–युद्ध-रत देवों के सहायक बनकर; पॊरुतु–घोर समर करके; अचुररै वॆऩ्ऱोर्–असुरों पर जिन्होंने विजय पाई, वे ककुत्स्थ मुचुकुंद आदि; पेर् कॅऴु चिऱप्पिऩ् वन्त–इनकी गौरवपूर्ण श्रेष्ठता के कारण मिली; पॅरु पुकऴ्–बड़ी कीर्ति; निऱ्पतु–स्थिर रहेगी; ऐयऩ्–प्रभु श्रीराम के; तार् कॅऴु–मालाशोभित; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों द्वारा; तन्त–अर्जित; पुकऴिऩै तऴुवि–कीर्ति के साथ मिलकर ही; ॲऩ्पार्–कहते। २७७

पहले इनके कुल में पैदा होकर सगरपुत्रों ने सागर निर्मित करके, भगीरथ ने गंगाजी को अवनि में ला करके, राजा ककुत्स्थ, मुचुकुन्द जैसों ने युद्धग्रस्त देवों की सहायता के लिए जाकर असुरों पर विजय पा करके कीर्ति अर्जित की थी। वह सारी कीर्ति खड़ी रहेगी इनके माला से शोभित पुष्ट कन्धों द्वारा अर्जित कीर्ति पर ही! वीरों के वंश में वीर पैदा हो तभी कुल की वीरता की कीर्ति टिक सकेगी। २७७

शन्दमिवै तावित्मणि यारमिवै यावुम्
शिन्दुरमु हङ्गिळर् तॅरिन्दमद वेळम्
पन्दिहळ् वयप्परि पशुम्बौनणि यावुम्
मैन्दवरि योर्हॉळ वळङ्गॅन्न निरैप्पार् 278

मैन्त–वीर कुमार; इवै चन्तम्–ये चन्दन के लेप; ता इल् मणि आरम्–निर्मल रत्नहार; इवै यावुम्–ये सब; चिन्तुरम् मुकम् किळर्–सिन्दूर के तिलकों के साथ शोभायमान रहनेवाले; तॅरिन्त–चुने हुए; मतम् वेळम् पन्तिकळ्–मत्तगज-पंक्तियाँ; वयम् परि–विजयशील अश्व; पचुमै पौन् अणि–शुद्ध स्वर्ण के आभरण; यावुम्–इन सबको; वरियोर् कॉळ–अभावग्रस्त लोग ले लें उनको; वळङ्कु–देने की कृपा कीजिए; ॲन–यह कहकर; निरैप्पार्–कतार में ला रख देते । २७८

कुछ लोग कहते कि वीर कुमार ! देखिए— ये चन्दन और सुगन्ध-पदार्थों के लेप हैं; ये निर्दोष रत्नहार हैं; ये चुने हुए मत्त हाथी हैं जिनके भाल पर सिंदूर के तिलक लगाये गये हैं। ये विजयी अश्व हैं। ये स्वर्णाभरण हैं। इन सबको आप लीजिये और अपने हाथों से अभावग्रस्त याचकों को दे दीजिये। ऐसा कहते हुए उनको लाकर सामने पंक्तियों में छोड़ देते । २७८

❀ मिन्बौरुवु तेरिन्मिशै वीरन्वरु पौळ्दिल्
तन्बौरुविल् कन्रुतनि ताविवरल् कण्डाङ्
गन्बुरुहु शिन्दयोडु मावुरुहु मापोल्
ॲन्बुरुह नॅञ्जुरुह यारुरुह हिल्लार् 279

वीरन्–वीर; मिन् पौरुवु तेरिन् मिचै–बिजली-सम रथ पर; वरु पोळ्तिल्–जब आ रहे थे, तब; तन् पौरुविल् कन्रु–अपना अनुपम बछड़ा; तनि तावि वरल् कण्ट आङ्कु–अकेला चौकड़ी भरता आता (है, उसे) देख; आ–गाय; अन्पु उरुकु चिन्तैयॉटुम्–प्रेमार्द्र मन के साथ; उरुकुम् आऱु पोल्–द्रवीभूत होती जैसे; नॅञ्चु उरुक–मन के पिघलते; ॲन्पु उरुक–हड्डी के गलते; उरुककिल्लार्–न पिघलनेवाले; यार्–कौन । २७९

श्रीराम जब बिजली के समान चमकते हुए रथ पर आ रहे थे तब उनको देखकर दर्शकों की स्थिति उस गाय की-सी हो गयी जो अपने बछड़े को चौकड़ी भरते आते हुए देखती हो। उनका मन प्रेमार्द्र हो गया। हड्डी भी पिघल गयी। तब जो न पिघले वे कौन या कहाँ रहे ? कोई वहाँ नहीं रहा जो पूर्णरूप से द्रवीभूत न हो गया ! । २७९

शत्तिर निळर्रनिमिर् तानयॊडु नाना
अत्तिर निळर्रवरु ळोडवनि याळ्वार्
पुत्तिर रिनिप्पॅरुदल् पुल्लिदॅन्न नल्लोर्
शित्तिर मॅनत्तनि तिहैत्तुरुहि निर्पार् 280

नल्लोर्–सज्जन; चत्तिरम् निऴऱ्ऱ–छत्रों की छाया देते; निमिर् तानैयोटु–बड़ी सेना के साथ; नाना अत्तिरम् निऴऱ्ऱ–विविध अस्त्रों के कांति बिखेरते; अरुळोटु–कृपा के साथ; अवनि आळ्वार्–भूमि का पालन करनेवाले; इनि–श्रीराम के बाद; पुत्तिरर् पॅऱुतल्–पुत्र पैदा करना; पुल्लितु ॲन्न–लघुता है (व्यर्थ है); ॲन्न–यह कहते हुए; तनि—अलग-अलग; तिकैत्तु–चकित; उरुकि–पिघलकर; चित्तिरम् ॲन्न–चित्र के समान; निऱ्पार्–निष्क्रिय खड़े रहे। २८०

कई सज्जन कहते कि श्वेत छत्र और बड़ी सेना रखनेवाले उन राजा लोगों का, जो विविध अस्त्र चमकाते हुए कृपा के साथ भूमि का पालन करते हैं, अब पुत्र पैदा करना निरर्थक है (क्योंकि कोई भी पुत्र श्रीराम के समान गौरव बढ़ानेवाला नहीं होगा)। वे लोग अलग-अलग, श्रीराम के अतिशय सौन्दर्य से चकित, मुग्ध और द्रवणशील होकर चित्रसम खड़े रहते। २८०

❀ कार्मिन्नोडु लायदॅन्न नूल्कन्नलु मार्बन्
तेर्मिशैनम् वायिल्कडि देहुदल्शॅय् यामल्
नेर्मिनिमिर् कोडिमणि यालुनिदि यालुम्
तूर्मिन्नॅडु वीदियिनै यॅन्ऱुशॊरि वारुम् 281

कार् मिन्नोटु उलायतु ॲन्न–मेघ बिजली-सह सैर करता हो जैसे; नूल् कन्नलुम् मार्पन्–यज्ञोपवीत-शोभित वक्ष वाले श्रीराम; तेर्मिचै–रथ पर; नम् वायिल् कटितु एकुतल् चॅय्यामल्–हमारे द्वार को जल्दी पार कर न जाएँ, इस तरह; नेर्मिन्–रथ के सामने रहिए (रोकिये); निमिर् कोटि मणियालुम्–बहुत अधिक रत्नों से; नितियालुम्–स्वर्ण से; नॅटुवीतियिनै तूर्मिन्–लम्बी वीथी को पाट दीजिये; ॲन्ऱु–ऐसा कहते हुए; चॊरिवारुम्–उड़ेलते हैं। २८१

जैसे मेघ बिजली के साथ संचार करता हो उस तरह उपवीतधारी वक्ष वाले श्रीराम अपने रथ पर बैठकर हमारे द्वार के सामने से आगे जाने न पावें! रथ के सामने जाकर खड़े हो जाइए। और अधिक संख्या में रत्न और स्वर्ण डालकर रास्ता दुर्गम बना दीजिये। ऐसा कहते हुए लोग वे वस्तुएँ लाकर मार्ग पर डाल रहे थे। ऐसे लोग कुछ थे। २८१

तायहयिल् वळर्न्दिलन् वळर्त्तदु तवत्ताल्
केहयन् मडन्दैकिळर् ञालमिव नाळ
ईहयि लुवन्दन ळियऱ्कयिदु वॆन्ऱाल्
तोहयवळ् पेरुवहै शॊल्लवरि दॆन्बार् 282

ताय् कैयिल् वळर्न्तिलन्–अपनी माता के पास पले नहीं; वळर्त्ततु–पालनेवाली; तवत्ताल्–पूर्वकृत तपस्या के फल से; केकयन् मटन्तै–केकयराज-तनया; किळर् ञालम्–विभवपूर्ण इस भूमि को; इवन् आळ ईकैयिल्–इनके पास शासन करने के लिए देते समय; उवन्तनळ्–हर्षित हुईं; इयऱ्कै इतु ॲन्ऱाल्–उनकी प्रकृति यह

है तो; तोकै अवळ्—मोर-सी छटा वाली उनका; पेर् उवकै—बड़ा आनन्द; चौल्ल अरितु—वर्णनातीत है; ॲन्पार्—कहते। २८२

कुछ लोग कहते हैं कि ये श्रीराम माता कौसल्या के हाथ नहीं पले थे। कैकेयी ने उस भाग्य के लिए तपस्या की थी। उन्हींने इनको पाला था। इसलिए चक्रवर्ती श्रीराम को राज्य पालन के लिए दे देंगे —यह सुनकर उन्हें हर्ष हुआ। यही उनकी प्रकृति सच्ची है तो मयूरछटा उनके मन का बड़ा आनन्द वर्णन करना कठिन है। २८२

❀ पावमु मरुन्दुयरुम् वेर्पऱियु मॅन्बार्
पूवलय मिन्ऱुमुद लन्ऱुपॉदु वॅन्बार्
तेवर्पहै युळ्ळवुमिव् वळ्ळऱॅरु मॅन्बार्
एवल्शॅयु मन्नर्तवम् यावदुहॉ लॅन्बार् 283

पावमुम्–(इनके दर्शन से) पाप; अरु तुयरुम्–और कठिन क्लेश; वेर् परियुम्–निर्मूल हो जायँगे; ॲन्पार्–कहते; पू वलयम्–भूमण्डल; इन्ऱु मुतल्–आज से; पॉतु अन्ऱु–आम सम्पत्ति नहीं होगी; ॲन्पार्–कहते; इ वळ्ळल्–ये प्रभु; तेवर् पकै उळ्ळवुम् तॅरुम्–देवों के शत्रु जो हैं, उनका नाश करेंगे; ॲन्पार्–कहते; एवल् चॅयुम् मन्नर्–इनके आज्ञाकारी राजाओं का; तवम्–सुकृत (पुण्य); यावतु कॉल्–कैसा (बड़ा) है; ॲन्पार्–कहते। २८३

कुछ लोग कहते हैं कि इनके दर्शन से पाप और कठोर दुख निर्मूल हो जायँगे। अब भूमि इन्हीं की होकर रहेगी, कोई दूसरा उस पर अधिकार नहीं जता सकेगा। ये प्रभु देवों के सारे शत्रुओं का नाश कर देंगे। और कुछ लोग कहते कि इनके मातहत रहनेवाले राजाओं ने कैसी ही उत्कृष्ट तपस्या की है कि उन्हें इनके आज्ञाकारी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है! । २८३

❀ आण्डिन्नय रायिन्नय कूऱवडल् वीरन्
तूण्डुपुर विप्पॉरुविल् शुन्दर मणित्तेर्
माण्ड कॉडि माडनॅडु वीदिमऱै यप्पोय्प्
पूण्डपुहळ् मन्नननुऱै कोयिलवै पुक्कान् 284

आण्टु–वहाँ; इत्तैयर् आय्–ऐसी स्थिति वाले बनकर; इत्तैय कूऱ–यह कहते थे, तब; अटल् वीरन्–विजयी वीर; तूण्टु पुरवि–त्वरितगामी अश्वों के; पॉरु इल्–उपमारहित; चुन्तरम्–सुन्दर; मणि तेर्–घण्टियाँ-बँधे रथ पर; माण्ट कॉटि माटम्–सम्मान के प्रदर्शक, पताकाओं से युक्त सौधों वाले; नॅटु वीति–राजमार्ग; मऱैय–आँखों से ओझल होने देते हुए; पोय्–जाकर; पूण्ट पुकळ्–(आभरण के समान) पहनी हुई कीर्ति वाले; मन्नन् उऱै–चक्रवर्ती के रहने के; कोयिल्–मन्दिर के; अवै पुक्कान्–सभा-मण्डप में पहुँचे। २८४

मार्ग में लोग ऐसी स्थिति में पड़कर ऐसी बातें कर रहे थे।

विजयी वीर श्रीराम त्वरगामी अश्वों के जुते और घन्टियों से युक्त उन्नत रथ पर सम्मान-प्रदर्शक पताकाओं वाले वड़े सौधों के मार्ग शीघ्र तय करते हुए आगे निकल गये। राजमार्ग पीछे ओझल हो गया। वे यशोभूषित चक्रवर्ती दशरथ के महल के अन्दर सभामंडप में पहुँचे। २८४

आङ्गुवन् दडैन्द वण्ण लाशयिन् कवरि वीशप्
पूङ्गुऴन् महळि राडुम् पुदुक्कळि याट्ट नोक्कि
वीङ्गिरुङ् गादल् काट्टि विरियरि चुमन्द पीडत्
तोङ्गिय वुवहै योडु मरशन्वीऱ् ऱिरुप्पक् काणान् 285

आङ्कु वन्तु अटैन्त अण्णल्–वहाँ जो आ पहुँचे उन प्रभु ने; आचै इन् कवरि वीच–स्वर्ण-डण्ड के चामर डुले; पू कुऴल् मकळिर् आटुम्–पुष्पसज्जित कुंतल की नर्तकियाँ जो नाचती हैं उस; पुतु कळि आट्टम् नोक्कि–नवीन उल्लासदायी नाच देखते हुए; वीङ्किरु कातल् काट्टि–(श्रीराम के आगमन पर) वड़ा प्रेम दिखाकर; ओङ्किय उवकै योटुम्–बढ़ते हुए हर्ष के साथ; अरचन्–राजा को; विरि अरि चुमन्त पीटत्तु–विशाल सिंह (धृत) आसन पर; वीऱ्ऱिरुप्प–विराजमान; काणान्–नहीं देखा। २८५

वहाँ पहुँचकर उन्होंने दशरथजी को नहीं देखा। वे होते तो स्वर्ण-डण्ड के चँवर डुलते होते। पुष्पालंकृत केश वाली नर्तकियों का नवीन और चित्ताकर्षक नाच होता रहता। वे श्रीराम के आगमन पर बड़े प्रेम और आनन्द का प्रदर्शन करते। वे नहीं थे और सिंहासन रिक्त था। श्रीराम ने सिंहासन पर राजा को विराजमान नहीं देखा। २८५

वेत्तवै मुन्निव रोडुम् विरुप्पुरक् कळिक्कु मॅय्म्मै
एत्तवै यिशैक्कुञ् जॅम्बॊन् मण्डबत् तिन्निदि नॆय्दान्
ओत्तवै युलहत् तॆङ्गु मुऴ्ळवै युणर्न्दा रुऴ्ळम्
पूत्तवै वडिवै यॊप्पान् शिऱ्ऱवै कोयिल् पुक्कान् 286

ओत्तु अवै–वेदसमूहों को; उलकत्तु ऍङ्कुम्–संसार भर में; उऴ्ळवै–प्राप्त रहनेवाले; उणर्न्तार्–जाननेवालों के; उऴ्ळम् पूत्तवै–मन में भावित; वटिवै–रूपों को; ऑप्पान्–धरनेवाले वे; वेन्तु अवै–राजमण्डली; मुन्निवरोटुम्–मुनियों के साथ; विरुप्पु उऱ–इच्छा के साथ; कळिक्कुम्–(जहाँ) हुलसेंगे; मॅय्म्मै एत्तु–सच्ची कीर्ति के; अवै इचैक्कुम्–गान गाये जायँगे; चॅम् पॊन् मण्टपत्तु–उस चोखे स्वर्ण से निर्मित मण्डप में; ऍय्तान्–न घुसकर; चिऱ्ऱवै कोयिल् पुक्कान्–छोटी माता के महल में गये। २८६

श्रीराम वेदसमूहों और संसार भर में प्रचार में रहनेवाले अन्य सभी शास्त्रों के ज्ञाता लोगों को, "जिन्ह की रही भावना जैसी", वैसे रूप में दर्शन देनेवाले थे। वे उस श्रेष्ठ स्वर्णमंडप में नहीं प्रविष्ट हुए, जहाँ उनके जाने पर यह आशा की जा सकती थी कि वहाँ एकत्रित राजदल मुनिवृंदों के साथ (मुकुट धारणोत्सव देखकर) प्रत्याशित आनंद का अनुभव करते

और स्वयं श्रीराम की यथार्थ महिमा गायी जाती। पर वे अपनी छोटी (सौतेली) माता कैकेयी के महल में प्रविष्ट हुए। २८६

पुक्कवऩ् ऱऩ्ऩै नोक्किप् पुरवलर् मुऩिव रॅल्लाम्
तक्कदे निऩैन्दाऩ् ऱादै तामरैच् चरणञ् जूडित्
तिक्किऩै निमिर्त्त कोलच् चॅल्वऩे शॅम्बॊऩ् चोदि
मिक्कुयर् महुडञ् जूट्टच् चूडुदल् विळुमि दॅऩ्ऱार् 287

पुक्कवऩ् तऩ्ऩै नोक्कि–(वहाँ) प्रविष्ट उनको देखकर; पुरवलर्–(मण्डप में रहे) राजा लोग; मुऩिवर्–मुनिगण; ॲल्लाम्–और अन्य सभी; तक्कते निऩैन्ताऩ्–उचित ही सोचा; तातै तामरै चरणम् चूटि–पिता के कमल-चरण (सिर पर) धारण करके; तिक्किऩै निमिर्त्त कोल्–दिशाओं को सीधा करनेवाले (राज) दण्डधर; अ चॅल्वऩे–उन चक्रवर्ती के; चॅम् पॊऩ्–अच्छे स्वर्ण के; चोति मिक्कु–अधिक कांतिमय; उयर् मुकुटम्–उन्नत किरीट को; चूट्ट–पहनाने पर; चूटुतल्–पहन लेना; विळुमितु–श्रेयस्कर है; ॲऩ्ऱार्–यह बोले। २८७

कैकेयी के महल में प्रवेश करनेवाले उनको देखकर सभामंडप में जो रहे उन राजाओं, मुनियों और अन्य लोगों ने यों सोचा। ठीक है। वे उचित कार्य ही कर रहे हैं। वे पहले पिता के चरण-कमलों पर नमस्कार करना चाहते हैं। बाद ही दशरथ द्वारा, जिनका राजदण्ड सभी दिशाओं में सीधापन (न्याय) स्थापित कर चुका है, अच्छे स्वर्ण के कांतिबहुल उन्नत किरीट का धारण किया जाना ही उचित और श्रेयस्कर है। २८७

आयऩ् निहळुम् वेलै यण्णलु मयर्न्दु तेऱात्
तूयव ऩिरुन्द शूळल् तुरुविऩऩ् वरुद नोक्कि
नायह ऩुरैयाऩ् वायाल् नाऩिदु पहर्वे ऩॅऩ्ऩात्
तायॅऩ निऩैवाऩ् मुऩ्ऩे कूऱ्ऱॅऩत् तमियळ् वन्दाळ् 288

आयऩ् निकळुम् वेलै–(वहाँ मण्डप में) ऐसा होता रहा, तब; अण्णलुम्–पुरुष-श्रेष्ठ; अयर्न्तु तेऱा–बेहोशी से जो सँभले नहीं थे; तूयवऩ्–उन पवित्र दशरथ के; इरुन्त चूळल्–रहने के स्थान को; तुरुवितऩ् वरुतल् नोक्कि–ढूँढ़ते हुए आते हैं, यह देखकर; नायकऩ् वायाल् इतु उरैयाऩ्–नायक अपने मुँह से यह नहीं कहेंगे; नाऩ् पकर्वेऩ्–मैं कहूँगी; ॲऩ्ऩा–यह विचार करके; ताय् ॲऩ निऩैवाऩ् मुऩ्ऩे–माता समझनेवाले (श्रीराम) के सामने; कूऱ्ऱु ॲऩ–मृत्यु के समान; तमियळ् वन्ताळ्–एकाकिनी आईं। २८८

वहाँ लोग ये बातें कर रहे थे। प्रभु राम को कैकेयी ने देख लिया और जान लिया कि वे दशरथ को, जो अभी होश में नहीं आये थे, ढूँढ़ते हुए आ रहे हैं। वे सोचने लगीं— राजा अपने मुख से यह बात नहीं कहेंगे। उन्होंने निश्चय किया कि मैं स्वयं श्रीराम से बात कह दूँगी। यह संकल्प लेकर वे, उन राम के सामने जो इनको अपनी माता ही समझ रहे हैं, यम के समान एकाकिनी बनकर आईं। २८८

❀ वन्दव डन्ऩैच् चॅन्ऩि मण्णुऱ वणङ्गि वाशच्
चिन्दुरप् पवळच् चॅव्वाय् शॅङ्गयिऱ् पुदैत्तु मऱ्ऱैच्
चुन्दरत् तडक्कै तानै मडक्कुऱत् तुवण्डु निन्ऱान्
अन्दिवन् दडैन्द तायैक् कण्डवात् कन्ऱि ऩन्ऩान् 289

अन्ति वन्तु अटैन्त–सायंकाल आकर प्राप्त हुई; तायै कण्ट–माता को देखकर; आन् कन्ऱु अन्ऩान्–गाय के बछड़े-से वे; वन्तवळ् तन्ऩै–आगत कैकेयी को; चॅन्ऩि मण् उऱ–सिर भूमि पर लगाये; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाचम्–सुवासपूर्ण; चिन्तुरम् पवळम्–सिन्दूर के समान; चॅंवाय्–लाल मुँह को; चॅं कैयिन् पुतैत्तु–ललाई लिए (ललाम) हाथ से ढँककर; मऱ्ऱै चुन्तरम् तट कै–अन्य सुन्दर विशाल हाथ से; तानै मटक्कुऱ–वस्त्र को मोड़ लेकर; तुवण्टु निन्ऱान्–विनयशील मुद्रा में खड़े हुए। २८९

जब कैकेयी सामने आई तब श्रीराम ने भूमि पर सिर लगाकर दण्डवत की। शाम के समय माता गाय को देखकर बछड़े की जैसी स्थिति होती है वैसे मातृप्रेम से वे भर गये। उन्होंने विनयसूचक शिष्टाचार की मुद्रायें धारण कीं— अपने एक ललाई लिये ललाम हाथ को अपने मुख के सामने रखा। दूसरे हाथ से वस्त्र को मोड़कर पकड़ा। फिर वे झुके हुए खड़े रहे। २८९

❀ निन्ऱवत् ऱन्ऩै नोक्कि यिरुम्बिना लियन्ऱ नॅञ्जिऱ्
कॊन्ऱुऴल् कूऱ्ऱ मॆन्ऩुम् बॆयरिन्ऱिक् कॊडुमै पूण्डाळ्
इन्ऱॆनक् कुणर्त्त लाव देयदे यॅन्ऩि ऩाहुम्
ऒन्ऱुनक् कुन्दै मैन्द वुरैत्तदो रुरैयुण् डॆन्ऱाळ् 290

इरुम्पिताल् इयन्ऱ नॅञ्चिन्–लौहनिर्मित मन के साथ; कॊन्ऱु उऴल्–जीवों को मारते फिरनेवाली; कूऱ्ऱम् ऍन्ऩुम् पॅयर् इन्ऱि–मृत्यु का नाम धरे बिना ही; कॊटुमै पूण्टाळ्–(उसकी) क्रूरता रखनेवाली; निन्ऱवन् तन्ऩै नोक्कि–स्थित उनको देखकर; मैन्त–पुत्र; ऒन्ऱु उनक्कु–योग्य तुम्हें; उन्तै उरैत्ततु–तुम्हारे बाप का कहा हुआ; ओर् उरै–एक कथन; उण्टु–है; इन्ऱु–अब; उनक्कु उणर्त्तल् आवतु–तुमसे वह बताने का काम; एयते ऍन्ऩिन्–(मेरे) योग्य (समझते) हो तो; आकुम्–(बताने का काम) मुझसे होगा; ऍन्ऱाळ्–बोलीं। २९०

ऐसी विनयमुद्रा में स्थित उनको कैकेयी ने देखा। कैकेयी में यम की-सी, जो लौहदिल के साथ जीवों को मारकर फिर रहा है, क्रूरता थी। हाँ, यम का नाम धारण किये बिना ही उन्होंने यम की क्रूरता अपना ली थी। उन्होंने कहा— वत्स! आज्ञाकारी योग्य तुम्हें जो तुम्हारे पिता बताना चाहते थे वह एक बात है। अगर तुम मेरा कहना उचित मानो तो मुझसे उसका कथन हो सकता है। (मैं कहूँगी।)। २९०

❀ ऍन्दये येव नीरे युरैशॅय वियैन्द दुण्डेल्
उयन्दर्त्त ऩडियेऩ् ऩॅत्त्तिर् पिऱन्दव रुळरो वाळि
वन्ददॅन् ऱवत्ति ऩाय वरुपयन् मऱ्ऱॊन् ऱुण्डो
तन्दयुन् दायु नीरे तलैनित्ऱेन् पणिमि ऩॅन्ऱान् 291

ऍन्तैये एव–मेरे पितृदेव की आज्ञा; नीरे उरै चॅय–आप ही सुनायें; इयैन्ततु उण्टेल्–इसका संयोग हुआ तो; अटियेन् उयन्ततॅन्–मैं तर गया; पिऱन्तवर्–सफलजन्मा; ऍन्त्तिन् उळरो–मेरे समान कोई होंगे (नहीं); ऍन् तवत्तिन् आय पयन् वन्ततु–मेरे तप का फल अब मिलने को हुआ है; वरुपयन् मऱ्ऱॊन्ऱु उण्टो–इससे बढ़कर मिलनेवाला (उत्कृष्ट) फल हो सकता है क्या; तन्तैयुम् तायुम् नीरे–पिता और माता आप ही हैं; तलै नित्ऱेन्–शिरोधार्य करूँगा; पणिमिन्–आज्ञा कीजिए; ऍन्ऱान्–कहा। २६१

श्रीराम ने उत्तर में बड़ी विनय के साथ कहा कि मेरे पितृदेव आज्ञा दें और वह आज्ञा आप मुझे सुनावें —ऐसा एक संयोग हो गया तो मैं तर गया। मुझसे बढ़कर सफलजन्मा कौन हो सकता है? मेरे पूर्वकृत तपों का यह बहुत ही शुभ फल अब मिल गया। इससे बढ़कर कौन सा सुफल मिलनेवाला है? अब आप ही पिता हैं, माता भी। आपकी आज्ञा को शिरोधार्य मानकर उसके अनुसार चलूँगा। अब आप आज्ञा सुनाइये। २९१

❀ आऴिशू ऴुलह मॅल्लाम् बरदत्ते याळ नीपोय्त्
ताऴिरुञ् जडैह डाङ्गित् ताङ्गरुन् दवमेऱ् कॊण्डु
पूऴिवॅङ् गाऩ नण्णिप् पुण्णियत् तुऱैह ळाडि
एऴिरण् डाण्डिऩ् वावॅन् ऱियम्बिऩ ऩरश ऩॅन्ऱाळ् 292

आऴि चूऴ् उलकम् ऍल्लाम्–समुद्रवलयित भूमि सब; परतत्ते आळ–भरत के ही राज करते; नी पोय्–तुम जाकर; ताऴ् इरु चटैकळ् ताङ्कि–लम्बी, बड़ी जटाएँ धारण करके; ताङ्क अरु–दुर्वह; तवम्–तपस्या; मेऱ् कॊण्टु–व्रत लेकर; पूऴि वॅम् काऩम् नण्णि–धूलि-भरा, तप्त जंगल जाकर; पुण्णियम् तुऱैकळ् आटि–पुण्य-सलिलों में स्नान करके; एऴ् इरण्टु आण्टिन् वा–दो के सात (चौदह) सालों में आ जाओ; ऍन्ऱु–ऐसा; अरचन् इयम्पितन्–राजा ने कहा; ऍन्ऱाळ्–कहा। २६२

कैकेयी ने कहा— सागर की घिरी इस सारी वसुन्धरा पर भरत का ही अधिकार होगा। तुम लम्बी, बड़ी जटा बना लो, दुर्वह तप का व्रत लो, धूलि भरे जंगल जाओ, पुण्यसलिलों में स्नान किया करो, और चौदह साल में लौट आओ। यही राजा ने कहा है। २९२

❀ इप्पॊऴु दॅम्म ऩोरा लियम्बुव दॅळिदो यारुम्
शॅप्परुङ् गुणत्ति रामऩ् तिरुमुहच् चॅव्वि नोक्किऩ्

ऑप्पदे मुऩ्बु पिऩ्बव् वाशह मुणरक् केट्ट
अप्पॊऴु दलर्न्द शॅन्दा मरैयिऩै वॅऩ्ऱ दम्मा 293

यारुम्–कोई भी (भाषा पर अधिकार रखनेवाले); चॅप्प अरुम्–वर्णन न कर सके; कुणत्तु इरामऩ्–ऐसे गुण वाले श्रीराम के; तिरु मुकम् चॅव्वि नोक्किऩ्–श्रीमुख की शोभा देखने पर; मुऩ्पु–(कैकेयी-कथन से) पूर्व; पिऩ्पुम्–बाद भी; ऑप्पते–समान था (कमल); अ वाचकम्–वह वचन; उणर–समझते हुए; केट्ट अप्पॊऴुतु–जब सुना तब; अलर्न्त चॅन्तामरैयिऩै–विकसित लाल कमल को; वॅऩ्ऱतु–जीत गया (शोभा में बढ़ गया)। २६३

श्रीराम पर इसका प्रभाव कैसे पड़ा ? यह सुनकर श्रीराम का मुखमंडल चमक उठा। श्रीराम किसी से भी अवर्णनीय श्रेष्ठ गुण वाले थे। उनके मुख की दिव्य शोभा देखिए। कैकेयी के वचन को सुनने के पहले और सुनकर जब जाने लगे उसके बाद भी उनके मुख की लाल कमल समता कर सकता था। पर जब उन्होंने कैकेयी का वचन खूब ध्यान देकर सुना और समझा तब उनका मुख सद्यविकसित कमल पर जीत पा गया। वह आज्ञा सुनकर श्रीराम अत्यन्त आनन्दपूरित हो गये। २९३

तॅरुळुडै मऩत्तु मऩ्ऩ ऩेवलिऱ् ऱिऱम्ब वञ्जि
इरुळुडै युलहन् दाङ्गु मिऩ्ऩलुक् किशैन्दु निऩ्ऱाऩ्
उरुळुडैच् चहडम् बूट्टि युडयव ऩुय्त्त कारे
ऱरुळुडै यॊरुव ऩीक्क वप्पिणि यविऴ्न्द दॊत्ताऩ् 294

तॅरुळ् उटै(य) मऩत्तु–संशय-विमुक्त (विशुद्ध) मन वाले; मऩ्ऩऩ् एवलिऩ्–चक्रवर्ती की आज्ञा को; तिऱम्प अञ्चि–उल्लंघन करने से डरकर; इरुळ् उटैय–अज्ञानांधकार युक्त; उलकम् ताङ्कुम् इऩ्ऩलुक्कु–लोकभरण के संकट सहने के लिए; इचैन्तु निऩ्ऱाऩ्–सम्मत रहे; उरुळ् उटैय–पहियेदार; चकटम् पूट्टि–छकड़े से जोतकर; उटैयवऩ् उय्त्त–स्वामी का चलाया गया; कार् एऱु–काला बैल; अरुळ् उटै(य) ऑरुवऩ्–करुणामय किसी के द्वारा; अ पिणि नीक्क–वह बन्धन खोल देने पर; अविऴ्न्ततु ऑत्ताऩ्–जो मुक्त हो गया उस बैल के समान हो गये। २६४

वे कितने उल्लसित हुए ? पहले वे स्वच्छ मन वाले चक्रवर्ती की आज्ञा का उल्लंघन करने से डरे। इसीलिए वे अज्ञानांधकार-मग्न भूमि का भार वहन करने का दुख उठाने के लिए सम्मत हो गये थे। अब वे उस काले बैल के समान अनुभव करने लगे जिसको उसके स्वामी ने एक बड़े छकड़े में जोतकर उस छकड़े पर बड़ा भार लाद दिया था और जिसको किसी दयावान मनुष्य ने बंधन काटकर छकड़े से मुक्त कर दिया। २९४

मऩ्ऩवऩ् पणियऩ् ऱाहि ऩुम्बणि मऱुप्प ऩोवॅऩ्
पिऩ्ऩवऩ् पॅऱ्ऱ शॅल्व मडियऩेऩ् पॅऱ्ऱ दऩ्ऱो

ऍऩ्ऩिदि नुरुदि यप्पा लिप्पणि तलैमेर् कॊण्डेऩ्
मिऩ्ऩॊळिर् काऩ मिऩ्ऱे पोहिऩ्ऱेऩ् विडैयुङ् गॊण्डेऩ् 295

मऩ्ऩवऩ् पणि अऩ्ऱु आकिल्–राजा का काम (हुक्म) नहीं हो तो (भी); नुम् पणि–आपकी आज्ञा; मऱुप्पऩो–मैं इनकार करूँगा क्या; ऍऩ् पिऩ्ऩवऩ् पॆऱ्ऱ चॆल्वम्–मेरे बाद के आये (कनिष्ठ) का प्राप्त विभव; अटियेऩ् पॆऱ्ऱतऩ्ऱो–मुझ दास का प्राप्त नहीं है क्या; ऍऩ् इऩि उऱुति अप्पाल्–कौन सा पुरुषार्थ है, इससे बढ़कर; इ पणि तलै मेल् कॊण्टेऩ्–यह आज्ञा सिर पर धर ली; मिऩ् ऒळिर् काऩम्–बिजली के समान जहाँ धूप रहेगी, उस जंगल को; इऩ्ऱे पोकिऩ्ऱेऩ्–आज ही जा रहा हूँ; विटैयुम् कॊण्टेऩ्–अब आपसे अनुमति लेता हूँ (अनुमति दीजिए)। २९५

(श्रीराम ने कहा।) चक्रवर्ती की आज्ञा नहीं हो, और यह आपकी ही आज्ञा हो तो मैं क्या उससे इनकार करूँगा? मेरे छोटे भाई का प्राप्त विभव क्या मेरा नहीं है? इस सौभाग्य से बढ़कर कौन सा पुरुषार्थ मुझे मिलेगा? अभी यह आज्ञा मैंने सिर पर धारण कर ली! उस जंगल में जाने को अभी निकला जिसमें बिजली के समान धूप पड़ती रहती है। आपसे विदा लेता हूँ। २९५

4. नहर् नीङ्गु पडलम् (नगर-निष्क्रमण पटल)

❀ ऍऩ्ऱुकॊण् डिऩैय कूऱि यडितॊऴु दिऱैञ्जि मीट्टुम्
तऩ्ऱुणैत् तादै पाद मत्तिशै नोक्कित् ताऴ्न्दु
पॊऩ्ऱिणि पोदि ऩाळुम् बूमियुम् पुलम्बि नैयक्
कुऩ्ऱिनु मुयर्न्द तोळाऩ् कोशलै कोयिल् पुक्काऩ् 296

ऍऩ्ऱु कॊण्टु इऩैय कूऱि–यह और ऐसा कहकर; मीट्टुम्–फिर; अटि तॊऴुतु–चरणों पर पड़कर; इऱैञ्चि–वन्दना करके; तऩ् तुणै तातै पातम्–स्वोपम पिता के चरणों की; अ तिचै नोक्कि ताऴ्न्तु–उस दिशा की ओर झुककर; कुऩ्ऱिऩुम् उयर्न्त तोळाऩ्–पर्वत से भी अधिक उन्नत कंधे वाले; पॊऩ् तिणि पोतिऩाळुम्–स्वर्णकमलवासिनी (श्रीलक्ष्मीदेवी) को; पूमियुम्–व भूदेवी को; पुलम्पि नैय–प्रलाप करते हुए दुखी रहने देकर; कोचलै कोयिल्–कौसल्या के मन्दिर (महल) में; पुक्काऩ्–पहुँचे। २९६

पर्वत से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले श्रीराम ने यह इस रीति से कहकर कैकेयी के चरण फिर एक बार छुए। पिता को नमस्कार उस दिशा में मुख करके सिर झुकाकर मानसिक रूप से किया। फिर वे कौसल्यादेवी के महल में आये। इनका कार्यक्रम देखकर स्वयं स्वर्णकमलवासिनी लक्ष्मीदेवी और भूमिदेवी भी दुखी होकर प्रलाप करने लगीं। २९६

❀ कुऴैक्किऩ्ऱ कवरि यिऩ्ऱिक् कॊऱ्ऱवण् कुडयु मिऩ्ऱि
इऴैक्किऩ्ऱ विदिमुऩ् शॆल्लत् तरुमम्बिऩ् ऩिरङ्गि येह

मळैक्कुन्ऱ मनैयान् मौलि कवित्तनन् वरुमॆन् ऱॆन्ऱु
तळैक्किन्ऱ वुळ्ळत् तन्नाण् मुन्नॊरु तमियन् शॆन्ऱान् 297

मऴै कुन्ऱम् अनैयान्–मेघाच्छन्न पर्वत-सम (श्रीराम); मौलि कवित्ततन्–मुकुट पहनकर; वरुम्–आयेंगे; ऎन्ऱु ऎन्ऱु–ऐसा सोच-सोचकर; तळैक्किन्ऱ उळ्ळत्तु–लहलहानेवाले चित्त की; अन्नाळ् मुन्–उनके सामने; कुळैक्किन्ऱ कवरि इन्ऱि–डुलनेवाले चामर के बिना; कॊऱ्ऱम् वॆण् कुटैयुम् इन्ऱि–विजयी श्वेतछत्र के बिना; इळैक्किन्ऱ विति–क्रियाशील विधि के; मुन् चॆल्ल–(उनके) आगे जाते; तरुमम् इरङ्कि–धर्म के दुख के साथ; पिन् एक–उनका पीछा करते; ऒरु तमियन् चॆन्ऱान्–एकाकी गये। २९७

उधर कौसल्यादेवी इनकी प्रतीक्षा में थीं। पर वे यह सोचते हुए आनन्दानुभव कर रही थीं कि मेघाच्छादित पर्वत-सम श्रीराम किरीटधारी होकर राजा के ठाट के साथ आयँगे। पर ये तो गये, अकेले; चामर नहीं डुल रहे थे; विजयी छत्र भी नहीं था। साथ कौन थे ? क्रियाशील विधि आगे जा रही थी और धर्म रोते हुए पीछे आ रहा था ! । २९७

❀ पुनैन्दिलन् मौलि कुञ्जि मञ्जनप् पुनिद नीराल्
ननैन्दिल नॆन्गॊ लॆन्नु मैयत्ता णळिन पादम्
वनैन्दपॊऱ् कळऱ्काल् वीरन् वणङ्गलुङ् गुळैन्दु वाळ्त्ति
निनैन्ददॆन् निडैयू ऱुण्डो नॆडुमुडि पुनैदऱ् कॆन्ऱाळ् 298

मौलि पुनैन्तिलन्–मुकुट पहना नहीं है; मञ्चनम् पुनितम् नीराल्–अभिषेक-योग्य पवित्र जल से; कुञ्चि ननैन्तिलन्–केश भीगा नहीं है; ऎन् कॊल्–क्या कारण है; ऎन्नुम् ऐयत्ताळ्–यह संशयवाली; नळिनम् पातम्–कमलचरणों में; वनैन्त पॊन् कळल् काल् वीरन्–पहनी हुई पायल वाले चरणों के वीर राघव के; वणङ्कलुम्–नमस्कार करते ही; कुळैन्तु वाळ्त्ति–गद्गद होकर उसे आशीर्वाद देकर; निनैन्ततु ऎन्–सोचा क्या; नॆटु मुटि पुनैतऱ्कु–उन्नत किरीट पहनने में; इटैयूऱु उण्टो–कोई बाधा है; ऎन्ऱाळ्–यह प्रश्न किया। २९८

कौसल्या के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ। सिर पर किरीट नहीं था। और उनका केश अभिषेकजल से भीगा भी नहीं था। क्या कारण होगा ? तब उनके कमलचरणों पर स्वर्ण-पायलधारी श्रीराम ने झुककर नमस्कार किया। वात्सल्य से गद्गद होकर कौसल्या ने पूछा कि अब तुमने इधर आने को सोचा क्यों है ? दीर्घ काल से रहता आनेवाला (या उन्नत) राजकिरीट पहनने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या ? । २९८

❀ मङ्गै यम्मॊऴि कूऱलु मानवन्, शॆङ्गै कूप्पिनिन् कादऱ् ऱिरुमहन्
बङ्ग मिल्गुणत् तॆम्बि बरदने, तुङ्ग मामुडि शूडुहिन् ऱानॆन्ऱान् 299

मङ्कै–देवी के; अ मॊऴि कूऱलुम्–वह वचन कहते ही; मानवन्–मनुकुल के, श्रेष्ठ श्रीराम; चॆम्कै कूप्पि–लाल हाथ जोड़कर; निन् कातल् तिरुमकन्–आपका

प्यारा पुत्र; पङ्कम् इल् कुणत्तु–कमीहीन गुणों वाले; ॲम्पि–मेरा छोटा भाई; परतऩ्–भरत ही; तुङ्कम् मा मुटि चूटुकिऩ्ऱाऩ्–पवित्र, वड़े किरीट को धारण करेगा; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। २९९

जब देवी ने यह बात कही तब मानव श्रीराम ने अपने सुन्दर हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि आपका प्यारा पुत्र, अभंगी गुण वाला मेरा छोटा भाई भरत पवित्र श्रेष्ठ और वड़े किरीट को धारण करनेवाला है। (मानव— मान्य या मनुकुलोत्पन्न)। २९९

❀ मुऱैमै यऩ्ऱॆऩ्ब दॊऩ्ऱुण्डु मुम्मयिऩ्
निऱैहु णत्तव ऩिऩ्ऩिऩु नल्लऩोर्
कुऱैवि लऩ्ऩॆऩक् कूऱिऩ णाल्वर्क्कुम्
मऱुवि लऩ्बिऩिल् वेऱुमै माऱ्ऱिऩाळ् 300

नाल्वर्क्कुम् मऱु इल् अऩ्पिऩिल्–चारों पुत्रों पर के निष्कलंक प्रेम में; वेऱ्ऱुमै माऱ्ऱिऩाळ्–भेद-विचार जिन्होंने बदल दिया था, उन कौसल्या ने; मुऱैमै अऩ्ऱु–यह क्रमोचित नहीं; ॲऩ्पतु ऒऩ्ऱु–ऐसी एक बात (दोष); उण्टु–इसमें है; निऩ्ऩिऩुम्–तुमसे अधिक; मुम्मैयिऩ् निऱै कुणत्तवऩ्–तिगुना श्रेष्ठ गुण वाला है (भरत); नल्लऩ्–सब लोगों से अच्छा माना जाता है; ओर् कुऱैवु इलऩ्–कोई कमी नहीं, उसमें; ॲऩ–ऐसा; कूऱिऩळ्–कहा। ३००

यह सुनकर कौसल्या उद्विग्न नहीं हुईं। चारों पुत्रों के प्रति होने वाले उनके प्रेम में जो स्वभावतया भेद हो सकता था उसको उन्होंने अपने विवेक से दूर कर दिया था और वे चारों पर समान प्रेम रखती थीं। उन्होंने शान्ति के साथ कहा कि इसमें एक ही दोष है। यह कुल का क्रम नहीं है कि ज्येष्ठ के रहते कनिष्ठ को राजा बनाया जाय। नहीं तो भरत तुमसे गुण में तिगुना श्रेष्ठ है! उसमें कोई कमी नहीं है। वह मुकुट के योग्य ही है। ३००

❀ ॲऩ्ऱु पिऩ्ऩरु मऩ्ऩव ऩेविय, दऩ्ऱॆ ऩामै महऩे युऩक्कऱऩ्
नऩ्ऱु नुम्बिक्कु नाऩिल नीकॊडुत्, तॊऩ्ऱि वाऴुदि यूऴि पलवॆऩ्ऱाळ् 301

ॲऩ्ऱु–यह कहकर; पिऩ्ऩरुम्–और भी; मकऩे–पुत्र; मऩ्ऩवऩ् एवियतु–राजा का आज्ञापित; अऩ्ऱु ॲऩामै–"नहीं-नहीं" कहना; उऩक्कु अऱऩ्–तुम्हारा धर्म है; नुम्पिक्कु–तुम्हारे अनुज को; नाल् निलम्–इस भूमि को; नी नऩ्ऱु कॊटुत्तु–तुम प्रेम के साथ देकर; ऒऩ्ऱि–उसके साथ मेल करके; ऊऴि पल वाऴुति–अनेक युग जिओ; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ३०१

कौसल्यादेवी ने यह कहकर आगे कहा कि वत्स! राजा की आज्ञा से इनकार नहीं करना ही तुम्हारा धर्म है। इसलिए तुम यह भूमि अपनें भाई भरत को उत्साह के साथ दे दो और उसके साथ मेल से अनेक युग जिओ। ३०१

❀ तायु रैत्तशॊर् केट्टुत् तऴैक्किन्ऱ, तूय शिन्दयत् तोमिल् कुणत्तिनान्
नाय हन्ऩॆनै नन्नॆऱि युय्प्पदऱ्, केय दुण्डॊर् पणियॆन् ऱियम्बिनान् 302

ताय् उरैत्त चॊल् केट्टु–माता का कहा वचन सुनकर; तऴैक्किन्ऱ–आनन्द-वर्धित; तूय चिन्तै–पवित्र मन और; अ तोम् इल् कुणत्तिनान्–निष्कलंक गुण वाले श्रीराम; ॲनै नल् नॆऱि उय्प्पतऱ्कु–मुझे सद्गति में पहुँचाने के निमित्त; नायकन् एयतु–राजा का आज्ञापित; ओर् पणि उण्टु–एक काम है; ॲन्ऱु इयम्पिनान्–ऐसा कहा। ३०२

माता का यह कथन सुनकर श्रीराम का मन उल्लास से भर गया। पवित्रमन और निर्दोषगुण श्रीराम ने माता को दूसरी बात सुनाई। माताजी! मुझे श्रेष्ठ गति में पहुँचाने के विचार से हमारे नायक ने मुझे एक आज्ञा दी है। ३०२

❀ ईण्डु रैत्त पणियॆन्नै यॆन्ऱवट्, काण्डॊ रेऴिनॊ डेऴहन् कानिडै
माण्ड मादवत् तोरुडन् वैहिप्पिन्, मीण्डु नीवर वेण्डुमॆन् ऱानॆन्ऱान् 303

ईण्टु उरैत्त पणि ॲन्नै–(राजा का) यहाँ पर आज्ञापित कार्य क्या है; ॲन्ऱ वट्कु–यह पूछनेवाली (माता) से; ओर् एऴिनोटु एऴु आण्टु–एक सात के साथ सात (चौदह) साल; अकन् कान् इटै–विस्तृत जंगल में; माण्ट–महान; मातवत्तोरुटन्–बड़े तपस्वियों के साथ; नी वैकि–तुम रहो और; पिन् मीण्टु वर वेण्टुम्–फिर लौट आना चाहिए; ॲन्ऱान्–(राजा ने) कहा; ॲन्ऱान्–कहा। ३०३

कौसल्या ने अशंकमन से पूछा कि यहाँ उन्होंने तुम्हें क्या कार्य सौंपा है? श्रीराम ने उन्हें उत्तर दिया कि सात और सात साल (चौदह वर्ष) वन में जाकर महिमायुक्त उत्तम तपस्वियों के साथ समय बिताऊँ और बाद लौट आऊँ—यह पिताजी की आज्ञा है। ३०३

❀ आङ्गव् वाशह मॆन्नु मनल्कुऴै
तूङ्गु तन्शॆवि यिऱ्ऱॊड रामुनम्
एङ्गि नाऴिळैत् ताडिहैत् ताण्मनम्
वीङ्गि नाळ् विम्मि नाऴ्विऴुन् दाळरो 304

आङ्कु–तब; अ वाचकम् ॲन्नुम् अनल्–उस वचन रूपी आग के; कुऴै तूङ्कु–कुण्डल-शोभित; तन् चॆवियिल् तॊटरा मुन्नम्–अपने कानों में पड़ने के पूर्व ही; एङ्कित्ताळ्–दुखी हुईं; इळैत्ताळ्–कृश हुईं; मनम् तिकैत्ताळ्–भ्रम-चित्त हुईं; विम्मित्ताळ्–सिसकने लगीं; वीङ्कित्ताळ्–(रोने से) सूजा मुख वाली हो गईं; विऴुन्ताळ्–नीचे गिर गईं। ३०४

वह कथन आग के समान कौसल्याजी के कुंडलशोभित कान में घुसा तो उनको अपार दुख हुआ। उनका मन भ्रमित हो गया। उनका शरीर कृश हो गया। सिसकने लगीं। रोते-रोते मुख सूज गया। वे अचेत होकर गिर पड़ीं। ३०४

❀ वञ्ज मोमह नेयुतै मानिलम्, तञ्ज माहनी ताङ्गॆन्ऱ् वाशहम्
नञ्ज मोविति नानुयिर् वाऴ्वॆन्नो, अञ्जु मञ्जुमॆन् नारुयि रञ्जुमाल् 305

मकते–सुत; उन्नै–तुमसे; मा निलम्–इस बड़ी भूमि को; तञ्चम् आक–शरण्य (रक्षक) रहकर; नी ताङ्कु–तुम भरण करो; ऎन्ऱ् वाचकम्–यह (राजा का) वचन; वञ्चमो–वंचना है; नञ्चमो–(या मुझे मारने आया) विष है; इति नान् उयिर् वाऴ्वॆत्तो–अब मैं क्या जिऊँगी; ऎन् अरु उयिर्–मेरे दुर्लभ प्राण; अञ्चुम् अञ्चुम्–डरते हैं, डरते। ३०५

(सम्हलकर कौसल्या ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी!) वत्स! इस विशाल भूमि का रक्षक रहकर उसका भरण करो—यह जो राजा का कहना था वह क्या वंचना थी? या मुझे मारने के लिए आया विष था? अब मैं जी सकूँगी क्या? मेरे प्राण काँपते हैं, हाँ काँपते हैं। ३०५

❀ कैयैक् कैयि नॆरिक्कुन्दन् कादलन्, वैहु मालिलै यन्न वयिऱ्ऱिनैप्
पॆय्व ळैत्तळि राऱ्पिशै युम्बुहै, वॆय्दु यिर्क्कुम् विऴुन्दु पुऴुङ्गुमाल् 306

कैयै कैयिन् नॆरिक्कुम्–एक हाथ को दूसरे हाथ से मसलतीं; तन् कातलन् वैकुम्–अपना प्यारा पुत्र जिसमें रहा उस; आल् इलै अन्न–वटपत्र-सम; वयिऱ्ऱिनै–पेट को; वळैपॆय् तळिराल्–वलयधारी पल्लव (-मृदुल कर) से; पिचैयुम्–दबातीं; पुकै वॆय्तु उयिर्क्कुम्—अग्नि-धूम के समान गरम साँस छोड़तीं; विऴुन्तु–नीचे गिरकर; पुऴुङ्कुम्–पीड़ा का अनुभव करतीं। ३०६

देवी एक हाथ से दूसरा हाथ पकड़कर मसलतीं। कभी अपने वटपत्र-सम पेट को, जिसमें उनका प्यारा पुत्र वास करता था, वलयधारी पल्लवमृदुल हाथ से मसलतीं। कभी आग से निकलनेवाले धुएँ के समान गरम साँस निकालतीं। कभी नीचे गिरकर मन मसोसतीं। ३०६

❀ नन्ऱु मन्नन् करुणै यॆन्नानहुम्, निन्ऱ मैन्दनै नोक्कि नॆडुञ्जुरत्
तॆन्ऱु पोव दॆनावॆऴु मिन्नुयिर्, पॊन्ऱुम् पोदुऱ्ऱ दुऱ्ऱनऴ् पोलुमे 307

मन्नन् करुणै नन्ऱु–राजा की दया भी भली है; ऎना नकुम्–कहकर हँसतीं; निन्ऱ मैन्तनै नोक्कि–खड़े रहे तनय को देखकर; नॆटु चुरत्तु–विस्तृत जंगल में; ऎन्ऱु पोवतु–कब जाना है; ऎना ऎऴुम्–कहती हुई उठतीं; इन् उयिर् पॊन्ऱुम् पोतु–जब प्यारे प्राण चलने को होते हैं तब; उऱ्ऱतु–जो पीड़ा होगी; उऱ्ऱनळ् पोलुम्–उसको प्राप्त कर चुकी-सी बन गईं। ३०७

कहतीं— राजा की कृपा भी भली रही! कहकर हँसतीं! अपने सामने स्थित श्रीराम से पूछती कि विस्तृत जंगल में कब जाना है? कहती हुई उठतीं। उनकी मरणवेला की-सी अवस्था हो गई। ३०७

❀ अन्बि ळैत्त मनत्तर शऱ्कुनो, ऎन्बि ळैत्तनै यॆन्ऱुनिन् ऱेङ्गुमाल्
मुन्बि ळैत्त वरुमयिन् मुऱ्ऱिनोर्, पॊन्बि ळैक्कप् पॊदिन्दनर् पोलवे 308

अऩ्पु इऴैत्त मऩत्तु–(तुम्हारे प्रति) प्रेम रखनेवाले मन के; अरचर्कु–राजा को; नी ॲऩ् पिऴैत्तऩै–तुमने क्या अपराध किया; ॲऩ्ऱु–कहकर; निऩ्ऱु–(ठिठकी) खड़ी रहकर; मुऩ् पिऴैत्त वऱुमैयिल्–पूर्व पाप प्राप्त दरिद्रता में; मुऱ्ऱिऩोर्–बढ़े हुओं ने; पॊऩ्–प्राप्त स्वर्ण को; पिऴैक्क–हाथ से जाने देते हुए; पॊतिऩ्तवर् पोल–गाँठ में बाँध रखा जैसे; एङ्कुम्–तरसतीं; (आल्, ए)। ३०८

कभी पूछतीं— राजा तुम पर गहरा प्रेम रखते थे। ऐसे उनका तुमने क्या अपराध किया ? पूछती हुई चकित खड़ी रहतीं। वह पूर्वकृत पापों के कारण दरिद्रता में बढ़े हुए उन लोगों के समान मन मसोसने लगीं जिन्होंने कुछ स्वर्ण पाकर गाँठ में असावधानी से बाँध रखी हो कि वह स्वर्ण खो गया हो। ३०८

❀ अऱमॆ नक्किलै योवॆऩु माविऩैऩ्, दिऱव डुत्तदॆऩ् ऱॆय्वदङ् गाळॆऩुम्
पिऱवु रैप्पदॆऩ् कऩ्ऱु पिरिऩ्दुऴिक्, कऱवै यॊप्पक् करैऩ्दु कलङ्गिऩाळ् 309

अऱम् ॲऩक्कु इलैयो–धर्म देवता मेरी सहायता करनेवाले नहीं हैं क्या; ॲऩुम्–कहतीं; तॆय्वतङ्काळ्–देवताओ; आवि नैन्तु इऱ–प्राण क्षीण होकर मिट जायँ, इसका; ऍटुत्ततु ॲऩ्–हेतु क्या है; ॲऩुम्–कहतीं; कऩ्ऱु पिरिन्त उऴि–बछड़ा जब बिछुड़ गया तब; कऱवै ऑप्प–जैसे गाय, वैसे; करैन्तु–पिघलकर; कलङ्किऩाळ्–व्याकुल हुईं; पिऱ उरैप्पतु ॲऩ्–फिर कहना क्या। ३०९

वे प्रलाप करतीं— क्या मेरा धर्म (सहायक) नहीं है ! देवताओ ! मेरे प्राणों को क्षीण करते हुए जो यह दुख सता रहा है उसका हेतु क्या है ? बछड़ा खोकर दुधार गाय जैसे छटपटाती है वैसे ही कौसल्याजी पिघलकर व्याकुल हुईं। किं वहुना ? अपार दुखी हो रहीं। ३०९

❀ इत्ति ऱत्ति ऩिडरुऱु वाडऩैक्, कैत्त लत्ति ऩॆडुत्तरुङ् गऱ्पिऩोय्
पॊय्त्ति ऱत्तिऩ ऩाक्कुदि योपुहल्, मॆय्त्ति ऱत्तुनम् वेन्दऩै नीयॆऩा 310

इ तिऱत्तिऩ्–इस प्रकार; इटर् उऱुवाळ् तऩ्ऩै–दुखनेवाली उनको; कै तलत्तिऩ् ऍटुत्तु–करतल से उठाकर; अरु कऱ्पिऩोय्–महार्घ पातिव्रत्य शीला; मॆय् तिऱत्तु नम् वेन्तऩै–सत्यनिष्ठ हमारे राजा को; नी–आप; पॊय् तिऱत्तिऩऩ्–असत्यवादी; आक्कुतियो–बना लेंगी क्या; पुकल्–कहिये; ॲऩा–ऐसा कहकर। ३१०

श्रीराम ने इस तरह दुख करनेवाली अपनी माता को अपने करतल से उठाया। आश्वस्त करते हुए कहा— महार्घ पातिव्रत्य वाली ! हमारे राजा सत्यनिष्ठ हैं। क्या आप उन्हें असत्यवादी बना लेंगी ? कहिये। ३१०

पॊऱ्पु ऱुत्तऩ मॆय्म्मै पॊदिन्दऩ, शॊऱ्पु ऱुत्तर् कुरियऩ शॊल्लिऩाऩ्
कऱ्पु ऱुत्तिय कऱ्पुडै याडऩै, वऱ्पु ऱुत्ति मऩङ्गॊळत् तेऱ्ऱुवाऩ् 311

कऱ्पु उऱुत्तिय–(बड़ों से) सिखाया गया; कऱ्पु उटैयाळ् तऩ्ऩै–पातिव्रत्यशीला को; वऱ्पुऱुत्ति–दृढ़चित्त बनाकर; तेऱ्ऱुवाऩ्–स्वस्थ बनाने के हेतु; पॊऱ्पु

उऱ्त्तत्त–सुन्दरता भरे; मॆय्म्मै पॊतिन्तत्त–सत्यगर्भित; चॊऱ्पु उऱुत्तऱ्कु उरियत्त–वात समझाने के लिए आवश्यक; मत्तम् कॊळ–(तर्क) मन में लगे ऐसे; चॊल्लितान्–(श्रीराम ने) वचन कहे। ३११

श्रीराम ने धारणा कर ली कि उत्तम गुरुओं से शिक्षित पातिव्रत्य रखनेवाली इनको धीरज बँधाना चाहिए। इसलिए उन्होंने ऐसे शब्दों में उन्हें समझाया जो तर्कयुक्त थे, सत्यगर्भित थे और उनके मन को व्यक्त करने की क्षमता रखते थे। ३११

❀ शिऱन्द तम्बि तिरुवुऱ वॆन्दयै, मऱन्दुम् पॊय्यिल नाक्कि वत्तत्तिडै
उऱैन्दु पेरु मुऱुदिपॆऱ् ऱेत्तिदिऱ्, पिऱन्दि यान्पॆऱुम् बेऱॆन्ब दियावदो 312

चिऱन्त तम्पि–श्रेष्ठ अनुज के; तिरु उऱ–राज्यश्री प्राप्त करते; ऍन्तैयै–मेरे पिता को; मऱन्तुम् पॊय्यिलन् आक्कि–अप्रमत्त सत्यसंध बनाकर; यान् वत्तत्तु इटै उऱैन्तु–मैंने, वनवास करके; पेरुम् उऱुति पॆऱ्ऱेन्–लौट आने को तय किया है; पिऱन्तु–(इस कुल में) जन्म लेकर; पॆऱुम् पेऱु ऍन्पतु–पाने का सौभाग्य; इतिन् यावतु–इससे बढ़कर क्या होगा। ३१२

उन्होंने कहा— माताजी मैं जंगल हो आने का निश्चय कर चुका हूँ ताकि मेरा प्यारा भाई राज्य पा जाय और मेरे पिताजी भूलकर भी असत्य न बोलनेवाले अप्रमत्त सत्यवादी रह जायँ। इस वंश में जन्म लेकर, इससे बड़ा लाभ कौन सा होगा जो मुझे प्राप्य होगा ? ३१२

❀ विण्णुम् मण्णुमिव् वेलयु मऱ्ऱुम्वे, ऱॆण्णुम् बूद मॆलामऴिन् देहिनुम्
अण्ण लेवन् मऱुक्क वडियनेऱ्, कॊण्णु मोविदऱ् कुळ्ळऴि येलॆन्ऱान् 313

विण्णुम्–आकाश; मण्णुम्–और यह पृथ्वी; इ वेलैयुम्–और यह सागर; मऱ्ऱुम्–और; वेऱु ऍण्णुम्—अलग-अलग गिने जानेवाले; पूतम् ऍल्लाम्–भूत सब; अऴिन्तु एकिनुम्–नाश हो जायँ तो भी; अटियनेऱ्कु–मुझ दास को; अण्णल् एवल्–चक्रवर्ती की आज्ञा; मऱुक्क ऒण्णुमो–टाली जा सकती है क्या; इतऱ्कु उळ् अऴियेल–इसके लिए मन छोटा मत कीजिए; ऍन्ऱान्–ऐसा कहा। ३१३

आकाश, पृथ्वी, समुद्र यानी जल और (दो अनल और अनिल) अन्य भूत— अलग-अलग गिने जानेवाले ये सब— मिट जायँ (यानी प्रलय ही क्यों न हो जाय) मुझ दास से स्वामी राजा की आज्ञा टाली जा सकती है क्या ? फिर आप क्यों अपने मन मारें ? दुखी मत होइए। (तमिऴ् में 'मैं' की जगह पर अडियेन्, जिसका अर्थ 'दास मैं' है, प्रयोग करने की प्रथा है। यह वैष्णव लोगों में अब भी प्रचलित है।)। ३१३

❀ आहि लैय वरशन्ऱ नाणयाल्, एह लॆन्ब दियानु मुरैक्किलेन्
शाह लावयिर् ताङ्गवल् लेन्नयुम्, पोहि लुन्नॊडुङ् गॊण्डनै पोहॆन्ऱाळ् 314

आकिल्–ऐसा है तो; ऐय–तात; अरचन् तन् आणैयाल्–राजा की आज्ञा से;

एकल् अँऩ्पतु–(वन) मत जाओ, कहना; यातुम् उरैक्किलेऩ्–मैं भी नहीं कहती; नोकिल्–तुम जाओ तो; चाक अल्ला उयिर्–न मर जानेवाली इस जान को; ताङ्क वल्लेतैयुम्–न रख सकनेवाली मुझे भी; उऩ्ऩॉटुम् कॉण्टनै पोक–अपने साथ लेते जाओ। ३१४

यह सुनकर कौसल्या ने उत्तर में वेदना देनेवाली बात कही। हे आर्य! हे राम! अगर यही तुम्हारा निर्णय है तो मैं भी नहीं कहूँगी कि तुम राजा की आज्ञा के कारण वन मत जाओ। पर इतना कहूँगी कि तुम्हारे वनगमन के निश्चय की बात सुनकर तत्काल मेरे प्राण नहीं छूटे, तो भी तुम्हारे जाने के बाद ध्रुव है कि मैं अपने प्राण धारण नहीं कर सकूँगी। इसलिए तुम मुझे भी साथ लेते चलो। ३१४

❀ ॲऩ्ऩै नीङ्गि यिडर्क्कडल् वैहुरुम्, मऩ्ऩर् मऩ्ऩनै वऱ्पुरुत् तादुडऩ्
तुऩ्ऩु कातन् दॉडरत् तुणिवदे, अऩ्ऩै नीयऱम् बार्क्किलै यामॆऩ्ऱाऩ् 315

अऩ्ऩै–माताजी; ॲऩ्ऩै नीङ्कि–मुझसे बिछुड़कर; इटर् कटल् वैकु उऱुम्–दुख-सागर में डूबनेवाले; मऩ्ऩर् मऩ्ऩनै–राजाधिराज को; वऱ्पुरुत्तातु–धीरज बँधाये बिना; तुऩ्ऩु कातम्–घने जंगल में; उटऩ्–मेरे साथ; नी तॉटर तुणिवते–आप आने का साहस करें; अऱम् पार्क्किलै आम्–धर्म नहीं देखा, यही बात है; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ३१५

श्रीराम ने कहा— माताजी! मेरे पिता मुझसे बिछुड़कर दुखसागर में मग्न हो जायँगे। उनको पास रहकर धीरज बँधाये बिना कैसे आप मेरे साथ जंगल आने का निश्चय करती हैं? वैसा भी करेंगी? तब इसका अर्थ यही होगा कि आपने धर्म पर ध्यान नहीं दिया है। ३१५

❀ वरिवि लॅम्बियिम् मण्णर शायवऱ्, कुरिमै मानिल मुऱ्ऱपिन् कॊऱ्ऱवऩ्
तिरुवि ऩीङ्गित् तवञ्जॅयु नाळुडऩ्, अरुमै नोऩ्बुह ळाऱ्ऱुदि यामऩ्ऱे 316

वरि विल् ॲम्पि–बन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा अनुज; इ मण् अरचु आय्–इस पृथ्वी का राजा बनकर; अवऱ्कु मा निलम् उरिमै उऱ्ऱ पिऩ्–उसका, यह बड़ा राज्य अपना हो जाने के बाद; कॊऱ्ऱवऩ्–चक्रवर्ती; तिरुविऩ् नीङ्कि–सम्पत्ति छोड़कर; तवम् चॅयुमुम् नाळ्–तपस्या जब करेंगे तब; उटऩ्–उनके साथ; अरुमै नोऩ्पुकळ्–महार्घ व्रत; आऱ्ऱुति–पालन कीजिए; आम् अऩ्ऱे–यह उचित है न। ३१६

बन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा भाई राजा बनेगा। सारा राज्य उसके अधिकार में आ जायगा। फिर राजा सांसारिक सुख-वैभव से छूटकर तपस्या करने वन में जायँगे। तब आप भी उनके साथ रहकर व्रतपालन कीजिए। यही न श्रेष्ठ होगा!। ३१६

❀ शित्त नीतिहैक् किऩ्ऱॅदॅन् तेवरुम्, ऑत्त मादवञ् शॅय्दुयर्न् दारऩ्ऱे
ॲत्त नैक्कुळ वाण्डुह ळीण्डवै, पत्तु नालुम् पहलल वॊवॆऩ्ऱाऩ् 317

नी चित्तम् तिकैक्किन्ऱ्तु ॲन्–आप चित्ताकुल क्यों होती हैं; तेवरुम्–देवता लोग भी; ऑत्त मातवम् चॅय्तु–उचित बड़ा तप करके; उयरन्तार् अन्ऱे–न बढ़े; ईण्टु–यहाँ; आण्टुकळ् ॲत्तनैक्कु उळ–वर्ष कितने हैं; अवै पत्तुम् नालुम्–वे दस और चार; पकल् अलवो–केवल (उतने ही) दिन हैं न; ॲन्ऱान्–कहा। ३१७

आपका मन क्यों चकित हो ? देवता भी उचित तपस्या करके न ऊँचे बढ़े ? यहाँ मेरे बनवास के वर्ष भी कितने हैं ? चौदह ही वर्ष हैं और वे उतने दिनों के समान बीत जायँगे। ३१७

मुन्तरक् कोशिह नॅन्नु मुनिवरन्, तन्न रुट्टलै ताङ्गिय विज्जयुम्
पिन्न रॅय्दिय पेरुम् पिळैत्तवो, इन्न नन्ऱवर्क् केयिन शॅय्दले 318

मुन्तर्–पहले; कोचिकन् ॲन्तुम् मुनिवरन् तन्–कौशिक नाम के मुनिवर की; अरुळ् तलै–दया से; ताङ्किय विज्चॆयुम्–प्राप्त मेरी विद्याएँ; पिन्तर्–बाद को; ॲय्तिय पेरुम्–(उनकी कृपा से) प्राप्त सौभाग्य भी; पिळैत्तनवो–क्या दोषपूर्ण हैं; इन्तम्–और भी; अवर्क्कु एयिन चॅय्तल्–उन (जैसे ऋषियों) की उचित सेवा करना; नन्ऱे–लाभदायक ही होगा। ३१८

देखिये। पहले कौशिक महर्षि की कृपा से मुझे विद्याएँ मिलीं और कितनी ही अन्य (यश, विवाह) उपलब्धियाँ हुईं ! क्या वे कुछ कमी रखती हैं ! और भी ऐसे महर्षियों की संगति और सेवा लाभदायक ही होगी। ३१८

माद वर्क्कु वळिपा डिळैत्तरुम्, बोद मुऱ्ऱिप् पॉरुवरु विज्जहळ्
एद मऱ्ऱन ताङ्गि यिमैयवर्, कादल् पॅऱ्ऱिन् नहर्वरक् काण्डियाल् 319

मातवर्क्कु–महान तपस्वियों की; वळि पाटु इळैत्तु–पूजा-सेवा करके; अरु पोतम् मुऱ्ऱि–मूल्यवान ज्ञान से पूर्ण होकर; एतम् अऱ्ऱत–निर्दोष; पॉरुवु अरु–और अनुपम; विज्चैकळ् ताङ्कि–मन्त्रविद्या प्राप्त करके; इमैयवर कातल् पॆऱ्ऱु–देवों की कृपा का पात्र बनकर; इ नकर् वर काण्टि–इस नगर को लौट (आऊँगा) आना देखेंगी। ३१९

आप ही देखेंगी। महान तपस्वियों की चरणसेवा करके उनकी संगति और उनके उपदेशों से ज्ञान में पूर्ण होकर निर्दोष और अनुपम विद्यायें अर्जित करके, और देवताओं का प्रेमपात्र बनकर इस नगर को लौट आऊँगा। ३१९

महर वेलैमण् डॉट्टवण् डाडुतार्च्, चहरर् तादै पणितलै नित्ऱुतम्
पुहरिल् याक्कयि तिन्नुयिर् पोक्किय, निहरिन् माप्पुहळ् नित्ऱदन् ऱोवॅन्ना 320

मकरम् वेलै–मकरालय सागर से वलयित; मण् तोंट्ट–भूमि को जिन्होंने खोदा वे; वण्टु आटु तार् चकरर्–भ्रमरावृत-मालाधारी सगरपुत्रों का; तातै पणि तलै नित्ऱु–पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके; तम्–अपने; पुकर् इल् याक्कैयिन्–निर्दोष

शरीरों से; इऩ् उयिर् पोक्किय–अपने प्राणों को त्यागने का; निकर् इल् मा पुकऴ्–अप्रमेय महान यश; निऩ्ऱतु अऩ्ऱो–आज भी अचल है न; ऍऩा–ऐसा कहकर। ३२०

मकरालय-वलयित भूमि को भ्रमरावृत्तमाला-धारी सगरसूनुओं ने खोदा था। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करके ही अपने शरीरों से प्राण अलग करा लिये। उनका यश आज भी अचल है न ? —यह कहकर आगे बोले। ३२०

माऩ्म ऱिक्करत् ताऩ्मऴु वेऩ्दुवाऩ्, ताऩ्म ऱुत्तिलऩ् ऱादैशॉर् ऱायये
ऊऩ ऱक्कुऱैत् ताऩुर वोऩरुऴ्, याऩ्म ऱुप्पदॅऩ् ऍण्णुव दॊॅऩ्ऱाऩ् 321

माऩ् मऱि करत्ताऩ् मऴु—मृगशावक-हस्त (शिवजी) का परशु; ताऩ् एऩ्तुवाऩ्–उसको अपने हाथ में रखनेवाले परशुराम ने; तातै चॊल् मऱुत्तिलऩ्–पिता की आज्ञा मानने से इनकार नहीं किया; तायैये–और माता को भी; ऊऩ् अऱ–शरीर के खण्ड करते हुए; कुऱैत्ताऩ्–उनका सिर काटा; उरवोऩ् अरुऴ् मऱुप्पतु–मेरे बुद्धि-शक्ति में श्रेष्ठ पिता के कृपा-वचन (आज्ञा) का अनादर करना; ऍऩ्ऱु याऩ् ऍण्णुवतो–ऐसा मैं सोचूं क्या; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३२१

एक हाथ में मृगशावक धारण करनेवाले शिवजी का हथियार परशु जो है उसको अपना हथियार बनाकर रखनेवाले परशुराम ने क्या किया ? अपने पिता की आज्ञा से (जो अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह हो जाने से क्रुद्ध हुए थे) अपनी माता का सिर काट लिया। इन उदाहरणों के सामने, मैं, अपने बुद्धिमान पिता की कृपापूर्ण आज्ञा मानने से इनकार करना सोचूं ? । ३२१

❀ इत्ति ऱत्त वॅऩैप्पल वाशहम्, उय्त्तु रैत्त महऩुरै युट्कॊळा
ऍत्ति ऱत्तु मिऱक्कुमिऩ् नाडॅऩा, मॅय्त्ति ऱत्तु विळङ्गिऴै युऩ्ऩुवाळ् 322

इ तिऱत्त–इस प्रकार के; ऍऩै पल वाचकम्–और अन्य वचन; उय्त्तु उरैत्त–समझाकर जिन्होंने कहे उन; मकऩ् उरै–पुत्र की बात; उळ् कॊळ्ळा–मन में धरकर; ऍ तिऱत्तुम्–किसी भी विध; इ नाटु इऱक्कुम् ऍऩा–यह राज्य छोड़ देगा, यह सोचकर; मॅय् तिऱत्तु–सत्यपक्ष (या सत्यरूपी); विळङ्कु इऴै–शोभायुक्त आभरण वाली; उऩ्ऩुवाळ्–(उपाय) सोचने लगीं। ३२२

कौसल्या ने इस प्रकार कहते हुए राम की बातें सुनीं। निश्चय जान लिया कि यह किसी विध राज्य छोड़ ही देगा। सत्यवादी और (या सत्य का ही) श्रेष्ठ आभरणधारिणी कौसल्या (उन्हें रोकने का) उपाय सोचने लगीं। ३२२

❀ अवऩि कावल् बरदऩ दाहुह, इवऩिऩ् ञाल मिऱन्दिरुङ् गाऩिडैत्
तवऩि लावहै काप्पॆऩ् ऱहविऩाल्, पुवऩि नादऱ् ऱॊऴुदॆऩ्ऱु पोयिऩाळ् 323

अवऩि कावल्–राज्यरक्षण; परतऩतु आकुक–भरत का हो; इवऩ्–यह;

इ ञालम् इऱन्तु–यह देश छोड़कर; इरु कान् इटै–बड़े वन में जाकर; तवन् निला वकै–तपोरत न हो, इस प्रकार; तकविऩाल्–उचित क्रम से; पुवति नातन् तॊऴुतु–भुवनपति से विनय करके; काप्पॆन्–रोकूँगी; ऎऩ्ऱु–सोचकर; पोयिऩाळ्–गईं। ३२३

उन्होंने सोचा कि भू-पालन भरत का हो, पर यह देश छोड़कर विशाल वन में जाकर तपस्या करता न रह जाय। मैं भुवनपति चक्रवर्ती से योग्य रीति से प्रार्थना करके इसको रुकवाऊँगी। यह मन में सोचकर वे निकलकर चलीं। ३२३

❀ पोहिऩ् ऱाळैत् तॊऴुतु पुरवलऩ्, आह मऱ्ऱिव ळऩ्ऩयु माऱ्ऱियिच्
चोहन् दीर्प्पव ळॆऩ्ऱु शुमित्तिरै, मेहन् दोय्मणिक् कोयिलै मेयिऩाऩ् 324

पोकिऩ्ऱाळै–जानेवाली का; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पुरवलऩ्–राजा के साथ; इवळ् तऩ्ऩैयुम्–इनको भी; आकम् आऱ्ऱि–मन दृढ़ करके; इ चोकम् तीर्प्पवळ्–शोकमुक्त करनेवाली; ऎऩ्ऱु–समझकर; चुमित्तिरै–सुमित्रा के; मेकम् तोय्–मेघ-स्पर्शी; मणि कोयिलै–सुन्दर महल में; मेयिऩाऩ्–जा पहुँचे। ३२४

गमनशील उनको श्रीराम ने नमस्कार किया। उन्होंने सोचा कि सुमित्रादेवी ही इनको और राजा को धीरज देकर उनके दुःख को दूर कर सकती हैं। इसलिए वे सुमित्रा के मेघस्पर्शी सुन्दर महल की ओर गये। ३२४

❀ नडन्द कोशलै केहय नाट्टिऱै, मडन्दै कोयिलै यॆय्दिऩण् मऩ्ऩवऩ्
किडन्द पार्मिशै वीऴ्न्दऩळ् कॆट्टुयिर्, उडैन्द पोऴ्दि नुडल्विऴुन् दॆऩ्ऩवे 325

नटन्त कोचलै–जो चलीं वे कौसल्या; केकय नाट्टु इऱै मटन्तै–केकय देश के राजा की पुत्री के; कोयिलै ऎय्तिऩळ्–महल में पहुँचीं; मऩ्ऩवन् किटन्त पार्मिचै–राजा जहाँ गिरे थे, उस स्थल पर; उयिर् उटैन्त पोतिऩ्–प्राणवियोग के अवसर पर; उटल् कॆट्टु विऴुन्ततु–शरीर अस्थिर होकर गिरा जैसे; वीऴ्न्तऩळ्–गिर पड़ीं। ३२५

कौसल्यादेवी चलकर केकयराज-तनया के महल में पहुँची। (देखा कि राजा भूमि पर बेहोश पड़े हैं।) वे भी उसी स्थान पर, जहाँ राजा गिरे पड़े थे, धड़ाम से गिरीं जैसे प्राण छूटने पर निर्जीव शरीर गिर जाता है। ३२५

पिऱियार् पिरिवे दॆऩ्ऩुम् पॆरियोय् तहवो वॆऩ्ऩुम्
नॆऱियो वडियो निलैनी निऩैयाय् निऩैवे दॆऩ्ऩुम्
वऱियोर् दऩमे यॆऩ्ऩुन् दमियेऩ् वलिये यॆऩ्ऩुम्
अऱिवो विऩैयो वॆऩ्ऩु मरशे यरशे यॆऩ्ऩुम् 326

पिऱियार्–अब तक जो कभी विलग नहीं हुए हैं उनमें; पिरिवु एतु–अब बिछुड़न का कारण क्या; ऎऩ्ऩुम्–कहतीं; पॆरियोय्–सर्वोत्तम; तकवो–क्या यह उचित है; नॆऱियो–नीतिसम्मत है; ऎऩ्ऩुम्–कहतीं; अटियोम् निलै–आपकी दासियाँ हमारी

स्थिति; नी नितैयाय्–आपने नहीं सोची; नितैवु एतु–आपका अभिप्राय भी क्या है; ऍऩ्ऱुम्–कहतीं; वऱियोर् तऩमे ऍऩ्ऱुम्–निर्धनों के धन कहतीं; तमियेऩ् वलिए–मेरे, निर्बल के बल; ऍऩ्ऱुम्–कहतीं; अऱिवो–इसका ज्ञान आपको है क्या; वितैयो–(दूसरे का) दुष्कर्म है; ऍऩ्ऱुम्–कहतीं; अरचे अरचे–राजा, राजा; ऍऩ्ऱुम्–यह पुकारतीं। ३२६

फिर वे विलाप करने लगीं। हम अब तक एक-दूसरे से अलग नहीं हुए थे। अब विलगाने का हेतु क्या है ? सर्वोत्तम ! क्या यह उचित है ? नीतिसम्मत है ? कभी कहतीं— हम चरणदासियों की स्थिति पर आपने विचार नहीं किया। आपका अभिप्राय क्या है ? निर्धन के धन ! मुझ निर्बल के बल ! कभी पूछतीं कि यह जो हुआ वह आप के जानते हुआ या किसी का षडयन्त्र है ? वे राजा, राजा कहकर प्रलाप करतीं। ३२६

इरुळऱ् ऱिडवुऱ् ऱॉळिरु मिरविक् कॅदिरुऩ् दिहिरि
उरुळत् तऩियुय्त् तॉरुको ऩडैयिऱ् कडैहा णुलहम्
पॉरुळऱ् ऱिडमुऱ् ऱुरुमप् पहलिऱ् पुहुदऱ् कॅऩ्ऱो
अरुळिऱ् करुदुऱ् ऱदुनी यरशऱ् करशे यॅऩ्ऱुम् 327

अरचऱ्कु अरचे–राजाधिराज; नी–आप; अरुळिऩ् करुतु उऱ्ऱतु–कृपा करके (श्रीराम वनगमन) जो सोचा वह; इरुळ् अऱ्ऱिट–अन्धकार दूर करते हुए; उऱ्ऱु–ऑळिरुम्–अधिक दीप्त; इरविक्कु ऍतिरुम्–सूर्य के समान; तिकिरि–अपने आज्ञाचक्र को; तऩि उरुळ उय्त्तु–अनुपम रूप से चलाकर; ऑरु कोल् नटैयिल्–राजदण्ड प्रयोग में; कटै काण्–उच्चता देखनेवाला; उलकम्–यह लोक; पॉरुळ् अऱ्ऱिट–सभी वस्तुओं के नाश के साथ; मुऱ्ऱु उऱुम्–पूर्ण नष्ट जिसमें हो जायगा; अ पकलिल्–उस समय में; पुकुतऱ्कु ऍऩ्ऱो–प्रवेश करने के लिए क्या; ऍऩ्ऱुम्–कहतीं। ३२७

राजन् ! आपने जो कृपापूर्ण आज्ञा सुनाई है उसका फल क्या होगा, सोचा है ? अन्धकार हटाते हुए दीप्त रहनेवाले सूर्य के समान आपका आज्ञाचक्र है। उस आज्ञाचक्र को चलाते हुए आप राजदण्ड धर रहे हैं। उस शासन में यह भूमि अत्युन्नत स्थिति पर है ! अब आपकी आज्ञा उस भूमि पर प्रलय ला देगी ! इसी हेतु आपकी आज्ञा निकली है क्या ? । ३२७

तिरैयार् कडलशू ऴुलहिऩ् ऱवमे तिरुविऩ् ऱिरुवे
निरैयार् कलैयिऩ् कडले नॅऱियार् मऱैयिऩ् निलैये
करैया वयर्वे नॅनैनी करुणा लयने यॅऩ्नॆऩ्
ऱुरैया यिदुदा नळहो वुलहे ऴुडैया यॅऩ्ऱुम् 328

तिरै आर्–लहरोंवाले; कटल् चूऴ्–सागर से घिरी; उलकिऩ् तवमे–पृथ्वी के तपोरूपी; तिरुविऩ् तिरुवे–धनों में धन; निरै ओर् कलैयिऩ्–श्रेणीबद्ध विद्याओं के; कटले–सागर; नॅऱि आर् मऱैयिऩ्–अच्छे नीतिवचनों से पूर्ण वेदों के; निलैये–निलय; करुणा आलयते–करुणा के आलय; उलकु एऴु उटैयाय्–सातों लोकों के स्वामी;

करैया अयर्वेन् अँन्नै–पिघलकर श्रांत होनेवाली मुझे; नी–आप; अँन् अँन्रु उरैयाय्–क्यों नहीं पूछते; इतु अऴकु तान्नो–यह आपके लिए शोभा है क्या। ३२८

लहरोंवाले समुद्र से वलयित इस भूमि के तपोरूप ! धनों में श्रेष्ठ धन ! अनेक विद्याओं और शास्त्रों के सागर (आगार) ! श्रेष्ठ नीतिबोधक वेदों के निलय ! करुणा के आलय ! सातों लोकों के मालिक ! मैं पिघल कर श्रान्त हो रही हूँ। 'क्यों रो रही हो' —यह एक बात नहीं पूछते ! यह मौन आपको शोभा देता है क्या ? । ३२८

मिन्नित् रत्नैय मेनि वॅरिदा यळहर् रळिय
उन्नुन् दहमैक् कडैया वुरुनो युरुहित् रुणरान्
अँन्नॅन् रुरैया नॅन्ने यिदुदा नॆदॆन् ररियेन्
मन्नन् रन्मै काण वाराय् महने यॅन्नुम् 329

मिन् निन्र अन्नैय मेनि–स्थिर विद्युत-सम इनकी देह; वॅरितु आय्–प्रभाहीन होकर; अऴकरुरु अऴिय–सौंदर्यविहीन होकर नष्ट होता है; उन्नुम् तकमैक्कु अटैया–अचिन्त्य रूप से; उरुनोय् उरुकिन्रु उणरान्–अत्यधिक वेदना भी नहीं समझते; अँन् अँन्रु उरैयान्–क्या हुआ यह भी नहीं कहते; अँन्ने–यह क्या है; इतु तान् एतु अँन्रु अरियेन्–यह क्यों यह मैं नहीं जानती; मकने–हे वत्स; मन्नन् तन्मै काण वाराय्–राजा की स्थिति देखने के लिए तुरत आओ; अँन्नुम्–कहतीं। ३२९

वे राजा की निपट सुधि-हीन स्थिति से घबड़ा उठीं। स्थिर विद्युत समान कान्ति वाले इनकी देह निष्प्रभ हो गई है। सौन्दर्य चला गया है। अचिंत्य पीड़ा की भी सुध नहीं करते। मुख खोलकर, क्या बात है —यह भी नहीं कहते। यह कैसी स्थिति है जान नहीं पातीं। वे उच्च स्वर में चिल्लाने लगीं— हे पुत्र ! आओ। चक्रवर्ती की दशा देखो। ३२९

इव्वा रळुवा ळिरियर् कुरल्शॆन् रिशैया मुन्नम्
ऒव्वा दॊव्वा दॆन्ना वॊळिर्वा णिरुबर् मुनिवर्
अव्वा ररिवा यॅन्न वन्दान् मुनिमन् नवनुम्
वॆव्वा ळरशन् निलैहण् डॆन्नो विळैवॆन् रुन्ना 330

इव्वारु अऴुवाळ्–इस प्रकार विलापती कौसल्या के; इरियल् कुरल्–रोने का स्वर; चॆन्रु इचैया मुन्नम्–जाकर लगने से पहले; ऒळिर् वाळ् निरुपर्–कांतियुक्त तलवार वाले राजा लोग; मुनिवर्–मुनि; ऒव्वातु ऒव्वातु–यह बेमेल है, अबद्ध; अँन्ना–कहते हुए; अ आरु अरिवाय् अँन्न–उसका हेतु जानिये, कहने पर; वन्तान् मुनि मन्नवनुम्–आये मुनिराज वसिष्ठ; वॆम् वाळ् अरचन् निलै–भयंकर तलवार वाले राजा की स्थिति; कण्टु–देखकर; विळैवु अँन्नो–हुआ क्या; अँन्रु उन्ना–यह सोचकर। ३३०

इस प्रकार विलापनेवाली देवी का रुदन-स्वर मण्डप में सुनाई दिया। उनके कान में पड़ते ही चमकती तलवार-धारी नरपति लोग और

मुनिगण सोचने लगे कि यह क्या वेमेल स्वर है ! बिलकुल प्रसंगविरोधी और अबद्ध ! उन्होंने वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि आप जाकर इसका पता लगा लें। मुनिराज वसिष्ठ भी वहाँ आये। उन्होंने भयंकर तलवार-धारी प्रतापी राजा की वेहोशी देखी तो उन्हें कुछ नहीं सूझा। यह क्या और क्यों हुआ ? इस पर विचार करके— । ३३०

इऱन्दा नल्ल नरश निऱवा दॊऴिवा नल्लन्
मऱन्दा नुणर्वॆन् ऱुन्ताळ् वण्के हयर्कोन् मङ्गै
तुऱन्दा डुयरन् दन्नैत् तुऱवा डुयर्हो शलैयिऱ्
पिऱन्दार् पॆयरुन् दन्मै पिऱरा लऱिदऱ् कॆळिदो 331

अरचन् इऱन्तान् अल्लन्–राजा मरे नहीं हैं; इऱवातु ऒऴिवान् अल्लन्–बिना मरे नहीं रहेंगे भी; वण् केकयर् कोन् मङ्कै–समृद्ध केकय देश के राजा की पुत्री; उणर्वु मऱन्तान्–सुध खो गये; ऎन्ऱु उन्ताळ्–यह नहीं सोचतीं; तुयरम् तन्नै तुऱन्ताळ्–दुख करना ही छोड़ दिया; कोचलै तुयर् तुऱवाळ्–कौसल्या दुख नहीं छोड़ेंगी; इल् पिऱन्तार्–अच्छी कुलोद्भवाएँ; पॆयरुम् तन्मै–परस्पर भिन्न हैं, इस स्वभाव को; पिऱराल्–दूसरों को; अऱितऱ्कु ऎळितो–जानना सुलभ है क्या । ३३१

(वसिष्ठ ने यों सोचा।) राजा मरे नहीं; पर विना मरे रहनेवाले भी नहीं लगते ! राजा सुध खोये पड़े हैं, केकयराजकुमारी इसकी सुध नहीं लेतीं; दुख नहीं करतीं। पर कौसल्या हैं जो दुख नहीं छोड़तीं। ये दोनो उच्च कुल की ही पुत्रियाँ हैं। पर इनमें इतना वैषम्य कैसे आया ? यह विचित्रता दूसरों के लिए जानने को सुलभ नहीं लगती। ३३१

ऎन्ना वुन्ना मुनिव निडरा लऴिवा डुयरम्
शॊन्ना ळाहा ळॆनमुन् ऱॊऴुके हयर्कोन् महळै
अन्ना युरैया यरश नयर्वा निलैये दॆन्नत्
तन्ना निहऴ्न्द वॆल्लान् दाने तॆरियच् चॊन्नाळ् 332

ऎन्ना उन्ना–यह सोचकर; मुनिवन्–मुनि (वसिष्ठजी); इटराल् अऴिवाळ्–दुख-पीड़ित; तुयरम् चॊन्नाळ् आकाळ्–(कौसल्या) दुख (का कारण) बता सकनेवाली नहीं होंगी; ऎन–यह सोचकर; मुन् तॊऴु–सामने आकर नमस्कार करनेवाली; केकयर् कोन् मकळै–केकयराज-तनया से; अन्नाय्–माँ; अरचन् अयर्वान्–राजा मूर्छित हैं; निलै एतु–यह स्थिति क्यों कर; उरैयाय् ऎन्न–कहिए, कहने पर; तन्नाल् निकऴ्न्त ऎल्लाम्–अपने से जो हुआ वह सब; ताने तॆरिय चॊन्नाळ्–स्वयं समझाती हुई बोलीं। ३३२

यह सोचनेवाले वसिष्ठजी ने आगे सोचा कि दुख-पीड़ित कौसल्या दुख का कारण वताने की स्थिति में नहीं हैं। तब तक कैकेयी ने सामने आकर महर्षि को नमस्कार किया। उनसे महर्षि ने पूछा कि माँ ! राजा मूर्छित क्यों हैं ? उनकी इस स्थिति का कारण क्या है; बताइए। तब कैकेयी ने अपने कारण जो भी हुआ वह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। ३३२

शॊऱ्ऱाळ् शॊऱ्ऱा मुन्नम् जुडर्वा ळरशर्क् करशैप्
पॊऱ्ऱा मरैपोर् कैयार् पॊडिशूळ् पडिनिन्ऱ् ऱॆळुविक्
कऱ्ऱा ययरे लवळे तरुनिन् कादर् करशै
ऍऱ्ऱे शॆयलिन् ऱॊळिनी यॆन्ऱॆन् ऱिरवा निन्ऱान् 333

चॊऱ्ऱाळ् चॊऱ्ऱामुन्नम्–जो कहने लगीं उनके कहने ही के पूर्व; चुटर् वाळ्–चमकती तलवार वाले; अरचर्क्कु अरचै–राजाधिराज को; पॊन् तामरै पोल–सुन्दर कमल-सम; कैयाल्–हाथों से; पॊटि चूळ् पटि निन्ऱु–मैली भूमि से; ऍळुवि–पकड़ उठाकर; कऱ्ऱाय्–शिक्षा प्राप्त; अयरेल्–दुखी मत होइए; अवळे–खुद वे ही; निन् कातऱ्कु अरचै तरुम्–आपके प्यारे को राज दे देंगी; चॆयल् ऍऱ्ऱु–यह आपका करना क्या है; इन्ऱु ऒळि नी–अभी (दुख करना) छोड़ दीजिए; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–कई बार यह कहकर; इरवा निन्ऱान्–याचना की। ३३३

उनके पूरा कह चुकने के पहले ही मुनिवर ने अपने श्रेष्ठ कमल-सम हाथों से राजा को पकड़कर मैली भूमि से उठाया। "विद्वान राजा! आप क्लांत न हों। वे कैकेयी स्वयं आपके प्रिय पुत्र को राज्य दे देंगी। यह आपका दुख करना कैसा? अभी उसे दूर कर दीजिए।" ऐसा कई बार कहकर उन्होंने याचना की। ३३३

शीदप् पनिनी रळवित् तिण्गा लुक्क मॆन्कार्
पोदत् तळवे तवळ्वित् तिन्शॊर् पुहला निन्ऱान्
ओदक् कडनञ् जनैया ळुरैनञ् जॊरुवा ऱवियक्
कादर् पुदल्वन् पॆयरे पुहल्वा नुयिरुङ् गण्डान् 334

चीतम् पनि नीर् अळवि–शीतल हिमजल छिड़काकर; तिण् काल्–दृढ़ (दस्ता) डण्ड वाले; उक्कम् मॆन् काल्–पंखे की मृदु हवा; पोततु अळवु–सुध लौटते तक; तवळ्वित्तु–चलाकर; इन् चॊल् पुकला निन्ऱान्–मधुर वचन जो कह रहे थे उन्होंने; ओतम् कटल्–शीतल (क्षीर-) सागर के; नञ्चु अनैयाळ्–विषतुल्य कैकेयी का; उरै नञ्चु–वचनविष; ऒरु वाऱु अविय–कुछ हद तक मन्द पड़ा, तब; कातल् पुतलवन् पॆयरे पुकल्वान्–अपने प्यारे पुत्र का नाम ही कहते रहनेवाले राजा की; उयिरुम् कण्टान्–चेतना देखी। ३३४

उन्होंने राजा पर शीतल हिमजल छिड़का। पंखे से राजा के सचेत होते तक हवा की। उनसे, तब तक, बातें भी करते जाते थे। तब उनको पता लगा कि शीतल क्षीरसागर से निकले विष के समान कैकेयी के वचनविष का प्रभाव कुछ कम हो गया और राम का नाम बराबर लेने वाले दशरथ की सुध लौट आई है। मुनि ने देखा कि राजा श्रीराम का नाम लेते हुए सचेत हो रहे हैं। ३३४

काणा वैया विनिनी यॊळिवाय् कळिपे रवलम्
आणा यहने यिनिना डाळ्वा निडैयू ऱुळदो

माणा वुरैया डरुमा मळैये यनैयान् महुडम्
पूणा दौळिवा नॆतिन्या मुळमो पॊन्रे लॆन्रान् 335

काणा-(सचेत हुए) देखकर; ऐया-आर्य; इनि नी कळि पेर् अवलम्-आप यह बहुत बड़ा दुख; ऑळिवाय्-छोड़ दीजिए; आण् नायकन्ने-पुरुषोत्तम ही; इनि नाटु आळ्वान्-अब राज करेंगे; इटैयूरु उळतो-और कोई बाधा है; माणा उरैयाळ्-अनादरयोग्य वचन जो बोलीं; तरुम्-वे स्वयं दे देंगी; मा मळैये अनैयान्-काला मेघ-सम राम; मकुटम् पूणातु ऑळिवान् ऎनिन्-मुकुट धारण किये बिना जायँगे तो; याम् उळमो-हम (यहाँ) रहेंगे क्या; पॊन्रेल्-मन मत मारिए; ऎन्रान्-कहा। ३३५

राजा को सचेत देखकर मुनिवर ने कहा कि आर्य ! अब आप यह अत्यधिक दुख छोड़ दीजिए। पुरुषोत्तम ही राज्य करेंगे। कोई संकट नहीं रहेगा। रानी, जिन्होंने अनादर योग्य वचन कहा था स्वयं राज्य को श्रीराम के पास सौंप देंगी। मेघश्याम श्रीराम विना मुकुट पहने, राजा बने वगैर जंगल चले जायेंगे तो क्या आप समझते हैं कि हम सब यहाँ रहेंगे ? आप मन छोटा न करें। (आर्य शब्द का जो अर्थ है वही तमिळ 'ऐय' शब्द का भी है।)। ३३५

ऎन्रुम् मुनिवन् रन्नै निनैया विनैये निनियान्
पॊन्रुम् मुन्नम् मवनैप् पुनैमा महुडम् पुनैवित्
तॊन्रुम् वनमॆन् रुन्ना वण्णज् जॆय्दॆन् नुरैयुम्
कुन्रुम् पळिपू णामर् कावाय् कोवे यॆन्रान् 336

ऎन्र मुनिवन् तन्नै-यह जिन्होंने कहा उन मुनि से; निनैया-जिसकी सुध नहीं थी; विनैयेन्-ऐसे पाप का भागी हो गया; इनि नान् पॊन्रुम् मुन्नम्-अब मेरे मरने से पहले; अवनै-उनको; पुनै मा मकुटम्-धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पुनैवित्तु-धारण कराकर; वनम् ऎन्रु ऑन्रुम्-वनगमन की कोई बात; उन्ना वण्णम्-न सोचें, वह उपाय; चॆय्तु-करके; ऎन् उरै कुन्रुम् पळियुम्-मुझ पर वचन-भंग की निन्दा; पूणामल्-न लगवाकर; कावाय्-बचाइए; कोवे-महाराज; ऎन्रान्-कहा। ३३६

राजा ने ऐसा ढाढस देनेवाले मुनिवर्य से कहा— महाराज ! मुझे इसका भान ही नहीं रहा ! मैं ऐसा पापी हूँ ! मेरे मर जाने से पहले आप एक सहायता करें। श्रीराम को मुकुट-धारण करके राजा बना लीजिए। वह वनगमन की बात सोचे ही नहीं उसका उपाय कीजिए और मुझे भी 'वचन तोड़नेवाला' —इस निन्दा से बचाइए। ३३६

मुनियुम् मुनियुज् जॆय्हैक् कॊडियाण् मुहमे मुन्नि
इनियुन् पुदल्वर् करशुम् मेनै योरुक् कुयिरुम्
मनुविन् वळिनिन् कणवर् कुयिरुम् मुदवि वशैतीर्
पुनिदम् मरुवुम् पुहळे पुनैयाय् पॊन्ने यॆन्रान् 337

मुनियुम्–मुनि ने भी; मुनियुम् चॅय्कै–कोपजनक काम की; कॉटियाळ्–निर्मम (कैकेयी) का; मुकम् मुन्नि–मुख देखकर; पॉन्ने–स्वर्ण; इनि–अब; उन् पुतल्वर्कु–आपके पुत्र श्रीराम को; मनुविन् वऴि अरचुम्–मनुकुल-परम्परागत राज को; निन् कणवर्कु उयिरुम्–अपने पति को जीवन; एनै योरुक्कु उयिरुम्–अन्यों को भी उनके प्राण; उतवि–दान करके; वचै तीर्–निन्दारहित; पुनितम् मरुवुम्–पवित्रता-मिलित; पुकऴे–कीर्ति को; पुनैयाय्–धारण कीजिए; ॲन्ऱान्–बोले। ३३७

मुनिवर तब कोपजनक वचन वाली कैकेयी को देखकर बोले। हे स्वर्णसमान मूल्य वाली! अब आप स्वयं आपके पुत्र राम को मनुकुल के परम्परागत राज्य को सौंपकर अपने पति को प्राणदान और अन्य प्रजाजनों को जीवनदान कीजिए और आप भी अनिंद्य पवित्र यश धारण कीजिए। ३३७

मॉय्म्माण् विनैवे रऱवॅन् ऱुयर्वान् मॉऴिया मुन्नम्
विम्मा वऴुवा ळरशन् मॅय्यिऱ् ऱिरिवा नॅन्निन्
इम्मा वुलहत् तुयिरो डिनिवाऴ् वुहवे नॅन्शॉल्
पॉय्म्मा णामऱ् किन्ऱे पॉन्ऱा दॉऴिये नॅन्ऱाळ् 338

मॉय् माण् विनै–सशक्त दोनो (पाप, पुण्य) कर्मों को; वेर् अऱ वॅन्ऱु–जड़ तक नाश करके उन पर विजय पाकर; उयर्वान्–उत्कृष्ट जो हुए थे उनके; मॉऴिया मुन्नम्–बात पूरा करने के पूर्व ही; विम्मा अऴुवाळ्–सिसकते हुए रोनेवाली; अरचन् मॅय्यिल् तिरिवान् ॲन्निन्–राजा सत्यपालन से मुकर जायँगे तो; इनि इ मा उलकत्तु–अब इस विशाल पृथ्वी पर; उयिरोटु–प्राण लेकर; वाऴ्वु–जीना; उकवेन्–नहीं चाहूँगी; ॲन् चॉल्–मेरा वचन; पॉय् माणामऱ्कु–झूठा न बन जाए, इसके लिए; इन्ऱे पॉन्ऱातु ऑऴियेन्–आज ही मरे बिना नहीं रहूँगी; ॲन्ऱाळ्–कहा। ३३८

वसिष्ठजी बलवान कर्मबन्धन को पूर्णरूप से काट चुके महात्मा थे। उनकी बातें पूरी होते तक भी कैकेयी ने सब्र नहीं किया। उसके पूर्व ही वे बोलीं। सिसक-सिसककर रोते हुए उन्होंने कहा कि अगर राजा अपने सत्यपालन से मुकर जाएँगे तो इस विशाल पृथ्वी पर प्राणों के साथ जीना नहीं चाहूँगी। मेरी बात झुठलायी न जाय इसके लिए मैं मरे बिना नहीं रहूँगी। उन्होंने अपना दृढ़ निश्चय सुना दिया। ३३८

कॉऴुनन् ऱुञ्जुम् मॅन्नवुङ् गॉळ्ळा दुलहम् मॅन्नवुम्
पऴिनिन् ऱुयरुम् मॅन्नवुम् पावम् मुळदा मॅन्नवुम्
ऑऴिहिन् ऱिलैयन् ऱियुमॉन् ऱुणर्हिन् ऱिलैया निनिमेल्
मॉऴिहिन् ऱनवॅन् ऱॅन्ना मुनियुम् मुऱैयन् ऱॅन्बान् 339

मुनियुम्–(वसिष्ठ) मुनि भी; कॉऴुनन् तुञ्चुम् ॲन्नवुम्–पति मर जाएँगे यह बात और; उलकम् कॉळ्ळातु–संसार सहन नहीं करेगा यह भी; पऴि निन्ऱु उयरुम् ॲन्नवुम्–अपमान अचल होगा और बढ़ेगा यह भी; पावम् उळतु आम्–पाप होगा;

ऍन्नवुम्–यह भी सोचकर; **ऒऴिकिन्ऱिलै**–हठ नहीं छोड़तीं; **अन्ऱियुम्**–इसके अलावा; **ऒन्ऱु उणर्किन्ऱिलै**–(दूसरों की) एक भी नहीं मानतीं; **यान् इनिमेल्**–मेरे, आगे; **मॊऴिकिन्ऱत्**–कथनीय; **ऍन्**–क्या हैं; **ऍन्ना**–कहकर; **मुऱै अन्ऱु**–यह ठीक नहीं है; **ऍन्पान्**–आगे भी बोले। ३३९

मुनिवर ने यह सुना तो उन्हें रंज हुआ। वे ज़रा डाँटते हुए बोले— आप यह नहीं देखतीं कि पति मर जायँगे, संसार सहन नहीं करेगा, अपयश बढ़ेगा और आप पर पाप लगेगा। यह समझकर आप अपना हठ नहीं छोड़तीं। फिर दूसरों की भी एक नहीं सुनतीं। आगे मेरे पास कहने को क्या हैं ? यह न्यायसम्मत नहीं। फिर वे आगे भी कहने लगे। ३३९

कण्णो डादे कणव नुयिरो डिडर्का णादे
पुण्णू डोडुङ् गन्नलो विडमो वॆन्नप् पुहल्वाय्
पॆण्णा हुदियो मायप् पेयो कॊडियाय् नीयिम्
मण्णो डुन्नो डॆन्ना मन्नमे वलिदे यॆन्ऱान् 340

कॊटियाय्–निष्ठुर; **कण्णोटाते**–दाक्षिण्यरहित; **कणवन् उयिर् ओटु इटर्**–पतियों के प्राण निकलते-से हैं, उससे होनेवाला दुख भी; **काणाते**–नहीं देखतीं; **पुण् ऊटु ओटुम् कन्नलो**–व्रण में घुसनेवाली आग क्या; **विटमो**–विष; **ऍन्न**–ऐसा समझी जाइए ऐसा; **पुकल्वाय्**–बात करती हैं; **नी पॆण् आकुतियो**–आप भी स्त्री हैं क्या; **मायम् पेयो**–मायावी पिशाच; **इ मण्णोटु**–इस मट्टी से; **उन्नोटु**–आपका; **ऍन् आम्**–क्या (लाभ) होगा; **मनम् वलिते**–आपका मन कठोर है; **ऍन्ऱान्**–बोले। ३४०

हे निष्ठुर ! दया-दाक्षिण्य नहीं दिखातीं। पति के प्राण-त्याग के दुख को भी नहीं देखतीं। क्या आप व्रण में घुसनेवाली आग हैं ? विष हैं ? —ऐसा पूछने योग्य रीति से बात करती हैं। आप स्त्री हैं, या माया-पिशाचिनी हैं ? इस मट्टी को लेकर आपका क्या लाभ होगा ? क्या आपका मन इतना कठोर है ? (आश्चर्य है !)। ३४०

वायान् मन्नन् महनै वनमे हॆन्ना मुन्नम्
नीये शॊन्ना यवन्नो निमिर्हा निडैवन् नॆऱियिर्
पोयो पुहलो तविरान् पुहऴो डुयिरैच् चुडुवॆन्
दीयोय् निन्बोर् ऱीयो रुळरो शॆयलॆन् नॆन्ऱान् 341

मन्नवन्–राजा (के); **वायाल्**–अपने मुख से; **मकनै**–अपने पुत्र को; **वनम् एकु**–वन जाओ; **ऍन्ना मुन्नम्**–कहने के पहले; **नीये चॊन्नाय्**–आप ही ने कह दिया; **अवन्नो**–वे तो; **निमिर् कान् इटै**–विस्तृत वन में; **वल् नॆऱियिल्**–कठोर मार्ग में; **पोय् पुकल्**–जा पहुँचना; **तविरान्**–नहीं छोड़ेंगे; **पुकऴोटु**–यश के साथ; **उयिरै चुटु**–प्राणों का भी नाश करनेवाली; **वॆम् तीयोय्**–भयंकरअग्नि-समाना; **निन् पोल् तीयोर्**–आपके समान क्रूर; **उळरो**–होंगे क्या; **चॆयल् ऍन्**–करनी भी कैसी; **ऍन्ऱान्**–कहा। ३४१

मुनिवर आगे बोले। चक्रवर्ती के अपने मुख से, 'वन जाओ' कहने से पहले ही आपने उनसे (राजा की आज्ञा के रूप में) कह दिया। श्रीराम भी विस्तृत जंगल में कठोर मार्ग तय करते हुए जा पहुँचने से नहीं रुकेंगे। आप भी कितनी क्रूर हैं कि आपने यश और चक्रवर्ती के प्राण दोनो को जला दिया है? आपके समान निर्मम स्त्री इस संसार में और कोई होंगी क्या? नहीं मिलेंगी। आपका भी कैसा काम है? । ३४१

तावित्‌ मुनिवन्‌ पुहलत्‌ तळरा नित्र मन्नन्‌
नाविन्‌ नञ्ज मुडैय नङ्गै तन्नै नोक्किप्‌
पावि नीये वॆङ्गान्‌ पडर्वा यॆन्ऱॆन्‌ नुयिरै
एवि नायो ववनु मेहितानो वॆन्ऱान्‌ 342

तावित्‌ मुनिवन्‌–निर्दोष मुनिवर के; पुकल–कहने पर; तळरा नित्र मन्नन्–शिथिल (हुए) राजा; नाविल्‌ नञ्चम्‌ उटैय–विष-जिह्वा; नङ्कै तन्नै–स्त्री को; नोक्कि–देखकर; पावि–पापिनी; नीये–तुम स्वयं ही; ऎन्‌ उयिरै–मेरे प्राण (सम पुत्र) को; वॆम्‌ कान्‌ पटर्वाय्‌ ऎन्त–भयंकर वन में जाओ, यह; एवित्तायो–आज्ञा दिला चुकीं; अवतुम्‌–वह भी; एकित्तानो–चला गया क्या; ऎन्ऱान्‌–पूछा। ३४२

अनिंद्य मुनि ने यह बात कही तो चक्रवर्ती को सच्ची स्थिति मालूम हो गई। उन्होंने, बहुत पीड़ा का अनुभव करते हुए विकल होकर, विषजिह्वा कैकेयी से पूछा— क्या तुमने अपनी ओर से मेरे प्राणप्यारे पुत्र को जंगल जाने की आज्ञा दिला दी? वह भी चला गया क्या? । ३४२

कण्डे नॆञ्जङ्‌ गळियार्‌ कनिवाय्‌ विडना नॆडुनाळ्‌
उण्डे नदना नीयॆन्‌ नुयिरै मुदलो डुण्डाय्‌
पण्डे यॆरिमुन्‌ नुन्नैप्‌ पावी देवि याहक्‌
कॊण्डे नल्लेन्‌ वेरोर्‌ कूऱ्ऱन्‌ देडिक्‌ कॊण्डेन्‌ 343

पावी–पापिनी; नॆञ्चम्‌ कण्टेन्‌–तुम्हारा मन जाना; कळियाल्–(काम, मोह) मस्ती के साथ; नान्‌–मैंने; कनिवाय्‌ विटम्‌–(बिंब-) फल-सम मुख (अधर) का विष; नॆट्टु नाळ्‌ उण्टेन्‌–बहुत काल तक पिया; अतनाल्–उससे (उसके बदले); नी मुतलोटु–तुमने मूल के साथ; ऎन्‌ उयिरै उण्टाय्‌–मेरे प्राण पी लिये; पण्टे–पहले ही; ऎरि मुन्‌–अग्नि को साक्षी बनाकर; उन्नै तेवि आक कॊण्टेन्‌ अल्लेन्‌–तुम्हें महिषी नहीं बनाया; वेऱु ओर्‌ कूऱ्ऱम्‌–विलक्षण एक यम को; तेटि कॊण्टेन्‌–ढूँढ़ लिया। ३४३

चक्रवर्ती ने और भी कहा— पापिनी! तुम्हारा मन समझ लिया। बहुत दिन तक मैंने तुम्हारा बिंबाधर-निसृत 'विष' पिया था। अब उसके बदले तुम मेरे प्राणों को मूल सहित पी चुकी हो। पहले अग्नि को साक्षी बनाकर तुमसे विवाह करके मैंने रानी को नहीं वरा था; परन्तु एक

विलक्षण यम को ढूँढ़ लिया। (तुमको रानी समझा पर तुम यम निकलीं।)। ३४३

विळिक्कुङ् गणवे रिल्ला वॅङ्गा नॅन्कान् मुळैयैच्
चूळिक्कुम् व्रितैया लेहच् चूळ्वा यॅन्नैप् पोळ्वाय्
पळिक्कु नाणाय् माणाप् पावि यिनियॅन् पलवुन्
कळुत्ति नाणुन् महऱ्कुक् काप्पु नाणा मॅन्ऱान् 344

माणा पावि–अनादरयोग्य पापिनी; विळिक्कुम् कण्–देखनेवाली आँखें; तन्नैयन्ऱि वेऱु इल्ला–उसको छोड़कर मेरी कोई और नहीं ऐसे; अॅन् काल् मुळैयै–मेरे वंश के किसलय को; वॅम् कान् एक–भयंकर कानन में भेजने का; चुळिक्कुम् वितैयाल्–गोलमाल के काम द्वारा; चूळ्वाय्–षड्यन्त्र रचती हो; अॅन्नै पोळ्वाय्–मुझे काट रही हो; पळिक्कुम् नाणाय्–कलंक से नहीं डरतीं; इनि पल अॅन्–अब अनेक बातों से क्या; उन् कळुत्तिल् नाण्–तुम्हारे गले का मंगलसूत्र ही; उन् मकऱ्कु–तुम्हारे पुत्र का; काप्पु नाण् आम्–रक्षाबन्धन का सूत्र बन जायगा; अॅन्ऱान्–कहा। ३४४

आदर के लिए अयोग्य पापिनी! श्रीराम मेरे वंश का वृक्ष का 'किसलय' है। मेरी आँखें ही है। तुम उसको भयंकर वन में भेजने का, अपने वंचक काम द्वारा षड्यन्त्र रच चुकी हो! उससे तुम मेरे प्राणों को चीर रही हो। तुम कलंक से नहीं डरतीं। हाँ, अब कितना भी कहूँ क्या लाभ है? पर यह समझ लो कि तुम्हारे गले का मंगल-सूत्र (विवाह के समय में पति द्वारा पत्नी के गले में पहनाया जाता है। यह एक ही बहुमुख्य अहिवात का सूचक है और मंगलकारी वस्तु है) तोड़ लेकर अपने पुत्र के अभिषेक के अवसर पर जो रक्षा-बन्धन किया जायगा उसके काम में लाया जानेवाला है (तुम विधवा बन जाओगी)। ३४४

इन्ने पलवुम् पहर्वा निरङ्गा दाळै नोक्किच्
चॊन्ने निन्ऱे यिवळॆन् ऱार मल्ल डुरन्देन्
मन्ने यावान् वरुमप् परदन् ऱनैयुम् महनॆन्
ऱुन्नेन् मुनिवा ववनु माहा नुरिमैक् कॅन्ऱान् 345

इन्ने–इस प्रकार; पलवुम् पकर्वान्–विविध बातें कहकर; इरङ्काताळै–निर्दय को; नोक्कि–देखकर; मुनिवा–महर्षे; इन्ऱे चॊन्नेन्–अभी कहता हूँ; इवळ् अॅन् तारम् अल्लळ्–यह मेरी पत्नी नहीं है; तुरन्तेन्–त्याग दिया; मन् आवान् वरुम्–राजा बनकर आनेवाले; अ परतन् तन्नैयुम्–उन भरत को भी; मकन् अॅन्ऱु उन्नेन्–पुत्र नहीं मानूँगा; अवन् उरिमैक्कुम् आकान्–वह मेरे पितृकृत्य करने का अधिकारी नहीं होगा; अॅन्ऱान्–कहा। ३४५

दशरथ ने कितनी ही ऐसी बातें कहीं। पर कैकेयी कुछ भी नहीं पसीजीं। तब राजा ने वसिष्ठजी से कैकेयी के सम्बन्ध में अपना फैसला

सुनाया। महर्षे ! अभी कहे देता हूँ। यह मेरी धर्मपत्नी नहीं है। उसको मैं त्याग चुका। उसके पुत्र भरत को भी, जो राजा बनेगा, अपना पुत्र नहीं मानता। उसे दाहक्रिया आदि पितृकर्म करने का अधिकार नहीं होगा। ३४५

ऍन्‌तैक् कण्डु मेहा वण्ण मिडैयू ऱुडैयान्
उन्‌तैक् कण्डु मिलन्नो वॅन्‌ना वुयर्को शलैयैप्
पिन्‌तैक् कण्डा ननैयान् पिरियक् कण्ड तुयरम्
तन्‌तैक् कण्डे तविर्वा डळर्वा णिलैयिऱ् ऱळर्वान् 346

उयर् कोचलैयै–उत्कृष्ट (गुण वाली) कौसल्यादेवी से; ऍन्‌तै कण्टुम् एका वण्णम्–मुझसे मिलने के बाद जाने से रोकनेवाली; इटैयूऱु उटैयात्–बाधा जिसको हुई थी वह; उन्‌तैयुम् कण्टिलत्तो–तुमसे भी नहीं मिला क्या; ऍन्‌ना–कहकर; पिन्नै–बाद; कण् अन्नयान् पिरिय–आँख-सम प्यारा छोड़ जाने से; कण्ट तुयरम्–उत्पन्न दुख; तन्‌नै कण्टु तविर्वाळ्–अपने को (दशरथ को) देखकर दूर करने के विचार से आकर; तळर्वाळ्–श्रांत होनेवाली उनकी; निलैयित्–स्थिति से; तळर्वान्–(प्रभावित हो) श्रांत पड़ गये। ३४६

फिर दशरथ ने गुणोन्नत कौसल्या से पूछा कि देवी ! मुझसे मिलकर जाने में उसे बाधा हो गई थी। क्या वह तुमसे भी नहीं मिला ? कौसल्या अपनी आँख के समान पुत्र के वियोग से दुखी होकर उस दुख को राजा की संगति में भूलने के विचार से आई थीं। यह राजा ने जाना और उनकी स्थिति को देखकर विचलित हो गईं। कौसल्या की स्थिति देखकर राजा भी व्याकुल हो गये। ३४६

माऱ्ऱाळ् शॅयला मॅन्‌ऱुङ् गणवन् वरमीन् दुळ्ळम्
आऱ्ऱा दयर्न्‌दा नॅन्‌ऱु मऱिन्‌दा ळवळुम् मवनैत्
तेऱ्ऱा नित्ऱाण् महनैत् तिरिवा नॅन्‌ऱा ळरशन्
तोऱ्ऱान् मॅय्यॅन् ऱुलहज् जॊल्लुम् बऴिक्कुञ् जोर्वाळ् 347

माऱ्ऱाळ् चॅयल् आम् ऍन्‌ऱुम्–सौत का काम है, यह और; कणवन् वरम् ईन्तु–पति ने वर देकर; उळ्ळम् आऱ्ऱातु–चित्तक्षमता खोकर; अयर्न्तान्–(संकटग्रस्त हो) बेहोश हुए, यह भी; अरिन्ताळ् अवळुम्–जिन्होंने जाना वे भी; अवनै तेऱ्ऱा नित्ऱाळ्–उन्हें ढाढस देते हुए; मकनै–श्रीराम (को); तिरिवान्–लौट आयगा; ऍन्‌ऱाळ्–बोलीं; अरचन् मॅय् तोऱ्ऱान् ऍन्‌ऱु–राजा सत्य-पराजित हो गये, इस; उलकम् चॊल्लुम् पऴिक्कुम्–लोक-निंदा से भी; चोर्वाळ्–मन में मुरझाईं। ३४७

कौसल्या ने जब यह जाना कि यह सब सपत्नी का काम है और राजा वर देकर संकट में पड़े बेहोश हो गये थे। यह जानकर उन्होंने राजा को धीरज बँधाते हुए कहा कि श्रीराम, हमारा पुत्र लौट आयगा। पर उससे राजा की सत्यवादिता की हानि हो जायगी। राजा की सत्य के क्षेत्र में

पराजय हो जायगी। लोकनिन्दा होगी। राजा के सत्यपालन की अभिलाषा रखनेवाली कौसल्या इस विचार से वहुत खिन्नमन हो गईं। ३४७

तळ्ळा निलैशान् मॆय्म्मै तळ्ळुवा वहैता नॆय्दिन्
ऎॅळ्ळा निलैहूर् पॆरुमैक् किऴिवा मॆन्नला लुरवोय्
विळ्ळा निलैशे रन्बान् महन्मेन् मॆलियिन् नुलहम्
कॊळ्ळा दन्ऱो वॆन्ऱाळ् कणवन् कुऱैयक् कुऱैवाळ् 348

कणवन् कुऱैय–पति के कृश होने से; कुऱैवाळ्–खुद क्षीण होनेवाली; उरवोय्–बुद्धिबली; तळ्ळा निलै चाल् मॆय्म्मै–जिसका अनिवार्य रूप से पालन करने में ही गौरव है, उस सत्य को; तळ्ळुवा वकै ऎॅय्तिन्–न पालने की स्थिति को प्राप्त होंगे तो (छोड़ देंगे तो); ऎॅळ्ळा निलै कूर् पॆरुमैक्कु–अनिंद्य आदर का स्थान प्राप्त आपके गौरव की; इऴिवु आम् ऎॅन्नलाल्–हानि होगी, इसलिए; मकन् मेल्–पुत्र पर; विळ्ळा निलै चेर् अन्पाल्–अभिन्न स्थिति के प्रेम के कारण; मॆलियिन्–अब ढिलाई होगी तो; उलकम् कॊळ्ळातु अन्ऱो–संसार (के श्रेष्ठों का समुदाय) नहीं मानेगा न; ऎन्ऱाळ्–कहा। ३४८

राजा कृश हुए —यह देखकर कौसल्यादेवी भी निर्वल हुईं। तो भी उन्होंने दशरथ को समझाया कि बुद्धिबली! अनिवार्य पालन से ही सत्य यशदायी बनता है। अगर आप उसके पालन को छोड़ देंगे तो अनिन्द्य आपके यश की हानि हो जायगी। इसलिए अकाट्य पुत्र-प्रेम के वश में पड़कर सत्यपालन में ढिलाई दिखायेंगे तो संसार का श्रेष्ठ समाज उसको उचित नहीं मानेगा न! । ३४८

पोवा दॊऴिया नॆन्ऱाळ् पुदल्वन् ऱन्नैक् कणवन्
शावा दॊऴिया नॆन्ऱॆन् ऱुळ्ळन् दळ्ळुऱ् ऱयर्वाळ्
कावा यॆन्नाण् महनैक् कणवन् पुहऴुक् कऴिवाळ्
आवा वुयर्को शलैया मन्न मॆन्नुऱ् ऱनळे 349

उयर् कोचलै आम् अन्नम्–गुणोन्नत कौसल्या हंसिनी (सी देवी); पुतल्वन् तन्नै–अपने पुत्र को; पोवातु ऒऴियान्–बिना गये नहीं रहेगा; ऎॅन्ऱाळ्–समझकर; कणवन् चावातु ऒऴियान्–पति मरे बिना नहीं रहेंगे; ऎॅन्ऱु ऎॅन्ऱु–ऐसा सोच-सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱ्ऱु–चित्ताकुल हो; अयर्वाळ्–लटतीं; कणवन् पुकऴुक्कु अऴिवाळ्–पति के यश के लिए मरतीं (उसकी उत्कट इच्छा करतीं); मकनै कावाय् ऎन्नाळ्–पुत्र को बचाओ (रोको) नहीं कहतीं; आ, आ–हाय, हाय; ऎॅन् उऱ्ऱनळ्–कैसी ही (दुखी) हो गईं। ३४९

गुणोन्नत हंसिनी-समान कौसल्या ने समझ लिया कि श्रीराम बिना वन गए नहीं रहेगा। "पति भी बिना मरे जीवित नहीं रहेंगे" यह बार-बार सोचकर वे विकलमन हुईं और शिथिल हुईं। पति के यश को प्राण-सम चाहनेवाली वे राजा से यह कह नहीं सकीं कि पुत्र को वन जाने से

वचाइए (रोकिए)। हाय ! उनकी स्थिति भी कैसी दयनीय हो गई ? । ३४९

उणर्वा ननैया ळुरैयालु यर्न्दा नुरैशाल् कुमरन्
पुणरा निलमे वनमे पोवा नेया मॅन्ना
इणरार् तरुदा ररश निडरा लयर्वान् विनैयेन्
तुणैवा तुणैवा वॅन्रान् रोन्रा रोन्रा यॅन्रान् 350

इणर् आर् तरु तार्–(फूलों के) गुच्छों से पूर्ण मालाधारी; अरचन्–राजा; अनैयाळ् उरैयाल्–उनके कथन से; उयर्न्तान्–गुणोत्कृष्ट (और); उरै चाल्–प्रकीर्तित; कुमरन्–कुँअर श्रीराम; निलम् पुणरान्–भूमि से विवाह नहीं करेगा; वनम् पोवाने आम्–वन जाएगा ही; ॲन्ना उणर्वान्–ऐसा सोचकर; इडराल् अयर्वान्–दुखी हो विकल होकर; विनैयेन् तुणैवा–पापी, मेरे सहायक; तुणै वा–सहायता के लिए आओ; ॲन्रान्–कहा; तोन्राल्–उत्तम कुमार; तोन्राय्–सामने आ जाओ; ॲन्रान्–कहा। ३५०

पुष्प के गुच्छों से मिली मालाधारी दशरथ ने कौसल्या के वचन से जान लिया कि गुणोत्कृष्ट और प्रकीर्तित श्रीराम भूपति नहीं बनेंगे और वन जाएँगे ही। यह जानकर दुख से लट गये और विलाप करने लगे कि हे राम ! इस पापी के सहायक ! आओ सहारा दो। उत्तम पुत्र ! सामने आओ। ३५०

कण्णु नीरा युयिरु मॊळुहक् कळिया निन्रेन्
ॲण्णु नीरान् मरैयो रॅरिमुन् निन्मेर् चॊरिय
मण्णु नीराय् वन्द पुनलै महने विनैयेन्
उण्णु नीरा युदवि युयर्का नडैवा यॅन्रान् 351

मकने–हे पुत्र; कण्णुम् नीर् आय् ऑळुक–आँखों के (अश्रु) जल होकर बहते; उयिरुम् कळिया–प्राणों के भी निकलते; निन्रेन्–(ऐसी स्थिति में) रहता हूँ; ॲण्णुम् नीराल्–मान्य प्रकार से; मरैयोर्–वेदज्ञ; ॲरि मुन्–अग्नि के सामने; निन् मेल् चॊरिय–तुम्हारे ऊपर (अभिषक) जल डालें; मण्णुम् नीर् आय् वन्त–मज्जनजल जो आया है; पुनलै–उस सलिल को; विनैयेन्–मुझ पापी को; उण्णुम् नीर् आय्–(मृत्यु के बाद) तर्पण का जल; उतवि–देकर; उयर् कान् अटैवाय्–उच्चवृक्ष-जंगल में जाओ; ॲन्रान्–कहा। ३५१

दशरथजी ने राम को सम्बोधित करते हुए विलाप किया। हे राम ! हे पुत्र ! मेरी आँखें स्वयं द्रवीभूत हो बह रही हैं। प्राण भी जाने को छटपटा रहे हैं, सबकी प्रशंसा और वाहवाही के साथ, अग्नि के सामने वेदज्ञों द्वारा तुम्हारा अभिषेक करने के लिए मंगलमज्जन जल जो आया है उसको लेकर पापी, मेरा तर्पण करो; तब ऊँचे पेड़ों के वन में जाओ। ३५१

पडैमा णरशैप् पलहान् मऴुवा ऴदन्ना ऍऱिवान्
मिडैमा वलिदा नन्नैयान् विल्ला लडुमा वल्लाय्
उडैमा महुडम् बुनैयॅन् ऱुरैया वुडन्ने कॊडियेन्
शडैमा महुडम् पुनैयत् तन्दे नन्दो ऍन्ऱान् 352

पटै माण् अरचै–सेनाविशिष्ट राजाओं को; पल काल्–अनेक बार; मऴु वाळ् अतनाल्–परशु के अस्त्र से; ऍऱिवान्–चलाकर (जिन्होंने) परास्त किया उनका; मिटै मा वलि–सुदृढ़ और बड़े बल को; अनैयान् विल्लाल्–उन्हीं के धनुष से; अटुम् आऱु वल्लाय्–मिटानेवाले समर्थ; कॊटियेन–क्रूर मैंने; उटै मा मकुटम्–(तुम्हारे ही) स्वत्व का उन्नत किरीट; पुनै ऍन्ऱु उरैया–पहनो कहकर; उटन्ने–तुरन्त; चटै मा मकुटम्–जटा का बड़ा किरीट; पुनैय तन्तेन्–पहनने को दिया; अन्तो–हाय; ऍन्ऱान्–कहा। ३५२

सेना सहित राजाओं को अनेक बार जिन्होंने अपना परशु फेंककर परास्त किया था उन परशुराम के कठिन बल को उन्हीं के धनु से नष्ट करनेवाले, हे राम ! मैं बड़ा क्रूर हूँ। पहले मैंने कहा कि यह उत्तम और उन्नत किरीट तुम्हारा है; धारण कर लो। पर तुरन्त आज्ञा दे दी कि जटा रूपी मुकुट धारण कर लो। ३५२

करुत्ता युरुवम् मनमुङ् गण्णुङ् गैयुञ् जॅय्याय्
पॊऱुत्ताय् पॊऱैये यिऱैवन् पुरमून् ऱॆरित्त पोर्विल्
इऱुत्ताय् तमिये नॆन्ना दॆन्नै यिम्मूप् पिडैये
वॆऱुत्ता यिनिनान् वाणाळ् वेण्डेन् वेण्डे नॆन्ऱान् 353

उरुवम् करुत्ताय्–श्यामरूप; मनमुम् कण्णुम् कैयुम् चॆय्याय्–लाल मन, आँखों और हाथों वाले; पॊऱैये पॊऱुत्ताय्–क्षमाशील; पुरम् मून्ऱु ऍरित्त इऱैवन्–त्रिपुरदाही परमेश्वर का; पोर् विल्–युद्धधनु; इऱुत्ताय्–तोड़नेवाले; इ मूप्पिटै–इस वार्द्धक्य में; तमियेन् ऍन्नातु–निस्सहाय (हूँ इसका भी) विचार न करके; ऍन्नै वॆऱुत्ताय्–मुझसे घृणा करते हो; इनि–अब; नान्–मैं; वाऴ्नाळ् वेण्टेन्–जीवन के दिन नहीं चाहता; वेण्टेन्–नहीं चाहता; ऍन्ऱान्–कहा। ३५३

दशरथ ने आगे कहा— श्याम रूप ! मन के श्रेष्ठ ! लाल (सुन्दर) आँखों और हाथों वाले; हे क्षमाशील ! त्रिपुरान्तकधनु-भंजक ! मेरे इस वार्द्धक्य में मेरी निस्सहायता का भी विचार न करके मुझे घृणा करके (त्याग कर) जाते हो अब और दिन जीना नहीं चाहता, नहीं चाहता। ३५३

पॊन्निन् मुन्न मॊळिरुम् बॊन्ने पुहऴिन् पुहऴे
मिन्निन् मिन्नुम् वरिविऱ् कुमरा मॆय्यिन् मॆय्ये
ऍन्निन् मुन्नम् वन्नी यडैदऱ् कॊऴिये नल्लेन्
उन्निन् मुन्नम् बुहुवे नयर्वा नहम्या नॆन्ऱान् 354

पॊन्निऩ् मुन्नम्–स्वर्ण से बढ़कर; ऒळिरुम्–चमकनेवाले; पॊन्ने–स्वर्ण; पुकऴिऩ् पुकऴे–यश से अधिक यशस्वी; मिन्निऩ् मिन्नुम्–विजली से भी अधिक दमक वाले; वरिविल् कुमरा–बन्धनयुक्त धनुर्धर; मॆय्यिऩ् मॆय्ये–सत्य के विग्रह; ऎन्निऩ् मुन्नम्–मुझसे पहले; नी वऩम् अटैतऱ्कु–तुम वन चले जाओ, इतना; ऎळियेऩ् अल्लेऩ्–(मैं) क्षुद्र नहीं हूँ; उन्निऩ् मुन्नम्–तुमसे पहले; याऩ् उयर् वाऩ् अकम्–मैं उच्च आकाशलोक (स्वर्ग) में; पुकुवेऩ्–पहुँचूंगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ३५४

स्वर्ण से अधिक मूल्यवान स्वर्ण ! यश से अधिक यशस्वी ! विजली से अधिक चमकनेवाले धनु के धारक ! सत्यमूर्ति ! तुमको मुझसे पहले, मुझे जीता छोड़कर, वन जाने दूँ मैं इतना क्षुद्र या मन का दुर्बल नहीं हूँ। तुम निकलो, इसके पहले ही मैं ऊपर स्वर्ग पहुँच जाऊँगा। ३५४

नहुदऱ् कोंत्त नञ्जु नेयत् ताले यावि
उहुदऱ् कोत्त वुडलु मुडैये तुन्बो लल्लेन्
तहुदऱ् कोत्त शनहन् तैयल् कैयेप् पऱ्ऱिप्
पुहुदक् कण्ड कण्णाऱ् पोहक् काणे नॆन्ऱान् 355

नॆकुतऱ्कु ऒत्त नॆञ्चुम्–द्रवणशक्य मन; नेयत्ताले–स्नेह से; आवि उकुतऱ्कु ऒत्त उटलुम्–जीवन छोड़ सकनेवाला शरीर; उटैयेऩ्–मेरे पास हैं; उऩ् पोल् अल्लेऩ्–तुम्हारे समान नहीं हूँ; तकुतऱ्कु ऒत्त–योग्यता रखनेवाली; चऩकऩ् तैयल्–जनक की पुत्री का; कैयै पऱ्ऱि–पाणीग्रहण करके; पुकुत कण्ट कण्णाल्–(नगर-) प्रवेश करते देखा (जिन्होंने) उन आँखों से; पोक काणेऩ्–नगर छोड़ जाना न देख सकूँगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ३५५

मेरे पास द्रवणशील मन है। शरीर इतना दुर्बल हो गया कि प्राण छोड़ देने में कोई कष्ट नहीं होगा। तुम्हारे समान मेरे पास कठोरता नहीं है। मैंने तुमको अपने योग्य, जनकपुत्री के साथ हाथ में हाथ डाले नगर में प्रवेश करते देखा था। क्या उन्हीं आँखों से मैं तुम्हारा नगर-निर्गम देख सकूँगा ? नहीं —कहा। ३५५

ऎऱ्ऱे पहर्वे निन्निया नॆन्ने युन्निऱ् पिरिय
वऱ्ऱे युलहम् मॆन्निनुम् वाने वरुन्दा दॆन्निनुम्
पॊऱ्ऱे ररशे तमियेन् पुहऴे युयिरे युन्नैप्
पॆऱ्ऱे नरुमै यऱिवेन् पिऴैयेन् पिऴैये नॆन्ऱान् 356

पॊन् तेर् अरचे–स्वर्णरथ राजा; तमियेन् पुकऴे–मेरे यश के हेतुभूत; उयिरे–मेरे प्राण (सम); ऎन्ने–(यह) क्या (हो गया); इनि–अब; याऩ् ऎऱ्ऱु पकर्वेन्–मैं कैसे बताऊँ; उलकम्–सारा संसार; उन्निल् पिरिय वऱ्ऱे ऎन्निनुम्–तुमसे बिछुड़ा रह सकता है, तो भी; वाऩ् वरुन्तातु–स्वर्ग नहीं पछतायेगा; ऎन्निनुम्–तो भी; अरुमै–तुम्हारा मूल्य; पॆऱ्ऱेन् अऱिवेन्–जनक के नाते मैं जानता हूँ; पिऴैयेन्–जीता नहीं रहूँगा; पिऴैयेन्–नहीं जिऊँगा; ऎन्ऱान्–कहा। ३५६

दशरथजी आगे विलापते हुए कहते हैं— स्वर्णरथी ! मेरे यश के कारणभूत ! मेरे प्राण ! यह क्या हो गया ? मैं अपनी दशा कैसे कहूँ ? यह सारा संसार तुमसे विलग रह सके तो भी, आकाशलोक भी तुम्हारा वियोग सह सके तो भी मैं तुम्हारा जनक हूँ, मैं तुम्हारा मूल्य जानता हूँ; मैं नहीं बचूँगा, न बचूँगा । ३५६

अळ्ळऱ् पळ्ळप् पुनल्शू ऴहन्मा निलमु मरशुम्
कॉळ्ळक् कुऱैया निदियिन् कुवैयु मुदला मॅवैयुम्
कळ्ळक् कैहे शिक्के युदविप् पुहऴ्हैक् कॉण्ड
वळ्ळऱ् ऱन्मॅन् नुयिरै माय्क्कु माय्क्कु मॅन्ऱान् 357

अळ्ळल्–पंकिल; पळ्ळम्–गहरा; पुनल् चूऴ्–सागर-वलयित; अकल् मा निलमुम्–विस्तृत श्रेष्ठ राज्य; अरचुम्–उस पर शासन का अधिकार; कॉळ्ळ कुऱैया–लेने से कम न होनेवाली; नितियिन् कुवैयुम्–निधि की राशियाँ; मुतल् आम्–आदि; ॲवैयुम्–सबको; कळ्ळम् कैकेचिक्के–वंचक कैकेयी को ही; उतवि–दान करके; पुकऴ् कै कॉण्ट–यश ग्रहण का; वळ्ळल् तन्म्–दातापन; ॲन् उयिरै माय्क्कुम्–मेरे प्राणों को हर लेगा; माय्क्कुम्–हर ही लेगा; ॲन्ऱान्–कहा । ३५७

मैंने पंकिल और गहरे सागर से घिरी हुई विस्तृत भूमि, उस पर शासन का अधिकार, अक्षय निधि की राशियाँ आदि वंचक कैकेयी को दिया और उससे अपार यश अर्जित किया भी, सही । पर यह दातापन मेरे प्राण हर लेनेवाला है; हाँ हर अवश्य लेगा । ३५७

ऑलियार् कडल्शू ऴुलहत् तुयर्वा निडैना हरिनुम्
पॉलिया निन्ऱा रुन्नैप् पोल्वा रुळरो पॉन्ने
वलिया रुडैया रॅन्ऱान् मऴुवा ळुडैयान् वरवुम्
चलिया निलैया यॅन्ऱाऱ् ऱविर्वा रुळरो वॅन्ऱान् 358

ऑलि आर्—शब्द-समन्वित; कटल् चूऴ् उलकत्तु–समुद्रवलयित इस पृथ्वी पर; उयर् वान् इटै–ऊँचे आकाशलोक में; नाकरिनुम्–पाताल में; पॉलिया निन्ऱार्–विद्यमान लोगों में; उन्नै पोल्वार्–तुम्हारे समान रहनेवाले; उळरो–रहते हैं क्या; पॉन्ने—स्वर्ण-सम (श्रेष्ठ); मऴुवाळ् उटैयान्–परशुधर; वलि यार् उटैयार्–बली कौन है; ॲन्ऱान् वरवुम्–कहते हुए आने पर; चलिया निलैयाय्–अचल खड़े रहे; ॲन्ऱाल्–तो; तविर्वार् उळरो–ऐसे तुमको जाने देनेवाले कोई होंगे क्या; ॲन्ऱान्–कहा । ३५८

हे स्वर्णसम श्रेष्ठ ! शब्दायमान समुद्रवलयित इस भूलोक में, उन्नत सुरलोक में और पाताल में तुम्हारे समान सर्वश्रेष्ठ कोई हैं क्या ? परशुधर ललकारते हुए आये कि यहाँ कौन बलशाली है ? तब तुमने बिना चलित हुए उनका सामना किया । ऐसे तुमको वन जाने देनेवाला कोई होगा क्या ? । ३५८

केट्टे यिरुन्दे ऩॆऩ्ऩिनुङ् गिळर्वा ऩिऩ्ऱे यडैय
माट्टे नाहि लऩ्ऱो वऩ्ग णॆऩ्कण् मैन्दा
काट्टे युरैवाय् नीयिक् कैहे शियैयुङ् गण्डिन्
नाट्टे युरैवे ऩॆऩ्ऱा नऩ्ऱॆऩ् ऱऩ्मै यॆऩ्ऱान् 359

केट्टे–सुनकर भी; इरुन्तेऩ् ऍऩ्ऩिनुम्–जीवित रहा, तो भी; इऩ्ऱे–अभी; किळर् वाऩ् अटैय माट्टेऩ् आकिल् अऩ्ऱो–प्रकाशमान आकाश नहीं जानेवाला रहा, तभी तो; ऍऩ् कण् वऩ् कण्–मेरी आँखें निष्ठुर आँखें होंगी; मैन्ता–मेरे सुत; नी काट्टे उऱैवाय्–तुम जंगल में रहोगे; इ कैकेयियैयुम् कण्टु–इस कैकेयी को देखते हुए; इ नाट्टे–इस राज्य में; उऱैवेऩ् ऍऩ्राल्–रहूँगा तो; ऍऩ् तऩ्मै नऩ्ऱु–मेरा स्वभाव भी अच्छा है; ऍऩ्ऱान्–कहा। ३५९

दशरथ ने आगे भी कहा— तुम्हारे वनगमन की बात सुनकर भी मैं जीवित रहता हूँ। यह कठोर मन का द्योतक है। पर अभी स्वर्ग न पहुँच सकूँगा तभी तो मेरी आँखें कठोर कही जायँगी! हे प्यारे पुत्र! तुम जाकर जंगल में रहो और मैं इस क्रूर कैकेयी को अपनी आँखों से देखते हुए इस राज्य में मजे से रहूँ तो मेरा स्वभाव भी बड़ा अच्छा माना जायगा न! । ३५९

मॆय्यार् तवमे शॆय्दुऩ् वियऩ्मार् बरिदिऩ् पॆऱ्ऱ
शॆय्या ळॆऩ्ऩुम् बॊऩ्ऩु निलमा दॆऩ्ऩुन् दिरुवुम्
उय्या रुय्या विऩ्ऩैये नुऩ्ऩैप् पिरिन्दु मिरुन्दाल्
ऐया कैहे शियैने राहे ऩोना ऩॆऩ्ऱान् 360

ऐया–तात; मॆय् आर् तवम् चॆय्तु–सत्यसंयुक्त तपस्या करके; उऩ् वियल् मार्पु–तुम्हारा विशाल वक्षस्थल; अरितिऩ् पॆऱ्ऱ–अपूर्व रूप से जिन्होंने पाया है; चॆय्याळ् ऍऩ्ऩुम् पॊऩ्ऩुम्–वे, लक्ष्मी नाम की श्रीदेवी और; निलम् मातु ऍऩ्ऩुम् तिरुवुम्–भूदेवी की श्री; उय्यार्–(तुम्हारे बिछुड़ने पर), जीवित नहीं रहेंगी (श्रीहीन हो जायगा यह राज्य); उय्या विऩैयेऩ्–जिससे बच नहीं पाता ऐसे कर्म का मैं; उऩ्ऩै पिरिन्तुम्–तुमसे वियुक्त होने पर भी; इरुन्ताल्–जीवित रहूँ तो; नाऩ् कैकेयियै नेर् आकेऩो–कैकेयी-सदृश न हो जाऊँगा क्या; ऍऩ्ऱान्–कहा। ३६०

तात! भूदेवी तथा श्रीदेवी दोनो ने बड़ी तपस्या करके तुम्हारा वक्षस्थल (भर्त्तापन) पाया है। वे तुमको छोड़कर बची नहीं रहेंगी। अगर पापी मैं, इस स्थिति से बचने का मार्ग ही न हो ऐसा काम जो कर चुका वह, मैं तुमसे वियुक्त होकर भी जीवित रह जाऊँ तो मैं भी कैकेयी के समान नहीं हो जाऊँगा क्या? मैं उतना निर्मम नहीं हूँ। ३६०

पूणा रणियुम् मुडियुम् पॊऩ्ऩा शऩमुङ् गुडैयुम्
शेणार् मार्बुन् दिरुवुन् दॆरियक् काणक् कडवेऩ्

माणा मरवर् कलैयु मानिन् ऱोलुम् वनैदल्
काणा दॊऴिवे नॆन्ऱा नन्ऱायन् तन्ऱो करुमम् 361

पूण् आर् अणियुम्–पहननेयोग्य आभरण; मुटियुम्–किरीट; पॊन् आचतमुम्–स्वर्ण (सिंह-) आसन; कुटैयुम्–श्वेत छत्र; चेण् आर् मार्पुम्–विशाल वक्षस्थल; तिरुवुम्–विजयश्री; तॆरिय काण कटवेन्–आँख भर देखने का अधिकार रखनेवाला मैं; माणा मरम् वर्कलैयुम्–क्षुद्र पेड़ की छाल का वस्त्र; मानिन् तोलुम्–और मृगचर्म; वनैतल्–पहनना; काणातु ऑऴिवेन् ऍन्ऱाल्–बिना देखे (संसार से) चला जाऊँ तो; करुमम्–वही कार्य; नन्ऱु आयत्तु अन्ऱो–अच्छा होगा न। ३६१

पहनने योग्य आभूषण, किरीट, स्वर्ण-सिंहासन, श्वेत छत्र, विशाल वक्ष, उसमें शोभित विजयश्री आदि के साथ तुम्हें देखने का मैं अधिकारी हूँ। पर क्षुद्र वल्कल और मृगचर्म पहने हुए तुमको देखना पड़ जाय तो उसको बिना देखे संसार छोड़ चला जाऊँ —वही काम श्रेष्ठ होगा न ? । ३६१

ऍन्ऱा वॊन्ऱॊन् ऱॊव्वा विशैदन् दरशन् नुयिरुम्
शॆन्ऱा निन्ऱो ऍन्नुन् दन्मै यॆय्दित् तेय्न्दान्
मॆन्ऱोन् मार्बिन् मुनिवन् वेन्दे ययरे लवनै
इन्ऱे येहा वण्णन् दहैवॆ नुलहो ऍन्ऱान् 362

ऍन्ऱा–ऐसा; ऑन्ऱु ऑन्ऱु ऑव्वा–एक दूसरे से न मिलनेवाली बातें; इचै तनतु–कहते हुए; अरचन् इन्ऱोटु उयिर् चॆन्ऱान्–राजा आज मर जायँगे; ऍन्नुम् तन्मै ऍय्ति–यह कहने योग्य दशा में आकर; तेय्न्तान्–घुले; मॆन् तोल् मार्पिन् मुनिवन्–मृदु (मृग-) चर्म वाले वक्ष के मुनिवर (वसिष्ठ); वेन्ते–राजा; अयरेल्–दुखी मत होइए; इन्ऱे–अभी; उलकोटु–श्रेष्ठ लोगों के साथ; अवनै–(जाकर) उनको; एका वण्णम् तकैवॆन्–न जाएँ ऐसा रोकूँगा; ऍन्ऱान्–कहा। ३६२

इस तरह के परस्पर असंबद्ध प्रलाप करते हुए राजा इतने श्रान्त हो गये कि यह सन्देह होने लगा कि राजा प्राणहीन हो गये हैं क्या ? उनको देखकर मृगचर्म-धारी वक्ष वाले वसिष्ठ ने कहा कि राजा ! दुखी मत होइए। अभी अन्य बड़े लोगों को साथ लेकर श्रीराम के पास जाऊँगा और उनको जाने से रोक लूँगा और राज्य-युक्त कर लूँगा। ३६२

मुनिवन् शॊल्लु मळविन् मुडियुङ् गॊल्लॆन् ऱरशन्
तनिनित् ऱुळऱन् नुयिरेच् चिऱिदे तहैवा निन्दप्
पुनिदन् बोना लिवनार् पोहा दॊऴिवा नॆन्ना
मनिदन् वडिवङ् गॊण्ड मनुवुन् दन्नै मऱन्दान् 363

मुनिवन् चॊल्लुम् अळविल्–मुनि के कहते समय; मुटियुम् कॊल्–मर जायँगे क्या; ऍन्ऱ अरचन्–ऐसी स्थिति में जो रहे वे राजा; मनितन् वटिवम् कॊण्ट मनुवुम्–मनुष्य रूप में मनु (सम रहनेवाले); इन्त पुनितन् पोनाल्–यह पवित्रपुरुष जाएँगे तो; इवनाल्–इनके प्रयास से; पोकातु ऑऴिवान्–बिना गये रह जायगा; ऍन्ना–समझकर;

तनि निन्ऱु उळल्–एकाकी रहकर कुढ़नेवाले; तन् उयिरै–अपने प्राण को; चिऱिते तकैवान्–कुछ देर स्थिर करके; तन्नै मऱन्तान्–अपनी सुध खोकर मूर्छित हुए। ३६३

यह सुनकर राजा को थोड़ा विश्वास हुआ। 'मर ही गये' ऐसी स्थिति में जो रहे वे, मनु के समान राजा यह सोचकर कि पवित्र मुनि जायँगे तो शायद श्रीराम वन जाना छोड़ देगा कुछ देर अपने छटपटानेवाले प्राणों को स्थिर करके बेहोश हो गये। ३६३

मऱन्दा नुणर्वु मुयिरुम् मन्न नॆन्न मरुहा
इऱन्दान् कॊल्लो वऱियेऩ् ऩॆन्ना विडरुऱ् ऱऴिवाळ्
तुऱन्दान् महन्मुन् ऩॆन्नैयुन् दुऱन्दाय् नीयुन् दुणैवा
अऱन्दा निदुवो वैया वरशर्क् करशे यॆन्ऱाळ् 364

मन्नन् उणर्वुम् उयिरुम् मऱन्तान्–राजा की सुध और बुध लुप्त हो गई; ऍन्न यह सोचकर; मरुका–व्याकुल होकर; इऱन्तान् कॊल्लो–मर गये क्या; अऱियेन्–नहीं जानती; ऍन्ना–कहते हुए; इटर् उऱ्ऱु–दुखी होकर; अऴिवाळ्–क्लांत होनेवाली (कौसल्या); ऐया–आर्य; अरचर्क्कु अरचे–राजाधिराज; मकन्–पुत्र ने; मुन्–पहले; ऍन्नैयुम् तुऱन्तान्–मुझे भी (आपके साथ) त्याग दिया; तुणैवा–जीवनसंगी; नीयुम् तुऱन्ताय्–आपने भी त्याग दिया; इतु अऱम् तानो–क्या यह धर्म है; ऍन्ऱाळ्–(ऐसा विलाप-वचन) कहा। ३६४

कौसल्या यह देखकर रोने लगीं। "राजा ने सुध-बुध खो ली; क्या वह मर गये? नहीं मालूम कर पाती!" ऐसा सोचकर वे घबड़ा उठीं। वे विलाप करने लगीं। आर्य! राजाधिराज! पहले मेरे पुत्र ने (आपके साथ) मुझे (भी) छोड़ दिया। अब आप भी मुझे छोड़ जाएँगे क्या? जीवनसंगी आप छोड़ जाएँ —क्या यह धर्म है?। ३६४

मॆय्यिन् मॆय्ये युलहिन् वेन्दर्क् कॆल्लाम् वेन्दे
उय्युम् वहैनिन् ऩुयिरै योम्बा दिङ्ङन् ऱेम्बिन्
वैय मुळुदुन् दुयरान् मऱुहुम् मुनिवन् ऩुडन्नम्
ऐयन् वरिनुम् वरुमा लयरे लरशे यॆन्ऱाळ् 365

मॆय्यिन् मॆय्ये–सत्यविग्रह; उलकिन् वेन्तर्क्कु ऍल्लाम्–लोक के राजाओं के; वेन्ते–राजा; उय्युम् वकै–(हमको) तारने के हेतु; निन् उयिरै ओम्पातु–अपने प्राणों की रक्षा न करके; इङ्ङन्–इस प्रकार; तेम्पिन्–दुख करेंगे तो; वैयम् मुऴुतुम्–भूलोक सारा; तुयराल् मऱुकुम्–दुख से विकल होगा; मुनिवन्ऩुटन्–मुनि के साथ; नम् ऐयन्–हमारा पुत्र; वरिनुम् वरुम्–आ भी सकता है; अयरेल्–शिथिल मत होइए; अरचे–राजा; ऍन्ऱाळ्–कहा। ३६५

वे और भी दुख करते हुए बोलीं— हे सत्यरूप! सारे लोक के राजाओं के राजा! हम सब जीवित और अच्छी स्थिति में रहें; इस हेतु आपको अपने प्राणों की रक्षा करनी चाहिए। बिना अपने प्राणों की

रक्षा किये अगर आप इस तरह मुरझा जाएँगे तो सारा लोक दुख से विकल हो जाएगा। हो सकता है कि हमारा लड़का मुनिवर के साथ आ जाय। इसलिए आप शिथिल न हों। ३६५

ॲन्ऱॆन्	ऱरशन्	मॅय्यु	मिरुदा	ळिणैयुम्	मुहन्नुम्
तन्ऱन्	शॅय्य	कैयाऱ्	ऱैवन्	दिड्को	सलैयै
ऑन्ऱुन्	दॅरिया	मम्म	रुळ्ळत्	तरशन्	मॅळ्ळ
वन्ऱिण्	शिलैनङ्	गुरिशिल्	वरुमे	वरुमे	यॅन्ऱान् 366

ॲन्ऱु ॲन्ऱु–ऐसा, ऐसा कहते हुए; अरचन् मॅययुम्–राजा का शरीर; इरु ताळ् इणैयुम्–दोनो चरणों; मुकन्नुम्–और मुख को; तन् चॅय्य कैयाल्–अपने लाल (सुन्दर) हाथों से; तैवन्तिट्टु–सहलाती हुई; कोचलैयै–कौसल्या को; ऑन्ऱुम् तॅरिया–कुछ भी न जाननेवाले; मम्मर् उळ्ळत्तु–अचेतमन; अरचन्–दशरथ ने; मॅळ्ळ–धीमे स्वर में; वल् तिण् चिलै–सबल और गफ़ धनु के; नम् कुरुचिल्–हमारा राजा; वरुमे, वरुमे–आयगा क्या, आयगा क्या; ॲन्ऱान्–कहा। ३६६

कौसल्यादेवी ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए राजा के शरीर को, उनके दोनो पैरों को और मुख को (गरमी देते हुए) सहला रही थीं। तब राजा बेसुध थे और उनका मन धूमिल पड़ गया था। तब वह कौसल्या से पूछने लगे कि क्या सुदृढ़ और सबल धनु का धारक हमारा राजा (पुत्र) आयगा ? आयगा क्या ?। ३६६

वन्मा	यक्कै	हेशि	वरत्ता	लॅन्ऱ	तुयिरै
मुन्माय्	विप्पत्	तुणिन्दा	ळॅन्ऱुङ्	गूनि	मॉऴियाल्
तन्मा	महन्नुन्	दानुन्	दरणि	पॅरुमा	ऱन्ऱि
ॲन्मा	महन्नैक्	कान्नै	हॅन्ऱा	ळन्ऱो	वॅन्ऱान् 367

वल् मायम् कैकेचि–प्रबल मायाविनी कैकेयी ने; कूनि मॉऴियाल्–कुब्जा के कहने से; वरत्ताल्–वर द्वारा; तन् मा मकन्नुम् तानुम्–अपना बड़ा पुत्र और आप; ॲन्ऱुम् तरणि पॅरुम् आरु अन्ऱि–सदा के लिए राज्य पाने के अलावा; ॲन् मा मकन्नै–मेरे बड़े पुत्र को; कान् एकु–जंगल जाओ; ॲन्ऱाळ् अन्ऱो–कहा न; ॲन् तन् उयिरै–मेरे प्राणों को; मुन् माय्विप्प तुणिन्ताळ्–पहले मारने का निश्चय कर लिया; ॲन्ऱान्–कहा। ३६७

धीरे-धीरे उनका मन अधिक सुलझा। तब उन्होंने कहा कि बड़ी मायाविनी कैकेयी ने कुब्जा मंथरा का मार्गदर्शन पाकर अपने और अपने पुत्र का शासक का स्थान सदा के लिए निश्चित कर लिया। साथ-साथ उसने मेरे पुत्र से 'वन जाओ' कहा न ? उसके द्वारा उसने क्या कर लिया, मालूम है ? पहले मेरे प्राणों का अन्त कर लिया। ३६७

पॊन्नार्	वलयत्	तोळान्	कान्नो	पुहुद	ऱविरान्
ॲन्ना	रुयिरो	वहला	दॊऴिया	दिदुको	शलैकेळ्

मुन्ना ळौरुमा मुनिवन् मॉळिन्द शाव मुळदॅन्
ऱन्ना ळुऱ्ऱ दॅल्ला मवळुक् करश नऱैवान् 368

पॉन् आर् वलयम्–स्वर्णनिर्मित (बाहु-) वलय; तोळान्–धारी; कान् पुकुतल् तविरान्–जंगल जाना नहीं छोड़ेगा; अन् आर् उयिरो–मुझसे लगे प्राण तो; अकलातु ऑळियातु–अलग हुए बिना नहीं रहेंगे; कोचलै–कौसल्या; इतु केळ्–यह सुनो; मुन् नाळ्–पहले किसी दिन; ऑरु मा मुनिवन्–एक बड़े मुनि का; मॉळिन्त चापम्–दिया गया शाप; उळतु–है; अॅन्ऱु–कहकर; अन्ताळ् उऱ्ऱतु अॅल्लाम्–उस दिन जो हुआ वह सब; अरचन्–राजा; अवळुक्कु–उनको; अऱैवान्–सुनाने लगे। ३६८

स्वर्ण के बाहुवलय-धारी श्रीराम जंगल जाने से नहीं रुकेगा। मेरे प्राण भी चले बिना टिकनेवाले नहीं हैं। कौसल्या ! एक बात सुनो। पहले कभी मुझे एक महामुनि का दिया शाप मिला था। —यह कहकर राजा वह सारा वृत्तान्त सुनाने लगे। ३६८

वॅय्य कानत् तिडैये वेट्टै वेट्कै मिहवे
ऐय शॅन्ऱे करियो डरिह डुरुवित् तिरिवेन्
कैयिऱ् चिलैयुङ् गणैयुङ् गॉडुहार् मिरुहम् वरुमोर्
शॅय्य नदियिन् करैवाय्च् चॅन्ऱे मऱैय निन्ऱेन् 369

वेट्टै वेट्कै मिक–आखेट की इच्छा के बढ़ने से; वॅय्य कानत्तिटै–भयंकर कानन में; चॅन्ऱु–जाकर; ऐय करियोटु–विस्मयकारी गजों के साथ; अरिकळ्–सिंहों को भी; तुरुवि तिरिवेन्–ढूँढ़ता फिरा; कैयिल् चिलैयुम् कणैयुम्–हाथ में धनुष और बाण; कॉटु–लेकर; कार् मिरुकम् वरुम्–करि जहाँ आ सकते हैं; ओर् चॅय्य नतियिन् करै वाय्–एक अच्छी नदी के किनारे पर; चॅन्ऱु–जाकर; मऱैय निन्ऱेन्–छिपा खड़ा रहा। ३६९

एक बार आखेट की मेरी इच्छा प्रबल हुई। मैं बड़े-बड़े विस्मयकारी आकार वाले गजों और सिंहों को ढूँढ़ता फिरा। उस सिलसिले में मैं, धनु और शर के साथ एक नदी के किनारे पर गया। वह नदी अच्छी नदी थी और हाथी आदि जल पीने के लिए उधर ही आएँ —इसकी संभावना थी। मैं वहाँ छिपा खड़ा रहा। ३६९

ऑरुमा मुनिवन् मनैयो डॉळियॉन् ऱिलवा नयनम्
तरुमा महन्ने तुणैयायत् तवमे पुरिपोळ् दितिन्वाय्
अरुमा महने पुन्नल्कॉण् उणैवान् वरुमा ऱऱियेन्
पॉरुमा कणैविट् टिडलुम् बुविमो दलरिप् पुरळ 370

ऑरु मा मुनिवन्–एक महामुनि; मनैयोटु–अपनी पत्नी के साथ; ऑळि ऑन्ऱिल आम्–तेजहीन (अन्धी); नयनम् तरु–आँखों के स्थान में आँख का काम देनेवाले; मा मकन्ने–श्रेष्ठ पुत्र को ही; तुणै आय्–सहायक बनाकर; तवम् पुरि पोळ्तिन् वाय्–तपस्या करते रहे, तब; अरु मा मकन्–वह उत्तम पुत्र ही; पुनल्

कॉण्टु अणैवान्–जल ले आने के लिए; वरुम् आरु–आया, यह बात; अरियेन्–न जानता; पॉरु मा कणै–घातक बड़ा अस्त्र (शब्दबेधी बाण); विट्टिटलुम्–छोड़ने पर; अलरि–चीखते हुए; पुवि मीतु पुरळ–भूमि पर (वह) लोटा तब। ३७०

तब वहाँ एक मुनि-बालक आया। एक महामुनि अपनी पत्नी के साथ पास में रहते तपस्या करते रहे। वे दोनो अन्धे थे। यही बालक उन दोनो अन्धों की आँख के समान उनकी सब विधि से सहायता करता था। वह उत्तम चरित्र वाला पुत्र जल ले जाने के लिए वहाँ आया। यह मैं नहीं जानता था। मैंने एक घातक वाण छोड़ा जो वालक पर लगा। लगते ही वह चीखते हुए गिर पड़ा और भूमि पर लोटने लगा। ३७०

पुक्कुप् पॅरुनीर् नुहरुम् बॉरुपो तहमॅन् ऱॉलिमेऱ्
कैक्कट् कणैशॅन् ऱदलाऱ् कण्णिऱ् ऱॅरियक् काणेऩ्
अक्कैक् करियिन् कुरले यन्ऱी दॅऩ्न वॅरुवा
मक्कट् कुरलॅन् ऱयर्वेन् मननॊन् दवणवन् दनॅऩ्ऱाल् 371

पुक्कु–वहाँ आकर; पॅरु नीर् नुकरुम्–अधिक जल पीनेवाला; पॉरु पोतकम्–झगड़ालू हाथी; ऍन्ऱु–समझकर; ऑलि मेल्–शब्द (की दिशा) में; कै कण् कणै–मेरे हाथ का अस्त्र; चॅन्ऱतु अल्लाल्–गया, उसे छोड़कर; कण्णिल्–अपनी आँखों से; तॅरिय काणेन्–देख न पाया; ईतु–यह स्वर; अ कैकरियिन् कुरले–उस हाथी का ही स्वर है; अन्ऱु ऍन्न–नहीं, यह; मक्कळ् कुरल्–और मानवी स्वर है; ऍन्ऱु–ऐसा जानकर; वॅरुवा–डरकर; मनम् नॊन्तु–खिन्नमन होकर; अयर्वेन्–श्लथ हुआ; अवण् वन्तनॅन्–वहाँ आया। ३७१

मैंने यह सोचकर कि कोई बड़ा झगड़ालू हाथी आकर जोर से पानी पी रहा है उस दिशा में शर छोड़ा जहाँ से वह ध्वनि आ रही थी। अपनी आँखों से तो मैंने कुछ नहीं देखा था। जब यह ध्वनि आई तो लगा कि वह हाथी की नहीं थी और मानवी स्वर है। इसलिए भय-चकित और दुखी होकर मैं वहाँ गया। ३७१

कैयुङ् गुडमुन् नॅहिऴक् कणैयो डुरुळ्वोऱ् काणा
वॅय्य तनुवु मनतुम् वॅऱिदे किडवे वीऴा
ऐय नीतान् याव नन्दो वरुळ्हॅन् ऱयरप्
पॉय्यॊन् ऱऱिया मैन्दन् केणी यॅन्नप् पुहल्वान् 372

कैयुम् कुटमुम् नॅकिऴ–हाथ से घट गिराकर; कणैयोटु–(शरीर पर) लगे शर के साथ; उरुळ्वोन् काणा–लोटनेवाले को देखकर; वॅय्य तनुवुम्–भयंकर धनु; मनतुम्–और मेरा मन; वॅऱितु एकिट–निर्बल हो गये, तब; वीऴा–(उसके पास) गिरकर; ऐय–आर्य; नी यावन्–तुम कौन हो; अन्तो–हाय; अरुळ्क–कहने की

कृपा करो; ॲन्ऱु–पूछकर; अयर–दुखी हुआ तो; पॉय् ऑन्ऱु अऱिया मैन्तन्–असत्य कुछ न जाननेवाले ऋषि-कुमार ने; केळ् नी–सुनिए आप; ॲन्ऩ–कहकर; पुकल्वान्–कहने लगा। ३७२

वहाँ मुनिपुत्र अपने हाथ से जलघट गिराकर शरीर पर लगे शर-सह लोट रहा था। उसे देखकर मेरा धनु हाथ से छूटा और मन मेरे वश से। मैंने भी उसके पास तपाक से बैठकर पूछा कि आर्य! तुम कौन हो? हाय! कृपा करके बताओ। मेरा दुख देखकर असत्य से अभिज्ञ वह बोला कि सुनिए। ३७२

अन्नाण् मलरोन् वऴिया लरुळ्का शिबनन् मैन्दन्
मिन्ऩार् पुरिनूल् मार्बन् विरुत्ते शनन्मॅय्प् पुदल्वन्
नन्नान् मऱैनू ऱॅरियु नावान् शलबो शनॅनच्
चॉन्नान् मुनिवन् पुदल्वन् शुरोश ननिया नॅन्ड्रान् 373

अ नाळ्–उन दिनों; मलरोन्–ब्रह्मा के; वऴियाल् अरुळ्–क्रमवार सृष्ट; काचिपन् नल् मैन्तन्–काश्यप के श्रेष्ठ पुत्र; मिन् आर् पुरि नूल् मार्पन्–उज्ज्वल त्रिसूत्री उपवीत से शोभित वक्ष वाले; विरुत्तेचनन्–व्रतेश के; मॅय्पुतल्वन्–सत्पुत्र; नल् नाल्मऱै–श्रेष्ठ चतुर्वेद; नूल्–और शास्त्र; तॅरियुम्–जाननेवाले; नावान्–वाग्मी; चलपोचन् ॲन–जलभोज (?); चॉन्नान् मुनिवन्–ऐसे कहलानेवाले मुनि का; पुतल्वन्–पुत्र; चुरोचनन् यान्–सुरोचन मैं हूँ; ॲन्ड्रान्–कहा। ३७३

उन प्राचीन दिनों में ब्रह्माजी की क्रमवार सृष्टि में काश्यप पहले आये। उनके पुत्र यज्ञोपवीतालंकृत वक्ष वाले व्रतेश (?) थे। उनके पुत्र वेदों और शास्त्रों के विद्वान जलभोज (?) थे। उनका पुत्र मैं हूँ और मेरा नाम सुरोचन (?) है। ३७३

[इसके बाद एक पद किसी-किसी संस्करण में पाया जाता है जिसका सार यह है— वेदरक्षण के लिए मत्स्यावतार लेनेवाले विष्णु के नाभीकमल से उत्पन्न ब्रह्मा ने वेदोक्त प्रकार से विविध जीवों की सृष्टि की। उन्होंने मनुष्य के चार वर्ण बनाये। उनमें प्रथम वर्ण का हूँ मैं।]

इरुकण् कळुमिन् ऱियदाय् तन्दैक् कुम्मिङ् गवर्हळ्
परुहुम् पुनल्हॊण् डहल्वान् पडर्न्देन् पळुदा यिनदाल्
इरुहुन् ऱनैय पुयत्ता यिबमॅन् ऱुणरा दॅय्दाय्
उरुहुन् दुयरन् दविर्नी यूऴिन् शॅयली दॅनवे 374

इरु कण्कळुम् इन्ऱिय–दोनो आँखों से हीन; ताय् तन्तैक्कुम्–माता और पिता को; अवर्कळ् परुकुम् पुनल्–उनका पेय जल; कॊण्टु अकल्वान्–ले जाने के लिए; इङ्कु पटर्न्तेन्–यहाँ आया; पऴुतु आयित्तु–निरर्थक हो गया; इरु कुन्ऱु अनैय पुयत्ताय्–दो पर्वतों के समान कंधों वाले; उणरातु–बिना जाने; इपम् ॲन्ऱु–हाथी समझकर; ॲय्ताय्–(शर) चलाया; ईतु ऊऴिन् चॅयल्–यह विधि का काम है;

ॲन्न–लेकर; नी उरुकुम् तुयरम्–आप विगलित करनेवाला दुख; तविर्–छोड़ दीजिए। ३७४

मेरे माता-पिता दोनो अन्धे हैं। उनके पीने के लिए जल ले जाने के लिए मैं इधर आया था। पर काम बिगड़ गया। पर्वतसम कन्धे वाले! आपने भी अज्ञान में हाथी समझकर शर प्रेषित किया। यह विधि का काम समझिए और दुख से विकल मत होइए। ३७४

उण्णीर् वेट्कै मिहवे युयङ्गु मॅन्दैक् कॊरुनी
तण्णीर् कॊंडुपो यळित्तॅन् शावु मुरैत्तुप् पुदल्वन्
विण्मी दडैवान् ऱॊऴुदा नॅन्नवुम् मवर्पाल् विळम्बॆन्
ऱॆण्णीर् मैयितान् विण्णो रॆदिर्हॊण् डिडवे हिन्नाल् 375

उण् नीर् वेटकै–प्यास; मिक–बढ़ी, तो; उयङ्कुम् ॲन्तैक्कु–दुखी रहते मेरे पिता को; ऑरु नी–अप्रमेय आप; तण् नीर्–शीतल जल; कोंटु पोय्–ले जाकर; अळित्तु–देकर; ॲन् चावुम् उरैत्तु–मेरा मरण बतलाकर; उम् पुतल्वन्–आपका पुत्र; विण् मीतु अटैवान्–स्वर्ग जानेवाला; तॊऴुतान्–(उसने) नमस्कार कहा; ॲन्नवुम्–यह भी; अवर् पाल् विळम्पु–उनके पास कहिए; ॲन्रु–ऐसा; ॲण् नीर्मैयित्तान्–सबसे स्मरणीय स्वभाव वाला; विण्णोर् ॲतिर् कॊण्टिट–देवों के स्वागत करते; एकिनन्–चला गया। ३७५

वहाँ मेरे पिताजी बढ़ती प्यास से दुखी हो रहे हैं। अप्रमेय आप उनको पीने के लिए जल ले जाइए। उनसे मेरे मरण की बात कहिए, और कहिए कि आपके पुत्र ने, जो स्वर्ग जा रहा था, आपको अपना नमस्कार कहा है। अवश्य वह कुमार श्रेष्ठमान्य स्वभाव वाला था। देवों ने आकर उसका स्वागत किया और वह स्वर्ग सिधार गया। ३७५

मैन्दन् वरवे नोक्कुम् वळर्मा दवर्पान् महनो
डन्दण् पुनल्कॊण् डणुह वॆया विदुपो दळवाय्
वन्दिङ् गणुहा यॆन्नो वन्द दॆन्रे नॊन्देम्
शन्दङ् गमऴुन् दोळाय् तऴुविक् कॊळवा वॆन्नवे 376

मैन्तन् वरवे नोक्कुम्–पुत्र के आने की ही प्रतीक्षा करनेवाले; वळर् मातवर् पाल्–वृद्ध महातपस्वियों के पास; मकनोटु–(उनके) पुत्र (के शरीर) के साथ; अम् तण् पुनल् कॊण्टु–स्वच्छ शीतल लेकर; अणुक–जाने पर; ऐया–तात; इतु पोतु अळवाय्–इतनी देर; इङ्कु वन्तु अणुकाय्–यहाँ आकर नहीं पहुँचे; वन्ततु ॲन्नो–(बाधा) आई क्या; ॲन्रु नॊन्तेम्–समझकर हम बहुत कुढ़ते रहे; चन्तम् कमऴुम् तोळाय्—चन्दन-वासित भुजा वाले; तऴुवि कॊळ वा–गले लगाने आओ; ॲन्न–कहने पर। ३७६

वे वृद्ध तपस्वी अपने पुत्र की ही प्रतीक्षा में बैठे थे। मैं उस मुनि-पुत्र का शरीर और स्वच्छ, शीतल जल लेकर वहाँ पहुँचा। मेरी आहट

पाकर वे अपना पुत्र समझकर कहने लगे— वत्स ! इतनी देर कर दी तो हमें डर हो गया कि कुछ विपदा हो गई है। वह क्या होगी —यह विचार करते हुए हम बहुत घबड़ाये रहे। चन्दनवासित भुजा वाले ! आओ। हृदय से लग जाओ। ३७६

ऐया यानो ररश नयोत्ति नहरत् तुळ्ळेन्
मैयार् कळबन् दुरुवि मरैन्दे वदिन्दे निरुळ्वाय्
पॉय्या वाय्मैप् पुदल्वन् पुनन्मॉण् डिडुमो दयिन्मेर्
कैयार् कणैशॅन् ऱदलार् कण्णिर् ऱॅरियक् काणेन् 377

ऐया—आर्य; यान् ओर् अरचन्—मैं एक राजा हूँ; अयोत्ति नकरत्तु उळ्ळेन्—अयोध्या नगर में रहता हूँ; मै आर् कळपम् तुरुवि—काले रंग के गजों की खोज में; इरुळ् वाय्—अँधेरे स्थान में; मरैन्तु वतिन्तेन्—छिपा रहा; पॉय्या वाय्मै पुतल्वन्—आपका अप्रमत्त सत्यसंध पुत्र; पुनल् मॉण्टिटुम्—जल भरने की; ओतैयिन् मेल्—ध्वनि पर; कै आर् कणै चॅन्ऱतु—मेरे हाथ का बाण गया; अल्लाल्—उसके सिवा; कण्णिल् तॅरिय काणेन्—आँखों से न देख पाया। ३७७

तब मैं बोला— आर्य ! मैं एक राजा हूँ— अयोध्यावासी। काले रंग के हाथियों की खोज में जाकर मैं एक अँधेरे स्थान में छिपा खड़ा रहा। तब अप्रमत्त सत्यवादी आपका पुत्र अपने घट में जल भरने लगा। उस शब्द की ओर मेरा अस्त्र गया। मैंने तो उसको अपनी आँखों से नहीं देखा। ३७७

वीट्टुण् डलरुङ् गुरलाल् वेळ्क् कुरलन् ऱॅन्वे
ओट्टन् दॅदिरा नीया रॅन्वुर् ऱदॅला मुरैया
वाट्टन् दरुनॅञ् जिनन्नाय् निन्ऱान् वणङ्गि वानोर्
ईट्ट मॅदिर्वन् दिडवे यिरन्दे हिनन्विण् णिडैये 378

वीट्टुण्टु—गिराया जाकर; अलरुम् कुरलाल्—(उसके) विलापनेवाले स्वर से; वेळम् कुरल् अन्ऱु—हाथी की ध्वनि नहीं; ॲन्न—जानकर; ओट्टन्तु—दौड़ जाकर; ॲतिरा—उससे मिलकर; नी यार् ॲन्न—तुम कौन हो, यह पूछने पर; उऱ्ऱतु ॲल्लाम् उरैया—हुआ सब कहकर; वाट्टम् तरु नॅञ्चिनन् आय्—दुखितमन होकर; वणङ्कि—आपको नमस्कार करके; निन्ऱान्—निस्पंद रहा; इऱन्तु—मरकर; वानोर् ईट्टम् ॲतिर् वन्तिट—देवगण के स्वागत के लिए आते; विण् इटै एकितन्—स्वर्ग में चला गया। ३७८

उस अस्त्र से विद्ध होकर वह गिर गया। उसके रुदनस्वर से मैंने समझ लिया कि यह हाथी की ध्वनि नहीं है। इसलिए मैं सवेग दौड़ा। आपके पुत्र से मिलकर मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो ? उसने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। दुखपूरित मन के साथ उसने आपको नमस्कार कहा। फिर वह संज्ञाहीन होकर मर गया। देवगण आकर उसको ले गये और वह स्वर्ग सिधार गया। ३७८

अरुत्ताय् कणैया लॅनवे यडियेन् रत्नै यैया
करुत्ते यरुळा यानो कण्णिऱ् कण्डे नल्लेन्
मरुत्ता निल्लान् वनमॊण् डिडुमो दयिनॆय् दनॆनाल्
पॊरुत्ते यरुळ्वा यॆन्ना विरुताळ् शॆन्नि पुनैन्देन् 379

ऐया–महात्मा; कणैयाल् अरुत्ताय्–शर से मार दिया; ऍन–सोचकर; अटियेन् तन्नै–मुझ दास पर; करुत्ते अरुळाय्–कोप मत कीजिए; यानो कण्णिल् कण्टेन् अल्लेन्–मैंने तो अपनी आँखों के सामने नहीं देखा था; मरु तान् इल्लान्–निरपराध उसके; वनम् मॊण्टिटुम् ओतैयिन्–जल भरने की ध्वनि से; ऍय्तनॆन्–शर चलाया; पॊरुत्ते अरुळ्वाय्–क्षमा कीजिए; ऍन्ना–विनय करके; इरु ताळ्–उनके दोनो पैर; चॆन्नि पुनैन्तेन्–सिर पर धारण कर लिए। ३७९

हे महात्मा ! 'तुमने मेरे पुत्र को शर से मारा' —यह कहकर दास पर न कोप करें। कृपा कीजिए। मैंने प्रत्यक्ष देखा नहीं था। निरपराध आपके पुत्र के जल भरने का नाद सुना और (शब्दवेधी) वाण चला दिया। आप क्षमा कीजिए। यह विनय करके मैंने उनके दोनो चरणों पर अपना सिर रखकर दण्डवत की। ३७९

वीळ्न्दा रयर्न्दार् पुरण्डार् विळिपो यिऱ्ऱिन् ऱॆन्ऱार्
आळ्न्दार् तुन्बक् कडलु ळैया वैया वॆन्ऱार्
पॊळ्न्दाय् नॆञ्जै यॆन्ऱार् पॊन्ना डदनिऱ् पोय्नी
वाळ्न्दे यिरुप्पत् तरियेम् वन्देम् वन्दे मिन्ये 380

वीळ्न्तार्–वे भूमि पर गिरे; अयर्न्तार्–शिथिल हुए; पुरण्टार्–लोटे; इन्ऱु विळि पोयिऱ्ऱु ऍन्ऱार्–अब आँखें चली गईं, कहा; तुन्पम् कटलुळ् आळ्न्तार्–दुखसागर में मग्न हुए; ऐया, ऐया ऍन्ऱार्–तात, तात पुकारा; नॆञ्चै पोळ्न्ताय्–गला चीर दिया; ऍन्ऱार्–आर्त्तनाद किया; नी–तुम; पॊन् नाटु अतनिल्–स्वर्ग में; पोय् वाळ्न्तु इरुप्प–जाकर रहो, यह; तरियेम्–सहेंगे नहीं; इन्ये–अभी; वन्तेम् वन्तेम्–आये, आये। ३८०

माता-पिता दोनो यह सुनकर नीचे गिर गये। लोटने लगे। 'हाय हमारी आँखें ही चली गयीं' —यह आर्तवचन कहा। दुख-सागर में मग्न हो गये। हाय वत्स वत्स —की पुकार मचायी। "तुमने हमारा गला चीर दिया। तुम जाकर स्वर्ग में रहो —यह हम सह नहीं सकते; इधर रह नहीं सकते। अभी हम भी आ गये, आ गये अभी।" ३८०

ऍन्ऱॆन् ऱयरुन् दवरै यिरुताळ् वणङ्गि याने
इन्ऱुम् पुदल्वन् ऱिनिनो रेवुम् पणिशॆय् दिडुवेन्
ऑन्ऱुन् दळरे लैया वॊळिमिन् ऱुयरॆन् ऱिडलुम्
वन्ऱिण् शिलैयाय् कॆण्मो वॆन्ना वीरुशोल् वहुत्तान् 381

ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा, ऐसा; अयरुम्–दुखनेवाले; तवरै–(वृद्ध) तपस्वियों को;

इरु ताळ् वणङ्कि–दोनो चरणों पर नमस्कृत करके; इन्रु–आज से; याने उम् पुतल्वन्–मैं ही आपका पुत्र बनूँगा; इनि नीर् एवुम् पणि–अब से आपसे आज्ञापित सेवाएँ; चॅय्तिटुवेन्–कर दूँगा; ऐया–उत्तम मुनि; ऑन्रुम् तळरेल्–धीरज कुछ मत छोड़िए; तुयर् ऑऴिमिन्–दुख छोड़ दीजिए; ऎन्ऱिटलुम्–कहते ही; वल् तिण् चिलैयाय्–बलवान और कठोर धनुर्धर; केण्मो ऎन्ना–सुनिए कहकर; ऑरु चॊल्–एक बात; वकुत्तान्–बताई। ३८१

ऐसा-ऐसा विलाप करते हुए वे विगलित हो रहे थे। उनके पैर पड़कर मैंने विनय सुनाई— आज से मैं आपका पुत्र रहूँगा। आपकी आज्ञाएँ मानूँगा। आपकी सेवा करूँगा। महात्मा, आप धीरज न खोइए; यह दुख त्यागिए। मेरे यह कहने पर तपस्वी ने कहा कि बलवान और कठोर धनुर्धर! यह सुनिए। यह कहकर उन्होंने आगे एक बात कही। ३८१

कण्णुण् मणिबोन् महवै यिऴन्दु मुयिर्हा दलिया
उण्ण वॆण्णि यिरुन्दा लुलहो रॆन्नॆन् रुरैयार्
विण्णिन् रुलैशे रुदुम्या मॆम्बोल् विडले पिरियप्
पण्णुम् बरिमा वुडैया यडैवाय् पडर्वा नॆन्ना 382

कण्णुळ मणि पोल्–आँखों के तारे के समान; मकवै इऴन्तुम्–पुत्र को खोकर भी; उयिर् कातलिया–जीवन चाहकर; उण्ण ऎण्णि–पेट भरने की इच्छा करते हुए; इरुन्ताल्–(जीवित) रहेंगे तो; उलकोर् ऎन् ऎन्रु उरैयार्–लोकवासी क्या (निन्दा) नहीं कहेंगे; याम् विण्णिन् तलै चेरुतुम्–हम स्वर्ग चले जाएँगे; पण्णुम् परि मा–अलंकृत अश्वों के; उटैयाय्–पति; ऎम् पोल्–हमारी ही भाँति; विटले पिरिय–लड़का खोकर; पटर् वान् अटैवाय्–विशाल स्वर्गलोक पहुँचेंगे; ऎन्ना–ऐसा। ३८२

हम आँख का तारासम पुत्र को खोकर, इस लोक में पेट भरने के लिए जीवित रह जायँ तो दुनियावाले क्या कहेंगे? निन्दा में क्या-क्या नहीं कहेंगे? हम अभी स्वर्ग चले जायँगे। कोतल घोड़ों वाले राजा। आप भी हमारे जैसे, प्रिय पुत्र को गँवाकर स्वर्ग सिधारें। उन लोगों ने कहा। फिर वे आगे बोले। ३८२

तावा दॊळिरुङ् गुडैयाय् तवरिङ् गिदुनिन् शरणम्
कावा यॆन्रा यदनार् कडिय शाबङ् गरुदेम्
एवा महवेप् पिरिन्दिन् रॆम्बो लिडरुऱ् रुनेनी
पोवा यहल्वा नॆन्नाप् पॊन्नाट् टिडैपो यिनराल् 383

तावातु ऑळिरुम् कुटैयाय्–मन्द हुए बिना उज्ज्वल रहनेवाले श्वेतछत्रधारी; इङ्कु इतु तवरु–यहाँ यह अपराध है; निन् चरणम्–आपकी शरण में आया; कावाय्–रक्षा करें; ऎन्राय्–यह कहा; अततால்–उससे; कटिय चापम करुतेम्–कठोर शाप (देने) का विचार नहीं करते; इन्रु ऎम् पोल्–आज जैसे हम; नी–आप भी;

एवा–बिना आज्ञा की प्रतीक्षा किये, इंगित जानकर सेवा करनेवाले; मकवै–पुत्र से; पिरिन्तु–अलग होकर; इटर् उऱ्ऱै–दुखी बन; अकल् वान् पोवाय्–विस्तृत स्वर्ग में जायँगे; अॅन्ऩा–कहकर; पॉन् नाट्टु इटै–स्वर्गलोक में; पोयिनर्–चले। ३८३

सदा उज्ज्वल रहनेवाला छत्र-पति! "यह मेरा अपराध हो गया। आपकी शरण में आया हूँ" —ऐसा सत्य कहकर आपने विनय की। इसलिए हम कठिन शाप देना नहीं चाहते। आज जैसे हम, आप भी अपने आज्ञा के पहले ही इंगित जानकर सेवा-तत्पर रहनेवाले अपने पुत्र से विलग होकर दुख का अनुभव करके स्वर्ग सिधारेंगे। यह शाप देकर वे स्वर्ग सिधारे। ३८३

शिन्दै तळवुर् ऱयर्दल् शिऱिदु मिलना यिन्शॉल्
मैन्द नुळॅन्न् ऱदनान् महिऴ्व्रो डिवण्वन् दनॆनाल्
अन्द मुनिशॊर् ऱदुवु मण्णल् वनमे हुदलुम्
ऍन्ऱ नुयिर्वी हुदलु मिऱैयुन् दवऱा वॆन्ऱान् 384

इन् चॊल् मैन्तन्–मधुरभाषी वत्स; उळन् अॅन्ऱतनाल्–होगा, इस कथन से; चिन्तै तळर्वुऱ्ऱु–क्षुब्धमन होकर; अयर्तल् चिऱितुम् इलनाय्–आयास कुछ भी न करके; मकिऴ्वोटु–हर्ष के साथ; इवण् वन्तनॆन्–यहाँ आया; अन्त मुनि–उन मुनि ने; चॊऱ्ऱतुवुम्–जो कहा वह शापवचन और; अण्णल् वनम् एकुतलुम्–प्रभु का वन जाना; अॅन् उयिर् वीकुतलुम्–मेरे प्राणों का छूटना; इऱैयुम् तवऱा–कुछ भी न टलेंगे; अॅन्ऱान्–कहा। ३८४

दशरथजी ने कौसल्या से कहना जारी किया। इस शाप से यह ध्वनित होता था कि हमारे मधुर-तुतली बोली बोलनेवाला वत्स पैदा होगा। यह सोचकर मैं, जिसे शाप के कारण दुखी हो जाना था, दुखदग्ध नहीं हुआ। मेरा मन शोक से उद्विग्न नहीं हुआ। मैं आनन्द के साथ लौटकर महल में आ गया। अब देखो— मुनि का शाप, श्रीराम का वनगमन और मेरा मरण तीनो ज़रा भी नहीं टलेंगे। ३८४

उरैशॆय् पॅरुमै युयर्दवत्तो रोङ्गल्
पुरैशै मदहळिऱ्ऱान् पॊऱ्कोयिन् मुन्नर्
मुरश मुऴङ्ग मुडिशूट्ट मॊय्त्ताण्
डरश रिन्निदिरुन्द नल्लवैयि नायिनान् 385

उरै चॅय् पॅरुमै–(सबसे) प्रशंसित यशस्वी; उयर् तवत्तु–उत्कृष्ट तपोमार्ग में; ओर् ओङ्कल्–एक पर्वत-समान (रहे) वसिष्ठजी; पुरैचै मतम् कळिऱ्ऱान्–गले की रस्सी के साथ मत्त रहनेवाले गजों की सेना के स्वामी के; पॊन् कोयिल् मुन्नर्–स्वर्ण-महल के सामने; मुरचम् मुऴङ्क–ढोलों के बजते; मुटि चूट्ट–मुकुटधारण कराने के हेतु; अरचर् मॊय्त्तु–राजा एकत्र होकर; इन्नितु इरुन्त–जहाँ उत्साह से रहे; आण्टु–वहाँ; नल् अवैयिन्–उस सुन्दर मण्डप-प्रविष्ट; आयिनान्–बने। ३८५

उधर प्रकीर्तित (और पर्वतसम उन्नत महान तपस्या के कर्ता) महान तपस्वी वसिष्ठ सभामण्डप में गये जहाँ राजा लोग इस विचार से एकत्र हुए थे कि गजपति दशरथ के स्वर्णमहल के द्वार पर ढोल बजेंगे और श्रीराम का मुकुटधारण सम्पन्न होगा। ३८५

❀ वन्द मुनियै मुहनोक्कि वाळ्वेन्दर्
ॲन्दै पुहुदऱ् किडैयूरुण् डायदो
अन्दमिल् शोहत् तळुदहुर ऱानॆन्कोल्
शिन्दै तॆळिन्दोय् तॆळिवियॆमक् कॆन्ऱुरैत्तार् 386

वन्त मुनियै–आगत मुनि को; मुकम् नोक्कि–मुख पर देखकर; वाळ् वेन्तर्–तलवारधारी राजा लोगों ने; चिन्तै तॆळिन्तोय्–स्वच्छ मन वाले; ॲन्तै पुकतऱ्कु–हमारे पितृतुल्य दशरथ के आने में; इटैयूरु उण्टायतो–कोई बाधा हो गई क्या; अन्तम् इल् चोकत्तु–अपार शोक के साथ; अऴुत कुरल् तान् ॲन् कॊल्–जो रोने का स्वर आया वह क्या था; ॲमक्कु तॆळिवि–हमें साफ़ बताइए; ॲन्ऱु उरैत्तार्–ऐसा पूछा। ३८६

तलवारधारी नृपों ने आगत वसिष्ठजी के मुख को निहारकर प्रश्न किया कि निश्चल स्वच्छ चित्त वाले ! हमारे पितृतुल्य राजा के इधर आने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या ? अपार शोक प्रदर्शित करते हुए कोई क्रन्दन-स्वर जो सुनाई दिया वह क्या है। हमें साफ़-साफ़ बताने की कृपा कीजिए। ३८६

❀ वेन्दन् पणियिताऱ् कैहेशि मॆय्प्पुदल्वऩ्
पान्दण् मिशैक्किडन्द पार्काप्पा ऩायिऩाऩ्
एन्दु तडन्दो ळिरामन् ऱिरुमडन्दै
कान्द नॊरुमुरैपोय्क् काडुरैवा ऩायिऩाऩ् 387

वेन्तन् पणियिताल्–राजा की आज्ञा से; कैकेचि मॆय् पुतलवन्–कैकेयी के सत्यनिष्ट पुत्र; पान्तळ् मिचै किटन्त–शेषनाग पर धृत; पार् काप्पान् आयिऩाऩ्–भूमि के पति हो गये; तिरु मटन्तै कान्तन्–श्रीलक्ष्मी-पति; एन्तु तट तोळ् इरामन्–उन्नत व विशाल भुजा वाले श्रीराम; ऒरु मुऱै–एक रीति से; काटु पोय् उऱैवान्–वनवासी; आयिऩाऩ्–हो गये। ३८७

वसिष्ठ ने उत्तर दिया— राजा की जो आज्ञा हुई है उसके अनुसार कैकेयी का सत्यवादी (या असली) पुत्र शेषशीर्षस्थ इस भूमि के नायक बनेंगे। श्रीलक्ष्मी-कान्त, विशाल और उन्नत भुजा वाले श्रीराम एक क्रम से वनवासी हो जाएँगे। ३८७

❀ कॊण्डाळ् वरमिरण्डुङ् गेहयर्कोन् कॊम्बवट्कुत्
तण्डाद कादऱ् ऱयरदनुन् दानळित्ताऩ्

ऑण्डार् मुहिलैवनम् बोहॅन् ऱौरुप्पडुत्ताळ्
ऍण्डानुम् वेरिल्लै ईदडुत्त वाऱॅन्ऱान् 388

केकयर् कोन् कॉम्पु–केकयराज की पुत्री ने; इरण्टुम् वरम् कॉण्टाळ्–दोनो वर माँग लिये; तण्टात कातल् तयरतनुम्–अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले दशरथ ने भी; अवट्कु अळित्तान्–उन्हें दे दिये; ऑळ् तार् मुकिलै–उज्ज्वल मालाधारी मेघ (सम श्रीराम) को; वनम् पोक–वन जाओ; ऍन्ऱु–कहकर; ऑरुप् पटुत्ताळ्–सम्मत कराया; ईतु अटुत्त आऱु–यही वृत्तान्त है; ऍण् वेऱु इल्लै–सोचने-समझने के लिए और कुछ नहीं है; ऍन्ऱान्–कहा। ३८८

उन्होंने आगे विवरण दिया। केकयराज-तनया ने राजा से दो वर माँगे। उन पर अगाध और अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले राजा ने भी उन्हें दो वर दे दिये। उनमें ही एक से कैकेयी ने उज्ज्वलमाला-धारी मेघसम श्रीराम को, 'वन जाओ' कहकर जाने को भी सम्मत करा लिया। इसमें आगे सोचने के लिए या इसके सम्बन्ध में और किसी प्रकार का अनुमान करने के लिए कुछ नहीं है। यही हुआ। —वसिष्ठ ने कहा। ३८८

❀ वारार् मुलैयारु मऱ्ऱुळ्ळ मान्दर्हळुम्
आराद काद लरशर्हळु मन्दणरुम्
पेराद वाय्मैप् पॅरियो नुरैशॅवियुळ्
शाराद मुन्नन् दयरदनैप् पोल्वीऴ्न्दार् 389

वार् आर् मुलैयारुम्–अँगिया-बद्ध स्तन वालियाँ (स्त्रियाँ); मऱ्ऱु उळ्ळ–और अन्य; मान्तर्कळुम्–पुरुष भी; आरात कातल् अरचर्कळुम्–अघट प्रेम रखनेवाले राजा; अन्तणरुम्–ब्राह्मण लोग; पेरात वाय्मै–अचल सत्यवादी; पॅरियोन्–महात्मा का; उरै–कथन; चॅवियुळ् चारात मुन्नम्–कान में पड़ने से पूर्व; तयरतनै पोल् वीऴ्न्तार्–दशरथ के समान नीचे गिरे। ३८९

स्त्रियाँ, जिनके स्तन अँगिया-बद्ध थे, पुरुष, श्रीराम के अत्यंत प्रेमी राजा लोग, और ब्राह्मण लोग, सभी; ज्योंही अचल सत्यवादी महात्मा वसिष्ठजी के कथन उनके कानों में लगे त्योंही दशरथ के समान भूमि पर गिर पड़े। ३८९

❀ पुण्णुऱ्ऱ तीयिऱ् पुहैयुऱ् ऱुयिर्पदैप्प
मण्णुऱ् ऱयर्न्दु मरुहिऱ् ऱुडम्बॅल्लाम्
कण्णुऱ्ऱ वारि कडलुऱ्ऱ दन्निलैये
विण्णुऱ्ऱ दॅम्मरुङ्गुम् विट्टकुद पेरोशै 390

उटम्पु ऍल्लाम्–शरीर सब; पुण् उऱ्ऱ तीयिन्–व्रण में आग लगी, जैसे; पुकैयुऱ्ऱु–झुलसकर; उयिर् पतैप्प–प्राणों के छटपटाते; अयर्न्तु–थककर; मण् उऱ्ऱु–भूमि पर पड़कर; मरुकिऱ्ऱु–लोटे; अ निलैये–उस दशा में; कण् उऱ्ऱ वारि–आँखों से निकला (अश्रु-) जल; कटल् उऱ्ऱतु–बहकर समुद्र में गया; ऍ मरुङ्कुम्–

सब ओर; विट्टु अऴुत–खुलकर जो रोये; पेर् ओचै–वह जोर का स्वर; विण् उऱ्ऱतु–आकाश तक पहुँचा। ३९०

उनके शरीर व्रण में आग लगी जैसे झुलस गये, प्राण छटपटाने लगे। वे थकित होकर भूमि पर लोटने लगे। उस दशा में उनकी आँखों से जो आँसू का प्रवाह निकला वह समुद्र में जा मिला। सब ओर जो वे मुख खोलकर रोये उसका जोर का नाद आकाश से जा मिला। ३९०

※ माद ररुङ्गलमु मङ्गलमुम् शिन्दित्तङ्
गोदै पुडैपॅयरक् कूऱ्ऱैय कण्शिवप्पप्
पाद मलर्पदैप्पत् ताम्बदैत्तुप् पार्शेर्न्दार्
ऊदै यॅरिय वौशिपूङ् गॊडिपोल्वार् 391

मातर्–स्त्रियाँ; अरु कलमुम्–बहुमूल्य आभरणों को; मङ्कलमुम्–अहिवात-सूचक आभरणों को भी; चिन्ति–गिराकर; तम् कोतै पुटै पॅयर–केश को बिखरने देते हुए; कूऱ्ऱु अतैय–यम-सम; कण् चिवप्प–आँखों को लाल करते हुए; पातम् मलर् पतैप्प–चरणकमलों के गड़बड़ाने से; ताम् पतैत्तु–खुद छटपटाकर; ऊतै–ऍरिय–उदीची (ठण्डी) हवा के बहने से; औचि–मुरझाकर गिरनेवाली; पू कॊटि पोल्वार्–पुष्पलतायें जैसे; पार् चेर्न्तार्–भूमि पर गिर पड़ीं। ३९१

स्त्रियाँ इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने अपने सारे आभरण, अहिवात-सूचक आभरण तक—उतार फेंक दिया। उनके केश खुलकर बिखर गये। पुरुषों के हृदय-भेदक (यम-सी) आँखें रोने से लाल हो गईं। चरण-कमल लड़खड़ाने लगे। वे खुद कंपित होकर उदीची हवा से मुरझायी हुई पुष्पलताएँ जैसे टूटकर भूमि पर गिर पड़ीं। ३९१

※ आवा वरश नरुळिलने यामॅन्बार्
कावा दऱत्तैयिनिक् कैविडुवोम् यामॅन्बार्
तावाद मन्नर् तलैत्तलैवीऴ्न् देङ्गिनार्
मावादञ् जाय्त्त मरामरमे पोल्हिन्ऱार् 392

तावात मन्नर्–(श्रीराम के प्रति) अबाध (प्रेम वाले) राजा; आ, आ–हाय, हाय; अरचन्–चक्रवर्ती; अरुळ् इलन्ने आम्–दयाहीन हैं; ॲन्पार्–कहते; याम्–हम भी; इऩ्ऩि–अब; अऱत्तै कावातु–धर्म को बिना पाले; कै विटुवोम्–छोड़ देंगे; ॲन्पार्–कहते; मा वातम् चाय्त्त–प्रबलप्रभंजन-निहत; मरा मरम् पोल् कित्ऱार्–सालवृक्ष के समान; तलै तलै वीऴ्न्तु—यत्र-तत्र गिरकर; एङ्कित्तार्–दुखी हुए। ३९२

श्रीराम पर जो राजा अचल प्रेम रखते थे वे भी, यह कहते हुए कि हाय, हाय! चक्रवर्ती भी निर्दय हैं। हम भी धर्म क्यों पालें? छोड़ देंगे, प्रचंड-प्रभंजन-प्रतिहत साल वृक्षों के समान यत्र-तत्र गिरकर रोये। ३९२

किळ्ळयॊडु पूवै यळुद किळर्माडत्
तुळ्ळुरैयुम् बूशै यळुद वुणर्वरियाप्
पिळ्ळै यळुद पॆरियोरै यॆन्शॊल्ल
वळ्ळल् वनम्बुहुवा नॆन्ऱुरैत्त माऱ्ऱत्ताल् 393

वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; वनम् पुकुवान्–वन जाएँगे; ऍन्ऱु उरैत्त माऱ्ऱत्ताल्–ऐसा कहे हुए वचन से; किळर्–शोभायमान; माटत्तु उळ् उऱैयुम्–महल के अन्दर रहनेवाले; किळ्ळैयॊटु–शुकों के साथ; पूवै–सारिकाएँ भी; अळुत–रोईं; पूचै अळुत–मार्जार रोये; उणर्वु अरिया–अबोध; पिळ्ळै अळुत–शिशु रोये; पॆरियोरै ऍन् चॊल्ल–बड़ों का क्या कहूँ। ३९३

श्रीराम वन जाएँगे —यह सुनकर सुन्दर सौधों के अंदर रहनेवाले तोते रोये; सारिकाएँ भी रोयीं। बिल्लियाँ रोयीं। अबोध शिशु रोये। फिर बड़ों की हालत का कहना क्या है ? । ३९३

चेदाम्बर् पोदनैय शॆङ्गनिवाय् वॆण्डळवप्
पोदाम्बर् ऱोन्ऱप् पुणर्मुलैमेर् पूण्डरळ
मादाम्बर् ऱॆन्न मळैक्कण्णी रालियुह
नादाम्बर् ऱामळ्लै नङ्गैमा रेङ्गिनार् 394

ना पऱ्ऱात मळलै–जीभ पर अपरिपक्व तोतली बोली वाली; नङ्कैमार्–स्त्रियाँ; चॆम्मै आम्पल्–लाल कुमुद का; पोतु–फूल; चॆम् कनि–लाल बिंबफल; अनैय वाय्–जैसे मुखों में; वॆळ् तळवम् पोतु आम्–श्वेत कुन्दकली से; पल् तोन्ऱ–दाँत प्रकट करते हुए; पुणर् मुलै मेल्–संश्लिष्ट स्तनद्वय पर; पूण्–पहनी हुई; मा तरळम् ताम्पु–श्रेष्ठ मुक्तामाला; अऱ्ऱु ऍन्न–टूटी हो जैसे; मळै कण् नीर् आलि उक–शीतल आँखों से आँसू की बूँदें गिराते हुए; एङ्किनार्–रोईं। ३९४

अपरिपक्व जीभ से अस्पष्ट मधुर तोतली बोली निकालनेवाली (उच्चकुल की) स्त्रियाँ भी लाल कुमुद और बिंबफल-सम अपने मुख में कुन्दकली-सी दंतावली प्रकट करते हुए, और आभरण-मंडित श्लिष्ट स्तनद्वय पर मुक्तामाला से छूटकर मोती के दाने गिरते हैं जैसे, जलभरी आँखों से आँसू के कण गिराते हुए रो रही थीं। ३९४

आवु मळुदवदन् कन्ऱळुद वन्ऱलर्न्द
पूवु मळदपुतर् पुळ्ळळुद कळ्ळॊळ्हुम्
कावु मळुद कळिऱळुद काल्वयप्पोर्
मावु मळुदनवम् मन्नवनै मानवे 395

अ मन्नवनै मानवे–उन चक्रवर्ती के समान; आवुम् अळुत–गायें रोईं; अतन् कन्ऱु अळुत–उनके बछड़े रोये; अन्ऱु अलर्न्त–उसी दिन विकसित; पूवुम् अळुत–फूल रोये; पुतल् पुळ् अळुत–जल-पक्षी रोये; कळ् ऑळुकुम् कावुम्–शहद चूनेवाले उद्यान रोये; कळिऱु अळुत–गज रोये; काल् वय पोर् मावुम् अळुतन–ताकतवर पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये। ३९५

गायें भी उन्हीं चक्रवर्ती के समान रोयीं। उनके बछड़े रोये। सद्यविकसित फूल रोये। जल-पक्षी रोये। मधुस्रावी वृक्षों वाले उद्यान रोये। गज रोये और सशक्त पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये। (रोये-मुरझाये, दुखी हुए।)। ३९५

नान्नीयु मुय्हला मॅन्ड्रॅण्णि नायहन्नैक्
कान्नीयु मॅन्ड्रुरैत्त कैहेशि युङ्गॉडिय
कून्नीयु मल्लार् कॉडियार् पिऱरुळरो
मेन्नीयु मिन्ड्रु वॅरुनीरे यायिन्नार् 396

नान्-मैं; नीयुम्-तुम भी; उय्कल आम्-उन्नत होंगे; ऍन्ड्रु ऍण्णि-यह सोचकर; नायकनै-(श्रीराम) नायक को; कान् ईयुम्-वनवास दिला दीजिए; ऍन्ड्रु उरैत्त-ऐसा जिन्होंने कहा उन; कैकेयियुम्-कैकेयी और; कॉटिय कूनियुम् अल्लाल्-क्रूर कुब्जा के सिवा; कॉटियार् पिऱर् उळरो-निर्मम कोई होंगे; मेनियुम् इन्ड्रि-विदेह होकर; वॅरुम् नीरे आयिन्नार्-केवल जलप्राय हो गये। ३९६

"मैं और तुम दोनो फूलें और फलें" —इस विचार से कैकेयी और कुब्जा दोनो ने षडयंत्र रचकर श्रीराम को वनवास दिलाया। उन दोनो निर्मम स्त्रियों के सिवा वहाँ निर्मम कौन थे? इसलिए अन्य सभी लोग विदेह बनकर जलप्राय हो गये! (वे शोक से एक दम दुखविगलित हो गये।)। ३९६

तेऱा दऱिवऴिन्दा रॅङ्गुलप्पार् तेरोड
नीऱाहिच् चुण्ण निऱैन्द तॅरुवॅल्लाम्
आऱाहि योडिन्न कण्णी रुनॅञ्जम्
कूऱाहि योडाद वित्तन्नैये कुऱ्ऱमे 397

तेऱातु-फिर सचेत न हुए, ऐसे; अऱिवु अऴिन्तार्-जो अचेत हुए; ऍङ्कु उलप्पार्-कहाँ गिनती में आएँगे; तेर् ओट-रथ के दौड़ने से; नीऱु आकि-धूलि उठी; चुण्णम् निऱैन्त-उससे धूलि-भरी; तॅरु ऍल्लाम्-सभी वीथियों में; कण् नीर्-अश्रुजल; आऱु आकि ओटिन्-नदी बनकर बहा; अरु नॅञ्चम्-उनके प्यारे हृदय; कूऱु आकि ओटात-खण्ड-खण्ड होकर नहीं भागे; इत्तन्नैये-इतनी ही; कुऱ्ऱम्-कसर थी। ३९७

जो इस तरह अचेत हो गये कि फिर सचेत होते नहीं दिखते उनकी गिनती कहाँ है? (वे अनगिनत हैं।) रथों के चलने से जो वीथियाँ धूलि-भरी हो गई थीं उन पर लोगों के अश्रुजल की बनी नदियाँ बह रही थीं। उनके प्यारे हृदय के टुकड़े नहीं बने और भागे, इतनी ही कसर थी। ३९७

❀ मण्शॅय्द पाव मुळदॅन्बार् मामलर्मेऱ्
पॅण्शॅय्द पाव मदन्ऱ् पॅरिदॅन्बार्

पुण्शॅय्द नञ्जै विदियॅऩ्बार् पूदलत्तोर्
कण्शॅय्द पावङ् गडलिऩ् पॅरिदॅऩ्बार् 398

मण् चॅय्त–पृथ्वी का कृत; पावम् उळतु–कोई पाप है; ॲऩ्पार्–कहते; मा मलर् मेल् पॅण्–उत्कृष्ट कमल पर स्थित देवी का; चॅय्त पावम्–किया हुआ पाप; अततिल् पॅरितु–उससे बड़ा है; ॲऩ्पार्–कहते; विति–विधि ने; नॅञ्चै पुण् चॅय्ततु–सभी के हृदयों पर घाव किया है; ॲऩ्पार्–कहते; पूतलत्तोर्–भूलोकवासियों की; कण् चॅय्त पावम्–आँखों का किया हुआ पाप; कटलिऩ् पॅरितु–सागर से भी विपुल है; ॲऩ्पार्–कहते (कुछ लोग)। ३६८

लोग विविध विचार प्रकट करते थे। कुछ लोग कहते कि पृथ्वी-देवी ने कोई पाप किया है; और कुछ कहते कि श्रेष्ठ कमल-निवासिनी श्रीदेवी ने उससे बड़ा पाप किया है। विधि ने सबके हृदयों को वेध दिया है —यह कुछ लोग कहते। भूतल के लोगों की आँखों का पाप, जिसकी वजह से उन्हें श्रीराम को जटावल्कल-धारी देखना पड़ा, सागर से भी बड़ा हो गया है। ३९८

❀ आळाऩ् बरद ऩरशॅऩ्बा रैयऩिऩि
मीळा ऩहर्क्कु विदिकॊडिदे काणॅऩ्बार्
कोळाहि वन्दवा कॊऱ्ऱमुडि ताऩॅऩ्बार्
माळाद नम्मिऩ् मऩम्वलिया रारॅऩ्बार् 399

परतऩ् अरचु आळाऩ् ॲऩ्पार्–भरत राज नहीं करेगा, कहते; ऐयऩ्–आर्य; इऩि नकर्क्कु मीळाऩ्–अब नगर लौट नहीं आएँगे, कहते; विति कॊटिते–विधि क्रूर है; ॲऩ्पार्–कहते; कॊऱ्ऱम् मुटि ताऩ्–विजयीमुकुट-धारण की बात ही; कोळ् आकि वन्त आऱु–बुरा ग्रह-फल बनके आया, किस प्रकार; ॲऩ्पार्–कहते; माळात नम्मिऩ्–यह सुनकर भी जो नहीं मरे हमसे; मऩम् वलियार्–कठोरमन; आर् ॲऩ्पार्–कौन हैं, कहते। ३६६

'भरत राज्य नहीं करेंगे'; 'आर्य श्रीराम अब नगर नहीं लौटेंगे'; 'विधि बड़ी क्रूर है'; मुकुटधारण की बात ही इस प्रकार का बुरा फल देनेवाला दुर्ग्रह बन गया; 'यह समाचार सुनकर भी जो नहीं मरे, हमसे बढ़कर पत्थरमन कौन हो सकता है ?' —ऐसे अनेक विचार उनसे व्यक्त किये गये। ३९९

❀ आदि यरश ऩरुङ्गे हयऩ्महण्मेऱ्
कादल् मुदिरक् करुत्तऴिन्दा ऩामॅऩ्बार्
शोदै मणवाळऩ् ऱऩ्ऩोडुन् दीक्काऩम्
पोदु मदुवऩ्ऱे पुहुदु मॅरियॅऩ्बार् 400

आति अरचऩ्–हमारे नायक चक्रवर्ती; अरुम् केकयऩ् मकळ् मेल्–अपनी प्यारी केकयपुत्री पर; कातल् मुतिर–प्रेम की बढ़ती से; करुत्तु अऴिन्ताऩ्–विवेकशून्य हो

गये; अँन्पार्–कहते; चीतै मणवाळन् तन्नोटुम्–सीता के पति के साथ; ती कानम् पोतुम्–हम भी तापक वन में जायँगे; अतु अन्रेल्–वह न हुआ तो; अँरि पुकुतुम्–अग्निप्रवेश करेंगे; अँन्पार्–कहते। ४००

और भी कुछ लोग कहते कि हमारे प्रमुख नायक कैकेयी पर के प्रेमाधिक्य के कारण विवेकहीन मन वाले हो गये। हम श्रीसीतापति के साथ संतापी वन में चले जायँगे। अगर वह संभव नहीं होगा तो आग में गिरकर जल जायँगे। ४००

❀ कैया निलन्दडविक् कण्णीर् मॅळ्हुवार्
उय्याळ्पॉन् कोशलैयॅन् ड्रोवादु वॅय्दुयिर्प्पार्
ऐया विळङ्गोवे यार्रुदियो नीयॅन्बार्
नॅय्या रळलुर्र दुर्रारन् नीणहरार् 401

कैयाल् निलम् तटवि–हाथों से धरती को मलकर; कण् नीर् मॅळ्कुवार्–आँसुओं से लीपते; पॉन् कोचलै उय्याळ्—स्वर्णसम कौसल्या जीवित नहीं रहेंगी; अँन्रु–कहते हुए; ओवातु वॅय्तुयिर्प्पार्–निरन्तर गरम उच्छ्वास छोड़ते; इळम् कोवे–लघुराज; ऐया–तात; नी आर्रुतियो–आप सह सकते हैं क्या; अँन्पार्–कहते; अ नीळ् नकरार्–उस बड़े नगर के वासी; नॅय् आर्—घी-लगी; अळल् उर्रतु–आग लगी जैसे; उर्रार्–(बहुत दुख की) स्थिति में पहुँचे। ४०१

कुछ लोग आँसू बहाकर भूमि को अपने हाथों से लीपते। (यह दुख के वर्णन की एक रीति है, जो तमिळ का विशेष मसल है।) कुछ लोग, 'स्वर्ण-सम श्रेष्ठ कौसल्या पुत्र से विलग होकर जी नहीं सकेंगी' —यह कहते हुए गरम निश्वास छोड़ते थे। कुछ लोग लक्ष्मण को पुकारकर कहते कि लघुराज! हमारे प्रभु! आप यह दुख सह सकेंगे क्या? इस तरह उस बड़े नगर के सभी लोग जैसे घी-लगी आग उन पर लगी हो वैसा दुखी हुए। ४०१

तळ्ळूरु वेरिल्लै तन्महर्कुप् पार्कॉळ्वान्
अँळ्ळूरु तीक्करुम नेर्न्दा ळिवळॅन्नाक्
कळ्ळूरु शॅव्वायक् कणिहयरुङ् गेहेशि
उळ्ळूरु काद लिलळ्पोलॅन् रुळ्ळळिन्दार् 402

कळ् ऊरु–मधुस्रावी; चॅम्मै वाय्–लाल अधरों वाली; कणिकैयरुम्–वेश्याएँ भी; तन् मकर्कु–अपने पुत्र के लिए; पार् कॉळ्वान्–भूमि दिलवा लेने के विचार से; कैकेचि–कैकेयी ने; अॅळ् ऊरु–गर्ह्य; ती करुमम्–बुरा काम; नेर्न्ताळ्–किया; तळ्ळूरु वेरु इल्लै–निवारण कुछ नहीं है; अँन्ना–कहकर; इवळ् उळ् ऊरु कातल्–ये अन्तस्थ सच्चा प्रेम वाली; इलळ् पोल्–नहीं हैं तो; अँन्ना–कहकर; उळ् अळिन्तार्–चित्ताकुलित हुईं। ४०२

(मन न देकर) अधर-सुरा देनेवाली वेश्याएँ भी दुखी हुईं। वे कहतीं

कि अपने पुत्र के लिए राज्य पाने की इच्छा से इन कैकेयी ने भी कितना निंदित और नीच और बुरा काम किया है? इसका कोई निवारण नहीं है। तब वे असल में उनसे मन से प्रेम नहीं करती थीं —यही लगता है। ४०२

❀ निऩ्ऱु तवमियऱ्ऱित् ताऩ्ऱीर नेर्ऩ्ततो
अऩ्ऱि युलहत्तु ळारुयिराय् वाऴ्वारैक्
कॊऩ्ऱु कळैयक् कुऱित्त पॊरुळदुवो
नऩ्ऱु वरङ्गॊडुत्त नायहऩ्ऱ ऎण्णमॆऩ्बार् 403

वरम् कॊदुत्त–वर देनेवाले; नायकन् तन् ऍण्णम्–नायक का मतलब; तान् निऩ्ऱु–आप जाकर; तवम् इयऱ्ऱि–तपस्या करके; तीर–प्राण छोड़ने का; नेर्न्ततो–सोचकर क्या; अऩ्ऱि–वह नहीं तो; उलकत्तुळ्–संसार में; आर् उयिराय्–प्यारे प्राण-सम; वाऴ्वारै–जीनेवाले प्रजाजनों को; कॊऩ्ऱु–मारकर; कळैय–दूर करने; कुऱित्त पॊरुळ् अतुवो–किया गया संकल्प है; नऩ्ऱु–बहुत अच्छा रहा; ऍऩ्पार्–कहते। ४०३

कुछ लोग कुछ निष्ठुर वचन कहते— राजा ने जो वर दिया उसके पीछे उनका विचार क्या है? वे क्या तपस्या करने जाकर अपने प्राणों को छोड़ना चाहते हैं या अपने प्राणप्यारे प्रजाजनों को मरवाने का उनका विचार है? । ४०३

❀ पॆऱ्ऱुडैय मण्णवळुक् कीन्दु पिऱन्दुलहम्
मुऱ्ऱुडैय कोवैप् पिरियादु मॊय्त्तीण्डि
उऱ्ऱुऱैदुम् यारु मुऱैयवे शिऩ्ऩाळिल्
पुऱ्ऱुडैय काडॆल्ला नाडाहिप् पोमॆऩ्बार् 404

पॆऱ्ऱु उटैय मण्–(वर द्वारा) प्राप्त भूमि को; अवळुक्कु ईन्तु–उन्हें देकर; यारुम्–हम सभी कोई; पिऱन्तु–जन्म (-सिद्ध अधिकार) से; उलकम् मुऱ्ऱुम्–सभी भुवनों के; उटैय कोवै–स्वामी राजा (राम) को; पिरियातु–अलग न छोड़कर; मॊय्त्तु ईण्टि–उनसे लगे एकत्र होकर; उऱ्ऱु उऱैतुम्–मिले रहेंगे; उऱैयवे–वैसे रहने से; चिल नाळिल्–कुछ दिनों में; पुऱ्ऱु उटैय काटु ऍल्लाम्–बाँबियों से पूर्ण जंगल सब; नाटु आकि पोम्–पुर बन जायगा; ऍऩ्पार्–कहते। ४०४

और कुछ लोग कहते कि ठीक! कैकेयी को वर द्वारा यह भूमि मिली है। लेने दो। पर हम जन्मसिद्ध अधिकार वाले राजा राम से अलग न होकर उनसे लगे रहकर वन में चले जायँगे। वहाँ जाकर रहेंगे तो कुछ ही दिनों में वह वन पुर बन जायगा। बाँबियाँ महलों में परिवर्तित हो जाएँगी। ४०४

❀ ऍऩ्ऩे निरुब ऩियऱ्कै यिरुन्दवा
तऩ्ऩे रिलाद तलैमहऱ्कुत् तारणियै

मुन्ऩे कॉडुत्तु मुऱैतिऱम्बत् तम्बिक्कुप्
पिन्ऩे कॉडुत्ताऱ् पिऴैयादो मॅय्यॅन्बार् 405

तारणियै–धरणी को; मुन्ऩे–पहले; तन् नेर् इलात–जिनका सादृश्य अन्यत्र नहीं, उन; तलै मकऱ्कु–नायक और ज्येष्ठ पुत्र को, देकर; पिन्ऩे–बाद; मुऱै तिऱम्प–क्रम तोड़कर; तम्पिक्कु कॉटुत्ताल्–उनके छोटे भाई को दे दें तो; मॅय् पिऴैयातो–सत्य भ्रष्ट नहीं होगा क्या; निरुपन् इयऱ्कै–राजा का स्वभाव भी; इरुन्त आऱु ॲन्ऩे–रहता किस प्रकार का है; ॲन्पार्–कहते। ४०५

कुछ लोगों ने बहुत पते का प्रश्न पूछा। नरपति तो पहले धरणी को अप्रमेय नायक अपने श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम को दिया। फिर मुकरकर अब उनके छोटे भाई को देते हैं। तो क्या यह सत्य से भ्रष्ट होना नहीं है? चक्रवर्ती की प्रकृति भी कैसी विचित्र है? । ४०५

कोदै वरिविर् कुमरऱ् कॉडुत्तनिल, मादै महऩ्पुणर वॅण्णिये वञ्जित्त
पेदै शिऱुवऩैप् पिन्पार्त्तु निऱ्कुमे, शीदै पिरियिनुन्दान् तीरा डिरुवॅन्बार् 406

कोतै–विजयमाला से अलंकृत; वरि विल्–बन्धनयुक्त धनु के; कुमरन् कॉटुत्त–कुमार को दी गई; निलम् मातै–भूमिदेवी का; मकन् पुणर ॲण्णि–मेरा पुत्र पति हो, यह सोचकर; वञ्चित्त–(जिन्होंने अपने पति को) धोखा दिया उन; पेतै चिऱुवऩै–जड़मति (कैकेयी के) पुत्र को; तिरु–श्रीदेवी; पिन् पार्त्तु निऱ्कुमे–मुड़कर देखेगी और स्थिर रहेगी क्या; चीतै पिरियिनुम्–सीता विलग हो (रह) जाएँगी तो भी; तान् तीराळ्–वह नहीं बिछुड़ेंगी; ॲन्पार्–कहते। ४०६

कुछ लोग विस्मय करते कि क्या राज्यश्री, जो विजयीमाला से अलंकृत बंधनयुक्त धनुर्धर श्रीराम की वाग्दत्ता हो गई थीं, और जिसका अपने पुत्र भरत को बनाना चाहकर अपने पति को जड़मति कैकेयी ने ठग दिया, अब भरत पर मुड़कर भी दृष्टिपात करेंगी और उनके अधीन रहेंगी? सीता भी चाहें तो राम से अलग रह जायँ पर राज्यलक्ष्मी उनको नहीं छोड़ेंगी। (भरत राज्य पर शासन नहीं कर सकेगा —यह संकेत है।) । ४०६

❀ उन्दादु नॅय्वार्त् तुदवादु कालॅऱिय
नन्दा विळक्कि नडुङ्गुहिन्ऱ नङ्गैमार्
शॅन्दा मरैत्तडङ्गट् चॅव्वि यरुणोक्कम्
अन्दो पिरिदुमो वाविदिये योवॅन्बार् 407

उन्तातु–बिना उकसाये; नॅय् वार्त्तु उतवातु–घी डालकर सहायता किये बिना; काल् ॲऱिय–वात के बहने से; नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपनेवाले; नन्ता विळक्किन्–अविरत जलते दीप के समान; नङ्कै मार्–उच्चकुल की स्त्रियाँ; अन्तो–हन्त; चॅम् तामरै तट कण्–लालकमल से विशाल नेत्रों की; चॅव्वि–सुन्दर; अरुळ् नोक्कम्–कृपादृष्टि से; पिरितुमो–वंचित हो जायँगे क्या; आ–हाय; वितियेयो–हमारा दुर्भाग्य है क्या; ॲन्पार्–कहतीं। ४०७

कुछ उच्च कुल की स्त्रियाँ उन अविरत जलनेवाले दीपों के समान थीं जिसकी बाती उकसायी नहीं गई हो और जिसमें घी (तेल) नहीं डाला गया हो, और जो प्रवल वेग से बहनेवाली हवा के सामने काँपते हैं। वे वैसे काँपने लगीं। वे इस बात का दुख करने लगीं कि अब वे श्रीराम के कमलसम आँखों की कृपापूर्ण सुन्दर दृष्टि से वंचित हो जायँगी। वे पछताने लगीं कि हन्त ! अब उनकी कृपादृष्टि के वगैर जी सकेंगी क्या ? हाय ! यह क्या हमारा दुर्भाग्य हुआ ? । ४०७

❀ केट्टा निळैयोन् किळर्ञालम् वरत्ति नाले
मीट्टा ळळित्ताळ् वनन्दम्मुनिन् वॆम्मै मुऱ्ऱित्
तीट्टाद वेऱ्कट् चिऱुदायॆन याव रालुम्
मूट्टाद कालक् कडैत्तीयॆन मूण्डॆ ळुन्दान् 408

तीट्टात वेल् कण्–विना पैनाये (ही तीक्ष्ण रहनेवाले) भाले-सी आँखों की; चिऱु ताय्–छोटी माता ने; तम् मुनिन्–मेरे भाई के प्रति; वॆम्मै मुऱ्ऱि–द्वेष बढ़ाकर; किळर् ञालम्–उनकी अपनी रहनेवाली भूमि को; वरत्तिनाले–वर के व्याज से; मीट्टाळ्–उनसे छीन लेकर; वनम् अळित्ताळ्–वनवास दे दिया; ऍन–यह बात; केट्टान् इळैयोन्–अनुज (लक्ष्मण) ने सुना; यावरालुम्–किसी से; मूट्टात–न प्रज्वलित; कालम् कटै ती ऍन–युगान्त की अग्नि के समान; मूण्टु ऍळुन्तान्–क्रोधोन्मत्त हो उठे । ४०८

लक्ष्मण के कानों में यह समाचार पड़ा। 'सौतेली माता ने जिनकी आँखें स्वाभाविक रूप से भाले के समान तीक्ष्ण हैं, मेरे बड़े भाई से बढ़ते द्वेष के कारण उनके अधिकार के इस राज्य को छीनकर उनको वनवास दिया' —यह सुनकर वे स्वयं, बिना किसी के द्वारा प्रज्वलित हो, उठनेवाले प्रलयांत अनल के समान क्रोधोन्मत्त हो उठे । ४०८

कण्णिऱ् कडैत्तीयुह नॆऱ्ऱियिऱ् कऱ्ऱै नाऱ
विण्णिऱ् चुडरुञ् जुडर्नाणमॆय् नीर्वि रिप्प
उण्णिऱ् कुमुयिर्प् पॆतुमूदै पिऱक्क निन्ऱ
अण्णऱ् पॆरियोन् ऱनदादियिन् मूर्त्ति यॊत्तान् 409

कण्णिल् कटै ती उक–आँखों से युगान्त की (सी) अग्नि प्रकट होती थी; नॆऱ्ऱियिल् कऱ्ऱै–भाल पर भौंहें; नाऱ–चढ़ गईं; मॆय्–शरीर; नीर्–स्वेदजल; विरिप्प–अधिक परिमाण में निकालने लगा तब; उळ् निऱ्कुम्–भीतरी; उयिर्प्पु ऍनुम्–श्वास का; ऊतै पिऱक्क–प्रबल पवन प्रकट हुआ, तब; विण्णिल् चुटरुम्–आकाश में दीप्त; चुटर् नाण–सूर्य भी लजा जाए, ऐसा; निन्ऱ–(उग्र रूप में) खड़े जो रहे; अण्णल् पॆरियोन्–बड़े महिमावान (लक्ष्मण); तनतु आतियिल् मूर्त्ति ऒत्तान्–अपने आदि (अनन्तनाग के) रूप में जैसे लगे । ४०९

आँखों से प्रलयकाल की-सी आग निकलने लगी। भौंहें भाल पर

चढ़ गईं। शरीर स्वेद से भीग गया। भीतर से साँसें आँधी के समान आने लगीं। उनको देखकर आकाशचारी तेजोमय सूर्य भी मानो लज्जा से ठिठक गया। इस उग्ररूप में स्थित लक्ष्मण, उनके, असली आदि रूप अनंतनाग के समान लगे। ४०९

शिङ्गक् कुरुळैक् किडुतीञ्जुवै यूनै नायिन्
वॅङ्गट् चिरुकुट् टनुक्कूट्ट विरुम्बि ऩाळे
नङ्गैक् करिविन् ऱिऱनन्ऱिदु नन्ऱि दॅन्ऩाक्
कङ्गैक् किरैवन् कडहक्कै पुडैत्तु नक्कान् 410

कङ्कैक्कु–गंगा के देश के; इऱैवन्–पति (लक्ष्मण); चिङ्कम् कुरुळैक्कु–सिंहशावक को; इट्टु–देने योग्य; तीम् चुवै ऊन–मधुर स्वाद के मांस को; वॅम् कण्–भयंकर आँख वाले; नायिन् चिरु कुट्टनुक्कु–कुत्ते के छोटे पिल्ले को; ऊट्ट–खिलाने को; विरुम्पिताळे–चाहती हैं; नङ्कैक्कु–इस स्त्री की; अऱिविन् तिऱम्–बुद्धि का कौशल; नन्ऱु इतु–अच्छा है; नन्ऱु इतु–अच्छा है; ॲन्ऩा–कहकर; कटकम् कै पुटैत्तु–कंकणधारी हाथों को पीटते हुए; नक्कान्–ठठाकर हँसे। ४१०

गंगा के देश के पति वे, 'सिंहशावक के योग्य स्वादिष्ट मांस को लेकर क्रूराक्ष कुत्ते के पिल्ले को देना चाहती हैं वे देवी! उनकी बुद्धिमानी भी बड़ी अच्छी रही, अच्छी रही', यह कहते हुए तालियाँ पीटकर हँस उठे। ४१०

❀ शुऱ्ऱारन्द कच्चिर् चुरिहैपुडै तोन्ऱ वार्त्तु
विऱ्ऱाङ्गि वाळिप् पॅरुम्बुट्टिल् पुऱत्तु वीक्किप्
पऱ्ऱारन्द शॅम्बोऱ् कवशम्बनि मेरु वाङ्गोर्
पुऱ्ऱा मनवोङ् गियतोळोडु मार्बु पोर्क्क 411

चुऱ्ऱु आर्न्त कच्चिल्–वलयित कर बँधे कमरबन्द में; चुरिकै–करवाल को; पुटै तोन्ऱ आर्त्तु–पार्श्व में प्रकट बाँधकर; विल् ताङ्कि–(बाँयें हाथ में) धनु लेते हुए; पॅरु वाळि पुट्टिल्–बड़ा तूणीर; पुऱत्तु वीक्कि–पीठ पर कस कर; पऱ्ऱु आर्न्त–चुस्त; चॅम् पॊन् कवचम्–चोखे स्वर्ण का कवच; पनि मेरु ओर पुऱ्ऱु आम्–(इसके सामने) हिमालय एक बाँबी है; ॲन ओङ्किय–ऐसा कहने योग्य रीति से उन्नत; तोळोटु–कंधों के साथ; मार्पु–वक्ष को भी; पोर्क्क–ओढ़ते हुए (पहनकर)। ४११

वे युद्ध के लिए लस थे। कमरबंद में बँधकर तलवार लटक रही थी। बायें हाथ में धनुष, पीठ पर बड़ा तूणीर, और हिमालय को भी अपने सामने बाँबीसम दिखनेवाला बना दें ऐसे उन्नत कंधों और वक्ष को ढँकने वाला चोखे स्वर्ण का कवच —इनके साथ—। ४११

अडियिऱ् चुडर्पोऱ् कळ्लार्हलि नाण वार्प्पप्
पिडियिऱ् ऱडवुञ् जिलैनाण्पॅरुम् पूश लोशै

इडियिऱ् ऱॉडरक् कडलेळु मडुत्तु ञाल
मुडिविऱ् कुमुऱुम् मळैमुम्मयिऩ् मेऩ्मु ळङ्ग 412

अटियिल् चुटर्–पैरों में चमकनेवाली; पॉऩ् कळल्—स्वर्ण-पायल; आर् कलि नाण—सागर-घोष को लज्जित करते हुए; आर्प्प–शब्द करे; पिटियिल् तटवुम्–(उँगलियों से) पकड़कर डोरी खींचने से; चिलै नाण्–धनु की प्रत्यंचा का; पॅरु पूचल् ओचै–बहुत बड़ी ध्वनि (जो उठी); इटियिऩ् तॉटर–वज्रघोष के समान लगातार उठे; ञालम् मुटिविल्–भुवनों के नाश के कल्पान्त में; कटल् एळुम् मट्टुत्तु–समुद्र, सातों को पीकर; कुमुऱुम्–गरजनेवाले; मळैयिऩ् मेल्–मेघों से बढ़कर; मुम्मै मुळङ्क–तिगुना शोर मचावे, ऐसा। ४१२

उनके पैरों में स्वर्ण-पायल बँधी थी जिसकी ध्वनि समुद्रगर्जन को भी हरा रही थी। धनुष की टंकार, जो उन्होंने अपनी उँगलियों से डोरी पकड़कर खींचने से उठी, वज्रगर्जन के समान ध्वनित हो रही थी। दोनो ध्वनियाँ मिलकर युगांतकाल के, जब सारे लोक मिट जाते हैं, सातों समुद्रों का जल पीकर गरजनेवाले मेघों के गर्जनध्वनि से तिगुनी जोर की थी। ४१२

वाऩुन् निलऩुम् मुदलीऱिल् वरम्बिल् पूदम्
मेनिऩ्ऱु कीळ्हाऱुम् विरिन्दऩ वीळ्व पोलत्
ताऩुन् दऩ्दम् मुऩुमल्लदु मुम्मै ञालत्
तूऩु मुयिरु मुडैयार्ह ळुळैन्दॊ दुङ्ग 413

वाऩुम् निलऩुम्–आकाश और धरती; मुतल् ईऱिल्–आदि और अन्तिम; मेल् निऩ्ऱु कीळ् काऱुम्–ऊपर से नीचे तक; विरिन्तऩ–व्याप्त; वरम्पु इल् पूतम्–अनन्त भूत; वीळ्व पोल–मानो मिट रहे हैं, ऐसा हो गये; मुम्मै ञालत्तु–(उसे देख) तीनो लोकों में; ताऩुम् तऩ तम्मुऩुम् अल्लतु–आप (लक्ष्मण) और अपने ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम के सिवा; ऊऩुम् उयिरुम् उटैयार्कळ्–शरीर और प्राणों वाले जीव; उळैन्तु–डरकर; ऑतुङ्क–(छिपने को) हटकर भाग जाएँ, ऐसा। ४१३

ऊपर आकाश से नीचे भूमि तक व्याप्त पाँचों भूतों का नाश होने वाला है ऐसा समझकर त्रिभुवनवासी जीवधारी सब, श्रीराम और लक्ष्मण को छोड़, डरकर छिपने का स्थान ढूँढ़कर भागने लगें, ऐसा— (लक्ष्मण का भयंकर रूप था)। ४१३

❀ पुविप्पावै परङ्गॅडप् पोरिल्वन् दोरै यॅल्लाम्
अविप्पाऩु मवित्तव राक्कयै यण्ड मुऱ्ऱक्
कुविप्पाऩु मिऩ्ऱॆऩ् कुणक्कोविऩैक् कोऱ्ऱमौलि
कविप्पाऩु निऩ्ऱे निदुकाक्कुनर् कामि तॆऩ्ऱाऩ् 414

इऩ्ऱु–आज; पोरिल् वन्तोरै ऍल्लाम्–युद्ध में आनेवाले सभी को; पुवि पावै परम् कॅट–भूमिदेवी का भार दूर करते हुए; अविप्पाऩुम्–मार मिटाने के हेतु और;

अवित्तवर् आक्कैयै–ऐसा मारे गये लोगों के शरीरों के; अण्टम् मुट्ट्र कुविप्पानुम्–आकाश को छूते हुए ढेर लगाने के लिए; ॲन् कुणम् कोविर्त्तै–(बाद) मेरे गुणपूर्ण राजा (राम) को; कोट्ट्रम् मौलि कविप्पानुम्–विजयी किरीट पहनाने के निमित्त; नित्रेन्–सन्नद्ध खड़ा हूँ; इतु काक्कुत्तर्–इसको रोक सकनेवाले; कामिन्–आकर रोको; ॲन्रान्–ललकारा। ४१४

उन्होंने ललकारा। अब मैं, युद्ध करने आनेवालों को, भूभार-निवारण करते हुए मारने, और उनकी लाशों के आकाशस्पर्शी ढेर लगाने और उसके बाद मेरे गुणोन्नत श्रीराजाराम को विजयमुकुट पहनाने के लिए सन्नद्ध खड़ा हूँ। जो रोकना चाहें वे आवें। ४१४

विण्णाट्टवर् मण्णवर् विज्जयर् नाहर् मट्रुम्
ॲण्णाट्टवर् यावरु निट्कवोर् मूव राहि
मण्णाट्टुनर् काक्कुनर् नीक्कुनर् वन्द पोदुम्
पॅण्णाट्ट मॊट्टे त्तिप्पेरुल हत्तु ळॅन्ना 415

विण् नाट्टवर्–स्वर्गवासी; मण्णवर्–भूलोकवासी; विज्चैयर्–विद्याधर; नाकर्–नाग लोग (पातालवासी); मट्रुम् ॲण् नाट्टवर् यावरुम्–और भी दूसरे (लोक) समझे जानेवाले लोकों के सभी वासी; निट्क–एक ओर रहें; ओर् मूवर् आकि–परमश्रेष्ठ त्रिमूर्ति बने; मण् नाट्टुनर्, काक्कुनर् नीक्कुनर्–भुवन की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं; वन्त पोतुम्–वे आएँ तो भी; इ पेर् उलकत्तुळ्–इस विशाल संसार में; इनि–अब; पॅण् नाट्टम् ओट्टेन्–एक नारी का मनचीता होने नहीं दूँगा; ॲन्ना–कहते हुए। ४१५

स्वर्गवासी, भूलोकवासी, विद्याधर, पातालवासी और अन्य लोक-संज्ञित सभी लोकों के सभी वासियों को छोड़ो एक ओर; स्वयं सृष्टि, स्थिति और संहार का काम करनेवाले परमश्रेष्ठ त्रिदेव भी क्यों न आएँ, मैं कदापि एक नारी के संकल्प को चरितार्थ होने नहीं दूँगा। ४१५

❀ कालैक् कदिरो नडुवुट्ट्रदोर् वॅम्मै काट्टि
ञालत् तवर्को महनन्नह रत्तु नाप्पण्
मालैच् चिहरत् तनिमन्दर मेरु मुन्दै
वेलैत् तिरिहिन् ट्रदुपोट्ट्रिरि हिन्ट्र वेलै 416

कालै कतिरोन्–प्रातःकालीन सूर्य; नटु उट्ट्रतु–आकाश-मध्य आया; ओर् वॅम्मै काट्टि–तब का एक ताप प्रकट करते हुए; ञालत्तवर् को मकन्–लोकों के चक्रवर्ती के पुत्र; अ नकरत्तु नाप्पण्–उस नगर के मध्य; मालै चिकरम्–श्रेणीबद्ध शिखरों के साथ; तनि मन्तरम्–अनुपम मन्दर; मेरु–मेरुपर्वत का अंश; मुन्तै–पहले; वेलै तिरिकिन्ट्रतु पोल्–(क्षीर-) सागर में जैसा घूमता था; तिरिकिन्ट्र वेलै–वैसा घूमते जब रहे, तब। ४१६

प्रातःकालीन सूर्य के समान रहे लक्ष्मण अब आकाशमध्य के सूर्य के

समान हो गये। उनमें उतना क्रोधताप पैदा हो गया। भुवनपति चक्रवर्ती दशरथ के उस नगर के मध्य वे उस शिखरबहुल मेरु के (अंशभूत) मंदरपर्वत के समान घूम रहे थे जो पहले क्षीरसागर मथते हुए घूमा था। ४१६

❀ वेऱ्ऱुक् कॉडियाळ् विळैवित्त विनैक्कु विम्मित्
तेऱ्ऱत् तॅळिया दयर्शिऱ्ऱवै पालि रुन्दान्
आऱ्ऱऱ् रुणैत्तम्बि तन्विऱ्पुय लण्ड कोळम्
कोऱ्ऱुऱ् रुडैयप् पडुनाणुरु मेरु केळा 417

वेऱु कॉटियाळ्–रुख बदलकर जो अब निर्मम बन गई हैं, उनके; विळैवित्त–कृत; विनैक्कु–उत्पात से; विम्मि–सिसकती हुई; तेऱ्ऱ तॅळियातु–धीरज बँधाने पर भी धीरज न धरकर; अयर्–लटनेवाली; चिऱ्ऱवै पाल्–छोटी माता (सुमित्रादेवी) के पास; इरुन्तान्–जो रहे (वे श्रीराम); आऱ्ऱल्–बलवान; तुणै तम्पि तन्–साथी, छोटे भाई का; विल् पुयल्–धनु रूपी मेघ से; अण्ट कोळम् कीऱ्ऱु उऱ्ऱु उटैय–अण्डगोल चिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाय ऐसा; पटु–उत्पन्न; नाण् उरुम् ऐरु–टंकार रूपी (मेघ-) गर्जन; केळा–सुनकर। ४१७

तब श्रीराम अपनी छोटी विमाता सुमित्रा के पास उनको धीरज बँधाते हुए रहते थे। निर्मम बनी कैकेयी के दुष्कृत्य से सिसकनेवाली वे धैर्य का अवलंबन नहीं कर पा रही थीं। उस स्थिति में श्रीराम ने सुना कि उनके सहचर भाई के धनु रूपी मेघ से ऐसी टंकार रूपी गर्जन निकल रहा है जिससे अंडगोल ही फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। ४१७

❀ वीऱाक् कियपॉऱ् कलन्विल्लिड वार मित्न
माऱात् तत्तिच्चॉऱ् ऱुळिमारि वळङ्गि वन्दान्
काऱाक्क निमिर्न्दु पुहैन्दु कनन्ऱु पॉङ्गुम्
आऱाक् कनलाऱ् ऱुमॊरञ्जन मेह मॅन्न 418

वीऱु आक्किय–विशिष्ट रूप से निर्मित; पॉन् कलन्–स्वर्णाभरण; विल् इट–इन्द्रधनुष की-सी आभा छिटक रहे थे; आरम् मिन्न–मोतियों के हार चमके; काल् ताक्क–हवा के आघात से; निमिर्न्तु पुकैन्तु–प्रज्वलित होकर धुएँ के साथ; कनन्ऱु पॉङ्कुम्–ज्वाला के साथ उठनेवाली; आऱात कनल्–न बुझनेवाली आग को; आऱ्ऱुम्–शान्त करने में समर्थ; ओर् अञ्चनम् मेकम् ॲन्न–एक काले मेघ के समान; माऱात–जिनको सुनकर लोग विपरीत नहीं जा सकते ऐसे; तत्ति चॉल्–श्रेष्ठ वचन रूपी; तुळि मारि–बूँदों की वर्षा; वळङ्क–करने; वन्तान्–पधारे। ४१८

वे वहाँ चले। उनके विशेष रूप से निर्मित आभरण इन्द्रधनुष-सम विविध रंग के प्रकाश बिखेर रहे थे। मुक्तामालाएँ चमक रही थीं। वे ऐसे काले मेघ के समान आये जो हवा की सहायता पाकर भभक उठकर धुएँ के साथ अदम्य रीति से जलनेवाली अग्नि को शांत करने में समर्थ हो और जो अवार्य श्रेष्ठ वचन रूपी बूँदों की वर्षा करने आता हो। ४१८

❀ मिन्नौत्त शीऱ्ऱक् कनल्विट्टु विळङ्ग निन्ऱ
पॉन्नौत्त मेनिप् पुयलौत्त तडक्कै यानै
ऍन्नतत नॆन्नी यिऱैयेनु मुनिन्दि लादाय्
सन्नतत नाहित् तनुवेन्दुदऱ् केदु वॆन्ऱान् 419

मिन् ऑत्त–बिजली के समान; चीऱ्ऱम् कनल् विट्टु–कोपाग्नि निकालते हुए; विळङ्क निन्ऱ–सबको वह स्थिति कराते हुए खड़े (जो) रहे उनको; पॊन् ऑत्त मेनि–और स्वर्णवर्ण-शरीरी; पुयल् ऑत्त तट कैयानै–मेघ-सम विशाल हाथों वाले उनको; ऍन् अत्तन्–मेरे तात; इऱैयेनुम् मुनिन्तु इलाताय्–किंचित भी कोप न करनेवाले; नी–तुम; चन्नत्तन् आकि–युद्धसन्नद्ध होकर; तनु एन्तुतऱ्कु–धनु उठा लेने का; एतु ऍन–हेतु क्या है; ऍन्ऱान्–पूछा। ४१९

आते ही उन्होंने बिजली के समान क्रोधाग्नि प्रकट करते हुए कुपित रहनेवाले, स्वर्णसम शरीर और मेघसम हाथों वाले लक्ष्मण से प्रश्न किया कि मेरे तात ! तुमने कभी ऐसा कोप नहीं किया था। अब युद्धसन्नद्ध ही हो गये हो और तुमने हाथ में धनु भी उठा लिया है। इसका हेतु क्या है ? । ४१९

❀ मॅय्यैच् चिदैवित्तु निन्मेन्मुऱै नीत्त नॆञ्जम्
मैयिन् करिया ळॆदिर्निन्तैयम् मौलि शूट्टल्
शॆय्यक् करुदित् तडैशॆय्हुनर् देव रेनुम्
तुय्यैच् चुडुवॆङ् गनलिऱ्चुडु वान्ऱु णिन्दॆन् 420

मॅय्यै चितैवित्तु–सत्य की हत्या करके; निन् मेल् मुऱै नीत्त–आपका परम्परागत स्वत्व का क्रम तुड़ानेवाले; नॆञ्चम् मैयिन् करियाळ्–चित्त (जिसका) अंजन से काला है उसके; ऍतिर्–सामने ही; निन्तै–आपका; अ मौलि चूट्टल् चॆय्य–वह मुकुट धारण कराना; करुति–सोचकर; तटै चॆय्कुनर्–बाधा देनेवाले; तेवरेनुम्–देव भी हों; तुय्यै चुटु–रुई को जलानेवाली; वॆम् कनलिन्–भयंकर आग के समान; चुटुवान् तुणिन्तेन्–उनको जलाने का निश्चय किया है। ४२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया— जिस कैकेयी ने सत्य का गला घोंट दिया, और आपका परंपरागत स्वत्वक्रम छीन लिया उस अंजनसम काले मन वाली कैकेयी के देखते, उसके सामने ही मैंने आपको मुकुट पहनाने का संकल्प कर लिया है। उसको रोकनेवाले चाहे देवता ही क्यों न हों उनको रुई को जलानेवाली आग के समान जलाकर राख बनाने को ठान लिया है। ४२०

वलक्कार्मुह मॆन्कैय दाहवव् वानु ळोरुम्
विलक्कारवर् वन्दु विलक्किनु मॆन्कै वाळिक्
किलक्कावॆरि वित्तुल हेळिनो डेळु मन्नर्
कुलक्कावलु मित्रुतक् कियान्ऱरक् कोडि यॆन्ऱान् 421

वलम् कार्मुकम्–बलवान कार्मुक; ॲन् कैयतु आक–मेरे हाथ में रहता है, तब; अ वान् उळोरुम्–वे स्वर्गवासी देवता भी; विल्क्कार्–मुझे नहीं रोकेंगे; अवर् वन्तु विलक्कितुम्–वे आकर रोकें तो भी; ॲन् कै वाळिक्कु–मेरे हाथ के अस्त्र का; इलक्कु आ(क)–लक्ष्य बनकर; ॲरिवित्तु–मिटाकर; उलकु एळिनोटु एळुम्–लोक सात और सात, चौदहों को; मन्नर् कुलम् कावलुम्–उनके राजाओं का अधिकार भी; इन्ऱु उनक्कु यान् तर–मैं आज आपको दूँगा और; कोटि–ले लीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। ४२१

लक्ष्मण ने आगे कहा— जब तक सबल कार्मुक मेरे हाथ में है तब तक वे स्वर्गलोक-वासी देवगण भी मुझे रोकने नहीं आयेंगे। आयेंगे तो भी उनको अपने बाणों का निशान बनाकर जला दूँगा और उनको राख बना दूँगा। मैं चौदहों लोकों को और उनमें रहनेवाले राजाओं के अधिकार को आपका बना दूँगा। आप ग्रहण कर लीजिए। ४२१

❀ इळैयान्ऱिदु कूऱ विराम तियैन्द नीदि
वळैयावरु नन्नॅऱि नित्तनऱि वाहु मन्ऱे
उळैयावऱम् वऱ्ऱिड वूळ्वळु वुऱ्ऱ शीऱ्ऱम्
विळैयाद निलत्तुनक् कॅङ्ङन् विळैन्द ॲन्ऱान् 422

इळैयान्–अनुज के; इतु कूऱ–यह कहने पर; इरामन्–श्रीराम; इयैन्त नीति–सर्वसम्मत नीति; वळैयातु वरुम्–जिसमें टल नहीं जाती; नल् नॅऱि–उस मार्ग में; निन् अऱिवु आकुम् अन्ऱे–तुम्हारी बुद्धि चलनेवाली है न; उळैया अऱम्–अचल धर्म को; वऱ्ऱिट–मिटाते हुए; ऊळ् वळुवु उऱ्ऱ चीऱ्ऱम्–क्रम का व्यतिक्रम करनेवाला क्रोध; विळैयात निलम्–न होनेवाले स्थान; उनक्कु–तुममें; ॲङ्ङन् विळैन्ततु–क्योंकर हुआ; ॲन्ऱान्–पूछा। ४२२

जब अनुज ने यह कहा तब श्रीराम ने पूछा कि भाई! तुम्हारी मति उसी अच्छे मार्ग में चलनेवाली है न जो सर्वसम्मत-नीति से युक्त और बिना वक्र हुए चलता आता है? फिर अब यह धर्मनाशक और क्रमभंजक क्रोध, अपने लिए अनुचित प्रदेश, तुममें उत्पन्न कैसे हुआ? (तमिळ का जो 'इळैयान्' शब्द इस पद्य में प्रयुक्त है उसका 'छोटा' अर्थ भी है; अदम्य, अथक आदि अर्थ भी।)। ४२२

❀ नीण्डा नदुकूऱलु नित्तिलन् दोन्ऱ नक्कुच्
चेण्डान् ऱोडर्मानिल निऱ्कॅनत् तादै शॅप्पप्
पूण्डाय् पहैयालिळन् देवन्नम् बोदि यॅन्ऱाल्
याण्डो वडियेऱ्किनिच् चीऱ्ऱ मडुप्प दॅन्ना 423

नीण्टान्–सर्वश्रेष्ठ श्रीराम के; अतु कूऱलुम्–वह कहने पर; नित्तिलम् तोन्ऱ–मोती (सम दाँत) प्रकट करते हुए; नक्कु–हँसकर; चेण् तॉटर् मा निलम्–(दूर से) बहुत काल से रहता आनेवाला विशाल राज्य; निऱ्कु ॲन्न–आपका, यह; तातै चॅप्प–

पिता के कहने पर; पूण्टाय्–मान लिया (आपने); पकैयाल् इऴन्तु–(किसी के) द्वेष से खोकर; वनम् पोति ॲन्ऱाल्–वन जाओ कहा गया तो; अटियेऱ्कु चीऱ्ऱम् अटुप्पतु–मुझ दास का क्रोध करना; इति याण्टो–इसके सिवा कहाँ; ॲन्ऩा–कहकर। ४२३

सर्वोत्तम श्रीराम के यह कहने पर लक्ष्मण ने अपने मोतीसम दाँतों को प्रकट करते हुए हँसकर कहा कि आप भी खूब बोले ! परंपरा के क्रम से ज्येष्ठ पुत्र का होता हुआ आनेवाला यह विशाल राज्य पिताजी के कहने पर आपका हुआ। फिर किसी की शत्रुता के कारण आपको उसको खोना पड़ा और आप जंगल जा रहे हैं। तब क्रोध नहीं आएगा तो फिर कब मुझे कोप होगा ? । ४२३

❀ निऩ्कट्परि विल्लवर् नीऴ्वनत् तुऩ्ऩै नीक्कप्
पुऩ्कट्पॊऱि याक्कै पॊऱुत्तुयिर् पोऱ्ऱु हेतो
ॲऩ्कट्पुल मुऩ्ऩुनक् कीन्दुवैत् तिल्लै यॆऩ्ऱे
वऩ्कट्पुलन् दाङ्गिय मऩ्ऩवन् पोल वॆऩ्ऱान् 424

ॲन् कण् पुलम् मुऩ्–मेरी आँख के सामने; उऩक्कु ईन्तु वैत्तु–आपको देकर; इल्लै ॲऩ्ऱु–फिर 'नाहिं' करके; वन् कण् पुलम् ताङ्किय–कठोर हृदय बने हुए; मऩ्ऩवन् पोल–चक्रवर्ती के समान; निऩ् कण् परिवु इल्लवर्–आप पर स्नेह न रहनेवालों के; उऩ्ऩै–आपको; नीऴ् वऩत्तु नीक्क–विशाल वन में भेजते; पुन् कण्पॊऱि–नीच इन्द्रियों वाला; याक्कै पॊऱुत्तु–शरीर धारण करके; उयिर् पोऱ्ऱुकेतो–प्राण रखूँगा क्या; ॲन्ऱान्–कहा। ४२४

लक्ष्मण ने आगे कहा कि मेरे ही समक्ष राजा ने आपको राज्य दिया; फिर नहीं कह दिया। इतने कठोरहृदय उन राजा के समान क्या मैं भी यह देखते हुए कि आपसे प्रेम न रखनेवाले आपको वन भेज रहे हैं, अपना इन्द्रियागार यह शरीर ढोता हुआ जीवन रखूँगा ? । ४२४

पिऩ्कुऱ्ऱ मऩ्ऩुम् बयक्कुम्मर शॆऩ्ऱल् पेणेन्
मुऩ्कॊऱ्ऱ मऩ्ऩन् मुडिकॊऴ्हॆऩक् कॊऴ्ळ मूण्ड
दॆऩ्कुऱ्ऱ मऩ्ऱि यिहऩ्मऩ्ऩवन् कुऱ्ऱम् यादो
मिऩ्कुऱ् ऱॊऴिरुम् वॆयिऱ्ऱीक्कॊ डमैन्द वेलोय् 425

मिन् कुऱ्ऱु–बिजली (की चमक) मिटाकर (मन्द कर); ऑऴिरुम् वॆयिल्–गरम धूप; ती कॊटु अमैन्त–और अग्नि-सह निर्मित; वेलोय्–भाला वाले; अरसु–राज; पिन् मऩ्ऩुम् कुऱ्ऱम्–फिर भी अधिक दोष; पयक्कुम्–दिलाएगा; ॲन्पतु पेणेन्–इसकी परवाह न करके; कॊऱ्ऱम् मऩ्ऩन्–विजयशील चक्रवर्ती के; मुन्–पहले; मुटि कॊऴ्क ॲन–किरीट धारण कर लो कहने पर; कॊऴ्ळ–मैंने मान लिया; मूण्टतु–ऐसा फल हुआ; ॲन् कुऱ्ऱम् अन्ऱि–मेरे अपराध के सिवा; इकल् मऩ्ऩवन् कुऱ्ऱम्–वीर राजा का कसूर; यातो–कौन सा है। ४२५

श्रीराम ने समाधान देते हुए कहा कि बिजली की कान्ति को मिटाने वाली कांति और उज्ज्वल धूप और गरम आग की-सी तापक शक्ति से युक्त भाला वाले ! मुझे यह सोचना चाहिए था कि राज्य कितने ही दोष पैदा करेगा। मैंने उसका विचार किये बिना ही, जब राजा ने कहा कि 'राज्य लो', तो मान लिया। उसी का यह फल है ! तब अपराध मेरा है। शक्तिमान राजा का इसमें अपराध क्या है ? । ४२५

❀ नदियिन्पिऴै यन्ऱु नऱुम्पुन लिन्मै यऱ्ऱे
पदियिन्पिऴै यन्ऱु पयन्दु नमैप्पु रन्दाळ्
मदियिन्पिऴै यन्ऱु महन्पिऴै यन्ऱु मैन्द
विदियिन् पिऴैनी यिदर्कॆन्नै वॆहुण्ड दॆन्ऱान् 426

मैन्त–कुमार; नऱु पुनल् इन्मै–अच्छा जल न रहे तो; नतियिन् पिऴै–नदी का दोष; अन्ऱु–नहीं है; अऱ्ऱे–उसी तरह; पतियिन् पिऴै अन्ऱु–राजा का दोष नहीं है; पयन्तु नम्मै पुरन्ताळ्–(हमको पुत्र रूप में) प्राप्त कर पालनेवाली (कैकेयी) की; मतियिन् पिऴै अन्ऱु–मति का दोष भी नहीं है; मकन् पिऴै अन्ऱु–उनके पुत्र का भी दोष नहीं है; वितियिन् पिऴै–विधि का दोष है; इतऱ्कु–इसमें; नी वॆकुण्टतु–तुम क्रोधित हुए; ऎन्नै–क्यों; ऎन्ऱान्–कहा। ४२६

श्रीराम ने आगे बहस की। नदी में जल सूख गया तो नदी का क्या दोष ? उसी तरह यह राजा का अपराध नहीं है; न उन कैकेयी माता की बुद्धि की भूल है जिन्होंने हमें पुत्र के रूप में प्राप्तकर (पुत्र मानकर) प्रेम से पाला था। भरत का भी कोई अपराध नहीं है। यह केवल विधि का दोष है। इसमें तुम क्रोध क्यों करते हो ? । ४२६

❀ उदिक्कुम् मुलैयुळ् ळुऱुदीयॆन वूदै पोङ्गक्
कॊदिक्कुम् मनमॆङ् ङनमाऱुमिक् कोळि ऴैत्ताळ्
मदिक्कुम् मदियाय् मुदल्वानवर्क् कुम्व लीइदाम्
विदिक्कुम् विदियाहु मॆन्विऱ्ऱॊऴिल् काण्डि यॆन्ऱान् 427

ऊतै पोङ्क–(भाथी की) हवा के अधिक होने से; उलै उळ् उतिक्कुम्–भट्ठी के अन्दर प्रज्वलित; उऱु ती ऎन–विपुल अग्नि के समान; कॊतिक्कुम् मतम्–तपनेवाला मेरा मन; ऎङ्ङनम् आऱुम्–कैसे शान्त होगा; इ कोळ् इऴैत्ताळ्–यह उत्पात मचानेवाली की; मतिक्कुम् मति आय्–बुद्धि की बुद्धि बनकर; मुतल् वानवर्क्कुम्–आदि त्रिदेव के लिए भी; वलितु आम्–प्रबल रहनेवाली; वितिक्कुम् विति आकुम्–विधि की विधि बननेवाले; ऎन् विल् तॊऴिल्–मेरे धनु का कार्य; काण्टि–देखिए; ऎन्ऱान्–कहा। ४२७

इसके उत्तर में लक्ष्मण ने कहा— भाथी की हवा के अधिक लगने से उत्तेजित भट्ठी की अग्नि के समान मेरा मन तप्त है। वह शांत कैसे होगा ? आप कैकेयी की बुद्धि, विधि आदि की बात क्या करते हैं। मेरा

धनु उनकी मति को बुद्धि दिलायेगा और त्रिदेवों से भी अकाट्य विधि की भी विधि बनेगा। देखिए उसका कार्य। ४२७

❀ आय्तन्दव तव्वुरै कूऱलु मैय निऩ्ऱऩ्
वाय्तन्दऩ कूऱुदि योमऱै तन्द नावाल्
नीतन्ददऩ् ऱोनॆंऱि यो ह णिलाद दीऩ्ऱ
ताय्दन्दयॆंन् ऱालवर् मेऱ्चलिक् किऩ्ऱ दॆंऩ्ऩो 428

आय् तन्तवन्–शास्त्रानुशीलन-कर्ता के; अ उरै कूऱलुम्–वह वचन कहने पर; ऐयन्–आर्य बोले; मऱै तन्त नावाल्–वेदाभ्यस्त जिह्वा से; निऩ्ऱन् वाय् तन्तत–जो भी मुख में आए; कूऱुतियो–कहोगे; नी तन्ततु–अब जो तुमने (करने को) कहा; नॆंऱियोर् कण् निलाततु अऩ्ऱो–सन्मार्गियों में पाया जायगा न; ईऩ्ऱ ताय् तन्तै ॲऩ्ऱाल्–जनक माँ-बाप हैं तब; अवर् मेल्–उनसे; चलिक्किऩ्ऱतु–क्रोध करना; ॲऩ्ऩो–क्या ठीक है। ४२८

लक्ष्मण स्वयं शास्त्रज्ञ तथा शास्त्रानुशीलन-कर्ता थे। श्रीराम ने उसका स्मरण दिलाते हुए कहा— वेदों से अभ्यस्त अपनी जीभ से तुम यह कैसे शब्द निकाल रहे हो? अब जो करने की बात कह रहे हो क्या वह सन्मार्ग-गामियों के पास उचित रहेगा? जब सम्बद्ध लोग हमारे माता-पिता हैं तब उन पर क्रोध करना कैसी बात है? । ४२८

❀ नऱ्ऱा दयुनी तऩिनायह नीव यिऱ्ऱिऱ्
पॆंऱ्ऱायु नीये पिऱरिल्लै पिऱ्ऱ्कु नल्हक्
कऱ्ऱा यिदुहा णुदिनीयॆंनक् कैम्म ऱित्ताऩ्
मुऱ्ऱा मदियम् मिलैन्दाऩ्मुऩिन् दानै यऩ्ऩाऩ् 429

मुऩिन्ताऩ्–क्रोधशील; मुऱ्ऱा मतियम् मिलैन्ताऩै–बालचन्द्रधर शिव के; अऩ्ऩाऩ्–सदृश रहनेवाले ने; पिऱर्क्कु नल्क कऱ्ऱाय्–दूसरों को (सब) दान कर देना आपने सीखा है; नल् तातैयुम् नी–मेरे लिए आप ही अच्छे पिता हैं; तऩि नायकऩ् नी–अद्वितीय नायक आप हैं; वयिऱ्ऱिल् पॆंऱ्ऱ आयुम् नीये–गर्भ में से जन्म देनेवाले भी आप ही; पिऱर् इल्लै–और कोई नहीं; इतु नी काणुति–यह आप ध्यान से देखिए; ॲन–यह कहकर; कै मऱित्ताऩ्–हाथ हिलाया। ४२९

तब क्रोधशील, चंद्रशेखररुद्र-सम लक्ष्मण ने कहा— आपने सब कुछ दूसरों को देना सीख लिया है। (या सबको दान करने की शिक्षाप्राप्त हे उदार!) मेरे आप ही पिता हैं; जननी माता भी अद्वितीय नायक आप ही। और कोई नहीं हैं। अब मेरी करनी देखिए। यह कहकर लक्ष्मण ने अपना हाथ नकारात्मक उत्तर में हिला दिया। ४२९

वरदन् पहऱ्वाऩ् वरम्बॆंऱ्ऱव डाऩिव् वैयम्
शरदम् मुडैया ळवळॆंऩ्ऱऩित् तादै शॆंप्पप्

परदऩ् पॅरुवा ऩिऩियाऩ्पडैक् किऩ्ऱ शॅल्वम्
विरदम् मिदिऩल् लदुवेऱिऩि याव दॅऩ्ऱाऩ् 430

वरतऩ् पकर्वाऩ्–वरद प्रभु ने कहा; इ वैयम्–इस राज्य की; वरम् पॅऱ्ऱवळ् ताऩ्–जिन्होंने वर द्वारा प्राप्त किया है वे ही; चरतम् उटैयाळ्–सच्ची स्वामिनी हैं; अवळ्–वे; ऍऩ् तऩि तातै–मेरे अनुपम पिता; चॅप्प–कहते हैं; परतऩ् पॅरुवाऩ्–भरत (राज्य को) प्राप्त करेगा; इऩि–आगे; याऩ् पटैक्किऩ्ऱ–जो मैं प्राप्त करूँगा वह; चॅल्वम्–धन; विरतम्–तपस्या है; इतिऩ् नल्लतु–इससे अधिक अच्छा; इऩि वेऱु यावतु–अब क्या है; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ४३०

वरदप्रभु श्रीराम ने बहस जारी की। सच पूछा जाय तो इस भूमि की स्वामिनी कैकेयी ही हैं जिन्हें यह वर के रूप में प्राप्त हो गई। वे और मेरे श्रेष्ठ पिताजी इसको भरत को देते हैं तो वह भरत की हो गई। अब मेरा प्राप्य धन तप का धन है। अब इससे बढ़कर श्रेयस्कर वस्तु क्या है ? । ४३०

❀ आऩ्ऱाऩ् पहर्वाऩ् पिऩ्ऩुमैयविव् वैय मैयल्
तोऩ्ऱा नॅऱिवाऴ् तुणैत्तम्बियैप् पोर्तॊ लैत्तो
शाऩ्ऱोर् पुहऴुन् दऩित्तादैयै वाहै कॊण्डो
ईऩ्ऱाळै वॅऩ्ऱो विऩियिक्कदऩ् दीर्व दॅऩ्ऱाऩ् 431

आऩ्ऱाऩ्–सर्वश्रेष्ठ श्रीराम; पिऩ्ऩुम्–फिर भी; पकर्वाऩ्–कहा; ऐय–आर्य; इऩि–अब; इ वैयम् मैयल्–इस संसार-मोह से; तोऩ्ऱात नॅऱि वाऴ्–रहित मार्ग में रहनेवाले; तुणै तम्पियै–सहचर अनुज (भरत) को; पोर् तॊलैत्तो–युद्ध में मारकर; चाऩ्ऱोर् पुकऴुम्–सभी बड़े लोगों से प्रशंसित; तऩि तातैयै–अनुपम पिता पर; वाकै कॊण्टो–विजय पाकर; ईऩ्ऱाळै वॅऩ्ऱो–या जननी को हराकर; इ कतम् तीर्वतु–यह कोप दूर होगा क्या; ऍऩ्ऱाऩ्–बोले। ४३१

पुरुषोत्तम ने आगे पूछा— उत्तम गुणों के आर्य ! क्या तुम्हारा कोप, सांसारिक मायाजाल से विमुक्त, अच्छे मार्ग में जानेवाले अपने साथी भ्राता भरत को युद्ध में मारकर, साधुओं से प्रशंसित हमारे पिता को हराकर, या जननी कैकेयी को हराकर ही शांत होगा ? । ४३१

❀ शॅल्लुञ्जॊल् वल्ला ऩॆदिर्तम्बियुन् दॆव्वर् शॊल्लुम्
शॊल्लुञ् जुमन्दे ऩिरुतोळॆऩच् चोम्बि योङ्गुम्
कल्लुञ् जुमन्दॆऩ् कणैप्पुट्टिलुङ् गट्ट मैन्द
विल्लुञ् जुमक्कप् पिऱन्देऩ्वॆहुण् डॆऩ्ऩै यॆऩ्ऱाऩ् 432

चॅल्लुम् चॊल् वल्लाऩ्–अमोघ भाषणकुशल के; ऍतिर्–सामने; तम्पियुम्–अनुज लक्ष्मण ने भी; तॆव्वर् चॊल्लुम् चॊल्लुम् चुमन्तेऩ्–शत्रुओं की निंदा के वचन सह रहा हूँ; इरु तोळ् ऍऩ–दो कंधे के नाम पर; चोम्पि आङ्कुम्–व्यर्थ बढ़े हुए; कल्लुम् चुमन्तेऩ्–पत्थर ढोता हूँ; कणै पुट्टिलुम्–शरों की थैली भी; कट्टु अमैन्त

विल्लुम्–बन्धन से युक्त धनु भी; चुमक्क पिऱन्तेन्–ढोने के लिए पैदा हुआ; वॅकुण्टु ॲन्नै–मुझ पर गुस्सा करके क्या (लाभ) है; ॲन्ऱान्–कहा। ४३२

यह सुनकर अनुज लक्ष्मण अपनी निंदा करते हुए बोले— मैं अपने शत्रुओं की निंदा का वचन सहते हुए दो कन्धे के नाम पर व्यर्थ बढ़े हुए पत्थर, शरों की थैली और बंधनयुक्त धनुष ढोनेवाला हो गया। फिर आप मुझ पर कोप करके क्या करेंगे ! । ४३२

नन्शोर् कडन्दाण् डॅन्नैनाळुम् वळर्त्त तादै
तन्शोर् कडन्दॆर् करशाळ्वदु तक्क दन्ऱाल्
ॲन्शोर् कडन्दा लुनक्कियादुळ दूऱ्ऱ मॆन्ऱान्
तॆन्शोर् कडन्दान् वडशोऱ्कलैक् कॆल्लै तेर्न्दान् 433

तॆन् चोल् कटन्तान्–दक्षिणी भाषा (तमिळ) के पारंगत; वट चोल् कलैक्कु–उत्तरी (संस्कृत) भाषा के वेदशास्त्रों के; ॲल्लै तेर्न्तान्–पूर्ण ज्ञानी; नन् चोऱ्कळ् तन्तु–श्रेष्ठ वचन (विद्याएँ) सिखाकर; ॲन्नै आण्टु–मुझे पालकर; नाळुम् वळर्त्त–जिन्होंने पोषा; तातै तन् चोल् कटन्तु–उन पिता का वाक्य टालकर; अरचु आळ्वतु–राज करना; तक्कतु अन्ऱु–उचित नहीं है; ॲन् चोल् कटन्ताल्–मेरा वचन न मानोगे; उनक्कु यातु उळतु ऊऱ्ऱम्–तुम्हारा क्या बल होगा; ॲन्ऱान्–बोले। ४३३

तमिळ और संस्कृत के पारंगत श्रीराम ने कहा कि 'मुझे अच्छी विद्याएँ सिखाकर जिन्होंने पालन-पोषण किया उन पिताजी के वाक्य का उल्लंघन करके राज्य करना मैं उचित नहीं समझता। तुम भी मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा बल क्या रह जायगा ? सोचो !' श्रीराम ने यह कह अपनी बात समाप्त की। ४३३

शीऱ्ऱन् दुऱन्दा नॆदिर्निन्ऱु तॆरिन्दु शॆप्पुम्
माऱ्ऱन् दुऱन्दान् मऱैनान्गॆन वाङ्गल् शॆल्ला
नाऱ्ऱॆण् डिरैवे लयिनम्बिद ताणे याले
एऱ्ऱन् दॊडङ्गाक् कडलिऱ्ऱणि वॆय्दि निन्ऱान् 434

नम्पितन्–नायक के; मऱै नान्कु ॲन–चतुर्वेद-सम; वाङ्कल् चॆल्ला–अकाट्य; आणैयाल्–आज्ञा से; चीऱ्ऱम् तुऱन्तान्–कोप छोड़कर; ॲतिर् निन्ऱु–समक्ष खड़े होकर; तॆरिन्तु चॆप्पुम्–सोचकर कहे हुए; माऱ्ऱम्–वचन; तुऱन्तान्–छोड़ दिये; नाल्, तॆळ् तिरै–चार, स्वच्छ लहरों वाले; वेलैयिन्–तीरों को; एऱ्ऱम् तॊटङ्का–पार कर जाना, जो नहीं करते; कटलिन्–उन समुद्रों के समान; तणिवु ॲय्ति–कोप थाम कर; निन्ऱान्–खड़े रहे। ४३४

नायक श्रीराम के वचन प्रभुसंहिता कहे जानेवाले चतुर्वेद के शासनों के समान अकाट्य थे। इसलिए लघुराज लक्ष्मण ने अपना क्रोध त्याग दिया। अपने ज्येष्ठ भ्राता के समक्ष खड़े होकर तर्क करना भी छोड़

दिया। वे तीर न पार करनेवाले, पारावार के समान कोप थामकर खड़े रहे। ४३४

अन्नान्ऱनै यैयनु मादियो डन्द मॅन्ऱुम्
तन्नालु मळप्परुन् दानुन्दन् पाह निन्ऱ
पॊन्मानुरि यानुन् दळीइयॅनप् पुल्लिप् पिन्नैच्
चॊन्माण्बुडै यन्नै शुमित्तिरै कोयिल् पुक्कान् 435

ऐयनुम्–आर्य भी; आतियॊटु अन्तम्–आदि और अन्त; ऍन्ऱुम्–कभी भी; तन्तालुम् अळप्पु अरुम्–स्वयं अपने लिए भी अगम; तानुम्–आप; तन् पाकम् निन्ऱ–अपने ही भाग के रूप में विद्यमान; पॊन्मान् उरियानुम्–स्वर्णमृगचर्मधारी; तळीइयतु ऍन–आलिंगन कर रहे हों, जैसे; अन्नान् तन्नै पुल्लि–उन (लक्ष्मण) को गले लगाकर; पिन्नै–बाद; चॊल् माण्पु उटैय–भाषण-गरिमा वाली; अन्नै–माता; चुमित्तिरै कोयिल् पुक्कान्–सुमित्रा के मन्दिर में जा पहुँचे। ४३५

श्रीराम ने लक्ष्मण का कसकर आलिंगन कर लिया। वे अपने लिए भी अगम श्रीविष्णु थे। लक्ष्मण उन स्वर्णमृगांबर-धारी शिवजी के समान थे, जो विष्णु के ही अर्द्धांग (समझे जाते) हैं। वह आलिंगन शिव-विष्णु का आलिंगन-सा था। फिर वे दोनो भाषण की गरिमा वाली सुमित्राजी के महल में जा पहुँचे। (दक्षिण में शंकर-नारायण की मिली हुई मूर्तियाँ और उनके मन्दिर भी हैं)। ४३५

कण्डाण् महनुम् महनुन्दन कण्गळ् पोल्वार्
तण्डा वनञ्जॅल् वदर्केशमैन् दार्ह डम्मैप्
पुण्डाङ्गु नॅञ्जत् तिनळाय्प् पुरण्डाळ् पडिमेल्
उण्डाय तुन्बक् कडर्कॅल्लै युणर्न्दि लादाळ् 436

तन् कण्कळ् पोल्वार्–अपने दोनो आँखों के समान रहनेवाले; मकनुम् मकनुम्–अपना पुत्र और दूसरा पुत्र; तण्टा वनम् चॅल्वतर्के–दण्डकारण्य जाने के ही लिए; चमैन्तार्कळ् तम्मै–उद्यत उनको; कण्टाळ्–देखकर; उण्टाय तुन्पम् कटर्कु–जो हुआ उस दुख के सागर की; ऍल्लै उणर्न्तिलाताळ्–सीमा न जाननेवाली; पुण् ताङ्कुम् नॅञ्चत्तिनळ् आय्–व्रणयुक्त मन वाली होकर; पटि मेल् पुरण्टाळ्–भूमि पर लोटने लगीं। ४३६

सुमित्रादेवी ने अपनी दोनो आँखों के समान अपने दोनो पुत्रों को दण्डकवन जाने के लिए उद्यत हो आते हुए देखा। तब उनको जो दुख हुआ वे उसका अन्त नहीं पा सकीं। उनका हृदय व्रणयुक्त हो गया। वे दुख के अतिरेक से भूमि पर गिरीं और लोटने लगीं। ४३६

शोर्वाळै योडित् तॊळुदेन्दिनन् ऱुन्ब मॅन्नुम्
ईर्वाळै वाङ्गि मनन्देऱुदर् केऱ्ऱ शॅय्वान्

पोर्वा ळरशर्क् किरैपॊय्त्तन नाक्क हिल्लेन्
कार्वा नॆडुङ्गा निरॆकण्डिवण् मीळ्वॆ नॆन्ऱान् 437

चोर्वाळै–शिथिल पड़नेवाली उनको; ओटि तॊऴुतु–दौड़कर नमस्कार करके; एन्तिनन्–(हाथ में) उठाया; तुन्पम् अॆन्नुम्–दुख रूपी; ईर् वाळै–चीरनेवाली कटार को; वाङ्कि–दूर कर; मनम् तेऱ्ऱुतर्कु एऱ्ऱ–मन को धीरज देने योग्य; चॆय्वान्–(उपाय) करने के लिए; पोर्वाळ् अरचर्क्कु इऱै–युद्ध में प्रयुक्त तलवारों के राजाओं के राजा मेरे पिता को; पॊय्त्तनन्–असत्यवक्ता; आक्ककिल्लेन्–बना नहीं सकूँगा; कार् वान् नॆटु कान्–काले मेघों से भरे विशाल वन को; इऱै कण्टु–जरा देखकर; इवण् मीळ्वॆन्–यहाँ लौट आऊँगा; अॆन्ऱान्–कहा। ४३७

श्रीराम शिथिल होनेवाली माता के पास दौड़े आये। उन्होंने माता को नमस्कार करके उन्हें अपने हाथों से पकड़कर उठाया। सुमित्रा के मन को जो दुख तलवार के समान काट रहा था उसे हटाने का उपाय करने के विचार से श्रीराम ने उनसे कहा कि माताजी! तलवार-धारी राजाओं के राजा, अपने पिता को मैं असत्यभाषी बनाना नहीं चाहता। वह मुझे असह्य होगा। इसलिए वन में, जहाँ काले मेघ मँड़राते रहते हैं, जाऊँगा; उसको जरा देखूँगा और यहाँ लौट आऊँगा। ४३७

कान्पुक् किडिनुङ् गडल्पुक्किडि नुङ्ग लिप्पेर्
वान्पुक् किडिनु मॆनक्कन्नवै माण योत्ति
यान्पुक्क दॊक्कु मॆनैयार्नलि हिऱ्कु मीट्टार्
ऊन्पुक् कुयिर्पुक् कुणर्पुक्कुलै यऱ्क वॆन्ऱान् 438

कान् पुक्किटिनुम्–वन-गमन करूँ; कटल् पुक्किटिनुम्–समुद्र-प्रवेश करूँ; कलि पेर् वान् पुक्किटिनुम्–शब्दाधार बड़े आकाश में पहुँच जाऊँ; अॆनक्कु–मेरे लिए; अन्नवै–वे सब; माण् अयोत्ति–महिमायुक्त अयोध्या में; यान् पुक्कतु ऒक्कुम्–मेरे जाने के समान ही होंगे; अॆन्नै नलिकिऱ्कुम्–मुझे दुख देने की; ईट्टार्–शक्ति रखनेवाले; यार्–कौन हैं; ऊन् पुक्कु–शरीर के अन्दर प्रवेश करने; उयिर् पुक्कु–प्राणों के अन्दर प्रवेश करने; उणर् पुक्कु–आत्मा के अन्दर प्रवेश करने (दुख को) देकर; उलैयऱ्क–वेदना का अनुभव मत कीजिए; अॆन्ऱान्–कहा। ४३८

माताजी मेरे लिए जंगल जाना क्या? समुद्र में प्रवेश, शब्दागार आकाश में गमन, सब अयोध्यावास के समान ही होंगे। कहीं भी मेरा अहित कर सकनेवाला कौन होगा? इसलिए आप दुख को अपने शरीर, प्राण और आत्मा तक को पीड़ा पहुँचाने मत दीजिए। आप चिन्ताग्रस्त न हों। —श्रीराम ने आश्वासन दिया। ४३८

तायाऱ् ऱुहिला डनैयाऱ्ऱुहिन् ऱार्ह डम्बाल्
तोयाऱ्ऱु हिन्ऱा रॆनच्चिन्दयि निन्ऱु तेऱ्ऱ
नोयाऱ्ऱ हिल्ला वुयिर्पोल नुडङ्गि डेयार्
मायाप् पऴिया डरवऱ्कलै येन्दि वन्दार् 439

आऱ्ऱुकिलाळ् ताय् तन्नै–(दुख-) सहन न कर सकनेवाली (वि-) माता को; आऱ्ऱुकिन्ऱार्कळ्–धीरज बँधानेवाले; तम् पाल्–उन (भाइयों) के पास; ती आऱ्ऱु-किन्ऱार् अंत–आग बुझानेवाले, जैसे; चिन्तैयिन् निन्ऱु तेऱ्ऱ–चिन्ता (दुख) से मुक्त कराने के लिए धीरज बँधाने पर भी; नोय्—पीड़ा-रोग से; आऱ्ऱ किल्ला–मुक्त हो धैर्य-धारण न कर सकनेवाली की; उयिर् पोल–जान के समान; नुटङ्कु–लचकनेवाली; इटैयार्–कमरों की (दासियाँ); मायात पऴियाळ्–अमरअपयश-पात्र; तर–(श्रीराम के पास) देने के लिए, दिये गये; वऱ्कलै–वल्कल को; एन्ति वन्तार्–ले आईं। ४३६

अधीर माता सुमित्राजी की दुखाग्नि को श्रीराम और लक्ष्मण शान्त करने का प्रयास करने लगे। पर उनकी जान उस दुखरोग से मुक्त न हो सकी और क्षीण होती गई। तब उनकी ही जान के समान कृशकटि वाली दासियाँ, अमिट कलंकिनी कैकेयी द्वारा दिये हुए वल्कल लिये हुए आईं। ४३९

कार्वान मोप्पान् ऱनैक्काण्डोरुम् काण्डोरुम् पोय्
नोरा युहक्कण् णिनुनॅञ्ज ऴिहिन्ऱ नीरार्
पेरा विडऱ्पपट् टयलारुऱु पीऴै कण्डुम्
तीरा मनत्ता डरवन्दन शीर मॅन्ऱार् 440

कार् वानम् ऑप्पान् तन्नै–काले मेघ-सम (श्रीराम) को; काण् तोऱुम् काण् तोऱुम्—ज्यों-ज्यों देखतीं त्यों-त्यों; कण्णिनुम् नीर् आय् उक–आँखों से आँसू बहाते हुए; नॅञ्चु पोय् अऴिकिन्ऱ नीरार्–मन अति व्याकुल होकर; पेरात इटर् पट्टु–अदम्य दुख के वश में होकर; अयलार् उऱु–अन्यों की सही हुई; पीऴै कण्टुम्–पीड़ा देखकर भी; तीरात मनत्ताळ् तर–(अपने संकल्प से) न हटनेवाले मन की (कैकेयी) के देने से; वन्तन चीरम्–आये हैं, ये चीर; ऍन्ऱार्–कहा। ४४०

वे भी काले मेघ के समान रहनेवाले श्रीराम को देखकर दुख से भर गईं। ज्यों-ज्यों वे उन पर दृष्टि डालतीं त्यों-त्यों उनकी आँखों से आँसू बहने लगते। कम न होनेवाले दुख से पीड़ित उन्होंने कहा कि दूसरों का दुख करना देखकर भी जिसका मन अपने बुरे और कठोर संकल्प से नहीं हटता ऐसी कैकेयी ने ये चीर दिये हैं। उनकी आज्ञानुसार हम इन्हें इधर लाईं। ४४०

वाणित् तिलनन् नहैयार्हळै वळ्ळ ऱबिम्
याणर्त् तिरुना डिऴप्पित्तव रीन्द वॅल्लाम्
पूणप् पिऱन्दानु निन्ऱानदु पोर्वि लोडुम्
काणप् पिऱन्देनु निन्ऱेनवै काट्टु मॅन्ऱान् 441

वळ्ळल् तम्पि–प्रभु के भाई (या उदारमन लघुभ्राता); वाळ् नित्तिलम्–उज्ज्वल मोती-सम; नल् नकैयार्कळै–अच्छे दाँत वालियों को (देखकर); याणर् तिरुनाटु–आमदनीवाले विभवशील राज्य से; इऴप्पित्तवर्–जिन्होंने (श्रीराम को) वंचित कराया; ईन्त ऍल्लाम्–वे जो भी देते हैं; पूण पिऱन्तानुम्–उन्हें स्वीकार

करने के लिए जो पैदा हुए हैं, वे; निन्ऱान्-इधर विद्यमान हैं; पोर् विल्लोटुम्-युद्धधनु के साथ; अतु काण पिऱन्तेनुम्-उसको देखते चुप रहने के लिए जो जन्मा हूँ, वह मैं भी; निन्ऱेन्-इधर खड़ा रहता हूँ; अवै काट्टुम्-उनको दिखाओ; ऎन्ऱान्-कहा। ४४१

प्रभु के छोटे भाई लक्ष्मण ने सुन्दर मुक्तातुल्य दाँत वाली उनसे कहा—अच्छी आमदनी वाले विभवशील राज्य से जिन्होंने मेरे भाई को वंचित किया वे जो भी (भला-बुरा) भेजती हैं उनको अंगीकार करने के लिए मेरे भाई श्रीराम, मानो इसी के लिए पैदा हुए हों, ऐसे तैयार खड़े हैं। इधर मैं भी खड़ा हूँ, अपना धनुष व्यर्थ ढोते हुए उसको देखने के लिए मानो मैंने जन्म लिया हो। दिखाओ तो, सही उन चीरों को। ४४१

अन्ऩा नवर्तन् दन्तवादरत् तोडु मेन्दि
इन्ना विडर्तीर्न् दुडनेहॅन्न वॅम्बि राट्टि
शॊन्ना लदुवे तुणैयामॅनत् तूय नङ्गै
पॊन्ना रडिमेऱ् पणिन्दानव ळुम्पु हल्वाळ् 442

अन्ऩान्-वे; अवर् तन्तन-उनसे दिये हुए; आतरत्तोटुम् एन्ति-आदर के साथ ग्रहण करके; ऎम् पिराट्टि-मेरी मातादेवी; इन्ना इटर् तीर्न्तु-इस कठोर दुख से छूटकर; उटन् एकु-साथ चलो; ऎन्ऩ चॊन्नाल्-यह कहेंगी तो; अतुवे तुणै आम्-वही मेरा सहायक होगा; ऎन्ऩ-कहकर; तूय नङ्कै-पवित्रमना देवी के; पॊन् आर् अटि मेल्-सुन्दरता-युक्त चरणों पर; पणिन्तान्-नमस्कार किया; अवळुम् पुकल्वाळ्-वे भी बोलीं। ४४२

लक्ष्मण ने उनसे दिये गये चीरों को आदर के साथ स्वीकार किया। फिर अपनी माता से बोले। माताजी! आप दुख छोड़कर यह कहेंगी कि 'तुम भी श्रीराम के साथ जाओ', तो वह मेरे लिए बड़ा उपकार होगा। यह कहकर उन्होंने अपनी माता के सुन्दर चरणों पर अपना मस्तक रखा। माता ने भी (यों) कहा। ४४२

आहाद दन्ऱ लुनक्कवन्न मिव्व योत्ति
माहाद लिराम नम्मन्नवन् वैय मीन्दुम्
पोहावुयिर्त् तायर्नम् पूङ्गुळऱ् चीदै यॆन्ऱे
एहायिनि यिव्वयि निऱ्ऱलु मेद मॆन्ऱाळ् 443

उनक्कु-तुम्हारे लिए; अ वनम्-वह वन; इ अयोत्ति-यह अयोध्या है; आकातु अन्ऱु-अयोग्य स्थान नहीं है; मा कातल् इरामन्-तुम्हारे प्रति अधिक प्रेम रखनेवाला श्रीराम; नम् मन्नवन्-हमारे पिता; वैयम् ईन्तुम्-राज्य दूसरों को देने के बाद भी; उयिर् पोकात-जो प्राण विमुक्त नहीं है; तायर्-वे माताएँ (कौसल्या और मैं); नम् पू कुळल् चीतै-हमारी पुष्पालंकृत केश वाली सीता; ऎन्ऱु-यह मानकर; एकाय्-तुम चलो; इनि-अब; इ वयिन्-इस स्थान पर; निऱ्ऱलुम्-खड़ा रहना भी; एतम्-अपराध है; ऎन्ऱाळ्-कहा। ४४३

बेटे ! जाओ। उस वन को अयोध्या मानकर जाओ। वह ठीक स्थान नहीं है —ऐसा समझकर मत जाओ। तुम्हारे ऊपर अपार प्रेम रखने वाले इन श्रीराम को अपने राजा-पिता मान लो। श्रीराम को राज्यहीन देखने पर भी उसकी माताएँ हम जीवित हैं। तुम पुष्पालंकृत केश वाली सीता को अपनी माता मान लो। जाओ। आगे यहाँ खड़ा रहना भी अपराध होगा। सुमित्रा ने इतना कहा। ४४३

पिन्नुम् पहरवाण् महत्तेयिवन् पिन्शॅ ऱम्बि
ॲन्नुम् पडियन् ऱडियारिनु मेवल् शॅय्दि
मन्नुन् नहर्क्कॆ यिवन् वन्दिडिन् वाव दन्ऱेल्
मुन्नम् मुडियॅन् ऱतळ्पान्मुलै शोर निन्ऱाळ् 444

मुलै पाल् चोर–स्तनों से दूध के स्रवते; निन्ऱाळ्–जो रहीं वे; पिन्नुम्–और भी; पकर्वाळ्–बोलीं; मकन्–पुत्र; इवन् पिन् चॅल्–इसके पीछे जाओ; तम्पि ॲन्नुम् पटि अन्ऱु–(छोटे) भ्राता के रूप में नहीं; अटियारितुम्–दास से भी बढ़कर; एवल् चॅय्ति–सेवा करो; मन्नुम् नकर्क्कु–स्थायी इस नगर को; इवन् वन्तिटिन्–यह आएगा तो; वा–तुम भी आओ; अतु अन्ऱेल्–वह नहीं हो तो; मुन्नम् मुटि–उसके पहले तुम काम आ जाओ; ॲन्ऱतळ्–कहा। ४४४

वात्सल्य के कारण अपने स्तनों से दूध को बहने देते हुए वे चिन्ताहत सुमित्रा और भी बोलीं— वत्स ! इसके पीछे जाओ। पर उसके भाई के नाते नहीं। उसके दास की तरह जाओ और उसकी आज्ञाओं का पालन करो। इस स्थायी नगर को वह लौट के आयेगा तो तुम भी आओ। नहीं तो तुम पहले ही उनके काम आ जाओ। ४४४

इरुवरुन् दॊऴुदन रिरण्डु कन्ऱॊरीइ
वॆरुवरु मावॆनत् तायुम् विम्मिनाळ्
पॊरुवरुङ् गुमररुम् पोयि नार्पुरम्
तिरुवरैत् तुहिलॊरीइच् चीरै शात्तिये 445

इरुवरुम्–दोनो ने; तॊऴुततर्–प्रणमन किया; तायुम्–माता भी; इरण्टु कन्ऱु ऒरीइ–दो बछड़ों से छूटकर; वॆरुवरुम् आ ॲन–दुख उठानेवाली गाय के समान; विम्मिताळ्–रोईं; पॊरु अरु कुमररुम्–अप्रमेय वे कुमार भी; तिरु अरै–अपनी शोभायुक्त कमर से; तुकिल् ऒरीइ–वस्त्र उतारकर; चीरै चात्ति–वल्कल पहनकर; पुरम् पोयितार्–बाहर चले गये। ४४५

इसके बाद दोनो भाइयों ने उनको नमस्कार किया। वे भी अपने दोनो बछड़ों को एक साथ खोकर दुख करनेवाली गौ के समान रोईं। अप्रतिम कुमारों ने अपनी शोभायमान कमर से वस्त्र उतारकर चीर पहन लिये। फिर वे बाहर चले गये। ४४५

❀ तान्बुनै शीरैयैत् तम्बि शात्तिडत्
तेन्बुनै तॅरियलान् शॅय्है नोक्किनान्
वान्बुनै यिशैयिनाय् मरुक्कि लादुनी
यान्बुह रुहैयदो रुरुदि केळॅना 446

तान् पुनै चीरैयै–जैसे स्वयं आपने वल्कल पहना वैसे ही; तम्पि चात्तिट–अपने छोटे भाई को भी पहनते (देख); तेन् पुनै तॅरियलान्–शहद से युक्त मालाधारी राम ने; चॅय्कै नोक्किनान्–उनका वह काम देखकर; वान् पुनै इचैयिनाय्–आकाश तक व्याप्त यशस्वी; यान् पुकल्–मेरी अब कथनीय; तकैयतु ओर् उरुति–उचित एक हितवचन; नी मरुक्किलातु–तुम बिना असहमत हुए; केळ्–सुनो; ॲन्ना–कहकर। ४४६

जब श्रीराम ने देखा कि वे जैसे वल्कल चीर पहन रहे हैं वैसे ही लक्ष्मण भी पहन रहे हैं, तो शहदभरी पुष्पमाला-धारी उन्होंने उनसे कहा—आकाश तक व्याप्त यश वाले, लक्ष्मण! मेरा कहना सुनो। मैं बहुत ही उचित एक हितवचन कह रहा हूँ। मान जाओ। ४४६

❀ अन्नय रन्नैवरु माळि वेन्दनुम्
मुन्नय रल्लर्वॅन् दुयरिन् मूळ्हिनार्
ॲन्नयुम् बिरिन्दन रिडरु रावहै
उन्न(य्)नी यॅन्बॉरुट् टुदवु वायॅन्रान् 447

अन्नैयर अन्नैवरुम्–माताएँ सभी; आळि वेन्तनुम्–और चक्रवर्ती; मुन्नैयर् अल्लर्–पहले की-सी स्थिति में नहीं; वॅम् तुयरिल्–कठोर दुख में; मूळ्कितार्–डूबे हुए हैं; ॲन्नैयुम् पिरिन्ततर्–मुझसे भी बिछुड़े हुए हैं; इटर् उरा वकै–वे संकट न पाएँ, इसलिए; ॲन् पॉरुट्टु–मेरे लिए; उन्नै नी उतवुवाय्–तुम अपने को समर्पित करके सहायता करो; ॲन्रान्–कहा। ४४७

वह क्या है—उसे भगवान ने व्यक्त कहा। हमारी माताएँ और पिता, चक्रवर्ती पहले की-सी स्थिति में नहीं हैं। वे अब बहुत दुख-पीड़ित हैं। तिस पर मैं ही छोड़कर जानेवाला हूँ और मेरा वियोग उन्हें और भी दुख देगा। तुम इनको दुखी होने से बचाने के लिए यहीं रह जाओ और अपने को उनके सहायक रूप में उनको समर्पित कर लो। ४४७

❀ आण्डहै यम्मॊळि यरुळ वन्बनुम्
तूण्डहु तिरळ्पुयन् दुळङ्गत् तुण्णॆना
मीण्डदो रुयिरिडै विम्म विम्मुवान्
ईण्डुनक् कडियनेन् पिळैत्त दियादॆना 448

आण् तके–पुरुषश्रेष्ठ के; अ मॊळि अरुळ–वह वचन कहने की कृपा करने पर; अन्पनुम्–उनसे अचल प्रेम करनेवाले लक्ष्मण; तूण् तकु–स्तम्भ-सम; तिरळ् पुयम्

तुळङ्क–कन्धों को हिलाते; तुण ॲन्ता–एक दम ठिठककर; मीण्टतु ओर् उयिर्–चलते-चलते बची जान; इटै विम्म–फिर चलनेवाली बनी हो, जैसे; विम्मुवान्–सिसककर; अटियनेन्–दास मुझसे; ईण्टु–अब; उनक्कु पिऴैत्ततु यातु–आपके प्रति हुआ अपराध क्या है; ॲन्ना–कहकर। ४४८

जब पुरुषोत्तम ने यह वाक्य कहा तो उन पर अपार प्रेम रखनेवाले लक्ष्मण रोने लग गये। उनकी सिसकियों से उनके स्तम्भसम कंधे भी हिलने लगे। चलती-चलती जो बची थी वह उनकी जान फिर चली जायगी ऐसी स्थिति का अनुभव करते हुए उन्होंने रोते-रोते अपने भाई से पूछा कि प्रभु ! दास द्वारा अब क्या अपराध हो गया है ? । ४४८

नीरुळ वॅन्निनुळ मीनु नीलमुम्, पारुळ वॅन्निनुळ यावुम् पार्प्पुरिन्
नारुळ तनुवुळाय् नानुम् जीदयुम्, आरुळ रॅन्निनुळ मरुळु वायॅन्ना 449

नीर् उळ ॲन्निन्–(जलाशय में) जल रहा तो; मीनुम् नीलमुम् उळ–मछलियाँ और नीलोत्पल आदि पुष्प होंगे; पार् उळ ॲन्निन्–भूमि रही तभी तो; यावुम् उळ–सभी वस्तुएँ हैं; पार्प्पु उरिन्–सोचकर देखिए तो; नार् उळ–डोरे सहित; तनु उळाय्–धनु वाले; नानुम् चीतैयुम्–मैं और सीताजी; आर् उळर् ॲन्निन्–कौन रहेंगे तो; उळम्–जीवित रहेंगे; अरुळुवाय्–श्रीवचन कहो; ॲन्ना–कहकर। ४४९

आप ही सोचकर देखिए। जल रहा तो जलाशयों में मछलियाँ रह सकती हैं, नीलोत्पल आदि फूल भी पनप सकते हैं। मालाधारी धनुर्धर ! भूमि रही तो सब वस्तुएँ रह सकती हैं। आप आधार नहीं रहेंगे तो मैं और सीता, किसके रहते, रह सकेंगे ? आप ही कहने की कृपा करें। यह कहकर उन्होंने आगे भी कहा। ४४९

❀ पैन्दॉडि यॊरुत्तिशॉऱ् कॊण्डु पार्महळ्
नैन्दुयिर् नडुङ्गवु नडत्ति कानॅन्ना
उयॆन्दन् निरुन्दन् नुण्मै कावलन्
मैन्दनॅन् रिन्नैयशॉल् वळङ्गि नायॅन्ना 450

पार् मकळ्–भूमिदेवी; उयिर् नैन्तु–प्राणों के क्षीण होते; नटुङ्कवुम्–काँप रही हैं, इस रीति से; पचु तॊटि–सुन्दर कंकणधारिणी; ऑरुत्ति–एक स्त्री का; चॊल् कॊण्टु–वाक्य मानकर; कान् नटत्ति–जंगल जाओ; ॲन्ना–कहकर; उय्न्ततन् इरुन्तनन्–जीवित रहे; उण्मै कावलन्–सत्यपालक राजा; मैन्तन्–उनका पुत्र; ॲन्रु–हूँ, इसलिए; इन्नैय चॊल् वळङ्कितायु–ऐसा वाक्य कहा, शायद; ॲन्ना–कहकर। ४५०

राजा ने कंकणधारिणी एक नारी का वचन मानकर आपसे कह दिया कि जंगल जाओ। उससे भूमिदेवी भी प्राण क्षीण कर काँप रही हैं। इतना होने पर भी वे जीवित रहते हैं। उनका पुत्र मैं हूँ —इसीलिए आपने ऐसा वाक्य कहा —शायद ! । ४५०

❀ मारिनि यॅन्नैनी वनङ्गॉळ् वायॅन, एरिन वॅहुळियै यादु मुरुरुरा
दारिनै तविर्हॅन वैय वाणैयिन्, कूरिन मौळियिनुङ् गॉडिय दामॅन्रान् 451

मारु इति ॲन्नै–इसके अलावा कहना क्या है; ऐय–आर्य; नी वनम् कॉळ्वाय्–आप वन जाएँगे; ॲन–यह जानकर; एरिन वॅकुळियै–जो चढ़ा, उस क्रोध को; यातुम् मुरुरु उरातु–(अपने विचारों के अनुसार) कुछ न करके; आरितै तविर्क्क–शान्त होकर छोड़ दो; ॲन–ऐसा; आणैयित् कूरिय–आज्ञा का वचन जो आपने कहा, उससे बढ़कर; कॉटियतु आम्–कठोर है यह; ॲन्रान्–कहा। ४५१

"आर्य ! इसके उत्तर में मैं क्या कहूँ ? जब मुझे, यह जानने पर कि आप वन जाएँगे, क्रोध हुआ और वह बढ़ने लगा; तब आपने मेरे सब इरादे व्यर्थ करते हुए आज्ञा दी कि यह क्रोध थामो और बिलकुल छोड़ दो। उस आज्ञा से भी यह कथन अत्यधिक निर्मम है।" लक्ष्मण ने दुख के साथ ऐसा कहा। ४५१

❀ शॅय्दुडैच् चॅलवमो डियादुन् दीर्नदॅमैक्
कैदुडैत् तेहवुङ् गडवै योवैया
नॅय्दुडैत् तडैयलार् नेय मादर्हण्
मैदुडैत् तुरैपुहुम् मरङ्गॉळ् वेलिनाय् 452

ऐया–आर्य; नॅय् तुटैत्तु–घी मलकर; अटैयलार्–शत्रुओं की; नेयम् मातर्–प्यारी पत्नियों का; कण् मै तुटैत्तु–आँखों का अंजन पोंछकर; उरै पुकुम्–कोश में आनेवाले; मरम् कॉळ्–सशक्त; वेलिनाय्–भाला वाले; चॅय्तु उटैय–सुकृत से प्राप्त; चॅल्वमोटु–राज्यविभव के साथ; यातुम्–और सभी सुख-भोगों को; तीर्न्तु–त्यागकर; ॲमैयुम् कै तुटैत्तु–हमसे भी हाथ धोकर; एक कटवैयो–जा पायेंगे क्या; (ॲन्रान्–कहा)। ४५२

"प्रभु ! घी-मला, और शत्रुओं की पत्नियों की आँखों से काजल पुँछवाकर (उनकी पत्नियों को विधवा बनाते हुए शत्रुओं का संहार करके) कोश में आए हुए सशक्त भाले वाले ! आपने अपने सुकृत से प्राप्त राज्य छोड़ा; और अन्य सभी सुख-भोग छोड़े। इसके साथ क्या आप हमसे भी हाथ धोकर चले जायँगे ? यह उचित है ?" लक्ष्मण ने अपनी बात इस आर्तवचन के साथ समाप्त की। ४५२

❀ उरैत्तबि निरामनॊन् ररैक्क नेर्नदिलन्
वरैत्तडन् दोळिनान् वदन नोक्किनान्
विरैत्तडन् दामरैक् कण्णिन् मिक्कनोर्
निरैत्तिडै यिडैविळ नॅडिदु निर्किन्रान् 453

उरैत्तत पिन्–यह कहने के बाद; इरामन्–श्रीराम; ऑन्रुम् उरैक्क नेर्न्तिलन्–कुछ भी कह नहीं सके; वरै तट तोळिनान्–पर्वत-सम विशाल भुजा वाले (लक्ष्मण)

का; वततम्–वदन को; नोक्कितान्–देखते हुए; विरै–सुवासित; तट तामरै–बड़े कमल के समान; कण्णित्–आँखों से; मिक्क नीर्–बहुत निकला अश्रुजल; निरैन्त–लगातार; इटै इटै विळ–भूमि पर गिराते हुए; नॅटितु निऩ्कित्ऱान्–बहुत देर खड़े रहे। ४५३

लक्ष्मण के ऐसे कथन के बाद श्रीराम क्या कह सकते थे? कुछ कह नहीं पाये। पर्वतसम विशाल कंधे वाले अपने भाई के मुख को एकटक निहारते हुए खड़े ही रह गये और उनकी सुगन्धयुक्त कमल के समान विशाल आँखों से आँसू टप-टप भूमि पर गिरने लगे। ४५३

❀ अव्वयि नरशवै यहत्तॢ नॅञ्जहत्
तॅव्वमि लिरुन्दव मुतिव नॅय्दिताऩ्
शॅव्विय कुमररुञ् जॅन्ति ताऴ्न्दतर्
कव्वयिन् पॅरुङ्गडल् मुतियुङ् गाल्वैत्ताऩ् 454

अ वयिन्–उस समय; नॅञ्चु अकत्तु–मन में; ऍव्वम् इल्–दुख का अनुभव न करनेवाले (निर्लिप्त); इरु तव मुतिवन्–महान तपस्वी मुनि वसिष्ठ; अरचु अवै अकत्तु–राजसभामण्डप से निकलकर; ऍय्तिताऩ्–वहाँ आये; चॅव्विय कुमररुम्–श्रेष्ठ कुमार; चॅन्ति ताऴ्न्ततर्–नतमस्तक हुए; मुतियुम्–मुनिवर ने भी; कव्वैयिन्–दुख के; पॅरु कटल्–बड़े सागर में; काल् वैत्ताऩ्–पैर रखे। ४५४

तब दुख-सुख-निर्लिप्त मुनि वसिष्ठजी सभामण्डप से निकलकर वहाँ आ गये। महान तपस्वी उनके चरणों पर दोनो कुमारों ने अपने मस्तक नवाये। मुनि के मन में, इनको देखकर, दुख घर करने लगा। मुनिवर ने दुख-सागर में पैर रखा। ४५४

❀ अन्नवर् मुहत्तिनो डहत्तै नोक्किताऩ्
पॊन्नरैच् चीरयिन् पॊलिवु नोक्किताऩ्
ऍन्तिति युणर्त्तुव दॅडुत्त तुन्बत्ताल्
तन्नयु मुणर्न्दिल नुणरुन् दन्मयाऩ् 455

उणरुम् तन्मैयान्–(किसी भी विषय का) सत्व जाननेवाले स्वभाव के; अन्तवर् मुकत्तित्तोटु–उनके मुखभाव के साथ; अकत्तै–मन के भाव को भी; नोक्कितान्–देख, समझ गये; पॊन् अरै–सुन्दर कमर पर; चीरैयिन् पॊलिवुम्–वल्कलचीर की शोभा; नोक्कितान्–देखी; ऍटुत्त तुन्पत्ताल्–उठी वेदना से; तन्नैयुम् उणर्न्तिलन्–अपना वश (अपनी सुध को) खो दिया; इन्तियुम् ऍन् उणर्त्तुवतु–और क्या समझाया जाय। ४५५

तत्वदर्शी महर्षि वसिष्ठजी ने उनका मुख देखा, उनका मन जाना और कमर पर वल्कल की शोभा देखी। समझ गये कि क्या होनेवाला है। श्रीराम और लक्ष्मण दोनो वन जाने के लिए उद्यत हो गये। यह जानकर

मुनि के मन में अपार दुख उभर आया और वे अपनी सुध भूल गये। अब क्या बताया-समझाया जाय ? । ४५५

❀ वाळ्वितै	नुदलिय	मङ्ग	लत्तुनाट्
टाळ्वितै	यदुवरच्	चीरै	शात्तिनान्
शूळ्वितै	नान्मुहत्	तॉरुवन्	शूळिनुम्
ऊळ्वितै	यॉरुवरा	लॉळिक्कर्	पालदो 456

वाळ्वितै नुतलिय–सुखमय जीवन के लिए जो बताया गया; मङ्कलम् नाळ्–उस शुभ दिन में; ताळ् वितै अतु वर–दुर्भाग्य के आने से; चीरै चार्त्तितान्–वल्कल पहन लिया; चूळ् वितै–विधिविधायक; नाल् मुकत्तु ऑरुवन्–चतुर्मुख ब्रह्मा के; चूळिनुम्–उपाय का निर्णय करने पर भी; ऊळ्वितै–प्रारब्ध कर्म; ऑरुवराल्–किसी से भी; ऑळिक्कल् पालतो–निवारणीय है क्या। ४५६

वसिष्ठजी मन में सोचने लगे। यह क्या दुर्भाग्य और विडम्बना है ? मंगलकार्य के लिए शुभ दिन शोधा गया था। उसी दिन यह दुर्भाग्य हुआ और श्रीराम को वल्कल पहनना पड़ गया। चतुर्मुख ब्रह्माजी भी स्वयं कोई कार्य निर्णय क्यों न करें, जब विधि प्रबल है तो किसी से भी वह टाली न जा सकेगी। ४५६

वॅव्वितै	यवडर	विळैन्द	देयुमन्
इव्वितै	यिवन्वयि	नॅय्दर्	पार्रुमन्
ऍव्वितै	निहळ्न्ददो	वेव	रॅण्णमो
शॅव्विदि	नॉरुमुरै	तॅरियुम्	बिन्नॅना 457

इ वितै–यह कृत्य; वॅम् वितैयवळ्–बुरे कार्य करनेवाली के; तर–कराने से; विळैन्ततुम् अन्रु–फलीभूत हुआ भी नहीं; इवन् वयिन्–इन (पुण्य-मूर्ति) का; ऍय्तल् पार्रुम् अन्रु–होने योग्य भी नहीं है; ऍ वितै निकळ्न्ततो–(इसका हेतु) कौन सा दुष्कर्म हुआ है; एवर् ऍण्णमो–किसका षडयन्त्र है; पिन्–बाद; ऑरु मुरै–एक तरह से; चॅव्वितिन् तॅरियुम्–साफ़ विदित होगा; ऍन्ना–यह सोचकर। ४५७

अब श्रीराम वल्कल पहनकर जो वन में जा रहे हैं, यह विधान क्रूर-कर्मिणी कैकेयी के कार्य का फल नहीं है ! ये पुण्यमूर्ति हैं और वे ऐसे कष्ट के लिए अर्ह नहीं हैं। फिर यह किस कर्म का फल है ? इसका हेतु क्या हुआ है ? किसकी करनी का यह फल है ? यह सब, पीछे समय पड़ने पर साफ़-साफ़ प्रकट हो जायगा। ऐसा सोचते हुए— । ४५७

❀ विर्रडन्	दामरैच्	चॅङ्गै	वीरनै
उर्रडैन्	दैयनी	यॉरुवि	योङ्गिय
कर्रडङ्	गाणुदि	यॅन्निर्	कण्णहन्
मर्रडन्	दानयान्	वाळ्हि	लानॅन्रान् 458

विल्–धनुर्धर; तट तामरै–विशाल कमल-सम; चॅम् कै–लाल हस्त वाले; वीरतै उऱ्ऱु अटैन्तु–वीर के बहुत पास जाकर; ऐय–आर्य; नी ऑरुवि–आप (इस राज्य को) छोड़कर; ओङ्किय कल्–उन्नत चट्टानों के; तटम् काणुति ॲन्ऩिन्–जंगल जायँगे तो; कण् अकल्–विस्तृत; मल् तट तानैयान्–मल्लों की बड़ी सेना के स्वामी (हमारे राजा); वाऴ्किलान्–जीवित नहीं रहेंगे; ॲन्ऱान्–कहा। ४५८

वे धनुर्धर विशाल कमलहस्त श्रीराम के पास आये। 'आर्य! आप यह राज्य छोड़कर ऊँचे पर्वतों वाले वन में चले जायेंगे तो मल्लयुद्ध-कुशल वीरों की बड़ी सेना के स्वामी आपके पिता जीवित नहीं रहेंगे।' —वसिष्ठ ने श्रीराम से कहा। ४५८

❀ अन्ऩवन्	पणितलै	येन्दि	याऱ्ऱुदल्
ॲन्ऩदु	कडनव	निडरै	नीक्कुदल्
निन्ऩदु	कडनिदु	नॅऱियु	मॅन्ऱनन्
पन्ऩहप्	पायलुट्	पळ्ळि	नीङ्गिनान् 459

पन्नकम् पायलुळ्–पन्नग-शय्या पर से; पळ्ळि नीङ्किनान्–शयन त्यागकर आये हुए; अन्ऩवन् पणि–(श्रीराम ने) उनकी आज्ञा; तलै एन्ति–सिर पर धारण करके; आऱ्ऱुतल्–अदा करना; ॲन्ऩतु कटन्–मेरा कर्तव्य है; अवन् इटरै नीक्कुतल्–उनका दुख दूर करना; निन्ऩतु कटन्–आपका कर्तव्य है; नॅऱियुम् इतु–क्रम भी यही है; ॲन्ऱनन्–कहा। ४५९

क्षीरसागर की पन्नगशय्या में योगनिद्रा त्यागकर जो अयोध्या में आकर श्रीराम बने थे, उन्होंने वसिष्ठजी से कहा कि मुने! राजा की आज्ञा शिरोधार्य कर उसका पालन करना मेरा कर्तव्य-धर्म है। उनका दुख दूर करना आपका धर्म है। यही तो उचित क्रम है। ४५९

वॅव्वरम्	बयिल्शुरम्	विरवॅन्	ऱानलन्
तॅव्वरम्	बनैयशॊऱ्	ऱीट्टि	नाडनक्
कव्वरम्	बॊरुदवे	लरश	नायिला
दिव्वरन्	दरुवॅनॅन्	ऱेन्ऱ	दुण्डॆन्ऱान् 460

तॅव्वर् अम्पु अनैय–शत्रुओं के सायक के समान; चॊल् तीट्टिनाळ् तनक्कु–(वर के रूप में) वाक्य जिन्होंने कहा, उनको; अरम् पॊरुत–रेती से रगड़े हुए; वेल्–(तीक्ष्ण) भाले वाले; अ अरचन्–उन राजा का; आय्किलातु–बिना सोचे; इ वरम् तरुवॅन्–यह वर दूँगा; ॲन्ऱु–ऐसा; एन्ऱतु उण्टु–सम्मत होना अवश्य हुआ है; वॅम् अरम् पयिल्–भयंकर रेतियों के समान रहनेवाले कंकड़ जहाँ भरे रहते हैं; चुरम् विरवु–जंगल जाओ; ॲन्ऱान् अल्लन्–यह नहीं कहा; ॲन्ऱान्–कहा। ४६०

वसिष्ठजी को दशरथजी को दिये गये वचन का निर्वाह करना था। इसलिए उन्होंने कहा कि दशरथ ने, जिनका भाला रेती द्वारा तीक्ष्ण बना हुआ है कैकेयी से, जिन्होंने शत्रु के शर के समान वर के रूप में वचन कहा

था कहा अवश्य था कि वर दूँगा। पर उन्होंने यह नहीं कहा था कि आप पैर में चुभनेवाले, रेती के समान कंकड़ों से भरे जंगल में जाइए। ४६०

❀ एन्ऱ्ऱन् नॅन्दयिव् वरङ्ग ळेविन्नाळ्
ईन्ऱवळ् यान्दु शॅन्नि येन्दिनेन्
शान्ऱॅन् निन्ऱनी तडुत्ति योवॅन्ऱान्
तोन्ऱिय नल्लऱ निरुत्तत् तोन्ऱिनान् 461

तोन्ऱिय नल् अऱम्–प्रकटित सद्धर्म के; निरुत्त तोन्ऱिनान्–उत्थानार्थ जो अवतरित हुए थे, उन्होंने; ॲन्तै इ वरङ्कळ् एन्ऱनन्–मेरे पिता ये दोनो वर देने को सम्मत हुए; ईन्ऱवळ् एविनाळ्–जननी माता ने आज्ञा की; यान् अतु चॅन्नि एन्तिनेन्–मैंने सिर पर धारण की; चान्ऱु ॲन–साक्षीभूत; निन्ऱ नी–विद्यमान आप; तटुत्तियो–रोकेंगे क्या; ॲन्ऱान्–कहा। ४६१

सनातन धर्म के उत्थान के लिए अवतरित हुए श्रीराम ने इसके उत्तर में कहा कि मेरे पिताजी ने वर दिये। मेरी जननी माता ने मुझे वन जाने की आज्ञा की। मैंने उसको शिरोधार्य कर लिया। साक्षी रूप में विद्यमान आप बीच में पड़कर मुझे रोकेंगे क्या ?। ४६१

❀ ॲन्ऱपिन् मुनिवनीन् ऱियम्ब नेर्न्दिलन्
निन्ऱन नॅडुङ्गणीर् निलत्तु नीर्त्तुहक्
कुन्ऱन तोळवन् ऱॊळुदु कॊऱ्ऱवन्
पॊन्ऱिणि नॅडुमदिल् वायिल् पोयिनान् 462

ॲन्ऱ पिन्–यह कहने के बाद; मुनिवन्–महर्षि; ऑन्ऱु इयम्प नेर्न्तिलन्–कुछ कह नहीं पाये; नॅटु कण् नीर्–अधिक अश्रु; नीर्त्तु निलत्तु उक–धारा के रूप में भूमि पर गिरा; निन्ऱनन्–(गिराते हुए) खड़े रहे; कुन्ऱु अन्न तोळ् अवन्–पर्वत-सम कन्धे वाले श्रीराम; तॊळुतु–नमस्कार करके; कॊऱ्ऱम्–विजयशील; वल्–मजबूत; पॊन् तिणि–स्वर्णखचित; नॅटु मतिल्–लम्बे प्राचीर के; वायिल्–द्वार से होकर; पोयिनान्–जाने लगे। ४६२

श्रीरामजी के ऐसा कहने के बाद वसिष्ठजी क्या कहते ? उनके पास कहने को कुछ नहीं था। इसलिए आँखों से आँसू की धारा बहाते हुए, जो भूमि पर गिर रही थी; स्तम्भित-से खड़े रह गये। तब पर्वतोन्नत कन्धे वाले श्रीराम उनको नमस्कार करके, विजयी, सुदृढ़ और स्वर्णखचित प्राचीर के द्वार से होकर जाने लगे। ४६२

शुऱ्ऱिय शीरयन् ऱॊडरुन् दम्बियन्
मुऱ्ऱिय वुवहयत् मुळरिप् पोदिनुम्
कुऱ्ऱमिन् मुहत्तिनन् कॊळ्है कण्डवर्
उऱ्ऱदै यॊरुवहै युणर्त्तु वामरो 463

चुऱ्ऱिय चीरैयत्–लपेटा हुआ वल्कल वाले; तॉटरुम् तम्पियत्–पीछे लगे भाई सह; मुऱ्ऱिय उवकैयत्—पूर्ण-आनन्दित; मुळरि पोतितुम्–नीरज पुष्प से अधिक (सुन्दर); कुऱ्ऱम् इल्–निर्मल; मुकत्तितत्–मुख वाले; कॉळ्कै–(उनका) मनोभाव; कण्टवर्–जिन्होंने जाना, वे; उऱ्ऱतै–जिस स्थिति को पहुँच गये; ऑरु वकै–(उसको) एक प्रकार से; उणर्त्तुवाम्–बताएँगे। ४६३

श्रीराम की कमर में वल्कल वेष्टित था। भाई लक्ष्मण उनके पीछे जा रहे थे। वे आनन्दपूर्ण थे। उनका मुख कंजपुष्प से बढ़कर सुन्दर था। उनका मुखभाव निर्मल था। ऐसे श्रीराम के मनोभाव को समझ कर लोगों की जो दशा हुई उसका वर्णन अब करेंगे। ४६३

❀ अन्दण रुरुन्दव रवति कावलर्, नन्दलि नहरुळोर् नाट्टु ळोर्हडम्
शिन्दयॆत् पुहल्वदु तेव रुळ्ळमुम्, वॅन्दनर् मेल्वरु मुरुदि वेण्डलर् 464

तेवरुम्–देवता भी; मेल् वरुम् उरुति–आगामी हित; वेण्टलर्–नहीं चाहते हुए; उळ्ळम् वॆन्तनर्–चिन्ताकुलित हुए; अन्तणर्–ब्राह्मण; अरु तवर्–उत्तम तपस्वी; अवनि कावलर्–अवनिपति; नन्तल् इल् नकर् उळोर्–अक्षय नगरवासी; नाट्टु उळोर्कळ् तम्–और कोसलदेश-वासी, इन सबके; चिन्तै–मन की स्थिति; ऎन् पुकल्वतु–क्या कही जाय। ४६४

स्वयं देवता भी अपने भावी का हित भूलते हुए दुख से झुलसे। ब्राह्मण, मुनि, राजा और अक्षय उस नगर के वासी और कोसल देश के सारे प्रजाजन—सबके मन की स्थिति का क्या कहा जाय? । ४६४

ऐयनैक् काण्डलु मणङ्ग नारॆलाम्
मॊय्यिळन् दळिर्हळान् मुळरि मेल्विळुम्
मैयलिन् मदुहरङ् गडियु माऱॆनक्
कैहळिन् मदर्नॆडुङ् गण्णि नॆऱ्ऱिनार् 465

अणङ्कु अऩ्ऩार् ऎल्लाम्–देवियों के समान रहनेवाली सब स्त्रियों ने; ऐयतै काण्टलुम्–आर्य को देखते ही; मुळरि मेल् विळुम्–कमलपुष्प पर मँड़रानेवाले; मैयल् मतुकरम्–मधुमत्त मधुकरों को; मॊय् इळ तळिर्कळाल्–घने मृदु पल्लवों से; कटियुम् आऱु ऎऩ–मार भगाते हों, जैसे; कैकळिऩ्–अपने हाथों से; मतर् नॆटु कण्णिऩ्–मत्त आयत आँखों पर; ऎऱ्ऱिऩार्–पीट लिए। ४६५

सुरस्त्री-सदृश नगर की स्त्रियों ने श्रीराम को इस वेष में देखते ही अपने हाथों से अपनी मत्त और लंबी आँखों को पीट लिया, मानो वे अपने मुखकमलों से मत्त मधुकरों को मृदुल पल्लवों से मारकर भगा रही हों। ४६५

तम्मयु मुणर्न्दिलर् तणप्पि लन्बिनाल्
अम्मयि निरुविनै यहऱ्ऱ वोवन्ऱेल्

विम्मिय पेरुयिर् मीण्डिला मैहॉल्
शॅम्मरत् ऱादयिर् चिलवर् मुन्दिऩार् 466

चिलवर्–कुछ लोग; तणप्पु इल् अऩ्पिऩाल्–अभंग प्रेम के कारण; तम्मैयुम् उणर्न्तिलर्–अपनी सुध खोकर; चॅम्मल् तऩ् तन्तैयिऩ्–प्रभु के पिता दशरथ के भी; मुन्तिऩार्–पहले (स्वर्ग) गये; अम्मैयिऩ्–परवर्ती; इरु विऩै अकऱ्ऱवो–दोनो (पाप-पुण्य-)कर्म निवारणार्थ; अऩ्ऱेल्–नहीं तो; विम्मिय पेर् उयिर्–बाहर निकले प्राण; मीणट्टु इलामै कॉल्–लौट नहीं आये, इसलिए क्या। ४६६

कुछ लोग श्रीराम के प्रति अभंगप्रेम के कारण सुध-बुध खो गये और दशरथ के पहले ही स्वर्गवासी हो गये। उनका ऐसा प्राणत्याग कर्मबन्धन काटने के लिए था ? या उनके प्राण जो अकस्मात हुए दुख के कारण बाहर निकले लौट नहीं आये ? यानी वे जान-बूझकर मरे या अवश ही मर गये ? मालूम नहीं। ४६६

विऴुन्दऩर् शिलर्शिलर् विम्मि विम्मिमेल्
ऍऴुन्दऩर् शिलर्मुहत् तिऴिह णोरिडै
अऴुन्दिऩर् शिलर्पदैत् तळह वल्लियिऩ्
कॉऴुन्दऩ लुऱ्ऱॆऩत् तुयरङ् गूर्हिऩ्ऱार् 467

चिलर् विऴुन्तऩर्–कुछ लोग गिरे; चिलर्–कुछ लोग; विम्मि विम्मि—सिसक-सिसक कर; मेल् ऍऴुन्तऩर्–दुख के साथ उठे; चिलर्–(अन्य) कुछ; मुकत्तु इऴि–मुख से निकलनेवाले; कण् नीर् इटै अऴुन्तिऩर्–अश्रुजल में डूब गये; चिलर्–कुछ; पतैत्तु–तड़पकर; अळकम् वल्लियिल्—केश-लता पर; कॉऴुन्तु अऩल् उऱ्ऱाल् ऍऩ–अग्नि की ज्वाला लग गई, जैसे; तुयरम् कूर्किऩ्ऱार्–दुख से भर जाते। ४६७

कुछ लोग रोते हुए गिरे; कुछ लोग सिसकते हुए उठे; कुछ लोग अपनी आँखों से बही अश्रुधारा में डूब गये। कुछ लोग ऐसे तड़प उठे मानो उनकी केश-लता पर आग लग गई हो; अपार दुख से उद्विग्न हुए। ४६७

करुम्बऩ मॉऴियवर् कण्ब ऩिक्किलर्
वरम्बरु तुयरिऩाऩ् मयङ्गि येकॉलाम्
इरुम्बऩ मऩत्तव रॅऩ्ऩ निऩ्ऱऩर्
पॅरुम्बॊरु ळिऴन्दवर् पॉलुम् बॅऱ्ऱियार् 468

करुम्पु अऩ्ऩ मॉऴियवर्–ईक्षु (-रस) समान भाषण वाली कुछ स्त्रियाँ; पॅरु पॉरुळ्–बड़ा धन; इऴन्तवर् पोलुम्–खो चुकी हों, जैसे; पॅऱ्ऱियार्–ऐसी अवस्था में पड़कर; कण् पऩिक्किलर्–आँखों से आँसू न निकालतीं; इरुम्पु अऩ्ऩ–लोहे के समान; मऩत्तवर् ऍऩ्ऩ–मन वाली हों, ऐसा; निऩ्ऱऩर्–अकम्पित खड़ी रहीं; वरम्पु अऱु–निस्सीम; तुयरिऩाल्–दुख से; मयङ्किये कॉल् आम्–चकित हो गईं, इसलिए ही। ४६८

इक्षुरसमधुर बोली वाली कुछ स्त्रियाँ ऐसे निस्तब्ध खड़ी हो गईं मानो उनका सारा धन खो गया हो। उनकी आँखों से अश्रु नहीं निकला। देखनेवाले को यही लगता कि उनका दिल लोहे का बना है। वे इसलिए ऐसे खड़ी रहीं कि श्रीराम पर अपार प्रेम के कारण वे संज्ञाशून्य हो गईं। ४६८

नक्कऩ वुटलुयिर् निलैयि निऩ्ऱिल, इक्कण मिक्कण मॆऩ्ऩुऩ् दऩ्मय
पुक्कऩ पुऱत्तऩ पुण्णिऱ् कण्मलर्, उक्कऩ नीर्वऱऩ् दुदिर वारियॆ 469

उटल् नॆक्कऩ–(कुछ लोगों के) शरीर ढीले हो गये; उयिर् निलैयिल् निऩ्ऱिल–प्राण स्थिर न रहे; इ कणम्–इसी क्षण; इ कणम्–इसी क्षण (चले जायँगे); ऎऩ्ऩुम् तऩ्मैय–ऐसी स्थिति वाले; पुऱत्तऩ पुक्कऩ–बाहर निकले और भीतर आये; कण् मलर्–नेत्रपुष्पों ने; नीर् वऱन्तु–जल सूखकर; पुण्णिऩ्–व्रणों के समान; उतिरम् वारि–रक्तधारा; उक्कऩ–बहाई। ४६९

कुछ लोगों के शरीर ढीले हो गये। उनके प्राण डगमगाने लगे। प्राण अभी निकले, इसी क्षण निकले—ऐसी स्थिति उनकी हो गई। असल में जान बाहर जाती फिर भीतर प्रवेश करती—ऐसी लगी। आँखों में जल नहीं रहा; वे शुष्क हो गईं। वे व्रण के समान रक्त की धारा बहाने लगीं। ४६९

इरुकैयिऩ् करिनिह रॆण्णि ऱन्दवर्
पॆरुहैयिऩ् पॆयर्त्तऩर् तलैयैप् पेणलर्
ऒरुकैयिल् कॊण्डऩ रुरुट्टु हिऩ्ऱऩर्
चुरिहैयिऩ् कण्मलर् चूऩ्ऱु नीक्किऩार् 470

इरु कैयिऩ् करि निकर्–दो सूँड़ों वाले हाथी के समान; ऎण् इऱन्तवर्–असंख्यक; तलैयै पेणलर्–अपने सिर की परवाह न करके; पॆरु कैयिऩ् पॆयर्त्तऩर्–अपने बड़े हाथ से घुमाकर, नोचकर; ऒरु कैयिल् कॊण्टऩर्–एक हाथ में लिये; उरुट्टुकिऩ्ऱऩर्–(गेंद की तरह) लुढ़काते; कण् मलर्—आँख-फूलों को; चुरिकैयिऩ्–कटार से; चूऩ्ऱु–निकालकर; नीक्किऩर्–फेंक देते। ४७०

अनेक वीर थे जो दो सूँड़ों वाले हाथी के समान थे और जिन्होंने अपने सिर का भला ही नहीं सोचा पर अपने ही हाथ से उसे घुमाकर तोड़ लिया। वे उसे अपने एक हाथ में लेकर, गेंद के समान उससे खेलने लगे। ऐसे वीर भी थे जिन्होंने अपनी कटार से अपनी कमल-सी आँखें नोचकर निकाल लीं। ४७०

शिन्दिऩ वणिमणि शिदऱि वीऴ्न्दऩ
पैन्दुणर् मालयिऱ् परिन्द मेहलै

नन्दिनर् नहैयॊळि विळक्क नङ्गैमार्
सुन्दर वदनमु मदिक्कुत् तोऱ्ऱवे 471

नङ्कैमार्–स्त्रियों के; अणि चिन्तिन–आभरण छितरे; मणि चितऱि वीळ्न्तन–रत्न गिरकर बिखरे; पचु तुणर् मालैयिन्–ताजे गुच्छों की माला के समान; मेकलै परिन्त–मेखलाएँ टूटीं; नकै ऑळि विळक्कम्–मुस्कुराहट की आभा से; नन्तिनर्–हीन हुईं; चुन्तर वततमुम्–उनके सुन्दर आनन भी; मतिक्कु तोऱ्ऱन–चन्द्र के सामने हार गये। ४७१

स्त्रियों के आभरण बिखर गये। उनके रत्न बिखर गये। ताजे फूल के गुच्छों की माला के समान मेखलाएँ टूटकर अलग हो गईं। उनके मुख से मन्दहास की शोभा दूर हो गई। उनके सुन्दर वदन अब चन्द्र के सामने हार गये। ४७१

❀ अऱुपदि नायिर ररशन् ऱेवियर्
मऱुवऱु कऱ्पिनर् मळैक्कण् णीरिनर्
शिऱुवनैत् तॊडर्न्दनर् तिऱन्द वायिनर्
ऍऱिदिरैक् कडलॆन विरङ्गि येङ्गिनार् 472

मऱु अऱु कऱ्पिनर्–निष्कलंक पातिव्रत्य वाली; अरचन् तेवियर्–चक्रवर्ती की पत्नियाँ; अऱुपतिनायिरर्–साठ हज़ार स्त्रियाँ; मळैकण् नीरित्र्–वर्षा के समान आँख के आँसू वालियाँ; तिऱन्त वायिनर्–खुले मुख वालियाँ; चिऱुवनै तॊटर्न्ततनर्–पुत्र (श्रीराम) के पीछे जाती हुईं; ऍऱि तिरै कटल्–तरंग फेंकनेवाले समुद्र; ऍन–के समान; इरङ्कि–उच्च स्वर में रोते हुए; एङ्कितार्–व्याकुल हुईं। ४७२

चक्रवर्ती की साठ हज़ार निष्कलंक पतिव्रता पत्नियाँ श्रीराम के पीछे मुख खोलकर रोते हुए, आँखों से अश्रु बरसाते हुए और लहरों से भरे समुद्र के समान उच्च दुख-रव निकालते हुए जाने लगीं। ४७२

❀ कन्निनन् मयिल्हळुङ् गुयिऱ्क णङ्गळुम्
अन्नमुञ् जिऱैयिळन् दवनि शेर्न्दन
ऍन्नवीळ्न् दुळन्ऱन रिराम नल्लदु
मन्नुयिर्प् पुदल्वरै मऱ्ऱुम् बॆऱ्ऱिलार् 473

इरामन् अल्लतु–श्रीराम के सिवा; मऱ्ऱुम् मन् उयिर् पुतल्वरै–और अन्य प्राण-सम पुत्र; पॆऱ्ऱिलार्–जिनके नहीं हुए थे, वे; कन्नि नल् मयिल्कळुम्–श्रेष्ठ बालमयूर और; कुयिल् कणङ्कळुम्–कोकिल-समूह और; अन्नमुम्–और हंस; चिऱै इळन्तु–पंख खोकर; अवनि चेर्न्तन ऍन्न–भूमि पर गिरे, जैसे; वीळ्न्तु–गिरकर; उळन्ऱनर्–रोईं। ४७३

उनके अपने कोई पुत्र नहीं हुए थे। इसलिए वे श्रीराम पर प्राण-सम प्यार करती थीं। वे अब मोर, कोकिल और हंस पक्षहीन होकर भूमि पर गिरे जैसे नीचे गिरकर छटपटाने लगीं। (देवियों की देह की

कान्ति मोर की-सी थी; स्वर कोयल का-सा और चाल हंस की-सी थी।) । ४७३

किळैयिनु	नरम्बिनु	निरम्बुङ्	गेऴन
अळविऱ्न्	दुयिर्प्पुविट्	टरऱ्ऱ्न्	दन्मयाल्
तोंळैपडु	कुऴलिनो	डियाऴ्क्कुन्	दोऱ्ऱन
इळैयव	रमुदिनु	मिनिय	शोऱ्कळे 474

इळैयवर्–कम उम्र वाली उनकी; अमुतिनुम् इनिय चोऱ्कळ्–अमृत से अधिक मधुर शब्द; किळैयिनुम्–बाँसुरी-नाद से; नरम्पिनुम्–वीणा के स्वर से; निरम्पुम् केऴन–बढ़कर मधुर (पहले) रहे; अळवु इऱन्तु–अपार; उयिर्प्पु विट्टु–निश्वास छोड़ते हुए; अरऱ्ऱुम् तन्मैयाल्–विलाप करने से; तोंळै पटु कुऴलिनोटु–रंध्रसहित बाँसुरी के स्वर के सामने और; याऴ्क्कुम्–वीणा के सामने; तोऱ्ऱन–हार गये। ४७४

कम उमर वाली उनका स्वर अमृत से भी बढ़कर मीठा था। वह पहले बाँसुरी और वीणा के स्वर से भी अधिक श्रुतिमधुर और मनोरम होता था। पर अब, अत्यधिक निश्वास छोड़ते हुए रोती-विलापती रहीं। इसलिए उनका स्वर अब बाँसुरी और वीणा के स्वर के सामने हार गया। ४७४

❀ पुहलिडङ्	गोंडुवनम्	बोलु	मॅन्ऱ्तम्
महन्वयि	निरङ्गुरु	महळिर्	वायहळाल्
अहन्मदि	नॅडुमनै	यरत्त	वाम्बल्हळ्
पहलिडै	मलर्न्ददोर्	पऴनम्	बोन्ऱवे 475

पुकल् इटम्–वास का स्थान; कोट्टु वनम् पोलुम्–भयंकर वन ही है क्या; ऍन्ऱ्–कहते हुए; तम् मकन् वयिन्–अपने पुत्र के प्रति; इरङ्कु उरुम्–शोक करनेवाली; मकळिर् वायकळाल्–स्त्रियों के मुखों के दृश्य से; अकल् मतिल्–विशाल प्राचीरों के; नॅटु मनै–बड़े सौध; अरत्तम् आम्पल्कळ्–लाल कुमुद; पकल् इटै मलर्न्ततु–दिन में खिले हों (जिसमें), ऐसे; ओर् पऴनम् पोन्ऱ–एक खेत के समान रहे। ४७५

वे अपने मुख खोलकर रो रही थीं। 'क्या तुम्हारा वास-योग्य स्थान भयंकर वन ही है ?' —यह पूछती हुई वे विलाप रही थीं। तब उनके खुले लाल मुखों के कारण वे सब सौध, जिनके चारों ओर चौड़े प्राचीर थे ऐसे खेत के समान लगे जिसमें रक्तकुमुद दिन में ही खिले हों। ४७५

तिडरुडैक्	कुङ्गुमच्	चेरुज्	जान्दमुम्
इडैयिडै	वण्डलिट्	टार	मीर्त्तन

मिडैमुलैक् कुवडौरीइ मेहलैत् तडम्
कडलिडैप् परन्दहट् कलुऴि याऱ्ऱो 476

कण् कलुऴि आऱु–अश्रुजल की नदियाँ; मिटै मुलै कुवट्टु ऑरीइ–संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से छूटकर; तिटर् उटैय–उन पर टीले के समान लिप्त; कुङ्कुमम् चेऱुम्–कुंकुम का लेप; चान्तुम्–चन्दन; इटै इटै वण्टल् इट्टु—बीच-बीच में तलौंछ छोड़ते हुए; आरम् ईर्त्तन–मोती के हारों को बहाते हुए; मेकलै तटम्–मेखला-वलयित विशाल; कटल इटै–(कटि) समुद्र में; परन्त–प्रवेश कर फैलीं। ४७६

उनकी आँखों से जो अश्रुनदियाँ निकलीं वे संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से होकर नीचे बह चलीं। उन पर से कुंकुम और चन्दन का लेप गलाकर वहा ले चलीं। इधर-उधर उसको तलौंछ के रूप में छोड़ती हुई आगे बढ़ीं। मोती की मालाओं को वहा ले जाकर वे मेखला-वलयित कटितट रूपी विशाल सागर में प्रविष्ट होकर फैल गईं। ४७६

तण्डलैक् कोशलत् तलैवन् मादरैक्, कण्डन निरवियुङ् गमल वाण्मुहम्
विण्डलत् तुरैयुनल् वेन्दर् कायिनुम्, उण्डिड रुऱ्ऱपो दॆन्नु ऱादन 477

तण्टलै–उद्यानों से घिरे; कोचलम् तलैवन् मातरै–कोसल देश के राजा की पत्नियों के; कमलम् वाळ् मुकम्—कमल-सम उज्ज्वल मुख; इरवियुम् कण्टतन्–रवि ने (आज ही) देखे; विण् तलत्तु उऱैयुम्–आकाश के वासी; नल् वेन्तर्कु आयिनुम्–श्रेष्ठ देवेन्द्र के लिए भी; इटर् उण्टु–दुर्भाग्य होगा; उऱ्ऱ पोतु–जब होता है; उऱातन ऍन्–न आनेवाले (अपमान) क्या हैं। ४७७

उपवनों से भरे कोसल देश के अधिपति दशरथ की उन पत्नियों के मुख सूर्य ने उस दिन देख लिए। (इसके पहले सूर्य ने भी उनको नहीं देखा था।) उनकी ऐसी संकट की दशा हो गई! हाँ देवेन्द्र के भी दिन फिरते हैं और दुर्भाग्य का दौर हो जाता है। कौन सी दुर्गतियाँ हैं, जो तब उन्हें प्राप्त नहीं होतीं? । ४७७

तायरुङ् गिळैञरुञ् जाऱ्न्दु ळार्हळुम्, शेयरु मणियरुञ् शिऱन्द मादरुम्
कायॆरि युऱ्ऱन रनैय कव्वयर्, वायिलु मुन्ऱिलु मरैय मॊय्त्तनर् 478

तायरुम्–माताएँ (साठ सहस्र); किळैञरुम्–अन्य रिश्तेदार; चार्न्तु उळ्ळार्कळुम्–उनके परिवार; चेयरुम् अणियरुम्–दूर की और निकट की; चिऱन्त मातरुम्–श्रेष्ठ स्त्रियाँ; काय् ऍरि–जलनेवाली आग में; उऱ्ऱनर् अनैय–प्रविष्ट हुईं, जैसे; कव्वैयर्–दुखिनी बनकर; वायिलुम् मुन्ऱिलुम् मरैय–द्वारों और आँगनों को ढँकते हुए; मॊय्त्तनर्–एकत्रित हुईं। ४७८

वे साठ हज़ार माताएँ, उनकी रिश्तेदारिनें, उनके परिवार, और दूर और पास के रिश्ते की स्त्रियाँ जलती आग में प्रविष्ट-सी दुखी होकर सौधों के द्वारों और आँगनों में आ जुट गईं। ४७८

इरैत्तन रिरैत्तॆऴुन् देङ्गि यॆङ्गणुम्
तिरैप्पॆरुङ् गडलनत् तॊडर्न्दु पिन्शॆल
उरैप्पदै युणर्न्दिल नॊऴिप्प दोर्हिलन्
वरैप्पुयत् तण्णऱत् मनैयै नोक्किनान् 479

इरैत्तनर्–शोर मचाया; इरैत्तु ऍऴुन्तु–शोर करते हुए उठकर; ऍङ्कणुम्–सब ओर; तिरै पॆरु कटल् ऍन–लहरों-सहित बड़े सागर के समान; पिन् तॊटर्न्तु चॆ.–पीछे लगे चलीं; वरै पुयत्तु अण्णल्—पर्वत-सम भुजाओं के प्रभु; उरैप्पत उणर्न्तिलन्–(क्या) कहना (यह) जान न पाये; ऑऴिप्पतु ओर्किलन्–उनको रोकने का उपाय न सूझा; तन् मनैयै नोक्कितान्–अपने महल की तरफ़ (देखा) गया। ४७६

वे सब दुख का उच्च रव करते हुए, सब ओर, गर्जनयुक्त सागर के समान श्रीराम के पीछे चलीं। पर्वतसम भुजा वाले श्रीराम उनसे क्या कहते? उन्हें क्या कहना है? —यह नहीं सूझा। वे उनको रोकने का उपाय भी न सोच सके। वे चुपचाप अपने महल की तरफ़ जाने लगे। ४७९

❀ नन्नॆंडु नऴिमुडि शूड नन्मणिप्, पॊन्नॆंडुन् देर्मिशैप् पवनि पोनवन्
तुन्नॆंडुञ् जीरैयैच् चुऱ्ऱि मीण्डुमप्, पॊन्नॆंडुन् दॆरुविडैप् पोद नोक्किनर् 480

नल् नॆंटु नऴि मुटि–उत्तम, बड़े, सम्मानित किरीट को; चूट–धारण करने के लिए; नल् मणि–चुने हुए अच्छे रत्नों से सज्जित; पॊन् नॆंटु तेर् मिचै–स्वर्णमय बड़े रथ पर; पवनि पोनवन्–जो वीथी-यात्रा पर गये, वे; तुन् नॆंटु चीरैयै–सिये हुए वल्कल को; चुऱ्ऱि–वेष्टित करके; मीण्टुम्–लौटकर; अ पॊन् नॆंटु तॆरु–उस उज्ज्वल वीथी के; इटै पोतल्–मध्य जाते; नोक्कितर्–(सबने) देखा। ४८०

श्रीराम जिस वीथी से श्रेष्ठ सुन्दर और सम्मानित किरीट पहनने के लिए रत्नजटित स्वर्णमय रथ पर वीथी-यात्रा में गये थे उसी वीथी से, वल्कलधारी बनकर पैदल जा रहे थे। इसको सबने देखा। ४८०

❀ अञ्जन मेनियिव् वऴहर् कॆय्दिय
वञ्जनै कण्डपिन् वहिर्न्दु नीङ्गला
नॆञ्जितुम् वलिदुयिर् नितैप्प दॆन्शिल
नञ्जितुम् वलियनन् नलमॆन् ऱार्शिलर् 481

अञ्चनम् मेनि—काजल-सम शरीर के; इ अऴकर्कु ऍय्तिय–इन सुन्दर पुरुषोत्तम को प्राप्त; वञ्चनै कण्ट पिन्–वंचना को देखने के बाद; वकिर्न्तु नीङ्क अल्ला–टूटा जो नहीं; नॆञ्चितुम्–उस हृदय से अधिक; उयिर् वलितु–प्राण कठोर हैं; चिल नितैप्पतु ऍन्–अन्य कुछ प्रकार से सोचा क्या जाय; नम् नलम्–हमारा भाग्य; नञ्चितुम् वलितु–विष से भी क्रूर है; ऍन्ऱार्–कहा; चिलर्–कुछ लोगों ने। ४८१

अंजनवर्ण सुन्दर पुरुष श्रीराम पर किसीकी वंचना से इतना भारी संकट आया है। यह देखकर भी हमारा हृदय टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ। यह बड़ा कठोर है! उससे भी निर्मम हैं हमारे प्राण। अन्य प्रकारों से क्यों सोचा जाय ? हमारा भाग्य ही विष से अधिक क्रूर निकला। —ऐसा कुछ लोगों ने कहा। ४८१

❀ मण्कॊडु वरुमॆऩ वऴियि रुन्ददियाम्
ऎण्कॊडु शुडर्वऩत् तेहल् काणवो
पॆण्कॊडु विऩैशॆय्प् पॆऱ्ऱ नाट्टिऩिल्
कण्कॊडु पिऱत्तलुङ् गडैयॆऩ् ऱार्शिलर् 482

मण् कॊटु वरुम् ॲऩ–पृथ्वी साथ लेकर (मुकुट धरकर) आएँगे, यह सोचकर; याम् वऴि इरुन्ततु–हम जो राह देखते रहे, वह; ऎण् कॊटु–हमारा हृदय लेकर; चुटर् वऩत्तु–जलते जंगल में; एकल् काणवो-जाना देखने के लिए है क्या; पॆण्–एक स्त्री; कॊट विऩै चॆय पॆऱ्ऱ नाट्टिऩिल्–क्रूर काम करना जहाँ सम्भव हुआ, उस राज्य में; कण् कॊटु पिऱत्तलुम्–आँखों के साथ जन्म लेना भी; कटै–निकृष्टता है; ॲऩ्ऱार् चिलर्–कहा कुछ ने। ४८२

कुछ लोगों ने कहा— हम यह विश्वास करके उनकी राह देख रहे थे कि वे 'पृथ्वी के स्वामी बनकर आयेंगे' पर वे हमारा हृदय छीनकर गरम धूप के जंगल में जा रहे हैं। क्या यही देखने के लिए हम प्रतीक्षा में बैठे थे ? इस देश में, जहाँ एक स्त्री का अनुचित रूप से क्रूर कर्म करना संभव हो गया, दृष्टिशक्ति के साथ जन्म लेना ही पाप था। ४८२

❀ मुऴुवदे पिऱन्दुल हुडैय मॊय्म्बिऩोऩ्
उऴुवैशेर् काऩहत् तुऱैवॆऩ् याऩॆऩा
ऎऴुवदे यॆऴुदल्कण् डिरुप्प देयिरुन्
दऴुवदे यऴहिदिव् वऩ्बॆऩ् ऱार्शिलर् 483

पिऱन्तु–(ज्येष्ठ पुत्र के रूप में) जन्म लेकर; उलकम् मुऴुवते उटैय–सारे भुवन के स्वामी जो हुए; मॊय्म्पिऩोऩ्–वे वीर; उऴुवै चेर्–बाघों का वासस्थान; काऩकत्तु उऱैवॆऩ् याऩ्–जंगल में वास करूँगा; ॲऩ–कहकर; ऎऴुवते–निकलें, (यह उचित है) क्या; ऎऴुतल् कण्टु–निकलना देखकर; इरुप्पते–चुप रह जायँ क्या; इरुन्तु अऴुवते–रहकर रोएँगे क्या; इ अऩ्पु अऴकितु–यह स्नेह भी भला है; ॲऩ्ऱार् चिलर्–कहा कुछ ने। ४८३

कुछ लोगों ने कहा कि श्रीराम ज्येष्ठ पुत्र पैदा हुए हैं। सारा भुवन उनका है। वे योग्य वीरता भी रखते हैं। इतना होने पर भी वे, 'बाघ जहाँ वास करते हैं उस वन में जाकर वास करूँगा' —यह कहते हुए जा रहे हैं। क्या यह उचित है ? उनको जाते हुए देखकर हम चुप रहें; निष्क्रिय रहकर रोएँ —यही हमारा उन पर स्नेह का निशान है ? हमारा स्नेह भी भला रहा ! । ४८३

वलङ्गडिन् देंळैशीऱ् कॊण्ड मन्ननै
नलङ्गडिन् दऱङ्गॊड नयत्ति यो॑न्ताक्
कुलङ्गडिन् दान्वलि कॊण्ड कॊण्डलै
निलङ्गडिन् दाळॊडु निहरॆन् ऱार्शिलर् 484

चिलर्–कुछ लोग; वलम् कटिन्तु–अपना बल त्यागकर; एऴै चॊल् कॊण्ट–एक स्त्री का वचन जिन्होंने माना; मन्ननै–उन राजा को; नलम् कटिन्तु–भलाई छोड़कर; अऱम् कॆंट–धर्म बिगाड़ने की; तयत्तियो–सोची क्या; ऒ॑ना–ऐसा न पूछनेवाले; कुलम् कटिन्तान्–क्षत्रियकुल को हरानेवाले परशुराम का; वलि कॊण्ट–बल परास्त करनेवाले; कॊण्टलै–मेघश्याम को; निलम् कटिन्ताळॊटु–भूमि (का अधिकार) छीननेवाली कैकेयी के; निकर्–समान मानो; ऒ॑न्ऱार्–कहा। ४८४

राजा अपनी शक्ति भूलकर एक स्त्री के वचन को मान गये। उनसे इन श्रीराम को पूछना चाहिए था कि हित का त्याग कर धर्म का गला घोंटने की बात आपने सोची है क्या ? पर क्षत्रियकुल-घाती परशुराम को परास्त करनेवाले मेघश्याम ने यह नहीं किया। उनमें और उनसे देश छीननेवाली कैकेयी में क्या भेद रहा ? दोनो समान समझिए। —यह कहा कुछ लोगों ने। ४८४

तिरुवरै शुऱ्ऱिय शीरै याडैयन्
पॊरुवरुन् दुयरिनन् ऱॊडरन्दु पोहिन्ऱान्
इरुवरैप् पयन्दव ळीन्ऱ कान्मुळै
ऒरुवनो विवऱ्किवू रुऱवन् ऱार्शिलर् 485

इरुवरै पयन्तवळ् ईन्ऱ–दो पुत्रों की जननी के जन्मे; काल् मुळै–ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण; तिरु अरै चुऱ्ऱिय–अपनी शोभायमान कमर में; चीरै आटैयन्–वल्कल पहने हुए; पॊरुवु अरुम्–उपमाहीन; तुयरिनन्–दुखी बनकर; तॊटर्न्तु पोकिन्ऱान्–(श्रीराम के) पीछे लगे जाते हैं; इवऱ्कु–इन श्रीराम के; इ ऊर्–इस नगर में; उऱवु ऒरुवनो–रिश्तेदार एक ही हैं क्या; ऒ॑न्ऱार् चिलर्–कहा कुछ लोगों ने। ४८५

कुछ लोगों ने कहा कि सुमित्रादेवी दो पुत्रों की जननी हैं। उनके ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण ही वल्कल पहनकर, अत्यधिक दुख के साथ श्रीराम के साथ जा रहे हैं। इस विशाल नगर में श्रीराम के स्नेही केवल वे एक ही हैं ? । ४८५

मुळ्क्कलिन् वलियनम् मूरि नॆ॑ञ्जिनै
मळ्क्कळिऱ् पिळत्तुमॆ॑न् ऱोडु वार्वळि
ऒ॑ळुक्किय कण्णिनिऱ् कलुळि यूऱ्ऱिडै
इळुक्कलि निळुक्किवोऴ्न् दिडरुऱ् ऱार्शिलर् 486

चिलर्–कुछ; मुळु कल्लिन् वलिय–बड़ी चट्टान से अधिक कठोर; नम् मूरि नॆ॑ञ्चिनै–हमारे सख्त हृदय को; मळुक्कळिन्–कुल्हाड़ियों से; पिळत्तुम् ऒ॑न्ऱु–फाड़

देंगे, यह कहकर; ओटुवार्–दौड़नेवालों ने; वऴि–मार्ग में; ऑऴुक्किय–जो बरसाया; कण्णिनिल् कलुऴि ऊऱ्ऱु–वह आँखों का झरना; इटै इऴुक्कलिऩ्–बीच-बीच से फिसलाता था, इसलिए; इऴुक्कि वीऴ्न्तु–फिसलकर गिरे; इटर् उऱ्ऱार्–और संकटग्रस्त हुए। ४८६

कुछ लोग चट्टान से कठोर अपने हृदय को कुल्हाड़ी से फाड़ दें, इस विचार से दौड़ रहे थे। तब उनकी आँखों से अश्रुधारा जो बही उसके कारण मार्ग कीचड़ से भर गया। वे उससे फिसलकर गिर गये और तंग हो गये। ४८६

पॊऩ्ऩणि मणियणि मॆय्यिऱ् पोक्किऩर्
मिऩ्ऩॆऩ मीऩॆऩ विलक्कि मॆय्विलैप्
पऩ्ऩिऱत् तुहिलिऩैप् परित्तु नीक्किये
शिऩ्ऩनुण् डुहिलरैच् चॆऱिक्किऩ् ऱार्शिलर् 487

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; मिऩ् ऎऩ–बिजली के समान; मीऩ् ऎऩ–आकाश (की मछलियों) के नक्षत्रों की तरह; मॆय्यिल्–अपने शरीरों पर के; पॊऩ् अणि–स्वर्णाभरणों और; मणि अणि–रत्नाभूषणों को; विलक्कि पोक्किऩर्–उतारकर दूर करके; मॆय्विलै–अधिक दाम के; पल् निऱ–रंग-बिरंगे; तुकिलिऩै–वस्त्रों को; परित्तु नीक्कि–निकाल दूर करके; चिऩ्ऩम् नुण् तुकिल्–फटे-पुराने सादे वस्त्र; अरै चॆऱिक्किऩ्ऱार्–कमर में पहन लेती हैं। ४८७

कुछ स्त्रियों ने अपने शरीर पर से बिजली और नक्षत्रों के समान शोभनेवाले स्वर्ण तथा रत्नाभरणों को उतारकर फेंक दिया और महँगे और रंगीन वस्त्र हटाकर फटे-पुराने सादे कपड़े पहन लिये। ४८७

※ निरैमह वुडैयवर् नॆऱिशॆ लैम्बॊऱि
कुऱैमहक् कुऱैयिऩुङ् कॊडुप्प रामुयिर्
मुऱैमहऩ् वऩम्बुह मॊऴियैक् काक्किऩ्ऱ
इऱैमहऩ् ऱिरुमऩ मिरुम्बॆऩ् ऱार्शिलर् 488

चिलर्–कुछ लोग; निरै मक उटैयवर्–बहुत पुत्र वाले हों (तो भी); नॆऱि चॆल्–विषय पर चलनेवाली; ऐन्तु पॊऱि–पाँच इन्द्रियों में; कुऱै मक–एक भी से हीन पुत्र के; कुऱैयितुम्–मर जाने पर; उयिर् कॊटुप्पर्–अपनी जान दे देंगे; आम्–यह लोकरीति है; मुऱै मकऩ्–अधिकारी श्रेष्ठ पुत्र को; वऩम् पुक–जंगल जाने देकर; मॊऴियै काक्किऩ्ऱ–अपना वचन पालन करनेवाले; इऱैमकऩ्–(हमारे) राजा का; तिरु मऩम्–सुन्दर मन; इरुम्पु ऎऩ्ऱार्–लोहा है, कहते। ४८८

कुछ लोगों ने दशरथ की यों आलोचना की। किसी के अनेक पुत्र भी हों और उनमें एक लूला या लँगड़ा, काना या अन्धा पुत्र भी मर जाय तो वह अपनी जान दे देगा। यही लोकरीति देखी जाती है। पर

दशरथ को देखिए— । अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र राम को वन भेजकर अपना वचन-पालन करते हैं ! अवश्य उनका मन लोहे का होगा । ४८८

वान्मे यनैयदोर् करुणै माण्बलाल्, ऊनम्वे ट्रिलानुड नुलहम् यावैयुम्
कान्मे पुहुमॅनिर् कादन् मैन्दनुम्, तानुमे याळ्ङ्गॉ उरैयॅन् ड्राऱ्शिलर् 489

वान्मे अनैयतु—मेघ के ही सम; ओर्—अप्रतिम; करुणै—करुणा; माण्पु—अन्य उत्तम गुण; अल्लाल्—इनके अलावा; वेऱु ऊनम् इलानुटन्—जिनमें कोई कमी नहीं है, उन श्रीराम के साथ; उलकम् यावैयुम्—सारा देश; कान्मे पुकुम् ऍनिल्—वन में चला जायगा तो; कातल् मैन्तनुम् तानुमे—अपने प्यारे पुत्र भरत और आप ही; तरै आळुम् कॉल्—खाली भूमि का शासन करेंगे क्या । ४८९

कुछ स्त्रियाँ कहतीं कि समझो कि मेघश्याम, करुणानिधि, श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण और बिल्कुल त्रुटिहीन श्रीराम के साथ सारे देश के लोग वन चले जाते हैं तो क्या चक्रवर्ती अपने प्यारे पुत्र के साथ रहकर खाली भूमि का शासन करते रहेंगे शायद ! । ४८९

वाङ्गिय मरुङ्गुलै वरुत्तुङ् गॉङ्गयार्
पूङ्गॉडि यॉदुङ्गुव पोलॊ दुङ्गिनार्
एङ्गिय कुरलिन रिणैन्द कान्तळिन्
ताङ्गिय शॅङ्गैदन् दलैयिन् मेलुळार् 490

वाङ्किय मरुङ्कुलै—धँसी हुई (पतली) कमर को; वरुत्तुम्—दुख देनेवाले; कॉङ्कैयार्—स्तनों की; एङ्किय कुरलिनर्—रो-रोकर क्षीण हुए स्वर वालियाँ; इणैन्त कान्तळिन्—संश्लिष्ट 'कान्तळ्' पुष्पों के समान; तम् तलैयिन् मेल् ताङ्किय चॅम् कै—सिर पर जोड़ रखे गये लाल हाथों; उळ्ळार्—वालियाँ; पू कॉटि ऑतुङ्कुव पोल्—पुष्पलताएँ चलतीं जैसे; ऑतुङ्किनार्—चलीं । ४९०

कुछ स्त्रियाँ जिनके स्तन अन्दर धँसी हुई कमर को कष्ट दे रहे थे, रोते हुए अपने दोनों हाथों को, कांतळ् पुष्पों के जोड़े के समान जोड़कर सिर पर रखे, पुष्पलता के समान चल रही थीं । ४९०

तलैक्कुवट् टयन्मदि तवऴु माळिहै
निलैक्कुवट् टिडैयिडै निन्ऱ नङ्गैमार्
मुलैक्कुवट् टिऴिहणी रालि मॉय्त्तुह
मलैक्कुवट् टयर्वुरु मयिलिन् माऴ्हिनार् 491

तलै कुवटु अयल्—(जिनके) शीर्ष भागों के पास; मति तवऴुम्—चन्द्र रेंगता है; माळिकै—ऐसे सौधों के; कुवटु निलै—उच्च भागों पर; इटै इटै—बीच-बीच में; निन्ऱ—स्थित; नङ्कैमार्—रमणियों के; मुलै कुवटु इऴि—स्तनशिखरों पर से बहनेवाली; कण् नीर् आलि—आँसू की बूँदें; मॉय्त्तु उक—एकत्र होकर गिरीं; मलै कुवटु अयर्वु उरुम्—पर्वत-शिखरों पर कुम्हलानेवाले; मयिलिन्—मोरों के समान; माऴ्किनार्—दुखतप्त हुईं । ४९१

कुछ प्रासादों के ऊपरी भागों में, जिनके पास चन्द्र चल रहा था (याने चन्द्रस्पर्शी, ऊँचे प्रासादों पर) स्त्रियाँ खड़ी थीं। उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ निकलीं, स्तनों के ऊपरी भाग पर से होती हुई नीचे बह रही थीं। वे स्त्रियाँ पर्वत-शिखरों पर कुम्हलाते हुए मोर जैसे दुखतप्त दिख रही थीं। ४९१

मञ्जॅन वहिऱ्पुहै वऴङ्गु माळिहै
ॲञ्जलिल् शाळरत् तिरङ्गु मिऩ्शॊलार्
अञ्जनक् कण्गणी ररुवि शोर्दरप्
पञ्जरत् तिरुन्दऴुङ् गिळियिऩ् पऩ्ऩिऩार् 492

मञ्चु अॅऩ–मेघों के समान; अकिल् पुकै वऴङ्कुम्–अगरु का धुआँ निकालनेवाले; माळिकै–प्रासादों की; ॲञ्चल् इल् चाळरत्तु–असंख्यक खिड़कियों के पास; इरङ्कुम्–दुख प्रकट करते हुए रहनेवाली; इऩ् चॊल्लार्–मधुर-भाषिणियाँ; अञ्चऩम् कण्कळ्–अंजन-लगी आँखों से; नीर् अरुवि चोर् तर–सरिता-सम आँसू बहाते हुए; पञ्चरत्तु इरुन्तु अऴुम्–पिंजरे में रहकर रोनेवाले; किळियिऩ्–शुकों के समान; पऩ्ऩिऩार्–कई बातें कहती हुई विलाप करती थीं। ४९२

उन प्रासादों के, जिनके अन्दर से अगरु का धुआँ मेघ के समान निकल रहा था, झरोखों के पास स्त्रियाँ खड़ी होकर रो रही थीं। वे मधुर-भाषिणी स्त्रियाँ, अपने काजल-लगे नेत्रों से आँसू-नदियाँ बहाते हुए पंजरस्थ शुकों के समान कई बातें कहकर विलाप रही थीं। ४९२

नऩ्नॅडुङ् गण्गळि ऩाऩ्ऱ नीर्त्तुळि
तऩ्नॅडुन् दारॆह डळत्तिऩ् वीऴ्दलाल्
अन्नॅडुङ् गुमरतुक् कऴुङ्गि माडमुम्
पॊऩ्नॅडुङ् गण्कुऴित् तऴुव पोऩ्ऱवे 493

नल् नॅटु कण्कळिऩ् नाऩ्ऱ–(ऊपर रही स्त्रियों की) सुन्दर आयत आँखों से निकले हुए; नीर् तुळि तऩ्–अश्रुकणों की; नॅटु तारॆकळ्–मिली हुई धाराएँ; तळत्तिऩ् वीऴ्तलाल्–ऊपर से नीचे गिरने से; माटमुम्–अटारी भी: अ नॅटु कुमरतुक्कु अऴुङ्कि–उन श्रेष्ठ कुमार से सहानुभूति करके; पॊऩ् नॅटु कण् कुऴित्तु–सुन्दर आयत आँखों को धँसाकर; अऴुव पोऩ्ऱ–रोते-से लगे। ४९३

प्रासादों की छतों पर खड़ी होकर स्त्रियाँ रो रही थीं। उनकी आँखों से निकलनेवाले आँसू के कण धाराएँ बने और वे धाराएँ नीचे गिरने लगीं। तब ऐसा लगता था कि स्वयं प्रासाद भी उन श्रेष्ठ और बड़े चक्रवर्ती के कुमार श्रीराम से सहानुभूति करके आँखों में गड्ढे बनाते हुए रो रहे हों। ४९३

मक्कळै मऱन्दनर् मादर् तायरैप्
पुक्किड मुणर्न्दिलर् पुदल्वर् पूशलिट्
टुक्कन रुयङ्गिन रुरुहिच् चोर्न्दनर्
तुक्कनित् तऱिविनैच् चूऱै याडवे 494

तुक्कम् नित्ऱु–दुख ने स्थिर होकर; अऱिविनै चूऱै आटवे–बुद्धि को लूट लिया, इसलिए; मातर्–स्त्रियों ने; मक्कळै मऱन्ततर्–अपने पुत्रों को भुला दिया; पुतल्वर्–पुत्रों ने; तायर् पुक्क इटम्–माताओं के गमनस्थान; उणर्न्तिलर्–न जाना; पूचल् इट्टु–रोते-चिल्लाते; उक्कनर्–आँसू बहाये; उयङ्किनर्–कुम्हलाये; उरुकि चोर्न्तनर्–विकल होकर थक गये। ४६४

दुख ने स्थायी रहकर लोगों की बुद्धि हर ली। इसलिए माताओं ने अपने पुत्रों को भुला दिया। वत्स भी अपनी माताओं के रहने के स्थान नहीं जान सके। सब रोते-चिल्लाते, आँसू बहाते-कुम्हलाते और विगलित होते थक जाते थे। ४९४

कामरङ् गनिन्दॆनक् कनिन्द मॆन्मॊऴि, मामडन् दैयरॆला मरुहु शेर्दलाल्
तेमरु नऱुङ्गुऴऱ् ऱिरुवि नीङ्गिय, तामरै यॊत्तन तवळ माडमे 495

कामरम् कतिन्ततु ऍन–‘श्रीकामर’ नामक राग अपनी उच्च गति पर हो, ऐसा; कनित्त–मधुरतापूर्ण; मॆल् मॊऴि–मृदु बोली वाली; मा मटन्तैयर् ऍल्लाम्–श्रेष्ठ लक्ष्मी-सम-स्त्रियाँ, सभी; मरुकु चेर्तलाल्–मार्ग पर जुट गईं, इसलिए; तवळम् माटम्–धवल प्रासाद; तेम् मरु–मधुरता भरा; नऱु कुऴल्–सुबासित केश वाली; तिरुविन् नीङ्किय–श्री-विहीन; तामरै ऒत्तन–कमल-तुल्य हो रहे। ४६५

सभी स्त्रियाँ, जिनकी वाणी ‘श्रीकामर’ के खूब अलापे स्वर के समान मीठी थी सड़कों पर आ गईं। इसलिए स्त्रियों से विहीन धवल प्रासाद मधुर और सुवासित केश वाली श्री से परित्यक्त कमलों के समान शोभाहीन हो गये। ४९५

❀ मऴैक्कुलम् बुरैहुऴल् विरिन्दु मण्णुऱक्
कुऴैक्कुल मुहत्तियर् कुऴाङ्गॊण् डेङ्गिनर्
इऴैक्कुलञ् जिदऱिड वेवुण् डोय्वुरुम्
उऴैक्कुल मुऴैप्पन वॊत्तॊर् पालॆलाम् 496

ओर् पाल् ऍलाम्–एक ओर; कुऴै–कुण्डलधारिणी; कुलम् मुकत्तियर्–उज्ज्वल मुख वाली स्त्रियाँ; कुऴाम् कॊण्टु–दलों में जुटकर; मऴै कुलम् पुरै–मेघ-समूह के समान; कुऴल्–केश को; विरिन्तु मण् उऱ–खुलकर भूमि पर बिखरने देते हुए; इऴै कुलम् चितऱिट–और आभरण-जाल को छितरने देते हुए; ए उण्टु ओय्वु उऱुम्–शराहत हो गिरनेवाले; उऴै कुलम्–हरिण-समूह; उऴैप्पन ऒत्तु–दुख करते जैसे; एङ्किनर्–दुखी हुईं। ४६६

एक ओर देखिए। उस तरफ़ सभी स्थानों में कुंडलधारिणी स्त्रियाँ

प्रभाहीन मुखों के साथ आ जुटी थीं। उनके मेघसम केश खुलकर नीचे भूमि पर बिखरे थे। उनके आभरण गिर गये थे। वे शराहत हरिण-समूह जैसे पीड़ा का अनुभव करती रहीं। ४९६

कॊडियडङ् ग्रिऩमतॆक् कुऩ्ऱङ् गोमुर
शिडियडङ् गिऩमुळक् किळऩ्द पल्लियम्
बडियडङ् गलुनिमिर् पशुङ्गण् मारियाल्
पॊडियडङ् गिऩमदिर् पुऱत्तु वीदियॆ 497

मतॆ कुऩ्ऱम्—प्रासाद रूपी पर्वतों पर; कॊटि अटङ्किऩ—पताकाएँ स्थिर रहीं; को मुरचु—राजकीय ढोल; इटि अटङ्किऩ—वज्रसम घोष से विहीन रहे; पल् इयम्—विविध वाद्य; मुळक्कु इळऩ्त—बजे नहीं; पटि अटङ्कलुम्—भूमि पर सब जगह; निमिर्—विपुल; पचु कण् मारियाल्—ताजे आँसुओं की वर्षा के कारण; मतिल् पुऱत्तु वीति—प्राकार से लगी वीथियों में; पॊटि अटङ्किऩ—धूलि थम गई। ४९७

पर्वतसम प्रासादों पर पताकाएँ नहीं फहरती थीं। राज-ढोल नहीं बज रहे थे। विविध वाद्य बजने से रह गये। भूमि भर में आँखों के आँसू की धारा बह रही थी अतः धूलि थम गई। (इसमें "अटङ्किऩ" शब्द विविध अर्थों में प्रयुक्त होकर बार-बार आया है।) । ४९७

❀ अट्टिलु मिळऩ्दऩ पुहैय हिऱ्पुहै
नॆट्टिलु मिळऩ्दऩ निऱैन्द पाल्किळि
वट्टिलु मिळऩ्दऩ मरुङ्गु काऩ्मणित्
तॊट्टिलु मिळऩ्दऩ् महवुञ् जोर्न्दवे 498

अट्टिलुम्—पाकशालाएँ भी; पुकै इळऩ्तऩ—धुएँ से रिक्त हो गईं; नॆटु इल्लुम्—ऊँचे प्रासाद भी; अकिल् पुकै इळऩ्तऩ—अगरु के धुएँ खो गये; किळि वट्टिलुम्—शुकाशनपात्र भी; निऱैन्त पाल् इळऩ्तऩ—दूध से पूर्ण रहने से रह गये; मरुङ्कु काल्—चारों ओर प्रकाश बिखरनेवाले; मणि तॊट्टिलुम्—रत्नमय पालने भी; मकवु इळऩ्त—शिशु-रहित हो रहे; मकवुम् चोर्न्त—शिशु भी थके पड़े रहे। ४९८

पाकशालाओं में (पकाने का काम नहीं होता था, इसलिए) धुएँ का अभाव था। ऊँचे माढ़ों में अगरु का धुआँ नहीं पाया जाता था। शुकों को खिलाने के लिए उपयुक्त कटोरे दूध से खाली थे। रत्नमय पालनों में, जिनसे चारों ओर कान्ति छूटती थी, शिशु नहीं थे। शिशु जो नीचे पड़े थे, किसी के द्वारा उठाये न जाने से थके पड़े रहे। ४९८

ऒळितुऱन् दऩमुह मुयिर्तु ऱन्दॆऩत्
तुळितुऱन् दऩमुहिऱ् ऱॊहैयुन् दूयवाम्
तळितुऱन् दऩबलि दाऩ यात्तॆयुम्
कळितुऱन् दऩमलर्क् कळ्ळुण् वण्डिऩॆ 499

मुकम्–मुख; उयिर् तुऱन्ताल् अँन्न–प्राणविहीन हुए जैसे; ऑळि तुऱन्तन–निष्प्रभ हुए; मुकिल् तॉकैयुम्—मेघ-समूह भी; तुळि तुऱन्तन–जलकण-रिक्त हो गये; तूय आम् तळि–पवित्र देवालय; पलि तुऱन्तन–पूजा खो गये; मलर्कळ् उण् वण्टिन्–पुष्प में शहद पीनेवाले भ्रमरों के समान; तातम् यानैयुम्–मत्तगज भी; कळि तुऱन्तन–मस्ती छोड़ गये। ४९९

लोगों के मुख कान्तिहीन हो रहे। मेघों के दल जल-कण से रिक्त रहे। पवित्र देवालयों में पूजा नहीं होती थी। फूलों पर मँड़राकर शहद पीनेवाले भ्रमरों के साथ मत्तगजों ने भी अपनी मस्तता खो दी। ४९९

निऴल्पिरिन्	दन्नकुडै	नॅडुङ्ग	णेऴयर्
कुऴल्पिरिन्	दन्नमलर्	कुमरर्	ताळिणै
कऴल्पिरिन्	दन्नशिनक्	कामन्	वाळियुम्
अऴल्पिरिन्	दन्नतुणै	पिरिन्द	वन्ऱिले 500

कुटै निऴल् पिरिन्तन–छत्र-छाया नहीं दे रहे थे; नॅटु कण्–लम्बी आँखों की; एऴैयर् कुऴल्–स्त्रियों का केश; मलर् पिरिन्तन–पुष्पों से रिक्त हो गया; कुमरर् ताळ् इणै–वीर नौजवानों के चरणद्वय; कऴल् पिरिन्तन–पायलों से शून्य रहे; चिनम् कामन् वाळियुम्–क्रोधशील कामदेव के शरों से; अऴल् पिरिन्तन–ताप-शक्ति छूट गई; अन्ऱिल्–क्रौंच; तुणै–अपने सहचर से; पिरिन्त–अलग हो गये। ५००

छत्रों ने छाया देना छोड़ दिया। (किसी ने छत्र का उपयोग नहीं किया।) लंबी आँखों वाली स्त्रियों के केश पुष्पों से विहीन रहे। नौजवानों ने पायल पहनना छोड़ दिया। मन्मथ के शरों ने अपनी तापन-शक्ति खो दी। क्रौंच पक्षी भी अपने जोड़े से अलग हो गये। ५००

तारॉलि नीत्तन पुरवि तण्णुमै, वारॉलि नीत्तन मऴैयिन् विम्मुरुम्
तेरॉलि नीत्तन तॅरुवुन् दॅण्डिरै, नीरॉलि नीत्तन नीत्तम् बोलुमे 501

पुरवि–अश्वों ने; तार् ऑलि नीत्तन–पाजेब की गुरियाओं की ध्वनि छोड़ दी; तण्णुमै–मृदंगों ने; वार् ऑलि नीत्तन–अपनी ऊँची ध्वनि छोड़ दी; मऴैयिन् विम्मुरुम्–मेघ-गर्जन से अधिक स्वर करनेवाले; तेर् ऑलि–रथों की ध्वनि को; तॅरुवुम् नीत्तन–सड़कों ने छोड़ दिया; तॆळ् तिरै–स्वच्छ तरंगों वाले; नीर् ऑलि नीत्तन नीत्तम् पोलुमे–जल से युक्त ध्वनिहीन नदियों के समान रहीं। ५०१

अश्वों को गले का हार नहीं पहनाया गया अतः उनसे गुरियों का क्वणन नहीं निकल रहा था। मृदंग नहीं बजाये गये, इसलिए वे ध्वनिहीन पड़े हुए थे। सड़कों पर रथ नहीं दौड़ते थे, इसलिए रथों की, मेघसम घरघराहट सुनाई नहीं देती थी और सड़कें भी कल-कल ध्वनि से रिक्त नदी के समान पड़ी रहीं। ५०१

❀ मुळवॆळु मॊलियिल मुरैयिन् याळ्नरम्
वॆळवॆळु मॊलियिल विमैप्पिल् कण्णित्तर्
विळवॆळु मॊलियिल वेरु मॊन्ऱिल
अळवॆळु मॊलियॆळु मरश वीदियॆ 502

अरच वीति–राजमार्ग; मुरैयिन्–लगातार; मुळवु ॲळुम् ऑलि इल–ढोलों के नाद से खाली रहे; याळ् नरम्पु ॲळ–वीणा की तंत्रियों को झटका देने से; ॲळुम् ऑलि–उठनेवाला नाद; इल–नहीं रहा; इमैप्पु इल् कण्णित्तर्–पलकहीन देवों के; विळवु ॲळुम् ऑलि इल–उत्सवों के कारण उठनेवाला शोर नहीं रहा; वेरु ऑन्ऱुम् इल–और कोई (मंगल) नाद नहीं उठा; अळ ॲळुम्–रोने से उठनेवाला; ऑलि ॲळुम्–नाद उठा। ५०२

राजमार्गों पर ढोल नहीं बजते थे। कोई वीणा नहीं बजाता था इसलिए वीणा का तन्त्रीनाद सुनाई नहीं दिया। पलक न झपनेवाले देवताओं के पूजा आदि उत्सव नहीं मनाये गये, इसलिए कहीं कुछ कोलाहल सुनाई नहीं दिया। केवल रुदन-स्वर ही सुनाई देता था और अन्य कोई मंगलध्वनि सुनाई ही नहीं देती थी। ५०२

तॆळ्ळॊलिच् चिलम्बुहळ् शिलम्पु पॊन्मनै
नळ्ळॊलित् तिलनळिर् कलैयु मन्नवे
पुळ्ळॊलित् तिलपुनल् पॊळिलु मन्नवे
कळ्ळॊलित् तिलमलर् कळिरु मन्नवे 503

तॆळ् ऑलि चिलम्पुकळ्–साफ़ स्वर वाले नूपुर; चिलम्पु–जहाँ स्वरित हो रहे थे; पॊन् मनै–उन स्वर्णप्रासादों; नळ्–के मध्य; ऑलित्तिल–स्वरित नहीं हुए; नळिर् कलैयुम् अन्नवे–श्रेष्ठ मेखलाओं की बात वही; पुनल्–जलाशयों में; पुळ् ऑलित्तिल–पक्षी बोले नहीं; पॊळिलुम्–उद्यानों की बात भी; अन्नवे–वैसी ही; मलर्–पुष्पों पर; कळ् ऑलित्तिल–भ्रमरों ने गुंजार नहीं किया; कळिरुम् अन्नवे–गजों की बात वही (पुष्प की तरह ही)। ५०३

जिन प्रासादों में स्त्रियों के पैरों के नूपुरों की मनोरम साफ़ ध्वनि होती थी उनमें अब नूपुर मौन थे। मेखलाओं की भी वही स्थिति हो गई। जलाशय खगरव-हीन हो गये और उद्यानों की हालत भी वही हो गई। पुष्प, जैसे मत्तगज, मधुपों से खाली हो रहे। ५०३

शॆय्म्मरन् दनपुनल् शिवन्द वाय्च्चियर्
कैम्मरन् दनपशुङ् गुळवि कान्दॆरि
नॆय्म्मरन् दनॆरि यरिजर् यावरुम्
मय्म्मरन् दनरॊलि मरन्द वेदमे 504

चॆय्–खेत; पुनल् मरन्तत–जल भूल गये; चिवन्त वाय्च्चियर् कै–अरुणाधरा

स्त्रियों के हाथ; पच्चु कुऴवि मऱन्तत–शिशु भूल गये; कान्तु ॲरि–जलनेवाली ज्वालाएँ; नॅय् मऱन्तत–घी भूल गईं; नॅऱि अऱिञर् यावरुम्–सन्मार्ग-वेदज्ञ सभी; मेय् मऱन्ततर्–अपने शरीर भूल गये; वेतम् ऑलि मऱन्त–वेदों ने स्वर भुला दिया। ५०४

खेत, काम करनेवालों के न होने के कारण सींचे नहीं गये थे अतः जल भूलकर सूखे पड़े थे। अरुणाधरा स्त्रियों के हाथों ने शिशुओं को भुला दिया। ज्वालाएँ घी भूल गईं क्योंकि होम-कार्य नहीं हुआ। वेदज्ञ ब्राह्मण अपने शरीर को भी भुलाए रह गये। इसलिए वेदध्वनि कहीं नहीं सुनाई दी। (सब तरह के लोग निष्क्रिय थे अतः कहीं कुछ आवश्यक कामों की भी आहट नहीं मिलती थी।)। ५०४

आडिऩ रऴुदऩ रमुद वेऴिशै, पाडिऩ रऴुदऩर् परिन्द कोदैयर्
ऊडिऩ रऴुदऩ रुयिरि ऩऩ्बरैक, कूडिऩ रऴुदऩर् कुऴाङ्गु ऴाङ्गोंडे 505

कुऴाम् कुऴाम् कॉंटु–दल के दल; आटिऩर् अऴुतऩर्–(स्त्रियाँ) जो नाच रही थीं, वे रोईं; अमुतम् एऴ् इचै पाटिऩर्–सुधा-सम सप्तस्वर संगीत गानेवाली; अऴुतऩर्–रोईं; परिन्त कोतैयर्–त्यक्त-माला वालियाँ; ऊटिऩर् अऴुतऩर्–रूठी हुई स्त्रियाँ रोईं; उयिरिऩ् अऩ्परै–प्राणसम प्रिय नाथों से; कूटिऩर्–जो मिली थीं, वे भी; अऴुतऩर्–रोईं। ५०५

नर्तकियाँ मिलकर रोईं। गानेवाली स्त्रियाँ गाना छोड़कर रोईं। पुष्पमाला निकाल फेंककर जो अपने पतियों से रूठी हुई थीं वे रोईं। जो पतियों से मिलन का आनन्द उठा रही थीं वे भी रोईं। ५०५

नीट्टिल कळिरुकै नीरिऩ् वाय्पुदल्
पूट्टिल पुरविहळ् पुळ्ळुम् पार्प्पिनुक्
कीट्टिल विरैपुन्ऱि ऱीन्ऱ कऩ्ऱैयुम्
ऊट्टिल करवैनैन् दुरुहिच् चोर्न्दवे 506

कळिऱु–हाथियों ने; कै–सूँड़ें; नीरिऩ् नीट्टिल–पानी की तरफ़ नहीं बढ़ाईं; पुरविकळ्–अश्वों ने; वाय्–अपने मुखों पर; पुतल् पूट्टुतल् इल–घास नहीं रखी; पुळ्ळुम्–पक्षियों ने; पार्प्पिऩुक्कु–अपने शावकों के लिए; इरै ईट्टिल–चारा नहीं ढूँढ़ा; करवै–गायों ने; ईऩ्ऱ–नये ब्याये; पुऩ्ऱि कऩ्ऱैयुम्–छोटे बछड़ों को; ऊट्टु इल–दूध नहीं पिलाया; नैन्तु उरुकि–विगलित होकर; चोर्न्त–मुरझाये रहे। ५०६

गजों ने सूँड़ों को पानी की तरफ़ नहीं बढ़ाया। अश्वों ने अपने मुख में घास का ग्रास नहीं लिया। पक्षी अपने शावकों के लिए चारा ढूँढ़ नहीं लाये। गायों ने अपने नये बछड़ों को भी दूध नहीं पिलाया। सब दुख से विगलित रहे। ५०६

मान्दर्द मॊय्म्बिनिऩ् महळिर् कॊङ्गयाम्
एऩ्दिळ नीर्हळुम् वरुमै यॆय्दिऩ
शान्दमम् महिळ्नर्तम् मुडियिर् ऱॆयलार्
कूऩ्दलुम् वरुमैय मलरिऩ् कूलमे 507

मान्तर् तम् मॊय्म्पितिल्–पुरुषों की भुजाओं के समान; मकळिर्–स्त्रियों के; कॊङ्कै आम्–स्तन रूपी; एन्तु इळनीर्कळुम्–उन्नत (कच्चे) नारियल; चान्तम् वरुमै ऎय्तिऩ–चन्दन से रिक्त रहे; अ मकिऴ्नर् तम्–उन पुरुषों के; मुटियिल्–केशों के समान; तैयलार् कून्तलुम्–स्त्रियों के केश भी; मलरिऩ् कूलम् वरुमैय–पुष्पों के समूह से रिक्त हो गये। ५०७

पुरुषों के कन्धे और स्त्रियों के नारियल के फलों जैसे स्तनों पर चन्दन नहीं लगा। दोनो के केश पुष्पों के अलंकार से शून्य पाये गये। ५०७

ओडै नल्लणि मुऩिन्दऩ वुयर्हळि ऱुच्चि
शूडै नल्लणि मुऩिन्दऩ शुडर्मणिक् कॊडियिऩ्
आडै नल्लणि मुऩिन्दऩ वम्बॊऩ्शॆ यिञ्जि
पेडै नल्लणि मुऩिन्दऩ मॆन्नडैप् पुऱवम् 508

उयर् कळिऱु–उत्तम गजों ने; ओटै–मुखपट्टों के; नल् अणि–सुन्दर अलंकार से; मुऩिन्तऩ–गुस्सा किया; उच्चि–(स्त्रियों के) केशों ने; चूटै नल् अणि मुऩिन्तऩ–श्रेष्ठ शिरोभूषणों से घृणा की (पहना नहीं); अम् पॊऩ् चॆय् इञ्चि–उत्तम स्वर्णनिर्मित प्राचीरों ने; चुटर् मणि कॊटियिऩ् आटै–कान्तियुत सुन्दर पताकाएँ रूपी; नल् अणि–श्रेष्ठ अलंकार को; मुऩिन्तऩ–त्याग दिया था; मॆल् नटै पुऱवम्–मृदु-चाल कपोतों ने; पेटै नल् अणि मुऩिन्तऩ–कपोतियों की श्रेष्ठ कमनीयता दुत्कार दी। ५०८

हाथियों ने मुखपट्ट आदि अलंकार दुत्कार दिये; स्त्रियों के सिर के केश ने शिरोभूषण पसन्द नहीं किये। प्राचीरों पर पताकाओं का अलंकार नहीं पाया गया। मृदु चाल वाले कपोतों ने अपनी कमनीय कपोतियों का संग छोड़ दिया। ५०८

❀ तिक्कु नोक्किय तीविऩैप् पयऩॆऩच् चिन्दै
नॆक्कु नोक्कुवोर् नल्विऩैप् पयऩॆऩ नेर्वोर्
पक्क नोक्कलॆऩ् परुवर लिऩ्बमॆऩ् ऱिरण्डुम्
ऒक्क नोक्किय योहरु मरुन्दुय रुळन्दार् 509

ती विऩै पयऩ्–बुरे कर्म का फल (दुख); तिक्कु नोक्किय–तुम्हारी दिशा की ओर आ रहा है; ऎऩ–ऐसा किसी के कहने पर; चिन्तै नॆक्कु–मन को विगलित करके; नोक्कुवोर्–प्रतीक्षा करनेवाले; नल् विऩै पयऩ् ऎऩ–सुकर्म का फल (सुख) आ रहा है, कहने पर; नेर्वोर् पक्कम्–स्वागत करनेवालों का स्वभाव; नोक्कल् ऎऩ्–देखने से क्या; परुवरल् इऩ्पम् ऎऩ्ऱु इरण्टुम्–दुख, सुख दोनो को; ऒक्क

ोक्किय–समदृष्टि से देखनेवाले; योकरुम्–योगी भी; अरु तुयर् उऴन्तार्–अत्यधिक दुख से पीड़ित हुए। ५०६

बुरे कर्मफल, दुख, का नाम सुनकर घबड़ानेवाले और अच्छे फल, सुख, का स्वागत करनेवाले मामूली लोगों की बात क्या कही जाय ? दुख और सुख को समदृष्टि से देखनेवाले योगीजन भी बहुत शोकाकुल हुए। ५०९

ओवि नल्लुयि रुयिर्प्पिन्नो डुडल्पदैत् तुलैय
मेव तॊल्लऴ हॆऴिल्कॆड विम्मनोय् विम्मत्
तावि लैम्बॊऱि मरुहुऱत् तयरद नॆन्न
आवि नीक्किन्ऱ वॊत्तदव् वयोत्तिमा नहरम् 510

अ अयोत्ति मा नकरम्–वह अयोध्या नगर; ओवु इल् नल् उयिर्–न छूटनेवाले ाणों के समान रहे जीव (प्रजाजन) सभी; उयिर्प्पिन्नोटु–निश्वास के साथ; उटल् तैत्तु उलैय–शरीर के तड़पकर शिथिल होने से; मेवु तॊल् अऴकु–पहले के स्वाभाविक आकर्षण; ऍऴिल्–और अलंकार के आकर्षण के; कॆट–विकृत हो जाने से; विम्मल् ोय् विम्म–दुख के रोग के बढ़ने से; ता इल् ऐन्तु पॊऱि–निर्बल हुई पाँचों इन्द्रियों के; मरुकु उऱ–क्षुब्ध होने से; तयरतन् ऍन्न–दशरथ के समान; आवि नीक्किन्ऱतु ऒत्ततु–प्राणों को छोड़ता-सा रहा। ५१०

उस अयोध्या नगर के सब जीव निश्वास छोड़ते हुए, स्वाभाविक सुन्दरता और अलंकार का आकर्षण —इनसे रिक्त होकर, कम्पायमान शरीरों के साथ दुखतप्त हुए और उनकी इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गईं। वह नगर उस अवस्था में बिलकुल दशरथ के समान रहा। ५१०

उयङ्गि यन्नह रुलैवुऱ वॊरुङ्गुऴैच् चुऱ्ऱम्
मयङ्गि येङ्गिन्ऱ् वयिन्वयिन् वरम्बिलर् तॊडर
इयङ्गु पल्लुयिर्क् कोरुयि रॆन्निन्ऱ इरामन्
तयङ्गु पूण्मुलैच् चानहि यिरुन्दुऴिच् चार्न्दान् 511

अ नकर्–वह नगर; उयङ्कि उलैवु उऱ–दुखी होकर छटपटाता रहा, तब; ऴै चुऱ्ऱम्–पास रहनेवाले सेवक; वयिन् वयिन्–इधर-उधर; वरम्पु इलर्–संख्यक लोग; ऒरुङ्कु–एक साथ; मयङ्कि एङ्किनर्–भ्रान्त होकर रोते हुए; टर–पीछा करते चले, तब; इयङ्कु पल् उयिर्क्कु–जीवन्त सभी विविध जीवों के; र् उयिर् ऍन्न निन्ऱ–एक प्राण के समान (जो) रहे (वे); इरामन्–श्रीराम; यङ्कु पूण् मुलै–शोभायमान आभरण-भूषित स्तनों वाली; चानकि इरुन्त उऴि–नकी जहाँ रही, उस स्थान को; चार्न्तान्–पहुँचे। ५११

वह नगर ही दुखाक्रांत हो गया। असंख्यक नौकर लोग भी यत्र-तत्र लकर बुद्धि-भ्रमित होकर श्रीराम का पीछा करते जा रहे थे। तब सब वों के एकप्राण श्रीराम आभरणभूषित स्तनों वाली जानकी के (रहने) स्थान को गये। ५११

❀ अऴुदु तायरो डनृदण ररुन्दव ररशर्
पुऴुदि याडिय मॅय्यितर् पुडैवन्दु पोरुमप्
पऴुदु शीरैयि नुडैयितन् वरुम्बडि पारा
ॲऴुदु पावयन् लाण्मनत् तुणुक्कमों डॅऴुन्दाळ् 512

तायरोटु–माताओं के साथ; अन्तणर्–ब्राह्मण लोग; अरु तवर्–श्रेष्ठ तपस्वी लोग; अरचर्–राजा लोग; पुऴुति आटिय मॅय्यितर्–धूल-धूसरित शरीर वाले; अऴुतु पुटै वन्तु–रोते हुए पास आकर; पोरुम–सिसकते खड़े रहे, तब; पऴुतु चीरैयित् उटैयितन्–क्षुद्र वल्कल-वसन; वरुम्पटि पारा–आते हैं, देखकर; ॲऴुतु पावै अन्नाळ्–चित्र-प्रतिमा-सी देवी; मनम् तुणुक्कमोटु–मन में भय के साथ; ॲऴुन्ताळ्–उठ खड़ी हुईं। ५१२

सीताजी ने देखा कि श्रीराम आ रहे हैं और उनके पीछे माताएँ, ब्राह्मण, मुनि, राजा आदि विविध प्रकार के लोग, धूल-धूसरित शरीरों के साथ पार्श्व में रोते हुए आ रहे हैं। स्वयं श्रीराम क्षुद्र वल्कल धारण किये हुए थे। यह देखकर चित्रप्रतिमा-सी जानकीजी ठिठककर खड़ी हो गईं। ५१२

❀ ॲऴुन्द नङ्गयै मामियर् तऴुवित रेन्दिप्
पोऴिन्द वुण्गणीर्प् पुदुप्पुन लाट्टिनर् पुलम्ब
अऴिन्द शिन्दय ळन्नमु मित्तदेन् ऱरियाळ्
वऴिन्द नीर्नॆडुङ् गण्णितळ् वळ्ळलै नोक्कि 513

ॲऴुन्त नङ्कैयै–जो उठीं, उन देवी को; मामियर्–सासों ने; तऴुवितर्–गले लगाते हुए; एन्ति–सम्हालकर; पोऴिन्त–बहनेवाले; उण् कण् नीर् पुतु पुनल्–काजल से युक्त आँखों के नये (अश्रु-) जल से; आट्टितर्–नहलाया; पुलम्प–और विलाप किया, तब; अन्नमुम्–हंसिनी (सीता) भी; इन्नतु ॲन्ऱु अरियाळ्–क्या बात है, यह नहीं जानकर; अऴिन्त चिन्तयळ्–उद्विग्न-मन होकर; नीर् वऴिन्त नॆटु कण्णितळ्–आँसू बहानेवाली आँखों की होकर; वळ्ळलै नोक्कि–प्रभु श्रीराम को देखकर। ५१३

वहाँ सासें खड़ी थीं। उन्होंने सीता को गले से लगा लिया। और अपनी आँखों से अश्रुजल बहाकर उन्हें नहला दिया। वे विलाप करने लगीं। सीताजी को पता नहीं लग रहा था कि यह सब क्या अनर्थ है? इसलिए क्षुब्धमना और अश्रु-भरी आँख वाली बनकर (जानकीजी ने) श्रीराम से—। ५१३

❀ पोन्नै युर्र पोलङ्गऴ लोय्पुहऴ्
मन्नै युर्रदुण् डोमर्रिव् वन्रुयर्
ॲन्नै युर्र दियम्बॆन् ररैञ्जिताळ्
मिन्नै युर्र नडुक्कतु मेनियाळ् 514

मिन्नुर्तै उर्र–बिजली के समान; नटुक्कत्तु मेत्तियाळ्–काँपनेवाली देह की बनकर; पोन्तै उर्र पॉलम् कळ्ळोय्–स्वर्णरचित पायलधारी; इ वन् तुयर् उर्रतु ॲन्नै–यह बड़ा दुख क्यों कर हुआ; पकळ् मन्नै–प्रकीर्तित राजा पर; उर्रतु उण्टो–कुछ बीता क्या; इयम्पु ॲन्नु–कहिए, कहकर; इरैञ्चिनाळ्–विनय की। ५१४

बिजली के समान काँपनेवाली श्री सीताजी ने (श्रीराम से) पूछा कि स्वर्णरचित पायलधारी वीर ! यह कठोर और बड़ा दुख काहे का और क्यों कर हुआ ? प्रथित यशस्वी महाराजा पर कुछ बीता है क्या ? कहिए —यह विनय की। ५१४

❀ पॉरुवि ऍल्म्बि पुविबुरप् पान्पुहळ्
इरुव राणैयु मेन्दिनॅ लिन्रुपोय्क्
करुवि मामळैक् कर्कडङ् गण्डु नान्
वरुवॅ नीण्डु वरुन्दलै नीयॅन्रान् 515

पॉरुवु इल् ॲम्पि–अप्रतिम मेरा अनुज; पुवि पुरप्पान्–भूमि का पालन करेगा; नान् पुकळ् इरुवर्–मैंने यश के पात्र (माता-पिता) दोनों की; आणैयुम् एन्तिनॅन्–आज्ञा मान ली; इन्रु पोय्–आज ही चलकर; करुवि मा मळै–समूहों में मेघ-संचारित; कल् कटम् कण्टु–पर्वतों वाले वन को देखकर; वरुवॅन्–लौट आऊँगा; ईण्टु नी वरुन्तलै–यहाँ तुम दुख मत करो; ॲन्रान्–कहा। ५१५

श्रीराम ने उत्तर में कहा कि मेरा अनुपम भाई भरत राजा बनेगा और भूमि का पालन करेगा। मैंने यशोगान-योग्य अपने पिता और माता की आज्ञा मान ली है। उसके अनुसार मैं आज ही जाऊँगा और मेघ-मंडरित वन को देखकर लौट आऊँगा। तुम यहीं रहो और दुखी मत हो। ५१५

❀ नाय हन्वन नण्णलुर् रानॅन्रुम्, मेय मण्णिळन् दानॅन्रुम् विम्मलळ्
नीव रुन्दलै नीङ्गुवॅन् यानॅन्र, तीय वॅञ्जोल् शॅविशुडत् तेम्बुवाळ् 516

नायकन् वनम् नण्णल् उर्रान्–हमारे पति जंगल जाने लगे; ॲन्रुम्–यह सोचकर; मेय मण् इळन्तान् ॲन्रुम्–स्वत्व की भूमि खोई, इसके लिए भी; विम्मलळ्–दुख-भरी नहीं हुईं; यान् नीङ्कुवॅन्–मैं जाऊँगा; नी वरुन्तलै–तुम दुख न करो; ॲन्र–इस; तीय वॅम् चोल्–कठोर तापक वचन के; चॅवि चुट–कानों को जलाने से; तेम्पुवाळ्–रोने लगीं। ५१६

सीताजी यह सुनकर रोने लगीं। उनको इस बात के दुख ने नहीं सताया कि उनके प्रिय पति जंगल जा रहे हैं। न यह बात उन्हें दुख दे रही थी कि उनके अधिकार की भूमि उन्हें नहीं मिली। पर 'मैं जा रहा हूँ। तुम दुख मत करो', यह निर्मम और तापक वचन उनके कानों को मानो जलाने लगा। वे अत्यन्त व्याकुल हुईं। ५१६

❀ तुऱन्दु पोमॆन्ऱु शॊऱ्ऱशॊऱ् ऱेऱुमो
उऱैन्द पाऱ्कडऱ् चेक्कै युडनॊरीइ
अऱन्दि ऱम्बल्कण् डैय नयोत्तियिल्
पिऱन्द पिन्बुम् पिरिविल ळायिनाळ् 517

ऐयन्–मेरे प्रभु; अऱम् तिरम्पल् कण्डु–(पृथ्वी पर) धर्म की ग्लानि देखकर; उऱैन्त पाल् कडल्–अपने वास के क्षीरसागर पर; उडन् चेक्कै ऑरीइ–साथ-साथ शयन त्यागकर; अयोत्तियिल् पिऱन्त पिन्पुम्–अयोध्या में जन्म लेने के बाद भी; पिरिवु इलळ् आयिनाळ्–अलग न होकर साथ रहीं, ऐसी; तुऱन्तु पोम् ॲन्ऱु–तुमको छोड़कर जायँगे, यह; चॊऱ्ऱ चॊल्–कथन; तेऱुमो–उचित मानतीं क्या। ५१७

भगवान विष्णु धर्म की ग्लानि देखकर उसके संरक्षणार्थ, क्षीरसागर से, श्री लक्ष्मीदेवी के साथ का शयन छोड़कर अयोध्या में श्रीराम बनकर आये। उसके बाद भी श्रीलक्ष्मी उनसे विलग नहीं हुई थीं। वियोग न सह सकनेवाली ऐसी देवी श्रीराम के इस कथन को कैसे सह्य मान सकेंगी कि 'मैं तुमसे अलग जा रहा हूँ' ? । ५१७

❀ अन्न तन्मैय ळैयनु मन्नयुम्, शॊन्न शॆय्यत् तुणिन्ददु तूयदे
ॲन्नै यॆन्नै यिरुत्तियॆन् ऱायॆन्ऱाळ्, उन्न वुन्न वुयिरुमि ळानिन्ऱाळ् 518

अन्न तन्मैयळ्–वैसी प्रकृति वाली ने; ऐयतुम् अन्नैयुम्–पिता और माता का; चॊन्न–कहा; चॆय्य तुणिन्ततु–करने को ठाना (आपने); तूयते–वह पवित्र (और श्लाघ्य) है; ॲन्नै ॲन्नै इरुत्ति–पर क्यों मुझे रहो; ॲन्ऱाय्–कहते हैं; ॲन्ऱाळ्–पूछा; उन्न उन्न–(वियोग की बात) ज्यों-ज्यों सोचतीं; उयिर् उमिळा निन्ऱाळ्–त्यों-त्यों प्राण निकालती-सी रहीं। ५१८

वैसी श्री सीताजी ने प्रभु से कहा कि आपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का जो निश्चय किया है, वह अवश्यमेव पवित्र आचरण है। पर आप मुझे क्यों ठहर जाने को कह रहे हैं ? ज्यों-ज्यों वह उनकी बात पर सोचतीं त्यों-त्यों उनके प्राण निकलने-से लगते थे। ५१८

वल्ल रक्करिन् माल्वरै मेल्विळुन्, दल्ल रक्कि नुरुक्कळऱ् काट्टदरक्
कल्ल रक्कुङ् गडुमय वल्लनिन्, शिल्ल रक्कुण्ड शेवडिप् पोदॆन्ऱान् 519

निन्–तुम्हारे; चिल्–छोटे; अरक्कु उण्ट–महावर लगे; चॆं अटि पोतु–लाल चरण कमल; वल् अरक्करिन्–सबल राक्षसों का; माल् वरै मेल् विळुन्तु–बड़े पर्वतों पर पड़कर; अल्–रात को भी; अरक्किन् उरुक्कु–लाख की तरह पिघलाने वाली; अळल्–गर्मी वाले; काटु अतर्–वन-मार्ग में; कल् अरक्कुम्–कंकड़ों का चुभना सहन करने योग्य; कटुमैय अल्ल–कठोर नहीं हैं; ॲन्ऱान्–कहा। ५१९

श्रीराम ने समझाया कि देखो। वन में बलवान राक्षस वास कर रहे हैं। हमेशा गर्मी लगी रहेगी। पर्वतों पर पड़कर पत्थर को लाख

की तरह पिघलानेवाली गर्मी होगी वह। ऐसे वन के मार्गों में चुभते हुए कंकड़ों पर चलने योग्य क्षमता तुम्हारे छोटे, लाक्षारस-लगे कोमल पैर नहीं रखते। ५१९

❀ परिवि हन्द मनत्तॊडु पऱ्ऱिला, दॊरुवु हित्ऱनै यूऴि यरुक्कनुम्
ॲरियु मॆन्नबन याण्डय वीण्डुनिन्, पिरिवि नुज्जुडु मोपॆरुङ् काडॆन्ऱाळ् 520

पऱ्ऱु इलातु–(मुझ पर) प्रेमरहित; परिवु इकन्त–दयाहीन; मनत्तॊटु–मन के साथ; ऒरुवुकिन्ऱनै–मुझे त्यागते हैं; ऊऴि अरुक्कनुम्–प्रलयकाल का सूर्य और; ऊऴि ॲरियुम्–प्रलयाग्नि; ॲन्पन–संज्ञित वे भी; याण्टैय–कहाँ के; ईण्टु निन् पिरिविनुम्–इधर आपसे वियोग से अधिक; पॆरु काटु–बड़ा वन; चुटुमो–मुझे जला सकेगा; ॲन्ऱाळ्–पूछा। ५२०

देवी ने उत्तर दिया— आप मुझ पर प्रेम नहीं रखते। दया भी नहीं करते। मुझे छोड़ जाना चाहते हैं। इसके सामने प्रलय-कालीन सूर्य और अग्नि भी गर्मी में कहाँ रहेंगे ? आप जिस वन की गर्मी का बयान कर रहे हैं वह विशाल वन आपके वियोग से अधिक जला (ताप दे) सकता है क्या ?। ५२०

❀ अण्ण लन्नशॊऱ् केट्टन नन्ऱियुम्, उण्णि वन्द करुत्तु मुणर्न्दनन्
कण्णि नीर्क्कडऱ् कैविड नेर्हिलन्, ॲण्णि निन्ऱन नॆन्शॆयऱ् पाऱ्ऱॆना 521

अण्णल्–प्रभु श्रीराम ने; अन्न चॊल्–वह वचन; केट्टनन्–सुना; अन्ऱियुम्–अलावा; उळ् निवन्त–उनके मन में उभरा रहा; करुत्तुम् उणर्न्तनन्–इरादा भी पहचाना; कण्णिन् नीर् कटल्–अश्रु-सागर में; कै विट नेर्किलन्–हाथ छोड़ना नहीं चाहा; ॲन् चॆयल् पाऱ्ऱु ॲना–क्या करना चाहिए, यह; ॲण्णि निन्ऱनन्–सोचते खड़े रहे। ५२१

श्रीराम ने सीताजी का कथन सुना और उनका मन समझ लिया। वे उन्हें अश्रु-सागर में हाथ (साथ) छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। अब क्या किया जा सकता है ? —इस पर सोचते रहे। ५२१

❀ अन्नैय वेलै यहमनै यॆय्दिनळ्, पुन्नैयुज् जीरै तुणिन्दु पुनैन्दनळ्
निन्नैयुम् वळ्ळल्पिन् वन्दय निन्ऱनळ्, पन्नैयि नीळ्करम् पऱ्ऱिय कैयिनाळ् 522

अन्नैय वेलै–उसी समय; अकम् मनै ॲय्तिनळ्–अन्तःपुर गईं; पुनैयुम् चीरै–पहनने योग्य वल्कल; तुणिन्तु पुनैन्तनळ्–निश्चय के साथ पहन लिया; निनैयुम् वळ्ळल् पिन् वन्तु–सोचते जो रहे, उनके पीछे आकर; पनैयिन् नीळ् करम्–तालवृक्ष से अधिक लम्बे हाथ को; पऱ्ऱिय कैयिनाळ्–अपने हाथ से पकड़कर; अयल् निन्ऱनळ्–पार्श्व में खड़ी रहीं। ५२२

तब तक सीताजी अन्तःपुर में गईं और दृढ़-चित्त हो पति के अनुकूल वल्कल पहने हुए आईं और श्रीराम के पीछे पास खड़ी हुईं। उन्होंने

श्रीराम का तालवृक्ष-सम लम्बा हाथ अपने हाथ से पकड़ लिया (जाने को तैयार)। ५२२

❀ एळै तन्शॅयल् कण्डवर् यावरुम्, वीळ्ु मण्णिडै वीळ्न्दनर् वीन्दिलर्
वाळ्ु नाळुळ वंन्ऱबिन् माळ्वरो, ऊळि पेरिनु मुय्हुन रुय्वरे 523

एळै तन् चॅयल्–देवी का यह कार्य; कण्टवर् यावरुम्–जिन्होंने देखा, वे सभी; वीळ्ु मण् इटै वीळ्न्ततर्–मरकर गिरने योग्य धरती पर गिर पड़े; वीन्तिलर्–पर मरे नहीं; वाळ्ुम् नाळ् उळ–आयु शेष रही; ॲन्ऱ पिन्–तो उसके बाद; माळ्वरो–मरेंगे क्या; ऊळि पेरितुम्–युग बदल जाय तो भी; उय्कुनर्–जिनको जीना है; उय्वरे–जीते ही रहेंगे। ५२३

देवी का कृत्य देखकर स्त्री-पुरुष सभी दुखाभिभूत हो गये। वे मरे-से भूमि पर गिरे। पर मरे नहीं क्योंकि आयु शेष थी। युगांत भी हो जाय तो जिनकी आयु शेष है और जिनको जीना है वे जीवित ही रहेंगे। ५२३

❀ तायर् तव्वयर् तन्ऱुणॅच् चेडियर्, आय मन्निय वन्बिन रॅन्ऱिवर्
तीयिन् मूळ्हिन रॊत्तनर् शॅङ्गणान्, तूय तैयलै नोक्किनन् शॊल्लुवान् 524

तायर्–माताएँ (रिश्ते, सेवा या उम्र में मातागण्य स्त्रियाँ); तव्वैयर्–बड़ी बहनें; तन् तुणै चेटियर्–साथिन चेरियाँ; आयम्–खेल की सखियाँ; मन्निय अन्पिनर्–गहरा प्रेम रखनेवाली अन्य; ॲन्ऱ इवर्–ये सब; तीयिल् मूळ्कितर् ऑत्तनर्–आग में मग्न हो गई सी हो गईं; चॅम् कण्णान्–अरुणाक्ष; तूय तैयलै नोक्कितन्–पवित्र देवी को देखकर; चॊल्लुवान्–बोले। ५२४

देवी की मातासम स्त्रियाँ, बड़ी बहनेंसम स्त्रियाँ, साथिन चेरियाँ, खेल की सखियाँ और अन्य प्रेम रखनेवाली स्त्रियाँ —सभी आग में कूदी जैसे संकटग्रस्त हो गईं। अरुणाक्ष श्रीराम उज्ज्वल चरित्र वाली पवित्र देवी से बोले। ५२४

❀ मुल्लै युङ्गडन् मुत्तु मॅदिर्प्पिनुम्, वॅल्लुम् वॅण्णहै याय्विळै वुन्नुवाय्
अल्लै पोद वमैन्दनै यादलिन्, ॲल्लै तीर्न्द विडर्दरु वायॆन्ऱान् 525

मुल्लैयुम्–चमेली; कटल् मुत्तुम्–समुद्र के श्रेष्ठ मोती; ॲतिर्प्पितुम्–टकराएँगे तो भी; वॅल्लुम्–उनको जीतनेवाले; वॅळ् नकैयाय्–श्वेत दन्तवती; विळैवु उन्नुवाय् अल्लै–जो होगा वह सोचती नहीं; पोत अमैन्ततै आतलिन्–जाने का निश्चय कर चुकी हो, इसलिए; ॲल्लै तीर्न्त इटर् तरुवाय्–असीम संकट दिलाओगी; ॲन्ऱान्–कहा। ५२५

चमेली के फूल और समुद्रज मोती को भी हरानेवाले श्वेत दाँतों से शोभित प्रिये, सीता! तुम अपने कार्य का नतीजा नहीं समझतीं। मेरे साथ आने का निश्चय कर लिया —इससे तुम मुझे अपार संकट दिलाओगी। ५२५

❀ कोऱ्ऱ वन्नदु कूऱलुङ् गोहिलम्, शॆऱ्ऱ दन्न कुदलयळ् शीऱुवाळ्
उऱ्ऱु निन्ऱ तुयरमि दॊन्ऱुमे, ऎऱ्ऱु ऱन्दपि निन्बङ्गॊ लामॆन्ऱाळ् 526

कोऱ्ऱवन् अतु कूऱलुम्–राजा राम के वह कहने पर; कोकिलम् चॆऱ्ऱतु अन्न–कोकिल को जीतती-सी; कुतलैयळ्–मधुर तोतली बोली वाली; चीऱुवाळ्–कुपित होकर; उऱ्ऱु निन्ऱ तुयरम्–आपको लगा रहा दुख; इतु ऑन्ऱुमे–यही एक है; ऎन् तुऱन्त पिन्–मुझे त्यागने के बाद; इन्पम् आम् कॊल्–सुख ही सुख होगा क्या; ऎन्ऱाळ्–कहा। ५२६

विजयी राजा राम ने जब यह कहा तो कोकिलवयनी सीताजी क्रुद्ध होकर बोलीं कि ऐसी बात ! यही एक आपका संकट होगा क्या ? यानी आप मुझे त्याग देंगे तो आपको सुख ही सुख होगा ! यही है न ? । ५२६

❀ पिऱिदॊर् माऱ्ऱम् बॆरुन्दहै पेशलन्, मऱुहि वीऴ्न्दऴ मैन्दरु मादरुम्
शॆऱुविन् वीऴ्न्द नॆडुन्दॆरुच् चॆन्ऱनन्, नॆऱिपॆ ऱामै यरिदिनि नीङ्गुवान् 527

पॆरुन्तकै–उदार श्रीराम; पिऱितु ओर् माऱ्ऱम्–उत्तर में कोई वाक्य; पेचलन्–नहीं बोले; मैन्तरुम् मातरुम्–पुरुष और स्त्रियाँ; मऱुकि वीऴ्न्तु–व्याकुल होकर भूमि पर गिरकर रोये, इसलिए; चॆऱुविन् वीऴ्न्त–(सिंचे) खेत के समान जो बन गया, उस; नॆटु तॆरु चॆन्ऱतन्–उस लम्बे मार्ग में जाने लगे तो; नॆऱि पॆऱामै–मार्ग न पाने से; अरितिनिन् नीङ्कुवान्–सायास तय करते हुए जाने लगे। ५२७

श्रीराम आगे उत्तर में कुछ कह नहीं सके। वे उनको साथ लेकर जाने लगे। पुरुष और स्त्री सब गिरकर रोने लगे। उनके अश्रु के कारण मार्ग सिंचित खेत के समान हो गया। अधिक भीड़ के कारण मार्ग रुक जाता था। श्रीराम सायास आगे बढ़ते चले। ५२७

❀ शीरै शुऱ्ऱित् तिरुमहळ् पिन्शॆल, मूरि विऱ्कै यिळैयवन् मुन्शॆलक्
कारै यॊत्तवन् पोम्बडि कण्डवव्, वूरै युऱ्ऱ दुणर्त्तव् मॊण्णुमो 528

तिरु मकळ्–भगवती; चीरै चुऱ्ऱि–वल्कल पहने हुए; पिन् चॆल–अनुगमन करती गईं; मूरि विल् कै–बलवान धनुर्हस्त; इळैयवन्–अनुज लक्ष्मण; मुन् चॆल–आगे गये; कारै ऒत्तवन्–मेघश्याम; पोम् पटि–(उनके बीच) गये, वह प्रकार; कण्ट–जिसने देखा; अ ऊरै उऱ्ऱतु–उस नगर का जो हुआ; उणर्त्तवुम् ऒण्णुमो–(वह दुख) वर्णित करना सम्भव है क्या। ५२८

वल्कल पहने हुए सीताजी श्रीराम के पीछे जा रही थीं। हाथ में बलवान धनुष उठाए हुए लक्ष्मण उनके आगे जा रहे थे। बीच में श्रीराम के जाने का प्रकार देखकर वह नगर कैसे दुख में पड़ा, उसका वर्णन करना हमारे लिए सम्भव है क्या ? (नहीं।)। ५२८

❀ आरुम् बिन्न रळुदव लित्तिलर्, शोरुञ् जिन्दयर् यावरुञ् जूऴ्न्दनर्
वीरन् मुन्वन मेवुदुम् यामॆनाप्, पोरॊन् ऱॊल्लॊलि कैमिहप् पोयिनार् 529

पिन्नर्–उसके बाद; आरुम् अळुतु अवलितृतिलर्–रोते हुए दयनीय नहीं बने; चोरुम् चिन्तैयर् यावरुम्–खिन्नमन सभी; चूळ्न्ततनर्–एकत्र हुए; याम् वीरन् मुन्–हम, वीर के पहले ही; वनम् मेवुतुम्–वन जाएँगे; अँता–कहते हुए; पोर् ऑन्ऱु ऑल् ऑलि–युद्ध में उठता-सा जोर का शोर; कैमिक–अधिक मचाते हुए; पोयिनार्–गये। ५२६

इतना हो जाने के बाद लोग रोते-कलपते दयनीय बने रहने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए दुखाक्रान्त सभी एकत्र हुए; निर्णय किया कि हम श्री वीर राघव के जाने से पहले ही वन चले जायँगे। और युद्ध का-सा जोर का शोर करते हुए त्वरित गति से चल पड़े। ५२९

❀ तादै वाशल् कुरुहिनन् शार्दलुम्, कोदै वेलवन् ऱायरैक् कुम्बिडा
आदि मन्ननै यारुमि नीरॆन्ऱान्, माद रारुम् विळुन्दु मयङ्गिनार् 530

कोतै वेलवन्–माला से अलंकृत भालाधारी श्रीराम; तातै वाचल् कुरुकिनन्–पिता के महल के द्वार के निकट; चार्तलुम्–आने पर; तायरै कुम्पिटा–माताओं को नमस्कार करके; नीर्–आप; आति मन्ननै–प्रधान राजा को; आरुमिन्–धीरज बँधाइए; ॲन्ऱान्–कहा; मातरारुम्–माताएँ भी; विळुन्तु मयङ्कितार्–गिरकर मूर्च्छित हुईं। ५३०

श्रीराम जो माला से अलंकृत भालाधारी थे, चलते-चलते अपने पिता के महल के द्वार के निकट पहुँचे। तब उन्होंने अपनी माताओं को नमस्कार करके उनसे विनय की कि आप अपने पति चक्रवर्ती को सांत्वना दीजिए। यह सुनकर माताएँ बेहोश होकर गिर गईं। ५३०

❀ वाळ्त्ति नार्दम् महनै मरुहियै, एत्ति नारिळै योनै वळ्त्तिनार्
कात्तु नल्हुमिन् ऱॆय्वदङ् गाळॆन्ऱार्, नात्त ळुम्ब वरऱ्ऱि नडुङ्गुवार् 531

ना तळुम्प–जिह्वों पर घट्ठा पड़ जाय, ऐसा; अरऱ्ऱि–प्रलाप करके; नटुङ्कुवार्–काँपनेवाली माताओं ने; तम् मकनै–अपने पुत्र को; वाळत्तिनार्–आशीर्वाद दिया; मरुकियै एत्तिनार्–वधू की प्रशंसा की; इळैयोनै–अनुज को; वळ्त्तिनार्–साधुवाद दिया; तॆय्वतङ्काळ्–देवताओ; कात्तु नल्कुमिन्–उनकी रक्षा करने की कृपा कीजिए; ॲन्ऱार्–(यह प्रार्थना) कही। ५३१

वे फिर सँभलीं। "जीभों में घट्ठा पड़ जाए" —इतना विलाप करती हुई रोईं। उन्होंने श्रीराम की प्रशंसा की; वधू सीता को आशीर्वाद दिया और लक्ष्मण को साधुवाद दिया। उन्होंने देवताओं से विनय की कि इन्हें आप रक्षा प्रदान करने की कृपा कीजिए। ५३१

❀ अन्न ताय ररिदिऱ् पिरिन्दपिन्, मुन्नर् निन्ऱ मुनिवनैक् कैदॊळात्
तन्न दारुयिर्त् तम्बियुन् दामरैप्, पॊन्नुन् दानुमोर् तेर्मिशैप् पोयिनान् 532

अन्न तायर्–वैसी माताएँ; अरितिल् पिरिन्त पिन्–बहुत कष्ट के साथ अलग

हुईं, पश्चात्; मुऩ्ऩर् निऩ्ऱ–अपने सामने स्थित; मुऩिवऩै–महर्षि को; कै तॊऴा–हाथ जोड़कर नमस्कार करके; तऩ्ऩतु अरु उयिर् तम्पियुम्–अपने प्यारे प्राणसम अनुज; तामरै पॊऩ्ऩुम्–पंकजा देवी; तानुम्–और स्वयं; ओर् तेर् मिचै पोयिऩाऩ्–एक रथ पर (सवार होकर) चले। ५३२

वे बहुत कष्ट के साथ श्रीराम से अलग हुईं। तब श्रीराम अपने सामने स्थित वसिष्ठ महर्षि को नमस्कार करके अपने प्राणसम अनुज और पंकजा श्री लक्ष्मीदेवी के साथ सुमंत्र से लाये गये एक रथ पर आरूढ़ होकर चल पड़े। ५३२

5. तैल माट्टु पडलम् (तैल निमज्जन पटल)

❀ एविय कुरिशिल्पिऩ् याव रेहिलार्, माविय ऱानैयिऩ् मऩ्ऩै नीङ्गलात्
तेवियर् तविर्न्दनर् दॆय्व मानहर्, ओवियम् ऑऴिन्दन वुयिरि लामयाल् 533

मा इयल् ताऩैयिऩ्–वड़ी प्रकीर्तित सेना के स्वामी; मऩ्ऩै–चक्रवर्ती को; नीङ्क अल्लात–जो छोड़ नहीं जा सकीं; तेवियर् तविर्न्तऩर्–वे पत्नियाँ रह गईं; तॆय्वम् मा नकर्–दिव्य विशाल नगर के; ओवियम्–चित्र; उयिर् इलामैयाल्–प्राणहीन रहने से; ऑऴिन्तऩ–अपवाद हुए; एविय कुरिचिल् पिऩ्–(वनगमन की) आज्ञा-प्राप्त श्रीराम के पीछे; एकिलार् यावर्–गये कौन नहीं। ५३३

पिता की आज्ञा से वन जानेवाले श्रीराम के साथ कौन-कौन गये ? बहुत यशप्राप्त सेना के स्वामी चक्रवर्ती को जो छोड़ नहीं जा सकती थीं वे उनकी रानियाँ नहीं गईं। फिर उस दिव्य नगर के चित्र नहीं गये क्योंकि वे प्राणवंत नहीं थे। इनको छोड़ कौन थे जो उनके पीछे नहीं गये ? । ५३३

कैहणीर् परन्दुका ऱॊडरक् कण्णुहुम्, वॆय्यनीर् वॆळ्ळत्तु मॆळ्ळच् चेऱलाल्
उय्यवे ऴुलहुमान् ऱान नीरुलाम्, दॆय्वमी नॊत्तदच् चॆम्बॊऱ् ऱेररो 534

अ चॆम् पॊऩ् तेर्–वह लाल स्वर्ण का रथ; कैकळ्–पार्श्वों में; नीर परन्तु–जल फैलकर; काल् तॊटर–पहियों का पीछा करे, ऐसा; कण् उकुम्–आँखों से बहनेवाला; वॆय्य नीर् वॆळ्ळत्तु–गरम अश्रुप्रवाह में; मॆळ्ळ चेऱलाल्–धीरे-धीरे गया, इसलिए; एऴु उलकुम् ऒऩ्ऱु आऩ नीर्–सातों लोकों को अपने अन्दर समा लेनेवाले उस (युगान्त) जल-प्लावन में; उय्य–लोकोद्धरणार्थ; उलाम्–जो घूमता फिरता था; तॆय्वम् मीऩ् ऑत्ततु–उस दिव्य मत्स्य के समान लगता था। ५३४

जब श्रीराम का उत्तमस्वर्ण-रचित रथ चला, तब लोग अधिक रोये। उनके अश्रुजल का विपुल विस्तार हो गया। उसके बीच रथ उस मत्स्य के समान (जो विष्णुदेव का अवतार था) धीरे-धीरे चल रहा था, जो सातों

लोकों को अपने अन्दर समा लेकर फैले हुए प्रलय-जल पर जीवों का उद्धार करते हुए संचार करता था। ५३४

❀ मीन्पुहल् पॅऱ्वॅयि लॊदुङ्ग मेदियो, डान्पुहक् कदिरव नत्तम् बुक्कनन्
कान्पुहक् काण्गिले नॅन्ऱु कल्लदर्, तान्पुह मुडुहिन नॅन्नुन् दन्मयान् 535

कतिरवन्–सूर्य; कान् पुक काण्किलेन्–(श्रीराम को) वन जाते न देख सकूँगा; ऍन्ऱु–सोचकर; तान् कल् अतर् पुक–खुद पर्वत-मार्ग में जाने के लिए; मुटुकिनन् ऍन्नुम् तन्मैयान्–त्वरित रहा जैसे; मीन् पुकल् पॅऱ–नक्षत्र प्रकट होने देते हुए; वॅयिल् ऒतुङ्क–धूप को छिपने देते हुए; मेतियोटु आन्–भैंसों के साथ गायों के; पुक–(चरागाह से लौटकर) नगर में प्रवेश करते; अत्तम् पुक्कनन्–अस्तगिरि पर पहुँच गया। ५३५

सूर्य अस्ताचल पर जाकर छिप गया मानो श्रीराम का वन जाना देख नहीं सकता हो और वह खुद पर्वतपूर्ण जंगल के रास्ते में जल्दी जाना चाहता हो। तब आकाश में तारे उदित हुए। धूप छिप गई। भैंसें और गायें चरागाहों से नगर के अन्दर आ गईं। ५३५

पहुत्तवान् मदिहॊडु पदुमत् तण्णले, वहुत्तवा णुदलियर् वदन राशिबोल्
उहुत्तकण् णोरिन वॊळियु नीङ्गिड, मुहिऴ्त्तल हिऴन्दन मुळरि योट्टमे 536

पकुत्त वान् मति कॊटु–अर्धचन्द्र से; पतुमत्तु अण्णले–कमलासन ने, जो स्वयं; वकुत्त–रचाया; वाळ् नुतलियर्–उज्ज्वल ललाट वालियों की; वतनम् राचि पोल्–वदनराशियों के समान; मुळरि ईट्टम्–कमल समूह; उकुत्त कण् नीरिन–अश्रु बहाते हुए; ऒळियुम् नीङ्किट–प्रभा-विहीन होकर; मुकिऴ्त्तु–बन्द होकर; अऴकु इऴन्तन–आकर्षण खो गये। ५३६

कमल के पुष्प अयोध्या नगर की स्त्रियों के समान जिनके ललाटों को ब्रह्माजी ने अर्द्धचन्द्र के आधार पर (या चन्द्र के खण्डों को लेकर) बनाया था, आँसू (शहद) बहाते हुए निष्प्रभ होकर मुकुलित हो गये। ("कण्णीर्" में श्लेष है। कण् नीर्— आँसू; कळ् नीर्— मधु का जल।) । ५३६

❀ अन्दियिन् वॅयिलॊळि यऴिय वानहम्, नन्दलिल् केहयन् पयन्द नङ्गैतन्
मन्दरै युरैयॆनुङ् गडुविन् मट्किय, शिन्दयि निरुण्डदु शॆम्मै नीङ्गिये 537

अन्तियिन् वॅयिल् ऒळि–सायंकाल की धूप के; अऴिय–छिप जाने से; वान् अकम्–आकाश; मन्तरै उरै ऍन्नुम्–मन्थरा का वचन रूपी; कटुविन् मट्किय–विष के कारण मन्द हुए; नन्तल् इल्–दोषहीन; केकयन् पयन्त नङ्कै–केकय की पुत्री; तन् चिन्तैयिन्–के मन के समान; चॅम्मै नीङ्कि–(सिधाई) लाली से छूटकर; इरुण्टतु–अन्धकार से भर गया। ५३७

सन्ध्याकालीन धूप का प्रकाश भी चला गया। तब आकाश निर्दोष

केकयराज की पुत्री कैकेयी के मन के समान जो मंथरा के विषवाक्य से मैला होकर सिधाई छोड़कर कलुषित हो गया था, लालिमा छोड़कर अँधेरे से आवृत हो गया। (चॅम्मै— लालिमा, सिधाई।)। ५३७

परन्दुमी नरुम्बिय पशलै वानहम्
अरन्दयिन् मुनिवर नरैन्द शावत्ताल्
निरन्दर मिमैप्पिला नॅडुङ्ग णीण्डिय
पुरन्दर नुरुवॅनप् पॉलिन्द दॅङ्गुमे 538

मीन् परन्तु अरुम्पिय–नक्षत्रों से व्याप्त; पचलै वान् अकम्–ताजे रंग के आकाश भर में; अरनृतं इल् मुनिवरन्—शोक-रहित मुनि (गौतम) के; अरैन्त चापत्ताल्–कहे (दिये) शाप से; निरन्तरम्–निरन्तर; इमैप्पु इला–अपलक; नॅटु कण् ईट्टिय–लम्बी आँखों से भरे; पुरन्तरन् उरु ॲन–पुरन्दर के शरीर के समान; पॉलिन्ततु–दिखा। ५३८

आकाश में सब जगह नक्षत्र उदित हो गये। तब वह पुरन्दर के शरीर के समान दिखा जिस पर दुख से अप्रभावित मन वाले गौतम ऋषि के शाप के फलस्वरूप अपलक लम्बी आँखों से पूर्ण था। ५३८

❀ तिरुनहर्क् कोशनै यिरण्डु शॅन्रीरु
विरैशॅरि शोलैयै विरैवि नॅय्दिनान्
इरदनिन् ड्रिळिन्दुबि निराम निन्रुणै
उरैशॅरि मुनिवरो डुरैयुङ् गालये 539

इरामन्–श्रीराम; विरैविन्–जल्दी; तिरुनकर्क्कु–उस श्री-युक्त पुरी को; ओचनै इरण्टु चॅन्रु–दो योजन दूर जाकर; विरै चॅरि–(पुष्प के) सुवासपूर्ण; ओरु चोलैयै–एक उपवन में; ॲय्तिनान्–पहुँचे; पिन्–पश्चात्; इरतम् निन्रु–रथ से; इळिन्तु–उतरकर; इन् तुणै–सत्संगी बनकर; उरै चॅरि–उपदेश के वचन कहनेवाले; मुनिवरोटु–मुनियों के साथ; उरैयुम् कालै–ठहरे, तब। ५३९

श्रीराम आगे बढ़ते चले। अयोध्या के श्री-नगर से दो योजन दूर जाकर एक पुष्प-भरे उपवन में पहुँचे। वहाँ रथ से उतरकर वहाँ के ऋषि-मुनियों के सत्संग में उनके उपदेश सुनते हुए ठहरे। तब—। ५३९

❀ वट्टमो रोशनै वळैविर् रायनडु
ॲट्टनै यिडवुमो रिडमि लावहै
पुट्टहु शोलैयिन् पुरत्तैच् चूळन्दुताम्
विट्टिलर् कुरुशिलै वेन्दर् वेरुळोर् 540

वेन्तर्–राजा लोग; वेरु उळोर् ताम्–अन्य लोग सभी; वट्टम्–चारों ओर; ओर् ओचनै वळैविर्रु आय्–एक योजन का विस्तार बनकर; नटु–बीच में; ॲळ् तनै इटवुम्–तिल रखने के लिए भी; ओर् इटम् इला वकै–स्थान न रहा, ऐसा;

पुळ् तकु–खगों से पूर्ण; चोलैयिन् पुरत्तै चूळ्न्तु–उपवन के चारों ओर घेरकर; कुरुचिलै विट्टिलर्–युवराज के पास से हटे नहीं। ५४०

राजा और अन्य लोग एक योजन के विस्तृत भू-भाग में ऐसे भर गये कि तिल रखने को भी स्थान नहीं रह गया। वे खगकुल-कलकल-कलित उस उपवन के चारों ओर घेरे रहे और श्रीराम से अलग नहीं हुए। ५४०

❀ कुयिन्ऱन कुलमणि नदियिन् कूलत्तिल्
पयिन्ऱुयर् वालुहप् परप्पिऱ् पैम्बुलिल्
वयिन्ऱीरुम् वैहिना रीन्ऱुम् वाय्मडुत्
तयिन्ऱिलर् तुयिन्ऱिल रळुदु माळ्हिनार् 541

कुलम् मणि कुयिन्ऱ अन्न–श्रेष्ठ रत्नराशियाँ जटित हों, ऐसा; नतियिन् कूलत्तिल्–नदी के कूलों पर; पयिन्ऱु उयर् वालुकम् परप्पिल्–भरे, ऊँचे बालू के मैदानों पर; पचुमै पुल्लिल्–हरी घास पर; वयिन् तोऱुम्—स्थान-स्थान पर; वैकितार्–रहकर; ओन्ऱुम् वाय् मट्टुत्तु–कुछ भी मुख में रखकर; अयिन्ऱु इलर्–बिना खाये; तुयिन्ऱु इलर्–बिना सोये; अळुतु माळ्कितार्–रोये और व्यग्र हुए। ५४१

लोग (तमसा) नदी के कूलों पर, बालू के ऊँचे टीलों पर, हरी घास के मैदानों पर और स्थान-स्थान पर उन पर जड़ित श्रेष्ठ रत्नों की राशियों के समान ठहरे रहे। उन्होंने अपने मुख में (खाने के लिए) कुछ नहीं रखा— भूखे ही रहकर वे रोये और बिना सोये पड़े रहे। ५४१

❀ वाविविरि तामरैयिन् मामलरिन् वाशक्
काविविरि नाण्मलर् मुहिळ्त्तनैय कण्णार्
आविविरि पानुरैयि नाडैयणै याह
नाविविरि कूळैयिळ नव्वियर् तुयिन्ऱार् 542

वावि विरि–वापियों में खिले हुए; तामरैयिन् मा मलरिन्–कमल के श्रेष्ठ पुष्पों में; वाचम् विरि–सुवास बिखेरनेवाले; कावि नाळ् मलर्–नील कुवलय के सद्य-विकसित फल; मुकिळ्त्त अनैय–खिले हों, जैसे; कण्णार्–ऐसी आँखों वाली; नावि विरि कूळै–कस्तूरी का बासयुक्त केश वाली; इळ नव्वियर्—बालमृगी-सी तरुणियाँ; आवि विरि—धुआँ-सह; पाल् नुरैयिन् आटै–दूध के फेन के समान (महीन) वस्त्रों को; अणै आक–बिछावन बनाकर; तुयिन्ऱार्–सोईं। ५४२

(बहुत देर के बाद किसी तरह उनको नींद आ गई। तब निद्रा-मग्न उनका वर्णन किया जाता है।) वापियों पर खिले कमलों पर नील कुवलय खिले हों ऐसे लगनेवाले मुखों और आँखों वाली बालमृगी-सी स्त्रियाँ, जिनके केश से कस्तूरी की सुगन्धि छूट रही थी सुगन्धित धुएँ सहित दूध के फेन के समान वस्त्र को ही बिछावन बनाकर सो रहीं। ५४२

पॅरुम्बहल्	वरुन्दिऩर्	पिऱङ्गुमलै	तॅङ्गिऩ्
कुरुम्बैहळ्	पॉरुञ्जॅविलि	मङ्गयर्	कुऱङ्गिल्
अरुम्बऩैय	कॊङ्गययि	लम्बऩैय	वुण्कण्
करुम्बऩैय	शॅञ्जॊनविल्	कऩ्ऩियर्	तुयिऩ्ऱार् 543

अरुम्पु अऩैय कॊङ्कै–(सेमर) कली के समान स्तन; अयिल् अम्पु अऩैय–तीक्ष्ण बाण के समान; उण् कण्—काजल-लगी आँखों वाली; करुम्पु अऩैय–इक्षु (-रस)-तुल्य; चॅम् चॊल् नविल्–मधुरभाषी; कऩ्ऩियर्–बालाएँ; पॅरु पकल् वरुन्तिऩर्–लम्बे दिन के समय में श्रम उठाकर; पिऱङ्कुम् मुलै–जिनके उभरे स्तन; तॅङ्किऩ् कुरुम्पैकळ् पॊरुम्–नारियल के कच्चे फलों के समान थे; चॅविलि मङ्कैयर्–उन धाइयों के; कुऱङ्किल्–ऊरुओं पर; तुयिऩ्ऱार्–(सिर रखे) सोईं। ५४३

सेमरकली के समान पयोधरों और तीक्ष्ण भाले के समान आँखों वाली, इक्षुरस-मधुरभाषिणी कन्याएँ दिन भर चलते आने से श्रांत होकर नारियल के कच्चे फलों के समान कुचों वाली धाइयों के ऊरुओं पर सिर रखकर सोयी पड़ी थीं। ५४३

पूवह	निऱैन्दपुळि	ऩत्तिडर्ह	ळोरुम्
मावहिरि	ऩुण्गणर्	मडप्पिडियिऩ्	वैहच्
चेवह	मणैन्दशिरु	हट्करिह	ळॅऩ्ऩत्
तूवयि	लिरुन्दमऱ	मऩ्ऩरह	डुयिऩ्ऱार् 544

पू अकम् निऱैन्त–फूलों से भरे; पुळिऩम् तिटर्कळ् तोरुम्–नदियों के पुलिनों के टीलों पर; मा वकिरिऩ् उण् कण्णर्–टिकोरे की फाँक के समान और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियाँ; मटम् पिटियिऩ् वैक–छोटी हथिनियों के समान सोईं; तू अयिल् इरुन्त—मांसयुक्त भाले लिये हुए; मऱम् मऩ्ऩर्कळ्–वीर राजा लोग; चेवकम् अणैन्त—निद्रा-रत; चिरु कण् करिकळ् अॅऩ्ऩ–छोटी आँखों वाले हाथियों के समान; तुयिऩ्ऱार्–सोये। ५४४

नदी के बीच पुलिन थे जिनमें विकसित पुष्प-सह तरु, लताएँ आदि थीं। उन पर टिकोरे की फाँक-सी और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियाँ (राजकुल की स्त्रियाँ) छोटी हथिनियों के समान सो रही थीं। उनके पास मांसलिप्त भालों वाले वीर राजा लोग छोटी आँखों के गजों के समान सो रहे थे। ५४४

तहवुमिहु	तवमुमिवै	तळुववुयिर्	कॊळुनर्
मुहमुमव	रुळुतुहर्	हिलर्तुयरिऩ्	मूळ्हि
अहवुमिळ	मयिल्हळुयि	रलशियऩ	वऩैयार्
महवुमुलै	वरुडविळ	महळिर्ह	डुयिऩ्ऱार् 545

इळ मकळिर्कळ्–छोटी उम्र की स्त्रियाँ; तकवुम्–निष्पक्ष व्यवहार; मिकु

तवमुम्–और अधिक तपस्या; इवै तऴुव–इनसे युक्त; उयर्–श्रेष्ठ; कोऴुनर् मुकमुम्–पतियों का मुख (उनकी कृपादृष्टि); अवर् अरुळुम्–उनकी कृपा (सहानुभूति); नुकर्किलर्–बिना भोगे; तुयरिल् मूऴ्कि–दुख में मग्न; मकवु मुलै वरुट–शिशु को स्तन सहलाने देते हुए; उयिर् अलचियन–प्राण दुर्बल पड़े; अकवुम् इळ मयिल्कळ् अन्नैयार्–नाचनेवाले छोटी उम्र के मयूरों के समान; तुयिन्ऱार्–थककर सो रहीं। ५४५

कुछ (सन्तानवती) स्त्रियाँ अपने पतियों की, जो श्रेष्ठ रीति से तपस्या के समान अपना गार्हस्थ्य जीवन विताते थे, सहानुभूतिपूर्ण कृपा-दृष्टि और उनके कृपा-वचन का सुख उठा न सकीं। वे इतनी व्याकुल थीं। उनके शिशु उनके स्तनों के चूचुकों को पकड़कर घुमा रहे थे। उसकी भी उनको सुध नहीं थी। नाचकर थके हुए मोरों के समान वे श्रांत पड़ी सो रही थीं। ५४५

माहमणि वेदिहैयिन् मादविशॅय् पन्दल्
केहय नॅडुङ्गुल मॅन्नच्चिलर् किडन्दार्
पूहवन मूडुपडु हर्प्पुळिन मुन्ऱिल्
तोहैयिळ वन्ननिरै यिऱ्चिलर् तुयिन्ऱार् 546

चिलर्–कुछ लोग; वेतिकैयिन्–चबूतरों पर; माकम् अणि–आकाश तक ऊँचे, बढ़ी हुई; मातवि चॅय् पन्तल्–माधवी लता के वितान के नीचे; नॅटु केकयम् कुलम् अॅन्न–विशाल मयूरों के समूह के समान; किटन्तार्–पड़े रहे; चिलर्–कुछ (स्त्रियाँ); पूकम् वनमूटु–पूगवन-मध्य; पटुकर्–जलाशयों के निकट; पुळितम् मुन्ऱिल्–बालू के टीलों पर; तोकै इळ अन्नम् निरैयिल्–पंखों वाले बाल-हंसों की श्रेणी के समान; तुयिन्ऱार्–सोती रहीं। ५४६

वहाँ के उद्यानों में चबूतरे थे। उन पर माधवीलताओं के वितानों के नीचे कुछ स्त्रियाँ विशाल मयूरसमूहों के समान पड़ी रहीं। कुछ स्त्रियाँ पूगवन-मध्य जलाशयों के पास बालू के टीलों पर हंसों की पंक्ति के समान सो रही थीं। ५४६

❋ चम्बह नऱुम्पॊऴिल्ह ळिऱ्ऱरुण वञ्जिक्
कॊम्बळ हॊशिन्दन वॅनच्चिलर् कुऴैन्दार्
वम्बळवु कॊङ्गयॊडु वालुह वळाहत्
तम्बवळ वल्लिह ळॅनच्चिल रशैन्दार् 547

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; चम्पकम् नऱु पॊऴिल्कळिल्–सुबासित चम्पकवनों में; तरुणम् वञ्चि कॊम्पु–तरुण पुष्पलताएँ; अऴकु ऑचिन्तन–मनोरम रीति से लचकी गिरी हों, जैसे; कुऴैन्तार्–मुरझाई पड़ी रहीं; चिलर्–और कुछ; वम्पु अळवु कॊङ्कै यॊटु–अँगियाबद्ध स्तनों के साथ; वालुकम् वळाकत्तु–बालू के मैदानों पर; अम् पवळ वल्लिकळ् अॅन–सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान; अचैन्तार्–शिथिल पड़ी रहीं। ५४७

कुछ चम्पकवनों में मुरझाई पड़ी सुन्दर पुष्पलताओं के समान क्लेश-तप्त पड़ी रहीं। कुछ अन्य स्त्रियाँ अँगिया-बद्ध स्तनों के साथ बालू के मैदानों पर, सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान थकी हुई पड़ी रहीं। ५४७

कुङ्गुम मलैक्कुळिर् पनिक्कुळ्ळमि यॆऩ्ऩत्
तुङ्गमुलै यिऱ्ऱुह ळुऱ्च्चिलर् तुयिऩ्ऱार्
अङ्गयणै यिऱ्पॊलि वळुङ्ग मुहमॆल्लाम्
पङ्गय मुहिळ्त्तऩ वॆऩ्च्चिलर् पडिन्दार् 548

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; कुङ्कुमम् मलै–कुंकुम-पर्वत पर; कुळिर् पऩि–शीतल हिम; कुळ्ळमि ॲऩ्ऩ–जमा रहा, जैसे; तुङ्कम् मुलैयिल्–तुंग स्तनों पर; तुकळ् उऱ–धूलि जमी रही; तुयिऩ्ऱार्–इस प्रकार सोईं; चिलर्–अन्य कुछ; मुकम् ॲल्लाम्–मुखों के; मुकिळ्त्तऩ पङ्कयम् ॲऩ–मुरझाकर बन्द हुए कमल-पुष्पों के समान; पॊलिवु अळुङ्क–प्रभा के छूटते; अम् कै अणैयिऩ्–सुन्दर हाथों के तकियों पर; पटिन्तार्–(सिर रखकर) भूमि पर लेटी रहीं। ५४८

कुछ स्त्रियाँ अपने तुंग स्तनों को, कुंकुम-पर्वत पर हिम जमा हो जैसे धूल-धूसरित करती हुई सो रही थीं। कुछ स्त्रियाँ बन्द कमलसम, प्रभाहीन मुखों के साथ अपने हाथों पर, तकिये के समान, सिर रखे सो रही थीं। ५४८

तॊडुत्तकलि डैच्चिलर् तुवण्डनर् तुयिऩ्ऱार्
अडुत्तवडै यिऱ्चिल रळिन्दऩ रयर्न्दार्
उडुत्ततुहिल् शुऱ्ऱॊरु तलैच्चिल रुऱैन्दार्
पडुत्तकुळै यिऱ्चिलर्हळ् कण्पडै पयिऩ्ऱार् 549

चिलर्–कुछ (स्त्रियाँ); तॊटुत्त कल् इटै–पास-पास लगे रहे पत्थरों पर; तुवण्टऩर् तुयिऩ्ऱार्–मुरझाई पड़ी सोती रहीं; चिलर्–कुछ; अटुत्त अटैयिल्–नीचे बिखरे रहे पत्तों पर; अळिन्तऩर् अयर्न्तार्–मन मारकर सो रही थीं; चिलर् उटुत्त तुकिल् चुऱ्ऱु–पहने हुए वस्त्र की लपेटों से; ऑरु तलै–एक सिरे पर (दामन पर); उऱैन्तार्–सोईं; चिलर्कळ्–कुछ लोग; पटुत्त कुळैयिल्–खुद पत्ते बिछाकर उन पर; कण् पटै पयिऩ्ऱार्–आँख का उन्मीलन किया। ५४९

कुछ पास-पास लगे पड़े रहे पत्थरों पर चूर होकर पड़ी रहीं। कुछ स्त्रियाँ नीचे बिखरे रहे पत्तों पर क्लांत हो लेटी रहीं। कुछ स्त्रियाँ अपनी कमर पर लपेटी हुई साड़ी के दामन को बिछाकर उस पर सिर रखे सो रही थीं। कुछ स्त्रियों ने खुद पत्ते बिछाये और उन पर लेटकर अपने को भूल गईं। ५४९

❀ एऩयरु मिऩ्ऩण मुऱङ्गिऩ रुऱङ्गा
माऩवऩ् मन्दिरिशु मन्दिरनै वाॅऩ्

रुन्नमिल् परुङ्गुण मॊरुङ्गुडैय वुन्नाल्
मेन्निहऴ्व दुण्डवुरै केळॆन्न् विळम्बुम् 550

एनैयरुम्–अन्य लोग भी; इन्नतणम्–इस तरह; उऱङ्कित्तर्–सोये; उऱङ्का मानवनुम्–जो नहीं सोये, वे 'मानव' (मनुकुल-सम्भूत) श्रीराम; मन्तिरि चुमन्तिरनै–मन्त्री सुमन्त्र को; वा ऍन्ऱु–आइए कहकर; ऊनम् इल्–दोषहीन; पॆरुम् कुणम्–श्रेष्ठ गुण; ऒरुङ्कु उटैय–एक साथ रखनेवाले; उन्ताल्–आपसे; मेल् निकऴ्वतु–आगे करने योग्य; उण्टु–काम है; अ उरै केळ्–वह कथन सुनिए; ऍन्न–कहकर; विळम्पुम्–कहने लगे। ५५०

अन्य लोग भी कहीं-कहीं किसी विध निद्रारत हो रहे। तब मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम ने, जो सो नहीं रहे थे, मंत्री सुमंत्र को पास बुलाया और कहा कि निर्दोष और गुण-पूर्ण! आपके द्वारा एक काम होना है। वह सुनिए। यह कहकर वे आगे बोले। ५५०

❀ पूण्डपे रन्बि नारैप् पोक्कुव दरिदु पोक्का
दीण्डुनिन् ऱेहल् पॊल्ला दॆन्दैनी यिरद मिन्ने
तूण्डिनै मीळ्व दाक्किऱ् चुवट्टैयोर्न् दॆन्नै यङ्गे
मीण्डन नॆन्न मीळ्व रिदुनिन्नै वेण्डिऱ् ऱॆन्ऱान् 551

पूण्ट पेर् अन्पिनारै–मेरे ऊपर बड़ा प्रेम रखनेवाले इनको; पोक्कुवतु–अलग कर भेजना; अरितु–सुलभ नहीं है; पोक्कातु–उनको भिजवाये बिना; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकल्–हमारा जाना; पॊल्लातु–अन्याय होगा; ऍन्तै नी–पितृतुल्य आप; इरतम्–रथ को; इन्ने तूण्टिनै–अभी चलाकर; मीळ्वतु आक्किल्–नगर को लौट गया ऐसा करेंगे; चुवट्टै ओर्न्तु–चिह्न देखकर; ऍन्नै अङ्के मीण्टनन् ऍन्न–मुझे वहाँ लौटा हुआ मानकर; मीळ्वर्–वे भी लौटेंगे; निन्नै वेण्टिऱ्ऱु–आपसे प्रार्थना है; इतु–यह; ऍन्ऱान्–कहा। ५५१

मुझ पर अपार प्रेम रखनेवाले इनको वापस भेजना आसान नहीं लगता। उनको लौटा के भेजे बिना यहाँ से आगे जाना भी बुरा होगा। इसलिए मेरे पितृतुल्य आप हमारे रथ को लौटाकर नगर ले जाइए। लोग भी रथ-चिह्न देखकर मुझे अयोध्या लौटा हुआ मानकर अयोध्या चले जाएँगे। यही आपसे प्रार्थना है। (वाल्मीकि और तुलसी के अनुसार सुमंत्र यहाँ से वापस नहीं भेजे जाते। गंगा नदी पहुँचने के बाद भेजे जाते हैं।)। ५५१

चॆव्विय कुरुशिल् कूऱत् तेर्वला नुणर्त्तु वानव्
वॆव्विय तायिऱ् ऱीय विदियिनिन् मेलन् पोलाम्
इव्वयि निन्नै नीक्कि यिन्नुयिर् नीत्ते नल्लेन्
अव्वयि नन्नैय काण्डऱ् कमैदला लळिय नॆन्ऱान् 552

चॅव्विय कुरुचिल्–सुशील राजा राम के; कूर–यह कहने पर; तेर् वल्लान्–रथ-सारथ्य-चतुर; उणर्त्तुवान्–समझाते हुए; अळियन्–दयनीय मैं; इ वयिन् निन्तै नीक्कि–यहाँ, (इस तरह) आपको छोड़कर; इन् उयिर् नीत्तेन् अल्लेन्–प्यारे प्राणों को बिना छोड़े; अ वयिन्–वहाँ (नगर में); अतैय काण्टर्कु–(वहाँ जो होंगे), उन दुख-दृश्यों को देखने के लिए; अमैतलाल्–(आपका कहना) मार्ग बनता है, इसलिए; अ वॅव्विय तायिन्–उन क्रूर माता से भी अधिक; तीय वितियिनिन्–बुरी विधि से भी अधिक; मेलन् पोल् आम्–बढ़ा हुआ क्रूर बनूँगा ही; ॲन्रान्–कहा। ५५२

यह सुनकर रथसारथ्य-चतुर सुमंत्र एक दम विचलित हो गये। श्रीराम सुशील राजा थे। उनके कथन का खण्डन हो नहीं सकता। इसलिए सुमंत्र उनको समझाते हुए कहने लगे। मैं बड़ा दयनीय हूँ। आपको इधर छोड़कर बिना जीवन त्यागे, उधर आपके वियोग से जो अनर्थ होंगे —उनको देखने के लिए मैं जाऊँ, यही आपकी सलाह का अर्थ है! तब मैं क्रूर कैकेयी से भी बढ़कर और निर्मम विधि से भी अधिक निष्ठुर हो गया! । ५५२

❀ देवियु मिळवलुन् दॉडरच् चॅल्वतैप्, पूवियल् कानहम् पुहवुय्त् तेनॅन्गो
कोविनै युडन्कॉड् कुरुहि नॅन्गो, यावदु कूरुहे निरुम्बि नॅञ्जिनेन् 553

इरुम्पित् नॅञ्चित्तेन्–लोहे का दिल वाला मैं; तेवियुम् इळवलुम् तॉटर–देवी और अनुज के अनुसरण करते; चॅल्वतै–श्रीमान (राघव) को; पू इयल्–पुष्प भरे; कानकम् पुक–कानन में प्रविष्ट; उय्त्तेन्–कराया; ॲन्को–कहूँ क्या; कोविनै–राजा को; उटन् कॉटु कुरुकित्तेन्–साथ लेकर आया; ॲन्को–कहूँ; यावतु कूरुकेन्–क्या कहूँगा। ५५३

वहाँ जाकर मैं क्या कहूँगा? कहूँ कि लौहदिल वाला, मैंने देवी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ श्रीराम को पुष्पतरुपूर्ण जंगल में भेज दिया? या यह (झूठ) कहूँ कि राजा राम को साथ लाया हूँ? उनसे क्या कहूँगा? । ५५३

❀ तारुडै मलरिनु मॉदुङ्गत तक्किला, वारुडै मुलैयॉडु मदुहै मैन्दरैप्
पारिडैच् चॅलुत्तिनेन् पऴैय नण्बिनेन्, तेरिडै वन्दनॅन् ऱीदि लेनॅन्गो 554

पऴैय नण्पिन्तेन्–बहुत दिनों का स्नेही मैं; तार् उटै (य) मलरित्तुम्–समान रूप से फैले हुए पुष्पों पर भी; ऑतुङ्क तक्कु इलात–चलने में असमर्थ; वार् उटै मुलैयॉटु–अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीता के साथ; मतुकै मैन्तरै–बलिष्ठ नौजवानों को; पार् इटै चॅलुत्तित्तेन्–भूमि पर चलने देते हुए; तीतु इलेन्–बिना आँच के; तेरिटै वन्ततॅन्–रथ पर सवार होकर आया; ॲन्को–कहूँ। ५५४

सुमंत्रजी आगे पूछते हैं कि क्या मैं उनसे यह कहूँ कि बहुत दिनों का

स्नेही मैं पुष्प पर भी न चल सकनेवाले मृदुल चरणों की और अँगिया-निविष्ट स्तनों वाली सीताजी के साथ वीर नौजवान श्रीराम और लक्ष्मण को पैदल चलने देकर, बिना किसी आँच के रथ पर बैठकर सुखपूर्वक आ गया ? । ५५४

❀ वन्बुलक् कन्मन मदियिल् वञ्जनेन्
अॅन्बुलप् पुरवुडैन् दिरङ्गु मन्नन्पाल्
उन्बुलक् कुरियशॉ लुणर्त्तच् चॅल्हॅन्नो
तॅन्बुलक् कोमहन् रूदिर् चॅल्हॅन्नो 555

वन् पुलम् कल्–कठोर स्थानों के पत्थर के समान; मनम्–मन का; मति इल् सद्बुद्धि-हीन; वञ्चनेन्–वंचक मैं; अॅन्पु उलप्पु उरु–शरीर शिथिल हो, ऐसे; उटैन्तु–विदीर्णमन होकर; इरङ्कुम्–दुखी रहनेवाले; मन्नन् पाल्–राजा के पास; उन् पुलक्कु उरिय–आपके, अपनी बुद्धि में सही मानकर; चॉल्–वचनों को; उणर्त्त–कहने के लिए; चॅल्कॅन्नो–जाऊँ; तॅन् पुलम् कोमकन्–दक्षिण दिशा के राजा (यम) के; तूतिन्–दूत के समान; चॅल्कॅन्नो–जाऊँ। ५५५

मैं बड़ा कठोर-दिल हूँ। कठोर स्थल के पत्थर से भी कठिन मेरा चित्त है। बुद्धि भी मेरी नीच है। वंचक हूँ! आपके वियोग से शरीर को दुर्बल और मन को विदीर्ण होने देते हुए शोकसंतप्त रहनेवाले राजा के पास, आप जो अब अपनी सन्मति के अनुसार कह रहे हैं —उन बातों को कहने के लिए दक्षिण दिशा के देवता यम के दूत के समान जाऊँ मैं? । ५५५

नाऱ्रिशै मान्दरु नहर माक्कळुम्, तेऱ्रिनर् कॉणर्वरॅन् शिरुवन् रन्नयॅन्
राऱ्रिन वरशनै यैय वॅय्यवॅन्, कूऱ्रुरळ् शॉल्लिनार् कॉलैशॅय् वेन्गॊलो 556

ऐय–प्रभु; नाल् तिचै मान्तरुम्–(आपके साथ) चारों दिशाओं के लोग (जो आये हैं); नकरम् माक्कळुम्–और नगर के लोग; अॅन् चिऱुवन् तन्नै–मेरे वत्स को; तेऱ्रिनर् कॉणर्वर्–समझा-बुझाकर लौटा लाएँगे; अॅन्ऱु–समझकर; आऱ्रित्त अरचनै–धैर्य अवलम्बित कर रहनेवाले राजा को; वॅय्य–तापक; अॅन्–मेरे; कूऱ्रु उरळ्–यम के समान; चॉल्लिनाल्–वचनों से; कॉलै चॅय्वेनो–हत्या करनेवाला बनूँ। ५५६

हे प्रभु! चक्रवर्ती यही सोचकर सान्त्वना पा रहे हैं और जीवन धारण कर रहे हैं कि चारों ओर से जो लोग आये थे, वे और अयोध्या नगर के वासी मिलकर मेरे वत्स श्रीराम को समझा-बुझाकर ले आएँगे। मैं जाऊँ और उनसे प्राण सुखानेवाले, यम-सम वचन से उनके प्राण निकाल दूँ? । ५५६

❀ अङ्गिमेल् वेळ्विशॅय् दरिदि नोर्पॅऱ्ऱ
शिङ्गवे ऱहन्ऱदॅन् रुणर्त्तच् चॅल्हॅन्नो

अङ्गळ्को महऱ्किनि यॆन्निऱ् केहयन्
नङ्गये कडैमुऱै नल्लळ् पोलुमाल् 557

ऍङ्कळ् को मकऱ्कु–हमारे चक्रवर्ती के पास; नी अङ्कि मेल्–आप अग्नि पर; वेळ्वि चॆय्तु–अनेक यज्ञ करके; अरितिन् पॆऱ्ऱ–अपूर्व रीति से आपने जिनको प्राप्त किया; चिङ्कम् एऱु–पुरुषसिंह; अकन्ऱतु ॲन्ऱु–बिछुड़ गये, यह; उणर्त्त चॆल्कॆतो–कहने के लिए जाऊँ; इनि–अब; कटै मुऱै–आखिर; केकयन् नङ्कैये–केकयपुत्री ही; ॲन्निन् नल्लळ् पोलुम्–मुझसे भली बनेगी शायद। ५५७

मैं अपने चक्रवर्ती के पास जाऊँ और यह कहूँ कि आपका पुत्र, जिसको आपने अग्नि पर अनेक यज्ञों के अंग-स्वरूप होम करके बहुत कष्ट के साथ प्राप्त किया है, वह पुरुष-सिंह आपको छोड़कर जंगल चला गया ? तब तो आखिर केकयतनया मुझसे भली बनी ! । ५५७

❀ मुडिवुऱ विन्नन मॊऴिन्द पिन्नरुम्
अडियुऱत् तऴुविन नऴुङ्गिप् पैयरा
इडियुऱत् तुवळुव दॆन्नु मिन्नलन्
पडियुऱप् पुरण्डनन् पलवुम् पन्निनान् 558

इन्नन मुटिवु उऱ–ऐसा, पूर्ण रूप से; मॊऴिन्त पिन्नरुम्–अपना (विचार) कहने के बाद भी; अऴुङ्कि–और दुखी होकर; पै अरा–फन वाला सर्प; इटि उऱ–वज्र के गिरने पर; तुवळुवतु ॲन्नुम्–तड़पता हो, जैसी; इन्नलन्–वेदना के साथ; अटि उऱ तऴुविनन्–उनके चरणों को खूब पकड़कर; पटि उऱ–भूमि पर; पुरण्टनन्–लोटते हुए; पलवुम् पन्निनान्–अनेक बातें कहीं। ५५८

सुमंत्र, जो कहना चाहते थे, वह सब कह चुके। फिर भी उनका दुख कम नहीं हुआ और वज्राहत सर्प जैसे तड़पता है वैसे दुखसंतप्त होकर वे श्रीराम के पैरों पर गिरे और उनको पकड़कर लोटे। और विविध बातें कहते हुए विलाप करने लगे। ५५८

❀ तडक्कया लॆडुत्तवऱ् ऱऴुविक् कण्णिनीर्
तुडैत्तुवे ऱिरुत्तिवैत् तिनैय शॊल्लिनान्
अडक्कुमैम् बॊऱियॊडु करणत् तप्पुऱम्
कडक्कुम्वा लुणर्विनुक् कणुहुङ् गाट्चियान् 559

अटक्कुम्–दाँत; ऐन्तु पॊऱियॊटु–पाँचों इन्द्रियों के साथ (इन्द्रिय-निग्रह करके); करणत्तु अ पुऱम्–अन्तःकरणों को पार कर, उस पार; कटक्कुम्–जो गया रहता है; वाल् उणर्विनुक्कु–शुद्ध ज्ञान के लिए; अणुकुम्–पास आनेवाले; काट्चियान्–रूप के (श्रीराम) ने; अवन्–उनको; तट कैयाल् ॲटुत्तु–विशाल हाथ से उठाकर; तऴुवि–गले लगाकर; कण्णिन् नीर् तुटैत्तु–आँखों से आँसू पोंछकर; वेऱु इरुत्ति वैत्तु–अलग ले जाकर, बिठाकर; इनैय चॊल्लिनान्–ये बातें कहीं। ५५९

श्रीराम इन्द्रियनिग्रह के द्वारा सारे अन्तःकरणों के पार जाकर शुद्धज्ञान-प्राप्त तपस्वियों के ही ज्ञानगम्य भगवान हैं। उन्होंने सुमंत्र को अपने विशाल हाथों से उठाया और गले से लगा लिया। उनकी आँखों से बहनेवाले आँसू को पोंछकर उनको अलग ले गये। फिर वे उनसे बोले। ५५९

❀ पिऱत्तलीऩ्	ऱुऱ्ऱपिऩ्	पॅरुव	यावॆयुम्
तिऱत्तुळि	युणर्वदोर्	शॆम्मै	युळ्ळत्ताय्
पुऱत्तुरु	पॆरुम्बऴि	पॊदुविऩ्	ऍय्दवुम्
अऱत्तिऱ	मऱत्तियो	ववल	मुण्डॆऩा 560

पिऱत्तल् ऒऩ्ऱु उऱ्ऱ पिऩ्–जन्म लेने के बाद; पॆरुव यावॆयुम्–सहज-प्राप्य सभी (सुख-दुखों) को; तिऱत्तु उळ्ळि–खूब सोचकर; अऱिवतु ओर्–समझनेवाले; चॆम्मै उळ्ळत्ताय्–निष्पक्ष विवेकी; पुऱत्तु उऱु–बाहर से आनेवाले; पॆरु पऴि–बड़े अपयश को; पॊतु इऩ्ऱु–असाधारण रूप से; ऍय्तवुम्–मैं प्राप्त करूँ, इस स्थिति में भी; अवलम् उण्टु ऍऩा–दुख होगा, इस ख्याल से; अरम् तिऱम्–धर्म का अंश; मऱत्तियो–भूल जायँगे। ५६०

हे सुमंत्रजी! आप विवेकशील महात्मा ज्ञानी हैं। आप जानते हैं कि जन्म ले लेने के बाद जीव को सुख-दुख प्राप्त होंगे ही। उनके सम्बन्ध में बिना किसी चंचलता के, सोच-समझनेवाले विवेकी! आप यह जानते हुए भी कि जंगल न जाऊँ तो मेरा असाधारण अपयश होगा, दुख से डरकर धर्म का प्रकार भूल जाएँगे? । ५६०

❀ मुऩ्बुनिऩ्	ऱिशैनिऱीइ	मुडिवु	मुऱ्ऱिय
पिऩ्बुनिऩ्	ऱुऱुदियैप्	पयक्कुम्	पेरऱम्
इऩ्बम्वऩ्	दुऱुमॆऩि	लियैव	दायिडॆऩ्
तुऩ्बम्वऩ्	दुऱुमॆऩिऱ्	ऱुऱक्कऱ्	पालदो 561

मुऩ्पु निऩ्ऱु–(पुरुषार्थों में) पहला रहकर; इचै निऱीइ–यश स्थापित करके; मुटिवु मुऱ्ऱिय पिऩ्पुम्–(जीवन का) अन्त होने के बाद भी; निऩ्ऱु–उसके साथ रहकर; उऱुतियै पयक्कुम्–(जीव को) परलोक में भी हित करनेवाला; पेर् अऱम्–सम्मान्य धर्म को; इऩ्पम् वऩ्तु उऱुम् ऍऩिल्–सुख मिलेगा तो; तुऱक्कऱ् पालतो–त्याज्य हो जायगा क्या। ५६१

धर्म प्रथम पुरुषार्थ है। वह इह-जीवन में यश दिलाता है और साथ रहकर पर-जीवन में भी हित करता है। क्या वह श्रेष्ठ धर्म (त्यागने पर), सुख मिलने की सम्भावना हो तो त्याज्य हो जायगा? (न वह दुख के कारण त्याज्य है, न सुख के कारण। वह हमेशा पालनार्ह है।)। ५६१

निऱप्परुम् बडैक्कल निऱत्ति नॆय्दवुम्
मऱप्पयऩ् विळैक्कुरुम् वऩ्मै यऩ्ऱरो
इऱप्पिऩुन् दिरुवॆला मिऴप्प वॆय्दिऩुम्
तुऱप्पिल ररमॆऩल् शूर रावदे 562

चूरर् आवतु–शूर बनते हैं; निऱम् पॆरु पटै–उज्ज्वल और सबल; कलम्–हथियार; निऱत्तिऩ् ऎय्तवुम्–वक्ष पर लगे; मऱम् पयऩ्–और वीरता का पुरस्कार; विळैक्कुरुम्–(विजय) दिलानेवाले; वऩ्मै अऩ्ऱु–साहस के कारण नहीं; तिरु ऎल्लाम् इऴप्प ऎय्तिऩुम्–सारी सम्पत्ति खोनी पड़े, तो भी; इऱप्पिऩुम्–मृत्यु हो जाय, तो भी; अऱम् तुऱप्पु इलर्–धर्म न त्यागेंगे; ऎऩले–इस यश के कारण ही। ५६२

आखिर शूर कौन होते हैं ? उज्ज्वल भाले आदि का वार अपने वक्ष पर झेलकर वीरता का पुरस्कार, जो विजय है उसको प्राप्त करना ही शूरता है ? नहीं। पर शूरता सारी सम्पत्ति खोने पर भी, मृत्यु को गले लगाने की नौबत आने पर भी धर्म न त्यागना ही है ! । ५६२

❀ काऩ्पुऱञ् जेऱलि नरुमै काण्डियाल्
वाऩ्पिऱङ् गियपुहऴ् मऩ्ऩर् तॊल्हुलम्
याऩ्पिऱन् दऱत्तिऩिऩ् ऱिऴुक्किऱ् ऱॆऩ्ऩवो
ऊऩ्ऱिऱन् दुयिर्गुडित् तॊऴिरुम् वेलिऩाय् 563

ऊऩ् तिऱन्तु–(शत्रु का) शरीर चीरकर; उयिर् कुटित्तु–प्राण पी (हर) कर; ऒऴिरुम्–शोभनेवाले; वेलिऩाय्–भाले वाले; काऩ् पुऱम् चेऱलिऩ्–(मेरे) वन जाने में; अरुमै काण्टि–अधिक संकट का अनुमान करते हैं; वाऩ् पिऱङ्किय–आकाश में भी (व्याप्त) रहनेवाले; पुकऴ् मऩ्ऩर्–यशस्वी राजाओं का; तॊल् कुलम्–प्राचीन कुल; याऩ् पिऱन्तु–मेरे जन्म लेने से; अऱत्तिऩ् निऩ्ऱु–धर्म से; इऴुक्किऱ्ऱु–डिग गया; ऎऩ्ऩवो–कहा जाय। ५६३

शत्रु-शरीर को चीरकर रक्त पीकर चमकनेवाले भाला के धारक ! आप मेरे वन जाने में दुख देखते हैं ! पर यह देखते नहीं कि स्वर्ग-व्यापी यशस्वी राजाओं का मेरा प्राचीन कुल मेरे जन्म से (अगर मैं वन नहीं जाऊँ तो, उस हालत में) धर्म-विमुख हो जाने के अपयश का भागी हो जायगा। क्या लोगों को ऐसा कहने दूँ कि मेरे जन्म से मेरा कुलगौरव नष्ट हो गया ? । ५६३

❀ विऩैक्करु मॆय्म्मयिऩ् वऩत्तु विट्टऩऩ्
मऩक्करुम् बुदल्वऩै यॆऩ्ऱऩ् मऩ्ऩवऩ्
तऩक्करुन् दवमदु तलैक्कॊण् डेहले
ऎऩक्करुन् दवमिदऱ् किरङ्ग लॆऩ्दैनी 564

विऩैक्कु अरु–पालन-दुस्तर; मॆय्म्मैयिऩ्–सत्य-पालन के लिए; मऩक्कु अरु

पुतल्वनै–मन (प्राण-) प्यारे पुत्र को; वनत्तु विट्टनन्–वन में भेज दिया; ऍन्ऱल्–यह कथन (इस कीर्ति के योग्य होना); मन्नवन् तनक्कु–राजा के लिए; अरु तवम्–बहुमूल्य तप है; अनु तलै कॊण्टु–(उनको आज्ञा) वह शिरोधार्य करके; एकले–वन में जाना ही; ऍनक्कु अरु तवम्–मेरी तपस्या है; ऍन्नै नी–मेरे पितृतुल्य आप; इतऱ्कु–इसका; इरङ्कल्–दुख न कीजिएगा। ५६४

कष्टसाध्य सत्य पालन के निमित्त अपने मन के बहुत ही प्यारे पुत्र को (राजा ने) वन भेजा; यह लोग कहें —ऐसी स्थिति राजा के लिए तपस्या है। उनकी आज्ञा को सिर पर धारण करके वन में जाना मेरे लिए तपस्या है। पितृतुल्य आप इसका दुख मत कीजिए। ५६४

मुन्दिनै मुनिवनैक् कुऱुहि मुऱ्ऱुमॆन्, वन्दनै मुदलिय माऱ्ऱङ् गूऱिप्पिन्
ऍन्दयै यवनॊडु मॆय्दि यीण्डॆन, शिन्दयै युणर्त्तुदि यॆन्ऱु शॆप्पुवान् 565

मुन्तिनै–आप शीघ्र जाकर; मुनिवनै कुऱुकि–मुनि (वसिष्ठ) के पास जाकर; ऍन् वन्तनै मुतलिय माऱ्ऱम् मुऱ्ऱुम् कूऱि–मेरा नमस्कार आदि सभी बातें कहकर; पिन्–उसके बाद; अवनॊटुम् ऍन्तैयै ऍय्ति–उनको साथ लेकर पिता के पास जाकर; ईण्टु ऍन चिन्तैयै–यहाँ के मेरे विचारों को; उणर्त्तुति–समझाइए; ऍन्ऱु–कहकर; चॆप्पुवान्–आगे भी बोले। ५६५

आप जाइएगा। पहले वसिष्ठजी के पास जाकर, उनको मेरा नमस्कार आदि कहिए। बाद उनको साथ लेकर मेरे पिताजी के पास जाइए। उन्हें मेरे विचार समझाइए। —यह कहकर वे आगे भी बोले। ५६५

मुनिवनै यॆम्पियै मुऱैयि निन्ऱरुम्
पुनिदवे दियर्क्कुमे लुऱैपुत् तेळिर्क्कुम्
इनियन विळैत्तियॆन् ऱियम्बि यॆऩ्पिरि
तनिमयुन् दीर्त्तियॆन् ऱुरैत्ति तन्मयोय् 566

तन्मैयोय्–श्रेष्ठ स्वभाव वाले; ऍम्पियै–मेरे भाई (भरत) को; मुऱैयिल् निन्ऱु–धार्मिक नीति पर रहकर; अरु पुनितम् वेतियर्क्कुम्–श्रेष्ठ, पवित्र वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों के प्रति; मेल् उऱै पुत्तेळिर्क्कुम्–आकाश में रहनेवाले देवताओं के प्रति; इनियन इळैत्ति–मधुर व्यवहार करो; ऍन्ऱु इयम्पि–ऐसा कहकर; ऍन् पिरि–मुझसे बिछुड़ने से उत्पन्न; तनिमैयुम् तीर्त्ति–एकाकीपन का दुख भी दूर कीजिए; ऍन्ऱु–ऐसा; मुनिवनै उरैत्ति–मुनिवर से कहिए। ५६६

उत्तम प्रकृति वाले! मुनिवर से कहें कि वे मेरे अनुज भरत को उपदेश दें ताकि वह उत्तम, बहुमूल्य वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों और स्वर्गवासी देवताओं के प्रति मधुर व्यवहार करे। मुनिवर भरत को जो मेरे बिछुड़ने से एकाकीपन का क्लेश होगा उसको दूर करा दें। ५६६

वॆव्विय दन्नैयाल् विळैन्द दीण्डॊरु
कव्वयॆन् ऱिरैयुनन्दन् करुत्ति नोक्कलन्
ऍव्वरु ळॆन्वयिन् वैत्त दॆन्‌शॊलाल्
अव्वरु ळव्वयि नरुळु हॆन्‌ऱियाल् 567

अन्नैयाल्–माता कैकेयी द्वारा; ईण्टु–अब; वॆव्वियतु ऑरु कव्वै–भयानक एक दुख; विळैन्ततु ऍन्ऱु–पैदा हो गया, समझकर; तन् करुत्तिल्–अपने मन में; इऱैयुम्–जरा भी; नोक्कलन्–न सोचकर; ऍन् चॊल्लाल्–मेरे वाक्य से; ऍन् वयिन् वत्ततु–मेरे प्रति रखी गई; ऍ अरुळ–जैसी कृपा; अ अरुळ–वैसा स्नेह; अ वयिन् अरुळुक–उनके प्रति भी कीजिएगा; ऍन्ऱि–(मुनिवर से) कहें। ५६७

महर्षि यह न सोचें कि मेरी स्नेहशील जननी कैकेयी द्वारा कोई क्रूर काम हो गया है। ऐसा विचार वे किंचित भी न करें। जितनी कृपा वे मुझ पर रखते हैं उतनी कृपा उन पर भी रखें। —यह मुनिवर से विनय कीजिए। ५६७

वेण्डिनॆ निव्वर मॆन्ऱु वेलवन्
ईण्डरु ळॆम्बिपा निरुवि यॆऱ्पिरि
वीण्डिय तुयर्तविर्न् दिरुक्क वॆन्ऱशॊल्
आण्डहैक् कुरैत्तव नवल माऱ्ऱिप्पिन् 568

इ वरम् वेण्टिनॆन्–यह वर मैंने उनसे माँगा; ऍन्ऱु–कहकर; मेलवन् ईण्टु अरुळ–श्रेष्ठ उनकी पूर्ण कृपा को; ऍम्पि पाल् निरुवि–मेरे अनुज पर रखकर; ऍन् पिरिवु इण्टिय–मेरे वियोग के कारण होनेवाले; तुयर् तविर्न्तु–दुख को भूलकर; इरुक्क–रहो; ऍन्ऱ चॊल्–यह बात; आण् तकैक्कु उरैत्तु–पुरुषश्रेष्ठ (मेरे पिता) को कहकर; अवन् अवलम् माऱ्ऱि–उनका दुख कम करके; पिन्–बाद। ५६८

मुनिवर से यह मेरी प्रार्थना कहकर मेरे छोटे भाई भरत पर उनकी दया रखवा लीजिए। फिर मेरे पिता पुरुष-श्रेष्ठ चक्रवर्ती से मेरी विनय कहिए कि वे दुख करना छोड़कर शान्त रहें। उनका दुख भी मुनिवर शान्त करें और मेरा यह वचन कहकर आश्वासन दें कि। ५६८

❀ एळिरण् डाण्डुनीत् तीण्ड वन्दुनैत्
ताळ्हुवॆन् ऱिरुवडि तळर लीण्डॆनच्
चूळिवॆङ् गळिऱ्ऱिरै तन्नक्कुच् चोर्विला
वाळिमा दवन्‌शॊलाल् मनन् दॆरुट्टुवाय् 569

एळ् इरण्टु आण्टु–दो के सात (चौदह) साल; नीत्तु–बिताकर; ईण्ट वन्तु–शीघ्र लौटकर; उन्नै तिरुवटि ताळ्कुवॆन्–आपके चरणों पर विनत हो जाऊँगा; तळरल् ईण्टु ऍन–शोक मत कीजिए, ऐसा; चूळि वॆम् कळिऱु–मुखपट्ट-पहने भयंकर गजों के; इऱै तनक्कु–स्वामी को; चोर्वु इला मातवन् चॊल्लाल्–अमोघ, महर्षि के वाक्यों द्वारा; मनम् तॆरुट्टुवाय्–मन को निःशंक कर दीजिए। ५६९

"मैं (श्रीराम) चौदह वर्ष व्यतीत करके शीघ्र लौट आऊँगा और आपके चरणों पर विनत हो जाऊँगा, आप शोक मत कीजिए"। वसिष्ठजी मुखपट्टधारी भयंकर गजों के स्वामी राजा दशरथ को मेरी ओर से अपने मुख से कहकर उनके मन को दृढ़ व संशयहीन बना दें। ५६९

❀ मुऱैमया लॆऩ्ऩ्पयन् दडुत्त मूवर्क्कुम्
कुऱैविला वॆन्ऩॆडु वणक्कङ् गूऱिप्पिन्
इऱैमहऩ् ऱुयर्दुडैत् तिरुत्ति माडॆऩ्ऱाऩ्
मऱैहळै मऱैन्दुपोय् वऩत्तुळ् वैहुवाऩ् 570

मऱैकळै मऱैन्तु–वेदों से भी छिपकर (अज्ञात); पोय्–जाकर; वऩत्तुळ् वैकुवाऩ्–वन में रहनेवाले; ऎऩ् पयन्तु ऎडुत्त मूवर्क्कुम्–मेरी तीनों जननियों को; ऎऩ्–मेरा; कुऱैवु इल्ला–निर्मल; नॆडु वणक्कम्–दीर्घ नमस्कार; मुऱैमैयाल् कूऱि–क्रम से कहकर; पिन्–आगे; इऱै मकऩ् तुयर् तुडैत्तु–चक्रवर्ती के दुख को दूर करते हुए; माटु इरुत्ति–उनके पास रहिए; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ५७०

श्रीराम ने, जो वेदों के लिए भी अज्ञात हैं, और अब वन में जाकर लोगों से छिपे हुए हैं, सुमंत्र से कहा कि आप मेरी तीनों जननियों को क्रम से मेरा निर्मल, पवित्र और दीर्घ नमस्कार कहिए। बाद चक्रवर्ती का दुख दूर करते हुए उनके पास रहिए। ५७०

❀ आळ्वित्तै याणयिऱ् ऱिऱम्ब लऩ्ऱॆऩ्ऱा
ताळ्मुदल् वणङ्गियत् तऩित्तिण् डेर्वलाऩ्
ऊळ्वित्तै वशत्तुयिर् निलैयॆऩ् ऱुऩ्ऩुवाऩ्
वाळ्वित्तै नोक्कियै वणङ्गि नोक्किऩाऩ् 571

अ तऩि तिण् तेर्–अनुपम पक्के रथ के उन; वल्लाऩ्–समर्थ सारथी ने; आळ् वित्तै–किंकर का काम; आणैयिल् तिऱम्पल् अऩ्ऱु–आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं है; ऎऩ्ऩा–कहकर; ताळ् मुतल् वणङ्कि–श्रीराम की चरण-वन्दना करके; उयिर् निलै–जीव की स्थिति; ऊळ् वित्तै वचत्तु ऎऩ्ऱु–कर्मवश है, यह; उऩ्ऩुवाऩ्–सोचकर; वाळ्वित्तै नोक्कियै–(सुखी) जीवन-दायिनी (सीताजी) को; वणङ्कि–नमन कर के; नोक्किऩाऩ्–(कुछ सुनने के विचार से) देखा। ५७१

अनुपम और सबल रथ को चलाने में समर्थ सुमंत्र ने, कहा कि किंकर का धर्म स्वामी की आज्ञा टालना नहीं है। उन्होंने श्रीराम को नमस्कार किया। 'आखिर कोई भी जीव अपने कर्म के वश में ही है' यह तथ्य सोचकर वे एक तरह से परिस्थिति को मान गये। तब उन्होंने जीवों पर कृपादृष्टि रखनेवाली सीता की तरफ़ देखा, इस प्रतीक्षा में कि वे कुछ कहेंगी। ५७१

❀ अऩ्ऩवळ् कूरुवा ळरशर्क् कत्तयर्क्
कॆऩ्ऩुडै वणक्कमुन् नियम्बि यानुडैप्
पॊऩ्निरप् पूवयुङ् गिळियुम् बोऱ्ऱुमिन्
ऎऩ्ऩमर् ऱॆङ्गयर्क् कियम्बु वायॆऩ्ऱाळ् 572

अऩ्नवळ् कूरुवाळ्–वे बोलीं; अरचर्क्कु–चक्रवर्ती को; अत्तैयर्क्कु–और सासों को; ऎऩ्ऩुटै वणक्कम्–मेरी विनय; मुऩ् इयम्पि–पहले सुनाकर; ऎङ्कैयर्क्कु–मेरी बहनों से; यान् उटैय–मेरी पालित; पॊऩ् निरम्–सुन्दरवर्ण; पूवैयुम्–सारिका को; किळियुम्–शुक को; पोऱ्ऱुमिन् ऎऩ्ऩ–पालो-पोसो, ऐसा; इयम्पुवाय्–कहिए; ऎऩ्ऱाळ्–कहा। ५७२

देवी ने कहा कि चक्रवर्ती और मेरी सासों को मेरा विनीत नमस्कार कहिए। फिर मेरी बहनों से कहें कि वे मेरी पालित सारिका, शुक आदि सुन्दर पक्षियों को पालें-पोसें। ५७२

❀ तेर्वला नव्वुरै केट्टुत् तीङ्गुऱिऩ्
यार्वला रुयिर्तुऱप् पॆळिदऩ् ऱॆऩ्ऩाप्
पोर्वलाऩ् ऱडुक्कवुम् पॊरुमि विम्मिनाऩ्
शोर्विला ळऱिहिलात् तुयर्क्कुच् चोर्हिऩ्ऱाऩ् 573

तेर्वलाऩ्–रथसारथ्य-चतुर; अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; चोर्वु इलाळ्–(वनगमन की बात से) न घबड़ानेवाली उनके; अऱिकिलात तुयर्क्कु–अज्ञात कष्टों को सोचकर; चोर्किऩ्ऱाऩ्–शोक करते हुए; तीङ्कु उऱिऩ्–(विधिवशात) हानि हो जाय तो; आर् वल्लार्–कौन रोक सकता है; उयिर् तुऱप्पु–(मेरे लिए) प्राण-त्याग भी; ऎळितु अऩ्ऱे–सुलभ नहीं; ऎऩ्ऩा–यह सोचकर; पोर्वलाऩ् तटुक्कवुम्–युद्ध में निपुण वीर के रोकने पर भी; पॊरुमि विम्मिताऩ्–(जी) भरकर रोये। ५७३

उनका यह कथन सुनकर समर्थ सारथी सुमंत्र के मन में ये भाव उठे। ये वनगमन की कोई चिन्ता नहीं करतीं। उनको मालूम नहीं है कि क्या-क्या कष्ट सम्भवनीय है! इनकी कोई हानि हो गई तो कौन उनको बचा सकेंगे? मरना भी आसान नहीं लगता। यह सोचकर उन्हें अपार दुख हुआ। यद्यपि युद्धवीर श्रीराम ने सांत्वना दी और उनको रोका तो भी वे अपने दुख को रोक नहीं सके और फूट-फूटकर रोये। ५७३

❀ आऱिनऩ् पोऱ्चिऱि दवल मव्वऴि, वेऱिला वऩ्बिनाऩ् विडैतऩ् दीऩ्ऩा
एऱुशे वहऱ्ऱोळ् दिळैय मैन्दऩैक्, कूरुव दियादॆऩ विऩैय कूरुवाऩ् 574

वेऱु इला अऩ्पिताऩ्–अपरिवर्तनशील प्रेम रखनेवाले; अ वऴि–तब; अवलम् चिऱितु आऱिनऩ् पोल्–दुख थोड़ा कम हुआ जैसे; एऱु चेवकऩ् तोळ्तु–वर्धनशील वीरता के श्रीराम के चरणों को नमस्कृत करके; विटै तऩ्तीक ऎऩ्ऩा–आज्ञा दीजिए, कहकर; इळैय मैन्तऩै–कनिष्ठ पुत्र को; कूरुवतु यातु ऎऩ–कहना (आपका) क्या है, पूछने पर; इऩैय कूरुवाऩ्–ये बातें कहीं (उन्होंने)। ५७४

श्रीराम ने उनको धीरज बँधाया। तब उन पर अकम्पन प्रेम रखने वाले सुमंत्र थोड़ा धैर्यशील हुए। और श्रीराम से नमस्कार करके विदा ली। फिर उन्होंने छोटे राजकुमार लक्ष्मण से पूछा कि आपका संदेश क्या है ? । ५७४

❀ उरैशॅय्दॅङ् गोमहऱ् कुऱ्दि याक्किय
तरैशॅऱ्रि तिरुविनैत् तविर्त्तु मऱ्ऱॊरु
विरैशॅऱ्रि कुळलिमाट् टळित्त मॆय्यनै
अरशनॅन्ऱ् रिन्नमॊन्ऱ् ऱुरैयर् पालदो 575

ऍम् कोमकऱ्कु–मेरे राजकुँअर श्रीराम को; उरै चॅय्तु–वचन देकर; उऱ्ति आक्किय–उनकी बनाई हुई; तरै चॅऱ्रि तिरुविनै–भूमि रूपी समृद्ध श्री को; तविर्त्तु–उनको छोड़कर; मऱ्ऱु ऑरु–दूसरी एक; विरै चॅऱ्रि कुळलि माट्टु–सुबासित केश वाली के पास; अळित्त–जिन्होंने दे दिया, उन; मॆय्यनै–सत्यवादी को; इन्नम् अरचन् ऍन्ऱु–अब भी राजा मानकर; ऑन्ऱु अरैयल् पालतो–कहने योग्य समाचार भी होगा क्या। ५७५

लक्ष्मण ने निष्ठुरता से पूछा कि क्या उनको मैं अब भी राजा मानूँ, जो हमारे राजकुँवर को अपने ही मुख से राज्य और सम्पत्ति का स्वामी घोषित करने के बाद उनको एक सुबासित केश वाली स्त्री को देकर सत्य व्रती बने हैं; और कोई सन्देश दूँ ? वे इसके अर्ह हैं क्या ? । ५७५

❀ कानहम् बऱ्ऱिनऱ् पुदल्वन् कायुणप्
पोनहम् बऱ्ऱुमप् पॊरुविल् मन्नवऱ्
कूनहम् बऱ्ऱिय वुयिरॊ डिन्नम्बोय्
वानहम् बऱ्ऱिला वलिमै कूऱॆन्ऱान् 576

नल् पुतल्वन्–अच्छे कुँवर; कान् अकम् पऱ्ऱि–वन में रहते हुए; काय् उण–(कन्द-मूल-) फल खाते रहें; पोनकम् पऱ्ऱुम्–अच्छा भोजन भुगतनेवाले; अ पॊरुवु इल् मन्नवऱ्कु–उन अनुपम राजा से; ऊन् अकम् पऱ्ऱिय–मांसपिण्ड, शरीर से लगे रहनेवाले; उयिरॊटु–प्राणों के साथ; इन्नम् पोय्–अब भी जाकर; वान् अकम् पऱ्ऱु इला–स्वर्ग में न पहुँच जाने का; वलिमै–कठोर स्वभाव; कूऱु–उनसे कहिए; ऍन्ऱान्–कहा। ५७६

पुत्र वन में वास करते हुए कन्द, मूल फलादि खाते हैं। तब पिता स्वयं महल में रहकर षड्रस भोजन का मौज उठा रहे हैं! राजा को प्राण उतने प्यारे हैं! शरीर के साथ लगे रहे प्राणों को त्यागकर स्वर्ग जाने का उनके पास मनोबल नहीं है! उस विषय को उन्हें समझाइए। ५७६

❀ मित्तुडन् पिऱन्दवाट् परद वेन्दऱ्कॆन्
मन्तुडन् पिऱन्दिलॆन् मणगॊण् डाळ्हिन्ऱ

तऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दिलॅऩ् इम्बि मुऩ्ऩलॅऩ्
ऎऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दयाऩ् वलिय ऩॆऩ्ऱियाल् 577

मिऩ्ऩुटऩ् पिऱन्त वाळ्–चमक के साथ रहनेवाली तलवार के धारी; परतऩ् वेन्तऱ्कु–राजा भरत से; ऎऩ् मऩ्–अपने राजा राम का; उटऩ् पिऱन्तिलॅऩ्–सहोदर मैं जन्मा नहीं; मण् कॊण्टु–उनकी धरती (राज्य) लेकर; आळ्किऩ्ऱ–शासन करने को रहनेवाले भरत का भी; तऩ् उटऩ् पिऱन्तु इलॅऩ्–सहोदर जन्मा नहीं हूँ; तम्पि मुऩ्ऩलॅऩ–(अपने छोटे) शत्रुघ्न को भी भाई नहीं मानता; ऎऩ् उटऩ् पिऱन्त याऩ्–अपने साथ स्वयं जन्मा (अकेला) मैं; वलियऩ्–बड़ा स्वस्थ हूँ; ऎऩ्ऱि–कहिए; (ऎऩ्ऱाऩ्–कहा)। ५७७

चमकीले तलवार-धारी भरत को मेरा यह सन्देश दे दें। मैं न राजा राम का सहोदर पैदा हुआ हूँ (क्योंकि अपना भायपा मैं निर्वाह नहीं कर पाया); न भरत का मैं सहोदर जन्मा हूँ। शत्रुघ्न को भी मैं अपना भाई नहीं मानता। मैं अपने आप का अकेला सहोदर हूँ (यानी मैं एकाकी हो गया।) और मैं स्वस्थ सबल हूँ!। ५७७

❀ आरिय ऩिळवलै नोक्कि यॆयनी, शीरिय वल्लऩ शॅप्प लॆऩ्ऱपिऩ्
पारिडै वणङ्गिऩऩ् परियु नॆञ्जिऩऩ्, तेरिडै वित्तहऩ् शेऱल् मेयिऩाऩ् 578

आरियऩ्–आर्य श्रीराम ने; इळवलै नोक्कि–अपने अनुज को देखकर; ऐय–तात; नी चीरिय अल्लऩ–तुम अभद्र बातें; चॅप्पल्–मत कहो; ऎऩ्ऱपिऩ्–कहने के बाद; तेर् इटै वित्तकऩ्–सारथी सुमन्त्र; पार् इटै वणङ्कि–भूमि पर पड़कर दण्डवत करके; परियुम् नॆञ्चिऩऩ्–खिन्नमन हो; चेऱल् मेयिऩाऩ्–जाने लगे। ५७८

तब आर्य श्रीराम ने अपने लघुभ्राता से कहा कि लक्ष्मण! तुम अभद्रवचन मत बोलो। उसके बाद समर्थसारथी सुमंत्र दण्डवत करके भारी मन के साथ निकलने को तैयार हो गये। ५७८

❀ कूट्टिऩऩ् ऱेर्प्पॊऱि कूट्टिक् कॊण्मुऱै, पूट्टिऩऩ् पुरवियप् पुरवि पोॅऩॆऱि
काट्टिऩऩ् काट्टित्तऩ् कल्वि माट्चियाल्, ओट्टिऩ ऩॊरुवरु मुणर्वु ऱामले 579

तेर् पॊऱि कूट्टिऩऩ्—रथ-यन्त्र तैयार किया; कूट्टि–करके; पुरवि–अश्व; कोॅळ् मुऱै पूट्टिऩाऩ्–(उनको) मनाकर रथ में जोता; अ पुरवि–उन अश्वों को; पोम् नॆऱि–गम्य मार्ग; काट्टिऩऩ्–बतलाया; काट्टि–मार्ग दिखाकर; तऩ् कल्वि माट्चियाल्–अपनी सारथ्य विद्या के विशेष ज्ञान से; ऒरुवरुम् उणर्वु उऱामल्–किसी के जाने-समझे बिना; ओट्टिऩऩ्–चलाया। ५७९

सुमंत्र रथ के पास आये। उसका साज-बाज ठीक किया। फिर उसमें अश्वों को किसी तरह मनवाकर जोता। उन्होंने उनको उनके जाने का मार्ग दिखाया। अपनी सारथ्य-कुशलता से रथ को इस भाँति चलाया कि किसी को रथ के जाने का भान नहीं मिले। ५७९

❀ तैयरत् करुपुनदन् रहवुन् दम्बियुम्, मैयरु करुणयु मुणर्वुम् वाय्मयुम्
शॅय्यतन् विल्लुमे शेम माहक्कोण्, डैयनुम् बोयिना नल्लि नाप्पणे 580

ऐयनुम्–प्रभु भी; तैयल् तन् कर्पुम्–देवी का पातिव्रत्य; तम्पियुम्–अनुज; तन् तकवुम्–अपना श्रेष्ठ आर्जव; मै अरु करुणैयुम्–निर्मल कृपा; उणर्वुम्–मेधा; वाय्मैयुम्–और सत्य; तन् चॅय्य विल्लुमे–और अपने उत्तम धनुष को; चेमम् आक कॊण्टु–पाथेय (रक्षक) मानकर; अल्लिन् नाप्पण्–अर्धरात्रि में; पोयिनान्–चलते गये। ५८०

उनके जाने के बाद श्रीराम अर्धरात्रि के अन्धकार में वहाँ से रवाना होकर वन की ओर पैदल जाने लगे। उनके साथ उनके सहायक और संबल के रूप में सीताजी का पातिव्रत्य, श्रीराम के भाई, श्रीराम का आर्जव, उनकी पवित्र करुणा, उनकी मेधा, सत्य, और उनके हाथ का श्रेष्ठ धनुष —ये ही थे। ५८०

❀ पॉय्वित्तैक् कुदवुम् वाळ्क्कै यरक्करैप् पॉरुन्दि यन्नार्
शॅय्वित्तैक् कुदवु नट्पार् चॅल्बवर्त् तडुप्प दॊक्कुम्
मैविळक् कियदे यन्न मयङ्गिरु डुरक्क वानम्
कैविळक् कॅडुत्त दॅन्न वुदित्तदु कडवुट् टिङ्गळ् 581

पॉय् वित्तैक्कु–वंचक कार्यों में; उतवुम् वाळ्क्कै–सहायक जीवन बितानेवाले; अरक्करै पॉरुन्ति–राक्षसों से मिलकर; अन्नार् चॅय्वित्तैक्कु–उनके दुष्कृत्यों में; उतवुम् नट्पाल्–सहायता करानेवाली मित्रता के कारण; चॅल्पवर् तटुप्पतु ऒक्कुम्–(उनको मारने) चलनेवाले को रोकता सा; विळक्कियतु मैये अन्न–निखरा अंजन ही सम; मयङ्कु इरुळ्–भ्रामक अन्धकार; तुरक्क–दूर करने के लिए; वानम्–आकाश ने; कै विळक्कु ऍटुत्ततु–हाथ में दीपक लिया; ऍन्न–ऐसा; कटवुळ् तिङ्कळ्–चन्द्र देव; उतित्ततु–उदित हुए। ५८१

तब चन्द्रदेव उदित हुए। वे देवलोक के दीप के समान लगे, जो वंचक कर्म करनेवाले राक्षसों के दुष्कर्मों का सहायक होकर, उनके विरुद्ध जानेवालों को रोकनेवाले काजलसम अन्धकार को दूर करने के लिए जलाया गया था। ५८१

मरुमत्तुत् तन्नै यून्रु मरुक्कॊडुम् बावन् दीर्क्कुम्
उरुमॊत्त शिलैयि नोरै यॊरुप्पडुत् तुदवि निन्र
करुमत्तिन् विळैवै यॅण्णिक् कळप्पॊडुङ् गाण वन्द
तरुमत्तिन् वदन मॅन्नप् पॊलिन्दतु तनिवॅण् डिङ्गळ् 582

तन्नै मरुमत्तु ऊन्रुम्–(धर्म) अपने को मर्म पर आघात करनेवाले; मरुम् कॊटु पावम्–विरुद्ध और क्रूर पाप को; तीर्क्कुम्–मिटा सकनेवाले; उरुम् ऒत्त चिलैयितारै–वज्रसम धनुर्धरों को; ऒरुप्पट्टुतु–सम्मत कराकर; उतवि निन्र–अपनी सहायता जिसने की; करुमत्तिन् विळैवै ऍण्णि–उस विधि का फल सोचकर;

कळिप्पॉट्टुम्–हर्ष के साथ; काणवन्त–(श्रीराम, लक्ष्मण को) देखने आये हुए; तरुमत्तिन् वतनम् अन्न–धर्म के मुख के समान; तत्ति वॅण् तिङ्कळ्–अनुपम श्वेत चन्द्र; पॉलिन्ततु–शोभित रहे। ५८२

और भी वे उस धर्मदेवता के मुख के समान शोभे, जो अपने मर्म पर प्रहार करनेवाले विरोधी क्रूर पाप के नाशक, वज्रसम धनुर्धर और अपने सहायक वीरों को वन जाने से सम्मत करानेवाले सुकृत की बात सोचकर हर्ष के साथ उन वीरों के दर्शनार्थ आया हो। ५८२

कामबुयर् कानञ् जॅल्लुङ् गरियवन् वरुमै नोक्कित्
तेम्बिन कुविन्द पोलुञ् जॅङ्गळु नीरुञ् जेरॅप्
पाम्बिन तलैय वाहिप् परिन्दन कुविन्दु शोर्न्द
आम्बलु मॅन्ऱ पोदङ् गम्बुय मलर्व दुण्डो 583

काम्पु उयर्–(जिसमें) बाँस ऊँचे उगे हुए थे; कानम् चॅल्लुम्–उस वन में जानेवाले; करियवन् वरुमै–काले (राम) की (दयनीय दशा) कंगाली; नोक्कि–देखकर; चॅङ्कळु नीरुम्–लाल कुमुद-पुष्प भी; तेम्पिन–दुखी हुए; कुविन्त पोलुम्–जैसे मुकुलित रहे; आम्पलुम्–कुवलय भी; चेरै पाम्पिन तलैय आकि–"चेरै" नामक (विषहीन) साँप के सिरों के समान संकुचित होकर; परिन्तन–(श्रीराम की) सहानुभूति में; चोर्न्त–झुके रहे; अन्ऱ पोतु–तब तो; अङ्कु–वहाँ; अम्पुयम्–अम्बुजों का; अलर्वतु उण्टो–खिलना हो सकता है क्या। ५८३

जब श्रीराम उस वन में जा रहे थे, जिसमें बाँस के वृक्ष बहुत ऊँचे उगे थे तब रात में खिलनेवाले कुमुद, कुवलय आदि पुष्प कुम्हलाकर मुकुलित थे। उनकी दयनीय दशा देखकर रक्तकुमुद शोक करते-से बन्द रहे। कुवलय भी चेरै नामक (विषहीन) साँप के सिर के समान पिचककर मानो उनसे सहानुभूति करके मुरझाये रहे। रात में खिलनेवाले पुष्पों की यह स्थिति रही तो अम्बुज कैसे मुख खोलेंगे ? । ५८३

❀ अञ्जनक् कुन्ऱ मन्न वऴहनु मऴहन् ऱन्नै
अॅञ्जलिल् पोन्बोर्त् तन्न विळवलु मिन्दु वॅन्बान्
वॅञ्जिलैप् पुरुवत् ताडन् मॅल्लडिक् केऱ्प वॅण्णूऱ्
पञ्जिडैप् पडुत्ता लॅन्न वॅण्णिलाप् परप्पप् पोनार् 584

इन्तु अॅन्पान्–इन्दु नाम के उन (चन्द्र) ने; वॅम् चिलै–कमनीय धनु-सम; पुरुवत्ताळ् तन्–भौंहें वाली सीताजी के; मॅल् अटिक्कु एऱ्प–मृदु चरणों के अनुकूल; वॅळ् नूल पञ्चु–श्वेत-सूत्र-जनक रुई को; इटै पटुत्ताल् अॅन्न–भूमि पर बिछाया हो, जैसे; वॅळ् निला परप्प-श्वेत चाँदनी फैलाई; अञ्चनम् कुन्ऱम् अन्न अऴकनुम्–अंजनपर्वत-सम सुन्दरराज; अऴकन् तन्नै अॅञ्चल् इल्–उन सुन्दर से किसी विध जो कम नहीं थे; पॉन् पोर्त्त अन्न इळवलुम–स्वर्णरंग के लघुराज; पोनार्–गये। ५८४

चन्द्रिका खूब फैली। वह ऐसी लगी, मानो इन्दु-संज्ञित चन्द्र ने कमनीय धनुसम ललाट वाली सीता के मृदुचरण-पात के योग्य श्वेत-सूत्रजनक रुई फैला रखी हो। सीताजी के साथ काजलगिरि जैसे सुन्दर-मूर्ति श्रीराम और उनके उतने ही सुन्दर, पर स्वर्णवर्ण लक्ष्मण भी चलते गये। ५८४

शिरुहिडै वरुन्दक् कोंङ्गै येन्दिय शंल्व मॅन्नुम्
शॅरियिरुङ् गून्द नङ्गै शीऱडि नीर्क्कोंप् पूळिन्
नरियन तॉडर्न्दु शॅन्रु नडन्दॅनि नवैयि नीङ्गुम्
उरुवलि यन्बि नूङ्गॉन् रुण्डॅन वुणर्व दुण्डो 585

चिरुकु इटै वरुन्त–छोटी कमर दुखी हो, ऐसा; कोङ्कै एन्तिय–स्तन वहन करनेवाली; चॅरि इरु कून्तल्–घने, काले केश वाली; चॅल्वम् ऍन्नुम् नङ्कै–लक्ष्मीदेवी; नीर् कॉप्पूळिन्–जल के बुदबुदों से भी अधिक; नरियन चिऱु अटि–मृदुल छोटे चरण; तॉटर्न्तु चॅन्रु–श्रीराम के साथ लगे हुए जाकर; नटन्तु ऍनिन्–चले तो; नवैयिन् नीङ्कुम्–दोषहीन; अन्पिन् ऊङ्कु–प्रेम से बढ़कर; उरु वलि ऑन्रु उण्टु–अधिक बलयुक्त कुछ है; ऍन–ऐसा; उणर्वतु उण्टो–सोचा जाय, ऐसा कुछ है क्या। ५८५

सीताजी स्वयं लक्ष्मीदेवी थीं। वे घने-घुँघराले केश वाली अपनी पतली कमर और उसको सतानेवाले पीन स्तनों का वहन करती हुई श्रीराम के साथ बिना किसी शिकायत के चलीं। उनके, जल के बुदबुदों से भी मृदु चरण इतनी दूर चल सके तो उसका कारण प्रेम ही है! प्रेम से भी बलवान या बलदायक कुछ और है —यह समझने के लिए कोई स्थान है क्या? । ५८५

❀ परुदिवा नवनुङ् गीऴ्पाऱ् परुवरै पऱ्ऱा मुन्नम्
तिरुविना यहनुन् दॅन्बाल् योशनै यिरण्डु शॅन्ऱान्
अरुविपाय् कण्णुम् बुण्णा यऴिहिन्ऱ मनमुन् दानुम्
तुरिदमान् ऱेरिऱ् पोनान् शॅय्ददु शॉल्ल लुऱ्ऱाम् 586

परुति वानवन्–सूर्यदेव; कीऴ् पाल्–पूर्व दिशा के; परुवरै–बड़े (उदय-) अचल को; पऱ्ऱा मुन्नम्–पहुँच जाएँ, इसके पहले; तिरुविन् नायकनुम्–श्रीलक्ष्मीपति; तॅन् पाल्–दक्षिण दिशा में; इरण्टु योचनै चॅन्ऱान्–दो योजन दूर चले; अरुवि पाय् कण्णुम्–धारा बहानेवाली आँखें; पुण्णाय्–व्रण बनकर; अऴिकिन्ऱ मनमुम्–मिटने वाला मन; तानुम्–और स्वयं; तुरितम् मान् तेरिल् पोनान्–(जो) त्वरितगति अश्वों के (जुते) रथ पर गये; चॅय्ततु–उन्होंने जो किया, वह; चॉल्लल् उऱ्ऱाम्–कहेंगे। ५८६

सूर्यदेव के बड़े उदयाचल पर पहुँचने के पहले ही श्रीलक्ष्मी-पति दक्षिण की ओर दो योजन चले गये। धारा-बनी आँखें और व्रण-बना

हृदय और स्वयं वे —ऐसी स्थिति में और जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर गये उनका क्या हुआ —यह बतलाएँगे । ५८६

❀ कडिहयो रिरण्डु मून्ऱिऱ् कडिमदि लयोत्ति कण्डान्
अडियिणै तॊऴुदा नादि मुनिवनै यवनु मुऱ्ऱ्
पडियॆलाङ् गेट्टा नॆञ्जिऱ् परुवर लुऴन्दान् मुन्नम्
मुडिवॆला मुणर्न्दा नन्दो मुडिन्दनन् मन्न नॆन्ऱान् 587

कटिकै ओर् इरण्टु मून्ऱिल्–छः घड़ी के अन्दर; कटि मतिल् अयोत्ति कण्टान्–सुरक्षित (या रक्षक) प्राचीरों वाली अयोध्या पहुँच गये; आति मुनिवनै–प्रधान मुनिवर के; इणै अटि तॊऴुतान्–चरणद्वय की वन्दना की; अवनुम्–उन्होंने भी; उऱ्ऱपटि ऍल्लाम्–घटित सब; केट्टान्–सुना; नॆञ्चिल् परुवरल् उऴन्तान्–मन में क्लेश पाया; मुटिवु ऍल्लाम्–भावी सब; मुन्नम् उणर्न्तान्–पहले ही मन में अनुमान करके; अन्तो–हाय; मन्नन् मुटिन्तनन्–राजा मर ही गये; ऍन्ऱान्–कहा । ५८७

वे (दो के तीन) छः (या दो और तीन, पाँच) घड़ियों में सुरक्षा के प्राचीर वाली अयोध्या में पहुँच गये । पहले उन्होंने प्रधान पुरुष, मुनिवर वसिष्ठ से भेंट की और उनको नमस्कार किया । वसिष्ठजी ने भी सारा वृत्तान्त सुना तो दुखसन्तप्त होकर भावी का अनुमान करके समझ लिया कि अब दशरथजी नहीं बचेंगे । 'वे मर ही गये, समझ लो' । ५८७

❀ निन्ऱुयर् पऴियै यञ्जि नेर्न्दिलन् ऱडुक्क वळ्ळल्
ऒन्ऱुना नुरैत्त नोक्कान् ऱरुमत्तुक् कुऱुदि पार्प्पान्
वॆन्ऱव रुळरो मेलै विदियिनै यॆन्ऱु विम्मिप्
पॊन्ऱिणि मन्नन् कोयिल् शुमन्दिर नोडुम् बुक्कान् 588

वळ्ळल्–श्रीराम; तरुमत्तुक्कु उऱुति पार्प्पान्–धर्म धारणार्थ; निन्ऱु उयर् पऴियै अञ्चि–स्थिर होकर बढ़ सकनेवाले अपयश से डरकर; तटुक्क–(मेरे) रोकने पर भी; नेर्न्तिलन्–(रुकने को) सहमत नहीं हुए; नान् उरैत्तल् ऒन्ऱुम् नोक्कान्–मेरा कहा कुछ नहीं माना; मेलै वितियिनै–पूर्वकृत कर्मफल को; वॆन्ऱवर् उळरो–जीतनेवाले हैं क्या; ऍन्ऱु–सोचकर; विम्मि–दुख से भरकर; चुमन्तिरनोटुम्–सुमन्त्र के साथ; मन्नन्–चक्रवर्ती के; पॊन् तिणि कोयिल्–स्वर्णयुक्त महल में; पुक्कान्–पहुँचे । ५८८

"मैंने प्रभु श्रीराम से कितना कहा ! धर्म को सुस्थिति देनेवाले स्थायी रूप से वर्धित हो सकनेवाले अपयश से डरकर वे, मेरे रोकने पर भी रुकने को सहमत नहीं हुए । मेरा कहा एक न माना । हाँ— पूर्वकृत कर्म के फल को रोक सकनेवाला कौन है ?" —यह सोचकर वसिष्ठजी अपार दुख से भरकर, सुमंत्र को साथ लिये हुए चक्रवर्ती के स्वर्णमय महल में पहुँचे । ५८८

❀ तेर्हॊण्डु वळ्ळल् वन्दा नॆन्रुदम् जिन्दै युन्द
ऊर्हॊण्ड तिङ्ग ळॆन्न मन्ननै युळैयर् शुऱ्ऱिक्
कार्हॊण्ड मेनि यानैक् कण्डिलर् कण्णिल् वऱ्ऱा
नीर्हॊण्ड नॆडुन्देर्प् पाह निलैहण्डै निलैयिर् ऱीर्न्दार् 589

तेर् कॊण्टु–रथ (का आना) लेकर; उळैयर्–मन्त्री लोग; वळ्ळल् वन्तान्–प्रभु आ गये; ऍन्रु–सोचकर; तम् चिन्तै उन्त–अपने मन के प्रेरित करने से; तिङ्कळ् ऊर् कॊण्टतु ऍन्न–चन्द्र को परिवेष ने घेरा, जैसे; मन्ननै चुऱ्ऱि–राजा को घेरकर; कार् कॊण्ट मेनियानै–श्यामशरीर (श्रीराम को); कण्टिलर्–न देखकर; कण्णिल्–आँखों में; वऱ्ऱा नीर् कॊण्ट–न सूखनेवाले जल के साथ; नॆटु तेर् पाकन् निलै कण्टु–बड़े रथ के सारथी की दशा देखकर; निलैयिल् तीर्न्तार्–(उत्साह की) स्थिति से बदल गये। ५८६

मंत्री आदि राजा के निकटस्थ लोगों ने रथ को देखा तो अनुमान कर लिया कि प्रभु श्रीराम भी आये होंगे। इसलिए अपने मन के प्रेरित करने से वे दशरथजी के पास आये और चन्द्र को परिवेष जैसे उनको घेरकर खड़े हो गये। पर वहाँ श्यामशरीर श्रीराम नहीं रहे। उनके स्थान में वे बड़े रथ के सारथी सुमंत्रजी को, जिनकी आँखों से अश्रु की अटूट धारा, जो सूखती नहीं थी, बह रही थी; देखकर उत्साह और हर्ष छोड़कर दुखी हो रहे। ५८९

❀ इरदम्वन् दुऱ्ऱ दॆन्ऱाङ् गियावरु मियम्ब लोडुम्
वरदन्वन् दुऱ्ऱा नॆन्न मन्ननु मयक्कन् दीर्न्दान्
पुरैदबु कमल नाट्टम् बॊरुक्कॆन विळित्तु नोक्कि
विरदमा दवनैक् कण्डान् वीरन्वन् दननो वॆन्ऱान् 590

इरतम् वन्तु उऱ्ऱतु ऍन्रु–रथ आ गया, यह; आङ्कु–वहाँ; यावरुम् इयम्पलोटुम्–सब के कहने पर; वरतन् वन्तु उऱ्ऱान्–वरद-प्रभु पधारे; ऍन्न–सोचकर; मन्ननुम्–राजा भी; मयक्कम् तीर्न्तान्–मूर्च्छा से छूटे; पुरै तपु–निर्मल; कमलम् नाट्टम्–कमल-जैसी आँखों को; पॊरुक्कॆन विळित्तु–झट से खोलकर; नोक्कि–दृष्टि डालकर; विरतम् मातवनै कण्टान्–व्रती और महान तपस्वी को देखा; वीरन्–वीरराघव; वन्तननो ऍन्ऱान्–आया क्या, पूछा। ५६०

वहाँ सबने कहा कि रथ आ गया। यह सुनकर 'वरदप्रभु श्रीराम आ गये' —इस विचार से चक्रवर्ती मूर्च्छा से जागे। अपने निर्मल कमल-सम आँखें खोलकर उन्होंने दृष्टि दौड़ाई। वहाँ महान तपोव्रती वसिष्ठजी ही उनकी दृष्टि में पड़े। राजा ने महर्षि से पूछा कि वीरराघव आ गया क्या ? । ५९०

इल्लयॆन् ऱुरैक्क लाऱ्ऱा दॆङ्गिमा मुनिव निन्ऱान्
वल्लवन् मुहमे नम्बि वन्दिल नॆन्ऱ माऱ्ऱम्

शौल्ललु मरशन् शोरन्दान् रुयरुरु मुनिव नानिव्
वल्लल्हाण् गिल्ले यॅन्ना वाङ्गुनिन् ऱहलप् पोनान् 591

इल्लै यॅन्रु–नहीं, यह; उरैक्कल् आऱ्रातु–कहने का साहस न होने के कारण; मा मुनिवन्–उत्तम मुनिवर; एङ्कि निन्ऱान्–व्याकुल खड़े रहे; वल्लवन् मुकमे–(दुख से अप्रभावित रहने में) समर्थ उनके मुख ने ही; नम्पि वन्तिलन्–नायक नहीं आया; यॅन्ऱ माऱ्ऱम् चॉल्ललुम्–यह उत्तर (अपने भावों से) व्यक्त किया तो; अरचन् चोर्न्तान्–राजा शिथिल हो गये; तुयर् उऱु मुनिवन्–दुखार्त्त मुनि; नान् इ अल्लल् काण्किल्लेन्–यह दुख देख नहीं सकूँगा; यॅन्ना–कहकर; आङ्कु निन्ऱु–वहाँ से; अकल पोनान्–हट गये। ५९१

महामुनि "नहीं" कहने का साहस नहीं कर सके। दुख-सहन-समर्थ होने पर भी उनका मुख ही बतला गया कि श्रीराम नहीं आये। राजा फिर से मूर्च्छित हो गये। राजा की स्थिति देखकर मुनिवर का मन अत्यधिक दुख से भर गया। यह संकट मैं देख नहीं सकूँगा —यह कहकर वे वहाँ से हट गये। ५९१

❀ नायहन् पिन्नु नऱ्ऱेरप् पाहनै नोक्कि नम्बि
शेयनो वणिय नोवॅन् ऱुरैत्तलुन् देर्व लानुम्
वेयुयर् कानिऱ् ऱानुन् दम्बियुम् मिदिलैप् पॉन्नुम्
पोयिना यॅन्ऱा यॅन्ऱ पोळ्दत्ते आवि पोनान् 592

नायकन्–चक्रवर्ती के; पिन्नुम्–और; नल् तेर् पाकनै–श्रेष्ठ सारथी को; नोक्कि–देखकर; नम्पि–नायक; चेयनो–दूर हैं; अणियनो–या पास हैं; यॅन्ऱु–ऐसा; उरैत्तलुम्–पूछने पर; तेर् वल्लानुम्–सारथ्यसमर्थ भी; तानुम् तम्पियुम्–(वे) आप, छोटे भाई और; मितिलै पॉन्नुम्–मिथिला का स्वर्ण; वेय् उयर् कानिल्–उन्नत वंश (बाँस) के वन में; पोयिनान्–गये; यॅन्ऱान्–बोले; यॅन्ऱ पोळ्ततते–वैसा कहते ही; आवि पोनान्–प्राणविमुक्त हो गये। ५९२

नायक दशरथ ने फिर होश में आकर चतुर सारथी सुमंत्र से पूछा कि श्रेष्ठ नायक श्रीराम दूर गये हैं (दूरस्थ हैं) या पास ही (निकटस्थ) हैं ? सुमंत्र ने उत्तर दिया कि श्रीराम उनके भाई लक्ष्मण और मिथिला की निधि मैथिली तीनों ऊँचे बाँस के पेड़ों से भरे जंगल में चले गये। तभी राजा के प्राणपखेरू उड़ गये। ५९२

इन्दिरन् मुदल्व रान कडवुळर् यारु मीण्डिच्
चन्दिर ननैय दाङ्गोर् मानत्तिऱ् ऱलैयिऱ् ऱाङ्गि
वन्दन यॅन्दै तन्दै यॅनमनङ् गळित्तु वाळ्त्ति
उन्दिया नुलहि नुम्बर् मीळ्हिला वुलहत् तुयत्तार् 593

इन्तिरन् मुतल्वर् आन–इन्द्रादि; कटवुळर् यावरुम् ईण्टि–सभी देवता एकत्र होकर; चन्तिरन् अनैयतु–चन्द्र के समान; ओर् मानत्तिल्–एक देवयान में (रख);

तलैयिल् ताङ्कि–अपने सिर पर वहन करके; ऍन्ते तन्तै–हमारे पिता के पिता; वन्तनन् ऍन–पधारे, यह कहते हुए; मतम् कळित्तु–हर्षितमन होकर; वाळ्त्ति–संस्तुति करके; उन्तियान् उलकत्तु उम्पर्–नाभी से उत्पन्न ब्रह्मा के लोक के परे; मीळ्किला उलकत्तु–(जहाँ से) लौट आना नहीं होता, उस लोक में; उय्त्तनर्–पहुँचाया। ५९३

देवेन्द्र आदि सभी देवता एकत्र हो आये। चन्द्रसमान एक देवयान पर उनके शरीर को अपने सिर पर ढोकर रखा। "हमारे धाता के पिता आये" यह हर्ष-घोष करते हुए उनको ले जाकर ब्रह्मा के लोक को पार कर उस मोक्षलोक में पहुँचाया, जहाँ से पुनरावर्तन नहीं होता। ५९३

❀ उयिर्प्पिलन् रुडिप्पु मिल्ल नॆन्रुणर्न् दुरुवन् दीण्डि
अयिर्त्तन णोक्कि मन्नर् कारुयि रिन्मै तेऱ्ऱि
मयिर्कुल मनैय नङ्गै कोशलै मरुहि वीऴ्न्दाळ्
वॆयिर्चुडुङ् गोडै तन्निऱ् ऱॆन्बिला वुयिरिन् वेवाळ् 594

कुलम् मयिल् अनैय–श्रेष्ठ मयूरतुल्य छटा वाली; नङ्कै कोचलै–देवी कौसल्या; अयिर्त्तनळ्–सन्देह करती हुई; उरुवम् तीण्टि नोक्कि–शरीर स्पर्श करके देखकर; उयिर्प्पु इलन्–श्वासहीन हैं; तुटिप्पुम् इल्लन्–स्पन्दनहीन भी हैं; ऍन्रु उणर्न्तु–यह पहचानकर; मन्नरकु आर् उयिर् इन्मै–राजा की प्राणहीनता; तेऱ्ऱि–निश्चित रूप से जानकर; मरुकि–उद्विग्न होकर; वीऴ्न्ताळ्–गिरीं; वॆयिल् चुटुम्–धूपतप्त; कोटै तन्निल्–ग्रीष्म में; ऍन्पु इला उयिरिन्–अस्थिहीन जीव (कीड़े) के समान; वेवाळ्–तड़पने लगीं। ५९४

श्रेष्ठ कुलीन, और मयूराभा कौसल्या ने सन्देह करके राजा का शरीर स्पर्श कर देखा। 'श्वास नहीं छोड़ते; कोई स्पन्दन नहीं है; इसलिए मर ही गये हैं', यह निश्चय जानकर शोकाकुल होकर भूमि पर गिर पड़ीं। उनकी स्थिति उस अस्थिरहित कीड़े की-सी हो गई, जो ग्रीष्म की धूप में छटपटाता है। ५९४

इरुन्द वन्दणनो डॆल्ला मीन्ऱवन् ऱन्नै यीन्ऱ
पॆरुन्दवञ् जॆय्द नङ्गै कणवनैप् पिरिन्दु दॆय्व
मरुन्दिऴन् दवरित् विम्मि मणिपिरि यरविन् माऴ्हि
अरुन्दुणै यिऴन्द वन्ऱिऱ् पॆडैयॆन वरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ् 595

इरुन्त अन्तणनोटु–(अपनी नाभि में) रहनेवाले ब्रह्मज्ञ (ब्रह्मा) के साथ; ऍल्लाम्–सृष्टि सब; ईन्ऱवन् तन्नै–उत्पन्न करनेवाले (परब्रह्म) को; ईन–जन्म दिलाने योग्य; पॆरु तवम् चॆय्त–जिन्होंने बड़ी तपस्या की थी, वे; नङ्कै–देवी (कौसल्या); कणवनै पिरिन्तु–पति से अलग होकर; तॆय्वम् मरुन्तु–दैवी अमृत को; इऴन्तवरित्–खोनेवाले के समान; विम्मि–दुख से भरकर; मणि पिरि अरविन्–रत्न खोकर विषधर जैसे; माऴ्कि–कुम्हलाकर; अरु तुणै–प्यारा साथी;

इळन्त–(जिसने) खोया; अऩ्ऱिल् पॆट्टै ऎऩ–उस मादा क्रौंच के समान; अरऱ्ऱल् उऱ्ऱाळ्–कलपने लगीं। ५९५

कौसल्या बड़ी तपस्विनी थीं; तभी तो अपनी नाभि में ब्रह्मा को सृष्ट कर उनके साथ सारी सृष्टि को स्थिति देनेवाले परब्रह्म ने इनकी कोख से जन्म लिया। वे अपने पति के वियोग से, अमृतवंचित लोगों के समान दुख करके और रत्नवंचित नागराज के समान तड़पकर संगी-विमुक्त मादा क्रौंच के समान विलाप करने लगीं। ५९५

❀ ताऩे ताऩे तञ्जमि लादाऩ् ऱहविल्लाऩ्
पोऩाऩ् पोऩा नॆङ्गळै नीत्तिप् पॊऴुदॆऩ्ऩा
वानीर् शुण्डि मण्णऱ वऱ्ऱि मरुहुऱ्ऱ
मीऩे यॆऩ्ऩ मॆय्दडु माऱि मॊलिहिऩ्ऱाळ् 596

तञ्चम् इलातान्–किसी भी निकृष्टता से रहित (राजा); तकवु इल्लाऩ्–हमारे प्रति दया न करके; ऎङ्कळै नीत्तु–हमें त्यागकर; इप्पॊऴुतु–अब; ताऩे ताऩे–खुद अकेले; पोऩाऩ् पोऩाऩ्–गये, गये; ऎऩ्ऩा–कहकर; वाऩ् नीर् चुण्टि–मेघ-जल से हीन; मण् अऱ वऱ्ऱि–धरती के भी बिल्कुल सूख जाने से; मरुकु उऱ्ऱ–जीवित रहने के लिए तरसनेवाली; मीऩ् ऎऩ्ऩ–मछलियों के समान; मॆय् तटुमाऱि–शरीर तड़पाते हुए; मॊलिकिऩ्ऱाळ्–शिथिल हुईं। ५९६

'किसी भी कमी से रहित श्रेष्ठ हमारे नायक हमसे ज़रा भी दया न करके हमें छोड़कर अब गये; हाय, अकेले ही अकेले गये!' ऐसा विलाप करती हुई वे उस जलाशय की मछलियों के समान, जिसका जल सूख गया है और जिसमें मेघ-जल भी नहीं पहुँचता, तड़पते शरीर वाली होकर शिथिल हुईं। ५९६

ऒऩ्ऱा नऩ्ऩाट् टुय्क्कुव रिऩ्ऩाट् टुयिर्हाप्पार्
अऩ्ऱे मक्कट् पॆऱ्ऱुयिर् वाऴ्वार्क् कवमुण्डो
इऩ्ऱे वन्दोण् डञ्जलॆ ऩादॆम् महऩॆऩ्बाऩ्
कॊऩ्ऱा ऩऩ्ऱो तन्दयै यॆऩ्ऱाळ् कुलैहिऩ्ऱाळ् 597

मक्कळ्–पुत्र उपाधिप्राप्त लोग (पुत्र); इ नाट्टु–इस लोक में; उयिर् काप्पर्–(पिता) की जान की रक्षा करनेवाले हैं; ऒऩ्ऱु आम्–और अत्युत्कृष्ट; नल् नाट्टु उय्क्कुवर्–उच्च लोक में पहुँचानेवाले हैं; अऩ्ऱे–क्या नहीं; पॆऱ्ऱु–(ऐसे पुत्र) प्राप्त करके; उयिर् वाऴ्वार्क्कु–इस लोक में जीवित रहनेवालों का; अवम् उण्टो–कोई अहित हो सकता है क्या; ऎम् मकऩ् ऎऩ्पाऩ्–हमारा पुत्र कहलाने वाला; इऩ्ऱे ईण्टु वन्तु–अभी यहाँ आकर; अञ्चल् ऎऩ्ऩातु–मत डरिए कहकर सान्त्वना न देकर; तन्तैयै कॊऩ्ऱाऩ् अऩ्ऱो–पिता को मार चुका है न; ऎऩ्ऱाळ्–कहती हुई; कुलैकिऩ्ऱाळ्–काँपतीं। ५९७

पुत्र का प्रयोजन है जनक के जीवंत काल में उनकी जान का रक्षक रहना और मरने के बाद उनकी आत्मा को सद्गति में पहुँचाना। पुत्रवान लोगों की कोई हानि नहीं होती। यही तो लोकरीति है! पर हमारा सत्पुत्र राम अभी यहाँ आकर 'मत डरो' कहकर हमें सान्त्वना नहीं देता और उसी कारण पिता का मारक बन गया! —यह कहते हुए वे रोने लगीं। ५९७

नोयुम् मिन्ऱि नोन्गदिर् वाळ्वे लिवैयिन्ऱि
मायुन् दन्मै मक्कळि नाह मऱमन्नन्
कायुम् बुळ्ळिक् कर्क्कड मिप्पि कनिवाळै
वेयुम् बोन्ऱा नॅन्ऱु मयङ्गा विळुहिन्ऱाळ् 598

मऱम् मन्नन्–शूर चक्रवर्ती की; मायुम् तन्मै–मृत्यु का प्रकार; नोयुम् इन्ऱि–बिना व्याधि के; नोन कतिर्–बलवान, उज्ज्वल; वाळ् वेल् इवै इन्ऱि–तलवार, भाला, इनके (प्रहार के) बिना ही; मक्कळिन् आक–पुत्रों के द्वारा ही हुआ, इसलिए; कायुम्–त्रासक; पुळ्ळि कर्क्कटम्–बिन्दियों से युक्त कर्कट; इप्पि–सीपी; कनि वाळै–फलदार केले के पेड़; वेयुम् पोन्ऱान्–और बाँस के समान हो गये; ॲन्ऱु–यह कहकर; मयङ्का विळुकिन्ऱाळ्–मूर्च्छित हो गिर पड़तीं। ५९८

वीर राजा मर गये! उनकी मृत्यु का प्रकार भी कितना विडम्बनापूर्ण हो गया! न किसी रोग से मरे, न भाला या तलवार के घात से। वे कर्कट, सीपी, केले के पेड़ और बाँस के तरुओं के समान मर गये; जो पुत्र को जन्म देने पर मर जाते हैं (इनकी, इनकी सन्तानें ही मारक होती हैं)। यह कहकर वे मूर्च्छित हो गईं। ५९८

❀ वडित्ताळ् कून्दऱ् केहयन् मादे मदियाले
पिडित्ताय् वैयम् वॅऱ्ऱनै पेरा वरमिन्ऩे
मुडित्ता यन्ऱे मन्दिर मॅन्ऱाळ् मुहिल्वाय्मिन्
तुडित्ता लॅन्न मन्नवन् मार्बिऱ् ऱुवळ्हिन्ऱाळ् 599

वटि ताळ्–लम्बा और लटकनेवाला; कून्तल–केश वाली; केकयन् माते–केकय-पुत्री; मतियाले–अपनी बुद्धि के चातुर्य से; पेरा वरम् वॆऱ्ऱतै–अचूक वर प्राप्त कर लिया (तुमने); वैयम् पिटित्ताय्–भूमि ग्रस ली; मन्तिरम्–अपने षड्यन्त्र; इन्ऱे मुटित्ताय्–आज ही सफल करा लिया; अन्ऱे–न; ॲन्ऱाळ्–कहते हुए; मुकिल् वाय्–मेघ के मुख में; मिन् तुटित्ताल् ॲन्न–बिजली तड़पी जैसे; मन्नवन् मार्पिल्–राजा की छाती पर; तुवळ्किन्ऱाळ्–छटपटातीं। ५९९

कैकेयी का स्मरण करके वे कहतीं— लम्बी लटकनेवाली वेणी से शोभित कैकेयी! तुमने अपने बुद्धिचातुर्य से अचल वर पाकर भूमि गह ली। तुमने पति को भी मारकर अपना षडयन्त्र आज ही सफल कर लिया न! (आज ही भूमि को अन्य शासकहीन कर दिया!) —यह कह

कर वे राजा के शरीर पर गिरकर, मेघमुख पर बिजली जैसे लोटने लगीं। ५९९

※ अरुन्दे रानच् चम्बर तैप्पण् डमर्वॆन्राय्
इरुन्दार् वानोर् निन्नरु ळाले यिनिदन्नार्
विरुन्दा हिन्रा यॆन्रनळ् वेऴत् तरशॊन्रैप्
पिरिन्दे तुन्बत् ताऴ्पिडि यॆन्नप् पिणियुर्राळ् 600

वेऴत्तु अरचु ऑन्रै–राजकीय गज को; पिरिन्तु–खोकर; तुन्पत्तु आऴ्–दुख में मग्न; पिटि ऍन्न–हथिनी की तरह; पिणि उर्राळ्–पीड़ित होकर कौसल्या; अरु तेरान्–आपके श्रेष्ठ रथ की सहायता से; पण्टु–पहले; अ चम्परनै–उस शंबरासुर को; अमर् वॆन्राय्–समर में मिटाया; निन् अरुळाले–आपकी दया से; वानोर् इनितु इरुन्तार्–स्वर्गवासी सुखी रहे; अन्नार् विरुन्तु आकिन्राय्–अब आप उनके अतिथि बन गये; ऍन्रनळ्–कहा। ६००

हाथियों के राजा को खोकर (अर्थात् अपने गज से वियुक्त) दुख में मग्न हथिनी-सम शोक करती हुई कौशल्यादेवी ने कहा— हे नाथ ! आपने अपने रथ की सहायता से उस दिन शंबरासुर को मारा, और देवता लोग आपकी कृपा से सुख से रहते हैं। आप अब उनके अतिथि बनने जाते हैं। ६००

※ वेऴ्विच् चॆल्वन् दुय्त्तिहॊल् मॆय्म्मैत् तुरैमेवुम्
शूऴ्विर् चॆल्वन् दुय्त्तिहो रोला मनुनूलिन्
वाऴ्विर् चॆल्वन् दुय्त्तिहॊल् मन्नॆन् रनळ्वानोर्
केऴ्विच् चॆल्वन् दुय्क्क वयिर्रोर् किळैतन्दाळ् 601

वानोर्–देवलोकवासी भी; केऴ्वि चॆल्वम् तुय्क्क–(रामचरित रूपी) श्रुतिनिधि भोगें, यह सुलभ करते हुए; वयिर्रु–अपने कोख से; ओर् किळै तन्ताळ्–एक पुत्र जनमनेवाली ने; मन्–राजा; वेऴ्वि चॆल्वम्—यज्ञ-फल-निधि; तुय्त्ति कॊल्–भोगेंगे; मॆय्म्मै तुरै–सत्यपथ; मेवुम्–अपनाने के; चूऴ्विन् चॆल्वम्–व्रत का फल-सुख; तुय्त्ति कॊल्–भुगतेंगे; तोला–अटूट; मनु नूलिन्–मनुशास्त्र-सम्मत; वाऴ्विन् चॆल्वम्–जीवन का फल-सुख; तुय्त्ति कॊल्–भुगतेंगे क्या; ऍन्रनळ्–कहा। ६०१

देवों के लिए भी श्रीराम का चरित श्रवणानन्द देनेवाली निधि है। ऐसे श्रीराम को अपनी कोख से जन्म देनेवाली जननी कौसल्यादेवी ने आगे अपने विलाप में कहा— राजा ! आपका अब स्वर्ग जाने का प्रयोजन क्या है ? आपने यहाँ अनेक यज्ञ सम्पन्न किये थे; उनका फल, सुख, भुगतने का आपका इरादा है ? या आप सत्यनिष्ठ अपने ऐहिक जीवन का स्वर्ग में फल भोगने जा रहे हैं ? या मनुधर्म के अनुसार, उसके किंचित भी प्रतिकूल न जाकर आपने यहाँ जो राज्यशासन किया था, उसके फलस्वरूप जो सुख मिलेगा, वह भोगने जाते हैं ? (इस पद में जो 'चॆल्वम्' शब्द

आया है, उसका अभिधा अर्थ भी है, लाक्षणिक अर्थ भी। निधि या धन के साथ सुखभोग का अर्थ भी है।)। ६०१

❀ आऴि वेन्दन् पॅरुन्देवि यन्न पन्नि यऴुदरऱ्‌रत्
तोऴि यन्न शुमित्तिरैयुन् दुळङ्गि येङ्गि युयिर्शोर
ऊऴि तिरिव दॅन्नक्कोयि लुलैयुम् वेलै मऱ्‌ऱॊऴिन्द
माऴै यॊण्गट् टेवियरु मयिलिन् कुऴात्तिन् वन्दिरैत्तार् 602

आऴि वेन्तन् पॅरुम् तेवि—चक्रवर्ती की प्रधान महिषी के; अन्न पन्नि—वैसी-वैसी बातें कहते हुए; अऴुतु अरऱ्‌र—रोते-कलपते समय; तोऴि अन्न चुमित्तिरैयुम्—सखी-सदृश सुमित्रा भी; तुळङ्कि—काँपकर; एङ्कि—विगलित होकर; उयिर् चोर—प्राणहीन-सी हो गईं; कोयिल्—और महलवासी; ऊऴि तिरिवतु ॲन्न—युग-परिवर्तन-समय आ गया हो, जैसे; उलैयुम् वेलै—अस्तव्यस्त हुए, तब; मऱ्‌ऱु ऑऴिन्त—और बाकी रही; माऴै ऑण् कण् तेवियरुम्—अँबिया की फाँक के समान आँखों वाली रानियाँ (राजपत्नियाँ) भी; मयिलिन् कुऴात्तिन वन्तु—मयूर-समूह के समान आकर; इरैत्तार्—रोईं-चिल्लाईं। ६०२

चक्रवर्ती की प्रधान रानी, देवी कौसल्या इस तरह अनेक बातें कहते हुए विलाप रही थीं। तब उनकी सखी समान रहनेवाली सुमित्रादेवी भी दुख से काँपते हुए "अभी प्राण छोड़ देंगी" —ऐसी दशा को प्राप्त हो गईं। सारा महल युगपरिवर्तन के समय का जैसा अस्त-व्यस्त हो गया। टिकोरे की फाँक के समान आँखों वाली, राजा की साठ सहस्र पत्नियाँ, मयूरसमूह के समान वहाँ आ पहुँचीं। ६०२

❀ तुञ्जि नानैत् तम्मुयिरित् ऱुणैयैक् कण्डार् तुणुक्कत्ताल्
नञ्जु नुहर्न्दा रॅन्नवुडल नडुङ्गु हिन्ऱा रॅन्ऱालुम्
अञ्जि यऴुङ्गि विऴुन्दिलरा लन्बिऱ् ऱॊडर्वान् मनम्वलित्तार् 603
वञ्ज मिल्ला मनत्तानै वानिऱ् ऱॊडर्वान् मनम्वलित्तार्

तुञ्चितानै—मरे हुए (राजा को); तन् उयिरिन् तुणैयै—अपने जीवन-संगी को; कण्टार्—देखकर; तुणुक्कत्ताल्—उद्विग्नता से; नञ्चु नुकर्न्तार् ॲन्न—विष खा लिया हो जैसे; उटलम् नटुङ्कुकिन्ऱार् ॲन्ऱालुम्—कम्पित-शरीर हो गये तो भी; अञ्चि—डरकर; अऴुङ्कि—दुखाभिभूत होकर; विऴुन्तिलर्—न गिरीं; वञ्चम् इल्ला मनत्तानै—निष्कपटमन राजा को; वानिल् तॊटर्वान्—स्वर्ग में भी अनुगमन करने का; मतम् वयत्तार्—निश्चय कर लिया; अन्पिन्—प्रेम से बढ़कर; तरुकण् पिऱितु उण्टो—निर्भयता देनेवाला दूसरा है क्या। ६०३

उन्होंने आकर अपने मृत-पति का शरीर देखा। शोकाकुल हुईं और उनके शरीर, विषभक्षण से जैसे होता है वैसे थर-थर काँपने लगे। तो भी वे डरीं नहीं, रोईं नहीं। उन्होंने ठान लिया कि निष्कपटमन राजा के साथ स्वर्ग जायेंगी, यानी सहगमन करेंगी। उनका राजा पर

अचल प्रेम था, जो उनको यह साहस दे रहा था। प्रेम से बढ़कर निर्भयता दिलानेवाली और कोई चीज़ होती है क्या ? । ६०३

❀ अळङ्गॉ ळक्क रिरुम्परप्पि लण्ड रुलहि लप्पुरत्तिल्
विळङ्गु मानक् कऱ्पिना रिवरिऩ् याव रॅऩनिऩ्ऱार्
कळङ्ग नीत्त मुहत्तिऩार् कान वॅळ्ळङ् गाल्होप्पत्
तुळङ्ग लिल्लात् तनिक्कुऩ्ऱिऱ् ऱॊक्क मयिलिऱ् चूऴ्न्दिरून्दार् 604

अळम् कॊळ्–लोनारों (नमक के उत्पत्ति-स्थानों) से भरे (तीरों वाले); अळक्कर् इरु परप्पिल्–समुद्र-वलयित इस विशाल भूतल में; अण्टर् उलकिल्–सुरलोक में; अप्पुरत्तिल्–उसके परे भी; मानम् विळङ्कु कऱ्पिनार्–यश की शोभा फैलानेवाली पतिव्रताएँ; इवरिऩ् यावर्–इनसे परे कौन हैं; ऍन–ऐसा; निऩ्ऱार्–जो रहीं; कळङ्कम् नीत्त मुकत्तिनार्–क्षोभ का कलंक-रहित मुख वालियाँ; कानम् वॅळ्ळम् काल् कोप्प–वन का प्रवाह घेर जाए; तुळङ्कल् इल्ला–(तव) अचल; तनि कुऩ्ऱिल्–अकेली गिरि पर; तॊक्क–आकर जो जुटे; मयिलिऩ्–उन मोरों (के समूह) के समान; चूऴ्न्तिरुन्तार्–घेरे खड़ी रहीं। ६०४

उनको उस स्थिति में देखकर यही कहने को मन होता था कि नमक के उत्पत्ति-स्थानों से भरे तीर वाले समुद्र से वलयित इस भूतल में ही क्या, सुरलोक में, क्यों उसके बाहर या ऊपर भी, सम्मान देनेवाले पातिव्रत्य की व्रतपालिका पतिव्रताएँ इनसे श्रेष्ठ कौन हैं ? उनके मुख पर दुख का भाव प्रकट नहीं होता था। वन में जब सब जगह बाढ़ आई है तब प्रवाह के मध्य एक अचल पर्वत पर आ एकत्रित हुए मोरों के समूह के समान वे आकर जुटी थीं। ६०४

❀ कैत्त शॊल्ला लुयिरिऴन्दुम् बुदल्वऩ् पिरिन्दुम् कडैयोड
मॅय्त्त वेन्दऩ् तिरुवुडम्बैप् पिरियार् पऱ्ऱि विट्टिलराल्
पित्त मयक्काऱ् चुऱवॅऱियुम् पिऱविप् पॅरिय कडल्कडक्क
उय्त्तु मीण्ड नावायिऱ् ऱामुम् बोवार् ऑक्किऩ्ऱार् 605

कैत्त चॊल्लाल्–कड़ुवे वचन से; पुतल्वऩ् पिरिन्तुम्–पुत्र का वियोग होने पर भी; उयिर् इऴन्तुम्–प्राण खोकर भी; कटै ओट मॅय्त्त–अन्त तक सत्य का पालन करनेवाले; वेन्तऩ्–दशरथ के; तिरु उटम्पै पिरियार्–सुन्दर शरीर से अलग न होकर; पऱ्ऱि–उसको पकड़े हुए; विट्टिलर्–न छोड़ा; पित्तम् आम् मयक्कु–मोह रूपी माया के; चुऱवु ऍऱियुम्–मकरसंकुल; पिऱवि पॅरु कटल्–भव के बड़े सागर को; कटक्क उय्त्तु–पार कर (जहाँ से पुनरावर्तन नहीं है) उस स्थान पर जाकर भी; मीण्ट–लौट जो आई; नावायिल्–उस अपूर्व नाव पर; तामुम् पोवार्–वे खुद जायँगी, जैसी; ऑक्किऩ्ऱार्–लगती हैं। ६०५

कैकेयी के कड़ुए कथन के कारण राजा को अपने पुत्र से वियुक्त होना पड़ा। अपना जीवन ही होम करना पड़ा। तो भी उन्होंने अन्त तक

अपना वचनपालन कर लिया। उनके शरीर को पकड़े हुए वे खड़ी थीं। तब वह दृश्य ऐसा लगा मानो राजा का शरीर नाव हो, जो मोहक माया रूपी मकरों से भरे भवसागर को पार करने के लिए उपयुक्त हो और जो एक बार स्वर्ग जाकर लौट आयी हो। वे उस पर बैठकर जाने को तैयार रहनेवाले यात्रियों के समान लगीं। ६०५

❀ माद राऱ्ह ळरुपदिऩा यिरर्तम् मुळ्ळम् वलित्तिरुप्पक्
कोदिल् कुणत्तुक् कोसलैयु मिळैय मादुङ् गुळैन्देङ्गच्
चोदि मणित्तेर्च् चुमन्दिरऩ्शॅन् ऱरशऩ् ऱऩ्मै शॊलवन्द
वेद मुऩिवन् विदिशॅय्द विऩैयै नोक्कि विम्मुवाऩ् 606

मातरार्कळ् अरुपतिऩायिरर्–रानियाँ, साठ सहस्र; तम् उळ्ळम् वलित्तु इरुप्प–दृढ़निश्चय रहीं, तब; कोतु इल् कुणत्तु–निष्कलंक स्वभाव की; कोचलैयुम्–कौसल्यादेवी और; इळैय मातुम्–छोटी देवी सुमित्रा; कुळैन्तु एङ्क–कुम्हलाकर दुख-तप्त रहीं; चोति मणि तेर् चुमन्तिरऩ्–ज्योतिर्मय रत्न-निर्मित रथ के सारथी; चुमन्तिरऩ्–सुमन्त्र के; चॆऩ्ऱु–जाकर; अरचऩ् तऩ्मै चॊल्ल–राजा की दशा (मौत की बात) कहने पर; वन्त–जो आये; वेतम् मुऩिवऩ्–वेदज्ञ वसिष्ठजी; विति चॆय्त विऩैयै नोक्कि–विधिकृत कार्य देखकर; विम्मुवाऩ्–दुख से भर उठे। ६०६

चक्रवर्ती की साठ सहस्र स्त्रियाँ सहगमन का दृढ़ निश्चय करके रहीं। कौसल्या और सुमित्रा दोनों अत्यधिक दुख से पीड़ित होकर, कुम्हला रही थीं। तब ज्योतिर्मय रत्नखचित रथ के सारथी सुमंत्र ने जाकर वसिष्ठजी से राजा के मरण की बात कही। वेदमूर्ति वसिष्ठजी विधि का कार्य देखकर दुख-संतप्त हुए। ६०६

वन्द मुऩिवन् वरङ्गॊडुत्तु महऩै नीत्त वऩ्कणमै
अंन्दै तीर्न्दा ऩॆऩवुळ्ळत् तॆण्णि यॆण्णि यिरङ्गुवाऩ्
उन्दु कडलिऱ् पॆरुङ्गलमॊन् ऱुडैया निऱ्पत् तऩिनाय्हऩ्
नैन्दु नीङ्गच् चॆयलोरा मीहा मऩैप्पो ऩलिवुऱ्ऱाऩ् 607

वन्त मुऩिवऩ्–वहाँ आकर मुनिवर; ऎन्तै–हमारे राजा; वरम् कॊटुत्तु–वर प्रदान करके; मकऩै नीत्त–पुत्र से छुटने के; वऩ्कणमै–कठोर दुख से; तीर्न्ताऩ्–छूटे; उळ्ळत्तु ऎण्णि–मन में सोचते-सोचते; इरङ्कुवाऩ्–दुखी होकर; उन्तु कटलिल्–तरंगाकुल समुद्र में; पॆरु कलम् ऒऩ्ऱु–एक बड़ा पोत; उटैया निऱ्प–टूट गया और; तऩि नायकऩ्–उसके अनुपम अध्यक्ष; नैन्तु नीङ्क–व्यग्र होकर हट गया और; चॆयल् ओरा–किंकर्तव्यविमूढ़; मीकामऩै पोल्–मल्लाह के समान; नलिवु उऱ्ऱाऩ्–व्यग्र हुए। ६०७

दुख के साथ वे वहाँ आये। कैकेयी को वर देने से उत्पन्न कठोर दुख से, प्राण देकर मुक्ति पानेवाले चक्रवर्ती का हाल देखकर वे अधिक व्यग्र हो उठे। तरंगोद्वेलित सागर-मध्य पोत के टूटने पर पोताध्यक्ष भी दुख के

कारण हट जाय तो मल्लाह की जैसी दशा होगी, उसी दशा को वे प्राप्त हुए। वे चिन्ताकुल हो गये। ६०७

* शॅय्यक् कडव शॅयऱ्कुरिय शिरुव रीण्डै यारल्लर्
ऍय्दक् कडव पॉरुळॅय्दा दिहवा वॅन्ऩ वियल्बॅण्णि
मैयऱ् कॉडियाण् महऩीण्डु वन्दाल् मुडित्तु मऱ्ऱॅऩ्ऩत्
तैयऱ् कडलिऱ् किडन्दाऩैत् तयिलक् कडलिऩ् ऱलैयुय्त्ताऩ् 608

चॅय्य कटव–कर्तव्य दाह-कर्म आदि; चॅयऱ्कु उरिय चिरुवर्–करने के अधिकारी पुत्र; ईण्टैयार् अल्लर्–यहाँ नहीं रहे; ऍय्त कटव पॉरुळ्–होनी; ऍय्तातु इकवा–बिना हुए (होकर ही) रहेगी; ऍऩ्ऩ–यह; इयल्पु ऍण्णि–विधि की रीति सोचकर; मैयल् कॉटियाळ्–(लोभ-) मोहित क्रूर (कैकेयी) का; मकऩ्–पुत्र; ईण्टु वन्ताल्–इधर आएगा तो; मऱ्ऱु मुटित्तुम् ऍऩ्ऩ–अन्य कार्य पूरा होगा, यह निश्चय करके; तैयल् कटलिल् किटन्ताऩै– तिरिया-सागर-मध्य पड़े रहे राजा को; तयिलम् कटलिऩ् तलै–तैल-सागर (पात्र) में; उय्त्ताऩ्–निक्षेप कराया। ६०८

उनको तो कार्य सँभालना था। सोचा कि दाहकर्म आदि करने के अधिकारी कोई पुत्र यहाँ नहीं हैं। होनी होकर ही रहेगी। यह संसार की अकाट्य विधि है। अब (लोभ-) मोहित निर्मम रानी कैकेयी का पुत्र आएगा, तो आगे का कार्य पूरा हो सकता है। तब तक चक्रवर्ती के मृत शरीर को सुरक्षित रखने के निमित्त उन्होंने "तिरिया-सागर-मध्य" पड़े रहे उस शरीर को तैल-पात्र में डलवाया। ६०८

देवि मारै यिवऱ्कुरिमै शॅय्यु नाळिऱ् चॅन्दीयिल्
आवि पोक्की रॅऩ्ऩीक्कि यरिवै माऱ्ह ळिरुवरैयुम्
ताविल् कोयिऱ् ऱलैयिरुत्तित् तण्डाऱ्प् परदऱ् कॉण्डणैहॅऩ्
ऱेवि ऩाऩ्मन् ऩवऩाणै यॅळुदु मडङ्गल् कॉडुत्तवरै 609

तेवि मारै–(साठ सहस्र) स्त्रियों को; इवऱ्कु उरिमै चॅय्युम् नाळिल्–इन (राजा) के कर्म करने के दिन; चॅम् तीयिल् आवि पोक्कीर्–लाल (ज्वाला-युक्त) आग में प्राण त्याग कर लो; ऍऩ्–कहकर; नीक्कि–उनको भेजकर; अरिवैमार्कळ्–देवियों; इरुवरैयुम्–दोनों (कौसल्या और सुमित्रा) को; ता इल् कोयिल् तलै–अपने-अपने निर्मल महल में; इरुत्ति–ठहराकर; तण् तार् परतऩ्–शीतल मालाधारी भरत को; कॉण्टु अणैक–लिवा लाओ; ऍऩ्ऱु–कहकर; मऩ्ऩवऩ् आणै–राजाज्ञा; ऍळुतुम् मुटङ्कल्–लिखित पत्र; कॊटुत्तु–देकर; अवरै–उनको (दूतों को); एविऩाऩ्–प्रेषित किया। ६०९

फिर उन्होंने दशरथ की साठ सहस्र स्त्रियों को यह कहकर अलग हटा दिया कि तुम लोग दाहकर्म के अवसर पर उस अग्नि में प्रवेश कर अपना प्राणत्याग का कर्तव्य निबाह लो। बाद उन्होंने कौसल्या और सुमित्रा को अपने-अपने महल में जाकर रहने का आदेश दिया। दूतों को

बुलाकर, उनके हाथ राजाज्ञा का पत्र दिया और आज्ञा दी कि जाकर शीतल (सुखद) माला से अलंकृत भरत को लिवा लाओ। (पत्र में राजा के सम्बन्ध में क्या लिखा गया —इसका प्रकट रूप से कथन नहीं है। शायद कवि अपने मुख से यह कहना नहीं चाहते कि वसिष्ठ ने असत्य का आश्रय लिया।)। ६०९

पोना रवरुङ् गेहयर्होन् पौन्मा नहरम् बुहवॅय्दिन्
आना वऱिवि नरुन्दवनु मऱमार् पळवि यदुशेर्न्दान्
शेना पदियिच् चुमन्दिरने शॅयऱ्पार् कुरिय शॅय्हॅन्ना
मेनाळ् जॊन्न मान्दर्क्कु विळैन्द परिशु विळम्बुवाम् 610

अवरुम्–वे भी; केकयर् कोन्–केकयराजा के; पौन् मा नकरम्–सुन्दर विशाल नगर; पुक–जाने के लिए; वॅय्तिन् पोतार्–सवेग चले; आता अऱिविन्–अक्षय-परमज्ञानी; अरु तवनुम–महान तपस्वी वसिष्ठजी भी; चेनापति इ चुमन्तिरने–सेनानायक ये सुमन्त्र ही; चॅयल् पाऱ्कुरिय–करणीय; चॅय्क अॅन्न–(राजकाज) करें, यह कहकर; अऱम् आर् पळ्ळि अतु—तपस्या-स्थान अपने आश्रम में; चेर्न्तान्–गये; मेल्–पहले; नाम् चॊन्न–हमने जिनके बारे में (वृत्तान्त) कहा था; मान्तर्क्कु–उन लोगों पर; विळैन्त परिचु–बीता वृत्तान्त; विळम्पुवाम्–कहेंगे। ६१०

वे दूत केकयराजा की राजधानी, विशाल नगर की ओर सवेग चले। अक्षयब्रह्म-ज्ञानी और महा तपस्वी वसिष्ठजी ने, 'सेनापति सुमंत्र आवश्यक तात्कालिक राजकाज सँभालें' —यह आज्ञा देकर अपने, तपस्या के स्थान, आश्रम में चले गये। अब हम उन लोगों का हाल कहेंगे, जिनके बारे में हम पहले बोले थे। ६१०

❀ मीनार् वेलै मुरशियम्ब विण्णो रेत्त मण्णिरैञ्जत्
तूनी रॊळिवाळ् पुडैयिलङ्गच् चुडर्त्ते रेऱित् तोन्ऱिनान्
वाने पुक्का नरुम्बुदल्वन् मक्क ळहन्ऱार् वरुमळवुम्
याने काप्पॅ निव्वुलहै यॅन्राबन् पोल विरिहदिरोन् 611

विरि कतिरोन्–विस्तृत किरणों वाले; अरु पुतलवन्–हमारा श्रेष्ठ पुत्र; वान् पुक्कान्–स्वर्ग चला गया; मक्कळ् अकन्ऱार्–(उसके) पुत्र भी (नगर से) चले गये; वरुम् अळवुम्–उनके आते तक; इ उलकै–इस लोक को; याने काप्पॅन्–मैं पालूंगा; अॅन्पान् पोल्–यह कहते-से; मीन् आर् वेलै मुरचु–मकरालय रूपी भेरी के; इयम्प–बजते; विण्णोर् एत्त–स्वर्गवासियों के स्तुति करते; मण् इऱैञ्च–भूलोक (वासियों) के वन्दना करते; चुटर् तेर् एऱि–दीप्यमान रथ पर चढ़कर; तूनीर्–पवित्र प्रकृति; ऑळि वाळ्–किरण-करवाल के; पुटै इलङ्क–पार्श्व में शोभित होते; तोन्ऱिनान्–उगे। ६११

सूर्य उग आये। 'मेरे कुल का श्रेष्ठ पुत्र स्वर्गवासी हो गया।

उसके पुत्र भी वन चले गये हैं। उनके लौट आने तक मैं ही यह भूमि-पालन करूँ।' मानो इस विचार से वह उग आये। उनके स्वागत में मकरालय रूपी भेरी वजी। स्वर्गवासी देवताओं ने स्तुति की। भूलोक-वासियों ने वन्दना की। पवित्र किरण रूपी तलवार पास में लटकाते हुए राजसी-ठाठ के साथ वे अपने एकचक्र-रथ पर विराजे प्रकट हुए। ६११

❀ वरुन्दा वण्णम् वरुन्दिनार् मरन्दार् तम्मै वऴ्ळलुमाङ्
गिरुन्दा नॆऩ्ऱे थिरुन्दारह ळॆल्ला मॆऴुन्दा ररुळिरुक्कुम्
पॆरुन्दा मरैक्कट् करुमुहिलैप् पॆयर्न्दार् काणार् पेदुऱ्ऱार्
पॊरुन्दा नयऩम् पॊरुन्दिनमैप् पॊऩ्ऱच् चूऴ्न्द वॆऩप्पुरण्डार् 612

वरुन्ता वण्णम्–पहले जिस तरह दुखी नहीं हुए, उस प्रकार (अभूतपूर्व रूप से) वरुन्तिनार्–जो दुखी हुए; तम्मै मऱन्तार्–और अपनी सुध-बुध खो गये (सो गये थे); वऴ्ळलुम्–प्रभु भी; आङ्कु इरुन्ताऩ्–वहाँ रहे; ऍऩ्ऱे इरुन्तार्कळ्–यही सोचकर रहे; ऍल्लाम्–वे सब; ऍऴुन्तार्–उठे; पॆयर्न्तार्–चलकर; अरुळ् इरुक्कुम्–करुणा-निलय; पॆरु तामरै कण्–विशाल कमलाक्ष; करुमुकिलै–श्यामलमेघ को; काणार्–न देखकर; पेतुऱ्ऱार्–घवड़ा गये; पॊरुन्ता--अपलक; नयऩम् पॊरुन्ति–आँखें वन्द होकर; तम्मै पॊऩ्ऱ–हमको मारने का; चूऴ्न्त–षडयन्त्र कर गये; ऍऩ–कहते हुए; पुरण्टार्–भूमि पर गिरकर लोटने लगे। ६१२

अब; वहाँ उस उपवन में जो लोग अभूतपूर्व शोक के कारण अपने को भूलकर सोये, वे इसी विश्वास के साथ सोये कि प्रभु श्रीराम वहीं हैं। सब जागे और श्रीराम को देखने गये। पर वहाँ करुणानिलय, पंकजाक्ष, मेघश्याम नहीं थे। यह जानकर वे घबड़ा उठे। "हाय! हमारी आँखों ने निद्रा में वन्द होकर हमारा नाश कर दिया", यह कहते हुए वे भूमि पर गिरे और लोटने लगे। ६१२

❀ ऍट्टुत् तिशैयु मोडुवा रॆऴुवार् विऴुवा रिडर्क्कडलुळ्
विट्टुप् पिरिन्दा ऩमैयॆऩ्बार् वॆय्य विऩैयिऩ् पयऩॆऩ्बार्
ऒट्टिप् पडर्न्द दण्डहमिव् वुलहत् तुळदऩ् ऱोवुणर्वैच्
चुट्टिच् चेरा दाऱ्ऱुमो तॊडर्दुऩ् देरिऩ् चुवडॆऩ्बार् 613

ऍट्टु तिचैयुम्–आठों दिशाओं में; ओटुवार्–भागते; ऍऴुवार्–उठते; विऴुवार्–नीचे गिरते; नमै इटर् कटलुळ्–हमको संकट-समुद्र में; विट्टु पिरिन्ताऩ्–डुबोकर हट गये; ऍऩ्पार्–कहनेवाले; वॆय्य विऩैयिऩ् पयऩ्–क्रूर कर्म का फल है; ऍऩ्पार्–कहनेवाले; ऒट्टि पटर्न्त–दृढ़ निश्चय करके जहाँ गये; तण्टकम्–वह दण्डकवन; इ उलकत्तु उळ्ळतऩ्ऱो–इसी लोक में रहता है न; उणर्वै चुट्टि–बुद्धि का उपयोग करके; चेरातु–बिना वहाँ पहुँचे; आऱ्ऱुमो–सहते रह सकेंगे क्या; तेरिऩ् चुवटु तॊटर्न्तुम्–रथ के चिह्नों का पीछा करेंगे; ऍऩ्पार्–कहनेवाले बने। ६१३

(वे उठे। उनकी बहुत बुरी स्थिति हो गई।) वे आठों दिशाओं में भागते और लड़खड़ाकर गिरते। कहते कि श्रीराम हमको संकट-समुद्र में मग्न करके चले गये। हमारे क्रूर कर्मों का फल है! फिर निर्णय के स्वर में कहते कि आखिर वह दण्डकवन जहाँ जाने का इरादा पक्का करके श्रीराम गये हैं, इसी लोक में तो कहीं है! थोड़ा बौद्धिक प्रयास करके वहाँ पहुँच जायँगे। नहीं तो क्या हम उनका वियोग सह सकेंगे? चलो— रथचक्रचिह्न पकड़ें। ६१३

❀ तेरित् चुवडु नोक्कुवार् तिरुमा नहरित् मिशैत्तिरिय
ऊरुन् दिहिरिक् कुऱियोऱ्ऱि युवन्दा रॅल्ला मुयिर्वन्दार्
आरु मञ्ज लैयत्बो ययोत्ति वन्दा नॅतवशतिक्
कारुङ् गडलु मॊरुवळिक्कॊण् डार्त्त वॅन्नक् कडिदार्त्तार् 614

तेरित्–रथ (-चक्र); चुवटु नोक्कुवार्–चिह्नों का अन्वेषण करते जो गये, वे; तिरु मा नकरित् मिचै–श्रीयुक्त विशाल अयोध्या नगर की ओर; तिरिय ऊरुम्– लौटाकर चलाये गये; कुऱि तिकिरि ओऱ्ऱि–रथचक्र-चिह्न पकड़कर; उवन्तार्– हर्षित हुए; ॲल्लाम्–सबकी; उयिर् वन्तार्–जान लौट आई; आरुम् अञ्चल्– कोई मत डरो; ऐयत् अयोत्ति वन्तात्–आर्य अयोध्या आ गये; ॲत्त–ऐसा कहकर; अचनि कारुम्–बिजली वाले मेघ; कटलुम्–और समुद्र; ओरु वळि कॊण्टु–एक स्थान पर मिलकर; आर्त्त ॲन्त–शब्द करते जैसे; कटितु आर्त्तार्–अत्यधिक शोर मचाया। ६१४

चक्र-चिह्नों का अन्वेषण करते जब वे गये, तब पाया कि चिह्न श्रीयुक्त अयोध्या नगर की ही ओर मुड़कर जा रहे हैं। उन्हें अपार हर्ष हो गया। पुनः प्राणवन्त होकर वे उच्च स्वर में बोले— कोई डरें नहीं। प्रभु अयोध्या लौट आ गये! उनका शोर इतना ज़ोर का था कि लगता था, मानो वज्रसह-मेघ और सागर एक स्थान पर मिलकर गरज रहे हों। ६१४

मात वरवित् वाय्त्तीय वळैवात् ऱॊळैवा ळॅयिऱ्ऱित्वळि
आत कडुवुक् करुमरुन्दा मरुन्दु ममुदम् पॆऱ्ऱुय्न्दु
पोत वुयिर्वन् दुडल्पुहुदप् पॊरुत्ता रॊत्तार् पॊरुवरिय
वेतित् मदनै मदत्तळित्तात् मीण्डा नॅन्त वाण्डैयार् 615

आण्टैयार्–वहाँ जो रहे, वे सब; पॊरु अरिय–उपमाहीन; वेतिल् मततै– वसन्तराज मन्मथ को; मतत् अळित्तात्–जिन्होंने (सुन्दरता में) हराया वे; मीण्टात् ॲत्त–लौट गये, यह मानकर; मातम् अरवित् वाय्–बड़े सर्प के मुख के; तीय वळै वात् तॊळै–भयंकर, वक्र, बड़े रन्ध्र वाले; वाळ् ॲयिऱ्ऱित् वळि–तीक्ष्ण दाँत के जरिए; आत–(अपने शरीर में) गये; कटुवुक्कु–विष (निवारण) के लिए; अरु मरुन्तु– श्रेष्ठ दवा; अरुन्तुम् अमुतम्–खाद्य अमृत पाकर; उय्न्तु–बचकर; पोत उयिर्

वन्तु–निर्गत प्राण के लौट आकर; उटल् पुकुत–शरीर में प्रवेश करने से; पॊरुत्तार्–नई जान पाकर आनन्दित जो हों; ऒत्तार्–उनके समान हुए। ६१५

जब उन्होंने यह सोचा कि वसंतपति मन्मथ का गर्व तोड़नेवाले अनुपम सुन्दरमूर्ति श्रीराम लौट आ गये, तब उनकी स्थिति उस मनुष्य की-सी हुई, जिसके शरीर के अन्दर भयंकर सर्प के वक्र, तीक्ष्ण और छेदयुक्त दाँत द्वारा विष गया था और जो उसके निवारक और स्वादिष्ट अमृत को पाने से विष से बचकर प्राणरक्षित हो गया हो। वे अत्यन्त हर्ष-रत हुए। ६१५

❀ आऱु शॆल्लच् चॆल्लत्ते राऴि कण्डा रयलप्पाल्
वेऱु शॆऩ्ऱ नॆऱिहाणार् विम्मु हिऩ्ऱ वुवहैयराय्
माऱि युलहम् वहुक्कु नाळ् वरम्बु कडन्तु मण्मुऴुदुम्
एऱि यॊडुङ्गु मॆऱिकडल्पो लॆयिऩ्मा नहर मॆय्दिऩार् 616

आऱु चॆल्ल चॆल्ल–मार्ग में जाते-जाते; तेर् आऴि कण्टार्–रथचक्र (-चिह्न) जिन्होंने देखा, वे; अप्पाल्–आगे; अयल् वेऱु चॆऩ्ऱ नॆऱि–अलग दूसरे मार्ग में चिह्नों को; काणार्–न देखकर; विम्मुकिऩ्ऱ उवकैयराय्–फूले आनन्द के साथ; उलकम् माऱि वकुक्कुम् नाळ्–लोक मिटाकर नई सृष्टि करने की उस युगसन्धि में; वरम्पु कटन्तु–सीमा लाँघकर; मण् मुऴुतुम् एऱि–भूमि पर फैलकर; ऒटुङ्कुम्–फिर स्वस्थ होनेवाले; ऎऱि कटल् पोल–तरंगाकुल सागर के समान; ऎयिल् मा नकरम् ऎय्तिऩार्–प्राचीर-वलयित बड़े नगर में आये। ६१६

वे यह देखते गये कि रथ अयोध्या की ओर ही गया है और अन्यत्र उसका मार्ग नहीं दिखता। युगसंधि में अपनी सीमा लाँघकर भूमि भर में चढ़नेवाले समुद्र के समान उनका आनन्द सीमा पार कर उमगा। फिर उसी समुद्र के समान थमा। वे अयोध्या में आये। ६१६

❀ पुक्का ररशऩ् पॊऩ्ऩुलहिऩ् पोऩा ऩॆऩ्ऩुम् पॊरुळ्केट्टार्
उक्कार् नॆञ्ज मुयिरुहुत्ता रुऱ्ऱ दॆम्मा लुरैप्परिदाल्
तक्काऩ् पोऩाऩ् वऩमॆऩ्ऩुन् दहैयु मुणर्न्दार् मिहैयावि
अक्का लत्ते यहलुमो ववदि यॆऩ्ऱॊऩ् ऱुळदाऩाल् 617

पुक्कार्–प्रविष्ट उन्होंने; अरचऩ् पॊऩ् उलकिल् पोऩाऩ्–राजा स्वर्गलोक सिधारे; ऎऩ्ऩुम् पॊरुळ् केट्टार्–यह समाचार सुना; तक्काऩ्–सुयोग्य श्रीराम; वऩम् पोऩाऩ्–वन गये; ऎऩ्ऩुम् तकैयुम्–यह बात भी; उणर्न्तार्–समझे; नॆञ्चम् उक्कार्–विदीर्णमन हुए; उयिर् उकुत्तार्–प्राण छोड़नेवाले के समान हुए; उऱ्ऱतु–उनकी स्थिति; ऎम्माल् उरैप्पु अरितु–हमें कहना दुस्साध्य है; मिकै आवि–अनावश्यक (उनकी दृष्टि में) प्राण; अवति ऎऩ्ऱु ऒऩ्ऱु उळताऩाल्–निश्चित अवधि वाले जो हैं तो; अ कालत्तु–उस समय; अकलुमो–छूट सकते हैं क्या। ६१७

वहाँ अयोध्या में प्रविष्ट होने पर उन्हें समाचार मिला कि चक्रवर्ती स्वर्ग सिधार गये। सुयोग्य श्रीराम जंगल ही गये हैं —इस बात का भी

पता लगा। तो वे विदीर्ण-हृदय प्राणत्यक्त-से हो गये। उनकी स्थिति का वर्णन हमारे लिए दुस्साध्य है। हाँ, जब प्राणों के काल की अवधि निश्चित है, तब हमारे चाहने पर भी प्राण क्या छूटेंगे ? । ६१७

मन्नर् कल्लर् वनम्बुहुन्द मैन्दर् कल्लर् वाङ्गरिय
इन्नर् चिरैयि निडैप्पट्टा रिरुन्दा रिरुन्द वरुन्दवनुम्
उन्नर् करिय पळियञ्जि यन्रो वॊळिन्द दियान्नॆन्रु
पन्नर् करिय पलनॆरियुम् पहर्न्दु पदैप्पै नीक्किनान् 618

मन्नर्कु–(वे) राजा के (पास); अल्लर्–नहीं रहे; वनम् पुकुन्त–जंगल में जो गये, उन; मैन्तर्कु अल्लर्–राजपुत्रों के (पास) सहायक न रहे; वाङ्क अरिय–अवार्य; इन्नल् चिरैयिन् इटै पट्टार्–दुख की कारा में पड़े; इरुन्तार्–रहे; इरुन्त–वहाँ विद्यमान; अरु तवनुम्–श्रेष्ठ तपस्वी (वसिष्ठ) ने; उन्नर् करिय–सोचने के लिए भी कठिन; पळि अञ्चि अन्रो–निन्दा से डरकर तो; यान् ऒळिन्ततु–मैंने (आत्महत्या का विचार) छोड़ा; ॲन्रु–कहकर; पन्नर्कु अरिय–दूसरों के लिए जो कहना कठिन हो वे; पल नॆरियुम् पकर्न्तु–अनेक नीति-वचन कहकर; पतैप्पै नीक्कितान्–उनकी बेचैनी दूर की। ६१८

वे न चक्रवर्ती के रहे, न वनगामी राजपुत्रों के। दोनों ओर से वे वंचित हो गये थे। वे अवार्य दुख की कारा में पकड़े गये-से रहे। (उन्होंने निश्चय कर लिया कि हम आत्महत्या कर लें।) वहाँ तपस्वी वसिष्ठ रहे। उन्होंने उन्हें धीरज बँधाया। कहा कि आत्महत्या निंद्य है। उसी कारण से मैंने, चाहते हुए भी, अपनी आत्महत्या नहीं की। उन्होंने अनेक नीति-वाक्यों का उपदेश देकर लोगों की बेचैनी दूर की। ६१८

❀ वॆळ्ळत् तिडैवाळ् वडवनलै यञ्जि वेलै कडवाद
पळ्ळक् कडलिन् मुनि पणियाऱ् पैयु णहरम् पदैप्पडङ्ग
वळ्ळऱ् ऱादै पणियदनाल् वानोर् वरत्तान् मयङ्गिरुळिन्
नळ्ळिऱ् पोन वरिशिलैक्कै नम्बि शॆय्है नडत्तुवाम् 619

वॆळ्ळत्तु इटै वाळ् वट अनलै अञ्चि–जलप्रवाह के अन्दर रहनेवाली वड़वाग्नि से डरकर; वेलै कटवात–तीर न लाँघनेवाले; पळ्ळम् कटलिन्–गहरे सागर के समान; मुनि पणियाल्–मुनिवर की आज्ञा से; पैयुळ् नकरम्–दुखमग्न नगरवासी; पतैप्पु अटङ्क–बेचैनी छोड़ शान्त रहे, तब; वळ्ळल्, तातै पणि अतनाल्–प्रभु, अपने पिता की आज्ञा से; वानोर वरत्ताल्–देवों के (प्राप्त) वर से; मयङ्कु इरुळ् नळ्ळिल्–भ्रामक अन्धकार (की अर्धनिशा) में; पोन–जो जंगल (की ओर) चले; वरि चिलै–उन बन्धनयुक्त धनु के; कै नम्पि–हाथ में धारण करनेवाले नायक का; चॆय्कै–कार्य; नटत्तुवाम्–कहें। ६१९

गहरा समुद्र अपनी सीमा नहीं लाँघता क्योंकि वह अपने अन्दर रहने वाली वडवाग्नि से डरता है। वैसे ही वसिष्ठजी की आज्ञा से नगरवासी

शान्त हुए। उनका दुख सीमा पार कर अनर्थ करने के लिए उद्यत नहीं हुआ। उनकी बात यहाँ छोड़कर हम धनुर्हस्त श्रीराम का हाल कहें, जो कि अपने उदार पितृदेव की आज्ञा से और देवों की वरसिद्धि के निमित्त भ्रामक अन्धकार के वक्त जंगल चले थे। ६१९

6. गङ्गैप् पडलम् (गंगा पटल)

वॆय्योऩॊळि	**तऩमेऩियिऩ्**	**विरिशोदियिऩ्**	**मऱैयप्**
पॊय्योवॆऩु	**मिडैयाळॊडु**	**मिळैयाऩॊडुम्**	**बोऩाऩ्**
मैयोमर	**हदमोमऱि**	**कडलोमऴै**	**मुहिलो**
ऐयोविवऩ्	**वडिवॆऩ्बदो**	**रऴियावऴ**	**हुडैयाऩ् 620**

इवऩ् वटिवु–इनका रूप; मैयो–अंजन (क्या); मरकतमो–मरकत; मऱि कटलो–(जिसमें) तरंगें मुड़कर आती हैं, वह समुद्र; मऴै मुकिलो–वर्षाकालीन जलधर है; ऐयो–ओफ़; ऍऩ्पतु–ऐसा (विस्मय-योग्य); ओर् अऴिया अऴकु उटैयाऩ्–अनुपम और अचल सौंदर्य वाले; वॆय्योऩ् ऒळि–सूरज का प्रकाश; तऩ् मेऩियिऩ्–अपने शरीर से; विरि–निकलनेवाली; चोतियिऩ् मऱैय–ज्योति में विलीन होने देते हुए; पॊय्यो ऍऩुम्–झूठ क्या, यह सन्देह करने योग्य; इटैयाळॊटुम्–कमर वाली देवी के साथ, और; इळैयाऩॊटुम्–छोटे, लक्ष्मण के साथ; पोऩाऩ्–चलते गये। ६२०

श्रीराम असाधारण सौन्दर्यवान थे। उनका श्यामल रूप-सौन्दर्य देखकर विस्मय होता है! इनके रूप-लावण्य की समता अंजन करेगा? या मरकत? या वे नीला समुद्र हैं, जिनकी लहरें तीर से टकराकर लौट जाती हैं? या जल-भरे काले मेघ हैं? ओफ़! कैसा सौन्दर्य है? इस तरह विमुग्ध करनेवाले, अचल और अक्षय सौन्दर्य के श्रीराम सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजी के साथ जा रहे थे। उनकी ज्योति में सूर्य का प्रकाश छिप जाता था। (सूर्य की धूप गरम थी, वह श्रीराम की शीतल ज्योति में छिप जाती थी।) सीताजी की कमर ऐसी सूक्ष्म थी कि संशय उठता था कि झूठ है क्या? (इटैयाळ का अर्थ मध्यस्थता भी है। वे दोनों के बीच में जाती थीं। और लक्ष्मी को माया कहते हैं शास्त्र! माया के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वह मिथ्या है! उनकी कमर मिथ्या है —इसमें आश्चर्य नहीं।) लक्ष्मणजी भी (इळैयाऩ् का अर्थ छोटा है और न थकनेवाला यानी हमेशा उत्साह-भरा।) साथ जा रहे थे। ६२०

अऴियऩ्ऩदो	**रऱुऩ्ऩिय**	**कुऴलाळ्कड**	**लमुदिऩ्**
तऴियऩ्ऩदोर्	**मॊऴियाणिऱै**	**तवमऩ्ऩदोर्**	**पॊऱैयाळ्**
वॆऴियऩ्ऩदो	**रिडैयाळॊडुम्**	**विडैयऩ्ऩदोर्**	**नडैयाऩ्**
कऴियऩ्ऩमु	**मडवऩ्ऩमु**	**मुडऩाडुव**	**कण्डाऩ् 621**

अळि अऩ्ऩतु–(रंग में) भ्रमर के समान; ओर् अऱल् तुऩ्ऩिय—वालू-सदृश; कुळलाळ्–केशिनी; कटल् अमुतिऩ् तळि अऩ्ऩतु–समुद्रोत्पन्न अमृत की बूंदों के समान; ओर् मोळियाळ्–उत्तम बोली वाली; निऱै तवम्–पूर्ण (पातिव्रत्य) तपस्या वाली; अऩ्ऩतु–वैसे ही (पूर्ण); ओर् पोऱैयाळ्–अत्यधिक क्षमाशीला; वॆळि अऩ्ऩतु–आकाश-तुल्य (सूक्ष्म); ओर् इटैयाळोटुम्–अनुपम कमर वाली देवी के साथ; विटै अऩ्ऩतु ओर् नटैयाऩ्—ऋषभ-सम चाल वाले; कळि अऩ्ऩमुम्–मत्त पुरुष हंस व; मटम् अऩ्ऩमुम्–छोटी हंसिनी को; उटऩ् आटुव—साथ-साथ क्रीड़ा करते हुए; कण्टाऩ्–देखा। ६२१

(अब ये कोसल देश के दक्षिणी भाग, मरुदम-खेतों और बागों के प्रदेश में जा रहे हैं। वहाँ के सुन्दर दृश्यों का वर्णन दिया जाता है।) सीताजी भ्रमर और काले बालू के समान (जो लहरों के-से रूप में नदी-तल में जमे पड़े हैं) केश वाली हैं। उनकी बोली अमृत-भव सुधा की बूँदों के समान मधुर और जीवनदायिनी है। वे पतिव्रता तपस्विनी और अत्यन्त क्षमाशीला हैं। आकाश की तरह सूक्ष्म कटि वाली, उनके साथ, ऋषभसम चाल वाले श्रीराम ने जाते-जाते मुदित पुरुषहंस और मनोरम हंसिनी को साथ-साथ क्रीडा करते हुए देखा। ६२१

अञ्जम्बैयु	मैयऩ्ऱऩ	दलहम्बैयु	मळवा
नञ्जङ्गळै	वॆलवाहिय	नयऩङ्गळै	युडैयाळ्
तुञ्जुङ्गळि	वरिवण्डुहळ्	कुळलिऩ्बडि	शुळलुम्
कञ्जङ्गळै	मञ्जऩ्कळ्	नहुहिऩ्ऱदु	कण्डाळ् 622

अञ्चु अम्पैयुम्–(मन्मथ के पाँचों बाणों को और; ऐयऩ् तऩतु–प्रभु के; अलकु अम्पैयुम्–तीक्ष्ण शरों को; अळवा–माप कर; नञ्चङ्कळै वॆल आकिय–विष को भी जीतने के लिए तैयार; नयतङ्कळै उटैयाळ्–नयनों की स्वामिनी ने; कळि तुञ्चुम्–मोदपूर्ण; वरि वण्टुकळ्–धारीदार भ्रमर; कुळलिऩ् पटि–बाँसुरी की-सी ध्वनि करते हुए; चुळलुम्–जिन पर मँड़राते हैं; कञ्चङ्कळै–उन कमलों की; मञ्चऩ् कळल्–सुन्दर राम के चरण; नकुकिऩ्ऱतु–हँसी उड़ाते हैं, यह; कण्टाळ्–देखा। ६२२

उधर सीताजी ने, जिनकी आँखें मन्मथ के पाँचों बाणों और प्रभु श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों को भी हरा चुकी थीं, और गरल को भी हरा सकती थीं, कमलपुष्पों को देखा, जिन पर धारीदार भौंरे मँड़रा रहे थे; और यह भी देखा कि श्रीराम के श्रीचरण उनका परिहास कर रहे हैं। (यानी श्री-चरण कंजों से अत्यधिक मनोरम हैं।)। ६२२

❀ माहऩ्दमु	महरऩ्दमु	मळहऩ्दरु	मदियिऩ्
पाहऩ्दरु	तुदलाळोडु	पवळऩ्दरु	मिदळाऩ्
मेहऩ्दऩि	वरुहिऩ्ऱदु	मिऩ्ऩोडॆऩ	मिळिर्पूण्
नाहऩ्दऩि	वरुहिऩ्ऱदु	पिडियोडॆऩ	नडवा 623

अळकम्–केशराशि; मा कन्तमुम्–बड़ी सुगन्धि और; मकरन्तमुम् तर–मकरन्द से भरी रही; मतियिन् पाकम् तरु–अर्धचन्द्र-सम; नुतलाळॊट्टु–ललाट वाली सह; पवळम् तरु इतळान्–प्रवाल का रंग प्रकट करनेवाले अधरों के श्रीराम; तत्ति मेकम्–एक अपूर्व मेघ; मिऩ्ऩॊटु वरुकिन्ऱतु अॅन्न–बिजली के साथ आता हो जैसे; मिळिर् पूण्–उज्ज्वल खुमी (दाँतों के अलंकार के कवच) से युक्त; तत्ति नाकम्–श्रेष्ठ गज; पिटियॊटु वरुकिन्ऱतु अॅन्न–अपनी हथिनियों के साथ आता हो जैसे; नटवा–चलते हुए। ६२३

सुबासपूर्ण और मकरंद-मिलित केश, और अर्धचन्द्र-सम ललाट से युक्त देवी सीताजी के साथ प्रवालसम अधरों से शोभित श्रीराम ने, विजली सहित आनेवाले मेघ के समान और कवचालंकृत दाँत वाला गजराज हथिनी के साथ आता हो जैसे, चलते हुए— । ६२३

तॊळैहट्टिय किळैमुट्टिय शुरुदिच्चुवै यमुदिऱ्
किळैहट्टिय करुविक्किळ रिशैयिऱ्पशै नऱविन्
विळैहट्टियिन् मदुरित्तॆळु किळविक्किळि विऴिपोल्
कळैहट्टवर् तळैविट्टॆऱि कुवळैत्तॊहै कण्डान् 624

तॊळै कट्टिय–छेदों से युक्त; किळै–बाँसुरी में; मुट्टिय–पवन द्वारा उठाया गया; चुरुति चुवै अमुतिन्–ताल-लय-बद्ध संगीत के श्रुत्यमृत से; किळै कट्टिय–तारों सहित; करुवि किळर्–वीणा से उठी; इचैयिन्–संगीत की ध्वनि से भी; पचै नऱविन्–सारभूत शहद से भी; विळै कट्टियिन्–(इक्षुरस से) उत्पन्न खाँड़ से; मतुरित्तु ॲळु–अधिक मधुरता से निकलनेवाली; किळवि–बोली वाली; किळि–शुक-समान सीताजी की; विऴि पोल्–आँखों के समान; कळै कट्टवर्–निरानेवालों ने; तळै विट्टु ॲऱि–खेतों से जो दूर फेंके थे; कुवळै तॊकै–कुवलय-राशि को; कण्टान्–देखा (श्रीराम ने)। ६२४

उन खेतों को देखा, जिनमें किसान लोग निराने का काम कर रहे थे। उन्होंने कुवलय-लताओं को पुष्पों सहित निकाल कर फेंका था। वे कुवलय-पुष्प सीताजी की कमनीय आँखों के समान लगीं, श्री रामजी को। छिद्र सहित बाँसुरी से पवनाघात द्वारा उठनेवाली मधुर ध्वनि; तारों की टंकार से ध्वनि करनेवाली वीणा का सुरीला नाद, मौखिक मनोरम संगीत का नाद और खाँड़ —इनसे भी अधिक मधुरता से पूर्ण होती थी, सीताजी की बोली। ऐसी देवी की आँखों के समान वे कुवलय-पुष्प लगे। ६२४

❀ अरुप्पेन्दिय कलशत्तुणै यमुदेन्दिय मदमा
मरुप्पेन्दिय वॆन्नलामुलै मळैयेन्दिय कुऴलाळ्
करुप्पेन्दिर मुदलायिन कण्डाळिडर् काणाळ्
पॊरुप्पेन्दिय तोळानॊडु विळैयाडिनळ् पोऩाळ् 625

अरुम्पु एऩ्ऩतिय–(उपमा में कमल या सेमर) कलियों का स्थान देनेवाले; तुणै अमुतु कलचम् एऩ्ऩतिय–जोड़े के कलशों से तुल्य; मतम् मा मरुप्पु एऩ्ऩतिय–मत्तगज के बड़े दांत के समान; अऩ्ऩल् आम्–ऐसे कहने योग्य; मुलै–उरोजों; मऴै एऩ्ऩतिय कुऴलाळ्–और मेघ-सम केश वाली; करुम्पु एऩ्ऩतिरम्–इक्षु का कोल्हू; मुतलायिऩ–आदि; कण्टाळ्–देखा; इटर् काणाळ्–संकट न देखा; पॊरुप्पु एऩ्ऩतिय तोळाऩॊटु–पर्वतोन्नत कन्धों वाले के साथ; विळैयाटिऩळ्–क्रीड़ा करती हुई; पोऩाळ्–गई। ६२५

कमल (या सेमर-) कलियों के समान हैं, अमृतकलशद्वय हैं; मत्तगज-दाँत हैं —ऐसे कहलाने योग्य स्तनों और मेघसम केश वाली सीताजी ईख के कोल्हू आदि को देखते हुए श्रम की चिन्ता न करके, पर्वतोन्नत कंधों वाले श्रीराम के साथ खेलती हुई चलीं। ६२५

पऩ्ऩऩ्दुहु तरळऩ्दॊहु पडर्पऩ्दिहळ् पडुनीर्
अऩ्ऩऩ्दुयिल् वदितण्डलै ययऩ्ऩ्दुऱै पुळिऩम्
शिऩ्ऩऩ्दरु मलर्तऩ्दऩ शॆऱिनन्दऩ वऩऩ्
पॊऩ्नुन्दिय नदिकण्डुळ महिऴ्दन्दऩर् पोऩार् 626

पऩ् नन्तु उकु–अनेक शंखों के दिये; तरळम् तॊकु–मोतियों की राशियों की; पटर् पऩ्तिकळ् पटुम्–जहाँ पंक्तियाँ पड़ी हैं; नीर्–उन घाटों को; अऩ्ऩम् तुयिल् वति–हंस जहाँ सोने आते हैं, उन; तण्टलै–उद्यानों को; अयल्–उनके पास; नन्तु उऱै पुळिऩम्–शंख के आवासभूत पुलिनों को; चिऩ्ऩम् तरु–चिह्न वाले; मलर् तऩ्तऩ–पुष्पों के; चॆऱि नन्तऩ वऩम्–घने नन्दनवनों को; नऩ् पॊऩ् उन्तिय–और श्रेष्ठ स्वर्ण उछालने वाली; नति–नदियों को; कण्टु–देखते हुए; उळम् मकिऴ् तऩ्तऩर्–मनमुग्ध हो; पोऩार्–तीनों गये। ६२६

तीनों बटोहियों ने मार्ग में जलघाट देखे, जहाँ शंखजनित मोतियों की राशियाँ पंक्तियों में पड़ी थीं; उपवन देखे, जहाँ हंस सोने के लिए आते थे। उन्होंने बालू के टीले देखे, जहाँ शंख रहते थे; अनेक नन्दनवन (पुष्पवन) देखे और स्वर्ण से समृद्ध नदियाँ देखीं। ६२६

काल्पाय्वऩ मुदुमेदिहळ् कदिर्मेय्वऩ कडैवाय्प्
पाल्पाय्वऩ पुऩल्पाय्वऩ मलर्वायळि पडरच्
चेल्पाय्वऩ कयल्पाय्वऩ शॆङ्गाऩ्मड वऩ्ऩम्
पोल्पाय्पुऩल् मडवार्पडि नॆडुनाडवै पोऩार् 627

काल् पाय्वऩ–पैरों को उठाकर भागनेवाली; मुतु मेतिकळ्–बड़ी भैंसें; कतिर् मेय्वऩ–धान के पौधों को चरते हुए; कटै वाय्–मुख के कोरों से; पाल् पाय्वऩ–कच्चे धान का श्वेत रस बहने देते हुए; पुऩल् पाय्वऩ–जल में कूदती हैं; मलर् वाय् अळि–वहाँ के पुष्पों पर से, भ्रमर; पटर–उठकर उड़ जाते हैं; चेल् पाय्वऩ–"चेल" मछलियाँ उछलती हैं; कयल् पाय्वऩ–"कयल" मछलियाँ लपकती हैं; पाय् पुऩल्–विशाल जलाशयों में; चॆम् काल्–लाल पैरों वाले; मट अऩ्ऩम् पोल्–छोटे

हंसों के समान; मटवार् पटि–छोटी उम्र की स्त्रियाँ जहाँ स्नान कर रही हैं; नॆट्टु नाट्टु अवै–विशाल भूभागों से होते हुए; पोतार्–गये। ६२७

तीनों ने देखा— बड़ी-बड़ी भैंसे पैर उठाकर भागती थीं और धान के पौधों में चरने के बाद मुख के कोरों से धान के श्वेत रस को बहने देते हुए दौड़कर जल में पैठ जाती थीं। तब जलाशय के फूलों पर से भ्रमर उठकर उड़ जाते थे। 'चेल', 'कयल' आदि मछलियाँ उछलती थीं। विशाल जलाशय में स्त्रियाँ स्नान करती थीं, वे लाल पैर वाले सुन्दर छोटी उम्र के हंसों के समान थीं। ६२७

परुदि पऱ्ऱिय पल्हलन् मुऱ्ऱिनर्, मरुद वैप्पिन् वळङ्गॊऴु नाडॊरीइच्
चुरुदि कऱ्ऱुयर् तोमिलर् शुऱ्ऱुरुम्, विरिदि रैप्पुनऱ् कङ्गैयै मेविनार् 628

परुति पऱ्ऱिय–अत्युज्वल; पल् कलन् मुऱ्ऱिनर्–अनेक आभूषणों से अलंकृत तीनों; मरुतम् वैप्पिन्–'मरुदम्' प्रदेश के; वळम् कॊऴु नाटु–समृद्ध भूभाग को; ऑरीइ–पार करके; चुरुति कऱ्ऱु उयर्–वेदाध्ययन से उत्कृष्ट; तोम् इलर्–निर्मल (मुनियों) से; चुऱ्ऱु उरुम्–घिरी हुई; विरि तिरै पुनल्–विस्तृत लहरों के पाट वाले जल-विस्तार की; कङ्कैयै मेविनार्–गंगा को पहुँच गये। ६२८

उज्ज्वल आभरणालंकृत तीनों, मरुदम (बागों और खेतों के मैदान) के उर्वर प्रदेश को पार कर तरंग सहित गंगा नदी के तट पर आये, जहाँ वेदाध्ययन से उत्कृष्ट निर्मल तपोधन रहते थे। ६२८

❀ गङ्गै यॆन्नुम् कडवुट् टिरुनदि, तङ्गि वैहुन् दबोदनर् यावरुम्
ऍङ्गळ् शॆल्हदि वन्द्दॆन् ऱेमुरा, अङ्ग णायहऱ् काणवन् दणमिनार् 629

कङ्कै ऍन्नुम्–गंगा नाम की; कटवुळ् तिरु नति–दिव्य आदरणीय नदी के; तङ्कि वैकुम्–तीर पर रहनेवाले; तपोतनर् यावरुम्–तपोधन सब; ऍङ्कळ् चॆल् कति–हमारी प्राप्य सद्गति; वन्ततु–आ गये; ऍन्ऱु–यह जानकर; एम् उरा–आनन्दित होकर; अम् कण् नायकन् काण–सुन्दराक्ष नायक के दर्शनार्थ; वन्तु अणमिनार्–आ पहुँचे। ६२९

गंगा नाम की उस दिव्य और पूज्य नदी के तट पर जो वास करते थे, वे सब तपस्वी यह कहते हुए कि 'हमारे प्राप्य-गति-रूप श्रीराम आ गये' अत्यधिक आनन्द के साथ श्रीराम के दर्शनार्थ आये। ६२९

❀ पॆण्णि नोक्कुज् जुवैयैप् पिऱर्पिऱक्
कॊण्णि नोक्कि यियम्बरु मिन्बत्तैप्
पण्णि नोक्कुम् बरावमु दैप्पशुङ्
गण्णि नोक्किन् रुळ्ळङ् गळिक्किन्ऱार् 630

पिऱर्–(तपस्वियों से); इतर–(गृहस्थ) लोग; पॆण्णिऩ् नोक्कुम् चुवैयै–कामिनियों से जो प्राप्त करते हैं, उस काम-माधुर्य-स्वरूप (श्रीराम) को; ऍण्णिऩ् नोक्कि–मन से देखकर; पिऱर्क्कु इयम्प अरुम्–दूसरों को समझाना जो कठिन है, उस; इऩ्पत्तै–आनन्दकन्द को; पण्णिऩ् नोक्कुम्–गीतरूप वेदों से प्रतिपादित; परावु अमुतै–सब के स्तुत्य अमृत को; पचु कण्णिऩ् नोक्कि–चर्म के बहिश्चक्षुओं द्वारा देखकर; उळ्ळम्–मन में; कळिक्किऩ्ऱार्–आनन्द का अनुभव करते हैं। ६३०

वे भाग्यवान थे। श्रीराम गृहस्थों के सांसारिक स्त्रीसंग-जन्य स्वानुभूति के भोग-माधुर्य के समान, ज्ञानियों के ध्यान-गम्य और अकथनीय परमानन्दरूप हैं। गेय वेदों के प्रतिपाद्य और सर्ववन्द्य उनको अपने पार्थिव चक्षुओं से देखकर वे तपोधन अतिशय हर्षचित्त हुए। ६३०

❀ ऍदिर्हॉण् डेत्तिऩ रिऩ्ऩिशै पाडिऩर्
वॆदिर्हॉळ् कोलिऩ राडिऩर् वीरऩैक्
कदिर्हॉ डामरैक् कण्णऩैक् कण्णिनाल्
मदुर वारि यमुदॆऩ मान्दुवार् 631

वॆतिर् कॉळ् कोलित्तर्–बाँस के बने त्रिदण्डधारी उन्होंने; वीरऩै–वीर को; ऍतिर् कॉण्टु–स्वागत करके; एत्तिऩर्–स्तुति की; इऩ् इचै पाटिऩर्–मधुर गुणगान किया; आटिऩर्–नाचे; कतिर् कॉळ् तामरै कण्णऩै–कृपा से दीप्यमान पंकजाक्ष को; कण्णिऩाल्–अपनी आँखों से; मतुरम् वारि अमुतु ऍऩ–मधुर पयोधि के अमृत के समान; माऩ्तुवार्–पिया। ६३१

त्रिदण्डी उन संन्यासियों ने श्रीवीरराघव का स्वागत किया। उनका मधुर पदों में गुणगान किया। वे नाचे। कृपा की कान्ति से भरी और श्रेष्ठ कमल-सी आँखों वाले श्रीराम की सुन्दरता को वे अपनी आँखों रूपी चषक से उठाकर पीने लगे। ६३१

❀ मऩैयि नीङ्गिय मक्कळै वेहलुम्
निऩैयु नॆञ्जिऩर् कण्डिलर् नेडुवार्
अऩैयर् वन्दुऱ् वाण्डॆदिर्न् दार्हळ्पोल्
इऩिय मादवप् पळ्ळिहॉण् डॆय्दिऩार् 632

मऩैयिऩ् नीङ्किय–घर छोड़कर जो गये, उन; मक्कळै–पुत्रों को; कण्टिलर्–न देख पाकर; निऩैयुम् नॆञ्चिऩर्–सदा स्मरण करनेवाले मन के रहकर; वेकलुम् नेटुवार्–अनेक काल से ढूँढ़नेवाले (माँ-बाप); अऩैयर्–उन (पुत्रों) के; आण्टु वन्तुउऱ–वहाँ आ जाने पर; ऍतिर्न्तार्कळ् पोल्–सामने मिल गये, जैसे; इऩिय मा तवम् पळ्ळि–सुखद तपोस्थान (आश्रम) में; कॉण्टु ऍय्तिऩार्–लिवा ले गये। ६३२

उनका आनन्द उन माँ-बाप का-सा था, जिनके पुत्र, घर छोड़कर गये थे और जो उनको देख न पाकर सदा स्मरण करते बहुत दिनों तक खोजते

रहे और जिनके सामने पुत्र स्वयं आ गये। वे श्रीराम को अपने सुखद तपोस्थान, आश्रम में ले गये। ६३२

पॉऴियुङ् गण्णीर्प् पुदुप्पुऩ लाट्टिऩर्
मॉऴियु मिऩ्शॉलिऩ् मॉय्म्मलर् शूट्टिऩर्
अऴिवि लऩ्बॅऩु मारमिर् दूट्टिऩर्
वऴियिऩ् वन्द वरुत्तत्तै वीट्टिऩर् 633

पॉऴियुम् कण् नीर्–ढलकनेवाले आँसुओं के; पुतुपुऩल्–नवीन जल से; आट्टिऩर्–उनको नहलाया; मॉऴियुम्–कहे हुए; इऩ् चॉल्–अभ्यर्थना-वचन के; मॉय् मलर् चूट्टिऩर्–अधिक पुष्पों से अर्चना की; अऴिवु इल्–अक्षय; अऩ्पु ऍऩुम्–भक्ति रूपी; अरु अमिर्तु ऊट्टिऩर्–अपूर्व अमृत का अशन कराया; वऴियिऩ् वन्त–मार्गगमन से उत्पन्न; वरुत्तत्तै–क्लेश को; वीट्टिऩर्–दूर किया। ६३३

उन्होंने श्रीराम को अपने आनन्दाश्रु की धारा से नहलाया। स्तुति-वचन रूपी पुष्प चढ़ाकर उनकी पूजा की; अपनी भक्ति रूपी अमृत का नैवेद्य अर्पित किया। अपने व्यवहारों से मुनियों ने उन तीनों के पथचलन-परिश्रम को दूर किया। ६३३

❀ कायुङ् गाऩिऱ् किऴङ्गुङ् गऩिहळुम्, तूय तेडिक् कॉणर्न्दऩर् तोऩ्ऱनी
आय गङ्गै यरुम्बुऩ लाडिऩै, तीयु मोम्बिऩै शॅय्यमु दॅऩ्ऱनर् 634

काऩिऩ्–वन में; कायुम्–कच्चे फलों; किऴङ्कुम्–कन्दों; कऩिकळुम्–और फलों को; तूय तेटि–अच्छे रूप से ढूँढ़; कॉणर्न्तऩर्–लाये; तोऩ्ऱल्–प्रभु; नी–आपके; आय–स्नान-योग्य; कङ्कै अरु पुऩल्–गंगाजी के पुण्यजल में; आटिऩै–स्नान करके; तीयुम् ओम्पिऩै–अग्निसन्धान करके; अमुतु चॅय्–इनको भोगिए; ऍऩ्ऱऩर्–कहा। ६३४

वे वन में जाकर पवित्र कन्द-मूल-फलादि चुन लाये। उनसे प्रार्थना की कि प्रभु! आप गंगाजी में स्नान करके अग्निसंधान, औपासन आदि अनुष्ठान पूरा कीजिए और इनका भोग कीजिए। ६३४

मङ्गै यर्क्कु विळक्कऩ्ऩ मादैयुम्, शॅङ्गै पऱ्ऱिऩऩ् ऱेवरुङ् गैदॉऴप्
पङ्ग यत्तयऩ् पण्डुदऩ् पादत्तिऩ्, अङ्गै यिऱ्ऱन्द गङ्गयि ऩाडिऩाऩ् 635

मङ्कैयर्क्कु विळक्कु अऩ्ऩ–स्त्रियों में दीप-समान; मातैयुम्–देवी को; चॅम् कै पऱ्ऱिऩऩ्–(लाल) मनोरम हाथ से पकड़कर; तेवरुम् कै तॉऴ–देवों के हाथ जोड़े वन्दना करते; पङ्कयत्तु अयऩ्–कमलासन अज देव; पण्टु–पहले किसी दिन; तऩ् पातत्तिऩ्–अपने चरणों का; अम् कैयिल्–उनके श्रेष्ठ हाथों से; तन्त–(जिस नदी से) प्रक्षालन कराया; कङ्कैयिऩ्–उस गंगा नदी में; आटिऩाऩ्–स्नान किया। ६३५

श्रीराम, उनकी प्रार्थना के अनुसार गंगा में स्नान करने गये। वे अपने साथ स्त्रीकुल-दीपक श्री सीताजी को भी हाथ पकड़े हुए ले गये।

तब देवों ने उनको नमस्कार किया। यह वही गंगा थीं, जिनके जल से कमलासन ब्रह्मा ने अपने सुन्दर हाथों से श्रीराम (श्रीविष्णु) के चरणों का पवित्र प्रक्षालन कराया था। उन गंगाजी में अब श्रीराम ने मज्जन किया। ६३५

कऩ्ऩि नीक्करुङ् गङ्गैयुङ् गैदॊ़ळाप्, पऩ्ऩि नीक्करुम् बादहम् पारुळोर्
ऎऩ्ऩि नीक्कुवर् याऩुमिऩ् ऱॆऱ्ऱनद, उऩ्ऩि नीक्किऩॆऩ् उय्न्दऩॆऩ् ऩालॆऩ्ऱाळ् 636

कऩ्ऩि नीक्कु अरु–कन्यापन (नित नया रहना) जिनका न छूट सकता, उन; कङ्कैयुम्–गंगाजी ने भी; कै तॊ़ळा–अंजलि करके; पार् उळोर्–भूवासी; पऩ्ऩि नीक्क अरु–अकथनीय; पातकम्–पापों को; ऎऩ्ऩिऩ् नीक्कुवर्–मुझमें स्नान करके दूर करते हैं; याऩुम्–मैं भी; इऩ्ऱु–आज; ऎऩ् तन्त उऩ्ऩिऩ्–मुझे जन्म देनेवाले आपसे; नीक्किऩॆऩ्–अपना पाप दूर किया; उय्न्तऩॆऩ्–उद्धार पाया; ऎऩ्ऱाळ्–कहा। ६३६

नित्यनवीन गंगाजी ने भी श्रीराम की अंजलि की और अभिनन्दन कहा कि संसार के लोग अकथनीय घोर पाप करके मुझमें आकर स्नान करते हैं और अपने पापों से निवृत्त होते हैं। आज मेरे ही जनक आप द्वारा मेरा पाप दूर हुआ और मैं उद्धार पा गई। ६३६

वॆङ्ग णाहक् करत्तिऩऩ् वॆण्णिऱक्, कङ्गै वार्शडैक् कऱ्ऱैयऩ् कऱ्पुडै
मङ्गै काणनिऩ् ऱाडुहिऩ् ऱाऩ्वहिर्त्, तिङ्गळ् शुडिय शॆलवनिर् ऱोऩ्ऱिनाऩ् 637

वॆम् कण्–क्रूर आँखों वाले; नाकम् करत्तिऩऩ्–गजसूँड़-सम हस्त वाले; वॆळ् निऱम्–श्वेत रंग के; कङ्कै वार् चटै कऱ्ऱैयऩ्–गंगाजल जिससे स्रवित होता था, उस जटा वाले; कऱ्पु उटै(य) मङ्कै काण–पतिव्रता देवी सीता के सामने; निऩ्ऱु आटकिऩ्ऱाऩ्–खड़े होकर, डूबकर स्नान करते हैं; वकिर् तिङ्कळ्–अंशचन्द्र; चूटिय–धारण करनेवाले; चॆल्वऩिऩ्–ईश्वर (शिव) के समान; तोऩ्ऱिऩाऩ्–दर्शन दिये। ६३७

जब श्रीराम गोते लगाकर उठे, तब उनके जटाजूट से श्वेत गंगाजल बह रहा था। तब भयावनी आँखों के हाथी की सूँड़ के समान हाथ वाले श्रीराम, जो पतिव्रता सती श्री सीताजी के सामने नहा रहे थे; चन्द्रशेखर शिवजी के समान लगे। ६३७

तळ्ळु नीर्प्पॆरुङ् गङ्गैत् तरङ्गत्ताऩ्, वळ्ळि नुण्णिडै मामल राळॊडुम्
वॆळ्ळि वॆण्णिऱप् पार्कडऩ् मेलैनाट्, पळ्ळि नीङ्गिय पाऩ्मयिऱ् ऱोऩ्ऱिनाऩ् 638

वळ्ळि नुण् इटै–लता-सी पतली कमर वाली; मा मलराळॊटुम्–श्रेष्ठ कमल-निवासिनी (श्रीलक्ष्मी का अवतार सीताजी) के साथ; तळ्ळुम् नीर्–तरंगायित जल वाली; पॆरुम् कङ्कै–बड़ी गंगाजी की; तरङ्कत्ताऩ्–तरंगों के मध्य स्नान कर उठनेवाले श्रीराम ने; मेलै नाळ्–पहले उस दिन; वॆळ्ळि वॆळ् निऱम्–चाँदी-सदृश श्वेत रंग के; पाल् कटल्–दुग्ध-सागर में से; पळ्ळि नीङ्किय पाऩ्मैयिऩ्–शयन त्यागकर उठे, जैसे; तोऩ्ऱिऩाऩ्–दर्शन दिये। ६३८

और भी लता-सी पतली कमर वाली कमला श्री सीताजी के साथ स्नान करनेवाले वे तरंगायमान व बड़ी गंगा की तरंगों के मध्य ऐसे लगते थे, मानो श्रीविष्णु, पहले कभी, चाँदी के समान श्वेत जल वाले क्षीरसागर में अपना श्रीदेवी के साथ शयन छोड़कर जाग उठे हों। ६३८

वञ्जि नाण विडैक्कु मडनडैक्, कञ्जि यन्न मॊदुङ्ग वडिक्कुमॆन्
कञ्ज नीरि लॊळिप्पक् कयलुहप्, पञ्जि मॆल्लडिप् पावैयु माडिनाळ् 639

इटैक्कु वञ्चि नाण–अपनी कमर को देख लता को लज्जित होने देते हुए; **मटम् नटैक्कु अञ्चि**–मृदु चाल से डरकर; **अन्नम् ऒतुङ्क**–हंस को दूर चले जाने देते हुए; **अटिक्कु**–चरणों के सामने; **मॆन् कञ्चम् नीरिल् ऒळिप्प**–कोमल कमल जल में छिप जाएँ, ऐसे; **कयल् उक**–कयल मछली को उछलने देते हुए; **पञ्चि मॆल् अटि**–महावर-लगे मृदु चरणों वाली; **पावैयुम्**–देवी ने भी; **आटिनाळ**–मज्जन किया। ६३९

जब सीताजी नहायीं, तब लताएँ उनकी कमर देखकर लज्जित हो गईं। उनकी धीमी चाल से डरकर (हार मानकर) हंस दूर हो गये। कमल-पुष्प उनके चरणों की सुन्दरता के सामने क्षमा खोकर जल में छिप गये। (उठती तरंगें उनको छिपा लेती थीं।) 'कयल' आदि मछलियाँ उछलने लगीं। इस संभ्रम के मध्य महावर-लगे चरणों वाली देवी नहायीं। ६३९

देव देवन् शॆऱिशडैक् कट्रयुट्, कोवै मालै यॆरुक्कॊडु कॊन्ऱैयिन्
पूवु नाऱलळ् पूङ्गुळऱ् कट्रयिन्, नावि नाण्मलर् कङ्गयु नाऱिनाळ् 640

कङ्कैयुम्–गंगाजी भी; **तेव तेवन्**–देवाधिदेव के; **चॆऱि चटै कऱ्ऱै उळ्**–घनी जटाजूट में; **कोवै मालै**–गुँथी माला के; **ऎरुक्कॊटु**–अर्क-पुष्प की गन्ध के साथ; **कॊन्ऱै इन् पूवुम्**–अमलतास के सुखद पुष्पों की गन्ध; **नाऱलळ्**–नहीं देती थी, पर; **पू कुळल् कऱ्ऱैयिन्**–सीताजी के केशजाल के; **नावि**–कस्तूरी का बास और; **नाळ् मलर्**–नवीन विकसित पुष्पों की; **नाऱिनाळ्**–गन्ध देती थीं। ६४०

इनके नहाने से अब गंगाजी में देवदेव शिवजी की जटाजूट के अन्दर रहनेवाले अर्क, अमलतास आदि पुष्पों की गन्ध नहीं पायी गई। पर उनसे सीताजी के सुन्दर केशजाल में जो रही, वह कस्तूरी और पुष्पों की सुगन्धि आने लगी। ६४०

नुरैक्कॊ ळुन्दॆळुन् दोडि नुडङ्गलाल्, नरैत्त कून्दलि नङ्गैमन् दाहिनि
उरैत्त शोदै तनिमैयै युन्नुवाळ्, तिरैक्कै नीट्टिच् चॆविलियि नाट्टिनाळ् 641

नुरै कॊळुन्तु–लहरों की मालाएँ; **ऎळुन्तु ओटि**–उठकर फैलीं और; **नुटङ्कलाल्**–हिलीं, इसलिए; **नरैत्त कून्तलिन्**–पके केश की; **नङ्कै मन्ताकिनी**–(सी लगने वाली) मन्दाकिनी देवी ने; **उरैत्त चोतै**–सर्वस्तुत्य सीताजी का; **तनिमैयै**

उऩ्ऩुवाळ्–एकाकीपन सोचकर; तिरै कै नीट्टि–लहर रूपी हाथ बढ़ाकर; चॅविलियिऩ्–दाई के स्थान में रहकर; आट्टिऩाळ्–(मानो) नहलाया। ६४१

छोटी-छोटी लहरें उठीं और फैलीं। वे गंगा के श्वेत केशों के समान लगीं। इसलिए वह दृश्य ऐसा लगता था, मानो वृद्धा मंदाकिनी यशस्विनी सीता की निस्सहायता का विचार करके, उनकी दाई के स्थान में रहकर उन्हें अपने हाथों से नहला रही हों। ६४१

मङ्गै वार्कुळऱ् कऱ्ऱै मळैक्कुलम्, तङ्गु नीरिडैत् ताळ्न्दु कुळैप्पऩ
कङ्गै यारुड नाडुङ् गरियवळ्, पॉङ्गु नीर्च्चुळि पोवऩ पोऩ्ऱवे 642

मङ्कै–देवी (सीता) के; वार् कुळल् कऱ्ऱै–लम्बे केशजाल रूपी; मळै कुलम्–मेघसमूह; तङ्कुम् नीर् इटै–(जिसमें) मग्न हुए, उस जल में; ताळ्न्तु कुळैप्पऩ–मग्न होकर जो लहराते हैं; कङ्कै आऱ्ऱुटऩ् आटुम्–गंगा नदी के साथ मिलनेवाली; करियवळ्–काली (कालिन्दी नदी) की; पॉङ्कु नीर् चुळि–अधिक भौंरियाँ; पोवऩ पोऩ्ऱ–बनकर चलती जैसे हैं। ६४२

सीताजी के मेघसम काले और लम्बे बाल गंगा के जल में वर्तुलाकार हिल रहे हैं। उनको देखकर ऐसा लगता है कि काली कालिन्दी के, जो गंगा नदी में मिल रही हैं; भँवर अधिक संख्या में गंगा में उठ रहे हों। ६४२

शुळिपट् टोडिय तूङ्गॉलि याऱ्ऱुत्तऩ्
विळियिऩ् चेलुहळ् वानिऱ वॅळ्ळत्तु
मुळुहित् तोऩ्ऱुहिऩ् ऱाणमुदऱ् पाऱ्कडल्
अळुवत् तऩ्ऱॅळु वाळॆऩ लायिऩाळ् 643

चुळि पट्टु ओटिय–भँवरों के साथ बहनेवाली; तूङ्कु ऑलि याऱ्ऱु–अधिक ध्वनि वाली गंगा नदी के; चेल् तऩ् विळियिऩ् उकळ–'चेल' मछलियाँ (अपनी) उनकी आँखों के समान जिसमें चंचल हैं, उस; वाल् निऱम् वॅळ्ळत्तु–श्वेत रंग के प्रवाह में; मुळुकि तोऩ्ऱुकिऩ्ऱाळ्–डूबकर ऊपर उठतीं, तब; अऩ्ऱु–पहले; मुतल् पाल् कटल् अळुवत्तु–पहला-गण्य (सर्वश्रेष्ठ) दुग्ध-सागर से; ऍळुवाळ् ऍऩल्–प्रकट हुई श्रीलक्ष्मी ही मान्य; आयिऩाळ्–बनीं (दिखीं)। ६४३

भँवरों के साथ गंगा कल-ध्वनि करती हुई बह रही हैं। उनमें की 'चेल' मछलियाँ सीताजी की आँखों के समान ही चंचल हैं। ऐसी गंगा में गोते लगाकर सिर उठाए खड़ी रहनेवाली सीताजी लक्ष्मीदेवी के ही समान लगती हैं, जो पहले कभी दुग्धसागर-मध्य प्रकट हुई थीं। ६४३

शॅय्य तामरैत् ताळ्पण्डु तीण्डलाल्, वॅय्य पादहन् तोर्त्तु विळङ्गुवाळ्
ऐयऩ् मेऩियॅल् लामळैन् दाळिनि, वैय मानर हत्तिडै वैहुमो 644

पण्टु–पहले; ऐयऩ्–हमारे प्रभु के; चॅय्य तामरै ताळ्–लालकमल-चरणों के;

तीण्टलाल्–स्पर्श से; वॆय्य पातकम् तीर्त्तु–कठोर पापों को दूर करके; विळङ्कुवाळ्–रहनेवाली गंगाजी ने; ऐयन् मेनि ऍल्लाम् अळैन्ताळ्–श्रीराम के पूरे दिव्य शरीर को टटोला; इनि–आगे; वैयम्–संसार (के जीव); मा नरकत्तु इटै–बड़े नरक में जाकर रहेंगे क्या। ६४४

गंगाजी पहले श्रीविष्णु के चरण-स्पर्श से पवित्र हुई थीं और उसके फलस्वरूप वे घोर पातकों को भी दूर करने की क्षमता रखती थीं। अब तो श्रीराम का सारा शरीर उनमें मग्न है। फिर क्या उनमें इतनी पवित्रता और पापनिवारण-क्षमता नहीं आई कि संसार वालों को नरक में जाने की नौबत ही न आये? क्या संसार अब भी नरक जाएगा? । ६४४

❀ तुऱैन रुम्बुन लाडिच् चुरुदियोर्, उऱैयु ळॆय्दि युणर्वुडै योरुणर्
इऱैवर् कैदॊळु देन्दॆरि योम्बिप्पिन्, अऱिञर् कादर् कमैविरुन् दायिनान् 645

तुऱै–गंगा के घाट पर; नऱु पुनल् आटि–पवित्र जल में स्नान करके; चुरुतियोर् उऱैयुळ्–वेदज्ञों के वासस्थान में; ऍय्ति–जाकर; उणर्वु उटैयार्–ब्रह्मज्ञों के ही; उणर् इऱैवन् कै तॊळुतु–ज्ञानगम्य भगवान की अंजलि करके; एन्तु ऍरि ओम्पि–श्रेष्ठ अग्निसंधान का अनुष्ठान करके; पिन्–बाद; अऱिञर् कातर्कु–उन ज्ञानियों के प्रेम के; अमै विरुन्तु–योग्य अतिथि; आयिनान्–बने। ६४५

[त्रिविक्रमावतार के समय श्री ब्रह्माजी ने अपने कमंडल के पात्र से श्रीविष्णु के अपने लोक में आये श्री-चरण का प्रक्षालन कराया था। वही गंगा की उत्पत्ति का वृत्तान्त समझा जाता है। इसलिए वह नूपुर-गंगा भी कहलाती हैं। मदुरा के पास अळगर कोयिल के पास जो पवित्र जलस्रोत है, उसको नूपुरगंगा मानकर लोग उसमें स्नान करके पापमुक्त होते हैं—ऐसी मान्यता है।]

श्रीराम ने गंगा के घाट पर पवित्र जल में स्नान किया। वे फिर मुनियों के आश्रम में गये। ज्ञानियों के ही ज्ञानगम्य परब्रह्म का ध्यान करके उन्होंने अग्निसंधान, औपासन आदि कर्म किये। फिर वे उन ज्ञानी मुनियों के भक्ति-पात्र अतिथि बने। ६४५

वरुन्दित् तान्ऱर वन्द वमुदैयुम्, अरुन्दु नीरॆन् ऱमररै यूट्टिन्ना
विरुन्दु मॆल्लड हुण्डु विळङ्गिनान्, तिरुन्दि नार्वयिर् चॆय्दन तेयुमो 646

तान् वरुन्ति–अपने परिश्रम से; तर वन्त–उत्पन्न; अमुतैयुम्–अमृत को भी; नीर् अरुन्तुम् ऍन्ऱु–आप अशन कीजिए, कहकर; अमररै ऊट्टिनान्–देवों को जिन्होंने खिलाया वे; विरुन्तु मॆल् अटकु–आतिथ्य में मिले अल्प आहार को; उण्टु–भोजन कर; विळङ्किनान्–आनन्द के साथ रहे; तिरुन्तिनार् वयिन्–उत्कृष्ट मन वाले लोगों के प्रति; चॆय्तन–जो उपकार किया जाता है; तेयुमो–वह क्षीण होगा क्या। ६४६

एक वार उन्होंने खुद अधिक परिश्रम करके अमृत निकाला। और उसको देवों को, 'आप लीजिए', कहकर अशनार्थ दे दिया। आज मुनियों के अतिथि बनकर उनका दिया अल्प आहार आनंद के साथ किया। उत्कृष्ट मन वाले अच्छे लोगों के प्रति किया हुआ उपकार कभी क्षीण नहीं होता। ६४६

7. गुहप्पडलम् (निषाद पटल)

❀ आय कालैयि ऩायिर मम्बिक्कु, नाय हऩ्बोर्क् कुहऩॆऩु नामत्ताऩ्
तूय गङ्गैत् तुऱैविडुन् दॊऩ्मैयाऩ्, कायुम् विल्लिऩऩ् कऱ्ऱिर डोळिऩाऩ् 647

आय कालैयिऩ्–उस समय; आयिरम् अम्पिक्कु नायकऩ्–सहस्रों नावों का स्वामी; तूय कङ्कै तुऱै–पवित्र गंगा-घाट पर; विटुम् तॊऩ्मैयाऩ्–नाव चलाने का बहुत दिनों से अधिकार रखनेवाला; कायुम् विल्लिऩऩ्–संहारक धनुष वाला; कल् तिरळ् तोळिऩाऩ्–पर्वत के समान पुष्ट कंधों वाला; पोर्–युद्धनिपुण; कुकऩ् ऎऩ्ऩुम् नामत्ताऩ्–गुह का नाम धरनेवाला। ६४७

उस समय गुह आया। (उसका वर्णन लगातार नौ पदों में पूर्ण होता है।) सहस्रों नावों का अधिपति; पवित्र गंगा-घाट पर नाव चलाने का बहुत दिनों का स्वत्व रखनेवाला; संहारक धनुर्धर; पर्वत-सम पुष्ट कंधों वाला; योद्धा वीर; गुह नाम का; । ६४७

तुडिय ऩायिऩऩ् ऱोऱ्चॆरुप् पार्त्तपेर्, अडिय ऩऱ्चॆऱिऩ् दऩ्ऩ निऱत्तिऩाऩ्
नॆडिय तानै नॆरुङ्गलि ऩीर्मुहिल्, इडियि ऩोडॆऴुन् दालऩ्ऩ वीट्टिऩाऩ् 648

तुटियऩ्–"तुटि" (डमरू) रखनेवाला; नायिऩऩ्–अनेक श्वानों का स्वामी; तोल् चॆरुप्पु–चमड़े के पदत्राणों से; आर्त्त–युक्त; पॆरु अटियिऩऩ्–बड़े पैरों वाला; अल् चॆऱिऩ्त–घना अन्धकार; अऩ्ऩ–सदृश; निऱत्तिऩाऩ्–रंग वाला; नॆटिय तानै–विशाल सेना से; नॆरुक्कलिऩ्–घिरे रहने के कारण; नीर् मुकिल्–जलभरा मेघ; इटियिऩोटु ऎऴुन्ताल् अऩ्ऩ–वज्रघोष के साथ उठ आया, ऐसा; ईट्टिऩाऩ्–लगने वाला। ६४८

तुरही वाला; कुत्तों को साथ रखनेवाला; चमड़े का पदत्राण पहने हुए बड़े पैरों वाला; घना अंधकार-सा रंग वाला; हमेशा बड़ी सेना से घिरे रहने के कारण वज्रघोष के साथ आनेवाले काले मेघ के समान दिखनेवाला; । ६४८

कॊम्बु तुत्तरि कोडदिर् पेरिहै, पम्बै पम्बु पडैयिऩऩ् पल्लवत्
तम्ब ऩम्बिक्कु नाद ऩऴिहवुळ्, तुम्बि योट्टम् बुरैहिळर् शुऱ्ऱत्ताऩ् 649

कॊम्पु–तुरही; तुत्तरि–छोटी दुंदुभी; कोटु–शंख; अतिर् पेरिकै–चोट पर

थर्रानेवाले ढोल; पम्पै–पम्पै नामक बड़ा डमरू; पम्पु–जिसमें रहते हैं, ऐसी; पटैयित्तन्–सेना का स्वामी; पल्लवत्तु अम्पन्–पत्ताकार के सिरे वाले बाण वाला; अम्पिक्कु नातन्–नावों के चलानेवालों का सरदार; अऴि कवुळ्–मदप्रवाह-युक्त गण्डस्थल के; तुम्पि ईट्टम् पुरै–गजदल के समान; किळर् चुऱ्ऱत्तान्–उमंग उठनेवाले परिवारों वाला। ६४९

तुरही, छोटी दुंदुभी, शंख, ताडन से थर्रानेवाले ढोल, बड़ा डमरू —इनसे युक्त सेना का पति; पत्ताकार फल वाले बाणों का रखनेवाला; नाविकों का सरदार; मदजल-प्रवाह से युक्त गण्डस्थल वाले गजों के समान परिवारों से घिरा हुआ; । ६४९

❀ काऴ मिट्ट कुऱङ्गित्तन् कङ्गैयिन्, आऴ मिट्ट नॅडुमयि नात्तैत्
ताऴ विट्टशॅन् दोलन् ऱयङ्गुऱच्, चूऴ विट्ट तॊडुपुलि वालित्तान् 650

काऴम् इट्ट–जाँघिया पहने; कुऱङ्कित्तन्–जाँघ वाला; अरै ताऴ विट्ट–कमर से नीचे कसे; चॅम् तोलन्–लाल चमड़े का वस्त्रधारी; तयङ्कु उऱ–उस पर शोभा पाते हुए; चूऴलिट्ट–लपेटकर पहने हुए; तॊटु–एक दूसरे से बँधे हुए; पुलि वालित्तान्–बाघ के दुम से युक्त; कङ्कैयिन् आऴम् इट्ट–गंगा की गहराई जानने का; नॅटुमैयित्तान्–यश धारण करनेवाला। ६५०

जाँघियाधारी जाँघों वाला; लाल चमड़े का वस्त्रधारी; उस पर लपेटे हुए बाघ के दुमों के बने कमरबंद वाला; गंगा की गहराई थाह चुका —ऐसे यश का अधिकारी; । ६५०

❀ पऱ्ऱॊ· डुत्तन पल्हु कवडियन्, कऱ्ऱॊ डुत्तन पोलुङ् गऴलिनान्
अऱ्ऱॊ डुत्तन्न कुञ्जियि नाय्हदिर्, नॅऱ्ऱॊ डुत्तु नॅरिन्द पुरुवत्तान् 651

पल् तॊटुत्त अन्न–दाँतों को गूँथा हो जैसे; पल्कु कवटियन्–बहुत कौड़ियों की माला पहना हुआ; कल् तॊटुत्तन पोलुम्–पत्थरों को गूँथा हो जैसे; कऴलित्तान्–पायलधारी; अल् तॊटुत्त अन्न–अन्धकार-खण्डों को गूँथा हो जैसे; कुञ्चियिन्–केश पर; आय् कतिर् नॅल् तॊटुत्तु–चुनी हुई धान की बालों को खोंसकर; नॅरिन्त पुरुवत्तान्–कुंचित भौंहों वाला। ६५१

दाँतों की गुँथी माला जैसे बने कौड़ियों के आभूषणों से भूषित; पत्थरों की बनी जैसी पायलधारी; अंधकार-खंडों के बने जैसे दिखनेवाले केश पर धान की बालें खोंसे हुए रहनेवाला; तनी हुई भौहों वाला; । ६५१

पॅण्णै वन्शॅरुम् बिऱ्पिऱङ् गिच्चॅरि, वण्ण वन्मयिर् वार्न्दुयर् मुन्कैयान्
कण्ण हन्ऱड मार्बिनुङ् गल्लितान्, ऍण्णॅ युण्ड विरुळ् पुरै मेनियान् 652

वन् पॅण्णै चॅरुम्पिल् पिऱङ्कि–कठोर ताड़ की तीलियों के समान रहकर; चॅरि–घने; वल् मयिर्–काले और मोटे बाल; वार्नतु उयर्–लम्बे जिन पर बढ़े थे; मुन् कैयान्–वैसे हाथों वाला; कण् अकल्–विस्तृत; मार्पु अँनुम्–वक्ष रूपी;

कल्लित्तान्–चट्टान वाला; ऍण्णॅय् उण्ट—तेल-लगा; इरुळ् पुरै–अन्धकार-सम; मेतियान्–शरीर वाला। ६५२

जिसके हाथ के बाल ताल तरु के दृढ़ रेशों के समान लगते थे और लम्बे व काले थे; चट्टान के समान वक्ष वाला; तेल-मले अंधकार के समान रंग वाला; । ६५२

❀ कच्चॊडारत्त करैक्कदिर् वाळिनन्, नच्च रावि नडुक्कुरु नोक्किनन्
पिच्च रामन्न पेच्चिन निन्दिरन्, वच्चि रायुदम् बोलु मरुङ्गिनान् 653

कच्चॊट्टु आर्त्त–कमरबन्द से बद्ध; करै–रक्तरंजित; कतिर् वाळिनन्–चमकीली तलवार वाला; नञ्चु अरावित्–विषैले साँप के समान; नटुक्कु उरुम्–दिल कँपानेवाली दृष्टि वाला; पिच्चर् अन्न–पागल के समान; पेच्चितन्–(असम्बद्ध) वचन करनेवाला; इन्तिरन्–इन्द्र के; वच्चिरायुतम् पोलुम्–वज्रायुध के समान; मरुङ्कित्तान्–कमर वाला। ६५३

चमकीली और रक्त के धब्बों सहित तलवार से युक्त कमरबंद वाला; विषैले सर्प-सम भयंकर दृष्टि वाला; उन्मत्त के समान असंगत और असंबद्ध बात करनेवाला; देवेन्द्र के वज्रायुध के समान कटि वाला; । ६५३

ऊऱ्ऱ मेय्नऱ वूनॊडु मीनुहर्, नाऱ्ऱ मेय नहैयिन् मुहत्तिनान्
शीऱ्ऱ मिन्ऱियुन् दीयॆळ नोक्कुवान्, कूऱ्ऱ मञ्जक् कुमुरुङ् गुरलिनान् 654

ऊऱ्ऱम् एय्—मस्ती-दायक; नऱवु–ताड़ी; ऊनॊटु मीन्–मांस के साथ मछलियों को; नुकर्–खाने से; नाऱ्ऱम् मेय–(मांस-) गन्ध से भरा; नकै इल् मुकत्तितान्–प्रकाशहीन मुख वाला; चीऱ्ऱम् इन्ऱियुम्–बिना क्रोध के भी; ती ॲळ नोक्कुवान्–आग उगलते हुए देखनेवाला; कूऱ्ऱम् अञ्च–यम को भी डराते हुए; कुमुरुम् कुरलितान्–शब्दित कण्ठ वाला। ६५४

मस्ती देनेवाली ताड़ी, मांस और मछलियों को खाने से मांसगंध-युक्त और प्रकाशहीन मुख वाला; बिना क्रोध के भी आग-सी बरसानेवाली दृष्टि वाला; यम को भी भयभीत करनेवाले कंठस्वर वाला; । ६५४

❀ शुऱ्ऱ मप्पुऱ निऱ्कच् चुडुहणै, विऱ्ऱु ऱन्दरै वीक्किय वाळॊळित्
तऱ्ऱ नीत्त मनत्तिन तन्बिनन्, नऱ्ऱ वप्पळ्ळि वायिलै नण्णिनान् 655

चुऱ्ऱम् अ पुऱम् निऱ्क–परिवारों के एक ओर खड़े होते; चुटु कणै–सन्तापक शर; विल्–और धनुष; तुऱन्तु–त्यागकर; अरै वीक्किय वाळ्–कमर में बद्ध तलवार को; ऑळित्तु–हटाकर; अऱ्ऱम् नीत्त—कलंक-रहित; मनत्तितन्–मन वाला होकर; अन्पितन्–भक्ति के साथ; नल् तवम् पळ्ळि वायिलै–मंगलमय आश्रम के द्वार पर; नण्णितान्–पहुँचा। ६५५

वह गुह अपने परिवारों की भीड़ को एक ओर खड़ा करके, शर,

धनुष और तलवार को भी त्यागकर, मन में कलंक-रहित भक्ति लेकर उस आश्रम के द्वार पर आया, जहाँ श्रीराम रहते थे। ६५५

❀ शिरुङ्गि पेर मॅन्नत्तिरैक् कङ्गैयिन्, मरुङ्गु तोन्रुम् नहरुरै वाऴ्क्कैयन्
ऑरुङ्गु तेनॉडु मीनुब हारत्तन्, इरुन्द वळ्ळलैक् काणवन् दॅय्दिनान् 656

चिरुङ्कि पेरम्–शृंगवेर; ॲन्न–नाम का; तिरै कङ्कैयिन्–तरंगसहित गंगा के; मरुङ्कु तोन्रुम्–पास में रहे; नकर् उरै वाऴ्क्कैयन्–नगर में रहनेवाला वासी; इरुन्त वळ्ळलै काण–(आश्रम में) ठहरे हुए प्रभु (श्रीराम) के दर्शन के लिए; तेनॊटु मीन ऑरुङ्कु–शहद और मछली की; उपकारत्तन्–भेंट लिये हुए; वन्तु ॲय्तिनान्–आया हुआ था। ६५६

लहर-भरी गंगा के पास के शृंगवेर नगर का वासी वह गुह, आश्रम में ठहरे हुए प्रभु श्रीराम के दर्शनार्थ शहद और मछलियों की भेंट लेकर आया था। ६५६

❀ कूव मुन्न मिळैयोन् कुरुहिनी, यावन् यावॅन वन्बि निरैञ्जिनान्
देव नुङ्गळल् शेविक्क वन्दनॅन्, नाव वेट्टुव नायडि येन्नॅन्रान् 657

कूव–पुकारने पर; मुन्नम् इळैयोन् कुरुकि–पहले लक्ष्मण के उसके पास आकर; नी यावन्–तुम कौन हो; या–(कार्य) क्या; ॲन्न–पूछने पर; अन्पिन्–भक्ति के साथ; इरैञ्चिनान्–विनय करके; तेव–प्रभु; नावम् वेट्टुवन्–नावों का नायक व्याध; नाय् अटियेन्–कुत्ते के समान दास; नुम् कऴल् चेविक्क–आपके चरण-दर्शन के लिए; वन्तनॅन्–आया; ॲन्रान्–कहा। ६५७

उसने आश्रम के द्वार पर आकर पुकारा तो पहले छोटे भाई लक्ष्मण आये। उन्होंने गुह से पूछा कि तुम कौन हो? और तुम्हारा क्या काम है? तब गुह ने बड़े ही आदर और प्रेम के साथ निवेदन किया कि देव! मैं नावों का स्वामी निषाद हूँ; आपका कुत्ता-सम दास हूँ। आपके चरणों के दर्शनार्थ आया हूँ। ६५७

❀ निऱ्ऱियीण् डॅन्रु पुक्कु नॅडियवऱ् ऱॊऴुदु तम्बि
कॊऱ्ऱव निन्नैक् काणक् कुरुहिन निमिर्न्द कूट्टच्
चुऱ्ऱमुम् तानु मुळ्ळन् दूयवन् ऱायि नल्लन्
ऍऱ्ऱुनीर्क् कङ्गै नावायक् किऱैगुह नॊरुव नॅन्ऱान् 658

तम्पि–छोटे भाई; ईण्टु निऱ्ऱि ॲन्ऱु–यहाँ खड़े रहो, कहकर; पुक्कु–अन्दर जाकर; नॅटियवन् तॊऴुतु–श्रीराम को नमस्कार करके; कॊऱ्ऱव–विजयी राजा; उळ्ळम् तूयवन्–पवित्र मन वाला; तायिन् नल्लन्–माता से भी अधिक अच्छा; ऍऱ्ऱुम् नीर् कङ्कै–तीरों से टकरानेवाली लहरों से युक्त गंगा की; नावाय्क्कु इऱैयवन्–नावों का स्वामी; कुकन् ऒरुवन्–गुह नाम का कोई; निमिर्न्त–बड़ी; कूट्टम्–भीड़ के; चुऱ्ऱमुम् तानुम्–परिवार और आप; निन्नै काण–आपके दर्शन के लिए; कुरुकितन्–आया है; ॲन्ऱान्–कहा। ६५८

लक्ष्मण ने उसका वचन सुनकर उससे कहा कि तुम इधर रहो, मैं अभी आया। यह कहकर वे तुरंत अंदर गये और श्रीराम से बोले— विजयी राजा! आपके दर्शनार्थ गुह नाम का कोई (मनुष्य) आया है। वह पवित्रमन और माता से भी अधिक हितैषी लगता है। तरंग-भरी गंगा पर चालित नावों का मालिक है। उसके साथ बड़ा परिवार भी है। ६५८

अण्णलुम् विरुम्बि यॆऩ्बा लळैत्तिनी यवऩै यॆऩ्ऩप्
पण्णवऩ् वरुह वॆऩ्ऱाऩ् परिवित्तऩ् विरैविऱ् पुक्काऩ्
कण्णऩैक् कण्णि ऩोक्किक् कऩिन्दऩ निरुण्ड कुञ्जि
मण्णुऱप् पणिन्दु मेऩि वळैत्तुवाय् पुदैत्तु निऩ्ऱाऩ् 659

अण्णलुम्–श्रीराम के भी; विरुम्पि–इच्छा करके; नी अवऩै–तुम उसको; ऍऩ् पाल् अळैत्ति ऍऩ्ऩ–मेरे पास बुला लाओ, कहने पर; पण्णवऩ्–सुसंस्कृत (लक्ष्मण) ने; वरुक ऍऩ्ऱाऩ्–आओ, कहा; परिवित्तऩ्–प्रेमविह्वल (गुह); विरैविल् पुक्काऩ्–जल्दी अन्दर गया; कण्णऩै–सर्वनेत्ररूप श्रीराम को; कण्णिऩ् नोक्कि–आँखों से देखकर; कऩिऩ्तऩऩ्–गद्‌गद होकर; इरुण्ट कुञ्चि–काले केश को; मण् उऱ–भूमि पर टेककर; पणिन्तु–दण्डवत करके; मेऩि वळैत्तु–शरीर झुकाते हुए; वाय् पुतैत्तु–मुख पर हाथ रखे; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। ६५९

यह सुनकर श्रीराम को भी गुह को देखने की इच्छा हुई। भाई को आज्ञा दी कि तुम जाकर उसको ले आओ। सुसंस्कार-युक्त लक्ष्मण ने बाहर जाकर गुह को बुलाया। वह भी बड़े प्रेम के साथ सत्वर अंदर आया। उसने सर्वनेत्ररूप श्रीराम को अपनी आँखों से खूब देखा और प्रेम-विह्वल हो गया। उसने अपने काले केश वाले सिर को भूमि पर लगाते हुए दण्डवत की। वह उठा और सिर झुकाकर, मुख पर उँगली रखते हुए विनत मुद्रा में खड़ा हो गया। ६५९

इरुत्तियीण् डॆऩ्ऩ लोडु मिरुन्दिल ऩॆल्लै नीत्त
अरुत्तियऩ् ऱेऩु मीऩु ममुदिऩुक् कमैन्द वाहत्
तिरुत्तिऩॆऩ् कॊणर्न्दे ऩॆऩ्गॊलॊ तिरुवुळ मॆऩ्ऩ वीरऩ्
विरुत्तमा दवरै नोक्कि मुऱुवलऩ् विळम्ब लुऱ्ऱाऩ् 660

ईण्टु इरुत्ति–यहाँ बैठो; ऍऩ्ऩलोटुम्–कहने पर; इरुन्तिलऩ्–नहीं बैठा; ऍल्लै नीत्त अरुत्तियऩ्–असीम रूप से आर्द्र; अमुतिऩुक्कु अमैन्त आक–आपके भोजन-योग्य; तेऩुम् मीऩुम् तिरुत्तिऩॆऩ्–शहद और मछलियाँ ठीक करके; कॊणर्न्तेऩ्–लाया हूँ; तिरुवुळम् ऍऩ् कॊल्–चित्त क्या है; ऍऩ्ऩ–कहने पर; वीरऩ्–वीर (श्रीराम); विरुत्तर् मातवरै–वृद्ध महातपस्वियों को; नोक्कि–देखकर; मुऱुवलऩ्–मन्दहास के साथ; विळम्पल् उऱ्ऱाऩ्–कहने लगे। ६६०

भगवान श्रीराम ने कहा कि यहाँ बैठो। पर वह नहीं बैठा। असीम भक्ति के साथ उसने निवेदन किया कि प्रभु! आपके भोग के लिए

योग्य शहद और मछलियाँ ठीक करके लाया हूँ। आपका श्रीचित्त क्या है ? तब वीर राघव ने पास रहे वृद्ध और महान तपस्वियों की ओर मुख करके मंद-हास के साथ कहा। ६६०

अरियदा मुवप्प वुळ्ळत् तन्बिना लमैन्द कादल्
तॅरिदरक् कॊणरन्द वॅन्ऱा लमुदिनुञ् जीर्त्त वन्ऱे
परिविनिऱ् ऱळीइय वॅन्निऱ् पवित्तिर मॅम्म नोर्क्कुम्
उरियन विनिदि नामु मुण्डनॅ मन्ऱो वॅन्ऱान् 661

अरिय–श्रेष्ठ; ताम् उवप्प–(पानेवाले के) मन को सन्तोष देते हुए; उळ्ळत्तु अन्पिनाल्–(देनेवाले के) मन के सच्चे प्रेम से; अमैन्त–उत्पन्न; कातल् तॅरितर–इच्छा प्रकट करते हुए; कॊणरन्त–लाये गये हों; ऍन्ऱाल्–तो; अमुतिनुम्–अमृत से भी; चीर्त्त अन्ऱे–श्लाघ्य हैं न; परिविनिल् तळीइय–प्रेम के साथ स्वीकृत हो गये; ऍन्निन्–तो; पवित्तिरम्–पवित्र भी हैं; ऍम् अन्नोर्क्कुम्–हम जैसे इन (मुनियों) के लिए भी; उरियन–योग्य हैं; नामुम् इनितिन् उण्टनॅम्–हमने सुख से भोग लिया (समझो); ऍन्ऱान्–श्रीराम ने कहा। ६६१

गुह जो पदार्थ लाया है, वे बड़े ही पवित्र विचार से मुझे तृप्त करने के लिए लाये गये हैं। उसके प्रेम-जनित आह्लाद को प्रकट करते हैं। इसलिए वे अमृत से भी श्रेष्ठ बन गये हैं (यद्यपि वे मेरे द्वारा स्वीकार-योग्य नहीं हैं, क्योंकि मांसाहार वर्ज्य है)। इसलिए हम उन्हें अंगीकार करते हैं, तब ये हमारे जैसे इन तपस्वियों से भी स्वीकृत हो गये। इसलिए वे जैसे हमसे सुखपूर्वक भुगत लिये गये, समझो। —यह श्रीराम ने कहा। ६६१

❀ शिङ्गवे ऱनैय वीरन् पिन्नरुञ् जॅप्पु वान्याम्
इङ्गुरैन् दॅरिनीर्क् कङ्गै येरुदु नाळै याणर्प्
पॊङ्गुनिन् शुऱ्ऱत् तोडुम् पोयुवन् दिनिदु नूरिल्
तङ्गिनी नावा योडुञ् जारुदि विडिय लॅन्ऱान् 662

चिङ्कम् एऱु अनैय वीरन्–पुरुषसिंह-सदृश वीर (श्रीराम); पिन्नरुम्–आगे भी; चॅप्पुवान्–बोले; याम् इङ्कु उऱैन्तु–हम यहाँ रहकर; ऍरि नीर् कङ्कै–लहरें उछालनेवाली गंगा को; नाळै एऱुतुम्–कल पार करेंगे; नी–तुम; याणर् पॊङ्कुम्–आकर्षण भरे; निन् चुऱ्ऱत्तोटुम् पोय्–अपने परिवार के साथ जाकर; उवन्तु–आनन्द के साथ; इनितु उन् ऊरिल् तङ्कि–सुखपूर्वक अपने नगर में रहकर; विटियल्–(कल) सुबह; नावायोटुम् चारुति–नावों के साथ आ जाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ६६२

आगे पुरुषसिंह ने कहा कि हम आज यहाँ विश्राम करेंगे। कल तरंग-भरी गंगा को पार करेंगे। तुम अपनी सुन्दर सेना के साथ लौट जाओ। अपने नगर में सुख से ठहरो और कल सबेरे नाओं को लेकर आ जाओ। ६६२

❀ कार्हुला निऱत्तान् कूऱक् कादला नुणर्त्तु वानिप्
पार्हुलाञ् जॅल्व वुन्नै यिङ्ङनम् बार्त्त कण्णै
ईर्हिलाक् कळ्व नेना निन्नलि निरुक्कै नोक्कित्
तीर्हिले नान देय शॅय्हुवॅ नडिमै यॅन्ऱान् 663

कार् कुला निऱत्तान् कूऱ—मेघ-सम श्यामवर्ण के यह कहने पर; कातलान्—भक्त गुह; उणर्त्तुवान्—समझाने लगा; इ पार् कुला(वु)म् चॅल्व—इस भूतल के स्वामी धनी; उन्नै इङ्ङनम् पार्त्त कण्णै—आपको इस वेष में (जिन्होंने) देखा (उन) आँखों को; ईर्किलात—निकाल नहीं रहा हूँ (जो, वह); कळ्वनेन् नान्—चोर मैं; इन्नलिन् इरुक्कै नोक्कि—दुखालय (मेरे वासस्थान) को देखकर (की ओर); तीर्किलेन्—आपको छोड़ नहीं जाऊँगा; ऐय—प्रभु; आनतु अटिमै—यथासाध्य दास का काम; चॅय्कुवॅन्—करता रहूँगा; ऍन्ऱान्—कहा। ६६३

मेघश्याम ने यों कहा, तो भक्त गुह ने उत्तर में कहा कि धराधिप धनी ! आपको इस वेश में देखकर भी देखनेवाली अपनी आँखों को मैंने नोच नहीं लिया। मैं चोर हूँ। दुखालय अपने नगर को मैं लौट नहीं जाऊँगा। प्रभु ! यहीं रहूँगा और यथाशक्य सेवा-टहल करूँगा। ६६३

❀ कोदैविऱ् कुरिशि लन्नान् कूऱिय कॉळ्है केट्टान्
शीदैयै नोक्कित् तम्बि तिरुमुह नोक्कित् तीराक्
कादल नाहु मॅन्ऱु करुणैयिन् मलर्न्द कण्णन्
यादिनु मिनिय नण्ब विरुत्तियिन् ऱॅम्मो डॅन्ऱान् 664

कोतै विल् कुरिचिल्—माला से अलंकृत धनुर्धर श्रीराम; अन्नान् कूऱिय—उसका कहा; कॉळ्कै केट्टान्—निर्णय सुना; चीतैयै नोक्कि—सीताजी को देखकर; तम्पि तिरुमुकम् नोक्कि—भाई का श्रीमुख देखकर; तीरा कातलन् आकुम्—अटल प्रेमी है; ऍन्ऱु—जानकर; करुणैयिन्—करुणा के कारण; मलर्न्त कण्णन्—विकसित आँखों के साथ; यातिनुम् इनिय नण्प—सबसे मधुर मित्र; इन्ऱु ऍम्मोटु इरुत्ति—आज हमारे साथ रहो; ऍन्ऱान्—कहा। ६६४

विजयसूचक-माला से अलंकृत धनुर्धर श्रीराम ने गुह का निर्णय सुना। सीताजी और अपने कनिष्ठ के मुखभाव देखे। "यह अचल भक्त है", यह समझे। उनकी आँखें कृपा प्रकट करते हुए भावपूरित हो उत्फुल्ल हुईं। 'सबसे मधुर मित्र ! आज हमारे साथ रह जाओ।' —यह अनुमति उन्होंने दे दी। ६६४

अडिदॉळु दुवहै तूण्ड वळ्ळत्तन नाळियत्तन
तुडियुडैच् चेनै वॅळ्ळम् पळ्ळियैच् चुऱ्ऱवेवि
वडिशिलै पिडित्तु वाळुम् वीक्किवा यम्बु पऱ्ऱि
इडियुडै मेह मॅन्न विणैयडि यॅय्दि निन्ऱान् 665

उवकै तूण्ट–आनन्द-प्रेरित होकर; अटि तॊऴुतु–श्रीचरण-वन्दना करके; आऴि अऩ्ऩ–सागर-सम; तुटि उटै (य) तुटि–(डमरू) वाली; चेऩै वॆळ्ळम्–सेनासमूह को; अऴैत्तऩऩ्–बुलाकर; पळ्ळियै चुऱ्ऱ एवि–आश्रम के चारों ओर खड़े रहने की आज्ञा देकर; वटि चिलै पिटित्तु–प्रयोग-योग्य प्रकार से धनु रखते हुए; वाळुम् वीक्कि–तलवार बाँधकर; वाय् अम्पु पऱ्ऱि–(तीक्ष्ण) मुखी शर पकड़े हुए; इटि उटै (य) मेकम् अऩ्ऩ–वज्रसहित मेघ के समान आकर; इणै अटि ॲय्ति–चरणद्वय के पास; निऩ्ऱाऩ्–आकर खड़ा रहा। ६६५

गुह का मन आनंद से भर गया। उसने श्रीराम के चरणों को नमस्कृत किया। फिर डमरू-वाद्य रखनेवाली अपनी बड़ी सेना को बुलाया। आश्रम के चारों ओर उसे खड़ा किया। फिर उसने तैयार स्थिति में धनु को एक हाथ में लिया, दूसरे हाथ में तीक्ष्ण शर लिया। तलवार से लैस होकर वह वज्र सहित मेघ के समान श्रीराम के चरणद्वय की सेवा में उपस्थित हो गया। ६६५

❀ तिरुनहर् तीर्न्द तऩ्मै मालव तॆरित्ति यॆऩ्ऩप्
परुवर ऱम्बि कूऱप् परिन्दवऩ् पैयुळॆय्दि
इरुहणी ररुवि शोरक् कुहनुमाण् डिरुन्दा ऩॆऩ्ऩे
पॆरुनिलक् किऴत्ति नोऱ्ऱुम् पॆऱ्ऱिलळ् पोलु मॆऩ्ऩा 666

मालव–मनुकुलभूषण; तिरु नकर् तीर्न्त तऩ्मै–श्रेष्ठ नगर-त्याग का प्रकार; तॆरित्ति ॲऩ्ऩ–बताइए, कहने पर; तम्पि–अनुज ने; परुवरल् कूऱ–कष्ट-कथा सुनाई; परिन्तवऩ्–आर्द्र होकर; पैयुल् ॲय्ति–दुख प्राप्त करके; ॲऩ्ऩे–क्या; पॆरु निलम् किऴत्ति–विशाल भूमि की देवी; नोऱ्ऱुम्–तपस्या करने पर भी; पॆऱ्ऱिलळ् पोलुम्–(फल) प्राप्त न कर सकी क्या; ॲऩ्ऩा–यह कहकर; इरु कण् नीर् अरुवि चोर–दोनों आँखों से अश्रुनदी बहाते हुए; आण्टु इरुन्ताऩ्–वहाँ खड़ा रहा। ६६६

गुह ने पूछा कि हे मनुकुलोत्पन्न प्रभु! श्रीमंत अयोध्या नगर को छोड़ने का हेतु क्या था? बताइए। तब लक्ष्मण ने दुख-वृत्तांत कह सुनाया। गुह ने दुखी होकर विस्मय के उद्गार निकाला— यह क्या आश्चर्य है! विशाल भूमि की देवी की तपस्या का, उन्हें पूरा फल नहीं मिला? उसकी दोनों आँखों से आँसू की नदी-सी बहने लगी। वह सरिताओं सहित गिरि के समान खड़ा रहा। ६६६

❀ विरियिरुट् पहैयै योट्टित् तिशैहळै वॆऩ्ऱु मेतिऩ्
ऱोरुतऩित् तिहिरि युन्दि युयर्पुहऴ् निऱुवि नाळुम्
इरुनिलत् तॆवर्क्कु मुळ्ळत् तिरुन्दरुळ् पुरिन्दु वीन्द
शॆरुवलि वीरऩॆऩ्ऩच् चॆङ्गदिर्च् चॆल्वऩ् शॆऩ्ऱाऩ् 667

विरि इरुळ्–विस्तृत अन्धकार-सम; पकैयै ओट्टि–शत्रुओं (के समूह) को

मिटाकर; तिचैकळै वॅन्ऱु–(दशों) दिशाओं को जीतकर; मेल् निन्ऱु–सबके ऊपर रहकर; ऑरु तनि तिकिरि–अकेला (राज्य) चक्र; उन्ति–चलाते हुए; उयर् पुकळ् निऱुवि–उत्कृष्ट यश स्थापित करके; नाळुम्–सदा; इरु निलत्तु ॲवर्क्कुम्–इस विशाल भूमि में रहनेवाले सभी लोगों के; उळ्ळत्तु इरुन्तु–मन में रहकर; अरुळ् पुरिन्तु–कृपा करके; वीन्त–जो मरे उन; चॅरु वलि वीरन्–युद्ध में पराक्रमी वीर; ॲन्न–के समान; चॅम् कतिर् चॅल्वन्–लाल किरणमाली; चॅन्ऱान्–(अस्त हो) गया। ६६७

तब सूर्यास्त हुआ। अंधकार-शत्रु को मिटाकर, दसों दिशाओं में विजय पाकर, सबके ऊपर रहते हुए उन्नत यश स्थापित करके, इस विशाल भूमि के हर वासी के मन में स्थान बनाकर, सब जीवों पर कृपा दिखाकर (सबका हित कर) जो दिवंगत हुए, उन दशरथ के समान सूर्य भी अस्तंगत हुआ। (इस पद में सूर्य और दशरथ में श्लेष है।)। ६६७

❀ मालैवाय् नियमञ् जॅय्य मरबुळि यियऱ्ऱि वॅहल्
वेलैवा यमुद नाळुम् वीरनुम् विरित्त नाणऱ्
पालवाम् पारिन् पायल् वैहिन्नर् परुवि लेन्दिक्
कालैहाण् बळवुन् दम्बि यिमैप्पिलन् कात्तु निन्ऱान् 668

मालै वाय् नियमम्–संध्याकालीन कर्म; चॅय्य मरपुळि–श्रद्धा के साथ यथारीति; इयऱ्ऱि–पूरा करके; वैकल्–दिन (के रात के अंश) में; वेलै वाय् अमुतु अन्नाळुम्–सागर से उत्पन्न अमृत-सम देवी और; वीरनुम्–वीर श्रीराम; विरित्त–बिने हुए; नाणल् पाल आम्–नरकुलों की बनी; पार् इन् पायल्–भूमि पर बिछाई गई सुखावह चटाई पर; वैकिन्नर्–लेट (सो) गईं; तम्पि–अनुज; परु विल् एन्ति–स्थूल चाप को लिये हुए; कालै काण्पु अळवुम्–सवेरा दिखते तक; इमैप्पु इलन्–पलक मारे बिना; कात्तु निन्ऱान्–पहरा देते रहे। ६६८

संध्या हो गई। श्रीराम आदि ने संध्यावंदन आदि संध्याकालीन नियम यथाविधि चुकाये। फिर 'नाणल' (नरकट ?) की चटाई बिछाकर क्षीर-सागरोद्भवा श्रीजानकी देवी और वीर श्रीराम भूमि पर ही शयन करने लगे। तब लक्ष्मण, हाथ में स्थूल और दृढ़ धनुष लिये हुए सबेरे तक पहरा देते रहे। उन्होंने पलकें ही नहीं गिराईं। ६६८

तुम्बियिन् कुळात्तिऱ् चुऱ्ऱुञ् शुऱ्ऱत्तन् ऱॊडुत्त विल्लन्
वॅम्बिवॅन् दळिया निन्ऱ नॅञ्जिनन् विळित्त कण्णन्
तम्बि निन्ऱानै नोक्कित् तलैमहन् ऱनिमै नोक्कि
अम्बियिन् ऱलैवन् कण्णी ररुविशोर् कुन्ऱि निन्ऱान् 669

तुम्पियिन् कुळात्तिन्–गजयूथ के समान; चुऱ्ऱुम्–घेरे रहनेवाले; चुऱ्ऱत्तन्–परिवारों का स्वामी; तॊडुत्त विल्लन्–शर-चढ़े धनुष वाला; वॅम्पि वॅन्तु–तपकर, झुलसकर; अळिया निन्ऱ–क्षीण होता हुआ; नॆञ्चिनन्–चित्त वाला; विळित्त कण्णन्–खुले नेत्रों वाला; अम्पियिन् तलैवन्–नावों का मालिक; तम्पि निन्ऱानै–भाई (जो) खड़े रहे, उनको; नोक्कि–देखकर; तलैमकन्–नायक श्रीराम का;

ततिमै नोक्कि–एकाकीपन देखकर; कण् नीर् अरुवि चोर्–अश्रुनदी जिस पर बहती हो, ऐसी; कुन्ऱिन्–गिरि के समान; निन्ऱान्–खड़ा रहा। ६६८

[इसके बाद किसी-किसी संस्करण में तीन अतिरिक्त पद पाये जाते हैं। उनका सार यों है—

निद्रा की देवी सुन्दर स्वर्णगिरि को मात करनेवाली गिरि-सम कांति वाले लक्ष्मण के सामने प्रकट हुई। तब लक्ष्मण ने उससे कहा कि अब जाओ। जब हम अयोध्या आयेंगे तब आ जाना।

करवाल-हस्त वीर लघुराज की आज्ञा का वह उल्लंघन नहीं कर सकी। निद्रा की श्रेष्ठ देवी ने उनके चरण-कमलों पर दण्डवत करके कहा कि आप प्राचीरों से आवृत्त पवित्र अयोध्या नगर लौट जाएँगे, तब हम आकर आपके चरणों पर उपस्थित होएँगी। यह कहकर वह चली गई।

उसके जाने के बाद लक्ष्मण, कमला सीताजी के साथ श्रीराम की निद्रा की दयनीय स्थिति देखकर विदीर्णमन होकर आँखों से आँसू को बहने देते हुए एक अनूठी प्रतिमावत खड़े रहे।]

गुह भी खड़ा रहा। उसको उसकी सेना घेरे खड़ी थी (उसकी आज्ञापालन के लिए सतत तैयार)। उसके हाथों में धनुष और शर हर दम प्रयोग के लिए तैयार थे। उसका मन तप्त होकर, झुलसकर क्षीण हो रहा था। नावों का मालिक गुह भी निर्निमेष खड़ा था। उसके मन में खड़े रहनेवाले लक्ष्मण और श्रीराम की निस्सहायता के विचार (खटका बना रहे) थे। अपनी आँखों से अश्रु की नदी-सी बहाते हुए, वह एक गिरि के समान खड़ा था। (इस पद्य में टीकाकारों को गुह का लक्ष्मण पर किंचित संदेह भी ध्वनित होता है।)। ६६९

तुऱक्कमे मुदलवाय तूयन यावै येनुम्
मऱक्कुमा निनैय लम्मा वरम्बिल तोऱ्ऱ माक्कळ्
इऱक्कुमा ऱिदुवॅन् बान्बोन् मुन्नै नाळिऱन्दान् पिन्नाट्
पिऱक्कुमा ऱिदुवॅन् बान्बोऱ् पिऱन्दनन् पिऱवा वॅय्योन् 670

पिऱवा वॅय्योन्–अजन्मा सूर्य; वरम्पु इल तोऱ्ऱम् माक्कळ्–असंख्यजन्मा जीव सभी के; इऱक्कुम् आऱु–मरने का प्रकार; इतु ऍन्पान् पोल्–यह, यह कहते जैसे; मुन्नै नाळ् इऱन्तान्–जो पिछले दिन तिरोहित हुए; पिन् नाळ्–अगले दिन; पिऱक्कुम् आऱु इतु–जन्म लेने का प्रकार यह; ऍन्पान् पोल्–बताता हो जैसे; पिऱन्तनन्–जन्म लिया; तुऱक्कम् मुतल आय–स्वर्ग आदि; तूयन यावैयेनुम्–पवित्र लोक कोई भी हों; मऱक्कुम् आऱु–उनको भूलने का रास्ता; निनैयल्–सोचें; अम्मा–माँ। ६७०

सूर्य अजन्मा हैं। तो भी वे, असंख्य-जन्मा जीवों की मृत्यु का प्रकार यही है —मानो यह बताते हुए पहले दिन अस्त हुए थे। आज वे

फिर से उदित हुए और उससे जन्म का प्रकार इंगित किया गया। (सूर्य का उदय और अस्त जीव के जन्म और मरण की निश्चितता का पाठ पढ़ाते हैं। इससे यह भी सीख मिलती है कि) स्वर्ग आदि भी क्यों न हो, समस्त लोकों को भूलो (मोक्ष जाने का मार्ग सोचो)। ६७०

शॅऱ्ऱॅवे शेऱ्ऱिऱ् ऱोऩ्ऱुम् दामरै तेरिऱ् ऱोऩ्ऱुम्
वॅऩ्ऩुडर्च् चॅल्वऩ् मेऩि नोक्किय विरिन्द वेऱोर्
अञ्जऩ नायि ऱऩ्ऩ वैयऩै नोक्किच् चॅय्य
वञ्जिवाऴ् वदऩ मॅऩ्ऩुन् दामरै मलर्न्द दऩ्ऱे 671

चेऱ्ऱिल् तोऩ्ऱुम् तामरै–पंक में उत्पन्न होनेवाले कमल; तेरिल् तोऩ्ऱुम्–(एक चक्र) रथ पर आनेवाले; वॅम् चुटर् चॅल्वऩ्–गरम किरणों के ईश्वर के; मेऩि नोक्किय–रूप को देख; चॅम् चॅव्वे विरिन्त–खूब सुन्दर रूप से खिले; वेऱु ओर्–अन्य एक अनोखे; अञ्चऩम् ञायिऱु अऩ्ऩ–अंजन-सूर्य समान; ऐयऩै नोक्कि–प्रभु को देखकर; चॅय्य वञ्चि–सुन्दर लता (सी जानकी) का; वाऴ् वदऩम् ॲऩ्ऩुम्–श्रेष्ठ वदन रूपी; तामरै मलर्न्ततु–कमल विकसित हुआ; (अऩ्ऱु, ए)। ६७१

जब एकचक्र-रथी किरणमाली उदित हुए, तब कीच में उत्पन्न कमल खूब ललाई लिये हुए सुन्दर ढंग से विकसित हुए। इससे भिन्न एक अनूठे सूर्य थे अंजन वर्ण के श्रीराम! उनको देखकर लता-सी देवी सीता का संजीवनी वदन-कमल खिल उठा। ६७१

नाण्मुदऱ् कमैन्द यावु नयन्दऩ ऩियऱ्ऱि नामत्
तोण्मुदऱ् कमैन्द विल्लाऩ् मऱैयवर् ऱॊडरप् पोवाऩ्
आण्मुदऱ् कमैन्द केण्मै यऩ्बऩै नोक्कि यैय
कोण्मुदऱ् कमैन्द नावाय् कॊणरुदि विरैवि ऩॆऩ्ऱाऩ् 672

तोळ् मुतऱ्कु अमैन्त–कंधे पर धृत; नामम् विल्लाऩ्–भयंकर धनुर्धर; नाळ् मुतऱ्कु अमैन्त यावुम्–दिन के आरम्भ में करने योग्य सभी; नयन्तऩऩ् इयऱ्ऱि–(नित्य कर्म) श्रद्धा के साथ करके; मऱैयवर् तॊटर–वेदज्ञ मुनियों के साथ; पोवाऩ्–जाने का विचार कर; आळ् मुतऱ्कु अमैन्त–कैंकर्य करने के लिए जो पहले ही उद्यत हुआ था; केण्मै अऩ्पऩै नोक्कि–उस मित्र और भक्त को देखकर; ऐय–जी; कोळ् मुतऱ्कु अमैन्त नावाय्–ले जाने के लिए सबसे योग्य नाव; विरैविऩ्–शीघ्र; कॊणरुति–लाओ; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ६७२

कोदंडपाणी ने प्रातःकालीन अनुष्ठान पूरा किया। फिर वेदज्ञ मुनियों के साथ रवाना होने का विचार करके उन्होंने कैंकर्य के लिए प्रस्तुत अपने मित्र और भक्त गुह से कहा कि जी! जाकर हमें ले जाने के लिए सबसे अधिक योग्य नाव ले आओ। ६७२

꧁ एविय मॊऴिहेळा विऴिपुऩल् पॊऴिहण्णाऩ्
आवियु मुलैहिऩ्ऱा ऩडियिणै पिरिहल्लाऩ्

कावियिऩ् मलर्हाया कडऩ्मऴै यऩैयाऩैत्
तेवियो डडिताऴाच् चिऩ्दऩै युरैशॆय्वाऩ् 673

एविय सॊऴि केळा–आज्ञा का वचन सुनकर; अटि इणै पिरिकल्लाऩ्–(श्रीराम के) श्रीचरणद्वय से अलग होना (जिसके लिए कठिन था) वह गुह; इऴि पुऩल्–(आँखों से) गिरनेवाले जल की; पॊऴि कण्णाऩ्–धारा वाली आँखों का; आवियुम् उलैकिऩ्ऱाऩ्–प्राण छटपटाता है; कावियिऩ् मलर्–नीलकुवलय-पुष्प; काया–अलसी (?); कटल्–सागर; मऴै–मेघ; अऩैयाऩै–(इनके) सदृश उनको; तेवियॊटु–सीतादेवी के साथ; अटि ताऴा–चरणों पर नमस्कार करके; चिऩ्तऩै उरै चॆय्वाऩ्–अपना विचार कहने लगा। ६७३

यह सुनकर गुह के प्राण सूख-से गये। आँखों से अश्रु की धारा बहने लगी। वह श्रीराम के श्री-चरणों से अलग होने की बात सह ही नहीं सका। वह नीलोत्पल, अलसी, नीला सागर और मेघ —इनके समान सुंदर रूप-धारी श्रीराम और सीतादेवी के चरणों पर नमस्कार करके बोला। ६७३

❀ पॊय्म्मुऱै यलरावॆम् बुहलिडम् वऩमेयाम्
कॊय्म्मुऱै युऱुतारोय् कुऱैविलॆम् वलियेमाल्
शॆय्म्मुऱै कुऱ्ऱेवल् शॆय्हुदु मडियोमै
इम्मुऱै युऱवॆऩ्ऩा विऩिदिरु नॆडिदॆम्मूर् 674

कॊय् मुऱै उऱु तारोय्–चुने पुष्पों की गुँथी मालाधारी; पॊय् मुऱै–असत्य का आचरण; अलरा (त)–जिनमें (विकसित) नहीं होता; ऍम् पुकल् इटम्–ऐसा हमारा वासस्थान; वऩमे आम्–वन ही है; कुऱैवु इलॆम्–कोई कमी नहीं है, हमारे पास; वलियेम्–बलवान हैं; कुऱु एवल्–छोटी-मोटी आज्ञाएँ; चॆय् मुऱै–करणीय प्रकार से; चॆय्कुतुम्–करेंगे; अटियोमै–हम, दासों को; इ मुऱै उऱवु–इस प्रकार का रिश्ता; ऍऩ्ऩा–मानकर; इऩितु–सुख से; ऍम् ऊर्–हमारी बस्ती में; नॆटितु इरु–बहुत काल ठहरिए। ६७४

चुने पुष्पों की गुँथी हुई मालाधारी! हम असत्यवादी नहीं हैं। हमारा वासस्थान भी वन है। हमारे पास किसी वस्तु की कमी भी नहीं है। हम बलवान हैं। आपकी सेवा-टहल करेंगे। हमको आप अपने दास के रिश्ते से मानकर हमारी बस्ती में सुख से बहुत काल तक रह जाइए। ६७४

तेऩुळ तिऩैयुण्डाऱ् ऱेवरु नुहर्दऱ्काम्
ऊऩुळ दुणैनाये मुयिरुळ विळैयाडक्
काऩुळ पुऩलाडक् कड्गैयु मुळदऩ्ऱो
नाऩुळ दऩैयुऩ्ऩी यिऩिदिरु नाडॆम्बाल् 675

तेन् उळ–शहद है; तिनै उणट्ु–कोदों है; तेवरुम् नुकर्तर्कु आम्–देवों से भी भोग्य हैं; विळैयाट–क्रीड़ा के लिए; ऊन् उळ तुणै–शरीर रहते तक; नायेम् उयिर् उळ–श्वान-सम दास, हमारे प्राण हैं; कान् उळ–वन हैं; पुनल् आट–स्नान करने के लिए; कङ्कैयुम् उळतु अन्ऱो–गंगा भी हैं न; नान् उळ तनैयुम्–जब तक मैं रहूँगा; नी इनितु इरु–(तब तक) आप भी सुख से रहें; ॲम् पाल् नाट्ु–हमारी ओर कृपादृष्टि रखें। ६७५

हमारे यहाँ अनेक प्रकार के मधु और कोदों हैं, जो देवों के लिए भी भोग्य हैं। जब तक हम जीते हैं, तब तक हमारे प्राण आपकी क्रीड़ा के लिए (अपने इच्छानुसार आपकी सेवा ग्रहण करने के लिए) प्रस्तुत हैं। मनोरम वन हैं और स्नान करने के लिए गंगाजी भी हैं न ? इसलिए मेरे जीवन पर्यंत आप हमारे पास वास करें। आप हम पर कृपा करें। ६७५

तोलुळ तुहिल्पोलुञ् जुहमुळ तॊंडर्मञ्जम्
पोलुळ परण्वैहुम् बुरैयुळ कडिदोडुम्
कालुळ शिलैपूणुङ् गैयुळ कलिवानिन्
मेलुळ पॊरुळेनुम् विरैवॊडु कॊणर्वेमाल् 676

तुकिल् पोलुम् तोल् उळ–वस्त्र के समान चमड़े हैं; चुकम् उळ–सुखदायक; तॊंटर् मञ्चम् पोल्–शय्या के पलंग के समान; परण् उळ–मचान हैं; वैकुम् पुरै उळ–वास के लिए झोंपड़े हैं; कटितु ओटुम्–सवेग दौड़नेवाले; काल् उळ–हमारे पैर हैं; चिलै पूणुम्–धनु रखनेवाले; कै उळ–हमारे हाथ हैं; कलि वानिन् मेल् उळ–शब्दाधार आकाश में प्राप्य; पॊरुळेनुम्–पदार्थ भी हों तो; विरैवॊटु कॊणर्वेम्–जल्दी ला देंगे। ६७६

हमारे यहाँ उत्तम वस्त्रों के समान चर्म मिलेंगे। सुखावह पर्यंक के समान मचान हैं। वास के योग्य कुटीर हैं। हमारे त्वरितगामी पैर हैं और धनु-धारी हाथ हैं। इसलिए आकाश में से भी क्यों न हो, इच्छित पदार्थ हम शीघ्र ला देंगे। ६७६

ऐयिरु पत्तोडैन् दायिर रुळराणै
शॅयुहुनर् शिलैवेडर् तेवरिन् वलियाराल्
उयहुदु मडियोमॅङ् गुडिलिडै यॊरुनाणी
वैहुदि यॅनिन्मेलोर् वाळ्विलै पिरिदॅन्ऱान् 677

आणै चॅय्कुनर्–आज्ञाकारी; चिलै वेटर्–धनुर्धर निषाद; तेवरिन् वलियार्–देवों से अधिक बलवान; ऐ इरु पत्तोट–पाँच के बीस (एक सौ) के; एन्तु आयिरर् उळर्–पाँच हजार (पाँच सौ सहस्र) हैं; ॲम् कुटिल् इटै–हमारी कुटी में; नी ऒरु नाळ् वैकुति ॲनिन्–आप एक दिन भी रहें, तो; अटियोम् उय्कुतुम्–हमारा तारण हो जायगा; मेल् ओर् वाळ्वु–उससे अधिक श्रेष्ठ भाग्य; पिरितु इलै–दूसरा नहीं है; ॲन्ऱान्–कहा; (आल्)। ६७७

मेरे अधीन पाँच सौ सहस्र आज्ञाकारी धनुर्धर निषाद हैं, जो देवों से भी अधिक बलवान हैं। आप एक दिन के लिए भी हमारी कुटी में वास करेंगे तो हम कृतार्थ हो जाएँगे। हमारा उद्धार हो जायगा। उससे बढ़कर सौभाग्य दूसरा नहीं है। ६७७

❀ अण्णलु मदुहेळा वहनिऱै यरुण्मिक्कान्
वॅण्णिऱ नहैशॅय्दान् वीरनिन् नुळैयामप्
पुण्णिय नदियाडिप् पुनिदरै वळिपाडुऱ्
ऱॅण्णिय शिलनाळिऱ् कुरुहुदु मिनिदॅन्ऱान् 678

अण्णलुम्–प्रभु भी; अतु केळा–वह सुनकर; अकम् निऱै–मन में पूर्ण; अरुळ् मिक्कान्–कृपा से युक्त होकर; वॅळ् निऱम् नकै चॅय्तान्–श्वेत दन्त दिखाते हुए कुछ मन्दहास करके; वीर–वीर; याम्–हम; अ पुण्णियम् नति आटि–उन पुण्यनदियों में स्नान करके; पुनितरै वळिपाटु उऱ्ऱु–पवित्र महात्माओं की पूजा करके; ऍण्णिय चिल नाळिल्–निर्णीत कुछ दिनों के बाद; इनितु–सन्तोष के साथ; निन्नुळै–तुम्हारे पास; कुरुकुतुम्–आ पहुँचेंगे; ऍन्ऱान्–बोले। ६७८

प्रभु ने गुह की बात सुनी तो वे उसकी भक्ति से प्रभावित हुए। उनके मन में कृपा भर उठी। श्वेत (मनोरम) दाँत प्रकट करते हुए मंद हास के साथ उन्होंने गुह से कहा कि हे वीर! हम वहाँ की पुण्य नदियों में स्नान करते हुए और पवित्र महात्मा महर्षियों की पूजा करते हुए निर्णीत समय तक रहेंगे। वह अल्प काल समाप्त होते ही लौट आएँगे और तुम्हारे पास आने में हमारा बड़ा आनंद होगा। ६७८

❀ शिन्दनै युणर्हिऱ्पान् शॅन्ऱनन् विरैवोडुम्
तन्दन नॅडुनावाय् तामरै नयनत्तान्
अन्दणर् तमैयॅल्ला मरुळुदिर् विडैयॅन्ना
इन्दुवि नुदलाळो डिळवलो डिनिदेऱा 679

चिन्तनै उणर्किऱ्पान्–उनका विचार समझकर; विरैवोटुम् चॅन्ऱनन्–शीघ्र जाकर; नॅटु नावाय् तन्तनन्–बड़ी एक नाव लाया; तामरै नयनत्तान्–कमलनयन; अन्तणर् तमै ऍलाम्–सब वेदज्ञों को; विटै अरुळुतिर् ऍन्ना–बिदा दीजिए कहकर; इन्तुविन् नुतलाळोटु–इन्दु-सम ललाट वाली (सीता) के साथ; इळवलोटु–और लघुराज के साथ; इनितु एऱा–सुख से चढ़कर। ६७९

गुह श्रीराम का मन समझा। वह जाकर एक श्रेष्ठ और बड़ी नाव लाया। कमल-नयन श्रीराम ने वेदज्ञ मुनियों से विदा ली। फिर इंदु-सम ललाट वाली देवी सीताजी के साथ नाव पर चढ़े। ६७९

❀ विडुनति कडिदॅन्ट्रान् मॅय्युयि रनैयानुम्
मुडुहिन नॅडुनावाय् मुरिदिरै नॅडुनीर्वाय्क्
कडिदिदिनिन् मडवन्नक् कदियदु शॅलनिन्ट्रार्
इडररु मरैयोरु मॅरियुरु मॅळ्हानार् 680

नत्ति कटितु विटु–बहुत वेग के साथ चलाओ; अॅन्ट्रान्–बोले; मॅय् उयिर् अनै-यानुम्–सच्चा, प्राण-सम मित्र गुह ने भी; मुरि तिरै नॅटु नीर् वाय्–मुड़कर आनेवाली तरंगों से पूर्ण और अधिक जल-प्रवाह में; नॅटु नावाय्–बड़ी नाव को; मुटुकिनन्–शीघ्र चलाया; अतु–वह नाव; कटितितिल्–शीघ्र; मट अन्नम् कति चॅल–बालमराल की गति में (आकर्षक रीति से) गई तो; निन्ट्रार्–तीर पर स्थित; इटर् अरु मरै योरुम्–दुखरहित मुनि भी; अॅरि उरुम्–आग में पड़े; मॅळुकु आनार्–मोम बने। ६८०

श्रीराम ने गुह को आज्ञा दी कि शीघ्र चलाओ। गुह ने नाव तेज़ी से चलायी तो लहरें उठीं और तीरों से टकराकर मुड़ आईं। वह नाव बाल-मराल की गति में मनोरम रीति से चलने लगी। तब तीर पर जो मुनि लोग खड़े थे, वे आग में पड़े मोम के समान द्रवित हो गये; यद्यपि दुख-निर्लिप्तता उनका गुण था। ६८०

पालुडै मॉळ्रियाळुम् पहलव ननैयानुम्
शेलुडै नॅडुनन्नीर् शिन्दिनर् विळैयाडत्
तोलुडै निमिर्कोलिन् ठुळविय नॅडुनावाय्
कालुडै नॅडुञॅण्डिन् चॅन्ट्रदु कडिदम्मा 681

पाल् उटै मॉळ्रियाळुम्–दूध को भी (मधुरता में) हरानेवाली वाणी की देवी और; पकलवन् अनैयानुम्–सूर्य-सम श्रीराम; चेल् उटै (य)–'चेल' नाम की मछलियों से युक्त; नॅटु नल् नीर्–बहुत अच्छे जल को; चिन्तिनर् विळैयाट–उछालते हुए क्रीड़ा करते थे; तोल् उटै (य)–चमड़ा मढ़े हुए; निमिर् कोलिन् तुळविय–सीधे डाँड़ों को चलाकर खेई गई; नॅटु नावाय्–बड़ी नाव; काल् उटै (य) नॅटु ञॅण्टिल्–अनेक पैरों वाले केकड़े के समान; कटितु चॅन्ट्रतु–सवेग चली। ७८१

नाव चलने लगी। दुग्ध-मधुर-भाषिणी देवी जानकी और दिवादेव (सूर्य) सम श्रीराम 'शेल' मछलियों से युक्त गंगाजल को अपने हाथों से उछालते हुए क्रीड़ा करते जा रहे थे। खेनेवाले लम्बे डाँड़ों के सहारे नाव को जब खे रहे थे, तब ऐसा लगता था, मानो अनेक पैर वाला केकड़ा जा रहा था। नाव बहुत तेज़ी से चली। ६८१

शान्दणि पळिनत्तिन् ऱडमुलै युयर्गङ्गै
कान्दिन मणिमिन्नक् कडिहमळ् कमलत्तिन्
शेन्दोळि विरियुन्दॅण् डिरैयॅनु निमिर्याहैल्
एन्दिन ळॊरुताने येऱ्ऱिन ळिन्दिदप्पाल् 682

चानतु अणि–चन्दन से अलंकृत; पुळिनम् तट मुलै–पुलिन रूपी बड़े स्तनों वाली; उयर् कङ्कै–यशोन्नत गंगाजी; कान्तिन्न मणि मिन्न–कांतियुक्त माणिक्यों की चमक से; कटि कमळ् कमलत्तिन्–सुवासित कमल के समान; चेनत ओळि विरियुम्–लाल और दीप्त; तॆण् तिरै ॲनुम्–शुद्ध लहर रूपी; निमिर् कैयाल्–लम्बे करों से; ओरु ताने एन्तित्तळ्–अनुपम (उन्होंने) स्वयं ही उठाकर; अप्पाल्–उस पार; इत्तिु एर्रित्तळ्–सुख से पहुँचा दिया (नाव को)। ६८२

गंगाजी पर नाव का चलना ऐसा भी लगता था, मानो गंगादेवी स्वयं अपने हाथों पर उठाकर पार लगा रही हों। चंदन-मंडित स्तनों के स्थान पर उनके चंदनतरु सहित पुलिन थे। उनकी लहरें ही उनके हाथ थीं। उन लहरों पर माणिक्य आदि नगों की कांति पड़ती थी। कमल की गंध भी होती थी। गंगाजी ने अपने उन हाथों पर उठाकर नाव को दूसरे किनारे पर पहुँचा दिया। ६८२

❀ अत्तिशै	युर्ऱैय	नन्बनै	मुहनोक्किच्
चित्तिर	कूडत्तिर्	चॆन्नॆऱि	पुहलॆन्ऩप्
पत्तियि	नुयिरीयुम्	परिविन	नडिदाळा
उत्तम	वटिनाये	नोदुव	दुळदॆन्ऱान् 683

ऐयन्–प्रभु के; अ तिचै उर्ऱु–उस (दक्षिण) दिशा में आकर; अन्पनै मुकम् नोक्कि–प्यारे (मित्र) का मुख देखकर; चित्तिर कूटत्तिल्–चित्रकूट में; चॆल् नॆऱि पुकल्–जाने का मार्ग बताओ; ॲन्न–यह पूछने पर; पत्तियिन्–भक्ति की प्रेरणा से; उयिर् ईयुम् परिविनन्–जान भी दे दूँ, ऐसा प्रेम रखनेवाले (गुह) ने; अटि ताळा–पैरों पर सिर झुका (रख) कर; उत्तम–पुरुषोत्तम; अटि नायेन्–श्वान-सम किंकर मेरी; ओतुवतु उळतु ॲन्ऱान्–विनती कुछ है, कहा। ६८३

उस पार पहुँचकर प्रभु श्रीराम ने अपने प्यारे मित्र से पूछा कि चित्रकूट जाने का मार्ग बताओ। तब गुह ने, जो अपनी भक्ति के कारण अपने प्राण तक श्रीराम के लिए उत्सर्ग करने को तैयार था; उनको नमस्कार किया और विनय की कि प्रभु! श्वान-सम दास मैं आपसे एक विनय करना चाहता हूँ। ६८३

❀ नॆऱियिडु	नॆऱिवल्ले	नेडिनॆन्	वळुवामल्
नऱियन	कनिहायु	नऱविवै	तरवल्लेन्
उऱैविड	मनैविप्पे	नॊरुनॊडि	वरैयुम्मैप्
पिरियल	नुडनेहप्	पॆऱुहुवॆ	नॆनिनायेन् 684

नायेन्–मैं; उटन्–साथ; एकप् पॆऱुकुवॆन् ॲनिन्–साथ जा पाया तो; नॆऱि–बड़े मार्ग; इटु नॆऱि–व घुमावदार छोटे मार्ग; वल्लेन्–दिखा सकता हूँ; वळुवामल्–बिना खराबी के; नऱियन–श्रेष्ठ; कनि कायुम्–कच्चे और पके फल और; नऱवु

इवै–शहद आदि; नेटिन्नॆन् तर वल्लेन्–ढूँढ़ लाकर दे सकूँगा; उऱैवु इटम् अमैविप्पेन्–वासस्थान बना सकूँगा; ऑरु नॊटि वरै–एक क्षण तक भी; उमै पिरियलन्–आपसे अलग न हटूँगा। ६८४

अगर आपकी आज्ञा पाकर मैं भी आपके साथ जा सकूँ, तो मैं आपकी सब तरह से सेवा करूँगा। बड़े-छोटे, सभी तरह के मार्ग जानकर आपको बताऊँगा। अच्छे कंद-मूल, शाक, फलादि ला दूँगा। कुटीर बनाऊँगा। हर दम आपके साथ रहूँगा; एक क्षण भी अलग नहीं होऊँगा। ६८४

तीयन वहैयावुन् दिशैतिशै शॆलनूऱित्
तूयन वुऱैकानन् दुरुविन्नॆन् वरवल्लेन्
मेयिन पॊरुणाडित् तरुहुवॆन् विनैमुऱ्ऱुम्
एयिन शॆयल्वल्ले निरुळिनु नॆऱिशॆल्वेन् 685

तीयन वकै यावुम्–बुरे जानवर, सब; तिचै तिचै–दिशा-दिशा में; चॆल्ल–जाकर; नूऱि–मारकर; तूयन उऱै कानम्–अच्छों का रहने का वन; तुरुविन्नॆन् वर वल्लेन्–खोजकर आ सकूँगा; मेयिन पॊरुळ् नाटि तरुकुवॆन्–आपकी इच्छित वस्तुएँ ला दूँगा; एयिन विनै मुऱ्ऱुम्–आज्ञापित सभी कार्य; चॆय वल्लेन्–पूरा कर सकूँगा; इरुळिनुम्–अन्धकार में भी; नॆऱि चॆल्वेन्–मार्ग तय कर सकूँगा। ६८५

बुरे जानवर जहाँ हैं, वहाँ दिशा-दिशा में जाकर उनको मारकर अच्छे जानवरों के जंगल को खोज पाऊँगा और आपको उधर ले जाऊँगा। आप जो भी चाहें ला दूँगा; जो भी कहें कर दूँगा। रात के अंधकार में, बिना डर के, जा सकता हूँ। ६८५

कल्लुवॆन् मलैयॆनुङ् गवलैयिन् मुदल्यावुम्
शॆल्लुवॆ नॆऱितूरञ् जॆऱिपुन ऱरवल्लेन्
विल्लिन मुळनॊन्ऱुम् वॆरुवलॆ निरुपोदुम्
मल्लिनु मुयर्तोळाय् मलरडि पिरियेनाल् 686

मल्लिनुम् उयर् तोळाय्–मल्लयुद्ध में भी समर्थ और उन्नत कंधे वाले; मलैयॆनुम् कल्लुवॆन्–पहाड़ भी खोद सकूँगा; कवलै मुतल् नॆऱि–शाखादार (पेचीदा) मार्ग; यावुम् चॆल्लुवॆन्–सब में जा सकूँगा; तूरम् चॆऱि–दूर में रहनेवाला; पुनल् तर वल्लेन्–जल लाकर दे सकता हूँ; विल् इनम्–धनुषों के विभिन्न प्रकार; उळॆन्–रखता हूँ; ऑन्ऱुम् वॆरुवलॆन्–किसी से नहीं डरता; इरु पोतुम्–(दिन और रात) दोनों समय; मलर् अटि पिरियेन्–कमलचरण नहीं त्यागूँगा। ६८६

मल्लयुद्ध-विजयी कंधे वाले! पहाड़ भी खोदना पड़े तो खोद दूँगा। शाखादार या भँवरजाल-दार भी रास्ते हों तो उन पहाड़ी रास्तों में सुख से जा सकता हूँ। जल बहुत दूर से भी लाना पड़े तो नहीं हिचकूँगा,

लाकर दूँगा। मेरे पास अनेक तरह के अनेक चाप हैं। मैं किसी से भी डरनेवाला नहीं हूँ। दिन व रात दोनों जून आपके कमल-चरण से अलग नहीं होऊँगा। ६८६

तिरुवुळ मॆनिऩ्मऱ्ऱॆऩ् शेनैयु मुडऩेकॊण्
डॊरुवलॆ नॊरुपोदु मुऱैहुवॆ ऩुळराऩार्
मरुवळ ऱॆनिऩ्मुऩ्ऩे माळ्हुवॆ नळिहल्लेऩ्
पॊरुवरु मणिमाऱ्बा पोदुवॆ ऩुडऩॆऩ्ऱाऩ् 687

पॊरुवु अरु–अप्रमेय; मणि मार्पा–सुन्दर वक्ष वाले; तिरुवुळम् ऍनिऩ्–आपका चित्त सम्मत है, तो; ऍऩ् चेऩैयुम् उटऩे कॊण्टु–(अपनी) मेरी सेना भी साथ लेकर; ऑरु पोतुम् ऑरुवलॆऩ्–कभी भी आपसे अलग न होते हुए; उऱैकुवॆऩ्–साथ रहूँगा; मरुवलर् उळर् आऩार् ऍनिऩ्–शत्रु कभी कोई रहे (आये) तो; अळिकल्लेऩ्–पीठ दिखाकर भागूँगा नहीं; मुऩ्ऩे माळ्कुवॆऩ्–पहले मर जाऊँगा; उटऩ् पोतुवॆऩ्–साथ आऊँगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ६८७

अप्रमेय सौंदर्ययुक्त वक्षस्थल वाले! आपका श्रीचित्त हो तो अपनी सेना को भी साथ लेकर आपके साथ ही, विना कभी अलग हुए, वास करूँगा। शत्रु कोई आ जाये, तो उससे डरकर भागूँगा नहीं, किन्तु पहले मैं मरूँगा। प्रभु! मैं आपके साथ आऊँगा। —यह गुह ने कहा। ६८७

❀ अऩ्ऩव ऩुरैहेळा वमलऩु मुरैनेर्वाऩ्
ऍऩ्ऩुयि रऩैयाय्नी यिळवलुऩ् ऩिळैयाऩिऩ्
नऩ्ऩुद लवणिऩ्गे णळिर्हड ऩिलमॆल्लाम्
उऩ्ऩुडै यदुनाऩुऩ् ऱॊळिलुरि मैयिऩुळ्ळेऩ् 688

अऩ्ऩवऩ् उरै केळा–उसका कथन सुनकर; अमलऩुम्–अमल देव भी; उरै नेर्वाऩ्–बोले; नी ऍऩ् उयिर् अऩैयाय्–तुम मेरे प्राण-सम हो; इळवल्–यह छोटा भाई; उऩ् इळैयाऩ्–तुम्हारा छोटा भ्राता है; इ नल् नुतलवळ्–यह सुन्दर भाल वाली; निऩ् केळ्–तुम्हारी रिश्तेदारिन (भाभी है); नळिर् कटल् निलम् ऍल्लाम्–शीतल सागर से (घिरी) भूमि सारी; उऩ्ऩुटैयतु–तुम्हारी है; नाऩ् उऩ् तॊळिल् उरिमैयिऩ् उळ्ळेऩ्–मैं भी तुम्हारी सेवा के अधीन हूँ। ६८८

श्रीराम उसका कहा सुनकर उत्तर में बोले— तुम मेरे प्राणों के प्राण हो! यह छोटा भाई तुम्हारा कनिष्ठ है। यह सुन्दर भाल वाली जानकी तुम्हारी भाभी है। समुद्रवलयित यह पृथ्वी सारी तुम्हारी है। मैं भी तुम्हारा आज्ञाकारी हूँ। ६८८

❀ तुऩ्बुळ दॆऩिऩऩ्ऱो सुहमुळ ददुवऩ्ऱिप्
पिऩ्बुळ दिडैमऩ्ऩुम् पिरिवुळ दॆऩवुऩ्ऩेल्
मुऩ्बुळॆम् मॊरुनाल्वे मुडिवुळ दॆऩवुऩ्ऩा
अऩ्बुळ विनिनामो रैवर्हळ् ळुळराऩोम् 689

तुन्नपु उळतु ऑन्तिन् अन्ऱो–दुख रहा, तभी न; चुकम् उळतु–सुख भी है; अतु अन्ऱि–उसके सिवा; पिन्नपु उळतु इटै–बाद के हमारे मिलन के बीच; पिरिवु–यह वियोग; मन्तुम् उळतु–बहुत बड़ा है; ॲन उन्नेल्–ऐसा मत सोचो; मुन्नपु–पहले; ऑरु नाल्वॅम् उळॅम्–हम चार रहे; इन्ऱि–अब; मुटिवु उळतु ॲन उन्ना–इसका अन्त कभी होगा, ऐसा सोचने की जहाँ सम्भावना नहीं; अन्पु उळ नाम्–ऐसा प्रेम करनेवाले हम; ओर् ऐवर्कळ् उळर् आनोम्–पाँच बन गये हैं। ६८९

श्रीराम ने जारी किया— दुख होगा तभी न सुख भी मिलेगा (और उसका मूल्य भी होगा)! उस रीति से न सोचकर (कि दुख के बाद सुख मिलेगा) बीच में वियोग जो हुआ है, उसको बड़ा दुख मानकर शोक मत करो। पहले (तुमसे मिलने के पूर्व) हम चार भाई थे। अब अपार प्रेमी हम पाँच हो गये। ६८९

पडरुऱ् वुळनुम्बि कानुऱै पहलॅल्लाम्
इडरुरु तहैयायो यानॅन वुरियाय्नी
शुडरुऱै वडिवेलाय् शॉन्मुऱै कडवेनान्
वडदिशै वरुमन्ना णिन्नुळै वरुहिन्ऱेन् 690

चुटर् उऱै वटि वेलाय्–दीप्त और तीक्ष्ण भालाधारी; पटर् उऱ–मेरे साथ आने के लिए; उम्पि उळन्–तुम्हारा छोटा भाई (लक्ष्मण) है; कान् उऱै पकल् ॲल्लाम्–वनवास के सारे दिन; यान् ॲन उरियाय् नी–मेरे स्थान पर रहने के तुम अधिकारी हो; इटर् उऱु तकैयायो–दुख करने योग्य हो क्या; चॉल् मुऱै कटवेल्–मेरा कहने का क्रम मत तोड़ो; नान् वट तिचै वरुम् अ नाळ्–(जिस दिन) मैं उत्तर दिशा की ओर आऊँगा, उस दिन; निन् उळै वरुकिन्ऱेन्–तुम्हारे स्थान को आऊँगा। ६९०

उज्ज्वल और तीक्ष्ण भालाधारी! मेरे साथ (रक्षणार्थ) आने के लिए तुम्हारा लघु भ्राता लक्ष्मण है। जब तक मैं जंगल में रहूँगा, तब तक राज्य-रक्षा का भार जैसे मेरा है वैसा तुम्हारा भी है। फिर दुख काहे का? दुख करना तुम्हारे लिए उचित है क्या? मेरा वचनभंग मत करो। मैं लौटकर उत्तर दिशा में आऊँगा, तब अवश्य तुम्हारे पास आऊँगा। ६९०

❀ अङ्गुळ किळैहावर् कमैदियि नुळनुम्बि
इङ्गुळ किळैहावर् कारुळ रिशैयाय्नी
उन्गिळै यॅनदन्ऱो वुरुतुय रुऱलामो
ॲन्गिळै यितुहावॅन् ऩेवलि ऩिऩिदॅन्ऱान् 691

अङ्कु उळ किळै कावर्कु–वहाँ (अयोध्या में) रहनेवाले बन्धुजनों की रक्षा के लिए; अमैतियिन्–अर्हता के साथ; उम्पि उळन्–तुम्हारा छोटा भाई भरत है; इङ्कु उळ किळै कावर्कु–यहाँ रहनेवाले बन्धुजनों की रक्षा के लिए; आर् उळर्–कौन हैं; नी इचैयाय्–तुम (ही) बताओ; उन् किळै–तुम्हारा बन्धु-समूह; ॲन्तु

अऩ्ऱो–मेरा नहीं है क्या; उऱु तुयर्–अधिक दुख; उऱल् आमो–करना ठीक है क्या; **ऍऩ् एवलिऩ्**–मेरी आज्ञा मानकर; ऍऩ् किळै इतु–मेरे परिवार, इनकी; **इऩितु का**–**सुख से रक्षा करो**; **ऍऩ्ऱाऩ्**–कहा। ६९१

अयोध्या में रहनेवाले बन्धु-बान्धव और प्रजाजनों की रक्षा तुम्हारा भाई भरत करेगा। वह वहाँ है। यहाँ रहनेवाले परिवारों की रक्षा के लिए कौन होगा? तुम ही बताओ। क्या तुम्हारे जन मेरे नहीं हैं? उनको कष्ट उठाने देना उचित है? इसलिए मेरी आज्ञा ही समझो—ये मेरे जन हैं; उनको अच्छी तरह पालो। ६९१

❀ पणिमौऴि कडवादाऩ् परुवर लिहवादाऩ्
पिणियुडै यवऩॆऩ्ऩुम् पिरिविऩऩ् विडैहॊण्डाऩ्
अणियिऴै मयिलोडु मैयऩु मिळैयोऩुम्
तिणिमर निरैकाऩिऱ् चेणुऱु नॆऱिशॆऩ्ऱार् 692

पिणि उडैयवऩ्–रोगग्रस्त है; ऍऩ्ऩुम् पिरिविऩऩ्–ऐसा दिखनेवाले वियोग-पीड़ित गुह ने; परुवरल् इकवाताऩ्–दुख से न छूटकर; पणि मौऴि कटवाताऩ्–आज्ञा का उल्लंघन न करके; विटै कॊण्टाऩ्–विदा ली; अणि इऴै मयिलोटुम्–सुन्दर आभरण-भूषिता और मयूरनिभ सीता के साथ; ऐयऩुम्–प्रभु और; इळैयोऩुम्–लघुराज; तिणि मरम् निरै काऩिल्–घने वृक्ष-भरे वन में; चेण् उऱु नॆऱि–बहुत दूर के मार्ग में; चॆऩ्ऱार्–चलते गये। ६९२

गुह क्या करे? वियोग का दुख भी दूर नहीं हुआ; न वह राजा राम की आज्ञा को भंग कर सका। वह रुग्ण मनुष्य की तरह दिखाई दिया। उसने किसी तरह श्रीराम से विदा ली। फिर श्रीराम और लक्ष्मण आभूषण-भूषिता और मयूराभा वैदेही के साथ तरुओं से खूब भरे वन में लंबे मार्ग पर चले। ६९२

8. वऩम् बुहु पडलम् (वन प्रवेश पटल)

पूरियर् पुणर्मादर् पॊदुमऩ मॆऩ्मऩ्ऩुम्
ईरमु मुळदिल्लॆऩ् ऱऱिवरु मिळवेऩिल्
आरियऩ् वरवोडु ममुदुळ वियशीदक्
कारुऱु कुऱिवाऩङ् गाट्टिय दवणॆङ्गुम् 693

पूरियर् पुणर्–नीच लोगों से समागम करनेवाली; पॊतु मातर् मऩम् ऍऩ–वार-वनिता के मन के समान; ईरमुम् उळतु–आर्द्रता है; इल्–या नहीं; ऍऩ्ऱु अऱिवु–यह समझना; मऩ्ऩुम् अरुम् इळवेऩिल्–(जब) बड़ा कठिन है, उस वसन्त ऋतु में; आरियऩ् वरवोटुम्–श्रीराम के आगमन पर; अवण् ऍङ्कुम्–वहाँ सर्वत्र; अमुतु अळविय–अमृतोपम; चीतम् कार्–शीतल मेघों के; उऱु कुऱि–आने का आसार; वाऩम् काट्टियतु–आकाश ने दिखाया। ६९३

जब श्रीराम ने वन में प्रवेश किया तब वसंत का मौसम था, जिसमें क्षुद्रजन-क्रीड़ित (वारांगना) के मन में जैसे यह समझना कठिन था कि आर्द्रता है या नहीं। तो भी उनका प्रवेश होते ही आकाश ने जल रूपी अमृत से भरे शीतल काले मेघों के उठने के आसार दिखाये। ६९३

वॆयिलिळ निलवेपोल् विरिहदि रिडैवीशप्
पयिऩ्मर निऴलीऩप् पऩिपुरै तुळिवाऩप्
पुयऱ्ऱ विळमॆऩ्गाल् पूवळ वियदॆय्द
मयिलिऩ नडमाडुम् वऴियिऩि यऩपोऩार् 694

वॆयिल्-सूर्य ने; विरि कतिर्-अपनी विस्तृत किरणों को; इळनिलवे पोल्-मन्द चाँदनी के समान; इटै वीच-तरुओं के मध्य फैलाया, तब; पयिल् मरम् निऴल् ईऩ—पास-पास रहे तरुओं ने छाया की; वाऩम् पुयल्-आकाश के मेघों ने; पऩि पुरै तुळि तर-शीतल सीकर छिड़के; इळम् मॆऩ् काल्-मन्द मृदु पवन; पू अळवियतु-फूलों पर से होता हुआ; ॲय्त-बहा; मयिल् इऩम्—मयूर-समूह; नटम आटुम्-नाचते रहे, ऐसे; इऩियऩ वऴि पोऩार्-सुखद मार्गों पर (वे) चले। ६९४

सूर्य ने अपनी किरणों को चाँदनी के समान सुखद बना लिया और तरुओं के मध्य फैलाया। घने पेड़ों ने छाया दी। आकाश के मेघों ने हिम-शीतल बूँदें गिराईं। मंद मलय-मारुत सुमनों पर से बहता हुआ आया। जिस रास्ते में मयूर नाच रहे थे, उससे होकर वे तीनों चलते रहे। ६९४

मऩ्ऱलिऩ् मलिहोदै मयिलियऩ् मडमाऩे
इऩ्ऱुयिल् वदिकोबत् तिऩम्विरि वऩमॆङ्गुम्
कॊऩ्ऱैहळ् शॊरिबोदिऩ् कुप्पैहळ् कुलमालैप्
पॊऩ्ऱिणि मणिमाऩप् पॊलिवऩ पलकाणाय् 695

मऩ्ऱल्-सुगन्धि; इऩ्-मधुर; मलि कोतै-(उससे) भरे केश; मयिल् इयल्-व मयूर की छटा से युक्त; मट माऩे-बालमृगी (-सी देवी); इऩ् तुयिल् वति-मधुर निद्रा में रत; कोपत्तु इऩम् विरि-इन्द्रगोप के कीड़ों से भरे; वऩम् ॲङ्कुम्-वन भर में; कॊऩ्ऱैकळ् चॊरि-अमलतास के तरुओं से गिरे; पोतिऩ् कुप्पैकळ्-पुष्पों के ढेर; पॊऩ् कुलम् मालै-स्वर्णहार में; तिणि-खचित; मणि माऩ-माणिक नगों के समान; पॊलिवऩ पल-शोभायमान दिखते हैं, अनेक; काणाय्-तुम देखो। ६९५

श्रीराम, सीताजी को वन्य-दृश्य दिखलाये। उनसे कहा कि देखो उधर! सुखद सुबासित केशिनी! मयूराभा मृगी! इस विशाल वन में सर्वत्र अमलतास के स्वर्ण-सम (पीले) फूलों के ढेर और इंद्रगोप के सोते हुए कीड़ों (वीरबहूटियों) के समूह दिखाई देते हैं। वे माणिक्य-खचित स्वर्णहारों के समान लगते हैं। देखो। ६९५

पाणिऩ मिजिऱाहप् पडुमऴै पणैयाह
नाणिऩ तॉहुपीलि कोलिऩ नडमाडल्
पूणिय निऩशायऱ् पॉलिवदु पलकण्णिऱ्
काणिय वॅऩ्लाहुङ् गळिमयि लिवैहाणाय् 696

कळि मयिल् इवै–मोदपूर्ण ये मोर; इळ मिजिऱु–छोटे भ्रमर; पाण् आक–भाट बने; पटु मऴै–गरजनेवाले मेघ; पणै आक–मृदंग बने, तब; नाणिऩ तॉकु पीलि–झुके पड़े रहे अपने कलाप को; कोलिऩ–उठाकर फैलाते हुए; नटम् आटल्–नर्तन करते हैं (जो), वह; पूण् इयल्–आभरण-भूषित; निऩ चायल्–तुम्हारी छटा की; पॉलिवु अतु–शोभा को; पल कण्णिल्–अपनी अनेक आँखों से; काणिय–देखने के लिए; ॲऩल् आकुम्–यह कहा जा सकता है; काणाय्–देखो। ६९६

उधर मोर अपने कलाप को फैलाकर नाच रहे हैं। भ्रमर नृत्य-सहायक गीत गाते हैं और गरजनेवाले मेघ मृदंग का काम दे रहे हैं। उन नाचते मोरों को और उनके पंखों में दिखनेवाली 'आँखों' को देखने पर ऐसा लगता है, मानो वे अपनी अनेक आँखों से आभरणों से भूषित तुम्हारी देह-कांति को देखने के लिए ही नाच रहे हों। ६९६

नॅय्त्तिजिऱै नॅडुवेलि निऴलुरु तिऱमुऱ्ऱिक्
कैञ्जिऱै निमिर्हण्णाय् करुदिऩ विऩ्मॅऩ्ऱे
मॅय्ज्जिऱै विरिशायल् कण्डुनिऩ् विऴिहण्डु
मञ्ञैयु मडमाऩुम् वरुवऩ पलकाणाय् 697

नॅय् जिऱै–घी-मले; नॅटु वेलिऩ्–लम्बे भाले के समान; निऴल् उऱु तिऱम्–कांति और शक्ति से; मुऱ्ऱि–पूर्ण होकर; कै जिऱै–हथेली के माप से भी; निमिर् कण्णाय्–अधिक बड़ी आँखों वाली; मञ्ञैयुम्–मोर और; मट माऩुम्–छोटे हरिण; निऩ् मॅय् जिऱै विरि–तुम्हारे शरीर के भरे; चायल् कण्टुम्–लावण्य देखकर और; निऩ् विऴि कण्टुम्–तुम्हारी आँखें–देखकर; इऩम् ॲऩ्ऱे करुतिऩ–अपनी जाति की ही (हो) समझकर; वरुवऩ पल–आनेवाले अनेक हैं; काणाय्–देखो। ६९७

घी-मले लंबे भाले के समान तेजपूर्ण और सशक्त और हथेली से भी बड़ी आँखों वाली! उधर मोर और हरिण तुम्हारी ओर आ रहे हैं, देखो। वे क्रमशः तुम्हारे रूप-लावण्य को और तुम्हारी आँखों को देखकर यह समझते हैं कि तुम भी उनकी ही जाति की हो। ६९७

पूवलर् कुरवोडुम् पुडैतवऴ् पिडवीऩुम्
मावलर् शॉरिशूऴर् ऱुयिलॅऴु मयिलॊऩ्ऱिऩ्
तूवियिऩ् मणनाऱत् तुणैपिरि पॅडैदाऩच्
चेवलॊ डुऱवूडित् तिरिवद ऩियल्हाणाय् 698

कुरवु अलर् पूवोटुम्–'कुरा' तरु पर पुष्पित सुमनों के साथ; पुटै तवऴ्–पार्श्व में फैलनेवाले; पिटवु ईऩुम्–'पिडा' नाम के पेड़ों से निकले; मा अलर्–अधिक फूल;

चॉरि-चूळल्–जहाँ गिरे हैं, उन स्थानों पर; तुयिल् ऍळुम्–सोकर उठे; मयिल् ऑन्ऱिन् तूवियिल्–एक मोर के परों पर; मणम् नाऱ–(उनकी) गन्ध आती है, तब; तुणै पिरि पॅटै–अपने साथी उससे वियुक्त मोरनी; अ चेवलोटु–उस पुरुष मोर के साथ; उऱ ऊटि–खूब रूठती; तिरिवतन् इयल्–फिरती है, वह प्रकार; काणाय्–देखो। ६६८

उधर देखो! एक मोरनी रूठते हुए अपने संगी मोर से दूर ही दूर जा रही है! क्यों, जानती हो! "कुरा" और "पिडा" के (ये पेड़ वर्षा-काल में फूलते हैं) फूल जहाँ बिखरे पड़े थे, वहाँ उन पर यह मोर सोकर उठा है। उसके परों से उन फूलों का वास आता है! इससे मोरनी के मन में संदेह हो गया है। ६९८

अरुन्ददि यनैयाळे यमुदिनु मिनियाळे
शॅरुन्दियिन् मलर्ताङ्गुम् शॅऱियिद ळिनशोहम्
पॊरुन्दिय कळिवण्डिऱ् पॊलिवन पॊन्नूदुम्
इरुन्दयि नॅळुदीयॊत् तॆळुवन विवैकाणाय् 699

अरुन्तति अनैयाळे–अरुन्धती-समाना; अमुतिनुम् इनियाळे–अमृत से भी मधुर स्वभाव वाली; चॅरुन्तियिन् मलर्–'शॅरुन्दि' के फूलों को; ताङ्कुम्–अपने ऊपर धारण किये हुए; चॅऱि इतळ् इन् अचोकम्–घने दलों के सुन्दर अशोक के फूल; पॊरुन्तिय कळि वण्टिन्–अपने ऊपर बैठे हुए भ्रमरों के साथ; पॊलि वन–शोभित हैं; पॊन् ऊतुम्–(वे) स्वर्ण (गलाने के लिए) हवा फूँकने पर; इरुन्तैयिन् ॲळु–कोयले के मध्य उठनेवाली; ती ऑत्तु ऍळुवन–आग के समान दिखाई देते हैं; इवै काणाय्–इनको देखो। ६९९

हे अरुन्धती-समाना! अमृत से भी मधुर देवी! उधर अशोक (आग के समान लाल रंग) के फूल देखो। उन पर 'शॅरुन्दी' के (पीले रंग के) फूल हैं और भ्रमर भी पाये जाते हैं। उनको देखकर सुनार की भट्ठी याद आती है, जिस पर सुनार के नली द्वारा फूँकने से काले कोयलों के मध्य आग जल रही हो। ६९९

शेन्दॊळि विरिशॅव्वाय्प् पैङ्गिळि शॅरिकोलक्
कान्दळिन् मलरेऱिक् कोदुव कविनारुम्
मान्दळिर् नरुमेनि मङ्गैनिन् मणिमुन्गै
एन्दिन वॅनलाहु मियल्बिन विवैकाणाय् 700

मा तळिर्–आम्रपल्लव-सम; नऱु मेनि मङ्कै–सुन्दर छटा वाली देवी; चेन्तु ऑळि विरि–लाली की सुन्दरता छिटकानेवाले; चॅव्वाय् पैङ्किळि–लाल मुख के हरे शुक; चॅऱि–घने दलों से युक्त; कोलम्–सुन्दर; कान्तळिन् मलर् एऱि–'कान्तळ्' पुष्प पर बैठकर; कोतुव–(दलों को) बिखेरते हैं; कविन् आरुम्–(वे) सौंदर्यवान; निन् मणि मुन् कै–तुम्हारे सुन्दर हाथ (के अग्रभाग) में; एन्तिन–धारण किये हुए हैं; ॲनल् आकुम्–ऐसे कहने योग्य हैं; इवै काणाय्–इनको निहारो। ७००

आम्र-पल्लव के समान रूप-रंग वाली ! ललित-लालिमा से लसित चोंच वाले शुक, पुष्ट दल वाले 'कांतळ' पुष्प पर बैठकर चोंच मार रहे हैं। वह दृश्य देखकर यह कहने को होता है कि तुम्हारे सुन्दर हाथ में शुक बैठे हैं। ('कांतळ' पुष्प पाँच दलीय होते हैं और ढेंपुली के साथ वे स्त्रियों के हाथ से उपमित होते हैं।) । ७००

एन्दिळ	मुलैयाळे	वॆळुदरु	मॊळिलाळे
कान्दळिन्	मुहैकण्णिर्	कण्डोरु	कळिमञ्ञै
पान्दळि	दॆन्नवुन्निक्	कव्विय	पडिपारय्
तेन्दळ	वुहळ्शॆय्युञ्	जिरुकुरु	नहैकाणाय् 701

एन्तु इळम् मुलैयाळे–उठे हुए पुष्ट स्तनों वाली; ॲळुत अरुम् ऑळिलाळे–चित्रण के लिए कठिन रूप वाली; ओरु कळि मञ्ञै–एक सन्तुष्ट मोर; कान्तळिन् मुकै–'कान्तळ' कली को; कण्णिल् कण्टु–अपनी आँखों से देखकर; इतु पान्तळ्–यह साँप है; ॲन्न उन्नि–यह सोचकर; कव्विय पटि पारा–चोंचों से पकड़ता है, यह कार्य देख; तेम् तळवुकळ्–मधुयुक्त कुंद पुष्प; चॆय्युम् चिरु कुरु नकै–जो करते हैं, वह मन्द-मृदु हास; काणाय्–देखो। ७०१

उभरे और तरुण स्तनों वाली ! चित्रांकनदुर्लभ लावण्यमयी ! देखो, उधर एक मुदित मयूर 'कांतळ' पुष्प को साँप समझकर उस पर चोंच मारता है। और उसकी नासमझी देखकर कुंद-पुष्प हँसते (से) हैं। ७०१

कुन्ऱुरै	वयमाविन्	कुरुळैयुप्	मिरुळ्शिन्दि
पिन्ऱिन	दॆन्नलाहुम्	बिडितरु	शिऱुमावुम्
अन्ऱिल	पिरिवोल्ला	वण्डर्त	मनैयाविन्
कन्ऱोडु	मुरवाडित्	तिरिवन	पलकाणाय् 702

कुन्ऱु उऱै–पर्वतवासी; वय माविन्–सिंहों के; कुरुळैयुम्–शावक और; इरुळ् चिन्ति–अन्धकारघन को तोड़कर; पिन्ऱिन्नतु ॲन्नल् आकुम्—खण्ड-खण्ड किया गया हो, ऐसा मान्य; पिटि तरु–हथिनियों के जाये; चिऱु मावुम्–छोटे कलभ; अन्ऱु इल–शत्रु नहीं; पिरिवु ओल्ला–अलग नहीं होते; अण्टर् तम् मनै–ग्वालों के घरों की; आविन् कन्ऱोटुम्–गायों के बछड़ों के साथ; उरवु आटि–मेल करके; तिरिवन–घूमते-फिरते हैं; पल–अनेक; काणाय्–देखो। ७०२

पर्वतवासी सिंह-शावक और अंधकार के खण्डों के समान हथिनियों के जाये कलभ आपस में वैर नहीं दिखाते हैं। पर मेल के साथ, अलग न होकर ग्वालों के घरों की गायों के बछड़ों के साथ मिलकर खेलते फिरते हैं। यह अनूठा दृश्य देखो। ७०२

अहिल्पुनै	कुळन्माते	यणियिळै	यॆन्नलाहुम्
नहुमलर्	निरैमालैक्	कोम्बुह	णदितोरुम्

तुहिल्पुरै तिरैनीरिऱ् ऱोय्वन तुऱैयाडुम्
मुहिऴिळ मुलैयारिऩ् मूऴ्हुव पलकाणाय् 703

अकिल् पुतै–अगरु के धुएँ से वासित; कुऴल् माते–केश वाली देवी; अणि इऴै–पहने हुए आभरण; अँतल् आकुम्–यह कहने योग्य; नकुम् मलर् निऱै–(अनेक रंगों के) विकसित पुष्पों से भरी; मालै कॊम्बुकळ्–पंक्तियों में पाई जानेवाली पुष्प की डालें; नति तोऱुम्–नदी में अनेक स्थानों में; तुकिल् पुरै–वस्त्र-सम; तिरै नीरिल्–लहरों से युक्त जल में; तोय्वत–जो डूबी रहती हैं; तुऱै आटुम्–घाटों पर स्नान करनेवाली; मुकिऴ् इळ मुलैयारिऩ्–वर्धनशील छोटे स्तनों वाली तरुणियों के समान; मूऴ्कुव पल–डूब रही हैं, अनेक; काणाय्–देखो। ७०३

अगरु के धुएँ से वासित केश वाली ! उधर नदी में सुमन-भूषण-भूषित अनेक पुष्पलताएँ, अनेक स्थानों पर, वस्त्रसम लहरों वाले जल में झुककर मग्न रहती हैं। वे नदी के घाटों पर स्नान करनेवाली तरुणस्तनी ललनाओं के समान स्नान करती-सी लगती हैं, देखो। ७०३

मुऱ्ऱुरु मुहैकिण्डि मुरल्हिल शिऱुतुम्बि
विऱ्ऱरु नुदल्मादे मॆन्मलर् विरिकोङ्गिऩ्
शुऱ्ऱुरु मलरेऱित् तुयिल्वत शुडर्मिऩ्ऩुम्
पॊऱ्ऱह डुरुनीलम् पुरैवत पलकाणाय् 704

विल् तरु नुतल् माते–धनुष-सम भाल वाली देवी; चिऱु तुम्पि पल–छोटे भ्रमर अनेक; मुऱ्ऱु उरु–बढ़ी हुई; मुकै किण्टि–कलियों को नोचकर; मुरल्किल–(मधु पीते हुए) नहीं भनभनाते; मॆल् मलर् विरि–मृदु सुमन जिन पर विकसित हैं, उन; कोङ्किऩ्–'कोङ्गु' के वृक्षों पर; चुऱ्ऱु उऱुम्–चारों ओर रहनेवाले; मलर् एऱि–पुष्पों पर चढ़कर; तुयिल्वत–सो रहे हैं; चुटर् मिऩ्ऩुम्–दीप्तियुक्त; पॊऩ् तकटु उरु–सोने की थाली पर जटित; नीलम् पुरैवत–नीले रत्न के समान हैं; काणाय्–देखो। ७०४

उन शिशु भ्रमरों को देखो। धनु-तुल्य ललाट वाली भामिनी ! वे वर्धित कलियों को नोचकर खिला नहीं पातीं। अतः वे उन पर बैठ कर उन्हें नोचते-गुंजारते नहीं। पर वे 'कोंगु' के खिले पुष्पों पर चढ़कर मधु पीकर वहीं निद्रा-मग्न हो पड़े रहते हैं। वे स्वर्णथाली पर खचित नीले रत्नों के समान लगते हैं। ('कोंगु' के फूल पीले रंग के और चपटे होते हैं।)। ७०४

कूडिय नऱैवायिऱ् कॊण्डत विऴिकॊळ्ळा
मूडिय कळिमन्ऩि मुडुहिय नॆऱिहाणा
आडिय शिऱैमावण् डन्दिरि तिशैमुऩ्ऩम्
पाडिय पॆडैकण्णा वरुवत पलकाणाय् 705

आटिय चिरै–हिलनेवाले पंखों के; मा वण्टु पल–काले भ्रमर, अनेक; कूटिय नरै–अत्यधिक शहद को; वायिल् कोण्टत्त–मुख में लेकर (पीकर); कळि मत्ति–मत्त (भ्रमित) होकर; विऴि कोळ्ळा मूटिय–आँखें न खोल सकने से वन्द करके; मुट्किय–शीघ्र जाने का; नेरि काणा–मार्ग न देख सके; अन्तरिन्–अन्धों के समान; मुन्तम्–अपने सामने; इचै पाटिय पेटै–गुंजार करती जानेवाली भ्रमरियों को; कण् आक–आँखें मानकर; वरुवत काणाय्–आनेवाले (भ्रमर) देखो। ७०५

उन पंख हिलाते उड़ रहे भ्रमरों को देखो। वे काले भ्रमर अत्यधिक परिमाण में शहद पी चुके। इसलिए वे मदांध हो गये हैं। सचमुच उनकी आँखें नहीं देखतीं। वे बंद हैं। इसलिए वे भ्रमर अपना मार्ग नहीं देख पाते और उनके आगे गुंजार के साथ जो भ्रमरियाँ उड़ती हैं, वे ही उनकी आँख बनी हैं। यानी वे भ्रमर उनका स्वर सुनकर उसी से मार्ग अनुमान करके उड़े आते हैं। वह दृश्य देखो। ७०५

कन्निय रणिहोलङ् गऱ्ऱरि हुदुमॆन्नप्
पॊन्नणि निऱवेङ्गै कोङ्गुहळ् पुदुमॆन्बू
अन्नमॆ नडैयाय्निन् नळहनन् नुदलप्पुम्
शिन्ननन् मलर्मानच् चिन्दुव पलकाणाय् 706

अन्नम् मॆल् नटैयाय्–हंस-सम मृदुगामिनी; वेङ्कै कोङ्कुकळ्–"वेङ्गै" और "कोङ्गु" के वृक्ष; कन्नियर् अणि कोलम्–तरुणियों का श्रृंगार करने का प्रकार; कऱ्ऱु अऱिकुतुम् ऎन्न–हम सीख लेंगे, ऐसा सोचकर; पॊन् अणि निऱम्–स्वर्ण सुन्दर वर्ण; पुतु मॆन् पू–नवीन मृदु सुमनों को; निन् नल् नुतल् अळकम्–तुम्हारे मनोरम ललाटों पर पड़नेवाले अलकों में; अप्पुम्–पहनने योग्य; नल् चिन्नम् मलर् मान–अच्छे छुट्टे फूलों के समान; पल चिन्तुव काणाय्–अनेक गिराते हैं, देखो। ७०६

हे हंसमृदुगामिनी! ये कोंगु और वेंगै वृक्ष शायद स्त्रियों का-सा श्रृंगार करना सीखना चाहते हैं। इसलिए वे ऐसे स्वर्ण-रंग व ताजे छुट्टे फूल गिराते हैं, जो तुम्हारे भाल पर लगनेवाले कुंतलों का अलंकार बन सकते हैं। ७०६

मणङ्गिळर् मलर्वाश मारुदम् वरवीशक्
कणङ्गिळर् तरुशुण्णङ् गल्लिडै यन्नकानत्
तणङ्गिनु मिनियायुन् नणिवड मुलैमुन्ऱिऱ्
चुणङ्गिन मवैमानत् तुरुवन पलकाणाय् 707

कानत्तु अणङ्किनुम् इनियाय्–वनदेवी से भी अधिक सुन्दर देवी; मारुतम् वर वीच–हवा अधिक बहती है, इसलिए; मणम् किळर् मलर्–सुबासपूर्ण सुमनों के; कणम् किळर् तरु–जमे हुए; वाचम् चुण्णम्–सुगन्धित (मकरन्द) चूर्ण; कल् इटैयन–(चूकर) पत्थरों के ऊपर गिरे हैं, वह दृश्य; उन् वटम् अणि–तुम्हारे, मोतीमाला से अलंकृत; मुलै मुन्ऱिल्–स्तनों पर; चुणङ्कु इनम्–फैले पांडुर वर्ण (तेमल) स्थलों के समान; तुरुवन पल–अधिक जमे पड़े हैं; काणाय्–देखो। ७०७

वनदेवी से भी सुन्दर देवी ! मारुत वेग से बहता है और सुवासित पुष्पों से मकरंद चूकर पत्थरों पर जमे हैं। वे वर्तुल पत्थर और मकरंद-पुंज तुम्हारे मोती-माला से अलंकृत स्तनों और उन पर फैले पीले वर्ण के धब्बों (तेमल, जो तरुणियों का लावण्य-वर्धक समझा जाता है) के समान लगते हैं। ७०७

अडियिणै युरैकल्ला वॅन्रुकी लदरॅङ्गुम्
इडैयिडै मलर्शिन्दु मिन्नमर मिवैकाणाय्
कॉडियिन्नॉ डिळवाशक् कॉम्बुहळ् कुयिलेयुन्
तुडिपुरै यिडैमानत् तुवळ्वन विवैकाणाय् 708

कुयिले–कोकिलबयनी; अटि इणै–तुम्हारे चरणद्वय; उऱै कल्ला–(कंकड़, काँटा आदि का चुभना) सीखे हुए (अभ्यस्त) नहीं; ॲन्रु–सोचकर; अतर् ॲङ्कुम्–मार्ग भर में; इटै इटै मलर् चिन्तुम्–इधर-उधर, स्थान-स्थान पर फूल गिरानेवाले; इन्नम् मरम् इवै–समूहों में तरुओं को; काणाय्–देखो; इळ वाचम् कॉटियिन्नॊटु–अल्प और मनोहर सुवासयुक्त लताओं के साथ; कॉम्पुकळ् इवै–पुष्पशाखाएँ, ये; उन् तुटि पुरै इटै मान–तुम्हारी डमरू-सी कमर के समान; तुवळ्वन–लचकती हैं; काणाय्–देखो। ७०८

कोकिलबयनी ! इन वृक्ष-समूहों को देखो। जिन्होंने, यह सोचकर मार्ग में स्थान-स्थान पर फूल गिरा रखे हैं कि तुम्हारे पैरों ने काँटों और कंकड़ों का चुभन सहना नहीं सीखा है। उन सुरभित पुष्पलताओं और डालों को देखो, जो तुम्हारी डमरू-सी कमर जैसे लचकती हैं। ७०८

वाळ्पुरै विळियायुन् मलरडि यणिमानत्
ताळ्पुरै तळिर्वैहुन् दहैजिमि ऱिवैकाणाय्
कोळ्पुरै यिरुळ्वाशक् कुळल्पुरै मळैकाणाय्
तोळ्पुरै यिळवेयिन् तॉहुदिह ळिवैकाणाय् 709

वाळ् पुरै विळियाय्–तलवार-सी आँखों वाली; उन् मलर् अटि अणि मान–तुम्हारे कमलचरण और उनके आभरणों के समान; ताळ् पुरै तळिर्–टहनी सहित पल्लव; वैकुम् तकै जिमिऱु–उन पर रहनेवाले सुन्दर भ्रमर; इवै–इनको; काणाय्–देखो; कोळ् पुरै इरुळ्–(छिपाने का) अपराधी अन्धकार-सम; वाचम् कुळल्–और सुवासित केश; पुरै–के समान; मळै काणाय्–मेघ देखो; तोळ् पुरै–(तुम्हारे) कन्धों के समान; इळ वेयिन् तॊकुतिकळ् इवै–छोटी आयु के बाँस, इनको; काणाय्–देखो। ७०९

करवाल-नेत्रा ! अपने कमल-चरण के समान टहनियों के पल्लव देखो; अपने पैरों के आभरणों के समान उन मनोरम भ्रमरों को देखो। सबको गोपने का अपराधी अंधकार-सम तुम्हारे केश के ही समान वे मेघ हैं, उन पर दृष्टि दो ! ये बाँस देखो, तुम्हारे ही कंधों के समान हैं। ७०९

पूनतै शितैतुतृऱिप् पुळ्ळिडै यिडैपम्बि
नातिऱ नळिर् वल्लिक् कॊडिनवै यिलपल्हि
मातिन मयिल्मालैक् कुयिलितम् वदिकानम्
तीनिहर् तॊळ्ळिलाडैत् तिरैपॊरु वनकाणाय् 710

पू नतै चितै तुतृऱि–पुष्प और कलियाँ डालियों पर अधिक हैं; इटै इटै पुळ् पम्पि–बीच-बीच में पक्षी अधिक पाये जाते हैं; नाल् निऱम्–रंग-बिरंगी; नळिर् वल्लि कॊटि–शीतल वल्लरियाँ और लताएँ; नवै इल पल्कि–बिना कमी के अधिक मिलती हैं; मान् इतम्–हरिणकुल; मयिल्–मयूर-समूह; मालै कुयिल् इतम्–झुण्डों में कोकिलकुल; वति-रहते हैं; कातम्–ऐसा यह वन; ती निकर् तॊळ्ळिल्–आग-सम दीप्त चित्रकारी से युक्त (अति रंजित); आटै तिरै–चित्रपट; पॊरुवन–के समान हैं; काणाय्–देखो। ७१०

इस वन में एक साथ पुष्प और कलियों से भरी शाखाएँ, बीच-बीच में अधिक संख्या में रहनेवाले खग-कुल, रंग-विरंगी लताएँ और वल्लरियाँ, जो बिना किसी कमी के पली हैं; मोर और कोयलें —इनको देखकर एक लाल रंग में चित्रित दृश्य का चित्रपट देखने का भ्रम होता है। देखो। ७१०

ऍन्ऱतन् मडवाळो डिनिदिलिन् विळैयाडिप्
पॊन्ऱिणि तिरडोळान् पोयिन नॆऱिपोदुम्
शॆन्ऱदु कुडपालत् तिरुमलै यिदुवन्ऱो
वॆन्ऱिरु विनैवॆन्ऱोर् मेविड मॆननिन्ऱार् 711

ऍन्ऱतन्–ऐसा कहते हुए; पॊन् तिणि तिरळ् तोळान्–पुष्ट-सुन्दर-बाहु; मटवाळोटु–बाला सीताजी के साथ; इनितिनिन् विळैयाटि–मधुर खेल खेलते हुए; नॆऱि पोयितन्–मार्ग पर गये; पोतुम्–समय (सूर्य) भी; कुटपाल् अ तिरुमलै–पश्चिम के (अस्ताचल) पर्वत (के पीछे); चॆन्ऱतु–गया; इतु–यह; वॆन्ऱु–(इन्द्रिय) जीत कर; इरु विनै वॆन्ऱोर्–दोनों (पाप, पुण्य के) कर्मों पर अधिकार प्राप्त (मुनियों) का; मेवु इटम् अन्ऱो–वासस्थान नहीं है क्या; ऍन–कहकर; निन्ऱार्–खड़े रहे। ७११

स्वर्ण-सम सुन्दरवाहु श्रीराम, इस प्रकार अपनी बाला देवी सीताजी के साथ क्रीड़ा करते हुए मार्ग चले। सूर्य अस्ताचल को प्राप्त हुआ। तब वहाँ एक आश्रम को देखकर वे यह कहते हुए खड़े हो गये कि 'यह तो इन्द्रियों का दमन कर पाप-पुण्य के चक्र से छूटे हुए मुनियों का वास-स्थान, आश्रम-सा लगता है'। ७११

अरुत्तिथि नहम्विम्मु मन्बिन नॆडुनाळिल्
तिरुत्तिय विनैमुऱ्ऱिर् ऱिन्ऱॆनत् तॆरिहिन्ऱान्

परत्तुव तॆन्नुनामप् परमुनि पवनोयिन्
मरुत्तुव ननैयानै वरवॆदिर् कॊळवन्दान् 712

अरुत्तियिन्–(श्रीराम की) दर्शन-लालसा से; अकम् विम्मुम् अन्पिनन्–मन में प्रेम-भरे; नॆट्टु नाळिल् तिरुत्तिय विनै–बहुत दिनों का अच्छा किया हुआ कर्म (तप); इन्रु मुऱ्ऱिऱ्ऱु–आज कृतार्थ होता है; ऎन्न तॆरिकिन्ऱान्–ऐसा जाननेवाले; परत्तुवन् ऎन्नुम्–भरद्वाज के; नामम् पर मुनि–नाम के मुनिवर; पवम् नोयिन्–भवरोग के; मरुत्तुवन् अनैयानै–भिषज श्रीराम का; वरवु ऎतिर् कॊळ–स्वागत करने; वन्तान्–आये। ७१२

तब भरद्वाज मुनि आये। वे श्रीराम के प्रति अपार प्रेम रखते थे। उस दिन को, बहुत दिनों के अपने तप की कृतकृत्यता का दिन समझकर वे भवरोग के भिषज श्रीराम का स्वागत करने के लिए पधारे। ७१२

कुडैयिन निमिर्कोलन् कुण्डिहै यिनन्मूरिच्
चडैयिन तुरिमानिन् शरुमनन् मरनारिन्
उडैयिनन् मयिर्नालु मुरुविन नॆऱिपेणुम्
नडैयिनन् मऱैनालु नडनवि ऱ्रुनावान् 713

कुटैयिनन्–छत्री; निमिर् कोलन्–त्रिदण्डी; कुण्टिकैयिनन्–कमण्डलधारी; मूरि चटैयिनन्–बड़ी जटाधारी; मानिन् उरि चरुमन्–मृगछाल-युक्त; नल् मरम् नारिन् उटैयिनन्–अच्छे वल्कल वसन; मयिर् नालुम् उरुविनन्–लम्बे लटकते बालों के रूप के; नॆऱि पेणुम् नटैयिनन्–मुक्तिमार्गगामी (तपस्या-मार्ग के) पथिक; मऱै नालुम्–चारों वेद; नटम् नविल् तरु–जिसमें नर्तन करते थे, ऐसी; नावान्–जिह्वा वाले। ७१३

छत्री, त्रिदण्डी, कमण्डलधारी और बड़ी जटा से युक्त वे मृगचर्म का उत्तरीय और वल्कल का वस्त्र पहने हुए थे। उनके बाल लम्बे लटकते थे। मुक्ति-मार्ग की तपस्या में रत उनकी जीभ पर मानो चारों वेद नाच रहे थे। ७१३

शॆन्दळल् पुरिशॆल्वन् ऱिशैमुह मुनिशॆव्वे
तन्दन वुयिरॆल्लान् दन्नुयि रॆननलहुम्
अन्दण नुलहेळु ममैयॆनि नमरेशन्
उन्दियि नुदवामे युदविडु तॊळिल्वल्लान् 714

चॆम्मै तळल् पुरि–ठीक तरह से होम-कार्य करना ही; चॆल्वन्–निधि माननेवाले (या निधि के रूप में प्राप्त); तिचै मुकम् मुनि–हर दिशा में मुख रखनेवाले (चतुर्मुख) ब्रह्मा के; चॆव्वे तन्तन–उचित रीति से सृष्ट; उयिर् ऎलाम्–जीव, सबको; तन् उयिर् ऎन–अपने प्राण-सम मानकर; नलकुम् अन्तणन्–कृपा करनेवाले दयालु; उलकु एळुम् अमै ऎनिन्–'सातों लोकों को सृजो' कहने पर; अमर ईचन् उन्तियिन् उतवामे–परब्रह्म की नाभि पर उत्पन्न किये बिना ही; उतविटु तॊळिल् वल्लान्–स्वयं सृष्टि करने के सामर्थ्यवान। ७१४

उनको होम-कार्य ही धन था। चतुर्मुख-दत्त सभी जीवों को अपने प्राणों के समान मानकर, उन पर दया करते थे। उनकी तपशक्ति इतनी थी कि अगर सातों लोकों का सृजन कर दीजिए —कहा जाय, तो वे परब्रह्म श्री विष्णुदेव की नाभि आदि क्रम अपनाये विना ही प्रपंच की सृष्टि कर सकते थे। ७१४

अम्मुनि वरलोडु मऴहनु मलर्तूवि
मुम्मुऱै तॉऴुदानम् मुनिवनु मॅदिर्पुल्लि
इम्मुऱै युरुवोनान् काण्गुव दॅनवुळ्ळम्
विम्मिन निऴिहण्णीर् विऴिवऴि युहनिन्ऱान् 715

अ मुनि वरलोटुम्–उन मुनिवर के आने पर; अऴकनुम्–सुन्दर-मूर्ति ने भी; अलर् तूवि–पुष्पार्चन करके; मून्ऱु मुऱै तॉऴुतान्–तीन बार नमस्कार किया; अ मुनिवनुम्–वे मुनि भी; ऍतिर् पुल्लि–सामने से उठाकर गले लगाकर; इ मुऱै उरुवो–इस प्रकार का रूप क्या; नान् काण्कुवतु ऍन्न–मुझे देखना पड़े, यह कह; उळ्ळम् विम्मिनन्–मन दुख से भरकर; विऴि वऴि–आँखों से; इऴि कण् नीर् उक–बहनेवाले आँसू गिराते हुए; निन्ऱान्–खड़े रहे। ७१५

ज्योंही वे आये त्योंही सुन्दरमूर्ति श्रीराम ने पुष्प लेकर उनके चरणों पर अर्चन किया। फिर तीन बार उनको नमस्कार किया। भरद्वाज मुनि ने भी उनको उठाकर आलिंगन किया। उन्हें श्रीराम को तपस्वी के रूप में देखकर, 'यही रूप मुझे देखना था' यह समझकर बड़ा दुख हुआ। उनकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। वे उसी दशा में खड़े रहे। ७१५

अहलिड नॅडिदाळुममैदियै यदुदीरप्
पुहलिड मॅमदाहुम् पुरैयिडै यिदुनाळिल्
तहविल तववेडन् दऴुविनै वरुवानेन्
इहलडु शिलैवीर विळैयव नॊडुमॅन्ऱान् 716

इकल् अटु चिलै वीर–शत्रु-संहारक धनु-वीर; अकल् इटम्–विशाल राज्य को; नॅटितु आळुम् अमैतियै–बहुत काल तक पालन करने के अधिकारी आप; अतु तीर–उस (राज्य) को छोड़कर; इतु नाळिल्–इस (छोटी) आयु में; तकवु इल–अनुचित; तव वेटम् तऴुविनै–तपोरूप अपनाए हुए हैं; ऍमतु पुकल् इटम् आकुम्–हमारे जैसे लोगों के गम्यस्थान; पुऱै इटै–जंगल में; इळैयवनॊटुम् वरुवान् एन्–छोटे भाई के साथ (आपको) आना पड़ा क्यों; ऍन्ऱान्–यह पूछा। ७१६

भरद्वाज ने श्रीराम से पूछा कि शत्रु-संहारक धनुर्वीर हे श्रीराम! विशाल राज्य का वहुत काल तक शासन करने का अधिकार रखनेवाले आप राज्य छोड़कर, तपस्वी का रूप धारणकर, मेरे जैसे तपस्वियों के

वास-स्थान इस जंगल में आये क्यों हैं ? भाई के साथ इधर आने की आवश्यकता क्या पड़ी ? । ७१६

उऱ्ऱुळ पॉरुळॅल्ला मुणर्वुऱ वुरैशॅय्दान्
नऱ्ऱव मुऩियन्दो विदितरु नवैयॅऩ्बान्
इऱ्ऱदु शॅयलुण्डो विनियॅन विडर्कॉण्डान्
पॅऱ्ऱिल डवमन्दो पॅरुनिल महळॆऩ्ऱान् 717

उऱ्ऱु उळ पॉरुळ् ॲलाम्–जो हुए रहे, उन सब समाचार को; उणर्वु उऱ–समझाते हुए; उरै चॅय्तान्–(श्रीराम ने) कहा; नल् तवम् मुऩि–उत्कृष्ट तपस्वी; अन्तो–ओफ़; विति तरु नवै ॲऩ्पान्–विधि का किया बुरा कार्य, समझकर; इऱ्ऱु अतु–वह कष्ट ऐसा है; इऩि चॅयल् उणटो–अब कोई बदलने का मार्ग है क्या; ॲऩ–सोचते हुए; इटर् कॉण्टाऩ्–चिन्ताग्रस्त हुए; अन्तो–हाय; पॅरु निलम् मकळ्–मान्य भूदेवी; तवम् पॅऱ्ऱिलळ्–(तप के) पुण्यशालिनी नहीं है; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ७१७

यह प्रश्न सुनकर श्रीराम ने सारी घटना समझाकर सुनाई। महा-तपस्वी ने सोचा कि ओफ़ यह विधि का दिया हुआ कष्ट है ! आगे इसके लिए क्या किया जा सकेगा ? वे दुखी हुए। बोले— सम्मानित भूमिदेवी तपस्या वाली नहीं रहीं ! । ७१७

तुप्पुऱळ् तुवर्वायिन् तूय्मॉळि यिवळोडुम्
अप्पुरु कडन्ञाल माळुदि कडिदॆऩ्ना
ऑप्परु महनुन्नै युयर्वन मुऱवेहॆन्
ऱॅप्परि शुयिरुय्न्दा नॆन्ऱुणै यवनॆन्ऱान् 718

ॲऩ् तुणैयवऩ्–मेरे मित्र (दशरथ); ऑप्पु अरु मकऩ्–अप्रमेय अपने पुत्र; उऩ्ऩै–आपको; तुप्पु उऱळ्–प्रवाल-सम; तुवर् वाय्–अरुणाधरा; इऩ् तूय् मॉळि–पवित्र-मधुर-भाषिणी; इवळोटुम्–इस सीता के साथ; अप्पु उरु कटल ञालम्–जलपूर्ण समुद्र-वलयित भूमि को; कटितु आळुति ॲऩ्ऩा–शीघ्र शासन-भार ले लो, कहकर; उयर् वऩम् उऱ–ऊँचे तरुओं से पूर्ण वन पहुँचने के लिए; एकु–निकलो; ॲऩ्ऱु–ऐसा कहकर; ॲ परिचु–किस प्रकार; उयिर् उय्न्ताऩ्–जीते रहे; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ७१८

वे आगे बोले— मेरे प्रिय मित्र दशरथ ने अपने अनुपम पुत्र आपसे पहले कहा कि आप प्रवालाधरा, पवित्र-मधुर-भाषिणी सीताजी के साथ रहकर ,जल-भरे समुद्र से वलयित इस भूमि का शासन करो। फिर से आप ऊँचे तरुओं से पूर्ण जंगल जाने के लिए प्रस्थान करो 'कहकर' वे जीवित कैसे रहे ? । ७१८

अल्ललु मुळविन्ब मणुहलु मुळवन्ऱो
नल्लव मुळशॅय्यु नवैहळु मुळवन्ऱो

इल्लैयोर् पयत्तानिङ् गिडरुरु मिदिलॅन्नाप्
पुल्लित्त नुडनेकॉण् डिनिदुरै पुरैपुक्कान् 719

अल्ललुम् उळ–कष्ट भी होते हैं; इन्पम् अणुकलुम् उळ–सुख प्राप्त होने की बारियाँ भी आती हैं; अन्ऱो–(यह तो स्वाभाविक) न; चॅय्युम् नल्लवुम् उळ–(इनके निमित्त के रूप में) कृत अच्छे कार्य भी हैं; नवैकळुम् उळ अन्ऱो–बुरे कार्य भी हैं न; नान्–मैं; इङ्कु इटर् उरुन्–यहाँ दुख करूँ; इतिल् ओर् पयन् इल्लै–इसमें कोई लाभ नहीं है; ऍन्ना–यह सोचकर; पुल्लितन्–(श्रीराम को) आलिंगन में; उटने कॉण्टु–साथ लेकर; इनितु उरै पुरै–सुख-वास के आश्रम में; पुक्कान्–पहुँचे। ७१९

उन्होंने गम्भीर रूप से सोचा— हाँ, जीवन में सुख के अवसर आते हैं; वैसे ही दुख की बारियाँ भी आती हैं। फिर यह भी तथ्य होता है कि इनके पीछे पुण्य-कार्य भी किये हुए रहते हैं और पाप-कर्म भी! फिर इसमें दुख करने से कोई लाभ नहीं होता। अपने मन को धीरज देकर मुनिवर श्रीराम को आलिंगन में साथ लिये अपने सुख-पूर्ण आश्रम में गये। ७१९

पुक्कुरै यिडनल्हिप् पूशनै मुरैपेणित्
तक्कन कनिहायुन् दन्दुरै तरुमन्पाल्
तॉक्कनन् मुरैहूरित् तूयव नुयिर्पोलुम्
मक्कळि नरुळुऱ्ऱान् मैन्दरु महिऴ्वुऱ्ऱार् 720

तूयवन्–पवित्र मुनि ने; पुक्कु–प्रवेश करके; उरै इटम् नल्कि–ठहरने का स्थान देकर; पूचनै मुरै पेणि–अतिथि-सत्कार यथाविधि करके; तक्कन–(अशन-) योग्य; कनि कायुम् तन्तु–फल (पक्के) और कच्चे फल देकर; उरै तरुम् अन्पाल्–कथनयोग्य प्रेम के साथ; तॉक्क नल् मुरै कूऱि–श्रेष्ठ सन्मार्ग-सम्बन्धी उपदेश देकर; उयिर् पोलुम् मक्कळिन्–अपने प्राण-सम पुत्रवत; अरुळ् उऱ्ऱान्–कृपा की; मैन्तरुम्–कुमार भी; मकिऴ्वु उऱ्ऱार्–मुदित हुए। ७२०

आश्रम में जाकर पवित्र भरद्वाज ने उनको उचित स्थान दिया, यथाविधि अतिथि-सत्कार किया और अच्छे कन्द-मूलफलादि दिया। फिर उल्लेखनीय प्रेम के साथ उन्हें सन्मार्ग के उपदेश दिये। उन पर मुनि ने अपने ही पुत्रवत कृपा की। कुमार भी बहुत सन्तुष्ट हुए। ७२०

वैहिन रिनिदन्ना रव्वऴि मऱैयोनुम्
उयहुवॅ नित्ततोडु मुडनुरै दलिनॅन्बान्
शॅय्दन निनैदॅल्लाञ् जॅल्वनै मुहमुन्नाक्
कॉय्हुल मलर्मार्ब कूऱुव दुळदॅन्ऱान् 721

अन्नार्–वे (तीनों); अ वऴि–उस स्थान में; इनितु वैकिनर्–सुख से रहे; मऱैयोनुम्–वेदज्ञ मुनि भी; इवनोटुम् उटन् उरैतलिन्–इनके साथ-साथ रहने से;

उय्कुवॅन् अॅन्पात्–तर जाऊँगा, यह सोचकर; अॅल्लाम् इत्तितु चॅय्तत्तन्–सब प्रबन्ध ठीक तरह से करके; चॅल्वन् मुकम् मुन्ना–ईश्वर के सामने आकर; कॉय् कुलम् मलर् मार्प–चुने हुए फूलों की मालाधारी वक्ष वाले; कूरुवतु उळतु–कहना कुछ है; अॅन्ड्रान्–कहते हुए। ७२१

श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मण तीनों उस स्थान में सुख से रहे। वेदज्ञ मुनि ने यह सोचा कि इनके सत्संग में रहने से मेरा उद्धार होगा। इसलिए उन्होंने श्रीराम का अच्छा सत्कार किया। फिर भगवान श्रीराम के सामने जाकर कहा कि उत्कृष्ट पुष्पमाला-धारी राम ! आपसे कहने की एक बात है। ७२१

निरैयु नीर्मलर् नॅडुङ्गनि किळङ्गुहाय् किडन्दोर्
कुरैयु मर्ड्र त्रूय्मैयार् कुलविय दॅम्मो
डुरैयु मिव्वळि युयर्तव मॉरुङ्गुडन् मुयल्वार्क्
किरैयु मीदला दित्तियदो रिडमरि दिन्नुम् 722

अॅम्मोटु उरैयुम् इ वळि–हमारे साथ (जहाँ) आप रहते हैं, यह आश्रम; ओर् कुरैयुम् अड्रत–किसी भी दोष से रहित; निरैयुम् नीर्–यथेष्ट पूर्ण जल; मलर्–पुष्प; नॅट्टु कत्ति–अधिक फल; किळङ्कु–कन्द; काय्–कच्चे फल; किटन्तु–प्राप्य होकर; तूय्मैयाल् कुलवियतु–पवित्रता से युक्त है; उयर् तवम्–उत्कृष्ट तपस्या; ऑरुङ्कु मुयल्वार्क्कु–एक साथ करना चाहनेवालों के लिए; ईतु अलातु–यहाँ नहीं तो; इत्तियतु ओर् इटम्–सुखद दूसरा स्थान; इरैयुम् अरितु–मिलना कठिन है; इन्नुम्–और भी। ७२२

आप जहाँ अब रहते हैं, वह स्थान श्रेष्ठ स्थान है। इसमें कोई कमी या दोष नहीं है। यहाँ जल, फूल, शाक, फल और कन्द आदि खूब मिलते हैं। यह पवित्र स्थान है। तपस्या-रत लोगों के लिए इससे बढ़कर सुखावह स्थान मिलना कठिन है। ७२२

गङ्गै याळॊडु करियव णामहळ् कलन्द
शङ्ग मादलिर् पिरियलॅन् ड्रामरैच् चरणच्
चॅङ्ग णायह वय्नुक्कु मरुम्बॅरड्र् ड्रीर्त्तम्
अॅङ्गळ् पोलियर् तरत्तदन् ड्रिरुत्ति रीण्डॅन्ड्रान् 723

तामरै चरणम्–कमल-चरण; चॅम् कण्–अरुणाक्ष; नायक–नायक; कङ्कै याळॊट्टु–गंगा देवी के साथ; करियवळ्–काली (कालिंदी) भी; नामकळ्–सरस्वती भी; कलन्त चङ्कम् आतलिन्–मिलित संगम है, इसलिए; अयनुक्कुम्–ब्रह्मा के लिए भी; पॅरल् अरुम्–दुष्प्राप्य; तीर्त्तम्–तीर्थस्थान है; अॅङ्कळ् पोलियर् तरत्ततु अन्ड्र–हमारे जैसों के लिए प्राप्य नहीं है; पिरियलॅन–(इसलिए यहाँ से) अलग नहीं जाता; ईण्ट्टु इरुत्तिर्–(आप भी) यहाँ रह जाइए; अॅन्ड्रान्–कहा। ७२३

कमल-चरण और अरुणाक्ष नायक ! यहाँ गंगा नदी, काली कालिन्दी

और सरस्वती तीनों नदियों का संगम होता है। इसलिए यह ब्रह्माजी के लिए भी दुष्प्राप्य स्थान है। हमारे जैसों के लिए तो अप्राप्य ही है ! इसी कारण मैं यहाँ से हटता नहीं। आप भी यहीं रह जाइये। ७२३

पूण्ड मादव नम्मौंळि विरुम्बितन् पुहल
नीण्ड दन्ऱिदु निरैपुन नाट्टुक्कु नॆंडुनाळ्
माण्ड शिन्दैय विव्वळि वैहुवॆं नॆंन्ऱाल्
ईण्ड यावरु नॆंरुङ्गुव रॆंन्ऱन निरामन् 724

पूण्ट मातवन्–महान तपोव्रती के; अ मौंळि विरुम्पितन् पुकल–वह कथन प्यार से कहने पर; इरामन्–श्रीराम; माण्ट चिन्तैय–आदरणीय विचार वाले; इतु–यह स्थान; निरै पुनल् नाट्टुक्कु–जलसमृद्ध (कोसल) देश के लिए; नीण्टतु अन्ऱु–दूर नहीं है; नॆंटु नाळ्–दीर्घकाल तक; इ वळि वैकुवॆंन् ऍन्ऱाल्–इस स्थान में रहूँ तो; यावरुम्–(देशवासी) सभी; ईण्ट नॆंरुङ्कुवर्–यहाँ एकत्रित हो जायेंगे; ऍन्ऱनन्–कहा। ७२४

महान तपोव्रती भरद्वाज ने श्रद्धा के साथ यह सुझाव दिया। तो श्रीराम ने उत्तर में कहा कि सम्मान्य विचार वाले ! यह, जलपूर्ण कोसल देश के लिए दूर का स्थान नहीं है। अगर मैं यहाँ बहुत काल रह जाऊँगा, तो कोसल के सभी लोग इधर आकर जमा हो जायेंगे। ७२४

आव दुळ्ळदे यॆयके ळॆयिरण् डमैन्द
काव दप्पॊळिऱ् कप्पुऱङ् गळिन्दपिन् काण्डि
मेवु कादलिन् वैहुदि विण्णिनु मिनिदात्
तेवर् कैदॊळुञ् जित्तिर कूडमॆंन् ऱुळदाल् 725

ऐय–प्रभु; आवतु उळ्ळते–ऐसा होना सम्भव ही है; केळ्–सुनिए; ऐ इरण्टु कावतम्–पाँच के दो (दस) कोस दूर; अमैन्त पॊळिऱ्कु–फैले इस उपवन को; अ पुऱम् कळिन्त पिन्–पार कर उस ओर जाने पर; विण्णितुम् इनितु आक–स्वर्ग से भी सुखावह; तेवर् कै तॊळुम्–देवों की भी अंजलि-योग्य; चित्तिर कूटम् ऍन्ऱु उळतु काण्टि–चित्रकूट रहता है, देखिए; मेवु कातलिन्–अपनी इच्छा के अनुसार; वैकुति–वहाँ ठहरिए। ७२५

भरद्वाज ने बात समझी। उन्होंने कहा कि प्रभु ! हाँ, आपने जो कहा वह होगा, इसकी सम्भावना रहती ही है। सुनिये। यह आश्रम दस योजन दूर है। इसको पार कर जाएँगे तो आपको चित्रकूट मिलेगा, जो स्वर्ग से भी अधिक पवित्र और सुखद और देवों के लिए भी वन्द्य है। वहाँ आप अपने इच्छानुसार रह सकेंगे। ७२५

ऍन्ऱु कादलि नेयिन नडिदॊळु देहिक्
कॊन्ऱै यङ्गुळऱ् कोवलर् मुल्लैयङ् गुऱिञ्जि

शॅन्ऱु शॅङ्गदिर्च् चॅल्वनु नडुवुऱच् चिऱुमान्
कन्ऱु निन्ऱुहळ् करैयुडैक् काळिन्दि कण्डार् 726

ॲन्ऱु–यह कहकर; कातलिन् एयिनन्–प्रेम से (मुनि ने) आज्ञा दी; अटि तॊळुतु–चरण-वन्दना करके; एकि–वहाँ से निकलकर; कॊन्ऱै अम् कुळल्–अमलतास के फलों की नली के बने वाद्य वाले; कोवलर् मुल्लै–ग्वालों के 'मुल्लै' प्रदेश को; अम् कुरिञ्चि–सुन्दर पार्वत्य प्रदेश को; चॅन्ऱु–पार करके जाकर; चॅम् कतिर् चॅल्वतुम्–लाल किरणों के ईश्वर के; नटु उऱ–आकाश-मध्य पहुँचते समय; चिऱुमान् कन्ऱु निन्ऱु–छोटे हरिण जहाँ खड़े होकर; उकळ्–उछलते हैं, उस; करै उटैय–तीर वाली; काळिन्ति कण्टार्–कालिन्दी को देखा। ७२६

यों कहकर मुनि ने प्रेम के साथ आज्ञा दी। तीनों ने उनके चरणों पर नमस्कार किया। फिर वे चले और अमलतास के फलों की नली को बाजे बनाकर बजानेवाले ग्वालों का प्रदेश 'मुल्लै' और उसके बाद सुन्दर पार्वत्य-प्रदेश 'कुरिञ्चि' को पार कर मध्याह्न के समय यमुना नदी के तट पर आये, जहाँ मृगशावक छलाँग मारते खेल रहे थे। ७२६

आऱु कण्डन रहमहिळ्न् दिरैञ्जिन ररिन्दु
नीऱु तोय्मणि मेनियर् नॅडुम्बुनल् पडिन्दार्
ऊऱु मॅन्गनि किळङ्गितो डुण्डुनी रुण्डार्
एऱि येहुव दॅङ्ङन मॅन्ऱलु मिळैयोन् 727

आऱु कण्टनर्–(यमुना) नदी को देखा; नीऱु तोय् मणि मेनियर्–धूलि-धूसरित शरीर वाले; अकम् मकिळ्न्तु–प्रसन्नमन होकर; अऱिन्तु–(यमुना का गौरव) समझकर; इऱैञ्चिनर्–उसकी स्तुति की; नॅटु पुनल् पटिन्तार्–गहरे जल में स्नान किया; ऊऱुम् मॅन् कनि–रसपूर्ण मृदु फलों को; किळङ्कितोटुम् उण्टु–कन्द के साथ भोग कर; नीर् उण्टार्–जल पिया; एऱि एकुवतु ॲङ्ङनम्–इसको पार कर जाना कैसा; ॲन्ऱलुम्–सोचने पर; इळैयोन्–लघुराज। ७२७

यमुना नदी को देखकर धूलि-धूसरित देह वाले वे प्रसन्नचित्त हुए। यमुना नदी का गौरव समझकर, उन्होंने उसकी स्तुति की। फिर गहरे जल की उस नदी में स्नान किया। वहाँ प्राप्त रसपूर्ण फल और कन्द का भोजन करने के बाद वे सोचने लगे कि इस नदी को पार कैसे किया जाय? तब लघुराज……। ७२७

वाङ्गु वेय्ङ्गळै तुणित्तनन् माणैयिन् कॊडियाल्
ओङ्गु तॅप्पमॊन् ऱमैत्तद नुम्बरि नुलम्बोल्
वीङ्गु तोळण्ण ऱेवियो डिनिदुवीऱ् ऱिरुप्प
नीङ्गि नानन्द नॅडुनदि यिरुहैया नीन्दि 728

वाङ्कु वेय् कळै–लोचदार बाँस के छड़; तुणित्तनन्–काटकर; माणैयिन्

कोटियाल्–'माणै' नाम की लता से; ओङ्कु तॅप्पम् ऑऩ्ऱु–(बाँधकर) एक अच्छी **डोंगी; अमैत्तु–बनाई;** अतन् उम्परिन्–उस पर; उलम् पोल् वीङ्कु **तोळ्–पत्थर-सम पुष्ट कन्धों वाले;** अण्णल्–प्रभु; तेवियोटु–देवी-सह; इरुन्तु वीऱ्ऱिरुप्प–**विराजमान हुए, तब;** अन्त नॅट्टु नति–उस गहरी नदी को; इरु कैयाल् नीन्ति–दोनों **हाथों से (डोंगी को ठेलते हुए)** तैर करके; नीङ्किऩान्–पार किया (लघुराज ने)। ७२८

(लक्ष्मण ने) लोचदार बाँस के छड़ काट लिये। उनको 'माणै' नाम की लता से बाँधकर एक अच्छी नाव बनाई। उन पर प्रस्तर-सम पुष्ट कंधे वाले श्रीराम और सीताजी विराजे। लक्ष्मण ने उस नाव को ठेलते हुए अपने दोनों हाथों के सहारे तैरकर उस नदी को पार किया। ७२८

आलै **पाय्वय** लयोत्तिय राण्डहैक् किळैयान्
मालै **माल्वरैत्** तोळॅनु मन्दरम् तिरियक्
कालै **वेलैयै** युऱ्ऱदु कऴिन्दनीर् कडिदिन्
मेलै **वेलैयिऱ्** पायन्ददु मीण्डनीर् वॅळ्ळम् 729

आलै पाय् वयल्–ईख के (पीसने के) कारखानों से इक्षु-रस जिनमें **बहता है, उन खेतों का देश; अयोत्तियर् आण् तकैक्कु**–अयोध्या के नायक (श्रीराम) के; **इळैयान्–छोटे भाई, लक्ष्मण के; मालै**–माला से अलंकृत; माल् वरै तोळ्–बड़े पर्वत-सम कन्धे; **ऍनुम् मन्तरम्–रूपी मन्दरपर्वत;** तिरिय–घूमते हैं, तब; मीण्ट नीर् वॅळ्ळम्–मुड़ा **हुआ जल-प्रवाह; मेलै वेलैयिल् पायन्ततु**–पश्चिमी सागर में जा पहुँचा; **कऴिन्त नीर्–बचा जल; कटितिन्–शीघ्र;** कालै वेलैयै उऱ्ऱतु–पूर्वी समुद्र पहुँचा। ७२९

इक्षुरस-सिंचित अयोध्या के पति पुरुषोत्तम श्रीराम के लघु भ्राता जब तैरे तब उनके मालाधारी, उन्नत पर्वत-सम कंधे रूपी मंदर पर्वत घूमे। तब उनसे टकराकर मुड़ा जल-प्रवाह पश्चिमी सागर पहुँचा। जो बचा, वही पूर्वी सागर में शीघ्र पहुँचा। ७२९

अन्नैय **रप्पुन** लेऱिन रहन्करै यणैन्दार्
पुनैयुम् **वऱ्कलैक्** कोलत्तर् नॅडुनॅऱि पोनार्
शिनैयु **मूलमु** मुहडुम्वॅन् दिडनिलन् दीय्न्दु
निनैयु **नॅञ्जमुञ्** जुडुवदोर् नॅडुञ्जुर नेर्न्दार् 730

पुनैयुम् वऱ्कलै कोलत्तर्–पहने हुए वल्कल से शोभा-प्राप्त वे; अन्नैयर्–उस **प्रकार; अ पुनल् एऱिनर्**–उस नदी के पार गये; अकल् करै अणैन्तार्–विशाल तट **पर आये; नॅट्टु नॅऱि पोनार्**–लम्बे मार्ग पर गये; शिनैयुम् मूलमुम्–डालें और जड़ें; **मुकटुम्–और उच्च भाग (पेड़ों के);** वॅन्तु–जलकर; इट निलम् तीय्न्तु–विशाल **भूमि भी सूखकर; निनैयुम् नॅञ्चमुम्**–सोचनेवाला मन भी; चुटुवतु–जहाँ झुलस **जाता है, उस; ओर् नॅट्टु चुरम्–विशाल** एक बालू के जंगल में; नेर्न्तार्–आये। ७३०

वल्कल-वसन-शोभित वे उस प्रकार यमुना के दक्षिणी तट पर आये।

फिर वे लम्बे मार्ग पर आगे बढ़े। जाते-जाते वे 'पालै' (मरु) प्रदेश में आये। उसमें वृक्ष, जड़ें, डालियाँ, उच्च भाग सबके जलने से ठूँठ पड़े रहे। भूमि भी जली पड़ी रहीं। उसकी बात सोचनेवाला मन भी जल सकता था, ऐसा गरम प्रदेश था वह। ७३०

नीङ्गल्   आऱ्ऱलळ्   ऎन्ऱियॅन्   ऱिराहव   निनैन्दान्
ओङ्गु   वॅय्यव   नुडुपदि   यॅन्नक्कदि   रुहुत्तान्
ताङ्गु   वॅङ्गडत्   तुलवैहळ्   तळैकॉण्डु   तळैत्त
पाङ्गु   वॅङ्गनल्   पङ्गय   वनङ्गळायप्   परन्द 731

इराकवन्–श्रीराघव ने; चलफि नीङ्कल् आऱ्ऱलळ्–जानकी पार कर नहीं सकती; ऎन्ऱु निनैन्दान्–ऐसा सोचा; ओङ्कु वॅय्यवन्–अत्युष्ण सूर्य ने; कतिर्–अपनी किरणों को; उडुपति ऎन्न–उडुपति (की किरणों) के समान; उकुत्तान्–फैलाया; ताङ्कु–(उन किरणों को) लेकर; वॅम् कटत्तु उलवैकळ्–अति गरम मरु के ठूँठ सब; तळै कॉण्टु–पत्तों सहित; तळैत्त–पनप उठे; वॅम् कनल् पाङ्कु–गरम आग के समान रहे स्थल; पङ्कयम् वनङ्कळाय्–कमल-वनों के रूप में; परन्त–फैले। ७३१

श्रीराम ने सोचा कि जानकी इसमें चलकर पार नहीं कर सकेंगी। उनके ऐसा सोचते ही अतितापक सूर्य ने अपनी गरम किरणों को उडुपति की शीतल किरणों के समान शीतल बना लिया। उस चाँदनी-सम किरणों के प्रभाव से "मरु" में जले खड़े रहे ठूँठ सब फिर से पल्लवित होकर हरे हो उठे। भयंकर रूप से तपानेवाले स्थल पंकज-वनों के समान शीतल बने और उनकी संख्याएँ बढ़ती रहीं। ७३१

वऱुत्तु   वित्तिय   वन्नैयन   वल्लयिऱ्   परल्हळ्
पऱित्तु   वित्तिय   मलरॅनक्   कुळिर्न्दन   पशैन्द
इऱुत्तॅ   रिन्दन   वल्लिहळ्   ळिळन्दळि   रीन्ऱ
कऱुत्त   वाळर   वॅयिऱ्ऱिनू   ऱमुदुहक्   कळित्त 732

वऱुत्तु वित्तिय–भूनकर फैलाये गये; अन्नैयन–जैसे; वल् अयिल् परल्कळ्–कठोर और तीक्ष्ण कंकड़; पऱित्तु वित्तिय–चुनकर फैलाये गये; मलर् ऎन्न–फूलों के समान; कुळिर्न्तन–शीतल हुए; पचैन्त–ताजे हुए; इऱुत्तु ऎरिन्तन–सूखकर जली हुईं; वल्लिकळ्–लताओं ने; इळम् तळिर् ईन्ऱ–नवीन पत्ते दिये; कऱुत्त वाळ् अरवु–क्रोधशील भयंकर सर्प; ऎयिऱ्ऱिन् ऊऱु–दाँतों द्वारा; अमुतु उक–अमृत बहाते हुए; कळित्त–खुश हुए। ७३२

कंकड़, जो भूनकर फैलाये गये-से लगते थे, चुनकर फैलाये गये फूलों के समान नरम और शीतल बन गये। शुष्क होकर झुलसी रही लताओं ने सुन्दर कोंपलें निकालीं। क्रोधशील भयंकर सर्प के दाँतों से अमृत बहने लगा और वे साँप प्रसन्न हो गये। ७३२

कुऴ्मि मेहङ्गळ् कुमुऱिन कुळिर्तुळि कॊणर्न्द
मुऴुविल् वेडरु मुनिवरिन् मुनिहिल रुयिरैत्
तऴुवि निन्ऱन पशियिल पहैयिल तणिन्द
उऴुवै यिन्मुलै मानिळङ् गन्ऱु हळुण्ड 733

मेकङ्कळ् कुऴुमि–मेघ घुमड़कर; कुमुऱित–गरजते हुए; कुळिर् तुळि कॊणर्नत–शीतल बूँदें लाये; मुऴु विल् वेटरुम्–पूर्ण चापधारी व्याध भी; मुनिवरिन्–(दाँत) मुनियों के समान; मुनिकिलर्–क्रोधी न रहे; उयिरै तऴुवि निन्ऱन–जीवों के साथ लगी रहनेवाली; पचि इल–बुभुक्षाएँ न रहीं; पकै इल–शत्रुताएँ नहीं रहीं; तणिन्त–शान्त हो गईं; मान् इळम् कन्ऱुकळ्–हरिण-शावकों ने; उऴुवैयिन्–(मादा) बाघों का; मुलै उण्टन–स्तन्य-पान किया। ७३३

मेघ घुमड़ आये, गरजे और शीतल बूँदें लाये। अनेक चाप रखनेवाले व्याध भी संयमी मुनियों के समान क्रोध छोड़ गये। जीवों के साथ हमेशा लगी रहनेवाली बुभुक्षाएँ शान्त हुईं। शत्रुताएँ भी दूर हो गईं। उसके फलस्वरूप मृगशावक मादा बाघों का स्तन्य-पान करते रहे। ७३३

कल्ल ळैक्किडन् दहड्वॆन् दयर्हिन्ऱ कदऴ्वाम्
बल्ल लुऱ्ऱिल वलैपुनर् किडन्दन वनैय
वल्लै युऱ्ऱवेय पुऱ्ऱॊडु मॆरिवन मणिवाय्प्
पुल्लॆ यिऱ्ऱिळङ् गन्नियर् तोळॆनप् पॊलिन्द 734

कल् अळै किटन्तु–पत्थरों के बीच में रहकर; अकटु वॆन्तु–पेट जलकर; अयर्किन्ऱ–शिथिल रहनेवाले; कतऴ् पाम्पु–क्रोधी भयंकर सर्प भी; अल्लल् उऱ्ऱिल–संकट नहीं उठाते; अलै पुनल् किटन्तन–लहरों से भरे जल में पड़े रहे; अनैय–ऐसे रहे; वल्लै उऱ्ऱ वेय्–विपुल परिमाण में बढ़े रहे बाँस; पुऱ्ऱॊटुम् ऎरिवन–बाँबियों के साथ जो जलनेवाले थे, वे; मणिवाय्–सुन्दर मुख; पुल् ऎयिऱु–छोटे (मनोरम) दाँत वाली; इळम् कन्नियर्–छोटी कन्याओं के; तोळ् ऎन–कन्धों के समान; पॊलिन्त–(नवीन और मनोहर) रहे। ७३४

पत्थर की दरारों में पड़कर जो साँप भूख के कारण पेट में जलन लेकर थके रहते थे, वे अब कष्ट से मुक्त होकर लहरों से पूर्ण जलमध्य पड़े हुए जैसे खुश हुए। विपुल परिमाण में बढ़े रहे बाँस, जो अपने तल की बाँबियों के साथ जलनेवाले थे; अब सुन्दर अधरों और छोटे मनोरम दाँतों वाली छोटी कन्याओं के कंधों के समान ताजे और मनोरम हो गये। ७३४

पडर्न्दॆ ऴुन्दपुर् पशुनिऱ्क् कम्बळम् बरप्पिक्
किडन्द पोन्ऱन केहयन् तोहैहळ् किळर
मडन्दै मारॆन नाडहम् वयिन्ऱॊरु नविन्ऱ
तॊडर्न्दु पाणरिऱ् ऱूङ्गिशै मुरन्ऱन तुम्बि 735

पटर्न्तु अँळुन्त पुल्–फैलकर उगी घास; पचमै निऱम् कम्पळम्–हरे रंग के कम्बल; परप्पि किटन्त पोन्ऱत्त–फैले पड़े रहे हों, जैसे लगी; केकयम्–मोर; तोकैकळ् किळर्–पंख फैलाकर; मटन्तैमार् अँत्त–(नर्तकी) स्त्रियों के समान; वयिन् तोऱुम् नाटकन् नविन्ऱ–स्थान-स्थान पर नाचते रहे; तोटर्न्तु–उनके अनुकरण में; तुम्पि–भ्रमर; पाणरिन्–गवैयों के समान; तूङ्कु इचै मुरन्ऱत–मधुर संगीत भनभनाये। ७३५

घास जो हरी-हरी फैली थी, हरे रंग के कम्बलों के समान रही। मोर पंख फैलाकर, नर्तकी स्त्रियों के समान यत्र-तत्र नाचते दिखाई दिये। उनके अनुकरण में भ्रमरों ने भाट (नाम के) गवैयों के समान गुंजार का मनोहर संगीत गाया। ७३५

काल मिन्ऱियुङ् गनिन्दन कनिनॅडुङ् गन्द
मूल मिन्ऱियु मुहिळ्त्तन निलनुऱ मुळ्दुम्
कोल मङ्गैय रॊत्तन कॊम्बरह ळिम्बर्च्
चील मन्ऱियुञ् जॅय्दवम् वेऱुमॊन् ऱुळदो 736

कनि–फल; कालम् इन्ऱियुम्–मौसम न होने पर भी; कनिन्तन–फले; नॅटु कन्तम् मूलम् इन्ऱियुम्–अधिक कन्दों और जड़ों के बिना ही; निलन् मुळुतुम्–धरती भर में; उऱ मुकिळ्त्तन–पेड़, पौधे उगे; कॊम्पर्कळ्–पुष्पलताएँ; कोलम् मङ्कैयर् ऒत्तन–सुन्दर स्त्रियों के समान शोभायमान बनीं; इम्पर्–इस भूलोक में; चीलम् अन्ऱियुम्–सिवा शील के; चॅय् तवम् वेऱु ऒन्ऱुम् उळतो–करने योग्य कोई दूसरी तपस्या है क्या। ७३६

उस मरु प्रदेश में इनके पधारने से ऋतु न होने पर भी फल फले। बिना जड़ों और कन्दों के भी पेड़-पौधे बढ़े। पुष्पलताएँ अलंकृत रमणियों के समान शोभा देती दिखाई दीं। उनके शील का यह प्रभाव था। शील से बढ़कर इस भूतल में श्रेष्ठ दूसरी कोई तपस्या है क्या? नहीं। शील सर्वश्रेष्ठ तप है। ७३६

ॲयिनर् तङ्गिड मिरुडिह ळिरुप्पिड मेय्न्द
वयिन्व यिन्ऱॊऱु मणिनिऱक् कोबङ्गण् मलर्न्द
पयिन्म रन्दॊऱुम् पेडैयैप् परिन्दन पयिरुम्
कुयिलि रङ्गिन कुरुन्दिन मरुम्बिन मुरुन्दम् 737

ॲयित्तर् तङ्कु इटम्–व्याधों के वासस्थान; इरुटिकळ् इरुप्पु इटम् एय्न्त–ऋषियों के स्थान के समान बने; वयिन् वयिन् तोऱुम्–स्थान-स्थान पर; मणि निऱम्–माणिक्य वर्ण; कोपङ्कळ् मलर्न्त–इन्द्रगोप फैले; पयिल् मरम् तोऱुम्–पास-पास रहे पेड़ों पर; पेटैयै परिन्तन–अपनी कोयलों पर प्रेम करके; पयिरुम् कुयिल्–बुलानेवाले नर कोकिल; इरङ्किन–कूके; कुरुन्तु इनम्–'कुरुन्द' तरुओं ने; मुरुन्तम् अरुम्पिन–मोर के पंख की खोखली नली के निम्न भाग के समान (श्वेत) कलियाँ प्रकट कराईं। ७३७

व्याधों के वासस्थान ऋषियों के आश्रमों के समान बदल गये। यत्र-तत्र माणिक्यवर्ण इंद्रगोप दिखाई दिये। पास-पास रहे तरुओं पर कोकिल बैठकर अपनी प्यारी कोयलों को पुकारते हुए कूक करने लगे। "कुरुन्द" तरुओं ने मोर के पंख की खोखली नली के निचले भाग के समान श्वेतवर्ण कलियाँ प्रकट करायीं। ७३७

पन्द नाट्पुर पासरै पौरुळ्वयिऱ् पयवन्
तन्द केळ्वरै तुनियरल् तळुवितर् पिरिन्द
कन्द ओदियर् चिन्तैयिऱ् कौतिप्पवक् कळ्ळोर्
वन्द पोदवर् अवर्मनक् कुळिर्न्दवक् पवले 738

पन्तम्–सन्नद्ध; नाट्पु युद्ध-युद्ध के; पासरै–पड़ाव की ओर; पौरुळ् वयिऩ्–(या और) अर्थार्जन के लिए; पयवन् तन्त–बिछुड़कर प्रत्यावर्तन का समय बताकर; केळ्वरै–जो गये थे, उन पतियों को; तळुवितर् पिरिन्त–गले लगाकर जिन्होंने विदा किया, उन; कन्तम् ओतियर् चिन्तैयिऩ्–सुवासित केश वाली नायिकाओं के मन के समान; कौतिप्पतु अ वनम्–जलता जो रहा, वह जंगल; अ कळ्ळोर् वन्त पोतु–उन पायलधारियों के आने पर; अवर् मनम् अेन–उन नायिकाओं का मन जैसा होता है, वैसा; कुळिर्न्ततु–शीतल (सुखी) बना। ७३८

वीर नायक अपनी प्रेयसियों को छोड़कर या तो संबद्ध युद्ध में भाग लेने पड़ाव की ओर या अर्थार्जन के लिए अनुकूल स्थान को जाते हैं। जब वे जाते हैं तब प्रत्यावर्तन का समय भी निर्धारित करके जाते हैं। उनके वियोग की अवस्था में रहनेवाली नायिकाओं के मन के समान जो तपता रहा, वह 'पालै' (मरु प्रदेश) अब वीर-पायलधारी नायकों के लौट आने पर नायिकाओं का मन जैसा सुख-शीतल हो जाता है, वैसा शीतल-सुखद बन गया। ७३८

वॆळिरु नीङ्गिय पालैयिल् मॆल्लॆऩप् पोनार्
ऒळिरु वान्मदिक् कुऴविदन् तूल्वयिऱ् उदैप्पप्
पिळिरु मेहत्तैप् पिडियॆऩप् पॆरुम्बनै तडक्कै
कळिरु नीट्टुमच् चित्तिर कूटत्तैक् कण्डार् 739

वॆळिरु नीङ्किय पालैयिल्–निकम्मापन जिससे छूट गया (उर्वर जो बन गया), उस 'पालै' में; मॆल् अेऩ पोऩार्–मृदु चाल से चले; ऒळिरु–प्रकाशमय; वाऩ् मति कुऴवि–श्वेत बालचन्द्र के; तन् चूल् वयिऱ् उतैप्प–अपने जलगर्भित पेट पर लात मारने से; पिळिरुम् मेकत्तै–चिंघाड़नेवाले मेघ को; पिटि अेऩ–हथिनी समझकर; कळिरु–पुरुषगज; पॆरुम् पऩै–बड़े ताड़ के वृक्ष के समान; तट कै नीट्टुम्–अपनी बड़ी सूँड़ को (उसकी तरफ़) बढ़ाने का दृश्य जहाँ उपलब्ध है; अ–उस; चित्तिर कूटत्तै कण्टार्–चित्रकूट को देखा। ७३९

अब 'पालै' प्रदेश अपना घृणायोग्य निकम्मापन छोड़ उर्वर हो

गया। श्रीराम आदि ने उसको बिना किसी उतावली के चलकर पार किया। फिर उन्हें वह चित्रकूट दिखाई दिया, जिस पर उज्ज्वल बालचन्द्र, गरजते मेघ और सूँड़ उठाये हाथी पाये गये। उस चन्द्र ने मेघ के गर्भ पर लात मारी तो वह मेघ गरजा। उसको चिंघाड़ती हथिनी समझकर हाथी ने अपनी तालतरु-सम सूँड़ बढ़ायी। ७३९

9. शित्तिरकूडप् पडलन् (चित्रकूट पटल)

निनैवुम्	देवर्क्कुम्	नमक्कुमोत्	तोरुनेरि	निन्र्
अनह	लक्ष्मण	सायिरम्	पेयरुडै	यमलन्
शनहन्	मामड	मयिर्क्कन्दच्	चन्दनम्	जोरिन्द
कनह	मालवरै	यियलुळैलाम्	दैरियुरक्	काट्टुम् 740

निनैवुम् तेवर्क्कुम्--(हम जिनको) मानते हैं, उन देवों के लिए और; नमक्कुम्--(मनुष्य) हमारे लिए; ओत्तु--एक सम; ओरु नेरि निन्र्--(अगम्य) पद पर स्थित; अनकन्--अनघ; अम् कण्णन्--सुन्दर दृष्टि वाले; आयिरम् पेयर् उडैय अमलन्--सहस्रनामी विमल देव; जनकन् मा मडम् मयिर्कु--जनक की पुत्री, छोटे मोर के समान छटा वाली सीताजी को; चन्दनम् चोरिन्द--चन्दनतरु-संकुल; अन्त कनकम् माल् वरै--उस कनकयुक्त बड़े पर्वत के; इयलपु एल्लाम्--विषय में सभी विशेष बातें; तेरियु उर--समझाते हुए; काट्टुम्--दिखाने लगे। ७४०

स्वयं भगवान श्रीराम, जो हमारे सम्मानित देवों के लिए और हम जैसे मनुष्यों के लिए समान रूप से अविज्ञेय स्थिति में हैं, जो अनघ हैं, कृपा-दृष्टि वाले हैं, सहस्रनाम-धारी हैं और निर्मल शुद्ध परब्रह्म हैं; बाल-मयूर की-सी छटा वाली जानकी को चन्दन-तरुओं से भरे चित्रकूट पर्वत के दृश्य दिखाकर, उसके स्वरूप बताने लगे। ७४०

वाळुम्	वेलुम्विट्	टळाविन	वलैयकण्	मयिले
ताळि	नेलमुम्	तमालमुम्	जुडर्तरुम्	जारल्
नीळ	मालैय	तुयिलुवन	नीरुण्ड	कमञ्जूर्
काळ	मेहमु	नाहमुन्	दैरिहिल	काणाय् 741

वाळुम् वेलुम्--कटार और भाला; विट्टु अळाविन अलैय--खूब मिलाये गये हों, ऐसी; कण्--आँखों के साथ; मयिले--मयूर की छटा रखनेवाली; ताळिन् एलमुम्--तने पर फलनेवाले इलायची; तमालमुम्--तमाल; चुटर् तरुम्--उज्ज्वल; चारल्--पार्श्वों में; नीळम् मालैय--लम्बी पंक्तियों में; तुयिलुवन--सोनेवाले; नीर् उण्ट--जल पिए हुए; कम चूल्--भरे गर्भ वाले; काळ मेकमुम्--काले मेघ; नाकमुम्--और गज; तेरिकिल--अलग-अलग नहीं दिखते; काणाय्--देखो। ७४१

हे मिश्रित कटार और करवाल-सम आँखों वाली! मयूराभा

मानिनी ! उधर देखो, तनों में ही फलनेवाले इलायची के पौधे, तमाल-वृक्ष, शोभायमान पर्वत-पार्श्वतटों में पंक्तियों में सुप्त-से लगनेवाले जल-गर्भित मेघ और गज —ये सब ऐसे मिले हुए दिखते हैं कि अलग पहचानना कठिन है ! उनको देखो । ७४१

कुरुदि वाळॆन्तच् चॆव्वरि परन्दकट् कुयिले
मरुवि माल्वरै युम्बरिऱ् कुदिक्किन्ऱ वरुडै
शुरुदि पोऱ्ऱॆळि मरहदक् कॊळुञ्जुडर् शुऱ्ऱप्
परुदि वानवन् पशुम्बरि निहर्प्पन पाराय् 742

कुरुति वाळ् अॆन्न–रक्तरंजित करवाल जैसे; चॆव् अरि परन्त कण्–लाल डोरों से युक्त आँख वाली; कुयिले–कोकिला (-सी) स्वर वाली; माल् वरै–बड़े पर्वत की; उम्परिल् मरुवि–चोटी पर जाकर; कुतिक्किन्ऱ वरुटै–कूदनेवाले (पहाड़ी) बकरे; चुरुति पोल् तॆळि–वेदों के समान स्वच्छ; मरकतम् कॊळु चुटर् चुऱ्ऱ–मरकत की पुष्ट दीप्ति के लगने से; परुति वानवन्–सूर्यदेव के; पचु परि निकर्प्पन–हरे अश्वों के समान हैं; पाराय्–देखो । ७४२

रक्तरंजित तलवार-सी लाल डोरों से शोभित आँखों वाली ! कोकिलवयनी ! उधर देखो । पहाड़ी बकरे, जो ऊँचे पर्वत की चोटी पर कूदते हैं; वेद-सम शुद्ध मरकतों की ज्योति के उनके ऊपर पड़ने से सूर्य के रथ के हरे रंग के अश्वों के समान लगते हैं । ७४२

वडङ्गॊळ् पूण्मुलै मडमयि लेमऴै मदमा
अडङ्गु पेऴ्वयिऱ् ऱरवुरि यमैतॊऱुन् दॊडक्कित्
तडङ्ग डोरुनिन् ऱाडुव तण्डलै ययोत्ति
नुडङ्गु माळिहैत् तुहिऱ्कॊडि निहर्प्पन नोक्काय् 743

वटम् कॊळ् पूण् मुलै–लड़ियोंवाले आभरण-मण्डित उरोजों वाली; मट मयिले–बालमयूर की-सी छटा वाली सुन्दरी; मऴै मतम् मा अटङ्कु–वर्षा के समान मद बहानेवाले हाथी को समाये हुए; पेऴ् वयिऱु–बड़े पेट वाले; अरवु उरि–सर्पों की उतारी हुई केंचुलियाँ; अमै तॊऱुम् तॊटक्कि–बाँसों पर अटककर; तटङ्कळ् तोऱुम्–स्थान-स्थान पर; निन्ऱु आटुव–रहकर हिलती हैं जो; तण्टलै अयोत्ति–(वे) उद्यान-भरी अयोध्या के; माळिकै नुटङ्कु–सौधों पर हिलनेवाली; तुकिल् कॊटि निकर्प्पन–पट-पताकाओं के समान हैं; नोक्काय्–देखो । ७४३

हारों से शोभित उरोज वाली ! बाल-मयूर की-सी छटा वाली ! उधर बाँसों पर देखो । बड़े-बड़े अजगरों की, जिनके पेट के अन्दर वर्षा के समान मदजल-प्रवाही मत्तगज समा गये हैं; केंचुलियाँ अटके हुए हिल रही हैं । वे हमारी, उपवनों से भरी अयोध्या के सौधों पर फहरानेवाली पटपताकाएँ-सी लगती हैं । देखो । ७४३

उवरि वायन्‌ऱिप् पाऱ्कड लुदविय वमुदे
तुवरि नोण्मणित् तडन्दोऱु मिडन्दोऱुन् दुवन्‌ऱिक्
कवरि पानिऱ वाल्पुडै पॅयर्वन कडिदित्
पवळ माल्वरै यरुवियैप् पोरुवन पाराय् 744

उवरि वाय् अन्‌ऱि–लवणसमुद्र में उत्पन्न न होकर; पाल् कटल् उतविय अमुते–दुग्धसागर-दत्त अमृत; तुवरित् नीळ्–ललाई से भरे; मणि तटम् तोऱुम्–पद्मराग पत्थर से भरे पार्श्वतटों पर; इटम् तोऱुम्–अनेक स्थानों में; कवरि तुवन्‌ऱि–चँवरमृग जुटकर; पाल् निऱम्वाल् कटितिन् पुटै पॅयर्वन–दुग्धवर्ण पूँछों को जल्दी-जल्दी हिलाते हैं; पवळम् माल् वरै–(वे पूँछें) प्रवाल के बड़े पर्वत की; अरुवियै पोरुवन–सरिताओं के समान हैं; पाराय्–देखो। ७४४

लवणसमुद्र छोड़कर दुग्धसागर से उत्पन्न अमृत-सी देवी! पर्वत के पार्श्वों में पद्मराग के पत्थर भरे हैं। वहाँ चँवरमृग (सुरागायें?) एकत्रित होकर अपनी दुग्ध-सम श्वेतवर्ण पूँछें हिला रहे हैं। वे प्रवाल-पर्वत के झरनों के समान लगते हैं। देखो। ७४४

शलन्द लैक्कोण्ड शीयत्ताऱ् ऱनिमदक् कदमा
उलन्दु वीळ्दलिऱ् चिन्दिन वुदिरत्तिन् मडवार्
पुलन्द कालैयिऱ् ऱुक्कन कुङ्गुमप् पोदियिल्
कलन्द मुत्तॅन वेळ्मुत् तिमैप्पन काणाय् 745

मतम् कतम् तनि मा–मद और क्रोध-युक्त अकेला गज; चलम् तलै कोण्ट–क्रोध-मस्तक; चीयत्ताल्–सिंह द्वारा; उलन्तु वीळ्तलिन्–आहत हो मरकर गिर गया, तब; चिन्तिन उतिरत्तिल्–निकले रक्त में; मटवार् पुलन्त कालैयिल्–अल्पवयक स्त्रियाँ जब रूठती हैं; इऱ्ऱु उक्कन–तब कटकर गिरे; कुङ्कुमम् पोतियिल् कलन्त–कुंकुम के लेप में सने; मुत्तु अॅन–मोतियों के समान; वेळम् मुत्तु–उस गज (के दाँत) के मोतियों के समान; इमैप्पन–चमकते हैं; काणाय्–देखो। ७४५

एक उन्मत्त क्रोधी हाथी, जिसके सिर पर क्रोध चढ़ा था; उस सिंह से आहत होकर मरा पड़ा है। उससे निकले रक्त में उसके दाँत के मोती रक्त-रंजित होकर चमकते हैं। उनको देखो; वे मानिनी स्त्री के अपने पति के साथ रूठने के अवसर पर उसके मुक्ताहारों से कटकर गिरे मोती के समान हैं और वे उसके (हटाकर) फेंके गये कुंकुम के लेप के मध्य पड़े हुए चमकते हैं। ७४५

नोण्ड माल्वरै मदियुऱु नॅडुमुडि निवन्द
तूण्डु मामणिच् चुडर्शडैक् कऱ्ऱयिऱ् ऱोन्‌ऱ
माण्ड वानिऱ वरुवियम् मळ्विडैप् पाहन्
काण्ड हुञ्जडैक् कङ्गयै निहर्प्पन काणाय् 746

नीण्ट माल् वरै–अति विशाल इस पर्वत के; **मति उरुम् नॅटु मुटि**–चन्द्राश्रित उच्च शिखर पर; **निवन्त**–अधिक संख्या में मिलनेवाले; **मा मणि तूण्टु चुटर्**–बड़े-बड़े माणिक्यों से निकली आभा; **चटै करुरैयिल्**–जटाजूट के समान; **तोन्र्**–दिखाई देती है; **माण्ट वाल् निरम् अरुवि**–सम्मानित श्वेत रंग की सरिताएँ; **अ मळविटै पाकन्**–छोटी आयु के ऋषभ पर आरूढ़ श्री शिवजी की; **काण् तकुम् चटै**–दृष्ट्यपहारी जटा पर से गिरनेवाली; **कङ्कैयै निकर्प्पन**–गंगा की धाराओं के समान हैं; **काणाय्**–देखो। ७४६

इस बड़े और ऊँचे पर्वत के उच्च शिखर पर, जहाँ चन्द्र आकर विश्राम करता है श्रेष्ठ माणिक पत्थर पड़े हैं। उनसे लाल ज्योतियाँ निकलती हैं। वे शिवजी की जटाजूट के समान दिखती हैं। पर्वत पर श्रेष्ठ श्वेत वर्ण के (जल के) झरने झरते हैं। वे ऋषभ-वाहन शिवजी की दर्शनीय जटाजूट से निकलनेवाली गंगाजी की धाराओं के समान लगते हैं। देखो। ७४६

तॊट्ट वार्शुनैच् चुडरॊळि मणियॊडुन् दूवि
विट्ट शॆन्र्न विडामद मळैयॆळिल् वेळम्
वट्ट वेङ्गैयिन् मलरॊडुन् ददैन्दन वयङ्गुम्
पट्ट नॆर्रियिर् चुर्रिय पोल्वन पाराय् 747

चुनै—पर्वत-झरने में; **चुटर् ऒळि मणियॊटुम्**–अत्युज्वल रत्नों के साथ; **तॊट्ट वार्**–(सूँड़ में) भरे जल को; **तूवि विट्ट चॆन्रन**–अपने सिरों पर उछालते हुए जानेवाले; **विटा मत मळै**–अटूट मदप्रवाही; **ऎळिल् वेळम्**–मनोहर गज; **ततैन्तन**–जमे हुए; **वट्टम्**–गोल; **वेङ्कैयिन् मलरॊटुम् वयङ्कुम्**–'वेंगै' के फूलों के साथ शोभित हैं; **नॆर्रियिल् पट्टम् चुर्रिय**–माथे पर पट्ट लगे हैं; **पोल्वन**–ऐसा लगता है; **पाराय्**–देखो। ७४७

पहाड़ी झरनों से रत्न के साथ जल को अपनी सूँड़ से लेकर अपने मस्तक पर उछालते हुए निरन्तर मदस्रावी मत्तगज जाते हैं। उनके मस्तक पर गोल-गोल "वेंगै" तरु के स्वर्णवर्ण फूल गिरकर जमे हैं। उनको देखने पर वे गज मुखपट्ट से अलंकृत हुए जैसे लगते हैं। देखो। ७४७

इळैन्द नूलिणै मणिक्कुडञ् जुमक्किन्र दॆन्नक्
कुळैन्द नुण्णिडैक् कुवियिळ वनमुलैक् कॊम्बे
तळैन्द शन्दनच् चोलैदन् शॆलविनैत् तडुप्प
नुळैन्दु पोहिन्र मदियिरा लॊप्पदु नोक्काय् 748

इळैन्त नूल्–महीन सूत्र; **इणै मणि कुटम्**–जोड़े के सुन्दर कलश; **चुमक्किन्रतु**–ढोता है; **ॲन्न**–ऐसी; **कुळैन्त नुण् इटै**–लचीली सूक्ष्म कटि; **कुवि इळम् वनम् मुलै**–वर्तुल, तरुण और सुन्दर उरोज; **कॊम्पे**–(इनसे युक्त) पुष्पलता (-समाना); **तळैन्त चन्तनम् चोलै**–घने चन्दनों के उद्यानों के; **तन् चॆलविनै तटुप्प**–अपने जाने को

रोकने से; नुळैन्तु पोकिन्ऱ–घुसकर जानेवाला; मति–चन्द्र; इऱाल् ऑप्पतु–छत्ते के समान है; नोक्काय्–देखो। ७४८

सूत-सम लचीली कटि और उस पर भार-स्वरूप धृत कलशद्वय-सम पुष्ट वर्तुल और जवान उरोजों वाली! पुष्पलता-समाना देवी! घना चन्दनवन चन्द्र को आगे जाने से रोकता है। उसमें घुसकर चन्द्र तरुओं के मध्य से मार्ग निकालकर जो जा रहा है, वह शहद के छत्ते के समान लगता है। उस दृश्य को देखो। ७४८

उरुहु कादलिऩ् ऱळैहॉण्डु मळलैवण् डोच्चि
मुरुहु नाऱुशॅन् देऩिनै मुळैनिन्ऱु वाङ्गिप्
पॅरुहु शूलिळम् पिडिक्कॉरु पिऱैमरुप् पियानै
परुह वायिनिऱ् कैयिनिन् ऱळिप्पदु पाराय् 749

पिऱै मरुप्पु यानै–अपूर्ण चन्द्र के समान दाँत वाला एक हाथी; उरुकु कातलिऩ्–आर्द्र प्रेम के कारण; मळलै वण्टु–गुंजारनेवाले भ्रमरों को; तळै कॉण्टु ओच्चि–पत्ते सहित टहनी से उड़ा देकर; मुळै निन्ऱु–दरार से; मुरुकु नाऱु–सुगन्धयुक्त; चॅम् तेऩिनै–उत्तम शहद को; वाङ्कि–लेकर; पॅरुकु चूल्–पूर्णगर्भ; इळम् पिटिक्कु–छोटी आयु की हथिनी को; निन्ऱु–उसके सामने खड़े होकर; परुक–पीने के लिए; वायिनिल्–उसके मुख में; कैयिन् अळिप्पतु–अपनी सूँड़ से दे रहा है, वह पाराय्–देखो। ७४९

उधर अर्धचन्द्र-सम दाँतों वाले एक गज को देखो। उसकी हथिनी पूर्ण गाभिन है। वह हाथी टहनी से भ्रमरों को उड़ाकर दरार के अन्दर रहनेवाले छत्ते से बहनेवाले स्वादिष्ट और सुगन्धित शहद को अपनी सूँड़ में भर लेता है और हथिनी के सामने खड़े होकर उसके मुख में छोड़ रहा है। उस हाथी के प्यार-भरे उस कृत्य को देखो। ७४९

अळिक्कु नायहऩ् मायैपुक् कडङ्गिऩ नॅऩिनुम्
कळिप्पि लिन्दियत् तियोहियैक् करक्किल तदुपोल्
ऑळित्तु निन्ऱुळ रायिनु मुरुत्तॅरि हिऩ्ऱ
पळिक्क रैच्चिल परिमुह माक्कळैप् पाराय् 750

अळिक्कुम् नायकऩ्–(सृष्टि-) पालनकर्ता देव; मायै पुक्कु–माया में प्रविष्ट होकर; अटङ्किऩऩ् ऎऩिनुम्–अपने को छिपाये रहे तो भी; इन्तियत्तु कळिप्पु इल्–इन्द्रियाराम जो नहीं हैं, उन; योकियै–योगियों के लिए; करक्किलतु–अदृश्य (या अविज्ञेय) नहीं रहे; अतु पोल्–उसी प्रकार; पळिङ्कु अऱै–स्फटिक-शिलाओं के मध्य; ऑळित्तु निन्ऱुळर्–छिपे खड़े रहे; आयिनुम्–तो भी; उरु तॅरिकिन्ऱ–रूप दरसानेवाले; चिल परिमुकम् माक्कळै–कुछ अश्वमुखी किन्नरों को; पाराय्–देखो। ७५०

जगद्रक्षक परब्रह्म माया का स्वयं अवलम्बन करके जग में आते हैं और उनका परतत्व छिपा रहता है। तो भी जो योगी इन्द्रियाराम नहीं हैं, पर आत्माराम हैं; उनसे वे अदृश्य नहीं रहते। वैसे ही उधर देखो— स्फटिक पत्थरों के पीछे छिपे रहते हैं वे अश्वमुखी किन्नर ! पर वे हमारी आँखों से अदृश्य नहीं हैं। देखो ! । ७५०

आडु	हिऩ्ऱमा	मयिलिऩु	मऴहिय	कुयिले
कूडु	हिऩ्ऱिलर्	कॊडिच्चियर्	तम्मनङ्	गॊदिप्प
ऊडु	हिऩ्ऱऩर्	कॊऴुनरुक्	कुरुहिऩ	रुवक्कप्
पाडु	हिऩ्ऱऩ	किऩ्ऩर	मिदुनङ्गळ्	पाराय् 751

आटुकिऩ्ऱ–नर्तनशील; मा मयिलिऩुम् अऴकिय–श्रेष्ठ मोर से भी सुन्दर; कुयिले–कोयल (सुन्दरी); कॊटिच्चियर्–(कुछ) पर्वतदेशीय नारियाँ; तम् मऩम् कॊतिप्प–मन के ताप (क्रोध) से; कूटुकिऩ्ऱिलर्–अपने पतियों से नहीं मिलतीं; ऊटुकिऩ्ऱऩर्–मान किये रहती हैं; कॊऴुनरुक्कु–ऐसे पतियों के लिए; उरुकिऩर्–सहानुभूति में द्रवित होकर; उवक्क–उनको (पति-पत्नियों को मिलकर) मुदित रहने के हेतु; पाटुकिऩ्ऱऩ किऩ्ऩर मितुनङ्कळ्–गानेवाले किन्नर-मिथुनों को; पाराय्–देखो। ७५१

नाचते मयूरों से भी सुन्दर रूपवती ! कोकिल की-सी मधुर बोली वाली ! कॊटिच्चि (पार्वत्य) स्त्रियाँ अपने पतियों से गुस्सा करके तप्त-मन के साथ रूठ रही हैं। वे उनसे नहीं मिलती हैं। इसको देखकर किन्नर-मिथुन तरस खाते हैं और उनका मन शान्त करके, उनको मिला देने के विचार से अनुकूल गीत गाते हैं। उनको देखो ! । ७५१

विल्लि	वाङ्गिय	शिलैयॆऩ्ऩप्	पॊलिनुदल्	विळक्के
वल्लि	ताङ्गळै	ताक्कलिऩ्	वऴिन्दिऴि	पिरशम्
कॊल्लि	वाङ्गिय	कुऩ्ऱवर्	कॊडिनॆडुङ्	गवलै
कल्लि	वाङ्गिय	कुऴिहळै	निऱैप्पऩ	काणाय् 752

विल्लि वाङ्किय–कुशल धनुर्धर के झुकाये; चिलै ऎऩ्ऩ–धनु के समान; नुतल्–सुन्दर भाल वाली; विळक्के–कुल-दीप; वल्लितु आम्–बलिष्ठ; कऴै ताक्कलिऩ्–बाँस के आघात से; वऴिन्तु इऴि पिरचम्–नीचे बहनेवाला शहद; कॊल्लि वाङ्किय कुऩ्ऱवर्–साबर रखनेवाले पार्वत्य लोगों के; नॆटु कॊटि कवलै–लम्बी लताओं के 'कवलै' कन्दों को; कल्लि वाङ्किय कुऴिकळै–खोद लेने से बने गड्ढों को; निऱैप्पऩ काणाय्–भरता है, देखो। ७५२

बड़े ही प्रसिद्ध धनुर्धर के झुके हुए धनुष के समान मनोरम भाल वाली ! कुल-दीप-समान मंगलमयी ! उधर सुदृढ़ बाँसों के आघात से छत्तों से जो शहद गिरता है, वह उन गड्ढों को भरता है जिनको साबर लेकर

पार्वत्य लोगों ने 'कवलै' नामक कन्द को खोद निकाला था। वह दृश्य देखो। ७५२

ऑरुविल्	पॅण्मैयॅन्	ऱुरैक्किन्ऱ	वुडलिन्नुक्	कुयिरे
मरुवु	कादलि	निनिदुड	नाडिय	मन्दि
अरुवि	नीर्कॊडु	वीशत्ता	नप्पुरत्	तेरिक्
करुवि	मामळै	युदिर्प्पदोर्	कडुवनैक्	काणाय् 753

ऑरुवु इल्–अवियुक्त; पॅणमै ॲन्ऱु उरैक्किन्ऱ उटलितुक्कु–स्त्रीत्व रूपी शरीर के; उयिरे–प्राण-समाना; मरुवु कातलिन्–लगे प्रेम के साथ; इनितु–आनन्द के साथ; उटन् आटिय–वानर के साथ जो खेल रही थी; मन्ति–वह वानरी; अरुवि नीर् कॊटु–सरिता का जल लेकर; वीच–उछालती है; तान्–वह वानर; अप्पुरत्तु एऱि–उधर बहुत ऊँचा जाकर; करुवि मा मळै–वहाँ जमे रहे बड़े मेघों को; उतिर्प्पतु–निचोड़ता है; ओर् कटुवतै–उस एक वानर को देखो। ७५३

हे स्त्रीत्व की जान (उत्तम गुणों की स्त्री)! उधर वानर और वानरी खेलते हैं। वानरी सरिता से जल लेकर वानर पर उछालती है। इसके बदले में वानर ऊपर उस तरफ़ जाकर, वहाँ जमे पड़े बड़े मेघों के समूह को निचोड़कर वानरी पर जल गिराता है। उस वानर को देखो। ७५३

वीरु	पञ्जिन्ऱि	यमुदनॅय्	माट्टिय	विळक्के
शीरु	वॅङ्गदिर्	शॅरिन्दन	पेर्हल	तॅरिय
माऱिन्	मण्डिल	निरम्बिय	माणिक्क	मणिक्कऱ्
पाऱै	वेऱोरु	परिदियिऱ्	पॊलिवन	पाराय् 754

वीऱु पञ्चु इन्ऱि–अच्छी रुई की बत्ती के बिना ही; अमुतम् नॅय् माट्टिय–अमृत रूपी घृत-लगा; विळक्के–दीप; चीऱु–अन्धकार पर क्रोध करनेवाली; वॅम् कतिर् चॅरिन्तन–मनोहर चमक से युक्त; पेर्कल–अपने स्थानों से न हटनेवाली; तॅरिय–प्रकट रूप से; माऱु इल् मण्टिलम् निरम्पिय–सुडौल वर्तुलाकार; मणि माणिक्कम् कल् पाऱै–सुन्दर माणिक की चट्टानें; वेऱु ऑरु परितियिन्–अलग-अलग अन्य सूर्य के समान; पॊलिवन–शोभायमान हैं; पाराय्–देखो। ७५४

बिना रुई की बत्ती के, घृत के स्थान पर अमृत देकर जलनेवाले दीप-सी दीप्त देवी! माणिक पत्थरों की गोल-गोल चट्टानें देखो, जो अपने स्थान से नहीं हटतीं और वहीं रहकर अपनी मनोरम ज्योति से अँधेरे को दूर करती हैं। सुडौल मंडलाकार वे अलग-अलग अनूठे सूर्य के समान शोभती हैं, देखो। ७५४

शील	मिन्नदॅन्	ऱुरुन्ददिक्	करुळिय	तिरुवे
नील	वण्डिनम्	पडिन्दॅळ	वळैन्दुड	निमिर्व

कोल वेङ्गैयिन् कॉम्बर्हळ् पॉन्मलर् तूविक्
कालि निऱ्ऱॉऴु दॆऴुवन निहर्प्पन काणाय् 755

अरुन्ततिक्कुम्–अरुन्धती को भी; चीलम् इन्नतु ॲन्ऱु–शील क्या है, यह; अरुळिय–दरसानेवाली; तिरुवे–श्री लक्ष्मीदेवी; कोलम्–मनोहर; वेङ्कैयिन् कॉम्पर्कळ्–'वेङ्गै' तरु की छोटी टहनियाँ; नीलम् वण्टु इनम् पटिन्तु–नीले भ्रमरों की भीड़ के बैठने से; वळैन्तु–अवनत होकर; ॲऴ–(भ्रमरों के) उठने पर; उटन् निमिर्व–जो ऊपर उठती हैं; कालितिऩ्–(वे) तुम्हारे श्रीचरणों पर; पॉन् मलर् तूवि–स्वर्णसुमन से अर्चन करके; तॉऴुतु ॲऴुवन–नमस्कार कर उठती हों; निकर्प्पन–ऐसा लगती हैं; काणाय्–देखो। ७५५

अरुन्धती को शील का रूप दिखानेवाली सुशीला श्रीलक्ष्मी-सी देवी ! सुन्दर 'वेंगै' वृक्ष की मृदु टहनियाँ, भ्रमरकुल-भारावनत होती हैं; भ्रमरों के उठ, उड़ जाने पर वे फिर यथापूर्व तन जाती हैं। बीच में उनसे फूल गिरते हैं। यह सारा दृश्य ऐसा लगता है, मानो वे तुम्हारे श्रीचरणों में पुष्पार्चन करके नमस्कार करने के बाद ऊपर चली जाती हों। ७५५

विऱ्कॊळ् वाणुदल् विळङ्गिऴै यिळन्दळिर्क् कॊऴुन्दे
ॲऱ्कॊळ् माल्वरै युम्बर्निन् ऱिरुम्बुनङ् गाक्कुम्
कॊऱ्कॊळ् वेऱ्कणार् कुरीइनत् तॆऱिकुरु विन्दक्
कऱ्कळ् वानिडै मीनॆन विऴुवन काणाय् 756

विल् कॊळ् वाळ् नुतल्–धनु-सम उज्ज्वल ललाट वाली; विळङ्कु इऴै–शोभायमान आभरण वाली; इळम् तळिर् कॊऴुन्ते–मृदु 'मरुआ'-पल्लव-समाना; ॲल् कॊळ्–धूप-सहित; माल् वरै उम्पर–वड़े पर्वत की चोटी पर (मचानों पर); निन्ऱु–रहकर; इरु पुतम् काक्कुम्–विशाल कोदों के बागों की रखवाली जो करती हैं, वे; कॊल् कॊळ् वेल् कण्णार्–संहारक भाला-सी आँख वाली 'कुऱ' स्त्रियाँ; कुरीइ इनत्तु ॲरि–चिड़ियों के समूहों पर जो फेंक रही हैं; कुरुविन्तम् कर्कळ्–माणिक के पत्थर; वानिटै मीन् ॲन–आकाश से गिरनेवाले नक्षत्रों के समान; विऴुवन काणाय्–गिरते हैं, देखो। ७५६

धनु-सम और उज्ज्वल ललाट वाली ! शोभायमान आभरण-भूषिते ! मरुआ के मृदु पल्लव के समान मनोरम कामिनी ! उधर धूप से आवृत पर्वत के उच्च भागों में मचानों पर रहकर, संहारक भाला-सी आँखों वाली 'कुऱ' स्त्रियाँ कोदों के बागों की रखवाली कर रही हैं। चिड़ियाँ आती हैं, उनको भगाने हेतु वे स्त्रियाँ माणिक के पत्थरों को उठाकर फेंकती हैं। वे पत्थर आकाश के नक्षत्रों के समान गिरते हैं। उनको देखो। ७५६

नाऩ नाण्मलर् नऱैयहि ऩाविते नाऱुम्
शोऩै वार्हुऴर् चुमैपॊऱा दिऱुमिडैत् तोहाय्
वाऩ याऱुमीऩ् मलर्न्दन वॆंऩप्पुऩल् वऱन्द
काऩ याऱुहळ् कणमणि यिमैप्पऩ काणाय् 757

नाऩम्–विलाव-कस्तूरी; नाळ् मलर्–ताज़े फूल; नऱै अकिल्–सुवासित अगरु; नावि–कस्तूरी; तेऩ् नाऱुम्–फूलों से शहद इनकी गन्ध से युक्त; चोऩै वार् कुऴल्–अटूट धारा में बरसनेवाले मेघ के समान सुन्दर केश का; चुमै पॊऱातु–भार न उठा सकने से; इऱुम्–टूटती; इडै–कमर वाली; तोकाय्–कलापी-सी सुन्दरी; वाऩम् याऱु–आकाश की नदी में; मीऩ् मलर्न्तऩ अॅंऩ–नक्षत्र खिले हों जैसे; पुऩल् वऱन्त काऩम् याऱुकळ्–जलशुष्क जंगली नदियों में; कणम् मणि–समूहों में रत्न; इमैप्पऩ–चमकते हैं; काणाय्–देखो। ७५७

अटूट धारा में लगातार वर्षा करनेवाले काले मेघों के समान सुन्दर और भारी केश-जाल को, जिसमें विलाव-कस्तूरी, नवीन सुमन, सुवासित अगरु-धूम, कस्तूरी और शहद की गन्ध मिली हुई है, उठा न सकने के कारण टूटती-सी रहनेवाली कमर से शोभित और कलापी-सी कामिनी! जल-शुष्क जंगली नदियों के तल में आकाश रूपी सरिता में चमकनेवाले तारों के समान मणि-राशियाँ चमकती हैं। देखो। ७५७

वरिहॊ णोऩ्शिलै वयवर्दङ् गणिच्चियिऩ् मऱित्त
परिय कारहिल् शुडनिमिर् पशुम्बुहैप् पडलम्
अरिय वेदिय राहुदिप् पुहैयॊडु मळविक्
करिय माल्वरैक् कॊऴुन्दॆंऩप् पडर्वऩ काणाय् 758

वरि कॊळ् नोऩ् चिलै–बन्धनयुक्त सुदृढ़ धनु रखनेवाले; वयवर्–व्याध लोग; तम् कणिच्चियिऩ् मऱित्त–अपने फरसे से क़टे हुए; परिय कार् अकिल्–मोटी, काली अगरु की लकड़ियों को; चुट–ज़लाते हैं, तब; निमिर् पचुम् पुकै पटलम्–उठनेवाला घना धूममण्डल; अरिय वेतियर्–सम्मान्य ब्राह्मणों के; आकुति पुकैयॊटुम्–होम-धुएँ के साथ; अळवि–मिश्रित होकर; करिय माल् वरै कॊऴुन्तु अॅंऩ–काले, बहुत बड़े (हिमालय) पर्वत के शिखर के समान; पटर्वऩ–फैलता है; काणाय्–देखो। ७५८

उधर हिमालय के काले शिखरों के समान धूम-राशियाँ उठकर फैलती हैं, देखो। बन्धनयुक्त सशक्त चाप-धर निषाद लोग अपने फरसे से अगरु को काली लकड़ी के खण्डों में काटते हैं और उन्हें जलाते हैं। तब जो धुएँ की घनी राशियाँ उठती हैं, उनके साथ ब्राह्मणों के होमकुण्ड से उठने वाली धुएँ की राशियाँ मिल जाती हैं। वे सब मिलकर ऊपर फैलती हैं। ७५८

मञ्ज ळाविय माणिक्कप् पाऱैयिऩ् मऱैव
शॆंञ्जॆं वेनॆंडु मरहदप् पाऱैयिऱ् ऱॆंरिव

विऴ्जै नाडियर् कॉऴुनरॊ डूडिय विमलप्
पञ्ज ळाविय शीऱडिच् चुवडुहळ् पाराय् 759

कॉऴुनरोटु ऊटिय–पतियों से रूठी हुई; विऴ्चै नाटियर्–विद्याधर स्त्रियों के; विमलम्–निर्मल; पञ्चु अळाविय–महावर-लगे; चिऱ अटि–छोटे पैरों के; चुवटुकळ्–चिह्न; मञ्चु अळाविय–सुन्दरता-युक्त; माणिक्कम् पाऱैयिल्–माणिक की चट्टानों पर; मऱैव–छिपकर; नॆटु मरकतम् पाऱैयिल–बड़ी मरकत की चट्टानों पर; चॆञ्चॆवे–खूब लाल-लाल; तॆरिव–दिखाई देते हैं; पाराय्–देखो। ७५८

विद्याधर-स्त्रियाँ अपने प्रेमी पतियों से रूठकर चली जा रही हैं। उनके निर्मल, लाक्षारस-रंजित लघु पैरों के चिह्न सौन्दर्ययुक्त पद्मराग की चट्टानों पर छिपे रह जाते हैं। पर मरकत की चट्टानों के ऊपर साफ़ लाल-लाल दिखाई देते हैं। उनको देखो। ७५९

शुऴित्त तण्पुनऱ् चुऴिपुरै युन्दियन् दोहाय्
कॉऴित्त मामणि यरुवियो डिऴिवन कोलम्
अऴित्तु मेविय वरम्बय रऱल्पुरै कून्दल्
कऴित्तु नीक्किय कऱ्पह नऱुमलर् काणाय् 760

तण् पुनल्–शीतल जल के; चुऴित्त–गोल-गोल; चुऴि पुरै–भँवर के समान; उन्ति–सुन्दर नाभियुक्त; अम् तोकाय्–सुन्दर कलापी सी छटा वाली सुभगे; मा मणि कॉऴित्त अरुवियॊटु–श्रेष्ठ रत्न वहा लेती आनेवाली इस सरिता में; मेविय अरम्पैयर्–स्नान करने की इच्छुक देवांगनाओं के; कोलम् अऴित्तु–अपना अलंकार हटाकर; अऱल् पुरै कून्तल् कऴित्तु–काले वालू-समान केश से निकालकर; नीक्किय–फेंके हुए; नऱु कऱ्पक मलर्–सुवासित कल्पपुष्प; इऴिवन काणाय्–(जल से मिलकर) नीचे की ओर जा रहे हैं, देखो। ७६०

जल-मध्य उठनेवाले मनोहर चक्राकार भँवर के समान मनमोहक नाभि वाली ! ये सरिताएँ रत्न वहा लेती हुई बह रही हैं। उनमें स्नान करने की इच्छा से जो देवांगनाएँ आती हैं, वे स्नान करने के पहले अपना साज-शृंगार उतार देती हैं। तव वे अपने काले वालू-सम केशों से कल्प-पुष्पों को उतारकर फेंक देती हैं। इन सरिताओं के जल के साथ वे पुष्प भी नीचे आते हैं, देखो। ७६०

अऱैह ऴऱ्चिलैक् कुऩ्ऱव रहऩ्बुऩङ् गावऱ्
पऱैयॆ डुत्तॆरु कडुवऩिऩ् ऱडिप्पदु पाराय्
पिऱैयै यॆट्टिऩळ् पिडित्तिदऱ् किदुपिळै यॆऩ्ऩाक्
कऱैदु डॆक्कुरुम् पेदैयोर् कॊडिच्चियैक् काणाय् 761

अऱै कऴल्–वजनेवाली पायल; चिलै–और चाप रखनेवाले; कुऩ्ऱवर्–(पार्वत्य) 'कुऱ' लोग; अकऩ् पुऩम्–विशाल कोदों के बागों की; कावल् पऱै–रक्षा हेतु

रहनेवाले (विशेष तरह के) ढोल को; ओर् कट्टुवन् ॲट्टुत्तु–एक वानर लेकर; निन्ऱु–खड़ा होकर; अटिप्पतु–पीट रहा है; पाराय्–देखो; पिऱैयै ॲट्टित्तळ्–अर्धचन्द्र को हाथ बढ़ाकर; पिटित्तु–पकड़कर; इतऱ्‌कु–इसका; इतु पिळै–यह कलंक है; ॲन्ऱा–कहकर; कऱै तुटैक्कुऱुम्–कलंक पोंछने का यत्न करनेवाली; पेतै–अबोध; ओर् कॊटिच्चियै–एक 'कॊटिच्चि' (पर्वत प्रदेश की स्त्री) को; काणाय्–देखो। ७६१

उस वानर को देखो, जो उस विशेष ढोल को पीट रहा है जिसको क्वणनशील पायलधारी और चापधर "कुऱ" पुरुष कोदों के बागों के रक्षणार्थ बजाने के लिए रखते हैं। उस नादान 'कुऱ' स्त्री को देखो, जो अर्धचन्द्र को हाथ बढ़ाकर पकड़ लेती और उसको कलंक-हीन बनाने का विचार कर कलंक को पोंछने का प्रयास कर रही है। ७६१

अडुत्त पल्पह लन्बरिऱ् पिरिन्दव रॅन्ब
दॅडुत्तु नन्दमक् कियम्बुव वॆन्क्करिन् दिरुण्ड
तॊडुत्त मादविच् चूळ्लिऱ् चूरर महळिर्
पडुत्तु वैहिय पल्लव शयनङ्गळ् पाराय् 762

तॊट्टुत्त मातवि चूळ्लिल्–उलझकर फैली माधवी लता के कुंज में; चूर् अर मकळिर्–देवकन्याएँ (कुछ); पट्टुत्तु वैकिय–जिन पर लेटी रहीं; पल्लव चयनङ्कळ्–वे पल्लव-शय्याएँ; अट्टुत्त पल् पकल्–लगातार अनेक दिन; अन्परिन् पिरिन्तवर्–(वे स्त्रियाँ) प्रिय पतियों से वियुक्त रहीं; ॲन्पतु–यह बात; नम् तमक्कु ॲट्टुत्तु इयम्पुव ॲन–हमें मानो बता रही हों; करिन्तु इरुण्ट–काले बनकर झुलसे हुए हैं; पाराय्–देखो। ७६२

घने माधवीकुंज में रहनेवाली पुष्प-शय्याएँ देखो, जिन पर देवांगनाएँ लेटी थीं। उन शय्याओं के झुलसे काले पल्लवों से यह बात प्रकट होती है कि वे लगातार अनेक दिनों से पति-वियुक्ता रही हैं। ७६२

नितैन्द पोदिनु ममुदॊक्कु नेरिळै निऱैतेन्
वतैन्द वेङ्गैयिऱ् कोङ्गिनिल् वयिन्ऱॊरुन् दॊडुत्तुक्
कुनिन्द वूशलिऱ् कॊडिच्चिय रॆडुत्तविन् कुऱिञ्जिक्
कनिन्द पाडल्हेट् टशुणमा वळर्वत काणाय् 763

नितैन्त पोतितुम्–मन में सोचते समय में भी; अमुतु ऒक्कुम्–अमृत-मधुर लगनेवाली; नेर् इळै–कलापूर्ण आभरण-भूषित अंगने; निऱै तेन् वतैन्त–अधिक शहद जिनमें पाया जाता है; वेङ्कैयिल्–उन 'वेङ्गै' के वृक्षों पर; कोङ्किनिल्–और 'कोङ्गु' वृक्षों पर; वयिन् तॊऱुम्–स्थान-स्थान पर; तॊट्टुत्तु–बँधकर; कुनिन्त–नीचे लटकनेवाले; ऊचलिल्–झूलों पर; कॊटिच्चियर्–'कॊटिच्चि' स्त्रियाँ; ॲट्टुत्त–जो अलापती हैं; इन् कुऱिञ्चि–उस मधुर 'कुऱिञ्चि' राग के; कतिन्त पाटल् केट्टु–रस-भरा संगीत सुनकर; अचुणम् मा–'अचुण' नाम के प्राणी; वळर्वत काणाय्–सोते हैं, देखो। ७६३

स्मरणमधुर और कलापूर्ण आभरण-भूषिता अंगने ! "वेंगै" और 'कोंगु' के वृक्षों की डालियों पर, जिन पर शहद के छत्ते कसरत से पाये जाते हैं; झूले बाँधकर 'कोंटिच्चि' (पार्वत्य) स्त्रियाँ झूला झूलती और 'कुरिञ्चि' राग के गीत गा रही हैं। उनको सुनकर "अचुणम्" नाम के प्राणी सो रहे हैं। उनको देखो। (अचुणम् का ज़िक्र बालकाण्ड में भी आया है। वह (कल्पित ?) जानवर या पक्षी है, जो मधुर संगीत सुनकर सोता है और कटु संगीत सुनने पर मर जाता है।)। ७६३

इलवु	मिन्दिर	गोपमुम्	पुरैयिद	ळितियाय्
अलवु	नुण्डुळि	यरुविनी	ररम्बैय	राडक्
कलवै	शान्दुशॅङ्	गुङ्गुमङ्	गर्पहङ्	गॉडुत्त
पलवुन्	दोय्दलिऱ्	परिमळङ्	गमळ्वन	पाराय् 764

इलवुम्–सेमर के फूल और; इन्तिर कोपमुम्–इन्द्रगोप की; पुरै–रंग में समानता करनेवाले; इतळ्–अधरों की; इतियाय्–मधुर देवी; अरम्पैयर् आट–अप्सराओं के स्नान करने से; कलवै–चन्दन का लेप; चान्तु–और केश का लेप; चॅङ्कुङ्कुमम्–लाल कुंकुम का लेप; कऱ्पकम् कॉटुत्त पलवुम्–कल्पतरु के दिये हुए अनेक पदार्थ; तोय्तलिऩ्–जल में मिलते हैं, इसलिए; अलवुम् नुण् तुळि अरुवि नीर्–छिटकनेवाली छोटी बूँदों वाली नदी का जल; परिमळम् कमळ्वन–सुगन्धि देता है; पाराय्–देखो। ७६४

सेमर के फूल और इन्द्रगोप के समान वर्ण वाले अधरों से शोभनेवाली और प्यारी जानकी ! देखो उन सरिताओं को, जिनसे सीकर छूटकर छितरते हैं और जिनमें, उनमें स्नान करनेवाली अप्सराओं के शरीर और केश के चन्दन-लेप, कस्तूरी का लेप, लाल कुंकुम का लेप और कल्पतरु के दिये फूल आदि के धुलने से उनकी गन्ध मिली रहती है। ७६४

शॅम्बॉन्ताऱ्	चॅय्दु	कुलिहमिट्	टॅळुदिय	शॅप्पोर्
कॉम्बु	ताङ्गिय	दॅन्नप्पॉलि	वनमुलैक्	कॉडिये
अम्बॉन्	मालवरै	यलर्कदि	रुच्चिशॅन्	ऱणैयप्
पैम्बॊन्	मामुडि	मिलैच्चिय	दॉप्पदु	पाराय् 765

चॅम् पॊन्ताल् चॅय्तु–लाल (श्रेष्ठ) स्वर्ण से निर्मित कर; कुलिकम् इट्टु ॲळुतिय–इंगुलिक की चित्रकारी से युक्त; चॅप्पु–(दो) इंगुरौटियों को; ओर् कॉम्पु–एक पुष्प-टहनी; ताङ्कियतु अॅन–उठा रही हो, ऐसा; पॊलि–शोभनेवाले; वनम् मुलै–सुन्दर स्तनों वाली; कॉटिये–लता-समाना; अलर् कतिर्–विस्तृत (सूर्य-) किरणें; उच्चि चॅन्ऱु अणैय–शिखरों पर पड़ती हैं, तब; अम् पॊन् माल् वरै–सुन्दर स्वर्णवर्ण यह बड़ा पर्वत; पचुमै पॊन् मा मुटि–चोखे स्वर्ण का बना बड़ा किरीट; मिलैच्चियतु ऑप्पतु–पहने हुए है, ऐसा लगता है; पाराय्–देखो। ७६५

स्वर्णनिर्मित इंगुलिक-चित्रकारी-युक्त सिंदोरों के जोड़े को एक

पुष्पलता उठा रही हो, ऐसा मान्य रीति से दो मनोरम पयोधरों से शोभने वाली लतासमाना, सीते ! सूर्य की किरणें उन शिखरों पर लगती हैं; इसलिए वह बड़ा स्वर्णवर्ण पर्वत श्रेष्ठस्वर्ण-निर्मित श्रेष्ठ किरीटों से अलंकृत दिखता है, देखो। ७६५

मडन्दै मार्क्कोरु तिलदमे मणिनिऱत् तिणिहल्
तॊडर्न्द पाऱैयिन् वेयिनञ् जॊरिहदिर् मुत्तम्
इडन्दॊ रुङ्गिडन् दिमैप्पन वॆरिहदिर्च् चॆक्कर्
पडर्न्द वानिडैत् तारहै निहर्प्पन पाराय् 766

मटन्तै मार्क्कु ऒरु तिलतमे–स्त्रियों के कुल का तिलक; मणि निऱम्–माणिक्य-वर्ण; तिणि कल्–सुदृढ़ पत्थर की; तॊटर्न्त पाऱैयिन्–लम्बी चट्टान पर; वेय् इनम् चॊरि–बाँसों के समूहों के गिराये; कतिर् मुत्तम्–उज्ज्वल मोती; इटम् तॊऱुम्–स्थान-स्थान पर; किटन्तु–पड़े रहकर; इमैप्पन–चमकते हैं; ऎरि कतिर्–जलानेवाले सूर्य के कारण; चॆक्कर् पटर्न्त वानिटै–लालिमा-फैले आकाश में; तारकै निकर्प्पन–(वे मोती) नक्षत्रों के समान लगते हैं; पाराय्–देखो। ७६६

स्त्रियों में तिलक ! उस माणिक्य रंग के पत्थर की चट्टान को देखो। उस लम्बी चट्टान पर यत्र-तत्र बाँसों के मोती गिरे पड़े हैं और चमक रहे हैं। वे सूर्य-युक्त लाल संध्या-गगन और उस पर दिखनेवाले नक्षत्रों के समान लगते हैं, देखो। ७६६

कुऴुवु नुण्डॊळै वेयिनुङ् गुऱिनरम् बॆऱिवुऱ्
ऱॆऴुवु तण्डमिऴ् याऴिनु मितियशॊऱ् किळिये
मुऴुव दुम्मलर् विरिन्दनाण् मुरुक्किडै मिडैन्द
पऴुवम् वॆङ्गनल् कदुविय दॊप्पदु पाराय् 767

कुऴुवु नुण् तॊळै–समूह में रंध्रों से युक्त; वेयिनुम्–बाँसुरी (के स्वर) से भी; कुऱि नरम्पु ऎऱिवुऱु–(अलग-अलग स्वर) देनेवाली तंत्रियों को झंकृत कर; ऎऴुवु–उठाया जानेवाला संगीत जिससे पाया जाता है; तण् तमिऴ् याऴिनुम्–उस मधुर शीतल वीणा से भी; इनिय चॊल्–अधिक मधुर बोलनेवाली; किळिये–शुक-समाना; मुऴुवतुम्–(सारे) पेड़ भर में; नाळ् मलर् विरिन्त–नव-विकसित पुष्पों से युक्त; मुरुक्कु–कँटीले पलाश; इटै मिटैन्त–जिसमें घने रूप से पाये जाते हैं, यह; पऴुवम्–वन; वॆम् कनल्–जलती आग से; कतुवियतु ऒप्पतु–जल रहा हो, ऐसा लगता है; पाराय्–देखो। ७६७

अनेक रंध्रयुक्त बाँसुरी के नाद से और स्वरतंत्रियों से युक्त वीणा की ध्वनि से भी मधुर वचन बोलनेवाली शुक-समान बाले ! देखो इस वन में, अपने में सब ओर पुष्पित फूल लिये 'कँटीले पलाश' के पेड़ (जिनके फूल ज्वाला-सम अत्यधिक लाल हैं और जिनके तने, डालियाँ, टहनियाँ सब छोटे काँटों से युक्त हैं) भरे हैं। इसलिए यह वन भयंकर आग से जलता हो, ऐसा लगता है, देखो। ७६७

वळैहळ्	कान्दळिर्	पॅय्दन	वनैयकै	मयिले
तॊळैहॊ	डाळ्तडक्	कैनॅडुन्	दुरुत्तियिर्	रूक्कि
अळविन्	मूप्पिन	ररुन्दवर्क्	करुविनीर्	कॊणर्न्दु
कळब	माल्हरि	कुण्डिहैच्	चॊरिवन	काणाय् 768

कान्तळिल्–'कांदळ' पुष्पों पर; वळैकळ् पॅय्तन–कंकण धरे हों; अनैय कै–जैसे हाथों वाली और; मयिले–मयूर-सी सुन्दरी; कळपम् माल् करि–कलभ-सहित बड़े गज; अळवु इल् मूप्पिनर्–अत्यधिक वृद्ध; अरु तवर्क्कु–महा तपस्वियों को; अरुवि नीर्–सरिता का जल; तोळै कॊळ्–नली से युक्त; ताळ् तट कै–लम्बी, बड़ी सूँड़ रूपी; नॅट्टुरुत्तियिल्–(मशक) बड़ी चमड़ी की थैली में; तूक्कि कॊणर्न्तु–भर लाकर; कुण्टिकै चॊरिवन–उनके कमण्डलों में उड़ेलते हैं; काणाय्–देखो। ७६८

आभरणधारी 'कांदल' पुष्प के समान (आभूषणधारी) हाथों वाली और मयूर-सी आभा वाली ! वे हाथी वयोवृद्ध महान तपस्वियों के लिए अपनी बड़ी सूँड़ों (के मशकों) में, झरनों से पानी भर लाकर उनके कमण्डलों में उड़ेलते हैं। उनको देखो। ७६८

वडुविन्	मावहि	रिवैयॅनप्	पॊलिन्दकण्	मयिले
इडुहु	कण्णिन	रिडरुरु	मूप्पिन	रेह
नॅडुहु	कून्ल्वा	नीट्टिन	वुरुहुरु	नॅञ्जक्
कडुवन्	मादवर्क्	करुनॅरि	काट्टुव	काणाय् 769

इवै–ये; मा वटुविन्–आम के टिकोरे की; वकिर् ऎन–फाँकें हैं, ऐसा; पॊलिन्त–मान्य; कण्–आँखों वाली; मयिले–मयूर-छटा; इटर् उरु मूप्पिनर्–दुखदायी वार्धक्य वाले; इटुकु कण्णिनर्–मन्द (संकरी) दृष्टि वाले; मा तवर्क्कु–महा तपस्वियों को; उरुकु उरु–द्रवणशील; नॅञ्चम् कटुवन्–चित्त वाले वानर; नॅटुकु कून्ल् वाल्–लम्बी झुकी पूँछ; नीट्टिन–बढ़ाकर (पकड़वाकर); एक अरु नॅरि–अगम्य मार्ग; काट्टुव–बता रहे हैं (ले जा रहे हैं); काणाय्–देखो। ७६९

आम के टिकोर की फाँकों के समान आँखों वाली ! वार्धक्य-पीड़ित (संकरी) मन्द दृष्टि वाले महान तपस्वियों को, उनसे सहानुभूति में पिघल कर वानर अपनी पूँछ उनसे पकड़वाकर मार्ग जाने में सहायता कर रहे हैं, देखो। ७६९

अलम्बु	वार्हुळ	लाय्मयिर्	पॅण्णरुङ्	गलमे
नलम्बॅय्	वेदियर्	मार्बिनुक्	कियॅवुरु	नाडिच्
चिलम्बि	पञ्जिनिर्	चिक्करत्	तॅरिन्दनू	रेमाप्
पलम्बॅय्	मन्दिह	ळुडन्वन्दु	कॊडुप्पन	पाराय् 770

अलम्पु वार् कुळल्–हिलने और लम्बा लटकनेवाले केश की; आय् मयिल्–सुन्दर मोर-सी; पॅण् अरु कलमे–स्त्रियों के श्रेष्ठ आभूषण-समान देवी; तेम् मा पलम्–मधुर आम्रफल; पॅय्–(ऋषियों को) देनेवाली; मन्तिकळ्–वानरियाँ; नलम् पॅय्

वेतियर्–(सर्व-) हितकारी ऋषि; मार्पित्तुक्कु–वक्ष पर पहनने के लिए; इयैवु उऱ नाटि–योग्य समझकर; पञ्चितिन्–रुई के सूत्र-सम; चिक्कु अऱ तॅरिन्त–बिना गाँठ के साफ़; चिलम्पि नूल् उटन्–मकड़ी के जाल के तागों के साथ; वन्तु–आकर; कॉटुप्पन–देते हैं; पाराय्–देखो। ७७०

लम्बे और हिलते केश वाली और बहुत मनोहर मयूर की-सी सुन्दरता से युक्त सुन्दरी ! लोकहितकारी तपोधनों को वानरियाँ मीठे-मीठे आम्रफल ला रही हैं। साथ-साथ मकड़ी के जाले को ला रही हैं, देखो। उनका विचार है कि यह रुई के सूत्र के यज्ञोपवीत के समान वक्ष पर पहनने के काम आएगा ! । ७७०

तॅरिवै मार्क्कॉरु कट्टळै यॅन्तच्चॅय्द तिरुवे
पॅरिय माक्कनि पलाक्कनि पिऱङ्गिय वाळै
अरिय माक्कनि कडुवन्ग ळन्बुकॉण् डळिप्पक्
करिय माकिळङ् गहळ्न्दन कॉणर्वन काणाय् 771

तॅरिवै मार्क्कु–नारियों के लिए; ऑरु कट्टळै–एक आदर्श; अॅन्न–सम; चॅय्त–सृजित (अवतरित); तिरुवे–श्रीमती; कटुवन्कळ्–वानर; अन्पु कॉण्टु–(तपस्वियों से) प्रेम करके; पॅरिय मा कनि—बड़े-बड़े आम के फल; पला कनि–(और) कटहल के फल; पिऱङ्किय–मधुर लगनेवाले; वाळै अरिय मा कनि–केले के श्रेष्ठ अच्छे फल, इनको; अळिप्प–ला देते हैं, तब; करिय मा–सुअर भी; किळङ्कु अकळ्न्तन–कन्द खोदकर; कॉणर्वन–लाते हैं; काणाय्–देखो। ७७१

स्त्रियों के आदर्शरूप अवतरित श्रीमती ! वानर प्रेम के साथ ऋषियों को, बड़े-बड़े आम के फल, कटहल के फल, मधुर लगनेवाले केले के श्रेष्ठ फल —इनको लाकर दे रहे हैं तो सुअर कन्द खोदकर लाते हैं और उन्हें देते हैं। देखो। ७७१

ऐव नक्कुर लेतलिन् कदिरिरुङ् गवरै
मॅय्व णक्कुरु वेयिन मीन्ऱमॅल् लरिशि
पॉय्व णक्किय मादवर् पुरैदॉरुम् पुहुन्दुत्
कैव णत्तवाय्क् किळ्ळै तन्दळिप्पन काणाय् 772

उन् कै वण्णत्त–तुम्हारे हाथ के से (लाल) रंग वाले; वाय् किळ्ळै–(चोंच और) मुख के शुक; ऐवनम् कुरल्–पहाड़ी धान की बालों को और; एतल् इन् कतिर्–कोदों की मधुर बालों को; इऱुङ्कु–ज्वार; अवरै–सेम को; मॅय् वणक्कु उऱु–झुके तनों वाले; वेय् इनम् ईन्ऱ–बाँसों के पैदा हुए; मॅल् अरिचि–मृदु चावल को; तन्तु–लाकर; पॉय् वणक्किय–माया तार चुके; मातवर् पुरै तॉऱुम् पुकुन्तु–महा तपस्वियों की कुटी-कुटी में घुसकर; अळिप्पन–देते हैं; काणाय्–देखो। ७७२

सीते ! तुम्हारे हाथ के समान लाल रंग की चोंचों वाले शुक पहाड़ी

धान की बालें, कोदों की बालें, ज्वार, सेम, लचीले बाँस के मृदु चावल, आदि लेकर माया-जयी ऋषियों के आश्रम-आश्रम में जाकर उन्हें देते हैं, देखो। ७७२

इडिकॊळ् वेळत्तै यॆडुत्तुड नॆयिऱ्ऱॊडु विळङ्गुम्
कडिय माशुणङ् गऱ्ऱरिन् दवरॆन वडङ्गिच्
चडैहॊळ् शॆन्नियर् ताळ्विलर् तामिदित् तेऱप्
पडिह ळामॆनत् ताळ्वरैक् किडप्पन पाराय् 773

इटि कॊळ्–चिघाड़नेवाले; वेळत्तै ऍटुत्तु–हाथी को उठाकर; ऍयिऱ्ऱॊटुम् उटन् विळुङ्कुम्–दाँतों के साथ खा लेनेवाले; कटिय माचुणम्–क्रूर अजगर; कऱ्ऱु अरिन्तवर् ऍन–विद्वान लोगों के समान; अटङ्कि–शान्त होकर; चटै कॊळ् चॆन्नियर्–जटाधारी सिर वाले; ताळ्वु इलर्–निर्दोष; ताम्–(मुनियों के) आप; मितित्तु एऱ–पैर रखकर चढ़ने के लिए; पटिकळ् आम् ऍन–सीढ़ियों के समान; ताळ्वरै–पर्वत के निचले प्रदेशों में; किटप्पन–पड़े रहते हैं; पाराय्–देखो। ७७३

उन अजगरों को देखो, जो चिंघाड़नेवाले बड़े गजों को उनके दाँतों के साथ निगल सकते हैं। वे भयंकर अजगर विद्वानों के समान शान्त होकर पर्वत के निचले भागों में ऐसे पड़े रहते हैं जैसे जटाधारी निर्दोष मुनियों के ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ हों। ७७३

पान्द डेरिवै पळिपडप् परन्दपे रलहुल्
एन्दु नून्मणि मार्बिन राहुदिक् कियैयक्
कून्दन् मॆन्मयिल् कुऱुहिन नॆडुञ्जिरै कोलिक्
कान्दु कुण्डत्ति लडङ्गॊरि यॆळुप्पुव काणाय् 774

पान्तळ् तेर् इवै–सर्प-फन और रथ-पीठ, इनको; पळि पट–निंद्य बनाकर; परन्त पेर् अलकुल्–विशाल बड़े नितंबों वाली; कून्तल् मॆल् मयिल्–कलाप वाले मृदु मोर; कुऱुकिन–आकर; नूल् एन्तुम् मणि मार्पिनर्–यज्ञोपवीतधारी सुन्दर वक्ष वाले; आकुतिक्कु इयैय–(ऋषियों के) आहुति देने योग्य; कान्तु कुण्टत्तिल्–अग्निकुण्ड में; अटङ्कु ऍरि–सीमित अग्नि को; नॆटु चिऱै कोलि–बड़े पंखों को खोलकर; ऍळुप्पुव काणाय्–प्रज्वलित कर रहे हैं, देखो। ७७४

ऐसे विशाल नितम्बों वाली, जिनके सामने सर्प का फन और रथ का पीठ निंदित हो जाते हैं! कलापी मोर आश्रम में घुसकर उपवीत-सह वक्ष वाले ऋषियों के होमकुण्ड की अग्नि को अपने विशाल पंखों द्वारा हवा करके प्रज्वलित करते हैं। वह देखो। ७७४

अशुम्बु पाय्वरै यरुन्दव मुडित्तवर् तुणॆक्कट्
टशुम्बु वेय्न्दव रीत्तवर् तमक्कुविण् डरुवान्

विशुम्बु तूर्प्पत्त वामॅत्त वॅयिलॅत्त विळङ्गुम्
पशुम्बॉत् मानङ्गळ् वरुवत्त पोवत्त पाराय् 775

अचुम्पु पाय् वरॆ–सोते जिस पर विस्तृत रूप से बहते हैं, इस पर्वत पर; अरु तवम् मुटित्तवर्–कठिन कृत तप; तुणॆ कण्–अक्षिद्वय के रूप में; तचुम्पु वेय्न्तवर्–दो (बाष्प रूपी-) जलपूर्ण कलश रखनेवाले; ऑत्तवर्–जैसे; तमक्कु–(ऋषि) लोगों को; विण् तरुवात्–स्वर्गवास देने के लिए; वॅयिल् ॲत्त विळङ्कुम्–धूप के समान शोभायमान; पचुम् पॉत् मातङ्कळ्–उत्तम स्वर्ण-यान; विचुम्पु तूर्प्पत्त आम् ॲत–आकाश को आच्छादित करते से; वरुवत्त पोवत्त—आते-जाते हैं; पाराय्–देखो। ७७५

देखो उस पर्वत पर सूर्य के समान स्वर्णमय देवयान आते-जाते रहते हैं। उन पर देव आते हैं। उन ऋषियों को स्वर्ग ले जाने आये हैं, जिनकी तपस्या पूरी हो गई है और जिनकी आँखें आनन्द-बाष्प से भरकर जलकलश के समान रहती हैं; उन असंख्यक यानों के कारण आकाश ही छिप गया-सा लगता है, देखो। ७७५

इत्तॆय यावॅयु मेन्दिळॆक् कियम्बित्त् काट्टि
अत्तॆय माल्वरॆ यरुन्दव रॅदिर्वर वणङ्गि
वित्तॆयि नीङ्गिय वेदियर् विरुन्दित्त् नातात्
मत्तॆयित् मॅय्यॅनु मादवम् पुरिन्दवत् मैन्दत् 776

मत्तॆयिल्–गृहस्थी में ही रहकर; मॅय् ॲतुम् मा तवम्–सत्यपालन का बड़ा तप; पुरिन्तवन्–जिन्होंने किया; मैन्तत्–उनके पुत्र; इत्तॆय यावॅयुम्–इस प्रकार सबको; एन्तु इळॆक्कु–श्रेष्ठ आभरण-धारिणी को; इयम्पित्त् काट्टि–विवरण देकर दिखाते हुए; अत्तॆय माल् वरॆ–उस बड़े पर्वतवासी; अरु तवर्–कठोर (तपस्या में रत) तपस्वियों के; ॲतिर् वर–सामने आने पर; वणङ्कि–उनको नमस्कार करके; वित्तॆयित् नीङ्किय–कर्मबन्धन-मुक्त; वेतियर्–वेदज्ञ ऋषियों के; विरुन्तित्तत्–अतिथि; आतात्–बने। ७७६

गृहस्थी में रहकर सत्यपालन की बड़ी तपस्या जिन्होंने की थी, उन दशरथ के श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम ने उत्तम आभूषणधारिणी सीतादेवी को उपरोक्त सभी को विवरण के साथ दिखाया। फिर उस गौरवपूर्ण बड़े पर्वत के वासी श्रेष्ठ तपस्वी लोग उनके स्वागतार्थ आये। श्रीराम ने उनको नमस्कार किया। कर्मबन्धन-मुक्त उन वेदज्ञ तपस्वियों ने उन श्रीराम को अपने अतिथि बना लिया। श्रीराम उनके अतिथि बने। ७७६

❀ माविय लुदयमान् दुळव वात्तवत्, मेविय पहैयिरु ळवुणर् वीन्दुहक्
कावियल् कुडवरॆक् काल नेमिमेल्, एविय तिहिरियि त्तिरवि येहित्तात् 777

मा इयल्–अत्यधिक गौरवयुक्त (जानवर, सिंह के रूप में); उतयम् आम्–उदयाचल रूपी (प्रकट हुए); तुळवम् वात्तवत्–तुलसीमालाधारी देव (श्रीविष्णु)

के; पकै मेविय–शत्रुता रखनेवाले; इरुळ् अवुणर्–अन्धकार रूपी राक्षसों को; वीन्त उक–मार-मिटाने के लिए; का इयल्–उनकी रक्षा करनेवाले; कुट वरै–पश्चिमी (आस्त) गिरि रूपी; काल नेमि मेल् एविय–कालनेमी (राक्षस) पर प्रेषित; तिकिरियिन्–चक्रायुध के समान; इरवि–सूर्य; एकितान्–उस गिरि पर गये। ७७७

सूर्य अस्ताचल पर गये। वह तुलसीमाला-धारी श्रीविष्णुदेव के चक्र के समान गये, जिसको उन्होंने कालनेमि नाम के राक्षस का नाश करने के लिए उस गिरि पर चलाया था, जहाँ वह रक्षा पाता था। यहाँ अन्धकार कालनेमि है और गिरि अस्तगिरि है। (इसमें सूर्य और श्रीविष्णु में श्लेष है। 'मा इयल् उतयम् आम्' के वाक्य खण्ड का अर्थ— सिंह के रूप में प्रकट होनेवाले होगा।)। ७७७

❀ शक्करन् दानव नुडलिऱ् ऱाक्कुऱ, ऑक्किय कुरुदियिऱ् परन्द दॅङ्गणुम्
शॅक्करत् तीयवन् वायिऱ् ऱीर्न्दुवे, ऱुक्कवान् ऱनियॅयि ऱॊत्त दिन्दुवे 778

चक्करम्–चक्र के; तानवन् उटलिल् ताक्कुऱ–दानव के शरीर पर प्रहार करने पर; ऑक्किय–वेग से निकले; कुरुतियिन्–रक्त के समान; चॅक्कर् ऑङ्कणुम् परन्ततु–लालिमा आकाश भर में फैली; इन्तु–चन्द्र; अ तीयवन्–उस खल के; वायिल् तीर्न्तु–मुख से छूटकर; वेऱु उक्क–अलग पड़े हुए; वान् तनि ऍयिऱु ऑत्ततु–प्रकाशमान एकाकी दाँत के समान लगा। ७७८

चक्र के उस दानव के शरीर पर लगते ही जैसे लाल रक्त वेग से फूट निकला और फैला वैसे ही आकाश भर में सायंकाल की लाली फैल गई। चन्द्र जो उदित हुआ, वह उस खल दानव के मुख से छूटा एक दाँत-सा लगा। ७७८

आनन महळिरुक् कळित्त तामरैप्, पूननि मुहिऴ्त्तन पुलरि पोन पिन्
मीनॅन विळङ्गिय वॅळ्ळि याम्बल्वी, वानॅनु मणित्तड मलर्न्द वॅङ्गुमे 779

पुलरि पोन पिन्–सूर्य के (छिप) जाने के बाद; तामरै पू–कमलपुष्प; मकळिरुक्कु आननम् अळित्त–स्त्रियों के पास अपनी शोभा छोड़कर; नति मुकिऴ्त्तन–खूब बन्द हुए; मीन् ऍन विळङ्किय–नक्षत्र-सम रहे; वॅळ्ळि आम्पल् वी–श्वेत कुमुदपुष्प; वान् ऍनुम् मणि तटम् ऍङ्कुम्–आकाश-सम सुन्दर तालाबों में; मलर्न्त–खूब विकसित रहे। ७७९

सूर्य छिप गये। कमल अपनी शोभा को स्त्रियों के आननों के पास छोड़कर भलीभाँति उन्मीलित हो गये। आकाश के नक्षत्रों के समान श्वेत कुमुदपुष्प, आकाश के समान तालाबों पर खूब खिल गये। ७७९

❀ मन्दियुङ् गडुवनु मरङ्ग णोक्किन
तन्दियुम् बिडिहळुन् दडङ्ग णोक्किन

निन्दैयिल् शहुन्दङ्ग णीड नोक्कित्त
अन्दियै नोक्किना नऱिवै नोक्कितान् 780

मन्तियुम् कदुवन्तुम्–वानरियों और वानरों ने; मरङ्कळ नोक्कित्त–(अपने सोने के) वृक्ष ढूंढ़े; तन्तियुम् पिटिकळुम्–हाथी और हथिनियाँ; तटङ्कळ् नोक्कित्त–अपने स्थलों की ओर गये; निन्तै इल् चकुन्तङ्कळ्–अनिन्द्य शकुन्त; नीटम् नोक्कित्त–अपने नीड़ों की ओर गये; अऱिवै नोक्कितान्–ज्ञान को देखनेवाले श्रीराम ने; अन्तियै नोक्कितान्–संध्या-कर्म पर ध्यान दिया। ७८०

शाम हो गई। वानर और वानरियाँ पेड़ों की ओर गये (निद्रा के लिए)। मादा और नर गज निद्रायोग्य स्थलों की खोज में गये। अनिन्द्य शकुंतगण अपने नीड़ों की ओर गये। मनुष्यों के ब्रह्मज्ञान को महत्व देनेवाले श्रीराम संध्या-कर्म करने गये। (इस पद में 'नोक्कुदल्' क्रिया के शब्दसंगति के कारण देखना, जाना, खोजना, करना, ध्यान देना, महत्व देना आदि अर्थ हो जाते हैं।)। ७८०

❀ मोंय्हिळर् नरुमलर् मुहिळ्त्त वाऴ्जिल
मैयरु नरुमलर् मलरन्द वाऴ्जिल
ऐयनो डिळवर्कु ममुदन् नाळुक्कुम्
कैहळुङ् गणगळुङ् कमलम् पोन्रवे 781

मोंय् किळर्–घने रूप से लसित; नरु मलर् चिल–सुगन्धपूर्ण कुछ पुष्प; मुकिळ्त्त–उन्मीलित हुए; चिल मै अरु नरु मलर्–कुछ निर्मल सुबासपूर्ण पुष्प; मलर्न्त–विकसित हुए; ऐयतोटु–प्रभु के साथ; इळवर्कुम्–छोटे भाई के; अमुतु अन्नाळुक्कुम्–और अमृततुल्य सीताजी के; कैकळुम् कण्कळुम्–हाथ और नेत्र; कमलम् पोन्र–(ध्यान में) कमल-सम (बन्द) हुए। ७८१

लसे हुए दल वाले कुछ सुबासित पुष्प उन्मीलित हुए। निर्मल कुछ सुगन्धित फूल खिल उठे। प्रभु श्रीराम, उनके अनुज लक्ष्मण और सुधा-सी सीताजी के हाथ और नेत्र (ध्यान की मुद्रा में) वन्द हुए। ७८१

❀ मालैवन् दहन्रपिन् मरुङ्गि लाळोंडुम्
वेलैवन् दुरैविड मेय दामॅनक्
कोलैवन् दुमिळ्शिलैत् तम्बि कोलिय
शालैवन् दॅय्दिनान् रवत्ति नॅय्दिनान् 782

मालै वन्तु–शाम आई और; अकन्रपिन्–उसके बीतने के बाद; तवत्तिन् ऍय्तितान्–(लोकों की) तपस्या के कारण प्रकट जो हुए थे, वे; मरुङ्कु इलाळोंटुम्–कमर-हीना (क्षीणकटि) सीताजी के साथ; वेलै वन्तु–क्षीरसागर आकर; उऱैवु इटम् मेयतु ऍन–वासस्थान बना, ऐसा; कोलै–शरों को; वन्तु उमिळ् चिलै–पवन-सम प्रेषित करनेवाले धनु के धारक; तम्पि–लघुभ्राता से; कोलिय–निर्मित; चालै वन्तु ऍय्तितान्–पर्णशाला में आये। ७८२

शाम का पहला याम बीत गया। तब श्रीराम, जो देवों की तपस्या के फलस्वरूप इस भूमि पर अवतार लेकर पधारे थे; अपनी क्षीणकटि, प्रिया सीताजी के साथ क्षीरसागर-मान्य उस पर्णशाला में आये, जिसको पवनवेग से शर छोड़ सकनेवाले लक्ष्मण ने निर्मित कर रखा था। ७८२

❀ नॅडुङ्गऴैक् कुरुन्दुणि निरुवि मेनिरैत्
तॉडुङ्गलि नॅडुमुह डॉऴुक्कि यूऴुऱ
इडुङ्गलिल् कैविरित् तेऱ्ऱि यॅङ्गणुम्
मुडङ्गलिल् वरिच्चुमेल् विरिच्चु मूट्टिये 783

नॅटु कऴै–लम्बे बाँस के; कुरु तुणि–टुकड़े करके; निरुवि–(उन लट्ठों को) भूमि में खम्भों के रूप में गाड़ा; मेल्–उन पर; निरैत्तु–(लम्बे बाँसों को ओरी के रूप में) रखा; ऊऴ् उऱ–क्रम से; ऑटुङ्कल् इल्–निम्न नहीं, ऊँचा; नॅटु मुकटु ऑऴुक्कि–लम्बा शिखर का बल्ला रखकर; ऍङ्कणुम्–सब ओर; इटुङ्कल् इल्–स्थूल; कै विरित्तु–शहतीर फैलाकर; एऱ्ऱि–उनको ओरी और शिखर के बल्ले के साथ बाँधकर; मेल्–उन पर; मुडङ्कल् इल्–वक्रताहीन; वरिच्चु विरिच्चु–फट्ठे आड़े रखकर; मूट्टि–सबको खूब बाँधकर। ७८३

(पर्णशाला कैसे बनी थी, इसका विवरण दिया जाता है।) लक्ष्मण ने लम्बे बाँसों को काटकर छोटे लट्ठे बनाये। उनको खम्भे के रूप में (चौकोर) गाड़ा। उनके ऊपर ओरी के धरन रखे। फिर शिखर का बल्ला (मरुआ) भी रखा। ओरी के धरन और शिखर के बल्ले के बीच स्थूल शहतीर रखकर उनको खूब बाँधा। उन पर आड़े फट्ठे बिछाकर उन्हें भी स्थिर रूप से बाँधा। ७८३

❀ तेक्कडैप् पडलयिऱ् चॅऱिवु शॅय्दुपिऩ्
पूक्किऴर् नाणलिऩ् पुल्लु वेय्न्दुकीऴ्त्
तूक्किय वेय्हऴिऱ् शुवरुञ् जुऱ्ऱुऱप्
पोक्किमण् णॅऱिन्दवै पुऩलिऱ् ऱीऱ्ऱिये 784

तेक्कु अटै पटलैयिऩ्–सागौन के पत्तों के छाजन से; चॅऱिवु चॅय्तु–छप्पर को पक्का बनाकर; पिऩ्–बाद; पू किऴर्–पुष्पसहित; नाणलिऩ् पुल्लु वेय्न्तु–(नरकट की ?) 'नाणल' की घास छाकर; कीऴ्–नीचे; चुऱ्ऱु उऱ–चारों ओर; तूक्किय वेय्कऴिऩ्–गड़े बाँस के लट्ठों की; चुवरुम् पोक्कि–दीवार बनाकर; मण् ऍऱिन्तु–उस पर मिट्टी भरकर; अवै–उसको; पुऩलिऩ् तीऱ्ऱि–जल छिड़ककर सम बनाकर। ७८४

ऐसे बने ठाट के ऊपर सागौन के पत्तों का छाजन छाया। उसके ऊपर (नरकट ?) "नाणल" की घासों को बिछाया। नीचे खम्भों को ढँकते हुए और उनके बीच मिट्टी भरकर दीवार बनाई। उस मिट्टी की दीवार पर जल छिड़ककर उसे सम और चिकना बनाया। ७८४

❀ वेरि̤डम् वीरर्̤कु मिदिलै नाडिक्कुम्
कूरि̤य नेॅरि̤मुरै̤ कुयिर्̤रि̤क् कङ्गुमच्
चेरु̤कोॅण् डळ्हुर्̤त् तिरुत्तित् तिण्शुवर्
आरि̤डु मणियोॅडु तरळ मप्पिये 785

वीरर्̤कुम्–प्रतापी श्रीराम के लिए और; मितिलै नाटिक्कुम्–मिथिला देश की सीताजी के लिए; वेरु̤ इटम्–अलग-अलग कमरे; कूरि̤य नेॅरि̤–(वास्तु-शास्त्र में) उक्त रीति से; मुरै̤ कुयिर्̤रि̤–उचित रीति से बनाकर; कुङ्कुमम् चेरु̤ कोॅण्टु–कुंकुम के चेप से; अळ्कु उर्̤ तिरुत्ति–(फर्श को) सुन्दर बनाकर; तिण् चुवर्–दृढ़ दीवारों पर; आरु̤ इटुम् मणियोॅटु–नदी से प्राप्त रत्नों के साथ; तरळम्–मोतियों को; अप्पि–जड़ित कर। ७८५

कुटीर के अन्दर वीर श्रीराघव के लिए और मिथिलेशनन्दिनी सीताजी के लिए अलग-अलग कमरों का वास्तुशास्त्रोक्त रीति से प्रबन्ध किया। कमरों की फ़र्श पर लाल कुंकुम का चेप लीपकर पक्की बनायी गई। पार्श्व की दृढ़ दीवारों पर नदी द्वारा लाये गये रत्न और मोती चुन लाकर उनको जड़ित किया। ७८५

मयिलुडैप् पीलियिऩ् विदाऩ मेल्वहुत्
तयिलुडैच् चुरिहैया लरुहु तूक्करुत्
तेॅयिलुडैक् कळैहळा लियर्̤रि̤ याङ्गुनर्
चेॅयलुडैप् पुदुमलर् पोॅर्̤पच् चिऩ्दिये 786

मयिल् उटै पीलियिऩ्–मोर के पंखों से; वितातम् मेल्वकुत्तु–वितान बनाकर; अयिल् उटै–धारदार; चुरिकैयाल्–छुरी से; अरुकु–छोरों के; तूक्कु अरुत्तु–लटकनेवाले पत्ते आदि को काटकर; ऍयिल् उटैय कळिकळाल् इयर्̤रि̤–प्राचीर के समान चहारदीवारी बाँसों के सहारे बनाकर; याङ्कुम्–सब जगह; नल् चेॅयल् उटैय–बहुत आकर्षकता-युक्त; पुतु मलर्–नवपुष्पों को; पोॅर्̤प चिऩ्ति–मनोरम रीति से डालकर। ७८६

कमरों में, ऊपर मयूरपंखों के वितान ताने गये। फिर अपनी धारदार छुरी से, लक्ष्मण ने छोरों से लटकनेवाले पत्ते आदि काटकर सुरम्य बनाया। फिर लक्ष्मण ने कुटीर के चारों ओर बाँसों को गाड़कर चहार-दीवारी खड़ी की। पश्चात् सब स्थानों पर आकर्षक रीति से फूलों को डालकर अलंकृत किया। ७८६

❀ इऩ्ऩण मिळैयव ऩिळैत्त शालैयिल्
पोॅऩ्ऩिर्̤त् तिरुवोॅडुङ् गुडिपुक् काऩ्रो
नऩ्ऩॅडुन् दिशैमुह ऩहत्तु नम्मऩोर्
उऩ्ऩरु मुयिरुळु मोॅक्क वैहुवाऩ् 787

इन्नणम्–इस तरह; इळैयवन् इळैत्त चालैयिल्–छोटे भाई के द्वारा निर्मित पर्णशाला में; नल् नॅट्टु तिचैमुकन् अकत्तुम्–श्रेष्ठ और आदरपात्र दिशामुख (ब्रह्मा) के अन्दर भी; नम् अन्नोर्–हमारे जैसों के लिए; उन्न अरुम्–अचिंत्य; उयिर् उळ्ळुम्–जीवों के अन्दर भी; ऑक्क वैकुवान्–समान रूप से रहनेवाले; पॊन् निऱम्–स्वर्णवर्ण; तिरुवॊटुम्–श्रीदेवी के साथ; कुटि पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। ७८७

इस प्रकार छोटे भाई ने जो पर्णशाला रची उसमें श्रीराम, जो ब्रह्माजी के मन में और वैसे ही हमारे लिए अचिन्त्य छोटे-छोटे जीवों के अन्दर भी एक समान वास करनेवाले हैं, स्वर्णवर्णा श्री देवी सीताजी के साथ प्रविष्ट हुए। ७८७

माय नीङ्गिय शिन्दनै मामऱै, तूय पाऱ्कडल् वैहुन्दञ् जॊल्ललाम्
आय शालै यरुम्पॆऱ लन्बिनान्, नेय नॆञ्जिन् विरुम्बि निरम्बिनान् 788

मायम् नीङ्किय चिन्तनै–मायाविमुक्त-मन; मा मऱै–अति श्रेष्ठ वेद; तूय पाल् कटल्–पवित्र क्षीरसागर; वैकुन्तमुम्–और वैकुण्ठलोक; चॊल्लल् आम्–कहलाने-योग्य; आय चालै–उस पर्णशाला में; पॆऱल् अरु अन्पिनान्–दूसरों में (अप्राप्य) प्रेम वाले श्रीराम; नेयम् नॆञ्चिन्–मैत्री-भरे मन के साथ; विरुम्पि–बहुत चाहकर; निरम्पिनान्–सन्तुष्ट रहे। ७८८

वह पर्णशाला मायाविमुक्त (ज्ञानियों का) पवित्र मन, बड़े आदरणीय वेद, पवित्र क्षीरसागर या श्रीवैकुण्ठ (जो सब परब्रह्म के वासस्थल हैं) कहे जाने योग्य थी। अन्यों में अप्राप्य प्रेमपूरित मन वाले श्रीराम मैत्री से भरे चित्त के साथ, प्रीतियुक्त होकर उसमें मुदित रहने लगे। ७८८

❀ मेवु कान मिदिलैयर् कोन्महळ्, पूविन् मॆल्लिय पादमुम् बोन्दन
तावि लॆम्बिहै शालै शमैत्तन, यावै यादुमि लार्क्कियै यादवे 789

मेवु कानम्–जहाँ आ गये थे, उस जंगल में; मितिलैयर् कोन् मकळ्–मिथिलाधिपति की पुत्री के; पूविन् मॆल्लिय पातमुम्–पुष्प-सम मृदुल चरण; पोन्तन–चलकर आये; ता इल् ॲम्पि कै–निर्मल मेरे छोटे भाई के हाथों ने; चालै चमैत्तन–पर्णशाला बनाई; यातुम् इलार्क्कु–जिनके पास कुछ नहीं है; इयैयात यावै–उन्हें क्या प्राप्त नहीं होता। ७८९

हम इस वन में कारणवश आये। मिथिलेशनन्दिनी के पुष्प से भी अधिक कोमल चरण भी चलकर आ गये। अनिन्द्य मेरे भाई के हाथों ने यह पर्णशाला निर्मित की। लगता है कि साधनाहीन मनुष्य को सभी वस्तुएँ प्राप्त हो जाती हैं (क्योंकि सभी उसकी सहायता करते हैं)। ७८९

❀ ॲन्ऱु शिन्दित् तिळैयवऱ् पार्त्तिरु, कुन्ऱु पोलक् कुलविय तोळिनाय्
ॲन्ऱु कऱ्ऱनै नीयिदु पोलॆन्नात्, तुन्ऱु तामरैक् कण्बनि शोर्हिन्ऱान् 790

ऍऩ्ऱु चिन्तित्तु–ऐसा सोचकर; इळैयवऩ् पार्त्तु–छोटे भाई को देखकर; इरु कुऩ्ऱु पोल् कुवविय तोळित्ताय्–दो गिरियों के समान बढ़े हुए कन्धों वाले; नी–तुमने; इतु पोल् ऍऩ्ऱु कऱ्ऱऩै–ऐसा कब सीखा; ऍऩ्ऩा–कहकर; तामरै कण्–कमल-सी आँखों से; तुऩ्ऱु पति चोर्किऩ्ऱाऩ्–भरा अश्रुजल बहाते हुए । ७६०

श्रीराम ने ऐसा सोचा। फिर अपने लघुभ्राता से बोले— दो पर्वत-सम उन्नत कंधों वाले ! तुमने ऐसा काम करना कब सीखा ? यह कहते-कहते उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लग गई। ७९०

❀ अडरुम् जॅल्व मळित्तव ऩाणैयिऱ्, पडरु नल्लऱम् पालित् तिरवियिऱ्
चुडरु मॅय्प्पुहऴ् शूडिऩ ऩॅऩ्बदॅऩ्, इडरु नक्किळैत् तेनिङ्ङ ऩाऩॅऩ्ऱाऩ् 791

अटरुम् चॅल्वम्–विपुल सम्पत्ति को; अळित्तवऩ्–(भरत के पास) देनेवाले (दशरथ) की; आणैयिऩ् पटरुम्–आज्ञा मानकर चलने का; नल् अऱम् पालित्तु–श्रेष्ठ धर्म पालन कर; इरवियिऩ् चुटरुम्–रवि के समान शोभायमान; मॅय् पुकऴ् चूटिऩऩ्–सच्चे यश को धारण किया (श्रीराम ने); ऍऩ्पतु–यह प्रशंसा का वचन; ऍऩ्–क्या; इङ्ङऩ्–इस प्रकार; नाऩ् उऩक्कु इटर् इळैत्तेऩ्–मैंने तुम्हें कष्ट दिया; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । ७६१

. वे आगे बोले— 'राम ने अपने पिता के, जिन्होंने उसके हक की विपुल संपत्ति उठाकर भरत को दे दी, वाक्यपालन का धर्मरक्षण करके सूर्योज्वल यश पाया !' —मेरे सम्बन्ध में लोगों की इस प्रशस्ति का क्या महत्व रहा ? उसी के कारण तो मैंने तुम लोगों को इतना कष्ट दिया ? । ७९१

अऩ्द वाय्मॊऴि यॆय ऩियम्बलुम्, नॊन्द शिन्दै यिळैय ऩोक्किऩाल्
ऍऩ्दै काण्डि यिडरिऩुक् कङ्गुरम्, मुऩ्दि वन्दु मुळैत्तदऩ् ऱॊॆऩ्ऱाऩ् 792

ऐयऩ्–प्रभु (के); अऩ्त वाय् मॊऴि इयम्पलुम्–वह वचन कहते ही; इळैयवऩ्–अनुज ने; नॊन्त चिन्तैयऩ्–खिन्नमन होकर; नोक्किऩाल्–देखा जाय तो; इटरिऩुक्कु अङ्कुरम्–कष्ट का अंकुर; मुऩ्ति वन्तु मुळैत्ततु अऩ्ऱो–पहले ही फूट गया था न; ऍऩ्तै–पितृतुल्य; काण्टि–उसको देखिए; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । ७६२

जब प्रभु ने यह वचन कहा तब लक्ष्मण बहुत दुखोद्विग्न हुए। मेरे तात ! देखा जाय तो इसका अंकुर उस (आपके वनगमन के) पूर्वकृत्य में ही है न ? आप सोचिए। —यह लक्ष्मण ने कहा। उनका मतलब है यह सेवा और परिश्रम दुखदाई नहीं है। पर आपका वनवास ही मेरे लिए अपार दुख का हेतु है। ७९२

आह शॆय्दक्क दिल्लै यऱत्तिऩिऩ्, ऱेह लॆऩ्ब दरिदॆऩ्ऱु मॆण्णिऩाऩ्
ओहै कॊण्डव ऩुळ्ळिडर् नोक्किऩाऩ्, शोह पन्दऩ् दुडैप्परि दालॆऩा 793

आक–जब लक्ष्मण यह कहते बने; ओकै कॊण्टवऩ्–(कैंकर्य में) उत्साही लक्ष्मण का; उळ् इटर् नोक्किऩाऩ्–मन का दुख जानकर; ऍण्णिऩाऩ्–उसके सम्बन्ध में

सोचकर; चोकम् पन्तम्–इसका शोक-सम्बन्ध; तुटैप्पु अरितु–दूर करना कठिन है; अऱत्तिन् निन्ऱु–धर्म से (छोड़कर); ।एकल् ऍन्पतु–(इसके लिए) जाना; ऍन्ऱुम् अरितु–सदा असाध्य है; चॅय् तक्कतु इल्लै–(अब) करने योग्य कुछ नहीं है; ऍन्ना–ऐसा सोचकर। ७९३

प्रभु ने देखा और जाना कि लक्ष्मण को भ्रातृसेवा में आनन्द मिलता है, पर मेरा वनवास दुख दे रहा है। उस हालत में क्या किया जा सकता है ? श्रीराम ने सोचा कि इस हालत में लक्ष्मण का शोकसम्बन्ध छूट नहीं सकता। क्योंकि पितृवाक्यपालन के धर्म से मेरा हटना तो असम्भव है। इसलिए इसका कोई निवारण-कार्य नहीं है। ७९३

पिन्नुन् दम्बियै नोक्किप् पॅरियवन्, मन्नुज् जॅल्वत्तिऱ् कुण्डु वरम्बिदऱ्
कॅन्न केडुण्डिव् वॅल्लैयि लिन्बत्तै, उन्नु मेल्वरु मूदियत् तोडॅना 794

पॅरियवन्–श्रीराम; पिन्नुम्–फिर से; तम्पियै नोक्कि–अनुज को देखकर; मन्नुम् चॅल्वत्तुक्कु–(किसी के पास) जुड़नेवाली सम्पत्ति का; वरम्पु उण्टु–अन्त है; इतऱ्कु–इस (तपस्या) में; ऍन्न केटु उण्टु–कौन सी हानि है; ऍल्लै इल् इव् इन्पत्तै–असीम इसके आनन्द को; मेल् वरुम् ऊतियत्तोटु–आगे (जन्मांतर में) मिलनेवाले पुण्य के साथ रखकर; उन्नु–सोचो; ऍन्ना–ऐसा। ७९४

बड़े ने अपने भाई से फिर कहा कि लक्ष्मण ! किसी से भी प्राप्य भौतिक संपत्ति का अन्त हो सकता है ! पर इस तपस्या के धन की कौन हानि हो सकती है ? कोई हानि सम्भव नहीं। इसका सुख जन्मान्तर में भी मिलनेवाले पुण्य-सौभाग्य के साथ रखकर सोचो ! ७९४

तेऱ्ऱित् तम्बियैत् तेवरुङ् गैदॊऴ, नोऱ्ऱि रुन्दन नोन्शिलै योनप्पाल्
आऱ्ऱन् मादव नाणैयिऱ् पोनवर्, कूऱ्ऱि नुऱ्ऱदु कूऱलुऱ् ऱामरो 795

तम्पियै तेऱ्ऱि–अनुज को आश्वस्त करके; नोन् चिलैयोन्–बलवान धनुर्धर; तेवरुम् कै तॊऴ–देवों की वन्दना के पात्र होकर; नोऱ्ऱु इरुन्तनन्–व्रतपालन करते रहे; अप्पाल्–बाद; आऱ्ऱल्–सशक्त; मातवन् आणैयाल्–महान तपस्वी (वसिष्ठजी) की आज्ञा से; पोनवर् कूऱ्ऱिन्–जो गये, उन (दूतों) की ओर; उऱ्ऱतु–जो हुआ; कूऱल् उऱ्ऱाम्–वह बताएँगे। ७९५

ऐसा कहकर श्रीराम ने लक्ष्मण को धैर्य दिलाया। बलवान धनुर्धर श्रीराम अपने व्रती जीवन पर दृढ़ रहे। देवों ने भी उनकी दृढ़ता देखकर सम्मान में अंजलि की। यह यहाँ की बात हुई। अब उन दूतों की तरफ़ में, जो सशक्त और महान तपस्वी वसिष्ठजी की आज्ञा से भरत के पास केकय राज्य में गये थे, जो घटा वह कहें। ७९५

10. पळ्ळि पडैप् पडलम् (चितार्पण पटल)

❀ पॉरुवि ळ्रूदुवर् पोयिऩर् पॉय्यिलार्, इरवु नऩ्बह लुड्गडि देहिऩार्
बरदऩ् कोयिलुट् ऱार्पडि कारिरॅम्, वरवु शॉल्लुमिऩ् मऩ्ऩवऱ् कॅऩ्ऱार् 796

पॉरुविल् तूतुवर्–अनुपम दूत; पोयिऩर–जो गये; पॉय् इलार्–असत्य व्यवहार न करनेवाले; इरवुम् नन् पकलुम्–रात और दिन; कटितु एकिऩार्–सवेग जाकर; परतऩ् कोयिल् उऱ्ऱार्–भरत के महल पहुँचे; पटिकारिर्–द्वारपालक; मऩ्ऩवर्कु–राजा के पास; अॅम् वरवु चॉलुलुमिऩ्–हमारे आगमन का समाचार दें; ॲऩ्ऱार्–कहा। ७९६

वसिष्ठ का संदेश लेकर जो गये वे दूत अनुपम कार्यचतुर थे। ईमानदार थे। रात और दिन चलकर वे भरत के महल के द्वार पर पहुँचे। द्वारपालकों से बोले कि महाराजा से हमारा आगमन सुना देना। ७९६

❀तूदर् वन्दऩ रुन्दैशॉल् लोडॅऩक्, कादऩ् मुन्दिक् कळिक्किऩ्ऱ शिन्दैयाऩ्
पोदु हॅन्ऩवुट् पुक्कऩर् कैदॊळत्, तीदि लन्गॉ ऱिरुमुडि यानॅऩ्ऱाऩ् 797

उन्तै चॉल्लॉटु–आपके पिता का सन्देश लेकर; तूतर् वन्तऩर् ॲऩ–दूत आये हैं, ऐसा; (अऱिविक्क)–बताने पर; कातल् मुन्ति–इच्छा से भरकर; कळिक्किऩ्ऱ चिन्तैयाऩ्–मुदितमन होकर; पोतुक ॲऩ्ऩ–वे अन्दर आएँ, कहने पर; उळ् पुक्कऩर्–अन्दर प्रवेश करके; कै तॊळ–अंजलि करने पर; तिरुमुटियाऩ्–चक्रवर्ती; तीतु इलन् कॉल्–अस्वस्थ तो नहीं; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। ७९७

उन्होंने अन्दर जाकर निवेदन किया कि आपके पिताजी का सन्देश लेकर दूत आये हैं। यह सुनकर भरत के मन में प्रेम उमड़ आया। हर्षितमन उन्होंने आज्ञा दी कि वे अन्दर आ जाएँ। वे अन्दर आकर हाथ जोड़कर विनत हुए। भरत ने प्रश्न किया कि चक्रवर्ती अस्वस्थ तो नहीं हैं ?। ७९७

❀ वलिय नॅऩ्ऱवर् कूऱ महिळ्न्दऩऩ्, इलैकॊळ् वेलॅम् बिराऩिळङ् गोवॊडुम्
उलैविल् शॅल्वत्त तोवॅऩ वुण्डॆऩत्, तलैयि लेन्दिऩऩ् ऱाळ्तडक् कैहळे 798

वलियन् ॲऩ्ऱु–दृढ़, ऐसा; अवर् कूऱ–उनके कहने पर; मकिळ्न्तऩऩ्–आनन्द करके; इलै कॊळ् वेल्–जिनके भाले का फल पत्र के आकार का है, वे; ॲम्पिराऩ्–मेरे प्रभु; इळम् कोवॊटुम्–लघुराज के साथ; उलैवु इल् चॅल्वत्ततो–अक्षुण्ण वैभवशाली हैं न; ॲऩ–पूछने पर; उण्टु ॲऩ–हैं, कहा; ताळ् तट कैकळ्–लम्बे विशाल हाथों को; तलैयिल् एन्तिऩऩ्–सिर पर जोड़े रखा (भरत ने)। ७९८

दूतों ने एक शब्द में उत्तर दिया कि सुदृढ़ हैं। खुश होकर भरत ने प्रश्न किया कि पत्र के आकार के सिर वाले भाले के धारी मेरे प्रभु

श्रीराम और उनके अनुज, लघुराज अनंत वैभवशाली हैं न ? दूतों ने 'हाँ' कहा। भरत ने अपने हाथ जोड़े सिर पर रख लिये। ७९८

❀ मर्ऱुम् जुर्ऱत्तु ळार्क्कुम् वरन्मुऱै, उर्ऱ तन्मै विनवि युवन्दनन्
इर्ऱ दाहु मॅऴुदरु मेऩियाय्, कॊर्ऱ मन्नन् ऱिरुमुहङ् गॊळ्हॅन्ऱार् 799

मर्ऱुम्–और भी; चुर्ऱत्तु उळ्ळार्क्कुम्–सभी परिवारों का; उर्ऱ तन्मै–उचित समाचार; वरल् मुऱै विनवि–यथाक्रम पूछकर; उवन्तनन्–हर्षित हुए; ऍऴुत अरु मेऩियाय्–चित्रणदुर्लभ रूप वाले; कॊर्ऱम् मन्नन् तिरुमुकम्–विजयी चक्रवर्ती का पत्र; इर्ऱु आकुम्–यही है; कॊळ्क ऍन्ऱार्–ग्रहण कीजिए; ऍन्ऱार्–कहा। ७९९

फिर सभी परिवारों के लोगों का, वारी-बारी से कुशल पूछा। संतुष्ट हुए। तब दूतों ने कहा कि चित्रण-दुर्लभ रूपवान ! विजयी चक्रवर्ती का पत्र यह है। आप ग्रहण कर लें। उन्होंने उसको आगे किया। ७९९

❀ ऍन्ऱु कूऱलु मेत्ति यिरैञ्जिनान्, पॊन्ऱि णिन्द पॊरुवि ऱडक्कैयान्
निन्ऱु वाङ्गि युरुहिय नॅञ्जिनान्, तुन्ऱु नाण्मलर्च् चॅन्नियिऱ् चूडिनान् 800

ऍन्ऱु कूऱलुम्–ऐसा कहते ही; पॊन् तिणिन्त–स्वर्णाभरणधारी; पॊरु इल्–अनुपम; तट कैयान्–विशालहस्त; एत्ति इऱैञ्चिनान्–(भरत ने) उसकी स्तुति और पूजा की; निन्ऱु वाङ्कि–खड़े होकर लिया; उरुकिय–प्रेमद्रवित; नॅञ्चिनान्–मन के साथ; नाळ् मलर् तुन्ऱु–नवविकसित पुष्पों से भरे; चॅन्नियिल्–अपने सिर पर; चूटिनान्–धारण किया। ८००

यह सुनकर विशाल और दीर्घ हस्त वाले भरत ने हाथ जोड़े और स्तुति की। उन्होंने खड़े होकर आदर के साथ उसे हाथ में लिया। प्रेमार्द्र होकर उसे अपने नवपुष्पालंकृत सिर पर धारण किया। ८००

❀ शूडिच् चादनन् दोर्ऱुडैच् चुर्ऱुमण्, मूडुन् दोट्टिन् मुडङ्ग निमिर्त्तनन्
ईडु नोक्किवन् दॅय्दिय तूदर्क्कुक्, कोडि मेलु निदियङ् गॊडुत्तनन् 801

चूटि–धारण करके; चुर्ऱुम्–चारों ओर; चाततम् तोर्ऱु उटैय–(लांछन लगा) दिखनेवाले; मण्मूटुम्–मिट्टी से आच्छादित; तोट्टिन्–ताल-पत्र के; मुटङ्कल् निमिर्त्तनन्–मोड़ सीधे किये; ईटु नोक्कि–अन्दर का समाचार पढ़कर; वन्तु ऍय्तिय–आगत; तूतर्क्कु–दूतों को; नितियम्–निधि; कोटि मेलुम् कॊटुत्तनन्–करोड़ से भी अधिक (अत्यधिक) दिया। ८०१

वह तालपत्र पर लिखा हुआ, जिसको अनेक बार एक ही दिशा पर मोड़ने के बाद मिट्टी से बन्द कर उस पर लांछन लगाया गया था। भरत ने मिट्टी हटाई तालपत्र को सीधा किया और उस पर लिखा सन्देश पढ़ा। फिर दूतों को अत्यधिक निधि दिलाई। ८०१

❀ वाणि लानहै तोन्र्र मयिर्पुरम्, पूण मीदुयर् कादलिर् पॊङ्गिनन्
तागि लामलर् तूवितन् ऱम्मुनैक्, काण लामॆनु माशै कडाववे 802

तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ के; ताळ्–पैरों पर; निलावुम् मलर् तूवितन्–पुष्पांजलि करके; काणलाम्–दर्शन कर सकता हूँ; ऍनुम्–ऐसी; आचै कटाव–अभिलाषा की प्रेरणा से; वाळ् निला नकै तोन्र्र–अत्युज्वल दाँत (मन्दहास के साथ) प्रकट होने देते हुए; मयिर् पुऱम् पूण–शरीर के बालों के प्रफुल्लित होते; मीतु उयर् कातलिन्–अधिक बढ़े हुए प्रेम के साथ; पॊङ्कितन्–उमंग में भरे। ८०२

भरत के मन में यह आशा उमड़ी कि अब हम जाकर अपने ज्येष्ठ भ्राता के चरणों पर पुष्पांजलि करके उनके दर्शन कर सकेंगे। इस इच्छा के जगते ही उनके दाँत मन्दहास में किंचित प्रकट हुए। शरीर पुलक से भर गया। प्रेम भर आया। ८०२

❀ ऍळ्ह शेनैयॆन् ऱेवित नॆय्दितान्, तॊळ्दु केहयर् कोमहन् शॊल्लॊडुम्
तळ्वु तेरिडैत् तम्बियॊ डेऱितान्, पॊळ्दु नाळुङ् गुऱित्तिलन् पोयिनान् 803

नाळुम् पॊळुतुम् कुऱित्तिलन्–दिन और मुहूर्त नहीं शोधा; चेनै ऍळ्क–सेना प्रस्थान करे; ऍन्ऱु एवितन्–ऐसी आज्ञा दी; केकयर् कोमकन् ऍय्तितान्–केकयराजा के पास गये; तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊल्लॊटुम्–उनके आशीर्वाद लेकर; तळुवु तम्पियॊटु–साथ लगे रहनेवाले अनुज के साथ; तेर् इटै एऱितान्–रथ पर चढ़े; पोयिनान्–चल पड़े। ८०३

दिन और मुहूर्त शोधे बिना ही उन्होंने आज्ञा दिला दी कि सेना उठ चले। वे केकयराज के पास गये। उनको नमस्कार करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। सदा साथ लगे रहनेवाले अपने भाई (शत्रुघ्न) को भी साथ लेकर वे रथ पर सवार हुए। और अयोध्या की तरफ़ जाने लगे। ८०३

❀ यानै शुऱ्ऱिन तेररैत् तीण्डिन, मान वेन्दर् कुळुमिनर् वाळुडैत्
तानै शूळ्न्दन शङ्ग मुरन्ऱन, मीन वेलयिन् विम्मिन बेरिये 804

यानै चुऱ्ऱिन–गज घेर आये; तेर् इरैत्तु ईण्टिन–रथ शब्द करते हुए जमा हुए; मानम् वेन्तर् कुळुमिनर्–गौरवान्वित राजा लोग एकत्र हुए; वाळ् उटै तानै–तलवारधारी वीरों की पल्टनें; चूळ्न्तन–घेर आईं; चङ्कम् मुरन्ऱन–शंख निनादित हुए; पेरि–भेरियाँ; मीतम् वेलैयिन्–मकरालय (समुद्र) के समान; विम्मिन–घोष कर उठीं। ८०४

उनके रवाना होते ही अनेक गज आये। रथ शब्द करते हुए आये। सम्मानित राजा लोग आ मिले। तलवारधारी वीर आ जुटे। शंख बजे। भेरियाँ मकरालय के समान बजाई गईं। ८०४

कौडिनॅ रुङ्गित तौङ्गल् कुळीइत, वडिनॅ डुङ्गण् मडनदय रूर्मडप्
पिडिदु वत्ृरित पूणौळि पेर्नदत, इडिमु हिर्पडु मित्नॅत वॅङ्गुमे 805

कॉटि नॅरुङ्कित–ध्वजाएँ भरीं; तोंङ्कल् कुळीइत–मयूरपंखों के झालर जुटे; वटि नॅटु कण् मटन्तैयर्–तीक्ष्ण आयत आँखों वाली रमणियों के; ऊर् मट पिटि–वाहन छोटी (आयु की) हथिनियाँ; तुवन्रित–सटीं; इटि मुकिल् पटुम्–गरजते मेघ-मध्य चमकनेवाली; मिन् अॅत–बिजली के समान; पूण् ऑळि–आभरणों की दीप्ति; अॅङ्कुम्–सर्वत्र; पेर्नतत–चमकी। ८०५

ध्वजाएँ अधिक संख्या में एकत्र हुईं। मयूरपंखों के झालर आये। तीक्ष्ण और आयत आँख वाली रमणियों के वाहन, छोटी आयु की हथिनियाँ मिल आईं। कड़कनेवाले मेघमध्य बिजलियों के समान आभरण की दीप्ति सर्वत्र फैली रही। ८०५

पण्डि यॅङ्गुम् परनदत पल्लियम्, कॉण्डि यम्बित कौण्डलिर् कोदैयिल्
वण्डि यम्बित वाळियिन् वावुरुम्, शॅण्डि यङ्गुम् बरियुञ् जॅरिन्दवे 806

पण्टि अॅङ्कुम् परन्तत–छकड़े सर्वत्र पाये गये; पल् इयम्–विविध वाद्य; कॉण्टलिन् कॉण्टु–मेघ-समान; इयम्पित–नाद कर उठे; कोतैयिल्–मालाओं पर; वण्टु इयम्पित–भ्रमरों ने गुंजार किया; वाळियिन्–शर के समान; वा उरुम्–दुलकी चलनेवाले; चॅण्टु इयङ्कुम्–गोलपथ में दौड़नेवाले; परियुम्–अश्व भी; चॅरिन्त(त)–मिल गये। ८०६

छकड़े सर्वत्र चले। विविध वाद्य मेघों के समान बजे। पुष्प-मालाओं पर भ्रमर गुंजार उठे। शरसमान वेग से चलनेवाले और गोलपथ में घूम आनेवाले अश्व आकर अधिक संख्या में मिले। ८०६

तौळैमु हत्तिर् चुरुदि विळम्बित, उळैमु हत्तित वुम्बरि नॆविडिन्
विळैमु हत्तनल् वेलैयिन् मीदुशॅल्, वळैमु हत्तत वाशियुम् वन्दवे 807

तौळै मुकत्तिन्–नासिकारंध्रयुक्त मुख से; चुरुति विळम्पित–वेद-घोष के समान हिनहिनानेवाले; उळै मुकत्तित–कलँगी-युक्त सिर वाले; एविटिन्–चलाने पर; उम्परिन्–आकाश में भी; मुकत्तु अतल् विळै–अश्वमुख के रूप से आग (वड़वाग्नि) उगलनेवाले; वेलैयिन् मीतु–समुद्र पर भी; चॅल्–जा सकनेवाले और; वळै मुकत्तत–झुकी गरदन वाले; वाचियुम्–वाजी भी; वन्त(वे)–आये। ८०७

वे अश्व नासिकारंध्रयुक्त मुख से वेदसम स्वर में हिनहिनानेवाले (श्रीविष्णु ने अश्वमुख होकर वेद पाठ किया था) थे, वे चलाये जाने पर आकाश और अश्व-मुख द्वारा आग उगलनेवाले सागर पर भी सरपट दौड़ सकते थे और उनकी गर्दन झुकी हुई थी। ८०७

विल्लिन् वेदियर् वाळ्शॅरि वित्तहर्, मल्लिन् मल्लर् शुरिहैयिन् वल्लवर्
कौल्लुम् वेल्कुन्दङ् गरुयर् कौरर्वर्, तौल्लै वारणप् पाहरुन् दुन्निनार् 808

विल्लिन् वेतियर्–धनुर्वेदज्ञ वीर; वाळ् चॅरि वित्तकर्–तलवार-युद्ध में विद्वान (निपुण); मल्लिन् मल्लर्–मल्लवीर; चुरिकैयिन् वल्लवर्–खड्ग-युद्ध में कुशल; कॉल्लुम् वेल्–मारक भाले; कुन्तम्–कुंत; कऱ्ऱु उयर्–चलाना सीखकर (उनमें) दक्ष; कॉऱ्ऱवर्–विजयी वीर; तॉल्लै–प्राचीन (अनुभवी) वारणम् पाकरुम्–पीलवान; तुन्ऩिऩार्–मिल आये। ८०८

धनुर्वेद-विद्वान, तलवार के युद्धनिपुण, मल्लवीर, खड्गयुद्धचतुर, संहारक भाला और कुन्त चलाने में अभ्यस्त विजयशील वीर और अनुभवी हाथीवान आकर जुटे। ८०८

ऑऱिप हट्टिऩ माडुह ळेऱ्ऱैमा, कुऱिकॉळ् कोऴि शिवल्हुरुम् बूळ्नॅडुम्
पॉऱिम यिर्क्कवु दारिहळ् पोऱ्ऱुरु, नॅऱियिन् माक्कळु मुन्दि नॅरुङ्गिऩार् 809

ऑऱि–भिड़नेवाले; पकटु इऩम्–भैंस के पाठे; आट्टुकळ्–और बकरे; एऱ्ऱै मा–बैल; कुऱि कॉळ् कोऴि–(विजय पर) निशान लगाए हुए मुर्गे; चिवल्–चिवल (तीतर ?) पक्षी; कुरुम्पूळ्–बटेर पक्षी; नॅट्टुम् पॉऱि मयिर्–लम्बी बिंदियों और परों के; कवुतारिकळ्–कौदारि नामक पक्षी, इनको; पोऱ्ऱु उरुम्–लड़ाई के लिए पालने को; नॅऱियिन् माक्कळुम्–जीविका वाले लोग; मुन्ति नॅरुङ्किऩार्–आगे मिल आये। ८०९

लड़ाकू भैंस के पाठे, बकरे, बैल, विजयचिंतक मुर्गे, तीतर, बटेर, 'कौदारी' आदि पालनेवाले लोग भी आ मिले। ८०९

निऱैन्द मान्दर् नॅरुङ्गिऩर् नॅञ्जिऩिल्
परन्दु पोदुङ्गॉ लॅन्ऱु पदैक्किऩ्ऱार्
पिऱन्द तेव रुणर्न्दु पॅयर्न्दुपोय्
उऱैन्द वाऩुरु वार्हळै यॉक्किऩ्ऱार् 810

नॅरुङ्किऩर्–मिलकर आनेवाले; निऱैन्त मान्तर्–(विद्या-अनुभव-) भरे लोग; नॅञ्चिऩिल्–मन में; परन्तु पोतुम् कॉल्–उड़ जा सकें क्या; ऍऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; पतैक्किऩ्ऱार्–उतावली दिखाते हैं; पिऱन्त तेवर्–(शापवश) भूमि पर पैदा हुए देव; उणर्न्तु–(अपनी सच्ची स्थिति) समझकर; पॅयर्न्तु पोय्–छोड़ जाकर; उऱैन्त–जहाँ पहले रहे; वाऩ्–उस स्वर्गलोक को; उरुवार्कळै–जानेवालों की; ऑक्किऩ्ऱार्–समता करते हैं। ८१०

भरत के साथ जो शिक्षित लोग जा रहे थे, वे मानो उड़ जाना चाहते थे, इतने वेग से जा रहे थे। वे उन देवों के समान लगते थे, जो शापवश इस भूमि पर जन्म ले चुके थे और तथ्य समझकर भूमि छोड़कर अपने वासस्थान, स्वर्ग को जाने की उतावली दिखा रहे हों। ८१०

❀ ऊऩ ळैन्द वुडऱ्कुयि रामॅऩत्, ताऩ ळैन्दु तळुविऩ तण्णुमै
तेऩ ळैन्दु शॅवियुऱ वार्त्तॅऩ, वाऩ ळैन्दडु माहदर् पाडले 811

माकतर् पाटल्–मागधों के गीत; तेन् अळैन्तु–शहद घोलकर; चॅवि उऱ् वार्त्तु–कर्णों में ढाला गया हो; ॲत–ऐसा; वान् अळैन्ततु–स्वर्ग में भर गया; तण्णुमै–मृदंग का नाद; ऊन् अळैन्त उटऱ्कु–मांस के शरीरों के; उयिर् ॲत–प्राणों के समान; अळैन्तु तऴुविन–(संगीत के साथ) मिलकर शब्दित हुए। ८११

मागधों के गाने मानो शहद से घुलकर स्वर्ग में भी जाकर फैला। मृदंगों का नाद उसकी जान के समान उससे मिलकर फैला। ८११

ऊऱु कॊण्ड मुरशिमि ऴोदैयै, वीऱु कॊण्डन वेदियर् वाऴ्त्तॊलि
एऱु कॊण्डॆऴु मल्ल रिडिप्पॊडु, माऱु कॊण्डन वन्दिय रेत्तरो 812

ऊऱु कॊण्ट–चोब का प्रहार पाकर; मुरचु–भेरियाँ जो उठाती हैं; इमिऴ् ओचैयै–उस तुमुल नाद को; वेतियर्–वेदपाठी ब्राह्मणों के; वाऴ्त्तु ऑलि–आशीर्वाद-स्वर ने; वीऱु कॊण्टन–मन्द करा दिया; वन्तियर् एत्तु–वन्दियों की संस्तुतियों का नाद; एऱु कॊण्टु ॲऴुम्–मस्त होकर उठनेवाले; मल्लर् इटिप्पॊटु–मल्लों को नारों के स्वरों से; माऱु कॊण्टन–बढ़कर उठा। ८१२

चोब की चोट खाकर भेरियाँ थर्रा उठीं। पर वेदपाठी विप्रों का मंगलाशासन का स्वर उससे बढ़कर उठा। वन्दियों के गाने के स्वर मल्लों के नारों के ऊपर सुनाई दिये। ८१२

❀ आऱुङ् गानु महन्मलै युङ्गडन्, देऱि येऴ्पह नीन्दिप्पि नॆन्दिरत्
तूऱु पाहु मडैयुडैत् तॊण्मुळै, नाऱु पाय्वयर् कोशल नण्णिनान् 813

आऱुम्–नदियों; कानुम्–वनों; अकन् मलै–और विशाल पर्वतों को; एऴ् पकल्–सात दिन; नीन्ति कटन्तु–क्रमशः तैरकर, चलकर; एऱि–चढ़कर पार करके; पिन्–बाद; ॲन्तिरत्तु ऊऱु–कारखानों से वहनेवाला; पाकु–इक्षुरस; मटै उटैत्तु–मेंड़ों को काटकर; ऑळ् मुळै–श्वेत अंकुर वाले; नाऱु वयल् पाय्–बेढ़ों में (जहाँ धान बोये जाते हैं और रोपने के पूर्व पाले जाते हैं, उन खेतों में) बहता है (जहाँ); कोचलम्–(उस) कोसल देश के पास; नण्णिनान्–आये। ८१३

भरत अपनी सेना के साथ नदियों को तैरकर, वन में चलकर और पर्वतों पर चढ़कर उस पार जाकर मार्ग तय करते हुए उस कोसल देश में आये, जहाँ कोल्हुओं से ईख का रस बहकर खेतों की मेंड़ों को तोड़ता और बेढ़ों के खेतों में बहता था। ८१३

❀ एऱ्दु ऱन्द वयलिळ मैन्दर्तोळ्, तार्तु ऱन्दन तण्डलै नॆल्लिनुम्
नीर्दु ऱन्दन तामरै नीत्तॆनप्, पार्दु ऱन्दनळ् पङ्गयच् चॆल्वियै 814

वयल्–खेत; एर् तुऱन्तन–हलों से खाली रहे; इळ मैन्तर् तोळ्–जवान लोगों के कन्धे; तार् तुऱन्तन–मालाएँ छोड़ गये; नॆल्लिन् तण्टलैयुम्–धान के गीले खेत; नीर् तुऱन्तन–जलत्यक्त रहे; पङ्कयम् चॆल्वि–सरसिजनिलया श्री; तामरै नीत्ततु ॲन–मानो कमल छोड़कर गईं, वैसे ही; पार् तुऱन्तनळ्–भूमि को भी छोड़ गईं। ८१४

(वहाँ के दृश्य मंगलसूचक नहीं थे।) खेतों में हल नहीं चलते थे। जवानों के कंधे मालाओं से रिक्त थे। धान के खेत भी जल से खाली थे। सरसिजनिलया ने मानो कमल छोड़ दिया है वैसे ही विभवश्री राज्य छोड़ चली गई थीं। ८१४

पिदिर्न्दु शारु पॅरुन्दुरै मण्डिडच्
चिदर्न्दु शिन्दि यळिन्दन तेङ्गनि
मुदिर्न्दु कॉय्हुन रिन्मैयिन् मूक्कविळ्न्
दुदिर्न्दु लर्न्दन वॉण्मल रीट्टमे 815

तेम् कनि–मधुर फल; कॉय्कुनर् इन्मैयिन्–ग्रहण करनेवाले नहीं थे, इसलिए; मुतिर्न्तु–सड़कर; चारु पिळिन्तु–रस रिसाकर; पॅरु तुरै मण्टिट–बड़े घाटों पर बहने देते हुए; चितर्न्तु चिन्ति अळिन्तन–गिरकर नष्ट हुए; ऑळ् मलर् ईट्टम्–शोभायमान फूलों की राशियाँ; कॉय्कुनर् इन्मैयिन्–चयन करनेवालों के न रहने से; मूक्कु अविळ्न्तु उतिर्न्तु–ढेंपुनियों से अलग होकर गिरकर; उलर्न्तन–सूखे पड़े रहे। ८१५

मीठे फल फले थे। पर उनको तोड़ लेनेवाले नहीं रहे। इसलिए वे अधिक पके और उनका रस नीचे बहकर घाटों में भर गया। वे फल सड़कर गिरे और नष्ट हो रहे थे। वैसे ही उज्ज्वल शोभनेवाले पुष्पों की राशियाँ टहनियों से कटकर गिर गईं और सूखी पड़ी थीं। ८१५

एय्न्द काल मिदुविदर् कामॅन, आय्न्दु मळ्ळ ररिहुन रिन्मैयाल्
पाय्न्द शूदप् पशुनरुन् देऱलाल्, शाय्न्दॊ शिन्दु मुळैत्तन शालिये 816

इतर्कु एय्न्त कालम् इतु–(फसल काटने के) इस काम के लिए योग्य काल यह; आम् ॲन–है, समझकर; आय्न्तु–शोधकर; अरिकुनर्–काटनेवाले; मळ्ळर् इन्मैयाल्–कृषक नहीं हैं, इसलिए; शालि–धान के पौधे; चाय्न्तु ऑचिन्तु–अवनत होकर, टूटकर; पाय्न्त–(खेतों में) बहकर फैले रहे; चूतम् पचु नरु तेऱलाल्–आम्रफलों के ताजे अच्छे रस (में सनकर); मुळैत्तन–अंकुरित हुए थे। ८१६

फसल काटने का समय हो गया था। पर उस योग्य काल को समझकर काटनेवाले कृषक नहीं थे। इसलिए शालि के पौधे अवनत होकर टूट गये। धान गिरकर, खेतों में बहकर रहे आम्ररस में सनकर अंकुरित हुए थे। ८१६

ॲट्कु लामल रेशिय नाशियर्, पुट्कु लावयर् पूशर् कडैशियर्
कट्कि लार्हळै कादर् कॉळुनरो, डुट्क लामुडै यारि नुयङ्गिनार् 817

पुळ् कुला वयल्–पक्षी जहाँ मिले खेल रहे थे, उन खेतों में; पूचल्–कोलाहल करनेवाली; कुलावुम् ॲळ् मलर् एचिय–तिल के फूल को निन्दित करनेवाली; नाचियर्–नासिकाओं की; कटैचियर्–कृषकस्त्रियाँ; कळै कट्किलार्–न निराकर;

कातल् कॊळुनरोटु–प्रिय पतियों के साथ; उळ् कलाम् उटैयारिन्–मनमुटाव रखनेवालियों के समान; उयङ्किनार्–म्लान रहीं। ८१७

खेतों में पक्षीगण मिलकर कोलाहल मचा रहे थे। कृषक-स्त्रियाँ, जो कोलाहल मचानेवाला स्वभाव और तिल के फूल की निन्दा करनेवाली नासिका —इनकी स्वामिनी थीं; निराने के काम में न लगकर प्रिय पतियों से रूठी हुई-सी म्लान रहीं। ८१७

अलर्न्द पैङ्गू ळहन्गुळक् कोळ्मडै, मलर्न्द वायिर् पुनल्वळङ् गामैयाल्
उलर्न्द वन्ग णुलोबर् कडैत्तलैप्, पुलर्न्दु निर्कुम् बरिशिलर् पोलवे 818

अकन् कुळम् कोळ्–विशाल तालाब के पास; अलर्न्त पचु कूळ्–बढ़े हुए धान के पौधे; मलर्न्त मटैवायिल्–खुले नल के मार्ग से; पुनल् वळङ्कामैयाल्–जल न सिंचित होने से; वन् कण्–कठोर-हृदय; उलोपर् कटैत्तलै–कृपण के द्वार पर; पुलर्न्तु निर्कुम्–मुरझाए खड़े रहनेवाले; परिचिलर् पोल–दान पाने आए हुओं के समान; उलर्न्त–मुरझाए। ८१८

बड़े तालाब के पास खेत थे। खेतों में धान के पौधे उग आये थे। पर मोरी से जल नहीं बहाया गया। इसलिए वे पौधे, कृपण के द्वार पर दान पाने की इच्छा से आये हुए असफल याचक लोगों के समान मुरझाए खड़े रहे। ८१८

ओदु हिन्रिल किळ्ळैयु मोदियर्, तूदु शॆन्रिल वन्दिल तोळर्पाल्
मोदु हिन्रिल बेरि मुळाविळाप्, पोदु हिन्रिल पॊन्नणि वीदिये 819

किळ्ळैयुम् ओतुकिन्रिल–शुक नहीं बोलते; ओतियर् तूतु–सुरम्य केश वालियों के दूत भी; तोळर् पाल्–प्रेमियों के पास; चॆन्रिल वन्तिल–आते-जाते नहीं; पेरि–भेरियाँ; मुळा–मृदंग; मोतुकिन्रिल–नहीं बजाए जाते; पॊन् अणि वीति–स्वर्णसज्जित वीथियों में; विळा पोतुकिन्रिल–उत्सव-यात्राएँ नहीं जातीं। ८१९

शुक बोलते नहीं। सुरम्य केश वालियाँ अपने प्रेमियों के पास दूत नहीं भेजतीं और दूतों के आने-जाने का काम नहीं होता था। भेरियाँ, मृदंग आदि नहीं बजते थे। स्वर्णालंकृत वीथियों में उत्सव-यात्राएँ नहीं आती थीं। ८१९

❀ पाड नीत्तन पण्डॊडर् पाणगुळल्, आड नीत्त वरङ्गो डहन्बुनल्
शूड नीत्तन शूडिहै शूळिहै, माड नीत्तन मङ्गल वळ्ळैये 820

पण् तॊटर्–संगीतानुसरित; पाण् कुळल्–भाटों की बाँसुरियों ने; पाटल् नीत्तन–बजना छोड़ दिया; अरङ्कॊटु–रंगमंच भी; अकन् पुनल्–विशाल जलाशय भी; आटल् नीत्तन–(श्लेष से) नाच और स्नान से विमुक्त रहे; चूटिकै–नारियों के सिरों ने; चूटल् नीत्तन–शृंगार छोड़ दिया; चूळिकै माटम्–हर्म्य सहित सौधों ने; मङ्कलम् वळ्ळै नीत्त–मंगलमयी "वळ्ळै" गीतों को त्याग दिया। ८२०

भाट लोगों की, संगीतमयी स्वर निकालनेवाली बाँसुरियाँ चुप रहीं। रंगमंचों पर नाच नहीं होते थे। जलाशय में लोग स्नान नहीं करते पाये गये। स्त्रियों के केशों पर पुष्पालंकार दिखाई नहीं दिये और हर्म्योंसहित सौधों के अन्दर मंगलसूचक "वल्लै" (धान कूटते वक्त गाये जानेवाले 'मूसल' गीत) नहीं गाये गये। ८२०

❀ नहैयि ळन्दन वाण्मुह नाऱहिऱ्, पुहैयि ळन्दन माळिहै पॊङ्गळऱ्
चिहैयि ळन्दन तीविहै तेमलर्त्, तॊहैयि ळन्दन तोहैय रोदिये 821

वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुख; नकै इळन्तत–हास खो गये; माळिकै–प्रासादों ने; नाऱु अकिल् पुकै–सुगन्धित अगरु-धुआँ; इळन्तत–खो दिया; तीविकै–दीपकों ने; पॊङ्कु अळल् चिकै–ज्वलन्त दीपशिखाएँ; इळन्तत–खो दीं; तोकैयर् ओति–कलापी-सी स्त्रियों के केश; तेम् मलर् तोकै–मधुर पुष्पराशियों से; इळन्तत–रिक्त हो गये। ८२१

प्रभापूर्ण मुखों से हास छूट गया था। सौधों से अगरु का धुआँ नहीं उठता था। दीप अग्निशिखाओं से हीन रहे। मयूरनिभ स्त्रियों के केशों पर पुष्प नहीं पाये गये। ८२१

नावि नीत्तरु नल्वळन् दुन्निय, पूवि नीत्तन नाडु पॊलिवॊरीइत्
तेवि नीत्तरुञ् जेणॆरि शॆन्ऱिड, आवि नीत्त वुडलॆन वायदे 822

नाविन् नीत्तु अरु–जिह्वा (मुख) से कहना जो कठिन हो; नल् वळम्–उस अच्छी समृद्धि से; तुन्निय–पूर्ण; पूविन् ईत्तु अ(न्)न नाटु–भूदेवी का वरदान-स्वरूप वह देश; तेवि–देवी सीताजी; नीत्तु–उसको छोड़कर; अरु चेण् नॆऱि–दुर्गम दूर के मार्ग में; चॆन्ऱिट–चली गईं, इसलिए; पॊलिवु ऒरीइ–अपनी शोभा त्यागकर; आवि नीत्त उटल् ऎन–प्राणहीन शरीर-सम; आयतु–बना। ८२२

वह कोसल देश इतना समृद्ध देश था कि उसकी प्रशंसा यथेष्ट नहीं हो सकती थी। वह भूदेवी की देन के समान रहा। सीता देवी उसको छोड़कर दूर चली गईं, इसलिए वह अपनी सारी शोभा खोकर प्राणविहीन शरीर के समान बना रहा। ८२२

❀ ॲन्ऱ नाट्टिनै नोक्कि यिडरुळन्, दॊन्ऱु मुऱ्ऱ दुणर्न्दिल नुन्नुवान्
शॆन्ऱु केट्पदॊर् तीङ्गुळ दामॆना, निन्ऱु निन्ऱु नॆडिदुयिर्त् तान्रो 823

उऱ्ऱतु ऒन्ऱुम् उणर्न्तिलन्–जो हुआ वह कुछ नहीं जानकर; ॲन्ऱ–उपरोक्त; नाट्टिनै–देश (की स्थिति) को; नोक्कि–देखकर; इटर् उळन्तु–दुखपीड़ित होकर; उन्नुवान्–(भरत) सोचने लगे; चॆन्ऱु–(हमें) जाकर; केट्पतु ऒर् तीङ्कु उळतु–सुनने को एक बुरा (समाचार) है; ऎना–अनुमान करके; निन्ऱु निन्ऱु–हिचक-हिचककर; नॆटितु उयिर्त्तान्–दीर्घ निःश्वास छोड़े। ८२३

ऐसी स्थिति में अपने प्यारे देश को देखकर भरत बहुत दुखी हुए।

उन्हें यह सूझ गया कि महल में जाकर कुछ अनिष्ट की बात सुनना पड़ेगा। इसलिए वह हिचकते-हिचकते लम्बी साँसें भरने लगे। ८२३

मीण्डु मॅय्दियम् मॅय्यॅनु नल्लणि, पूण्ड वेन्दन् ऱिरुमहन् पुन्दितान्
तूण्डु तेरिनु मुन्दुरत् तूण्डुवान्, नीण्ड वायि नॅडुनहर् नोक्किनान् 824

अ मॅय् ॲनुम् नल् अणि पूण्ट–उन, सत्यपालन रूपी श्रेष्ठ शृंगार से भूषित; वेन्तन् तिरुमकन्–चक्रवर्ती के पुत्र; मीण्टुम् ॲय्ति–फिर सम्हलकर; पुन्ति–मन; तूण्टु तेरिनुम्–त्वरित किये हुए रथ से; मुन्नु उऱ–आगे जब चला तब; तूण्टुवान्–रथ को और तेज करके; नॅटु नकर्–विशाल नगर के; नीण्ट वायिल्–उन्नत द्वार को; नोक्किनान्–देखा। ८२४

सत्यपालन रूपी आभूषण से भूषित चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र कुछ देर के बाद स्वस्थ हुए। उनका मन उनके तेज रथ से भी आगे भागना चाहता था। इसलिए उन्होंने रथ को और तेज कराया। आखिर अयोध्या के फाटक से पास आये। ८२४

अण्ड मुऱ्ऱुन् दिरिन्दयर्न् दायमु, दुण्डु पोदियॅन् ऱॉण्गदिर्च् चॅल्वनै
विण्डॉ डर्न्दु विलक्कुव पोल्वन, कण्डि लन्कॉडि यिन्नॅडुङ् गानमे 825

ऑण् कतिर् चॅल्वनै–उज्ज्वल किरणधन (सूर्य) को; अण्टम् मुऱ्ऱुम्–अण्ड भर में; तिरिन्तु अयर्न्ताय्–घूमते फिरे और थके हुए हो; अमुतु उण्टु पोति–भोजन करके जाओ; ॲन्ऱु–कहकर; विण् तॉटर्न्तु–आकाश में बढ़कर; विलक्कुव पोल्वन–रोकते से लगनेवाली; कॉटियिन् नॅटु कानम्–ध्वजाओं का बड़ा वन (समूह) भी; कण्टिलन्–नहीं देख सके। ८२५

अब नगर की स्थिति देखिए। सौधों पर ध्वजाएँ नहीं फहरती थीं। वे ध्वजाएँ, जो मानो सूर्य से यह कहकर उसको रोकती थीं कि अण्डभर में घूमे, फिरे और थके हुए हो। थोड़ा विश्राम करो और भोजन करके जाओ। ८२५

ईट्टु नन्पुहऴ्क् कीट्टिय यावैयुम्, वेट्ट वेट्टवर् कॉण्मिन् विरैन्दॅनक्
कोट्टि माक्कळैक् कूवुव पोल्वन, केट्टि लन्मुर शिन्गिळ रोदैये 826

ईट्टुम् नन् पुकऴ्क्कु–अर्जन योग्य यश के लिए; ईट्टिय यावैयुम्–अर्जित सभी (धनों) को; वेट्टवर्–याचकों के; वेट्ट–अपेक्षित; विरैन्तु कॉण्मिन्–शीघ्र ले जाइए; ॲन्न–कहकर; कोट्टि माक्कळै–याचकगण को; कूवुव पोल्वन–पुकारती हुई-सी रहनेवाली; मुरचिन्—दान-भेरियों की; किळर् ओतै–उमड़ती ध्वनि को; केट्टिलन्–भरत ने नहीं सुना। ८२६

वे दानसूचक भेरियाँ नहीं बजती थीं, जो याचकों को मानो यह कहकर बुलाती थीं कि यह सब धन यशार्जन के निमित्त ही अर्जित किया गया है। आओ, जो चाहें वे आएँ और जो चाहें ले जाएँ। ८२६

कळ्ळै माक्कवर् कण्णियन् कण्डिलन्, पिळ्ळै माक्कळिरुम्बिडि योट्टमुम्
वळ्ळै माक्क णिदियुम् वयिरियर्, कॊळ्ळै माक्कळिर् कॊण्डन रेहवे 827

कळ्ळै–(पुष्पों के) शहद को; मा कवर्–जहाँ से भ्रमर ग्रहण करके पीते थे; कण्णियन्–वैसी सिर-मालाधारी; वळ्ळै माक्कळ्–मंगल-गीत गानेवाले; वयिरियर्–नर्तक; नितियुम्–निधियाँ; पिळ्ळै मा कळिरुम्–छोटी आयु के बड़े गज; पिटि ईट्टमुम्–हथिनियों का झुण्ड; कॊळ्ळै माक्कळिन्–लुटेरों के समान; कॊण्टन्र्–उनको दान में प्राप्त कर लेते हुए; एक कण्टिलन्–(याचक लोगों को) जाते नहीं देखा। ८२७

पुष्पमाला से, जिस पर बैठकर भ्रमर शहद चूसते थे, अलंकृत केश वाले भरत ने मंगलगीत गानेवालों को नहीं देखा न नर्तकों को देखा। ये लोग निधियाँ, छोटी आयु के बड़े गज, हथिनियों का झुंड आदि को प्रभुओं या राजा से प्राप्त करके लुटेरों के समान जाते पाये जाते —यही नियम था। अब वे कहीं दिखाई नहीं दिये। ८२७

कावन् मन्नवन् कान्मुळै कण्डिलन्, आवु मावु मळिहवुळ् वेळमुम्
मेवु काद निदियिन् वॆरुक्कैयुम्, पूविन् वानवर् कॊण्डनर् पोहवे 828

कावल् मन्नवन् काल् मुळै–लोकपालक चक्रवर्ती के पुत्र भरत ने; आवुम्–गायों; मावुम्–अश्वों; अळि कवुळ् वेळमुम्—मदजल-युक्त गण्डस्थल वाले गजों को; कातल् मेवु–इच्छा के विषय; नितियिन् वॆरुक्कैयुम्–निधियों की राशियों को; पूविन् वानवर्–भूसुर लोग; कॊण्टनर् पोक–दान में ग्रहण कर ले जाते हुए; कण्टिलन्–नहीं देख पाया। ८२८

लोकपालक चक्रवर्ती के पुत्र ने और भी अनेक सामान्य दृश्य देख नहीं पाये। भूसुर गायें, अश्व, मत्तगज, इच्छित धन आदि प्राप्त कर जाते नहीं पाये गये। ८२८

शूळ् मैन्द शुरुम्बु नरम्बुन्दम्, एळ् मैन्द विशैयिशै यामैयाल्
माळै यॊण्गण् मयिलॅनुज् जायलार्, कूळै पोन्र पॊरुनर् कुळाङ्गळे 829

चूळ् अमैन्त–मँड़रानेवाले; चुरुम्पुम्–भ्रमर; नरम्पुम्–(कुंजी घुमाकर कसे हुए) वीणा की तारें; तम्–अपने; एळ् अमैन्त इचै—सप्तस्वरीय संगीत; इचैयामैयाल्–नहीं निकालतीं, इसलिए; माळै ऑण् कण्–आम की फाँक के समान और उज्ज्वल आँखें; मयिल् अॅन्नुम् चायलार्–मोर की-सी आभा से युक्त स्त्रियों के; कूळै–केश; पॊरुनर् कुळाङ्कळ्–और नर्तकों के समूह; पोन्र–एक सम बने। ८२९

मँड़रानेवाले भ्रमर गुंजार नहीं करते थे। कुंजी घुमाकर कसे जानेवाली वीणा की तारें झंकृत नहीं होती थीं। इसका माने यह था कि स्त्रियों के केशों पर फूल नहीं थे और नर्तकों के हाथों में वीणा नहीं थीं। वे दोनों संगीत से अपने को वंचित कर गये थे। ८२९

तेरु मावुङ् गळिरुत् जिविहैयुम्, ऊरुम् पण्डियु मूरुन रिन्मैयाल्
यारु मिन्ऱि यॅळ्रिलिल वीदिहळ्, वारि यिन्ऱिय वालुह वाऱ्ऱिन्ने 830

ऊरुम्—सवारी-योग्य; तेरुम्—रथ और; मावुम्—अश्व; कळिरुम्—हाथी; चिविकैयुम्—पालकियाँ और; पणटियुम्—गाड़ियाँ; ऊरुत्र् इन्मैयाल्—सवारी करनेवाले नहीं थे, इसलिए; यारुम् इन्ऱि—बिना किसी के; वीतिकळ्—वीथियाँ; . वारि इन्ऱिय—जल से रहित; वालुकम् आऱ्ऱिन्—बालू की नदी के समान; ॲळ्रिल् इल—शोभाहीन रहीं। ८३०

वीथियों पर रथ, अश्व, हाथी, शिविकाएँ या गाड़ियाँ नहीं जा रही थीं क्योंकि उनमें सवारी करनेवाले लोग नहीं थे। पैदल जानेवाले भी नहीं पाये गये। इसलिए वीथियाँ, जलहीन बालुका-भरी नदियों के समान शोभाहीन दिख रही थीं। ८३०

अन्न तन्मै यहत्तहर् नोक्किनन्, पिन्नै यप्पॅरि योर्क्कुप् पॅरुन्दहै
मन्नन् वैहुम् वळनहर् पोलुमो, ऍन्न तन्मै यिळैयव नेयॅन्ऱान् 831

अन्न तन्मै—वैसी स्थिति के; अक नकर् नोक्कितन्—नगर के अन्दर देखकर; अ पॅरियोर्क्कु पॅरु तकै—शीलवानों में श्रेष्ठ शीलवान; पिन्नै—अपने अनुज से; इळैयवने—भ्राता; ईतु मन्नन् वैकुम्—चक्रवर्ती के वास का; वळम् नकर् पोलुम्—वैभवपूर्ण नगर है क्या; ऍन्न तन्मै—क्या ही गति है इसकी; ऍन्ऱान्—कहा। ८३१

नगर के अन्दर भी यह स्थिति देखी तो भरत का मन विस्मय से भर गया। शीलवानों में सबसे बड़े शीलवान ने अपने छोटे भाई शत्रुघ्न से उद्‌गार निकालते हुए कहा— भाई क्या यही चक्रवर्ती के वास का समृद्ध नगर है? क्या ही (बुरी) दशा है इसकी? । ८३१

वेऱ्ऱ डङ्गल रूरॅन मॅल्लिदाऱ्, चूऱ्ऱ डङ्गरुङ् गार्पुरै तोऱ्ऱत्तान्
शेऱ्ऱ डङ्गट् टिरुवोडु नीङ्गिय, पाऱ्ऱ डङ्गड लॊत्तदु पारॅन्ऱान् 832

वेऱु अटङ्कलर् ऊर् ऍन—विरोधी शत्रुओं के नगर के समान; मॅल्लितु—क्षीण रहता है; चूल् तटम् करु कार् पुरै तोऱ्ऱत्तान्—जलगर्भित बड़े मेघ के समान रूपवान श्रीमन्नारायण; चेल् तटम् कण् तिरुवोटुम्—'शेल' मीन की तरह आयत आँखों वाली श्रीलक्ष्मीजी के साथ; नीङ्किय—जहाँ से चले गये; तटम् पाल् कटल् ऒत्ततु—विशाल क्षीरसागर के समान हैं; पार् ऍन्ऱान्—देखो, कहा। ८३२

यह नगर हमारे शत्रुओं के नगर के समान दलित लगता है। उस क्षीरसागर के समान लगता है, जिसको जल-गर्भित विशाल मेघ के समान श्यामवर्ण श्रीविष्णु भगवान अपनी भगवती श्रीलक्ष्मी देवी के साथ छोड़ गये हों। ८३२

कुरुम णिप्पू णरशिळङ् गोळरि, इरुहै कूप्पि यिरैञ्जित्त नॅय्दिय
दीरुव हैत्तन् रुरुदुय रूळिवाळ्, तिरुन हर्त्तिरुत् तीर्न्दन्न ळामॅन्ऱान् 833

कुरु मणि–सुरम्य वर्ण के रत्नों से युक्त; पूण्–आभरण-भूषित; अरचु इळ कोळ् अरि–बालराजकेशरी शत्रुघ्न; इरु कै कूप्पि–दोनों हाथ जोड़कर; इरैञ्चित्तन्–नमस्कार करके; ॲय्तियतु उरु तुयर्–जो आया है, वह बड़ा दुख; ऑरु वकैत्तु अन्ऱु–केवल एक प्रकार का नहीं; ऊळि वाळ् तिरुनकर्–प्राचीन काल से वैभवशाली यह नगर की; तिरु–श्री; तीर्न्तनळ् आम्–उसको छोड़ गई हैं; ॲन्ऱान्–कहा। ८३३

श्रेष्ठ रंगीन मणियों से युक्त आभरण पहने हुए युवराजकेसरी शत्रुघ्न ने अपने दोनों हाथ जोड़े। नमस्कार करके कहा कि बड़े भैया! इस नगर पर आई विपदा केवल एक प्रकार की नहीं लगती! बहुत काल से समृद्ध रहनेवाले इस नगर को विभवश्री छोड़ गई है! । ८३३

अन्नैय वेलैयि लच्चुडैत् तेररण्, मन्नैयि नीणॅडु मङ्गल वायिलै
निन्नैयु मात्तिरत् तॅय्दलु नेमियान्, तन्नैय नुन्दन्दै शार्विड मॅय्दिनान् 834

अन्नैय वेलैयिल्–उस समय पर; अच्चु उटैय तेर्–धुरी-सहित वह रथ; निन्नैयुम् मात्तिरत्तु–सोचते समय के अन्दर ही; अरण्मनैयिन्–राजमहल के; नीळ् नॅटु–लम्बे, चौड़े; मङ्कलम् वायिलै–मंगलमयी द्वार पर; ॲय्तलुम्–पहुँचने पर; नेमियान् तन्नैयनुम्–चक्रवर्ती-तनय (भरत भी); तन्तै चार्वु इटम् ॲय्तिनान्–पिताजी के रहने के स्थान पर गये। ८३४

तभी उनका वह सबल रथ राजद्वार के पास आ गया। चक्रवर्ती के पुत्र भरत उतरकर उस स्थान पर गये, जहाँ दशरथजी प्रायः रहा करते थे। ८३४

❀ विरुप्पि नॅय्दिनन् वॅन्दिऱल् वेन्दनै
इरुप्पु नल्लिड मॅङ्गणुङ् गण्डिलन्
अरुप्प मन्ऱिदॅन् ऱैयुऱ वॅय्दिनान्
पॊरुप्पु नाण वुयर्न्दपॊन् ऱोळिनान् 835

विरुप्पिन् ॲय्तिनन्–(पिता को देखने की) इच्छा से आये हुए; पॊरुप्पुम् नाण–पर्वतों को भी लज्जायुक्त करनेवाले; उयर्न्त पॊन् तोळिनान्–उन्नत कन्धे वाले; वॅम् तिऱल् वेन्तनै–बहुत बली चक्रवर्ती को; इरुप्पु नल् इटम् ॲङ्कणुम्–रहने के सभी अच्छे स्थानों में; कण्टिलन्–न देख पाये; इतु अरुप्पम् अन्ऱु–यह अल्प बात नहीं; ॲन्न–समझकर; ऐयुऱवु ॲय्तिनान्–शंकितमन हुए। ८३५

बहुत ही आतुरता के साथ भरत आये पर वहाँ दशरथजी नहीं मिले। पर्वतोन्नत सुन्दर भुजा वाले भरत ने पराक्रमी दशरथजी को सर्वत्र ढूँढ़ा। पर कहीं भी उन्हें न पाकर उन्हें यह खटका हुआ कि यह साधारण और अल्प बात नहीं है। ८३५

❀ आय कालैयि लैयनै नाडित्तन्, तूय कैयिर् रॉळुलुरु वान्ऱनैक्
कूय ळन्नै कुरुहुदि रॅन्ऱॉरु, वेय्हॉ डोळि तॉळुदु विळम्बिनाळ् 836

आय कालैयिल्–उस समय; ऐयनै नाटि–पिता की खोज कर; तन् तूय कैयिल्–अपने पवित्र हाथों से; तॉळल् उरुवान् तन्नै–नमस्कार करना चाहनेवाले उनको; ऑरु वेय्कॉळ् तोळि–एक बाँस-सम कन्धों वाली; तॉळुतु–(एक दासी ने आकर) नमस्कार करके; अन्नै कूयळ्–माता ने बुलाया; कुरुकुतिर्–आइए (उधर); ऍन्ऱु–ऐसा; विळम्पिनाळ्–कहा। ८३६

तव एक दासी वहाँ आई। पिता को ढूँढ़कर उनके चरणकमलों पर अपने पवित्र करों से नमस्कार करने की धुन में रहनेवाले भरत से उसने कहा कि युवराज ! आपकी माताजी आपको बुला रही हैं। उधर आइए। ८३६

❀ वन्दु तायै यडियिल् वणङ्गलुम्, शिन्दै यारत् तळुविन डीदिलर्
ऍन्दै यॅन्नैय रॅङ्गैय रॅन्ऱतळ्, अन्द मिल्कुणत् तानुम दामॅन्ऱान् 837

वन्तु–आकर; तायै–माताजी को; अटियिल् वणङ्कलुम्–पैरों में दण्डवत करने पर; चिन्तै आर–जी भरकर; तळुविनळ्–(कैकेयी ने) गले लगा लिया; ऍन्तै–तात; ऍन् ऐयर्–मेरे बड़े भाई; ऍङ्कैयर्–मेरी छोटी बहनें; तीतु इलर्–सुखी हैं न; ऍन्ऱतळ्–पूछा; अन्तम् इल् कुणत्तानुम्–अपार सद्‌गुणी ने भी; अतु आम् ऍन्ऱान्–वह वैसा ही, कहा। ८३७

भरत आये। अपनी माता के चरणों पर नतमस्तक हुए। कैकेयी ने उन्हें उठाकर जी-जान से गले लगा लिया। पूछा कि मेरे पिता, मेरे भाई और मेरी बहनें अस्वस्थ तो नहीं हैं ? अनंत सद्‌गुणी भरत ने कहा कि हाँ, वे वैसे ही (स्वस्थ ही) हैं। ८३७

❀ मूण्डॅळु कादलान् मुळरित् ताडॉळ
वेण्डिनॅ नॅय्दिनॅ नुळ्ळम् विम्मुमाल्
आण्डहै नॅडुमुडि यरशर् कोमहन्
याण्डैयान् पणित्तिरॅन् ड्रिरुहै कूप्पिनान् 838

मूण्टु ऍळु कातलान्–(पिता को देखने की) उभर उठनेवाली इच्छा वाले; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; नॅटुमुटि–बड़े किरीटी; अरचर् कोमकन्–राजाधिराज; मुळरि ताळ्–चरणकमल पर; तॉळ वेण्टिनॅन्–नमस्कार करना चाहता हूँ; ऍय्तिनॅन्–(वही चाह लेकर) शीघ्र आया; उळ्ळम् विम्मुम्–मेरा मन आतुर है; याण्टैयान्–वे कहाँ हैं; पणित्तिर्–बताइए; अन्ऱु–कहकर; इरु कै कूप्पिनान्–दोनों हाथ जोड़े। ८३८

भरत अपने पिताजी से मिलने के लिए उतावले थे। उन्होंने माताजी से कहा कि पुरुषश्रेष्ठ, दीर्घ किरीटधारी चक्रवर्ती के चरण-कमलों की

पूजा करने की उत्कंठा लेकर आया हूँ और पूछा कि वे कहाँ हैं ? कहिए —यह प्रार्थना की ८३८

❀ आनव नुरैशंय वळिविल् शिन्दैयाळ्
ताऩवर् वलितीलैत् तवनि ताङ्गिय
तेऩमर् तॆरियलान् ऱेवर् कैदोळ
वानह मॆय्दिनान् वरुन्द नीयॆन्ऱाळ् 839

आनवन् उरै चॆय–उनके वह कहने पर; अळिवु इल् चिन्तैयाळ्–अचंचलमना; ताऩवर् वलि तॊलैत्तु–दानवों का बल मिटाकर; अवनि ताङ्किय–लोक की रक्षा जिन्होंने की; तेन्; अमर् तॆरियलान्–वे शहद-भरी (पुष्प-) मालाधारी; तेवर् कै तॊळ–देवों की अंजलि स्वीकार करते हुए; वान् अकम् ऍय्तिनान्–स्वर्ग सिधार गये; नी वरुन्तल्–तुम शोक मत करो; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८३९

भरत के यह पूछने पर, कैकेयी ने, जिसका मन किंचित भी विचलित नहीं हुआ, कहा कि दानवारि, लोकपालक, मधुसिक्त मालाधारी चक्रवर्ती तुम्हारे पिता देवों की अंजलि प्राप्त करते हुए स्वर्गलोक सिधारे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि तुम दुख मत करो। ८३९

❀ ऍरिन्दन कडियशोर् चॆविथि नॆय्दलुम्
नॆरिन्दलर् कुञ्जिया नॆडिदु वीळ्न्दनन्
अरिन्दिल नुयिर्त्तिल नशनि येऱ्ऱिनाल्
मरिन्दुयर् मरामर मण्णुऱ् ऱॆन्नवे 840

ऍरिन्त अन्न–मर्माहत करते से; कटिय चॊल्–कठोर (पीड़ादायक) वचन; चॆविथिन् ऍय्तलुम्–ज्योंही कानों में पहुँचा; नॆरिन्तु अलर् कुञ्चियान्–घुँघराले और बिखरे बाल वाले; उयर् मरामरम्–ऊँचा शालवृक्ष; अचनि एऱ्ऱिनाल्–अत्युग्र वज्र से; मरिन्तु मण् उऱ्ऱु–आहत होकर भूमि पर गिर गया हो; ऍन्न–ऐसा; नॆटितु वीळ्न्तनन्–चित गिर गये और; अरिन्तिलन्–बेसुध हो गये; उयिर्त्तिलन्–साँसें नहीं छोड़ीं। ८४०

मर्म पर आघात करते-से उन निष्ठुर वचनों को सुनकर घुँघराले-घने केश वाले भरत चित गिर गये, मानो एक ऊँचा साल वृक्ष गाज के कारण गिर गया हो और मूर्छित हो गये। ८४०

वायॊळि मळुङ्गत्तन् मलर्न्द तामरै, आयलर् नयनङ्ग ळरुवि शोर्दरत्
तीयॆरि शॆवियिल्वैत् तनैय तीयशोल्, नीयल दुरैशॆय निनैप्प रोवॆन्ऱान् 841

वाय् ऒळि मळुङ्क–देहकांति मन्द हो गयी; मलर्न्त–विकसित; तामरै आय् अलर्–कमल के सुरम्य फूल-सम; तन् नयनङ्कळ्–अपनी आँखों के; अरुवि चोर् तर–सरिता-सम आँसूधार बहाते; ती ऍरि–जलानेवाली आग को; चॆवियिल् वैत्ततु अनैय–कानों में रखा हो, ऐसा; तीय चॊल्–दुखदायी वचन; नी अलतु–आपको छोड़; उरै चॆय निनैप्परो–दूसरा कोई कहना सोचेगा क्या; ऍन्ऱान्–कहा। ८४१

उनकी देह की कान्ति मन्द पड़ गयी। सुविकसित कमल-सम नयन अश्रु-सरिता बहाने लगे। उन्होंने माता से कहा कि जलानेवाली आग को कान में रखा हो, ऐसा निर्मम वचन आपको छोड़ कोई दूसरा कहना सोचेगा क्या ? । ८४१

ऍऴुन्दऩ नेङ्गिऩ तिरङ्गिप् पिऩ्ऩरुम्
विऴुन्दऩऩ् विम्मिऩऩ् वॅय्दु यिर्त्तऩऩ्
अऴिन्दऩ ऩरऱ्ऱिऩ ऩरऱ्ऱि यिऩ्ऩऩ
मॊऴिन्दऩऩ् पिऩ्ऩरु मुरुहऩ् चॅव्वियाऩ् 842

मुरुकऩ् चॅव्वियाऩ्–"मुरुहन्" (कार्तिकेय) के समान सुन्दर; ऍऴुन्तऩऩ्–(भरतजी) उठे; एङ्किऩऩ् इरङ्कि–दुखी हो रोते हुए; पिऩ्ऩरुम् विऴुन्तिऩऩ्–फिर भी गिरे; विम्मिऩऩ्–सिसकियाँ भरीं; वॅय्तु उयिर्त्तऩऩ्–उत्तप्त साँसें छोड़ीं; अऴिन्तऩऩ् अरऱ्ऱिऩऩ्–धैर्य खोकर प्रलाप किया; अरऱ्ऱि–विलाप करते हुए; पिऩ्ऩरुम् इऩ्ऩऩ मॊऴिन्तऩऩ्–फिर से ये बातें बोले। ८४२

मुरुगन (कार्तिकदेव, जो तमिळनाड में मुरुहन या मुरुगन कहे जाते हैं और जो सौन्दर्य के साक्षात मूर्तिमान-स्वरूप हैं) के समान सौन्दर्यवान भरत फिर से उठे। पिता के स्मरण से दुखी हुए। रोये। फिर गिरे। सिसकियाँ भरीं, गरम साँसें निकालीं। वे मन मारकर विलाप करने लगे। विलाप करते-करते यों कहने लगे। ८४२

अऱन्दऩै वेररुत् दरुळैक् कॊऩ्ऱऩै, शिऱन्दनिऩ् ऱण्णळित् तिरुवैत् तेशऴित्
तिऱन्दऩै यामॅऩि ऩिऱैव नीदियै, मऱन्दऩै युनक्कदिन् माशु मेलुण्डो 843

इऱैव–राजा; अऱम् तऩै वेर् अऱुत्तु–धर्म को जड़ से काटकर; अरुळै कॊऩ्ऱऩै–कृपा को मिटाकर; चिऱन्त निऩ् तण् अळि–श्रेष्ठ अपनी दया रूपी; तिरुवै–धन को; तेचु अऴित्तु–तेज-हीन करके; इऱन्तऩै ऍऩिऩ्–मर गये तो; नीतियै मऱन्तऩै आम्–अपनी राजनीति भूल गये, यही अर्थ होगा; उऩक्कु इतिऩ् मेल् माचु उण्टो–आपका इससे बढ़कर कोई कलंक हो सकता है क्या। ८४३

महाराजा ! यह आपने क्या किया ? धर्म को जड़ से काट दिया; कृपा नष्ट कर दी; और आपके पास दया की अक्षयनिधि थी, उसको निष्प्रभ बनाकर आप चल बसे तो इसका अर्थ यही न हुआ कि आपने राजधर्म भुला दिया। इससे बढ़कर आपको कलंक क्या लग सकता है ? । ८४३

शिऩक्कुरुम् बॅरिन्दॅऴु कामत् तीयवित्
तिऩक्कुरुम् बियावैयु मॅऱ्ऱि यावर्क्कुम्
मऩक्कुरु वॅऱिशॅलुम् वळ्ळि योय्मऱन्
दुऩक्कुरु वॅऱिशॅल लॊऴुक्किऩ् पालदो 844

चितम् कुऱ्ऱप्पु अॆऱिन्तु–क्रोध रूपी शत्रु को मिटाकर; कामम् ती अवित्तु–काम रूपी आग को बुझाकर; इनम् कुऱ्ऱप्पु यावैयुम् अॆऱ्ऱि–उस वर्ग के सभी (अन्त-) शत्रुओं को जीतकर; यावर्क्कुम् मनक्कु उरु–किसी के लिए भी मन को अच्छा लगनेवाले; नॆऱि चॆल्लुम्–मार्गगामी; वळ्ळियोय्–दानी स्वभाव वाले; मऱन्तु–उसको भूलकर; उनक्कु उरु–(केवल) आपको भला लगनेवाले मार्ग पर जाना; ऒऴुक्किन् पालतो–शील है क्या। ८४४

हे वदान्य महाराज ! क्रोध का शत्रु मिटाया; कामाग्नि को बुझाया। उस वर्ग के (लोभादि) अन्य दुर्गुण रूपी शत्रुओं को आहत करके आप लोकोपकारी सद्मार्ग पर चलते रहे। ऐसे स्वभाव को भूलकर अब अपनी इच्छा के मार्ग पर चले। ऐसा चलना शील है क्या ? । ८४४

मुदलवन् मुदलिय मुन्दै योर्पऴङ्, गदैयैयुम् बुदुक्किय तलैव कण्णुडै
नुदलवन् शिलैविलि नोन्मै नूऱिय, पुदल्वनै यॆङ्ङनम् बिरिन्दु पोयिनाय् 845

मुतल्वन् मुतलिय–(हमारे कुल के) आदि पुरुष (मनु) आदि; मुन्तैयोर्–पूर्वजों के; पऴम् कतैयैयुम्–प्राचीन वृत्तान्तों को भी; पुतुक्किय–अपने (साहसपूर्ण और धर्म-सम्मत) कार्यों से नवीन (रूप से उज्ज्वल) करनेवाले; तलैव–नायक; कण् उटै नुतलवन्–भालनेत्र शिवजी के; चिलै विल्लिन्–पर्वत-धनु का; नोन्मै–बल; नूऱिय–मिटानेवाले; पुतल्वनै–प्यारे पुत्र को; ऎङ्ङनम् पिरिन्तु पोनाय्–कैसे छोड़कर गये। ८४५

हमारे कुल के आदि पुरुष मनु से लेकर हमारे पूर्वजों का वृत्तान्त अविश्वसनीय रीति से उज्ज्वल था। उसको आपने अपने चरित्र से विश्वसनीय ही नहीं बनाया वरन उसको उजाला किया। हे श्रेष्ठ नायक ! भालनेत्र शिवजी के धनुष के भंजक श्रीराम को छोड़कर आप कैसे जा सके ? । ८४५

शॆव्वऴि युरुट्टिय तिहिरि मन्नव, ऎव्वऴि मरुङ्गिनु मिरव लाळर्तम्
इव्वऴि युलहिनि लिनिय नण्बिनोर्, अव्वऴि युलहिनु मुळर्हो लोवैया 846

चॆम्मै वऴि उरुट्टिय–न्याय-मार्ग पर परिचालित; तिकिरि–आज्ञाचक्र वाले; मन्नव–राजा; ऐया–मेरे तात; इ वऴि उलकिनिल्–इस लोक में; इनिय नण्पिनोर्–आपके बहुत प्यारे थे; ऎ वऴि मरुङ्कितुम्–सर्वत्र रहनेवाले; इरवल् आळर् ताम्–याचक ही; अ वऴि मरुङ्कितुम्–उस लोक में भी; उळरो–हैं क्या। ८४६

न्यायसम्मत सीधे मार्ग पर आज्ञा चलानेवाले चक्रवर्ती ! हे मेरे तात ! इस लोक में आपके प्यारे थे सभी ओर से आनेवाले याचक ! क्या उस लोक में भी याचक हैं कि उनके पास जा पहुँचे ? । ८४६

❀ पऱ्पह	निऴऱ्ऱुनिन्	कविहैप्	पाय्निऴल्
निऱ्पन	पल्लुयि	रुणङ्ग	नीनॆडुङ्

गऱ्पह नऱुनिऴल् काद लित्तियो
मऱ्पह मलर्न्दतोण् मन्नर् मन्नने 847

मल् पक–(शत्रुओं के) मल्लयुद्ध-वीरता को निष्फल बनाते हुए; मलर्न्त तोळ्–उन्नत हुए कन्धों वाले; मन्नर् मन्नने–राजाधिराज; पल् पकल्–अनेक दिन; निऴऱ्ऱुम्–(जीवों को शरण की) छाया देनेवाले; निन् कविकै–आपके विजयी छत्र की; पाय् निऴल्–विशाल छाया में; निऱ्पन पल् उयिर्–रहनेवाले अनेक जीवों को; उणङ्क–कष्ट देते हुए; नी–आप; नॅट्टु कऱ्पकम् नऱु निऴल्–बड़े कल्पवृक्ष की सुगन्धयुक्त छाया को; कातलित्तियो–चाहते हैं क्या। ८४७

मल्लयुद्ध में अन्य मल्लों की वीरता को तुड़ानेवाले उन्नत कंधों से शोभायमान राजाधिराज ! अनेक काल से आपकी छत्र-छाया में जीव सुखी रहे। उन अनेक जीवों को दुख में डालकर आप बड़े कल्पवृक्ष की छाया चाहने लग गये क्या ? । ८४७

❀ इम्बर्नित् ऱेहितै यिरुक्कुज् जार्बिऴन्
दुम्बर्वन् दुन्गळ लॊदुङ्गि नार्हळो
शम्बर नतैयवर् तानैत् तानवर्
अम्बरत् तिन्नमु मुळर्हॊ लोवैया 848

ऐया–तात; इम्पर् निन्ऱु एकितै–इस लोक से चले गये; उम्पर्–देव; इरुक्कुम् चार्पु इऴन्तु–अपना वासस्थान खोकर; वन्तु–इधर आकर; उन् कऴल् ऑतुङ्किनार्कळो–आपकी शरण में छिपे क्या; चम्परन् अतैयवर्–शम्बर आदि; तानै तानवर्–सेना वाले दानव; अम्परत्तु–आकाशलोक में; इन्नमुम् उळर् कॊल्–अब भी हैं क्या। ८४८

आप क्यों भूमि छोड़कर स्वर्ग सिधारे ? क्या देवों ने अपना वासस्थान खोकर, आपकी शरण में आकर रक्षा माँगी थी ? क्या अब भी विशाल सेना सहित शंबरादि असुर वहाँ रहते हैं ? । ८४८

इयङ्गॊळु तानैय रिरुत्त मात्तिऱै, उयङ्गलिन् मऱैयवर्क् कुदवि युम्बरिन्
अयङ्गॊळु वेळ्वियो डरशर्क् कोदिय, वयङ्गॊरि वळर्क्कलै वैह वल्लैयो 849

इयम् कॊळु तानैयर्–बाजों की ध्वनि से पूर्ण सेना वाले; इऱुत्त–आपको जो दिया; मा तिऱै–उस कर की निधियाँ; उयङ्कल् इन्–(तप का) क्लेश सहनेवाले प्यारे; मऱैयवर्क्कु उतवि–वेदज्ञों को दे-देकर; अयम् कॊळु वेळ्वियोटु–अश्वमेध यज्ञ के साथ; अरचर्क्कु ओतिय–राजाओं के लिए निर्दिष्ट; वयङ्कु ऍरि–मंगलमय होमाग्नि का; वळर्क्कलै–पालन किये बिना; उम्परिन् वैकवल्लैयो–आकाश में रह सकोगे क्या। ८४९

मारू बाजे सहित बड़ी-बड़ी सेनाओं के स्वामी राजा आपको कर देते थे। उनको लेकर आप व्रतादि से म्लान, अपने प्यारे भूसुरों को दान में दे देते थे। और अश्वमेध यज्ञ के साथ अनेक होम-कर्म संपन्न करके अग्नि

पालते थे। यह सब कार्य छोड़कर वहाँ जाकर रहने का आपको मन हुआ कैसा ? क्या आप वहाँ सुखी रह सकेंगे ? । ८४९

एऴुयर्	मदहळिऱ्	ऱिऱैव	वेहित्तै
वाऴिय	करियवन्	वऱियत्	कैयॆंत्तप्
पाऴियम्	बुयत्तुनित्	पणियि	नीङ्गिला
आऴियै	यित्तियवऱ्	कळिक्क	वॆण्णियो 850

एऴु उयर्–सात हाथ ऊँचे; मतम् कळिऱु–मत्तगज; इऱैव–(जिनके पास हैं वे) राजा; करियवत्–श्यामल; वाऴिय–राजा बनकर जिएँ; कै वऱियत्–(इसके लिए आवश्यक अधिकार-चक्र से) रहित हस्त वाले हैं; ऍत्त–सोचकर; पाऴि अम् पुयत्तु–बलवान सुन्दर भुजा वाले; नित्त पणियित् नीङ्कु इल्ला–आपकी सेवा में अटल रहनेवाले; आऴियै–चक्र को; इत्तियवर्कु–प्यारे के पास; अळिक्क ऍण्णियो–देने के विचार से क्या; एकित्तै–चले। ८५०

सात-सात हाथ ऊँचे राज-गजों के स्वामी ! क्या आपको यह चिन्ता हो गई कि श्यामलदेव श्रीराम राजा बनेंगे तो उनके पास चक्र (आज्ञा का अधिकार) नहीं रहेगा ? और आपने अपना चक्र, जो सदा आपके सुदृढ़ हाथों में रहा और आपकी सेवा में निरन्तर रहा, उनको देने के विचार से यह भूमि छोड़ी और स्वर्ग प्रस्थान किया ? । ८५०

पऱ्ऱिय	तवत्तित्तिऱ्	पयन्द	मैन्दऱ्कु
मुऱ्ऱुल	हळित्ततु	मुऱैयि	नॅय्दिय
कॊऱ्ऱवन्	मुडिमणक्	कोलङ्	गाणवुम्
पॆऱ्ऱिलै	पोलुनित्	पॆरिय	कण्गळाल् 851

पऱ्ऱिय तवत्तित्तिल्–स्वीकृत तपस्या के फलस्वरूप; पयन्त मैन्तऱ्कु–उत्पन्न पुत्र को; मुऱ्ऱु उलकु अळित्तु–सारा लोक देकर; अतु–उस लोक (शासन) को; मुऱैयित् ऍय्तिय–उचित क्रम से प्राप्त; कॊऱ्ऱवत्–विजयशील राजा राम के; मुटि मणम् कोलम्–किरीट-सह राजसी ठाठ को; नित्त पॆरिय कण्कळाल्–अपनी विशाल आँखों से; काणवुम् पॆऱ्ऱिलै–देख नहीं पाये। ८५१

बड़ी तपस्या करके आपने श्रीराम को पुत्र के रूप में प्राप्त किया। उनको राज्य देकर राजा राम के किरीट-सह राजसी ठाठ को अपने विशाल नयनों से देखने का भी भाग्य आपका नहीं रहा ! । ८५१

❀ आऱ्ऱल	नित्तत्त	पत्ति	यावलित्
तूऱ्ऱुऱु	कण्णित्त	तुरुह	वात्ऱतैत्
तेऱ्ऱित्त	ळत्तैदात्	शिऱिदु	तेऱिय
कूऱ्ऱुऱळ्	वरिशिलैक्	कुरिशिल्	कूऱुवात् 852

आऱ्ऱलन्–दुख न सह सके; इन्नन पन्नि—ऐसी-ऐसी बातें कहकर; आवलित्तु–रोकर; ऊऱ्ऱु उरु कण्णिनन्–अश्रुजल का स्रोत जो बनी थीं, उन आँखों के साथ; उरुकुवान् तन्नै–द्रवित होनेवाले (पुत्र) को; अन्नै तेऱ्ऱिनळ्–माता ने धीरज दिया; चिऱितु तेऱिय–थोड़ा स्वस्थ होकर; कूऱ्ऱु उऱऴ्—यम-सम; वरि चिलै कुरिचिल्–बन्धन-युक्त धनुष के रखनेवाले राजकुमार; कूऱुवान् बोलने लगे। ८५२

भरत दुख सह ही नहीं सके। ऐसी-ऐसी बातें कहकर विलाप किया। खूब रोये। सरिता-सी अश्रुधारा बहनेवाली आँखों के साथ वे द्रवीभूत हो रहे थे। तब उनकी माँ ने उनको धीरज बँधाया। कुछ धैर्य अवलम्बन कर, यमसम धनु के धारी भरत यों बोले। ८५२

❀ ऍन्दैयु यायुमॅम् बिरानु मॅम्मुनुम्
अन्दमिल् पॅरुङ्गुणत् तिराम नादलाल्
वन्दनै यवन्गळल् वैत्त पोदलाल्
शिन्दैवॅङ् गॉडुन्दुयर् तीर्ह लादॅन्ऱान् 853

ऍन्तैयुम्–मेरे पिता; यायुम्–मेरी माता; ऍम्पिरानुम्–मेरे आराध्य देव; ऍम् मुनुम्–मेरे अग्रज भाई; अन्तम् इल्–अनन्त; पॅरुम् कुणत्तु–श्रेष्ठ गुणों वाले; इरामन्–श्रीराम हैं; आतलाल्–इसलिए; अवन् कळल्–उनके चरणों पर; वन्तनै वैत्तपोतु अल्लाल्–वन्दना समर्पित किये वगैर; चिन्तै–चित्त का; वॅम् कॉटुम् तुयर्–तापक कठोर दुख; तीर्कलातु–दूर नहीं होगा; ऍन्ऱान्–कहा। ८५३

माँ! मेरे लिए पिता, माता, भगवान, ज्येष्ठ भ्राता सभी अनन्त श्रेष्ठ गुण वाले श्रीराम ही हैं। उनके चरणों पर अपनी पूजा समर्पित किये वगैर मेरे मन का यह तापक कठोर दुख दूर नहीं होगा। चैन नहीं पड़ेगा। ८५३

❀ अव्वुरै केट्टलु मशनि येऱॅन, वॅव्वुरै वल्लवण् मीट्टुङ् गूऱुवाळ्
तॅव्वडु शिलैयिनाय् तेवि तम्बियॅन्, ऱिव्विरु वोरॉडुङ् गानत् तानॅन्ऱाळ् 854

अ उरै केट्टलुम्–वह वचन सुनने पर; अचनि एऱु अन्न–कठोरतम अशनि के समान; वॅव् उरै वल्लवळ्–निर्मम वचन कहने में समर्थ; मीट्टुम् कूऱुवाळ्–(कैकेयी ने) फिर कहा; तॅव् अटु चिलैयिनोय्–शत्रुघाती धनुर्धर; तेवि तम्पि–अपनी पत्नी और भाई; ऍन्ऱु इव् इरुवरोटुम्–इन दोनों के साथ; कानत्तान्–वनवासी हैं; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८५४

कैकेयी ने यह कथन सुना। कठोर से कठोर वज्र के समान वचन कहने से हिचकनेवाली वे तो थीं नहीं। उसमें समर्थ उन्होंने कहा कि शत्रुजयी धनुर्धर! मेरे पुत्र! अब श्रीराम अपनी देवी और अपने छोटे भाई के साथ वनस्थ हैं। ८५४

❀ वनत्तिन नॅन्ऱव ळिशैत्त माऱ्ऱत्तै
निनैत्तन निरुन्दन नॅरुप्पुण डानॅन

विनैत्तिड़ मियादिनि विळैप्प दिन्नमुम्
अँनैत्तळ केट्पन तुन्बम् यानॅन्ड्रान् 855

वनत्तितन्–वनवासी; अँन्ड्र–ऐसा; अवळ् इचैत्त माड्रत्तै–उनके कहे वचन को; नितैत्तुत्तन्–सोचते हुए; नॅरुप्पु उण्टान् अँन–अग्नि खा गये हों, ऐसा; इरुन्ततन्–(सन्न) रह गये; वितै तिरम्–मेरे कुकर्म का परिपाक; इनि विळैप्पतु यातु–आगे भी देगा क्या; इन्नमुम् यान् केट्पन तुन्पम्–आगे भी मेरे सुनने में आनेवाले दुख; अँत्तैतु उळ–कितने होंगे; अँन्ड्रान्–कहा। ८५५

हूँ ! वनस्थ ! भरत को वह अकस्मात समझ में ही नहीं आता था। बार-बार उसको सोचने लगे। सोचते-सोचते वे अग्नि खा गए हों, ऐसी स्थिति में पड़ गये। कुछ देर बाद उद्गार निकाली कि हाय ! मेरे कर्म का परिपाक अब भी क्या लानेवाला है ? आगे भी जो सुनना पड़ेगा वे कठोर दुख अब भी कितने होंगे ? । ८५५

❀ एङ्गित्त विम्मलो डिरुन्द वेन्दलप्, पूङ्गळॅड् कालवन् वनत्तुप् पोयदु
तीङ्गिळैत् तदनिनो दॅय्वञ् जीड्रियो, ओङ्गिय विदियिनो यादि नोवॅना 856

एङ्कितन्–बहुत उद्विग्न होकर; विम्मलोटु इरुन्त एन्तल्–सिसकी भरते जो रहे, वे राजकुमार; अ कळ्ल् पू कालवन्–वे वीरपायल-धारी कमलचरण; वनत्तु पोयतु–जंगल में गये, सो; तीङ्कु इळैत्ततनितो–क्या कोई अपराध करके; तॅय्वम् चीड्रियो–दैव के कोप से; ओङ्किय वितियितो–प्रबल विधि का काम था; यातितो–किससे; अँता–ऐसा पूछकर। ८५६

बहुत ही व्याकुलता से अभिभूत वे राजकुमार कुछ देर सिसकते रहे। फिर पूछा कि माँ ! वीर-पायलधारी कमल-चरण श्रीराम जंगल जो गये, क्या वह इसलिए कि उन्होंने कोई बुराई की ? या देवता का कोप उन पर हुआ ? क्या बल में बढ़ी विधि का करतूत था ? किससे उनको जाना पड़ा ? । ८५६

❀ तीयन विरामने शॅय्यु मेलवै, तायॅय लल्लवो तलत्तु ळोर्क्कॅलाम्
पोयदु तादॅविण् पुक्क पिन्नरो, आयदन् मुन्नरो वरुळु वीरॅन्ड्रान् 857

तीयत इरामते चॅय्युमेल्–बुरे काम श्रीराम करेंगे; अवै–वे काम; तलत्तु उळ्ळोर्क्कु अँल्लाम्–सब भूलोकवासियों के लिए; ताय् चॅयल् अल्लवो–माता द्वारा कृत (उपकारी) काम ही न रहेंगे; पोयतु–जाना; तातै विण् पुक्क पिन्नरो–पिता के स्वर्ग-गमन के पश्चात क्या; आय अतन् मुन्नरो–सम्पन्न हुए उसके पहले; अरुळुवीर्–कहिए; अँन्ड्रान्–बोले (पूछा)। ८५७

माँ ! मानो कि श्रीराम कोई (लोगों की समझ में) बुरा काम करते हैं। तो वह काम देशवासियों के लिए माता द्वारा कृत (हित-) कार्य के ही समान न होगा क्या ? (माता अपनी सन्तानों के प्रति अहित कर ही

नहीं सकती ! सन्तानों का यह विश्वास रहता है।) छोड़ो उसे। उनका वनगमन पिता के स्वर्गवास के पश्चात हुआ या उसके पूर्व ही ? कृपा करके यह बताइए —भरत ने यह प्रश्न किया। ८५७

❀ कुरुक्कळै यिहऴ्दलि तऩ्ऱु कुऩ्ऱिय
शॆरुक्किऩा लऩ्ऱॊरु दॆय्वत् तालुमऩ्
ऱरुक्कऩै यऩैयनम् मरशर् कोमहऩ्
इरुक्कवे वनत्तव ऩॆऩ्ऱाऴ् 858

कुरुक्कळै इकऴ्तलिऩ् अऩ्ऱु–गुरुओं की निन्दा करने से नहीं; कुऩ्ऱिय चॆरुक्किऩाल् अऩ्ऱु–निन्द्य अहंभाव से नहीं; ऒरु तॆय्वत्तालुम् अऩ्ऱु–किसी देवता (के कोप) से भी नहीं; अरुक्कऩै अऩैय–सूर्य ही सम; नम् अरचर् कोमकऩ्–हमारे चक्रवर्ती के; इरुक्कवे–रहते समय ही; अवऩ् वऩत्तु एकिऩाऩ्–वह वन चला; ऎऩ्ऱाऴ्–(ऐसा कैकेयी ने) कहा। ८५८

कैकेयी ने उत्तर में कहा कि ऐसी कोई बात नहीं हुई। राम ने गुरुओं की निन्दा नहीं की। न निन्द्य अहंभाव के कारण उसे वन जाना पड़ा। किसी देवता का कोप ही उस पर नहीं था। सूर्यसम (हमारे) चक्रवर्ती के जीवित रहते समय ही वह जंगल गया। ८५८

❀ कुऱ्ऱमॊऩ् ऱिल्लैयेल् कॊदित्तु वेऱुळोर्
शॆऱ्ऱदु मिल्लयेल् ऱॆय्वत् तालऩ्ऱेल्
पॆऱ्ऱव ऩिरुक्कवे पिळ्ळै काऩ्पुह
उऱ्ऱदॆऩ् ऱॆरिदर वुरैशॆय् वीरॆऩ्ऱाऩ् 859

कुऱ्ऱम् ऒऩ्ऱु इल्लैयेल्–अपराध कुछ नहीं रहा तो; वेऱु उळ्ळोर्–अन्य शत्रुओं ने; कॊतित्तु–कोप करके; चॆऱ्ऱतुम् इल्लैयेल्–हराकर नहीं भगाया तो; तॆय्वत्ताल् अऩ्ऱेल्–दैवी कोप से नहीं तो; पॆऱ्ऱवऩ् इरुक्कवे–जनक के रहते समय; पिळ्ळै काऩ् पुक उऱ्ऱतु–पुत्र को जंगल जाना पड़ा; ऎऩ्–क्यों; तॆरितर–समझाते हुए; उरै चॆय्वीर्–बतलाइए; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (पूछा भरत ने)। ८५९

भरत को दुख के साथ विस्मय भी हो गया। राजा राम ने कोई अपराध नहीं किया; न किसी शत्रु ने उन्हें हराकर निर्वासित कराया। किसी देवता का भी कोप उन पर नहीं हुआ। फिर भी पिताजी के जीवित रहते पुत्र को जंगल जाना पड़ गया! यह क्यों ? समझाकर कहें। ८५९

❀ वाक्किऩाल् वरन्दरक् कॊण्डु मैन्दऩैप्
पोक्किऩॆऩ् वनत्तिडैप् पोक्किप् पारुऩक्

काक्कित्त नन्नदु पौरुक्क लामैयाल्
नीक्कित्तान् उन्नुयिर् नेमि वेन्दॆन्ऱाळ् 860

वाक्कित्ताल्–अपने ही मुख से; वरम तर–(दशरथ के) वर देने पर; कौण्टु–उनको पाकर; मैन्तत्तै–पुत्र (राम) को; वत्ततु इटै पोक्कित्तेन्–वन में भिजवाया; पोक्कि–पठवाकर; पार् उन्तक्कु आक्किॆत्तेन्–भूमि तुम्हारी बनाई; अन्नतु पौरुक्क अल्लामैयाल्–उसको न सह सके, इसलिए; नेमिवेन्तु–चक्रवर्ती ने; तत् उयिर् नीक्कित्तान्–अपना प्राण छोड़ दिया; ॲन्ऱाळ्–(कैकेयी ने) कहा। ८६०

कैकेयी ने पूरी बात कही। देखो भरत! चक्रवर्ती ने अपनी ही ओर से मुझे दो वर दिये। मैंने उनको स्वीकारा। एक से श्रीराम को वन पठवाया। पठवाकर दूसरे वर से यह भूमि तुम्हारी बनाई। यह बात तुम्हारे पिता सह नहीं सके और उन्होंने अपने प्राणों का त्याग कर दिया! । ८६०

❀ शूडित्त मलर्क्करञ् जौल्लिन् मुन्शॆवि
कूडित्त पुरुवङ्गळ् कुनित्तुक् कूत्तुनिन्
ऱाडित्त वुयिर्प्पित्तो डळर्कॊ ळुन्दुहळ्
ओड़ित्त वुमिऴ्न्दत्त वुदिरङ् गण्गळे 861

चूटित्त मलर् करम्–सिर पर जोड़कर रखे हुए हस्तकमल; चौल्लिन् मुन्–(कैकेयी के) यह वचन कहते ही; चॆवि कूटित्त–कानों पर आ गये; पुरुवङ्कळ् कुनित्तु निन्ऱु–भौंहें झुकीं, (भाल पर) चढ़कर; कूत्तु आटित्त–कम्पित हुईं; उयिर्प्पित्तोटु–निःश्वास के साथ; अळल् कॊळुन्तुकळ्–अग्नि की ज्वालाएँ; ओटित्त–प्रकट हुईं; कण्कळ्–आँखों ने; उतिरम् उमिऴ्न्तत्त–रक्त उगला। ८६१

भरत ने अपने हाथ श्रीराम के स्मरण में अपने सिर पर अंजलि की मुद्रा में धरे थे। यह कैकेयी का वचन उनके मुख से ज्योंही निकला त्योंही वे हाथ उनके कानों पर आ गये। भौंहें कुंचित होकर भाल पर चढ़ीं और नाचती-सी काँपने लगीं। निःश्वास के साथ अग्निज्वालाएँ निकलीं। आँखों से रक्त बहा। ८६१

तुडित्तत्त कपोलङ्गळ् शुऱ्ऱुन् दीच्चुडर्
पॊडित्तत्त मयिर्त्तॊळै पुहैयुम् बोर्त्तदु
मडित्तदु वाय्नॆडुन् दडक्कै मण्बह
अडित्तत्त वॊन्ऱॊडॊन् ऱशनि यञ्जवे 862

कपोलङ्कळ् तुटित्तत्त–गाल कम्पित हुए; मयिर् तॊळै–रोमकूपों से; चुऱ्ऱुम् ती चुटर् पॊटित्तत्त–चारों ओर अग्निकण बिखरे; पुकैयुम् पोर्त्ततु–धुआँ भी ढाँपने लगा; वाय् मटित्ततु–ओंठ दबे; नॆटु तट कै–दीर्घ विशाल हस्त; मण् पक–भूमि को फाड़ते हुए; अचति एऱु अञ्च–अशनि को भयभीत करते हुए; ऒन्ऱॊटु ऒन्ऱु अटित्तत्त–परस्पर पीट उठे। ८६२

कपोल फड़के; रोमकूपों से चारों ओर अंगारे छूटे। धुआँ ढाँप गया। ओंठ दबाये गये। विशाल और लम्बे हाथ परस्पर बज उठे और उससे जो नाद हुआ, उससे धरती फूटी और उसके सामने अशनि ही डर गई। ८६२

पादङ्गळ् पॅयर्दॉरुम् पारु मेरुवुम्
पोदङ्गॉ णॅडुन्दनिप् पॉरुविल् कूम्बॉडु
मादङ्गम् वरुहल मरुहिक् काल्पॉर
ओदङ्गॉळ् कडलिनिऩ् रुलैव पोऩ्ऱवे 863

पातङ्कळ् पॅयर् तॉरुम्–पग बारी-बारी से नीचे धरते समय; पारुम्–भूमि और; मेरु–मेरु पर्वत; पोतम् कॉळ्–(पोत के) आगमन के सूचक; नॅटु तऩि–उन्नत, अकेले; पॉरु इल्–अनुपम; कूम्पॉटुम्–मस्तूल के साथ; मातङ्कम् वरु कलम्–मातंग ले आनेवाला पोत; काल् मरुकि पॉर–झंझावात के आघात से; ओतम् कॉळ् कटलिल् निऩ्ऱु–उत्तुंग तरंगाकुल समुद्रमध्य रहकर; उलैवतु पोऩ्ऱ–जैसे डगमगा रहे हों, वैसे रह गये। ८६३

भरत कोप के कारण जब डग भरते थे तब पदाघात से भूमि और मेरु उस पोत के समान डगमगाये, जो अपने आगमन-सूचक उच्च मस्तूल के साथ मातंग ढोता आया और झंझावात के प्रहार से उत्तुंग तरंगों वाले सागर-मध्य डगमगाया। ८६३

अञ्जिनर् वानव रवुण रच्चत्ताल्
तुञ्जिन रॅनैप्पलर् शॉरिम दत्तॉळै
ॲञ्जिन दिशैक्करि यिरवि मीण्डनन्
वॅञ्जिनक् कूऱ्ऱुन्दन् विऴिबु दैत्तते 864

वानवर्–देवता लोग; अवुणर्–दानव; अञ्चिनर्–भयभीत हुए; अच्चत्ताल्–भय से; तुञ्चिनर्–मरे; ॲनै पलर्–कितने ही अनेक; तिचै करि–दिग्गजों के; मतम् चॉरि तॉळै–मदस्रावी छिद्र; ॲञ्चिन–(मदजल से) रिक्त हो गये; इरवि मीण्टनन्–रवि दिशा बदल गया; वॅम् चिऩम् कूऱ्ऱुम्–निर्मम क्रोधी यम ने भी; तन् विऴि पुतैत्ततु–अपनी आँखें मूँद लीं। ८६४

भरत का रोष देखकर देव और दानव सब भयभीत हुए। कितने ही लोग भय से मृत हो गये। दिग्गजों के मद-छिद्रों से मद का बहना बन्द हो गया। सूर्य ने अपनी गति बदल ली। बड़ा भयंकर क्रोधी यम ने भी अपनी आँखें मूँद लीं। ८६४

❀ कॉडियवॅङ् गोबत्ताऱ् कॉदित्त कोळरि
कडियव डायॅऩक् करुदु हिऩ्ऱिलन्

नॆडियवऩ् मुऩियुमॆऩ् ऱञ्जि निऩ्ऱऩऩ्
इडियुरु मऩैयवॆम् मॊऴिवि ळम्बुवाऩ् 865

कॊटिय वॆम् कोपत्ताल्–अत्यधिक भयंकर क्रोध से; कॊतित्त–उत्तप्त; कोळ् अरि–पुरुषसिंह; कटियवळ्–निर्मम उनको; ताय् ॲऩ–माता; करुतुकिऩ्ऱिलऩ्–नहीं समझते; नॆटियवऩ् मुऩियुम्–श्रीराम रिस करेंगे; ॲऩ्ऱु अञ्चि–ऐसा डरकर; निऩ्ऱऩऩ्–(बिना मारे) चुप रहे; इटि उरुम् अऩैय–कठोर वज्र के समान; वॆम्मॊऴि–तापक वचन; विळम्पुवाऩ्–कहने लगे। ८६५

अति भयंकर क्रोध के कारण तप्तमन पुरुषसिंह भरत कैकेयी को माँ का आदर देने को तैयार नहीं थे। उन्हें मारना ही चाहते थे। पर पुरुष-श्रेष्ठ श्रीराम रुष्ट होंगे—इस डर से चुप रह गये। पर वज्रघोष के समान उच्च स्वर में वे यों बोले। ८६५

❀ माण्डऩ ऍन्दयॆऩ् ऱम्मुऩ् मादवम्
पूण्डऩ निऩ्कॊडुम् पुणर्प्पिऩ् ऱालॆऩ्ऱाल्
कॊण्डिलॆऩ् वायिडु केट्टु निऩ्ऱयाऩ्
आण्डऩ् ऩेयऩ्ऱो वरशै याशैयाल् 866

निऩ् कॊटुम् पुणर्प्पिताल्–तुम्हारी कठोर प्रवंचना से; ॲऩ्तै माण्टऩऩ्–मेरे पिता चल बसे; ॲऩ् तम् मुऩ्–मेरे अग्रज ने; मा तवम् पूण्टऩऩ्–घोर तप अपना लिया; ॲऩ्ऱाल्–तो; इतु केट्टुम्–यह सुनकर भी; वाय् कीण्टिलॆऩ्–तुम्हारा मुख बिना चीरे; निऩ्ऱ याऩ्–जो खड़ा रहा वह मैं; अरचै आचैयाल् आण्टऩऩ् अऩ्ऱो–राज्य को चाह से पालन करनेवाला बन ही गया न। ८६६

तुम्हारे क्रूर षड्यन्त्र से मेरे पिताजी स्वर्गवासी हो गये। मेरे ज्येष्ठ भ्राता तपस्वी हो गये। यह सुनकर मैंने तुम्हारा मुख न चिराया। तो मैं राज्य को चाह के साथ पालनेवाला बन ही गया न ? । ८६६

नीयिऩ् ऩिरुन्दऩै याऩु निऩ्ऱऩॆऩ्, एयॆऩु मात्तिरत् तॆऱ्ऱु हिऱ्ऱिलॆऩ्
आयवऩ् मुऩियुमॆऩ् ऱञ्जि ऩेऩलाल्, तायॆऩुम् पॆयरॆऩैत् तडुक्कऱ् पालदो 867

नी इऩ्ऩम् इरुन्तऩै–तुम अभी (बिना मरे) रहीं; याऩुम्–मैं भी; ए ॲऩुम् मात्तिरत्तु–‘ए’ कहने की देर (क्षण मात्र) में; ॲऱ्ऱुकिऱ्ऱिलॆऩ्–प्रहार किये बिना; निऩ्ऱऩॆऩ्–खड़ा रहा; आय् अवऩ्–माता-सम श्रीराम; मुऩियुम् ॲऩ्ऱु–रुष्ट होंगे, यह सोचकर; अञ्चिऩेऩ्–डरा; अल्लाल्–नहीं तो; ताय् ॲऩुम् पॆयर्–नाम मात्र के लिए माता तुम्हारा मान; ॲऩ्ऩै तटुक्कल् पालतो–मुझे (तुम्हें मारने से) रोक सकती हो क्या। ८६७

तुम अब भी जीवित रहती हो ! मैंने एक क्षण में तुम्हारा वध नहीं किया और खड़ा हूँ। इसका कारण जानती हो ? मेरे ज्येष्ठ भ्राता रुष्ट

होंगे। नहीं तो क्या तुम्हारा नाम मात्र का मातृत्व मुझे रोक सकता था ? । ८६७

शुऴियुडैत् तायुडैक् कॊडिय शूऴ्च्चियाल्
वऴियुडैत् तायवरु मरबै मायत्तॊरु
पऴियुडैत् ताक्कितन् बरदन् पण्डॆनुम्
मॊऴियुडैत् ताक्कलिन् मुऱैमै वेऱुण्डो 868

पण्टु–पहले; परतन्–भरत ने; चुऴि उटैय–छलनी; ताय् उटैय–माता के; कॊटिय चूऴ्च्चियाल्–कठोर षड्यन्त्र से; वऴि उटैत्तु आय् वरुम्–परम्परा से आनेवाले; मरपै मायत्तु–रीति को मिटाकर; ऒरु पऴि उटैत्तु आक्कितन्–एक कलंक उस (कुल) पर लगा दिया; ऎनुम् मॊऴि–यह अपवाद; उटैत्तु आक्कलिन्–सुस्थापित करने से बढ़कर; मुऱैमै–अच्छी रीति; वेऱु उण्टो–दूसरी है क्या। ८६८

हाय ! अपवाद पहले ही लग गया कि भरत ने माता के षड्यन्त्र द्वारा सूर्यकुल की परम्परागत रीति को तोड़कर उस पर कलंक लगा दिया। उसे राज्य अपनाकर अचल बना लूँ —यही न उचित क्रम है ? दूसरा क्रम है क्या ? । ८६८

❀ माळवु मुळतॊरु मन्नन् वन्शॊलाल्, मीळवु मुळतॊरु वीरन् मेयपार्
आळवु मुळतॊरु बरद नायिनाल्, कोळिल दऱनॆऱि कुऱैयुण् डाहुमो 869

वन् चॊल्लाल्–तुम्हारे कठोर वचन से; माळवुम्–मरने के लिए; ऒरु मन्नन् उळन्–एक राजा रहे; मीळवुम् ऒरु वीरन् उळन्–(वन) हो आने के लिए एक वीर मिले; मेय पार्–तुम्हारी इच्छित भूमि का; आळवुम् ऒरु परतन् उळन् आयिनाल्–पालन करने एक भरत आ गया तो; अऱम् नॆऱि—धर्म-मार्ग; कोळ् इलतु–निर्दोष है; कुऱै उण्टु आकुमो—दोष-युक्त होगा क्या। ८६९

तुम्हारे कठोर वचन के कारण मरने के लिए एक राजा थे; वन हो आने के लिए एक वीर हैं; तुम्हारा इच्छित राज्य-शासन करने के लिए भरत है ! तब धमपथ दोषहीन हो गया ! उसमें कमी क्या है ? । ८६९

कव्वर वदुवॆन विरुत्तिर् कऱ्पॆनुम्, अव्वरम् बऴित्तुमै यहत्तु ळॆवैत्त
वॆव्वरम् बॊरुदवे लरशै वेरऱुत्, तिव्वरङ् गॊण्डनी रिनियॆन् कोडिरो 870

कऱ्पु ऎनुम्–पतिपरायणता की; अ वरम्पु अऴित्तु–वह सीमा मिटाकर; उम्मै अकत्तु उळ्ळे वैत्त–तुम्हें अपने मन में स्थान देकर जो रखते थे; वॆव् अरम् पॊरुत वेल्–भयंकर, रेती से पैनाये गये भाले के धारी उन; अरचै–राजा को; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल कर; कव्वु अरवु अतु ऎन–काटनेवाले सर्प के समान; इरुत्तिर्–रहती हो; इ वरम् कॊण्ट नीर्–ये वर लेनेवाली तुम; इनि ऎन् कोटिरो–आगे भी क्या लेना चाहोगी। ८७०

तुमने पतिभक्ति की सीमा तोड़ी। तुमको मन में स्थान जो दिये रहे उन प्यारे पति, रेती से पैनाये गये भाले के धारी चक्रवर्ती को निर्मूल करके काटनेवाले सर्प के समान रहीं! ये वर लेनेवाली तुम आगे क्या-क्या लोगी, भला ? । ८७०

नोयी रल्लीर् नुङ्गण वन्रन् नुयिरुण्डीर्
पेयी रेनी रिन्न मिरुक्कप् पॅरुवीरो
मायीर् माया वन्बळि तन्दीर् मुलैतन्दीर्
तायी रेनी रिन्न मॅनक्कॅन् ऱुरुवीरो 871

मुलै तन्तीर् तायीरे–स्तन्य दिया जिसने, वह माँ; नीर् ऍनक्कु माया वन् पळि तन्तीर्–तुमने मुझे अमिट कठोर निन्दा दिला दी; इन्नम् ऍन् तरुवीरो–और भी क्या दिलाओगी; नोयीर् अल्लीर्–रोग न होकर ही; नुम् कणवन् तन् उयिर् उण्टीर्–अपने पति की जान खा ली; नीर् पेयीरे–तुम पिशाचिनी हो; मायीर्–बिना मरे; इन्नम् इरुक्क पॅरुवीरो–और भी जीने योग्य हो। ८७१

पहले तुमने स्तन्य दिया। अब मुझे अमिट कलंक प्रदान किया। और भी क्या देनेवाली हो ? तुम रोग नहीं हो ! तो भी अपने पति का प्राण पी चुकी हो ! तुम अवश्य पिशाचिनी हो। मरोगी नहीं ? जीवित रहोगी क्या ? । ८७१

ऑन्ऱुम् पॊय्या मन्ननै वाया लुयिरोडुम्
तिन्ऱुन् दीरा वन्बळि कॊण्डुन् दिरुवॅय्दि
ऍन्ऱुन् नीरे वाळ्वहन्दि रवनेहक्
कन्ऱुन् दायुम् बोल्वन कण्डुङ् गळियीरे 872

ऑन्ऱुम् पॊय्या मन्ननै–कभी असत्यवादी जो न रहे, उन राजा को; वायाल्–अपने मुख (वचन) से; उयिरोटुम् तिन्ऱुम्–जान के साथ खाकर; तीरा वन् पळि कॊण्टुम्–(और श्रीराम को वन पठवाकर) अमिट निंदा धारण करके; तिरु ऍय्ति–(राज्य-) लक्ष्मी प्राप्त करके; ऍन्ऱुम् नीरे वाळ्व उकन्तीर्–सदा तुमने जीना चाहा; अवन् एक–श्रीराम के वन जाने पर; कन्ऱुम् तायुम् पोल्वन कण्टुम्–वत्स (और वत्स से बिछुड़ी) गाय के समान (उनको और प्रजाजन को) देखकर भी; कळियीर्–हठ नहीं छोड़ा; ए–क्या आश्चर्य है। ८७२

मेरे पिता कभी असत्यवादी नहीं रहे। अपने वरों से उनको जान से खाकर और श्रीराम के वनप्रेषण द्वारा अमिट अपयश लेकर राज्य-श्री के साथ सुख से जीना चाहती थीं। जब श्रीराम गये तब प्रजाजन की और उनकी, बिछुड़ी गाय और बछड़े की-सी हालत देखकर भी तुमने अपना हठ नहीं छोड़ा ! वन भेजकर ही चैन पाया ! ओफ़ ! । ८७२

इऱन्दान् ऱन्दै यीन्द वरत्तुक् किऴिवॆण्णान्
अऱन्दा नीदॆन् ऱन्नवन् मैन्द नरशॆल्लाम्
तुऱन्दान् ऱायिन् शूऴ्च्चियिन् ञाल मवनोडे
पिऱन्दा नाण्डा नॆन्नुमि दॆन्नाऱ् पॆऱलामे 873

तन्तै–मेरे पिता; ईन्त वरत्तुक्कु इऴिवु ऍण्णान्–अपने दिये हुए वरों को निरर्थक कराना नहीं चाहते; इऱन्तान्–मर गये; अन्नवन् मैन्तन्–उनके पुत्र; ईतु अऱम् तान् ऍन्ऱु–यह धर्म ही है, मानकर; अरचु ऍल्लाम् तुऱन्तान्–राज्य सब छोड़ गये; अवनोटे पिऱन्तान्–उनका सहोदर, भरत ने; तायिन् चूऴ्च्चियिन्–माता की वंचना मानकर; ञालम् आण्टान्–भूमि पाली; ऍन्नुम् इतु पॆऱल्–यह अपवाद प्राप्त करना; ऍन्नाल् आमे–मुझसे हो सकता है क्या। ८७३

राजा अपने दिये वरों को अपमानित करना नहीं चाहा, प्राण दे दिये। उनके पुत्र ने सोचा कि वही धर्म है; अतः राज्य त्याग दिया। उनका भ्राता मैं, माँ की प्रवंचना से सम्मत होकर राज्य-शासन किया —यह अपवाद सह सकूँगा क्या ?। ८७३

माऴु मॆन्ऱे तन्दैयै युन्नान् वशैकॊण्डाऴ्
कोऴु मॆन्ना लॆयॆनल् कॊण्डा नदुवन्ऱेल्
मीऴु मन्ऱे यॆन्नैयु मॆय्ये युलहॆल्लाम्
आऴु मॆन्ऱे पोयिन नन्ऱो वरशाऴ्वान् 874

अरचु आऴ्वान्–राज्यपालन-कर्ता; वचै कॊण्टाऴ् कोऴुम्–निन्द्य इसका (कैकेयी का) वर लेना; ऍन्नाले ऍनल् कॊण्टान्–मेरी सम्मति से हुआ, यह समझकर; तन्तैयै–पिता के सम्बन्ध में; माऴुम् ऍन्ऱे उन्नान्–मरेंगे, यह नहीं सोचकर; ऍन्नैयुम्–मेरे सम्बन्ध में; मॆय्ये उलकु ऍल्लाम् आऴुम्–निश्चय ही वह सब लोक का शासन करेगा; ऍन्ऱे–यही धारणा करके; पोयिनन्–गये हैं; अतु अन्ऱेल्–वह नहीं तो; मीऴुम् अन्ऱे–लौट आये होंगे न। ८७४

राज्य के अधिकारी श्रीराम थे। जब कैकेयी ने वर लिया तब उन्होंने यही सोचा होगा कि यह मेरी ही सम्मति से हुआ है। पिता मरेंगे —यह भी विचारे बिना, मेरे सम्बन्ध में यह सोचकर कि भरत अवश्य राज्य करेगा, वे वन गये। नहीं तो प्रजाजन की दशा देखकर लौट आये होंगे न ?। ८७४

ओदा निन्ऱ तॊल्हुल मन्न नुणर्वप्पाल्
एदे तुन्दा नाहवॆ नक्के पऴिशॆय्वान्
तीदा निन्ऱ शिन्दनै शॆय्दा नवनॆन्नप्
पोदा दोवॆन् ऱायिवऴ् कॊण्ड पॊरुऴम्मा 875

ओता निन्ऱ–प्रकीर्तित; तॊल् कुलम् मन्नन्–प्राचीन (सूर्य-) कुल के राजा का;

उणर्वु–विचार; अप्पाल्–वर देने के बाद; एतेतुम् तान्–कुछ भी; आक–हो; ॲन् ताय् इवळ्–मेरी माँ इस (दुष्टा) के; कॉण्ट पोरुळ्–वर माँगने का अर्थ; ॲन्तक्के पळि चॅय्वान्–मेरे ही प्रति निन्द्य काम करना चाहकर; तीतु आक निन्ऱ–हानिकारक; अवन् चिन्तत्तै चॅय्तान्–भरत ने विचार किया; ॲन्न–यह (राजा के) सोचने के लिए; पोतातो–पर्याप्त कारण नहीं रहेगा क्या; अम्मा–हाय री मैया। ८७५

प्रकीर्तित प्राचीन कुल में उत्पन्न महाराजा ने वर देने के बाद क्या सोचा होगा? यह कुछ भी हो। पर मेरी दुष्टा माँ ने वर लिया। क्या वह उनके मन में यह भाव पैदा करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि भरत ने मेरे प्रति अपराध किया है और बुरा काम सोचा है? मैया री! यह क्या कर दिया तुमने? । ८७५

उय्या निन्ऱे निन्नमु मन्मुन् नुडन्वन्दोन्
कैयार् हल्लैप् पुल्लड हुण्णक् कलमेऱ्ऱि
वॅय्यो नानिन् शालियिन् वॅण्शो ऱमुदॅन्न
नॅय्यो डुण्णा निन्ऱदु निन्ऱार् निनैयारो 876

वॅय्योन् नान्–क्रूर मैं; इन्नमुम् उय्या निन्ऱेन्–अब भी जीवित हूँ; उटन् वन्तोन ॲन् मुन्–मेरे ज्येष्ठ भ्राता के; कै आर् कल्लै–हाथ के दोनों से; पुल् अटकु उण्ण–अल्प साग का भोजन करते; इन् चालियिन्–मधुर शालि का श्वेत चावल; कलम् एऱ्ऱि–स्वर्णथाली पर लेकर; अमुतु ॲन्न–देवामृत के समान; नॅय्योटु–घी के साथ; उण्णा निन्ऱतु–(मेरा) भोजन करना; निन्ऱार्–देखते खड़े रहनेवाले; निनैयारो–(निन्द्य) नहीं समझेंगे क्या। ८७६

कितना क्रूर हूँ, मैं! जीवित रहता हूँ अब भी। मेरे अग्रज भ्राता हाथ के दोने में अल्प साग-पात खाते हैं और मैं सोने की थाली में शालि धान के श्वेत चावल का भोजन सुधासम घृत के साथ करूँगा। यह देखने वाले निन्द्य नहीं समझेंगे मुझे? । ८७६

विल्लार् तोळान् मेविनन् वॅङ्गा नहमॅन्न
नल्ला नन्ऱे तुञ्जिन नञ्जे यनैयाळैक्
कॉल्लेन् मायेन् वन्बळि याले कुऱैवऱ्ऱेन्
अल्ले नोना नन्बुडै यार्बो लळुहिन्ऱेन् 877

विल् आर् तोळान्–धनुर्धारी कन्धों वाले; वॅम् कानकम् मेविनन् ॲन्न–भयंकर वन गये, ऐसा सुनकर; नल्लान्–अच्छे राजा; अन्ऱे तुञ्चिनन्–उसी दिन जन्मांत की नींद सो गये; नान्–मैं; नञ्चे अनैयाळै–विष ही सम इसको; कॉल्लेन्–बिना मारे; मायेन्–बिना खुद मरे; वन् पळियाले–कठोर निंदा में; कुऱैवु अऱ्ऱेन् अल्लेनो–कमीहीन हो गया न; अन्पु उटैयार् पोल्–सच्चा प्यार करनेवाले की नकल में; अळुकिन्ऱेन्–रो रहा हूँ। ८७७

धनुर्धारी कंधों वाले श्रीराम वन चले गये, यह सुनते ही अच्छे

चक्रवर्ती ने आँखें बन्द कर लीं। मैं तो इस विषतुल्य स्त्री को नहीं मारता; न स्वयं ही मरता। इसका यही आशय हुआ न कि मेरा घोर अपयश अक्षय हो गया? श्रीराम के प्रति सच्चा प्यार रखनेवाले के समान रोता खड़ा रहता हूँ! यह कैसी विडम्बना है? । ८७७

पारोर् कॊळ्ळार् यान्उयिर् पेणिप् पऴिपूणेन्
तीरा दॊन्ऱो तुन्बुमिव् वूरिऱ् ऱिरुनिल्लाळ्
आरो डॆण्णिऱ् ऱारुरै तन्दा ररमॆल्लाम्
वेरो डुङ्गे डाह मुडित्तॆन् विळैवित्ताय् 878

पारोर् कॊळ्ळार्–लोकवासी उचित नहीं मानेंगे; यान्–मैं; उयिर् पेणि–अपना प्राण बचाकर; पऴि पूणेन्–(राज्य लेकर) अपयश नहीं लूँगा; इ ऊरिल्–इस नगर में; तुन्पुम् तीरातु–(श्रीराम के अभाव में) दुख नहीं मिटेगा; ऒन्ऱो–वही एक है (नहीं); तिरु निल्लाळ्–श्री नहीं टिकेंगी; ऍण्णिऱ्ऱु आरोटु–तुमने सलाह ली किससे; आर् उरै तन्तार्–किसने सुझाव दिया; अऱम् ऍल्लाम्–सब धर्म; वेरोटुम् केटु आक–जड़ से विगाड़कर; मुटित्तु–कार्य करके; ऍन् विळैवित्ताय्–क्या ही (अनर्थ) उत्पन्न किये हैं (तुमने)। ८७८

मैं राजा बनूँ तो संसार के लोग सम्मत नहीं होंगे। मैं अपनी जान बचाकर (राज्य लेकर) निन्द्य नहीं होऊँगा। श्रीराम की अनुपस्थिति में दुख भी दूर नहीं होनेवाला है। क्या उतना ही है? विभवश्री भी नहीं टिकेंगी। माँ! इतने अनर्थों की जड़ तुम्हारा कार्य है! किससे यह सलाह ली? किसने यह सलाह दी? सारे धर्म नष्ट हो गये। क्या ही अनर्थ तुमने कराये हैं? । ८७८

कॊन्ऱे तातैत् ऱादैयै मऱुन् कॊलैवायाल्
ऒन्ऱो कानत् तण्णलै युय्त्ते युलहाळ्वान्
निन्ऱे नॆन्ऱा निन्बिऴै युण्डो पऴियुण्डो
ऍन्ऱे तुन्दा नॆन्बऴि मायु मिडमुण्डो 879

उन् कॊलै वायाल्–तुम्हारे घातक मुख को साधन बनाकर; नान्–मैंने; ऍन् तातैयै कॊन्ऱेन्–अपने पिता की हत्या करा दी; ऒन्ऱो–वही एक है; अण्णलै कानत्तु उय्त्तु–प्रभु को वन में भिजवाकर; उलकु आळ्वान् निन्ऱेन्–संसार का पालन करने के लिए प्रस्तुत हूँ; ऍन्ऱाल्–अगर लोग कहें तो; निन् पिऴै उण्टो–तुम्हारा अपराध है क्या; पऴि उण्टो–कलंक लगेगा (तुम पर) क्या; ऍन् पऴि–मेरा अपयश; ऍन्ऱेनुम्–कभी भी; मायुम् इटम् तान् उण्टो–मिटे, ऐसा स्थान भी है क्या। ८७९

तुम्हारे मृत्युकारक मुख के साधन से मैंने अपने पितृदेव को मरवाया। क्या उतना ही है? मेरे प्रभु को वन में भिजवाकर राज्य लेने के लिए प्रस्तुत हूँ! यही लोग समझें तो इसमें तुम्हारा कोई दोष है क्या? तुम

पर कलंक लगेगा क्या ? नहीं वह मुझ पर कलंक है। अपना कलंक कहाँ जाकर धो लूँ ? ऐसा कोई स्थान (मार्ग) भी है क्या ? । ८७९

कण्णा लेयॅन् शॅय्वित्तै यिन्नुञ् जिलकाण्बार्
मण्णोर् पारा दॅळ्ळुवर् वाळा पळिपूण्डाय्
उण्णा नञ्जङ् गॉल्हिल दॅन्नु मुरैयुण्डॅन्
ऱॅण्णा निन्ऱे नन्ऱियि रेलॅन् नुयिरोडे 880

उण्णा नञ्चम् कॉल्किलतु–अखादित विष नहीं मारेगा; ऍन्नुम् उरै–यह कथन; उण्टु ऍन्ऱु–(लोक में मशहूर) है, यह; ऍण्णा निन्ऱेन्–अब समझता हूँ; अन्ऱि–नहीं तो; ऍन् उयिरोटे इरेन्–अपने प्राणों-सह नहीं रहता; मण्णोर्–भूलोकवासी; ऍन् चॅय्वित्तै चिल–मेरे किये जानेवाले कुछ कार्य; इन्नुम् कण्णाले काण्पार्–और भी अपनी आँखों से (लोग) देखेंगे; परातु–तुममें कुछ न देखकर; ऍळ्ळुवर्–तुम्हारी भर्त्सना करेंगे; वाळा पळि पूण्टाय्–व्यर्थ कलंक धारण करती हो। ८८०

अभुक्त विष मारता नहीं—यह मसल संसार में प्रचलित है। उसको अब मैं याद करता हूँ। नहीं तो मैं जीवित नहीं रहता। आगे अपने कृत्यों को लोकवासी देखेंगे और तब सच्चाई जान लेंगे। पर तुममें तो कुछ नहीं देखेंगे और तुम्हारी निन्दा अमिट रहेगी। व्यर्थ ही तुमने अपयश ले लिया। ८८०

एन्ऱुन् बाविक् कुम्बि वयिर्ऱि निडैवैहित्
तोन्ऱुन् दीराप् पादह मर्ऱॅन् ऱुयर्तीरच्
चान्ऱुन् दाने नल्लर माहत् तहैञालम्
मून्ऱुङ् गाण मादव नाने मुयल्हिन्ऱेन् 881

उन्–तुम्हारे; पावि कुम्पि वयिर्ऱिनिटै–पापी नरक-सम पेट में; एन्ऱु–रहना पड़ा; वैकि–रहकर; तोन्ऱुम्–जन्म लिया उसका; तीरा पातकम् अऱ्ऱु–अमिट पाप दूर कर; ऍन् तुयर् तीर–अपना दुख भी दूर करने; नल् अऱम् ताने चान्ऱु आक–अच्छे धर्म को ही साक्षी बनाकर; तकै ञालम् मून्ऱुम् काण–श्रेष्ठ तीनों लोकों को दिखाते हुए; नाने मातवम् मुयल्किन्ऱेन्–मैं महान तप करूँगा। ८८१

मैं तुम्हारी पापिनी नरक-सम कुक्षि में रहा और उससे जन्म लिया। वह अमिट पातक है। उसको काटने के लिए और अपना दुख दूर करने के लिए महान घोर तप करनेवाला हूँ। अच्छा धर्म ही उसका साक्षी रहेगा और गौरववान तीनों लोक उसको देखेंगे। ८८१

शिऱन्दार् शॊल्लु नल्लुरै शॊन्नेन् शॆयलॆल्लाम्
मऱन्दाय् शॆय्दा याहुदि माया वयिर्दन्नैत्

तुऱन्दा यायिऱ् ऱूयैयु मादि युलहत्ते
पिऱन्दा यादि यीदल दिल्लैप् पिऱिदॆन्ऱान् 882

माया उयिर् तन्नै–अब तक जो न मिटी, उस जान को; तुऱन्ताय् आयिन्–अब छोड़ दोगी तो; चॆयल् ऍल्लाम्–तुम्हारे सारे कृत्य; मऱन्ताय् चॆय्ताय् आकुति–भूल से कर चुकी, मानी जाओगी; तूयैयुम् आति–कलंकहीन हो जाओगी; उलकत्ते पिऱन्ताय् आति–इस संसार में जन्म (-फल)-प्राप्त बनोगी; ईतु अलतु–यह नहीं तो; पिऱितु इल्लै–कोई दूसरा (मार्ग) नहीं; चिऱन्तार्–उत्तम लोगों द्वारा; चॊल्लुम्–कथनीय; नल् उरै–अच्छी सलाह है; चॊन्तेन्–मैंने कही; ऍन्ऱान्–कहा। ८८२

अब तक तुम्हारे प्राण छूटे नहीं हैं! अब भी छोड़ दो तो लोक तुम्हारा पाप-कृत्य भूल जायगा; उसमें सहायता देनेवाली बनोगी। पवित्र भी हो जाओगी। संसार में जन्म लेनेवाली (जन्म लेने का कुछ अर्थ प्राप्त करनेवाली) होओगी। यह नहीं करोगी तो दूसरा कोई उपाय नहीं है! यह मैं नहीं कहता। श्रेष्ठ पंडितों का यह कथन है! मैं वही सुना रहा हूँ। —भरत यह सब कह चुके। ८८२

❀ इन्नण मित्तैयन वियम्बि यानिनिप्, पन्नरुङ् गॊडुमनप् पावि पालिरेन्
तुन्नरुन् दुयर्कॆडत् तूय कोशलै, पॊन्नडि तॊऴुवॆन्नॆन् ऱॆऴुन्दु पोयिनान् 883

इन्नणम्–इस तरह; इन्नैयन इयम्पि–ऐसी बातें कहकर; यान् इनि–मैं आगे; पन्न अरु–अवर्णनीय; कॊटु मनम् पावि पाल्–क्रूरमना पापिनी के निकट; इरेन्–नहीं ठहरूँगा; तुन् अरुम्–आया यह बड़ा; तुयर् कॆट–दुख दूर करने के लिए; तूय–पवित्रमना; कोचलै पॊन् अटि–कौसल्या के उज्ज्वल चरणों पर; तॊऴुवन्–नमस्कार करूँगा; ऍन्ऱु–कहकर; ऍऴुन्तु–उठकर; पोयिनान्–चले। ८८३

यह सब कह चुकने के बाद भरत ने सोचा कि मैं और भी इस अवर्णनीय क्रूरमना पापिनी के पास नहीं रहूँगा। जो अपार दुख हो गया है, उसके निवारणार्थ मैं पवित्रमना कौसल्यादेवी के चरणों में जाकर उनकी वन्दना करूँगा। फिर वह उठकर चले गये। ८८३

❀ आण्डहै कोशलै यरुहि नॆय्दिनान्
कीण्डुमण् किऴिदर विऴुन्दु कॆऴ्हिऴर्
काण्डहु तडक्कैयिऱ् कमलच् चीऱडि
पूण्डनन् किडन्दिडै पुलम्बि नानरो 884

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ भरत; कोचलै अरुकिन् ऍय्तिनान्–कौसल्या के पास पहुँचे; मण् कीण्टु–भूमि फटकर; किऴितर–चिर जाए, ऐसा; विऴुन्तु–गिरकर; कॆऴ् किऴर्–सुरम्य रंग के; काण्तकु–दर्शनीय; तट कैयिन्–विशाल हाथों से; कमलम् चिऱु अटि–कमल-सम लघु चरणों को; पूण्टनन्–ग्रहण करते हुए; इटै किटन्तु–भूमि पर ही पड़ा रहकर; पुलम्पिनान्–विलाप करने लगे। ८८४

पुरुषश्रेष्ठ भरत कौसल्या के पास जाकर, उनके चरणों पर धड़ाम से

गिर पड़े ताकि भूमि फटकर चिर जाए ! और अपने मनोरम प्रभा के साथ शोभायमान हाथों से उन्होंने देवी के लघु और सुन्दर पैर ग्रहण कर लिये। उसी स्थिति में वे विलाप करने लगे। ८८४

❀ ॲन्दैयॅव् वुलहळा नॅम्मुन् याण्डैयान्
वन्दतु तमियनेन् मरुक्कङ् गाणवो
शिन्दैयि लुरुतुयर् तीर्त्ति रालॅनुम्
अन्दरत् तमररु मळुटु शोरवे 885

अन्तरत्तु अमररुम्–आकाश के देव भी; अळुतु चोर–रोते हुए म्लान हों ऐसा; ॲन्तै–मेरे पिता; ॲ उलकु उळ्ळात्–किस लोक के वासी हैं; ॲम्मुन्–मेरे अग्रज; याण्टैयात्–कहाँ रहते हैं; तमियनेन् वन्ततु–निस्सहाय मेरा आना; मरुक्कम् काणवो–यह अव्यवस्था देखने के लिए क्या; चिन्तैयिल् उरु–मेरे मन में हुआ; तुयर्–दुख; तीर्त्तिर्–दूर कीजिए; ॲन्नुम्–कहा। ८८५

उनकी स्थिति देखकर सुरलोकवासी देव भी रोकर म्लान होने लगे। तब भरत विविध प्रकार से बातें कहते— मेरे पिता किस लोक के वासी हो गये? मेरे अग्रज भ्राता कहाँ रहते हैं? अनाथ मैं इधर आया यही चिन्त्य दशा देखने के लिए क्या? आप मेरे मन की व्यथा दूर कीजिए। —यह कहा। ८८५

❀ अडित्तलङ् गण्डिलॅन् यानॅन् नैयनैप्
पडित्तलङ् गावलन् पॅयरर् पालनो
पिडित्तिलिर् पोलुनीर् पिळैत्ति रालॅनुम्
पॉडित्तलन् दोळुरप् पुरण्डु शोर्हिन्रान् 886

तोळ् पॉटि तलम् उऱ–भुजाओं को, धूलि-सहित भूमि पर लगाकर; पुरण्टु–लोटते हुए; चोर्किन्रान्–अशक्त हो रहा है; यान्–मैं; ॲन् ऐयनै–अपने पिता के; अटि तलम् कण्टु–चरणतल के दर्शन; इलॅन्–न कर पाया; पटि तलम् कावलन्–भूतल के स्वामी, रक्षक; पॅयरल् पालनो–निष्कासनार्ह हैं क्या; नीर् पिटित्तिलर् पोलुम्–आपने रोका नहीं क्या; पिळैत्तिर्–भूल की; ॲन्नुम्–कहते। ८८६

धूलि-लगी भूमि पर अपने कंधों को पड़ने देते हुए लोटे और मुरझाये। फिर वे कहते— अपने पितृदेव की चरण-वन्दना करने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला। भूमि का पालन करना जिनको था वे राम क्या वन जाने योग्य हैं? आपने उन्हें नहीं रोका था, शायद? आपने भूल की। ८८६

❀ कॉडियवर् यावरुङ् गुलङ्गळ् वेरर
नॉडिहिलर् यानदु नुवल्व दॅङ्ङनम्
कडियवळ् वयिर्रितिर् पिरन्द कळ्वनेन्
मुडिहुवॅ नरुन्दुयर् मुडिय वॅन्नुमाल् 887

कॉटियवर् यावरुम्–अत्याचारी लोग; कुलङ्कळ् वेर् अऱ–अपने कुलों को निर्मूल होने देते हुए; नॉटिकिलर्–मरे नहीं; कटियवळ् वयिऱ्ऱिनिल् पिऱन्त–क्रूर कैकेयी के पेट से जनित; कळ्वनेन् यान्–चोर मैं; अतु नुवल्वतु ऍङ्ङनम्–वह कहूँगा कैसे; अरु तुयर् मुटिय–कठोर दुख का अन्त करते हुए; मुटिकुवॅन्–मिट जाऊँगा; ऍन्नुम्–कहते । ८८७

फिर उद्गार निकालते— इस अनर्थ के मूल कारण जो हैं वे अपने कुल का जड़समेत नाश करते हुए नहीं मिटे । निष्ठुर कैकेयी के कोख से जन्मा मैं बड़ा चोर हूँ । इसलिए यह कहने का अधिकार भी नहीं रखता । इस असह्य दुख से मुक्ति पाने के हेतु मैं मर जाऊँगा । ८८७

❀ इरदमॉन् ऱूर्न्दुपा रिरुळै नीक्कुमव्
वरदनि लॉळिपॅऱ्ऱ मलर्न्द तॉल्हुलम्
बरदनॅन् ऱॅरुपऴि पडैत्त दॅन्नुमाल्
मरगद मलैयॅन वळर्न्द तोळिनान् 888

मरकतम् मलै ॲंन–मरकत के पर्वत के समान; वळर्न्त–बढ़े हुए; तोळितान्–कन्धों वाले; इरतम् ऑन्ऱु ऊर्न्तु–एकचक्र-रथ चलाते हुए; पार् इरुळै नीक्कुम्–भूलोक का अँधेरा दूर करनेवाले; अ वरततिल्–उन सूर्यदेव से लेकर; ऑळि पॅऱ्ऱ मलर्न्त–यश के साथ बढ़ते आनेवाले; तॉल् कुलम्–प्राचीन कुल ने; परतन् ऍन्ऱ ऑरु पऴि पटैत्ततु–भरत नाम का कलंक सृजन कर लिया है; ऍन्नुम्–कहते । ८८८

मरकतपर्वत-सम उन्नत कंधों वाले भरत यह कहते— एकचक्र-रथी लोकांधकार-निवारक सूर्य से लेकर बढ़ते आनेवाले इस प्राचीन कुल ने भरत नाम के एक कलंकी पुत्र को जन्म दे दिया है। हाय ! । ८८८

❀ वाडॊडु तानैयान् वानिन् वैहिडक्, काडॊरु तलैमह नॅय्दक् कण्णिला
नाडॊरु तुयरिडै नैव दॆय्ॅनुम्, ताडॊडु तडक्कैयत् तरुम मेयनान् 889

ताळ् तॉटु तट कै–आजानुलम्बित हाथों के; अ तरुममे अन्नान्–धर्मदेवता ही सम भरत; वाळ् तॉटु तानैयान्–तलवारधारी वीरों की सेना के स्वामी के; वानिन् वैकिट–स्वर्गवासी होने से; ऑरु तलै मकन्–अतिश्रेष्ठ एक पुत्र के; काटु ऍय्त–वन जाने से; कण् इला नाटु–आँखें खोकर कोसल देश; ऑरु तुयिरिटै नैवते–बड़ा दुख उठाए (यह उचित है क्या); ऍनुम्–कहते । ८८९

फिर, आजानुबाहु, धर्म देवता ही सम भरत पूछते— तलवारधारी वीरों की सेना के पति चक्रवर्ती स्वर्गवासी हो रहे; उनके अनुपम ज्येष्ठ पुत्र वनवासी हो रहे। कोसल देश नेत्रहीन होकर बड़े संकट में पड़ गया। इसको वैसे होने देना भी उचित है क्या ? । ८८९

पुलम्बुरु कुरिशिऱन् पुलर्वु नोक्किनाळ्
कुलम्बॊऱै कऱ्पिवै शुमन्द कोशलै

निलम्बॊऱ्ऱै याऱ्ऱल नॆञ्जु तूयदॆऩच्
चलम्बिरि तुऱमनन् दळर्न्दु कूऱुवाळ् 890

कुलम्–उच्चकुल में जन्म; पॊऱै–क्षमा; कऱ्पु–पातिव्रत्य; इवै चुमन्त कोचलै–इनको धारण करनेवाली कौसल्यादेवी; पुलम्पु उऱु–विलाप करनेवाले; कुरिचिल् तन्–राजकुमार का; पुलर्वु नोक्कि नाळ्–मुरझाना देखकर; नॆञ्चु तूय्तु–इसका मन साफ़ है; निलम् पॊऱै आऱ्ऱलन्–भू-पालन का भार नहीं उठाएगा; ऍन–समझकर; चलम् पिरितु उऱ–(पहले उत्पन्न) कोप को दूर करके; तळर्न्तु–पिघलकर; कूऱुवाळ्–कहने लगीं। ८६०

उच्चकुल में जन्म, क्षमाशीलता, पातिव्रत्य इन श्रेष्ठ गुणों से भूषित कौसल्या ने भरत का प्रलाप सुना। भरत का मुरझाना देखा। समझ गईं कि इसका मन साफ़ है! यह राज्य-भार वहन नहीं करेगा। तब उनका पूर्व-उदित कोप शान्त हो गया। वे गद्गद होकर बोलीं। ८९०

मैयऱु मनत्तॊरु माशु ळातलन्, शॆय्यनॆ यॆन्बदु तेरुञ् जिन्दैयाळ्
कैहयर् कोमह ळिऴैत्त कैदवम्, ऍयनी यरिन्दिलै पोलु मालॆन्ऱाळ् 891

मै अऱु मनत्तु–निष्कलंक मन में; ऒरु माचु उळान् अल्लन्–कोई बुरा भाव नहीं रखता; चॆय्यन्–नेक हैं; ऍन्पतु–इस बात को; तेरुम् चिन्तैयाळ्–साफ़ करने के इच्छुक मन की कौसल्या ने; ऐय–तात; कैकयर् को मकळ्–केकयराज-तनया के; इऴैत्त–किये हुए; कैतवम्–कैतव को; नी अऱिन्तिलै पोलुम्–तुमने पहले नहीं जाना था क्या; ऍन्ऱाळ्–पूछा। ८६१

कौसल्या को यह साफ़ हो गया कि इसके अकलंक मन में कोई बुरा भाव उदित नहीं हुआ है और वह नेक है। तो भी कौसल्याजी ने इस बात को और साफ़ करने के लिए भरतजी से पूछा कि तात! केकयराज-कुमारी तुम्हारी माता ने जो छल रचा उसे तुम पहले नहीं जानते थे, क्या? । ८९१

ताळुऱु कुरिशिलत् ताय्शॊऱ् केट्टलुम्
कोळुऱु मडङ्गलिऱ् कुमुऱि विम्मुवान्
नाळुऱु नल्लऱ नडुङ्ग नावितार्
चूळुऱु कट्टुरै शॊल्लन् मेयितान् 892

ताळ् उऱु–(कौसल्या के) पैरों पर पड़े रहे; कुरिचिल्–राजकुमार; अ ताय् चॊल् केट्टलुम्–माता का वह कथन सुनते ही; कोळ् उऱु–जाल में फँसे; मटङ्कलिन्–सिंह के समान; कुमुऱि–हहरा उठे; विम्मुवान्–सिसकते हुए; नाळ् उऱु नल् अऱम्–चिरस्थायी धर्मदेवता को; नटुङ्क–कँपाते हुए; नावित्ताल्–अपनी जीभ से; चूळ् उऱु कट्टुरै–शपथ-वचन; चॊल्लल् मेयितान्–कहने लगे। ८६२

भरत, जो उनके चरणों को पकड़े हुए नीचे पड़े थे, यह सुनकर जाल में फँसे सिंह के समान हरहरा उठे। उनका मन अत्यन्त दुख से भर गया।

सिसकते हुए वे अपने मुख से ऐसे शपथ-वचन कहने लगे कि स्वयं चिरस्थायी धर्म देवता भी काँप उठे। ८९२

अऱङ्गॊंड मुयन्ऱव नरुळि नॆंञ्जिनन्
पिऱन्गडै निन्ऱवन् पिऱरैच् चीऱिनोन्
मऱङ्गॊंडु मन्नुयिर् कॊंन्ऱु वाऴ्न्दवन्
तुऱन्दमा दवर्क्करुन् दुयरञ् जूऴ्न्दुळोन् 893

अऱम् कॊंट मुयन्ऱवन्–धर्म का नाश करने का प्रयत्न करनेवाला; अरुळ् इल् नॆंञ्चितन्–दयाहीन मन वाला; पिऱन् कटै निन्ऱवन्–(दूसरे की स्त्री को चाहकर) परगृह के द्वार पर खड़ा रहनेवाला; पिऱरै चीऱिनोन्–दूसरों पर अनावश्यक रीति से रिस करनेवाला; मऱम् कॊंटु–बलात्कार से; मन् उयिर् कॊंन्ऱु–अन्य जीवों को मारकर; वाऴ्न्तवन्–जीनेवाला; तुऱन्त मा तवर्क्कु–विरक्त तपस्वियों को; अरु तुयरम् चूऴ्न्तु उळ्ळोन्–बहुत त्रास देनेवाला। ८९३

धर्मनाशक प्रयत्न करनेवाला, दयाहीन मन वाला, परदारागामी, दूसरों पर अनावश्यक रीति से कोप करनेवाला, बलात्कार से अन्य जीवों को मारने या खानेवाला, विरक्त तपस्वियों का पीडक; । ८९३

कुरवरै महळिरै वाळिऱ् कॊंन्ऱुळोन्
पुरवल नुरुपॊंरुळ् पुनैविल् वारिनोन्
विरवलर् वॆंरिनिडै विळिक्क मीण्डुळोन्
इरवल ररुनिदि यॆंऱिन्दु वव्विनोन् 894

कुरवरै–पाँच गुरुओं को; मकळिरै–स्त्रियों को; वाळिल् कॊंन्ऱु उळोन्–तलवार के घाट उतारनेवाले; पुरवलन् उरु पॊंरुळ्–रक्षक राजा के (स्वत्व के) पदार्थों को; पुनैविल् वारिनोन्–छल से लूटनेवाला; विरवलर्–शत्रु; वॆंरिन् इटै विळिक्क–अपनी पीठ देख ले ऐसा; मीण्टु उळ्ळोन्–युद्ध से भागनेवाला; इरवलर् अरु निति–याचकों का कष्ट से प्राप्त धन; ऎंऱिन्तु वव्विनोन्–प्रहार कर हरनेवाला। ८९४

(माता, पिता, गुरु, भ्राता और राजा) पाँचों गुरु महाजनों का और स्त्रियों का वध करनेवाला, राजकीय संपत्ति को छल से लूटनेवाला, युद्ध में शत्रुओं को पीठ दिखाते हुए भागनेवाला, याचकों पर धावा करके उनके धन को हथियानेवाला; । ८९४

तळैत्ततण् डुळविनोन् ऱलैव नल्लनॆंन्
ऱुळैत्तव नरुनॆंऱि यन्द णाळरिल्
पिळैत्तवन् पिळैप्पिला मऱैयप् पेणला
दिळैत्तवन् पॊंय्यॆंनु मिळुवै नॆंञ्जिनोन् 895

तळैत्त–पुष्ट; तण्–शीतल; तुळविनोन्–तुलसीमाला-धारी श्रीविष्णु; तलैव

अल्लत् अ‍ॅन्ऱु–देवनाथ नहीं हैं, यह; अळैत्तवन्–कहनेवाला; अरु नॅऱि अन्तणाळरिल्–श्रेष्ठ सन्मार्गी ब्राह्मणों के प्रति; पिळैत्तवन्–अपराध करनेवाला; पिळैप्पु इला मऱैये–अकलंक वेदमार्ग का; पेणलातु–अनुगमन न करके; इळैत्तवन्–विपरीत कार्य करनेवाला; पॉय् अ‍ॅनुम्–असत्य रूपी; इळुतै नॅञ्चित्तोन्–भूतग्रस्त मन वाला। ८९५

पुष्ट और शीतल तुलसीदलों की माला के धारण करनेवाले श्रीविष्णु को परब्रह्म न माननेवाला, उत्तम मार्ग पर चलनेवाले ब्राह्मणों के प्रति अपराध करनेवाला, निर्दोष वेदमार्ग को आदर से न अपनाकर उसके विपरीत कार्य करनेवाला, असत्यभूत-ग्रस्त; । ८९५

तायपशि युळन्दुयिर् तळरत् तान्ऱनिप्
पाय्पॅरुम् बाळ्वयि ऱळिक्कुम् बावियुम्
नायहन् पडनडन् दवनु नण्णुमत्
तीयॅरि नरहत्तुक् कडिदु शॅल्हयान् 896

ताय्–माता जब; पचि उळन्तु–भूख से त्रस्त होकर; उयिर् तळर–प्राण सुखाती रहीं तब; तान्–स्वयं; तनि–अकेले; पाय् पॅरुम्–अति बड़ी; पाळ् वयिरु–नीच कुक्षि को; अळिक्कुम्–(भोजन से) पालनेवाला; पावियुम्–पापी और; नायकन् पट–अपने राजा को युद्धभूमि पर मरने देकर; नटन्तवनुम्–खुद भागनेवाला; नण्णुम्–जहाँ जायगा; अ ती ऍरि नरकत्तु–(उस) अग्नि से जलनेवाले उस नरक में; यान् कटितु चॅल्क–मैं शीघ्र जाऊँ। ८९६

माता को भूखा रखकर स्वयं अपने नीच पेट को भरकर पालनेवाला पापी, राजा को युद्ध में मरने देकर स्वयं भाग जानेवाला —ये सब जिस नरक में जायँगे, उसी में मैं भी शीघ्र जाऊँ (अगर मुझे इस कैतव का पता पहले से रहा हो)। ८९६

ताळिनि लडैन्दवर् तम्मैत् तऱ्कॉरु, कोळुऱ वञ्जिये कॉडुत्त पेदैयुम्
नाळिनु मऱमऱन् दवनु नण्णुमम्, मीळऱु नरहत्तुक् कडिदु वीळ्हयान् 897

ताळितिल् अटैन्तवर् तम्मै–शरणागत को; तऱ्कु ऑरु कोळ् उऱवु–अपना कोई अहित होगा; अञ्चि–इस डर से; कॉटुत्त–शत्रु के साथ सौंपनेवाला; पेतैयुम्–जड़मति; नाळितुम्–दैनिक; अऱम् मऱन्तवनुम्–धर्म (कर्म) भूलनेवाला; नण्णुम्–जिसमें जाएगा; अ मीळ् अऱु–उस अनावर्तनीय; नरकत्तु–नरक में; यान् कटितु वीळ्क–मैं शीघ्र पहुँच जाऊँ। ८९७

और भी शरणागत को स्वहानि से डरकर शत्रु के हाथ में सौंपनेवाला जड़मति, दैनिक धर्म से विमुख मनुष्य —ये जिसमें प्रवेश करेंगे, उसी नरक में मेरा भी जाना हो! । ८९७

पॉय्क्करि कूऱितोन् पोरुक् कञ्जितोन्
कैक्कॉळु मडैक्कलङ् गरन्दु वव्वितोन्

ऍय्त्तिडत् तिडर्शॅय्दो तॆन्ऱिन् तोर्पुहुम्
मॅय्क्कॊडु नरहिडै विरैविल् वीऴ्हयान् 898

पॊय् करि कूऱित्तोन्–झूठी गवाही देनेवाला; पोरुक्कु अञ्चित्तोन्–युद्ध से डरनेवाला (क्षत्रिय); कै कॊळ्ळुम् अटैक्कलम्–हाथ में प्राप्त धरोहर को; करन्तु वव्वित्तोन्–(उसके स्वामी को) धोखा देकर हथियानेवाला; ऍय्त्त इटत्तु–किसी के थके रहते समय; इटर् चॅय्तोन्–संकट देनेवाला; ऍन्ऱ इत्तोर्–ऐसे लोग; पुकुम्–जहाँ जायँगे, उस; मॅय् कॊटु नरकु इटै–सच्चे भयंकर नरक में; यान् विरैविल् वीऴ्क–मैं शीघ्र गिर जाऊँ। ८९८

झूठी गवाही देनेवाला, युद्ध-भीरु, धरोहर की वस्तु को छल से हड़प लेनेवाला, पहले ही त्रस्त मनुष्य को और भी सतानेवाला —ऐसे लोग जहाँ जायँगे वहीं, उसी घोर नरक में मेरा भी शीघ्र गमन हो ! । ८९८

अन्दण रुऱैयुळै यन्लि यूट्टिनोन्
मैन्दरैक् कॊन्ऱुळोन् वऴक्किर् पॊय्त्तुळोन्
निन्दनै देवरै निहऴ्त्ति नोन्बुहुम्
वॆन्दुयर् नरहत्तु वीऴ्ह यानुमे 899

अन्तणर् उऱैयुळै–विप्र के गृह में; अत्तलि ऊट्टित्तोन्–आग लगानेवाला; मैन्तरै कॊन्ऱु उळोन्–पुत्र को मारनेवाला; वऴक्किल् पॊय्त्तु उळोन्–झूठा दावा करनेवाला; तेवरै निन्तत्तै निकऴ्त्तित्तोन्–देवताओं की निंदा करनेवाला; पुकुम्–जिसमें प्रविष्ट होगा; वॆम् तुयर् नरकत्तु–भयंकर दुखदायी नरक में; यानुम् वीऴ्क–मैं भी गिर जाऊँ। ८९९

विप्रावास को अग्निदग्ध करानेवाला, पुत्रघातक झूठा दावा दागने वाला, देव-निन्दक —इनके प्राप्य नरक में मेरा भी प्रवेश हो जाय ! । ८९९

कन्ऱुयि रोयन्दुहक् कऱन्दु पालुण्डोन्
मन्ऱिडैप् पिऱर्पॊरुळ् मऱैत्तु वव्विनोन्
नन्ऱियै मऱन्दिडु नयमि नाविनोन्
ऍन्ऱिव रुऱुहदि यॆन्न दाहवे 900

कन्ऱु ओय्न्तु उयिर् उक–बछड़ा क्षीण होकर (दूध के बिना) मरने देकर; पाल् कऱन्तु उण्टोन्–दूध दुहकर पान करनेवाला; मन्ऱिटै–न्यायालय में; पिऱर् पॊरुळ्–पराये धन को; मऱैत्तु–छल कर; वव्वित्तोन्–हड़पनेवाला; नन्ऱियै मऱन्तिटुम्–कृतघ्न; नयम् इल् नावित्तोन्–अमंगल जीभ वाला; ऍन्ऱ इवर् उऱु कति–ऐसे इनकी प्राप्य गति; ऍन्नतु आक–मेरी भी हो जाय। ९००

बछड़ों को क्षीण होकर मरने देकर स्वयं गाय का दूध पीनेवाला, न्यायालय में झूठ बोलकर दूसरों की वस्तु को अपना बना लेनेवाले, कृतघ्न और अमंगलवाक् —इनकी गति मेरी भी हो। ९००

आरुतन् तुडन्वरु मञ्जोत् मादरै
ऊरुहोण् डलैक्कत्तन् नुयिर्हौण् डोडिन्नोन्
शोरुतन् नयलुळोर् पशिक्कत् तुय्त्तुळोन्
एरुमक् कदियिडै यानु मेरुवे 901

आरु–मार्ग में; तन्नुटन् वरुम्–अपने साथ आनेवाली; अम् चौल् मातरै–मधुरभाषिणी स्त्रियों को; ऊरु कौण्टु अलैक्क–(अत्याचारी) जब पकड़कर कष्ट देते हैं, तब; तन् उयिर् कौण्टु ओटिन्नोन्–अपने प्राण लेकर भागनेवाला; तन् अयल् उळोर्–अपने पास रहनेवाले; पचिक्क–जब भूखे हैं, तब; चोरु तुय्त्तु उळोन्–खुद अपना पेट भरके खानेवाला; एरुम्–जिस गति पर बढ़ेगा; अ कति इटै–उसी गति पर; यानुम् एर–मैं भी बढ़ूँ। ६०१

जो अपने साथ मार्ग में आनेवाली मधुर-बयनी स्त्रियों को खलों के पकड़कर कष्ट देने देकर खुद वचकर भाग जाता है वह, पास में रहनेवालों को भूखा रहने देकर स्वयं भरपेट खा लेनेवाला —ये जिस गति को प्राप्त होंगे, उसी गति में मैं भी चला जाऊँ। ९०१

अॅःकॅरि शॅरुमुहत् तेर्ड़ दॅव्वरुक्
कौःकिन नुयिरलैत् तुण्णु माशयान्
अःकलि लऱनॅरि यहर्ड़ि यौण्बौरुळ्
वॅःकिय मन्नन्वीळ् नरहिन् वीळ्हयान् 902

अॅःकु अॅरि—अस्त्र-शस्त्र जहाँ प्रयुक्त होते हैं, उस; चॅरिमुकत्तु–युद्धक्षेत्र में; एर्ड़ तॅव्वरुक्कु–सामने आये शत्रुओं के सामने; ऑःकिनन्–सिर झुकानेवाला; उयिर् अलैत्तु उण्णुम् आचैयान्—जीव-हत्या करके खाने का इच्छुक; अःकल् इल्–अक्षय; अऱम् नॅरि अकर्ड़ि–धर्ममार्ग छोड़कर; ऑण् पॊरुळ् वॅःकिय–(अधर्म-मार्ग से) अधिक धन (अर्जित करना) चाहनेवाला; मन्नन्–राजा; वीळ् नरकिन्–ये जिस नरक में गिरेंगे, उसी में; यान् वीळ्क–मैं गिर जाऊँ। ६०२

अस्त्र-शस्त्रों के साथ होनेवाले युद्ध में शत्रु से डरकर उसके सामने विनत होनेवाला, जीवभक्षण का इच्छुक, अक्षय धर्ममार्ग छोड़कर अत्यधिक धन का लालची बना हुआ राजा —ये जिस नरक में पतित होंगे, उसमें मेरा भी पतन हो। ९०२

अळिवरु मरशिय लॅय्दि याहुमन्, रिळिवरु शिरुतॊळि लियर्ड़ि याण्डुतन्
वळिवरु दरुमत्तै मऱन्दु मर्ड़ौरु, पळिवरु नॅरिपडर् पदह नाहयान् 903

अळिवु अरुम्–अमिट; अरचियल् ऍय्ति–राज्य प्राप्त करके; आकुम् ऍन्ऱु–अब हमसे सभी कुछ हो सकता है, यह समझकर; इळि वरु–निन्द्य; चिरु तॊळिल्–नीच काम; इयर्ड़ि–करके; आण्टु–राज्य करके; तन्–अपना; वळि वरु तरुमत्तै–परम्परागत धर्म को; मऱन्तु–भुलाकर; पळि वरु–अपयश लानेवाले; मर्ड़ु ऑरु नॅरि पटर्–(धर्म से) इतर दूसरे एक मार्ग में जानेवाला; पतकन्–पातक; यान् आक–मैं बनूँ। ६०३

अक्षय राज्य-शासन पाकर, 'अब हम कुछ भी कर सकेंगे' —इस अभिमान के कारक नीच कर्म करते हुए जो राजा परम्परागत धर्म को भूलकर निन्द्य अधार्मिक पथ पर चलेगा, वही पातक मैं हो जाऊँ। ९०३

कऩ्ऩियै यऴिशॅयक् करुदि ऩोऩ्गुरु, पत्ऩियै नोक्किऩोऩ् परुहि ऩोऩऱै
पॊऩ्ऩिहऴ् कळविऩिऱ् पॊरुन्दि ऩोऩॆऩुम्, इऩ्ऩव रुऱुहदि यॆऩ्ऩ दाहवे 904

कऩ्ऩियै—कन्या का; अऴिवु चॆय करुतिऩोऩ्—(कन्यात्व) नष्ट करना चाहनेवाला; कुरु पत्ऩियै नोक्किऩोऩ्—गुरु-पत्नी पर कुदृष्टि डालनेवाला; नऱै परुकिऩोऩ्—सुरापायी; पॊऩ्—स्वर्ण को; इकऴ् कळविऩिल्—निन्द्य चोरी से; पॊरुत्तिऩोऩ्—हथियानेवाला; ऎऩुम् इऩ्ऩवर्—ये और ऐसे लोग; उऱु कति—जिस गति को प्राप्त होंगे; ऎऩ्ऩतु आक—वह मेरी भी हो। ९०४

कन्यापहारी, गुरु-पत्नी पर कुदृष्टि डालनेवाला, मद्यपायी, सोने का चोर —ऐसे इनको जो गति मिलेगी, वही नरक की गति मुझे भी प्राप्त हो। ९०४

तञ्जॆऩ वॊदुङ्गिऩोर् तऩदु पारुळोर्
ऎञ्जिऩर् मरुक्किऩो डिरियल् पोयुऱ
वञ्जिशॆऩ् ऱिरुत्तवन् वाहै मीक्कॊळ
अञ्जिय मऩ्ऩव ऩवऩु माहयाऩ् 905

तञ्चु ऎऩ—आपकी शरण हैं, कहकर; ऒतुङ्किऩोर्—(अपने राज्य में) आये हुए लोगों को और; तऩतु पार् उळोर्—अपने राज्य के प्रजाजनों को; ऎञ्चिऩर्—और अन्यों को; मरुक्किऩोटु—घबड़ाहट के साथ; इरियल् पोय् उऱ—डरकर भागने को विवश करते हुए; वञ्चि चॆऩ्ऱु इऱुत्तवन्—("वंजि" पुष्पमाला धरकर) धावा बोलते हुए आनेवाला शत्रु राजा; वाकै मी कॊळ—"वाहै" पुष्पमाला धारण कर ले (विजयी हो लौटे) ऐसा; अञ्चिय मऩ्ऩवऩ् अवऩुम्—(व्यवहार करनेवाला) भीरु राजा; याऩ् आक—मैं होऊँ। ९०५

(अगर मेरा अपनी माता के छल का कोई पूर्वज्ञान रहा हो तो) मैं उस राजा के समान पापी समझा जाऊँ, जो अपने अधीन रहनेवाले शरणागतों, अपनी प्रजाओं और अन्यों को भयभीत कर भगाकर राज्य-हरण करने के लिए आये हुए "वंजि" मालाधारी अपने शत्रु-राजा से स्वयं भयभीत होकर उसको "वाहै" मालाधारी बनने दे। ("वंजि" की माला परराज्य पर धावा करने का निशान है और "वाहै" की माला विजय का। 'वंजि' लता है और 'वाहै' पेड़ के नाम हैं, जिनके फूलों की माला बनती है। साहित्य में 'वंजि' आक्रमण का वर्णन है और 'वाहै' विजय का।)। ९०५

मऱुविऱील् कुलङ्गळै माशिट् टेऱ्ऱिऩोऩ्
शिऱुविलै यॊळियव रुणवु शिन्दिऩोऩ्

नऱियवॆऩ् ऱयलवर् नावि ऩीर्वर
उरुपद नुङ्गिय वॊरुव ऩाह याऩ् 906

मऱु इल् तॊल् कुलङ्कळै–अकलंक प्राचीन कुलों के सपूतों को; माचु इट्टु एऱ्ऱित्तोऩ्–कालिख लगाकर बदनाम करनेवाला; चिऱुविलै–दुर्भिक्ष के समय में; ऍळियवर् उणवु–दीनों का भोजन; चिन्तित्तोऩ्–ठुकरा देनेवाला; उऱु पतम्–उत्तम भोजन को; नऱिय ऍऩ्ऱु–सुगन्धित और स्वादिष्ट देखकर; अयल् अवर् नाविल् नीर् वर–पास रहनेवाले के मुख में पानी भर आये तब; नुङ्किय ऒरुवऩ्–खुद निगलनेवाला एक मनुष्य; याऩ् आक–मैं बनूँ। ९०६

अकलंक प्राचीन कुल में उत्पन्न कुलीन लोगों पर झूठे कलंक का आरोप करनेवाला, अकाल में गरीबों का खाद्य नष्ट करनेवाला, स्वादिष्ट श्रेष्ठ भोजन को, पास रहकर अपने मुँह में पानी जो भर लाता है उसको दिये बिना, जो स्वयं निगल लेता है वह मनुष्य —इनके समान मैं भी पापभुक् होऊँगा। ९०६

ऊणल वुणर्वऴि नायि ऩुण्डवऩ्, आणलऩ् पॆण्णल ऩार्हॊ लामॆऩ
नाणल ऩरहमुण् डॆऩ्ऩु नल्लुरै, पेणलऩ् पिऱर्पऴि पिदऱ्ऱि याहयाऩ् 907

ऊण् अल–अखाद्य; उणर्वु अऴि–बुद्धिहीन; नायिऩ् उण्टवऩ्–कुत्ते के समान खानेवाला; आण् अलऩ्–यह पुरुष नहीं है (क्योंकि कायर है); पॆण् अलऩ्–स्त्री भी नहीं; आर् कॊल् ऍऩ–फिर कौन, ऐसा कहने पर भी; नाणलऩ्–न शरमानेवाला; नरकम् उण्टु ऍऩ्ऩुम्–नरक है, यह; नल् उरै पेण् अलऩ्–अच्छे (वेद-) उपदेश को न माननेवाला; पिऱर् पऴि पितऱ्ऱि–पर-निंदा बकनेवाला; याऩ् आक–मैं बनूँ। ९०७

(अगर मेरा अपनी माता के करतूत में कोई हाथ रहा हो तो) अपवित्र भोजन को कुत्ते के समान खानेवाला, "यह न पुरुष है, न स्त्री, यह नपुंसक कौन है ?" —ऐसा कहे जाने पर भी न शर्मानेवाला, नरक का वेद-प्रमाण न माननेवाला और पर-निन्दक —जिस रास्ते जायगा, उसी में मैं भी जाऊँगा। ९०७

विल्लिऩुम् वाळिऩुम् विरिन्द वाण्डॊऴिल्
पुल्लिडै युहुत्तऩऩ् पॊय्म्मै याक्कैयैच्
चिल्पह लोम्बुवाऩ् शॆऱुनर् शीऱिय
इल्लिडै यिडुपद मेऱ्क वॆऩ्कैयाल्। 908

विल्लिऩुम् वाळिऩुम् विरिन्त–धनुष और तलवार चलाने से व्यक्त; आण् तॊऴिल्–पौरुष कर्म को; पुल् इटै उकुत्तऩऩ्–घास के मध्य डालकर (व्यर्थ बनाकर); पॊय्म्मै याक्कैयै–नश्वर शरीर को; चिल् पकल् ओम्पुवाऩ्–कुछ दिन बचाए रखने के हेतु; चॆऱुनर्–शत्रु; चीऱिय–रुष्ट होकर जो देता है; इल इटै–(उस कारा-) गृह में; इटु पतम्–उसका दिया हुआ खाना; ऍऩ् कैयाल् एऱ्क–मैं अपने हाथ से लेकर खाऊँ। ९०८

तलवार, भाला आदि लेकर युद्ध करने का पौरुष रूपी अमृत को मिट्टी में डालकर (निष्फल बनाकर) इस नश्वर शरीर को कुछ दिन सुरक्षित रखने के हेतु शत्रुओं के कोप के साथ दिये गये (कारा-)गृह में रहकर उनका दिया हुआ खाना अपने हाथों से ग्रहण कर अशन करूँ। (अगर मैंने माता का काम पहले ही जान लिया हो तो)। ९०८

एऱ्ऱवर्क् कॊरुपॊरु ळुळ्ळ दिऩ्ऱॆऩ
माऱ्ऱल तुदवलऩ् वरम्बिल् पल्बहल्
आऱ्ऱिऩ नुळऱ्ऱुमो राद ऩॆय्दुमक्
कूऱ्ऱुरु नरहिऩॊर् कूऱु कॊळ्हयाऩ् 909

उळ्ळतु ऑरु पॊरुळ्–अपने पास जो रहता है, उस पदार्थ को; एऱ्ऱवर्क्कु–माँगनेवाले याचक को; उतवलऩ्–न देकर; इऩ्ऱु ऎऩ माऱ्ऱलऩ्–नहीं दूँगा, यह भी न कहकर; वरम्पु इल् पल् पकल्–अनन्त अनेक दिन; आऱ्ऱिऩऩ्–टालकर; उळऱ्ऱुम्–(उसको) सतानेवाला; ओर् आतऩ्–एक निठल्ले के; ऎय्तुम्–प्राप्य; अ–उस; कूऱ्ऱु उऱु नरकिऩ्–मृत्युदेव के अधीन रहनेवाले नरक के; ओर् कूऱु–एक भाग को; याऩ् कॊळ्क–मैं प्राप्त करूँ। ९०९

अपने पास रहनेवाले पदार्थ को याचक को न देनेवाला, या "नहीं दूँगा" यह भी न कहकर बहुत दिन तक उसको लालायित करनेवाला एक नाचीज़ व्यक्ति जिस जगह पहुँचेगा, उस मृत्युलोक के नरक-भाग में मैं पहुँच जाऊँ। ९०९

पिणिक्कुरु मुडैयुडल् पेणिप् पेणलाऱ्ऱ्
तुणिक्कुरु वयिरवा डडक्कै तूक्किप्पोय्
मणिक्कुरु नहैयिळ मङ्गै माऱ्हण्मुऩ्
तणिक्कुरु पहैञरैत् ताळ्ह वॆऩ्ऱलै 910

पिणिक्कु उऱु–रोगों का निलय; मुटै उटल्–दुर्गन्धपूर्ण शरीर; पेणि–रक्षित करके; पेणलार् तुणिक्क उऱु–शत्रु को काट सकनेवाली; वयिरम् वाळ्–सशक्त तलवार को; तट कै तूक्कि पोय्–विशाल हाथ में लेते हुए जाकर; मणि कुऱु नकै–मोती जैसे दाँतों की पंक्ति सहित; इळम् मङ्कै मार् कण् मुऩ्–छोटी आयु की स्त्रियों की आँखों के सामने; तणिक्क उऱु पकैञरै–जिसको हराया जा सकता है, उस शत्रु के सामने; ऎऩ् तलै ताळ्क–मेरा सिर झुक जाय। ९१०

रोगालय, दुर्गंधपूर्ण इस शरीर को रक्षित करके शत्रुसंहारक बड़ी तलवार को विशाल हाथ में ले जाकर, मुक्तादन्तावलि तरुणियों की आँखों के सामने, विजेय राजा के सामने मैं अपना सिर झुका लूँ। (यानी उतना पतित हो जाऊँ।)। ९१०

करुम्बलर् शॆऩ्ऩॆलङ् गळ्ऩिक् काऩ्ना
डरुम्बहै कवऱ्ऩ्दुण वावि पेणिनिऩ्

रिरुम्बलर् नॅडुन्दळै यीर्त्त कालॊडुम्
विरुम्बलर् मुहत्तॆदिर् विळित्तु निऱ्कयान् 911

करुम्पु–ईख; अलर् चॆन्नॆल्–विस्तृत शालि के पौधे; अम् कळनि कानम् नाटु–(इनसे) भरे अच्छे खेतों के घिरे हुए देश को; अरु पकै–हराने योग्य शत्रु; कवर्न्तु उण–छीनकर जब भोगते हैं, तब; आवि पेणि निन्ऱु–जान बचाकर; इरुम्पु अलर् नॆट्टुतळै–लोहे की बेड़ियाँ; ईर्त्त कालॊटुम्–खींचते जानेवाले पैरों के साथ; विरुम्पलर् मुकत्तु ऎतिर्–शत्रुओं के मुखों के सामने; यान् विळित्तु निऱ्क–मैं ताकता खड़ा रहूँ। ९११

(अगर मैं अपनी माता का काम पहले से जानता होऊँ तो) मैं वह राजा (सा) बनूँ, जो ईख के बागों और विस्तृत शालि के खेतों से आवृत देश को शत्रु द्वारा छिनकर भोगने देकर, अपने पैरों से लोहे की बेड़ियों की साँकल खींचता हुआ जाए और शत्रु के सामने ताकता खड़ा रहे (इस पद में "कान नाडु" नाम आया है। यह चोळ देश का एक भाग है, जिसको चोळ राजा के हारने पर शत्रु ने हथिया लिया था। इस पद से कम्बन के काल-निर्णय में सहायता ली जाती है।)। ९११

एनैप्पल शूळुरैत् तॆन्नै यीन्ऱवळ्
विनैत्तिरत् तरशितै विरुम्बि नन्नैकेळ्
अनैत्तुळ नरहॆनक् काह वॆन्ऱवळ्
पत्तिक्कम लप्पदम् बणिन्दि रैञ्जिनान् 912

ऍनै–ऐसा; पल चूळ उरैत्तु–अनेक शपथ खाकर; ऍन्नै ईन्ऱवळ्–मेरी जननी के; विनै तिऱत्तु अरचितै–छल से प्राप्त राज्य को; विरुम्पिन्–अगर मैं चाहूँ तो; अन्नै केळ्–माताजी, सुनिए; उळ–जो हैं; अनैत्तु नरकु–सभी नरक; ऍनक्कु आक–मेरे हों; ऍन्ऱु–यों कहकर; अवळ् पत्ति कमलम् पतम्–उनके शीतल (सुखद) कमल-चरणों पर; पणिन्तु इरैञ्चितान्–झुककर नमस्कार किया। ९१२

भरत ने ऐसे अनेक शपथ-वचन कहे। और भी कहा कि माँ! अपनी जननी के छल द्वारा प्राप्त राज्य को मैंने चाहा हो तो जितने भी पातकों के नरक हैं, वे सब मेरे हों! यह कहते हुए उन्होंने माता कौसल्या के तापहारी शीतल कमल-चरणों पर नमस्कार किया। ९१२

❀ तूय वाशहञ् जॊन्न तोन्ऱलैत्, तीय कानहन् दिरुवि नीङ्गिमुन्
पोयि नान्वरक् कण्ड पॊम्मलाळ्, आय कादला लळुदु पुल्लिनाळ् 913

मुन्–पहले; तिरुविन् नीङ्कि–राज्य-श्री को छोड़कर; तीय कानकम्–भयंकर जंगल; पोयिनान्–जो गये, वे; वर–लौट आये हों; कण्ट पॊम्मलाळ्–और उनको देखा हो, ऐसा आनन्द करनेवाली; आय कातलाल्–वैसे प्रेम के साथ; अळुतु–आँसू बहाकर; तूय वाचकम् चॊन्न–(जिन्होंने) निर्मल वचन कहे, उन; तोन्ऱलै–राजकुमार को; पुल्लिनाळ्–गले लगा लिया (कौसल्या ने)। ९१३

कौसल्यादेवी की स्थिति बहुत आनन्दपूरित हुई। उन्हें राज्यश्री छोड़कर भयंकर वन में जो गये थे, उन श्रीराम के लौटने पर जितना आनन्द हो सकता था उतना आनन्द हुआ। उन्होंने उतने ही गम्भीर प्यार के साथ निर्मल वचन कहनेवाले भरत को रोते हुए कसकर छाती से लगा लिया। ९१३

शॆम्मै यामन्नत् तण्णल् शॆय्हैयुम्, अम्मै तीमैयु मऱिद ऱॆऱ्ऱिनाळ्
कॊम्मै वॆम्मुलै कुमुरु पालुह, विम्मि विम्मिनिन् ऱिवैवि ळम्बिन्नाळ् 914

चॆम्मै आम् मन्नत्तु–सीधे स्वभाव वाले; अण्णल् चॆय्कैयैयुम्–भरत का कार्य; अम्मै तीमैयुम्–माता का दुष्कृत्य; अऱितल् तेऱ्ऱिनाळ्–निश्चित रूप से समझकर; कॊम्मै वॆम् मुलै–पुष्ट मनोरम पयोधर से; कुमुरु पाल् उक–उमड़ते दूध को बहने देते हुए; विम्मि विम्मि निन्ऱु–सिसकती खड़ी रहीं और; इवै विळम्पिन्नाळ्–यों बोलीं (देवी कौसल्या)। ९१४

उन्हें भरत के सीधे स्वभाव पर विश्वास हो गया और उनकी माता का बुरा गुण विदित हो गया। जब उन्हें यह भाव उठा तब उनका मातृ-वात्सल्य उमड़ आया और उनके पुष्ट और भावज्वलित स्तनों से दूध भरकर स्रवा। सिसकती खड़ी रहकर वे यों बोलीं। ९१४

❀ मुन्नै निन्गुल मदुलु ळोर्हडाम्, निन्नै यावरे निहर्क्कु नीर्मैयार्
मन्नर् मन्नवा वॆन्रु वाळ्त्तिनाळ्, उन्न वुन्ननैन् दुरुहि येङ्गुवाळ् 915

उन्न उन्न–ज्यों-ज्यों सोचतीं; नैन्तु उरुकि एङ्कुवाळ्–त्यों-त्यों क्षीण होतीं, द्रवीभूत होतीं और रोतीं, कौसल्या; मन्नर् मन्नवा–राजाधिराज; मुन्नै निन् कुलम्–प्राचीन तुम्हारे कुल में; मुतल् उळ्ळोर्कळ् ताम्–अग्रगण्य जो रहे; निन्नै निकर्क्कुम्–उनमें तुमसे समानता करनेवाले; नीर्मैयार्–स्वभाव के श्रेष्ठ (गुणों के); यावर्–कौन रहे; ॲन्रु–कहकर; वाळ्त्तिनाळ्–साधुवाद दिया। ९१५

ज्यों-ज्यों वे भरत का स्वभाव सोचतीं, त्यों-त्यों वे द्रवीभूत हो जातीं, गद्गद हो जातीं। उन्होंने उन्हें राजाधिराज! सम्बोधित करके साधुवाद दिया कि तुम्हारे प्राचीन और गौरववान कुल में उदित अग्रगण्य पूर्वजों में कौन थे, जो तुम्हारे समान गुण रखनेवाले थे? । ९१५

[इसके आगे दो पद हैं, जो किसी-किसी संग्रह में पाये जाते हैं। उनको टी-के-सी महोदय ने भी प्रामाणिक माना है। उनका सार यों है—इस तरह गद्गद और द्रवीभूत होनेवाली माता के पैरों पर गिरकर भरत के छोटे भाई शत्रुघ्न ने भी नमस्कार किया। फिर वह बहुत व्याकुल खड़े रहे। उस समय वसिष्ठजी आ गये। भरत ने उनके चरणों पर गिरकर दण्डवत की और पूछा कि मेरे पिता कहाँ हैं? महातपस्वी उत्तर नहीं दे सके। भावस्तब्ध होकर उन्होंने भरत को गले लगा लिया।]

मरुविल् मैन्द नेवळ्ळ लुन्दैयार्, इरुदि येय्दिना ळेऴि रुन्दन
शिरुवर् शॅय्हडन् शॅय्दु तीर्त्तियॆन्, रुरुदि मेयिना ळुरैवि ळम्बिनाळ् 916

उरुति मेयिनाळ्–धैर्य अवलम्बित करके; मरु इल् मैन्तने–निष्कलंक पुत्र; वळ्ळल् उन्तैयार्–वदान्य तुम्हारे पिता को; इरुति ऍय्ति–अन्त पाकर; नाळ् एऴु इरुन्तन–सात दिन बीत गये; चिरुवर् चॅय् कटन्–पुत्रों द्वारा करने योग्य कृत्यों को; चॅय्तु तीर्त्ति–कर दो; ऍन्रु–ऐसा; उरै विळम्पिनाळ्–(कौसल्या ने) कथन किया। ६१६

सम्हलकर कौसल्या भरत से बोलीं— निष्कलंक सुत ! वदान्य तुम्हारे पिता के प्राणांत हुए सात दिन हो गये। अब पुत्रों द्वारा जो कर्म होना चाहिए उसे पूरा करो। ९१६

अन्नै येविना ळडियि रैञ्जिनान्, पॊन्निन् वार्शडैप् पुनिद नोडुम्बोय्त्
तन्नै नल्हियत् तरुम नल्हिनान्, पन्नु तॊल्लरप् पडिव नोक्किनान् 917

एविनाळ्–आज्ञा देनेवाली; अन्नै अटि–माता के चरणों की; इरैञ्चिनान्–वन्दना करके; पॊन्निन् वार् चटै–स्वर्णवर्ण और लम्बी जटाधारी; पुनितनोटुम् पोय्–पुनीत ऋषि वसिष्ठ के साथ जाकर; तन्नै नल्कि–अपने (प्राण) को देकर; अ तरुमम् नल्किनान्–धर्म का पालन जिन्होंने किया उनका; पन्नु–प्रशंसनीय; तॊल् अरम्–प्राचीन धर्ममूर्त; पटिवम्–शरीर; नोक्किनान्–देखा। ६१७

माता की आज्ञा पाकर भरत, उनकी चरण-वन्दना करके स्वर्णवर्ण और लम्बी जटाधारी पुनीत ऋषि के साथ वहाँ गये, जहाँ दशरथ का शरीर रखा गया था। वहाँ उन्होंने अपने प्राण देकर धर्म को स्थिति दिलाने वाले राजा के प्रशंसनीय, वृद्ध, और धर्म-विग्रह के समान रहे शरीर को देखा। ९१७

मण्णिन् मेल्विऴुन् दलरि माऴ्हुवान्, अण्ण लाऴिया नवनि कावलान्
ऍण्णॆ युण्डपॊन् नॆऴिल्हॊण् मेनियैक्, कण्णि नीरिनार् कऴुवि याट्टिनान् 918

मण्णिन् मेल्–भूमि पर; विऴुन्तु–गिरकर; अलरि माऴ्कुवान्–चिल्ला-चिल्लाकर रोनेवाले; अण्णल् आऴियान्–प्रतापी चक्रवर्ती; अवनि कावलान्–अवनिपति का; ऍण्णॆय् उण्ट–तैल-मग्न; ऍऴिल् कॊळ्–सौंदर्य-युक्त; पॊन् मेनियै–स्वर्ण-सम शरीर; कण्णिन् नीरिनाल्–आँखों के आँसुओं से; कऴुवि–नहलाकर; आट्टिनान्–मग्न कर दिया। ६१८

देखते ही भावावेश में आकर भरत भूमि पर गिर पड़े। चिल्ला-चिल्लाकर रोये। आँसू इतने बहाए कि सम्मान्य चक्रवर्ती, अवनिपति का तैलनिमज्जित स्वर्णवर्ण शरीर उनसे धुल गया और उनमें मग्न हो गया। ९१८

पऱ्ऱि यव्वयिऱ् परिविन् वाङ्गिनार्, शुऱ्ऱु नान्मरैत् तुरैशॅल् केळ्वियार्
कॉऱ्ऱ मणगणै कुमुऱ मन्ननै, मऱ्ऱोर् पॉन्निन्मा मान मेऱ्ऱिनार् 919

नाल् मऱै–चतुर्वेद के; तुऱै चॅल्–प्रतिपादित मार्ग पर चलनेवाले; केळ्वियार्–शास्त्री लोग; मन्ननै–राजा को; चुऱ्ऱुम् पऱ्ऱि–चारों ओर से उठा लेकर; परिविन्–आदर के साथ; अ वयिन् वाङ्किनार्–वहाँ से हटाकर; कॉऱ्ऱम् मण् कणै कुमुऱ–राजमर्यादा के वाद्यों के बजते; ओर् पॉन्निन् मा मानम्–एक स्वर्ण-विमान पर; एऱ्ऱिनार्–आरूढ़ किया। ६१६

फिर चतुर्वेद-विहित धर्मज्ञ शास्त्री ब्राह्मणों ने राजा के शरीर को चारों ओर से आदर के साथ ग्रहण कर, वहाँ से उठाकर एक स्वर्ण-विमान पर रखा। तब राजमर्यादोचित वाद्य ध्वनि कर उठे। ९१९

उन्दु पॉऱ्ऱडन् देर्व लानॊडु, मन्दि रप्पॅरुन् दलैवर् मऱ्ऱुळोर्
तन्दि रत्तनित् तलैवर् नण्बिनोर्, वन्दु शुऱ्ऱुमुऱ् ऱळुदु माळ्हिनार् 920

पॊन् तटम् तेर् उन्तु–विशाल पीठ के रथ को चलाने में; वलानॊटु–समर्थ (सुमन्त्र) के साथ; मन्तिरम् पॅरुम् तलैवर्–मन्त्रीमण्डल के सदस्य; तन्ति तन्तिरम् तलैवर्–श्रेष्ठ सेनापति; मऱ्ऱु उळोर्–और अन्य राजकीय लोग; नण्पिनोर्–मित्र; वन्तु चुऱ्ऱुम् उऱ्ऱु–वहाँ आकर घेर गये; अऴुतु माळ्किनार्–रोकर व्याकुल हुए। ६२०

तब स्वर्णमय रथ चलाने में समर्थ (सारथी) सुमन्त्र के साथ अन्य मन्त्रीगण, सेनापति और अन्य राजकीय अधिकारी लोग और मित्र —सभी ने वहाँ आकर रोते हुए दुख प्रकट किया। ९२०

करैशॅय् वेलैपो नहरि कैयॅडुत्, तुरैशॅय् पूशलिट् टुयिर्दु ळङ्गवे
अरश वेलैशूऴ्न् दळुदु कैतॊऴुप्, पुरशै यानैयिऱ् कॊण्डु पोयिनार् 921

नकरि–नगरवासी; कै ॲटुत्तु–हाथ उठाकर; करै चॅय् वेलै पोल्–गरजते सागर के समान; उरै चॅय् पूचल् इट्टु–(आपस में राजा के) गुणकथन का शोर मचाते हुए; उयिर् तुळङ्क–प्राण काँप जाए, ऐसा; अरचर् वेलै–राजवृन्द (सागर) के; चूऴ्न्तु अऴुतु कै तॊऴ–घेरे हुए रोकर अंजलि करते; पुरचै यानैयिल्–गले की रस्सी (कलापक) सहित गज के ऊपर; कॊण्टु पोयिनार्–(विमान रखकर) ले गये। ६२१

नगरवासियों ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर हाहाकार किया। दशरथ के गुणकथन में इतना शोर मचाया कि गरजते सागर का-सा स्वर भर गया। जीव काँप उठे, राजा लोगों ने अंजलि करते हुए आर्तनाद किया। इस परिस्थिति में वह विमान गले में रस्सी के साथ शोभायमान एक गजराज पर चढ़ाया गया। ९२१

शङ्गु पेरियुन् दळुवु शिन्नमुम्, ॲङ्गु मॅङ्गुनिन् ऱिरङ्गि येङ्गुव
मङ्गु ऱोयुनहर् महळि रामॆनप्, पॊङ्गु कण्बुडैत् तळव पोन्ऱवे 922

चङ्कु–शंख; पेरियुम्–भेरियाँ और; तळ्वु चिन्नमुम्–उनके अनुसरण में बजनेवाले चिन्न वाद्य; ऍङ्कुम् ऍङ्कुम् निन्ऱु–सर्वत्र रहकर जो; इरङ्कि एङ्कुम्–वेदना का सूचक स्वर देनेवाले; मङ्कुल् तोय् नकर–मेघाश्रय उस नगर की; मकळिर् ऍन–स्त्रियों के समान; पॉङ्कु कण् पुटैत्तु–आँसू-भरी आँखों को पीटते हुए; अळुव पोन्ऱ–रोते-से लगे। ९२२

तब शंख, भेरियाँ, उनके अनुरूप बजनेवाले 'चिन्नम' नामक वाद्य सब स्थान-स्थान पर सर्वत्र बजाए गये। उनका नाद मेघाश्रय प्रासादों वाले उस नगर की उन स्त्रियों के क्रन्दन की ध्वनि के समान था, जो अपनी अश्रुभरी आँखों पर पीटते हुए रो रही थीं। ९२२

मावुम् यानैयुम् वयङ्गु तेर्हळुम्, कोवु नान्मऱैक् कुळ्वु मुन्सॅलत्
तेवि मारॉडुङ् गॉण्डु तॅण्डिरै, तावु वार्पुनर् चरयु वॅय्दिनार् 923

मावुम्–अश्वसेना; यानैयुम्–गजसेना; वयङ्कु तेर्कळुम्–साथ रहनेवाली रथसेना; कोवुम्–राजा लोग; नाल् मऱै कुळ्वुम्–चारों वेदों के ज्ञाता विप्रवृन्द; मुन् चॅल–आगे गये; तेविमारॉटुम्–पीछे आनेवाली (साठ सहस्र) पत्नियों के साथ; कॉण्टु–गज को चलाते हुए; तॅळ् तिरै तावु–स्वच्छ वीचियाँ जिस पर लहर रही थीं, उस; वार् पुनल्–जलसमृद्ध; चरयु ऍय्तिनार्–सरयू के तट पर गये। ९२३

रथ, गज, तुरग की सेनाएँ, राजा लोग, चतुर्वेदपाठी विप्रवृन्द ये सब विमान के आगे गये। चक्रवर्ती की साठ सहस्र पत्नियाँ पीछे गईं। सब स्वच्छ-वीचि-विचलित जलसमृद्ध सरयू के तट पर गये। ९२३

ऍय्दि नूलुळोर् मॉळिन्द यावैयुम्, शॅय्दु तीत्तलन् दिरुत्तिच् चॅल्वनै
वॅय्दि तेऱ्ऱिनार् वीर नुन्दैपाल्, पॉय्यिन् माक्कडन् कळित्ति पोन्दॅन्ऱार् 924

ऍय्ति–पहुँचकर; नल् उळोर्–शास्त्री लोगों ने; मॉळिन्त यावैयुम्–कहे अनुसार सब कर्म; चॅय्तु–करके; ती तलम् तिरुत्ति–दाह-स्थान (चिता) ठीक करके; चॅल्वनै–श्रीमान (के शरीर) को; वॅय्तिन् एऱ्ऱिनार्–दुख के साथ उस पर रखा; वीर–वीर; पोन्तु–आकर; नुन्तै पाल्–अपने पिता के; पॉय् इल् माकटन्–अपराधहीन श्रेष्ठ दाहकर्म; कळित्ति–अदा करो; ऍन्ऱार्–कहा। ९२४

वहाँ पहुँचकर शास्त्रियों ने दाह-पूर्व-कर्म विधि के अनुसार किये। फिर चिता सजाई। चक्रवर्ती के शरीर को उस पर रखा। फिर उन्होंने भरत से कहा कि वीर, आओ। पिता का, भूल-चूक के बिना उत्तम दाह-कर्म पूरा करो। ९२४

ऍन्नुम् वेलैयि लॅळुन्द वीरनै, अन्नै तीमैया लरश निन्नैयुम्
तुन्नु तुन्बत्ताऱ् ऱुऱन्दु पोयिनान्, मुन्न रेयॅन मुनिवन् कूऱिनान् 925

ऍन्नुम् वेलैयिल्–जब ऐसा कहा गया तब; ऍळुन्त वीरनै–जो उद्यत हो उठे,

उन वीर को; मुनिवन्–मुनिवर (वसिष्ठ); मुन्नरे–पहले ही; अन्नै तीमैयाल्–तुम्हारी जननी के कुकृत्य से; तुन्नु तुन्पत्ताल्–उत्पन्न दुख के कारण; अरचन्–राजा ने; निन्नैयुम् तुरन्तु–तुमको भी त्यागकर (अनधिकारी घोषित करके); पोयिनान्–प्राण त्यागे; अँन कूरिनान्–ऐसा कहा। ९२५

यह सुनकर भरत उठे। पर मुनिवर वसिष्ठ ने उनको रोकते हुए कहा कि भरत! तुम्हारे पिता ने पहले ही, तुम्हारी माता के कुकर्म से दुखी होकर, तुमको दाह-कर्म करने से वर्जित करके, तुम्हें त्याग दिया है। ९२५

तुरन्दु पोयिना नुन्दै तोन्ऱली, पिऱन्दु पेरऱम् पिऴैत्त दॅन्ऱपो
दिरन्दु पोयिना निरुन्द दाण्डदु, मऱन्दु वेऱॊरु मनत्त नाय्क्कॊलाम् 926

तोन्ऱल्–राजकुमार; नुन्तै–आपके पिता; नी पिऱन्तु–तुम्हारे जन्म से; पेर् अऱम् पिऴैत्ततु–बड़ा धर्म डिग गया; अँन्ऱ पोतु–ऐसा जब माना; मऱन्तु–(तब तुम्हारा गुण) भूलकर; वेऱु ऑरु मनत्तनाय् कॊल्–दूसरी भावना के वश में होकर शायद; तुरन्तु पोयिनान्–त्याग गये; इऱन्तु पोयिनान्–मर भी गये; आण्टु इरुन्ततु अतु–तब की स्थिति यह रही। ९२६

वे आगे विवरण देते हुए बोले— भरत! तुम्हारे पितृदेव ने सोचा कि तुम्हारे जन्म के कारण अचल धर्म की हानि हो गई है। उस शोक की अवस्था में, तुम्हारा स्वभाव भूलकर वे शायद दूसरी मनस्थिति में रहे। इसलिए उन्होंने तुम्हें पुत्र की पदवी से हटाकर त्याग दिया। फिर वे रहे भी नहीं, मर गये। तभी यह स्थिति हो गयी। ९२६

ऑन्ऱु कॊण्डुमा दवनि यम्बुऱा, निन्ऱु निन्ऱुदा नॅडिदु यिर्त्तनन्
नन्ऱु नन्ऱॆना नहैमु हिऴ्त्तनन्, कुन्ऱु कुन्ऱुरक् कुलवु तोळिनान् 927

अँन्ऱु कॊण्टु–ऐसा; मा तवन्–महान तपस्वी; इयम्पु उऱा–कहकर; निन्ऱु निन्ऱु–हिचकते-हिचकते; तान् नॅटितु उयिर्त्तनन्–खुद लम्बे श्वास छोड़ते हुए रहे, तब; कुन्ऱु–पर्वत को; कुन्ऱु उऱ–छोटा बनाते हुए; कुलवु तोळिनान्–उन्नत कन्धों वाले भरत; नन्ऱु नन्ऱु अँना–ठीक है, अच्छा है, कहकर; नकै मुकिऴ्त्तनन्–(वेदना की) हँसी हँसते हुए। ९२७

वसिष्ठजी स्वयं यह कहते हुए बहुत दुखी हो रहे थे। लम्बे निःश्वास छोड़ते हुए वे ठिठक-ठिठककर खड़े रहे। तब पर्वत-जयी उन्नत कंधों वाले भरत ने वेदना से हँसकर "अच्छा, अच्छा है!" कहा। ९२७

इडिक्कु वाळरा विडैव दामॆनप्
पडिक्कण् वीऴ्न्दनन् पदैक्कु नॆञ्जिनन्
तडुक्क लाहलात् तुयरन् दन्नुळे
तुडिक्क विम्मिनित् ऱळुदु शॊल्लिनान् 928

इटिक्कु–गाज के पड़ने पर; वाळ् अरा–भयंकर सर्प; इटैवतु आम् अँत–घबड़ा जाता हो, जैसे; पटि कण् वीळ्न्ततन्–भूमि पर गिरे; पतैक्कुम् नॅञ्चितन्–कम्पायमान मन के होकर; तट्टुक्कल् आक अल्ला तुयरम्–अदम्य दुख के; तन् उळ्ळे तुटिक्क–अपने अन्दर उमड़ते; विम्मि नितृ–उससे भरे होकर; अळुतु–रोते हुए; चॉल्लितान्–बोले। ९२८

वेदना की हँसी के साथ वज्राहत भयंकर सर्प के समान हरहराकर वे भूमि पर गिर पड़े। उनका मन काँपने लगा। अदम्य दुख उमड़ आया। उसके भरने से वे रोने लगे। तब वे बोले। ९२८

उरैशॅय् मन्नर्मर् ऍन्निन् यावरे, इरवि तन्कुलत् तॅन्दै मुन्दैयोर्
पिरद पूशनैक् कुरिय पेऱिलेन्, अरशु शॅय्यवो वाव दायिनेन् 929

पिरत पूचतैक्कु—प्रेत-पूजा का; उरिय पेऱु इलेन्–योग्य भाग्य मेरा नहीं रहा; अरचु चॅय्यवो आवतु आयितेन्–(वह मैं) राज्य करने योग्य हो गया; इरवि तन् कुलत्तु–सूर्य के कुल में; ऍन्तै–मेरे पिताजी; मुन्तैयोर्–उनके पूर्वज; उरै चॅय् मन्नर्–इन प्रकीर्तित राजाओं में; ऍन्नित्–मेरे समान; मऱु यावर्–दूसरे कौन हैं। ९२९

पिता के प्रेत-संस्कार का अधिकार न रखनेवाला मैं पिता के राज्य को लेने का अधिकारी कैसे हो गया? यह भी खूब रहा! सूर्यकुल में मेरे पिता और उनके पूर्वज —इन प्रकीर्तित राजाओं में मेरे समान कौन रहे? । ९२९

पूवि नान्मुहन् पुदल्व नादियाम्, तावित् मन्नर्दन् दरुम नीदियाल्
तेव रायिनार् शिऱुव नाहिये, आव नान्बिऱन् दवत्त नानवा 930

पूविल् नान्मुकन्–कमलासन चतुर्मुख के; पुतल्वन् आति आम्–पुत्र (कश्यप) से लेकर आनेवाले; ता इल् मन्नर्–निर्दोष राजा लोग; तम् तरुमम् नीतियाल्–अपनी धर्मसम्मत नीति-रीति से; तेवर् आयितार्–देवता बने; आव–हाय; नान् पिऱन्तु–मैं जन्म लेकर; चिऱुवन् आकि–क्षुद्र बनकर; अवत्तन् आनवा(ऱु)–निठल्ला हुआ कैसे। ९३०

कमलासन चतुर्मुख के पुत्र कश्यप (विवस्वान या सूर्य के पिता) आदि मेरे कुल के दोषहीन राजा अपने धर्मसम्मत नीति और रीति के कारण देवता बने। हाय! मैं पैदा हुआ क्षुद्र बनने! निठल्ला (नरकवासी) बनने! यह अनर्थ कैसे हो गया? । ९३०

तुन्नु ताळ्वळञ् ज़ुमन्द ताळैयिन्, पन्नु वान्गुलैप् पदडि यायिनेन्
ऍन्नै यॅन्नैये य ऱु कात्तवॅन्, अन्नै यारॅनक् कळुहु शॅय्दवा 931

वळम् तुन्नु–समृद्ध; ताळ् चुमन्त–तने से धृत; ताळैयिल्–नारियल पर; पन्नु वान् कुलै–विशेष रूप से मान्य फलों के गुच्छे में; पतटि आयितेन्–खोखला फल

हो गया हूँ; ॲन्नै ईन्ऱु कात्त–मुझे जन्म देकर पालती रही; ॲन् अन्नैयार्–मेरी माता ने; ॲन्कक्कु चॅय्त आऱु–मेरे प्रति जो किया है, वह रीति भी; ॲन्नै अऴकु–कितनी सुन्दर है। ९३१

बहुत समृद्ध रीति से खूब उगे हुए नारियल के पेड़ के घने फलों के गुच्छे के फलों में मैं एक खोखला फल बन गया। मेरी माता ने, जिसने मुझे जन्म देकर पाला है क्या ही अच्छा सुन्दर उपकार किया है, मेरा ? । ९३१

ॲन्ऱु कूऱिनोन् दिडरिऩ् मूऴ्हुमत्, तुन्ऱु तारवर् किळैय तोन्ऱलाल्
अन्ऱु नेर्हड नमैव दाक्किनाल्, निन्ऱु नान्मऱै नॅऱिशॅय् नीर्मैयान् 932

ॲन्ऱु कूऱि–यह कहकर; नॊन्तु–दुखविद्ध होकर; इटरिल् मूऴ्कुम्–वेदना में मग्न; अ तुन्ऱु तारवर्कु–उन पुष्पपुष्कल मालाधारी (भरत) के; इळैय तोन्ऱलाल्–छोटे भाई द्वारा; अन्ऱु नेर् कटन्–उस दिन का (अग्नि-) संस्कार; नाल् मऱै नॅऱि निन्ऱु–चतुर्वेद की बताई रीति से; चॅय् नीर्मैयान्–कार्य करने के स्वभाव वाले वसिष्ठ ने; अमैवतु आक्किनान्–कराया। ९३२

ऐसा कहते हुए भरत दुखाहत हो वेदना-सागर में डूबे रहे। तब चतुर्वेद-विहित शास्त्र-मार्ग में रहकर कार्य करनेवाले वसिष्ठजी ने पुष्पबहुल-मालाधारी भरत के छोटे भाई शत्रुघ्न के द्वारा उस दिन का दाह-कर्म कराया। ९३२

इऴैयु मारमु मिडैयु मिऩ्निडक्, कुऴैयु मामलर्क् कॊम्ब नार्हडाम्
तऴैयिन् मुण्डहन् दऴुवु कानिडै, नुऴैयु मञ्ञैपो लॅरियिन् मूऴ्हिनार् 933

इऴैयुम्–आभरण; आरमुम्–और मुक्ताहार; इटैयुम्–कमरें; मिन् इट–बिजली के समान चमकती हुई; कुऴैयुम् मा मलर् कॊम्पु अन्नार्कळ् ताम्–लचीली बड़ी पुष्पलता-सदृश (साठ सहस्र) देवियाँ; तऴैयिल्–पत्रहीन; मुण्टकम् तऴुवु कान् इटै–लाल कमल-वन में; नुऴैयुम्–घुसनेवाले; मञ्ञै पोल्–मोरों के समान; ॲरियिल् मूऴ्किनार्–अग्नि में निमग्न हुईं। ९३३

फिर दशरथ की साठ सहस्र पत्नियाँ चिता पर चढ़कर अग्नि में घुस गईं। जब वे चिता की ओर गईं, तब उनके स्वर्णाभरण और मुक्ताहार बिजली के समान चमक उठे। उनकी सुन्दर लचीली कटियाँ भी बिजली के समान लचक उठीं। लोच भरी बड़ी-बड़ी पुष्पलताओं के समान वे अग्नि में इस तरह घुस गईं, मानो कमल-कानन-मध्य मयूरसमूह मगन हो रहे हों। ९३३

अङ्गि नीरिनुङ् गुळिर वम्बुयत्, तिङ्गळ् वाण्मुहन् दिरुवि लङ्गुऱच्
चङ्गै तीर्न्दुदङ् गणवर् पिन्शॅलुम्, नङ्गै मार्बुहु मुलह् नण्णिनार् 934

अङ्कि–अग्नि; नीरितुम् कुळिर–जल से भी शीतल बनी; अम्पुयम् तिङ्कळ् वाळ् मुकम्–कमलवन-मध्य दिखनेवाले चन्द्र-सम उज्ज्वल उनके मुख; तिरु विळङ्कुऱ–सौंदर्यश्री में और बढ़े; तम् कणवर् पिन्–अपने पतियों के पीछे; चङ्कै तीर्न्तु

चॅल्लुम्–सन्देह छोड़कर जानेवाली; नङ्कैमार पुकुम्–स्त्रियों का गम्य स्थान; उलकम्–पुण्यलोक में; नण्णिनार्–पहुँचीं (वे देवियाँ)। ६३४

जब वे अग्नि में प्रविष्ट हुईं, तब अग्नि शीतल हुई। अम्बुजारण्य में चन्द्र-सम दीखनेवाले उनके प्रसन्न मुख अधिक श्री-दीप्त हो रहे। विना किसी संशय के पति के पीछे अपने प्राण छोड़कर जानेवाली पतिव्रता स्त्रियाँ जिस पुण्यलोक को पहुँच जाती हैं, उस लोक को वे चली गईं। ९३४

अन्नैय शॅय्हैया लरशर् कोमहऱ्, कित्तैय नऱ्कड ऩियऩ्ऱ दॆंऩ्ऱपिऩ्
मऩ्नैयि नॅय्दिऩाऩ् मरबिऩ् वाऴ्विऩ्नै, विऩ्नैयि नॅय्दुमोर् पिणियिऩ् वॆः्कलाऩ् 935

अन्नैय चॅय्कैयाल्–उस कार्यरीति से; अरचर् कोमकऱ्कु–चक्रवर्ती का; इन्नैय नल् कटऩ्–यह दाह-संस्कार; इयऩ्ऱतु–किया गया; ॲऩ्ऱ पिऩ्–इसके बाद; मरपिऩ् वाऴ्विऩ्नै–क्रमागत (राज-) जीवन को; विऩ्नैयिऩ् ॲय्तुम्–बुरे कर्म-फल के रूप में मिले हुए; ओर् पिणियिऩ्–एक रोग के समान समझकर; वॆ:.क अलाऩ्–न चाहनेवाले; मऩ्नैयिऩ् ॲय्तिऩाऩ्–(भरत) महल पहुँचे। ६३५

इस प्रकार चक्रवर्ती का उस दिन का दाह-संस्कार सम्पन्न हुआ। फिर भरत, जो क्रमागत रूप से प्राप्त राज्य को कर्मफल-दत्त रोग समझकर उसे चाहते नहीं थे, अपने महल में आये। ९३५

ऐन्दु मैन्दुना ऴ्ऴि यामॅऩ, मैन्दऩ् वॆऩ्दुयरक् कडलिऩ् वैहिऩाऩ्
तन्दै तऩ्वयिऱ् ऱरुमम् यावैयुम्, मुन्दु नूलुऴोर् मुऱैयिऩ् मुऱ्ऱिऩार् 936

मैन्तऩ्–राजकुमार भरत; ऐन्तुम् ऐन्तुम् नाऴ्–पाँच और पाँच (दस) दिन; ऊऴि आम् ॲऩ–युगों के समान; वॆम् तुयर् कटलिऩ् वैकिऩाऩ्–भयंकर दुख-सागर में मग्न रहे; तन्तै तऩ् वयिऩ्–पिता के प्रति; तरुमम् यावैयुम्–सभी संस्कार; मुन्तु नूल् उऴोर्–प्राचीन शास्त्रों के ज्ञाता शास्त्रियों ने; मुऱैयिऩ् मुऱ्ऱिऩार्–यथाक्रम पूरा किये। ६३६

शवदाह के बाद दस दिन के संस्कार विहित हैं। उन दसों दिनों में राजकुमार भरत, मानो वे युग-दीर्घ काल हों, ऐसे दुखमग्न और अधीर रहे। प्राचीन शास्त्रों के निपुण आचार्यों ने उनके पिता के प्रति कर्तव्य सारे संस्कार यथाक्रम पूरा किये। ९३६

मुऱ्ऱु मुऱ्ऱुवित् तुदवि मुम्मैनूऱ्, चुऱ्ऱम् यावैयुन् दॊडरत् तोऩ्ऱिऩाऩ्
वॆऱ्ऱि मादवऩ् विऩ्नैमु डित्तवक्, कॊऱ्ऱ वेऩ्डुङ् गुमरऱ् कूऱुवाऩ् 937

वॆऱ्ऱि मा तवऩ्–(तपस्या में) विजयी महान तपस्वी; मुऱ्ऱुम् मुऱ्ऱुवित्तु–सारा संस्कार कराके; उतवि–दान आदि देने का रस्म पूरा कर; मुम्मै नूल् चुऱ्ऱम्–तीनों वेदों के ज्ञाताओं के समूह के; यावैयुम् तॊटर–सबके घेरे आते; विऩ्नै मुटित्त–कर्म-बन्धन-मुक्त; अ–उन; कॊऱ्ऱम् वेल्–विजयशील भालाधारी; नॆटु कुमरऩ्–श्रेष्ठ राजकुमार भरत से; कूऱुवाऩ्–बात करने के लिए; तोऩ्ऱिऩाऩ्–पधारे। ६३७

यह सब पूरा कराने के बाद तपस्या में विजयी महान तपस्वी महर्षि ने दान देने का रस्म अदा कराया। फिर वे बुरे कर्मों से पूर्ण रूप से निवृत्त उन विजयी भालाधारी श्रेष्ठ राजकुमार भरत के पास आवश्यक बातें बताने के लिए पधारे। उनके साथ अनुगमन करते हुए त्रिवेदी (चारों वेद तीन में समाविष्ट हो जाते हैं) ब्राह्मणों का समूह आया। ९३७

मऩ्ऩ रिऩ्ऱिये वैयम् वैहऱाऩ्, तॊऩ्मै यऩ्ऱॆऩत् तुणियु नॆञ्जिऩार्
अऩ्ऩ मानिलत् तऱिञर् तम्मॊडुम्, मुऩ्ऩै मन्दिरक् किऴवर् मुऩ्ऩिऩार् 938

मुऩ्ऩै मन्तिरम् किऴवर्–प्राचीन मन्त्रीगण; वैयम्–देश; मऩ्ऩर् इऩ्ऱि वैकल्–राजा के बिना रहे, यह; तॊऩ्मै अऩ्ऱु–परम्परा नहीं; ॲऩ–ऐसा; तुणियुम् नॆञ्चिऩार्–निश्चयचित्त होकर; अऩ्ऩ मा निलत्तु अऱि अर् तम्मॊटुम्–उस विशाल देश के पण्डितों के साथ; मुऩ्ऩिऩार्–(भरत से मिलने) शीघ्र आये। ९३८

प्राचीन मंत्रियों ने सोचा कि देश का अराजक रहना उचित क्रम नहीं है। इसलिए वे उस देश के अनेक श्रेष्ठ पण्डितों को साथ लेकर भरत से मिलने शीघ्र पहुँचे। ९३८

11. आऱु शॆल् पडलम् (मार्ग-गमन पटल)

❀ वरऩ्मुऱै तॆरिन्दुणर् मऱैयिऩ् मादवत्
तरुनॆऱि मुऩिवऩु माण्डै याऩॆऩ
विरैविऩ्वन् दीण्डिऩर् विरहि ऩॆय्दिऩार्
बरदऩै वणङ्गिऩर् परियु नॆञ्जिऩार् 939

परियुम् नॆञ्चिऩार्–शोचयुक्त मन वाले; वरऩ् मुऱै–(राज्य-सम्बन्धी) कार्यरीति क्रम आदि से; तॆरिन्तु उणर्–अवगत; मऱैयिऩ्–वेदों के ज्ञानी; मा तवत्तु अरु नॆऱि–महान तप के श्रेष्ठ मार्गगामी; मुऩिवऩुम्–मुनिवर्य वसिष्ठ; आण्टैयाऩ् ॲऩ–वहीं रहते हैं (जहाँ भरत हैं), यह जानकर; विरैविऩ् वन्तु–शीघ्र आकर; ईण्टिऩर्–जमा हुए; विरकिऩ् ॲय्तिऩार्–(वे भरत को राजा बनाने का) उपाय सोचकर आये; परतऩै वणङ्किऩर्–भरत को नमस्कार किया। ९३९

मंत्री और पण्डित लोगों के अलावा अनेक लोग जिनके मन में राज्य-सम्बन्धी चिन्ता थी, भरत के पास आये। उनको मालूम था कि राजकीय क्रम और वेद-शास्त्र के ज्ञाता और महान तपस्वी मुनिवर वसिष्ठ भी वहाँ थे। भरत को राजा बनाना एक मात्र उपाय जानकर वे शीघ्र आये। आकर उन्होंने भरत को नमस्कार किया। ९३९

❀ मन्दिरक् किऴवरु नहर माऩ्दरुम्, तन्दिरत् तलैवरुन् दरणि पालरुम्
अन्दर मुऩिवरो डऱिञर् यावरुम्, सुन्दरक् कुरिशिलै मरबिऱ् चुऱ्ऱिऩार् 940

मन्तिरम् किळवरुम्–मन्त्री लोग; नकरम् मान्तरुम्–नगर के वासी; तन्तिरम् तलैवरुम्–सेनापति; तरणि पालरुम्–धराधिप; अन्तरम् मुनिवरोटु–आकाशचारी मुनियों के साथ; अरिञर्–पण्डित लोग; यावरुम्–सभी; मरपिन्–यथाक्रम; चुन्तरम् कुरिचिलै–सुन्दर राजकुमार भरत के; चुर्रित्तार्–चारों ओर बैठे। ९४०

मंत्रीगण, नगरवासी, सेनापति, धराधिप, आकाशचारी मुनिलोग और श्रेष्ठ पण्डित सभी क्रमानुसार राजा भरत को घेरकर आसनस्थ हुए। ९४०

❀ शुर्रिन रिरुन्दुळिच् चुमन्दि रप्पॅयर्प्
पॉर्रडन् देर्वलात् पुलमै युळ्ळत्तान्
कॉर्रवक् कुरिशिलैक् कुरित्त कॉळ्हैयान्
मुर्रुणर् मुनिवरन् मुहत्तै नोक्किनान् 941

चुर्रिनर् इरुन्त उळि–जब वे घेरे बैठे रहे, तब; पुलमै उळ्ळत्तान्–सूक्ष्ममति; चुमन्तिरन् पॅयर्—सुमन्त्र-कथित; पॉन् तट तेर् वल्लान्–स्वर्णरथ के समर्थ सारथी ने; कॉर्रम् अ कुरिचिलै–विजयशील राजा भरत को; कुरित्त कॉळ्कैयान्–संकेत करते हुए; मुर्रु उणर् मुनिवरन्–सर्वज्ञ मुनिवर का; मुकत्तै–मुख; नोक्कितान्–देखा। ९४१

जब वे सब भरत के चारों ओर बैठे तब सूक्ष्ममति सुमन्त्र, उन नामी स्वर्णरथ चालनसमर्थ मंत्री ने सर्वज्ञ मुनिवर के मुख को अर्थभरी दृष्टि से देखा। उनके मन में भरत सम्बन्धी विचार था। ९४१

❀ नोक्किनार् चुमन्दिर नुवल लुर्रदै
वाक्किना लन्रिये युणर्न्द मादवन्
काक्कुदि युलहुनिन् कडनि दामॅनक्
कोक्कुम रनुक्कदु तॅरियक् कूरुवान् 942

चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; वाक्किनाल् अन्रिये–वचन के बिना ही; नोक्किनाल्–दृष्टि से; नुवलल् उर्रतै–जो (कहा) इंगित किया, उसे; उणर्न्त मातवन्–समझकर महान तपस्वी; अतु–उसको लेकर; को कुमरनुक्कु–चक्रवर्ती-पुत्र से; उलकु काक्कुति–लोक (राज्य) का पालन करो; इतु निन् कटन् आम्–यह तुम्हारा कर्तव्य है; ॲन–ऐसा; तॅरिय–समझाते हुए; कूरुवान्–बोलने लगे। ९४२

यद्यपि सुमन्त्र ने मुख खोलकर कुछ नहीं कहा तो भी वसिष्ठ ने उनकी दृष्टि का इंगित समझ लिया। तब उन्होंने चक्रवर्ती-कुमार भरत को यह समझाना आरम्भ किया कि आप इस राज्य का पालन कीजिये। यह आपका कर्तव्य है। ९४२

❀ वेदिय ररुन्दवर् विरुत्तर् वेन्दर्हळ्
आदियर् निन्वयि नडॅन्द कारियम्
नीदियुन् दरुममु निरुत्त नीयिदु
कोदरु गुणत्तिनाय् मनत्तुट् कोडियाल् 943

कोतु अऱु कुणत्तिताय्–निर्दोष गुणी; वेतियर्–ब्राह्मण; अरु तवर्–श्रेष्ठ तपस्वी; विरुत्तर्–ज्ञान-वृद्ध; वेन्तर्कळ्–राजा; आतियर्–आदि; निन् वयिन् अटैन्त कारियम्–आपके पास आये हैं, सो कार्य; नीतियुम् तरुमुम् निऱुत्त–नीति और धर्म की स्थापना के अर्थ; नी इतु मनत्तुळ् कोटि–आप यह मन में धारण कर लीजिए। ९४३

निर्दोष गुण वाले ! ब्राह्मण लोग, अपूर्व तपस्वी, ज्ञानवृद्ध, विद्वान, राजा लोग आदि —ये आपके पास जिस कार्य के लिए आये हैं, वह इस राज्य में नीति और राजधर्म को स्थापित करना है। आप यह मन में धारण कर लें। ९४३

दरुममॅन् ऱॊरुपॊरु ळन्दु नाट्टुदल्, अरुमैयॅन् बदुर्दॆरिन् दरिदि यैयनी
इरुमैयुन् दरुवदऱ् कियैव दीण्डिदु, तॆरुण्मनत् तार्शॆयुज् जॆयलि दाहुमाल् 944

ऐय–तात; तरुमम् ऎन्ऱ् ओरु पॊरुळ्–धर्म नाम की वस्तु; तन्तु–प्रजा को देकर; नाट्टुतल्–उसकी संस्थापना करना; अरुमै ऎन्पतु–परममुख्य काम है, यह; नी तॆरिन्तु अऱिति–आप खूब समझते हैं; ईण्टु इतु–अब यह; इरुमैयुम् तरुवतऱ्कु–इह-पर दोनों का हित देने को; इयैवतु–अर्ह बना है; तॆरुळ् मनत्तार्–कर्तव्य के सम्बन्ध में सुलझे हुए विचार रखनेवाले का; चॆयुम् चॆयल्–कर्तव्य काम; इतु आकुम्–यह होगा। ९४४

तात ! धर्म नामक जो वस्तु है, उसको देश में प्रचलित और सुस्थापित करना बहुत कष्टसाध्य है —यह आप अच्छी तरह जानते हैं। अब आपके सामने जो धर्म है, वह इह-पर दोनों के हित करने के लिए अर्ह है। और विवेकमन लोगों का कर्तव्य भी वही है। ९४४

※ वळ्ळुऱु वयिरवा ळरशिल् वैयहम्, नळ्ळुऱु कदिरिलाप् पहलु नाळॊडुम्
तॆळ्ळुऱु मदियिला विरवुन् देर्दरिन्, उळ्ळुऱै युयिरिला वुडलु मॊक्कुमाल् 945

तेर् तरिन्–विचार करके देखें तो; वळ् उऱु–म्यान में रहनेवाली; वयिरम् वाळ्–सुदृढ़ तलवारधारी; अरचु इल् वैयकम्–राजा से रहित राज्य; नळ् उऱु–वांछित; कतिर् इला पकलुम्–सूर्य बिन दिन; नाळॊटुम्–सितारों के साथ; तॆळ् उऱु–स्वच्छ; मति इला–चन्द्र से हीन; इरवुम्–रात्रि; उळ् उऱै उयिर् इला–अन्तर्व्यापी प्राण से रहित; उटलुम्–शरीर; ऒक्कुम्–के समान है। ९४५

खूब विचार करके देखिये तो म्यान में तलवार रखनेवाले राजा के रक्षण से रहित देश, सबके चाहे हुए सूर्य से रहित दिन, नक्षत्र के साथ स्वच्छ चन्द्र से हीन रात और प्राणहीन शरीर —इनके समान होगा। ९४५

※ तेवर्द मुलहिनुन् दीमै शॆय्दुळल्, मावलि यवुणर्हळ् वैहु नाट्टिनुम्
एवॆवै युलहमॅन् ऱिशैक्कु मन्नवै, कावल्शॆय् तलैवरै यिन्मै कण्डिलम् 946

तेवर् तम् उलकितुम्–(परोपकारी) देवों के लोक में; तीमै चॆय्तु उऴल्–परपीड़न करते फिरनेवाले; अवुणर्कळ् वैकुम् नाट्टिनुम्–दानवों के वास-लोक में भी;

ए अँवै उलकम् अँन्ऱु इचैक्कुम्–अन्य जो लोक माने जाते हैं; अन्नतवै–उन सभी स्थानों में; कावल् चेय् तलैवर् इन्मै–शासन करनेवाले राजा का अभाव; कण्टिलम्–हम नहीं देखते। ६४६

परोपकारी देवों का लोक हो, चाहे पर-पीड़क अतिबली दानवों का, जहाँ भी लोक-व्यवस्था है, उन सभी स्थानों में रक्षक राजा का अभाव हमने नहीं देखा है। ९४६

❀ मुऱैदॅरिन् दौरुवहै मुडिय नोक्कुरिन्, मऱैयवन् वहुत्तन मण्णिल् वानिडै
निऱैपॅरुन् दन्मैयि निऱ्प शॅल्वन, इऱैवनै यिल्लन यावुङ् गाण्गिलम् 947

मुऱै तॅरिन्तु–क्रम जानकर; ऑरु वकै–एक प्रकार से; मुटिय नोक्कु उऱिन्–सम्पूर्ण संसार को देखें तो; मऱैयवन् वकुत्तन–ब्रह्म-सृष्टि में; मण्णिल्–भूलोक में और; वानिटै–स्वर्ग में; निऱै पॅरु तन्मैयिन्–खूब भरे और बड़ी संख्या में रहनेवाले; निऱ्प–स्थावर; चॅल्वन–और जंगम जीवों में; इऱैवनै इल्लन–राजा (मुखिया) रहित; यावुम् काण्किलम्–कोई वर्ग नहीं देखते। ६४७

व्यवस्था सम्बन्धी क्रम जानकर एक प्रकार से सम्पूर्ण जगत को देखने से पता चलेगा कि ब्रह्म-सृष्टि में भरे और घने चर-अचर सभी जगतों में विना राजा के कोई भी हम नहीं देखते। ९४७

पूत्तनाण् मलरयन् मुदल पुण्णियर्, एत्तुवान् पुहऴिनं रिन्ऱु कारुमुन्
कात्तनर् पिन्नोरु कळैह णिन्मैयाल्, नीत्तनो रुडैहल नीर दाहुमाल् 948

पूत्त नाळ् मलर्–(विष्णु की नाभि में) विकसित सुन्दर कमल पर आसीन कमलनाभ; अयन् मुतल–अज देव आदि; पुण्णियर्–पुण्यवानों (से); एत्तु–स्तुत्य; वान् पुकऴिनर्–श्रेष्ठ कीर्ति वाले; मुन्–(राजा) आपके पूर्व; इन्ऱु कारुम्–आज तक; कात्तनर्–शासन करते रहे; पिन्–इसके बाद; ऑरु कळै कण् इन्मैयाल्–और कोई अवलम्ब न रहने के कारण; नीत्तम् नीर्–सागर-मध्य; उटै–टटी; कलम् नीरतु–नाव के समान; आकुम्–(यह राज्य) हो जायगा। ६४८

श्रीमन्नारायण के नाभिकमल में उदित ब्रह्म आदि पुण्यपुरुष जिनकी प्रशंसा करते थे, तैसे वे तुम्हारे पूर्वज अब तक यह राज्य पालन करते रहे। अब (आप इसका पालन न करेंगे तो) यह अवलंब के विना सागर-मध्य टूटी हुई नाव की-सी स्थिति में आ जायगा। ९४८

❀ उन्दैयु मिऱन्दन नुम्मु नीत्तनन्
वन्ददु मन्नैदन् वरत्तिन् मैन्दनी
अन्दमिल् पेरर शलित्ति यन्नतु
शिन्दनै यमक्कॅनत् तॅरिन्दु कूऱिनान् 949

मैन्त–कुमार; उन्तैयुम् इऱन्तनन्–आपके पिता स्वर्गवासी हो गये; उम् मुन् नीत्तनन्–आपके अग्रज राज्य छोड़ जा चुके; अन्तम् इल्–अनन्त; पेर् अरचु–बड़ा

राज्य; वन्ततुम्–आपका हुआ, वह भी; अऩ्ऩै तन् वरत्तिन्–माता के वर द्वारा; नी अळित्ति–आप अपनाकर पालिये; ऍमक्कु चिन्तै अऩ्ऩतु–हमारा विचार वही है; ऍऩ्ऩ–ऐसा; तॆरिन्तु कूऱिऩाऩ्–जान-बूझकर कहा। ६४६

वत्स! आपके पिता स्वर्गवासी हो गये। आपके अग्रज राज्य छोड़कर वन चले गये। अब और कोई नहीं। यह राज्य भी विधिवत आपकी माता का वर प्राप्त होने से आपका ही है। इसको लेने में कोई अनुचितता नहीं होगी। आप इसका पालन-भार ले लें। यही हमारा विचार है—वसिष्ठजी ने खूब सोच-विचारकर यह कहा। ९४९

❀ तञ्जमिव् वुलहनी ताङ्गु वायॆऩच्
चॆञ्जॊवे मुऩिवरऩ् चॆप्पक् केट्टलुम्
नञ्जिऩै नुहरॆऩ नडुङ्गु वारिऩुम्
अञ्जिऩ नयरन्दऩ नरुविक् कण्णिऩाऩ् 950

इ उलकम् तञ्चम्–यह राज्य आपका पालनयोग्य है; नी ताङ्कुवाय्–आप भरण कीजिए; ऍऩ–ऐसा; मुऩिवरऩ्–मुनिवर ने; चॆञ्चॆवे चॆप्प—साफ़-साफ़ जब कहा; केट्टलुम्–उसको सुनते ही; नञ्चिऩै नुकर् ऍऩ–'विष खाओ' ऐसा कहने पर; नटुङ्कु वारिऩुम्–(सुनकर) काँपनेवाले से भी अधिक; अञ्चिऩऩ्–भयभीत होकर; अरुवि कण्णिऩाऩ्—सरिता-सम अश्रुधारा-युक्त आँखों के होकर; अयर्न्तऩऩ्–भरत शिथिल पड़े। ६५०

"यह राज्य आपके परिपालनार्ह है। आप इसका भार लीजिए।" ज्योंही यह बात मुनिवर ने साफ़-साफ़ कही, त्योंही भरत उससे अधिक काँप गये, जिसको विष खाओ—यह आज्ञा दी गयी हो। उनकी आँखों से सरिता के समान अश्रुधारा बही। वे शिथिल पड़ गये। ९५०

❀ नडुङ्गिऩ ऩात्तडु माऱि नाट्टमुम्
इडुङ्गिऩऩ् महळिरि ऩिरङ्गु नॆञ्जिऩऩ्
ऒडुङ्गिय वुयिरिऩ ऩुणर्वु कॊंदरत्
तॊडङ्गिऩ ऩरशवैक् कुळ्ळञ् जॊल्लुवाऩ् 951

मकळिरिऩ्–अबलाओं के समान; इरङ्कुम् नॆञ्चिऩऩ्–आर्तमन; नटुङ्किऩऩ्–काँपते हुए; ना तटुमाऱि–जीभ के लड़खड़ाते; नाट्टुमुम् इटुङ्किऩऩ्–दृष्टि संकरी हो (सकुचा) गई; ऒटुङ्किय उयिरिऩऩ्—क्षीण-प्राण (मूर्छित) हो गये; उणर्वु कॊं तर–(कुछ देर बाद) सुध आई तब; अरचु अवैक्कु–राजसभा को; उळ्ळम्–अपना मन; चॊल्लुवाऩ् तॊटङ्किऩऩ्–कहने लगे। ६५१

अबला के समान बहुत खिन्नमन होकर वे अधीर बने। जीभ लड़खड़ाने लगी। आँखें छोटी हो गयीं। प्राण-संचार भी संकुचित हो गया। वे मूर्छित हो गये। कुछ देर के बाद जब सुधि आयी तब वे सभासदों से यों अपना अभिप्राय कहने लगे। ९५१

❀ मून्ऱुल हिनुक्कोरु मुदल्व नाय्मुदल्
तोन्ऱिन निऱ्कयान् महुडञ् जूडुदल्
शान्ऱव रुरैशॅयत् तरुम मायदेल्
ईन्ऱवळ् शॅय्हैयि लिळुक्कुण् डाहुमो 952

मून्ऱु उलकिऩुक्कु–तीनों लोकों के; ऑरु मुतल्वऩ् आय्–अद्वितीय नेता बनकर; मुतल् तोन्ऱिऩऩ्–मेरे अग्रज के रूप में जो जन्मे; निऱ्क–उनके रहते; याऩ् मकुटम् चूटुतल्–मेरा मुकुट धारण करना; चाऩ्ऱवर् उरै चॅय–बड़ों के कहने से; तरुमम् आयतेल्–धर्मसम्मत बन जायगा तो; ईन्ऱवळ् चॅय्कैयिल्–मेरी जननी के कृत्य में; इळुक्कु उण्टु आकुमो–दोष है, ऐसा माना जा सकता है क्या। ९५२

त्रिलोकाधिपति श्रीराम, अपने अग्रज के रहते, मेरा किरीट-धारण धर्म-सम्मत हो गया क्या ? तो मेरी जननी के कृत्य में दोष क्या रहा ? । ९५२

अडैवरुङ् गॊडुमैयॆन् नन्नै शॅय्हैयै, नडैवरुन् दन्मैनीर् नन्ऱि यॆन्ऱिरेल्
इडैवरु कालमीण् डिरण्डु नीत्तिदु, कडैवरुन् दीनॆऱिक् कलियि नाट्चियो 953

अटैवु अरुम् कॊटुमै–अभूतपूर्व क्रूरता की; ऍन् अन्नै–मेरी माता के; चॅय्कैयै–काम को; नटै वरुम् तन्मै–सदाचारशील; नीर्–आप; नन्ऱु इतु–ठीक है यह; ऍन्ऱिरेल्–कहेंगे तो; इतु–यह युग और; ईण्टु इटै वरु कालम्–मध्य में आनेवाले युग (त्रेता और द्वापर); इरण्टुम् नीत्तु–दोनों को छोड़कर; कटै वरुम्–अन्त में आनेवाले; ती नॆऱि–बुरे चाल-चलनों को प्रोत्साहन देनेवाले; कलियिऩ् आट्चियो–कलिदेव का शासनकाल है क्या। ९५३

अभूतपूर्व क्रूर मेरी माता के काम को, सदाचारशील आप उचित और भला मानते हैं तो क्या यह युग बीच के त्रेता और द्वापर युग को पार कर अन्त में आनेवाला पापिष्ठ कलि का काल हो गया ? (त्रेतायुग में यह बात कही गयी है।) । ९५३

❀ वेत्तवै यिरुन्दनीर् विमल नुन्दियिल्
पूत्तवन् मुदलिनर् पुवियिऩ् ऱोन्ऱितार्
मूत्तव निरुक्कवे मुऱैमै यानिलङ्
गात्तव रुळरॆनिऱ् काट्टिक् काण्डिराल् 954

वेन्तु अवै इरुन्त नीर्–राज-सभा से अभ्यस्त आप; विमलन् उन्तियिल् पूत्तवन्–निर्मल विष्णुदेव की नाभि में उत्पन्न ब्रह्मा को; मुतलिनर्–आदि बनाकर; पुवियिल् तोन्ऱितार्–इस पृथ्वी पर जो पैदा हुए, उन राजाओं में; मूत्तवन् इरुक्कवे–ज्येष्ठ के रहते; मुऱैमैयाल्–उचित मान्य रीति से; निलम् कात्तवर्–भूमि के पालक; उळर् ऍऩिल्–रहते हों तो; काट्टिक् काण्टिर्–दिखा दीजिए। ९५४

आप राजसभा के अनुभवी सभासद हैं। सभी राजाओं को

लीजिए, जो निर्मल विष्णुदेव की नाभि से उत्पन्न ब्रह्मा से लेकर अब तक रहे हैं। क्या उनमें कोई थे, जिन्होंने अपने अग्रज के रहते स्वयं राजा बनकर राज्य किया था ? हों तो बताइए। ९५४

❀ नन्ऱॆन्ऱि यॆऩ्ऩिनुम् नाऩिन् नानिल
मन्नुयिर्प् पॊऱैशुमन्दु इरुन्दु वाऴ्हिलेन्
अन्नवन् ऱन्नैक्कॊणर्न्दु अलङ्गल् मामुडि
तॊन्नॆऱि मुऱैमैयिन् चूट्टल् काण्डिराल् 955

नल् नॆऱि ऍन्ऩितुम्–(चाहे कोई) यह अच्छी रीति है, कहे तो भी; नान्–मैं; इ नाल् निलम्–इस चतुर्विधा भूमि का; मन् उयिर् पॊऱै–जीवों का भार; चुमन्तु इरुन्तु–ढोता रहकर; वाऴ्किलेन्–नहीं जीऊँगा; अन्नवन् तन्नै–उनको; कॊणर्न्तु–लौटा लाकर; तॊल् नॆऱि मुऱैमैयिन्–प्राचीन रीति के अनुसार; अलङ्कल् मा मुटि–मालायुक्त किरीट का; चूट्टल्–धारण कराना; काण्टिर्–आप देखेंगे। ६५५

अगर आप सब मिलकर क्यों न कहें कि ज्येष्ठ को दूर करके अनुज का राज्य करना उचित क्रम ही है, तो भी मैं चतुर्विधा (पार्वत्य, वन, मैदान और समुद्र-तटीय) भूमि के जीवों के पालन का भार ढोते हुए जीवन धारण नहीं करूँगा। उन श्रीराम को लिवा लाऊँगा, प्राचीन परम्परा की रीति के अनुसार माला से अलंकृत किरीट का धारण कराऊँगा। आप देखिए। ९५५

❀ अन्ऱॆनि नवनॊडु मरिय कानिडै, निन्ऱिनि दरुन्दव नॆऱियि नाऱ्ऱुवॆन्
ऒन्ऱिल दॆनिन्न दुयिरै नीक्कुवॆन्, ऍन्ऱन नॆन्ऱलु मिरुन्द पेरवै 956

अन्ऱु ऍन्निन्–नहीं तो; अवनॊटुम्–उनके साथ; अरिय कान् इटै निन्ऱु–दुर्गम वन में रहकर; इनितु–सुखपूर्वक; नॆऱियिन्–यथाविधि; अरु तवम् आऱ्ऱुवॆन्–अच्छा तप करूँगा; ऒन्ऱिलतु ऍन्निल्–वह भी प्राप्त नहीं हुआ तो; ऍन्नतु उयिरै–अपने प्राण; नीक्कुवॆन्–तज दूँगा; ऍन्ऱनन्–कहा; ऍन्ऱलुम्–यह कहने पर; इरुन्त पेर् अवै–वहाँ एकत्र रही विशाल सभा के सभासद। ६५६

अगर वह नहीं हो सका तो उनके साथ उस दुर्गम वन में ही रहकर सुखपूर्वक यथाविधि कठोर तप में लग जाऊँगा। वह भी सम्भव नहीं हुआ तो अपने प्राणों को तज दूँगा। यह जब उन्होंने कहा तब विशाल सभा के सभी सभासद (यों बोले)। ९५६

आन्ऱपे ररशनु मिरुप्प वैयनुम्
एन्ऱनन् मणिमुडि येय्न्द वेन्दनी
वान्ऱॊडर् तिरुविनै मरुत्ति मन्निळन्
तोन्ऱलुहळ् यारुळर् निन्निर् ऱोन्ऱिनार् 957

आऩ्ऱ पेर् अरचऩुम्–गुणविशिष्ट चक्रवर्ती के; इरुप्प–रहते समय भी; ऐयऩुम्–प्रभु श्रीराम भी; मणि मुटि एऩ्ऩ एऩ्ऱतऩ्–सुन्दर किरीट को धारण करने के लिए सम्मत हुए थे; एऩ्तल्–महान; नी–आप; वाऩ् तोटर् तिरुविऩै–आकाश तक उन्नत राज्यश्री को; मऱुत्ति–लेने से अस्वीकार करते हैं; मऩ् इळम् तोऩ्ऱल्कळ्–राजकुमारों में; निऩ्ऩिऩ् तोऩ्ऱिऩार्–आपके सदृश जनमे; यार् उळर्–कौन हैं। ६५७

हे भरत ! (आप श्रीराम से अधिक प्रशंसा के पात्र बन गये।) चक्रवर्ती के रहते हुए भी श्रीराम ने मणिमय किरीट धारण करने के लिए अपनी सम्मति जता दी। पर यशस्वी ! आप तो आकाशोन्नत इस बड़ी राज्यश्री को लेने से इन्कार करते हैं। राजकुमारों में कौन हैं जो आपके समान जनमे हैं ? । ९५७

❀ आऴियै युरुट्टियु मऱङ्गळ् पोऱ्ऱियुम्
वेळ्वियै यियऱ्ऱियुम् वळर्क्क वेण्डुमो
एऴिऩो डेऴेऩु मुलह मॅऩ्जिऩुम्
वाऴिय निऩ्पुह ऴॅऩ्ऱु वाऴ्त्तिऩार् 958

आऴियै उरुट्टियुम्–(आज्ञा का) चक्र चलाकर और; अऱङ्कळ् पोऱ्ऱियुम्–धर्म संरक्षण करके; वेळ्वियै इयऱ्ऱियुम्–यज्ञ करके (ही); वळर्क्क वेण्टुमो–(यश) बढ़ाना है क्या; एऴिऩॊटु एऴ् ऍऩुम्–सात और सात के; उलकम् ऍञ्चिऩुम्–लोक मिट जायँ तो भी; निऩ् पुकऴ्–आपका यश; वाऴिय–बढ़े; ऍऩ्ऱु–ऐसा कहकर; वाऴ्त्तिऩार्–आशीर्वाद बोले। ६५८

यश तो आज्ञा चलाकर, धर्म संरक्षण कर और यज्ञादि करके बढ़ाया जाय, ऐसी आवश्यकता है क्या ? सात और सात चौदहों भुवन चाहे मिट जाएँ तो भी आपका यश अमर रहे ! —यह कहते हुए सभासदों ने उनको आशीर्वाद दिया। ९५८

❀ कुरिशिलुन् दम्बियैक् कूविक् कौण्डलिऩ्
मुरशऱैन् दिऩ्ऩहर् मुऱैमै वेन्दऩैत्
तरुदुमीण् डॅऩ्बदु शाऱ्ऱित् ताऩैयै
विरैविऩि लॅऴुहॅऩ विळम्बु वायॅऩ्ऱाऩ् 959

कुरिचिलुम्–राजकुमार भरत भी; तम्पियै कूवि–लघुभ्राता को बुलाकर; इ नकर्–इस नगर में; मुऱैमै वेन्तऩै–अधिकारी राजा को; ईण्टु तरुतुम् ऍऩ्पतु–यहाँ लिवा लाएँगे, यह; कौण्टलिऩ् मुरचु अऱैन्तु–मेघ-सम मुनादी पिटवाकर; चाऱ्ऱि–घोषणा करके; ताऩैयै–सेनाओं को; विरैविऩिल् ऍऴुक–शीघ्र कूच करें; ऍऩ विळम्पुवाय्–यह बतला दो; ऍऩ्ऱाऩ्–ऐसा बोले। ६५६

भरत ने अपने कनिष्ठ को बुलाया और आज्ञा दी कि भ्राता ! राज्य के सच्चे अधिकारी श्रीराम को यहाँ लिवा लाएँगे —यह बात नगर भर में

मेघगर्जन-सम बज उठनेवाला ढिंढोरा पिटवाकर सुना दो। सेनाओं को भी ताकीद कर दो कि वे जल्दी उठ आएँ। ९५९

❀ नल्लव नुरैशॅय नम्बि कूऱलुम्
अल्ललि नळुन्दिय वळविन् मानहर्
ऑल्लॅन विरैत्तदा लुयिरिल् याक्कयच्
चॉल्लॅनु ममुदिनाऱ् ऱुळिर्त्त दॅन्नवे 960

नल्लवन् उरै चॅय-पुरुषोत्तम के यह कहने पर; नम्पि–नायक शत्रुघ्न ने; कूऱलुम्–नगरवासियों को कहा तो; अल्ललिन् अळुन्तिय–संकटमग्न; अळवु इल् मा नकर्–असीम उस बड़े नगर में; उयिर इल् याक्कै—प्राण-हीन शरीर; अ चॉल् ऍनुम्–उस शब्द रूपी; अमुतिनाल्–अमृत से; तुळिर्त्ततु ऍन्न–पनप उठें, ऐसा; ऑल् ऍन इरैत्ततु–आरव उठा। ९६०

साधुस्वभाव भरत की आज्ञा पाकर शत्रुघ्न ने नगर भर में यह समाचार फैला दिया। सुनते ही संकटमग्न रहे उस असीम नगर में अकस्मात ऐसा कोलाहल भर उठा, मानो प्राणहीन पड़े रहे शरीरों में उस वचन रूपी अमृत ने नई जान भर दी हो। ९६०

अवित्तवैम् बुलत्तव रादि यावुळ
पुवित्तलै युयिरॅला मिरामन् पॊन्मुडि
कविक्कुमॅन् ऱुरैक्कवे कळित्त लालदु
चॅविप्पुल नहर्वदोर् दॅय्वत् तेन्कॊलाम् 961

इरामन् पॊन् मुटि कविक्कुम्–श्रीराम स्वर्ण-किरीट धारण करेंगे; ऍन्ऱु उरैक्कवे–यह कहते ही; अवित्त ऐम्पुलत्तवर् आतियाक–पंचेन्द्रिय-निग्रही (ज्ञानियों) से लेकर; पुवित्तलै उळ उयिर् ऍलाम्–भूमि पर रहनेवाले जीव सभी; कळित्तलाल्–हर्ष-मत्त हुए, इसलिए; अतु–वह वचन; चॅवि पुलम् नुकर्वतु ओर्–कर्णेन्द्रिय द्वारा भोग्य; तॅय्वम् तेन् कॊल्–दिव्य शहद था शायद। ९६१

श्रीराम स्वर्ण-किरीट-धारण करेंगे —यह वाक्य सुनते ही पंचेन्द्रिय-निग्रही ज्ञानियों से लेकर भूलोकवासी सभी जीव हर्षित हो उठे। तो वह वाक्य शायद श्रवण-भोग्य दिव्य मधु था!। ९६१

पडुमुर शऱैन्दतर् बरदन् ऱम्मुनैक्, कॊडिनहर्त् तरुमवन् कॊणरच् चेनैयुम्
मुडुहुह वॅन्ऱशॊल् मूरि मानहर्, उडुपदि वेलयि नुदयम् पोन्ऱदे 962

परतन्–भरत; तम् मुनै–अपने अग्रज भ्राता को; कॊटि नकर्–ध्वजा-शोभित नगर में; तरुम्–लिवा लायँगे; अवन् कॊणर–उनको ले आने; चेनैयुम् मुटुकुक–सेना भी शीघ्र रवाना हो; ऍन्ऱ चॊल्–यह घोषणा; पटु मुरचु अऱैन्तत्तर्–ढोल पीट करके की गई; मूरि मा नकर्–(यह सुनकर), बहुप्रशंसित वह नगर; वेलैयिन्–समुद्र पर; उटुपति उतयम् पोन्ऱतु–उडुपति के उदय होने पर जो होगा, उसके समान हो गया। ९६२

भरत अपने ज्येष्ठ भ्राता को पताकाओं से अलंकृत अयोध्या नगर में लिवा लाएँगे। उनको ले आने के लिए सेना भी साथ जाए। यह घोषणा ढिंढोरा पीटकर सुना दी गयी। तब गौरवपूर्ण अयोध्या नगर की स्थिति चन्द्रोदय पर सागर की-सी हो गयी। ९६२

❀ ऍऴुन्ददु पॅरुम्बडै येऴु वेलैयिन्, मॉऴिन्दपे रूऴियिन् मुऴङ्गि मुन्दॅऴ
अऴिन्ददु केहयन् मडन्दै याशैपोय्क्, कऴिन्ददु तुयर्नॅडुङ् गाद रूण्डवे 963

पॅरु पटै–बड़ी सेना; मॉऴिन्त पेर् ऊऴियिन्–(ग्रन्थों में) वर्णित युगान्त में; एऴु वेलैयिन्–सातों समुद्रों के समान; मुऴङ्कि ऍऴुन्ततु–आरव के साथ उठी; मुन्तु ऍऴ–जब वह उठी तब; केकयन् मटन्तै–केकयपुत्री की; आचै–आशा; अऴिन्ततु–मिटी; नॅटुम् कातल् तूण्ट–गम्भीर (श्रीराम-) प्रेम के प्रेरित करने से; तुयर्–लोगों का दुख; पोय् कऴिन्ततु–दूर हुआ। ९६३

विपुल सेना, पुराणों में वर्णित युगांत में जैसे सातों समुद्र उमड़कर फैलते हैं, वैसे तुमुल नाद के साथ उठी। ज्योंही वह उठी, त्योंही केकयराज-सुता (कैकेयी) की आशा मिट गयी। और श्रीराम-प्रेम से प्रेरित हो जो चलने को उद्यत हुए उनका दुख दूर हो गया। ९६३

पण्णिन् पुरविदेर् पहडु पण्डियुम्, मण्णिनै मऱैत्तन मलिन्द माक्कॉडि
विण्णिनै मऱैत्तन विरिन्द मात्तुहळ्, कण्णिनै मऱैत्तदु कमलत् तोन्ऱये 964

पण्णित–अलंकृत; पुरवि–घोड़े; तेर्–रथ; पकटु–गज; पण्टियुम्–छकड़े; मण्णिनै–पृथ्वी को; मऱैत्तन–ढाँप गए; मलिन्त मा कॉटि–खूब अधिक संख्या की ध्वजाओं ने; विण्णिनै–आकाश को; मऱैत्तन–ढँक दिया; विरिन्त मा तुकळ्–फैलनेवाली विपुल धूलि ने; कमलत्तोनै–ब्रह्मा की; कण्णिनै मऱैत्ततु–आँखों को ढँक दिया। ९६४

सारी भूमि अलंकृत घोड़े, रथ, गज और छकड़ों से ढक गयी। अधिक संख्या में फहरानेवाली ध्वजाओं से आकाश छिप गया। जो विपुल धूलराशि उठी उसने ब्रह्मा की आँखों को मीच दिया। ९६४

ईशनिव् वुलहिनै यऴिक्कु नाळॅऴुम्, ओशैयि निमिर्न्दुळ तॉल्लॅन् पेरॉलि
काशयिर् करियवर् काण मूण्डॅऴुम्, आशैयि निमिर्न्ददव् वनिह राशिये 965

ईचन्–रुद्रदेव; इ उलकिनै अऴिक्कुम् नाळ्–(जिस दिन) इस संसार को मेटेंगे उस दिन; ऍऴुम् ओचैयिन्–मचनेवाले हल्ले से बढ़कर; ऑल् ऍन् पेर् ऑलि–"ऑल" की विपुल ध्वनि; निमिर्न्तुळतु–भर उठी; काचैयिन् करियवन् काण–काशै (अतसी ?) के फूल से बढ़कर नीले देव को देखने के लिए; मूण्टु ऍऴुम्–उमंग कर उठनेवाली; आचैयिन्–बड़ी इच्छा से अधिक; अतिकम् राचि निमिर्न्ततु–सेना-समूह बढ़ा रहा। ९६५

रुद्रदेव के इस सृष्टि के संहार-काल में जैसा तुमुल शोर उठेगा, वैसा

'ऑल' का नाद इस सेना में भर उठा। 'काशै' नाम के (अतसी ?) पुष्प के रंग वाले श्रीराम के दर्शन की लालसा जितनी हर एक में भरी थी, उससे भी सेना का परिमाण अधिक था। ९६५

पडियॊडु तिरुनहर् तुऱन्दु पल्मरम्, शॆडियॊडु तॊडर्वऩ नोक्किच् चीदैयाम्
कॊडियॊडु नडन्दवक् कॊण्ड लामॆऩप्, पिडियॊडु नडन्दऩ पॆरुङ्गै वेऴमे 966

पटियॊटु–देश के साथ; तिरु नकर्–श्रीसम्पन्न नगर को भी; तुऱन्तु–छोड़कर; चॆटियॊटु–पौधों के साथ; पल मरम् तॊटर्–अनेक तरुओं से भरे; वऩम् नोक्कि–जंगल की ओर; चीतै आम् कॊटियॊटुम्–सीता रूपी लता के साथ; नटन्त–जो चले; अ कॊण्टल् ॲऩ–उन मेघ (-श्याम) के समान; पॆरु कै वेऴम्–लम्बी सूँड़ के गज; पिटियॊटुम्–हथिनियों के साथ; नटन्तऩ–चले। ९६६

जो श्रीराम कोसल देश के साथ अयोध्या नगर को त्यागकर, पौधों और तरुओं से पूर्ण वन की ओर अपनी लता-सी सीताजी के साथ गये, उन मेघश्याम की तरह लम्बी सूँड़ वाले गज अपनी हथिनियों सहित चले। ९६६

शेऱ्ऱिळ मरैमलर् शिदैत्त वामॆऩक्, काऱ्ऱळम् बॊलिदरु कऩ्ऩि मारॊडुम्
एऱ्ऱिळम् पिडिक्कुल मिहलि यिऩ्ऩडै, तोऱ्ऱिळ महळिरैच् चुमप्प पोऩ्ऱवे 967

चेऱु इळम् मरै मलर्–पंक में उद्भूत नवीन कमलपुष्प; चितैन्त आम् ॲऩ–बिथुरें (हारे) ऐसा; काल् तळम् पॊलि तरु–जिनके चरण शोभायमान थे, उन; कऩ्ऩि मारॊटुम्–बालाओं के साथ; इळम् पिटि कुलम्–छोटी हथिनियाँ; इकलि–स्पर्द्धा करके; एऱ्ऱु–युद्ध में रत हो; इऩ् नटै तोऱ्ऱु–मनोरम चाल में हारकर; इळम् मकळिरै–तरुणियों को; चुमप्प पोऩ्ऱ–ढो जाती हों, ऐसा चलीं। ९६७

पंक में उत्पन्न कमल-पुष्प का मान इनके सामने छिन्न-भिन्न हो गया —ऐसे दर्शनीय चरणों के साथ शोभित रहनेवाली छोटी आयु की स्त्रियों से, उनकी चाल की स्पर्द्धा में टकराकर जो हार गयीं, वे हथिनियाँ मानो हार मानकर दण्डस्वरूप, उनको अपनी पीठ पर ढोते हुए चलीं। ९६७

वेदऩै वॆयिऱ्कदिर् तणिक्क मॆऩ्मळैच्, चीदनीर् कॊडुनॆडुङ् गॊडियुञ् जॆऩ्ऱऩ
कोदैवॆञ् जिलैयवऩ् कोलङ् गाण्गिला, मादरि ऩुडङ्गुव वरम्बिल् कोडिये 968

वेतऩै–पीड़ा देनेवाली; वॆयिल् कतिर् तणिक्क–सूर्य की धूप को कम करने के लिए; मळै मॆऩ् चीतम् नीर् कॊटु–मेघ के मृदु शीतल जल को लेकर; वरम्पु इल् कोटि–अनन्त करोड़ों; नॆटु कॊटियुम्–लम्बी पताकाएँ; कोतै वॆम् चिलैयवऩ्–माला से अलंकृत धनुर्धर श्रीराम के; कोलम्–मनोहर रूप को; काण्किला–न दर्शन कर सकने से काँपनेवाली; मातरिऩ्–स्त्रियों के समान; नुटङ्कुव चॆऩ्ऱऩ–काँपती चलीं। ९६८

सेना के साथ अधिक संख्या में पताकाएँ पायी गयीं। वे कष्टदायिनी सूर्य-किरणों से बचाने के लिए मेघों से शीतल जल लेती चलीं; और माला

से अलंकृत भयंकर धनु-धारी श्रीराम के दर्शन न मिलने के कारण श्लथ होनेवाली स्त्रियों के समान वल खाती हुई फहरती चलीं। ९६८

वॆण्मदि मीच्चॆल मेह् मूर्न्दॆऩ
अण्णल्वॆङ् गदिरव नळविल् मूर्त्तियाल्
मण्णिडै यिऴिन्दॊरु वऴिक्कॊण् डालॆऩ
ऒण्णरु मऩ्ऩवर् कळिऱ्ऱि ऩेहिऩार् 969

अण्णल्–महत्वपूर्ण; वॆम् कतिरवऩ्–गरम किरणमाली; अळवु इल् मूर्त्ति आय्–असंख्यक रूपधर होकर; मण् इटै इऴिन्तु–भूमि पर आकर; मेकम् ऊर्न्तॆऩ–मेघों पर सवार हो चलता हो और; वॆण् मति मी चॆल–सफ़ेद चन्द्रों के ऊपर जाते; ऒरु वऴि कॊण्टाल् ॲऩ–एक मार्ग से यात्रा कर रहा हो, जैसे; ॲण्ण अरु मऩ्ऩवर्–असंख्यक राजा; कळिऱ्ऱिऩ् एकिऩार्–गजों पर (श्वेत छत्रों की) छाया में गये। ९६९

गजों पर राजा थे और उन पर श्वेत छत्र फैले हुए थे। वे गज मेघों के समान लगे और राजा असंख्य सूर्य-रूप लगे। इसलिए वह दृश्य ऐसा लगता था, मानो उष्णकिरण सूर्य असंख्य रूप लेकर भूमि पर आकर मेघों पर सवार हो जा रहा हो और उसके अनेक रूपों पर अनेक चन्द्र जा रहे हों। ९६९

तेर्मिशैच् चॆन्ऱदोर् परवै शॆम्मुहक्, कार्मिशैच् चॆऩ्ऱदो रुवरि कार्क्कडल्
एर्मुहप् परिमिशै येहिऱ् ऱॆङ्गणुम्, पार्मिशैच् चॆऩ्ऱदु पदादि वेलैये 970

ओर् परवै–एक समुद्र; तेर् मिचै चॆऩ्ऱतु–रथों पर बैठे हुए गया; ओर उवरि–एक सागर; चॆम्मुकम् कार् मिचै–लाली से युक्त मुख वाले गजों पर; चॆऩ्ऱतु–गया; कार् कटल्–(तीसरा) काला समुद्र; एर्मुकम्–सुन्दर; परिमिचै–अश्वों पर; एकिऱ्ऱु–चला; पताति वेलै–पदाति-सागर; पार् मिचै–भूमि पर; ॲङ्कणुम् चॆऩ्ऱतु–सर्वत्र फैला हुआ चला। ९७०

एक सागर रथ पर चला; एक समुद्र लाल रंग से रंगित मेघसम गजों पर चला। एक काला वारीश मनोहर मुखों वाले अश्वों पर गया। पदाति पारावार भूमि पर सर्वत्र फैला चला। ('सेना-सागर' कहना परिचित बात है। अब सागर अश्वों आदि पर गया —अनोखा वैचित्र्य है।)। ९७०

तारैयुञ् जङ्गमुन् ताळङ् गॊम्बॊडु, वार्विशि पम्बैयुन् दुडियु मऱ्ऱवुम्
पेरियु मियम्बल शॆऩ्ऱ पेदैमैप्, पूरियर् कुऴात्तिडै यऱिञर् पोलवे 971

तारैयुम्–'तारै' नामक बाजे; चङ्कमुम्–शंख; ताळम्–झाँझें; कॊम्पॊटु–श्रृंगियों के साथ; वार् विचि–डोरों से कसे; पम्पै–बड़े डमरू; तुटियुम्–डमरू; मऱ्ऱवुम्–और अन्य चमड़े-मढ़े बाजे; पेरियुम्–भेरियाँ; पेतैमै पूरियर्–मूर्ख नीच

लोगों के; कुऴात्तिटै—समूह-मध्य; अऱिञर् पोल—विद्वानों के समान; इयम्पल चॆऩ्ऱ—मौन हो चले। ९७१

'तारै', शंख और शृंगियाँ (जो फूँककर वजायी जाती हैं), झाँझें और चमड़े के "पम्पै" (बड़े डमरू ?) और डमरू आदि वाद्य गये, पर वे नहीं बजाये गये। वे इस तरह मौन थे, जैसे विद्वान लोग क्षुद्र और मूर्ख लोगों के बीच मौन हो रहते हैं। ९७१

तावरु नाण्मुद लणिय लाऱ्ऱहै, मेवरु कलऩ्गळै वॆऱुत्त मेऩियर्
तेवरु मरुऴ्हॊळत् तॆरियुङ् काट्चियर्, पूवुदिर् कॊम्बॆऩ महळिर् पोयिऩार् 972

तेवरुम् मरुऴ् कॊळ—देवों को भी भ्रम में डालते हुए; तॆरियुम् काट्चियर्—दर्शनीय रूप वाली; मकळिर्—स्त्रियाँ; ता अरु नाण्—निर्मल मंगलसूत्र रूपी; मुतल् अणि अल्लाल्—प्रमुख अलंकार के सिवा; तकै मेवरु कलऩ्कळै—सुन्दरता देनेवाले अन्य आभरणों को; वॆऱुत्त मेऩियर्—त्याग चुके शरीरों के साथ; पू उतिर् कॊम्पु ऎऩ—पुष्प-विमुक्त लता के समान; पोयिऩार्—चलीं। ९७२

बड़ी सुन्दर स्त्रियाँ, जिनको देखकर देव भी भ्रान्त होते थे कि ये देव-कन्याएँ हैं क्या ? पवित्र मंगल-सूत्र के अलावा कुछ नहीं पहने हुए थीं। अलंकार के आभूषणों से शून्य उनके शरीर पुष्पशून्य लताओं के समान दिखे। ९७२

अदिर्कडल् वैयह मऩैत्तुङ् गात्तवऩ्, विदिवरुन् दऩिक्कुडै मीदि लाप्पडै
पॊदिवरु कविहैमीऩ् पूत्त वायिनुम्, कदिर्मदि नीङ्गिय कङ्गुल् पोऩ्ऱदे 973

अतिर् कटल्—घोष-युक्त सागर-वलयित; वैयकम् अऩैत्तुम्—सारे भूतल के; कात्तवऩ्—पालनकर्ता का; विति वरुम् तऩि कुटै—विधि के अनुसार आनेवाला अनुपम छत्र; मीतु इला पटै—जिस सेना के ऊपर नहीं था, वह सेना; पॊति वरु कविकै मीऩ्—पास-पास आनेवाले अन्य छत्र रूपी नक्षत्रों से; पूत्त आयितुम्—भरी रहने पर भी; कतिर् मति नीङ्किय—उज्ज्वल चन्द्र से त्यक्त; कङ्कुल् पोऩ्ऱतु—रात्रि के समान दिखी। ९७३

उस सेना के साथ गर्जनशील सागर-वलयित सारी भूमि के पालक चक्रवर्ती का क्रम के अनुसार आनेवाला बड़ा, अनुपम विजयछत्र नहीं था। अन्य छत्र तो थे। पर उस छत्र से हीन वह सेना उस रात के समान लगी, जिसमें अत्यधिक संख्या में नक्षत्र रहे पर प्रकाशमय चन्द्र नहीं रहा। ९७३

शॆल्लिय शॆलविऩाऱ् चिऱिय तिक्कॆऩच्, चॊल्लिय शेऩैयैच् चुमन्द दॆऩ्ऩिऩ्
ऒल्लियल् वेलैनी रुडुत्त पारैयोर्, मॆल्लिय लॆऩ्ऱवर् मॆय्य रेहॊलाम् 974

चॆल्लिय चॆलविऩाल्—अपनी गति से; तिक्कु चिऱिय ऎऩ चॊल्लिय—दिशाओं को छोटी बनानेवाली; चेऩै—उस वृहत सेना को; चुमन्तते ऎऩ्ऩिऩ्—ढोती तो; ऒल् इयल् वेलै नीर्—गर्जनशील सागर-जल से; उटुत्त—वेष्टित; पारै—इस भूमि को;

ओर मॅल्लियल् ॲन्र्वर्–एक मृदुला (स्त्री) कहनेवाले; मॅय्यरे कोल्–सत्यवादी हैं क्या। ९७४

उस सेना के जाते-जाते ऐसा लगा कि दिशाएँ छोटी हैं। उस सेना को भी भूमि ढो सकी तो नादयुक्त समुद्रवेष्टित भूमि को एक कोमलांगी स्त्री कहकर चर्चा करनेवाले सत्यवादी हैं क्या? । ९७४

तङ्गुदण् शान्दिल कलवै शात्तिल, कुङ्गुमङ् गोट्टिल कोवै मुत्तिल
पॊङ्गिळङ् गॊङ्गैहळ् पुदुमै वेऱ्िल, तॆङ्गिळ नीरॆन्न् तॆरिन्द काट्चिये 975

पॊङ्कु इळम् कॊङ्कैकळ्–प्रवृद्ध तरुण स्तन; तङ्कु तण् चान्तु इल–चिपके शीतल चन्दन से रहित थे; कलवै चातृतिल–अन्य सुगन्ध-लेप से भी चर्चित न थे; कुङ्कुमम् कोट्टु इल–कुंकुम-चेप से चित्रकारी भी नहीं थी; कोवै मुत्तु इल–मोती के हार नहीं थे; वेरु पुतुमै इल–अन्य कृत्रिम अलंकार नहीं थे; तॆङ्कु इळ नीर ॲन्न–नारियल के डाभों के समान; काट्चि तॆरिन्त–दृश्यमान रहे। ९७५

स्त्रियों के प्रवृद्ध तरुण स्तनों पर न चन्दन का लेप लगा था, न अन्य सुगन्धित द्रव्यों का लेप। कुंकुम-चेप से चित्रित चित्रकारी भी न पाई गई। उन पर मुक्ताहार नहीं हिल रहे थे। न उन पर कोई कृत्रिम साज-शृंगार पाया गया। तब वे नारियल के कच्चे फलों के समान स्वाभाविक सौन्दर्य के साथ शोभे। ९७५

इन्रुणै यवर्मुलै यॆळुदु शान्दिनुम्, मन्ऱलन् दारिनु मऱैन्दि लामैयाल्
तुन्ऱिळङ् गॊडिमुदऱ् ऱूरु नीङ्गिय, कुन्ऱॆनप् पॊलिन्दन कुववुत् तोळ्हळे 976

कुववु तोळ्कळ्–पुष्ट कन्धे; इन् तुणैयवर् मुलै–उनकी प्यारी प्रियाओं के स्तनों पर; ॲळुतु चान्तितुम्–बनी चित्रकारी के कुंकुम-चेप से; मन्ऱल् अम् तारितुम्–सुबासित सुन्दर मालाओं से; मऱैन्तु इलामैयाल्–ढके नहीं थे, इसलिए; तुन्ऱु इळम् कॊटि मुतल्–घनी बाललताओं आदि के; तूऱु नीङ्किय–झाड़-झंखाड़ हटाए हुए; कुन्ऱु ॲन्न–पर्वतों के समान; पॊलिन्तन–दर्शनीय रहे। ९७६

पुरुषों के कन्धों पर भी प्रेयसियों (स्तनों) का चन्दन-लेप नहीं लगा था। सुबासित मालाओं से भी उनके कन्धे ढके नहीं थे। इसलिए वे उन पर्वतों के समान लगे, जिन पर से लताएँ, पौधे, झाड़ियाँ, आदि हटायी गई हों। ९७६

नऱैयऱु कोदैयर् नाट्चॆय् कोलत्तिन्, तुऱैयऱ वञ्जनन् दुऱन्द नाट्टङ्गळ्
कुऱैयऱ निहर्त्तन कॊऱ्ऱ मुऱ्ऱुवान्, कऱैयऱक् कळुविय काल वेलैये 977

नऱै अऱु कोतैयर्–सुबास-रहित केश वाली स्त्रियाँ; नाळ् चॆय् कोलत्तिन् तुऱै–दैनिक शृंगार के प्रकारों को; अऱ–छोड़ गईं, इसलिए; अञ्चनम् तुऱन्त नाट्टङ्कळ्–अंजनहीन आँखें; कॊऱ्ऱम् मुऱ्ऱुवान्–विजय पाकर एक वीर; कऱै अऱ कळुविय–धब्बों को धोकर रहे; कालन् वेलै–यम-सम भाले के; कुऱै अऱ निकर्त्तन–बिल्कुल समान थीं। ९७७

स्त्रियों के केश से सुगन्धि नहीं आ रही थी। उन्होंने कोई कृत्रिम श्रृंगार नहीं कर लिया था। उनकी आँखों में काजल नहीं था। इसलिए वे उस यम-सम भयंकर भाले के समान लगीं, जिसको विजय पाने के पश्चात एक वीर ने रक्त के धब्बे आदि धोकर साफ़ किया हो। ९७७

विरिमणि मेहलै विरवि यार्त्तिल, तॅरिवैय रल्हुर्ऱा रीलियि ऱेरॅन्नप्
परिबुर मार्त्तिल पवळच् चीऱडि, अरियिन्न मार्त्तिलाक् कमल मॅन्नवे 978

तॅरिवैयर् अल्कुल्–स्त्रियों के जघनप्रदेश; तार् ऑलि इल् तेर् अॅन्न—दाम-घण्टियों के रव से हीन रथों के समान; विरि मणि मेकलै विरवि आर्त्तिल–खुली घुंघरुओं की मेखलाओं से अलंकृत हो शब्द-युक्त नहीं रहे; पवळम् चिरु अटि—प्रवाल-सम लघु चरण; अरि इन्नम् आर्त्तु इला—अलिकुल-कल नाद रहित; कमलम् अॅन्न—कमल के समान; परिपुरम् आर्त्तिल—नूपुर-ध्वनि से हीन थे। ६७८

स्त्रियों के जघनों पर मेखला नहीं थी और छोटी घुँघुरुएँ नहीं बजती थीं। अतः वे दाम-हीन रथों के समान लगे। उनके प्रवालवर्ण छोटे चरणों पर नूपुर नहीं वजते थे। इसलिए वे चरण उन कमलों के समान लगे, जिन पर अलिकुल गुंजार नहीं कर रहे। ९७८

मल्हिय केहयन् मडन्दै वाशहम्, नल्हिय दरिवैयर् नडुविऱ् केहॉलाम्
पुल्हिय मणिवडम् पूण्गि लामयाल्, ऑल्हिय वॉरुवहैप् पॉऱैयु यिर्त्तवे 979

मल्किय—अर्थ-भरे; केकयन् मटन्तै वाचकम्–केकयतनया के वचन ने; नल्कियतु–सहायता की; अरिवैयर् नटुविऱ्के कॉल्–स्त्रियों की कमरों की ही शायद; पुल्किय मणि वटम्–घनी मणिमालाओं को; पूण्किलामैयाल्–पहनती नहीं थीं, इसलिए; ऑल्किय–पतली कमरें; ऑरु वकै पॉऱै–एक तरह के भार से; उयिर्त्त–हीन हुए। ६७६

केकयराज-कुमारी ने जो वर पाया, उससे अत्यधिक हित शायद स्त्रियों की कमरों का ही हुआ। क्योंकि स्त्रियों ने आभरण नहीं पहना और उतनी हद तक उन पर भार कम हुआ। ९७९

कोमहन् पिरिदलिऱ् कोल नीत्तनळ्
तामरैच् चॅल्वियुन् दवत्तै मेविन्नाळ्
कामनु मरुन्दुयरक् कडलिन् मूळ्हिन्नान्
आमॅन्नक् कळिन्ददव् वळविल् शेन्नैये 980

कोमकन् पिरितलिन्–चक्रवर्ती-तनुज (श्रीराम) के वियोग से; कोलम् नीत्तनळ्–श्रृंगार छोड़कर; तामरै चॅल्वियुम्–कमला ने भी; तवत्तै मेविन्नाळ् आम्–तपस्या अपना ली हो; कामन्नुम्–मनोज भी; अरु तुयर् कटलिन् मूळ्कित्तान् आम्–अतल दुख-सागर में डूब गया; अॅन्न–ऐसा; अ अळवु इल् चेन्नै–वह अपार सेना; कळिन्ततु–(बिना प्रेमोत्साह के या धनसमृद्धता की तड़क-भड़क के) चली। ६८०

यह बात कही जाए कि चक्रवर्ती-तनुज के वियोग से अलंकार-हीन कमला श्रीलक्ष्मी ने भी तप का जीवन अपना लिया। मनोज भी अतल दुख-सागर में मग्न हो गया; ऐसा वह अपार सेना (प्रमोद-रहित और आडम्बर-हीन) चलती गई। ९८०

मण्णयुम् वान्यरुम् वयङ्गु दिक्कयुम्, उण्णिय निमिर्हड लॉक्कु मॅन्वदॅन्
कण्णिनु मनत्तिनुङ् गमलत् तण्णरन्, ऍण्णिनु नॅडिदव णॅऴुन्द शेनैये 981

अवण् ऍऴुन्त चेनै–वहाँ जो सेना उठी; मण्णैयुम्–(वह) भूमि को; वानैयुम्–स्वर्ग को; वयङ्कु तिक्कैयुम्–विद्यमान (आठों) दिशाओं को; उण्णिय–लीलने के लिए; निमिर्–उमंग कर आनेवाले; कटल् ऑक्कुम्–(प्रलय-कालीन) समुद्र की समानता करेगी; ऍन्पतु–यह कहना; ऍन्–क्या अर्थ रखता; कमलत्तु अण्णल् तन् कण्णितुम्–कमलभव की दृष्टि से; मनत्तितुम्–कल्पना से भी; ऍण्णितुम्–विचार से भी; नॅटितु–बड़ी थी। ९८१

प्रस्थानरत उस सेना को भूमि, आकाश और दृश्यमान आठों दिशाओं को लीलने के लिए उमड़ आनेवाला प्रलयकालीन सागर कहना क्या अर्थ रखेगा? वह तो कमलभव ब्रह्मा की दृष्टि और कल्पना के अन्दर भी न समा सकनेवाली थी। ९८१

अलैनॅडुम् बुनलरक् कुडित्त लार्पुवि, निलैपॅर निलैनॅरि निरुत्त लानॅडु
मलैयिनै मण्णुर वऴुत्त लार्रमिऴ्त्, तलैवनै निहर्त्तदत् तयङ्गु तानैये 982

अ तयङ्कु तानै–वह दर्शनीय सेना; अलै नॅटु पुनल्–लहरोंवाले विस्तृत जल को; अर् कुटित्तलाल्–पूर्ण रूप से पी जाने के कारण; पुवि निलैनॅरि–भूमि को एक स्थिति पर; निलै पॅर निरुत्तलाल्–स्थिर रूप से स्थापित रखने से; नॅटु मलैयिनै–बड़े पर्वत को; मण् उर अऴुत्तलाल्–भूमि के अन्दर धँसा देने से; तमिऴ् तलैवनै निकर्त्ततु–तमिऴ के (प्रथम आचार्य) नेता, अगस्त्य के समान थी। ९८२

उस सेना को तमिऴ के प्रथम आचार्य अगस्त्य कह सकते हैं क्योंकि अगस्त्य ने समुद्र-जल को पूरा-पूरा पी लिया था; भूमि को स्थिरता प्रदान की और विन्ध्य पर्वत को नीचे धँसा दिया था। (पार्वती-विवाह के अवसर पर सारे जीव उत्तर को आ गये थे। दक्षिण भाग ऊपर उठ आया। तब परमेश्वर ने भूमि को सम रखने के लिए अगस्त्य को दक्षिण की तरफ़ भेजा। मार्ग में विन्ध्य अगस्त्य को रोकने लगा, तो उन्होंने उसे धँसा दिया। फिर वे दक्षिण में आये और दक्षिण भाग नीचे आ गया। अगस्त्य को तमिऴ का 'जनक' कहा जाता है। यह औपचारिक पद है। वे पाणिनी के समान तमिऴ के प्रथम वैयाकरण थे।) सेना ने भी मार्ग के सब जलाशयों को जल पीकर रिक्त करा दिया। सेना के ही कारण राजा के पास भूमि स्थिर रूप से रहती है। सेना मार्ग में पड़नेवाले टीलों को सम बना देती है। ९८२

अऱिञरुञ् जिऱियरु मादि यन्दमाच्
चॅऱिपॅरुन् दातैयुन् दिरुवु नीङ्गलाल्
कुऱियवन् पुन्नॅल्लाम् वयिऱ्ऱिऱ् कॉण्डनाळ्
मऱिहड लॉत्तदव् वयोत्ति मानहर् 983

अऱिञरुम् चिऱियरुम्–ज्ञानी, विद्वान और निम्न श्रेणी के लोग; आति अन्तम् आक–क्रमशः आदि और अन्त में हों ऐसा; चॅऱि–लोगों से पूर्ण; पॅरुम् तात्तैयुम्–बड़ी सेना; तिरुवुम्–और वैभव; नीङ्कलाल्–(इनके) चले जाने से; अ अयोत्ति मा नकर्–वह अयोध्या का बड़ा नगर; कुऱियवन्–छोटे मुनि ने; पुत्तल् ऍल्लाम् वयिऱ्ऱिल् कॉण्ट–सारा जल अपने पेट में (जिस दिन) भर लिया; नाळ्–उस दिन; मऱि कटल् ऑत्ततु–उस दिन के अपनी दुरवस्था में (जल-हीन) रहे समुद्र के समान रहा। ९८३

विद्वान पण्डित से लेकर साधारण अनपढ़ तक के सारे लोगों से भरी वह सेना श्रीसम्पन्न अयोध्या नगर को छोड़कर चली तो वह विशाल नगर उस दिन के समुद्र के समान दिखने लगा, जिस दिन उन वामन मुनि अगस्त्य ने समुद्र का सारा जल पी लिया था। ९८३

पॅरुन्दिरै नदिहळुन् वयलुम् बॅट्पुरु, मरङ्गळु मलैहळु मण्णुङ् गण्णुऱत्
तिरुन्दलि नयोत्तियान् दॅय्व मानहर्, अरुन्दॅरु वॉत्तदप् पडैशॅ लाऱ्ऱो 984

पॅरुम् तिरै नतिकळुम्–बड़ी तरंगों वाली नदियाँ; वयलुम्–खेत; पॅट्पु उऱु मरङ्कळुम्–चाहनीय वृक्ष; मलैकळुम्–पर्वत; मण्णुम्–मामूली स्थल; कण् उऱ–आँखों को प्रिय लगनेवाली रीति से; तिरुन्तलिन्–(मार्ग बनानेवालों द्वारा) ठीक किये रहने के कारण; अ पटै चॅल् आऱु–उस सेना के जाने का मार्ग; अयोत्ति आम्–अयोध्या के; तॅय्वम् मा नकर–दिव्य, बड़े नगर की; अरुम तॅरु ऑत्ततु–श्रेष्ठ वीथियों के समान था। ९८४

सेना जब जाने लगी तब आगे जाकर मार्ग बनानेवालों ने मार्ग ठीक किया। लहरोंवाली नदियाँ, खेत, मनोहारी वृक्ष, पर्वत और अन्य स्थल ठीक किये गये। इसलिए सेना के मार्ग दिव्य नगर अयोध्या की वीथियों के समान सुखद बने रहे। ९८४

तार्हडाङ् गोदैतान् तामन् दान्दहै
एर्हडाङ् गलवैताङ् कमळ्न्दिन् रॅन्बराल्
कार्हडा मॅन्मिहक् कडुत्त कैम्मलै
वार्हडा मल्लदम् मन्नन् शेनैये 985

अ मन्नन् चेनै–उस राजकीय सेना में; कार्कळ् ताम् ऍन्न–मेघ ही (के समान) मान्य; मिक कटुत्त–बहुत समानता रखनेवाले; कै मलै वार् कटाम्–गजों से बहनेवाले मद-नीर के; अल्लतु–सिवा; तार्कळ् ताम्–(पुरुषों की) पुष्पमालाएँ; तामम् ताम्–सुन्दर बड़ी मालाएँ; तकै एर् कटाम्–गौरव और सौंदर्य प्रदान करनेवाले;

कलवै ताम्–पुलों का मिश्रण; कमऴ्न्ततु इन्ऱु–उनकी गन्ध नहीं पाई गई; ऍन्पर्–लोगों ने कहा। ९८५

उस सेना में गज-मद-गंध के सिवा न तो अलंकार की मालाओं की गन्ध पाई गई, न विविध रंग-विरंगे फूलों की (चन्दन आदि लेप की) गन्ध पाई गई। यह सभी का कथन था। ९८५

आऴुलाङ् गडलिन् महन्ऱ वक्कडल्, तोऴुलाङ् गुण्डल मुदल तॉल्लणि
केऴुला मिन्नॉऴि किळर्न्द दिल्लैयाल्, वाळला नुदलियर् मरुङ्गु लल्लदे 986

कटलिनुम् अकन्ऱ–समुद्र से भी बड़ी; आळ् उलावुम् अ कटल्–मनुष्यों से भरा उस (सेना-) सागर में; वाळ् उलावुम् नुतलियर्–उज्ज्वलता-युक्त भाल वाली स्त्रियों की; मरुङ्कुल् अल्लतु–कमर के सिवा; तोळ् उलावुम् कुण्टलम् मुतल—स्कन्ध-स्पर्शी कुण्डल आदि; तॉल् अणि–प्राचीन आभरण किसी से भी; केळ् उलावुम्–मनोरम रंग-भरी; मिन् ऑळि—विद्युत-सी आभा; किळर्न्ततु इल्लै–छिटकी नहीं। ९८६

वह सेना लोगों से खचाखच भरी थी और सागर से भी बड़ी थी। वहाँ केवल उज्ज्वल ललाट वालियों की कमरों से विद्युत की-सी कान्ति छिटक रही थी। नहीं तो वहाँ न भुजस्पर्शी कुण्डलों की दीप्ति पाई गई न अन्य प्राचीन आभरणों की प्रभा। ९८६

मत्तळ मुदलिय वयङ्गु पल्लियम्, ऑत्तन शेऱलि नुरैयि लामैयिन्
शित्तिरच् चुवर्नॅडुञ् जेनै तीट्टिय, पत्तियै निहर्त्तदप् पडैयि नीट्टमे 987

अ पटैयिन् ईट्टम्–वह सेना-समूह; उरै इलामैयिन्–परस्पर सम्भाषण-हीन रहने से; मत्तळम् मुतलिय वयङ्कु–'मत्तळ' (पखावज-सा एक वाद्य) आदि; पल् इयम्–अनेक वाद्य; ऑत्तन–स्तब्ध चलनेवाले उन लोगों के समान (मौन हो); चेऱलिन्–चले, इसलिए; चुवर् तीट्टिय–दीवार में लिखित; नॅटु चेनै–विशाल सेना के; चित्तिरम् पत्तियै–चित्रों की पंक्तियों की; निकर्त्ततु–समानता करता था। ९८७

उस सेना में कोई बोलता नहीं था। 'मर्दळ' आदि बाजे नहीं बजते थे। इसलिए वह मौन सेना भित्तियों में खिंची सेना की पंक्तियों के समान लगी। ९८७

एडऱु कोदैयर् विऴियि नॅयदकोल्, ऊडुऱ वुरन्दोळैत् तुयिरु णावहै
आडवर्क् करुम्बॅरुङ् गवश मायदु, काडुऱै वाऴ्क्कैयैक् कण्ण नण्णले 988

कण्णन्–(सभी के लिए) नेत्र (सम) श्रीराम का; काटु उऱै वाऴ्क्कैयै–वनवासी-जीवन को; नण्णल्–अपना लेना; एटु अऱु कोतैयर्—पुष्पालंकार-विमुक्त केश वाली स्त्रियों के; ऍय्त विऴियिन् कोल्–प्रेषित दृष्टि-शर; उरम् ऊटु उऱ–वक्ष के आरपार; तोळैत्तु–छेदकर; उयिर् उण्णा वकै–प्राण न खा जाएँ, इसका; आटवर्क्कु–पुरुषों के लिए; अरु पॅरु कवचम् आयतु–अपूर्व बड़ा कवच बन गया। ९८८

सबके नेत्र-समान (प्यारे और रक्षक) श्रीराम का वनवास पुरुषों के

लिए वरदान-सा प्रतीत हुआ क्योंकि वह बलवान कवच बनकर पुष्प-विहीन केश वाली स्त्रियों के दृष्टि रूपी शरों को उनके वक्ष को निफरकर सालने से रोकता था। श्रीराम के वनवास से उत्पन्न दुख ने पुरुषों के मन में प्रेम के भाव को जागने न दिया। ९८८

कनङ्गुळैक् केहयन् महळिर् कण्णिय
शिनङ्गिडन् दॅरिदलिर् ऱीयुन्द वेकॉलाम्
अनङ्गनैङ् गॊडुङ्गणै कडन्द वाडवर्
मनङ्गिडन् दुण्गिल महळिर् कॉङ्गैये 989

कनम् कुळै–भारी कुण्डलधारिणी; केकयन् मकळिल्—केकयराज-तनया के प्रति; कण्णिय–उत्पन्न; चिनम्–(लोगों की) कोपाग्नि; किटन्तु ऍरितलिन्–जी में रहकर जलती रही, इसलिए; अनङ्कन् ऐङ्कॉटुम् कणै–अनंगदेव के पाँच क्रूर शर; तीयुन्तवे कॉल्–झुलस ही गये; कटन्त आटवर् मनम्–वैसे काम-निग्रही पुरुषों का मन; मकळिर् कॉङ्कै किटन्तु–स्त्रियों के स्तनों पर जा अटक कर; उण्किल—सौंदर्य-स्वादन करता न रहा। ६८६

भारी कुण्डल-धारिणी के प्रति पुरुषों के मन में जो क्रोध उत्पन्न हुआ था, वह आग के समान उनके मन में जलता रहा। उस आग ने (पाँच) अनंगशरों को झुलसा दिया। इसी कारण उनके नेत्र स्त्रियों के मनोरम पयोधरों पर नहीं लगते और उनके मन उसका आनन्द नहीं लूटते थे। ९८९

इन्नण नॆडुम्बडै येह वेन्दलुम्, तन्नुडैत् तिरुवरै शीरै शात्तिनान्
पिन्निळै यवनॊडुम् पिऱन्द तुन्बॊडुम्, नन्नॆडुन् देर्मिशै नडत्तल् मेयिनान् 990

नॆटुम् पटै–वह विशाल सेना; इन्नणम् एक–इस प्रकार जाती रही, तब; एन्तलुम्–राजा भरत ने भी; तन् उटै(य) तिरु अरै–अपनी श्रीयुत कमर पर; चीरै चात्तिनान्–वल्कल पहना; पिन् इळैयवनॊटुम्–अपने कनिष्ठ भ्राता के साथ; पिऱन्त तुन्पॊटुम्–मन में उत्पन्न दुख के साथ; नल् नॆटु तेर् मिचै–अच्छे बड़े रथ पर; नटत्तल् मेयिनान्–चलने लगे। ६६०

वह बड़ी सेना इस तरह दुख-मौन हो जा रही थी। तब भरत वल्कल-वसन होकर अपने भाई के साथ मन में अत्यन्त दुख लेकर एक बड़े रथ पर सवार हो जाने लगे। ९९०

तायरु मरुन्दवत् तवरुन् दन्दयिन्, आयमन् दिरियरु मळविल् शुऱ्ऱमुम्
तूयवन् दणर्हळुन् तॊडर्न्दु शूळ्वरप्, पोयिनन् ऱिरुनहर्प् पुरिशै वायिले 991

तायरुम्–माताएँ तीनों; अरुम् तवत्तवरुम्–उत्तम तपस्वी लोग; तन्तैयुम् आय–पितृवत वात्सल्यपूर्ण; मन्तिरियरुम्–मन्त्रीगण; अळवु इल्–असंख्यक; चुऱ्ऱमुम्–बन्धु-बान्धव; तूय अन्तणर्कळुम्–और पवित्र ब्राह्मण; तॊटर्न्तु चूळ्वर–पीछे और घेरे आये, इस प्रकार; तिरु नकर्–श्रीसम्पन्न नगर के; पुरिचै वायिल् पोयिनन्–राजद्वार पर आये। ६६१

उनके साथ तीनों माताएँ, उत्तम तपस्वी, (भरत के प्रति) पितृवत वात्सल्य रखनेवाले मन्त्रीगण, अपार बन्धु-बान्धव और पवित्र ब्राह्मण लोग सभी गये। भरत उनके साथ नगर के राजद्वार पर पहुँचे ९९१

मन्दरैक् कूऱ्ऱमुम् वऴिच्चॆल् वारॊडुम्
उन्दिये पोदल्कण् डिळव लोडिप्पोय्
अन्दरत् तेऱ्ऱुवा नऴन्ऱु पऱ्ऱलुम्
शुन्दरत् तोळवन् विलक्किच् चॊल्लुवान् 992

मन्तरै कूऱ्ऱमुम्–मन्थरा-मृत्यु भी; वऴि चॆल्वारॊटुम्—मार्ग-गामियों के साथ; उन्तिये पोतल्—उछल-उछलकर जाती थी, उसको; इळवल् कण्टु–शत्रुघ्न ने देखा तो; अऴन्ऱु–गुस्सा करके; ओटि पोय्–दौड़े हुए उसके पास जाकर; अन्तरत्तु एऱ्ऱुवान्–स्वर्गारोही बनाने के विचार से; पऱ्ऱलुम्–पकड़ा, तब; चुन्तरम् तोळ् अवन्–सुन्दर बाहु, भरत ने; विलक्कि–रोककर; चॊल्लुवान्–कहा। ६६२

तब मृत्युसम मन्थरा भी जानेवालों के साथ उचक-उचककर चलने लगी तो शत्रुघ्न ने उसको देख लिया। अपार क्रोध हुआ, उन्हें। उन्होंने एकदम जाकर उसे स्वर्गवासी बनाना (आकाश में उठा फेंकना) चाहते हुए उसे पकड़ लिया तो सुन्दरबाहु भरत ने रोककर यों कहा। ९९२

मुन्नैयर् मुरैहॆड मुडित्त पावियैच्
चिन्नतपिन् नञ्जॆय्दॆन् शिनत्तै तीर्वॆन्तेल्
ऎन्नैयिन् ऱॆन्नैयत् तुऱक्कु मॆन्ऱलाल्
अन्नैयॆन् ऱुणर्न्दिलॆ नैय नॆयॆन्ऱान् 993

मुन्नैयर् मुऱै कॆट–पूर्वजों की रीति को बिगाड़कर; मुटित्त–जिसने कार्य किया; पावियै–उस पापिन को; चिन्नम् पिन्नम् चॆय्तु—छिन्न-भिन्न करके; ऎन् चिनत्तै तीर्वॆन्तेल्–अपना कोप शान्त कर लूँ तो; ऎन् ऐयन् इन्ऱु–मेरे प्रभु आज; ऎन्नै तुऱक्कुम्–मुझे त्याग देंगे; ऎन्ऱु अलाल्–यह विचार नहीं तो; अन्नै ऎन्ऱु उणर्न्तिलॆन्–माता नहीं समझता; ऐयनॆ–प्रिय तात; ऎन्ऱान्–कहा। ६६३

'देखो भाई! हमारे पूर्वजों की सम्मानित रीति को हमारी पापिनी माता ने मिटाकर अपना स्वार्थ साध लिया और हमें घोर अपयश दिलाया। उनको एकदम छिन्न-भिन्न कर मैं अपना कोप शान्त करना चाहूँगा। तो भी अगर मैं वैसा करूँगा, तो हमारे प्रभु श्रीराम मुझे त्याग देंगे। इसी डर से मैं ऐसा नहीं करता; माता समझकर नहीं। तुम उस पर विचार करो।'। ९९३

आदलान् मुनियुमिन् ऱैय नन्दमिल्, वेदनैक् कूनियै वॆहुण्डु मॆन्ऩिनुम्
कोदिला अरुमरै कुलवु नूल्वलाय्, पोदुना मॆन्ऱुहॊण् डरिदिऱ् पोयिनान् 994

आतलाल्–इसलिए; कोतु इला अरु मरै–निर्दोष मूल्यवान वेद; कुलवुम् नूल्–(अन्य) विद्यमान शास्त्र; वल्लाय्–इनमें विद्वान; इन्ऱु–अब; अन्तम् इल्–अनन्त; वेतनै कूनियै–पीड़ाकारिणी कुब्जा पर; वॅकुण्टुम् ॲन्ऩितुम्–कोप करेंगे तो भी; ऐयन् मुनियुम्–प्रभु नाराज होंगे; नाम् पोतुम् ॲन्ऱु–हम चलें, कहकर; अरितिन् कॉण्टु पोयिनान्–सयत्न उन्हें अलग ले गये। ९९४

'शत्रुघ्न तुम निर्मल वेद और सम्मानप्राप्त रहनेवाले शास्त्रों के चतुर ज्ञानी हो! अब अगर हम इस अपार वेदना के निमित्तभूत रहनेवाली इस कुब्जा पर कोप दिखाएँगे तो भी हमारे प्रभु हम पर क्रोध करेंगे। इसलिए चलो। हम चलें।' यह कहकर भरत उनको बहुत प्रयत्न के साथ शान्त करके अलग ले गये। ९९४

मॉय्पॅरुञ् जेनैयु मुडिविन् मन्ऩरुम्, कैहलन् दयलॉरु कडलिऱ् चुऱ्ऱिड
ऐयनुन् देवियु मिळैय वाळियुम्, वैहिन शोलैयिऱ् ऱानुम् वैहिनान् 995

मॉय् पॅरुम् चेनैयुम्–लोगों से खूब भरी विशाल सेना भी; मुटिवु इल् मन्ऩरुम्–असंख्यक राजा लोग; कै कलन्तु–मिलकर; अयल्–पार्श्व में; ऑरु कटलिन् चुऱ्ऱिट–एक सागर के समान घेरकर आये, ऐसा; ऐयनुम् तेवियुम्–प्रभु और उनकी देवी; इळैय आळियुम्–और छोटे सिंह (-सदृश लक्ष्मण); वैकिन चोलैयिल्–जहाँ ठहरे थे, उस उपवन में; तानुम् वैकिनान्–भरत भी ठहरे। ९९५

भरत के पार्श्व में चारों ओर मनुष्य-लसी विशाल सेना और असंख्यक राजा लोग मिलकर आये। भरत (और छोटे भाई शत्रुघ्न) जाकर उसी उपवन में ठहरे, जिसमें पहले श्रीराम सीताजी और छोटे केसरी-समान लक्ष्मण ने रात बितायी थी। ९९५

अल्लणै नॅडुङ्गणी ररुवि याडिनन्
कल्लणै किळङ्गॉडु कनियु मुण्डिलन्
विल्लणैन् दुयर्न्दतोळ् वीरन् वैहिय
पुल्लणै मरुङ्गिऱ्ऱान् पॉडियिन् वैहिनान् 996

अल्–उस रात को; कण् अणै नॅटु–आँखों से निकलकर अत्यधिक बहनेवाले; अरुवि नीर् आटिनन्–अश्रु की सरिता में मग्न हुए; कल् अणै किळङ्कॉटु–पत्थर में उत्पन्न कन्द के साथ; कनियुम्–फलों को; उण्टिलन्–बिना अशन किये; विल् अणैन्तु उयर्न्त तोळ्–धनु धारण करके उन्नत बने कन्धों वाले; वीरन् वैकिय–वीर श्रीराम जहाँ लेटे रहे; पुल् अणै मरुङ्किल्–दर्भशय्या के पास; तान्–आप; पॉटियिन् वैकिनान्–धूलि पर लेटे। ९९६

रात को भरत सोये नहीं, मगर मानो अपनी आँखों से बहनेवाली अश्रु-सरिता में डूबे रहे। न उन्होंने कन्दमूल या फल खाया। जिस दर्भ-शय्या पर धनुर्धर और उन्नत कंधों वाले श्रीराम लेटे थे, उसके पास धूलि पर भरत लेटे। ९९६

❀ आण्डुनिऩ् ऱाण्डहै यडियि ऩेहिऩाऩ्, ईण्डिय नॆऱियॆऩत् तानु मेहिऩाऩ्
तूण्डिय तेर्हळुन् दुरह वॆळ्ळमुम्, काण्डहु करिहळुन् दॊडरक् कालिऩे 997

आण्टु निऩ्ऱु–वहाँ से निकलकर; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम; ईण्टिय नॆऱि–जिस मार्ग में गये, उस पर; अटियिऩ् एकिऩाऩ्–पैदल ही चले; ऍऩ–जानकर; ताऩुम्–भरत स्वयं; तूण्टिय तेर्कळुम्–चलाये जानेवाले रथ; तुरकम् वॆळ्ळमुम्–अश्वों के विशाल समूह; काण् तकु करिकळुम्–कमनीय करि समूह; तॊटर–अनुकरण करते आये, इस स्थिति में; कालिऩे एकिऩाऩ्–पैदल ही चले। ९९७

भरत ने जान लिया कि श्रीराम उस स्थान से आगे पैदल ही चले। इसलिए वे भी पैदल ही जाने लगे। उनके साथ रथ, अनन्त अश्वसमूह और सुन्दर गजवृन्द पीछे लगे चले। ९९७

12. गङ्गै काण् पडलम् (गंगा-दर्शन पटल)

❀ पूविरि पॊलऩ्कळर् पॊरुवि ऱाऩैयाऩ्, काविरि नाडऩ्ऩ कळऩि नाडॊरीइत्
तावर शङ्गम मॆऩ्ऩुन् दऩ्मैय, यावैयु मिरङ्गिडक् कङ्गै यॆय्दिऩाऩ् 998

पू विरि–शोभाविकच; पॊलऩ् कऴल्–स्वर्णपायल-धारी; पॊरु इल् ताऩैयाऩ्–अनुपम (बड़ी) सेना वाले; काविरि नाटु अऩ्ऩ–कावेरी के (जल से सिंचित) देश के समान; कऴऩि नाटु ऒरीइ–खेतों से भरे देश को पार कर; तावरम् चङ्कमम्–स्थावर और जंगम; ऍऩ्ऩुम् तऩ्मैय–ऐसी प्रकृति के; यावैयुम्–सभी जीवों के; इरङ्किट–सहानुभूति करते; कङ्कै ऍय्तिऩाऩ्–गंगा के किनारे पर पहुँचे (भरत)। ९९८

प्रफुल्लछटा स्वर्णपायलधारी और बड़ी सेना के स्वामी भरत कावेरी के जल से सिंचित देश के समान रहनेवाले बागों और खेतों के (मैदान) प्रदेश को पार करके गंगा के तट पर आ पहुँचे। उनकी स्थिति देखकर स्थावर-जंगम सभी प्रकार के जीव और पदार्थ दुख-कातर हुए। ९९८

ऍण्णरुञ् जुरुम्बुदम् मिऩ्ऩत्तुक् कल्लदु
कण्णहऩ् पॆरुम्बुऩऱ् कङ्गै यॆङ्गणुम्
अण्णल्वॆङ् गरिमदत् तरुवि पाय्दलाल्
उण्णवुङ् गुडैयवु मुरित्तऩ् ऱायदे 999

कण् अकल्–विस्तृत; पॆरुम् पुऩल्–अधिक जल की; कङ्कै ऍङ्कणुम्–गंगा के सभी घाटों पर; अण्णल्–महिमा-युक्त; वॆम् करि–भयानक हाथियों के; मतम् अरुवि पाय्तलाल्–मद-नीर के, नदियों के रूप में बहने से; ऍण्ण अरु चुरुम्पु इऩत्तुक्कु अल्लतु–अगणित अलिकुलों के सिवा; उण्णवुम् कुटैयवुम्–(मनुष्यों या पशुओं के लिए) पीने या स्नान करने के लिए; उरित्तु अऩ्ऱु आयतु–योग्य नहीं रहे। ९९९

उनके गजों की संख्या अत्यधिक थी। उनके मदजल से गंगाजल इतना मैला हो गया कि अलिकुल ही उसका उपयोग कर सका। अन्य

मनुष्य और प्राणियों के स्नान, पान आदि के लिए वह अनुपयुक्त हो गया। ९९९

अडिमिशैत् तूळिपुक् कडैयत् तेवर्दम्
मुडिमिशैप् परन्ददोर् मुरैमै तेर्न्दिलेम्
नॅडिदुयिर्त्त् तुण्डवु नीन्दि निन्ऱवुम्
पॉडिमिशैप् पुरण्डवुम् पुरवि यीट्टमे 1000

नॅटितु उयिर्त्तु–दीर्घ साँसें छोड़ते हुए; उण्टवुम्–(जिन्होंने) गंगाजल पिया; नीन्ति निन्ऱवुम्–और (जो) तैरते रहे; पॉटि मिचै पुरण्टवुम्–(और जो) धूलि पर लोट रहे थे; पुरवि ईट्टम्–अश्वों के झुण्डों के; अटि मिचै तूळि–पैरों से उठाई गई धूलि; अटैय पुक्कु–सारी जाकर; तेवर् तम् मुटि मिचै–देवों के सिरों पर; परन्ततु–जम गई, वह; ओर् मुरैमै–एक प्रकार; तेर्न्तु इलेम्–हम समझे नहीं। १०००

अश्व भी अधिक संख्या में थे। अनेक अश्व लम्बी साँसें छोड़ते हुए जल में तैर रहे थे। अनेक जल पी रहे थे। और अनेक धूलि पर, अपना शारीरिक दर्द निवारण करने हेतु लोट रहे थे। उनके पदाघात से उठी धूलि ऊपर गई और देवों के सिरों पर जम गई थी, यह वृत्तान्त हमने प्रत्यक्ष नहीं देखा। १०००

पालैयेय् निऱत्तॊड् पण्डु तान्पडर्, ओलैयेय् नॅडुङ्गड लोडिर् रिल्लैयाल्
मालैयेय् नॅडुमुडि मन्नन् शेन्नैयाम्, वेलैये मडुत्तदक् कङ्गै वॅळ्ळमे 1001

मालै एय् नॅटु मुटि मन्नन्–माला से अलंकृत बड़े किरीट-धारी (दशरथ) की; चेन्नै आम् वेलैये–बड़ी सेना रूपी सागर; अ कङ्कै वॅळ्ळम् मटुत्ततु–उस गंगा का सारा जल पी गया; पालै एय् निऱत्तॊटु–दुग्ध-रंग के साथ; पण्टु तान् पटर्–पहले जिस सागर में बहकर मिल जाती थी; ओलै एय् नॅटु कटल्–घोषपूर्ण विशाल सागर में; ओटिऱ्ऱु इल्लै–(वह नदी) बहती जाकर नहीं मिली। १००१

वह सेना, जो माला से अलंकृत गौरवपूर्ण किरीटधारी चक्रवर्ती दशरथ की थी, बड़े सागर के समान थी। उसने गंगा का सारा जल पी लिया। इसलिए वह क्षीरतुल्य रंग के साथ जिस गर्जनशील समुद्र में जाकर मिल जाता था, उसमें अब जाकर नहीं मिल सका। (गंगाजल, जल-सागर के पेट में नहीं गया क्योंकि सेना-सागर के पेट में चला गया था।)। १००१

❀ कान्ऱलै नण्णिय काळै पिन्पडर्
तोन्ऱलै यव्वळि तॊडर्न्दु शॅन्ऱन
आन्ऱव रुणर्त्तिय वक्कु रोणिहळ्
मून्ऱुपत् तिरट्टिया यिरत्तिन् मुऱ्ऱुमे 1002

कान् तलै नणणिय–जंगल में जो गये; काळै पिन्–उन पुरुष-ऋषभ के अनुगमन में; पटर् तोन्ऱलै–जानेवाले राजकुमार का; अ वळि तॉटर्न्तु चॅन्ऱत्त–उस मार्ग में अनुगमन करके जानेवाली (सेनाओं की संख्या); आन्ऱवर् उणर्त्तिय–बड़ों से उक्त; मून्ऱु पत्तु इरट्टि आयिरम्–(तीन, दस, दो गुना) साठ हजार; अक्कुरोणिकळ् मुऱ्ऱुम्–अक्षौहिणी भर देगी। १००२

पहले जो जंगल में गये, उन श्रीराम के अनुगमन में भरत के साथ आयी सेना के लोगों की संख्या साठ सहस्र अक्षौहिणी थी। इतनी सेना चक्रवर्तियों के लिए आवश्यक है —ऐसा विद्वान कहते हैं। १००२

❀ अप्पडै गङ्गैयै अडैन्द वायिडैत्
तुप्पुडैक् कडलित्रीर् शुमन्द मेहत्तै
ऑप्पुडै यण्णलो डुडऱ्ऱ वेहॅलाम्
इप्पडै यॅडुत्तदॅन् ऱॅडुत्त शीऱ्ऱत्तान् 1003

अ पटै–(जब) वह सेना; कङ्कैयै अटैन्त आयिटै–गंगा आ पहुँची, तब; तुप्पु उटै(य)—प्रवाल-युक्त; कटलिन् नीर् चुमन्त—सागर-जलवाही; मेकत्तै ऑप्पु उटै(य)–मेघों की समानता करनेवाले; अण्णलोटु–(श्याम) भगवान के साथ; उटऱ्ऱवे–युद्ध करने के लिए ही; इ पटै ॲटुत्तत्तु कॉल्–यह सेना आयी है, शायद; ॲन्ऱु–ऐसा समझकर; ॲटुत्त चीऱ्ऱत्तान्–उठा हुआ क्रोध वाला। १००३

जब वह सेना गंगा के उत्तरी तट पर आ पहुँची तब प्रवालयुक्त समुद्रजल से भरे मेघों के वर्ण के श्रीराम से युद्ध करने के लिए ही यह सेना आयी है —ऐसा समझकर उठे हुए क्रोध से आक्रांत; । १००३

❀ गुहनॅन्नप् पॅयरिय कूऱ्ऱि नाऱ्ऱलान्
तॉहैमुरट् चेनैयैत् तुहळि नोक्कुवान्
नहैमिहक् कण्गडी नाऱ नाशियिऱ्
पुहैयुऱक् कुनिप्पुरुम् बुरुवप् पोर्विलान् 1004

कुकन् ॲन्न पॅयरिय–गुह नामी; कूऱ्ऱिन् आऱ्ऱलान्–यम-सा बली; तॉकै मुरण् चेनैयै–संख्या और बल में बड़ी उस सेना को; तुकळिन् नोक्कुवान्–धूलि के समान मानकर; नकै मिक–हँसी के बढ़ते; कण्कळ् ती नाऱ–आँखों से अग्नि के निकलते; नाचियिल् पुकै उऱ–नासिका से धुआँ निकालते हुए; कुनिप्पु उऱुम्–झुकनेवाली; पुरुवम्–भौंहे रूपी; पोर् विल्लान्–युद्धोपयुक्त (दो) धनु वाला (हो गया)। १००४

गुह नाम का यमसम बली; संख्या और बल में बढ़ी हुई उस सेना को धूलि-सम मानकर ठठाकर हँसा। उसकी आँखों से अंगारे और नासिका से धुआँ निकल आया। धनुष के समान उसकी भौंहें वक्र हो गईं। १००४

मैयुऱ वुयिरॅला मिऱुदि वाङ्गुवान्, कैयुरु कवरयिल् पिडित्त कालन्ऱान्
ऐयैन्नू ऱायिर मुरुव मायिन, मॅय्युरु तानैयान् विल्लिन् कल्वियान् 1005

मै उऱवु उयिर् ऍलाम्—कर्म-कलंकित सब जीवों को; इऱुति—अन्तकाल में; वाङ्कुवान्—हरने के लिए; कै उरु—हाथ में रहनेवाले; कवर् अयिल्—त्रिशूल को; पिटित्त—धारण करनेवाले; कालन् तान्—यम ही; ऐ—सुन्दर; ऐ नूऱायिरम् उरुवम् आयित—पाँच के सौ सहस्र (पाँच लाख) रूप धर गया; मॅय् उरु—ऐसे शरीर वाले; तानैयान्—वीरों की सेना का पति; विल्लिन् कल्वियान्—धनुर्विद्या-विदग्ध। १००५

वह कर्मकलंकित जीवों का अन्त करने के लिए जो त्रिशूल लेकर आता है, उस यम के पाँच लाख रूप के समान रहनेवाले वीरों की सेना का स्वामी था। धनुर्विद्या में विशारद था। १००५

❀ कट्टिय शुरिहैयन् कडित्त वायितन्
वॅट्टिय मॉऴियितन् विऴिक्कुन् दीयितन्
कॉट्टिय तुडियितन् कुऱिक्कुम् कॉम्बिनन्
किट्टिय दमरॅनक् किळरुन् दोळितान् 1006

अमर् किट्टियतु ऍन—युद्ध (का अवसर) मिल गया, यह सोचकर; किळरुम् तोळितान्—फूलनेवाले कन्धों का; कट्टिय चुरिकैयन्—कटार बाँधकर; कटित्त वायितन्—ओंठ चबानेवाला; वॅट्टिय मॉऴियितन्—काटते-से वचन बोलनेवाला; विऴिक्कुम् तीयितन्—दृष्टि से आग प्रकट करनेवाला; कॉट्टिय तुटियितन्—डमरू बजाते हुए; कुऱिक्कुम् कॉम्पितन्—निनादित श्रृंगी वाला। १००६

उसके हाथ युद्ध की प्राप्ति देखकर फूल उठे थे। वह कटार से लैस था। ओंठ चबाये हुए था। वह बात ऐसा करनेवाला था, मानो शब्द ही काट ले। जब वह दृष्टि फेरता तो आग प्रकट होती थी। डमरू और तुरही बजाता था। १००६

ऍलियॅला मिप्पडै यरवम् यानॅन
ऑलियुलाञ् जेनैयै युवन्दु कूवितान्
वलियुला मुलहिनिल् वाऴुम् वळ्ळुहिर्प्
पुलियॅला मॉरुवऴिप् पुहुन्द पोलवे 1007

इ पटै ऍलाम्—यह सारी सेना; ऍलि—चूहे हैं; यान् अरवम्—मैं (उनका भक्षक) सर्प; ऍन उवन्तु—ऐसा (सोचकर) हर्षित होकर; ऑलि उलाम् चेनैयै—कोलाहलपूर्ण (अपनी) सेना को; कूवितान्—पुकारा; उलकिनिल् वाऴुम्—(तब) संसार में वास करनेवाले; वलि उलाम्—अतिवली; वळ् उकिर् पुलि—तीक्ष्ण नाखूनों वाले बाघ; ऍल्लाम्—सभी; ऑरु वऴि—एक जगह पर; पुकुन्त पोल—आ एकत्रित हुए जैसे। १००७

हा! यह सारी सेना चूहों का समूह है। मैं उनका भक्षक सर्प हूँ। ऐसा सोचकर उसने कोलाहल मचानेवाली अपनी सेना को उत्साह के साथ

पुकारा। तब मानो भूलोक के सभी, तीक्ष्ण नाखूनों से युक्त बाघ एक स्थान पर आ जुटे हों, ऐसा। १००७

❀ मरुङ्गडै तॅऩ्गरै वन्दु तोऩ्ऱिऩाऩ्
ऑरुङ्गडै नॅडुम्बडै यॊल्लॅऩा र्प्पिऩो
डरुङ्गडै युहन्दनि लशनि मामळै
करुङ्गडल् किळर्न्दॅनक् कलन्दु शूळ्वे 1008

ऑरुङ्कु अटै नॅट्टुम् पटै–एकत्र हुई सेना; अरु कटै युकम् ततिल्–(जब जीवों का) बचना कठिन है, उस युगान्त में; अचनि मा मळै–वज्र के साथ बड़े-बड़े मेघ; करु कटल्—बड़े-बड़े समुद्र; किळर्न्त अॅऩ–उठ आये, ऐसा; ऑल् अॅऩ् आर्प्पिऩोटु–'ऑल्' के तुमुल नाद के साथ; कलन्तु चूळ–घेरकर आई, तब; मरुङ्कु अटै–पास के; तॅऩ् करै–दक्षिणी किनारे पर; वन्तु तोऩ्ऱिताऩ्–आकर प्रकट हुआ। १००८

एक साथ, उसकी सेना आ एकत्र हुई। युगांत में, जब किसी जीव का बचना असम्भव हो जाता है, जैसे वज्रयुक्त मेघ और समुद्र उमड़ उठते हैं, वैसे यह सेना तुमुल नाद के साथ गुह के चारों ओर आकर घेरे खड़ी हो गई। उसके साथ गुह दक्षिणी किनारे पर उस स्थान पर आकर खड़ा हो गया, जो भरत के यथासाध्य अधिक समीप था। १००८

❀ तोऩ्ऱिय पुळिञरै नोक्किच् चूळ्च्चियिऩ्
ऊऩ्ऱिय शेऩैयै युम्ब रेऱ्ऱुदऱ्
केऩ्ऱरॅऩ् ऩॅऩ्ऩुयिर्त् तुणैवर् कीहुवाऩ्
आऩ्ऱपे ररशुनी रमैदि रॅऩ्ऱाऩ् 1009

तोऩ्ऱिय पुळिञरै नोक्कि–(पास आकर) दिखाई देनेवाले व्याध-वीरों को देखकर; अॅऩ् उयिर् तुणैवर्कु–मेरे प्राण-प्यारे मित्र का; आऩ्ऱ पेर् अरचु–स्वत्व का विशाल राज्य; ईकुवाऩ्–(भरत का) बनाने के लिए; चूळ्च्चियिऩ्–षड्यन्त्र के साथ; ऊऩ्ऱिय चेऩैयै–आकर जो डटी रहती है, उस सेना को; उम्पर् एऱ्ऱुतऱ्कु–स्वर्ग में पहुँचाने का; एऩ्ऱरॅऩ्–कृतनिश्चय हूँ; नीर् अमैतिर्–तुम लोग सन्नद्ध हो; अॅऩ्ऱाऩ्–कहा। १००९

उसने अपने पास स्थित अपनी सेना के वीरों को आज्ञा सुनाई कि देखो। भरत के, मेरे प्राणप्यारे मित्र श्रीराम के राज्य पर शासन को स्थिर बनाने के लिए यह सेना इधर आकर डटी हुई है। इसको मैं स्वर्गवासी बनाना चाहता हूँ। तुम भी सन्नद्ध रहो। १००९

तुडियॅऱि नॅऱिहळुन् दुऱैयुम् चुऱ्ऱुऱ
ऑडियॅऱि यम्बिहळ् यावु मोट्टलिर्
कडियॅऱि गङ्गैयिक् करैवन् दोर्हळैप्
पिडियॅऱि पडवॅऩाप् पॅयर्त्तुङ् गूऱुवाऩ् 1010

तुटि ऍऱि–मारू बाजे (डमरू को) बजाओ; नॆऱिकळुम्–मार्गों में; तुऱैयुम्–घाटों पर; चुऱ्ऱुर–सब ओर; ऑटि ऍऱि–सब (तरु आदि) को काटकर गिराओ (अगम बनाओ); अम्पिकळ् यावुम्–सभी नावों को; ओट्टलिर्–मत चलाओ; कटि ऍऱि–पहरा बैठाओ; कङ्कै इ करै वन्तोर्कळै–गंगा के इस किनारे पर आनेवालों को; पिटि–पकड़ो; पट ऍऱि–काट डालो; ऍन्ना–ऐसी आज्ञा सुनाकर; पॆयर्त्तुम् कूऱुवान्–और भी कहा। १०१०

मारू बाजे, डमरू आदि बजाओ। सभी मार्गों और घाटों को काट कर तोड़कर अगम बना दो। एक भी नाव को नदी पर मत छोड़ो। इस तट पर जो भी आयगा उसे पकड़कर काट डालो। वह आगे भी बोला। १०१०

अञ्जन वण्णनॆन् नारुयिर् नायह ताळामे
वञ्जनै यालर शॆय्दिय मन्नरुम् वन्दारे
शॆञ्जर मॆन्बन तीयुमिऴ् हिन्ऱन शॆल्लावो
उञ्जिवर् पोय्विडि नाय्क्कुह नॆन्ऱॆन्नै योदारो 1011

अञ्चनम् वण्णन्–कजरारे; ऍन् आर् उयिर् नायकन्–मेरे प्यारे प्राणनायक को; आळामे–राज्य न करने देते हुए; वञ्चनैयाल्–धोखे से; अरचु ऍय्तिय–जिन्होंने राज्य प्राप्त किया; मन्नरुम्–वे राजा भी; वन्तारे–आये हैं; चॆम् चरम् ऍन्पन–सीधे (मेरे) शर; ती उमिऴ्किन्ऱन–आग उगलते हुए; चॆल्लावो–क्या (उन पर) नहीं चलेंगे; इवर्–ये; उञ्चु पोय् विटिन्–जीवित (बच) जायँगे तो; ऍन्नै–मुझे; नाय् कुकन्–कूकर गुह; ऍन्ऱु ओतारो–ऐसा नहीं कहेंगे क्या। १०११

मेरे कजरारे श्रीराम, मेरे प्राण-प्रिय नायक को राज्य करने से रोककर छल से राज्य प्राप्त कर जो राजा हुआ, वह इधर भी आ गया! क्या मेरे सीधे शर आग उगलते हुए जाकर उस पर नहीं लगेंगे? यह बचकर चला जायगा तो क्या लोग मुझे 'कूकर गुह' नहीं कहेंगे? । १०११

※आऴ नॆडुन्दिरै यारु कडन्दिवर् पोवारो
वेऴ नॆडुम्बडै कण्डु विलङ्गिडुम् विल्लाळो
तोऴमै यॆन्ऱवर् शॊल्लिय शॊल्लॊरु शॊल्लन्ऱो
एऴैमै वेड निरन्दिल नॆन्ऱॆन्नै येशारो 1012

आऴम्–गहरी; नॆटु तिरै–और बड़ी लहरों वाली; आऱु कटन्तु–यह नदी पार कर; इवर् पोवारो–ये चले जायँगे क्या; नॆटु वेऴम् पटै कण्टु–विशाल गज-सेना देखकर; विलङ्किटुम् विल् आळो–हटनेवाला धन्वा हूँ मैं; तोऴमै ऍन्ऱु–मित्र हो तुम, यह; अवर् चॊल्लिय चॊल्–उनका कहा वचन; ऑरु चॊल् अन्ऱो–महत्वपूर्ण शब्द नहीं क्या; एऴैमै वेटन्–क्षुद्र निषाद; इऱन्तिलन् ऍन्ऱु–मरा नहीं, यह कहकर; ऍन्नै एचारो–मेरी निन्दा नहीं करेंगे क्या। १०१२

क्या यह बहुत गहरी और तरंग-संकुल इस गंगा नदी को पार कर

चला जा सकेगा ? इसकी गजसेना देखकर डर से हट जाऊँ, ऐसा कायर धनुर्धर हूँ मैं ? श्रीराम ने 'तुम मेरे मित्र हो' —यह जो कहा वह कथन बड़ा मूल्यवान कथन नहीं है क्या ? अगर मैं इन लोगों को जाने दूँ तो क्या संसार यह कहकर मेरी निन्दा नहीं करेगा कि यह मूर्ख व्याध मरा नहीं ? । १०१२

❀ मुन्नव   ॲन्रु   निनैन्दिलन्   मॉय्पुलि   यन्नानोर्
पिन्नव   निन्रन   ॲन्रिल   नन्नवै   पेशानेल्
ॲन्निव   ॲन्नै   यिहळ्न्ददिव्   ॲल्लै   कडन्दन्रो
मन्नवर्   नॅञ्जिनिन्   वेडर्   विडुञ्जरम्   बायावो 1013

इवन्–इस भरत ने; मुन्नवन् ॲन्रु–ज्येष्ठ, यह; निनैन्तिलन्–नहीं सोचा है; मॉय् पुलि अन्नान्–पराक्रमी व्याघ्र-सम; ओर् पिन्तवन्–एक अनुज (लक्ष्मण); निन्रनन्–उनके साथ हैं; ॲन्रिलन्–यह भी नहीं सोचा है; अन्नवै पेचानेल्–उनकी बात नहीं कहता तो भी; ॲन्नै इकळ्न्ततु–मेरी अवहेलना की; ॲन्–क्योंकर; इव् ॲल्लै कटन्तु अन्रो–यह सीमा पार करके तो; वेटर् विटुम् चरम्–निषादों के प्रेषित शर; मन्नवर् नॅञ्चिनिल्–राजाओं के वक्ष में; बायावो–नहीं चलेंगे क्या। १०१३

यह भरत, देखो, यह भी न सोच सका कि श्रीराम मेरे ज्येष्ठ भ्राता हैं। उसने यह भी नहीं विचारा कि उनके साथ बाघ के समान एक कनिष्ठ भ्राता रक्षण करता हुआ खड़ा है। चाहे वह उनकी बात न सोचता-विचारता हो तो भला वह मुझे कैसे भूला ? मेरी उपेक्षा कैसे की ? मेरे शासन की इस सीमा को पार कर जायगा तभी न वह अपना स्वार्थ साध सकेगा ? निषादों के चलाए हुए शर क्या राज-वक्ष में नहीं घुसेंगे ? । १०१३

पावमु   निन्र   पॅरुम्बळि   युम्बहै   नण्बोडुम्
एवमु   मॅन्बवै   मण्णुल   हाळ्बव   रॅण्णारो
आवदु   पोहवॅन्   नारुयिर्त्   तोळ्मै   तन्दान्मेर्
पोवदु   शेनैयु   मारुयि   रुङ्गॉडु   पोयन्रो 1014

मण् उलकु आळ्पवर्–भूमि के पालनकर्ता; पावमुम्–पाप और; निन्र पॅरुम् पळियुम्–(पाप से) टिकनेवाला बड़ा अपयश; पकै नण्पोटुम्–शत्रुता, मित्रता इन विचारों के साथ; एवमुम्–(उनके समुचित पालन के अभाव में) होनेवाला अपराध; ॲन्पवै–आदि ऐसी बातें; ॲण्णारो–नहीं विचारेंगे क्या; आ–ओफ़ ओह; अतु पोक–वह रहे; ॲन् आरुयिर् तोळ्मै–मेरा बहुमूल्य प्राण-सम मित्रता को; तन्तान् मेल्–जिन्होंने मुझे प्रदान किया है, उन पर; पोवतु–(आक्रमण करने) जाना; चेनैयुम्–सेना; अरु उयिरुम्–प्यारी जान, इनको; कॉटु पोय् अन्रो–बचाके ले जायगा तभी न। १०१४

पाप-पुण्य, यश-अपयश, मित्र-शत्रु, अपराध ऐसी बातों का भूमिपालक लोग विचार नहीं करेंगे क्या ? ओफ़ कितना आश्चर्य है ! मुझे जिन्होंने

अपनी श्रेष्ठ मित्रता प्रदान की, उन श्रीराम पर आक्रमण करने के लिए इसका अपनी सेना के साथ जाना तभी न सफल होगा जब यह पहले अपनी सेना को और अपने प्राण को सुरक्षित कर लेगा ? । १०१४

अरुन्दव मॅन्ऱुणै याळ विवन्पुवि याऴ्वाऩो
मरुन्दॅऩ्ऩि नन्ऱुयिर् वण्बुहऴ् कॉण्डुबिन् मायेऩो
पॉरुन्दिय केण्मै युहन्दवर् तम्मॊडु पोहादे
इरुन्दवु नन्ऱु कऴिक्कुवॅं नॅन्ऩगड निऩ्ऱोडे 1015

ॲन् तुणै–मेरे मित्र; अरु तवम्–कठोर तपोव्रत का; आळ–पालन करें; इवन्–और यह; पवि आऴ्वाऩो–भूमि का पालन करेगा क्या; उयिर् मरुन्तु ॲन्निन्–प्राण अमृत (-सम अत्याज्य) है तो; अन्ऱु–नहीं है; वण् पुकऴ् कॉण्टु–श्रेष्ठ यश पाकर; पिन् मायेऩो–उसके बाद नहीं मरूँगा क्या; पॉरुन्तिय केण्मै–हृदय-मिला (हार्दिक) मित्रता (मेरे साथ); उकन्तवरॊटु–चाहनेवाले श्रीराम के साथ; पोकाते इरुन्ततुम्–बिना गये रह गया; नन्ऱु–वही अच्छा; ॲन् कटन्–मेरा ऋण; इन्ऱॊटे कऴिक्कुवॅन्–आज ही चुकाऊँगा । १०१५

मेरे आदरणीय मित्र तपोव्रत का पालन करें और यह राज्य का पालन ? क्या यह सम्भव होने दूँगा ? क्या प्राण अमृत हैं (उतने मूल्यवान हैं)? नहीं, नहीं ! यश लेकर ही मरूँगा । मेरे साथ सच्ची और हार्दिक मित्रता चाहनेवाले अपने नायक के साथ मैं उस दिन नहीं गया, यह भी अच्छा ही रहा । अब मैं अपना मित्रता का ऋण चुकाऊँ इसका अच्छा अवसर आ गया है । १०१५

तुम्बियु मावु मिडैन्द पॅरुम्बडै शूऴ्वारुम्
वम्बिय ऱारिवर् वाळ्वलि गङ्गै कडन्दन्ऱो
वॅम्बिय वेड रुळीर्दुऱै योडम् विलक्कीरो
नम्बिमुन् नेयिनि नम्मुयिर् माय्वदु नन्ऱन्ऱो 1016

तुम्पियुम् मावुम् मिटैन्त–हाथी और घोड़े जिसमें भरे हैं; पॅरुम् पटै–उस बड़ी सेना; चूऴ्वु आरुम्–के साथ रहनेवाला; वम्पु इयल् तार्–सुवासित माला से अलंकृत; इवर् वाळ् वलि–इसका तलवार-बल; कङ्कै कटन्तु अन्ऱो–गंगा पार करे तभी न; वॅम्पिय वेटर् उळीर्–कुपित निषाद लोग तुम हो; तुऱै ओटम् विलक्कीरो–घाट की नाओं को हटाओगे नहीं क्या; इनि–अब; नम्पि मुन्ऩे–(श्रीराम) नायक के पहले ही; नम् उयिर् माय्वतु नन्ऱु अन्ऱो–अपना प्राण त्यागना अच्छा है न । १०१६

इसके साथ गज, तुरग आदि की विपुल सेना है । सुवासित मालाधारी यह भरत तलवार का धनी है ! पर यह सेना का बल और तलवार का बल आदि तभी न काम आयगा, जब यह गंगा पार कर जाए ? क्रुद्ध व्याध लोग तुम नावों को नहीं हटाओगे क्या ? उसकी सहायता

करोगे ? नहीं न ! अब श्रीराम को कुछ हो जाय इसके पहले हम सब मर जायँ, यही न अच्छा है ? । १०१६

※ पोऩ्‌ पडैत्तलै वीरर्‌ तमक्किरै पोदाविच्‌
चेऩै किडक्किडु तेवर्‌ वरिऩ्चिलै मामेकम्‌
शोऩै पडक्कुडर्‌ शूरै पडच्चुडर्‌ वाळोडुम्‌
ताऩै पडत्तऩि याऩै पडत्तिरळ्‌ शायेऩो 1017

पोऩ्‌–(युद्ध-विद्या में) पारंगत; पटै तलै वीरर्‌ तमक्कु–हमारी सेना के श्रेष्ठ वीरों के लिए; इरै पोता–जो चारा काफ़ी नहीं है; इ चेऩै–यह सेना; किटक्किटु–रहे (एक ओर); तेवर्‌ वरिऩ्‌–देव भी आ जायँ; चिलै मा मेकम्‌–मेरे धनुष रूपी बड़े मेघ से; चोऩै पट—शर-वर्षा हुई तो; कुटर्‌ चूरै पट–आँतें छिन्न-भिन्न हो जायँ; ताऩै–(पदाति-) वीर; चुटर्‌ वाळोटुम्‌ पट–चमकती तलवारों के साथ मिट जायँ; तऩि याऩै पट–विशिष्ट गज-सेना नाश हो; तिरळ्‌–(इसके साथ) सारे (देव-) समूह को भी; चायेऩो–मिटा नहीं दूँगा क्या। १०१७

तुम सब युद्धविद्या-पारंगत हो। यह सेना इतनी अल्प है कि तुम्हारे लिए बिल्कुल अपर्याप्त है। इस सेना की बात छोड़ो। समझो कि सभी देव इसके पक्ष में मिलकर आते हैं। तब भी मेरे धनुष रूपी बड़े मेघ से शर रूपी वर्षा जो होगी, उसके सामने उनकी आँतें छिन्न-भिन्न हो जायँगी। (पदाति) वीर अपनी चमचमाती तलवारों के साथ मिट जायँगे। उस सारे झुण्ड को क्या मैं मटियामेट नहीं कर डालूँगा ? । १०१७

निऩ्ऱ्‌ कॊडैक्कैयॆ ऩऩ्ब नुडुक्क नॆडुञ्जीरै
अऩ्ऱ्‌ कॊडुत्तवळ्‌ मैन्दर्‌ बलत्तैयॆ नम्बाले
कॊऩ्ऱु कुवित्त निणङ्गॊळ्‌ पिणक्कुवै कॊण्डोडित्‌
तुऩ्ऱु तिरैक्कडल्‌ गङ्गै मडुत्तिडै तूरादो 1018

निऩ्ऱ्‌ कॊटै कै–स्थाई दान-शील हस्त वाले; ऍऩ्‌ अऩ्पऩ्‌–मेरे मित्र के; उटुक्क–पहनने के लिए; नॆटु चीरै अऩ्ऱु कॊटुत्तवळ्‌–(जिसने) बड़ा वल्कल-वस्त्र उस दिन दिया, उसका; मैन्तर्‌–पुत्र; पलत्तै–सेना को; ऍऩ्‌ अम्पाले कॊऩ्ऱु कुवित्त–अपने शरों से मारकर ढेर जो लगाऊँगा; निणम्‌ कॊळ्‌ पिणम्‌ कुवै–चर्बी सहित उन लाशों के ढेरों को; कङ्कै कॊण्टु ओटि–यह गंगा बहा ले जाकर; तुऩ्ऱु तिरै–लहरों से पूर्ण; कटलिटै मटुत्तु–समुद्र में डालकर; तूरातो–उसको नहीं भरेगी क्या। १०१८

मेरे नायक श्रीराम उत्तम वदान्य हैं। उनके दानी हाथों में कैकेयी ने पहनने के लिए वल्कल-वसन दिया ! उसका पुत्र है यह ! इसकी सेना के बल को मैं अपने बाणों से छिन्न-भिन्न करके लाशों के ढेर लगा दूँगा ! यह गंगा उनको बहा ले जाकर समुद्र में डाल देगी और उसे भर देगी ! देखो। १०१८

❀ आड्ड	कॉडिप्पडै	शाडि	यरत्तव	रेयाळ
वेड्ड	कॉडुत्तदु	पारॅनु	मिप्पुहळ्	मेवीरो
नाड्ड	कॉडुत्तवॅन्	नायह	नुक्किवर्	नामाळुम्
काड्ड	कॉडुक्किल	राहि	यॅडुत्तदु	काणीरो 1019

नाट्टु–राज्य को; कॉट्टुत्त–इसको जो दे चुके, उन; ॲन् नायकत्तुक्कु–मेरे नायक के लिए; इवर्–यह भरत; नाम् आळुम् काट्टु उम्–हमारा शासित वन भी; कॉट्टुक्किलर् आकि–न देना चाहकर; ॲट्टुत्ततु काणीर्–सेना ले आया, देखो; ओ–ओह; आट्टु कॉटि–(जिसकी) पताकाएँ फहर रही हैं, उस; पटै चाटि–सेना का नाश करके; पार्–भूमि का; अऱत्तवरे आळ–धर्मस्वरूप श्रीराम ही राज्य करें; वेट्टु कॉट्टुत्ततु–ऐसा निषाद ने दिया; ॲनुम्–(इस) कथन वाला; इ पुकऴ्–यह यश; मेवीरो–लोगे नहीं क्या। १०१९

इसको मेरे प्रभु ने अपना राज्य प्रदान किया। पर इसको देखो, वह उन्हें उस वन में भी रहने देना नहीं चाहता, जहाँ हमारा राज्य है। ओफ़ कैसी क्रूरता है! ध्वजाएँ फहराते हुए जो आयी है, इस सेना का नाश करके 'राजा राम को निषाद ने राज्य दिलाया' इस उच्च यश के भागी नहीं बनोगे तुम लोग? । १०१९

मामुनि	वर्क्कुऱ	वाहिव	नत्तिडै	येवाळुम्
कोमुनि	यत्तहु	मॅन्ऱु	मनत्तिऱै	कॉळ्ळामे
एमुनै	युऱ्ऱिडि	लेळु	कडऱ्पडै	यॅन्ऱालुम्
आमुनै	यिऱ्चिऱु	कूॡॅन	विप्पॉळु	दाहादो 1020

मा मुनिवर्क्कु–उत्तम मुनियों के; उऱवु आकि–मित्र बनकर; वनत्तु इटै वाऴुम्–वनमध्य रहनेवाले; को–राजा राम; मुनिय तकुम्–अतृप्त हो सकेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा; मनत्तु इऱै कॉळ्ळामे–(यह बात) मन में कुछ भी न सोचकर; ए मुनै उऱ्ऱिटिल्–शर चलाने में लग जाऊँगा तो; एऴु कटल् पटै ॲन्ऱालुम्–सातों समुद्र की सेनाएँ भी हों तो; इ पॉऴुतु–इसी क्षण में; आ मुनैयिल्–गाय प्रयत्न करेगी तो; चिऱु कूऴ् ॲन–कम चारे के समान; आकातो–नहीं हो जायगी क्या। १०२०

मेरे प्रभु श्रीराम मुनियों के मित्र बनकर वन में रह रहे हैं। वे राजा इस बात को पसन्द नहीं करेंगे। अतृप्त हो जायँगे —यह एक संकोच हो सकता है। उसका किंचित भी विचार न करके, मैं शर चलाने में प्रवृत्त हो जाऊँ तो सातों समुद्रों के समान बहुत विकराल और विपुल सेनाएँ भी आ जायँ तो क्या उनकी स्थिति भूखी गाय के सामने रहनेवाली अल्प घास की-सी नहीं हो रहेगी? । १०२०

❀ ॲन्बन	शॉल्लि	यिरुम्बन	मेनिय	रेनोर्मुन्
वन्बणै	विल्लिनन्	मल्लुयर्	तोळिनन्	वाळ्वीरर्

कन्बनु निन्ऱन निन्ऱदु कण्डरि येऱन्न
मुन्बनिल् वन्दु मॊऴिन्दनन् मूरिय तेर्वल्लान् 1021

वल् पणै विल्लिनन्–सुदृढ़ और वृहदाकार धनुर्धर; मल् उयर् तोळिनन्–और मल्लयुद्धोत्साही उन्नत कन्धों वाला; वाळ् वीरर्कु अन्पन्–और तलवार के वीर श्रीराम का मित्र; इरुम्पु अन्न मेनियर्–लोहे के समान शरीर वाले; एतोर् मुन्–निषाद वीरों के सामने; अन्पन चॊल्लि–ऐसी बातें कहकर; नित्ऱनन्–खड़ा रहा; नित्ऱतु–ऐसा जो खड़ा रहा, उसको; मूरिय तेर्वल्लान्–भारी रथ चलाने में चतुर; कण्टु–(सुमन्त्र ने) देखकर; अरि एऱु अन्न–पुरुषकेसरी-सदृश; मुन्पनिल् वन्तु–नायक भरत के सामने आकर; मॊऴिन्तनन्–यों कहा। १०२१

बड़ा और सारयुक्त धनुर्धर, मल्लयोग्य व उन्नत कंधों वाला (गुह), तलवार के धनी प्रतापी श्रीराम का मित्र लोहे के-से शरीर वाले अपनी सेना के वीरों से ऐसा कहते हुए खड़ा रहा। तब भारी रथ के समर्थ सारथी सुमन्त्र पुरुषकेसरी भरत से यों बोले। १०२१

❀ गङ्गैयिरु करैयुडैयान् कणक्किऱन्द नावायान्
उङ्गळ्हुलत् तनिनादर् कुयिर्त्तुणैव नुयर्दोळान्
वॆङ्गरियि नेऱनैयान् विऱ्पिडित्त वेलैयिनान्
कॊङ्गलरु नऱुन्दण्डार्क् कुहनॆन्नुङ् गुऱियुडैयान् 1022

कङ्कै इरु करै उटैयान्–गंगा के दोनों किनारों के प्रदेशों का स्वामी; कण्क्कु इऱन्त–अगणित; नावायान्–नावों का पति; उङ्कळ् कुलम् तनि नातर्कु–आपके कुल के श्रेष्ठ नाथ (श्रीराम) का; उयिर् तुणैवन्–प्राण-सखा है; उयर् तोळान्–उन्नत कन्धों वाला; वॆम् करियिन् एऱु अनैयान्–क्रोधी सिंह-तुल्य है; विल् पिटित्त वेलैयिनान्–धनुर्धर वीरों की सेना-सागर का स्वामी; कॊङ्कु अलरुम्–शहद-सह विकसित; नऱु तण् तार्–सुबासित शीतल मालाधारी; कुकन् ऎन्नुम् कुऱि उटैयान्–गुह संज्ञित है। १०२२

भरत! देखिए वह! गंगा नदी के दोनों किनारों के प्रदेशों का स्वामी, अगणित नौकाओं का नाथ, आपके कुल के श्रेष्ठ अनुपम नायक श्रीराम का प्राणमित्र, उन्नत कन्धों वाला, क्रुद्ध गज-सदृश, धनुर्धर वीरों की सेना के सागर का अधिपति, शहद-सहित सुबासित मालाधारी वह गुह नाम का है। १०२२

❀ कर्काणुन् दिण्मैयान् करैहाणाक् कादलान्
अऱ्काणि कण्डनैय वळहमैन्द मेनियान्
मऱ्काणुन् दिरुनॆडुन्दोण् मळैहाणु मणिनिऱत्ताय्
निऱ्काणु मुळ्ळत्ता नॆरियॆदिर्निन् ऱनॆन्ऱान् 1023

मल् काणुम् तिरु नॆटु तोळ्–मल्लयुद्ध-अभ्यस्त सुघड़ स्कन्धों के; मळै काणुम् मणि निऱत्ताय्–मेघ-सम (श्याम) रंग वाले; कल् काणुम्–पर्वत-सम दिखनेवाले;

तिण्मैयान्–वली; करै काणा कातलान्–अपार प्रेमी; अऱ्‌कु आणि कण्टत्तैय–अन्धकार-घन के समान; अऴकु अमैन्त मेंतियान्–सुन्दरतापूर्ण शरीरी; निन् काणुम् उळ्ळत्तान्–आपको देखने का (अभिलाषी) मन लेकर; नॅऱि ॲतिर्–मार्ग में आगे; निन्ऱनन्–खड़ा रहता है; ॲन्ऱान्–कहा। १०२३

मल्लयुद्धाभ्यस्त कन्धों और मेघ-सम दिखनेवाले सुन्दर रंग के भरत ! पर्वत-सम कठोर, श्रीराम पर अपार प्रेम रखनेवाला, अन्धकारघन सुन्दर-शरीरी, वह आपसे भेंट करने की चाह लेकर मार्ग में आगे खड़ा है, देखिए। —यों सुमन्त्र बोले। १०२३

* तन्मुन्ने यवन्ऱन्मै तन्दैतुणै मुन्दुरैत्त
शॊन्मुन्ने युवक्किन्ऱ तुरिशिलात् तिरुमनत्तान्
मन्मुन्ने तऴीइक्कॊण्ड मनक्किनिय तुणैवनेल्
ॲन्मुन्ने यवऱ्काण्बॆन् यानेशॆन् ऱॆनवॆऴुन्दान् 1024

तन् मुन्ने–अपने सामने; अवन् तन्मै–उसकी स्थिति को; तन्तै तुणै–अपने पिता के सहयोगी (सुमन्त्र) के; मुन्तु उरैत्त–पूर्व-भाषित; चॊल् मुन्ने–कथन के पहले ही; उवक्किन्ऱ–हर्षित होनेवाले; तुरिचु इलात तिरु मनत्तान्–कपट-रहित पवित्र मन वाले; मन्–राजा राम ने; मुन्ने तऴीइ कॊण्ट–पहले जिसका आलिंगन कर लिया; मनक्कु इनिय–मन-मधुर; तुणैवनेल्–मित्र हो तो; ॲन् मुन्ने–(वह) मेरा ज्येष्ठ ही है; यान् चॆन्ऱु–मैं ही जाकर; अवन् काण्पॆन्–उससे भेंट करूँगा; ॲन–यह कहते हुए; ॲऴुन्तान्–निकला। १०२४

भरत ने उनकी बात सुनी। सामने उस पार रहनेवाले गुह की स्थिति, उसकी मुखमुद्रा और हाव-भाव देखे। उन्हें अपार हर्ष हुआ। कपट-रहित पवित्र मन वाले भरत यह कहते हुए निकल पड़े कि श्रीराम ने इसे पहले अपना बना लिया (आलिंगन कर लिया) और मनचीता मित्र मान लिया, तो वह भी मेरा ज्येष्ठ हो गया। १०२४

* ॲन्ऱॆऴुन्दु तम्बियॊडु मॆऴुहिन्ऱ कादलॊडुम्
कुन्ऱॆऴुन्दु शॆन्ऱदॆनक् कुळिर्गङ्गैक् करैकुऱुहि
निन्ऱवनै नोक्किनान् तिरुमेति निलैयुणर्न्दान्
तुन्ऱुकरु नऱुङ्गुञ्जि यॆयिनर्कोन् ऱुण्णॆन्ऱान् 1025

ॲन्ऱु ॲऴुन्तु–ऐसा उठकर; तम्पियॊटुम्–भाई के साथ; ॲऴुकिन्ऱ कातलॊटुम्–वर्द्धित स्नेह के साथ; कुन्ऱु ॲऴुन्तु चॆन्ऱतु ॲन–पर्वत उठकर चला हो, ऐसा; कुळिर् कङ्कै करै–शीतल गंगा के तट पर; कुऱुकि निन्ऱवनै–आकर खड़े रहे, उनको; तुन्ऱु–घने; करु नऱु कुञ्चि–काले, सुवासित केश वाला; ॲयिनर् कोन्–निषादराज; नोक्किनान्–देखकर; तिरु मेति निलै–श्री-शरीर की (कान्तिहीन) स्थिति; उणर्न्तान्–ध्यान में लाकर; तुण् ॲन्ऱान्–चौंक उठा। १०२५

भरत अपने छोटे भाई को साथ लेकर गंगा के दक्षिणी कूल पर आये।

बड़े उत्साह के साथ पर्वत के समान शीतल गंगाजी के उत्तरी तट पर स्थित उनको घने काले केश के गुह ने देखा। देखते ही वह ठिठक गया क्योंकि भरत का शरीर मुरझाया-सा रहा। १०२५

**❀ वऱ्कलैयि नुडैयातै माशडैन्द मॅय्यातै
नऱ्कलैयिऩ् मदियॅऩ्ऩ नहैयिऴन्द मुहत्तानैक्
कऱ्कनियक् कऩिहिऩ्ऱ तुयरानैक् कण्णुऱ्ऱाऩ्
विऱ्कयिऩिऩ् ऱिडैवीऴ विम्मुऱ्ऱु निऩ्ऱॊऴिन्दाऩ्** 1026

वऱ्कलै उटैयातै—वल्कलधारी; **माचु अटैन्त मॅय्यातै**—मैला शरीर वाले; **नल् कलै इल्**—अच्छी प्रभा-रहित; **मति ऍऩ्ऩ**—चन्द्र-सम; **नकै इऴन्त**—हास से हीन; **मुकत्तातै**—मुख वाले; **कल् कऩिय**—पत्थर को भी द्रवीभूत करते हुए; **कऩिकिऩ्ऱ तुयरातै**—प्रवृद्ध दुखी को; **कण्णुऱ्ऱाऩ्**—देखा; **विल्**—धनु को; **कैयिऩिऩ्ऱु**—हाथ से; **इटै वीऴ**—भूमि पर गिरने देते हुए; **विम्मुऱ्ऱु निऩ्ऱु**—दुख और विस्मय में पड़कर; **ऒऴिन्ताऩ्**—निर्बल खड़ा रह गया। १०२६

भरत वल्कलधारी थे। उनका शरीर मैला था। उनका हास-हीन मुख कला-हीन चन्द्र के समान था। उनका दुख इतना अधिक और गम्भीर दिखा कि पत्थर भी पिघल जाए। इस ठाठ में उनको देखकर गुह का मन ही अचम्भे में पड़ गया। उसके हाथ का धनुष भूमि पर गिरा। वह एकदम भावावेश से निस्पन्द खड़ा रह गया। १०२६

**❀ नम्बियुमॅऩ् ऩायहऩै यॊक्किऩ्ऱा ऩयलिऩ्ऱाऩ्
तम्बियैयु मॊक्किऩ्ऱाऩ् ऱववेडन् दलैनिऩ्ऱाऩ्
तुऩ्बमॊरु मुडिविल्लै तिशैनोक्कित् तॊऴुहिऩ्ऱाऩ्
ऍम्बॅरुमाऩ् पिऩ्पिऱन्दा रिऴैप्परो पिऴैप्पॅऩ्ऱाऩ्** 1027

नम्पियुम्—ये पुरुषोत्तम भी; **ऍऩ् नायकऩै ऒक्किऩ्ऱाऩ्**—मेरे नायक के समान हैं; **अयल् निऩ्ऱाऩुम्**—पार्श्व में स्थित रहनेवाले भी; **तम्पियै ऒक्किऩ्ऱाऩ्**—(श्रीराम के) छोटे भाई (लक्ष्मण) के समान रहते हैं; **तवम् वेटम् तलै निऩ्ऱाऩ्**—तपोचित वेश धरे हैं; **तुऩ्पम् ऒरु मुटिवु इल्लै**—दुख का छोर नहीं दीखता; **तिचै नोक्कि तॊऴुकिऩ्ऱाऩ्**—(श्रीराम की) दिशा देखकर नमन करते हैं; **ऍम् पॅरुमाऩ्**—मेरे भगवान के; **पिऩ् पिऱन्तार्**—अनुज पैदा हुए; **पिऴैप्पु इऴैप्परो**—अपराध करेंगे क्या; **ऍऩ्ऱाऩ्**—यह विचार किया। १०२७

वह सोचने लगा— वे राजकुमार मेरे प्रभु श्रीराम के समान ही दिखते हैं। उनके पास स्थित उनके भाई भी श्रीराम के साथ रहनेवाले भाई के समान ही लगते हैं। भरत का वेश भी तपस्वी का-सा वेश है। उनके दुख का अन्त नहीं —ऐसा दिखता है! और भी श्रीराम जिस ओर गये उस ओर अपना मुख करके नमस्कार करते हैं। हा! वे तो मेरे प्रभु

के भाई हैं ! (मैंने कैसी ही भूल की ?) मेरे प्रभु के अनुज कभी कोई अपराध करेंगे क्या ? । १०२७

❀ उण्डिडुक्क णॉन्ऱुडैया नुलैयाद वन्बुडैयान्
कॉण्डतव वेडमे कॉण्डिरुन्दान् कुऱिप्पॅल्लाम्
कण्डुणर्न्दु पॅयर्हिन्ऱेन् कामित्ग णॅऱियॅन्ऩात्
तण्डुऱैयोर् नावायि लॉरुतनिये तान्वन्दान् 1028

उण्टु इटुक्कण् ऑन्ऱु–उत्पन्न बड़े कष्ट एक से; उटैयान्–अभिभूत लगते हैं; उलैयात अऩ्पुटैयान्–(श्रीराम से) अचल प्रेम रखनेवाले; कॉण्ट तव वेटमे–उनका धरा तपोवेश; कॉण्टु इरुन्तान्–स्वयं धरे रहते हैं; कुऱिप्पु ॲल्लाम्–उनका सब मनोभाव; कण्टु–परख, देखकर; उणर्न्तु–समझकर; पॅयर्किऩ्ऱेऩ्–लौट आऊँगा; नॅऱि कामित्कळ्–मार्ग का रक्षण करो; ॲऩ्ऩा–(अपनी सेना से) कहकर; तण् तुऱै–शीतल घाट पर (रही); ओर् नावायिल्–एक तरणी पर; ताऩ् ऑरु तनिये वन्ताऩ्–स्वयं अकेला आया । १०२८

वह अपनी सेना के वीरों से बोला कि ये तो बड़े कष्ट में पड़े हुए दीखते हैं। श्रीराम के प्रति अचल प्रेम रखनेवाले हैं। श्रीराम के ही समान ये भी तपस्वी का वेश धारण किये रहते हैं। इसलिए मैं जाऊँगा। उनका सभी आशय परख-समझकर लौट आऊँगा। तब तक मार्ग पर पहरा देते रहो। फिर वह शीतल घाट पर रही एक तरणी पर बैठकर अकेले ही आया । १०२८

❀ वन्दॅदिरे तॉऴुदानै वणङ्गिनान् मलरिरुन्द
अन्दणनुम् तनैवणङ्गु मवनुमव नडिवीऴ्न्दान्
तन्दैयिनुङ् गळिहूरत् तऴुविनान् ऱहवुडैयोर्
शिन्दैयिलुम् जॅन्नियिलुम् वीऱ्ऱिरुक्कुञ् जीर्त्तियान् 1029

ॲतिरे वन्तु तॉऴुतातै–सामने आकर जिसने प्रणमन किया; मलर् इरुन्त अन्तणनुम्–कमलवासी ब्रह्मा से भी; तनै वणङ्कुम्–वन्द्य; अवनुम्–उन्होंने भी; वणङ्किनान्–सिर नवाकर नमस्कार किया; अवन्–गुह; अटि वीऴ्न्तान्–उनके पैरों पर गिरा; तकवु उटैयोर्–सुयोग्य उत्तम लोगों के; चिन्तैयिलुम् चॅन्नियिलुम्–मन में और सिर पर; वीऱ्ऱिरुक्कुम्–स्थान-प्राप्त; चीर्त्तियान्–यशस्वी भरत ने; तन्तैयिनुम् कळि कूर–पिता से भी अधिक आनन्द के साथ; तऴुविनान्–आलिंगन कर लिया । १०२९

'उसने आकर भरतजी को नमस्कार किया। ब्रह्माजी से वन्द्य भरत ने भी सिर नवाया। फिर वह गुह ने भरत के पैरों पर गिरकर दण्डवत की। भरत ने, जिनका गौरवमय यश सुयोग्य बड़ों के मनों और सिरों पर था, पिता से भी अधिक आनन्द के साथ उसको उठाकर गले लगा लिया । १०२९

❀ तऴुविन पुळिञर् वेन्दन् ऱामरैच् चॅङ्ग णान
अॅऴुविनु मुयर्न्द तोळा यॅय्दिय दॅन्नै यॅन्न
मुऴुदुल हळित्त तन्दै मुन्दैयोर् मुऱैयि निन्ऱुम्
वऴुविन नदनै नीक्क मन्ननैक् कॉणर्वा नॅन्ऱान् 1030

तऴुविन–आलिंगनबद्ध; पुळिञर् वेन्तन्–निषादराज; तामरै चॅम् कण्णानै–कमलारुणाक्ष भरत को; अॅऴुविनुम्–गजबन्धन-स्तम्भ से दृढ़; उयर्न्त–और उन्नत; तोळाय्–कन्धों वाले; अॅय्तियतु अॅन्नै–आगमन कैसा; अॅन्न–यह पूछने पर; मुऴुतु उलकुम् अळित्त तन्तै–सारे लोक के रक्षक मेरे पिता; मुन्तैयोर् मुऱैयिन् निन्ऱुम्–पूर्वजों के धर्म से; वऴुविनन्–डिग गये; अतनै नीक्क–उसको सुधारने के लिए; मन्ननै कॉणर्वान्–राजा को ले आने के लिए; अॅन्ऱान्–कहा। १०३०

आलिंगनबद्ध आखेटकराज ने कमलारुणाक्ष भरत से प्रश्न किया कि गजबन्धन-स्तम्भ से भी सुदृढ़ और सुघड़ कन्धों वाले! आपके इस आगमन का हेतु क्या है? तब भरत ने उत्तर दिया कि भुवननिकाय-पति मेरे पिता ने अपने पूर्वजों के अपनाये क्रम को तोड़ दिया है (और श्रीराम को राज्य से वंचित कर दिया है)। मैं उस भूल को सुधारने के निमित्त राजा राम को लिवा लाने के लिए आया। १०३०

❀ केट्टनन् किरादर् वेन्दन् किळर्न्दॅऴु मुयिर्प्प नाहि
मीट्टुमण् णदनिल् वीऴ्न्दान् विम्मिन तुवहै वीङ्गत्
तीट्टरु मेनि मैन्दन् शेवडिक् कमलप् पूविऱ्
पूट्टिय कैयन् पॉय्यि लुळ्ळत्तन् पुहल लुऱ्ऱान् 1031

केट्टनन् किरातर् वेन्तन्–यह सुनकर किरातपति; उवकै वीङ्क–बढ़ते आनन्द के कारण; किळर्न्तु अॅऴुम् उयिर्प्पन् आकि–सन्तोष से दीर्घ बनी साँसें छोड़ते हुए; विम्मिनन्–फूल उठा; मीट्टुम्–फिर; मण् अतनिल् वीऴ्न्तान्–भूमि पर गिरा; तीट्ट अरु मेनि मैन्तन्–चित्र खींचने के लिए कठिन उतने सुन्दर शरीर के राजकुमार के; चॅम्मै अटि कमलम् पूविल्–लाल चरणकमलों को; पूट्टिय कैयन्–हाथों से ग्रहण कर; पॉय् इल् उळ्ळत्तन्–असत्य-रहित चित्त वाला; पुकलल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। १०३१

भरत का यह कथन सुनकर गुह के हर्ष का ठिकाना नहीं रहा। सन्तोष के कारण उसकी साँसें भी दीर्घ हुईं। वह फूल उठा। वह फिर एक बार भूमि पर गिरा, चित्रण-दुर्लभ रूप वाले भरत के अरुण-चरण-कमलों को हाथों से पकड़कर साफ़ मन से ये बातें कहने लगा। १०३१

❀ तायुरै कॉण्डु तादै युदविय तरणि तन्नैत्
तीविनै यॅन्न नीत्तुच् चिन्दनै मुहत्तिऱ् ऱेक्किप्
पोयिनै यॅन्ऱ पोदु पुहऴिनोय् तन्मै कण्डाल्
आयिर मिरामर् निन्गे ऴावरो तॅरियि नम्मा 1032

पुकऴिनोय्–यशस्वी; ताय् उरै कॊण्डु–माता का वचन सुनकर; तातै उतविय–पिता ने जो दिया; तरणि तन्नै–उस धरणी को; तीविनै–पाप; ॲन्न–समझकर; नीत्तु–त्यागकर; चिन्तनै–चिन्ता को; मुकत्तु तेक्कि–मुख में भरकर (चिन्ताग्रस्तता को अपने मुख पर प्रकट होने देते हुए); पोयिनै–(श्रीराम को लेने वन में) गये; ॲन्र पोतु–तब; तन्मै कण्टाल्–आपका गुण देखकर; तॆरियिन्–विचार करें तो; आयिरम् इ रामर्–एक सहस्र राम भी; निन् केळ् आवरो–आपकी समानता कर सकेंगे क्या। १०३२

महान यशस्वी ! माता के माँगने पर आपके पिता ने आपको राज्य दिया। उसको आपने हानिकारक पाप के समान मानकर त्याग दिया और मुख पर चिन्ता के भावों के साथ वन की तरफ़ चल पड़े। इसको सुनकर आपके स्वभाव और गुणों का विचार करने पर— सहस्र राम भी आपकी समानता कर सकेंगे क्या ? । १०३२

※ ॲन्पुहऴ् हिन्र देळै यॆयिनन्ने निरवि यॆन्वान्
तन्पुहऴ्क् कर्रै मर्रै यॊळिहळैत् तविर्क्कु मापोल्
मन्पुहऴ् पॆरुमै नुङ्गळ् मरबिनोर् पुहऴै यॆल्लाम्
उन्पुह ऴाक्किक् कॊण्डा युयर्गुणत् तुरवुत् तोळाय् 1033

उयर् कुणत्तु–उत्कृष्ट गुण; उरवु तोळाय्–और सार-युक्त कन्धों वाले; एऴै ॲयिनेन्–क्षुद्र निषाद मैं; ॲन् पुकऴ्किन्रतु–क्या प्रशंसा करूँ; इरवि ॲन्पान् तन्–सूर्य नाम के उसकी; पुकऴ् कर्रै–शंसित किरण-जाल; मर्रै ऑळिकळै–अन्य सभी प्रकाशों को; तविर्क्कुम् आरु पोल्–अपने में लीन करके (उनसे) अधिक प्रकाशमय रहेगा, वैसे ही; मन् पुकऴ् पॆरुमै–अन्य राजाओं की प्रशंसायोग्य यशस्वी; नुङ्कळ् मरपितोर्–आपके कुल के राजाओं के; पुकऴै ॲल्लाम्–सभी यश को; उन् पुकऴ् आक्कि कॊण्टाय्–अपना बना लिया आपने। १०३३

इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी ही होगी। उत्कृष्ट गुणों और सारयुक्त कन्धों वाले ! मैं एक क्षुद्र निषाद हूँ। मैं आपकी कैसे समुचित प्रशंसा कर सकूँगा ? रवि दूसरे प्रकाशों को अपने में समा लेकर स्वयं उज्ज्वलतम बना रहता है। उसी तरह आपकी कीर्ति में मानो राजकुलशंसित आपके कुल के पूर्वजों की सारी कीर्ति समा गई और आपका यश अद्वितीय रूप से उज्ज्वल बना रहता है। १०३३

ॲन्नविवै यन्न मार्र मियैवन पलवुङ् गूरिप्
पुनैहऴर् पुलवु वेर्कैप् पुळिञर्होन् पॊरुविल् कादल्
अनैयवर् कमैविर् चॆय्दा नारविर् कन्बि लादार्
निनैवरुङ् गुणङ्गॊ डन्रो विरामन्मे निमिर्न्द कादल् 1034

ॲन इवै अन्न–यह और ऐसा; इयैवन मार्रम् पलवुम्–समुचित शिष्टवचन अनेक; कूरि–कहकर; पुनै कऴल्–अलंकृत करनेवाली पायल; पुलवु वेल् कै–और

मांसगन्ध भालाधारी हाथों का; पुळिञर् कोन्-निषादराज; अमैविन्-मन से; अत्तैयवर्कु-भरत के प्रति; पोरु इल् कातल्-अनुपमेय प्रेम (और आदर); चॅय्तान्-दिखाने लगा; अवर्कु अन्पिलातार् आर्-उन पर प्रेम न रखनेवाले कौन हैं; नित्तॅवु अरुम्-कल्पनातीत; कुणम् कॉट्टु अन्ऱो-(श्रेष्ठ) गुणों के कारण तो; इरामन् मेल्-श्रीराम के प्रति; कातल् निमिर्न्ततु-सबका प्रेम बढ़ा। १०३४

गुह ने ऐसी-ऐसी बातें कहीं। उसका पायलधारी और मांसगन्ध भाले वाले भरत के प्रति अपार प्रेम पैदा हो गया। उसने उसे अपनी रीति से प्रदर्शित भी कराया। हाँ, उनके प्रति कौन प्रेम नहीं करेगा? श्रीराम के प्रति लोग उनके कल्पनातीत अच्छे गुणों के कारण तो प्रेम करते हैं? भरत भी गुणोन्नत हैं न? । १०३४

❀ अव्वळि यवत्तै नोक्कि यरुडरु वारियन्न
चॅव्वळि युळ्ळत् तण्णल् तॅन्ऱिशैच् चॅङ्गै कूप्पि
ऍव्वळि युऱैन्दा नम्मु नॅन्ऱलु मॅयिनर् वेन्दन्
इव्वळि वीर याने काट्टुवॅ नॆळुह वॅन्ऱान् 1035

अ वळि-तब; अरुळ् तरु वारि अन्न-करुणादायक सागर-सम; चॅं वळि उळ्ळत्तु-ऋजु स्वभाव वाले (भरत) के; अवत्तै नोक्कि-उसको देखकर; तॅन् तिचै-दक्षिण दिशा की ओर; चॅम् कै-श्रेष्ठ हाथ; कूप्पि-जोड़कर; नम् मुन्-हमारे ज्येष्ठ; ऍ वळि-कहाँ; उऱैन्तान्-ठहरे; ऍन्ऱलुम्-पूछने पर; ऍयिनर् वेन्तन्-निषादराजा ने; वीर-वीर; इ वळि-इसी स्थान पर; याने काट्टुवॅन्-मैं ही दिखाऊँगा; ऍळुक-उठिये; ऍन्ऱान्-कहा। १०३५

तब करुणावारिधि, सीधे स्वभाव वाले भरत ने गुह को देखकर और दक्षिण दिशा की ओर अंजलि समर्पित करते हुए प्रश्न किया कि भाई! हमारे ज्येष्ठ भ्राता यहाँ कहाँ ठहरे रहे? तब निषादराज ने उत्तर में निवेदन किया कि वीर! यहीं। आइए मैं आपको दिखाऊँगा। १०३५

❀ कारॅन्नक् कडिदु शॅन्ऱान् कल्लिडैप् पडुत्त पुल्लिन्
वार्शिलैत् तडक्कै वळ्ळल् वैहिय पळ्ळि कण्डान्
पार्मिशैप् पदैत्तु वीळ्न्दान् परुवरऱ् परवै पुक्कान्
वार्मणिप् पुन्नलान् मण्णै मण्णुनी राट्टुङ् गण्णान् 1036

कार् ऍन्न-मेघों के समान; कटितु चॅन्ऱान्-सत्वर गया; वार् चिलै तट कै-दीर्घ धनुष रखनेवाले विशालहस्त; वळ्ळल्-प्रभु; वैकिय-जहाँ लेटे रहे; कल् इटै पटुत्त-(उस) पत्थरों पर डसे; पुल्लिन् पळ्ळि-दर्भ की शय्या को; कण्टान्-देखकर; पार् मिचै-भूमि पर; पतैत्तु वीळ्न्तान्-छटपटाकर गिरे; परुवरल् परवै-दुख-सागर में; पुक्कान्-मग्न हुए; वार् मणि पुनलाल्-ढलकनेवाली मुक्ताओं के समान (अश्रु) जल से; मण्णै-(अपने शरीर पर लगी उस स्थान की) धूलि को; मण्णुम् नीर् आट्टुम्-नहलानेवाली; कण्णान्-आँखों वाले बने। १०३६

भरत गुह का अनुगमन करके मेघ के समान सत्वर गये। पत्थर पर डसी उस दर्भ-शय्या को देखा, जिस पर दीर्घ धनुधारी विशाल हाथ वाले श्रीराम ने शयन किया था। उसको देखते ही छटपटाकर भरत भूमि पर गिर पड़े। दुखसागर में मग्न हो गये। फिर उनकी आँखों से अश्रुजल की धारा बही और उनके शरीर पर लगे मैल को धोती चली। १०३६

❀ इयन्ऱदॆन् पॊरुट्टि ऩालिव् विडरुनक् कॆन्ऱ पोदुम्
अयिन्ऱनै किळङ्गुङ् गायु ममुदॆन वरिय पुल्लिल्
तुयिन्ऱनै यॆनवु मावि तुऱन्दिलॆन् शुडरुङ् गाशु
कुयिन्ऱुयर् महुडञ् जूडुञ् जॆल्वमुङ् गॊळ्वॆन् यान् 1037

उतक्कु–आपको; इ इटर्–यह कष्ट; ॲन् पॊरुट्टिताल्–मेरे ही कारण; इयन्ऱतु ॲन्ऱ पोतुम्–हुआ, उस हालत में भी; किळङ्कुम् कायुम्–कन्द और (कच्चे) फल; अमुतु ॲन अयिन्ऱनै–अमृत के समान मानकर अशन किया; अरिय पुल्लिल्–अल्प घास पर; तुयिन्ऱनै–सोये; ॲनवुम्–यह जानकर भी; आवि तुऱन्तिलॆन्–प्राण नहीं त्यागा; चुटरुम् काचु कुयिन्ऱु–दीप्त मणियों को जड़ित करके; उयर्–मूल्य में बढ़ा; मकुटम् चूटुम् चॆल्वमुम्–मुकुट धारण करने का वैभव भी; यान् कॊळ्वॆन्–मैं अपनाने को हूँ। १०३७

वे विलाप करने लगे— इतना दुख आपको मेरे ही कारण हुआ। आप मेरे ही कारण कन्द और कच्चे फलों का अशन करते हैं। कष्ट देनेवाली घास की शय्या पर शयन करते हैं। यह सब जानकर भी मैंने अपना प्राण-त्याग नहीं किया! वही नहीं बल्कि दीप्तिमान रत्नजड़ित बड़े किरीट को पहनने का वैभव भोगने को प्रस्तुत हूँ!। १०३७

❀ तूण्डर निवन्द तोळान् पिन्नरुञ् जॊल्लु वानन्
नीण्डवन् ऱुयिन्ऱ शूळ लिदुवॆनि निमिरन्द नेयम्
पूण्डवन् ऱॊडरन्दु पिन्नै पोन्दवन् पॊळुदु नीत्त
दियाण्डॆन विनिदु केट्टा नॆयिनरहो निदनैच् चॊन्नान् 1038

तूण् तर निवन्त–स्तम्भ-सम ऊँचे; तोळान्–कन्धों वाले; पिन्नरुम् चॊल्लुवान्–और भी बोले; अ नीण्टवन् तुयिन्ऱ चूळल्–उन विश्वेश की शय्या का स्थान; इतु ॲनिन्–यही रहा तो; निमिरन्त नेयम् पूण्टवन्–उन पर अत्यधिक प्रेम रखनेवाला; तॊटरन्तु पिन्नै पोन्तवन्–उनके साथ अनुगमन करनेवाला; पॊळुतु नीत्ततु–रात बिताता रहा; याण्टु–कहाँ; ॲन–ऐसा; इनितु केट्टान्–मधुर रीति से प्रश्न किया; ॲयिनर् कोन्–निषादपति ने; इतनै चॊन्नान्–यह कहा। १०३८

स्तम्भोन्नत कन्धों वाले भरत ने आगे गुह से पूछा कि अगर विश्वेश यहाँ सोये, तो उनके प्रति अगाध प्रेम रखनेवाले, उनके अनुगामी लक्ष्मण ने रात कहाँ रहकर काटी? उनके प्रश्न करने के प्रकार से यह साफ़ झलकता था कि उनका लक्ष्मण के प्रति वात्सल्य कितना है। ऐसी

मधुर रीति से उन्होंने प्रश्न किया। तब निषादराज ने उत्तर में यह कहा। १०३८

❀ अल्लैयाण् डमैन्द मेति यळहनु मवळुन् दुञ्ज
विल्लैयून् ड्रियकै योडुम् वॅय्दुयिर्प् पोडुम् वीरन्
कल्लैयाण् डुयर्न्द तोळाय् कण्गणीर् शोरक् कङ्गुल्
ॲल्लैहाण् बळवु निन्ड्रा निमैप्पिल नयन मॅन्ड्रान् 1039

कल्लै आण्टु–पर्वत को भी अधीन बनाकर; उयर्न्त तोळाय्–बढ़े हुए कन्धों वाले; अल्लै आण्टु–अन्धकार को निम्न बनाकर; अमैन्त–(कजरारे) बने; मेनि–शरीर के; अळकनुम्–सुन्दर पुरुष; अवळुम्–और वे (उनकी देवी); तुञ्च–जब सो रहे थे, तब; वीरन्–वीर; नयतम् इमैप्पु इलन्–अपलक आँखों के होकर; विल्लै ऊन्ड्रिय कैयोटुम्–भूमि पर टेककर रखे गये धनुष के साथ; वॅय्तु उयिर्प्पोटुम्–उत्तप्त उसाँसों के साथ; कङ्कुल् ॲल्लै काण्पु अळवुम्–रात का अन्त देखते समय तक (सवेरा तक); कण्कळ् नीर् चोर–आँखों से आँसू बहाते हुए; निन्ड्रान्–खड़े रहे; ॲन्ड्रान्–कहा। १०३९

पर्वत-जयी कन्धों वाले! अन्धकार को जीतनेवाले काले रंग के सुन्दर श्रीराम और उनकी सीतादेवी यहाँ जब सोये, तब वीर लक्ष्मण बिना पलकें गिराये, जागते हुए और दुख की आहें भरते हुए रात के पूरा होते तक धनु भूमि पर टेके, आँखों से अश्रु बहाते हुए खड़े रहे। १०३९

❀ ॲन्बतैक् केट्ट मैन्द निरामनुक् किळैया रॅन्ड्रु
मुन्बीन्त तोड्रत् तेमिल् यानॅन्ड्रु मुडिविलाद
तुन्बत्तुक् केदु वाने नवनदु तुडैक्क निन्ड्रान्
अन्बत्तुक् कॅल्लै युण्डो वळहिदॅन् नडिमै यॅन्ड्रान् 1040

ॲन्पतै–गुह ने जो कहा, उसको; केट्ट मैन्तत–सुनकर राजकुमार भरत ने; मुन्पु–पहले; इरामनुक्कु इळैयार् ॲन्ड्रु–श्रीराम के कनिष्ठों के रूप में; ईन्त तोड्रत्तेमिल्–समान रूप से जन्मे हम में; यान्–मैं; ॲन्ड्रुम् मुटिवु इल्लात–कभी न अन्त होनेवाले; तुन्पत्तुक्कु–(श्रीराम के) कष्ट का; एतु आनेन्–कारण बना; अवन्–वह (लक्ष्मण); अतु तुटैक्क निन्ड्रान्–उसको दूर करने का संकल्प करके रहता है; अन्पुक्कु–उसके स्नेह का; ॲल्लै उण्टो–अन्त हो सकता है क्या; ॲन् अटिमै–मेरी दासता भी; अळकितु–बड़ी सुन्दर है; ॲन्ड्रान्–कहा। १०४०

जब भरत ने यह सुना, तब उन्होंने अत्यन्त प्रभावित होकर कहा— श्रीराम के कनिष्ठों के रूप में जात हममें मैं एक हूँ, जो श्रीराम के अकट कष्ट का कारण बन गया। वह लक्ष्मण तो उसको दूर करने को उद्यत रहता है! उसके प्रेम का कोई परिमाण नहीं, कोई ठिकाना नहीं। मेरा कैंकर्य भी, भला, कितना सुन्दर है!। १०४०

अव्विडै यण्ण ऱानु मन्ऱरुम् बॉडियिन् वैहित्
तॅव्विडै तरनिन् ऱार्क्कुज् जॅऱिहळऱ् पुळिञर् कोमान्
इव्विडैक् कङ्गै याऱ्ऱि नेऱ्ऱिनै यायि नॅम्मै
वॅव्विडर्क् कडनिन् ऱेऱ्ऱि वेन्दन्बाल् विडुत्त दॅन्ऱान् 1041

अण्णल् तानुम्–महिमायुक्त (भरत) भी; अन्ऱु–उस दिन; अ इटै–वहीं; अरु पॉटियिन् वैकि–दुखद धलि पर ही समय बिताकर; तॅव् इटै तर–शत्रु को डरा-धमकाते हुए; निन्ऱु आर्क्कुम्–खूब झनझनानेवाली; चॅऱि कळल्–बँधी हुई पायलधारी; पुळिञर् कोमान्–निषादपति; इ इटै–इस समय; ऎम्मै–हमें; कङ्कै आऱ्ऱिन् एऱ्ऱिनै आयिन्–गंगानदी के पार लगाओगे तो; वॅव् इटर् कटल् निन्ऱु–कठोर दुख-सागर से; एऱ्ऱि–बाहर निकालकर; वेन्तन् पाल् विट्टुत्ततु–हमारे अधिपति के पास पहुँचा दिया (जैसे) होगा; ऎन्ऱान्–कहा। १०४१

महिमावान भरत उस दिन वहीं दुखद धूलि पर पड़े रहे। दूसरे दिन उन्होंने गुह को 'शत्रुओं का दिल दहलाते हुए निरन्तर बजनेवाली पायलधारी निषादराज' कहकर सम्बोधित किया और कहा कि तुम हमें गंगा पार कराके दक्षिणी कूल पर पहुँचा दोगे, तो वह भयंकर दुखसागर पार कराके श्री राजा राम के पास पहुँचाना-सा होगा। १०४१

नन्ऱॅनप् पुळिञर् वेन्द नणियिनन् ऱमरै नावाय्
शॅन्ऱिनित् तरुदि रॅन्न वन्दन शिवन्शेर् वॅळ्ळिक्
कुन्ऱॅनक् कुनिक्कु मम्बॉर् कुवडॅनक् कुबेरन् मानम्
ऑन्ऱॅन नाणिप् पल्वे ऱुरुवुहॉण् डनैयवान 1042

पुळिञर् वेन्तन्–व्याधपति; नन्ऱु ऎन–ठीक कहकर; तमरै नणियिनन्–अपने लोगों के पास आया; इनि चॅन्ऱु–अब जाकर; नावाय् तरुतिर्–नौकाएँ लाओ; ऎन–यह आज्ञा सुनाने पर; चिवन् चेर् वॅळ्ळि कुन्ऱु ऎन–शिवजी का वासस्थान चाँदी के पर्वत और; कुपेरन् मानम्–कुबेर का पुष्पकयान; ऑन्ऱु ऎनल्–एकाकी रहने से; नाणि–लजाकर; पल वेऱु उरुवु कॉण्ट अनैय–अनेक रूप धर गए हों, ऐसे; आन–बनी रहीं जो; वन्तन–आ पहुँचीं। १०४२

व्याधपति ने कहा कि अच्छा। फिर वह इस ओर अपने लोगों के पास आया। उसने आज्ञा सुनाई कि अब जाओ और नौकाएँ लाओ। नौकाएँ आईं और वे उतने शिवजी के कैलाशपर्वत के और कुबेर के पुष्पकयान के समान लगीं। (कवि की कल्पना है कि) कैलाश और पुष्पकयान एकाकी रहने से शरमाकर अनेक रूपों में अपने को परिवर्तित करके आये हों, ऐसी वे नावें लगीं। १०४२

नङ्गैयर् नडैयि नन्न नाणुऱ शॅलवि नावाय्
गङ्गैयु मिडमिल् लामै मिडैन्दन कलन्द वॅङ्गुम्

अङ्गींडिङ् गिळित्ति येऱ्ऱु ममैदिया लमरर् वैयत्
तिङ्गींडङ् गिळित्ति येऱ्ऱु मिरुविनै यॆन्न लान 1043

नङ्कैयर् नटैयिन्–स्त्रियों की चाल के समान चाल; अन्नम् नाण् उऱु चॆलविन्–हंस को भी शरमानेवाली गति (के साथ); कङ्कैयुम् इटम् इलामै–गंगा के विस्तार में स्थान नहीं हो, ऐसा; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; मिटैन्तन–भरीं; कलन्त–जुटीं; नावाय्–वे नावें; अङ्कॊट्टु इङ्कु–यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ; इळित्ति एऱ्ऱुम् अमैतियिन्–उतारकर चढ़ा लेती हैं, उस प्रकार में; अमरर् वैयत्तु इङ्कु–स्वर्गलोक से यहाँ; इङ्कॊट्टु अङ्कु–यहाँ से वहाँ; इळित्ति एऱ्ऱुम्–उतारकर चढ़ा देनेवाले; इरु विनै ऍन्तल् आन–दो (पाप, पुण्य) कर्मों के समान रहीं। १०४३

उन नौकाओं की चाल नारियों की चाल के समान थी और हंस भी उसको देखकर लाज का अनुभव करे, ऐसी थी। नावें इतनी वड़ी संख्या में आकर मिल गईं कि गंगा के पाट पर उन्हें जगह पर्याप्त नहीं लगती थी। वे नावें मनुष्यों या प्राणियों को इस कूल से उस कूल को और वहाँ से इस ओर ले आती-जाती थीं। उस विषय में वे उस कर्मगति के समान लगती थीं, जो जीवों को भूलोक से देवलोक को और वहाँ से यहाँ ले आती रहती है। १०४३

वन्दन वरम्बि नावाय् वरिशिलैक् कुरिशिन् मैन्द
शिन्दनै याव दॆन्ऱु शिरुङ्गिपे रियर्कोन् शॊप्पच्
चुन्दर वरिवि लानुज् जुमन्दिरन् ऱन्नै नोक्कि
ऍन्दैयित् तानै तन्नै येऱ्ऱुदि विरैवि नॆन्ऱान् 1044

वरि चिलै कुरिच्चिल् मैन्त–बन्धनयुक्त धनुर्धर, चक्रवर्ती-कुमार; वरम्पु इल् नावाय् वन्तन–अपरिमेय नौकाएँ आई हैं; चिन्तनै यावतु ऍन्ऱु–विचार क्या है, ऐसा; चिरुङ्कि पेरियर् कोन्–शृंगवेरपुर के राजा के कहने पर; चुन्तरम् वरि विल्लानुम्–सुन्दर और बन्धनयुक्त धनुर्धर भी; चुमन्तिरन् तन्नै नोक्कि–सुमन्त्र को देखकर; ऍन्तै–तात; इ तानै तन्नै–इस सेना को; विरैविन् एऱ्ऱुति–शीघ्र उस पार पहुँचा दीजिए; ऍन्ऱान्–कहा। १०४४

तव गुह ने भरत से विनय सुनाई कि हे बन्धनयुक्त धनु के प्रयोग में समर्थ चक्रवर्ती के पुत्र! अपार संख्या की नावें आ गईं। अब आपकी आज्ञा क्या है? जब शृंगवेरपुर के स्वामी ने यह कहा, तब सुन्दर सबंध धनुर्धर भरत ने भी सुमन्त्र से कहा कि हे हमारे पिताजी! इस सेना को शीघ्र उस पार पहुँचवा दीजिए। १०४४

कुरिशिल देव लालक् कुरहदत् तेऱ्व लानुम्
वरिशैयिन् वळामै नोक्कि मरबुळि वहैयि नेऱ्ऱक्
करिपरि यिरदङ् गालाळ् कणक्करु करैयिल् वेलै
ऍरिमणि तिरैयिन् वीशुङ् गङ्गैया ऱेरिऱ् ऱन्ऱे 1045

कुरिचिलतु एवलाल्–राजा भरत की आज्ञा से; अ कुरकतम् तेर् वल्लानुम्–अश्वजुते रथ-सारथ्य-चतुर सुमन्त्र के; वरिचैयिऩ् वऴामै नोक्कि—क्रम-भंग न करके; मरपुऴि–उचित प्रकार से; वकैयिऩ् एट्रऱ–भलीभाँति चढ़ा देने से; करि–गज; परि–अश्व; इरतम्–रथ; कालाऴ्–पदाति; कणक्कु अऱ–अगणित; करै इल् वेलै–अपार सेना-सागर; ऒरि मणि–दीप्तिमान मणियों को; तिरैयिऩ् वीचुम्–अपनी लहरों द्वारा छितरानेवाली; कङ्कै आऱु–गंगानदी को; एऱिट्रऱु–पार किया। १०४५

भरत की आज्ञा पाकर अश्वरथचालन-चतुर सारथी सुमन्त्र ने नावों पर उचित क्रम से उपयुक्त प्रकार समीचीन संख्या में सबको चढ़ाया। तब गज, रथ और पदाति का समूह, जिनकी संख्या अगणित थी, निस्सीम सागर-लहरों से दीप्त रत्नों को बिखेरनेवाली गंगा के दक्षिणी पार गया। १०४५

इडिपडु मुऴक्कम् बॊङ्ग विनमऴै महर नीरै
मुडिवुऱ मुहप्प वूऴि यिऱुदियिऩ् मॊय्प्प पोलक्
कॊडियॊडु वङ्गम् वेलैक् कूम्बॊडु पडर्व पोल
नॆडियकै यॆडुत्तु नीट्टि नीन्दिऩ नॆडुङ्गै वेऴम् 1046

नॆट्टु कै वेऴम्–लम्बी पंक्तियों में गज; ऊऴि इऱुतियिल्–युगान्त में; इनम् मऴै–घटाएँ; मकरम् नीरै—सागर-जल को; मुटिवु उऱ मुकप्प–पूर्ण रूप से चूस लेते हुए; इटि पटुम्–वज्रदन्त; मुऴक्कम् पॊङ्क–गर्जन के उच्च होते; मॊय्प्प पोल–आकर समुद्र पर जुड़ जायँ, जैसे; कॊटियॊटु कूम्पॊटु–ध्वजा और मस्तूल के साथ; वङ्कम्–पोत; वेलै पटर्व पोल–समुद्र में जाते हों, जैसे; नॆटिय कै–लम्बी सूँड़ों को; ऍटुत्तु नीट्टि–उठाकर बढ़ाते हुए; नीन्तिऩ–तैरकर चले। १०४६

अनेक गज तैरते गये। वे लम्बी पंक्तियों में समुद्रजल ग्रहण करने के लिए जुटी हुई घटाओं के समान लगे। वे अपनी सूँड़ों को जल के ऊपर उठाकर बढ़ाते हुए चले; तब वे मस्तूल और ध्वजाओं सहित उन पोतों के समान लगे, जो समुद्र पर जा रहे हों। १०४६

शङ्गमु महर मीऩुन् दरऴमु मणियुन् दऴुऴि
वङ्गनीर्क् कडलुम् वन्दु तऩ्वऴिप् पडर माऩप्
पॊङ्गुवॆङ् गऴिऱु नूक्कक् करैयॊरीइप् पोयिऱ् ऱम्मा
गङ्गैयु मिरामर् काणुङ् कादलुऱ् ऱॆऩ्ऩ मादो 1047

माऩम्–बड़ाई योग्य; पॊङ्कु वॆम् कऴिऱु–बड़े समूहों के भयंकर गज; नूक्क–(तैरते समय) ढकेलते हैं, इसलिए; कङ्कैयुम्–गंगा का जल; चङ्कमुम्–शंखों को; मकरम् मीऩुम्–मगर, मच्छों को; तरऴमुम्–मोतियों को; मणियुम्–और रत्नों को; तऴुऴि–बहाते हुए; वङ्कम् नीर् कटलुम्–पोत जिस पर चलते हैं, उस सागर के जल के; तऩ् वऴि वन्तु पटर–अपने (गंगा के) स्थान में आ जाते; करै ऒरीइ–तीर

लाँघकर; इरामऩ् काणुम् कातल् उऱ्ऱतु—श्रीराम-दर्शन की इच्छुक हुई, जैसे; पोयिऱ्ऱु—(दक्षिण की तरफ़) वहने लगा। १०४७

बड़ाई करने योग्य भयंकर बड़े-बड़े गजों के समूहों ने तैरते वक्त जल को पीछे ढकेला। तब समुद्र का जल मगर, मच्छ, शंख, मोती, रत्न आदि को ठेलते हुए गंगा में प्रवहित हो गया। तब गंगा का जल दक्षिणी तीर को लाँघकर भूमि पर बहने लगा। तब वह ऐसा लगा, मानो श्रीराम-दर्शनाभिलाषा से प्रेरित होकर गंगा दक्षिण की तरफ़ बढ़ रही हो। १०४७

पाङ्गिनुत् तरिय माऩप् पडर्तिरै तवऴप् पारिऩ्
वीङ्गुनी रऴुवऩ् दऩ्ऩुळ् वीऴ्मदक् कलुऴि वॆळ्ळत्
तोङ्गलूह डलैह डोऩ्ऱ वॊळित्तव णुयर्ऩ्द कुम्बम्
पूङ्गुऴऱ् कङ्गै नङ्गै मुलैयॆऩप् पॊलिऩ्द मादो 1048

पारिऩ् वीङ्कुम् नीर्—भूमि पर अधिक बहनेवाले (गंगा-) जल के; अऴुवम् तऩ्ऩुळ्—गहरे स्थानों में; वीऴ्—उतरकर तैरनेवाले; मतम् कलुऴि वॆळ्ळत्तु—मद की मैली धारा बहानेवाले; ओङ्ककलऌ—गजों के; तलैकळ् तोऩ्ऱ—सिर दिखाई देते हैं; ऑळित्तु—(उनके शरीर जल के अन्दर) छिपे हैं, इसलिए; अवण् उयर्ऩ्त कुम्पम्—उधर ऊपर दिखनेवाले मस्तक; पाङ्किऩ् उत्तरियम् माऩ—भले प्रकार के उत्तरीय के समान; पटर् तिरै तवऴ—फैलनेवाली तरंगों के उन पर रेंगते चलने से; पू कुऴल् कङ्कै नङ्कै—पुष्पालंकृत केश वाली गंगासुन्दरी के; मुलै ऍऩ्ऩ पॊलिऩ्त—उरोजों के समान शोभायमान हुए। १०४८

वैसी गंगा के, जिसका जल तीर लाँघकर थल में बह रहा था, गहरे स्थानों में मद के मैले जल से युक्त गज डूबे हुए थे। उनके शरीर छिपे थे, पर उनके दोनों मस्तक ऊपर दिखाई दिये। वहाँ गंगाजी की लहरें उठ रही थीं। वह दृश्य गंगा के मनोरम उत्तरीय के लहराने का-सा था और वे हाथियों के कुम्भ पुष्पालंकृत केश वाली गंगादेवी के स्तनों के समान लगे। १०४८

कॊडिञ्जॊडु तट्टु मच्चु माऴियुम् कोऩ्त मॊट्टुम्
नॆडुञ्जुवर्क् कॊडियुम् यावु नॆऱिवरु मुऱैयि ऩीक्कि
विडुञ्जुवर् पुरवि योडुम् वेऱुवे ऱेऱ्ऱिच् चॆऩ्ऱ
मडिञ्जपि नुयिर्हळ् कूट्टुम् विऩैयॆऩ वयिरत् तेर्हळ् 1049

कॊटिञ्चॊटु—'कॊडिञ्जु' नाम का रथी का सहारा; तट्टुम्—पीठ (या आसन); अच्चुम्—धुरी; आऴियुम्—चक्र; कोऩ्त मॊट्टुम्—कमलकली-सी लगी छत; नॆटु चुवर् कॊटियुम्—दोनों बाजुओं में बँधी ध्वजाएँ; यावुम्—सब भाग; नॆऱि वरुम् मुऱैयिऩ्—उचित क्रम से; नीक्कि—अलग-अलग निकालकर; विटुम्—मुक्त; चुवल् पुरवि योटुम्—अयाल-सहित अश्वों के साथ; वेऱु वेऱु एऱ्ऱि—अलग-अलग चढ़ाकर; उयिर्कळ्

मटिञ्च पिन्–जीवों के मरने के बाद; कूट्टुम्–उनको दूसरे शरीरों से मिलानेवाली; विनै अँन–कर्मगति के समान; चॅन्ऱ्–(नौकाएँ) गईं। १०४९

रथों को अश्वों के साथ नावों पर चढ़ाना असम्भव था। इसलिए रथ के सभी भाग अलग-अलग किये गये। 'कॉडिजी' (वह सहारा जो, रथी के सामने आराम से अपना हाथ रखने के लिए बना रहता है), पीठ (या आसन), चक्र, कमल के समान बनी छत और ध्वजाएँ आदि भाग नावों पर रखे गये। अयाल वाले अश्व भी अलग से नावों पर चढ़ाये गये। इनको लेकर नावें कर्मगति के समान चलीं। कर्मगति जीवों को एक शरीर से ले जाकर दूसरे शरीर से जोड़ देती है। शरीर पाँच भूतों का बना होता है। अश्व को जान और रथ को शरीर माना गया है और भागों को पंचभूत। १०४९

नालिरण् डायकोडि नवैयिल नावाय् मीदाच्
चेऱ्ऱिरण् डनैय वाय कदियॊडु निमिरच् चॅन्ऱ्
पाऱ्ऱिरण् डनैय मॅय्य पयन्दिरण् डनैय नॅञ्ज
काऱ्ऱिरण् डनैय काल कडुनडैक् कलिनप् पाय्मा 1050

पाल् तिरण्टाल् अनैय–दूध ने रूप लिया हो जैसे; मॅय्य–शरीर वाले; पयम् तिरण्टाल् अनैय नॅञ्च–भय ने मिलकर रूप लिया हो, ऐसा मन; काल् तिरण्टाल् अनैय काल–हवा ने रूप धरा हो, ऐसे पैरों वाले; कडु नडै–तेज़ चाल; कलिनम्–लगाम-लगे; पाय्मा–अश्व; मीतु आक–अपने ऊपर लेकर; नाल् इरण्टु आय कोटि–चार के दो (आठ) करोड़; नवै इल नावाय्–दोषहीन नौकाएँ; चेल् तिरण्टाल् अनैय आय–'शेल' मछलियों की मिली; कतियॊटु–गति के साथ; निमिर चॅन्ऱ्–लम्बी (रेखा में) गईं। १०५०

वे अश्व रंग में दुग्धघन के समान थे। उनका हृदय भय के सम्मिलित रूप के समान था क्योंकि ज़रा सा खटका होने पर भी वे सरपट भाग जाते थे। उनके पैर पवननिकाय के समान थे। त्वरित-चाल के और लगाम-लगे वे घोड़े आठ करोड़ नावों पर चढ़ाये गये। वे नौकाएँ 'शेल' नामक मछलियों के समूहों के समान गंगाजल पर लम्बी कतारों में चलीं। १०५०

ऊड्ड् नॅरुक्कि योडत् तॊरुवर्मुन् तॊरुवर् किट्टिच्
चूडहत् तळिर्क्कै मादर् तळुविनर् तुवन्ऱित् तोन्ऱ्
पाडियल् कळिमाल् यानैप् पन्दियङ् गडैयिर् कुत्तुम्
कोडुहळ् मिडैन्द वॅन्न मिडैन्दन कुववुक् कॊङ्गै 1051

चूटकम् तळिर् कै मातर्–चूड़ाओं से भूषित पल्लवमृदु-हस्ता स्त्रियाँ; ओटत्तु ऊट्ट–नौकाओं में; ऑरुवर् मुन् ऑरुवर् किट्टि–एक के पहले एक आकर; उऱ नॅरुक्कि–बहुत लसकर; तळुविनर्–परस्पर पाश में बाँध लेकर; तुवन्ऱि तोन्ऱ–

जुटी रहीं; पाटु इयल्–(तब) बड़ाई-योग्य; कळि–मत्त; माल् यानै पन्ति—बड़े-बड़े हाथियों की पंक्तियों के; अम् कटैयिल् कुत्तुम् कोटुकळ्–सुन्दर नोकों से बेधनेवाले दाँत; मिटैन्त अन्न–एक साथ मिले हों जैसे; कुवबु कोङ्कै–पुष्ट स्तन; मिटैन्तत्त–मिले रहे। १०५१

चूड़ियाँ पहने हुए और पल्लव-समान हाथों वाली स्त्रियाँ नावों पर खचाखच भर गईं। वे एक के पहले एक जाने की उत्कण्ठा दिखाते हुए नावों पर चढ़ीं और परस्पर गुँथी हुई लस गईं। तब उनके, मत्तगजों की श्रेणियों के चुभनेवाले दाँतों के समान स्तन भी सटे रहे। १०५१

पॉलङ्गुळै महळिर् नावाय् पोक्कित्तोन्ऱु ऑन्ऱु ताक्क
मलङ्गिन रिरण्डु पालु मरुहिनर् वॅरुवि नोक्क
अलङ्गुनीर् वॅळ्ळन् दळ्ळि यळिदर वङ्गु मिङ्गुम्
कलङ्गिन वॅरुविप् पायुङ् गयऱ्कुल निहर्त्त कण्गळ् 1052

नावाय्–नौकाएँ; पोक्कित्–अपनी गति में; ऑन्ऱु ऑन्ऱु ताक्क–परस्पर टकराईं, तब; पॉलम् कुळै मकळिर्–स्वर्णकुण्डलधारिणी स्त्रियाँ; वॅरुवि–डरकर; मलङ्कित्तर्–हड़बड़ाईं; मरुकित्तर्–घबड़ा उठीं; इरण्टु पालुम् नोक्क–दोनों ओर ताकने लगीं, तब; कण्कळ्–उनकी आँखें; अलङ्कु नीर् वॅळ्ळम्–बहनेवाली धारा से; तळ्ळि अळि तर–फेंकी जाकर निर्वलता पाकर; वॅरुवि कलङ्कित्त–भयातुर और चंचल हुईं; अङ्कुम् इङ्कुम् पायुम्–इधर-उधर भागनेवाले; कयल् कुलम् निकर्त्तत–मच्छकुल के समान रहीं। १०५२

नौकाएँ अपनी-अपनी गति में आपस में टकराईं। तब भारी कुंडलधारिणी नारियाँ भयभीत होकर घबड़ा उठीं और दोनों ओर चंचल नेत्रों से देखने लगीं। तब उनके नेत्र उन मीनों के कुलों के समान लगे, जो गंगा की धारा से इधर-उधर चलाये जाने से अस्त-व्यस्त होकर इधर-उधर चल रहे हों। १०५२

इयल्वुरु चॅलवि नावा यिरुहैयु मॅयितर् तूण्डत्
तुयल्वरु तुडप्पु वीशुन् दुवलैहण् महळिर् मॅन्नूरू
शुयल्वुरु परवे यलुहु लॉळिपॅरत् तळिप्प वुळ्ळत्
तयर्वुरु मदुहै मैन्दरुक् कयावुयिर्प् पळित्त दन्ऱे 1053

इयल्वु उरु चॅलविल्–स्वाभाविक तेज गति में; नावाय्–नौकाओं को; इरु कैयुम्–दोनों पार्श्वों में रहकर; ऍयित्तर् तूण्ट–निषादों के चलाते समय; तुयल् वरु–आगे-पीछे चलनेवाले; तुटुप्पु–डाँड़ों द्वारा; वीचुम् तिवलैकळ्–फेंकी हुई छींटें; मकळिर्–स्त्रियों के; मॅन् तूचु उयल्वु उरु–महीन वस्त्र जिन पर सरकते थे, उन; परवै अल्कुल्–विशाल नितम्बों को; ऑळि पॅऱ तळिप्प–दृश्यमान कराते हुए भिगोते थे; उळ्ळत्तु अयर्वु उरु–(वह दृश्य) मन में श्रान्त रहनेवाले; मतुकै मैन्तर्क्कु–वीर नौजवानों में; अया उयिर्प्पु–लम्बी साँसें; अळित्ततु–पैदा करता था। १०५३

नावें अपनी स्वाभाविक तेज़ गति में जा रही थीं और दोनों ओर निषाद बैठे हुए डाँड़े चला रहे थे। तब जो सीकर छितरे उनसे स्त्रियों के कटि प्रदेशों पर जो वस्त्र हवा के कारण इधर-उधर खिसक रहे थे वे भीग गये। तव उनके नितम्व आदि साफ़ दृष्टि पड़ते थे और वीर तरुणों के मन प्रभावित हुए और वे अभागे दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगे। १०५३

इक्करै यिरैत्त शेनै यॅऱिहडन् मुहन्द वेहि
अक्करै यडैय वीशि वऱियन वणुहु नावाय्
पुक्कलै याऴि नन्नीर् पॉरुत्तन पॉऴिन्तु पोक्कि
अक्कण मुवरि मीऴु महन्मऴै निहर्त्त वम्मा 1054

इ करै–इस (उत्तरी) तीर पर; इरैत्त–शोरगुल सहित; चेनै ॲऱि कटल्–सेना रूपी तरंगायमान पारावार को; मुकन्त एकि–ढो जाकर; अ करै–उस कूल पर; अटैय वीचि–पूरा उतारकर; वऱियन अणुकुम्–खाली होकर आनेवाली; नावाय्–नौकाएँ; अलै आऴि पुक्कु–तरंगसहित समुद्र में घुसकर; पॉरुत्तन नल् नीर्–जो ले लिया, उस अच्छे जल को; पॉऴिन्तु पोक्कि–बरसाकर रिक्त करके; अ कणम्–उसी क्षण; उवरि मीऴुम्–लौटकर समुद्र के पास आनेवाले; अकल् मऴै निकर्त्त–बड़े मेघों के समान लगीं। १०५४

नावें उत्तरी कूल से कोलाहल-युक्त सेना-सागर को चढ़ा लेकर दक्षिणी किनारे पर आईं। वहाँ उसको पूरा उतार देकर रिक्त हुईं। फिर उत्तरी किनारे पर लौट आईं। वे उन मेघों के समान आईं, जो सागर से गृहीत जल को बरसाकर तुरन्त सागर पर लौट आते हों। १०५४

अहिलिडु दूब मन्न वाय्मयिर् पीलि यार्त्त
मुहिऴुडै मुरण्मात् तण्डु कूम्बॅन मुहिलिन् वण्णत्
तुहिलोंडु तॉडुत्त शॅम्बॊर् ऱट्टिडैत् तॊडुत्त मुत्तिन्
नहुकोडि नॅडिय पाया नव्वॅनच् चॅन्ऱ नावाय् 1055

अकिल् इटु तूपम् अन्न–अगरु-धूम के समान; आय् मयिल् पीलि आर्त्त–चुने हुए मयूरपंख-वद्ध; मुकिऴ् उटै–मुकुट के; मुरण् मा तण्टु–बड़े सारयुक्त दण्ड; कूम्पु ॲन–मस्तूल-सम; मुकिलिन् वण्णम्–मेघवर्ण; तुकिलोटु तॊटुत्त–चीरों की बनी; चॅम् पॊन् तट्टिटै तॊटुत्त–स्वर्ण की कारीगरी से युक्त; मुत्तिन् नकु कॊटि–मुक्ताओं से अलंकृत ध्वजाएँ; पाय् आक–पालों के समान लगें, ऐसा; नावाय्–नावें; नव् ॲन–विशाल पोतों के समान; चॅन्ऱ–गईं। १०५५

वे नावें वड़े-बड़े पोतों के समान लगीं। अगरु-धूम के समान मयूर-पंखों के मुकुट के साथ रहे दण्ड मस्तूल के समान लगे। मेघवर्ण चीर की वे ध्वजाएँ पाल के समान दिखाई दीं, जिन पर स्वर्ण और मोती सजे थे। १०५५

आननङ् गमल मन्न मिन्नन वमुदच् चॅव्वाय्त्
तेनवर् कुळला रेरु मम्बिहळ् शिदरु मुत्तम्
मीनॅन विरिन्द गङ्गै विण्णॅनप् पण्णै मुर्रि
वानवर् महळि रूरु मानमे निहर्त्त मादो 1056

कमलम् अन्न आननम्–कमलानना; अमुतम् चॅव्वाय्–अमृतावास अरुणाधरा; मिन् अन्न–विद्युतसमाना; तेन् अलर् कुळलार्–शहदमिलित केश वालियों ने; एरुम् अम्पिकळ्–जिन पर सवारी की वे नावें; कङ्कै विण् अॅन–गंगा आकाश-सी बनी; चितरुम् मुत्तम्–छितरनेवाले मोती; मीन् अॅन–नक्षत्र-सम बने; वानवर् मकळिर्–देवबालाएँ; पण्णै मुर्रि–क्रीड़ा पूरा करके; ऊरुम्–जिन पर सवार होकर चलती हैं; मानमे निकरत्त–उन यानों के समान लगीं। १०५६

वे नावें, जिन पर कमलानना, अमृताधरा, विद्युल्लता-समाना और मधु-केशिनी स्त्रियाँ सवार थीं, देवयानों के समान दिखीं। तब गंगा का जल-विस्तार आकाश के समान, लहरों से विखरनेवाले मोती तारों के समान लगे। स्त्रियाँ उन सुरांगनाओं के समान लगीं, जो जलक्रीड़ा समाप्त करके अपने यानों पर सवार हो जा रही हों। १०५६

तुळिपडत् तुळावु तिण्कोड् रुडुप्पिरु कालिड् रोन्र
नळिर्पुनर् कङ्गै यार्रि नण्डॅनच् चॅल्लु नावाय्
कळियुडै मञ्ञै यन्न कनङ्गुळैक् कयर्कण् मादर्
ऑळिरडिक् कमलन् दीण्ड वुयिर्पडैत् तनवे यॊत्त 1057

तुळि पट तुळावु–जलकण छितराते हुए चलनेवाले; तिण् कोल् तुडुप्पु–सारयुक्त डाँड़े; इरु कालिल् तोन्र–दोनों बाजुओं में दिखाई दिये; नळिर् पुनल्–शीतल जलयुक्त; कङ्कै आर्रिल्–गंगाजल में; नण्टु अॅन चॅल्लुम्–केकड़ों के समान चलनेवाली; नावाय्–नावें; कनम् कुळै–भारी कुण्डल; कयल् कण्–मछली-सी आँखें; कळि उटै–हर्ष-भरे; मञ्ञै अन्न–मोरों के समान; मातर्–स्त्रियों के; ऑळिर् अटि कमलम्–उज्ज्वल चरणकमलों के; तीण्ट–स्पर्श से; उयिर् पटैत्तनवे–जीवन्त बन गईं। १०५७

डाँड़े जो दोनों बाजुओं में सीकर उड़ाते हुए चल रहे हैं (केकड़े) के पैरों के समान दिखाई दे रहे हैं। नौकाएँ शीतल जल वाली गंगाजी पर केकड़ों के समान चल रही हैं। वे मानो भारी कुण्डलधारिणी, मीनलोचनी और मयूराभा स्त्रियों के लाल प्रकाश वाले चरण-कमलों के स्पर्श से सजीव हो गईं। १०५७

मैयरु विशुम्बिन् मण्णिन् मरुमो रुलहिन् मुरुम्
मॅय्विनै तवमे यन्रि वेरुमीन् रुळदो कोळ्ळर्
शॅय्विनै नावा येरित् तीण्डलर् मनत्तिर् चॅल्लुम्
मॊय्विशुम् बोड माहत् तेवरिन् मुनिवर् पोनार् 1058

मुनिवर्–ऋषि; कीऴोर् वित्तै चॅय् नावाय्–निम्न (जाति के) लोगों से स्पृष्ट नावों पर; तीण्टि एऱलर्–स्पर्श कर नहीं चढ़े; मनत्तिल् चॅल्लुम्–संकल्प-मात्र से चलनेवाले; मॉय् विचुम्पु–बलवान गगनगति को ही; ओटम् आक–नाव बनाकर; तेवरिन् पोऩार्–देवों के समान गये; मै अऱु विचुम्पिल्–निर्दोष आकाशलोक में; मण्णिल्–भूलोक में; मऱ्ऱुम् ओर् उलकिल्–अन्य किसी भी लोक में; मुऱ्ऱुम् मॅय् वित्तै–सम्पूर्ण फलदायी सच्चा कृत्य; तवमे अन्ऱि–तपस्या के सिवा; वेऱु ऒन्ऱुम् उळतो–और कोई है क्या। १०५८

वसिष्ठ आदि महर्षि नाव को निम्न लोगों के स्पृष्ट होने से न छूकर योग-शक्ति से गगन मार्ग पर देवों के समान उड़ चले। हाँ, स्वर्ग या भूमि या किसी भी लोक में पूर्णफलदायिनी तपस्या के समान और कोई कार्य है क्या ? नहीं। १०५८

❀ अऱुपदि नायिर मक्कु रोणियॅन्
ऱिऱुतिशॅय् शेनैयु मॅल्लै तीर्नहर्
मऱुवऱु मैन्दरु महळिर् वॅळ्ळमुम्
शॅऱिदिरैक् कङ्गैपिन् किडक्कच् चॅन्ऱवे 1059

अऱुपतिनायिरम्–साठ सहस्र; अक्कुरोणि ऍन्ऱु–अक्षौहिणी कहकर; इऱुति चॅय्–गणित; चेनैयुम्–सेना भी; ऍल्लै तीर् नकर्–अनन्त (अयोध्या) नगर के वासी; मऱु अऱु मैन्तरुम्–अकलंक पुरुष; मकळिर् वॅळ्ळमुम्–नारियों का समूह; चॅऱि तिरै कङ्कै–अधिक लहरों वाली गंगा को; पिन् किटक्क–पीछे पड़ी छोड़कर; चॅन्ऱ–गये। १०५९

साठ सहस्र अक्षौहिणी की सेना, अनन्त यशस्वी अयोध्या नगर के निर्मल पुरुष और नारियों के वृन्द —सभी लहरसंकुल गंगाजी को पीछे पड़ा छोड़कर दूसरे किनारे पर आ गये। १०५९

❀ शुळित्तुनीर् वरुदुरै याऱ्ऱैच् चूऴ्बडै
कळित्तुनीङ् गियदॅनक् कळ्ळ वाशैयै
अळित्तुवे ऱवनिपण् डाण्ड वेन्दरै
इळित्तुमे लेऱिनान् ऱानु मेऱिनान् 1060

चूऴ् पटै–अपने साथ आई हुई सेना; नीर् चुळित्तु वरु तुऱै–जल भँवरों के साथ जहाँ आता था, ऐसे घाटों वाली; आऱ्ऱै कळित्तु नीङ्कियतु ऍन–(गंगा-) नदी को पार कर गयी, तब; कळ्ळम् आचैयै अऱुत्तु–वंचक मोह काटकर; पण्टु अवनि आण्ट–पहले भू का पालन करते जो रहे, उन; वेऱु वेन्तरै इळित्तु–अन्य राजाओं को नीचा करके; मेल् एऱिनान्–ऊपर जो (यश में) चढ़ गये थे, वे; तानुम् एऱिनान्–आप नाव पर सवार हुए। १०६०

सारी सेना भँवर सहित जलधारा वाले घाटों से पूर्ण गंगानदी को पार कर गई —यह जानकर कपटी मोह को काटकर, अन्य राजाओं से

बढ़कर जिन्होंने यश प्राप्त किया था, वे भरत आप एक नाव पर सवार हुए। १०६०

❀ शुड़्ड़त्तार् तेवरोंडुन् दॉळनिन्ड़ कोसलैयैत् तॉळुदु नोक्किक्
कॉड़्ड़त्तारक् कुरुशिलिव रारॅन्ऱु गुहन्विनवक् कोक्कळ् वैहुम्
मुड़्ड़त्तान् मुदड़्ड़ेवि मून्ऱुलहु मीन्ड़ानै मुन्नीन् ड़ानैप्
पॅड़्ड़त्तारप् पॅरुञ्जॅल्वम् यान्बिड़त्त लाड़ुड़न्द पॅरिया ळॅन्ड़ान् 1061

चुड़्ड़त्तार्–परिवारों; तेवरॉटुम्–और देवों से; तॉळ निन्ड़–पूजित खड़ी रही; कोचलैयै–कौसल्यादेवी को; कुकन् नोक्कि–गुह ने देखकर; कॉड़्ड़म् तार् कुरुचिल्–विजय की मालाधारी हे वीर राजा; इवर् आर्–ये कौन हैं; ॲन्ऱु वितव–ऐसा प्रश्न किया, तब; कोक्कळ् वैकुम् मुड़्ड़त्तान्–जिनके आँगन में राजा लोग खड़े रहते थे, उनकी; मुतल् तेवि–प्रथम महिषी; मूतरु उलकुम्–तीनों लोकों को; ईन्ड़ानै–जिन्होंने उत्पन्न किया, उनको; मुन् ईन्ड़ानै–प्रथम देनेवाले (महाविष्णु) को; पॅड़्ड़त्ताल्–(पुत्र के रूप में) प्राप्त करने से; पॅरुम् चॅल्वम्–प्राप्य महान सम्पत्ति को; यान् पिड़त्तलाल्–मेरा जन्म होने से; तुड़न्त–खोनेवाली; पॅरियाळ्–महीयसी; ॲन्ड़ान्–कहा। १०६१

[इसके बाद एक अतिरिक्त पद है। वह कई संस्करणों में नहीं पाया जाता। डाक्टर स्वामिनाथय्यर ने भी इसे प्रामाणिक नहीं माना है। तो भी टी-के-सी ने माना है। अतः उसका सार दिया जाता है :—

भरत का अनुज, तीनों माताएँ, प्रकीर्तित सारथी (सुमन्त्र) तथा पवित्र मित्र, गुह मिलकर नाव पर बैठे। तब वह नाव भी अपने डाँड़े रूपी पैरों को बढ़ाकर अग्रसर हुई।]

नाव में परिवारों और देवों से स्तुत्य होकर कौसल्यादेवी थीं। उनको देखकर गुह ने भरत से उनका परिचय चाहा। 'विजय की मालाधारी वीर राजकुमार! ये कौन हैं?' गुह ने यह प्रश्न किया। तब भरत ने उत्तर में कहा— ये चक्रवर्ती दशरथ की जिनके अजिर में असंख्य राजा लोग प्रतीक्षा में खड़े रहते हैं, प्रथम पटरानी हैं। जगत्पिता के धाता महाविष्णु को इन्होंने पुत्ररूप में प्राप्त किया। उससे जो वैभव इन्हें प्राप्य था, उसे उन्होंने मेरे जन्म के कारण गवाँ दिया। ऐसी महीयसी हैं ये। १०६१

❀ ॲन्ड़लुमे यडियिन्मिशै नॅडिदुविळुन् दळुवानै यिवना रॅन्ऱु
कन्ऱुपिरि काराविन् ऱुयरुडैय कॉडिविनवक् कळड़्काल् मैन्दन्
इन्ऱुणैव निरागवनुक् किलक्कुवड़्कु मिळैयवड़्कु मॅनक्कु मूत्तान्
कुन्ड़नैय तिरुनॅडुन्दोट् कुहनॅन्बा निन्निन्ड़ कुरिशि लॅन्ड़ान् 1062

ॲन्ड़लुम्–कहते ही; अटियिन् मिचै–उनके पैरों पर; नॅटितु विळुन्तु–दीर्घ

दण्डवत करके; अऴुवाऩै–रोनेवाले को; कऩ्ऱु पिरि–बछड़े से वियुक्त; कार् आविऩ्–काले चूचुक वाली गाय के समान; तुयर् उटैय–दुखग्रस्त; कोटि–लता कौसल्या के; इवऩ् आर् ॲऩ्ऱु–यह कौन है, ऐसा; वितव–पूछने पर; कऴल् काल् मैन्तऩ्–पायल से अलंकृत चरण वाले वीर (भरत); इ निऩ्ऱ कुरिचिल्–इस स्थिति में रहनेवाला यह वीर; इराकवऩुक्कु–श्रीराघव का; इऩ् तुणैवऩ्–प्यारा मित्र; इलक्कुवऱ्कुम्–लक्ष्मण का; इळैयऩुक्कुम्–उसके छोटे भाई (शत्रुघ्न) का; ॲऩक्कुम्–और मेरा; मूत्ताऩ्–ज्येष्ठ भ्राता है; कुऩ्ऱु अऩैय–गिरि-सम; तिरु नॅट्टु तोळ्–सुन्दर और विशाल कन्धों वाला; कुकऩ् ॲऩ्पाऩ्–गुह नाम का है; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। १०६२

सुनते ही गुह ने उनके पैरों पर गिरकर दण्डवत की। तब बछड़े से छूटकर अपार दुखमग्न रहनेवाली काले चूचुकों की गाय के समान आर्त रहनेवाली लता-समाना कौसल्या ने भरत से प्रश्न किया कि यह कौन है? वीरतासूचक पायलधारी भरत ने उसका परिचय निम्न प्रकार से दिया। यह, जो बहुत दुख-परितप्त स्थिति में है, श्रीराघव का बहुत ही प्रिय मित्र है। लक्ष्मण, उसका अनुज (शत्रुघ्न) और मैं तीनों का ज्येष्ठ भ्राता है। पर्वत-सम और सुन्दर विशाल भुजा वाला यह गुह नाम से जाना जाता है। (ऐसी गाय को 'काराम्पशु' कहते हैं, उसका इधर बहुत मान है और पूजार्ह समझा जाता है। उसका दूध विशेष रूप से देवों के अभिषेकार्ह माना जाता है।)। १०६२

※ नैवीर लोर्मैन्दी रिनित्तुयरा नाडिऱन्दु काडु नोक्कि
मॅय्वीरर् पॅयर्न्ददुवु नलमायिऱ् ऱामऩ्ऱे विलङ्गऱ् रिण्डोट्
कैवीरक् कळिऱनैय काळैयिवऩ् ऱऩ्ऩोडु कलऩ्दु नीङ्गळ्
ऐवीरु मॊरुवीरा यहलिडत्तै नॅडुङ्गाल मळित्ति रॅऩ्ऱाळ् 1063

मैन्तीर्–पुत्रो; इऩि तुयराल् नैवीर् अल्लीर्–आगे दुख से म्लान होने को अर्ह नहीं हो; मॅय् वीरर्–सच्चे वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) का; नाट्टु इऱन्तु–राज्य त्यागकर; काट्टु नोक्कि–जंगल की तरफ़; पॅयर्न्ततुवुम्–प्रस्थान करना भी; नलम् आयिऱ्ऱु–भला ही हुआ; आम्–हाँ; विलङ्कल् तिण् तोळ्–पर्वत-सम बलवान भुजाओं; कै वीरम्–(धनु-प्रयोग में) हस्त कौशल; कळिऱु अऩैय–(इनसे युक्त और) गज-सदृश; काळै इवऩ् तऩ्ऩोटु कलन्तु–पट्ठा, इसके साथ मिलकर; नीङ्कळ्–तुम; ऐवीरुम् ऒरुवीर् आय्–पाँचों एक होकर; अकल् इटत्तै–विस्तृत स्थल को; नॅट्टु कालम् अळित्तिर्–बहुत काल तक रक्षित करो; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १०६३

कौसल्याजी ने तब कहा कि पुत्रो! अब तुम दुख से म्लान होने योग्य नहीं रह गये हो। सच्चे वीर श्रीराम और लक्ष्मण जो राज्य छोड़कर वन की तरफ़ गये, वह प्रस्थान भी भला साबित हुआ है! हाँ! गिरि-सम कन्धे और धनु के प्रयोग का कौशल इनसे युक्त, गजसम वीर तरुण —इससे मिलकर तुम पाँच हो गए हो। पाँचों एक बने रहो और विस्तृत भूमि का बहुत काल तक पालन करते रहो। १०६३

❀ अऱन्दाने यॆन्ऩगिन्ऱ वयनिन्ऱा ळनैनोक्कि यैय वन्बिन्
निऱैन्दाळै युरैयॆन्ऩ नॆऱितिऱम्बात् तन्मॆय्यै निऱ्प दाक्कि
इऱन्दान्ऱ निळन्देवि यावर्क्कुन् दॊळ्हुलमा मिरामन् पिन्बु
पिऱन्दानु मुळनॆन्ऩप् पिरियादान् ऱनैप्पयन्द पॆरिया ळॆन्ऱान् 1064

अऱम् ताने–धर्म ही का रूप; ऎन्किन्ऱ–कहलानेवाली; अयल् निन्ऱाळ् तन्नै–पास में जो खड़ी रहीं, उनको; नोक्कि–देखकर; ऐय–प्रभु; अन्पिन् निऱैन्ताळै–प्रेम से भरी इनका; उरै ऎन्न–परिचय दीजिए, कहने पर; नॆऱि तिऱम्पा–मार्ग से अविचलित; तन् मॆय्यै–अपनी (वचन-) सत्यता को; निऱ्पतु आक्कि–स्थिर रहनेवाली बनाकर; इऱन्तान् तन्–प्राणत्याग जिन्होंने किया, उनकी; इळम् तेवि–छोटी महिषी है; यावर्क्कुम् तॊळ् कुलम् आम्–सर्ववन्द्य; इरामन्–श्रीराम का; पिन्पु पिऱन्तानुम् उळन्–अनुज भी है; ऎन्न–ऐसा लोग कहें ऐसा; पिरियातान् तन्नै–(जो) अलग नहीं होता, उसकी; पयन्त पॆरियाळ्–जननी महादेवी है; ऎन्ऱान्–कहा। १०६४

फिर गुह ने उनको देखा जो पास में धर्मरूप खड़ी थीं। 'प्रभु! इनका परिचय दीजिए। ये बहुत करुणामयी और स्नेहपूर्णा रहती हैं।' इसके उत्तर में भरत ने कहा कि अचूक सत्य-स्थापना के लिए अपनी जान त्यागनेवाले चक्रवर्ती की छोटी पटरानी हैं। ये ही वह मान्य देवी हैं, जिन्होंने उस लक्ष्मण को जन्म दिया जो सदा श्रीराम का अनुगामी रहने के कारण लोगों के मन में यह धारणा पैदा कर सका कि श्रीराम का एक अनुज भी है! । १०६४

❀ शुडुमया नत्तिडैदन् ऱुणैयेहत् तोन्ऱऱुयर्क् कडलि नेहक्
कडुमैयार् कानहत्तुक् करुणैयार् कलियेहक् कळऱ्कान् मायन्
नॆडुमैया लन्ऱळन्द वुलहॆल्लान् दन्मनत्ते निनैन्दु शॆय्युम्
कॊडुमैया लळन्दाळै यारिवॆन् ऱुरैयॆन्ऩक् कुरुशिल् कूऱुम् 1065

तन् तुणै–अपने पति को; चुटुम् मयानत्तिटै एक–(शव-) दाह-योग्य स्मशान पर जाने देकर; तोन्ऱल्–पुत्र को; तुयर् कटलिन् एक–दुख-सागर में जाने देकर; करुणै आर् कलि–करुणा-सागर को; कटुमै आर् कानकत्तु–कठोर जंगल में; एक–जाने देकर; कळल् काल् मायन्–पायलधारी मायावी (त्रिविक्रम) ने; नॆटुमैयाल्–अपने विराट रूप में; अन्ऱु अळन्त उलकु ऎल्लाम्–(जिन लोकों को) उस दिन नापा, उन लोकों को; तन् मनत्ते निनैन्तु–अपने मन से जान-बूझकर; चॆय्युम् कॊटुमैयाल्–किये हुए निर्मम कृत्य से; अळन्ताळै–नाप चुकनेवाली को; इवर् यार् ऎन्ऱु उरै–यह कौन हैं, बताइए; ऎन्न–पूछने पर; कुरुचिल् कूऱुम्–राजा भरत ने उत्तर दिया। १०६५

अब कैकेयी की बारी है। भर्ता को दाहक्रिया योग्य स्मशान में, पुत्र को दुख के सागर में और करुणासागर श्रीराम को कठोर वन में भिजवाते हुए जो निर्मम काम उन्होंने मन में खूब सोच-समझकर किया,

वह इस तरह तीनों लोकों में व्याप्त हो गया, जिस तरह वीर-पायलधारी त्रिविक्रम के विराट स्वरूप के चरण व्याप्त हो गये थे। गुह ने उनकी ओर संकेत करके पूछा कि ये कौन हैं ? । १०६५

❀ पडरॅलाम् बडॆत्ताळैप् पळिवळर्क्कुञ् जॅविलियैत्तन् पाळ्त्त पाविक्
कुडरिले नॆडुङ्गालङ् गिडन्देर्कु मुयिर्प्पारङ् गुरैन्दु तेय
उडरॅला मुयिरिळन्द वॆन्त्तोन्रु मुलहत्ते यॊरुत्ति यन्रे
इडरिला मुहत्ताळै युणर्न्दिलैयो विन्निन्रा ळॆन्नै यीन्राळ् 1066

. पटर् ॲलाम् पटैत्ताळै–कष्ट, सब, की जननी; पळि वळर्क्कुम्–अपयश की धात्री; चॅविलियै–दाई को; पाळ्त्त–विनष्ट; पावि कुटरिले–पापी कोख में; नॆटु कालम्–बहुत समय तक; किटन्तेर्कुम्–जो रहा, उस मुझे; उयिर् पारम्–जीवन-भार; कुरैन्तु तेय–क्षीण हो ऐसा; उटल् ॲलाम्–सब शरीर; उयिर् इळन्त–निर्जीव हैं; ॲत्त तोन्रुम् उलकत्ते–ऐसा जिसमें पाया जाता है, उस जग में; इटर् इल्ला मुकत्ताळै—दुख-भाव-हीन मुख वाली; ऒरुत्ति अन्रे–एक ही न हो सकती है; उणर्न्तिलैयो–पहचानते नहीं; इ निन्राळ्–ऐसी जो खड़ी है, वह; ॲन्नै ईन्राळ्–मेरी जननी है। १०६६

भरत ने बहुत ही उदासी और उपेक्षा के साथ परिचय दिया। भाई ! यह सभी संकट की जननी है ! लोकनिन्दा की धात्री है। इसकी नीच और पापी कोख में मैं पड़ा रहा। वैसे मुझे यह संकट दिला दिया कि मेरे जीवन का भार अधिक हो गया और उसके कारण मैं क्षीण हो रहा हूँ, सारी सृष्टि निर्जीव-सी पड़ी हुई है पर इसका चेहरा देखो, कोई दुख का भाव नहीं है ! इसको नहीं पहचानते ? यह जो इस अत्यन्त अपमानजनक स्थिति में है मेरी जननी है ! । १०६६

❀ ॲन्नक् केट्टव् विरक्कमि लाळैयुम्
तन्नर् कैयिन् वणङ्गिनन् रायॆन
अन्नप् पेडै शिरैयिल दाय्क्करै
तुन्निर् रॆन्नवुम् वन्ददु तोणिये 1067

ॲन्न केट्टु–यह कथन सुनकर; अव् इरक्कम् इल्लाळैयुम्–उस करुणाहीना को भी; ताय् ॲत–माता के समान; तन् नल् कैयिन् वणङ्कितन्–अपने पवित्र हाथों से नमस्कार किया; तोणियुम्–नाव भी; अन्नम् पेटै–हंसिनी; चिरै इलतु आय्–पंख-रहित होकर; करै तुन्निरु ॲत–तीर चढ़ी ऐसा; वन्ततु–आ पहुँची। १०६७

गुह ने यह सुनकर उन निर्दय कैकेयी को भी अपने पवित्र हाथ जोड़कर नमस्कार किया। तब तक नाव, पक्षहीन हंसिनी के समान चलकर इस पार आ गयी। १०६७

❀ इळिन्द तायर् शिविहैयि नेहत्तान्
पौळिन्द कण्णीरप् पुदुप्पुनर् पोयिनान्
औळिन्दि लन्गुह नुम्मुड नेहिनान्
कळिन्द नन्बल कावदङ् गालिने 1068

इळिन्त तायर्–जो उतरीं वे माताएँ; चिविकैयित् एक–शिविकाओं पर गईं; तान्–स्वयं (भरत); पॊळिन्त कण् नीर्–बहते हुए अश्रुजल की; पुतु पुनल्–नवीन धारा में; पोयितान्–चलकर; पल कावतम्–कई योजन; कालिन् कळिन्तनन्–पैदल ही चले; कुकनुम्–गुह भी; औळिन्तिलन्–बिना अलग हुए; उटन् एकितान्–साथ चला। १०६८

नाव से नीचे उतरकर तीनों माताएँ शिविकाओं पर आसीन होकर चलीं। भरत अपनी आँखों से इतनी अश्रुधारा बहाते चले कि लगता था कि वे उसी की नवीन धारा में बहते जा रहे हों। वे पैदल ही कई योजन दूर चले। गुह भी उनसे अलग न होकर उनके साथ-साथ चला। १०६८

❀ परत्ति निऱ्कुम् परत्तुव नॆन्नुम्बेर्
वरत्तिन् मिक्कुयर् मादवन् वेहिडम्
अरुत्ति हूर वणुहिन नाण्डवन्
विरुत्ति वेदिय रोडॆदिर् मेविनान् 1069

परत्तिन् निऱ्कुम्–परब्रह्म पर मन लगाए रहनेवाले; परत्तुवन् ऍन्नुम् पेर्–भरद्वाज नाम के; वरत्तिन् मिक्कु उयर्–विशिष्ट उत्कृष्ट; मातवन् वैकुम् इटम्–महान तपस्वी के वासस्थान के पास; अरुत्ति कूर–बढ़ते उत्साह के साथ; अणुकिनन्–आये; आण्टु–तब; अवन्–वे; विरुत्ति वेतियरोटु–ब्राह्मण-वृत्ति में (अध्ययन, अध्यापन, यजन करना, याजन करना, दान करना, दान लेना आदि षड्वृत्ति में) रत विप्रों के साथ; ऍतिर् मेविनान्–भरत के सामने स्वागतार्थ आये। १०६९

वे चलकर बहुत आतुरता के साथ परब्रह्म-ध्यानरत भरद्वाज नाम के वरदश्रेष्ठ, महान तपस्वी के आश्रम के पास आये। तब भरद्वाज सच्चे ब्राह्मण-वृत्ति (अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ करना, कराना, दान देना, लेना आदि षट्वृत्ति) के पालनेवाले ब्राह्मणों के साथ भरत के स्वागतार्थ सामने आये। १०६९

13. तिरुवडि शूट्टु पडलम्

श्री पादुका (शिरो) धारण पटल (पट्टाभिषेक पटल)

❀ वन्द मादवत् तोनैयम् मैन्दनुम्, तन्दै यामॆनत् ताळ्न्दु वणङ्गिनान्
इन्दु मोलियन् नानु मिरङ्गिनान्, अन्द मिन्नलत् ताशिहळ् कूऱिनान् 1070

अ मैन्तनुम्–उन कुमार भरत ने भी; वन्त मातवत्तोनै–अपने सामने पधारे

हुए महान तपस्वी को; तन्तै आम् ॲन-पितृवत; ताऴ्न्तु वणङ्कित्तान्–सिर नवाकर प्रणमन किया; इन्तु मोलि अन्तातुम्–चन्द्रमौलीश्वर-सम उन्होंने भी; इरङ्कित्तान्–दयार्द्र होकर; अन्तम् इल् नलत्तु–अनन्त मंगलदायक; आचिकऴ्–आशीर्वचन; कूऱित्तान्–कहे। १०७०

राजकुमार भरत ने आगत तपस्वी को पिता के समान मानकर विनय के साथ नमस्कार किया। चन्द्रमौलीश्वर के समान रहनेवाले उन मुनिवर ने भी भरत पर बहुत कृपा करके अनन्त मंगलदायक आशीर्वाद के वाक्य कहे। १०७०

❀ ॲडुत्त मामुडि शूडिनिन् बालियैन्
दडुत्त पेरर शाण्डिलै यैयनी
मुडित्त वार्शडै योडु मुनिवर्तू
शुडुत्तु नण्णुदऱ् कुऱ्ऱुळ दियावदे 1071

ऐय–तात; नी–तुम; ॲट्टुत्त मा मुटि चूटि–उन्नत बड़े किरीट को धारण करके; निन् पाल् इयैन्तु अट्टुत्त–तुम्हारे पास स्वतः आये; पेर् अरचु–विशाल राज्य को; आण्टिलै–पाले बगैर; मुटित्त वार् चटै ओटु–जटा बाँधकर; मुनिवर् तूचु उट्टुत्तु–मुनि-योग्य वसन पहनकर; नण्णुतऱ्कु–आये हो, उसके लिए; उऱ्ऱु उळतु–हेतु बना रहा; यावतु–क्या। १०७१

फिर महर्षि ने भरत से प्रश्न किया कि तात! राज्य तुम्हें आप ही आप मिला। श्रेष्ठ मुकुट धारण करके तुमने उसका पालन नहीं किया और जटा-जूट बाँधकर मुनि के वेश में इधर आये हो। इसके हेतुस्वरूप कौन सी बात हो गयी? । १०७१

❀ शित्तक्क डुन्दिऱऱ् चीऱ्ऱ वॅन्दीयिन्नाल्
मत्तक्क डुप्पित्तन् मादवत् तोङ्गलै
ॲन्तक्क डुप्पदु शॅय्दिलॅन् नॅन्ऱशॊल्
उन्तक्क डुप्पदन् ऱालुर वोयॅन्ऱान् 1072

कट्टु तिऱल्–अति कठोर; चित्तम् चीऱ्ऱम्–बहुत कोप की; वॅम् तीयिन्नाल्–भयंकर आग से; मत्तम् कट्टुप्पित्तन्–मन में खौलकर; मा तवत्तु ओङ्कलै–महान तप की गिरि को; उरवोय्–विवेकवली; ॲन्तक्कु अट्टुप्पतु–(मैंने) अपने योग्य काम; चॅय्तिलॅन्–नहीं किया; ॲन्ऱ चॊल्–यह कथन; उन्तक्कु अट्टुप्पतु अन्ऱु–आपके योग्य नहीं; ॲन्ऱान्–कहा (भरत ने)। १०७२

यह सुनकर भरत को अत्यधिक कोप हुआ। उसकी भयंकर आग में उनका मन बहुत तप्त हुआ। उन्होंने तपस्या के पर्वतस्वरूप रहनेवाले महर्षि से कहा कि विवेकी महर्षि! आपने जो यह कहा कि मैंने अपने योग्य काम नहीं किया है, वह कथन आपके योग्य नहीं! । १०७२

❀ मऱैयिऩ् केळ्वऩ्कु मऩ्ऩिळऩ् दोऩ्ऱल्पिऩ्
मुऱैयि ऩीङ्गि मुदुनिलङ् गॊळ्हिलेऩ्
इऱैवऩ् कॊळ्हिल ऩामॆऩि लाण्डॆलाम्
उऱैवॆऩ् काऩत् तोरुङ्गुड ऩॆऩ्ऱाऩ् 1073

मऱैयिऩ् केळ्वऩ्कु–वेदपति (श्रीराम) के; मऩ् इळम् तोऩ्ऱल्–योग्य कनिष्ठ भ्राता; पिऩ्–और भी; मुऱैयिऩ् नीङ्कि–क्रम का उल्लंघन करके; मुतु निलम् कॊळ्किलेऩ्–परम्परागत भूमि को न लूँगा; इऱैवऩ् कॊळ्किलऩ् आम्–राजा राम नहीं अपनाएँगे; ऎऩिल्–तो; आण्टु ऎल्लाम्–(चौदह) साल का सम्पूर्ण समय; काऩत्तु–वन में; ऒरुङ्कु–मिलकर; उटऩ्–उनके साथ; उऱैवॆऩ्–रह जाऊँगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १०७३

वेदनायक के योग्य कनिष्ठ भ्राता भरत ने और भी कहा कि यह राज्य परम्परागत क्रम का उल्लंघन करके मुझे मिला है। उस राज्य को मैं नहीं लूँगा। वन में जाकर श्रीराम के पास अर्पण कर दूँगा। वह स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं भी उनके साथ चौदह साल का सम्पूर्ण काल वन में रह जाऊँगा। १०७३

❀ उरैत्त वाशहङ् गेट्टलु मुळ्ळॆळुऩ्
दिरैत्त काद लिरुऩ्दवत् तोर्क्कॆलाम्
उरैत्त मॆऩ्ऩियॊ डुळ्ळङ् गुळिर्ऩ्दवाल्
अरैत्त शाऩ्दुहॊण् डप्पिय दॆऩ्ऩवे 1074

उरैत्त वाचकम् केट्टलुम्–उनका कहा वचन सुनकर; उळ् ऎऴुन्तु–अन्दर उठकर; इरैत्त कातल्–जो जोर से उमगने लगा, उस प्रेम के; इरु तवत्तोर्क्कु ऎल्लाम्–महान तपस्वियों के लिए; उरैत्त मेऩियॊटु–फूले शरीरों के साथ; उळ्ळम्–मन भी; अरैत्त चान्तु कॊण्टु–पिसे चन्दन का लेप लेकर; अप्पियतु ऎऩ्ऩ–लगा दिया गया हो ऐसा; कुळिर्न्त–शीतल (सुखानुभव-युक्त) हो गये। १०७४

यह सुनकर वहाँ रहे तपोधनों के शरीर और मन पर मानो चन्दन का लेप लगाया गया हो, ऐसे वे सुख का अनुभव करने लगे। उनके मन में भरत के प्रति प्रेम उठकर उमगने लगा। १०७४

❀ आय कालैयि लैयऩैक् कॊण्डुतऩ्, तूय शालै कुरुहिऩऩ् ड्रोमिलाऩ्
मेय शेऩैक् कमैप्पॆऩ् विरुऩ्दॆऩात्, तीयि ऩावुदि शॆङ्गैयि ऩोक्किऩाऩ् 1075

आय कालैयिल्–उस समय; तोम् इलाऩ्–निर्मल महर्षि; ऐयऩै कॊण्टु–प्रभु भरत को लेकर; तऩ् तूय चालै–अपने पवित्र आश्रम में; कुऱुकिऩऩ्–पहुँचे; मेय चेऩैक्कु–(भरत के साथ) आगत सेना को; विरुन्तु अमैप्पॆऩ्–दावत दूँगा; ऎऩा–कहकर; चॆम् कैयिऩ्–अपने श्रेष्ठ हाथ से; तीयिऩ् आवुति–अग्नि में आहुति; ओक्किऩाऩ्–दी। १०७५

तब निर्मल महर्षि भरद्वाज आर्य भरत को अपने आश्रम में ले आये। उन्होंने चाहा कि भरत की सेना को भोज दूँ। तदनुकूल उन्होंने अग्नि में अपने लाल (श्रेष्ठ) हाथों से कुछ आहुतियाँ दीं। १०७५

❀ तुऱन्द शॆल्व निऩैयत् तुऱक्कन्दाऩ्, पऱन्दु वन्दु पडिन्ददु पल्शऩम्
पिऱन्दु वेऱॊरु उलहुपॆऱ् ऱारॆऩ, मऱन्दु वैहिऩर् मुऩ्ऩरत्तम् वाऴ्वॆलाम् 1076

तुऱन्त चॆल्वऩ्–निस्पृह तपोधन भरद्वाज के; **निऩैय**–संकल्प करते ही; **तुऱक्कम्**–स्वर्ग; **पऱन्तु वन्तु**–उड़ता (तुरन्त) आकर; **पटिन्ततु**–रह गया; **पल् चऩम्**–विविध जन; **पिऱन्तु**–नया जन्म लेकर; **वेऱु ऑरु उलकु पॅऱ्ऱार्**–दूसरे एक लोक में पहुँच गये, जैसे; **मुऩ्ऩर् तम् वाऴ्वु ऑल्लाम्**–पहले का अपना जीवन सब; **मऱन्तु**–भूलकर; **वैकिऩर्**–(सुखभोग में) रहने लगे। १०७६

निर्लिप्त तपोधन भरद्वाज के संकल्प मात्र से स्वर्ग ही वहाँ आ पहुँच गया। उस सेना के सारे लोग मानो, एक नये ही लोक में पहुँच गये। उनको उनका अपना जीवन भूल गया। वे सुख-भोग में रहे। १०७६

नन्द लिल्लऱ नन्दिऩ रामॆऩ, अन्द रत्ति ऩरम्बैय रऩ्बिऩर्
वन्दु वन्दॆदि रेऱ्ऱऩर् मैन्दरै, इन्दु विऱ्चुडर् कोयिल्हॊण् डेहिऩार् 1077

अन्तरत्तु अरम्पैयर्–सुरलोक की अप्सराएँ; **नन्तल् इल्**–अक्षय; **अऱम् नन्तिऩर् आम् ऍऩ**–धर्म-फल-प्राप्तों को जैसे; **मैन्तरै**–पुरुषों का; **ऍतिर् वन्तु वन्तु**–अलग-अलग सामने आकर; **अऩ्पिऩर् एऱ्ऱऩर्**–प्यार के साथ स्वागत करके; **इन्तुविऩ् चुटर् कोयिल्**–चन्द्र-सम उज्ज्वल भवनों में; **कॊण्टु एकिऩार्**–ले गईं। १०७७

देवलोक की अप्सराएँ आयीं। मानो सेना के सभी पुरुष अत्यन्त पुण्यशाली हों, वे उनसे अलग-अलग आकर मिलीं। उनको चन्द्र-धवल भवनों में ले गयीं। १०७७

नाऩ नऩ्गुरैत् तार्नऴिर् वाऩिडै, आऩ गङ्गै यरुम्बुऩ लाट्टिऩार्
ताऩ मामणिक् कऱ्पहन् दाङ्गिय, ऊऩ मिऩ्मल राडै युडुत्तिऩार् 1078

नाऩम् नऩ्कु उरैत्तार्–उबटन खूब मलकर; **नऴिर्**–शीतल; **वाऩिटै आऩ कङ्कै**–आकाशगंगा के; **अरु पुऩल्**–अलभ्य जल से; **आट्टिऩार्**–स्नान कराया; **ताऩम् आम्**–दानशील; **मणि**–सुन्दर; **कऱ्पकम् ताङ्किय**–कल्पवृक्ष से धृत; **ऊऩम् इल्**–निर्दोष; **मलर् आटै उटुत्तिऩार्**–पुष्प-सम वस्त्र पहनाया। १०७८

वहाँ ले जाकर अप्सराओं ने पुरुषों के शरीरों पर कस्तूरी-मिश्रित उबटन लगाया और आकाशगंगा के शीतल जल से नहलाया। फिर दानशील कल्पवृक्ष-दत्त निर्मल पुष्प-सम वस्त्रों को पहनाया। १०७८

कोम्बि ऩिऩ्ऱु नुडङ्गुरु कोऴ्हैयार्, शॆम्बॊ ऩिऩ्गल राशि तिरुत्तिऩार्
अम्ब रत्ति नरम्बैय रऩ्बिऩर्, उम्बर् कोनुह रिऩ्ऩमु दूट्टिऩार् 1079

कॊम्पिन् निऩ्ऱु–पुष्पशाखा के समान; नुटङ्कु उरु–रहकर लचकनेवाली; कॊळ्कैयार्–प्रकृति की; अम्परत्तु अरम्पैयर्–स्वर्गलोक की अप्सराएँ; चॆम् पॊन्–चोखे स्वर्ण के; इन् कलम् राचि–मनोरम भोजन-पात्र-राशि को; तिरुत्तिनार्–ठीक से सजाकर; अऩ्पिनर्–चाव के साथ; उम्पर् कोन्–देवराज के; नुकर् इन् अमुतु–भोग्य मधुर अमृत; ऊट्टिनार्–(अमृत-सा भोजन) खिलाया। १०७९

पुष्पलता-सी रहकर लचकनेवाली देह की उन अप्सराओं ने चोखे स्वर्ण के विविध भोजन-पात्रों में भोजन सजाकर उन पुरुषों को बड़ा प्रेम दिखाते हुए खिलाया। वह भोजन देवराज-भोग्य था। १०७९

अञ्ज डुत्त वमळि यलत्तहप्, पञ्ज डुत्त परिबुरप् पल्लव
नञ्ज डुत्त नयऩियर् नव्वियिऩ्, तुञ्ज वत्तनै मैन्दरुन् दुञ्जिऩार् 1080

अञ्चु अटुत्त अमळि–पंचशयन-सहित पर्यंकों पर; अलत्तकम् पञ्चु अटुत्त–महावर-लगे; परिपुरम्–नूपुरालंकृत; पल्लवम्–पल्लव-चरणा; नञ्चु अटुत्त नयऩियर्–विष-नयनी; नव्वियिऩ्–(अप्सराएँ जब) हरिणों के समान; तुञ्च–साथ लेटीं; अत्तनै मैन्तरुम्–वे सभी पुरुष; तुञ्चिऩार्–सोये। १०८०

फिर पुरुष पंचशयन (रुई, पयाल आदि पाँच तरह के नरम पदार्थों से भरे गद्दों) से युक्त पलंगों पर सोये। उनके साथ महावर-लगे, नूपुरालंकृत चरण वाली और विष-समान नेत्रों वाली अप्सराएँ मृगियों के समान सोयीं। १०८०

एन्दु शॆल्वत् तिमैयव रामॆऩक्, कून्दर् ऱॆय्व महळिर्हॊण् डाडिऩार्
वेन्द रादि शिविहैयिऩ् वीङ्गुतोळ्, मान्दर् कारुम् वरिशै वळामले 1081

कून्तल् तॆय्व मकळिर्–केशिनी अप्सराएँ; वेन्तर् आति–राजाओं से लेकर; चिविकैयिऩ्–शिविका ढोने से; वीङ्कु तोळ् मान्तर् कारुम्–सूजे हुए कन्धों के लोगों तक; वरिचै वळामल्–क्रम का उल्लंघन न करके; एन्तु चॆल्वत्तु इमैयवर् आम् ऎऩ–श्रेष्ठ श्रीमान देवों को जैसे; कॊण्टाटिऩार्–सत्कृत किया। १०८१

सुकेशिनी अप्सराओं ने सत्कार में राजा से लेकर शिविका-वाहक तक, जिनके कंधे शिविका ढोते-ढोते सूज गये थे, सभी का यथोचित देवसम सत्कार किया। १०८१

मादर् यावरुम् वाऩवर् देवियर्, कोदिल् शॆल्वत्तु वैहिऩर् कॊव्वैवाय्त्
तोदि ऱॆय्व मडन्दैयर् शेडियर्, तादि मारॆऩत् तम्बणि केट्पवे 1082

कॊव्वैवाय्–बिंबमुखी; तोतु इल्–निर्मल; तॆय्व मटन्तैयर्–अप्सराएँ; चेटियर् तातिमार् ऎऩ–चेरियों और दासियों के समान; तम् पणि केट्प–आज्ञाएँ मानती रहीं, तो; मातर् यावरुम्–सभी स्त्रियाँ; वाऩवर् तेवियर्–सुरदेवियों के; कोतु इल् चॆल्वत्तु–त्रुटिहीन सुख-भोग में; वैकिऩर्–रहीं। १०८२

बिम्बाधरा निर्मल देवबालाओं ने सेना में रही स्त्रियों की चेरियों और दासियों के समान सेवा की। वे स्त्रियाँ स्वर्ग की देवियों के समान सुखानुभव करती रहीं। १०८२

नन्द नन्द वऩङ्गळि नाण्मलर्क्, कन्द मुन्दिय कऱ्पहक् काविनिऩ्
ऱन्दर् वन्दॅऩ वन्दितन् कैदर, मन्द मन्द नडन्ददु वाडैये 1083

नाळ् मलर् कन्तम् मुन्तिय–सद्यविकसित पुष्पगन्ध-भरे; कऱ्पकम् काविल् निऩ्ऱु–कल्पकानन में से; नन्तु अम् नन्तवऩङ्कळिऩ्–वहाँ आकर जो पनपे थे, उन उपवनों में; मन्तम् वाटै–मन्दमारुत; अन्तर् वन्ताल् अॅऩ–अन्धक आता हो जैसे; अन्ति तन् कै तर–संध्या के हाथ पकड़कर ले आते; मन्त मन्त नटन्ततु–मन्द-मन्द वहा। १०८३

वहाँ कल्पकानन से उद्यान आये और यत्र-तत्र भर गये। उसमें मलयमारुत सन्ध्या के सहारे इस तरह मन्द-मन्द वहा, मानो एक अन्धा आदमी किसी के हाथ के सहारे से चला आ रहा हो। १०८३

माऩ्ऱ ळिक्कुल मामदम् वन्दुणत्, तेऩ्ऱ ळिर्त्त कवळमुम् जॅङ्गदिर्
काऩ्ऱ नॅऱ्ऱळै कऱ्ऱैयुङ् गऱ्पहम्, ईऩ्ऱ ळिक्क नुहर्न्दऩ याऩैये 1084

तेन् तळिर्त्त कवळमुम्–शहद से खूब मिश्रित कौर; चॅम् कतिर् काऩ्ऱ–और उत्तम बालों-सहित; नॅल् तळै–धानों से पूर्ण; कऱ्ऱैयुम्–मुट्ठों को; कऱ्पकम् ईऩ्ऱु अळिक्क–कल्पवृक्ष ने पैदा कर दिया तो; यानै–गजों ने; अळि कुलम् माऩ्ऱु वन्तु–अलिकुल को मुग्ध हो आकर; मा मतम् उण्ण–अपना मदजल पीने देते हुए; नुकर्न्तऩ–खाया। १०८४

गजों को शहद-मिश्रित कौर, धान की बालों से भरे धान के पौधों के मुट्ठे दिये गये। कल्पवृक्ष ने उन्हें पैदा करके दिया था। गजों ने उन्हें चाव से खाया। तब मुग्ध अलिकुल ने उनके गण्डस्थल में वहनेवाले मदजल को खूब अशन कर आनन्द लूटा। १०८४

नरह दर्क्कुर नल्हु नलत्तिनीर्, करह दक्करि कानिमिर्न् दुण्डऩ
मरह दत्तिन् कॊळुन्दॅऩ वार्न्दपुल्, कुरह दत्तिन् कुळाङ्गळुङ् गॊण्डवे 1085

करम् कतम् करि–सूँड़ तथा क्रोध सहित गज; नरकतऱ्कु–नरक योग्य लोगों को भी; अऱम् नल्कुम् नलत्तिन्–पुण्य दिलानेवाली शक्ति से युक्त; नीर्–(आकाशगंगा के) जल को; काल् निमिर्त्तु उण्टऩ–पैरों को सीधा रखकर ही पान किया; कुरकतत्तिन् कुळाङ्कळुम्–तुरगदलों ने भी; मरकतत्तिन् कॊळुन्तु अॅऩ–मरकत-पल्लव-सी; वार्न्त पुल्–लम्बी घास; कॊण्ट–चरी। १०८५

फिर क्रोधी शुंडियों ने बिना पैर झुकाये ही उस देवगंगा का जल पिया, जो नरकवास योग्य पापियों को भी पुण्यवान बना सकती है।

तुरगों को भी मरकत के पल्लव के समान खूब वढ़ी घास चरने को मिल गयी। १०८५

इऩ्ऩ रिऩ्ऩणम् यावरु मिऩ्दिरऩ्
तुऩ्ऩु वोहङ्ग डुयत्तऩर् तोऩ्ऱऱाऩ्
अऩ्ऩ कायुङ् गिळङ्गुमुण् डव्विराप्
पॊऩ्ऩिऩ् मेऩि पॊडियुऱप् पोक्किऩाऩ् 1086

इऩ्ऩर् यावरुम्–ऐसे सब; इऩ्ऩणम्–इस तरह; इन्तिरऩ् तुऩ्ऩु पोकङ्कळ्–इन्द्र-भोग; तुय्त्तऩर्–भोगे; तोऩ्ऱल्–राजा भरत; अऩ्ऩ कायुम् किळङ्कुम्–वैसे ही (जैसे श्रीराम ने खाये) शाक और कन्द; उण्टु–अशन करके; अ इरा–उस रात भर में; पॊऩ्ऩिऩ् मेऩि–स्वर्ण-सम (कान्तियुत) शरीर पर; पॊटि उऱ–धूल को लगने देते हुए; पोक्किऩाऩ्–(रात) बिताई। १०८६

इस तरह सब देवेन्द्र-सुलभ-भोग भोगते रहे। तब राजकुमार भरत ने श्रीराम के समान कन्द और शाक खाकर धूलि में, अपने कान्तिमय शरीर को धूलि-धूसरित करते हुए रात काटी। १०८६

नील वल्लिरु णीङ्गलु नीङ्गुरुम्
मूल मिल्हऩ विऱ्ऱिरु मुऱ्ऱुऱ
एलु नल्विऩै तुय्प्पवर्क् कोरुशॆल्
काल मॆऩ्ऩक् कदिरवऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 1087

नीलम् वल् इरुळ्–काला घना अन्धकार; नीङ्कलुम्–दूर हुआ, तब; नीङ्कु उरुम्–दिखाई देकर लुप्त होनेवाले; मूलम् इल् कऩविऩ्–आधारहीन स्वप्न के समान; तिरु मुऱ्ऱु उऱ–देव-भोग लुप्त हो गया; एलुम् नल् विऩै–युक्त पुण्य के कारण; तुय्प्पवर्क्कु–उसके फल-भोक्ताओं को; ईरु चॆल् कालम् ऍऩ्ऩ–अन्त आया, इस काल (को बतानेवाले) के समान; कतिरवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–सूर्य उदित हुआ। १०८७

आखिर काला घना अन्धकार दूर हुआ। लोगों के सारे सुखानुभव के पदार्थ भी आधारहीन स्वप्न के समान लुप्त हो गये। तब सूर्य मानो यह बताता उदित हुआ कि पुण्य-भोग का काल समाप्त हो गया है। १०८७

आऱ्ऱि निऩ्ऱऱ माऱ्ऱलर् वाळ्वॆऩप्, पाऱ्ऱि वीऩ्ददु शॆल्वम् बरिन्दिलर्
तेऱ्ऱि मुऩ्दैत्तम् जिऩ्दैय रायिऩार्, माऱ्ऱि वऩ्दु पिऱन्दऩ माट्चियार् 1088

चॆल्वम्–वह सुखानुभव; आऱ्ऱि निऩ्ऱु–दाँत रहकर; अऱम् आऱ्ऱलर्–जो धर्ममय जीवन नहीं बिताते, उनके; वाळ्वु ऍऩ–जीवन के समान; पाऱ्ऱि वीऩ्ततु–नष्ट होकर मिट गया; माऱ्ऱि वन्तु पिऱन्त अऩ्ऩ–जन्म बदलकर नया जन्म लिया हो जैसे; माट्चियार्–रहनेवाले वे; परिन्तिलर्–दुखी न रहे; तेऱ्ऱि–(वस्तुस्थिति) जानकर; तम् मुऩ्तै चिन्तैयर्–अपने पूर्व-भाव वाले; आयिऩार्–बने। १०८८

उनका भोगवैभव उनके सुखी जीवन के समान समाप्त हुआ, जिन्होंने

इन्द्रियदमन करके धर्म-कर्म नहीं किये थे। लोग मानो दूसरे जन्म ले गये हों, ऐसी पूर्व-दशा को पहुँच गये। पर वे दुखी नहीं हुए। वस्तुस्थिति पहचानकर वे अपनी पूर्वभाव-दशा में आ गये। १०८८

कालैयॅऩ् ऱॅऴुन्ददु कण्ड्डु वाऩवर्
वेलैयॅऩ् ऱऩिहमॅऩ् ऱॅङ्गि विम्मुऱच्
चोलैयुङ् गिरिहळुञ् जुण्ण मायॅऴप्
पालैशॅऩ् ऱडैन्ददु बरदऩ् शेऩैये 1089

कालै–प्रातःकाल; ॲऩ्ऱु ॲऴुन्ततु कण्टु–(सूचित करता हुआ) सूर्य उदित हुआ, देख; परतऩ् चेऩै–भरत की सेना; वाऩवर्–देवता लोग; वेलै ॲऩ्ऱु–सागर यह; अऩिकम् ॲऩ्ऱु–या सेना है; एङ्कि विम्मुऱ–(न जानकर) विस्मयविमूढ़ हुए, तब; चोलैयुम्–उपवनों और; किरिकळुम्–पर्वतों को; चुण्णम् आय् ॲऴ–चूर्ण बनाकर उड़ाते हुए; चॅऩ्ऱु–जाकर; पालै अटैन्ततु–'पालै' (मरु) प्रदेश पहुँची। १०८९

सवेरा हुआ देखकर सेना कूच करने लगी। वह विपुल सेना देवों को इस भ्रम में डालती रही कि यह मनुष्यों की सेना है या जल का सागर है! सेना, मार्ग में पड़े उपवनों और पर्वतों को धूलि उड़ाते हुए पार कर 'पालै' (कँकड़ीले जंगल) में आ गयी। १०८९

ॲऴुन्ददु तुहळदि ऩॅरियुम् वॅय्यवऩ्
अऴुन्दिऩ ऩविप्परुम् वॅम्मै यारिऩाऩ्
पॊऴिन्दत करिमदम् पॊडिवॅङ् गाऩहम्
इऴिन्दत वऴिनडन् दॅरॊ णामैये 1090

ॲऴुन्ततु तुकळ् अतिऩ्–उठी धूलि में; ॲरियुम् वॅय्यवऩ्–जलानेवाला सूर्य; अऴुन्तिऩऩ्–डूब गया; अविप्प अरुम् वॅम्मै–अदम्य गर्मी से; आऱिऩाऩ्–शान्त हुआ; पॊटि वॅम् काऩकम्–धूलि-भरे उस गरम "पालै" जंगल में; वऴि नटन्तु एऱ ऒण्णामै–मार्ग तय करके बढ़ना कठिन बनाते हुए; करि पॊऴिन्तऩ मतम्–गजों ने जो (मदजल) बहाया, वह मदजल; इऴिन्तत–नदियों के समान बह चला। १०९०

धूलि इतनी उठी कि सूर्य ने उसके अन्दर डूबकर अपना अदम्य ताप शान्त कर लिया। गजों ने इतना मदजल बहाया कि उस गरम धूलि से भरे भयंकर जंगल में चलना भी कठिन हो गया। १०९०

वडियुडै ययिऱ्पडै मऩ्ऩर् वॅण्गुडै, शॅडियुडै नॅडुनिऴल् शॅय्द तीप्पॊदि
पडियुडैप् परलुऱु पालै मेलुयर्, कॊडियुडैप् पन्दरिऱ् कुळिर्न्द दॆङ्गुमे 1091

वटि उटै(य) अयिल् पटै मऩ्ऩर्–तीक्ष्ण भालाधारी राजाओं के; चॅटि उटै(य) वॅण्कुटै–लसे श्वेत छत्रों ने; नॅटु निऴल् चॅय्त–अधिक छाया दी; ती पॊति–आग का; पटि उटै(य)–रूपधारी; परल् उऱु–कंकड़ों से भरा; पालै ॲङ्कुम्–जंगल

भर में; मेल् उयर्–ऊपर तने हुए; कोटि उटै(य) पन्तरिन्–वस्त्रवितानों से; कुळिर्न्ततु–सब स्थान शीतल हुए। १०९१

तीक्ष्ण भालाधारी राजाओं के बहुसंख्यक श्वेत छत्रों ने अधिक छाया की। ऊपर वस्त्र के वितान ताने गये थे, जिनके कारण आग के रूप में रहे कंकड़ों से भरे उस जंगल में सर्वत्र ठंडक फैल गयी। १०९१

पॅरुहिय शॅल्वनी पिडियॅन् ड्राळ्वयिन्
तिरुहिय शीऱ्ऱत्ताऱ् चॅम्मै यानिऱम्
करुहिय वण्णलैक् कण्डु कादलिन्
उरुहिय तळिर्त्तन वुलवै योट्टमे 1092

पॅरुकिय चॅल्वम्–विपुल सम्पत्ति; नी पिटि–तुम ग्रहण करो; ॲन्ड्राळ् वयिन्–ऐसा कहनेवाली (कैकेयी) के प्रति; तिरुकिय–विपरीत; चीऱ्ऱत्ताल्–कोप के कारण; चॅम्मैयाल्–लाल रंग के साथ; निऱम् करुकिय–स्वाभाविक काले रंग के; अण्णलै कण्टु–प्रभु भरत को देखकर; उलवै ईट्टम्–ठूँठों के समूह; कातलिन्–स्नेह के कारण; उरुकिय तळिर्त्तन–आर्द्र होकर लहलहा उठे। १०९२

भरत स्वतः नीले वर्ण के थे। अब वे अपनी माता के प्रति, जिन्होंने उनसे कहा था विपुल सम्पत्ति तुम्हारी है, तुम ले लो, विपरीत गुस्से के कारण लाल हो गये थे। काले-लाल हुए उनको देखकर ठूँठ भी स्नेहार्द्र होकर फिर से पत्तों-डालियों के साथ हरे हो गये। १०९२

वन्ड्रॅरु पालैयिन् मरुद मामॅनच्
चॅन्ड्रदु शित्तिर कूडञ् जेर्न्ददाल्
ऑन्ड्ररैत् तुयिरिनु मॉळुक्क नन्ड्रॅनप्
पॉन्ड्रिय पुरवलन् पॉरुविल् शेनैये 1093

उयिरितुम् ऑळुक्कम् नन्ड्रु–प्राणों से चरित्र श्रेष्ठ है; ॲन–मानकर; ऑन्ड्रु उरैत्तु–सत्य कहकर; पॊन्ड्रिय–उसके लिए प्राण जिन्होंने त्यागा, उन; पुरवलन्–चक्रवर्ती की; पॊरु इल् चेनै–अनुपम सेना; वल् तॆरु पालैयिल्–कठोर, तापक कंकड़ीले जंगल प्रदेश में; मरुतम् ॲन–मानो 'मरुदम' (खेतों के) प्रदेश में जा रही हो; चॆन्ड्रतु–चली; चित्तिर कूटम् चेर्न्ततु–चित्रकूट पहुँची। १०९३

प्राण की रक्षा से बढ़कर चरित्र-पालन श्रेयस्कर है —ऐसा मानकर सत्यवचन-पालन के लिए जिन्होंने अपना प्राण त्याग दिया, उन चक्रवर्ती की सेना (भरत राजा बनने को तैयार नहीं थे अतः कवि बार-बार चक्रवर्ती की सेना कहकर उस बात की ओर संकेत करते हैं।) कठोर उस मरुप्रदेश में ऐसा चली, मानो तर मैदान में चल रही हो; और उसे पार कर चित्रकूट के पास पहुँची। १०९३

तूळियिन् पडलैयुन् दुरह दत्तॊडु
मूळिरुञ् जिनक्करि मुळङ्गु मोदैयुम्

आऴियिऩ् कुऴुविऩो रार वारमुम्
कोऴिरुम् बडैयिदॅऩ् ऱुणरक् कूऱ्वे 1094

तूऴियिऩ् पटलैयुम्–धूलि-पटल; तुरकतत्तॊटु–तुरंगों के साथ; मूळ् इरु–उत्पन्न, बड़ा; चिऩम् करि–क्रोध वाले गज; मुऴङ्कुम्–(इनके) बोलने से उठा; ओतैयुम्–नाद; आऴियिऩ् कुऴुविऩोर्–सिंह-सदृश वीरों के; आरवारमुम्–हल्ला; कोऴ् इरुम् पटै इतु–(यह सब) प्रबल बड़ी सेना है, यह; ॲऩ्ऱु–ऐसा; उणर कूऱ्वे–बताता था, तब। १०६४

धूलि का विशाल घना पटल, अश्वों का हिनहिनाना, क्रोधशील गजों की चिंघाड़, सिंह-सदृश वीरों के नारे —इन सबसे यह बात द्योतित हो गयी कि बहुत बड़ी सशक्त सेना आ रही है। १०९४

❀ ॲऴुन्दऩ निऴैयव ऩॆऱि नाऩिलम्
कॊऴुन्दुयरन् दऩैयदोर् नॆडिय कुऩ्ऱिऩ्मेल्
शॆऴुन्दिरैप् परवैयैच् चिऱुमै शॆय्दवक्
कऴुन्दुडै वरिशिलैक् कडलै नोक्किऩाऩ् 1095

इळैयवन्–छोटे भाई (लक्ष्मण); ॲऴुन्ततन्–उठे; निलम् कॊऴुन्तु उयर्न्ततु–भूमि ने पल्लव उगाया, वह ऊँचा बढ़ा रहा; अऩैय–ऐसा दिखनेवाले; ओर् नॆटिय कुऩ्ऱिऩ् मेल् एऱिऩाऩ्–एक उन्नत गिरि पर चढ़े; चॆऴु तिरै परवैयै–बड़ी-बड़ी लहरों वाले सागर को भी; चिऱुमै चॆय्त–छोटा बनानेवाली; अ–उस; कऴुन्तु उटै वरि चिलै–उपयोग के कारण चिकना बना बन्धनयुक्त धनु ले आनेवाली; कटलै–सेना के सागर को; नोक्किऩाऩ्–देखा। १०६५

छोटे भ्राता लक्ष्मण वह जानकर उठे। भूमि की पल्लवसहित शाखा के समान उन्नत एक गिरि पर चढ़े। वहाँ से देखा कि लहरों वाले समुद्र को छोटा बनाता हुआ धनु वाला (सेना का) सागर आ रहा है। उन धनुओं के दण्ड सतत उपयोग से चिकने बन गये थे। १०९५

परदऩिप् पडैहॊंडु पार्हॊण् डाण्मऱम्
करुदियुट् किडन्ददोर् करुवु कान्दलाल्
विरदमुऱ् ऱिरुत्तवन् मेल्वन् दाऩिदु
शरदमऱ् ऱिलदॆऩत् तऴङ्गु शीऱ्ऱत्ताऩ् 1096

परतन्–भरत; उळ् किटन्ततु–मन में रहकर; ओर् करुवु कान्तलाल्–सुलगनेवाले कोप के ताप से; पार् कॊण्टु आळ्–भूमि को अपनाकर शासन करने का; मऱम् करुति–अत्याचारी संकल्प करके; विरतम् उऱ्ऱु–तपोव्रत में; इरुन्तवन् मेल्–रहनेवाले श्रीराम पर; इ पटै कॊंटु वन्ताऩ्–यह सेना ले (चढ़) आया; इतु चरतम्–यह निश्चित है; मऱ्ऱु इलतु ॲऩ–और कुछ नहीं, ऐसा; तऴङ्कु चीऱ्ऱत्ताऩ्–(सोचने से) वर्धनशील कोप से आक्रान्त होकर। १०६६

लक्ष्मण ने यह विचार किया कि भरत के मन में क्रोध सुलग रहा है।

और राज्य लेकर शासन करने की एक क्रूर इच्छा बढ़ रही है। इसलिए वह व्रतधारी श्रीराम पर सेना लेकर चढ़ आया है। यही अवश्य है। और कोई कारण नहीं। यह सोचकर उनका क्रोध बढ़ गया। १०९६

❀ कुदित्तनन् पारिडैक् कुवडु नीऱॅळ्
मिदित्तन तिरामनै विरैवि नॅय्दिनान्
मदित्तिलन् बरदनिन् मेल्वन् दान्मदिड्
पदिप्पॅरुञ् जेनैयिन् परप्पि नानॅना 1097

कुवटु नीरु ॲळ्-गिरिशिखर को चूर करते हुए; मितित्ततन्-पैर दबाकर; पार् इटै कुतित्ततन्-भूमि पर कूदे; विरैविन्-शीघ्र; इरामनै ॲय्तिनान्-श्रीराम के निकट आये; परतन्-भरत; मतित्तिलन्-आपका सम्मान न करके; मतिल् पति प्राचीरवलयित नगर की; पॅरु चेनैयिन् परप्पित्तोटु-बड़ी सेना के विस्तार के साथ; निन् मेल् वन्तान्-आप पर (आक्रमण करने) आया है; ॲना-कहकर। १०९७

कोप के बढ़ने से वे चंचल हो उठे। पर्वत-शिखर को चूर करते हुए वे उसको दबाकर नीचे भूमि पर कूदे। सवेग श्रीराम के पास आये। उनको समाचार दिया कि भरत आपका आदर नहीं करता और आप पर आक्रमण करने के लिए प्राचीर-वलयित अयोध्या नगर की सेना का विस्तार लेकर आ गया। १०९७

❀ कट्टिनन् शुरिहैयुङ् गळ्ळुम् पल्हणैप्
पुट्टिलुम् बॊरुत्तनन् कवशम् बूट्टमैत्
तिट्टन तॆडुत्तनन् वरिवि लेन्दलैत्
तॊट्टडि वणङ्गिनिन् ड्रिनैय शॊल्लिनान् 1098

चुरिकैयुम्-कटार; कळ्ळुम्-पायल; कट्टिनन्-बाँध ली; पल्कणै-अनेक शरों का; पुट्टिलुम् पॊरुत्ततन्-तूणीर भी बाँधा; कवचम्-कवच भी; पूट्टु अमैत्तु इट्टतन्-सिरों पर सन्धि-बन्धन लगाकर पहन लिया; वरि विल् ॲटुत्ततन्-बन्धनयुक्त धनुष ले लिया; एन्तलै-प्रभु श्रीराम का; अटि तॊट्टु वणङ्कि-चरण-स्पर्श कर नमस्कार करके; निन्रु-खड़े हुए और; इत्तैय चॊल्लितान्-यों बोले। १०९८

यह कहकर वे युद्ध-सन्नद्ध होने लगे। कटि में कटार और पैरों में वीर कंकण बाँधे। पीठ पर शर-भरा तरकश कस लिया। कवच पहन कर दोनों सिरों को सन्धि-बन्धन के सहारे स्थिर किया। फिर बन्धनयुक्त धनु को हाथ में ले लिया। वे श्रीराम के पास आकर उनके पैरों पर गिरे। नमस्कार करके उन्होंने श्रीराम से ये बातें कहीं। १०९८

❀ इरुमैयु मिळ्न्दवप् परद नन्दुतोट्
परुमैयु मन्नवन् पडैत्त शेनैयिन्

पॆरुमैयु निऩ्ऩॊरु पिऩ्बु वन्दवॆऩ्
ऒरुमैयुङ् गण्डिऩि दुवत्ति युळ्ळनी 1099

इरुमैयुम् इऴन्त–इह और पर दोनों के सुखों से वंचित; अ परतऩ्–उस भरत के; एन्तु तोळ् परुमैयुम्–उन्नत कन्धों का मोटापा (बल); अन्नवऩ् पटैत्त–उसे प्राप्त; चेऩैयिऩ् पॆरुमैयुम्–सेना की बड़ाई; ऒरु निऩ् पिऩ्पु वन्त–अनुपम, आपके पीछे आये; ऎऩ् ऒरुमैयुम्–मेरे एकाकीपन (सामर्थ्य) को; नी इऩितु कण्टु–आप आनन्द के साथ; उळ्ळम् उवत्ति–मनमुदित हों। १०९९

भैया ! उस भरत के जिसने इह-पर दोनों अपने कृत्यों से खो दिया है, उन्नत कन्धों का वल, उसे प्राप्त सेना की वड़ाई और अप्रमेय आपके पीछे अकेले आये मेरे एकाकीपन के अर्थ को आप ही देखें और सन्तोष कर लें। १०९९

❀ पडरॆलाम् बडप्पडुम् परुम यानैयिऩ्
तिडरॆला मुरुट्टिऩ तेरु मीर्त्तऩ
कुडरॆलान् दिरैत्तऩ कुरुदि याऱुहळ्
कडरॆला मडुप्पऩ पलवुङ् काण्डियाल् 1100

पटर् ऎलाम् पट–सभी वीरों का नाश करके; पटुम्–नष्ट होनेवाले; परुमम् यानैयिऩ्–मोटे हाथियों के; तिटर् ऎलाम्–(ढेर रूपी) टीलों को; उरुट्टिऩ–लुढ़काते हुए; तेरुम् ईर्त्तऩ–रथों को भी खींचते हुए; कुटर् ऎलाम् तिरैत्तऩ–आँतों को इधर-उधर फेंकते हुए; कटर् ऎलाम् मटुप्पऩ–(बहते जाकर) सभी समुद्रों को पाटनेवाली; कुरुति आऱुकळ् पलवुम्–रक्त की नदियाँ, अनेक; काण्टि–देखेंगे। ११००

यह भी देखिए कि सेना का कैसा नाश होता है। सारे वीर मिट जायँगे, रक्त की धाराएँ वह निकलेंगी और मिटे हुए मोटे हाथियों के ढेर रूपी टीलों को लुढ़काते हुए, रथों को बहाते हुए और आँतों को अस्त-व्यस्त करते हुए समुद्र में जा मिलेंगी और उसे पाट देंगी। ११००

करुवियुङ् गैहळुङ् गवश मार्बमुम्
उरुविऩ वुयिरिऩो डुदिरन् दोय्विल
तॆरिवऩ शुडर्क्कणै तिशैक्कण् यानैहळ्
वॆरुवरच् चॆल्वऩ काण्डि वीरनी 1101

वीर–वीर; तॆरिवऩ चुटर् कणै–चुनकर प्रेषित दीप्त शर; करुवियुम्–ढालों; कैकळुम्–हाथों और; कवचम् मार्पुम्–कवचरक्षित वक्षों को; उरुविऩ–वेधकर; उयिरिनोटु–उनके प्राणों के साथ; उतिरम् तोय्वु इल–रक्त का कलंक न लेकर; तिचै कण् यानैकळ्–(आठों) दिग्गजों को; वॆरुवर–भयभीत करते हुए; चॆल्वऩ–जायेंगे; नी काण्टि–आप देखेंगे। ११०१

वीर भाई ! मैं चुन-चुनकर शर प्रेषित करूँगा। वे दीप्तियुत शर शत्रुओं के हाथों को, उनके ढालों को और कवचरक्षित वक्षों को वेधकर

बाहर आएँगे। वे उनकी जान लेकर बिना रक्तलिप्त हुए ही आठों दिग्गजों को भयभीत करते हुए चलेंगे। आप वह दृश्य देखेंगे। ११०१

कोडहत्	तेर्बडु	कुदिरै	ताविय
आडहत्	तट्टिडै	यलहै	यऱ्ऱुहु
केट्हत्	तडक्कैहळ्	कव्विक्	कीदत्तिऩ्
नाडह्	नडिप्पऩ	काण्डि	नादनी 1102

ताविय कुतिरै पट्ट–चौकड़ी भरनेवाले अश्व जिनके मर गये; कोटकम् तेर्–उन नवीन रथों के; आटकम् तट्टै–स्वर्णपीठों पर; अलकै–भूतों को; अऱ्ऱु उकु–कटकर गिरनेवाले; केटकम् तट कैकळ्–ढाल सहित विशाल हाथों को; कव्वि–मुख से ग्रसकर; कीतत्तिऩ्–गाने के साथ-साथ; नाटकम् नटिप्पऩ–नृत्य करते हुए; नात–हे नाथ; नी काण्टि–आप देखेंगे। ११०२

नाथ ! चौकड़ी भरते हुए जानेवाले अश्वों के मर जाने से उनसे वियुक्त रथों के स्वर्ण-आसनों पर आप भूतों को देखेंगे, जो कटकर गिरे ढाल सहित करों को मुख से ग्रस्त कर गाते हुए नाचेंगे। ११०२

पण्मुदिर्	कळिऱ्ऱॊडु	परन्द	शेऩैयिऩ्
ऍण्मुद	लऱुत्तुना	ऩिमैप्पि	ऩीक्कलाल्
विण्मुदु	हुळुक्कवुम्	वेलै	याडैयिऩ्
मण्मुदु	हाऱ्ऱवुङ्	गाण्डि	मऩ्ऩनी 1103

मन्न–महाराज; नाऩ्–मैं; पण् मुतिर् कळिऱ्ऱॊटु–अधिक अलंकारयुक्त गजों के साथ; परन्त चेऩैयिऩ्–इस विशाल सेना के; ऍण्–समूह को; इमैप्पिऩ्–पलक मारते समय में; मुतल् अऱुत्तु–झट से नष्ट कर; नीक्कलाल्–मिटा दूंगा, इसलिए; विण्–स्वर्ग (जहाँ वीर पहुँचते हैं); मुतुकु उळुक्कवुम्–पीठ पर बल खायगी और; वेलै आटैयिऩ् मण्–सागर-वसना भूमि; मुतुकु आऱ्ऱवुम्–(भार से निवृत्त होकर) पीठ को आराम देगी; नी काण्टि–आप वह देखिए। ११०३

राजा ! इस सेना को, जिसमें अत्यधिक अलंकृत गज हैं, मैं पलक मारते समय के अन्दर निर्मूल कर दूंगा। तब वीर-स्वर्ग की पीठ पर बल पड़ेगी और भूमि की पीठ का भार दूर हो जायगा। स्वर्ग की पीठ भाराक्रान्त हो पीड़ा का अनुभव करेगी और भूमि की पीठ भारनिवृत्त हो आराम का अनुभव करेगी। आप देखते रहिए। ११०३

❀ निवन्दवाऩ्	कुरुदियि	नोत्त	नोन्दिमॆय्
शिवन्दशा	दहरॊडु	शिऱुहट्	कूळियुम्
कवन्दमु	मुलहुनित्	कैय	दायवॆऩ्
ऱुवन्दऩ	कुनिप्पऩ	काण्डि	युम्बर्पोय् 1104

निवन्त वाऩ् कुरुतियिऩ्–उमड़ उठे अधिक रक्त की; नोत्तम् नोन्ति–धारा में

तैरने से; मॅय् चिवन्त–शरीर लाल होकर, जो रहे; चातकरोंटु–वे भूत; चिरु कण् कूळियुम्–छोटी आँखों वाली पिशाचिनें; कवन्तमुम्–कबन्ध (सिरहीन धड़); उलकु निन् कैयतु आयतु–राज्य आपके हाथ का हो गया; ऍन्रु–यह कहकर; उम्पर् पोल्–देवों के समान; उवन्तत–हर्षित होकर; कुतिप्पत–नाचते हैं; काण्टि–आप देखिए। ११०४

भूत, छोटी आँखों वाली पिशाचिनियाँ, कबन्ध आदि उमड़ उठनेवाली रक्त-नदी में तैरेंगे और लाल रंग के हो जाएँगे। वे देवों के समान राज्य को आपका हो गया, देखकर आनन्द से नाचेंगे। देखिए। ११०४

शूळिवॅङ् गडहरि तुरह राशिहळ्
पाळिवन् बुयत्तिहल् वयवर् पट्टर
आळिवॅङ् गुरुदिया रळैन्दु वेलैहळ्
एळुमॊन् राहिनि रिरैप्पक् काण्डियाल् 1105

चूळि वॅम् कट करि–मुखपट्ट से अलंकृत भयंकर मत्तगज; तुरकम् राचिकळ्–और अश्ववृन्द; पाळि–महिमायुक्त; वल् पुयत्तु–सशक्त भुजाओं के; इकल् वयवर्–सेना के वीर; पट्टु अर–मर-मिट जाएँगे, तब; आळि वॅम् कुरुति आरु–गहरी गरम रक्त-नदियों से; अळैन्तु–मिलकर; वेलैकळ् एळुम्–सातों समुद्र; ऑन्रु आकि निन्रु–एक बने रहकर; इरैप्प–तुमुल गर्जन करेंगे; काण्टि–आप देखेंगे। ११०५

ये मुखपट्ट पहने हुए भयंकर मत्तगज, अश्ववृन्द और महिमावान और सशक्त भुजाओं वाले सैनिक वीर —ये सब मिट जाएँगे। उनके शरीरों से गरम और गहरी रक्त-नदी बह निकलेगी। वह समुद्र में जाकर मिलेगी तो सातों समुद्र एक होकर तुमुल गर्जन करेंगे। यह आप देखेंगे। ११०५

तळैत्तवान् शिरैयन तशैयुङ् गव्विन
अळैत्तवान् परवैह ळलङ्गु पॊन्वडिम्
बिळैत्तवान् पहळिपुक् कीरु मार्बिडैप्
पुळैत्तवान् पॅरुवळि पोव काण्डियाल् 1106

अलङ्कु–शोभायमान; पॊन् वटिम्पु इळैत्त–(काले-) स्वर्ण (लोहे) के पंखों वाले; वान् पकळि—बड़े-बड़े शर; पुक्कु ईरुम्–(जिनमें) घुसकर छेद कर देंगे; मार्पु इटै–उन (वीरों के) वक्षों में; पुळैत्त–उनके विंधे हुए; वान् पॅरु वळि–बहुत बड़े छेद के मार्ग से; तळैत्त वान् चिरैयत–घने और बड़े पक्षों के; वान् परवैकळ्—बड़े-बड़े पक्षी; अळैत्त–अपने समूहों को बुलाते हुए; तचैयुम् कव्वित–मांस को चोंचों में पकड़ लेकर; पोव–जाएँगे; काण्टि–आप देखेंगे। ११०६

लोहे के पंख वाले बड़े-वड़े बाण, जो मैं छोड़ूँगा, जाकर वीरों के वक्षों में छेद बना डालेंगे। उन बड़े छेदों के मार्ग से बड़े पक्षों वाले मांसभक्षी पक्षीवृन्द शरीर के अन्दर घुसकर मांस नोच लेंगे और बाहर निकलकर अन्य पक्षियों को दावत देते हुए उड़ेंगे। देखिए। ११०६

आळऱ् वलङ्गुते रळिय वाडवर्
वाळऱ् वरिशिलै तुणिय माक्करि
ताळऱत् तलैयऱप् पुरवि तारोडुम्
तोळऱ वडिक्कणै तोडुप्पक् काण्डियाल् 1107

आळ् अऱ–(पदाति) वीर नष्ट होंगे; अलङ्कु तेर् अळिय–(और) इधर-उधर झुकते हुए चलनेवाले रथ मिटेंगे; आटवर्–रथी वीरों की; वाळ् अऱ–तलवारें टूट जायँगी; वरि चिलै–बन्धनयुक्त धनुष; तुणिय–टुकड़े हो जायँगे; मा करि–बड़े हाथी; तारोटुम् पुरवि—दाम-सहित अश्व; ताळ् अऱ–(उनके) पैर कट जायँगे; तलै अऱ–सिर कट जायँगे; तोळ् अऱ–(उन पर सवार) लोगों की भुजाएँ कट जायँगी; वटि कणै–(ऐसा) तीक्ष्ण शर; तॊटुप्प–(मुझे) चलाते हुए; काण्टि–देखेंगे। ११०७

पदाति वीर मिटेंगे। झुकते चलनेवाले रथ नष्ट हो जाएँगे। रथ पर आरूढ़ वीरों की तलवारें टूट जायँगी और उनके धनुष कट जायँगे। बड़े गजों और दाम सहित अश्वों के पैर और सिर अलग हो जायँगे। उन पर सवार वीरों की भुजाएँ कट जायँगी। ऐसा मैं तेज शर चलाऊँगा, आप देखें। ११०७

❀ ऑरुमहळ् कादलि नुलहै नोय्शॅय्द
पॅरुमह नेवलिऩ् परदऩ् ऱाऩ्पॅऱुम्
इरुनिल माळ्हैविट् टिऩ्ऱॅऩ् ऩेवलाल्
अरुनर हाळ्वदु काण्डि याळियाय् 1108

आळियाय्–चक्रधारी; ऑरु मकळ् कातलिऩ्–एक स्त्री पर के प्रेम से; उलकै नोय् चॅय्त–संसार को दुख देनेवाले; पॅरु मकऩ् एवलिऩ्–चक्रवर्ती की आज्ञा से; परतऩ्–भरत; ताऩ् पॅऱुम्–जो प्राप्त कर रहा है, उस; इरु निलम्–बड़ी भूमि का; आळ्कै विट्टु–पालन करना छोड़कर; इऩ्ऱु–अब; ऍऩ् एवलाल्–मेरी आज्ञा से; अरु नरकु—आवर्तन-अशक्य नरक; आळ्वतु–वास करेगा; काण्टि–देखेंगे। ११०८

चक्रधर वीर! स्त्री-मोह में पड़कर चक्रवर्ती ने भरत को राज्य दिया और संसार को कष्ट हुआ। उनकी आज्ञा से भरत बड़ी भूमि का राज्य करने चला। अब मेरी आज्ञा से वह राज्य करना छोड़कर नरकवास करेगा, देखिए। ११०८

❀ वैयहन् दुऱन्दुवन् दडवि वैहुदल्
ऍय्दिय दुऩक्कॅन निऩ्ऩै यीऩ्ऱवळ्
नैदलुहण् डुवन्दव णवॅय्यि ऩोङ्गिय
कैहयन् महळ्विळुन् दरऱ्ऱक् काण्डियाल् 1109

उऩक्कु–आपको; वैयकम् तुऱन्तु वन्तु–राज्य छोड़ आकर; अटवि वैकुतल् ऍय्तियतु–अटवी में रहना पड़ा; ऍऩ–यह सोचकर; निऩ्ऩै ईऩ्ऱवळ्–आपकी माता;

नैतल् कण्टु–दुखी हैं, यह देखकर; उवन्तवळ–जो खुश है; नवैयिन् ओङ्किय–और जो बड़ी अपराधिनी है; कैकयन् मकळ्–वह केकयराज-तनया; विऴुन्तु अरऱ्ऱ–भूमि पर गिरकर रोयेगी; काण्टि–देखेंगे। ११०९

आपको राज्य छोड़कर वन में वास करना पड़ा। यह देखकर आप की जननी अत्यन्त दुखी हैं। उनका दुख देखकर कैकेयी आनन्दमग्न है। वह बड़ी अपराधिनी कैकेयी अब भूमि पर गिरकर दहाड़ मारकर रोयेगी —आप भी देखेंगे। ११०९

अरञ्जुड वऴन्निमि रलङ्गल् वेलिन्नाय्
विरैञ्जॊरु नॊडियिलव् वनिह वेलैयै
उरञ्जुडु वडिक्कणै यॊन्ऱिल् वॆन्ऱुमुप्
पुरञ्जुडु मॊरुवनिऱ् पॊलिवॆन् यानॆन्ऱान् 1110

अरम् चुट–रेती के रगड़ने से; अऴल् निमिर्–चमक में बढ़नेवाला; अलङ्कल् वेलिनाय्–माला से अलंकृत भाला वाले; विरैञ्चु–जल्दी; ऒरु नॊटियिल्–एक क्षण में; इव् अतिकम् वेलैयै–इस सेना-समुद्र को; उरम् चुटु–बलनाशक; वटि कणै ऒन्ऱिल्–तीक्ष्ण एक शर के द्वारा; वॆन्ऱु–हराकर; मुप्पुरम् चुटुम् ऒरुवतिन्–त्रिपुरदाहक परमेश्वर के समान; पॊलिवॆन्–शोभूँगा; यान्–मैं; ऎन्ऱान्–कहा। १११०

रेती से पैनाये जाने से अधिक कान्तियुक्त और मालालंकृत भालाधारी! एक ही तीक्ष्ण बाण से, एक ही क्षण में इस अनीक-वारिधि का नाश करके त्रिपुरदाही परमेश्वर के समान शोभूँगा —आप देखिए। लक्ष्मण ने यह सब कहा। १११०

* इलक्कुव वुलहमो रेऴी डेऴुन्नी
कलक्कुवॆ नॆन्नुबदु करुदि नालदु
विलक्कुव दरिददु विळम्ब वेण्डुमो
पुलक्कुरित् तॊरुपॊरुळ् पुहलक् केट्टियाल् 1111

इलक्कुव–लक्ष्मण; उलकम् ओर् एऴोटु एऴुम्–सात और सात चौदहों लोकों को; कलक्कुवॆन् ऎन्पतु–मिटाऊँगा, यह; नी करुतिनाल्–तुम संकल्प करोगे तो; अतु विलक्कुवतु–उसको रोकना; अरितु–कठिन है; अतु विळम्प वेण्टुमो–वह कहना भी चाहिए क्या; पुलक्कु उरित्तु ऒरु पॊरुळ्–समझाने योग्य एक बात है; पुकल–कहूँगा; केट्टि–सुनो। ११११

उनके कह चुकने के बाद श्रीराम ने उनसे यों कहा। लक्ष्मण! 'चौदहों भुवनों का नाश करूँगा' —यह संकल्प लेकर तुम लड़ने चलोगे तो तुम्हें रोकना किसी के लिए भी असम्भव है। यह कहना भी चाहिए क्या? लेकिन एक बात है, जो मैं चाहता हूँ कि तुम समझ लो। सुनो। ११११

❀ नङ्गुलत् तुदित्तवर् नवैयि नीङ्गिनार्
अङ्गुलप् पुरुवरूह ळॅण्णिन् यावरे
तङ्गुलत् तौरुवरुन् दरुम नीङ्गिनार्
पॊङ्गुलत् तिरळोडुम् पौरुद तोळिनाय् 1112

पॊङ्कु उलम् तिरळॊटुम्–बड़े लौहस्तम्भों से; पॊरुत तोळिनाय्–तुल्य कन्धों वाले; नम् कुलत्तु उतित्तवर्–हमारे कुल में जनमे; नवैयिन् नीङ्किनार–जो कलंकहीन हैं; अॅङ्कु उलप्पुरुवरकळ्–कहाँ गिनकर पूरा किये जा सकते हैं; अॅण्णिन्–सोच-विचार करो तो; तम् कुलत्तु–अपने कुल के; ऑरुवु अरुम्–अत्याज्य; तरुमम् नीङ्कित्तार्–धर्म से हटे; यावर्–कौन हैं। १११२

बड़े लौहस्तम्भ-सम भुजा वाले! हमारे कुल में पैदा हुए अकलंक सच्चरित्रवान लोगों की गिनती करके कोई अन्त पा सकता है क्या? खूब सोचकर देखो तो हमारे कुल में अत्याज्य धर्म से डिगनेवाले कौन पैदा हुए थे? । ११११२

❀ अॅन्नैत्तुळ मरैयवै यियम्बर् पालन
पन्नैत्तिरळ् करक्करिप् परदन् शॅय्हैये
अन्नैत्तिर मल्लन वल्ल वन्नदु
निन्नैत्तिलै यॅन्वयि नेय नॅञ्जिनाल् 1113

मरै अॅन्नैत्तु उळ–वेद जितने हैं; अवै–वे सब; इयम्पल् पालन–जो निर्धारित करते हैं; पन्नै तिरळ् करम्–तालवृक्ष-सम सूँड़ वाले; करि परतन्–गजों की सेना के (पति) भरत के; चॅय्कैये–आचरण ही हैं; अन्नै तिरम् अल्लन–(उसके किये) वैसे जो नहीं हैं; अल्ल–वे वेदोक्त नहीं हैं; अॅन् वयिन् नेयम् नॅञ्चिनाल्–मुझ पर प्रेमी मन के कारण; अन्नतु निन्नैत्तिलै–उस बात का विचार नहीं किया। १११३

जान लो कि तालवृक्ष-सम सूँड़ वाले गजों से भरी सेना के पति भरत के जो चलन हैं, वे ही सब सभी वेदों में पाये जायँगे। उनके कृत्य जो नहीं हैं वे वेदोक्त नहीं रह सकते, तुम मेरे प्रति इतने प्रेमान्ध हो कि तुमने यह नहीं सोचा। १११३

पॅरुमह नेवलिऱ् पिऱन्द कादलिन्
वरुमॅन निन्नैहैयु मण्णै यॅन्वयिन्
तरुमॅन निन्नैहैयुन् दविर्त्तुत् तानैयाल्
पौरुमॅन निन्नैहैयुम् पुलमैप् पालदो 1114

पॅरु मकन् एवलिन्–चक्रवर्ती की आज्ञा से; पिऱन्त कातलिन्–मेरे प्रति उत्पन्न प्रेम के कारण; वरुम् अॅन निन्नैकैयुम्–आता होगा, ऐसा सोचना; मण्णै अॅन् वयिन् तरुम्–और राज्य मुझे सौंपेगा; अॅन निन्नैकैयुम्–यह सोचना; तविर्त्तु–छोड़कर;

तातैयाल्–सेना द्वारा; पॉरुम् लड़ेगा; ॲन्न नित्तैकैयुम्–यह सोचना; पुलैमै पालतो–बुद्धिसंगत है क्या। १११४

चक्रवर्ती की आज्ञा से और अपने मेरे प्रति प्रेम से प्रेरित होकर वह आया होगा —यह नहीं सोचा तुमने। वह आकर राज्य को मेरे पास सौंप देगा —यह भी तुमको नहीं ख्याल हुआ। ऐसा सोचना छोड़कर सेना लेकर मेरे साथ युद्ध करेगा —ऐसा सोचना क्या बुद्धिसंगत होगा ? १११४

पॉन्नॉडुम् बॉरुहळऱ् परदन् पोन्दुतान्
नन्नॆडुम् बॆरुम्बडै नल्ह लन्ऱिये
ॲन्नॊडुम् बॊरुमॆन्न वियम्बऱ् पालदो
मिन्नॊडुम् बॊरुवुऱ् विळङ्गुम् वेलिनाय् 1115

मिन्नॊटुम् पॊरुवु उऱ्–बिजली से भी तुल्य; विळङ्कुम् वेलिनाय्–विद्यमान भाला वाले; पॊरु कऴल् परतन्–युद्धोचित पायल के धारी भरत; पोन्तु–इधर आकर; पॊन्नॊटुन्–राज्य-श्री के साथ; नल् नॆटु–अच्छी-खासी; पॆरु पटै–विशाल सेना को; नल्कल् अन्ऱि–मुझे देने के सिवाय; ॲन्नॊटुम् पॊरुम् ॲन्न–मेरे साथ लड़ेगा, ऐसा; इयम्पल् पालतो–कहना उचित है क्या। १११५

बिजली की-सी चमकदार भाला वाले ! युद्धद्योतक पायलधारी भरत इधर आकर राज्यश्री और अच्छी-खासी विशाल सेना को मेरे पास सौंप देगा। इसके सिवा वह मेरे साथ युद्ध करेगा —यह कहना भी उचित होगा क्या ? । १११५

❀ शेणुयर् तरुमत्तिन् ऱेवैच् चॆम्मैयिन्
आणियै यन्नदु निनैक्क लाहुमो
पूणियल् मॊय्म्बिनाय् पोन्द दीण्डॆनैक्
काणिय नीयदु पिन्नुङ् गाण्डियाल् 1116

पूण् इयल् मॊय्म्पिनाय्–आभरणभूषित भुजा वाले; चेण् उयर्–अति उत्कृष्ट; तरुमत्तिन् तेवै–धर्मदेवता (तुल्य उस) को; चॆम्मैयिन् आणियै–सदाचरण की धुरी को; अन्नतु निनैक्कल् आकुमो–वैसा सोचना ठीक है क्या; पोन्ततु–आगमन; ईण्टु ॲनै काणिय–मुझसे मिलने के लिए; अतु–वह; नी पिन्नुम् काण्टि–पीछे देख लोगे। १११६

आभरण-भूषित भुजा वाले ! अत्युत्कृष्ट धर्मदेवता (स्वरूप) को और शील की धुरी को ऐसा समझना उचित होगा क्या ? वह इधर आता है मुझसे भेंट करने हेतु ही ! तुम पीछे स्वयं देख लोगे कि वही हो रहा है। १११६

❀ ॲन्ऱन निळवलुक् किशैत्तङ् गेन्दलुम्
निन्ऱनन् बरदन निमिर्न्द शेनैयप्

पिन्ऱरु हॅन्ऱुतन् पिरिविल् कादलिन्
तन्ऱुणैत् तम्बियुन् दानु मुन्दिनान् 1117

एन्तलुम्–महिमावान श्रीराम ने; ऍन्ऱतन्–यह कहकर; इळवलुक्कु–अनुज भ्राता को; इचैत्तु–समझाकर; निन्ऱनन्–(प्रतीक्षा में) खड़े रहे; परतनुम्–भरत भी; निमिर्न्त चेनैयै–बड़ी सेना को; पिन् तरुक–पीछे लाओ; ऍन्ऱु–आज्ञा दिलाकर; तन् पिळवु इल् कातलिन्–अपने अक्षुण्ण प्रेम के साथ; तन् तुणै तम्पियुम्–अपने साथी भाई; तानुम्–और आप; मुन्तिनान्–आगे आये। १११७

महिमायुक्त प्रभु ने लक्ष्मण को ये बातें कहकर समझाया। फिर वे भरत की प्रतीक्षा में (खड़े) रहे। उधर भरत नें सेनानायकों को आज्ञा दी कि सेना बाद को लायी जाय। वे अपने चिरसहचर भाई और अपना अक्षुण्ण प्रेम —इनको लेकर आप स्वयं आगे आये। १११७

❀ तॊळुदुयर् कैयिनन् ऱुवण्ड मेनियन्
अऴुदऴि कण्णिन नवल मीदॆन
ऍळुदिय पडिवमॊत् तॆय्दु वान्ऱनै
मुळुदुणर् शिन्दैयान् मुडिय नोक्किनान् 1118

तॊळुतु उयर् कैयिनन्–जोड़कर सिर पर रखे हाथों के साथ; तुवण्ट मेनियन्–श्लथशरीरी; अऴुतु अऴि कण्णिनन्–रोते हुए आँसू बहानेवाली आँखों के; अवलम् ईतु ऍन–मूर्तदुख है यह; ऍळुतिय पटिवम् ऒत्तु–ऐसी चित्र-प्रतिमा से तुल्य होकर; ऍय्तुवानै–आनेवाले को; मुळुतु उणर् चिन्तैयान्–सर्वज्ञ श्रीराम ने; मुटिय नोक्किनान्–(आपादकेश) दृष्टि दौड़ाई। १११८

उनके हाथ जुड़े हुए सिर पर रखे गये थे। उनका शरीर अत्यन्त म्लान था। आँखें रोती आँसू बहा रही थीं। वे साक्षात् दुख-भाव के सजीव चित्र-से लगते थे। ऐसे आनेवाले भरत को सर्वश्रेष्ठ श्रीराम ने आपाद-केश देखा। १११८

❀ कार्प्पॊरु मेनियक् कण्णन् काट्टिनान्
आर्प्पुरु वरिशिलै यिळैय वेयनी
तेर्प्पॆरुन् दानैयप् परदन् शीऱिय
पोर्प्पॆरुङ् गोलत्तैप् पॊरुन्द नोक्कॆना 1119

कार् पॊरु मेनि–काले मेघ के समान रूपधर; अ कण्णन्–सबके नेत्र-सम श्रीराम ने; आर्प्पु उरु वरि चिलै–टंकारयुक्त बन्धनसहित धनुर्धर; इळैय ऐय–छोटे राजा; तेर् पॆरुम् तानै–रथबहुल सेना वाले; अ परतन्–उस भरत का; चीऱिय–क्रुद्ध; पॆरुम् पोर् कोलत्तै–बड़े युद्धसन्नद्ध रूप को; नी पॊरुन्त नोक्कु–तुम ध्यान लगाकर देखो; ऍना–कहकर; काट्टितान्–दिखाया। १११९

फिर मेघश्याम श्रीराम ने, जो सबके लिए नेत्र थे, लक्ष्मण से कहा

कि देखो ! टंकार के साथ बन्धनयुक्त धनुष लिये खड़े रहनेवाले लक्ष्मण ! देखो। रथबहुल सेना के स्वामी भरत का क्रुद्ध युद्धसन्नद्ध रूप (कैसा है ?) खूब ध्यान से देखो। उन्होंने भरत की ओर लक्ष्मण का ध्यान आकृष्ट किया। १११९

* ऍल्लॊडुङ् गियमुहत् तिळव निऩ्ऱऩऩ्
मल्लॊडुङ् गियपुयत् तवऩै वैदॆळुम्
शॊल्लॊडुञ् जिनत्तॊडु मुणर्वु शोर्दर
विल्लॊडुङ् गण्णनीर् निलत्तु वीऴ्वे 1120

इळवल्–कनिष्ठ; मल् ऑटुङ्किय पुयत्तवऩै–निर्बल हुए कन्धों वाले (भरत) को; वैतु–दुर्वचन कहकर; ऍऴुम् चॊल्लॊटुम्–उठनेवाले शब्दों के साथ; चिऩत्तॊटुम्–क्रोध; उणर्वुम्–(और) बुद्धि; चोर् तर्–क्षीण हो गई; विल्लोटु–धनुष के साथ; कण्ण नीर्–आँखों के अश्रुजल को; निलत्तु वीऴ–भूमि पर गिराते हुए; ऍल् ऑटुङ्किय मुकत्तु–कान्तिहीन मुख के साथ; निऩ्ऱऩऩ्–(चकित) खड़े रहे। ११२०

लक्ष्मण ने देखा कि भरत कितने बलहीन हो गये हैं। उनकी भुजाएँ अशक्त हो रही थीं। तब उनके निन्दा करने के लिए उठे शब्द, कोप और ज्ञान —यह सब शिथिल होकर लुप्त हो रहे। हाथ से धनुष को और आँखों से अश्रु को गिराते हुए वे कान्तिहीन मुख के साथ सन्न खड़े रह गये। ११२०

* कोदऱत् तवञ्जॆय्दु कुऱिप्पि ऩॆय्दिय
नादऩैप् पिरिन्दुतऩ् नलत्ति ऩीङ्गिय
मेदिऩित् तिरुमहळ् मॆलिहिऩ् ऱाळ्विडु
तूदॆऩप् परदऩुन् दॊऴुदु तुऩ्ऩिऩाऩ् 1121

कोतु अऱ–त्रुटिहीन; तवम् चॆय्तु–तपस्या करके; कुऱिप्पिऩ् ऍय्तिय–लक्ष्य-प्राप्त; नातऩै पिरिन्तु–नाथ से अलग होकर; तऩ् नलत्तिऩ्–अपने सौभाग्य से; नीङ्किय–वंचित हुई; मेतिऩि तिरुमकळ्–मेदिनीदेवी के; मॆलिकिऩ्ऱाळ्–क्षीण होती हुई; विटु तूतु ऍऩ–प्रेषित दूत के समान; परतऩुम्–भरत भी; तॊऴुतु–नमस्कार करते हुए; तुऩ्ऩिऩाऩ्–श्रीराम के पास आये। ११२१

भरत उस भूदेवी के दूत के समान था, जो निर्दोष तपस्या करके पति के रूप में प्राप्त श्रीराम के वियोग से सारा सौभाग्य खोकर क्षीण हो रही थीं। वे श्रीराम के पास नमस्कार करते हुए आये। ११२१

* अऱन्दऩै निऩैन्दिलै यरुळु नीत्तऩै
तुऱन्दऩै मुऱैमैयु मॆऩ्ऩुञ् जॊल्लिऩाऩ्
मऱन्दऩऩ् मलरडि वन्दु वीऴ्न्दऩऩ्
इऱन्दऩऩ् ऱादैयॆ यॆदिर्हण् डॆऩ्ऩवे 1122

अऱम् तत्तै नित्तैन्तिलै–धर्म का विचार नहीं किया; अरुळुम् नीत्तनै–कृपा त्याग दी; मुऱैमैयुम् तुऱन्ततै–कुलक्रम भी उड़ा दिया; ऍन्ऩुम् चोल्लितान्–इन वचनों के साथ; इऱन्त तन् तातैयै–दिवंगत अपने पिता को; ऍतिर् कण्टाल् ऍन्ऩ–सामने देख लिया हो, जैसे; मऱन्ततन्–अपने को भूलकर; वन्तु–आये और; मलर् अटि–कमल-चरणों पर; वीळ्न्तनन्–गिरे। ११२२

आते ही वे यह कहते हुए कि धर्म का विचार नहीं किया, कृपा का गुण, कुल का क्रम —सबको तिलांजलि दे दी, और ऐसे परवश होकर श्रीराम के श्री-चरणों पर गिरे, मानो दिवंगत पिता को साक्षात देख रहे हों। ११२२

❀ उण्डुकॉल् लुयिरॅन्ऩ वॉडुङ्गि नानुरुक्
कण्डन निन्ऱनन् कण्णन् कण्णॅनुम्
पुण्डरी हम्बॊळि पुनल वन्शडा
मण्डल निऱैन्दुपोय् वळिन्दु शोरवे 1123

कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम ने; उयिर् उण्टु कॉल्–सजीव भी है क्या; ऍन्ऩ–ऐसा सन्देह योग्य रीति से; ऑटुङ्कितान् उरु–क्षीण हुए भरत का रूप; कण्टनन्–देखकर; कण् ऍनुम् पुण्टरीकम्–आँखें रूपी कमल से; पॊळि पुनल्–स्रवनेवाला जल; अवन् चटा मण्टलम्–उसकी जटाजूट को; निऱैन्तु पोय्–प्लावित कर; वळिन्तु चोर–बहकर चले, ऐसा; निन्ऱनन्–खड़े रहे। ११२३

पुण्डरीकाक्ष ने उन भरत को देखकर आँखों से अश्रुधारा बहायी, जिनके प्राणों के अस्तित्व में ही सन्देह हो रहा था और जो बहुत ही दुर्बल थे। उनके अक्षपुण्डरीक से बहा अश्रुजल भरत की जटाजूट को प्लावित करके भूमि पर सरक गया। वे उसी स्थिति में खड़े रहे। ११२३

❀ अयावुयिर्त् तळुहणी ररुवि मार्बिडै
उयावुऱत् तिरुमन मुरुहप् पुल्लिनान्
नियामत् तत्तैक्कुमोर् निलैय मायिनान्
तयामुद लऱत्तिन्नैत् तळीइय वॅन्नवे 1124

नियायम् अत्तत्तैक्कुम्–सभी नीतियों के; ओर् निलैयम् आयितात्–एकमात्र आश्रयभूत श्रीराम ने; अया उयिर्त्तु–लम्बा निश्वास छोड़कर; अळु कण् नीर् अरुवि–रोती आँखों की जल-सरिता को; मार्पु इटै–वक्षस्थल पर; उया उऱ–बहने देते हुए; तिरु मतम् उरुक–श्रीमन के द्रवीभूत होते; तया मुतल्–दयामूल ने; अऱत्तित्तै–धर्म को; तळीइयतु ऍन्ऩ–आलिंगन किया जैसे; पुल्लितान्–गले लगा लिया। ११२४

न्यायाश्रय श्रीराम ने गहरी साँस ली। आँखों के रुदन के आँसू की धारा उनके वक्ष पर बही। उनका श्रीमन द्रवीभूत हुआ। उस

स्थिति में उनका भरत का आलिंगन ऐसा लगा, मानो दयामूल ने धर्मदेवता को गले लगा लिया हो। ११२४

❀ पुल्लित निऩ्ऱवऩ् पुतैन्द वेडत्तैप्
पल्विदम् नोक्किऩाऩ् पलवु मुऩ्ऩिऩाऩ्
अल्ललि नऴुङ्गिऩै यैय वाऴुडै
मल्लुयर् तोळवऩ् वलिय ऩोवॆऩ्ऱाऩ् 1125

पुल्लितन् निऩ्ऱु–आलिंगन-दशा में खड़े होकर; अवन् पुतैन्त–भरत के धृत; वेटत्तै–(मुनि-) वेश को; पलवितम् नोक्किऩाऩ्–विविध प्रकार से देखकर; पलवुम् उऩ्ऩिऩाऩ्–विविध प्रकार से विचारकर; ऐय–तात; अल्ललिऩ् अऴुङ्किऩै–दुख में मग्न हो; आऴ् उटै(य)–आज्ञापक; मल् उयर् तोळवऩ्–सशक्त भुजा वाले; वलियतो–स्वस्थ हैं क्या; ऎऩ्ऱाऩ्–पूछा। ११२५

श्रीराम ने आलिंगन में रखकर के भरत के मुनिवेश को अनेक प्रकार से देखा और उनके मन में विविध भाव और विचार उठे। उन्होंने भरत से पूछा कि तात ! तुम बहुत दुखपीड़ित दिखते हो। आज्ञापक बलबाहु चक्रवर्ती स्वस्थ हैं न ? । ११२५

❀ अरियव ऩुरैशॆय्प् परद ऩैयनिऩ्
पिरिवॆऩुम् बिणियिऩा लॆऩ्ऩैप् पॆऱ्ऱवक्
करियवळ् वरमॆऩुङ् गाल ऩाऱ्ऱऩक्
कुरियमॆय् निऱुविप्पो युम्ब राऩॆऩ्ऱाऩ् 1126

अरियवन् उरै चॆय–उत्तम श्रीराम के ऐसा पूछने पर; परतऩ्–भरत; ऐय–प्रभु; निऩ् पिरिवु ऎऩुम् पिणियिऩाल्–आपके वियोग-रोग से; ऎऩ्ऩै पॆऱ्ऱ–मुझे जन्म देनेवाली; अ करियवळ्–उस काली (करतूत वाली) के; वरम् ऎऩुम् कालऩाल्–वर रूपी यम से; तऩक्कु उरिय–अपने पालनार्ह; मॆय् निऱुवि–सत्य की स्थापना करके; पोय्–जाकर; उम्पराऩ्–स्वर्गवासी हैं; ऎऩ्ऱाऩ्–उत्तर दिया। ११२६

जब सर्वोत्तम ने यह प्रश्न किया, तब भरत ने उत्तर दिया कि आर्य ! आपके वियोग रूपी रोग के कारण और मेरी जननी कालामन कैकेयी के वर रूपी यम के त्रास से वे इस दुनिया में अपनी सत्यवादिता स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये। ११२६

❀ विण्णिडै यडैन्दऩ ऩॆऩ्ऱ वॆय्यशॊल्
पुण्णिडै ययिलॆऩच् चॆविपु हामुऩ्ऩम्
कण्णॊडु मऩत्तुळल् करङ्गु पोलवल्
मण्णिडै विऴुन्दऩऩ् वाऩि ऩुम्बराऩ् 1127

विण् इटै अटैन्तऩऩ्–स्वर्ग सिधार गये; ऎऩ्ऱ–इसका सूचक; वॆय्य चॊल्–तापक वचन; पुण् इटै अयिल् ऎऩ–व्रण में भाला-सा; चॆवि पुका मुऩ्ऩम्–कानों में

प्रविष्ट हुआ, तभी; वाऩिन् उम्पराऩ्–स्वर्ग के परे श्रीवैकुण्ठ के वासी; कण्णोटु मतम्–आँखों के साथ मन के; चुऴल् करङ्कु पोल–घूमनेवाले वातचक्र बनते; वल् मण् इटै–कठोर भूतल पर; विऴुन्तऩऩ्–गिरे। ११२७

'राजा स्वर्ग सिधार गये' —यह कथन व्रण में भाले के समान कान में पड़ते ही श्रीराम, जो स्वर्ग से भी परे श्रीवैकुण्ठ के नाथ थे, आँखों और मन के चक्कर खाते, कटी पतंग के समान कठोर भूतल पर गिर गये। ११२७

❀ इरुनिलञ् जेर्न्दऩ ऩिरैयु यिर्त्तिलऩ्
उरुमॅऱि यरवॆऩ वुणर्वु नीङ्गिऩाऩ्
अरुमैयि ऩुयिर्वर वयावु यिर्त्तहम्
पॊरुमिऩऩ् पऩ्मुऱै पुलम्बि ऩाऩरो 1128

इरु निलम् चेर्न्तऩऩ्–भूमि पर गिरे श्रीराम; इऱै उयिर्त्तु इलऩ्–बिल्कुल श्वासहीन रहे; उरुम् ऍऱि अरवु ऎऩ–वज्राहत साँप के समान; उणर्वुम् नीङ्किऩाऩ्–अचेत भी हुए; अरुमैयिऩ्–सायास; उयिर् वर–प्राणता (प्रज्ञा) लौटी; अया उयिर्त्तु–दीर्घ निश्वास छोड़कर; अकम् पॊरुमिऩऩ्–खिन्नमन होकर; पल् मुऱै पुलम्पिऩाऩ्–विविध प्रकार से विलाप करने लगे। ११२८

वे गिरकर बिल्कुल श्वासहीन और अचेत हो गये। वज्राहत साँप के समान बेसुध रहने के बाद सायास उनकी प्राणता लौट आयी। लम्बी साँस भरकर, क्लान्तमन से वे अनेक प्रकार से विलाप करने लगे। ११२८

❀ नन्दा विळक्कऩैय नायहऩे नाऩिलत्तोर्
तन्दाय् तनियऱत्तिऩ् ऱाये दयाऩिलैये
ऎॅन्दा यिहल्वेन्द रेऱे यिऱन्दऩैयो
अन्दो विऩिवाय्मैक् काऱुळरे मॅय्युऱ्ऱार् 1129

नन्ता विळक्कु अऩैय–अमरदीप-से; नायकऩे–नायक; नाल् निलत्तोर् तन्ताय्–सभी लोकवासियों के पिता-सम; अऱत्तिऩ् ताये–धर्म की माता-समान; तया निलैये–दया के आगार; ऎॅन्ताय्–मेरे पिता; इकल् वेन्तर् एऱे–शत्रु राजा (रूपी गजों) के सिंह; इऱन्तऩैयो–आप मर गये; अन्तो–हाय; इऩि–अब; वाय्मैक्कु मॅय् उऱ्ऱार्–सत्य का सच्चा बन्धु; आर् उळर्–कौन है। ११२९

अमरदीप-तुल्य नायक! समस्त लोकों के धाता! धर्मदेवता के मातृस्वरूप! करुणानिलय! हमारे पिता! शत्रु राजाओं के सिंह (सदृश भयंकर)! आप स्वर्गवासी हो गये? हाय, अब सत्य के सच्चे बन्धु कौन हैं? । ११२९

❀ शॊऱ्पॆऱ्ऱ नोऩ्बिऩ् ऱुऱैयो तरुळ्वेण्डि
नऱ्पॆऱ्ऱ वेळ्वि नवैनीङ्ग नीयियऱ्ऱि

अऱ्पॆऱ्ऱ नीपॆऱ्ऱ दिऩ्ऩुयिर्पोय् नीङ्गवो
कॊऱ्पॆऱ्ऱ वॆऱ्ऱिक् कॊलैवॆऱ्ऱ कूर्वेलोय् 1130

कॊल् पॆऱ्ऱ–संहारक कृत्य से प्राप्य; वॆऱ्ऱि–विजय के योग्य; कॊलै पॆऱ्ऱ–संहारकता-प्राप्त; कूर् वेलोय्–तीक्ष्ण भाला वाले; नी–आप; चॊल् पॆऱ्ऱ–शासित; नोऩ्पिऩ् तुऱैयोऩ्–तपोमार्गी (ऋष्यश्रृंग) की; अरुळ् वेण्टि–कृपा पाकर; नवै नीङ्क–दोषों से रहित; नल् पॆऱ्ऱ वेळ्वि इयऱ्ऱि–हितकारी यज्ञ सुसम्पन्न करके; ऎऩ् पॆऱ्ऱ नी–मुझे पुत्र के रूप में आपने प्राप्त किया, वह; पॆऱ्ऱतु–प्राप्ति; इऩ् उयिर् पोय् नीङ्कवो–प्राण त्यागकर स्वर्गगमन के लिए क्या। ११३०

संहारक, विजयी और तीक्ष्ण भाला वाले ! आपने प्रकीर्तित तपोधन ऋष्यश्रृंग की दया से निर्दोष और हितकारी यज्ञ सम्पन्न करके मुझे जो पुत्र के रूप में पाया, क्या वह अपने प्राण-त्याग के लिए ही था ? । ११३०

मऩ्ऩुयिर्क्कु नल्हुरिमै मण्बार नाऩ्शुमक्कप्
पॊऩ्ऩुयिर्क्कुऩ् दारोय् पॊऱैयुयिर्त्त वाऱिदुवो
उऩ्ऩुयिर्क्कुक् कूऱ्ऱा युलहाळप् पिऱन्देऩो
मिऩ्ऩुयिर्क्कुऩ् दीवाय् वॆयिलुयिर्क्कुम् वॆळ्वेलोय् 1131

मिऩ् उयिर्क्कुम्–विद्युत को भी लम्बी साँस लेने के लिए (कान्ति में हारकर) मजबूर करनेवाली; वॆयिल् उयिर्क्कुम्–कान्ति देनेवाले; ती वाय्–तीक्ष्ण मुखी; वॆळ् वेलोय्–चाँदी के भालाधारी; पॊऩ् उयिर्क्कुम् तारोय्–स्वर्णमालाधारी; मऩ् उयिर्क्कु–स्थायी जीवों को; नल्कु उरिमै–कृपादान करने का अधिकार-युक्त; मण् पारम्–राज्य-भार को; नाऩ् चुमक्क–मैं वहन करूँ; पॊऱै उयिर्त्त आऱु–(इसलिए) भार-निवारण का प्रकार; इतुवो–यही है क्या; उऩ् उयिर्क्कु–आपके प्राणों का; कूऱ्ऱु आय्–यम बनकर; उलकु आळ–लोकपालन करने के लिए; पिऱन्तेऩो–मैं जनमा क्या। ११३१

ऐसे कान्तिमय चाँदी के भाले के धारक, जिसकी कान्ति के सामने हारकर विद्युत भी ठण्डी आह भरती है ! स्वर्णमाला-धारी ! जीवरक्षण-भार से युक्त शासन-भार को मुझ पर डालकर भार-निवृत होने का यही तरीका है क्या ? आपके प्राणों का ग्राहक बनकर लोकपालन करने हेतु ही मैंने जन्म लिया क्या ? । ११३१

अॆम्बरत्त दाक्कि यरशुरिमै यिन्दियङ्गळ्
तम्बरत्त वाक्कित् तवमिळैत्त वाऱिदुवो
शम्बरप्पेर्त् ताऩवऩैत् तळ्ळिच् चदमहऱ्कऩ्
ऱम्बरत्ति नीङ्गा वरशळित्त वादियाय् 1132

अऩ्ऱु–उस दिन; चम्परऩ् पेर् ताऩवऩै–शम्बर नामक दानव को; तळ्ळि–मिटाकर; चतमकऱ्कु–शतमख को; अम्परत्तिऩ् नीङ्का अरचु–स्वर्ग का अचल राज्य; अळित्त–देनेवाले; आदियाय्–चक्रवर्ती; अरचु उरिमै–शासनाधिकार को;

ऍम् परत्ततु आक्कि–हमारे वश में करके; इन्तियङ्कळ्–इन्द्रियों को; तम् परत्त आक्कि–अपने वश में करके; तवम् इळैत्तत आरु–तपस्या करने का (विचार जो रखते थे, उसके अंजाम का) प्रकार; इतुवो–यही है क्या। ११३२

शंबर दानव का नाश कर शतमख को आपने अचल स्वर्ग का राज्य दिलाया, ऐसे चक्रवर्ती ! शासन को हमारे वश में छोड़कर, इन्द्रियों को अपने वश में करके जो आपने तपस्या करना चाहा, वह इसी प्रकार की थी क्या ? । ११३२

वेण्डुन् दिऱत्तारुम् वेण्डा वरशाट्चि
पूण्डिव् वुलहुक् किडर्हॉडुत्त पुल्लनेन्
माण्डु मुडिवदल्लाल् माया वुडम्बिदुहॉण्
डाण्डु वरुवदिनि यार्मुहत्ते नोक्कवो 1133

वेण्टुम् निऱत्तारुम्–अर्थी प्रकृति वाले भी; वेण्टा–जिसको नहीं चाहेंगे; अरचु आट्चि पूण्टु–वह शासन अपनाकर; इव् उलकुक्कु–इस लोक को; इटर् कॉटुत्त–दुख देनेवाला; पुल्लनेन्–क्षुद्र मैं; माण्टु मुटिवतु अल्लाल्–मर मिटूं, इसके सिवा; माया उटम्पु इतु कॉण्टु–इस अविनष्ट शरीर को लेकर; आण्टु वरुवतु–उधर (अयोध्या) आना; इनि यार् मुकत्ते नोक्कवे–अब किसके मुख पर दृष्टि डालने के लिए। ११३३

सभी वस्तुओं की माँग करनेवाले भी जिसको नहीं चाहते, उस राज्य-भार को आपकी आज्ञा से अपने ऊपर ले-लेकर मैंने इस लोक को कितना दुख दे दिया ! मैं कितना क्षुद्र हूँ ! बिना मरे मैं यह अविनष्ट शरीर लेकर वहाँ अयोध्या में आऊँ तो किसके मुख को देखने के लिए आऊँ ? । ११३३

❀ तेनडैन्द शोलैत् तिरुनाडु कैविट्टुक्
कानडैन्दे नॅन्नत् तरियादु कावलनी
वानडैन्दा यिन्न मिरुन्देनान् वाळ्वुहन्दे
ऊनडैन्द तॅव्व रुयिरडैन्द वौळ्वेलोय् 1134

ऊन् अटैन्त तॅव्वर्–मांसल शत्रुओं का; उयिर् अटैन्त–प्राणहारी; ऑळ् वॅलोय्–दीप्तियुत भालाधारी; कावल–पालनकर्ता; तेन् अटैन्त चोलै–शहद-भरे उद्यानों के; तिरु नाटु कै विट्टु–श्रीसम्पन्न देश को छोड़कर; कान् अटैन्तेन् ऍन्नत्–वन में आया तो यह; तरियातु–न सह सक कर; नी वान् अटैन्ताय्–आप स्वर्ग सिधारे; नान्–मैं तो; वाळ्वु उकन्तु–जीना चाहकर; इन्नम् इरुन्तेन्–अब भी जीवित रहा। ११३४

मोटे शत्रुओं के प्राणों को हरनेवाले दीप्त भालाधारी ! लोकपालक ! मधुसम्पन्न उद्यानों से भरे अयोध्या नगर को छोड़कर मैं जंगल आया। यह बात सुनते ही आपने सह न सककर प्राण त्याग दिये और आप स्वर्ग

सिधार गये। पर मुझे देखिए। आप स्वर्गवासी हो गये, यह जानकर भी जीना चाहते हुए अब भी प्राणवान रहा ! । ११३४

❀ वण्मैयु माऩमुम् वाऩवर्क्कुम् बेर्क्कहिलात्
तिण्मैयुञ् जॅङ्गो नॆंरियुन् दिऱम्बाद
उण्मैयु मॆल्ला मुडनेंहोंण् डेहिऩैये
तण्मै तहैमदिक्कु मीन्द तऩिक्कुडैयोय् 1135

तकै मतिक्कुम्–श्रेष्ठ चन्द्र को भी; तण्मै ईन्त–शीतलता प्रदान करनेवाला; तनि कुटैयोय्–एकछत्र-धारी; वण्मैयुम्–दानशीलता; मानमुम्–और मान; वानवर्क्कुम् पेर्क्ककिल्लात–देवों के लिए भी दुद्धर्ष; तिण्मैयुम्–बल; चॅङ्कोल् नॆंऱियुम्–संतुलित दण्डधारण का प्रकार; तिऱम्पात उण्मैयुम्–और अटल सत्यवादिता; ॲल्लाम्–यह और अन्य सभी; उटने कॊण्टु–साथ लेकर; एकिनैये–चले गये, हाय। ११३५

सम्मान्य चन्द्र को भी शीतलता प्रदान करनेवाले अनुपम छत्र के पति ! अपनी दानशीलता, गौरव, देवों के लिए भी दुर्धर्ष साहस और बल, न्यायोचित सीधी दण्डनीति (शासन-शक्ति), अडिग सत्यपालन —इनको और ऐसे सभी अन्य गुणों को अपने साथ लेकर आप चले गये, हाय ! । ११३५

❀ ॲन्ऱॆडुत्तुप् पऱ्पलवुम् पन्नि यिडरुऴक्कुम्
कुन्ऱॆडुत्त पोलुङ् गुववुत्तोट् कोळरियै
वन्ऱडक्कैत् तम्बियरुम् वन्दडैन्द मन्नवरुम्
शॆन्ऱॆडुत्तुत् ताङ्गिऩार् मावशिट्टन् ऱेऱ्ऱिऩान् 1136

ॲन्ऱु–ऐसा; पल पलवुम् ॲटुत्तु–अनेक-अनेक बातें कहकर; पन्नि–विलाप करते हुए; इटर् उऴक्कुम्–दुखी होनेवाले; कुन्ऱु ॲटुत्त पोलुम्–पर्वताकार; कुववु तोळ् कोळ् अरियै–कन्धों वाले केसरी को; वल् तट कै तम्पियरुम्–बलिष्ठ विशाल हाथों वाले भाइयों; वन्तु अटैन्त मन्नवरुम्–और आगत राजाओं ने; चॆन्ऱु ॲटुत्तु–जाकर उठाया और; ताङ्किनार्–सम्हाला; मा वचिट्टन–महात्मा वसिष्ठ ने; तेऱ्ऱिनान्–धीरज बँधाया। ११३६

श्रीराम ऐसे बहुत प्रकार से विलाप करते हुए दुखपीड़ित हो रहे थे। तब उन पर्वत-सम कन्धों वाले नरकेसरी को बल से युक्त विशाल बाहु वाले उनके तीनों छोटे भाइयों और तब तक वहाँ आ पहुँचे राजाओं ने दौड़कर उठाया और सहारा देकर खड़ा किया। महामुनि वसिष्ठ ने उन्हें आश्वासन दिया। ११३६

❀ पन्नरिय नोन्बिऱ् परत्तुवऩे यादियाम्
पिन्नु शडैयोरुम् पेरुलह मोरेऴिन्

मन्नवरु मन्दिरिय रॅल्लारुम् वन्दडैन्दार्
तन्नुरिमैच् चेनैत् तलैवोरुन् दामडैन्दार् 1137

पन्नत अरिय नोन्पिन्–वर्णनातीत तप के कर्ता; परत्तुवन् आति आम्–भरद्वाज आदि; पिन्नु चटैयोरुम्–बढ़ी हुई जटा वाले; ओर एळु–सप्तद्वीपीय; पेर् उलक मन्नवरुम्–विशाल भूतल के राजा लोग; मन्तिरियर् ॲल्लारुम्–सभी मन्त्री लोग; वनतु अटैन्तार्–आ पहुँचे; तन् उरिमै–श्रीराम पर प्रेमाधिकार रखनेवाले; चेनै तलैवोर् तामुम्–सेनानायक भी; अटैन्तार्–आ गये। ११३७

अवर्ण्य तपोव्रती भरद्वाज आदि बड़ी जटा वाले मुनिगण और सप्त-द्वीपीय संसार के अनेक भूखण्डों के राजा, मन्त्री लोग और श्रीराम पर अपार प्रेम का अधिकार रखनेवाले सेनानी आ पहुँच गये। ११३७

मर्रुम् वरर्पाल रॅल्लारुम् वन्दडैन्दु
शुर्रु मिरुन्द वमैदियिनिर् रुन्बुळक्कुम्
कॉर्रक् कुरिशिन् मुहनोक्किक् कोमलरोन्
पॅर्र पॅरुमैत् तवमुनिवन् पेशुवान् 1138

मर्रुम्–और भी; वरल् पालर् ॲल्लारुम्–जिनको आना था, वे सब; वनतु अटैन्तु–आ पहुँचकर; चुर्रुम् इरुन्त–चारों ओर विद्यमान हुए; अमैतियिनिल्–उस समय; तुन्पु उळक्कुम्—दुख-पीड़ित; कॉर्रम् कुरिचिल् मुकम्–विजयी नायक का मुख; नोक्कि–निहारकर; को मलरोन्–राजपुष्प कमलवासी ब्रह्मा के; पॅर्र–(जनमे) पुत्र; पॅरु तवम् मुनिवन्–सम्मान्य तपोधन, महर्षि वसिष्ठ; पेचुवान्–कहने लगे। ११३८

जब आनेवाले सब आ चुके और श्रीराम को घेरकर रहे, तब पिता की मृत्यु के दुख से दुखी श्रीराम का मुख देखकर पुष्पराज कमलासन ब्रह्मा के पुत्र महान तपस्वी वसिष्ठ यों बोले। ११३८

❀ तुरत्तलु नल्लरत् तुरैयुमल्लदु
पुरत्तॊरु तुणैयिलै पॊरुन्दु मन्नुयिर्क्
किरत्तलुम् बिरत्तलु मियर्कै यॆन्बदै
मरत्तियो मरैहळिन् वरम्बु कण्डनी 1139

पॊरुन्तुम् मन् उयिर्क्कु–इस संसार में जन्म लेनेवाले स्थायी जीवात्माओं के लिए; इरत्तलुम् पिरत्तलुम्–जन्म लेना और मरण प्राप्त करना; इयर्कै–स्वाभाविक ही है; तुरत्तलुम्–(उनके लिए) वैराग्य; नल् अरम् तुरैयुम्–और सद्धर्माचरण; अल्लतु–नहीं तो; पुरत्तु ऑरु तुणै इल्लै–अन्य कोई आधार नहीं है; ॲन्पतै–इस तथ्य को; मरैकळिन् वरम्पु कण्ट—वेद-पारंगत; नी मरत्तियो–आप भूल गये क्या। ११३९

इस लोक में जन्म लेनेवाले नित्यजीवों के लिए मरण और जन्म अनिवार्य हैं और स्वाभाविक हैं। उन्हें वैराग्य और सद्धर्माचरण को

छोड़ कोई दूसरा सहारा नहीं। यह तथ्य क्या आप, वेदपारंगत होते हुए भी भूल गये ? । ११३९

❀ उण्मैयिल् पिऱविह ळुलप्पिल् कोडिहळ्
तण्मैयिल् वॆम्मयिऱ् ऱळुवि नव्वॆन्नुम्
वण्मैयै नोक्किय वलिय कूऱ्ऱिन्बाल्
कण्मैयु मुण्डॆनक् करुदऱ् पालदो 1140

उलप्पु इल् कोटिकळ्–असंख्यक; उण्मै इल् पिऱविकळ्–मिथ्या जीवी (अस्थायी जीवन की) जीवराशियाँ; तण्मैयिल् वॆम्मैयिल् तळुविन–शीतोष्णमय (सुख-दुख के); तळुविन–(जीवन में) पड़ी रहती हैं; ॲन्नुम् वण्मैयै–इस तथ्य को; नोक्किय–दृष्टिगोचर रखनेवाले; वलिय कूऱ्ऱिन् पाल्–कठोर यम के पास; कण्मै उण्टु–दाक्षिण्य होगा; ॲन करुतल् पालतो–यह आशा करना ठीक होगा क्या। ११४०

ये जीवात्मा जो असंख्यक मिथ्या जीवन बिताते हैं, शीतोष्ण सुख-दुख के भागी हैं, यह वेदशास्त्र-कथित अचल सत्य है। इसको जाननेवाला यम निर्ममता के साथ अपना कार्य करता रहेगा। उसके पास दाक्षिण्य की आशा करना उचित है क्या ? वह वृथा भी है। [वेदान्त दर्शन के अनुसार जीवात्मा परमात्मा (या परमात्मा के अंश) होने के कारण अमर हैं। जीवात्मा पाप-पुण्य के प्रारब्ध के अनुसार देह धारण करते हैं और जीव बनते हैं। जीव का अर्थ ही कर्मफलानुसार सुख-दुख का अनुभव करना है। अनुभव पूरा होते ही जीव को मरना पड़ता है और जीवात्मा को दूसरी देह लेनी पड़ती है। यह यम का काम है। वह इसमें कोई दाक्षिण्य या दया नहीं दिखाता]। ११४०

❀ पॆरुवदन् मुन्नुयिर् पिरिदल् काण्डियाल्
मरुवरु कऱ्पिनिल् वैयम् यावैयुम्
अरुपदि नायिर माण्डु माण्डवन्
इरुवदु कण्डवऱ् किरङ्गल् वेण्डुमो 1141

पॆरुवतन् मुन्–ब्याने से पहले ही; उयिर् पिरितल्–प्राण का चला जाना; काण्टि–देखते हैं (आप); मरु अरु–निर्दोष; कऱ्पितिल्–शिक्षा से; वैयम् यावैयुम्–सभी लोकों का; अरुपतिनायिरम् आण्टुम्–साठ सहस्र वर्ष; आण्टवन्–पालन (जिन्होंने) किया, उनका; इरुवतु–मरण; कण्टु–जानकर; अवऱ्कु–उनके लिए; इरङ्कल् वेण्टुमो–खेद करना चाहिए क्या। ११४१

(वसिष्ठजी आगे बोले।) श्रीराम आप देखते हैं कि कितने ही जीव जन्म लेने से पहले ही मर जाते हैं। उस स्थिति में आपके पिता निर्दोष ज्ञान के साठ सहस्र वर्ष लोकपालन करते हुए जीवित रहे। उनकी मृत्यु को लेकर दुख करना भी आवश्यक है क्या ? । ११४१

शीलमुन् दरुममुम् जिदैविल् शॅय्हैयाय्
शूलमुन् दिहिरियुम् जॉल्लुन् दाङ्गिय
मूलम्वन् दुदविय मूवर्क् कायितुम्
कालमॅन् ड्रॉरुवलै कडक्क लाहुमो 1142

चीलमुम्–शील; तरुममुम्–धर्मपरायणता; चितैवु इल्–अक्षुण्ण; चॅय्कैयाय्–कर्म करनेवाले; मूलम् वनतु–आदि परब्रह्म से प्रकट होकर; उतविय–(सृष्टि का) हित करनेवाले; चूलमुम् तिकिरियुम् चॉल्लुम् ताङ्किय–शूल, चक्र और वाक् के पति (शिव, विष्णु और विरंचि); मूवर्क्कु आयितुम्–तीनों के लिए भी; कालम् ॲन्नुर ऑरु वलै–काल-जाल; कटक्कल् आकुमो–काटना हो सकता है क्या। ११४२

शील और धर्मवान और अक्षय आचारनिष्ठ श्रीराम ! आदि परब्रह्म से तीन रूप लेकर जो वाक्पति ब्रह्माजी, चक्रपति श्रीविष्णु और शूलपति परमेश्वर सृष्टि, स्थिति, संहार का हित-कार्य करते रहे हैं, उनके लिए भी काल-जाल काटना सम्भव है क्या ? । ११४२

कण्मुदऱ् काट्चिय करैयिलादन, उण्मुदऱ् पॉरुट्कॅला मूऱ्ऱ मावन
मण्मुदऱ् पूदमु मायु मॅन्ऱपो, दॅण्मुद लुयिर्क्कॅला मियम्ब वेण्डुमो 1143

कण् मुतल् काट्चिय–दृष्टि आदि इन्द्रियगोचर; करै इलातन–असंख्यक; उळ् मुतल पॉरुट्कु ॲल्लाम्–अण्डों के अन्तर्गत रहनेवाले सभी के लिए; ऊऱ्ऱम् आवन–आधारभूत रहनेवाले; मण् मुतल् पूतमुम्–पृथ्वी आदि (पाँच) भूत; मायुम् ॲन्ऱ पोतु–मिट जायँगे तो; ॲण् मुतल्–निर्धारित अवधि वाले; उयिर्क्कु ॲल्लाम्–सभी जीवों की बात; इयम्पवेण्टुमो–कहनी है क्या। ११४३

दृष्टि आदि इंद्रिय-गोचर होनेवाली सारी सृष्टि के आधारतत्व पृथ्वी आदि पाँच भूत हैं। उनका भी नाश हो जाता है। फिर जीवराशियाँ मिट जायँगी, यह भी समझाकर कहने की बात है ? । ११४३

पुण्णिय नरुनॅयिऱ् पॉरुविल् कालमाम्
तिण्णिय तिरियिनिल् विदियॅन् ड्रीयिनिल्
ॲण्णिय विळक्कवै यिरण्डु मॅञ्जिनाल्
अण्णले वीवदऱ् कैयम् यावदो 1144

अण्णले–महिमावान; पुण्णियम्–पुण्य रूपी; नऱु नॅय्यिल्–अच्छे घी से; पॉरुवु इल्–अनुपम; कालम् आम्–काल रूपी; तिण्णिय तिरियिनिल्–सुदृढ़ वर्तिका से; विति ॲन्न् तीयिनिल्–और विधि की आग से; ॲण्णिय–प्रकट (जलनेवाला); विळक्कु–दीपक; अवै इरण्टुम् ॲञ्चिनाल्–वे दोनों खतम हो जायें तो; वीवतऱ्कु–गुल हो जायगा, इसमें; ऐयम् यावतो–सन्देह क्या है। ११४४

महिमावान ! पुण्य घी है; अनुपम काल सुदृढ़ वर्तिका है; और कर्मविधि आग है। इनके सहारे जलनेवाला दीप है प्राण। घृत और वर्तिका जल जायगी तो दीप बुझ जायगा —इसमें क्या शक है ? । ११४४

इव्वुल हत्तिनु मिडरु ळेहिडन्, दव्वुल हत्तरु नरहि लाळ्न्दुतम्
वॆव्विनै तुय्प्पन विरिन्द योनिहळ्, अॆव्वुल हिर्चॆलु मॆन्न लाहुमो 1145

इ उलकत्तितुम्–इह में भी; इटर् उळ्ळे किटन्तु–संकटमग्न रहकर; अ उलकत्तु–परलोक में; अरु नरकिल् आळ्न्तु–कठोर नरक में डूबे रहकर; तम् वॆम् विनै तुय्प्पन–अपने भयंकर कर्म भोगनेवाले; विरिन्त योनिकळ्–विविध प्रकार के जीव; अॆव् उलकिल् चॆल्लुम्–कौन से लोक में जायँगे; अॆन्नल् आकुमो–यह कहना साध्य है क्या। ११४५

जीव विविध योनियों में जन्म लेकर इस लोक में भी संकट का अनुभव करते हैं। परलोक में भी नरक में दुख भोगते हैं। वे किस लोक में जायँगे —यह कहना भी साध्य है क्या ? । ११४५

उण्डुहो लिदुवल दुदविनी शॆय्व, दॆण्डहु कुणत्तिनाय् तादै यॆन्ऱलाल्
पुण्डरि हत्तनि मुदर्कुम् बोक्करुम्, विण्डुवि नुलहिडै विळङ्गि नानरो 1146

अॆण् तकु कुणत्तिताय्–स्मरणीय गुण वाले; तातै अॆन्ऱलाल्–आपके पिता हैं, इससे; पुण्टरिकम् तनि मुतर्कुम्–कमलासन, आदिपुरुष, ब्रह्मा के लिए भी; पोक्कु अरुम्–अगम; विण्टुविन् उलकिटै–श्रीविष्णुलोक में; विळङ्कितान्–विराजमान हैं; इतु अलतु–इसके सिवा; नी चॆय्वतु उतवि–आपकी करने योग्य सहायता; उण्टु कॊल्–है क्या। ११४६

स्मरणीय ऊँचे गुणों वाले ! आपके पिता होने के नाते चक्रवर्ती दशरथ कमलासन ब्रह्मा के लोक के भी ऊपर के वैकुण्ठधाम, श्रीविष्णुलोक में विराजमान हो गये हैं। इससे बढ़कर आप उनका क्या उपकार कर सकेंगे ? । ११४६

❀ ऐयनी यादॊन्ऱु मवलिप् पायलै
उय्दिऱ मवर्किनि यिदनि नूङ्गुण्डो
शॆय्वन वरन्मुऱै तिरुत्तिच् चेन्दनिन्
कैयिना लॊळ्क्कुदि कडनॆ लामॆन्ऱान् 1147

ऐय–आर्य; नी यातु ऒन्ऱुम्–आप कोई भी; अवलिप्पाय् अल्लै–चिन्ता न करें; चॆय्वन–कर्तव्य (संस्कार); वरल् मुऱै तिरुत्ति–यथाविधि पूरा करके; चेन्तनिन् कैयिताल्–अपने लाल हाथों से; कटन् अॆल्लाम् ऒळ्क्कुति—उदक-तर्पण आदि कर दीजिए; अवर्कु–उनको; उय् तिऱम्–सद्गति में पहुँचाने के लिए; इतनिन् ऊङ्कु उण्टो–इससे बढ़कर कुछ है क्या; अॆन्ऱान्–कहा। ११४७

प्रभु ! आप अब कोई चिन्ता न करें। मृत पिता का उदकसंस्कार आदि जो करना है, उसे यथाविधि अपने श्रेष्ठ सुन्दर हाथों से करें। उनको सद्गति दिलाने के लिए इसके सिवा और कोई उपाय क्या है ? । ११४७

विण्णिऩ्नीर् मॊक्कुहळिऩ् विळियुम् याक्कैयै
ऎण्णिऩी यळुङ्गु लिळुदॆप् पालदाल्
कण्णिऩी रुहुत्तलिऱ् कण्ड दिल्लैपोय्
मण्णुनी रुहुत्तिनिऩ् मलर्क्कै यालॆऩ्ऱाऩ् 1148

विण्णिऩ् नीर् मॊक्कुळिऩ्–आकाश से गिरनेवाले जल के बुलबुले के समान; विळियुम्–नश्वर; याक्कैयै ऎण्णिऩ्–शरीर को सोचें तो; नी अळुङ्कुतल्–आपका रोना; इळुतै पालतु–नासमझी है; कण्णिऩ् नीर् उकुत्तलिल्–अश्रु बहाने से; कण्टतु इल्लै–प्राप्य कुछ नहीं है; पोय्–जाकर; निऩ् मलर् कैयाल्–आपके कमल-कर से; मण्णुम् नीर् उकुत्ति—उदक-तर्पण कीजिए। ११४८

मेघ से गिरनेवाले जल के बुलबुले के समान है नश्वर शरीर। उसकी बात सोचें तो आपका दुख करना नासमझी है! और अश्रु बहाने से दिखाई देनेवाला (मिलनेवाला) लाभ भी क्या है? इसलिए आप उठिए। जाकर अपने कमल-करों से उदक छोड़कर तर्पण कीजिए। —वसिष्ठजी ने अपनी बात समाप्त की। ११४८

ऎऩ्ऱपि ऩॆऩ्दलै येन्दि वेन्दरुम्, पॊऩ्ऱिणिऩ् दऩ्ऩशडैप् पुऩिद ऩोडुम्बोय्च्
चॆऩ्ऱऩर् शॆऱिदिरैप् पुऩलिऱ् चॆय्हॆऩ, निऩ्ऱऩ ऩिरामऩु ऩॆऱियै नोक्किऩाऩ् 1149

ऎऩ्ऱ पिऩ्–कहने के बाद; वेन्तरुम्–राजा लोग भी; एन्तलै एन्ति–प्रभु को सहारा देकर; पॊऩ् तिणिन्त अऩ्ऩ चटै–घनी स्वर्णलसित-सी जटाधारी; पुऩिततॊटुम्–पवित्र मुनिवर के साथ; पोय्–जाकर; चॆऱि तिरै पुऩलिल्–लहरों से पूर्ण जल-घाट पर; चॆऩ्ऱऩर्–गये; चॆय्क ऎऩ–कीजिए कहने पर; निऩ्ऱऩऩ् इरामऩुम्–उनके वश में रहे श्रीराम ने; नॆऱियै नोक्किऩाऩ्–अनुक्रम पर ध्यान दिया। ११४६

इनके कहने के बाद श्रीराम राजाओं का सहारा लेकर स्वर्णिम जटाधारी वसिष्ठजी के साथ जल-घाट पर पधारे। सबकी अनुमति लेकर उनके वश में होकर श्रीराम आवश्यक संस्कार करने लगे। धर्म-गति का उन्होंने आदर किया। ११४९

*पुक्कऩऩ् पुऩलिडै मुळुहिप् पोन्दऩऩ्
तक्कनल् मऱैयवऩ् शडङ्गु काट्टत्ताऩ्
मुक्कैनीर् विदियदु मुऱैयि नीन्दऩऩ्
ऒक्कनिऩ् ऱुयिर्दॊऱु मुणर्वु नल्हुवाऩ् 1150

उयिर् तॊऱुम्–हर जीव में; ऒक्क निऩ्ऱु–समान रूप से स्थित रहकर; उणर्वु नल्कुवाऩ्–ज्ञान देनेवाले भगवान; पुऩलिटै पुक्कऩऩ्–जल में उतरकर; मुळुकि पोन्तऩऩ्–स्नान करके तीर पर आये; तक्क नल् मऱैयवऩ्–योग्य वेदवित वसिष्ठ के; चटङ्कु काट्ट–संस्कार बतलाते; ताऩ्–आप; मु कै नीर्—तीन-तीन बार जल छोड़ने की; विति अतु मुऱैयिऩ्–विधि के अनुसार; ईन्तऩऩ्—उदक-क्रिया की। ११५०

सभी जीवों के अन्दर समभाव से रहकर ज्ञान देनेवाले भगवान के अवतार श्रीराम जल में घुसकर स्नान करके तीर पर आये। फिर वेद-शास्त्र के ज्ञानी श्रीराम ने श्री वसिष्ठजी के निर्देश में तीन-तीन बार उदक देने की विधि के अनुसार पितृओं के लिए मन्त्र के साथ उदक-दान देकर तर्पणक्रिया की। ११५०

❀ आऩवऩ् शॅय्हडऩ् पिऱवु माऱ्ऱिप्पिऩ्
मातमऩ् दिरत्तवर् मऩ्ऩर् मादवर्
एऩैयर् पिऱर्हळुम् सुऱ्ऱ वेहिऩऩ्
शाऩहि यिरुन्दवच् चालै यॅय्दिऩाऩ् 1151

आऩवऩ्–कर्मकर्ता वे; चॅय् कटऩ् पिऱवुम् आऱ्ऱि–अन्य संस्कार भी पूरा करके; पिऩ्–बाद; मातम् मऩ्तिरत्तवर्–मान्य मन्त्रीगण; मऩ्ऩर्–राजा; मा तवर्–श्रेष्ठ तपस्वी; एऩैयर् पिऱर्कळुम्–अन्य लोग; चुऱ्ऱ–(उनसे) घिरे जाकर; एकिऩऩ्–चले; चाऩकि इरुन्त–जहाँ जानकी रहीं; अ चालै अॅय्तिऩाऩ्–उस पर्णशाला में पहुँचे। ११५१

उदकक्रिया करने के बाद योग्य अन्य संस्कार भी पूरा किया। तदनंतर श्रीराम मान्य मन्त्रीगण, महान तपस्वियों, राजाओं और अन्य लोगों के साथ पर्णशाला में आये, जहाँ जानकीजी थीं। ११५१

❀ अॅय्दिय वेलैयिऱ् ऱमिय ळॅय्दिय
तैयलै नोक्कियच् चालै नोक्किऩाऩ्
कैहळिऱ् कण्मलर् पुडैत्तुक् काऩ्मिशै
ऐयऩप् परदऩ्वीऴ्न्दु दरऱ्ऱि ऩाऩरो 1152

अॅय्तिय वेलैयिल्–जब पहुँचे तब; ऐयऩ् अ परतऩ्–आर्य भरत ने; तमियळ् अॅय्तिय तैयलै–एकाकिनी आई उस देवी को; नोक्कि–देखकर; अ चालै नोक्किऩाऩ्–उस पर्णशाला पर भी दृष्टि डाली; कण् मलर् कैकळिल् पुटैत्तु–आँखों रूपी कमलों को हाथ से बन्द कर; काल् मिचै विऴुन्तु–उनके पैरों पर गिरकर; अरऱ्ऱिऩाऩ्–विलाप किया। ११५२

जब सब उधर आये, तब भरत ने सीताजी को देखा। उनका एकाकीपन और उनका वासस्थान, उस कुटीर को देखकर उनका दुख उमड़ आया— वे अपनी आँखों रूपी कमलपुष्पों को अपने हाथों से बन्द करके सीताजी के पैरों पर गिरकर रोने और विलाप करने लगे। ११५२

वॅन्दुयर् तॊडर्न्दॅऴ विम्मि विम्मिनीर्
उन्दिय निरन्दर मूऱ्ऱु माऱ्ऱिल
शिन्दिय कुरुदियच् चॅम्मल् शेन्दकण्
इन्दियङ् गळिलॅऱि कडलुण् डॅऩ्ऩवे 1153

वॅम् तुयर् तॉटर्न्तु ॲळ्–कठोर दुख के लगातार उमड़ते; अ चॅम्मल्–उन भरत की; चेन्त कण्–लाल बनी आँखों ने; विम्मि विम्मि–रो-रोकर; इन्तियङ्कळिल्–दृगिन्द्रियों में; ॲरि कटल् उण्टु ॲन्न–तरंगपूर्ण समुद्र है, ऐसा; नीर् ऊऱ्ऱु माऱ्ऱिल–जल बहाना न रोका; निरन्तरम् उन्तिय–निरन्तर जलमोचन किया; कुरुति चिन्तिय–रक्त भी ढलकाया। ११५३

भरत का दुख उत्तरोत्तर बढ़ता गया। उनकी आँखें अधिक लाल हो गयीं। आँखों में भी समुद्र है क्या? यह संशय उत्पन्न करते हुए उनकी आँखों से अश्रुजल अत्यधिक बहने लगा। खून भी गिरने लगा। ११५३

❀ अन्नॅंडुन् दुयरुऱ मरिय वीरनै
तन्नॅंडुन् दडक्कैया लिरामन् ऱाङ्गिनान्
नन्नॅंडुङ् गून्दलै नोक्कि नायहन्
ॲन्नॅंडुम् बिरिविनाऱ् ऱुञ्जि नानॅन्ऱान् 1154

अ नॅंटु तुयर् उऱुम्–ऐसे अत्यधिक दुख में पड़े; अरिय वीरनै–श्रेष्ठ वीर भरत को; इरामन्–श्रीराम ने; तन् नॅंटु तट कैयाल्–अपने दीर्घ विशाल हाथों से; ताङ्किनान्–सम्हाला; नल् नॅंटु कून्तलै–अपनी दीर्घकेशिनी सीता को; नोक्कि–देखकर; नायकन्–चक्रवर्ती; ॲन् नॅंटुम् पिरिविनाल्–मेरे दीर्घ वियोग से; तुञ्चिनान्–दिवंगत हो गये; ॲन्ऱान्–कहा। ११५४

श्रीराम ने उस तरह दुखपीड़ित भरत को अपने दीर्घ और विशाल हाथों से उठाया और सहारा दिया। फिर सुन्दर केशिनी अपनी सीतादेवी को श्रीराम ने समाचार दिया कि चक्रवर्ती मेरे लम्बे वियोग को न सह सकने के कारण दिवंगत हो गये। ११५४

❀ तुण्णॅनु नॅञ्जिन डुळङ्गि नाडुणैक्
कण्णॅनु नॅडुङ्गडल् कलुळि कान्ऱिड
मण्णॅनुञ् जॅविलिमेल् वैत्त कैयिनाळ्
पण्णॅनुङ् गिळवियाऱ् पन्नि येङ्गिनाळ् 1155

तुण् ॲनुम् नॅञ्चिनळ्–दहल उठा मन वाली; तुळङ्किनाळ्–भीर कर; तुणै कण् ॲनुम्–द्वय अक्ष रूपी; नॅंटु कटल्–विशाल समुद्र; कलुळि कान्ऱिट–आँसू बरसाये रहे, तब; मण् ॲनुम्–भूमि रूपी; चॅविलि मेल्–दाई पर; वैत्त कैयिनाळ्–हाथ रखकर; पण् ॲनुम् किळवियाल्–संगीत-मधुर शब्दों में; पन्नि–विविध बातें कहते हुए; एङ्किनाळ्–रोने लगीं। ११५५

अपने श्वसुर की मृत्यु का समाचार सुनकर जानकीजी दलक उठीं। काँपते हुए वे अपने अक्षद्वय रूपी समुद्र से अश्रुजल बहाने लगीं। भूमि रूपी धाई पर अपने हाथ टेककर संगीत-मधुर शब्दों में विलाप करती हुई रोईं। ११५५

❀ कन्नहु तिरळ्पुयक् कणवन् पिन्शॅल
नन्नह रौत्तदु नडन्द कानमुम्
मन्नवन् रुञ्जिन नॅन्र् मार्र्त्ताल्
अन्नमुन् दुयर्क्कड लडिवैत् ताळरो 1156

कल् नकु–पर्वत की हँसी उड़ानेवाले; तिरळ् पुयम्–पुष्ट कन्धों वाले; कणवन् पिन् चॅल–पति के पीछे जाने से; नटन्त कानमुम्–जिसमें पैदल चलीं, वह वन भी; नल् नकर् औत्ततु–अच्छा अयोध्या नगर-सा बना था; मन्नवन् तुञ्चिनान् ॲन्र् मार्र्त्ताल्–चक्रवर्ती मर गये, इस समाचार से; अन्नमुम्–हंसिनी सीताजी भी; तुयर् कटल् अटि वैत्ताळ्–दुख-सागर में डग देने लगीं। ११५६

सीताजी पर्वत की हंसी उड़ानेवाले सुदृढ़ कन्धों से शोभित श्रीराम के पीछे वन में गयीं, तब वन उन्हें अयोध्या के अच्छे नगर के समान सुखावह रहा। उन्हें तब कोई दुख नहीं हुआ। पर अब चक्रवर्ती की मृत्यु का समाचार सुनकर उन्हें दुख का अनुभव होने लगा। हंसिनी-सी वे दुखसागर में पैर रखने लगीं। ११५६

❀ आयव डन्नैनेर्न् दङ्गै येन्दिनर्
तायरिन् मुनिवर्तन् दरुमप् पन्नियर्
तूयनी राट्टिनार् तुयर नीक्किनार्
नायहर् चेर्त्तिनार् नवैयि नीङ्गिनार् 1157

आयवळ् तन्नै–वैसा दुख-मग्न सीताजी को; नवैयिन् नीङ्किनार्–दोषहीन; मुनिवर् तम् तरुमम् पन्नियर्–मुनिपत्नियों ने; तायरिन्–माताओं के समान; नेर्न्तु–पास आकर; अम् कै एन्तिनर्–सुन्दर हाथों से सम्हाल लेते हुए; तूय नीर् आट्टिनार्–गंगा के पुनीत जल में स्नान कराया; तुयरम् नीक्किनार्–दुख दूर करके; नायकन् चेर्त्तिनार्–उनके नायक के पास पहुँचा दिया। ११५७

तब निर्मल मुनिपत्नियों ने दुखिनी सीताजी के पास आकर मातृवत उन्हें सम्हाला। वे उनको गंगाजी में ले जाकर स्नान करा लायीं। आश्वासन देकर उनका दुख दूर किया। उन्होंने उनको श्रीराम के पास पहुँचाया। ११५७

❀ तेन्ररुन् दॅरियलच् चॅम्म नाल्वरै
ईन्रवर् मूवरो डिरुमै नोक्कुरुम्
शान्रवर् कुळात्तोडुन् दरुम नोक्किय
तोन्रल्पार् चुमन्दिरन् रौळुदु तोन्रिनान् 1158

तेन् तरुम् तॅरियल्–शहद ढलकानेवाली मालाधारी; अ चॅम्मल् नाल्वरै–उन कुमार चारों के पास; ईन्रवर् मूवरोटु–उनकी तीन जननियों को और; इरुमै

नोक्कु उरुम्—जन्म-मरण सम्बन्धी विचार करनेवाले; चान्ऱवर् कुळात्तोटुम्—बड़े-बूढ़ों को साथ लेकर; चुमन्तिरन्—सुमन्त्र; तरुमम् नोक्किय–धर्मोन्मुख; तोन्ऱल् पाल्–पुरुषोत्तम श्रीराम के पास; तॉळुतु–नमन करते हुए; तोन्ऱितान्–आये। ११५८

तब शहद ढलकानेवाली मालाधारी उन कुमारों के पास सुमन्त्र तीनों माताओं और जन्म-मरण के स्वस्थ अन्वेषण करनेवाले जाने-माने वृद्ध लोगों को साथ लेकर आये। वे धर्मपरायण श्रीराम को नमस्कार करते आये। ११५८

❀ ऍन्दै याण्डैया नियम्बु वीरॅना, वन्द तायर्दम् वयङ्गु शेवडिच्
चिन्दि निन्ऱनन् शेन्त कण्णिनीर्, मुन्दै नान्मुहत् तवर्कु मुन्दैयान् 1159

मुन्तै–सृष्टि के आदिदेव; नान्मुकत्तवरक्कुम्–चतुर्मुख के भी; मुन्तैयान्–अतीत आदि परब्रह्म श्रीराम; ऍन्तै याण्टैयान्–मेरे पिता कहाँ गये; इयम्पुवीर्–बताइए; ऍन्ना–ऐसा विलाप करते हुए; वन्त तायर् तम्–वहाँ आगत माताओं के; वयङ्कु चेवटि–शोभायमान लाल चरणों पर; चेन्त कण्णिन्–लाल आँखों से; नीर् चिन्ति–आँसू बहाकर; निन्ऱानन्–खड़े रहे। ११५९

सृष्टि के आदिदेव ब्रह्मा हैं। उनके भी मूल हैं श्रीराम। उन्होंने उधर आयी अपनी जननियों को देखते ही दुखाभिभूत होकर प्रश्न किया कि मेरे पिता अब कहाँ हैं? बताइए। उन्होंने अपनी आँखों से अश्रुकण ढलकाये, जो माताओं के चरणों पर गिरे। ११५९

❀ ताय रुन्दलैप् पॅय्दु तान्दळीइ, ऑय्वि रुन्बिना लुरऱ लोङ्गिनार्
आय शेनैयु मणङ्ग नार्हळुम्, तीयिल् वीळ्न्दुती मॅळ्हिर् ऱेम्बिनार् 1160

तायरुम्–माताएँ भी; तलै पॅय्तु–एक साथ मिलकर; ताम् तळीई–अलग-अलग आलिंगन करके; ओय्वु इल् तुन्पिताल्–अमिट दुख से; उरऱल् ओङ्किनार्–बहुत कलपीं; आय चेनैयुम्–वहाँ आई सेना के पुरुष और; अणङ्कु अन्नार्कळुम्–श्री-सम स्त्रियाँ भी; तीयिल् वीळ्न्तु–आग में पड़कर; ती मॅळ्किल्–पिघलनेवाले मोम के समान; तेम्पिनार्–दुख से सिसकती गलने लगीं। ११६०

माताएँ भी उनसे लगकर बढ़ते दुख से प्रभावित होकर रोईं, कलपीं। तब सेना के पुरुषों और श्री-सम स्त्रियों की हालत भी आग में पड़े मोम की-सी हो गई। वे सिसके और विगलित हुए। ११६०

❀ पिन्नर् वीररैप् पॅऱ्ऱ पॅऱ्ऱियप्
पॊन्न नार्हळुम् जनहन् पूवैयत्
तुन्नि मार्बुऱत् तॊडर्न्दु पुल्लिनार्
इन्नल् वेलैबुक् किळिन्द ळुङ्गिनार् 1161

पिन्नर्–बाद; वीररै पॅऱ्ऱ पॅऱ्ऱि–वीरों को जन्म देने का सौभाग्य-प्राप्त; अ पॊन् अन्नार्कळुम्—लक्ष्मी-समान उन माताओं ने; जनकन् पूवैयै तुन्नि–जनक-दुहिता के पास जाकर; तॊटर्न्तु मार्पु उऱ–क्रम से गले से लगा लिया; इन्नल्

वेलै पुक्कु–दुख-सागर में घुसकर; इऴिन्तु–मग्न होकर; अऴुङ्कित्तार्–उद्विग्न हुईं। ११६१

बाद वीरों की उन लक्ष्मी-सम जननियों ने जनकदुहिता के पास जाकर गले लगा लिया। वे मानो दुखसागर में घुसकर उसी में मग्न हुईं। वे वहुत शोकातुर हुईं। ११६१

❀ शेनै वीररुन् दिरुनन् मानहर्, मान मान्दरु मऱ्ऱु ळोर्हळुम्
एनै वेन्दरुम् पिऱरुम् यावरुम्, कोनै यॅय्दिनार् कुऱैयुञ् जिन्दैयार् 1162

चेनै वीररुम्–सेना के वीर भी; तिरुनल् मा नकर्–धनी और अच्छे बड़े नगर (अयोध्या) के; मानम् मान्तरुम्–जाने-माने बड़े लोग और; मऱ्ऱ उळ्ळोर्कळुम्–अन्य साधारण लोग और; एनै–और अन्य; वेन्तरुम्–राजा लोग; यावरुम्–सभी; कुऱैयुम् चिन्तैयार्–शोकविगलित मन वाले होकर; कोनै ॲय्तित्तार्–राजा राम के पास आये। ११६२

उसके बाद सेना के वीर, अयोध्या के मान्य उच्च स्थिति वाले लोग अन्य साधारण जनता, इनके अलावा राजा लोग सभी शोकातुर होकर श्रीराम के पास मातमपुर्सी के लिए आये। ११६२

❀ पडञ्जॅय् नाहणैप् पळ्ळि नीङ्गिनान्
इडञ्जॅय् तॉल्हुलत् तिऱैव नादलाल्
तडञ्जॅय् तेरिनान् ऱानु नीरिनाल्
कडञ्जॅय् वानॆनक् कडलिल् मूळ्हिनान् 1163

तटम् चॅय् तेरिनान्–विशाल एकचक्र-रथी; पटम् चॅय्–फन फैलानेवाले; नाकम् अणै पळ्ळि–शेष-शय्या; नीङ्कितान्–जो त्यागकर आये, वे; इटम् चॅय्–जिसको अपना जन्मस्थान माने; तॉल् कुलत्तु इऱैवन्–उस प्राचीन कुल के आदिपुरुष थे, इसलिए; तानुम् नीरिनाल् कटम् चॅय्वान्–स्वयं भी उदक-क्रिया करना चाहता हो जैसे; कटलिल् मूळ्कितान्–समुद्र में निमग्न हुआ। ११६३

तब सूर्य अस्त हो गये। एकचक्र-रथ के रथी सूर्य उस प्राचीन कुल के आदिपुरुष थे, जिसको फणी शेष की शय्या के त्यागी श्रीविष्णु भगवान ने अपना जन्म-स्थान पसन्द किया था। वे भी मानो उदकक्रिया करना चाहते थे और उसी विचार से पश्चिमी सागर में मग्न हुए। ११६३

❀ अन्ऱु तीर्न्दपिन् नरश वेलैयुम्, तुन्ऱु शॅञ्जडैत् तवरुञ् जुऱ्ऱमुम्
तन्ऱु णैत्तिरुत् तम्बि मारॊडुम्, शॆन्ऱु शूऴ्वाण् डिरुन्द शॆम्मऱान् 1164

अन्ऱु तीर्न्त पिन्–उस दिन के बीत जाने के बाद; अरचर् वेलैयुम्–सागर के समान रहे अधिक राजा लोग; तुन्ऱु चॅम् चटै–घनी लाल जटाधारी; तवरुम्–तपस्वी; चुऱ्ऱमुम्–बन्धु-बान्धव; तन् तुणै तिरु तम्पिमारॊटुम्–आपके (श्रीराम के) सहायक श्रेष्ठ अनुज सहोदरों के साथ; चॅन्ऱु चूऴ–आकर चारों ओर विराजे, तब; आण्टु इरुन्त–वहाँ रहनेवाले; चॅम्मल्–नायक श्रीराम। ११६४

वह दिन समाप्त हुआ। दूसरे दिन सवेरे, सागर के समान राजाओं की भीड़, घनी जटाधारी तपस्वी लोग, अन्य बन्धु-बान्धव सभी श्रीराम के पास आये और उनको घेरे बैठ गये। उनके साथ श्रीराम के सहायक तीनों छोटे भाई भी थे। तब प्रभु, । ११६४

❀ वरदन् रुज्जिनान् वैय माणैयाल्, शरद निन्नदे महुडन् दाङ्गलाय्
विरद वेडनी यॅन्गॅन् मेविन्नाय्, बरद कूरॅन्नाप् परिन्दु कूरिन्नान् 1165

परत–भरत; वरतन् तुञ्चितान्–वरद चक्रवर्ती चिरनिद्रा-मग्न हो गये; आणैयाल्–उनकी आज्ञा से; वैयम्–राज्य; चरतम् नित्तते–सच्चे अर्थ में तुम्हारा है; नी–तुम; मकुटम् ताङ्कलाय्–मुकुट धारण नहीं करते; विरतम् वेटम् मेवित्ताय्–तपस्वी का वेश धारण कर लिया; ॲन् कॉल्–यह क्या है; कूरु ॲन्ना–बताओ, ऐसा; परिन्तु कूरितान्–प्यार के साथ पूछा। ११६५

श्रीराम ने भरत से प्रश्न किया। भरत! वरद चक्रवर्ती चिर निद्रा में लीन हो गये। उनकी आज्ञा से राज्य निश्चित रूप से तुम्हारा हो गया। फिर मुकुट न पहनकर तुमने यह मुनि-वेश धारण कर रखा है, क्यों? बताओ तो। श्रीराम के स्वर में अत्यन्त प्रेम भरा था। ११६५

❀ ॲन्ऱ लुम्बदैत् तॅऴुन्दु कैतॊऴा, निन्रु तोन्ऱलै नॅडिदु नोक्किनी
अन्ऱि यावरे यरत्तु ळोरदिल्, पिन्रु वायॊला मॅन्नप् पेशुवान् 1166

ॲन्ऱलुम्–यह कहते ही; पतैत्तु ॲऴुन्तु–सकपकाकर उठे; तोन्ऱलै–प्रभु को; कै तॊऴा निन्ऱु–हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए खड़े होकर; नॅटितु नोक्कि–बहुत देर तक उनको देखते रहने के बाद; नी अन्ऱि–आपके सिवा; अऱत्तु उळ्ळोर्–धर्मरत रहनेवाले; यावर्–कौन हैं; अतिल्–उससे; पिन्ऱुवाय् कॉल्–बिछुड़ जायेंगे क्या; ॲन्ऩ–कहकर; पेचुवान्–आगे बोले। ११६६

यह सुनना था कि भरत सकपका गये। वे उठे और श्रीराम के सामने अंजलिबद्ध होकर खड़े होकर दीर्घ काल तक उनको निहारते रहे। बाद उन्होंने कहा— आपको छोड़कर अब धर्म में अडिग स्थित रहनेवाले कौन हैं? आप ही धर्ममार्ग से अलग हो जाएँगे क्या? । ११६६

मनक्कॊन् ऱादन वरत्ति निन्नैयुम्
निनक्कॊन् ऱानिलै निरुत्ति नेमियान्
तनैक्कॊन् ऱाडरुन् दनैय नादलाल्
ॲनक्कॊन् ऱादव मडुप्प दॅण्णिनाल् 1167

मनक्कु ऒन्ऱातन–मन को जो उचित नहीं लगते; वरत्तिन्–उन वरों द्वारा; निन्नैयुम्–आपको भी; निनक्कु ऒन्ऱात–आपके लिए अनुचित; निलै निरुत्ति–स्थिति में रखकर; नेमियान् तन्नै–चक्रवर्ती को भी; कॊन्ऱाळ्–मार चुकीं; तरुम्–जो उसका जनाया; तनयन् आतलाल्–पुत्र हूँ, इसलिए; ॲण्णिताल्–सोचें तो; ॲनक्कु अटुप्पतु–मेरी अर्हता; तवम् ऒन्ऱा–तप करने की है क्या। ११६७

मैं उसका तनय हूँ, जिसने मन को न भानेवाले वरों द्वारा आपको आपके लिए अनुचित इस स्थिति में रखा और चक्रवर्ती के प्राण हर लिये। ऐसा मैं, सोचने पर, तपार्ह भी हो सकता हूँ क्या ? ११६७

नोव दाहविव् वुलहै नोय्शॅय्द, पाव कारियिऱ् पिऱन्द पावियेन्
शाव दोर्हिलेन् ऱवञ्जॅय् वेनलेन्, याव दाहविप् पऴिनिन् ऱेरुवेन् 1168

इ उलकै–इस लोक भर को; नोवतु आक–दुख में डालते हुए; नोय् चॅय्त–बड़ी वेदना देनेवाली; पावकारियिल् पिऱन्त–पापकारिणो से उत्पन्न; पावियेन्–बड़ा पापी मैं; तवम् चॅय्वेन् अल्लेन्–तपस्या करने के अर्ह नहीं हूँ; चावतु ओर्किलेन्–मरने का साहस भी नहीं करता; इ पऴि निन्ऱु–इस अपयश से; यावतु आक एरुवेन्–कैसे तरूँगा। ११६८

मेरी जननी बड़ी पापकारिणी है, जिसने सारे लोक पर बड़ा सितम ढाया है। उनका पुत्र पापी मैं तप के लिए अर्ह नहीं बना। जान दे देने का साहस भी मुझमें नहीं रहता मालूम पड़ता है। इस स्थिति में इस विकट अपयश से कैसे तरूँगा ? । ११६८

निऱैयि नीङ्गिय महळिर् नीर्मैयुम्, पॉऱैयि नीङ्गिय तवमुम् पॉङ्गरुळ्
तुऱैयि नीङ्गिय वऱमुन् दॉल्लैयोर्, मुऱैयि नीङ्गिय वरशु मुन्दुमो 1169

निऱैयिन् नीङ्किय–पतिसेवा धर्म से विमुख; मकळिर् नीर्मैयुम्–स्त्रियों का स्त्रीत्व; पॉऱैयिन् नीङ्किय तवमुम्–क्षमा-वियुक्त तप; पॉङ्कु अरुळ् तुऱैयिन् नीङ्किय–वर्धनशील करुणा के मार्ग से अलग हुआ; अऱमुम्–धर्म और; तॉल्लैयोर् मुऱैयिन् नीङ्किय अरचुम्–पूर्वजों के क्रम से हटा शासन; मुन्तुमो–बढ़ सकते हैं क्या। ११६९

पातिव्रत्य से विमुख स्त्रियों का स्त्रीत्व, क्षमाहीन तप, वर्धनशील करुणा से रहित धर्म, पूर्वजों के स्थापित क्रम से छूटा शासन —यह सब उन्नति कर सकेंगे क्या ? ११६९

पिऱन्दु नीयुडैप् पिरिवि ऱॉल्पदम्
तुऱन्दु मादवन् दॉडङ्गु वायॅन्ऱाल्
मऱन्दु नीदियिऱ् ऱिऱम्बि वाळिऱ्कॉन्
ऱऱन्दिन् ऱानॅन यानः(ह) दाळ्वॅनो 1170

पिऱन्तु–प्रथम पुत्र के रूप में पैदा होकर; नी उटै(य)–आपके ही स्वत्व का; पिरिवु इल्–अभिन्न; तॉल् पतम् तुऱन्तु–परम्परागत राज-पदवी छोड़कर; मा तवम् तॉटङ्कुवाय् ऍन्ऱाल्–महान तपस्या आरम्भ कर देंगे तो; मऱन्तुम्–भूलकर भी; नीतियिल् तिऱम्पि–न्याय का उल्लंघन करके; अऱम्–धर्म को; वाळिल् कॉन्ऱु–तलवार से हतकर; तिन्ऱान्–भक्षण कर चुका; ऍन–ऐसा नाम पाकर; यान्–मैं; अ.ःतु–उसका; आळ्वॅनो–शासन करूँगा क्या। ११७०

आप ज्येष्ठ पुत्र पैदा हुए। यह राज्य आपके स्वत्व का है और आपसे अविभाज्य है। उसको छोड़कर आप महान तप के कार्य में प्रवृत्त हो जायेंगे तो मैं भूलकर भी, नीति और न्याय को ठुकराकर धर्म के तलवार द्वारा संहारक-भक्षक के रूप में राज्य करूँगा क्या ? । ११७०

तॉहैयि लन्बिन्ना लिऱैवन् ऱुञ्जनी, पुहैयुम् वॅञ्जुरम् पुहुदप् पुन्दियाल्
वहैयिल् वञ्जन्ना यरशु वव्वयान्, पहैव नेहॉला मिऱवु पार्क्किन्ऱेन् 1171

नी पुकैयुम् वॅम् चुरम् पुकुत–आप धुआँ निकालनेवाले भयंकर जंगल आये और; इऱैवन्–चक्रवर्ती; तॉकै इल् अन्पिन्नाल्–अपार प्रेम के कारण; तुञ्च–चिरनिद्रा में लीन हो गये; यान्–मैं; पुन्तियाल्–मन में; वकै इल् वञ्चन् आय्–वर्गीकरण करने में कठिन वंचना लेकर; अरचु वव्व–राज्य ग्रसने के लिए; इऱवु पार्ककिन्ऱेन्–मौका ताकनेवाला; पकैवन्ते कॉल्–शत्रु ही क्या। ११७१

आप भयंकर जंगल में, जहाँ धुआँ उठता रहता है, वास करें, चक्रवर्ती अपने अपार प्रेम के कारण आपका वियोग न सहकर अपने प्राण त्याग दें, ऐसे समय पर मैं मन में अतिक्रूर वंचना (जिसका वर्गीकरण ही कठिन है), लेकर आपका राज्य ग्रस लूँ तो मुझमें और मौके की ताक में रहनेवाले शत्रु में क्या भेद है ? क्या मैं ऐसा शत्रु हूँ ? । ११७१

❀ उन्दै तीमैयु मुलहु ऱादनोय्, तन्द तीविन्नैत् तायॅाय् तीमैयुम्
ॲन्दै नीङ्गमीण् डरशु शॅय्हॅन्नाच्, चिन्दै यावदुन् दॅरियक् कूऱिन्नान् 1172

उन्तै तीमैयुम्–आपके पिता की, की हुई हानि; उलकु–संसार को; उऱात नोय् तन्त–अभूतपूर्व रोग (कष्ट) देनेवाली; ती विन्नै ताय्–घोर पापिन मेरी माँ का; चॅय् तीमैयुम्–कृत अत्याचार; नीङ्क–दूर करने हेतु; ॲन्तै–हे तात; मीण्टु अरचु चॅय्क–लौट आकर राज्य करें; ॲन्ना–ऐसा; चिन्तै यावतुम् तॅरिय–अपना मन पूर्ण रूप से प्रकट करते हुए; कूऱिन्नान्–कहा। ११७२

आपके पिता ने जो सितम ढाया है और मेरी माता ने जो अभूतपूर्व कष्ट दुनिया को दिया है, उन दोनों के निवारणार्थ, पितृतुल्य आप आकर राज्य करें। —भरत ने अपना मन साफ़-साफ़ कह दिया। ११७२

❀ शॊऱ्ऱ वाशहत् तुणिवु णर्न्दपिन्, इऱ्ऱ दोविवन् मनमॅन् ऱॅण्णुवान्
वॅऱ्ऱि वीरयान् विळम्बक् केळॅन्ना, मुऱ्ऱ नोक्किनान् मॊऴिदन् मेयिन्नान् 1173

मुऱ्ऱ नोक्किनान्–सर्वज्ञ श्रीराम; चॊऱ्ऱ वाचकम् तुणिवु–उनके कथन की दृढ़ता; उणर्न्त पिन्–समझने के बाद; इवन् मनम् इऱ्ऱतो–इसका मन ऐसा रहा क्या; ॲन्ऱु ॲण्णुवान्–ऐसा सोचकर; वॅऱ्ऱि वीर–विजयी वीर; यान् विळम्प केळ्–मैं जो कहूँ, वह सुनो; ॲन्ना–कहकर; मॊऴितल् मेयिन्नान्–कहने लगे। ११७३

सर्वज्ञ श्रीराम ने भरत की बातें सुनीं और उनके पीछे की उनकी मानसिक दृढ़ता पहचानी। "ऐसा है इसका विचार", यह सोचकर उन्होंने

भरत से कहा— विजयी वीर ! मैं कुछ कहना चाहता हूँ। सुनो। वे यों बोले। ११७३

मुऱैयुम् वाय्मैयु मुयलु नीदियुम्, अऱैयु मेऩ्मैयो डऱमु मादियाम्
तुऱैयुळ् यावैयुज् जुरुदि नूल्विडा, इऱैव रेवला लियैव काण्डियाल् 1174

मुऱैयुम्–शील; वाय्मैयुम्–सत्य; मुयलुम् नीतियुम्–सब जो पाने के लिए प्रयत्न करते हैं, वे न्याय; अऱैयुम् मेऩ्मैयोटु–श्रेष्ठ कथित गौरव के साथ; अऱमुम् आति आम्–धर्म आदि; तुऱैयुळ् यावैयुम्–सन्मार्ग सभी; चुरुति नूल् विटा—वेद-शास्त्र को न टालनेवाले (उनके अनुसार चलनेवाले); इऱैवर् एवलाल्–राजा की आज्ञा से; इयैव–निर्धारित होते हैं; काण्टि–देखो। ११७४

सन्मार्ग, सत्य, अन्वेषित न्याय, प्रशंसा योग्य गौरव और धर्म ये सब वेद-शास्त्र सम्मत क्रमों के अनुगामी राजा की आज्ञा पर ही अवलम्बित रहते हैं। उनके वचन ही ये सब कुछ हैं। यह तुम जान लो। ११७४

परवु केळ्वियुम् पऴुदिन् ञाऩमुम्, विरवु शीलमुम् विऩैयिऩ् मेऩ्मैयुम्
उरवि लोय्दॊऴऱ् कुरिय देवरुम्, कुरव रेयॆऩप् पॆरिदु कोडियाल् 1175

उरम् विल्लोय्–सुदृढ़ धनुर्धर; परवु केळ्वियुम्–प्रशंसित शास्त्रज्ञान; पऴुतु इल् ञाऩमुम्–निर्दोष (प्राकृतिक) ज्ञान; विरवु चीलमुम्–सबसे मान्य शील; विऩैयिऩ् मेऩ्मैयुम्–कार्य की उत्कृष्टता; तॊऴऱ्कु उरिय तेवरुम्–वन्दनीय देवता; कुरवरे ॲऩ–गुरु लोग ही; पॆरितु कोटि–यह बात खूब जान लो। ११७५

सारयुक्त धनुर्धर ! प्रशंसा योग्य शास्त्राध्ययन से उत्पन्न ज्ञान, निर्मल प्रकृत ज्ञान, शील या सदाचार, कार्यों की उत्कृष्टता, वन्दनीय देवता लोग —सभी हमारे गुरु लोग ही हैं। (राजा, आचार्य, माता-पिता, ज्येष्ठ भ्राता —ये पाँचों 'गुरु' कहे जाते हैं।) इस तथ्य को खूब ध्यान में रखो। ११७५

अऩ्द नऱ्पॆरुङ् गुरव रारॆऩच्, चिन्दै तेर्वुऱत् तॆरिय नोक्किऩाल्
तन्दै तायरॆऩ् ड्रिवर्ह डामलाल्, ॲन्दै कूऱवे ऱॆवरु मिल्लैयाल् 1176

अऩ्त नल् पॆरुम् कुरवर्–(उनमें भी) वे अच्छे और मान्य गुरु; आर् ॲऩ–कौन हैं, ऐसा; चिन्तै तेर्वु उऱ–मन में सुलझाकर; तॆरिय नोक्किऩाल्–खूब सोचें तो; ॲन्तै–मेरे तात; तन्तै तायर्–पिता, माता; ॲऩ्ऱ इवर्कळ् ताम् अल्लाल्–इनके सिवा; कूऱ–कहने के लिए; वेऱु ॲवरुम् इल्लै–और कोई नहीं है। ११७६

उनमें भी सबसे अधिक मान्य कौन हैं ?' इस पर सुलझाकर विचार करो तो, हे मेरे तात ! पिता-माता के सिवा कोई नहीं हैं। ११७६

ताय्व रङ्गॊळत् तन्दै येवलाल्, मेय नङ्गुलत् तरुम मेविऩेऩ्
नीव रङ्गॊळत् तीर्द ऩेर्मैयो, आय्व रुम्बुलत् तऱिवु मेविऩाय् 1177

आय्वु अरुम् पुलत्तु—शोध-दुस्तर शास्त्रों के; अऱिवु–ज्ञान में; मेविऩाय्–बढ़े हुए; ताय् वरम् कॊळ्ळ–माता के वर प्राप्त करने पर; तन्तै एवलाल्–पिता

की आज्ञा से; मेय–हमारे योग्य; नम् कुलम् तरुमम्–हमारे कुल का धर्म; मेवितेन्–(मैंने) अपनाया; नी वरम् कोळ–तुम्हारे वर माँगने पर; तीर्तल्–उससे हटना; नीर्मैयो–उचित होगा क्या। ११७७

अन्वेषण योग्य शास्त्रों में चतुर विद्वान, भरत! माता ने वर लिया और पिता ने मानकर मुझे आज्ञा दी कि वन जाओ। यह पिता की आज्ञा मानना हमारे लिए परमोचित कुलधर्म-पालन है। यह विचारकर मैंने वह आज्ञा मान ली। अब तुम वर माँगो तो उसे टालूँ? वह उचित होगा क्या? । ११७७

❀ तन्नैय रायित्तार् तन्दै तायरै, वित्तैयि नल्लदो रिशैयै वेय्दलो
नित्तैद लोविडा नॆडिय वन्बळि, पुन्नैद लोवैया पुदल्व रादरात् 1178

ऐया–महिमावान; तन्नैयर् आयित्तार्–पुत्र जो हुए हैं; पुतल्वर् आतल्–उनका (सच्चे अर्थ में) पुत्र बनना; वित्तैयित्–अपने कृत्यों से; तन्तै तायरै–पिता-माता को; नल्लतु ओर् इचैयै वेय्तलो–अच्छा एक यश दिलाना; नित्तैतल् ओविटा–(या) अविस्मरणीय; नॆटिय वन् पळि–दीर्घ और प्रबल अपयश धारण कराना। ११७८

जो पुत्र पैदा होते हैं, वे सच्चे अर्थ में उस पद के पात्र कब होते हैं? अपने कृत्यों द्वारा जब पिता-माता को यश दिलाते हैं, तब? या जब अविस्मरणीय और दीर्घ व प्रबल अपयश जुटा देंगे तब? तुम विचारकर देखो। ११७८

इम्मै पॊय्युरैत् तिवरि यॆन्दैयार्, अम्मै वॆम्मैशेर् नरह माळयान्
कॊम्मै नन्निदिक् कुवैयिल् वैहिवाळ्, शॆम्मै शेर्निलत् तरशु शॆय्वदो 1179

इवरि–राज्य चाहकर; ऍन्तैयार्–मेरे पिता; इम्मै पॊय् उरैत्तु–यहाँ असत्यवादी बनकर; अम्मै–वहाँ (परलोक में); वॆम्मै चेर्–सन्तापयुक्त; नरकम् आळ–नरकवास करें; यान्–और मैं; कॊम्मै–समृद्ध; नल् निति कुवैयिल्–श्रेष्ठ निधि के ढेर में; वैकि–रहकर; वाळ्–जीवन बिताने योग्य; चॆम्मै चेर्–वैभवयुक्त; निलत्तु अरचु–भूमि का पालन; चॆय्वतो–करूँ क्या। ११७९

मानो कि मैं राज्य चाह लेता हूँ। तो राजा इस लोक में असत्यता के दोषी हो जायँगे और परलोक में भयंकर संतापक नरक के वासी हो जायँगे। ऐसा करते हुए क्या मैं समृद्ध सुख-भोग के साधनों के ढेर के मध्य जीवन दिला सकनेवाला भूमि-पालन अपनाऊँ? यह ठीक होगा? । ११७९

वरन्नि लुन्दैशॊन् मरबि ऩालुडैत्, तरणि नित्ननदॆन् ऱियॆन्द तन्मैयाल्
उरन्नि ऩीपिऱन् दुरिमै यादलाल्, अरशु नित्ननदे याळ्ह वॆन्ऩवे 1180

वरन् निल्–वरदान में स्थिर जो रहे; उन्तै चॊल् मरपिनाल्–उन तुम्हारे पिता

के वचन के अनुसार; उटै(य) तरणि–उनके स्वत्व की धरणी; निऩ्ऩतु ऎऩ्ऩु–तुम्हारी ही है; इयैऩ्त तऩ्मैयाल्–इस औचित्य के प्रकार से; नी उरत्तिल् पिऱन्तु–तुम बल के साथ पैदा होकर; उरिमै आतलाल्–अधिकार पा चुके, इसलिए; अरचु निऩ्ऩते–राज्य तुम्हारा ही है; आऴ्क–राज्य करो; ऎऩ्ऩवे–कहने पर। ११८०

तुम्हारे पिता वरदान के धर्म पर अचल रहे। ऐसे उनका दिया हुआ राज्य उनके वचन के अनुसार तुम्हारा है। यह औचित्य और तुम भी समर्थ पैदा हुए हो और अधिकारी बने हुए —यह तथ्य —दोनों के आधार पर भी राज्य तुम्हारा है। चलो शासन करो। —श्रीराम ने अपनी बात कही। ११८०

मुऩ्ऩर् वन्दुदित् तुलहम् मूऩ्ऱिलुम्, निऩ्ऩै यॊप्पिला नीपि ऱन्दपार्
ऎऩ्ऩ दाहिऩ्या निऩ्ऱु तन्दऩॆऩ्, मऩ्ऩ पोन्दुनी महुडञ् जूडॆऩा 1181

मुऩ्ऩर् वन्तु उतित्तु–मेरे पूर्व जन्म लेकर; उलकम् मूऩ्ऱिलुम्–तीनों लोकों में; निऩ्ऩै ऒप्पु इला–जो सानी नहीं रखते, वैसे आपकी; पिऱन्त पार्–जन्मसिद्ध भूमि; ऎऩ्ऩतु आकिऩ्–मेरी हो गई तो; इऩ्ऱु तन्तऩॆऩ्–अभी आपको दे देता हूँ; मऩ्ऩ–राजा; नी पोन्तु–आप जाकर; मकुटम् चूटु–मुकुट धारण कर लें; ऎऩा–कहकर। ११८१

भरत ने उत्तर में कहा— भाई आप मेरे ज्येष्ठ जनमे हैं। तीनों लोकों में आपके सदृश और कोई नहीं मिल सकते। इस राज्य पर आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। उस राज्य को आप मुझे दे रहे हैं, और अगर वह मेरा हो गया तो लीजिए, मैंने उसे आपके पास सौंप दिया। राजा ! चलिए आकर मुकुट-धारण कर लीजिए। ११८१

मलङ्गि वैयहम् वरुन्दि वैहनी, उलङ्गॊ डोळुनक् कुरुव शॆय्दियो
कलङ्गु ऱावणङ् गात्ति पोन्दॆऩाप्, पॊलङ्गु लावुताळ् पूण्डु वेण्डिऩाऩ् 1182

वैयकम्–पृथ्वी; मलङ्कि–आकुल; वरुन्ति–और उद्विग्न होकर; वैक–रहती है और; नी–आप; उलम् कॊळ् तोळ्–चट्टान-सम कन्धों वाले; उऩक्कु उरुव–अपने इच्छानुसार; चॆय्तियो–करते रहेंगे क्या; कलङ्कु उऱा वण्णम्–व्याकुल न हो, इस प्रकार; पोन्तु–लौट जाकर; कात्ति–रक्षा कीजिए; ऎऩा–ऐसा; पॊलम् कुलावु–सुन्दरता-लसे; ताळ् पूण्टु–पैर पकड़कर; वेण्टिऩाऩ्–प्रार्थना की। ११८२

आप इस बात पर ध्यान दीजिए। सारा संसार शोकातुर है। पीड़ित है। उस स्थिति में आप सबल, चट्टान-सम कन्धे वाले होकर अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करते रहेंगे ? यह उचित नहीं होगा। दुनिया संकट न करे, इस वास्ते आप लौट आकर राज्य का रक्षण कीजिए। —भरत ने श्रीराम के शोभायुक्त चरणों को पकड़ते हुए यह वचन कहा। ११८२

पचॆन्द शिन्दैनी परिविल् वैयमॆन्, वशञ्जॆय् दालदु मुऱैमै योवशैक्
कशॆन्द वॆन्दैया ररुळ वन्ऱुनान्, इशॆन्द वाण्डॆला मिन्ऱॆ डॆरुमो 1183

पचैन्त चिन्तै–(मेरे प्रति) प्रेमार्द्र-मन; नी–तुम; परिविल्–उस प्रेम के कारण; वैयम् ॲन् वचम् चैय्ताल्–राज्य को मेरे वश में करोगे तो; अतु मुऱैमैयो–वह उचित होगा क्या; वचैक्कु अचैन्त–अपयश से डरकर; ॲन्तैयार् अरुळ–मेरे पिता ने दिया; अन्ऱु–और उस दिन; नान् इचैन्त आण्टु ॲलाम्–मेरे द्वारा (वनवास के लिए) माने गये साल सभी; इन्ऱोटु एरुमो–आज ही समाप्त हो जायेंगे क्या। ११८३

श्रीराम ने समझाया— भरत तुम मेरे प्रति प्रेमार्द्र हो। उसी प्रेम के कारण तुम राज्य मुझे दे दोगे तो क्या वह धर्मसम्मत होगा ? अपयश से डरनेवाले पिता ने जब आज्ञा दी, तब मैंने वादा किया कि चौदह साल वन में व्यतीत करूँगा। तो क्या अब तुम्हारे कहने से चौदहों साल की अवधि इसी एक दिन में पूर्ण हो जायगी ? । ११८३

वाय्मै यॆन्नुमी दन्ऱि वैयहम्, तूय्मै वेऱुमुण् डॆन्ऱु शॊल्लुमो
तीमै तानदिऱ् ऱीर्द लन्ऱिये, आय्मॆय् याहवे ऱरैय लावदे 1184

वाय्मै ॲन्नुम् ईतु अन्ऱि–सत्य जो कहा जाता है, उसके सिवा; तूय्मै वेऱुम् उण्टु–पवित्र कोई और है; ॲन्ऱु–ऐसा; वैयकम् चॊल्लुमो–दुनिया मानेगी क्या; अतिल् तीर्तल्–उससे हटना; तीमै तान्–हानिकर ही है; अन्ऱि–इसके अलावा; वेऱु अरैयल् आवते–किसी प्रकार से कहा जा सकता है क्या; मॆय्याक आय्–ईमानदारी से विचारकर देखो। ११८४

संसार में सत्य को छोड़कर पवित्र कहलानेवाला क्या धर्म है ? दुनिया किसको पवित्र मानती है ? उससे हटना अवश्य हानिकारक होगा। इसके सिवा क्या कहा जाय ? तुम ही खूब सोचकर देखो। ११८४

❀ ॲन्दै येववाण् डेऴॊ डेऴॆना, वन्द कालनान् वनत्तुळ् वैहनी
तन्द पारहन् दन्तै मॆय्म्मैयाल्, अन्द नाळॆला माळॆन् ऩाणैयाल् 1185

ॲन्तै एव–मेरे पिता ने आज्ञा की; एऴॊटु एऴ् ॲना–सात और सात, चौदह; वन्त आण्टु कालम्–साल का काल; नान् वनत्तुळ् वैक–मैं वन में रहूँ और; नी–तुम; अन्त नाळ् ॲलाम्–वह सारा काल; तन्त पार् अकम् तन्तै–पितृदत्त राज्य को; ॲन् आणैयाल्–मेरी आज्ञा से; मॆय्म्मैयाल् आळ्–सत्य ही पालन करो। ११८५

हमारे पिता की आज्ञा है कि मैं सात और सात मिलाने से प्राप्त चौदह संख्या के साल वन में व्यतीत करूँ। और तुम उस अवधि भर में राज्य का शासन करो। अब वैसे प्राप्त राज्य को, मेरी भी आज्ञा है, सच्चे रूप से शासन करो। ११८५

मत्तव तिरुक्क वेयु मणियणि महुडञ् जूडु
हॆन्तया तियैन्द दन्ना नेयदु मरुक्क वञ्जि
अन्नदु निनैन्दु नीयॆन् नाणैयै मरुक्क लामो
शॊन्नदु शॆय्दि यैय तुयरुऴन् दयर लॆन्ऱान् 1186

ऐय–मेरे प्रिय; मन्नवन् इरुक्कवेयुम्–चक्रवर्ती के जीवित रहते हुए भी; मणि अणि मकुटम् चूटुक ऍन्न–मणिमण्डित मुकुट धारण करो, कहने पर; यान् इयैन्ततु–मेरा सम्मत होना; अन्नान् एयतु–उनकी आज्ञा; मरुक्क अञ्चि–लाँघने से डरकर, था; नी ऍन् आणैयै–तुम मेरी आज्ञा को; मरुक्कल् आमो–टालो, यह उचित होगा क्या; अन्नतु निनैन्तु–उसको सोचकर; चॊन्नतु चॆय्ति–मेरा कहा मानो; तुयर् उऴन्तु अयरेल्—दुख-पीड़ित होकर शिथिल मत होओ; ऍन्ऱान्–कहा। ११८६

प्रिय भाई ! जब राजा जीवित रहे तब भी मैंने, उनके 'मुकुट धारण कर लो' कहने पर अपनी सम्मति दिला दी। वह इसलिए कि मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने से डरता था। इस स्थिति में तुम मेरी आज्ञा मानने से इनकार करोगे क्या ? इनकार करना उचित होगा क्या ? यह सोचकर मेरा कहा मान लो। व्यर्थ दुख करके शिथिल मत होओ। ११८६

ऒऴियो नितैय वॆल्ला मुरैत्तलु मुरैक्कलुऱ्ऱ
पळ्ळनीर् वॆळ्ळ मन्न बरदनै विलक्किप् पण्डु
तॆळ्ळिय कुलत्तोर् शॆय्है शिक्करच् चिन्दै नोक्कि
वळ्ळियोय् केट्टि यॆन्ना वशिट्टमा मुनिवन् कूऱुम् 1187

ऒऴियोन्–देव श्रीराम के; इतैय ऍल्लाम् उरैत्तलुम्–यह सब कहने पर; उरैक्कल् उऱ्ऱ–उत्तर देने को उद्यत; पळ्ळम् नीर् वॆळ्ळम् अन्न–गड्ढे में बहनेवाली जलधारा के समान गतिशील; परततै–भरत को; वचिट्ट मा मुनिवन्–वसिष्ठ मुनिवर ने; विलक्कि–रोककर; वळ्ळियोय्–उदार प्रभु; पण्टु–पूर्व के; तॆळ्ळिय कुलत्तोर्–शुद्ध विचार वाले, आपके कुल के; चॆय्कै–कृत्यों को; चिक्कु अऱ–(सुलझाकर) उलझन हटाकर; चिन्तै नोक्कि–मन में सोचकर; केट्टि ऍन्ना–सुनो, कहकर; कूऱुम्–आगे कहने लगे। ११८७

द्युतिमान श्रीराम ने जब यह सब क्रम समझाते हुए अपना कथन पूरा किया, तब भरत इतनी तीव्रगति में उत्तर देने को उद्यत हो गया, जितनी तेज़ी से गड्ढे की ओर जल बहता है। तब महर्षि वसिष्ठजी ने उनको रोका। वे स्वयं राम से बोले। उदार स्वभाव वाले ! आपके कुल के पूर्वज सुलझे हुए विचार वाले थे। उनके कृत्यों को, बिना किसी और बात से मिश्रित करते हुए साफ़ रीति से सोचकर देखिये और मेरी बात सुनिए। ११८७

किळरहन् पुनलिनिन् ऱरियोर् केळ्ळाय्
इळैयॆनुन् दिरुविनै येन्दि नानरो

उळैवरुम् बॅरुमैयो रॅयिट्रिऱ् नुट्पुरै
वळरिळम् बिऱैयिडै मरुविऱ् ऱोन्ऱवे 1188

अरि–हरि; ओर् केळल् आय्–एक वराह बनकर; उळैवु अरुम् पॅरुमै–अथक शक्ति का गौरव रखनेवाले; ओर् ऍयिट्रिऩ् उळ् पुरै–एक वक्र दाँत के अर्धगोल पर; वळर् इळम् पिरै इटै–बढ़नेवाली कला वाले चन्द्र के मध्य; मरुविल् तोन्ऱ–रहनेवाले कलंक के समान लगनेवाली; इळै ऍनुम् तिरुवितै–'इला' नाम की पृथ्वीदेवी को; किळर् अकऩ् पुऩलिऩ् निन्ऱु–उमड़नेवाले विशाल सागर से; एन्तिऩाऩ्–उठाकर धारण करते रहे। ११८८

उन्होंने समझाया— हरि के वराहावतार की बात जानते हैं। उन्होंने अपने वक्रदन्त के अर्धगोलाकार स्थान में चन्द्र के कलंक-समान 'इला' नाम की पृथ्वीदेवी को उमड़ते हुए विशाल सागर से उठाकर उसका उद्धार किया। ११८८

आदिय वमैदियि ऩिरुदि यॅप्पॅरुम्
बूदमुम् वॅळियॊळिन्दॅवैयुम् पुक्कबिऩ्
नादनव् वहऩ्बुऩ ऩल्हि नण्णरुम्
शोदियाऩ् दन्मैयिऱ् ऱुयिऱ्ऱऩ् मेयिऩाऩ् 1189

आतिय अमैतियिऩ् इऱुति–पूर्व के कल्पान्त में; ऐम् पॅरुम् पूतमुम्–पंच महाभूत; वॅळि ऑळितुतु–अप्रकट हो गये; ऍवैयुम्–सभी तत्व; पुक्क पिऩ्–ईश्वर के शरीर के अन्दर छिप गये, उसके बाद; नातऩ्–जगन्नाथ; अव् अकऩ् पुऩल् नल्कि–उस विशाल समुद्र की सृष्टि करके; नण्ण अरुम् चोति आम्–पास जाने के लिए दुस्तर रहनेवाली ज्योति के; तन्मैयिऩ्–रूप में; तुयिऱल् मेयिताऩ्–निद्रा करने लगे। ११८९

उस कल्प के अन्त में जब पंचभूत के साथ सभी सृष्टि श्रीमन्नारायण के अंगीभूत हो गयी, तब सर्वलोकनायक श्रीमन्नारायण ने विशाल उस प्रलय की सृष्टि की और उसके मध्य (वटपत्र पर) दुर्लभ ज्योतिस्वरूप बनकर योगनिद्रालीन हो गये। ११८९

एऱ्ऱवित् तन्मैयि ऩमरर्क् किऩ्ऩमु
दूऱ्ऱुमक् कडवुड ऩुन्दि युन्दिय
नूऱ्ऱिदळ्क् कमलत्ति ऩॊय्दिऩ् यावैयुम्
तोऱ्ऱुवित् तुदविड मुदल्वऩ् ऱोन्ऱिऩाऩ् 1190

एऱ्ऱ इ तन्मैयिऩ्–योगनिद्रा में रहते इस स्थिति में; अमरर्क्कु–देवों को; इऩ् अमुतु ऊऱ्ऱुम्–सरस सुधा सुरों को (मोहिनी बनकर) जिन्होंने दिलाई थी; अ कटवुळ् तऩ्–उन श्रीमन्नारायण की; उन्ति उन्तिय–नाभि से उत्पन्न; नूऱु इतळ्–शतदलीय; कमलत्तिऩ्–कमल पर; यावैयुम्–सभी प्रपंचों को; नॊय्तिऩ् तोऱ्ऱुवित्तु उतविट–शीघ्र सृष्टि करके सहायता देने के लिए; मुतल्वऩ्–सृष्टि के आदि ब्रह्मा; तोन्ऱिऩाऩ्–प्रकट हुए। ११९०

इस तरह जब देवों को सरस सुधा-लाभ साध्य करानेवाले लक्ष्मीपति जलमध्य रहते थे, तब उनकी नाभि से एक शतदल कमल उग आया। उस पर सृष्टि के आदिदेव ब्रह्माजी सृष्टि-कार्य में सहायता देने के लिए पहले प्रकट हुए। ११९०

अऩ्ऱव ऩुलहिऩै यळिक्क वाहिय, ऩुऩ्ऱऩिक् कुलमुद लुळ्ळ वेऩ्दर्हळ्
इऩ्ऱळ विऩुमुऱै यिहऩ्दु ळारिलै, ऑऩ्ऱुळ दुरैयिऩ मुणरक् केट्टियाल् 1191

अऩ्ऱु–उस समय; अवऩ्–उन्होंने; उलकिऩै आळिक्क–लोकसृष्टि आरम्भ की; आकियतु–(तभी) सृष्ट हुआ; उऩ् तऩि कुलम्–आपका श्रेष्ठ (सूर्य-) कुल; मुतल् उळ्ळ वेऩ्तर्कळ्–तबसे लेकर आये राजाओं में; मुऱै इकऩ्तु उळ्ळार्–(ज्येष्ठ पुत्र को राजा बनाने के) क्रम को तोड़नेवाले कोई; इऩ्ऱु अळविऩुम्–आज तलक; इल्लै–नहीं; इऩ्ऩम् उरै ऑऩ्ऱु–और भी कथन एक; उळतु–है; उणर केट्टि–ध्यान देकर सुनिए। ११९१

जब उन्होंने सृष्टि का कार्य प्रारम्भ किया, तभी आपका श्रेष्ठ कुल भी आरम्भ हो गया क्योंकि आपके कुल के आदि नायक सूर्य की सृष्टि हो गई। तबसे अब तक आपके कुल में जितने राजा हो गये हैं, उनमें कोई भी नहीं हैं, जिन्होंने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देने के क्रम का उल्लंघन किया हो। यह एक बात है। और दूसरी एक बात है। वह भी सुनिये। ११९१

इदविय लियऱ्ऱिय कुरवर् यारिऩुम्
मदवियल् कळिऱ्ऱिऩाय् मऱुविल् विज्जैहळ्
पदविय विरुमैयुम् बयक्कप् पण्बिऩाल्
उदविय वॊरुवऩे युयरु मॆऩ्बराल् 1192

मत इयल् कळिऱ्ऱिऩाय्–बलवान गज-सदृश राम; इतम् इयल् इयऱ्ऱिय–हितकारी कार्य करनेवाले; कुरवर् यारिऩुम्–सभी गुरुओं में; पतविय इरुमैयुम् पयक्क–(इह-पर) दोनों पदवियों में सुकृत दिलानेवाले; मऱु इल्–निर्दोष; विज्चैकळ् उतविय–विद्याएँ सिखानेवाले; ऑरुवऩे–आचार्य एक ही; उयरुम् ऍऩ्पर–सर्वश्रेष्ठ है, कहते। ११९२

बलवान गजतुल्य श्रीराम! सभी गुरु हितकारी हैं। तो भी उनमें आचार्य इह-पर सुखसाधनार्थ आवश्यक निर्दोष सभी विद्याएँ सिखाते हैं। वही सबसे श्रेष्ठ है —ऐसा बड़े लोगों का कहना है। ११९२

ऍऩ्ऱलाल् याऩुऩै यॆडुत्तु विज्जैहळ्, ऑऩ्ऱला दऩपल वुदविऱ् ऱुण्मैयाल्
अऩ्ऱॆऩा दिऩ्ऱॆऩ दाणै यैयनी, नऩ्ऱुपोन् दळियुऩक् कुरिय नाडॆऩ्ऱाऩ् 1193

ऍऩ्ऱलाल्–इसलिए; याऩ् उऩै ऍट्टुत्तु–मैंने आपको पालकर; ऑऩ्ऱु अलातऩ–अनेक; पल विज्चैकळ्–अनेक विद्याएँ; उतविऱ्ऱु उण्मैयाल्–सिखाई हैं, उससे; ऐय–प्रभु; नी–आप; इऩ्ऱु ऍऩ्तु आणै–आज मेरी आज्ञा; अऩ्ऱु अऩातु–अस्वीकार

न करके; पोन्तु–नगर आकर; उत्तक्कु उरिय नाट्टु–अपने राज्य का; नन्ऱु अळि–ठीक तरह से पालन कीजिए; ॲन्ऱान्–कथन किया। ११६३

इसलिए और मैंने ही आपका शैशव से लेकर पालन किया और एक नहीं, अनेक-अनेक विद्याएँ सिखाईं। इसलिए तात! आप मेरी आज्ञा को मानने से इनकार न करके राज्य लौट आइए और यह राज्य आपका ही है, उसका अच्छा परिपालन कीजिए। ११९३

कूऱिय मुनिवनैक् कुविन्द तामरै, शीऱिय कैहळाऱ् ऱॊळुदु शॆङ्गणान्
आऱिय शिन्दनै यऱिञ वॊन्ऱुरै, कूऱुव दुळदॆनक् कूऱन् मेयिनान् 1194

कूऱिय मुनिवनै–ऐसा जिन्होंने कहा, उन महर्षि को; चॆम् कणान्–अरुणाक्ष श्रीराम; कुविन्त तामरै चीऱिय–बन्द कमल को जीतनेवाले; कैकळाल्–हाथों से; तॊळुतु–अञ्जलि करके; आरिय चिन्तनै–दांतमन; अऱिञ–ज्ञानी; ऑन्ऱु उरै–मन में उठी बात; कूऱुवतु उळतु–कहनी है; ॲना–कहकर; कूऱल् मेयिनान्–वह बतलाने लगे। ११६४

इस तरह बोलनेवाले वसिष्ठजी का, अरुणाक्ष श्रीराम ने अपने उन्मीलित कमल-सम जुड़े हाथों से अंजलि द्वारा नमस्कार करके अर्थगर्भित शब्दों में कहा— दांतमन ज्ञानी! मुझे, जो मैं उचित समझता हूँ, वह एक बात कहनी है। फिर वे कहने लगे। ११९४

शान्ऱव राहदन् कुरव राहदाय्, पोन्ऱव राहपॊऱ् पुदल्व राहदान्
तेन्ऱरु मलरुळान् शिऱुव शॆय्वनॆन्, ऱॆन्ऱबि नव्वुरै मऱुक्कु मीट्टदो 1195

तेन् तरु–मधुदायी; मलर् उळान् चिऱुव–कमल पर आसीन ब्रह्मा के पुत्र; चान्ऱवर् आक–सदाचार शील बड़े हों, चाहे; तन् कुरवर् आक–अपने गुरुजन; ताय् पोन्ऱवर् आक–चाहे माता के समान गण्य; पॊन् पुतल्वर् आक—स्वर्ग-सम प्यारे पुत्र; तान् चॆयवॆन् ॲन्ऱु एन्ऱ पिन्–करूँगा कहकर, स्वीकार कर लेने के बाद; अ उरै–वह वचन; मऱुक्कुम् ईट्टतो–टालने योग्य होगा क्या। ११६५

हे मधुमयकमलासन ब्रह्माजी के पुत्र! चाहे सदाचारशील बड़े पुरुष हों, चाहे गुरु; चाहे माता-समान मान्य लोग हों, चाहे स्वर्ण-सम प्यारे पुत्र; 'यह मैं करूँगा' कहकर जो कार्य स्वीकार किया जा चुका है, उस स्वीकृति के वचन से मुकरना योग्य काम है क्या?। ११९५

ताय्पणित् तुवन्दन तन्दै शॆय्हॆन, एयवॆप् पॊरुळ्हळु मिऱैञ्जि मेऱ्कॊळात्
तीयवप् पुलैयनिऱ् शॆय्है तेर्हिला, नायॆनत् तिरिवदु नल्ल दल्लदो 1196

ताय् उवनतु पणित्तत–माता ने जो पसन्द करके आज्ञा दी; तन्तै चॆय्क ॲन एय–पिता ने 'करो' कहकर जो प्रेरित किया; अ पॊरुळ्कळुम्–उन सभी कार्यों को; इऱैञ्चि मेल् कॊळ्ळात–विनय करके जो करने का उत्तरदायित्व नहीं रखता; अ तीय पुलैयानिन्–वह क्रूर चाण्डाल बनकर रहने से; चॆय्कै तेर्किला–कर्तव्य न जान

सकनेवाला; नाय् अँत तिरिवतु–कुत्ता बनकर घूमना; नल्लतु अल्लतो–अच्छा नहीं होगा क्या। ११९६

माता ने पसन्द करके आज्ञा दी; पिता ने 'यह करो', कहकर प्रेरित किया। वे कार्य जो हों उनको विनय के साथ न अपनाऊँ तो बहुत बुरा चण्डाल बन जाऊँगा। वैसे चण्डाल बनने से कर्तव्याकर्तव्य न जाननेवाला कुत्ता बनकर घूमता-फिरना क्या श्रेष्ठ नहीं होगा ? । ११९६

मुऩ्ऩुऱप् पणित्तवर् मॊऴियै याऩॆऩ
शॆऩ्ऩियिऱ् कॊण्डदु शॆय्वॆऩ् ऩॆऩ्ऱदऩ्
पिऩ्ऩुऱप् पणित्तऩै पॆरुमै योयॆऩक्
कॆऩ्ऩिऩिच् चॆय्वहै युरैशॆ योङ्गॆऩ्ऱाऩ् 1197

मुऩ्ऩुऱ–पहले; पणित्तवर् मॊऴियै–आज्ञा देनेवाले की आज्ञा को; याऩ् अँत चॆऩ्ऩियिल् कॊण्टु–मैं अपना शिरोधार्य करके; अतु चॆय्वॆऩ्–वह करूँगा; अँऩ्ऱतऩ् पिऩ्ऩुऱ–ऐसा वचन देने के बाद; पणित्तऩै–आप आज्ञा सुनाते हैं; पॆरुमैयोय्–सम्मान्य गुरुदेव; अँऩक्कु–मेरे सामने; इऩि चॆय्वकै–अब कर्तव्य; अँऩ्–क्या है; ईङ्कु उरै चॆय्–अब आप ही कहें; अँऩ्ऱाऩ्–कहा। ११९७

पहले जिन्होंने आज्ञा दी उनके वचन को मैंने अपने शिरोधार्य कर लिया। वैसा करूँगा —यह भी मान लिया। उसके बाद आप आज्ञा सुनाते हैं। सम्मान्य गुरुदेव ! अब आप ही कहिए कि इस स्थिति में मेरा कर्तव्य क्या है ? । ११९७

मुऩिवऩु मुरैप्पदोर् मुऱैमै कण्डिलॆम्
इऩियॆऩ विरुन्दऩ ऩिळैय मैन्दऩुम्
अऩैयदे लाळ्बव राळ्ह नाडुनाऩ्
पऩिपडर् काडुडऩ् पडर्दऩ् मॆय्यॆऩ्ऱाऩ् 1198

मुऩिवऩुम्–(वसिष्ठ) महर्षि भी; इऩि–आगे; उरैप्पतु–बाद प्रस्तुत करने के लिए; ओर् मुऱैमै–कोई क्रम; कण्टिलॆम्–नहीं देखते; अँऩ–ऐसा समझकर; इरुन्तऩऩ्–मौन रह गये; इळैय मैन्तऩुम्–कनिष्ठ राजकुमार भरत ने भी; अऩैयतेल्–वही बात है तो; नाटु–देश को; आळ्पवर् आळ्क–राज्य करनेवाले पाल लें; नाऩ्–मैं; पऩि पटर् काटु–कँपानेवाले जंगल में; उटऩ् पटर्तल्–श्रीराम के साथ जाऊँगा, यह; मॆय्–सत्य है; अँऩ्ऱाऩ्–दृढ़ता से कहा। ११९८

वसिष्ठजी ने यह तर्क सुना तो उन्हें मालूम हो गया कि आगे मेरे पास कोई तर्क नहीं है। वे मौन साध गये। तब कनिष्ठ भ्राता भरत ने अपना निश्चय सुनाया कि यही बात है, तो जिनको राज्य करना है, वे जाकर राज्य करें। शीत से या भयानकता से कँपा देनेवाले जंगल में मेरा श्रीराम के साथ वास करना निश्चित है —सत्य है ! । ११९८

अव्वऴि यिमैयव रऱिन्दु कूडिनार्
इव्वऴि यिरामनै यिवन्गॊण् डेहुमेऱ्
चॆव्वऴित् तन्ऱुनञ् जॆयलॆन् ऱॆण्णिनार्
कव्वैयर् विशुम्बिडैक् कळऱि नाररो 1199

अव् वऴि–तव; इमैयवर्–सुर लोग; अऱिन्तु–यहाँ की बातें जानकर; इ वऴि–अब; इरामनै इवन् कॊण्टु–श्रीराम को यह ले; एकुमेल्–जायगा तो; नम् चॆयल्–हमारा कार्य; चॆम्मै वऴितत्तु अन्ऱु–नहीं साध्य होने का; ऎन्ऱु ऎण्णितार्–ऐसा सोचते हुए; कव्वैयर्–घबड़ाकर; विचुम्पिटै–आकाश में; कूटितार्–एकत्र होकर; कळऱितार्–बोले। ११९९

देव लोग यह सारी बातें जान गये। अगर भरत राम को अपने साथ ले जायगा तो उनका कार्य सिद्ध होने का नहीं। उन्हें चिन्ता हो गयी। वे आकाश में आ जुड़े और बोले। ११९९

एत्तरुम् बॆरुङ्गुणत् तिराम निव्वऴिप्
पोत्तरुन् दादैशॊऱ् पुरक्कुम् बूट्चियान्
आत्तवाण् डेऴिनो डेऴु मन्निलम्
कात्तलुन् कडनिवै कडमै यॆन्ऱनर् 1200

एत्त अरुम्–स्तुति करने के लिए कठिन; पॆरुम् कुणत्तु इरामन्–उत्तम गुणों के श्रीराम; तातै चॊल् पुरक्कुम्–पितृवाक्य परिपालन करने के लिए; पूट्चियान्–दृढ़संकल्प होकर; इ वऴि पोतरुम्–इसी रास्ते जायँगे; आत्त आण्टु–निर्णीत साल; एऴिनोटु एऴुम्–सात और सात (चौदह) में; अ निलम् कात्तल्–भूमि का पालन करना; उन् कटन्–आपका उत्तरदायित्व है; इवै कटमै–ये (आप दोनों के) कर्तव्य हैं; ऎन्ऱनर्–ऐसा उन्होंने कहा। १२००

जिनका वर्णन करना कठिन है, उन गुणों से भूषित श्रीराम पितृवाक्य-परिपालन में दृढ़ संकल्प हैं। वे इसी मार्ग को अपनाकर चलेंगे। निर्धारित चौदहों साल के काल में भूमि का पालन करना भरत का ही उत्तरदायित्व है। वन में जाना श्रीराम का और राज्यपालन भरत का कर्तव्य है। १२००

वानव रुरैत्तलु मरुक्कर् पालदन्, ऱियानुनै यिरन्दनॆ निनियॆ नाणैयाल्
आनदो रमैदियि नळित्ति पारॆनात्, तानवन् ऱुणैमलर्त् तडक्कै पऱ्ऱिनान् 1201

वानवर् उरैत्तलुम्–देवों ने जब यह कहा, तब; मऱुक्कल् पालतु अन्ऱु–(देवों का) कहना अस्वीकार्य नहीं है; यान् उनै इरन्तनॆन्–मैं भी तुमसे याचना करता हूँ; इनि–अब; ऎन् आणैयाल्–मेरे आदेश से; आनतु ओर् अमैतियिन्–निर्धारित अवधि तक; पार् अळित्ति–भूमि का पालन करो; ऎना–कहकर; तान्–आप; अवन् तुणै मलर् तट कै–उसके कमलद्वय के समान विशाल हाथों को; पऱ्ऱितान्–पकड़ लिया। १२०१

जब देवों ने ऐसा कहा, तो श्रीराम ने उसका हवाला देकर भरत से कहा कि देखो भरत ! देवता लोग जो कहते हैं, वह अस्वीकार्य नहीं है। और भी मैं तुमसे याचना करता हूँ। अब तो मेरी आज्ञा मानो। निश्चित अवधि तक देश का पालन करो। यह कहते हुए श्रीराम ने भरत के दोनों विशाल हाथों को अपने हाथों से पकड़ लिया। १२०१

❀ आमॅनि लेऴिरण् डाण्डि लयनी, नामनीर् नॅडुनहर् नण्णि नानिलम्
कोमुऱ़ै पुरिहिलै यॅन्निऱ् कूर्ॅरिच्, चामिदु शरदनिन् नाणै शाऱ़्ऱिनेन् 1202

आम् ऍनिल्–अगर वही सही है तो; ऐय–महिमावान भाई; नी–आप; एऴ् इरण्टु आण्टिल्–सात के दो चौदह साल में; नामम् नीर्–भयोत्पादक (खाई के) जल से वलयित; नॅटु नकर् नण्णि–बड़े नगर में लौट आकर; नाल् निलम्–भूमि का; को मुऱ़ै–राज्य-पालन; पुरिकिलै ऍन्निन्–नहीं करेंगे तो; कूर् ऍरि चाम्–विपुल अग्नि में गिरकर मर जाऊँगा; इतु चरतम्–यह निश्चित है; निन् आणै चाऱ़्ऱिनेन्–आपकी सौगन्ध खाकर कहता हूँ। १२०२

तब भरत ने श्रीराम से आग्रहपूर्वक कहा— मेरे प्रभु ! अगर यह स्वीकार करना हो तो एक शर्त है। चौदह साल पूरा होते ही आपको भयानक खाई से आवृत्त अयोध्या नगर पधारकर भूमि का भार लेना होगा। अगर आप उससे चूक जायँगे तो मैं विपुल अग्नि में प्रवेश कर मर जाऊँगा। यह निश्चित है। आपकी सौगन्ध खाकर मैं यह कह रहा हूँ। १२०२

❀ ऍन्बदु शॉल्लिय बरदन् यादुमोर्
तुन्बिल नवन्दु तुणिवै नोक्किनान्
अन्विनि तुरुहिन नन्न दाहॅन्ऱान्
तन्बुहऴ् तन्निनुम् बॅरिय तन्मैयान् 1203

ऍन्पतु चॉल्लिय परतन्–यह कहकर, भरत ने; यातुम् ओर् तुन्पु इलन्–किसी भी दुख से अप्रभावित; अवन्तु तुणिवै–उन श्रीराम के निश्चय की; नोक्किनान्–प्रतीक्षा की; तन् पुकऴ् तन्निनुम्–अपनी प्रशंसा के अर्थ से भी; पॅरिय तन्मैयान्–बड़े गौरव वाले श्रीराम ने; अन्पिनिन्–प्रेम से; उरुकिनन्–द्रवीभूत होकर; अन्नतु आक ऍन्ऱान्–वैसा ही हो, कहा। १२०३

भरत ने यह कहकर सुख-दुख-निर्लिप्त श्रीराम के वादे की प्रतीक्षा की। अपनी प्रशंसा से भी यथार्थ में अधिक उत्कृष्ट गुणों वाले श्रीराम स्नेहार्द्र और गद्गद हो गये। उन्होंने वादा किया कि वैसा ही हो। १२०३

❀ विम्मिनन् बरदनुम् वेऱु शॅय्वदोन्
ड्रिन्मैयि नरिदॅन वॅण्णि येङ्गुवान्

शॆम्मलिन् ऱिरुवडित् तलन्दल दीहॆन
ऎम्मैयुन् दरुवन विरण्डु नल्हिनान् 1204

परततुम्–भरत; चॆय्वतु वेऱु ऒन्ऱु इन्ऱ्मैयिन्–करणीय और कोई काम नहीं देख; अरितु ऎन–शासन का काम कठिन; ऎण्णि–समझकर; विम्मितन् एङ्कुवान्–दुख से भरकर रोते हुए; चॆम्मल्–पुरुषोत्तम; निन् तिरुवटि तलम्–आपकी पादुकाएँ; तन्तीक–देने की कृपा कीजिए; ऎन–यह प्रार्थना करने पर; ऎम्मैयुम् तरुवन इरण्टुम्–इह-पर-सौभाग्यदायक दोनों पादुकाओं को; नल्किनान्–दिया। १२०४

अब भरत क्या करें ? उनके सामने कोई चारा नहीं था। उन्हें शासन करना कठिन लगा। उनको रुलाई आ गयी। वे शोकातुर होकर श्रीराम से बोले— आप अपनी श्रीपादुकाएँ मुझे दिला दीजिएगा। श्रीराम ने भी इह-पर-सौभाग्यदायिनी दोनों पादुकाओं को उनके हाथ में सौंप दिया। १२०४

❀ अडित्तल मिरण्डैयु मऴुद कण्णिनन्
मुडित्तल मिवैयॆन मुऱैयिऱ् चूडिनान्
पडित्तलत् तिऱैञ्जिनन् बरदन् पोयिनान्
पॊडित्तल मिलङ्गुरु पॊलङ्गॊण् मेनियान् 1205

अऴुत कण्णिनन्–रोती आँखों-सहित; पॊटि तलम् इलङ्कु उरु–धूलि-धूसरित; पॊलम् कॊऴ् मेनियान्–शोभायमान शरीरी; परतन्–भरत; अटितलम् इरण्टैयुम्–दोनों पादुकाओं को; इवै मुटि तलम् ऎन–ये ही मेरे किरीट हैं, कहकर; मुऱैयिन्–आदर के साथ; चूटिनान्–सिर पर लगाकर; पटि तलत्तु इऱैञ्चिनन्–भूमि पर गिरकर (श्रीराम की) दण्डवत करके; पोयिनान्–उठ चले। १२०५

रोती आँखें और धूलि-धूसरित देह —इनके साथ शोभनेवाले भरत ने दोनों पादुकाओं को ग्रहण किया। 'ये ही मेरे किरीट हैं' —कहते हुए अपने सिर पर उनको धारण किया। फिर श्रीराम के चरणों पर भूमि पर पड़कर दण्डवत की। पश्चात् वे उठकर मार्गगामी हो गये। १२०५

❀ ईन्ऱवर् मुदलिय वॆण्णिल शुऱ्ऱमुम्
शान्ऱवर् कुऴुवॊडु तवत्तु ळोर्हळुम्
वान्ऱरु शेनैयु मऱ्ऱुञ् जुऱ्ऱुऱ
मून्ऱुनूल् किडन्दतोण् मुनियुम् बोयिनान् 1206

ईन्ऱवर् मुतलिय–जननियाँ आदि; ऎण् इल् चुऱ्ऱमुम्–अगणित बन्धु-बान्धव; चान्ऱवर् कुऴुवॊटु–बुजुर्गों के वृन्दों के साथ; तवत्तु उळ्ळोर्कळुम्–तपस्वी मुनिवृन्द; वान् तरु चेनैयुम्–मान्य सेना; मऱ्ऱुम्–अन्य लोग; चुऱ्ऱुऱ्–घेरते हुए गये; मून्ऱु नूल् किटन्त–जिस पर त्रिसूत्री यज्ञोपवीत शोभायमान था, उस; तोळ् मुनियुम्–वक्ष के महर्षि वसिष्ठ भी; पोयिनान्–गये। १२०६

उनके पीछे यज्ञोपवीतधारी वसिष्ठजी भी निकल पड़े। उनके साथ तीनों माताएँ, अगणित परिवार, बुजुर्गों के दल, तपस्वी मुनिवृन्द, बड़ाई योग्य सेना के लोग और अन्य राजा लोग आदि उनको घेरते हुए चले। १२०६

❀ पण्डैनूल् ऍरिबरत् तुवनुम् बोयिनान्
मण्डुनीर् नॅडुनहर् मानुदर् पोयिनार्
विण्डुरै देवरुम् विरैविऌ् पोयिनार्
कॊण्डऌ् ताणैयाऌ् कुहनुम् पोयिनान् 1207

पण्टै नूल तॆरि–सनातन वेद आदि के ज्ञाता; परत्तुवत्तुम्–भरद्वाज भी; पोयित्तान्–चले; मण्टु नीर्–खाई की विपुल जलराशि से घिरे हुए; नॆटु नकर् मानुतर्–विशाल नगर के लोग; पोयित्तार्–चले गए; विण्टु उरै–आकाश में एकत्रित; तेवरुम्–देववृन्द भी; विरैविल् पोयिनार्–शीघ्र लौट गये; कॊण्टल् तन् आणैयाल्–मेघश्याम श्रीराम के आदेश से; कुकत्तुम् पोयितान्–गुह भी चला गया। १२०७

सनातन वेदों के ज्ञाता भरद्वाज भी चले। जलावृत्त अयोध्या नगर के अधिवासी भी चले। आकाश में एकत्रित देवगण भी अपने स्थानों को लौट गये। मेघश्याम श्रीराम के आदेश से गुह भी गया। १२०७

पादुहन् दलैक्कॊडु परदन् पैम्बुनल्
मोदुहङ् गैयिन्गरै कडन्दु मुन्दिनान्
पोदुहुङ् गडिपॊऴि लयोत्ति पुक्किलन्
ओदुहङ् गुलिनॆडि दुरक्क नीङ्गिनान् 1208

परतन्–भरत; पातुकम् तलै कॊटु–पादुकाएँ सिर पर लेकर; पैम् पुनल् मोतु–शीतल जल सिर पर लहराता आता है, उस; कङ्कैयिन् करै कटन्तु–गंगा का किनारा पार कर; मुन्तिनान्–बढ़े; पोतु उकुम्–पुष्प-बिखरे; कटि पॊऴिल्–सुबासित उद्यानों से घिरे; अयोत्ति पुक्किलन्–अयोध्या में प्रविष्ट न होकर; ओतु कङ्कुलिन्–उक्त रात की; नॆटितु उऱक्कम् नीङ्कित्तान्–लम्बी देर अनिद्रित रहे। १२०८

भरत श्रीपादुकाओं को सिर पर लेकर शीतलजल-प्रताड़ित गंगा के किनारे को पार कर आगे बढ़े। वे पुष्प गिरानेवाले तरु-पौधों से पूर्ण उद्यानों से आवृत्त अयोध्या नगर में नहीं आये। एक रात उन्होंने आँखों में काटी। १२०८

नन्दियम् बदियिडै नादन् पादुहम्
शॅन्दनिक् कोन्मुरै शॅलुत्तच् चिन्दैयान्
इन्दियङ् गळैयवित् तिरुत्तन् मेयिनान्
अन्दियुम् बहलुनी रड़ाद कण्णिनान् 1209

नन्ति अम् पति इटै–नन्दीग्राम में; नातऩ् पातुकम्–नायक की पादुकाओं के; तऩि चॆम् कोल् मुऱै चॆलुत्त–अनुपम राजदण्ड का यथाक्रम व्यवहार (शासन) करते; चिन्तैयाऩ्–श्रीराम ध्यान-रत; इन्तियङ्कळै अवित्तु–इन्द्रिय-निग्रह करके; अन्तियुम् पकलुम्–रात और दिन; नीर् अऱात कण्णिऩाऩ्–अश्रु से अविमुक्त आँख वाले होकर; इरुत्तल् मेयिऩाऩ्–वहीं आवास बना लिया। १२०९

आखिर उन्होंने नन्दिग्राम में पादुकाओं को स्थापित किया और उन्हें शासन व्यवस्था का आधार बनाया। वे स्वयं श्रीरामध्यान-रत और इन्द्रिय-निग्रही बनकर वहीं वास करने लगे। उनकी आँखों से आँसू का बहना कभी नहीं रुका। १२०९

कुऩ्ऱिऩि लिरुन्दऩ ऩॆऩ्ऩुङ् गॊळ्हैयाल्
निऩ्ऱवर् नलिवरा ऩॆशत् तालॆऩात्
तऩ्ऱुणैत् तम्बियुऩ् दाऩुन् दैयलुम्
तॆऩ्ऱिशै ऩॆऱियिऩैच् चॆऱऩ् मेयिऩाऩ् 1210

कुऩ्ऱिऩिल् इरुन्तऩऩ्–(चित्रकूट-) पर्वत पर रहते हैं; ऎऩ्ऩुम् कॊळ्कैयाल्–इस विचार से; निऩ्ऱवर्–अयोध्या में रहनेवाले; नेचत्ताल्–प्रेम के कारण; नलिवर् ऎऩा–(बार-बार आकर) कष्ट देंगे, यह समझकर; तऩ् तुणै तम्पियुम्–अपने सहायक छोटे भाई को और; ताऩुम्–आप; तैयलुम्–देवी सीताजी के साथ; तॆऩ् तिचै नॆऱियिऩै–दक्षिण की ओर जानेवाले मार्ग में; चॆऱल् मेयिऩाऩ्–(श्रीराम) चलने लगे। १२१०

इधर श्रीराम ने यह विचार किया कि 'चित्रकूट पर्वत पर ही तो रहते हैं श्रीराम! हम जाकर मिलें' यह समझकर लोग अयोध्या और अन्य स्थानों से आ-आकर हमें कष्ट पहुँचायेंगे। इसलिए वे अपने अनुचर सहायक भाई लक्ष्मण और अपनी पत्नी श्रीसीतादेवी दोनों को साथ लेकर दक्षिण की ओर जानेवाले मार्ग में चल पड़े। १२१०

॥ अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

अरण्य काण्डम्

1. विरादन् वदैप्पडलम् (विराध-वध पटल)

कडवुळ् वाळ्त्तु (ईश्वर वन्दना)

❀ पेदि यादुनिमिर् पेद वुरुवम् पिऱळ्हिला
ओदि योदियुण रुन्दोरु मुणर्च्चि युदवुम्
वेदम् वेदियर् विरिञ्जन् मुदलोर् तॆरिहिला
आदि देव ररॆम् मरिविनुक् करिवरो 1

पेतियातु–स्वयं अव्यय (अभेद) रहकर; निमिर् पेत उरुवम्–अपने से प्रकट हुए सभी चराचर रूपों से भी; पिऱळ्किला–अपृथक रहनेवाले; ओति ओति उणरुम् तोरुम्—अध्ययन-अन्वेषण के हर बार; उणर्च्चि उतवुम्–श्रेष्ठ ज्ञान (अनुभवगम्य) प्रदान करनेवाले; वेतम्–चारों वेद; वेतियर्–वेदज्ञ विप्र; विरिञ्चन् मुतलोर्–ब्रह्मा आदि; तॆरिकिला–(उनके द्वारा भी) पूर्ण रूप से जो जाने नहीं गए हैं, वे; आति तेवर्–आदिदेव (श्रीराम); ऎम् अऱिविनुक्कु–मेरे क्षुद्र ज्ञान के लिए; अऱिवरो–जानने का विषय हो सकते हैं क्या। १

श्रीराम अपने परत्व से अभेद रहकर उसी समय, अपने द्वारा और अपने से प्रकट होकर पलनेवाले प्रपंच में सर्वत्र अन्तर्यामी के रूप में चराचर सभी जीवों से युक्त रहनेवाले हैं। उनको वेद, जो अध्ययन-अन्वेषण करते हर समय ज्ञान दिलाते हैं और वेदज्ञ ब्राह्मण भी पूर्णरूपेण जान नहीं पाये हैं। ऐसे वे मेरी (क्षुद्र) बुद्धि के विषय बन सकेंगे क्या ? । १

मुत्ति रुत्तिय विरुन्दनैय मोय्न्न हैयोडुम्
शित्ति रक्कुनि शिलैक्कुमरर् शॆन्ऱ णुहिनार्
अत्ति रिप्पॆय ररुन्दव त्तिरुन्द वमैदिप्
पत्ति रप्पळु मरप्पॊळि रुवत्तु पळुवम् 2

चित्तिर कुति चिलै कुमरर्–चित्र (अद्भुत) व विनत धनुर्धर कुमार; मुत्तु इरुत्तिय अतैय–मोती जड़े हों, ऐसे; विरुन्तु अतैय–(आँखों को) दावत के समान (बहुत ही आकर्षक); मोय् नकैयोटुम्–लसे दाँतों से शोभित सीताजी के साथ;

अत्तिरि पॅयर् अरुम् तवन्–अत्रि नाम के उत्तम तपस्वी; इरुन्त–जहाँ रहे; अमैति–वह स्थान; पत्तिर पळ्ळु मर पॉळिल्–पत्तों और फलों से पूर्ण तरुओं के उद्यानों से; तुवन्ऱु–युक्त; पळ्ळुवम्–एक वन; चॅन्ऱु अणुकिऩार्–जा पहुँचे। २

श्रीराम और लक्ष्मण, जो चित्र और झुके हुए धनु उठाकर चलते थे, श्रीजानकी के साथ, जिनके दाँत जड़े हुए सुन्दर मोतियों के समान देखने वालों को अपनी अद्‌भुत मनोहारिता से मोह रहे थे, अत्रि मुनि के आश्रम गये। उस आश्रम में फूलों, पत्तों और फलों से युक्त तरुओं के अनेक उपवन थे। २

तिक्कु रुऱ्ऱॅरि परन्दणिय निन्ऱ तिरळ्पॉऩ्
कैक्कु रुङ्गण्मलै पोऱ्कुमरर् काम मुदलाम्
मुक्कु रुम्बऱ वॅऱिन्द विनैयाण् मुनिवनैप्
पुक्कि रैञ्जिन रऱिन्दव नुवन्दु पुहलुम् 3

तिक्कु उऱुम्–(आठों) दिशाओं में पड़नेवाले; चॅऱि परम्–भारी भार को; तणिय निन्ऱ–कम करते हुए उठाये खड़े रहनेवाले; तिरळ् पॉन् कै–पुष्ट सुन्दर सूँड़ों के; कुऱुम् कण्–छोटी आँखों के; मलै पोल्–पर्वत-सम (दिग्गजों से तुल्य); कुमरर्–श्रीराम और लक्ष्मण; पुक्कु–उस आश्रम में पहुँचकर; मु कुऱुम्पु अऱ ऍऱिन्त–(काम, क्रोध, मोह रूपी) तीन शत्रुओं को जो नाश कर चुके; वित्तै आळ् मुनिवनै–उन तप के कर्म के स्वामी ऋषि की; इऱैञ्चिनर्–स्तुति की; अवन्–वे; अऱिन्तु–इनको जानकर; उवन्तु–हर्षित होकर; पुकलुम्–बोलने लगे। ३

श्रीराम और लक्ष्मण उन दिग्गजों के समान थे, जो आठों दिशाओं में रहकर भूमि का भार हल्का कर रहे थे, जिनके पुष्ट सुन्दर सूँड़ें थीं और जिनकी आँखें छोटी थीं। उन्होंने, काम, क्रोध और मोह रूपी तीनों शत्रुओं के सम्पूर्ण नाशक और तप के महान शासक (साधक) अत्रि को नमस्कार किया। अत्रि ने उनको पहचान लिया। उन्हें अपार हर्ष हुआ और वे कहने लगे। ३

कुमरर् नीरिव णडैन्दुदवु कॉळ्है यॅळिदो
अमरर् यावरॉडु मॅव्वुलहुम् वन्द दलवो
ऍमरिन् यार्दव मुयन्ऱनर् हळॅन्ऱु रुहिनन्
तमरॅ लाम्वर वुवन्दनैय तन्मै मुनिवन् 4

तमर् ॲलाम् वर–अपने (परिवार के) सबों के आने पर; उवन्तु अतैय–हर्षित हुए जैसे; तन्मै मुनिवन्–हर्ष की स्थिति में पड़े मुनि; कुमरर् नीर्–राजकुमार आप; इवण् अटैन्तु–इधर आकर; उतवु कॉळ्कै–हमारा उपकार जो करते हैं, वह बात; ऍळितो–सुलभ है क्या; अमरर् यावरॉटुम्–सभी देवों के साथ; ॲव्वुलकुम् वन्तु अलवो–सभी लोकों का आगमन (सा) है न; ऍमरिन्–(दण्डकवासी) हमारे समान; यार् तवम् मुयन्ऱवर्कळ्–किसने तप किया है; ऍन्ऱु–कहकर; उरुकिऩन्–गद्‌गद हुए। ४

अत्रि मुनि ने, स्वबन्धुओं से मिलने से प्राप्य आनन्द के साथ प्रेम से कहा कि राजकुमार ! आपने स्वयं यहाँ पधारकर हमको उपकृत किया है। यह साधारण और सुलभ उपकार नहीं है। सभी देव और सभी लोक प्राप्त हो गये हों, ऐसा एक अहोभाग्य है ! ओह ! हमारे जैसे कौन हो सकते हैं, जिनका तप इतना सफलीभूत हो ? यह कहते-कहते उनका कण्ठ गद्गद हो गया और वे द्रवीभूत हो गये। ४

अन्ऩ मामुऩियी डन्ऩव णुऱैन्द वऩरुम्
पत्ऩि कऱ्पिऩऩ शूयै पणिया लणिहलन्
तुन्ऩु तूशिऩोडु शन्दिवै शुमन्द शऩहन्
पॊन्ऩो डेहि युयर्दण् डहवऩम् बुहुदलुम् 5

अऩ्ऩ–उन; मा मुऩियॊटुम्–महान तपस्वियों के साथ; अऩ्ऱु–उस दिन; अवण् उऱैन्तु–वहाँ रहकर; अवऩ् अरुम् पत्ति–उनकी उत्तम पत्नी; कऱ्पिऩ् अऩ्ऩचयै–पतिव्रताशिरोमणि अनसूया के; पणियाल्–आदेश के अनुसार; अणिकलऩ्–आभरण; तुऩ्ऩु तूचिऩॊटु–शोभनेवाले वस्त्र के साथ; चन्तु–चन्दन; इवै–आदि; चुमन्त–अलंकार प्राप्त; चऩकऩ् पॊऩ्ऩॊटुम्–जनक के स्वर्ण (के समान सीता) के साथ; एकि–वहाँ से निकलकर; उयर् तण्टक वऩम्–श्रेष्ठ दण्डक वन; पुकुतलुम्–ज्यों ही प्रविष्ट हुए। ५

श्रीराम अपनी देवी और अपने भाई के साथ उस दिन उन महर्षि के साथ ही ठहरे। अत्रि की पत्नी, पतिव्रताशिरोमणि अनसूया ने सीताजी को अनेक आभरण, युक्त वस्त्र और चन्दन का लेप आदि दिया। (वे सब दैवी गुणों से पूर्ण थे।) दूसरे दिन वे निकलकर दण्डक वन में आये। जब उन्होंने वन में प्रवेश किया तब— (विराध आया, जिसका विराट वर्णन अगले पद से लेकर उन्नीसवें पद तक पाया जाता है।)। ५

ॲट्टॊ डॅट्टुमद माहरि यिरट्टि यरिमा
वट्ट वॅङ्गणवरै याळि पदिऩारु वलियिल्
किट्ट विट्टिडै किडन्दऩ शॆरिन्द दॊरुहैत्
तॊट्ट मुत्तलै ययिऱ्ऱॊळिऩ् मिडऱ्क ळुवॊडे 6

ॲट्टॊटु ॲट्टु–आठ और आठ (सोलह); मत मा करि–मत्त और बड़े गज; इरट्टि अरिमा–दुगुने (बत्तीस) शेर; वट्ट वॅम् कण्–गोल और भयंकर आँखों वाले; वरै–पर्वत-वासी; आळि पतिऩाऱु–शरभ सोलह; वलियिल्–अपने बल से; किट्ट इट्टु–सटाकर गूँथकर; इटै किटन्तऩ–पास रहे; चॆऱिन्ततु ऒरु कै–स्थूल एक हाथ में; तॊट्ट–पकड़े हुए; मिटल् तॊऴिल्–भयंकर युद्ध-प्रयुक्त; मुत्तलै अयिल् कऴुवॊटु–त्रिशूल के साथ। ६

उसके हाथ में एक भयंकर समरोपयोगी त्रिशूल था, जिसमें सोलह

मत्तगज, दुगुने यानी बत्तीस सिंह और गोल भयंकर आँखों वाले व पर्वतगुफा-वासी सोलह शरभ (कल्पित जानवर, सूँड़, कठोर दाँत, तेज नाखून, अयाल और दो पंख —इनसे युक्त) बलात सटे हुए प्रकार से पिरोये हुए थे। ६

शॅञ्ञ्जु डर्च्चॅरि मयिर्च्चुरुळ् शॅरिन्द शॅन्नियन्
नञ्ञ्जु वॅर्पु रुवुपॅर्रिडै नडन्द दॅन्नमा
मञ्ञ्जु शुर्रिय वयङ्गुहिरि वाद विशैयिल्
पञ्ञ्जु पट्टदु पडप्पडि यिन्मेन् मुडुहियै 7

चॅम् चुटर् चॅरि–लाल प्रभा छिटकानेवाले घने; मयिर् चुरुळ् चॅरिन्त–घुँघराले बालों से लसा; चॅन्नियन्–सिर वाला; नञ्चु वॅर्पु उरुवु पॅर्रु–विष पर्वत का रूप धरकर; इटै नटन्ततु अॅन–वहाँ चलता आता हो, ऐसा; मा मञ्चु–बड़े मेघों से; चुर्रिय–आवृत होकर; वयङ्कु–वहाँ विद्यमान; किरि–गिरियाँ; वात विचैयिल्–उसके चलने से उत्पन्न पवन के झोंकों से; पञ्चु पट्टतु पट–रुई की-सी स्थिति को पहुँच गईं, ऐसा; पटियिन् मेल्–भूमि पर; मुटुकि–तेज़ गति से चलता हुआ। ७

उसके सिर के बाल घुँघराले और रक्तिम रंग वाले थे। वह पर्वतरूपधारी विष के समान आ रहा था। जब उसकी चाल के कारण पवन उद्वेलित होता था, उसके आघात से बड़े-बड़े मेघों से आवृत पर्वत रुई के समान छिन्न-भिन्न हो गये। वह अतितीव्र चाल के साथ भूमि पर चलता आ रहा था। ७

पुण्डु ळङ्गियन कण्कळनल् पॊङ्ग मळैशूळ्
विण्डु ळङ्गिड विलङ्गल्हळ् कुलुङ्ग वॅयिलुम्
कण्डु ळङ्गदि कुरैन्दिड नॆडुङ्गडल् शुलाम्
मण्डु ळङ्गमर वन्दहन् मनन्द ळरवे 8

पुण् तुळङ्कि अन–व्रण चंचल हों, जैसे; कण्कळ् अनल् पॊङ्क–आँखों से अंगारे छूटे; मळै चूळ् विण्–मेघाच्छन्न आकाश; तुळङ्किट–काँपा; विलङ्कल्कळ् कुलुङ्क–पर्वत डोल उठे; वॅयिलुम्–सूर्य भी; कण्टु–(इसको) देखकर; कति कुरैन्तिट–मन्द-गति हुआ; नॆटुम् कटल् चुलाम्–विशाल सागरों से आवृत; मण् तुळङ्क–भूमि थर्रा उठी; मर् अन्तकन्–भयंकर यम; मनम् तळर–मन में ढीला पड़ गया। ८

आँखों से अंगारे निकल रहे थे, जिसके कारण वे आँखें चंचल व्रण के समान दिखती थीं। मेघयुक्त आकाश कोप रहा था। पर्वत डोल रहे थे। सूर्य भी मन्दगति हो गया। बड़े सागरों से आवृत भूमि थर्रा उठी। क्रूर यम भी विकलमन हो गया। ८

पुक्क वाळरि मुळक्कु शॅवियिन् पॊरियुरप्
पक्क मितनु मणिमेरु शिहरङ् गुळैपडच्

चॆक्कर् वान्मऴै निहर्क्क वॆदिरुऱ्ऱ शॆरुवत्
तुक्क वीररुदि रत्तितॊऴिर् शॆच्चै यितॊडे 9

चॆवियिन् पॊऱि पुक्क–कर्णेन्द्रिय में आ रहे; वाळ् अरि–भयंकर सिंहों का; मुऴक्कु–गर्जन; उऱ–जोर से उठा, तव; पक्कम् मिन्तुम्–पार्श्व में चमकनेवाले; मणि–रत्नयुक्त; मेरु चिकरम्–मेरु-शिखर; कुऴैपट–शिथिल हो झुक गये; ऍतिर् उऱ्ऱ–सामने आये; चॆरुवत्तु–युद्ध में; उक्क वीरर् उतिरत्तिन्–मिटे हुए वीरों के रक्त से; चॆक्कर् वान् मऴै निकर्क्क–लाल आकाश के मेघों के समान; ऑळिर्–शोभायमान; चॆच्चैयिन् ओटु–चन्दन-चर्चा के साथ। ६

उसके कर्णगह्वर में सिंह रहकर दहाड़ रहे थे। उसको सुनकर दीप्त नगों के साथ शोभायमान मेरु के शिखर निर्बल होकर गिर गये। उसके सामने जो युद्ध करने आये थे, उन सब वीरों को उसने मार दिया था। तब उनके शरीर से निकलकर रक्त इसके शरीर पर जम गया था। लालगगन के रक्तवर्ण मेघ के समान रक्त और चन्दन का लेप लगता था। ९

पडैयॊ डाडवर्हळ् पाय्बुरवि माल्ह ळिरुतेर्
नडैय वाळरिहळ् कोळुळुवै नण्णि यवॆलाम्
अडैय वारियर वान्मुडि यन्नेह विदवन्
तॊडैयत् मालै तुयल्वन् दुलवुतोळ् पॊलियवे 10

पटैयॊटु आटवर्कळ्–हथियारों से लैस वीर; पाय् पुरवि–फाँद चलनेवाले अश्व; माल् कळिरु–विशालकाय हाथी; तेर्–रथ; नटैय–संचरणशील; वाळ् अरिकळ्–भयंकर सिंह; कोळ् उळुवै–खूनी बाघ; नण्णिय ऍलाम्–जो पास आये, उन सबको; अटैय वारि–एक साथ उठा लेकर; अरवाल् मुटि–बड़े सर्प (की रस्सी) से पिरोकर बनी; अनेक वित–विविध; वन् तॊटैयल् मालै–भारी गुँथी हुई मालाएँ; तुयल् वन्तु–लटककर; उलुवु–(जिन पर) डोल रही थीं, वे; तोळ् पॊलिय–कंधे शोभते थे, ऐसा। १०

उसके कण्ठ में अनेक सारयुक्त मालाएँ डोल रही थीं। मालाओं में कौन सी वस्तु गुँथी हुई थी ? युद्धवीर, फाँदनेवाले अश्व, मत्त गज, रथ, संचरणशील सिंह, घातक बाघ और अन्य जो भी दृष्टि पड़े, उनको एक साथ उठा लेकर उसके बहुत बलवान सर्प पर गूँथकर उसने वे मालाएँ बनायी थीं। उन मालाओं से उसके कन्धे शोभ रहे थे। १०

कुन्ऱु तुन्ऱिन वॆन्नक्कुमुरु कोब मदमा
ऑन्ऱि नॊन्ऱिडै यडुक्किन तडक्कै युदवप्
पिन्ऱु हिन्ऱ पिलनिऱ् पॆरियवायि नॊरुपाल्
मॆन्ऱु तिन्ऱु विळियातु विरियुम् बशियॊडे 11

कुन्ऱु तुन्ऱिन ऍन–पर्वत जुट गये हों, ऐसा; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱु–एक दूसरे पर;

इटै अट्टुक्कित्त–रखे हुए; कुमुऱु कोप–चिंघाड़नेवाले और क्रुद्ध; मत मा–मत्त गजों को; तट कै उतव–बड़ा हाथ (एक-एक कर) लेकर दे रहा था, तब; पिऩ्ऱुकिऩ्ऱ–उपमा कहें तो पिछड़ जानेवाली; पिलतिल्–गुफा के समान; पॆरिय वायिल्–बड़े मुख में; ऒरु पाल् मॆऩ्ऱु तिऩ्ऱुम्–एक ओर चबाते हुए खाते रहने पर भी; विळियातु–उससे शान्त न होकर; विरियुम्–बढ़नेवाली; पचि ऒट्टु–बुभुक्षा के साथ। ११

एक हाथ में अनेक पर्वतसम क्रुद्ध और मत्तगज एक के ऊपर एक चुनकर रखे गये थे। दूसरा हाथ एक-एक करके उनको लेकर उसके गुफा-सम बड़े मुख में डालता था। वह एक ओर उसको चबाता हुआ आ रहा था तो दूसरी ओर उसकी बुभुक्षा शान्त होने के विपरीत बढ़ती चली जा रही थी। ११

पऩ्ऩ हातिबर् पणामणि परित्त वैपुहुत्
तॆऩ्ऩ वात्तवर् विमाऩ मिडैयिट् टरविडैत्
तुऩ्ऩु कोळिऩॊडु तारहै तॊडुत्त तुळऩिच्
चऩ्ऩ वीर मिडैमिऩ्ऩु तडमार्बि ऩॊडुमे 12

पऩ्ऩक अतिपर्–सर्पराजाओं के; पणा मणि परित्तु–फनों के रत्नों को छीनकर; अरवु इटै–एक ही सर्प पर; अवै पुकुत्तु ऎऩ्ऩ–उनको जड़ दिया गया हो, वैसे; वात्तवर् विमाऩम् इटै इट्टु–देवयानों को बीच-बीच में लटकाकर; तुऩ्ऩु–सटे रहे; कोळिऩॊटु–नवग्रहों के साथ; तारकै–नक्षत्रों को; तॊटुत्त–पिरोकर; तुळऩि–शब्दायमान; चऩ्ऩ वीरम्–'शन्नवीर' नामक विजयमाला; इटै मिऩ्ऩुम्–जिसके मध्य चमकती है; तट मार्पिऩॊटु–उस विशाल वक्ष के साथ। १२

उसके वक्ष पर 'शन्नवीरम्' नाम की जयमाला शोभित थी। वह ऐसी थी, मानो आठ सर्प-नायकों (वासुकि, अनन्त, दक्ष, शंखपाल, गुळिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक —इन) के फणों को छीनकर बड़े सर्प में उनको जड़कर बनाई गई हो! उसकी जयमाला में देवयान, नवग्रह और तारे गुँथकर लटक रहे थे। उससे ध्वनि भी निकल रही थी। १२

पम्बु शॆक्क रॊळियॊक्कु मयिर्पक्क मॆरियक्
कुम्ब मुऱ्ऱ वुयर्नॆऱ्ऱि यिऩ्विशित् तॊळिकुलाम्
उम्ब रुक्करशऩ् माल्करियि ऩोडै यॆयिरुण्
किम्बु रिप्पॆरिय तोळ्व ळैयॊडुङ् गिळरवे 13

पम्पु–फैली हुई; चॆक्कर् ऒळि ऒक्कुम्–लाल गगन की ज्योति के समान; मयिर्–बाल; पक्कम् ऎरिय–पार्श्व में ज्वलन्त हैं; उम्परुक्कु अरचऩ्–देवराज; माल्–इन्द्र के; करियिऩ्–हाथी (ऐरावत) के; कुम्पम् उऱ्ऱ–कुंभों-सहित; उयर् नॆऱ्ऱियिल् विचित्तु–उन्नत मस्तक पर बँधकर; ऒळि कुलाम्–प्रभा फैलानेवाला; ओटै–मुखपट्ट; ऎयिऱु उण्–(ऐरावत के) दाँतों-सहित; किम्पुरि–किंपुरी नाम के; पॆरिय तोळ् वळैयॊटुम्–बड़े बाहुवलयों के साथ; किळर–शोभायमान होकर। १३

उसके शरीर के लाल गगन के समान बाल चारों ओर ज्वलंत थे। उसके सिर पर पट्टी थी, जिसको ऐरावत के भाल से निकालकर उसने पहन लिया था। ऐरावत के ही दाँतों से अलंकृत 'किंपुरी' नाम के बाहुवलयों से उसकी भुजाएँ भूषित थीं। १३

तङ्गु तिण्करिय काळिमै तळैन्दु तवळप्
पोङ्गु वॅङ्गॊडुमै यॅन्बदु पुळुङ्गि यॆळमा
मङ्गु पादहम् विडङ्गनल् वयङ्गि निमिरक्
कङ्गुल् पूशिवरु हिन्ऱकलि कालमॅन्नवे 14

तङ्कु–युक्त; तिण् करिय–बल तथा गौरवपूर्ण; काळिमै तळैन्तु–कालिमा घनीभूत होकर; तवळ–छटा दिखाती है; पॊङ्कु–ऊपर उठकर; वॆम् कॊटुमै ॲॅन्पतु–भयंकर क्रूरता नाम की वस्तु; पुळुङ्कि ॲॅळ–ताप देती हुई बढ़ी; मङ्कु मा पातकम्–हानिकारक महापाप; विटम् कनल् वयङ्कि–विष और आग से मिलकर; निमिर–वर्धित होता है; कङ्कुल् पूचि वरुकिन्ऱ–अन्धकार को मलकर आनेवाले; कलि कालम् ॲॅन्न–कलिकाल के समान। १४

उसका काला रंग घना और बहुत ही गाढ़ा था। उसकी क्रूरता अत्यधिक उठनेवाली थी। उसका महान नाशकारी पातकगुण विष और आग के साथ मिलकर अत्यधिक भयावना होता था। इसलिए वह अँधेरे का लेप लगाकर आनेवाले कलिकाल के समान लगता था। १४

शॅऱ्ऱ वाळुळु वैवन् शॅऱियतट् टिरुहुऱच्
चुऱ्ऱि वारण वुरित्तॊहुदि नीवि तॊडरक्
कॊऱ्ऱ मेवु दिशैयानै यिन्मणिक् कुलमुडैक्
कऱ्ऱै माशुणम् विरित्तु वरिकच् चॊळिरवे 15

चॆऱ्ऱ–हत; वाळ् उळुवै–भयंकर बाघ का; वन् चॆऱि अतळ्–कठिन और मोटा चमड़ा; तिरुकु उऱ–उस पर लपेटा गया है; चुऱ्ऱि–वेष्टित करके; वारणम् उरि तॊकुति—गजचर्म-राशि; नीवि तॊटर–कमर में गाँठ लगाकर पहनाई गई है; कॊऱ्ऱम् मेवुम्–सारयुक्त; तिचै यानैयिन्–दिग्गजों के; मणि कुलम् उटै–मणिकुल-सहित; कऱ्ऱै माचुणम् विरित्तु वरि–बड़े अजगर को तानकर बाँधा गया; कच्चु–कमरबन्द; ऑळिर–प्रकाशमय रहा। १५

उसने अपने द्वारा हत बाघ के चर्म को उत्तरीय के रूप में छाती पर पहन रखा था। कमर पर हाथियों के चर्म बन्धन के साथ लपेटे गये थे। उसका कमरबन्द अजगर का बना था, जिसमें दिग्गजों के दाँतों के नग जड़े हुए थे। १५

शॆङ्ग णङ्गवर विन्नम्बॊरु विल्शॆम् मणिविराय्
अङ्ग णङ्ग वलयङ्गळु मिलङ्ग वणियच्

चङ्ग णङ्गिय शलञ्जल मलम्बु तवळक्
कङ्ग णङ्गळु मिलङ्गिय करम्बि ऱ्ऴवे 16

चॅम् कण्–लाल आँखों के; अङ्क अरवु इनम्–लम्बे शरीर वाले सर्प-दल के; पॉरुवु इल् चॅम् मणि–अनुपमेय श्रेष्ठ लाल रत्नों को; विराय्–रखकर; अम् कण्–(बने हुए) विशाल; अङ्क वलयङ्कळुम्–शरीर के वलयों के; विलङ्क–हिलते रहते; विरवि–मिलकर; चङ्कु अणङ्किय–अन्य शंखों की ईर्ष्या के पात्र; चलञ्चलम् अलम्पु–'चलंजल' नाम के शंखों के शब्दसह रहनेवाले; तवळ कङ्कणङ्कळुम्–धवल कंकण; इलङ्किय करम्–भूषित हाथ; पिऱळ–शोभित हों। १६

उसके शरीर पर यत्र-तत्र वलय थे। वे बड़े थे और उनमें लाल आँखों वाले लम्बे सर्पों के फनों से छीने हुए श्रेष्ठ लाल रत्न जड़े थे। 'चलंजल' नामक शंख के, जिसको देखकर अन्य शंख ईर्ष्या से पीड़ित होते थे, यानी उत्कृष्ट जाति के थे, धवल कंकण उसके हाथों में शोभित होकर नाद कर रहे थे। १६

मुन्दु वॅळ्ळिमलै पॉऩ्ऩिऩ् मलैयोडु मुरणप्
पन्दि ऩुन्दुकळल् पाडुपड वूडु पडर्वोऩ्
वन्दु मण्णिऩिडै योॅऩ्ऩिनुम् वाऩि ऩिडैयोर्
शिन्दै युळ्ळुम् विळियुळ्ळुम् मुळऩॆऩ्ऱ तिऱलोऩ् 17

मुन्तु–अग्रगण्य; वॅळ्ळि मलै–श्वेत कैलासपर्वत को और; पॉऩ्ऩिऩ् मलैयोटु–स्वर्ण (मेरु) पर्वत के साथ; मुरण–विपरीत जाए, ऐसा; पन्तिऩ् उन्तु–गेंद के समान उछालकर; कळल् पाटु पट–पैरों से उन्हें कष्ट देते हुए; ऊटु पटर्वोऩ्–उनके मध्य से जानेवाला; वन्तु मण्णिऩ् इटैयोऩ् ऑऩ्ऩिनुम्–आकर भूमि में रहता, तो भी; वाऩिऩ् इटैयोर्–आकाश में रहनेवालों के; चिन्तै उळ्ळुम्–मन में और; विळि उळ्ळुम्–आँखों में; उळऩ्–रहता है; ऑऩ्ऱ–ऐसा; तिऱलोऩ्–प्रतापी। १७

वह श्वेत कैलास पर्वत और स्वर्ण मेरु पर्वत को गेंद के समान ऐसा ढकेलता आता था कि वे आगे-पीछे हो जाते थे। यद्यपि वह भूमि पर ही था तो भी देवों के मन और उनकी आँखों से न हटता था —ऐसा आक्रांतकारी था वह। १७

पूद मत्तनैयु मोर्वडिवु कॉण्ड पुदिदॆऩ्
ऱोद वॉत्त वुरुवत्त ऩुरुमॊत्त कुरलन्
काद लित्तय ऩळित्त कडैयिट्ट कणिदप्
पाद लक्कमद वॅऱ्पवै पडैत्त वलियाऩ् 18

पूतम् अत्तनैयुम्–पाँचों भूतों ने; ओर् वटिवु कॉण्ट–एकाकार रूप लिया हो; पुतितु ऑऩ्ऱु–ऐसा एक नया रूप है; ओत ऑत्त उरुवत्तऩ्–कहने योग्य आकार वाला; उरुम् ऑत्त कुरलऩ्–वज्र-सम कण्ठ-स्वर वाला; अयऩ्–ब्रह्मा का; कातलित्तु

अळितत्त–प्यार से दत्त; कटै इट्ट पात लक्कम्–निर्धारित पाव (चौथाई) लाख; मत वॅऱ्पु इटै पटैत्त–मत्तगजों का सम्मिलित; वलियान्–बल वाला। १८

पाँचों भूतों ने मिलकर एक अभूतपूर्व घोर रूप धर लिया है —ऐसा कहने योग्य रूप था उसका। उसे ब्रह्माजी ने तृप्त होकर निर्धारित कर चौथाई लाख मदमत्त गजों का-सा बल दिया था। १८

शार वन्दयल् विलङ्गितन् मरङ्ग डरैयिल्
पेर वन्गिरि पिळन्दुह वळर्न्दि हल्पॅऱा
वीर वॅञ्जिलैयि ऩोरॅदिर् विराद नॅन्नुमक्
कोर वॅङ्ग णुरुमे ऱुनकॉडुन् दॊळिलिनान् 19

विरातन् ॲन्नुम्–विराध नाम का; अ कोर वॅम् कण्–उन घोर भयंकर आँखों का; उरुम् एऱु अन–अशनि-सम; कॉटुम् तॊळिलितान्–क्रूरकर्मा; मरङ्कळ् तरैयिल् पेर–तरुओं को धरती पर गिराते हुए; वन् किरि पिळन्तु उक–बलवान पर्वतों को चूर करते हुए; वळर्न्तु–वर्धित होकर; इकल् पॆऱा–युद्ध जिन्हें प्राप्त नहीं हुआ, उन; वीर वॅम् चिलैयितोर्–वीरों, भयंकर धनुर्धरों; अयल्–के पास; चार वन्तु–समीप आकर; ऍतिर् विलङ्कितन्–रोककर खड़ा रहा। १९

उस राक्षस का नाम विराध था। उसकी घोर आँखें बड़ी भयंकर थीं। उसका कण्ठस्वर अशनिराज का-सा था। उसके काम भी उतने क्रूर थे। मार्ग के तरुओं को धराशायी बनाते हुए और कठिन पर्वतों को चूर करते हुए अति तीव्र गति के साथ वह वर्धित बल वाले, और अब तक जिन्हें युद्ध का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था, उन धनुर्धरों, श्रीराम और लक्ष्मण के सामने समीप में आया और उनको रोके खड़ा रहा। १९

निल्लु निल्लुमॅन वन्दु निणमुण्ड नॅडुवॅण्
पल्लुम् वल्लॅयिऱु मिन्नु पहुवाय् मुळैतिऱन्
दल्लि पुल्लुमल रन्न मनैयाळै यॊरुहैच्
चॊल्लु मॅल्लैयिन् मुहन्दुयर् विशुम्बु तॊडर 20

निणम् उणट–मांस-भरे; नॆटु वॅण् पल्लुम्–लम्बे श्वेत दाँत; वल् ऍयिऱुम्–सुदृढ़ मसूड़े; मिन्तु–जिसके अन्दर साफ़ चमकते हैं; पकु वाय् मुळै–उस द्विविभक्त मुख गह्वर को; तिऱन्तु–खोले; निल्लुम् निल्लुम्–खड़े रहो, खड़े रहो; ॲत पर; अल्लि पुल्लु मलर्–दल-लसे कमलपुष्प पर; अन्तम् अनैयाळै–वास करनेवाली हंसिनी-समाना को; वन्तु–सामने आकर; चॊल्लुम् ॲल्लैयिल्–वैसा कहने के पहले ही; ऑरु कै मुकन्तु–एक हाथ से उठाकर; उयर् विचुम्पु तॊटर–ऊँचे आकाश में चला, तब। २०

वह जो मांस चबा रहा था, वह उसके बड़े-बड़े श्वेत दाँतों के बीच फँसा हुआ था। उसके मसूड़े भयंकर रूप से कठोर थे। ऐसे दाँतों और

मसूड़ों से युक्त अपने गुफा-सम मुख को खोलकर उसने चिल्लाया कि रुको, रुको। कथन पूरा होने के पहले ही उसने कमल पर वास करनेवाली हंसिनी-तुल्य सीताजी को एक हाथ से उठा लिया और आकाश में उठकर जाने लग गया। २०

काळै मैन्दरदु कण्डु कदम्वन्दु कदुवत्
तोळिल् वॅञ्जिलै यिडङ्गौडु तॊडर्न्दु शुडर्वाय्
वाळि तङ्गिय वलङ्गै यवर्वञ् जनैयडा
मीळ्दि यॅङ्गहरि यॆन्बदु विळम्ब ववनुम् 21

काळै मैन्तर्—ऋषभ-सम कुमार; अतु कण्टु—उसको देखकर; कतम् वनतु कतुव—क्रोध के बढ़ते; तोळिल् वॆम् चिलै इटम् कॊटु—कंधे पर रहे धनुष को बाएँ हाथ में लेकर; चुटर् वाय् वाळि—दीप्तमुखी शर; तङ्किय वलङ्कै अवर्—लिये हुए दाहिना हाथ वाले; तॊटर्न्तु—पीछा करते हुए; अटा—रे; वञ्चतै—वंचना है; ऍङ्कु अकल्ति—कहाँ जाओगे; मीळ्ति—लौटो; ऍन्पतु विळम्प—ऐसा कहने पर; अवनुम्—वह भी। २१

ऋषभ-समान उन तरुण वीरों ने उसका यह कुकृत्य देखा। उन्हें क्रोध प्रचण्ड वेग से आया। कन्धे पर रहे धनुष को उन्होंने अपने बायें हाथ में लिया और उज्ज्वल-मुख के शर को दायें हाथ में ले लिया। उसके पीछे जाते हुए ज़ोर से कहा कि रे! वंचना का काम करके कहाँ जाओगे? मुड़ो। यह सुनकर विराध बोला। २१

आदि नान्मुहन् वरत्ति नॆनदावि यहलेन्
एदि यावदुवु मिन्ऱि युलहियावु मिहलिल्
शादि यादनवु मिल्लै युयिर्तन् दनॆनडा
पोदि मादिवळै युन्दि यिनिदॆन्ऱु पुहल 22

आति नान् मुकन्—(सृष्टि के) आदि चतुर्मुख के; वरत्तिन्—वर (के प्रताप) से; ऍन्तु आवि अकलेन्—प्राण-रहित नहीं होऊँगा; उलकु यावैयुम्—सभी लोकों के सभी लोगों के साथ; इकलिल्—युद्ध में; एति यावैयुम् इन्ऱि—बिना हथियार के; चातियाततवुम् इल्लै—नहीं साधा हो, ऐसा कोई काम नहीं है; उयिर् तन्ततन्—जान बख़्शी है; अटा—रे; मातु इवळै उन्ति—इस स्त्री को (मेरी ओर) ढकेल (छोड़) कर; इतितु पोति—सुख से जाओ; ऍन्ऱु पुकल—ऐसा बोला, तब। २२

"सृष्टि के आदिकर्ता, ब्रह्मा ने मुझे वर दिया है। उसके प्रभाव के कारण मुझे मार नहीं सकते। मेरे प्राण अलग नहीं होंगे। सारे लोकों के सारे लोग मेरे साथ लड़ने आये —तब बिना हथियार के ही मैंने कितने ही अपूर्व काम साधे हैं! ऐसा कोई काम नहीं, जिसको मैंने सिद्ध नहीं किया हो! अब मैं तुम लोगों की जान बख्श देता हूँ। रे, इस नारी को

मेरे पास ठुकरा दो और जान लेकर भाग जाओ।" —विराध ने चेतावनी दी! । २२

वीर नुञ्जिऱिदु मॅन्मुरु वल्वॅण् णिलवुहप्
पोर ऱिन्दिल निवन्ऱनदु पॉऱ्पु मुरणुम्
तीरु मॅञ्जियॅन नॅञ्जिलुरु शिन्दै तॅरियप्
पार वॅञ्जिलैयि नाणॉलि पडैत्त पॉळुदे 23

वीरनुम्–वीर श्रीराम भी; मॅल् मुऱुवल्–मृदु दाँतों को; चिऱितु वॅण् निलवु उक–ज़रा मन्दहास प्रकट करने देते हुए; पोर् अऱिन्तिलन्–युद्ध-तन्त्र नहीं जानता; इवन् ततु पॉऱ्पुम् मुरणुम्–इसका शान और बल; ऍञ्चि तीरुम्–क्षीण होकर नष्ट हो जायगा; ऍन–ऐसा; नॅञ्चिल् उऱु चिन्तै तॅरिय–मन में उठा विचार प्रकट करके; पार वॅम् चिलैयिन्–भारी भयंकर धनुष के; नाण् ऑलि–डोरे की टंकार; पटैत्त पॉळुतु–जब निकाली, तब । २३

वीर श्रीराम ने अपने मृदु, सुन्दर दाँतों को किंचित प्रकट करते हुए मन्दहास किया। उन्होंने सोचा कि यह युद्ध करने का प्रकार नहीं जानता। उसका शान और बल क्षीण होकर नाश हो जाएँगे। उसको अपना प्रताप जताने के लिए उन्होंने अपने भारी धनुष के डोरे को टंकृत किया। २३

इलैहॉळ् वेलड लिराम नॅळुमेह वुरुवन्
शिलैहॉ णाणॅडिय कोदै यॉलियेऱ् तिरैनीर्
मलैह णीडुतल नाहर्पिलम् वान मुदलाम्
उलह मेळु मुरुमे ऱॅनवॊलित् तुरऱवे 24

ऍळु मेक उरुवन्–ऊपर उठनेवाले मेघ-सम श्यामवर्ण; इलै कॉळ् वेल्–पत्राकार-शीर्ष भालाधारी; अटल् इरामन्–बलवान श्रीराम; चिलै कॉळ्–धनु के; नॅटिय–लम्बे; कोतै–हस्तत्राण-सहित हस्त से; नाण् ऑलि एऱु–डोरे को मारकर किये गये बड़े शोर ने; तिरै नीर्–लहर-युक्त समुद्रजल; मलैकळ्–पर्वत; नीडु तलम्–इनसे आवृत विशाल भूमि; नाकर् पिलम्–नागलोक; वानम्–सुरलोक; मुतलाम् उलकम् एळुम्–आदि सातों लोक; उरम् एऱु ऍन–अशनिराज के समान; ऑलित्तु उरऱ–बड़ा तहलका मचाया, तब । २४

जब ऊपर उठनेवाले मेघ के समान श्यामवर्ण और पत्राकार के सिर वाले भाले के धारक श्रीराम ने अपने बड़े हस्तत्राण से रक्षित हाथ से डोरे को मारकर टंकार निकाली, तब लहरोंसहित सागर, पर्वत, विशाल भूतल, नागलोक आदि सातों लोक सब स्थानों में अशनि के घोर नाद के समान ध्वनि उठी और बढ़ी। २४

वञ्ज हक्कॊडिय पूशै नॆंडुवायिन् मरुहुम्
पञ्ज रक्किळि यॆन्नक्कदरु पावै यैविडा
नॆञ्जु ळुक्कित्त नॆन्नच्चिरिदु निन्रु निनैया
अञ्ज नक्किरि यन्नानॆदि ररक्क नऴला 25

अरक्कन्–राक्षस; वञ्चक कॊटिय–वंचना-भरे, क्रूर; पूचै–मार्जार के; नॆट्टु वायिल्–बड़े मुख में; मरुकुम्–फँसकर छटपटानेवाली; पञ्चर किळि अॆन्न–पिंजरे की शुकी के समान; कतरु पावैयै–चीखनेवाली देवी को; विटा–छोड़कर; नॆञ्चु उळुक्कित्तन् अॆन्न–मन कम्पित हुआ सा; चिरितु निन्रु निनैया–थोड़ी देर तक रुककर सोचकर; अञ्चन किरि अन्नान् ऎतिर्–अंजनगिरि-सम श्रीराम के सामने; अऴला–आगबबूला होकर। २५

राक्षस ने अपने हाथ में, वंचक और क्रूर मार्जार के मुख में पड़कर छटपटानेवाली पंजरस्थ शुकी के समान त्रस्त और रोती हुई सीतादेवी को नीचे छोड़ दिया। फिर कुछ देर अभिभूत-सा सोचता हुआ खड़ा रहा। बाद श्रीराम पर आँखें डालकर आगबबूला हुआ। २५

पेय्मु हप्पिणि यरप्पहैञर् पॆट्पि नुदिरम्
तोय्मु हत्तदु कन्नत्तदु शुडर्क्कु दिरैयिन्
वाय्मु हत्तिडै निमिर्न्नदु वडवेलै परुहुम्
तीमु हत्तिरि शिहैप्पडै तिरित्तॆ ऱियवे 26

पेय् मुक पिणि अऱ–भूतों की भूख को मिटाते हुए; पकैञर् शत्रुओं के; उतिरम् तोय्–रक्त में मग्न; पॆट्पित मुकत्ततु–होने का प्रभाव रखनेवाला; कन्नत्ततु–सार-युक्त; चुटर् कुतिरैयिन्–निकालनेवाली, अश्वाकार का; वाय् मुकत्तु इटै निमिर्न्तु–मुँह और आनन लेकर जलनेवाली; वट वेलै परुकुम्–उत्तरी सागर को पीने (सोखने) वाली; ती मुक–अग्नि को अपने सिरे पर लिये रहनेवाले; तिरि चिकै पटै–त्रिशीर्ष त्रिशूल को; तिरित्तु ऎऱिय–घुमाकर फेंका, तब। २६

क्रोध के आवेश में आकर उसने त्रिशूल फेंका। त्रिशूल कैसा था? उस पर भूत-प्रेतों की भूख मिटाते हुए (विराध द्वारा) जो शत्रु मारे गये थे, उनका रक्त लगा हुआ था। बड़ा सारयुक्त था। अश्व के मुँह और आनन का रूप लेकर जो वड़वा-मुखाग्नि ज्वाला के साथ जलकर उत्तरी सागर का जल सोखती है, वह अग्नि उसकी शिखा पर बैठी थी। उसने वैसे त्रिशूल को घुमाकर श्रीराम पर चलाया। २६

तिशैयुम् वानवरु निन्ऱ तिशैमावु मुलहुम्
अशैयु मालमॆन वन्नवयिन् मिन्नि वरलुम्
वशैयिन् मेरुमुदल् माल्वरैह ळॆळ्िन् वलिशाल्
विशैय वार्शिलै यिरामनॊरु वाळि विडवे 27

अऩ्ऩ अयिल्–वह शूल; तिचैयुम्–दिशाएँ; वानवरुम्–देव (दिग्पाल); निऩ्ऱ तिचै मावुम्–दिशाओं में स्थित दिग्गज; उलकुम्–सारे लोक; अचैयुम्–(इसको देखकर) चलता आनेवाला; आलम् ऍऩ–विष समझे, ऐसा; मिऩ्ऩि वरलुम्–चमकता आया तो; इराकवऩ्–श्रीराम; वचै इल्–अनिन्द्य; मेरु मुतल् माल् वरैकळ्–मेरु से लेकर बड़े-बड़े पर्वत; एऴिऩ्–सातों से; वलि चाल्–सशक्त; विचैय वार् चिलै–विजयशील अपने धनु से; ऒरु वाळि विट–एक बाण चलाने पर । २७

उसको चमकते आते देखकर दिशाएँ, दिग्पाल, देव, दिग्गज और सारे लोक यह सोचने लगे कि यह चलता-फिरता विष ही है ! श्रीराम ने अनिन्द्य मेरु आदि सातों पर्वतकुलों से बढ़कर सशक्त अपने धनु से एक विजयशील शर को छोड़ा । २७

इऱ्ऱ दिऩ्ऱोडिव् वरक्करुहुल मॆऩ्ऱु पहले
वॆऱ्ऱ विण्णिनिडै निऩ्ऱु नॆडुमीऩ् विऴुवपोल्
शुऱ्ऱ मैन्द शुडरॆःहम दिरण्डु तुणिया
अऱ्ऱ कण्डमवै आशैयिऩ दन्द मुऱवे 28

इ अरक्कर् कुलम्–यह राक्षसकुल; इऩ्ऱोटु इऱ्ऱतु–आज ही समाप्त हो गया; ऍऩ्ऱु–कहकर; पकले–दिन में; वॆऱ्ऱ विण्णिऩ् इटै निऩ्ऱु–खुले गगन में खड़े होकर; नॆटु मीऩ् विऴुव पोल्–बड़े नक्षत्र नीचे गिरते हों, जैसे; चुऱ्ऱु अमैन्त चुटर्–चारों ओर प्रकाश से युक्त; अ.·.कम् अतु–शूल वह; इरण्टु तुणिया–दो टुकड़े होकर; अऱ्ऱ कण्टम् अवै–भिन्न वे खण्ड; आचैयिऩतु अन्तम् उऱ–दिशाओं के छोर पर जा गिरे, तब । २८

आज ही यह राक्षसकुल समाप्त हो गया ऐसा (लोग डरें, ऐसा) सब ओर से दीप्त वह शूल दो खण्डों में कट गया और वे खण्ड दिशाओं के छोर में जाकर गिरे । उनको देखते वक्त ऐसा लगा, मानो दिन में ही बड़े-बड़े नक्षत्र आकाश से गिर रहे हों । २८

शूरॊ डुङ्गयि ऱुणिन्दिऱुदल् कण्डु शिऱिदुम्
पोरॊ डुङ्गलऩ् मऱङ्गॊडु पुऴुङ्गि निरुदऩ्
पारॊ डुङ्गुरु करङ्गॊडु परुप्प दमॆलाम्
वेरॊ डुङ्गडि दॆडुत्तॆदिर् विशैत्तु विडलुम् 29

निरुतऩ्–राक्षस; चूर् ऒटुङ्कु अयिल्–क्रूरता का आवास अपने शूल को; तुणिन्तु इऱुतल् कण्टु–कटकर मिटते देखकर; चिऱितुम् पोर् ऒटुक्कलऩ्–कुछ भी युद्ध से न उचटकर; मऱम् कॊटु–कठोरता को अपनाकर; पुऴुङ्कि–क्रोध-तप्त होकर; पार् ऒटुङ्कु उरु–भूमि को भी अन्तर्हित करनेवाले; करम् कॊटु–करों से; परुप्पतमॆलाम्–सारे पर्वतों को; वेरॊटुम् कटितु ऍटुत्तु–जड़ से जल्दी उखाड़कर; ऍतिर्–श्रीराम के सामने; विचैत्तु विटलुम्–वेग के साथ फेंकता, तब । २६

राक्षस ने देखा कि उसका भयंकर शूल कटकर मिट गया । तो

भी उसका युद्धोत्साह कम नहीं हुआ। अधिक क्रुद्ध होकर उसने अपने बड़े हाथों से सभी प्राप्य पर्वतों को जड़ से उखाड़कर श्रीराम पर बहुत वेग से फेंका। २९

वट्ट मिट्टुमिळिर् नॅऱ्ऱियित् वयङ्गु वयिरक्
कट्ट मैन्द कदिर्वाळि यॅदिरे कडवलाल्
विट्ट विट्टवरै मीळववत् मॅय्यित् विशैयाल्
पट्ट पट्ट विडमॅङ्गु मुडलूरु पडलुम् 30

वयङ्कु वयिर कट्टु अमैन्त–सुन्दर और सुदृढ़ बन्धनों से युक्त; कतिर् वाळि–उज्ज्वल बाणों को; वट्टम् इट्टु–गोल रूप में; मिळिर् नॅऱ्ऱियित्–प्रकाशमान भाल लक्ष्य कर; कटवलाल्–चलाने से; विट्ट विट्ट वरै–एक के बाद एक प्रेषित पर्वत; मीळ–लौट गये और; अवन् मॅय्यिल्–उसके शरीर पर; उटत्–एक दम; विचैयाल्–वेग के साथ; पट्ट पट्ट इटम् ऍङ्कुम्—जहाँ-जहाँ पर्वत लगे, उन स्थानों में; ऊरु पटलुम्–व्रण हुए, तब। ३०

तब श्रीराम ने अपने सुन्दर और सुदृढ़ बन्धनयुक्त धनुष पर उज्ज्वल शर चढ़ाकर राक्षस के गोल भाल को लक्ष्य बनाकर चलाया। उसने उन पर्वतों को उसी पर ढकेल दिया। उन पर्वतों के उसके शरीरांगों पर गिरने से उसके शरीर पर सर्वत्र व्रण हो गये। ३०

ओम रामरै यॉरुङ्गु मुणर्वो रुणर्वुरुम्
नाम रामवरै नल्लऱ निरुत्त नणुहित्
ताम रावणै तुऱन्दु तरैनिन्ऱ वरैयोर्
माम रामर मिरुत्तदु कॊडॆऱ्ऱ वरलुम् 31

ओम् अ रामरै–ओंकार रूपी उन श्रीराम को; ऑरुङ्कुम् उणर्वोर्–पूर्ण रूप से जाननेवालों द्वारा; उणर्वु उरुम्–जानने योग्य; नामर् आम् अवरै–रामनामधारी उनको; नल् अऱम् निऱुत्त–श्रेष्ठ धर्म की संस्थापना के लिए; ताम् अरावणै तुऱन्तु–शेष-शय्या त्यागकर; तरै नणुकि निन्ऱवरै–भूलोक पर जो अवतरित हुए हैं, उनको; ओर् मरामरम् इऱुत्तु–एक बड़े सालतरु को तोड़कर; अतु कॊंटु–उससे; ऍऱ्ऱ वरलुम्–मारने जब आया, तब। ३१

विराध एक बड़े सालतरु को तोड़ लेकर श्रीराम पर मारने आया। श्रीराम कौन थे? 'प्रणव' के अर्थ, ज्ञानियों के ज्ञान, सर्वाभीष्टदायक राम-नाम से ज्ञात होनेवाले और श्रेष्ठ धर्मस्थापनार्थ क्षीरसागर पर की शेष-शय्या छोड़कर भूमि पर अवतरित भगवान श्रीविष्णु थे। उनको एक तरु से मारना चाहता था विराध!। ३१

एरु शेवह निरण्डिन्नॊ डिरण्डु कणैयाल्
वेरु वेरुतुणि शॅय्ददु विळुत्ति विशैयाल्

मारि मारिनिमिर् तोळिडैयु मार्बि निडैयुम्
आरु मारुमयिल् वॅङ्गणै यळुत्त ववनुम् 32

एरु चेवकन्–वर्धनशील वीरता के स्वामी; इरण्टिनोटु इरण्टु कणैयाल्–दो और दो (चार) बाणों द्वारा; अतु–उस वृक्ष को; वेरु वेरु–अलग-अलग; तुणि चॅय्तु–(खण्ड-खण्ड) काटकर; विळुत्ति–गिराकर; निमिर् तोळ् इटैयुम्–(विराध के) उन्नत कन्धों पर भी; मार्पिन् इटैयुम्–छाती में भी; मारि मारि–अलग-अलग; आरुम् आरुम्–छः और छः (बारह); अयिल् वॆम् कणै–तीक्ष्ण और कठोर अस्त्रों को; विचैयाल् अळुत्त–वेग के साथ चुभाते, तब; अवनुम्–वह भी। ३२

उत्तरोत्तर बढ़नेवाली वीरता के श्रीराम ने चार बाण चलाकर उस तरु के कई खण्ड बनाकर गिरा डाला। फिर उस राक्षस के बलवान कन्धों और छाती पर बारह शर जोर से चला दिये। ३२

मॊय्त्त मुट्टन दुडर्रलै तॊळैप्प मुडुहिक्
कैत्त वर्रिनिमिरक् कडिदु कन्रि विशिरुम्
ऐय्त्त मॅय्प्पॅरिय केळलॅन वॆङ्गुम् विशैयिल्
तैत्त वक्कणै तॅरिप्पमॅय् शिलिर्त्तु दरवे 33

तत्तु उटल् तलै–अपने शरीर पर; मॊय्त्त–गम्भीर रूप से लगे; मुळ्–बाणों के; तॊळैप्प–(शरीर को) वेधते; मुटुकि–शीघ्र; कैत्तु–(उससे) खीझकर; अवर्रिन्–उनसे; निमिर–बचने के लिए; कटितु कन्रि विचिरुम्–तुरन्त गुस्से के साथ झटकानेवाले; ऐय्त्त–पीड़ित; पॅरिय मॅय् केळल् अॅन–बड़े जंगली सुअर के समान; ऍङ्कुम्–शरीर में सर्वत्र; विचैयिल् तैत्त अ कणै–वेग के साथ चुभे उन शरों को; तॅरिप्प–छितराते हुए; मॅय् चिलिर्त्तु उतर–शरीर को (उसने) झटकाया। ३३

वे शर उसके शरीर पर लगकर अन्दर घुसने लगे। उसका मन खीझ उठा। उसने अपने शरीर को, आहत जंगली सुअर के समान झटकाया और उन शरों को बाहर गिराने की कोशिश की। ३३

ऍरियिन् वार्हणै यिरामन्विड वॆङ्गु निलैया
दुरुवि योडमर मोडु दल्चॅया वुणर्विनान्
अरुवि पायुम्वरै पोर्कुरुदि यारु पॅरुहिच्
चोरिय वेहवलि कॅट्टुणर्वु शोर्वु रुदलुम् 34

ऍरियिन् वार् कणै–आग के समान लम्बे (या आग्नेय) शरों को; इरामन् विट–श्रीराम ने छोड़ा, तब; ऍङ्कुम् निलैयातु–वे कहीं नहीं ठहरे; उरुवि ओट–उसके शरीर को बेधकर उस पार निकले; मरम् ओटुतल् चॅय्या उणर्वितान्–वीरता को चलने न देनेवाला वह; अरुवि पायुम् वरै पोल्–सरिताएँ जिस पर बहती हैं, उस पर्वत के समान; कुरुति आरु पॅरुकि चोरिय–(शरीर से) रक्त की नदियाँ बहाते हुए; वेक वलि कॅट्टु–वेग और बल क्षीण होकर; उणर्वु चोर्वु उरुतलुम्–चेतना खोकर श्लथ हुआ, तब। ३४

आग्नेय अस्त्र या अग्नि के समान वे लम्बे अस्त्र कहीं नहीं रुके। उसके शरीर में छेद लगाते हुए बाहर आये। तब भी वह राक्षस युद्ध से विरत नहीं हुआ। तो भी पर्वत पर नदियाँ बहतीं जैसे उसके शरीर से रक्त की नदियाँ वहीं और वह निर्बल होकर थोड़ा अचेत हुआ। ३४

मॆय्व रत्तिनन् मिडऱ्पडै विडप्प डुहिलन्
शॆय्यु मऱ्ऱुमिह लॆन्ऱु शिनवा ळुरुविवन्
कैतु णित्तु मॆनमुन्दु कडुहिप् पडर्पुयत्
तॆय्विन् मऱ्पॊरुवु तोळिरुव रेऱ निरुदन् 35

ऎय्वु इल्–अथक; मल् पॊरुवु तोळ् इरुवर्–मल्लयुद्ध-विजयी कंधों वाले दो; मॆय् वरत्तिनन्–यह अमर वर वाला है; मिटल् पटै विट–बलवान अस्त्र छोड़ने पर भी; पट्टुकिलन्–नहीं मरता; मऱ्ऱुम् इकल् चॆय्युम्–और आगे भी युद्ध करेगा; ऎन्ऱु–समझकर; चिन वाळ् उरुवि–कोप के साथ तलवार निकालकर; वन् कै तुणित्तुम्–इसके सशक्त हाथों को काट देंगे; ऎन–यह विचार करके; मुन्तु कट्टुकि–उसके सामने वेग से जाकर; पटर् पुयत्तु एऱ–विशाल कंधों पर चढ़े, तब; निरुतन्–राक्षस। ३५

श्रीराम और लक्ष्मण अथक और मल्लयुद्ध में खूब अभ्यस्त कन्धों वाले थे। उन्होंने सोचा कि उसे जो वर मिला है, वह अवश्य अमर है। कितने ही बलवान अस्त्र चलाओ, वह मरेगा नहीं। आगे युद्ध ही करेगा। इसलिए हम उसके दोनों हाथों को काट लेंगे। यह निश्चय करके वे क्रोध के साथ तलवार लेकर दौड़े आये और उसके विशाल कन्धों पर चढ़ बैठे। ३५

उण्डॆ ळुन्दवुणर् वव्वयि नुणर्न्दु मुडुहित्
तण्डॆ ळुन्दनैय तोळ्हॊडु शुमन्दु तळुविप्
पण्डॆ ळुन्दनदु वन्गदि पदिऱ्ऱिन् मुडुहिक्
कॊण्डॆ ळुन्दनन् विळुन्दिळि कॊळुङ्गु रुदियान् 36

विळुन्तु–गिरकर; इळि–बहनेवाले; कॊळुम् कुरुतियान्–गाढ़े रक्तसहित वह; अव्वयिन्–उस स्थिति में; उण्टु ऎळुन्त उणर्वु–दबी रहकर जो उठी, वह चेतना; उणर्न्तु–प्राप्त करके; तण्टु ऎळुन्तनैय–उन्नत दण्ड के समान; तोळ् कॊट्टु–कंधों पर; तळुवि चुमन्तु–लपेटकर उठाते हुए; पण्टु ऎळुम्–पहले से रहे; तनतु वल् कति–अपने बल को; पतिऱ्ऱिन् मुटुकि–दस गुना बढ़ाकर वेग के साथ; ऎळुन्तनन्–ऊपर उठ गया। ३६

तब तक उसकी सुध पुनः जाग गयी। उसने जाना कि दोनों कन्धों पर हैं। अपने दण्ड-सम हाथों से उन्हें पकड़ते हुए वह पहले से दस गुना बल के साथ ऊपर उठने लगा। उसके शरीर पर गाढ़ा रक्त बह रहा था। ३६

मुन्दु वान्मुह डुरक्कडिदु मुट्टि मुडुहिच्
चिन्दु शोरियोंडु शारिहै तिरिन्द नन्नरो
वन्दु मेरुविनै नाडोरुम् वलञ्जॅय् दुळ्ळुम्
इन्दु शूरियरै योत्तिरु वरुम्बॉ लियवे 37

मेरुविनै–मेरु पर्वत की; नाळ् तोरुम्–प्रतिदिन; वलम् चॅय्तु वन्तु उळ्ळुम्–परिक्रमा करते फिरनेवाले; इन्तु चूरियरै ऑत्तु—चन्द्र-सूर्य के समान रहकर; इरुवरुम् पॉलिय–दोनों शोभे; मुन्तुवान् मुकटु उर–(उस स्थिति में) ऊपर के आकाश की छत से लगते हुए; कटितु मुट्टि–वेग से टकराकर; चिन्तु चोरियोंटु–बहनेवाले खून के साथ; मुटुकि–वेग से; चारिकै तिरिन्तनन्–(वह) घूमता फिरा। ३७

श्रीराम और लक्ष्मण उस राक्षस पर मेरु की परिक्रमा प्रतिदिन करते रहनेवाले सूर्य और चन्द्र के समान शोभायमान दिखे। उनका सिर आकाश की छत को छुए, ऐसा वह आकाश में बड़े वेग के साथ घूम-फिरने लगा। ३७

शुवण वण्णनोंडु कण्णनिरु तोळ्हळ् पॉलिय
अवण विण्णिडै यॅळ्न्दुपडर् हिन्र वनरम्
शिवण वन्नशिरै मुन्नवरो डेहु शॅलवत्
तुवण वण्णलॅनु मन्ननैयु मोत्तननरो 38

चुवण वण्णन् ऑटु–स्वर्णवर्ण (लक्ष्मण) के साथ; कण्णन्–नयनाभिराम श्रीराम; इरु तोळ्कळ् पॉलिय–उसके दोनों कंधों पर सुन्दर रूप से विराजमान रहे; अवण विण् इटै–ऊपर के आकाश में; ॲळुन्तु पटर्किन्रवन्–उठकर चलनेवाला; अरम् चिवण अन्न–धर्म लगे हों, ऐसे; चिरै–पक्षों के साथ; मुन् अवरोंटु एकुम् चॅलवत्तु–पहले (श्रीवैकुण्ठ में) (वासुदेव और संकर्षण) इन दो मूर्तियों को धारण करके संचार करनेवाले; उवण अण्णल् ॲनुम् मन्नवनै–गरुड़ महाराज कहे जानेवाले पक्षीराज; ऑत्तनन्–के समान रहा (वह राक्षस)। ३८

तब वह स्वर्णवर्ण लक्ष्मण और सर्वनेत्राभिराम श्रीराम, इन दोनों को अपने कन्धों पर लिये हुए पक्षीराज धर्मपक्ष गरुड़राज के समान लगा, जो कभी श्रीवैकुण्ठ में वासुदेव और संकर्षण को उठाए हुए घूमते थे। ३८

माद यावुडैय तन्गणवन् वञ्जन् वलियिल्
पोद लोडुमल मन्दनळ् पुलर्न्दु पॉडियिल्
कोदै योडुमोशि कॉम्बॅन विळुन्द नळ्कुलच्
चीदै शेवल्पिडि युण्ड शिरैयन्न मनैयाळ् 39

कुल चीतै–उच्च कुलीना सीतादेवी; मा तया उटैय–बड़ी करुणा वाले; तन् कणवन्–अपने पति के; वञ्चन् वलियिल्–मायावी के बल में फँसकर; पोतलोटुम्–जाते समय; अलमन्तनळ्–उद्विग्न होकर; पुलर्न्तु–मुरझाकर; चेवल् पिटियुण्ट–हंस के परवश हो जाने पर; चिरै अन्नम् अनैयाळ्–(तब संकट उठानेवाली) हंसिनी

के समान; ऑचि कॉम्पु अँत–टूटनेवाली एक पुष्पशाखा के समान; कोतैयॉटुम्–अपने केश के साथ; पॉटियिल् विळुन्तत्तळ्–भूमि की धूलि पर गिरीं। ३९

अब उच्चकुलीना सीतादेवी की दयनीय स्थिति हो गई। उनके दयामय पति मायावी राक्षस के वल के अधीन होकर कहीं जा रहे थे। कृपालु उनको जाते देखकर वह इतनी व्याकुल हुईं, जितनी एक हंसिनी अपने सहचर हंस को परवश देखकर दुखी होगी। वह मुरझाकर टूटकर गिरनेवाली एक पुष्पशाखा के समान नीचे धूलि पर गिर पड़ीं। ३९

पिन्नै येदुमुद वुन्दुणै पॅऱाळु रैपॅऱाळ्
मिन्नै येयिडै नुडङ्गिड विरैन्दु तॉटर्वाळ्
अन्नै येयनैय वन्विनर वोर्ह डमैविट्
टॅन्नै येनुहर्दि यॅन्ऱन ळॅळुन्दु विळुवाळ् 40

ॲळुन्तु–उठकर; उतवुम् तुणै–उपकार करनेवाले सहायक; पिन्नै एतुम् पॅऱाळ्–और किसी को न पाकर; उरै पॅऱाळ्–धैर्य-वचन भी (किसी से) प्राप्त न कर सककर; मिन्नै एय् इटै—बिजली-सम कमर; नुटङ्किट—झुकाती-हिलाती हुई; विरैन्तु–वेग के साथ पीछा करके; अन्नैये अनैय अन्पिन्–माता के ही समान करुणावान; अऱवोर्कळ् तमै–धर्मरूप उनको; विट्टु–छोड़कर; ॲन्नैये नुकर्ति–मुझे ही ले जाकर खाओ; ॲन्ऱनळ्–कहती हुई; विळुवाळ्–(उसके सामने) गिरीं। ४०

फिर वह स्वत: उठीं। वहाँ उनका उपकार करनेवाले या धीरज बँधानेवाले कौन थे? किसी को न पाकर वह अपनी बिजली-सी कमर के लचकते दौड़कर यह कहती हुई विराध के सामने भूमि पर गिरी कि माता-सम कृपालु और धर्मपरायण उनको छोड़ दो और मुझे लेकर खा जाओ। ४०

अळुदु वायुहुळरि यारुयि रळुङ्गि युलैयुम्
ॲळुदु पावै यनैयाणिलै युणर्न् दिळैयवन्
तॉळुदु देवितुयर् कूरविळै याड ऱॉळिलो
पळुदु वाळिॲन वूळि मुदल्वन् पहर्वुरुम् 41

वाय् कुळरि अळुतु—स्वर-गद्गद हो रोकर; आर् उयिर् अळुङ्कि–प्राण के सूखने से; उलैयुम्–शिथिल पड़नेवाली; ॲळुतु पावै अनैयाळ्–चित्रप्रतिमा-सी देवी की; निलै उणर्न्तु–स्थिति जानकर; इळैयवन्–लघुराज (के); तॉळुतु–(श्रीराम का) नमस्कार करके; वाळि–जयजीव; तेवि तुयर् कूर–देवी बहुत दुख उठा रही हैं, तब; विळैयाटल् तॉळिलो–लीला करना अच्छा काम है क्या; पळुतु–यह गलत है; ॲन–कहने पर; ऊळि मुतल्वन्–युगों के आदिपुरुष; पकर्वुरुम्–बोलने लगे। ४१

वे इतनी उद्विग्न हुईं कि वचन स्पष्ट नहीं निकलता था। वे रोईं। उनके प्राण सूखने-से लगे। चित्रप्रतिमा-सी देवी, उनकी स्थिति को लक्ष्मण ने देखा। उन्होंने श्रीराम को नमस्कार किया और निवेदन किया

कि जयजीव ! भगवती सीता को इतने दुख में डालते हुए आपका लीला का रस उठाता रहना अच्छा नहीं लगता। यह गलत है। तब युगों के आदिदेव श्रीराम ने हँसते हुए कहा। ४१

एह निन्ऱ्नॅरि्ऱ यॅल्लैकडि देरि्ऱ यिनिदिल्
पोहै नन्ऱॅन्न निनैन्दॅन्न निवन्पॉ रुविलोय्
शाहै यिन्ऱुपॉरु ळन्ऱॅन्न नहुन्द हैमैयोन्
वेह वॅङ्गळ्ऴलि लुन्दिनन् विरादन् विऴ्ऴवे 42

पॉरुवु इलोय्–अप्रमेय; एक निन्ऱ् नॅरि्ऱ–हमारे जाने का मार्ग का; ऍल्लै–अन्त; कटितु–वेग से; एरि्ऱ–इस पर सवार होकर; इनितु पोकै–सुख से जाना; नन्ऱु ऍन्न–अच्छा होगा, ऐसा; निनैन्तॅन्न्–समझा; इवन् चाकै–इसका मरना; इन्ऱु–आज ही; पॉरुळ् अन्ऱु–कोई बात नहीं; ऍन्न–कहकर; नकुम् तकैमैयोन्–हँसी करके; वेक वॅम् कऴलिल्–सत्वर भारी पादवलयधारी पैर से; उन्तिनन्–लताड़ा; विरातन्–विराध; विऴवे–नीचे गिरा, तो। ४२

अप्रतिम लक्ष्मण ! मैंने सोचा कि हमें तो दक्षिण में जाना है। इसके कन्धे पर बैठकर मार्ग तय करूँ और मंज़िल तक सुख से पहुँच जाऊँ ! नहीं तो इसको अभी मारना कोई बड़ी बात नहीं ! खेल में यह कहकर उन्होंने अपने वीर कंकणधारी पैर से उसके एक लात मारी। तब विराध नीचे गिर गया। ४२

तोळि रण्डुम्वडि वाळ्हॉडु तुणित्तु विशैयाल्
मोळि मॉय्म्बिनर् कुदित्तलुम् वॅहुण्डु पुरुवत्
तेळि रण्डुनॅरि यच्चिनवु शॅङ्ग णरवक्
कोळि रण्डु शुडरुन् दॉडर्वदिर् कुरुहलुम् 43

मीळि मॉय्म्पितर्–वीरबाहू (दोनों); विचैयाल्–वेग के साथ; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; वटि वाळ् कॉटु–तीक्ष्ण तलवार से; तोळ् इरण्टुम्–दोनों हाथों को; तुणित्तु–काटकर; कुतित्तलुम्–नीचे कूद पड़े, तब; पुरुव तेळ् इरण्टुम् नॅरिय–बिच्छू के समान भौंहों को टेढ़ा करते हुए; वॅकुण्टु–कोप करके; चितवु–क्रुद्ध; चॅम् कण् अरवकोळ्–लाल आँख वाले (राहु) सर्प के ग्रह के; इरण्टु चुटरुम् तॉटर्वतिल्–दोनों (सूर्य-चन्द्र के) गोलों का पीछा करते से; कुरुकलुम्–उनके पीछे लगे आये। ४३

सबल भुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने क्रोध के साथ क्षिप्र गति से उसके दोनों भुजाओं को काट दिया और वे नीचे कूद गये। वह राक्षस अपनी बिच्छू-सम भौंहों को टेढ़ा करते हुए उनका पीछा करने लगा। तब ऐसा लगा, मानो क्रुद्ध और लाल आँख वाला सर्प-ग्रह, राहु सूर्य और चन्द्र के प्रकाशपुंजों का पीछा करता आ रहा हो। ४३

पुण्णि डैप्पॉळि करैप्पुनल् पॉलिन्दु वरवुम्
विण्णि डैप्पडर्दल् विट्टॅळु विहर्प निनैया
ऍण्णि डैक्कुरिशि लॅण्णियिळै योयिव नैयिम्
मण्णि डैक्कडिदु पॉत्तुदल् वळक्कॅ नलुमे 44

पुण् इटै पॉळि–व्रणों से निकलकर बहनेवाला; करै पुनल्–रक्त का प्रवाह; पॉलिन्तु वरवुम्–दृश्यमान होता आया; विण् इटै पटर्तल्–आकाश में चलना; विट्टु–छोड़कर; ऍळु विकर्पम् निनैया–भाग जाने का विकल्प सोचकर; ऍण् इटै कुरिचिल्–सर्वान्तर्यामी प्रभु; ऍण्णि–समझकर; इळैयोय्–छोटे भाई; इवनै–इसको; इम् मण् इटै–इस भूमि में; कटितु पॉत्तुतुल्–जल्दी गाड़ देना; वळक्कु ऍनलुम्–उचित कर्म होगा, यह कहने पर। ४४

विराध के शरीर से खूब रक्त बह रहा था। अब वह ऊपर उड़ जाने की बात नहीं सोच सका। पर वह भाग जायगा —यह उसका विकल्प सोचकर सर्वान्तर्यामी श्रीराम ने अपने भाई से कहा कि भाई ! इसको भूमि में जल्दी गाड़ देना ही अच्छा है। ४४

मदनल् यानैयनै यानिलम् वहिर्न्द कुळिवाय्
नदमु लावुनळि नीर्वयि नळुन्द नवैतीर्
कदळ्व मायनरुनॅ युण्डुलहि लन्बर् करुदिर्
रुदवु शेवडि यिनालमल नुन्दु दलुमे 45

नवै तीर्–निर्दोष; कतळ्वम् आय्–यज्ञाग्नि बनकर; नरु नॅय् उण्टु–घृतभुक बनकर; उलकिल्–लोक में; अन्पर् करुतिरु–भक्तों की इच्छाएँ; उतवु–पूरकर सहायता करनेवाले; चे अटियिनाल्–लाल (मनोरम, पवित्र) श्रीचरणों से; अमलन्–निर्मल प्रभु (के); उन्तुतलुम्–लात देकर ढकेलने पर; नल् मत यानै अनैयान्–श्रेष्ठ मत्तगज-सम लक्ष्मण ने; नळि नीर् उलावु–अधिक जल से पूर्ण; नतम् वयिन्–नदी के किनारे; निलम् वकिर्न्त कुळि वाय्–भूमि पर खुदे गड्ढे में; अळुन्त–गाड़ा, तब। ४५

श्रीलक्ष्मण ने जलसमृद्ध नदी के किनारे पर गड्ढा खोदा। श्रीराम ने, जो पवित्र होमाग्नि में दत्त घृत का अशन कर भक्त लोगों का अभीष्ट दिलानेवाले हैं, अपने पवित्र श्रीचरण से उस विराध को लताड़ा। वह उस गड्ढे में जा धँस गया। ४५

पट्ट तन्मैयु मुणर्न्दु पडर्शाब मिडमुन्
कट्ट वन्बिरवि तन्द कडैयान वुडरान्
विट्टु विण्णिडै विळङ्गितन् विरिञ्ज नॅनवोर्
मुट्टे तन्ददनिल् वन्दमुदल् मुन्न वनिने 46

पट्ट तन्मैयुम् उणर्न्तु–अपना नाश समझकर; मुन् पटर् चापम् इट–पहले घोर शाप देने से; कट्ट–बद्ध; वन् पिरवि तन्त–बुरा राक्षस जन्म-दत्त; कटैयात उटल्

तान् विट्टु–नीच शरीर को छोड़कर; ओर् मुट्टै तन्तु–एक अण्डा (हिरण्यगर्भ) उत्पन्न करके; अततिन् वन्त–उससे निकले; विरिञ्चन् ॲन्त मुन्नतवलिल्–विरंचि के समान उत्तम रूप में; विण्णिटै विळङ्कितन्–आकाश में दृश्यमान हुआ। ४६

विराध ने अपने शरीर का नाश जाना और कुबेर के शाप के कारण मिले नीच जन्म के शरीर से निकलकर वह आकाश में दृश्यमान रहा। तब वह हिरण्यगर्भ नामक अण्डे से प्रकट हुए ब्रह्माजी के समान प्रकाशमान दर्शन देता रहा। (विराध का शाप-समाचार आगे ६६वें पद में पाया जाता है।)। ४६

पॊऱियि नॊन्ऱि ययल्शॆन्ऱु तिरिपुन्दि युणरा
नॆऱियि नॊन्ऱि निलैनिन्ऱ निन्नैवुण् डदनिनुम्
पिऱिवि लन्बुनति पण्डुडैय पॆऱ्ऱि तनिनुम्
अऱिवु वन्दुदव नम्बनै यऱिन्दु पहर्वान् 47

पॊऱियिन् ऑन्ऱि–इन्द्रियाराम होकर; अयल् चॆन्ऱु तिरि–बाह्य विषयों में लगे रहनेवाली; पुन्ति उणरा–बुद्धि से अग्राह्य; नॆऱियिन् ऑन्ऱि–मार्ग में लगा रहकर; निलै निन्ऱ–उसमें स्थिर; निनैवु उण्टु अततिनुम्–स्मरण हुआ, इसलिए; पिरिवु इल्–अपरिवर्तित; अन्पु–भक्ति; पण्टु नति उटैय पॆऱ्ऱिततिनुम्–पहले अधिक प्राप्त रही इसलिए भी; अऱिवु वन्तु उतव–ज्ञान ने आकर सहायता की; नम्पतै अऱिन्तु–(फलस्वरूप) जगन्नायक को पहचानकर; पकर्वान्–(स्तोत्र) कहने लगा। ४७

इन्द्रियों के वश में पड़कर जो बाह्य सुख-भोग में लगा रहता है, उसकी बुद्धि सन्मार्ग को पहचान नहीं सकती। पर अब विराध की बुद्धि सन्मार्ग पर स्थिर रूप से स्थित हो गयी है। और भी वह पहले भक्तिमान रहा। उसका अच्छा फल भी अब सहायक बना। इन दोनों कारणों से उसकी ज्ञान-शक्ति श्रीराम को परब्रह्म समझ सकी। तब वह उनकी स्तुति करने लगा। ४७

वेदङ्ग ळऱैहिन्ऱ वुलहॆङ्गुम् विरिन्दननिन्
पादङ्ग ळिवैयॆन्निन् पडिवङ्ग ळॆप्पडियो
ओदङ्गॊळ् कडलन्ऱि यॊन्ऱिनो डॊन्ऱॊव्वाप्
पूदङ्ग डॊऱुमुऱैन्दा लवैयुन्नैप् पॊऱुक्कुमो 48

निन् पातङ्कळ् इवै–आपके श्रीचरण ये; उलकु ॲङ्कुम् विरिन्तत–सारे लोकों में व्याप्त हैं; वेतङ्कळ् अऱैकिन्ऱत–वेद घोषणा करते हैं; ॲन्तिल्–तो; पटिवङ्कळ् ॲप्पटियो–अन्य अंग कैसे होंगे; ओतम् कॊळ्–उदकपूर्ण; कटल् अन्ऱि–समुद्र (शय्या) के अलावा; ऑन्ऱितोटु ऑन्ऱु ऑव्वा–परस्पर विपरीत; पूतङ्कळ् तॊऱुम्–भूत-भूत में; उऱैन्ताल्–स्थित हों; अवै–वे; उन्नै पॊऱुक्कुमो–धारण कर सकेंगे क्या। ४८

हे भगवान! आपके पादों ने मुझे सद्गति दिलाई। मैं उनकी

महिमा को समझकर विस्मयविमूढ़ हो रहा हूँ। वेद कहते हैं कि ये आपके श्रीचरण सारे लोकों में सर्वत्र व्याप्त, हैं। तो आपके अन्य अंग कहाँ और कैसे रहते हैं ? आप क्षीरसागर में ही शयन नहीं करते पर परस्पर विपरीत भूत-भूत में सत् के रूप में विद्यमान हैं ! तो वे भूत कैसे आपको धारण कर पाते हैं ? । ४८

कडुत्तकराङ् गदुवनिमिर् कैयॆडुत्तु मॆय्हलङ्गि
उडुत्तदिशै यनैत्तिनुञ्जॆन् ऱॊलिकॊळ्ळ वुरुतुयराल्
अडुत्तपॆरुन् दनिमूलत् तरुम्बरमे परमेयॆन्
ऱॆडुत्तोरुवा रणमळैप्प नीयोवन् ऱॆन्नॆन्ऱाय् 49

कटुत्त–क्रुद्ध; कराम् कतुव–नक्र के ग्रसने से; ऑरु वारणम्–गजेन्द्र के; उरु तुयराल्–होनेवाले बहुत दुख के साथ; निमिर् कै ऍटुत्तु–सूँड़ ऊपर उठाते हुए; मॅय् कलङ्कि–शरीर शिथिल होकर; उटुत्त तिचै अनैत्तुम्–आवृत्त सभी दिशाओं में; चॅन्ऱु ऑलि कॉळ्ळ–जाकर गूंज उठे ऐसा; अटुत्त–हर वस्तु में रहनेवाले; पेरुम्–पूज्य; मूलत्तु अरुम् परमे–आदि परब्रह्म; परमे–परब्रह्म; ऍन्ऱु ऍटुत्तु–ऐसा स्वर देकर; अळैप्प–पुकारने पर; अन्ऱु–उस दिन; नीयो–क्या आपने ही; एन् ऍन्ऱाय्–क्या है पूछा (सहायता की)। ४९

आप परब्रह्म हैं। उस दिन गजेन्द्र को नक्र ने पकड़ा। गजेन्द्र को दुख हुआ। उसने काँपते हुए अपनी सूँड़ को ऊपर उठाया और इतने उच्च स्वर में, कि वह आठों दिशाओं में गूँज उठा, पुकारा कि हर पदार्थ में अन्तर्निहित रहनेवाले परब्रह्म ! तब क्या आप ही ने क्यों-क्यों —पूछते हुए जाकर उसको बचाया ? (क्यों— उत्तर देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। आप ही परब्रह्म हैं। इसलिए आप ही ने गजेन्द्र की पुकार का उत्तर दिया।) । ४९

पुऱङ्गाण वहङ्गाणप् पॊदुमुहत्ति नरुणोक्कम्
इऱङ्गाद तामरैक्क णॆम्बॆरुमाअ नियम्बुदियाल्
अऱङ्गात्तऱ् कुनक्कॊरुव रारुमॊरु तुणैयिन्ऱिक्
कऱङ्गाहु मॆनत्तिरिय नीयेयो कडवाय्दान् 50

पॊतु मुकत्तिन्–तटस्थ रहकर; अरुळ् नोक्कम्–करुणादृष्टि; इऱङ्कात–जिनमें कम नहीं होती, उन; तामरै कण्–कमलाक्ष; ऍम्पॆरुमा अन्–हमारे नायक; पुऱम् काण अकम् काण—बाहर-भीतर सब जगह व्यापकर; अऱम् कात्तऱ्कु–धर्म-रक्षणार्थ; ऑरुवर् यारुम् उनक्कु ऑरु तुणै इन्ऱि–किसी भी सहायक या सहायता के बिना; कऱङ्कु आकुम् ॲन–(पतंग) वातचक्र के समान; तिरिय–घूमने-फिरने के लिए; नीये ओ कटवाय् तान्–आप ही बाध्य हुए क्या; इयम्पुति–बतलाइए। ५०

सब पर समानरूप से कृपादृष्टि रखनेवाले पुण्डरीकाक्ष ! बाहर-भीतर, ऊपर-नीचे सब स्थानों में व्याप्त रहकर धर्मरक्षणार्थ, अकेले बिना

किसी दूसरे सहायक के घूमते फिरते हैं वातचक्र के समान ! यह बतलाइए, भला कि आपका यह कर्तव्य है ? आप बाध्य हैं ? । ५०

तुऱप्पदे तॊऴिलाहत् तोऩ्ऱिऩोर् तोऩ्ऱियक्काल्
मऱप्परो निऩ्ऱऩ्मै यदुवाहिल् मऱ्ऱवर्पोल्
पिऱप्परो यॆवर्क्कुम्यान् पॆऱ्ऱपदम् बॆऱलरिदे
इऱप्पदे पिऱप्पदे यॆऩुम्विळैयाट् टुवन्दऩैये 51

इऱप्पतु पिऱप्पतु ऍऩुम्–मरना और जन्म लेना; विळैयाट्टु–इस लीला में; उवन्तनै–रस लेनेवाले; तुऱप्पते तॊऴिलाकत् तोऩ्ऱिऩोर्–संन्यास को ही अपना कर्तव्य समझनेवाले जन्म से ज्ञानी लोग; तोऩ्ऱियक्काल्–जन्म लेने के बाद; निऩ् तऩ्मै मऱप्परो–आपके गुणों को भूलेंगे (सांसारिक माया में बद्ध हो जायँगे) क्या; अतु आकिल्–वह सम्भव हुआ तो; मऱ्ऱवर् पोल् पिऱप्परो–दूसरों के समान जन्म लेंगे क्या; ऍवर्क्कुम्–किसी के लिए भी; याऩ् पॆऱ्ऱ पतम्–जो मैंने पाया, वह पद; पॆऱल् अरिते–पाना कठिन साध्य है। ५१

जन्म-मरण की लीला में रस लेनेवाले लीलाधर ! जन्म-सिद्ध ज्ञानी, जो इस संसार में जन्म लेकर संसार-त्याग को ही अपना काम मानते हैं, क्या आपको भूल जा सकते हैं ? तब वे अन्यों के समान फिर जन्म लेंगे क्या ? नहीं लेंगे । ऐसे ज्ञानियों के भाग्य से बढ़कर मेरा भाग्य हो गया ! मेरा सा भाग्य उन्हें भी प्राप्त नहीं हो सकता । ५१

पऩिनिऩ्ऱ पॆरुम्बिऱविक् कडल्हडक्कुम् बुणैपऱ्ऱि
नऩिनिऩ्ऱ समयत्तो रॆल्लारु नऩ्ऱॆऩ्ऩत्
तऩिनिऩ्ऱ तत्तुवत्तिऩ् ऱहैमूर्त्ति नीयाहिल्
इऩिनिऩ्ऱ मुदर्ऱेव रॆऩ्कॊण्डॆऩ् शॆय्वारे 52

तऩि निऩ्ऱ तत्तुवत्तिऩ्–अनुपम रूप से उत्कृष्ट तत्व-ज्ञान द्वारा प्राप्य; तकै मूर्त्ति–श्रेष्ठ देव; नी आकिल्–आप हैं, तब; पऩि निऩ्ऱ–ठण्डक भरा (कँपा देनेवाला); पॆरुम् पिऱवि कटल्–बड़ा भवसागर; नऩि निऩ्ऱ–पकड़कर रहनेवाले; चमयत्तोर् ऍल्लारुम्–अन्य सभी धर्मावलम्बी; कटक्कुम् पुणै–तरने की तरणि; निऩ्ऱ मुतल् तेवर–स्वरूप रहनेवाले उन धर्मों के नायक देव; नऩ्ऱु ऍऩ्ऩ–भले हैं, ऐसा समझ रहे हैं; इऩि ऍऩ् कॊण्टु–अब किसका सहारा लेकर; ऍऩ् चॆय्वार्–क्या साधेंगे । ५२

उत्तम तत्वज्ञान के ही विषय आप हैं । तत्वज्ञान द्वारा ही प्राप्य हैं । ऐसी स्थिति में डरावने भवसागर को तरने के लिए मार्ग बतानेवाले अन्य मत अपने-अपने प्रधान देव पर विश्वास रखते हैं । वे अब क्या करेंगे ? उन्हें क्या गति प्राप्त होगी ? कौन सा साधन लेकर कौन सी सिद्धि पायेंगे ? । ५२

ओयाद मलरयत्ते मुदलाह् वुळराहि
मायाद वात्तवर्क्कु मऱ्ऱॊऴिन्द मन्नुयिर्क्कुम्
नीयादि मुदऱ्ऱादै नॆऱिमुऱैया लीन्ऱॆडुत्त
तायावार् यावरे तरुमत्तिन् तनिमूर्त्ति 53

तरुमत्तिन् तनि मूर्त्ति–धर्म के अप्रमेय स्वरूप; ओयात–अपने (सृष्टि-) कार्य में निरन्तर लगे रहनेवाले; मलर् अयत्ते मुतल् आक–कमलासन अज आदि; उळराकि–जो हैं; मायात–अमर; वात्तवर्क्कुम्–देवों के; मऱ्ऱु ऒऴिन्त मन् उयिर्क्कुम्–और अन्य जीवों के; नी मुतल् तातै आति–आप प्रथम पिता हैं; नॆऱि मुऱैयाल्–फिर क्रम से; ईन्ऱु ऎंट्टुत्त–जना लेनेवाली; ताय् आवार् यावरे–माता बनीं कौन। ५३

अकेले धर्ममूर्ति ! निरन्तर सृष्टिकार्य-रत ब्रह्मा से लेकर सारे अमर देवों और अन्य नर आदि जीवों के आप ही धाता या पिता हैं। तो इनको कोख से प्रकट करनेवाली माता और कौन हैं ? (आप ही धाता भी हैं माता भी।)। ५३

नीयादि परम्बरमुम् निन्नवे युलहङ्गळ्
आयाद शमयमुनिन् नडियवे ययलिल्लै
तीयारि लॊळित्तियाल् वॆळिनिन्ऱार् ऱीङ्गुण्डो
वीयाद पॆरुमाय विळैयाट्टुम् वेण्डुमो 54

आति परम् परमुम् नी–आदिमूल परब्रह्म आप हैं; उलकङ्कळ् निन्नवे–लोक आपके हैं; आयात–अन्वेषण के अन्दर न आनेवाले; चमयमुम्–धर्म (मत) भी; निन् अटियवे–आपके ही चरणों की महिमा कहते हैं (या आपको ही अपना मूल देव मानते हैं); अयल् इल्लै–दूसरा नहीं है; तीयारिन्–बुरे मायावी के समान; ऒळित्ति–छिपे हैं; वॆळि निन्ऱाल्–प्रकट हों तो; तीङ्कु उण्टो–हानि है क्या; वीयात–अक्षय; पॆरु माय विळैयाट्टुम्–बड़ी माया का खेल भी; वेण्टुमो–तुमको चाहिए क्या। ५४

आदि परब्रह्म आप ही हैं। सारे लोक आपके ही अधीन हैं। कितने ही धर्म हैं, जो अन्वेषण के बाहर हैं। उन सबके आप ही आधार हैं। और कोई नहीं। तो भी आप बुरे मायावियों के समान क्यों छिपे रहते हैं ? बाहर प्रकट होने पर कोई हानि, आपकी या जीवों की, हो जायगी क्या ? यह अक्षय माया का खेल भी आपको चाहिए क्या ? । ५४

तायदन्नै यऱियाद कन्ऱिल्लै तन्कन्ऱै
यायुमऱि युम्मिदिव् वुलहिन्ऱाय्क् किल्लैयाल्
नीयऱिदि यॆप्पॊरुळु मवैयुन्नै निलैयऱिया
मायैयिदु वॆन्गॊलो वारादे वरवल्लाय् 55

वाराते वर वल्लाय्–विना चलके आये (अकस्मात वहीं) प्रकट हो (आ)

सकनेवाले; ताय् तन्नै अऱियात–अपनी माँ (गाय) को पहचान न सकनेवाला; कन्ऱु इल्लै–बछड़ा नहीं है; यायुम् तन् कन्ऱै अऱियुम्–माँ गाय भी अपने वत्स को पहचान लेती है; इतु–यह गुण; उलकिन् तायक्कु इल्लै–लोकमाता आपके पास नहीं है; नी अऱिति अँप्पॉरुळुम्–आप सभी सृष्टि को जानते हैं; अवै–वे (सृष्टि के जीव आदि); उन्नै निलै अऱिया–तुम्हारी प्रकृति (या स्थिति) नहीं जानते; मायै इतु अॅन् कॉलो–यह माया क्या है। ५५

जहाँ रहकर आपका स्मरण किया जाता है, वहीं प्रकट होनेवाले श्रीराम ! आपको किसी दूर के स्थान से चलकर आने की आवश्यकता नहीं पड़ती है ! ऐसे देवदेव ! आपके सम्बन्ध में एक विचित्र बात है। संसार में माता गाय को न पहचान सकनेवाले बछड़े नहीं होते। वैसे ही हर माता गाय अपने बछड़े को पहचान लेती है। यह गुण लोकमाता आपके पास नहीं है। आप सारी सृष्टि को जानते हैं; पर ये जीव आपको नहीं जान पाते ! यह क्या माया है ? । ५५

पत्तला मॅन्ऱुलहम् पलपलवु नित्तैयुमाल्
उन्नलाऱ् पॅरुन्दॅय्व मुयर्न्दुळो रॊळुक्कन्ऱे
अन्नवूर दियैमुदला मन्दणर्माट् टरुन्दॅय्वम्
निन्नला लिल्लामै नॅऱिनिन्ऱार् नित्तैयारो 56

उलकम्–संसार के मनुष्य; पत्तल् आम् अॅन्ऱु–स्तोत्र करने के लिए; पल पलवुम् नित्तैयुम्–अनेक-अनेक देवों की बात सोचते हैं; उन् अल्लाल्–आपको छोड़; पॅरुम् तॅय्वम्–श्रेष्ठ भगवान (हैं, समझना); उयर्न्तुळोर् ऑळुक्कु अन्ऱु–उत्तम ज्ञानियों का काम नहीं है; अन्न ऊर्तियै मुतल् आम्–हंसवाहन (ब्रह्मा) आदि; अन्तणर् माट्टु अरुम् तॅय्वम्–ब्राह्मणों के लिए आराध्य देव; निन् अलाल् इल्लामै–आपके सिवा कोई नहीं है, यह तथ्य; नॅऱि निन्ऱार्–अन्य मतावलम्बी; नित्तैयारो–सोचकर नहीं देखेंगे क्या। ५६

संसार के मनुष्य विविध देवों को अपने आराध्य मानकर उनकी पूजा, स्तुति आदि करते हैं। पर आपके सिवा कोई उत्तम देवता हैं —ऐसा मानना उत्तम ज्ञानियों के लिए योग्य काम नहीं है। हंसवाहन ब्रह्मा से लेकर सभी ब्रह्मविदों के आराध्य देव आप ही हैं। आपके सिवाय कोई दूसरे नहीं हैं। दूसरों को आदिदेव माननेवाले अन्य धर्मावलम्बी यह तथ्य नहीं सोचेंगे क्या ? । ५६

पॉरुवरिय शमयङ्गळ् पुहल्हिन्ऱ पुत्तेळिर्
इरुविनैयु मुडैयार्पो लरुन्दवनिन् ऱियऱ्ऱुवराल्
तिरुवुऱैयु मणिमार्बा नित्तक्कॅन्न शॅयऱ्पाल
ऑरुविनैयु मिल्लार्पो लुऱङ्गुदिया लुऱङ्गादाय् 57

तिरु उऱैयुम् अणि मार्पा–श्री-निलय वक्ष वाले; पॉरुवु अरिय–अनुपमेय;

चमयङ्कळ्–अन्य धर्म; पुकल्किन्ऱ–जो बताते हैं; पुत्तेळिर्–वे देव; इरु वित्तैयुम् उटैयार् पोल्—पाप-पुण्य दोनों कर्मों से बद्ध जीवों की तरह; अरुम् तवम् निन्ऱु इयऱ्ऱुवर्–कठिन तपस्या करनेवाले हैं; नित्तक्कु ॲन्त्त चॅयल् पाल–आपके लिए करने को क्या रखा है; उऱङ्काताय्–(तो भी सोते नहीं हैं) न सोनेवाले; ऒरु वित्तैयुम् इल्लार् पोल्–बेकार की तरह; उऱङ्कुतियाल्–सोते भी हैं। ५७

श्रीलक्ष्मी-वक्ष ! अन्य धर्म जिन्हें अनुपम आराध्य देव मानते हैं, उन्हें भी कर्मबद्ध जीवों के समान तपस्या करनी पड़ती है। पर आपके लिए करने के लिए कौन सी तपस्या है, साधना है ? आप जाग्रत अवस्था में भी अकर्मी बनकर निद्रामग्न हैं ! यह क्या ही विचित्र है ? आपकी योगमाया है ! । ५७

अरवाहिच् चुमत्तिया लयिलॅयिऱ्ऱि नेन्दुदियाल्
ऒरुवायिन् विऴुङ्गुदिया लोरडिया लॊळित्तियाल्
तिरुवात्त निलमहळै यिःदऱिन्दाऱ् चीऱाळो
मरुवारुन् दुऴायलङ्गन् मणिमार्बिन् वैहुवाळ् 58

तिरु आत्त निल मकळै–सुन्दरी भूमिदेवी को; अरवु आकि–आदिशेष नाग बनकर; चुमत्ति–धारण किये रहते हैं; अयिल् ॲयिऱ्ऱिल् एन्तुति–तीक्ष्ण दाँतों पर; एन्तुति–उठाते हैं; ऒरुवामल् विऴुङ्कुति–बिना बाकी छोड़े निगल लेते हैं; ओर् अटियाल्–एक पग में; ऒळित्ति–समा लेते हैं; मरु आरुम्–सुगन्धपूर्ण; तुऴाय् अलङ्कल्–तुलसीमाला से अलंकृत; मणि मार्पिल्–सुन्दर वक्षस्थल पर; वैकुवाळ्–जो विराज रही हैं; इःतु अऱिन्ताल्–वे श्रीदेवी यह जान लेंगी तो; चीऱाळो–गुस्सा नहीं करेंगी क्या। ५८

आपने भूमिदेवी के साथ क्या-क्या व्यवहार किया है ? सुन्दरी, उनको आदिशेष नाग बनकर सिर पर चढ़ा रखते हैं। वराहावतार लेकर दाँतों पर उठाके रखते हैं। प्रलयकाल में उनको निगल लेते हैं। त्रिविक्रमावतार लेकर अपने एक ही पाद के अन्दर समा लेते हैं। सुवासित तुलसीमाला से अलंकृत आपके वक्ष की निवासिनी श्रीलक्ष्मीदेवी यह जान लेंगी तो आपसे रुष्ट नहीं होंगी क्या ? । ५८

मॅय्यैत्तान् शिऱिदुणर्न्दु नीविदित्त मन्नुयिर्हळ्
उय्यत्ता ताहादो वुनक्कॅन्न कुऱैयुण्डो
वैयत्तार् वानत्तार् मऴुवाळिक् कन्ऱळित्त
ऐयत्ताऱ् चिऱिदैयन् दविर्न्दारु मुळरैया 59

ऐया–प्रभु; नी वितित्त मन् उयिर्कळ–आपसे नियमित ये जीव; मॅय्यै तान् चिऱितु उणर्न्तु–सत्य को किंचित जानकर; उय्य तान् आकातो–तर जायँ, यह हो नहीं सकता क्या; उनक्कु ॲन्न कुऱै उण्टो–(वैसा हो जाय तो) आपकी क्या हानि हो जायगी; मऴु आळिक्कु–परशु के हथियार वाले शिवजी को; अन्ऱु–उस दिन

(वे जब उन्मत्त हो घूमे); अळितुत ऐयत्ताल्–आपने जो भीख दी, उससे; वैयत्तार् वात्तुतार्–आकाशवासी और भूलोकवासी; चिरितु ऐयम् तविर्न्तारुम् उळर्–किंचित संशय-विमुक्त हुए, वे भी हैं। ५६

प्रभु ! क्या यह सम्भव नहीं हो सकता कि संसार के जीव, जिनके आप ही सृजक और नियामक हैं, आपके परत्व की सच्चाई को किंचित जान कर तर जायँ ? इससे आपका क्या बिगड़ जायगा ? हाँ, जिस दिन आपने उन्मत्त शिवजी को भिक्षा दी थी, उस दिन देवों और मनुष्यों में लोग भी ऐसे थे, जिन्होंने अपना संशय किंचित दूर किया और आपके परत्व पर विश्वास किया था। [शिवजी ने ब्रह्मा का पाँचवाँ सिर नोचा तो वह कपाल उनके हाथ से चिपक गया। शिवजी ब्रह्महत्या-दोष से उन्मत्त होकर संचार करने लगे। श्रीविष्णु ने उस कपाल में भिक्षा डाली, तभी कपाल उनके हाथ से छूटा और वे शापमुक्त हुए। ऐतिह्य है कि यह शापविमोचन तंजाऊर (दक्षिण में एक प्रसिद्ध नगर) के पास कंडियूर नामक विष्णुस्थल में हुआ था। वहाँ के मन्दिर के देवता 'हरशापमोचक हरि' नाम से स्तुति किये जाते हैं।]। ५९

अन्नमा यरुमरैह ळरैन्दाय्नी यवैयुत्तै
मुन्नमा रोदुवित्ता रॅल्लारु मुडिन्दारो
पिन्नमा यॉन्ड्रादल् पिरिन्देयो पिरियादो
ॲन्नमा मायमिवै येन्नमाय् मण्णिडन्दाय् 60

एन्नमाय् मण् इटन्ताय्–हे राम, जिन्होंने वाराहावतार में भूमि को खोद उठाया था; नी अन्नमाय्–आपने हंस बनकर; अरु मरैकळ् अरैन्ताय्–उत्तम वेदों का (ब्रह्मा को) उपदेश सुनाया; अवै मुन्नम् उन्नै यार् ओतुवित्तार्–उनके पहले आपको किसने सिखाया; ऍल्लारुम् मुटिन्तारो–वे सब (आपके शिक्षक) लुप्त हो गये क्या; पिन्नमाय् ऑन्रु आतल्–जो भिन्न हो जाते हैं, फिर एक बनेंगे तो; पिरिन्तेयो–अलग जो हुए वे; पिरियातो–या वे, जो अलग-अलग थे; ऍन्न मा मायम् इवै–यह सब कैसी महान माया है। ६०

हे आदि भगवान ! आपने वराहावतार लेकर भूमि को दाँतों से निकालकर उसके स्थान पर स्थापित किया। आपने हंस का रूप लेकर ब्रह्मा को वेद सिखाये ! तब आपको उसके पहले किसने सिखाया ? सिखानेवाले कोई नहीं रह गये क्या ? भिन्न होकर फिर जीव जब अभिन्न होते हैं, तब जो पहले भिन्न हुए थे, वे ही (आपसे) अभिन्न हुए या अलग कोई जीव हैं ? यह कैसी माया है, जिसका अर्थ हम समझ नहीं पाते ! । ६०

ऑप्पिरैयुम् बॅरलरिय वॉरुवामु तुवन्दुरैयुम्
अप्पुरैयुट् टुरन्दडिये तरुन्दवत्ता लणुहुदलाल्

इप्पिऱविक् कडल्हडन्दे न्निप्पिऱवे निरुविनैयुम्
तुप्पुऱनीत् तनैयशुडर्त् तिरुवडियाऱ् ऱुडैत्तायुनी 61

इऱैयुम्–किंचित भी; ऒप्पु पॆरल् अरिय–उपमा पाने में कठिन; ऒरुवा–परवस्तु; मुन् उवन्तु उऱैयुम्–पहले, चाव के साथ जहाँ वास करते थे, उस; अप्पु उऱैयुळ् तुऱन्तु–क्षीरसागर का वासस्थान छोड़कर; अटियेन् अरुम् तवत्ताल्–मेरे पूर्वकृत कठोर तप के कारण; अणुकुतलाल्–सामने आये हैं; इ पिऱवि कटल्–(इसलिए) यह भवसागर; कटन्तेन्–तरा; इनि पिऱवेन्–आगे जन्म नहीं लूँगा; इरुविनैयुम्–मेरे दोनों कर्म; चुटर् अनैय तिरुवटियाल्–अग्निसम ज्योतिर्मय श्रीचरण से; तुप्पुर–शुद्ध करके; नीत्तु–हटाकर; नी तुटैत्ताय्–आपने मिटा दिया। ६१

अप्रमेय और अद्वैत ब्रह्म ! आपने अपना प्यारा वासस्थान, क्षीरसागर छोड़कर, मेरे तप के फलस्वरूप यहाँ आकर मुझे दर्शन दिये और मैं भवसागर तर गया। आगे जन्म नहीं लूँगा। आपने अपने ज्योतिर्मय श्रीचरणों से मेरा कर्मबन्धन सारा काट दिया और मुझ पर अपार कृपा की। ६१

इऱ्ऱॆ लामि यम्बिनान्, निऱ्ऱ लोडु नीयिव्वा
ऱुऱ्ऱ वाऱु णर्त्तॆना, वॆऱ्ऱि यान्वि ळम्बिनान् 62

इऱ्ऱु ऎलाम्–ऐसा सब; इयम्पिनान्–कहकर; निऱ्ऱल् ओटु–विराध ने विराम लिया, तब; नी–तुम; इ आऱु उऱ्ऱ–यह गति पाये; आऱु–वह प्रकार; उणर्त्तु ऎना–समझाओ, ऐसा पूछने पर; वॆऱ्ऱियान्–सिद्धिप्राप्त विराध ने; विळम्पिनान्–कहा। ६२

विराध ने यह सारा कहकर विराम लिया। तब श्रीराम ने पूछा कि तुम्हें यह स्थिति कैसे प्राप्त हुई ? सो बतलाओ। तब इष्टविजयी विराध ने यों कहा। ६२

कळ्ळ माय वाळ्वॆलाम्, विळ्ळ ञानम् वीशुताळ्
वळ्ळल् वाळि केळॆना, उळ्ळ वाऱु णर्त्तिनान् 63

कळ्ळ माय वाळ्वु ऎलाम्–तस्करी और माया से पूर्ण जीवन सब; विळ्ळ–दूर करके; ञानम् वीचु–ज्ञानप्रदायी; ताळ्–श्रीचरण वाले; वळ्ळल्–परोपकारी प्रभु; केळ् ऎना–सुनिए कहकर; उळ्ळवाऱु उणर्त्तिनान्–जैसा हुआ वैसा बताने लगा। ६३

हे प्रभु ! मेरा तस्कर और मायाजन्य जीवन काट देनेवाले ज्ञानप्रदायक श्रीचरण ! सुनिये। —यह कहकर वह अपना वृत्तान्त कहने लगा। ६३

इम्ब रुऱ्ऱि दॆय्दिनेन्, वॆम्बु विऱ्कॆ वीरपेर्
तुम्बु रुत्त नदन्शूळ्, अम्ब रत्तु ळेन्रो 64

वॅम्पु विल् कॅ वीर–भयंकर धनुर्हस्त वीर; इम्पर् उऱ्ऱु–इस भूमि पर आकर; इतु ॲय्तिनॅन्–इस स्थिति को प्राप्त हुआ मेरा; पेर्–नाम; तुम्पुरु–तुम्बुरु है; तनतत् चूऴ्–धनद कुबेर के शासनाधीन; अम्परत्तु उळेन्–स्वर्ग में रहनेवाला हूँ। ६४

भयंकर धनुर्हस्त ! संसार में आकर जो इस दुर्गति को प्राप्त हुआ, उस मेरा नाम 'तुंबुरु' है। मैं कुबेर के अधीन रहनेवाला स्वर्गवासी गन्धर्व हूँ। ६४

आड रम्बै नीडरङ्गु, ऊडु निन्ऱु पाडलाल्
ऊडल् वन्दु कूडविक्, कूडु वन्दु कूडिनेन् 65

आटु अरम्पै–नर्तकी रम्भा; नीटु अरङ्कु ऊटु–विशाल मंच पर; निन्ऱु पाटलाल्–खड़ी होकर गाती थी, तब; ऊटल् वन्तु कूट–उस पर प्रेम, रूठन आदि के हो जाने से; इ कूटु वन्तु कूटितेन–इस पंजर (शरीर) में आ प्रविष्ट हो गया। ६५

नर्तकी रंभा विशाल रंगमंच पर रहकर नाच रही थी। मेरा मन उस पर रीझ गया। फिर प्रेम, रूठन आदि शृंगारी सिलसिला आरम्भ हो गया। उसके ही फलस्वरूप इस शरीर में जन्म लेना पड़ा। ६५

करक्क वन्द कामतोय्, तुरक्क वन्द तोमिनाल्
इरक्क मिन्ऱि येयिनान्, अरक्कन् मैन्द नाहॅना 66

करक्क वन्त काम नोय्–(बुद्धि को) आच्छन्न करते हुए आये कामरोग की; तुरक्क–प्रेरणा से; वन्त–उत्पन्न; तोमिनाल्–अपराध से; अरक्कन् मैन्तन् आकु ॲना–राक्षस-पुत्र बन जाओ, ऐसा; इरक्कम् इन्ऱि–बिना करुणा के; एयिनान्–मुझे शाप दिया। ६६

कामरोग ने मेरी बुद्धि को आक्रांत कर लिया। उससे उत्पन्न अपराध से कुबेर ने बिना किसी दया के, निर्मम रूप से शाप दिया कि राक्षसपुत्र बन जाओ। ६६

अन्न शाब मेविनान्, इन्न ईर्व देॅनॅना
निन्न ताळि नीङ्गुमॅन्, ऱुन्नु मॅऱ्कु णर्त्तिनान् 67

नान्–मैं; अन्न चापम्–वह शाप; मेवि–प्राप्त करके; इन्नल् तीर्वतु–कष्ट-निवृत्त होना; एतु ॲना–कैसा, ऐसा पूछने पर; निन्न ताळिल्–आपके चरण-स्पर्श से; नीङ्कुम्–दूर होगा; ॲन्ऱु–ऐसा; उन्नलाल् उणर्त्तिनान्–विचार करके (कुबेर ने) बताया। ६७

जब मुझे वह शाप मिला, तो मैंने पूछा कि यह कष्ट कब दूर होगा ? कुबेर ने विचारकर देखा और कहा कि श्रीराम के चरण-स्पर्श से दूर होगा। ६७

वलञ्जॅय् दिन्द वानॅलाम्, नलिञ्जु तिन्नु नामवेल्
पॉलिञ्ज वॅन्ऱि पूणुमक्, किलिञ्जन् मैन्द नायिनेन् 68

इन्त वान् ॲलाम्–इस आकाशमण्डल भर में; वलम् चॅय्तु–घूम आकर; नलिञ्चु तिन्नुम्–मारपीट कर खानेवाले; नाम वेल् पॉलिञ्च–भयंकर भाले के साथ रहनेवाले; वॅन्ऱि पूणुम्–विजयी; अ किलिञ्चन् मैन्तन्–उस किलिंज का पुत्र; आयितेन्–बना। ६८

मैं किलिंजन का पुत्र पैदा हुआ। किलिंज सब जगह घूमकर जीवों को त्रस्त करनेवाला भयंकर भालाधारी था। वह विजयशील राक्षस था। (वाल्मीकी के अनुसार 'जय' उसका पिता था और 'शतह्रदा' उसकी माता।)। ६८

अन्ऱु मूल मादियाय्, इन्ऱु काऱु मेळैयेन्
नन्ऱु तीदु नाडलेन्, निन्ऱु तीय नेडिनेन् 69

आतियाय्–आदिदेव; अन्ऱु मूलम्–उस दिन से; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; एळैयेन्–क्षुद्र मैं; नन्ऱु तीतु नाटलेन्–अच्छा, बुरा न परखकर; निन्ऱु–अपने रास्ते रहकर (चलकर); तीय नेटितेन्–अत्याचार ही ढूँढ़-ढूँढ़कर करता रहा। ६९

हे आदिदेव! उस दिन से आज तक मैं अच्छे-बुरे का विचार किये बिना ही मनमाना अत्याचार करता फिरता था। ६९

तूण्ड निन्ऱ तॉन्मैदान्, वॅण्ड निन्ऱ वेदनूल्
पूण्ड निन्पॉलन्गॉडाळ्, तोण्ड विन्ऱु तेऱिनेन् 70

तूण्ट–मुझे प्रेरित करने के लिए; निन्ऱ–जो रहा; तॉन्मै तान्–उस पुराने पुण्य ने; वेण्ट–चलाया; निन्ऱ–मेरे सामने आ उपस्थित हुए; वेत नूल् पूण्ट–वेदशास्त्रभूषित; निन् पॉलन् कॉळ् ताळ्–आपके सुन्दर श्रीचरणों ने; तीण्ट–मेरा स्पर्श किया; इन्ऱु तेऱितेन्–और मैं आज तरा। ७०

मेरा भाग्य रहा और मेरे पूर्वकृत तप ने मुझे प्रेरित किया और मेरा आपसे टकराने का सौभाग्य हुआ। आपके श्रीचरण ने मेरा स्पर्श किया और आज मैं तर गया। ७०

तॅऱुत्तु वन्द तीदॅलाम्, अऱुत्त वुन्नै यादनेन्
ऑऱुत्त तन्मै यूळियाय्, पॉऱुत्ति यॅन्ऱु पोयिनान् 71

ऊळियाय्–युगान्तवाह्य; तॅऱुत्तु वन्त–वैर करने से जो आया; तीतु ॲलाम्–वह सब पाप व कष्ट; अऱुत्त उन्नै–काटनेवाले आपको; आततेन्–बुद्धिहीन मैंने; ऑऱुत्त तन्मै–जो आपको कष्ट दिया; पॉऱुत्ति–(वह अपचार) क्षमा कीजिए; ऍन्ऱु–प्रार्थना करके; पोयितान्–(विराध) तुम्बुरु चला गया। ७१

युगान्त में अमर रहनेवाले अक्षयपुरुष! अपने दुष्कृत्य से सम्पादित

सभी पापों को काटनेवाले आपके साथ जो मैंने निपट अनुचित व्यवहार किया, वह सब क्षमा कर दीजिए। यह प्रार्थना करके विराध तुंबुरु बन कर चला गया। (तुंबुरु नारद-शाप प्राप्त कर विराध बना हुआ कोई ब्राह्मण है। दुर्वासा ऋषि ने ही इसे शाप दिया था। —ऐसे भी वृत्तान्त अन्यत्र पाये जाते हैं। अध्यात्म रामायण के अनुसार विराध ने ही श्रीराम और लक्ष्मण को शरभंग के आश्रम जाने की सलाह दी थी।)। ७१

तेवु कादल् शीरियोन्, आवि पोयि नान्तॆताप्
पूवु लावु पूवयो, डेव लारु मेहितार् 72

तेवु कातल् चीरियोन्–देवों के भी चाहने योग्य श्रेष्ठ गुण वाले; आवि पोयितान्–(विराध के) प्राण उड़ गये; अंता–जानकर; पू उलावु–पुष्पशोभित; पूवैयोटु–देवी सीताजी के साथ; एवलारुम्–शरप्रेषण-चतुर कुमार भी; एकितार्–वहाँ से चले। ७२

विराध देवों से भी शंसित श्रेष्ठ गुण वाला था। वह मर गया। इसके बाद पुष्पालंकृत देवी सीताजी के साथ शर चलाने में चतुर श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ से चल पड़े। ७२

कैहॊळ् काल वेलिनार्, मॆय्हॊळ् वेद मॆय्यरवाळ्
मॊय्हॊळ् शोलै मुन्नित्तार्, वैह लानुम् वैहिनान् 73

कै कॊळ् काल वेलित्तार्–हाथ में धृत यम-सम भाला वाले; मॆय् कॊळ् वेत मॆय्यर् वाळ्–सत्यबोधक वेदमूर्ति (महर्षि) जहाँ रहे; मॊय् कॊळ् चोलै–उस घने वन में; मुन्नित्तार्–पहुँचे; वैकलानुम् वैकितान्–दिनकर भी अस्त हुए। ७३

यम के समान भयंकर भालाधारी श्रीराम और लक्ष्मण शाश्वत वेदों के विग्रहस्वरूप महर्षियों के वासस्थान, वन में पहुँचे। तब तक दिनकर भी अस्त हो गया। ७३

2. शरबङ्गर् पिऱप्पु नीङ्गु पडलम्

शरभङ्ग-मुक्ति (जन्म-निवृत्ति) पटल

कुरवङ्गुवि कोङ्गलर् कॊम्बिनॊडुम्, इरवङ्ग णुहुम्बॊळु दॆय्दिनराल्
शरवङ्ग निरुन्दु तवङ्गरुदुम्, मरवङ्गिळर् कॊङ्गॊळिर् वाशवनम् 74

कुरवम्–'कुरा' के फूल; कुवि कोङ्कु–प्रवृद्ध 'कोङ्गु' की कलियाँ; अलर्–जिन पर फबती थीं; कॊम्पिनॊटुम्–उन पुष्पलता (समान सीताजी) के साथ; चरवङ्कन्–शरभंग (जहाँ); इरुन्तु–रहकर; तवम् करुतुम्–तप में लीन रहते थे; मरवम् किळर् कोङ्कु ऒळिर्–'मराम' नानक वृक्ष से उठनेवाले शहद के गन्ध से पूर्ण; वाच

वऩम्–सुवासित तपोवन के पास; इरवु अङ्कु अणुकुम् पॉऴ़ुतु–जब रात उसमें आई, तब; ॲय्तिऩर्–पहुँचे। ७४

श्रीराम सीताजी के साथ शरभंग के आश्रम में तब पहुँचे, जब रात का वहाँ आगमन हो रहा था। सीताजी "कुरा" के पुष्प और "कोंगु" की कलियों से अलंकृत थीं और एक पुष्पशाखा के समान लग रही थीं। शरभंग के आश्रम में 'मराम्' नामक (कुंकुम ?) वृक्ष अधिकता से पाये जाते थे और उनमें से श्रेष्ठ शहद का सुबास आ रहा था। ७४

शॅव्वेलवर् शॅऩ्ड्रऩर् शेरलुरुम्, अव्वेलैयि नॅय्दिऩ ऩायिरमाम्
तव्वादिर वुम्बॉलि तामरैयिऩ्, वॅव्वेऱलर् कण्णिऩऩ् विण्णवर्होऩ् 75

चॅम् वेल् अवर्–श्रेष्ठ शक्तिधर वे; चॅऩ्ड्रऩर् चेरल् उरुम्–चलकर जो पहुँचे; अ वेलैयिऩ्–उस समय; तव्वातु–निरन्तर; इरवुम् पॉलि–रात में भी विकसित रहनेवाले; तामरैयिऩ्–कमलपुष्पों के समान; वॅव्वेऱु अलर्–अलग-अलग विकसित; आयिरम् आम् कण्णिऩऩ्–सहस्राक्ष; विण्णवर् कोऩ्–सुरपति; ॲय्तिऩऩ्–आ पहुँचे। ७५

जब श्रेष्ठ भालाधारी श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ पहुँचे, तभी देवेन्द्र भी वहाँ आये। उनके सहस्र नेत्र निरन्तर, रात में भी विकसित रहनेवाले कमलों के समान उनके शरीर में शोभा दे रहे थे। ७५

अऩ्ऩच्चॅल विऱ्पडि मेलयल्शूऴ़्, पॉऩ्ऩिऱ्पॉलि वारणि पूण्मुलैयार्
मिऩ्ऩिऱ्चॅऱि कऱ्ऱै विरिन्दऩपोल्, पिऩ्ऩिच्चुड रुम्बिऱऴ़् पेरॊळियाऩ् 76

पटि मेल्–भूमि पर; अयल् चूऴ़्–अपने पार्श्व में घेरे रही; पॉऩ्ऩिल् पॉलि–स्वर्ण-सम फैले ('तेमल-') सुन्दरतासूचक धब्बों के साथ; वार् अणि–अँगिया-पहनी हुई; पूण् मुलैयार्—आभरण-भूषित उरोजों वाली सुरांगनाएँ; मिऩ्ऩिल् चॅऱि कऱ्ऱै–एक घना बिजलीपुंज; विरिन्तऩ पोल्–फैला रहा, जैसे; अऩ्ऩ चॅलविल्–हंस-गति में; पिऩ्ऩि—पास-पास सटे हुए; चुटरुम्–कांति बिखेर रही थीं, इस रीति से; पिऱऴ़् पेर् ऑळियाऩ्—रह-रहकर चमकनेवाली देह-कांति वाले। ७६

उनके साथ 'तेमल' (चर्म पर फैले स्वर्णवर्ण) से युक्त, अँगिये से बद्ध और आभरणभूषित उरोजों वाली सुरांगनाएँ उनको मध्य में लिये चल रही थीं। जब वे मिलकर हंस के समान चलीं, तब उनकी कान्ति इन्द्र पर पड़ती थी। इसलिए उनकी देह रह-रहकर चमक उठी। ७६

वाऩिऱ्पॉलि कोदैयर् कण्मलर्वण्, काऩिऱ्पडर् कट्कळि वण्डॊडुतार्
मेऩित्तिरु नारदऩ् वीणैयिशैत्, तेऩिऱ्पडि युऩ्ऩॅवि वण्डुडैयाऩ् 77

वाऩिल् पॉलि कोतैयर्–आकाश की शोभाशालिनी उनके; कण् मलर्–अक्ष रूपी पुष्पों के; वण् काऩिल्–घने वन में; पटर्–फैलती चलनेवाली; कण् कळि वण्टु ऑटु–दृष्टि रूपी मत्त अलियों के साथ; तार् मेऩि तिरु नारतऩ्–मालाभूषित शरीर

और शुभ कृत्य वाले श्रीनारद के; वीणै इचै तेत्तिल्–(मगधी) वीणा के संगीत-मधु में; पटियुम्–लगे हुए; चॅवि वण्टु उटैयान्–कर्ण रूपी भ्रमर वाले। ७७

वे उनको देखते और वे सुरबालाएँ उनकी सुन्दरता पर अपनी आसक्ति प्रकट करती थीं। इन्द्र श्रीनारद की वीणा के स्वर का भी लुत्फ़ उठाते थे। (कवि का वर्णन है कि इन्द्र के नेत्र और कर्ण मत्त भ्रमर हैं। नेत्र-भ्रमर सुरांगनाओं के नेत्र रूपी कमल-कानन में विचर रहे थे और कर्ण-भ्रमर मालाधारी और महान कर्मनिष्ठ नारद की वीणा के स्वर रूपी शहद पर अटका था।)। ७७

अऩैयिऩ्ऱुऱै यैम्बदो डैम्बदुनूल्, विऩैयिऩ्ऱोहै वेळ्वि निरप्पियमा
मुऩैवऩ्मुदु तेवरिऩ् मूवरलार्, पुऩैयुम्मुडि तुऩ्ऱु पॊलङ्गळलान् 78

अऩैयिऩ् तुऱै–होमाग्नि में; नूल् विऩैयिऩ्–शास्त्रोक्त कर्म के अनुसार; ऐम्पतु ऒटु ऐम्पतु तोकै–पचास और पचास जोड़ने से प्राप्त (एक सौ) संख्या के; वेळ्वि निरप्पिय–यज्ञ जिन्होंने पूरा किये थे; मा मुऩैवऩ्–वे महान नायक; मुतु तेवरिऩ्–प्राचीन देवों में; मूवर् अलार्–ब्रह्मा, विष्णु और शिव को छोड़ अन्य; पुऩैयुम् मुटि तुऩ्ऱ–जो किरीट पहनते हैं, वे जिन पर लगते थे; पॊलऩ् कऴलान्–उन उज्ज्वल वीरवलयों से अलंकृत। ७८

इन्द्र शतमख हैं। यानी शास्त्रोक्त रीति से होमाग्नि में सौ यज्ञ करके देवों के नायक बने थे। त्रिदेव को छोड़ अन्य सभी देवता उनके पैरों पर सिर नवाते थे। उनके सिरों के किरीटों से स्पृष्ट सुन्दर (या स्वर्णमयी) पायलधारी थे वे। ७८

शॅम्मामल राणिहर् देवियॊडुम्, मुम्मामद वॅण्णिऱ मुऩ्ऩुयर्ताळ्
वॅम्मामिशै याऩ्विरि वॅळ्ळिविळङ्, गम्मामलै यण्णलै येयऩैयान् 79

चॅम्मा मलराळ् निकर्–लाल और शालीन कमलनिवासिनी-सदृश; तेवियॊटुम्–देवी शची के साथ; मु मा मतम्–(कर्ण, कपोल, बीज-) त्रिमदयुक्त; वॅण् निऱम्–श्वेतवर्ण; उयर् मुऩ् ताळ्–ऊँचे अगले पैर वाले; वॅम् मा मिचैयान्–भयंकर (रोबीले) ऐरावत गज पर आनेवाले; विरि वॅळ्ळि–प्रभापूर्ण चाँदी के समान; विळङ्कु–शोभनेवाले; अ मा मलै–उस महान कैलास पर्वत के; अण्णलैये अऩैयान्–प्रभु (शिवजी) के ही सदृश। ७९

उनके साथ लाल कमल की निवासिनी श्रीलक्ष्मी-सदृश शचीदेवी भी आयी थीं। वे (कर्ण, कपोल, बीज इनसे बहनेवाले) त्रिमदस्रावी, श्वेत वर्ण और लम्बे अगले पैरों वाले ऐरावत के श्रेष्ठ गज पर आसीन हो आये थे। वे साक्षात कैलासपर्वतवासी शिवजी के समान थे। ७९

ताऩिऩ्ऱय निऩ्ऱॊळिर् तण्गदिरोऩ्, याऩिऩ्ऱदे नॆऩ्ऱॊळि यॆञ्जिडमा
वाऩिऩ्ऱ पॆरुम्पदम् वऩ्दुरुवाय्, मेऩिऩ्ऱॆऩ निऩ्ऱॊळिर् वॆण्गुडैयान् 80

अयल् निऩ्ऱु–पास आकाश में स्थित होकर; ऑळिर्–प्रकाश देनेवाले; तण् कतिरोऩ्–शीतल किरणों के चन्द्र; याऩ् इङ्ङु निऩ्ऱतु ऎऩ्–मेरा इधर रहना क्या (किस प्रयोजन का); ऎऩ्ऱु–समझकर; ऑळि अॅऴ्चिट–प्रभाहीन हो; मा वाऩ् निऩ्ऱ–शानदार आकाश में स्थित; पॅरुम् पतम्–श्रेष्ठ अमृत; उरुवाय् वन्तु–(छाते का) रूप लेकर आया; मेल् निऩ्ऱु ऎऩ–उनके ऊपर रहा, ऐसा; निऩ्ऱु ऑळिर्–रहकर शोभा देनेवाले; वॅण् कुटैयाऩ्–श्वेत छत्रधारी। ८०

उनके ऊपर श्वेतछत्र खुला हुआ था। उसको देखकर चन्द्र ने सोचा कि अब मेरे प्रकाश से क्या होगा ? उसकी प्रभा ही मन्द पड़ गयी। ऐसे उसकी प्रभा को मन्द करते हुए अमृत, मानो छत बनकर आया हो, वैसा वह छत्र शोभायमान था। ८०

तिशैकट्टिऩ माल्हरि दॅट्टमदप्, पशैहट्टिऩ किट्टिऩ पऱ्पलपोर्
विशैकट्टऴि दाऩवर् विट्टिहल्पेर्, इशैकट्टिऩ वॊत्तिवर् शामरैयाऩ् 81

तिचै कट्टिऩ–आठों दिशाओं में बद्ध; माल् करि–बड़े गजों का; तॅट्ट–गाढ़ा; मत पचै–दानवारि का गोंद; कट्टिऩ–जिन पर जम गया हो; किट्टिऩ–प्राप्त; पऱ्पल पोर्–अनेक युद्धों में; विचै कॅट्टु अऴि–वेग खोकर जो मिटे; दाऩवर्–वे दानव; इकल् विट्टु–युद्ध छोड़कर; पेर्–भाग जाएँ, ऐसा; इचै कट्टिऩ ऑत्तु–कीर्ति स्थापित करते हों, ऐसा; इवर् चामरै याऩ्–डुलनेवाले चँवरों से सेवित। ८१

उनके ऊपर चँवर डुल रहे थे। वे उनको असुर-विजयिनी कीर्ति-स्तम्भ के समान (कीर्ति के स्मारक के समान) रहे। दानव और राक्षस उनके सामने लड़ने आये, पर हारकर भाग गये। सभी दिशाओं में दिशाओं के अन्त तक भागे। तब उनके ऊपर दिग्गजों का मदजल बहा और जम गया। ऐसी विजय की कीर्ति के स्मारक थे, वे चँवर। ८१

तेरिऱ्ऱिरि शॅङ्गदिर् तङ्गुवदोर्, ऊरिऱ्ऱॆऩ दॅऩ्ऩप्पॊलि यॊण्मुडियाऩ्
पोर्वित्तह नेमि पॊऱुत्तवऩ्मा, मार्विऱ्ऱिरु विऱ्पॊलि मालैयिऩाऩ् 82

तेरिल् तिरि–एकचक्ररथ-गामी; चॅम् कतिर्–लाल किरणमाली; तङ्कुवतु ओर्–जिसके अन्दर रहते हैं; ऊर् इऱ्ऱितु ऎऩ–वह परिवेश यही है, ऐसा; पॊलि ऑळ् मुटियाऩ्–शोभनेवाला प्रभापूर्ण किरीटधारी; पोर् वित्तकऩ्–युद्ध में चतुर; नेमि पॊऱुत्तवऩ्–चक्रधारी (विष्णु) के; मा मार्विल्–शानदार वक्षस्थल में; तिरुविल्–विद्यमान श्रीलक्ष्मीदेवी के सदृश; पॊलि–उज्ज्वल; मालैयिऩाऩ्–रत्नहारधारी। ८२

उनका किरीट सूर्य के परिवेश के समान था। वे युद्ध-चतुर चक्रधारी श्रीविष्णु के शानदार वक्षस्थल में निवास करनेवाली श्रीलक्ष्मी देवी के सदृश प्रभापूर्ण रत्नहार पहने हुए थे। ८२

शॆऱ्ऱिक्कदि रिऱ्पॊलि शॆम्मणियिऩ्, कऱ्ऱैच्चुडर् विट्टॆरि कञ्जुहियाऩ्
वॆऱ्ऱित्तिरु विऩ्गुळिर् वॆण्णहैपोल्, शुऱ्ऱिक्किळ रुञ्जुडर् तोळ्वळैयाऩ् 83

चॆऱ्ऱि कतिरिल् पॊलि—जड़ित और किरणें निकालनेवाले; चॆम् मणियिऩ्—लाल रत्नों के; चटर् कऱ्ऱै—किरनराशि; विट्टु ऎरि—छिटकाते हुए दीप्त रहनेवाले; कञ्चुकियाऩ्—कंचुक से अलंकृत; वॆऱ्ऱि तिरुविऩ्—विजयश्री के; कुळिर् वॆण् नकै पोल्—मन को शीतल (सुखी) बनानेवाले श्वेत दन्तों के हास के समान; चुऱ्ऱि किळरुम्—आवृत रहनेवाले; चुटर् तोळ् वळैयाऩ्—शोभायमान बाहुवलयों से भूषित। ८३

वे ऐसा कंचुक पहने हुए थे, जिसमें जड़ित उज्ज्वल रत्न ज्योतिपुंज-सा निकाल रहे थे। उनकी भुजाओं के बाहुवलय विजयलक्ष्मी के श्वेत दाँतों द्वारा प्रकट उज्ज्वल हास के समान थे। ८३

पल्लायिर मामणि पाडमुरुम्, तॊल्लारणि काल्शुड रिऩ्ऱॊहैदाऩ्
ऎल्लामुड ऩायॆळ् लालॊरुतऩ्, विल्लालॊळिर् मेह मॆऩप्पॊलिवाऩ् 84

पल् आयिरम् मा मणि—अनेक सहस्र रत्न; पाटम् उरुम्—ज्योति निकालते (जिनसे) हैं; तॊल् आर् अणि—वे प्राचीन आभरण; काल्—जो बिखरे हैं; चुटरिऩ् तॊकै—उस प्रभा का पुंज; ऎल्लाम् उटऩ् आय्—सब मिलकर; ऎऴलाल्—ऊपर उठता है, इसलिए; ऒरु तऩ् विल्लाल्—अपने अनुपम (इन्द्र-) धनुष से; ऒळिर् मेकम् ऎऩ—प्रकाशित मेघ के समान; पॊलिवाऩ्—दर्शनीय। ८४

सहस्रों रत्नों से युक्त प्राचीन आभरणों से जो आभा की किरणें छूट रही थीं, उनका सम्मिलित प्रकाशपुंज उठकर फैल रहा था। तब इन्द्र इन्द्रधनुष के साथ उठे काले मेघ के समान मनोहर लगे। ८४

माऩावुल हन्दनिऩ् मऩ्ऱल् पॊरुम्, तेऩारु नलञ्जॆऱि तॊङ्गलिऩाऩ्
मीऩोडु कडुत्तुयर् वॆऩ्ऱियवाम्, वाऩाडियर् कण्णॆऩुम् वाळुडैयाऩ् 85

उलकम् तऩिल् माता—संसार में जिसकी उपमा नहीं मिल सकती; मऩ्ऱल् पॊरुम्—दिव्य सुगन्ध छिटकानेवाली; नाऱु तेऩ्—सुवासित शहद; नलम् चॆऱि—श्रेष्ठ और सुन्दर; तॊङ्कलिऩाऩ्—मालाधारी; वाऩ् नाटियर्—देवांगनाओं की; मीऩ् ओटु कटुत्तु—मछलियों से टकराकर; उयर् वॆऩ्ऱि अवाम्—उत्कृष्ट विजयाकांक्षी; कण् ऎऩुम्—आँख रूपी; वाळ् उटैयाऩ्—तलवारों से भूषित (आँखें उन पर लगी थीं)। ८५

उनकी पुष्पमाला संसार में अन्यत्र दुर्लभ, अनुपम और सुगन्धपूर्ण शहद की सुगन्धी से युक्त पुष्पों की बनी थी। बड़ी ही श्रेष्ठ मालाएँ थीं। उन पर तलवारें जो लगी थीं, वे साधारण तलवारें नहीं थीं। सुरांगनाओं की मीन-विजयिनी आँखों की दृष्टि रूपी तलवारें थीं। ८५

वॆल्वाऩशै याल्विशै याल्विडुनाळ्, ऎल्वाऩ्शुडर् मालै यिरावणऩ्मेल्
नॆल्वालु मऱादु निऱम्बिऱळा, वल्वाय्मडि यावयि रप्पडैयाऩ् 86

मेल्—प्राचीनकाल में; ऎल् वाऩ् चुटर्—सूर्यतुल्य प्रकाश वाली; मालै—रत्नमालाओं से भूषित; इरावणऩ् वॆल्वाऩ् नचैयाल्—रावण ने विजय पाने की इच्छा से; विचैयाल् विट्टु नाळ्—वेग के साथ जब अस्त्र चलाये, तब; नॆल्वालुम् अऱात—धान की नोक-सा

उतना छोटा अंश भी जिसका नष्ट नहीं हुआ; निऱम् पिऱऴा–जिसकी आभा नहीं मिटी; वल् वाय् मटिया–जिसकी कठोर धार कुण्ठित नहीं हुई; वयिर पटैयान्–ऐसा वज्रायुध-धारी। ८६

उनके पास वज्रायुध था। पहले रत्नहारधारी रावण ने इन्द्र के साथ युद्ध किया था। इन्द्र पर विजय की आकांक्षा के साथ उसने वेग के साथ अनेक अस्त्र चलाये थे। पर उनसे इस वज्र पर किंचित भी आँच न आयी। न उसका धान की नोक का उतना अंश नष्ट हुआ। न उसकी प्रभा मन्द हुयी। न उसी की धार कुंठित हुई। ऐसे वज्रायुध के साथ वे आये थे। ८६

निन्ऱानॆदिर् निन्ऱ नॆडुन्दवनुम्, शॆन्ऱानॆदिर् हॊण्डु शिऱप्पमैया
ऎन्ऱातिव णॆय्दिय वाऱॆनलुम्, पॊन्ऱाद पॊलङ्गऴ लोन्बुहलुम् 87

निन्ऱान्–(वे इन्द्र शरभंगाश्रम में) स्थित हुए; ऎतिर् निन्ऱ नॆटुम् तवनुम्–उनके सामने जो रहे, उन महान तपस्वी ने भी; ऎतिर् कॊण्टु चॆन्ऱान्–उनका स्वागत कर ले जाकर; चिऱप्पु अमैया–अतिथि-सत्कार किया; इवण् ऎय्तिय आऱु ऎन्–यहाँ आने का हेतु क्या है; ऎनलुम्–पूछने पर; पॊन्ऱात पॊलन् कऴलोन्–अमिट आभा वाली पायलधारी (इन्द्र); पुकलुम्–बोले। ८७

ये इन्द्र महर्षि शरभंग के सामने आ खड़े हुए। महान तपस्वी ने उनको देखा। आगे आकर स्वागत करके अपने कुटीर के अन्दर ले गये। अतिथि-सत्कार करने के बाद उन्होंने इन्द्र से पूछा कि यहाँ आपके आगमन का हेतु क्या है ? तब अक्षुण्ण प्रभा वाली पायलधारी इन्द्र बोले। ८७

निन्नालियै नीदि नॆडुन्दवमिन्, ऎन्नालुम् विळम्बरि दॆन्ऱुणर्वान्
अन्नान्मुह निन्नै यऴैत्तनन्नाल्, पॊन्नार्शडै मादव पोदुदियाल् 88

पॊन् आर् चटै मातव–स्वर्णवर्ण जटाधारी महान तपस्वी; निन्ताल् इयै–आपसे की हुई; नीति नॆटुम् तवम्–यथोक्त लम्बी तपस्या; ऎन्नालुम् विळम्प अरितु–मुझसे भी अवर्ण्य है; ऎन्ऱु उणर्वान्–ऐसा मानकर; अ नान् मुकन्–उन चतुर्मुख ने; निन्नै अऴैत्तनन् आल्–आपको निमन्त्रित किया है, इसलिए; पोतुति–पधारिये। ८८

स्वर्ण के रंग की जटाधारी महान तपोधन ! चतुर्मुख ने आपकी यथोचित लम्बी तपस्या पर विचार किया। उन्हें भी आपकी तपस्या की महिमा अवर्ण्य लगी। इसलिए उन्होंने आपको अपने सत्यलोक में निमन्त्रित किया है। आप पधारिए। ८८

ऎन्दायुल हियावैयु मॆव्वुयिरुम्, तन्दानुऱै युन्नॆरि तन्दनन्नाल्
नन्दाद पॆरुन्दव नाडदुनी, वन्दायॆनि नन्नॆदि रेवरुवान् 89

ऎन्ताय्–पूज्य; उलकु यावैयुम्–सारे लोकों को; ऎ उयिरुम्–सभी जीवों को;

तन्तान्–सृजित करनेवाले; उरैयुम्–जहाँ वास करते हैं, उस; नॅरि–सत्यलोक-वास को; तन्ततन्–आपको प्रदान किया है; अतु नन्तात पॅरुम् तव नाटु–वह अक्षय तपस्या से प्राप्य महान पद है; नी वन्ताय् ॲनिल्–अगर आप पधारें तो; निन् ॲतिरे वरुवान्–वे ही अगवानी करने के लिए पधारेंगे। ८९

पूज्य महर्षि ! सारे लोकों और जीवों के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने आपको अपने सत्यलोक का पद प्रदान किया है। वह लोक अक्षय और दीर्घ तपस्या द्वारा ही प्राप्य पद है। अगर आप पधारेंगे, तो स्वयं ब्रह्मा अगवानी करने के लिए पधारेंगे। ८९

ॲल्लावुल हुक्कु मुयर्न्दमैयान्, शॉल्लावहै नीयुणर् तॉन्मयैयाल्
नल्लाळुड नॅनड नीयॅन्तलुम्, अल्लेनॅन वालरि वानरैवान् 90

ॲल्ला उलकुक्कुम् उयर्न्तमै–(वह सत्यलोक) सारे लोकों में श्रेष्ठ है, यह श्रेष्ठता; यान् चॊल्ला वकै–मैं बखानूँ इसकी आवश्यकता नहीं हो, ऐसा; नी उणर् तॊन्मैयै–आप ही पहले से जानते हैं, ऐसे वृद्ध हैं आप; नल्लाळ् उटत्ते नट नी–अपनी साध्वी पत्नी के साथ चलिए आप; ॲन्तलुम्–(इन्द्र के) कहने पर; वाल् अरिवान्–श्रेष्ठ ज्ञानी; अल्लेन् ॲन्त–(आ) नहीं सकूँगा, यह कहकर; अरैवान्–आगे बोले। ९०

वह सत्यलोक सर्वश्रेष्ठ लोक है। यह मुझे कहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि आप बड़े ही वृद्ध तपस्वी हैं और आप स्वयं इसके जानकार हैं। आप अपनी साध्वी पत्नी को भी साथ लेकर पधारिए। इन्द्र के यह कहने पर ज्ञानी महर्षि ने उत्तर में कहा कि नहीं, मैं नहीं आ सकूँगा। फिर वे आगे बोले। ९०

शॊर्रुन्दर मन्रिदु शूळ्हळ्ळाय्, पॅर्रुम्बॅर लायदॊर् पॅर्रियदो
मर्रॅन्बल नीयिवण् वन्ददनाल्, मुर्रुम्बह ऱानु मुडिन्दुळदाल् 91

चूळ् कळ्ळाय्–पहनी हुई पायल वाले; इतु चॊर्रुम् तरम् अन्रु–यह (लोक) प्रशंसा योग्य नहीं है; पॅर्रुम्–प्राप्त करने पर भी; पॅरल् आयतु ओर्–पाने योग्य एक; पॅर्रियतो–विशिष्टता रखनेवाला है क्या; मर्रु ॲन् पल–कि बहुना; नी इवण् वन्ततनाल्–तुम इधर आये हो, इसलिए; पकल् तानुम्–मेरे दिन; मुर्रुम् मुटिन्तुळतु–सारे पूरे हो गये। ९१

पायलधारी देवेन्द्र ! यह पद, जो मुझे दिला रहे हैं, प्रशंसायोग्य नहीं है ! वह मिल भी जाय तो ऐसा नहीं है, जिसको प्राप्त करने की अभिलाषा की जाय ! वह ऐसा श्रेष्ठ नहीं है ! बस ! ऐसी बहुत बातें कहने से क्या होने का ? आप इधर पधारे हैं, यह इसकी सूचना है कि मेरे दिन पूरे हो गये। ९१

शॊर्पॊङ्गु पॅरुम्बुह ळोय्दॊळिन्माय्, शिर्पङ्गळिन् वीवन शॅर्हुवॅन्तो
अर्पङ्गरु दॅन्ने ऱुन्दवमो, कर्पम्बल शॅन्रुदु काणुवयाल् 92

चॊल् पॊङ्कुम् पॆरुम् पुकऴोय्–शब्दों से बढ़ी हुई बड़ी कीर्ति वाले (ऐन्द्र नामक व्याकरण रचकर यश-प्राप्त); माय् तॊऴिल्–भंगुर; चिऱ्पङ्कऴित्–अल्प पदार्थों की तरह के; वीवत–नश्वर पद; चेर्कुवॆतो–लूँगा क्या; अऱ्पम् करुतेन्–क्षुद्र पद नहीं चाहूँगा; ऍन् अरुम् तवमो–मेरी कठोर तपस्या; कऱ्पम् पल चॆन्ऱत–अनेक कल्प बीते हैं; काणुति–यह देख लो। ९२

शब्दों (व्याकरण-रचना) से प्राप्त यश वाले! भंगुर अल्प पदार्थों के समान नश्वर पद को प्राप्त करना चाहूँगा क्या? यह बहुत अल्प है। उसको मैं नहीं चाहता। मेरी तपस्या अनेक-अनेक कल्पों की, की हुई है। आप यह ध्यान रखें। (इन्द्र "ऐन्द्र" नाम के तमिळ व्याकरण के रचनाकार माने जाते हैं।)। ९२

शिऱुहापॆरु हातिलै योतिरिया, कुऱुहानॆडु हागुणम् वेऱुपडा
उऱुहाल्किळर् पूदमॆ लामुहिनुम्, मऱुहानॆऱि यॆय्दुवॆन् वानुडैयाय् 93

वान् उटैयाय्–आकाशलोकपति; चिऱुका–कम नहीं हो; पॆरुका–बड़ा न बढ़े; निलै ओ तिरिया–स्थिति न बदले; कुऱुका–काल में छोटा न हो; नॆटुका–बड़ा न हो; कुणम् वेऱु पटा–गुण में नहीं बदले; उऱु काल् किळर् पूतम्–स्थायी हवा आदि (पाँचों) भूत; ऍलाम्–सब; उकितुम्–नष्ट हो जायें तो भी; मऱुका नॆऱि–अक्षुण्ण रहनेवाले पद (मुक्ति) को; ऍय्तुवॆन्–पाऊँगा। ९३

हे सुरलोकप! मैं ऐसा पद चाहता हूँ, जो न घटेगा, न बढ़ेगा; जो स्थायी रहेगा; काल की गणना के अनुसार जो न छोटा होगा, न लम्बा; जिसका स्वभाव सदा एक सा रहेगा और कभी नहीं बदलेगा; जो पाँचों भूतों के नाश के अवसर पर भी नहीं मिटेगा। ऐसा अक्षय पद मुक्तिपद है। उसी को मैं प्राप्त होऊँगा। ९३

ऍन्ऱिन्न विळम्बिडु मॆल्लैयिन्वाय्, वन्ऱिण्शिलै वीररुम् वन्दणुहा
ऒन्ऱुङ्गिळ रोशैयि नालुणर्वार्, निन्ऱॆन्नैहो लिन्न वॆनानिनैवार् 94

ऍन्ऱु–ऐसा; इन्न–ऐसा; विळम्पिटुम् ऍल्लैयिन् वाय्–कहने के समय; वन् तिण् चिलै वीररुम्–सुदृढ़ व भारी धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण; वन्तु अणुका–आकर समीपस्थ हुए; ऒन्ऱुम्–वहाँ उठी; किळर् ओचैयिनाल्–अधिक ध्वनि से; उणर्वार्–स्थिति कुछ अनुमान करके; निन्ऱु–वहीं खड़े रहकर; इतु ऍन्नै कोल्–यह क्या है; ऍना–ऐसा; निनैवार्–विचार करने लगे। ९४

जब महर्षि यह सब कह रहे थे, तब भारी और सारयुक्त धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण सीताजी के साथ आश्रम के निकट आ गये। उन्होंने देखा कि अन्दर कुछ शोर मचा है। आसार पाकर वे सोचने लगे कि अन्दर क्या हो रहा होगा? सोचते हुए वे खड़े रहे। ९४

कौम्बौत्तन नालौळिर् कोळ्वयिरक्, कम्बक्करि निन्ऱदु कण्डनमाल्
इम्बर्त्तलै मादवर् पालिवनाम्, उम्बर्क्कर शॆय्दिन ऎन्ऱुणरा 95

नाल्–चार; ऑतूतत–एकसम; ऑळिर् कोळ्–दीप्तियुक्त; वयिर कोम्पु–वज्रसम दाँत वाला; कम्प करि–हिलता हुआ या कँपानेवाला (ऐरावत) गज; निन्ऱतु–खड़ा है यह; कण्टऩम् आल्–देखा (हमने) इसलिए; इम्पर तलै–इस भूतल पर; मातवर् पाल्–महान तपस्वी (इन) के पास; इवण्–यहाँ; उम्पर्क्करचु ऎय्तिऩऩ् आम्–देवलोकाधिपति आये हैं, हाँ; ऎन्ऱु उणरा–ऐसा अनुमान करके। ९५

पहले ही उन्होंने एक सम चार वज्रदाँत वाले ऐरावत गज को देखा था। "हमने 'कम्पकरि' (हिलनेवाला, कँपानेवाला या खम्भे से बद्ध) ऐरावत को देखा। इसलिए देवेन्द्र ही इस भूतल पर शरभंग से भेंट करने आये हैं!" —यह अनुमान करके—। ९५

मानैयनै याळौडु मैन्दनैयप्, पूनेर्पौळि लिन्बुऱ नेनिऱुवा
आनेऱॆन वाळरि येऱिदॆनत्, ताऩेयव हन्बौळिल् शारुदलुम् 96

मान्ऩै अनैयाळ् ऑटु–हरिनी-समान सीताजी के साथ; मैन्तनैयुम्–छोटे वीर (लक्ष्मण) को भी; पू नेर् पॊळिलिन्–पुष्प-भरे आश्रम के; पुऱत्ते निऱुवा–बाहर ही रहने को कहकर; आन् एऱु ऎन–ऋषभ के समान; आळ् अरि एऱु ऎन–सशक्त पुरुषसिंह के समान; तान्–आप अकेले; अकन् पॊळिल् चारुतलुम्–उस विशाल आश्रम में पहुँचे, तब। ९६

श्रीराम ने हरिणी-सम सीतादेवी को और छोटे भाई वीर लक्ष्मण को पुष्प-भरे आश्रम के बाहर ही रुकवाया। शानदार ऋषभ और बलवान पुरुषकेसरी के समान वे अकेले उस विशाल आश्रम के अन्दर पधारे। ९६

कण्डामवै यायिर मुङ्गदुवक्, कण्डामरै पोऱ्करु ञायिऱॆनक्
कण्डानिमै योरिऱै काशितियित्, कण्डानरु नान्मऱै यिन्गतियै 97

इमैयोर् इऱै–सुरेन्द्र ने; काचिनियिन् कण्–भूतल पर; कण् तामरै पोल्–आँखें कमल के समान; करु ञायिऱु ऎन–काले सूर्य के समान; अरु नान् मऱैयिन् कतियै–उत्तम चतुर्वेद के फल को; कण् अवै आयिरमुम् कतुव–सहस्रों आँखों को लगाकर; कण्टान्–देखा। ९७

तब देवेन्द्र ने अपनी सहस्र आँखों को उन पर लगाकर देखा। श्रीराम की आँखें सरसिज के समान थीं। उनकी देह की कान्ति काले सूर्य के समान थी। चतुर्वेदसार उनके सहस्राक्ष सुरेन्द्र ने दर्शन कर लिये। ९७

काणामन तौन्दु कवन्ऱननाल्, आणादनै यन्दणर् नायहनै
नाणाळुम् वणङ्गिय नन्मुडियाल्, तूणाहिय तोळ्हौडु ताडौळुवान् 98

काणा–देखकर; नॊन्तु–क्षुब्ध होकर; कवत्ऱत्तन्–चिन्तामग्न होकर; आण् नातत्तै–पुरुषोत्तम को; अन्तणर नायकत्तै–ब्राह्मण, ऋषियों के नायक को; नाळ् नाळुम्–दिन-प्रतिदिन; वणङ्किय नल् मुटियाल्–जिस सिर को नवाकर नमस्कार करते थे, उस श्रेष्ठ सिर से; तूण् आकिय तोळ् कॊंटु–स्तम्भ-सम भुजाओं से पकड़कर; ताळ तॊऴुवान्–पैरों पर दण्डवत की। ९८

देखते ही उनका मन विक्षुब्ध हुआ। पुरुषोत्तम और ब्राह्मण महर्षियों के रक्षक श्रीराम के पैरों पर गिरे और दिन-प्रतिदिन उनके चरणों के सामने नमनेवाले अपने सिर को उनके श्रीचरणों पर रखकर उन्होंने अपने खम्भे-सम दीर्घ हाथों से उनको पकड़ लिया। ९८

तुवशमार् तॊल्लमरुट् टुन्नारैच् चॆऱ्ऱुच्
जुरुदिप् पॆरुङ्गडलिन् शॊऱ्पॊरुळ्कऱ् पित्तुम्
तिवशमार् नल्लऱत्तिन् शॆन्नॆऱियि लुय्त्तुन्
दिरुवळित्तुम् वीडळित्तुञ् जिङ्गामैत् तङ्गळ
कवशमा यारुयिराय्क् कण्णाय्मॆय्त् तवमाय्क्
कडैयिला ञानमाय्क् काप्पानैक् काणा
अवशमाय्च् चिन्दैयळिन् दयले निन्ऱा
नऱियादान् पोल वऱिन्दवॆलाञ् जॊन्नान् 99

तुवचम् आर्–ध्वजाएँ जहाँ फहरती थीं, उस; तॊल् अमर् उळ्–प्राचीन (देवासुर-) युद्ध में; तुन्नारै–शत्रुओं को; चॆऱ्ऱुल्–मिटाकर और; चुरुति पॆरुम् कटलिन्–वेद के बड़े सागर के; चॊल् पॊरुळ्–शब्द व अर्थ; कऱ्पित्तुम्–सिखाकर; तिवचम् आर्–आह्निक; नल् अऱत्तिन्–श्रेष्ठ धर्म-कर्म; चॆम् नॆऱियिल् उय्त्तुम्–अच्छे मार्ग पर चलाकर; तिरु अळित्तुम्–सम्पत्ति प्रदान कर; वीटु अळित्तुम्–मुक्तिपद दिलाकर; चिङ्कामै–अक्षय; तङ्कळ्–अपना; कवचमाय्–रक्षक-कवच रहकर; अरुमै उयिराय्–बहुमूल्य प्राण बनकर और; कण्णाय्–आँखें रहकर; मॆय् तवम् आय्–सच्ची तपस्या रहकर; कटै इला ञानम् आय्–अनन्त ज्ञान बनकर; काप्पानै–पालनेवाले के; काणा–दर्शन करके; अवचमाय्–अवश होकर; चिन्तै अऴिन्तु–मन खोकर; अयले निन्ऱान्–समीप खड़े रहे; अऱिन्त ऎलाम्–अपने जाने सब विषयों का; अऱियातान् पोल–मानो (श्रीराम) नहीं जानते; चॊन्नान्–वर्णन करने (स्तुति करने) लगे। ९९

देवासुर-युद्ध में, जो पहले हुआ था और जिसमें ध्वजाएँ फहरती थीं, श्रीविष्णु ने देवशत्रुओं को मिटाया था। उन्होंने हंस के रूप में श्रुतिसागर के शब्द और अर्थ सिखाये थे। वे ही आह्निक धर्मों के अच्छे मार्ग में चलने में सहायता करनेवाले और धन या मुक्तिपद सभी देनेवाले थे। वे ही देवों के अक्षय रक्षण-कवच थे। वे देवों के प्यारे प्राण, आँखें, सच्ची तपस्या, अनन्त ज्ञान —सब कुछ थे। ऐसे महिमावान, सहायक और परि-पालक नाथ श्रीराम को सुरेन्द्र ने पहचान लिया। दर्शन करके वे अवश

हो गये। मन विह्वल हो गया। उनके पास खड़े होकर अपनी जानी उनकी सारी महिमाओं का वर्णन करके, मानो वे नहीं जानते हों, स्तुति करने लगे। ९९

तोय्न्दुम् बॊरुळनैत्तुन् दोयादु निन्ऱ
तॊल्शुडरे तॊडक्करुत्तोर् शुऱ्ऱमे पऱ्ऱि
नीन्द लरियनॆडुङ् गरुणैक् कॆल्ला
निलैयमे वेदनॆऱि मुऱैयि नेडि
आय्न्द वुणर्वि नुणर्वेवॆम् बहैया
ललैप्पुण् डडियेम् मडिपोऱ्ऱ वन्नाळ्
ईय्न्द वरमुदव वॆय्दित्तैये यॆन्दा
यिरुनिलत् तवोनिन् निणैयडित्ता मरैदाम् 100

पॊरुळ् अनैत्तुम्–सभी वस्तुओं में; तोय्न्तुम्–युक्त रहकर भी; तोयातुम्–अयुक्त भी; निन्ऱ तॊल् चुटरे–रहनेवाले सनातन ज्योतिष्मान; तॊटक्कु अऱुत्तोर्–(संसार से) नाता तोड़नेवाले के; चुऱ्ऱमे–बन्धु; पऱ्ऱि नीन्तल् अरिय–पकड़कर तैरने में कठिन (अपार); नॆटुम् करुणैक्कु ऎल्लाम् निलैयमे–अत्यधिक करुणा के निलय; वेत नॆऱि मुऱैयिन्–वेदोक्त प्रकार से; नेटि–अन्वेषण करके; आय्न्त उणर्विन् उणरवे–खोजने पर प्राप्य अनुभूति रूप; ऎन्ताय्–धाता; अटियेम्–हम दास; वॆम् पकैयाल् अलैप्पुण्टु–भयंकर शत्रुओं से (दानवों से) त्रस्त होकर; अटि पोऱ्ऱ–आपके चरणों की पूजा की; अ नाळ्–उस दिन; ईन्त वरम् उतव–जो वर दिया, उसको चरितार्थ करने की कृपा करने; ऎय्तित्तैये–पधारे हैं; निन् इणै अटि तामरै–आपके श्रीचरणद्वय-कमल; इरु निलत्तवो–इन विशाल भूतल में लगने योग्य हैं क्या। १००

सभी वस्तुओं में युक्त रहकर भी अयुक्त, परे रहनेवाले सनातन ज्योतिस्वरूप! संसार से नाता तोड़नेवाले ज्ञानियों के बन्धु! अपार करुणा के निलय! वेदोक्त प्रकार से अन्वेषण करने पर ही अनुभूति रूप में प्राप्त होनेवाले परमतत्व! हमारे धाता! हम दासों ने भयंकर शत्रुओं द्वारा त्रस्त होकर आपकी शरण आकर स्तुति की। उस दिन आपने वर दिया। उस वर को चरितार्थ करके हमारी रक्षा करने हेतु आप पधारे हुए हैं! नहीं तो क्या आपके श्रीचरण-कमल के जोड़े इस विशाल भूमि पर पड़ने के लिए अर्ह हैं? । १००

मेवा दवरिल्लै मेविनरु मिल्लै
वॆळियो डिरुळिल्लै मेलहीळु मिल्लै
मूवामै यिल्लै मूत्तमैयु मिल्लै
मुदलिडैयो डीऱिल्लै मुन्नीडुपिन् निल्लै
तेवाविङ् गिव्वोनिन् ऱोन्ऱुनिलै यॆन्ऱाऱ्
चिलैयेन्दि वन्दॆम्मैच् चेवडिह णोवक्

कावादु नीयॊऴियिऱ् पऴिपॆरिदो वऩ्ऱेऱ्
करुङ्गडलिऱ् कण्वळर्न्दोय् कैम्माऱु मुण्डो 101

तेवा–देव; करुम् कटलिल्–(आपके रंग के कारण) काले (बने) या विशाल क्षीरसागर में; कण् वळर्न्तोय्–निद्रा करनेवाले; मेवातवर् इल्लै–आपके शत्रु नहीं हैं; मेवितरुम् इल्लै–मित्र भी नहीं हैं; वॆळियोटु इरुळ् इल्लै–प्रकाश के साथ अन्धकार भी नहीं है; मेल् कीऴुम् इल्लै–ऊपर, नीचे नहीं है; मूवामैयुम् इल्लै–उमर में कम होना भी नहीं; मूत्तमैयुम् इल्लै–बढ़ना भी नहीं; मुतल् इटै ओटु–आदि, मध्य के साथ; ईऱु इल्लै–अवसान भी नहीं; मुऩ् ओटु पिऩ् इल्लै–पूर्व और पश्चात नहीं है; निऩ् तोऩ्ऱु निलै–आपके स्वरूप के लक्षण; इव्वो–ये हैं क्या; ऍऩ्ऱाल्–तो; नी चिलै एन्ति–आप धनुष लेकर; चेवटिकळ् नोव–लाल (मनोरम) पैरों को दुख देते हुए; वन्तु कावातु ऒऴियिल्–आकर रक्षा नहीं करेंगे तो; पऴि पॆरितो–बड़ा अपयश होगा क्या; अऩ्ऱेल्–या; कै माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार भी हो सकता है क्या । १०१

आप काल-देश-वस्तु-परिच्छेद रहित हैं। इसलिए आपके न शत्रु है, न मित्र है। देवाधिदेव ! क्षीरसागरशायी ! आपके लिए न प्रकाश है, न अँधेरा। ऊपर कुछ नहीं है, न आपके नीचे कुछ है (आप सर्वत्र व्याप्त हैं)। आपकी न जवानी होती है, न वार्द्धक्य होता है (आप कालातीत हैं)। आपका न आदि है, न मध्य, न अन्त। आपके पूर्व या बाद कुछ नहीं होता। आप सभी काल में वर्तमान हैं। आपके लक्षण ऐसे हैं न ? फिर क्या आश्चर्य है कि आप धनुष लेकर अपने श्रीचरणों को दुखाते हुए हमारे रक्षणार्थ इधर आये हैं। ऐसा रक्षण नहीं करेंगे तो आपका अपयश हो जायगा क्या ? या हम आपका कोई प्रत्युपकार करनेवाले हैं क्या ? । १०१

नाऴि नवैती रुलहमॆला माह
नळिऩत्तु नीतन्द नाऩ्मुहत्तार् तामे
ऊऴि पलपलवु निऩ्ऱळन्दा लॆऩ्ऱु
मुलवाप् पॆरुङ्गुणत्तॆ मुत्तमते मेऩाळ्
ताऴि तरैयाहत् तण्डयिऱ् नीराहत्
तडवरैये मत्ताहत् तामरैक्कै नोव
आऴि कडैन्दमुद मॆङ्गळुक्के यीन्दा
यवुणरहडा मुऩक्कडिमै यल्लामै युण्डो 102

नी–आपने; नळिऩत्तु तन्त–अपनी नाभी-कमल से जिनको सृष्ट किया; नाऩ् मुकत्तार् तामे–वे चतुर्मुख; नवै तीर् उलकम् ऍलाम्–निर्दोष प्रपंच सब; नाऴि आक–माप बनाकर; ऊऴि पल पलवुम्–अनेक-अनेक युग; निऩ्ऱु अळन्ताल्–रहकर मापें तो भी; ऍऩ्ऱुम् उलवा पॆरुम् कुणत्तु–कभी पूरा न होनेवाले (अमाप) उत्तम गुणों के; ऍम् उत्तमते–हमारे पुरुषश्रेष्ठ; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; तरै ताऴि

आक–भूमि को मथनी (पात्र) बनाकर; नीर् तण् तयिर् आक–सागरजल को दही बनाकर; मत्तु तटवरैये आक–मथानी, बड़े मन्दरपर्वत को बनाकर; तामरै कै नोव—कमल-सम हाथों को दुखाते हुए; आऴि कटैन्तु–समुद्र को मथकर; अमुतम्–अमृत को; अँङ्कळुक्के ईन्ताय्–हमें ही दे दिया; अवुणर्कळ् ताम्–दानव तो; उनक्कु अटिमै अल्लामै उण्टो–आपके दास नहीं हैं, ऐसा क्या। १०२

आपके, अपनी नाभि से सृजित चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं, निर्दोष लोकों को माप बनाकर अनेक युगों तक आपके गुणों का माप लगाने लगें, तो भी आपके गुणों का माप नहीं मिल सकता। ऐसे अमाप कल्याण-गुणपूर्ण! पुरुषोत्तम! प्राचीन काल में सारी पृथ्वी को मथनी बनाकर क्षीरसागरपय को दही बनाकर और मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर अपने कमल-सम हाथों को दुखाते हुए मथन किया; पर सुधा निकला तो उसे हम देवों को दे दिया! तब क्या दानव आपके दास नहीं हैं—यह बात है क्या ?। १०२

ऑन्राहि मूलत् तुरुवम् बलवाहि
युणर्वा युयिराहिप् पिऱिदाहि यूऴि
शॅन्रा शरुङ्गालैत् तन्निलैय दाहित्
तीर्न्दुलहन् दाताहिच् चॅव्वेता निन्र
नन्रान ञानत् तनिक्कॊऴुन्दे यॆङ्ग
णवैदीर्क्कु नायहने नल्वितैये नोक्कि
निन्रारैक् कात्ति ययलारैक् काय्दि
निलैयिल्लात् तीवितैयु नीतन्द दन्रे 103

मूलत्तु ऑन्रु आकि–मूल में एक रहकर; उरुवम् पल आकि–अनेक रूप बनकर; उणर्वु आय्–ज्ञानगोचर बनकर; उयिर् आकि–प्राण बनकर; पिऱितु आकि–इस तरह भिन्न-भिन्न होकर; ऊऴि चॅन्रु आचु उरुम् कालै–युगान्त में प्रपंच-नाश के समय; तन् निलैयतु आकि तीर्न्तु–अपनी पूर्व-स्थिति में आ (अपनी लीला) समाप्त करके; उलकम् तान् आकि–तब प्रपंच स्वयं आप होकर; चॅव्वे निन्र–शोभित रहनेवाले; नन्राय ञान तनि कॊऴुन्ते–श्रेष्ठ ज्ञान के पल्लव (सार) समान; अँङ्कळ् नवै तीर्क्कुम्–हमारे अपराधों को दूर करनेवाले; नायकने–नाथ; नल् वितैये नोक्कि निन्रारै–अच्छे कर्म ही करते रहनेवाले साधुओं को; कात्ति–आप रक्षा करते हैं; अयलारै–इतरों को; काय्ति–दण्ड देते हैं; निलै इल्ला तीवितैयुम्–अस्थायी बुरे कर्म भी; नी तन्ततु अन्रे–आपके ही बने हुए हैं न। १०३

मूल में एक रहकर फिर अनेक रूप में बदले। भिन्न-भिन्न सृष्टि में ज्ञान से अनुभव में आनेवाले तत्व रहे। उसके प्राण रहे। इस तरह अनेक जीवों में बँटे से रहने के बाद युगांत में फिर आपने उन सबको अपने में समेट लिया। तब प्रपंच सब आप ही हो गया। उस स्थिति में शोभायमान जो रहते हैं, वे ज्ञानसार! हमारे अपराधों को मिटानेवाले नायक! अच्छे कर्म करनेवाले साधुओं को रक्षित और इतरों को दण्डित

करनेवाले हैं आप। पर क्या अस्थायी पाप भी आपके ही कारण स्थिति नहीं पाते ? । १०३

वल्लै वरम्बिल्लाद मायविन्नै तन्नाल्
मयङ्गिनर् हळोडे मदिमयङ्गि मेन्नाळ्
अल्लै यिऱैयवन्नी यादियॆन्नप् पेदुऱ्
ऱलमरु वेमुन्नै यऱ्प्पयनुण् डाह
ॲल्लै वलयङ्गळ् नुम्मुळैयॆन् ऱन्ना
ळॆरियोनैत् तीण्डि यॆळ्ळुव रॆन्ननिन्ऱ
तॊल्लै मुदन्मुनिवर् शूळुऱ्ऱ पोदे
तॊहैनिन्ऱ वैयन् दुडैत्तिलैयो वॆन्दाय् 104

ॲन्ताय्–हमारे पिता; वल्लै–वलवती; वरम्पु इल्लात–असीम; माय विन्नै तन्नाल्–माया के कार्य से; मयङ्कितर्कळ् ओटु–भ्रमित रहे (देवों) के साथ; मति मयङ्कि–मोहमग्न होकर; मेल् नाळ्–प्राचीन समय में; इऱैवन् नी अल्लै–आप आदि भगवान नहीं हैं; आति ॲन्न–आदिदेव हैं, ऐसा; पेतुऱ्ऱु–संशय में पड़कर; अलमरुवेम्–संकट में रहे हमारे; मुन्नै अऱ पयन् उण्टाक–पूर्वकृत सुकर्म का फल सहायता करने आया; अन्नाळ्–उस दिन; ॲल्लै वलयङ्कळ्–सीमा पर स्थित सारे कुवलय; नुम् उळै ॲन्ऱु–आप ही पर स्थित हैं, ऐसा; ॲळ्ळुवर् ॲन्न निन्ऱ तॊल्लैमुतल् मुनिवर्–"सप्तक" के रूप में प्रख्यात सप्तर्षियों ने; ॲरियोनै तीण्टि–अग्नि को स्पर्श करके; चूळ् उऱ्ऱ पोते–शपथ कही; तॊकै निन्ऱ ऐयम्–तब घनीभूत रहा संशय; तुटैत्तिलैयो–आपने मिटाया नहीं क्या। १०४

धाता! पहले कुछ देवों ने बलवती और असीम माया के कार्य के वश में होकर आपके परत्व के सम्बन्ध में संशय किया। यह उनका भ्रम था। हम भी उनके साथ भ्रमित होकर आप परब्रह्म आदिदेव हैं, नहीं हैं, ऐसे संशय में पड़कर गड़बड़ा रहे थे। पर हमारा सुकृत था, जिसके फलस्वरूप (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगीरस आदि) सप्तर्षियों ने अग्नि में हाथ रखकर शपथ खायी कि सारे कुवलय आपके ही शरीर पर धृत हैं। तब परब्रह्म कौन हैं, इस पर उठा घनीभूत सन्देह मिट गया। आप ही न ऐसी व्यवस्था करके हमारा सन्देह मिटाया! (वाल्मीकी में ये बातें पायी नहीं जातीं।)। १०४

इन्नन पलनिनैन् देत्तिन्न नियम्बात्
तुन्नुद लिडैयुळ दॆन्ननि तुणिवान्
तन्निहर् मुनिवनैत् तरविडै यॆन्नाप्
पॊन्नॊळिर् नॆडुमुडिप् पुरन्दरन् पोनान् 105

पॊन् ऒळिर् नॆटु मुटि पुरन्तरन्–स्वर्ण की चमकदार दीर्घकिरीटी पुरन्दर ने; इन्नन पल–ऐसी अनेक बातें; निनैन्तु–सोचकर; इयम्पा एत्तितन्–और कहकर

स्तुति की; इटै तुन्नुतल् उळतु–बीच में होनेवाली एक घटना है; ॲंत–ऐसा; नति तुणिवान्–खूब निश्चय करके; तन् निकर् मुनिवनै–स्वोपम महर्षि को; विटै तर–बिदा दें; ॲन्ना–कहकर (ले); पोनान्–सिधारे। १०५

स्वर्ण के कारण जाज्वल्यमान दीर्घ किरीटधारी पुरन्दर ने ऐसी बहुत सी बातों का स्मरण करके उनकी स्तुति की। उन्होंने सोच लिया कि बीच में घटनेवाली एक विशेष घटना है। इसलिए उन्होंने शरभंग मुनि को, जो अपनी उपमा स्वयं आप ही थे, नमस्कार करके विदा ली और वे वहाँ से चले गये। १०५

पोनव नहनिलै पुलमयि नुणर्वान्, वानवर् तलैवनै वरवॅदिर् कॉण्डान्
आनव नडितॉळ वरुळ्वर मुनिवन्, तानुडै यिडवहै तळुविन नुळैवान् 106

पोतवन् अक निलै–वैसे निर्गत देवेन्द्र का मनोभाव; पुलमैयिन्–अपनी ज्ञान-दृष्टि से; उणर्वान्–समझकर ऋषि ने; वानवर् तलैवनै–देवदेव श्रीराम को; वरवु ॲतिर् कॉण्टान्–अपने सामने आते पाया; आनवन्–(आगत) श्रीराम ने; अटि तॉळ–नमस्कार किया; मुनिवन् अरुळ् वर–मुनि ने कृपापूर्ण होकर; तळुविनन्–आलिंगन कर लिया; तानुटै इट वकै–अपने वासस्थान (कुटीर) को; नुळैवान्–प्रवेश करके। १०६

महर्षि ने, वहाँ से जो गये, उन पुरन्दर का मनोभाव अपनी ज्ञानदृष्टि से जान लिया। तब देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने पधारे। उन्होंने आकर महर्षि के चरणों में नमन किया। महर्षि उन्हें गले लगाकर अपने आश्रम में लिवा ले जाने लगे। १०६

एळैयु मिळवलुम् वरुहॅन विनिदा, वाळिय ववरॉडु वळ्ळलु महिळा
ऊळियिन् मुदन्मुनि युरैयुळै यणुह, आळियि लरितुयि लवनॅन महिळ्वान् 107

वळ्ळलुम्–श्रीराम ने; एळैयुम् इळवलुम् इतिता वरुक ॲंत–देवी और छोटे भाई सुख से आवें, कहा, तब; अवरॉटु–उनके साथ; मकिळा–खुश होकर; ऊळियिन् मुतन् मुनि–युग के पूर्व से भी विद्यमान महर्षि के; उऱैयुळ्–कुटीर में; अणुक–श्रीराम आये तब; आळियिल् अऱि तुयिल्–क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन रहनेवाले; अवन् ॲंत–परब्रह्म, विष्णु भगवान हैं, समझकर; मकिळ्वान्–हर्षरत हुए। १०७

तब श्रीराम ने अपनी देवी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण को अपने साथ आने की आज्ञा दी। युगारम्भ के पहले से ही रहनेवाले मुनिवर उन सबको लेकर अपने कुटीर में आये। वे श्रीराम को क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान जानकर अत्यन्त हर्षित हुए। १०७

अव्वयि नळहनु वॅहिन नरिजत्
शॅव्विय वरिवुरै शॅव्वियि नुहरा
नव्वियिन् विळियव ळॉडुनति यिरुळॅक्
कव्विय निशियॉरु कडैयुरु मळविल् 108

अ वयित्-उस आश्रम में; अळकतुम्-सुन्दरराज; नव्वियिन् विळि अवळोटु-मृगनयनी सीताजी के साथ; वैकित्तन्-ठहरे; अरिजन्-ज्ञानी ऋषि के; चव्विय अरिवु उरै-श्रेष्ठ उपदेशों को; चॅवि वयिन् नुकरा-कानों से सुनकर; इरुळै नत्ति कव्विय-अन्धकार-ग्रस्त; निचि-निशा; ऑरु कटै उरुम् अळविल्-अन्त होने को आई, तब। १०८

आश्रम में सुन्दरराज श्रीराम, मृगनयना सीतादेवी के साथ ठहरे। (लक्ष्मण शायद कुटीर के बाहर ही रह गये थे।) महान ज्ञानी शरभंग ने अनेक श्रेष्ठ उपदेश दिये। उपदेशों को ध्यान से श्रीराम ने सुना। यों रात बीती और अन्धकारग्रस्त रात एक तरह से अपने अन्तिम समय में आ गयी। तब—। १०८

विलहिडु निळलिनन् वॅयिल्विरि ययिल्वाळ्
इलहिडु शुडरव निशैयन तिशैदोय्
अलहिड वरिदॅनु मविर्हर निरैयाल्
उलहिडु निरैयिरु ळुरैयिनै युरिवान् 109

विलकिटु निळलितन्-फैलनेवाले प्रकाश के स्वामी; इलकिटु चुटरवन्-व्यक्त गर्मी वाले; इचै अन-अपनी कीर्ति के समान; तिचै तोय्-चारों दिशाओं में व्याप्त; अलकु इट अरितु ऍतुम्-अगणित; वॅयिल् विरि-दीप्तियुत; अयिल् वाळ्-तीक्ष्ण तलवार-सम; अविर् कर निरैयाल्-शोभायमान किरण-हस्तों से; उलकु इटु-संसार पर आच्छादित; निरै इरुळ् उरैयिनै-घने अन्धकार रूपी चादर को; उरिवान्-उधेड़ लेने लगे। १०९

व्यापनेवाले प्रकाश के और जाज्वल्यमान तेज के स्वामी सूर्य ने अपनी ही कीर्ति के समान चारों दिशाओं में व्याप्त तलवारें-सम धूप की किरण-करों से भूमि पर आच्छादित अन्धकार रूपी चादर को उधेड़ दिया। (अन्धकार सूर्य-रश्मि के पड़ते ही हट गया।) । १०९

आयिडै यरिजनु मवनॅदि रळुवत्, तीयिडै नुळैवदोर् तॅळिविनै युडैयान्
नीविडै तरुहॅन निरुविन नॅरियाल्, कायॅरि वरन्मुरै कडिदिनि लिडुवान् 110

अ इटै-तव; अरिजनुम्-ज्ञानी; अवन् ऍतिर्-(श्रीराम) उनके सामने; अळुवम् ती इटै-अधिक पुष्ट अग्नि में; नुळैवतु ओर् तॅळिविनै उटैयान्-प्रवेश करने का एक शुद्ध संकल्प लेकर; काय् ऍरि-जलनेवाली अग्नि को; नॅरियाल्-यथाक्रम; वरन्मुरै-शास्त्रोक्त रीति से; कटितिनिल् इटुवान्-जल्दी प्रज्वलित करके; नी विटै तरुकॅन-आप आज्ञा दें, यह; निरुवितन्-माँग लिया। ११०

तब महान ज्ञानी शरभंग मुनि ने श्रीराम के सामने अधिक परिमाण में अग्नि जलाकर उसमें प्रवेश करने का संकल्प लेकर उचित क्रम से, शास्त्रोक्त प्रकार से सत्वर प्रज्वलित किया। फिर श्रीराम से विदा माँगी। ११०

वरिशिलै युळवनु मऱैयुळ वन्नो, पुरितॊळि ऱॆन्नैयदु पुहलुदि यॆन्नलुम्
तिरुमह डलैवशॆय् तिरुविनै युऱयान्, ऎरिपुह निन्नैहुवॆ नरुळॆन्न विऱैवन् 111

वरिचिलै उळवनुम्–बन्धनयुक्त धनुष चलाने में दक्ष श्रीराम के; मऱै उळवनै–वेदकृषक को; नी पुरि तॊळिल् ऎन्नै–आप करते हैं, वह कार्य क्या है; अतु पुकलुति–वह बतलाइए; ऎन्नलुम्–पूछने पर; तिरुमकळ् तलैव–श्रीलक्ष्मीपति; चॆय् इरुविनै–मेरे कृत दोनों कर्म; अऱ–नष्ट हो जायँ, इसलिए; यान् ऎरि पुक निनैकुवॆन्–मैं अग्निप्रवेश करना चाहता हूँ; अरुळ् ऎन्न–आज्ञा देने की कृपा करें, प्रार्थना करने पर; इऱैवन्–भगवान। १११

धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम ने, वेदविद्याप्रवीण महर्षि से प्रश्न किया कि यह आप क्या करने जा रहे हैं? कृपया बताइए तो। तब शरभंग ने कहा कि हे लक्ष्मीपति! मैं अपने दोनों (पाप-पुण्य) कर्मों का नाश करने के लिए अग्नि में प्रवेश करना चाहता हूँ। आप कृपया अनुमति प्रदान करें। तब भगवान ने—। १११

यान्वरु ममैदियि लिदुशॆय लॆवन्नो, मान्वरु तनियुरि मार्बिनै यॆन्नलुम्
मीन्वरु कॊडियवन् विऱलडु मऱवोन्, ऊन्विडु मुवहैय नुरैननि पहर्वान् 112

मान् वरु–मृग के; तनि उरि मार्पिनै–श्रेष्ठ चर्म से आच्छादित वक्ष वाले; यान् वरुम् अमैतियिन्–मेरे आगमन के इस समय में; इतु चॆयल् ऎवन्–यह करना क्यों; ऎन्नलुम्–(श्रीराम के) यह पूछने पर; मीन् वरु कॊटि अवन्–मकरध्वज (मन्मथ) का; विऱल् अटु–प्रताप नष्ट करनेवाले; मऱवोन्–महर्षि; ऊन् विटुम् उवकै यिन्–शरीर-त्याग से उत्पन्न हर्ष के साथ; उरै–वचन; ननि पकर्वान्–खूब बोले। ११२

मृगचर्मालंकृत वक्ष वाले! यह अग्निप्रवेश का कार्य आप अब करना चाहते हैं, जब मैं इधर आया हूँ! यह क्यों? —यह पूछा। तब मकरध्वज मन्मथ के प्रताप-नाशक महर्षि, जो इस उल्लास में थे कि शरीर छूटनेवाला है, बोले। ११२

आयिर युहमुळ तवमयर् हुवॆन्यान्, नीयिवण् वरुहुदि यॆनुनिलै युडैयेन्
पोयिन दरुविनै पुहलुरु विदियान्, मेयिनै यिनियॊरु विनैयिलै विऱलोय् 113

विऱलोय्–विजयी वीर; यान्–मैं; आयिरम् उकम् उळ–सहस्र युगपर्यन्त; तवम् अयर्कुवॆन्–तपस्या करता रहा हूँ; नी इवण् वरुकुति–आप इधर पधारेंगे; ऎनुम् निलै उटैयेन्–इस स्थिरता पर रहा; पुकल् उरु वितियान्–शास्त्र-विधि के अनुसार; पोयितु अरु विनै–मिटे मेरे कठिन कर्म; मेयिनै–आप भी पधारे; इनि ऒरु विनै इलै–अब कोई कर्म नहीं है। ११३

विजयी वीर! सहस्र युग पर्यन्त मैंने तपस्या की साधना की है। आप इधर पधारेंगे, इस बात की दृढ़ प्रतीक्षा में रहा। शास्त्र-विधान के अनुसार मेरे दोनों कर्म कट गये। तभी तो आप पधारे हैं। आगे मेरा कर्तव्यकर्म कुछ नहीं है। ११३

न्दिरन् नाळित्त दिरुदिहळ् पहर, वन्दनन् मरुवुदि मलरय नुलहम्
न्दत्त तॆन्नवदु शारलॆ नुरवोय्, अन्दमि लुयर्पद मडैदलै मुयल्वेन् 114

उरवोय्–बलवान; इन्तिरन्–देवेन्द्र के; नाळित्तु इरुतिकळ् पकर–मेरे जीवन का अन्त कहने के लिए; वन्ततन्–आये; मलर् अयन् उलकम्–कमलासन ने अपने लोक का वास; तन्ततन्–दिया; मरुवुति–आ जायँ; ऎन्त–कहने पर; अतु वारलॆन्त–वह नहीं चाहते हुए; अन्तम् इल् उयर पतम् अटैतलै–अक्षय परम (मोक्ष) पद प्राप्त करना; मुयल्वेन–साधूँगा। ११४

शक्तिमन्त ! अभी देवेन्द्र आये थे और मेरी आयु का अन्त जताकर उन्होंने कहा कि कमलोद्भव ने आपको अपने लोक में आमन्त्रित किया है। पधारिए। पर मैं वह लोक नहीं चाहता। पर अक्षर परमपद (मुक्ति-लोक) पाने के प्रयास में ही मैं साधना करता रहा हूँ। ११४

आदलि न्नदुपॆर् वरुळॆन वुरैयाक्, कादलि यवळॊडुङ् गदळॆरि मुळ्ळिहिप्
पोदलै मरुविन नॊरुनॆऱि पुहला, वेदमु मऱिवरु मिहुपॊरु ळुणर्वान् 115

ऒरु नॆऱि पुकला–(केवल) एक मार्ग प्रतिपादित न करनेवाले; वेतमुम्–वेदों के भी; अऱिवरु–अज्ञात; मिकु पॊरुळ् उणर्वोन्–अनेक विषय के ज्ञानी महर्षि; आतलिन्–इसलिए; अतु पॆऱल् अरुळ्–उसकी प्राप्ति का वर दीजिए; ऎन्त उरैया–यह प्रार्थना करके; कातलि अवळॊटुम्–प्रिया के साथ; कतळ् ऎरि मूळ्कि–जलनेवाली आग में प्रवेश करके; पोतलै मरुविनन्–परमपदगमन में प्रवृत्त हुए। ११५

वेद भी, जो निश्चित रूप से एक मार्ग या एक पद की व्याख्या नहीं करते हैं, पर अनेक मार्गों और अनेक पदों का प्रतिपादन करते हैं, परमपद का मार्ग नहीं बताते। लेकिन महर्षि शरभंग उस परमपद (मुक्तिलोक) का लक्षण खूब जानते थे। इसलिए उन्होंने उसी पद-प्राप्ति की श्रीराम से प्रार्थना की और वे अपनी प्रिया पत्नी के साथ ज्वलन्त अग्नि में प्रवेश करके मोक्षपद जाने को उद्यत रहे। ११५

तेवरु मुनिवरु मुरुवतु तॆरिवोर्, मावरु नरुविरै मलरयन् मुदलोर्
एवरु मुडिविनि लिरुविनै यॊरुविप्, पोवदु करुदुमव् वरु नॆऱिपुक्कान् 116

उरुवतु तॆरिवोर्–भवितव्य समझनेवाले; मा वरु–गौरवपूर्ण; नरु विरै–सुवासित; मलर् अयन् मुतलोर्–कमलभव अज आदि; तेवर्–देवता लोग; मुनिवरुम्–मुनिगण; एवरुम्–कोई भी; इरुविनै ऒरुवि–दोनों कर्मों का नाश करके; मुटिविनिल्–अन्त में; पोवतु करुतुम्–जाना (जहाँ) चाहेंगे; अ अरु नॆऱि–उस परमगति को; पुक्कान्–पहुँचे। ११६

भावी की बातें जाननेवाले मूल्यवान और सुवासित कमल पर आसीन अजादि देवता लोग और मुनिगण —कोई भी अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों के नाश पर अन्तिम गति के रूप में जहाँ जाना चाहते हैं, उसी गति को शरभंग प्राप्त हो गये। ११६

अण्डमु महिलमु मरिवरु नॆरियाल्, उण्डव: नॊरुपॆय रुणर्हुन रुरुपे
ऱॆण्डव नॆडिदुयि रिरुदियि लवनैक्, कण्डव ररुपॊरुळ् करुदुव दॆळिदे 117

अण्टमुम्–सारे अण्ड; अकिलमुम्–और सारे लोक; अरिवु अरु नॆरियाल्–अनजानी रीति से; उण्टवन्–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था, उन श्रीराम का; ऑरु पॆयर्–एक (परमपावन) नाम; उणर्कुनर्–ध्यान करनेवाले; उरु पेरु–जिसको प्राप्त करते हैं, वह भाग्य; ऍण् तव नॆटितु–अपार और अत्यधिक है; नॆटितु उयिर् इरुतियिल्–अपनी लम्बी आयु के अन्त में; अवतै कण्टवर्–जिन्होंने उनके दर्शन किये, वे; उरु पॊरुळ्–जो प्राप्त करेंगे, वह वस्तु; करुतुवतु ऍळिते–सोचना सुलभ है क्या। ११७

अखिल अण्डों और लोकों को अपने पेट में प्रलयकाल में समा लेनेवाले विष्णु भगवान के सहस्र रूप हैं और सहस्र नाम हैं। उनमें एक परम पवित्र नाम है श्रीराम ! उसके स्मरण मात्र से लोग जो भाग्य प्राप्त करते हैं, वह कल्पना के भी बाहर है; बहुत श्रेष्ठ है। तो अपनी लम्बी आयु के अन्त में, मरणावसर पर उनके दर्शन करने का भाग्य जिनका हुआ है, वे जिस पद को प्राप्त होंगे उसका महत्त्व कल्पना करना भी आसान है क्या ? । ११७

3. अहत्तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)

अनैयव तिरुदियि नमैवु नोक्कलिन्
इनियव रित्तलि निरङ्गु नॆञ्जिनर्
कुनिवरु तिण्शिलैक् कुमरर् कॊम्बॊडुम्
पुनिदन दुरैयुणित् तॆरिदिर् पोयिनार् 118

इनियवर्–सबके प्यारे (सबको सुख देनेवाले); कुनि वरु–नमनीय; तिण् चिलै–और सारयुक्त धनुष के; कुमरर्–(धारण करनेवाले) राजपुत्र; कॊम्पु ओटुम्–पुष्प-शाखा (सीतादेवी) के साथ; अतॆयवन्–उन महर्षि के; इरुतियिन् अमैव–अन्त की व्यवस्था; नोक्कलिन्–प्रत्यक्ष देखने से; इन्तलिन्–परिताप से; इरङ्कु नॆञ्चितर्–खिन्नमन होकर; पुनितनतु उरैयुळ् निन्रु–पवित्रात्मा के आश्रम से; अरितिल् पोयिनार्–निकलकर सायास चले। ११८

सर्वभूतरंजक प्यारे राजकुमार और नमनीय धनुष के धारक श्रीराम और लक्ष्मण, पुष्पलता-समाना श्रीसीतादेवी के साथ शरभंगदेह-वियोग देख रहे थे। उन्हें परिताप हुआ। बड़े खिन्नमन होकर वे उन पवित्र ऋषि के आश्रम से निकले और भारी मन के साथ सायास आगे जाने लगे। ११८

मलैहळु मरङ्गळु मणिक्कर् पारैयुम्
अलैपुन नदिहळु मरुविच् चारलुम्

इलैशॆरि पऴुवमु मिऩिय शूऴ्लुम्
निलैमिहु तडङ्गळु मिऩ्ऩिदु नीङ्गिऩार् 119

मलैकळुम्–पर्वत; मरङ्कळुम्–और अनेक तरु; मणि कल् पाऱैयुम्–और सुन्दर अनेक चट्टानों को; अलै पुतल् नतिकळुम्–तरंगसहित जल वाली नदियाँ; अरुवि वारलुम्–सरिताओं के साथ पर्वत-पाद-प्रदेश; इलै चॆरि पऴुवमुम्–पत्तों से पूर्ण वनप्रदेश; इऩिय चूऴलुम्–और सुन्दर स्थान; इऩितिऩ्–सुख से देखते हुए; नीङ्कितार्–पार करके गये। ११९

वे अनेक पर्वत, वृक्ष, सुन्दर चट्टानें, तरंगसहित जल से पूर्ण नदियाँ, सरिताओं के साथ पर्वतों के पादप्रदेश और अन्य अनेक मनोरम स्थल —इनको देखते हुए सुख से आगे बढ़ते चले। ११९

※ पण्डैय वयऩ्ऱरुम् बाल किल्लरुम्
मुण्डरु मोऩरु मुदलि ऩोर्हळत्
तण्डह वऩत्तुऱै तवत्तु ळोर्लाम्
कण्डऩ रिरामऩैक् कळिक्कुज् जिऩ्दैयार् 120

पण्टैय अयऩ् तरुम्–पुरातन ब्रह्माजी से सृष्ट; पालकिल्लरुम्–वालखिल्य; मुण्टरुम्–मुण्डी; मोऩरुम्–मौनी; मुतलिऩोर्कळ्–आदि; अ तण्टक वऩत्तु उऱै–जो उस दण्डक वन में रहते थे; तवत्तु उळ्ळोर्कळ् ॲल्लाम्–सब तपस्वी लोगों ने; इरामऩै कण्टऩर्–श्रीराम के दर्शन किये; कळिक्कुम् चिन्तैयर्–मुदितमन हुए। १२०

दण्डक वन में अनेक तरह के तपस्वी रहे। सृष्टि के आदिपुरुष ब्रह्माजी के (रोम से उत्पन्न) वालखिल्य (साठ हज़ार), मुण्डी, मौनी आदि तपस्वी थे। वे सब श्रीराम के दर्शन करके बहुत हर्षित हुए। १२०

※ कऩैवरु कडुञ्जिऩत् तरक्कर् कायवोर्
विऩैपिऱि दिऩ्मैयिऩ् वॆंदुम्बु हिऩ्ऱऩर्
अऩैवरु काऩहत् तमुद ळाविय
पुऩैवर वुयिर्वरु मुलवै पोल्हिऩ्ऱार् 121

कऩै वरु–शीघ्र अभिभूत कर आनेवाले; कटुम् चिऩत्तु–अत्यधिक क्रोध वाले; अरक्कर् काय–राक्षसों के सताने से; ओर् विऩै पिऱितु इऩ्मैयिऩ्–अपने पास कोई प्रतीकार-शक्ति न रहने के कारण; वॆंतुम्पुकिऩ्ऱऩर्–तप्त; अऩै वरु काऩकत्तु–अग्नि-लगे कानन में; अमुतु अळाविय–अमृत-मिश्रित; पुऩैवर–जल के आने से; उयिर् वरुम्–प्राणवन्त होनेवाले; उलवै पोल्किऩ्ऱार्–ठूँठ के समान बने। १२१

श्रीरामचन्द्र प्रभु का आगमन उनके लिए अग्निदग्ध कानन में सुधा-मिश्रित जलधारा के प्रवाह के समान रहा। वहाँ के प्राणवन्त बने ठूँठों के समान उन्मत्त क्रोधी राक्षसों से पीड़ित वे निस्सहाय मुनिगण हरे हो उठे। १२१

❀ आय्वरुम् पॅरुवलि यरक्कर् नाममे
वाय्वॅरीइ यलमरु मरुक्क नीङ्गिऩार्
तीवरु वत्तत्तिडै विट्टुत् तीर्न्ददोर्
ताय्वर नोक्किय कन्ऱिन् ऱन्मैयार् 122

आय् वरुम्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; पॅरुवलि अरक्कर्–बड़े बल वाले राक्षसों का; नाममे–नाम; वाय् वॅरीइ–कहने से भी डरकर; अलमरुम्–व्याकुल रहने की; मरुक्कम्–उद्विग्नता से; नीङ्किनार्–मुक्त होकर; ती वरु वत्ततु इटै–(वे) जलनेवाले जंगल-मध्य; विट्टु–छोड़कर; तीर्न्ततु–जो गई थी; ताय् वरल्–उस माता गाय का आना; नोक्किय–देखते रहे; कन्ऱिन् तन्मैयार्–बछड़े के समान स्थिति वाले हुए। १२२

वे वर्धनशील बल से युक्त राक्षसों का नाम लेने से भी डरते हुए अपार संकटग्रस्त होकर राक्षसों के त्रास के कारण बहुत व्याकुल व उद्विग्न रहते थे। तब श्रीराम पधारे तो उनकी स्थिति उस बछड़े की-सी उत्साहपूर्ण हो गयी, जिसके सामने उसकी माता गाय, जो उसको जलने वाले जंगल में अकेले छोड़कर चली गयी थी, आ गयी हो। १२२

करक्करुङ् गडुन्दॊऴि लरक्कर् काय्दलिल्
पॊरऱ्किड मिऩ्मैयिऱ् पुऴुङ्गिच् चोरुनर्
अरक्करॅन् गडलिडै याऴ्हिन् ऱारॊरु
मरक्कलम् पॅऱ्ऱॆन मरुक्क नोक्किनार् 123

करक्क अरुम्—लुक-छिपकर नहीं पर खुले रूप से; कटुम् तॊऴिल्–नृशंसकारी; अरक्कर्–राक्षस; कायतलिल्–वैर करके सताते रहे, इसलिए; पॊरऱ्कु इटम् इन्मैयिन्–वार करने का मौका न रहने के कारण; पुऴुङ्कि चोरुतर्–तप्त होकर वेदना उठानेवाले; अरक्कर् ॲन् कटल् इटै–राक्षस रूपी सागर में; आऴ्किन्ऱार्–गिरकर डूबनेवाले; ऑरु मरक्कलम् पॅऱ्ऱॆन–एक नाव मिल गई हो, जैसे; मरुक्कम् नीङ्किनार्–संकट से मुक्त हुए। १२३

उनकी स्थिति सागर-मध्य डूबनेवाले को नाव मिल गयी हो, ऐसी भी हो गयी। दिन-दहाड़े वे राक्षस उनको दिक कर रहे थे। इनके पास प्रतीकार का या अपनी रक्षा का कोई साधन नहीं था। इसलिए वे बहुत क्लेशित होकर राक्षस रूपी सागर में डूबते रहे। अब उनको श्रीराम रूपी नौका मिल गयी। १२३

❀ तॅरिज्जुरु नोक्कितर् शॅय्द शॅय्दवम्, अरुज्जिऱप् पुदवनल् लऱिवु कॅदर 124
विरिञ्जुऱप् पऱ्ऱिय पिऱवि वॅन्दुयऱ्प्, पॅरुज्जिऱै वीडुपॅऱ् ऱतॅय पऱ्ऱियार्

चॅय्त चॅय् तवम्–तब तक किया हुआ श्रेष्ठ तप; अरुम् चिऱप्पु उतव–उत्तम फल देने लगा तो; नल् अऱिवु कॅ तर–परमज्ञान के फलस्वरूप; तॅरिञ्चु–श्रीराम का परत्व पहचानकर; उऱ नोक्कितर–खूब दर्शन करके; विरिञ्चु उऱ पऱ्ऱिय–

(जाल के समान) फैलकर उन्हें जो पकड़े रहा; वॆम् पिऱवि तुयर्–भयंकर भवसंकट रूपी; पॆरुम् चिऱै–बड़ी कारा से; वीट्टु पॆऱ्ऱतैय–मोक्ष पा गये हों, ऐसी; पॆऱ्ऱियार्–दशा वाले हो गये। १२४

उन ऋषियों ने बहुत तप किया था। उसका फल अब उनकी सहायता करने आया। उनका ज्ञान उनका सहायक हुआ। वे पहचान गये कि श्रीराम परब्रह्म ही हैं। उन्होंने श्रीरामभद्र के खूब दर्शन कर लिये। अब उन्हें यही विश्वास हो गया कि जाल के समान फैलकर जिस भयंकर भवसंकट ने उन्हें ग्रस लिया था, उस बड़ी कारा से उनको मुक्ति मिल गयी। १२४

वेण्डिन वेण्डिनर्क् कळिक्कु मॆय्त्तवम्
पूण्डुळ रायिनुम् पॊऱैयि नाऱ्ऱलाल्
मूण्डॆळु वॆहुळियै मुदलि नोक्किनार्
आण्डुऱै यरक्करा ललैप्पुण् डाररो 125

वेण्टित्तवर्क्कु–प्रार्थियों को; वेण्टित्त अळिक्कुम्–प्रार्थित वस्तु दिलानेवाले; मॆय् तवम् पूण्टुळर्–यथार्थ तप के साधक थे; आयितुम्–तो भी; पॊऱैयिन् आऱ्ऱलाल्–क्षमा के बल से; मूण्टु ऍळुम् वॆकुळियै–अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को; मुतलिन् नोक्कित्तार्–जड़ से जिन्होंने काट दिया था, वे; आण्टु उऱैन्तु–(वन में) वहाँ रहकर; अरक्कराल्–राक्षसों द्वारा; अलैप्पु उण्टार्–कष्ट में पड़े रहे। १२५

उनकी तपस्या भी अमोघ थी। इच्छित वस्तु दिला सकनेवाली ही थी। तो भी क्षमा के बल से उन्होंने अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को जड़ से काटकर दूर कर दिया था। इसीलिए वे वहाँ, उस वन में रहकर राक्षसों के हाथ त्रास सहते रहे। १२५

❀ ऍळुन्दन रॆय्दिन रिरुण्ड मेहत्तिन्
कॊळुन्दॆन निन्ऱवक् कुरिशिल् वीरनैप्
पॊळिन्दॆळु कादलिर् पॊरुन्दि नारवन्
तॊळुन्दॊऱुन् दॊळुन्दॊऱु माशि शॊल्लुवार् 126

ऍळुन्ततर्–(वे) उठे और; ऍय्तितर्–श्रीराम के पास आये; इरुण्ट मेकत्तिन्–काले मेघ की; कॊळुन्तु ऍन–कोंपल के समान; निन्ऱ–अपने सामने शोभायमान (खड़े) रहे; अ कुरिचिल् वीरनै–उन वीर राजकुमार के; पॊळिन्तु ऍळु कातलिल्–आप्लावित कर उमड़नेवाले प्रेम के साथ; पॊरुन्तितार्–समीप आये; अवन् तॊळुम् तोऱुम् तॊळुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों वे नमस्कार करते, त्यों-त्यों; आचि चॊल्लुवार्–(ऋषियों ने) आशीर्वचन कहे। १२६

वे उठे और श्रीराम के पास, जो काले मेघ की कोंपल के समान सुन्दर थे, आये। उनके मन में श्रीराम को आप्लावित करते हुए उमड़ने

वाला प्रेम उठा था। श्रीराम ने उनको अलग-अलग एक-एक करके नमस्कार किया। तो उन्होंने भी हर वार उनको आशीर्वाद किया। १२६

❀ इनियदोर् शालैकोण् डेहि यिव्वयित्
नत्रियुरै यॅन्ऱवर् कमैय नल्हित्ताम्
तनियिडञ् जारन्दनर् तङ्गि मऱ्ऱैनाळ्
अनैवरु मॅय्दिन रल्लल् शॊल्लुवान् 127

अनैवरुम्–सभी (ऋषि); इनिय ओर् चालै कॊण्टु एकि–सुखद एक आश्रम में ले जाकर; इ वयिन्–यहाँ; ननि उऱै ऍन्ऱु–खूब विश्राम करें, ऐसा कहकर; अवर्कु अमैय नल्कि–उनको आवश्यक वस्तुएँ देकर; ताम् तनि इटम् चारन्तनर्–स्वयं अलग-अलग स्थानों में जाकर; तङ्कि–ठहरे रहने के बाद; अल्लल् चॊल्लुवान्–अपना दुखड़ा कहने; ऍय्तिनर्–(श्रीराम के पास) आ पहुँचे। १२७

फिर वे श्रीराम आदि को एक सुखद पर्णशाला में ले गये। 'यहाँ ठहरकर विश्राम करें' —कहकर उन्होंने दिव्य अतिथियों को वहाँ ठहराया। फिर आवश्यक सामग्रियाँ देकर वे अपने-अपने अलग-अलग स्थानों में चले गये। रात विताकर वे सवेरे अपना दुखड़ा श्रीराम से बताने के लिए उनके पास पहुँचे। १२७

❀ ऍय्दिय मुनिवरै यिऱैञ्जि येत्तुवन्, दैयनु मिरुन्दन नरुळॆन् नॆन्ऱलुम्
वैयहङ् गावलन् मैन्द वन्ददोर्, वॆय्यवॆङ् गॊडुन्दॊऴिल् विळैवु केळॆना 128

ऐयनुम्–प्रभु ने भी; ऍय्तिय मुनिवरै–आगत मुनियों का; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; एत्तु उवन्तु–उनकी स्तुति करते हुए मुदित हो; इरुन्तनन्–रहकर; अरुळ् ऍन्–कृपा की आज्ञा क्या है; ऍन्ऱलुम्–पूछने पर; वैयकम् कावलन् मैन्त–लोकपाल के पुत्र; वन्ततु–हम पर आये; ओर् वॆय्य वॆम् कॊटुम् तॊऴिल्–बहुत ही भयंकर नृशंसकार्य की; विळैवु–अधिकता; केळ्–सुनिए; ऍना–कहकर। १२८

श्रीराम ने आगत मुनियों को नमस्कार किया; स्तुति की और मोद के साथ रहकर पूछा कि आप कौन सी आज्ञा सुनाने की कृपा करेंगे? ऋषियों ने उत्तर में कहा कि लोकपालक पुत्र! हमारे ऊपर जो बीत रहा है, उस भयंकर कष्ट की अधिकता सुनिए। १२८

❀ इरक्कमॆन् ऱॊरुपॊरु ळिलाद नॆञ्जिनर्
अरक्करॆन् ऱुळर्शिल रऱत्ति नीङ्गिनार्
नॆरुक्कवुम् यामवर् नॆऱिय लानॆऱि
तुरक्कवु मरुन्दवत् तुऱैयुम् नीङ्गिनोम् 129

इरक्कम् ऍन्ऱु–करुणा नाम का; ओरु पॊरुळ्–सर्वश्रेष्ठ गुण; इलात–से हीन; नॆञ्चिनर्–मन वाले; अऱत्तिन् नीङ्किनार्–धर्म-मार्ग से दूर; अरक्कर्–राक्षस; ऍन्ऱु उळर् चिलर्–कहे जानेवाले हैं कुछ लोग; नॆरुक्कवुम्–(उनके) हमें सताने से;

याम्–हम; पटर् नॆऱि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नॆऱि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुऱैयुम् नीङ्कित्तोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं। १२९

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वऩत्तु माऩॆऩ
ॲल्लियुम् बहलुनॊन् दिरङ्गि याऱ्ऱलॆम्
शॊल्लिय वऱ्ऩॆऱित् तुऱैयि नीङ्गित्तेम्
विल्लियऩ् मॊय्म्बिऩाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊय्म्पिऩाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वऩत्तु–जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; माऩ् ॲऩ–मृगों के समान; ॲल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॊन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॆम्–अशक्त होकर; चॊल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॆऱि–धर्म-मार्ग के; तुऱैयिऩ्–कर्मों से; नीङ्कित्तेम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे? । १३०

❀ मादवत् तॊऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॆ मोदुवार्क् कुदव लाऱ्ऱलॆम्
मूदॆरि वळर्क्कलॆ मुऱैयि ऩीङ्गिऩेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ऑऴुकलॆम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलॆम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॆम्–सहायता दे नहीं पाते; मूतु ॲरि वळर्क्किलॆम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिऩ् नीङ्कित्तेम्–अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलिऩ्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलेम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये हैं। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर तॆऩ्ऩिलव ऩरक्क रेविऩ
शिन्दैयिऱ् चॆऩ्ऩियिऱ् कॊऴ्ऴुज् जॆय्हैयाऩ्
ॲन्दैमऱ् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दऩै याऩ्जॆय्द तवत्तिऩ् माट्चियाल् 132

अँनृतै–हमारे तात; इन्तिरन् अँतिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॅन्नितियिल्–सिर पर; कोळ्ळुम् चॅय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले हैं; इटुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मऱ्ऱु यार् उळर्–और कौन हैं; याम् चॅय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॉरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयम् यामॆन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॉरुळ् उटै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिनाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ऎन्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॆन् नम्बोडुम् वीऴ्वराल्
तहवि रुन्बन् दविरुदिर् नीरॆन्नाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयँगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ऎन् अम्पॊटुम् वीऴ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ऎन्ना–कहकर; पणिक्किन्ऱान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

※ वेन्दत्‌ वीयवुम्‌ याय्‌तुयर्‌ मेववुम्‌, एन्द लॅम्बि वरुन्दवु मॅन्नहर्‌
मान्दर्‌ वन्‌ऱुयर्‌ कूरवुम्‌ यान्‌वत्तम्‌, पोन्द दॅन्‌नुडैप्‌ पुण्णियत्‌ तालॅन्‌ऱान्‌ 135

वेन्तन्‌ वीयवुम्‌—चक्रवर्ती दिवंगत हुए; याय्‌ तुयर्‌ मेववुम्‌—और मेरी माता दुखग्रस्त हुईं; एन्तल्‌ अॅम्पि—महिमायुक्त मेरे लघु भ्राता भरत; वरुन्तवुम्‌—संकटग्रस्त हैं; अॅन्‌ नकर्‌ मान्तर्‌—मेरे नगर के लोग; वन्‌ तुयर्‌ कूरवुम्‌—कठोर वेदना का अनुभव करते हैं; यान्‌ वत्तम्‌ पोन्ततु—(यह स्थिति पैदा करते हुए) मेरा वन में आगमन; अॅन्‌नुटै पुण्णियत्‌ताल्‌—मेरे सुकृत (पुण्य) से ही; अॅन्‌ऱान्‌—कहा। १३५

मुझे वन में आना पड़ा जिसके कारण मेरे पिता चक्रवर्ती दिवंगत हो गये। मेरी माता कौसल्यादेवी दुखग्रस्त हो गयीं। महिमावान मेरा लघुभ्राता भरत शोकपीड़ित हो गया। मेरे नगर के वासी दुख में पड़ गये। तो भी मैं समझता हूँ कि मेरा वन में आगमन मेरे सुकृत का ही फल है। १३५

※ अऱन्द वालॅऱि यन्दणर्‌ तन्‌मैयै, मऱन्द पुल्लर्‌ वलितॉलै येन्‌ॲनिल्‌
इऱन्दु पोहिनु नन्‌ऱिदु वल्लदु, पिऱन्दि यान्‌बॅऱुम्‌ बेऱॅन्‌बदि यावदो 136

अऱम्‌ तवा नॅऱि—धर्म से न हटनेवाले आचरण में लीन; अन्तणर्‌ तन्‌मैयै—ब्राह्मणों के महत्व को; मऱन्त—भूलकर (कष्ट देनेवाले); पुल्लर्‌—नीच राक्षसों का; वलि तॉलैयेन्‌—बल नहीं मिटाऊँगा; अॅनिल्‌—तो; इऱन्तु पोकिनुम्‌—मर जाना भी; नन्‌ऱितु—अच्छा; अल्लतु—नहीं तो; पिऱन्तु यान्‌ पॅऱुम्‌ पेऱु—जन्म लेकर पाने का भाग्य; यावतो—और क्या होगा। १३६

वे नीच राक्षस आपकी महिमा और आपका स्वभाव नहीं जानते और आपको वहुत कष्ट दे रहे हैं। उनका बल न मिटाऊँ तो मर जाना भी भला है। नहीं तो मैंने जन्म लेकर क्या पाया? और कौन सा लाभ है जो मैं पाऊँ?। १३६

निवन्द वेदियर्‌ नीयिरुन्‌ दीयवर्‌, कवन्द बन्दक्‌ कळिनडङ्‌ गण्डिड
अमैन्द विल्लु मरुङ्गणैत्‌ तूणियुम्‌, शुमन्द तोळुम्‌ पॉऱैत्तुयर्‌ तीरुमाल्‌ 137

निवन्त—गुणोन्नत; वेतियर्‌ नीयिरुम्‌—वेदज्ञ विप्र आप; तीयवर्‌—खलों के; कपन्त पन्तम्‌—कवन्ध-वृन्द का; कळि नटम्‌ कण्टिट—मुदित नाच देखें तब; अमैन्त विल्लुम्‌—मेरे पास वेकार रहा धनु; अरुम्‌ कणै तूणियुम्‌—अपूर्व शरों का तूणीर; चुमन्त—इनको ढोनेवाली; तोळुम्‌—मेरी भुजाएँ; पॉऱै तुयर्‌ तीरुम्‌—भार उठाने का दुख दूर होगा। १३७

आप गुणोन्नत ब्राह्मण उन खलों के कवन्ध-वृन्दों का मुदित नाच देख कर आनन्द मनावें, तभी भारस्वरूप बेकार यह धनु और उत्तम शरों का तूणीर —इनका बोझ व्यर्थ जो ढोती रही उन भुजाओं के भारवहन का दुख दूर होगा। १३७

आवुक् कायिनु मन्दणर्क् कायिनुम्, यावर्क् केनु मॅळियवर्क् कायिनुम्
शावप् पॅऱ्ऱव रेतहै वानुऱै, देवर्क् कुन्दॉळुन् देवर्ह ळाहुवार् 138

आवुक्कु आयितुम्–गायों के रक्षणार्थ हो; अन्तणर्क्कु आयितुम्–या ब्राह्मणों के लिए हो; ऍळियवर् यावर्क्केतुम् आयितुम्–निर्बल किसी के लिए भी हो; चाव पॅऱ्ऱवरे–जिनको मरने का भाग्य होता है, वे ही; तर्क वान् उऱै–महिमायुक्त स्वर्ग में वास करनेवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के लिए भी; तॉळुम्–वन्द्य; तेवर्कळ् आकुवार्–देव बनेंगे। १३८

वे ही मनुष्य देववन्द्य देव बनते हैं, जो गाय, ब्राह्मण या किसी और निर्बल की रक्षा में अपने प्राण खोते हैं। १३८

शूर रुत्त वनुञ्जुडर् नेमियुम्, ऊर रुत्त वॊरुवनु मोम्बिनुम्
आर ऱत्तिनॊ डन्ऱिनिन् ऱारवर्, वेर रुप्पॅन् वॅरुवन्मि नॊरॅन्ऱान् 139

चूर् अऱुत्तवतुम्–शूरपद्म के संहारक (कार्तिकेय) और; चुटर् नेमियुम्–ज्वलन्त चक्रधारी (विष्णुदेव); ऊर् अऱुत्त ऑरुवतुम्–और त्रिपुरांतक (शिवजी); ओम्पितुम्–उनकी रक्षा करने आएँ (तो भी); आर्–जो; अऱत्तित्तोटु अन्ऱि–धर्म से अलग होकर; निन्ऱार्–(पाप-कर्म में प्रवृत्त) रहते हैं; अवर्–उनको; वेर् अऱुप्पॅन्–जड़ से काट (मिटा) दूँगा; नीर् वॅरुवन्मिन्–आप मत डरिए; ऍन्ऱान्–कहा। १३९

शूरपद्म के संहारक कार्तिकेय, दीप्तचक्रधारी विष्णु, त्रिपुरान्तक शिव —ये सब सहायतार्थ क्यों न आएँ तो भी अधर्मी लोगों को निर्मूल करके ही छोड़ूँगा। आप डरें नहीं। श्रीराम ने यह सुदृढ़ आश्वासन दिया। १३९

उरैत्त वाशहङ् गेट्टुवन् दोङ्गिड, इरैत्त कादल रेहिय विन्नलर्
तिरित्त कोलिनर् तेमऱै पाडिनर्, निरुत्त माडिनर् निन्ऱु विळम्बुवार् 140

उरैत्त वाचकम् केट्टु–श्रीराम का कहा हुआ कथन सुनकर; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ओङ्किट इरैत्त कातलर्–उत्कृष्ट और मुखर प्रेम वाले होकर; एकिय इन्नलर्–मुक्तदुख हो; तिरित्त कोलितर्–दण्ड को घुमाते हुए; ते मऱै पाटितर्–दिव्य वेदगान किया; निरुत्तम् आटितर्–नृत्य किया और; निन्ऱु विळम्पुवार्–फिर खड़े होकर (वे) बोले। १४०

ये आश्वासन के वचन सुनकर मुनिगण तृप्त हुए। उनका प्रेम उमड़ा और मुखर हुआ। चिन्ताविमुक्त होकर उन्होंने अपने दण्डों को घुमाया, वेदगान और नृत्य किया। बाद वे बोले। १४०

तोन्ऱ नीमुनि यिऱ्पुव नत्तॊहै, मून्ऱु पोल्वन मुप्पदु कोडिवन्
देन्ऱ पोदु मॅदिरल वॅन्ऱलिन्, शान्ऱु वेदम् तवप्पॅरु ञानमे 141

तोन्ऱल्–नायक; नी मुनियिल्–आप कुपित हों तो; मून्ऱु पुवत तॊकै पोल्वत–तीन लोकों के समूह के समान; मुप्पतु कोटि वन्तु एन्ऱ पोतुम्–तीस करोड़ आकर

लड़ें तो भी; ऑतिर् इलै ऑन्ऱलिऩ्–सामना नहीं कर सकेंगे, इसके; चान्ऱु–साक्षी; वेतम् तव पॅरु ञातमे–वेदों का ज्ञान और उससे प्राप्त ज्ञान ही हैं; अरो–ऐसा है न। १४१

प्रभु ! आप कुपित हो जायँ तो यह एक लोकत्रय क्या तीस करोड़ लोकत्रय भी आपका सामना नहीं कर सकते। इसके साक्षी वेद हैं और उनके ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हैं। १४१

अऩ्ऩ दादलि ऩेयिऩ वाण्डॅलाम्, इऩ्ऩल् कात्तिङ् गिऩिदुऱै वायॅऩच्
चॉऩ्ऩ मादवर् पादम् दॉऴुदुयर्, मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ् मैन्दऩुम् वैहिऩाऩ् 142

अऩ्ऩतु आतलिऩ्–ऐसा है, इसलिए; एयिऩ आण्टु ऑलाम्–वनवास के लिए नियत सारे दिन; इऩ्ऩल् कात्तु–हमारी संकट से रक्षा करने; इङ्कु इऩितु उऱैवाय्–यहाँ सुख से रहें; ऑऩ–ऐसा; चॉऩ्ऩ–जिन्होंने कहा, उन; मातवर् पातम् तॉऴुतु–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; उयर् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्–सर्वश्रेष्ठ राजाधिराज (चक्रवर्ती) के; मैन्तऩुम्–पुत्र भी; वैकिऩाऩ्–वहाँ ठहरे। १४२

बात ऐसी है। अतः आप वनवास के लिए निर्धारित अवधि भर यहीं सुख से वास करें और हमारी संकट से रक्षा करें। ऋषियों की यह प्रार्थना सुनकर सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र उनके चरणों पर विनत हुए और वहीं वास करने लगे। १४२

❀ ऐन्दु मैन्दु ममैदियि ऩाण्डवण्, मैन्दर् तीदिलर् वैहिऩर् मादवर्
शिन्दै यॅण्णि यहत्तियर् चेर्हॅऩ, इन्दु नऩ्ऩुद ऱऩ्ऩॉडु मेहिऩार् 143

मैन्तर्–राजकुमार; अवण्–उस तपोवन में; ऐन्तुम् ऐन्तुम् आण्टु–पाँच और पाँच (दस) साल; तीतु इलर्–बिना किसी कठिनाई के; अमैतियिऩ्–शान्ति के साथ; वैकिऩर्–ठहरे; मातवर्–महान तपस्वियों के; चिन्तै ऑण्णि–मन में सोचकर; अकत्तियऩ् चेर्क–अगस्त्य से जा मिलें; ऑऩ–कहने पर; इन्तु नल् नुतल् तऩ्ऩॉटुम्–इन्दु-सम भाल वाली सीताजी-सह; एकिऩार्–चले। १४३

वे राजकुमार पाँच और पाँच (दस) साल वहीं ठहरे। कोई असुविधा या कष्ट नहीं था। वे शान्ति के साथ वहाँ रहे। पश्चात उन ऋषियों ने मन में सोचकर श्रीराम को सुझाया कि आप अगस्त्यजी से जाकर मिलें। तब श्रीराम और लक्ष्मण इन्दुसम सुन्दर भाल वाली सीताजी के साथ चले। १४३

विडर हङ्गळुम् वेय्ञॅऱि काऩमुम्, पडरुञ् जिऩ्ऩॅऱि पयप्पय नीङ्गिऩार्
शुडरु मेऩिच् चुदीक्कण ऩॅऩ्ऩुमव्, इडरि लाऩुऱै शोलैशॅऩ् ऱॅय्दिऩार् 144

विटर् अकङ्कळुम्–पर्वत-घाटियाँ; वॅय् चॅऱि काऩमुम्–बाँसतरु-संकुल वन; पटरुम्–इनमें जानेवाले; चिल् ऩॅऱि–सँकरे मार्ग; पय पय नीङ्किऩार्–(तीनों ने)

धीरे-धीरे तय किये; चुटरुम् मेति–तेजोमय शरीर वाले; चुतीक्कणन् अँतुम्–सुतीक्ष्ण नाम के; अ इटर् इलान् उरै–उत्तम दुख-निर्लिप्त ऋषि के वास के; चोलै चॅन्ऱु–आश्रम जाकर; अँय्तित्तार्–पहुँचे। १४४

पर्वत प्रदेशों, बाँस के वनों आदि से होकर जानेवाले सँकरे मार्ग धीरे-धीरे तय करके वे तेजोमय शरीरी सुतीक्ष्ण नाम के ऋषि के आश्रम में पधारे। १४४

अरुक्क नऩ्ऩ मुऩिवऩै यव्वऴि, शॅरुक्किल् शिन्दैयर् शेवडि ताऴ्दलुम्
इरुक्क वीण्डॆन् ऱिऩियऩ कूऱिऩाऩ्, मरुक्कॊऴ् शोलैयिऩ् मैन्दरुम् वैहिऩार् 145

चॅरुक्कु इल् चिन्तैयर्–घमण्डरहित मन वालों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; अ वऴि–वहाँ; अरुक्कन् अऩ्ऩ मुऩिवऩै–सूर्योपम मुनि के; चे अटि–मनोहर चरणों पर; ताऴ्तलुम्–नमन करने पर; ईण्टु इरुक्क अॅन्ऱु–यहाँ रहें, ऐसा; इऩियऩ कूऱिऩाऩ्–मधुर वचन कहे; मैन्तरुम्–राजकुमार भी; मरु कॊऴ् चोलैयिल्–सुबासपूर्ण तपोवन में; वैकिऩार्–ठहरे। १४५

अहंकारशून्य श्रीराम और लक्ष्मण सूर्य-सम तेजोवान उन ऋषि के उत्तम चरणों पर विनत हुए। तब ऋषि ने उन्हें आसन देकर विराजमान कराया। मधुर स्वागत-वचन कहे। सत्कारप्राप्त श्रीराम और लक्ष्मण भी अच्छे बास से युक्त उस आश्रम में ठहरे। १४५

वैहुम् वैहलिऩ् मादवऩ् मैन्दर्बाल्, शॅय्है यावॆयुम् जॆय्दिवण् शॆल्वनी
ऍय्द यान्शॅय्द दॆत्तव मॆन्ऱऩऩ्, ऐय तुम्मवर् कऩ्बऩ कूऱिऩाऩ् 146

मातवऩ्–महान तपस्वी (सुतीक्ष्ण) के; वैकुम् वैकलिऩ्–वास के आश्रम में; मैन्तर् पाल्–राजकुमारों को; चॅय्कै यावॆयुम् चॅय्तु–सत्कार सब करके; चॅल्व–धनवन्त; नी इवण् अॅय्त–आप इधर पधारें, इसके लिए; याऩ् चॅय्ततु अॅ तवम्–मेरा किया कौन सा तप था; अॅऩ्ऱऩऩ्–बोले; ऐयतुम्–प्रभु ने भी; अवर्क्कु–उनसे; अऩ्पऩ–स्नेहपूर्ण; कूऱिऩाऩ्–बातें कहीं। १४६

ऋषि ने अपने आश्रम में आगत दिव्य अतिथियों का खूब सत्कार किया। फिर कहा कि धनवन्त! आप इधर पधारे हैं, तो मैंने कितनी विशिष्ट तपस्या की होगी और मेरी तपस्या का कितना ही शुभ फल मिला है! श्रीराम इसके उत्तर में मधुर वचन बोले। १४६

शॊऩ्ऩ नाऩ्मुहऩ् ऱऩ्वऴित् तोऩ्ऱिऩर्, मुऩ्ऩै योरुण् मुयऱ्व मुऱ्ऱिऩार्
उऩ्ऩिल् यारुळ रुऩ्ऩरु ळॅय्दिय, अॅऩ्ऩिऩ् यारुळ रिऱ्पिऱऩ् दारॆऩ्ऱाऩ् 147

चॊऩ्ऩ–प्रकीर्तित; नाऩ्मुकऩ् तऩ् वऴि तोऩ्ऱिऩर्–चतुर्मुख के वंश में उत्पन्न; मुऩ्ऩैयोरुळ्–प्राचीन मुनियों में; मुयल् तवम् मुऱ्ऱिऩार्–कठिन तपस्या करके सुसम्पन्न करनेवाले; उऩ्ऩिऩ् यार् उळर्–आपके समान कौन हैं; उऩ् अरुळ् अॅय्तिय–आपकी कृपा के पात्र; इल् पिऱऩ्तार्–गृहस्थों में; अॅऩ्ऩिल् यार् उळर्–मेरे समान कौन हैं; अॅऩ्ऱाऩ्–कहा। १४७

प्रकीर्तित ब्रह्मा के वंश में उदित अग्रगण्य महर्षियों में कौन हैं, जिन्होंने आपके समान तप सम्पन्न किया है ? वैसे ही गृहस्थों में कौन ऐसा है, जिसे आपकी कृपा मिली है, जैसे मुझे ? । १४७

उवमै नीङ्गिय तोऩ्ऱ लुरैक्कॅदिर्, नवमै तोऩ्ऱिय नऱ्ऱवऩ् शॊल्लुवाऩ्
अवमि लाविरुन् दाहियॆऩ् ऩालमै, तवमॆ लाङ्गॊळत् तक्कऩै यालॆऩ्ऱाऩ् 148

उवमै नीङ्किय–अनुपमेय; तोऩ्ऱल् उरैक्कु–प्रभु के कथन के; ऍतिर्–उत्तर में; नवमै तोऩ्ऱिय नल् तवऩ्–नये प्रकार की तपस्या के श्रेष्ठ तपस्वी; चॊल्लुवाऩ्–बोले; अवम् इला विरुन्तु आकि–अमोघ अतिथि बने आप; ऍऩ्ऩाल् अमै–मेरे अब तक सुसम्पन्न; तवम् ऍलाम्–तप सब; कॊळ तक्कनै–ग्रहण करने अर्ह हैं आप; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । १४८

श्रीराम थे उपमाहीन । ऋषि थे अपूर्व और नयी तपस्या के कर्ता । ऋषि ने श्रीराम से कहा कि आप अमोघ अतिथि हैं । आप मेरी की हुई तपस्या का सारा फल ग्रहण कर लीजिए । आप इसके अर्ह हैं । १४८

मऱैव लाऩॆदिर् वळ्ळुलुङ् गूऱुवाऩ्, इऱैव निऩ्ऩरु ळॆत्तवत् तिऱ्कॊळि
तऱैव दीण्डुण् डहत्तियर् काण्बदोर्, कुऱैहि डन्द दिऩियॆऩक् कूऱिऩाऩ् 149

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु; मऱैवलाऩ् ऍतिर्–वेदज्ञ उनके सामने; कूऱुवाऩ्–बोले; इऱैव–स्वामी; निऩ् अरुळ्–आपका अनुग्रह; ऍ तवत्तिऱ्कु ऍळितु–किस तप के लिए सुलभ (प्राप्य) है; ईण्टु–अब; अऱैवतु उण्टु–कथनीय एक विषय है; इऩि–अब; अकत्तियर् काण्पतु–अगस्त्य के दर्शन का; ओर् कुऱै किटन्ततु–एक इच्छा अपूर्ण रहती है; ऍऩ कूऱिऩाऩ्–ऐसा कहा । १४९

वेदव्युत्पन्न मुनिवर से प्रभु ने कहा कि स्वामी ! आपकी कृपा मुझ पर हुई —वह क्या कम है ? कितनी ही बड़ी तपस्या का फल है वह उपलब्धि ! अब आपसे एक निवेदन करना है । अगस्त्यजी के दर्शन की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई । १४९

नल्ल देनिऩैन् दायदु नाऩुमुऩ्, शॊल्लु वाऩ्ऱुणि हिऩ्ऱदु तोऩ्ऱनी
शॆल्दि याण्डवऩ् चेरुदि शेर्न्दपिऩ्, इल्लै निऩ्वयि नॆय्दहि लादवे 150

तोऩ्ऱल्–प्रभु; नी नल्लते निऩैन्ताय्–आपने अच्छा ही सोचा है; अतु–वही; नाऩुम्–मेरे द्वारा भी; मुऩ् चॊल्लुवाऩ्–पहले कहने का; तुणिकिऩ्ऱतु–निश्चय किया हुआ था; आण्टु चॆल्ति–वहाँ पधारें; अवऩ् चेरुति–उनसे मिलें; चेर्न्तपिऩ्–उनसे मिलने के बाद; निऩ् वयिऩ्–आपके; ऍय्त किल्लातवे–अप्राप्य कोई हित; इल्लै–नहीं ही होंगे । १५०

मुनि ने उत्तर में कहा कि राजकुमार ! आपने ठीक ही सोचा है । मेरा भी वह अभिप्राय था । उधर पधारिए, उनसे मिलिए । उसके बाद आपको प्राप्त न हों, ऐसे कोई मंगल रहेंगे ही नहीं ! । १५०

अत्ऱि युन्निन् वरविनै यादरित्, तिन्ऱु हाऱुनित् ऱेमुऱु मालवर्
चॅन्ऱु शेरुदि शेरुदल् शॅव्वियोय्, नन्ऱु देवर्क्कुम् यावर्क्कु नन्ऱॅना 151

अन्ऱियुम्–इसके अलावा; चॅव्वियोय्–पुरुषश्रेष्ठ; नित् वरविनै–आपके आगमन की; आतरित्तु–प्रतीक्षा करके; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; निन्ऱु–रहकर; एम् उऱुमाल्–तरसते होंगे; चॅन्ऱु–जाकर; अवर् चेरुति–उनसे मिलिए; चेर्न्त पिन्–मिलने के पश्चात; तेवर्क्कुम् नन्ऱु–देवों के लिए भी मंगल है; यावर्क्कुम् नन्ऱु–सबके लिए लाभकर है; ऍना–कहकर। १५१

और भी आपके आगमन की प्रतीक्षा में वे उतावले हो रहे होंगे। इसलिए आप उनसे जाकर मिलिए। उनसे आपका मिलन देवों के लिए भी भला करनेवाला है और अन्य सभी के लिए भी। १५१

❀ वऴियुङ् गूऱि वरम्बिल वाशिहऴ्
मॊऴियु मादवन् मॊय्मलर्त् ताडॊऴाप्
पिऴियुन् देनिऱ् पिऱङ्गरु वित्तिरऴ्
पॊऴियुञ् जोलै विरैविनिऱ् पोयिनार् 152

वऴियुम् कूऱि–मार्ग बताकर; वरम्पु इल–निस्सीम; आचिकऴ् मॊऴियुम्–आशीर्वाद देनेवाले; मातवन्–महान तपस्वी के; मॊय् मलर् ताऴ् तॊऴा–घना-कमल-सम चरणों की पूजा करके; पिऴियुम् तेनिल्–छत से निचोड़े जानेवाले शहद की धारा के समान; पिऱङ्कु–वहाँ रहनेवाली; अरुवि तिरऴ्–सरिताओं की राशि; पॊऴियुम्–जहाँ जल बहाती थी, उस; चोलै–आश्रम को छोड़कर; विरैविनिल्–वेग के साथ; पोयिनार्–आगे चले। १५२

ऐसा कहकर उन्होंने श्रीराम को अगस्त्याश्रम जाने का मार्ग भी बताया। उन्हें पुष्कल आशीर्वाद भी किया। श्रीराम, उनके घने कमल-समान चरणों की वन्दना करके वहाँ से चल पड़े। उस आश्रम में शहद की धारा के समान स्वच्छ सरिताओं की राशि जल बहा रही थी। श्रीराम उस आश्रम से निकलकर वेग के साथ चलने लगे। १५२

❀ आण्डहैय रव्वयि नडैन्दमै यऱिन्दान्
ईण्डुवहै वेलैतुणै येऴुलह मॆय्द
माण्डवर दन्शरण वणङ्गवॆदिर् वन्दान्
नीण्डतमि ऴालुहै नेमियि नळन्दान् 153

नेमियिन्–चक्रधारी के त्रिविक्रम अवतार के समान; उलकै–(ज्ञान) लोक को; अळन्तान्–नापनेवाले (अगस्त्य); नीण्ट तमिऴाल्–बहुत प्राचीन तमिऴ भाषा से; अ वयिन् अटैन्तमै–वहाँ आगमन; अऱिन्तान्–आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का; ईण्टु उवकै वेलै ऍय्त–इधर जानकर; तुणै एऴु उलकम्–चौदहों भुवनों को; सुखसमुद्र में मग्न करते हुए; माण्ट वरतन्–महिमावान वरद श्रीराम; चरण् वणङ्क–अपने चरण में वन्दना करें, यह सुविधा करते हुए; ऍतिर् वन्तान्–श्रीराम के सामने (अपने कुटीर से निकलकर) आये। १५३

(वाल्मीकी में श्रीराम का पहले अगस्त्य के भाई सुदर्शन के आश्रम में जाने की चर्चा है। अगस्त्याश्रम जाने से पहले सीताजी ने श्रीराम को बताया कि अकारण राक्षसों को मारना पाप है —यह भी वृत्तान्त है।) अब वे अगस्त्याश्रम आ गये। अगस्त्य जिन्होंने, जैसे त्रिविक्रम ने तीनों लोकों को नापा था, तमिऴ भाषा द्वारा ज्ञानलोक को मापा था यानी तमिऴ में ज्ञान को समाहित किया था, जान गये कि श्रीराम अपने आश्रम में पधारे हैं। वे स्वयं उनके सामने आ गये ताकि महिमावान वरद श्रीराम चौदहों भुवनों को सन्तोष-सागर में मग्न करते हुए उनके चरणों पर विनत हों। १५३

❀ पण्डवुणर् मूऴ्हित्तर् पडार्हळॆऩ्ऩ वाऩोर्
ऍण्डव वॆमक्करुळ् हॆऩ्ऩक्कुऱै यिरप्पक्
कण्डोरुहै वारित्तऩ्मु हऩ्दुकड लॆल्लाम्
उण्डवर्हळ् पिऩ्ऩुमिऴ्ह वॆऩ्ऱलु मुमिऴ्न्दाऩ् 154

वाऩोर्–देव; पण्टु–पहले; अवुणर्–असुर लोग; मूऴ्कित्तर्–समुद्र में डूबे; पटार्कळ्–नहीं मरेंगे; ऍऩ्ऩ–सोचकर; ऍण् तव–सम्मान्य तपोधन; ऍमक्कु अरुळ्क–हम पर कृपा करें; ऍऩ्ऩ कुऱै इरप्प–ऐसा कष्ट निवेदन करने पर; कण्टु–विषय समझकर; कटल् ऍल्लाम्–सातों समुद्रों को; ऒरु कै वारित्तऩ् मुकऩ्तु–एक हाथ में उठा लेकर; उण्टु–घूँट लेकर; पिऩ् अवर्कळ् उमिऴ्क ऍऩ्ऱलुम्–फिर उनके 'बाहर उगल दीजिए' कहने पर; उमिऴ्न्ताऩ्–बाहर थूक दिया। १५४

पहले कभी, वृत्रासुर आदि समुद्र में जाकर छिप गये। देवेन्द्र और अन्य देव समझ गए कि ये समुद्र में छिपे हैं। उनको मारना असम्भव है। इसलिए वे अगस्त्य के पास आये और प्रार्थना की कि सम्मान्य तपोधन! हम पर कृपा कीजिए। अगस्त्य ने बात समझ ली। उन्होंने सातों समुद्रों का जल अपने चुल्लू में भरकर घूँट लिया। फिर देवों के प्रार्थना करने पर ही उसे थूका और समुद्रों को जल-भरा बनाया। ऐसे महिमावान थे वे। १५४

तूयकड ऩीरैमुळु दुण्डवै तुरन्दाऩ्
आयवव ऩालमरु मॅय्युडैय ऩऩ्ऩाऩ्
मायविऩै वाळवुणऩ् वादवितऩ् वऩ्मैक्
कायमिऩि दुण्डुलहि ऩारिडर् कळैन्दाऩ् 155

तूय कटल् नीरै–पवित्र सागर-जल को; मुळुतु उण्टु–पूरा घूँटकर; अवै तुरन्ताऩ्–उसे थूकनेवाले; आयवऩुम्–वे ऋषि भी; आल् अमरुम् मॅय् उटैयऩ्–वट-बीज-सम छोटी आकृति वाले हैं; अऩ्ऩाऩ्–उन्होंने; माय विऩै–मायावी कार्य करनेवाले; वाळ् अवुणऩ्–तलवारधारी असुर; वातवि–वातापि नाम के; वऩ्मै–शक्तियुक्त; कायम् इऩितु उण्टु–शरीर को सुखपूर्वक खाकर; उलकिऩ् आर् इटर्–संसार का घोर संकट; कळैन्ताऩ्–दूर किया था। १५५

सागरजल सारा एक घूंट में पीनेवाले वे आकृति में बहुत छोटे थे और जैसे वट-बीज में उतना बड़ा वटवृक्ष अव्यक्त रहता है, उसी तरह उस आकृति के अन्दर बड़ी महिमा छिपी थी। उन्होंने मायावी, कपटकर्मा वातापि का शरीर भक्षण करके उसकी मृत्यु द्वारा लोकहित किया था। कथा इस प्रकार है— इल्वल और वातापि दो दानव भाई थे। इल्वल वातापि को मेष बनाकर मारता और उसे पका देता। वह ब्राह्मणों को श्राद्ध कहकर निमन्त्रण देता और खिलाने के बाद वातापि को बुलाता। वातापि ब्राह्मण का पेट चीरकर बाहर आ जाता। दोनों मृतक ब्राह्मण को खा जाते। यही चाल उन्होंने अगस्त्य से भी चली। पर अगस्त्य वातापि को जीर्ण कर गये। संसार की आफ़त मिटी। १५५

**※ योहमुरु पेरुयिर्ह डामुलैवु ड्रामल्, एहुनॅरि यादॅन्न मिदित्तडियि नेरि
मेहनॅडु मालैतवळ् विन्दमॅन्नुम् विण्डोय्, नाहमदु नाहमुड नाहमॅन्न निन्ड्रान् 156**

योकम् उरु पेर् उयिर्कळ् ताम्–उद्योगशील बड़ी संख्या के जीव; उलैवु उड्रामल्–बिना हानि के; एकुम् नॅरि यातु–जायँ, ऐसा मार्ग क्या है; अँत–(देवों के) पूछने पर; अटियिन् मितित्तु एरि–अपने चरणों को रखते हुए उसके ऊपर चढ़कर; मेकम् नॅटु मालै तवळ्—मेघ-मालाएँ जिस पर रेंगती थीं, उस; विन्तम् अँन्नुम्–विन्ध्य नाम के; विण् तोय्–गगनस्पर्शी; नाकम् अतु–पर्वत को; नाकम् उड–नागलोक (पाताल) तक धँसाते हुए; नाकमॅन्न–एक गज के समान; निन्ड्रान्–खड़े रहे। १५६

(विन्ध्य पर्वत सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से वैर करके ऊँचा बढ़ा और ग्रहों की गति रुक गयी और जीवों का उद्यम भी बेकार होने लगा।) देवों ने अगस्त्य से प्रार्थना की कि इन उद्यमी जीवों का आना-जाना कैसे हो? तब अगस्त्य उस पर पग धरकर चढ़े और गज के समान उसके ऊपर खड़े हो गये। तब वह पर्वत धँसकर नागलोक पहुँच गया। (नाकम् के तीन अर्थ हैं— पर्वत, पाताललोक और गज।)। १५६

**※ मूशरवु शूडुमुद लोनुरैयिन् मूवा, माशिड़व वेहॅन्न वडादुदिशै मेन्नाळ्
नीशमुड़ वान्निनॅडु मामलय नेरा, ईशनिह रायुलहु शीर्पॅड़ विरुन्दान् 157**

मेल् नाळ्–पहले किसी दिन; वटातु तिचै–उत्तर दिशा; नीचम् उड–नीचे चली गई, तब; मूचु अरवु चट्टु मुतलोन–घने नागाभरण देव (शिवजी) ने; मूवा–वार्द्धक्य से अप्रभावित; माचु इल् तव–और अकलंक तपस्वी; एकु अँन–तुम (दक्षिण) जाओ, कहा, तब; वानिन् नॅटु मा मलयम्–आकाश तक ऊँचे बढ़े मलयपर्वत; नेरा–पहुँचकर; ईचन् निकराय्–शिवजी को समान स्थिति में; उलकु चीर् पॅड–भूमि को सम बनाते हुए; इरुन्तान्–बस गये। १५७

(एक बार परमेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी जीवराशियाँ उत्तर में आ गयीं और भूमि का उत्तरी भाग नीचा हो गया। भूमि का सन्तुलन बिगड़ गया। तब) अनेक सर्पों को आभरण के रूप में धारण

करनेवाले शिवजी ने अगस्त्यजी से कहा कि हे वार्द्धक्य से अप्रभावित तेज वाले ! अकलंक तपस्वी ! आप दक्षिण में चले जाइए। अगस्त्य दक्षिण गए और गगन तक उन्नत मलय पर्वत में रह गये। भूमि समतल हो गयी और अगस्त्य शिवजी की समानता की स्थिति में मान्य हो गये। १५७

उऴक्कुमऱै नालिनु मुयर्न्दुलह मोदुम्
वऴक्किनु मदिक्कवैयि नुम्मरबि नाडि
निऴऱ्पॊऴि कणिच्चिमणि नॆऱ्ऱियुमिऴ् चॆङ्गण्
तऴऱ्पुरै शुडर्क्कडवु ळन्दतमिऴ् तन्दान् 158

निऴल् पॊऴि–प्रकाश बरसानेवाला; कणिच्चि–परशु (तप्त-आयस ?); मणि नॆऱ्ऱि–सुन्दर भाल पर; उमिऴ् चॆम् कण्–लाली फैलानेवाली आँख; तऴल् पुरै चुटर्–अग्नि-सम तेज; कटवुळ्–इनसे युक्त ईश्वर ने; तन्त–जो दिया (सिखाया) था; तमिऴ्–उस तमिऴ को; उऴक्कु मऱै नालितुम्–परिश्रम के साथ अध्येय चारों वेदों; उलकम् उयर्न्तु ओतुम् वऴक्कितुम्–संसार के श्रेष्ठ ज्ञानियों के प्रयोग-प्रणालियों; मति कवैयितुम्–और अपनी बुद्धि से किये हुए अन्वेषण के आधार पर; मरपित्–उचित परिपाटी के अनुसार; नाटि–खूब खोजकर; तन्तात–व्याकरण शुद्ध बनाकर दिया था। १५८

जाज्वल्यमान परशु, सुन्दर भाल का लाल नेत्र और अग्निसम तेजोमय रूप —इनसे युक्त शिवजी ने अगस्त्यजी को तमिऴ सिखायी। (पाणिनी को संस्कृत —ऐसा पुराण कहता है।) तब अगस्त्य ने बहुत परिश्रम से अध्येय वेद, लोकरूढ़ी और अपनी मेधा-शक्ति का प्रयोग कर उचित रीति से अन्वेषण किया और तमिऴ को व्याकरण-बद्ध श्रेष्ठ भाषा बना दिया। १५८

* विण्णिनि निलत्तिनिल् विहऱ्पवुल हिऱ्पेर्
ऎण्णिनि लिरुक्किनि लिरुक्कुमॆन यारुम्
उण्णिनै करुत्तिनै युरुप्पॆरुवॆ नॆन्
कण्णिनि लॆन्क्कॊडु कळिप्पुरु मनत्तान् 159

विण्णिनिल्–देवलोक में; निलत्तिनिल्–भूलोक में; विकऱ्प उलकिल्–इनसे जुदा अन्य लोकों में; पेर् ऎण्णिनिल्–बड़े गणित-शास्त्रों में; इरुक्किनिल्–वेदों के ऋचाओं में; इरुक्कुम् ऎन–विद्यमान हैं, ऐसा; यारुम् उळ् नितै करुत्तितै–सभी जिसका मन में ध्यान करते हैं, उस परमतत्व को; ऎन् कण्णिनिल्–अपनी आँखों के; उरु पॆरुवॆन्–गोचर बनते देखूंगा; ऎन कॊटु–यह विचारकर; कळिप्पु उरु मनत्तान्–हर्षितमन हुए। १५९

ऐसे अगस्त्य अब अपार हर्ष से भर गये। क्या आज मुझे ऐसा भाग्य मिल रहा है जिससे वह तत्व, जिसको देवलोक, भूलोक और इनसे अलग अन्य लोकों के लोग वेदों और श्रेष्ठ गणित (तर्क) शास्त्रों में ढूंढ़ते

हैं और सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं, आज दृष्टिगोचर होगा ? इस कल्पना से ही उनके मन में आनन्द उमड़ आया। १५९

❀ इरैत्तमरै नालिन्नो डियैन्दपिऱ यावुम्
निरैत्तन्नॆऱि ञानिनिमिर् कल्लिनॆट्ट नाळिट्
टुरैत्तुमय नारुमऱि यादपॊरु ळोविन्
ऱुरैत्तदुवु माल्ऎन्नु मुणर्च्चिचियि नुवप्पान् 160

इरैत्त मऱै–उद्गीत वेद; नालिन्न् ओटु–चारों के साथ; इयैन्त पिऱ यावुम्–लगे रहनेवाले अन्य सभी शास्त्र, पुराण आदि में; निरैत्त–अभ्यस्त; नॆऱि ञानम्–सन्मार्ग से प्राप्त ज्ञान की; निमिर् कल्लिल्–उत्कृष्ट कसौटी में; नॆट्टु नाळ् इट्टु उरैत्तुम्–अनेक दिन कसकर देखने पर भी; अयनारुम् अरियात–ब्रह्मदेव को भी अज्ञात; पॊरुळो–वह परवस्तु क्या; इन्ऱु–आज; उरैत्तु–मेरे साथ सम्भाषण करके; उतवुम् आल्–कृपा करेगी; ऎन्नुम्–इस; उणर्च्चिचियिन्–भावोद्वेग में; उवप्पान–बहुत आनन्दमग्न हुए। १६०

उद्गीत चारों वेद और अन्य शास्त्र, पुराण आदि का खूब अध्ययन, अन्वेषण करके उससे प्राप्त ज्ञान की कसौटी पर बहुत दिन कसकर देखने पर भी ब्रह्मादि देवों से भी जिस परतत्व को वस्तुतः समझना कठिन है, क्या वह परब्रह्म आज मेरे साथ वार्तालाप करेगा और मुझ पर कृपा करेगा ! हा ! कितना भाग्यवान हूँ ! इस भावोद्वेग में वे हर्षविह्वल हो गये। १६०

❀ उय्न्दन रिमैप्पिल रुयिर्त्तनर् तवत्तोर्
अन्दण रऱत्तिनॆऱि नित्ऱनर् ळानार्
वॆन्दिऱ लरक्कर्विड वेर्मुद लऱुप्पान्
वन्दनन् मरुत्तुव नॆन्नत्तनि वलिप्पान् 161

वॆम् तिऱल् अरक्कर्–भयंकर और शक्तिमन्त राक्षस रूपी; विट वेर् मुतल् अऱुप्पान्–विषैली जड़ को जो निर्मूल करेंगे; मरुत्तुवन्–वे वैद्य; वन्त नन्–आये; इमैप्पु इलर्–निर्निमेष (सुर); उय्न्तनर्–तर गये; तवत्तोर् उयिर्त्तनर्–तपस्वी लोग प्राण-रक्षित हो गये; अन्तणर् अऱत्तिन् नॆऱि–ब्राह्मण धर्म-मार्ग में; नित्ऱनर्कळ् आनार्–चलनेवाले हो गये; ऎन्न–ऐसा सोचकर; तनि वलिप्पान्–विशेष साहसपूर्ण हो गये। १६१

भयंकर और बलवान राक्षस रूपी विष की जड़ को ही उखाड़ने के लिए वैद्य के समान श्रीराम आ गये। अब निर्निमेष आँखों वाले देवों का संकट मिट गया और वे दुखनिवृत्त हो गए। तपस्वीजन जीवन्त हो गए। ब्राह्मण लोग धर्ममार्गगामी बने। ऐसी धारणा करके वे उत्साही और साहसी बने। १६१

तियुयि रामुलवै यावुमिडै वेवित्, तूनुह ररक्करुरु मिऱ्चुडु शिनत्तिन्
तव तलैक्कडि दवित्तुल हळिप्पान्, वानमळै वन्ददैन मैन्दुरु मनत्तान् 162

एनै उयिराम्–अन्य जीव; उलवै यावुम्–सभी मुरझाए (भयातुर) लोगों को; वित्तु–उबालकर; ऊन् नुकर्–उनका मांस खानेवाले; अरक्कर्–राक्षस रूपी; हमिल् चुटु चिनत्तिन्–वज्र के समान जलानेवाले क्रोध की; कान अळलै–दावाग्नि ; कटितु अवित्तु–सत्वर बुझाकर; उलकु अळिप्पान्–लोकों की रक्षा करने के ए; वान मळै वन्ततु–मेघों से बारिश आई; ऍन्न–ऐसा; मैन्तु उरु मनत्तान्–त्साह-भरे मन वाले। १६२

राक्षस लोग, पहले ही उनसे डरकर मुरझाते रहे जीवों को पकड़कर न्हें उबालकर खा लेते थे। वे गाज के समान जलानेवाली दावाग्नि थे। स दावाग्नि को बुझाने के लिए आकाश के मेघों से गिरनेवाले जल के मान श्रीराम लोकरक्षणार्थ आ गए। यह सोचकर अगस्त्य उत्फुल्लमन े गए। १६२

❀ कण्डन तिरामनै वरक्करुणै कूरप्
पुण्डरिह वाणयन नीरपॊळिय निन्ऱान्
ऍण्डिशैयु मेळुलहु मॆव्वुयिरु मुय्यक्
कुण्डिहैयि ऩिऱ्पॊरुविल् काविरि कॊणर्न्दान् 163

ऍण् तिचैयुम्–आठों दिशाएँ; एळ् उलकुम्–सातों लोक; ऍ उयिरुम्–कोई ी जीव; उय्य–तरें, इसके लिए; कुण्टिकैयिऩिल्–अपने मण्डलु में; पॊरुवु इल्–पमा-रहित; काविरि कॊणर्न्तान्–कावेरी नदी को (ब्रह्मलोक से) जो लाये, वे गस्त्य; इरामनै वर कण्टनन्–श्रीराम को आते हुए देखकर; करुणै कूर–कृपा के मगते; पुण्टरिक–कमलपुष्प के समान; वाळ्–प्रकाशमान; नयनम्–आँखों से; र् पॊळिय–आँसू बरसाते हुए; निन्ऱान्–खड़े रहे। १६३

अगस्त्य आठों दिशाओं और सातों लोकों में रहनेवाले जीवों के द्धार के लिए ब्रह्मलोक से अपने कमण्डलु में कावेरी नदी को लाये थे। श्रीराम को आते देखकर आनन्दबाष्पाकुल कमलनेत्रों के साथ श्रीराम के ामने खड़े रहे। १६३

❀ निन्ऱवनै वन्दनॆडि योनडि पणिन्दान्
अन्ऱवनु मन्बॊडु तळीइयळुद कण्णान्
नन्ऱुवर वॆन्ऱुपल नल्लुरै पहर्न्दान्
ऍन्ऱुमुळ दॆन्ऱमि ळियम्बियिशै कॊण्डान् 164

निन्ऱवनै–वैसे स्थित उनके; वन्त नॆटियोन्–उधर जो पधारे, वे विष्णु श्रीराम; टि पणिन्तान्–चरणों पर नतमस्तक हुए; अन्ऱु–तब; ऍन्ऱुम् उळ–सदा से हनेवाली; तॆन् तमिळ्–(दक्षिणी या) मधुसम तमिळ; इयम्पि–रचकर; इचै

कॊण्टान्–कीर्ति जो पा चुके; अवऩुम्–उन्होंने; अऩ्पॊटु तऴीइ–प्रेम के साथ गले लगाकर; अऴुत कण्णान्–बाष्पपूरित आँखों वाले बनकर; नऩ्ऱु वरवु–शुभ हो आपका आगमन; ऎऩ्ऱु–कहकर; पल नल् उरै–अनेक शिष्टाचार-वचन; पकर्न्तान्–कहे। १६४

आत्मविभोर होकर जो खड़े रहे उनके चरणों को, श्रीराम ने, जो वहाँ पधारे और जो त्रिविक्रम देवता ही थे, नमस्कार किया। तब नित्य रहनेवाली मधुर तमिऴ देकर जो कीर्तिमान बने, उन अगस्त्य ने उन्हें स्नेह के साथ गले लगाकर नेत्रों से आनन्द का बाष्प बहाते हुए कहा कि आपका आगमन शुभ हो। १६४

❀ वेदियर्हळ् वेदमॊऴि वेऱुपल कूऱक्
कादऩ्मिह निऩ्ऱॊऴिर् कमण्डलुवि नऩ्नीर्
मादवर्हळ् वीशिनॆडु मामलर्ह डूवप्
पोदुमण नाऱुकुऴिर् शॊलैहॊडु पुक्कान् 165

वेतियर्कळ्–वेदज्ञ ब्राह्मण लोगों ने; वेऱु पल–विभिन्न अनेक; वेत मॊऴि कूऱ–वेद (के) मंगलाशासन किया; मातवर्कळ्–महान तपस्वियों ने; कातल् मिक–प्रेम के बढ़ते; निऩ्ऱु–सामने खड़े होकर; ऒऴिर् कमण्टलुविन्–शुभकारी कमण्डलु के; नल् नीर् वीचि–पवित्र जल को (मन्त्रोच्चारण के साथ) छिड़काकर; नॆटु मा मलर्कळ् तूव–सुन्दर फूलों को देर तक बरसाया; पोतु कणम् नाऱुम्–(तब अगस्त्य) तभी खुले हुए पुष्पों की गन्ध से पूर्ण; कुऴिर् चोलै कॊटु–शीतल आश्रम में ले जाकर; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १६५

वेदज्ञ ब्राह्मणों ने विविध वेदों के मन्त्र उच्चारण करते हुए मंगलाशासन किया। महान तपस्वियों ने बढ़ते प्रेम के साथ अपने कमण्डलुओं से पवित्र जल लेकर मंगलदायी मंत्रों को कहते हुए श्रीराम पर छिड़का। तब अगस्त्य श्रीराम (आदि) को लेते हुए नवीन, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से पूर्ण अपने तपोवन में ले गये। १६५

❀ पॊरुन्दवम लऩ्बॊऴि लहत्तिनिदु पुक्कान्
विरुन्दव णमैत्तपिऩ् विरुम्बिनऩ् विरुम्बि
इरुन्दव मिऴैत्तवॆऩ दिल्लिडैयिल् वन्दॆन्
अरुन्दव मुडित्तनै यरुट्करश वॆऩ्ऱान् 166

अमलन्–निर्मल श्रीराम; पॊऴिल् अकत्तु–तपोवन में; पॊरुन्त–चाव के साथ ठहरने; इनितु पुक्कान्–आनन्द के साथ पहुँचे; अवन्–वे महर्षि; विरुम्पितन्–प्यार के साथ; विरुन्तु अमैत्त पिन्–भोजन कराने के बाद; अरुट्कु अरच–कृपालु प्रभु; इरुम् तवम् इऴैत्त–बड़ी तपस्या जहाँ करता रहा; ऎन्तु इल् इटैयिल्–मेरे इस कुटीर में; विरुम्पि वन्तु–आप ही चाहकर आये; ऎन् अरुम् तवम् मुटित्ततै–और मेरी तपस्या को सम्पन्न बना दिया; ऎन्ऱान्–बोले। १६६

पवित्र पुरुष श्रीराम भी उधर सुख से रहने का विचार करके आनन्द
साथ गये। महर्षि ने उनको भोजनादि सत्कार करने के बाद उनसे
हा कि कृपालु प्रभु! मेरे इस तपोवन में, जहाँ मैं लम्बे अरसे से तपस्या
र रहा हूँ, आप पधारे और मेरे कुटीर को अपनी इच्छा से पवित्र किया
। आपने ऐसा करके मेरे तप को सुसंपन्न कराया है! मेरी तपस्या
फलीभूत हुई। १६६

※ ॲन्ऱमुऩि यॆत्तॊऴु दिराम ऩिमैयोरुम्
निऩ्ऱतव मुऱ्ऱुनॆॅडि योरिऩॆॅडि योरुम्
उऩ्ऱऩरुळ् पॆऱ्ऱिलर्ह ळुऩ्ऩरुळ् शुमन्देऩ्
वॆऩ्ऱऩ ऩनैत्तुलहु मेलिऩियॆ नॆऩ्ऱाऩ् 167

ॲऩ्ऱ मुऩियै–ऐसा जिन्होंने कहा उन मुनि को; इरामऩ्–श्रीराम; तॊऴुतु–
मस्कार करके; इमैयोरुम्–देवता लोग; निऩ्ऱ तवम् मुऱ्ऱु–क्रियमाण तपस्या को
ी पूरा कर चुके; नॆॅटियोरिऩ् नॆॅटियोरुम्–श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ वे तपस्वी भी; उऩ्ऱऩ्
रुळ् पॆऱ्ऱिलर्कळ्–आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके; उऩ् अरुळ् चुमन्तेऩ्–मैं आपकी
पा का पात्र बना हूँ; अऩैत्तुलकुम्–सारे लोकों को; वॆऩ्ऱऩऩ्–जीतनेवाला बन
या; मेल्–इससे श्रेष्ठ; इऩि ॲऩ्–अब क्या चाहिए; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। १६७

ऐसा शिष्टाचारवचन कहनेवाले अगस्त्यजी को नमस्कार करके
श्रीराम ने कथन किया कि हे महर्षि! देव क्या, अपनी तपस्या को सुसंपन्न
कर चुके महान से महान तपस्वी क्या—वे भी आपकी कृपा के पात्र नहीं बन
सके हैं। लेकिन मैं आपकी कृपा का पात्र बन गया। इसलिए सर्वलोक-
जयी हो गया। इससे बढ़कर कौन सा भाग्य है, जो मैं पाना चाहूँ? । १६७

※ तण्डह वऩत्तुऱैदि यॆऩ्ऱुरै तरक्कॊण्
डुण्डुवर वित्तिशै यॆऩप्पॆरि दुवन्देऩ्
ॲण्डहु गुणत्तिऩै यॆऩक्कॊडुयर् शॆऩ्ऩित्
तुण्डमदि वैत्तवऩ योत्तमुऩि शॊल्लुम् 168

उयर् चॆऩ्ऩि–अपने श्रेष्ठ सिर पर; तुण्ट मति–कलाचन्द्र को; कॊट्टु–लेकर;
त्तवऩ्–धरनेवाले; ऒत्त–(शिवजी से) तुल्य; मुऩि–महर्षि; ॲण् तकु कुणत्तिऩै–
शंसनीय गुण वाले; तण्टक वऩत्तु उऱैति–दण्डकवन में रहते हैं; ॲऩ्ऱु–ऐसा;
रै तर कॊण्टु–वचन के कहे जाते सुनकर; उण्टु वरव इ तिचै–आना होगा आपको
स दिशा में; ॲऩ–यह निश्चय करके; पॆरितु उवन्तेऩ्–बहुत आनन्दित हुआ;
त–कहा और; चॊल्लुम्–और आगे कहा। १६८

अपने सिर पर कलाचन्द्र धारण करनेवाले शिवजी-सदृश अगस्त्य ने
हा कि सबसे प्रशंसनीय गुण वाले श्रीराम! यहाँ आगत मुनियों से यह
माचार मिला था कि आप दण्डक वन में वास कर रहे हैं। तब

सोचा कि इसी ओर आपका आगमन संभाव्य है। इस विचार से मैं बहुत आनन्दित हुआ। वे आगे बोले। १६८

❀ ईण्डुइ़ैदि यैयविऩि यिव्वयि ऩिरुन्दाल्
वेण्डियऩ मादवम् विरुम्बिऩै मुडिप्पाय्
तूण्डुशिऩ वाणिरुदर् तोऩ्ऱियुळ रॆऩ्ऱाल्
माण्डुह मलैन्दॆमर् मऩत्तुयर् तुडैप्पाय् 169

ऐय–प्रभु; ईण्टु उऱ़ैति–यहाँ ठहरिए; इ वयिऩ् इरुन्ताल्–इधर रहेंगे तो; इऩि–आगे; वेण्टियऩ मातवम्–जो चाहेंगे वे महान तप; मुटिप्पाय्–सम्पन्न कर सकेंगे; तूण्टु चिऩ–उकसाए हुए क्रोध के साथ; वाळ् निरुतर्–तलवारधारी राक्षस; तोऩ्ऱि उळर् ॲऩ्ऱाल्–प्रकट हो आयँगे तो; माण्टु उक–उनको मारकर गिराते हुए; मलैन्तु–उनसे लड़कर; ॲमर्–हम जैसों का; मऩ तुयर्–मन के क्लेश को; तुटैप्पाय्–दूर कर सकेंगे। १६९

प्रभु ! यहीं ठहरिए। इधर रहने से आपको सुविधा होगी। आप अपने इच्छित तप, व्रत आदि का पालन कर सकेंगे। और भी उकसाये क्रोध वाले तलवारधारी राक्षस इधर प्रकट होंगे तो आप उन्हें मार मिटाकर हमारी रक्षा कर सकेंगे और हम जैसे मुनियों का क्लेश दूर कर सकेंगे। १६९

❀ वाऴुमऱै वाऴुमऩु नीदियऱम् वाऴुम्
ताऴुमिमै योरुयर्व्वर् ताऩवर्ह डाऴ्वार्
आऴियुऴ वऩ्बुदल्व वैयमिलै मॆय्य्ये
एऴुलहम् वाऴुमिऩि यिङ्गुऱ़ैदि यॆऩ्ऱाऩ् 170

आऴि उऴवऩ् पुतल्व–आज्ञाचक्र-कृषक चक्रवर्ती के पुत्र; इऩि मऱ़ै वाऴुम्–अब वेद जी गए; मऩु नीति वाऴुम्–मनुनीति स्थिर हो गई; अऱम् वाऴुम्–(बत्तीस) धर्म जी जायँगे; एऴ् उलकम् वाऴुम्–सातों लोक जी जाएँगे; ताऴुम् इमैयोर्–अवनत देवता लोग; उयर्वर्–उन्नत हो जायँगे; ताऩवर्कळ् ताऴ्वार्–दानव अवनत हो जायँगे; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; मॆय्य्ये–यह सत्य है; इङ्कु उऱ़ैति–यहाँ वास कीजिए; ॲऩ्ऱाऩ्–(अगस्त्य) ऐसा बोले। १७०

आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती के पुत्र ! आगे वेद जी जायँगे। मनुनीति सुस्थापित हो जायगी। (बत्तीस ?) धर्म टिक जायँगे। सातों लोक पनपेंगे। अवनत देवता लोग उन्नत हो जायेंगे और राक्षस गिर जायँगे। हाँ, शक नहीं। यह ध्रुवसत्य है। इसलिए आप यहीं वास कीजिए। १७०

❀ शॆरुक्कुडै यरक्कर्पुरि तीमैशिदै वॆय्दऩ्
तरुक्कळि दरक्कडिदु कोल्वदु शमैन्देऩ्

वरुक्कमऱै योयवर् वरुन्दिशैयिऩ् मुन्दुऱ्
ऱिरुक्कैनल नॅऱ्करुळ्ह वॅऩ्ऱऩ तिरामऩ् 171

इरामऩ्–श्रीराम ने; वरुक्क मऱैयोय्–अंग-उपांगों के साथ वेदों के ज्ञाता; चॅरुक्कु उटै अरक्कर्–घमण्डी राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै–अत्याचार; चितैवु ॲय्त–उनको मिटाते हुए; तरुक्कु अऴि तर–गर्व चूर करते हुए; कटितु कॊल्वतु चमैन्तेऩ्–शीघ्र उनको मारने का संकल्प कर लिया है; अवर् वरुम् तिचैयिल्–उनके आने की दिशा में; मुन्तु उऱ्ऱु–पहले जाकर; इरुक्कै–प्रतीक्षा में रहना; नलऩ्–अच्छा होगा; ॲऩ्कु अरुळ्क–हमें आज्ञा देने की कृपा करें; ॲऩ्ऱऩऩ्–यह इच्छा सुनाई। १७१

श्रीराम ने अगस्त्य से कहा कि हे श्रेणीबद्ध वेदों के ज्ञाता! मैंने इन गर्वीले राक्षसों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए उनके घमण्ड को चूर करते हुए उन्हें मिटाने का संकल्प किया है। इसलिए उनके आने के मार्ग में सामने जाकर प्रतीक्षा में रहना सुविधाजनक होगा—ऐसा समझता हूँ। आप मुझे आशीर्वाद के साथ आज्ञा दें। १७१

❀ विऴुमियदु शॊऱ्ऱऩैयिव् विल्लिदिवण् मेऩाळ्
मुऴुमुदल्वऩ् वैत्तुळदु मूवुलहुम् याऩुम्
वऴिपड विरुप्पदिदु तऩ्ऩैवडि वाळिक्
कुऴुवऴुविल् पुट्टिलॊडु कोडियॆऩ नल्हि 172

विऴुमियतु चॊऱ्ऱऩै–श्रेष्ठ बात कही; इवण्–यहाँ; इ विल् इतु–यह धनु; मेल् नाळ्–पहले किसी दिन; मुऴु मुतल्वऩ् वैत्तु उळतु–परात्पर ब्रह्म ने रखा था; मू उलकुम्–त्रिभुवन; याऩुम्–और मैं; वऴि पट इरुप्पतु–इसकी पूजा करते हैं, ऐसा; इतु तऩ्ऩै–इसको; वटि वाळि कुऴु–तीक्ष्ण शर-राशि; वऴुवु इल्–अक्षय; पुट्टिल् ऑटु–तूणीर के साथ; कोटि–ग्रहण कर लें; ॲऩ–कहकर; नल्कि–उन्हें प्रदान करके। १७२

अगस्त्यजी ने उत्तर में कहा कि हे श्रीराम! आपने अच्छा सोचा है! यहाँ यह जो धनुष है, यह परात्पर विष्णुदेव के पास रहा था। यह मेरे और त्रिभुवन द्वारा पूजित है। इसको और तीक्ष्ण अनेक शरों को अक्षय तूणीरों के साथ आप ग्रहण कर लीजिए। यह कहकर उन्होंने उनको श्रीराम के पास समर्पित किया। १७२

❀ इप्पुवऩ मुऱ्ऱुमॊरु तट्टिऩिडै यिट्टाल्
ऑप्पुर विऱ्ऱॆऩ वुरैप्पपरिय वाळुम्
वॅप्पुरुवु पॆऱ्ऱवरऩ् मेरुवरै विल्ला
मुप्पुर मॆरित्तदऩि मॊय्हणैयु नल्हा 173

इ पुवऩम् मुऱ्ऱुम्–इस भुवन भर को; ऑरु तट्टिऩ् इटै–एक (तराजू के) पलड़े में रखकर; इट्टाल–(इसको दूसरे पलड़े में) रखें तो; ऑप्पु वरविऱ्ऱु ॲऩ–समान

ोंगे; उरैप्पु अरिय–ऐसा कहने न योग्य; वाळम्–एक तलवार को; वेंप्पु उरुवु दिर्र–अग्नि रूप के; अरन्–हरदेव ने; मेरु वरै विल्ला–मेरुपर्वत को धनुष बनाकर; पुप्पुरम् ऍरित्त–त्रिपुर को जिससे जलाया; तन्ति मॉय् कणैयुम्–उस अनुपम सारयुक्त ार को भी; नल्का–देकर। १७३

और भी एक तलवार है। उसे तराजू के एक पलड़े में और तीनों लोकों को एक पलड़े में रखेंगे तो दोनों समान होंगे—ऐसा कहना सही नहीं होगा क्योंकि तलवार तीनों लोकों की विजय करने की शक्ति रखती है और महिमामय है। उन्होंने वह तलवार श्रीराम के पास दी। और अग्निमूर्ति शिवजी ने महामेरु को धनुष बनाकर जिस अप्रतिम शर से त्रिपुरदाह कराया था, उस बाण को भी उनके पास दिया। १७३

❀ओङ्गुमर नोङ्गिमलै योङ्गिमण लोङ्गिप्
पूङ्गुलै कुलावुहुळिर् शोलैपुडै विम्मित्
तूङ्गुदिरै यारुतवळ् शूळ्लदोर् कुन्ऱिन्
पाङ्गरुळ दालुरैयुळ् पञ्जवडि मञ्ज 174

मञ्च–राजकुमार; ओङ्कु मरन् ओङ्कि–ऊँचे पेड़ जहाँ ऊँचे उगे हैं; मलै ओङ्कि–उन्नत पर्वत हैं; मणल् ओङ्कि–बालू के ऊँचे टीले पाये जाते हैं; पूम् कुलै कुलावु–पुष्पों के गुच्छे मिलते हैं; कुळिर् चोलै–शीतल उपवन; पुटै विम्मि–पार्श्वों में उगे रहते हैं; तूङ्कु तिरै आऱु–हिलनेवाली लहरों से युक्त नदियाँ; तवळ्–बहती हैं; चूळ्लतु–ऐसे पार्श्वस्थलों के; ओर् कुन्ऱिन् पाङ्कर्–एक पर्वत के पास; पञ्चवटि–पंचवटी नाम का; उरै उळ्–एक वासयोग्य स्थान; उळतु–है। १७४

यह सब देने के बाद अगस्त्य ने सुझाया कि श्रीराम! पंचवटी नाम का एक स्थान है। वहाँ ऊँचे तरु हैं, उन्नत पर्वत हैं, उच्च सिक्ता-टीले हैं। वह ऐसे पर्वत पर है, जिसके पार्श्वों में पुष्प-भरे उपवन हैं और झलमलाती लहरों वाली नदियाँ बहती हैं। वह पंचवटी वासयोग्य स्थान है। १७४

कन्निियिळ वाळैकनि यीवकदिर् वालिन्, शॅन्नॅलुळ तेनॊळ्हु पोदुमुळ दॅय्वप्
पॊन्नियॅन लायपुन लाऱुमुळ पोदा, अन्नमुळ पॊन्निवळॊ डन्बिन्विळै याड 175

कन्नि इळ वाळै–बाल-कदलियाँ; कनि ईव–फल देनेवाली हैं; कतिर् वालिन्–प्रकाशमय पूँछ जैसे छोटे भाग के साथ; चॅन्नॅल् उळ–शालि के धान मिलेंगे; तेन् ऑळुकु पोतुम् उळ–मधु बरसानेवाले पुष्प हैं; तॅय्व पॊन्नि ऍनल् आय–दिव्य कावेरी नदी के ही समान रहनेवाली; पुनल् आऱुम् उळ–अच्छे जल की नदियाँ भी हैं; पॊन् इवळॊटु–श्रीलक्ष्मी इनके साथ; अन्पिन् विळैयाट–प्रेम के साथ मनोरंजन करने के लिए; पोता–सारस; अन्नम्–और हंस पक्षी; उळ–हैं। १७५

और भी वहाँ आपको कदली के बालवृक्ष मिलेंगे, जो मधुर फल दिलाएँगे। दुम के समान पतले अंग के साथ रहनेवाले लाल रंग के शालि के धान वहाँ पाये जाते हैं। मधु बरसानेवाले नवीन पुष्प हैं। दैवी

कावेरी नदी के समान पवित्र और मनोरम जल वाली नदियाँ हैं। इन श्रीलक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ प्रेमसहित खेलने के लिए सारस और हंस पक्षी रहते हैं। १७५

❀ ऐहियिऩि यव्वयि ऩिरुन्दुऱैमि ऩॆऩ्ऱाऩ्
मेहनिऱ वण्णऩुम् वणङ्गिविडै कॊण्डाऩ्
पाहऩैय शॊल्लियॊडु तम्बिपरि विऩ्पिऩ्
पोहमुऩि शिन्दैतॊड रक्कडिदु पोऩाऩ् 176

इऩि–आगे; अ वयिऩ् एकि–उधर जाकर; इरुन्तु उऱैमिऩ्–रहकर वास कीजिए; ॲऩ्ऱाऩ्–(अगस्त्य ने) कहा; मेक निऱ वण्णऩुम्–मेघवर्ण श्रीराम ने भी; वणङ्कि–नमन करके; विटै कॊण्टाऩ्–विदा ली; पाकु अऩैय चॊल्लि ऒटु–चासनी-सम बोली वाली श्री सीताजी के साथ; तम्पि–अनुज लक्ष्मण भी; परिविऩ्–श्रद्धा के साथ; पिऩ् पोक–उनका पीछा करते गये; मुऩि चिन्तै तॊटर–(अगस्त्य) मुनि का मन भी पीछा करता चला; कटितु पोऩाऩ्–वे शीघ्र वहाँ से गये। १७६

आप आगे वहीं जाकर वास करें। —अगस्त्य ने कहा। मेघवर्ण श्रीराम ने भी उनको नमस्कार करके उनसे विदा ली। जब वे जाने लगे, तो चासनी-सम बोली वाली देवी सीताजी और कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण उनके पीछे गये। अगस्त्य का मन भी उनका पीछा करता गया। श्रीराम शीघ्र चले। १७६

4. शडायु काण् पडलम् (जटायु-दर्शन पटल)

❀ नडन्दऩर् कावदम् बलवु नऩ्ऩदि
किडन्दऩ निऩ्ऱऩ गिरिहळ् केण्मैयिल्
तॊडर्न्दऩ तुवऩ्ऱिऩ शूळल् यावैयुम्
कडन्दऩर् कण्डऩर् कळुहिऩ् वेन्दैये 177

कावतम् पलवुम्–अनेक 'काद' (कोस) दूर; नटन्तऩर्–पैदल चलकर; किटन्तऩ नल् नति–मार्ग में पड़ी रही अनेक श्रेष्ठ नदियाँ; निऩ्ऱऩ–(अकेले) स्थित; केण्मैयिऩ् तॊटर्न्तऩ–मित्रों के समान परस्पर मिले रहे; किरिकळ्–अनेक पर्वत; तुवऩ्ऱिऩ चूळल् यावैयुम्–(बीच-बीच में) घने उपवन; कटन्तऩर्–पार करके; कळुकिऩ् वेन्तै–गृध्रराज को; कण्टऩर्–(उन्होंने) देखा। १७७

श्रीराम आदि तीनों अनेक कोस दूर गये। रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ी थीं। पर्वत और पर्वतश्रेणियाँ पाई गयीं। अनेक उपवन मिले। उन सबको पार करके उन्होंने जटायु के दर्शन किये। १७७

❀ मुन्दैरु करुमलै मुहट्टु मुऩ्ऱिलिल्
शन्दिर ऩॊळियॊडु तळवच् चात्तिय

अन्दमिल् कनैहड लमरर् नाट्टिय
मन्दर गिरियैन वयङ्गु वान्ऱनै 178

मुन्तु–पहले; अमरर्–सुर; अन्तम् इल्–अपार; कनै कटल्–गर्जनशील सागर में; चन्तिरन् ऑळि ऑटु तळुव–चन्द्र-किरण के साथ मिलाकर; चात्तिय नाट्टिय–आधार-स्तम्भ के रूप में स्थापित; मन्तर किरि ऍन–मन्दरपर्वत के समान; ऑरु करु मलै मुकट्टु मुन्ऱिलिल्–एक काली गिरि की चोटी पर खुले थल में; वयङ्कुवान् तनै–शोभायमान उनको। १७८

वे (जटायु) उस मन्दरपर्वत के समान शोभित थे, जिसको अमृतमंथन के उस समय गर्जनशील सागर-मध्य चन्द्र की किरणों से लगाते हुए आधार-स्तम्भ के रूप में गाड़ दिया गया था। वे एक काले (या बड़े) पर्वत की चोटी पर आँगन-सम खुले थल में शान के साथ विराजमान थे। १७८

उरुक्किय शुवणमॊत् तुदयत् तुच्चिशेर्
अरुक्कनि निळल्पडैत् तलङ्गु तिक्कॅलाम्
तॅरिप्पुरु शॅरिशुडरच् चिरैयि नाऱ्ऱिशै
विरित्तिरुन् दननॅन विळङ्गु वान्ऱनै 179

उरुक्किय चुवणम् ऑत्तु–पिघले हुए सोने के समान; उतयत्तु उच्चि चेर्–उदयगिरि के शृंग पर पहुँचे हुए; अरुक्कतिल्–सूर्य के समान; निळल् पटैत्तु–कान्ति से युक्त होकर; अलङ्कु तिक्कु ऍलाम्–अन्धकार के कारण व्यथित रहनेवाली सभी दिशाओं को; तॅरिप्पु उरु–प्रकाश दिलानेवाले; चॅरि चुटर् चिरैयिनाल्–घनी दीप्ति वाले पक्षों को; तिचै विरित्तु इरुन्तनन्–सभी दिशाओं में फैलाये रहे; ऍन–ऐसा कहने योग्य रीति से; विळङ्कुवान् तनै–दृश्यमान उनको। १७९

वे पिघला-स्वर्ण-सम थे। उदयगिरि पर आये सूर्य के समान कान्ति-युक्त थे। अन्धकार से आक्रान्त दिशाओं में प्रकाश करते हुए मानो वे अपने पक्ष फैलाए हुए थे, ऐसे दृश्यमान उनको श्रीराम आदि ने देखा। १७९

वानिऱ विशुम्बॅळिन् मरैयत् तन्मणिक्
कानिऱच् चेयॊळि कतुवक् कण्णहल्
नीनिऱ वरैयिनिऱ् पवळ नीळ्हॊडि
पोनिऱम् बॊलिन्दिडप् पॊलिहिन् ऱान्ऱनै 180

वाल् निऱ विचुम्पु–विशाल और प्रभावान आकाश की; ऍळिल् मऱैय–छटा को छिपाते हुए; कण् अकल्–विस्तृत; नील् निऱ वरैयितिल्–नीलवर्ण पर्वत पर; तन् काल् निऱ–अपने पैरों का रंग; मणि चॅय् ऑळि–लाल सुन्दर आभा; कतुव–फैलाते हुए; पवळ नीळ् कॊटि पोल्–प्रवाल की लम्बी लताओं के समान; निऱम् पॊलिन्तिट–वहाँ शोभायमान करते हुए; पॊलिकिन्ऱान् तनै–तेज के साथ रहनेवाले उनको। १८०

उनके तेज के सामने विशाल और आभायुक्त आकाश की शोभा छिप

थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर
थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान
ी; । १८०

❀ तूय्मैय तिरुङ्गलै तुणिन्द केळ्वियन्
वाय्मैयन् मरुविलन् मदियिन् कूर्मैयन्
आय्मैयिन् मन्दिरत् तरिञ्ञ नामेनच्
चेय्मैयि नोक्कुरु शिऱुह णान्ऱनै 181

तूय्मैयन्–शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळ्वियन्–गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के
श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयन्–सत्यसंध; मरु इलन्–निर्दोष; मतियिन्
न्–सूक्ष्ममति; आय्मैयिन्–दीर्घदर्शी; मन्तिरत्तु अरिञ्ञन् आम् अेन–मंत्रणा
ल मन्त्री के समान; चेय्मैयिन् नोक्कु उरुम्–दूर तक देख सकनेवाले; चिरु
न् तनै–छोटे नेत्रों वाले उनको। १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त
सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले
ा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी
थीं। १८१

❀ वीट्टिवा ळवुणरै विरुन्दु कूऱ्ऱिनै
ऊट्टिवीऴ् मिच्चिलै नुण्डु नाडॊरुम्
तोट्टिमे विन्दिरन् शिरुहण् यानैयिन्
तोट्टिपोऱ् ऱेय्न्दॊळिर् तुण्डत् तान्ऱनै 182

वाळ् अवुणरै–तलवारधारी दानवों को; वीट्टि–मारकर; कूऱ्ऱिनै विरुन्तु
–यम को दावत में खिलाकर; वीऴ्–बचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्–जूठन को;
ॊरुम् उण्टु–प्रतिदिन खाकर; चिरु कण् यानैयिन् मेवु इन्तिरन्–छोटी आँखों वाले
त-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्–अंकुश के समान; तीट्टि–
जाकर; तेय्न्तु ऑळिर्–उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्टत्तान्
ंच के उनको। १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे
ाचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचें छोटी-छोटी आँखों वाले
गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई
र उससे चमकदार लगती थीं। १८२

ऴरु नालिनो डॊन्ऱु कूडिय, आळुरु तिहिरिबो लारत् तान्ऱनै
यर् मेनियि नॆऱ्ऱि मुऱ्ऱिय, वाळिर विियिऱ्पोलि मवुलि यान्ऱनै 183

नालिन् ओटु–दो के चार के साथ; ऑन्ऱु कूटिय–एक मिलाकर (नौ) रहे;
ों को; आळ् उरु तिकिरि पोल्–चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरत्तान् तनै–हार से अलंकृत उनको; नीळ् उयर् मेत्तियिन्–विशाल और दीर्घ शरीर के; नॅंड्रि–शिखर पर; मुड्रिय–रखे गये; वाळ् इरवियिन्–उज्ज्वल सूर्य के समान; पॉलि–शोभनेवाला; मवुलियान् तनै–किरीटधारी को। १८३

उनके वक्ष पर एक हार था। वह शिशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था। उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था। ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा)। १८३

❀ शॉर्पङ्ग मुड़निमि रिशैयिन् शुम्मैयै, अर्पङ्ग मुड़वरु मरुणन् शॅम्मलैच्
चिर्पङ्गॉळ् पहलॅनक् कडिदु शॅन्ड़ुतीर्, कर्पङ्ग ळॅनैप्पल कण्डु ळान्ड़नै 184

चॉल् पङ्कम् उड़–शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्मैयै–उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उड़–अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्–आनेवाले; अरुणन् चॅम्मलै–अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चॅन्ड़ु तीर्–शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिर्पम् कॉळ् पकल् ऍन्न–अल्प दिन के समान; कर्पङ्कळ् ऍनै–कल्प कहलानेवाले काल; पल–अनेक; कण्टु उळान् तनै–जो देख चुके, उनको। १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे। वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे। उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे। ऐसे उनको; । १८४

❀ ओङ्गुयर् नॅडुवरै यॉन्ड़ि निन्ड़ुदु, ताङ्गल दिरुनिलन् दाळ्न्दु ताळ्वुड़
वीङ्गिय वलियिन निरुन्द वीरनै, आङ्गव रणुहिन रयिर्क्कुञ् जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्–ऊँचे बढ़े हुए; नॅंटु वरै ऑन्ड़िन्–बड़े पर्वत पर; निन्ड़ु–रहकर; अतु ताङ्कलतु–वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्न्तु–विशाल भूमि में धँसकर; ताळ्वु उड़–अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलियितिन् इरुन्त–बढ़े हुए बल के साथ रहे; वीरनै–वीर जटायु को; आङ्कु–वहाँ; अवर्–वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्–शंकितमन होकर; अणुकिनर्–उनके समीप गए। १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे। वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर धँस गया था। उतने बलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया। १८५

❀ इरुदियॅत् तन्वयि नियड़्ड़ वॅय्दिनान्
अड़्रिविलि यरक्कना मल्ल ना मॅनिल्
ऑरुळ्वलिक् कलुळने यॅन्न वुन्नियच्
चॅरिहळल् वीररुञ् जॅयिर्त्तु नोक्कितार् 186

गयी थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर रहे थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान उनको; । १८०

❀ तूय्मैय निऱुङ्गलै तुणिन्द केळ्वियऩ्
वाय्मैयऩ् मऱुविलऩ् मदियिऩ् कूर्मैयऩ्
आय्मैयिऩ् मन्दिरत् तऱिञ नामॅऩच्
चेय्मैयि नोक्कुऱु शिऱुह णाऩ्ऱऩै 181

तूय्मैयऩ्–शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळ्वियऩ्–गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के साथ श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयऩ्–सत्यसंध; मऱु इलऩ्–निर्दोष; मतियिऩ् कूर्मैयऩ्–सूक्ष्ममति; आय्मैयिऩ्–दीर्घदर्शी; मन्तिरत्तु अऱिजऩ् आम् ॲऩ–मंत्रणा में कुशल मन्त्री के समान; चेय्मैयिऩ् नोक्कु उऱुम्–दूर तक देख सकनेवाले; चिऱु कण्णाऩ् तऩै–छोटे नेत्रों वाले उनको। १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त थे। सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले मंत्रणा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी आँखें थीं। १८१

❀ वीट्टिवा ळवुणरै विरुन्दु कूऱ्ऱिऩै
ऊट्टिवीऴ् मिच्चिऱा नुण्डु नाडॊऱुम्
तोट्टिमे विन्दिरऩ् शिऱुहण् यानैयिऩ्
तोट्टिपोऱ् ऱेय्न्दॊळिर् तुण्डत् ताऩ्ऱऩै 182

वाळ् अवुणरै–तलवारधारी दानवों को; वीट्टि–मारकर; कूऱ्ऱिऩै विरुन्तु ऊट्टि–यम को दावत में खिलाकर; वीऴ्–बचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्–जूठन को; नाळ् तॊऱुम् उण्टु–प्रतिदिन खाकर; चिऱु कण् यानैयिऩ् मेवु इन्तिरऩ्–छोटी आँखों वाले (ऐरावत-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्–अंकुश के समान; तीट्टि–पैनायी जाकर; तेय्न्तु ऑळिर्–उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्टत्ताऩ् तऩै–चोंच के उनको। १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे और बचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचें छोटी-छोटी आँखों वाले ऐरावत गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई थीं और उससे चमकदार लगती थीं। १८२

❀ कोळिरु नालिनो डॊन्ऱु कूडिय, आळुऱु तिहिरिबो लारत् ताऩ्ऱऩै
नीळुयर् मेऩियि नॆऱ्ऱि मुऱ्ऱिय, वाळिर विियिऱ्पॊलि मवुलि याऩ्ऱऩै 183

इरु नालिऩ् ओटु–दो के चार के साथ; ऑन्ऱु कूटिय–एक मिलाकर (नौ) रहे; कोळ्–ग्रहों को; आळ् उऱु तिकिरि पोल्–चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरत्तान् तनै–हार से अलंकृत उनको; नीळ् उयर् मेनियिन्–विशाल और दीर्घ शरीर के; नॆंड्रि–शिखर पर; मुड्रिय–रखे गये; वाळ् इरवियिन्–उज्ज्वल सूर्य के समान; पॊलि–शोभनेवाला; मवुलियान् तनै–किरीटधारी को। १८३

उनके वक्ष पर एक हार था। वह शिशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था। उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था। ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा)। १८३

❀ शॊऱ्पङ्ग मुऱनिमि रिशैयिन् शुम्मैयै, अऱ्पङ्ग मुऱवरु मरुणन् शॆम्मलैच्
चिऱ्पङ्गॊळ् पहलॆनक् कडिदु शॆन्ऱुतोर्, कऱ्पङ्ग ळॆनैप्पल कण्डु ळान्ऱनै 184

चॊल् पङ्कम् उऱ--शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्मैयै–उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उऱ–अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्–आनेवाले; अरुणन् चॆम्मलै–अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चॆन्ऱु तीर्–शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिऱ्पम् कॊळ् पकल् ॲन्न–अल्प दिन के समान; कऱ्पङ्कळ् ॲनै–कल्प कहलानेवाले काल; पल–अनेक; कण्टु उळान् तनै–जो देख चुके, उनको। १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे। वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे। उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे। ऐसे उनको; । १८४

❀ ओङ्गुयर् नॆंडुवरै यॊन्ऱि निन्ऱदु, ताङ्गल दिरुनिलन् दाळ्न्दु ताळ्वुऱ
वीङ्गिय वलियिन निरुन्द वीरनै, आङ्गव रणुहिन रयिर्क्कुम् जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्–ऊँचे बढ़े हुए; नॆंटु वरै ऒन्ऱिन्–बड़े पर्वत पर; निन्ऱु–रहकर; अतु ताङ्कलतु–वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्न्तु–विशाल भूमि में धँसकर; ताळ्वु उऱ–अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलियिनिन् इरुन्त–बढ़े हुए बल के साथ रहे; वीरनै–वीर जटायु को; आङ्कु–वहाँ; अवर्–वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्–शंकितमन होकर; अणुकिनर्–उनके समीप गए। १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे। वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर धँस गया था। उतने बलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया। १८५

❀ इरुदियैत् तन्वयि नियड्ऱ वॆय्दिनान्
अरिविलि यरक्कना मल्ल ना मॆनिल्
ॲरुळ्वलिक् कलुळने यॆन्न वुन्नियच्
चॆरिहळ्ल् वीररुम् जॆयिर्त्तु नोक्किनार् 186

चॅऱिकऴल् वीररुम्–ठोस पायलधारी वीर; तन् वयिन्–अपना; इऱुतियै–अन्त; इयऱ्ऱ–कराने के लिए; ॲय्तितान्–जो आया; अऱिवु इलि अरक्कन् आम्–यह बुद्धिहीन राक्षस है; अल्लन् आम्–नहीं; ॲतिल–तो; ॲऱुऴ् वलि–अत्यधिक बलशाली; कलुऴन् आम्–गरुड़ होगा; ॲन्न उन्नि–ऐसा सोचकर; चॅयिर्त्तु–कोप करके; नोक्कित्तार्–उनको देखा। १८६

भारी चरणवलय-धारी वीरों ने अनुमान लगाया— "यह अपना अन्त कराने के लिए आया हुआ एक राक्षस ही होगा ! नहीं तो वह बलवान गरुड़ हो !" उन्होंने जटायु को खूब देखा। १८६

❀ वनैहऴल् वरिशिलै मदुहै मैन्दरै
अनैयवन् ऱानुङ्गण् डयिर्त्तु नोक्कितान्
वितैयऱु नोन्बिन रल्लर् विल्लितर्
पुनैशडै मुडियितर् पुलव रोवॅन्ऩा 187

अनैयवन् तानुम्–जटायु भी; वनै कऴल् वरि चिलै–पहनी हुई पायल और बन्धनयुक्त धनु के धारक; मतुकै मैन्तरै–बलवान राजकुमारों को; कण्टु–देखकर; वितै अऱु नोन्पितर् अल्लर्–कर्म काटने के व्रती (तपस्वी) नहीं हैं; विल्लितर्–धनुर्धर हैं; पुनै चटै मुटियितर्–निर्मित जटाधारी हैं; पुलवरो–देव हैं क्या; ॲन्न–ऐसा अयिर्त्तु–सन्देह करके; नोक्कितान्–देखा। १८७

जटायु ने भी पायलधारी धनुर्द्धर वीरों को देखा। प्रतापी उनको देखकर जटायु के मन में प्रश्न उठा कि ये कौन हैं ? 'ये कर्मनाशार्थ तप करनेवाले तपोव्रती नहीं हैं ! उनके हाथों में चाप है और सिरों पर जटा है। क्या ये देवता हैं ?' सन्देह के साथ उन्होंने उन पर दृष्टि दौड़ाई। १८७

❀ पुरन्दरन् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्, निरन्दर नोक्कुवॅ नेमि यानुमव्
वरन्दरु मिऱैवनु मऴुव लाळनुम्, करन्दिल रॅन्नैया नॅन्ऱुङ् गाण्बॅनाल् 188

पुरन्तरन् मुतलिय पुलवर् यारैयुम्–पुरन्दर आदि सभी देवों को; निरन्तरम् नोक्कुवेन्–प्रतिदिन देख रहा हूँ; नेमियानुम्–चक्रधारी विष्णु और; अ वरम् तरु इऱैवनुम्–वे वरदायी भगवान ब्रह्मा और; मऴुवलाळनुम्–'मऴु' नामक (परशु ?) हथियारधारी (शिवजी) के भी; यान् ॲन्ऱुम् काण्पॅन् आल्–मैं रोज दर्शन करता हूँ, इसलिए; ॲन्नै करन्तिलर्–मुझसे अपना रूप नहीं छिपाएँगे। १८८

जटायु आगे भी सोचने लगे। पुरन्दर आदि देवों को तो मैं रोज देख रहा हूँ। चक्रधारी विष्णु, भक्तों को इच्छित वर देनेवाले ब्रह्मा, मऴु (परशु या तप्तलौह) आयुधधारी शिव —इनके तो प्रतिदिन दर्शन कर रहा हूँ। वे हमसे अपना यथार्थ रूप नहीं छिपा सकते। १८८

❀ कामनॅन् बवनैयुङ् गण्णि नोक्किनॅन्
तामरैच् चॅङ्गणित् तडक्कै वीरर्हळ्

पूमरु पौलङ्गळऱ् पौडियि तोडुमॊप्
पामलऩ् वरुबव राऱ्हौ लामिवर् 189

कामऩ् ऎऩ्पवऩैयुम्–मन्मथ को भी; कण्णिऩ् नोक्किऩेऩ्–आँखों से देखा है; तामरै चॆम् कण्–कमलदल-सम लाल आँखें; तट कै–दीर्घ भुजाएँ; इ वीररकळ्–(इनसे युक्त) इन वीरों के; पू मरु पॊलऩ् कळल्–कमलगन्ध-युक्त उज्ज्वल चरणों की; पॊटियिऩोटुम्–धूलि के साथ भी; ऒप्पु आम् अलऩ्–तुल्य नहीं हो सकता; वरुपवर् इवर्–आनेवाले ये; आर् कॊल्–कौन हैं। १८९

मैंने कामदेव को भी अपनी आँखों से देखा है। वह मन्मथ कमलदल के समान अरुण आँखें और दीर्घ विशाल हाथों के साथ मनोरम आभायुक्त इनके पास पायलधारी चरण पर लगी धूलि से भी तुल्य नहीं हो सकता। फिर ये कौन हैं, जो इस तरफ़ आ रहे हैं ? । १८९

❀ उलहौरु मूऩ्ऱुन्दम् मुडैमै याक्कुऱुम्
अलहऱु मिलक्कण ममैन्द मॆय्यिऩर्
मलर्महट् कुवमैया ळोडुम् वन्दविच्
चिलैवलि वीररैत् तॆरिहि लेऩॆऩा 190

उलकु ऒरु मूऩ्ऱुम्–स्वर्ग, भूतल और पाताल के तीनों लोकों को; तम् उटैमै आक्कुऱुम्–अपने अधीन बना सकनेवाला; अलकु अऱुम्–अमाप; इलक्कणम् अमैन्त–सामुद्रिका लक्षणों से युक्त; मॆय्यिऩर्–दिव्य रूप वाले हैं; मलर् मकट्कु उवमैयाळोटुम्–कमलजा से तुल्य देवी के साथ; वन्त–जो इधर आये हैं; इ चिलै वलि वीररै–इन धनुर्धर बलवान वीरों को; तॆरिकिलेऩ्–जान नहीं पाता; ऎऩा–कहकर। १९०

इनके दिव्यशरीर अपार लावण्यमयी हैं। सभी सामुद्रिका लक्षणों के अनुसार सुघड़ बने हैं। उनकी सुन्दरता तीनों लोकों को अपने अधीन करनेवाली है। इनके साथ जो देवी आती हैं, वह कमलजा लक्ष्मीदेवी के समान हैं। ये वीर धनुर्धर कौन हैं ? मैं समझ नहीं पाता। १९०

❀ करुमलै चॆम्मलै यऩैय काट्चियर्
तिरुमहिळ् मार्बिऩर् चॆङ्गण् वीरर्दाम्
अरुमैचॆय् गुणत्तिऩॆऩ् ऱुणैव ऩाळियाऩ्
ऒरुवऩै यिरुवरु मॊत्तु ळाररो 191

करुमलै चॆम्मलै अऩैय–काली गिरि और लाल गिरि के समान; काट्चियर्–दर्शन देनेवाले; तिरु मकिळ् मार्पिऩर्–वीरश्री जिन पर मोद के साथ वास करती थी, वैसे वक्ष वाले; चॆङ्कण् वीरर्–अरुणाक्ष बली; अरुमै चॆय्–अभूतपूर्व रूप से प्राप्त; कुणत्तिऩ्–श्रेष्ठ गुणों के; ऎऩ् तुणैवऩ्–मेरे मित्र; आळियाऩ्–चक्रवर्ती; ऒरुवऩै–उन अद्वितीय (दशरथ) के ही; इरुवरुम्–ये दोनों; ऒत्तुळार्–सदृश दिखाई देते हैं। १९१

ये काले पर्वत और लाल स्वर्ण-पर्वत के समान दर्शन देते हैं। इनके

वक्षस्थल वीरश्री का वासस्थान-सा लगते हैं। अरुणाक्ष ये दोनों अच्छे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण मेरे अत्यन्त मित्र चक्रवर्ती दशरथ के ही सदृश लगते हैं। १९१

※ ऍऩप्पल नितैप्पितऩ् मऩत्तु ळॆण्णुवाऩ्
शिऩप्पडै वीरर्मेऱ् चॆल्लु मऩ्बिऩाऩ्
कऩप्पडै वरिशिलैक् काळै यीर्हळ्यार्
मऩप्पड वॆऩक्कुरै वळङ्गु वीरॆऩ्ऱाऩ् 192

ऍऩ—ऐसे-ऐसे; मऩत्तुळ् ऍण्णुवाऩ्—मन में सोचते हुए; पल नितैप्पितऩ्—विविध अनुमान करनेवाले; चिऩम् पटै वीरर् मेल्—क्रोधशील हथियारधारी उन वीरों पर; चॆल्लुम् अऩ्पिताऩ्—सहज उठते हुए प्रेम के साथ; कऩ पटै—भारी हथियार; वरि चिलै—और बन्धनसहित धनु के साथ रहनेवाले; काळै यीर्कळ्—ऋषभ-सम तरुण वीर; यार्—कौन हो; मऩम् पट—मेरे मन को समझाते हुए; ऍऩक्कु उरै वळङ्कुवीर्—मुझे उत्तर दो; ऍऩ्ऱाऩ्—(जटायु ने) कहा। १९२

इस तरह जटायु उधेड़बुन में लगे हुए अनेक विचार करते रहे। उन्होंने अनुभव किया, सहज ही उन भयंकर क्रोधशील हथियारधारी वीरों पर प्रेम पैदा हो रहा है। उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण से पूछ ही लिया कि भारी हथियार और बन्धनयुक्त शरासन रखनेवाले वीर! ऋषभ-सम तरुण तुम लोग कौन हो? मेरे मन में साफ़ ज्ञान हो, ऐसा मुझे प्रत्युत्तर दो। १९२

※ विऩविय कालैयिऩ् मॆय्म्मै यल्लदु, पुऩैमलर्त् तारवर् पुहल्हि लामैयाल्
कऩैहडल् नॆंडुनिलङ् गाव लाळियाऩ्, वऩैहळ्ऱ् ऱयरदऩ् मैन्दर् यामॆऩ्ऱार् 193

विऩविय कालैयिऩ्—जब जटायु ने पूछा, तब; पुऩै मलर् तार् अवर्—सुन्दर पुष्पमाला से अलंकृत उन्होंने; मॆय्म्मै अल्लतु—सत्य के सिवा; पुकल्किलामैयाल्—नहीं बोल सकते, इसलिए; याम्—हम; कऩै कटल् नॆंटु निलम्—गर्जनशील समुद्र से वलयित इस विशाल भूमि के; कावल्—रक्षक; आळियाऩ्—चक्रवर्ती; वऩै कऴल् तयरतऩ्—वीर-चरण-कंकणधारी दशरथ के; मैन्तर्—पुत्र हैं; ऍऩ्ऱार्—कहा। १९३

जब जटायु ने यह प्रश्न किया, तब उन्होंने सच्ची बात कह दी। वे सत्य के सिवा असत्य बोलनेवाले नहीं थे। इसलिए उन्होंने बताया कि गरजते सागर से वलयित भूलोक के भर्त्ता चक्रवर्ती, वीरचरणकंकण-धारी दशरथ के पुत्र हैं। १९३

※ उरैत्तलुम् पॊङ्गिय वुवहै वेलैयऩ्
तरैत्तलै यिळिन्दवर्त् तळुवु कादलऩ्
विरैत्तडन् दारिऩाऩ् वेन्दर् वेन्दऩ्ऱऩ्
विरैत्तडन् दोळिणै वलिय वोवॆऩ्ऱाऩ् 194

उरैत्तलुम्–कहते ही; पोङ्किय उवकै वेलैयन्–उमड़नेवाले मोद-सागर के समान जटायु; तरै तलै इऴिन्तु–भूमि पर उतर आकर; अवर् तऴुवुम् कातलन्–उनको आलिंगन करके प्रेमातुर होकर; विरै तटम् तारिनान्–सुबासित और बड़ी माला से अलंकृत; वेन्तर् वेन्तन् तन्–राजाधिराज के; वरै तटम् तोळ् इणै–पर्वत-सम बड़े कंधे दोनों; वलियवो–बल से पूर्ण हैं क्या; अन्ऱान्–(जटायु ने) पूछा। १६४

ज्योंही राजकुमारों ने यह उत्तर दिया, त्योंही जटायु के मन में आनन्द उठा और सागर-सा बढ़ गया। वे नीचे भूमि पर उतर आये। उनको गले से लगाकर प्रेम के साथ जटायु ने प्रश्न किया कि सुबासित और बड़ी माला से शोभित राजाधिराज दशरथ की पर्वत-सम विशाल भुजाओं का जोड़ा बल संयुक्त है ? । १९४

❀ मऱक्कमुऱ् ऱाददन् वाय्मै कात्तवन्
तुऱक्कमुऱ् ऱान्ऎन विरामन् चॊल्ललुम्
इऱक्कमुऱ् ऱान्ऎन वॆक्क मॆय्दिनान्
उऱक्कमुऱ् ऱान्ऎन वुणर्वु नीङ्गिनान् 195

अवन्–वे; मऱक्क मुऱ्ऱात–अविस्मरणीय; तन् वाय्मै कात्तु–अपनी वचनसत्यता का; कात्तु–पालन करके; तुऱक्कम् उऱ्ऱान्–स्वर्गवासी हो गये; ऎन–ऐसा; इरामन् चॊल्ललुम्–श्रीराम के कहते ही; इऱक्कम् उऱ्ऱान् ऎन–(दशरथ) मर गये, कहकर; एक्कम् ऎय्तिनान्–तरस खाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱान् ऎन–निद्रामग्न हुए जैसे; उणर्वु नीङ्कितान्–अचेत हुए। १६५

चक्रवर्तीतनय श्रीराम ने उत्तर दिया कि चक्रवर्ती अविस्मरणीय अपनी सत्यवादिता के संरक्षण में स्वर्गवासी हो गये। ज्योंही श्रीराम ने यह कहा, त्योंही जटायु तरस खाकर निद्रामग्न हुए-से अचेत हो गये। १९५

❀ तऴुविन रॆडुत्तनर् तडक्कै यान्मुहम्, कऴुविन रिरुवरुङ् गण्णि नीरिनाल्
वऴुविय तन्नुयिर् वन्द मन्ननुम्, अऴिवुऱु नॆञ्जिन नरऱ्ऱि नानरो 196

इरुवरुम्–दोनों ने; तटम् कैयाल्–विशाल हाथों से; तऴुविनर्–लपेटकर; ऎटुत्तनर्–उठाया; कण्णिन् नीरिनाल्–आँखों के जल से; कऴुविनार्–(जटायु के मुख को) धोया; वऴुविय–खोई हुई; तन् उयिर्–अपनी जान को; वन्त मन्नतुम्–फिर से प्राप्त करके गृध्रराज भी; अऴिवु उऱु नॆञ्चितन्–विगलित मन के होकर; अरऱ्ऱितान्–विलाप करने लगे। १६६

श्रीराम और लक्ष्मण ने गिरे हुए उनको अपने हाथों से लपेटकर उठाया। उनकी आँखों से अश्रुजल उनके मुख को धुलाते हुए बहा। तब जटायु की खोयी हुई प्राणता फिर आयी। गृध्रराज विकलमन होकर विलापने लगे। १९६

❀ परवलरुङ् गॊडैक्कुनिन्ऱन् ऱनिक्कुडैक्कुम् बोरैक्कुनॆडुम् बण्बु तोऱ्ऱक्
करवलरुङ् गऱ्पहमु मुडुपतियुङ् गडलिडमुङ् गळित्तु वाऴप्

पुरवलर्दम् पुरवलत्ते पॉय्प्पहैये मॅय्क्कणिये पुहऴिन् वाऴ्वे
इरवलरु नल्लरमुम् यानुमिनि यंन्बडनीत् तेहि नाये 197

पुरवलर् तम् पुरवलत्ते–पालकों के पालक; पॉय् पकैये–असत्य के शत्रु; मॅय्क्कु अणिये–सत्य के भूषण; पुकऴिन् वाऴ्वे–यश के वासस्थान; निन् तन्–आपकी; परवल् अरु–अप्रशंसनीय; कॉटैक्कुम्–दानशीलता और; तनि कुटैक्कुम्–अद्वितीय छत्र; पॉरैक्कुम्–और क्षमाशीलता, इनके सामने; नॅटुम् पण्पु तोट्र्–अपने उच्च गुणों में जो हार गये, वे; करवल् अरु कर्पकमुम्–अवंचक कल्पवृक्ष; उटुपतियुम्–चन्द्र; कटल् इटमुम्–समुद्र की घिरी यह भूमि; कळितुतु वाऴ–(अपने प्रतिद्वन्द्वी के अभाव में) गर्व-मोद के साथ रहें, ऐसा; इरवलरुम्–याचक लोग; नल् अरमुम्–श्रेष्ठ धर्म को; यानुम्–और मुझे; इनि ॲन् पट–अब कौन सा दुख भोगने देकर; नीत्तु–हमें छोड़कर; एकिनाय्–चले गये। १९७

हे राजाधिराज ! असत्य के शत्रु ! सत्य के भूषण ! कीर्ति के वासस्थान ! आपकी अवर्णनीय दानशीलता, शीतल श्वेतछत्र और क्षमाशीलता के सामने क्रमशः अवंचक कल्पतरु, उडुपति और समुद्र की घिरी भूमि जो हार गयी थी, अब प्रतिद्वन्द्वी से रहित होकर उत्साह के साथ रह रही है। और याचक, श्रेष्ठ धर्म और मैं —तीनों को कौन सा दुख भोगने के लिए छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए हैं ? । १९७

अलङ्गार मॅन्वुलहुक् कमुदळिक्कुन् दनिक्कुडैया याऴि शूऴ्न्द
निलङ्गाव लदुकिडक्क निलैयाद निलैयुडैये नेय नॅञ्जिन्
नलङ्गाण नडन्दनैयो नायहने तीविनैये नण्बि निन्रुम्
विलङ्गाने नादलिनाल् विलङ्गिने निन्नुमुयिर् विट्टि लेनाल् 198

नायकने–नायक; अलङ्कारम् ॲन–साज-शृंगार है ऐसा; उलकुक्कु अमुतु अळिक्कुम्–(माने जाते हुए, पर असल में) लोकवासियों को कृपासुधा दिलानेवाला; तनि कुटैयाय्–अप्रतिम छत्रधारी; आऴि चूऴ्न्त निलम् कावल्–समुद्रवलयित पृथ्वी का शासन; अतु किटक्क–वह एक ओर रहे; निलैयात निलैयुटैयेन्–चंचल स्थिति वाले मेरे; नेय नॅञ्चिन् नलम्–प्रेमपूर्ण मन की (सच्चाई) स्थिति; काण ओ–परखने के लिए क्या; नटन्तनै–आप चल बसे; तीवितैयेन्–पापी मैं; विलङ्कु आनेन्–जानवर रह गया; आतलिनाल्–इसलिए; नण्पिन् निन्रुम्–उत्तम मित्रता से; विलङ्किनेन्–अलग रह गया; उयिर् विट्टिलेन्–और प्राण नहीं त्यागे। १९८

नायक ! आपका श्वेतछत्र केवल अलंकार की वस्तु नहीं था। सुधासम कृपा बरसानेवाले शासन का प्रतीक था। ऐसे छत्रधारी ! अब समुद्रमेखला भूमि अनाथ हो गयी; वह एक ओर रहे ! क्या आप मेरे मन के प्रेम की स्थिरता की परीक्षा करने के हेतु चले गये क्योंकि मैं चंचलमन हूँ ! मैं पापी हूँ ! जानवर पैदा हुआ हूँ। तभी तो उत्तम मित्रता के अनुरूप उचित व्यवहार से डिगकर अब भी प्राण त्याग किये बिना जीवित रहता हूँ ! । १९८

❀ तयिरुडैक्कु मत्तॅन्न वुलहैनलि शम्बरनैत् तडिन्द वन्नाळ्
अयिर्हिडक्कुङ् गडल्वलयत् तवरऱिय नीयुडल् यानावि यॅन्नच्
चॅयिर्हिडत्तल् शॅय्याद तिरुमनत्ताय् शॅप्पिनाय् तिरुम्बाय् निन्शॊल्
उयिरहिडक्क वुडलैविशुम् बेऱ्ऱिना रुणर्विरन्द कूऱ्ऱि नारे 199

चॅयिर् किटत्तल् चॅय्यात–दोष को स्थान न देनेवाले; तिरु मनत्ताय्–पवित्र मन के स्वामी; तयिर् उटैक्कुम् मत्तु ॲन्न–दही मथनेवाली मथानी के समान; उलकै नलि–लोकत्रासक; चम्परनै–शंवरासुर को; तटिन्त अ नाळ्–जिस दिन काट गिराया, उस दिन; अयिर् किटक्कुम्–काले बालू से युक्त; कटल् वलयत्तवर्–समुद्रवलयित भूतलवासियों को; अऱिय–जताते हुए; नी उटल् यान् आवि–तुम (दशरथ) शरीर, मैं प्राण; ॲन्न–ऐसा; चॅप्पिनाय्–कहा; निन् चॊल् तिरुम्पाय्–आप अपना वचन भंग करनेवाले नहीं हैं; उणर्वु इरन्त–भावना न समझ सकनेवाले; कूऱ्ऱिनार्–यमदेव भी; उयिर् किटक्क विट्टु–प्राणों को इधर रहने देकर; उटलै–शरीर, आपको; विचुम्पु एऱ्ऱिनारे–स्वर्ग पर चढ़ा ले गये। १६६

अकलंक पवित्र मन वाले ! दही को विलोडित करनेवाली मथानी के समान शंवरासुर लोगों को त्रास दे रहा था। जब आपने उनको मारा, उस दिन आपने सूक्ष्म काले बालुओं से युक्त समुद्र से वलयित भूमि के सारे लोगों के सामने उनके जाने, यह कहा कि जटायु तुम प्राण हो, मैं तुम्हारा शरीर हूँ। आप वचन भंग करनेवाले नहीं हैं। उस भावना की पवित्रता जड़मति यमदेव नहीं समझ सके। इसलिए प्राण— मुझे छोड़कर, शरीर— आपको उठा ले गये हैं। १९९

❀ ॲळुवदो रिशैपॅरुह विप्पॊळुदे यॊप्पपरिय वॅरियुन् दीयिल्
विळुवदे निऱ्कमड मॅल्लियलार् तम्मैप्पो निलत्तिन् मेल्वीळ्न्
दळुवदो यानॅन्ना वऱिवुऱ्ऱा नॅनवॅळुन् दवरै नोक्कि
मुळुवदे ळुलहुडैयान् मैन्दन्मीर् केण्मिनॅन मुऱैयिऱ् चॊन्नान् 200

ॲळुवतु ओर् इचै पॅरुक–उन्नत यश के बढ़ते; इप्पॊळुते–अभी; ऑप्पु अरिय–उपमाहीन; ॲरियुम् तीयिल्–जलनेवाली आग में; विळुवते निऱ्क–गिरना छोड़कर; मट मॅल्लियलार् तम्मै पोल्–अबोध सुकुमारी नारियों के समान; निलत्तिन् मेल् विळुन्तु–धरती पर गिरकर; यान् अळुवतो–मैं रोता रहूँ; ॲन्ना–कहकर; अऱिवु उऱ्ऱान् ॲन–सूझ पा गये हों, ऐसा; ॲळुन्तु–उठकर; अवरै नोक्कि–उनको देखकर; एळ् उलकु मुळुवतु उटैयान्–सातों लोकों के अकेले स्वामी; मैन्तनमीर्–(दशरथ के) पुत्र; केण्मिन्–सुनिए; ॲन–ऐसा; मुऱैयिल्–(निम्नोक्त) प्रकार से; चॊन्नान्–बोले। २००

मुझे अभी खूब जलती आग में प्रवेश करके मरना चाहिए, उससे यश मिलेगा और मैं यशस्वी हो जाऊँगा। वह काम छोड़कर मैं अब अबोध सुकुमारी नारियों के समान भूमि पर गिरकर रोता-कलपता रहता हूँ।

क्या यह मुझे सोहता है ? फिर वे सहसा कोई बात सूझ गई हो ऐसे उठे। राजकुमारों को सम्बोधित किया— सातों लोकों के शासक दशरथ के तनयो ! सुनो मेरी बात ! फिर वे निम्नप्रकार से बोले। २००

❀ अरुणऩ्ऱऩ् बुदल्वऩ्या ऩवऩ्पडरु मुलहॆलाम् पडर्वॆ ऩाऴि
इरुण्मॊय्म्बु कॅडत्तुरऩ्द तयरदऱ्किऩ् ऩुयिर्त्तुणैव ऩिमैयो रोडुम्
वरुणङ्गळ् विरिहिऩ्ऱ कालत्ते वऩ्दुदित्तेऩ् कऴुहिऩ् वेऩ्दऩ्
तरुणङ्गॊळ् पेरॊळियोर् शम्बादि पिऩ्पिऱऩ्द जडायु वॆऩ्ऱाऩ् 201

तरुणम् कॊळ् पेर् ऑळियोर्—तरुणाई से युक्त बड़े तेजोमय; याऩ्—मैं; अरुणऩ् तऩ् पुतल्वऩ्—अरुण का पुत्र हूँ; अवऩ् पटरुम्—वे जहाँ जाते हैं; उलकु ऍल्लाम्—उन सभी लोकों में; पटर्वेऩ्—जाने की शक्ति रखता हूँ; इमैयोर् ओटुम्—देवों के साथ; वरुणङ्कळ्—अनेक वर्ण-भेद; विरिकिऩ्ऱ कालत्ते—जब बँटे उसी (आदि) काल में; वन्तु उतित्तेऩ्—जनमा, वह मैं; कऴुकिऩ् वेऩ्तऩ्—गृध्रराज; चम्पाति—सम्पाति; पिऩ् पिऱन्त—का अनुज; चटायु—जटायु हूँ; इरुळ् मॊय्म्पु—(शत्रु रूपी) अन्धकार का बल; कॅट—नाश करते हुए; आऴि तुरन्त—आज्ञाचक्र-चालक; तयरतऱ्कु—दशरथ का; इऩ् उयिर् तुणैवऩ्—प्राण-प्यारा मित्र हूँ; ऍऩ्ऱाऩ्—कहा। २०१

तरुण तेजोमय वीर ! मैं अरुण का पुत्र हूँ। अरुण जहाँ चलते हैं, उन सभी स्थानों में जाने की मेरी शक्ति है। देवों के साथ जिस दिन सभी विविध जातियों के जीवों का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्राचीनकाल में मेरा जन्म हो गया। गीधों के राजा सम्पाति का अनुज हूँ मैं। शत्रु रूपी अन्धकार को नाश करते हुए जिन्होंने आज्ञाचक्र चलाया, उन दशरथ का प्राण-प्यारा मित्र हूँ। २०१

[इसके बाद पाँच पद्य पाये जाते हैं, जो क्षेपक माने जाते हैं। उनमें जटायु की वंशावली का विवरण पाया जाता है। जानकारी हेतु उनका सार यहाँ दिया जाता है— दक्ष प्रजापति की पचास उभरे उरोजों वाली सुताओं में तेरह पुत्रियों से काश्यप का विवाह हुआ। उनमें अदिति ने तैंतीस करोड़ देवों को जन्म दिया। कजरारी आँखों वाली दिति ने दुगुने दैत्यों को जनाया।

दनु ने दानवों को, मति ने अपने अवयवों से मनुष्य की जातियों को और सुरभी ने धेनु, अश्व और अन्य जानवरों को पैदा किया। क्रोधवशा ने गर्दभ, मृग, उष्ट्र आदि को पैदा किया।

अभ्रकुंतला विनता से वज्र, अरुण, वैनतेय (गरुड़), उल्लू-गीध आदि बड़े-बड़े पक्षी जनमे। ताम्रा ने गौरैये, तीतर, बटेर आदि पक्षियों को जन्म दिया। कळा नाम की कोमलांगी ने तरु, लता आदि को जन्म दिया।

कद्रू ने फनियों और व्यालों को जन्म दिया। सुधा से भुजंग उत्पन्न

हुए। अरिष्ठा द्वारा गिरगिट, घोरपड़ आदि आये। इला ने जलचरों को जन्म दिया।

अदिति, दिति, दनु, अरिष्ठा, सुधा, कळा, सुरभी, विनता, मति, इला, कद्रू, क्रोधवशा और ताम्रा —इन स्त्रियों ने ये सब जीव-जन्तु पैदा किये। विनता-सुत अरुण ने रम्भा से विवाह किया और हम भूमि पर पैदा हुए।]

❀ आण्डवऩी दुरैशॅय्य वञ्जलित्त मलर्क्कैया रऩ्बि ऩोडुम्
मूण्डपॅडरुऩ् दुऩ्बत्ताऩ् मुरैमुरैयि निरैमलर्क्कण् मॉय्त्त नीरार्
पूण्डपॅरुम् बुहऴ्निरुवित् तम्बॉरुट्टार् पॉऩ्ऩुलहम् पुक्क तादै
मीण्डऩऩ्वऩ् दाऩवऩैक् कण्डऩरे यॊत्ततरव् विलङ्गर् ऱोळार् 202

आण्टु—वहाँ; अवऩ्—उनके; ईतु उरै चॅय्य—यह कहते ही; विलङ्कल् तोळार्—पर्वत-सम कंधों वाले; अञ्चलितृत मलर् कैयार्—अञ्जलिबद्ध कमल-हस्त (वाले); अऩ्पिऩ् ओटुम्—प्रेम के साथ; मूण्ट—बढ़नेवाले; पॅरुम् तुऩ्पत्ताल्—बड़े दुख से; मुरै मुरैयिऩ्—उत्तरोत्तर; मलर् कण् निरै—कमल-सम आँखों में भर आनेवाले; मॉय्त्त नीरार्—अधिक अश्रुजल के साथ; पूण्ट पॅरुम् पुकऴ् निरुवि—अपना धृत बड़ा यश इधर स्थापित करके; तम् पॉरुट्टाल्—अपने कारण; पॊऩ् उलकम् पुक्क—स्वर्ण (स्वर्ग) लोक जो गये, उन; तातै—अपने पिता ही; मीण्टऩऩ् वऩ्ताऩ् अवऩै—लौट आये जो, उनको; कण्टऩरे ऑत्ततर्—देख लिया हो, ऐसा हुए। २०२

जब जटायु ने यह वृत्तान्त कहा, तब पर्वत-सम कन्धों वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने कमल-हाथ जोड़ लिये। स्नेह-विह्वल उनकी आँखों से अश्रुकण बारी-वारी से भर आये। उनकी स्थिति ऐसी हो रही, मानो वे दशरथ से ही प्रत्यक्ष मिल रहे हों, जो अब स्वर्ग से अपने उन पुत्रों को देखने के लिए लौट आये हों जिनके (वियोग के ही) कारण वे इस संसार में बड़ा यश स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये थे। २०२

❀ मरुविऩिय कुणत्तवरै यिरुशिऱहा लुऱत्तऴुवि मक्का णोरे
उरियकडऩ् विऩैयेऱ्कु मुदवुवी रुडलिरण्डुक् कुयिरोऩ् ऱाताऩ्
पिरियवुऩ्दाऩ् पिरियादे यिऩ्दिरुक्कु मुडऱ्पॊऱैयाम् बीऴै पारा
ऍरियदऩि लिऩ्ऱेपुक् किऱवेऩे लित्तुयर मऱवे ऩॆऩ्ऱाऩ् 203

मरुवु इऩिय—अपनाने-योग्य मधुर; कुणत्तु अवरै—स्वभाव वाले उनको (श्रीराम आदि को); इरु चिऱकाल्—अपने दोनों पक्षों से; उऱ तऴुवि—आलिंगन करते हुए; मक्काळ्—पुत्रो; नीरे—तुम ही; विऩैयेऱ्कुम्—पापी मेरा भी; उरिय कटऩ्—आवश्यक शवकर्म; उतवुवीर्—करा दो; उटल् इरण्टुक्कु—दो शरीर का; उयिर् ऑऩ्ऱु आताऩ्—जो प्राण एक रहे; पिरियवुम्—उनके मरने पर; ताऩ् पिरियाते—खुद मरे बगैर; इऩ्तिरुक्कुम्—सुख से जीता रहने का; उटल् पॊऱै आम्—शरीर-वहन का; पीऴै परातु—दुख देखते हुए; ऍरि अतऩिल्—आग में; इऩ्ऱे—अभी; पुक्कु—प्रवेश कर; इऱवेऩ् एल्—न मरूँगा तो; इ तुयरम् मऱवेऩ्—यह दुख भूल नहीं पाऊँगा। २०३

पश्चात जटायु ने अपनाने योग्य अच्छे गुणों वाले उन कुँअरों को अपने विशाल पक्षों के अन्दर लेते हुए आलिंगन किया और कहा कि पुत्रो ! मैं बड़ा पापी हूँ। मेरा भी शव-संस्कार कर दो। यह मेरे प्रति उपकार होगा। दशरथ मेरे और उनके दोनों शरीरों का एकप्राण-सम रहे। उनकी मृत्यु होने के बाद मैं विना मरे यह शरीर ढोता रहूँ, यह मेरे लिए असह्य है ! यह शरीरभार-वहन-दुख दूर करने के लिए आग में प्रवेश करके अभी मर जाऊँगा। नहीं तो यह वेदना भूल नहीं सकूँगा। २०३

❀ ऍऩ्ऱु रैत्त वॆरुवै यरशऩैत्, तुऩ्ऱु तारवर् नोक्कित् तॊऴुदुहण्
ऒऩ्ऱु मुत्त मुरैमुरै यायुह, निऩ्ऱु मऱ्ऱिऩ्ऩ नीर्मै निहऴ्त्तिऩार् 204

ऍऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा कहनेवाले; ऍरुवै अरचतै–गृध्रराज को; तुऩ्ऱु तार् अवर्–घनी माला से अलंकृत श्रीराम और लक्ष्मण; तॊऴुतु–विनय करके; कण् ऒऩ्ऱुम्–आँखों में लगी; मुत्तम्—मुक्तापंक्ति-सम अश्रुकण; मुरै मुरैयाय्–क्रम से; उक–टपके, ऐसा; निऩ्ऱु–जटायु के सामने स्थित होकर; इऩ्ऩ नीर्मै–इस प्रकार से; निकऴ्त्तिऩार्–बहस की। २०४

जब गृध्रराज जटायु ने अपना यह संकल्प सुनाया, तब मनोरम माला-धारी श्रीराम और लक्ष्मण शोकाकुल हुए। आँखों से मोतियों के समान अश्रुकण बहाते हुए उन्होंने जटायु के सामने खड़े होकर यों कहा। २०४

❀ उय्विडत् तुदवर् कुरिया ऩुऩ्दऩ्, मॆय्वि डक्करु दादुविण् णॆऱिऩाऩ्
इव्वि डत्तिऩि लॆम्बॆरु माऒऩैमैक्, कैवि डिऱ्पिऩै यार्कळै कण्णुळार् 205

उय्वु इटत्तु–रक्षा के अवसर पर; उतवऱ्कु उरियाऩुम्–रक्षा करनेवाले चक्रवर्ती भी; तऩ् मॆय् विट करुताातु–अपना वचन-परिपालन छोड़ना न चाहकर; विण् एऱिऩाऩ्–स्वर्गवासी हुए; इ इटत्तिऩिल्–इस स्थान (जंगल) में; ऍम् पॆरुमा अऩ्–हमारे नाथ; ऍमै कै विटिल्–हमको असहाय छोड़ जाएँगे तो; पिऩै–फिर; कळै कण् उळार्–हमारे अवलम्ब (सहायक) रहनेवाले; यार्–कौन हैं। २०५

तात ! हमारी सहायता और रक्षण करने का भार जिन पर स्वयमेव था, वे हमारे सहायक और नाथ अपने वचन को छोड़ना न चाहकर स्वर्ग-वासी हो गए। हे हमारे नाथ ! यहाँ इस जंगल में आप भी हमें निस्सहाय करके छोड़ेंगे तो हमारे आधार कौन हैं ? । २०५

❀ तायि ऩीङ्गरुन् दऩ्दैयिऱ् ऱुणहर्, वायि नीङ्गि वऩम् बुहुन् दॆय्दिय
नोयु नीङ्गिऩै ऩुऩ्ऩिऩॆऩ् ऩॆङ्गळै, नोयु नीङ्गुदि योनॆऱि नीङ्गलाय् 206

नॆऱि नीङ्कलाय्—धर्म-मार्ग से न हटनेवाले; नीङ्कु अरु–जिनसे अलग होना कठिन है, उन; तायिऩ–माता से; तऩ्तैयिल्–पिता से; तऩ् नकर् वायिऩ्–अपने नगर के द्वार से; नीङ्कि–अलग होकर; वऩम् पुकुन्तु–जंगल में प्रवेश करके; ऍय्तिय–अब तक जो हमने भुगता है; नोयिऩ्–उस दुख से; ऩुऩ्ऩिऩ्–आपके मिलने

के कारण; नीङ्किर्तम्–विमुक्त हुए; ॲङ्कळै–ऐसे हमको; नीयुम्–आप भी; ॲन् नीङ्कुतियो–क्यों छोड़ जाएँगे । २०६

हे धर्म से कभी न हटनेवाले ! जिनसे अलग होना कठिन है उन माता से, पिता से और अपने नगर के द्वार से अलग होकर हम इधर आए । उससे हमारे मन में जो व्यथा हुई उससे, आपको देखने के बाद हम मुक्त हो पाये । इस स्थिति में आप हमें क्यों छोड़कर जायँगे ? । २०६

❀ ॲन्रु शॊल्ल विरुन्दळि नॆञ्जित्तन्, निन्र वीररै नोक्कि निनैन्दवन्
अन्र दॆन्नि लयोत्तियि लैयनीर्, शॆन्र पिन्नवर् चेर्हुवॆन् यान्ॆन्रान् 207

ॲन्रु चॊल्ल–ऐसा (श्रीराम और लक्ष्मण के) कहने पर; इरुन्तु अळि नॆञ्चित्तन्–जो दुख से विगलित मन वाले रहे, उन जटायु ने; निन्र वीररै–सामने खड़े रहे वीरों को; नोक्कि–देखकर; निनैन्तवन्–विचार करते हुए; अतु अन्रु ॲतिन्–वह तुमको (पसन्द) नहीं तो; ऐय नीर्–प्यारो; नीविर्–तुम लोगों के; अयोत्तियिल् चॆन्रपिन्–अयोध्या में लौट जाने के बाद; यान् अवन् चेर्कुवॆन्–मैं उनके पास जाऊँगा; ॲन्रान्–कहा । २०७

जब श्रीराम और लक्ष्मण ने दुख के साथ अपनी यह बात कही, तब व्याकुलता से निर्बल हुए मन के जटायु ने उनको देखा और कुछ सोचा । फिर मन बदलकर उन्होंने कहा कि पुत्रो ! अगर मेरा मरना आपको ठीक नहीं लगता तो लो मेरे प्यारो ! तुम्हारे अयोध्या लौट जाने के बाद मैं अपने मित्र के पास जाऊँगा । २०७

❀ वेन्दन् विण्णडैन् दानॆनिल् वीरर्नीर्, एन्दु ञाल मिनिदळि यादिवण्
पोन्द दॆन्नॆ पुहुन्दवॆन् बुन्दिपोय्क्, कान्दु हिन्रदु कट्टुरै योरॆन्रान् 208

वेन्तन्–चक्रवर्ती; विण् अटैन्तान् ॲतिल्–स्वर्ग सिधार गये तो; वीरर् नीर्–वीर तुम; एन्तु ञालम्–भरणयोग्य राज्य को; इतितु अळियातु–सुख से पालन किये बिना; इवण्–यहाँ; पोन्तत ॲन्नॆ–आये क्यों; ॲन् पुन्ति–मेरा मन; पोय्–अस्थिर होकर; कान्तुकिन्रतु–दुखतप्त होता है; पुकुन्त ॲन्–बीच में हुए कौन से; कट्टुरैयोर्–समझाकर कहो; ॲन्रान्–पूछा । २०८

फिर जटायु को विचार आया कि ये जंगल क्यों आये हैं ? उन्होंने पूछा कि चक्रवर्ती स्वर्गवासी हुए तो वीर तुम्हारा कर्तव्य था कि भरण योग्य राज्य का पालन करो । पर सन्तोष के साथ राज्य-पालन करना छोड़कर यहाँ क्यों आये हो ? मेरा मन इधर-उधर भटककर दुखतप्त है ! क्या अनर्थ बीच में आये ? खूब खोलकर कहो । २०८

❀ तेवर् तानवर् तिण्डिर नाहर्वे, ऱॆव राह विडरिळैत् तारॆनिल्
पूव रावु पॊलङ्गदिर् वेलितीर्, शाव राक्कित् तरुवॆ नरशॆन्रान् 209

पू अरावु–रेतकर तेज किए हुए; पॊलन् कतिर् वेलितीर्–स्वर्ण-सम कान्ति

छिटकानेवाले भालों का धारण करनेवाले; तिण् तिऱल्—कठोर शक्तिमन्त; तेवर्—देव हों चाहे; तानवर्—दानव; नाकर्—नागलोक-वासी; वेऱु एवर् आक—अन्य कोई भी हों; इटर् इऴैत्तार् ॲतिल्—दुख दिया हो तो; चावर् आक्कि—उनको मृतक बनाकर; अरचु तरुवॅन्—राज्य दिला दूँगा; ॲन्ऱान्—कहा। २०९

खूब रेतकर तीक्ष्ण और स्वर्ण-सम कान्ति देनेवाले भाले के धारक कुँअर! आपको देवों ने कष्ट दिया हो, चाहे दानव; नागलोकवासी हों या और कोई —कहो कि अमुकों ने कष्ट दिया तो उनको मृतक बनाकर आपको राज्य दिला दूँगा। २०९

❀ तादै कूऱलुन् दम्बियै नोक्किनान्, शीदै केऴ्व नवनुन्दन् शिऱ्ऱवै
माद राल्वन्द शॅय्है वरम्बिला, ओद वॅलै यॊऴिविन् ऱुणर्त्तिनान् 210

तातै कूऱलुम्—पिता के कहने पर; चीतै केऴ्वनुम्—सीतापति ने भी; तम्पियै नोक्कितान्—अनुज को देखा; अवनुम्—उन्होंने भी; तन् चिऱ्ऱव्वै मातराल्—अपनी छोटी माता देवी कैकेयी द्वारा; वन्त चॅय्कै—किया हुआ कार्य; वरम्पु इला ओत—जो निस्सीम घोषयुक्त; वेलै—दुख-सागर था वह; ऑऴिवु इन्ऱु—बिना अन्तर के; उणर्त्तिनान्—वताया। २१०

जव पिता-सम जटायु ने यह वचन कहा तब सीतापति ने अपने अनुज के प्रति अर्थभरी दृष्टि फेरी। लक्ष्मण ने भी अपनी सौतेली माता देवी कैकेयी के कृत्य का घोषपूर्ण समुद्र-सा दुखवृत्तान्त पूर्ण रूप से, बिना कुछ छोड़े-छुड़ाये, कह सुनाया। २१०

❀ उन्दै युण्मैय नाक्कियुन् शिऱ्ऱवै, तन्द शॊल्लैत् तलैक्कॊण्डु तारणि
वन्द तम्बिक् कुदविय वळ्ळले, ॲन्दै वल्ल दियावर्वल् लारॅना 211

उन्तै उण्मैयन् आक्कि—अपने पिता को सत्यनिष्ठ वनाकर; उन् चिऱ्ऱवै तन्त चॊल्लै—अपनी सौतेली माता की आज्ञा; तलै कॊण्टु—सिर पर धारण करके; तारणि—(अपने स्वत्व के) राज्य को; वन्त तम्पिक्कु—अपने अनुज भरत को देकर; उतविय—उपकार करनेवाले; वळ्ळले—दानी प्रभु; ॲन्तै वल्लतु—मेरे तात (तुम) जो कर सके; यावर् वल्लार्—ऐसा कौन कर सकता है; ॲना—कहकर। २११

यह सुनकर जटायु ने साधुवाद दिया! हे राम! तुमने अपने पिता को सत्यसंध वनाया और अपनी सौतेली माता की आज्ञा शिरोधार्य करके धरणी को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दिया! तुम दानियों में श्रेष्ठ दानी हो! हे मेरे तात! हा! मेरा पुत्र जो कर चुका वह कौन कर सकता है? । २११

❀ अल्लित् तामरैक् कण्णनै यन्बुऱप्
पुल्लि मोन्द पॊऴिन्दकण् णीरिनन्

वल्लै मैन्दवम् मन्नैयु मॅन्नैयुम्
ॲल्लै यिल्पुह ऴॅय्दुवित् तायॅन्ऱान् 212

अल्लि तामरै कण्णनै–पंखुड़ियों सहित कमल-सम आँखों वाले श्रीराम को; अन्पु उऱ पुल्लि–प्रेम के साथ आलिंगित करके; मोन्तु–माथे पर चूमकर; पॉऴिन्न कण् नीरितन्–अश्रु बहानेवाले नेत्रों के साथ; मैन्त–पुत्र; अ मन्नैयुम्–उन चक्रवर्ती को; ॲन्नैयुम्–और मुझे भी; ॲल्लै इल् पुकऴ्–असीम यश; ॲय्तुवित्ताय्–दिला दिया; वल्लै–तुम समर्थ हो; ॲन्ऱान्–कहा (जटायु ने)। २१२

जटायु ने हर्षातिरेक से पद्मदलाक्ष श्रीराम को गले लगाया और सिर सूँघा (माथा चूमा)। आँखों से आनन्दबाष्प बहाते हुए जटायु ने कहा—पुत्र ! तुमने चक्रवर्ती को और मुझे, दोनों को अपार यश दिला दिया ! तुम बड़े समर्थ हो ! । २१२

❀ पिन्न रुम्मप् पॅरियवन् पॅय्वळै, अन्न मन्न वणङ्गिनै नोक्किनान्
मन्नर् मन्नवन् मैन्दविव् वाणुदल्, इन्न ळॅन्न वियम्बुदि यालॅन्ऱान् 213

पिन्नरुम्–फिर भी; अ पॅरियवन्–उन बड़े ने; पॅय्वळै–कंकणधारिणी; अन्नम् अन्न–हंसिनी-सदृश; अणङ्कित्नै–देवी सीता को; नोक्किनान्–देखकर; मन्नर् मन्नवन् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इ वाळ् नुतल्–यह उज्ज्वल ललाट वाली; इन्नळ–अमुक (कौन) है ऐसा; इयम्पुति–बतलाओ; ॲन्ऱान्–कहा। २१३

फिर भी उन वृद्ध जटायु ने कंकणधारिणी मरालीतुल्य देवी सीता को देखा और श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह उज्ज्वल ललाट वाली कौन है ? यह बताओ। २१३

अल्लि रुत्तन्न ताडहै यादिया
विल्लि रुत्तङ् गरिवैयै मेलैनाळ्
पुल्लु रुत्तदि यावुम् बुहन्ऱुतन्
शॊल्लि रुत्तनन् ऱॊन्ऱल्पिन् ऱोन्ऱिनान् 214

तोन्ऱल् पिन् तोन्ऱिनान्–श्रीराम के अनुज (लक्ष्मण) ने; मेलै नाळ्–पहले, आरम्भ में; अल् इरुत्तु अन्न–अन्धकारालय-सी; ताटकै आतिया–ताड़का (वृत्तान्त) आदि; विल् इरुत्तु–धनुर्भंग करके; अङ्कु–उधर; अरिवैयै–सीतादेवी से; पुल् उऱुत्ततु–विवाह करना; यावुम् पुकन्ऱु–सभी सुनाकर; तन् चॊल् इरुत्तनन्–अपना कथन पूरा किया। २१४

तब श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने सारा श्रीराम-चरित सुनाया। अन्धकार के आगार-सी ताड़का का वध, मिथिला में शिव-धनुष तोड़ना, सीताजी का विवाह आदि सभी घटनाएँ वर्णन करके श्रीलक्ष्मण ने अपना कथन समाप्त किया। २१४

केट्टु वन्द किळरॉळि मोलियान्, तोट्ट लङ्गलि तीर्तुरन् दीर्वळम्
नाट्टु नीरिति नण्णुदल् कारुमिक्, काट्टिल् वैहुदिर् काक्कुवॅन् यानॅन्रान् 215

केट्टु उवन्त–सुनकर आनन्दित हुए; किळर् ऑळि मोलियान्–वर्धनशील प्रभा के किरीट के धारी; तोटु अलङ्कलित्तीर्–पुष्पमाला वाले; वळम् तुरन्तीर्–धन-समृद्धि छोड़ आये हो; नाटु–अपने राज्य में; नीर् इति नण्णुतल् कारुम्–तुम लोगों के आगे पहुँचते तक; इ काट्टिल् वैकुतिर्–इस जंगल में रहो; यान् काक्कुवॅन्–मैं रक्षा करूँगा; ॲन्रान्–कहा। २१५

जाज्वल्यमान किरीट से शोभायमान जटायु ने तुष्ट होकर वादा किया कि हे पुष्पदलमाला-धारी वीरो! तुम लोग धन आदि वैभव त्यागकर आये हो! जब तक तुम अयोध्या लौट नहीं जाओगे, तब तक इसी वन में वास करो। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। २१५

इरैव वॅण्णि यहत्तिय तीन्दुळ, तरैयु नन्मणि यार्रि नहन्गरैत्
तुरैयि नुण्डोरु शूळलच् शूळल्पुक्, कुरैदु मॅन्रन नुळ्ळत् तुरैहुवान् 216

उळ्ळत्तु उरैकुवान्–अन्तर्यामी भगवान श्रीराम; इरैव–नाथ; अकत्तियन्–अगस्त्य का; ॲण्णि–विचारकर; ईन्तु उळतु–बतलाया हुआ स्थान; अरैयुम् नल् मणि–कलरवयुक्त सुन्दर; आर्रिन् अकन् करै–गोदावरी नदी के विशाल तट पर; ओरु चूळल् उण्टु–एक स्थान है; अ चूळल् पुक्कु–उस स्थान में जाकर; उरैतुम्–रहेंगे; ॲन्रनन्–कहा। २१६

सर्वान्तिर्यामी भगवान श्रीराम ने उत्तर में कहा कि हे नाथ! अगस्त्य ने वासयोग्य कोई स्थान बताया है। वह कलरव सहित वहनेवाली श्रेष्ठ गोदावरी नदी के विशाल तट पर स्थित एक स्थान है। वहीं जाकर हम वास करेंगे। २१६

❀ पॅरिदु नन्रप् पॅरुन्दुरै वैहित्तीर्, पुरिदिर् मादवम् बोदुमिन् यानदु
तॅरिवु रुत्तुवॅ नॅन्रवर् तिण्शिरै, विरियु नीळ्लिन् मेवविण् शॅन्रनन् 217

पॅरितुम् नन्रु–बड़ा अच्छा है; नीर् अ पॅरुम् तुरै वैकि–तुम उस नदी के श्रेष्ठ घाट पर रहकर; मा तवम् पुरितिर्–महान तप करो; पोतुमिन्–चलो; यान् अतु तॅरिवुरुत्तुवॅन्–मैं वह स्थान दिखाऊँगा; ॲन्रु–कहकर; तिण् चिरै निळलिल्–बलवान अपने पक्षों की छाया में; अवर् मेव–उनको आने देते हुए; विण् चॅन्रनन्–आकाश में उड़ता चला। २१७

जटायु ने उसे उचित समझा। कहा कि वह स्थान अवश्य बड़ा अच्छा है। तुम उसी घाट पर जाकर रहो और बड़ी तपस्या करो। चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा और वह स्थान दिखा आऊँगा। वे आकाश पर उड़ते चले और उनके बलवान और विशाल पक्षों की छाया के नीचे श्रीराम आदि सुख से गये २१७

❀ आय शूऴ् लऱिय वुणर्त्तिय, तूय शिन्दैयत् तोमिल् गुणत्तवन्
पोय पिन्नैप् पॊरुशिलै वीररुम्, एय शोलै यिनिदुशॆन् ऱॆय्दिनार् 218

आय चूऴल्–उस (पंचवटी के) स्थान को; अऱिय उणर्त्तिय–समझा-बुझाकर; अ तूय चिन्तै–वे पवित्रमन; तोम् इल् कुणत्तु–निर्मल गुणों वाले; अवन्–वे जटायु; पोय पिन्नै–चले गये, उसके बाद; पॊरु चिलै वीररुम्–युद्धोपयोगी धनुओं के स्वामी श्रीराम आदि; एय चोलै–वहाँ रहनेवाले एक उपवन में; इनितु चॆन्ऱु ऎय्तिनार्–सुख से जाकर रहे। २१८

उस स्थान, पंचवटी को दिखाकर और उसके सम्बन्ध में समझाकर पवित्रमन और उत्तम, निर्मल गुणों वाले जटायु चले गये। उसके बाद युद्धोपयोगी धनुष के रखनेवाले दोनों वीर देवी सीता के साथ वहाँ स्थित एक उपवन में गये। २१८

❀ वार्प्पॊऱ् कॊङ्गै मरुहियै मक्कळै
एर्प्पच् चिन्दनै यिट्टव् वरक्कर्दम्
शीर्प्पैच् चिक्कऱत् तेरिन्दन् शेक्कैयिल्
पार्प्पैप् पार्क्कुम् बऱवैयिऩ् पार्क्किन्ऱान् 219

अ अरक्कर् तम् चीर्प्पै–वहाँ के राक्षसों की बलविशिष्टता को; चिक्कु अऱ–संशय के बिना; एर्प–खूब; चिन्तनै इट्टु–सोचकर; तेरिन्तन्–जो निश्चित रूप से जानते थे, वे जटायु; वार् पॊन् कॊङ्कै–अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली; मरुकियै–पुत्रवधू सीताजी को; मक्कळै–और अपने पुत्रों को; चेक्कैयिल् पार्प्पै पार्क्कुम्–घोंसलों में पोटों की देखरेख करनेवाली; पऱवैयिल्–मादा पक्षी के समान; पार्क्किन्ऱान्–देखते रहे। २१६

जटायु राक्षसों के बल का पूरा ज्ञान रखते थे। उन्होंने खूब सोचा और मन में धारणा बना ली (कि इनकी रक्षा का खूब ध्यान रखना आवश्यक है)। अतः वे अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली पुत्रवधू सीताजी और दोनों कुमारों पर, सावधानी से अपने बच्चों की देखरेख करनेवाली मादा पक्षी के समान उन पर निगरानी रखते थे। २१९

5. शूर्प्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)

पुवियिनुक् कणिया यान्ऱ पॊरुडन्दु पुलत्तिऱ् ऱाहि
आवियहत् तुऱैह डाङ्गि यैन्दिणै नॆऱियळाविच्
चवियुऱत् तॆळिन्दु तण्णॆन् ऱॊऴुक्कमुन् दऴुविच् चान्ऱोर्
कवियॆनक् किडन्द कोदा वरियिनै वीरर् कण्डार् 220

पुवियितुक्कु अणियाय्–भूलोक का शृंगार (भूषण) बनकर; आन्ऱ पॊरुळ् तन्तु–श्रेष्ठ वस्तुएँ (पुरुषार्थ) प्रदान करते हुए; पुलत्तिऱ्ऱु आकि–खेतों (बुद्धि) का

पोषक रहकर; अवि अक तुऱैकळ् ताङ्कि–अपने में बने हुए अनेकों घाटों के साथ (प्रसादगुणपूर्ण अनेक कथाप्रसंगों के साथ); ऐ तिणै नॆऱि अळावि–पाँचों भूभागों पर से बहती हुई (पाँचों अंगों का वर्णन करती हुई); चवि उऱ तॆळिन्तु–छविमान रूप से साफ़ रहते हुए (जल्दी समझ में आकर ज्ञान दिलानेवाले रूप से साफ़ रहते हुए); तण् ऍन्ऱ ऒऴुक्कमुम् तऴुवि–शीतल धारा-प्रवाह के साथ (रम्य शैली के साथ); चान्ऱोर् कवि ऍन–उत्तम कवियों के काव्य के समान; किटन्त–दृश्यमान; कोतावरियिनै–गोदावरी नदी को; वीरर् कण्टार्–वीरों ने देखा। २२०

(इस पद में गोदावरी नदी और उत्तम कवि के रचे काव्य का श्लिष्ट वर्णन है।) वीरों (सीताजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण) ने उस गोदावरी को देखा, जो उत्तम कवि के रचे काव्य के समान पड़ी (बहती) थी।

[भुवि का शृंगार, चारों पुरुषार्थों का दायक, बुद्धि का पोषक, शृंगार रस के सुन्दर उपांगों के प्रसंगों का वर्णनकारी, (शृंगार) रस भरे काव्य के प्रधान अंगों का (तिणै) चित्रण करनेवाला, मनोहारी छटा के साथ स्वच्छ और शीतल प्रवाहमयी शैली के साथ रहनेवाले उत्तम कवि के काव्य के समान भुवि का शृंगार बनकर अनेक पदार्थों को देती हुई या पैदा करने में सहायता देती हुई, खेतों की पोषक, ताप शान्त करनेवाले अनेक घाटों से युक्त, पाँचों (पर्वत, वन, नदी की कछार, समुद्र तट और मरु के) प्रदेशों से होकर सुन्दर रूप से स्वच्छ और शीतल सुखावह प्रवाह के साथ बहनेवाली गोदावरी नदी को वीरों ने देखा।]

[पॊरुळ्–पुरुषार्थ या पदार्थ; पुलम्–बुद्धि (ज्ञान) या खेत; तुऱैहळ–शृंगार-रस-कथा के उपांगों का वर्णन या घाट; तिणै–प्रधान भाग, प्रधान भूभाग]। २२०

वण्डुऱै कमलच् चव्वि वाण्मुहम् पॊलिय वाशम्
उण्डुऱै कुवळै यॊण्ग णॊरुङ्गुऱ नोक्कि यूऴिन्
तॆण्डिरैक् करत्तिन् वारित् तिरुमलर् तूविच् चॆल्वर्क्
कण्डडि पणिव दॆन्नप् पॊलिन्ददक् कडवुळ् याऱु 221

अ कटवुळ् याऱु–वह दिव्य नदी; चॆल्वर् कण्टु–उन श्रीमानों को देखकर; वण्टु उऱै कमलम्–अलिकुलावृत कमल रूपी; चॆव्वि वाळ् मुकम्–सुन्दर उज्ज्वल मुख; पॊलिय–आनन्द से शोभित करके; वाचम् उण्टु–सुगन्धियुक्त; उऱै–वहाँ रहनेवाले; कुवळै ऒण् कण्–कुवलय रूपी प्रभापूर्ण आँखों से; ऒरुङ्कु उऱ नोक्कि–एकाग्रता से खूब देखकर; ऊऴिन् तॆळ् तिरै करत्तिन्–क्रम से उठनेवाली तरंग रूपी हाथों से; तिरु मलर् वारि–सुन्दर पुष्पों को लेकर; तूवि–बरसाकर; अटि पणिवतु ऍन्न–चरणों पर विनत हो रही हो, ऐसा; पॊलिन्ततु–दर्शनीय रही। २२१

उस दिव्य नदी ने उन श्रीमंत कुमारों को देखा तो उसका अलिकुल-कलित कमल रूपी मुख विकसित हुआ। वह सुवासित वनप्राय कुवलय रूपी

आँखों द्वारा देखते हुए क्रमानुक्रम में उठनेवाली स्वच्छ तरंगों रूपी हाथों से पुष्पों को लेकर उनके चरणों पर डालते हुए प्रणमन कर रही हो —ऐसा लगा। २२१

अॅऴुवुरु कादलारि त़िरैत्तिरैत् तेङ्गि येङ्गिप्
पऴुवनाट् कुवळैच् चॅव्विक् कण्बऩि परन्दु शोर
वऴ़ुविला वाय्मै मैन्दर् वऩत्तुऱै वरुत्त नोक्कि
अऴुवतु मॊत्त दालव् वलङ्गु नीराऱु मन्ऩो 222

अलङ्कु नीर्—हिलती वहनेवाली जलधारा की; अ आरु—वह नदी; वऴु इला वाय्मै मैन्तर्—अचल सत्यसंध उन कुमारों का; वऩत्तु उऱै वरुत्तम् नोक्कि—वनवास का दुख देखकर; अॅऴु उरु कातलाल्—उठे हुए प्रेम के साथ; इरैत्तु इरैत्तु—लम्बी साँस लेते-लेते; एङ्कि एङ्कि—तरस खाते-खाते; पऴुव—वन-सम घने; नाळ् कुवळै—उसी दिन विकसित कुवलय रूपी; चॅव्वि कण्—आकर्षक आँखों से; पति—जलकण; परन्तु चोर—बरसाकर बहाते हुए; अऴुवतु ऑत्ततु—रोती हो, ऐसा लगी। २२२

वह हिलती हुई बहनेवाली नदी सत्यनिष्ठ उन वीरों के वनवास-जनित दुख को देखकर लम्बी आहें भरते हुए तरस के साथ रो रही हो, ऐसा भी लगा। उनके वनप्राय कुवलय रूपी नेत्रों में हिमकण दिखाई दिये। २२२

नाळङ्गॊ णळिऩप् पऴ्ळि नयऩङ्ग ळमैय नेमि
वाळङ्ग ळुऱैव कण्डु मङ्गैतऩ् कॊङ्गै नोक्क
नीळङ्गॊळ् शिलैयोऩ् मऱ्ऱऩ् नेरिऴै नॅडिय नम्बि
तोळिऩ्ग णयऩम् वैत्ताळ् शुडर्मणित् तडङ्गळ् कण्डाळ् 223

नीळम् कॊळ् चिलैयोऩ्—दीर्घ धनु के धारक श्रीराम ने; नाळम् कॊळ्—नाल सहित; नळिऩ पळ्ळि—कमल रूपी शय्या पर; नयऩङ्कळ् अमैय—आँखें उन्मीलित करके; नेमि वाळङ्कळ्—चक्रवाक पक्षियों को; उऱैव कण्टु—रहते देखकर; मङ्कै तऩ् कॊङ्कै नोक्क—देवी के स्तनों पर दृष्टि लगाई, तब; अ नेरिऴै—उन आभरणभूषिता देवी ने; चुटर् मणि—कान्तियुक्त नीले रत्नों से भरे; तटङ्कळ् कण्टाळ्—टीलों को देखकर; नॅटिय नम्पि—उन्नत नायक श्रीराम के; तोळिऩ् कण्—कन्धों पर; नयऩम् वैत्ताळ्—आँखें डालीं। २२३

(पति-पत्नी दोनों विविध दृश्य देखते हैं और परस्पर अर्थभरी निगाहें डालकर रसानुभव प्राप्त करते हैं।) दीर्घ-धनुर्धर श्रीराम ने कमलों पर आँखें उन्मीलित करते हुए चक्रवाक पक्षियों के जोड़े को देखा और अपनी अर्द्धांगिनी के उरोजों पर दृष्टि चलायी। तो श्रेष्ठ आभरणालंकृता सीताजी ने उज्ज्वल नीले रत्नों से युक्त बालू के टीलों को देखा और सहज रूप से अपनी दृष्टि श्रीराम के सुडौल दीर्घ कंधों पर डाली। २२३

❀ ओदिम मॊदुङ्गक् कण्ड वुत्तम नुळैय ळाहुम्
शीदैतन् नडैयै नोक्किच् चिऱियदोर् मुऱुवल् शॆय्दान्
मादव डातु माण्डु वन्दुनी रुण्डु मीळुम्
पोदह नडप्प नोक्किप् पुदियदोर् मुऱुवल् पूत्ताळ् 224

ओतिमम्–हंस को; ऒतुङ्क कण्ट–किनारा खींचते देखकर; उत्तमन्–पुरुषोत्तम श्रीराम; उळैयळ् आकुम्–पास आनेवाली; चीतै तन् नटैयै नोक्कि–सीताजी की चाल देखते हुए; चिऱियतु ओर् मुऱुवल्–एक मन्दहास; चॆय्तान्–किया; मातु अवळ् तातुम्–देवी, उन्होंने भी; आण्टु–(उस नदी पर) वहाँ; वन्तु नीर् उण्टु मीळुम्–आकर जल पीकर लौटनेवाले; पोतकम् नटप्प नोक्कि–गज को डग भरते देखकर; पुतियतु ओर् मुऱुवल्–नया (विचित्र) एक हास; पूत्ताळ्–विकसित किया। २२४

वहाँ एक हंस (सीताजी की चाल देखकर) हटकर जाने लगा। श्रीराम ने वह देखा और पास आनेवाली सीताजी की चाल देखकर मन्दहास किया। देवी ने एक गज को देखा जो नदी पर आकर पानी पीने के बाद लौट जा रहा था और अनोखा अर्थ-भरा हास हँसीं। २२४

❀ विल्लियऱ् ऱडक्कै वीरन् वीङ्गु नीराऱ्ऱिन् पाङ्गर्
वल्लिह णुडङ्गक् कण्डान् मङ्गैदन् मरुङ्गु नोक्क
अॆल्लियङ् गुवळैक् कानत् तिडैयिडै मलर्न्दु निन्ऱ
अल्लियङ् गमलङ् गण्डा ळण्णऱन् वडिवङ् गण्डाळ् 225

विल् इयल्–धनुर्विद्या में अभ्यस्त; तट कै वीरन्–विशालहस्त वीर; वीङ्कु नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–समृद्ध-जल नदी के पास; वल्लिकळ्–लताओं को; नुटङ्क कण्टान्–लचकते देखा; मङ्कैल् तन्–देवी की; मरुङ्कुल् नोक्क–कमर पर दृष्टि डाली तो; अॆल्लि अम् कुवळै कानत्तु–अन्धकार के समान फैले पड़े कुवलय वन के; इटै इटै–बीच-बीच में; मलर्न्तु निन्ऱ–विकसित रहे; अल्लि अम् कमलम्–पंखुड़ियों से भरे कमलों को; कण्टाळ्–देखनेवाली (देवी) ने; अण्णल् तन् वटिवु कण्टाळ्–महिमावान नायक के शरीर पर दृष्टि दौड़ाई। २२५

धनुर्धर श्रीराम ने समृद्धजल वाली नदी के पास लताओं को देखा और उसी स्मृति में सुमध्यमा की कमर निहारी! तब देवी ने अंधकार-सम रंग वाले कुवलय-वन को बीच-बीच में कमलों के साथ देखा और लगे हाथ महिमावान प्रभु के शरीर पर उनकी दृष्टि जा जमी। २२५

अन्नैयदोर् तन्मै यान वरुविनी राऱ्ऱिन् पाङ्गरप्
पन्निदरु दॆय्वप् पञ्ज वडियॆनुम् बरुवच् चोलैत्
तन्नियिड मदन् नण्णित् तम्बियाऱ् चमैक्कप् पट्ट
इन्नियपूञ् जाल यॆय्दि यिरुन्दन् निराम निप्पाल् 226

इरामन्–श्रीराम; अत्तैयतु ओर् तन्मैयात्–वैसी एक स्थिति की; अरुवि नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–सरिताओं की मिलकर बनी गोदावरी नदी के पास; पत्ति तरु तॅय्व–शीतल और दिव्य; पञ्चवटि ॲन्नुम्–पंचवटी नाम के; परुव चोलै–सभी ऋतुओं में मनोरम रहनेवाले उपवन में; तत्ति इटम् अतत्तै–एकान्त स्थान को; नण्णि–जाकर; तम्पियाल् चमैक्क पट्ट–छोटे भाई द्वारा निर्मित; इत्तिय पूम् चालै ॲय्ति–प्यारी मनोरम, पर्णशाला में पहुँचकर; इरुन्ततन्–रहे; इप्पाल्–इसके बाद। २२६

ऐसी गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी नाम के स्थान में एक उपवन में, जो सभी ऋतुओं में मनोरम और सुखद रहता था, श्रीराम आदि गये। वहाँ छोटे भाई लक्ष्मण ने एक सुन्दर पर्णशाला निर्मित की। श्रीराम उसमें (अपनी प्रिया के साथ) रहने लगे। तब शूर्पणखा वहाँ आयी। २२६

नीलमा मणिनिऱ निऱुदर् वेन्दत्तै
मूलना शम्बॅऱ मुडिक्कु मुन्बिनाल्
मेलैना ळुयिरॊडुम् पिऱन्दु तान्विळै
कालमोर्न् दुडनुऱै कडिय नोयनाळ् 227

मा नील मणि निऱ निरुतर् वेन्तत्तै–बड़े नीले रत्न के समान रंग वाले राक्षस-राजा (रावण) को; मूल नाचम् पॅऱ–समूल नाश करने के लिए; मुटिक्कुम्–उपाय कर चुकने की; मुन्पिनाल्–प्रेरणा से; मेलै नाळ्–आरम्भ के दिन में ही; उयिरॊटुम् पिऱन्तु–जन्म के साथ पैदा होकर; तान् विळै कालम् ओर्न्तु–फलदान का समय देखकर; उटन् उऱै–(जीव के) साथ रहनेवाली; कटिय नोय् अनाळ्–कठोर व्याधि के समान जो रही, ऐसी। २२७

शालीन नीले रत्न के समान काले रंग के राक्षस रावण का समूल नाश करने का उपाय करनेवाली विधि की प्रेरणा से शूर्पणखा वहाँ आयी। वह ऐसे रोग के समान थी, जो शरीर के साथ-साथ जन्म के अवसर पर पैदा हो जाता है और ऐन समय की प्रतीक्षा में उसके साथ लगा रहता है। २२७

शॅम्बरा हम्बडच् चॅऱिन्द कून्दलाळ्
वॅम्बरा हन्दत्ति विळैन्द मॅय्यिनाळ्
उम्बरा नवर्क्कुमॊण् डवर्क्कु मोदनीर्
इम्बरा नवर्क्कुमो रुऱुदि यीट्टुवाळ् 228

चॅम्पु अराकम् पट–ताम्र का रंग बिछुड़ जाय, ऐसे लाल; चॅऱिन्त–और घने; कून्तलाळ्–केश वाली; वॅम्पु–उष्णतप्त; अराकम् तत्ति विळैन्त–कामराग-विवर्धित; मॅय्यिनाळ्–शरीर वाली; उम्पर् आनवर्क्कुम्–देवों का; ऑण् तवर्क्कुम्–और श्लाघ्य तपस्वियों का; ओतम् नीर्–समुद्रजल से; इम्पर् आनवर्क्कुम्–(वलयित) इस लोक के वासियों का; ओर् उऱुति ईट्टुवाळ्–एक अपूर्व हित साधन करनेवाली। २२८

उसके केश ताँबे के रंग को मात देनेवाले अरुण वर्ण के थे। उसका

शरीर कामेच्छा के उष्ण से तप्त था। वह अनजान में ही देवों, श्रेष्ठ तपस्वी लोगों और इस समुद्र-मेखला पृथ्वी के वासियों का हित करनेवाली बनी आयी। २२८

❀ वॆय्यदोर् कारण मुण्मै मेवित्ताळ्
वैहलुन् दमियळव् वत्तत्तु वैहुवाळ्
नॊय्दिनिव् वुलहॆला नुळैयु नोन्मैयाळ्
ऎय्दिन्‌ ळिराहव निरुन्द शूळल्वाय् 229

वॆय्यतु ओर् कारणम्–अनर्थकारी एक कारण (कामवासना) के; उण्मै मेवित्ताळ्–अस्तित्व को अपनानेवाली; तमियळ्–अकेली; अ वत्तत्तिल्–उस वन में; वैकुवाळ्–वास करनेवाली; नॊय्तिन्–अनायास; इ–इस; उलकु ऎलाम् नुळैयुम्–लोक में सर्वत्र पहुँचने का; नोन्मैयाळ्–सामर्थ्य वाली; इराकवन् इरुन्त चूळल् वाय्–(जहाँ) श्रीराघव रहे, उस स्थान में; ऎय्तिताळ्–आई। २२९

भयंकर एक कारण था, जिसके संपादनार्थ वह वन में अकेली रहती थी। (वह कारण उसकी कामलिप्सा हो सकता है या अपने पति को मारने वाले अपने भाई रावण के प्रति उसका क्रोध भी हो सकता है।) वह सारे लोक में घुसकर चलने की शक्ति और साहस रखती थी। वह अकस्मात उस स्थान पर आयी, जहाँ श्रीराम रहते थे। २२९

❀ ऎण्डरु मिमैयव ररक्क रॆङ्गण्मेल्
विण्डनर् विलक्कुदि यॆन्न मेलनाळ्
अण्डशत् तरुन्दुयि रुरन्द वैयनैक्
कण्डन्‌ डन्‌गिळैक् किरुदि काट्टुवाळ् 230

तन् किळैक्कु–अपने परिवारों को; इरुति काट्टुवाळ्–अन्त दिखाने (दिलाने) वाली ने; मेलै नाळ्–पहले कभी; ऎण् तरुम् इमैयवर्–सबसे प्रशंसित सुर लोगों के; अरक्कर् ऎङ्कळ् मेल् विण्टनर्–राक्षसों ने हमसे वैर किया है; विलक्कुति ऎन्न–मिटाइए यह प्रार्थना करने पर; अण्टचत्तु–अण्डज नाग पर; अरुन्तुयिल् तुरन्त–अपूर्व योगनिद्रा-त्यागी (अवतरित हुए); ऐयनै–महाप्रभु को; कण्टनळ्–देखा। २३०

अपने बन्धु-बान्धवों को अंत दरसानेवाली उसने श्रीराम पर दृष्टि लगायी। किस श्रीराम पर? एक समय पूजनीय देवों ने विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि राक्षस हमसे वैर करते हैं; हमें बचा लीजिए। तब परमात्मा ने अण्डज नाग पर अपना शयन और योगनिद्रा त्यागकर इस संसार पर श्रीराम का अवतार लिया था। ऐसे श्रीराम को उसने देखा। २३०

❀ शिन्दैयि लुऱैबवर् कुरुवन् दीय्न्ददाल्
इन्दिरऱ् कायिर नयन मीशऱ्कु

मुन्दिय मलर्क्कणोर् मून्ऱु नान्गुतोळ्
उन्दियि लुलहळित् तार्कॅन् ऱुन्नुवाळ् 231

चिन्तैयिल् उऱैपवर्कु–मन में वास करनेवाले (मन्मथ) का; उरुवम् तीय्न्ततु–शरीर जल गया; इन्तिरऱ्कु–देवेन्द्र के तो; आयिरम् नयनम्–सहस्र आँखें हैं; इचऱ्कु–ईश्वर शिव के; मुन्तिय–अपूर्व; मलर् कण्–कमल-सम नेत्र; ओर् मून्ऱु–तीन हैं; उन्तियिन्–नाभी से; उलकु अळित्तार्क्कु–लोकों को दिलानेवाले (विष्णुदेव) के; नान्कु तोळ्–चार हाथ हैं; ॲन्ऱु–ऐसा; उन्नुवाळ्–सोचती। २३१

वह विचार करने लगी कि ये कौन हैं ? मनोवासी मन्मथ है क्या ? पर उसका शरीर तो जल गया और वह अशरीरी है ! देवेन्द्र ? उसके तो सहस्र नेत्र हैं। शिवजी हैं क्या ? उनके तो तीन आँखें हैं। विष्णु भी नहीं हो सकते, जिन्होंने अपनी नाभि से लोकों की सृष्टि की क्योंकि उनके चार हाथ होते हैं और इसके तो दो ही हैं। २३१

❀ कऱ्ऱैयञ् जडैयवन् कण्णिऱ् काय्दलाल्
इऱ्ऱव नन्ऱुतॉट् टिन्ऱु काऱुन्दान्
नऱ्ऱव मियऱ्ऱियव् वनङ्ग नल्लुरुप्
पॅऱ्ऱन नामॅनप् पॅयर्त्तु मॅण्णुवाळ् 232

कऱ्ऱै अम् चटैयवन्–जूट बनी सुन्दर जटा वाले की; कण्णिल्–(भाल की) आँख (की अग्नि) से; काय्तलाल्–जला देने से; इऱ्ऱवन्–अरूप बना; अ अनङ्कन् तान्–वह अनंग ही; अन्ऱु तॉट्टु इन्ऱु काऱुम्–उस दिन से आज तक; नल् तवम् इयऱ्ऱि–अच्छा तप करके; नल् उरु पॅऱ्ऱतन् आम्–यह सुन्दर रूप पा गया हो; ॲन–ऐसा; पॅयर्त्तुम्–फिर भी; ॲण्णुवाळ्–सोचती। २३२

वह आगे सोचती— जटाधारी शिवजी के भाल के नेत्र से निकली आग से जलकर जो अरूप बन गया था, वह अनंग उस दिन से आज तक तपस्या करके यह सुन्दर रूप पा गया क्या ? । २३२

❀ तरङ्गळि नमैन्दुताळ्न् दुयर्न्द तालमा
मरङ्गळ् निहर्क्किल मलैयुम् बुल्लिय
उरङ्गळि नुयर्दिशै योम्बु मात्तैयिन्
करङ्गळे यिवन्मणिक् करमॅन् ऱुन्नुवाळ् 233

इवन् मणि करम्–इसके सुन्दर हाथ; तरङ्कळिन् अमैन्तु–सम और श्रेष्ठ बनकर; ताळ्न्तु–दीर्घ रहते हैं; उयर्न्त ताल मा मरङ्कळुम्–ऊँचे तालवृक्ष भी; निकर्क्किल–तुलना नहीं कर सकते; मलैयुम् पुल्लिय–पर्वत भी अल्प हैं; उरङ्कळिल् उयर्–बल में बढ़े-चढ़े; तिचै ओम्पु–दिशाओं में रहकर पालन करनेवाले; यात्तैयिन्–गजों के; करङ्कळे–कर ही हैं; ॲन्ऱु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३३

इसके सुन्दर हाथ परस्पर सम, बडे ही सुन्दर और आजानु लम्बे हैं।

इनकी उपमा बड़े तालवृक्ष नहीं कर सकते; पर्वत भी अल्प रह जायेंगे। इसलिए वल में बढ़े हुए दिग्गजों के कर ही हैं इसके हाथ ! । २३३

विऱ्मलै वल्लवऩ् वीरत् तोळोडुम्
कऩ्मलै निहर्क्किल कत्तिऩ्द नीलत्तिऩ्
नऩ्मलै यल्लदु नाम मेरुवुम्
पॊऩ्मलै यादलाऱ् पॊरुवि लादॆऩ्बाळ् 234

विल् मलै वल्लवन्–धनुर्युद्धसमर्थ इसके; वीर तोळ् ओटुम्–वीरता-भरे कन्धों से; कल मलै निकर्क्किल–मामूली पत्थर के पर्वत तुल नहीं सकते; कत्तिन्त नीलत्तिऩ्–पक्के नीले रत्नों के; नल् मलै अल्लतु–सुन्दर पर्वत के सिवा; नाम मेरुवुम्–नामी मेरु पर्वत भी; पॊन मलै आतलाल्–स्वर्ण-पर्वत होने के कारण; पॊरुवलातु–समान नहीं बन सकता; ऍऩ्पाळ्–कहती । २३४

धनुर्युद्ध में समर्थ इसके वीरतापूर्ण सबल कंधों की समता साधारण पत्थर का पर्वत नहीं कर सकता। खूब प्रवृद्ध नीली मणि का श्रेष्ठ पर्वत कर सकता है। उसके सिवा नामी मेरु पर्वत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर्णमय है। —ऐसी राय कहती वह शूर्पणखा। २३४

ताळुयर् तामरैत् तळङ्ग डम्मोडुम्
केळुयर् नाट्टत्तऩ् गिरियिऩ् ऱोऱ्ऱत्ताऩ्
तोळोडु तोळिऩैत् तोंडर्ऩ्दु नोक्कुऱिऩ्
नीळिय वल्लकण् णॆंडिदु मार्बॆऩ्बाळ् 235

ताळ् उयर्–नाल के कारण ऊँचे रहनेवाले; तामरै तळङ्कळ् तम् ओटुम्–कमल की पंखुड़ियों सहित; केळ् उयर्–उज्ज्वलता में बढ़ी; नाट्टत्तऩ्–आँखों वाला है; किरियिऩ् तोऱ्ऱत्ताऩ्—गिरि-सम आकार का है; तोळ् ओटु तोळिऩै–एक कन्धे के साथ दूसरे कन्धे को; तॊटर्न्तु नोक्कुऱिऩ्–बराबर एक ही दृष्टि में देखना चाहूँ तो; कण् नीळिय अलल–मेरी आँखें लम्बी नहीं हैं (दृष्टि में सामर्थ्य नहीं है); नॆटितु मार्पु ऍऩ्पाळ्–विशाल वक्ष वाला है, कहती । २३५

वह उनके रूप को अंग-अंग देखती और सराहती। इनकी आँखें कमलदल की शोभा लिये बहुत मनोरम हैं। पर्वत-समान आकार के इसके दोनों कंधों को एक साथ, एक दृष्टि में देखना कठिन है क्योंकि मेरी आँखें उतनी लम्बी नहीं रहतीं। इसका वक्ष बहुत विशाल है। २३५

अदिहऩिऩ् ऱोळिरुमिव् वळहऩ् वाण्मुहम्
बोदियविऴ् तामरैप् पूवै यॊप्पदो
कदिर्मदि यामॆऩिऱ् कलैह ळेयुमम्
मदियॆऩिऩ् मदिक्कुमोर् मरुवण् डॆऩ्ऩुमाल् 236

निऩ्ऱु अतिकम् ऑळिरुम्–स्थिर रूप से अधिक दीप्तिमान; इ अऴकऩ् वाळ् मुकम्–इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल मुख; पोति अविऴ् तामरै पूवै ऑप्पतो–पंखुड़ियाँ जिसकी विकसित हो रही हैं, उस कमल की उपमा बन सकता है; कतिर् मति आम्–(शीतल-) किरण (पूर्ण) चन्द्र है (कहूँ); ऎऩिल्–तो; कलैकळ् तेयुम्–कलाएँ लुप्त होती जाती हैं; अ मति ऎऩिल्–वह चन्द्र (सम) है, कहा भी जाय तो; मतिक्कुम्–पूर्ण चन्द्र में भी; ओर् मऱु उण्टु–एक कलंक है; ऎऩ्ऩुम्–ऐसा कहती। २३६

स्थिर रूप से अत्यधिक शोभायमान रहनेवाले इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल आनन विकासशील कमल से उपमित हो सकता है क्या ? नहीं। उज्ज्वल किरणों वाला पूर्ण-चन्द्र उपमान बन सकता है क्या? नहीं। क्योंकि दूसरे दिन से वह क्षीण होने लग जाता है। पूर्णता स्थायी न होने पर भी राका-चन्द्र की उपमा मान जायँ तो भी उसमें कलंक है। अतः राका-चन्द्र भी इसकी उपमा नहीं बन सकता। २३६

❀ ऎवऩ्शॆय वितियविव् वऴहै यॆय्दिऩाऩ्
अवऩ्ऴॆय्दु तिरुवुडम् बलश नोऱ्किऩ्ऱाऩ्
नवऩ्ऴॆय्त् तहैयविऩ् नळिऩ नाट्टत्ताऩ्
तवऩ्ऴॆयत् तवऩ्ऴॆय्द तवमॆ ऩ्ऩ्गिऱाळ् 237

इतिय इ अऴकै–मधुर इस सुन्दरता को; ऎय्तिताऩ्–जो प्राप्त है, यह; अवम् चॆय–अपना रूप बिगाड़ने के लिए; तिरु उटम्पु–श्रीशरीर; अलच–कष्ट उठाए, ऐसा; ऎवऩ् चॆय–क्या साधने के लिए; नोऱ्किऩ्ऱाऩ्–तप करता है; नवम् चॆयत्तकॆय–नित-नवीन; इ नळित नाट्टत्ताऩ्–यह कमल-सम आँखों वाला; तवम् चॆय–तपस्या करे, इसके लिए; तवम् चॆय्त तवम् ऎऩ्–तप ने किया कैसा तप है; ऎऩ्किऩ्ऱाळ्–कहती। २३७

इतनी सुन्दरता पाने का भाग्यशाली यह अपने लावण्य को नष्ट करते हुए और श्री शरीर को दुख देते हुए कौन सा कार्य साधने के लिए तपस्या करता है ? हा ! नितनवीन कमलसम आँखों वाला यह तप करे, इसके लिए तप ने क्या ही तप किया है ? —यह आश्चर्य करती ! । २३७

उडुत्तनी राडैय ळुरुवच् चॆव्वियळ्
पिडित्तरु नडैयिऩळ् पॆण्मै नऩ्ऱिवऩ्
अडित्तलन् दोण्डलि ऩवनिक् कम्मयिर्
पॊडित्तऩ पोलुमिप् पुल्लॆऩ् ऱुन्नुवाळ् 238

उडुत्त नीर् आटैयळ्–समुद्रवसना; उरुव चॆव्वियळ्–रूपसौंदर्यवती; पिटि तरु नटैयिताळ्–हथिनी-सम चाल वाली (भूदेवी का); पॆण्मै तऩ्ऱु–स्त्रीत्व श्लाघनीय है; इ पुल्–ये घासें; इवऩ् अटित्तलम् तोण्टलिऩ्–इसके चरणों के स्पर्श से; अ मयिर्–उसके रोंगटे; पॊटित्तत पोलुम्–खड़े हुए हों, ऐसी लगती हैं; ऎऩ्ऱु उऩ्ऩुवाळ्–ऐसा सोचती। २३८

समुद्रवसना, सौन्दर्यवती और हथिनी-सी चाल वाली भूमिदेवी का स्त्रीत्व भाग्यवान हो गया। इन घासों को देखो। भूमि के रोम के समान हैं जो इसके चरण-स्पर्श से पुलकित हो खड़े रहते हैं —यह कवित्वपूर्ण विचार करती। २३८

वाणिला	मरुवलान्	वयङ्गु	शोदियैक्
काणल	नेर्कॊलाङ्	कदिरि	नायहन्
शेणॆलाम्	बुल्लॊळि	शॆलुत्तिच्	चिन्दैयिल्
नाणिलन्	मीमिशै	नडक्कु	मॆन्गिन्ऱाळ् 239

वाळ् निला मुरुवलान्–उज्ज्वल चाँदनी-सम दाँतों वाले इसकी; वयङ्कु चोतियै–शोभायमान प्रभा को; कतिरिन् नायकन्–किरणनायक सूर्य ने; काणलत्तॆ कॊलाम्–देखा नहीं है शायद; चेण् ऍलाम् पुल् ऑळि चॆलुत्ति–(तभी तो) दूर-दूर तक अपनी मन्द प्रभा फैलाते हुए; चिन्तैयिल्–मन में; नाण् इलन्–लाज-रहित; मी मिचै–आकाश में; नटक्कुम्–संचार करता है; ऍन्किन्ऱाळ्–यह निंदा करती। २३९

उज्ज्वल चाँदनी के समान दाँत वाले इसके शरीर की ज्योति को रश्मिपति सूर्य ने देखा नहीं हैं शायद क्या? तभी तो वह दूर-दूर तक अपना मंद प्रकाश फैलाते हुए, निर्लज्ज होकर, आकाश में संचार करता है! —ऐसा कहती। २३९

कुप्पुऱऱ् करियमाक् कुन्ऱै वॆन्ऱुयर्, इप्पॆरुन् दोळव तिदळ्क् केऱ्पदोर्
ऑप्पॆन वुलहमे युरैक्कि नॊण्णुमो, तुप्पिनिऱ् ऱुप्पुडै यादैच् चॊल्लुहेन् 240

कुप्पुऱऱ्कु अरिय–जिसको लाँघना मुश्किल है, उस; मा कुन्ऱै वॆन्ऱु–बड़े पर्वत को हराकर; उयर्–उन्नत हुए; इ पॆरुम् तोळवन्–बड़े कन्धों वाले इसके; इतळ्क्कु–अधरों की; ओप्पु ऍन–समता करनेवाला ऐसा; उलकमे उरैक्किन्–सारी दुनिया कहे तो भी; ऑण्णुमे–वह समान हो सकता है क्या; तुप्पितिल्–प्रवाल से बढ़कर; तुप्पु उटै–(उपमा होने का) सामर्थ्य रखनेवाला; यातै चॊल्लुकेन्–किसको कह सकूंगी। २४०

अलंघ्य पर्वत को भी नीचा दिखानेवाले कन्धों से शोभायमान इसके अधरों की तुलना प्रवाल से लोक करते हैं। तो क्या प्रवाल में वह सामर्थ्य है? लेकिन प्रवाल से बढ़कर समर्थ उपमा कहाँ खोजूँ? (तुप्पु—प्रवाल; सामर्थ्य)। २४०

नऱ्कलै मदियुऱ वयङ्गु नम्बितन्, ऍऱ्कलै तिरुवरै यॆय्दि येमुऱ
वऱ्कलै नोऱ्ऱन माशि लामणिप्, पॊऱ्कलै नोऱ्ऱिल पोलु मालॆन्ऱाळ् 241

नल् कलै मति–पूर्ण-(कला)-चन्द्र की; उऱ–तुलना करते हुए; वयङ्कुम्–शोभायमान; नम्पि तन्–इस पुरुष-नायक की; ऍल् कलै–सूर्य (प्रभा-) हारी; तिरु अरै–श्रीयुक्त कमर को; अय्ति–प्राप्त करके; एम् उऱ–आनन्द भोगने के लिए;

वऱ्कलै नोऱ्ऱत–वल्कल ने तप किया था; माचु इला मणि–निर्दोष और श्रेष्ठ; पॊन् कलै–स्वर्ण-वस्त्र ने; नोऱ्ऱिल पोलुम्–तप नहीं किया शायद; ऎन्ऱाळ्–कहती। २४१

वह वल्कल का भाग्य सराहती। कहती– सारी कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान 'इस पुरुषनायक की सूर्यप्रभाहारी श्रीकमर को लपेटकर सुखभोग करने का भाग वल्कल ने ही अपने तप द्वारा प्राप्त किया है। क्या स्वर्ण-वस्त्र ने तपस्या नहीं की है शायद ? । २४१

तॊडैयमै नॆडुमळैत् तॊड्ग लामॆनक्
कडैहुळन् ऱिडैनॆऱि करिय कुञ्जियैच्
चडैयॆनप् पुनैन्दिल नॆन्ऩिऱ् ऱैयलार्
उडैयुयिर् यावैयु मुडैयु मालॆन्ऱाळ् 242

तॊटै अमै–बराबर और; नॆटु मळै तॊड्कल् आम् ऎन–लम्बी बारिश की धार के समान; कटै कुळन्ऱु–छोर कुंचित होकर; इटै नॆऱि–बीच में खूब घने; करिय कुञ्चियै–काले केश को; चटै ऎन पुनैन्तिलन् ऎन्ऩिल्–जटा बनाकर नहीं रखता तो; तैयलार् उटै–स्त्रियों के; उयिर् यावैयुम्–सारे प्राण; उटैयुमाल्–मिट जाते; ऎन्ऱाळ्–कहती। २४२

वह स्त्रियों पर तरस खाती, कहती। इनके काले केश मेघ से बराबर गिरनेवाली धार के समान लम्बे और छोर में कुंचित हैं। वे घने हैं। अगर यह उनको जटा के रूप में नहीं बाँधता तो स्त्रियों के प्राण मिट जाते (स्त्रियों के मन टूट जाते)। २४२

नाऱिय नहैयणि नल्ल पुल्लिनाल्
एऱिय शॆव्वियै यियऱ्ऱु मोवॆन्ना
माऱहन् मुळ्ळमणिक् करशिन् माट्चिदान्
वेऱोरु मणियिनाल् विळङ्गु मोवॆन्ऱाळ् 243

नाऱिय–शोभायमान; अणि नकै–सुन्दर आभरणों में; नल्ल–श्रेष्ठ; पुल्लिनाल्–इसके शरीर का आलिंगन करें; एऱिय चॆव्वियै–(तो वे) और अधिक सुन्दरता को; इयऱ्ऱुमो–प्रदान कर सकेंगे क्या; ऎन्ना–सोचकर; माऱु अकल्–लाजवाब; मुळ्ळ मणिक्कु अरचिन्–सारे रत्नों के राजा श्रीकौस्तुभ का; माट्चि–शान; वेऱु ऒरु मणियिनाल्–दूसरी एक मणि से; विळङ्कुमो–प्रकाशित हो सकता है क्या; ऎन्ऱाळ्–कहती। २४३

वह उनको आभरणभूषित के रूप में कल्पना करती है और पूछती है कि क्या अति सुन्दर आभरणों में अति श्रेष्ठ आभरणों को चुनकर इसको पहनाएँ तो वे आभरण इसकी दर्शनीयता को बढ़ा सकेंगे ? वह निश्चय करती कि मणियों में श्रेष्ठ श्रीकौस्तुभमणि का शान और रूप-गौरव अन्य रत्नों द्वारा बढ़ाया जा नहीं सकता। २४३

करन्दिल	निलक्कण	मॅडुत्तुक्	काट्टिय
परन्दरु	नान्मुहन्	पऴिप्पुऱ्	ऱानॅरो
इरन्दिव	णिणॅयडिप्	पॉडियु	मेऱ्किलाप्
पुरन्दर	नुलहॅलाम्	पुरक्किन्	ऱानॅन्ऱाळ् 244

इवन् इणै अटि–इसके चरणद्वय की; पॉटियुम्–धूलि की महिमा; इरन्तुम् एऱ्किला–याचना करने पर भी जो प्राप्त न कर सकेगा; पुरन्तरन्–वह पुरन्दर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों का; पुरक्किन्ऱान्–पालन करता है; करन्तिलन्–बिना छिपाये; इलक्कणम् ॲट्टुत्तु काट्टिय–(सामुद्रिका-) लक्षणों के साथ इनकी रचना करनेवाले; परम् तरु नान्मुकन्–महिमायुक्त ब्रह्मा; पऴिप्पु उऱ्ऱान् अरो–अपराधी हो गया न; ॲन्ऱाळ्–कहती। २४४

इसके चरणद्वय की धूलि के समान भी पुरन्दर नहीं बन सकता। वह याचना कर पा लेने का प्रयास करे तो भी उसे इसकी-सी महिमा नहीं हो सकती। तो भी वह तीनों लोकों का पालन करता है! ब्रह्मा ने बिना किसी दुराव के सारे लक्षणों से युक्त कराके इसको रचा है तो क्या लाभ है? इसको तपस्वी वनाने से ब्रह्मा को अपयश मिल गया है। २४४

नीत्तमुम्	वानमुङ्	गुरुह	नॅञ्जिडैक्
कोत्तवन्	बुणर्विडैक्	कुळित्तु	मीक्कॉळ
एत्तवुम्	बरिविन्ऱोन्	ऱीह	लान्बॉरुळ्
कात्तवन्	बुहळॅनत्	तेयुङ्	गऱ्पिनाळ् 245

नीत्तमुम्–समुद्रजल; वानमुम्–और आकाश को; कुरुक–छोटा दिखने देते हुए; नॅञ्चु इटै कोत्त–अपने मन में अंकित; अन्पु उणर्वु इटै–कामेच्छा में; कुळित्तु–मग्न होकर; मी कॉळ–उस राग के बढ़ने से; एत्तवुम्–याचकों की प्रार्थना सुनकर भी; परिविन्–अनुताप करके; ऒन्ऱु ईकलान्–कुछ न देनेवाले; पॉरुळ् कात्तवन् पुकळ् ॲन–धन के परिग्रही (रक्षक) के यश के समान; तेयुम् कऱ्पिनाळ्–क्षीणप्राय स्त्रीत्व (शील-संयम) वाली। २४५

शूर्पणखा के मन में कामसागर इतना भर आया कि उसके विस्तार के सामने समुद्र का जल और आकाश का फैलाव छोटे दिखे। उसमें मग्न उसके मन में ज्यों-ज्यों कामेच्छा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों उसका स्त्रीसहज शील और संयम उस लोभी धनवान के यश के समान छीजने लगे, जो प्रार्थना करनेवाले याचक से सहानुभूति नहीं करता और न ही कुछ देता और धन की रक्षा करता है। २४५

❀ वान्ऱनिल्	वरैन्ददोर्	माद	रोवियम्
पोन्ऱन	णिन्ऱनळ्	पुळङ्गु	नॅञ्जिनाळ्
तोन्ऱरन्	शुडर्मणित्	तोळि	नाट्टङ्गळ्
ऊन्ऱिन	परिक्कवो	रूऱ्ऱम्	बॅऱ्ऱिलाळ् 246

पुळुङ्कुरा नॆञ्चिताळ्–(काम-) तप्तमना; तोन्ऱल् तन्–चक्रवर्ती-तनय के; चुटर् मणि तोळिन्–दीप्त-मणि-सम भुजाओं में; ऊन्ऱिन नाट्टङ्कळ्–गड़ी आँखों को; परिक्क–निकालने की; ओर् ऊऱ्ऱम् पॆऱ्ऱिलाळ्–आवश्यक शक्ति नहीं रखती थी; वान् तलिल् वरैन्त–आकाश में खींचे हुए; ओर् मातर् ओवियम् पोन्ऱनळ्–एक स्त्री (प्रेम की स्त्री) के चित्र के समान लगी; निन्ऱनळ्–खड़ी रही। २४६

उसका मन कामतप्त हो गया। उसमें अपनी दृष्टि को, जो श्रीराम के कांतिमय कंधों पर गड़ गयी थी, उखाड़ लेने की क्षमता नहीं रह गयी थी। इसलिए वह बीच आकाश में ही निस्पंद-सी खड़ी रह गयी। तब वह आकाश में खींचे गये स्त्रीचित्र (या प्रेमचित्र) के समान दिखी। २४६

❀ निन्ऱन ळिरुन्दव नॆडिय मार्बहम्
ऑन्ऱुवॆ नन्ऱॆनि लमुद मुण्णिनुम्
पॊन्ऱुवॆन् पोक्किनि यरिदु पोलॆनाच्
चॆन्ऱॆदिर् निऱ्पदोर् शॆय्है तेडुवाळ् 247

निन्ऱनळ्–स्तब्ध खड़ी रही; इरुन्तवन्–वहाँ स्थित उसका; नॆटिय मार्पु अकम्–विशाल वक्षस्थल पर; ऑन्ऱुवॆन्–लग जाऊँगी; अन्ऱु ऎनिल्–(वह) नहीं (हो सका) तो; अमुतम् उण्णिनुम्–अमृत खाऊँगी तो भी; पॊन्ऱुवॆन्–(इस काम-वेदना के कारण) मर जाऊँगी; पोक्कु इनि अरितु पोल् ऎना–कोई गति दूसरी नहीं शायद, यह सोचकर; ऎतिर् चॆन्ऱु निऱ्पतु–सामने जाकर स्थित होने का; ओर् चॆय्कै तेटुवाळ्–एक बहाना ढूँढ़ती। २४७

चित्र के समान स्थिर जो खड़ी रही, उस शूर्पणखा के मन में यह संकल्प उठा। वहाँ रहनेवाले उस पुरुष के विशाल वक्षस्थल में लिपट जाऊँगी। अगर वह नहीं हो सकता तो अमृत भी मुझे जीवित नहीं रख सकता— मैं मर जाऊँगी। कोई दूसरा चारा नहीं दीखता। अब श्रीराम के सामने आकर खड़ी होने के लिए मन में एक योग्य बहाना ढूँढ़ने लगी। २४७

❀ ऎयिरुडै यरक्कियॆव् वुयिरु मीट्टदोर्
वयिरुडै याळॆन मऱुक्कु मादलाल्
कुयिलॊडर् कुदलैयोर् कॊव्वै वायिळ
मयिलॊड रियलॆऴिल् मरुव नन्ऱॆना 248

ऎयिऱु उटै अरक्कि–वक्रदाँत वाली राक्षसी; ऎ उयिरुम् इट्टतु–सभी जीवों को जिसमें दफ़ना लिया है, उस; ओर् वयिऱु उटैयाळ्–उदर वाली है यह; ऎन–समझकर; मऱुक्कुम् आतलाल्–इनकार कर देगा, इसलिए; कुयिल् तॊटर्–कोयल-सम; कुतलै–मधुर वाणी; ओर् कॊव्वै वाय्–बिम्बाधर; इळमयिल् तॊटर्–(इनके साथ) बालमयूर की-सी छटा वाली; इयल् ऎऴिल्–स्वाभाविक शोभा को; मरुवल्–अपनाना; नन्ऱु ऎना–अच्छा, समझकर। २४८

उसे संशय था कि श्रीराम से इस रूप में मिलूँ तो वे अस्वीकार कर देंगे। वे यह सोचेंगे कि इस राक्षसी का पेट सभी जीवों को जीवित ही गाड़ देने का गड्ढा है। इसलिए उसने विचार किया कि मैं एक सुन्दरी का रूप धारण करूँगी। उसकी वाणी कोकिल की-सी होगी। उसके अधर बिंबफल के समान लाल होंगे। उसकी चमक-दमक बाल-मयूर की-सी होगी। और समूची सुन्दरता स्वाभाविक होगी। हाँ वही अच्छा कार्य होगा। २४८

❀ पङ्गयच् चॅल्वियै मनत्तुप् पाविया
अङ्गैयि नायमन् दिरत्तै यायन्दनळ्
तिङ्गळिऱ् चिऱन्दॊळिर् मुहत्तळ् चॅव्वियळ्
पॊङ्गॊळि विशुम्बिनिऱ् पॊलियत् तोन्ऱिनाळ् 249

पङ्कय चॅल्वियै–पंकज की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी को; मनत्तु पाविया–मन में ध्यान करके; अम् कैयिन् आय–खूब वश में रहे; मन्तिरत्तै–श्रीलक्ष्मी-मन्त्र को; आयन्तनळ्–जपा; तिङ्कळिल् चिऱन्तु–चन्द्र से बढ़कर; ऑळिर् मुकत्तळ्–शोभायमान मुख वाली; चॅव्वियळ्–और तरुण सुन्दरी बनी; पॊङ्कु ऑळि–अपनी छिटकती छटा को; विचुम्पिनिल् पॊलिय–आकाश में फैलने देते हुए; तोन्ऱिनाळ्–प्रकट हुई। २४९

उसने पंकजा श्रीलक्ष्मीदेवी का ध्यान किया। उसने लक्ष्मीदेवी का मंत्र वश कर रखा था। उसने वह मंत्र जपा। तब वह पूर्ण-चन्द्र से भी बढ़कर प्रभा छिटकानेवाला मुख, तरुण सौन्दर्य —इनसे युक्त होकर आकाश में अपना रूप-लावण्य-प्रकाश फैलाती हुई प्रकट हो गयी। २४९

पञ्जियॊळि विञ्जुकुळिर् पल्लव मनुङ्गच्
चॅञ्जॅविय कञ्जनिहर् शीऱडि पॆयर्प्पाळ्
अञ्जॊलिळ मञ्जैयॆन वन्नमॆन मिन्नुम्
वञ्जियॆन नञ्जमॆन वञ्जमहळ् वन्दाळ् 250

ऑळि विञ्चु–आभा में बढ़कर; पञ्चि–लाल रुई व; कुळिर् पल्लवम्–शीतल पल्लव को; अनुङ्क–(परास्तता का) दुख देते हुए; चॅम् चॅविय–लाल और सुन्दर; कञ्चम् निकर्–कंज-सम; चीऱटि–अपने छोटे पैरों को; पॆयर्प्पाळ्–रखती हुई; अम् चॊल् इळ मञ्ञै ऍन्न–सुन्दर बोली वाले बालमयूर के समान (छटा वाली); अन्नम् ऍन्न–हंस के समान (चाल वाली); मिन्नुम् वञ्चि ऍन्न–चमकती बिजली के समान; नञ्चम् ऍन्न–और विष के समान; वञ्च मकळ्–वंचकी नारी; वन्ताळ्–आई। २५०

फिर वह वंचकी निशाचरी श्रीराम के सामने आयी। कैसे ? उसके लाल, कंजतुल्य छोटे पैर लाल रुई और शीतल पल्लवों को मात दे रहे थे। वह कोकिल के समान मधुर-मधुर बोलनेवाले बालमयूर के

समान आभा वाली थी। वह बिजली की लता के समान और विषतुल्य थी। ऐसी वह मनोरम रूप से पग धरती हुई आयी। २५०

पॊऩ्ऩॊळुहु पूविऩॊडु पूविलुऱै पूवै
पिऩ्ऩॆळिल्हॊळ वाळिणै पिऱळ्ऩ्दॊळिर् मुहत्ताळ्
कऩ्ऩियॆळिल् कॊण्डदु कलैत्तड मणित्तेर्
मिऩ्ऩिऴिव तऩ्मैयदु विण्णिऴिव दॆऩ्ऩ 251

पॊऩ् ऒळ्कु—स्वर्ण-वर्ण के साथ; पूविऩ् ऒटु—और कान्ति के साथ; पूविल् उऱै—कमल के फूल पर रहनेवाली; पूवै—देवी, श्रीलक्ष्मी को; पिऩ् ऎळिल् कॊळ—सौंदर्य में पीछे ढकेलनेवाली सुन्दरता लेकर; वाळ् इणै—तलवार (-सम आँखों) के जोड़े; पिऱळ्न्तु ऒळिर्—जिसमें चलित होकर छवि दे रहे थे, वह; मुकत्ताळ्—मुख वाली; कऩ्ऩि ऎळिल् कॊण्टतु—एक अनोखी सुन्दरता लिये; कलै तट मणि तेर्—चित्रमयी विशाल सुन्दर रथ; मिऩ् इऴिव तऩ्मैयतु—बिजली गिरती-सी; विण् इऴिवतु ऎऩ्ऩ—आकाश से उतरता हो, ऐसा। २५१

शूर्पणखा स्वर्णवर्ण, कमलजा से भी बढ़कर सुन्दरी बन गयी। उसका मुख दो चंचल और तलवार-सम आँखों के साथ बहुत ही छविमान दिखा। वह आकाश से नीचे जब उतरती आयी तब वह एक अनोखे, चित्र-प्रतिमाओं से अलंकृत विशाल और सुन्दर रथ के समान लगी, जो बिजली उतरती हो ऐसा आकर्षण लेकर आकाश से उतर रहा था। २५१

❀ काऩ्ऱिलुयर् कऱ्पह मुयिर्त्त कदिर्वल्लि
मेऩ्ऩिऩऩ् पॆऱ्ऱुविळै कामनॆऱि वाशत्
तेऩिऩ्मॊऴि युऱ्ऱियिय शॆव्विऩऩि कॊण्डोर्
माऩिऩ्विऴि पॆऱ्ऱुमयिल् वन्ददॆऩ्ऩ वन्दाळ् 252

ओर् मयिल्—एक मोर; कातिल् उयर्—सुगन्धि में बढ़े हुए; कऱ्पकम् उयिर्त्त—कल्पकतरु-सृष्ट; कतिर् वल्लि—उज्ज्वल कामलता का; मेऩि नऩि पॆऱ्ऱु—रूप-सौंदर्य पाकर; काम नॆऱि—काम-मार्ग में; वाच तेऩिऩ् मॊऴि उऱ्ऱु—सुबासपूर्ण शहद की-सी बोली के साथ; इतिय चॆव्वि नऩि कॊण्टु—मनोरम छटा से खूब पूर्ण होकर; माऩ् विऴि पॆऱ्ऱु—मृग के-से नयन ले; वन्ततु ऎऩ्ऩ—आया हो, ऐसा; वन्ताळ्—आई। २५२

फिर वह भूमि पर एक विचित्र मयूर के समान चलती आयी। कैसा मयूर? समझिए कि एक मयूर को सुबासित कल्पतरु द्वारा सृजित आभा-युक्त कल्पवल्ली का रूप मिल गया। सुबासपूर्ण शहद-सी मधुर बोली, बड़ी ही आकर्षक सुन्दरता और हरिण की-सी आँखें प्राप्त हो गयीं। ऐसा एक मयूर पैदल आता हो ऐसे आकर्षण के साथ वह आयी। २५२

❀ नूबुरमु मेहलैयु नूलुमऱ लोदिप्
पूमुरलुम् वणडमिवै पूशलिड मोवै

तामुरैशॅय् हिलुरदॅरु तैयल्वरु मलुनाक्
कोमहनु मलुतिशं कुरित्तनन् विळित्तान् 253

नूपुरमुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–और मेखला; नूलुम्–हार; अरल् ओति–काले बालू के समान केश के; पू मुरलुम्–पुष्पों पर गुंजार करनेवाले; वण्टुम्–भ्रमर; इवै–इनके; पूचल् इटुम् ओतै–जो मचाते थे, वह शब्द; ऑरु तैयल् वरुम् ॲन्ऩा–एक स्त्री आ रही है, ऐसा; उरै चॅय्किन्ऱतु–घोषणा कर रहा है; कोमकनुम्–चक्रवर्ती-सुत ने भी; अ तिचै–उस दिशा; कुरित्तनन्–को लक्ष्य करके; विळित्तान्–देखा। २५३

उसके नूपुर, मेखला, हार, केशालंकार के पुष्प पर गुंजार करनेवाले अलिकुल सब हर्षरव कर रहे थे। वह शब्द यह घोषणा कर रहा था कि कोई स्त्री आ रही है। चक्रवर्तीसुत दाशरथी ने यह जाना और उस दिशा में दृष्टि दौड़ाई, जहाँ से यह ध्वनि आ रही थी। (तुलसीदासजी ने इस ध्वनि को मदनदुंदुभी कहा है, पर वह सीताजी के मिलन के मंगलमयी पवित्र प्रसंग में।)। २५३

❀ विण्णरुळ वन्ददॅरु मॅल्लमुद मॅन्न
वण्णमुलै कॉण्डिडै वणङ्गवरु पोऴ्दत्
तॅण्णरुळि येळ्मै तुडैत्तॅऴुमॅय्ञ् ञानक्
कण्णरुळ्शॅय् कण्णनिरु कण्णिलॅदिर् कण्डान् 254

विण्–आकाश (स्वर्ग); ऑरु मॅल् अमुतम्–अनुपम और नरम सुधा; अरुळ वन्ततु ॲन्न–देने की कृपा करने आया जैसे; वण्ण मुलै कॉण्टु–आकर्षक उरोजों के साथ; इटै वणङ्क–कमर लचकाते हुए; वरु पॊऴ्ततु–जब वह आई तब; ॲण् अरुळि–बुद्धिशक्ति प्रदान कर; एळ्मै तुटैत्तु–अज्ञान दूर करके; ॲऴुम्–ऊपर उगनेवाली; मॅय् ञान कण् अरुळुम्–सच्ची ज्ञान-दृष्टि दिलाने की कृपा करनेवाले; कण्णन्–सर्वनेत्र श्रीराम ने; इरु कण्णिल् ॲतिर् कण्टान्–अपनी दोनों आँखों से (उसको) देखा। २५४

स्वर्ग अमृत दिलाने लाया हो, ऐसे स्तनों वाली और लचकती कमर वाली, शूर्पणखा जब आ रही थी तब श्रीराम ने, जो जीवों को विवेक देकर, तद्वारा अज्ञान मिटाकर, फलस्वरूप ज्ञानदृष्टि दिलानेवाले, सब नेत्रों के नेत्र, परब्रह्म हैं, अपनी दोनों आँखों से उसको देखा। २५४

❀ पेरुळैय नाहरुल हिऱ्पिऱिदु वानिल्
पारुळैयि लिल्लदॅरु सॅल्लुरुवु पारा
आरुळैय डङ्गुमॅऴ हिट्कवदि युण्डो
नेरिऴैयर् यावरिव णॅरॅन निनैन्दान् 255

पेर् उळैय–बहुत विशाल थल वाला; नाकर् उलकिल्–नागलोक में; पिऱितु वानिल्–उससे भिन्न स्वर्गलोक में; पार् उळैयिल्–भूतल में; इल्लतु–अप्राप्य; ऑरु–

अनुपम एक; मॆल् उरुवु पारा–कोमल रूप को देखकर; आर्–कौन; उळै अटङ्कुम् अळकिऱ्कु–इसमें समाविष्ट सुन्दरता का; अवति उण्टो–ठिकाना है क्या; नेरिऴैयर्–आभरणधारिणी नारियाँ; यार् इवळ् नेर्–कौन इसके समान हैं; ॲन निऩैन्ताऩ्–ऐसा सोचा (श्रीराम ने)। २५५

विस्तृत नागलोक में, उससे भिन्न स्वर्ग में, या भूलोक में कहीं भी अप्राप्य था एक ऐसा कोमल रूप। श्रीराम सोचने लगे कि यह कौन है? इसमें समाविष्ट सुन्दरता का ठिकाना भी है? कौन आभरणभूषिता नारियाँ हैं जो इसकी समानता कर सकती हैं?। २५५

❀ अव्वयिऩव् वाशैतऩ हत्तुडैय वऩ्ऩाळ्
शॆव्विमुह मुऩ्ऩियडि शॆङ्गैयि ऩिऱैञ्जा
वॆव्विय नॆडुङ्गणयिल् वीशिययल् पारा
नव्वियि ऩॊदुङ्गियिऱै नाणियय निऩ्ऱाळ् 256

अ वयिऩ्–उस समय; अ आचै–वह राग; तऩ्तु अकत्तु उटैय–अपने मन में रखनेवाली; अऩ्ऩाळ्–वह (शूर्पणखा); चॆव्वि मुकम् मुऩ्ऩि–श्रीराम के मनोहर मुख को देख; अटि–उनके श्रीचरणों को; चॆम् कैयिऩ् इऱैञ्चा–लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करके; वॆव्विय–सालनेवाला; नॆटुम् कण्–दीर्घ आँखों का; अयिल्–(दृष्टि रूपी) भाला; वीचि–फेंककर; अयल् पारा–आँख चुराकर दूसरी ओर देखती हुई; नव्वियिऩ् ऒतुङ्कि–हरिण के समान एक ओर हटकर; इऱै नाणि–थोड़ा लजाती हुई; अयल् निऩ्ऱाळ्–(श्रीराम के) पास खड़ी रही। २५६

तब तक शूर्पणखा श्रीराम के मुख के सामने आ गयी। उसने अपने मनोरम हाथ जोड़कर श्रीराम के चरणों को नमस्कार किया। अपने लाल डोरों सहित नेत्रों की भाला-सम दृष्टि श्रीराम पर फेंकी। झट आँख चुराकर दूसरी ओर देखने लगी। भीरु मृगी के समान थोड़ा हटी। लाज का किंचित प्रदर्शन किया। इन सब नखरों के साथ वह उनके पास खड़ी रही। २५६

❀ तीदिल्वर वाहतिरु निऩ्वरवु शेयोय्
पोदवुळ दॆम्मुळैयॊर् पुण्णियम दऩ्ऱो
एदुपदि येदुपॆयर् यावरुऱ वॆऩ्ऱाऩ्
वेदमुदल् पेदैयव डऩ्ऩिलै विरिप्पाळ् 257

चेयोय्–अपरिचित (या श्रीलक्ष्मी-सम) स्त्री; निऩ् तिरु वरवु–तुम्हारा श्रेष्ठ आगमन; तीतु इल्–अमंगलहीन (शुभ); वरवु आक–आगमन हो; पोत–तुम आओ इसका; ॲम् उळै–हमारे पास; ओर् पुण्णियम् अतु अऩ्ऱो–एक सुकृत रहा है न; एतु पति–कौन सा स्थान; एतु पॆयर्–कौन सा नाम; यावर् उऱवु–रिश्तेदार कौन हैं; वेत मुतल्–वेदमूल ने; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा; पेतै अवळ्–अबोध ने; तऩ् निलै–अपना वृत्तान्त; विरिप्पाळ्–विस्तार से कहा। २५७

श्रीराम ने सम्भाषण आरम्भ किया। आगन्तुक अजनबी ! (चेयोय् का अर्थ लक्ष्मी भी हो सकता है।) तुम्हारा वर आगमन अमंगलरहित शुभ आगमन हो ! हमने पुण्य किया है, यह सच है तभी तो तुम आयी हो ! तुम्हारा वासस्थान कौन सा ? नाम क्या ? तुम्हारे रिश्तेदार कौन हैं ? —वेदमूल (बोध का आधार) श्रीराम ने प्रश्न किया। अबोध (बोध-हीन) शूर्पणखा अपना वृत्तान्त विस्तार से सुनाने लगी। २५७

❀ पूविलोऩ् पुदल्वऩ् मैन्दऩ् पुदल्विमुप् पुरङ्गळ् शॅऱ्ऱ
शेवलोऩ् तुणैव ऩाऩ शॅङ्गैयोन् ऱङ्गै तिक्किन्
मावॅलान् दॉलैत्तु वॅळ्ळि मलैयॅडुत् तुलह मूऩ्ऱुम्
कावलोऩ् पिऩ्ऩै काम वल्लियाङ् गऩ्ऩि यॅऩ्ऱाळ् 258

पूविलोऩ्–कमलासन के; पुतल्वऩ् मैन्तऩ्–पुत्र के पुत्र की; पुतल्वि–दुहिता हूँ; मु पुरङ्कळ् चॅऱ्ऱ–त्रिपुरदाहक; चे वलोऩ्–ऋषभवाहन के; तुणैवऩ् आऩ–मित्र; चॅम् कैयोऩ्–लाल (दान देते-देते लाल बने) हाथ वाले कुबेर की; तङ्कै–छोटी बहिन; तिक्किऩ् मा–दिग्गज; ऍलाम् तॉलैत्तु–सारे भगाकर; वॅळ्ळि मलै ऍटुत्तु–चाँदी के पर्वत (कैलास) को उठाया (जिसने); उलकम् मूऩ्ऱुम् कावलोऩ्–लोकत्रयी का पालक; पिऩ्ऩै–उस रावण की अनुजा; काम वल्लि–कामवल्ली; आम्–नाम की; कऩ्ऩि–कन्या; ऍऩ्ऱाळ्–(अपना परिचय) कहा। २५८

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के पुत्र (विश्रवा) की पुत्री हूँ। त्रिपुर जलानेवाले ऋषभवाहन शिवजी के मित्र दान देते-देते लाल बने हाथ वाले कुबेर की बहिन हूँ। दिग्गजों को भगानेवाले, चाँदी के पर्वत (कैलास) को उखाड़नेवाले त्रिलोकाधिपति रावण की अनुजा हूँ। मेरा नाम कामवल्ली है। (बार-बार शिवजी की चर्चा त्रिपुरांतक, त्रिपुरदाहक आदि के साथ आयी है। उसका संक्षिप्त विवरण यों है— तारकासुर के पुत्र विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष थे। इन्होंने कठोर तपस्या की और अपार बल-वैभव पा लिया। मय ने इनके लिए स्वर्ण, चाँदी और लोहों के प्राचीरों से युक्त तीन नगर निर्मित किये। ये नगर जहाँ चाहे उड़े जा सकते थे। वे तीनों असुर इनका उपयोग कर सर्वत्र जाते और सितम ढाते। देवों और मुनियों ने मिलकर शिवजी से प्रार्थना की। शिवजी ने भूमि को रथ, वेदों को चार अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु को धनुष, आदिशेषनाग को प्रत्यंचा, विष्णु रूपी पंखों से युक्त अग्नि को अस्त्र और अन्य देवों को अन्य अस्त्र-शस्त्र बना लिया। फिर युद्धसन्नद्ध हो चले। उन्होंने एक विचित्र हास के साथ उन असुरों को मय उनके नगरों के जला डाला। शूर्पणखा ने अपनी वंशावली की तीन पीढ़ियों की चर्चा की। क्योंकि उसका उद्देश्य 'विवाह' था।)। २५८

अव्वुरै केट्ट वीर नैयुरु मनत्तान् शॅय्है
शॅव्विदन् ऱ्ऱियलाहुम् जिऱिदि नॅन्ऱु णराच् चॅङ्गण्
वॅव्वुरु वमैन्दोन् ऱङ्गै यॅन्ऱदु मॅय्म्मै याहिल्
इव्वुरु वमैन्द तन्मै यियम्बुदि विरैवि नॅन्ऱान् 259

अ उरै केट्ट—वह कथन सुनकर; ऐ उऱु मनत्तान्—शंकितमन होकर; चॅय्कै चॅव्वितु अन्ऱु—इसके (हाव-भाव और) कार्य अच्छे नहीं; चिऱितिन् अऱितल् आकुम्—थोड़ा समझना आवश्यक है; ॲन्ऱु उणरा—ऐसा महसूस करके; चॅम् कण्—रक्तिम आँखों और; वॅम् उरु अमैन्तोन्—भयंकर रूप वाले (रावण) की; तङ्कै ॲन्ऱतु—बहिन कहा जो, सो; मॅय्म्मै आकिल्—सच है तो; इ उरु अमैन्त तन्मै—यह रूप (कैसे) मिला, वह प्रकार; विरैविन् इयम्पुति—शीघ्र बताओ; ॲन्ऱान्—पूछा। २५९

शूर्पणखा का यह कथन सुनकर (उसकी अदाओं से) श्रीराम के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ। श्रीवीरराघव ने सोचा कि इसका कार्य भला नहीं लगता। थोड़ा जाँचकर समझा जा सकता है। यह सोचकर उन्होंने शूर्पणखा से पूछा कि लाल आँखों वाले और भयंकर रूप वाले रावण की बहिन होने की बात सत्य है, तो तुम्हें यह रूप कैसे मिला ? शीघ्र बताओ। २५९

तूयवन् पणिया मुन्नम् जॊल्लुवाळ् शोर्वि लाळम्
मायवल् लरक्क रोडुम् वाऴ्विनै मदिक्कि लादे
आय्वुरु मनत्ते नाहि यऱन्दलै निऱ्पदानेन्
तीविनै तीय नोऱ्ऱुत् तेवरिऱ् पॅऱ्ऱ दॅन्ऱाळ् 260

तूयवन् पणिया मुन्नम्—पवित्र पुरुष श्रीराम के पूछने पर; चोर्वु इलाळ्—उत्सुक उसने; अ माय वल् अरक्करोटुम्—उन माया में समर्थ राक्षसों के साथ; वाऴ्विनै—जीवन को; मतिक्किलाते—उचित न मानकर; आय्वु उऱु मनत्तेन् आकि—विवेक से भरे मन वाली होकर; अऱम् तलै निऱ्पतु आतेन्—धर्मावलम्बी बनी; तीविनै तीय—पाप जलाने (मिटाने) के लिए; नोऱ्ऱु—तपस्या करके; तेवरिल्—देवों की कृपा से; पॅऱ्ऱतु—(जो) पाया (वह) यह है; ॲन्ऱाळ्—उत्तर दिया। २६०

पवित्र मन वाले श्रीराम ने जब ऐसा प्रश्न किया, तो शूर्पणखा समझ सकती थी कि श्रीराम इसके मन की बात माननेवाले अपवित्र-चरित्र नहीं हैं। तो भी वह हतोत्साह होनेवाली नहीं थी। उसने उत्तर दिया कि मैं उन मायाकार्य में प्रवृत्त और चतुर राक्षसों के साथ रहना उचित नहीं समझकर विवेकशीला बन गयी हूँ। धर्ममार्गावलम्बी हो गयी। अपने सभी पापों को, तपस्या करके जला दिया। देवों की कृपा से प्राप्त यह रूप है। २६०

इमैयवर् तलैव नेयु मॅळिमैयि नेवल् शॅय्युम्
अमैदियि नुलह मून्ऱु माळ्बवन् ऱङ्गै याहिल्

शुमैयुरु शॅल्वत् तोडुन् दोन्ऱलै तुणैयु मिन्ऱित्
तमियणी वरुदर् कॉत्त तन्मैयॅन् ऱैय लॅन्ड्रान् 261

तैयल्–नारी; इमैयवर् तलैवन् ए उन्–देवेन्द्र भी; ॲंळिमैयिन्–दीन बनकर; एवल् चॅय्युम्–जिसकी सेवा करता है; अमैतियिन्–उस स्थिति में; उलकम् मून्ऱुम् आळ्पवन्–जो त्रिलोकाधिपत्य करता है, उस रावण की; तङ्कै आकिल्–बहिन हो तो; चुमै उरु–गुरु; चॅल्वत्तोटुम्–धन-वैभव के साथ; तोन्ऱलै–नहीं दिखाई देती; तुणैयुम् इन्ऱि–सहायक से रहित; तमियळ्–अकेली; वरुतर्कु–आओ, इसका; ऑत्त तन्मै–योग्य कारण; ॲन्–कौन सा है; ॲन्ऱान्–पूछा। २६१

श्रीराम ने आगे पूछा— हे नारी ! तुम कहती हो कि रावण की भगिनी हूँ। रावण त्रिलोकाधिपति है। देवों के राजा देवेन्द्र भी उसका किंकर होकर उसकी सेवा-टहल करता है। वह बड़ा ही श्रीमंत है। उसके भारी धन-वैभव के योग्य रूप में तुम नहीं दिखाई देतीं। और भी तुम अकेली और कोई साथी-संगी के विना आयी हो। ऐसा दीन-हीन और असहाय आना क्योंकर हुआ ? कारण क्या है ? । २६१

वीरनः(ह्) दुरैत्त लोड् मॅय्यिलाळ् विमल यानच्
चीरिय रल्लार् माट्टुच् चॅर्हिलॅन् ऱेवर् पालुम्
आरिय मुनिवर् पालु मडैन्दनॅ निऱैव वीण्डोर्
कारिय मुण्मै निन्नैक् काणिय वन्दे नॅन्ड्राळ् 262

वीरन्–वीर के; अ.·.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मॅय् इलाळ–असत्यवादी ने; विमल–निर्मल; यान्–मैं; अ चीरियर् अल्लार् माट्टु–उन श्रेष्ठताहीन (नीच) लोगों से; चेर्किलॅन्–नहीं मिल सकती; तेवर् पालुम्–देवों के पास और; आरिय मुनिवर् पालुम्–सुशील मुनियों के पास; अटैन्तनॅन्–आकर रहती हूँ; इऱैव–नाथ; ईण्टु ओर् कारियम् उण्मै–इधर मेरा एक कार्य है, इसलिए; निन्नै काणिय वन्तेन्–तुमको देखने आई; ॲन्ऱाळ्–कहा। २६२

श्रीवीरराघव के इस प्रश्न के उत्तर में उस मिथ्याभाषिणी ने कहा कि विमल वीर ! मैं उन नीच लोगों से नहीं मिलती। देवों और मुनियों से ही सम्पर्क रखती हूँ। प्रभु ! मेरा एक कार्य है। उसी के सिलसिले में मैं तुमसे भेंट करने आयी हूँ। २६२

अन्नव ळुरैत्त लोडु मैयनु मरिदर् कॉव्वा
नन्नुदन् मह्ळिर् शिन्दै नन्नॅरिप् पाल वल्ल
पिन्निदु तॅरियु मॅन्नाप् पॅय्वळैत् तोळि यॅन्बाल्
ॲन्नका रियत्तै शॉल्लः(ह्) दियैयुमे लिळैप्प लॅन्ड्रान् 263

अन्नवळ्–उसके; उरैत्तलोटुम्–कह चुकते ही; ऐयनुम्–प्रभु ने भी; नल् नुतल् मकळिर् चिन्तै–सुन्दर भाल वाली इस स्त्री का अभिप्राय; अरितर्कु ऑव्वा–

जानने में आनेवाला नहीं होता; नल् नॅरि पाल अल्ल–अच्छे पथ पर जानेवाला नहीं लगता; इतु–यह (इसका सत्य); पिन् तॅरियुम्–पीछे मालूम होगा; ऍन्ऩा–विचार करके; पॅय् वळै तोळि–भुजवलय-भूषित कंधों वाली; ऍऩ् पाल्–मेरे पास; ऍन्ऩ कारियत्तै–कौन से कार्य की अपेक्षा करती हो; चॊल्–कहो; अ.'.तु इयैयुमेल्–वह युक्त हो तो; इळैप्पल्–करूँगा; ऍन्ऱाऩ्–कहा। २६३

उसका वह उत्तर सुनकर श्रीराम ने सोचा कि इस सुन्दर भाल वाली के (मन के अंदर रहनेवाले) विचार हमारे जानने में नहीं आते। पर वे सन्मार्गगामी नहीं लगते। इसका सत्य पीछे मालूम होगा। फिर उन्होंने उससे कहा— हे अंगदालंकृत कंधों वाली ! मेरे पास क्या उद्देश्य ले आयी हो ? बताओ। अगर वह उचित और कार्यसाध्य होगा, तो अवश्य करूँगा। २६३

तामुरु कामत् तन्मै ताङ्गळे युरैप्प दॅन्ब
दामॆन लाव दन्ऱा लरुङ्गुल महळिर्क् कम्मा
एमुरु मुयिर्क्कु नोवे नॅन्शॅय्हेन् यारु मिल्लेन्
कामनॆन् ऱोरुवन् शॅय्युम् वन्मैयैक् कात्ति यॆन्ऱाळ् 264

ताम् उऱु–आप में उठी; काम तन्मै–कामेच्छा की स्थिति; ताङ्कळे उरॅप्पतु ऍन्पतु–स्वयं कहना, यह; अरुम् कुल मकळिर्क्कु–उत्तम कुल की स्त्रियों के लिए; आम् ऍनल्–हो सकेगा, ऐसा कहना; आवतु अन्ऱु–होनेवाला नहीं है; एम् उऱुम्–मोहमग्न; उयिर्क्कु–अपना जीवन रखने के लिए; नोवेन्–तड़प रही हूँ; ऍन् चॅय्केन्–क्या कर सकूँगी; यारुम् इल्लेन्–(अपना) कोई नहीं रखती; कामन् ऍन्ऱु ऒरुवन्–मन्मथ नाम का कोई; चॅय्युम्–(जो) करता है; वन्मैयै–उस अत्याचार को; कात्ति–रोककर (मुझे) बचाओ; (अम्मा–री मैया); ऍन्ऱाळ्–कहा। २६४

उसके उत्तर में शूर्पणखा ने कहा कि कुलीन स्त्रियों के लिए अपने काम की चर्चा स्वयं करना साध्यकाम समझना ठीक नहीं है। री मैया ! वह कठिन है। मेरा प्राण अब मोहमग्न होकर क्षीण हो रहा है। उसे बचाने को तरस रही हूँ। क्या करूँ ? मेरे कोई सहायक भी नहीं हैं। अब काम नाम का वह मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है। उसकी क्रूरता को रोको और मेरी रक्षा करो। २६४

शेणुऱ नीण्डु मीण्डु शव्वरि शिदऱि वॆव्वे
ऱेणुऱ मिळिर्न्दु नाना विदम्बुरण् डिरुण्ड वाट्कण्
पूणियल् कॊङ्गै यन्ना ळम्मौळि पुहल लोडुम्
नाणिल ळैय णोय्य णल्लळु मल्ल ळॆन्ऱान् 265

चेण् उऱ नीण्टु–दूर तक जाकर; मीण्टु–(स्थानाभाव से) लौटकर; चॆम् अरि चितऱि–लाल डोरे (जिनमें) फैले रहे; वॆव्वेऱु एण् उऱ–विविध वैशिष्ट्यों से भरे; मिळिर्न्तु–चलित होकर; नाना वितम् पुरण्टु–नाना प्रकार से घूमकर; इरुण्ट–

अन्धकार के समान काले; वाळ् कण्—तलवार-सम नेत्रों वाली; पूण् इयल् कोङ्कै—आभरणभूषित स्तनों वाली; अऩ्ऩाळ्—उस (शूर्पणखा) के; अ मोऴि—वह वचन; पुकललोटुम्—कहने पर; नाण् इलळ्—निर्लज्ज है; ऐय नोय्यळ्—बहुत ही नीच है; नल्लळुम् अल्लळ्—भली भी नहीं है; ऍऩ्ऱाऩ्—(श्रीराम ने) समझा। २६५

यह कहते हुए उसने जो नखरे दिखाये, वे उसकी निर्लज्जता को साफ़ प्रकट करते थे। उसकी आँखें, लम्बी जाकर स्थानाभाव के कारण मुड़ी हों, इतनी लम्बी थीं और विचित्र अदाएँ दिखाती हुई विविध प्रकार से चलित होती थीं। वे अन्धकार के समान काली थीं और तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके स्तन आभरणों से शोभित थे। ऐसी उसने जब वह कथन किया तब, श्रीराम समझे कि यह अतीव निर्लज्ज है। यही नहीं, वह बड़ी ओछी भी है। भली स्त्री नहीं है। २६५

पेशल निऱुन्द वळ्ळ लुळ्ळत्तिऩ् पॆऱ्ऱि योराळ्
पूशलवण् डरऱ्ऱुङ् गून्दऱ् पॊय्म्महळ् पुहऩ्ऱ वॆऩ्गण्
आशैकण् डरुळिऱ् ऱुण्डो वऩ्ऱॆऩ लुण्डो वॆऩ्ऩुम्
ऊशलि ऩुलावु हिऩ्ऱाण् मीट्टुमो ऱुरैयॆच् चॊऩ्ऩाळ् 266

पेचलऩ् इरुन्त वळ्ळल्—(विचारमग्न) बिना कुछ कहे जो रहे, उन उदार प्रभु के; उळ्ळत्तिऩ् पॆऱ्ऱि ओराळ्—मन की स्थिति समझ नहीं सकी; वण्टु पूचल् अरऱ्ऱुम्—भ्रमर नाद करते हैं (जिस पर बैठकर); कून्तल्—वैसा केश वाली; पॊय् मकळ्—मायाविनी; पुकऩ्ऱ—(इसके) कथित वचन; ऍऩ् कण्—मेरे प्रति; आचै कण्टु—प्रेम करके; अरुळिऱ्ऱु उण्टो—कृपा करने के फलस्वरूप हैं; अऩ्ऱु ऍऩल् उण्टो—'न' ऐसा कहना है; ऍऩ्ऩुम्—ऐसे (दो); ऊचलिऩ्—विचारों के बीच में झूलने में जैसे; उलावुकिऩ्ऱाळ्—डोलायमान रहनेवाली; मीट्टुम् ओर् उरै चॊऩ्ऩाळ्—फिर एक बात कहने लगी। २६६

यह सोचते हुए वे मौन रह गये। मायाविनी शूर्पणखा, जिसके केश पर सज्जित पुष्पों पर अलिकुल गुंजार कर रहे थे, श्रीराम के मन के भाव को समझ नहीं सकी। 'इसने जो कहा क्या वह मेरे ऊपर प्रेम करने की कृपा के फलस्वरूप था? या वह इन्कार करने के लिए था?' इन दो विचारों के बीच उसका मन झूले के समान झूलने लगा। फिर उसने एक बात कही। २६६

ऍऴुदरु मेऩि यायीण् डॆय्दिय दऱिन्दि लादेऩ्
मुऴुदुणर् मुऩिव रेवऱ् चॆय्दॊऴिऩ् मुऱैयिऩ् मुऱ्ऱिप्
पऴुदऱु पॆण्मै योडु मिळमैयुम् बयऩिऩ् ऱेहप्
पॊऴुदॊडु नाळुम् वाळा कऴिन्दऩ पोलु मॆऩ्ऱाळ् 267

ऍऴुतु अरु मेऩियाय्—(जिसका) चित्र खींचना कठिन है, वैसे रूपधर; ईण्टु

ॲय्तियतु–तुम्हारा यहाँ आगमन; अरिन्तिलातेन्–नहीं जानती मैं; मुळ्ळुतु उणर्–सर्वज्ञ; मुतिवर् एवल्–महर्षियों की आज्ञा से; चॅय् तॊळिल्–उनकी सेवा-टहल; मुट्रॅयिन् मुट्रि–यथाविधि पूरा करके; पळ्ळुतु अऱ्ऱु पॅण्मैयोटुम्–अकलंकित स्त्रीत्व के साथ; इळमैयुम्–यौवन को भी; पयन् इन्ऱि एक–व्यर्थ बीतने देते हुए; पॊळ्ळुतॊटु नाळुम्–समयों के साथ दिन भी; वाळा कळिन्तन–व्यर्थ बीत गये; ॲन्ट्राळ्–कहा। २६७

ऐसे सुन्दर रूप वाले, जिसका चित्र खींचना कठिन है ! तुम इधर आये, यह मैं नहीं जानती थी। इसलिए सर्वज्ञ मुनियों की सेवा-टहल में श्रद्धा के साथ लगी रह गयी और मेरे अकलंक चरित्र के साथ मेरे यौवन को भी निरर्थक बनाते हुए अनेक काल यों ही व्यर्थ बीत गये। २६७

निन्दनै यरक्कि नीदि निलैयिलाळ् विनैमऱ् ऱॅण्णि
वन्दन ळाहु मॅन्ऱे वळ्ळलु मनत्तुट् कॊण्डान्
सुन्दरि मणत्तिऱ् कॊत्त तॊन्मैयिन् ऱुणिविऱ् ऱन्ऱाल्
अन्दणर् पावै नीया नरशरिल् वन्दे नॅन्ऱान् 268

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु ने भी; निन्ततै अरक्कि–निन्द्य निशाचरी है; नीति निलै इलाळ्–नैतिक स्थिति वाली नहीं; मऱ्ऱु वितै ऍण्णि–कोई दूसरा (बुरा) कार्य सोचकर; वन्ततळ् आकुम्–आयी हुई है, यही होना चाहिए; ॲन्ऱे–ऐसे ही; मतत्तुळ् कॊण्टान्–मन में धारणा कर ली; चुन्तरी–सुन्दरी; नी अन्तणर् पावै–तुम ब्राह्मण-कन्या हो; यान्–मैं; अरचरिल् वन्तेन्–राजाओं (के कुल) में पैदा हुआ (क्षत्रिय) हूँ; मणत्तिऱ्कु ऒत्त–विवाह-क्रम के योग्य; तॊन्मैयिन् तुणिपिऱ्ऱु अन्ऱु–प्राचीन प्रथा को पुष्ट करनेवाला नहीं; ॲन्ऱान्–कहा। २६८

प्रभु को विश्वास हो गया कि यह निन्द्य निशाचरी है। न्याय-मार्ग पर जानेवाली नहीं है। कोई भयंकर उद्देश्य लेकर इधर आयी है। यह दृढ़ धारणा करके प्रभु ने समझाया कि सुन्दरी ! तुम ब्राह्मण-कुल-कन्या हो। मैं तो क्षत्रिय राजकुल का हूँ। विवाह सम्बन्धी जो क्रम निर्धारित हुए हैं, उन प्राचीन क्रमों के अनुसार हमारा विवाह होने योग्य नहीं है। २६८

आरण मऱैयो नॅन्दै यरुन्ददिक् कऱ्पि नॅम्मोय्
तारणि पुरन्द शाल कडङ्गडर् मरबिऱ् ऱैयल्
पोरणि पॊलङ्गॊळ् वेलोय् पॊरुन्दलै यिहळ्दऱ् कॊत्त
कारण मिदुवे याहि लॅत्तुयिर् काण्बॆ नॅन्ऱाळ् 269

पोर् अणि–युद्ध ही जिसका शृंगार हो, ऐसे; पॊलन् कॊळ् वेलोय्–सुन्दर शक्ति-धारी; ॲन्तै–मेरे पिता; आरण मऱैयोन्–वेदज्ञ विप्र हैं; अरुन्तति कऱ्पिन्–अरुन्धती-सम पतिव्रता; ॲम् ओय्–मेरी माँ; तारणि पुरन्त–धरणीपालक; चालकटङ्कटर्–सालकटंकट के; मरपिल् तैयल्–वंश की पुत्री है; पॊरुन्तलै–सम्मत

न होकर; इकऴ्तर्कु ओत्त–उपेक्षा करने के लिए युक्त; कारणम् इतुवे आकिल्–कारण यही है, तो; ऍन् उयिर् काण्पॆन्–अपनी जान को (बचा हुआ) पा जाऊँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। २६९

शूर्पणखा ने उत्तर में कहा कि युद्ध ही जिसका शृंगार है, ऐसे उज्ज्वल भाला के धारी ! तुम यह जान लो कि मेरे पिता वेदज्ञ ब्राह्मण थे, पर अरुन्धती ही सम पतिव्रता मेरी माता धरणी के पालक 'सालकटंकट' नाम के राजवंश की संतान थी। (अध्यात्म रामायण के अनुसार तृणबिंदु राजा के सालकटंकटा नाम की लड़की थी। उसके पेट से विश्रवस के वर से शूर्पणखा पैदा हुई। दूसरा वृत्तान्त है कि राक्षस-कुल के हेति का पुत्र विद्युतकेश था। उसने सालकटंकटा से विवाह किया और उनके पुत्र माल्यवान, मालि और सुमालि थे। उनमें सुमाली की पुत्री कैकशी थी, जिसके रावण, शूर्पणखा आदि सन्तानें थीं।) अगर तुम्हारी अस्वीकृति का कारण इतना ही था तो मैं बच गयी। क्षत्रिय से विवाह करने का मेरा अधिकार स्वतः सिद्ध है। इसलिए तुमसे विवाह न होने की हालत में जीवन त्यागने का विचार जो मैंने किया था अब उस विचार को त्याग दूँगी और अपने को जीवित रखूँगी। २६९

अरुत्तिय ळन्न कूऱ वहत्तुरु नहैयिन् वॆळ्ळैक्
कुरुत्तॆळु हिन्ऱ नीलक् कॊण्डलुण् डाट्टङ् गॊण्डान्
वरुत्तनीङ् गरक्कर् तम्मिन् मानुडर् मणत्त नङ्गै
पॊरुत्तमन् ऱॆन्ऱु शालप् पुलैमैयोर् पुहल्व रॆन्ऱान् 270

अरुत्तियळ्–अर्थिनी के; अन्न कूऱ–ऐसा कहने पर; अकत्तु उरु नकैयिन्–अन्दर उठे हास के; वॆळ्ळै कुरुत्तु–श्वेत अंकुर; ऍळुकिन्ऱ–फूट निकलते हों, ऐसे मन्दहास के साथ; नील कॊण्टल्–श्यामलमेघ-सम श्रीराम ने; उण्टाट्टम् कॊण्टान्–एक लीला रची; नङ्कै–वाले; वरुत्तम् नीङ्कु–जो दुख से दूर हैं, उन; अरक्कर् तम्मिन्–राक्षसों से; मानुटर् मणत्तल्–मानवों का विवाह करना; पॊरुत्तम् अन्ऱु–उचित नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; चाल पुलैमैयोर्–गम्भीर विद्वान; पुकल्वर्–कहेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। २७०

अर्थिनी शूर्पणखा ने यह कहा तो श्रीराम को हँसी आ गयी। वह हँसी अन्दर गड़ी हास-बीज के श्वेत अंकुर के समान बाहर प्रकट हुई। मेघश्याम ने एक लीला रचने का विचार किया। उन्होंने कहा कि अंगने ! राक्षस दुख से अभिभूत न होनेवाले हैं। मनुष्य तो विविध संकटों से ग्रस्त रहनेवाले हैं। मनुष्य-राक्षस का विवाह उचित नहीं होता। यह गम्भीर विद्वानों का मत है। २७०

परावरुञ् जिरत्तै यारुम् पत्तियिन् पयत्तै योरा
दिरावणन् ऱङ्गै यॆन्ऱ देळैमैप् पाल दॆन्ना

अरावणै यमल नन्ना यरिवित्तेन् मुन्तन् देवर्प्
परावित्तॆ नीङ्गि नेनप् पळिपडु पिरवि यॆन्राळ् 271

अरावणै अमलन् अन्नाय्–शेषशायी निर्मल (विष्णु) देव के समान रहनेवाले; परावु अरुम्–जिसका विस्तार से कहना कठिन है; चिरत्तै आरुम्–श्रद्धा से युक्त; पत्तियिन् पयत्ते–उस भक्ति के फल को (जो मुझे मिला है); ओरातु–नहीं सोचकर; इरावणन् तङ्कै–रावण-भगिनी; ॲन्रतु–कहना (और उपेक्षा करना); एळ्मै पालतु–अज्ञता से सम्बन्धित है; ॲन्ना–कहकर; तेवर् परावित्तन्–देवों की स्तुति की (मैंने); अ पळि पटु पिरवि–उस निन्दा योग्य जन्म से; नीङ्कित्तेन्–अलग हो गई हूँ; मुन्तम् अरिवित्तेन्–पहले ही समझा दिया (मैंने); ॲन्राळ्–कहा। २७१

शूर्पणखा ने तर्क प्रस्तुत किया कि हे शेषशायी विमल विष्णु-सम राम ! तुम मुझे रावण की भगिनी के रूप में ही देखते हो। मैंने कितनी श्रद्धा के साथ कैसी भक्ति की है, इसका यथार्थ विस्तार ही कठिन है। उसको भूल जाते हो, और रावण की वहिन कहकर उपेक्षा दिखाते हो। यह तुम्हारी अज्ञता है ! उसने आगे विश्वास दिलाया कि मैंने देवों की स्तुति-पूजा आदि करके वह जन्म-कलंक धुला दिया है ! यह पहले ही मैंने तुमको बताया था। २७१

ऑरुवन्तो वुलह मून्रिर्क् कोङ्गोरु तलैव नूङ्गिल्
ऑरुवन्तो कुबेर निन्नि तुडन्बिरन् दार्ह ळन्नार्
तरुवरेल् कोडु मन्रेल् रमियवे रिडत्तुच् चारल्
वॆरुवुवॆ नङ्गै यॆन्रान् मीट्टव ळिनैय शौन्नाळ् 272

नङ्कै–नारीरत्न; निन्निन् उटन् पिरन्तार्कळ्–तुम्हारे सहोदरों में; ऑरुवत्तो–एक तो; उलकम् मून्रिर्कु–तीनों लोकों का; ओङ्कु ऑरु तलैवन्–उन्नत और अकेला अधिपति है; ऊङ्किल्–वैभव में; ऑरुवत्तो–और एक तो; कुपेरन्–धनद (कुबेर) है; अन्नार् तरुवरेल्–वे कन्यादान कर देंगे; कोटुम्–मैं ग्रहण कर सकूँगा; अन्रेल्–नहीं तो; तमियै–अकेली तुम; वेरु इटत्तु चारल्–दूसरे की हो जाओ; वॆरुवुवॆन्–उससे डरता हूँ; ॲन्रान्–कहा; अवळ्–वह; मीट्टु–फिर; इनैय चौन्नाळ्–यों बोली। २७२

श्रीराम ने बहस की। हे नारी-रत्न ! तुम्हारे सहोदरों में एक तो तीनों लोकों का निर्द्वन्द्व अधिपति रावण है। दूसरा धन-देवता कुबेर है। वे तुमको मेरे पास कन्यादान में दे देंगे, तो मैं तुमको ग्रहण कर सकूँगा। नहीं तो, तुम अपनी इच्छा से किसी परपुरुष को वरो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे डर पैदा होता है। तब शूर्पणखा ने यों उत्तर दिया। २७२

❀ कान्दर्प्प मॆन्ब दुण्डार् कादलिर् कलन्द शिन्दै
मान्दर्क्कु मडन्दै मार्क्कु मरैहळे वहुत्त कूट्टम्

एन्दऱ् पॉऱ् ऱोळि नायि:(ह) दियॅन्दपि ऍन्तक्कु मूत्त
वेन्दर्क्कुम् विरुप्पिऱ् ऱाहुम् वेऱुमो रुरैयुण् डॅन्ऱाळ् 273

एन्तल् पॉन् तोळित्ताय्—पर्वत-सम सुन्दर कंधों वाले; कातलिल् कलन्त चिन्तै—प्रेम से परस्पर अनुरक्त मन वाले; मान्तर्क्कुम्—पुरुषों और; मटन्तै मार्क्कुम्—स्त्रियों के लिए; कान्तर्प्पम् ऍन्पतु—गान्धर्व प्रकार का; मऱैकळे वकुत्त—वेदों से ही निर्दिष्ट; कूट्टम्—विवाह; उण्टु—है; इ.'.तु इयैन्त पिन्—(ऐसा विवाह) यह (हममें) हो जाने के बाद; ऍन्तक्कु मूत्त वेन्तर्क्कुम्—मेरे बड़े भाइयों को भी; विरुप्पिऱ्ऱु आकुम्—पसन्द आयगा; अन्ऱियुम्—इसके अलावा; वेऱुम् ओर् उरै उण्टु—दूसरी एक बात भी है; ऍन्ऱाळ्—कहा। २७३

पर्वत-सम मनोरम कंधे वाले! परस्पर प्रेम में संयुक्त मन वाले पुरुष और स्त्रियाँ गान्धर्व विवाह कर ले सकते हैं। यह वेदसम्मत विवाहरीति ही है। पहले हम विवाह कर लें तो देखोगे कि मेरे अग्रज इसे चाव के साथ स्वीकार कर लेंगे। और भी एक लाभ है, इसमें। सुनो। २७३

❀ मुनिवरो डुडैय मुन्ने मुदिर्पहै मुऱैमै नोक्कार्
तनियैनी याद लान्मऱ् ऱवरोडुन् दळ्वर् कॉत्त
विनैयमी दल्ल दिल्लै विण्णुनिन् नाट्चि याक्कि
इनियवर् महिळ्न्दु वन्दुन् नेवलि निऱ्प रॅन्ऱाळ् 274

अवर्—वे (मेरे अग्रज); मुन्ने—पहले; मुनिवरोटु उटैय—मुनियों के साथ जो रखते हैं; मुतिर् पकै मुऱैमै—वह वैर की रीति; नोक्कार्—नहीं रखेंगे; नी तनियै आतलाल्—तुम एकाकी हो, इसलिए; अवरॉटुम्—उनके साथ; तळुवर्कु—मिलकर रहने के लिए; ऑत्त—अनुकूल; विनैयम्—उपाय; ईतु अल्लतु इल्लै—इसके सिवा कुछ नहीं है; इति—आगे; विण्णुम् निन् आट्चि आक्कि—स्वर्ग को तुम्हारे शासन के अधीन बनाकर; अवर् मकिळ्न्तु वन्तु—वे आनन्द के साथ आकर; उन् एवलिन्—तुम्हारे आदेश की प्रतीक्षा में; निऱ्पर्—रहेंगे; ऍन्ऱाळ्—कहा। २७४

हमारा विवाह हो जायगा तो मेरे भाई रावण आदि मुनियों को वैर की दृष्टि से नहीं देखेंगे। तुम इस जंगल में एकाकी रहते हो और राक्षसों की मैत्री तुम्हारे कुशल के लिए आवश्यक है। उनसे मित्रता के साथ रहने का एक मात्र उपाय यही— हमारा विवाह ही —हो सकता है। कोई दूसरा मार्ग नहीं। अब वे स्वर्ग को भी तुम्हारे अधीन करके स्वयं तुम्हारे पास सहर्ष आयेंगे और अधीन किंकर रहेंगे। तुम्हारी आज्ञाएँ मन लगा कर मानेंगे। २७४

❀ निरुदर्त मरुळुम् बॅऱ्ऱे निन्नलम् बॅऱ्ऱे निन्नो
डॉरुवरुञ् जॅल्वत् तियाण्डु मुऱैयवुम् बॅऱ्ऱे नॉन्ऱो
तिरुनहर् तोऱ्न्द पिन्नर्च् चॅय्दवम् बयन्द दॅन्ना
वरिशिलै वडित्त तोळान् वाळॅयि ऱिलङ्ग नक्कान् 275

वरिचिलै वट्टितुत तोळान्–बन्धनयुक्त धनुष चलाने में अभ्यस्त भुजा वाले; निरुतर् तम् अरुळुम् पॆट्रेन्–राक्षसों का अनुग्रह पा गया; निन् नलम् पॆट्रेन्–तुम्हारी कृपा प्राप्त हो गई; याण्टुम्–कभी भी; ऒरुवु अरुम् चॆल्वतुतु–क्षय न होनेवाले धन-वैभव के साथ; निन्नॊटम् उरॆयवुम् पॆट्रेन्–तुम्हारे संग रहना भी प्राप्त हो गया; तिरुनकर् तीरन्त पिन्तर्–सुन्दर अयोध्या नगर छोड़ आने के बाद; चॆय् तवम्–मेरे किये हुए तप ने; पयन्ततु ऒन्रो–क्या एक (पर अनेक) फल प्रदान कर दिया है; ॲन्ता–(व्यंग्य से) कहकर; वाळ् ॲयिरु–उज्ज्वल दांत; इलङ्क–प्रकट करते हुए; नक्कान्–हँसे। २७५

बन्धनयुक्त कठोर धनुष के प्रयोग में अभ्यस्त श्रीराम ने व्यंग्य किया। हा! मेरा अहोभाग्य! राक्षसों का अनुग्रह मिल गया! तुम्हारी कृपा मिल गयी! अक्षय धन-दौलत के साथ तुम्हारी संगति का भी बड़ा भाग्य हाथ आ गया! श्रीनगर अयोध्या छोड़कर आने के बाद मैंने जो तपस्या की थी, उसका फल क्या एक है (अनेक हैं)! यह कहकर श्रीराम सुन्दर दाँतों को प्रकट करते हुए हँसे। २७५

❀ विण्णिडै यिम्बर् नाहर् विरिञ्जने मुदलोर्क् कॆल्लाम्
कण्णिडै यॊळियिन् पाङ्गर्क् कडिहमळ् शालै निन्रुम्
पॆण्णिडै यरशि तेवर् पॆट्रनल् वरत्ताऱ् पिन्नर्
मण्णिडै मणियिन् वन्द वञ्जिये पोलवाळ् वन्दाळ् 276

विण् इटै–व्योम में; इम्पर्–भू पर; नाकर्–नागलोक में; विरिञ्चने–विरंचि; मुतलोर्क्कु ॲल्लाम्–आदि सबके लिए; कण् इटै–नेत्रों की; ऒळियिन् पाङ्कर्–ज्योतिस्वरूप श्रीराम के पास; पॆण् इटै अरचि–स्त्रियों में रानी; तेवर् पॆट्र नल् वरत्ताल्–देवों के प्राप्त वर से; पिन्तर्–बाद; मण् इटै–पृथ्वी पर; मणियिन् वन्त वञ्चिये पोल्वाळ्–मणि से निकली लता के समान (अवतरित) सीतादेवी; कटि कमळ् चालै निन्रुम्–सुगन्धि बिखेरनेवाली पर्णशाखा से; वन्ताळ्–आने लगी। २७६

श्रीराम स्वर्ग, भूलोक और पाताल में रहनेवाले ब्रह्मा से लेकर सभी जीवों के नेत्रों के ज्योति-स्वरूप थे। उनके पास आने के लिए सीताजी तभी पर्णशाला के बाहर निकलीं। वे स्त्रियों में रानी थीं। देवों के वर को पूरा करने के लिए भूमि पर अवतरित हुई थीं। वे रत्न-वल्ली के समान सुबास से पूरित पर्णशाला के बाहर प्रकट हुईं। २७६

❀ ऊन्शुड वुणङ्गु पेळ्वा युणर्विलि युरुवि नाऱुम्
वान्शुडर्च् चोदि वॆळ्ळम् वन्दिडै वयङ्ग नोक्कि
मीन्शुडर् विण्णु मण्णुम् विरिन्द पोरक्क रॆन्नुम्
कान्शुड मुळैत्त करुपिन् कन्नलियैक् कण्णिऱ् कण्डाळ् 277

ऊन्–शरीर को; चुट–काम ने तपाया, उससे; उणङ्कु–मुरझाये रहनेवाली; पेळ् वाय्–बड़ा मुख वाली; उणर्वु इलि–मतिहीन शूर्पणखा; उरुवित्–भगवती के

रूप में; नाऱुम्–प्रकट हुई; वान् चुटर्–बड़ी कान्तिमय; चोति वॆळ्ळम्–ज्योति-प्रवाह; वन्तु इटै वयङ्क–आकर उनके मध्य प्रकट हुआ तो; नोक्कि–उसको देखकर; मीन् चुटर् विण्णुम्–नक्षत्र-ज्योतित आकाश में; मण्णुम्–धरती में; विरिन्त–फैले हुए; पोर् अरक्कर् ऎन्नुम्–झगड़ालू राक्षस रूपी; कान् चुट–जंगल को जलाने; मुळैत्त–उद्भूत; कर्पिन् कनलियै–पातिव्रत्य रूपी अग्निशिखा को; कण्णिल् कण्टाळ्–अपनी आँखों से देखा (देखती ऐसा अनुभव किया)। २७७

शूर्पणखा ने, जिसका शरीर कामाग्नि से तप्त होकर मुरझा-सा गया था, जिसका मुख बहुत बड़े बिल के समान था और जो अपनी बुद्धि खो चुकी थी, सीताजी के रूप में उनके मध्य आनेवाली बड़ी कान्तिमय ज्योति के प्रवाह को देखा। वह ऐसी थीं, मानो वह पातिव्रत्य की अग्निशिखा हैं, जो नक्षत्रोज्वल आकाश में और भूमि में फैले रहे राक्षस-कानन को जलाने के लिए उद्भूत हैं। २७७

❀ पण्बुऱ नॆडिदु नोक्किप् पडैक्कुनर् शिऱुमै यल्लाल्
ऍण्बिऱङ् गळ्हुक् कॆल्लै यिल्लैया मॆन्ऱु निन्ऱाळ्
कण्बिऱ पॊरुळिऱ् चॆल्ला करुत्तॆनि त:(ह)दे कण्ड
पॆण्बिऱन् दॆऩक् कॆन्ऱा लॆन्बडुम् पिऱरुक् कॆन्ऱाळ् 278

पण्पु उऱ–खूब आँख लगाकर; नॆटितु नोक्कि–दीर्घकाल तक देखकर; पटैक्कुनर् चिऱुमै अल्लाल्–सृष्टिकर्ता की गलती है, नहीं तो; ऍण् पिऱङ्कु–कल्पना में आनेवाली; अऴकुक्कु ऎल्लै इल्लै आम्–सुन्दरता की सीमा नहीं होता, इस बात को साबित करती हुई; निन्ऱाळ्–यह शोभायमान (खड़ी) रहती है; कण् पिऱ पॊरुळिल् चॆल्ला–दृष्टि दूसरे पदार्थ पर नहीं जाती; करुत्तु ऎनिन् अ:ते–मन भी वही है; कण्ट–इसे जो देखती; पॆण् पिऱन्तेऩुक्कु–स्त्री पैदा हुई मेरी स्थिति यह है; ऎन्ऱाल्–तो; पिऱर्क्कु ऎन् पटुम्–दूसरे (पुरुषों) की क्या होगी; ऎन्ऱाळ्–(आश्चर्य के साथ) कहा। २७८

उसने खूब आँखें फाड़कर बहुत देर तक देखा। उसे एक नया तथ्य सूझा। प्रपंचसृजक ब्रह्मा की ही असमर्थता है कि उसकी सृष्टि में सुन्दरता भी सीमित रहती है। नहीं तो सत्य यह है कि सुन्दरता की कोई सीमा नहीं! यह तथ्य साबित करती हुई सीताजी उनके सामने खड़ी थीं। शूर्पणखा ने विस्मय के साथ सोचा कि इस सुन्दरता के खजाने को जो देखता है वह उस पर से आँख नहीं हटा सकता। उसके मन की भी वही हालत होगी। मैं स्त्री हूँ। इसको देखकर मेरी भी यह हालत हो गयी तो अन्य (पुरुष) लोगों की क्या स्थिति होगी ?। २७८

❀ पॊरुदिऱत् तानै नोक्किप् पूवैयै नोक्कि निन्ऱाळ्
करुदमऱ् ऱिनिवे ऱिल्लै कमलत्तुक् कडवु ळानुम्
ऒरुतिऱत् तुणर नोक्कि युरुविनुक् कुलह मून्ऱिल्
इरुतिऱत् तार्क्कुज जॆय्द वरम्बिव ऱिरुव रॆन्ऱाळ् 279

पोरु तिऱत्तातै–युद्धदक्ष श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; पूवैयै नोक्कि–फिर देवी को देखती; निन्ऱाळ्–विस्मित खड़ी (जो) रही; कमलत्तु कटवुळ् तानुम्–कमलासन देवता (ब्रह्मा) भी; ओरु तिऱत्तुु–अपूर्व रीति से; उणर नोक्कि–विवेक से देखकर; उलकम् मून्ऱिन्–तीनों लोकों के; इरु तिऱत्तार्क्कुम्–पुरुष-स्त्री दोनों वर्गों के लिए; इवर् इरुवर्–ये दोनों; उरुविऩुक्कु चॆय्त वरम्पु–रूपसौंदर्य की रची सीमाएँ हैं; मऱ्ऱु करुत–दूसरा सोचने के लिए; इनि वेऱु इल्लै–अब कुछ नहीं; ऎन्ऱाळ्–धारणा बना ली। २७९

शूर्पणखा ने युद्धसमर्थ श्रीराम को देखा। फिर एक बार सीताजी पर दृष्टि डाली। विस्मयविमूढ़ खड़ी रह गयी। उसने विचार किया कि ब्रह्मा ने खूब सोचकर अच्छी तैयारी के साथ इन दोनों को पुरुष और स्त्री के सौन्दर्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में सरजा है। तीनों लोकों में पुरुष के सौन्दर्य की सीमा श्रीराम हैं और स्त्री-सौन्दर्य की सीमा यह स्त्री है। उसने दृढ़ धारणा बना ली, इसके सिवा सोचने के लिए गुंजाइश नहीं है। २७९

मरुवोन्ऱु कून्द लाळै वनत्तिवन् कॊण्डु वारान्
उरुविङ्गि दुडैय राह मऱ्ऱैयोर् यारु मिल्लै
अरविन्द मलरु णीङ्गि यडियिणै पडियिऱ् ऱोयत्
तिरुविङ्गु वरुव दॆन्नो वॆन्ऱहन् दिहैत्तु निन्ऱाळ् 280

मरु ऒन्ऱु–सुवास-लगे; कून्तलाळै–केश वाली (इस) को; इवन् वनत्तु कॊण्टु वारान्–यह वन में नहीं लायगा; इतु उरुवम् उटैयर् आक–ऐसी रूपवती; मऱ्ऱैयोर् यारुम्–दूसरी कोई; इङ्कु इल्लै–यहाँ नहीं हैं; तिरु–श्रीलक्ष्मीदेवी; अरविन्त मलर् उळ्–अरविन्द-मध्य वास; नीङ्कि–छोड़कर; अटि इणै–चरणद्वय; पटियिल् तोय–भूमि पर पड़ने देते हुए; इङ्कु वरुवतु–यहाँ आती; ऎन्नो–क्योंकर; ऎन्ऱु–यह सोचकर; अकम् तिकैत्तु–मन में चकित होकर; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। २८०

उसने तर्क किया कि सुवासित केश वाली इसको यह पुरुष वन में अपने साथ नहीं लाया होगा। इतनी रूपवती स्त्रियाँ कोई अन्य हैं भी नहीं। इसलिए यह श्रीदेवी ही होगी, जो अपना कमल पर वास छोड़कर अपने चरणद्वय को भूमि पर पड़ने देती हुई आयी है। पर उसका इधर आगमन किस हेतु हुआ है? ऐसा विस्मय करती हुई चकितमन होकर शूर्पणखा खड़ी रही। २८०

❀ पॊन्ऩैप् पोलॊळिरु मेऩि पूवैपोल् वण्णत् तानिम्
मिन्ऩैप्पो लिडैया ळोडु मेवुम् वेडत्त नल्लन्
तन्ऩैप्पोर् ऱहैयो रिल्लात् तळिरैप्पो लडियि नाळुम्
ऎन्ऩैप्पो लिडैये वन्दा ळिहळ्विप्पे ऩिवळै यॆन्ऩा 281

पूवै पोल् वण्णत्तान्–अतसी पुष्प का-सा वर्ण-वाला; पॊन्ऩै पोल् ऒळिरुम्

मेति–स्वर्ण की-सी कान्ति का शरीर; मिऩ्ऩै पोल्—बिजली-सम; इटैयाळॊटुम्–कमर वाली के साथ; मेवुम् वेटत्तऩ् अल्लऩ्–मिलकर रहे, ऐसे गृहस्थ धर्मोचित वेश का नहीं; तऩ्ऩै पोल् तकैयोर् इल्ला–जिसके समान श्रेष्ठ स्त्रियाँ नहीं होतीं (जो अप्रतिम है); तळिरै पोल् अटियिऩाळुम्–जिसके पल्लव के समान चरण हैं; इटैये–(यह) बीच में; ऎऩ्ऩै पोल् वन्ताळ–मेरे समान आई हुई होनी चाहिए; इवळै–इसको; इकऴ्विप्पेऩ्–उपेक्षित करा दूँगी; ऎऩ्ऩा–ऐसा निश्चय करके। २८१

अतसी-पुष्प का-सा रंग वाला यह स्वर्ण की-सी चमक वाली और बिजली-सी कमर वाली इसके साथ गृहस्थी चलाता नहीं लगता। इसका वेश गृहस्थी योग्य नहीं है। तपस्वी का वेश है। यह अप्रमेय स्त्री, पल्लव-चरणा नारी मेरे समान बीच में आयी हुई है। हाँ, वही होना चाहिए। अब मैं उसको निन्दित कर उपेक्षित करवा दूँगी। —शूर्पणखा ने यह संकल्प किया। २८१

❀ वरुमिवळ् मायम् वल्लळ् वञ्जनै यरक्कि नॆञ्जम्
तॆरिविल तेरुन् दऩ्मै शीरियोय् शॆव्वि दऩ्ऱाल्
उरुविदु मॆय्य दऩ्ऱा लूऩुहर् वाऴ्क्कै याळै
वॆरुविऩॆ ऩॆय्दि डामल् विलक्कुदि वीर वॆऩ्ऱाळ् 282

चीरियोय्–हे अच्छे गुण वाले; वरुम् इवळ्–जो आ रही है, यह; मायम् वल्लळ्–माया में निपुण है; वञ्चनै अरक्कि–वंचक राक्षसी है; नॆञ्चम् तॆरिवु इल–इसका मन अगम्य है; तेरुम् तऩ्मै–इसको अच्छा मानना; चॆव्वितु अऩ्ऱु–ठीक नहीं; उरु इतु मॆय्यतु अऩ्ऱु–उसका यह रूप भी सच्चा नहीं; ऊऩ् नुकर् वाऴ्क्कैयाळै–मांसाहारी जीवन वाली इसे; वॆरुविऩॆऩ्–(देखकर) डरती हूँ; ऎय्तिटामल्–पास न आने दो; वीर–हे वीर; विलक्कुति–हटाओ; ऎऩ्ऱाळ्–कहा। २८२

ऐसा संकल्प करके शूर्पणखा श्रीराम से बोली। हे अच्छे गुण वाले! यह जो आ रही है माया में निपुण है। वंचकी निशाचरी है। इसके मन के भाव गूढ़ हैं और हमारी समझ में नहीं आ सकेंगे। इसको अच्छा मानना भला नहीं होगा। इसका रूप भी सच्चा नहीं है। मांस खाकर जीवन चलानेवाली इसको देखकर मेरे मन में भय पैदा होता है। हे वीर! उसको पास आने मत दो। रोको और भगाओ। २८२

❀ ऒळ्ळिदुन् ऩुणर्वु मिऩ्ऩे युऩ्ऩैया रॊळिक्कु मीट्टार्
तॆळ्ळिय नलत्ति ऩालुऩ् शिऩ्दऩै तॆरिन्द दम्मा
कळ्ळवल् लरक्कि पोला मिवळॆऩी काण्डि यॆऩ्ऩा
वॆळ्ळिय मुरुवऩ् मुत्तम् वॆळिप्पड वीर ऩक्काऩ् 283

वीरऩ्–वीर राघव; मिऩ्ऩे–विद्युत (-सम स्त्री); उऩ् उणर्वु ऒळ्ळितु–तुम्हारी समझ बड़ी साफ़ है; उऩ्ऩै यार् ऒळिक्कुम् ईट्टार्–तुमसे छिपने की किसके पास शक्ति है; तॆळ्ळिय नलत्तिऩाल्–सुलझी हुई शक्ति से; उऩ् चिऩ्तऩै–तुम्हारी

बुद्धि ने; तॆरिन्ततु–यह बात जान ली; अम्मा–री माँ; इवळुम्–यह भी; कळ्ळ–चोर; वल् अरक्कि–भयंकर राक्षसी; पोल् आम्–होगी, अवश्य; नी काण्टि–तुम देख लो; ॲन्ऩा–कहकर; वॆळ्ळिय मुरुवल् मुत्तम्–श्वेत दन्तमुक्ता; वॆळिप्पट–प्रकट करके; नक्कान्–हँसे। २८३

श्रीवीरराघव ने इसके उत्तर में कहा कि विद्युत के समान लगनेवाली नारी ! तुम्हारी सूझ भी बड़ी साफ़ है ! कौन तुमसे छिपने-छिपाने की क्षमता रखता है ? तुम्हारी बूझ ने अपने सामर्थ्य से सच्चाई जान ली ! हा ! री मैया ! यह अवश्य चोरनी, भयंकर राक्षसी ही होगी शायद ! तुम भी देख लो। ऐसा कहकर मोती-समान मनोरम दाँतों को प्रकट करते हुए श्रीराम हँसे। २८३

❀ आयिडै यमुदित् वन्द वरुन्ददिक् कऱ्पि ऩञ्जोल्
वेयिडै तोळि ऩाळुम् वीरऩैच् चेरुम् वेलै
नीयिडै वन्द दॆन्ऩै निरुदर्तम् बावै यॆन्ऩाक्
कायॆरि यऩैय कळ्ळ वुळ्ळत्ताळ् कदित्त लोडुम् 284

अ इटै–उस समय; अमुतिऩ् वन्त–अमृत के समान आगत; अरुन्तति कऱ्पिऩ्–अरुन्धती के समान पातिव्रत्य; अम् चॊल्–मधुर बोली; वेय् इटै–बाँस को पीछे करनेवाले (बाँस से भी सुडौल); तोळिऩाळुम्–कन्धे, इनसे युक्त सीताजी भी; वीरऩै–श्रीवीरराघव के पास; चेरुम् वेलै–आई तब; काय् ॲरि अऩैय–जलती आग के समान; कळ्ळ उळ्ळत्ताळ्—कपट-भरे मन वाली के; निरुतर् तम् पावै–हे राक्षसी स्त्री; इटै नी वन्ततु–बीच में तुम्हारा आना; ॲन्ऩै–कैसा; ॲन्ऩा–कहकर; कतित्तलोटुम्–कोप के साथ बढ़ने पर। २८४

तब तक सुधा-सम वहाँ जो आयीं, वे अरुन्धती-सी पतिव्रता, मधुर-वाणी और बाँस के समान कंधों वाली सीताजी श्रीराम के पास आ गयीं। झट जलती आग के समान वंचना मन में रखनेवाली शूर्पणखा ने ताड़ना दी कि राक्षस-कुमारी ! तुम हमारे बीच में कैसी आयीं ? यह कहकर वह कोप के साथ श्रीसीता की तरफ़ बढ़ने लगी। २८४

❀ अञ्जिऩळ् वञ्जि यऩ्ऩ मिऩ्ऩिडै यलश वोडिप्
पञ्जिऩ्मॆल् लडिह णोवप् पदैत्तऩळ् परुवक् काल
मञ्जिडै वयङ्गित् तोऩ्ऱुम् पवळत्तिऩ् वल्लि येपोऱ्
कुञ्जर मऩैय वीरऩ् कुववुत्तो डळुविक् कॊण्डाळ् 285

अञ्चिऩळ्–भयभीत (सीताजी); मिऩ् इटै–बिजली-सी कमर को; वञ्चि अऩ्ऩ–लता के समान; अलच–बल खाने देती हुई; ओटि–दौड़कर; पञ्चिऩ् मॆल् अटिकळ्—रुई-समान चरणों को; नोव–कष्ट देते हुए; पतैत्तऩळ्–सिहरकर; परुव काल मञ्चु इटै–वर्षाकालीन मेघ के बीच; वयङ्कि तोऩ्ऱुम्–साफ़ दिखनेवाली; पवळत्तिऩ् वल्लिये पोल्—प्रवाल-लता ही के समान; कुञ्चरम् अऩैय वीरऩ्–कुंजर-

सम वीर श्रीराम के; कुववु तोळ्-पुष्ट और उन्नत कन्धों से; तळुवि कोंण्टाळ्-लिपट गई। २८५

शूर्पणखा को अपने पास आते देखकर श्री सीताजी भयभीत हो गयीं। अपनी बिजली-सी कमर को लता के समान लचकाती हुई दौड़ीं। रुई-समान पैरों को दुख देती हुई हड़बड़ाहट के साथ वह दौड़ीं और कुंजर-सम श्रीराम के सबल और पुष्ट कंधों से ऐसे लग गयीं जैसे वर्षाकालीन मेघ के मध्य प्रवाललता लग गयी हो। २८५

❀ वळैयॆयिऱ् ऱवर्ह ळोडु वरुम्विळै याट्टॆऩ् ऱालुम्
विळैवऩ तीमै येया मॆऩ्बदै युणर्न्दु वीरऩ्
उळैवऩ वियऱ्ऱ लॊल्लै युऩ्निलै युणरु मायिऩ्
इळैयवऩ् मुऩियु नङ्गै येहुदि विरैवि ऩॆऩ्ऱाऩ् 286

वळै ऍयिऱ्ऱु-वक्रदाँत वाले; अवर्कळोटुम्-उन (राक्षसों) के साथ; वरुम् विळैयाट्टु ऍऩ्ऱालुम्-होनेवाले खेल भी हों; विळैवऩ तीमैये आम्-फल बुरे ही होंगे; ऍऩ्पतै उणर्न्तु-यह महसूस कर; वीरऩ्-श्रीवीरराघव; नङ्कै-नारी; उळैवऩ इयऱ्ऱल्-मन को संकट देनेवाले काम न करो; इळैयवऩ्-मेरा अनुज; उऩ् निलै उणरुम् आयिऩ्-तुम्हारी बात जान लेगा तो; ऒल्लै मुऩियुम्-तुरन्त तुमसे कुपित हो जायगा; विरैविऩ् एकुति-शीघ्र चली जाओ; ऍऩ्ऱाऩ्-कहा। २८६

अब श्रीराम महसूस करने लग गये कि वक्रदन्त राक्षसों के साथ विनोद भी अनर्थकारी है। वीर श्रीराम ने शूर्पणखा से कहा कि नारी! तुम ऐसा काम मत करो, जिससे मन को क्लेश पहुँचे। मेरा छोटा भाई तुम्हारी स्थिति जानेगा तो तुरन्त कुपित हो जायगा। तुम शीघ्र यहाँ से चली जाओ। २८६

पॊऱ्पुडै यरक्कि पूविऱ् पुऩलिऩिऱ् पॊरुप्पिल् वाऴुम्
अऱ्पुडै युळ्ळत् तारु मऩङ्गऩु ममरर् मऱ्ऱुम्
ऍऱ्पॆऱत् तवञ्जॆय् हिऩ्ऱा रॆऩ्ऩैनी यिहऴ्व दॆऩ्ऩे
नऱ्पॊऱै नॆञ्जि लिल्लाक् कळ्वियै नच्चि यॆऩ्ऱाळ् 287

पॊऱ्पुटै अरक्कि-सुन्दर वेश में जो रही, उस राक्षसी ने; पूविल्-(कमल) पुष्प पर; पुऩलिल्-(क्षीरसागर के) पथ पर; पॊरुप्पिल्-(कैलास) पर्वत पर; वाऴुम्-वास करनेवाले; अऱ्पु उटै उळ्ळत्तारुम्-प्रेम-मन के (तीनों देवता) और; अऩङ्कऩुम्-मन्मथ और; मऱ्ऱुम् अमरर्-अन्य देवता लोग; ऍऩ् पॆऱ-मुझे पाने के लिए; तवम् चॆय्किऩ्ऱार्-तपस्या करते हैं; नल् पॊऱै-श्रेष्ठ क्षमा नामक गुण; नॆञ्चिल् इल्ला-जिसके मन में नहीं है, उस; कळ्वियै-चोरनी को; नच्चि-चाहकर; ऍऩ्ऩै नी इकऴ्वतु-मेरी तुम्हारा उपेक्षा करना; ऍऩ्ऩे-क्यों; ऍऩ्ऱाळ्-पूछा। २८७

शूर्पणखा जानेवाली नहीं थी। मायारूपिणी उसने श्रीराम से

कहा— कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा, क्षीरसागरवासी विष्णु, कैलासपर्वत-पति शिव, अनंग और अन्य देवता लोग मुझ पर प्रेम रखते हैं और मुझे प्राप्त करने हेतु तपस्या कर रहे हैं, बात ऐसी है तब तुम असह्यशीला इस नारी को चाहकर मेरी उपेक्षा करते हो! इसका कारण क्या है? —शूर्पणखा ने पूछा। २८७

❀ तन्ऩॊडुन् दॊडर्वि लादे ऍन्ऩवुन् दविरा डाऩिक्
कन्ऩॆडु मनत्ति शॊल्लुङ् गळ्ळवा शहङ्ग ळॆन्ऩा
मिन्ऩॊडु तॊडर्न्दु शॆल्लु मेहम्बोल् मिदिलै वेन्दन्
पॊन्ऩॊडुम् बुनिदन् बोयप् पूम्बॊऴिर् चालै पुक्कान् 288

इ कल् नॆंटुम् मनत्ति तन्ऩॊटु–इस पत्थर-सम मन वाली के साथ; तॊटर्वु इलातेम्–हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है; ऍन्ऩवुम्–कहने पर भी; तविराळ्–यहाँ से नहीं हटती; चॊल्लुम्–इसके वचन भी; कळ्ळ वाचकङ्कळ्—वंचना-भरे वचन हैं; ऍन्ऩा–यह सोचकर; पुनितन्–पवित्र श्रीराम; मिन् ओटुम्–बिजली के साथ; तॊटर्न्तु चॆल्लुम्–लगे जानेवाले; ऒरु मेकम् पोल–मेघ के समान; मितिलै वेन्तन् पॊन् ओटुम्–मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ; पोय्–वहाँ से जाकर; अ पूम् पॊऴिल्–उस उपवन में रहनेवाली; चालै–पर्णशाला में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। २८८

श्रीराम ने निश्चय कर लिया कि यह पत्थर-सम मन वाली है। इस कठोरमन स्त्री से हमने कह दिया कि हमारा-तुम्हारा रिश्ता कुछ नहीं हो सकता। तो भी वह हटती नहीं। इसके कथन भी कपट के वचन लगते हैं। यह सोचकर पवित्रचरित्र श्रीराम मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ जाकर उस उपवन में रही अपनी पर्णशाला में घुस गये। सीताजी जब उनके पीछे गयीं, तब ऐसा लगा कि मेघ के पीछे बिजली जा रही हो। २८८

❀ पुक्कपिन् बोन दॆन्ऩु मुणर्विनळ् पॊऱैयि नीङ्गि
उक्कदा मुयिर ळॊन्ऱु मुयिर्त्तिल ळॊडुङ्गि निन्ऱाळ्
तक्किलन् मनत्तुळ् यादुन् दळ्ळुविलन् शलमुङ् गॊण्डान्
मैक्करुङ् गुऴलि नाण्माट् टन्बिनिल् वलिय नॆन्ऱाळ् 289

पुक्क पिन्–उनके पर्णशाला में प्रविष्ट होने के बाद; पोनतु ऍन्ऩुम् उणर्विनळ्–बेसुध-सी; पॊऱैयिन् नीङ्कि–शरीर से छूटकर; उक्कतु आम् उयिरळ्–ध्वस्त हुए हों, ऐसे प्राणों वाली होकर; ऒन्ऱुम् उयिर्त्तिलळ्–साँस ही नहीं छोड़ी; ऒटुङ्कि निन्ऱाळ्–सन्न खड़ी रही; तक्किलन्–मेरे योग्य नहीं; मनत्तुळ् यातुम् तळ्ळुविलन्–मन में कोई लगाव पैदा नहीं हुआ है; चलमुम् कॊण्टान्–कोप भी करता है; मै करुम् कुऴलिनाळ् माट्टु—अंजन-सम काला केश वाली के साथ; अन्पितिल् वलियन्–प्रेम में दृढ़ है; ऍन्ऱाळ्–अपने आप से कहा। २८९

उनके पर्णशाला में प्रवेश के बाद शूर्पणखा की दशा बहुत बिगड़

गयी। सुधि खोकर वह क्षीण-प्राणा-सी रह गयी। साँस भी नहीं छोड़ती थी। सन्न खड़ी रही। फिर उसने आप ही आप कहा कि यह मेरे योग्य नहीं लगता। अपने मन में किंचित भी स्नेह का भाव नहीं लाता। वही नहीं, मेरे प्रति कुपित भी है। उसका इस अंजन-सम काले केश वाली स्त्री पर प्रेम दृढ़ है। २८९

❀ नित्ऱिल ळवनैच् चेरु नॆंऱियिनै निनैन्दु पोनाळ्
इन्ऱिव नाहम् बुल्ले नॆंनिलुयि रिळप्पे नॆंन्नाप्
पॊन्ऱिणि शारऱ् चीदप् पळिक्ककरैप् पॊदुम्बरप् पुक्काळ्
शॆन्ऱदु परिदि मेल्पाऱ् चॆक्करवन् दिरुत्त दन्ऱे 290

निन्ऱिलळ्–(शूर्पणखा) खड़ी नहीं रही; अवत्तै–उसको; चेरुम् नॆंऱियित्तै–प्राप्त करने का उपाय; नितैन्तु–सोचते हुए; पोताळ्–गई; इन्ऱु–आज; इवन् आकम् पुल्लेन्–इसके वक्ष को आलिंगन नहीं करूँगी; ऍतिल्–तो; उयिर् इळप्पॆंन्–प्राण छोड़ दूँगी; ऍन्ऩा–ऐसा सोचकर; पॊंन् तिणि–स्वर्णमिश्रित; चारल्–एक तराई में; चीत पळिक्कु अरै–शीतल स्फटिक-चट्टान सहित रहनेवाले; पॊतुम्पर्–उद्यान में; पुक्काळ्–घुसी; परिति मेल्पाल् चॆन्ऱतु–सूर्य पश्चिम दिशा में (अस्त हो) चला; चॆक्कर् वन्तु इरुत्ततु–लालिमा आ फैली। २९०

फिर वह वहाँ खड़ी नहीं रही। उसका मन श्रीराम को भूल नहीं सका। उनसे मिलने का उपाय सोचने लगी। 'अगर मैं इसके वक्ष का आलिंगन नहीं करूँगी तो मैं प्राण त्याग दूँगी।' —यह संकल्प करती हुई वह एक उपवन में गयी, जो तराई में था, और जिसमें शीतल स्फटिक-चट्टान थी। तब तक सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया और गगन में लाली फैल गयी। २९०

❀ अऴिन्द शिन्दैय ळाययर् वाळ्वयिन्
मॊऴिन्द कामक् कडुङ्गनन् मूण्डदाल्
वऴिन्द नाहत्तिन् वन्ऱॊळै वाळॆयिऱ्
ऱिऴिन्द कार्विड मेऱिय दॆन्नवे 291

वऴिन्त–छलककर; नाकत्तिन्–सर्प के; वन्–दृढ़; तॊळै–रंध्रसहित; वाळ्–उज्ज्वल; ऍयिऱु–विषदाँत का; इऴिन्त कार् विटम्–बाहर आया विष; एऱियतु ऍन्न–सिर पर चढ़ गया, जैसे; अऴिन्त चिन्तैयळाय्–संज्ञाशून्य होकर; अयर्वाळ् वयिन्–शिथिल रहनेवाली शूर्पणखा के अन्दर; मॊऴिन्त–पूर्वोक्त; काम कटुम् कनल्–काम की भयंकर अग्नि; मूण्टतु–उद्दीप्त हुई। २९१

शूर्पणखा की स्थिति बहुत बुरी हो गयी। किसी सर्प के रंध्रसहित दृढ़ दाँत द्वारा निकले विष का असर सिर पर चढ़ गया हो, ऐसा वह स्वस्थता खोकर श्रांत हो गयी। पूर्वोक्त काम का कठोर ज्वर उसके शरीर को ताप देने लगा। २९१

❀ ताड हैक्कॊडि याडड मार्बिडै, आड वर्क्कर शन्नयि लम्बुपोल्
पाड वत्तॊऴिन् मन्मदन् बाय्कणै, ओड वुट्कि युयिरुळैन् दाळरो 292

ताटकै कॊटियाळ्–ताड़का, क्रूरी; तट मार्पु इटै–के विशाल वक्ष के मध्य; आटवर्क्कु अरचन्–पुरुषों में राजा श्रीराम के; अयिल् अम्पु पोल्–तीक्ष्ण शर जैसे; पाटवम् तॊऴिल् मन्मतन्–कार्य-पटु मन्मथ के; पाय् कणै–प्रेषित शर; ओट–निफर गए तो; उट्कि–सिहरकर; उयिर् उळैन्ताळ्–प्राणविह्वल हुई। २६२

मन्मथ कार्यपटु था। उसका प्रेषित शर इसकी छाती को ऐसा निफर गया, जैसे पुरुषोत्तम श्रीराम का तीक्ष्ण शर क्रूरी ताड़का के वक्ष को वेधकर चला गया था। शूर्पणखा सिहर उठी और वह मर्मान्तिक पीड़ा का अनुभव करने लगी। २९२

❀ कलैयु वामदि येकरि याहवन्, शिलैय मारनैत् तिन्नु निनैप्पिनाळ्
मलैय मारुद मानॆडुङ् गालवेल्, उलैय मार्बिडै यून्ऱिड वोयुमाल् 293

कलै उवा मतियै–कलाओं से पूर्ण चन्द्र को ही; करि आक–व्यंजन बनाकर; वन् चिलैय मारनै–कठोर धनुर्धर मारदेव को; तिन्नुम् निनैप्पिनाळ्–खाने का विचार किया; मलय मारुतम् आम्–मलयमारुत रूपी; नॆटुम् काल वेल्–दीर्घ यम-शूल; उलैय्–सालते हुए; मार्पु इटै ऊन्ऱिट–छाती पर घुसा तो; ओयुम्–श्रान्त खो गई। २६३

वह सोचती कि मैं पूर्णचन्द्र को व्यंजन बनाकर कठोर धनुर्धर कामदेव को ही भक्षण कर लूँ। पर मलयपवन रूपी सशक्त शक्ति के उसके वक्ष पर गड़ने से वह निर्बल रह जाती। २९३

❀ अलैक्कु माऴि यडङ्गिड वङ्गैयाल्
मलैक्कु लङ्गळिऱ् ऱूर्क्कु मनत्तिनाळ्
निलैक्कुम् वानि नॆडुमदि नीणिला
वलैक्कु नीङ्गु मिडुक्किलण् मानुवाळ् 294

अलैक्कुम्–उसको सालनेवाले; आऴि–समुद्र को; अटङ्किट–चुप कराने के लिए; अम् कैयाल्–अपनी हथेली से; मलै कुलङ्कळिन्–गिरियों की राशि उखाड़कर उनसे; तूर्क्कुम् मनत्तिनाळ्–पाटने का संकल्प किया; वानिल् निलैक्कुम् नॆटु मति–आकाश में स्थिर रहे चन्द्र की; नीळ् निला वलैक्कु–विस्तृत चाँदनी के जाल से; नीङ्कुम्–बच जाने की; मिटुक्कु इलळ्–शक्ति नहीं रखती थी; मानुवाळ्–क्षोभ करती। २६४

समुद्र-गर्जन उसे सालने लगा। उसने सोचा कि अपने हाथों से गिरिराशियों को उखाड़कर समुद्र में डालूँ और उसे पाट दूँ। पर आकाश में निरन्तर (चलते) रहनेवाले चन्द्र की किरणों के जाल से बच निकलने की शक्ति उसमें नहीं थी। इसलिए विक्षुब्ध हो जाती। २९४

❀ पूवॅ लाम्बॊडि याहविप् पूमियिल्, कावॅ लागॊडिप् पॆन्नक् कान्दुवाळ्
शेव लोडुरै शॆन्दलै यन्ऱिलिन्, नावि नाल्वलि यॆञ्ज नडुङ्गुवाळ् 295

पू ऎलाम् पॊटियाक–सारे पुष्पों को चूर्ण बनाते हुए; इ पूमियिल्–इस पृथ्वी पर रहनेवाले; का ऎलाम्–उद्यान सब; ऒटिप्पेन् ऎन्–तोड़-फोड़ दूँगी, ऐसा; कान्तुवाळ्–कोप करती; चेवलोटु उऱै–नर (क्रौंच) के साथ रहनेवाली; चॆम् तलै अन्ऱिलिन्–लाल सिर की मादा क्रौंच पक्षी के; नादिनाल्–(मिलन-सुख-सूचक) बोली से; वलि ऎञ्च–अपनी शक्ति खोकर; नटुङ्कुवाळ्–काँप उठती। २९५

कभी वह सोचती कि सारे उद्यानों को तहस-नहस कर डालूँ ताकि सभी पुष्प चूर्ण-चूर्ण हो जायँ। पर अपने नर के साथ रहती हुई मादा क्रौंच अपने सुख-संभोग से उत्पन्न आनन्द का नाद करती तो उससे इसका बल छूट जाता और वह काँप उठती। २९५

अणॆवि ड़िङ्गळै नुङ्ग वराविनैक्, कॊणर्वॆ नोडि यॆनक्कॊदित् तुन्नुवाळ्
पणॆयिन् मॆन्मुलै मेऱ्पनि मारुदम्, पुणर वारुयिर् वॆन्दु पुळुङ्गुमाल् 296

अणॆवु इल् तिङ्कळै–प्रतिकूल चाँद को; नुङ्क–निगलने के लिए; अराविनै–(राहु या केतु) सर्प को; ओटि कॊणर्वॆन्–दौड़ जाकर लाऊँगा; ऎन्–ऐसा; कॊतित्तु–खौल उठती; उन्नुवाळ्–सोचती; पणॆयिन् मॆन् मुलै मेल्–पीन और नरम स्तनों पर; पनि मारुतम् पुणर–शीतल पवन के लगने से; आरुयिर् वॆन्तु–मर्मतप्त होकर; पुळुङ्कुम्–ताप से पीड़ित होती। २९६

वह कभी संकल्प करती कि यह चन्द्र मेरे अनुकूल नहीं है। उसे (राहु या केतु) सर्प द्वारा निगलवा लूँगी। बड़े क्रोध के साथ उसको पकड़ लाने की बात सोचती। पर उसके पीन और कोमल स्तनों पर शीतल पवन आकर लगता और उत्तेजित कामवासना से तप्त होकर थक जाती। उसके प्राण जर्जर हो जाते और वह वेदना का अनुभव करती। २९६

❀ कैह ळाऱ्ऱन कदिरिळङ् गॊङ्गै मेल्, ऐय तण्बनि यळ्ळिन ळप्पिनाळ्
मॊय्हॊ डीयिडै वॆन्दु मुरुङ्गिय, वॆय्य पाऱैयिल् वॆण्णॆय् निहर्क्कुमाल् 297

तन कतिर् इळम् कॊङ्कै मेल्–अपने छटामय तरुण उरोजों पर; कैकळाल्–अपने हाथों से; ऐय तण् पनि–छोटे शीतल हिमखण्डों को; अळ्ळित्तळ् अप्पित्ताळ्–उठाकर (शूर्पणखा ने) लगा लिया; ती इटै–अग्नि में; वॆन्तु मुरुङ्किय–तपकर गरम बनी; वॆय्य पाऱैयिल्–उष्ण चट्टान पर (रखे); वॆण्णॆय् निकर्क्कुम्–मक्खन के समान (बाष्प) बना। २९७

उसने अपना ज्वर शान्त करने की इच्छा से शीतल हिमकणों को लेकर अपने मनोरम तरुण स्तनों पर डाल लिया। पर वे इस तरह अदृश्य हो गये, जैसे आग से तप्त गरम चट्टान पर डाला गया मक्खन पिघलकर लुप्त हो जाता है। २९७

❀ अळिक्कु मॅय्युयिर् कान्दळ् लञ्जिनळ्
कुळिक्कु नीरुङ् गॉदित्तॅळक् कूशुमाल्
विळिक्कुम् वेलैये वॅङ्गण तङ्गत्तै
ऑळिक्क लामिड मामॅन्न वुन्नुमाल् 298

अळिक्कुम्–संरक्षणीय; मॅय्–शरीर को और; उयिर्–प्राणों को; कान्तु–जलानेवाली; अळल्–कामाग्नि से; अञ्चिनळ्–डरकर; कुळिक्क–नहायी; नीरुम्–वह जल भी; कॉतित्तु अॅळ–खौल उठा; कूचुम्–नहाने से सकुचाती; विळिक्कुम् वेलैयै–निनादी समुद्र को; वॅम् कण् अतङ्कत्तै–भयंकर मन्मथ को; ऑळिक्कल् आम् इटम्–छिपाये रखनेवाला स्थान; आम् अत्त उन्नुवाळ्–होगा, ऐसा सोचती। २९८

वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाहती थी। पर उसकी कामेच्छा उनका शत्रु बनी थी। उस आग को शान्त करने की इच्छा से वह स्नान करने चली तो जल ही गरम हो गया। तो बेचारी नहाने से कतराती। वह गरजनेवाले सागर को कठोरमन मन्मथ का छिपकर रहने का स्थान मानती। २९८

❀ वन्दु कार्मळै तोन्ऱिनु मामणिक्, कन्दु काणिनुङ् गैत्तलङ् गूप्पुमाल्
इन्दु कान्दत्ति तीर नॅडुङ्गलुम्, वॅन्दु कान्द वेदुम्बुरु मेनियाळ् 299

इन्तु कान्तत्तिन्–चन्द्रकान्त के; ईर नॅटुम् कलुम्–शीतल और विशाल पत्थर को भी; वॅन्तु कान्त–जलाकर भस्म करे, ऐसे; वॅतुम्पु उरु मेनियाळ्–तापशील शरीर वाली; कार् मळै वन्तु तोन्ऱितुम्–काला मेघ आकर दिखे तो भी; मा मणि कन्तु काणितुम्–श्रेष्ठ रत्नस्तम्भ को देखे, तब भी; कै तलम् कूप्पुम्–करतल जोड़ती। २९९

उसका शरीर इतना जलता था कि चन्द्रकान्त का बड़ा पत्थर भी उससे लगे तो जलकर राख बन जाय! ऐसी कामाग्नि से दग्ध शरीर वाली वह काले मेघ को या रत्न-स्तम्भ को देखती तो हाथ जोड़कर नमस्कार करती (श्रीराम के रंग-साम्य के कारण)। २९९

वाम मामदि युम्बनि वाडैयुम्, काम नुन्दनैक् कण्डुण रावहै
नाम वाळॅयिऱ् ऱोरुहद नाहमाय्च्, चेम माल्वरै यिन्मुळैच् चेरुमाल् 300

वाम मा मतियुम्–सुन्दर पूर्णचन्द्र और; पनि वाटैयुम्–शीतल पवन; कामतुम्–कामदेव; तनै कण्टु उणरा वकै–अपने को देख न पाये, इस तरह; नाम वाळ् ॲयिऱ्ऱु ऑरु कत नाकम् आय्–भयंकर दाँत वाला कुपित सर्प बनकर; चेम माल् वरैयिन्–सुरक्षित एक बड़े पर्वत की; मुळै–गुफा में; चेरुम्–जा पहुँचती। ३००

वह सुन्दर पूर्ण-चन्द्र, शीतल (उदीची) हवा और कामदेव से डरती थी। वह चाहती थी कि वे उसे देख न लें। इसलिए वह एक भयंकर तीक्ष्ण दाँतों का सर्प बनकर सुरक्षित एक पर्वत की गुफा में जाकर छिप

गयी। क्यों ? नाग चन्द्र को ग्रसनेवाला है और हवा को खानेवाला। वह शिवजी का अलंकार था और मन्मथ शिवजी से डरता था। इसलिए शूर्पणखा सर्प बनकर छिप गयी। ३००

अऩ्ऩ कालै यळऩ्मिहुत् तेऱवुम्, मुऩ्ऩ मेऩिय ळाय्मुलै वॆऩ्दुह
इऩ्ऩ वाशॆय्वॆ ऩॆऩ्ऱऱि यादिळम्, पॊऩ्ऩिऩ् वार्दळि रिऱ्पुरण् डाळरो 301

अऩ्ऩ कालै–तब; अळल् मिकुत्तु एऱवुम्–कामाग्नि चढ़ी; मुऩ्ऩ मेऩियळाय्–पहले का रूप लेकर; मुलै वॆन्तु उक–स्तनों से अंगारे निकालते हुए; इऩ्ऩवा चॆय्वॆऩ्–किस प्रकार क्या करूँ; ऎऩ्ऱु अऱियातु–यह न जानकर; पॊऩ्ऩिऩ् वार् इळम तळिरिल्–स्वर्ण के रंग वाले पल्लवों पर; पुरण्टाळ्–लेटकर लोटी। ३०१

पर वहाँ भी गरमी बढ़ी तो उसने अपना सर्प-रूप छोड़ दिया। अपना निजी रूप लिया। उसके स्तन इतने तपने लगे कि उनसे आग-सी निकली। क्या करें, कैसे करें ? किंकर्तव्यमूढ़ होकर वह स्वर्णवर्ण पल्लवों पर गिरकर लोटने लगी। ३०१

※ वीरऩ् मेऩि वॆळिप्पड वॆय्दवऩ्, कार्हॊण् मेऩियैक् कण्डऩ ळामॆऩ्ऩच्
चोरुम् वॆळ्हुन् दुणुक्कॆऩु मव्वुरुप्, पेरुङ् गालप् पिणियिऱै पेर्हलाळ् 302

वीरऩ् मेऩि वॆळिप्पट–तव वीर श्रीराम का (भ्रान्ति का) रूप उसे दिखाई दिया; वॆय्तु–चाव के साथ; अवऩ् कार्कॊळ् मेऩियै–उनके मेघ-सम शरीर को; कण्टऩळ् आम् ऎऩ्ऩ–सचमुच देख लिया हो जैसे; चोरुम्–शिथिल हो जाती; वॆळ्कुम्–लजाती; तुणक्कु ऎऩुम्–दलक जाती; अ उरु–वह (कल्पित) रूप; पेरुम् काल्–जब अदृश्य हो जाता, तब; अ पिणि–उस काम-रोग से; इऱै पेर्कलाळ्–जरा भी छूट नहीं सकती थी। ३०२

तब उसे श्रीराम का भ्रान्ति का रूप शून्य में दिखाई दिया। उसके मन में प्रेम उमड़ आया। मेघश्याम को प्रत्यक्ष देखती हो, ऐसा भ्रम हो गया। वह शिथिल हुई, लाज से भरी; फिर सिहर उठी। वह रूप ओझल हो गया तो उसने अनुभव किया कि उसका रोग ज्यों का त्यों है और वह उससे थोड़ा भी छूट नहीं पायी है। ३०२

※ आहक् कॊङ्गैयि ऩैयऩॆऩ् ऱञ्जऩ, मेहत् तैत्तळु वुम्मवै वॆऩ्दऩ
पोहक् कण्डु पुलम्बुमप् पुऩ्मैयाळ्, मोहत् तुक्कॊर् मुडिवुमुण् डाङ्गॊलो 303

अञ्चऩ मेकत्तै–कजरारे (काले) मेघ को; ऐयऩ् ऎऩ्ऱु–प्रभु श्रीराम समझकर; आक कॊङ्कैयिऩ्–वक्ष के स्तनों के साथ; तळुवुम्–लगा लेती; अवै वॆन्तऩ–वे जलकर; पोक–मिट जाते; कण्टु–देखकर; पुलम्पुम्–विलाप करती; अ पुऩ्मैयाळ् मोकत्तिऱ्कु–उस ओछी स्त्री के काम का; ओर् मुटिवु उण्टाम् कॊलो–अन्त भी है क्या। ३०३

वह काले मेघों को प्रभु, कान्त श्रीराम समझकर अपने वक्षस्थल से स्तनों पर लगाकर कसकर पकड़ती। पर काले मेघ गरमी के कारण

बाष्प बनकर मिट जाते। तब वह मुख खोलकर विलाप करती, नीच शूर्पणखा के मोह का कोई अन्त है ? । ३०३

❀ ऊऴि वॅङ्गऩ लुऱ्ऱऩ्ऩ ळॊत्तुमव्, वॆळ्ळै यावि यिऴन्दिलळ् शॅङ्गैयिन्
आऴि यातै यडैन्दवळ् पिऩ्ऩरुम्, वाऴ्ला मॆऩ्ऩु माशै मरुन्दिऩ्ऩे 304

ऊऴि वॅम् कऩल् उऱ्ऱऩळ् ऒत्तुम्–युगान्त की अग्नि में पड़ गई हो ऐसा हो गई, तो भी; चॅम् कैयिऩ्–लाल (श्रेष्ठ) हाथों वाले; आऴियाऩ् अटैन्तु–(आज्ञा) चक्रधारी श्रीराम को प्राप्त करके; अवळ्–वह; पिऩ्ऩरुम् वाऴ्लाम्–फिर भी जी सकेगी; ऍऩुम् आचै मरुन्तिऩ्–ऐसी आशा रूपी दवा के कारण; एळै–उस अबोध ने; आवि इऴन्तिलळ्–प्राण नहीं त्यागे। ३०४

उस काममोह के कारण उसकी स्थिति युगान्त के अनल-प्रवाह में पड़ी हुई सी हो गयी। तो भी आशा बँधी थी कि लाल (मनोरम) हाथों वाले श्रीराम से मिलन होगा और वह मिलकर जिएगी। वही आशा दवा बनी और उसी से उसके प्राण बचे रहे। ३०४

वञ्ज नॆक्कॊडु मायै वळर्क्कुमॆऩ्, नॆञ्जु पुक्कॆऩ दावत्तै नीक्कॆनुम्
अञ्ज नक्किरि येयरु ळायॆनुम्, नञ्जु नक्किनर् पोल नडुङ्गुवाळ् 305

नञ्चु नक्किऩर् पोल–जिसने विष चाट लिया हो, उसके समान; नटुङ्कुवाळ्–काँपती (हुई); अञ्चऩ किरिये–अंजनगिरि (-सम राम); अरुळाय् ऍऩुम्–कृपा करो, कहती; वञ्चऩै–वंचना और; कॊटु मायै वळर्क्कुम्–क्रूर माया को पालनेवाले; ऍऩ् नॆञ्चु पुक्कु–मेरे मन में प्रवेश करके; ऍऩतु आवत्तै नीक्कु–मेरी विपदा दूर करो; ऍऩुम्–कहती। ३०५

विष को जो चाट चुका हो, उसके समान उसका शरीर काँपने लगा। वह मन में श्रीराम से प्रार्थना करने लगी कि हे अंजनपर्वत ! मुझ पर कृपा करो। वह यह भी कहती कि मेरा मन कपटी है और माया को पालनेवाला है। उसमें तुम घुस जाओ और मुझे आफ़त से बचाओ। ३०५

❀ कावि योहय लोवॅनुङ् गण्णिणैत्, तेवि योतिरु मङ्गैयिर् चॅव्वियाळ्
पावि येन्नैयुम् पार्क्कुङ्गॊ लोवॅनुम्, आवि योयिनु माशैयि नोय्विलाळ् 306

आवि ओयितुम्–प्राण छूट जायँ, तो भी; आचैयिन् ओय्वु इलाळ्–जिसका राग नहीं थमता, वह; कावियो–नीला पुष्प है; कयलो–या 'कयल' मछली है; ऍऩुम्–ऐसा कहलानेवाली; कण् इणै–आँखों का जोड़ा; तेवियो–जिसका है वह (उसकी) देवी तो; तिरुमङ्कैयिल् चॅव्वियाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी से भी सुन्दर है; पावियेन्नैयुम्–मुझ पापिनी पर; पार्क्कुम् कॊलो–दृष्टि लगाएगा क्या; ऍऩुम्–(यह नैराश्य वचन) कहती। ३०६

चाहे उसके प्राण ही क्यों न छोड़ जायँ, वह तो श्रीराम पर काम को छोड़नेवाली नहीं थी। उसे सीतादेवी का स्मरण आया। 'नीलोत्पल

है या कयल नाम की मछली ? ऐसा सन्देह उत्पन्न करनेवाली आँखों के जोड़े से युक्त उसकी पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवी से भी बढ़कर सुन्दरी है। वह क्या मेरी ओर आँख उठाकर भी देखेगा ?' ऐसा प्रश्न करके वह दुखी हुई। ३०६

❀ आऩ्ऱ काद लः(ह्)दुऱ वॅय्दुऴि, मूऩ्ऱु लोहमु मूडु मरक्कराम्
एऩ्ऱ कारिरु णीक्क विराहवऩ्, तोऩ्ऱि ऩाऩॆऩ वॆय्यवऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 307

आऩ्ऱ कातल् अ.ं.तु–गहरे काम-रोग से; उऱ ऍय्तुऴि–खूब पीड़ित होकर जब रही; मूऩ्ऱु लोकमुम् मूटुम्–(स्वर्ग-मध्य-पाताल) तीनों लोकों को आच्छादित कर जो रहे; अरक्कर् आम्–उन राक्षस रूपी; एऩ्ऱ कार् इरुळ्–अन्धकार को, जो सामने आया था; नीक्क–दूर करने के लिए; इराकवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ् ॲऩ–श्रीराघव आये, ऐसा; वॆय्यवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–उष्णकिरण (सूर्य) उदित हुए। ३०७

रात भर वह इसी तरह काम के बढ़ने से उद्विग्न रही। तब सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए उदित हुए, जैसे श्रीराघव तीनों लोकों पर छाये रहे राक्षस रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए अवतार ले आये। ३०७

❀ विडियल् काण्डलु माण्डुतऩ् ऩुयिर्हण्ड वॆय्याळ्
पडियि लाण्मरुङ् गुळ्ळॆऩि ऩॆऩैयवऩ् बाराऩ्
कडिदि नोडिऩॆ ऩॆडुत्तोल्लैक् करन्दवळ् कादल्
वडिवि ऩाऩुडऩ् वाऴ्वदे मदियॆऩ मदिया 308

विटियल् काण्टलुम्–सवेरा होते ही; आण्टु तऩ् उयिर् कण्ट–तब अपनी प्राणता को प्राप्त कर; वॆय्याळ्–नृशंस निशाचरी; पटि इलाळ्–उपमा-हीन देवी; मरुङ्कु उळळ् ॲऩिल्–पास रही तो; अवऩ् ॲऩै पाराऩ्–वह मेरी ओर ध्यान नहीं देगा; कटितिऩ् ओटिऩॆऩ्–सवेग दौड़कर; ॲटुत्तु–उसको उठाकर; ऒल्लै करन्तु–जल्दी छिपाये रखकर; कातल् अवळ् वटिविऩ्–उसकी प्रिया के रूप में; नाऩ् उटऩ् वाऴ्वते–मेरा उसके साथ रहना ही; मति ॲऩ–बुद्धिमानी है, ऐसा; मतिया–निश्चय करके। ३०८

सवेरा हुआ और शूर्पणखा ने देखा कि उसके प्राण बचे हैं। उसने सोचा कि जब तक वह स्त्री, जो अनुपम सुन्दरी है, उसके साथ रहेगी तब तक वह मेरी ओर दृष्टि देगा ही नहीं। इसलिए शीघ्र भागकर जाऊँगी और उसे उठा ले जाकर कहीं छिपा दूँगी। फिर राम की प्रिया उसका रूप लेकर उसके साथ रहूँगी। ऐसा जीना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा संकल्प करके ; । ३०८

❀ वन्दु नोक्किऩळ् वळ्ळल्पो यॊरुमणित् तडत्तिल्
शन्दि नोक्किऩ ऩिरुन्ददु कण्डऩ डम्बि

इन्दु नोक्किय नुदलियैक् कात्तय लिरुण्ड
कन्द नोक्किय शोलैयि लिरुन्ददु काणाळ् 309

वन्तु नोक्किनळ्–आकर देखा; वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; पोय्–जाकर; ऑरु मणि तटत्तिल्–एक सुन्दर घाट पर; चन्ति नोक्कितन्–संध्यावन्दन में लगे; इरुन्ततु–रहे; कण्टनळ्–देखा; तम्पि–कनिष्ठ (लक्ष्मण); इन्तु नोक्किय नुतलियै–चन्द्र-सम भाल वाली सीताजी का; कात्तु–रक्षण करते हुए; अयल्–पास; कन्तम् नोक्किय–सुवास निकालनेवाले; इरुण्ट चोलैयिल्–घने उपवन में; इरुन्ततु–रहे, वह; काणाळ्–नहीं देखा। ३०९

वह आयी। आश्रम के पास आकर उसने देखा कि प्रभु वहाँ से दूर मनोहर घाट पर संध्यावन्दन में दत्तचित्त हैं। उसका भाई इन्दु-सम ललाट वाली सीता के संरक्षण में ही पास में सुवास देनेवाले उस आश्रम के एक छाया के कारण अँधेरे स्थान में विराजे थे। पर शूर्पणखा ने लक्ष्मण को नहीं देखा। ३०९

❀ तनियि रुन्दनळ् शमैन्ददॆन् करुत्तॆनत् ताळ्वुऱ्
ऱिनियि रुन्दॆनक् कॆण्णुव दिल्लॆन वॆण्णात्
तुनियि रुन्दवन् मनत्तिन डोहैयैत् तॊडर्न्दाळ्
कनियि रुम्बॊळिल् कात्तय लिरुन्दवन् कण्डान् 310

तनि इरुन्तनळ्–एकाकिनी रहती है; ऍन् करुत्तु–मेरा विचार; चमैन्ततु–चरितार्थ हुआ; ऍन–ऐसा और; इनि ताळ्वु उऱ्ऱु इरुन्तु–अब विलम्ब करते रहने से; ऍनक्कु ऍण्णुवतु इल्–मुझे सोचने के लिए कुछ नहीं है; ऍन–ऐसा; ऍण्णा–निश्चय करके; तुनि इरुन्त–घृणा से भरे; वन् मनत्तितळ्–कठोर मन वाली; तोकैयै तॊटर्न्ताळ्–मयूराभा सीताजी की ओर गई; कनि–फलों से युक्त; इरुम् पॊळिल् कात्तु–विशाल उपवन में पहरा जो देते; अयल् इरुन्तवन्–पास रहे लक्ष्मण ने; कण्टान्–देखा। ३१०

शूर्पणखा को आश्वासन हो गया। 'सीता अकेली है! मेरा संकल्प पूर्ण हो गया। अब विलम्ब करके सोचते रहने के लिए कुछ नहीं है।' ऐसा घृणा से भरे कठोर मन वाली ने निश्चय किया। वह मयूराभा सीता की तरफ़ सवेग जाने लगी। लक्ष्मण ने, जो उस फलदार तरुओं से भरे विशाल आश्रम में पहरा देते हुए बैठे रहे, उसको देख लिया। ३१०

❀ निल्ल डीयॆनक् कडुहिनन् पॆण्णॆन निनैन्दान्
विल्लॆ डादवळ् वीङ्गॊरि यामॆन विरिन्द
शिल्ल लोदियैच् चिक्कुरच् चॆङ्गैयार् पऱ्ऱि
ऑल्लै यीर्त्तुदैत् तॊळिहिळर् शुऱ्ऱुवा ळुरुवि 311

अटी निल् ऍन–री खड़ी रह कहकर; कटुकितन्–तेज चाल आये; पॆण् ऍन निनैन्तान्–स्त्री है, समझे; विल् ऍटातु–धनुष न लेकर; अवळ्–उस (शूर्पणखा) के;

वीङ्कु ॲरि आम् ॲन्न–खूब अधिक जलती आग के समान; विरिन्त–विस्तृत रूप से सिर के चारों ओर बिखरे रहनेवाले; चिन्तलल् ओतियै–कम लम्बे केश-जाल को; चॅङ्कैयाल्–लाल हाथ से; चिक्कु उऱ पऱ्ऱि–हाथ को लपेट ले, ऐसा पकड़कर; ऒल्लै–तेजी से; ईर्त्तु–खींचकर; उतैत्तु–उसके लात मारकर; ऒळि किळर्–कान्तिमय; चुऱ्ऱुवाळ् उरुवि–कटार निकालकर। ३११

लक्ष्मण तुरन्त, 'री खड़ी रह।' —डाँटते हुए उठ आये। वह स्त्री थी, इसलिए उसने धनुष नहीं लिया। उसने आकर जलती आग के समान उसके सिर पर बिखरे रहे केश को अपने हाथ से मरोड़कर पकड़ा, उसको झटका देकर खींचा और लात मारी। फिर उन्होंने अपनी उज्ज्वल कटार निकालकर; । ३११

❀ ऊक्कित् ताङ्गिविण् पडर्वॅन्नॅन्नु रुरुत्तॅऴु वाळै
नूक्कि नॊय्दिनिल् वॅय्दिऴै येलॅन्न नुवला
मूक्कुङ् गादुम्वॅम् मुरण्मुलैक् कण्गळु मुऱैयाल्
पोक्किप् पोक्किय शिनत्तोडुम् बुरिहुळल् विट्टान् 312

ऊक्कि–प्रयत्न करके; ताङ्कि–(इसको) उठाते हुए; विण् पटर्वॅन्–आकाश में उड़ जाऊँगी; ॲन्नुरु–ऐसा; उरुत्तु ॲऴुवाळै–कोप के साथ उछलनेवाली को; नॊय्तितिल् नूक्कि–आसानी से नीचे पछाड़कर; वॅय्तु इऴैयेल् ॲन्न–ऐसा बुरा काम मत करो, यह; नुवला–कहकर; मूक्कुम् कातुम्–नाक और कानों को; वॅम् मुरण् मुलै–भयंकर कुरूपी स्तनों के; कण्कळुम्–चूचुकों को; मुऱैयाल् पोक्कि–एक के बाद एक क्रम से काटकर; पोक्किय चित्तत्तॊटुम्–शान्त हुए कोप के साथ; पुरि कुऴल् विट्टान्–ऐंठा केश छोड़ दिया। ३१२

उस शूर्पणखा को, जो उन्हें भी सयत्न उठाते हुए आकाश में उड़ जाने का विचार कर रही थी, नीचे पटक दिया। फिर 'ऐसे बुरे कार्य मत करो' कहते हुए उन्होंने उसकी नाक, कान और विकृत और भयंकर स्तनों के चूचुकों को क्रम से काट दिया। (यह चूचुक काटने की बात 'भागवत' में ही आयी है।) तभी जाकर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने हाथ में ऐंठे रहे उसके केश को छोड़ा। ३१२

अक्क णत्तवळ् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिय वमलै
तिक्क नैत्तिनुञ् जॅन्ऱदु तेवर्तञ् जॅवियुम्
पुक्क दुऱ्ऱदु पुहल्वदॅन् मूक्कॅनुम् बुऴैयू
डुक्क शोरियि नीरमुऱ् ऱुरुहिय दुलहम् 313

अ कणत्तु–उस समय; अवळ्–शूर्पणखा ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिय–जो विलाप किया, वह; अमलै–शोर; तिक्कु अत्तैत्तितुम् चॅन्ऱतु–सारी दिशाओं में गया; तेवर् तम् चॅवियुम्–देवों के कानों में भी; पुक्कतु–घुसा; उऱ्ऱतु पुकल्वतु ॲन्–वहाँ जो हुआ उसका क्या कहा जाय; मूक्कु ॲनुम्–नाक रूपी; पुऴै

ऊट्टु–विवरों द्वारा; उक्क–बहनेवाले; चोरियिन्–रक्त में; ईरम् उऱ्ऱु–भीगकर; उलकम् मुळ्ुवतुम् उरुकियतु–सारा लोक गल गया। ३१३

तव शूर्पणखा अपना मुख खोलकर उच्च स्वर में रोने-चिल्लाने लगी। वह शोर सभी दिशाओं में व्यापा और देवों के कानों में भी जाकर भर गया। जो हुआ उसका क्या कहा जाय? नासिका-विवर से जो रक्त बहा, वह इतना अधिक था कि विशाल भूमि ही गल गयी। ३१३

कॊलैतु मित्तुयर् कॊडुङ्गदिर् वाळित्तक् कॊडियाळ
मुलैतु मित्तुयर् मूक्कित्तै नीक्किय मुऱ्ऱैमै
मलैतु मित्तॆन्न विरावणन् मणियुडै महुडत्
तलैतु मित्तऱ्कु नाट्कॊण्ड दॊत्तदोर् तन्मै 314

कॊलै तुमित्तु–मारना रोककर; उयर् कतिर् कॊट्टुम् वाळित्–अधिक चमकदार भयंकर कटार द्वारा; अ कॊटियाळ्–उस अत्याचारिणी का; मुलै तुमित्तु–स्तनों (के चूचुकों) को काटकर; उयर् मूक्कित्तै नीक्किय–उठी हुई नाक को काटने का; मुऱ्ऱैमै–कार्य; मलै तुमित्तु ॲन्न–पर्वत को काटने के समान; इरावणन् मणि उटै मकुटम्–रावण के मणिमण्डित किरीटधारी; तलै तुमित्तऱ्कु–सिरों को काट लेने के लिए; नाळ् कॊण्टतोर् तन्मै–'मुहूर्त' (शुभारम्भ) करने के; ऒत्ततु–समान रहा। ३१४

लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नहीं मारा। पर उसके स्तनों के अग्रभाग और नाक के उठे हुए भाग को काट दिया। वह कार्य पीछे होनेवाले रावण-वध का शुभ आरम्भ-सा था। पर्वतशिखरों के समान रावण के मणिमय किरीटधारी सिर काटकर अलग किये जायँगे। उसका आरम्भ करने का मुहूर्त अब मनाया गया। ३१४

अदिर मानिलत् तडिपदैत् तरऱ्ऱिय वरक्कि
कदिर्ह्हॊळ् कालवेऱ् करन्मुद निरुदर्वॆङ् गदप्पोर्
ॲदिरि लादव रिऱुदियि निमित्तमा यॆळुन्दाण्
डुदिर मारिपॆय् कार्निऱ मेहमॊत् तुयर्न्दाळ् 315

अतिर–थर्राते हुए; मा निलत्तु–विशाल भूमि पर; अटि पतैत्तु–कोप और दुख के कारण पैर पटककर; अरऱ्ऱिय–जो दहाड़ मारकर रोने लगी, वह; अरक्कि–राक्षसी; काल–यम के समान; कतिर् कॊळ् वेल्–(और) चमकदार शक्ति-धारी; करन् मुतल्–खर आदि; वॆम् कत पोर्–भयंकर और घमासान युद्ध में; ॲतिर् इलातवर्–जो सानी नहीं रखते थे, उन; निरुतर्–राक्षसों के; इऱुतियिन् निमित्तमाय्–अन्त कराने के निमित्त; ॲळुन्तु–उठी और; आण्टु–वहाँ; उतिर मारि पॆय्–रक्तवर्षा करनेवाले; कार् निऱ मेकम् ऒत्तु–काले मेघ के समान; उयर्न्ताळ्–सिर ऊँचा कर खड़ी हुई। ३१५

शूर्पणखा वेदना से थर्रा उठी। भूमि पर पैर पटकने लगी। वह

दहाड़ मारकर रोयी। फिर वह सिर तानकर खड़ी हुई, तब वह रक्त बहानेवाले काले मेघ के समान लगी। कठोर युद्ध में निर्द्वन्द्व और यम के समान घातक और चमकदार भालों वाले खर आदि राक्षसों के नाश के लिए तत्पर हुई हो, ऐसा वह निशाचरी जोश के साथ उठी। ३१५

उयरुम् विण्णिडै मण्णिडै विऴुङ्गिडन् दुळैक्कुम्
अयरुङ् गैहुलैत् तलमरु मारुयिर् शोरुम्
पॅयरुम् पॅण्बिरन् दियान्बट्ट पळियॅनप् पिदट्रुम्
तुयरु मञ्जिमुन् ऱॊडर्न्दिलात् तॊल्हुडिप् पिऱन्दाळ् 316

तुयरुम्–दुख नामक कुछ; अञ्चि–डर से; मुन् तॊडर्न्तिला–जिसके पास पहले नहीं गया था; तॊल् कुटि पिऱन्ताळ्–उस प्राचीन (राक्षस-) कुल में जो पैदा हुई थी, वह; विण् इटै उयरुम्–आकाश में उठती; मण् इटै विऴुम्–भूमि पर गिरती; किटन्तु उळैक्कुम्–पड़ी चिल्लाती; अयरुम्–थकती; कै कुलैत्तु–हाथ मलकर; अलमरुम्–उद्विग्न होती; आर् उयिर् चोरुम्–क्षीणप्राण हो जाती; पॅयरुम्–सुध पाकर चलने लगती; पॅण् पिऱन्त–स्त्री पैदा होकर; यान्–मुझे; पट्ट पळि–मिली निन्दा है; ऍन–ऐसा; पितट्रुम्–बकती। ३१६

वह शूर्पणखा उस राक्षसकुल की थी, जिसके पास दुख भी डर के कारण नहीं आया था। अब उसे अपार दुख मिल गया। अत्यधिक वेदना का अनुभव करने लगी। वह ऊपर उठती पर भूमि पर गिर जाती। भूमि पर पड़ी रहकर चिल्लाती। थक जाती। हाथ मलकर उद्विग्न होती। प्राण-हीन-सी मूर्च्छित हो जाती। कुछ देर बाद सुध पाती और विलापती कि स्त्री पैदा होकर कैसी निन्द्य स्थिति को प्राप्त हो गयी? । ३१६

❀ ऑऱ्ऱुम् मूक्किनै युलैयुरु तीयॅन वुयिर्क्कुम्
ऍऱ्ऱुङ् गैयिनै निलत्तिनि लिणैत्तडङ् गॊङ्गै
पऱ्ऱिप् पार्क्कुमॅय् वेर्क्कुन्दन् बरुवरन् मयक्काल्
शुऱ्ऱु मोडुम्बोय्च् चोरिनीर् शॊरिदरच् चोरुम् 317

मूक्किनै–नाक को; ऑऱ्ऱुम्–पोंछती; उलै उऱु ती ऍन–भट्ठी की आग के समान; उयिर्क्कुम्–गरम साँस छोड़ती; कैयिनै–हाथों को; निलत्तितिल्–भूमि पर; ऍऱ्ऱुम्–मारती; इणै तट कॊङ्कै–जोड़े के बड़े स्तनों को; पऱ्ऱि पार्क्कुम्–हाथों में ले देखती; मेय् वेर्क्कुम्—स्वेद-पूर्ण शरीर हो जाती; तन् परुवरल् मयक्काल्–अपने दुख से उत्पन्न भ्रम के कारण; चुऱ्ऱुम् ओटुम्–चारों ओर दौड़ती; पोय्–जाकर; चोरि नीर्–रक्त को; चॊरि तर–बहाती हुई; चोरुम्–शिथिल पड़ जाती। ३१७

वह अपना दामन लेकर नाक को पोंछती। ऐसा गरम निश्वास छोड़ती, मानो भट्ठी से आग की ज्वाला निकल रही हो। हाथों से भूमि पर मारती। अपने दोनों स्तनों को हाथ से पकड़कर उन पर दृष्टि

दौड़ाती। उसका शरीर पसीने से भर जाता। असह्य वेदना के कारण उसका चित्त भ्रमित हो जाता और वह इधर चारों ओर घूमती। पर रक्त बहाते हुए निर्बल हो गिर जाती। ३१७

❀ ऊऱ्ऱु मिक्कनी रुविथि नीॆळ्हिय कुरुदिच्
चेऱ्ऱु वॆळ्ळत्तुट् टिरिबव डेवरु मिरियक्
कूऱ्ऱु मुट्कुन्दन् कुलत्तिनोर् पॆयरॆलाङ् गूऱि
आऱ्ऱु हिऱ्किलळ् पऱ्पल पन्निनिन् ऱळैत्ताळ् 318

ऊऱ्ऱु मिक्क–सोते से अधिक वहनेवाले; नीर् अरुवियिन्–जल की पर्वत-सरिता के समान; ऑळुकिय–बहनेवाले; कुरुति चेऱु–रक्त के पंकिल; वॆळ्ळत्तु उळ्–प्रवाह के अन्दर; तिरिपवळ्–जो घूमती थी, वह; आऱ्ऱकिऱ्ऱिलळ्–सह नहीं सकी और; तेवरुम् इरिय–देव भाग जाएँ, ऐसा; कूऱ्ऱुम् उट्कुम्–यम को भी भयभीत करते हुए; तन् कुलत्तिनोर् पॆयर् ऍलाम्–अपने कुल के सभी के नाम; कूऱि–लेते हुए; पल् पल–अनेक प्रलाप; पन्नि निन्ऱु–करते हुए खड़ी रहकर; अळैत्ताळ्–बुलाया (शूर्पणखा ने)। ३१८

सोते से वहनेवाले जल की पर्वतसरिता के समान उसके कटे अंगों से पंकिल रक्त बह रहा था। वह उसके साथ बेचैनी से संचार करती थी। दुख उसे असह्य था। तब वह अपने कुल के राक्षसों के नाम लेकर बिलापती हुई पुकार मचाने लगी। उसे सुनकर देव भाग गये और यम भी भयभीत हो गया। ३१८

निलैयॆडुत्तु नॆडुनिलत्तु नीयिरुक्कत् ताबदर्हळ्
शिलैयॆडुत्तुत् तिरियुमिदु शिऱ्ऱिदन्ऱो देवरॆदिर्
तलैयॆडुत्तु विळियामै शमैप्पदे तळलॆडुत्तान्
मलैयॆडुत्त तनिमलैये यिवैहाण वारायो 319

तळल् ऍटुत्तान्–अग्निज्वाला को हाथ में रखनेवाले (शिवजी) के; मलै–कैलासपर्वत को; ऍटुत्त–जिसने उखाड़ लिया, वह; तनि मलैये–अनुपम पर्वत-सम (भाई रावण); नी–तुम; नॆटु निलत्तु–विशाल भूमि पर; निलै ऍटुत्तु इरुक्क–स्थायी यश के साथ रहते हो, तभी; तापतर्कळ्–तपस्वी; चिलै ऍटुत्तु तिरियुम् इतु–धनुष लेकर घूमते हैं, यह; चिऱ्ऱितु अन्ऱो–तुम्हारे गौरव में कमी नहीं है क्या; तेवर् ऍतिर्–देवों के सामने; तलै ऍटुत्तु–सिर उठाकर; विळियामै–देख न सकना; चमैप्पते–साध्य हो जाय क्या; इवै काण वारायो–ये देखने न आओगे क्या। ३१९

अनलधर शिवजी के कैलासपर्वत को उखाड़नेवाले पर्वत-सम मेरे भाई रावण ! तुम इस भूमि पर अभी स्थायी यश के साथ हो ! तो भी तापस लोग धनु लेकर घूम रहे हैं ! यह तुम्हारे यश को छोटा बनानेवाला नहीं है क्या ? और अब हम देवों के सामने सिर उठा नहीं सकेंगे ? उनकी दृष्टि से दृष्टि न मिला सकेंगे। ऐसी स्थिति भी आ जायगी

शायद ? इनको देखने नहीं आओगे क्या ? (दारुका वन के ऋषियों ने शिवजी पर अग्नि को भेजा था। उन्होंने उसे अपने हाथ में रख लिया। उसको 'मऴु' कहते हैं। मऴु का अर्थ परशु भी है। अतः मऴु-धारी शब्द के दोनों अर्थ— परशुधर, अनलधर किये जाते हैं।)। ३१९

पुलितान्ऱे पुऱत्ताहक् कुट्टिकोट् पडादॆन्ऩुम्
ऑलियाऴि युलहुरैक्कु मुरैपॊय्यो वूऴियिनुम्
शलियाद मूवरुक्कुन् दानवर्क्कुम् वानवर्क्कुम्
वलियान्ऱे यान्पट्ट वलिहाण वारायो 320

ऊऴियितुम् चलियात–कल्पान्त में भी अचल रहनेवाले; मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों से और; तानवर्क्कुम्–असुरों से; वानवर्क्कुम्–देवों से; वलियाते–वढ़कर बली; पुलि पुऱत्तु आक–मादा व्याघ्र के पास रहते; कुट्टि–उसका शावक; कोळ् पटातु–किसी की पकड़ में नहीं आयगा; ॲन्ऩुम्–ऐसा; ऑलि आऴि उलकु–गर्जनशील सागर-वलयित भूतल (वासी); उरैक्कुम् उरै–जो कहता है, वह मसल; पॊय्यो–असत्य है क्या; यान् पट्ट–मुझ पर आया; वलि काण–संकट देखने के लिए; वारायो–नहीं आओगे क्या। ३२०

हे भाई! तुम कल्पान्त में भी अमिट रहनेवाले त्रिदेवों, दानवों और देवों से भी अधिक बली हो। तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्गति हो गयी। लोकोक्ति है कि मादा व्याघ्र के पास रहते व्याघ्रशावक को कोई ग्रस नहीं सकता। क्या वह कथन असत्य है ? मुझ पर जो बीता है, वह बड़ी विपदा देखो, आओ। नहीं आओगे ? । ३२०

आर्त्तान्ऩैक् करशुन्दि यमरर्कणत् तॊडुमडर्त्त
पोर्त्तान्ऱै यिन्दिरन्ऩैप् पॊरुदवन्ऩैप् पोर्तॊलैत्तु
वेर्त्तान्ऱै युयिर्हॊण्डु मीण्डान्ऱै वॆरिन्पण्डु
पार्त्तान्ऱे यान्पट्ट पऴिवन्दु पारायो 321

पण्टु–पहले; आर्त्तु–बड़े हुल्लड़ के साथ; आनैक्कु अरचु उन्ति–गजराज ऐरावत को चलाते हुए; अमरर् कणत्तॊटुम्–देवगणों के साथ मिलकर; अटर्त्त–(तुमसे) जिसने लड़ाई की; पोर् तानै इन्तिरनै–उस युद्धसन्नद्ध सेना के स्वामी इन्द्र से; पॊरुतु–लड़कर; अवनै–उसको; पोर् तॊलैत्तु–युद्ध में हराकर; वेर्त्तानै–डर से स्वेदयुक्त होकर; उयिर् कॊण्टु मीण्टानै–जान लेकर भागनेवाले उसकी; पण्टु–पहले; वॆरिन् पारत्तानै–पीठ को जिसने देखा, ऐसे रावण; यान् पट्ट पऴि–मुझे मिली दुर्गति को; वन्तु पारायो–तुम आकर नहीं देखोगे क्या। ३२१

पहले दिग्विजय के अवसर पर, हे रावण! गजराज ऐरावत को चलाते हुए इन्द्र अपने देवगणों को साथ लेकर तुमसे लड़ने आया। युद्धसन्नद्ध सेना उसके साथ आयी थी। तुमने उससे लड़ाई की और समरभूमि में उसको हराया। वह पसीना-पसीना होकर जान लेकर तुमको

अपनी पीठ दिखाते हुए भागा ! ऐसे रावण ! क्या तुम इधर आकर मेरी दुर्गति नहीं देखोगे ? । ३२१

कार्ऱ्िनैयुम् पुनलिनैयुम् कनलिनैयुङ् गडुङ्गालक्
कूर्ऱ्िनैयुम् विण्णियङ्गु कोळिनैयुम् बणिहोडर्
कार्ऱ्िनी यीण्डिरुवर् मानिडवर्क् कार्ऱादु
मार्ऱ्िनैयो वुन्वलत्तैच् चिवन्ऱडक्कै वाळ्होण्डाय् 322

चिवन् तट कै वाळ्–शिवजी के दीर्घ हाथ से दी गई तलवार (चन्द्रहास); कॊण्टाय्–रखनेवाले; कार्ऱिनैयुम्–वायुदेव को; पुनलिनैयुम्–और वरुण को; कनलिनैयुम्–अग्निदेव को; कटुम् काल कूर्ऱिनैयुम्–कठोर काल के देव यम को; विण् इयङ्कु–आकाश में संचार करनेवाले; कोळिनैयुम्–नवग्रहों को; पणि कोटर्कु–सेवा लेने के लिए; आर्ऱिनै–नियत किया; नी–तुमने; ईण्टु इरुवर् मानिटवर्क्कु–यहाँ दो मनुष्यों के सामने; आर्ऱादु–अशक्त होकर; उन् वलत्तै मार्ऱिनैयो–अपना बल खो दिया है क्या । ३२२

शिवजी के हाथ से तुमको चन्द्रहास नाम की तलवार मिली । उस तलवार के धारक रावण ! तुमने वायुदेव, वरुण, अग्निदेव, कठोर कालदेव और आकाशचारी नवग्रह इन सबको अपने सेवक बना रखा है ! ऐसे बली अब इन दो मामूली मनुष्यों के सामने अशक्त होकर तुम अपना बल खो चुके क्या ? । ३२२

उरुप्पॊडिया मन्मदनै यॊत्तुळरे यातालुम्
शॆरुप्पडियिर् पॊडियॊव्वा मानिडरैच् चीऱुदियो
नॆरुप्पॊडियप् पॊडिशिदऱ निऱैमदत्त तिशैयानै
मरुप्पॊडियप् पॊरुप्पिडियत् तोणिमिर्त्त वलियोनै 323

निऱै मतत्त–पूर्ण मद वाले; तिचैयानै–दिग्गजों के; मरुप्पु ऒटिय–दाँत तोड़ते हुए; पॊरुप्पु इटिय–कैलास को ढहते हुए; नॆरुप्पु ऒटिय–अग्निदेव को तोड़कर; पॊटि चितऱ–चूर-चर कर छितराते हुए; तोळ् निमिर्त्त–(दिग्विजय के अवसर पर) भुजाओं का बल दिखाकर जिसने लड़ाई की, ऐसे; वलियोनै–बलवान (रावण); उरु पॊटिया–शरीर जिसका नष्ट नहीं हुआ हो, ऐसे; मन्मतनै–मन्मथ के; ऒत्तु उळरे आतालुम्–समान हैं तो भी; चॆरु पटियिल्–युद्धभूमि में (या जूते के तल को); पॊटि ऒव्वा–धूलि-सम भी जो नहीं हैं; मानिटरै–उन मनुष्यों पर; चीऱुतियो–कोप करोगे क्या । ३२३

दिग्विजय के अवसर पर तुमने मदमत्त दिग्गजों के दाँतों को तोड़ा, कैलास को गिराया और अग्निदेव को चूर कर छितराया । ऐसे तुमने भुजाओं के बल का प्रदर्शन किया । ऐसे बली रावण ! ये दोनों सशरीर मन्मथ के समान हैं तो भी (चॆरु पटियिल =) युद्धभूमि में, या

(चॅरुप्पटियिल् =) जूते के तल की धूलि के समान भी नहीं होंगे। वे इतने दुर्बल हैं। उन पर कोपकर उनसे लड़ोगे भी ? । ३२३

तेनुडैय नऱुन्दॅरियऱ् ऱेवरैयुन् दॅरुमाऱ्ऱल्
तानुडैय विरावणऱ्कुन् दम्बियर्क्कुन् दविर्न्ददो
ऊनुडैय वुडम्बिनरा यॅङ्गुलत्तोर्क् कुणवाय
मानुडवर् मरुङ्गेपुक् कॊडुङ्गिनदो वलियम्मा 324

तेन् उटैय–शहद-भरे; नऱुम् तॅरियल्–मधुर सुगन्धयुक्त मालाधारी; तेवरैयुम्–देवों को भी; तॅरुम्–आक्रान्त करनेवाले; आऱ्ऱल् तान् उटैय–शक्तिसम्पन्न; इरावणऱ्कुम्–रावण का और; तम्पियर्क्कुम्–उसके छोटे भाइयों का; वलि–बल; तविर्न्ततो–छूट गया क्या; ऊन् उटैय उटम्पितर् आय्–मांसयुक्त शरीर के बनकर; ॲम् कुलत्तोर्क्कु–हमारे राक्षसकुल के लोगों का; उणवु आय–भोजन बननेवाले; मानुटवर् मरुङ्के पुक्कु–मनुष्यों के अन्दर घुसकर; ऑटुङ्कितो–समा गया क्या; अम्मा–आश्चर्य। ३२४

अब जो हुआ है, उसका अर्थ क्या समझा जाय ? यह समझा जाय कि मधुयुक्त सुवासित मालाधारी देवों को आक्रान्त करनेवाले रावण का और उसके भाइयों का बल क्षीण हो गया ? और वह बल हमारे कुल के लोगों का भोज्य मांसधारी मानवों के शरीर के अन्दर प्रवेश कर समा गया ? । ३२४

मरनेयु नॅडुङ्गानिन् मऱैन्दुऱैयुन् दापदर्हळ्
उरनेयो वडलरक्क रोय्वेयो वुऱ्ऱॅदिर्न्दार्
अरनेयो वरियेयो वयनेयो वॅनुमाऱ्ऱल्
करनेयो यान्पट्ट कैयऱवु काणायो 325

मरन् एयुम्–वृक्षाकीर्ण; नॅटुम् कानिल्–विस्तृत वन में; मऱैन्तु उऱैयुम्–छिपकर रहनेवाले; तापतर्कळ्–तपस्वी लोगों का; वलिये ओ–बल है यह; अटल् अरक्कर्–(या) बली राक्षसों की; ओय्वेयो–शक्तिहीनता है; उऱ्ऱु ॲतिर्न्तार्–लड़ने आये हुए (लोग); अरने ओ–हर है क्या; अरिये ओ–हरि है क्या; अयने ओ–अज है क्या; ॲनुम्–ऐसा मानें उतना; आऱ्ऱल्–बली; करने ओ–हे खर; यान् पट्ट–मैंने जो पाया है; कै अऱवु–वह संकट; काणाय् ओ–आकर देखोगे नहीं क्या। ३२५

यह घटना तरुसंकुल वन में छिपे रहनेवाले तपस्वियों के बल का द्योतक है ? या बली राक्षसों की शक्ति के क्षीण हो जाने का ? हे खर ! जिसको युद्ध में देखकर शत्रु यह सन्देह करते थे कि यह क्या हर ही है या हरि या अज ! ऐसी शक्ति वाले खर ! आकर मुझे क्या हो गया है —यह अनर्थ तुम नहीं देखोगे क्या ? । ३२५

इन्दिरन् मलरयन् मिमैयवरुम् बणिकेट्पच्
चुन्दरिपल् लाण्टिशैप्प वुलहेळुन् दॊळ्देत्तच्
चन्दिरन्पॊऱ् कुडैनिऴऱ्ऱ विशैन्दिरुन्द शवैनडुवे
वन्दडिये नाणादु मुहङ्गाट्ट वल्लेनो 326

इन्तिरत्तुम्–देवेन्द्र और; मलर् अयत्तुम्–सरोजासन ब्रह्मा; इमैयवरुम्–और अन्य देव; पणि केट्प–सेवाएँ करते हैं; चुन्तरि–सुन्दरी शची देवी; पल्लाण्टु इचैप्प–'जयजीव' गाती है, तब; उलकु एऴुम् तॊऴुतु एत्त–सातों लोक विनय करके स्तुति करते; चन्तिरन्–चन्द्र के; पॊन् कुटै–स्वर्णछत्र; निऴऱ्ऱ–ले छाया करते; इचैन्तु इरुन्त–तुम ऐसा जिस सभा में उल्लास के साथ रहते हो; चवै नटुवे–उस सभा के मध्य; अटियेन् वन्तु–दासी मैं आकर; नाणातु–बिना शरमाये; मुकम् काट्ट वल्लेनो–मुख दिखा सकूँगी क्या। ३२६

हे रावण ! तुम अपनी सभा में बड़े ठाट-बाट के साथ बैठते हो। तब इन्द्र, सरसिजासन ब्रह्मा और अन्य देव तुम्हारी आज्ञाएँ मानते हुए सेवक के रूप में रहते हैं। सुन्दरी शची जयजीव का गान गाती है। सातों लोक तुम्हारी संस्तुति करते हैं। चन्द्र तुम्हारा स्वर्णछत्र धारण कर छाया बनाता है। ऐसी सभा में अब आकर बेशरम की तरह अपना मुख दिखाने योग्य रहती हूँ क्या ? । ३२६

❀ उरनेरिन्दु विऴवॆन्नै युदैत्तुरुट्टि मूक्करिन्द
नरनिरुन्दु तोळ्पार्क्क नानिरुन्दु पुलम्बुवदो
करनिरुन्द वनमन्ऱो विवैपडवुङ् गडवेनो
अरनिरुन्द मलैयॆडुत्त वैयावो वैयावो 327

अरन् इरुन्त मलै ऎटुत्त–हर जिसमें रहे, उस गिरि को उखाड़नेवाले; ऐयाओ ऐयाओ–प्रभु, प्रभु; उरन् नॆरिन्तु विऴ–मेरी छाती विदीर्ण हुई और मैं नीचे गिर गई, ऐसा; ऎन्नै उतैत्तु उरुट्टि–मुझे लात मारकर, गिराकर और लुढ़काकर; मूक्कु अरिन्त–(जिसने) मेरी नाक काटी; नरन् इरुन्तु तोळ् पार्क्क–वह नर अभिमान के साथ अपने कंधों को देख रहा है, तब; नान् इरुन्तु पुलम्पुवतो–मैं बैठी विलाप करूँ (क्या यह ठीक है); करन् इरुन्त वनम् अन्ऱो–खर के वास का वन है न; इवै पटवुम् कटवेनो–यह (अन्याय) सहने अर्ह हूँ क्या। ३२७

हे प्रभु ! हे रावण ! तुमने हरनिलय कैलास को उखाड़ लिया था ! मुझे मेरी छाती विदीर्ण करते हुए नीचे गिरा दिया एक नर ने ! उसने मेरी नाक काट दी और वह आत्माभिमान के साथ अपने कन्धों को देख रहा है, अपने बल पर इठला रहा है ! और मैं असहाय की तरह विलाप कर रही हूँ। क्या यह ठीक लगता है ? यह खर के शासनाधीन वन है। इधर मेरी ऐसी दुर्गति हो—मैं इसके अर्ह हूँ क्या ? । ३२७

❀ नशैयाले मूक्किऴन्दु नाणमिला नान्बट्ट
वशैयाले निन्पुहऴु माशुण्ड दाहादो
दिशैयानै विशैहलङ्गच् चॅरुच्चॅय्दु मरुप्पॊशित्त
इशैयाले वॅऴुदुपॅय रिरावणवो यिरावणवो 328

तिचै यानै–दिग्गजों के; विचै कलङ्क–क्रोधोद्वेग को मिटाते हुए; चॅरु चॅय्तु–लड़कर; मरुप्पु ओचित्त–उनके दाँतों को तोड़ा (जिसने); इचैयाले पॅयर् ऍऴुतु–यश से (जिसने) अपना नाम अंकित किया; इरावण ओ इरावण ओ–हे वह रावण, वह रावण; नचैयालै–इच्छा के कारण; मूक्किऴन्तु–नाक खोकर; नाणम् इला–लाज खोकर; नान् पट्ट वचैयाले–मुझे जो अपमान मिला, उससे; निन् पुकऴुम्–तुम्हारा यश भी; माचु उण्टतु आकातो–कलंकित नहीं होगा क्या। ३२८

हे रावण ! तुमने दिग्गजों के क्रोध को मिटाकर उनसे लड़कर उनके दाँत तोड़ दिये और अपना नाम यश से अंकित किया है। ऐसे हे रावण ! क्या प्रेम करना बुरा है ? अपने प्रेम के कारण मैंने अपनी नाक खोयी, लाज खोयी और मैं अपमानित हो गयी हूँ। इस मेरी निन्द्य स्थिति से तुम्हारे यश में भी बट्टा नहीं लगेगा क्या ?। ३२८

❀ कानदनि निडैयॊरुवर् कादोडुमूक् कुडनरिय
मानमदाऌ पाविये निवण्मडियक् कडवेनो
दानवरैक् करुवरुत्तुप् पुरन्दरनैत् तळैयिट्टु
वानवरैप् पणिहॊण्ड मरुहावो मरुहावो 329

तानवरै करु अरुत्तु–दानवों का मान नाश कर; पुरन्तरनै–पुरन्दर को; तळैयिट्टु–बेड़ी पहनाकर; वानवरै–देवों को; पणि कॊण्ट–नौकर (जिसने) बना लिया; मरुका ओ मरुका ओ–हे वह भतीजे, भतीजे; कान् अतनिन् इटै–जंगल में; ऒरुवर्–एक मानव ने; कातु ओटु मूक्कु उटन् अरिय–कान के साथ नाक एक साथ काट दिया, तब; पावियेन्–पापिनी मैं; मानम् अताल्–अपमान से; इवण् मटिय कटवेनो–इधर मर जाने अर्ह हो गई क्या। ३२९

(अब वह इन्द्रजित् को पुकार रही है।) हे मेरे भतीजे ! भतीजे ! तुमने दानवों का मान मिटाया, पुरन्दर को बेड़ियाँ पहनाकर कारागृह में रखा और देवों को नौकर बनाया और अपनी सेवा-टहल करायी। ऐसे भतीजे ! जंगल में एक नर ने मेरे नाक और कान एक साथ काट दिये। पापिनी मैं अपमान से यहीं मर जाऊँ —इसी के योग्य हूँ क्या मैं ?। ३२९

ऒरुहालत् तुलहेऴु मुरुत्तिरिय तनुवीन्ऱाल्
तिरुहाद शिनन्दिरुहित् तिशैतिशैये शॅलनूऱि
इरुहालप् पुरन्दरनै यिरुज्जिरैयि लिट्टलैत्त
मरुहावो मानिडवर् वलिहाण वारायो 330

औरु कालत्तु–पहले (दिग्विजय के समय) कभी; तनु ऑन्ड्राल्–एक धनु द्वारा; तिरुकात चिनम् तिरुक्कि–अदम्य क्रोध बढ़कर; उलकु एळुम् उरुत्तु–सातों लोकों पर कोप प्रदर्शित करके; इरिय–उनको अस्तव्यस्त करते हुए; तिचै तिचैये चॅल–दिशा-दिशा में भगाते हुए; नूरि–उनको मारकर; अ पुरन्तरनै–उस पुरन्दर को; इरु काल्–दो बार; इरुम् चिरै इट्टु–भयंकर कारा में डालकर; अलैत्त–(जिसने) सताया वह; मरुका ओ–भतीजे; मानिटवर्–इन मानवों का; वलि काण–बल देखने; वारायो–आओगे नहीं क्या। ३३०

हे भतीजे ! अपने पिता के दिग्विजय के समय में तुमने क्या-क्या साहस दिखाये। एक ही धनुष के सहारे तुमने बढ़ते क्रोध के साथ सातों लोकों पर कोप उतारकर उनके वासियों को भयभीत किया और वे भागने लगे। उनको तुमने मारा। फिर उस इन्द्र को दो बार कारागृह में डालकर दुख दिया। ऐसे तुम अब आकर दो अल्प नरों का बल देखो। देखने नहीं आओगे ? । ३३०

❀ कल्लीरुम् बडैत्तडक्कै यडर्करतू डणर्मुदला
अल्लीरुञ् जुडर्मणिप्पू णरक्कर्कुलत् तवदरित्तीर्
कॊल्लीरुम् बडैक्कुम्ब करुणनैप्पोर् कॊडियीर्हाळ्
ऍल्लीरु मुरङ्गुदिरो यानळैप्प केळीरो 331

कल् ईरुम्–पत्थर को भी बेधनेवाले; पटै तट कै–हथियारों को लिये हुए विशाल हाथों के; अटल्–बली; कर तूटणर् मुतला–खर, दूषण आदि; अल् ईरुम्–अन्धकार को भेदनेवाली; चुटर्मणि पूण्–कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित; अरक्कर् कुलत्तु अवतरित्तीर्–राक्षसकुल में जात (राक्षसो); कॊटियीर्काळ्–क्रूर; ऍल्लीरुम्–तुम लोग सब; कॊल् ईरुम् पटै–लुहार से रेतकर तेज किए हुए आयुधों के; कुम्पकरुणनै पोल्–कुम्भकर्ण की तरह; उरङ्कुतिरो–सो रहे हो क्या; यान् अळैप्प–मैं पुकार रही हूँ; केळीरो–वह नहीं सुनते क्या। ३३१

(खर-दूषण आदि राक्षसों को पुकारती है।) कठोर पत्थर को भी बेधनेवाले हथियारधारी खर-दूषण आदि राक्षसो ! अन्धकार को भेदने वाली कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित राक्षसकुलोद्भूत निशाचरो ! तुम सब क्रूर राक्षस क्या उस कुम्भकर्ण के समान सो रहे हो, जिसके पास लुहार से रेती द्वारा तेज किए हुए हथियार (बेकार) पड़े हैं ! मैं बुला रही हूँ— तुम सुन नहीं रहे हो क्या ? । ३३१

ऍन्ड्रिन्न पलपन्नि यिहलरक्कि यळैत्तिरङ्गि
पॊन्रुन्नुम् बडियहत्तुप् पुरळ्हिन्र पोळुदत्तु
निन्रन्द नदियहत्तु निरैतंवत्तिन् तुरैमुडित्तु
वन्ड्रिणंच् चिलैनॅडुन्दोण् मरहदत्तिन् मलैवन्दान् 332

ऍन्रु–ऐसा; इन्न पल–ऐसे विविध प्रलाप; पन्नि–कहते; इकल् अरक्कि–

वैर रखनेवाली राक्षसी के; अऴैत्तु इरङ्कि–पुकारते और रोते हुए; पॊन् तुन्तुम्–बहुत मनोहर; पटि अकत्तु–भूमि पर; पुरळ्कित्र पॊऴुतत्तु–लोटते समय; वन् तिण् कै–बलिष्ठ और सारयुक्त हाथों; चिलै नॆटुम् तोळ्–धनु धारण करनेवाले उन्नत कंधों के; मरकतत्तिन् मलै–मरकत गिरि (-सम श्रीराम); अन्त नति अकत्तु–उस नदी के घाट पर; निऱै तवत्तिन् कुऱै मुटित्तु–यथावत कर्म अशेष पूरा करके; निन्ऱु–वहाँ से; वन्तान्–आश्रम की ओर पधारे। ३३२

वैर रखनेवाली शूर्पणखा ने इस तरह ऐसी विविध बातें कहती हुई अपने बन्धुओं को पुकार-पुकारकर विलाप किया। विलापते हुए वह आश्रम की पवित्र भूमि पर गिरकर लोटी। तब श्रीराम, जिनके हाथ दीर्घ और बलवान थे और जिनके सबल कन्धे को धनु अलंकृत कर रहा था, नदी-घाट में सन्ध्या का नित्यकर्म यथावत अशेष रूप से सम्पन्न करके वहाँ से निकलकर इस स्थान पर आ गये। ३३२

वन्दानै मुहनोक्कि वयिऱलैत्तु मऴैक्कण्णीर्
शॆन्दारैक् कुरुदियॊडु शॆऴुनिलत्तैच् चेऱाक्कि
अन्दोवुन् ऱिरुमेनिक् कन्बिऴैत्त वन्बिऴैयाल्
ऎन्दायान् पट्टपडि यिदुहाणॆन् ऱॆदिर्वीऴ्न्दाळ् 333

वन्तानै–आये उनका; मुकम् नोक्कि–श्रीमुख देखकर; वयिऱु अलैत्तु–पेट (छाती) पीटकर; मऴै कण् नीर्–वर्षा के समान अश्रु; चॆम् तारै कुरुति ऒटु–और धार रूप में बहनेवाले रक्त के साथ; चॆऴु निलत्तै चेऱु आक्कि–श्रेष्ठ भूमि को कीचड़ बनाते हुए; ऎन्ताय्–मेरे नाथ; अन्तो–हाय; उन् तिरुमेतिक्कु–तुम्हारे श्रीशरीर पर; अन्पु इऴैत्त–आसक्ति रखने के; वन् पिऴैयाल्–कठोर अपराध के कारण; इतु–यह; यान् पट्ट पटि इतु–मुझे मिला प्रकार (संकट) यह; काण् ऎन्ऱु–देखो, कहकर; ऎतिर् वीऴ्न्ताळ्–उनके सामने गिरी। ३३३

शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा। उनके मुख के सामने अपना पेट (अपनी छाती को) पीटा। आँखों से अश्रुजल की धारा बहायी और शरीर ने लाल रक्त की धारा। उनसे वहाँ की श्रेष्ठ भूमि पंकिल बन गयी। उसने श्रीराम से शिकायत की कि देखो! मेरे नाथ! हाय! तुम्हारे रूप पर मेरा जी ललचाया। इस घोर अपराध का फल मुझे भोगना पड़ा, वह यह देखो! यह कहते हुए वह श्रीराम के सामने भूमि पर गिर पड़ी। ३३३

विरिन्दाय कून्दलाळ् वॆय्यविनै यादानुम्
पुरिन्दाळॆन् बदुन्दन्नदु पॊरुवरिय तिरुमनत्ताल्
तॆरिन्दानिन् ऱिळैयोनै यिवळ्ळैनॆडुञ् जॆवियॊडुमूक्
करिन्दानॆन् बदुमुणर्न्दा नवळैनी यारॆन्ऱान् 334

विरिन्ताय कून्तलाळ्–बिखरे केश वाली ने; वॆय्य विनै–क्रूर काम; यातेनुम् (पु)रिन्ताळ्–कुछ किया है; ऎन्पतुम्–यह; तन्तु–अपने; पॊरुवु अरिय तिरुमनत्ताल्–

अनुपम श्रीमन में; तेरिन्तान्-समझकर; इळैयोर्ने-छोटे भाई ने; इवळै-इसके; इन्नुरु-अभी; नॅट्टुम् चॅवि ऑट्टु-बड़े कानों के साथ; मूक्कु-नाक को; अरिन्तान् ऍन्नुपतुम्-काट लिया है, यह भी; उणर्न्तान्-जानकर; अवळै-उससे; नी यार्-तुम कौन हो; ऍन्ड्रान्-पूछा। ३३४

श्रीराम ने अपने श्रीमन में सोचा कि बिखरे केश वाली इसने नृशंस कोई काम किया होगा और अनुज लक्ष्मण ने अभी-अभी इसकी नाक और इसके कान काटे हैं। उन्होंने उससे प्रश्न किया कि तुम कौन हो? । ३३४

अव्वुरैकेट् टडलरक्कि यरियायो नीयॅन्नैत्
तॅव्वुरैयॅन् ड्रॅव्वुलहु मिल्लाद शीड्रत्तान्
वॅव्विलैवे लिरावणनाम् विण्णुलह मुदलाय
ऍव्वुलहु मुडैयानुक् कुडन्बिड्रन्देन् यानॅन्ड्राळ् 335

अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; अटल् अरक्कि-सशक्त राक्षसी ने; ऍन्नै नी अरियायो-मुझे नहीं पहचानते क्या; ऍ उलकुम्-सभी लोकों में; तॅव् उरै ऍन्ड्रु इल्लात-जिसके शत्रु नहीं होते (सभी हराये गये हैं); चीड्रत्तान्-जो क्रोधी है; वॅम् इलै वेल्-भयंकर पत्राकार सिर वाला भालाधारी; इरावणन् आम्-रावण कहलानेवाले; विण् उलकम् मुतल् आय-स्वर्गलोक आदि; ऍ उलकुम् उटैयानुक्कु-सभी लोकों के स्वामी की; उटन् पिड्रन्तेन्-सहोदरा हूँ; यान्-मैं; ऍन्ड्राळ्-कहा। ३३५

वह प्रश्न सुनकर शूर्पणखा को आश्चर्य हो गया। उस क्रूर राक्षसी ने उत्तर में कहा कि क्या तुम मुझे नहीं जानते? मैं उस रावण की बहिन हूँ, जिसका किसी भी लोक में कोई शत्रु नहीं है (क्योंकि उसने शत्रुओं को मिटा दिया है और कोई भी उससे वैर मोल लेने से डरते हैं), जो बड़ा क्रोधी है और जो पत्राकार सिर के भाले का धारी है और जो स्वर्गादि लोकों में हर किसी लोक का स्वामी है। मैं उसकी सहोदरा हूँ। ३३५

तामिरुन्द तहैयरक्कर् पुहलॊळियत् तवमियड्र
यामिरुन्द नॅडुञ्जूळर् कॅन्शेयवन् दायॅन्नलुम्
वेमिरुन्दै यॅन्नक्कनलु मॅरिहाम वॅम्बिणिक्कु
मामरुन्दै नॅरुनलिनुम् वन्दिलॅनो यानॅन्ड्राळ् 336

तकै अरक्कर्-निषिद्ध राक्षस; ताम् इरुन्त-जहाँ रहते हैं; पुकल् ऑळिय-उन स्थानों को छोड़कर; याम्-हम; तवम् इयड्र-तपस्या करते हुए; इरुन्त-जहाँ रहते हैं; नॅटुम् चूळल्-इस विशाल आश्रम में; ऍन् चॅय वन्ताय्-क्या करने आई; ऍन्नलुम्-पूछने पर; वेम् इरुन्तै ऍन्न-कोयले के समान; कनलुम्-जलनेवाले; ऍरि काम-तापक काम रूपी; वॅम् पिणिक्कु-तपानेवाले भयंकर रोग की; मा मरुन्तै-श्रेष्ठ औषध; नॅरुनलिनुम्-कल भी; यान् वन्तिलॅनो-मैं नहीं आई थी क्या; ऍन्ड्राळ्-पूछा। ३३६

तब श्रीराम ने पूछा कि निषिद्ध राक्षसों के वासस्थानों को छोड़कर इस श्रेष्ठ आश्रम में तुम क्यों आयी, जहाँ हम तपस्या कर रहे हैं ? उसके उत्तर में शूर्पणखा श्रीराम से बोली— अग्नि में जलते कोयले के समान तपानेवाले काम रूपी रोग की श्रेष्ठ औषध ! क्या तुम भूल गए कि मैं कल भी आयी थी। कल आयी थी न ? । ३३६

शॆङ्गयल्पोऱ् करुनॆडुङ्गट् टेमरुदा मरैयुऱैयुम्
नङ्गैयिव ऱॆऩ्ऩॆरुनल् नडन्दवरो नामॆन्ऩक्
कॊङ्गैहळुङ् गुऴैहादुङ् कॊडिमूक्कुङ् गुऱैत्तऴित्ताल्
अङ्गणर शेयोरुवर्क् कऴियादो वऴहॆन्ऱाळ् 337

चॆम् कयल् पोल्–लाल 'कयल' मीनों के समान; करु नॆटुम् कण्–काली और आयत आँखों वाली; तेमरु तामरै–शहद से युक्त कमल पर; उऱैयुम्–रहनेवाली; नङ्कै अँत–श्रीलक्ष्मीदेवी के समान; नॆरुनल्–कल; नटन्तवरो–आई जो थी; नाम् ऎन्ऩ–वही हम हैं (तुम हो) क्या, यह पूछने पर; अरचे–राजा; कॊङ्कैकळुम्–स्तन और; कुऴै कातुम्–लचकदार कान; कॊटि मूक्कुम्–और लता-समान नाक को; कुऱैत्तु अऴित्ताल्–काटकर दूर करने से; अङ्कण्–तब; अऴकु अऴियातो–सौंदर्य मिट नहीं जायगा क्या; ऎन्ऱाळ्–पूछा । ३३७

श्रीराम ने कहा— ओफ़ ओह ! कल जो श्रीलक्ष्मी के समान लाल कयल-सी आँखों वाली कमलनिवासिनी हैं, इधर आयी, वह तुम्हीं हो क्या ? शूर्पणखा ने निष्ठुरता से कहा कि लटकनेवाले कानों को और लता-समान नाक को काट दिया गया तो क्या सौन्दर्य मिट नहीं जायगा ? (कल और आज के रूप में अन्तर क्या नहीं आ जायगा ?) । ३३७

मुरन्मूरु वलनिळैय मॊय्म्बिनान् मुहनोक्कि
वीरवॆहुण् डनैयिवडन् विडुहादुङ् गॊडिमूक्कुम्
ईरनिनैन् दिवळिऴैत्त पिऴैयॆन्ऩॆन् ऱिरैविनवच्
चूरनॆडुल् दहैयवनै यडिवणङ्गिच् चॊल्लुवान् 338

इऱै–भगवान श्रीराम के; मूरल् मरुवलन्–मन्दहास के साथ; इळैय मॊय्म्पिनान्–पराक्रमी छोटे भाई के; मुकम् नोक्कि–मुख को देखकर; वीर–वीर; इवळ् तन्–इसके; विटु कातुम्–लटकनेवाले कानों और; कॊटि मूक्कुम्–लम्बी नाक को; वॆकुण्टनै–क्रोध करते हुए; ईर–काटने के लिए; इवळ् निनैन्तु इऴैत्त–इसने सोचकर जो किया; पिऴै–वह अपराध; ऎन्ऩ–क्या; ऎन्ऱु विनव–यह पूछने पर; चूर नॆटुम् तकै–शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण; अवनै अटि वणङ्कि–उनको पैरों पर नमस्कार करके; चॊल्लुवान्–बोले । ३३८

प्रभु श्रीराम को हँसी आ गयी। मन्दहास के साथ उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वीर ! इसके लटकते कानों और दीर्घ नाक को गुस्से के साथ इस तरह काटो, ऐसा इसने जान-बूझकर क्या अपराध

किया ? शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण ने श्रीराम को नमस्कार करके यों उत्तर दिया। ३३८

तेट्टन्दान् वाळॅयिऱ्ऱिऱ् ऱिऩ्ऩवो तीविऩैयोर्
कूट्टन्दाऩ् पुऱत्तुळदो कुऱित्तपॊरु ळऱिन्दिलॅऩाल्
नाट्टन्दा ऩॆरियुमिळ नल्लाण्मेऱ् पॊल्लादाळ्
ओट्टन्दा ळरिदिऩिव ळुयिर्हवर्न्दा ळॅऩवन्दाळ् 339

तेट्टम् ताऩ्–इसका इधर खोजते हुए आना; वाळ् ऍयिऱ्ऱिल् तिऩ्ऩवो–(वक्र और) उज्ज्वल दाँतों से काटकर खाने के लिए था, या; ती विऩैयोर्–नृशंसकारी; कूट्टम् ताऩ्–राक्षसों का दल ही; पुऱत्तु उळतो–पास रहता है; कुऱित्त पॊरुळ्–जो उद्देश्य ले आई थी, वह बात; अऱिन्तिलॅऩ्–मैंने नहीं जाना; नाट्टम् ताऩ् ऍरिउमिळ–आँखों से अग्नि प्रकट करते हुए; पॊल्लाताळ्–यह क्रूरी; नल्लाळ् मेल्–साध्वी (भाभी) पर; अरितिऩ्–अप्रत्याशित रीति से; इवळ् उयिर् कवर्न्ताळ् ऍऩ्ऩ–इनका प्राण हर लिया हो, ऐसा; ओट्टन्ताळ्–भागती; वन्ताळ्–आई। ३३९

प्रभु ! इसका उद्देश्य क्या था ? भाभी की खोज में यह आयी— उनको अपने सफ़ेद दाँतों से चबाकर खाने के लिए ? या क्रूरकर्मा राक्षसों का दल पास में कहीं है ? यह क्या करने आयी —मैं जान नहीं पाया। पर यह बुरी स्त्री आँखों से अग्नि निकालती हुई साध्वी देवी पर ऐसी झपटी कि मानो उसने उनकी जान ही हर ली हो ! वह तीव्र गति से भागती आयी। ३३९

एऱ्ऱवळै वरिशिलैयो ऩियम्बामुऩ् ऩिहलरक्कि
शेऱ्ऱवळै तऩ्कणव ऩरुहिरुप्पच् चिऩन्दिरुहिच्
चूऱ्ऱवळै तुऩियुळक्कुन् दुऱैहॆळ्ळुनीर् वळनाड
माऱ्ऱवळैक् कण्डक्का लळ्ळलादो मऩमॅऩ्ऱाळ् 340

एऱ्ऱ–(हाथ में) धृत; वळै वरि चिलैयोऩ्–झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष वाले (लक्ष्मण) के; इयम्पा मुऩ्–कहने से पूर्व ही (कहते ही); इकल् अरक्कि–वैरमना राक्षसी; चूल् तवळै–गाभिन मेंढकी; तऩ् कणवऩ् अरुकु–अपने पति मेंढक के पास; चेऱ्ऱ वळै इरुप्प–कीचड़ में एक शंखकीट को रहते देख; चिऩम् तिरुकि–कोप में बढ़कर; तुऩि उळक्कुम्–बहुत रूठकर जहाँ दुखी होती है; तुऱै कॆळु–ऐसे घाटों से भरे; नीर् नाटा–जलाशय जिसमें रहते हैं, ऐसे देश के अधिपति; माऱ्ऱवळै कण्ट काल्–सौत को देखकर; मऩम् अळ्ळातो–मन तप्त नहीं होगा क्या; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ३४०

झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष को हाथ में जो लिये रहे, उन लक्ष्मण के यह कह चुकने के पूर्व ही शूर्पणखा बोल उठी। हे अयोध्या देश के अधिपति, जहाँ ऐसे जलाशय बहुतायत से पाये जाते हैं, जिनमें गाभिन मेंढकियाँ कीच में अपने मेंढक के पास शंखकीट को देखकर मान करके बहुत दुखी हो रहती हैं ! सौत को देखने पर किसी का मन जल नहीं उठेगा

क्या ? (इस पद में सम्बोधन जो है, उसमें सौत के मनोभाव की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से हुई है। यह तमिऴ काव्य की विशेषता है। शूर्पणखा अपने को मेंढकी और सीताजी को मादा शंखकीट मानती है। यानी अपने को पत्नी और सीता को सौत।)। ३४०

पेडिप्पोर् वल्लरक्कर् पॅरुङ्गुलत्तै यॉरुङ्गविप्पान्
तेडिप्पोन् दनमित्रु तीमाट्रज् जिलविळम्बि
वीडिप्पो हादेयिव् वॅव्वत्तै विट्टहल
ओडिप्पो वॅन्ड्रुरैत्त वुरैहडन्दार् कवळुरैप्पाळ् 341

पेटि पोर्–भयजनक युद्ध में; वल्–समर्थ; अरक्कर् पॅरुम् कुलत्तै–राक्षसों के बड़े कुल को; ऑरुङ्कु अविप्पान्–एक साथ मिटाने के लिए; तेटि पोन्तनम्–ढूँढ़ते हुए हम आये हैं; इन्ड्रु–अब; ती माट्रम्–बुरी बातें; चिल विळम्पि–कुछ कहकर; वीटि पोकाते–मिटो मत; इ वॅव् वत्तै विट्टु–इस प्यारे वन को छोड़कर; अकल–दूर; ओटि पो–भाग जाओ; ॲन्ड्रु उरैत्त–यह जिन्होंने कहा; उरै कटन्तार्क्कु–उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम से; अवळ् उरैप्पाळ्–वह बोली (उत्तर में)। ३४१

श्रीराम ने गम्भीरता से चेतावनी दी। हम इधर उन भयंकर युद्ध-समर्थ राक्षसों को एक साथ समूल नाश करने आये हैं। हम उन्हीं की खोज में इधर रहते हैं। अब तुम कुछ अंड-संड कहकर अपना अन्त मत करा लो। चलो इस प्यारे आश्रम को छोड़कर दूर भाग जाओ। उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम के ये वचन सुनकर शूर्पणखा उन्हीं को उपदेश देने लगी। ३४१

नरैतिरैयॊन् ड्रिल्लाद नान्मुहत्ते मुदलमरर्
करैयिड्रन्दो रिरावणर्ड्कुक् करनिड्रुक्कुङ् गुडियन्ड्रो
विरैयुमदु नन्ड्रन्ड्रु वेड्राह यानुरैक्कुम्
उरैयुळदु नुमक्कुड्रदि युणरुदिरे लॅन्ड्रुरैप्पाळ् 342

नरै तिरै–बाल का पकना और खाल का झुर्रियों सहित हो जाना; ऑन्ड्रु इल्लात–कुछ जिनका नहीं है; नान्मुकत्ते मुतल्–वे चतुर्मुख आदि; अमरर्–देव; करै इड्रन्तोर्–असीम लोग; इरावणर्ड्कु–रावण को; करन् इड्रुक्कुम्–कर देनेवाले; कुटि अन्ड्रो–प्रजा हैं न; विरैयुम् अतु–तुम जिसके करने में त्वरा दिखाते हो वह; नन्ड्रु अन्ड्रु–अच्छा नहीं है; उड्रुति उणरुतिरेल्–अपना हित चाहते हो तो; नुमक्कु–तुम लोगों को; वेड्रु आक–अलग; यान् उरैक्कुम् उरै–मेरे समझाने की एक बात; उळतु–है; ॲन्ड्रु–कहकर; उरैप्पाळ्–बताने लगी। ३४२

ब्रह्मा आदि देव सब, जो कभी बुढ़ापे को प्राप्त नहीं होते, जब बाल पक जाते हैं और खाल पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रावण को कर देनेवाले प्रजाजन हैं। यह तुम नहीं जानते क्या ? तुम जो काम करने में तत्पर

रहते हो और जल्दी दिखाते हो, वह तुम्हारे हित में नहीं होगा। अगर तुम अपना भला सोचो तो मुझे तुमसे विशेष रूप से कहने की एक बात है। सुनो। वह कहने लगी। ३४२

आक्करिय मूक्कुङ्गै यरियुण्डा ळॅन्ऱारै
नाक्करियुन् दयमुहन्नार् नाहरिह रल्लामै
मूक्करिन्दु नुङ्गुलत्तै मुदलरिन्दी रिन्नियुमक्कुप्
पोक्करिदिव् वळ्हैयॅल्लाम् पुल्लिडैये युहुत्तीरे 343

उङ्कै–तुम्हारी छोटी बहिन; आक्कु अरिय–फिर से ठीक कराने के लिए कठिन रीति से; मूक्कु अरि उण्टाळ्–नाक की कटी हो गई; ॲन्ऱारै–यह समाचार कहनेवाले की; नाक्कु अरियुम्–नाक जो काट देंगे वे; तयमुकन्नार्–दशग्रीव; नाकरिकर् अल्लामै–दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं, इसलिए; मूक्कु अरिन्तु–नाक काटकर; नुम् कुलत्तै–अपने कुल को; मुतल् अरिन्तीर्–जड़ से काट लिया (तुमने); इन्ति–अब; उमक्कु पोक्कु अरितु–तुम्हारा कोई मार्ग नहीं है; इ अळ्कु ॲल्लाम्–यह सब सौंदर्य; पुल् इटैये–घास के मध्य; उकुत्तीर्–गिरा दिया (तुमने)। ३४३

कोई जाकर दशमुख से कहे कि तुम्हारी बहिन की नाक एकदम कट गयी और उसका कोई इलाज नहीं हो सकता तो झट वे उस कहनेवाले की जीभ काट देंगे। ऐसे वे दशग्रीव दया-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं। तुमने मेरी नाक क्या कटवायी, अपने कुल को जड़ से काट दिया समझो! अब तुम्हारे बचाव का कोई मार्ग नहीं है। हन्त! अपना यह सारा सौन्दर्य तुमने धूल में मिला लिया! (घास में छितराना मुहावरा है।)। ३४३

वान्गाप्पोर् मण्गाप्पोर् मानाहर् वाळुलहम्
तान्गाप्पो रिन्नित्तङ्ग डलैकात्तु निन्ऱुङ्गळ्
ऊन्गाक्क वुरियार्या रॅन्नैयुयिर् नीर्हाक्किन्
यान्गाप्पॅ नल्लालव् विरावणना रुळरॅन्ऱाल् 344

इरावणतार् उळर्–रावण हैं; ॲन्ऱाल्–इसलिए; नीर् ॲन्नै उयिर् काक्किन्–तुम मेरे प्राण बचाओगे तो; यान् काप्पॅन्–मैं तुमको (रावण से) बचा लूंगी; अल्लाल्–नहीं तो; वान् काप्पोर्–स्वर्गपालक; मण् काप्पोर्–भूपति; मा नाकर् वाळ्–बड़े नाग जहाँ रहते हैं; उलकम् तान्–उस लोक के; काप्पोर्–राजा लोग; इन्ति–अब; तङ्कळ् तलै कात्तु–अपने सिरों को बचा लेकर; उङ्कळ् ऊन् काक्क–तुम्हारा शरीर भी बचाने की; उरियर् यार्–क्षमता रखनेवाले कौन हैं। ३४४

रावण हैं, इसका अर्थ है कि तुम बच नहीं सकते। हाँ, तुम मेरी बात मानकर मेरे प्राण बचाओगे तो मैं तुम्हें बचा सकूँगी। नहीं तो स्वर्ग, भूमि या नागलोक के राजाओं में अपने सिरों को बचा लेकर तुम्हारा शरीर भी बचा लें, ऐसे शक्तिसम्पन्न कौन होते हैं? (कोई नहीं!)। ३४४

कावऱ्ऱित् करुपमैन्दार् तम्बॆरुमै ताङ्गळ्ऱार्
आवऱ्पे रन्बिना लऱैहिन्ऱे नामन्ऱो
देवर्क्कुम् वलियान्ऱन् ऱिरुत्तङ्गै याळिवळोण्
डेवर्क्कु वलियाळॆन् ऱिळैयानुक् कियम्बीरो 345

तिण् कावल् कऱ्पु अमैन्तार्–अपने स्त्रीत्व का सबल रक्षक जो पातिव्रत्य है, उससे
त पतिव्रता स्त्रियाँ; तम् पॆरुमै–अपनी बड़ाई; ताम् कळ्ऱार्–खुद नहीं कहतीं;
वल् पेर् अन्पिताल्–इच्छा और गम्भीर प्रेम के कारण; अऱैकिन्ऱेन् आम् अन्ऱो–
न बातों को खोलकर कह रही हूँ न; इवळ्–यह; तेवर्क्कुम् वलियान् तन्–देवों
भी अधिक शक्तिशाली की; तिरु तङ्कैयाळ्–प्यारी बहिन है; ईण्टु–इधर;
वर्क्कुम् वलियाळ्–किसी से भी अधिक बलशालिनी है; ऍन्ऱु–ऐसा; इळैयानुक्कु–
पने भाई को; इयम्पीरो–नहीं समझाओगे क्या । ३४५

यह मेरे लिए बहुत संकोच की बात है। अपने स्त्रीत्व की रक्षा में
ो पातिव्रत्य में दृढ़ हैं, वे कुलीन स्त्रियाँ अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं कह
कतीं। पर मेरा तुम पर इच्छा और प्रेम अगाध है। इसलिए मैं
ाफ़-साफ़ ये बातें कह रही हूँ। तुम अपने भाई को समझाओ कि यह
ूर्पणखा देवों से भी अधिक शक्तिशाली रावण की भगिनी है और वह
वयं किसी से भी बढ़कर बलवान है। यह नहीं बताओगे क्या ? । ३४५

माप्पोरिऱ् पुऱङ्गाप्पॆन् वानशुमन्दु शॆलवल्लेन्
तूप्पोलक् कनिपलवुञ् जुवैयुडैय तरवल्लेन्
काप्पारैक् कॆत्तेनीर् करुदियदै तरुवेनिप्
पूप्पोलु मॆय्यिवळाऱ् पॊरुळॆन्ने पुहल्वीराल् 346

मा पोरिल्–घोर युद्ध में; पुऱम् काप्पॆन्–पास रहकर रक्षा करूँगी; वान्–
काश में; चुमन्तु चॆल वल्लेन्–ढोते हुए ले जा सकूँगी; तू पोल–मांस के समान;
वै उटैय–स्वादिष्ट; कनि पलवुम्–फल अनेक; तर वल्लेन्–लाकर दे सकूँगी;
ाप्पोरै कॆत्तु–रक्षक को मिटाकर; ऍन् नीर् करुतियते–तुम जो चाहते हो, वह;
वेन्–लाकर दूंगी; इ पू पोलुम् मॆय्–इस सुमन सदृश शरीर वाली; इवळ् आल्–
स्त्री से; पॊरुळ् ऍन्ने–लाभ क्या है; पुकल्वीर्–बताओ । ३४६

और भी सुनो। किसी से घोर युद्ध छिड़ा तो मैं तुम्हारे पास
हकर तुमको बचाऊँगी। तुमको उठाकर आकाश में संचार कर सकूँगी।
ष्ठ मांस के समान स्वादिष्ट फल संग्रह कर ला दूँगी। समझो कि
्हारा मन किसी वस्तु पर ललचाता है। उस वस्तु को, उसकी रक्षा
रनेवाला कोई भी हो उसे मारकर, तुम्हारे लिए ला दूँगी। ऐसी शक्ति-
लिनी मुझको छोड़कर तुम इस सुमन-समान कोमल शरीर वाली के पास
ों रहो ? इस अबला से तुम्हारा क्या मिलेगा ? बताओ तो देखें। ३४६

कुलत्तालु नलत्तालुङ् गुरित्तनवे कॉणर्दक्क
वलत्तालु मदियालुम् वडिवालु मडत्तालुम्
निलत्तारुम् विशुम्बारु नेरिळैया ऍन्नैप्पोल्
शॉलत्तानिङ् गुरियारैच् चॉल्लीरो वल्लीरेल् 347

कुलत्तालुम्–जाति से; नलत्तालुम्–गुणों से; कुरित्तनवे–तुमसे निर्दिष्ट वस्तुएँ; कॉणर् तक्क–लाने की; वलत्तालुम्–क्षमता में; मतियालुम्–बुद्धि में; वटिवालुम्—रूप-सौंदर्य में; मटत्तालुम्–सुकुमारता में; निलत्तारुम्–भूलोकवासी; विचुम्पारुम्–स्वर्गवासी; ऍन्नै पोल् नेरिळैयार्–मेरे समान कोई स्त्री; चॉल तान्–कहने के लिए; उरियारै–योग्य हो तो उसे; वल्लीरेल्–कह सकते हो तो; चॉल्लीर्–कहो। ३४७

जाति, श्रेष्ठ गुण, तुम्हारी इच्छित वस्तु ला देने की क्षमता, बुद्धि, रूप-सौन्दर्य और सुकुमारता में मेरे समान भूलोक, स्वर्ग और नागलोक के वासियों द्वारा मान्य योग्यता रखनेवाली कोई स्त्री हो और तुम उसे जानते हो तो बताओ तो सही ! । ३४७

पोक्कितो ऍन्नाशि पॉयत्तॆन्नीर् पॉरुक्किलिरेल्
आक्कुवॆन्नोर् नॊडिवरैयि लळहमैवॆ नरुळ्हूरुम्
पाक्कियमुण् डॆन्निलदनाल् पॆण्मैक्कोर् पळ्ळुण्डो
मेक्कुयरु नॆडुमूक्कु मडन्दैयर्क्कु मिहैयन्ऱो 348

ऍन्नाचि पोक्कितीर्–मेरी नाक कटा दी; पोयत्तु ऍन्–गया क्या; नीर् पॉरुक्किलिरेल्–तुम इसे सह नहीं सको तो; अरुळ् कूरुम् पाक्कियम् उण्टु–कृपा मिलने का भाग्य दिया; ऍन्निल्–तो; ओर् नॊटि वरैयिल्–एक ही क्षण के अन्दर; आक्कुवॆन्–बना लूंगी; अळ्कु अमैवॆन्–सौंदर्यवती बन जाऊँगी; अतनाल्–बिना नाक की रह जाऊँ तो; पॆण्मैक्कु–स्त्रीत्व में; ओर पळिप्पु उण्टो–कमी होगी क्या; मेक्कु उयरुम्–उभरकर उगनेवाली; नॆटु मूक्कुम्–दीर्घ नाक भी; मटन्तैयर्क्कु–नारियों के लिए; मिकै अन्ऱो–अनावश्यक नहीं है क्या। ३४८

तुमने मुझे नासिका से हीन कर दिया। छोड़ दो ! उससे क्या नष्ट हुआ ? तो भी अगर तुमको मेरा नासिका बिना रहना असह्य हो तो फिर से अपनी नाक पूर्ववत बना लूँगी इस शर्त पर कि तुम मुझ पर कृपा करो। वचन दो, देखो एक क्षण में ठीक हो जायगा। वही नहीं तुम जैसा रूप चाहो वैसा रूप ले लूँगी। नाक के न रहने से क्या स्त्रीत्व में कोई कमी होगी ? उभरकर उगी हुई लम्बी नाक आवश्यकता से अधिक नहीं है ? । ३४८

विण्डारे यल्लारो वेण्डादार् मनम्वेण्ड
उण्डाय कादलिलॆन् नुयिरॆन्ब दुमदन्ऱो

कण्डारे काद्लिक्कुङ् गट्टऴुहुम् विडमन्ऱो
कॉण्डारे कॉण्डाडु मुरुप्पॅऱ्ऱाऱ् कॉळ्ळीरो 349

वेण्टातार्–जिनको हम नहीं चाहते; विण्टारे अल्लारो–वे न हमारे शत्रु बन जाते हैं; मतम् वेण्ट–मन के लगने से; उण्टाय–जो उत्पन्न होता है; कातलिन्–उस प्रेम से; ऍन् उयिर्–मेरे प्राण; ऍन्पतु–जो है; उमतु अन्ऱो–वे तुम्हारे नहीं हैं क्या; कण्टारे कातलिक्कुम्–जो भी देखे वह प्रेम करे; कट्टऴकुम्–ऐसा रूप-सौंदर्य भी; विटम् अन्ऱो–विष नहीं होगा क्या; कॉण्टारे कॉण्टाटुम्–जिसने अपना बना लिया है, वही सराहे; उरु पॅऱ्ऱाल्–ऐसा रूप धरूँ तो; कॉळ्ळीरो–तुम नहीं अपनाओगे क्या। ३४९

लोग, जिनको हम पसन्द नहीं करते, हमारे शत्रु हो जाते हैं। पर मेरा मन तुम पर आसक्त है, इसलिए तुमसे मेरा गाढ़ा प्रेम हो गया है और इससे क्या मेरे प्राण भी अब तुम्हारे नहीं हुए ? जो भी देखे, वही अनुरक्त हो जाय, ऐसा रूप-सौन्दर्य भी विष (के समान हानिकारक) नहीं है ? जिसकी मैं हो गयी, उसको जो भावे वही रूप मैं लूँ तो क्या तुम मुझे नहीं अपनाओगे ? । ३४९

शिवनुमलर्त् तिशैमुहनुन् दिरुमालुन् दॅऱुकुलिशत्
तवनुमॅऴुन् दॉन्ऱाहि निन्ऱनन् वुरुवोने
पुवनमनैत् तैयुमॉरुवन् पूङ्गणैया लुयिर्वाङ्गुम्
अवनुमुनक् किळैयानो विवनेपो लरुळिलनाल् 350

चिवनुम्–शिवजी और; मलर् तिचै मुकनुम्–कमलासन चतुर्मुख; तिरुमालुम्–और श्रीविष्णु; तॅऱु कुलिचत्तु अवनुम्–शत्रुसंहारक वज्र रखनेवाला वह (इन्द्र); ऍऴुन्तु–सब अपना-अपना अलग शरीर छोड़कर; ऑन्ऱु आकि–एकाकार बनकर; निन्ऱ अनन्–खड़े हों (मानो); उरुवोने–ऐसे दर्शन देनेवाले; पुवनम् अनैत्तैयुम्–सारे भुवनों को; ऑरु वन् पूम् कणैयाल्–एक असरदार पुष्पशायक से; उयिर् वाङ्कुम्–प्राण हरनेवाला; अवनुम्–वह (मनोज) भी; इवने पोल्–इस तुम्हारे भाई के समान; अरुळ् इलनाल्–दयाहीन लगता है, इसलिए; उनक्कु इळैयानो–(वह मन्मथ भी) तुम्हारा लघु-भ्राता है क्या। ३५०

हे राम ! तुम ऐसे रूपवान हो मानो शिव, कमलासन, श्रीविष्णु और संहारक वज्रपाणी सबने अपना-अपना रूप त्यागकर एकाकार होकर तुम्हारा रूप लिया हो ! सुन्दर राम ! तुमसे एक बात पूछूँ ? अपने एक अपार दुखदायी पुष्पास्त्र से सारे भुवनों के प्राण हरनेवाला (मर्मांतक पीड़ा पहुँचानेवाला) मन्मथ भी तुम्हारे इस भाई के समान कृपालु नहीं रहता। तो क्या वह भी तुम्हारा ही छोटा भाई है ? । ३५०

ऍन्नुरुवप् पॉरुहळ्ळीर् पिलैकाणीर् मूक्करिवान् पॉरुळ्वेरुण्डो
ऍन्नुरुवैक् कैक्कॉण्डी रिरुन्दॉळियु नम्मरुङ्गे येहाळप्पाल्

पिन्निवळै यलोरुवर् पारारा मॅतवरिन्दीर् पिळ्ळैयॆ् दीरो
अन्नदनै यरिन्दन्रो वन्बिरट्टि कॊण्डदुना नरिवि लेनो 351

पॊन् उरुव–स्वर्ण की; पॊरु कळलीर्–वीरपायलधारी; पिळै काणीर्–तुम अपराध करनेवाले नहीं हो; ॲन् उरुवै–मेरे शरीर को; कै कॊण्टीर्–अपने अधीन कर लिया है; नम् मरुङ्के–हमारे ही पास; इरुन्तु ऒळियुम्–ठहर जायगी; पिन्तै–फिर; अप्पाल् एकाळ्–कहीं नहीं जायगी; इवळै अयल् ऒरुवर् पारार् आम्–इस पर कोई अन्य दृष्टि नहीं डालेगा; ॲन्न अरिन्तीर्–ऐसा सोचकर ही मेरी नाक काट ली है; मूक्कु अरिवान् पॊरुळ्–(नहीं तो) नाक काटने का अर्थ; वेरु उण्टो–दूसरा है क्या; पिळै चॆय्तीरो–तुमने कोई गलती की है क्या (नहीं); अन्न तनै–उसको; अरिन्तु अन्रो–जानकर ही तो; नान् अन्पु इरट्टि कॊण्टतु–दुगुना प्रेम रखती; नान् अरिवु इलेनो–क्या मैं बुद्धिहीन हूँ। ३५१

स्वर्णनिर्मित वीर पायलधारी ! तुम लोग अपराध करनेवाले नहीं हो। तुमने मेरे शरीर और रूप को अपना बना लिया है ! 'यह हमारे पास रह जायगी। अब उसके पास कोई चारा नहीं है। यह विकृत रूप लेकर वह कहीं नहीं जा सकेगी। इसको कोई दूसरा नहीं देखेगा।' —यही सोचकर तुमने मेरी नाक काट दी है। नहीं तो मेरी नाक काट देने का कोई प्रयोजन है क्या ? तव क्या तुम अपराधी बन सकोगे ? नहीं। उस सच्चे अभिप्राय को मैं जान गयी। तभी तो मेरा तुम पर प्रेम दुगुना हो गया ! क्या मैं बुद्धिहीन हूँ ? । ३५१

वॆप्पळिया नॆडुवॆहुळि वेलरक्क रीदरिन्दु वॆहुण्डु नोक्किन्
अप्पळिया लुलहनैत्तु मुम्बॊरुट्टा लळिन्दनवा मरत्तै नोक्किन्
ऒप्पळियच् चॆय्हिला रुयर्हुलत्तै तोन्रिना रुणर्न्दु नोक्किन्
इप्पळियैत् तुडैत्तुदवि यिनिदिरुत्ति रॆन्नॊडुमॆन् रिरैञ्जि निन्राळ् 352

वॆप्पु अळिया–उग्रता से मिले; वॆकुळि–क्रोधी; नॆटुवेल् अरक्कर्–लम्बे भालों के धारक राक्षस; ईतु अरिन्तु–यह जानकर; वॆकुण्टु नोक्किन्–कोप करके देखें तो; अ पळियाल्–उनके बदला लेने से; उलकु अनैत्तुम्–सारे लोक; उम् पॊरुट्टाल्–तुम्हारे कारण; अळिन्तन आम्–मिट जाते होंगे; अरत्तै नोक्किन्–धर्म देखा जाय तो; उयर् कुलत्तु तोन्रितीर्–उच्च कुल में जात तुम; ऒप्पु अळिय–लोक-असम्मत कार्य; चॆय्किलीर्–करोगे नहीं; उणर्न्तु नोक्कि–खूब सोचकर देखकर; इ पळियै तुटैत्तु–इस अपमान को दूर करके; उतविट–सहायता करने के लिए; ॲन्नॊटुम् इनितु इरुत्तिर्–मेरे साथ सुख से रह जाओ; ॲन्रु इरैञ्चि निन्राळ्–ऐसी विनय कर खड़ी रही। ३५२

राक्षस उग्र क्रोधी हैं। वे यह जानेंगे तो कुपित होंगे और बदला लेने आयँगे। उनके बदला लेने के सिलसिले में सारे लोक मिट जायँगे और तुम ही उस नाश के निमित्त रह जाओगे। तुम लोग उच्चकुल-जात हो ! लोकों का असम्मत कार्य नहीं करोगे। धर्म की बात सोचो और खूब

विचार करो। मेरा अपमान दूर करके मेरी सहायता करने के लिए मेरे साथ सुखपूर्वक रह जाओ। —शूर्पणखा ने यह प्रार्थना की और खड़ी रही। ३५२

नाडयरत् तुयरिऴैत्त नवैयरक्कि निन्नन्नै तन्नै नल्हुम्
ताडहैये युयिर्हवर्न्द शरमिरुन्द दन्ऱियुनान् ऱवमेऱ् कॊण्डु
तोडशैयत् तुरुमलर्त्ता रिहलरक्कर् कुलन्दॊलैप्पान् ऱोन्ऱि निन्ऱेन्
पाडहल पुल्लॊऴुक्किन् वल्लरक्कि यॆन्ऱिरैवन् पहरुम् बिन्नुम् 353

नाट्ट अयर–संसार को त्रस्त करते हुए; तुयर् इऴैत्त–अत्याचार जो करती रही; नवै अरक्कि–अपराधिनी राक्षसी; निन् अन्नै तन्नै नल्कुम्–तुम्हारी माता की जननी; ताटकैयै–ताड़का के; उयिर् कवर्न्त–प्राण हर चुका वह; चरम् इरुन्तत्तु–शर मेरे पास अब भी है; अन्ऱियुम्–अलावा; नान्–मैं; तवम् मेल् कॊण्टु–तपोव्रती बनकर; तोट्टु अचै–दल-सहित; अ मलर् तुरु तार्–पुष्पों की बनी मालाधारी; इकल् अरक्कर्–शत्रु राक्षसों का; कुलम् तॊलैप्पान्–कुल का नाश करने के लिए; तोन्ऱि निन्ऱेन्–आया हूँ (इधर); पुल् ऒऴुक्किन्–नीच चरित्र की; वल् अरक्कि–बलवान राक्षसी; पाट्टु अकल–दूर चली जाओ; ऎन्ऱु–कहकर; इऱैवन्–प्रभु श्रीराम; पिन्नुम् पकरुम्–आगे बोले। ३५३

श्रीराम ने डाँट वतायी। री राक्षसी! लोकों को त्रस्त करते हुए ऊधम जो मचाती रही, उस तुम्हारी माता की माता ताड़का का वध मैंने ही किया था। जिस शर से उसको मैंने मारा वह शर अब भी मेरे पास सुरक्षित है। और भी ध्यान रखो। मैं तपोव्रती होकर इधर आया हूँ पुष्पमालाधारी उन वैरी राक्षसों के कुल को ही मिटाने हेतु! नीच चरित्र वाली क्रूर राक्षसी! दूर हट जाओ, भागो, भागो! फिर प्रभु और भी बोले। ३५३

तरैयळित्त तनिनेमित् तयरदन्ऱन् पुदल्वर्यान् तायशॊऱ् ऱाङ्गि
विरैयळित्त कान्बुहुन्देम् वेदियरु मादवरुम् वॆण्ड निन्ऱ
करैयळित्तऱ् करियपडैक् कडलरक्कर् कुलन्दॊलैत्तुक् कण्डाय् पण्डै
वरैयळित्त कुलमाड नहर्पुहुवे मिवैतॆरिय मनक्कॊ ळॆन्ऱान् 354

याम्–हम; तरै अळित्त–पृथ्वीपालक; तनि नेमि–एकचक्राधिपति; तयरतन् तन् पुतल्वर्–दशरथ के पुत्र हैं; ताय् चॊल् ताङ्कि–माता का वचन मानकर; विरै अळित्त–सुबास बरसानेवाले; कान् पुकुन्तेम्–जंगल में आये; वेतियरुम्–वेदज्ञ और; मा तवरुम्–महान तपस्वियों के; वेण्ट–प्रार्थना करने से; निन्ऱ–यहाँ स्थित; करै अळित्तऱ्कु अरिय–अपार; कटल् पटै अरक्कर्–समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों का; कुलम् तॊलैत्तु–दल मिटाकर; पण्टै–प्राचीन; वरै अळित्त–पर्वत-सम; कुल माट नकर्–अधिक संख्या में प्रासादों से पूर्ण (अयोध्या) नगर; पुकुवेम्–पहुँचेंगे; इवै–यह सब; तॆरिय मनम् कॊळ्–खूब जानकर मन में धरो; ऎन्ऱान्–श्रीराम ने समझाया। ३५४

हम उन दशरथ के पुत्र हैं, जो एकचक्राधिकार के साथ भूमि का पालन करते थे। अपनी (सौतेली) माता की आज्ञा सिर पर धारण करके हम सुबास से पूर्ण इस वन में आये। यहाँ के वेदवित ब्राह्मणों और महान तपस्वियों ने हमसे प्रार्थना की। उसको मानकर हमने यहाँ रहनेवाले असीम समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों के दल को मिटा चुककर अपने प्राचीन और पर्वत-सम ऊँचे सौधों से पूर्ण अयोध्या नगर लौट जाने का संकल्प किया है। ये बातें भी तुम ध्यान में रख लो। श्रीराम ने चेतावनी देते हुए यह कहा। ३५४

नॅऱित्तारै शॅल्लाद निरुदरॅदिर् निल्लाद नॅडिय तेवर्
मऱित्तारीण् डिरुवरिवर् मानिडव रॅन्ऩादु वल्लै याहिल्
वॅऱित्तारै वेलरक्कर् विऱलियक्कर् मुदलिनर्ऩी मिडलो रॅन्ऱु
कुऱित्तारै यावरैयुम् कॊणरुदिये निऩ्ऩॅदिरे कोऱु मॅन्ऱान् 355

नॅऱि तारै चॅल्लात–धर्म-मार्ग पर न जानेवाले; निरुतर्–राक्षसों के; ऍतिर्–सामने; निल्लाते–न खड़े होकर; नॅटिय तेवर्–बड़े-बड़े देव भी; मऱित्तार्–मुड़कर भाग गये; ईण्टु इवर् इरुवर्–यहाँ ये दो; मानिटवर्–मनुष्य; ऍन्ऩातु–यह न सोचकर; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; वॅऱि तार्–सुबासपूर्ण मालाधारी; ऐ वेल् अरक्कर्–सुन्दर भालों वाले राक्षस; विऱल् इयक्कर्–पराक्रमी यक्ष; मुतलितर्–आदि में; नी मिटलोर् ऍन्ऱु कुऱित्तोरै–तुम जिनको शक्तिशाली मानती हो, उन; यावरैयुम्–सभी को; कॊणरुतियेल्–लाओगी, तो; निन् ऍतिरे–तुम्हारे सामने ही; कोऱुम्–मारूँगा; ऍन्ऱान्–श्रीराम ने कहा। ३५५

श्रीराम ने आगे अपनी बात पर उसका विश्वास पैदा करने के लिए कहा— 'धर्म-मार्ग पर न जानेवाले राक्षसों के सामने चिरप्रतिष्ठित देव टिक नहीं सके। लौटकर भाग गये। यहाँ ये दोनों अल्पशक्ति मनुष्य हैं।' तुम ऐसा सोचोगी। ऐसा मत सोचो। तुम्हारे पास सामर्थ्य हो तो जाओ, सुबासपूर्ण मालाधारी राक्षस, शक्तिशाली यक्ष आदि लोगों में जिनको तुम पराक्रमी मानती हो, उन सबों को बुला लाओ। देखो, मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही उनको मार दूँगा। ३५५

कॊल्लला मायङ्गळ् कुऱित्ततवे कॊळ्ळलाङ् गोॅऱ्ऱ मुऱ्ऱ
वॅल्लला मवरियऱ्ऱुम् वित्तैयमॅल्लाङ् गडक्कला मेल्वाय् नीङ्गिप्
पल्लॅला मुऱत्तोन्ऱुम् बहुवाय ळॅन्ऩादु पार्त्ति याहिल्
नॅल्लॅलाञ् जुरन्दुदवु नीर्नाड केळॅन्ऱु निरुदि कूऱुम् 356

नॅल् ऍलाम् चुरन्तु–धान आदि खाद्य पदार्थ सब पैदा करके; उतवुम्–देनेवाले; नीर् नाट–जल-समृद्ध कोसल देश के राजा; केळ्–सुनो; मेल् वाय् नीक्कि–मुख (अधरों) को हटाकर; पल् ऍलाम्–सारे दाँतों को; उऱ तोन्ऱुम्–खूब प्रकट होने देनेवाले; पकुवायळ्–बड़ा मुख वाली; ऍन्ऩातु–ऐसा न सोचकर; पार्त्ति आयिन्–

मुझ पर प्रेम की दृष्टि रखोगे तो; कॉल्लल् आम्–मारना हो सकता है; कुऱित्तन्नवे मायङ्कळ्–वे जो भी माया सोचेंगे; कॉळ्ळल् आम्–उनको पहले ही समझना सम्भव होगा; कॉऱ्ऱम्–विजय; मुऱ्ऱ–पूरी हमारी हो ऐसा; वॅल्ललाम्–उनको हरा सकते हैं; अवर् इयऱ्ऱुम् वित्तैयम् ॲलाम्–वे जो भी षड्यन्त्र रचेंगे, उन सबको; कटक्कलाम्–मिटा सकेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा; निरुति कूऱुम्–निशाचरी ने कहा। ३५६

शूर्पणखा हार मानने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। उसने बहस की। धान आदि खाद्य पदार्थ कसरत से पैदा करनेवाले, जलसमृद्ध कोसल देश के अधिपति ! सुनो ! तुम इस छोटी सी बात को भूल जाओ कि मेरे दाँत बाहर निकले हुए हैं और मेरा मुख-विवर अधिक बड़ा है। मुझ पर कृपा-दृष्टि रखो तो तुम जिनको मारना चाहते हो, उन राक्षसों को अवश्य मार सकोगे। हम उनके माया कार्यों का पूर्व-ज्ञान प्राप्त करके उन पर पूर्ण रूप से विजय पा सकेंगे। उनके सभी षड्यन्त्रों को असफल बना सकेंगे। ३५६

काम्बुऱऴुन् दोळाळैक् कैविडी रॆन्ऩितिनुम्यान् मिहैयो कळ्वर्
आम्बॊऱियि लडलरक्क रवरोडे शॆरुच्चॆय्वा नमैन्दी राहिल्
ताम्बॊऱियिऱ् पलमायन् दरुम्बॊऱिह ळऱिन्दवऱ्ऱैत् तडुप्पे नन्ऱे
पाम्बऱियुम् पाम्बिन्ऩगा लॆन्नमॊऴियुम् पऴमॊऴियुम् बार्क्कि लीरो 357

काम्पु उऱऴुम्–बाँस की समानता करनेवाले; तोळाळै–कंधे वाली को; कै विटीर् ॲन्ऩितिनुम्–नहीं छोड़ोगे तो भी; यान् मिकैयो–मैं अधिक हो जाऊँगी क्या; कळ्वर् आम्–चोर; पॊऱि इल्–श्रीहीन; अटल् अरक्कर् आम्–पराक्रमी राक्षसों; अवरोटे–के साथ (विरुद्ध); चॆरु चॆय्वान्–लड़ने के लिए; अमैन्तीर् आकिल्–प्रस्तुत हुए तो; पॊऱियिल्–इन्द्रियों के समान; पल मायम् तरुम्–विविध माया के कार्य करनेवाले; पॊऱिकळ् अऱिन्तु–उनके रहस्यों को पहले ही जानकर; अवऱ्ऱै तटुप्पेन् अन्ऱे–उनको रोक दूँगी न; पाम्पु–सर्प; पाम्पिन् काल्–सर्प का पैर; अऱियुम्–जानता है; ॲन्न मॊऴियुम्–ऐसा कहनेवाली; पऴमॊऴियुम्–लोकोक्ति; पार्क्किलीरो–नहीं जानते क्या। ३५७

तुम बाँस की समानता करनेवाले कन्धों की इस स्त्री को छोड़ना नहीं चाहते तो भी मैं तुम्हारे लिए अधिक हो जाऊँगी या निरर्थक हो जाऊँगी ? नहीं। राक्षस बुरे हैं और पराक्रमी हैं। उनके विरुद्ध जब लड़ोगे, तब वे इन्द्रियों के समान अनेक अनर्थकारी मायाकार्य करेंगे। मैं उनका रहस्य जानकर उनको रोक लूँगी। क्या तुम यह लोकोक्ति नहीं जानते, जो यह बताती है कि सर्प, सर्प का पैर जानता है। राक्षसी हूँ, राक्षसों की चाल जानती हूँ। इस पर विचार नहीं करोगे। ३५७

उळङ्गोडर् कन्बिऴैत्ता ऴुण्डोरुत्ति यॆन्ऩुदिये निरुद रोडुङ्
कळङ्गोडर् करियशॆरुक् कण्णियक्का लॊरुमूवेङ गलन्द पोदु

कुळङ्गोडु मऱ्ऱैयक् कॊडियविऱल् वीरर्तमैक् कॊन्ऱ पिन्तर्
इळङ्गोवो डॆन्नैयिरुत्ति यिरुकोळुञ् जिऱैवैत्ताऱ् किळैया ळॆन्ऱे 358

उळम् कोटऱ्कु—मन में स्थान देने के लिए; अन्पु इळैत्ताळ् ऒरुत्ति—मुझसे प्रेम करनेवाली एक स्त्री; उण्टु—पहले से है; ऎन्नुतियेल्—कहोगे तो; निरुतरोटुम्—राक्षसों के साथ; कळम् कोटऱ्कु अरिय—समरांगण में जो दुस्तर करा देगा, ऐसा; चॆरु कण्णियक्काल्—युद्ध करना चाहोगे तो; ऒरु मूवेम् कलन्त पोतु—हम तीनों मिले रहें तो; कुळम् कोटुम् अन्ऱे—वह समरभूमि रक्त का तालाब बन जायगी न; अ कॊटिय—उन निर्मम; विऱल् वीरर् तम्मै—बली वीरों को; कॊन्ऱ पिन्तर्—मारने के बाद; इरु कोळुम् चिऱै वैत्ताऱ्कु—दोनों ग्रहों (सूर्य और चन्द्र) को कारागृह में जिसने बन्द कर रखा था, उस रावण को; इळैयाळ् ऎन्ऱे—भगिनी के मान की रक्षा करते हुए; इळम् को ओटु—लघुराज लक्ष्मण के साथ; ऎन्नै इरुत्ति—मुझे बिठा दो, (उसकी पत्नी बना लो)। ३५८

तुम कह सकते हो कि मेरे मन में स्थान पाकर मेरे साथ प्रेम करने के लिए पहले ही एक स्त्री है। तब एक काम करें। राक्षसों के साथ हम तीनों मिलकर युद्ध करेंगे। तब साधारण रूप से समरांगण में जाना भी जिसमें कठिन होगा, उस भयंकर युद्ध में हम रणभूमि को ही रक्त का तालाब बना देंगे और विजयी बनेंगे। उन वीर राक्षसों को मारने के बाद मुझे इतना मान दो कि मैं सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहों को कारागृह में जिसने बन्द कर दिया, उस रावण की भगिनी हूँ और मुझे अपने लघुराज लक्ष्मण के घर में (उसकी स्त्री के रूप में) बिठा दो। ३५८

पॆरुङ्गुला वुऱुनहर्क्के पॆयरुनाळ् वेण्डुमुरुप् पिडिप्पे नन्ऱेल्
अरुङ्गला मुऱ्ऱिरुन्दा नॆन्ऱालु मिळैयवन्ऱा नरिन्द नाशि
ऒरुङ्गिला विवळोडु मुऱैवदो वॆन्बाने लिऱैव वॊन्ऱु
मरुङ्गिला दवळोडु मन्ऱेयान् नॆडुङ्गालम् वाळ्न्दे नॆन्बाय् 359

इऱैव—सरदार; पॆरुम् कुला उऱु—बड़े कोलाहलमय; नकर्क्के—नगर (अयोध्या) को; पॆयरु नाळ्—लौटते दिन; इळैयवन्—तुम्हारा छोटा भाई; अरुम् कलाम् उऱ्ऱु इरुन्तान्—गहरा कोप करता होता; ऎन्ऱालुम्—तो भी; तान् अरिन्त नाचि ऒरुङ्कु इला—खुद जो उसने काटी, उस नाक से हीन; इवळोटुम् उऱैवतो—इसके साथ रहूँगा क्या; ऎन्पातेल्—कहेगा तो; ऒन्ऱु मरुङ्कु इलातवळोटुम् अन्ऱे—युक्त कमर से हीन स्त्री के साथ तो; यान् नॆटुम् कालम् वाळ्न्तेन्—मैं बहुत काल से रहता हूँ; ऎन्पाय्—कहो; अन्ऱेल्—वह तब भी न माने तो; वेण्टुम् उरु पिटिप्पेन्—उसके पसन्द का रूप धारण कर लूंगी। ३५९

नाथ ! जब तुम लोग बड़े कोलाहलमय अयोध्या नगर को लौटोगे, तब लक्ष्मण क्रोध न छोड़कर यह कहे कि यह नासिका से हीन है, यद्यपि उसी ने मुझे नाक से हीन कर दिया था तो तुम उससे समाधान कहो कि क्या मैं कमर से हीन स्त्री के साथ बहुत दिन से नहीं रह रहा ? नहीं तो

मैं वह जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लूँगी; नहीं तो भी मैं उसका चाहा रूप धर लूँगी। ३५९

ऍऩ्ऱलुमे यिळैयवऩ्ऱा निलङ्गिलैवेल् कडैक्कणिया यिवळै योण्डु
कॊऩ्ऱुहळै योमॆऩ्ऩि नॆडिदलैक्कु मरुळऩ्गोल् कोवे यॆऩ्ऩ
नऩ्ऱदुवे यामऩ्ऱो पोहाळे लाहवॆऩ्ऩ नादऩ् कूऱ
ऑऩ्ऱुमिव रॆनक्किरङ्गा रुयिरिऴप्पॆ निऱ्किलॆऩ वरक्कि युऩ्ऩा 360

ऍऩ्ऱलुमे–उसके ऐसा कहते ही; इळैयवऩ्–कनिष्ठ ने; इलङ्कु इलै वेल्–दृश्यमान पत्राकार सिर वाले भाले को; कटैक्कणिया–आँख की कोर से दिखाकर; कोवे–स्वामी; इवळै कॊऩ्ऱु–इसको मारकर; कळैयोम् ऍऩ्ऩिल्–नहीं मिटायँगे तो; नॆटितु अलैक्कुम्–बड़ा ऊधम मचायगी; अरुळ् ऍऩ् कोल्–कृपापूर्ण आज्ञा क्या है; ऍऩ्ऩ–यह पूछने पर; नातऩ्–नायक श्रीराम के; पोकाळेल्–नहीं जायगी तो; अतुवे–वही; नऩ्ऱु आम् अऩ्ऱो–भला होगा न; आक ऍऩ–वही हो, कहने पर; कूऱ–कहने पर; इवर् ऍऩक्कु ऑऩ्ऱुम् इरङ्कार्–ये मेरी दया कुछ नहीं करेंगे; निऱ्किऩ्–खड़ी रहूँ तो; उयिर् इऴप्पॆऩ्–प्राण गँवा दूँगी; ऍऩ–ऐसा; अरक्कि उऩ्ऩा–राक्षसी सोचकर। ३६०

लक्ष्मण ने यह बात सुनी। उनकी सहनशीलता जाती रही। उन्होंने श्रीराम का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने दृश्यमान, पत्रसिर-भाले को अपनी आँखों की कोरों से देखा। फिर कहा— हे स्वामी! अगर हम इसे मारकर दूर नहीं करेंगे तो यह बड़ा अनर्थ करा देगी। आपकी आज्ञा क्या है? तब नायक श्रीराम ने मान लिया। कहा कि हाँ! अगर यह जानेवाली नहीं है तो क्या वैसा करना ही न भला होगा? वही हो! शूर्पणखा ने सुना तो वह समझ गयी कि ये हमारे ऊपर कृपा नहीं करेंगे। इधर ठहरूँगी तो प्राण से हाथ धोना पड़ जायगा। (यह सोचकर)। ३६०

एऱ्ऱनॆडुङ् गोडिमूक्कु मिरुकादु मुलैयिरण्डु मिऴन्दु वाऴल्
आऱ्ऱुवऩे वञ्जऩैया लुमैयुळ्ळ परिशऱिवा नमैन्द दऩ्ऱो
काऱ्ऱिऩिलुङ् कऩलिऩुङ् कडियानैक् कॊडियानैक् करऩै युङ्गळ्
कूऱ्ऱुवऩै यिप्पॊऴुदे कॊणर्हिऩ्ऱे ऩॆऩ्ऱुशलङ् गॊण्डु पोऩाळ् 361

एऱ्ऱ–युक्त; नॆटुम् कोटि मूक्कुम्–लम्बी, लता-सम नाक को; इरु कातुम्–दोनों कानों को; मुलै इरण्टुम्–दोनों स्तनों को; इऴन्तुम्–खोने के बाद भी; वाऴल् आऱ्ऱुवऩे–जीना सह सकूँगी क्या; उमै उळ्ळ परिचु–तुम्हारे गूढ़ अभिप्राय; वञ्चऩैयाल्–कपट से; अऱिवाऩ्–जानने को; अमैन्ततु अऩ्ऱो–रचा गया (नाटक) न; काऱ्ऱिऩिलुम् कटियाऩै–वायु से अधिक तीव्र और बलवान; कऩलिऩुम् कॊटियाऩै–अग्नि से भी बढ़कर निर्मम; करऩै–खर को; उङ्कळ् कूऱ्ऱुवऩै–तुम्हारे यम को; इ पॊऴुते कॊणर्किऩ्ऱेऩ्–यहाँ अभी लाऊँगी; ऍऩ्ऱु–कहकर; चलम् कॊण्टु पोऩाळ्–वैर लेकर चली। ३६१

जाते-जाते शूर्पणखा यह कह गयी कि मेरी लम्बी लता-सी नाक मेरे रूप के योग्य सुन्दर थी। उसको, दोनों कानों और स्तनों को खोने के बाद कोई अपने जीवन को सह सकेगा क्या ? मैं जीवित रहने की क्षमता रख सकूँगी क्या ? यह सब जो मैंने तुमसे कहा, वह तुम्हारे गूढ़ अभिप्रायों को जानने के लिए रचा गया कपट नाटक था। अब मैं जा रही हूँ और वायु से भी तीव्रगामी और बलवान, अग्नि से भी निर्मम खर को, जो तुम्हारा यम होगा, अभी ले आऊँगी। ३६१

6. करन् वदैप् पडलम् (खर-वध पटल)

❀ इरुन्द माक्करन् ऱाळिणै यिन्मिशैच्
चॉरिन्द शोरियळ् कून्दल ऌम्बॅन्नत्
तॅरिन्द मूक्किन्नळ् वायिन्नळ् शॅक्कर्मेल्
विरिन्द मेह मॅन्नविळ्ुन् दाळरो 362

चॊरिन्त चोरियळ्–बहते हुए रक्त के साथ; कून्तलळ्–बिखरे केश वाली; तूम्पु ॲंत–मोरी की नली के द्वार के समान; तॅरिन्त मूक्कितळ्–दिखनेवाली नाक की; वायित्तळ्–(मोरी के द्वार के समान) बड़ा मुख वाली; चॅक्कर् मेल् विरिन्त–लाल गगन पर फैले; मेकम् ॲंत–मेघ के समान; इरुन्त मा करन्–(जनस्थान में) रहनेवाले प्रख्यात खर के; ताळ् इणैयिन् मिचै–जोड़े के पैरों पर; विळुन्ताळ्–जा गिरी। ३६२

शूर्पणखा के शरीर के कटे अंगों से रक्त बह रहा था। उसका केश खुला और बिखरा हुआ था। उसकी नाक और मुख मोरी के द्वार के समान खुले थे। वह भागी और जनस्थान में रहे प्रख्यात खर के चरणों पर लाल गगन के ऊपर छाये हुए मेघ के समान गिरी। ३६२

❀ अऴुङ्गु नाळिदॆन् ऱन्दह ऩाणैयाल्, तऴङ्गु पेरि यॅन्नत्तनित् तेङ्गुवाळ्
मुऴङ्गु मेह मिडित्तवॆन् दीयिन्नाल्, पुऴुङ्गु नाह मॅन्नप्पुरण् डाळरो 363

अन्तकन् आणैयाल्–यम की आज्ञा से; अळुङ्कु नाळ् इतु–अन्त होने का काल यह है; ॲन्ऱु–ऐसा घोषित करते हुए; तळङ्कु पेरि ॲंत्ति–पिटनेवाली भेरी के समान; तत्तित्तु एङ्कुवाळ्–विचित्र रूप से रोने का स्वर करती हुई; मुळङ्कुम् मेकम्–गरजनेवाले मेघ से; इटित्त वॆम् तीयिताल्–गिरी गाज की अग्नि से; पुळुङ्कुम् नाकम् ॲंत–व्यग्र नाग के समान; पुरण्टाळ्–लोटने लगी। ३६३

उसका अनोखा रुदन का गम्भीर स्वर यम की आज्ञा के अनुसार राक्षसों के अन्त की घोषणा करनेवाली भेरी के नाद के समान था। वह उस सर्प के समान छटपटाकर लोटने लगी, जो गरजते मेघ से गिरी गाज की अग्नि से तप रहा हो। ३६३

❀ वाक्किऱ् कॊप्पप् पुहैमुन्दु वायिनाऩ्
नोक्किक् कूशलर् नुन्नैयित् तन्मैयै
आक्किप् पोनव राऱ्हॊलॆन् ऱानवळ्
मूक्किऱ् चोरि मुऴ्इक्कॊण्ड कण्णिनाऩ् 364

अवळ् मूक्किल् चोरि–उसकी नाक से बहते हुए रक्त में; मुऴ्इ कॊण्ट–मग्न रही; कण्णिनाऩ्–आँखों का; वाक्किऱ्कु ऒप्प–शब्द के अनुकल; पुकै मुन्तु–धुआँ निकालनेवाले; वायिनाऩ्–मुख का (खर); नोक्कि–देखकर; कूचलर्–निस्संकोच होकर; नुन्नै–तुम्हारी; इ तन्मै आक्कि–इस दुर्गति में पहुँचाकर; पोन्तवर्–जानेवाले; आर् कॊल्–कौन हैं तो; ॲन्ऱाऩ्–पूछा। ३६४

खर की दृष्टि शूर्पणखा की नाक से निकलनेवाले रक्त के प्रवाह में मानो डूब सी गयी। उसके मुख से ज्यों-ज्यों शब्द निकलते, त्यों-त्यों धुआँ भी निकलता। उतने क्रोध के साथ उसने शूर्पणखा से प्रश्न किया कि ऐसा निस्संकोच होकर तुम्हारी दुर्गति कर गये जो वे कौन हैं ? । ३६४

❀ इरुवर् मानिडर् तापद रेन्दिय, वरिविल् वाट्कैयर् मन्मदन् मेनियर्
तरुम नीरर् तयरदन् कादलर्, शॆरुवि नेरु निरुदरैत् तेडुवार् 365

इरुवर् मानिटर्–दो मानव; तापतर्–तपस्वी; एन्तिय–धृत; वरिविल्–बन्धनयुक्त धनु; वाळ्–तलवार के; कैयर्–हाथ वाले; मन्मतन् मेनियर्–मन्मथ के समान रूप वाले; तरुम नीरर्–धर्मपथचारी; तयरतन् कातलर्–दशरथ के प्यारे पुत्र; चॆरुविल् नेरुम्–युद्ध में लड़नेवाले; निरुतरै–राक्षसों को; तेटुवार्–ढूँढ़नेवाले। ३६५

(शूर्पणखा का उत्तर भी देखिये!) वे दोनों मानव हैं तप में लीन! हाथ में धनुष और तलवार रखते हैं। उनका रूप मन्मथ का-सा है। धर्मपथचारी हैं। दशरथ के प्यारे पुत्र हैं और युद्ध में लड़नेवाले राक्षसों की खोज में लगे रहनेवाले हैं। ३६५

❀ ऒन्ऱु नोक्कल रुन्वलि योङ्गरम्, निन्ऱु नोक्कि निऱुत्तु निनैप्पिनर्
वॆन्ऱि वेऱ्कै निरुदरै वेरऱक्, कॊन्ऱु नोक्कुदु मॆन्ऱुणर् कॊळ्हैयार् 366

ओङ्कु अऱम् निन्ऱु–उत्कृष्ट धर्म खुद अवलम्बन कर; नोक्कि–उनकी गति शोधकर; निऱुत्तुम् निनैप्पिनर्–स्थापित करने का संकल्प करते हुए; उन् वलि ऒन्ऱुम् नोक्कलर्–तुम्हारे बल की परवाह नहीं करते; वॆन्ऱि वेल्–विजयशील भालेधारी; कै–हस्त वाले; निरुतरै–राक्षसों को; वेर् अऱ–निर्मूल करके; कॊन्ऱु नोक्कुतुम् ॲन्ऱु–मार मिटाएँगे, ऐसा; उणर्–निश्चय जिसमें हो; कॊळ्कैयार्–ऐसे संकल्प वाले। ३६६

वे उत्कृष्ट धर्म के मार्ग में खुद रहते हुए, धर्म की गति को शोधकर उसकी संस्थापना में दत्तचित्त रहनेवाले हैं। वे तुम्हारे बल का कोई महत्त्व न देते। यही संकल्प रखनेवाले हैं कि हम विजयशील भालों के धारी राक्षसों का उन्मूलन करके मिटा देंगे। ३६६

❀ मण्णि नोक्करु वानिनिन् मऱ्ऱिनिल्
ऍण्णि नोक्कुरिल् यावरु नेर्हिलाप्
पॅण्णि नोक्कुडै याळॊरु पेदैयॅन्
कण्णि नोक्कि युरैप्परुङ् गाट्चियाळ् 367

मण्णिल्–धरती पर; नोक्कु अरु—दर्शन-दुर्लभ; वानितिल्–आकाश में; मऱ्ऱितिल्–अन्य लोकों में; ऍण्णि–सोचकर; नोक्कुरिल्–देखने पर; यावरुम् नेर्किला–कोई उसकी समानता न कर सके, ऐसी; पॅण्णिन् नोक्कु उटैयाळ्—स्त्री-सौंदर्य वाली; ऍन् कण्णिन् नोक्कि–अपनी आँखों से देखकर; उरैप्पु अरुम्–अवर्णनीय; काट्चियाळ्—आकार-प्रकार वाली। ३६७

और भी, उनके साथ एक स्त्री है। स्वर्ग, भूलोक, पाताल आदि कहीं भी ढूँढ़ो, उसकी समानता करनेवाली कोई नहीं मिलेगी। बड़ी सुन्दरी स्त्री है। उसका आकर्षण इतना अधिक है कि मैं अपनी आँखों से देखा उसके मनोहारी रूप का वर्णन करूँ, इतनी क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है। ३६७

❀ कण्डु नोक्कुरुङ् गारिहै याडनैक्, कॊण्डु पोवॅ निलङ्गैयर् कोक्कॅना
विण्डु मेलॅळुन् देनै वॅहुण्डवर्, तुण्ड माक्किनर् मूक्कॅनच् चॊल्लिनाळ् 368

नोक्कु उरुम् कारिकैयाळ् तनै–सुन्दरी उस स्त्री को; कण्टु–देखकर; इलङ्कैयर् कोक्कु–लंकेश्वर के लिए; कॊण्टु पोवॅन् ऍना–ले जाऊँगी कहकर; विण्टु–शत्रुता दिखाकर; मेल् ऍळुन्तेनै–उस पर लपकनेवाली मुझे; अवर्–उन दोनों ने; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; मूक्कु तुण्टम् आक्कितर्–नाक के टुकड़े कर लिये; ऍन–ऐसा; चॊल्लिनाळ्–शूर्पणखा ने कहा। ३६८

मैंने उस अनुपम सुन्दरी को देखा तो सोचा कि उसको लंकेश के लिए ले जाऊँ। इसी विचार से मैं उसकी ओर लपकी। तब उन दोनों मनुष्यों ने मेरी नाक काट दी। —शूर्पणखा ने घटना का अपनी रीति से वर्णन किया। ३६८

❀ केट्ट ननुरै कण्डनन् कण्णिनाल्, तोट्ट नुङ्गिऱ् ऱॊळैयुरु मूक्किनैक्
काट्टॅ नावॅळुन् दानॅदिर् कण्डनर्, नाट्टन् दीय वुलहै नडुक्कुवान् 369

ऍतिर् कण्टवर् नाट्टम्–सामने से देखनेवालों की दृष्टि को; तीय–जलाते हुए; उलकै नटुक्कुवान्–लोक को कम्पित करनेवाले खर ने; उरै केट्टतन्–शूर्पणखा का कथन सुना; तोट्ट नुङ्किल्–कोए निकालने के बाद ताल-फल जैसे हो जाता है, वैसे; तॊळै उरु—गड्ढों सहित; मूक्कितै–नाक को; कण्णिताल्–अपनी आँखों से; कण्टतन्–देखा; काट्टु–उनको दिखाओ; ऍना–कहते हुए; ऍळुन्तान्–उठा। ३६९

खर ऐसा भयंकर और उग्र राक्षस था कि उसको सामने से देखनेवाले की आँखें जलकर भस्म हो जातीं और लोक काँप उठते। उसने शूर्पणखा के मुख को गौर से देखा, जो कोए से हीन ताल-फल के

समान लगता था। देखकर उसने तैश में आकर कहा कि दिखाओ उन्हें। यह कहते हुए वह उठा। ३६९

❀ ॲऴुन्दु निन्ऱुल हॅऴु मॅरिन्दुहप्, पॉऴिन्द कोबक् कत्तलितिर् पॉङ्गुवान्
कऴिन्दु पोयितर् मानिड रॅन्ऩुङ्गाल्, अऴिन्द दोविव् वरुम्बऴि ॲन्ऩुमाल् 370

ॲऴुन्तु निन्ऱु–उठकर खड़ा होकर; उलकु एऴुम् ॲरिन्तु उक–सातों लोकों को भस्म होकर चूने देते हुए; पॉऴिन्त–बढ़नेवाली; कोप कत्तलितिल्–कोपाग्नि में; पॉङ्कुवान्–जो भड़क उठा, उसने; मानिटर् कऴिन्तु पोयितर्–(ये) मनुष्य मिट चले; ॲन्ऩुम् काल्–ऐसी स्थिति में भी; इ अरुम् पऴि–यह कठोर अपयश; अऴिन्ततो–मिटेगा क्या; ॲन्ऩुम्–कहा। ३७०

उठकर खड़ा हुआ वह खर ऐसी कोपाग्नि के साथ भड़क उठा, जो सातों लोकों को जला दे और भस्म करके छितरा दे। उसे इतना क्षोभ हुआ कि उसके मुख से प्रश्न उठा। अगर मैं उन मानवों को मार भी दूँ और वे मिट जायँ तो भी यह अपयश दूर हो सकेगा क्या? । ३७०

❀ वरुह तेरॅनु मात्तिरै माडुळोर्, इरुहै माल्वरै येऴिनो डेऴनार्
ऑरुहै यालुल हेन्दु मुरत्तिनार्, तरुह विप्पणि यॅम्वयिऱ् ऱानॅन्ऱार् 371

तेर् वरुक–रथ आ जायँ; ॲन्ऩुम् मात्तिरै–ऐसा (आज्ञा) सुनाते ही तत्क्षण; माटु उळोर्–पास रहनेवाले; इरु कै मालवरै–दो-दो हाथों के साथ बड़े-बड़े पर्वत; एऴितोटु एऴु अन्नार्–सात और सात (चौदह) के समान जो थे; ऑरु कैयाल्–अपने एक हाथ से; उलकु एन्तुम्–भूलोक को उठाने की; उरत्तिनार्–शक्ति रखनेवाले; इ पणि–यह काम; ॲम् वयिन् तान् तरुक–हमारे पास छोड़ दें; ॲन्ऱार्–बोले। ३७१

फिर उसने आज्ञा दी कि रथ आ जाय। तब उसके पास चौदह सेनापति थे। वे ऐसे पर्वतों के समान थे जिनके दो-दो हाथ हों। वे अपने एक हाथ पर ही धरणी को उठा सकनेवाले थे। उन्होंने प्रार्थना की कि यह काम हमें सौंप दें। ३७१

❀ चूलम् वाण्मऴुत् तोमरञ् जक्करम्, काल पाशङ् गदैपॉरुङ् गैयिनार्
वेलै ञालम् वॅरुवुऱ मार्प्पिनार्, आल कालन् दिरण्डनन् वाक्कैयार् 372

चूलम् वाळ्–शूल और तलवार; मऴु तोमरम्–परशु और तोमर; चक्करम् कालपाचम्–चक्र, कालपाश; कतै–गदा; पॉरुम् कैयितार्–इनको लेकर लड़नेवाले हाथों के; वेलै ञालम्–समुद्रवलयित भूतल को; वॅरुवु उऱम् आर्प्पितार्–डराते हुए शोर मचानेवाले; आल कालम् तिरण्टु अन्न–हलाहल रूप ले आया हो ऐसा; आक्कैयार्–शरीर वाले। ३७२

(वाल्मीकी में इनके नाम दिये गये हैं।) वे शूल, तलवार, परशु, तोमर, कालपाश और गदा इनका उपयोग कर लड़ सकते थे। जब वे

उच्च स्वर उठाते तब समुद्र और उसके मध्य रहनेवाली भूमि थर्रा उठती थी। उनके शरीर हलाहल के पिण्डों के समान थे। ३७२

❀ वॆम्बु वेलैक् कनलन्न वॆम्मैयार्, नम्बि नम्मडि मैत्तोंळि नन्ऱॆना
उम्बर् मेलु मुरुत्तनै पोदियो, इम्बर् मेलिनि यामुळॆ मेयॆन्ऱार् 373

वॆम्पु वेलै–गरम और समुद्र से निकली; कनल् अन्त–(बड़वा) आग के समान (वे); वॆम्मैयार्–क्रोधशील; नम्पि–नायक; नम् अटिमै तॊळिल्–हमारी सेवकाई भी; नन्ऱु ऎना–अच्छी रही, कहके; उम्पर् मेलुम्–देवों पर; उरुत्तनै–गुस्सा कर; पोतियो–जा रहे हो क्या; इम्पर् मेल्–इस लोकवासी पर (आक्रमण करने); इनि याम् उळमे–अब हम तो हैं; ऎन्ऱार्–बोले। ३७३

अत्यन्त गरम बड़वाग्नि के समान क्रोध से भरे उन्होंने खर को देखकर कहा कि नायक ! हमारी सेवकाई भी कितनी खूब है (कि हमारे रहते आप लड़ने चलें) ! और भी क्या वे देव हैं कि आप क्रोध के साथ लड़ने जायँ ? वे धरती के मानव हैं और हम इधर प्रस्तुत हैं। ३७३

❀ नन्ऱु शॆल्लुदिर् नानिच् चिऱार्कण्मेल्
शॆन्ऱु पोर्शॆयिऩ् ऱेवर् शिरिप्पराल्
कॊन्ऱु शोरि कुडित्तवर् कॊळ्हैयै
वॆन्ऱु मीळुदिर् मॆल्लिय लोडॆन्ऱान् 374

नन्ऱु–ठीक है; चॆल्लुतिर्–चलो; नान्–मैं; इ चिऱार्कळ् मेल्–इन लड़कों पर; चॆन्ऱु पोर् चॆयिन्–जाकर युद्ध करूँ तो; तेवर् चिरिप्पर्–सुर लोग हँसेंगे; कॊन्ऱु–मारकर; चोरि कुटित्तु–रक्त पीकर; अवर् कॊळ्कैयै–उनका संकल्प; वॆन्ऱु–वृथा करके (उन्हें जीतकर); मॆल्लियलोटु–कोमल नारी को साथ ले; मीळुतिर्–लौट आओ; ऎन्ऱान्–कहा। ३७४

खर ने भी उसे ठीक माना। उसने कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम ही जाओ। मैं इन मानव-बालकों के विरुद्ध लड़ने जाऊँ तो देव मेरी हँसी उड़ायेंगे। तुम जाओ उन्हें मारो, उनका खून पिओ और उनका संकल्प हरा दो। फिर उस कोमल नारी को साथ लेकर लौट आओ। ३७४

❀ ऎन्न लोडुम् विरुम्बि यिऱैञ्जिनार्, शॊन्न नाणिलि यन्दहन् ऱूदॆन
अन्नळ् पिऩ्पडर् वारॆन वायिनार्, मन्नन् कादलर् वैहिड नण्णिनार् 375

ऎन्नलोटुम्–उसके यों कहते ही; विरुम्पि–खुश होकर; इऱैञ्चिनार्–विनय करके; चॊन्न–जिसने उनके सम्बन्ध में कहा था, उस; नाण् इलि–निर्लज्ज (शूर्पणखा) को; अन्तकन् तूतु ऎन–यम का दूत मानकर; अन्नळ् पिन् पटर्वार् ऎन–उसके पीछे जानेवाले; आयिनार्–बनकर वे; मन्नन् कातलर्–(दशरथ-) राज के पुत्र; वैकु इटम्–जहाँ रहे, वह स्थान; नण्णिनार्–पहुँचे। ३७५

यह अनुमति पाकर वे हर्षित हुए। खर को नमस्कार करके

निकले। यम के भेजे दूत के समान वह निर्लज्ज शूर्पणखा आगे-आगे गयी और ये उसका अनुकरण करते गये। वे दाशरथि जहाँ रहे वहाँ आये। ३७५

❀ तुमिलप् पोर्वल् लरक्कर्क्कुच् चुट्टिये
अमलत् तॊल्पॆय रायिरत् ताळियान्
निमलप् पाद नितैवि लिरुन्दवक्
कमलक् कण्णतैक् कैयितिऱ् काट्टिताळ् 376

अमलम् तॊल्–निर्मल और प्राचीन; पॆयर् आयिरत्तु–सहस्रनाम-धारी; आळियान्–चक्रपाणी के; निमल पात नितैविल् इरुन्त–पवित्र चरण-स्मरण में रहे; अ कमल कण्णतै–उन कमलाक्ष को; तुमिलम् पोर् वल्–तुमुल युद्ध करने में समर्थ; अरक्कर्क्कु–राक्षसों को; कैयितिल् चुट्टिये–हाथ के इशारे से; काट्टिताळ्–दिखाया (शूर्पणखा ने)। ३७६

वे प्राचीन और सहस्र नामों से भूषित चक्रपाणी श्रीविष्णु के निर्मल पवित्र चरणों का स्मरण करके ध्यानमग्न थे। शूर्पणखा ने अपने हाथ से उन कमलाक्ष को उन तुमुल युद्ध-निपुण राक्षसों को दिखाया। ३७६

❀ ऎऱ्ऱु वाम्बिडित् तेन्दुदु मॆन्गुनर्, पऱ्ऱु वानॆडुम् बाशत्ति तॆन्गुनर्
मुऱ्ऱु वामिऱै शॊल्मुऱै यालॆनाच्, चुऱ्ऱि नार्वरै शूळ्न्दनन तोऱ्ऱत्तार् 377

ऎऱ्ऱुवाम्–उसको ढकेलकर उछालेंगे; पिटित्तु एन्तुतुम्–पकड़कर धारण करेंगे; ऎन्कुनर्–कहनेवाले; नॆटुम् पाचत्तितिन्–लम्बे पाश से; पऱ्ऱुवाम्–कस लेंगे; ऎन्कुनर्–कहनेवाले; इऱै चॊल् मुऱैयाल्–हमारे राजा के कहे प्रकार; मुऱ्ऱुवाम्–कार्य पूरा करेंगे; ऎना–कहते हुए; वरै चूळ्न्तनन तोऱ्ऱत्तार्–पहाड़ घेर आये हों, ऐसे दृश्य वाले; चुऱ्ऱितार्–घेर गये। ३७७

उनको देखते ही कुछ ने कहा कि हम उसे उछालेंगे और हाथों में पकड़ लेंगे। कुछ ने कहा कि लम्बे पाश से उसे बाँध देंगे। और कुछ ने कहा कि हम अपने राजा का आशय पूरा करेंगे। ऐसी-ऐसी बातें शोर के साथ कहते हुए पर्वतों के समान जो रहे वे उन्हें घेर गये। ३७७

❀ एत्तु वाय्मै यिराम निळवलैक्, कात्ति तैयलै यॆन्ऱुतन् कऱ्पहम्
पूत्त दन्न पॊरुवि ऱडक्कैयाल्, आत्त नाणि नरुवरै वाङ्गितान् 378

एत्तु वाय्मै इरामन्–प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने; इळवलै–अपने अनुज से; तैयलै कात्ति–देवी की रक्षा करो; ऎन्ऱु–कहकर; कऱ्पकम् पूत्तत्तु अन्न–कल्पतरु पुष्पित हो, ऐसे; तन् पॊरुवु इल् तट कैयाल्–अपने उपमाहीन विशाल हाथ से; आत्त नाणित्–चढ़ी हुई प्रत्यंचा के साथ; अरु वरै–श्रेष्ठ पर्वत-सम धनुष को; वाङ्कितान्–ले लिया। ३७८

(श्रीराम ने देखा।) प्रशंसित सत्यसंध श्रीराम ने अपने कनिष्ठ से

कहा कि लक्ष्मण ! तुम सीताजी की रक्षा करो। उन्होंने अपने पुष्पित कल्पतरु के समान विशाल हाथ में प्रत्यंचा-चढ़े और पर्वतसम धनुष को ले लिया। ३७८

ॐ वाङ्गि वाळॊडु वाळिपॆय् पुट्टिलुम्, ताङ्गित् तामरैक् कण्णनच् चालैयै
नीङ्गि यिव्वयि नेर्मि नडावॆना, वीङ्गु तोळन् मलैदलै मेयिनान् 379

तामरै कण्णन्–कमलाक्ष; वाळ् ऒटु–तलवार के साथ; वाळि पॆय् पुट्टिलुम्–शरों के साथ तूणीर भी; वाङ्कि–लेकर; अ चालैयै नीङ्कि–उस पर्णशाला के बाहर आकर; इ वयिन् नेर्मिन् अटा–इस ओर आकर लड़ो रे; ऍन्ना–ललकारते हुए; वीङ्कु तोळन्–(युद्धोत्साह में) विवृद्ध कन्धों वाले (श्रीराम); मलैतलै मेयिनान्–युद्ध में प्रवृत्त हुए। ३७९

कमलाक्ष ने तलवार और शर-भरे तूणीर भी लिया। आश्रम से बाहर आये और उन्होंने ललकारा कि रे आओ इधर ! लड़ो। युद्धोत्साह के कारण उनके कंधे फूल उठे। वे युद्ध में प्रवृत्त हो गये। ३७९

मळुवुम् वाळुम् वयङ्गॆरि मुच्चिहैक्
कळुवुङ् गालवॆन् दीयन्न काट्चियार्
ऍळुवि नीडडक् कैयॆळु नान्गैयुन्
दळुवुम् वाळिह ळाड्रलज् जारत्तिनान् 380

काल वॆम् ती अन्न–युगान्तकालीन भयंकर आग के समान; काट्चियार्–दृश्यमान; मळुवुम्–परशु; वाळुम्–और तलवारें; वयङ्कु ऍरि–जलती आग के समान; मु चिकै कळुवुम्–त्रि(सिर) शूल, इनके साथ; ऍळुविन् नीळ्–स्तम्भ-सम लम्बे; तट–और विशाल; कै ऍळु नान्कैयुम्–(सात के चार) अट्ठाईस हाथों को; तळुवुम् वाळिकळाल्–निशाने पर अचूक लगनेवाले शरों से; तलम् चार्त्तिनान्–काटकर भूमि पर गिराया। ३८०

श्रीराम ने उनके स्तम्भ-सम लम्बे और मोटे अट्ठाईस हाथों को अपने अचूक बाणों से विद्ध कर गिराया। युगान्तकालीन अग्नि के समान क्रोधी उन राक्षसों के हाथों में परशु, तलवारें, अग्नि के समान उज्ज्वल त्रिशूल आदि थे। उनके साथ वे हाथ कट कर गिर गये। ३८०

ॐ मरङ्गळ् पोनॆडु वाळॊडु तोळ्विळ, उरङ्ग ळालडर्त् तारुर वोन्विडुम्
शरङ्ग ळोडिन तैत्त वरक्कर्दम्, शिरङ्ग ळोडिन तीयव ळोडिनाळ् 381

नॆटु वाळॊटु–लम्बी तलवारों के साथ; तोळ्–हाथ; मरङ्कळ् पोल्–पेड़ों के समान; विळ–गिरे, तब; उरङ्कळाल् अटर्त्तार्–छातियों से टकराये; उरवोन् विटुम् चरङ्कळ्–बलवान श्रीराम से प्रेषित शर; ओटिन तैत्त–चलकर घुसे; अरक्कर् तम् चिरङ्कळ्–राक्षसों के सिर; ओटिन–कट कर दौड़े (दूर गये); तीयवळ् ओटिनाळ्–दुराचारिणी भागी। ३८१

लम्बी तलवारों (व अन्य हथियारों) के साथ हाथों के अलग हो पेड़ों के समान गिरने के बाद भी वे सेनानायक लड़ने लगे। अपनी छाती से उन्होंने प्रहार किया। तब प्रबल प्रतापी श्रीराम ने तेजी से शर प्रेषित किये, जिन्होंने जाकर उनके सिरों को धड़ों से अलग कर दिया। शूर्पणखा ने देखा और वह नृशंस राक्षसी वहाँ से भाग चली। ३८१

❀ ऑऴिरु वेऱ्करऱ् कुऱ्ऱ् दुणर्त्तिऩाळ्, कुऴिरु कोबवॅङ् गॉळरि मावडक्
कळिरॅ लाम्बडक् कैदलै मेलुऱप्, पिळिऱि योडुम् बिडियऩ्ऩ पॅऱ्ऱियाळ् 382

कुऴिरु–गरजनेवाले; कोप वॅम् कोळ् अरि मा–क्रोधी, भयंकर सिंह के; अट–प्रहार करने से; कळिरु ॲलाम् पट–सभी गज मर गये और; कै तलै मेल् उऱ–हाथ सिर पर रखते हुए; पिळिऱि ओटुम्–चिंघाड़ती भागनेवाली; पिटि अऩ्ऩ–हथिनी के समान; पॅऱ्ऱियाळ्–स्थिति वाली ने; ऑळिरु वेल्–चमकीले भाले के; करऩ्कु–खर को; उऱ्ऱतु उणर्त्तिऩाळ्–जो हुआ वह सुनाया। ३८२

वह उस हथिनी के समान सिर पर हाथ रखे भागी, जो गरजनेवाले क्रोधी भयंकर सिंह के युद्ध में प्रहार से सभी गजों के मर जाने पर अपने सिर पर सूँड़ रखकर चिंघाड़ती हुई भाग रही हो। जाज्वल्यमान भाला-धारी खर के पास जाकर उसने समाचार सुनाया। ३८२

❀ अङ्ग रक्क रविऩ्दॉऴिऩ् दारॅत्तप्, पॉङ्ग रत्तम् विऴिवऴिप् पोऩ्दुह
वॅङ्ग रप्पॅय रोऩ्वॅहुण् डाऩ्विडैच्, चङ्ग रऩ्कुन् दडुप्परुन् दऩ्मैयाऩ् 383

विटै चङ्करऩ्कुम्–ऋषभवाहन शंकर से भी; तटुप्पु अरुम् तऩ्मैयाऩ्–जो रोका नहीं जा सकता, वैसा; वॅम् कर पॅयरोऩ्–क्रूर खर नाम का राक्षस; अङ्कु अरक्कर् अविन्तु ऑऴिन्तार् ॲऩ–वहाँ राक्षस मर मिटे; ॲऩ–यह सुनकर; पॉङ्कु अरत्तम्–उफन उठनेवाला रक्त; विऴि वऴि–आँखों द्वारा; पोन्तु उक–निकलने देते हुए; वॅकुण्टाऩ्–क्रुद्ध हुआ। ३८३

खर नामक वह राक्षस ऐसा दुद्धर्ष था कि ऋषभवाहन शंकर से भी हराया न जा सके। उसने जब सुना कि राक्षस वहाँ हत हो मिट गये, तो उसे बड़ा क्रोध हुआ। उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसकी आँखें ऐसी लगीं, मानो रक्त खौल उठा हो और वह आँखों से बाहर निकल रहा हो। ३८३

❀ अऴैयॅऩ् ऱेरॅऩक् काक्कुहॅऩ् पोर्प्पडै, उऴैय रोडि यॉरुनॊडि युम्बल्मेल्
मऴैयिऩ् मामुर शॅऱ्ऱुदिर् वल्लॅऩ्ऱाऩ्, मुऴैयिऩ् वाळरि यञ्ज मुऴङ्गुवाऩ् 384

मुऴैयिऩ् वाळ् अरि–गुफा में रहनेवाले सिंह को भी; अञ्च मुऴङ्कुवाऩ्–भयभीत करते हुए दहाड़नेवाले खर ने; ॲऩ् तेर् अऴै–मेरे रथ को बुलाओ; ॲऩ् पोर् पटै–मेरी युद्ध-सन्नद्ध सेना को; ॲऩक्कु आक्कुक–मेरे साथ करो; वल्–सत्वर; उऴैयर्–सेवक; ओटि–भाग जाकर; ऒरु कॊटि उम्पल् मेल्–उत्तम पताका से अलंकृत गज

पर; मळैयिन्–मेघ के समान; मा मुरचु–बड़ा ढोल; अॅर्ऱुतिर्–पिटवा दें; अॅन्ऱान्–कहा। ३८४

खर भीषण स्वर वाला था। उसका नाद सुनकर गुफा के अन्दर सुरक्षित रहनेवाले सिंह भी सिहर उठते थे। उसने आज्ञा निकाली कि मेरा रथ बुला लो। मेरी सेनाओं को मेरे साथ कर दो। जल्दी सेवक जायँ और ध्वजासहित गज पर ढोल रखकर यह मुनादी पिटवा दें। वह ठनक मेघ के गर्जन के समान उच्च हो। ३८४

❀ पेरि योशै पिऱत्तलुम् बॅट्पुरु, मारि मेहम् वरम्बिल वन्दॅन्नत्
तेरिन् शेनै तिरण्डदु तेवर्दम्, ऊरु नाह रुलहु मुलैयवे 385

पेरि ओचै पिऱत्तलुम्—भेरी-नाद के उठते ही; पॅट्पु उरु–विपुल; मारि मेकम्–वर्षाकालीन मेघ; वरम्पु इल–असीम; वन्त अॅन्न–आये हों ऐसा; तेवर् तम् ऊरुम्–देवों का लोक; नाकर् उलकुम्–नागों का (पाताल) लोक; उलैय–अस्तव्यस्त करते हुए; तेरिन् चेनै–रथों की सेना; तिरण्टतु–जुट आई। ३८५

भेरी का नाद हुआ कि गुरुत्वपूर्ण वर्षाकालीन मेघों के समान अगणित रथ आ गये। उनकी भीड़ और उनके शब्द के कारण आकाश और पाताल अस्तव्यस्त हो गये। ३८५

❀ पोर्प्पॅ रुम्बणै बॉम्मॅन् मुळक्कमा
नीर्त्त रङ्ग नॅडुन्दडन् दोळ्हळा
आर्त्तॅ ळुन्द दिरुदियि नार्हलिक्
कार्क्क रुङ्गडल् काल्हिळर्न् दॅन्नवे 386

इऱुतियिन्–कल्पान्त में; आर् कलि–सघोष; कार् करुम् कटल्–अति विशाल काला सागर; काल् किळर्न्तु अॅन्न–पवनोद्वेलित हुआ हो, ऐसा; पोर् पॅरुम् पणै–युद्धसूचक बड़े ढोलों का नाद; पॉम् अॅन् मुळक्कमा–'भों' का उच्च नाद हुआ; नॅटुम् तटम् तोळ्कळ्–दीर्घ और विशाल भुजाएँ; नीर् तरङ्कमा–जल-तरंगें हुईं; आर्त्तु अॅळुन्ततु–(रथ-सेना) कोलाहल के साथ उठी। ३८६

वह सेना युगान्तकाल में पवनाद्वेलित हो उमड़नेवाले सघोष समुद्र के समान तुमुल नाद के साथ उठ आयी। युद्धसूचक ढोल ही उस समुद्र का गर्जन था। वीरों की सबल और लम्बी भुजाएँ उसकी तरंगें थीं। ३८६

❀ काडु तुन्ऱि विशुम्बु करन्दॅन्न, नीडि यॅङ्गु निमिर्न्द नॅडुङ्गॉडि
ऑडु मॅङ्गळ् पशियॅन् ऱुवन्दॅळुन्, दाडु हिन्ऱ वलहैयि न्ाडवे 387

काटु तुन्ऱि–सब वनों ने मिलकर; विचुम्पु–करन्तन–आकाश को ढक दिया हो, ऐसा; अॅङ्कुम्–सर्वत्र; नीटि–फैलकर; निमिर्न्त–ऊँची उठी; नॅटुम् कॉटि–लम्बी ध्वजाएँ; अॅङ्कळ् पचि ओटुम्–हमारी भूख मिट जायगी; अॅन्ऱु–मानकर; उवन्तु अॅळुन्तु आटुकिन्ऱ–हर्ष के साथ उठकर नाचनेवाले; अलकैयिन्–प्रेतों के समान; आट–फहरती हैं, ऐसी स्थिति में। ३८७

रथ की ध्वजाएँ इतनी विपुल थीं कि वनों ने मिलकर आकाश को ढक दिया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित होता था। वे ध्वजाएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते हुए फहरीं कि 'हमारी भूख मिट गयी' —यह कहते हुए प्रेत नाच रहे हों। ३८७

❀ तऱियि नीङ्गिय ताऴ्दडक् कैत्तुणैक्
कुऱिहों ऴामद वेऴक् कुऴुवन्नार्
शॅऱिविन् वाळोंडु वाळिडैत् तेय्न्दुहुम्
पॊरियिऱ् कानॅङ्गुम् वॅङ्गनल् पॊङ्गवे 388

तऱियिन् नीङ्किय–खूँटों से अलग हुए; कुऱि कॊळा–किसी की परवाह न करनेवाले; ताऴ् तट कै तुणै–नीचे तक लटकनेवाली बड़ी दो सूँड़ों वाले; मत वेऴ कुऴु अन्नार्–मत्तगजों के झुण्ड के समान राक्षसों की; चॆऱिविन्–भरी भीड़ से; इटै–बीच में; वाळोटु वाळ् तेय्न्तु–तलवारों के टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; पॊऱियिल्–अग्निकणों से; कान् ऍङ्कुम्–वन में सर्वत्र; वॆम् कनल् पॊङ्क–जलानेवाली आग के उमड़ते। ३८८

(सेनाओं का वर्णन जारी है।) खूँटों से अलग छूटे हुए और बेपरवाह और नीचे लटकनेवाली दो मोटी सूँड़ों के मत्त गजदल के समान राक्षसों की भीड़ में तलवारें परस्पर टकरायीं। तब अग्निकण नीचे गिरे। उनके कारण जंगल भर में गरम आग प्रज्वलित हुई। (ऐसी सेना)। ३८८

मुरुडि रण्डु मुऴङ्गु मुऴक्कॊलि, उरुडि रण्डॆऴुन् देरॊलि युट्पुह
अरुडि रण्ड वरुक्कन्ऱन् मेलऴन्, दिरुडि रण्डुवन् दीण्डिय दॆन्नवे 389

इरण्टु–दोनों बाजुओं में; मुरुटु मुऴक्कु–'मुरुडु' नामक ढोल की; मुऴक्कु ऒलि–ठनक का शब्द; उरुळ् तिरण्टु ऍऴुम्–चलनेवाले पहियों से उठनेवाले; तेर् ऒलियिनुळ्–रथ के शब्दों से; पुक–मिल गया, इस प्रकार; अरुळ् तिरण्ट–घनीभूत कृपा के समान; अरुक्कन् तन् मेल्–सूर्य पर; अऴन्ऱु–कोप करके; इरुळ्–अन्धकार; तिरण्टु वन्तु–मिल आकर; ईण्टियतु ऍन्न–धावा बोल रहा हो ऐसा। ३८९

दोनों बाजुओं में 'मुरुडु' नाम के ढोलों का नाद उठा और वह चलने वाले अनेक रथों के पहियों से उठे हुए नाद में समा गया। सभी जीवों पर होनेवाली दया घनीभूत हो उठी हो, ऐसा दिखनेवाले सूर्य पर सारे अन्धकार ने मानो दल बाँधकर आक्रमण किया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करती हुई (वह सेना आई)। ३८९

❀ तलैयिन् माशुणन् दाङ्गिय तारणि, निलैनि लादु मुदुहै नॆळिप्पुऱ
उलैवि लेऴुल हत्तिनु मोङ्गिय, मलैयॆ लामॊरु माडुतॊक् कॆन्नवे 390

माचणम् तलैयिल् ताङ्किय–शेषनाग के सिर पर धृत; तारणि–धरणी के;

निलै निलातु–अस्थिर होकर; मुतुकै नॆळिप्पु उऱ–अपनी पीठ पर बल खाते; एऴ् उलकत्तिनुम्–सातों लोकों में; ओङ्किय मलै ॲलाम्–ऊँचे उगे पर्वत सभी; ऒरु माट्टु–एक ही स्थान पर; तॊक्कतु अन्न–एकत्रित हो आये हों, ऐसा। ३९०

आदिशेष के द्वारा उसके सिर पर धारण की हुई भूमि की पीठ पर बल पड़ गयी; ऐसा सातों लोकों के अति ऊँचे सभी पहाड़ एक स्थान पर जुट आये हों (ऐसा वह सेना आई)। ३९०

आळिहळ् पूण्डन वरिहळ् पूण्डन, मीळिहळ् पूण्डन वेङ्गै पूण्डन
ञाळिहळ् पूण्डन नरिहळ् पूण्डन, कूळिहळ् पूण्डन कुदिरै पूण्डन 391

आळिकळ् पूण्टन–'याळियों' (अप्राप्य भयंकर सिंहों) से युक्त; अरिकळ् पूण्टन–सिंहों के साथ जुते हुए; मीळिकळ् पूण्टन–प्रेतों से युक्त; वेङ्कै पूण्टन–बाघों से युक्त; ञाळिकळ् पूण्टन–कुत्तों से जुते हुए; नरिकळ् पूण्टन–सियारों से युक्त; कूळिकळ् पूण्टन–भूतों से युक्त; कुतिरै पूण्टन–घोड़ों से युक्त (रथ आये)। ३९१

रथों में शरभों ('याळि' नामक अब अप्राप्य केसरी जाति के भयंकर जानवरों) से युक्त, सिंहों से जुते हुए, प्रेतों, भूतों, व्याघ्रों, कुत्तों, सियारों और अश्वों से जुते हुए रथ थे। ३९१

वल्लियक् कुळाङ्गळो मळैयि नीट्टमो
ऑल्लिबत् तॊहुदियो वोङ्गु मोङ्गलो
अल्लमऱ् ऱरिहळि ननिह मोवॆनप्
पल्पदि नायिरम् पडैक्कै वीररे 392

वल्लिय कुळाङ्कळो–बाघों के दल या; मळैयिन् ईट्टमो–मेघ-समूह या; ऒल् इप तॊकुतियो–तेज चाल के गजों के झुण्ड या; ओङ्कुम् ओङ्कलो–ऊँचे पर्वत; अल्ल–जो नहीं थे; अरिकळिन् अतिकमो–सिंहों की सेना क्या; ॲन–ऐसे कहने योग्य; पल् पतिनायिरम्–अनेक दस सहस्र; पटै कै वीरर्–शस्त्रधारी वीर (आये)। ३९२

अनेक सहस्र वीर आये, जिनकी व्याघ्रों का समूह, मेघमण्डल, त्वरित-गति गज, ऊँचे पर्वत या सिंहों की सेनाओं से तुलना की जा सकती थी। वे हाथों में हथियार लिये आये। ३९२

एऱ्ऱिन मार्त्तन वेन मार्त्तन, काऱ्ऱिन मार्त्तन कळुदै यार्त्तन
तोऱ्ऱिन मात्तिरत् तुलहु शूळ्वरुम्, पाऱ्ऱिन मार्त्तन पणिल मार्त्तन 393

एऱु इनम् आर्त्तन–सिंहों के 'लेंहड़े' (झुण्ड) गरजे; एनम् आर्त्तन–सुअर चिल्लाये; काऱु इनम् आर्त्तन–प्रेतों के दलों ने शोर मचाया; कळुतै आर्त्तन–गधे रेंके; तोऱ्ऱिन मात्तिरत्तु–(भाव) उठते ही; उलकु चूळ् वरुम्–संसार भर में घूम आनेवाले; पाऱु इनम्–गीधों के समूह; आर्त्तन–बोले; पणिलम् आर्त्तन–शंख बजे। ३९३

उनमें सिंह गरजे, सुअर चीखे; प्रेत चिल्लाए और गधे रेंके। विचार

करते ही सारी दुनिया घूम आ सकनेवाले गीध जोर से बोले। शंख बजे। (आर्त्तन का अर्थ 'बँधे थे' भी है)। ३९३

तेरित्तन् दुवत्तृरित शिरुहट् चॅम्मुहक्, कारित्त नॅरुङ्गित कालिऱ् काऱ्परित्
तारित्तङ् गुळुवित्त दडॅयिल् कूऱ्ऱॅनप्, पेरित्तङ् गडलॅत्तप् पॅयरुङ् गालैये 394

पेर् इत्तम्–पदाति ने; **तटॅयिल् कूऱ्ऱु अॅत**–दुर्द्धर्ष यम के समान; **कटल् अॅत**–समुद्र के समान; **पॅयरुम् कालै**–जब कूच किया; **तेर् इत्तम् तुवन्रित**–रथदल मिल आये; **चिऱु कण्**–छोटी आँखों और; **चॅम् मुक**–लाल मुख के; **कार् इत्तम्**–गज-समूह; **नॅरुङ्कित**–आ जुटे; **कालिल्**–वायु के समान; **काल् परि**–पैर रखनेवाले (दौड़नेवाले) अश्वों की; **तार् इत्तम्**–सेना के दल; **कुळुवित**–भीड़ लगाते आये। ३९४

पदाति वीर आये। वे अप्रतिहत यम के समान, सघोष समुद्र के समान कूच कर आये। तब उनके साथ रथों, छोटी आँखों के और लाल मुखों के गजों और वायुवेग से चलनेवाले अश्वों की सेनाएँ भी आ सम्मिलित हुईं। ३९४

मळुक्कळु मयिल्हळुम् वयिर वाट्कळुम्
अॅळुक्कळुन् दोमरत् तॉहैयु मीट्टियुम्
मुळुक्कलु मुशुण्डियुन् दण्डु मत्तलॅक्
कळुक्कळु मुलक्कॅयुङ् गाल पाशमुम् 395

मळुक्कळुम्–परशु; **अयिल्कळुम्**–भाले; **वयिर वाट्कळुम्**–सुदृढ़ तलवारें; **अॅळुक्कळुम्**–लोहे के मूसल; **तोमर तॉकैयुम्**–तोमर-समूह; **ईट्टियुम्**–बर्छियाँ; **मुळुक्कलुम्**–वर्तुल पत्थर; **मुचुण्टियुम्**–'भुशुंडी' नाम के हथियार; **तण्टुम्**–दण्ड; **मु तलॅ अॅळुक्कळुम्**–तीन सिर वाले शूल; **उलक्कैयुम्**–और मुद्‌गर; **काल पाचमुम्**–काल-पाश। ३९५

उनके पास निम्नलिखित हथियार थे। परशु, भाले, सुदृढ़ असियाँ, लोहे के मूसल, तोमर-समूह, वर्तुल पत्थर, भुशुण्डी नामक हथियार, दण्डायुध, त्रिशूल व काले पाश; । ३९५

कुन्दमुङ् गुलिशमुङ् कोलुम् पालमुम्
अन्दमिल् शाबमुम् शरमु माळियुम्
वॅन्दॉळिल् वलयमुम् विळङ्गुज् जङ्गमाम्
पन्दमुम् कप्पणप् पडॅयुम् पल्लमुम् 396

कुन्तमुम्–साँग; **कुलिचमुम्**–कुलिश; **कोलुम्**–छड़ियाँ; **पालमुम्**–भिंडिपाल; **अन्तम् इल् चापमुम्**–बेशुमार चाप; **चरमुम्**–शर; **आळियुम्**–चक्र; **वॅम् तॉळिल् वलयमुम्**–भयंकर वलय; **विळङ्कु चङ्कमाम्**–श्वेत शंखों की; **पन्तमुम्**–राशियाँ; **कप्पण पटॅयुम्**–'कप्पण' नामक हथियार; **पल्लमुम्**–बल्लम। ३९६

कुंत, कुलिश, छड़ियाँ, भिण्डिपाल, असंख्यक चाप, शर, चक्र, भयंकर वलय, श्वेत शंखबंद, कप्पण नामक हथियार और बल्लम। ३९६

आदियि लरुक्कनु मनलु मञ्जुरुम्, शोदिय शोरियुन् तुवुन् दुन्निन
एदिहण् मिडैन्दन विमैय वर्क्कॅलाम्, वेदनै कॊडुत्तन वाहै वेयन्दन 397

एतिकळ्–हथियार; आति इल् अरुक्कनुम्–अनादि सूर्य; अनलुम्–अग्नि भी; अञ्चु उरुम्–(जिसको देख) भयभीत हो जायँ, ऐसी; चोतिय–ज्योति वाले; चोरियुम् तुवुम्–रक्त और मांस से; तुन्नित–लिप्त थे; इमैयवर्क्कु ॲलाम्–सभी देवों को; वेतनै कॊटुत्तन–जिन्होंने वेदना दी थी, ऐसे; वाकै वेय्न्तन–अनेक विजय पा चुके हैं, वे; मिटैन्तन–भरे रहे। ३९७

ये ऐसे हथियार थे, जिनकी ज्योति के सामने अनादि सूर्य और अनल भी डरते थे; जो मांस और रक्त से लिप्त थे; जिन्होंने देवों को त्रास दिया था और जो हर बार उन राक्षसों को विजय दिला चुके थे। ३९७

आयिर मायिरङ् गळिऱ्ऱि नाऱ्ऱलर्, मायिरु ञालत्तै विळुङ्गुम् वायिनर्
तीयॅरि विळियिनर् निरुदर् शेनैयिन्, नायहर् पदिन्मरो डडुत्त नाल्वरे 398

निरुतर् चेनैयिन् नायकर्–राक्षस-सेना के नायक; पतिन्मरोटु अटुत्त नाल्वर्–दस और चार चौदह; आयिरम् आयिरम् कळिऱ्ऱिन्–सहस्र (अनेक) सहस्र गजों के; आऱ्ऱलर्–बल वाले; मा इरु ञालत्तै–बहुत बड़े लोक को; विळुङ्कुम् वायिनर्–निगल सकनेवाले मुखों के; ती ॲरि विळियिनर्–आग उगलती दृष्टि वाले। ३९८

इन सेनाओं के चौदह सेनानायक थे। वे एक-एक सहस्र-सहस्र गजों का बल रखते थे। वे एक-एक सारी धरती को निगल सकें, ऐसा बड़ा मुख रखते थे। उनकी आँखें आग बरसाती थीं। ३९८

आऱ्ऱो डायिर ममैन्द वायिरम्, कूऱ्ऱि दॊरुपडै कुऱित्त वप्पडै
एऱ्ऱि देळिन दिरट्टि यॅन्बराल्, ऊऱ्ऱि शेनैयिन् ऱॊहुदि युन्नुवार् 399

ऊऱ्ऱ चेनैयिन् तॊकुति–युद्ध-निपुण सेना की संख्या का; उन्नुवार्–हिसाब लगानेवालों का; कूऱ्ऱितु–कहना है; ऒरु पटै–एक पलटन; आऱ्ऱोटु आयिरम् अमैन्त–छः हज़ार के; आयिरम्–हज़ार (छः लाख); कुऱित्त अ पटै–जिसकी गणना हुई, उस पूरी सेना की संख्या; एळित्तु इरट्टि–चौदह (पलटनों का कुल); ॲन्पर–कहते हैं। ३९९

उस सेना में चौदह सेनाएँ मिली थीं। किसी ने गिनकर बताया कि हर सेना में साठ लाख संख्या के वीर थे। ऐसी चौदह सेनाओं का मेल था वह बड़ी सेना। ३९९

उरत्तिन रुरुमॅन वुरऱुम् वायिनर्
करत्तॅऱि पडैयिनर् कमलत् तोन्ऱरुम्
वरत्तिनर् मलैयॅन मळैतु यिन्ऱॅळुम्
शिरत्तिनर् तरुक्किनर् शॅरुक्कुञ् जिन्दैयार् 400

उरत्तिनर्–वीर्यवान; उरुम् ॲन उरऱुम् वायिनर्–वज्र के समान नाद करनेवाली

बोली के; करत्तु ऎरि पटैयित्तर्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियार-धारी; कमलत्तोत्तरुम् वरत्तित्तर्–ब्रह्माजी से प्राप्त वर वाले; मलै ऎन–पर्वत समझकर; मळै तुयिन्ऱु ऎऴुम्–मेघ जिन पर सोकर उठ जाते हैं, वैसे; चिरत्तित्तर्–सिर वाले; तरुक्कित्तर्–गर्वीले; चॆरुक्कुम् चिन्तैयार्–युद्धोत्साही मन वाले। ४००

उस सेना के वीर बड़े ही बली थे। वज्र के समान बोली वाले थे। हाथों से हथियार चलाकर लड़नेवाले थे। उन्हें ब्रह्माजी से वर मिले थे। उनके सिर ऐसे थे कि मेघ भी उन्हें पर्वत समझकर उन पर आकर ठहरते, सोते और उनसे उठकर चले जाते। बड़े गर्वीले थे और शत्रुओं को मिटाने का अभिमान व उत्साह रखते थे। ४००

विण्णळ विडन्निमिर्न् दुयर्न्द मेन्नियर्
कण्णळ विडलरु मार्बर् कालिन्नाल्
मण्णळ विडुनॆडु वलत्तर् वान्निडै
ऎण्णळ विडलरुञ् जॆरुवॆन् ऱेऱ्ऱिनार् 401

विण् अळवु इट–आकाश को नापने के लिए; निमिर्न्तु उयर्न्त–सीधे और ऊँचे हुए; मेन्नियर्–शरीर वाले; कण् अळव इटल् अरुम्–दृष्टि से नापना कठिन; मार्पर–ऐसे छाती वाले; कालिन्नाल्–पैरों से; मण् अळवु इट–पृथ्वी को नाप सकनेवाली; नॆटुवलत्तर्–अधिक शक्ति वाले; वान् इटै–आकाश में; ऎण् अळवु इट अरुम्–गिनना कठिन; चॆरु वॆन्ऱु–उतने युद्ध में जीतकर; एऱ्ऱिनार्–बढ़े-चढ़े थे। ४०१

उनके शरीर इतने ऊँचे थे कि वे आकाश को नाप सकते थे। वे दृष्टि माप न सके ऐसे विशाल वक्ष वाले थे। उनके पैरों में इतना बल था कि भूमि को नाप सकते थे। गिनती असम्भव हो, उतनी लड़ाई में विजय पाकर वे बढ़े-चढ़े हो गये थे। ४०१

इन्दिरन् मुदलिन्नो रॆऱिन्द मापपडै, शिन्दिन्न तॆऱित्तुहच् चॆऱिन्द तोळिन्नार्
अन्दह नडितॊळु दडङ्गु माणैयार्, वॆन्दिऱ लुरुवुहॊण् डन्नैय मेन्नियार् 402

इन्तिरन् मुतलिन्नोर्–इन्द्रादि देव; ऎऱिन्त–जो फेंकते थे; मा पटै–उन श्रेष्ठ हथियारों को; तॆऱित्तु चिन्तित्त उक–झेलकर तोड़कर छितरा दिया (जिन्होंने), ऐसे; चॆऱिन्त तोळिन्नार्–कठोर कन्धों वाले; अन्तकन्–यम; अटितॊऴुतु अटङ्कुम्–चरण-वन्दना करके अधीन रहेगा; आणैयार्–ऐसे रोबीले; वॆम् तॊऴिल्–क्रूर काम ने ही; उरुवु कॊण्टन्नैय–रूप धर लिया हो, ऐसे; मेन्नियार्–शरीर वाले। ४०२

उनके सारयुक्त सबल कंधे ऐसे थे कि इन्द्रादि देवों द्वारा फेंके गये सशक्त हथियार उनसे लगकर टूट गये और बिखर गये। यम भी विनत होकर उनकी आज्ञा मानता था, ऐसे रोबीले थे। क्रूर कार्य ने ही एक रूप धर लिया हो, ऐसे रूप वाले थे। ४०२

चूलमुम् पाशमुन् दॊडर्न्द शॆम्मयिर्च्
चालमुन् दरुहणु मॆयिरुन् दाङ्गिनार्
आलमुम् वॆळिदॆनु निऱत्त राऱ्ऱलाल्
कालनुङ् गालनॆन् ऱयिर्क्कुङ् गाट्चियार् 403

चूलमुम् पाचमुम्–शूल और पाश; तॊटर्न्त–मिले रहे; चॆम् मयिर् चालमुम्–लाल बाल-जाल; तरुकणुम्–भयंकर आँखें; ऎयिऱुम्–और वक्र दाँत; ताङ्कितार्–धारण करनेवाले; आलमुम् वॆळितु ऎनुम्–इसके सामने हलाहल श्वेत है, ऐसा; निऱत्तर्–रंग वाले; आऱ्ऱलाल्–शक्ति में; कालनुम्–यम भी; कालन् ऎन्ऱु–अपना काल समझे; अयिर्क्कुम् काट्चियार्–संशय और भय करेगा, ऐसे आकार वाले। ४०३

उनके पास शूल, पाश आदि हथियार थे। शरीर पर लाल बाल घने रूप से उगे थे। भयंकर आँखें थीं। उनका रंग इतना काला था कि हलाहल भी श्वेत लगता था। शक्ति में वे इतने बढ़े थे कि यम भी उन्हें अपने यम की शंका करता और भय मानता। ४०३

कऴलिनर् तारिनर् कवश मार्बिनर्, निऴलुरु पूणिनर् नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्
अऴलुरु कुञ्जिय रमरै वेट्टुवन्, दॆऴलुरु मनत्तिन रोरुमै यॆय्दिनार् 404

कऴलिनर्–पायलधारी; तारिनर्–मालाधारी; कवच मार्पिनर्–कवचवक्ष; निऴल् उरु पूणिनर्–प्रभापूर्ण आभरणधारी; नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्–कोप से कुंचित भाल वाले; अऴल् उरु कुञ्चियर्–अग्निशिखा के समान घने केश वाले; अमरै वेट्टु–युद्ध चाहकर; उवन्तु ऎऴल् उरु–चाव लिये उमँगनेवाले; मनत्तिनर्–मन के; ओरुमै ऎय्तिनार्–आपस में मेल रखनेवाले। ४०४

उनके पैरों में वीर कंकण पड़े थे। छाती पर कवच थे। वे कान्ति-पूर्ण आभरण पहने हुए थे। उनके भाल कोप-कुंचित थे। केश अग्नि-शिखा के समान लाल और डरावने थे। युद्ध करना चाहकर चाव के साथ उमंगित होनेवाले मन के वे परस्पर मेल रखते थे। ४०४

मरुप्पिऱा मदक्कळिऱ् ऱमरर् मन्ननुम्
विरुप्पुऱा मुहत्तॆदिर् विऴिक्किन् वॆन्निडुम्
उरुप्पॆऱा दुलैवुरु मुलह मून्ऱिनुम्
शॆरुप्पॆऱात् तिनवुऱु शिहरत् तोळिनार् 405

इऱा मरुप्पु–अटूट (सबल) दाँतों के; मत कळिऱ्ऱु–मत्तगज (ऐरावत) पर सवार; अमरर् मन्ननुम्–देवेन्द्र भी; मुकत्तु ऎतिर्–इनके मुख के सामने; विऴिक्किन्–आँख खोल देखेगा तो; विरुप्पु उऱा–सामने रहना न चाहकर; वॆन् इटुम्–पीठ दिखाते हुए भाग जायगा; उरु पॆऱातु–अस्थिर और; उलैवुऱुम्–चंचल; उलकम् मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; चॆरु पॆऱा–युद्ध प्राप्त न करके; तिनवु उऱु–खुजली से भरे; चिकर तोळिनार्–पर्वतशिखर-सम कन्धों वाले। ४०५

वे राक्षस ऐसे (वीर) थे कि देवेन्द्र भी, जो अक्षुण्ण, सबल दाँतों वाले ऐरावत गज का स्वामी है, उनको सामने से देखे तो ठहरना न चाहकर पीठ दिखाते हुए भाग जाय ! नश्वर तीनों (स्वर्ग, मध्य और पाताल) लोकों में उन्हें युद्ध का अवसर नहीं मिला था अतः पर्वतशिखर-सम उनके कंधों में खुजली (युद्ध की प्यास) हो गयी थी। ४०५

कुञ्जरङ्	गुदिरैपेय्	कुरङ्गु	कोळरि
वॆञ्जिनक्	करडिनाय्	वेङ्गै	याळियॆन्
ऱञ्जुऱक्	कनल्बुरै	मुहत्त	राऱ्हलि
नञ्जुदॊक्	कॊन्नप्पुरै	नयनत्	ताऱ्हळुम् 406

कुञ्चरम् कुतिरै–कुंजर, अश्व; पेय्–प्रेत; कुरङ्कु–वानर; कोळ् अरि–सबल सिंह; वॆम् चिनम् करटि–भयंकर क्रुद्ध रीछ; नाय्–कुत्ता; वेङ्कै–व्याघ्र; याळि–'याळि' (शरभ) नामक जानवर; ऍन्ऱु–समझकर; अञ्चु उऱ–भय खाए ऐसा; कनल् पुरै मुकत्तर्–अनल-सम मुख वाले; आर्कलि नञ्चु–सघोष सागर से (मंथन के समय) उत्पन्न विष; तॊक्कन्न पुरै–घनीभूत हुआ हो ऐसे; नयनत्तार्कळुम्–नेत्र वाले थे। ४०६

किसी का मुख कुंजर के समान था, किसी का अश्व के समान। प्रेत, वानर, वली सिंह, भयंकर और क्रुद्ध रीछ, कुत्ता, व्याघ्र और शरभ के समान लगनेवाले उनके डरावने मुख अनल-सदृश थे। समुद्र से (क्षीरसागर-मन्थन के अवसर पर) उत्पन्न हलाहल के समान उनकी आँखें थीं। ४०६

ऍण्गैय	रॆळुहैय	रेळु	मॆट्टुमाय्क्
कण्गनल्	शॊरिदरु	मुहत्तर्	कालिनर्
वण्गैयिल्	वळैत्तुयिर्	वारि	वायिलिट्
टुण्गैयि	नुवहैय	रुलप्पि	लाऱ्हळुम् 407

ऍण् कैयर्–आठ हाथ वाले; ऍळु कैयर्–सात हाथ वाले; एळुम् ऍट्टुम् आय्–सात-सात और आठ-आठ; कण्–आँखें; कनल् चॊरि तरु–अंगार उगलती थीं (जिनमें); मुकत्तर्–ऐसे मुख वाले; कालिनर–वैसे ही पैरों वाले; उयिर्–जीवों को; वण् कैयिल्–सबल हाथों से; वळैत्तु वारि–समेट लेकर; वायिल् इट्टु–मुख में डालकर; उण्कैयिल्–खाने में; उवकैयर्–आनन्द पानेवाले; उलप्पु इलार्कळुम्–असंख्यक लोग। ४०७

किसी के आठ हाथ थे, किसी के सात। वैसे ही सात-सात, आठ-आठ आँखों के द्वारा उनके मुख आग बरसा रहे थे। वैसे ही उनके पैर सात-सात या आठ-आठ थे। उनको जीवों को अपने सबल हाथों से समेट ले अपने मुख में डालकर खाने में बड़ा आनन्द आता था। वे अगणित थे। ४०७

इयक्करिऱ् पऱित्तन ववुण रिट्टन
मयक्कुरुत् तमररै वलियित् वाङ्गिन
तुयक्किल्हन् दिरुवरैत् तुरन्दु वारिन
नयप्पुरु शित्तरै नलिन्दु वव्विन 408

इयक्करिल् पऱित्तन–यक्षों से छीन लिये गये; अवुणर् इट्टन–दानवों से (भागते वक्त) नीचे डाले हुए; अमररै–सुरों को; मयक्कुरुत्तु–माया से मोहित करके; वलियित् वाङ्कित्न–अपने बल से लिये गये; तुयक्कु इल्–अथक; कन्तिरुवरै–गन्धर्वों को; तुरन्तु वारिन–(डरा-धमकाकर उनको) भगाकर उनसे लिये गये; नयप्पु उरु चित्तरै–सुलह करनेवाले सिद्धों से; नलिन्तु वव्विन–दुख देकर उगाह लिये गये (झण्डे आदि)। ४०८

उनके पास झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने यक्षों के पास से छीन लिया था; दानवों ने युद्धभूमि में छोड़ दिया था; देवों को भ्रमित करके ले लिया था; अथक गन्धर्वों को भगाकर उनसे ग्रस लिया था। वे भी झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने सन्धि करने को उत्सुक सिद्धों को सताकर छीन लिया था। ४०८

कॊडिदळै कविहैवान् ड्रोङ्गल् कुञ्जरम्
पडियुरु पदाहैमी विदानम् बन्मणि
इडैमिळिर् शामरैक् कुळाङ्गॊण् डॆङ्गणुम्
मिडैदलि नुलहॆलाम् वॆयिलि ळन्दवे 409

कॊटि—वस्त्र-झण्डे; तळै–मोरछल; कविकै–छत्र; वान् तोङ्कल्–बड़े हार; कुञ्चम् मेल् पटि उरु–झालरों से युक्त; पताकै–बड़ी पताकाएँ; मी वितानम्–उच्च वितान; पल् मणि इटै मिळिर्–अनेक रत्न बीच-बीच में चमकते हैं, ऐसे; चामरै कुळाम्–चँवर-समूह; कॊण्टु–इनको लेकर; ऍङ्कणुम् मिटैतलिल्–सब जगह भीड़ लगाते रहे, इसलिए; उलकु ऍलाम्–सारी धरती; वॆयिल् इळन्त–धूप से वंचित हो गई। ४०९

उस विपुल सेना के पास झण्डे थे, मोरछल थे और छत्र थे। बड़े-बड़े हार, झालरों सहित बड़ी-बड़ी पताकाएँ, वितान और ऐसे चामरों की राशियाँ जो रत्नों से सजे थे। ये सब लिये हुए वह सेना भूमि पर सर्वत्र फैली रही। इसलिए भूतल धूप से वंचित रह गया। ४०९

ऍळुवरो डॆळुवर्नो ळुलह मेळॊडेळ्
तळुविय वॆन्ऱियर् तलैवर् तानैयर्
मळुविनर् वाळिनर् वयङ्गु शूलत्तार्
उळुवैयो डरियॆन वुडऱ्ऱुज् जोऱ्ऱत्तार् 410

तानैयिन् तलैवर्–सेनानायक; ऍळुवरोटु ऍळुवर्–सात और सात (चौदह); नीळ् उलकम्–विस्तृत लोक; एळॊटु एळ्–सात और सात; तळुविय–(इनमें) व्याप्त;

वॅन्ऱियर्–विजय के स्वामी; मऴुवित्तर्–परशु; वाळितर्–तलवार; वयङ्कु चूलत्तर्–और उज्ज्वल शूलधारी; उऴुवैयॊटु अरि अँन–व्याघ्र और केसरी के समान; उटऱ्ऱुम्–दुखानेवाले; चीऱ्ऱत्तर्–क्रोधी। ४१०

सेनानायक चौदह थे। उनकी विजय चौदहों भुवनों पर व्याप्त थी। उनके पास परशु तलवारें और चमकदार शूल आदि हथियार थे। वे व्याघ्र और सिंहों के समान लोगों को अपार दुख देनेवाले क्रोधशील राक्षस थे। ४१०

विल्लित्तर् वाळित्त रिदऴै मेलिडुम्
पल्लित्तर् मेरुवैप् पऱिक्कु माऱ्ऱलर्
पुल्लित्तर् तिशैदॊऱुम् पुरवित् तेरित्तर्
शॊल्लित्त मुडिक्कुरुन् दुणिवि नॆञ्जित्तार् 411

विल्लित्तर्–धनुर्धर; वाळित्तर्–तलवारधारी; इतऴै मेलिटुम् पल्लित्तर्–अधरों पर टिके दाँत वाले; मेरुवै पऱिक्कुम् आऱ्ऱलर्–मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले; पुरवि तेरित्तर्–अश्व-जुते रथ वाले; चॊल्लित्त मुटिक्कुरुम्–कहे हुए कार्य को पूरा करने का; तुणिविन् नॆञ्चित्तार्–साहस रखनेवाले मन के; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; पुल्लित्तर्–आ जुटे। ४११

वे सेनानायक धनुष और तलवारों से लैस थे। उनके दाँत अधरों को काट रहे थे। मेरु को भी उखाड़ सकनेवाले वे अश्व-जुते रथों पर सवार थे। जो कहते वही कर दिखाने का साहस रखते थे। वे सभी दिशाओं में घेरकर खड़े रहे। ४११

तूडणन् ऱिरिशिरात् तॊन्ऱ लादियर्
कोडणै मुरशिनङ् गुळिरुञ जेनैयर्
आडव रुयिर्हव रलङ्गल् वेलित्तार्
पाडव निलैयित्तर् पलरुञ् जुऱ्ऱित्तार् 412

आटवर् उयिर् कवर्–(सामने लड़नेवाले) वीरों की जान हर लेनेवाली; अलङ्कल् वेलित्तार्–माला से अलंकृत बर्छी वाले; पाटव निलैयित्तर्–पटु स्थिति में रहनेवाले; कोटणै मुरचु इनम्–गम्भीर नादयुक्त ढोलों के समूह; कुळिरुम्–जिसमें ठनक उठते थे, ऐसी; चेनैयर–सेना वाले; तूटणन् तिरिचिरा तॊन्ऱल् आतियर्–दूषण, त्रिशिरा आदि नायकों को पुरस्सर करते हुए; पलरुम्–अनेक सेनानी; चुऱ्ऱित्तार्–आ जुटे। ४१२

उनके पास माला से अलंकृत भाले थे, जो सामने आये शत्रुओं के प्राण हर लेते थे। वे दक्षता में बढ़ी-चढ़ी स्थिति में थे। उनके पास बड़ी सेनाएँ थीं, जिनमें ढोलों की उच्च ठनक सुनाई देती थी। दूषण, त्रिशिरा आदि अधिपतियों को पुरस्सर करके वे आ एकत्र हुए। ४१२

आन्ऱमै यॆरिपडै यळुवत् तारुहलि, वान्ऱोडर् मेरुवै वळैत्त दामॆन्न
ऊन्ऱिन्न तेरिन्न नुयर्न्द तोळिनन्, तोन्ऱिनन् करन्नमन् ऱुणुक्क मॆय्दवे 413

आन्ऱु अमै–खूब मिली रही; ऍरि पटै–शत्रुघातक सेनाएँ रूपी; अळुवत्तु आर् कलि–गम्भीर सघोष सागर; वान् तॊटर् मेरुवै–गगनस्पर्शी मेरु को घेर आया हो, ऐसा; ऊन्ऱिय तेरित्तन्–मध्य में स्थापित रथ वाला; उयर्न्त तोळित्तन्–उन्नत भुजाओं वाला; करन्–खर; नमन् तुणुक्कम् ऍय्त–यम को आतंकित करते हुए; तोन्ऱित्तन्–प्रकट हुआ (दिखाई दिया)। ४१३

वे सेनाएँ, जो बड़ी थीं और वीरों से भरी थीं, गम्भीर समुद्रों के समान थीं। उनके मध्य खर का रथ स्थापित था। यह दृश्य ऐसा लगा, मानो समुद्र ने मेरु को घेर लिया हो! वह रथ आकाश तक ऊँचा था और मेरु के समान था। उसमें बैठे हुए उन्नत कंधों वाला खर, यम को भी भयभीत करते हुए दिखाई दिया। ४१३

अशुम्बुरु मदहरि पुरवि याडहत्, तशुम्बुरु शयन्दन मरक्कर् ताडर
विशुम्बुरु तूळियाल् वॆण्मै मेयिन्न, पशुम्बरि पहलवन् बॆम्बॊर् ऱेररो 414

अचुम्पु उरु–मद बहानेवाले; मत करि–मत्तगज; पुरवि–अश्व; आटक तचुम्पु उरु–स्वर्णकलशों वाले; चयन्ततम्–स्यंदन; अरक्कर् ताळ्–पदाति राक्षस वीरों के; ताळ्–अपने पैरों से; तर–उठनेवाली; विचुम्पु उरु तूळियाल्–व आकाश पर जमा धूलि से; पकलवन्–दिनकर के; पचुम् करि–हरे घोड़े; पैम् पॊन् तेर्–व चोखे स्वर्ण का रथ; वॆण्मै मेयित–धवलता से ढक गये। ४१४

मद बहानेवाले मत्तगज, अश्व, स्वर्णकलशों वाले रथ, पदाति के राक्षस वीर —इन सबके पदाघात से धूलि जो उड़ी, उससे दिनकर के हरे घोड़ों और स्वर्णरथ पर भी धवलता छा गयी। यानी वे श्वेत दिखे। ४१४

वत्तन्दुहळ् पट्टन्न मलैयिन् वानुयर्, कत्तन्दुहळ् पट्टन्न कडल्ह डूर्न्दन्न
इत्तन्दोहु तूळिया लिशैप्प दॆन्निनिच्, चित्तन्दोहु नॆडुङ्गडर् चेत्तै शॆल्लवे 415

चित्तम् तॊकु–उमड़ते क्रोध की; नॆटुम् कटल् चेत्तै–विशाल सागर-सी सेना; चॆल्ल–जब (जनस्थान से पंचवटी की ओर) चली तब; इत्तम् तॊकु तूळियाल्–विपुल राशि में उठी धूलि से; वत्तम्–वे वन; तुकळ् पट्टत्त–सर्वत्र धूलि से ढक गये; वान् उयर्–आकाश में ऊँचे उठे; मलैयिन् कत्तम्–पर्वतों पर के घन; तुकळ् पट्टत्त–धूलि से भर गये; कटल्कळ्–समुद्र; तूर्न्तत–भरकर धरती बन गये; इति ऍन् इचैप्पतु–आगे क्या कहा जाय। ४१५

जब क्रोधोन्मत्त, विशाल सागर-सम सेना जनस्थान से पंचवटी जाने लगी, तब धूलि की राशि इतनी उठी कि वन सब धूलिधूसरित हो गये। आकाशस्पर्शी पर्वतों पर के मेघ ढक गये। समुद्र भी पटकर धरती बन गये। इससे बढ़कर क्या कहा जाय? । ४१५

निलमिशै विशुम्बिडै नॆरुक्क लानॆ̄डु
मलैमिशै मलैयितम् वरुव पोन्̱मलैत्
तलैमिशैत् तलैमिशैत् ताविच् चॆन्̱ऱ̱तर्
कॊलैमिशै नञ्जॆन्̱क् कॊदिक्कु नॆञ्जितार् 416

कॊलै मिचै–मारने के उत्साह में; नञ्चु अॆंत–विष के समान; कॊतिक्कुम् नॆञ्चितार्–खौलते मन वाले; निलमिचै–भूमि पर; विचुम्पु इटै–आकाश पर; नॆरुक्कलाल्–स्थानाभाव हो जाने से; नॆट्टु मलै मिचै–बड़े पर्वतों पर; मलै इतम् वरुव पोल्–पर्वत-समूह आ रहा हो, ऐसा; मलै तलै मिचै तलै मिचै–पर्वत-शिखर से शिखर पर; तावि चॆन्̱ऱ̱तर्–लपकते चले। ४१६

युद्ध में शत्रुसंहार करने के उत्साह के साथ, खौलता विष-सम मन लेकर जो वीर जा रहे थे, उनको पर्वतों के शिखरों पर चलनेवाले अन्य पर्वतों के समान शिखर से शिखर उछलकर जाना पड़ता था; क्योंकि सारी भूमि वीरों से भर गयी थी। ४१६

ॐ वन्̱ददु शेन̱ै वॆळ्ळम् वळ्ळियोन्̱ मरुङ्गिन्̱ माया
बन्̱दमा विन̱ैयम् माळप् पऱ्ऱ̱ऱ̱ु पॆऱ्ऱ̱ि योर्क्कुम्
उन्̱दरु निलैय दाहि युडन̱ुऱ̱ैन्̱ दुयिर्ह डम्मै
अन्̱दहर् कळिक्कु नोय्पो लरक्किमुन्̱ न̱ाह वम्मा 417

माया–अनंत; पन्̱त मा विन̱ैयम्–बन्धन जो कर्म हैं, उनके; माळ–मिटने पर; पऱ्ऱ̱ु अऱ̱ु–राग-हीन; पॆऱ्ऱ̱ियोर्क्कुम्–श्रेष्ठ ज्ञानियों के लिए भी; उन्̱तु अरु निलैयतु आकि–अप्रतिहत बन; उटन्̱ उऱ̱ैन्̱तु–शरीर के साथ रहकर; उयिर्कळ् तम्मै–जीवों को; अन्̱तकर्कु अळिक्कुम्–यम के हाथ सौंप देनेवाले; नोय् पोल्–रोग के समान; अरक्कि मुन्̱न̱ाक–राक्षसी शूर्पणखा को आगे करके; वळ्ळियोन्̱ मरुङ्किन्̱–उदार प्रभु के पास; चेन̱ै वॆळ्ळम् वन्̱ततु–सेना-प्रवाह आया। ४१७

वह सेना-सागर प्रभु श्रीराम के सम्मुख आ गयी। उसको शूर्पणखा आगे रहकर ले आयी। वह उस रोग के समान थी, जो कर्मबन्धननाशक रागरहित ज्ञानियों के लिए भी अप्रतिहत बनकर शरीर के साथ रहता है और जीवों को यम के हाथ सौंप देता है। ४१७

तूरियक् कुरलिन्̱ वानिन्̱ मुहिर्कणन्̱ दुणुक्कङ् गॊळ्ळ
वार्शिलै यॊलियि न̱ञ्जि युरुमॊरु मरुक्कङ् गॊळ्ळ
आर्हलि तान̱ु मुट्कि यशैवुऱ̱ वरक्कर् शेन̱ै
पोरुवन्̱ दिरुन्̱द वीर नुऱ̱ैविडम् बुक्क दन्̱ऱ̱े 418

तूरिय कुरलिन्̱–बाजों के नाद से; वानिन्̱ मुकिल् कणम्–आकाश के मेघ-समूहों को; तुणुक्कम् कॊळ्ळ–कँपाते हुए; वार् चिलै ऒलियिन्̱–लम्बे धनुष की टंकार की ध्वनियों से; अञ्चि–डरकर; उरुम्–वज्र भी; ऒरु मरुक्कम् कॊळ्ळ–व्यग्र हों,

ऐसा; आर् कलि तानुम्–गरजते सागर भी; उट्कि–भीतर से काँपकर; अचैवु उरु–उद्वेलित हों, ऐसे; अरक्कर् चेत्तै–राक्षस-सेना; पोर् उवन्तु इरुन्त–युद्ध की सानन्द प्रतीक्षा में जो रहे; वीरन्–श्रीरघुवीर के; उरैवु इटम्–रहने के स्थान को; पुक्कतु–जा पहुँचीं। ४१८

मारू बाजे बजे और आकाश के मेघसमूह वह सुनकर काँप उठे। दीर्घ धनुषों की टंकारें निकलीं तो वज्र भी उनसे डर गये और समुद्र भी भीतर से उद्वेलित होकर मथ गये। इस ठाट-बाट के साथ वे राक्षस-सेनाएँ उस पर्णशाला के पास आयीं, जिसमें रघुकुलवीर श्रीराम युद्ध की, आनन्द के साथ प्रतीक्षा करते हुए रह रहे थे। ४१८

वाय्बुलरन् दऴिन्द मॅय्यिन् वरुत्तत्त याण्डुम्
ऑय्विल निमिर्न्दु वीङ्गु मुयिर्प्पिन वुलैन्द कण्ण
तीयवर् शेनै वन्दु शेर्न्दमै तॆरियच् चॆन्रु
वेय्दॆरिन् दुरैप्प पोऩ्ऱ पुळ्ळॊडु विलङ्गु मम्मा 419

पुळ् ऑटु विलङ्कुम्–पक्षी और जानवर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखकर; अऴिन्त–मिटे जो; मॅय्यिन् वरुत्तत्त–शरीर में रुग्ण हुए जो; वऴियिल् याण्टुम् ओय्वु इल–मार्ग में कहीं विश्राम न लेकर; निमिर्न्तु वीङ्कुम् उयिर्प्पिन–मुख ऊपर कर लम्बी साँसें छोड़नेवाले; उलैन्त कण्ण–प्रभाहीन आँख वाले; तीयवर् चेत्तै वन्तु चेर्न्तमै–खलों की सेना के आगमन का समाचार; तॆरिय चॆन्रु–पहले जानकर दौड़कर; वेय् तेरिन्तु उरैप्प पोऩ्ऱ–चर जाकर खबर देते हों जैसे (बने)। ४१९

इस विपुल सेना से आक्रांत होकर पक्षी और जानवर भागे। उनके मुख भय के मारे सूख गये। शरीर रुग्ण हो गये। बीच में वे कहीं विश्राम नहीं कर सके। मुख ऊपर उठाकर लम्बी साँसें छोड़ते हुए वे भागे और उनकी आँखें प्रभाहीन हो गयीं। वे चरों का काम करते हुए बुरे लोगों की सेना के आगमन की खबर सुनाने आये हों —ऐसे भागते आये। ४१९

तूळियिन् पडलै वन्दु तॊडर्वुऱ मरमुन् दूऱुम्
ताळिडै यॊडियु मोशै शडशड वॊलिप्पक् कान्नत्
ताळियु मरियु मञ्जि यिरिदरु ममलै नोक्कि
मोळिमॊय्म् बिन्नरुञ् जेनै मेल्वन्द दुळदॆन् ऱुन्ना 420

तूळियिन् पटलै–धूलि-पटल; वन्तु तॊटर्वु उऱ–आकर जमे, इसलिए; मरमुम् तूऱुम्–पेड़ और झाड़; ताळ् इटै–उनके पैरों के नीचे; ऑटियुम् ओचै–टूटते हैं, वह नाद; चटचट ऑलिप्प–तड़-तड़ शब्द उठाते हैं; कान्नत्तु–वन में; आळियुम् अरियुम्–शरभ और सिंह; अञ्चि–डरकर; इरि तरुम्–दूर भागते हैं; अमलै नोक्कि–वह शब्द सुनकर; मोळि मॊय्म्पिन्नरुम्–सबल भुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण भी; चेत्तै मेल् वन्तु उळतु–सेना हम पर चढ़ आई है; ऍन्ऱु उन्ना–यह सोचकर। ४२०

धूलिपटल आकर तरुओं और झाड़ों पर जम गया। वे वीरों के पैरों के नीचे और मध्य पड़कर टूटे। उस तड़-तड़ शब्द से शरभ और सिंह डरकर भागे। उनके हड़बड़ाकर भागने का शोर सुनकर सबल कंधे वाले वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) ने ताड़ लिया कि सेना हम पर चढ़ आयी है। (ऐसा सोचकर —)। ४२०

❀ मरम्बडर् कान मॅङ्गु मदर्बड वन्द शेनै
करन्बडै यॅन्ब दॅण्णिक् करुनिऱक् कमलक् कण्णन्
शरम्बडर् पुट्टिल् कट्टिच् चाबमुन् दरित्तान् ऱळ्ळा
उरम्बडर् तोळिन् मीळाक् कवशमिट् टुडैवा ळार्त्तान् 421

मरम् पटर् कातम् अँङ्कुम्–तरुसंकुल वन में सर्वत्र; अतर् पट–मार्ग बनाते हुए; वनत चेनै–जो सेना आई वह; करन् पटै अँन्पतु–खर की सेना है, यह; करु निऱ–नीले वर्ण के; कमल कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम ने; अँण्णि–निश्चय करके; चरम् पटर् पुट्टिल् कट्टि–शरबहुल तूणीर बाँधकर; चापमुम् तरित्तान्–धनुष भी उठा लिया; तळ्ळा उरम् पटर्–अटल वीरता से युक्त; तोळिन्–कन्धों पर; मीळा–अटूट; कवचम् इट्टु–कवच बाँधकर; उटैवाळ् आर्त्तान्–कटार बाँध ली। ४२१

कमलाक्ष और नीलवर्ण श्रीराम ने यह भी निश्चय कर लिया कि वन में सर्वत्र मार्ग बनाते हुए जो आयी है, वह विपुल सेना खर की है। उन्होंने युद्ध में जाने की तैयारी की। तूणीर, चाप, अक्षय सबल कंधों से कसा हुआ कवच और तलवार आदि को यथोचित रीति से यथास्थान धारण कर लिया। ४२१

मिन्निन्ऱ शिलैयन् वीरक् कवशत्तन् विशित्त वाळन्
पॊन्निन्ऱ वडिम्बिन् वाळिप् पुट्टिलन् पुहैयु नॅञ्जन्
इन्निन्ऱु काण्डि यान्शॅय् निलैयॅन विरुम्बि नेरा
मुन्निन्ऱ पिन्वन् दानै नोक्किनन् मॊऴिय लुऱ्ऱान् 422

मिन् निन्ऱ चिलैयन्–बिजली ने धनु का रूप धर लिया हो, ऐसे धनुष के धारक; वीर कवचत्तन्–वीरोचित कवच से अलंकृत; विचित्त वाळन्–बँधी हुई तलवार वाले; पॊन् निन्ऱ वटिम्पिन्–स्वर्णमय कोरों के; वाळि पुट्टिलन्–तूणीर वाले; पुकैयुम् नॅञ्चन्–क्रोधाग्नि के धुएँ से भरा मन वाले (लक्ष्मण); विरुम्पि–(स्वयं जाना) चाहकर; यान् चॅय् निलै–मेरे (युद्ध) कार्य की स्थिति; इन् इन्ऱु काण्टि–आज अभी देखिए; अँन–कहकर; मुन् नेरा निन्ऱ–जो अग्रस्थ हुए उन; पिन् वन्तानै–अनुज को; नोक्किनन्–देखकर; मॊऴियल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४२२

तब लक्ष्मण उनके सामने आये। बिजली के अवतार-सा धनुष, वीरोचित (दृढ़) कवच, तलवार, स्वर्णमुख तूणीर आदि के साथ मन में धुआँ निकालनेवाली कोपाग्नि लेकर जो आये, उन्होंने श्रीराम से कहा कि आज मेरा युद्ध-सामर्थ्य देखिए। ऐसा कहते हुए अग्रस्थ अनुज से श्रीराम बोले। ४२२

नॅरिक्कॊण्मा दवर्क्कु मुन्नॆ नेर्न्दनॆ तिरुद रावि
परिक्कुवॆन् यानॆ यॆन्नु मम्मॊऴि पऴुदु ऱामे
वॆरिक्कॊऴ्बूङ् गुऴलि नाळै वीरनॆ वेण्डि तॆन्यान्
कुरिक्कॊण्डु कात्ति यिन्नॆ कॊल्वॆनिक् कुऴुवै यॆन्ऱान् 423

नॅरि कॊळ् मातवर्क्कु–तपोमार्गरत महान तपस्वियों को; मुन्नॆ नेर्न्दनॆन्–पहले ही (मैंने) वचन दिया है; यानॆ निरुतर् आवि–मैं ही राक्षसों की जान; परिक्कुवॆन्–हरूँगा; ॲन्नुम् अ मॊऴि–ऐसा वह वचन; पऴुतु उऱामे–व्यर्थ न जाए; यान् वेण्टितॆन्–मैं याचना करता हूँ; वीरनॆ–हे वीर; वॆरि कॊळ्–सुगन्ध-युक्त; पू कुऴलिनाळै–पुष्पालंकृत केश वाली (सीताजी) की; कुरि कॊण्टु कात्ति–सावधानी से रक्षा करो; इ कुऴुवै ॲल्लाम्–इन सेनादलों को; इन्नॆ कॊल्वॆन्–अभी मार देता हूँ; ॲन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ४२३

लक्ष्मण ! मैंने तपोरत महात्मा मुनिवरों को वचन दिया है कि मैं उन राक्षसों के प्राण हरूँगा। वह वचन वृथा न हो यही मैं तुमसे याचना करता हूँ। वीर लक्ष्मण ! तुम सुबासित केश वाली सीता की सावधानी से रक्षा करते रहो। मैं अभी इन दलों का नाश किये देता हूँ। ४२३

❀ मीळरुञ् जॆरुविल् विण्णु मण्णुमॆन् मेल्वन् दालुम्
नाळुलन् दऴियु मन्ऱे नानुनक् कुरैप्प दॆन्नॆ
आळियिन् मॊय्म्बि नायिव् वमरॆनक् करुळि यिन्ऱॆन्
तोळिनैत् तिन्नुहिन्ऱ शॊम्बिनैत् तुडैत्ति यॆन्ऱान् 424

आळियिन् मॊय्म्पिनाय्–शरभ-समान बली; विण्णुम् मण्णुम्–आकाशलोकवासी और पृथ्वीवासी; मेल् वन्तालुम्–मुझ पर चढ़ आएँ तो भी; मीळ् अरुम् चॆरुविल्–जिससे लौट जाना मुश्किल है, उस युद्ध में; नाळ् उलन्तु–(आयु के) दिन खोकर; अऴियुम् अन्ऱे–मर जायँगे न; नान् उनक्कु उरैप्पतु ॲन्नॆ–मैं तुमको कहूँ क्या; इ अमर् ॲनक्कु अरुळि–यह युद्ध मुझे दे दो; ॲन् तोळिनै तिन्नुकिन्ऱ–मेरे कन्धों को खानेवाले; चोम्पिनै–आलस्य को; तुटैत्ति ॲन्ऱान्–मिटाओ, कहा। ४२४

श्रीराम ने आगे कहा। शरभ-सम बली भाई ! क्यों डरते हो ? आकाश और भूलोकवासी सभी चढ़ आवें तो भी उनकी आयु शेष नहीं रहेगी और वे समाप्त हो जायँगे। तुमसे अधिक क्या कहूँ ? यह युद्ध मुझे प्रदान करने की कृपा करो। मेरे कंधों को आलस्य से (युद्धाभाव पर) उत्पन्न क्लेश खा रहा है। उसको मिटा दो। [इसको लक्ष्मण का कहा माननेवाले भी हैं। उनको 'प्रदान करने की कृपा करो' की प्रार्थना श्रीराम के मुख से निकली मानना असह्य है। विवाद में हम नहीं पड़ेंगे। वही अर्थ लिया गया तो आगे के ४२५वें पद्य में 'ॲन्ऱलुम्' जो है, जिसका अर्थ 'कहने पर' है। उसका पाठान्तर ॲन्ऱनन् (कहा) होगा]। ४२४

❀ ऍन्ऱलु मिळैय वीर ऩिशैन्दऩ ऩिराम ऩेऩ्ऩु
कुऩ्ऱऩ तोळि ऩाऱ्ऱ लुळ्ळत्ति ऩुणरक् कॊण्डाऩ्
अऩ्ऱियु मण्ण लाणै मरुक्किल ऩङ्गै कूप्पि
निऩ्ऱऩ ऩिरुन्दु कण्णीर् निलम्बुहप् पुलर्हिऩ् ऱाळ्बाल् 425

ऍऩ्ऱलुम्–यह कहने पर; इळैय वीरऩ्–वीर अनुज ने; इचैन्तऩऩ्–मान लिया; इरामऩ् एऩ्ऩुम् कुऩ्ऱु अऩ–श्रीराम के पर्वत के समान; तोळिऩ् आऱ्ऱल्–कन्धों का बल; उळ्ळत्तिऩ् उणर कॊण्टाऩ्–मन में समझ लिया; अऩ्ऱियुम्–और भी; अण्णल् आणै मऱुक्किलऩ्–प्रभु की आज्ञा अस्वीकार नहीं की; इरुन्तु–(पर्णशाला में) रहकर; कण् नीर्–अश्रुजल; निलम् पुक–भूमि को पहुँचाते हुए; पुलर्किऩ्ऱाळ् पाल्–दुखनेवाली देवी के पास; अम् कै कूप्पि–सुन्दर हाथ जोड़े; निऩ्ऱऩऩ्–खड़े रहे। ४२५

श्रीराम के यह कहने पर लघुभ्राता सहमत हो गये। उन्होंने श्रीराम के पर्वत से उन्नत स्कन्धों की शक्ति का भी स्मरण कर लिया। और भी ज्येष्ट भ्राता हैं, उनकी बात अस्वीकार करना नहीं चाहा। इसलिए वे पर्णशाला में अंजलिबद्ध हो आँखों से आँसू बहाती हुई रहने वाली सीता की रक्षा में खड़े रहे। ४२५

❀ कुळैयुरु मदियम् बूत्त कॊम्बऩाळ् कुळैन्दु शोरत्
तळैयुरु शालै निऩ्ऱुम् तऩिच्चिलै तरित्त मेरु
मळैयॆऩ मुळङ्गु हिऩ्ऱ वाळॆयिऱ् ऱरक्कर् काण
मुळैयिऩिऩ् ऱॆळुन्दु शॆल्लु मडङ्गलिऩ् मुऩिन्दु शॆऩ्ऱाऩ् 426

कुळै उरु–कुण्डलधारिणी; मतियम् पूत्त–चन्द्र जैसा वदन जिस लता का खिला फूल हो, ऐसी; कॊम्पु अऩाळ्–लता-सदृश सीताजी; कुळैन्तु चोर–मुरझाकर शिथिल हुईं; तळै उरु चालै निऩ्ऱुम्–पर्णशाला से; तऩि चिलै तरित्त–अनुपम धनु लिये हुए; मेरु–मेरुपर्वत (श्रीराम); मळै ऍऩ मुळङ्कुकिऩ्ऱ–मेघ के समान शोर मचानेवाले; वाळ् ऍयिऱ्ऱु–खड्ग-समान दाँत वाले; अरक्कर् काण–राक्षसों को देखने देते हुए; मुळैयिऩ् निऩ्ऱु–गुफा से; ऍळुन्तु चॆल्लुम्–निकल आनेवाले; मटङ्कलिऩ्–सिंह के समान; मुतिन्तु चॆऩ्ऱाऩ्–क्रोध के साथ गये। ४२६

सीताजी कुण्डल-पत्र और चन्द्रवदनमुख-सुमन के साथ लता के समान रहीं। वह लता अब मुरझायी। उनको उसी दशा में छोड़कर श्रीराम पर्णशाला से बाहर आये। उनके हाथ में अनुपम कोदण्ड था। वे मेरु-सम लगे। उनको मेघों के समान शोर मचानेवाले खड्गवक्रदन्त राक्षसों ने देखा। श्रीराम गुफा से निकलकर आनेवाले सिंह के समान कोप के साथ उनके सामने गये। ४२६

तोऩ्ऱिय तोऩ्ऱ रऩ्ऩैच् चुट्टिऩळ् काट्टिच् चॊऩ्ऩाळ्
वाऩ्ऱॊडर् मूङ्गि ऱन्द वयङ्गुवॆऩ् दीयदॆऩ्ऩत्

तान्ड्रोडर् कुलत्तै यॅल्लाम् दॉलैक्कुमा शमैन्दु निन्ड्राळ्
अॅन्ड्रुवन् दॅदिरन्द वीर निवनिह लिराम नॅन्ड्रे 427

तोन्ड्रिय–ऐसे प्रकट हुए; तोन्ड्रल् तन्नै–प्रभु श्रीराम को; वान् तोटर् मूङ्किल् तन्त–आकाश तक उन्नत बाँसों (के रगड़ने) से उत्पन्न; वयङ्कु वॅम् ती अतु अॅन्न–जलनेवाली भयंकर आग ही सम; तान् तोटर् कुलत्तै अॅल्लाम्–अपने रिश्ते के सारे कुल को; तॉलैक्कुम् आ चमैन्तु निन्ड्राळ्–मिटाने के काम में जो प्रवृत्त रही; चुट्टित्तळ् काट्टि–संकेत करके; एन्ड्रु वन्तु–युद्धसन्नद्ध हो जो आया है; अॅतिर्न्त वीरन्–और सामने प्रकट हुआ है वीर; इवन्–यह; इकल् इरामन्–शत्रु राम है; अॅन्ड्रु चॉन्नाळ्–ऐसा कहा। ४२७

आकाश तक उन्नत बाँसों का नाश वही अग्नि कर देती है जो उन्हीं से (उनके आपस में हवा के कारण टकराने से) उत्पन्न होती है, वैसे ही यह शूर्पणखा भी अपने कुल की नाशक शक्ति निकली। वह मानो उस कार्य में दत्तचित्त और तत्पर रही। ऐसी उसने उनके सामने प्रकट हुए श्रीराम को अपने हाथ के इशारे से दिखाया और कहा कि देखो! जो युद्धसन्नद्ध होकर सामने आ रहा है वही वीर राम है, जिसने हमारे साथ वैर ठाना है! । ४२७

कण्डनन् कनहत् तेर्मेऱ् कदिरवन् कलङ्गि नीङ्ग
विण्डन निन्ड्र वॅन्ड्रिक् करनॅनुम् विलङ्गऱ् ड्रोळान्
मण्डमर् याने शॅय्दिम् मानिडन् वलियै नीक्किक्
कॉण्डनॅन् वाहै यॅन्ड्रु पडैञरैक् कुड्रित्तुच् चॉन्नान् 428

कनक तेर् मेल्–स्वर्ण-रथ पर; कतिरवन्–सूर्य; कलङ्कि–व्यग्र होकर; नीङ्क–हटे; विण्टतन् निन्ड्र–वैर के साथ स्थित; वॅन्ड्रि–विजयशील; करन् अॅन्नुम्–खर नाम के; विलङ्कल् तोळान्–पर्वत-सम कन्धों वाले ने; कण्टतन्–श्रीराम को देखा (देखकर); पटैञरै कुड्रित्तु–सेनावीरों को उद्दिश्य करके; याने–मैं स्वयं; मण्टु अमर् चॅय्तु–यह बड़ा युद्ध करके; इ मानिटन् वलियै नीक्कि–इस मनुष्य का बल मिटाकर; वाकै कॉण्टनॅन्–विजय पा लूंगा; अॅन्ड्रु–ऐसा; चॉन्नान्–कहा। ४२८

खर भी कम वैर नहीं रखता था। उसके वैर के सामने कनकरथ सूर्य भी डरकर हट गया। पर्वत-सम कन्धे वाले विजयशील खर ने श्रीराम को देखकर अपनी सेना के वीरों से कहा कि मैं ही बड़ा युद्ध करके इस मनुजपुत्र का बल मिटा दूंगा और विजय पाऊँगा। ४२८

मानिड नॉरुवन् वन्द वलिहॅळ्ळु शेनैक् कम्मा
कानिड मिल्लै यॅन्नुङ् गट्टुरै कलन्द काले
यानुडै वॅन्ड्रि यॅन्नाम् यावरुङ् गण्डु निड्रिर्
ऊनुडै यिवनै याने युणगुवॅ नुयिरै यॅन्ड्रान् 429

मालिटन् ऑरुवन्–एक मनुज; वन्त–(उससे लड़ने) आई; वलि कॅळु चेतैक्कु–सशक्त सेना के लिए; कान् इटम् इल्लै–जंगल में स्थान नहीं है; ऍन्नुम्–ऐसी; कट्टुरै–बात; कलन्त काले–जब फैल जायगी; यान् उटै वॅन्ऱि–मेरी विजय का (महत्त्व); ऍन्नाम्–क्या होगा; यावरुम् कण्टु निऱ्ऱिर्–सब देखते रहो; याते–मैं अकेला ही; ऊन् उटै इवतै–(हमारे खाने योग्य) मांसधारी इसको; उयिरै उण्कुवॅन्–प्राण अशन कर लूंगा; ऍन्ऱान्–कहा। ४२९

लोग यह जानने लगें और यह बात फैल जाय कि एक अकेला मनुष्य आया था और उसके विरुद्ध इतनी बड़ी सेना ने युद्ध किया जिसके लिए वन में खड़े होने को भी स्थान नहीं मिला, तो मेरी जीत का क्या महत्त्व होगा ? इसलिए सब चुप देखते खड़े रहो। अकेला मैं ही इस मांसपिंड का प्राण पी लूंगा। खर ने ऐसा कहा। ४२९

अव्वुरै केट्टु वन्दा तहम्बनॅन् ऱमैन्द कल्विच्
चॅव्विया नॉरुव नैय शॅप्पुवॅन् शॅरुविऱ् चाल
वॅव्विय राद नन्ऱे वीररि लाण्मै वीर
इव्वयि नुळदान् दीय निमित्तमॅन् ऱियम्ब लुऱ्ऱान् 430

अकम्पन् ऍन्ऱु–अकम्पन नाम के; अमैन्त कल्वि चॅव्वियान्–युक्त विद्या-विदग्ध; ऑरुवन्–एक राक्षस ने; अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; वन्तान्–पास आकर; ऐय–प्रभु; वीररुळ् आण्मै वीर–वीरों में सर्वश्रेष्ठ वीर; चॅप्पुवॅन्–विनय करता हूँ; चॅरुविल् चाल वॅव्वियर् आतल्–युद्ध में बड़ा उत्साही रहना; नन्ऱे–अच्छा ही है; इ वयिन्–इस संदर्भ में;' तीय निमित्तम् उळ आम्–बुरे शकुन होते हैं; ऍन्ऱु–कहकर; इयम्पल् उऱ्ऱान्–विस्तार किया। ४३०

यह खर का वचन सुनकर अकंपन नाम का राक्षस सामने आया। वह विद्वान था। उसने कहा— स्वामी ! एक विनयवचन है— सुनाऊँगा। युद्ध में उत्साह दिखाना अच्छा ही है। पर शकुन बुरे दिखते हैं। उसने आगे उस बात का विस्तार किया। ४३०

कुरुदि मामळै शॊरिन्दन मेहङ्गळ् कुमुऱिप्
परुदि वानव नूऱ्वळैप् पुण्डदु पाराय्
करुदु वीरनिन् गॊडिमिशैक् काक्कैयिन् कणङ्गळ्
पॊरुदु वीऴ्वन पुलम्बुव निलम्बडप् पुरळ्व 431

करुतु वीर–प्रतिष्ठित वीर; मेकङ्कळ् कुमुऱि–मेघ गर्जन करते हुए; कुरुति मा मळै चॊरिन्तन–बड़ी रक्त-वर्षा बरसायी; परिति वानवन्–सूर्यदेव; ऊर् वळैप्पुण्टतु–परिवेश से घिरे हुए हो गये; काक्कैयिन् कणङ्कळ्–कौओं के समूह; निन् कॊटि मिचै–तुम्हारी ध्वजा पर; पॊरुतु वीऴ्वन–आपस में लड़ते हुए गिरते और; पुलम्पुव–चीखते-चिल्लाते हैं; निलम्पट पुरळ्व–भूमि पर गिरकर लोटते हैं; पाराय्–तुम देखो। ४३१

प्रतिष्ठित वीर ! मेघ गरजते हुए रक्तवर्षा कर रहे हैं। सूर्य के परिवेश बना है। काकवृन्द आपस में लड़ते हुए ध्वजा पर गिरते हैं, फिर चिल्लाते हुए नीचे गिरते हैं और भूमि पर गिरकर लोटते हैं। देखो। ४३१

वाळि वाय्हळे योवळेक् किन्ऱन वयवर्
तोळु नाट्टमु मिडनुदुडिक् किन्ऱन तुङ्गि
मीळि मॉय्म्बुडै यिवुळिहळ् विळुवन विऱलोय्
ञाळि योडुनिन् ऱुळैप्पन नरिक्कुलम् बलवाल् 432

विऱलोय्–विजयी वीर; वाळि वाय्कळे–बाणों के मुखों पर; ई वळेक्किन्ऱन–मक्खियाँ मँड़राती हैं; वयवर्–वीरों की; तोळुम् नाट्टमुम्–भुजाएँ और आँखें; इटम् तुटिक्किन्ऱन–बाईं ओर (की) फड़कती हैं; मीळि मॉय्म्पु उटै–अपार शक्ति वाले; इवुळिकळ्–अश्व; तूङ्कि विळुवन–सोते हुए गिरते हैं; नरि कुलम्–सियारों के झुण्ड; पल–अनेक; ञाळियोटु निन्ऱु–कुत्तों के साथ खड़े होकर; उळैप्पन–रुदन-स्वर में भूंकते हैं; पाराय्–देखो। ४३२

वीर ! बाणों के फलों पर मक्खियाँ मँड़रा रही हैं। वीरों के वाम नेत्र और हाथ फड़क रहे हैं। ताकतवर अश्व सोते और गिर पड़ते हैं। सियारों के झुण्ड आकर कुत्तों से मिल गये हैं और दोनों रुदन कर रहे हैं। तुम देखो। ४३२

पिडियॆ लामदम् बॆय्दिडप् पॆरुङ्गवुळ् वेळम्
ऑडियुम् मान्मरुप् पुलहमुङ् गम्बिक्कु मुयर्वाळ्
इडियुम् वीळ्न्दिडु मॆरिन्दिडुम् बॆरुन्दिशै यॆवर्क्कुम्
मुडियिन् मालैहळ् पुलालोडु मुळ्मुडै नाऱुम् 433

पिटि ऑलाम्–हथिनियाँ, सभी; मतम् पॆय्तिट–मद बहाते हुए; पॆरुम् कवुळ् वेळम्—बड़े-बड़े गण्डस्थल वाले गजों के; माल् मरुप्पु ऑटियुम्–बड़े दाँत टूट जाते हैं; उलकमुम् कम्पिक्कुम्–पृथ्वी में कम्पन होता है; उयर् वान् इटियुम्–ऊँचे आकाश से गाज; वीळ्न्तिटुम्–गिरती है; पॆरुम् तिचै–लम्बी दिशाएँ; ऎरिन्तिटुम्–जलती हैं; ऎवर्क्कुम्–सभी की; मुटियिन् मालैकळ्–सिर की मालाएँ; पुलाल् ऑटु–मांसगन्ध के साथ; मुटै नाऱुम्–दुर्गन्ध निःसृत करती हैं। ४३३

हथिनियाँ मद बहा रही हैं और बड़े गाल वाले हाथियों के दाँत टूट जाते हैं। भूकम्प होता है। आकाश से गाज गिरती है। दिशाएँ जलती हैं। सबके सिर की मालाओं से सड़े मांस की-सी गन्ध और दुर्गन्ध निकलती है। ४३३

इन्नैय वाहलिन् मानिड नॊरुवनॆन् ऱिवनै
निन्नैय लावदिङ् गॆळ्मै नीयमर्क् कियन्ऱ

विनैयै लाऱ्ऱॅय्दु वॅल्ललान् दन्मैय नल्लन्
पुनैयुम् वाहैयाय् पॉरुत्तियॆन् नुरैयॆनप् पुहन्ऱान् 434

पुनैयुम् वाकैयाय्–'वाहै' (विजय-सूचक) मालाधारी; इनैय आकलिन्–ऐसे हैं (शकुन) इसलिए; इवनै–इसको; मानिटन् ऑरुवन्–केवल एक मनुष्य है; ॲन्ऱु–ऐसा; इक्कु नितैयल् आवतु–यहाँ सोचना; एळ्मै–अज्ञता होगा; नी अमर्क्कु इयन्ऱ–तुम युद्ध-योग्य; विनै ॲलाम् चॅय्तु–सभी कार्य करके; वॅल्लल् आम्–उस पर विजय पाओ; तन्मैयन् अल्लन्–ऐसा मनुष्य नहीं; ॲन् उरै पॉरुत्ति–मेरी बात के लिए क्षमा करो; ॲन पुकन्ऱान्–ऐसा कहा (अकम्पन ने)। ४३४

ये सब बुरे शकुन हैं। ये हो रहे हैं। इसलिए इसको मामूली अल्प मानव समझना अज्ञता होगा। तुम्हारे युद्ध-तन्त्र और सामर्थ्य द्वारा वह जीता जानेवाला नहीं लगता। मैं यह कह रहा हूँ, उसके लिए क्षमा कर दो। अकंपन ने विनय के साथ यों बताया। ४३४

उरैत्त वाशहङ् गेट्टलु मुलहॅला मुलैयच्
चिरित्तु नन्ऱिदॆन् शेवहन् देवरैत् तेय
अरैत्त वम्मिया मलङ्गॅळिड् ड्रोळमर् वॅण्डि
इरैत्तु वीङ्गुव मानिडर् कॅळियवो वॅन्ऱान् 435

उरैत्त वाचकम् केट्टलुम्–(उसका) कहा वचन सुनकर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; चिरित्तु–ठठाकर (हँसकर); तेवरै तेय अरैत्त–देवों को पिचकाते हुए पीसनेवाले; अम्मि आम्–सिल है, ऐसा; अलङ्कु ॲळिल् तोळ्–हिलनेवाले सुन्दर मेरे ये कन्धे; अमर् वेण्टि–युद्ध माँगते हुए; इरैत्तु वीङ्कुव–फूले और उभरे हैं; मानिटर्क्कु ॲळियवो–मनुष्य के लिए अल्प (जेय) हो गये क्या; नम् चेवकम् नन्ऱितु–हमारी वीरता भी बड़ी भली; ॲन्ऱान्–कहा। ४३५

यह सुनते ही खर ऐसा ठठाया कि सारे लोक काँप गये। उसने कहा— अकंपन! इन मेरे अनुपम कन्धों को देखो जो मेरे हँसते समय हिलते हैं। और सिल के समान इनसे देव पिसे और पिचक गये थे। ये फूले हुए पुष्ट कन्धे उस अल्प मानव के लिए क्षुद्र हो गये क्या? हमारी वीरता भी भली रही! । ४३५

ॲन्नु मात्तिरत् तॅऱिपडै पिडियॆन विडिया
मन्नर् मन्नवन् मदलैयै वळैन्दन वळैन्दु
मिन्नुम् वालुळ मडङ्गलै मुनिन्दन वेळम्
तुन्नि नालॆनच् चुडुशिनत् तरक्करदन् दॊहुदि 436

ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–(खर के) यह कहते ही; मिन्नुम् वाल् उळै मटङ्कलै–प्रकाशमय लम्बे अयाल वाले सिंह को; मुनिन्तन–वैर करके; वेळम् वळैन्तु तुन्निनाल् ॲन–गजों ने घेर लिया हो, ऐसा; चुटु चिनत्तु–तापक क्रोधशील; अरक्कर् तम् तॊकुति–राक्षसों के दल; ॲऱि पटै–आपस में टकरानेवाले हथियारों के; इटि ॲन इटिया–

वज्र के समान नाद करते; मन्नतर् मन्नवन् मतलैयै–राजाधिराज के पुत्र श्रीराम को; वळैन्तत–घेर गये। ४३६

खर के यह कहते ही अग्नि के समान क्रोधी राक्षसों की सेना ने आकर चक्रवर्तीसुत श्रीराम को घेर लिया, मानो उज्ज्वल अयाल वाले सिंह से वैर करके गजों ने आकर घेर लिया हो। तब उनके हथियार आपस में टकराये और वज्र के समान नाद पैदा हुआ। ४३६

वळैन्द	कालैयिल्	वळैन्ददव्	विरामन्नगै	वरिविल्
विळैन्द	पोरैयु	मावदुम्	विळम्बुदुम्	विशैयाल्
पुळैन्द	पाय्बरि	पुरण्डन	पुहर्मुहप्	पूट्कै
उळैन्द	माल्वरै	युरुमिडि	पडवॉडिन्	दॅन्न 437

वळैन्त कालैयिल्–जब घिर गये तब; इरामन् कै वरि विल्–श्रीराम के हाथ का बन्धनयुक्त धनुष भी; वळैन्ततु–झुका; विळैन्त पोरैयुम्–तब जो युद्ध हुआ, उसको; आवतुम्–उसके फल को; विळम्पुतुम्–कहेंगे; विचैयाल् पुळैन्त–अपनी तीव्र गति से जो विद्ध हुए वे; पाय् परि–तीव्रगामी अश्व; पुरण्टत–नीचे गिरकर लोटे; माल् वरै–बड़े-बड़े पर्वत; उरुम् इटि पट–घोर वज्र के गिरने से; ऑटिन्तॅन्न–टूट जाते हों जैसे; पुकर् मुक पूट्कै–बिन्दियों सहित मुख वाले गज; उळैन्त–दुखी हो गिरे। ४३७

जब वे घेर आये तब श्रीराम ने अपने प्रतापी चाप को झुकाया और युद्ध छिड़ गया। उसके फलस्वरूप क्या-क्या आश्चर्य हुए? हम उनका वर्णन करेंगे। एक दम विद्ध होकर दुलकी चलनेवाले अश्व गिरे और भूमि पर लोटे। गज, जिनके माथाओं पर बिन्दियाँ थीं, ऐसे पर्वतों के समान टूटकर गिरे जिन पर वज्र-पात हुआ हो। ४३७

शूल	मर्र्न	वर्र्न	शुडर्मळुत्	तॉहैवाळ्
मूल	मर्र्न	वर्र्न	मुरट्टण्डु	पिण्डि
पाल	मर्र्न	वर्र्न	पहळिवॅम्	बहुवाय्
वेलु	मर्र्न	वर्र्न	विल्लॊडु	पल्लम् 438

चूलम् अर्र्न–शूल कटे; चुटर् मळु तॉकै–उज्ज्वल परशु-वृन्द; अर्र्न–बेकार हुए; वाळ् मूलम्–तलवारों के मूल; अर्र्त–छिन्न हुए; मुरण् तण्टु अर्र्न–सुदृढ़ दण्डायुध नष्ट हुए; पिण्टिपालम् अर्र्न–भिंडिपाल मिटे; वॅम् पकुवाय्–चीरकर जानेवाले फल के; वेलुम्–भाले भी; अर्र्न–नष्ट हुए; विल् ऑटु पल्लम्–धनुष के साथ बल्लम व्यर्थ हुए। ४३८

और भी राक्षसों के शूल और कान्तियुक्त परशुसमूह नष्ट हुआ। तलवारों के मूल (या रूप) छिन्न हुए। सुदृढ़ दण्डायुध टूटे। भिण्डिपाल, भेदनेवाले शूल, चाप और बल्लम सभी तहस-नहस हुए। ४३८

तॊडितु णिन्दन तोळॊडुन् दोमरन् दुणिन्द
अडितु णिन्दन कडहळि रुच्चॊडु नॆडुन्देर्क्
कॊडितु णिन्दन कुरहदन् दुणिन्दन कुलमा
मुडितु णिन्दन तुणिन्दन मुळैयॊडु मुशलम् 439

तॊटि तुणिन्तत–वीरकंकण टूटे; तोळॊटु तोमरम् तुणिन्तत–कन्धों के साथ तोमर खण्ड-खण्ड हुए; कट कळिऱु अटि–मत्तगजों के पैर; तुणिन्तत–कटे; नॆटुम् तेर्–बड़े रथ; अच्चॊटु कॊटि–धुरों के साथ ध्वजाएँ; तुणिन्तत–कटीं; कुरकतम् तुणिन्तत–घोड़े कटे; कुल मा मुटि–बड़ी संख्या में एक साथ बड़े किरीट; तुणिन्तत–खण्डित हुए; मुळैयॊटु–मुद्गरों के साथ; मुचलम् तुणिन्तत–मूसल टूटे। ४३९

और भी अंगवलय आदि वलय कटकर गिरे और भुजाओं के साथ तोमर आदि कटे। मत्तगजों के पैर, ऊँचे रथों की धुरियाँ और ध्वजाएँ आदि छिन्न हो गयीं। घोड़े टुकड़े-टुकड़े हुए। दण्ड और मुद्गर छिन्न-भिन्न हुए। ४३९

करुवि मावॊडु कार्मदक् कैम्मलैक् कणत्तो
डुरुवि मादिरत् तोडिन शुडुशर मुदिरम्
अरुवि मालैयिऱ् पिऱङ्गिय दवनियि लरक्कर्
तिरुविन् मार्बहन् दिऱन्दन तुऱन्दन शिरङ्गळ् 440

चुटु चरम्–श्रीराम के भयंकर शर; करुवि मा ऒटु–जीन वाले घोड़ों के साथ; कार्–काले; मत कै मलै–मत्तगजों के; कणत्तॊटु–दलों को; उरुवि–आर-पार होकर; मातिरत्तु ओटिन–(बाहर निकल) दिशाओं में चले; उतिरम् अरुवि–रक्त नदियों; मालैयिल् पिऱङ्किन–के रूप में बहा; अवनियिल्–भूमि में; अरक्कर्–राक्षसों के; तिरु इल् मार्पु अकम्–श्रीहीन वक्षस्थलों को; तिऱन्तन–खोलकर (रक्त) बाहर आया; चिरङ्कळ् तुऱन्तन–सिर (धड़ों से) अलग हुए। ४४०

श्रीराम के सन्तापी शर जीन वाले अश्वों और काले रंग के मत्तगजों को निफरकर आगे सभी दिशाओं में गए। रक्त की सरिताएँ बह चलीं। शरों ने राक्षसों के श्रीहीन वक्षों को विदीर्ण कर दिया और उनके सिरों को काटकर धड़ों से अलग कर दिया। ४४०

ऒन्ऱु पत्तुनू ऱायिरङ् गोडियॆन् ऱुणरात्
तुन्ऱु पत्तिय विराहवन् शुडशरन् दुरक्कच्
चॆन्ऱु पत्तिरत् तलैयिन मलैदिरण् डॆन्नक्
कॊन्ऱु पत्तियिऱ् कुविन्दन पिणप्पॆरुङ् गुन्ऱम् 441

ऒन्ऱु पत्तु नूऱु–एक, दस, सौ; आयिरम् कोटि–सहस्र, करोड़; ऎन्ऱु उणरा–ऐसा अगण्य; तुन्ऱु पत्तिय–बहुत मिली हुई पंक्तियों में; चुटु चरम्–जला डालनेवाले शरों को; इराकवन् तुरक्क–श्रीराघव ने चलाया तब; चॆन्ऱु–जाकर; कॊन्ऱु–मारकर; पत्तिर तलैयिन्–शरसहित सिरों की; मलै तिरण्ट ऎन्न–पर्वत

एकत्र हुए हों, जैसे; पिण ्पॆरुम् -कुन्ऱम्-लाशों के बड़े पर्वतों को; पत्तियिल् कुवित्तन-श्रेणियों में लगा दिया (शरों ने)। ४४१

श्रीराघव ने कितने शर लगातार छोड़े ? एक, दस, सौ, हज़ार, करोड़...? कोई गणना नहीं थी ! उनके भयंकर अस्त्र धनुष से छूटे और गये। राक्षस मरे और उनके सिरों पर वे अस्त्र गड़े रहे। उन अस्त्रों के साथ उन राक्षसों की लाशों के ढेर के ढेर पंक्तियों में बन गये। ४४१

काडु कॊण्डहा रुलवैहळ् कायॆरि कदुवच्
चूडु कॊण्डन वॆन्नत्तॊडर् कुरुदिमीत् तोन्ऱ
आडु हिन्ऱन वरुहुरै यथिलम्बु विण्मेल्
ऒडु हिन्ऱन वुयिरैयुन् दॊडर्वन वॊत्त 442

काटु कॊण्ट-वन में भरे; कार् उलवैकळ्-काले ठूंठ; काय् ऎरि कतुव-जलती आग के लगने से; चूटु कॊण्टत्त ऎत-गरम हो गए जैसे; अऱु कुऱै—सिर-कटे राक्षसों के कबन्ध; तॊटर् कुरुति मी तोन्ऱ-रक्त की धार के ऊपर उछलते रहने से; आटुकिन्ऱत्त-और नाचते हैं, तब; अयिल् अम्पु-श्रीराम के तीक्ष्ण शर; विण् मेल् ओटुकिन्ऱत्त उयिरैयुम्-आकाश में जानेवाले उनके प्राणों को भी; तॊटर्वत्त ऒत्त-(पकड़ने के लिए) पीछे जाते थे, ऐसे लगा। ४४२

राक्षसों के सिर-रहित कबन्ध नाचे। उनके शरीरों पर से लाल रक्त उछल रहा था। उनको देखकर ऐसा लगता था, मानो वन के ठूंठ आग से जल रहे हों। उछलते रक्त के फौवारे श्रीराम के बाणों के समान दिखे, जो स्वर्गगामी राक्षसों के प्राणों का पीछा कर रहे हों। ४४२

कैहळ् वाळॊडु कळप्पड कळुत्तऱुक् कवश
मॆय्हळ् पोळ्बडत् ताळ्विळ मिहनॆडु निरुदर्
शॆय्य मात्तलै शिन्दिडत् तिशैयुऱच् चॆन्ऱ
तैय लार्नॆडु विळियॆनक् कॊडियन शरङ्गळ् 443

तैयलार् नॆटु विऴि ऎत-दयिताओं के आयत नेत्रों के समान; कॊटियत्त-घातक; चरङ्कळ्-श्रीराम के शर; मिक नॆटु निरुतर्-बहुत ऊँचे कद के राक्षसों के; कैकळ् वाळॊटु कळम् पट-हाथों को तलवारों के साथ युद्धभूमि पर गिराते हुए; कळुत्तु अऱ-गलाओं को काटते हुए; कवच मॆय्कळ्-कवचसहित शरीरों को; पोळ् पट-चीरते हुए; ताळ् विऴ-पैरों को काटते; चॆय्य मा तलै चिन्तिट-लाल सिरों को छितराते हुए; तिचै उऱ चॆन्ऱ-दिशाओं में लगे हुए उड़ चले। ४४३

श्रीराम के बाण दयिताओं के आयत नेत्रों के समान थे। वे अत्यन्त भयंकर थे। वे चारों दिशाओं में बड़ा उत्पात मचाते हुए उड़े। ऊँचे कद के राक्षसों के हाथ तलवारों के साथ कटकर गिरे। उन शरों से गर्दनें कटीं। कवच विदीर्ण हुए। बड़े और लाल सिर अलग हुए। ४४३

मारि याक्किय वडिक्कणै वरैपुरै निरुदर्
पेरि याक्कैयिऩ् पॆरुङ्गरै वयिऩ्ऱॊऱुम् बिऱङ्ग
एरि याक्किऩ वाऱुह ळाक्किऩ विरैक्कुम्
शोरि याक्किऩ पोक्किऩ वऩमॆंतुऩ् दॊऩ्मै 444

मारि आक्किय–वर्षा हो रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करनेवाले; वटि कणै–(श्रीराम के) तीक्ष्ण बाणों ने; वरै पुरै निरुतर्—पर्वत-सम राक्षसों के; पेर् याक्कैयिऩ्–बड़े शरीरों के (रूपी); पॆरुम् करै–बड़े तटों के; वयिऩ् तॊऱुम् पिऱङ्क—स्थान-स्थान पर दृश्यमान होते; एरि आक्किऩ–झीलें बनाईं; आऱुकळ् आक्किऩ–नदियों की सृष्टि की; इरैक्कुम् चोरि आक्किऩ–उनको खून से भरा बना दिया; वऩम् ॲऩुम् तॊऩ्मै पोक्किऩ–वन का प्राचीन प्रकार मिटा दिया। ४४४

श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों की वर्षा ने बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें बनायीं, जिनके तट पर्वत-सम राक्षसों के बड़े शरीरों के बनाये और उनमें रक्त भर दिया। अब वन का प्राचीन रूप बदल गया। ४४४

अलैमि दऩ्दऩ कुरुदियिऩ् बॆरुङ्गड लरक्कर्
तलैमि दऩ्दऩ नॆडुऩ्दडि मिदऩ्दऩ तडक्कै
मलैमि दऩ्दऩ वाम्बरि मिदऩ्दऩ वयप्पोर्च्
चिलैमि दऩ्दऩ मिदऩ्दऩ कॊडियॊडु तेर्हळ् 445

अलै मितऩ्तऩ–लहरें जिसमें उठती थीं, उस; कुरुतियिऩ् पॆरुम् कटल्–रक्त के बड़े सागर पर; अरक्कर् तलै मितऩ्तऩ–राक्षसों के सिर तैरे; नॆटुम् तटि मितऩ्तऩ–लम्बे मांसखण्ड तैरे; तट कै मलै–विशाल हाथों (सूँड़ों) के गज बहे; वाम् परि मितऩ्तऩ–फाँदकर चलनेवाले अश्व बहे; वय पोर् चिलै मितऩ्तऩ–सारयुक्त युद्ध-धनु बहे; कॊटि ऒटु तेर्कळ् मितऩ्तऩ–ध्वजाओं-सहित रथ बहे। ४४५

रक्त का सागर-सा बन गया और उस पर तरंगें भी उठीं। उस रक्त पर राक्षसों के सिर, उनके बड़े-बड़े मांसखण्ड, अनेक करी, अश्व, बलवान चाप और ध्वजाओं के साथ रथ उतराये। ४४५

आय कालैयि लऩ्ऩल्विऴित् तार्त्तिरैत् तरक्कर्
तीय वार्हणै मुदलिय तॆऱुशिऩप् पडैहळ्
मेय माल्वरै यॊऩ्ऱिऩै वळैत्तिऩ मेहम्
तूय तारैहळ् शॊरिवऩ वामॆऩच् चॊरिऩ्दार् 446

आय कालैयिल्–तब; अरक्कर्–राक्षसों ने (जो बचे रहे); मेय माल् वरै–स्थायी, बड़े एक पर्वत; ऒऩ्ऱिऩै–एक को; इऩ मेकम् वळैत्तु–श्रेणीबद्ध मेघ घेरकर; तूय तारैकळ् चॊरिवऩ आम्–शुद्ध धारें गिरा रहे हों; ॲऩ–ऐसा; तीय वार् कणै–भयंकर लम्बे अस्त्र; मुतलिय–आदि; चिऩ तॆऱु पटैकळ्–क्रोध के साथ फेंके, घातक हथियार; चॊरिऩ्तार्–बरसाये। ४४६

तब राक्षसों ने श्रीराम को घेर लिया और भयंकर अस्त्र आदि

चलाये। वह दृश्य ऐसा था, मानो मेघों के समूहों ने एक पर्वत को घेर लिया हो और वे उस पर शुद्ध जलधारें बरसा रहे हों। राक्षसों ने क्रोध के साथ अस्त्र चलाये और वे अस्त्र भयंकर और घातक थे। ४४६

शॊरिन्द पल्पडै तुणिबडत् तुणिबडच् चरत्ताल्
अरिन्दु वॆन्दन शिन्दिडत् तिशैतिशै यहद्रि
नॆरिन्दु पार्मह णॊळिवुऱ वनमुऱ्ऱु निऱैय
विरिन्द शॆम्मयिर्क् करुन्दलै मलैयॆन वीळ्त्तान् 447

चरत्ताल्–शरों द्वारा (श्रीराम ने); चॊरिन्त पल् पटै–(राक्षसों के) बरसाये अनेक हथियारों को; तुणि पट तुणि पट—आते-आते खण्डित करके; अरिन्तु–काटकर; वॆन्तत्त चिन्तिट–जलाकर छितराया; तिचै तिचै अकट्ऱि—दिशा-दिशा में फिकवा दिया; पार् मकळ्–भूदेवी को; नॆरिन्तु नॆळिवु उऱ–कुचलकर झुकने देते हुए; वतम् मुऱ्ऱुम् निऱैय–सारे वन को भरते हुए; विरिन्त चॆम्मयिर्–बिखरे लाल केशों के; करुम् तलै–काले सिरों को; वीळ्त्तान्–गिराया। ४४७

श्रीराम ने अपने शरों से उन हथियारों को, जो राक्षसों द्वारा अत्यधिक परिमाण में उन पर चलाये गये, आते-आते काट दिया। उनको जलाकर छितराया। उनको सभी दिशाओं में दूर-दूर तक फेंक दिया। उन्होंने राक्षसों के लाल बालों से भरे काले सिरों को काट गिराया। उन सिरों की इतनी भारी संख्या थी कि उनके भार से भूदेवी कुचल गयीं और वह लचक गयीं। वन में सर्वत्र सिर ही सिर दिखाई दिये। ४४७

कवन्द पन्दङ्गळ् कळित्तन कुळित्तकैम् मलैहळ्
शिवन्दु पायन्दवॆङ् गुरुदियिऱ् ऱिरुहिन शिनत्ताल्
निवन्द वॆन्दॊळि निरुदर्दम् नॆडुनिणन् दॆविट्टि
उवन्द वन्गळु दुयिर्शुमन् दुळुक्किय दुम्बर् 448

कवन्त पन्तङ्कळ्–कबन्धराशियाँ; कळित्तत–मुदित हुए; कै मलैकळ्–'सूँड़ वाले पर्वत' (करी); चिवन्तु पायन्त वॆम् कुरुतियिल्–लाल और बहते रक्त-प्रवाह में; कुळित्त–नहाये; तिरुकित चितत्ताल्–भयंकर क्रोध के कारण; निवन्त–उभरे; वॆम् तॊळिल्–भयंकर काम करनेवाले; निरुतर् तम्–राक्षसों के; नॆटु निणम्–अधिक मांसों को खाकर; तिवट्टि–अघाकर; वन् कळुतु–बलवान प्रेत; उवन्त–हर्षित हुए; उम्पर–देवलोक; उयिर् चुमन्तु–(राक्षसों के) प्राणों को ढोते हुए; उळुक्कियतु–लचक उठा। ४४८

भयंकर युद्ध में कबन्धराशियाँ मुदित हुईं। करी रक्त-प्रवाह में नहाये। बलवान प्रेतों ने क्रुद्ध राक्षसों के मांस खाकर अघाकर आनन्द मनाया। देवलोक में इतने राक्षसों के प्राण आ भर गये कि लोक ही झुक गया। ४४८

मरुड रुङ्गळि वञ्जनै वळैयॅयिऱ् ऱरक्कर्
गरुड नञ्जुरु कण्मणि काहमुङ् गवर्न्द
इरुड रुम्बुऱत् तिऴ्देयर् पऴुदुऱऱ् कॅळिदे
अरुड रुन्दिऱत् तऱनन्ऱि वलियदुण् डामो 449

मरुळ् तरुम्–मोह में डालनेवाले (मायावी); कळि–मत्त; वञ्चतै–कपटी; वळै ॲयिऱ्ऱु–वक्रदाँत वाले; अरक्कर्–राक्षसों की; करुटन् अञ्चुरु–गरुड़ को भी भयभीत करनेवाली; कण्मणि–आँखों की पुतलियों को; काकमुम् कवर्न्त–कौओं ने छीन लिया; इरुळ् तरुम् पुऱत्तु–अन्धकार-सम काले शरीरों के; इऴ्तैयर्–नीच लोग; पऴुतु उऱऱ्कु ॲळिते–नष्ट होंगे, यह सुलभ ही है; अरुळ् तरुम् तिऱत्तु–कृपा देनेवाले; अऱन् अन्ऱि–धर्म के सिवा; वलियतु–बलवान; उण्टामो–कोई दूसरा होगा क्या। ४४९

उन मायावी, मत्त, कपटी और वक्रदाँत वाले राक्षसों की आँखों की पुतलियों को अब कौए नोचकर खाने लगे। पहले उन आँखों को देखकर स्वयं गरुड़ भी डरता था। अब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी! क्यों? उन नीचों की अवनति सुगमता से हो जाती है, जो अन्धकार के समान काले होते हैं! धर्म कृपा का जनक है। उससे बढ़कर बलवान और क्या है? । ४४९

पल्लायिर मिरुळ् कीऱिय पहलोन्नॅ वॊळिरुम्
विल्लाळनै मुनियावॅयि लयिलामॅन विऴियाक्
कल्लार्मऴै कणमामुहिल् कडैनाळ्विऴ् वन्बोल्
ॲल्लामॊरु तॊडैयावुड नॅय्दार्विनै शॅय्दार् 450

पल् आयिरम् इरुळ्–अनेक सहस्र अन्धकार पुंजों को; कीऱिय–चीरनेवाले; पकलोन् ॲन ऑळिरुम्–सूर्य के समान प्रभावान; विल्लाळतै–कोदण्डपाणी श्रीराम को; ॲल्लारुम् ऑरु तॊटैया–सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ मिलकर; मुनिया–कोप करके; वॅयिल् अयिल् आम् ॲन–चमकदार भाले के समान; विऴिया–तरेरकर; कण मा मुकिल्–समूहों में मिले बड़े-बड़े मेघ; कटै नाळ्–युगान्त में; कल् आर् मऴै–पत्थर की वर्षा; विटुवत पोल्–गिराते हों, जैसे; ॲल्लाम् उटन् ॲय्तार्–सभी अस्त्र एक साथ चलाते हुए; वितै चॅय्तार्–(युद्ध-) कार्य किया। ४५०

श्रीराम अन्धकार के समूहों को चीरकर हटानेवाले सूर्य के समान प्रभावान थे। उन कोदण्डपाणी पर सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। उनकी तरेरती आँखों ने भयंकर भालों के समान दृष्टि चलायी। युगान्त में पत्थर बरसानेवाले मेघों के समान वे सभी अस्त्रों को एक साथ चलाने लगे। ४५०

ऑऱिन्दारॅन वॅय्दारॅन वऱियानिनैन् दन्वुम्
अऱिन्दारॅन वऱियावहै ययिल्वाळियि नऱुत्तान्

शॆऱिन्दारैयुम् बिऱिन्दारैयुञ् जॆऱुत्तारैयुन् दिऱत्ताल्
मऱिन्दारैयुम् वलित्तारैयु मडित्तान्शिलै पिडित्तान् 451

चिलै पिटित्तान्–कोदण्डपाणी श्रीराम ने; चॆऱिन्तारैयुम्–दलों में आनेवालों को; पिऱिन्तारैयुम्–अलग-अलग आनेवालों को; चॆऱुत्तारैयुम्–द्वेष करके आनेवालों को; चित्तत्ताल् मऱिन्तारैयुम्–(जो भागे थे पर) क्रोध के कारण मुड़ आये उनको; वलित्तारैयुम्–अन्याय करनेवालों को; मटित्तान्–मिटाया; ऍऱिन्तार् ऍन्–ये शस्त्र फेंकनेवाले; ऍय्तार् ऍन्–ये अस्त्र चलानेवाले; अऱिया नित्तैन्तत्तवुम्–चलाने योग्य हथियारों को; अऱिन्तार् ऍन–परखकर लेनेवाले थे; अऱिया वकै–ऐसा पहचाना न जा सके, ऐसा; अयिल् वाळियिन् अऱुत्तान्–तीक्ष्ण अपने शरों से छिन्न-भिन्न कर दिया। ४५१

कोदण्डपाणी श्रीराम ने सब राक्षसों को मार दिया। उनमें दल बाँधकर आनेवाले, पृथक-पृथक आनेवाले, क्रुद्ध राक्षस, भाग जाकर वैर-प्रेषित हो लौट आनेवाले और अन्यायी सभी थे। इस तेजी से वे हत हुए कि यह जानना भी कठिन हो गया कि कौन क्या कर रहा था। अस्त्र चलानेवाले, शस्त्र चलानेवाले, चलाने के लिए चुनाव में लगे रहनेवाले सभी थे। वे भी कुछ करने से पहले ही हत हो गये। ४५१

वानत्तन कडलिन्बुऱ वलयत्तन मदिशूऴ्
मीनत्तन मिळिर्हॊण्डलिन् मिशैयत्तन मिडल्वॆम्
कानत्तन मलैयत्तन तिशैमुऱ्ऱिय करियिन्
तानत्तन काहुत्तन शरमुन्दिय शिरमे 452

काकुत्तत–काकुत्स्थ के; चरम् उन्तिय–शरों द्वारा उकसाये गये; चिरमे–राक्षसों के सिर; वानत्तत–आकाश में गये; कटलिन् पुऱ वलयत्तत–समुद्र के पार के चक्रवाल में गये; मति चूऴ्–चन्द्रवलयित; मीनत्तत–नक्षत्र-मण्डल में गये; मिळिर् कॊण्टलिन्–दृश्यमान मेघमण्डलों के; मिचैयत्तत–ऊपर वाले हो गये; मिटल् वॆम् कानत्तत–घने भयंकर वनों में गये रहे; मलैयत्तत–पर्वतों पर के हुए; तिचै मुऱ्ऱिय–दिशाओं के छोर में रहनेवाले; करियिन्–करियों के; तानत्तत–स्थानों पर गये। ४५२

काकुत्स्थ के शरों से कटे हुए राक्षसों के सिर कहाँ-कहाँ दिखे! आकाश, समुद्र पार चक्रवाल पर्वत, चन्द्र को मध्य में लिये रहे मीनमण्डल, सुदृश्य मेघमण्डल, घने भयंकर वन, पर्वत, दिशाओं के अन्त में रहनेवाले दिग्गजों के स्थान —सभी स्थानों पर गये रहे। ४५२

मण्मेलन मलैमेलन मऴैमेलन मदितोय्
विण्मेलन नॆडुवेलैयि निडमेलन मिडलोर्
पुण्मेलन कुरुदिप्पॊरु तिरैयाऱुहळ् पॊङ्गत्
तिण्मेरुवे नहुमार्बिन युरुवुन्दॆरि शरमे 453

तिण् मेरुवै नकु–सुदृढ़ मेरु का परिहास करनेवाली; मार्पितै–(राक्षसों की) छातियों को; उरुवुम् तॅरि चरम्–वेध जानेवाले (श्रीराम के) चुने हुए शर; पॊरु तिरै कुरुति आऱुकळ्–आपस में टकरानेवाली तरंगों से युक्त रक्त-नदियाँ; पॊङ्क–उमँगकर बढ़ें, ऐसा; मण् मेलत–पृथ्वी में गये; मलै मेलत–पर्वतों पर गये; मऴै मेलत–मेघों पर गये; मति तोय् विण् मेलत–चन्द्राश्रयी आकाश पर के हो रहे; नॅटु वेलैयिऩ् इटम् मेलत–विस्तृत समुद्रतलों के हो रहे; मिटलोर् पुण् मेलत–बली (राक्षसों) के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

जो मेरु-समान कठिन छाती वाले राक्षसों को भेद चले, वे श्रीराम के चुने हुए शर कहाँ-कहाँ पाये गये ! राक्षसों के रक्त की नदियों को उमँगकर बहने देते हुए वे शर पृथ्वी पर, पर्वतों पर, मेघमण्डल पर, चन्द्राश्रयी आकाश पर, समुद्र पर और बली राक्षसों के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

पॊलन्दारिऩ रऩलिऩ्शिहै पॊऴिहण्णिऩ रॅवरुम्
वलन्दाङ्गिय वडिवॆम्बडै विडुवार्शर मऴैयाल्
उलन्दारुडल् कडलोडुऱ् वुलवारुड लुऱ्ऱार्
अलन्दार्निशि शररामॆऩ विमैयोरॊडु मार्त्तार् 454

पॊलम् तारिऩर्–मनोरम मालाधारी; अऩलिऩ् चिकै पॊऴि कण्णिऩर्–अग्नि की ज्वालाएँ-सी निकालनेवाली आँखों के; वटि वॆम् पटै विटुवार्–तीक्ष्ण भयंकर हथियार चलानेवाले; ॲवरुम्–सभी राक्षस; चर मऴैयाल्–शर-वर्षा से; उटल् कटल् ओटु उऱ–शरीर जाकर समुद्र में मिल गये, इस रीति से; उलन्तार्–मरे; उलवा उटल् उऱ्ऱार्–अमर शरीर पाकर; इमैयोर् ओटुम्–देवों के साथ मिलकर; निचिचरर् अलन्तार् आम् ऎऩ–निशिचर मरे, यह कहकर; आर्त्तार्–सन्तोषरव उत्पन्न किया। ४५४

मनोरम मालाधारी सभी राक्षस, जिनकी आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलती थीं और जो भयंकर तीक्ष्ण हथियार चलाते थे, श्रीराम की शरवर्षा के सामने मर गये। उनकी लाशें समुद्र में जाकर मिल गयीं। अब उन्हें अमर शरीर मिल गया। वे देवों में मिल गये। अब वे नीचे देखते हैं और मरते हुए राक्षसों को देखकर हर्षरव निकालते हैं कि वाह ! राक्षस मर गये। ४५४

ईरऱ्चॅऱि कमलत्तऩ विरदक्कुऱै पुळिऩम्
वीरक्करि मुदलैक्कुल विडुपाय्परि कुरम्बाप्
पारक्कुडर् मिडैपाशडै पडर्हिऩ्ऱऩ पलवा
मूरित्तिरै युदिरक्कुळ मुळुहिक्कळु दॆळुमे 455

ईरल्–यकृत् (रूपी); चॅऱि कमलत्तत–दलसंकुल कमल वाले; इरत कुऱै–टूटे रथ; पुळिऩम्–पुलिन; वीर करि–साहसी गज; मुतलै कुलम्–नक्रसमूह; पाय् परि–अश्व; विटु–बँधे; कुरम्पा–बाँध; पार कुटर्–भारी आँतें; मिटै–लसे

रहनेवाले; पल् पाचटै आ–अनेक ताजे पत्ते, इनसे युक्त; मूरि तिरै–बड़ी-बड़ी तरंगों वाले; उतिर कुळम्–रक्त के तालाबों में; कळुतु–भूत; मुळुकि अॅळुव–नहा उठते हैं। ४५५

युद्धभूमि में एक अनोखा तालाब बन गया। उसमें रक्त भरा था। यकृत् कमल बने, टूटे रथ पुलिन। साहस के साथ मरे गज नक्र बने और अश्व की लाशें बाँध बनीं। भारी आँतों ने विविध पत्तों का स्थान लिया! ऐसे तालाब में, जिसमें बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रही थीं, प्रेत नहा उठते थे। ४५५

अळैत्तार्शिल रार्त्तार्शिल रळिन्दार्शिलर् कळिन्दार्
उळैत्तार्शिल रुयिर्त्तार्शिल रुरुण्डार्शिलर् पुरण्डार्
कुळैत्ताळ्दिरैक् कुरुदिक्कडऱ् कुळित्तार्शिलर् कॉलैवाय्
मळैत्तारैहळ् पडप्पारिडै मडिन्दार्शिल रुडैन्दार् 456

कॉलै वाय्–मारक; मळै तारैकळ् पट–शरवर्षा के लगने से; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; अळैत्तार्–पुकार मचायी; चिलर् आर्त्तार्–कुछ ने (भीषण) गर्जन किया; चिलर् अळिन्तार्–कुछ मिटे; चिलर् कळिन्तार्–कुछ भागे; चिलर् उळैत्तार्–कुछ तड़पे; चिलर् उयिर्त्तार्–कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी; चिलर् उरुण्टार्–कुछ लोटे; चिलर् पुरण्टार्–कुछ लुढ़के; कुळै ताळ्–गहरे पंक के साथ; तिरै कुरुति कटल्–लहरों से युक्त रक्त-सागर में; चिलर् कुळित्तार्–कुछ डूबे; चिलर् पार् इटै मटिन्तार्–कुछ भूमि पर गिरकर मरे; उटैन्तार्–हारे। ४५६

श्रीराम के संहारक वर्षा-धारों के समान शरों के आकर लगने से कुछ राक्षस त्राहि! त्राहि! पुकारने लगे। कुछ राक्षसों ने घोर शब्द किया। कुछ राक्षस वहीं ढेर हो गये। कुछ जान लेकर भागे। कुछ तड़पकर रह गये। कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी। कुछ लुढ़कते हुए गये। कुछ करवट बदलते बेचैन रहे। कुछ लोग कीच से भरे रक्त-सागर में डूबकर संकटग्रस्त हो रहे। कुछ लोग भूमि पर ही गिरकर मरे। कुछ लोग हारकर हटे। ४५६

उडैत्तार्हळै नहैशॅय्दन रुरुडेरिन रुडनाय्
अडैन्दार्पडैत् तलैवीरर्हळ् पदिनाल्वरु मयिल्वाळ्
मिडैन्दार्नॅडुङ् गडऱ्रानैयर् मिडल्विल्लिनर् विरिनीर्
कडैन्दार्वॅरु वुऱमीदॅळु कडुवामॅनक् कॉडियार् 457

विरि नीर्–विस्तृत (क्षीर-) सागर को; कटैन्तार्–जिन्होंने मथा उन (देवों और असुरों) को; वॅरुवु उऱ–भयभीत करते हुए; मीतु अॅळु–ऊपर उठ आये; कटु आम् ॲन–विष के समान; कॉटियार्–निर्मम; पटै तलै वीरर्कळ् पतिनाल्वरुम्–सेनापति चौदहों ने; उटनाय्–एक साथ; उटैन्तार्कळै–हारकर भागनेवालों की; नकै चॅय्तनर्–हँसी उड़ाई; उरुळ् तेरितर्–पहियों वाले रथ पर सवार हो; अयिल् वाळ् मिटैन्तु आर्–भालों और तलवारों को लिये हुए मिल आनेवाली; नॅटुम् कटल्

तातैयार्–विशाल समुद्र-सम सेना के साथ; मिटल् विल्लितर्–सबल धनु वाले हो; उटनाय्–एक साथ; अटैन्तार्–(वे) आये। ४५७

चौदहों सेनापतियों ने यह देखा तो उनका परिहास किया। देवों और असुरों को भयभीत करते हुए जो विष क्षीरसागर से उठ आया था, उस विष के समान बड़े ही भयंकर और खूनी वे सेनापति एक साथ निकलकर रथों पर युद्धभूमि में आये। उनके साथ बड़ी सेना आयी, जिसके वीर भालों और तलवारों से युक्त थे। सेना विपुल सागर के समान थी और वीरों से खूब भरी थी। ४५७

नाहत्तनि	यॊरुविल्लियै	नळिमुप्पुर	मुन्नाळ्
माहत्तिडै	वळैयुर्ऱन	वॆन्नवळ्ळलै	मदियार्
आहत्तॆळु	कनल्हण्वळि	युहवॆर्ऱॆदि	रळन्ऱार्
मेहत्तनि	नॆडुविल्लियै	वळैत्तार्शॆरु	विळैत्तार् 458

मुन्नाळ्–प्राचीनकाल में; नाकम् तनि ऒरु विल्लियै–(मेरु) पर्वत को श्रेष्ठ धनु बनाकर जिन्होंने लिया था, उन (मेरुधन्वा) को; नळि मुप्पुरम्–बड़े त्रिपुरों ने; माकत्तु इटै–आकाश में; वळैवुर्ऱत्त अॆत्त–घेर लिया हो ऐसा; मेक तनि नॆटु विल्लियै–मेघश्याम, उत्तम दीर्घ धनु के स्वामी कोदण्डपाणी; वळ्ळलै–प्रभु श्रीराम को; मतियार्–कुछ न माननेवाले; आकत्तु ऎळु कनल्–शरीर के अन्दर उठनेवाली आग को; कण् वळि उक उर्ऱु–आँखों द्वारा निकलने देते हुए; ऎतिर् अळन्ऱार्–सामने द्वेष करते हुए; वळैत्तार्–घेरकर; चॆरु विळैत्तार्–युद्ध किया। ४५८

वे श्रीराम का महत्त्व जान नहीं पाये। उनके मन में उनके प्रति आदर ही नहीं था। मेघसम दीर्घ धनु के साथ दृश्यमान उन उदार प्रभु श्रीराम को उन्होंने आकर ऐसा घेरा, जैसा मेरुधन्वा शिवजी को त्रिपुरों ने आकाश में घेर लिया था। उनकी आँखों से मानो उनके अन्दर की कोपाग्नि निकल रही थी। बड़े वैर के साथ वे घेर गये। ४५८

ऎय्दार्पल	रॆरिन्दार्पल	रॆळुवोच्चिनर्	मळुवाल्
पॊय्दार्पलर्	पडैत्तार्पलर्	किडैत्तार्पलर्	पॊरुप्पाल्
पॆय्दार्मळै	पिदिर्त्तारॆरि	पिऱैवाळॆयिर्	ऱरक्कर्
वैदार्पलर्	तॆळित्तार्पलर्	मलैयामॆन	वळैत्तार् 459

पिऱै वाळ् ऎयिर्ऱु–अपूर्ण चन्द्र-सम वक्रदाँत वाले; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेकों ने; ऎय्तार्–शर चलाये; पलर्–अनेकों ने; ऎळु–दण्ड; ओच्चित्तर्–फेंके; पलर् मळुवाल् पॊय्तार्–अनेकों ने परशुओं से वार किया; पलर् पुटैत्तार्–अनेकों ने मारा; पलर् किटैत्तार्–अनेक पास आये; पलर् पॊरुप्पाल् मळै पॆय्तार्–अनेकों ने पर्वतों को वर्षा के समान लगातार फेंके; ऎरि पितिर्त्तार्–(अनेकों ने) आग बरसायी; पलर् वैतार्–अनेकों ने गाली दी; पलर् तॆळित्तार्–अनेक डाँटे; मलै आम् ऎन्न वळैत्तार्–पर्वत के समान घेर लिया। ४५९

उनके साथ कितने ही राक्षस-वीर आये थे। चन्द्रकला के समान श्वेत और वक्रदाँत वाले उनमें अनेकों ने श्रीराम पर बाण चलाये। कितनों ने दण्ड फेंके। परशु और अन्य हथियार चलानेवाले भी अनेक, अनेक थे। अनेक उन पर झपटने आये। अनेक राक्षसों ने पर्वतों को उठाकर वर्षा के समान निरन्तर फेंका। अनेकों ने आग बरसायी। अनेकों ने गालियाँ दीं और अनेक डाँटे। अनेक पर्वतों के समान श्रीराम के चारों ओर आकर उनको घेर गये। ४५९

तेर्पूण्डऩ विलङ्गियावैयुम् जिलैपूण्डॆळु कणैयाल्
पार्पूण्डऩ मदमाकरि पलिपूण्डऩ परिमात्
तार्पूण्डऩ वुडल्पूण्डिल तलैवॆङ्गदिर् तळिवन्
दूर्पूण्डन पिरिन्दालॆऩ विरिन्दारुयि रुलन्दार् 460

चिलै पूण्टु ऍळु-(श्रीराम के) कार्मुक से छूटे हुए; कणैयाल्-शरों से; तेर् पूण्टऩ-रथों में जुते हुए; विलङ्कु यावैयुम्-जानवर सब; पार् पूण्टऩ-भूमि पर गिरकर मरे; मत मा करि-मत्त, बड़े-बड़े गज; पलि पूण्टऩ-बलि चढ़े; तार् पूण्टऩ परि मा-हारों से युक्त अश्व; उटल् तलै पूण्टिल-शरीरों से सिर-जुड़े नहीं रहे; चॅरु विळैत्तार्-युद्ध करने जो आये थे, वे; वॅम् कतिर् तळि वन्तु-गरम सूर्य को घेर जो आया; ऊर् पूण्टऩ-उस परिवेश के; पिरिन्ताल् ऍऩ-हटने के समान; उयिर् उलन्तार्-प्राण खोकर; विरिन्तार्-सब जगह अलग-अलग पड़े रहे। ४६०

श्रीराम ने तब शर चलाये। उनके कोदण्ड से निकले बाणों के लगने से राक्षसों के रथों में जुते हुए जानवर भूमि पर गिरकर मर गये। मत्तगज बलि चढ़े। हारों से भूषित अश्व सिर से विहीन हो गये। उनको घेर आये हुए राक्षस सूर्य के परिवेश के समान, जो जल्दी दूर हो जाता है, मर गये। उनकी लाशें सर्वत्र फैली पड़ी रहीं। ४६०

माल्पोत्तिय मऱवोरुडन् मलैयॊत्तुड ऩळिशॆम्
पाल्पोत्तिऩ नदियिऱ्किळर् पडियॊत्तदु पऩिवान्
मेल्पोत्तिय कुळुविण्णवर् विळिपोत्तिऩर् विरैवॆम्
काल्पोत्तिऩर् नमऩ्तूदुवर् कडिदुऱुयिर् कवर्वार् 461

माल् पोत्तिय-मूर्च्छा में पड़े रहे; मऱवोर् उटल्-वीरों के शरीर; मलै ऒत्तु-पर्वतों से तुले; उटल् अळि-उन शरीरों से निकलनेवाले; चॅम् पाल् पोत्तिऩ-रक्त से भरी; नतियिल्-नदियों के कारण; किळर् पटि ऒत्ततु-दृश्यमान भूमि के समान लगे; पऩि वाऩ् मेल्-शीतल आकाश पर; पोत्तिय कुळु विण्णवर्-एकत्रित हुए देवों ने; विळि पोत्तिऩर्-अपनी आँखें मूँद लीं; नमऩ् तूतुवर्-यमदूतों ने; कटितु उऱु-जल्दी आकर; उयिर् कवर्वार्-(राक्षसों के) प्राण हरकर; मिटल् वॆम्-सशक्त और भयंकर; काल् पोत्तिऩर्-अपने पैरों से (युद्धभूमि को) आच्छादित कर दिया। ४६१

मूच्छित वीरों के शरीर पर्वतों के समान लगे। उनके शरीरों से निकलनेवाले रक्त की भरी नदियों के कारण भूमि शोभित लगी। आकाश में देवों ने भीड़ लगायी थी। उन्होंने यह दृश्य देखकर अपनी आँखें मूंद लीं। उस युद्धभूमि को यम के दूतों के पैरों ने ढँक दिया। वे जल्दी-जल्दी राक्षसों के प्राण लेने आ-जा रहे थे। ४६१

पेयेऱित्तर्	शॅरुवेट्टॆऴु	पित्तेऱित्तर्	पिलवाय्त्
तीयेऱिह	लरियेऱित्तर्	करियेऱित्तर्	शॅऱिवाय्
नायेऱिऩ	तलैमेनॆंडु	नरियेऱिऩ	वॅरिहाल्
वायेऱिय	वडिवाळियिऩ्	वाऩेऱित्तर्	वऩ्दार् 462

पिल वाय्–बिल के समान मुख वाले; ती एऱु इकल्–बड़ी आग के समान लड़नेवाले; अरि एऱित्तर्–सिंहों पर सवार; करि एऱित्तर्–गजों पर सवार; चॆरु वेट्टु ॲऴु–युद्ध चाहते हुए आये; पेय् एऱित्तर्–भूतग्रस्त; पित्तु एऱित्तर्–उन्मत्त (राक्षसों के); तलै मेल्–सिरों पर; चॆऱिवाय्–भीड़ लगाकर; नाय् एऱिऩ–कुत्ते चढ़े; नॆटु नरि एऱिऩ–लम्बी कतार में सियार चढ़े; ॲरि काल्–आग उगलनेवाले; वाय् एऱिय–मुखों से युक्त; वटि वाळिऩ्–तीक्ष्ण बाणों से; वाऩ् एऱित्तर्–(हत होकर) आकाश में चढ़े; वऩ्तार्–आये। ४६२

राक्षस, जिनके मुख बिल के समान थे, भयंकर सिंहों पर और गजों पर सवार होकर चाव के साथ भूतग्रस्त या उन्मत्त के समान युद्ध करने आये थे। पर वे मर गये। उनकी लाशों पर अब कुत्ते, सियार आदि चढ़ रहे थे। वे राक्षस श्रीराम के अग्निमुख और तीक्ष्ण बाणों से हत हुए थे। इसलिए उनकी आत्माएँ स्वर्ग पहुँच गयीं। ४६२

तलैशिन्दिऩ	विऴिशिन्दिऩ	तऴल्शिन्दिऩ	तरैमेल्
मलैशिन्दिऩ	पडिशिन्दिऩ	वरुशिन्दुर	मऴैबोल्
शिलैशिन्दिऩ	कणैशिन्दिऩ	तेर्शिन्दिऩ	तिशैयू
डुलैशिन्दिऩ	पॊरिशिन्दिऩ	वुयिर्शिन्दिऩ	वुडलम् 463

मऴै पोल्–मेघ (वर्षा) के समान; चिलै चिन्तिऩ–धनु से निकले; कणै चिन्तिऩ–शर फैले; तलै चिन्तिऩ–सिर गिरे; विऴि चिन्तिऩ–आँखें बिखरीं; तऴल् चिन्तिऩ–आग फैली; वरु चिन्तुरम्–आगत गज; तरै मेल्–भूमि पर; मलै चिन्तिऩ पटि पोल्–पर्वत बिखरे पड़े हों, इस प्रकार; चिन्तिऩ–बिखरे पड़े थे; तेर् चिन्तिऩ–रथ टूटकर छितराये; तिचै ऊटु–दिशाओं में सर्वत्र; उलै चिन्तिऩ–भट्ठी से निकली; पॊरि चिन्तिऩ–आग के कणों के समान अंगार बिखरे; उटलम्–शरीरों ने; उयिर् चिन्तिऩ–प्राण छोड़ दिये। ४६३

श्रीराम के कोदण्ड ने वर्षा की धारों के समान शर बरसाये। इसलिए राक्षसों के सिर छितरे; आँखें बिखरीं और उन आँखों से अंगार छितरे। उन शरों से आहत होकर गज पर्वत के समान यत्र-तत्र पड़े रहे और रथ

टूटकर गिरे। दिशाओं में अंगारे उड़े और राक्षसों के शरीरों ने प्राण त्याग दिये। ४६३

पडैत्तलै वरुमवर् पडैत्त तेर्हळुम्
उडैत्तडम् बडैहळु मॊळिय वुट्रॆदिर्
विडैत्तडर्न् दॆदिर्न्दवर् वीरन् वाळियाल्
मुडैत्तवॆङ् गुरुदियिन् कडलिन् मूळ्हिनार् 464

पटै तलैवरुम्–सेनापति; अवर् पटैत्त तेर्कळुम्–उनके अपने रथ; उटै तटम् पटैकळुम्–उनके अपने बड़े-बड़े युद्ध-हथियार; ऑळिय–इनको छोड़कर; उट्रु–(युद्धभूमि में) आकर; ऍतिर्–(श्रीराम के) सम्मुख; विटैत्तु–तनकर; अटर्त्तु–युद्ध करके; ऍतिर्न्तवर्–सामना जिन्होंने किया, वे सब; वीरन् वाळियाल्–वीर (श्रीराम) के शरों द्वारा; मुटैत्त–दुर्गन्धपूर्ण; कुरुतियिन्–रक्त के; कटलिन्–समुद्र में; मूळ्कितार्–डूब (मिट) गये। ४६४

सब मर-मिट गये। केवल वे चौदह सेनापति, उनके रथ और उनके पास रहे हथियार —ये ही बचे। अन्य सभी, जो दम्भ के साथ श्रीराम के सामने लड़ने आये थे, श्रीराम के बाणों से आहत हुए और दुर्गन्धपूर्ण रक्त-सागर में डूबकर मर गये। ४६४

शुट्रुट्र नोक्कितर् तॊडर्न्द शेतैयिल्, अट्रिल तलैयॆन्नु माक्कै कण्डिलर्
तॆट्रित ऱॆयिरुह डिरुहि नार्शिन, मुट्रित रिरामतै मुडुहु तेरितार् 465

चुट्रु उट्र नोक्कितर्–सिर घुमाकर देखा; तॊटर्न्त चेतैयिल्–अनुगामिनी सेना में; तलै अट्रिल ऍन्नुम्–सिर न कटे ऐसा कहने योग्य; आक्कै कण्टिलर्–शरीर नहीं देखे; चितम् तिरुकितार्–क्रोध से ऐंठे; ऍयिरुकळ् तॆट्रितर्–दाँत चबाये; मुटुकु तेरितार्–तेजी से चलाये जानेवाले रथों के होकर; इरामतै मुट्रितर्–श्रीराम को घेर लिया (चौदहों सेनापतियों ने)। ४६५

सेनापतियों ने सिर घुमाकर चारों ओर देखा। अपनी सेना के किसी वीर को नहीं देख सके, जिसके शरीर का सिर कटा नहीं हो! उनके कोप का पारा चढ़ गया। दाँत पीसे। और रथ को सवेग चलाते हुए उन्होंने श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया। ४६५

एळिरु तेरुम्वन् दिमैप्पिन् मुन्बिडैच्, चूळ्वन कणैहळिऱ् ऱुणिय नूरितान्
आळियु माणियुम् माळु मट्रवै, ऊळिवॆङ् गालॆरि योङ्ग लॊत्तवे 466

वन्तु इटै चूळ्वन–पास आकर घेरनेवाले; एळ् इरु तेरुम्–(सात के दो) चौदहों रथों को; इमैप्पिन् मुन्–पलक मारने के अन्दर; कणैकळिल्–अपने बाणों से; तुणिय नूरितात्–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न कर दिया; आळियुम् आणियुम् आळुम्–चक्रों, धुर और सारथी से; अट्रु–हीन होकर; अवै–वे; ऊळि वॆम् काल् ऍरि–भयंकर युगान्तकालीन झंझा द्वारा प्रताड़ित; ओङ्कल् ऒत्तत–पर्वत-समान नष्ट हुए। ४६६

पल भर में श्रीराम ने उनके चौदहों रथों को अपने बाणों से तोड़कर चूर-चूर कर दिया। पहिये और धुर ही नहीं, सारथी भी नहीं बचे। युगान्त के झंझे से जर्जर हुए पर्वतों के समान वे रथ (नष्ट) हो गये। ४६६

अऴिन्दऩ	तेरव	रवऩि	कोण्डुह
इऴिन्दऩर्	वरिशिलै	यॅडुत्त	कैयिऩर्
ऒऴिन्दिलर्	शरङ्गळै	युरुमि	ऩेरॅऩप्
पॊऴिन्दऩर्	पॊऴिहऩल्	पॊडिक्कुङ्	गण्णिऩार् 467

तेर् अऴिन्तऩ अवर्—रथ-नष्ट हुए वे; अवऩि कीण्टु उक—भूमि में दरार बनाते हुए (उतनी उग्रता से); इऴिन्तऩर्—उतरे; वरि चिलै ॲटुत्त कैयिऩर्—बन्धनयुक्त धनु हाथ में लेकर; मिकु कऩल् पॊटिक्कुम् कण्णिऩार्—अधिक अंगार निकालनेवाली आँखों के साथ; चरङ्कळै—शरों को; ऒऴिन्तिलर् पॊऴिन्तऩर्—निरन्तर चलाये। ४६७

रथों को नष्ट-भ्रष्ट पाकर वे सेनापति जल्दी-जल्दी रथों पर से ऐसे कूदे कि भूमि पर दरार पड़ गयी ! धनुर्धर उन्होंने आँखों से अंगार उगलते हुए श्रीराम पर निरन्तर बाणवर्षा की। ४६७

नूऱिय	शरमॅला	नुरुङ्ग	वाळियाल्
ईरुशॅय्	दवर्शिलै	येऴॊ	डेऴैयुम्
आऱिऩॊ	डारुमो	रिरण्डु	मम्बिऩाल्
कूरुशॅय्	दमर्त्तॊऴिऱ्	कॊडिप्पै	नीक्किऩाऩ् 468

चरम् ॲलाम्—सभी बाण; नूऱिय नुरुङ्क—मिटकर चूर हुए; वाळियाल् ईऱु चॅय्तु—ऐसा अपने बाणों द्वारा मिटाकर; अवर् चिलै एऴॊटु एऴैयुम्—उनके चौदहों चापों को; आऱिऩ् ऒटु आऱुम् ओर् इरण्टुम्—छः छः और दो (= चौदह); अम्पिऩाल्—बाणों से; कूऱु चॅय्तु—खण्ड-खण्ड करके; अमर् तॊऴिल् कॊटिप्पै—उनके युद्ध-कर्म की भयंकरता को; नीक्किऩाऩ्—दूर किया (श्रीराम ने)। ४६८

श्रीराम ने न केवल उन बाणों को नहीं मिटाया बल्कि उनके चौदहों चापों के भी चौदह बाण चलाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन वीरों के युद्धोत्साह को और युद्ध की भयंकरता को दूर कर दिया। ४६८

विल्लिऴन्	दऩैवरुम्	वॅहुळि	मीक्कॊळक्
कल्लुयर्	नॅडुवरै	कडिदि	ऩॅन्दिऩार्
ऒल्लैयि	ऩुरुत्तुयर्	विशुम्बि	ऩोङ्गिनिऩ्
ऱॅल्लैयिल्	पॊऱियुह	वॅऱिदऩ्	मेयिऩार् 469

अऩैवरुम्—वे सब; विल् इऴन्तु—चाप खोकर; वॅकुळि मी कॊळ—क्रोध के उमड़ने से; कल् उयर् नॅटु वरै—पत्थर के बड़े पर्वतों को; कटितिऩ् एन्तिऩार्—वेग के साथ उठाकर; ऒल्लैयिऩ्—जल्दी; उरुत्तु—कोप करके; उयर् विचुम्पिऩ् ओङ्कि निऩ्ऱु—आकाश में ऊपर स्थित होकर; ॲल्लैयिल् पॊऱि उक—अगणित अंगार छितराते हुए; ॲऱितल् मेयिऩार्—फेंकने लगे। ४६९

उन सेनापतियों को धनुष-विहीन होने से अपार क्रोध हुआ। वे पत्थर के बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर ऊपर आकाश में खड़े होकर श्रीराम पर फेंकने लगे। उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनसे अंगार निकले और फैले। ४६९

कलैह्ळिन् परुङ्गडल् कडन्द विल्लिनान्
इलैहॉळ्वॅम् बहळिये ळिरण्डु वाङ्गिनान्
कॉलैहॉळ्वॅञ् जिलैयॊडु पुरुवङ् गोट्टिनान्
मलैहळुन् दलैहळुम् विळुन्द मण्णिले 470

कलैकळिन् पॅरुम् कटल्-(६४) कलाओं के बड़े सागरों को; कटन्त-जिन्होंने पार किया था (निपुण); विल्लितान्-उन कोदण्डपाणी ने; इलै कॉळ्-पत्र-सम फल वाले; वॅम् पकळि-भयंकर अस्त्र; एळ् इरण्टु-सात के दो; वाङ्कितान्-लेकर; कॉलै कॉळ वॅम् चिलै ओटु-मारक धनुष और; पुरुवम्-भौंहों को; कोट्टितान्-झुकाया (कुंचित किया); मलैकळुम् तलैकळुम्-पर्वत और सिर; मण्णिले विळुन्त-भूमि पर गिर गये। ४७०

श्रीराम चौंसठ कलाओं के पारंगत धनुर्धर थे। उन्होंने चौदह पत्राकार सिर वाले बाण लिये। उन भयंकर बाणों को मारक धनु पर रखा। धनु को झुकाया जब उनकी भौंहें भी झुकीं! उसके फलस्वरूप पर्वत और सेनापतियों के सिर एक साथ भूमि पर गिर गये। ४७०

पडैत्तलै वीरर्हळ् पडलुम् बल्पडै
पुडैत्तडर्त् तार्त्तॅरि पुहैयुङ् गण्णिनार्
किडैत्तन ररक्कर्हळ् कीळु मेलुमॊय्त्
तडैत्तनर् तिशैहळै यमर रञ्जिनार् 471

पटै तलै वीरर्कळ्-सेनापति वीरों के; पटलुम्-हत हो जाने पर; अरक्कर्कळ्-(बचे रहे) राक्षस; पल् पटै पुटैत्तु-अनेक हथियारों से प्रहार करके; आर्त्तु-नारे लगाकर; ॲरि पुकैयुम् कण्णितार्-आग और धुएँ सहित आँखों के साथ; किटैत्ततर्-(श्रीराम के) समीप आकर; तिचैकळै-चारों दिशाओं में; कीळुम् मेलुम् मॊय्त्तु-नीचे और ऊपर भीड़ लगाकर; अटैत्ततर्-भर गए; अमरर् अञ्चितार्-देव डरे। ४७१

सेनापति वीर हत हो गये तो अन्य बचे हुए राक्षस क्रोध करके श्रीराम के समीप पिल पड़े और सभी दिशाओं में सर्वत्र भर गये। उनकी आँखों से आग और धुआँ-सा निकल रहा था। वे विविध प्रकार के अनेक हथियार चलाने लगे। उनकी संख्या, उनका क्रोध और युद्ध देखकर देव भी डर गये। ४७१

मुळङ्गिन पॅरुम्बणै मूरि माल्हरि
मुळङ्गिन वरिशिलै मुडुहु नाणॊलि

मुऴङ्गिऩ शङ्गोलि पुरवि मोय्त्तुर
मुऴङ्गिऩ वरक्करदम् मुहिलि ऩार्प्परो 472

पॅरुम् पणै—बड़े-बड़े मारू ढोल; मूरि माल् करि—बड़े और बलवान करी; मुऴङ्किऩ—नाद कर उठे; वरि चिलै—बन्धनयुक्त धनुओं की; मुट्कु नाण् ऑलि—कठोर प्रत्यंचा की टंकार; मुऴङ्किऩ—उठी; चङ्कु ऑलि—शंखनाद मुऴङ्किऩ—हुए; पुरवि मोय्त्तु उऱ—अश्व ठस मिलकर आये; अरक्कर् तम् मुकिलिऩ् आर्प्पु—राक्षसों का मेघगर्जन; मुऴङ्किऩ—उच्च स्वर में उठा। ४७२

बड़े ढोलों का नाद, गजों की चिंघाड़, भयंकर बलवान चापों की टंकार, शंखध्वनि आदि तुमुल नाद उठा। अश्व ठस जुट आये और राक्षसों का मेघ-सा गर्जन उच्च रहा। ४७२

वॅम्बडै निरुदर् वीश विण्णिडै मिडैन्द वीरऩ्
अम्बिडै यरुक्कच् चिऩ्दि यऱ्ऱऩ विऴुमॆऩ् ऱञ्जि
उम्बरु मिरियल् पोऩा रुलहॅला मुलैन्दु शाय्न्द
कम्बमि ऱिशैयि निऩ्ऱ कळिऱुकण् णिमैत्त वऩ्ऱे 473

निरुतर्—राक्षसों के; वीच—फेंकने से; वॅम् पटै—(वे) भयंकर हथियार; विण् इटै मिटैन्त—जो आकाश में घने रूप से भरे; वीरऩ्—वीर श्रीराम के; अम्पु इटै अरुक्क—शरों के मध्य घुसकर काटने से; चिन्ति अऱ्ऱऩ—छितरकर बेकार हुए; विऴुम्—वे गिरेंगे; ऍऩ्ऱु अञ्चि—ऐसा डरकर; उम्पुरुम्—देव; इरियल्—अलग; पोऩार्—हट गये; उलकु ऍलाम्—सारे लोक; उलैन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; चाय्न्त—अस्थिर हुए; कम्पम् इल्—अचल; तिचैयिल् निऩ्ऱ—दिशाओं में खड़े रहे; कळिऱुम्—गजों ने भी; कण् इमैत्त—आँखें मूंद लीं। ४७३

राक्षसों ने जो भयंकर हथियार फेंके, वे आकाश में घने रूप से भरे आये। पर वीर श्रीराम ने उनको बीच में ही खण्डित कर बेकार करा दिया। 'वे बेकार खण्ड हम पर गिरेंगे' —इस डर से देव भी हटकर भाग गये। सारे लोकों के वासी भी अस्तव्यस्त होकर शिथिल पड़ गये। अचल रहनेवाले दिग्गजों ने भी डर से अपनी आँखें मूंद लीं। ४७३

❀ अत्तलैत् तानैयऩ् ऩळवि लाऱ्ऱलऩ्
मुत्तलैक् कुरिशिल्बॊऩ् मुडियऩ् मुक्कणाऩ्
कैत्तलैच् चूलमे यनैय काट्चियाऩ्
वैत्तलैप् पहळियाऩ् मऴैशॅय् विल्लिऩाऩ् 474

अ तलै—तब; अळविल् तानैयऩ्—अपार सेना वाले; आऱ्ऱलऩ्—शक्तिमान; पॊऩ् मुटियऩ्—स्वर्णकिरीटधारी; मुत्तलै कुरिचिल्—तीन सिरों का राजा त्रिशिरा; मुक्कणाऩ्—त्रिनेत्र (शिवजी) के; कै तलै—हाथ में रहनेवाले; चूलमे अनैय—त्रिशूल की ही तरह; काट्चियाऩ्—दृश्यमान; वै तलै पकळियाऩ्—तीक्ष्ण सिर (फल) वाले बाणों का रखनेवाला; मऴै चॅय्—(शर-) वर्षक; विल्लिऩाऩ्—धनुर्धर। ४७४

तव त्रिशिरा अपनी सेना के साथ बढ़ आया। कैसा था वह? अपार सेना का स्वामी, अगाध शक्ति का नाथ; स्वर्णकिरीट-धारी और तीन सिरों वाला था वह। वह त्रिनेत्र शिवजी के हाथ के त्रिशूल के समान दृश्यमान था। उसके पास तीक्ष्णमुखी भयंकर शर थे। उसका शरासन भयंकर रूप से शरवर्षक था। ४७४

अऩ्ऩव ऩडुवुऱ् वूऴि याऴियी
दॆऩ्ऩवन् दॆङ्गणु मिरैत्त शेऩैयुळ्
तऩ्ऩिहर् वीरऩुन् दमियन् विल्लिऩऩ्
तुऩ्ऩिरु ळिडैयदोर् विळक्किऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 475

अऩ्ऩवऩ्–वह; नडुवु उऱ्–मध्य में रहा; ऊऴि आऴि–युगान्त समुद्र; ईतु अॆऩ्ऩ–यह है, ऐसा; वनु–आकर; ऍङ्कणुम् इरैत्त–सब जगह शोर के साथ आ गई; चेऩै उळ्–उस सेना के अन्दर; तऩ् निकर् वीरऩुम्–स्वोपम वीर भी; तमियन् विल्लिऩऩ्–अकेले, धनु के साथ; तुऩ् इरुळ् इडै–घने अन्धकार के मध्य; ओर् विळक्किल्–एक दीप के समान; तोऩ्ऱिऩाऩ्–शोभित रहे। ४७५

उसको मध्य में रखते हुए उसकी अपार सेना युगान्तकालीन समुद्र के समान उमड़ी आयी। सब स्थानों पर उसका विस्तार था। उस सेना के मध्य श्रीराम, जिनकी तुलना का वीर और कोई नहीं था, हाथ में धनुष लिये अकेले स्थित थे। वे घने अंधकार के मध्य रहनेवाले दीप के समान शोभे। ४७५

ओङ्गिय वाऴिऩ ऩुरुमि ऩार्प्पिऩऩ्
वीङ्गिय वेहत्तऩ् वॆय्य कण्णिऩऩ्
आङ्गव ऩणिक्कॆदि रणिह ळाहनेर्
ताङ्गिऩ ऩिरामनुञ् जरत्तिन् ऱाऩैयाल् 476

ओङ्किय वाऴिऩऩ्–उठाई हुई तलवार वाले; उरुमिऩ् आर्प्पिऩऩ्–वज्रनिनादी; वीङ्किय वेकत्तऩ्–बहुत वेगवान; वॆय्य कण्णिऩऩ्–भयंकर आँखों वाला; आङ्कु अवऩ्–वहाँ (जो आया) उस (त्रिशिरा) की; अणिक्कु–सेना भागों के; नेर्–सामने; अणिकळ् आक–सेनाओं के रूप में; चरत्तिन् ताऩैयाल्–शरों की सेनाओं (पंक्तियों) से; नेर् ताङ्किऩऩ्–श्रीराम ने सामना किया। ४७६

त्रिशिरा तलवार उठाये हुए तुमुल नाद के साथ नारे लगाते हुए आया। वह बड़ा वेगवान था। उसकी आँखें क्रूर और भयंकर थीं। उसकी सेना के सामने श्रीराम खड़े रहे। श्रीराम ने उसकी सेना के भागों के सामने अपने शरों की पंक्तियों को ही पलटनों के रूप में स्थापित किया और युद्ध किया। ४७६

ताळिडै यऱ्ऱऩ तलैयु मऱ्ऱऩ, तोळिडै यऱ्ऱऩ तॊडैह ळऱ्ऱऩ
वाळिडै यऱ्ऱऩ मऴुवु मऱ्ऱऩ, कोळिडै यऱ्ऱऩ कुडैह ळऱ्ऱऩ 477

ताळ् इटै अऱ्ऱऩ–(राक्षसों के) पैर बीच से कटे; तलैयुम् अऱ्ऱऩ–सिर अलग हुए; तोळ् इटै अऱ्ऱऩ–भुजाएँ बीच से कटीं; तॊटैकळ् अऱ्ऱऩ–ऊरु कटे; वाळ् इटै अऱ्ऱऩ–तलवारें नष्ट हुईं; मऴुवुम् अऱ्ऱऩ–परशु भी मिटे; कोळ् इटै अऱ्ऱऩ–उनका बल भी मध्य में बेकार हुआ; कुटैयुम् अऱ्ऱऩ–छत्र भी छिन्न हुए। ४७७

राक्षसों का क्या हाल हुआ ? पैर कटे, सिर लुढ़के, हाथ कटे और ऊरु खण्डित हुए। तलवारें कटीं, परशु मिटे और छत्र नष्ट हुए। राक्षसों का बल भी बेकार हुआ। ४७७

कॊडियॊडु कॊडिञ्जिऱप् पुरविक् कूट्टऱप्
पडियॊडु पडिन्दऩ परुदित् तेर्प्पणै
नॆडियवॆङ् गडहरि पुरण्ड नॆऱ्ऱिवीऴ्
इडियॊडु मिडिन्दुवीऴ् शिहर मॆऩ्ऩवे 478

परुति तेर् पणै–चक्रव्यूह में रहे रथों के समूह; कॊटि ओटु–ध्वजाओं के साथ; कॊटिञ्च–'कॊडिञ्जु' (रथी के स्थान के सामने रहनेवाला कमल के आकार का वह अवलम्ब, जिस पर हाथ रखकर आराम लिया जाता है); इऱ–टूटे, इसलिए; पुरवि कूट्टु अऱ–अश्व अलग हुए और मिटे, इसलिए; पटि ओटु पटिन्तऩ–भूमि पर गिरकर नष्ट हुए; नॆऱ्ऱि वीऴ्–अपने ऊपर गिरे; इटि ओटु–वज्र के साथ; इटिन्तु वीऴ्–टूटकर गिरनेवाले; चिकरम् ऎऩ्ऩवे–पर्वतशिखरों के समान; नॆटिय वॆम् कट करि–बड़े, भयंकर और मत्त गज; पुरण्ट–लोट गये। ४७८

चक्रव्यूह में रथ थे। उनकी ध्वजाएँ कटीं। उनके अन्दर रहने वाले कमलाकार अवलम्ब (जिनका रथी अपनी थकन मिटाने के लिए सहारा लिया करते हैं) खण्ड हुए। अश्व भी मरकर अलग हो गये। फलस्वरूप रथ ही भूमि पर सिर के बल गिरे और टूट गये। बड़े-बड़े भयंकर मत्तगज भी वज्राहत पर्वत-शिखरों के समान, जो वज्र के साथ ही नीचे गिरते हैं, नीचे गिरकर लुढ़क गये। ४७८

अऱ्ऱऩ शिरमॆऩ वऱिद ऱॆऱ्ऱलर्
कॊऱ्ऱवॆञ् जिलैच्चरङ् गोत्तु वाङ्गुवार्
इऱ्ऱिल ताळॆऩ वॆऴुन्दु विण्णिऩैप्
पऱ्ऱिऩर् मऴैयॆऩप् पडैव ऴङ्गुवार् 479

चिरम् अऱ्ऱऩ ऎऩ–सिर कट गये, यह बात; अऱितल् तॆऱ्ऱलर्–(जो) समझ न सके, वे; कॊऱ्ऱ वॆम् चिलै–बलवान भयंकर धनुषों में; चरम् कोत्तु वाङ्कुवार्–शर-संधान करते थे; ताळ् इऱ्ऱिल–पैरों को न कटा; ऎऩ–समझकर; ऎऴुन्तु विण्णिऩै पऱ्ऱिऩर्–उठकर आकाश में खड़े होकर; मऴै ऎऩ–वर्षा के समान; पटै वऴङ्कुवार्–हथियार फेंके (कुछ राक्षसों ने)। ४७९

राक्षसों की विचित्र शक्ति और श्रीराम के शरों की तीव्रगति की विशेषता देखिए। सिर कटकर गिर गये तो भी राक्षस धनुष पर शर-संधान कर रहे हैं, मानो उनको विदित ही नहीं हुआ हो कि उनके सिर कट गये। कुछ राक्षसों के पैर कट गए; पर वे बिना उसकी सुध लिये ही आकाश में उछल उठे और वहाँ से वर्षा के समान हथियार बरसा रहे हैं! । ४७९

केडहत् तडक्कैय किरियिन् ट्रोऱ्ऱत्त, आडहक् कवशत्त कवन्द माडुव
पाडहत् तरम्बैयर् मरुळप् पल्विद, नाडहत् तॉळिलन नान्द हत्तन 480

कवन्तम् आटुव—कबन्ध (सिर कटे रुण्ड) जो नाच रहे थे; केटक तट कैय—ढाल सहित विशाल हाथों वाले थे; किरियिन् तोऱ्ऱत्त—पर्वत-सम आकार के थे; आटक कवचत्त—हाटक-कवच वाले थे; नान्तकत्तन—तलवारधारी थे; पाटकत्तु अरम्पैयर्—पाटक (पैंजनी ?) पहनी हुई अप्सराओं को; मरुळ—विस्मित करते हुए; पल् वित—विविध अनेक; नाटक तॉळिलत्त—नृत्य-कर्म में लीन थे। ४८०

युद्धभूमि में कबन्ध ऐसे नाच रहे हैं कि पैंजनीविभूषित अप्सराएँ भी उनके विविध नाच देखकर विस्मय से हार मान लेती हैं! गिरि के समान उन कबन्धों के एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में तलवार है। वे हाटक-कवच-धारी हैं। ४८०

कवरिवॅण् कुडैयॅनु नुरैय कैम्मलैच्, चुवरित्त कवन्दमाळ् शुळिय तण्डुऱैप्
पवरिनप् पडुमणि कुविक्कुम् बण्णैय, उवरियैप् पुदुक्किन वुदिर वाऱ्ऱो 481

उतिर आऱु—रक्त-नदियाँ; कवरि वॅण् कुटै ॲनुम्—चँवर और छत्र रूपी; नुरैय—झागों वाली थीं; कैम् मलै चुवरित्त—गज रूपी तटों की; कवन्तम् आळ् चुळिय—कबन्ध जिनमें डूब जायँ, ऐसे आवर्त वाली; तण् तुऱै—शीतल घाटों की; पवर् इन—विविध प्रकार के समूहों के; पटु मणि—दिखनेवाले रत्न; कुविक्कुम्—जिनमें आकर ढेरों में पाये जाते हैं, उन; पण्णैय—समीपवर्ती खेतों वाली; उवरियै पुतुक्किन—समुद्र को नया रंग-रूप देनेवाली हैं। ४८१

राक्षसों के मृत-शरीरों से जो रक्त बहा, वह नदियाँ बन गया। उन नदियों में चामर और श्वेत छत्र झाग के स्थान में थे। गज तट बने। आवर्त ऐसे थे जिनमें कबन्ध डूब जाते थे। शीतल घाट थे। उस नदी द्वारा अनेक रत्न बहते आये, जो पास के खेतों में जा पड़े रहे। उन नदियों ने समुद्र को नया रंग-रूप दिला दिया। ४८१

चण्डवॅङ् गडुङ्गणै तडियत् ताञ्जिल
तिण्डिऱल् वळैयॅयिऱ् ऱरक्कर् तेवराय्
वण्डुळल् पुरिहुळल् मडन्दै मारॉडुम्
कण्डनर् तम्मुडैक् कवन्द नाडहम् 482

चण्ट वॆम् कटुम् कणै–प्रचण्ड और अति कठोर (श्रीराम के) बाणों ने; ताम् तटिय–प्रहार कर हत किया, इसलिए; चिल–कुछ; तिण् तिऱल्–अति बली; वळै ऎयिऱु अरक्कर–वक्रदाँत वाले राक्षस; तेवराय्–देव बनकर; वण्टु उऴल्–भ्रमरावृत; पुरि कुऴल्–वेणी वाले केशों की; मटन्तैमार् ओटुम्–(देव-) स्त्रियों के साथ; तम् उटै कवन्त–अपने ही कबन्धों के; नाटकम्–नृत्य; कण्टनर्–देखकर आनन्दित हो रहे थे। ४८२

श्रीराम के शरों का यह गुण था कि उनसे आहत शत्रु वीर-स्वर्ग पहुँच जाया करते थे। यहाँ भी उनके प्रचण्ड बाणों से आहत वक्रदाँतों वाले राक्षस स्वर्ग के देव बन गये। वे वहाँ उन अप्सराओं के साथ, जिनकी वेणी वाले केश पर भ्रमर मँड़रा रहे थे, युद्धभूमि देखने लगे। अपने ही कबन्धों को नाचते देखकर उन्हें मजा आया। ४८२

आय्वळै महळिरो डमर रीट्टत्तर्, तूयवॆङ् गडुङ्गणै तुणित्त तङ्गडोळ्
पेयॊरु तलैहॊळप् पिणङ्गि वाय्विडा, नायॊरु तलैहॊळ नहैयुऱ् ऱार्शिलर् 483

आय् वळै मकळिरोटु–चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराओं के साथ; अमरर् ईट्टत्तार्–देवगण बने (जो थे, वे) राक्षस; तूय वॆम् कटुम् कणै–पवित्र और भयंकर (श्रीराम के) अस्त्रों से; तुणित्त–कटे; तङ्कळ् तोळ्–अपने कन्धों को; ऒरु तलै पेय् कॊळ–एक ओर प्रेत के खींचते; पिणङ्कि–उससे झगड़कर; वाय् विटा–अपने मुख से न जाने देते हुए; नाय्–कुत्ते को; ऒरु तलै कॊळ–दूसरी ओर छीनते; नकैयुऱ्ऱार्–देखकर हँस रहे थे। ४८३

चुने हुए कंकण-धारिणी अप्सराओं के साथ वे यह भी देख रहे थे कि श्रीराम के पवित्र और प्रचण्ड बाणों से कटे उनके हाथों को कुत्तों ने अपने मुख में ग्रस लिया है; और एक ओर प्रेत उनको छीनने का प्रयास करते हैं और उस ओर कुत्ते अपने मुख से छीनने न देते हुए खींच लेने के प्रयास में लगे हैं। यह देखकर उन्हें मनोरंजन हुआ। ४८३

तॆरिहणै मूऴ्हलिऱ् ऱिऱन्द मार्बिनर्
इरुविनै कडन्दुपो युम्ब रॆय्दिनार्
निरुदर्दम् बॆरुम्बडै नॆडिदु निन्ऱवन्
ऒरुवनॆन् ऱुळ्ळत्ति नुलैवुऱ् ऱार्शिलर् 484

तॆरि कणै–चुने हुए (श्रेष्ठ) शरों के; मूऴ्कलिल्–घुस जाने से; तिऱन्त मार्पिनर् चिलर्–विदीर्ण छाती वाले कुछ राक्षस; इरु विनै कटन्तु–दोनों कर्मों का निराकरण करके; पोय् उम्पर् ऎय्तिनार्–स्वर्ग जो जा पहुँचे थे; निरुतर् तम् पॆरुम् पटै–राक्षसों की सेना; नॆटितु–अतिविशाल है; निन्ऱवन्–(सामना करके) स्थित रहनेवाले; ऒरुवन्–एकाकी हैं; ऎन्ऱु–सोचकर; उळ्ळत्तिन् उलैवु उऱ्ऱार्–मन में चिंतित हुए। ४८४

श्रीराम के उत्तम बाणों के राक्षसों के शरीर के आर-पार होने से उनकी छातियाँ विदीर्ण हो गयीं। वे पाप-पुण्य दोनों कर्मों का निराकरण हो जाने से स्वर्ग पहुँच गये। वहीं से वे देखते हैं कि युद्धभूमि की स्थिति वड़ी विषम है। राक्षसों की सेना अत्यधिक विशाल है और उनके सम्मुख श्रीराम अकेले खड़े हैं। वे श्रीराम से सहानुभूति करके दुखी हुए। ४८४

कैक्कळि इनैयवन् पहळि कण्डहर्
मॅय्क्कुलम् वेरोडुन् दुडैत्तु वीळ्त्तिन
मैक्करु मनत्तोरु वञ्जन् माण्बिलन्
पॉय्क्करि कूरिय कॉडुञ्जॊर् पोलवे 485

मै करु मनत्तु—अंजन-सम काले मन के; ऑरु वञ्चन्—एक वंचक; माण्पु इलन्—गुण-हीन मनुष्य को; पॉय् करि—झूठी गवाही (देते हुए); कूरिय कॉटुम् चॉल्—जो कहा, उस घातक वचन; पोलवे—के समान; कै कळिरु अनैयवन्—सूंड़ वाला जानवर (गज) सम श्रीराम के; पकळि—शरों ने; कण्टकर्—लोककंटक; मॅय्कुलम्—राक्षसों के शरीरों की राशि को; वेर् ऑटुम्—समूल; तुटैत्तु वीळ्त्तिन—मार-मिटाया। ४८५

सूँड़ वाले जानवर करी के समान दर्शनीय श्रीराम के बाणों ने लोक-कंटक राक्षसों के शरीरों को समूल मिटा दिया। उनका क्षय होना ऐसा था जैसे अंजन के समान काले मन वाले, कपटी और नीच प्रकृति के आदमी के झूठी गवाही के वचन कहने पर उसका नाश हो जाता है। ४८५

अञ्जुदर् कुरुपहै यरुत्त नीदियर्
तञ्जॅनत् तन्मय माक्कुन् दन्मैपोल्
वञ्जहत् तरक्करै वळैत्तु वळ्ळराल्
शॅञ्जरत् तूय्मैयार् रेव राक्किनान् 486

वळ्ळल्—उदार प्रभु श्रीराम ने; अञ्चुतर्कु उरु—भयावह; पकै अरुत्त—अंतश्शत्रु के नाशक; नीतियर्—नीतिमान ज्ञानियों से; तञ्चु ॲन—शरण कहने पर; तन् मयम् आक्कुम् तन्मै पोल्—(ज्ञानी) अपने ही समान (शरणागतों को) बना लेते हैं, उसी प्रकार; वञ्चकत्तु अरक्करै—कपटी राक्षसों को; वळैत्तु—लपेट में लेकर; चॅम् चर तूय्मैयाल्—श्रेष्ठ शरों की पवित्रता द्वारा; तेवर् आक्कितान्—देव बना दिया। ४८६

सबको भयातुर करनेवाले कामादि दुर्गुण रूपी शत्रुओं को मिटाकर रहनेवाले ज्ञानियों के पास कोई जाकर यह कहे कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, तो वे उसे अपने समान बना लेते हैं। वैसे ही श्रीराम ने उन कपटी राक्षसों को अपने शरों के दायरे के अन्दर बलात लाकर उन्हें मारा और उन्हें देव बना दिया। ४८६

वलङ्गॊळ्पोर् मात्तिडन् वलिन्दु कॊन्ऱमै
अलङ्गल्वे लिरावणऱ् करिविप् पामॆन्च्
चलङ्गॊळ्पो ररक्कर्द मुरुक्क डाङ्गित्
इलङ्गैयि लुय्त्तदक् कुरुदि याऱ्ऱो 487

वलम् कॊळ्-बलशाली; पोर् मातिटन्-योद्धा, एक मनुष्य का; वलिन्तु कॊन्ऱमै-(अनेक राक्षसों को) बलात मारना; अलङ्कल्-मालाधारी; वेल्-भाला वाले; इरावणऱ्कु-रावण को; अऱिविप्पाम् ॲन्त-जाकर सुनायेंगे, सोचकर; कुरुति आऱु-रक्तनदी ने; चलम् कॊळ्-आवेग के साथ; पोर्-लड़नेवाले; अरक्कर् तम् उरुक्कळ्-राक्षसों के शरीरों को; ताङ्कित्त-बहा ले जाकर; इलङ्कैयिन्-लंका में; उय्त्ततु-पहुँचाया। ४८७

प्राण या जीव देव बन गये। पर राक्षसों के मृत शरीरों का क्या हुआ? रक्त की नदी उन्हें बहा ले गयी और वे लाशें लंका पहुँच गयीं। वे, मानो माला से भूषित और भालाधारी रावण को यह सन्देशा देने चलीं कि एक बलवान मनुष्य ने ही इन राक्षसों को बलात मारा था! । ४८७

शूऴ्न्दुयर् नॆडुम्बडै पहऴि शुऱ्ऱुऱप्
पोऴ्न्दुयिर् कुडित्तलिऱ् पुरळप् पॊङ्गितान्
ताऴ्न्दिलन् मुत्तलैत् तलैवन् शोरियिन्
आऴ्न्दते रम्बरत् तोट्टि यार्क्किन्ऱान् 488

चूऴ्न्तु उयर्-अपने को घेरकर बढ़ी; नॆटुम् पटै-विशाल सेना (के वीरों) के; पकऴि-श्रीराम के बाणों ने; चुऱ्ऱु उऱ-चारों ओर से; पोऴ्न्तु-चीरकर; उयिर् कुटित्तलिल्-प्राण हर लिये; पुरळ-वे लोट गये, इसलिए; मुत्तलै तलैवन्-त्रिशिरा नामक सेनापति; पॊङ्कितान्-उबल पड़ा; ताऴ्न्तिलन्-विलम्ब नहीं किया; चोरियिन् आऴ्न्त तेर्-रक्त में मग्न अपने रथ को; अम्परत्तु ओट्टि-अन्तरिक्ष में चलाते हुए; आर्क्किन्ऱान्-गरज उठा। ४८८

श्रीराम के बाणों ने उनको घेरे आये सभी राक्षसों को लपेटकर उनको मार दिया। वे सब लोट गये। त्रिशिरा नामक तीन सिर वाले राक्षस ने यह देखा और वह बौखला गया। बिना विलम्ब के उसने रक्त में मग्न रहे अपने रथ को ऊपर आकाश में चलाया। उसने भीषण गर्जन किया। ४८८

ऊन्ऱिय तेरित्त् तुरुमिन् वॆङ्गणै
वान्ऱॊडर् मऴैयॆन वाय्मै यावर्क्कुम्
शान्ऱन निन्ऱवत् तरुम मन्नवन्
तोन्ऱऱन् ऱिरुवुरु मऱैयत् तूविनान् 489

ऊन्ऱिय तेरित्तन्-सुस्थापित रथ वाले ने; उरुमिन्-वज्र के समान; वॆम् कणै-भयंकर अस्त्र; वान् तॊटर् मऴै ॲन्त-मेघ-वर्षित निरन्तर धारों के समान; वाय्मै

यावर्क्कुम्–सभी सत्यप्रिय लोगों के लिए; चान्ऱु अँत्त नित्ऱ्–दृष्टान्त के समान विद्यमान; तरुमम् अऩ्ऩवऩ्–धर्म-मूर्ति; तोऩ्ऱल् तऩ्–(दशरथ के) पुत्र श्रीराम के; तिरु उरु–श्रीशरीर को; मऱैय–आवृत करते हुए; तूवित्ताऩ्–बरसाये। ४८६

' अपने रथ को अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से खड़ा करके उसने वज्र के समान शरों को मेघ-वर्षा की धारों के समान निरन्तर चलाया। उन शरों में सत्यवादियों के दृष्टान्तस्वरूप और धर्मावतार दशरथ के पुत्र श्रीराम का दिव्य शरीर छिप गया। ४८९

❀ तूविय शरमॅलाऩ् दुणिय वॅङ्गणै
एविऩ् निरामऩु मेवि येऴिरु
पूवियल् वाळियार् पॉलङ्गॉी डेरऴित्
ताविवॅम् बाहऩै यऴित्तु माऱ्ऱिऩाऩ् 490

तूविय चरम् अँलाम्–वर्षित सभी अस्त्र; तुणिय–खण्डित करते हुए; इरामऩुम्–श्रीराम ने भी; वॅम् कणै एवितऩ्–भयंकर शर चलाये; एवि–चलाकर; एऴ् इरु–(और) चौदह; पू इयल् वाळियाल्–तीक्ष्ण शरों से; पॉलऩ् कॉळ् तेर्–स्वर्ण-निर्मित रथ को; अऴित्तु–नष्ट करके; वॅम् पाकऩै–पराक्रमी सारथी को; आवि अऴित्तु–जान से मारकर; माऱ्ऱिऩाऩ्–युद्ध की स्थिति में परिवर्तन पैदा कर लिया। ४६०

तब श्रीराम ने बाण चलाकर उन सभी तीरों को काट दिया। फिर उन्होंने चौदह अतितीक्ष्ण तीर चलाये और उसके रथ को ध्वस्त कर दिया और सारथी को भी मार दिया। तब युद्ध का रवैया ही बदल गया। ४९०

❀ अऩ्ऱियु मक्कणत् तमर रार्त्तॅऴप्
पॉऩ्ऱॅरि वडिम्बुडैप् पॉरुविल् वाळियाल्
वऩ्ऱॉऴिऱ् ऱीयवऩ् महुड मात्तलै
ऑऩ्ऱॉऴित् तिरण्डैयु मुरुट्टि ऩाऩरो 491

अऩ्ऱियुम्–उसके अलावा; अ कणत्तु–उसी क्षण में; अमरर् आर्त्तु अँऴ–देवों को हर्षरव करने देते हुए; पॉऩ् तॅरि–सुनहले; वटिम्पु उटै–किनारों वाले; पॉरुव् इल् वाळियाल्–अनुपम अस्त्रों से; वऩ् तॉऴिल् तीयवऩ्–नृशंसकारी क्रूर के; मकुटम् मा तलै–किरीटधारी (तीन) बड़े सिरों में; ऑऩ्ऱु ऑऴित्तु–एक को छोड़कर; इरण्टैयुम्–अन्य दोनों को; उरुट्टिऩाऩ्–लुढ़काया। ४६१

श्रीराम वहीं तक नहीं रुके। उसी क्षण उन्होंने अपने रुक्मपंख अस्त्र चलाकर उस नृशंस पापी के किरीटधारी बड़े सिरों में एक को छोड़कर बाकी दोनों को काट दिया। वे सिर भूमि पर गिरकर लोटने लगे। इसको देखकर देवगण सन्तोष का नाद कर उठे। ४९१

❀ तेरऴिन् दव्वऴित् तिरिशि रावॅनुम्
पेरऴिन् दन्ऩिनु मऱम्बि ऴैत्तिलन्
नारिऴिन् दुमिऴ्शिलै वान नाट्टुऴिक्
कारिऴिन् दालॅनक् कणैहळ् शिन्दिनान् 492

अ वऴि–उस स्थान में; तेर् अऴिन्तु–रथ खो गया; तिरिचिरा–त्रिशिरा; ॲनुम् पेर्–का नाम; अऴिन्तॅन्ऩिनुम्–मिट (निरर्थक हो) गया तो भी; मऱम् पिऴैत्तिलन्–वीरता से वंचित न होकर; चिलै–धनु से; नार् इऴिन्तु उमिऴ्–प्रत्यंचा द्वारा प्रेषित; कणैकळ्–शरों को; वान नाटु उऴि–आकाशलोक से; कार् इऴिन्ताल् ॲन–मेघ (पानी) गिरता हो जैसे; चिन्तिनान्–चलाया। ४९२

अब त्रिशिरा त्रिशिरा नहीं रहा। दो सिर खोकर उसने अपना नाम ही खो दिया। उसका रथ भी बेकार हो गया। तो भी उसने अपनी वीरता और साहस नहीं छोड़ा, पर अपने धनुष के डोरे खींचकर, व्योमनगर से मेघ-वर्षा गिरती हो, ऐसा अस्त्र निरन्तर छोड़े। ४९२

❀ एऱ्ऱिय नुदलिन निरुण्ड कार्मऴै
तोऱ्ऱिय विल्लॊडुन् दॊडर मीमिशैक्
काऱ्ऱिडै यऴित्तॅनक् कार्मु हत्तैयुम्
माऱ्ऱरुम् बहऴिया लऱुत्तु माऱ्ऱिनान् 493

एऱ्ऱिय नुतलिनन्–चढ़ी हुई भौंहों के भाल वाले (श्रीराम) ने; इरुण्ट कार्–काले मेघ ने; मऴै तोऱ्ऱिय–वर्षा कराई जैसे; विल् ओटुम्–अपने धनु से; तॊटर–शर चलाकर युद्ध किया; मी मिचै–आकाश में; काऱ्ऱु इटै अऴित्तु ॲन–वायु ने प्रवेश कर मिटा दिया जैसे; कार्मुकत्तैयुम्–त्रिशिरा के धनु को भी; माऱ्ऱु अरुम् पकऴियाल्–अलंघ्य बाणों से; अऱुत्तु माऱ्ऱिनान्–काटकर ध्वस्त कर दिया। ४९३

श्रीराम की भी त्योरियाँ चढ़ीं। उन्होंने भी काले मेघ के समान जो वर्षा कराता है, अपने धनुष के साथ युद्ध किया और अपने अमोघ और अवार्य अस्त्रों से त्रिशिरा के धनुष को काट दिया। धनु बिल्कुल नष्ट हो गया। ४९३

❀ विल्लि ऴन्दन नॅन्ऩिनुम् विळङ्गुवाण् मुहत्तिन्
ॲल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् वॅङ्गद मिडिक्कुम्
शॊल्लि ऴन्दिलन् ऱोळ्वलि यिऴन्दिलन् शौरियुम्
कल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् कऱङ्गॊन्त तिरिदल् 494

विल् इऴन्तनन् ॲन्ऩिनुम्–धनु गँवा दिया तो भी; विळङ्कु वाळ् मुकत्तिन्–शोभनेवाले उज्ज्वल चेहरे का; ॲल् इऴन्तिलन्–प्राकृतिक सौंदर्य न खोया; वॅम् कतम् इऴन्तिलन्–भयंकर क्रोध भी न गँवाया; इटिक्कुम् चॊल्–वज्र-सम बोली; इऴन्तिलन्–न गँवायी; तोळ् वलि–भुजबल; इऴन्तिलन्–न खोया; चौरियुम्

कल्–पत्थर बरसाना; इळन्तिलन्–न छोड़ा; करङ्कु अँन–वातचक्र के समान; तिरितल्–घूमना; इळन्तिलन्–न छोड़ा। ४६४

त्रिशिरा ने अब धनुष भी गँवा दिया। तो भी उसके उज्ज्वल मुख की प्रभा नहीं गयी। उसका क्रोध दूर नहीं हुआ और उसके वचन की वज्र की-सी कड़क और उग्रता भी नहीं गयी। उसका भुजबल भी नहीं गया और उसने पत्थर बरसाना नहीं छोड़ा। (पतंग या) वातचक्र के समान वह घूमता हुआ लड़ा। ४९४

❀ आळि रण्डुनू रुळवॅन्न वन्दरत् तौरुवन्
मूळि रुम्बॅरु मायैयिन् शॅरुमुयल् वान्नैत्
ताळि रणडॅयु मिरणडुवॅङ् गणैहळाङ् ऱडिन्दु
तोळि रणडॅयु मिरण्डुवॅञ् जरङ्गळाङ् ऱुणित्तान् 495

अन्तरत्तु–अन्तरिक्ष में; औरुवन्–एकाकी; मूळ् इरुम्–छानेवाली बड़ी; पॅरु मायैयिन्–विस्तृत माया से; आळ् इरण्टु नूरु उळ–योद्धा दो सौ हैं; अँन–ऐसा; चॅरु मुयल्वान्नै–युद्ध करनेवाले उसके; ताळ् इरण्टैयुम्–दोनों पैरों को; इरण्टु वॅम् कणैकळाल् तटिन्तु–दो घातक बाणों से काटकर; तोळ् इरण्टैयुम्–दोनों भुजाओं को; इरण्टु वॅम् चरङ्कळाल् दो भयंकर बाणों द्वारा; तुणित्तान्–काट लिया। ४६५

अन्तरिक्ष में एकाकी रहकर त्रिशिरा ऐसी माया के साथ लड़ा कि यह भ्रम हो जाता था कि दो सौ राक्षस एक साथ युद्ध कर रहे थे। अदम्य उत्साह के साथ वह युद्ध कर रहा था। श्रीराम ने दो-दो अस्त्र चलाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों को काटकर अलग कर दिया। ४९५

❀ अऱ्ऱ ताळॊडु तोळिनन् नयिलॅयि ऱिलङ्गप्
पॊऱ्ऱै मामुळैप् पुलालुडै वायिनिऱ् पुहुन्दु
पऱ्ऱ वादरिप् पान्ऱनै नोक्किनन् परियान्
कॊऱ्ऱ वाऱ्शरत् तौळिन्ददोर् शिरत्तैयुङ् गुऱैत्तान् 496

अऱ्ऱ ताळ् ऒटु तोळिनन्–पैरों और हाथों से हीन; अयिल् ऍयिऱु इलङ्क–तेज दाँतों को प्रकट करते हुए; पॊऱ्ऱै मा मुळै–पर्वत की बड़ी कन्दरा के समान; पुलाल् उटै वायितिल्–मांस की गन्ध निकालनेवाले मुख में; पुकुन्तु पऱ्ऱल्–जाकर ग्रसने का; आतरिप्पात तत्तै–प्रयत्न करनेवाले उसको; नोक्कितन्–(श्रीराम ने) देखकर; परियान्–कृपा न करके; कॊऱ्ऱ वार् चरत्तु–दृढ़ एक लम्बे बाण से; ऒळिन्तु ओर् चिरत्तैयुम्–बचे रहे एक सिर को भी; कुऱैत्तान्–काटकर अलग किया। ४६६

हाथ और पैर खोकर राक्षस ने अपने तीक्ष्ण दाँतों को निकालते हुए श्रीराम को अपने मांस-गन्ध-पूर्ण, बिलसदृश मुख से ग्रसने का उपक्रम किया। श्रीराम ने उसको देखा, दया नहीं की और एक लम्बा और बलवान अस्त्र चलाकर उसका बचा हुआ सिर भी धड़ से अलग कर दिया। ४९६

❀ तिरिशि	रावॅनुञ्	जिहरमण्	चेर्दलुञ्	जिदरि
निरुद	रोडिनॅर्	तूडणन्	विलक्कवु	निल्लार्
परुदि	वाळिनॅर्	केडहत्	तडक्कैयर्	परन्द
कुरुदि	नीरिडै	वार्हुळल्	कॉळुङ्गुडर्	तॉडक्क 497

तिरिचिरा ॲंतम् चिकरम्–त्रिशिरा रूपी शिखर; मण् चेर्तलुम्–धराशायी हुआ तो; परुति वाळितर्–सूर्यप्रभ तलवारधारी; केटक तट कैयर्–ढाल लिये बड़े हाथ वाले; नित्रूर निरुतर्–विद्यमान राक्षस; चितरि–अस्तव्यस्त होकर; तूटणन् विलक्कवुम्–दूषण के रोकने पर भी; निल्लार्–न रुके; परन्त–फैले रहे; कुरुति नीर् इटै–रक्त-प्रवाह के मध्य; कॉळुम् कुटर्–मोटी आँतों के; वार् कळल्–लम्बे पैरों से; तॉटक्क–उलझकर रोकते; ओटितर्–(उनको भी खींचते हुए) भागे। ४९७

त्रिशिरा रूपी शिखर (शिखर-सम नेता) मरकर भूमि पर गिर गया, तो अर्क-सम प्रकाशमान तलवारें और ढाल रखनेवाले विशाल हाथों के राक्षस भय से अस्तव्यस्त होकर भागे। दूषण ने रोकना चाहा तो भी वे नहीं रुके। सारी युद्धभूमि रक्त और कीच से भरी थी। वे उसी में घुसकर भागे। आँतों ने उनके पैरों से उलझकर बाधा डाली। तो भी लस्टम-पस्टम वे भागे ही। ४९७

कणत्तिन्	मेनिऩ्ऱ	वानवर्	कैबुडैत्	तार्प्पप्
पणत्तिन्	मेनिलङ्	गुलैवुऱक्	काल्हॉडु	पऱप्पार्
निणत्तिन्	मेल्विळुन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	निवन्द
पिणत्तिन्	मेल्विळुन्	दुरुण्डन	उयिर्हॉडु	पिळैप्पार् 498

मेल्–अन्तरिक्ष में; कणत्तिन् निऩ्ऱ–दलबद्ध स्थित; वानवर्–देवों ने; कै पुटैत्तु आर्प्प–तालियाँ पीटकर आनन्दरव किया; पणत्तिन मेल् निलम्–शेषनाग पर भूमि; कुलैवु उऱ–थर्रा उठी, तब; काल् कॉटु पऱप्पार्–पैरों के सहारे उड़नेवाले; चिलर्–(राक्षसों में) कुछ; निणत्तिन् मेल् विळुन्तु–मांस-पंक में गिरकर; अळुन्तितर–मग्न हुए; चिलर्–कुछ; निवन्त पिणत्तिन् मेल् विळुन्तु–ढेर बनी रही लाशों पर गिरकर; उरुण्टनर्–लुढ़के; उयिर् कॉटु पिळैप्पार्–किसी विध जान से बचे। ४९८

वे राक्षस ऐसे दौड़े, मानो उनके पैर ही पंख हों। उनको देखकर आकाश में देवगण तालियाँ पीटकर हँसे। शेषनाग पर धृत यह भूमि राक्षसों के पदाघातों से डोल उठी। उनमें कुछ रक्त-कीच में मग्न होकर डूब गये। कुछ ढेर बनी पड़ी रही लाशों पर टकराकर गिरे और किसी तरह बचकर भागे। ४९८

वेय्न्द	वाळॉडु	वेलिडै	मिडैन्दन	वॅट्ट
ओय्न्दु	ळार्शिल	रुलन्दन	रुदिरनीर्	याऱ्ऱिल्
पाय्न्दु	कालपदिन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	पयत्ताल्
नीन्दि	नार्नॅडुङ्	गुरुदियङ्	गडल्पुक्कु	निलैयार् 499

चिलर्–कुछ; इटै–बीच में; वेय्न्त–पड़ी रही; वाळ् ऒट्टु वेल्–तलवारों और भालों के; मिटैन्तन–जो सटे हुए थे; वॅट्ट–काटने से; ओय्न्तुळार्–(दौड़ नहीं सके) शिथिल हुए; उलन्तनर्–मरे; चिलर्–और कुछ; उतिर नीर् आऱ्ऱिल् पाय्न्तु—रक्त-नदी में गिरकर; काल् पतिन्तु–पैरों के गड़ जाने से; अळुन्तिनर्–डूब मरे; चिलर् पयत्ताल्–कुछ, डरते हुए; नीन्तिनार्–तैरे; कुरुति अम् कटल् पुक्कु—रक्त-सागर में पहुँचकर; निलैयार्–चंचल रहे। ४९९

राक्षसों के मार्ग में तलवारें, भाले आदि कसरत से पड़े थे। कुछ राक्षसों के पैर उनसे कट गये और वे राक्षस निर्बल होकर गिरे और मरे। कुछ रक्त-प्रवाह में घुसे और कीच में पैरों के गड़ जाने से मरे। कुछ भयातुर होकर उस रक्त-नदी में उतरे और बहते जाकर रक्त-सागर में पहुँचे। वहाँ वे डूब-उतराये। ४९९

❀ मण्डि योडिनर् शिलर्नॅडुङ् गडहरि वयिऱ्ऱिल्
पुण्डि ऱन्दमा मुळैयिडै वाळॊडुम् बुहुवार्
तॊण्डै नोङ्गिय कवन्दत्तैत् तुणैवनी यॆम्मैक्
कण्डि लेन्नप् पुहलॆन्नक् कैदलैक् कॊळ्वार् 500

मण्टि ओटिनर् चिलर्–तेज जो भागे, वे कुछ; नॅटुम् कट करि वयिऱ्ऱिल्–मत्तगजों के पेट में; पुण् तिऱन्त–व्रण जो खुले थे; मा मुळै इटै–उन बिलों में; वाळ् ऒटुम् पुकुवार्–तलवारों के साथ घुसे; तॊण्टै नीङ्किय–गले से (कटकर) हीन; कवन्तत्तै–कबन्ध को; तुणैव–मित्र; नी ऎम्मै कण्टिलेन्–तुम 'मुझे नहीं देखा'; ऎन्न–यह; पुकल् ऎन्न–(श्रीराम के बाणों से) कहो, ऐसा; कै तलै कॊळ्वार्–सिर पर हाथ (जोड़कर) रख लेते। ५००

कुछ राक्षस दौड़े। बचने का कोई स्थान नहीं मिला। वहाँ हाथी मरे पड़े थे, जिनके पेट बिलों के समान खुले थे। राक्षस अपनी तलवारों के साथ उन्हीं में घुस गये। कुछ राक्षस भागते जा रहे थे। उनको डर था कि श्रीराम के शर पीछा करके आ रहे हैं। उन्होंने कबन्धों को देखा और अंजलिबद्ध हाथ अपने सिरों पर रखते हुए उनसे प्रार्थना की कि तुम श्रीराम के बाणों से मत कहो कि तुमने हमें देखा था। ५००

❀ कच्चुम् वाळुन्दङ् गाऱॊडऱ्न् दीर्प्पन काणार्
अच्च मॆन्नबदोन् ऱुरुवुहॊण् डालॆन्न वळिवार्
उच्च वीरन्गैच् चुडुशर निरुदर्नॆञ् जुरुवित्
तच्चु निन्ऱन कण्डन रव्वळित् तविर्न्दार् 501

उच्च वीरन्–सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के; कै–हाथ के; चुट्टु चरम्–मारक बाण; निरुतर् नॆञ्चु उरुवि–राक्षसों की छाती में घुसकर; तच्चु निन्ऱन–गड़े रहे; कण्टनर्–उनको देखकर; अ वळि तविर्न्तार्–उस मार्ग को बचाकर; कच्चुम् वाळुम्–कमरबन्द और तलवार; तम् काल् तॊटर्न्तु ईर्प्पन–उनके पैरों को काटती

रहती है; काणार्–उसकी भी सुध न लेते हुए; अच्चम् ऍन्पतु ओर् उरुवु कॉण्टाल् ऍन्न–मानो भय नामक वस्तु ने रूप लिया हो, ऐसा; अऴिवार्–वहीं रहकर मरते। ५०१

कुछ वीरों ने देखा कि मार्ग में सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के हाथ के प्रेरित भयानक शर राक्षसों के वक्षों में घुसकर वहीं गड़े रहे। वे उस मार्ग से नहीं गये। वे इतने भयभीत हो गये कि उनके कमरबन्द और उनकी तलवारें उन्हें निरन्तर काट रही थीं—इसकी भी उन्होंने सुध नहीं ली। वे बिल्कुल भय के मूर्त आकार थे। वे जहाँ-तहाँ रहकर मरने लगे। ५०१

❀ अन्नैय राहिय वरक्करै याण्डॉऴिर् कमैन्द
विन्नैय नीङ्गिय मनित्तरै वॅरुवन्मि ऍन्ना
निन्नैयु यानॊन्ऱु निरप्पुव दुण्डॅन्न निन्ऱान्
तुन्नैयुम् वाम्बरित् तेरितन् रूडणन् शॊन्नान् 502

तूटणन्–दूषण; तुन्नैयुम्–तीव्रगामी; वाम् परि—अश्व-जुते; तेरितन्–रथ पर सवार; अन्नैयर् आकिय अरक्करै–वैसे भागते हुए राक्षसों को; आण् तॊऴिऱ्कु अमैन्त–पुरुष के कार्य योग्य; विन्नैयम् नीङ्किय–काम जिनके पास नहीं, उन; मनित्तरै–मानवों से; वॅरुवल्मिन्–मत डरो; ऍन्ना–कहकर; यान् निन्नैयुम् ऒन्ऱु–मैं सोचता हूँ एक बात; निरप्पुवतु उण्टु–जो कहती है; ऍन्न–ऐसा; निन्ऱान्–खड़ा होकर; चॊन्नान्–बोला। ५०२

तब दूषण नामक सेनापति ने, जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार था, भागनेवाले राक्षसों को रोकते हुए कहा कि हे वीरो! मत डरो, मत भागो। आखिर तुम्हारा शत्रु मनुष्य है। वह साहसपूर्ण वीरता युक्त (राक्षस) पुरुष का काम करने की शक्ति नहीं रखता। उससे मत डरो। फिर उसने वहीं खड़ा रहकर कहा कि मुझे तुमसे एक बात कहनी है। सुनो। ५०२

❀ वच्चै यामॅनुम् वयमनत् तुण्डॅन्न वाऴुम्
कॊच्चै मान्दरैक् कोल्वळै मकळिरुङ् गूशार्
निच्च यमॅनुङ् गवशत्ता निलैनिऱ्कु मन्ऱेल्
अच्च मॅन्नुमो दारुयिर्क् करुन्दुणै यामो 503

वच्चै आम् ऍनुम् पयम्–अपमान योग्य यह भय; मनत्तु उण्टु ऍन्न वाऴुम्–मन में रखते हुए जो जीते हैं; कॊच्चै मान्तरै–उन क्षुद्र मनुष्यों से; कोल् वळै मकळिरुम्–सुन्दर चूड़ियाँ जो पहनती हैं, वे स्त्रियाँ भी; कूचार्–नहीं शरमाती हैं (आदर नहीं करतीं); निच्चयम् ऍनुम्–धैर्य रूपी; कवचत्ताल्–कवच धारण करने से ही; निलै निऱ्कुम्–प्राण स्थायी रहेगा; अन्ऱेल्–नहीं तो; अच्चम् ऍन्नुम् अतु–भय का यह गुण; आर् उयिरुक्कु–प्यारे प्राणों के लिए; अरुम् तुणै आमो–श्रेष्ठ सहायक होगा क्या। ५०३

भय अपयश है। उसके साथ रहनेवाले हैं मानव लोग। उनको

देखकर सुन्दर कंकणधारिणी स्त्रियाँ भी नहीं डरतीं, उनसे नहीं शरमातीं। और भी एक बात है। वीरता के कवच के अन्दर ही प्राण सुरक्षित रह सकते हैं। अब जो भीरुता तुम दिखा रहे हो, क्या वह तुम्हारे प्राणों का रक्षण कर सकेगी ? । ५०३

❀ पूव रावुवेऱ् पुरन्दरऩ् ऱऩ्ऩोडु पॉऩ्ऱा
मूव रोडुदाऩ् मुऩ्ऩिऩ्ऱु मुट्टिय मुऩैयिल्
एव रोडिऩा रिराक्कदर् नुमक्किडैन् दोडुम्
देव रोडुहऱ् ऱरिऩ्दुळि रोमऩऩ् दिहैत्तीर् 504

पू अरावु वेल्–तीक्ष्ण किये हुए भाले वाले; पुरन्तरऩ् तऩ्ऩोटु–पुरन्दर के साथ और; पॉऩ्ऱा–अमर; मूवरोटु–त्रिदेवों के साथ; मुऩ् निऩ्ऱु मुट्टिय–सामने स्थित जो की; मुऩैयिल्–उस युद्धभूमि में; इराक्कतर् एवर् ओटिऩार्–राक्षस कौन भागे; मऩम् तिकैत्तीर्–यहाँ चित्त-भ्रमित हुए; नुमक्कु इटैन्तु–तुमसे (हारकर) त्रस्त होकर; ओटुम्–जो भागते हैं; तेवरोटु–उन देवों से; कऱ्ऱु अऱिन्तु उळिर् ओ–सीख ले गये हो क्या। ५०४

तीक्ष्ण भालाधारी पुरन्दर से और अमर रहनेवाले त्रिदेव से भी युद्ध हुआ था न ? उनके सामने डटकर जिन राक्षसों ने युद्ध किया, उनमें कौन थे जो मैदान छोड़कर भागे ? कोई नहीं ! अब क्यों विकलमन हुए हो ? क्या यह गुण तुमने उन देवों से सीख लिया है जो तुमको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं ? । ५०४

इङ्गॊर् माऩिडर् कित्तऩै वीरर्ह ळिडैन्दीर्
उङ्गै वाळॊडु पुहऴ्विऴ वूर्पुह वुवन्दीर्
कॊङ्गै मार्बिडैक् कुळिप्पुरक् कळिप्पुरु कॊऴुङ्गण्
नङ्गै मार्हळैप् पुल्लुदि रोनल नुहर्वीर् 505

इङ्कु ऒर् माऩिटर्कु–यहाँ एक मनुज के सामने; इत्तऩै वीरर्कळ्–इतने वीर; इटैन्तीर्–हार मान गये; उम् कै वाळ् ऒटु–अपने हाथ की तलवार के साथ; पुकऴ् विऴ–यश को नीचे डालते हुए; ऊर् पुक उवन्तीर्–गाँव जाना पसन्द किया; नलम् नुकर्वीर्–सुख-भोग चाहते हो; कळिप्पु उरु–मदमत्त; कॊऴुम् कण्–बड़ी आँखों की; नङ्कैमार्कळै–अपनी स्त्रियों को; कॊङ्कै–उनके स्तन; मार्पु इटै कुळिप्पु उऱ–तुम्हारे वक्षों में दबें, ऐसा; पुल्लुतिरो–गले से लगाओगे क्या। ५०५

अकेले एक मनुज के सामने इतने राक्षस हार मानकर भागते हो ! युद्धस्थल में तलवारों के साथ अपने यश को गिराकर अपने स्थान में जा प्रविष्ट होना चाहते हो ! क्या सुख-भोग की इच्छा हो गयी और तुम जाकर उन मत्त और विशाल आँखों की अपनी स्त्रियों को इतना कसकर गले लगाना चाहते हो कि उनके पुष्ट स्तन तुम्हारे वक्षों में दब जायँ ? । ५०५

❀ शॅम्बु काट्टिय कण्णिणै पालॅनत् तॅळिन्दीर्
वॅम्बु काट्टिडै नुळैदॊरुम् वॅरिनुरप् पायन्द
कॊम्बु काट्टुदि रोतड मार्बिडैक् कुळित्त
अम्बु काट्टुदि रोहुल मङ्गैयर्क् कम्मा 506

चॅम्पु काट्टिय–ताम्र (क्रोध से लाल) बनी; कण् इणै–आँखों के जोड़े; पाल् ऍत–दूध के समान; तॅळिन्तीर्–स्वच्छ हो गये, ऐसी आँखों के हो गये; कुल मङ्कैयर्क्कु–तुम्हारे कुल की स्त्रियों को; वॅम्पु काट्टु इटै–विकट जंगल में; नुळै तॊरुम्–घुसकर दौड़ते समय; वॅरिन्–पीठ में; उऱ पायन्त–चुभी रही; कॊम्पु काट्टुतिरो–डालियाँ दिखाओगे; तट मार्पु इटै कुळित्त–(या) विशाल वक्ष में घुसे; अम्पु काट्टुतिरो–बाणों को दिखाओगे। ५०६

तुम्हारी आँखों को लाल होना चाहिए ! पर अब वे श्वेत दिखती हैं—डर से, क्रोध छोड़ देने से ! जब तुम अपने-अपने आवास पर जाओगे तो अपनी पत्नियों को क्या दिखाओगे, अपनी वीरता के चिह्नों के रूप में ? उन टहनियों और शाखाओं को दिखाओगे जो घने वन के मध्य से भागते समय तुम्हारी पीठ में चुभ जायँगे ? या अपने वक्षमध्य घुसे शर को? । ५०६

एक्क मिङ्गिदन् मेलुमुण् डोविहन् मनिदर्
काक्कुम् वॅञ्जमत् ताण्मैयव् वमरर्क्कु मरिदाल्
ताक्क रुम्बुयत् तुङ्गुलत् तलैमहन् रङ्गै
मूक्कॊ डन्ऱिनुम् मुदुहॊडुम् बॊम्बळि मुयन्ऱीर् 507

इकल् मनितर्कु आक्कुम्—शत्रु-मनुष्य से जो किया जाता है; वॅम् चमत्तु–उस भीषण युद्ध में; आण्मै–(तुम्हारा) पौरुष; अ अमरर्क्कुम्–उन अमरों के लिए भी; अरितु–दुर्लभ है; इङ्कु एक्कम् इतन् मेल् उण्टो–यहाँ हमारा सन्ताप इससे बढ़कर हो सकता है क्या; ताक्कु अरुम्–जिन पर प्रहार करना कठिन है, ऐसी; पुयत्तु–भुजाओं के स्वामी; उम् कुल तलैमकन्–तुम्हारे कुल के उच्च नायक; तङ्कै–(रावण की) छोटी बहिन की; मूक्कु ओटु अन्ऱि–नाक के साथ ही नहीं बल्कि; नुम् मुतुकु ओटुम्–तुम्हारी पीठ के साथ भी; पोम् पळि–लगनेवाला अपयश; मुयन्ऱीर्–हो, इसका उपक्रम किया है तुमने। ५०७

आखिर शत्रु मनुज के साथ जो हो रहा, इस युद्ध में तुम ऐसा पौरुष (पौरुष-हीनता) दिखा रहे हो ! यह देवों के लिए भी दुर्लभ है। हन्त ! इससे अधिक दुखदायिनी बात क्या होगी ? तुम कैसा कार्य कर रहे हो, उसका अर्थ क्या होगा ? —मालुम है ? तुम्हारे कुलनायक, जो अलंघ्य भुजाबल रखते हैं, उन रावण की बहिन की नाक ही नहीं कटी, बल्कि तुम्हारी पीठ पर अपयश लगेगा ! यही प्रयत्न तुम कर रहे हो। ५०७

❀ आर वाळ्क्कैयिन् वणिहरा यमैदिरो वयिल्वेल्
वीर वाट्कॊळ्ळु वॅन्नमडुत् तुळुदिरो वॅरिप्पोरुत्

तीर वाळ्क्कैयिऱ् ऱेवरैच् चॅरुविडैप् पऱित्त
वीर वाट्कैयी रॅङ्ङनम् वाऴ्दिरो विळम्बीर् 508

वॅरि पोर्-उन्मत्तकारी युद्ध में; तीर वाळ्क्कैयिल्-साहसपूर्ण जीवन के कारण; तेवरै चॅरु इटै परित्त-देवों से युद्ध में छीनी हुई; वीर वाळ्-वीरता की तलवारें; कैयीर्-जिनमें हैं, ऐसे हाथों के राक्षसो; वाळक्कैयित् वणिकराय्-जीवन में व्यापारी; आर-बनकर; अमैतिरो-रहोगे क्या; अयिल् वेल्-तीक्ष्ण भाले; वीर वाळ्-वीरता की सहायक तलवारें; कॉळु अॅत्त मट्टुत्तु-हल की फाल बनाकर भूमि में खोदकर; उऴुतिरो-जोतनेवाले हो; अॅङ्ङनम् वाऴ्तिरो-कैसे जीवन बिताओगे; विळम्पीर्-कहो। ५०८

उन्मत्तकारी युद्ध में अपूर्व धैर्य दिखाते हुए तुमने देवों के हाथों से उनकी तलवारें छीन ली थीं। ऐसी तलवारों के धारक! अब जीवन वणिकों का बिताने का विचार किया है? या तीक्ष्ण भालों और प्रतापी तलवारों को हल का फाल बनाकर भूमि की खेती करोगे और कृषक बनोगे? बताओ तो सही। ५०८

❀ अॅन्ऱु तानुन्द नॅरिहडऱ् चेनैयु मिऱैनीर्
निन्ऱु काण्डिरॅन् नॅडुञ्जिलै वलियॅन नेराच्
चॅन्ऱु ताक्कितन् ऱेवरु मरुळ्हॉण्डु तिहैत्तार्
नन्ऱु कात्तियॅन् ऱिरामनु मॅदिर् शॅल नडन्दान् 509

अॅन्ऱु-ऐसा कहकर; नीर्-तुम लोग; इऱै-कुछ देर; निन्ऱु-खड़े होकर; अॅन् नॅट्टम् चिलै-मेरे लम्बे धनुष का; वलि-पराक्रम; काण्टिर्-देखो; अॅन-समझाकर; तानुम्-स्वयं और; तन् अॅरि कटल् चेनैयुम्-उसकी तरंगाकुल समुद्र-सम सेना ने; नेरा चॅन्ऱु ताक्कितन्-श्रीराम के सामने जाकर उन पर आक्रमण किया; तेवरुम् मरुळ् कॉण्टु-देव भी चकराकर; तिकैत्तार्-भ्रमित हुए; इरामनुम्-श्रीराम ने भी; नन्ऱु कात्ति अॅन्ऱु-अच्छा सावधान, बचा लो कहकर; अॅतिर् चॅल-उसके सामने; नटन्तान्-चलते आये। ५०९

दूषण ने यह वचन कहा। आगे यह बोला कि तुम मत भागो। ज़रा देर खड़े रहो और मेरे धनुष का अतुल प्रताप देखो। फिर वह आगे गया और उसकी सेना भी साथ गयी। उन्होंने जाकर श्रीराम पर आक्रमण किया। देवों को भी भय हो गया कि यह राक्षस वीर अनर्थ कर देगा। तब श्रीराम भी यह कहते हुए सामने आये कि ठहरो, अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाओ। सावधानी से अपनी रक्षा कर लो। ५०९

ऊड रुप्पुण्ड मॉय्बडैक् कैयॉडु मुयर्न्द
कोड रुप्पुण्ड कुञ्जरङ् गॉडिञ्जॉडु कॉडियिन्
काड रुप्पुण्ड कालिय ऱेर्हदिर्च् चालि
शूड रुप्पुण्ड वॅन्नक्कळुत् तरुप्पुण्ड तुरहम् 510

मॉय् पटै–सबल हथियार; ऊटु अरुप्पुण्ट–बीच में कटे; कुञ्चरम्–हाथी; कै ऑट्टुम्–सूँड़ों सहित; उयर्न्त–उभर आये; कोटु–दाँतों के; अरुप्पुण्ट–कटे हो गये; काल् इयल् तेर्–हवा के समान चलनेवाले रथ; कॉटिञ्चु ऑटु–पीठ के सामने के 'कॉडिञ्जु' नाम के हस्तावलम्ब के साथ; कॉटियिन् काटु–ध्वजाओं के वन के साथ; अरुप्पुण्ट–कटे हो गये; तुरकम्–अश्व; कतिर् चालि चूटु–शालि-पौधों की बालें; अरुप्पुण्ट अॅन–कट गई हों, ऐसे; कळुत्तु अरुप्पुण्ट—गर्दन-कटे हो गये। ५१०

उस युद्ध में बलवान हथियार कटे। हाथी की सूँड़ें और दाँत कटे और वे गिर गये। रथ ध्वस्त हुए। ध्वजाएँ और पीठ के सामने के भाग आदि कटे। अश्वों के सिर धान की बालियों के समान गले से काट दिये गये। ५१०

तुरुवि	योडिन	वुयिर्निलै	शुडुशरन्	दुरन्द
करुवि	योड्वन्	कच्चैयुङ्	गवशमुङ्	गळल
अरुवि	योडिन	वॅनविळि	कुरुदिया	ऱलैप्प
उरुवि	योडिन	केडहत्	तट्टॉडु	मुडलम् 511

चुटु चरम् तुरन्त–तापक शर (जो श्रीराम ने) छोड़े; उयिर् निलै–राक्षसों का मर्म स्थान; तुरुवि–ढूँढ़ते हुए; ओटिन–चले; करुवि ओटु–हथियारों के साथ; वन् कच्चैयुम्–दृढ़ बन्दों और; कवचमुम् कळल–कवचों को उतारते हुए; अरुवि ओटिन अॅन–नदियाँ बहती हों जैसे; इळि कुरुति आऱु–(राक्षसों के शरीरों से) निकलनेवाले रक्त की नदियाँ; अलैप्प–उनको इधर-उधर हिलाती ऐसा; केटक तट्टु ऑटुम्–ढालों के थालों के साथ; उटलम्–शरीरों को भी; उरुवि ओटिन–निफरकर चले। ५११

श्रीराम से प्रेरित सन्तापक वाण राक्षसों के मर्मस्थल की खोज में चले। उनके लगते ही राक्षसों के हथियार कमरबन्द और कवच आदि कटकर गिर गये। वे अस्त्र ढालों को भेदकर और राक्षसों के शरीरों के आर-पार हो गये। उनके शरीर से निकलकर रक्त बहा और उसकी नदियाँ वहीं। उन नदियों में कवच, कमरबन्द आदि उतराये और इधर-उधर चालित हुए। ५११

आय्न्द	कङ्गपत्	तिरङ्गळ्पुक्	करक्कर्दम्	मावि
तोय्न्द	तोय्विल	पिऱैमुहच्	चरञ्जिरन्	दुमित्त
काय्न्द	वॅञ्जरम्	निरुदर्तङ्	गवशमार्	बुरुवप्
पाय्न्द	वञ्जह	रिदयङ्गळ्	पिळन्दन	पल्लम् 512

आय्न्त–चुनकर प्रेरित; कङ्क पत्तिरङ्कळ्–कंक-पत्र (चील के पंख से युक्त शर) बाण; पुक्कु–(राक्षसों के शरीरों के अन्दर) प्रविष्ट होकर; अरक्कर् तम् आवि तोय्न्त–राक्षसों के प्राणों में लगे; तोय्वु इल–ऐसा जो प्रविष्ट नहीं हुए वे; पिऱै मुक चरम्–अर्द्धचन्द्र बाणों ने; चिरम् तुमित्त–सिर खण्डित कर दिये; काय्न्त

वॅम् चरम्–उग्र और प्रचण्ड शर; निरुतर् तम्–राक्षसों के; कवच मार्पु–कवच-सज्जित वक्षों के; उरुव पाय्न्त–आर-पार गये; पल्लम्–अन्य शरों ने; वञ्चकर्–वंचकों के; इतयङ्कळ् पिळन्तत–हृदय को फोड़ दिया। ५१२

श्रीराम के कंकपत्र नाम के चील के पंख से युक्त तीक्ष्ण शर राक्षसों के मर्म पर जा लगे। ऐसे जो जाकर नहीं लगे, उन अर्द्धचन्द्र बाणों ने राक्षसों के सिरों को काट दिया। कुछ उग्र वाण जो तेजी से गये कवच सहित शरीरों को निफरकर बाहर आ गये। अन्य अस्त्रों ने उनके हृदय (वक्षस्थल) को विदीर्ण कर दिया। ५१२

तूड णन्विडु शरमवै यावैयुन् दुणिया
माड् निन्ऱवर् वळङ्गिय पडैहळु माऱ्ऱा
आडल् कॉण्डन नळप्परुम् बॅरुवलि यरक्कर्
कूडि निन्ऱवक् कुरैहडल् वऱळ्बडक् कुऱैत्ताऩ् 513

तूटणन्–दूषण ने; विट्टु–जो चलाया; चरम् अवै यावैयुम्–उन सभी बाणों को; तुणिया–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न करके; माट्टु निन्ऱवर्–पास जो खड़े रहे; वळङ्किय पटैकळुम्–उनके चलाये हुए शरों को भी; माऱ्ऱा–लौटवा देकर; अळप्पु अरुम्–अगणित; पॅरु वलि अरक्कर्–बड़े बलवान राक्षस; कूटि निन्ऱ–जिसमें मिले रहे; कुरै कटल्–उस गर्जनशील सागर-सम सेना को; वऱळ् पट–सुखाते हुए; कुऱैत्तान्–मिटाकर; आटल्–विजय; कॉण्टतन्–प्राप्त की। ५१३

श्रीराम ने दूषण-प्रेरित सभी शरों के खण्ड-खण्ड कर दिये। पास जो रहे, उन राक्षसों के प्रेरित शरों को बेकार करके फिरा दिया। इस तरह गर्जनशील सागर के समान जो सेना राक्षसों से भरी थी उसको श्रीराम ने सुखा दिया। वे विजयी हो गये। ५१३

आर्त्तॆ ऴुन्दनर् वानव रुवरै मरत्तो
डीर्त्तॆ ऴुन्दन कुरुदियिन् पॅरुनदि यिरामन्
तूर्त्त शॅञ्जरन् दिशैतॊरुन् दिशैतॊरुन् दॊडर्न्दु
पोर्त्त वॆञ्जिनत् तरक्करैप् पुरट्टिन पुवियिल् 514

वानवर्–देव; आर्त्तु ऍऴुन्तनर्–हल्ला मचा उठे; कुरुतियिन् पॅरु नति–रक्त की बड़ी नदियाँ; अरु वरै–बड़े पर्वतों को; मरत्तॊटु–पेड़ों के साथ; ईर्त्तु ऍऴुन्तन–बहाते हुए बहीं; इरामन्–प्रभु श्रीराम ने; तूर्त्त–जो ठूँसे; चॅम् चरम्–उन उत्तम बाणों ने; तिचै तॊऱुम् तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में सर्वत्र; तॊटर्न्तु–(राक्षसों का) पीछा करके जाकर; पोर्त्त–उन दिशाओं को आच्छादित करते हुए जो रहे, उन; वॅम् चितत्तु अरक्करै–भयंकर, क्रुद्ध राक्षसों को; पुवियिल्–भूमि पर; पुरट्टिन–लुढ़का दिया। ५१४

देवगण इससे हर्षित हो गये और उन्होंने हल्ला मचाया। रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बड़े-बड़े पर्वतों को तरुओं सहित बहाते हुए बहीं।

श्रीराम लगातार शर चला रहे थे। वे हर दिशा में राक्षसों का पीछा करते गये और वहाँ भरे रहे क्रुद्ध राक्षसों के सिर कटकर भूमि पर लुढ़क गये। ५१४

तोन्ऱु	माल्वरैत्	तॉहैयॆन्नत्	तुवन्ऱिय	निणच्चे
ऱान्ऱ	पाळ्वयिऱ्	ऱलहैयेप्	पुहळ्वदॆ	न्मर्वेट्
टून्ऱि	न्नारॆला	मुलन्दन	रॊल्लैयिन्	मडिन्दार्
कान्ऱ	वव्वुयिर्क्	कालनुम्	वलित्तुमॆय्	कवन्ऱान् 515

तोन्ऱु माल् वरै–दृश्यमान बड़े पर्वतों के; तॉकै ऍन्न–समूहों के समान; तुवन्ऱिय–घने रूप से रहे; निण चेऱु–मांस-पंक; आन्ऱ–खूब खाकर जो रहे; पाळ् वयिऱु अलकैयै–उन रिक्त-पेट वाले प्रेतों की; पुकळ्वतु ऍन्–प्रशंसा क्या हो; अमर् वेट्टु–युद्ध चाहकर; ऊन्ऱिनार् ऍलाम्–जो रहे वे सभी (राक्षस); ऑल्लैयिन्–जल्दी; उलन्ततर्–मरे; कान्ऱ–(प्रेतों से पेट भर जाने के कारण जो) थूके गये; अ उयिर्–उन प्राणों को; कालनुम्–यम भी; वलित्तु–छीन ले जाते-जाते; मॆय् कवन्ऱान्–श्रान्त-शरीर हो गया। ५१५

चर्बी के पर्वतों के समान ढेर बने रहे। उसको खाकर प्रेत बड़े ही मजे में रहे। अब तक रिक्तपेट रहे उनको मनमाने ढंग से खाने को मिल गया। उनकी प्रशंसा क्या की जाय? उससे बढ़कर यम की स्थिति कहना अधिक युक्त होगा, क्योंकि उसी से युद्धभूमि की स्थिति का सच्चा रूप मिलेगा। युद्ध में मन लगाकर जो राक्षस आये वे सब मरे। उनको प्रेतों ने खाया और जो पेट के भर जाने से उनके द्वारा त्यक्त थे, उन जीवों को उठाते-उठाते यम का शरीर थक गया। ५१५

कळिऱु	तेर्परि	कडुत्तवर्	मुडित्तलै	कवन्दम्
ऑळिऱु	पल्पडैत्	तङ्गुलत्	तरक्करद	मुडलम्
वळिऱु	शेर्निणम्	बिऱङ्गिय	वडुक्कलिन्	मीदिल्
कुळिऱु	तेर्हडि	दोट्टिनन्	ऱूडणन्	कोदित्तान् 516

तूटणन्–दूषण; कळिऱु–हाथी; तेर्–रथ; परि–अश्व; कटुत्तवर्–(साथ लेकर) क्रोध के साथ जो लड़े; तन् कुलत्तु अरक्कर् तम्–अपने कुल के राक्षसों के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों; कवन्तम्–कबन्धों; ऑळिऱु पल् पटै–शोभायमान अनेक हथियारों; वॆळिऱु चेर् निणम्–श्वेत चर्बी; पिऱङ्किय–के बने; अटुक्कलिन् मीते–पर्वतों पर ही; कुळिऱु तेर्–शब्दायमान रथ को; कटितु ओट्टिनन्–सवेग चलाता गया; कॊतित्तान्–क्रुद्ध रहा। ५१६

दूषण ने अब अपने रथ को आगे बढ़ाया। सामने हाथी, अश्व, राक्षसों के किरीटधारी सिर, उनके कबन्ध, अनेक उज्ज्वल हथियार श्वेत चर्बी आदि के पर्वतों के समान ढेर बने पड़े थे। क्रोध से उन्मत्त दूषण का रथ इन्हीं के ऊपर से चला और गरगराहट करता गया। ५१६

अऱङ्गोळ् ळादव राक्कैह ळडुक्किय वडुक्कल्
पिऱङ्ग नीण्डऩ कणिप्पिल पॅरुङ्गडु विशैयाल्
कऱङ्गु पोऩ्ऱुळ दायिऩुम् बिणप्पॅरुङ् गडत्तिल्
इऱङ्गु मेऱ्मत् तेर्पट्ट दियादॅऩ विशैप्पाम् 517

अऱम् कोळ्ळातवर्–अधर्मी (राक्षसों) के; आक्कैकळ्–शरीर; अट्टुक्किय अट्टुक्कल्–जिनमें परतों के रूप में चुने गये थे, वे पर्वत; पिऱङ्क नीण्टऩ–सब जगह दिखाई देते हुए विस्तृत रूप से पड़े रहे; कणप्पिल–हिसाब में नहीं आये (अगणित रहे); पिणम् पॅरुम् कटत्तिल्–लाशों के उस बड़े वन में; पॅरुम् कटुम् विचैयाल्–अधिक वेग के साथ; कऱङ्कु पोऩ्ऱु–लटटू के समान; उळतु आयितुम्–घूमता रहा तो भी; इऱङ्कुम् एऱ्म्–उतरता-चढ़ता गया; अ तेर् पट्टतु–उस रथ का हाल; यातु ॲऩ–क्या (था यह); इचैप्पाम्–कहें। ५१७

अधर्मी राक्षसों की असंख्य लाशें परतों में पहाड़ों के समान पड़ी रहीं। दूषण का रथ जब उन लाशों के वन-समान युद्धभूमि में लट्टू के समान वेग से घूमता हुआ चला तो भी चढ़ावों और उतारों के कारण उसे बहुत संकट उठाना पड़ा। उसकी क्या गति हुई, उसका क्या कहा जाय ? । ५१७

अरिदि नॅय्दिऩ नैयैन्दु कॉय्युळैप् परियाल्
उरुळु माळिय दॉरुदनित् तेरिऩऩ् मेहत्
तिरुळि नीङ्गिय विन्दुविऱ् पॉलिहिऩ्ऱ विरामऩ्
तॅरुळम् वार्हणैक् कूऱ्ऱॅवि राविशॅऩ् ऱॅऩ्ऩ 518

ऐ ऐन्तु–(पाँच के पाँच =) पचीस; कॉय् उळै परियाल्–सुन्दर रूप से कटे अयालों से भूषित अश्वों द्वारा; उरुळुम्–(खींचकर चलने से) चलनेवाले; आळियतु ऑरु तऩि तेरिऩऩ्–चक्रों के अनुपम रथ पर आरूढ़ दूषण; मेकत्तु इरुळिऩ् नीङ्किय–मेघों के कारण बने अन्धकार से छूटकर जो आया है; इन्तुविल्–उस इन्दु के समान; पॉलिकिऩ्ऱ–शोभायमान; इरामऩ्–श्रीराम के; तॅरुळुम्–साफ़; वार्–दीर्घ; कणै कूऱ्ऱु ॲतिर्–बाण रूपी यम के सामने; आवि चॅऩ्ऱु ॲऩ्ऩ–जीव पहुँचा हो, ऐसा; अरितिऩ् ॲय्तिऩऩ्–सायास पहुँचा। ५१८

उसके रथ में पचीस सुन्दर रूप से कटे (सजे) अयालों से भूषित अश्व जुते थे। उस पर आरूढ़ दूषण सायास श्रीराम के सामने, यम के सामने जानेवाले जीव के समान (अपने प्राण सौंपने के लिए) जा पहुँचा। श्रीराम मेघान्धकारनिवृत्त इन्दु के समान शोभायमान थे। ५१८

❀ शॅऩ्ऱ तेरैयुम् जिलैयुडै मलैयॅऩत् तेर्मेल्
निऩ्ऱ तूडणऩ् ऱऩ्ऩैयु नेडियव ऩोक्कि
नऩ्ऱु नऩ्ऱॅनिऩ् ऩिलैयॅऩ वरुळुरै नयन्दाऩ्
ॲऩ्ऱ कालत्तव वॅय्यवऩ् पहळिमूऩ् ऱॅय्दाऩ् 519

नॅटियवऩ्–विक्रमी श्रीराम ने; चॅऩ्ऱ तेरैयुम्–आगत रथ को; चिलै उटै मलै ॲऩ–धनुर्धर पर्वत के समान; तेर् मेल् निऩ्ऱ–रथ पर स्थित; तूटणऩ् तऩ्ऩैयुम्–दूषण को; नोक्कि–देखकर; निऩ् निलै नऩ्ऱु नऩ्ऱु–तुम्हारा धैर्य अच्छा है, अच्छा है; ॲऩ–ऐसा; अरुळ् उरै नयन्ताऩ्–कृपा-वचन कहे; ॲऩ्ऱ कालत्तु–जब उन्होंने यह कहा, तब; अ वॅय्यवऩ्–उस दुराचारी ने; पकऴि मूऩ्ऱु–शर तीन; ॲय्ताऩ्–चलाये। ५१९

विक्रमी श्रीराम ने सामने आये रथ को और उस पर आरूढ़, धनुर्धर भूधर के समान दूषण को भी देखा। उन्होंने वाहवाही की— "तुम्हारा धैर्य धन्य है, धन्य है।" जब वे कृपा के साथ यह वचन कह रहे थे, तभी उस दुराचारी दूषण ने तीन भयंकर शर लेकर उन पर चला दिये। ५१९

तूर वट्टवॅण् डिशैहळैत् तऩित्तऩि शुमक्कुम्
पार वॅट्टिऩो डिरण्डिऩि लॊऩ्ऱुपार् पुरक्कल्
पेर विट्टवऩ् करिनुद लोडैयिऱ् पिऱङ्गुम्
वीर पट्टत्तिऱ् पट्टऩ विण्णवर् वॅरुव 520

तूर वट्ट–दूर, मण्डलाकार; ॲण् तिचैक्कळै–आठों दिशाओं को; तऩि तऩि चुमक्कुम्–अलग-अलग धारण करनेवाले; पार ॲट्टिऩ् ओटु–बली अष्ट (दिग्गजों) के साथ; इरण्टितिल् ऑऩ्ऱु–और (शेष व कूर्म में) एक (शेष) अपनी पादुकाओं को; पार् पुरक्क–लोकभरणार्थ; पेर विट्टवऩ्–जिन्होंने अलग भेजा था, उन (श्रीराम) के; करि नुतल् ओटैयिल्–गज के भाल पर शोभनेवाले पट्ट के समान; पिऱङ्कुम्–मनोरम रूप से विद्यमान; वीर पट्टत्तिल्–वीरोचित पट्टों पर; विण्णवर् वॅरुव–देवों को सिहरने देते हुए; पट्टऩ–(वे तीनों शर) लगे। ५२०

वे जाकर श्रीराम के भाल की वीरपट्टी पर लगे, जिसे देखकर देवगण सहम उठे। वह पट्टी गज के भाल पर सज्जित मुखपट्ट के समान शोभायमान थी। श्रीराम कौन थे? वे स्वयं विष्णु भगवान थे, जिन्होंने अष्टदिग्गजों के भूभार-वहन के कार्य में सहायता देने के लिए अपनी पादुकाओं को अपने से अलग करके भेजा था। वे पादुकाएँ शेषनाग के अवतार थीं, जो भूमि के भारवाही दो (शेष और कूर्म) में एक (माना जाता) है। ५२०

※ ॲय्द कालमुम् वलियुनऩ् ऱॆऩनिऩैन् दिरामऩ्
शॅय्द शेयॊळि मुऱुवलऩ् कडुङ्गणै तॊरिन्दाऩ्
नॊय्दि तङ्गव नॊऱिल्परित् तेर्बड नूऱिक्
कैयिल् वॆञ्जिलै यऱुत्तॊऴिर् कवशमुङ् गडिन्दाऩ् 521

इरामऩ्–श्रीराम ने; ॲय्त कालमुम्–(दूषण के) शर चलाने का काल; वलियुम्–और उसका बल; नऩ्ऱु ॲऩ–श्लाघ्य, यह; निऩैन्तु–समझकर; चॅय्त चेय् ऑळि–लाल (सुन्दर) उज्ज्वल; मुऱुवलऩ्–हँसी के साथ; कटुम् कणै तॆरिन्ताऩ्–कठोर एक अस्त्र चुनकर चलाया; नॊय्तिऩ्–सुगम रीति से (या जल्दी); अङ्कु–वहाँ; अवऩ्–उसके; नॊऱिल् परि–तीव्रगति अश्व के; तेर्–रथ को; पट नूऱि–तहस-नहस

करके; कैयिन् वॆम् चिलै अऱुत्तु-(उसके) हाथ में रहे धनुष को भी काटकर; ऒळिर् कवचमुम्-चमकदार कवच को भी; कटिन्तान्-तोड़ दिया। ५२१

तीनों शर श्रीराम के सिर की पट्टी पर लगे। श्रीराम मुस्कराये। उन्होंने मन में सोचा कि वाह! उसका शरप्रेषणकाल यानी उसके बाण की गति और उसका बल प्रशंसनीय है! फिर श्रीराम ने एक भयावह बाण चुन लिया और उससे उसके रथ को और उसमें जुते तीव्रगामी अश्वों को ध्वस्त किया; उसके हाथ में रहे भयंकर धनु को तोड़ा और उसके कवच को भी नष्ट कर दिया। ५२१

❀ तेव रार्त्तॆळ मुनिवर्ह डिशैतॊरुञ् जिलम्बुम्
ऒविल् वाळ्त्तॊलि कार्क्कडन् मुळक्कॆन वोङ्गक्
काव डाविदु वल्लैये नीयॆनक् कणैयॊन्
ऱेवि नानव नॆयिऱुडै नॆडुन्दलै यिळन्दान् 522

तेवर् आर्त्तु ॲळ-देवों ने उठकर कोलाहल मचाया; मुनिवर्कळ्-मुनियों का; तिचै तॊऱुम्-दिशा-दिशा में; चिलम्पुम्-कहा हुआ; ओवु इल्-निरन्तर; वाळ्त्तु ऒलि-आशीर्वाद का स्वर; कार् कटल् मुळक्कु ॲन-काले समुद्र के गर्जन के समान; ओङ्क-भर उठा; वल्लैयेल्-समर्थ हो तो; इतु का अटा नी-इसको बचा रे तू; ॲन-कहकर; कणै ऒन्ऱु-एक बाण; एवितान्-चलाया; अवन्-उसने भी; ॲयिऱुटै नॆटुम् तलै-(भयंकर वक्र) दाँतों से युक्त अपना बड़ा सिर; इळन्तान्-गँवाया। ५२२

श्रीराम ने फिर एक अस्त्र छोड़ा। छोड़ते-छोड़ते उन्होंने ललकारा कि रे दुष्ट! हो सके तो तू बचा ले इसे। दूषण बेचारा क्या करता? उसने अपना सिर गँवाया। तब देव हर्षरव मचा उठे। चारों ओर ऋषियों ने साधुवाद और आशीर्वाद किया, जिसका स्वर काले समुद्र के गर्जन के समान सब ओर भर उठा। ५२२

❀ तम्बितलै यऱ्ऱपडि युन्दय रदन्शेय्
अम्बुपडै यैत्तुणि पडुत्तदु मऱिन्दान्
वॆम्बुपडै विऱ्कैविश यक्करन् वॆहुण्डान्
कॊम्बुतलै कट्टिय कॊलैक्करि कडुप्पान् 523

कॊम्पु तलै कट्टिय-जिसके दाँत, सिर जितना ऊँचा उगे हुए थे; कॊलै करि-उस भयंकर गज की; कटुप्पान्-समता करनेवाला; वॆम्पु पटै-भयंकर हथियार; विल्-धनुष को; कै-रखनेवाले हाथ का; विचय करन्-विजयी खर; तम्पि तलै अऱ्ऱ पटियुम्-भाई (दूषण) के सिर के कटने का प्रकार; तयरतन् चेय्-दशरथ के पुत्र के; अम्पु-बाणों का; पटैयै तुणि पटुत्ततुम्-उसकी सेना का नाश करना; अऱिन्तान्-जानकर; वॆकुण्टान्-नाराज हुआ। ५२३

विजयी खर को यह समाचार मिला। खर ऐसे खूनी गज के समान

भयंकर आकार का था, जिसके दाँतों के छोर सिर तक ऊँचे उगे थे। वह अपने हाथों में बड़े ही घातक हथियार और धनुष रखता था। उसके भाई दूषण का सिर कैसे कटा? दशरथसुत, दाशरथी श्रीराम के बाणों ने राक्षस-सेना को कैसे हत कर मिटाया? —यह उसने सुना। उसे अपार क्रोध हुआ। ५२३

❀ अन्दहनु मुट्किट वरक्करहड लोडुम्
शिन्दुरम् वयप्पुरवि तेर्दिशै परप्पि
इन्दुवै वळैक्कुमॅळि लिक्कुल मॅन्त्तान्
वन्दुवरि विऱ्कैमद यानैयै वळैत्तान् 524

अन्तकनुम् उट्किट–यम को भी भयभीत करते हुए; अरक्कर् कटल् ओटुम्–राक्षसों की सेना के सागर के साथ; चिन्तुरम्–गजों; वय पुरवि–बलवान अश्वों; तेर्–रथों को; तिचै परप्पि–चारों दिशाओं में वितरित करके; इन्तुवै वळैक्कुम्–इन्दु को घेरनेवाले; ॲळिलि कुलम् ॲन–मेघ-समूह के समान; वरि विल्कै–बन्धन-युक्त धनुर्धर-हस्त; मत यानैयै–मत्तगज-सम (श्रीराम) को; तान् वन्तु–स्वयं आकर; वळैत्तान्–घेर लिया (खर ने)। ५२४

वह तुरन्त उठकर अपनी सेना के साथ श्रीराम के पास आया और उसने अपनी सेना के साथ उन्हें घेर लिया। उस सेना में पदाति वीरों का दल सागर के समान था। उसमें गज, बलवान अश्व, रथ आदि की सेनाएँ भी थीं। वह सेना चन्द्र को घेर आनेवाले मेघमण्डलों के समान चारों ओर फैली रही। खर ने अपने दल-बल सहित धनुर्धर, मत्तगज-सम श्रीराम को घेरा। ५२४

❀ अडङ्गलिल् कॉडुन्दॊळि लरक्करव वनन्दन्
पडङ्गिळि वुऱप्पडि पडप्पल विदप्पोर्
कडङ्गलुळ् तडङ्गळिरु तेर्परि कडावित्
तॊडङ्गिनर् नॆडुन्दहैयुम् वॆङ्गणै तुरन्दान् 525

अटङ्कल् इल्–अदम्य; कॊटुम् तॊळिल्–दुराचारी; अरक्कर्–राक्षसों ने; अ अनन्तन्–उस अनन्तनाग के; पटम् किळिवु उऱ–फनों को फाड़ते हुए; पटि पट–भूमि को मेटते हुए; पल वित–विविध; कटम् कलुळ्–मद बहानेवाले; तटम् कळिऱु–बड़े हाथियों; तेर्–रथों और; परि–अश्वों को; कटावि–चलाते हुए; पोर् तॊटङ्किनर्–युद्ध आरम्भ किया; नॆटुम् तकैयुम्–विक्रमी प्रभु ने भी; वॆम् कणै–भयंकर अस्त्र; तुरन्तान्–चलाये। ५२५

वे अदम्य दुराचारी राक्षस घोर युद्ध करने लगे। भूमि का धारण करनेवाले आदिशेषनाग का फन ही फट गया; भूमि भी ध्वस्त हो गयी! वे राक्षस विविध बड़े-बड़े गज हाँकते आये। वे गज अपने गालों पर

मदनीर बहा रहे थे। वीर अश्वों के साथ रथ चलाते आये। विक्रमी श्रीराम ने बलवान अस्त्र छोड़े। ५२५

तुडित्तन	कडक्करि	तुडित्तन	परित्तेर्
तुडित्तन	मुडित्तलै	तुडित्तन	तॉडित्तोळ्
तुडित्तन	मणिक्कुडर्	तुडित्तन	तशैत्तोल्
तुडित्तन	कळ्ऴरुणै	तुडित्तन	विडत्तोळ् 526

कटम् करि तुटित्तन–(उनके लगने से) मत्तगज तड़पे; परि तेर्–अश्व-जुते रथ; तुटित्तन–उछले; मुटि तलै–किरीटधारी सिर; तुटित्तन–छटपटाये; तॉटि तोळ्–वलयभूषित कन्धे; तुटित्तन–कटकर छटपटाये; मणि कुटर्–उनकी छोटी आँतें; तुटित्तन–फड़कीं; तचै तोल् तुटित्तन–मांससहित खालें फड़कीं; कळल् तुणै–पैरों के जोड़े; तुटित्तन–फड़के; इटम् तोळ्–बायें हाथ। ५२६

मत्तगज तड़पकर गिरे। रथ उछलकर गिरे और टूटे। अश्व छटपटाते हुए गिरे। किरीटधारी राक्षसों के सिर तड़पे। वलयधारी कन्धे लुढ़के। राक्षसों की छोटी आँतें फड़कीं। दोनों पैर फड़फड़ाये। बायें हाथ फड़के। (तुडित्तन = शरीर के अंग जब शरीर से कटकर अलग होते हैं, तब कुछ देर तक उछलते-गिरते, तड़पते हैं और छटपटाते हैं। या जीवित शरीर के अंगों का फड़कना भी कहते हैं।)। ५२६

❀ वाळिन्वनम्	वेलिन्वनम्	वार्शिलै	वनन्दिण्
तोळिन्वन	मॅन्ऱवै	तुवन्ऱुनिरु	दप्पेर्
आळिन्वन	निन्ऱदनै	यम्बिन्वन	मॅन्नुम्
कोळिन्	मऴैवन्गुळ्	विलिऱ्कुरै	पडुत्तान् 527

वाळिन् वनम्–तलवारों का कानन (समूह); वेलिन् वनम्–बर्छियों का जंगल; वार् चिलै वनम्–दीर्घ धनुषों का वन; तिण् तोळिन् वनम्–सुदृढ़ कन्धों का समूह; अन्नवै तुवन्ऱु–वे सब खूब मिले रहे (जिसमें), उस; निरुत पेर् आळिन् वनम्–राक्षसों के वीरों का जंगल (अनीक); निन्ऱतनै–जो सामने खड़ा था, उसे; अम्पिन् वनम् ॲन्नुम्–शरों का वन रूपी; कोळिन्–बलवान; मऴैयिन्–वर्षा द्वारा; कुळुविनिल् कुरैपट्टुत्तान्–दल के दल श्रीराम ने काट गिराये। ५२७

युद्ध के मैदान में तलवारों की बहुलता थी। भालों का जंगल था। लम्बे धनुषों की भरमार थी। सबल कन्धों की विपुल भीड़ थी। इनसे भरी राक्षसों के पैदल वीरों की विशाल सेना थी। उसको श्रीराम ने शरों की वर्षा से ध्वस्त कर दिया। (तमिळ में वनम् = वन, कानन या जंगल किसी चीज की भीड़ या बड़े वृंद को द्योतित करता है।)। ५२७

तानुरुवु कॉण्डदरु मन्दॅरि शरन्दान्, मीनुरुवु मेरुवै विरॅन्दुरुवु मेलाम्
वानुरुवु मण्णुरुवुम् वाळुरुवि वन्दार्, ऊनुरुवु सॅन्नुमि दुणर्त्तवु मुरित्त 528

तान् उरुवु कॊण्ट तरुमम्–धर्मरूप श्रीराम के; तॆरि चरम् तान्–चुने हुए शर; मीन् उरुवुम्–नक्षत्रमण्डल को भेदकर जायँगे; मेरुवै विरैन्तु उरुवुम्–मेरु को तुरन्त भेद जायँगे; मेल् आम् वान् उरुवुम्–ऊपर के आकाश के आर-पार जायँगे; मण् उरुवुम्–भूमि को भी विद्ध कर जायँगे; वाळ् उरुवि वन्तार्–तलवार लेकर आनेवाले; ऊन् उरुवुम्–राक्षसों के शरीरों को निफर जायँगे; ॲन्तुम् इतु–यह बात; उणर्त्तवुम् उरित्तो–कहने अर्ह है क्या। ५२८

धर्मावतार श्रीराम के चुनकर प्रेषित शर तारामण्डलों को, मेरु को, आकाश को और भूमि को भी अनायास भेद चल सकते हैं। फिर तलवार-धारी राक्षसों के शरीरों को निफर सकते हैं—यह कहना क्या उनकी प्रशंसा करना होगा क्या? । ५२८

अन्ऱिडर् विळैत्तवर् कुलङ्गळॊ डडङ्गच्
चॆन्ऱुलै वुरुम्बडि तॆरिन्दुहणै शिन्दा
मन्ऱिडै नलिन्दुवलि योर्हळॊळि योरैक्
कॊन्ऱलर् कवर्न्दपॊरु ळिऱ्कडिदु कॊन्ऱान् 529

अन्ऱु–तब; इटर् विळैत्तवर्–कष्ट देनेवाले राक्षसों को; कुलक्कळ् ओटु अटङ्क–कुल के साथ एक दम; चॆन्ऱु उलैवु उऱुम्पटि–जाकर मिटाते हुए; तॆरिन्तु कणै चिन्ता–श्रीराम ने चुनकर अस्त्र छोड़े तो; मन्ऱु इटै–न्यायालय में; वलियोर्–शक्तिमन्त; ऑळियोरै–दीनों को; नलिन्तु–त्रास देकर; कॊन्ऱवर्–मारकर; कवर्न्त पॊरुळिल्–जो धन ग्रस लेते हैं, उसकी (मिटने की) से भी; कटितु–अधिक तीव्र गति से; कॊन्ऱान्–मारा। ५२९

श्रीराम ने अस्त्र चुनकर उन राक्षसों पर चलाया जो इनको कष्ट देने आये थे और इस संकल्प के साथ चलाया कि राक्षसों का उनके कुलों के साथ नाश हो। समझिए कि कोई सबल आदमी गरीब आदमी को सताता है। न्यायालय में भी उसके विरुद्ध झूठा मामला चलाता है। अन्त में उसको मारकर उससे धन ग्रस लेता है। तो वह धन नहीं टिकता। वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है। उससे भी अधिक तेज़ी से राक्षसों की सेना को श्रीराम के बाणों ने मिटा दिया। ५२९

❀ कडुङ्गर नॆन्पॆयर् पडैत्त कऴल्वीरन्
अडङ्गलु मरक्करऴि वुऱ्ऱिड वऴन्ऱान्
ऑडुङ्गलि निणक्कुरुदि योदमदि नुळ्ळान्
नॆडुङ्गडलिन् मन्दर मॆनत्तमिय निन्ऱान् 530

ऑटुङ्कल् इल्–अक्षय; निण कुरुति ओतम् अतिल्–मांस और रक्त के सागर में; उळ्ळान्–जो रहा; नॆटुम् कटलिन्–बड़े (क्षीर-) सागर में; मन्तरम्–मन्दरपर्वत; ॲन–के समान; तमियन् निन्ऱान्–एकाकी जो खड़ा रहा; कटुम् करन् ॲन पॆयर् पटैत्त–प्रखर खर नामक विख्यात; कऴल् वीरन्–पायलधारी वीर; अरक्कर्

अटङ्कलुम्–सारे राक्षसों के; अऴिवु उऱ्ऱिट–मर-मिटने पर; अऴल्नूरान्–क्रुद्ध हुआ। ५३०

सेना-विहीन खर अक्षय मांस और रक्त के सागर के बीच में क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरु के समान खड़ा रहा। प्रखर और खर के नाम से विख्यात उस पायलधारी वीर ने देखा कि सारी सेना मिट गयी है। उसे अपार क्रोध हुआ। ५३०

❀ शॅङ्गणॅरि शिन्दवरि विऱ्पहऴि शिन्दप्
पॊङ्गुहुरु दिप्पुणरि युट्पहैयु नॆञ्जन्
कङ्गमोडु काहमिडै यक्कडलि नोडुम्
वङ्गमॆन लायदॊरु तेरिन्मिशै वन्दान् 531

चॆम् कण्–लाल आँखों से; ऎरि चिन्त–अंगारे से उगलते हुए; विल् पकऴि चिन्त–धनुष से बाण छोड़ते हुए; पॊङ्कु कुरुति पुणरि–उमड़नेवाले रक्त का सागर और; उऴ् पुकैयुम् नॆञ्चन्–धुआँ जिसमें था, ऐसे मन के साथ; कङ्कम् ओटु काकम् मिटैय–कंक के साथ कौए भी मिल आये; कटलिन् ओटुम् वङ्कम् ऎन्न्ल् आयतु–समुद्र में चलनेवाले पोतोपम; ऒरु तेरिन् मिचै–एक रथ पर; वन्तान्–आया। ५३१

उसकी लाल-लाल आँखों से अंगारे छूटे। धनुष ने शर छोड़े। रक्त सागर-सा उसके मन में उमग रहा था। उसके मध्य धुआँ उठ रहा था। खर समुद्र में चलनेवाले पोत के समान एक बड़े रथ पर सवार हो आया। उसके रथ के साथ कंक और काग उड़ते आ रहे थे। ५३१

❀ शॅऱुत्तिऱुदि यिऱ्पुवनि तीयवॆऴु तीयिन्
मऱत्तिन्वयि रत्तॊरुवन् वन्दणुहु मुन्दॆक्
करुत्तमणि कण्डऱ्हड वुट्चिलै करत्ताल्
इऱुत्तवनुम् वॆङ्गणै तॆरिन्दॆदि ऱॆदिर्न्दान् 532

इऱुतियिल्–युगान्त में; पुवनि तीय–भुवनों को जलाते हुए; चॆऱ्ऱु ऎऴु–प्रचण्डता के साथ उठनेवाली; तीयिन्–आग के समान; मऱत्तिन् वयिरत्तु ऒरुवन्–वीरता और शत्रुता में अद्वितीय (खर); वन्तु अणुकुम् मुन्तॆ–आकर नियराये, इसके पहले ही; करुत्त मणि कण्टर्–नीलकण्ठ श्रीशिवजी के; कटवुळ् चिलै–दिव्य (त्र्यंबक नामक) धनु के; इऱुत्तवनुम्–भंजक ने भी; वॆम् कणै तॆरिन्तन्–तापक अस्त्र लेकर; ऎतिर्न्तान्–सामना किया। ५३२

खर भुवनों का अन्त करनेवाली युगान्त अग्नि के समान क्रूरता और वैर में अद्वितीय था। उसके अपने पास पहुँचने के पूर्व ही नीलकण्ठ शिवजी के धनु के भंजक श्रीराम ने बाण चुन लिये। फिर वे युद्धसन्नद्ध हो उसके सामने आये। ५३२

तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियत्त वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यरक्करपदि यॅय्दान्
तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियत्त वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यिरामनु मरुत्तान् 533

ती उरुव–अग्नि के आकार के; काल विचैय–वायु की-सी गति के; चॅव्वि अत्त–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–भयंकर रूप से तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण शर; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; ॲय्तान्–चलाये; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; ती उरुव–अग्नि रूपी; काल् विचैय–पवनगति; चॅव्वियत्त–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण बाण; अऱुत्तान्–चलाकर उनको काट दिया। ५३३

खर ने एक सहस्र शर चलाये। वे शर ज्वलन्त अग्नि के आकार के थे। पवनसम तेज चलनेवाले और तीक्ष्णमुखी थे। श्रीराम ने वैसे ही अग्नि रूपी, पवनगति, श्रेष्ठ और तीक्ष्णमुखी, एक सहस्र शर छोड़े और खर के अस्त्रों को काटकर मिटा दिया। ५३३

❀ ऊळियॅरि यिऱ्कॉडिय पाय्पहळि यॉन्बान्
एळुलहि नुक्कुमॉरु नायहनु मॅय्दान्
शूळ्शुडर् वडिक्कणै यवर्ऱॅदिर् तॊडुत्ते
आळिवरि विऱ्करनु मन्नवै यऱुत्तान् 534

ऊळि ॲरियिल् कॊटिय–युगान्त की अग्नि से भी अधिक क्रूर; पाय् पकळि ऑन्पान्–तेज चलनेवाले नौ अस्त्र; एळ् उलकित्तुक्कुम् ऑरु नायकनुम्–सातों लोकों के श्रेष्ठ नायक श्रीराम ने; ॲय्तान्–खर पर चलाये; आळि–मण्डलाकार; वरि विल्–बन्धनयुक्त धनु के; करनुम्–खर ने भी; अवर्ऱु ॲतिर्–उनके आगे; चुटर् चळ्–ज्वलन्त; वटि कणै–तीक्ष्ण बाण; तॊटुत्ते–चलाकर; अन्नवै–उनको; अऱुत्तान्–काट दिया। ५३४

फिर सर्वलोकनायक श्रीराम ने प्रलयकालीन अग्नि के समान तापक और तेज चलनेवाले सात बाण खर पर चलाये। खूब मण्डलाकार झुके धनुष के धारक खर ने भी उनके विरुद्ध ज्वलन्त और तीक्ष्ण अस्त्र भेजकर उन्हें काट दिया। ५३४

❀ कळ्ळविनै मायमवर् कल्वियिन् विळैत्तान्
वळ्ळलुरु वैप्पहळि मारियिन् मऱैत्तान्
उळ्ळमुलै वुऱ्ऱमर रोडिन्न रॊळित्तार्
वॅळ्ळॅयि ऱिदळ्प्पिऱळ वीरनुम् वॅहुण्डान् 535

कल्वियिन्–अपनी विद्या में; कळ्ळविनै–वंचनापूर्ण; माय अमर्–मायायुद्ध; विळैत्तान्–करके; वळ्ळल् उरुवै–उदार प्रभु श्रीराम के शरीर को; पकळि मारियिन्–शर-वर्षा से; मऱैत्तान्–छिपा दिया (खर ने); अमरर्–देव; उळ्ळम् उळैवु उऱ्ऱु–

मन में व्याकुल होकर; ओटिऩर्–भागे और; ऑळितार्–छिप गये; वीरऩुम्–वीर श्रीराम ने; वॆळ् ऎयिरु–श्वेत दाँतों से; इतळ् पिऱळ–अधर को दबाते हुए; वॆकुण्टाऩ्–कोप किया। ५३५

खर माया-विद्या में निपुण था। उसने कपटपूर्ण मायायुद्ध करके श्रीराम के श्रीशरीर को शर-वर्षा से छिपा दिया। देव इसको देखकर व्याकुल हुए और दूर भागकर छिप गये। वीर श्रीराम ने भी दाँत पीसते हुए क्रोध का अवलम्बन किया। ५३५

❀ मुडिप्पॆ निऩ्ऱॊरु मॊय्हणै यालॆऩत्, तॊडुत्तु निऩ्ऱुयर् तोळुऱ वाङ्गिऩाऩ्
पिडित्त तिण्शिलै पेरहल् वाऩिडै, इडिप्पि ऩोशै पडक्कडि दिऱ्ऱदे 536

इऩ्ऱु–अभी; ऒरु मॊय् कणैयाल्–एक सारयुक्त बाण से; मुटिप्पॆऩ् ऎऩ–समाप्त कर दूँगा, यह कहते हुए; तॊटुत्तु निऩ्ऱु–संधान करके; उयर् तोळ् उऱ–उन्नत कन्धे तक; वाङ्किऩाऩ्–डोर खींचा; पिटित्त तिण् चिलै–उनसे ग्रस्त बलवान धनुष; पेर् अकल् वाऩ् इटै–अति विस्तृत आकाश में; इटिप्पिऩ् ओचै–वज्र का-सा नाद; पट–उठाते हुए; कटितु इऱ्ऱतु–शीघ्र टूट गया। ५३६

श्रीराम ने कहा कि अब एक ही सारयुक्त बाण चलाकर खर का काम तमाम कर दूँगा। उन्होंने शर संधान कर डोर को ऐसा खींचा कि धनुष का छोर उनके कन्धे को स्पर्श करे। बस, वह बलवान धनुष आकाश के वज्र के समान उच्च स्वर निकालते हुए उसी दम भग्न हो गया। ५३६

वॆऱ्ऱि कूऱिय वाऩवर् वीरऩ्विल्, इऱ्ऱ पोदु तुणुक्कमुऱ् ऱॆङ्गिऩार्
मऱ्ऱु वॆञ्जिलै यिऩ्मै मऩक्कॊळा, अऱ्ऱ दाॆम् वलियॆऩ वञ्जिऩार् 537

वॆऱ्ऱि कूऱिय वाऩवर्–(श्रीराम की) विजय के प्रशंसक देव; वीरऩ् विल् इऱ्ऱ पोतु–वीर श्रीराम के धनुष के टूटने पर; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–डरकर; एङ्किऩार्–दुखी हुए; मऱ्ऱुम् वॆम् चिलै इऩ्मै–अन्य किसी धनुष का अभाव; मऩम् कॊळा–मन में सोचकर; ॆम् वलि अऱ्ऱतु–हमारा बल मिटा; ऎऩ–ऐसा; अञ्चिऩार्–भयभीत हुए। ५३७

देव श्रीराम की विजय की प्रशंसा करते रहे। अब उन्होंने देखा कि श्रीवीरराघव का धनुष टूट गया है। कोई दूसरा धनुष नहीं है। वे निस्सहाय खड़े हैं। उन्हें संशय और डर हो गया कि अब हमारा बल गया! । ५३७

❀ ऎऩ्ऩु मात्तिरत् तेऩ्दिय कार्मुहम्, चिऩ्ऩ मॆऩ्ऱुऩ् दऩिमैयुञ् जिऩ्दियाऩ्
मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ् शॆम्मल् मरबिऩाल्, पिऩ्ऩु ऱत्तऩ् पॆरुङ्गर नीट्टिऩाऩ् 538

ऎऩ्ऩुम् मात्तिरत्तु–उनके ऐसा कहते समय; मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ्–राजाधिराज के; चॆम्मल्–पुत्र श्रीराम ने; एऩ्तिय कार्मुकम्–अपना गृहीत कार्मुक; चिऩ्ऩम् ऎऩ्ऱुम्–टूट गया, इसकी ओर; तऩिमैयुम्–अपनी (एकाकी) निस्सहाय स्थिति को;

चिन्तियात्–चिन्ता न करके; मरपित्ताल्–पूर्व संकेत के अनुसार; तन् पॅरुम् करम्–अपना बड़ा हाथ; पिन् उऱ–पीछे की तरफ़; नीट्टितान्–बढ़ाया। ५३८

देव इस प्रकार कह ही रहे थे कि उधर श्रीराम ने एक अद्भुत कार्य किया। दाशरथी ने किंचित भी चिन्ता नहीं की कि मेरा कोदण्ड टूट गया है और मैं बिना हथियार के एकाकी खड़ा हूँ। उन्होंने अपना दीर्घ हाथ पीछे की ओर बढ़ाया। उसका पूर्वसंकेत का कोई अर्थ था। ५३८

❀ कण्डु निन्ऱु करुत्तुणर्न् दान्ऩ, अण्डर् नादन् ऱडक्कैयि नत्तुणै
पण्डु पोर्मळु वाळियैप् पण्बिनाल्, कॉण्ड विल्लै वरुणन् कॉडुत्तनन् 539

कण्टु निन्ऱु–उस स्थिति को देखते हुए खड़ा; करुत्तु उणर्न्तान् ॲन्न–उनका अभिप्राय समझ गया हो ऐसा; पण्टु–पहले; पोर् मळु आळियै–युद्ध में परशु का प्रयोग करनेवाले परशुराम से; पण्पिनाल्–अपने सामर्थ्य से; कॉण्ट–गृहीत; विल्लै–धनु को; अत्तुणै–तब; वरुणन् तटम्कैयिल् कॉटुत्तनन्–वरुण ने श्रीराम के विशाल हाथ में दिया। ५३९

वरुण यह सब देखते हुए पीछे खड़े थे। पहले जब श्रीराम ने युद्धोपयोगी परशु के धारक परशुराम को हराया था और अपने सामर्थ्य से उनका धनुष ले लिया था, तब उन्होंने वह कार्मुक वरुण के पास दे रखा था। वरुण ने श्रीराम का मन जान लिया और वह धनु श्रीराम के हाथ में धर दिया। ५३९

❀ कॉडुत्त विल्लैयक् कॉण्ड निऱत्तिनान्
ॲडुत्तु वाङ्गि वलङ्गॉण् डिडक्कैयिऱ्
पिडित्त पोदु नॅऱिपिळैत् तार्क्कॅलाम्
तुडित्त वालिडक् कण्णोडुन् दोळ्हळे 540

कॉटुत्त विल्लै–वरुण-दत्त धनु को; अ कॉण्टल् निऱत्तिनान्–उन मेघश्याम ने; ॲटुत्तु–लेकर; वलम् कॉण्टु वाङ्कि–जोर से झुकाकर; इट कैयिल् पिटित्त पोतु–जब अपने बायें हाथ में धरा, तब; नॅऱि पिळैत्तार्क्कु ॲल्लाम्–दुराचारी सभी राक्षसों के; इटम् कण् ओटु तोळ्कळ्–बाईं आँखें और उनके साथ बाईं भुजाएँ; तुटित्त–फड़क उठीं। ५४०

मेघवर्ण श्रीराम ने वरुण-दत्त धनु को हाथ में लिया। उसको झुकाकर अपने बायें हाथ में धरा तो दुराचारी सभी राक्षसों की बायीं आँखें बायीं भुजाओं के साथ फड़क उठीं। ५४०

❀ एऱ्ऱि नाणिमै यामुन् ॲडुत्तदु, कूऱ्ऱि नारुङ् गुनिक्कक् कुनित्तॅदिर्
आऱ्ऱि नानव नाळियन् देऱ्शरम्, नूऱ्ऱि नानुण् पॉडिपड नूऱिनान् 541

अतु ॲटुत्तु–उस चाप को लेकर; इमैया मुन्–पलक मारती देर से पहले; नाण् एऱ्ऱि–प्रत्यंचा चढ़ाकर; कूऱ्ऱिनारुम् कुनिक्क–यमदेव को भी नाचने देते हुए;

कुतित्तु–उसको झुकाकर; अँतिर् आऱ्ऱिऩाऩ् अवऩ्–सामने लड़ने आगत उस (खर) के; आऴि अम् तेर्–चक्रसहित सुन्दर रथ को; चरम् नूऱ्ऱिऩाल्–सौ शरों से; नुण् पॊटि पट–बारीक चूर्ण करते हुए; नूऱ्ऱिऩाऩ्–मिटा दिया। ५४१

श्रीराम ने पलक मारने के समय के अन्दर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी। शर संधान करके धनु को झुकाया। यम को आनन्द-नृत्य-मग्न करते हुए सौ अस्त्र चलाये। उनके सामने आये खर का सुन्दर पहियेदार रथ चूर-चूर हो गया। रथ ध्वस्त हो गया। ५४१

❀ ऎन्दि रत्तडन् देरिऴन् दाऩिऴिन्, दन्द रत्तिडै यार्त्तॆऴुन् दम्बॆलाम्
सुन्द रत्तनि विल्लिदन् ऱोळॆन्नुम्, मन्द रत्तिन् मऴैयिन् वऴङ्गिनान् 542

ऎन्तिर तटम् तेर्–यन्त्रचालित विशाल रथ; इऴन्ताऩ्–खोकर; इऴिन्तु–(खर) उतरकर; आर्त्तु–नारे लगाते हुए; अन्तरत्तु इटै–अन्तरिक्ष में; ऎऴुन्तु–उठ जाकर; अम्पु ऎलाम्–अपने सारे बाण; चुन्तर् तनि विल्लि तन्–सुन्दर कोदण्डपाणी के; तोळ् ऎऩ्ऩुम्–भुजाओं रूपी; मन्तरत्तिल्–मन्दरपर्वत पर; मऴैयिन्–वर्षा के समान; वऴङ्किनाऩ्–बरसाया। ५४२

खर का रथ यन्त्र-चालित था। वह नष्ट हो गया। खर उतरा और अन्तरिक्ष में खड़ा हो गया। भयंकर गर्जन करते हुए उसने अपने पास रहे सभी अस्त्रों को अद्वितीय सुन्दर कोदण्डपाणी पर वर्षा के समान बरसा दिया। ५४२

❀ ताङ्गि निऩ्ऱ तयरद रामऩुम्, तूङ्गु तूणि यिडैच्चुडु शॆञ्जरम्
वाङ्गु हिऩ्ऱ वलक्कैयै वाळियाल्, वोङ्गु तोळोडुम् पारिडै वीऴ्त्तिनान् 543

ताङ्कि निऩ्ऱ–उन अस्त्रों का सामना करते हुए जो खड़े रहे, उन; तयरतरामऩुम्–दशरथ के पुत्र, श्रीराम ने भी; तूङ्कु तूणियिटै–लटकनेवाले तूणीर में से; चुटु चॆम् चरम्–तापक और श्रेष्ठ बाण; वाङ्कुकिऩ्ऱ–लेनेवाले; वल कैयै–दक्षिण हस्त को; तोळ् ओटु–कन्धे के साथ; पार् इटै–भूमि पर; वीऴ्त्तिनाऩ्–काटकर गिरा दिया। ५४३

श्रीराम ने उनको धैर्य के साथ धारण किया। फिर उन्होंने खर के उस हाथ को भुजमूल से काटकर गिराया जो पीठ पर बँधे तूणीर से अस्त्र ले रहा था। ५४३

❀ वलक्कै वीऴ्दलु मऱ्ऱैक्कै याल्वॆऱ्ऱि
उलक्कै वाऩत् तुरुमॆऩ वोच्चिनाऩ्
इलक्कु वऱ्कुमुन् वन्द विरामनुम्
विलक्कि नाऩॊरु वॆङ्गदिर् वाळियाल् 544

वलम् कै–दक्षिण हस्त के; वीऴ्तलुम्–अलग हो गिरने पर; मऱ्ऱै कैयाल्–दूसरे हाथ से; वॆऱ्ऱि उलक्कै–विजयदायक मूसल को; वाऩत्तु उरुम् ऎऩ–आकाश

में वज्र के समान; ओच्चिनान्–(खर ने श्रीराम पर) फेंका; इलक्कुवऱ्कु मुन्वन्त इरामनुम्–लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने भी; ऑरु वॅम् कतिर् वाळियाल्–एक भयंकर ज्वलन्त बाण से; विलक्किनान्–उसको रोका। ५४४

खर का दक्षिण हस्त कटकर गिर गया। तो उसने बायें हाथ से एक विजयदायक मूसल उठाकर आकाश के वज्र के समान श्रीराम पर फेंका। लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने जाज्वल्यमान और संतापक एक अस्त्र से उसको बीच में रोक दिया। ५४४

❀ विराव रुङ्गडु वॅळ्ळॅयि ऱिऱ्ऱपिन्, अराव ळ्नऱ् तनैयव नाऱ्ऱलान्
मराम रङ्गैयिन् वाङ्गि वन्दॅय्दिनान्, इराम नङ्गोर् तनिक्कणै येविनान् 545

अरा–एक सर्प; कटु विरा वरु–विष से पूरित रहनेवाले; वॅळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों के; इऱ्ऱ पिन्–नष्ट हो जाने के बाद; अऴन्ऱतु अनैयवन्–जैसे क्रुद्ध होता है, वैसा क्रुद्ध; आऱ्ऱलान्–शक्तिशाली (खर); मरामरम्–सालवृक्ष; कैयिल् वाङ्कि वन्तु–अपने हाथ में ले आकर; ऍय्तिनान्–पहुँचा; इरामन्–श्रीराम ने; अङ्कु–वहाँ; ओर् तनि–एक अद्वितीय; कणै–बाण; एविनान्–चलाया। ५४५

खर उस सर्प के समान बिफर उठा, जिसका विषैला श्वेत दाँत उखाड़ लिया गया हो। उस पराक्रमी खर ने एक सालवृक्ष ले लिया। उसके साथ जब वह लड़ने आया तो श्रीराम ने अप्रमेय एक शर छोड़ा। ५४५

❀ वरम रक्कन् पटॅत्तलिन् मायैयिन्, उरमुडॅत् तन्मै यालुल हेऴैयुम्
परमु ऱुत्तिय पावत्ति नाल्वलक्, करमॅ नक्करन् कण्डमुऱ् ऱानरो 546

अरक्कन्–(रावण) राक्षस की; वरम् पटॅत्तलिन्–वर-प्राप्ति से; मायैयिन्–वंचना से; उरम् उटॅ तन्मैयाल्–बलवान होने से; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; परम् उऱुत्तिय–बहुत त्रस्त करनेवाले; पावत्तिनाल्–पापकृत्यों से; वलम् करम् ॲन–दाहिने हाथ के समान; करन्–खर; कण्टम् उऱ्ऱान्–खण्डित हुआ। ५४६

खर रावण का दाहिना हाथ था। अब वह मर गया। यह उसी रावण के किए पाप का फल था। रावण को वर प्राप्त थे और वह मायावी राक्षस था। वर के बल पर उसने अपने कपटी स्वभाव के कारण सातों लोकों पर सितम ढाया। उसका ही फल खर की मौत था। ५४६

❀ आर्त्तॅ ऴुन्दन राडिनर् पाडिनर्, तूर्त्त मैन्दनर् वानवर् तूय्मलर्
तीर्त्त नुम्बॉलिन् दानुगदि रोन्ऱिशै, पोर्त्त मॅन्पनि पोक्किय पोलवे 547

वानवर्–सुरलोग; आर्त्तु ॲऴुन्तनर्–हर्षरव कर उठे; आटिनर् पाटिनर्–नाचे-गाये; तूय् मलर्–पवित्र फूल; तूर्त्तु अमैन्तनर्–बरसाये और विश्रब्ध खड़े रहे; तीर्त्तनुम्–तीर्थ श्रीराम भी; कतिरोन्–सूर्य; तिचै पोर्त्त–दिशाओं को ढँके रहे; मॅन् पनि पोक्कियतु–नरम कुहरे को दूर कर शोभित रहे; ॲन्न–जैसे; पॉलिन्तान्–प्रभावान बने रहे। ५४७

खर की मृत्यु पर देव आनन्द का कोलाहल कर उठे। वे नाचे और गाये। पवित्र कल्पसुमन बरसाकर वे प्रसन्नचित्त खड़े रहे। तीर्थ श्रीराम भी दिशाओं में भरे कुहरे को दूर कर शोभनेवाले सूर्यदेव के समान प्रभावान दिखे रहे। ५४७

❀ मुऩिवर् वन्दु मुऱैमुऱै मॊय्प्पुऱ, इऩिय शिन्दै यिरामऩु मेहिऩाऩ्
अऩिह वॆञ्जमत् ताऱुयिर् पोहत्ताऩ्, तऩियि रुन्द वुडलऩ्ऩ तैयल्बाल् 548

मुऩिवर् मुऱै मुऱै वन्तु–मुनिगण बारी-बारी से आये और; मॊय्प्पु उऱ–घेरे खड़े रहे; इऩिय चिन्तै–प्रसन्नचित्त; इरामऩुम्–श्रीराम भी; अऩिक वॆम् चमत्तु–राक्षस-सेना के साथ कठोर युद्ध में; तऩ् आर् उयिर् पोक–अपने प्यारे प्राणों को भेजकर; तऩि इरुन्त–अलग रहे; उटल् ताऩ् अऩ्ऩ–शरीर ही के समान जो रहीं; तैयल् पाल्–उन देवी सीताजी के पास; एकिऩाऩ्–पधारे। ५४८

ऋषियों ने दलों में आकर श्रीराम को घेर लिया। तब श्रीराम वहाँ से चले और देवी सीता के पास पधारे। देवी सीता निष्प्राण शरीर के समान थीं, क्योंकि उनके प्यारे प्राण राक्षसों के साथ कठोर युद्ध में चले गये थे। ५४८

❀ विण्णि ऩीङ्गिय वॆय्यवर् मेऩियिल्, पुण्णि ऩीरुम् पॊडिहळुम् बोयुह
अण्णल् वीरऩैत् तम्बियु मऩ्ऩमुम्, कण्णि ऩीरिऩिऱ् पादङ् गळुविऩार् 549

विण्णिऩ् नीङ्किय–(वीरों के प्राप्य) स्वर्ग में जो गये; वॆय्यवर्–उन आततायी राक्षसों के; मेऩियिल्–शरीर पर; पुण्णिऩ् नीरुम्–व्रणों से निकला रक्त-जल और; पॊटिकळुम्–धूलि; पोय् उक–पोंछते हुए; अण्णल् वीरऩै–महिमावान वीर श्रीराम को; तम्पियुम् अऩ्ऩमुम्–उनके लघु भाई लक्ष्मण ने और हंसिनी (-सी सीताजी) ने; कण्णिऩ् नीरिऩाल्–आँखों के जल से; पातम् कऴुविऩार्–पाद-प्रक्षालन कराया। ५४९

राक्षस वीर मरकर स्वर्ग चले गये। उनके शरीरों पर लगे व्रणों से जो रक्त-जल बहा उससे श्रीराम का शरीर लिप्त हो गया। उनके शरीर पर धूलि भी जमी हुई थी। उनके लघु भ्राता ने और उनकी देवी हंसिनी-सी सीता ने श्रीराम को देखकर भावातिरेक से अश्रुजल बहाया, जिससे श्रीराम के श्रीचरण धुल गये। ५४९

❀ मूत्त मॊऩ्ऱिऩ् मुडिन्दवर् मॊय्प्पुणीर्, नीत्त मोडि नॆडुन्दिशै नेरुऱक्
कोत्त वेलैक् कुरलॆऩ्ऩ वाऩवर्, एत्त वीर ऩिऩिदिरुन् दाऩरो 550

मूत्तम् ऒऩ्ऱिऩ्–एक मुहूर्त में; मुटिन्तवर्–जो मरे; मॊय्–(उनका) एकत्रित; पुण्णीर् नीत्तम्–व्रण-जल रक्त का प्रवाह; कोत्त वेलै–मिश्रित समुद्रों के; कुरल् अऩ्ऩ–घोष के समान; ओटि–बहकर; नॆटुम् तिचै–लम्बी दिशाओं के अन्तों से; नेर् उऱ–टकराकर मुड़ आया; वाऩवर् एत्त–देवों ने स्तुति की, इस प्रकार; वीरऩ्–रघुवीर श्रीराम; इऩितु इरुन्ताऩ्–ससन्तोष रहे। ५५०

एक ही मुहूर्त में सारे राक्षस मर गये थे। उनके शरीरों से इतना रक्त बहा कि सागर-सा बन गया और उससे सम्मिलित सागरों के गर्जन के समान गर्जन निकला। उसका प्रवाह सभी दिगन्त तक गया और टकराकर मुड़ आया। श्रीराम की विजय पर देव इठलाये। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। श्रीराम विश्रब्धमन और सुख के साथ रहे। ५५०

❀ इङ्गु निऩ्ऱ दुरैत्तु मिरावणऩ्, तङ्गै तऩ्गै वयिऱु तहर्त्तऩळ्
कङ्गु लऩ्ऩ करऩैत्त ळीइनॆंडुम्, पॊङ्गु वॆंङ्गुरु दिप्पुरण् डाळरो 551

इङ्कु निऩ्ऱतु–यहाँ जो स्थिति है; उरैत्तुम्–कहें; इरावणऩ् तङ्कै–रावण की बहिन ने; तऩ् कै–अपने हाथों से; वयिऱु तकर्त्तऩळ्–अपना पेट पीट लिया; कङ्कुल अऩ्ऩ–रात के समान काले; करऩै–खर को; तळीइ–आलिंगन करके; पॊङ्कु नॆंटुम्–उमड़नेवाले अधिक; वॆंम् कुरुति–गरम रक्त में; पुरण्टाळ्–लोटी। ५५१

अब हम (कवि) यहाँ जो हुआ वह कहें। रावण की बहिन ने अपने हाथों से अपना पेट पीट लिया। रात के समान काले खर का आलिंगन किया। उसके शरीर पर, वह निकलनेवाले अधिक रक्त के प्रवाह में लोटी। ५५१

❀ आक्कि ऩेऩ्मऩत् ताशैयिव् वाशैयॆऩ्, मूक्कि ऩोडु मुडिय मुडिऩ्दिलेऩ्
वाक्कि नालुङ्गळ् वाऴ्वैयु नाळैयुम्, पोक्कि ऩेऩ्कॊडि येऩॆऩ्ऱु पोयिऩाळ् 552

मऩत्तु–अपने मन में; आचै आक्किऩेऩ्–(श्रीराम के प्रति) प्रेम किया; अ आचै–वह इच्छा; ऎऩ् मूक्किऩोटु–मेरी नाक के साथ; मुटिय–चली जाय; मुटिऩ्तु इलेऩ्–ऐसा मरी नहीं; वाक्किऩाल्–अपने वचनों से; उङ्कळ् वाऴ्वैयुम्–तुम लोगों का जीवन और; नाळैयुम्–आयु को; पोक्किऩेऩ्–समाप्त कर दिया; कॊटियेऩ्–निर्मम हूँ; ऎऩ्ऱु–कहती हुई; पोयिऩाळ्–वहाँ से चली। ५५२

वह उठी। अपने को धिक्कारने लगी। मैंने श्रीराम से प्रेम किया। वह इच्छा मेरी नाक के साथ चली जाती तो कोई बात नहीं। वहीं तक बात समाप्त करते हुए मैं मरी नहीं। अपने वचनों से मैंने तुम्हें युद्ध में प्रेरित किया और तुम्हारा जीवन और आयु खतम हो गयी। बड़ी निर्मम निकली मैं। ऐसा विलाप करती हुई वह वहाँ से चली गयी। ५५२

❀ अलङ्गल् वेऱ्कै यरक्करै याशऱक्
कुलङ्गळ् वेरऱुप् पाऩ्गुऱित् ताऴ्हडल्
कलङ्गु रैत्तॆऴु कालॆऩक् कालिऩाल्
इलङ्गै मानहर् नॊय्दिऱ्चॆऩ् ऱॆय्दिऩाळ् 553

अलङ्कल् वेल् कै अरक्करै–माला से अलंकृत भाले हाथ में लिये रहनेवाले राक्षसों को; आचु अऱ–निर्मूल करते हुए; कुलङ्कळ् वेर् अऱुप्पाऩ्–राक्षसकुलों की जड़ काटने का; कुऱित्तु–संकल्प लेकर; आऴ् कटल् कलम्–गहरे सागर में पोत को;

कुरैत्तु अॅळु—अस्त-व्यस्त कर उठनेवाले; काल् अॅत्र—झंझे के समान; कालिताल्—पैदल चलकर; नॉय्तिन्—आयास के साथ; इलङ्कै मा नकर् चॅन्ऱु—लंकानगर जा; अॅय्तिनाळ्—पहुँची। ५५३

वहाँ कहाँ रुकी ? उसका आशय माला से अलंकृत भाले लिये रहनेवाले राक्षसों को निर्मूल करने का, उनके कुलों की जड़ ही खोद लेने का था ! इसलिए वह आयास के साथ पैदल चली और लंका जा पहुँची। वह इस कार्य में गहरे समुद्र में फँसे पोत को हिला देनेवाली आँधी के समान लगी। ५५३

7. शूर्प्पणहै शूळ्च्चिप् पडलम् (शूर्पणखा-योजना पटल)

इरैत्तनॅडुम् बडैयरक्क रिऱन्ददनै मऱन्दनळ्बो रिरामन् ऱुङ्ग
वरैप्पुयत्ति निडैक्किडन्द पेराशै मनङ्गवर्ऱ वाऱ्ऱा ळाहित्
तिरैप्परवैप् पेरहळित् तिरुनहरिर् कडिदोडिच् चीदै तन्मै
उरैप्पॅनेनच् चूर्प्पणहै वरविरुन्दा निरुन्दपरि शुरैत्तु मन्नो 554

इरैत्त नॅटुम् पटै—शोर मचाते हुए जो चली उस सेना के; अरक्कर्—(खर मिलाकर) सभी वीर; इऱन्ततनै—मरे, वह बात; मऱन्तनळ्—भूल गई; पोर् इरामन्—युद्ध-चतुर श्रीराम के; तुङ्क—उन्नत; वरै पुयत्तिन् इटै—पर्वत-सम कन्धों में; किटन्त—बँधे रहे; पेर् आचै—गम्भीर प्रेम के; मनम् कवर्ऱ—मन को व्यथित करने से; आर्ऱाळ् आकि—असहनशील बनकर; तिरै परवै—तरंग-भरा समुद्र; पेर् अकळि—बड़ी खाई के रूप में जिसे प्राप्त था; तिरु नकरिल् कटितु ओटि—उस श्रीनगर में सवेग दौड़कर; चीतै तन्मै उरैप्पॅन्—सीता का लक्षण बताऊँगी; ॲन—सोचकर; चूर्प्पणकै वर—शूर्पणखा के आते समय; इरुन्तान्—वहाँ विद्यमान; इरुन्त परिचु—श्रीरावण के रहने का प्रकार; उरैत्तुम्—कहेंगे। ५५४

शूर्पणखा अब यह बात भूल गयी कि खर और बड़ी धूम मचानेवाली उसकी सेना विनष्ट हो गयी। उसका मन युद्ध-कला-प्रवीण श्रीराम के उन्नत, पर्वतसम मनोरम कन्धों से आकृष्ट हो गया। श्रीराम पर उसका प्रेम उसे व्यग्र करने लगा। वह संयम नहीं रख सकी, काम-ताप सह नहीं सकी। उसने यह सोचा कि मैं लंका में, जिसके चारों ओर तरंगाकुल समुद्र ही खाई के रूप में पड़ा है और जो श्रीसमृद्ध है, शीघ्र जाऊँगी और रावण के पास सीता की स्थिति, उसके लक्षण आदि कहूँगी। जब वह उधर आयी तब लंकेश रावण किस ठाट के साथ शोभायमान था, उसका वर्णन करेंगे। ५५४

निलैयिला वुलहिनिडै निऱ्ऱवुन् दिरिन्दनवु नॅऱियि नीन्द
मलरिन्मे नान्मुहर्कुम् वहुप्परिय नुनिप्पदोरु वरम्बि लाद
उलैविला वहैयिळैत्त दरुमॅन्न निनैन्दवॅला मुदवुन् दच्चन्
पुलनॅलान् दॅरिप्पदोरु पुनैमणिमण् डबमदनिर् पॉलिय मन्नो 555

उलकिन् इटै–इस भूमि में; निलै इला–नश्वर; निन्ऱनवुम्–स्थावर; तिरिन्तनवुम्–और जंगम; तॅरियिन् ईन्त–यथाक्रम सृष्ट करनेवाले; मलरिन् मेल्–कमल पर आसीन; नान् मुकऩ्कुम्–चतुर्मुख को; वकुप्परिय–जिसकी सृष्टि नहीं हो सकती; नुणिप्पतु ऑरु वरम्पु इलात–सूक्ष्म रूप से जिसकी सीमा माप करना कठिन है; तरुमम् अँन–उस धर्म के समान; निनैन्त ऍलाम् उतवुम्–इच्छित सभी पदार्थ देनेवाले; तच्चन्–देवशिल्पी विश्वकर्मा के; पुलन् ऍलाम् तॅरिप्पतु–सारे सामर्थ्य का प्रदर्शक; पुनै–सुन्दर; उलैवु इला वकै–अमिट रूप से; इऴैत्त–रचित; ऑरु मणि मण्टपम् अतऩिल्–एक मणिमण्डप में; पॊलिय–शोभायमान रहते (रावण के)। ५५५

रावण एक मणिमण्डप में विराजमान था। वह मणिमण्डप देवशिल्पी विश्वकर्मा से बनाया गया था। वह विश्वकर्मा की सारी शक्ति का, शिल्पशास्त्र के गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान का पूर्ण परिचायक था। नश्वर विश्व और उसमें रहनेवाले स्थावर और जंगम —सभी जीवों के सृष्टिकर्ता, कमलवासी ब्रह्मा के लिए भी वह मण्डप अभाव्य था। वह धर्म के समान सभी मनोरथ पूरा करने की शक्ति रखता था। वह बड़ा ही सुन्दर था और अक्षय रूप से शोभायमान रहनेवाला था। ५५५

पुलियिनद ळुडैयानुम् पॊन्नाडै पुनैन्दानुम् पूवि नानुम्
नलियुमनत् तारल्लर् देवरिलिङ् गियावरिनि नाट्ट वल्लार्
मॅलियुमिडै तडिक्कुमुलै वेयिळन्दोट् चेयरिक्कण् वॅन्ऱि मादर्
वलियनॅडुम् बुलवियिनुम् वणङ्गाद महुडनिरै वयङ्ग मन्नो 556

पुलियिन् अतळ् उटैयानुम्–बाघम्बरधारी; पॊन् आटै पुनैन्तानुम्–पीताम्बरधारी; पूविनानुम्–और कमलवासी; नलियुम् मनत्तार्–(रावण के पराक्रम, वैभव आदि देख) आतंकित थे; अल्लर् तेवरिल्–वे ही नहीं तो अन्य देव; इङ्कु–यहाँ; यावर्–कौन; इनि नाट्टवल्लार्–अब इसकी समता कर सकते हैं; मॅलियुम् इटै–क्षीण-कटि; तटित्त मुलै–पीन स्तन; वेय् इळम् तोळ्–बाँस के समान और बाल कन्धे; चेय् अरि कण्–लाल डोरों से युक्त आँखें, इनसे शोभित; वॅन्ऱि मातर्–मनोहारिणी स्त्रियों के; वलिय नॅटुम् पुलवियिनुम्–शान्त करने में कठिन और लम्बी रूठन के अवसर में भी; वणङ्कात–जो नहीं झुकती; मकुटम् निरै–मुकुटपंक्ति; वयङ्क–(के) शोभते। ५५६

(५५५वें पद से ५७६वें पद तक रावण की सभा में स्थिति का वर्णन है। पूर्णक्रिया पद आखिरी पद में आता है।) स्वयं बाघम्बर शिव, पीताम्बर विष्णु और कमलवासी ब्रह्मा उसके ठाट-बाट से उद्विग्न थे यानी उनका स्थान भी इसके सामने घटा हुआ लगता था। फिर कौन देव हैं जो इसकी समानता कर सकें? वह बड़ा अभिमानी था। क्षीण-कटि, पीन-स्तना, छोटे बाँस-सी भुजाओं और लाल डोरों के साथ मनोरम आँखों से भूषित और विजयशीला स्त्रियों की लम्बी और दुर्वह रूठन के अवसर पर भी उसके किरीट (सिर) नहीं झुकते थे। ऐसे (सिरों के) किरीटों की पंक्ति दृश्यमान करते हुए रावण विराजमान था। ५५६

वण्डलङ्गु नुदऱ्ऱिशैय वयक्कळिऱ्ऱिन् मरुप्पॊडिय वडर्त्त पॊऱ्ऱोळ्
विण्डलङ्ग ळुऱवीङ्गि योङ्गुदय माल्वरैयिन् विळङ्ग मीदिल्
कुण्डलङ्गळ् कुलवरैयै वलम्वरुवा निरविहॊळुङ् गदिर्शूळ् कऱ्ऱै
मण्डलङ्गळ् पन्निरण्डु नालैन्दाय्प् पॊलिन्ददॆन्न वयङ्ग मन्नो 557

वण्टु अलङ्कु नुतल्–भ्रमरावृत भालों के; तिचैय–दिशाओं में स्थित; वय–विजयशील; कळिऱ्ऱिन्–हाथियों के; मरुप्पु ऑटिय–दाँतों को तोड़ते हुए; अटर्त्त–(उन गजों से) जिन्होंने टकराया; पॊन् तोळ्–वे मनोरम कन्धे; विण् तलङ्कळ् उऱ–आकाश के लोकों में जा लगें, ऐसा; वीङ्कि–फूलकर, बढ़कर; ओङ्कु–उन्नत; उतय माल् वरैयिन्–उदयगिरि के समान; विळङ्क–दृश्यमान रहे और; मीतिल्–उन पर; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डल; कुल वरैयै–मेरुपर्वत की; वलम् वरुवान्–परिक्रमा करनेवाले; इरवि–सूर्य के; कॊळुम्–पुष्कल; कतिर् चूळ्–किरणसंकुल; कऱ्ऱै–पुंज; मण्टलङ्कळ्–मण्डल; पन्निरण्टुम्–बारह; नालु ऐन्ताय्–(चार के पाँच) बीस बनकर; पॊलिन्ततु ॲन्न–प्रकाशमय विद्यमान रहते हों जैसे; वयङ्क–दृश्यमान रहे। ५५७

उसके कन्धों ने दिग्गजों के साथ युद्ध करते हुए उनके दाँतों को तोड़ा था। दिग्गज इतने मदमत्त थे कि हमेशा भ्रमर उनके भालों पर मँड़राते थे। ऐसे बलवान कन्धे बहुत ही दर्शनीय और फूलकर उन्नत उदयगिरि के समान शोभ रहे थे। कानों के कुण्डल, जो उनके कन्धों को स्पर्श करते हुए हिल रहे थे, किरण-पुंज बारह आदित्यों के समान प्रकाशमान थे जो बीस बन गये हों। ५५७

वाळुला मुळुमणियिन् वयङ्गॊळियिन् ऱॊहैवळङ्ग वयिरक् कुन्ऱत्
तोळॆलाम् बडिशुमन्द विडवरविन् बडनिरैयिऱ् ऱोन्ऱ वान्ऱ
नाळॆलाम् पडैदयङ्ग नामनी रिलङ्गैयिऱ्ऱा नलङ्ग विट्ट
कोळॆलाङ् गिडन्दनॆडुञ् जिरैयनन्न निरैयारङ् गुलव मन्नो 558

वाळ् उलाम्–उज्ज्वल; मुळु मणियिन्–बड़े-बड़े रत्नों की; वयङ्कु ऑळियिन्–छिटकनेवाली कान्ति की; तॊकै–राशि; वळङ्क–दृश्यमान रही; वयिर कुन्ऱ तोळ् ॲलाम्–वज्र गिरि-सम सब कन्धे; पटि चुमन्त–भू-भार-वाही; विट अरविन्–विषैले नाग के; पट निरैयिन्–फनों की पंक्ति के समान; तोन्ऱ–दिखाई दिये; नाम नीर् इलङ्कैयिल्–भयोत्पादक समुद्रजल सहित लंका में; तान् नलङ्क विट्ट–उससे आक्रान्त; कोळ् ॲलाम्–सब (नव) ग्रह; आन्ऱ–श्रेष्ठ; नाळ् ॲलाम्–सभी नक्षत्र; पुटै तयङ्क–पास-पास रहें, ऐसा; किटन्त–(बद्ध) पड़े रहे; नॆटुम् चिऱै अन्न–बड़ी कारा के समान; निरै आरम्–रत्नमय हार; कुलव–शोभ रहा था। ५५८

रावण अनेक आभरण पहने हुए था। उनमें जड़ित रत्न बड़े-बड़े थे और बड़े ही जाज्वल्यमान थे। उनकी ज्योतियों की राशि शोभित थी। उसके वज्रगिरिसम कन्धे भूभारवाही शेषनाग के फनों के समान दर्शनीय थे (वे रत्न उन फनों के ऊपर रहनेवाली मणियों के समान थे।)

उसने एक रत्नहार पहन रखा था, जो उस कारा के समान था जिसमें उसने ग्रहों और नक्षत्रों को हराकर डाल रखा था। यानी वह हार श्रेष्ठ और ज्वलन्त रत्नों का बना था। ५५८

❀ आय्वरुम् बॆरुवलि यरक्क रादियोर्
नायहर् नळिमणि महुड नण्णलाल्
तेय्वुऱत् तेय्वुऱप् पॆयर्न्दु शॆन्ज़ुडर्
आय्मणिप् पौलन्गळ् लडिनित् ऱार्प्पवे 559

आय्वु अरु–अकूत; पॆरु वलि–बहुत बल से युक्त; अरक्कर् आतियोर्–राक्षस आदि राजा लोगों के; नळि मणि मकुटम्–बहुमूल्य रत्न-जड़ित किरीट; नण्णलाल्–मिले आते हैं, इसलिए; तेय्वु उऱ तेय्वु उऱ–घिसते-घिसते; पॆयर्न्तु–फिर से; चॆम् चुटर्–लाल प्रकाश की; मणि पौलन् कळल्–मणिमण्डित पायल; अटि निन्ऱु आर्प्प–उसके पैरों में रहकर क्वणित हो रही थी। ५५९

राक्षस वीर आकर उसके पैरों पर सिर झुकाते थे। उन राक्षसों के बल का अनुमान भी नहीं हो सकता था। उनके मुकुटों के लगने से उसकी पायल घिसी हुई थी और उस पर जड़ित रत्न अधिक निखरे हुए हो गये थे। वह पायल उसके पैरों में क्वणित हो रही थी। ५५९

❀ मूवहै युलहितु मुदल्वर् मुन्दैयोर्, ओविल रुदविय परिशि ऩोङ्गल्बोल्
तेवरु मवुणरु मुदलि ऩोर्दिशै, तूविय नऱुमलर्क् कुप्पै तुन्ऩवे 560

मूवकै उलकितुम्–तीन प्रकार (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों के; मुतल्वर्–नायकों ने; मुन्तैयोर्–मैं पहले, मैं पहले करते हुए; ओविलर्–निरन्तर; उतविय–लाकर जो दिये; परिचिन्–उन उपहारों के; ओङ्कल् पोल्–पर्वत के समान; तेवरुम् अवुणरुम् मुतलिऩोर्–देव, असुर और अन्यों के; तिचै–चारों दिशाओं से; तूविय–बरसाये; नऱुमलर्–सुगन्धित फूलों की; कुप्पै–राशियाँ; तुन्ऩ–ठस भरकर पड़ी रहीं। ५६०

तीनों लोकों के नायक लोग पहले आने की स्पर्द्धा करते हुए आकर निरन्तर उपहार देते रहे। उन उपहारों के पर्वत-से ढेर हो गये थे। देवों और राक्षसों द्वारा चारों ओर से बरसाये सुवासित फूलों के ढेर सर्वत्र पाये जाते थे। ५६०

❀ इन्ऩबो दिव्वळि नोक्कु मॆन्बदै, उन्ऩलर् करदलज़् जुमन्द वुच्चियर्
मिन्ऩविर् मणिमुडि विज़्जै वेन्दर्हळ्, तुन्ऩिनर् मुऱैमुऱै तुऱैयिर् चुऱ्ऱवे 561

मिन्ऩु अविर्–बिजली के समान चमकनेवाले; मणि मुटि–रत्नकिरीट-धारी; विज़्चै वेन्तर्कळ्–विद्याधर राजा लोग; इन्ऩ पोतु–कब; इ वळि नोक्कुम् ऍन्पतै–इस तरफ़ देखेगा, यह; उन्ऩलर्–नहीं जानते; कर तलम् चुमन्त उच्चियर्–हाथ सिर पर रखे; तुन्ऩितर्–समीपस्थ होकर; मुऱै मुऱै–यथाक्रम; तुऱैयिल्–अपनी-अपनी निर्दिष्ट सेवा में लगे; चुऱ्ऱ–घेरे रहे, ऐसा। ५६१

विद्याधर राजा लोग थे। उनके रत्नकिरीट बिजली के समान चमकते थे। वे अपने हाथों को जोड़े अपने सिरों पर रखे हुए थे। वे हमेशा सतर्क रहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम नहीं हो सका कि रावण किस समय किस ओर दृष्टि फेंकेगा। वे अपने-अपने स्थान पर निर्दिष्ट सेवा में लगे हुए, रावण की दृष्टि की भी प्रतीक्षा करते हुए चारों ओर पाये गये। ५६१

❀ मङ्गैयर् तिऱत्तॊरु माऱ्ऱङ् गूऱिनुम्, तङ्गळै यामॆनत् ताऴुज् जॆन्निियर्
अङ्गैयु मुळ्ळमुङ् गुविन्द वाक्कैयर्, शिङ्गवे ऱॆन्नत्तिऱर् चित्तर् शेरवे 562

चिङ्क एऱु ॲन्न–पुरुषकेसरी के समान बलिष्ठ; चित्तर्–सिद्ध लोग; मङ्कैयर् तिऱत्तु–अपनी दासियों के प्रति; ऑरु माऱ्ऱम् कूऱिनुम्–(रावण) एक बात कहता तो भी; तङ्कळै आम् ॲन्न–अपने से कहता है, समझ; ताऴुम् चॆन्निियर्–सिर झुकाते हैं (झुके सिर वाले होकर); अम् कैयुम्–हथेलियों; उळ्ळमुम्–और मन को जोड़कर; कुविन्त आक्कैयर्–शरीर झुकाकर (विनय की मुद्रा में); चेरवे–(रावण के चारों ओर) समीप खड़े रहे, ऐसा। ५६२

कभी सिंहसदृश रावण अपने पास स्थित किसी स्त्री से कोई बात कहता तो वहाँ रहे सिद्ध जाती के लोग सोचते कि वह हमारे प्रति ही कुछ कह रहा है! वे हाथ जोड़े। मन को एकाग्र किये और सिर झुकाये बहुत ही विनय के साथ स्थित रहे। 'सिंह-सदृश' सिद्धों पर भी लग सकता है। ५६२

अन्नव	**ऩमैच्चरै**	**नोक्कि**	**याण्डॊरु**
नत्मौऴि	**पहरिनु**	**नडुङ्गुञ्**	**जिन्दैयर्**
ॲन्नैहोल्	**पणियॆन**	**विऱैञ्जु**	**हिन्ऱनर्**
किन्नरर्	**पॆरुम्बयङ्**	**गिडन्द**	**नॆञ्जिनार् 563**

किन्नरर्–किन्नर जाति के लोग; अन्नवन्–वह (रावण); अमैच्चरै नोक्कि–मन्त्रियों को देखकर; आण्टु ऑरु नल् मौऴि–वह एक शिष्ट-वचन; पकरित्तुम्–कहता तो भी; नटुङ्कुम् चिन्तैयर्—कम्पित-मन होकर; पॆरुम्पयम् किटन्त–बहुत भयाक्रान्त; नॆञ्चिनार्–मन के साथ; ॲन्नै कोल् पणि–क्या सेवा है; ॲन–ऐसा; इऱैञ्चुकिन्ऱनर्–विनय करते। ५६३

किन्नर लोग पाये गये। अगर रावण अपने अमात्यों से कोई मधुर वचन भी कहता तो वे समझ लेते कि वह हमसे कुछ कह रहा है। बस, सिहर उठते। पास आकर पूछते कि कौन सी सेवा है जो बजा लानी है? यह अत्यन्त विनय के साथ पूछते। ५६३

पिरहर	**नॆडुन्दिशैप्**	**पॆरुन्दण्**	**डेन्दिय**
करदलत्	**तण्णलेक्**	**कण्णि**	**ऩोक्किय**

नरहिऩ रामॆऩ नडुङ्गु नाविऩर्
उरहरुन् दम्मऩ मुलैन्दु शूऴ्वे 564

उरकरुम्–नागलोकवासी; पिरकर नॆट्टुम् तिचै–(जीवों को) दण्ड जहाँ दिया जाता है, उस (दक्षिणी) दिशा के देव; पॆरुम् तण्टु एन्तिय–बड़ा कालदण्ड-धारी; करतलत्तु–हाथ के; अण्णलै–राजा (धर्मदेवता) को; कण्णिऩ् नोक्किय–अपनी आँखों के सामने जिन्होंने देखा हो, ऐसे; नरकर् आम् अॆऩ–नरकवास योग्य पापियों के समान; नटुङ्कुम् नाविऩर्–स्खलित-वचन (लड़खड़ाती-वाणी वाले) होकर; तम् मतम् उळैन्तु–मन में व्यथित होकर; चूऴ–घेरे खड़े रहे। ५६४

नागलोकवासी रावण के सामने इतना डरे हुए खड़े रहे जितना कि नरक-योग्य जीव उस यमलोक के देव दण्डधर यम को देखकर डरते है, जहाँ जीवों को दण्ड का विधान हो, दण्ड दिया जाता है। उनकी जिह्वाएँ लड़खड़ातीं; मन व्यग्र रहता। वे भी रावण को घेरे खड़े रहे। ५६४

❀ तिशैयुऱु करिहळैच् चॆऱ्ऱुत् तेवनुम्
वशैयुऱक् कयिलैयै मऱित्तु वाऩॆलाम्
अशैयुऱप् पुरन्दरऱ् कडन्द तोळ्हळिऩ्
इशैयिऩैत् तुम्बुरु विशैयि ऩेत्तवे 565

तिचै उऱु करिकळै–दिग्गजों को; चॆऱ्ऱु–हराकर; तेवनुम् वचै उऱ–परमेश्वर को भी अपयश दिलाते हुए; कयिलैयै मऱित्तु–कैलास को उखाड़कर; वाऩ् ऎलाम् अचैवु उऱ–सारा आकाश कँपाते हुए; पुरन्तरन् कटन्त–पुरन्दर को जिन्होंने प्रताड़ित किया; तोळ्कळिऩ् इचैयिऩै–उन कन्धों की प्रशंसा; तुम्पुरु–तुम्बुरु; इचैयिऩ् एत्त–गीत गाते (रहे, ऐसा रावण सभा में विराजमान था)। ५६५

रावण ने दिग्गजों का बल दमन किया था। कैलास पर्वत को उखाड़कर परमेश्वर शिव को भी अपयश दिलाया था। पुरन्दर को हराकर आकाश भर को उद्विग्न कराया था। ऐसे रावण के पराक्रम की प्रशंसा तुम्बुरु गा रहे थे। ५६५

❀ शेणुयर् नॆऱिमुऱै तिऱम्ब लिऩ्ऱिये
पाणिहळ् पणिशॆयप् पऴुदिल् पण्णिऱै
वीणैयि ऩरम्बिडै विळैन्द तेमऱै
वाणियि ऩारदऩ् शॆवियिऩ् वाक्कवे 566

चेण् उयर्–अत्युन्नत; नॆऱि मुऱै तिऱम्पल् इऩ्ऱिये–गति-विधि का उल्लंघन किये बिना; पाणिकळ् पणि चॆय–ताल काल-निर्णय का काम करते हैं, ऐसा; पऴुतु इल्–त्रुटिहीन; पण् निऱै–राग-युक्त; वीणैयिऩ् नरम्पु इटै–वीणा की तन्त्रियों से; विळैन्त–उत्पन्न; ते मऱै–मधुर वेद-रूप संगीत; वाणियिऩ्–मुख-स्वर के साथ; नारतन्–नारद ऋषि; चॆवियिऩ् वाक्क–उसके बीसों कानों में भर रहे थे। ५६६

नारद अपनी वीणा से संगीतमय स्वर निकालते हुए ताल-मेल के साथ श्रुति-शुद्ध, लय-शुद्ध रीति से वेदसमान गन्धर्वगान कर रहे थे। रावण के बीसों कान उसे श्रवण कर रहे थे। ५६६

मेहमॅन् ऱुरुत्ति वीक्कि विण्णवर् तरुवुम् विज्जै
नाहमुञ् जुरन्द तीन्दे नरुपुत्त लोड ळावित्
तोहैयर् तुहिलिऱ् ऱोय्क्कु मॅन्नबदोर् तुणुक्कत् तोडुञ्
जीहर महर वेलैक् कावलन् शिन्द मन्नो 567

मकर वेलै कावलन्–मकरालय के देवता वरुण; विण्णवर् तरुवुम्–देवों का कल्पतरु; विज्चै नाकमुम्–विद्याधर लोक का सुरपुन्नाग; चुरन्त–(अपने फूलों से जो) ढलकते थे; तीम् तेन्–वह मधुर शहद; नऱु पुत्तलोटु–सुवासित जल के साथ; अळावि–मिश्रित करके; मेकम् अॅन् तुरुत्ति वीक्कि–मेघ की मशक में भरकर; तोकैयर् तुकिलिल्–(रावण के पास रहनेवाली) स्त्रियों के वस्त्र; तोय्क्कुम्–गीला हो जायगा; अॅन्पतोर् तुणुक्कत्तोटुम्–इस डर से (अत्यन्त सावधानी के साथ); चीकरम्–जल-सीकर; चिन्त–छिड़का रहे थे। ५६७

मकरालय के अधिदेवता वरुण मण्डप में जल छिड़कने का कार्य कर रहे थे। कैसा जल था? उत्तम जल में आकाश के कल्पतरु से झरनेवाला शहद और नागलोक के सुरपुन्नाग तरुओं से मिलनेवाला शहद मिला हुआ था। मेघ की मशक में उसे भरकर सीकरों में छिड़कता था। यह भय लगा हुआ था कि कहीं रावण की नारियों के वस्त्र पर पड़ जायगा तो रावण का कोप अनर्थ कर देगा। इसलिए बहुत सावधानी से वे जल की बौछार कर रहे थे। ५६७

नरॅमलरत् तादुन् देतु नळिनॅडु महुड कोडि
मुरॅमुरॅ यरॅयच् चिन्दि मुरिन्दुहु मणियु मुत्तुम्
तरॅयिडॅ युहाद मुन्नन् दाङ्गिनन् ऱळुवि वाङ्गित्
तुरॅदोरुन् दोडर्न्दु निन्ऱु समीरणन् ऱुडैप्प मन्नो 568

चमीरणन्–वायुदेव; नरॅ मलर् तातुम्–सुगन्धपूर्ण पुष्पों का पराग; तेनुम्–और शहद; नळि–बड़े; नॅटु–लम्बे; मकुट कोटि–किरीट-कोटि के; मुरॅ मुरॅ अरॅय–बार-बार टकराने से; चिन्ति मुरिन्तु उकु–टूटकर जो गिरे, वे; मणियुम् मुत्तुम्–रत्न और मोती; तरॅयिटॅ–भूमि पर; उकात मुन्नम्–गिरें, इसके पहले ही; ताङ्कितन्–पकड़कर; तळुवि वाङ्कि–समेट लेकर; तुरॅ तोरुम् तॉटर्न्तु निन्ऱु–हर स्थान में निरन्तर खड़े होकर; तुटॅप्प–झाड़कर शुद्ध कर रहे थे। ५६८

वायुदेव का क्या काम था? सुबासित पुष्पों से मकरन्द चूते थे। उनसे शहद भी गिरता था। रावण से भेंट करने जो आये उनके किरीटों के आपस में टकराने से रत्न और मोती अलग होकर गिरते थे। समीरण

का काम था कि उनको भूमि पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर ले। वे सर्वत्र रहकर बुहारने का काम करते रहे। ५६८

मिऩ्ऩुडै वेत्तिरक् कैयर् मॅय्बुहत्, तुऩ्ऩिडु कञ्जुहत् तुहिलर् शोर्विलाप्
पॊऩ्ऩॊडु वॆळ्ळियप् पुरन्द रादियर्क्, किऩ्ऩियऩ् मुऱैमुऱै यिरुक्कै यीयवे 569

पॊऩ् ऑट्टु–बृहस्पति के साथ; वॆळ्ळि–असुर-गुरु शुक्र; मिऩ् उटै–चमकीले; वेत्तिर कैयर्–वेत्रपाणी होकर; मॅय् पुक–शरीर जिसमें प्रविष्ट हो, ऐसा; तुऩ्ऩिटु–सिये हुए; कञ्चुक तुकिलर्–कंचुक की पोशाक से अलंकृत; चोर्वु इलर्–बिना आलस्य के; पुरन्तरातियर्क्कु–पुरन्दरादि देवता लोगों को; इऩ् इयल्–मधुर व्यवहार के साथ; मुऱै मुऱै–उचित प्रकार से; इरुक्कै ईय–आसन की व्यवस्था कर रहे थे, ऐसा। ५६९

स्वर्णदेव बृहस्पति, शुक्लदेव शुक्राचार्य दोनों कंचुकी पहने हुए वेत्र हाथ में लेकर आलस्य त्यागकर पुरन्दर आदि को उनका योग्य स्थान दिखा रहे थे। आगतों का स्वागत करना और उनके आसन की व्यवस्था करना उनका काम था। ५६९

शूलमे मुदलिय तुऱन्दु शुऱ्ऱिय, शेलैयाऱ् चॆय्यवाय् पुदैत्त शेङ्गैयऩ्
तोलुडै नॆडुम्बणै तुवैक्कुन् दोरॆलाम्, कालऩिऩ् ऱिशैक्कुनाट् कडिहै कूऱवे 570

कालऩ्–कालदेव (यम); चूलमे मुतलिय तुऱन्तु–शूल आदि त्यागकर; चुऱ्ऱिय चेलैयाल्–अपने शरीर पर लपेटे वस्त्र के छोर से; चॆय्य वाय्–लाल मुख को; पुतैत्त–जो ढक रहे थे; चॆम् कैयऩ्–उन अरुण हाथों के साथ; तोल् उटै नॆटुम् पणै–चमड़ा-मढ़े बड़े ढोलों के; तुवैक्कुम् तोऱु ऎलाम्–पिटते हर समय; इचैक्कुम् नाळ् कटिकै–निर्दिष्ट दिन की घड़ी; वन्तु कूऱ–सभा में आकर बता रहे थे। ५७०

यम का क्या हाल था? ढोल बजाकर घड़ी बतायी जाती। यम का काम था कि वे अन्दर आते और अपने वस्त्र से मुख ढाँपे विनय के साथ घड़ी बतावें। समय-सूचक का काम उनका था। वे अपना शूल आदि त्याग चुके थे। ५७०

नयङ्गिळर् नऱुविरै नाऩ नॆय्यळाय्
वियऩ्गरुप् पूरमॆऩ् पञ्जित् मीक्कॊळीइ
कयङ्गळिऩ् मरैमलर्क् काडु पूत्तॆऩ
वयङ्गॆरिक् कडवुळुम् विळक्क माट्टवे 571

वयङ्कु–प्रकाशमान; ऎरि कटवुळुम्–अग्निदेव ने भी; नयम् किळर्–श्रेष्ठतायुक्त; नऱु विरै–सुबासपूर्ण; नातम्–कस्तूरी को; नॆय् अळाय्–घृत से मिलाकर; वियऩ् करुप्पूरम्–उत्तम कर्पूर को; मॆऩ् पञ्चिल् मी–नरम रुई पर रख के; कॊळीई–(उस बाती को) जलाकर; कयङ्कळिल्–तालाबों में; मरै मलर् काटु–कमलपुष्प-कानन; पूत्तत–फूले, जैसे; विळक्कम् माट्ट–दिये जलाये। ५७१

प्रकाशमान अग्निदेव पर दीया जलाने का जिम्मा था। उन्होंने अनेक दीये जलाये, जिनका तेल श्रेष्ठ और सुगन्धित कस्तूरी और उत्तम घृत का मिश्रण था और कर्पूर को रुई में रखकर उसकी बातियाँ जलायी गयीं। उन्होंने उन्हें जलाशयों पर विकसित कमलों के समान सजाए। ५७१

अदिशय मळिप्पदऱ् करुळ ऱिन्दुनल्, पुदिदलर् कऱ्पहत् तरुवुम् बॊय्यिलाक्
कदिर्नॆडु मणिहळुङ् गऱवै यात्गळुम्, निदिहळु मुऱैमुऱै निन्ऱु नीट्टवे 572

नल् पुतितु अलर्–अच्छे और ताजा फूले हुए; कऱ्पक तरुवुम्–कल्पतरु और; पॊय् इला–अभंग; नॆटु कतिर्–लम्बी ज्योति से युक्त; मणिकळुम्–(चिंतामणि आदि) रत्न; कऱवै आत्कळुम्–दुधारू गायें (कामधेनु); नितिकळुम्–(शंख आदि नव-) निधियाँ; अतिचयम् अळिप्पतऱ्कु–रावण को विस्मयगर्भित मनोरंजन करने के लिए; अरुळ् अऱिन्तु–उसकी कृपा की ताक में रहकर; मुऱै मुऱै—अपने-अपने क्रम से; निन्ऱु–खड़ा होकर; नीट्ट–अपना उपहार बढ़ातीं, ऐसे संभ्रम के साथ। ५७२

नवविकसित फूलों के साथ कल्प, संतान, मन्दार, पारिजात, हरिचन्दन के तरु, अमन्द और लम्बी ज्योतियुक्त चिन्तामणि, दुधारू कामधेनु आदि गायें, शंख, (पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, हीरे आदि) निधियाँ —ये सब रावण को प्रसन्न करने के लिए बारी-बारी से अपना-अपना उपहार बढ़ा रही थीं। तब। ५७२

कुण्डल मुदलिय कुलङ्गॊळ् पेरणि, मण्डिय पेरॊळि वयङ्गि वीशलाल्
उण्डुहॊ लिरविनि युलह मेळिनुम्, ऎण्डिशै मरुङ्गिनु मिरुळिन् ऱॆन्नवे 573

कुण्टलम् मुतलिय–कुण्डल आदि; कुलम् कॊळ् पेर् अणि–उत्तम और बहुमूल्य आभरणों की; मण्टिय–परिपूर्ण; पेर् ऒळि–बड़ी कान्ति; वयङ्कि वीचलाल्–भरपूर फैलती है, इसलिए; उलकम् एळिनुम्–सातों लोकों में; इनि–अब; इरवु उण्टु कॊल्–रात भी है क्या; ऎण् तिचै मरुङ्कितुम्–आठों दिशाओं में सर्वत्र; इरुळ् इन्ऱु–अन्धकार नहीं है; ऎन्न–कहा जाय, ऐसा। ५७३

रावण के कर्ण-कुण्डल और अन्य श्रेष्ठ आभरण घनी कान्ति बिखेर रहे थे। वह प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ था। इस वजह से ऊपर के और नीचे के सातों लोकों में क्या कभी रात हो सकेगी? आठों दिशाओं में कहीं अन्धकार का नाम तक नहीं था। ५७३

कङ्गैये मुदलिय कडवुट् कन्नियर्, कॊङ्गैहळ् शुमन्दिडै कॊडियि नॊल्हिडच्
चॆङ्गैयि नरिशियुम् मलरुम् जिन्दिनर्, मङ्गल मुऱैमॊळि कूऱि वाळ्त्तवे 574

कङ्कैये मुतलिय–गंगाजी आदि; कटवुळ् कन्नियर्–(नदी की) देव-कन्याएँ; कॊङ्कैकळ् चुमन्तु–स्तनों को ढोने से; इटै–कमर को; कॊटियिन् ऒल्किट–लता के समान झुकने देते हुए; चॆम् कैयिन्–लाल (नरम और सुन्दर) हाथों से; अरिचियुम् मलरुम्–अक्षत और फूल; चिन्तिनर्–(रावण पर) चढ़ाकर; मङ्कल मुऱै मॊळि कूऱि–मंगलाशासन के वाक्य कहकर; वाळ्त्त–'जय जीव' कहतीं, ऐसा। ५७४

गंगाजी आदि दिव्य जल-कन्याएँ, जिनकी कमरें भारी स्तनों के बोझ के कारण लचक-लचक जाती थीं, अपने लाल (मनोरम और कोमल) हाथों से चावल और फूल रावण पर चढ़ाकर मंगलाशासन करके स्तुति के गीत गा रही थीं। ५७४

ऊरुविऱ् ऱोन्ऱिय वुरुप्प शिप्पॆयरक्, कारिहै यार्मुदऱ् कलाप मञ्ञैबोल्
वार्विशिक् करुवियोर् वहुत्त पाणियिन्, नारिय ररुनड नडिप्प नोक्कियॆ 575

ऊरुविल् तोन्ऱिय–श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न; उरुप्पचि पॆयर्–उर्वशी नाम की; कारिकैयार् मुतल्–सुरबाला आदि; नारियर्–नारियाँ; कलाप मञ्ञै पोल्–कलापी मोरों के समान; वार् विचि–फीते से कसे; करुवियोर्–मृदंग आदि के वादकों के; वकुत्त पाणियिन्–वादन से निर्दिष्ट ताल-लय में; अरु नटम् नटिप्प–श्रेष्ठ नाच नाचतीं, तब। ५७५

वहाँ मृदंग आदि बाजे बज रहे थे। उन्हीं के ताल-मेल में श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न उर्वशी आदि अप्सराएँ नाच रही थीं। उसका रसास्वादन करते हुए— (नर और नारायण बदरिकाश्रम में तपस्या कर रहे थे। देवेन्द्र ने उनके तप को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा। श्रीमन्नारायण ने अपने ऊरु से उर्वशी को पैदा किया। उसका सौन्दर्य देखकर अप्सराएँ लज्जित होकर चली गयीं।)। ५७५

इरुन्दन नुलहङ्ग ळिरण्डु मॊन्ऱुन्दन्
अरुन्दव मुडैमैयि नळवि लाऱ्ऱलिल्
पॊरुन्दिय विरावणन् पुरुवक् कार्मुहक्
करुन्दडङ् गण्णियर् कण्णिन् वॆळ्ळत्ते 576

उलकङ्कळ् इरण्टुम् ऒन्ऱुम्–दो और एक (तीनों) लोकों में; तन् अरुम् तवम् उटैमैयिन्–अपने अपूर्व तपस्या के होने से; अळवु इल् आऱ्ऱल्–(प्राप्त) अपार पराक्रम का स्वामी; इरावणन्–रावण; पुरुव कार्मुक–भौंहें रूपी धनुओं के साथ; करुम् तटम् कण्णियर्–काली और विशाल आँखों की; कण्णिन् वॆळ्ळत्ते–दृष्टि रूपी प्रवाह में; इरुन्ततन्–तैरता रहा। ५७६

रावण सभा में विराजमान था। उसने ऐसा कठोर तप किया था, जैसा तीनों लोकों का और कोई नहीं कर सकता था। अतः उसे अपार बल प्राप्त था। उस पर नारियाँ बड़े प्रेम के साथ दृष्टि दिये रहती थीं। कवि कहते हैं कि रावण उनकी काली और दीर्घ आँखों की दृष्टि के प्रवाह में तैरता रहा। ५७६

❀ तङ्गैयु मव्वळि तलैयिऱ् ऱाङ्गिय
शॆङ्गैयळ् शोरियिन् ऱारै शॆऱ्न्दिळि

कोङ्गैयळ् मूक्किलळ् कुळैयिन् कादिलळ्
मङ्गुलि नॊलिपडत् तिऱन्द वायिनाळ् 577

अ वळि–तब; तङ्कैयुम्–(रावण की) बहिन; तलैयिल् ताङ्किय–सिर पर रखे; चॆम् कैयळ्–हाथों के साथ; चोरियिन् तारै–रक्त की धारा; चेर्न्तु इळि–जिन पर बहती रही; कोङ्कैयळ्–उन स्तनों के साथ; कुळैयिन् कातु इलळ्–कुण्डल सहित कानों से रहित; मङ्कुलिन् ऑलि पट–मेघ-गर्जन करते हुए; तिऱन्त वायिनाळ्–खुले मुख के साथ। ५७७

जब रावण इस ठाट-बाट के साथ राजदरबार में विराजमान रहा, तब (उसकी बहिन शूर्पणखा) हाथ सिर पर रखते हुए, स्तनों पर रक्त को बहने देते हुए नासिकाहीन मुख खोलकर मेघगर्जन-से उच्च स्वर में— । ५७७

❀ मुडैमिडै वायिनिन् मुऱैयिट् टार्हलि
कडैयुहत् तॆळुमॊलि काट्टक् कान्दुवाळ्
कुडदिशैच् चॆक्करिऱ् चेन्द कून्दलाळ्
वडदिशै वायिलिन् वन्दु तोन्ऱिनाळ् 578

मुटै मिटै–मांस-गन्ध-युक्त; वायिनिन्–मुख से; मुऱैयिट्टु–शिकायत करते हुए; आर् कलि–सघोष समुद्र से; कटै युकत्तु–युगान्त में; ऍळुम् ऑलि–जो उठती है, उस ध्वनि को; काट्ट–प्रकट करते हुए; कान्तुवाळ्–जो मुरझायी रही; कुट तिचै चॆक्करिल्–पश्चिमी दिशा के गगन की लालिमा से; चेन्त कून्तलाळ्–अधिक लाल केश वाली; वट तिचै वायिलिन्–उत्तर के द्वार पर; वन्तु तोन्ऱिताळ्–आकर प्रकट हुई (शूर्पणखा)। ५७८

मांसगन्धयुक्त अपने मुख से प्रलाप करती हुई उत्तरी द्वार पर आ प्रकट हुई। उसने जो शोर मचाया वह युगान्त के नाद के समान भयंकर था। अग्नितप्त-सी, लाल सन्ध्या-राग से भी अधिक लाल केश के साथ वह आयी। ५७८

तोन्ऱलुन् दॊन्नह ररक्कर् तोहैयर्
एन्ऱॆदिर् वयिऱलैत् तिरङ्गि येङ्गिनार्
मून्ऱुल हुडैयवन् ऱङ्गै मूक्किलळ्
तान्ऱनि यवळ्वरत् तरिक्क वल्लरो 579

तोन्ऱलुम्–प्रकट होते ही; तॊल् नकर्–प्राचीन नगर की; अरक्कर् तोकैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; ऍतिर् एन्ऱु–सामने स्थित हो; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटते हुए; इरङ्कि एङ्कितार्–अनुताप करके रोईं; मून्ऱु उलकु उटैयवन्–तीनों लोकों के पति की; तङ्कै–बहिन; मूक्कु इलळ्–नासिका से हीन; तनि अवळ् तान् वर–अकेली स्वयं आए; तरिक्क वल्लरो–सह सकेंगी क्या। ५७९

उसके उस रूप में प्रकट होने पर उस प्राचीन नगर की राक्षस-नारियाँ सामने आकर (अपनी छाती) अपना पेट पीटते हुए अनुताप के साथ रोयीं।

तीनों लोकों के स्वामी की सगी बहिन थी वह। उसकी यह स्थिति ! उसकी नाक कटी हुई है ! अकेली आ रही है। यह देखकर कोई सब्र कर सकता है क्या ? । ५७९

❀ पॉरुक्कॅऩ नोक्किऩर् पुहल्व दोर्हिलर्
अरक्करु मिरॅत्तऩ रशऩि येर्रॅऩक्
करत्तॊडु करङ्गळॅप् पुडॅत्तुक् कण्गळिऩ्
नॅरुप्पॅऴ विऴित्तुवाय् मडित्तु निऱ्किऩ्ऱार् 580

अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; पॉरुक्कु ॲऩ नोक्किऩर्–सहमकर देखा; पुकल्वतु ओर्किलर्–क्या कहना, नहीं जानते; अचऩि एऱु ॲऩ–अशनिराज के समान; करत्तु ओटु करङ्कळॅ–हाथों से हाथों को पीटकर: कण्कळिऩ् नॅरुप्पु ॲऴ–आँखों से अंगार निकालते हुए; विऴित्तु–आँख फाड़े देखकर; वाय् मटित्तु–दाँत पीसकर; निऱ्किऩ्ऱार्–खड़े रहे। ५८०

राक्षसों ने भी सहमकर देखा। क्या कहना —यह भी न सूझा। अशनि का-सा नाद पैदा करते हुए हाथों से हाथ मारे। उनकी आँखों से आग उगलने लगी। दाँत पीसते हुए आँखें फाड़े देखते हुए खड़े के खड़े रह गये। ५८०

❀ इऩ्दिरऩ् पालदो वुलह मीऩ्ऱपेर्, अऩ्दणऩ् पालदो वाऴि याऩदो
शऩ्दिर मवुलिपाऱ् रङ्गु मेहॊलो, अऩ्दर मिदुवॅऩ वऴल्हिऩ् ऱार्शिलर् 581

चिलर्–(उनमें) कुछ; इऩ्तिरऩ् पालतु ओ–क्या इन्द्र की तरफ़ से हुआ है; उलकम् ईऩ्ऱ–लोकों के सर्जक; पेर् अऩ्तणऩ् पालतो–बड़े ब्राह्मण (ब्रह्मवित) ब्रह्मा की तरफ़ से क्या; आऴियाऩ् अतो–चक्रधारी (क्षीर-) सागर-निवासी का है; चन्तिर मवुलि पाल्–चन्द्रमौलि पर; तङ्कुमे कॊलो–इसका जिम्मा रहता है; अन्तरम् इतु–सितम है यह; ॲऩ अऴल्किऩ्ऱार्–समझकर कोप से तपते हैं। ५८१

उनमें कुछ राक्षसों ने बड़े क्रोध के साथ प्रश्न किया कि क्या यह घोर अपराध इन्द्र की तरफ़ से हुआ है ? या विश्व के सृष्टि-कर्ता ब्राह्मण (ब्रह्मवित) द्वारा हो गया ? या क्षीरसागरशायी, चक्रधर श्रीविष्णु के हाथों हो गया है ? (आऴि का अर्थ चक्र भी है, सागर भी।) या चन्द्र-मौलीश्वर पर ही यह लगेगा ? जो हो यह बड़ी आफ़त है ! वे क्रोध से उबले। ५८१

पोरिलाऩ् पुरऩ्दर नेवल् पूण्डऩऩ्, आरुला नेमिया ऩाऱ्ऱ ऱोऱ्ऱुप्पोय्
नीरिऩा ऩॅरुप्पऩाऩ् पॊरुप्पि ऩाऩिनि, यार्हॊलो मोदॅऩ वर्रॅहिऩ् ऱार्शिलर् 582

चिलर्–(और) कुछ; पुरऩ्तरऩ्–पुरन्दर; पोर् इलाऩ्–युद्ध छोड़कर; एवल् पूण्टतऩ्–सेवक बन गया; आर् उलाम् नेमियाऩ्–तीक्ष्ण चक्रधारी; आऱ्ऱल् तोऱ्ऱु पोय्–बल में हारकर; नीरिऩाऩ्–(क्षीरसागर का) जलवासी हो गया है; नॅरुप्पु

अतान्—अग्नि-समान शिव; पॊरुप्पिनान्—पर्वतवासी हो गया; इनि-अब; यार् कोल् आम् ईतु—यह कौन हो सकता है; अॆन—ऐसा; अऱैकिन्ऱार्—पूछते। ५८२

और कुछ राक्षसों ने यों कहा— पुरन्दर तो युद्ध से एक दम विरत होकर रावण का नौकर बन गया है। तीक्ष्ण चक्र के रखनेवाले विष्णु भी रावण से हारकर (क्षीर-सागर-) जलवासी हो गये। अग्नि-सम शिवजी (डर से) पर्वत पर चढ़ बैठे हैं। फिर किसने यह काम किया होगा ? । ५८२

❀ शॆप्पुदऱ् कुरियवर् तॆव्व रारुळर्
मुप्पुऱत् तुलहमु मडङ्ग मूडिय
इप्पुऱत् तण्डत्तोर्क् कियैव दन्ऱिदु
अप्पुऱत् तण्डत्ता रारॆन् ऱार्शिलर् 583

चिलर्—(और) कुछ; तॆव्वर्—शत्रु; चॆप्पुतऱ्कु उरियवर्—कहाने योग्य; यार् उळर्—कौन हैं; मु पुऱत्तु उलकमुम्—तीनों लोकों को; अटङ्क मूटिय—पूर्ण रूप से जिसने अपने में समा लिया है; इ पुऱत्तु अण्टत्तोर्क्कु—इस तरफ़ के अण्ड के वासियों का; इतु इयैवतु अन्ऱु—यह हो सकने का काम नहीं; अ पुऱत्तु—उस तरफ़ के; अण्टत्तोर् आम्—अण्ड के वासियों का ही हो सकता है; आर्—कौन हैं (वे); अॆन्ऱार्—पूछते। ५८३

और कुछ राक्षसों ने तर्क किया। हमारे रावण का शत्रु कहाने योग्य है कौन ? आकाश, पाताल और भूलोक को अन्तर्निहित रखनेवाले इस अण्डगोल का कोई भी यह नहीं कर सकता ? अपराण्ड (बहिरण्ड) में भी कौन है ? । ५८३

अॆन्नैये यिरावणन् ऱङ्गै यॆन्ऱपिन्, अन्नैये यॆन्ऱडि वणङ्ग लन्ऱिये
उन्नवे यॊण्णुमो वीरुव रालिवळ्, तन्नैये यरिन्दत डानॆन् ऱार्शिलर् 584

चिलर्—कुछ; अॆन्नैये—यह क्या (आश्चर्य); इरावणन् तङ्कै—रावण की बहिन; अॆन्ऱ पिन्—यह जानने के बाद भी; अन्नैये अॆन्ऱु—माताजी कहकर; अटि वणङ्कल् इन्ऱि—चरण में विनत हुए बिना; ऒरुवराल्—किसी से; उन्नवे ऒण्णुमे—(ऐसी बात) सोची भी जा सकेगी क्या; इवळ्—इसने; तन्नैये तान् अरिन्ततळ्—खुद अपने अंगों को काट लिया है; अॆन्ऱार्—बोले। ५८४

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान लगाया। यह क्या आश्चर्य हो गया ! रावण की छोटी बहिन जानने पर कोई भी 'माताजी' कहकर उसके पैरों पर झुक जायगा। इसको छोड़कर वह ऐसा काम मन में भी नहीं ला सकेगा। इसलिए अवश्य इसने स्वयं अपने अंग काट लिये हैं। ५८४

शॊऱ्पिऱन् दार्क्किदु तुणिय वॊण्णुमो
इऱ्पिऱन् दार्तमक् कियैव शॆय्विलळ्

कऱ्पिऱन् दाळॅनक् करन्गॉ लामिवळ्
पॉऱ्पऱै याक्कितन् पोलॅन् ऱार्शिलर् 585

चिलर्–कुछ; चॉल् पिऱन्तार्क्कु–कीर्तिमानों को; इतु तुणिय ऑण्णुमो–(स्त्री के अंग काटने का) यह काम करने योग्य है क्या; इल् पिऱन्तार्क्कु इयैव–कुलीन स्त्री के लिए उचित काम; चॅय्तिलळ्–इसने नहीं किया; कऱ्पु इऱन्ताळ्–शील को मारा है; ॲन्–(कुछ ऐसा) देखकर; इवळ् पॉऱ्पु–इसके रूप को; अऱै आक्कितन्–विकृत कर दिया; करन् कॉल् आम्–खर ने ही शायद; ॲन्ऱार्–बोले। ५८५

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान किया— गौरवपूर्ण कुल में उत्पन्न किसी के लिए भी ऐसा करना सूझ सकता है क्या? (इसलिए मेरा मत है—) इसने कुलीन स्त्रियों के लिए उचित कार्य नहीं किया होगा। अपना शील त्याग दिया होगा। इसलिए खर ने ही इसका अंग-भंग करके रूप को विकृत करा दिया है। ५८५

तत्तुऱु शिन्दैयर् तळरुन् दैवरिप्
पित्तुऱ वल्लरे पिऴैप्पिल् शूऴ्च्चियार्
मुत्तिऱत् तुलहैयु मुडिक्क वॅण्णुवार्
इत्तिऱम् बुणर्त्तन रॅन्गिन् ऱार्शिलर् 586

तत्तु उऱु चिन्तैयार्–मन डगमगाकर; तळरुम्–निर्बल रहनेवाले; तेवर्–देव; इ पित्तु उऱ वल्लरे–यह पागलपन कर सकनेवाले हैं क्या; पिऴैप्पु इल् चूऴ्च्चियार्–अचूक तन्त्रशाली; मु तिऱत्तु उलकैयुम्–तीनों तरह (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों को; मुटिक्क ॲण्णुवार्–मिटाना चाहनेवाले कोई; इ तिऱम् पुणर्त्तनर्–यह काम कर चुके होंगे; ॲन्ऱार्–कहा; चिलर्–कुछ ने। ५८६

देव यह पागलपन नहीं कर सकते, क्योंकि उनका मन रावण के डर से हड़बड़ाता रहता है। वे निर्बल बने हुए हैं। अचूक तन्त्रशाली, तीनों लोकों के नाश को चाहनेवाले किसी ने यह काम किया है। —ऐसा कुछ राक्षसों ने कहा। ५८६

इतियॊरु कऱ्पमुण् डॅन्नि नन्ऱियॆ
वत्तैहऴल् वयङ्गुवाळ् वीरर् वल्लरो
पनिवरु कानिडैप् पऴिप्पि नोन्बुडै
मुनिवरर् वॅहुळियिन् मुडिवॅन् ऱार्शिलर् 587

चिलर्–(और) कुछ (राक्षसों) ने; इति ऑरु कऱ्पम् उण्टु–अब किसी दूसरे कल्प में होगा; ॲन्निल् अन्ऱियॆ–यह बात छोड़कर; वत्तै कऴल्–पायल पहने हुए; वयङ्कु वाळ्–प्रकाशमान तलवार धारण किये रहनेवाले; वीरर्–(इस कल्प के) वीर; वल्लरो–समर्थ हैं क्या; पनि वरु कान् इटै–शीतल कानन में; पऴिप्पु इल् नोन्पु उटै–अनिन्द्य व्रतधारी; मुनिवरर्–मुनिवरों के; वॅकुळियिन् मुटिव–कोप का फल है; ॲन्ऱार्–कहा। ५८७

ऐसा काम किसी दूसरे कल्प में हो सकता है तो हो सकता है। इस कल्प का कौन पायलधारी असिहस्त होगा जो यह कर सकेगा ? इसलिए यह अवश्य उन मुनिवरों के कोप का फल है, जो ठण्डे जंगल में अनिन्द्य तपोव्रत में लगे हैं। ५८७

❀ करैयरु तिरुनहर्क् करुङ्ग णङ्गैमार्
निरैवळैत् तळिर्क्कर नॅरित्तु नोक्किनर्
पिरैयुरु पालॅन निलैयिर् पिन्ऱिय
उरैयिन रॊरुवर्मु नॊरुवर् मुन्दिनार् 588

करै अरु तिरुनकर्–असीम सम्पत्तिशाली इस श्रीनगर लंका की; करुम् कण् नङ्कैमार्–नीलाक्षी स्त्रियों ने; निरै वळै–पंक्तिबद्ध कंकणों से भूषित; तळिर् करम्–पल्लव-सम हाथों को; नॅरित्तु–मलते हुए; नोक्कित्तर्–देखा; पिरै उरु पाल् ॲन्न–जामन-लगे दूध की तरह; निलैयिल् पिन्ऱिय–स्खलित (अव्यवस्थित); उरैयित्तर्–बोली बोलते हुए; ऑरुवर् मुन् ऑरुवर्–एक के आगे एक; मुन्तित्तार्–पहले आईं। ५८८

राक्षस पुरुषों की यह बात थी। स्त्रियों ने क्या किया ? इसका वर्णन आगे मिलता है। असीम सम्पत्तिशाली उस नगर की वासिनी, काली आँखों की सुन्दर राक्षसियों ने पंक्ति में कंकणों से भूषित अपने हाथ मलते हुए देखा। जामन-लगे दूध के समान उनकी बोली अव्यवस्थित रही। वे एक के पहले एक दौड़ती आयीं। ५८८

❀ मुळविनिल् वीणैयिल् मुरन्नल् याळिनिल्
तळ्विय कुळलिनिऱ् चङ्गिऱ् ऱारैयिल्
ऍळुहुर लन्ऱिये यॅन्ऱु मिल्लदोर्
अळुहुरल् पिऱन्ददव् विलङ्गैक् कन्ऱरो 589

मुळविनिल्–'मत्तळम्' (मृदंग-सम बाजे) से; वीणैयिल्–वीणा से; मुरल् नल् याळिनिल्–सुरीले श्रेष्ठ 'याळ' नामक वाद्य से; तळुविय कुळलित्तिल्–संगीतमय बाँसुरी से; चङ्किल्–शंख वाद्य से; तारैयिल्–लगातार; ऍळु कुरल्–उठनेवाला नाद; अन्ऱिये–नहीं आया पर; अन्ऱु–उस दिन; अ इलङ्कैक्कु–उस लंका के लिए; ऍन्ऱुम् इल्लतु ओर्–अभूतपूर्व एक; अळुकुरल् पिऱन्ततु–रुदन-स्वर उठा। ५८९

साधारण रूप से लंका में 'मद्दल' (मृदंग-सा बाजा) सुरीला याळ, संगीतमयी बाँसुरी, शंख —इन वाद्यों का निरन्तर गान सुनाई देता था। पर आज इसके विपरीत, अभूतपूर्व रीति से रुदन का स्वर उठा। ५८९

❀ कळ्ळुडै वळ्ळमुङ् गळित्तु वॅम्बिय
उळ्ळमु मॊरुवळिक् किडक्क वोडिनार्
वॅळ्ळमु नाणुऱ विरिन्द कण्णिनर्
तळ्ळुरु मरुङ्गिनर् तळ्ळीइक्कॊण् डेहिनार् 590

वॆळ्ळमुम् नाण् उऱ–वाढ़ को भी शरमानेवाले; विरिन्त कण्णित्तर्–अश्रुप्रवाह से भरी आँखों से युक्त स्त्रियाँ; कळ् उटै वळ्ळमुम्–सुरा-भरे प्यालों और; कळित्तु वॆम्पिय उळ्ळमुम्–सुरापान से गरम हुए मनों को; ऒरु वऴि किटक्क–एक ओर रहने देकर; ओटिऩार्–दौड़ीं; तळ्ळुऱु–बल खानेवाली; मरुङ्किऩर्–कमरों के साथ; तऴीइ कॊण्टु–आपस में पकड़ लेते हुए; एकिऩार्–शूर्पणखा के पास गईं। ५९०

स्त्रियाँ सुरापान में लगी रहीं। उन्होंने सुरा का प्याला और पीने से उत्तप्त मन दोनों को एक ओर रख दिया। उनकी आँखें वाढ़ को भी शरमाती हुई अश्रुजल से भर गयीं। वे दौड़ीं। उनकी कमरें लचकीं। एक दूसरे को पकड़ती हुई, सहारा लेती हुई शूर्पणखा के पास गयीं। ५९०

❀ नान्दह वुळ्वर्मे नाडुन् दण्डत्तार्
कान्दिऩ मऩत्तिनर् पुलवि कैम्मिहच्
चॆन्दह णदिहमुञ् जिवन्दु नीरुह
वेन्दनुक् किळैयव डाळिन् वीऴ्न्दनर् 591

नान्तक उळवर् मेल्–तलवार-कृषक (अपने पतियों) को; नाटुम् तण्टत्तार्–दण्ड देने को आतुर स्त्रियाँ; कान्तिऩ मऩत्तिऩर्–कोपसंतप्त मन के साथ; पुलवि कै मिक–मान के बढ़ने से; चॆन्त कण् अतिकमुम् चिवन्तु–लाल आँखों को और अधिक लाल करते हुए; नीर् उक–आँसू निकालकर; वेन्तनुक्कु इळैयवळ्–(राक्षस-) राजा की छोटी बहिन के; ताळिल् वीऴ्न्तनर्–पैरों पर गिरीं। ५९१

कुछ स्त्रियाँ अपने तलवार के धनी पतियों से खीझ गयी थीं। वे उनको दण्ड देने की खोज में थीं। उनका मन गरम था और आँखें लाल थीं। अब डर के कारण उनकी आँखें अधिक तीव्र लाल हो गयीं। वे आकर अपने राजा की बहिन शूर्पणखा के पैरों पर गिरीं। ५९१

पॊऱ्ऱलै मरहदप् पूह नोवुऱच्, चुऱ्ऱिय मणिवडन् दूङ्गु मूशलिन्
मुऱ्ऱिय पाडलै मुनिवुऱ् ऱेङ्गिऩार्, शिऱ्ऱिडै यलमरत् तॆरुवु शेर्हिन्ऱार् 592

पॊऩ् तलै–सिरों पर स्वर्ण-सदृश फलों से भरे; मरकत पूकम्–मरकतवर्ण पूग-तरुओं को; नोवु उऱ–कष्ट देते हुए; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बँधे हुए; मणि वटम् तूङ्कुम्–मणिमय जंजीरों से लटकनेवाले; ऊचलिऩ्–झूलों में रहकर; मुऱ्ऱिय आटलै–उच्चतम वेग से झूलना; मुनिवु उऱ्ऱु–कोप से छोड़कर; एङ्किऩार्–दुखित जो हुईं, वे; चिऱु इटै अलमर–पतली कमरों को दुखने देते हुए; तॆरुवु चेर्किऩ्ऱार्–वीथी में आ गईं। ५९२

कुछ स्त्रियाँ पूगतरुओं से बँधे झूलों में बैठकर झूल रही थीं। वे पूगतरु मरकततरु के समान हरे और मनोहारी थे और उनके सिरों पर स्वर्ण-सम फल लगे थे। उन तरुओं को संकट देते हुए स्त्रियों का झूलना उच्चतम दशा पर था। जब उन्होंने शूर्पणखा को देखा तो उन्होंने गुस्से के

साथ झूलना छोड़ा। पतली कमर को कष्ट देती हुई वे वीथी में आ गयीं। ५९२

❀ अँळुवॅन्न मलैयॅन्न वॅळुन्द तोळ्हळैत्
तळुविय वळैत्तळिर् नॅहिळत् तामरै
मुळुमुहत् तिरुहयल् मुत्ति नालिहळ्
पॉळिदरच् चिलरुळम् पॉरुमि विम्मुवार् 593

चिलर्–(और) कुछ (राक्षसी स्त्रियाँ); अँळु अँत–स्तम्भ-सम; मलै अँत–पर्वत-से; अँळुन्त–उन्नत; तोळ्कळै–(अपने पतियों के) कन्धों से; तळुविय–लिपटे रहे; वळै तळिर्–वलय-भूषित पल्लवों (हस्तों) को; नॅकिळ–अलग करके; तामरै मुळु मुकत्तु–वदन रूपी पुष्ट कमल पर की; इरु कयल्–दो कयलों (आँखों) में; मुत्तिन् आलिकळ्–मोती-से अश्रुकण; पॉळि तर–भरते हुए; उळम् पॉरुमि–मन को दुख से भरकर; विम्मुवार्–सिसकीं। ५९३

अन्य कुछ राक्षस-नारियाँ अपने पतियों के स्तम्भ और पर्वत-सम कन्धों से लिपटी रहीं। जब उन्हें समाचार मिला तो उनके वलय-भूषित पल्लव-सम हाथ ढीले पड़ गए। पुष्ट कमल-सम मुखों में रही कयल मछली-सी आँखों में मोतियों के समान अश्रुकण ढलक आये। उनका मन दुखी हुआ और वे सिसकियाँ भरने लगीं। ५९३

नॅय्न्निलैय वेलरश नेरुनरै यिल्लान्
इन्निलैयु णर्न्दबोळ्ळु दॅन्निलैय तॅन्ना
मैन्निलैनॅ डुङ्गणमळै वानिलैय वाहप्
पॉय्न्निलैम रुङ्गिनर् पुलम्बिनर् पुरण्डार् 594

नेरुनरै इल्लात्–टक्कर लेनेवाला जिसकी कोई नहीं रहा; नॅय् निलैय–घृत-लगे; वेल् अरचन्–भाले का धारण करनेवाला राजा (रावण); इ निलै उणर्न्त पॉळुतु–(शूर्पणखा की) यह स्थिति जब जानेगा; अँ निलैयन् अँन्ना–किस स्थिति का होगा, यह सोचकर; मै निलै–अंजनयुक्त; नॅटुम् कण्–आयत आँखों के; मळै वान् निलैयतु आक–जल-वर्षक मेघ की-सी स्थिति में आते; पॉय् निलै मरुङ्कितर्–मिथ्या-कटि स्त्रियाँ; पुरण्टार् पुलम्पितर्–लोटीं और विलपीं। ५९४

कुछ स्त्रियों के मन में यह प्रश्न उठा कि अजातशत्रु धृतरंजित भाले के स्वामी, रावण को जब शूर्पणखा की स्थिति मालूम होगी तो उसकी स्थिति क्या होगी? तो उनकी काजल-लगी दीर्घ आँखें जलवर्षक मेघों के समान हो गयीं। नाम-मात्र की कटि से युक्त वे भूमि पर लोटती हुई विलाप करने लगीं। ५९४

मनन्दलै वरुङ्गनलि तिन्शुवै मरुन्दार्
कनन्दलै वरुङ्गुळल् शरिन्दुहलै शोर

ननन्दलैय कौङ्गैह डदुम्बिड नडन्दार्
अनन्दलिळ मङ्गैय रळुङ्गिययर् हिन्ऱार् 595

अनन्तल् इळ मङ्कैयर्–सोती रहीं (जो) वे कुछ तरुणी रमणियाँ; मनम् तलै–मन में इच्छा करने से; वरु–होनेवाले; कनवु इन् चुवै–सपनों का मधुर रस; मऱन्तार्–भूलकर; कनम् तलै वरुम्–घन-सदृश विशिष्ट; कुळल् चरिन्तु–केश को खुलकर बिखरने देते हुए; कलै चोर–वस्त्र को खिसकने देते हुए; ननम् तलैय–पृथुल; कौङ्कैकळ्–स्तनों को; ततुम्पिट–उछलने देते हुए; नटन्तार्–पैदल आईं; अळुङ्कि–दुखी होकर; अयर्किन्ऱार्–श्रांत हुईं। ५९५

कुछ स्त्रियाँ निद्रा कर रही थीं। उनका मन आनन्द के साथ स्वप्न देखने लगा था। जब उन्हें यह समाचार मिला तो स्वप्न का रस भूलकर उठीं। मेघ-सम केश खुलकर बिखर गये। वस्त्र भी ढीले हो खिसकने लग गये। जब वे पैदल चलने लगीं तो उनके बड़े-बड़े स्तन उछलने लगे। वे बहुत दुखी हुईं। ५९५

अङ्गैयि नरत्तगयिलै कौण्डदिऱ लैयन्
तङ्गैनिलै चिङ्गिदुहो लॆन्ऱुतळर् हिन्ऱार्
कौङ्गैयिणै शॆङ्गैयिन् मलैन्दुकुलै कोदै
मङ्गैयर्ह णङ्गैयडि वन्दुविळु हिन्ऱार् 596

कुलै कोतै मङ्कैयर्कळ्–स्त्रियाँ, जिनके केश छूटे और बिखरे थे; अम् कैयिल्–अपनी हथेलियों में; अरन् कयिलै कौण्ट–हर के कैलास को जिसने उखाड़ा था, उस; तिऱल् ऐयन्–पराक्रमी राजा की; तङ्कै निलै–बहिन की दशा; इङ्कु इतु कोल्–यहाँ यह हुई तो; ऍन्ऱु तळर्किन्ऱार्–यह सोचकर क्लान्त हुईं; कौङ्कै इणै–स्तन-द्वय पर; चॆम् कैयिल् मलैन्तु–अपने लाल हाथों से पीटती हुई; नङ्कै अटि वन्तु–उस नायिका के चरणों पर आकर; विळुकिन्ऱार्–गिरती हैं। ५९६

कुछ स्त्रियाँ, जिनके केश खुले हुए बिखरे थे, अपनी छाती पीटते हुए रोने लगीं। उन्हें दुख इस बात का था कि अपनी हथेली में जिसने हर के कैलास पर्वत को उठाया था, उस पराक्रमी स्वामी की बहिन की भी यह हालत हो गयी। रोती हुई आकर वे नायिका के पैरों पर गिरीं। ५९६

इलङ्गैयिल् विलङ्गुमिवै यॆय्दलिल वॆन्ऱुम्
वलङ्गैयि लिलङ्गुमयिन् मन्ननुळ ऍन्ना
नलङ्गैयि लहन्ऱदुहो नम्मिनॆन नैन्दार्
कलङ्गलिल् करुङ्गणिणै वारिहलुळ् हिन्ऱार् 597

वलम् कैयिल् इलङ्कुम् अयिल्–दाहिने हाथ में प्रकाशमान भाला रखनेवाला; मन्नन् उळन्–राजा है; ऍन्ना–यह सोचकर (डर से); ऍन्ऱुम्–सदा; इलङ्कैयिल्–लंका के; विलङ्कुम्–जानवर भी; इवै ऍय्तल् इल–ऐसी आफ़त के भागी नहीं होते थे; नम्मिन्–हमसे; नलम् कैयिल् अकन्ऱतु कोल्–भलाई छोड़कर अलग हो गई

शायद; अँन्–यह सोचकर; नैन्तार्–दुख से क्षीण होती हुई; कलङ्कलिल्–व्यथा के कारण; करुम् कण् इणै–काली दोनों आँखों से; वारि–जल को; कलुळ्कित्ऱार्–गिराती हैं। ५६७

अपने दाहिने हाथ में भाला लिये हुए राजा रावण विद्यमान था। उसके कारण लंका में किसी जानवर पर भी ऐसा संकट नहीं आया था। 'अब क्या हमारी सुरक्षितता चली गयी ?' यह सोचकर वे व्यथित हुईं। व्याकुलता के कारण उनकी काली आँखों के जोड़ों में अश्रु भर आया। ५९७

※ अँन्ऱितैय वन्तुय रिलङ्गैनह रॅय्द
निन्ऱव रिरुन्दवरॉ डोडुनॅऱि तेडक्
कुन्ऱितडि वन्दुपडि कॉण्डलॅन मन्नन्
पॉन्ऱिणि पॉलन्गळ्ल् विळुन्दनळ् पुरण्डाळ् 598

अँन्ऱ इतैय–ऐसा, ऐसा; इलङ्कै नकर्–लंका नगर; वन् तुयर् अॅय्त–कठोर दुख को प्राप्त हुआ, तब; निन्ऱवर् इरुन्तवर् ओटु–सभा में जो खड़े रहे वे, जो बैठे रहे उनके साथ; ओटु नॅऱि तेट–भागने का मार्ग देखने लगे; कुन्ऱिन् अटि वन्तु पटि–पर्वत के तल में आकर जमनेवाले; कॉण्टल् अँन–घन के समान; मन्नन्–(राक्षस) राजा रावण के; पॉन् तिणि–स्वर्णमय; पॉलन् कळल्–सुन्दर पायल से अलंकृत पैरों पर; विळुन्तनळ्–गिरी; पुरण्टाळ्–लोटी (शूर्पणखा)। ५६८

इस तरह लंका का नगर ही व्याकुलता से भर गया। तब रावण की सभा में शूर्पणखा आयी और रावण के स्वर्णमय पायलधारी चरणों पर गिरी। जब वह वहाँ आयी तो सभा में जो खड़े रहे और जो बैठे रहे, सभी भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। जब वह रावण के पैरों पर गिरी, तब पर्वत के तल में मेघ आकर पड़ा हो, ऐसा लगा। वह गिरकर लोटने लगी। ५९८

मूडिय तिरुट्पडल मूवुलहु मुऱ्ऱच्
चेडनुम् वॅरुक्कॊडु शिरत्तॊहै नॅळित्तान्
आडिन कुलक्किरि यरुक्कनु मयिर्त्तान्
ओडिन तिशैक्करिह ळुम्बरु मॊळित्तार् 599

मू उलकुम् मुऱ्ऱ–तीनों लोकों में सर्वत्र; इरुळ् पटलम् मूटियतु–अँधेरा-पटल ढँक गया; चेटनुम्–शेषनाग ने भी; वॅरु कॊटु–डरकर; चिरम् तॊकै–सिरों की राशि को; नॅळित्तान्–लचकाया; कुल किरि आटिन–कुलपर्वत हिल उठे; अरुक्कनुम् अयिर्त्तान्–सूर्यदेव भी ठिठके; तिचै करिकळ्–दिग्गज; ओटिन–भागे; उम्परुम्–देव भी; ऑळित्तार्–छिप गये। ५६६

तब तीनों लोकों को अन्धकार ढाँप गया। शेषनाग ने डरकर अपने सिरों के समूह को लचका दिया। (कैलास, हिमालय, मन्दर, विन्ध्य,

निषद, हेमकूट, नील, गन्धमादन नाम की) सातों कुलगिरियाँ हिल गयीं। सूर्य भी भयभीत और संशयसहित हो गया। दिग्गज भाग गये और देव भी छिप गये। ५९९

विरिन्दवल यङ्गण्मिडै तोळ्बडर मीदिट्
टॅरिन्दनय नङ्गळॅयिऱ् ऱिऱ्बुऱ ऱिमैप्प
नॅरिन्दपुरु वङ्गणॅडु नॅऱ्ऱियिनै मुऱ्ऱत्
तिरिन्दपुव नङ्गळ्विनै तेवरु मयिर्त्तार् 600

विरिन्त वलयङ्कळ् मिटै–विशाल वलयों से लसे; तोळ् पटर–कन्धे फूल उठे, तब; मीतु इट्टु–ऊपर उठती; ॲरिन्त नयनङ्कळ्–ज्वाला के साथ जलनेवाली लाल आँखें; ॲयिऱ्ऱिऩ् पुऱम्–वक्रदाँतों के बाजू में; इमैप्प–प्रकाश फैलातीं तो; नॅरिन्त पुरुवङ्कळ्–टेढ़ी हुई भौंहें; नॅटु नॅऱ्ऱियिनै–लम्बे भालों को; मुऱ्ऱ–ढँक गईं, तो; पुवनङ्कळ्–सारे भुवन; तिरिन्त–गति बदलकर घूम उठे; विनै–विपरीत कार्य देख; तेवरुम् अयिर्त्तार्–देवता लोग भी भय करने लगे। ६००

रावण के कन्धे, जिन पर वलय लगे थे, फूल उठे। उसकी आँखों से जो ज्वाला-सी उठी उसका प्रकाश वक्रदन्तों के बाजुओं में फैला। घनी भौंहें तनीं और भाल पर फैल गयीं। सारे भुवन डगमगा गये। यह विपरीत स्थिति देखकर देव सिहर उठे। ६००

तॅन्ऱिशै नमऩ्ऱऩोडु तेवर्हुल मॅल्लाम्
इऩ्ऱिऱुदि वन्दतु नमक्कॅन विरुन्द
निन्ऱुयिर् नडुङ्गवुडल् विम्मनिलै यिल्ला
दॊन्ऱुमुरै याडलिल रुम्बरिनो डिम्बर् 601

तॅन् तिचै नमन् तन् ऒटु–दक्षिणी दिशा के (अधिदेवता) यम के साथ; तेवर् कुलम् ॲल्लाम्–देवों के कुल सब; नमक्कु–हमारा; इन्ऱु–आज; इऱुति वन्ततु–अन्त आ गया; ॲन–सोचकर; इरुन्त–रहे; उम्पर् ऒटु–देवों के साथ; इम्पर्–इस लोक के वासी भी; उयिर् नटुङ्क–काँपते प्राणों के साथ; निन्ऱु–खड़े होकर; उटल् विम्म—शरीर-स्पन्दन के साथ; निलै निल्लातु–कहीं स्थिर न रह सके; ऒन्ऱुम् उरै आटल् इलर्–एक शब्द भी नहीं बोल सके। ६०१

दक्षिण दिशा के यम से लेकर सारे देवता भयभीत हो गये कि आज हमारा अन्त आ गया। वे खड़े रह गये। आकाशवासी के साथ इहलोकवासी भी काँपने लगे। उनके प्राण सूख गये, शरीर काँपने लगे और वे अस्थिर और मौन हो रहे। ६०१

❀ मडित्तपिल वाय्हडोरुम् वन्दुबुहै मुन्दत्
तुडित्ततोडर् मीशैहळ् शुरुक्कॊळ वुयिर्प्पक्
कडित्तहदिर् वाळॅयिरु मिन्कनल मेहत्
तिडित्तवुरु मॊत्तुररि यावर्शॅय लॅन्ऱान् 602

मट्टित्त पिल वाय्कळ् तोरुम्–(कोप से रावण ने जिनके) अधरों को मोड़कर दाँतों से दबा रखा था, उन मुखों में; पुकै वनुतु मुनुत–धुआँ निकल रहा था; तुटित्त–फड़कती; तोटर् मीचैकळ्–मूँछों की शृंखला को; चुरुक्कोळ–झुलसाते (काला बनाते) हुए; उयिर्प्प–साँसें छोड़ रहा था; कटित्त–जिनको पीसता था; कतिर् वाळ् ॲयिरु–प्रकाशमय तलवार-सम वक्र (या खड्ग) दाँतों के; मिनु कनल–विद्युत-से चमकते; मेकत्तु इटित्त उरुम् ओत्तु–मेघ में उठनेवाले वज्र-नाद के समान; उरप्पि–स्वर में बोलते हुए; यावर् चॅयल्–किसका काम है; ॲन्ऱान्–पूछा। ६०२

रावण ओंठ चबा रहा था। उन बिल-समान मुखों से धुआँ उठ रहा था। उसकी मूँछें पंक्ति में हिल रही थीं। और उनको झुलसाते हुए वह गरम साँसें छोड़ रहा था। उसके वक्र दाँत, जो ओंठों को दबा रहे थे, बिजली के समान चमक रहे थे। मेघ में उठनेवाले वज्र के से स्वर में उसने शूर्पणखा से पूछा कि यह किसका काम है ? । ६०२

❀ कानिडै यडैनुदुबुवि कावल्बुरि हिन्ऱार्
मीनुडै नॅडुङ्गॊडियि नोत्तैयर् मेल्हीळ्
ऊनुडै युडल्बुडैमै योरुवमै यिल्ला
मानिडर् तडिन्दन्रहळ् वाळुरुवि यॅन्ऱाळ् 603

पुवि कावल् पुरिकिन्ऱार्–भूपालक; मीन् उटै नॅटुम् कॊटियिनोन्–मकरांकित लम्बी ध्वजा वाले के; अत्तैयर्–समान रूप रखनेवाले; मेल् कीळ्–ऊपर और नीचे के लोकों में; ऊन् उटै–मांस सहित; उटम्पु उटैमैयोर्–शरीरधारी; ओर् उवमै इल्ला–अनुपम; मानिटर्–मनुष्य; कान् इटै अटैन्तु–कानन में आकर; वाळ् उरुवि–तलवार खींचकर; तटिन्तनर्कळ्–काट लिया; ॲन्ऱाळ्–कहा। ६०३

शूर्पणखा ने उत्तर दिया कि वे भूमि के पालक राजकुमार हैं। मकरकेतु के समान रूपवान हैं। ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों लोकों में वे मांसधारी मनुष्य अनुपम हैं। वे वन में आये हैं और उन्होंने कटार निकालकर मेरा अंग-भंग कर दिया। ६०३

❀ शॅय्दनर्हण् मानिड रॅनत्तिशै यत्तैत्तुम्
ॲय्दनहै वन्ददॅरि शिन्दिनह णॅल्लाम्
नोय्दवर् वलित्तॊळि नुवन्ऱमॊळि यॊन्ऱा
पॊय्तविर् पयत्तैयॊळि पुक्कपह लॅन्ऱान् 604

मानिटर् चॅय्ततर्कळ् ॲन्न–मानवों ने किया, यह कहने पर; तिचै अत्तैत्तुम् ॲय्त–दिशाओं भर में गूँजे, ऐसा; नकै–हास; वन्तत्तु–आया; कण् ॲल्लाम्–सभी आँखों ने; ॲरि–आग; चिन्तिन–बरसायी; नोय्तवर्–अल्प (मानव); वलि तॊळिल्–बलवान का कार्य; नुवन्ऱ मॊळि–तुम्हारा कहा वचन; ऒन्ऱा–मेल नहीं खाता; पॊय् तविर्–झूठ छोड़ा; पयत्तै ऒळि–भय त्यागो; पुक्क–जो हुआ; पुकल्–बताओ (सच); ॲन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ६०४

मनुष्यों ने यह काम किया —यह सुनकर रावण को हँसी आ गयी। उसकी गूँज आठों दिशाओं में भर उठी। आँखों ने आग उगली। उसने शूर्पणखा को डाँटा कि क्या वकती हो ? वे दुर्बल मानव हैं और यह काम बड़े वीरों का काम है। दोनों में मेल नहीं है। असत्य कहना छोड़ो। भय के कारण ऐसा कहती हो तो भय त्याग दो। जो हुआ वह सच-सच बताओ। ६०४

मऩ्मदऩै यॊप्पर्मणि मेऩिवड मेरुत्
तऩ्मद नऴिप्पर्दिर डोळिऩ्वलि तऩ्ऩाल्
अॆऩ्ऩदऩै यिप्पॊऴु दिशैप्पदुल हेऴिऩ्
नऩ्मदम ऴिप्पॊरि मैप्पिऩऩि विल्लाल् 605

मणि मेऩि–सुन्दर रूप में; मऩ्मतऩै ऑप्पर्–मन्मथ की समानता करते हैं; तिरळ् तोळिऩ् वलि तऩ्ताल्–पुष्ट भुज-वल के पराक्रम में; वट मेरु तऩ्–उत्तर के मेरु का; मतऩ् अऴिप्पर्–घमण्ड चूर कर देंगे; विऩ्लाल्–धनुर्युद्ध में; ओर् इमैप्पिल्–एक पल में; उलकु एऴिऩ्–सातों लोकों का; नल् मतऩ्–बड़ा बल; नऩि ऑऴिप्पर्–खूब नष्ट कर सकेंगे; अतऩै–उसको; इप्पॊऴुतु–अब; इचैप्पतु अॆऩ्–कहना कैसा। ६०५

शूर्पणखा फिर उनके सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। वे रूप में मन्मथ हैं। पुष्ट कन्धों के वल में मेरु का गर्व चूर करनेवाले हैं। एक ही धनु के वल से एक ही पल में वे सातों लोकों का वल मिटा सकनेवाले हैं। हा! हा! उसका अब कैसा वर्णन किया जायगा ?। ६०५

वऩ्दऩैमु ऩित्तलैवर् पालुडैयर् वाऩत्
तिऩ्दुविऩ्मु हत्तरॆरि नीरिलॆऴु नाळक्
कऩ्दमल रैप्पॊरुवु कण्णर्हऴल् कैयर्
अऩ्दमिऱ् वत्तॊऴिल रारवरै यॊप्पार् 606

मुऩि तलैवर् पाल्–मुनिवरों के प्रति; वऩ्तऩै उटैयर्–पूजा का भाव जो रखते हैं; वाऩत्तु इऩ्तुविऩ् मुकत्तर्–आकाश के चन्द्र के समान मुख वाले; अॆरि–तरंगाकुल; नीरिल्–जलाशय में; अॆऴु–उत्पन्न; नाळ–नालसहित; कऩ्त मलरै–सुवासपूर्ण (कमल-) पुष्प की; पॊरुवु–समानता करनेवाली; कण्णर्–आँखों वाले; कऴल्–चरण वाले; कैयर्–हाथों वाले; अऩ्तम् इल्–असीम; तव तॊऴिलर्–तपस्या-कार्य में लीन; आर् अवरै ऑप्पार्–कौन उनकी समानता करेगा। ६०६

शूर्पणखा ने आगे कहा कि वे मुनिवरों के प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाले हैं। आकाश के चन्द्र के समान उनके मुख प्रकाशमान और मनोरम हैं। उनकी आँखें तरंग-भरे जलाशयों में विकसित नालयुक्त सुगंधित कमल के समान हैं। हा! हा! वे कमल-हस्त हैं और कमल-चरण हैं। अपार

तप के कर्म में लगे हुए हैं। उनकी उपमा कहाँ ढूँढ़ी जाय ? कौन उनकी तुलना कर सकेंगे ? । ६०६

वऱ्कलैयर्	वार्हळलर्	मार्बिलणि	नूलर्
विऱ्कलैयर्	वेदमुऱै	नावर्तऩि	मॅय्यर्
उऱ्कलैय	रुऩ्ऩैयोर्दु	हट्टुणेयु	मुऩ्ऩार्
शॊऱ्कलैयॅ	ऩत्तॊलैवि	रूणिहळ्	शुमन्दार् 607

वर्कलैयर्—वल्कल-वसन; वार्कळ्लर्—लम्बी पायलधारी; मार्विल् अणि—वक्ष में धृत; नूलर्—यज्ञोपवीत वाले; विल् कलैयर्—धनुर्विद्या-विशारद; वेतम् उऱै नावर्—वेदाश्रय-जिह्वा; तत्ति मॅय्यर्—अनुपम सत्यसंध; उत् कलैयर्—कला-श्रेष्ठ; चॊल् कलै ॲत—शब्द-विद्या के समान; तॊलैवु इल्—अक्षय; तूणिकळ् चुमन्तार्—तूणीर रखनेवाले; उऩ्ऩै ओर् तुकळ् तुणैयुम्—तुमको एक धूलि के समान भी; उऩ्ऩार्—नहीं समझते। ६०७

वे वल्कलवसन हैं। पायलधारी हैं। उनके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। युद्धविद्याविशारद हैं। उनकी जीभ वेदों का आश्रय हैं। अनुपम सत्यसंध हैं। कलाओं में उत्कृष्ट निपुण हैं। शब्द-शास्त्र के समान उनके तूणीर अक्षय हैं। वे तुमको धूलि के समान भी नहीं मानेंगे। ६०७

❀ माररुळ	रेयिरुव	रोरुयिरिऩ्	वाळ्वार्
वीररुळ	रेयवरिऩ्	विल्लिऩ्वलि	वल्लार्
आरॊरुव	रऩ्ऩवरै	यॊप्पवर्ह	ळेया
ओरॊरुव	रेमुदल्वर्	मूवरैयु	मॊप्पार् 608

ऐया—महिमावान; इरुवर् मारर् उळरे—दो मार देव हैं क्या; ओर् उयिरिऩ् वाळ्वार्—एकप्राण हो रहते हैं; विल् अमरिल्—धनुर्विद्या में; वल्लार्—कुशल; अवरिऩ् वीरर्—उनसे बढ़कर वीर; उळरे—हैं क्या; अऩ्ऩवरै ऑप्पवर्कळ्—उनकी समानता करनेवाले; ऑरुवर् आर्—कोई एक कौन हैं; ओर् ऑरुवरे—उनमें एक-एक; मुतल्वर् मूवरैयुम्—प्रधान त्रिदेवों की; ऑप्पार्—समानता करेंगे। ६०८

हे मेरे तात, प्रभु ! कहीं मन्मथ दो है क्या ? वे एक प्राण हो रहते हैं। धनुर्विद्या में वे बड़े ही समर्थ हैं। उनसे बढ़कर कोई वीर भी है क्या ? उनकी तुलना करनेवाले कोई कहाँ हैं ? उनमें एक-एक त्रिदेवों की समानता कर सकेंगे। ६०८

❀ आरुमऩ	मञ्जिऩ	मरक्करै	यॆऩच्चॊऩ्
ऱेरुनॆऱि	यऩ्दण	रियम्बवुल	हॆल्लाम्
वेरुमॆऩु	नुङ्गळ्हुलम्	वेरॊडु	मडङ्गक्
कोरुमॆऩ	मुऩ्दैयोरु	शूळुरवु	कॊण्डार् 609

एरु नॅरि अन्तणर्–उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते जानेवाले ब्राह्मणों (ऋषियों) ने; चॅन्रु–उनके पास जाकर; अरक्करै–राक्षसों को; आरुम् मतम्–शान्तमन वाले हम; अञ्चितम्–डरते हैं; ॲन इयम्प–यह कहा, तो; उलकु ॲलाम्–सारे लोक; वेरुम् ॲतुम्–हराकर मिटा देंगे, कहनेवाले; उङ्कळ् कुलम्–तुम्हारे कुल का; अटङ्क–सारा; वेर् ऑट्टुम् कोरुम् ॲन–समूल नाश करेंगे, ऐसा; मुन्तै–पहले; ओरु चूळ्–एक शपथ; उरवु कॉण्टार्–कर ली है। ६०६

उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते चलनेवाले मुनिवरों ने उन मानवों के पास जाकर बताया कि हम शान्त-प्रकृति हैं और हमें इन राक्षसों से भय है। तब उन्होंने शपथ खायी कि 'संसार का नाश कर देंगे' —यह कहनेवाले राक्षसों के कुल को ही हम समूल नाश कर देंगे। पहले की हुई उस शपथ से वे बद्ध हैं। ६०९

❀ तरावलय नेमियुळ् वन्रयर दप्पेर्प्
परावरु नलत्तॉरुवन् मैन्दर्पळि यिल्लार्
विरावरुम् वनत्तवन् विळम्बवुरै हिन्रार्
इरामनु मिलक्कुवनु मॅन्बर्पॅय रॅन्राळ् 610

तरा वलयम्–भूमण्डल का; नेमि उळवन्–चक्रवर्ती राजा; तयरत पेर्–दशरथ नाम का; परावरु नलत्तु ऑरुवन्–प्रशंसनीय गुण वाला एक; मैन्तर्–उसके पुत्र; पळि इल्लार्–अनिन्द्य; अवन् विळम्प–उसके कहने पर; विरावु अरु वनत्तु–वास के लिए अयोग्य कानन में; उरैकिन्रार्–रहते हैं; पॅयर्–नाम; इरामनुम् इलक्कुवनुम्–श्रीराम और लक्ष्मण; ॲन्पर्–कहते हैं; ॲन्राळ्–कहा (शूर्पणखा ने)। ६१०

इस भूमण्डल का राजा, चक्रवर्ती दशरथ नाम का प्रशंसनीय गुणी था। ये उस श्रेष्ठ राजा के पुत्र हैं। ये अनिन्द्य हैं। दशरथ की आज्ञा से वे इस वन में आकर ठहरते हैं, जहाँ स्वच्छन्द होकर वास करना कठिन है। उनके नाम राम और लक्ष्मण हैं। —शूर्पणखा ने अपनी बात समाप्त की। ६१०

मरुन्दनैय तङ्गैमणि नाशिवडि वाळाल्
अरिन्दवरु मानिड ररिन्दुमुयिर् वाळ्वार्
विरुन्दनैय वाळॊडुम् विळित्तिरैयुम् वॅळ्हा
दिरुन्दन निरावणनु मिन्नुयिर्हॊ डिन्नुम् 611

मरुन्तु अनैय तङ्कै–अमृत-सम छोटी बहिन की; मणि नाचि–सुन्दर नासिका को; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; अरिन्तवरुम् मानिटर्–काटनेवाले भी मानव हैं; अरिन्तुम्–यह विदित होने पर भी; उयिर् वाळ्वार्–जीवित हैं; इरावणनुम्–रावण भी; विरुन्तु अनैय वाळ् ओटुम्–नई तलवार के साथ; विळित्तु–ताकते हुए; इरैयुम् वॅळ्कातु–किंचित भी लाज का अनुभव किये बिना; इन् उयिर् कॊटु–अपने प्यारे प्राणों के साथ; इरुन्तनन्–चुप रह गया। ६११

रावण को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा। वह कहने लगा— मेरी अमृत-सी प्यारी बहिन की सुन्दर नासिका को तीक्ष्ण असि से काटनेवाले हैं मनुष्य! यह विदित होने पर भी वे जीवित हैं! क्या अपमान है! रावण भी अपनी नवीन तलवार के साथ, बीसों आँखों से देखता हुआ, विना शरम खाये प्यारे प्राण लेकर रहता है! । ६११

❀ कॊऱ्ऱमदु मुऱ्ऱिवलि यालरशु कॊण्डेऩ्
उऱ्ऱपयऩ् मऱ्ऱिदुहॊ लामुरै यिऱऩ्देऩ्
मुऱ्ऱवुल हत्तुमुदल् वीरर् मुडियॆल्लाम्
अऱ्ऱपॊऴ्ु दिऱ्ऱिदुपॊ रुन्दुमॆऩ लामो 612

कॊऱ्ऱम् अतु मुऱ्ऱि–विजय का पक्का बनाकर; वलियाल्–अपनी शक्ति से; अरचु कॊण्टेऩ्–त्रिलोकाधिपत्य अपनाया (मैंने); उऱ्ऱ पयऩ्–उसका प्राप्त फल; इतु कॊल् आम्–यही है क्या; उरै इऱन्तेऩ्–(गौरव-) गाथा खोई; मुऱ्ऱ उलकत्तु–सारे विश्व में; मुतल् वीरर्–पहले सिरे के वीरों के; मुटि ऎल्लाम्–सिरों को; अऱ्ऱपॊऴुतु–जब काटा गया तब; इऱ्ऱ इतु–जो गया यह यश; पॊरुन्तुम् ऎऩल् आमो–फिर मिलेगा, यह माना जा सकेगा। ६१२

मैंने अपनी विजय-यात्रा पूरी करके अपने पराक्रम के बल पर तीनों लोकों का राज पाया! उसका यही फल रहा क्या? हाय! यश मेरा नष्ट हो गया! सभी लोकों के सारे प्रथम श्रेणी के वीरों के सिर काट भी लूँ तो यह नष्ट हुआ यश फिर मिल सकेगा क्या? । ६१२

❀ मूऴुमुळ दायपऴि यॆऩ्वयिऩ् मुडित्तोर्
आऴुमुळ वामवरद मारुयिरु मुण्डाम्
वाऴुमुळ दोदविड मुण्डवऩ् वऴङ्गु
नाऴुमुळ तोऴुमुळ नाऩुमुळॆ ऩऩ्ऱो 613

ऎऩ् वयिऩ्–मेरे प्रति; उळतु आय–स्थायी; मूऴुम् पऴि–और व्यापी अपयश का काम; मुटित्तोर्–करनेवाले; आऴुम् उळ–मनुष्य अब भी हैं; अवर् तम् आर् उयिरुम् उण्टाम्–उनके प्यारे प्राण अब भी हैं; वाऴुम् उळतु–(चन्द्रहास-) तलवार भी है; ओतम् विटम् उण्टवऩ्–समुद्र का विष के भोक्ता शिव के द्वारा; वऴङ्कु–दत्त; नाऴुम् उळ–आयु के दिन भी हैं; तोऴुम् उळ–भुजाएँ हैं; नाऩुम् उळॆऩ् अऩ्ऱो–मैं भी रहता हूँ। ६१३

वे मनुष्य भी हैं जो मेरे प्रति इतना बड़ा अपराध, मेरे इतने बड़े अपयश का काम कर चुके। और उनके प्राण अब भी बचे हैं! मेरे हाथ में चन्द्रहास भी है। समुद्र से निकला विष जिन्होंने खाया, उन शिवजी से वर के रूप में दत्त आयु भी है। मेरे कन्धे भी हैं। मैं भी जीवित हूँ न! । ६१३

❀ पॊत्तुउऱ वुडऱ्पऴि पुहुन्ददॆन्न नाणित्
तत्तुरुव दॆन्नॆमन्न नॆतळर लॆन्मा
ऍत्तुय रुन्नक्कुळ दिनिप्पऴि शुमक्कप्
पत्तुळ तलैप्पहुदि तोळ्हळ् पलवन्ऱो 614

मनत्ते–रे मन; उटल् पॊत्तु उऱ–मेरे शरीर को विद्ध करते हुए; पऴि पुकुन्ततु–अपयश लग गया; ऍन्न–यह सोचकर; नाणि–शरमाकर; ततुरुवतु–हड़बड़ाने से; ऍन्नॆ–क्यों; इनि तळरल्–अब मत मुरझा; ऍ तुयर्–कौन सा दुःख; उन्नक्कु उळतु–तुम्हें है; इनि–आगे; पऴि चुमक्क–कलंक ढोने के लिए; तलै पकुति–मेरे सिर के अंश; पत्तु उळतु–दस हैं; तोळ्कळ् पल अन्ऱो–कन्धे भी अनेक (बीस) हैं न। ६१४

रे मन ! यह अपयश ऐसा आकर लगा है कि मेरा शरीर ही विद्ध हो गया। यह सोचकर तुम क्यों शरमाकर हड़बड़ाते हो ? तुम दुख से निर्बल मत हो जाओ। तुम्हारा क्या दुख है ? अपयश ढोने के लिए मेरे दस सिर हैं। कन्धे तो अनेक हैं न ! । ६१४

❀ ऍन्ऱुरै शॆयानहै शॆयावॆरि विऴिप्पान्
वन्ऱुणैयि लाविरुवर् मानिडरै वाळाल्
कॊन्ऱिलर्ह ळॉनॆडिय कुन्ऱुडैय कानिल्
निन्ऱकर नॆमुदलि नोर्निरुद रॆन्ऱान् 615

ऍन्ऱु उरै चॆया–यह (स्वनिंदा में) कहकर; नकै चॆया–हँसकर; ऍरि विऴिप्पान्–आग के समान दृष्टि चलाते हुए; नॆटिय कुन्ऱु–उच्च पर्वत; उटैय कानिल्–जहाँ रहते हैं, उस वन में; निन्ऱ–रहनेवाले; करन् मुतलिनोर् निरुतर्–खर आदि राक्षसों ने; वन् तुणै इला–कठोर बल से रहित; इरुवर् मानिटरै–दो मनुष्यों को; वाळाल्–अपनी तलवार से; कॊन्ऱिलर्कळा–नहीं मारा था क्या; ऍन्ऱान्–यह पूछा। ६१५

इस तरह (अपनी निन्दा का वचन) कहता हुआ रावण हँस उठा। आग-सी दृष्टि करते हुए रावण ने शूर्पणखा से पूछा कि उस कानन में, जिसमें उन्नत पर्वत हैं, खर आदि राक्षस थे न ? क्या उन्होंने इन निर्बल और असहाय मानवों का अपनी तलवार से वध नहीं किया ? । ६१५

अऱ्ऱव नुरैत्त लोडु मऴुदिऴि यरुविक् कण्णाळ्
ऍऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ् पारि निडैविऴुन् दॆङ्गु हिन्ऱाळ्
शुऱ्ऱमुन् दॊलैन्द दॆय नोय्दॆनच् चुमन्द कैयाळ्
उऱ्ऱदु तॆरियुम् वण्ण मॊरुवहै युरैक्क लुऱ्ऱाळ् 616

अऱ्ऱु अवन् उरैत्तलोटुम्–वैसा उसके कहने पर; अऴुतु इऴि–रोने से बहनेवाले; अरुवि कण्णाळ्–सरिता-सम अश्रु-भरी आँखों के साथ; ऍऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ्–पेट पीटती (हुई); पारिन् इटै–भूमि पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; एङ्कुकिन्ऱाळ्–रोती

(हुई शूर्पणखा); ऐय-प्रभु; चुर्रमुम्-हमारे बन्धु-बान्धव सभी; नोय्तु तोलैन्ततु-अनायास मिट गये; ॲन्न-कहकर; चुमन्त कैयाळ्-सिर पर हाथ धरकर; उर्रतु तॅरियुम् वण्णम्-वृत्तान्त समझाते हुए; ओरु वकै-एक प्रकार से; उरैक्कल् उर्राळ्-बताने लगी। ६१६

जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब शूर्पणखा ने आँखों से सरिता के समान अश्रु की धार बहायी। पेट को पीटते हुए भूमि पर गिरी। खूब रोती हुई उसने कहा कि सारा परिवार ही अनायास मिट गया। यह कहकर उसने अपने हाथ सिर पर रख लिये। सारा वृत्तान्त समझाते हुए वह एक प्रकार से कहने लगी। ६१६

शॊल्लॆन्रन् वायिर् केट्टार् तॊडर्न्दॆळ् शेनै योडुम्
कल्लॆन्र् वॊलियिर् चॆन्र् करन्मुदर् काळै वीरर्
ॲल्लॊन्रु कमलच् चॆङ्ग णिरामनॆन् रियैन्द वेन्दल्
विल्लॊन्रिर् कडिहै मून्रि लेर्रिनन् विण्णि लॆन्राळ् 617

चोल्-बात; ॲन् तन् वायिल् केट्टार्-मेरे मुख से सुनकर; तॊटर्न्तु ॲळु-साथ उठी; चेनै ओटुम्-सेना के साथ; कल् ॲन्र् ऒलियिल्-'घल' शब्द के साथ; चॆन्र्-जो गये; करन् मुतल् काळै वीरर्-खर आदि ऋषभ-सम वीर; ॲल् ऒन्रु-किरणस्पृष्ट; कमलम्-कमल-सम; चॆम् कण्-लाल आँखों के; इरामन् ॲन्रु इयैन्त-श्रीराम के नाम से युक्त; एन्तल्-महिमावान ने; विल् ऒन्रिल-एक धनु से; कटिकै मून्रिल्-तीन घड़ियों में; विण्णिल्-स्वर्ग पर; एर्रिनन्-चढ़ा दिया; ॲन्राळ्-शूर्पणखा ने कहा। ६१७

भाई! मैंने उनसे यह अपना हाल कहा तो वे अपनी सेना के साथ शोर करते हुए राम से लड़ने गये। किरण-प्रफुल्लित कमल-सम आँखों के राम नाम के वीर के धनु द्वारा तीन ही घड़ियों में स्वर्ग चढ़ गये। —शूर्पणखा ने कहा। ६१७

तारुडैत् तानैयोडुन् दम्बियर् तमियन् शॆय्द
पोरिडै मडिन्दा रॆन्र् वुरैशॆवि पुहाद मुन्नम्
कारिडै युरुमिन् मारि कनलॊडु पिर्क्कु माबोल्
नीरॊडु नॆरुप्पुक् कान्र् निरैनॆडुङ् गणग ळॆल्लाम् 618

तमियन् चॆय्त पोर् इटै-एकाकी श्रीराम ने जो किया, उस युद्ध में; तम्पियर्-छोटे भाई; तार् उटै तानै ओटुम्-हारयुक्त वीरों की सेना के साथ; मटिन्तार्-मरे; ॲन्र् उरै-यह कथन; चॆवि पुकात मुन्नम्-कान में घुसा इसके पूर्व ही; कार् इटै उरुमिन्-मेघमध्य वज्र के; कनल् ऒटु-अनल के साथ; मारि-वर्षा; पिर्क्कुमा पोल्-होती हो जैसे; निरै नॆटुम् कण्कळ् ॲल्लाम्-पंक्ति में रही सभी आँखों ने; नीरोटु नॆरुप्पु-जल के साथ अग्नि को; कान्र्-उगला। ६१८

एकाकी राम से लड़कर मेरे छोटे भाई, हारों से भूषित वीरों की

बड़ी सेना के साथ मर गये —यह बात ज्योंही रावण के कानों में पड़ी, त्योंही उसकी पंक्ति की आँखों में मेघमध्य वज्र के साथ अनल और जल जैसे भर जाता है वैसे आग और जल भर गया। ६१८

आयिडै यॅळुन्द शीऱ्ऱत् तळुन्दिय तुऩ्ब माऱित्
तीयिडै युहुत्त नॅय्यिऱ् चीऱ्ऱत्तिऱ् कूऱ्ऱम् जॅय्य
नीयिडै यिळैत्त कुऱ्ऱ मॅऩ्ऩवर् निऩ्ऩै यिऩ्ऩे
वायिडै यिदळु मूक्कुम् वलिन्दऩर् कॉय्य वॅऩ्ऱाऩ् 619

अ इटै–तब; ॲळुन्त–उभरे; चीऱ्ऱत्तु–कोप में; अळुन्तिय–मग्न; तुऩ्पम् माऱि–दुःख बदलकर; ती इटै–अग्नि में; उकुत्त नॅय्यिल्–छोड़े गये घी के समान; चीऱ्ऱत्तुक्कु–कोप को; ऊऱ्ऱम् चॅय्य–बल दिलाने पर; अवर्–उन्होंने; निऩ्ऩै–तुम्हारे; इऩ्ऩे–इस प्रकार; वाय् इटै इतळुम्–मुख पर के अधरों को; मूक्कुम्–और नाक को; वलिन्तऩर् कॉय्य–बलात् काटा, इसके निमित्त-रूप में; नी–तुमने; इटै इळैत्त कुऱ्ऱम्–उनके प्रति किया (जो) अपराध; यातु–वह कौनसा; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। ६१९

रावण को एक साथ क्रोध आया और दुख भी। उसने कुछ देर बाद दुख छोड़ा। आग में घी छोड़ने पर भड़क उठनेवाली आग के समान क्रोध उभर आया। उसने पूछा कि इस तरह वे तुम्हारे अधर और नाक को बलात् काट दें, इसके लिए तुमने उनके प्रति क्या अपराध किया ? । ६१९

⁂ ॲऩ्वयि ऩुऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावर्क्कु मॅळुद वॊण्णात्
तऩ्मैय ऩिराम ऩोडुन् दामरै तविरप् पोन्दाळ्
मिऩ्वयिऩ् मरुङ्गुल् कॊण्डाळ् वेय्वयिऩ् मॅऩ्ऱोळ् कॊण्डाळ्
पॊऩ्वयिऩ् मेऩि कॊण्डाळ् पॊरुट्टिऩाऱ् पुहुन्द वॆऩ्ऱाळ् 620

ॲऩ् वयिऩ् उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्–मुझसे हुआ अपराध; यावरुक्कुम् ॲळुत ऒण्णात–किसी से भी चित्र बनाना (जिसका) असम्भव है; तऩ्मैयऩ्–ऐसे रूप वाले; इरामऩोटुम्–राम के साथ; तामरै तविर–(अपना वासस्थान) कमल छोड़कर; पोन्ताळ्–जो आयी है; मिऩ् वयिऩ् मरुङ्कुल् कॊण्टाळ्–बिजली से अपनी कमर पानेवाली; वेय् वयिऩ् मॅऩ् तोळ् कॊण्टाळ्–बाँस से जिसने अपने कन्धे पाये हैं; पॊऩ् वयिऩ् मेऩि कॊण्टाळ्–स्वर्ण से जिसने अपनी शोभा पाई है; पॊरुट्टिऩाल्–ऐसी एक स्त्री के कारण; पुकुन्ततु–हो गया; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ६२०

शूर्पणखा ने उत्तर दिया— इस अपराध के हो जाने का एक निमित्त भी है। जिसका चित्र खींचना असम्भव है, उस रूप से युक्त राम के साथ एक स्त्री आयी है ! वह ऐसी लगती है कि मानो कमल पर अपना वास छोड़कर इधर आयी है। उसने बिजली से कमर पायी है, बाँस से कन्धे, और स्वर्ण से रूप-रंग। उसी स्त्री के कारण यह हुआ। ६२०

आरव ळॅऩ्ऱ लोडु मरक्कियु मैय वाऴि
तेरव ळल्हुल् कॊङ्गै शॆम्बॊऩ्जॆय् कुलिहच् चॆप्पु
पारवळ् पादन् दीण्डप् पाक्कियम् बडॆत्त दम्मा
पेरवळ् शीद यॆऩ्ऱु वडिवॆलाम् बेशलुऱ्ऱाळ् 621

अवळ् आर्–वह कौन; ऍऩ्ऩल् ओट्टुम्–पूछने पर; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; ऐया–महिमावान; वाऴि–जिओ; अवळ् अल्कुल् तेर्–उसका कटि-प्रदेश रथ ही है; कॊङ्कै–स्तन; चॆम् पॊऩ् चॆय्–लाल स्वर्ण की बनी; कुलिक चॆप्पु–इंगुरौटियाँ हैं; पार्–भूमि ने; अवळ् पातम् तीण्ट–उसके चरण-स्पर्श का; पाक्कियम् पटैत्ततु–बड़ा भाग्य पाया है; अम्मा–मैया; अवळ् पेर् चीतै–उसका नाम सीता है; ऍऩ्ऱु–कहकर; वटिवु ऍलाम्–सारा रूप; पेचल् उऱ्ऱाळ्–वर्णन करने लगी। ६२१

रावण ने पूछा कि वह कौन स्त्री है ? तुरन्त शूर्पणखा ने कहा। महिमावान ! जिओ ! क्या कहूँ ? उसका कटिप्रदेश रथ है ! स्तन स्वर्ण-निर्मित इंगुरौटियाँ हैं। भूमि ने बड़ा पुण्य किया है, तभी वह उसके चरणों को स्पर्श कर सकी है। मैया ! उसका नाम सीता है। वह उत्साह के साथ उनके रूप का वर्णन करने लगी। ६२१

कामरम् बऴुत्त पाडऱ् कळ्ळॆऩक् कनिन्द शॆञ्जॊऱ्
तेमलर् शॆऱिन्द कून्दऱ् ऱेवर्क्कु मणङ्गा मॆऩ्ऩत्
तामरै यिरुन्द नङ्गै शेडियात् दरमु मल्लळ्
यामुरै वऴङ्ग लॆऩ्ब देळ्ळैमैप् पाल दऩ्ऱे 622

पऴुत्त कामरम् पाटल्–पूर्णसिद्ध 'कामर' राग के; कळ् ऍऩ कनिन्त–मधु के समान मधुर; चॆम् चॊल्–सुन्दर बोली वाली; ते मलर्–शहद-भरे पुष्पों से; चॆऱिन्त कून्तल्–घने केश-भूषित; तेवर्क्कु अणङ्काम्–देवबाला-सी उसकी; तामरै इरुन्त नङ्कै–कमलनिवासिनी लक्ष्मी; चेटि आम् तरमुम् अल्लळ्–चेरी भी बनने योग्य नहीं; याम् उरै वऴङ्कल्–हम (प्रशंसा का) वचन कहें; ऍऩ्पतु–यह; एळ्ळैमै पालतु–अज्ञता होगा। ६२२

(कामर एक राग है।) पूर्ण-सिद्ध कामर राग के समान मधुरबयनी है वह। केश पर शहदसहित फूल शोभित हैं। देवांगना-सी उस(सुन्दरी) की, कमला श्रीदेवी दासी बनने भी योग्य नहीं है। उसका वर्णन करने का प्रयास करना बुद्धिहीनता ही होगा। ६२२

मञ्जॊक्कु मळह वोदि मळैयॊक्कुम् वडिन्द कून्दल्
पञ्जॊक्कु मडिहळ् शॆय्य पवळत्तिन् विरल्ह ळैय
अञ्जॊऱ्क ळमुदि ऩळ्ळिक् कॊण्डवळ् वदन मैदीर्
कञ्जत्तिऱ् कॊण्ड देनुङ् गडलिनुम् बॆरिय कण्गळ् 623

ऐय–महिमायुक्त; अम् चॊऱ्कळ्–सुन्दर बोली को; अमुतिल् अळ्ळि कॊण्टवळ्–अमृत से उठा ली हैं, उसका; अळक ओति–भाल पर का छल्लेदार केश; मञ्चु

ऑक्कुम्–मेघ की समानता करता है; वटिऩ्त कूऩ्तल्–लटकता केश; मऴै ऑक्कुम्–जल-भरे घन की तुलना करता है; अटिकळ्–उसके चरण; पञ्चु ऑक्कुम्–रुई की भाँति हैं; विरल्कळ् चॅय्य पवळत्तिऩ्–लाल प्रवाल की (-सी) हैं; वतऩम्–आनन; मै तीर्–निष्कलंक; कञ्चत्तिल् कॊण्टतेऩुम्–कमल से प्राप्त है तो भी; कण्कळ्–उसकी आँखें; कटलिऩुम् वॆरिय–समुद्र से भी विशाल हैं। ६२३

महिमायुक्त भाई! उसने अपनी बोली अमृत से उठा ली है। सामने का केश मेघ-सा और लटकनेवाली वेणी वर्षक घन-सी है। उसके चरण रुई के समान (कोमल) हैं। पैर की उँगलियाँ लाल प्रवाल की बनी-सी हैं। आनन रूपी निष्कलंक कमल पर जो आँखें हैं, वे कमल से ली गयी हैं; तो भी समुद्र से भी बड़ी हैं। ६२३

ईशऩार् कण्णिऩ् वॆन्दा नॆऩ्ऩुमि दिऴुदैच् चॊल्लिव्
वाशना ड्रोदि याळैक् कण्डऩऩ् वव्व लाऱ्ऱाऩ्
पेशलान् दहैमैत् तल्लाप् पॆरुम्बिणि पिणिप्प नीण्ड
आशैया लऴिन्दु वॆन्दा ऩनङ्गऩव् वुरुव मम्मा 624

अनङ्कऩ्–अनंग; ईचऩार् कण्णिऩ् वॆन्ताऩ्–ईश्वर (शिव) की (भाल की) आँख से जला; ऎऩ्ऩुम् इतु–कही जानेवाली यह बात; इऴुतै चॊल्–अल्पज्ञ कथन है; इ वाचम् नाऱु ओतियाळै–इस सुवासित केश वाली को; कण्टऩऩ्–देखकर; वव्वल् आऱ्ऱाऩ्–ग्रसने की शक्ति से हीन होने के कारण; पेचल् आम् तकैत्तु अल्ला–अवर्ण्य; पॆरुम् पिणि पिणिप्प–बड़े (काम-) रोग से पीड़ित होकर; नीण्ट आचैयाल्–लम्बी बढ़ी उस इच्छा से; अ उरुवम्–वह रूप; अऴिन्तु–गला; तेय्न्ताऩ्–वह मिटा; अम्मा–मैया री। ६२४

मन्मथ परमेश्वर से भाल-नेत्र की आग से जल गया —यह कथन असत्य है। असल में हुआ दूसरा है। उसने इस सुवासित केशिनी को देखा। उसके मन में अपार राग पैदा हुआ। वह उसे ले जा नहीं सका। अकथ्य काम-रोग ने उसे सताया। धीरे-धीरे छीजकर उसका रूप मिट गया। माँ, उतनी सुन्दर है वह!। ६२४

तॆव्वुल हत्तुङ् गाण्डि शिरत्तिऩिऱ् पणत्ति नोर्हळ्
अव्वुल हत्तुङ् गाण्डि यलैहड लुलहिऱ् काण्डि
वॆव्वुलै युऱ्ऱ वेलै वाळिनै वॆऩ्ऱ कण्णाळ्
ऎव्वुल हत्ता ळङ्गम् यावर्क्कु मॆऴुदॊ णादाळ् 625

वॆम् उलै उऱ्ऱ–गरम भट्ठी में ताप कर बनाये गये; वेलै वाळिनै–भाले और असि को; वॆऩ्ऱ–जो जीत चुकी हैं; कण्णाळ्–ऐसी आँखों से शोभित है; तॆव् उलकत्तुम्–देवों के लोकों में भी; काण्टि–खोजो; चिरत्तितिल् पणत्तितोर्कळ्–सिर पर (जिनके) फन हैं, उन; अ उलकत्तुम्–(नागों के) उस (नाग-)लोक में भी; काण्टि–खोजो; अलै कटल् उलकिल् काण्टि–तरंग-भरे समुद्र से वलयित भूतल में

खोजो; अङ्कम् यावर्क्कुम् अॅळ्ुत ऑणाताळ्–ऐसे अंगों से युक्त है, जिनका कोई चित्रण नहीं कर सकता; अॅव्वुलकत्ताळ्–किस लोक की है। ६२५

उसकी आँखों ने उस भाले और असि को अपनी कान्ति और तीक्ष्णता में हराया है, जो भट्ठी की आग में तपाकर बनाया गया था। तुम चाहे सुरलोक में ढूँढ़ो; चाहे फणी नागों के लोक में। तरंगायमान समुद्र से वलयित भूलोक में ही क्यों न ढूँढ़ो। उसके समान स्त्री नहीं मिलेगी। उसके अंगों का चित्रण ही किसी के लिए असम्भव है! फिर वह किस लोक की होगी? नहीं जानते। ६२५

❀ तोळैये शॊल्लु हेन्नो शुडर्मुहत् तुलवु हिन्ऱ
वाळैये शॊल्लु हेन्नो वल्लवै वळुत्तु हेन्नो
मीळवुन् दिहैप्प दल्लाऱ् ऱनित्तनि विळम्ब लाऱ्ऱेन्
नाळैये काण्डि यन्ऱे नातुनक् कुरैप्प दॆन्नो 626

तोळैये चॊल्लुकेन्नो–भुजाएँ ही कहूँ; चुटर् मुकत्तु–प्रकाशमय मुख में; उलवुकिन्ऱ–चलित रहनेवाली; वाळैये चॊल्लुकेन्नो–तलवारें (आँखें) ही बखानूँ; वल् अवै–गोटियाँ (स्तन) उनको; वळुत्तुकेन्नो–बताऊँ; मीळवुम् तिकैप्पतु अल्लाल्–फिर-फिर चक्कर खाने के सिवाय; तनि तनि–अलग-अलग; विळम्पल् आऱ्ऱेन्–कह नहीं सकूँगी; नाळैये काण्टि अन्ऱे–कल तुम ही देख लो न; नान् उनक्कु उरैप्पतु अॅन्नो–मैं तुमको बताऊँ क्या। ६२६

हा! क्या मैं उसकी भुजाओं को कहूँ? या उज्ज्वल मुख में जो चंचल आँखें हैं, उन तलवारों का वर्णन करूँ? गोटी के समान उन स्तनों को कहूँ? (वल्+अवै का यह अर्थ होगा; अल+अवै शब्द लिये जायँ तो 'अन्य अंगों को कहूँ?' होगा।) किस अंग का वर्णन कर सकूँगी। कोई भी अंग लूँ तो फिर-फिर चक्रित होकर रुक जाना पड़ेगा। अलग-अलग किसी का उचित वर्णन नहीं कर पाऊँगी। तुम तो कल ही उसे देख लोगे न? फिर मैं क्या कहूँ तुमसे?। ६२६

❀ विल्लॊक्कु नुदलॆन् ऱालुम् वेलॊक्कुम् विळियॆन् ऱालुम्
पल्लॊक्कु मुत्तॆन् ऱालुम् बवळत्तै यिदळॆन् ऱालुम्
शॊल्लॊक्कुम् बॊरुळॊव् वादाऱ् चॊल्लला मुवमै युण्डो
नॆल्लॊक्कुम् बुल्लॆन् ऱालुम् नेरुरैत् ताह वऱ्ऱो 627

नुतल् विल् ऑक्कुम्–उसका भाल धनु की समता करेगा; अॅन्ऱालुम्–कहें तो भी; विळि–आँखें; वेल् ऑक्कुम्–भाले की समता करेंगी; अॅन्ऱालुम्–कहें तो भी; पल् मुत्तु ऑक्कुम् अॅन्ऱालुम्–दाँत मोती के समान हैं, कहने पर भी; पवळत्तै इतळ् अॅन्ऱालुम्–प्रवाल को अधर कहें तो भी; चॊल् ऑक्कुम्–कहने भर के लिए ही समानता होगी; पॊरुळ् ऑव्वातु आल्–पदार्थ देखने पर समानता नहीं पाई जायगी; आल्–इसलिए; चॊल्लल् आम् उवमै उण्टो–कहने के लिए कोई उपमा है क्या;

नॅल् ऑक्कुम् पुल्–धान घास-सा है; ऍन्ऱालुम्–कहें तो भी; नेर् उरैत्तु आक वऱ्ऱो–सही बात कही गई क्या। ६२७

भाल धनु के समान है; आँखें भालों के समान, मोती दाँत के समान। ऐसा कहा जा सकता है। प्रवाल को उसका अधर कह सकते हैं। तो भी वह क्या सही रूप में उपमा कहना बन सकेगा? केवल शाब्दिक उपमा होगी। तत्त्वत: उपमा ठीक नहीं उतरेगी। उसके अंगों से उपमेय वस्तुएँ हैं कहाँ? कहने को तो कह सकते हैं कि धान घास है! पर क्या वह सही अर्थ में सार्थक हो सकता है?। ६२७

इन्दिरन् शशियैप् पॅऱ्ऱा निरुमूनुरु वदनत् तोन्ऱल्
तन्दैयु मुमैयैप् पॅऱ्ऱान् ऱामरैच् चॅङ्गण् मालुम्
शॅन्दिरु महळैप् पॅऱ्ऱान् शीदैयै नीयुम् पॅऱ्ऱाय्
अन्दरम् बार्क्कि नन्मै यवर्क्किल्लै युनक्के यैया 628

ऐया–महिमावान; इन्तिरन् चचियै पॅऱ्ऱान्–इन्द्र ने शची को पाया; इरु मून्ऱु वतनत्तोन् तन्–(दो के तीन = छः) षण्मुख के; तन्तैयुम्–पिता (शिवजी) को; उमैयै पॅऱ्ऱान्–उमादेवी प्राप्त हुई; तामरै चॅम् कणानुम्–कमलाक्ष ने भी; चॅम् तिरु मकळै–गोरी श्रीदेवी को; पॅऱ्ऱान्–प्राप्त किया; नीयुम्–तुमने भी; चीतैयै पॅऱ्ऱाय्–सीता को प्राप्त किया; अन्तरम् पार्क्किन्–अन्तर देखा जाय तो; अवर्क्कु नन्मै इल्लै–सौभाग्य उनका नहीं है; उनक्के–तुम्हारा ही। ६२८

(शूर्पणखा रावण के मन में सीता-प्रेम जाग्रत् करती है।) इन्द्र को शचीदेवी प्राप्त हुई। षण्मुख के पिता ने उमा को प्राप्त किया। कमलाक्ष विष्णु को कमला मिली। तुम्हें सीता मिल गयी। पर अन्तर देखने पर उन सबका भाग्य उतना खरा नहीं। तुम्हारा ही सर्वश्रेष्ठ होगा। तुम्हारा भाग्य ही श्लाघनीय है। ६२८

❀ पाहत्ति लॊरुवन् वैत्तान् पङ्गयत् तिरुन्द पॊन्नै
आहत्ति लॊरुवन् वैत्ता नन्दण नाविन् वैत्तान्
मेहत्तिन् मिन्नै मुन्नै वॅन्ऱनुण् णिडैयि नाळै
माहत्तोळ् वीर पॅऱ्ऱा लॅङ्ङनम् वैत्तु वाळ्दि 629

पाकत्तिल् ऑरुवन् वैत्तान्–एक ने अपने बायें भाग में रख लिया (शिव की पार्वती अर्धांगिनी बनी); पङ्कयत्तु इरुन्त पॊन्नै–कमला श्री को; ऑरुवन्–(त्रिदेवों में) एक (विष्णु) ने; आकत्तिल् वैत्तान्–वक्ष में रख लिया; अन्तणन्–ब्राह्मण (ब्रह्मा) ने; नाविल् वैत्तान्–जीभ में रख लिया; माक तोळ् वीर–आकाश तक उन्नत कन्धे वाले वीर; मेकत्तिन् मिन्नै–मेघ की बिजली को; मुन्नै वॅन्ऱ–जिसने पहले ही हरा दिया; नुण् इटैयिनाळै–उस क्षीण कटि-भूषित सीता को; पॅऱ्ऱाल्–पाओगे तो; ऍङ्ङनम्–कहाँ; वैत्तु वाळ्ति–रखकर जीवन चलाओगे। ६२९

हाँ! आकाश तक उन्नत कन्धों वाले वीर भाई! त्रिदेवों में एक, शिव

ने उमा को अपने शरीर के वाम भाग में स्थान दिया। दूसरे (विष्णु) ने कमला श्रीदेवी को अपने वक्ष में रख लिया। तीसरे, ब्राह्मणोत्तम (ब्रह्मा) ने सरस्वती को अपनी जीभ में स्थान दे दिया। सीता बड़ी सुन्दरी है। उसकी कमर ने मेघ की बिजली को हरा दिया है। उस सीता को प्राप्त करके तुम कहाँ स्थान देकर उसके साथ जीवन बिताओगे ?। ६२९

❀ पिळ्ळैपोऱ् पेशुवाळैप् पॅऱ्ऱपिऩ् पिळैक्क लाऱ्ऱाय्
कॊळ्ळैमा निदियमॆल्ला मवळुक्के कॊडुत्ति यैय
वळ्ळले युऩक्कु नल्लेऩ् मऱ्ऱुनिऩ् मऩैयिल् वाळुम्
किळ्ळैबोऩ् मॊऴियार्क् केल्लाङ् गेडुशूऴ् हिऩ्ऱे नऩ्ऱे 630

ऐया—महिमावान; वळ्ळले—दानी; पिळैक्कल् आऱ्ऱाय्—अचूक परिश्रमी; पिळ्ळै पोल् पेच्चिताळै—सारिका की-सी बोली वाली को; पॅऱ्ऱपिऩ्—पाने के बाद; कॊळ्ळै पोकिऩ्ऱ चॆल्वम्—लूटी जानेवाली अपनी सम्पत्ति को; अवळुक्के कॊटुत्ति—उसी को दे दो; उऩक्कु नल्लेऩ्—तुम्हारी हितू हूँ; उऩ् मऩैयिल् वाळुम्—तुम्हारे महल में रहनेवाली; किळ्ळै पोल्—शुक-सम; मॊऴियार्क्कु ॲल्लाम्—बोलनेवाली सभी (स्त्रियों) को; केट चूऴ्किऩ्ऱेऩ् अऩ्ऱे—अहित करती हूँ न। ६३०

महिमावान ! यह सर्वविदित है कि तुम्हारे प्रयत्न कभी असफल नहीं होते। सीता तुम्हारी हो जायगी। सारिका-वाणी को लाने के बाद तुम अपनी सारी सौभाग्यश्री को, जिसे अब तुम्हारी अन्य प्रियाएँ लूट रही हैं, उसे दे दो। देखो मैं तुम्हारा हित कर रही हूँ। पर तुम्हारे महल में तुम्हारी कृपा का पात्र बनी जो स्त्रियाँ रहती हैं, उनको कष्ट दिला रही हूँ न ?। ६३०

❀ तेर्तऩ्द वल्हुऱ् चीदै तेवर्द मुलहि लिम्बर्
वार्तऩ्द मुलैयि नार्दम् वयिऱुतऩ् दाळु मल्लळ्
तार्तऩ्द कमलत् ताळैत् तरुक्किऩ्ऱ् कडैयच् चङ्ग
नीर्तऩ्द ददऩै वॆल्वा ऩिलऩ्दऩ्दु निमिर्ऩ्द दऩ्ऱे 431

तेर् तऩ्त अल्कुल्—रथ-समान जघन वाली; चीतै—सीता; तेवर् तम् उलकिल्—देवों के लोक में; इम्पर्—इहलोक में; वार् तऩ्त कॊङ्कैयार् तम्—अँगिया-बद्ध उरोजों से शोभित स्त्रियों की; वयिऱु तऩ्ताळुम् अल्लळ्—कोख से आई हुई नहीं है; चङ्क नीर्—शंखकीटों से युक्त क्षीरसागर को; तरुक्कितर् कटैय—गर्वीले (देवासुरों) के मथने पर; तार् तऩ्त कमलत्ताळै—कमलपुष्पमाला-धारिणी को; तऩ्ततु—(उसने) पैदा किया; अतऩै वॆल्वाऩ्—उसको हराने के लिए; निलम् तऩ्तु—भूमि इसे पैदा करके; निमिर्ऩ्ततु—उत्कृष्ट हुई। ६३१

रथ के समान नितम्बयुक्त सीता स्वर्ग या भूलोक की किसी अँगिया-बद्ध उरोजों के साथ शोभनेवाली स्त्री के पेट से पैदा हुई नहीं है। शंखों से भरे क्षीरसागर ने, बलवान देवासुरों से मथने पर कमलमालाधारिणी

श्रीलक्ष्मीदेवी को उत्पन्न किया। उस क्षीरसागर को नीचा दिखाने के लिए भूमि इसको उत्पन्न करके तर्जीह (श्रेष्ठता) पा गयी। ६३१

❀ मीऩ्गॉण्ड कॉडि यिऩाऱ्कु विऴावयर्ऩ् दुलह मेत्तत्
तेऩ्गॉण्ड नॅऱिमॅऩ् कूऩ्दऱ् चिऱ्ऱिडैच् चीदॅयॅऩ्ऩुम्
माऩ्गॉण्डुण् डाडु नीयुऩ् वाळ्वलि युलहङ् गाण
याऩ्गॉण्डू डाडुम् वण्ण मिरामऩैत् तरुदि यॅऩ्बाल् 632

मीऩ् कॉण्ट कॉटियिऩार्क्कु–मत्स्य की ध्वजा वाले (मन्मथ) का; उलकम् विऴा अयर्न्तु एत्त–लोक उत्सव मनाकर उसकी स्तुति करे; उऩ् वाळ् वलि उलकम् काण–तुम्हारी तलवार की शक्ति भुवन देखे; तेऩ् कॉण्ट–मधु-भरा; नॅऱि–घुंघराला; मॅऩ् कूऩ्तल्–कोमल केश; चिऱु इटै–पतली कमर; चीतै ऍऩ्ऩुम्–(इनसे युक्त) सीता नाम को; माऩ्–हरिणी (-सी सीता) को; नी कॉण्टु–तुम लाकर; उण्टाटु–उसके साथ केलि करो; याऩ् कॉण्टु ऊटाटुम् वण्णम्–मैं लेकर खेलूं; ऍऩ्पाल् इरामऩै तरुति–मेरे पास राम को दिला दो। ६३२

तुम मकरकेतन का उत्सव और स्तुति लोक द्वारा कराते हुए और अपनी असि का पराक्रम दिखाते हुए उस सीता को हर ले आओ। उसका केश मधुमिश्रित घुंघुराला और कोमल है। कमर पतली है और वह हरिणी-सी है। उसको लाकर तुम उसके साथ केलि करो और मुझे लेकर खेलने के लिए उस राम को मुझे दिला दो। ६३२

❀ तरुवदु विदियेयॅऩ्ऱाऱ् ऱवम्बॅरि दुडैय रेऩुम्
वरुवदु वरुना ळऩ्ऱि वन्दुकै कूड वऱ्ऱो
ऑरुबदु मुहमु माऱ्बु मुरुवमुङ् गण्णुन् दोळ्हळ्
इरुबदुम् बडैत्त शॅल्व मॅय्दुव दिऩिऩी यॅऩ्ऱाळ् 633

तरुवतु वितियॆ–(भलाई) देनेवाली विधि ही है; ऍऩ्ऱाल्–कहा जाय तो; तवम् पॅरितु उटैयरेऩुम्–बड़ा तपस्वी हो तो भी; वरुवतु–होनी; वरुम् नाळ् अऩ्ऱि–होने का काल छोड़कर; वन्तु कै कूट वऱ्ऱो–आ मिल सकनेवाली है क्या; ऑरु पतु मुकमुम्–दस मुख; माऱ्पुम्–वक्ष; कण्णुम् तोळ्कळ् इरुपतुम्–और बीस-बीस आँखें और कन्धे; उरुवमुम्–इनसे युक्त शरीर; पटैत्त चॅल्वम्–(और तुम्हारा) प्राप्त धन; नी ऍय्वतु–तुम सच्चे अर्थ में पाओगे (उसका भोग करोगे); इति–(सीता-प्राप्ति पर) आगे ही; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ६३३

विधि ही भला देनेवाली है। तो भी बड़े तपस्वी को भी तभी कुछ प्राप्त होता है, जब उचित काल आकर मिलता है। तुम्हारे दस सिर हैं, दस वक्ष और बीस नेत्र और कन्धे। तुम्हारे पास असीम सम्पत्ति है। तो भी उनके भोग का अब तक समय नहीं आया है। सीता की प्राप्ति के बाद ही वह काल आयगा। —यह सब कहकर शूर्पणखा ने रावण के मन में सीता के प्रति काम को पैदा करके उभारा। ६३३

❀ अन्तव इत्तै युन्बा लुयप्पदन् रुणह लुऱ्ऱ
अन्नैयव् विरामन् ऱम्बि यिडैबुहुन् दिलङ्गु वाळाल्
मुन्नैमूक् करिन्दु विट्टान् मुडिन्ददेन् वाळ्वु मुन्निन्
शौन्नपि नुयिरै नीप्पान् ऱुणिन्दनैं नेन्नच् चौन्नाळ् 634

अन्नवळ् तन्नै–ऐसी सीता को; उन् पाल् उयप्पतु ॲन्ऱु–तुम्हारे पास पहुँचाने का विचार करके; अणुकल् उऱ्ऱ–समीप (जो) गई; ॲन्नै–मुझे; अ इरामन् तम्पि–उस राम के छोटे भाई ने; इटै पुकुन्तु–बीच में घुसकर; इलङ्कु वाळाल्–(अपने पास रहे) कटार से; मुन्नै–(सीता को पकड़ने से) पहले ही; मूक्कु अरिन्तु विट्टान्–मेरी नाक काट दी; ॲन् वाळ्वुम् मुटिन्ततु–मेरा जीवन भी (व्यर्थ) गया; उन्निल् चौन्न पिन्–तुमसे कहने के बाद; उयिरै नीप्पान्–प्राण छोड़ने का; तुणिन्तनॅन्–निश्चय किया; ॲन्न चौन्नाळ्–ऐसा कहा। ६३४

आगे कहा कि भाई ! ऐसी सीता को तुम्हारे पास ले आने का निश्चय करके मैं उसके समीप जाने लगी। तभी उस राम के छोटे भाई ने बीच में घुसकर अपने पास रहे खड्ग से मेरी नासिका काट दी। मेरा जीवन उसके साथ गया, समझ लिया। पर तुम्हारे पास आकर यह कहने के बाद प्राण त्याग दूँगी —यही विचार ले इधर आयी हूँ। ६३४

कोबमु मऱनु मानक् कौदिप्पुमॅन् ऱिनैय वॅल्लाम्
पावनिन् ऱिडत्ति निल्लाप् पॅऱ्ऱिबोऱ् पऱ्ऱु विट्ट
तीबमॊन् ऱॊन्ऱॆ युऱ्ऱा लॅन्नलाञ् जॅयलिऱ् पुक्क
ताबमु नाणु मॊन्ऱा युयिरोडुन् दळीइय वन्ऱे 635

कोपमुम्–क्रोध; मऱनुम्–और वीरता; मान कौतिप्पुम्–अपमानजनित ताप; ॲन्ऱु–आदि; इनैय ॲल्लाम्–ऐसे सभी भाव; पापम् निन्ऱिटत्तु–पाप के स्थान पर; निल्ला पॅऱ्ऱि पोल्–जो रह नहीं सकता, उस पुण्य-भाग के समान; पऱ्ऱु विट्ट–रावण का साथ छोड़ गये; तीपम् ऒन्ऱु ऒन्ऱु उऱ्ऱाल्–एक दीये से दूसरा दिया लगा तो; ॲन्नल् आम् चॅयलिल्–जो होगा ऐसी रीति से; तापमुम्–ताप; काम नोयुम्–और कामरोग; उयिरोटु तळीय–रावण के प्राणों से मिले और बढ़े। ६३५

यह सुनने पर रावण की विचित्र दशा हो गयी। पुरुषोचित क्रोध, वीरोचित साहस, अपमानजनित सन्ताप —सभी भाव ऐसे भाग गये जैसे पाप जहाँ है वहाँ से पुण्य का सुखसौभाग्य भाग जाता है। एक से एक दीप मिल जाने पर जैसा फल होगा, उसके समान उसके प्राणों में राग का ज्वर और कामरोग मिल गये। ६३५

❀ करनैयु मऱन्दान् ऱङ्गै मूक्किनैक् कडिन्दु निन्ऱार्
उरनैयु मऱन्दा नुऱ्ऱ पळियैयु मऱन्दान् वॆऱ्ऱि
अरनैयुङ् गौण्ड काम नम्बिनान् मुन्बु पॆऱ्ऱ
वरनैयु मऱन्दान् केट्ट मङ्गैयै मऱन्दि लादान् 636

अरतैयुम् वॆऱ्ऱि कॊण्ट–हर को हरानेवाले; कामन् अम्पिनाल्–काम-बाण से; केट्ट मङ्कैयै–सुनी हुई (सीता) देवी को; मऱन्तिलातान्–जो नहीं भूला; करनैयुम् मऱन्तान्–(वह) खर को भूला; तङ्कै–अनुजा की; मूक्किनै–नाक को; कटिन्तु–काटकर; निन्ऱार्–जो बचे रहते हैं, उनका; उरनैयुम् मऱन्तान्–बल भूला; उऱ्ऱ पऴियैयुम्–प्राप्त अपयश; मऱन्तान्–भूला; मुन्नै पॆऱ्ऱ–पहले (ब्रह्मा, शिव आदि से) प्राप्त; वरनैयुम् मऱन्तान्–वरों को भूल गया। ६३६

रावण हरविजयी था। पर काम का बाण बली था। उससे आहत वह देवी सीता को, जिसके सम्बन्ध में शूर्पणखा से सुना भर था, भूल नहीं सका। पर खर मरा —यह भूल गया; छोटी बहिन की नाक कटी है —यह भी भूल गया। राम का बल भी स्मरण नहीं रहा। अपने पर लगा अपयश, ब्रह्मा, शिव आदि द्वारा दत्त वर —सभी भूल गया, रावण। ६३६

शिऱ्ऱिडैच् चीदै यॆन्नु नाममुञ् जिन्दै तानुम्
उऱ्ऱिरण् डॊन्ऱाय् निन्ऱा लॊन्ऱॊऴित् तॊन्ऱै युन्न
मऱ्ऱॊरु मनमु मुण्डो मरक्कलाम् वऴिमऱ् ऱियादो
कऱ्ऱऱि ञान मिन्ऱेऱ् कामत्तैक् कडक्क लामो 637

चिऱ्ऱिडै चीतै–क्षीण-कटि सीता; ऍन्नुम् नाममुम्–का नाम और; चिन्तै तानुम्–उसका मन; इरण्टुम्–दोनों; ऒन्ऱाय् उऱ्ऱु निन्ऱाल्–एक साथ मिले रहे तो; ऒन्ऱु ऒऴिन्तु–एक को छोड़कर; ऒन्ऱै उन्न–(दूसरे) एक को सोचने के लिए; मऱ्ऱु ऒरु मनमुम् उण्टो–(दूसरा) एक मन है क्या; मऱक्कल् आम् वऴि–भूलने का मार्ग; मऱ्ऱुम्–और कोई; यातो–कौन सा है; कऱ्ऱु अऱि ञानम् इन्ऱेल्–सीखकर प्राप्त ज्ञान नहीं हो तो; कामत्तै कटक्कल् आमो–काम को जीतना हो सकता है क्या। ६३७

रावण का मन और पतली कमर की सीता का नाम दोनों बहुत ही प्रबल रूप से जुड़ गये। फिर एक से रहित दूसरे का अस्तित्व असम्भव हो गया। फिर दूसरा अलग एक मन भी नहीं था, जो उनमें एक को छोड़ दूसरा स्मरण करे। भूलने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं रहा। शास्त्र पढ़कर उसके उपदेशों के कार्यान्वित अभ्यास द्वारा प्राप्त (अमली) ज्ञान जिसमें नहीं है, वह काम पर विजय पा कैसे सकेगा ? । ६३७

मयिलुडैच् चाय लाळै वञ्जिया मुन्न नीण्ड
ऍयिलुडै यिलङ्गै वेन्द निदयमाञ् जिऱ्ऱैयि लिट्टान्
आयिलुडै यरक्क नुळ्ळ मव्वऴि मॆल्ल मॆल्ल
वॆयिलुडै नाऴि लुऱ्ऱ वॆण्णॆय्बोल् वॆदुम्बिऱ् ऱन्ऱे 638

नीण्ट ऍयिल् उटै–लम्बे प्राचीरों से आवृत; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा ने; मयिल् उटै चायलाळै–मयूरनिभ सीता को; वञ्चिया मुन्नम्–प्रवंचना से लाने से पहले

ही; इतयम् आम् चिरैयिल्–हृदय रूपी कारा में; इट्टान्–बन्द कर दिया; अयिल् उटै–भालाधारी; अरक्कन् उळ्ळम्–राक्षस का मन; अ वळि–तब; वॅयिल् उटै नाळिल्–धूप-तप्त दिन में; उर्र–धूप में रखे; वॅण्णॅय् पोल्–मक्खन के समान; मॅल्ल मॅल्ल–धीरे-धीरे; वॅतुम्पिर्ऱु–गरम होकर पिघला। ६३८

प्राचीरों से आवृत लंका के राजा रावण ने मयूराभा सीताजी को वंचना द्वारा हर लाने के पूर्व ही अपने हृदय की कारा में कैद कर रख लिया ! भालाधारी राक्षस का हृदय तब गरम दिन में आतपदग्ध मक्खन के समान धीरे-धीरे पसीजने लगा। ६३८

विदियदु वलियि ताल़ु मेलुळ विळैवि ताल़ुम्
पदियुरु केडु वन्दु कुरुहिय बयत्ति ताल़ुम्
कदियुरु पॊरियिन् वॅय्य कामनोय् कल्वि नोक्का
मदियिलि मरैयच् चॅय्द तीमैबोल् वळर्न्द दन्ऱे 639

वितियतु वलियिताल़ुम्–विधि के बल से और; मेल् उळ–आगे की; विळैविताल़ुम्–होनी के निमित्त; पति उरु केटु–और लंका नगर पर जो आना था, वह कष्ट; कुरुकिय पयत्तिताल़ुम्–निकट आ गया, उस भावी के फल के कारण; कति उरु पॊरियिल्–गतियुक्त यन्त्र के समान; वॅय्य काम नोय्–पीड़क कामरोग; कल्वि नोक्का–विद्याविहीन; मति इलि–बुद्धि-रहित किसी का; मरैय चॅय्त–छिपाकर किया; तीमै पोल्–बुरा काम-सा; वळर्न्ततु–बढ़ा; (अन्ऱु–ए)। ६३९

विधि प्रबल थी। होनी होनेवाली थी। लंका पर विनाश लाने का समय निकट आ गया था। इसलिए गतियुक्त यन्त्र के समान भयंकर कामरोग राक्षस के शरीर भर में, विद्यावंचित बुद्धिहीन आदमी से किये गये अनर्थ के समान, व्याप्त हो गया। ६३९

पॊन्मय मान नङ्गै मनम्बुहप् पुन्मै पूण्ड
तन्मैयो वरक्कन् ऱन्नै ययर्त्तदोर् तहैमै यालो
मन्मदन् वाळि तूवि नलिवदोर् वलत्त नानान्
वन्मैयै माऱ्ऱु माऱ्ऱल् कामत्ते वदिन्द दन्ऱे 640

पॊन् मयम् आन–स्वर्णमय (आभा से) शोभायमान; नङ्कै–नायिका के; मनम् पुक–मन में प्रवेश के कारण; पुन्मै पूण्ट तन्मैयो–(रावण) बलहीनता पा गया था, या; तन्नै अयर्त्ततु ओर्–अपने को भूले रहने की; तकैमैयालो–एक स्थिति रही, इस वजह से; अरक्कन् तन्नै–राक्षस को; मन्मतन्–मनोज; वाळि तूवि–पुष्प-शर बरसाकर; नलिवतु–त्रस्त कर देनेवाला; ओर वलत्तन् आनान्–एक बली बन गया; वन्मैयै माऱ्ऱुम् आऱ्ऱल्–बल को वृथा करने की शक्ति; कामत्ते–काम में; वतिन्ततु अन्ऱे–रही न। ६४०

स्वर्णमय देवी के रावण के मन में प्रविष्ट होने से रावण दुर्बल हो

गया ? या वह अपने को भूले रहा ? अब राक्षस को मन्मथ अपने पुष्प-शरों से आहत करने में समर्थ हो गया ! हाँ ! बल को बेकार करने की शक्ति कामेच्छा में निहित रहती है न ? । ६४०

इऴिन्दऩ् निऱुक्कै निऩ्ड्राण् डेऴुल हत्तु ळोरुम्
मॊऴिन्दऩ राशि योशै मुऴङ्गिऩ शङ्ग मॆङ्गुम्
पॊऴिन्दऩर् पूविऩ् मारि पोयिऩर् पुरत्तो रॆल्लाम्
अऴिन्दयर् शिन्दै योडु माडहक् कोयिल् पुक्काऩ् 641

इरुक्कै निन्ड्र–आसन से; इऴिन्ततन्–उतरा; आण्टु–तब वहाँ; एऴ् उलकत्तोरुम्–सातों लोकवासी; आचि मॊऴिन्ततर्–आशीर्वचन बोले; चङ्कम् ऍङ्कुम्–शंख सर्वत्र; ओचै मुऴङ्कित–नाद कर उठे; पुरत्तोर् ऍल्लाम्–पास रहे सभी; पूविन् मारि–पुष्पवर्षा; पॊऴिन्ततर्–करके; पोयिनर्–हटे; अऴिन्तु अयर्–शिथिल होकर मुरझानेवाले; चिन्तैयोटुम्–मन के साथ; आटक कोयिल्–स्वर्णमय भवन में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ । ६४१

रावण आसन से उतरा । तब जो सातों लोकों के लोग वहाँ थे, उन्होंने आशीर्वचन कहे । सब स्थानों पर शंख बज उठे । पास जो रहे उन्होंने पुष्पवर्षा की । वे हट गये । रावण खिन्न और श्रांतमन होकर स्वर्णनिर्मित अपने महल में प्रविष्ट हुआ । ६४१

पूविऩाल् वेय्न्दु शॆय्द पॊङ्गुपे रमळिप् पॊऱ्पिऩ्
देविमार् वॆळ्ळ नीङ्गिच् चेर्न्दऩऩ् शेर्द लोडुम्
नाविना ऱोदि नव्वि नयऩमुन् नलनु नण्णिप्
पावियाक् कॊडुत्त वॆम्मै पयप्पयप् परन्द दऩ्ऱे 642

तेविमार् वॆळ्ळम् नीक्कि–स्त्रियों की भीड़ त्यागकर; पूविताल् वेय्न्तु चॆय्त–पुष्प छाकर निर्मित; पॊऱ्पिन्–सुन्दरता में; पॊङ्कु पेर् अमळि–अधिक उत्कृष्ट शय्या में; चेर्न्ततन्–गया; चेर्तलोटुम्–उसमें जाते ही; नावि नाऱु ओति–कस्तूरी की गन्ध से युक्त केशिनी की; नव्वि नयतमुम्–मृग की-सी आँखों; नलतुम्–और अन्य अंग-सौष्ठव ने; नण्णि–आकर; पाविया–भावना करने से; कॊटुत्त–जो दिया; वॆम्मै–वह ताप; पय पय–धीरे-धीरे; परन्ततु–(उसके शरीर भर में) व्याप्त हो गया । ६४२

पत्नियों की भीड़ का निवारण करके वह एक पुष्पशय्या पर लेटा । उस सुन्दर शय्या के ऊपर का वितान भी फूलों से सज्जित था । उस पर लेटते ही उसके मन ने कस्तूरी की सुगन्ध से भरे केश से युक्त सीतादेवी के मृग के-से नयन और अन्य अंगसौष्ठव की भावना की । उस भावना के कारण बड़ा ताप पैदा हुआ और वह धीरे-धीरे शरीर में व्यापकर पीड़ा देने लगा । ६४२

नूक्क लाह लाद काद नूरु नूरु कोडियाय्प्
पूक्क वाश वाडै वीशु शीद नीर्बी दिन्दमॅन्
शेक्कै वीक रिन्दु तिक्क यड्ग ऍट्टुम् वॅन्ड्रतोळ्
आक्कै तीय वुळ्ळ नैय वावि वेव दायित्तान् 643

नूक्कल् आकलात-अनिवार्य; कातल्-कामेच्छा; नूरु नूरु कोटियाय्-शत-शत करोड़ गुना; पूक्क-विकसित हुई; वाटै वीचु-उदीची से आनेवाली; चीत नीर्-शीत जल से; पौतिन्त-भरी; मॅन् चेक्कै-कोमल शय्या के; वाच वी-सुगन्धयुक्त पुष्प; करिन्तु-झुलस गये और; तिक्कु कयक्कळ् ऍट्टुम्-आठों दिग्गजों को; वॅन्ऱ-जिन्होंने हराया था, वे; तोळ् आक्कै-कन्धे और शरीर; तीय-जल उठे; आवि वेवतु-प्राण मुरझाये; आयित्तान्-ऐसी स्थिति का हो गया। ६४३

सीता पर उसकी कामेच्छा निवार्य नहीं लगी। वह शत-शत कोटि-कोटि गुना विकसित हुई। तब उसकी शय्या के सुवासित फूल सूखने लग गये, यद्यपि उसमें उदीची हवा द्वारा लायी गयी शीतल सीकरें खूब भरी थीं। और भी उसका शरीर और उसके कंधे भी, जिन्होंने आठों दिग्गजों को हराया था, जलने लगे। प्राण भी जलते-से लगे। ऐसी विकट स्थिति में पड़ गया रावण। ६४३

तादु कॉण्डु शीद मुञ्जु मन्दु तण्णॅ न्नन्दमॅन्
पोदु कॉण्डु डुत्त पोदु पॉङ्गु तीम रुन्दिन्नाल्
वेदु कॉण्ड वॅन्न मेन्नि वॅन्दु शिन्द विम्मुदी
ऊदु वन्रु रुत्ति पोलु यिर्त्तु यिर्त्तु यङ्गिन्नान् 644

तातु कॉण्टु-मकरन्द लेकर; चीतमुम् चुमन्तु-शीतलता ढोते हुए; तण् ॲन्-शीतल; अन्त-उन; पोतु कॉण्टु-पुष्प लेकर; अटुत्त पोतु-(जब वह उदीची हवा) आई तब; पौङ्कु ती मरुन्तिन्नाल्-भभकती आग रूपी दवा से; वेतु कॉण्टतु ॲन-सेंका गया, ऐसा; मेनि वॅन्तु-शरीर गरम होकर; चिन्त-छितर जाय, ऐसा; विम्मु ती-बढ़नेवाली आग को; ऊतु-फूंकनेवाली; वन् तुरुत्ति पोल्-बलवान भाथी के समान; उयिर्त्तु उयिर्त्तु-लम्बी साँसें छोड़ते-छोड़ते; उयङ्किन्नान्-शलथ हुआ। ६४४

उदीची हवा मकरन्द, शीतल जल और कुसुमों को लेकर, स्वयं ठण्डी रहकर आयी। पर उससे भभकनेवाली ज्वाला से सेंका गया हो, ऐसा वह गरम साँसें छोड़ने लगा। वे साँसें धौंकनी की हवा के समान उसके शरीर को अंगारे छितरानेवाली आग के समान पीड़ा देने लगीं और वह छटपटाने लगा। ६४४

तावि यादु तीयॅ न्नादु तैयलाळै मॅय्युरप्
पावि याद पोदि लाद पावि माळ्ळै पान्नल्वेल्
कावि यान्न कण्णि मेन्नि काण मूळ्ळु वान्नु मायित्तान् 645
आवि शाल नॊन्दु नॊन्द ळुङ्गु

तावियातु–स्थिर न करके; ती अॅन्ातु–(परदारा-प्रेम) अग्नि है, यह न सोचकर; तैयलाळै–देवी को; मॅय् उऱ–सचमुच; पावियात–नहीं स्मरण किया हो, ऐसा; पोतु इलात–जिसका समय नहीं रहा; पावि–वह पापी (रावण); माळै–आम; पातल्–कुवलय; वेल्–भाला; कावि–नीलोत्पल; आऩ–ऐसे; कण्णि–नेत्रों की; मेनि काण–(देवी का) रूप देखने के लिए; मूळुम्–बढ़नेवाली; आचैयाल्–लालसा से; आवि चाल नॉन्तु नॉन्तु–प्राणों के खूब पीड़ित होते-होते; अळुङ्कुवातुम् आयिनाऩ्–बहुत कष्ट उठाता रहा। ६४५

वह अपने मन को वश में न रख सका; न सीता को आग समझकर उनकी इच्छा करने से विरत हो सका। उस पापी के पास समय ही नहीं रहा, जब उसने सीताजी की भावना नहीं की! उसके मन में आम की फाँकें, कुवलय, भाला और नीलोत्पल —इनके समान जिनके नेत्र थे, उनका पूरा रूप देखने की दुर्दम लालसा उठी। वह बढ़ने लगी। उस कारण उसके प्राण बहुत कष्ट उठाने लगे। वह भी बहुत कष्ट में पड़ा। ६४५

परङ्गि डन्द मादि रञ्जु मन्द पाळि यानैयिन्
करङ्गि डन्द कॉम्बॉ डिन्द डङ्ग वॅन्ऱ कावलान्
मरङ्गु डैन्द तुम्बि पोल नङ्ग बाणम् वन्दुवन्
दुरङ्गु डैन्दु नॉन्दु नॉन्दु ळैन्दु ळैन्दॊ डुङ्गिनान् 646

परम् किटन्त मातिरम्–भारयुक्त दिशाओं के; चुमन्त–वाहक; पाळि यानैयिन्–मोटे (दिग्-) गजों की; करम् किटन्त–सूँड़ों के बाजू में रहे; कॉम्पु ऑटिन्तु–दाँत टूटकर; अटङ्क–(उसके) वक्ष में समा गये; वॅन्ऱ कावलान्–ऐसा विजयी राजा; अनङ्कपाणम्–अनंग-बाणों के; वन्तु वन्तु–आ-आकर; मरम् कुटैन्त–काठ को छेदनेवाले; तुम्पि पोल्–कीड़े (भ्रमर ?) के समान; उरम् कुटैन्तु–वक्ष को छेदने से; नॉन्तु नॉन्तु–वेदना सहते-सहते; उळैन्तु उळैन्तु–बहुत दर्द पाते-पाते; ऑटुङ्किनान्–शिथिल हो गया। ६४६

रावण बली वीर था। बोझीली दिशाओं के वाही दिग्गजों से जब उसने युद्ध किया था, तब उनके दाँत उसके कठोर वक्ष से टकराकर टूट गये और उसके वक्ष में ही रह गये। ऐसे राजा के वक्ष में अब मन्मथ के पुष्पशर घुसकर छेद बनाने लगे। काठ में जैसे कीड़ा छेद बना देता है, वैसा उन शरों ने उसके वक्ष को भेद डाला। रावण वेदना के मारे थक गया। ६४६

कॉन्ऱै तुन्ऱु कोदै योडॊर् कॉम्बु वन्दॆ नॆञ्जिडै
निन्ऱ दुण्डु कण्ड दॆन्ऱु ळन्द ळुङ्गु नीर्मैयान्
मन्ऱ ऱङ्ग लङ्गन् मारन् वाळि पोल मल्लिहैत्
तॆन्ऱल् वन्दॆ दिर्न्द पोदु शोरु वानु मायिनान् 647

कॉन्ऱै तुन्ऱु–अमलतास के फलों के समान; कोतै ऑटु–केश के साथ; ओर्

कॉमृपु वन्तु—एक पुष्पशाखा आकर; अॅन्नु नॅञ्चु इटै—मेरे मन में; निन्ऱतु—रह गई; कण्टतु उणट्ु—मैंने देखा; अॅन्ऱु—यह कहते हुए; उळन्तु अळुङ्कु नीरमैयान्—दुखी होकर संकट उठानेवाला; मन्ऱल् तङ्कु—सुबास-निलय; अलङ्कल् मारन्—मालाधारी मन्मथ के; वाळि पोल—(पुष्प-) शरों के समान; मल्लिकै तॅन्ऱल् वन्तु—मल्लिका के बास के साथ मलयपवन आकर; अॅतिर्न्त पोतु—जब उस पर लगा, तब; चीऱ्रवातुम् आयित्तान्—कोप करनेवाला भी बना। ६४७

उसे ऐसा भान रहा कि अमलतास के फलों के समान काले केश के साथ एक पुष्पलता के समान सुन्दरी उसके दिल में आकर ठहर गयी। तब वह दुखी होकर क्लान्त रहा। पर जब मलयपवन मल्लिका के फूलों का बास ढोता हुआ मन्मथ के शरों के समान उस पर लगा तो उसने कोप दिखाया। ६४७

अन्न कालै यङ्गु निन्ऱॅ ळुन्द ळुङ्गु शिन्दैयान्
इन्न वाऱु शॅय्वॅ नॅन्ऱॊ रॅण्णि लान्ि रङ्गुवान्
पन्नु कोडि दीब मालै पालै याळ्प्प ळित्तशोऱ्
पॊन्न नारॅ डुक्क वङ्गोर् शोलै यूडु पोयिन्नान् 648

अन्न कालै—तब; अळुङ्कु चिन्तैयान्—क्लान्तमन; अङ्कु निन्ऱु—(रावण) वहाँ से; अॅळुन्तु—उठकर; इन्न आऱु चॅय्वॅन्—ऐसा करूँ; अॅन्ऱु—यह; ओर् अॅण्—किसी एक विचार; इलान्—के विना; इरङ्कुवान्—दुखी रहा; पालै याळ्—'पालै' नाम की 'याळ' (वीणा) के स्वर को; पळित्त चोल्—परिहसित करनेवाली बोली वाली; पॊन् अनार्—स्वर्ण-सम सुन्दरियों के; पन्नु—प्रशंसित; कोटि तीप मालै अॅटुक्क—बहुसंख्यक दीप-माला लेते आते; अङ्कु—वहाँ; ओर् चोलै ऊटु—एक उद्यान में; पोयिनान्—गया। ६४८

तब रावण वहाँ से उठा। उसका मन बड़ा क्लेशपूर्ण था। उसे नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाय। उससे वह और भी उद्विग्न हुआ। तब वह पास के एक उद्यान में चला। उसके साथ 'पालै याळ' नाम की वीणा के स्वर से भी मधुर बोली वाली सुन्दरियाँ बहुत बड़ी संख्या में दीप की मालाएँ लेते हुए चलीं। ६४८

माणिक्कम् पनशम् वाळै मरहदम् वयिरन् देमा
आणिप्पॊन् वेङ्गै कोङ्ग मरविन्द रागम् बूगम्
शेणुऱ्ऱ नीलञ् जालङ् गुरुविन्दन् वॅङ्गु वॅळ्ळि
पाणित्तॅण् पळिङ्गु नाहम् पाटलम् पवळ मन्नो 649

पनचम्—पनस (कटहल); माणिक्कम्—माणिक्यमय हैं; वाळै—कदली; मरकतम्—मरकतमय; तेमा वयिरम्—मधुर आम हीरे से; वेङ्कै—'वेंगै' वृक्ष; आणिप् पॊन्—चोखे स्वर्णमय; कोङ्कु—'कोंगु' तरु; अरविन्त राकम्—पद्मराग; चेण् उऱ्ऱ पूकम्—गगनस्पर्शी पूगतरु; नीलम्—इन्द्रनील; चालम्—सालवृक्ष; कुरुविन्तम्—रत्नमय;

तॆङ्कु वॆळ्ळि–नारियल चाँदी के; नाकम्–सुरपुन्नाग; पाणि तॆळ् पळिङ्कु–जल-सम स्वच्छ स्फटिक; पाटलम्–पाटल; पवळम्–प्रवाल। ६४९

उस उद्यान के पेड़ विचित्र थे। पनस माणिक्यमय थे। केले मरकत के, आम के पेड़ हीरे के, 'वेंगै' तरु चोखे स्वर्ण के, 'कोंगु' पद्मराग के, गगनस्पर्शी पूगतरु इन्द्रनीलमय, सालवृक्ष एक तरह के रत्न के, नारियल के पेड़ चाँदी के और सुरपुन्नाग जल-स्वच्छ स्फटिक के थे। पाटल के पेड़ प्रवालमय थे। ६४९

वानुऱ निवन्द शॆङ्गेऴ मणिमरन् दुवन्ऱि वान
मीनॊडु मलर्ह डम्मिल् वेऱुमै तॆरिद ऱेऱात्
तेनुहु शोलै नाप्पण् शॆम्बॊन्मण् डबत्तु ळाण्डोर्
पानिऱ वमळि शेर्न्दान् पैयुळुऱ् ऱुयङ्गि नैवान् 650

पैयुळ् उऱ्ऱु–पीड़ित होकर; उयङ्कि नैवान्–दुःख-मग्न हो विगलित होनेवाला; वान् उऱ निवन्त–गगन को स्पर्श करते हुए उन्नत; चॆम् केऴ्–उत्तम रंग वाले; मणि मरम् तुवन्ऱि–रत्नमय तरुओं से भरे रहकर; मलर्कळ्–उनके फूल; वान मीन् ऑटु–आकाश के नक्षत्रों के साथ; तम्मिल्–उनसे; वेऱुमै तॆरितल् तेऱ्ऱा–भेद जानना कठिन हो ऐसा, रहकर; तेन् उकु–जहाँ शहद चूते थे; चोलै नाप्पण्–उस उद्यान के मध्य; चॆम् पॊन् मण्टपत्तुळ्–लाल स्वर्ण-मण्डप में; आण्टु–वहाँ; पाल् निऱ–क्षीरवर्ण; ओर् अमळि–एक शय्या में; चेर्न्तान्–गया। ६५०

कामवेदना से व्यग्र रावण उस उद्यान के बीच में रहे स्वर्ण-मण्डप के अन्दर दुग्ध-सम श्वेत एक शय्या पर गया। उस उद्यान में गगन को छूते हुए बढ़े और रत्नमय तरु खूब भरे थे। उनके फूलों और आकाश के नक्षत्रों में भेद जानना कठिन था। वे फूल शहद चू रहे थे। ६५०

कनिहळिन् मलरिन् वन्द कळ्ळुण्ड कळिह ळन्न
वनिदैयर् मऴलै यिन्शोऱ् किळ्ळैयुङ् कुयिलुम् वण्डुम्
इनियन मिऴऱ्ऱु हिन्ऱ यावैयु मिलङ्गै वेन्दन्
मुनियुमॆन् ऱविन्द वाय मूङ्गैयर् पोन्ऱ वन्ऱे 651

कनिकळिन्–फलों से और; मलरिन्–फूलों से; वन्त–निकला; कळ् उण्टु–मधु पीकर; कळिकळ् अन्न–पियक्कड़ों के समान; वनितैयर्–स्त्रियों के-से; मऴलै इन् चोल्–तुतलाते मधुर वचन बोलनेवाले; किळ्ळैयुम्–शुक; कुयिलुम्–पिक; वण्टुम्–भ्रमर; इनियत मिऴऱ्ऱुकिन्ऱ यावैयुम्–मधुर बोलनेवाले सभी; इलङ्कै वेन्तन्–लंकाधिपति; मुनियुम् ॲन्ऱु–कोप करेगा, यह सोचकर; अविन्त वाय–मुख बन्द कर; मूङ्कैयर् पोन्ऱ–गूंगे के समान हो रहे। ६५१

उस उद्यान में शुक, पिक, भ्रमर आदि थे। वे उस उद्यान के तरुओं के फलों और फूलों से निकलनेवाले मधु और रस पीकर पियक्कड़ों के समान मत्त हो स्त्रियों की-सी तुतलाती मधुर बोली में बोलते थे। पर

अब वे, इस डर से कि लंकेश रावण गुस्सा करेगा, मुख बन्द करके गूंगे के समान हो रहे। ६५१

परुवत्ताल् वाडै तन्द पशुम्बति यनङ्ग बाणम्
उरुविप्पुक् कौळित्त पुण्णिर् कुळित्तलु मुळैन्दु विम्मि
इरुदुत्तान् याद डावॆन् ड्रियम्बिना नियम्ब लोड्म्
वॆरुविप्पोय्च् चिशर नीङ्गि वेनिल्वन् दिरुत्त दन्ड्रे 652

परुवत्ताल्–ऋतु के धर्म के अनुसार; वाटै तन्त–उदीची हवा द्वारा लाई गई; पचुम् पति–शीतल हिम; अतङ्कपाणम् उरुवि–अनंग-बाण छेदकर; पुक्कु ऑळित्त–प्रवेश कर (छिपे) जहाँ रहे; पुण्णिल्–उन व्रणों में; कुळित्तलुम्–जब पैठे तभी; उळैन्तु विम्मि–पीड़ा से व्यग्र होकर; इरुतु तान् यातटा–ऋतु कौन है, रे; ऍन्ड्र–ऐसा; इयम्पितान्–रावण ने प्रश्न किया; इयम्पलोटुम्–कहते ही; चिचिरम्–शिशिर; वॆरुवि पोय् नीङ्कि–डरकर चला, हटा और; वेतिल् वन्तु इरुत्ततु–वसन्त आ गया। ६५२

ऋतु शिशिर की थी। इसलिए उदीची हवा द्वारा शीतल हिम आकर लग रहा था। वह काम-शर-विद्ध रावण के शरीर के व्रणों में जब पैठा, तब वह छटपटाने लगा। वेदना से हड़बड़ाकर उसने डाँटा कि क्या ऋतु है यह ? यह पूछना था कि शिशिरऋतु डरकर भाग गयी। उसके स्थान पर वसन्तऋतु आ रही। ६५२

वन्बणै मरमुन् दीयुम् मलैहळुङ् गुळिर वाळुम्
मॆन्बति यॆरिन्द दॆन्ड्राल् वेतिलै विळम्ब लामो
अन्बॆनुम् विडमुण् डारै याड्रला मरुन्दु मुण्डो
इन्बमुन् दुन्बमुन् दानु मुळ्ळत्तो डियैन्द वन्ड्रे 653

वन् पणै मरमुम्–कठोर बड़े तरु भी; तीयुम्–अग्नि; मलैकळुम्–पहाड़; कुळिर–शीतल बने; वाळुम्–प्राणपूर्ण; मॆल् पति–कोमल हिम ने; ऍरिन्ततु–जलाया; ऍन्ड्राल्–तो; वेतिलै विळम्पलामो–धूप का कहना क्या; अन्पु ऍनुम् विटम् उण्टारै–काम नाम का विष जिसने खाया है, उसका; आड्रल् आम् मरुन्तुम्–शमन करनेवाली दवा भी; उण्टो–है क्या; इन्पमुम् तुन्पम् तानुम्–सुख और दुःख; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; इयैन्त अन्ड्रे–लगे हुए (अनुभव) हैं न। ६५३

वसन्त के कारण बड़े-बड़े कठोर पेड़ भी मनोरम हो गये। पर्वत भी आँखों को ठण्डक (आराम) पहुँचानेवाले हो गये। पर धूप तो थी। जिसको हिम भी ताप दे रहा था उसको धूप क्या देगी, यह कहने की आवश्यकता है क्या ? काम का विष जिसने पिया है, उसके ताप को शान्त करनेवाली दवा इस लोक में कहाँ प्राप्य है ? सुख व दुःख अपने-अपने मन की अनुभूत दशाएँ हैं न ? फिर बाहर का उपचार क्या कर सकता है ? । ६५३

मादिरत्　　तिरुदि　　कारुन्　　दऩ्मनत्　　तॆऴुन्द　　मैयल्
वेदनै　　वॆप्पञ्　　जॆय्य　　वेऩिलुम्　　वॆदुप्पुङ्　　गालै
यादिदिङ्　　गिदनिऩ्　　मुऩ्नैच्　　चिशिरनऩ्　　ऱिदनै　　नीक्किक्
कूदिराम्　　बरुवन्　　दऩ्नैक्　　कॊणरुदिऱ्　　विरैवि　　नॆऩ्ऱाऩ् 654

तऩ् मनत्तु ऍऴुन्त–अपने मन में उठी; मैयल् वेतनै–प्रेम की वेदना ने; मातिरत्तु इऱुति कारुम्–दिगन्त तक; वॆप्पम् चॆय्य–गरमी दिला दी, तब; वेऩिलुम् वॆतुप्पुम् कालै–धूप ने भी ताप दिया, तो; यातु इङ्कु–कौन (सी ऋतु) यहाँ; मुऩ्नै चिचिरम् इततिऩ् नऩ्ऱु–पहले का शिशिर इससे बेहतर रहा; इलतै नीक्कि–इसको दूर करके; कूतिर् आम् परुवम् तऩ्नै–शरद ऋतु को; विरैविल् कॊणरुतिर्–तुरन्त लाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ६५४

रावण के मन का ताप दिगन्त तक फैलकर तपाने लगा। उस पर वसन्त की धूप भी मिल गयी। वह और भी गरम हो गया। पूछा कि अब कौन सी ऋतु आयी है यह? पहले जो शिशिरकाल था वह इससे बेहतर था, ऐसा लगता है। उसने आज्ञा दी— हटाओ इसे। शरदऋतु को लाओ शीघ्र। ६५४

कूदिर्वन्　　दडैन्द　　कालै　　कॊदित्तन　　कुववुत्　　तिण्डोळ्
शीदमुञ्　　जुडुमो　　मुऩ्नैच्　　चिशिरमे　　काणि　　दॆऩ्ऱाऩ्
आदिया　　यञ्जु　　मऩ्ऱे　　यरुळल　　दियऱ्ऱ　　लॆऩ्ऩ
यादुमिङ्　　गिरुदु　　माहा　　यावैयु　　महऱ्ऱु　　मॆऩ्ऱाऩ् 655

कूतिर् वन्तु अटैन्त कालै–शरद जब आया; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सुदृढ़ कन्धे; कॊतित्तऩ–गरम हो गये; चीतमुम् चुटुमो–शीत भी जलायगा क्या; मुऩ्नै चिचिरमे इतु–पहले का शिशिर ही यह; काण्–देखो; ऍऩ्ऱाऩ्–बोला; आतियाय्–नाथ; अरुळ् अलतु–आज्ञा के सिवाय; इयऱ्ऱल्–करना; अञ्चुम्–डरते हैं; ऍऩ्ऩ–कहा, तो; इङ्कु–यहाँ; इरुतु यातुम्–कोई भी ऋतु; आकातु–(भली) नहीं हो सकती; यावैयुम् अकऱ्ऱुम्–सबको हटाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; (अऩ्ऱु–ए)। ६५५

शरद आया। (पर क्या फल होता?) उसके पुष्ट और सबल कंधे जल उठे। "ऐ! शीत भी जला सकेगा क्या? वही शिशिर यह है! देखो!" जब रावण ने यह कहा तब उसके दासों ने विनय की कि महाराज! हम आपकी आज्ञा के सिवा कुछ अन्य करने से डरेंगे। (आप विश्वास मानें कि यह शरद है।) तब रावण ने आज्ञा दी कि सो बात है तो कोई भी ऋतु कुछ नहीं करेगी। यहाँ कोई ऋतु न हो। हटाओ सबको। ६५५

ऍऩ्ऩलु　　मिरुदु　　वॆल्ला　　मेहलुम्　　यावुन्　　दऩ्दम्
पऩ्ऩरुम्　　बरुवञ्　　जॆय्या　　योहिपोल्　　पऱ्ऱु　　नीत्त
पिऩ्ऩरु　　मुलह　　मॆल्लाम्　　पिणिमुदऱ्　　पाशम्　　वीशित्
तुऩ्ऩरुन्　　दवत्तो　　रॆय्दुन्　　दुऱक्कम्बोऱ्　　ऱोऩ्ऱिऱ्　　ऱऩ्ऱे 656

अॅन्ऱलुम्–कहते ही; इरुतु ॲल्लाम्–सभी ऋतुएँ; एकलुम्–चली गईं, तब; यावुम्–सभी (पदार्थ); पन् अरुम्–अवर्ण्य; परुवम् चॅय्या–मौसम के अनुसार व्यापार छोड़कर; योकि पोल्–यतियों की तरह; पऱ्ऱु नीत्त–निर्लिप्त रह गये; पिन्तरुम्–और फिर; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोक; पिणि मुतल् पाचम् वीचि–रोग आदि कर्म-पाश हटाकर; तवत्तोर् ॲय्तुम्–तपस्वी द्वारा प्राप्य; तुन् अरुम् तुऱक्कम् पोल्–दुर्गम स्वर्ग के समान; तोन्ऱिऱ्ऱु–दिखाई दिया। ६५६

उसके ऐसा कहने पर सारी ऋतुएँ चली गयीं। उनके साथ कालोचित व्यापार भी रुक गये। इसलिए उस उद्यान में रहे चल और अचल सभी पदार्थ और जीव योगी के समान अचल और निर्लिप्त रह गये। वे ही क्या सारे लोकों के सारे जीव रोग आदि कर्मबन्धन काटकर स्थिर रहे। इसलिए लोक तपस्वी द्वारा प्राप्य और साधारण रीति से दुर्गम स्वर्ग के समान दिखे। ६५६

कूलत्ता रुलह मॅल्लाङ् गॉदिप्पीडु कुळिर्प्पु नीङ्ग
नीलत्ता ररक्कन् मेऩि नॅय्यिन्ऱि यॅरिन्द दन्ऱे
कालत्ताल् वरुव दॊन्ऱो कामत्तार् कनलुम् वॅन्दीच्
चीलत्ता लविप्प दन्ऱिच् चॅय्यत्ता ऩाव दुण्डो 657

कूलत्तु आर्–सीमा-बद्ध; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोक; कॊतिप्पु और कुळिर्प्पु नीङ्क–गरमी व ठण्डी से रहित हुए, तब; नीलत्तु आर् अरक्कन् मेऩि–नीलवर्ण राक्षस का शरीर; नॅय् इन्ऱि–घी के विना ही; ॲरिन्ततु–जला; कालत्ताल् वरुवतु ऑन्ऱो–ऋतु के कारण आया वह क्या; कामत्ताल्–काम के कारण; कनलुम् वॅम् ती–जलनेवाली गरम आग को; चीलत्ताल्–शीलगुण द्वारा; अविप्पतु अन्ऱि–बुझाना छोड़कर; चॅय्य ताऩ् आवतु उण्टो–करने के लिए कोई दूसरा है क्या। ६५७

संसार सीमाबद्ध है। उसकी गति-विधि आदि के नियम हैं। अब वे नियम नहीं रहे। अतः न शीत था, न ताप। तब भी नीलवर्ण रावण का शरीर ताप का अनुभव करने लगा। वह विना घी के ही जलने लगा! उसका ताप काल के व्यापार के फलस्वरूप आनेवाला नहीं था! पर उसके मन की काम रूपी जलती आग से होनेवाला ताप था। उसकी शान्ति शीलगुण से ही हो सकती थी। दूसरा कोई परिहार क्या होगा? । ६५७

नारमुण् डॅळुन्द मेहन् दामरै वळैय नाऩ्च्
चारमुण् डिरुन्द शीदच् चन्दनन् दळिर्मॅन् ऱादो
डारमुण् डॅरिन्दु शिन्दै ययर्हिन्ऱा नयऩिन् ऱारै
ईर्मुण् डॅन्ब रोडि यिन्दुवॅक् कॊणरु मॅन्ऱान् 658

नारम् उण्टु ॲऴुन्त–जल पीकर जो उठे; मेकम्–वे मेघ; तामरै वळैयम्–कमलनालों के वलय; नाऩ् चारम् उण्टु इरुन्त–कस्तूरी और गन्ध-द्रव्य-मिला; चीत चन्तनम्–शीतल चन्दन; तळिर्–पल्लव; मॅल ताताॅटु–कोमल पराग के साथ;

आरम्–मोती; उण्टु–उसके शरीर पर रखे गये; ॲरिन्तु–(पर) जलन से; चिन्तै अयर्कित्ऱान्–मन में तप्त हो थकता है; अयल् नित्ऱारै–पार्श्व में स्थित लोगों को; ईरम् उण्टु ॲन्पर्–शीतलता है, कहते; ओटि–भागो; इन्तुवै–इन्दु को; कोणरुम् ॲन्ऱान्–लाओ, कहा। ६५८

रावण के शरीर पर शीत देनेवाले पदार्थ रखे गये। जल-भरे मेघ; कमलनालों के बने वलय; कस्तूरी-मिला शीतल चन्दन; पल्लव; कोमल मकरन्द; मोती आदि उसका ताप हर नहीं रहे थे बल्कि ताप को बढ़ाने लगे। तब उसने अपने पार्श्वस्थों से कहा कि लोग कहते हैं कि चन्द्र में शीत (देने की शक्ति) है। जाकर इन्दु को पकड़ लाओ। ६५८

वॆञ्जिनत् तरक्क ऩाण्ड वियऩहर् मीदु मेव
नॆञ्जयिर्त् तोंदुङ्गु हित्ऱ निऱैमदि योनै नेडि
अञ्जलै वरुदि नित्तै यळैत्तन ऩरश ऩॆन्नच्
चञ्जलन् दुऱन्दु तानच् चन्दिर नुदिक्क लुऱ्ऱान् 659

वॆम् चित्तत्तु–भयंकर क्रोधी; अरक्कन् आण्ट–राक्षस से पालित; वियन् नकर् मीतु–बड़े उस नगर के ऊपर; मेव–जाने से; नॆञ्चु अयिर्त्तु–मन में डरकर; ऒतुङ्कुकित्ऱ–परे चलता जो रहा, उस; निऱै मतियोनै–पूर्णचन्द्र को; नेटि–ढूँढ़कर; अञ्चलै–मत डरो; नित्तै–तुमको; अरचन्–राजा ने; अऴैत्तनन्–बुलाया है; ॲन्ऩ–कहने पर; अ चन्तिरन्–वह चन्द्र भी; चञ्चलम् तुऱन्तु–घबड़ाहट छोड़कर; उतिक्कल् उऱ्ऱान्–उदित हुआ। ६५६

चन्द्र तो भयंकर क्रोधी राक्षसराज से पालित बड़े नगर— लंका —के ऊपर जाने से बिल्कुल डरता था। इसलिए वह उसे बचाकर कहीं घूमता रहा। राक्षसों ने उसे ढूँढ़कर पकड़ा। उससे कहा— मत डरो। राजा ने तुम्हें बुलाया है। वह चन्द्र भी कुछ अधैर्य छोड़कर धीरता का अवलंबन करके उदित हुआ। ६५९

अयिरुऱक् कलन्द तीम्बा लाऴिनिन् ऱाऴि यिन्दु
शॆयिरुऱऱ् करश ऩाण्डोर् तेय्वुवन् दुऱ्ऱ पोऴ्दिन्
वयिरमुऱ् ऱुडैन्द माऱ्ऱान् वलियऱच् चॆन्ऱ वन्ऱन्
उयिर्तॆऱ्ऱ वुवन्दु वन्दा ऩॊत्तन नुदयञ् जॆय्दान् 660

चॆयिर् उऱ्ऱकु अरचन्–अपने शत्रु राजा के; ओर् तेय्वु उऱ्ऱ पोऴ्तिल्–निर्बल रहते समय; आण्टु–तब; वयिरम् उऱ्ऱु–वैर साधकर; उटैन्त माऱ्ऱान्–बलहीन शत्रु के; वलि अऱ–बल को ध्वस्त करने; चॆन्ऱु–चढ़ जाकर; अवन् तन् उयिर् तॆऱ्ऱ–उसके प्राणों का अन्त करने की; उवन्तु वन्तान्–चाह लेकर आया हो; ऒत्तनन्–उसकी तरह; अयिर् उऱ कलन्त–शर्करा (या सूक्ष्म सिकता) से युक्त; तीम् पाल् आऴि निन्ऱु–मधुर क्षीरसागर से; आऴि इन्तु–गोल चाँद; उतयम् चॆय्तान्–उदित हुआ। ६६०

कोई राजा है। उसका शत्रु निर्बल हो गया है। उस समय यह राजा अपना वैर साधने के इरादे से विकट स्थिति में रहनेवाले उस शत्रु पर आक्रमण करके उसके प्राण हरने के लिए आता हो ऐसा, शर्करा-भरे क्षीर-सागर-मध्य से गोल पूर्णचन्द्र उगकर आया। ६६०

परावरुङ् गदिर्ह ळॅङ्गुम् परप्पिमीप् पडर्न्दु वानिल्
तरादलत् तॅवरुम् बेणत् तण्मदि युदित्त तोर्रम्
अरावणैत् तुयिलु मण्णल् कालमोर्न् दर्र नोक्कि
इरावण नुयिर्मे लुय्त्त तिहिरियु मॅन्न लान 661

परावु अरुम्–जिसकी पूरी प्रशंसा करना कठिन है; तण् मति–वह शीतल चन्द्र; कतिर्कळ् ऍङ्कुम् परप्पि–सर्वत्र किरणें फैलाते हुए; वानिल् मी पटर्न्तु–ऊपर आकाश में चलकर; तरातलत्तु ऍवरुम् पेण–धरातल के सबका स्वागत पाकर; उतित्त तोर्रम्–उदित जो हुआ वह दृश्य; अरा अणै तुयिलुम् अण्णल्–शेष-शय्या पर निद्रा करनेवाले प्रभु द्वारा; कालम् ओर्न्तु–समय विचारकर; अर्रम् नोक्कि–सन्दर्भ निश्चित कर; इरावणन्–रावण के; उयिर्मेल् उय्त्त–प्राणों पर चलाया गया; तिकिरियुम् ऍन्नल्–(सुदर्शन) चक्र-सम; आन–हुआ। ६६१

अवर्णनीय यशस्वी शीतल चन्द्र आकाश में ऊपर उदित हुआ। तब उसकी किरणें सब जगह फैलीं। भूमि के सभी लोग उसका चाव के साथ स्वागत करने लगे। तब वह दृश्य शेषशायी श्रीमन्नारायण के चक्र के समान था, जिसे उन्होंने उचित समय विचारकर और ठीक सन्दर्भ देखकर रावण पर चलाया हो। ६६१

अरुहुरु पालिन् वेलै यमुदॅला मळैन्दु वारिप्
परुहिन परन्दु पाय्न्द निलाच्चुडर् पनिमॅन् कर्रै
नॅरिवुरु पुरुवच् चॅङ्ग णरक्कर्कु नॅरुप्पि नाप्पण्
उरुहिय वॅळ्ळि यळ्ळि वीशिना लॊत्त दन्रे 662

अरुकु उरु–पास रहे; पालिन् वेलै–क्षीरसागर के; अमुतु ऍलाम्–सारे अमृत को; अळैन्तु वारि परुकित–(चन्द्र ने) टटोल, उठाकर खा लिया; परन्तु पाय्न्त–(वही अमृत) सर्वत्र फैलकर व्यापा; निला चुटर्–(उस अमृत की) चाँदनी की किरणों की; पनि मॅल् कर्रै–शीतल कोमल राशि; नॅरिवु उरु पुरुव–तनी हुई भौंहों के; चॅम् कण् अरक्कर्कु–अरुणाक्ष राक्षस रावण के लिए; नॅरुप्पिन् नाप्पण्–अग्नि-मध्य; उरुकिय–पिघली हुई; वॅळ्ळि–चाँदी; अळ्ळि वीचिनाल्–उठाकर जो फेंकी गई; ऑत्ततु–उसके समान रही। ६६२

चन्द्र की चाँदनी की शीतल किरणों की राशि क्या थी! उसने अपने पास के क्षीरसागर से टटोल लेकर जो अमृत खाया था, वह मानो सब जगह फैल रहा था। लेकिन वह तनी हुई भौंहों और लाल आँखों के साथ जो रहा, उस रावण के लिए अग्निमध्य चाँदी को पिघलाकर प्राप्त द्रव के समान था जिसे उस पर उड़ेल दिया हो। ६६२

मिऩ्ऩलन् दिहऴ्ज् जोदि विऴुनिला मिदिलै शूऴ्न्द
शॆन्नॆलङ् गऴनि नाडऩ् ऱिरुमहळ् शॆव्वि केळा
नऩ्ऩलन् दॊलैन्दु शोरु मरक्कनै नाळुन् दोलात्
तुऩ्ऩल तॊरुवऩ् बॆऱ्ऱ पुहऴॆनच् चुट्ट दऩ्ऱे 663

मिऩ् नलम् तिकऴुम् चोति–विद्युत के गुण के साथ विद्यमान ज्योति की; विऴु निला–श्रेष्ठ चाँदनी ने; चूऴ्न्त–चारों ओर घेरे रहनेवाले; चॆम् नॆल्–लाल धान के; अम् कऴनि–मनोहर खेतों से युक्त; मितिलै नाटऩ्–मिथिलेश की; तिरुमकळ् चॆव्वि–दिव्य सुता सीता का रूपसौंदर्य; केळा–श्रवण कर; नल् नलम् तॊलैन्तु चोरुम्–(उसके फलस्वरूप) अपना बल सब खोकर लटनेवाले; अरक्कनै–राक्षस, रावण को; नाळुम् तोला–कभी न हारनेवाले; तुऩ्ऩलन् ऑरुवन् पॆऱ्ऱ पुकऴ् ॲन–शत्रु से प्राप्त यश के समान; चुट्टतु–तपाया। ६६३

उस चाँदनी में विद्युत की-सी ज्योति भरी थी। रावण उस विदेह देश के राजा की सुपुत्री जानकीदेवी का रूपसौंदर्य सुनकर अपने सभी तरह के बल को क्षीण होने देते हुए छटपटा रहा था; जिस देश के चारों ओर लाल धान के पौधों से भरे खेत पाये जाते थे। वह चाँदनी उस रावण को इस तरह तपाने लगी, जिस तरह अजेय शत्रु का यश किसी वीर को तपाता है। ६६३

करुङ्गऴऱ् काल नञ्जुङ् गावलन् करुत्तु नोक्कित्
तरुङ्गदिर्च् चीद याक्कैच् चन्दिरऩ् ऱरुदि ऍन्ऩ
मुरुङ्गिय कनलिन् मूरि विडत्तिनै यॊऴुक्कुञ् जीऱ्ऱत्
तरुङ्गदि ररुक्कन् ऱऩ्ऩै यारऴैत् तीरॆऩ ऱॆऩ्ऱाऩ् 664

करुम् कऴल् कालन्–बड़ी पायलों से भूषित यम भी; अञ्चुम्–जिससे डरता है; कावलन्–राक्षसराज; करुत्तु नोक्कि–(भृत्यों को) गुस्से के साथ देखकर; चीतम् तरुम् कतिर् याक्कै–शीत देनेवाली किरणों के शरीर के; चन्तिरन् तरुतिर् ऍन्ऩ–चन्द्र को लाओ, कहा; मुरुङ्किय कतलिन्–खूब जलती हुई आग के साथ; मूरि विटत्तिनै–भयंकर विष को; ऑऴुक्कुम्–बरसानेवाले; चीऱ्ऱत्तु–क्रुद्ध; अरुम् कतिर् अरुक्कन् तन्नै–संतापी किरणमाली सूर्य को; यार् अऴैत्तीर्कळ्–तुम लोगों में किसने बुलाया; ऍन्ऱान्–पूछा। ६६४

बड़ी पायलधारी यम के भी भयदायी रावण ने अपने भृत्यों को देखकर पूछा कि शीतल-किरण-शरीरी चन्द्र को लाओ—यही मैंने कहा था। लेकिन यह सर्वदाहक अग्नि के साथ भयंकर विष को बरसानेवाले और विवृद्ध कठोर किरणमाली को लाया गया है। तुम लोगों में किसने उसको बुलाया? । ६६४

अव्वऴिच् चिलद रञ्जि यादिया यरुळिल् लारै
इव्वऴित् तरुदु मॆन्ब दियम्बला मियल्बिऱ् ऱॆऩ्ऱाल्

शॆव्वळिक् कदिरो नॆन्ऱुन् दॆरिन्मे लन्ऱि वारान्
अॆव्वळित् तॆनिनुन् दिङ्गळ् विमानत्तिन् मेल दॆन्ऱार् 665

अ वऴि–तब; चिलतर्–भृत्यों ने; अञ्चि–डरकर; आतियाय्–नायक; अरुळ् इल्लारै–आपने जिसको लाने की आज्ञा देने की कृपा नहीं की; इ वऴि–(उसको) इधर; तरुतुम् ऍन्पतु–लायेंगे, ऐसा करना; इयम्पल् आम् इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱु–कहने योग्य बात नहीं है; चॆम् वऴि कतिरोन्–अपने मार्ग पर सीधे चलनेवाला सूर्य; ऍन्ऱुम्–सदा; तेर् मेल् अन्ऱि–रथ पर आना छोड़कर; वारान्–नहीं आयगा; तिङ्कळ्–चन्द्र; ऍ वऴितु ऍनितुम्–किसी भी मार्ग पर क्यों न हो; विमानत्तिन् मेलतु–यान पर ही चलेगा; ऍन्ऱार्–(उत्तर में) कहा। ६६५

तब भृत्यों ने भयभीत होकर विनय की। हे नाथ! आपने जिसको लाने की आज्ञा कृपापूर्वक नहीं की, उसको हम लायेंगे, यह बात कथनीय नहीं है। सीधे मार्ग पर जानेवाला सूर्य कभी भी रथ पर आना छोड़कर किसी दूसरी तरह से नहीं आयगा। और चन्द्र, जहाँ भी जाये, यान पर ही जायगा। ६६५

पणन्दा ळल्हुर् पनिमॊळियार्क् कन्बु पट्टार् पडुङ्गामक्
कुणन्दान् मुन्न मऱियादान् कॊदिया निन्ऱान् मदियाले
तणन्दा मरैयिन् ऱनिप्पहैज नॆन्नुन् दन्मै यॊरुदाने
उणर्न्दा नुणर्वुऱ् ऱुवन्मेलिट् टुय्त्त नुन्बम् मुरैशॆय्वान् 666

पणम् ताळ् अल्कुल्–सर्पफन को उपमा में नीचे दिखानेवाला वरांग; पनि मॊळियार्क्कु–शीतल बोली, इनसे युक्त स्त्रियों के प्रति; अन्पु पट्टार्–काम के वश में जो हुए; पटुम्–उसको सतानेवाला; काम कुणन्तान्—कामरोग की स्थिति को; मुन्नम् अऱियातान्–जो पहले नहीं जानता था, वह रावण; मतियाल्–उस चन्द्र से; कॊतिया निन्ऱान्–तप्त रहा; तण् अम् तामरैयिन्–शीतल सुन्दर कमल का; तनि पकैजन्–विशेष शत्रु वह; ऍन्नुम् तन्मै–यह रीति; ऒरु ताने उणर्न्तान्–एक तरह से स्वयं जानकर; उणर्वु उऱ्ऱु–होश में आकर; उयिर् तन्तु उय्क्क–प्राण (स्वस्थता) पाकर बचने के लिए; अवन् मेलिट्टु–उस चन्द्र के प्रति; उरै चॆय्वान्–बोलने लगा। ६६६

रावण को कभी सर्प-फन के समान वरांग और शीतल, मधुर वाणी की स्त्रियों के प्रेम में फँसे हुए लोगों के काम-ताप की वेदना का प्रकार नहीं मालूम था। अब वह इस चन्द्र के कारण वेदना से तड़पने लगा। तब उसे स्मरण आया कि यह शीतल, सुन्दर कमल का अनोखा शत्रु है। तब उसे सुध आयी कि मैं इससे प्राण पाकर बचने के लिए कुछ कहूँ—यह सोचकर वह चन्द्र के प्रति कहने लगा। ६६६

तेया निन्ऱाय् मॆय्वॆळुत्ता युळ्ळङ् गरुत्ताय् निलै तिरिन्दु
काया निन्ऱा यॊरुनोयुङ् कण्डार् शॊल्लक् केट्टायो

पाया नित्र् मलर्वाळि पर्रिया नित्र्रा रिल्लैयाल्
ओया नित्रे नुयिर्हात्तर् कुरिया रारे युडुबदिये 667

उट्पतिये–उडुपति; तेया नित्राय्–क्षीण होता जाता है; मॅय् वॅळुत्ताय्–शरीर पाण्डुर है; उळ्ळम् करुत्ताय्–दिल काला है; निलै तिरिन्तु काया नित्राय्–गुण बदलकर सूख गया; ऑरु नीयुम्–अनोखी स्थिति में रहनेवाला तू भी; कण्टार् चॉल्ल–किसी के एक स्त्री को देखकर तेरे पास बताने से; केट्टायो–तूने सुन (कर प्रेम करने लग) गया क्या; पाया नित्र्–सवेग आनेवाले; मलर् वाळि–सुमन-शर; पर्रिया नित्रार्–निकालनेवाले; इल्लैयाल्–नहीं हैं, इसलिए; ओया नित्रेन्–थका हूँ; उयिर् कात्तर्कु–मेरे प्राण बचाने का; उरियार् यारे–जिम्मा लेनेवाले कौन हैं। ६६७

रावण ने कहा— उडुपति ! तू दिन ब दिन क्षीण होता जाता है। तेरा शरीर पाण्डुर है। दिल काला है। तेरी स्थिति बदल गयी है और तू झुलस गया है। इस विचित्र दशा में रहनेवाले तूने भी क्या किसी के द्वारा उसकी देखी हुई स्त्री के सम्बन्ध में सुनकर प्रेम किया है ? वेग से आकर मेरे ऊपर लगकर जो मन्मथ-शर मुझे सता रहे हैं उनको निकालकर मुझे बचानेवाला कोई नहीं रहा। इसलिए मैं निर्बल होकर थका हुआ हूँ। मेरी जान वचानेवाले कौन हैं ? । ६६७

आर्र्रा राहिर् र्रम्मैक्कोण् डडङ्गा रोवॅन् नारुयिर्क्कुक्
कूर्राय् नित्र् कुलच्चनहि कुवळै मलर्न्द तामरैक्कुत्
तोर्रा यदना लहङ्गरिन्दाय् मॅलिन्दाय् वॅदुम्बत् तॊडङ्गित्ताय्
मार्रार् शॅल्वङ् गण्डळिन्दाल् वॅर्रि याह वर्रामो 668

ॲन् आर् उयिर्क्कु–मेरे प्रिय प्राणों का; कूर्राय् नित्र्–यम जो बनी खड़ी है; कुल चत्तकि–उच्चकुल-जात जानकी के; कुवळै मलर्न्त–विकसित नीलोत्पलों (आँखों) सहित; तामरैकु–कमल (मुख) के सामने; तोर्राय्–तू हार गया; अतताल्–उस कारण; अकम् करित्ताय्–दिल का (क्रोध से) काला हो गया; मॅलिन्ताय्–पतला हो गया; वॅतुम्प तॊटङ्कित्ताय्–झुलसने लगा; मार्रार् चॅल्वम् कण्टु अळिन्ताल्–अन्य मनुष्य का धन देखकर जलेगा तो; वॅर्रि आक–विजयी बनने का; वरु आमो–बल मिलेगा क्या। ६६८

हे चाँद ! तू उस कुलीन जानकी के कमल-सम मुख के सामने हार गया, जो मेरे प्यारे प्राणों का यम बनी है। उस जानकी के कमल-सम मुख में दो नीलोत्पल-सम आँखें हैं। हार जाने की वजह से तेरा दिल झुलस गया है। तू क्षीण होकर जल रहा है। प्रतिद्वन्द्वी का धन देखकर ईर्ष्या के कारण छीजने से विजय पाने की शक्ति मिल जायगी क्या ? । ६६८

ॲन्नप् पन्नि यिडरुळ्वा विरवो डिवनैक् कॊण्डहर्रि
नृनॅप् पहलुम् पहलोनुम् वरुह वॅन्रान् मौळियामुन्

उन्नरुकरिय वुडुबदियु मिरवु मौळित्त वौरुनौडियिल्
पन्नरु करिय पहलवनुम् पहलुम् वन्दु परन्दवाल् 669

ऐन्त पन्त्ति–ऐसा विलाप करके; इटर् उऴवा–दुःख से पीड़ित होकर; इरवोट् इवनै–रात के साथ इसको; कौण्टु अकट्रि–पकड़कर दूर करो; मुन्नै पकलुम्–पहले रहा दिन और; पकलोनुम्–दिनकर को; वरुक–आने दो; ऐन्रान्–कहा; मौऴियामुन्–उसके कहने के पूर्व ही; उन्नरुकु अरिय–अचिन्त्य यशस्वी; उडुपतियुम्–उडुपति और; इरवुम्–रात्रि; ओरु नौटियिल्–एक चुटकी भर में; ऑळितुत–छिप गये; पन्नरुकु अरिय–अवर्ण्य यशस्वी; पकलवनुम्–दिनकर और; पकलुम्–दिन; वन्तु परन्त–आकर व्याप गया। ६६९

इस तरह विविध प्रकार से रावण विलापते हुए दुखता रहा। फिर उसने कहा— रात के साथ चाँद को भी हटा देकर पहले की तरह दिन और दिनकर को आने दो। उसके कहते ही अचिन्त्य यशस्वी उडुपति रात के साथ चुटकियों में छिप गया। अवर्णनीय यशस्वी दिन और दिनकर आ गये। ६६९

इरुक्किन् मौऴिया लॅरिमुहत्ति नीन्द नॅय्यि नॅरिशॅम्बोन्
उरुक्कि यनैय कदिर्बाय वनल्बोल् विरिन्द वुयर्हमलम्
अरुक्क नॅय्द वमैन्दडङ्गि वाऴा दडाद पौरुळॅय्दिच्
चॅरुक्कि यिडैये तिरुविऴन्द शिट्रियोर् पोन्र चेदाम्बल् 670

अरुक्कन्–सूर्य; ऍरि मुरवत्तिन्–अग्नि में; इरुक्किन् मौऴियाल्–वेदमन्त्रों के साथ; ईन्त–डाले गये; नॅय्यिन्–घी के समान; ऍय्त–आ गया तब; कतिर्–उसकी किरणें; ऍरि–भट्ठी में; चॅम्पोन् उरुक्कि अनैय–लाल स्वर्ण के गले हुए द्रव के समान; पाय–भूमि पर आ फैलीं; उयर् कमलम्–उत्कृष्ट कमल; अनल् पोल् विरिन्त–अग्निज्वालाओं के समान खिले; चेताम्पल्–लाल कुमुद; चिट्रियोर्–नीच लोग; अटात पौरुळ् ऍय्ति–अनुचित रीति से धन प्राप्त करके; अमैन्तु अटङ्कि वाऴातु–शम-दम के साथ जीवन न बिताकर; चॅरुक्कि–गर्व करते हुए (जब रहते हैं) तब; इटैये–बीच में ही; इऴन्त–खो गये हों, ऐसा; तिरु–विकास; इऴन्त–खो गये (बन्द हो गये)। ६७०

सूर्य क्या आया? होमाग्नि में वेदमन्त्र के साथ पड़नेवाले घी के समान रहा वह। उसकी किरणें भट्ठी में पिघलाये हुए चोखे स्वर्ण के द्रव के समान भूमि पर फैलीं। तब श्रेष्ठ कमल अग्निज्वाला के समान विकसित हुए। लाल कुमुद उन छुद्र मनुष्यों के समान श्रीहीन हुए, जो अधार्मिक रास्तों से धन प्राप्त कर शम और दम के साथ नहीं रहते, पर गर्वीले रहते हैं और जिनकी सम्पत्ति बीच में ही लुप्त हो जाती है। ६७०

नाणि नित्र वौळिमऴुङ्गि नडुङ्गा नित्र वुडम्बितनायच्
चेणि नित्रुम् बुरज्जायन्दु कङ्गुरु ट्रारम् बिन्शॅल्लप्

पूणित् वॆय्यो नीरुदिशैये पुहुदप् पोवान् पुहऴ्वेन्दर्
आणै शॆल्ल निलैयिऴन्द वरशन् बोन्ऱा नल्लाण्डान् 671

पूणित् वॆय्योन्–संसार का आभरण-स्वरूप सूर्य; ओरु तिचैये पुकुत–उत्तम एक (पूर्व) दिशा में उदय हुआ; अल् आण्टान्–रात का नायक; नाणि–लजाकर; नित्ऱ ऒळि–अपने पास रही ज्योति के; मऴुङ्कि–मन्द पड़ते; नटुङ्का निन्ऱ उटम्पितन् आय्–काँपते शरीर का बनकर; चेणित् नित्ऱु–आकाशमध्य से; पुरम् चाय्न्तु–एक ओर उतरकर; कङ्कुल् तारम् पिन् चॆल्ल–रात रूपी पत्नी के पीछा करते; पोवान्–जो गया वह; पुकऴ् वेन्तर्–विख्यात राजा के; आणै चॆल्ल–शासन में; निलै इऴन्त–अपनी स्थिति से च्युत; अरचन् पोन्ऱान्–छोटे राजा के समान लगा। ६७१

संसार का आभरणरूप सूर्य उत्तम पूर्व दिशा में उदय हुआ तो रात का शासक चाँद उसको देखकर शरमाया, मन्दप्रभ हुआ और आकाश-मध्य से काँपते हुए उतरकर हट गया। उसके पीछे रात रूपी उसकी पत्नी भी चली। बड़े राजा के शासन में छोटे राजा की स्थिति जैसे बिगड़ जाती है, वैसे चन्द्र का शासन भी बिगड़ गया। ६७१

मणन्दपे रन्बरै मलरिन् शेक्कैयुळ्
पुणर्न्दिल रिडैयोरु वॆहुळि पॊङ्गलाल्
कणङ्गुऴै महळिर्हळ् कङ्गुल् वीय्न्ददॆन्
रुणर्न्दिलर् कनविनु मूड ऱीर्न्दिलार् 672

कनम् कुऴै मकळिर्कळ्–भारी कुण्डलधारिणी स्त्रियों ने; मलरिन् चेक्कै उळ्–पुष्पशय्या पर; मणन्त पेर् अन्परै–मिले रहे पतियों के साथ; इटै ओरु वॆकुळि पॊङ्कल् आल्–बीच में रोष के होने से; पुणर्न्तिलर्–सम्भोग नहीं किया था; कङ्कुल् वीय्न्ततु–रात चली गई; ऎन्ऱु उणर्न्तिलर्–यह नहीं समझीं; कनविलुम्–तब के स्वप्न में भी; ऊटल् तीर्न्तिलार्–रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

(अकाल में अकस्मात अर्क के आगमन से क्या-क्या हुआ, उसका रसीला वर्णन है।) कुछ राक्षस-स्त्रियाँ, जिनके कर्णों को भारी कुण्डल अलंकृत कर रहे थे, अपने पतियों के साथ पुष्पशय्या पर लेटी हुई थीं। अकस्मात उनके मन में रूठन हो गयी और रोष उभर आया था। अतः क्रीड़ा रुक गयी थी। अब उन्हें ज्ञात नहीं था कि सवेरा हो आया है। इसलिए वे स्वप्न में भी मान कर रही थीं। रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

अणैमलर्च् चेक्कैयु ळाड ऱीर्न्दनर्
पणैहळैत् तऴुविय पवऴ वल्लिबोल्
इणैमलर्क् कैहळि निऱुह विन्नुयिर्त्
तुणैवरैत् तऴुविनर् तुयिल्हिन् ऱार्शिलर् 673

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; अणै मलर् चेक्कै उळ्–गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में;

आटल् तीर्न्ततर्–रतिक्रीड़ा समाप्त करके; पणैकळै तळुविय–मोटी डालों से लिपटी; पवळ वल्लि पोल्–प्रवालवल्लरी के समान; इणै मलर् कैकळिन्–जोड़े के सुमन-हस्तों से; इन् उयिर् तुणैवरै–प्राणप्यारे पतियों का; तळुवित्–आलिंगन करती हुई; तुयिल्किन्ड्रार्–सोती हैं। ६७३

और कुछ राक्षस-स्त्रियों ने रतिक्रीड़ाएँ पूरा कर ली थीं। गद्दे के समान वनी पुष्पशय्या में वे अपने प्यारे पति का आलिंगन करती हुई, स्थूल वृक्ष से लिपटी प्रवालवल्लरी के समान सो रही थीं। ६७३

तळ्ळुरु मुयिरिनर् तळैवर् नीङ्गलाल्
नळ्ळिर विडैयुरु नडुक्क नीङ्गलर्
कॊळ्ळैयि नलर्दरुङ् गुवळै नाण्मलर्क्
कळ्ळुहु वन्नवॆन् कलुळुङ् गण्णिनार् 674

तलैवर् नीङ्कलाल्–पतियों के चले जाने से; तळ् उरुम् उयिरिनर्–चलित-प्राण होकर; नळ् इरवु इटै–अर्धरात्रि के समय; उरु–जो हुआ; नटुक्कम् नीङ्कलर्–उस भय के कम्पन से मुक्त न होकर; अलर् तरु–विकसित; कुवळै नाण् मलर्–कुवलय के नवीन पुष्पों से; कळ् कॊळ्ळैयिन् उकुवन–मधु अधिक परिमाण में ढलकता है; अन्न–जैसे; कलुळुम् कण्णिनार्–जल बहानेवाली आँखों की बनीं। ६७४

कुछ स्त्रियों के प्रेमी पति उनको छोड़कर गये हुए थे। रात आधी बीत गयी। उनके प्राण डगमगाये। (उनका मन डोलायमान था।) उनके शरीर काँप रहे थे। उनकी आँखों से, नवीन कुवलयफूलों से शहद झरता हो, ऐसा अश्रु बहने लगे। ६७४

अळियिनन् दडन्दॊरु मार्प्प वाय्हदिर्
ऒळिबड वुणर्हिल वुरङ्गु हिन्ड्रन
तॆळिविल विन्दुयिल् विळैक्कुञ् जेक्कैयुळ्
कळिहळै निहर्त्तन कळिहॊळ् ळन्नमे 675

आय् कतिर् ऒळि पट–श्रेष्ठ सूर्यकिरण के लगते ही; अळि इनम्–भ्रमरकुल; तटम् तॊरुम् आर्प्प–सब स्थानों में गुंजारने लगे; कळि कॊळ् अन्नम्–मुदित हंस; कळिकळै निकर्त्तन–पियक्कड़ों के समान; इन् तुयिल् विळैक्कुम्–मधुर निद्रादायक; चेक्कै उळ्–(कमल की) शय्या में; तॆळिवु इल उणर्किल–बिना सुध-बुध के; उरङ्कुकिन्ड्रन–सोते हैं। ६७५

रावण की आज्ञा से अप्रत्याशित रीति से सूर्य का उदय हो गया। अलिकुल यत्र-तत्र गुंजार कर रहे थे। मुदित हंसवृन्द पियक्कडों के समान मधुर निद्रादायी कमल-शय्याओं पर सुध-बुध के विना सो रहे थे। ६७५

विरिन्दुढ़ै तुढ़ैतॊरुम् विळक्कम् यावैयुम्
ऎरिन्दिळु दः(ह्)कल वॊळियि ळन्दवाल्

अरुन्दुरै निरम्बिय वुयिरि नन्बरैप्
पिरिन्दुरै तरुङ्गुलप् पेदै मारिले 676

अरुम् तुरै निरम्पिय–मनोरम शृंगार-प्रकार जाननेवाले; उयिरिन् अन्नपरै–प्राण-प्यारे पतियों से; पिरिन्तु उरैतरुम्–अलग होकर रहनेवाली; कुल पेतै मारित्ते–कुलीन स्त्रियों की तरह: विरिन्तु उरै–विशाल नगर के; तुरै तोरुम्–प्रासादों में; विळक्कम् यावैयुम्–सभी दीपक; इऴुतु ऍरिन्तु–घी जलकर; अ॰(ह्)कल–कम नहीं हुआ तो भी; ऑळि इळन्त–मन्दप्रभ हुए। ६७६

कुछ स्त्रियों के रतिकलाविदग्ध प्रेमी पति उनको छोड़कर दूर चले गये थे और ये वियोगिनी नायिकाएँ घर पर रहीं। उन्हीं के समान बड़े-बड़े सौधों में रहे दीप भी मन्दप्रभ हो गये, यद्यपि उनमें घी अभी बाकी था (जलकर समाप्त न हुआ था)। ६७६

पुत्तैन्दिद ऴुरिञ्जुरुम् बॊऴुदु पुल्लियुम्
वत्तैन्दिल वैहरै मलरु मामलर्
नत्तन्दलै यमळियिर् रुयिलु नङ्गैमार्
अतन्दलि नॆडुङ्गणो डॊत्त वामरो 677

इतऴ् पुत्तैन्तु उरिञ्चुरुम्–दलों को सुन्दर रीति से विकसित करनेवाला; पॊऴुतु पुल्लियुम्–समय (सूर्योदय का) आया, तो भी (अप्रत्याशित रीति से हो जाने के कारण); वैकरै मलरुम् मा मलर्–सवेरे फूलनेवाले उत्तम फूल; वनैन्तिल–मनोरम (विकसित) नहीं हुए; नतम् तलै–विशाल; अमळियिल् तुयिलुम्–शय्या पर सोनेवाली; नङ्कैमार्–स्त्रियों की; अनन्तलिन्–निद्रा में रहनेवाली; नॆटुम् कणोटु ऑत्त आम्–दीर्घ आँखों के समान (मुकुलित रहे)। ६७७

दलों का स्पर्श कर उन्हें विकसित करनेवाली उदय-वेला आ गयी। तो भी सवेरे जिन श्रेष्ठ फूलों को विकसना था, वे मनोरम प्रकार से नहीं विकसे। विशाल शय्या में सोनेवाली स्त्रियों की निद्रामग्न आँखों के समान बन्द ही रहे। ६७७

इच्चैयिर् रुयिल्बवर् यावर् कण्गळुम्
निच्चयम् पहलुन्द मिमैह णीङ्गिल
पिच्चैयु मिडुदुमॆन् रुणर्दल् पेणला
वच्चैयर् नॆडुमनै वायित् मानवे 678

पिच्चैयुम् इटुतुम् ऍन्रु–भिक्षा देंगे, यह; उणर्तल् पेणला–भाव न रखनेवाले; वच्चैयर्–कृपणों के; नॆटु मनै वायिल् मान–बड़े घर के द्वार के समान; इच्चैयिल्–अपनी इच्छा भर; तुयिल्पवर् यावर् कण्कळुम्–सोनेवाले सभी की आँखें; पकलुम्–दिन होने पर भी; तम् इमैकळ्–अपनी पलकें; निच्चयम् नीङ्किला–निश्चय खोलकर नहीं जागीं। ६७८

सुप्त लोगों की आँखें नहीं खुलीं। उदय होने के बाद भी निश्चित

रूप से नहीं खुलीं। उनकी पलकें उन लोभी कृपण लोगों के घरों के द्वारों के समान बन्द रहे, जो कभी याचकों को कुछ नहीं देते। ६७८

नञ्जुरु पिरिवित्त नळ्ळि नीळमोर्न्
दञ्जुर नडुवणो रयर्वु ताङ्गिय
वॅञ्जिरै नीङ्गिय वित्तैयि त्तोरॅन्न
नॅञ्जुरक् कळित्तन नेमिप् पुळ्ळॅलाम् 679

नेमि पुळ् ऍलाम्–चक्रवाक पक्षी सब; नळ्ळित्–रात में; नञ्चु उरु पिरिवित्त–विष-सम वियोग में रहे; नीळम् ओर्न्तु–रात की लम्बाई का विचार करके; अञ्चुर–भय के साथ; ओर् अयर्वु ताङ्किय–क्लेशयुक्त रहे; नडुवण्–उस दुःख के समय के बीच; वॅम् चिरै नीङ्किय–कठोर कारा से विमुक्त; वित्तैयित्तोर् ऍन्त–सुकृतों के समान; नॅञ्चु उर कळित्तत–मन से मुदित हुए। ६७९

चक्रवाक पक्षियों को जब मालूम हुआ कि उदय-समय आ गया, तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे रात की लम्बाई का विचार करके भय के साथ निद्रा में लगी थीं। अब उसके बीच में ही उदय हो गया। कारामुक्त सुकृत्य वाले लोगों के समान वे बहुत आनन्दित हुए। ६७९

नाण्मदिक् कल्लदु नडुव णॅय्दिय
आणैयिऱ् ड्रिरक्कला वलरिऱ् पाय्वत्त
माण्वित्तैप् पयत्तरु वच्चै वायिल्शेर्
पाणरिऱ् ऱळर्न्दत्त पाडर् ऱुम्बिये 680

पाटल् तुम्पि–सुरीले गानेवाले भ्रमर; नाळ् मतिक्कु अल्लतु–नवोदित चन्द्र के सिवा; आणैयिल्–रावण की आज्ञा से; नटुवण् ऍय्तिय–(अकाल में) बीच में आये दिन में; तिरक्कला अलरिल्–जो नहीं विकसते, उन (कुवलय आदि) पुष्पों में; पाय्वत्त–सवेग आते हैं; माण् वित्तै पयत् अरु–महान सुकृत्यों से वंचित; वच्चै–कृपणों के; वायिल् चेर्–द्वार पर आये; पाणरिल्–याचकों के समान; तळर्न्तत्त–हतोत्साह हुए। ६८०

सुरीला गान गानेवाले भ्रमर बहुत शीघ्र उड़ते हुए कुवलय आदि पुष्पों के पास आये। वे तो नवोदित चन्द्र के सामने ही खिलने के आदी थे। अब तो रावणाज्ञा से सूर्य आ गया है। इसलिए वे बन्द रहे। भ्रमरों की स्थिति उन गवैये याचकों के समान हो गयी, जो कृपणों के द्वार पर जाते हैं और उसको बन्द पाते हैं। ६८०

अरुमणिच् चाळर मदत्ति नूडुबुक्
कॅरिहदि रित्तुरुयि लॅळुप्प वॅय्दवुम्
मरुळोडु तॅरुळुरु निलैयर् मङ्गैयर्
तॅरुळुर मॅय्प्पॉरु डॅरित्तदि लारित्ते 681

अरु मणि चाळरम् अतनिन् ऊटु–श्रेष्ठ रत्नमय गवाक्षों द्वारा; पुक्कु–प्रवेश करके; ॲरि कतिर्–सूर्य की किरणें; इन् तुयिल् ॲळुप्प–मधुर नींद से जगाने के लिए; ॲय्तवुम्–आ गईं, आने पर; मङ्कैयर्—राक्षस-स्त्रियाँ; तॅरुळ् उर मॅय् पॊरुळ् तॅळिन्तिलारिन्–पूर्णरूप से साफ़ ज्ञान न रखनेवाले के समान; मरुळ् ओटु तॅरुळ् उरु–भ्रम और बोध (तन्द्रा और जागरण) की मिश्रित; निलैयर्–दशा में रहीं। ६८१

सूर्य की किरणें उत्तम और बहुमूल्य रत्नजड़ित गवाक्षों द्वारा अन्दर घुसकर स्त्रियों को मधुर निद्रा से जगाने लगीं। तब वे न तो पूर्णरूपेण जाग पायीं, न निद्रा में ही रहीं। उनकी निद्रा-स्थिति उन लोगों के ज्ञान की स्थिति के समान थी, जो अपूर्ण रूप से विवृद्ध है। यानी संदिग्ध अवस्था में रही। ६८१

एवलिन् वन्मैयै यॅण्ण तेऱ्ऱलर्
नावलर् नविऱ्ऱिय नाळि नामनूल्
कावलि तुन्नित्तुणर् कणिद माक्कळुम्
कूवुरु कोळियुन् दुयिल्वु कॊण्डवे 682

एवलिन् वन्मैयै–आज्ञा के प्रताप को (रात में दिन होने की स्थिति को); ॲण्णल् तेऱ्ऱलर्–जान नहीं सके; नावलर् नविऱ्ऱिय–विद्वानों के रचित; नाळि नाम नूल्–समय के श्रेष्ठ शास्त्र के अनुसार; कावलिन् तुन्नित्तु उणर्–रात में सचेत रहकर काल की गणना करनेवाले; कणित माक्कळुम्–ज्योतिषी लोग और; कूवु उरु कोळियुम्–बाँग देनेवाले मुर्गे; तुयिल्वु कॊण्ट–निद्रामग्न हो रहे। ६८२

विद्वान ज्योतिषियों से रचे शास्त्र के निष्णात काल-गणितज्ञ, जो रात के काल की गणना करते रहे, सो गये। पहरों को बताने के लिए टेर लगानेवाले मुर्गे भी सोये रहे, क्योंकि उन्हें रावण की आज्ञा और उसके प्रताप से हुआ नतीजा मालूम नहीं था। यानी सूर्योदय हो गया सो बात उन्हें विदित नहीं थी। ६८२

इन्नैयन वुलहिनि निहळ्ळु मॅल्वैयिल्
कन्नैहळ् लरक्कनुङ् गण्णि नोक्किनान्
निन्नैवुरु मनत्तैयु नॅरुप्पिर् ऱीयक्कुमाल्
अन्नैयवत् तिङ्गळे याहुमा लॅन्ऱान् 683

इन्नैयन–ऐसी बातें; उलकिन् निकळुम् ॲल्वैयिन्–जब संसार में हो रही थीं, तब; कन्नै कळल् अरक्कनुम्–क्वणनशील पायलधारी राक्षस (रावण) ने भी; कण्णिन् नोक्किनान्–आँखों से (सूर्य को) देखकर; निन्नैवु उरु मनत्तैयुम्–स्मरणशील मन को भी; नॅरुप्पिल् तीयक्कुम् आल्–आग से जला देगा; (आतलिन्–इसलिए;) अन्नैय तिङ्कळे आकुम्–वही चन्द्र यह है; ॲन्ऱान्–(अपनी धारणा) कही। ६८३

जब ये बातें हो रही थीं, तो क्वणनशील पायल-चरण रावण ने सूर्य

को अपनी आँखों से देखा। कहा कि इसके बारे में सोचनेवाले मन को भी यह जला डालेगा। इसलिए यह वही चन्द्र है (जिसको हटाने की आज्ञा मैंने दी थी)। ६८३

तिङ्गळो वन्ऱिदु शॅल्वच् चॅङ्गदिर्
पॊङ्गुळैप् पच्चैमाप् पुरवित् तेरदाल्
वॅङ्गदिर् शुडुवदे यन्ऱि मॅय्युऱत्
तङ्गुदण् कदिर्शुडत् तहादॆन् ऱार्शिलर् 684

चिलर्–कुछ (भृत्यों) ने; इतु तिङ्कळो अन्ऱु–यह चन्द्र ही नहीं है; चॅल्व चॅम् कतिर्–श्रेष्ठ लाल किरणमाली; पॊङ्कु उळै–उभरे, बड़े अयाल वाले; पच्चै मा पुरवि–हरे बड़े अश्वों का; तेरतु आल्–रथ का है, इसलिए; वॅम् कतिर्–तापक किरणों का; मॅय्–शरीरी; उऱ चुटुवते अन्ऱि–खूब जलायगा, उसके सिवा; तण् तङ्कु कतिर्–शीत-भरी किरणों का चन्द्र; चुट तकातु–जला नहीं सकेगा; ऍन्ऱार्–कहा। ६८४

वहाँ जो रहे, उन किंकरों ने उत्तर में निवेदन किया कि नहीं! यह चन्द्र ही नहीं है। विश्वास मानिए। यह उत्तम और लाल किरणमाली है। उसके रथ में बड़े और हरे अश्व जुते हैं। इसी की किरणें गरम होती हैं और वे ही ताप देती हैं। चन्द्र शीतल-किरण है और वह नहीं जलाता। ६८४

नीलच् चिहरक् किरियन्नव निन्ऱ वॅय्योन्
आलत् तिनुम्वॅय्य नहऱ्ऱि यरऱ्ऱु हिन्ऱ
वेलैक् कुरलैत् तविर्हॆन्ऱु विलक्कि मेलै
मालैप् पिऱैप्पिळ्ळैयैक् कूवुदिर् वल्लै यॆन्ऱान् 685

चिकर नील किरि अन्नवन्–शिखरों-सहित नीले पर्वत के समान रावण; निन्ऱ वॅय्योन्–सामने स्थित यह सूर्य; आलत्तिनुम् वॅय्यन्–हलाहल से भी तापक है; अकऱ्ऱि–इसे दूर करके; अरऱ्ऱुकिन्ऱ–रोनेवाले; वेलै कुरलै–समुद्र के गले को; तविर्क ऍन्ऱु–चुप रहो, कहकर; विलक्कि–रोककर; मेलै–पश्चिम दिशा में उदित; मालै पिऱै पिळ्ळैयै–शाम के बालचन्द्र को; वल्लै–शीघ्र; कूवुतिर्–पुकारो; ऍन्ऱान्–आज्ञा दिलाई। ६८५

तब शिखरों सहित पर्वत-सम रावण ने आज्ञा सुनायी कि सामने जो है, वह सूर्य हलाहल से भी संतापी लगता है। उसको हटाओ। साथ-साथ उस समुद्र को भी चुप कराओ जो विलाप रहा है! फिर पश्चिम दिशा में जो उदित होता है, उस बाल-कला-चन्द्र को पुकारो। ६८५

शॊन्ना तिरुवर्क्किरै यम्मौळि शॊल्ल लोडुम्
अन्नाळि निरम्बिय वम्मदि याण्डॊर् वेलै

मुन्नाळि निळम्बिरै याहि मुळैत्त दॆन्ऱाल्
अॆन्नाळु मरुन्दव मन्ऱि यियऱ्ऱ लामो 686

निरुतर्क्कु इऱै–राक्षसों के राजा ने; चॊन्नान्–वैसा कहा; अ मॊऴि चॊल्लल् ओटुम्–वह वचन कहते ही; अ नाळिन् निरम्पिय–वह (पन्द्रह) दिनों का; अ मति–पूर्णचन्द्र; आण्टु–तब; ओर् वेलै–उसी समय; मु नाळ् इळम् पिऱै आकि–तीन दिनों का कलाचन्द्र बनकर; मुळैत्ततु–उदय हुआ; अॆन्ऱाल्–तो; अरुम् तवम् अन्ऱि–बिना कठिन तपस्या के; अॆ नाळुम्–किसी भी दिन; इयऱ्ऱल् आमो–ऐसा किया जा सकता है क्या। ६८६

राक्षसाधिपति ने यह आज्ञा सुनायी। सुनाते ही वह पूर्णचन्द्र तिरोहित हो गया। वहाँ तीन दिन का बालचन्द्र उदित हुआ। तो (कवि तपस्या की शक्ति की महिमा में कहते हैं कि) तपस्या की महिमा कितनी बड़ी है? उसके सिवा कौन सी चीज़ है जो ऐसा कर सकती है? (यह अर्थ भी लग सकता है कि तपस्या को छोड़ कौन कार्य है जो करने योग्य है?)। ६८६

कुडपालिन् मुळैत्तदु कण्ड कुणङ्ग डीयोन्
वडवावन लन्ऱॆनिन् मण्बिडर् वैत्त पाम्बिन्
विडवा ळॆयिऱन्ऱॆनि लॆन्नै वॆहुण्डु मालै
अडवा ळुरुविक्कॊडु तोन्ऱिय दाहु मन्ऱे 687

कुटपालिन्–पश्चिमी दिशा में; मुळैत्ततु–उदय हुआ; कण्ट–देख; कुणङ्कळ् तीयोन्–दुर्गुणी; वटवा अनल्–वड़वाग्नि है; अन्ऱु अॆनिल्–नहीं तो; मण् पिटर् वैत्त–भूमि को गले पर ढोनेवाले; पाम्पिन्–शेषनाग का; विट वाळ् अॆयिऱु–विषैला प्रकाशमय दाँत है; अन्ऱु अॆनिल्–वह भी नहीं तो; अॆन्नै वॆकुण्टु–मेरे विरुद्ध गुस्सा करके; मालै–संध्याकाल में; अट–मारने के लिए; वाळ् उरुवि कॊण्टु–तलवार खींच लेकर; तोन्ऱियतु आकुम्–प्रकट हुआ होगा। ६८७

दुर्गुणी रावण ने पश्चिमी दिशा में उदित कला-चन्द्र को देखा। उसने कहा कि रे, यह तो वड़वाग्नि है! अगर नहीं तो भूभारवाही शेषनाग का उज्ज्वल विषैला दाँत होगा! वह भी नहीं है तो संध्याकाल मुझसे वैर करके मुझे मारने के लिए तलवार लिये हुए प्रकट हो आया होगा!। ६८७

तादुण् शडिलत्तलै वैत्तदु तण्ड रङ्गम्
मोदुङ् गडलिऱ् किडैमुन्दु पिऱन्द पोदे
ओदुङ् गडुवैत्तन् मिडऱ्ऱि लॊळित्त तक्कोन्
ईदुङ् गडुवामॆन वॆण्णिय वॆण्ण मन्ऱो 688

ओतुम्–सबसे चर्चित; कटुवै–विष को; तन् मिटऱ्ऱिल ऒळित्त–कण्ठ में जिन्होंने दबा रखा है; तक्कोन्–श्रेष्ठ शिवजी ने; तण् तरङ्कम् मोतुम्–शीतल तरंग-ताड़ित; कटलिऱ्कु इटै–(क्षीर-) सागर से; मुन्तु पिऱन्त पोते–पहले जब प्रकट

हुआ तभी; तातु उण्—मकरन्द-भरी; चटिल तलै—जटा से अलंकृत सिर पर; वैत्ततु—रख लिया तो; ईतुम्—यह (चाँद) भी; कट्टु आम्—विष है; ऍत ऍण्णिय—ऐसा सोचा हुआ; ऍण्णम् अन्ऱो—विचार था न। ६८८

हाँ! यह भयंकर विष ही होगा। क्योंकि विषकंठ शिवजी ने शीतल तरंगाकुल क्षीरसागर पर उस विष के पहले इस चाँद को लेकर अपनी परागयुक्त जटा से अलंकृत सिर पर धारण क्यों किया? यही समझकर न कि यह भयंकर विष है?। ६८८

उरुमोत्त	वलत्तुयिर्	नुङ्गिय	तिङ्ग	ळोडित्
तिरुमिच्	चिरुमॅन्	पिरैदीमै	कुऱैन्द	दिल्लै
करुमैक्	करैयॅञ्जलि	नञ्जु	कलन्द	पाम्बिन्
पॅरुमै	शिऱुमैक्कोरु	पॅऱ्ऱि	कुऱैन्द	दुण्डो 689

ऍञ्चल् इल् नञ्चु—अक्षय विष; कलन्त पाम्पिन्—(से) युक्त सर्पों में; पॅरुमै चिऱुमैक्कु—बड़ा क्या, छोटा क्या; ओरु पॅऱ्ऱि—(विष के) रखने में; कुऱैन्ततु उण्टो—कमी है क्या; उरुम् ऑत्त वलत्तु—वज्र-सम बल के साथ; उयिर् नुङ्किय—प्राण खानेवाला; तिङ्कळ्—पूर्णचन्द्र; ओटि—भागकर; तिरुमि—बदलकर; इ चिऱु मॅल् पिऱै—यह छोटा कोमल बालचन्द्र (जो आया); तीमै कुऱैन्ततु इल्लै—बुराई में कम नहीं है। ६८९

अक्षय विष-भरे साँपों में छोटा क्या बड़ा क्या? विष के सम्बन्ध को लेकर सोचा जाय तो कोई किसी से कम नहीं! वज्र-सम बल के साथ मेरी जान का ग्राहक जो रहा वह पूर्णचन्द्र चला, फिर इस कोमल बालचन्द्र के रूप में आया। यह उससे कम दुखदायी नहीं लगता। ६८९

कन्नक्	कतियुमिरु	डन्नैयुङ्	गाण्डु	मन्ऱे
मुन्नैक्	कदिरन्नऱि	दहऱ्ऱुदिर्	मोय्म्बु	शान्ऱ
ऍन्नैच्	चुडुमेलिनि	येऴुल	हत्तिल्	वाऴ्वोर्
पिन्नैच्	चिलरुय्वरॅन्	ऱङ्गोरु	पेच्चु	मुण्डो 690

मुन्नै कतिर् नन्ऱु—पहले आया सूर्य ही अच्छा; कन्न कतियुम्—पूर्णरूप से घना; इरुळ् तन्नैयुम्—अन्धकार भी; काण्टुम्—देख लूँगा; इतु अकऱ्ऱुतिर्—इसको हटा दो; मॉय्म्पु चान्ऱ—बलवान; ऍन्नै चुटुमेल्—मुझे जलायगा (यह चाँद) तो; इनि—आगे; एऴु उलकत्तिल् वाऴ्वोर्—सातों लोकों में रहनेवाले; पिन्नै चिलर्—फिर कुछ लोग; उय्वर् ऍन्ऱु—इससे बच पायेंगे, ऐसा; अङ्कु ओरु पेच्चुम् उण्टो—वहाँ वचन होगा क्या। ६९०

पहले जो सूर्य रहा वही अच्छा लगता है! पूर्णरूप से घना बना अन्धकार कैसा होगा? —यह भी देख लूँ। हटाओ इसको। बलशाली मुझे भी यह इस प्रकार जला सकता है, तो सातों लोकों के वासियों में किसी के जान से बचने की बात ही उठेगी!। ६९०

आण्डप् पिऱैनीङ्गलु मॅय्दिय वन्द कारम्
तीण्डऱ् करिदाय्प्पल तेय्प्पितुन् देय्क्क लाहा
वेण्डिऱ् करबत्तिरप् पत्तियि नीर्न्दु वीऴ्त्तुक्
काण्डऱ् करिदाय्प्पल कन्दु तिरट्ट लाहुम् 691

आण्टु–तब; अ पिऱै नीङ्कलुम्–वह बालचन्द्र हटा तो; ॲय्तिय अन्तकारम्–आया अन्धकार; तीण्टऱ्कु अरिताय्–अस्पृश्य; पल तेय्प्पितुम्–खूब बार-बार रगड़ने पर भी; तेय्क्कल् आका–रगड़कर मिटाना कठिन था; वेण्टिल्–चाहने पर; करपत्तिर पत्तियिल्–आरे से; ईर्न्तु–काटकर; वीऴ्त्तु–गिराकर; काण्टऱ्कु अरिताय्–अदर्शनीय; पल कन्तु–अनेक खम्भों के रूप में; तिरट्टल् आकुम्–सँवारा जा सकता है। ६९१

तब बालचन्द्र हट गया। अन्धकार आ गया। वह ऐसा था कि कोई उसे स्पर्श नहीं कर सकता, न उसे रगड़कर उसका अभाव किया जा सकता था। चाहने पर शायद उसे आरे से काटकर उसके अनेक गोल खम्भे बनाये जा सकते थे। ६९१

मुरुडीर्न् दुरुट्टऱ् कॅळिदॅन्बदॅन् मुऱ्ऱ मुऱ्ऱिप्
पॊरुडीर्न्द ञानच् चुडर्बुक्कु वळङ्ग लिन्ऱिक्
कुरुडीङ्गि दॅन्नक् कुऱिक्कॊण्डहण् णोट्टङ् गुन्ऱि
अरुडीर्न्द नॅञ्जिऱ् करिदॅन्बदव् वन्द कारम् 692

मुरुटु ईर्न्तु–गाँठें आदि काट फेंककर; उरुट्टऱ्कु–गोल (खम्भों के रूप में) बनाना; ॲळितु ॲन्पतु ॲन्–आसान है, यह कहना क्या (विशेषता रखता) है; मुऱ्ऱ मुऱ्ऱि–सम्पूर्ण रूप से पक्व; पॊरुळ् तीर्न्त–असंदिग्ध तत्त्वज्ञ; ञानम् चुटर् पुक्कु–ज्ञान की ज्योति प्रवेश करके; वळङ्कल् इन्ऱि–प्रकाशमान नहीं है (जिसमें); ईङ्कु इतु कुरुटु–यहाँ यह अन्धा है; ॲन्न कुऱि कॊण्ट–ऐसा कहा जानेवाला; कण्णोट्टम् कुन्ऱि–दाक्षिण्य से हीन; अरुळ् तीर्न्त–दया से रहित; नॅञ्चिल्–(जो है उस) मन के समान; अ अन्तकारम्–वह अन्धकार; करितु ॲन्पतु–काला कहा जा सकता था। ६९२

हाँ— गाँठें आदि हटाकर उसके खम्भे बनाये जा सकते हैं —यह कहना कौन सी विशेषता रखता है? वह अन्धकार उस अज्ञ-जन के मन से बढ़कर काला था, जिसमें तत्त्वदर्शी पक्व ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाया था, जो 'यह अन्धा है', इस कथन का पात्र हो गया था और जिसमें न दाक्षिण्यभाव था, न दयाभाव। ६९२

विळ्ळादु शॅऱिन्दिडै मेलुऱ वीङ्गि यॅङ्गुम्
नळ्ळा विरुळ्वन्दहन् ञालम् विळुङ्ग लोडुम्
ॲळ्ळा वुलहियावैयुम् यावरुम् वीव वॅन्ब
वुळ्ळा दुमिळ्न्दान् विडमुण्ड वीरुत्त नॅन्ऱान् 693

विळ्ळातु–अखण्डित; इटै चॅरिन्तु–ठस; मेल् उऱ वीङ्कि–ऊपर बढ़कर; अँङ्कुम् नळ्ळा–कहीं भी न लगनेवाला; इरुळ् वन्तु–अन्धकार आया; अकल् ञालम् विळुङ्कल् ओटुम्–और उसके विशाल संसार को निगलते ही; विटम् उणट ऑरुत्तन्–विषखादक शिव ने; अॅळ्ळा उलकु यावैयुम्–अनिंद्य सभी लोक; यावरुम्–और उनके वासी; वीयुम् अॅन्ऱपतु उळ्ळातु–मिट जायँगे, यह नहीं सोचकर; उमिऴ्न्तान्–उगल लिया है; अॅन्ऱान्–कहा। ६९३

अविच्छिन्न, घना और सर्वत्र व्याप्त विपुल अन्धकार, जो कहीं चिपका नहीं रहता, आकर विशाल विश्व को निगल गया। रावण ने टीका की कि शिवजी ने जो पहले विष को निगल लिया था अब उसे उगल दिया है, विना यह सोचे-विचारे कि इसके फैलने से सारे लोक और उन लोकों के वासी मिट जायँगे। ६९३

वेलैत् तलैवन् दौरुवन्वलि याल्वि ळुङ्गुम्
आलत्ति नडङ्गुव दन्ऱि दऱिन्दु णरन्दॆन्
ञालत्तॊडु विण्मुदल् यावैयु नावि नक्कुम्
कालक् कनल्हार् विडमुण्डु करुत्त दन्ऱे 694

ऑरुवन्–अद्वितीय शिव ने; वेलै तलै वन्तु–समुद्र पर आकर; वलियाल्–अपने बल से; विळुङ्कुम्–(जिसको) निगला; आलत्तिन्–उस हलाहल में; इतु अटङ्कुवतु अन्ऱु–यह समाविष्ट होनेवाला नहीं; अऱिन्तु उणर्न्तेन्–जान-समझ लिया है; ञालत्तु ओटु–भू के साथ; विण् मुतल् यावैयुम्–आकाश आदि सभी (भूतों) को; नाविन् नक्कुम्–अपनी जीभ से चाट लेनेवाला; काल कनल्–युगान्तकाल की आग; कार् विटम् उण्टु–काला विष खाकर; करुत्ततु–जो काली बनी, वह। ६९४

(फिर उसे लगा कि) यह विष उस हलाहल के समान खाया नहीं जा सकता, जिसको अद्वितीय परमेश्वर ने क्षीरसागर-तट पर आकर उस दिन ले निगल लिया। मैंने जान-बूझ लिया है। यह युगांत अग्नि है, जो भूलोकों के साथ आकाशलोकों को भी चाट ले सकती है और जो विष खाकर काली बन आयी है। ६९४

अम्बु मनलु नुऴैयाक्कन वन्द कारत्
तुम्बु मऴैहॊण्डय लॊप्परि दाय तुप्पिन्
कॊम्बर् कुरुम्बैक् कुलङ्गॊण्डदु तिङ्ग ळाङ्गि
वॆम्बुन् दमियेन्मुन् विळक्कॆनत् तोन्ऱु मन्ऱे 695

अयल् ऑप्पु–कोई दूसरी उपमा; अरितु आय–जिसके लिए कहना कठिन है; तुप्पित् कॊम्पर् अतु–एक प्रवालवल्लरी; अम्पुम् अनलुम् नुऴैया–बाण या अनल प्रविष्ट न हो सके; कन–उतना घना; अन्तकार तुम्पु मऴै कॊण्टु–अन्धकारमय मेघ ढोकर; कुरुम्पै कुलम् कॊण्टतु–दो नारियल के कच्चे फलों से युक्त; तिङ्कळ् ताङ्कि–

चन्द्र को धरकर; वॅम्पुम् तमियेऩ् मुऩ्–तप्त मेरे सामने; विळक्कु ॲऩ–दीप के समान; तोऩ्ऱुम्–दिखाई देता है; (अऩ्ऱु–ए)। ६९५

(रावण के सामने देवी का मिथ्या रूप प्रकट होता है।) यह क्या ? एक अनुपम प्रवाललता दिखाई देती है ! उसके सिर पर बाणों और अग्नि से भी अभेद्य और घना मेघ है और उसकी देह पर दो नारियल के कच्चे फल हैं। इनके साथ वह चन्द्र को भी धारण किये हुए अकेले दुःख-पीड़ित मेरे सामने दीप के समान प्रकट हुई है। ६९५

मरुळूडु वन्द मयक्कोमदि मऱ्ऱु मुण्डो
तॅरुळेमि दॅऩ्ऩो दिणिमैयिळैत् तालु मॊव्वा
इरुळ्डिरु कुण्डलङ् गॊण्डु मिरुण्ड नीलच्
चुरुळोडुम् वन्दोर् शुडर्मामदि तोऩ्ऱु मऩ्ऱे 696

मरुळ् ऊटु वन्त मयक्को–चित्त-भ्रम से आया मोह; मति मऱ्ऱुम् उण्टो–दूसरा (अनोखा) चन्द्र भी है क्या; इतु ॲऩ्ऩो–यह क्या ही है; तॅरुळॆम्–मेरी समझ में नहीं आता; तिणि मै इऴैत्तालुम्–अंजन को ठस भरने पर भी; ऒव्वा–वह इसकी तुलना नहीं कर सकता, ऐसा; इरुळ् ऊटु–अन्धकार-मध्य; इरु कुण्टलम् कॊण्ट–दो (कर्ण-) कुण्डलों से भूषित होकर; इरुण्ट नील चुरुळ् ओटुम्–अन्धकार-सम काले घुंघराले केश के साथ और; चुटर् मा मति तोऩ्ऱुम्–उज्ज्वल श्रेष्ठ चन्द्र दिखाई देता है। ६९६

क्या यह मेरा भ्रमजन्य मोह है ? या सचमुच ऐसा अनोखा चाँद भी तत्त्वतः है ? मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता। अंजन को ठस भरकर ऐसा बनाने की कोशिश करें तो भी नहीं बन सके, ऐसे अन्धकार के मध्य वह दिखाई देता है। उसके दो कर्णकुण्डल हैं और अन्धकार-सम काला घुँघराला केश है। इस सजधज के साथ एक पूर्णचन्द्र आकर दिखाई देता है। ६९६

पुडैहॊण्डॆऴु कॊङ्गैयु मलहुलुम् बुल्हि निऱ्कुम्
इडैहण्डिल मल्लदॅल् लावुरु वुऩ्दॆ रिऩ्दाम्
विडनुङ्गिय कण्णुडै यारिवर् मॆल्ल मॆल्ल
मडमङ्गैय रायॆऩ् मऩत्तव रायि ऩारे 697

पुटै कॊण्टु ऍऴु–वक्ष के दोनों पार्श्वों में उठे हुए; कॊङ्कैयुम्–स्तनों और; अलकुलुम्–कटिप्रदेश से; पुल्लि निऱ्कुम्–लगी रहनेवाली; इटै कण्टिलम्–कमर नहीं देखी; अल्लतु–उसके बिना; ऍल्ला उरुवुम्–सारा रूप; तॆरिन्ताम्–(मैंने) देख लिया; विटम् नुङ्किय–विषभक्षक; कण् उटैयार्–आँखों की स्वामिनी; इवर्–यह; मॆल्ल मॆल्ल–धीरे-धीरे; मट मङ्कैयर् आय्–बाला स्त्री बनकर; ऍऩ् मऩत्तवर् आयिऩार्–मेरे मन की (वासिनी) हो गईं। ६९७

छाती के दोनों पार्श्वों में उठे रहनेवाले उरोजों को देखता हूँ। नीचे

नितंब देखता हूँ। पर इन दोनों के बीच दोनों से लगी रहनेवाली कमर नहीं देख पाता। धीरे-धीरे उस कटिहीना सुन्दरी का सारा रूप प्रकट हो गया है। विषभक्षक आँखों से भूषित यह बाला स्त्री हैं! वह मेरे मन में आकर बस गयी हैं। ६९७

पण्डे युलहेळ्ळिनु मुळ्ळ पडैक्क णारैक्
कण्डे निदुबोलोरु पॅण्णुरुक् कण्डि लेऩाल्
उण्डे यॅऩिल्वेऱिऩि यॅङ्गै युणरत्तुति निऩ्ऱ
वण्डेरु कोदै मडवारिव राहु मऩ्ऱे 698

पण्टु ए–पहले ही; उलकु एळित्तुम् उळ्ळ–सातों लोकों की; पटै कण्णारै–(भाला, तलवार आदि) हथियार-सी आँखों वालियों को; कण्टेन्–देखा है; इवर् पोल्वतु–इनके समान; ओर् पॅण् उरु–एक स्त्रीरूप; कण्टिलेन्–नहीं देखा है; वेऱु इति उण्टे ऍनिल्–दूसरी अब एक (देखी जाती) है तो; ऍङ्कै उणर्त्तुति निन्ऱ–मेरी छोटी बहिन ने जिसका वर्णन किया; वण्टु एऱु कोतै मटवार्–वह भ्रमरवाही केश वाली स्त्री; इवर् आकुम्–यही होगी। ६९८

पहले ही मैंने सातों लोकों की वासिनी, भाला, तलवार आदि हथियारों से तुल्य आँखों से शोभित स्त्रियों को देखा है। पर इनकी-सी सुन्दरता को प्राप्त स्त्री को नहीं देखा है। अब जो ऐसी एक दिखाई देती हैं, तो यह अवश्य वही स्त्री होगी जिस भ्रमरवाही केश से भूषित सुन्दरी का वर्णन मेरी छोटी बहिन शूर्पणखा ने किया था। ६९८

पूण्डिप् पिणिया तुऱुहिऩ्ऱदु ताऩ्बॊ ऱादाळ्
तेण्डिक् कॊडुवन्दऩळ् शॆय्ववॊर् माऱु मुण्डो
काण्डऱ् किऩियाळुरुक् कण्डवर् केट्कु माऱ्ऱाल्
ईण्डिप् पॊळुदेविरैन् दॆङ्गैयैक् कूवु हॆऩ्ऱाऩ् 699

इ पिणि पूण्टु–यह रोग पाकर; यान् उऱुकिन्ऱतु–जो कष्ट उठा रहा हूं, उसे; तान् पॊऱाताळ्–खुद न सह सककर; तेण्टि कॊण्टु वन्तनळ्–ढूंढ़ लाई है; चॆय्वतु ओर् माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार क्या होगा; काण्टऱ्कु इनियाळ्–देखने में मधुर; उरु–इनका रूप; अवळ् कण्टु–वह (शूर्पणखा) देखे; केट्कुम् आऱु आल्–मैं भी पूछकर जान लूं (कि क्या यह वही है); ईण्टु–यहीं; इ पॊळुते–अभी; विरैन्तु–शीघ्र जाकर; ऍङ्कैयै–मेरी अनुजा को; कूवुक–बुलाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ६९९

(मेरी बहिन भी कितनी अच्छी है!) मेरी बहिन ने मेरी व्यथा देखी और वह सह नहीं सकी। इसलिए वह उसे ढूंढ़ लायी है। उसका क्या प्रत्युपकार करूँ? जो सामने है, इस सुन्दर रूपवती को वह भी देखे और मैं प्रश्न कर ठीक-ठीक जान लूँ। उसने आज्ञा दी कि अभी यहीं मेरी बहिन को शीघ्र बुलाओ। ६९९

अॅन्ऱा नॅनलुङ् गडिदेहितर् कूवु मॅल्लै
वन्ऱा णिरुदक्कुलम् वेरऱ मायत्तल् शॅय्वाऴ्
ऑन्ऱाद कामक् कनलुट्टॅऱ लोडु नाशि
पॉन्ऱाऴ्हुऴै कॉङ्गैहऴ् पोक्किनऴ् पोय्प्पु हुन्दाऴ् 700

अॅन्ऱान्–(रावण ने) कहा; अॅनलुम्–कहते ही; कटितु एकितर्–शीघ्र गये; कूवुम् अॅल्लै–पुकारने पर; वन् ताऴ्–बली, उद्यमी; निरुत कुलम्–राक्षसकुल को; वेर् अऱ–जड़ से काटकर; मायुत्तल् चॅय्वाऴ्–मिटाने में तत्पर; ऑन्ऱात–अनुचित; काम कनल्–कामाग्नि के; उऴ् तॅरल् ओटुम्–अन्दर दाहने से; नाचि–नासिका; पॉन् ताऴ् कुऴै–स्वर्णकुण्डल-धारी कानों और; कॉङ्कैकळ्–स्तनों को; पोक्कितऴ्–(जिसने) गँवाया; पोय् पुकुन्ताऴ्–(वह शूर्पणखा) जा पहुँची। ७००

रावण का यह कहना था कि किंकरों ने जाकर शूर्पणखा को बुलाया। वह तो पराक्रमी और उद्यमी राक्षसकुल को ही जड़ से काटकर मिटाने के कार्य में तत्पर रही! उसने अपने लिए बिल्कुल अनुचित प्रेम किया और उस कामाग्नि के अन्दर जलाते उसने जाकर अपनी नाक को, स्वर्णकुण्डलभूषित कानों को और स्तनों को कटवा लिया था। ऐसी शूर्पणखा रावण के पास जा पहुँची। ७००

पॉय्न्निन्ऱ नॅञ्जिऱ्कॉडि याऴ्बुहुन् दाऴै नोक्कि
नॅय्न्निन्ऱ कूर्वाळव नेरुऱ नोक्कि नङ्गै
मैन्निन्ऱ वाट्कण् मयिनिन्ऱॅन वन्दॅन् मुन्नर्
इन्निन्ऱवळाङ्गॉ लियम्बिय शीदै यॅन्ऱान् 701

नॅय् निन्ऱ कूर् वाळ्–घृत-लगी तीक्ष्ण तलवार-धारी; अवन्–उस (रावण) ने; पॉय् निन्ऱ नॅञ्चिल्–असत्य जिसमें स्थायी रहा, उस मन की; कॉटियाऴ्–क्रूरी; पुकुन्ताळै–जो पहुँची, उसको; नेर् उऱ नोक्कि–सामने आया देख; नङ्कै–बाले; इयम्पिय–तुमने (जिसके बारे में) कहा; चीतै–वह सीता; मै निन्ऱ वाळ् कण्–अंजनयुक्त तलवार-सी आँखों की हो; मयिल् निन्ऱतु अॅन–मोर आकर खड़ा हो, ऐसा; अॅन् मुन्नर् वन्तु–मेरे सामने आकर; इ निन्ऱवळ् आम् कॉल्–जो यह खड़ी है, यही है क्या; अॅन्ऱान्–पूछा। ७०१

घी-लगी तलवारधारी रावण ने कपटनिलय मन वाली शूर्पणखा को वहाँ आया देखकर पूछा कि बाले! तुमने किसी सीता के बारे में कहा न? इधर मेरे सामने अंजनभूषित तलवार-सम आँखें लिये, मोर-सी एक स्त्री खड़ी है। देखो और कहो कि क्या यही वह सीता है? । ७०१

शॅन्दामरैक् कण्णॉडुङ् जॅङ्गनि वायि नोडुम्
शन्दार्दडन् दोळॉडुन् दाऴ्दडक् कैह ळोडुम्
अन्दारह लत्तॊडु मञ्जनक् कुन्ऱमॅन्न
वन्दानिव नाहुमव् वल्वि लिराम नॅन्ऱाळ् 702

चॆम् तामरै कण् ऒटुम्–लाल कमल-सम आँखों के साथ; चॆम् कति वायित् ऒटुम्–लाल (बिब-) फल-सम अधरों के साथ; चत्तु आर्–सुन्दरता-भरे; तटम् तोळ् ऒटुम्–विशाल कन्धों के साथ और; ताळ् तट कैकळ् ऒटुम्–दीर्घ और विशाल हाथों के साथ; अम् तार् अकलत्तु ऒटुम्–सुन्दर हार-शोभित वक्ष के साथ; अञ्चत्त कुन्ऱम् अन्न–अंजन-पर्वत के समान; वन्तान् इवन्–जो यह आया है; अ वल् विल्–वह कठोर धनुर्धर; इरामन् आकुम्–राम ही है; ऎन्ऱाळ्–बोली। ७०२

(शूर्पणखा तो हमेशा श्रीराम के ध्यान में रहती रही। उसे श्रीराम का रूप ही दिखाई दिया।) उसने कहा कि जो रूप यह दिखाई दे रहा है, वह अंजनगिरि के समान धनु हाथ में लिये आया हुआ राम है। उसके लाल कमल के समान आँखें हैं, लाल बिम्बफल के समान अधर हैं। मनोरम विशाल कंधों और दीर्घ विशाल हस्तों के साथ वह दिखता है, देखो। ७०२

पॆण्बालुरु नान्ऱिदु कण्डदु पेदै नीयीण्
डॆण्बालु मिलाददो राणुरु वॆन्ऱ दॆन्ने
कण्बालुरु मायै कवर्ऱुदल् कऱ्ऱ नम्मै
मण्बालव रेहॊल् विळैप्पवर् मायै यॆन्ऱान् 703

पेतै–मूढ़ स्त्री; नान् कण्टतु इतु–जो मैं देख रहा हूँ, यह; पॆण् पाल् उरु–स्त्री जाती का रूप है; नी–तुम; ईण्टु–यहाँ; ऎण् पालुम् इलाततु–कहीं भी असम्भाव्य; ओर् आण् उरु–एक पुरुष का रूप; ऎन्ऱतु–कहती हो, सो; ऎन्नॆ–क्या है; कण् पाल्–आँखों के सामने ही; उरु मायै–बड़ी माया द्वारा; कवर्ऱुतल् कऱ्ऱ–(दूसरों को) धोखा देना जो जानते हैं; नम्मै–उन हमको; मण्पालवरे–मर्त्य-मानव; मायै विळैप्पवर् कॊल्–वंचित करनेवाले हैं क्या; ऎन्ऱान्–(आश्चर्य से) पूछा। ७०३

रावण को अचम्भा हुआ। उसने कहा कि हे अबोध नारी! मेरे सामने जो दिखता है, वह तो स्त्री का रूप है। तुम तो असंभाव्य किसी पुरुष की बात कह रही हो! यह क्या बात है? हम मायाकार्य में प्रवीण हैं। हमें भी धोखा दे रहे हैं क्या ये मर्त्यलोक के मानव? । ७०३

ऊन्ऱुमुणर् वप्पुऱ मॊन्ऱिनु मोड लिन्ऱि
आन्ऱुमुळ दायॆन्डि दाशै कनऱ्ऱ निन्ऱायक्
केन्ऱुनॊन्दि रेविळि नोक्कु मिडङ्ग डोऱुम्
तोन्ऱुमनै याळिदु तॊन्नॆऱि याहु मॆन्ऱाळ् 704

ऊन्ऱुम् उणर्वु–सुस्थिर भावना; अ पुऱम् ऒन्ऱितुम्–दूसरी तरफ़ कहीं; ओटल् इन्ऱि–नहीं जाती; आन्ऱुम्–बहुत; उळतु आम्–बनी है; नॆंदितु आचै कनऱ्ऱ–गम्भीर काम-राग जलता है, उस स्थिति में; निन्ऱायक्कु–जो स्थित हो उस तुम्हें; उन् ऎतिरे–तुम्हारे सामने; एन्ऱु विळि नोक्कुम्–तुम्हारी दृष्टि जहाँ गौर करती हैं, वहाँ; इटङ्कळ् तोऱुम्–उन सभी स्थानों में; अनैयाळ् तोन्ऱुम्–वही दिखाई देगी; इतु–यह; तॊल् नॆऱितु आकुम्–प्राचीन (मनो-) धर्म ही है; ऎन्ऱाळ्–(शूर्पणखा ने) कहा। ७०४

शूर्पणखा ने समझाया कि भाई तुम्हारी सीता की भावना स्थिर और दृढ़ है। इसलिए तुम्हारी कल्पना दूसरी ओर नहीं जाती। तुम्हारा सीता के प्रति राग तुम्हें जला रहा है और तुम तप्त स्थिति में हो। इस स्थिति में तुम सर्वत्र सीता को ही देखो —यह कोई नई या विचित्र बात नहीं। यह तो प्राचीन और परिचित मनोधर्म ही है। ७०४

अऩ्ऩाळदु	कूऱ	वरक्कऩु	मऩ्ऩ	दाह
निऩ्ऩालव्	विरामऩैक्	काण्गुरु	नीरॅ	ऎऩ्ऱाऩ्
ऍऩ्ऩाळव	नॅऩ्ऩैयित्	तीर्वरु	मिऩ्ऩल्	शॅय्दाऩ्
अऩ्ऩाण्मुदल्	याऩु	मयर्त्तिल	ऩाहु	मॅऩ्ऱाळ् 705

अऩ्ऩाळ्–उसके; अतु कूऱ–ऐसा कहने पर; अरक्कऩुम्–राक्षस रावण ने; अऩ्ऩतु आक–वही हो; निऩ्ऩाल्–तुमसे; अ इरामऩै काण्कुरुम्–उस राम को देखे जाने का; नीर्–गुण; ऍऩ् ऍऩ्ऱाऩ्–कैसा, पूछा; ऍ नाळ–जिस दिन; ऍऩ्ऩै–मुझे; इ तीर्वु अरु–यह प्रत्यवायहीन; इऩ्ऩल् चॅय्ताऩ्–कष्ट दिया; अ नाळ् मुतल्–उस दिन से; याऩुम्–मैं भी; अयर्त्तिलऩ् आकुम्–भूली नहीं हूँ; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ७०५

यह सफ़ाई सुनकर रावण ने सकारा कि हाँ! वही ठीक हो सकता है। फिर पूछा कि तुम राम को ही देख रही हो, इसका रहस्य क्या है? शूर्पणखा ने यह सुनकर चातुर्य से उत्तर दिया। भाई यह क्या पूछते हो? जिस दिन राम ने यह प्रत्यवायहीन कष्ट दिया उस दिन से मैं उसे कहाँ भूल सकी हूँ? नहीं भूल पायी हूँ। ७०५

आमाम	दडुक्कुमॅ	ऩाक्कैयो	डावि	नैय
वेमाल्विऩै	येऱ्किऩि	यॅऩ्विडि	वाहु	मॅऩ्ऩक्
कोमाऩुल	हुक्कोरु	नीकुऱै	हिऩ्ऱ	वॅऩ्ऩै
पूमाण्गुळ्	लाडऩै	वव्वुदि	पोदि	यॅऩ्ऱाळ् 706

आम् आम्–हाँ, हाँ; अतु अट्कुकुम्–वह सम्भव ही है; ऍऩ् आक्कै ओटु–मेरे शरीर के साथ; आवि नैय–प्राण छीजते हैं; वेम् आल्–जलते हैं; आल्–इसलिए; विऩैयेऱ्कु–कामकार्य-तप्त मुझे; इऩि विटिवु ऍऩ्ऩ आकुम्–अब निस्सरण क्या है; ऍऩ्ऩ–पूछने पर; नी उलकुक्कु ओरु कोमाऩ्–तुम भुवनपति हो; कुऱैकिऩ्ऱतु ऍऩ्ऩै–अपने को हीन क्यों मानते हो; पू माण् कुळ्ळाळै–पुष्पालंकृत सुकेशिनी को; वव्वुति–हर लाओ; पोति–जाओ; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ७०६

रावण ने उत्तर में कहा कि ओफ़ ओह! हाँ, हाँ वह सम्भव बात ही है। पर देखो। मेरा शरीर दुर्बल हो रहा है; मेरे प्राण विगलित हो रहे हैं। शरीर और प्राण जल रहे हैं। कामेच्छा अपना निर्मम कार्य कर रही है। उसके वश होकर मैं बहुत कष्ट उठा रहा हूँ! अब उससे छूटना कैसे हो? शूर्पणखा ने उसे धीरज दिया। भाई! तुम भुवनपति हो।

फिर क्यों ऐसी हीनता का अनुभव करते हो ! जाकर पुष्पालंकृत सुकेशिनी सीता को हर लाओ। अभी जाओ ! उसने भाई को उकसाया। ७०६

अॅन्ड्रा ळहन्ड्राळ वरक्कनु मीड ळिन्दान्
ऑन्ड्रानु मुणर्न्दिल नावि युलैन्दु शोर्न्दान्
निन्ड्रारु नडुङ्गिनर् निन्रुळ नाळि नाले
पॉन्ड्राढुळ नायिन नत्तनै पोलु मन्ड्रे 707

अॅन्ड्राळ्–कहकर; अकन्ड्राळ्–शूर्पणखा चली; अ अरक्कतुम्–वह राक्षस भी; ईटु अळिन्तान्–अधीर हुआ; ऑन्ड्रातुम् उणर्न्तिलन्–कोई सुध नहीं रही; आवि उलैन्तु–प्राणविह्वल होकर; चोर्न्तान्–थक गया; निन्ड्रारुम् नटुङ्कितर्–(वहाँ जो) खड़े (थे) वे भी (भय से) काँपे; निन्रु उळ नाळिताल् ए–आयु शेष रही इसलिए; पॉन्ड्रातु–विना मरे; उळन् आयिततन्–जीवंत रहा; अ तुणै पोलुम्–वही कारण था; (अन्रु–ए)। ७०७

यह कहकर शूर्पणखा चली गयी। राक्षस संकट सह नहीं सका। अधीर हो गया। सुध-बुध खोयी और उसके प्राण सूखने लगे। पास जो थे वे भी उसकी स्थिति देखकर डर गये। रावण की आयु शेष थी। इसलिए वह मरा नहीं; जीवित रहा। वही कारण था ! नहीं तो आसार आशादायी नहीं लगते थे। ७०७

इऱन्दार् पिऱन्दारॅन विन्नुयिर् पॅऱ्ऱ मन्नन्
मऱन्दा तुणर्न्दानवण् माडुनिन् ड्रारै नोक्किक्
कऱन्दा लॅननीर्दरु शन्दिर कान्तत् तालोर्
शिऱन्दार् मणिमण्डबञ् जॅय्हॅनच् चॅप्पु हॅन्ड्रान् 708

इऱन्तार् पिऱन्तार् अॅन–मृतक फिर जीवित हो आया जैसे; इन् उयिर् पॅऱ्ऱ मन्नन्–प्यारे प्राणों को फिर से पाकर राक्षसराज; मऱन्तान् उणर्न्तान्–सुध-बुध जो खोई थी, उसे फिर पाकर; अवण् माटु निन्ड्रारै नोक्कि–वहाँ पास जो खड़े रहे उनको देखकर; कऱन्ताल् अॅन्–दुहने पर जैसे; नीर् तरु–जल बहानेवाला; चन्तिर कान्तत्ताल्–चन्द्रकान्त मणि से; ओर्–एक; चिऱन्तु आर्–श्रेष्ठ बने; मणि मण्टपम्–सुन्दर मण्डप को; चॅय्क अॅन–निर्मित करो, ऐसी; चॅप्पुक अन्ड्रान्–(आज्ञा) सुनाओ, कहा। ७०८

कुछ देर के बाद रावण होश में आया। तब यही लगा कि मृतक ही जी उठा हो। राक्षसराज अब तक भूला-सा रहा। फिर से स्मरण आ गया। उसने अपने पास जो रहे उनसे कहा कि चन्द्रकान्त-शिलाओं का एक रत्नमण्डप बना लेने को कहो। उन शिलाओं से ऐसा शीतल जल निकलता रहे— मानो कोई उन्हें दुह रहा हो। ७०८

वन्दा तॅंडुवानुरै तच्चन् मनत्तु णर्न्दान्
शिन्दा विनैयन्ड्रियुङ् गैविनै यालुञ् जॅय्वान्

अन्दाम नॅडुन्दरि यायिरत् ताल मैन्द
शन्दार् मणिमण्डबन् दामरै योनु नाण 709

नॅटु वान् उरै–विस्तृत आकाशलोक का वासी; तच्चन्–(विश्वकर्मा नाम का) शिल्पी; वन्तान्–वहाँ आया; मत्तुत्तु उणर्न्तान्–मन में समझा; अम् तामम्–सुन्दर और; नॅटुम् तरि आयिरत्ताल्–ऊँचे हज़ार खम्भों के साथ; अमैन्त–निर्मित; चन्तु आर् मणि मण्टपम्–सौन्दर्य-भरा रत्नमय मण्डप; तामरैयोनुम् नाण–कमलासन को भी शरम से भरते हुए; चिन्ता वित्तै अन्रियुम्–परिकल्पना के साथ; कै वित्तैयालुम्–हस्त-कौशल द्वारा भी; चॅय्तान्–रचा। ७०६

विस्तृत आकाशलोक का शिल्पी विश्वकर्मा आया। उसने रावण की इच्छा ध्यान से जान ली। एक सहस्र खम्भों के साथ उसने एक बड़ा मनोरम मण्डप निर्मित किया। ऐसा मण्डप बनाया कि सृष्टि-कर्म में अद्वितीय ब्रह्मा भी देखकर अपनी हीनता पर शरम खाये! उसमें उसकी भावना, कल्पना आदि का भी विशेष सामर्थ्य प्रकट होता था, बल्कि उसके हस्तकौशल की भी झाँकी मिलती थी। ७०९

कान्दम् ममुदिन्रुळि काल्वन काल मीनिन्
वेन्दन् नॉळियन्रियु मेलॉडु कीळ्वि रित्तान्
पून्दॅन्रल् पुहुन्दुरै शाळर मुम्बु तैन्दान्
एन्दुम् मणिक्कर्पहच् चीदळक् कावि ळैत्तान् 710

काल मीनिन् वेन्तन्–कालदर्शी नक्षत्रों के राजा; ऑळि अन्रियुम्–(चन्द्र की) ज्योति के विना भी; अमुतिन् तुळि काल्वन–अमृत की बूंदें निकालनेवाले; कान्तम्–चन्द्रकान्त पत्थरों को; मेल् ओटु कीळ् विरित्तान्–ऊपर-नीचे सर्वत्र बिछाया; पूम् तॆन्रल्–मधुर (पुष्पगन्ध-युक्त) मलयपवन; पुकुनतु उरै–प्रवेश कर रहे, इस निमित्त; चाळरमुम् पुतैन्तान्–गवाक्ष भी बनाये; मणि एन्तुम्–(फूल-फलों के रूप में) रत्नधारी; कर्पक चीतळ का–कल्पक तरुओं का शीतल उद्यान; अमैत्तान्–निर्मित किया। ७१०

उसने उस मण्डप में ऊपर और नीचे सर्वत्र ऐसे चन्द्रकान्त के पत्थर जड़े जिनसे कालदर्शी, नक्षत्रों के राजा चन्द्र के स्पर्श के विना भी जल स्रव सकता था। फिर मण्डप में गवाक्ष निर्मित किये, जिनसे मधुर पुष्पगन्धवाही मलयपवन अन्दर आकर ठहर सके। फिर उसके चारों ओर एक कल्प-तरुओं का शीतल उद्यान बनाया जिनके फल, फूल आदि रत्नमय थे। ७१०

आणिक्कमै पॉर्रट्टिन् मणिच्चुड रार्वि ळक्कम्
शेणुर् रिरुळ्शीप्पन दॅय्व मडन्दै मार्हळ्
पूणिर् पॉलिवार्बुडै येन्दिडैप् पॉड्गु तोळान्
माणिक्क मानत्तिडै मण्डबङ् गाण वन्दान् 711

आणिक्कु अमै–प्रामाणिक सोने (की कील) से समता रखनेवाले; पॊन् तट्टिन्–

स्वर्ण की बनी थालियों में; मणि चुटर् आर् विळक्कम्-सुन्दर रत्नप्रकाशमय दीप; चेण् उर्रु इरुळ् चीप्पत्त-जो दूर तक जाकर अन्धकार मिटानेवाले थे; पूणिल् पॉलिवार्-आभरणों से शोभित; तैय्व मटन्तै मार्कळ्-सुरस्त्रियाँ; पुटै एन्तिट-पार्श्व में ले आयीं; पोङ्कु तोळान्-उन्नत भुजा वाला; माणिक्क विमानत्तु इटै-माणिक्य-वाहन पर; मण्टपम् काण वन्तान्-मण्डप देखने आया। ७११

रावण उस मण्डप को देखने आया। वह माणिक्यजड़ित एक यान पर आया। पुष्ट और उन्नत कन्धों से युक्त उसके साथ अनेक सहस्र कोटि देवांगनाएँ हाथ में स्वर्णथालियों में दीप लिये आयीं। थालियों का स्वर्ण बहुत ही उच्च कोटि का था। उसका खरापन उसके लिए नियत प्रामाणिक सोने की कील से परखा जाता तो शुद्ध निकलता। दीपों की ज्वालाएँ रत्न ही थीं। उनमें से जो प्रकाश निकलता था वह दूर-दूर तक जाकर अन्धकार को मिटाता था। वे देवांगनाएँ बहुत मनोरम भूषणों से भूषित थीं। ७११

अल्लायिर कोडि यडुक्किय दौत्त देनुम्
नल्लार् मुहमाम् नळिर्वानिल विन्रि नामप्
पल्लायिर कोडि पनिच्चुड रीन्र तिङ्गळ्
ॲल्ला मुडत्ता विरुळोडि यिरिन्द दन्रे 712

नळिर् वान् निलवु इन्रि-शीतल आकाश में चाँद नहीं रहा, तो भी; अल् आयिर कोटि-रातें हजारों की संख्या में; अटुक्कियतु ऑत्ततेनुम्-एक के ऊपर एक रखी गयी हों, जैसे रहने पर भी; नल्लार् मुकम् आम्-उन सुन्दरियों के मुख रूपी; नाम-श्लाघनीय; पल् आयिर कोटि-अनेक सहस्र कोटि; पनि चुटर् ईन्र-शीतल प्रकाशमय; तिङ्कळ् ॲल्लाम्-चन्द्र सभी; उटत्ता-साथ आने से; इरुळ्-अन्धकार; ओटि-भागकर; इरिन्ततु-हट गया। ७१२

उनके मुख चन्द्र-सम उज्ज्वल थे। अनेक रातों का सम्मिलित अन्धकार हो तो भी बहुत मानार्ह अनेक सहस्र शीतल प्रकाशदायी मुख रूपी चन्द्र साथ आये, इसलिए चाँद के विना भी वह अन्धकार दूर हो गया था। ७१२

पॉर्पुर्रुत्त मामणि यौन्बदुम् बूवि निन्र
कर्पत्तरु विन्गदिर् नाणिळर् कर्रै नार्र
अर्पर्रुळि यप्पह लाक्किय दाल रुक्कन्
निर्पत्तॅरिक् किन्रतु नीळ्शुडर् नीर्मै यन्रो 713

पॉर्पु उर्रत-मनोहारिता से युक्त; मा मणि ऑन्पतुम्-श्रेष्ठ नवरत्न; पूवित्-फूल बने; निन्र-ऐसे स्थित; कर्प तरुविन्-कल्पतरुओं की; कतिर्-कान्ति-किरणें; नाळ् निळल् कर्रै-दिन के-से प्रकाश की रेखाओं के समान; नार्र-निकल

रही थीं; अल् पर्रु अऴिय-रात का सम्बन्ध मिट गया; पकल् आक्कियताल्-दिन-सा बनाने से; अरुक्कन् निऱ्प-सूर्य के (दूर) रहने पर भी; नीळ् चुटर् तॅरिक्किन्ऱतु-लम्बी प्रकाश-रेखाएँ निकालना; नीर्मै अन्ऱो-(कल्पतरुओं का) गुण है न। ७१३

उस उद्यान के कल्पतरु भी आसाधारण थे। उनके फल बहुत ही छटापूर्ण नवरत्न थे। उनसे जो प्रकाश छूटता था उससे दिन-सा प्रकाश होता था। विना सूर्य के ही उजाला देना कल्पतरु का गुण था न ? । ७१३

ऊऱोशै मुदऱ्पॉऱि यावैयु मॉन्ऱि नॊन्ऱु
तेऱानिलै युऱ्ऱदोर् शिन्दैयन् शॅय्है योरान्
वेऱाय पिऱप्पिडै वेट्कै विशित्त दीर्प्प
माऱोरुडल् पुक्कॅन मण्डबम् वन्दु पुक्कान् 714

ऊऱु-स्पर्शेन्द्रिय; ओचै-श्रवणेन्द्रिय; मुतला-आदि; पॊऱि यावैयुम्-इन्द्रिय सब; ऑन्ऱिऩ् ऑन्ऱु-एक सा एक; तेऱा-सतर्क नहीं रही; निलै-ऐसी स्थिति में; उऱ्ऱतु-पड़ा; ओर् चिन्तैयन्-मन वाला; चॅय्कै ओरान्-क्या करना, यह न जानकर; वेट्कै विचित्तु-राग ने उसको बाँधकर; अतुईर्प्प-खींचा; माऱु ओर् उटल् पुक्कतु ॲन-दूसरे एक शरीर में प्रविष्ट हुआ हो ऐसा; मण्टपम् वन्तु पुक्कान्-मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

रावण की दशा दयनीय थी। उसकी स्पर्श, शब्द आदि परखनेवाली कोई भी इन्द्रिय सतर्क नहीं थी। एक से एक बढ़कर सब इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। मन भी जड़वत हो गया। क्या करना है, यह भी निश्चय कर नहीं पाया। उधर सीता के प्रति राग उसे बलात् खींच रहा था। उससे वह मानो दूसरे शरीर में प्रवेश कर रहा हो, इस विचित्र भावना के साथ मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

तण्डलिल् तवञ्जॅय् वोर्हळ् वेण्डिन दायिन् नल्हुम्
मण्डल महर वेलै यमुदोडुम् वन्द दॅन्नप्
पण्डरुञ् जुरुम्बु शेरुम् पशुमर मुयिर्त्त पैम्बोन्
तण्डळिर् मलरिऩ् चॅय्द शीदळच् चेक्कै शार्न्दान् 715

तण्टल् इल्-निर्बाध रूप से; तवम् चॅय्वोर्कळ्-तपस्या करते रहनेवाले; वेण्टिऩ-जो माँगते हैं उन्हें; तायिन् नल्कुम्-माता के समान देगा; मकर मण्टल वेलै-मण्डलाकार मकरालय (क्षीरसागर); अमुतु ओटुम्-अमृत के साथ; वन्ततु ॲन्न-आया हो जैसे; पण् तरु-संगीत-सम गुंजारशील; चरुम्पु चेरुम्-भ्रमरों से आवृत; पचु मरम्-हरे पेड़ों से; उयिर्त्त-निकले; पैम् पॊन् तण् तळिर्-ताजे स्वर्णवर्ण शीतल पल्लव; मलरिल्-और फूलों से; चॅय्त-बनी; चीतळ चेक्कै-शीतल शय्या पर; चार्न्तान्-पहुँचा। ७१५

उसमें एक पुष्पशय्या थी जो क्षीरसागर अमृत के साथ आया हो ऐसा लगती थी। क्षीरसागर तपस्वियों को उनकी याचित वस्तुओं को माता के

समान दे सकता था। यह शय्या भी वैसी थी क्योंकि कल्पतरु के ताजे स्वर्णवर्ण पल्लव और मनोरम फूल उस पर बिछे हुए थे। उस पर सुरम्य संगीत-सा गुंजार करते हुए भ्रमर मँड़रा रहे थे। रावण उस शीतल शय्या पर आया। ७१५

नेरिळै महळिर् कून्द निऱैनऱै वाश नीन्दि
वेरियञ् जरळच् चोलै वेनिलान् विरुन्दु शेय्य
आरुहलि यळ्वन् दन्द वमिळ्देन्न वौरुव रावि
तीरिनु मुदवर् कौत्त तैन्ऱलवन् दिरुत्त दन्ऱे 716

औरुवर् आवि तीरिनुम्-एक के प्राणों के जाने की स्थिति में रहे, तो भी; उतवर्कु औत्त-प्राण रोकने में सहायता जो दे सकता था उस; आर्कलि अळुवम् तन्त-(क्षीर-) सागर की गहराई से प्राप्त; अमिळ्तु अन्न-अमृत के समान; तेन्ऱल्-दक्षिणी (मलय-) पवन; इळै मकळिर् कून्तल-आभरणालंकृता स्त्रियों के केश पर की; निऱै नऱै वाचम्-भरी शहद-युक्त सुगन्ध; नीन्ति-तैरकर; वेरि अम् चरळम् चोलै-शहदयुक्त, सुन्दर देवदार तरुओं के उपवन में; वेनिलान्-वसन्तकाल का राजा, मन्मथ के; विरुन्तु चेय्य-स्वागत करते; वन्तु इरुत्ततु-आ पहुँचा। ७१६

क्षीरसागर की गहराई से प्राप्त अमृत मरणोन्मुख मनुष्य को जिला कर उसकी सहायता कर सकता है। मलयपवन उसी अमृत के समान वहाँ संचार कर रहा था। वह आभूषणभूषिता सुन्दरियों के केशों के शहद-भरे फूलों की सुगन्धि में घुसकर बाहर आया हुआ था। शीतल देवदार तरुओं से भरे उस उद्यान में वसन्त का राजा मन्मथ उसका स्वागत कर रहा था। इस रीति से वह मलयपवन वहाँ आया। ७१६

शाळरत् तूडु वन्दु तवळ्दलुन् दरित्त ऱेऱ्ऱान्
नीळरत् तङ्गळ् शिन्द नॆरुप्पुह नोक्कु नीरान्
वाळ्मनैप् पुहुन्द दाण्डोर् माशुणम् वरक्कण् डन्न
कोळुरक् कौदित्तु विम्मि युळैयरैक् कूविच् चौन्नान् 717

चाळरत्तु ऊटु वन्तु-खिड़कियों से होकर आया; तवळ्तलुम्-और मन्द-मन्द बहा; तरित्तल् तेऱ्ऱान्-तब असहनीय वेदना के साथ; नीळ् अरत्तङ्कळ् चिन्त-लम्बी रक्त-धाराएँ बहाते हुए; नॆरुप्पु उक नोक्कुम्-आग निकालते हुए देखने का; नीरान्-स्वभाव वाला; वाळ् मनै पुकुन्ततु-वास के घर में घुसा; ओर् माचुणम्-एक सर्प; आण्टु वर-वहाँ आया; कण्टु अन्न-देखा-सा; कोळ् उऱ कौतित्तु-संकट पाकर उबला; विम्मि-सिसकते हुए; उळैयरै-समीपस्थ लोगों को; कूवि-पुकार कर; चौन्नान्-बोला। ७१७

वह मलयपवन खिड़कियों के रास्ते से अन्दर आया। पर रावण उसे सह नहीं सका। उसकी आँखों से रक्त की बूँदें ढलक आयीं। अंगार भी प्रकट हुए। वह कोप, दुःख दोनों से प्रभावित था। उसने उस मलयपवन

को वासस्थान के घर में घुस आये सर्प के रूप में देखा। उससे कष्ट हुआ और उस पर गुस्सा भी। वह उबल पड़ा। सिसकने भी लगा। समीपस्थ भृत्यों को पास बुलाकर उसने (निम्न बातें) कहीं। ७१७

कूवलि नुयिर्त्त शिन्नी रुलहित्तैक् कुप्पुरु् ऍन्नत्
तेवरि नोरुव नॅन्नै यिन्नलुम् जॅयत्तक् कान्नो
एवलि नन्ऱि वन्दिङ् गिव्वऴ्ऴ लॅय्दिङ् ऍन्नाक्
कावलि नुळैयर् तम्मैक् कौणरुदिर् कडिदि नॅन्ऱाल् 718

कूवलिन् उयिर्त्त–(छोटे से) कुएँ में से छनकर निकला; **चिल् नीर्**–थोड़ा जल; **उलकित्तै**–संसार भर को; **कुप्पुरुरु ऍन्न**–डुबो रहा हो जैसा; **तेवरिन् ऑरुवन्**–देवों में एक; **ऍन्नै**–मुझे; **इन्नलुम् चॅय तक्कान्नो**–संकट दे सका क्या; **इ अऴल्**–यह आग; **एवल् इन्ऱि**–विना अनुमति के; **इङ्कु वन्तु ऍय्तिरुरु**–यहाँ आ पहुँची है; **ऍन्ऱु**–कहकर; **कावलिन् उळैयर् तम्मै**–पहरेदारों को; **कटितिन् कौणरुतिर्**–जल्दी लाओ; **ऍन्ऱान्**–कहा। ७१८

कूप का रिसता जल क्या संसार भर को डुबो सकेगा? वैसा देवों में एक यह मुझे इतना कष्ट दे सकता है क्या? यह अग्निदेव मेरी आज्ञा के विना आया कैसे? बुलाओ पहरेदारों को। ७१८

अव्वऴि युळैय रोडि याण्डवर्क् कौणर्द लोडुम्
वॅव्वऴि यमैन्द शॅङ्गण् वॅरुवुर नोक्कि वॅय्योन्
शॅव्वऴि दॅन्ऱ लाऱ्कुत् तिरुत्तिन्नोर् नीर्हॉ लॅन्न
इव्वऴि यिरुन्द वालेत् तडैयवर्क् किल्लै यॅन्ऱार् 719

अ वऴि–तव; **उळैयर्**–पास जो रहे, वे; **ओटि**–दौड़े; **आण्टु**–वहीं; **अवर् कौणर्तल् ओटुम्**–उनको (बुला) लाये, तव; **वॅय्योन्**–आततायी राक्षस ने; **वॅम् वऴि अमैन्त**–क्रूर बनी; **चॅम् कण्**–लाल आँखों से; **वॅरुवु उऱ**–भयभीत करते हुए; **नोक्कि**–देखकर; **नीर् कौल्**–तुम्हीं ने तो; **तॅन्ऱलाऱ्कु**–मलयपवन को; **चॅल् वऴि तिरुत्तिन्नोर्**–जाने का मार्ग दिखाया; **ऍन्न**–पूछा, तो; **इ वऴि इरुन्त काले**–यह (खिड़कियों का) मार्ग जब रहता तब; **अवर्कु तटै इल्लै**–उनको रोक नहीं; **ऍन्ऱार्**–कहा। ७१९

समीप जो रहे वे भृत्य दौड़े। उन्होंने पहरेदारों को बुलाया और वे आये। निर्मम रावण क्रूर आँखों से उनको भयभीत करते हुए तरेरा और पूछा कि मलयपवन को अन्दर आने का सीधा मार्ग तुम्हीं ने बना दिया न? तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब खिड़कियाँ हैं, तब उसको आने से कौन रोक सकता है? कोई बाधा नहीं होगी। ७१९

वेण्डिय दुणर्न्दु शॅय्वान् विण्णवर् वरुव रॅन्ऱाल्
माण्डदु पोलुङ् गौळ्है यानुडै वन्मै वल्लै

तेण्डिनीर् तिशैह डोरुञ् जेणुऱ् विशैयिऱ् चॆलुहुऱ्
ऱीणिडिवऩ् ऱऩ्नैप् पऱ्ऱि यिरुञ्जिऱै यिडुदि यॆऩ्ऱाऩ् 720

वेण्टियतु उणर्न्तु चॆय्वान्-मैं जो चाहूँ वही करने के लिए; विण्णवर् वरुवर् ऎन्ऱाल्-सुरलोकवासी आते हैं, तो; यान्टै कोळ्कै वन्मै-मेरे (शासन-) सिद्धान्त का बल; माण्टतु पोलुम्-मिट गया शायद; वल्लै-शीघ्र; नीर् तिचैकळ् तोऱुम्-तुम दिशा-दिशा में; तेण्टि-खोजकर; चेण् उऱ-बहुत दूर; विचैयिल् चॆलकुऱ्ऱु-तेज जाकर; इवन् तन्नै-इसको; पऱ्ऱि-पकड़कर; ईण्टु-यहाँ; इरुम् चिऱै-बड़े कारागृह में; इटुतिर्-डाल दो; ऎन्ऱान्-यह हुक्म दिया। ७२०

रावण को आश्चर्य हुआ। देवता हैं तो मेरी इच्छा के अनुसार सेवा करने के लिए। आज बात विपरीत चली है। क्या मेरा शासन अपना अधिकार-बल खो गया है ? दौड़ो। दिशा-दिशा में भागो और इस पवनदेव को पकड़ो और भयंकर कारागृह में डाल दो। ७२०

काऱ्ऱिऩोऩ् ऱऩ्ऩै वाळा मुनिदलिऱ् कण्ड दिल्लै
कूऱ्ऱुम्वन् दॆऩ्ऩै यिन्ऩे कुऱुहुमाऱ् कुऱित्त वाऱ्ऱाल्
वेऱ्ऱरुङ् गरुङ्गट् चीदै मॆय्यरुळ् पुनैये नॆन्ऱाल्
आऱ्ऱला लडुत्त दॆण्णुममैच्चरैक् कॊणर्दि यॆन्ऱान् 721

काऱ्ऱिनोन् तन्नै-पवन पर; वाळा मुनितलिल्-अकारण कोप करने से; कण्टतु इल्लै-कोई लाभ नहीं देखते; कुऱित्त आऱ्ऱाल्-अपनी इच्छा के अनुसार; वेल् तरम्-भाला-तुल्य; करुम् कण्-असितेक्षणा; चीतै-सीता की; मॆय् अरुळ्-सच्ची कृपा का; पुनैयेन ऎन्ऱाल्-धारक नहीं बनूँ तो; कूऱ्ऱुम् वन्तु-यम भी आकर; ऎन्नै-मुझे; इन्ने कुऱुकुम्-अभी पा लेगा; आल्-इसलिए; अटुत्ततु-आगे जो करना है; आऱ्ऱलाल् ऎण्णुम्-बुद्धि-बल से सोचनेवाले; अमैच्चरै-मन्त्रियों को; कॊणर्तिर्-लाओ; ऎन्ऱान्-कहा। ७२१

रावण ने फिर भी सोचा कि वायुदेव पर बेकार क्रोध दिखाने से क्या लाभ ? कुछ नहीं देखता। अगर अपनी इच्छा के अनुसार सीताजी की कृपा पा नहीं सकूँगा तो यम भी मुझे मारने के लिए आ पहुँचेगा। इसलिए जो आगे की करनी के बारे में, अपनी बुद्धि के बल पर सोचकर मार्ग बता सकते हैं वे हमारे मन्त्री ही हैं। इसलिए चलकर उनको बुला लाओ। उसने भृत्यों को आज्ञा दी। ७२१

एविन शिलत रोडि येयॆनु मळवि लॆङ्गुम्
कूविनर् कूव लोडुङ् गुऱुहिनर् कॊडित्तिण् डेर्मेल्
माविनिऱ् चिविहै तम्मेन् मळैमदक् कळिऱ्ऱिन् मोदिल्
तेवरुम् वानन् दन्निऱ् ऱिशैदोरुञ् जिन्दै शिन्द 722

एवित चिलतर् ओटि-आज्ञापित भृत्य दौड़े और; एय् ऎन्नुम् अळविल्-'रे' कहने

के समय के अन्दर; अँङ्कुम् कूवितर्–सर्वत्र पुकारा; कूवलोटुम्–पुकारने पर; तेवरुम्–देव भी; वातम् तत्तिल्–आकाश में; तिचै तोरुम्–दिशा-दिशा में; चिन्तै चिन्त–चिन्ताग्रस्त हो रहे और; कॉटि तिण् तेर् मेल्–ध्वजासहित सुदृढ़ रथों पर; मावित्तिल्–अश्वों पर; चिविकै तम्मेल्–शिविकाओं पर; मऴै मत कळिऱ्ऱिन् मीतिल्–मेघवर्ण मत्तगजों पर; कुऱुकित्तर्–(वे मन्त्री) रावण के पास आये। ७२२

तुरन्त कुछ भृत्य दौड़े। 'रे' कहने की जितनी देर में सब जगह दौड़कर उन्होंने टेर लगायी। तो मन्त्री लोग आये। कुछ एक मन्त्री ध्वजामण्डित रथों पर आये। कुछ घोड़ों पर और कुछ पालकियों में आये। कुछ मेघसदृश मत्तगजों पर सवार हो आये। तब देव सब आकाश में एकत्र हो गये और वे बहुत ही चिंतित दिखाई दिये। ७२२

वन्दमन् दिरिह ळोडु माशऱ् मनत्ति नॅण्णिच्
शिन्दैयि नितैन्द शॅय्युऱ् जॅय्हैयन् ऱॅळिवि नॅञ्जन्
अन्दरच् जॅल्व दाण्डोर् विमानत्ति नारु मिन्ऱि
इन्दिय मडक्कि निन्ऱ मारीश निरुक्कै शेर्न्दान् 723

वन्त मन्तिरिकळोटु–आगत मन्त्रियों-सह; माचु अऱ मनत्तिन् ॲण्णि–दोष-रहित रीति से मन में सोचकर; चिन्तैयिल् नितैन्त–चित्त में सोचा हुआ; चॅय्युम् चॅय्कैयन्–करने में समर्थ; तॅळिविन् नॅञ्चन्–सुलझा हुआ विचारक; आण्टु–तब; अन्तरम् चॅल्वतु–आकाशचारी; ओर् विमानत्तिन्–एक (पुष्पक-) यान पर; आरुम् इन्ऱि–बिना किसी को साथ लिये (अकेले); इन्तियम् अटक्कि निन्ऱ–इन्द्रिय-दमन जो किये रहा; मारीचन् इरुक्कै चेर्न्तान्–मारीच के यहाँ जा पहुँचा। ७२३

मन्त्री आये। मंत्रणा हुई। कोई त्रुटि न रहे, ऐसा उपाय सोचा गया। रावण दृढ़संकल्प था, कार्यचतुर था। वह आकाशचारी एक यान पर चढ़ा और मारीच के पास आया, जो इन्द्रियों का दमन करके तपस्या करता था। ७२३

8. मारीशन् वदैप् पडलम् (मारीच-वध पटल)

इरुन्दमा रीश नन्द विरावण नॅय्द लोडुम्
पॊरुन्दिय पयत्तिन् शिन्दै पॊरुमुऱ्ऱु वॅरुवु हिन्ऱान्
करुन्दड मलैयनाऩै यॆदिर्हॊण्डु कडन्गळ् यावुम्
तिरुन्दिय शॅय्दु शॆव्वित् तिरुमुहम् नोक्किच् चॅप्पुम् 724

इरुन्त मारीचन्–(तपोरत जो) रहा, वह मारीच; अन्त इरावणन् ॲय्तल् ओटुम्–उस रावण के आते ही; पॊरुन्तिय–उत्पन्न; पयत्तिन्–भय के कारण; चिन्तै पॊरुमुऱ्ऱु–व्यग्र-मन होकर; वॅरुवुकिन्ऱान्–डरते-डरते; करुम् तटम् मलै अन्नानै–काले बड़े पर्वत के समान उसको; ॲतिर् कॊण्टु–स्वागत करके; कटन्कळ् यावुम्–कर्तव्य सब; तिरुन्तिय चॅय्तु–उचित रूप से करके; चॅव्वि तिरुमुकम् नोक्कि–दर्शनीय उसका मुख देखकर; चॅप्पुम्–(यों) बोला। ७२४

तपोरत मारीच ने रावण को देखा। जब रावण आया तो उसे बड़ा भय हो गया। भय के कारण चित्त व्याकुल हो गया। उसने बड़े काले पर्वत-सम रावण की अगवानी की। फिर अतिथि-सत्कार उचित रीति से किये। बाद उसके दर्शनीय मुख को देखकर वह बोला। ७२४

शन्द मलर्त्तण् कऱ्पह नीऴऱ् ऱलैवर्क्कुम्
अन्दह तुक्कु मञ्ज वडुक्कु मरशाळवाय्
इन्द वनत्तॆन् निऩ्ऩ लिरुक्कै यॆळियोरिऩ्
वन्द करुत्तॆन् शॊल्लुदि यॆऩ्ऱाऩ् मरुळ्हिऩ्ऱाऩ् 725

मरुळ्किऩ्ऱाऩ्–भ्रमित; चन्तम् मलर्–सुन्दर फूलदार; तण् कऱ्पक नीऴल्–शीतल कल्पतरु की छाया में रहकर शासन करनेवाले; तलैवर्कुम्–देवेन्द्र को; अन्तकनुक्कुम्–यम को भी; अञ्च अटुक्कुम्–भयभीत होने देते हुए शासन करते हुए; अरचु आळ्वाय्—राज्यपालन करनेवाले; इन्त–इस; वनत्तुत्–वन में; ऍन् इऩ्नल् इरुक्कै–मेरे संकट-दायक वासस्थान में; ऍळियारिऩ्–दीन के समान; वन्त करुत्तु–आने का अर्थ; ऍन्–क्या है; चॊल्लुति–कहो; ऍन्ऱाऩ्–कहा। ७२५

मारीच के मन में संशयजनित भ्रम था। देवेन्द्र मनोरम शीतल कल्पतरु की छाया में सुख से रहकर आकाशलोक का शासन करता है। यम है। उनको भी भयभीत करते हुए शासन करनेवाले राजा! तुम इस वन में मेरे तुच्छ और कष्टदायी वासस्थान में दीन मनुष्य के समान आये हो! इसका क्या अर्थ है? बताओ। —मारीच ने जानना चाहा। ७२५

आऩ दनैत्तु मावि तरित्ते ऩयर्हिऩ्ऱेऩ्
पोऩदु पॊऱ्पु मेऩ्मैयु मऱ्ऱॆऩ् पुहऴोडुम्
याऩ् दुनक्किऩ् ऱॆङ्ङ नुरेक्के ऩिनियॆऩ्ऩा
वाऩ् वरुक्कु नाण वडुक्कुम् वशैमऩ्ऩो 726

आनतु अनैत्तुम्–आने के (सभी) कष्ट आ गये; आवि तरित्तेन्–(किसी तरह) प्राण धारण कर रहा हूँ; अयर्किऩ्ऱेन्–थक गया हूँ; ऍन् पॊऱ्पुम् मेऩ्मैयुम्–मेरा महत्त्व और गौरव; पुकऴ् ओटुम् पोनतु–कीर्ति के साथ चले गये; इनि–अब; यान्–मैं; उनक्कु–तुम्हें; इन्ऱु ऍङ्ङन् उरैक्केन्–आज की स्थिति कैसे कहूँ; ऍन्ना–कहकर; वानवरुक्कुम्–देवों से भी; नाण–शरमाएँ; अटुक्कुम् वचै–ऐसा (जो) अपयश आया है; (मन्–ओ)। ७२६

रावण ने कहा कि मुझ पर सभी तरह के संकट आ चुके हैं। प्राण तो नहीं गये पर अत्यन्त शिथिल हूँ। मेरी महिमा, गौरव और कीर्ति सब चले गये। तुमसे मैं क्या कहूँ? देवों से भी हम शर्मायें, ऐसी निन्दा आ लगी है। ७२६

वऩ्मै तरित्तोर् माऩिडर् मऱ्ऱङ् गवर्वाळाल्
निऩ्मरु हिक्कु नाशि यिऴक्कु निलैनेर्न्दाल्
ॲऩ्मर बुक्कु निऩ्मर बुक्कु मिदऩ्मेलोर्
पुऩ्मै तॅरिप्पिऩ् वेऱिनि युण्डो पुहऴ्वेलोय् 727

पुकऴ् वेलोय्–सर्वप्रशंसित भालाधारी; मातुटर्–मानव; वऩ्मै तरित्तोर्–बलशाली हो गये हैं; मऱ्ऱु–और; अङ्कु–वहाँ (दण्डक वन में); अवर्–उन मानवों के द्वारा; वाळाल्–कटार से; निऩ् मरुकिक्कु–तुम्हारी भांजी की; नाचि इऴक्कुम्–नासिका खोने की; निलै नेरन्ताल्–दशा हुई तो; ॲऩ् मरपुक्कुम्–मेरे कुल का; निऩ् मरपुक्कुम्–और तुम्हारे कुल का; इतऩ् मेल् ओर् पुऩ्मै तॅरिप्पिऩ्–इससे बढ़कर हेयता की बात; इनि वेऱु उण्टो–दूसरी है क्या। ७२७

शंसित भालाधारी मारीच! अल्प मनुष्य आज बलशाली हो गये हैं। और स्थिति ऐसी हो गयी कि दण्डकवन में एक मनुष्य ने तुम्हारी भांजी शूर्पणखा की नाक काट ली। फिर तुम्हारे और मेरे कुल का क्या मान रहा? इससे बढ़कर हेयता हो सकती है क्या?। ७२७

तिरुहु शिऩत्ताऩ् मुदिर मलैन्दोर् शिऱियोर्नाळ्
परुहिऩ ॲऩ्ऱाल् वॅऩ्ऱि नलत्तिऱ् पऴियऩ्ऱो
इरुहै शुमन्दा यिऩिदि ऩिरुन्दा यिहल्वेलुऩ्
मरुह रुलन्दा रौरुवऩ् मलैन्दाऩ् वरिविल्लाल् 728

तिरुकु चिऩत्ताल्–ऐंठे कोप के साथ; मुतिर मलैन्तोर्–प्रचण्ड रूप से जिन्होंने युद्ध किया; चिऱियोर् नाळ् परुकिऩऩ्–उन मेरे छोटों के प्राण पी लिये; ॲऩ्ऱाल्–तो; वॅऱ्ऱि नलत्तिऩ्–विजय के गौरव पर; पऴि अऩ्ऱो–बट्टा नहीं है क्या; इकल् वेल् उऩ् मरुकर्–युद्धोपयोगी भालाधारी तुम्हारे भांजे; उलन्तार्–मरे; ऒरुवऩ्–अकेले एक मनुष्य ने; वरि विल्लाल्–बन्धनयुक्त धनुष ले; मलैन्ताऩ्–युद्ध करके मिटा दिया; इरु कै चुमन्ताय्–तुम (हाथ जोड़े) दोनों हाथों को सिर पर धारण किए हो; इऩितु इरुन्ताय्–सुखपूर्वक रहते हो। ७२८

ऐंठे (अपार) क्रोध के साथ मेरे छोटे भाइयों ने प्रचण्डता के साथ उससे युद्ध किया पर उसने उनके प्राण पी (हर) लिये। तो हमारी विजयशीलता पर बट्टा नहीं लगा क्या? युद्धोपयोगी भाले रखनेवाले तुम्हारे भांजे मरे; एक मनुष्य ने अपने धनुष के बल से उनसे युद्ध करके उनको मिटा दिया; और तुम इधर सिर पर जुड़े हाथ रखकर तपस्या कर रहे हो सुखपूर्वक!। ७२८

वॅप्पऴि यादॆऩ् ऩॆञ्जु मुलन्देऩ् विऴिहिऩ्ऱेऩ्
ऒप्पिल रॆऩ्ऱे पोर्शॆय वॊल्ले नुडऩ्वाऴुम्
तुप्पऴि शॆव्वाय् वञ्जियै वव्वत् तुणैहॊण्डिट्
टिप्पऴि निऩ्ऩिऱ् ऱीरिय वन्दे निवणॆऩ्ऱाऩ् 729

वॆप्पु अळियातु–मन का ताप नहीं मिटता; नॆञ्चम् उलन्तेन्–मन व्यग्र है; विळिकिन्ऱेन्–मर रहा हूँ; ऒप्पु इलर्–समान नहीं; ऎन्ऱे–इसीलिए; पोर् चॆय ऒल्लेन्–लड़ने में सहमत नहीं हूँ; उटन् वाळुम्–उनके साथ रहनेवाली; तुप्पु अळि–प्रवाल को हरानेवाले; चॆम् वाय्–अरुणाधरा; वञ्चियै–लता (-समाना स्त्री) को; वव्व–हर लाने के लिए; तुणै कॊण्टु इट्टु–तुम्हें अपना सहायक बनाकर; इ पळि–यह अपमान; निन्तिल् तीरिय–तुम्हारे द्वारा दूर करने के लिए; इवण्–यहाँ; वन्तेन्–आया; ऎन्ऱान्–कहा। ७२९

इससे मेरा मन जलता है। जलन नहीं मिटती। मैं मन मारे मरणोन्मुख दशा में हूँ। वे मेरे समान नहीं हैं; इसलिए उनके साथ लड़ने को मेरा मन नहीं मानता। पर बदला तो लेना ही है। उनके साथ एक स्त्री है। उसके अधर प्रवाल को भी सुन्दरता में मात देनेवाले हैं। वह लता के समान है। उसको तुम्हारी सहायता से हर लाना चाहता हूँ, ताकि मेरा यह अपयश छूटे! इसीलिए इधर आया हूँ। —रावण ने अपना अभिप्राय कहा। ७२९

इच्चॊ लनैत्तुञ् जॊल्लि यरक्क नॆरिहिन्ऱ
किच्चि नुरुक्किट् टुय्त्तन नॆन्नक् किळर्वान्मुन्
शिच्चि यॆनत्तन् मॆय्च्चॆवि पॊत्तित् तॆरुमन्दान्
अच्च महऱ्ऱिच् चॆऱ्ऱ मनत्तो डऱैहिन्ऱान् 730

अरक्कन्–रावण ने; ऎरिकिन्ऱ किच्चिन्–जलती आग में; उरुक्कु इट्टु–इस्पात गलाकर; उय्त्तनन् ऎन्न–गरम द्रव को कानों में डाला हो, ऐसा; इ चॊल् अनैत्तुम्–यह सारा वचन; चॊल्लि–कहकर; किळर्वान् मुन्–उकसानेवाले के सामने; ची ची ऎन–छिः छिः कहकर; तन् मॆय् चॆवि पॊत्ति–अपने कानों पर हाथ रखकर; तॆरुमन्तान्–गड़बड़ाकर; अच्चम् अकऱ्ऱि–फिर भय त्यागा; चॆऱ्ऱ मनत्तोटु–क्रुद्ध मन के साथ; अऱैकिन्ऱान्–बोला। ७३०

ये शब्द मारीच के कानों में पिघलते इस्पात के समान पड़े। रावण ने ये वचन कहकर उसको उकसाया। तब मारीच ने अपने दोनों हाथ दोनों कानों में धर लिये। कहा— छिः छिः! वह पहले गड़बड़ाया। फिर भय त्यागकर कोप के साथ वह यों बोला। ७३०

मन्ना नीयुन् वाळ्वै मुडित्ताय् मदियऱ्ऱाय्
उन्ना लन्ऱी दूळ्विनै यॆन्ऱे युणर्हिन्ऱेन्
इन्ना वेनुम् यानिदु रैप्पॆ निदमॆन्ताच्
चॊन्ना नन्ऱे यन्तव नुक्कुत् तुणिवॆल्लाम् 731

मन्ना–राजा; नी उन् वाळ्वै मुटित्ताय्–तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली; ऊळ् मति अऱ्ऱाय्–बुद्धि-हीन हो गये; ईतु उन्ताल् अन्ऱु–यह तुम्हारा कृत्य नहीं; ऊळ् विनै ऎन्ऱे–प्रारब्ध ही; उणर्किन्ऱेन्–समझता हूँ; इन्ना एनुम्–बुरा लगे तो भी;

यान्–मैं; इतम् इतु–हित यह; उरैप्पॅन्–बताऊँगा; ॲन्ऩा–कहकर; अन्ऩवन्ऩुक्कु–उसे; तुणिव् ॲल्लाम्–सारा हितकर उपदेश के वचन; चॊन्ऩान्–कहे; (अन्ऱु–ए)। ७३१

हे राजा ! बस ! तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली। बुद्धि खो चुके। मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारा काम नहीं; वरन् प्रारब्ध का तकाज़ा है। मेरा कहना तुमको बुरा लगेगा; तो भी तुमको हित की बात कहूँगा। —ऐसा कहकर मारीच ने रावण को अच्छी बातों का सब उपदेश किया। ७३१

अऱ्ऱ करत्तो डुन्ऱलै नीये यनन्मुन्निल्
पऱ्ऱिनै युय्त्ताय् पऱ्पल कालम् पशिहूर
उऱ्ऱुयि रुळ्ळे तेय वुलन्दाय् पिनैयन्ऱो
पॅऱ्ऱनै शॅल्वम् पिन्नि दिळन्दार् पॅऱलामो 732

अऱ्ऱ–खण्डित; करत्तोटु उन् तलै–अपने हाथ के साथ सिर को; अनल् मुन्निल्–(होम की) अग्नि में; नीये पऱ्ऱिनै उय्त्ताय्–स्वयं पकड़कर तुमने होम किये; पल् पल कालम्–बहुत समय तक; पचि कूर उऱ्ऱु–बहुत भूख से पीड़ित रहकर; उळ्ळै उयिर् तेय–अन्दर प्राणों के क्षीण होते; उलन्ताय्–कष्ट उठाया (तप किया); पिनै अन्ऱो–बाद तो; चॅल्वम् पॅऱ्ऱनै–(त्रिलोकाधिपत्य की) सम्पत्ति पायी; इऴन्ताल्–खो जाओ तो; पिन् इतु पॅऱल् आमो–फिर पाना हो सकता है क्या। ७३२

तुमने अपने ही खण्डित हाथ और सिरों को अपने ही हाथ से होमाग्नि में होम किया। कितने ही लम्बे काल तक भूखा-प्यासा रहकर, प्राणों को क्षीण होने देते हुए कठोर कष्ट सहे। तभी जाकर यह सारी विभवश्री तुम्हारी हुई ! (त्रिलोकाधिपत्य भी मिला।) तुम अब इसको खो जाओ तो पुनः प्राप्त हो सकता है क्या ? । ७३२

तिऱत्तिऱ नाले शॅय्दव मुऱ्ऱित् तिरुवुऱ्ऱाय्
मऱत्तिऱ नाले शॊल्लुदि शॊल्लाय् मऱैवल्लोय्
अऱत्तिऱ नाले यॅय्दिनै यन्ऱो वदुनीयुम्
पुऱत्तिऱ नाले पिन्नु मिऴक्कप् पुहुवायो 733

चॊल् आय् मऱै–निरुक्तांगी वेद में; वल्लोय–निपुण; तिऱम् तिऱन् आले–समर्थ सामर्थ्य से; चॅय् तवम् मुऱ्ऱि–करणीय सभी तप पूरा करके; तिरु उऱ्ऱाय्–यह सारा वैभव पाया; मऱ तिऱन् आले–धर्म-विरुद्ध बल से; चॊल्लुति–यह बात कहते हो; अऱ तिऱत्ताले–धर्म-सम्मत बल से; ॲय्तिनै अन्ऱो–(यह विभुता) पायी न; अतु–वह; पुऱ तिऱत्ताले–धर्म-विरुद्ध बल से; पिन्नुम् इऴक्क–उसको फिर से खोने के लिए; पुकुवायो–इस काम में प्रविष्ट होओगे क्या। ७३३

निरुक्त-सहित वेद के विशारद ! समर्थ सामर्थ्य के साथ, करणीय तप आदि करके तुमने यह सम्पत्ति पायी है। अब अधार्मिक बल हो गया है, उससे तुम यह बात कह रहे हो। यह सारा वैभव तुमने धर्म-मार्ग

पर चलकर ही प्राप्त किया था। अब इसे अधार्मिक कार्य करके खोना चाहोगे क्या ? । ७३३

नारङ् गॉण्डार् नाडु कवर्न्दार् नडैयिल्ला
वारङ् गॉण्डार् मर्रॉरु वर्काय् मनैवाळुम्
तारङ् गॉण्डा रॅन्रिवर् तम्मैत् तरुमन्दान्
ईरुङ् गण्डाय् कण्डह रुय्न्दा रॅवरैया 734

ऐया–प्रभु; नारम् कॉण्टार्–जल हरनेवाले; नाटु कवर्न्तार्–राज्य छीननेवाले; नटै इल्ला–प्रथा के विरुद्ध; वारम् कॉण्टार्–प्रजा से कर लेनेवाले; मर्रु ऑरुवर्कु आय्–दूसरे की गृहिणी बनकर; मनै वाळुम्–उसके घर में रहनेवाली; तारम् कॉण्टार्–उसकी पत्नी को हर लानेवाले; ॲन्रु इवर् तम्मै–ऐसे इन लोगों को; तरुमम् तान्–धर्मदेवता स्वयं; ईरुम्–काट कर मार देता है; कण्टकर् उय्न्तार्–पापी बचे; ॲवर्–कौन; कण्टाय्–देखा । ७३४

प्रभु ! तुम सोचो। पराया जल हरनेवाला, राज्य छीननेवाला, अक्रम कर उगाहनेवाला, परदारा ग्रसनेवाला —इनको धर्मदेवता स्वयं आकर मिटा देगा। पापी कौन नाश से बचा है अब तक, सोचो । ७३४

अन्दर मुर्रा नहलिहै पोर्पा लळिवुर्रान्
इन्दिर नॉप्पा रॅत्तनै योर्दा मियलर्रार्
शॅन्दिरु वॉप्पा रॅत्तनै योर्नित् रिरुवुण्बार्
मन्दिर मर्रा रुर्रु दुरैत्ताय् मदियर्राय् 735

अन्तरम् उर्रान्—सुरलोकाधिपति; अकलिकै पोर्पाल्–अहल्या के सौंदर्य से; अळिवु उर्रान्–बिगड़ा; इन्तिरन् ऑप्पार्–इन्द्र-सम; ॲत्ततैयोर् ताम्–कितनों ही ने; इयल् अर्रार्–गौरव खोया; चॅम् तिरु ऑप्पार्–सुन्दर लक्ष्मी-सम स्त्रियाँ; ऑत्ततैयोर्–कितनी ही; निन् तिरु उण्पार्–तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं; मन्तिरम् अर्रार्–विचार-शक्ति से हीन लोगों की; उर्रतु–(सी) बात; उरैत्ताय्–कहते हो; मति अर्राय्–बुद्धिहीन हो । ७३५

सुरलोकाधिपति इन्द्र अहल्या के सौन्दर्य से (आकृष्ट होकर) संकट में पड़ा। इन्द्र के समान कितने ही लोग अपना गौरव खो चुके हैं ! (तुम्हारे पास स्त्रियों की कमी है क्या ?) लक्ष्मी-सम कितनी ही सुन्दरियाँ तुम्हारे पास रहकर तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं ! फिर विवेक-हीन मनुष्य की अच्छी मन्त्रणा जिसे मिली नहीं हो उसकी बात कहते हो ! साफ़ है कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है । ७३५

शॅय्दा येतुन् दीविनै योडुम् वळियल्ला
दॅय्दा दॅय्दि तिराम तुलहीतुर्रान्

वेंदा लन्न वाळिहळ् कॊण्डुत् वळियोडुम्
कॊय्दा नन्ऱे कॊऱ्ऱ मुडित्तुन् कुळुवॆल्लाम् 736

चॆय्ताय् एनुम्–यह करोगे तो भी; तीविनै ओटुम्–पाप के साथ; पळि अल्लातु–**अपयश से हीन;** ऎय्तातु–जो है, वह मिले विना; ऎय्तातु–नहीं रहेगा; ऎय्तिन्–(**तुम्हारा संकल्प**) पूरा होगा तो भी; उलकु ईन्ऱान् इरामन्–लोक-जनक श्रीराम ने; **वेताल् अन्न**–(मुनि-) शापों के समान; वाळिकळ् कॊण्टु–शरों से; उन् वळि ओटुम्–**तुम्हारी संतति** के साथ; कॊऱ्ऱम् मुटित्तु–शक्ति मिटाकर; उन् कुळु ऎल्लाम्–**तुम्हारा दल और बल;** कॊय्ताऩ् अन्ऱे–मिटा दिया न, समझो। ७३६

अगर तुम यह काम करोगे तो यह निश्चित है कि पाप और अपयश के सिवा कुछ नहीं मिलेगा; नहीं ही मिलेगा। तुम्हारा मनोरथ पूरा हो गया तो भी यह निश्चय समझ लो कि लोकपिता श्रीराम ने अपने मुनि-शाप-सम अमोघ बाणों से तुम्हारी संतति के साथ तुम्हारा सारा दल-वल मिटा दिया! । ७३६

ऎन्ऱा नॆन्ने यॆण्णलै योनी करनॆन्बान्
निन्ऱा नैक्कु मेलुळ नॆन्नु निलैयम्मा
तन्ऱा नैत्तन् ऱेरॊडु माळत् तनुवॊन्ऱाल्
कॊन्ऱान् मुऱ्ऱुङ् गॊल्ल मनत्तिऱ् कुऱिहॊण्डान् 737

करन् ऎन्पान्–खर जो था; निन् तानैक्कुम् मेल्–तुम्हारी सेवा का नायक; **ऎन्नुम् निलै उळन्–उस पद में रहा न;** तन् तानै–अपनी सेना; तन् तेर् ऒटुम्–**अपने रथ के साथ; माळ–मर मिटे, ऐसा;** तनु ऒन्ऱाल्–एक ही धनु से; **कॊन्ऱान्–श्रीराम ने मारा;** मुऱ्ऱुम्–सारा वंश; कॊल्ल–मिटाने का; मनत्तिल् कुऱि कॊण्टान्–**मन में संकल्प रखता है;** ऎन्ने–क्या ही आश्चर्य है; ऎन् तान् नी ऎण्णलैयो–**क्यों ही तुमने यह बात नहीं सोची;** अम्मा–री माँ। ७३७

खर क्या मामूली राक्षस था? वह तुम्हारी सेना में नायक का पद वहन करता था। श्रीराम ने एक ही धनु की सहायता से उसका उसकी सेना और रथ सहित काम तमाम किया। और उसका यही संकल्प है कि राक्षसकुल को ही मिटा दूँ। यह क्या आश्चर्य है! तुमने यह सब क्यों नहीं सोचा? माँ! कैसी बुद्धिहीनता है! । ७३७

वॆय्योर् यारे वीर विरादन् ऱुणैवॆय्योर्
ऐयो पोना नम्बॊडु मुम्बरक् कवनॆन्ऱाल्
उय्वार् यारे नम्मि लॆनक्कॊण् डुणर्दोरुम्
नैया निन्ऱे नीयि दुरैत्तु नलिवायो 738

वॆय्योर्–कठोर वीरों में; वीर विरातन् तुणै–वीर विराध जितना; **वॆय्योर् यारे–भयंकर कौन हैं;** अवन्–वह भी; **ऐयो–हाय;** अम्पॊटुम्–राम के बाण के **साथ;** उम्पर्क्कु पोतान्–आकाश को चला गया; **ऎन्ऱाल्–तो;** नम्मिल् उय्वार्

यारे–हममें बचेगा कौन; ऍन्त कॉण्टु–यह सोचकर; उणर् तोङम्–ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ, त्यों-त्यों; नैया निऩ्ऱेऩ्–विगलित होता हूँ; नी इतु उरैत्तु–तुम यह कहके; नलिवायो–और भी सताते हो क्या। ७३८

बड़े भयंकर और क्रूर वीरों में वीर विराध के समान अति बलिष्ठ वीर कौन होगा ? हाय ! वह विराध भी श्रीराम के एक ही शर से, उस शर के साथ ही स्वर्ग पहुँच गया न ! तो हममें कौन ठहर सकता है ? यही सोच-सोचकर मैं व्यग्र हो रहा हूँ। शिथिल हो रहा हूँ। तुम यह बात कहकर और भी निर्बल कर रहे हो मुझे। ७३८

माण्डार् माण्डार् नीयिऩि माळ्वार् तॊऴिल्शॆय्य
वेण्डा वेण्डा शॆय्दिडि नुय्वात् विदियुण्डो
आण्डा राण्डा रॆत्तनै यॆऩ्गे नऱ्ऩाळार्
ईण्डा रीण्डार् निऩ्ऱव रॆल्ला मिलरऩ्ऱो 739

माण्टार् माण्टार्–जो मरे, वे मर गये; नी इति–तुम अब भी; माळ्वार् तॊऴिल्–मरणासक्त का काम; चॆय्य वेण्टा तेण्टा–मत करो, मत करो; चॆय्तिटिऩ्–करोगे तो; उय्वात् विति–बचने का रास्ता; उण्टो–है क्या; आण्टार् आण्टार्–शासक (के बाद) शासक; ऍत्तनै–कितने (मरे); ऍऩ्केऩ्–कहूँ; अऱऩ् आळार्–धर्म का जिन्होंने पालन नहीं किया; ईण्टार् ईण्टार्–चिरकाल नहीं रहेंगे, नहीं रहेंगे; निऩ्ऱवर् ऍल्लाम्–जो रहे वे भी; इलर् अऩ्ऱो–अब नहीं रहे न। ७३९

जो चल बसे वे तो चले गये। तुम यह काम करके मरण का वरण मत करो। करोगे तो जीवित बचने का कोई मार्ग नहीं होगा। राजा के बाद राजा, कितने ही राजा मरे हैं, उनकी संख्या क्या कहूँ ? जो धर्म का पालन नहीं करते वे बहुत काल नहीं जीते, नहीं जीते। जो रहे वे सारे यम के मेहमान हो गये। अब नहीं रहे न ? । ७३९

ऍम्बिक् कुम्मॆ ऩऩ्ऩै तऩक्कु मिऱुतिक्कोर्
अम्बुय्क् कुम्बोर् विल्लि तऩक्कु मयऱिऱ्कुम्
तम्बिक् कुम्मॆऩ् ऩाण्मै तविर्न्दे तळर्वुऱ्ऱेऩ्
कम्बिक् कुम्मॆऩ् ऩॆञ्जव ऩॆऩ्ऱे कवल्हिऩ्ऱेऩ् 740

ऍम्पिक्कुम्–मेरे कनिष्ठ को; ऍऩ् अऩ्ऩै तऩक्कुम्–मेरी माता को; इऱुतिक्कु–अन्त करने के लिए; ओर् अम्पु उय्क्कुम्–जिसने एक बाण चलाया; पोर् विल्लि तऩक्कुम्–उस युद्धकुशल धनुर्धर श्रीराम; अयल् निऱ्कुम्–और उसका पार्श्व; तम्पिक्कुम्–कनिष्ठ भ्राता के सामने; ऍऩ् आण्मै तविर्न्ते–अपना पौरुष हारकर; तळर्वु उऱ्ऱेऩ्–शिथिल हो गया; ऍऩ् नॆञ्चु–मेरा मन; कम्पिक्कुम्–काँपता है; अवऩ् ऍऩ्ऱे–वही राम (तुम्हारा शत्रु हो गया, यह समझकर); कवल्किऩ्ऱेऩ्–व्याकुल हूँ। ७४०

श्रीराम बड़ा ही युद्धनिपुण धनुर्धर है। उसने मेरे छोटे भाई और

माता (ताड़का) को मौत के घाट उतारने के लिए एक-एक ही बाण चलाया था। ऐसे उसके और उसके पार्षद लक्ष्मण के सामने अपना बल हारकर मैं निर्बल हुआ। अब भी उनकी बात सोचता हूँ तो मेरा मन कम्पित हो जाता है। अब मेरी चिन्ता यही है कि वही तुम्हारा शत्रु बन गया है ! । ७४०

निऩ्ऱुम् जॆऩ्ऱुम् वाऴ्वऩ यावु निलैयावाल्
पोऩ्ऱु मॆऩ्ऩु मॆय्म्मै युणर्न्दोय् पुलैयाडऱ्
कॊऩ्ऱु मुऩ्ऩा यॆऩ्ऩुरै कॊळ्ळा युयर्शॆल्वत्
तॆऩ्ऱु मॆऩ्ऱु वैहुदि यैया विऩ्ऱियॆऩ्ऱाऩ् 741

ऐया–तात; निऩ्ऱुम् चॆऩ्ऱुम्–अचल और चल; वाऴ्वऩ यावुम्–जीव सभी; निलैया–मर्त्य हैं; पोऩ्ऱुम्–मर जायेंगे; ऍऩ्ऩुम् मॆय्म्मै–यह सत्य; उणर्न्तोय्–जानते हो; पुलै आटऱ्कु–यह नीच काम करना; ऑऩ्ऱुम् उऩ्ऩाय्–कुछ मत सोचो; ऍऩ् उरै कॊळ्ळाय्–मेरा वचन मानो; इऩ्ऱि–आगे भी; उयर् चॆल्वत्तु–ऊँचे वैभव के साथ; ऍऩ्ऱुम् वैकुति–सदा रहो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (मारीच ने) । ७४१

हे तात ! इस संसार में चल या अचल कोई भी जीव या जन्तु स्थायी रूप से रहनेवाला नहीं है। यह तथ्य तुम जानते ही हो। ऐसे तुम यह पाप का खेल क्यों करना चाहते हो ? किञ्चित भी यह बात मत सोचो। मेरी बात मान लो। अपार वैभवयुक्त पद में हो आगे भी सदा उसी में रहो। मारीच ने ये सारी बातें कहीं। ७४१

कङ्गैशडै वैत्तव ऩोडुङ्गयिलै वॆऱ्पोर्
अङ्गैयि लॆडुत्तवॆऩ दाडॆऴिऩ् मणित्तोळ्
इङ्गॊरॆमऩि दऱ्कॆळिय वॆऩ्ऱऩै यॆऩत्तऩ्
वॆङ्गणॆरि यप्पुरुव मीदुऱ विडैत्ताऩ् 742

कङ्कै चटै वैत्तवऩ् ओटुम्–जटा में गंगाधारक के साथ; कयिलै वॆऱ्पु–उनके कैलासपर्वत को; ओर् अम् कैयिल्–एक हथेली पर; ऍटुत्त–जिन्होंने उठाया; ऍऩ्तु–मेरे; आटु–युद्धोत्साही; ऍऴिल् मणि तोळ्–सुन्दर श्रेष्ठ भुजाएँ; इङ्कु ओर् मऩितऩ्ऱ्कु–यहाँ एक मनुष्य के लिए; ऍळिय ऍऩ्ऱऩै–सुगम हैं, कहा; ऍऩ–कहकर; वॆम् कण् ऍरिय–भयंकर आँखों से आग निकालते हुए; पुरुवम् मीतु उऱ–भौंहों को ऊपर उठाते हुए; विटैत्ताऩ्–डाँट बतायी । ७४२

रावण को ये बातें कैसे पसन्द आतीं ? उसने डाँट बतायी। अपनी जटा में गंगाधारक शिवजी के कैलास को उनके साथ मैंने अपनी हथेली में उठाया था। तुम कहते हो ऐसी मेरी प्रबल, सुन्दर और युद्धोत्साही भुजाएँ इस अल्प मनुष्य के सामने तुच्छ हैं ! यह कहते वक्त उसकी आँखों से अंगार छूटे और भौंहें तनकर भाल पर चढ़ गयीं। ७४२

निहळ्न्ददै नित्तैक्किलैयेन् नेञ्जिनिलै यञ्जा
दिहळ्न्दनै यॆन्तक्किळैय नङ्गैमुह मॆङ्गुम्
अहळ्न्दवरै यॊप्पुर वमैत्तवरै यैया
पुहळ्न्दनै तनिप्पिळै पॊरुत्तनॆनॆ दॆन्ड्रान् 743

ऐया–प्रभु; निकळ्न्ततै–जो घटा; नितैक्किलै–वह नहीं सोचते; अञ्चातु–विना डर के; ऍन् नॆञ्चिन् निलै–मेरे हृदय की स्थिति की; इकळ्न्ततै–निन्दा की; ऍन्तक्कु इळैय नङ्कै–मेरी छोटी बहिन के; मुकम् ऍङ्कुम्–मुख-भर में; अकळ्न्त वरै–खुदे हुए पर्वत के; ऑप्पु उऱ–समान हो, ऐसा; अमैत्तवरै–जिन्होंने बनाया, उनको; पुकळ्न्ततै–प्रशंसा की; इतु तनि पिळै–यह बहुत बड़ा अपराध है; पॊरुत्तनॆन्–क्षमा की मैंने; ऍन्ड्रान्–कहा। ७४३

हे तात! तुमने जो हुआ उसका विचार नहीं किया। विना भय के मेरी चित्त-स्थिति को हेय बताया। मेरी छोटी बहिन का चेहरा खुदे हुए गढ़े-सहित पर्वत के समान हो गया। वैसा जिसने बनाया उस मनुष्य की मुझसे प्रशंसा करते हो। यह बड़ा भारी अतुलनीय अपराध है। तो भी तुम्हें क्षमा करता हूँ। ७४३

तन्नैमुनि वुऱ्ऱदरु कट्टहवि लोनैप्
पिन्नैमुनि वुऱ्ऱिडुमॆ नत्तविर्दल् पेणान्
उन्नैमुनि वुऱ्ऱुनुगु लत्तैमुनि वुऱ्ऱाय्
ऍन्नैमुनि वुऱ्ऱिलैयि दॆन्नॆन विशैत्तान् 744

तन्नै मुनिवु उऱ्ऱ–अपने पर कोप करनेवाले; तऱुकण्–निडर; तकवु इलोनै–अयोग्य को; पिन्नै मुनिवु उऱ्ऱिटुम्–फिर भी कोप करेगा; ऍन्त–यह सोचकर; तविर्तल् पेणान्–छोड़ना न चाहते हुए; ऍन्नै मुनिवु उऱ्ऱिलै–मुझ पर गुस्सा नहीं किया पर; उन्नै मुनिवु उऱ्ऱु–अपने से ही आक्रोश करते; उन् कुलत्तै मुनिवुऱ्ऱाय्–अपने वंश पर क्रोध करते हो; इतु ऍन् ऍन्त–यह क्या है; इचैत्तान्–कहा। ७४४

मारीच ने सोचा। रावण मुझ पर क्रोध करता है। वह निडर अयोग्य राक्षस और भी गुस्सा करेगा। तो भी भय के कारण उसने उपदेश देने से विरत होना नहीं चाहा। उसने कहा कि रावण! अब तुम मुझ पर क्रोध जो करते हो उसका अर्थ है तुम अपने पर गुस्सा करते हो और अपने कुल पर गुस्सा करते हो! यह कार्य तुम क्यों करते हो भाई!। ७४४

ऍडुत्तमलै येनित्तैयि तीशनिहल् विल्ला
वडित्तमलै नोयिदुव लित्तियॆन वारिप्
पिडित्तमलै नाणिडैप् पिणित्तॊरुवन् मेनाळ्
ऑडित्तमलै यण्डमुह डुऱ्ऱमलै यन्ड्रो 745

अॅटुत्त मलैये–तुमने पर्वत उठाया, उसी पर्वत को; नितैयित्–याद करते रहो तो; इतु ईचन् इकल् विल्लाय्–यह ईश्वर के युद्ध के लिए धनु; वटितृत मलै–बनाया गया पर्वत है; नी इतु वलित्ति–तुम इसे झुकाओ; अॅन्न–कहने पर; मेल् नाळ्–पहले; ऑरुवन्–एक मानव से; वारि–उठाकर; पिटित्त मलै–हाथ में जो पकड़ा गया वह पर्वत; नाण् इटै पिणितृतु–प्रत्यंचा से बद्ध खींचने के मध्य; ऑटित्त मलै–तोड़ा गया पर्वत; अण्टम् मुकटु उऱ्ऱ–आकाश की चोटी तक गया; मलै अन्ऱो–मेरुपर्वत नहीं है क्या। ७४५

तुमने जो उठाया उसी कैलासपर्वत की याद में भूले हुए हो। ईश्वर शिव ने मेरुपर्वत का ही धनु बनाया था। उसको झुकाने की आज्ञा दी विश्वामित्र ने। तो राम ने उस पर्वत को प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाते वक्त तोड़ दिया था। वह पर्वत कौन सा था। जानते हो ! (तुमने तो हिमालय के एक छोटे से शिखर को उठाया था !) राम ने जो उठाकर तोड़ा वह आकाश-स्पर्शी और श्रेष्ठ पर्वत था ! । ७४५

यादुमऱि यायुरैहों ळायिहलि रामन्, कोदैबुनै यामुनुयिर् कॉळ्ळैबडु मन्ऱे
पेदैमदि यालिदुवोर् पॅण्णुरुव मॅन्ऱाय्, शोदेयुरु वोनिरुदर् तीविनैय दन्ऱो 746

यातुम् अऱियाय्–कुछ नहीं जानते; उरै कॉळाय्–उपदेश ग्रहण न करोगे; इकल् इरामन्–युद्धसमर्थ श्रीराम; कोतै पुनैयामुन्–युद्ध के लिए हाथ में दस्ताना पहनने के पूर्व ही; उयिर् कॉळ्ळै पटुम् अन्ऱे–हमारे प्राण छूट जायँगे न; पेतै मतियाल्–जड़ मति के कारण; इतु ऑरु पॅण् उरुवम् अॅन्ऱाय्–यह स्त्री-रूप है, कहा; अतु चीतै उरुवो–वह सीता का रूप है क्या; निरुतर् ती विनैयतु–राक्षसों के पाप का रूप है; अन्ऱो–न। ७४६

तुम न खुद कुछ जानते हो, न मेरा उपदेश मानते हो ! यह जान लो कि श्रीराम के, जो युद्ध-प्रवीण है, हस्तत्राण (या माला) पहनने के पूर्व ही हमारे प्राण हर लिये जायँगे। तुम अपनी मन्दमति के कारण उसको स्त्री का रूप मानते हो ! वह क्या सीता का रूप है ? नहीं हमारे पापों का मूर्त-रूप है। ७४६

उञ्जुबिऴै यायुऱवि नोडुमॅन वुन्ना, नॅञ्जुबऱै पोदुमदु नीनिनैय हिल्लाय्
अञ्जुमॅन दारुयि रऱिन्दरुहु निन्ऱार्, नञ्जुनुहर् वारैयिदु नन्ऱॅन्लु नन्ऱे 747

उऱवितोटम् उञ्चु–परिवारों, बन्धु-बान्धवों के साथ बचकर; पिळैयाय्–जीवित नहीं रहोगे; अॅन्न–यह; उन्ना–सोचकर; नॅञ्चु पऱै पोतुम्–मेरा मन ढोल की खाल के समान थर्राता है; नी अतु नितैय किल्लाय्–तुम वह सोच नहीं पाते; अॅनतु आर् उयिर्–मेरे बहुमूल्य प्राण; अञ्चुम्–डरते हैं; नञ्चु नुकर्वारै–विष-खादक को; अऱिन्तु–(विष खाता) जानकर; अरुकु निन्ऱार्–पार्श्व में स्थित लोगों का; इतु नन्ऱु–यह (तुम्हारा विष खाना) अच्छा है; अॅन्ऩलुम्–कहना भी; नन्ऱे–अधिक अच्छा होगा। ७४७

जब मैं विचार करता हूँ कि तुम अपने परिवारों और बन्धुजनों के

साथ नष्ट हो जाओगे और नहीं बचोगे तो मेरा चित्त थर-थर काँपता है; जैसे पिटा ढोल। तुम वह सोचने में असमर्थ हो। मेरे प्यारे प्राण भी काँपते हैं। तुमको प्रोत्साहन दूँ तो उस काम से विषखादक को पास रहने वालों के, 'यह बड़ा अच्छा है' कहकर प्रोत्साहित करना भी अधिक भला होगा। ७४७

ईशऩ्मुद	लाहविरै	योरुलहु	मऱ्ऱैत्
तेशमुदऩ्	मुऱ्ऱुमो	रिमैप्पित्तुयिर्	तिऩ्ऩक्
कोशिह	ऩ्ळित्तहड	वुट्पडै	कौदिप्पो
डाशिल	कणिप्पिल	विरामऩरु	णिऱ्प 748

ईचऩ् मुतलाक–ईशानदेव आदि; इऱैयोर् उलकुम्–देवों के लोकों को; मऱ्ऱै–और अन्य; तेचम् मुतल्–देश आदि; मुऱ्ऱुम्–सारा; ओर् इमैप्पिल्–एक बार पलक मारती देर में; उयिर् तिऩ्ऩ–प्राण खाने (मिटाने) के लिए; कोचिकऩ् अळित्त कटवुळ् पटै–कौशिक से दत्त दिव्य अस्त्र; आचु इल–त्रुटिहीन; कणिप्पु इल–गणनाहीन; कौतिप्पोटु–उग्रता के साथ; इरामऩ् अरुळ्–श्रीराम की सेवा में; निऱ्प–खड़े हैं। ७४८

श्रीराम के पास कौशिक-दत्त अमोघ, त्रुटिहीन और अगणित अस्त्र हैं, जो ईशान के लोक से लेकर सारे देवताओं के लोक और अन्य लोकों को पल भर में समाप्त कर दे सकते हैं। वे श्रीराम की सेवा में उसकी आज्ञा के मुहताज खड़े हैं। ७४८

आयिरम	डऱ्कैयुडै	यातैमळु	वाळाल्
एयॆऩुमु	रैक्कुळुयिर्	शॆऱ्ऱवॆदि	रिल्लोऩ्
मेयतिऱऩ्	मुऱ्ऱुम्वरि	वॆञ्जिलैयि	ऩोडुम्
तायवऩ्व	लित्तहैमै	यामुरुत	हैत्तो 749

आयिरम्–सहस्र; अटल् कै–बलिष्ठ हाथों से; उटैयातै–युक्त कार्तवीर्य को; मळु वाळाल्–परशु के अस्त्र से; एय् ऎऩुम् उरैक्कुळ्–'रे' के उच्चारण करते समय के अन्दर; उयिर् चॆऱ्ऱ–जिसने प्राणहीन कर दिया; ऎतिर् इल्लोऩ्–उस अप्रतिद्वन्द्वी परशुराम का; मेय–प्राप्त; तिऱल् मुऱ्ऱुम्–सारा बल; वरि वॆम् चिलैयिऩ् ओटुम्–बन्धनयुक्त धनुष के साथ; तायवऩ्–परास्त जो किया उसका; वलि तकैमै–बल-पराक्रम; याम् उरु तकैत्तु ओ–हमारे कहने योग्य होगा क्या। ७४९

राम ने परशुराम के सारे बल को, उसके धनुष के साथ परास्त किया था। वह परशुराम क्या मामूली मनुष्य थे। सहस्र महाबली हस्तों से युक्त कार्तवीर्य को परशुराम ने 'रे' शब्द के उच्चारण समय के अन्दर अपने परशु के प्रहार से समाप्त किया था। ऐसे श्रीराम के बल का अनुमान या कथन हम करने योग्य हैं क्या? । ७४९

वेदनैशॆय् कामविड मेविडमॆ लिन्दाय्
तीदुरैशॆय् दायिनैय शॆय्हैशिदै वन्ऱो
मातुलन् मायमरबिन् मुन्दयुऱ वन्देन्
ईदुरैशॆय् देनिदनै यॆन्दैतविर् हॆन्ऱान् 750

वेतनै चॆय्–पीड़क; काम विटम् मेविट–काम रूपी विष चढ़ा और; मॆलिन्ताय्–क्षीण हो गये हो; तीतु उरै चॆय्ताय्–अनर्थ की बात करते हो; इनैय चॆय्कै–तुम्हारा यह काम; चितैवु अन्ऱो–नाश का है न; मातुलनुम् आय्–मामा बना हूँ और; उऱ मुन्नै वन्तेन्–बहुत पूर्व ही पैदा हुआ हूँ; ईतु उरै चॆय्तेन्–यह हितोपदेश किया; ऍन्तै–मेरे तात; इततै–(सीतापहरण का) यह (विचार); तविर्क–छोड़ दो; ऍन्ऱान्–कहा। ७५०

वेदनादायी काम-विष तुम पर चढ़ा है। इसलिए तुम तन से और (बुद्धि में भी) क्षीण हो गये हो। इसलिए अनुचित बातें कह रहे हो। सीतापहरण का काम हमारे नाश का काम नहीं हो जायगा ? मैं तुम्हारा मातुल हूँ; बहुत पहले पैदा हुआ, अतः तुमसे बड़ा हूँ। यह जो कहा, वह तुम्हारे हित का ही वचन है। मेरे तात ! इस बुरे विचार को त्याग दो। मारीच ने उसे समझाया। ७५०

ऍन्ऩवुरै यित्तनैयु मॆत्तनैयु मॆण्णिच्
चॊन्ऩवनै येशिन नरक्कर्पदि चॊन्नान्
अन्नैयुयिर् शॆऱ्ऱवनै यञ्जियुरै हिन्ऱाय्
उन्नैयॊरु वऱ्कॊरुव नॆन्ऩुणर्है नन्ऱो 751

ऍन्न–(मारीच के ऐसा) कहने पर; उरै इत्तनैयुम्–सभी उपदेशों पर; ऍत्तनैयुम् ऍण्णि–सभी तरह से विचार करके; चॊन्नवनै–वक्ता की; एचिनन्–निन्दा की; अन्नै उयिर् चॆऱ्ऱवनै–माता के प्राणघातक से; अञ्चि उरैकिन्ऱाय्–डरकर (छिपे) रहते हो; उन्नै–तुमको; ऒरुवऱ्कु ऒरुवन् ऍन्ऱु–वीर के मुकाबले में वीर; उणर्कै–समझना; नन्ऱो–ठीक होगा क्या; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; चॊन्नान्–कहा। ७५१

मारीच ने जो बातें कहीं, उन पर रावण ने खूब और सब तरह से विचार किया। पर उसे उनमें कोई सार नहीं लगा और क्रोध ही आया। राक्षसपति ने उपदेशक की निन्दा की। कहा— तुम डरपोक हो ! माता के मारक से डरकर तपस्या का बहाना करते हुए यहाँ छिपे रहते हो ! तुम्हें वीर के समान वीर कहना मान्य कैसे हो सकता है ? । ७५१

तिक्कय मॊळिप्पनिलै तेवर्हॆड वानम्
पुक्कव रिरुक्कैबुहै वित्तुलहम् यावुम्
शक्कर नडत्तुमॆनै योतयर दन्ऱन्
मक्कणलि हिऱ्परिदु नन्ऱुमदि यन्ऱो 752

तिक्कयम् ऑळिप्प–दिग्गजों को छिपने को विवश करते हुए; तेवर् निलै कॅट– देवों को अस्त-व्यस्त करते हुए; वानम् पुक्कु–देवलोक में जाकर; अवर् इरुक्कै पुकैवित्तु–उनके स्थान को जलाकर धुएँ से भरकर; उलकम् यावुम्–सारे लोकों पर; चक्करम् नटत्तुम्–आज्ञाचक चलानेवाले; ॲन्नैयो–मुझे क्या; तयरतन् तन् मक्कळ्–दशरथ के छोटे; नलिकिऱ्पर्–कष्ट देंगे; इतु नन्ऱु मति अन्ऱो–यह बड़ी अच्छी समझ है न। ७५२

मुझे दशरथ के छोटे कष्ट देंगे? मुझे, जिसने दिग्गजों को भयभीत करके छिपने को विवश किया; जिसने स्वर्गलोक में घुसकर देवों को अस्त-व्यस्त कर उनके लोक में आग और धुआँ फैला दिया और जो सारे लोकों पर आज्ञाचक्र चला रहा हूँ, ऐसे मुझे वे त्रास देंगे? यह तुम्हारी सूझ भी बड़ी भली रही न! । ७५२

मूवुलहि नुक्कुमोरु नायह मुडित्तेन्
मेवलर् किडैक्किन्निदन् मेलिन्निय दुण्डो
एवल्शॅय हिऱ्ऱियॅन्न दाणैवळि यॅण्णिक्
कावल्शॅ यमैच्चर्कड नीकडव दन्ऱे 753

मू उलकित्तुक्कुम्–तीनों लोकों का; ओरु नायकम् मुटित्तेन्–निर्द्वन्द्व नायकत्व अपनाया; मेवलर् किटैक्किन्–ऐसे शत्रु मिलेंगे तो; इतन् मेल् इनियतु–इससे बढ़कर सुखद; उण्टो–कोई दूसरा है क्या; कावल् चॅय्–राज्यरक्षणकारी; अमैच्चर् कटन्–अमात्यों का कर्तव्य; नी कटवतु अन्ऱे–तुम उल्लंघन नहीं कर सकते; ॲन्नतु आणै वळि–मेरी आज्ञा के अनुसार; ॲण्णि–सोचकर; एवल् चॅय्किऱ्ऱि–सेवा करो। ७५३

मैंने तीन लोकों का निर्द्वन्द्व आधिपत्य कर लिया। ऐसे मेरे शत्रु हो जायँ तो उससे बढ़कर सुखदायी बात क्या हो सकती है? राज्यरक्षणरत अमात्यों का कर्तव्य राजा का अभिप्राय जानकर तदनुकूल कार्य करना है। तुम्हारा काम उसका अतिक्रमण करना नहीं है। मेरी आज्ञा सुनो, उसी के अनुकूल सोचकर सेवा करो। ७५३

मरुत्तनै यॅनप्पॅरिनु निन्नैवडि वाळाल्
ऑरुत्तुमत मुऱ्ऱु मुडिप्पॅन्नॊळि हिल्लेन्
वॅरुत्तन किळत्तलुरु मित्तॊळिलै विट्टॆन्
कुऱिप्पिन्वळि निऱ्ऱियुयिर् कॊण्डुळलि तॆन्ऱान् 754

मरुत्तनै ॲन पॅरिनुम्–इनकार भी करोगे तो; निन्नै–तुम्हें; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; ऑरुत्तु–मारकर; मतम् उऱ्ऱु–अपना मनमाना; मुडिप्पॅन्–कर लूंगा; ऑळिकिल्लेन्–त्यागूंगा नहीं; उयिर् कॊण्टु उळलिन्–प्राणसहित रहना चाहो तो; वॅरुत्तन–मेरी खीझ के; किळत्तल् उरुम्–वचन कहने का; इ तॊळिलै विट्टु–यह काम छोड़ो; ॲन् कुऱिप्पिन् वळि निऱ्ऱि–मेरी राय का मार्ग चलो; ॲन्ऱान्–कहा। ७५४

तुम इनकार भी करोगे तो क्या होगा ? मैं अपनी तीक्ष्ण तलवार से तुम्हारा काम तमाम कर दूँगा और अपना मनमाना कर लूँगा। यह कार्य विना किये नहीं छोड़ूँगा। इसलिए तुम जीवित फिरना चाहो तो मुझे खिझानेवाले उपदेश देना छोड़ो और मेरी इच्छा के अनुकूल सेवा करो। रावण ने निश्चित रूप से कह दिया। ७५४

अरक्कनः(ह्) दुरैत्तलोडु मरिन्दन नडङ्गु नॆञ्जन्
तरुक्किनर् कॅडुव रॅन्ऱ ऱत्तुव निलैयिऱ् ऱन्ऱो
शॆरुक्किनिऱ् ऱीरु मॆन्बार् तम्मिलार् शॆरुक्क रॆन्ना
उरुक्किय शॆम्बॊ नुऱ्ऱ नीर्मैया लुरैक्क लुऱ्ऱान् 755

अरक्कन्–राक्षस के; अ..तु उरैत्तल् ओटुम्–वह बात कहने पर; अऱिन्ततन्–(रावण का मन) जाना; अटङ्कु नॆञ्चन्–संयत-मन होकर; तरुक्किनर् कॅटुवर्–घमण्डी नष्ट होंगे; ऎन्ऱल्–यह कथन; तत्तुव निलैयिऱ्ऱु अन्ऱो–सत्य बनता है न; चॆरुक्कितिल्–गर्व से; तीरुम् ऎन्पार् तम्मिन्–नाश को प्राप्त होंगे, ऐसा जिन्होंने निश्चय किया है उनसे बढ़कर; चॆरुक्कर्–गर्वीले शत्रु; आर्–कौन हैं; ऎन्ना–सोचकर; उरुक्किय चॆम्पॊन्–पिघले हुए स्वर्ण; उऱ्ऱ नीर्मैयान्–की स्थिति में जो रहा, वह; उरैक्कल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ७५५

जब राक्षसराज रावण ने यह कहा तो मारीच ने रावण का स्वभाव सोचा और उसका निश्चय जान लिया। इसलिए उसने अपने मन को संयत कर लिया। सोचा— अभिमानी लोग अवश्य नष्ट होंगे। यह कथन सत्य बन गया है ! जो गर्व के कारण अपने को नष्ट कर लेने में तुले हैं, उनका उनसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं होता। वह स्वयं अपना नाश कर लेगा। मारीच अब पिघला-स्वर्ण-समान स्वच्छमन हो गया था। वह यों बोला। ७५५

उन्वयि नुऱुदि नोक्कि युणर्मैयि नुणर्त्ति नेन्मऱ्
ऱॆन्वयि निऱुदि नोक्कि यच्चत्ता लिशैत्ते नल्लेन्
नन्मैयुन् दीमै यन्ऱे नाशम्वन् दुऱ्ऱ नाळिल्
पुन्मैयि निन्ऱ नीराय् शॆय्वदु पुहऱि यॆन्ऱान् 756

उन् वयिन् उऱुति नोक्कि–तुम्हारा हित सोचकर; उणर्मैयिल् उणर्त्तितेन्–सच्चे दिल से समझाया; मऱ्ऱु–अलावा; ऎन् वयिन् इऱुति–मेरा अन्त; नोक्कि–समझकर; अच्चत्ताल्–डर से; इचैत्तेन् अल्लेन्–कहा नहीं; नाचम् वन्तु उऱ्ऱ नाळिल्–जब नाश आता है; नन्मैयुम् तीमै अन्ऱे–भला भी बुरा हो जाता है न; पुन्मैयिन् निन्ऱ नीराय्–नीचकर्मतत्पर रावण; चॆय्वतु पुकल्ति–मेरा कार्य कहो; ऎन्ऱान्–पूछा। ७५६

रावण ! मैंने तुमसे जो कहा वह तुम्हारे भले के लिए ही साफ़ मन के साथ कहा था। अपनी मृत्यु के डर से नहीं कहा था। जब नाश का

दिन आता है तब भला भी बुरा लगता है। हे नीचकार्यतत्पर रावण! तुम कहो— मैं क्या करूँ ? । ७५६

ॲन्ऱलु मॆळ्ळुन्दु पुल्लि येऱ्ऱिय वॆहुळि नीङ्गिक्
कुन्ऱॆन्नक् कुविन्द तोळाय् मारवेळ् कॊदिक्कु मम्बाल्
पॊन्ऱलि लिराम नम्बाऱ् पॊन्ऱले पुहळ्ण् डन्ऱो
तॆन्ऱलैप् पहैयाच् चॆय्द शीदैयैत् तरुदि यॆन्ऱान् 757

ॲन्ऱलुम्–कहते ही; एऱ्ऱिय वॆकुळि नीङ्कि–उठे क्रोध को दूर करके; ॲळ्ळुन्तु पुल्लि–उठकर आलिंगन करके; कुन्ऱु ॲन्न कुविन्त तोळाय्–पर्वतोन्नत कन्धों वाले; मार वेळ्–मारदेव के; कौतिक्कुम् अम्पाल्–सन्तापक अस्त्रों से; पॊन्ऱलिन्–मरने से; इरामन् अम्पाल्–राम-शर से; पॊन्ऱले–मरना; पुकळ् उण्टु अन्ऱो–प्रशंसा-योग्य है न; तॆन्ऱलै पकैयाय् चॆय्त–मलयपवन को जिसने मेरा शत्रु बना दिया; चीतैयै–उस सीता को; तरुति–लाओ; ॲन्ऱान्–कहा। ७५७

मारीच के ऐसा कहते ही रावण का उमँगा हुआ क्रोध थम गया। उसने उठकर मारीच का आलिंगन करके कहा— हे पर्वतोन्नत भुजाओं के मारीच! मैं सोचता हूँ कि कामदेव के संतापक शरों से मरने से राम-शर से मरना अधिक कीर्तिदायक होगा। इसलिए उस सीता को हर लाओ, जिसने मलयपवन को मेरा शत्रु बना दिया है, और उसे मेरे पास दे दो। ७५७

आण्डव ननैय कूऱ् वरक्करो रिरुव रोडुम्
पूण्डवॆन् मानन् दीरत् तण्डहम् पुक्क कालैत्
तूण्डिय शरङ्गळ् पायत् तुणैवर्पट् टुरुळ वञ्जि
मीण्डयान् शॆन्ऱु शॆय्युम् विनैयॆन्गोल् विळम्बु हॆन्ऱान् 758

आण्टु–तब; अवन् अनैय कूऱ्–उसके वह कहने पर; पूण्ट ॲन् मानम् तीर–(पहले) प्राप्त अपना अपमान पोंछने के लिए; अरक्कर् ओर् इरुवर् ओटुम्–दो राक्षसों के साथ; तण्टकम् पुकुन्त कालै–जब दण्डक पहुँचा, तब; तूण्टिय चरङ्कळ् पाय–उससे प्रेरित बाणों के लगने पर; तुणैवर् पट्टु उरुळ–मेरे साथी आहत हो लोटे और; अञ्चि मीण्ट–डरकर लौट आया; यान्–मैं; चॆन्ऱु चॆय्युम्–जाकर करूँ ऐसा; विनै ॲन् कोल्–कार्य क्या (रखा) है; विळम्पुक–कहो; ॲन्ऱान्–कहा। ७५८

यह सुनकर मारीच ने कहा कि पहले मैं राम से अपमानित हुआ। उस अपमान को पोंछने के हेतु मैं दो-एक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ गया था। राम के शर के लगने से वे दोनों लुढ़क गये। भय से मैं लौट गया। ऐसे मेरे लिए अब करने को क्या काम रहेगा? यह तो बताओ। ७५८

आयव ननैय कूऱ वरक्करहो नैय नीयदुन्
तायैया रुयिरुण् डानैक् कॉल्लयान् शमैनदु निन्ऱेन्
पोयैया पुणर्प्प दॅन्नै यॅन्बद् पौरुन्दिऱ् ऱॊन्ऱो
मायैयाल् वञ्जित् तन्ऱो वव्वुद लवळै यॅन्ऱान् 759

आयवन् अनैय कूऱ–उसके ऐसा कहने पर; अरक्कर् कोन्–राक्षसराज; ऐय–श्रेष्ठ पुरुष; नीयतु–हेय रीति से; उन् तायै–तुम्हारी माता के; आर् उयिर् उण्टानै–प्यारे प्राणों के घातक को; कॉल्ल–मारने के लिए; यान् चमैन्तु निन्ऱेन्–मैं कृत-संकल्प हूँ; पोय् ऐया पुणर्प्पतु ऍन्नै–जाकर तात क्या करूँ; ऍन्पतु–कहना; पॉरुन्तिऱ्ऱु ऑन्ऱो–उचित है क्या; अवळै–उसको; मायैयाल् वञ्चित्तु–वंचना से धोखा देकर; वव्वुतल् अन्ऱो–हर लाना ही है न; ऍन्ऱान्–कहा। ७५९

मारीच के ऐसा कहने पर राक्षसपति रावण ने कहा कि मामा! मैंने दृढ़ संकल्प कर रखा है कि मैं तुम्हारी माता के, हेयरीति से घातक राम को मार दूँ। तब वहाँ जाकर क्या करूँ —यह पूछना तुम्हारे लिए उचित नहीं लगता। उस सीता को वंचना से हर लाओ —यही करना उचित है न? ७५९

पुऱत्तिनि युरैप्प दॅन्ने पुरवलन् ऱेवि तन्नैत्
तिऱत्तुळि यन्ऱि वञ्जित् तॅय्दुदल् शिऱुमैत् तामाल्
अऱत्तुळ दॊक्कु मन्ऱे यमर्त्तलै वॅन्ऱु कॊण्डुन्
मऱत्तुऱै वळर्त्ति मन्न वॅन्नमा रीशन् शॊन्नान् 760

मन्न–राजा; इनि पुऱत्तु उरैप्पतु ऍन्ने–अब और कहना क्या है; पुरवलन् तेवि तन्नै–(लोक-) रक्षक राम की देवी को; तिऱत्तु उळि अन्ऱि–अपने बल से नहीं; वञ्चित्तु ऍय्तल्–कपट से प्राप्त करना; चिऱुमैत्तु आम् आल्–नीचता का होगा, इसलिए; अऱत्तुळतु ऑक्कुम् अन्ऱे–धर्म-सम्मत नहीं होगा न; अमर् तलै वॅन्ऱु कॊण्टु–युद्ध में (राम को) जीतकर (सीता को) लेकर; उन् मऱ तुऱै–अपनी वीरता का गौरव; वळर्त्ति–बढ़ा लो; ऍन्न–ऐसा; मारीचन् चॊन्नान्–मारीच ने कहा। ७६०

मारीच को यह हेय लगा। उसने नीति बतायी। राजा! ऐसा कहोगे तो फिर क्या कहा जाय? राजाराम की देवी सीता को अपनी वीरता से उठा लाना छोड़कर वंचना से हर लाना चाहते हो! यह तुम्हारे गौरव को हल्का कर देगा। इसलिए वह धर्मसम्मत नहीं होगा। युद्ध करो, राम को हराओ, सीता को लाओ। अपनी वीरता को बढ़ाओ। ७६०

आनव नुरैक्क नक्क वरक्करहो नवरै वॅल्लत्
तानैदान् वेण्डु मोवॅन् ऱडक्कवा डक्क वन्ऱो
एनैय रिऱक्किऱ् ऱानुन् दमियळा यिऱक्कु मन्ऱे
मानव ळाद लाले मायैयिन् वलित्तु मॅन्ऱान् 761

आत्तवन्–ऐसे उसके; उरैक्क–कहने पर; नक्क–हँसते हुए; अरक्कर् कोन्–राक्षसाधिपति; अवरै वॅल्ल–उसको हराने के लिए; तातै तात् वेण्टुमो–सेना भी चाहिए क्या; ॲन् तट कै वाळ्–मेरे विशाल हाथ का (चन्द्रहास) खड्ग; तक्कतु अन्रो–योग्य नहीं है क्या; मात्तवळ्–वह मनुष्य स्त्री; एतैयर् इऱक्किन्–(उन दोनों) दूसरों के मरने पर; तानुम् तमियळाय्–स्वयं अकेली बनकर; इऱक्कुम् अन्रे–प्राण त्याग देगी न; आतलाले–उसी कारण; मायैयिन् वलित्तुम् ॲन्ऱान्–माया से ले आयेंगे; ॲन्ऱान्–कहा। ७६१

अपने रास्ते पर आये मारीच का कथन सुनकर राक्षसपति रावण उसकी नासमझी पर हँसते हुए बोला। राम और लक्ष्मण को हराने के लिए सेना की भी आवश्यकता पड़ेगी क्या? मेरे विशाल हाथ में जो चन्द्रहास, तलवार है वह पर्याप्त नहीं होगी क्या? पर तुमने यह नहीं सोचा। वे दोनों मर जायँगे तो वह मानवी स्त्री अपने को अकेला समझ कर प्राण त्याग देगी न? इसी हेतु कहता हूँ कि उसे माया से हर लायँगे। ७६१

तेवियैत् तीण्डा मुन्न मिवन्ऱलै शरत्तिऱ् चिन्दिप्
पोवहै पुणर्प्प नॅन्ऱु पुन्दियाऱ् पुहल्हिन् ऱेऱ्कुम्
आवहै यायिऱ् ऱिल्लै यार्विदि विळैवै योर्वार्
एविय शॅय्द लल्ला लिल्लैवे ऱॊन्ऱॆन् ऱॆण्णा 762

तेविपै तीण्टा मुन्नम्–देवी को स्पर्श करने से पहले ही; इवन् तलै–इसके सिर; चरत्तिल् चिन्ति पो वकै–शर से गिराने का उपाय; पुणर्प्पन्–राम कर लेगा; ॲन्ऱु–ऐसा; पुन्तियाल् पुकल्किन्ऱेऱ्कुम्–बुद्धि से जानकर कहता हूँ, ऐसा मेरा भी; आ वकै–भला होने का उपाय; आ(ि)ऱु इल्लै–होता नहीं है; विति विळैवै–विधि का फल; आर् ओर्वार्–कौन जान सकता; एविय चॅय्तल् अल्लाल्–आज्ञा मानने के सिवाय; वेऱु ऑन्ऱु इल्लै–कोई दूसरा रास्ता नहीं; ॲन्ऱु ॲण्णा–ऐसा सोचकर। ७६२

मारीच बहुत दुःखी हुआ। यह मूर्ख नहीं जानता कि देवी सीता का स्पर्श करने के पूर्व ही श्रीराम ऐसा कार्य साध लेंगे कि इसके सिर उनके शरों से कटकर गिर जायँगे। यह मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार पर कहता हूँ। तो भी मेरा भी भला अब नहीं होता दिखता। विधि का विधान कौन जाने? अब मेरे सामने रावण के आज्ञा में कहे अनुसार करने के सिवा कोई मार्ग नहीं है। ऐसा सोचकर—। ७६२

ॲन्ऩमा मायम् यानिङ् गियऱ्ऱुव दियम्बु हॅन्ऱान्
पॊन्ऩिऩ्मा ऩाहिप् पुक्कप् पॊऩ्ऩैमाल् पुणर्त्तु हॅन्ऩ
अन्ऩदु शॅय्वॅ नॅन्ऩा मारीश ऩमैन्दु पोनान्
मिऩ्ऩुवे लरक्कर् कोनुम् वेऱॊरु नॅऱियिऱ् पोनान् 763

इङ्कु यात् अॅन्न मा मायम् इयर्रुवतु–यहाँ मैं क्या बड़ी माया करूँ; **इयम्पुक**–कहो; **अॅन्रान्**–कहा; **पॉन्तिन् मान् आकि पुक्कु**–स्वर्ण-हिरण बनकर वहाँ पहुँचकर; **अ पॉन्तै**–उस स्वर्ण-सुन्दरी को; **माल् पुणर्त्तुक**–मोहित कर दो; **अॅन्न**–कहा, तब; **अन्ततु चॅय्वॅन् अॅन्ता**–वह करूँगा, कहकर; **मारीचन् अमैन्तु पोनान्**–मारीच सम्मत होकर गया; **मितृतुम् वेल्**–चमकदार भाला के; **अरक्कर् कोनुम्**–राक्षसराज भी; **वेरु ऑरु नॅरियिल् पोनान्**–दूसरे मार्ग से गया। ७६३

मारीच ने रावण से पूछा कि अब मैं क्या बड़ा माया-कार्य करूँ ? तुम्हीं बताओ। तो रावण ने कहा— तुम स्वर्णमृग बनकर वहाँ जाओ। और उस स्वर्णसुन्दरी सीता को मोह में डाल दो। मारीच ने सम्मत होकर कहा कि हाँ ! वैसा ही करूँगा। चमकदार भालाधारी रावण भी दूसरे मार्ग से निकल गया। ७६३

❀ **मेनाळवर् विल्वलि कण्डमैयाल्, तानाह निनैन्दु शमैन्दिलनाल्**
मानाहुदि यॅन्रवन् वाळ्वलियाल्, पोनान्मन मुञ्जॅय लुम्बुहल्वाम् 764

मेल् नाळ्–पहले; **अवर् विल् वलि**–उनके धनु की शक्ति; **कण्टमै याल्**–देखी थी, इसलिए; **तान् आक**–स्वयं; **निनैन्तु चमैन्तिलन्**–यह उपाय सोचकर तैयार नहीं हुआ; **मान् आकुति**–मृग बनो; **अॅन्रवन्**–यह जिसने कहा, उस रावण की; **वाळ् वलियाल्**–तलवार की शक्ति से (डरकर); **पोनान्** जो गया उसका; **मनमुम्**–मन और; **चॅयलुम्**–कार्य; **पुकल्वाम्**–बखानेंगे। ७६४

अब मारीच को राम-धनुष का बल खूब स्मरण रहा। उसने पहले उसका अनुभव किया था। इसलिए वह कदापि स्वयं मृग का रूप लेकर वहाँ जाने को सम्मत नहीं होता। पर रावण की तलवार का वार पड़ने का डर था। उसने कहा कि मृग बनो। इसीलिए वह सहमत हुआ। ऐसे उसका मन कैसा व्याकुल था और कार्य कैसे थे —उसका हम अब वर्णन करेंगे। ७६४

❀ **वॅञ्जुर्र निनैत्तुहम् वीररैवे, रञ्जुर्रु मरुक्कुरु माळ्हुळिनीर्**
नञ्जुर्रुळि मीनिनडुक् कुरुवान्, नॅञ्जुर्रदोर् पॅर्रि निनैप्परिदाल् 765

वॅम् चुर्रम् निनैत्तु–प्यारे बन्धु-बान्धवों की हालत सोचकर; **उकुम्**–विगलित हुआ; **वेरु**–और भी; **वीररै अञ्चु उर्रु**–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण से) डरकर; **मरुक्कु उरुम्**–घबड़ा जाता; **आळ् कुळि**–गहरे गढ़े का; **नीर् नञ्चु उर्रुळि**–जल जब विषाक्त हो जाता है; **मीनिन्**–तब उसमें रही मछली-जैसा; **नटुक्कु उरुवान्**–छटपटाया; **नॅञ्चु उर्रतु ओर् पॅर्रि**–उसके मन का जो हुआ; **निनैप्पु अरितु**–वह सोचना भी कठिन है। ७६५

उसका मन अपने भाई-बन्धुओं का भावी नाश सोचकर बहुत व्यग्र हुआ। और भी उन वीरों की वीरता का विचार कर गिड़गिड़ाया। उसकी स्थिति उन मछलियों की-सी थी जो गहरे गढ़े में हैं और उस गढ़े

का जल विषाक्त हो गया है। वह थर-थर काँपा। उसके मन की व्याकुलता की स्थिति का ज्ञान हमारी मनोशक्ति के अन्दर आनेवाला नहीं है! । ७६५

अक्कालमुन् वेळ्वियिनन् ऱतोडरन्, दॅक्कालु नलिन्दुमी रीरुबॅऱान्
मुक्कालिन् मुडिन्दिडु वान्मुयल्वान्, पुक्कान विराहवन् वैहुपुनम् 766

अवत्तोट्टु–उन श्रीराम के साथ; अ वेळ्वियिल् कालम्–उस भाग के समय के; अन्ऱु तॉटरन्तु–उस दिन से लेकर; ॲ कालुम् नलिन्तुम्–किसी भी तरह के क्लेश से; ओर् ईरु पॅऱान्–जो मरकर अन्त नहीं पा सका; मु कालिन्–(वह मारीच) तीसरी बार; मुटिन्तिटुवान् मुयल्वान्–मरने को उद्यत होकर; अ इराकवन्–वे राघव; वैकु पुतम्–जहाँ रहते थे, उस वन में; पुक्कान्–आ पहुँचा। ७६६

(श्रीराम के साथ इसके पहले दो बार सामना हो गया था। एक बार विश्वामित्र के यज्ञ के अवसर पर हुआ। दूसरी बार वह दो मित्रों के साथ मृग का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्र के सामने गया था। श्रीराम के शरों ने उसके दोनों मित्रों का नाश किया। मारीच बचके आ गया। उसका संकेत पद्य-संख्या ७५८ में है; फिर ७६४ में भी है, फिर इस पद्य में भी आता है। आगे ७९३वें पद में भी पाया जायगा।) जिस दिन पहले पहल उसे श्रीराम के साथ संपर्क हुआ था, उस दिन से लेकर वह बहुत क्लेश उठा रहा है। तो भी वह मरा नहीं था। अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं तीसरी बार जाऊँगा और मर जाऊँगा। मरने की तैयारी के साथ वह, श्रीराम जहाँ रहे उस वन में आ पहुँचा। ७६६

❀ तन्मानमि लाद तयङ्गॉळिशाल्, मिन्मानमु मण्णुम् विळङ्गुवदोर्
पॊन्मानुरु वङ्गॊडु पोयिननाल्, नन्मानने याडने नाडुरुवान् 767

नल् मान् अनैयाळ् तनै–उत्तम मृगनिभ उस (देवी) को; नाट्टु उऱुवान्–खोजते हुए; तन् मातम् इलात–अनुपम; तयङ्कु ऑळि चाल्–चमकदार कान्ति के साथ; मिन् मानमुम्–विद्युतसहित आकाश में; मण्णुम्–भू पर; विळङ्कुवतु ओर्–द्युतिमान एक; पॊन् मान् उरुवम् कॊट्टु–स्वर्ण-मृग का रूप लेकर; पोयितन्–वहाँ गया। ७६७

उत्तम हरिणी-तुल्य सीतादेवी को ढूँढ़ते हुए मारीच एक स्वर्णमृग का रूप धरकर आया। वह अनुपम मृग था। विद्युत सहित आकाश में या भू पर उससे तुल्य कोई मृग नहीं था। ७६७

कलैमान्मुद लायिन कण्डवॅलाम्, अलैमानुरु माशैयिल् वन्दनवाल्
निलैयामन वञ्जनै नेयमिला, विलैमादर्हण् यारुम् विऴुन्दॅनवे 768

निलैया मतम्–चंचल-मना; वञ्चनै–वंचक; नेयम् इला–स्नेहहीन; विलै मातर् कण्–वेश्या पर; यारुम्–सभी कामुक; विऴुन्ततु ॲनवे–मोह में गिर (पड़) जाते हैं जैसे; कण्ट–उसको जिन्होंने देखा, वे; कलै मान् मुतल् आयित–बारहसींगा,

हरिण, मृग आदि; **अलै मात् उरुम् आचैयित्**–तरंगों के समान उठनेवाली इच्छा के साथ; **वन्तत**–उसकी ओर आये। ७६८

उसको देखकर उस वन में रहे सभी बारहसींगे, हरिण, मृग आदि उसकी ओर ऐसे आकृष्ट होकर भागे, जैसे चंचलमना, कपटी और स्नेह-हीन वेश्या के मोह में पड़कर कामुक सभी दौड़ पड़ते हैं। ७६८

ॐ पॊय्यामॆन वोदु पुरञ्जॊलिनाल्, नैयाविडै नोव नडन्दनळाल्
वैदेविदन् वाल्वळै मॆन्गैयॆनुम्, कॊय्यामल रान्मलर् कॊय्हुरुवान् 769

वैतेवि–वैदेही; तन्–अपने; वाल् वळै–उज्ज्वल कंकणधारी; मॆल् कै ऍतुम्–कोमल हाथ रूपी; कॊय्या मलराल्–जिनको तोड़ा नहीं गया, उन कमलसुमन द्वारा; मलर् कॊय्कुरुवान्–पुष्प-चयन करने हेतु; पुरम्–अन्य दर्शक; पॊय् आम् ऍन ओतुम्–जिसका अभाव कहते हैं; चॊलिताल्–उस कथन के अनुसार; नैया इटै–दुःखी कमर के; नोव–संकट उठाते; नटन्ततळ्–चलकर गयी। ७६९

तब वैदेही पुष्प-चयन के लिए निकल आयीं। उसके हाथ उज्ज्वल वलय-भूषित और उन कमल-सम सुन्दर थे जो तोड़े नहीं गये थे। उसकी कमर के सम्बन्ध में दूसरे सन्देह करते थे और कहते थे कि इसके कमर नहीं है। वह ऐसी क्षीण कमर को दुःख देती हुई वैसे सुन्दर हाथों से पुष्प-चयन करने के लिए निकल पड़ी। ७६९

उण्डाहिय केट्टै यार्तुयिल्वाय्, ऍण्डानु मियैन्दियै यावुरुवम्
कण्डारॆन लाम्वहै कण्डनळाल्, पण्डारु मुराविडर्प् पाडुरुवाळ् 770

पण्टु आरुम् उरा–इसके पूर्व किसी से अननुभूत; इटर्प्पाटु–संकट; उरुवाळ्–जिन पर आने को था, उन देवी ने; उण्टाकिय केटु उटैयार्–संकटग्रस्त लोगों ने; तुयिल्वाय्–निद्रा में; ऍण् तानुम् इयैनुतु इयैया–असंभाव्य; उरुवम् कण्टार्–रूप देख लिया हो; ऍन्तल् आम् वकै–ऐसा; कण्टनळ्–(मायामृग को) देखा। ७७०

सीताजी पर संकट आनेवाला था। वह भी ऐसा जैसा किसी पर पहले कभी नहीं आया था। उनकी दृष्टि में वह स्वर्णमृग पड़ा। उन्होंने उसे ऐसे संकटग्रस्त स्वप्नद्रष्टा के समान देखा, जिसे निद्रा में बिल्कुल असंभाव्य कोई अनोखा रूप दिखाई दिया हो। ७७०

काणाविदु कैतव मॆन्रुणराळ्, पेणाद नलङ्गॊडु पेणिनळाल्
वाणाळै यिरावणन् माळुदलाल्, वीणाळि लरम्बुवि मेवुदलाल् 771

अ इरावणन्–उस रावण की; वाऴ् नाळ्–आयु के दिन; माळुतल् आल्–समाप्त होने को थे; वीऴ् नाळ् इल्–जिसका मरण-दिन नहीं होता; अऱम्–उस धर्म का; पुवि मेवुतलाल्–भूमि पर उत्थान होने को था, इसलिए; काणा–(देवी ने उसको) देखकर; इतु कैतवम्–यह कैतव है; ऍन्रु उणराळ्–यह न जानकर; पेणात नलम् कॊटु–अभूतपूर्व आनन्द मानकर; पेणिनळ्–उसको चाहा। ७७१

रावण की आयु को खतम होनी थी। अनश्वर धर्म के भू पर उत्थान का काल आ गया था। इसलिए देवी सीता ने उसको देख लिया। पर उन्हें मालूम नहीं था कि यह कैतव है। अब तक ऐसा आनन्द प्राप्त नहीं था। यह समझकर उन्होंने उसकी चाह की। ७७१

❀ नॅऱ्ऱिप्पिऱै याण्मुऩ् निऩ्ऱिडलुम्, मुऱ्ऱिप्पॉऴि कावलिऩ् मुन्दुरुवाळ्
पऱ्ऱित्तरु ऍऩ्बॅ नॅऩप्पदैया, वॅऱ्ऱिच्चिलै वीरऩै मेविऩळाल् 772

नॅऱ्ऱि पिऱैयाळ् मुऩम्–(चन्द्र-) कला-सम भाल से भूषित देवी के सामने; निऩ्ऱिटलुम्–हिरण खड़ा हुआ तो; मुऱ्ऱि पॉऴि–भरकर बढ़नेवाले; कातलिऩ् मुन्तुरुवाळ्–इच्छा से जाती हुई वह; पऱ्ऱि तरुक–पकड़कर दीजिए; ऍऩ्पॅऩ्–कहूँगी; ऍऩ–सोचकर; पतैया–उतावली से; वॅऱ्ऱि चिलै वीरऩै–विजय कोदण्डपाणी वीर; मेविऩाळ्–के पास पहुँची। ७७२

वह हरिण चन्द्रललाट सीता के सामने जाकर खड़ा हुआ। तब उनके मन में उसके प्रति अपार राग उत्पन्न हुआ और उमड़ आया। 'मैं जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि इसे पकड़कर दीजिए' —ऐसा सोचते हुए वह सवेग विजय-कोदण्ड-पाणी श्रीराम के पास जा पहुँचीं। ७७२

आणिप्पॉऩ् ऩाहिय दायुहदिराल्, शेणिऱ्चुडर् हिऩ्ऱदु तिण्शॅविकाल्
माणिक्क मयत्तॊरु मानुळदाल्, काणत्तहु मॅऩ्ऱऩळ् कैतॊऴुवाळ् 773

कै तॊऴुवाळ्–हाथ जोड़े नमस्कार करती हुई; आणि पॉऩिल् आकियतु–उत्तम स्वर्ण-निर्मित; आय् कतिराल्–शरीर की श्रेष्ठ कान्ति के कारण; चेणिल् चुटर्किऩ्ऱतु–बहुत दूर तक ज्योतिर्मय दिखनेवाला; तिण् चॅवि काल्–बलवान कान और पैर; माणिक्क मयत्तु–माणिक्यमय; ऑरु माऩ् उळतु–एक हिरण आया है; आल्–जो; काणत्तकुम्–वह देखने योग्य है; ऍऩ्ऱऩळ्–कहा (सीताजी ने)। ७७३

जाकर उन्होंने श्रीराम से हाथ जोड़कर विनय की। खरे स्वर्ण का बना, अपनी देह की कान्ति के कारण बहुत दूर तक द्युतिमान दिखता हुआ, माणिक्य के पैरों और कानों के साथ एक हिरन आया हुआ है। वह आपसे देखने योग्य है। ७७३

इम्माऩ् निलत्तिऩ् लिल्लैयॅऩा, ऍम्माऩ् दॅऩच्चिऱ् ऱॅण्णलॅयाऩ्
शॅम्मातवळ् शॊऱ्कॊडु तेमलरोऩ्, अम्माऩु मरुत्तिय ऩायिऩऩाल् 774

इ माऩ्–यह मृग; इ निलत्तिल् इल्लै–इस भूमि पर (प्राप्य) नहीं; ऍऩा–यह बात; ऍ माऩ् इतु–यह कैसा हरिण; ऍऩ–यह बात; चिऱितु ऍण्णल् ऍयाऩ्–कुछ भी नहीं सोचकर; ते मलरोऩ्–शहद-भरे कमल पर आसीन; अम्माऩुम्–(ब्रह्मा के) पिता (के अवतार) श्रीराम भी; चॅम् मातवळ्–सुन्दर (लाल) रंग की सीताजी का; चॊल् कॊटु–वचन मानकर; अरुत्तियऩ् आयिऩऩ्–इच्छुक हुए। ७७४

श्रीराम ने यह सुना। (आश्चर्य है कि) उन्हें यह नहीं सूझा कि

ऐसा मृग अनहोनी बात है। यह भी विचार नहीं आया कि यह कैसा मृग है ? विना किसी सोच-विचार के श्रीराम, जो शहदयुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा के भी विधाता विष्णु के अवतार थे, देवी की बात पर विश्वास करके उसको पकड़ने को इच्छुक हो गये। ७७४

आण्डङ्गिळै योतुरै याडितन्नाल्, वेण्डुम्मॅन लाम्विळै वन्रिदॅन्नाप्
पूण्डुञ्जुपॉ लङ्गॉडि पोयदुनाम्, काण्डुम्मॅनुम् वळ्ळल् करुत्तुणर्वान् 775

पूण् तुञ्चु–आभरण-युक्त; **पॉलन् कॉटि**–स्वर्ण-लता (सी देवी); **पोय् अतु नाम् काण्टुम्**–जाकर हम उसे देखें; **ॲनुम्**–कहनेवाले का; **वळ्ळल् करुत्तु**–उदार प्रभु का मन; **उणर्वान्**–भाँपकर; **इळैयोन्**–लघुराज; **आण्टु**–तब; **वेण्टुम् ॲनल् आम्**–चाहनीय; **विळैवु अन्रु इतु**–चाह के योग्य नहीं है यह; **ॲन्ना**–ऐसा सोचकर; **अङ्कु**–वहाँ; **उरै आटितन्**–वचन कहने लगे। ७७५

'हे आभरणालंकृता देवी ! हम जाकर देखेंगे' यह प्रभु ने कहा। पास जो रहे उन लघु भ्राता लक्ष्मण ने श्रीराम का विचार ताड़ लिया। तब उन्होंने सोचा कि यह चाहनीय इच्छा का विषय नहीं। इसलिए वह श्रीराम से निवेदन करने लगे। ७७५

कायङ्गन हम्मणि काल्शॅविवाल्, पायुम्मुरु वोडिदु पण्बलवाल्
मायम्मॅन लन्रि मनक्कॉळवे, एयुम्मिरै यैयुर वॅन्ऱननाल् 776

कायम् कनकम्–शरीर स्वर्णमय; **काल् चॅवि वाल्**–पैर, कान और दुम; **मणि**–माणिक्यमय; **पायुम् उरुवोटु इतु**–चौकड़ी भरनेवाला यह; **पण्पु अल आल्**–स्वाभाविक नहीं है, इसलिए; **मायम् ॲनल्**–माया कहना चाहिए; **अन्रि**–दूसरा; **इऱै**–प्रभु; **मनम् कॉळवे**–मानना; **ऐयुरवु एयुम्**–संशययुक्त होगा; **ॲन्ऱनन्**–कहा। ७७६

प्रभु ! सोचिए। शरीर स्वर्ण का, पैर, कान और दुम माणिक्य के; ऐसा मृग चौकड़ी भरता है ! यह बिल्कुल अप्राकृतिक है ! इसलिए कोई माया ही माननी है ! उसके विपरीत इसको सच्चा मानना संशय-युक्त है। ७७६

निल्लावुल हिन्निलै नेर्मैयिनाल्, वल्लारु मुणर्न्दिलर् मन्नुयिर्दाम्
पल्लायिर कोडि परन्दुळवाल्, इल्लादन विल्लै यिळङ्गुमरा 777

इळम् कुमरा–बाल कुमार; **नेर्मैयिनाल् वल्लारुम्**–सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी; **निल्ला उलकिन् निलै**–इस नश्वर जगत का स्वभाव; **उणर्न्तिलर्**–पूर्ण रूप से नहीं जानते; **मन् उयिर् ताम्**–अक्षय जीव-जन्तु; **पल् आयिरम् कोटि**–अनेक सहस्र कोटि; **परन्तु उळ आल्**–रूप में विस्तृत हैं; **इल्लातन इल्लै**–असम्भव कुछ नहीं है। ७७७

तब श्रीराम ने गम्भीर विचार व्यक्त किये। बालकुमार ! सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी इस चलनशील संसार का सारा रहस्य नहीं जान पाते।

अक्षय जीव अनेक सहस्र कोटि रूपों में विपुल रीति से पाये जाते हैं। इसलिए असंभाव्य कुछ नहीं है। ७७७

ऎऩ्ऱॆऩ्ऱु निऩैन्द दिळैत्तुळदाम्, कऩ्ऩङ्गळिल् वेऱुळ काणुदुमाल्
पॊऩ्ऩिऩ्कुळिर् मेऩि पॊरुन्दिऩवेऴ्, अऩ्ऩङ्गळ् पिऱन्द दऱिन्दिलैयो 778

ऎऩ् ऎऩ्ऱु निऩैन्तु—क्या समझकर; अतु इळैत्तु उळतु आम्—तुमने ऐसी बात कही थी; कऩ्ऩङ्कळिऩ्—अपने कानों से; वेऱु उळ काणुतुम—कितने ही अपरिचित अन्य पदार्थ देखते हैं (सुनकर जान लेते हैं); पॊऩ्ऩिऩ्—स्वर्णमय; कुळिर् मेऩि पॊरुन्तिऩ—मनोरम रूपधर; एऴ् अऩ्ऩङ्कळ् पिऱन्ततु—सात हंस पहले जनित थे; अऱिन्तिलैयो—नहीं जानते क्या। ७७८

पर पता नहीं कि तुम क्या सोचकर किसके आधार पर यह कह रहे हो। कितने ही पदार्थ हैं, जिनके बारे में हम सुनते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। (भरद्वाज मुनि के) सात स्वर्णशरीरी हंस (पुत्रों के रूप में) पैदा हुए थे—क्या तुम यह वृत्तान्त नहीं जानते ? । ७७८

मुऱैयुमुडि वुम्मिलै मॊय्युयिरॆऩ्, ऱिऱैवऩिळै योऩॊडि यम्बिऩऩाल्
पऱैयुन्दुणै यऩ्ऩदु पऩ्ऩॆऱिपोय्, मऱैयुम्मॆऩ वॆळ्ळै वरुन्दिऩळाल् 779

इऱैवऩ्—(श्रीराम) प्रभु के; मॊय् उयिर्—(इस संसार को) भरनेवाले जीवों की; मुऱैयुम् मुटिवुम् इलै—उत्पत्ति का प्रकार और नाश, हम नहीं जानते; ऎऩ्ऱु—ऐसा; इळैयाऩॊटु—भाई से; इयम्पिऩऩ्—कहा; एऴै—अबला ने; पऱैयुम् तुणै—वार्तालाप के अन्दर; अऩ्ऩतु—वह; पल् नॆऱि पोय्—बहुत दूर जाकर; मऱैयुम्—छिप जायगा; ऎऩ—ऐसा; वरुन्तिऩाळ्—दुःख के साथ बोली। ७७९

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता को समझाया कि यह संसार अक्षय जीव-जन्तुओं से भरे हैं। उन सभी के जन्म-मरण के प्रकार हम नहीं जान सकते। तब देवी ने चिन्ता व्यक्त की कि आप जब तक वार्तालाप में लगे रहेंगे तब तक यह हरिण बहुत दूर चला जायगा और आँखों से ओझल हो जायगा। ७७९

अऩ्ऩैयवळ्	करुत्तै	युऩ्ऩा	वञ्जऩक्	कुऩ्ऱ	मऩ्ऩाऩ्
पुऩ्ऩैयिळै	काट्ट	दॆऩ्ऱु	पोयिऩाऩ्	पॊऱाद	शिन्दैक्
कऩ्ऩैहऴल्	ऱम्बि	पिऩ्बु	शॆऩ्ऱऩऩ्	कडक्क	वॊण्णा
विऩ्ऩैयॆऩ	वन्दु	निऩ्ऱ	माऩॆदिर्	विऴित्त	दऩ्ऱे 780

अऩ्ऩैयवळ् करुत्तै—उनका विचार; उऩ्ऩा—सोचकर; अञ्चऩ कुऩ्ऱम् अऩ्ऩाऩ्—अंजन-गिरि-तुल्य श्रीराम; पुऩै इऴै—आभरणभूषिता; अतु काट्टु—उसे दिखाओ; ऎऩ्ऱु—कहकर; पोयिऩाऩ्—(देखने) गये; पॊऱात चिन्तै—अधीर-मन; कऩै कऴल् तम्पि—मुखरित पायलधारी भ्राता लक्ष्मण; पिऩ् चॆऩ्ऱऩऩ्—उनके पीछे गया; कटक्क ऒण्णा—अलंघ्य; विऩै ऎऩ—प्रारब्ध के समान; वन्तु निऩ्ऱ—जो आकर खड़ा रहा; माऩ्—उस हरिण ने; ऎतिर् विऴित्ततु—सामने आकर उन्हें देखा। ७८०

श्रीराम ने देवी का दुःख पहचाना। अंजनगिरि-तुल्य प्रभु श्रीराम ने उनको आभरणभूषित प्यारी देवी, सम्बोधित कर कहा कि दिखाओ। सीता चलीं और श्रीराम भी चले। इसको देखकर मुखरित पायलधारी लक्ष्मण चुप नहीं रह सके। अधीरमन हो वह भी उनके पीछे-पीछे गये। अलंघ्य प्रारब्ध के समान उस मायामृग ने उनके सामने आकर उनको ताका। ७८०

नोक्किय मानै नोक्कि नुदियिळै मदियि नॉन्ऱुम्
तूक्किल नन्ऱॆ ऍन्ऱा नदन्बॊरुळ् शॊल्ल लाहुम्
शेक्कैयि नरवि नीङ्गिप् पिऱन्ददु तेवर् शॆय्द
पाक्किय मुडैमै यन्ऱो वन्नदु पऴुदु पोमो 781

नोक्किय मानै–जो ताक रहा था, उस हरिण को; नोक्कि–देखकर; नुति इऴै मतियिन्–अपनी सूक्ष्म बुद्धि से; ऑन्ऱुम् तूक्किलन्–श्रीराम ने कुछ तर्क नहीं किया; इतु नन्ऱु–यह बड़ा अच्छा है; ऍन्ऱान्–कहा; अतन् पॊरुळ् चॊल्लल् आकुम्–उसका (गूढ़) अर्थ हम कहेंगे; अरवु चेक्कैयिन्–शेष-शय्या से; नीङ्कि–अलग आकर; पिऱन्ततु–भू पर अवतार लेना; तेवर् चॆय्त–देवों के कृत; पाक्कियम् उटैमै अन्ऱो–पुण्य से प्राप्त फल है न; अन्नतु–वह; पऴुतु पोमो–व्यर्थ जायगा क्या। ७८१

श्रीराम ने उस हरिण को देखा जो उनको ताक रहा था। उन्होंने कोई तर्क-वितर्क नहीं किया। कहा कि शाबाश! यह बहुत अच्छा है! इसका गूढ़ अर्थ क्या है? —हम कहें? वे शेषशय्या त्यागकर भूमि पर अवतरित हुए —यह देवों के पुण्य का फल था। वह वृथा जायगा क्या? 'अच्छा' का संकेत उनके पुण्य की ओर है। ७८१

ऍन्नॊक्कु मॆन्न लाहु मिळैयव विदनै नोक्काय्
तन्नॊक्कु मॆन्ब दल्लाऱ् ऱनैयॊक्कु मुवमै युण्डो
पन्नक्क तरळ मॊक्कुम् पशुम्बुन्मेऱ् पडरु मॆन्ना
मिन्नॊक्कुञ् जॆम्बॊन् मेनि वॆळ्ळियिन् विळङ्गुम् बुळ्ळि 782

इळैयव–अनुज भैया; इततै नोक्काय्–इस पर दृष्टि डालो; ऍन् ऑक्कुम्–किसके समान है; ऍन्नल् आकुम्–कहा जा सकता है; तन् ऑक्कुम्–स्वोपम है; ऍन्पतु अल्लाल्–इसके सिवा; तनै ऑक्कुम्–उससे तुल्य; उवमै उण्टो–उपमा होगी क्या; पल्–दाँत; नक्क तरळम् ऑक्कुम्–उज्ज्वल मोती के समान हैं; पचुम् पुल् मेल् पटरुम्–(जो) हरी घास पर लगती है, वह; मॆल् ना–मृदु जीभ; मिन् ऑक्कुम्–विद्युत के समान है; मेनि चॆम् पॊन्–शरीर लाल (खरा) सोना है; पुळ्ळि–बिंदियाँ; वॆळ्ळियिन् विळङ्कुम्–चाँदी के समान प्रकाशमान हैं। ७८२

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा। अनुज! इसको खूब देखो। इसकी तुलना में क्या कहा जा सकता है? यह स्वोपम है। यही कहना पड़ेगा।

इसके सिवाय कोई उपमा ढूँढ़े नहीं मिलेगी। इसके दाँत उज्ज्वल मोती के समान हैं। जब इसकी जीभ हरी घास पर लगती है, तब वह बिजली के समान चमकती है! इसका शरीर लाल (खरा) स्वर्ण है और बिंदियाँ चाँदी-सी हैं। ७८२

वरिशिलै मरैव लोने मानिदन् वडिवै युऱ्ऱ
अरिवैयर् मैन्दर् यारे यादरङ् गूऱ्ह लादार्
उरुहिय मनत्त वाहि यूर्वन परप्प यावुम्
विरिशुडर् विळक्कङ् गण्ड विट्टिलिन् वोळ्व काणाय् 783

वरि चिलै मऱैवलोने–सबन्ध-धनु-विद्या-विशारद; मान् इतन्–इस मृग का; वटिवै उऱ्ऱ–रूप जिसने देखा; अरिवैयर्–वह स्त्री; मैन्तर्–या पुरुष; यारे आतरम् कूऱ्कलातार्–कौन इस पर आसक्त नहीं होगा; ऊर्व–रेंगनेवाले; परप्प–उड़नेवाले; यावुम्–सभी जन्तु; उरुकिय मनत्त आकि–द्रवितमन होकर; विरि चुटर् विळक्कम् कण्ट–विस्तारशील प्रकाशमय दीप को देखकर; विट्टिलिन्–पतंग जैसे; वीळ्वन–टूट पड़ते हैं; काणाय्–देखो। ७८३

सबन्ध धनु के प्रयोग में निष्णात लक्ष्मण! इस हरिन को जो देखेगा, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, कौन ऐसा होगा जो इसके प्रति आसक्त नहीं होगा? रेंगनेवाले, उड़नेवाले सभी जीव-जन्तु इसके आकर्षण से द्रवीभूतमन होकर प्रकाशमय दीप पर गिरनेवाले पतंग के समान इसकी तरफ़ टूट पड़ते हैं। देखो। ७८३

आरिय ननैय कूऱ वन्नदु तन्नै नोक्किच्
चोरिय दन्रि दॅन्रु शिन्दैयिऱ् ऱॅळिन्द तम्बि
कारिय मॅन्नै यीण्डुक् कण्डदु कनह मानेल्
वेरियन् दॅरियल् वीर मीळ्वते मेन्मै यॅन्ऱान् 784

आरियन् अनैय कूऱ–आर्य श्रीराम के वह कहने पर; अन्नतु तन्नै–उस हिरण को; नोक्कि–खूब देखकर; चिन्तैयिल्–मन में; तॅळिन्त तम्पि–स्पष्ट जानकर रामानुज ने; वेरि अम् तॅरियल् वीर–सुगन्ध और सुन्दरता से भरी मालाधारी वीर; ईण्टु कण्टतु कनक मान् एल्–यहाँ दुष्ट स्वर्ण-मृग ही हो तो; कारियम् ॲन्नै–उससे हमारा कार्य क्या है; मीळ्वते मेन्मै–लौट जाना ही श्रेय है; ॲन्ऱान्–कहा। ७८४

जब आर्य श्रीराम ने यह कहा, तब लक्ष्मण, जिनके मन में स्पष्ट निश्चय था, बोले। सुगन्धित और आकर्षक मालाधारी वीर! मान लें कि यह कनकमृग है। तो हमारा उससे क्या काम है? चलिए लौट जाना ही श्रेयस्कर होगा। ७८४

अऱ्ऱवन् पहरा मुन्न मळ्हनै यळ्हि याळ्म्
कॉऱ्ऱवन् मैन्द मऱ्ऱैक् कुळैवुडै युळैयै वल्लै

ऱ्रितै तरुदि यायिऱ् पदियिडै यवदि यॅय्दप्
ऱ्ऱुळि यितिदुण् डाडप् पॅऱ्ऱ्करुन् दहैत्त दॅन्ऱाळ् 785

अऱ्ऱु अवन् पकरा मुन्नम्—वैसा उनके कहने के पूर्व ही; अळकन्नै—सुन्दरराज श्रीराम को; अळकियाळुम्—अनिन्द्य सुन्दरी देवी सीता ने भी; कोऱ्ऱवन् मैन्त—चक्रवर्तीतनय; कुळैवु उटै—थकनयुक्त (या लचीले); इ उळैयै—इस मृग को; ल्लै—शीघ्र; पऱ्ऱितै तरुति आयिल्—पकड़कर देंगे तो; अवति ॲय्त पॅऱ्ऱु—वनवास की अवधि पूरा करके; पति इटै—अपने नगर में; इतितु उण्टाट—सुख से खेलने के लिए; पॅऱ्ऱ्कु अरुम्—अलभ्य; तकैत्ततु—श्रेष्ठतायुक्त है; ॲन्ऱाळ्—कहा। ७८५

जब लक्ष्मण यह बात कह रहे थे, तब सुन्दरी सीतादेवी ने सुन्दर श्रीराम से विनय सुनायी। चक्रवर्तीकुमार! यह थकित है (या लचीला है)। अभी इस हरिण को पकड़कर दीजिए। तो वनवास की अवधि पूरा करके अयोध्या में ले जाऊँगी और उसके साथ खेलूँगी। यह दुर्लभ श्रेष्ठ वस्तु होगी। ७८५

यनुण् मरुङ्गु नङ्गै य:(ह्)दुरै शॅय्य वैयन्
य्वॅन्ऩ् ऱमैय नोक्कत् तॅळिवुडैत् तम्बि शॅप्पुम्
य्यवल् लरक्कर् वञ्जम् विरुम्बिनार् वित्तैयिऱ् चॅय्द
दव मान्ऩ् ऱण्णल् काणुदि कडैयि नॅन्ऱान् 786

ऐय नुण्—बहुत ही पतली; मरुङ्कुल् नङ्कै—कमर की नायिका के; अ:तु रै चॅय्य—वह कहने पर; चॅय्वन् ॲन्ऱु—करूँगा, ऐसा कहकर; ऐयन्—प्रभु के; मैय नोक्क—(उस मृग को) खूब देखने पर; तॅळिवु उटै—स्पष्टचित्त; तम्पि प्पुम्—अनुज ने कहा; अण्णल्—महिमावान; वञ्चम् विरुम्पितार्—वंचना करने के च्छुक; वॅय्य वल् अरक्कर्—कठोर बली राक्षसों के; वित्तैयिल् चॅय्त—कार्य से ाया; कैतवम् मान्—मायामृग है; ॲन्ऱु—ऐसा; कटैयिल् काणुति—अन्त में देखेंगे; न्ऱान्—कहा। ७८६

जब अति क्षीण-कटि नायिका ने यह इच्छा सुनायी, तब श्रीराम ने उत्तर दिया कि ठीक, वही करूँगा। वे मृग को देखने लगे। तब लक्ष्मण, जिनके मन में कोई संशय नहीं था, बोले। महात्मा! यह मायावी, कठोर और बलवान राक्षसों के मायाकार्य से आया हुआ मायामृग है। यह आप आखिर देख लेंगे। ७८६

यमेल् मडियु मॅन्ऩ्रन् वाळियिन् मडिन्द पोदु
ाय्शिनत् तवरॅक् कॊन्ऩु कडन्गळित् तोमु मादुम्
यदेर् पऱ्ऱिक् कोडुञ् जॊल्लिय विरण्डि नॊन्ऩु
यदे पुरिदु मॅन्ऩा निमैयव रिडुक्कण् डोर्प्पान् 787

इमैयवर् इटुक्कण तीर्प्पान्—देवों के संकटहारी ने; मायमेल्—माया हो तो; तन् वाळियिन्—मेरे अस्त्र से; मटियुम्—यह मरेगा; मटिन्त पोतु—जब मरेगा,

तब; काय् चित्तत्तु अवरै–सन्तापक कोप से युक्त उन (राक्षसों) को; कौन्ऱु–मारकर; कटन् कऴित्तोमुम्–कृतकृत्य भी; आतुम्–होंगे; तूयतेल्–(वह मृग) सच्चा रहा तो; पऱ्ऱि कोटुम्–पकड़कर लायेंगे; चोल्लिय इरण्टिन् ओन्ऱु–उक्त दो में एक; एयतु ए–उचित जो है वही; पुरितुम्–करेंगे; ऎन्ऱान्–बोले। ७८७

देवसंकटहरणार्थ अवतरित श्रीराम ने आश्वासन दिया। अगर यह मायामृग साबित हुआ तो यह मेरे शर से मरेगा। जब वह मरेगा तो सन्तापी व क्रोधी राक्षसों को मारने का हमारा प्रण भी पूरा होगा। अगर इसके विपरीत वह सच्चा मृग है तो पकड़कर लायेंगे। उक्त इन दो में एक, जो उचित होगा वह काम करेंगे। ७८७

पिन्निन्ऱा ऱॆन्नैय ऱॆन्ऱु मुणर्हिलॆम् बिडित्त मायम्
ऎन्नॆन्ऱुन् दॆरिद ऱॆऱ्ऱाम् यावदी दॆन्ऱु मोराम्
मुन्निन्ऱ मुऱैयि निन्ऱार् मुनिन्दुळ वेट्ट मुऱ्ऱल्
पॊन्निन्ऱ वयिरत् तोळाय् पुहऴुडैत् तामन् ऱॆन्ऱान् 788

पॊन् निन्ऱ वयिरम् तोळाय्–सौन्दर्य-निलय वज्रस्कन्ध; पिन् निन्ऱार्–इसके पीछे हैं; ऎन्नैयर्–कौन; ऎन्ऱुम् उणर्किलॆम्–यह भी नहीं जानते; पिटित्त मायम् ऎन्–संकल्पित मायाकार्य क्या है; ऎन्ऱुम्–यह भी; तॆळितल् तेऱ्ऱाम्–स्पष्ट नहीं जानते; ईतु यावतु–यह (मृग) क्या है; ऎन्ऱुम् ओराम्–यह भी नहीं समझ पाते; मुन् निन्ऱ–प्राचीन; मुऱैयिन् निन्ऱार्–नीतिमार्ग पर स्थित बड़े लोग; मुनिन्तु उळ–जिसको धिक्कारते हैं; वेट्टम् मुऱ्ऱल्–वह मृगया-कर्म; पुकऴ् उटैत्तु आम् अन्ऱु–श्लाघनीय कार्य नहीं है; ऎन्ऱान्–कहा। ७८८

तब लक्ष्मण ने तर्क किया। सौन्दर्य-(विजय श्री-) निलय वज्रस्कन्ध! हम यह नहीं जानते कि इसके पीछे कैसे, कितने शत्रु हैं? उनके मन में क्या वंचना है? —यह भी नहीं जानते। यह मृग भी सचमुच क्या है —यह भी विदित नहीं। हमारे लिए मृगया भी श्रेयस्कर नहीं है, क्योंकि प्राचीन धर्मावलम्बी बड़ों ने उसे धिक्कारा है। ७८८

पहैयुडै यरक्क ऱॆन्ऱुम् पलरॆन्ऱुम् बयिलु मायम्
मिहैयुडैत् तॆन्ऱुम् पूण्ड विरदत्तै विडुदु मॆन्ऱाल्
नहैयुडैत् ताहु मन्ऱे यादलि नलत्ते यॆन्नत्
तहैयुडैत् तम्बिक् कन्नाट् चदुमुहन् ऱादै शॊन्नान् 789

पकै उटै अरक्कर् ऎन्ऱुम्–शत्रु राक्षस, यह बात; पलर् ऎन्ऱुम्–वे अनेक हैं, यह बात; पयिलुम् मायम्–उनका मायाकार्य; मिकै उटैत्तु–अत्यधिक है; ऎन्ऱुम्–यह बात; विट्टुम् ऎन्ऱल्–छोड़ देंगे, यह बात कहना; पूण्ट विरतत्तै–संकल्पित व्रत को; नकै उटैत्तु आकुम् अन्ऱे–वह परिहास का विषय होगा न; आतलिन्–इसलिए; नलत्ते–(मेरा निश्चय) अच्छा ही है; ऎन्न–ऐसा; अ नाळ्–तब; कहना होगा; चतुमुकन् तातै–चतुर्मुख के धाता ने; चॊन्नान्–कहा। ७८९

तब चतुर्मुख ब्रह्मा के धाता श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि ये शत्रु राक्षस हैं, वे अनेक हैं, अत्यन्त मायावी हैं —यह सब कहने का अर्थ यही होगा कि हम अपनाये गये व्रत से अलग हटते हैं। वह परिहसनीय बात होगी न ? इसलिए यही, यानी मायामृग हो तो मारना, सच्चा मृग हो तो पकड़ लाना, अच्छा होगा। ७८९

❀ अडुत्तवु सॆण्णिच् चॆय्द लण्णले यमैदि यन्ऱो
विडुत्तिदन् पिन्निन् ऱाऱ्हळ् पलरुळ रॆन्निनुम् विल्लाल्
तॊडुत्तुवॆम् बहळि तूवित् तॊडर्न्दनॆन् विरैन्दु शॆन्ऱु
पडुक्कुवॆ नदुवन् ऱाहिऱ् पऱ्ऱिनन् कॊणर्वॆ नॆन्ऱान् 790

अण्णले–महात्मा; अट्टुत्तवुम् ऍण्णि चॆय्तल्–आगत कार्य भी विचारकर करना; अमैति अन्ऱो–उचित है न; विट्टुत्तु–(इसको) भेजकर; इतन् पिन् निन्ऱार्कळ्–इसके पीछे जो हैं; पलर् उळर् ऍन्निनुम्–अनेक होंगे तो भी; वॆम् पकळि–भयंकर शरों को; विल्लाल् तॊट्टुत्तु–धनु में संधान करके; तूवि–चलाकर; तॊटर्न्ततॆन्–अनुगमन करता हुआ; विरैन्तु चॆन्ऱु–त्वरित गति में जाकर; पट्टुक्कुवॆन्–मार दूंगा; अतु अन्ऱु आकिल्–वह (मायामृग) नहीं हो तो; पऱ्ऱितन् कॊणर्वॆन्–पकड़कर लाऊँगा; ऍन्ऱान्–कहा। ७९०

लक्ष्मण ने तब दूसरी बात कही। महात्मन् ! निश्चित कार्य भी सोच-विचारकर करना उचित होगा न ? इसको आगे भेजकर आड़ में जो खड़े हैं, उनकी संख्या बहुत बड़ी हो तो भी मैं अपने धनुष से शर चलाकर उन्हें मार दूंगा। अगर ऐसी बात नहीं है और यह सच्चा मृग है तो मैं पकड़ लाऊँगा। मुझे जाने दीजिए। ७९०

❀ आयिडै यन्न मन्ना ळमुदुहुत् तनैय शॆय्य
वायिडै मळलै यिन्शॊऱ् किळियिनुङ् गुळऱि माऴ्हि
नायह नीये पऱ्ऱि नल्हलै पोलु मॆन्नाच्
चेयरिक् कुवळै मुत्तम् जिन्दुबु शीऱिप् पोनाळ् 791

अ इटै–उस समय; अन्नम् अन्नाळ्–हंसिनी-सी सीतादेवी; माऴ्कि–व्याकुल होकर; अमुतु उकुत्तु अनैय–अमृत रिसती हो जैसा; चॆय्य वाय् इटै–लाल मुख से; मळलै इन् चॊल्–अस्पष्ट मधुर बोली में; किळियितिल् कुळऱि–शुक के समान तुतलाती हुई; नायक–नाथ; नीये पऱ्ऱि–आप ही पकड़कर; नल्कलै पोलुम्–नहीं देंगे क्या; ऍन्ना–कहकर; चेय् अरि–लाल रेखाओं से युक्त; कुवळै–कुवलय-पुष्पों (आँखों) से; मुत्तम् चिन्तुपु–मोती (अश्रु) गिराते हुए; चीऱि पोनाळ्–रोष के साथ चलीं। ७९१

तभी हंसिनी-सी सीताजी ने दुःखाक्रान्त होकर अपना लाल मुख खोल कर अमृत रिसती-सी तुतलाती बोली में पूछा कि नाथ ! क्या आप उसे

पकड़कर नहीं देंगे? फिर लाल डोरों से युक्त कुवलय-सम आँखों से अश्रुकण गिराती हुई वह रोष के साथ वहाँ से चलीं। ७९१

❀ पोन्नवळ् पुलवि नोक्किप् पुरवलन् पॉलन्गॉ डाराय्
मान्इदु नाने पऱ्ऱि वल्लैयिन् वरुवॆ नीयिक्
कान्इयल् मयिलन् नाळैक् कात्तनै यिरुत्ति यॆन्ना
वेन्नहु शरमुम् विल्लुम् वाङ्गिनन् विरैय लुऱ्ऱान् 792

पोन्नवळ्–गमनशील उनका; पुलवि नोक्कि–रोष देखकर; पुरवलन्–लोक-रक्षक श्रीराम ने; पॉलन् कॊळ् ताराय्–सुन्दर मालाधारी; मान् इतु–यह हरिण; नाने पऱ्ऱि–मैं ही जाकर पकड़कर; वल्लैयिल्–शीघ्र; वरुवेन्–आऊँगा; नी–तुम; इ कान् इयल् मयिल् अन्नाळै–इस वनमयूरनिभ देवी को; कात्तनै इरुत्ति–रक्षा करते रहो; ऍन्ना–कहकर; वेल् नकु चरमुम्–शक्ति-सम शर और; विल्लुम्–धनु को; वाङ्किनन्–ग्रहण करके; विरैयल् उऱ्ऱान्–शीघ्र जाने लगे। ७९२

लोकरक्षक श्रीराम ने गमनशील सीताजी का रोष देखा। उन्होंने झट लक्ष्मण से कहा— सुन्दर मालाधारी! इस मृग को मैं ही जाकर पकड़ लाऊँगा। तब तक वन-मयूरनिभ सीता की रक्षा करते रहो। फिर वे शक्तिसदृश शर और धनुष लेकर सवेग जाने लगे। ७९२

❀ मुन्नमु मानाय् वन्द मूवरि लॊरुवन् पोनान्
अन्नमा रीश नॆन्ऱे ययिर्त्तनॆ निदनै यैया
इन्नमुङ् गाण्डि वाऴि येहॆन विरुहै कूप्पिप्
पॊन्ननाळ् पुक्क शालै कात्तनन् पुऱत्तु निन्ऱान् 793

ऐया–प्रभु; वाऴि–चिरजीव रहिए; मुन्नमुम् मानाय् वन्त–पहले भी हरिणों के रूप में आये हुए; मूवरिल्–तीन में; ऑरुवन् पोनान्–एक बचकर चला गया; अन्न मारीचन् ऍन्ऱे–वही मारीच, ऐसा; इतनै अयिर्त्तनेन्–इस पर संदेह करता हूँ; इन्नमुम् काण्टि–आप भी जान लेंगे; एकु ऍन–चलिए, ऐसा कहकर; इरु कै कूप्पि–अपने दोनों हाथ जोड़कर; पॊन् अनाळ् पुक्क चालै–स्वर्ण-सी सुन्दरी सीता-देवी जिसमें प्रविष्ट हुईं, उस पर्णशाला के; पुऱत्तु–बाहर; कात्तनन्–रक्षण करते हुए; निन्ऱान्–खड़े रहे। ७९३

उस समय भी लक्ष्मण ने सचेत किया। प्रभु! जय हो आपकी! चिरजीव रहें। पहले तीन हरिण आये थे। उनमें दो मरे; एक बचकर भाग गया। यह वही (बचा) मारीच है—ऐसा सन्देह करता हूँ। आप भी यह सत्य जान लेंगे; जाइए। फिर वे दोनों हाथ जोड़कर स्वर्ण-सम सुन्दरी सीता जिस पर्णशाला में प्रविष्ट हुई थीं, उसके बाहर जाकर द्वार पर पहरेदार के रूप में खड़े रह गये। ७९३

❀ मन्दिरत् तिळैयोन् शॊन्न वाय्मॊऴि मनत्तुट् कॊळ्ळान्
शन्दिरऱ् कुवमै शान्ऱ वदनत्ताळ् शलत्तै नोक्किच्
चिन्दुरप् पवळच् चॆव्वाय् मुऱुवलन् शिहरच् चॆव्विच्
चुन्दरत् तोळि नातम् मानिनैत् तॊडर लुऱ्ऱान् 794

चिकर चॆव्वि–शिखर-सम श्रेष्ठ; चुन्तर तोळितान्–और सुन्दर भुजाओं से युक्त श्रीराम ने; मन्तिरत्तु इळैयोन्–मंत्रणा में छोटे भाई के कहे; वाय् मॊऴि–सत्य वचन को; मनत्तु उळ् कॊळ्ळान्–मन में नहीं लिया; चन्तिरऱ्कु उवमै चान्ऱ–चन्द्र से उपमेय; वतनत्ताळ्–आनन की सीतादेवी के; चलत्तै नोक्कि–रोष का स्मरण कर; चिन्तुरम्–लाल; पवळ–प्रवाल से; चॆम् वाय्–लाल अधर पर; मुऱुवलन्–मुस्कुराहट दिखाते हुए; अ मानिनै–उस हरिण का; तॊटरल् उऱ्ऱान्–पीछा करने लगे। ७९४

पर्वतशिखरों के समान कन्धों से युक्त श्रीराम ने अच्छे सलाहकार अपने छोटे भाई का वचन स्मरण नहीं किया। पर उन्हें चन्द्रानना सीताजी का कोप ही स्मरण आया। सिंदूर-सम लाल अधर पर हँसी प्रकट करते हुए वे मृग का पीछा करने लगे। ७९४

❀ मिदित्तदु मॆल्ल मॆल्ल वॆरित्तदु वॆरुवि मीदिल्
कुदित्तदु शॆवियै नीट्टिक् कुरबद मुरत्तैक् कूट्टि
उदित्तॆऴु मूदै युळ्ळ मॆन्ऱिवै युरुवच् चॆल्लुम्
गदिक्कॊरु कल्वि वेऱे काट्टुव दॊत्त दन्ऱे 795

मॆल्ल मॆल्ल मितित्ततु–उस मृग ने पहले धीरे-धीरे डग भरे; वॆरित्ततु–टुकुर-टुकुर ताका; वॆरुवि–भयातुर-सा; मीतिल् कुतित्ततु–ऊपर उछला; चॆवियै नीट्टि–कानों को तानकर; कुरपतम्–खुरों को; उरत्तै कूट्टि–छाती से लगाकर; उतित्तु ऎऴुम् ऊतै–उठकर ऊपर बहनेवाली हवा और; उळ्ळम् ऎन्ऱु इवै–मन आदि इनको; उरुव चॆल्लुम्–जो भेदकर चलते हैं; कतिक्कु–गति में; ऒरु कल्वि वेऱे–एक नया पाठ; काट्टियतु–सिखाता हो; ऒत्ततु–ऐसा (भागा)। ७९५

उस हरिण ने पहले धीरे-धीरे डग भरे। कुछ देर खड़ा होकर ताका। फिर वह डरा हुआ-सा आकाश में उछला। कान खड़े करके खुरसहित पैरों को छाती से लगाकर वह इतनी तीव्रगति से दौड़ा कि बहती हवा और उड़ता मन भी उससे उस विषय में शिक्षा ग्रहण कर ले! । ७९५

नीट्टिना नुलह मून्ऱु निन्ऱॆडुत् तळन्द पादम्
मीट्टन्दा नीट्टऱ् कम्मा वेऱुमो रण्ड मुण्डो
ओट्टिनान् ऱॊडर्न्द दॆन्नै यॊऴिवर निऱैन्द तन्मै
काट्टिना नन्ऱु शॊन्न कडुमैयार् कणिक्कर् पालार् 796

निन्ऱु ऎटुत्तु–(त्रिविक्रमावतार के संदर्भ में) स्थित होकर फिर उठाकर; मून्ऱु उलकम्–तीनों लोकों को; अळन्त पातम्–जिनसे नापा, उन चरणों को;

नीट्टिनान्–(श्रीराम ने) बढ़ाया; मीट्टुम् नीट्टऱ्कु–फिर से पैर बढ़ाने (नापने) के लिए; वेऱुम् ओर् अण्टम् उण्टो–अन्य अण्ड भी है क्या; तोटर्न्तु ओटिनान् ॲन्नै–फिर पीछे लगे दौड़े क्यों; ऑऴिवु अऱ–अखण्ड; निऱैन्त तन्मै–सर्वव्यापी भाव को; काट्टिनान्–दरसाया; अन्ऱु चॆन्ऱ कटुमैयै–उस दिन की उनकी गति की तीव्रता को; आर् कणिक्कर् पालार्–कौन मापने में समर्थ है। ७६६

श्रीराम अपने पैरों को बढ़ाकर उसके पीछे सर्वत्र दौड़े। उन्हीं चरणों ने त्रिविक्रमावतार के सन्दर्भ में तीनों लोकों को नापा था। कवि पूछते हैं कि अब नापने के लिए कौन सा अण्ड है कि वे चरण इस तरह बढ़ते हैं? उत्तर वे ही देते हैं कि सो बात नहीं। बल्कि वे अपने सर्वव्यापिता को दरसाने के लिए इस तरह सर्वत्र चलते हैं। उनकी तीव्र-गति ऐसी थी कि यही मालूम होता था कि वे सर्वत्र हैं। तो उनकी गति का माप कौन कर सकेगा? । ७९६

❀ कुन्ऱिडै यिवरु मेहक् कुऴुविडैक् कुदिक्कुङ् गूडच्
चॆन्ऱिडि लहलुन् दाऴिर् ऱीण्डलान् दन्मैत् ताहुम्
निन्ऱदे पोल नीङ्गु निदिवऴि नेय नीट्टु
मन्ऱलङ् गोदै मादर् मनमॆनत् तहैयत् तम्मान् 797

अ मान्–वह मृग; कुन्ऱु इटै इवरुम्–पर्वत पर चढ़ता; मेक कुऴु इटै कुतिक्कुम्–मेघसमूह के मध्य कूदता; कूट चॆन्ऱिटिल्–पास गये तो; अकलुम्–दूर हट जाता; ताऴिल्–देर करें तो; तीण्टल् आम् तन्मैत्तु आकुम्–स्पर्श किया जा सके, ऐसी स्थिति में रहता; निन्ऱते पोल–जैसे खड़ा था वैसे ही; नीङ्कुम्–हट जाता; निति वऴि–धन के मार्ग में; नेयम् नीट्टुम्–प्रेम बढ़ानेवाली; मन्ऱल् अम् कोतै–सुगन्धित सुन्दर मालाधारिणी; मातर् मनम् ॲन्न–(वार-)नारियों के मन ही; तकैयत्तु–के समान रहा। ७६७

वह हरिण पर्वतों पर चढ़ता; मेघसमूहमध्य कूदता। पास जाओ तो दूर भाग जाता। ठहर जाओ तो इतना पास आकर खड़ा रहता कि हाथ में आ जाय! पर वैसे ही वह हट जाता। वह उन वेश्याओं के मन के समान रहा, जो धन की दिशा में अपना मन बढ़ाती हैं! । ७९७

कायम्वे ऱाहिच् चॅय्युङ् गरुमम्वे ऱायिऱ् ऱन्ऱे
एयुमे यॆन्निन् मुन्न मॆण्णमे यिळवऱ् कुण्डे
आयुमॆय् यऱनिलाद वरक्करा नवऱ्हळ् शॅय्द
मायमे याय दैयान् वरुन्दिय वॆन्ऱान् वळ्ळल् 798

कायम् वेऱु आकि–रूप ही अस्वाभाविक रहा; करुमम् वेऱु आयिऱ्ऱु–कार्य विपरीत दूसरा रहा; अन्ऱो–न; ॲन्निन्–तो; एयुमे–उचित है क्या; मुन्नम्–पहले ही; ॲण्णमे–यही विचार; इळवऱ्कु उण्टे–अनुज का रहा; यान् वरुन्तियतु–मैंने जो कष्ट उठाया; आयुम् मॆय् अऱन् इलात–विवेकशील सत्य और धर्म से

रहित; अरक्कर् आतवर् चॆय्त–राक्षसों के किये हुए; मायमे आयते–कपट ही बना; ऎन्ऱान्–कहा; वळ्ळल्–प्रभु ने। ७९८

अब श्रीराम पछताने लगे। इसका शरीर कुछ है और काम उससे भिन्न! यह रूप और कार्य में कोई सम्बन्ध नहीं दिखता। यह अनुज लक्ष्मण पहले ही जानता था। मुझे इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है, इसलिए कि विवेकशील सत्य और धर्म से रहित राक्षसों की माया मैंने नहीं जानी! —प्रभु आप से आप बोले। ७९८

❀ पऱ्ऱु वातिति यल्लन् पहऴियाल्, शॆऱ्ऱु वातिर् चॆलुत्तलुऱ् ऱानॆन
मऱ्ऱ माय वरक्कन् मतक्कॊळा, उऱ्ऱ वेहत्ति तुम्बरि नोङ्गिनान् 799

अ माय अरक्कन्–वह मायावी राक्षस; इति पऱ्ऱुवान् अल्लन्–अब मुझे नहीं पकड़ेगा; पकऴियाल् चॆऱ्ऱु–अस्त्र से मारकर; वातिल् चॆलुत्तल् उऱ्ऱान्–स्वर्ग पहुँचा देगा; ऎन–ऐसा; मतम् कॊळा–मन में सोचकर; उऱ्ऱ वेकत्तिन्–शक्ति-भर वेग के साथ; उम्परिन् आङ्कितान्–आकाश में उछल उठा। ७९९

मारीच ने श्रीराम के मन की गति जान ली। उसने धारणा कर ली कि अब श्रीराम मुझे नहीं पकड़ेगा। शर से मुझे स्वर्ग पहुँचा देगा। यह सोचकर अपनी सारी शक्ति लगाकर वह आकाश में उछल पड़ा। ७९९

❀ अक्क णत्तिनि लैयनुम् वॆय्यदन्, शक्क रत्तिर् ऱहैवरि दायदोर्
चॆक्कर् मेनिप् पहऴि शॆलुत्तिनान्, पुक्क देयम्बुक् किन्नुयिर् पोक्कॆना 800

अ कणत्तितिल्–उसी क्षण में; ऐयनुम्–प्रभु ने भी; तन् चक्करत्तितिल्–अपने ही (सुदर्शन-)चक्र के समान; तकवु अरितु आयतु–अकाट्य; ओर्–एक; वॆय्य–भयंकर; चॆक्कर् मेति–लाल रंग के; पकऴि–शर को; पुक्क तेयम् पुक्कु–यह जहाँ जाता है, वहाँ जाकर; इन् उयिर् पोक्कु–इसके प्यारे प्राण हर लो; ऎन्ना–कहकर; चॆलुत्तितान्–चलाया। ८००

तभी महात्मा श्रीराम ने अपने सुदर्शन चक्र के समान अप्रतिहत और भयंकर अरुणवर्ण अस्त्र संधान कर यह कहते हुए छोड़ा कि वह जहाँ भी जाए, पीछे जाकर उसको हत कर दो। ८००

❀ नॆट्टि लैच्चरम् वञ्जनै नॆञ्जुऱप्, पट्ट दप्पॊऴु देपहु वायिनाल्
अट्ट तिक्किनु मप्पुऱ मुम्बुह, विट्ट ऴैत्तोरु कुन्ऱॆन वीऴ्न्दनन् 801

नॆटु इलै चरम्–वह लम्बा पत्राकारफलयुक्त शर; वञ्चनै–वंचक; नॆञ्चु उऱ–हृदय पर लगा; पट्टतु–अन्दर घुसा; अ पॊऴुते–तभी; पकु वायिताल्–खुले मुख से; अट्ट तिक्कुम्–आठों दिशाओं में; अ पुऱमुम्–और बाहर में भी; पुक–जाकर व्याप्त हो ऐसा; अऴैत्तु–पुकारते हुए; ओरु कुन्ऱु ऎन–एक पर्वत के समान; वीऴ्न्ततन्–गिरा। ८०१

श्रीराम का लम्बा और पत्राकार फल का शर वंचक के वक्ष में

जा लगा और गड़ गया। तभी वह अपने खुले मुख से उन सीता और लक्ष्मण को उच्च स्वर में पुकारते हुए मरा और पर्वत के समान गिर गया। वह स्वर आठों दिशाओं और उनके बाहर भी जाकर व्यापा। ८०१

❀ वॅय्य वऩ्ऱ नुरुविनिल् वीऴ्दलुम्, शॅय्य दन्ऱॅनच् चॅप्पिय तम्बियै
ऐयऩ् वल्लऩॅन् ऩारुयिर् वल्लनाऩ्, उय्य वन्दवऩ् वल्लऩॅऩ् ऱुन्निनाऩ् 802

वॅय्यवऩ्–क्रूर (मारीच) के; तऩ् उरु ऒॅट्टु–अपने निजी रूप के साथ; वीऴ्तलुम्–गिरने पर; चॅय्यतु अन्ऱु–यह सीधा नहीं; ऎॅन्न चॅप्पिय–ऐसा जिसने कहा, उस; तम्पियै–अनुज को; ऐयऩ् वल्लऩ्–मेरा तात बड़ा समर्थ है; ऎॅन् आर् उयिर्–मेरा प्राण-सम भाई; वल्लऩ्–समर्थ है; नाऩ् उय्य वन्तवऩ्–मुझे उबारने आया वह; वल्लऩ्–समर्थ है; ऎॅन्ऱु–ऐसा; उन्निनाऩ्–(श्रीराम ने साधुवाद के साथ) स्मरण किया। ८०२

क्रूर मारीच अपने निजी रूप में गिरा। उसको देखते ही श्रीराम के मन में भाई लक्ष्मण और उनकी दूरदर्शिता का स्मरण आया। वे बोल उठे कि हा! यह मृग सीधा नहीं है। यह मेरे भाई ने कहा था। मेरा तात सामर्थ्यवान है; मेरा प्राण-सम भाई सामर्थ्यवान है! मुझे उबारने के लिए जनित अनुज लक्ष्मण सामर्थ्यवान है! उन्होंने भाई के प्रति गौरव-बुद्धि के साथ उनका स्मरण किया। ८०२

❀ आशै नीळत् तरऱ्ऱिऩऩ् वीऴ्न्दवऩ्, नीशन् मेनियै निन्ऱुऱ नोक्किनाऩ्
माशिन् मादवन् वेळ्वियिन् वन्दमा, रीश नॆयिव नॆन्बदु तेऱिनाऩ् 803

आचै नीळतु–दिशा जितने लम्बे; अरऱ्ऱि–रुदन-स्वर निकालकर; वीऴ्न्त–जो गिरा; अ नीचऩ् मेनियै–उस नीच के शरीर को; निऩ्ऱु–खड़ा होकर; उऱ–खूब; नोक्किनाऩ्–(श्रीराम ने) देखा; माचु इल्–अकलंक; मातवऩ् वेळ्वियिऩ्–महातपस्वी (विश्वामित्र के) यज्ञ में; वन्त मारीचऩ्–जो आया था, वही मारीच; इवऩ्–यह है; ऎॅन्पतु–यह; तेऱिनाऩ्–पहचान लिया। ८०३

श्रीराम ने नीच मारीच के मृतक शरीर को खूब ध्यान देकर देखा। उसका क्रन्दन स्वर दिशाओं का जितना लम्बा था! अकलंक महा तपस्वी विश्वामित्र के यज्ञ में यही आया था। उन्होंने उस मारीच को पहचान लिया। ८०३

❀ पुळैत्त वाळि युरम्बुहप् पुल्लियोऩ्, इळैत्त मायैयि नॆऩ्गुर लालॆडुत्
तळैत्त दुण्डदु केट्टयर् वॆय्दुमाल्, मळैक्कण् णेळैयॆन् ऱुळ्ळम् वरुन्दिनाऩ् 804

पुळैत्त वाळि–भेदकर जो चला, उस शर के; उरम् पुक–छाती में घुसने पर; पुल्लियोऩ्–उस नीच ने; इळैत्त मायैयिऩ्–माया करके; ऎॅन् कुरलाल्–मेरे-से स्वर में; ऎॅटुत्तु–ऊँचा; अळैत्ततु उण्टु–(सीता और लक्ष्मण को) बुलाया, यह तो है; अतु केट्टु–वह सुनकर; मळै कण् एळै–मेघ-सी (अश्रुभरी) आँखों की सीता; अयर्वु

ऍय्तुम् आल्—व्यथित हो जायगी अवश्य; ऍन्ऱु उळ्ळम् वरुन्तिनान्—यह सोचकर श्रीराम खिन्नमन हुए। ८०४

मेरे शर के उसके वक्ष में भेदकर चलने पर इस नीच ने मेरे-से स्वर में टेर लगायी है ! यह सुनकर सीता अवश्य रोती होंगी। दुःखाक्रान्त हो जायँगी। यह सोचकर श्रीराम दुःखी हुए। ८०४

❀ माऱ्ऱ मिन्नदु मायना रोशनॆन्, ऱेऱ्ऱ मुन्नुणरन् दानिरुन् दानॆन
दाऱ्ऱ ऱेरु मऱिविन नादलाल्, तेऱ्ऱु मालिळै योनॆनत् तेऱिनान् 805

इन्नतु—ऐसे; माऱ्ऱम्—(मारीच के कहे, हा सीते, हा लक्ष्मण के) शब्दों को; मुन्—पहले ही; माय मारीचन् ऍन्ऱु—माया का मारीच, यह; एऱ्ऱम् उणर्न्तान्—जिन्होंने निश्चित रूप से जाना था; इळैयोन् इरुन्तान्—वह मेरा कनिष्ठ उधर है; ऍन्तु आऱ्ऱल् तेरुम्—मेरी शक्ति को जानने में समर्थ; अऱिवितन्—बुद्धिशाली; आतलाल्—इसलिए; तेऱ्ऱुम्—वह सीता को धीरज दिलायगा; ऍन—ऐसा सोचकर; तेऱिनान्—श्रीराम आश्वस्त रहे। ८०५

उन्होंने आगे तर्क किया। इसको लक्ष्मण ने सुना होगा। उसी ने पहले इसे मारीच जान लिया था। वह मेरी शक्ति का भी परिचय रखता है। इसलिए वह सीता को धीरज बँधायगा। श्रीराम को इस विचार से कुछ आश्वासन हुआ। ८०५

❀ माळ्व देतॊऴि लाहवन् दानलन्, शूऴ्व दोर्पॊरु ळुण्डिवन् शॊल्लिनाल्
मूळ्व देद मदुमुडि यामुनम्, मीळ्व देनल नॆन्ऱवन् मीण्डनन् 806

माळ्वते तॊऴिलाक—मरना ही कार्य समझकर; वन्तान् अलन्—आया नहीं है; इवन् चॊल्लिनाल्—इसके शब्दों से; चूऴ्वतु ओर् पॊरुळ् उण्टु—संभवनीय उपद्रव है; मूळ्वतु एतम् अतु—संभवनीय वह हानि; मुटिया मुनम्—पूरी हो, उसके पूर्व ही; मीळ्वते नलन्—लौट जाना ही श्लाघ्य है; ऍन्ऱु—सोचकर; अवन् मीण्टनन्—वे लौट आये। ८०६

श्रीराम ने आगे सोचा। यह मारीच केवल मरने का विचार लेकर नहीं आया है। इसके शब्दों से अवश्य एक उपद्रव होगा। कुछ उपद्रव हो जाय, इसके पूर्व ही पर्णशाला में लौट जाना ही भला होगा। यह सोचकर वे लौट आने लगे। ८०६

9. शडायु उयिर्नीत्त पडलम् (जटायु प्राण-त्याग पटल)

शङ्ग डुत्त तनिक्कडन् मेनियार्, कङ्ग डुत्त निलैमै यरैन्दनॆन्
कॊङ्ग डुत्त मलर्क्कुळर् कॊम्बनाट्, किङ्ग डुत्त तहैमै यियम्बुवाम् 807

चङ्कु अटुत्त—शंखों से भरे; तनि कटल्—उत्तम समुद्र के; मेनियार्कु—वर्ण के शरीरी को; अङ्कु अटुत्त—वहाँ जो रही; निलैमै अरैन्ततॆम्—वह स्थिति बतायी;

कोङ्कु अट्टुत्त मलर्–सुबासित पुष्प की; कोम्पु अत्ताट्कु–शाखा-सरीखी देवी का; इङ्कु अट्टुत्त तकैमै–यहाँ जो गति रही; इयम्पुवाम्–वह कहेंगे। ८०७

शंखों से भरे नीले समुद्र के समान जिनका सुन्दर रंग है, उन श्रीराम की जो स्थिति रही वह हमने बतायी। अब पर्णशाला में सुबासित पुष्पशाखा-सरीखी सीतादेवी का क्या हाल रहा —वह बतायेंगे। ८०७

❀ ऐयिर् लैत्तदु मुळैदिरन्नु देङ्गिय, शैयिर्द लैक्कोण्ड शोर्चॅवि शॆर्दलुम्
कुयिर् लत्तिडै युर्रदोर् कोळ्हैयाळ्, वयिर् लैत्तु विळुन्दु मयङ्गिन्नाळ् 808

ऐयिऱु अलैत्ततु–दाँतों को पीसकर; मुळै तिऱन्नतु–गुफा के समान मुख खोलकर; एङ्किय–घोषित; चॆयिर् तलै कॊण्ट–कपट-भरा; चॊल्–शब्द; चॆवि चेर्तलुम्–ज्योंही कान में पड़ा त्योंही; कुयिल् तलत्तु इटै उऱ्ऱतु–कोयल नीचे गिरी हो, ऐसी; ओर् कोळ्कैयाळ्–एक स्थिति में पड़कर; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटते हुए; विळुन्तु–गिरकर; मयङ्कित्ताळ–मूर्च्छित हुईं। ८०८

दाँत पीसते हुए मारीच ने अपना कन्दरा-सा मुख खोलकर बड़े ही वंचक शब्द उच्चारे थे। जब वे देवी के कान में पड़े तो वे पेट पीटती हुई भूमि पर गिरकर मूर्च्छित हो गयीं। वे उस कोयल की-सी स्थिति में दिखाई दीं, जो तरु की उच्च शाखा से भूमि पर गिर गयी हो। ८०८

❀ पिडित्तु नल्हिव् वुळैयॅनप् पेदैयेन्, मुडित्त नॆन्मुदल् वाळ्वॆन मॊय्यळल्
कॊडिपप डिन्द दॆन्नॆडुङ् गोळरा, इडिक्कि डॆन्द दॆनप्पुरण् डेङ्गिन्नाळ् 809

इ उळै पिटित्तु नल्कु–यह मृग पकड़ दीजिए; ऎन्न–कहकर; पेतैयेन्–जड़मति मैंने; मुतल् वाऴ्वु–जीवनाधार को; मुटित्ततॆन्–मरवा दिया; ऎन्न–कहकर; मॊय् अळल्–बड़ी आग; कॊटि पटिन्ततु ऎन्न–लता पर लग गयी जैसे; नॆटुम् कोळ् अरा–लम्बा, बली सर्प; इटिक्कु इटैन्ततु ऎन्न–वज्राहत हुआ जैसे; पुरण्टु एङ्किताळ्–लोटती हुई रोयीं। ८०९

जब वे होश में आयीं तो विलाप करने लगीं कि हाय! मैंने क्या कर दिया? 'इस मृग को पकड़कर मेरे पास दीजिए' कहकर मैंने अपने जीवनाधार को ही गँवा दिया। अग्निदग्ध पुष्पलता के समान और वज्राहत दीर्घ बली सर्प के समान वह भूमि पर लोटती हुई रोयीं। ८०९

❀ कुर्रम् वीयन्द गुणत्तिनॆङ् गोमहन्, मर्रै वाळरक् कन्बुरि मायैयाल्
इर्रु वीळ्न्दन नॆन्नवु मॆन्नयल्, निर्रियो विळैयो यॊरुन्नी यॆन्राळ् 810

कुऱ्ऱम् वीयन्त कुणत्तिन्–कलंक-रहित कल्याणगुणपूर्ण; ऎन् कोमकन्–मेरे नाथ; मऱ्ऱै–पराये; वाळ् अरक्कन् पुरि मायैयाल्–क्रूर राक्षस के किये हुए कपट से; इऱ्ऱु वीऴ्न्ततन्–मरकर गिर गये; ऎन्नवुम्–जानने के बाद भी; इळैयोय् ओरु नी–एक अनुज, तुम भी; ऎन् अयल्–मेरे पास में ही; निऱ्ऱियो–खड़े रहते हो क्या; ऎन्ऱाळ्–पूछा (लक्ष्मण से)। ८१०

सीताजी ने देखा कि लक्ष्मण खड़े हैं। उनको कोप आया। उन्होंने कहा— मेरे अकलंक कल्याणगुणपूर्ण नाथ शत्रु राक्षस के कपट से आहत हो गिर गये। यह जानने के बाद भी तुम, उनके अनुज, इधर ही मेरे पास में खड़े रहोगे क्या ? । ८१०

❀ ऍण्मैया रुलहिनि लिरामऱ् केऱ्ऱमोर्, तिण्मैया रुळरॅन्ऱ् चॅप्पऱ् पालदो
पॅण्मैया लुरैशॅयप् पॅरुदि रालॅन्, उण्मैया नन्नैयवट् कुणरक् कूरिनान् 811

ऍण्मै आर् उलकिल्–लघुतायुक्त लोक में; **इरामऱ्कु एऱ्ऱम्**–श्रीराम से बढ़कर; **ओर् तिण्मैयार्**–एक बलवान; **उळर् ऍन्नल्**–होगा कहना; **चॅप्पल् पालतो**–अभिव्यक्ति के अर्ह है क्या; **पॅण्मैयाल्**–स्त्री-बुद्धि के कारण; **उरै चॅय पॅरुतिर्**–यह कहने चलीं; **ऍन्न**–ऐसा; **उण्मैयान्**–सत्यज्ञ ने; **अन्नैयवट्कु**–उन्हें; **उणर कूरिनान्**–समझाकर कहा। ८११

यह संसार लघुतापूर्ण है। इसमें श्रीराम से बढ़कर कोई बली है, यह कथन उच्चारण योग्य है क्या ? स्त्री-बुद्धि के कारण आप ऐसी बात करती हैं। लक्ष्मण अपनी सूझ-बूझ से सच्ची बात जान सके थे। उन्होंने सीताजी को समझाया। ८११

एऴुमे कडलुल हेऴु मेऴुमे, शूऴुमेऴ् मलैयवै तॉडर्न्द शूऴल्वाय्
वाऴुमे ऴैयर्शिऱु वलिक्कु वाळमर्त्, ताऴुमे यिराहवन् तनिमै तैयलीर् 812

तैयलीर्–देवी; **कटल् एऴुम्**–सातों समुद्र; **उलकु एऴुम्**–(दो के) सातों लोक; **चूऴुम् एऴ् मलै**–घेरे हुए स्थित सात पर्वत; **तॉटर्न्त चूऴल् वाय्**–इनसे लगे स्थल; **वाऴुम्**–(यहाँ के) वासी; **एऴैयर् चिऱु वलिक्कु**–दुर्बल लोगों के बल के सामने; **इराकवन् तनिमै**–श्रीराघव का एकाकी बल; **वाळ् अमर् ताऴुमे**–कठोर युद्ध में नीचा हो जायगा क्या। ८१२

देवी ! सात समुद्र, सात (दो) लोक, उनको घेरे रहनेवाले सात पर्वत और उनसे संयुक्त स्थानों में जो वास करते हैं, उन निर्बलों के अल्प बल के सामने एकाकी राघव की शक्ति भयंकर युद्ध में कम हो रहेगी क्या ? । ८१२

पारॅनक् कनलॅनप् पुनलॅनप् पवनवान्
पेरॅनैत् तवैयवन् मुनियिर् पेरुमाल्
कारॅनक् करियवक् कमलक् कण्णनै
आरॅनक् करुदियिव् विडरि नाऴ्हिन्ऱीर् 813

पार् ऍन्न–भूमि; **कलन् ऍन्न**–आग; **पुनल् ऍन्न**–जल; **पवनम् वान् पेर् ऍन्नैत्तु तल् अवै**–पवन, आकाश नाम का कोई भी; **अवन् मुनियिल्**–वे कोप करेंगे तो; **पेरुम् आल्**–अस्त-व्यस्त होगा; **कार् ऍन्न करिय**–मेघसम श्यामल; **कमल कण्णनै**–कमलाक्ष

ो; आर् ॲन्न करुति—कौन है, समझकर; इ इटरिल् आऴ्किन्ड्रीर्—इस कदर दुःख में ग्न रहती हैं। ८१३

पृथ्वी, अग्नि, जल, पवन, आकाश नाम के इनमें कोई भी (भूत) उनके कोप के सामने ठहर न सकेगा और टूटकर बिखर जायगा। उन मेघश्याम कमलाक्ष को आप कौन समझकर इतना घबड़ाती हैं? इतने दुःखमग्न हैं? । ८१३

❀ इडैन्दुपोय् निशिशरर् किराम नेंव्वमुवन्
दडैन्दपो दळैक्कुमे वळैक्कु मामॅन्निन्
मिडैन्दपे रणडङ्गण् मेल कीळन्न
उडैन्दुपो ययन्मुद लुयिरुम् वीयुमाल् 814

इरामन्—श्रीराम; निचिचरर्कु—एक राक्षस से; इटैनुतु पोय्—हारकर पीछे हटकर; ॲव्वम् वन्तु अटैन्त पोतु—संकटग्रस्त होने पर; अळैक्कुमे—पुकार मचायेंगे क्या; अळैक्कुम् आम् ॲतिल्—बुलाने का मौका आ जायगा तो; मेल कीळत—ऊपर और नीचे; मिटैन्त—लगे रहे; पेर् अण्टङ्कळ्—बड़े-बड़े अण्डगोल; उटैन्तु पोय्—टूट जायेंगे; अयन् मुतल् उयिरुम्—अजादि जीव; तीयुम्—जल जायेंगे। ८१४

श्रीराम निशिचर के सामने साहस खोकर पीछे हटेंगे और सहायता के लिए पुकार मचायँगे भी? यह क्या कहती हैं आप? यदि ऐसी नौबत आ गयी तो समझिए कि नीचे और ऊपर के सभी अण्डगोल फट जायँगे, और अज से लेकर सारी जीवराशियाँ जल-भुन जायँगी। ८१४

मार्रमॅन् पहर्वदु मण्णुम् वानमुम्
पोर्रवन् रिरिपुर मॅरित्त पुङ्गवन्
एर्रिनिन् र्ॅय्दविल् लिर्र दॅम्बिरान्
आर्रलि न्नैवदो रार्र लिन्मैयाल् 815

मण्णुम् वानमुम् पोर्र—भूलोकवासियों और आकाशवासियों से प्रशंसित होकर; पुङ्कवन्—उन देव (शिव) के; वन् तिरिपुरम् ॲरित्त—सशक्त त्रिपुरों को जिन्होंने जलाया; ॲय्त विल्—शर जिससे छोड़े गये, उस धनु का; एर्रि निन्र—प्रत्यंचा चढ़ाकर; अनैवतु ओर् आर्रल्—उतने से युक्त बल; ॲम्पिरान् आर्रलिन्—मेरे नाथ की शक्ति जितनी; इर्रतु—टूट गया (वह धनु); मार्रम् ॲन् पकर्वतु—किन शब्दों में (श्रीराम की शक्ति) कही जाय। ८१५ इन्मैयाल्—नहीं रहा, इसलिए;

श्रीशिवजी ने बलवान त्रिपुरों को अपने एक धनुष की सहायता से जलाया था। उनकी बड़ी वाहवाही हुई। देवों ने और भूलोकवासियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की! उस धनु में हमारे प्रभु के बल को सहने की शक्ति नहीं रही। वह टूट गया। श्रीराम की शक्ति का परिचय फिर किस बात को लेकर कहा जाय? । ८१५

कावल तीण्ड्रुनीर् करुदिऱ् ऱैय्दुमेल्
मूवहै युलहमु मुडियु मुन्दुळ
तेवरु मुऩिवरु मुदल शॆव्वियोर्
एवरुम् वीवर्मऱ् ऱऱमु मॆञ्जुमाल् 816

कावलऩ्–लोकरक्षक; ईण्ड्रु–अब; नीर् करुतिऱ्ऱु–आप जो सोचती हैं, वैसे; ऎय्तुम् एल्–(नाश को) प्राप्त होंगे तो; मूवकै उलकमुम् मुटियुम्–तीनों लोक मिट जायँगे; मुन्तु उळ–आदि रहनेवाले; तेवरुम्–देव; मुऩिवरुम्–और मुनि; मुतल–आदि; चॆव्वियोर् एवरुम्–श्रेष्ठ सभी; वीवर्–मर जायँगे; मऱ्ऱु–और भी; अऱमुम् ऎञ्चुम्–धर्म भी मिट जायगा। ८१६

जैसे आप समझती हैं, वैसी हालत लोकरक्षक पर आयी होती तो तीनों लोक मिट जाते ! आदिदेव, ब्रह्मादि, मुनि और अन्य सभी श्रेष्ठ लोग मर जाते ! और भी धर्म नहीं टिकता। ८१६

❀ परक्कवॆन् पहर्वदु पहळि पण्णवन्
तुरक्कवङ् गदुपडत् तॊलैन्दु शोर्हिन्ऱ
अरक्कनव् वुरैयॆंड्रु तरऱ्ऱि नाऩदऱ्
किरक्कमुऱ् ऱिरङ्गलि रिरुत्ति रीण्डॆन्ऱान् 817

परक्क ऎन् पकर्वतु–विस्तार के साथ क्या कहना; पण्णवऩ्–हमारे नाथ ने; अङ्कु पकळि तुरक्क–वहाँ अस्त्र चलाया और; अतु पट–वह लगा; तॊलैन्तु चोर्किन्ऱ अरक्कऩ्–बल खोकर मिटते हुए उस राक्षस ने; अ उरै ऎंट्रुत्तु–वे शब्द कहकर; अरऱ्ऱिऩाऩ्–प्रलाप किया; अतऱ्कु–उससे; इरक्कम् उऱ्ऱु–दुःख मानकर; इरङ्कलीर्–मत रोइए; ईण्ड्रु इरुत्तिर्–यहाँ रहिए; ऎन्ऱाऩ्–कहा। ८१७

विस्तार क्या करना ? हुआ यही होगा कि श्रीराम ने बाण छोड़ा; बाण मारीच पर लगा और मारीच जान खोकर मरा। मरने से पहले उसने ऐसा स्वर करके प्रलाप किया। आप कुछ और समझकर उस दुहाई के पीछे दुःखी मत होइए और मत रोइए। निश्चित यहीं रहिए। —लक्ष्मण ने ढाढस दिया। ८१७

❀ ऎन्ऱव नियम्बलु मॆळुन्द शीऱ्ऱत्तळ्
कॊन्ऱन वित्तलळ् कॊदिक्कु मुळ्ळत्तळ्
नित्ऱनिऩ् ऩिलैयिदु नॆऱियिऱ् ऱऩ्ऱॆऩा
वन्ऱऱु कण्णिनाळ् वलिन्दु कूऱिनाळ् 818

ऎन्ऱु–ऐसा; अवऩ् इयम्पलुम्–उनके कहने पर; ऎळुन्त–उत्तेजित; चीऱ्ऱत्तळ्–क्रोधिता; कॊन्ऱु अऩ–मारी जायँगी, ऐसा; इन्ऩलळ्–संकटग्रस्त; कॊतिक्कुम् उळ्ळत्तळ–खौलते चित्त की; वल् तऱुकण्णिताळ्–सुदृढ़ निडरता के साथ (सीताजी ने); निऩ्ऱ निऩ् निलै इतु–अपनायी हुई तुम्हारी यह स्थिति; नॆऱियिऱ्ऱु

अऩ्ऱु–नीतिसम्मत नहीं; ॲऩ्ऱ–ऐसा; वलिऩ्ऩु–कठोर स्वर में; कूऱुवाळ्–कहने लगीं। ८१८

लक्ष्मण का वचन सुनकर सीताजी का क्रोध और उमड़ पड़ा। स्वयं उनको कोई मार रहा हो, उतना दुःख हुआ। उबल पड़ीं और अनोखे क्रूर निडरता के साथ उन्होंने कठोर शब्दों में कहा कि यह तुम्हारी स्थिति नीति-सम्मत नहीं है। ८१८

❀ ऒरुपहल्	पळहिऩा	रुयिरै	यीवराल्
पॆरुमह	ऩुलैवुऱ्ऱ	पॆऱ्ऱि	केट्टुनी
वॆरुवलै	निऩ्ऱऩै	वेऱॆऩ्	याऩिऩि
ॲरियिडैक्	कडिदुवीऴ्न्	दिऱप्पे	ऩीण्डॆऩा 819

ऒरु पकल् पळकिऩार्–एक दिन के परिचित भी; उयिरै ईवर्–प्राण दे देंगे; पॆरुमकऩ्–हमारे नाथ; उलैवु उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–मर गये, यह गति; नी केट्टुम्–तुमने कान से सुनी, तो भी; वॆरुवलै–भीत नहीं हो; निऩ्ऱऩै–खड़े हो; वेऱु ॲऩ्–दूसरा मार्ग अब मेरे लिए क्या रहा; याऩ्–मै; इऩि–अब; ॲरि इटै–आग में; कटितु वीऴ्न्तु–जल्दी प्रवेश करके; ईण्टु–यहाँ; उयिर् इऱप्पॆऩ्–प्राण त्यागकर मर जाऊँगी; ॲऩा–कहकर। ८१६

आगे मर्मघातक शब्द में कहा कि एक ही दिन के परिचित हों, तो भी वे अपने मित्र को बचाने के लिए अपने प्राण दे देंगे। हमारे नायक पर क्या बीता, यह तुम जानते हो। जानकर भी विना किसी भय के या संशय के मेरे ही पास खड़े हो! अब मेरे पास कोई दूसरा चारा नहीं है। अब मैं शीघ्र जलती आग में कूद पड़ूँगी और मर जाऊँगी। ८१९

❀ तामरै	वऩत्तिडैत्	तावु	मऩ्ऩम्बोल्
तूमवॆङ्	गाट्टॆरित्	तॊडर्हिऩ्	ऱाडलैच्
चेमविऱ्	कुमरऩुम्	विलक्किच्	चीऱडिप्
पूमुह	नॆडुनिलम्	पुल्लिच्	चॊल्लुवाऩ् 820

तामरै वऩत्तिटै–कमल-कानन में; तावुम् अऩ्ऩम् पोल्–लपकते हंस के समान; तूम वॆम् काट्टु ॲरि–धुएँ-सहित भयंकर दावाग्नि की ओर; तॊटर्किऩ्ऱाळ् तऩै–जो चलने लगीं, उनको; चेम विल् कुमरऩुम्–संरक्षक धनुर्धर कुमार भी; विलक्कि–रोक कर; चिऱु अटि पू मुकम्–छोटे चरण-पंकजों के सामने; नॆट्टु निलम् पुल्लि–लम्बी भूमि पर गिरकर (दण्डवत करके) चॊल्लुवाऩ्–बोलने लगे। ८२०

यह कहकर सीताजी कमलकानन में लपकनेवाले कलकण्ठ (हंस) के समान धुआँ उगलती हुई जलनेवाली दावाग्नि की ओर दौड़ने लगीं। संरक्षक धनुर्धर लक्ष्मण ने उनको रोका, उनके चरण-पंकजों के सामने गिरकर दण्डवत की और कहा। ८२०

❀ तुञ्जुव दॆन्नॆनीर् शॊन्न शॊल्लैयान्
अञ्जुवॆन् मरुक्किलॆ नवलन् दीर्न्दिनि
दिञ्जिरु मडियनॆ नेहु हिन्र्रॆन्
वॆञ्जिन विदियिनै वॆल्ल वल्लमो 821

तुञ्चुवतु ऍन्नॆ–आप मरें क्यों; नीर् चॊन्न चॊल्लै–आपकी कही हुई बात से; यान् अञ्चुवॆन्–मैं डरता हूँ; मरुक्किलेन्–आपकी बात मानने से इनकार नहीं करूँगा; इत्ति–अब; अवलम् तीर्न्तु–चिंता त्यागकर; इञ्चु इरुम्–यहीं रहिए; अटियेन् एकुकिन्र्रेन्–मैं जाता हूँ; वॆम् चित्त वितियिनै–भयंकर क्रोधी विधि को; वॆल्ल वल्लमो–हरा सकेंगे क्या। ८२१

भगवती ! आप क्यों मरें ? आपकी बात मुझे भयभीत कर रही है। मैं आपकी आज्ञा का भंग नहीं करूँगा। अब आप दुःख छोड़कर निश्चित यहीं रहिएगा। दास मैं जा रहा हूँ। विधि क्रूर है और क्रुद्ध है। उसको हम कैसे जीत सकेंगे ? । ८२१

❀ पोहिन्र्रे नडियनेन् पुहुन्दु वन्दुके
डाहिन्र्र दैयन्र्र नाणै नीर्मरुत्
तेहॆन्र्रि रिरुक्किन्र्रिर् तमिय रॆन्रुपिन्
वेहिन्र्र शिन्दैयेन् विडैहॊण् डॆन्ना 822

अटियनेन् पोकिन्र्रेन्–दास मैं जाता हूँ; केटु–बड़ा संकट; पुकुन्तु वन्तु आकिन्र्रतु–घुसकर आया हुआ है; ऐयन् तन् आणै–प्रभु श्रीराम की आज्ञा; नीर् मरुत्तु–आप काटती हैं और; एकु ऍन्र्रीर्–जाओ कहती हैं; तमियर् इरुक्किन्र्रिर्–अकेली रहती हैं; ऍन्रु–कहकर; पिन्–फिर; वेकिन्र्र चिन्तैयेन्–तप्तचित्त होकर; विटै कॊण्टेन्–बिदा लेता हूँ; ऍन्ना–कहकर। ८२२

मैं जा रहा हूँ। बहुत बड़ी विपदा आ रही है। प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करके आप मुझे भेज रही हैं। अब एकाकिनी रहेंगी। लक्ष्मण ने यह कहा। फिर उन्होंने जारी किया। मेरा मन संतप्त है ! उसी स्थिति में मैं आपसे आज्ञा ले रहा हूँ। ८२२

❀ इरुप्पनॆ लॆरियिडै यिरप्प रालिवर्
पॊरुप्पनै यानिडैप् पोवॆ नॆयॆनिल्
अरुप्पमिल् केडुवन् दडैयु मारुयिर्
इरुप्पनेर् कॆन्शॆय लॆन्रु विम्मितान् 823

इरुप्पनेल्–यहाँ रहता हूँ तो; इवर्–ये; एरि इटै इरप्पर्–आग में (कूदकर) मर जायँगी; पॊरुप्पु अनैयान् इटै–पर्वत-सम श्रीराम के स्थान पर; पोवन् ए ऍनिल्–जाऊँगा तो; अरुप्पमिल्–अनल्प; केटु वन्तु अटैयुम्–विपदा आ जायगी; आर् उयिर् इरुप्पनेर्कु–साथ लगे प्राण के साथ जो रहता हूँ मुझे; ऍन् चॆयल्–क्या करना है; ऍन्रु–ऐसा; विम्मितान्–(सोच में पड़कर) दुखी हुए। ८२३

लक्ष्मण को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने सोचा कि अगर मैं रह जाऊँगा, तो ये आग में कूदकर मर जायँगी। अगर मैं पर्वत-सम श्रीराम के पास चला जाऊँ तो अनल्प, बहुत बड़ी कोई विपदा आयगी, अवश्य। हाय! दुर्भाग्य! मैं जीवित हूँ। प्यारे प्राणों के साथ हूँ। क्या करूँ मैं? । ८२३

अऱन्दऩ्ऩा लऴिविल दाह लाक्कलाम्
इऱन्दुपा डिवर्क्कुरु मिरुक्कि ऩिव्वऴि
तुऱन्दुपो मिदऩ्ऩेये तुणिवॆंन् ऱॆल्विऩैप्
पिऱन्दुपोन् दिदुपडुम् पेदै येॆंऩ्ऩा 824

इ वऴि इरुक्किन्–यहीं रहूँगा तो; इवर्क्कु–इन्हें; इऱन्तुपाट्टु उरुम्–मरना पड़ जायगा; तॊल् विऩै पिऱन्तु–पूर्व-कर्म के फलस्वरूप जन्म लेकर; पोन्तु–इधर आकर; इतु पटुम्–इस संकट में जो पड़ा हूँ; पेतैयेन्–अबोध मैं; तुऱन्तु पोम् इतऩ्ऩेये–इधर से जाने का यही; तुणिवॆन्–निश्चय करूँगा; अऱम् तऩ्ऩाल्–धर्मद्वारा; अऴिवु इलतु आकल्–न मरने का काम; आक्कलाम्–सिद्ध हो सकता है; ऎन्ना–सोचकर। ८२४

फिर भी सोचा— यहीं रह जाऊँ क्या? नहीं। यहीं रहूँ तो इनकी मर जाने की हालत आ जायगी। मैं अभागा, प्राचीन कर्म-वश जनित होकर यह संकट उठा रहा हूँ। क्षुद्र आत्मा मैं यही करूँगा— जाने का निश्चय ही ठीक लगता है। शायद धर्म सबको बचा ले और नाश होने से रुक जाय। ८२४

❀ पोवदु पुरिवऩान् पुहुन्द दुण्डॆंनिल्
कावलॆंय् यॆरुवैयिन् ऱलैवन् कण्णुरुम्
आवदु काक्कुमॆंन् ऱऱिवुऱ् ऱव्वऴित्
तेवर्शॆंय् दवत्तिऩाऱ् चॆम्मल् लेहिऩान् 825

नान् पोवतु पुरिवल्–मैं गमन करूँगा; पुकुन्ततु उण्टु ऎनिल्–(संकट कुछ) आयगा तो; कावल् चॆय् ऎरुवैयिन् तलैवन्–हमारे संरक्षण में लगे हुए गृध्रराज; कण् उरुम्–देखेंगे; आवतु काक्कुम्–भरसक रक्षा करेंगे; ऎन्ऱु अऱिवु उऱ्ऱु–यह जानकर; तेवर् चॆय् तवत्तिनाल्–देवों के तप के कारण; अ वऴि–वहाँ से; चॆम्मल्–उत्तम लक्ष्मण; नीङ्किनान्–चले। ८२५

फिर लक्ष्मण ने सीताजी से कहा कि मैं गमन करता हूँ। 'गृध्रराज जटायु हमारे रक्षक हैं। वे ध्यान रखेंगे और भरसक सहायता करेंगे।' यह सोचकर वे चल पड़े। हाँ! देवताओं के तप को फलीभूत होना था। इसलिए वे उत्तम लक्ष्मण वहाँ से चले। ८२५

❀ इळैयव ऩेहलु मिऱवु पार्क्किन्ऱ
वळैयॆयिऱ् ऱिरावणऩ् वञ्ज मुरुवान्

मुळैवरित् तण्डोरु मूनूरु मुप्पहैत्
तळैयरि तवत्तवर् वडिवुन् दाङ्गिनान् 826

इळैयवन् एकलुम्–लघुराज लक्ष्मण के जाने पर; इरवु पार्क्किन्नुर–उनके हटने की टोह में जो रहा; वळै ऍयिऱु रावणन्–वह वक्रदाँतों का रावण; वञ्चम् मुऱ्ऱुवान्–कपटकार्य साधने के लिए; वरि–सबन्ध; मुळै तण्टु ओरु मूनूरुम्–बाँसों का त्रिदण्ड और; मु पकै तळै अरि–(काम, क्रोध, लोभ के) तीन शत्रुबन्धन को जो काट चुका; तवत्तु अवर् वटिवुम्–ऐसे तपस्वी का वह रूप; ताङ्किनान्–ले लिया। ८२६

लघुराज लक्ष्मण के जाते ही, उसकी टोह में जो रहा, वह वक्रदन्तोरा रावण अपना कपट-कार्य साधने के हेतु संन्यासी का वेश धरकर आया। हाथ में त्रिदण्ड, और काम, क्रोध और लोभ तीनों अन्तश्शत्रुओं के जयी एक तपोधन का वेश लेकर वह प्रकट हुआ। ८२६

ऊणिल नामॅन बुलर्न्द मेनियन्, शेणॅरि वन्ददोर् वरुत्तच् चॅय्हैयन्
पाणियि नळन्दिशै पडिक्किन् ऱानॅन, वीणैयि निशैपड वेदम् बाडुवान् 827

ऊण् इलन् आम् ॲन–निराहार रहा हो जैसे; उलर्न्त मेनियन्–कृश-शरीरी; चेण् नॅऱि वन्ततु–लम्बा मार्ग आया जैसे; ओर् वरुत्त चॅय्कैयन्–कष्ट-प्रकाशक, चेष्टा-प्रदर्शक; पाणियिन् अळन्तु–ताल-मेल के साथ; इचै पटिक्किन्ऱान् ॲन–संगीत सुनाता हो जैसे; वीणैयिन् इचैपट–वीणा-वादन के मेल में; वेतम् पाटुवान्–सामवेद-गायक। ८२७

उसका शरीर निराहार रहे मनुष्य के समान शुष्क था। उसकी चेष्टाएँ यह प्रदर्शित कर रही थीं, मानो वह बहुत दूर चलकर आया हो। ताल के मेल के साथ संगीत सुनाता जैसा वह वीणा के स्वर के मेल में सामवेदगान करता आया। ८२७

पूप्पॉदि यविऴ्न्दन नडैयन् पूदलम्
तीप्पॉदिन् दामॅन मिदिक्कुञ् जॅय्हैयान्
काप्परु नडुक्कुऱुङ् गालन् कैयिनन्
मूप्पॅनुम् परुवमु मुनिय मुऱ्ऱिनान् 828

पू पॊति अविऴ्न्तु अन–पुष्पदल विकसित होते हैं जैसे; नटैयन्–मृदुचाल; पू तलम् ती पॊतिन्ततु आम्–भूमि पर आग भरी हो; ॲन–ऐसे; मितिक्कुम् चॅय्कैयान्–पाँव फूंक-फूंककर रखनेवाला; काप्पु अरु–अनियन्त्रित रूप से; नटुक्कु उऱुम्–काँपते हुए; कालन् कैयिनन्–पैरों और हाथों का; मूप्पु ॲनुम् परुवमुम्–वार्द्धक्य दशा में; मुनिय–घृणित रूप से; मुऱ्ऱिनान्–बढ़ा रहा। ८२८

वह बहुत धीरे-धीरे पग धर रहा था, जैसे पुष्प का दल विकसता है। पैर फूंक-फूंककर रखता आया, मानो भूमि पर अंगार बिछे हों और वह

बचकर आता हो। उसके हाथ और पैर काँपते थे और रोके नहीं रुकते थे। वार्द्धक्य ने पूर्णरूप से आकर घेरा था —ऐसा जर्जर था। ८२८

❀ एमुरु निलैयिन्न् तिड्डु कण्णिनन्
आमैयि निरुक्कैयि नमैन्द वाक्कैयन्
नामनूल् मार्बिन्न णुहि नानरो
तूमनत् तरुन्ददि यिरुन्द शूळल्वाय् 829

एम् उरु निलैयितन्-आकुलित-मन; इट्कु कण्णितन्-सँकरी आँखों का; आमैयित् इरुक्कैयित्-कछुए की पीठ के समान; अमैन्त-कुबड़ा बना; आक्कैयन्-शरीरी; नाम नूल् मार्पितन्-श्रेष्ठ (उपवीत-)सूत्रधारी वक्ष का; तू मनत्तु अरुन्तति-पवित्र-मना, अरुन्धती (सी सीता) के; इरुन्त चूळल् वाय्-रहने के स्थान में; नणुकिनान्-आ पहुँचा। ८२९

उसका मन घबड़ाया हुआ था। आँखें सँकरी थीं। कछुए के कूबड़ के समान उसका शरीर वर्तुल था। वक्ष पर यज्ञोपवीत था। ऐसा वह कपटी पवित्रमना, अरुन्धती-सी सीतादेवी के रहने के स्थान में आ पहुँचा। ८२९

❀ तोमरु शालैयिन् वायि रुन्निनान्
नामुदल् कुळरिड नडुङ्गुञ् जोल्लिनान्
यावरिव् विरुक्कैयु ळिरुन्दु ळीरॆन्ड्रान्
तेवरु मरुडरत् तिरिन्द मेनियान् 830

तेवरुम् मरुळ् तर-देवों को भी भ्रमित करे, ऐसा; तिरिन्त मेनियान्-परिवर्तित (संन्यासी का) वेषधर; तोम् अरु-अनिन्द्य; चालैयिन् वायिल्-पर्णशाला के द्वार पर; तुन्नितान्-पहुँचकर; ना मुतल् कुळरिट-जीभ की नोक के लड़खड़ाते; नटुङ्कुम् चॊल्लिनान्-खण्डित बोली के साथ; यावर्-कौन; इ इरुक्कै उळ्-इस कुटीर के अन्दर; इरुन्तु उळीर्-रहते हो; ऎन्ड्रान्-पूछा। ८३०

उसका परिवर्तित वेश देखकर देव भी भ्रमित हो गये थे। वह कलंकहीन पर्णशाला के द्वार पर आ पहुँचा। लड़खड़ाती जिह्वा से अस्पष्ट बोली में उसने प्रश्न किया कि इस कुटीर के अन्दर तुम कौन रहते हो?। ८३०

❀ तोहैयु मिव्विळित् तोमिल् शिन्दनैच्
चेहरु नोन्बिन रॆन्नुञ् जिन्दैयाल्
पाहियल् किळवियोर् पवळक् कॊम्बर्पोल्
एहुमि नोण्डन वॆदिर्वन् दॆय्दिनाळ् 831

तोकैयुम्-देवी भी; इ वळि-इस वन के; तोम् इल् चिन्तनै-अकलंकमन; चेकु अरु नोन्पितर्-अनिन्द्य तपोव्रती; ऎन्नुम् चिन्तैयाल्-यह विचार करके; पाकु इयल् किळवि-चासनी-सम बोली के साथ; ओर् पवळ कॊम्पर् पोल्-एक प्रवालवल्लरी

के समान; ईण्ड्रु एकुमिऩ्–यहाँ पधारिए; ॲऩ–कहते हुए; ॲतिर् वन्तु ॲय्तिताळ्–सामने आयीं। ८३१

सीताजी का विचार था कि वह पवित्र तपोधन है, जो इस वन में रहता है। इसलिए प्रवाललता-सदृश देवी ने चासनी-सम मधुर बोली में स्वागत किया कि यहाँ पधारिए। यह कहते हुए वे उस कपट तपस्वी के सामने आयीं। ८३१

❀ वॆऱ्पिडै मदमॆऩ वेर्क्कु मेऩियऩ्
अऱ्पितिऱ् ऱिरैपुर ळाशै वेलैयऩ्
पॊऱ्पिऩुक् कणियिऩैप् पुहऴिऩ् शेक्कैयैक्
कऱ्पिऩुक् करशियैक् कण्णि ऩोक्किऩाऩ् 832

वॆऱ्पु इटै–पर्वत पर; मतम् ॲऩ–शिला-रस के समान (या गजमद के समान); वेर्क्कुम् मेऩियऩ्–स्वेद-भरा शरीरी; अऱ्पिऩिल्–प्रेम की; तिरै पुरळ–तरंगों से पूर्ण; आचै वेलैयऩ्–आशा-सागर में मग्न वह; पॊऱ्पिऩुक्कु अणियिऩै–सुन्दरता के अलंकार को; पुकऴिऩ् चेक्कैयै–कीर्ति-निलया को; कऱ्पिऩुक्कु अरचियै–पातिव्रत्य की रानी को; कण्णिऩ् नोक्किऩाऩ्–अपनी आँखों से (खूब) देखा। ८३२

रावण ने देवी को देखा। उसके शरीर से पर्वत से स्रवित शिलाजीत के समान स्वेद निकल रहा था। वह प्रेम की तरंगों से आकुलित आशा-सागर में मग्न था। उसने सुन्दरता की सुन्दरता, यश का आलय और पातिव्रत्य की रानी को अपनी आँखें फाड़कर देखा। ८३२

❀ तुङ्गलिऩ् कुयिल्हॊऴ् शॊल्लि ऩुम्बरिऩ्
ओङ्गिय वऴहिऩा ळुरुवङ् गाण्डलुम्
एङ्गिऩऩ् मऩनिलै यादॆऩ् ऱुऩ्ऩुवाम्
वीङ्गिऩ मॆलिन्दऩ वीरत् तोळ्हळे 833

तुङ्कलिऩ्–थकी अवस्था में भी; कुयिल् कॊऴु–कोयल की पक्व; चॊल्लिऩ् उम्परिल्–बोली की श्रेष्ठता में; ओङ्किय अऴकिऩाळ्–बढ़ी सुन्दरता से युक्त (देवी के); उरुवम् काण्टलुम्–रूप को देखते ही; वीर तोळ्कळ्–रावण के वीरता में बढ़े हुए कंधे; वीङ्किऩ–और भी फूल उठे; मॆलिन्तऩ–(पर मिलेगी कैसे, सोचने पर) दुबले हुए; एङ्किऩऩ्–उत्कंठित उसके; मऩ निलै–मन की स्थिति; यातु ॲऩ्ऱु–क्या थी; इयम्पुवाम्–कैसे कहें। ८३३

भगवती सीता वनवास के कारण कृश थीं। उस दुःख के कारण थकी थीं। तो भी बोली में सुन्दरता की उच्च श्रेणी में थीं। उनका रूप देखते ही रावण के कन्धे फूल उठे। फिर तरस के कारण कृश हो गये। ऐसा उत्कंठा से व्यग्र उसके मन की दशा क्या कहें? । ८३३

पुन॒मयिऱ् चायऱ् ऍ॒ऴिलिऩ् पूनऱैच्
चुनैमडुत् तुण्डिशै मुरलुन् दुम्बियिन्
इन॒मॆन॒क् कळितत्तुळ दॆन॒ब तॆन्ऩवन्
मन॒मॆन॒क् कळित्तदु कण्णिन् मालैये 834

कण्णिन् मालैये–अक्ष-माला; पुन मयिल् चायल् तन्–वन्यमयूरनिभ देवी की; ऍऴिलिल्–रम्यता से; पू नऱै चुनै मडुत्तु उण्टु–फूलों के शहद-भरे गढ़े में पड़कर उसको पीकर; इचै मुरलुम्–सुस्वर में गुंजायमान; तुम्पियिन् इनम् ऍन–भ्रमरों के समान; कळित्तुळतु ऍन्पतु ऍन्–मत्त थी, यह कहने में क्या (अर्थ) है; अवन् मनम् ऍन–उसी के मन के समान; कळित्ततु–मुग्ध हुई। ८३४

उसकी आँखों की माला का कैसा वर्णन हो? वनमयूरनिभ देवी का रूप देखकर वह फूलों का शहद गढ़े में भरकर उसे पीकर उन्मत्त भ्रमरों की पंक्ति थी —यह कहें? पर उसका क्या अर्थ निकलेगा? कहना यही पड़ेगा कि वे भ्रमर उसके ही मन के समान मुग्ध रहे। ८३४

❀ शेयिदळ्त् तामरैच् चेक्कै तीर्न्दिवण्
मेयिनळ् मणिनिऱ् मेनि काणुदऱ्
केयुमे यिरुपदिङ् गिमैप्पि नाट्टङ्गळ्
आयिर मिल्लैयॆन् ऱवल मॆय्दिन॒ान् 835

चे इतळ्–लाल दलों के; तामरै चेक्कै–कमल का वास; तीर्न्तु–छोड़कर; इवण् मेयिनळ्–यहाँ जो पधारी हैं, उनकी; मणि निऱ–सुन्दर प्रकाशमय; मेनि–देह-कान्ति; काणुतऱ्कु–देखने के लिए; इङ्कु इरुपतु नाट्टङ्कळ् एयुमे–यहाँ मेरी बीस आँखें पर्याप्त हैं क्या; इमैप्पु इल् नाट्टङ्कळ–अपलक आँखें; आयिरम् इल्लै ऍन्ऱु–सहस्र नहीं हैं, यह सोचकर; अवलम् ऍय्तिनान्–दुखी हुआ। ८३५

उसे बड़ा पछतावा हुआ। लाल दलों से लसित कमल का वास-स्थान छोड़कर जो इधर आयी थी, उन (लक्ष्मीदेवी) की कान्तिमय देह को देखने के लिए क्या बीस आँखें पर्याप्त होंगी? वह इस अभाव को लेकर चिन्तित हुआ कि मेरे अपलक सहस्र आँखें नहीं हैं! । ८३५

अरैकडै यिट्टमुक् कोडि यायुवुम्
परैतबु तवत्तिन॒ान् पडैत्त पोदुमे
निरैवळै मुन्ऩैयिन् निन्ऱ नङ्गैदन्
करैयरु नन्नलक् कडऱ्कॆन् ऱुन्ऩिन॒ान् 836

निरै वळै मुन् कै–पंक्तियों में कंकण-भूषित हाथों के साथ; इ निन्ऱ नङ्कै तन्–यहाँ जो खड़ी है, इस नायिका के; करै अऱु–तटहीन; नल् नलम् कटऱ्कु–उत्तम सौन्दर्य-सागर में क्रीड़ा करने के लिए; पुरै तपु तवत्तिन्–दोषरहित तपस्या द्वारा; अरै कटैयिट्ट–आधी जिसके पीछे लगी हुई है; ऍन् मुनान् पटैत्त–मैंने जो पायी;

कोटि–मेरी तीन करोड़ (यानी कुल साढ़े तीन करोड़) साल की; आयुवुम्–आयु के दिन भी; पोतुमे–पर्याप्त होंगे क्या। ८३६

अपने हाथों में पंक्तियों में कंकण पहने हुए ये मेरे सामने खड़ी हैं। मैंने अपराधहीन तपस्या की और साढ़े तीन करोड़ साल की आयु पायी। पर इनके सौन्दर्य रूपी सागर में क्रीड़ा करने के लिए उतनी आयु पर्याप्त होगी क्या ? । ८३६

❀ तेवरु मवुणरुत् देवि मारुडत्, कूवल्शॅय् तॉऴिलितर् कुडिमै शॅय्दिङ
मूवुल हमुमिवर् मुरैयि ताळयात्, एवल्शॅय् दुयहुवॅ तितियॅत् ॲॅण्णितात् 837

तेवरुम्–देव; अवुणरुम्–असुर; तेविमार् उटत्–अपनी-अपनी पत्नियों के साथ; कूवल् चॅय् तॉऴिलित्तर्–बुलाने पर सेवा करने के काम में लगे हुए; कुटिमै चॅय्तिट–(दासता का काम) परम्परा से करते आते हैं; मू उलकमुम्–(मेरे अधिकाराधीन) तीनों लोकों पर; इवर् मुरैयित् आळ–ये यथाक्रम शासन करें; इत्ति–आगे; यात् एवल् चॅय्तु–मैं कैंकर्य करके; उयकुवॅत्–तर जाऊँगा; ॲॅत्रु–ऐसा; उत्तित्तात्–(रावण ने) विचार किया। ८३७

अब मैं त्रिलोकाधिपति हूँ। देव और दानव अपनी पत्नियों के साथ मेरी दासता परम्परा से करते आ रहे हैं। अब वह आधिपत्य इनके सिपुर्द कर दूँगा और मैं भी उनकी सेवा करके तर जाऊँगा। ८३७

❀ उळैवुरु तुयर्मुहत् तॉऴियि दामॅतित्
मुळैयॅयि ॲिलङ्गिडु मुरुव लॅत्बडुम्
तळैयविऴ् कुऴलिवट् कण्डु तन्दवॅत्
इळैयवट् कळिप्पत्तॅत् तरशॅत् ॲॅण्णितात् 838

उळैवु उरु–उद्विग्न; तुयर् मुकत्तु–दुःख-प्रदर्शक आनन की; ऑळि इतु आम् ॲॅतिल्–आभा यह है तो; मुळै ॲॅयिरु इलङ्किटुम्–अंकुर-सम दाँतों से शोभित; मुरुवल् ॲॅत्पटुम्–मुस्कुराहट (का वदन) कैसा (अनुपम) होगा; तळै अविऴ् कुऴल्–खुले केश की; इवळ् कण्टु–इनको देखकर; तन्त–मुझे जिसने (समाचार) दिया; ॲॅत् इळैयवट्कु–अपनी छोटी बहिन को; ॲॅत् अरचु–अपना राज्य; अळिप्पॅत् ॲॅत्रु–दे दूंगा, ऐसा; ॲॅण्णित्तात्–रावण ने सोचा। ८३८

अब वह शूर्पणखा का स्मरण कृतज्ञता के साथ करने लगा। ये अब उद्विग्न हैं और इनका मुख-भाव दुःख का परिचायक है। इस स्थिति में भी इनकी शोभा इतनी मनोरम है। अगर इनके मुख पर अंकुर के समान हास दिखाई दे यानी ये सुखी हो जायँ, तो कितनी सुन्दर लगेंगी। इनको ढूँढ़ लेकर शूर्पणखा ने मुझे इनका समाचार दिया। खुले केश की इनको मुझे दिलाने के प्रत्युपकार में अपनी छोटी बहिन को मैं अपना राज्य ही दे दूँगा। रावण ने भावातिरेक में ऐसा सोचा। ८३८

❀ आण्टैया ननैयन वुन्नि याशैमेल्
मूण्डॅळु शिन्दनै मुरैयि लोन्ऱनैक्
काण्डलुङ् गण्णिनीर् तुडैत्त कऱ्पिनाळ्
ईण्डॅळुन् दरुळुमॅन् ऱिनिय कूऱिनाळ् 839

आण्टैयान्–वहाँ रहकर; अनैयन उन्नि–वह सब सोचकर; आचै मेल् मूण्टु ॲळु–प्रबल रूप से उभरी इच्छा-सहित; चिन्तनै–मन का; मुऱै इलोन् तनै–अत्याचारी को; कण्णिन् नीर् तुटैत्त–आँखों के आँसू पोंछकर; कऱ्पिनाळ्–पतिव्रता ने; ईण्टु ॲळुन्तरुळुम्–यहाँ पधारिए; ॲन्ऱु–यह; इनिय कूऱिनाळ्–मधुर (स्वागत-वचन) कहा। ८३९

वह वहाँ रहकर ऐसा सोचता रहा। उसका मन प्रबल रूप से उमँगनेवाले राग से भर गया। उधर पतिव्रता देवी सीता ने अपनी आँखों से अश्रु पोंछ लिये। उस अधर्मी अत्याचारी से मधुर स्वर में 'इधर पधारिए' कहा। ८३९

❀ एत्तिन ळॅय्दलु मिरुत्ति रीण्डॅन
वेत्तिरत् ताशनम् विदियि नल्हिनाळ्
मात्तिरि तण्डयल् वैत्त वञ्जनुम्
पूत्तॊडर् शालैयि निरुन्द पोऴ्दिने 840

एत्तिनळ्–स्वागत करके; ॲय्तलुम्–(रावण के) अन्दर आते ही; इरुत्तिर् ईण्टु ॲन–यहाँ विराजिए, कहकर; वेत्तिरत्तु आचनम्–वेत्रासन; वितियिन्–यथाविधि; नल्किनाळ्–दिया; मा तिरि तण्टु–गौरवपूर्ण त्रिदण्ड; अयल् वैत्त–पास रखकर; वञ्चनम्–वंचक भी; पू तॊटर् चालैयिन्–पुष्पपूर्ण पर्णशाला में; इरुन्त पोऴ्तिल्–जब रहा, तब। ८४०

उन्होंने स्तुति के साथ स्वागत किया, तो वह दुराचारी पर्णशाला में आ गया। सीताजी ने 'इधर विराजिए' कहकर एक वेत्र का बुना आसन डसवाकर बिठाया। वह कपटी रावण अपने आदरणीय त्रिदण्ड को पास रखकर पर्णशाला के अन्दर उस आसन पर आसीन जब हुआ, तब— । ८४०

नडुङ्गिन मलैहळु मरनु नावविन्
दडङ्गिन पऱवैयुम् विलङ्गु मञ्जिन
पडङ्गुऱैन् दॊडुङ्गिन पाम्बुम् बादहक्
कडुन्दॊऴि लरक्कनैक् काणुङ् गण्णिने 841

पातक कटुम् तॊऴिल् अरक्कनै–पातक, कठोर अत्याचारी राक्षस को; काणुम् कण्णिन्–वहाँ देखकर; मलैकळुम्–पर्वत और; मरनुम्–वृक्ष; नटुङ्किन–काँपे; ना अविन्तु–अवाक्; अटङ्किन–चुप रहे; विलङ्कुम् अञ्चिन–जानवर भी भयातुर हुए; पऱवैयुम्–खग भी; पाम्पुम्–सर्प भी; पटम् कुऱैन्तु–फन फैलाना छोड़कर; ऒटुङ्किन–ठिठुरे रहे। ८४१

पातक और कठोर दुराचारी को वहाँ देखकर पर्वत और तरु काँप उठे। खगगण अवाक् हो दब गये। जानवर भयभीत हुए। सर्प भी फन समेटकर दबे पड़े रहे। ८४१

❀ इरुन्दवन् यावदिव् विरुक्कै योङ्गुरै, अरुन्दवन् यावनीर् यारै यॅन्ऱलुम्
विरुन्दिनर् रिव्वऴि विरहि लारॅनप्, पॅरुन्दडङ् गण्णवळ् पेशल् मेयिनाळ् 842

इरुन्तवन्–आसनस्थ हो रावण ने; इ इरुक्कै यावतु–यह वासस्थान कौन है; ईङ्कु उरै–यहाँ का वासी; अरुम् तवन् यावन्–श्रेष्ठ तपस्वी कौन; नीर यारै–आप कौन हैं; ॲन्ऱलुम्–पूछा, तब; इ वऴि–(ये) यहाँ आगत; विरुन्तिनर्–अतिथि हैं; विरकु इलार्–कपटहीन (साधु) हैं; ॲन–सोचकर; पॅरुम् तटम् कण् अवळ्–विशाल आयताक्षी सीताजी; पेचल् मेयिनाळ्–बोलने लगीं। ८४२

वहाँ आसनस्थ रावण ने कुतूहलप्रदर्शक प्रश्न किये। यह वास कौन सा है? यहाँ के वासी श्रेष्ठ तपस्वी कौन हैं? आप कौन हैं? तब देवी ने सोचा कि ये निष्कपट अतिथि हैं। विशाल आयताक्षी सीताजी बोलीं। ८४२

❀ तयरदन् ऱॊल्हुलत् तनयन् ऱम्बियो
डुयर्हुलत् तन्नैशॊ लुच्चि येन्दिनान्
अयर्विल निववऴि युऱैयु मन्नवन्
पॅयरिनै तॅरिहुदिर् पॅरुमै योरॅन्ऱाळ् 843

पॅरुमैयोर्–आदरणीय; तॊल् कुलम्–प्राचीन कुल के; तयरतन् तनयन्–दशरथ के पुत्र; तम्पियोटु–अपने अनुज के साथ; उयर् कुलत्तु अन्नै–श्रेष्ठकुल-जाता अपनी माता की; चॊल् उच्चि एन्तिनान्–आज्ञा सिर पर धारण करके; अयर्वु इलन्–विना संताप के; इ वऴि उऱैयुम्–यहाँ वास करते हैं; अन्नवन्–उनका; पॅयरिनै–नाम को; तॅरिकुतिर्–आप जानते ही होंगे; ॲन्ऱाळ्–कहा (देवी ने)। ८४३

आदरणीय अतिथि! प्राचीन और प्रसिद्ध इक्ष्वाकुकुल के दशरथ के पुत्र अपने भाई के साथ इधर रहते हैं। वे अपनी उच्चकुलजाता माता की आज्ञा शिरोधारण करके विना किसी सन्ताप के इधर आये हैं और रहते हैं। उनका नाम आप जानते ही होंगे। ८४३

❀ केट्टनॆन् कण्डिलॆन् कॊऴुवु गङ्गैनीर्
नाट्टिडै यॊरुमुऱै नण्णि नॆन्मलर्
वाट्टडङ् गण्णिनीर् यावर् मामहळ्
काट्टिडै यरुम्बहर् कऴिक्किन् ऱीरॅन्ऱान् 844

केट्टनॆन्–हाँ सुना है; कण्टिलॆन्–देखा नहीं है; कॊऴुवु कङ्कै नीर्–अत्यधिक गंगा-जलसमृद्ध; नाट्टिटै–(उस कोसल) देश में; ऒरु मुऱै नण्णिनॆन्–एक बार गया

था; मलर्–कमलपुष्प और; वाळ्–तलवार के समान; तटम्–विशाल; कण्णिन् नीर्–आँखों से शोभायमान आप; यावर् मा मकळ्–किनकी श्रेष्ठ दुहिता हैं; काट्टु इटै–वन के मध्य; अरुम् पकल् कळिक्किन्ड्रीर्–मूल्यवान दिनों को (व्यर्थ) काट रही हैं); ॲन्ड्रान्–पूछा। ८४४

रावण ने उत्तर में कहा कि हाँ! हमने सुना है। पर समक्ष नहीं देखा है। कोसल देश में भी, जो गंगा-जल से अत्यधिक समृद्ध बना है, एक बार गया हुआ था। पर वह बात छोड़ो। कमल और तलवार के सदृश आँखों से शोभायमान आप किसकी सुपुत्री हैं? वन में आकर अपने अच्छे दिन व्यर्थ कर रही हैं। ८४४

❀अन्हमा नॆंरिपड रडिह णुम्मलाल्
निन्नैवदोर् दॆय्वम्वे रिलाद नॆञ्जिनान्
शन्हन्मा मडमहळ् शन्हि काहुत्तन्
मन्नैविया नॆन्ड्रन्ळ् मरुविल् कर्पिन्नाळ् 845

मरु इल् कर्पिन्नाळ्–अकलंक पतिव्रता सीतादेवी ने; अन्कम् मा नॆंरि पटर्–अनघ उत्तम मार्ग-गामी; अटिकळ्–साधु महात्मा; नुम् अलाल्–आप जैसों के सिवा; निन्नैवतु–स्मरण करते; ओर् दॆय्वम् वेरु इलात–किसी और देव का (जो) नहीं; नॆञ्चितान्–वैसे मन वाले; मा चन्कन्–उन महान जनक की; मट मकळ्–बाला पुत्री हूँ; चन्कि–जानकी नाम की; यान्–मैं हूँ; काकुत्तन् मन्नैवि–काकुत्स्थ की पत्नी; ॲन्ड्रन्ळ्–कहा। ८४५

अनिन्द्य पातिव्रत्यशीला देवी ने सहज ही उत्तर दिया कि अनघ मार्ग-गामी साधु महात्मा! मैं उन उत्तम जनक की दुहिता हूँ, जिनके स्मरण में आप जैसे महात्माओं के अलावा कोई अन्य देव ही नहीं रहता। मैं काकुत्स्थ की पत्नी हूँ। ८४५

❀अव्वळि यन्नैयन वुरैत्त वायिळै
वॆव्वळि वरुन्दिन्नीर् विळैन्द मूप्पिन्नीर्
इव्वळि यिरुविन्नै कडक्क वॆण्णिन्नीर्
ॲव्वळि निन्रुमिन् रॆय्दि नीरॆन्ड्राळ् 846

अन्नैयन उरैत्त–यह जिन्होंने कहा; आय् इळै–उन आभरणभूषिता ने; अ वळि–तब; विळैन्त मूप्पिन्नीर्–बहुत वृद्ध; इ वळि–इस तपस्या के जीवन में; इरु विन्नै कटक्क–(पाप-पुण्य) दोनों कर्मों का संतरण करने के; ऍण्णिन्नीर्–इच्छुक; वॆम् वळि वरुन्तिन्नीर्–कठोर मार्ग पर सायास आये हैं; ॲ वळि निन्रुम्–कहाँ से; इन्रु ॲय्तिन्नीर्–आज पधारे; ॲन्ड्राळ्–(सहानुभूति में) पूछा। ८४६

यह वृत्तान्त कहने के बाद देवी ने रावण से प्रश्न किया। हे अति वृद्ध संन्यासी! पापपुण्य-सन्तरणार्थ व्रत में लगे रहे तपस्वी! आप बहुत

दूर का कठिन मार्ग तय करके आये लगते हैं। आप कहाँ से पधारे हैं? । ८४६

❀ इन्दिरऱ् किन्दिर नॅऴुद लाहलाच्, चुन्दर तान्मुहन् मरबिऱ् ऱोन्ऱिनान्
अन्दरत् तोडुमॅव् वुलहु माळ्हिन्ऱान्, मन्दिरत् तरुमऱै वॆहु नाविनान् 847

इन्तिरऱ्कु इन्तिरन्–देवेन्द्र का भी इन्द्र; ऍऴुतल् आकला–जिसका चित्रांकन कठिन है; चुन्तरन्–वैसा सुन्दर पुरुष; नान्मुकन् मरपिल् तोन्ऱिनान्–चतुर्मुख के वंश में जनित; अन्तरत्तोटुम्–आकाशलोक के साथ; ऍ उलकुम्–सभी लोकों पर; आळ्किन्ऱान्–शासन करता है; मन्तिरत्तु अरु मऱै–मंत्रकोष वेदों का; वॆकुम्–निलय; नाविनान्–जिसकी जीभ है, वह । ८४७

तब कपटसंन्यासी ने रावण की महिमा सुनायी। देवेन्द्र का इन्द्र; चित्र खींचने में कठिन हो, ऐसा रूपवान; चतुर्मुख का वंशजात; आकाशलोक के साथ सभी लोकों का राजा और मन्त्रों से पूर्ण दिव्य वेदों से अभ्यस्त जीभ का स्वामी । ८४७

❀ ईशनाण् डिरुन्दपे रिलङ्गु माल्वरै
ऊशिवे रोडुम्बऱित् तुरुट्टु मूऱ्ऱत्तान्
आशैहळ् शुमन्दपे रमरि यानैहळ्
पूशल्शॅय् मरुप्पिनैप् पॊडिशॅय् मार्बिनान् 848

ईचन्–शिवजी; आण्टु इरुन्त–जहाँ वास करते थे; इलङ्कुमाल् वरै–उस शानदार पर्वत को; ऊचि वेर् ओटुम्–सूची से पतली-पतली जड़ों के जालों के साथ; पऱित्तु उरुट्टुम्–उखाड़कर लुढ़काने का; ऊऱ्ऱत्तान्–बलशाली; आचैकळ् चुमन्त–दिशावाही; पेर् अमर् यानैकळ्–बड़े योद्धा गजों के; पूचल् चॅय्–युद्धोपयुक्त; मरुप्पिनै–दाँतों का; पॊटि चॅय् मार्पिनान्–चूर्णकारी वक्ष-युक्त । ८४८

शिवजी के वास के कैलासपर्वत को आमूल उखाड़कर लुढ़काने में समर्थ; दिशावाही योद्धा गजों के युद्धप्रयुक्त दाँतों का चूर्णकारी वक्षयुक्त; । ८४८

❀ निऱ्पवर् कडैत्तलै निऱैन्द तेवरे, शॊऱ्पहु मऱ्ऱवन् पॆरुमै शॊल्लुङ्गाल्
कऱ्पह मुदलिय निदियङ् गैयन, पॊऱ्पदि मानन्दे रिलङ्गै पॊन्नहर् 849

कटै तलै निऱैन्तु निऱ्पवर्–उसके द्वार पर भीड़ में जो खड़े हैं, वे; तेवरे–देव ही हैं; कऱ्पकम् मुतलिय नितियम्–कल्पतरु आदि देवलोक की निधियाँ; कैयत–उसके हाथ में हैं; पॊन् पति–निधिपति का; मानम्–(पुष्पक नाम का) यान; तेर्–उसका रथ है; पॊन्नकर्–(उसकी) स्वर्णपुरी; इलङ्कै–लंका है; मऱ्ऱु–और; अवन् पॆरुमै–उसकी महिमा; चॊल्लुङ्काल्–कहते समय; चॊल् पकुम्–शब्द अपर्याप्त रह जायेंगे । ८४९

उसके द्वारों पर उसकी कृपा की प्रतीक्षा में जो भीड़ लगाकर खड़े रहते हैं, वे देव हैं। कल्पतरु आदि देव-निधियाँ उसके अधीन हैं।

निधिपति कुबेर का पुष्पकयान उसका रथ है। उसकी राजधानी सोने की लंका है। उसकी महिमा कहने लगें, तो शब्द दुर्बल पाये जायँगे। ८४९

[अतिरिक्त दो पद का सार : तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ उसके वैभव से आकृष्ट होकर लंका में आयी हैं और उसका पानदान और पादरक्षक उठाना और पैर सहलाना आदि सेवाएँ बजाती हैं। १

चन्द्र और सूर्य उसके मन के अनुसार चलते हैं। इन्द्र आदि देव उसके प्रासाद की रखवाली करते हैं। २]

पॊऩ्ऩह रत्तिनुम् पॊलऩ्गॊ णाहर्दम्
तॊऩ्ऩह रत्तिनुम् तॊडर्न्द मानिलत्
तंऩ्ऩह रत्तिऩ् मिऩ्िय वीण्डवऩ्
नऩ्ऩह रत्तऩ नवैयि लादऩ 850

पॊऩ् नकरत्तितुम्–स्वर्णपुरी, देवेन्द्र की राजधानी, अमरावती में; पॊलऩ् कॊळ् नाकर् तम्–सुन्दर नागों के; तॊल् नकरत्तिलुम्–प्राचीन (पाताल की) भोगवती नाम के नगर में और; मा निलत्तु तॊटर्न्त–इस विशाल भूलोक में पास-पास रहनेवाले; ॲ नकरत्तितुम्–नगरों में किसी में भी; इऩिय–सुखद; नवै इलातऩ–दोषहीन पदार्थ; ईण्टु–मिलकर; अवऩ् नल् नकरत्तत–उसके श्रेष्ठ नगर में प्राप्त होते हैं। ८५०

देवेन्द्र-नगर अमरावती में, सुन्दर नागों के भोगवती नामक नगर में और भूलोक के पास-पास लगातार रहनेवाले सभी नगरों में किसी भी नगर में प्राप्य सभी सुखदायी और निर्दोष विलासिता के पदार्थ सब मिलकर उसके नगर में आ गये हैं। ८५०

❀ताळुडै मलरुळोऩ् तन्द वन्दमिल्
नाळुडै वाळ्क्कैय ऩारि बाहत्तऩ्
वाळुडै तडक्कैयऩ् वारि वैत्तवॆङ्
गोळुडै शिऱैयिऩऩ् गुणङ्गण् मेयिऩाऩ् 851

ताळ उटै मलर् अळोऩ्–नालसहित कमल पर आसीन; तनृत–से दत्त; अनृतम् इल् नाळ् उटै वाळ्क्कैयऩ्–अन्तहीन आयु-प्राप्त; नारि पाकत्तऩ्–अर्धनारीस्वर शिव की; वाळ् उटै–(दत्त) तलवार से युक्त; तट कैयऩ्–विशाल-हस्त; वारि वैत्त–समेटकर एक स्थान पर रखे हुए; वॆम् कोळ् उटै–बलिष्ठ ग्रह जिसमें हैं, उस; चिऱैयिऩऩ्–कारागृह के पति; कुणङ्कळ् मेविताऩ्–उत्तम गुणी। ८५१

कमलासनदत्त अनन्त आयु प्राप्त उसके हाथ में अर्धनारीश्वर-प्रदत्त चन्द्रहास तलवार है। उसके कारागृह में सभी ग्रह एक साथ बन्द कर रखे गये हैं, वह गुणगणपूर्ण है। ८५१

वॆम्मैदी रॊळुक्किनन् विरिन्द केळ्वियन्
शॆम्मैयोन् मन्मदन् तिहैक्कुम् जॆव्वियान्
अॆम्मैयो रन्नैवरु मिरैव रॆन्नुम्
मुम्मैयोर् पॆरुमैयु मुट्रुम् पॆट्रियान् 852

वॆम्मै तीर् ऑळुक्किनन्–कठोरता-रहित आचरण का; विरिन्त केळ्वियन्–विस्तृत श्रवण-ज्ञानी; चॆम्मैयोन्–सदाचारी; मन्मतन् तिकैक्कुम् चॆव्वियान्–मन्मथ भी ठिठक से भर जाए, ऐसा रूपवान; अॆम्मैयोर् अन्नैवरुम्–कहीं के कोई भी; इरैवरे ऑन्नुम्–जिनको आदिदेव मानते हैं; मुम्मैयोर् पॆरुमैयुम्–उन त्रिदेवों की महिमाएँ; मुट्रुम् पॆट्रियान्–सम्पूर्ण रूप से इसने पायी है। ८५२

उसका आचरण क्रूरता-रहित है। विस्तृत रूप से उसने वेद-शास्त्र पढ़े-सुने हैं। नेकचलन है। मन्मथ को भी उसका रूप-सौन्दर्य देखकर तरस होता है। जिन त्रिदेवों को सभी लोकवासी अपने आदिदेव मानते हैं, उन सभी की सम्मिलित महिमाएँ इसके पास हैं। ८५२

अन्नैत्तुल हित्तुमळ हमैन्द नङ्गैयर्
ऑन्नैप्पल रवन्ट्रन दरुळि निच्चैयोर्
निन्नैत्तन रुरुहवु मुदव नेर्हलन्
मनक्किनि याळॊरु मादै नाडुवान् 853

अनैत्तु उलकिनुम्–सभी लोकों में; अळकु अमैन्त नङ्कैयर्–जो सौंदर्य-भरी वनिताएँ हैं; अवन् तनतु अरुळिन्–उसकी कृपा की; इच्चैयार्–इच्छुक हैं; अनै पलर्–कितने ही अनेक; निनैत्तनर् उरुकवुम्–उसका स्मरण कर पिघल रही हैं; उतव नेर्कलन्–उन पर कृपा कर सहायता देने को सम्मत नहीं होकर; मनक्कु इनियाळ्–अपने मनोनुकूल; ऑरु मातै नाटुवान्–एक रमणी की खोज में है। ८५३

सभी लोकों की सभी आकर्षण नारियाँ उसकी कृपा के लिए लालायित हैं। उनमें कितनी ही उसके स्मरण में उसकी कृपा प्राप्त न होने से रो रही हैं। वह उन पर कृपा नहीं करता; पर अपने मनोनुकूल एक रमणी की खोज में है। ८५३

❀ आण्डैया नरशुवीट्र् रिरुन्द वन्नहर्
वेण्डियान् शिल्बह लुरैदन् मेयिनेन्
ईण्डिया निरुन्दवर् पिरियु नॆञ्जिलेन्
मीण्डनॆ नवनुडै विनैय मुट्रुवान् 854

आण्टैयान्–वह; अरचु वीट्रिरुन्त–जहाँ से राज करता है; अ नकर्–उस नगर में; यान् वेण्टि–मैं चाहकर; चिल पकल् उरैतल् मेयितेन्–कुछ दिन रहा; यान् ईण्टु इरुन्तु–मैं उसके संग रहकर; अवन् पिरियुम् नॆञ्चु इलेन्–उससे अलग होना न चाहकर; अवनुटै वितैयम् मुट्रुवान्–उसका एक कार्य साधने हेतु; मीण्टनॆन्–लौटा। ८५४

उसकी राजधानी में मैं कुछ दिन अपनी इच्छा से रहा। उसको छोड़कर आने को मेरा मन नहीं हुआ। तो भी उसका एक कार्य साधने के ही हेतु वहाँ से लौट आया हूँ। ८५४

❀ वेदमुम् वेदिय ररुळुम् वॆः(ह्)कलाच्, चेदन मन्नुयिर् तिन्नुन् दीविनैप्
पादह वरक्कर्दम् पदियिन् वैहुदऱ्, केदुवॆन् तुडलमु मिहैयॆन् ऱॆण्णुवीर् 855

उटलमुम् मिकै ऍन्ऱु ऍण्णुवीर्–शरीर को भी अनावश्यक माननेवाले; वेतमुम्–(आप) वेदों और; वेतियर् अरुळुम्–वेदज्ञ ब्राह्मणों की कृपा को; वॆ.ःकला–न चाहकर; चेतन–चेतन; मन् उयिर्–अक्षय जीवों (मनुष्यों) के; तिन्नुम्–खादक; ती विनै–पापी; पातक–पातक; अरक्कर् तम् पतियिन्–राक्षसों के नगर में; वैकुतऱ्कु–ठहरे, इसका; एतु ऍन्–कारण क्या है। ८५५

देवी को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने पूछा। आप तपस्वी हैं। मोक्षसाधन में शरीर को भी अनावश्यक मानते हैं। आप वेदों और वेदों के ज्ञाता ऋषियों का अनुग्रह न चाहकर चेतन और अक्षय जीवधारी मनुष्यों के खादक, कुकर्मी पातक राक्षसों की नगरी में जाकर रहे —इसका कारण क्या है ? । ८५५

❀ वनत्तिडै मादवर् मरुङ्गु वैहलीर्, पुनऱ्ऱिरु नाट्टिडैप् पुनिद रूर्पुह
निनैक्किली ररनॆरि निनैक्कि लादवर्, इनत्तिडै वैहिनी रॆन्शॆय् दीरॆन्ऱाळ् 856

वनत्तु इटै–वन में; मा तवर् मरुङ्कु–महान तपस्वियों के पास; वैकलीर्–नहीं ठहरे; पुतल् तिरु नाट्टु इटै–जलसमृद्ध उर्वर प्रदेशों में; पुनितर्–पवित्राचरण; ऊर् पुक–(लोगों के) ग्रामों में जाकर रहना; निनैक्किलीर्–नहीं सोचा; अऱम् नॆऱि निनैक्किलातवर्–धर्म-मार्ग-विमुख; इनत्तु इटै–जातियों के बीच; वैकितीर्–रहे; ऍन् चॆय्तीर्–क्या ही (अनुचित कार्य) किया; ऍन्ऱाळ्–देवी ने पूछा। ८५६

वन में महान तपस्वी लोग वास करते हैं। उनके सत्संग में नहीं रहे। जलसमृद्ध प्रदेशों के पवित्र गृहस्थ लोग रहते हैं। न आपने उन लोगों में जाकर रहे ! यह क्या ही अनुचित काम आपने किया है ! देवी ग्रामों में जाना पसन्द किया। धर्ममार्गविमुख राक्षसों की जाती के ने अपना भाव व्यक्त किया। ८५६

मङ्गैयः(ह्) दुणर्त्तल् केट्ट वरम्बिलान् मऱविन् ऱीर्न्दाळ्
वॆङ्गण्वा ळरक्क रॆन्न वॆरुवुवाळ् मॆय्मै नोक्किन्
तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नाळे तेवरिऱ् ऱीय रन्ऱे
ऍङ्गळ्पो लियरक्कु नल्लार् निरुदरे पोलु मॆन्ऱान् 857

मङ्कै–देवी को; अ.ःतु उणर्त्तल् केट्ट–वह समझाना सुनकर; वरम्पु इलान्–अत्याचारी; मऱविल् तीर्न्ताळ्–निर्दोष; वॆम् कण् वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षस का; वॆरुवुवाळ्–भयभीत हो जो हो जाती है, उनकी; मॆय्मै नोक्कि–ऍन्न–नाम लेते ही;

सच्ची स्थिति जानकर; तिङ्कळ् वाळ् मुकत्तिताळे–चन्द्रोज्वलमुखी; तेवरिल् तीयर् अन्ऱे–देवों से अधिक बुरे नहीं तो; अँङ्कळ् पोलियर्क्कु–हम जैसों के लिए; निरुतरे–राक्षस ही; नल्लार् पोलुम्–अच्छे हैं; अँन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ८५७

अत्याचारी रावण ने देवी का यह समझाना सुना। समझ गया कि ये राक्षस का नाम लेते ही भड़क उठेंगी। उनकी सच्ची स्थिति देखकर उसने कहा कि उज्ज्वल चन्द्रमुखी! राक्षस देवों से अधिक (या के समान) बुरे नहीं होते। खासकर हमारे लिए राक्षस ही अच्छे हैं। ८५७

शेयिळै यन्न शॉल्लत् तीयवर्च् चेर्दल् शॅय्दाल्
तूयव रल्लर् शॉल्लिऱ् ऱॊन्नॅऱि तॊडर्न्दो रॅन्ऱाळ्
मायैवल् लरक्कर् वल्लर् वेण्डुरु वरिक्क वॅन्ब
तायव ळऱिद ऱेऱ्ऱा ळादलि लयलॊन्ऱ् ॲण्णाळ् 858

अन्न चॊल्ल–वह कहने पर; चेय् इऴै आयवळ्–श्रेष्ठ आभरणों से अलंकृत सीताजी; मायै वल् अरक्कर्–मायावी बलिष्ठ राक्षस; वेण्टु उरु–मनमाना रूप; वरिक्क वल्लर्–लेने में समर्थ हैं; अँन्पतु–यह बात; अऱितल् तेऱ्ऱाळ्–नहीं जान पायीं; आतलिऩ्–इसलिए; अयल् ऑन्ऱु–और कोई बात; अँण्णाळ्–न सोचती; चॊल्लिल्–कहना हो तो; तॊल् नॅऱि तॊटर्न्तोर्–प्राचीनों के सन्मार्ग पर जो चलते हैं, वे; तीयवर् चेर्तल् चॅय्ताल्–बुरों से मिलते हैं तो; तूयवर् अल्लर्–पवित्र नहीं रहेंगे; अँन्ऱाळ्–कहा। ८५८

रावण की वह वात सुनी। उत्तम आभरणों से अलंकृत सीताजी को मालूम नहीं था कि वलिष्ठ मायावी राक्षस मनमाना रूप लेने में समर्थ हैं। इसलिए उन्होंने कुछ अन्यथा नहीं सोचा। उन्होंने अपना मन्तव्य यों सुनाया कि प्राचीन परम्परागत सन्मार्गगामी श्रेष्ठ लोग बुरे लोगों की संगति करेंगे तो वे भी पवित्र नहीं रहेंगे। ८५८

अयिर्त्तन ळाहु मॅन्ऱो रैयुऱ वहत्तुक् कॊण्डान्
पॅयर्त्तदु तुडैक्क वॅण्णिप् पिऱिदुरप् पेश लुऱ्ऱान्
मयक्करु मुलह मून्ऱिल् वाऴ्बवर्क् कनैय वल्लोर्
इयऱ्कैयि निऱ्ऱ दल्ला लियऱ्ऱला नॅऱियॆ दॅन्ऱान् 859

अयिर्त्तनळ् आकुम्–शंकित हो गयीं; अँन्ऱु–सोचकर; ओर् ऐयुऱवु–एक संशय; अकत्तु कॊण्टान्–मन में करके; अतु–उसे; पॅयर्त्तु तुटैक्क अँण्णि–हटाकर मिटाना चाहते हुए; पिऱितु उऱ–दूसरे प्रकार से; पेचल् उऱ्ऱान्–बोलने लगा; मयक्कु अऱुम्–निर्भ्रम; उलकम् मून्ऱिल् वाऴ्पवर्क्कु–तीनों लोकों के वासियों के लिए; अनैय–उन; वल्लोर्–बलवान राक्षसों के; इयऱ्कैयिन्–स्वभावानुसार; निऱ्पतु अल्लाल्–वर्तन के सिवा; इयऱ्ऱल् आम् नॅऱि–अनुसरण योग्य मार्ग; एतु–कहाँ; अँन्ऱान्–कहा। ८५९

भगवती शंकितमन हो गयी हैं—ऐसा एक संशय रावण के मन में

हो गया। उसने उस शंका को निर्मूल करना चाहा। अतः कुछ दूसरे प्रकार से बात चलायी। कहा— तीनों लोकों के वासी निर्भ्रम रहना चाहें, तो उन्हें उन बलिष्ठ राक्षसों के स्वभाव के अनुरूप वर्तन के सिवा कोई चारा नहीं रहता। ८५९

तिऱन्दॆरि वञ्ज नच्चॊल् चॆप्पलुम् जॆप्प मिक्काळ्
अऱन्दरु वळ्ळ लीण्डिङ् गरुन्दव मुयलु नाळुळ्
मऱन्दलै तिरिन्द वाऴ्क्कै यरक्करुदम् वरुक्कत् तोडुम्
इऱन्दनर् मुडिवर् पिन्नै यिडरिलै युलहि लॆन्ऱाळ् 860

तिऱम् तॆरि वञ्चन्–इंगितज्ञ वंचक के; अ चॊल् चॆप्पलुम्–वह कथन करते ही; चॆप्पम् मिक्काळ्–अति नेक देवी; अऱम् तरु वळ्ळल्–धर्म-संस्थापक हमारे प्रभु; ईण्टु–अब; इङ्कु–यहाँ; अरुम् तवम् मुयलुम् नाळ् उळ्–उत्तम तपस्या जितने समय करते हैं, उसके अन्दर; मऱम् तलै तिरिन्त–पापाचारी; वाऴ्क्कै अरक्कर्–जीवन-यापनकारी राक्षस; तम् वरुक्कत्तोटुम् इऱन्ततर् मुटिवर्–अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे; पिन्नै–बाद; उलकिल् इटर् इलै–कोई दुःख नहीं रहेगा; ऎन्ऱाळ्–कहा। ८६०

रावण वंचक था और इंगितज्ञ था। उसकी यह बात सुनकर निष्कपट देवी ने कहा कि हमारे धर्मसंस्थापक प्रभु यहाँ तपस्या करते हैं। उनके तपस्या के दिनों के पूरे होने के अन्दर ही पापाचारी राक्षस अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे। फिर इस संसार में कोई कष्ट नहीं रहेगा। ८६०

मानव ळुरैत्त लोडु मानिड ररक्कर् तम्मै
मीनॆन मिळिरुङ् गण्णाय् वेरऱ वॆल्व रॆन्निल्
यानैयि निनत्तै यॆल्ला मिळमुयल् कॊल्लु मिन्नुम्
कूनुहिर् मडङ्ग लेऱ्ऱिन् कुऴुवैमान् कॊल्लु मॆन्ऱान् 861

मानवळ्–सम्मान्य देवी के; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मीन् ऎन मिळिरुम् कण्णाय्–मछली-सदृश चंचलाक्षी; मानिटर् अरक्कर् तम्मै–मानव राक्षसों को; वेर् अऱ वॆल्वर्–जड़ से काटकर विजयी होंगे; ऎन्निल्–तो; यानैयिन् इनत्तै ऎल्लाम्–सारे गजसमूहों को; इळ मुयल् कॊल्लुम्–एक बाल शशक मार देगा; मिन्नुम्–चमकदार; कूर् उकिर्–तेज नाखूनों से युक्त; मटङ्कल् एऱ्ऱिन् कुऴुवै–पुरुषसिंहों के वृन्द को; मान् कॊल्लुम्–हरिण मार देगा; ऎन्ऱान्–(व्यंग्य में) कहा। ८६१

सम्मान्य सीताजी का यह कथन सुनकर रावण ने व्यंग्य के साथ कहा कि मछली-सी चंचल आँखों से शोभित देवी! मानव राक्षसों को मिटाकर विजयी हो जायँगे, तो एक बाल शशक गजसमूहों का नाश करा देगा। एक हरिण चमकदार तेज नाखूनों से युक्त पुरुषसिंहों को मिटा देगा। ८६१

मित्ऱिरण् डतैय पङ्गि विरादतुम् वॅहुळि पॊङ्गिक्
कत्ऱिय मततु वॅत्ऱिक् करतुमुदऱ् कणक्कि लोरुम्
पॊत्ऱिय पूश लॊत्ऱुङ् केट्टिलीर् पोलु मॆत्ऱाळ्
अत्ऱवर् कडुत्त दुत्ति मळैक्कणी ररुवि शोर्वाळ् 862

मित् तिरण्टु अतैय–बिजली के पुंज के समान; पङ्कि–बालों से युक्त; विराततुम्–विराध और; वॅकुळि पॊङ्कि–बढ़ते क्रोध से; कत्ऱिय–उत्तप्त; मततु–मन का; वॅत्ऱि–विजयी; करत् मुतल् कणक्कु इलोरुम्–खर आदि असंख्यक; पॊत्ऱिय–जब मरे, तब जो उठा; पूचल् ऑत्ऱुम्–वह शब्द कुछ; केट्टिलिर् पोलुम्–सुना नहीं था (आपने) शायद; ऍत्ऱाळ्–कहकर; अत्ऱु–उस दिन; अटुत्तु उत्ति–जो हुआ (श्रीराम का व्रण पाना आदि) ध्यान कर; मळै कण् नीर्–मनोरम आँखों से आँसू; अरुवि चोर्वाळ्–धारा बहायी। ८६२

सीताजी ने उत्तर देते हुए कहा। विद्युत-पुंज के समान केशी विराध मरा। क्रोधोन्मत्त विजयशील खर आदि असंख्यक राक्षस उनसे लड़कर मरे। उनके मरने का शोर आपने सुना नहीं शायद! यह कहते-कहते उन्हें श्रीराम का युद्ध के अवसर पर हुआ कष्ट स्मरण आ गया। तो उनकी (मनोरम) शीतल आँखों से अश्रु की धारा बह चली। ८६२

वाळरि वळ्ळ ऱत्ताल् मात्गण निरुद रत्नार्
केळॊडु मडियु माऱुम् वात्वर् किळरु माऱुम्
नाळैये काण्डि रत्ऱे नवैयिली रुणर्हि लीरो
मीळरुन् दरुमन् दत्तै वॅल्लुमो पाव मॆत्ऱाळ् 863

नवै इलीर्–निर्दोष साधु; वाळ् अरि वळ्ळल् तत्ताल्–प्रबल सिंह-सदृश प्रभु द्वारा; मात् कणम् निरुतर् अत्तार्–मृग-वृन्द राक्षस; केळ् ऑटु मटियुम्–अपने बन्धु-बान्धवों के साथ मरेंगे; आऱुम्–वह प्रकार और; वात्तवर् किळरुम्–देवों का उत्थान होगा; आऱुम्–वह प्रकार; नाळैये काण्टिर्–अत्ऱे–कल ही देखिए न; मीळ् अरुम्–अनुपेक्षणीय; तरुमम् तत्तै–धर्म को; पावम् वॅल्लुमो–पाप हरा देगा क्या; उणर्किलीरो–यह नहीं समझते क्या; ऍत्ऱाळ्–पूछा। ८६३

उन्होंने उसी भावावेश में कहा कि निर्दोष साधू! भयंकर सिंह-सदृश प्रभु (श्रीराम) द्वारा राक्षस रूपी मृगवृन्द बन्धु-बान्धवों के साथ मृतक बनेंगे और देवों का उत्थान होगा। इनका होने का प्रकार आप कल ही देखेंगे। अनुपेक्षणीय धर्म को पाप हरा सकेगा क्या? क्या आप यह नहीं जानते (कि धर्म विजयी रहेगा)?। ८६३

तेनुड न्मुद ळाय वत्तमॆत् शिलशॊत् मालै
तानुडैच् चॆविह ळूडु तवळ्वुऱत् तळिर्त्तु वीङ्गुम्
ऊनुडै युडम्बि नानुम् मुरुहॆळु मात मूत्ऱ
मानिडर् वलिय रॆत्ऱ माऱऱत्ताऱ् चीऱ्ऱम् वैत्तान् 864

तेऩ् उटऩ् अमुतु अळाय अऩ्ऩ–शहद के साथ अमृत मिश्रित हो, ऐसा; मॆऩ् चिल चॊल्–कोमल कुछ शब्दों की; मालै–माला (पंक्ति); ताऩ् उटै चॆविकळ् ऊटु–अपने कानों में; तवळ्वु उऱ–घुसने पर; तळिर्त्तु वीङ्कुम्–आनन्द से प्रफुल्लित; ऊऩ् उटै उटम्पिऩाऩुम्–मांसल शरीरी रावण भी; माऩिटर् वलियर्–मनुष्य बलवान है; ऎऩ्ऩ मार्ऱत्ताल्–इस कथन से; उरु कॊळ्ळु माऩम् ऊऩ्ऱ–स्वाभिमान के सजग होकर चुभते; चीऱ्ऱम् वैत्ताऩ्–नाराज हुआ। ८६४

सीताजी की बोली शहदमिश्रित अमृत के समान कोमल और मधुर थी। उन शब्दों की पंक्ति सुनकर आनन्द से रावण के कन्धे फूल उठे। और मांसल शरीर पुलकित हुआ। पर सीता के कहने का तात्पर्य था कि मानव बलिष्ठ हैं। उससे उसका स्वाभिमान जाग उठा और उसे चुभने लगा। तो उसे कोप हुआ। ८६४

शीऱिऩ तुरैशॆय् वाऩच् चिऱुवलिप् पुल्लि योर्हट्
कोऱीरु मऩिदऩ् शॆय्दा तॆऩ्ऱॆडुत् तियम्बि ऩायेल्
तेऱुदि नाळै येयव् विऱुबदु तिण्डोळ् वाडै
वीऱिय पॊळ्दु पूळै वीयॆऩ वीव तऩ्ऱे 865

चीऱिऩऩ्–कुपित रावण; उरै चॆय्वाऩ्–बोला; अ चिऱु वलि–उन क्षुद्रबली; पुल्लियोर्क्कु–अल्पों को; ऒरु मऩिदऩ्–एक मानव ने; ईऱु चॆय्ताऩ्–अन्त दिला दिया; ऎऩ्ऱु ऎटुत्तु इयम्पिऩाय् एल्–यह बात लेकर बोलेंगी तो; नाळैये तेऱुति–(फल) कल ही जान लेंगी; अ इरुपतु तिण् तोळ् वाटै–(रावण की) उन बीस बलवान भुजाओं की हवा; वीचिय पॊळ्तु–जब बहेगी, तब; पूळै वी ऎऩ्ऩ–'पूळै' (नाम के) फूल के समान; वीवऩ्–वह मानव मिट जायगा। ८६५

क्रुद्ध रावण ने यों कहा— विराध आदि क्षुद्र बली अल्प राक्षस हैं। उनका एक मानव ने अन्त करा दिया, इस बात को लेकर तुम बोल रही हो। तो कल ही देखोगी कि इसका फल क्या होगा। रावण के बीस बलिष्ठ भुजाओं के पराक्रम की हवा जब बहने लगेगी, तब उसके सामने यह मनुष्य 'पूळै' फूल के समान (जो बहुत ही मृदु है) कहीं का नहीं रहेगा। ८६५

मेरुवैप् पऱिक्क वेण्डिल् विण्णिऩै यिडिक्क वेण्डिल्
नीरिऩैक् कलक्क वेण्डि नॆरुप्पिऩै यविक्क वेण्डिल्
पारिऩै यॆडुक्क वेण्डिऱ् पाऩिहर् शॊऩ्ऩॊ लॆळाय्
यारॆऩक् करुदिच् चॊऩ्ऩा यिरावणऱ् करिदॆ ऩ्ऱाऩ् 866

पाल् निकर् चॆम् चॊल् एळाय्–दूध-सम मधुरभाषिणी बाले; मेरुवै पऱिक्क वेण्टिल्–मेरु को उखाड़ना चाहो; विण्णिऩै इटिक्क वेण्टिल्–आकाश को गिराना चाहो; नीरिऩै कलक्क वेण्टिल्–समुद्र को विलोडित करना चाहो; नॆरुप्पिऩै अविक्क वेण्टिल्–अग्नि को शांत करना चाहो; पारिऩै ऎटुक्क वेण्टिल्–भूमि को खोद लेना चाहो; इरावणऱ्कु–रावण के लिए; अरितु एतु–कठिन क्या है; यार् ऎऩ्ऩ करुति–(उसको) कौन समझकर; चॊऩ्ऩाय्–ऐसा बोलती हो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ८६६

दुग्ध-सम मधुरभाषिणी बाले ! रावण के लिए कौन सा काम कठिन है ? चाहे मेरु को उखाड़ना हो या आकाश को गिराना हो; चाहे समुद्रजल को विलोडित करना हो या (बड़वा) अग्नि को बुझाना हो; चाहे भूमि को उखाड़ लेना हो। उस रावण को क्या समझकर ऐसी बात करती हो ? । ८६६

अरण्डरु तिरडोळ् शाल वुळवॆनि लाऱ्ऱ लुण्डो
करण्डन्नी रिलङ्गै वेन्दैच् चिऱैवैत्त कऴऱ्काल् वीरऩ्
तिरण्डतोळ् वऩत्तै यॆल्लाञ् जिऱियदोर् परुवन् दऩ्ऩिल्
इरण्डुतो ळॊरुव ऩऱ्ऱो मऴुविऩा लॆऱिन्दा ऩॆऩ्ऱाळ् 867

अरण् तरु-रक्षणदायी; तिरळ् तोळ्-स्थूल कन्धे; चाल उळ ऎऩिल्-अधिक हैं तो; आऱ्ऱल् उण्टो-बली हो जायगा क्या; करण्ट नीर्-करंडों से युक्त समुद्र-मध्य-स्थित; इलङ्कै वेन्तै-लंका के राजा को; चिऱै वैत्त-कारागृह में जिसने बन्द किया था; कऴल् काल् वीरऩ्-पायल-चरण वीर कार्तवीर्य के; तिरण्ट तोळ् वऩत्तै ऎल्लाम्-स्थूल कन्धों के कानन को; चिरियतु ओर् परुवम् तऩ्ऩिल्-अपने छुटपन में; इरण्टु तोळ् ऒरुवऩ् ताऩे-द्विभुज एक (नर) ने ही; मऴुविऩाल् ऎऱिन्ताऩ्-परशु से काट गिराया; ऎऩ्ऱाळ्-कहा। ८६७

देवी सीता ने उत्तर में कहा कि रक्षक स्थूल भुजाओं की संख्या अधिक होने से क्या राक्षस का बल बढ़ जायगा ? पहले कभी करंड पक्षियों से युक्त समुद्र के मध्य में स्थित लंका के राजा रावण को कार्तवीर्य ने कारागृह में बन्द कर रखा था। उस पायलधारी वीर के सहस्र भुजाएँ थीं। वे बिल्कुल एक वन के समान थीं, उन सबको परशुराम ने ही तो अपने छुटपन में ही अपने परशु से नहीं काट डाला था ! । ८६७

ऎऩ्ऱव ऴुरैत्त लोडु मॆरिन्दऩ नयऩन् दिक्किऱ्
चॆऩ्ऱऩ तिरडोळ् वाऩन् दीण्डिऩ महुडन् दिण्कै
ऒऩ्ऱॊडॊन् ऱडित्त मेहत् तुरुमॆऩ वॆयिऱु तम्मिऩ्
मॆऩ्ऱऩ वॆहुळि पॊङ्ग विट्टदु माय वेडम् 868

ऎऩ्ऱु-ऐसा; अवळ् उरैत्तल् ओटुम्-उनके कहते ही; नयऩम् ऎरिन्तऩ-उसके नयन जल उठे; तिरळ् तोळ्-स्थूल भुजाएँ; तिक्किल् चॆऩ्ऱऩ-सभी दिशाओं में (बढ़) गयीं; मकुटम् वाऩम् तीण्टिऩ-मुकुट आकाश में (ऊँचा) गये; तिण् कै ऒऩ्ऱॊटु ऒऩ्ऱु-बलिष्ठ हाथ परस्पर; मेकत्तु उरुम् ऎऩ-मेघों के वज्र के समान; अटित्त-पीटने लगे; ऎयिऱु तम्मिऩ्-दाँत; मॆऩ्ऱऩ-पिसे; वॆकुळि पॊङ्क-क्रोध के बढ़ते; माय वेटम्-मायावेश; विट्टतु-छूट गया। ८६८

देवी के यह कहते ही रावण के नेत्र अग्नि के समान दाहक लगे। भुजाएँ सब ओर प्रकट हो आयीं। मुकुट आकाश को छूते हुए दिखाई

दिये। हाथ परस्पर आपस में मेघों के वज्र के समान घोर शोर के साथ पिटे। दाँत पिसे। वह संन्यासी वेश, जो माया था, अब छूट गया। ८६८

इरुविनै तुरन्द मेलो रल्लर्हो लिवरॆन् ऱॆण्णि
अरिवैयु मैय मॆय्दा यारिवर् तामॆन् ऱॊन्ऱुम्
तॆरिवरु निलैय ळाहत् तीविडत् तरवन् दाने
उरुहॆळु शीऱ्ऱम् बॊङ्गिप् पणम्विरित् तुयर्न्द दॊत्तान् 869

अरिवैयुम्–देवी ने भी; इवर्–यह; इरु विनै तुरन्त–दोनों कर्मों से छूटा; मेलोर् अल्लर् कोल्–साधु पुरुष नहीं तो; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; ऐयम् ऍय्ता–शंकित होकर; यार् इवर् ताम्–कौन है, यह तो; ऍन्ऱु–यह; ऑन्ऱुम् तॆरिवरु निलैयळ् आक–कुछ नहीं जानने की स्थिति में आयीं, तब; ती विटत्तु अरवम्–बुरा विषैला सर्प; तान् उरु कॆळु चीऱ्ऱम् पॊङ्कि–स्वयं क्रोध में बढ़कर; पणम् विरित्तु–फन फैलाकर; उयर्न्ततु–उठा; ऑत्तान्–जैसा बना। ८६६

सीताजी को कुछ अस्पष्ट रीति से विदित हुआ कि वह कर्ममुक्त साधू नहीं है। संशय हुआ। पर कौन है यह? यह विदित नहीं हुआ। कुछ भी समझ नहीं पायीं। तब क्रुद्ध होकर फन फैलाकर उन्नत-सिर हुए सर्प के समान अपने दशग्रीव के रूप में सहसा आ गया। ८६९

आऱ्ऱवॆन् दुयरत् तन्ना ळाण्डुऱ्ऱ वलक्क णोक्किन्
एऱ्ऱमॆन् निनैक्क लाहुम् पिरिदॆडुत् तियम्ब लाहुम्
माऱ्ऱमॊन् ऱिल्लै शॆय्युम् विनैयिल्लै मरिक्क लाहाक्
कूऱ्ऱम्वन् दुऱ्ऱ कालत् तुयिरॆनक् कुलैवु कॊण्डाळ् 870

आऱ्ऱ वॆम् तुयरत्तु अन्नाळ्–बहुत कठोर दुःख से आर्त उन पर; आण्टु उऱ्ऱ अलक्कण् नोक्किन्–तब जो आया, वह संकट देखने पर; एऱ्ऱम् ऍन् निनैक्कल् आकुम्–इससे बढ़कर कौन सा दुःख कल्पित किया जा सकेगा; पिऱितु ऍटुत्तु इयम्पल् आकुम्–फिर क्या कहा जा सकेगा; माऱ्ऱम् ऑन्ऱु इल्लै–उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं रह गया; चॆय्युम् विनै इल्लै–(बचने के लिए) करने योग्य कुछ नहीं रहा; मऱिक्कल् आका–अनिवार्य; कूऱ्ऱम् वन्तु उऱ्ऱ कालत्तु–यम जब आ पहुँचता है, तब; उयिर् ऍन–जीव (जैसा कष्ट में पड़ता है) वैसा; कुलैवु कॊण्टाळ्–विकम्पित हुईं। ८७०

सीताजी पहले ही असह्य दुःखसंतप्त रहीं। अब इस रावण के कार्य से जो दुःख और हुआ, उससे बढ़कर कोई कष्ट सोचा भी नहीं जा सकता था! और किस बात को लेकर समझाया जाय? उनकी स्थिति इतनी दयनीय हो गयी कि वह कुछ नहीं कह सकीं; न कुछ कर सकीं। दुर्वार यम ही जीव के सामने आ गया हो, ऐसा वे शिथिल हो गयीं। ८७०

विण्णव रेवल् शॆय्य वॆन्ऱवॆन् वीरम् बाराय्
मण्णिडॆप् पुळ्विन् वाळु मातिडर् वलिय रॆन्ऱाय्

पॆण्णॆऩप् पिऴैत्ता यल्लै युऩ्ऩैयाऩ् पिशैन्दु तिऩ्ऩ
ऎण्णुवॆ ऩॆण्णिप् पिऩ्ऩै यॆऩ्ऩुयि रिऴप्प ऩॆऩ्ऩा 871

विण्णवर् एवल् चॆय्य–देव मेरी सेवा-टहल करते हैं; वॆऩ्ऱ–मैंने उन पर विजय पायी; ऎऩ् वीरम् पाराय्–ऐसे मेरा पराक्रम नहीं देखा; मण् इटै–भूमि पर; पुऴुविऩ् वाऴुम्–कीड़ों के समान जीवित; मातिटर् वलियर् ऎऩ्ऱाय्–नर बलिष्ठ हैं, कहती हो; पॆण् ऎऩ पिऴैत्ताय्–स्त्री हो, जीवित बच गयी हो; अल्लै–नहीं तो; उऩ्ऩै–तुम्हें; याऩ्–मैं; पिचैन्तु तिऩ्ऩ–पीसकर खाने को; ऎण्णुवॆऩ्–सोचता; ऎण्णि–सोचकर (वैसा); पिऩ्ऩै–(करने के) बाद; ऎऩ् उयिर् इऴप्पॆऩ्–अपनी जान त्याग दूँगा; ऎऩ्ऩा–कहकर। ८७१

तब रावण ने कहा कि नारी! तुमने क्या कहा? मैंने देवों पर विजय पायी और वे मेरी सेवा-टहल कर रहे हैं। ऐसा मेरा पराक्रम तुम्हारे ध्यान में नहीं आया, और कहती हो कि भूमि पर कीड़ों का जीवन जो जी रहे हैं, वे मानव बली हैं! तुम स्त्री हो, उसी कारण तुम यह कहने के बाद जीवित रह सकी हो! नहीं तो मैं तुमको पीसकर खा जाने का विचार करूँगा; विचार क्या करूँगा, खा जाऊँगा। हाँ! खाने के बाद मैं भी आत्महत्या कर लूँगा। ८७१

कुलैवुऱ लऩ्ऩ मुऩ्ऩम् यारैयुङ् गुम्बि डावॆऩ्
तलैमिशै महुड मॆऩ्ऩत् तऩित्तऩि यिऩिदु ताङ्गि
अलहिल्पू णरम्बै माद रडिमुऱै येवल् शॆय्य
उलहमे ऴेऴु माळुञ् जॆल्वत्तु ळुऱैदि यॆऩ्ऱाऩ् 872

अऩ्ऩम्–हंस (की-सी चाल वाली); कुलैवु उऱल्–मत घबड़ाओ; मुऩ्ऩम्–इसके पहले; यारैयुम् कुम्पिटा–किसी के सामने विनत नहीं; ऎऩ् तलै मिचै–(वैसे) अपने सिरों पर के; मकुटम् ऎऩ्ऩ–मुकुटों के समान; तऩि तऩि–अलग-अलग; इऩितु ताङ्कि–धारण करूँगा; अलकु इल् पूण्–अगणित आभरणधारिणी; अरम्पै मातर्–अप्सराएँ; अटि मुऱै एवल चॆय्य–तुम्हारे चरणों की यथाज्ञा सेवा करेंगी; उलकम् एऴ् एऴुम् आळुम्–चौदहों लोकों के शासन के; चॆल्वत्तुळ्–वैभवपूर्ण जीवन में; उऱैति–सुखी रहो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ८७२

हंसिनी! तुम व्याकुल मत बनो। मेरे सिर किसी के सामने कभी नहीं झुके हैं। उन पर जो मुकुट हैं, उनके समान मैं तुमको अपने सिरों पर बारी-बारी से धारण कर लूँगा। अगणित आभरणों से भूषित अप्सराएँ तुम्हारी चरण-सेवा करेंगी और तुम्हारी आज्ञाएँ बजा लायँगी। चौदहों लोकों पर शासन करने का जो मेरा वैभव है, उसको तुम अपनाओ और सुखी रहो। ८७२

शॆविहळैत् तळिर्क्कै याले शिक्कुऱच् चेमञ् जॆय्दाळ्
कवियैयुङ् गडक्कुम् वॆऩ्ऱिक् काहुत्तऩ [illegible]

पुवियुडै यॊऴुक्क नोक्काय् पॊङ्गॆरिप् पुनिद रीयुम्
अवियैनाय् वेट्ट दॆऩ्ऩ वॆऩ्शॊऩा यरक्क वॆऩ्ऩा 873

चॆविकळै–दोनों कानों पर; तळिर् कैयाले–करपल्लवों को; चिक्कु उऱ–खूब दबाकर; चेमम् चॆय्ताळ्–(इन शब्दों को सुनने से) रक्षित किया; अरक्क–राक्षस; पुवि इटै ऑऴुक्कम् नोक्काय्–लोकधर्म नहीं पालते; कवियैयुम् कटक्कुम् वॆऩ्ऱि–कवियों के भी कल्पनातीत; वॆऩ्ऱि–विजयशील; काकुत्तऩ् कऱ्पिऩैै–काकुत्स्थ की पत्नी को; पुऩितर्–पवित्र ब्राह्मणों द्वारा; पॊङ्कु ऎरि–प्रज्वलित अग्नि में; ईयुम्–देवार्पित; अवियै–हवि को; नाय् वेट्टतु अऩ्ऩ–कुत्ता जैसा चाहकर; ऎऩ् चॊऩ्ऩाय्–क्या कहा; ऎऩ्ऩा–कहकर। ८७३

यह सुनते ही देवी ने अपने करपल्लवों को कानों पर रखकर उन शब्दों के प्रहार से अपने कानों को बचा लिया। उन्होंने रावण को डाँटा। नीच निशाचर! लोक-धर्म-विमुख! कवियों के कल्पनातीत विजयशील काकुत्स्थ की पत्नी हूँ, मैं। मुझे तुम उस कुत्ते के समान चाहते हो, जो पवित्र ब्राह्मणों के द्वारा प्रचलित अग्नि में देय हवि को चाहता हो! चाहकर तुमने क्या कहा?। ८७३

पुऩ्ऩुऩै नीरि ऩॊय्दाय्प् पोदले पुरिन्दु निऩ्ऱ
इऩ्ऩुयि रिऴत्त लञ्जि यिऱ्पिऱ्प् पऴित्त लुण्डो
मिऩ्ऩुयिर्त् तुरुमिऱ् चीऱुम् वॆञ्जरम् विरवा मुऩ्ऩम्
उऩ्ऩुयिर्क् कुऱुदि नोक्कि यॊळित्तिया लोडि यॆऩ्ऱाळ् 874

पुल् नुऩै नीरिऩ्–घास की नोक की जल-बूंद के समान; नॊय्ताय्–अल्प बन; पोतले पुरिन्तु निऩ्ऱ–मिटना ही जिसका गुण है; इऩ् उयिर्–उस प्यारे प्राण को; इऴत्तल् अञ्चि–छोड़ने से डरकर; इल् पिऱप्पु–कुलीनता को (पातिव्रत्य को); अऴित्तल् उण्टो–मिटाऊँगी क्या; मिऩ् उयिर्त्तु–प्रकाश फैलाता हुआ; उरुमिल् चीऱुम्–वज्र के समान फुफकारते हुए चलायमान; वॆम् चरम्–भयंकर शर; विरवा मुऩ्ऩम्–आकर लगे, इसके पहले ही; उऩ् उयिर्क्कु उऱुति नोक्कि–अपने प्राणों का हित समझकर; ओटि ऒळित्ति–भागकर छिप जाओ; ऎऩ्ऱाळ्–देवी ने कहा। ८७४

यह जीवन घास की नोक पर की जल-बिन्दु के समान है। उसका गुण ही चलने का है। ऐसे प्राणों को जाने से रोकना चाहकर क्या मैं अपनी कुलीनता का निशान, पातिव्रत्य को त्याग दूँगी? राम का शर विद्युत-सम प्रकाश के साथ वज्र के समान फुफकारते हुए आयगा! उसके आने से पहले अपने प्राण बचा लो। अपने हित में भागो, कहीं और छिप जाओ। ८७४

ऎऩ्ऱव ळुरैक्क निऩ्ऱ विरक्कमि लरक्क ऩॆय्द
उऩ्ऱुणैक् कणव ऩम्बव् वुयर्दिशै शुमन्द वोङ्गल्

वन्ऱिऱन् मरुप्पि नाऱ्ऱन् मडित्तवॆन् मार्बिन् वन्दाल्
कुन्ऱिडैत् तॊडुत्तु विट्ट पूङ्गणै कॊल्ल दॆन्ऱान् 875

ऍन्ऱु अवळ् उरैप्प—ऐसा उनके कहने पर; नित्र इरक्कम् इल्—स्थिर दया-रहित; अरक्कन्—राक्षस; उन् तुणै कणवन्—तुम्हारे जीवन-संगी का; ऍय्त अम्पु—प्रेषित शर; उयर् तिचै चुमन्त—उन्नत दिशा-वाहक; ओङ्कल्—पर्वत-सम गजों के; वन् तिरल् मरुप्पिन्—कठिन सारयुक्त दाँतों का; आऱ्ऱल् मटित्त—बल-भंजक; ऍन् वन् मार्पिन् वन्ताल्—मेरी छाती पर आयगा तो; अतु—वह; कुन्ऱु इटै—पर्वत पर; तॊटुत्तु विट्ट—संधानकर प्रेषित; पूम् कणै ऍन्ऱात्—पुष्पशर (सम) होगा; ऍन्ऱान्—कहा। ८७५

देवी ने यह चेतावनी दी, तो रावण, जिसका चित्त कभी स्निग्ध न रहा और सदा क्रूर, बोला— तुम्हारे जीवन-संगी का प्रेषित शर मेरा क्या कर सकेगा? मेरा वक्ष उन्नत दिशा-भार-वाही पर्वत-सम दिग्गजों के कठोर सारयुक्त दाँतों का भंजक है! उस पर वह शर पर्वत पर लगे पुष्प के समान हो जायगा। ८७५

अणङ्गिनुक् कणङ्ग नाळे याशैनो यहत्तुट् पॊङ्ग
उणङ्गिय वुडम्बि नेनुक् कुयिरिनै युदवि युम्बर्क्
कणङ्गुळै महळिर्क् किल्लाप् पॆरुम्बदङ् गैक्कॊ ळॆन्ना
वणङ्गिन नुलहन् दाङ्गु मलैयिनुम् वलिय तोळान् 876

उलकम् ताङ्कुम्—भूधर; मलैयितुम्—पर्वतों से भी बढ़कर; वलिय तोळान्—कठोर कन्धों के रावण ने; अणङ्कितुक्कु—श्री की; अणङ्कु अन्नाळे—श्रीदेवी-सी देवी; आचै नोय्—राग-रोग; अकत्तु उळ् पॊङ्क—मन में प्रबल है; उणङ्किय—निर्बल पड़े; उटम्पितेऱ्कु—शरीरी मुझे; उयिरिनै उतवि—प्राण-दान करके; उम्पर्—स्वर्गवासिनी; कणम् कुळै—भारी कुण्डलधारिणी; मकळिर्क्कु इल्ला—देवांगनाओं के लिए भी अप्राप्य; पॆरुम् पतम्—श्रेष्ठ पद को; कै कॊळ् ऍन्ना—अपनाओ, कहकर; वणङ्कितन्—प्रणाम किया। ८७६

रावण की भूधर पर्वतों से भी अधिक बलवान भुजाएँ थीं। ऐसे भुजबली रावण ने एक बात की— श्रीदेवी की भी श्री! राग-रोग मेरे अन्दर सितम ढा रहा है! मेरा शरीर शिथिल हो रहा है। कृपा करो। मुझे प्राणदान करो। और स्वर्गवासिनी, भारी कुण्डलधारिणी देवांगनाओं को भी अप्राप्य बहुमूल्य पद अपनाओ। यह कहकर उसने देवी के चरणों पर झुककर प्रणाम किया। ८७६

तरैवायवन् वन्दडि ताळुदलुम्, करैवाळ्वड वावि कलङ्गिनळ्बोल्
इरैवाविळै योयॆन वेङ्गिनळाल्, पॊरैतानुरु वायदॊर् पॊऱ्पुडैयाळ् 877

अवन्—उसके; वन्तु—आकर; अटि तरैवाय्—चरणों के सामने, भूमि पर गिरकर; ताळ्तलुम्—दण्डवत करने पर; पॊऱै तान् उरु आयतु—क्षमा ही मूर्ति बन गयी, ऐसी;

ओर् पॉऱ्पु उटैयाळ्–शोभाशालिनी; करै वाळ् पट–(रक्त-)रंजित तलवार के लगने पर; आवि कलङ्किनळ् पोल्–प्राणाकुल हुई-सी; इऱैवा–मेरे नाथ; इळैयोय्–देवर जी; ॲन–पुकारते हुए; एङ्किनळ्–दुखी हुईं। ८७७

जब रावण ने सीताजी के पास आकर उनके चरणों पर दण्डवत की, तब क्षमा का अवतार सीताजी रक्तरंजित तलवार से प्रहरित के समान तड़पीं। 'हे मेरे नाथ! हे मेरे देवर!' की दुहाई देते हुए वे बहुत खिन्न हुईं। ८७७

❀ आण्डायिडै तीयव नायिळैयैत्, तीण्डानयन् मुन्नुरै शिन्दैशॅयात्
तूण्डानॅन लामुयर् तोळ्वलियाल्, कीण्डानिल मोशनै कीळ्पुडैये 878

आण्टु–तब; तीयवन्–खल ने; आय् इळैये–उत्तम आभरणों से अलंकृत देवी को; अयन् मुन् उरै–ब्रह्मा के पूर्वकथित शाप का; चिन्तै चॅया–मन में स्मरण करके; तीण्टान्–स्पर्श नहीं किया; तूण् तान् ॲनल् आम्–खम्भे ही मान्य; उयर् तोळ् वलियाल्–अपनी भुजाओं के बल से; आयिटै–उस स्थल में; निलम् कीळ् पुटै–भूमि को नीचे और पार्श्वों में; ओर् ओचनै–एक योजन; कीण्टान्–खोदकर उठा लिया। ८७८

तब खल रावण ने सोचा कि क्या किया जाय। उसे ब्रह्मा-दत्त शाप का स्मरण आया, जिसके अनुसार वह परनारी का स्पर्श नहीं कर सकता था। इसलिए उसने वहाँ की भूमि को अपने स्तम्भ-सम हाथों से खोद लिया, जहाँ सीताजी थीं। नीचे और पार्श्वों में एक योजन गहरी और एक योजन विस्तार की भूमि खोदकर उठा ली। ८७८

कॉण्डानुयर् तेर्मिशै कोल्वळैयाळ्, कण्डाळन दारुयिर् कण्डिलळाल्
मण्डानुरु मीनिन् मयङ्गिनळाल्, विण्डान्वळि यार्ॅळु वान्विरैवान् 879

उयर् तेर् मिचै कॉण्टान्–ऊँचे रथ पर उन्हें रख लिया; कोल् वळैयाळ्–सुन्दर कंकणशोभिता ने; कण्टाळ्–देखा; तनतु आर् उयिर् कण्टिलळ्–अपनी जान न देखतीं; मण् तान् उऱु–धरती पर गिरीं; मीनिन् मयङ्कितळ्–मछली-सी मूर्च्छित हुईं; विण् तान् वळि आ–(रावण) आकाश-मार्ग में; ॲळुवान्–उठा; विरैवान्–तेज चला। ८७९

रावण ने सीताजी को भूमिखण्ड-सहित उठाकर अपने रथ में रख लिया। सुन्दर कंकणभूषित देवी ने इसको देखा तो मानो उनके प्राण खिसक गये। धरती पर पड़ी मछली के समान छटपटायीं। बेहोश हुईं। रावण आकाश-मार्ग में आगे बढ़ रहा था। ८७९

❀ विडुतेरॅन वॅङ्गनल् वॅन्दळियुम्, कॉडिपोलपुरळ् वाळ्हुलै वाळयर्वाळ्
तुडियावॅळ् वाडुय रालळुवाळ् कडियायर नेयिदु कावॅनुमाल् 880

विटु तेर् ॲन्–चलाओ रथ, कहने पर; कतल् वॅन्तु अळियुम्–आग में झुलसकर म्रियमाण; कॉटि पोल्–लता के समान; पुरळ्वाळ्–छटपटातीं; कुलैवाळ्–अधीर

होतीं; अयर्वाळ्–शिथिल होतीं; तुटिया ॲळुवाळ्–तड़पकर उठतीं; तुयराल् अळुवाळ्–दुःख के साथ रोतीं; कटिया अरत्ते–(हमसे) अनुपेक्षित धर्मदेवता; इतु का–इससे तारो; ॲतुम्–कहतीं। ८८०

रावण ने सारथी को आज्ञा दी कि रथ को तेज चलाओ। तब अग्नितप्त लता के समान सीताजी लोटीं; अधीर हुईं; शिथिल पड़ीं; फिर तड़पकर उठीं। दुःख से रोयीं। धर्मदेवता को पुकारा। हे अनुपेक्षित धर्मदेवता! मुझे इस विपदा से बचा लीजिए। ८८०

❀ मलैयेमर नेमयि लेकुयिले, कलैयेपिणै येहळि ऱेपिडियें
निलैयावुयि रेनिलै तेरिरिर्पोय्, उलैयावलि याऱुळै नीरुरैयीर् 881

मलैये–हे पर्वतो; मरने–तरुओ; मयिले–मोरो; कुयिले–कोकिलो; कलैये–हिरणो; पिणैये–हरिनियो; कळिऱे–पुरुषगजो; पिटिये–हथिनियो; निलैया उयिरेन्–अस्थिरजीव; निलै तेरिरिर् नीर्–मेरी स्थिति जानते हो तुम लोग; उलैया वलियार्–अक्षय बलशाली; उळै पोय्–(श्रीराम) के पास जाकर; उरैयीर्–कहो। ८८१

सीताजी ने सामने दिखे सब पदार्थों को बुलाकर बचाव की याचना की। हे पर्वतो, तरुओ, मोरो, कोयलो, मृगो, हरिनियो, गजो, हथिनियो! मैं कितनी अधीर हूँ। यह तुम जानते हो। तुम जाकर उन अक्षय पराक्रमी श्रीराम को समाचार दो। ८८१

शॅऴ्जेवह नार्निलै नीर्तॅरिवीर्, मञ्जेपॉळि लेवन देवदैहाळ्
अञ्जेलॅन नलहुदि रेलडियेन्, उञ्जेनदु तानिळ वोवुरैयीर् 882

मञ्चे–मेघो; पॉळिले–उद्यानो; वनतेवतैकाळ्–वनदेवताओ; चॅम् चेवकनार् निलै–उत्तम पराक्रमी श्रीराम का जो (दुःख) होगा; नीर्–तुम लोग; तॅरिवीर्–जानते हो; अञ्चेल् ॲन्–मुझे अभय देकर; नलकुतिरेल्–यह समाचार उन्हें दें तो; अटियेन् उञ्चेन्–दासी मैं बच जाऊँगी; अतुतान्–वह भी; इळवो–तुम्हारे लिए कष्टकर है क्या; उरैयीर्–जाकर कहो। ८८२

हे मेघो, उद्यानो, वनदेवताओ! महा पराक्रमी श्रीराम मुझे खोकर कैसे दुखी होंगे —यह तुम लोग जानते हो। इसलिए मुझे अभयदान देकर उनके पास जाकर कहोगे तो बच सकूँगी। इसमें आपका कोई नुकसान होगा क्या? जाओ, कहो उनसे। ८८२

❀ निरुदादियर् वेरऱ नीणमुहिल्बोल्, शरतारैहळ् वीशिनर् शारहिला
वरदाविळै योय्मरु वेदुमिलाप्, परदाविळै योय्पळि पूणुदिरो 883

निरुतातियर्–राक्षस आदि; वेर् अऱ–निर्मूल करने; नीळ् मुकिल् पोल्–बड़े काले मेघ के समान; चर तारैकळ् वीचिनर्–शर-धाराएँ बरसाते हुए; चारकिला–जो यहाँ नहीं आये; वरता–वे वरद; इळैयोय्–उनके लघु भ्राता; मरु एतुम् इला–निर्दोष; परता–भरत; इळैयोय्–उनके अनुज; पळि पूणुतिरो–(मुझे न बचाकर) अपयश के भागी हो जायँगे क्या। ८८३

हे वरद श्रीराम ! आप राक्षसादि को निर्मूल करने के लिए बड़े काले मेघ के समान शर-वर्षा कराते हुए आये नहीं ! हे देवर ! निर्दोष भरत ! उनके कनिष्ठ भाई ! मेरे कारण आप सब अपयश के भागी होंगे क्या ? । ८८३

कोदावरि येहुळिर् वाय्हुळैवाय्, मादावनै यायमन नेतेळिवाय्
ओदादुणर् वारुळै योडितैपोय्, नीदान्विनै येनिलै शॊल्ललैयो 884

कोतावरिये–गोदावरी; कुळिर्वाय्–शीतल; कुळैवाय्–स्नेहार्द्र; माता अनैयाय्–माता-समाना; मनत्ते तॆळिवाय्–स्वच्छ-चित्त; नी तान्–तुम ही; ओतातु उणर्वार् उळै–विना अध्ययन किये ही विद्वान बने श्रीराम के पास; ओटिनै पोय्–दौड़ जाकर; विनैयेन् निलै–प्रारब्धवशा मेरी स्थिति; चॊल्ललैयो–नहीं कहोगी क्या । ८८४

हे गोदावरी नदी ! तुम शीतल हो, स्नेहार्द्र हो ! सबकी माता-समान हो। स्वच्छ-मना हो। तुम ही तो दौड़के जाओ और विना अध्ययन किये ही सर्वज्ञ बने मेरे पति के पास प्रारब्धवशा मेरी स्थिति नहीं कहोगी क्या ? । ८८४

मुन्दुञ्जुनै काण्मुळै वाळरिहाळ्, इन्दन्निल नोडु मॆडुत्तकैनाल्
ऐन्दुन्दलै पत्तु मलैन्दुलैयच्, चिन्दुम्बडि कण्डु शिरिक्किलिरो 885

मुन्तुम्–सामने दृश्य; चुनैकाळ्–निर्झरो; मुळै वाळ्–गुफावासी; अरिकाळ्–सिंहो; इन्त निलनोटुम्–इस भूमि के साथ; ॲटुत्त–जिन्होंने मुझे उठाया; कै नाल् ऐन्तुम्–वे बीसों हाथ और; तलै पत्तुम्–दसों सिर; अलैन्तु उलैय–हरहराकर गिरें और मिटें और; चिन्तुम् पटि कण्टु–उनके गिरने की बात देखकर; चिरिक्किलिरो–नहीं हँसोगे क्या । ८८५

मेरे सामने दृश्यमान निर्झरो ! गुफावासी सिंहो ! मुझे भूखण्ड के साथ उठाकर रावण लिये जा रहा है ! क्या उसके वीसों हाथ और दसों सिर हिलकर नहीं गिरेंगे ? और उनको नष्ट होते देखकर तुम नहीं हँसोगे ? । ८८५

ॲन्ऱिन्न पलवुम् पन्नि यिरियलुर् ररऱु वाळैप्
पॊन्ऱुन्तुम् पुणर्मॆन् कॊङ्गैप् पॊलङ्गुळै पोरि लॆन्तैक्
कॊन्ऱुन्नै मीट्कुङ् गॊल्लम् मानिडर् कॊळ्ह वॆन्ना
वन्ऱिणगै यॆरिन्दु नक्कान् वाळ्क्कैनाळ् वरितु वीळ्प्पान् 886

ॲन्ऱु–ऐसा; इन्न पलवुम्–और इस तरह की अनेक बातें; पन्नि–कहकर; इरियल् उऱ्ऱु–व्यथित होकर; अरऱुवाळै–जो रो रही थीं, उनको; वाळ्क्कै नाळ्–जीवन के दिनों को; वरितु वीळ्प्पान्–व्यर्थ करने में लगा रहा रावण; पॊन् तुन्तुम्–स्वर्णमय (आभरणावृत); पुणर् मॆल् कॊङ्कै–सटे हुए स्तनों से भूषित; पॊलन् कुळै–

(और) मनोरम कुण्डलधारिणी; अ माऩिटर–वे नर; पोरिल् ऒऩ्ऱै कॊऩ्ऱु–युद्ध में मुझे मारकर; उऩ्ऱै मीट्पर् कॊल्–तुम्हें मुक्त करेंगे क्या; कोळ्क–करें; ऎऩ्ऱा–कहकर; वऩ् तिण् कै ऎरिऩ्तु–कटोर बलवान हाथ पीटकर; नक्काऩ्–ठठाया। ८८६

सीताजी ऐसी और इस तरह की अन्य बातें कहकर अत्यधिक व्यथा के साथ विलाप रही थीं। तब व्यर्थजीवक रावण ने उनको चिढ़ाते हुए कहा कि स्वर्णमय आभरणभूषित उरोजों की, भारी कुण्डलधारिणी बाले ! अब क्या वे नर मुझे युद्ध में मारकर तुमको रिहा कर देंगे ? करें। यह कहकर ताली बजाते हुए ठठाया। ८८६

वाक्किता लऩ्ऩाऩ् शॊल्ल मायैयाल् वञ्ज मानॊऩ्
ऱाक्किऩा याक्कि युऩ्ऩै यारुयि रुण्णुङ् गूऱ्ऱैप्
पोक्किताय् पुहुन्दु कॊण्डु पोहिऩ्ऱाय् पॊरुदु निऩ्ऩैक्
काक्कुमा काण्डि यायिऱ् कडवलुऩ् तेरै यॆऩ्ऱाळ् 887

अऩ्ऩाऩ्–उस (रावण) के; वाक्किऩाल् चॊल्ल–अपने मुख से वह शब्द कहने पर; मायैयाल्–माया से; वञ्च मान् ऒऩ्ऱु–एक मायामृग; आक्किताय्–सृष्ट किया; आक्कि–बनाकर; उऩ्ऱै आर् उयिर् उण्णुम् कूऱ्ऱै–तुम्हारे प्यारे प्राण-भक्षक यम (श्रीराम) को; पोक्किऩाय्–उसके पीछे भिजवाया; पुकुन्तु–(उनके अभाव में) घुसकर; कॊण्टु पोकिऩ्ऱाय्–मुझे हर ले जा रहे हो; पॊरुतु–युद्ध करके; निऩ्ऩै काक्कुम् आ–अपने को बचा लेने का सामर्थ्य; काण्टि आयिल्–दिखा सको तो; उऩ् तेरै–अपने रथ को; कटवल्–आगे मत चलाओ; ऎऩ्ऱाळ्–कहा। ८८७

रावण के यह (परिहास-) वचन कहने पर सीताजी ने कहा कि तुमने एक मायामृग बनाया और उसके पीछे उनको भिजवा दिया। जब वे नहीं रहे, तब चोरी से आश्रम में घुसे और मुझे उठाये ले जा रहे हो ! अगर युद्ध में अपने को बचा लेने का सामर्थ्य सचमुच रखते हो, तो रथ को रोको। आगे मत बढ़ाओ। ८८७

मीट्टुमॊऩ् ऱुरैशॆय् वाणी वीरऩे विरैविऩ् मऱ्ऱुऩ्
कूट्टमा मरक्कर् तम्मैक् कॊऩ्ऱुङ्गै मुलैयु मूक्कुम्
वाट्टिऩार् वऩत्ति लुळ्ळार् माऩिड रॆऩ्ऱ वार्त्तै
केट्टुमिम् मायञ् जॆय्द दच्चत्तिऩ् किळर्च्चि यऩ्ऱो 888

नी वीरऩे–तुम वीर हो क्या; उऩ् कूट्टम् आम् अरक्कर् तम्मै–तुम्हारे दलों को, राक्षसों को; विरैविल् कॊऩ्ऱु–शीघ्रता से मारकर; उङ्कै मुलैयुम् मूक्कुम्–तुम्हारी बहिन की छाती और नाक को; वाट्टिऩार्–(जिन्होंने) काटकर दुखाया; माऩिटर्–वे नर; वऩत्तिल् उळ्ळार् ऎऩ्ऱ वार्त्तै–वन में हैं, यह समाचार; केट्टुम्–सुनने के बाद भी; इ मायम् चॆय्ततु–यह कपट करना; अच्चत्तिऩ् किळर्च्चि अऩ्ऱो–भय का विकास नहीं है क्या; मीट्टुम् ऒऩ्ऱु उरै चॆय्वाळ्–और एक बात कहने लगीं। ८८८

सीताजी ने और एक बात कही। तुम सच्चे वीर हो ? तुममें भय नहीं है क्या ? खर-दूषणादि तुम्हारे दल के राक्षसों को प्रभु ने शीघ्रता से निहत कर दिया। तुम्हारी बहिन की छाती और नाक कटी। ऐसे पराक्रमी वन में हैं, यह सुनने के बाद तुमने यह प्रवंचना की। क्या इसका अर्थ तुम्हारे भय का विकास और प्रदर्शन नहीं है ? । ८८८

मॊऴिदरु मऴवि नङ्गै केळिदु मुरणिल् याक्कै
इऴिदरु मनिद रोडे यान्शॆरु वॆंदिर्प्पॆ नॆन्ऱाल्
विऴिदरु नॆऱ्ऱि यान्ऱन् वॆळ्ळिवॆऱ् पॆडुत्त तोट्कुप्
पऴिदरु मदनिऱ् चालप् पयन्ऱरुम् वञ्ज मॆन्ऱान् 889

मॊऴि तरुम् अऴविल्–इतना कहने पर; नङ्कै–नायिका; इतु केळ्–यह सुनो; मुरण् इल् याक्कै–दुर्बल-शरीरी; इऴि तरु मनितरोटे–क्षुद्र नरों के साथ; यान् चॆरु ऎतिर्प्पॆन् ऎन्ऱाल्–मैं युद्ध में लगूँगा तो; विऴि तरु नॆऱ्ऱियान् तन्–भालनेत्र शिवजी के; वॆळ्ळि वॆऱ्पु ऎटुत्त तोट्कु–चाँदी के पर्वत के धारक, मेरे कन्धों का; पऴि तरुम्–अपमान होगा; अतनिल्–उससे; वञ्चम्–प्रवंचना; चाल–अच्छा; पयन् तरुम्–फल देगी; ऎन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ८८९

रावण ने इसके उत्तर में कहा कि नायिका ! मेरी यह बात सुनो। वे अल्प और दुर्बल शरीरी नर हैं। उनसे प्रत्यक्ष युद्ध करूँ तो वह मेरे भालनेत्र शिवजी सहित चाँदी के कैलास पर्वत के धारक कन्धों का अपमान होगा। उससे यह प्रवंचना निश्चय अधिक अच्छा फल दिलायेगी ! । ८८९

पावैयु मदनैक् केळात् तङ्गुलप् पहैञर् तम्बाल्
पोवदु कुऱ्ऱम् वाळिऱ् पॊरुवदु नाणम् बोलाम्
आवदु कऱ्पि ऩारै वञ्जिक्कु माऱ्ऱ लेयाम्
एवमॆन् पऴिदा नॆन्ऩे यिरक्कमि लरक्करक् कॆन्ऱाळ् 890

पावैयुम्–प्रतिमा-सी देवी; अततै केळा–वह सुनकर; तम् कुल पकैञर् तम् पाल्–अपने कुल के शत्रु के साथ; पोवतु–युद्ध करने के लिए जाना; कुऱ्ऱम्–अपराध है और; वाळिल्–तलवार से; पॊरुवतु–युद्ध करना; नाणम् पोलाम्–शरम की बात है क्या; कऱ्पितारै–परपुरुष की पत्नी को; वञ्चिक्कुम् आऱ्ऱले–धोखा देने का सामर्थ्य; आवतु आम्–ठीक होगा शायद; इरक्कम् इल् अरक्करक्कु–निर्दय निशाचरों के लिए; एवम् ऎन्–अपराध क्या है; पऴि तान् ऎन्ऩे–निन्दनीय क्या है; ऎन्ऱाळ्–कहा। ८९०

चित्रप्रतिमा-सी देवी ने व्यंग्य के साथ कहा। अपने कुल-शत्रु के साथ युद्ध करना अपराध है, तलवार की वार करना शरम की बात है ! परपुरुष की पतिव्रता पत्नी को वंचना से हर ले जाना श्रेयस्कर और करने योग्य काम है। वाह ! निर्दय राक्षसों के विचार में फिर अपराध क्या है ? अपमान क्या है ? विचित्र बातें हैं। ८९०

तुनुमव् वेलै यिऩ्ग ऎॆङ्गडा पोव दॆऩ्ऱे
तुनिलॆन् ऱिडितुत शॊल्लऩ् नॆरुप्पिडैप् परप्पुङ् गण्णऩ्
नत्तॆन विळङ्गुम् वीरत् तुण्डत्तऩ् मेरु वॆऩ्नुभ्
तुत्तोङ्ङ् गुऩ्ऱम् वाऩिल् वरुवदे पोलु मॆय्याऩ् 891

ऎॆन्ऩुम् अ वेलैयिऩ् कण्–जब वे ऐसा बोलीं, तब; ऎॆङ्कु अटा पोवतु–रे, तुम हाँ जाते हो; निल् निल् ऎॆऩ्ऱु–खड़ा रह, खड़ा रह, ऐसा; इटित्त चॊल्लऩ्–वज्रस्वर; रुप्पु इटै परप्पुम्–आगे को सर्वत्र फैलानेवाली; कण्णऩ्–आँखों के; मिऩ् ऎॆऩ्ऩ वळङ्कुम्–विद्युत के समान विद्यमान; वीर तुण्टत्तऩ्–प्रतापी चोंच के; पोऩ् नॆटुम् ऩ्ऱम्–उच्च स्वर्ण-पर्वत मेरु; वाऩिल् वरुवते पोलुम्–आकाश में आता हो, ऐसे; य्याऩ्–शरीरी। ८६१

वे यह कह ही रही थीं कि 'रे कहाँ जा रहे हो! खड़ा रह, खड़ा रह' का शब्द सुनाई दिया। जटायु ने यह शब्द कहा। (उनका वर्णन आगे है) उनका स्वर वज्र-सम था। आँखों से आग सब जगह बरस रही थी। उनका तुण्ड वज्र-सम कठोर था और विद्युत के समान प्रकाशमान। स्वर्ण-मेरु आकाश में उड़ता आता हो, ऐसा भ्रम पैदा करनेवाले भीमकाय थे। ८९१

ाळिवऩ् किरिह ळॆल्लाम् परिऩ्दॆळुन् दॊऩ्ऱो डॊऩ्ऱु
ूळियि ऩुदिर विण्णिऱ् पुडैत्तुरक् किळर्न्दु पॊङ्गि
ाळियु मुलहु मॊऩ्ऱा यळिदर मुळ्दुम् वीशुम्
ळिवॆङ् गाऱ्ऱॆऩ्ऩ चिऱैयिरण्डु पूदे पॊङ्ग 892

पाळि वळ् किरिकळ् ऎॆल्लाम्–बड़े और कठोर सभी पर्वतों को; परिन्तु ऎॆळुन्तु–खाड़कर ऊपर उठाकर; ऒॊऩ्ऱु ऒॊटु ऒॊऩ्ऱु–एक दूसरे के साथ; पूळियिऩ् उतिर–र होकर गिराते हुए; विण्णिल् पुटैत्तु–आकाश में टकराकर; उऱ किळर्न्तु ॊङ्कि–बड़े शोर के साथ ऊपर उठकर; आळियुम् उलकुम्–समुद्र और धरती को; ॊऩ्ऱाय् अळि तर–एक साथ विनष्ट करते हुए; मुळ्तुम् वीचुम्–सर्वत्र प्रवहमान; ळि वॆम् काऱ्ऱु इतु–युगांत का प्रभंजन है यह; ऎॆऩ्ऩ–ऐसा विचार पैदा करते हुए; रु चिऱै–अपने दोनों पंखों द्वारा; ऊतै पॊङ्क–पवन बनाते हुए। ८९२

उनके अपने पक्षों को हिलाने से पवन इतनी तेज़ी से और इतने बल के साथ विस्थापित हुआ कि पर्वत उखड़कर ऊपर उठे और आपस में टकराकर चूर हो गिर पड़े; और भूमि और आकाश को एक साथ विनष्ट करते हुए युगांतकालीन प्रभंजन प्रवृत्त हो बह रहा हो, ऐसा लगा। ८९२

शाहैवऩ् ऱलैयोडु मरमुन् दाळमेल्, मेहमुङ् गिरिहळुम् विण्णिन् मीच्चॆल
माहवॆङ् गलुळऩे वरुहिऩ् ऱाऩॆऩ, नाहमुम् पडमॊळित् तॊडुङ्गि नैयवे 893

मरमुम्–तरु भी; चाकै वऩ् तलैयोटु–शाखा रूपी सिरों के साथ; ताळ–गिर ; मेल् मेकमुम्–ऊपर के मेघ और; किरिकळुम्–गिरियाँ; विण्णिन् मी चॆल–

आकाश पर चलीं; माक वॅम् कलुळते–(ऐसा) बड़े और भयंकर गरुड़ ही; वरुकिन्रान् अॅन–आता हो, सोचकर; नाकमुम्–सर्प भी; पटम् ऑळितुतु–फन समेट लेकर; ऑतुङ्कि नैयवे–छिपकर क्लिन्न हैं, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए। ८९३

तरु शाखा के सिरों के साथ नीचे गिरे। ऊपर के मेघ और गिरियाँ आकाश में चलीं। बड़े और भयंकर गरुड़ ही आ रहे हैं—समझकर सर्प फनों को समेटते हुए जा छिपे और क्लिन्न रहे। ८९३

यानैयु माळियु मुदल यावैयुम्, कानॅडु मरत्तॊडु तूरु कल्लिवै
मेनिमिरन् दिरुशिरै विशैयि नेऱलाल्, वानमुङ् गानमु मारु कॊण्डवे 894

यानैयुम् आळियुम् मुतल–गज, शरभ आदि; यावैयुम्–सभी प्राणी; कान् नॅटु मरत्तॊटु–वन्य, ऊँचे पेड़ों के साथ; तूरु कल् इवै–झाड़, कंकड़ आदि; इरु चिरैकळ् विचैयिल्–दोनों पंखों के हिलने से उत्पन्न हवा के वेग से; मेल् निमिर्न्तु एऱलाल्–ऊपर उठकर चले, इसलिए; वानमुम् कानमुम् मारु कॊण्ट–आकाश और कानन स्थानांतरित हो गये। ८९४

गज, शरभ आदि सभी प्राणी, वन के बड़े-बड़े पेड़, झाड़, कंकड़ आदि उनके पक्षों के प्रबल पवन के कारण ऊपर उठे और उड़े। इसलिए कानन आकाश बन गया और आकाश कानन। ८९४

उत्तमन् ऱेवियै युलहॊ डोङ्गुदेर्
वैत्तनै येहुव दॅङ्गु वानिनो
डित्तनै दिशैयैयुम् मऱैप्पॅन् यानॆनाप्
पत्तिरच् चिऱैहळै विरिक्कुम् पण्बिनान् 895

उलकोटु उत्तमन् तेवियै–भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को; ओङ्कु तेर् वैत्तनै–उन्नत रथ पर रखकर; ऍङ्कु एकुवतु–कहाँ जाते हो; वानिन् ओटु इत्तनै तिचैयैयुम्–आकाश में ही नहीं, सभी दिशाओं के मार्ग को; यान् मऱैप्पॅन्–मैं रोक लूंगा; ऍना–कहकर; पत्तिर चिऱैकळै–पत्र-सम पक्षों को; विरिक्कुम् पण्पिनान्–फैलाने का कार्य करके। ८९५

जटायु ने पूछा— रे भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को ऊँचे रथ में रखकर कहाँ जाओगे? तुम आकाश में ही नहीं, किसी भी दिशा में जा नहीं पाओगे। मैं सभी मार्ग रोक लूंगा। यह कहते हुए वे पत्राकार अपने पक्षों को फैलाकर (रोकते हुए)। ८९५

वन्दन नॆरुवैयिन् मत्तन् माण्बिलान्
ऍन्दिरत् तेर्च्चॅल वॊळिक्कु मॅण्णिनान्
शिन्दुरक् काल्शिरञ् जॆक्कर् शूडिय
कन्दरक् कयिलैयै निहर्क्कुङ् गाट्चियान् 896

माण्पु इलान्–अश्रेष्ठ रावण के; ऍन्तिर तेर् चॅलवु–यन्त्रसहित रथ का

गमन; ऑळिक्कुम् ऍण्णितान्–रोकने का विचार ले; चिन्तुरम् काल् चिरम्–लाल पैरों और सिर से युक्त; चॅक्कर् चूटिय कन्तरम्–संध्याकाश के मेघ को अपने गले में रखते हुए; कयिलै–कैलास को; निकर्क्कुम् काट्चियान्–समानता करनेवाले; ऍरुवैयिन् मन्तन्–गीधों के राजा; वन्ततन्–आये। ८९६

अश्रेष्ठ रावण के यन्त्रयुक्त रथ को रोकने के विचार से जटायु आये। उनके पैर और सिर लाल थे। वे कैलास पर्वत के समान लगे, जिसके कण्ठ-प्रदेश पर सन्ध्यामेघ फैले हों। ८९६

✽ आण्डुर्र वणङ्गितै यञ्जलॅन्नात्, तीण्डुर्रिल तॅन्रुणर् शिन्दैयितान्
मूण्डुर्ऍ़ळु वॅङ्गद मुर्रिलनाय्, मीण्डुर्रुरै याडलै मेवितनाल् 897

आण्टु उर्रु–वहाँ आकर; अ अणङ्कितै–उन देवी को; अञ्चल् ऍता–मत डरो, कहकर; तीण्टु उर्रिलन्–(रावण ने) स्पर्श नहीं किया है; ऍन्रु उणर् चिन्तैयित्तान्–यह ज्ञान मन में करके; मूण्टु उर्रु–उत्पन्न होकर; ऍऴु वम् कतम्–उठनेवाले भयंकर क्रोध को; मुर्रिलन् आय्–पूर्ण होने न देकर; मीण्टु उर्रु–उसको रोककर; उरै आटलै–वार्तालाप करना; मेवितन्–आरम्भ किया। ८९७

आकर जटायु ने सीताजी को आश्वासन दिलाया। कहा कि मत डरो। उन्होंने यह जान लिया कि रावण ने देवी का स्पर्श नहीं किया है। इसलिए उन्होंने अपने उठते क्रोध को हद से अधिक जाने नहीं दिया। उसको रोककर उन्होंने रावण को कुछ उपदेश देना चाहा। ८९७

कॅट्टाय्हिळै योडुनिन् वाळ्वैयॅलाम्, शुट्टायिदु वॅन्नै तॉडङ्गिनैनी
पट्टायॅन वेहॉडु पत्तिनियै, विट्टेहुदि येल्विळि हिन्रिलैयाल् 898

कॅट्टाय्–विनष्ट हुए हो; किळैयोटु उन् वाऴ्वै ऍलाम्–बन्धुवर्ग-सहित अपने जीवन को; चुट्टाय्–जला डाला; इतु ऍन्न तॉटङ्कितै–यह क्या उपक्रम किया है; नी पट्टाय् ऍन कॉटु–तुम मरे, यह समझकर; पत्तितियै विट्टु एकुतियेल्–पतिव्रता सीता को छोड़कर चलो तो; विळिकिन्रिलै–नहीं मरोगे। ८९८

रावण! तुम अपने बन्धुजन सहित मिट गये। यह क्या उपक्रम किया है? 'अवश्य मर जाऊँगा' यह समझकर पतिव्रता देवी सीता को छोड़ जाओगे तो नहीं मरोगे। बच जाओगे। ८९८

✽ पेदाय्पिळै शॅय्दनै पेरुलहिन्, मादावनै याळै मनक्कॉडुनी
यादाहनि नैन्दनै यॅण्णमिलाय्, आदार निनक्किनि यारुळरो 899

पेताय्–जड़मति; पिऴै चॅय्ततै–अपराध कर दिया; पेर् उलकिन्–बड़े विश्व की; माता अतैयाळै–सीता-सम इनको; यातु आक–कौन; मनम् कॉटु–मन में; निनैन्ततै–विचार रखते हो; ऍण्णम् इलाय्–विवेकहीन; निनक्कु–तुम्हें; इति–अब; आतारम् यार् उळर्–अवलम्ब कौन है। ८९९

जड़मति! तुमने बहुत बड़ा अपराध कर दिया है! यह विश्वजननी-

सदृश हैं। इनको क्या समझकर उठा लाये हो? अविवेकी! अब (यह काम करने के बाद) तुम्हारा अवलम्ब कौन होगा? । ८९९

❀ उय्यामत् मलैन्दुम रारुयिरै, मॅय्याह विरामन् विरुन्दिडवे
कैयार मुहन्दुहों डन्दहन्नार्, ऐयापुदि दुण्ड दरिन्दिलैयो 900

इरामन्–श्रीराम; उमर्–तुम्हारी जाती के राक्षसों को (खरादि को); उय्यामल्–वचने न देकर; आर् उयिरै–उनके प्यारे प्राणों को; मॅय् आक विरुन्तु इटवे–सचमुच दावत के रूप में देने से; अन्तकत्तार्–यमदेव का; कै आर मुकन्तु–हाथ भर उसे लेकर; पुतितु उण्टतु–अपूर्व भोजन के रूप में खाना; अरिन्तिलैयो–(तुमने) न जाना क्या। ९००

श्रीराम ने तुम्हारे ही राक्षसों को (खर आदि को) वचने न देकर उनके प्राणों को यम का भोजन बनाया और यम ने अपने दोनों हाथ भर-भर के अभूतपूर्व भोज खाया था। तुमने नहीं जाना क्या? । ९००

कॉडुवॅङ्गरि कॉल्लिय वन्ददन्मेल्, विडुमुण्डै कडाव विरुम्बितैये
अडुमॅन्ब दुणर्न्दिलै यायिनुम्वल्, कडुवुण्डुयि रिन्निलै काणुदियाल् 901

कॉटु वॅम् करि–भयंकर क्रोधी गज; कॉल्लिय वन्ततन् मेल्–जो मारने आया उस पर; विटुम् उण्टै–गुलेले; कटाव विरुम्पित्तैये–चलाना चाहा है; अटुम् ॲन्पतु–नाश कर देगा; ॲन्पतु उणर्न्तिलै–यह नहीं विचारा; आयितुम्–तो भी; वल् कटु उण्टु–प्रबल विष खाकर; उयिरिन् निलै–प्राण की स्थिति; काणुति–देखना चाहते हो। ९०१

तुम्हें मारने, बड़े क्रोध के साथ भयंकर गज आ रहा है। उस पर तुम गुलेले चला रहे हो! क्या तुम नहीं जानते कि यह काम तुम्हारा घातक बन जायगा? तो भी विष खाकर जीवित रहने की इच्छा करोगे? । ९०१

ॲल्लावुल हङ्गळु मिन्दिरनुम्, अल्लादवर् मूवरु मन्दहनुम्
पुल्वाय्पुलि कण्डदु पोल्वरलाल्, विल्लाळरै वॅल्लु मिडुक्किनरो 902

ॲल्ला उलकङ्कळुम्–सभी लोकों के वासी; इन्तिरनुम्–देवेन्द्र और; अल्लातवर्–और अन्य; मूवरुम्–त्रिदेव; अन्तकनुम्–यम; पुल् वाय्–हरिण ने; पुलि कण्टतु–व्याप्त देखा हो; पोल्वर्–ऐसा हो जायँगे; अलाल्–नहीं तो; विल्लाळरै–धन्वियों को; वॅल्लुम्–हराने के; मिटुक्कितरो–सामर्थ्य रखनेवाले हैं क्या। ९०२

सभी लोकों के वासी, इन्द्र, त्रिदेव और यम भी श्रीराम के सामने, व्याघ्र के सामने हरिण के समान (भयभीत) हो जायँगे! नहीं तो प्रबल धन्वी उनको हराने का सामर्थ्य किसके पास है? । ९०२

❀ इम्मैक्कुर् वोडु मिड्रन्दळियुम्, वॅम्मैत्तॉळि लिङ्गिदु मेवुदियाल्
अम्मैक्करु मानर हन्दरुमाल्, ॲम्मैक्किद माहवि दॅण्णिनैनो 903

इम्मैक्कु–इस जन्म में; उरवु ओटुम्–बन्धुजनों के साथ; इरन्तु अऴियुम्–मर मिटने का; वॅम्मै तॊऴिल् इतु–भयावह काम इसे; इङ्कु–यहाँ; मेवुतियाल्–आरम्भ किया है, इसलिए; अम्मैक्कु–पर जीवन में भी; अरु मा नरकम्–भयंकर लम्बा नरकवास; तरुमाल्–दिलायगा, इसलिए; इतु–यह; ॲम्मैक्कु इतम्–कब के लिए हितकारी; आक–ऐसा; नी ॲण्णितै–तुमने सोचा। ९०३

इहलोक में यह काम तुमको अपने बन्धुजनों के साथ विनष्ट करानेवाला काम है। यह तुमने आरम्भ किया है। यह आगे भी भयंकर और लम्बा नरकवास दिला देगा। फिर कहाँ, कब हित होगा, तमने सोचा ? । ९०३

मुत्तेवरिऩ् मूल मुदऱ्पॊरुळाम्, अत्तेवरिम् मानिड रादलिऩाल्
ॲत्तेवरॊ डॆण्णुव दॆण्णमिलाय्, पित्तेऱिऩै याहप् पिऴैत्तऩैयाल् 904

इ मातिटर्–ये नर (-रूप श्रीराम और लक्ष्मण); मु तेवरिऩ्–तीनों आदिदेवों के; मूल मुतल् पॊरुळ् आम्–आदि परमात्मा; अ तेवर्–वे आदिदेव हैं; आतलिऩ्–इसलिए; ॲ तेवरोटु ॲण्णुवतु–किन देवों के साथ रखकर सोचोगे; ॲण्णम् इलाय्–अविवेकी; पित्तु एऱिऩै आक–पागलपन बढ़ गया; पिऴैत्तऩै–यह अपराध किया। ९०४

ये, जो नर-रूप में आये हैं, श्रीराम त्रिदेवों के आदिदेव हैं। परमात्मा हैं। उनको किन देवों के साथ मिलाकर गणना की जायगी ? विवेकहीन ! पागलपन वढ़ गया है ! तभी तुमने यह अपराध किया। ९०४

❀ पुरम्बऱ्ऱिय पोर्विडै योऩरुळाल्, वरम्बॆऱ्ऱवु मऱ्ऱुळ विञ्जैहळुम्
उरम्बॆऱ्ऱऩ वावऩ वुण्मैयिऩोऩ्, शरम्बऱ्ऱिय चाबम् विडुऩ्दऩैये 905

पुरम् पऱ्ऱिय–त्रिपुरदाहक; पोर् विटैयोऩ्–योद्धा ऋषभ-वाहन शिवजी की; अरुळाल्–कृपा से; वरम् पॆऱ्ऱवुम्–वर-रूप जो प्राप्त किये हैं वे, और; मऱ्ऱु उळ विञ्चैकळुम्–और अन्य (युद्ध-)विद्याएँ; उण्मैयिऩोऩ्–सत्यसंध के; चापम् पऱ्ऱिय–धनु पर संधान कर; चरम् विटुम् तऩैये–शर छोड़ते तक ही; उरम्पॆऱ्ऱऩ आवऩ–बलशाली रहेंगे। ९०५

तुम्हारे, त्रिपुरदाहकदत्त सभी वर और तुम्हारी सारी विद्याएँ सत्यसंध श्रीराम के शरप्रेषण तक ही शक्तिमन्त रह सकेंगी। ९०५

❀ वाऩाळ्बवऩ् मैन्दऩ् वळैत्तविलाऩ्, ताऩेवरि निऩ्ऱु तडुप्परिदाल्
नालॆयव णुय्प्पॆऩिऩ् नऩ्नुदलैप्, पोनीहडि दॆऩ्ऱु पुहऩ्ऱिडलुम् 906

वाऩ् आळ्पवऩ्–अब स्वर्गभोग-रत दशरथ के; मैन्तऩ्–पुत्र श्रीराम; वळैत्त विल्लाऩ्–झुका हुआ धनुष लेकर; ताऩे वरिऩ्–खुद आयँगे, तो; निऩ्ऱु तटुप्पु अरितु–खड़ा होकर रोकना कठिन है; इ नल् नुतलै–इन सुन्दर भाल वाली को; नाऩे अवण् उय्प्पॆऩ्–मैं ही ले जाकर वहाँ (पर्णशाला में) छोड़ूँगा; कटितु पोति–जल्दी भाग जाओ; ॲऩ्ऱु पुकऩ्ऱिटलुम्–यह कहते ही। ९०६

स्वर्ग-भोग में जो अब रहते हैं, उन दशरथ के पुत्र श्रीराम धनु झुका लेकर स्वयं आयँगे तो उनके सामने टिका रहकर उनको रोकना दुतस्र है (असम्भव है)। इन सुन्दर भाल वाली सीताजी को मैं पर्णशाला में स्वयं पहुँचा दूँगा। तुम शीघ्र भाग जाओ। ९०६

केट्टानिरु दर्क्किरै केळ्हिळर्दन्, वाट्टारै नॅरुप्पुह वाय्मडिया
ओट्टायिनि नीयुरै शॅय्हुनरैक्, काट्टायहडि यॅन्रु कनन्रुरैया 907

निरुतर्क्कु इरै–राक्षसाधिपति ने; केट्टान्–सुना; केळ् किळर्–जाज्वल्यमान; तन् वाळ्–उसकी तलवार से; तारै नॅरुप्पु उक–लगातार अंगार छूटे; वाय् मटिया–अधर काटते हुए; इति नी ओट्टाय्–आगे बात मत चलाओ; उरै चॅय् कुतरै–तुमसे कथित उनको; कटितु काट्टाय्–शीघ्र दिखाओ; ॲन्रु–ऐसा; कतन्रु उरैया–उबलकर कहकर। ९०७

राक्षसाधिपति ने यह सुना, तो उसकी तलवार से ही लगातार अंगारे निकलने लगे। मुड़े अधर को दाँतों से दबाकर उसने कहा कि बस बस! बहुत मत हाँक! जिनकी चर्चा करता है, उनको दिखा शीघ्र! यह क्रोध में उबलकर कहा। फिर। ९०७

वरुम्बुण्डर वाळियुन् मार्बुरुविप्, पॅरुम्बुण्डिऱ वावहै पेरुदिनी
इरुम्बुण्डनीर् मीळिनु मॅन्नुळैयिन्, करुम्बुण्डशॉन् मीळ्हिलळ् काणुदियाल् 908

वरुम् पुण्टर–(बाधा-स्वरूप) आगत गीध; वाळि–मेरा शर; उन् मार्पु उरुवि–तेरी छाती में घुसकर; पॅरुम् पुण्–बड़ा घाव; तिऱवा वकै–नहीं खोले ऐसा; नी पेरुति–तू चला जा; इरुम्पु उण्ट नीर्–तप्त लोहे का सोखा जल; मीळिनुम्–फिर पाया जा सके तो भी; ॲन् उळैयिन्–मेरे पास से; करुम्पु उण्ट चॉल्–इक्षु(-रस) सम भाषिणी; मीळ्किलळ्–लौटेगी नहीं; काणुति–जान लो। ९०८

बाधक रूप में आगत गीध! तू यहाँ से जल्दी हट जा इसके पहले कि मेरा शर तेरी छाती में बड़ा व्रण करा दे। तप्त लोहे द्वारा सोखा जल भी शायद लौटाया जा सकेगा, पर मेरे वश में आयी यह इक्षुरस-सी मधुरभाषिणी लौट नहीं सकेगी। यह जान लो। ९०८

ॲन्नुम्	**मळविर्**	**पयमुन्नि**	**निरट्टि**	**यॅय्दि**
अन्नम्	**मयरुहिन्**	**इदुनोक्कि**	**यरक्क**	**नाक्कै**
शिन्नम्	**मुरुमिप्**	**पॉळुदेशिलै**	**येन्दि**	**नङ्गळ्**
मन्नन्	**महन्वन्**	**दिलनॅन्रु**	**वरुन्द**	**लन्नै 909**

ॲन्नुम् अळविल्–कहते ही; अन्नम्–हंसिनी (-सी सीता) का; पयम् मुन्नित् इरट्टि–दुगुना भय; ॲय्ति–पाकर; अयर्किन्रतु–विलम्ब होना; नोक्कि–देखकर; अन्नै–माताजी; अरक्कन् याक्कै–राक्षस का शरीर; इ पॉळुते–अभी;

चिन्तम् उरुम्–छिन्न-भिन्न हो जायगा; नङ्कळ् मन्तन् मकन्–हमारे चक्रवर्तीपुत्र; चिलै एन्ति वन्तिलन् ॲन्रु–धनु लेकर आये नहीं, यह सोचकर; वरुन्तल्–दुःखी मत हो। ९०९

रावण ने ऐसी धमकी दी तो देवी सीता का भय दुगुना हो गया। वह शिथिल पड़ गयीं। जटायु ने उनकी हालत देखकर उनसे कहा कि माताजी! इस राक्षस का शरीर अभी छिन्न-भिन्न हो जायगा। चक्रवर्ती-सुत श्रीराम धनु लेकर नहीं आये —इसकी चिन्ता मत कीजिए। ९०९

मुत्तुक् कन्नबोन् मुहत्तालि मुलैक्कण् वीऴ्न्दु
तत्तत् तळरे रलैदाल पलत्ति नॆलुम्
कॊत्तॊप्पत कॊण्डिवत् कॊण्डन वॆन्र वाशै
पत्तिर्कु मिन्रे बलियीवदु पार्त्ति यॆन्रान् 910

मुत्तु उक्कत पोल्–मोती गिरते हों, ऐसे; मुकत्तु–मुख (आँखों) से; आलि–अश्रुकण; मुलै कण् वीऴ्न्तु–स्तनों पर गिरकर; तत्त–उछले ऐसा; तळरेल्–शिथिल मत हो; ताल पलत्तिन् एलुम्–तालफलों के; कॊत्तु ऑप्पन–गुच्छे के समान; तलै कॊण्टु–इसके सिर काट लेकर; इवन् कॊण्टन ॲन्र–इसके द्वारा विजित; आचै पत्तिर्कुम्–दसों दिशाओं को; इन्रे–आज ही; पलि ईवतु पार्त्ति–(उन सिरों की) बलि दूंगा, देखो; ॲन्रान्–कहा (जटायु ने)। ९१०

आप मोती-समान आँसू नहीं गिरायें, जो स्तनों पर गिरते और उछलकर नीचे ढलकते हैं। शिथिल मत हों। इनके तालफलों के गुच्छे के समान सिरों को नोच लूँगा और उसकी ही विजित दिशाओं को एक-एक सिर की बलि दे दूंगा। यह आप देखिये। जटायु ने यह कहा। ९१०

इडिप्पॊत्त मुऴक्कि निरुञ्जिरै वीशि यॆऱ्ऱि
मुडिप्पत् तिदनैप् पडियिट्टु मुऴङ्गु तुण्डम्
कडिप्पक् कडिदुर्रवन् काण्डहु नीण्ड वीणैक्
कॊडिप्पऱ्ऱि यॊडित्तुयर् वानव राशि कॊण्डान् 911

इटिप्पु ऑत्त मुऴक्किन्–वज्र-शब्द के साथ; इरुम् चिरै–विशाल पक्षों को; वीचि ॲऱ्ऱि–हिलाकर प्रताड़ित करके; मुटि पत्ति तनै–किरीटों की पंक्ति को; पटि इट्टु–भूमि पर गिराकर; मुऴङ्कु तुण्टम् कटिप्प–घोष उठाते हुए चोंच मारने के लिए; कटितु उऱ्ऱु–सवेग आकर; अवन् काण् तकु–उसकी दर्शनीय; वीणै कॊटि पऱ्ऱि–वीणांकित ध्वजा को पकड़कर; ऑटित्तु–तोड़कर; वानवर् उयर् आचि कॊण्टान्–देवों के उत्तम आशीर्वाद के भागी बने। ९११

फिर वे वज्र-सम गर्जन करते हुए झपटे। अपने पंखों से मारकर उसके किरीटों की पंक्ति को अलग कर गिराया। शोर के साथ तुण्ड से काटने के लिए सवेग आये और रावण के रथ की वीणांकित ध्वजा को तोड़ गिराया। देवों ने इस पर उनको आशीर्वाद दिया। ९११

अक्काल यरक्क तुरुक्करक् कनृत कण्णन्
अक्कालमु मित्तदो रीडळि वुड्रि लादान्
नक्का नुलहेळु नडुङ्गिड नाह मनृत
कैक्कार् मुहत्तोडु कडैप्पुरु वड्गु नितृतान् 912

अ काले–तब; ए कालमुम्–इसके पहले कभी; इन्नतु ओर् ईट्टु अळिवु–ऐसा एक पराभव; उड्रु इलातान्–जिसे नहीं हुआ था, उस रावण ने; उरुक्कु अरक्कु अनृत–पिघलती लाख जैसी; कण्णन्–आँख वाला होकर; उलकु एळुम् नडुङ्किट–सातों लोकों को भयभीत करते हुए; नक्कान्–ठठाकर; नाकम् अनृत–पर्वत-तुल्य; कै कार्मुकत्तोटु–हस्तार्पित धनु के साथ; कटै पुरुवम्–भौंहों के कोनों को भी; कुतित्तान्–झुकाया (टेढ़ा किया)। ६१२

रावण का इतना पराभव पहले कभी नहीं हुआ था। उसकी आँखें क्रोध से पिघलती लाख के समान लाल हो गयीं। वह ठठाकर हँसा और उस शब्द से सातों लोक सिहर उठे। उसने अपने पर्वत-सम हाथ के धनुष को, भौंहों को टेढ़ा करते हुए झुकाया। ९१२

शण्डप् पिड्रैवा ळॅयिड्रान्शर तारै मारि
मण्डच् चिड्रहा लडित्तान् शिलवळ् ळुहिराल्
कण्डप् पडुत्तान्शिल कालनुङ् गाण वुट्कुम्
तुण्डप् पडैयार्चिल तुण्डतुण् डङ्गळ् कण्डान् 913

पिड्रै वाळ्–अर्द्धचन्द्र-सम टेढ़ा और प्रकाशमय; चण्ट ऍयिड्रान्–भयंकर (वक्र) दन्ती रावण के; चर तारै मारि–शरों की धारवर्षा; मण्ट–अधिक हुई; चिल–कुछ को; चिड्रकाल् अटित्तान्–पक्षों से निवारा; चिल–अन्य कुछ को; वळ् उकिराल्–तेज नाखून द्वारा; कण्टम् पटुत्तान्–खण्डित किया; चिल–और कुछ एक के; कालनुम् काण उट्कुम्–यम को भी देखने से भयभीत करनेवाले; तुण्टम् पटैयाल्–तुण्ड से; तुण्ट तुण्टङ्कळ्–टुकड़े-टुकड़े; कण्टान्–बनाये। ६१३

रावण अर्द्धचन्द्र के समान टेढ़े और प्रकाशमय दाँतों का था। उसने शरवर्षा-सी करा दी। तब जटायु ने कुछ को पंखों से, कुछ को चोंचों से और कुछ को तेज नाखूनों से बेकार कर दिया। उसकी चोंच को यम भी देखकर डरता था। ९१३

मीट्टुम् मणुहा नॅडुवॅङ्ग णनन्द नाहम्
वाट्टुङ् गलुळ्ळॅन वनृदलै पत्तिन् मीवुम्
नीट्टुन् नॅडुमूक्कॅनु नेमियित् शेम विड्काल्
कोट्टुम् मळविल्मणिक् कुण्डलङ् गॊण्डु ळुन्दान् 914

मीट्टुम् अणुका–फिर पास आकर; नॅटु वॅम् कण्–लम्बे और क्रूर आँखों के; अनन्त नाकम्–अनन्त सर्पों को; वाट्टुम्–त्रस्त करनेवाले; कलुळ्न् ॲत–गरुड़ के समान; वन् तलै पत्तिन् मीतुम्–कठोर दसों सिरों पर; नीट्टुम्–बढ़ायी हुई;

नॆंटु मूक्कु ॲंतुम्–लम्बी चोंच रूपी; नेमियिऩ्–चक्र से; चेम विल् काल् कोट्टुम् अळविल्–रक्षा में धनु को झुकाने से पहले ही; मणि कुण्टलङ्कळ् कॊण्टु–सुन्दर कुण्डलों को छीन लेकर; ॲऴुन्ताऩ्–उठे। ९१४

जटायु फिर भी रावण के पास आये। लम्बे, और क्रूर आँखों से युक्त अनगिनत सर्पों को त्रस्त करते हुए गरुड़ के समान जटायु ने उसके सिरों पर चोंच मारी। फिर उसके अपनी रक्षा में धनु लेकर झुकाने के पूर्व ही वे उसके कुण्डलों को छीन लेकर आकाश में उछले। ९१४

ॲऴुन्दाऩ् रडमार्बिनि लेऴिनो डेऴु वाऴि
अऴुन्दादु कऴन्ऱिड वॆय्दॆडुत् तार्त्तल रक्कन्
पॊऴिन्दाऩ् पुहर्वाऴिहळ् मीळवुम् पोर्च् चडायु
विऴुन्दा नॆनविण्णवर् रञ्जिनर् वॆय्दु यिर्त्तार् 915

अरक्कन्–राक्षस; आर्त्तु–गरजकर; ॲऴुन्ताऩ्–जो ऊपर उठे थे, उनके; तट मार्विलिल्–विशाल वक्ष पर; एऴिन् ओटु एऴु वाऴि–सात और सात शर; अऴुन्तातु कऴन्ऱिट–चुभे बगैर बाहर आ गये, इसलिए; मीळवुम्–फिर भी; पुकर् वाऴिकळ्–स्वर्णमय शर; पॊऴिन्ताऩ्–बरसाये; पोर् चटायु–योद्धा जटायु; विऴुन्ताऩ् ॲंत–नीचे गिर गए, यह सोचकर; विण्णवर्–देव; अञ्चिनर्–डरे और; वॆय्तु उयिर्त्तार्–व्याकुल हुए और लम्बी साँसें छोड़ीं। ९१५

राक्षस रावण ने गर्जन किया। ऊपर उठे जटायु के वक्ष पर उसने चौदह शर चलाए, पर वे गड़े नहीं और अलग होकर गिर गये। खीझकर उसने अत्यधिक परिमाण में स्वर्णवर्ण शर चलाये, तो योद्धा जटायु भी थक गये। देवों ने सोचा कि वे भूशायी हो गये हैं। वे डरे और ठण्डी आहें भरने लगे। ९१५

पुण्णिऱ् पुदुनीर् पॊऴियप्पॊलि पुळ्ळिऩ् वेन्दऩ्
मण्णिऱ् करनॆ मुदलोरुदि रत्तिऩ् वारि
कण्णिक् कडलॆंऩ्ऱु कवर्न्ददु कान्ऱु मीळ
विण्णिऱ् पॊलिहिन्ऱदोर् वॆण्णिऱ मेह मॊत्ताऩ् 916

पुण्णिऩ्–व्रणों से; पुतु नीर् पॊऴिय–ताजा रक्त बहा, तब; पॊलि–उसके साथ दृश्यमान; पुळ्ळिऩ् वेन्तऩ्–पक्षियों के राजा; मण्णिल्–भूमि पर; करत्ते मुतलोर्–खर आदि; उतिरत्तिऩ् वारि–(राक्षसों के) रक्त के प्रवाह को; कटल् ॲंऩ्ऱु कण्णि–समुद्र समझकर; कवर्न्ततु–जिसको पहले पी गया था; मीळ कान्ऱु–फिर उगलकर; विण्णिल् पॊलिकिन्ऱतु–आकाश में शोभायमान; ओर् वॆण् निऱ मेकम्–एक श्वेत मेघ के; ऒत्ताऩ्–समान दिखाई दिये। ९१६

जटायु के शरीर में शरों के लगने से व्रण हो गये। उन व्रणों से ताजा रक्त बहने लगा। तब उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो खर-दूषण-वध के अवसर पर जिस मेघ ने रक्त-सागर पी लिया था, वह श्वेत मेघ अब

अपना पिया रक्त उड़ेल रहा हो। जटायु श्वेतवर्ण थे और उनके शरीर पर स्थान-स्थान से रक्त निकल रहा था। ९१६

औत्ता तुडने युयिर्त्ता नुरुत्ता नवन्ऱोळ्
पत्तोडु पत्तिन् नॆडुम्बत्तियिर् ऱत्ति मूक्काल्
कौत्ता नहत्ताऱ् कुडैयाच् चिऱैयाऱ् पुडैया
मुत्तार मार्बिऱ् कवशत्तैयु मूट्ट ऱुत्तान् 917

औत्तात्–ऐसा श्वेत मेघ-सम जो रहे; उटत्ते–(वे जटायु) तुरन्त; उयिर्त्तात्–निःश्वास छोड़कर; उरुत्तात्–कुपित होकर; अवत् तोळ् पत्तु ओट्टु पत्तित्–उसके बीसों भुजाओं की; नॆट्टुम् पत्तियिल्–लम्बी पंक्ति में; तत्ति–उचक बैठकर; मूक्काल् कौत्ता–चोंचों से मारकर और; नकत्ताल् कुटैया–नाखूनों से नोचकर; चिऱैयाल् पुटैया–पक्षों से पीटकर; मुत्तु आर–मुक्ताहार-भूषित; मार्पिल् कवचत्तैयुम्–वक्ष पर के कवच के भी; मूट्टु अऱुत्तात्–सन्धि-बन्ध तोड़ दिये। ९१७

ऐसे श्वेत मेघ के समान जो दिखे, उन जटायु ने लम्बा निःश्वास छोड़ा। क्रोध के साथ वे बीसों भुजाओं की पंक्ति में उछलकर कूदे और लगे चोंचों से मारने, नाखूनों से नोचने और अपने पक्षों से पीटने। फिर उन्होंने मुक्ताहार-भूषित उसके वक्ष पर के कवच के भी संधिबन्ध तोड़ दिये। ९१७

अऱुत्तानै यरक्कनु मैम्बदो डैम्ब दम्बु
शॆऱित्तान् ऱडमार्बिऱ् चॆऱित्तलुन् देव रञ्जि
वॆऱित्तार् वॆऱियामु निरावणन् विल्लै मूक्काल्
पऱित्तान् पऱवैक्किऱै विण्णवर् पण्णै यार्प्प 918

अऱुत्तातै–कवच जिन्होंने काटा उनको; अरक्कतुम्–राक्षस ने भी; ऐम्पतु ओट्टु ऐम्पतु–पचास पर पचास (एक सौ); अम्पु–शर; तट मार्पिल्–विशाल वक्ष पर; चॆऱित्तात्–चुभाये; चॆऱित्तलुम्–चुभाने पर; तेवर् अञ्चि वॆऱित्तार्–देव डरे और चकित हुए; वॆऱियामुन्–उनके चकित होने से पहले ही; पऱवैक्कु इऱै–खगराज ने; विण्णवर् पण्णै आर्प्प–देवों के समूहों की वाहवाही प्राप्त करते हुए; इरावणन् विल्लै–रावण के धनुष को; मूक्काल् पऱित्तात्–चोंच से छीन लिया। ९१८

रावण के कवच को जिन्होंने खोल दिया, उन जटायु के वक्ष में रावण ने एक सौ बाण गड़ा दिये। तब देव भी डरकर उद्विग्न हो गये। तुरन्त उनकी उद्विग्नता को वाहवाही में बदलते हुए जटायु ने रावण के धनुष को अपने तुण्ड से पकड़कर छीन लिया। ९१८

ऎल्लिट्ट वॆळ्ळिक् कयिलैप्पॊरुप् पीश तोडुम्
मल्लिट्ट तोळा लॆडुत्तान्शिलै वायित् वाङ्गि

विल्लिट् टुयर्न्द नॆंडुमेह मॆंनप्पों लिन्दान्
शॊंल्लिट् टवन्ऱोळ्वलि यारुळर् शॊल्ल वल्लार् 919

ईचन् ओटुम्–शिवजी के साथ; ऍल् इट्ट–प्रकाशमान; कयिलै पॊरुप्पु–कैलास पर्वत को; मल् इट्ट तोळाल्–बलिष्ठ भुजाओं से; ऍटुत्तान्–जिसने उठाया था, उस रावण के; चिलै–धनु को; वायिल् वाङ्कि–मुख से छीनकर; विल इट्टु उयर्न्त–इन्द्रधनुष के साथ उठे; नॆंटु मेकम् अॅत–बड़े मेघ के समान; पॊलिन्तान्–शोभित रहे; अवन् तोळ वलि–उनका भुजबल; चॊल् इट्टु चॊल्ल वल्लार्–शब्दों से माप कर कह सकनेवाले; यार् उळर्–कौन हैं। ६१६

रावण का धनु छीनना साधारण बात नहीं था। रावण ने अपने भुजबल से शिवजी-सह प्रकाशमान कैलास पर्वत को उठाया था। उसके धनु को छीनकर जब जटायु ऊपर उड़े, तब वह इन्द्रधनुष के साथ उठ जानेवाले मेघ के समान शोभे। उनके भुजबल का सच्चा माप कौन अपने शब्दों से प्रकट कर सकेगा? शब्द से उनका बल वर्णित करने में समर्थ कौन होगा?। ९१९

मीळा निऱत्ता यिरङ्गणणवन् विण्णि तोड
वाळा लॊंरुत्तान् शिलैवायिडे निन्ऱु वाङ्गित्
ताळा लिऱुत्तान् ऱऴल्वण्णन् ऱडक्कै विल्लैत्
तोळा लिऱुत्तान् तुणैत्तादैद नन्बिऱ् ऱोऴन् 920

तऴल् वण्णन्–अग्निवर्ण शिव के; तट कै विल्लै–विशाल हस्त के (त्र्यम्बक नामक) धनु को; तोळाल् इऱुत्तान्–अपने भुजबल से जिन्होंने तोड़ा, उन श्रीराम के; तातै तुणै–पिता के साथी; अन्पिल् तोऴन्–प्रिय मित्र जटायु; मीळा निऱत्तु–युद्ध से न फिरनेवाले बली; आयिरम् कण्णवन्–सहस्रनेत्र इन्द्र को; विण्णिन् ओट–हराकर आकाश में भागने को; वाळाल् ऑरुत्तान्–विवश करते हुए जिसने तलवार से सताया, उस रावण के; चिलै–धनु को; वाय् इटै निन्ऱु वाङ्कि–मुख में से लेकर; ताळाल् इऱुत्तान्–पैरों से तोड़कर मिटाया। ६२०

जटायु अग्निवर्ण शिवजी के हाथ के त्र्यम्बक नामक धनुष के भंजक श्रीराम के पिता दशरथ के साथी थे। अब प्रेम के कारण वे श्रीराम के भी मित्र बने थे। सहस्राक्ष इन्द्र में इतना बल था कि वह कभी लड़ाई में हारकर लौट नहीं जाते। उनको भी रावण ने युद्ध में हराकर उन्हें भागने को विवश कर दिया था। ऐसे रावण के धनुष को जटायु ने अपनी चोंच से लेकर पैरों के नीचे रखकर तोड़ दिया। ९२०

आलम् वट्टुप्पात्तन दाऱ्ऱलुक् केऱ्ऱ नल्विल्
मूलम् मॊंडिप्पुण्डदु कण्डु मुनिन्द नॆंञ्जन्
आलम् मिडऱ्ऱान्पुर मट्टदॊं रम्बु पोलुम्
शूलम् मॆंडुत्तार्त् तॆंरिन्दान्मऱन् दोऱ्ऱि लादान् 921

आलम् पटुप्पान्–लोक-नाशक; मऱम् तोऱ्ऱिलातान्–और वीरता जिसने नहीं खोयी थी, उस रावण ने; तततु आऱ्ऱलुक्कु एऱ्ऱ–अपनी शक्ति के योग्य; नल् विल्–उत्तम धनुष को; मूलम् ऑटिप्पुण्टतु कण्टु–मूल में टूटा देखकर; मुनिन्त नॅञ्चन्–क्रुद्ध-चित्त होकर; आलम् मिटऱ्ऱान्–विषकण्ठ; पुरम् अट्ट–(शिव के) त्रिपुरदाहक; ओर् अम्पु पोलुम्–अनुपम शर के समान; चूलम् ॲंटुत्तु–शूल को लेकर; आर्त्तु–गरजते हुए; ॲरिन्तान्–फेंका। ६२१

रावण विश्वनाशक था। उसकी शक्ति क्षीण नहीं हुई थी। उसने अपने बल के योग्य धनुष को टूटा देखा। बड़ा क्रोध आ गया। उसने अपने त्रिशूल को, जो त्रिपुरान्तक के अस्त्र के समान प्रचण्ड था, जटायु पर फेंका। ९२१

आऱ्ऱा निवनॆन् ऱुणरावॆन दाऱ्ऱल् काणॆन्
ऱेऱ्ऱा नॆरुवॆक्किऱै मुत्तलै यॆ:(ह्)कै मार्बिन्
मेऱ्ऱा निदुशॆय्दव रारॆन विण्णु ळोर्हळ्
तोऱ्ऱादु नित्ऱार्दम तोळ्बुडै कॊट्टि यार्त्तार् 922

ॲरुवॆक्कु इऱै–गृध्रराज ने; इवन् आऱ्ऱान् ॲन्ऱु–यह शक्तिहीन ऐसा; उणरा–सोचकर; ॲंततु आऱ्ऱल् काण्–मेरी शक्ति देख; ॲन्ऱु–कहते हुए; एऱ्ऱान्–जो चलाया (रावण ने); मु तलै ॲ:.कै–उस त्रिशूल को; मार्पिन् मेऱ्ऱान्–जटायु ने वक्ष पर धारण कर लिया; विण् उळोर्कळ्–आकाशवासी देवों ने; इतु तान् चॆय्पवर् यार् ॲंत–यह काम करनेवाला कैसा (शक्तिमान) है, कहकर; तोऱ्ऱातु नित्ऱार्–भ्रमित खड़े रहे; तम् तोळ् पुटै कॊट्टि–भुजाओं को ठोंकते हुए; आर्त्तार्–हल्ला मचाया। ६२२

उसने सोचा कि इसके सामने ठहरने की शक्ति जटायु में नहीं है। इसलिए उसने यह कहते हुए त्रिशूल को चलाया कि अब मेरा पराक्रम जानोगे। पर जटायु ने उसे अपने कठोर वक्ष पर धारण कर लिया। देवों को बड़ा विस्मय हो गया। हा! यह काम करनेवाला कैसे साहस का होगा? वे चकित खड़े रह गये। फिर वे अपने कन्धे ठोंककर शाबाशी का हल्ला मचाने लगे। ९२२

पॊन्नोक् कियर्दम् पुलन्नोक्किय पुन्ग णोरुम्
इन्नोक्किय रिल्वळि यॆय्दिय नल्वि रुन्दुम्
तन्नोक्किय नॆञ्जुडै योहियर् तम्मैच् चार्न्द
मॆन्नोक्कियर् नोक्कमु मामॆन मीण्ड दव्वेल् 923

पॊन् नोक्कियर् तम्–स्वर्ण पर आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के; पुलन् नोक्किय–स्थान पर जानेवाले; पुन् कणोरुम्–दरिद्र लोग; इन् नोक्कियर् इल् वळि–मीठी आँखों की गृहिणी से रहित घर में; ॲय्तिय नल् विरुन्तुम्–आगत उत्तम अतिथि और; तन् नोक्किय–आत्मलीन; नॆञ्चुटै योकियर्–मन वाले योगियों के; तम्मै

चार्न्त–पास जो गयीं; मॅल् नोक्कियर्–उन कोमल दृष्टि वालियों की; नोक्कमुम् आम् अॅन्न–कामना के समान ही; अ वेल्–वह त्रिशूल; मीण्टतु-(वृथा हो) लौट आया। ९२३

वह शूल बेकार हो लौट आया। (उसके लिए कवि की उपमाएँ देखिए।) स्वर्ण पर ही आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के घर से पैसेविहीन दरिद्र जैसा; मधुर दृष्टि और व्यवहार के साथ आतिथ्य जो कर सकती है, ऐसी गृहिणी से विहीन घर से अतिथि जैसे; और आत्मलीन मन वाले योगियों के पास प्रेम की कामना ले जानेवाली स्त्रियाँ जैसे विफल मनोरथ होकर लौट आती हैं, वैसे ही वह शूल बेकार हो लौट आया। ९२३

वेहम्मुडन् वेलिऴन् दान्पडै वेरॅ डामुन्
माहम्मरै युम्बडि नीण्ड वयङ्गु मान्डेर्
पाहन्रलै यैप्परित् तुप्पडर् कऱ्पि नाऴ्बाल्
मोहम्बडैत् तानुळै वॅय्द मुहत् तॅरिन्दान् 924

वेल् इऴन्तान्–त्रिशूल को बेकार पाकर; वेकम् उटन्–वेग के साथ; पटै वेरु–अन्य अस्त्र; ऍटा मुन्–लेने से पहले; माकम् मरैयुम् पटि–बड़े आकाश को ढँकते हुए; नीण्ट–विशाल और उन्नत; वयङ्कु मान् तेर्–दर्शनीय अश्वों से जुते रथ के; पाकन् तलैयै परित्तु–सारथी का सिर नोच लेकर; पटर् कऱ्पिन् आऴ् पाल्–गम्भीर पातिव्रत्य से युक्त देवी सीता के प्रति; मोकम् पटैत्तान्–काममोहित; उळैवु ऍय्त–(रावण को) व्याकुल करते हुए; मुकत्तु ऍऱिन्तान्–उसके मुख पर फेंका। ९२४

शूल खोने पर रावण ने वेग के साथ और हथियार का प्रयोग करने का प्रयास किया। पर उसके पहले ही जटायु ने आकाश को छिपाते हुए विशाल और उन्नत जो रहा और जिससे श्रेष्ठ अश्व जुते थे, उस रथ के सारथी का सिर नोच लिया और उसे उस रावण के मुख पर फेंक दिया, जो निर्लज्ज गम्भीर पातिव्रत्यशीला सीता के प्रति काममोहित था। उससे रावण बहुत ही उद्विग्न हुआ। ९२४

ऍरिन्दान् ऱनैनोक्कि यिरावण नॅञ्जि नाऱ्ऱल्
अऱिन्दान् मुनिन्दाण्डदॊ राडहत् तण्डु वाङ्गिप्
पॊरिन्दाङ् गॅरियिन् शिहैपॊङ्गि यॅऴप् पुडैत्तान्
मऱिन्दा नॅरुवैक्किऱै माल्वरै पोल मण्मेल् 925

ऍरिन्तान् तनै नोक्कि–जिन्होंने फेंका, उनको देखकर; इरावणन्–रावण ने; नॅञ्चिन् आऱ्ऱल्–(जटायु के) मन की शक्ति; अऱिन्तान्–जाना; मुनिन्तु–खीझकर; आण्टु ओर्–वहाँ एक; आटक तण्टु वाङ्कि–स्वर्णदण्ड लेकर; पॊरिन्तु–अंगार बरसाते हुए; ऍरियिन् चिकै–अग्निज्वाला; पॊङ्कि ऍऴ–भभक उठे, ऐसा; पुटैत्तान्–जटायु को उससे) पीटा; ऍरुवैक्कु इऱै–गीधों का राजा; मण् मेल्–भूमि पर; माल् वरै पोल–बड़े पर्वत के समान; मऱिन्तान्–औंधा गिरे। ९२५

रावण ने, सारथी का सिर नोचकर उसके मुख पर जो फेंक सकते थे, उन जटायु की दिलेरी जानी। क्रोध के साथ उसने एक स्वर्णदण्ड उठाया, जिसके सिर पर अग्नि की ज्वाला अंगारे बिखेरते हुए जल रही थी। उसने उससे जटायु को पीटा। गीधों के राजा जटायु उससे आहत होकर बड़े पर्वत के समान भूमि पर अधोमुख गिर पड़े। ९२५

मण्मेल् विळुन्दान् विळलोडुम् वयङ्गु मान्ऱेर्
कण्मे लॊळियुन् दॊडरावहै तान्ग डावि
विण्मे लॆळुन्दा नॆळमॆल्लिय लाळुम् वॆन्दीप्
पुण्मे नुळैयत् तुडिक्किन्ऱनळ् पोऱ्पु रण्डाळ् 926

मण मेल् विळुन्तान्–भूमि पर जो गिरे उनके; विळल् ओटुम्–गिरते ही; वयङ्कु मान् तेर्–श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ को; कण् मेल् ऑळियुम् तॊटरा वकै–(जटायु की) दृष्टि का प्रकाश भी न पीछा कर सके, इस प्रकार; तान् कटावि–स्वयं चलाते हुए; विण् मेल् ऍळुन्तान्–आकाश में उड़ने लगा; ऍळ–उठने पर; मॆल्लियलाळुम्–कोमलप्रकृति सीता भी; पुण् मेल्–घाव में; वॆम् ती नुळैय–भयंकर आग के घुसने पर; तुटिक्किन्ऱवळ् पोल्–तड़पती-सी; पुरण्टाळ्–(रथ पर गिरकर) लोटीं। ९२६

उनके गिरते ही रावण अपने रूपवान अश्वों से जुते रथ को इतनी तेज़ी से चलाते हुए ऊपर उठा कि जटायु की तीक्ष्ण दृष्टि की ज्योति भी मन्द पड़ गयी। जब उसका रथ ऊपर गया, तब कोमल-स्वभाव सीताजी व्रण में आग घुसने पर जैसे तड़प गयीं और गिरकर लोटीं। ९२६

कौळुन्दे यतैयाळ् कुळैन्देङ्गिय कौळ्है कण्डान्
अळुन्दे लवलत्तिडै यञ्जलै यन्न मॆन्ना
ऍळुन्दा नुयिर्त्तानड वॆङ्गिनिप् पोव दॆन्ना
विळुन्दा नवन्ऱेर्मिशै विण्णवर् पण्णै यार्प्प 927

कौळुन्ते अतैयाळ्–मृदुपल्लव-सदृश देवी का; कुळैन्तु–क्लिन्न होकर; एङ्किय–तरसने का; कौळ्कै कण्टान्–भाव देखा; अन्नम्–हंसिनी; अवलत्तु इटै–दुःख में; अळुन्तेल्–मत डूबो; अञ्चलै–मत डरो; ऍन्ना–(धीरज-वचन) कहकर; उयिर्त्तान् ऍळुन्तान्–निःश्वास छोड़ते हुए उठे; अट–रे; ऍङ्कु इति पोवतु–कहाँ (बचकर) अब जाओगे; ऍन्ना–कहकर; अवन् तेर् मिचै–उसके रथ पर; विळुन्तान्–कूदे; विण्णवर् पण्णै–देवसमूहों के; आर्प्प–आनन्दरव करते; ९२७

मृदु पल्लव-सम देवी का मुरझाना और रोना देखकर जटायु ने उन्हें आश्वस्त किया कि हंसिनी-तुल्य देवी! मत डरो। दुःख में डूब मत जाओ। दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए वे उठे। 'रे! कहाँ जाकर बचोगे?' यह पूछते हुए उसके रथ पर उछलकर कूद पड़े। जटायु का पराक्रम देखकर देवों का समूह आनन्दनाद कर उठे। ९२७

पायन्दा नवन्बल् मणित्तण्डु परित्तॆ रिन्दान्
एयन्दार् कदित्तेरॆप् परियॆट्टिनो डॆट्टु मॆञ्जित्
तीयन्दा शरवोशियत् तिण्डिरर् रुण्ड वाळाल्
कायन्दान् कवरन्दानुयिर् कालनुङ् गैवि दिरत्तान् 928

पायन्तान्–जो कूदे, उन्होंने; अवन्–उसका; पल् मणि तण्टु–अनेक रत्न-जड़ित दण्डायुध को; परित्तु ऍरिन्तान्–छीनकर फेंक दिया; एयन्तु आर्–युक्तता के साथ शोभनेवाले; कति तेर्–गतिमान रथ के; परि ऍट्टित्तोटु ऍट्टु–सोलहों अश्वों को; ऍञ्चि तीयन्तु–बलहीन होकर, ध्वस्त होकर; आचु अर्–निपट नष्ट करते हुए; वीचि–उछालकर; अ तिण् तिरल्–उस कठिन बलवान; तुण्ट वाळाल्–चोंच रूपी तलवार से; कायन्तान्–मिटाया; उयिर् कवर्न्तान्–जान का गाहक; कालतुम्–यम भी; कै वितिर्न्तान्–हाथ मलकर काँपा। ९२८

झपटकर जटायु ने पहले उसका रत्नजटित दण्डायुध छीनकर दूर पटक दिया। उसके तीव्रगामी रथ के योग्य और उससे जुते सोलहों अश्वों को अपने कठोर तुण्ड रूपी खड्ग से दुर्बल करके बिल्कुल विध्वस्त कर दिया। उनकी जान के गाहक यम भी इसको देखकर हाथ मलते हुए काँप गये। ९२८

तिण्डे रळित्ताङ्गवन् रिणबुरञ् जेरन्द तूणि
विण्डान् मरैप्पच् चॆरिहित्तरन विल्लि लामै
मण्डा रमर्दान् वळङ्गामैयिल् वच्चै माक्कळ्
पण्डार मॊक्कित्तरन वळ्ळुहि रार्प रित्तान् 929

तिण् तेर् अळित्तु–कठोर रथ को ध्वस्त करके; विण्तान् मरैप्प–आकाश को ही छिपाते हुए; चॆरिकिन्रन–जो भरे रहे; विल् आक्कु इलामै–धनुष के न होने से; मण्टु आर्–घोर रूप में चलनेवाले; अमर् वळङ्कामैयिन्–युद्ध में उपयोगी न होने के कारण (जो); वच्चै माक्कळ्–कंजूस लोगों के; पण्टारम् ऑक्किन्रन–भण्डार के समान हैं; अवन् तिण् पुरम् चेर्न्त–उसकी बलवान पीठ पर बँधे; तूणि–तूणीरों को; वळ् उकिराल्–तेज नखों से; परित्तान्–छीनकर फेंक दिया। ९२९

रावण का सबल रथ भी नष्ट हो गया। फिर जटायु ने तूणीरों पर ध्यान दिया। वे तूणीर आकाश को छिपानेवाले शरों से भरे थे। वे शर धनु के न रहने से अब कठोर युद्ध में उपयोगी नहीं रह गये थे। वे इस कारण कृपण के भण्डार के समान रहे। जटायु ने ऐसे शरों के तूणीरों को, जो रावण की बलवान पीठ पर बँधे थे, अपने तीक्ष्ण नखों से नोचकर छीन लिया। ९२९

माच्चिच् चिरल्पायन्दॆन मार्बिनुन् दोळ्हण् मेलुम्
ओच्चिच् चिरहार् पुडैत्तानुलै यावि ळुन्दु

मूच्चित् तविरा वणनुम्मुडि शाय्त्ति रुन्दान्
पोच्चित् तनैपोलु निन्नाऱ्ऱ ॲन्नप्पु हन्ऱान् 930

मा चिच्चिरल्–बड़ा मछरंगी (मछली खानेवाले जल-पक्षी); पाय्न्तॅत–झपटा हो ऐसा; मार्पितुम्–वक्ष पर; तोळ्कळ् मेलुम्–और कंधों पर; ओच्चि–वेग के साथ; चिऱ्काल् पुटैत्तान्–पंखों से मारा; उलैया विळुन्तु–शिथिल होकर नीचे गिरकर; मूच्चित्त–मूर्च्छित हुआ; इरावणतुम्–रावण भी; मुटि चाय्त्तु–सिर झुकाये; इरुन्तान्–रहा; पोच्चु–बस, गया; इत्तनै पोलुम्–इतना ही क्या; निन् आऱ्ऱल्–तुम्हारा बल; ॲन–ऐसा; पुकन्ऱान्–कहा। ९३०

जटायु बड़े मछरंगे के समान (जो जल-पक्षी इतनी तेज़ी से जलाशयों पर मछलियों पर झपटते हैं कि मछली को जल में डूबने को भी समय नहीं मिलता) रावण के वक्ष पर और कन्धों पर झपटे और पंखों से पीटने लगे। रावण उन प्रहारों से थक गया। मूर्च्छित-सा हुआ और सिर झुकाये रहा। तब जटायु ने चिढ़ाया कि बस, गया! इतना ही था तुम्हारा बल! ।९३०

अव्वे लैयिने मुनिन्दान्मुनिन् दाऱ्ऱ लन्नव्
वॅव्वे लरक्कन् विडलाम्बडै वेऱु काणान्
इव्वे लैयिने यिवनिन्नुयि रुण्व नॅन्नाच्
चॅव्वे पिळैया नॆडुवाळुऱै तीर्त्तॆ रिन्दान् 931

अ वेलैयिन् ए–उसी समय; मुनिन्तान्–क्रुद्ध हुआ; मुनिन्तु–क्रोध करके; आऱ्ऱलन्–शक्तिमान; अ वॅम् वेल् अरक्कन्–कठोर भालाधर राक्षस; विटल् आम् पटै–प्रेषण-योग्य हथियार; वेऱु काणान्–दूसरा कुछ नहीं देखा; इ वेलैयिन् ए–अभी; इवन् इन् उयिर्–इसकी प्यारी जान; उण्पॆन्–खाऊँगा; ॲन्ना–कहकर; पिळैया नॆटु वाळ्–अमोघ लम्बी तलवार को; उऱै तीर्त्तु–म्यान से निकालकर; चॅव्वे ॲऱिन्तान्–अच्छे प्रकार से चलायी। ९३१

ज्योंही रावण ने वह सुना, त्योंही वह क्रुद्ध हो उठा। शक्तिशाली कठोर भालाधारी उस राक्षस ने प्रेषणयोग्य कोई अन्य हथियार न देखकर अपनी चन्द्रहास तलवार म्यान से खींच ली। 'अभी इसका काम तमाम कर दूँगा' —यह कहते हुए उसने जटायु पर तलवार की वार की। ९३१

वलियिन् ऱलैतोऱ्ऱिलन् माऱ्ऱरुन् दॆय्व वाळाल्
नलियुन् दलैयॆन्ऱटु वन्ऱियुम् वाळ्क्कै नाळुम्
मॆलियुङ् गडैशॆन्ऱुळ दाहलिन् विण्णिन् वेन्दन्
कुलिशम् मॆऱियच्चिरै यऱ्ऱदोर् कुन्ऱिन् वीळ्न्दान् 932

वलियिन् तलै–रावण के बल से; तोऱ्ऱिलन्–हार नहीं खायी (जटायु ने); तॆय्व वाळाल्–दैवी तलवार से; नलियुम् तलै ॲन्ऱटु–किसी का माऱ्ऱु अरुम्–दुर्द्धर्ष; अन्ऱियुम्–और भी; वाळ्क्कै नाळुम्–आयु भी; मॆलियुम् भी सिर कटेगा, इससे; आकलिन्–इसलिए; विण्णिन् वेन्तन्–कटै चॆन्ऱु उळतु–अन्त होने को आयी थी;

सुरेन्द्र के; कुलिचम् ऍरिय–कुलिश चलाने पर; चिरै अऱ्ऱतु–पंख कटकर; ओर् कुन्ऱित्–(गिरनेवाले) एक पर्वत के समान; वीऴ्न्तान्–जटायु नीचे गिर पड़े। ९३२

जटायु रावण के बल से विजित नहीं हुए। पर तलवार दैवी थी और उसको वरदान प्राप्त था कि वह किसी का भी सिर काट सकती थी। अलावा इसके, जटायु की आयु भी अन्त होने को आ गयी थी। इसलिए देवेन्द्र के वज्र से पंखकटा होकर जैसे पर्वत गिरा, वैसे अपने पक्षों के कटने पर जटायु नीचे गिर गये। ९३२

विरिन्दार् चिरैहीऴ्ऱ वीऴ्न्दनन् मण्णिन् विण्णोर्
इरिन्दा रिऴन्दा डुणयॆन्ऩ मुनिक्क णङ्गळ्
परिन्दार् पडर्विण्डुवि नाट्टवर् पैम्बॊन् मारि
शॊरिन्दा रदुनोक्किय शीदै तुळक्क मुऱ्ऱाळ् 933

विरिन्तु आर् चिरै–विवृद्ध और मनोरम पंखों के; कीऴ् उऱ–नीचे गिरने से; मण्णिन् वीऴ्न्तनन्–(जटायु भी) भूमि पर गिर गये; विण्णोर् इरिन्तार्–व्योमवासी अस्त-व्यस्त भागे; मुनि कणङ्कळ्–मुनिवृन्द; तुणै इऴन्ताळ् ऍन्ऩ–सहायक खो गयीं (देवी) यह कहकर; पटर् परिन्तार्–दुःख से आक्रांत हुए; विण्टुविन् नाट्टवर्–श्रीविष्णुलोकवासी नित्यसूरिवृन्द ने; पैम्पॊन् मारि–स्वर्णवर्षा; चॊरिन्तार्–करायी; अतु नोक्किय चीतै–उसको देख सीताजी; तुळक्कम् उऱ्ऱाळ्–सिहर उठीं। ९३३

फैले रहे मनोरम पक्ष कटकर गिरे और वे भी भूमि पर गिर गये। यह देखकर देवगण अस्त-व्यस्त होकर भाग चले। मुनिवृन्द यह कहते हुए दुःखी हुए कि सहायतार्थ आया जटायु भी हत हो गया। श्रीविष्णु के वैकुण्ठलोकवासी नित्यसूरीवृन्द ने जटायु पर स्वर्णवर्षा करायी। (वैकुण्ठ में भगवान विष्णु के अलावा गरुड़, सुदर्शन आदि नित्यसूरी और मुक्त जीव, जो भूमि का वास पूरा करके मोक्ष को प्राप्त हुए हैं, हैं। विशिष्टाद्वैत मत के अनुसार ये नित्यसूरि विष्णु-भक्तों की मृत्यु होने पर स्वयं आकर उनको बड़े आदर के साथ लिवा ले जाते हैं।) यह देखकर सीताजी बहुत व्यथित हुईं। ९३३

वॆंळ्हुम् मरक्कन् नॆडुविण्बुह वार्त्तु मिक्कान्
तॊळ्हित् ऱलैयॆय्दिय मानॆन्ऩच् चोर्न्दु नैवाळ्
उळ्हुम् मुयिर्क्कु मुयङ्गुम्मॊरु शार्वु काणाळ्
कॊळ्हॊम् बॊडियक् कॊडिवीऴ्न्ददु पोऱ् कुलैन्दाळ् 934

वॆंळ्कुम् अरक्कन्–(जटायु के पराक्रम के सामने) जो शरम खाता था, वह राक्षस; नॆटु विण् पुक–(अब) आकाश में बहुत दूर गूँज उठे, ऐसा; आर्त्तु–शोर मचाकर; मिक्कान्–स्वाभिमान में बढ़ गया; तॊळ्किन् तलै ऍय्तिय–जाल में फँसी हुई; मान् ऍन्ऩ–हरिणी के समान; चोर्न्तु नैवाळ्–थकी और क्लिन्न; उळ्कुम्–(सीताजी ने) सोचा (कि क्या किया जाय); उयिर्क्कुम्–ठण्डी आहें भरीं; उयङ्कुम्–मुरझातीं;

ऑरु चार्पु काणाळ्–कोई उपाय नहीं देखतीं; कॉळ् कॉम्पु ऑटिय–अवलम्ब-तरु के टूटने पर; कॉटि वीळ्न्ततु पोल्–लता गिरी जैसे; कुलैन्ताळ्–जर्जर हुईं। ६३४

रावण जटायु का साहस देखकर पहले शरम से पीड़ित था। अब वह स्वाभिमान में बढ़ गया। उसने आकाश में बहुत दूर तक गुँजाते हुए गर्जन किया। सीताजी जाल में फँसी हरिणी के समान शिथिल पड़ गयीं। उद्विग्न हो गयीं। 'अब क्या करूँगी ?' यह सोचने लगीं। ठण्डी आहें भरीं। कोई सहायक नहीं रहा। अवलम्बित शाखा के टूटने पर गिरकर तड़पनेवाली लता के समान वे अस्त-व्यस्त होकर छटपटायीं। ९३४

❀ वन्रुणै युळनॅन वन्द मन्ननुम्, पॊन्ऱिनॅनक्किनि पुहलॅन् नॅन्गिन्ऱाळ्
इन्ऱुणैप् पिरिन्दिरुन् दिन्न लॅय्दिय, अन्ऱिलम् बॅडैयॅन वरऱ्ऱि नाळरो 935

इन् तुणै पिरिन्तु इरुन्तु–प्यारे संगी से बिछुड़कर; इन्नल् ऍय्तिय–कष्ट-प्राप्त; अन्ऱिल् अम् पॅडै ऍन–मनोरम क्रौंची के समान; अरऱ्ऱिनाळ्–सीताजी विलपीं; वल् तुणै उळन्–शक्तिमान सहायक हैं; ऍन–ऐसा; वन्त मन्ननुम्–जो आये, वे (गृध्र-) राज भी; पॊन्ऱिनन्–मर गये; ऍनक्कु इनि पुकल् ऍन्–अब मेरे लिए शरण कहाँ; ऍन्किन्ऱाळ्–कहतीं। ६३५

वे प्यारे जीवन-संगी से वियुक्त और दुःखी हुई मनोरम क्रौंची के समान विलाप करने लगीं। सबल सहायक आ गया —यह सोचकर मैं निश्चिन्त थी। ऐसे सहायक, गीधों के राजा भी मर गये। अब मेरे लिए शरण कहाँ होगी ? यह कहते हुए वे रोयीं। ९३५

❀ पिन्नवन् नुरैयिनै मऱुत्तुप् पेदैयेन्, अन्नवन् ऱनैक्कडि दहऱ्ऱि नॆन्बॊरु
मन्नवन् शिऱैयऱ मयङ्गि नॆन्विदि, इन्नमु मॆव्विनै यियऱ्ऱु मोवॆना 936

पेतैयेन्–जड़मति; पिन्नवन् उरैयिनै–देवर का कहना; मऱुत्तु–काटकर; अन्नवन् तनै–उनको; कटितु अकऱ्ऱिनेन्–शीघ्र हटा दिया; पॊरु मन्नवन् चिऱै अऱ–(मेरी सहायता के लिए) युद्धरत गृध्रराज का पंख कटवाया; मयङ्कितेन्–अब भ्रमित हूँ; विति–कर्मगति; इन्नमुम्–और भी; ऍ विनै–कौन सा कार्य; इयऱ्ऱुमो–करायगी; ऍना–सोचती हुई। ६३६

मैं जड़मति हूँ। देवर ने बहुत समझाया। उनकी बात काटकर उनको जल्दी जाने को विवश किया। अब युद्ध करने जो आये, उनके पंख कट गये और वे गिर गये। अब मैं भ्रमित हूँ। विधि और भी क्या-क्या करेगी ? नहीं जानती। —यह कहकर वे दुःखी हुईं। ९३६

❀ अल्ललुऱ् ऱैनवन् दनुज नॆन्ऱविन्
नल्लवन् ऱोऱ्पदे नरहन् वॆल्वदे
वॆल्वदुम् पावमो वेदम् पॊय्क्कुमो
इल्लैयो वऱमॆन विरङ्गि येङ्गिनाळ् 937

अल्लल् उऱ्ऱेनै–दुःखग्रस्त मुझे; वन्तु अञ्चल्–आकर मत डरो; ॲन्ऱ्–जिन्होंने कहा; इ नल्लवर्–ये उत्तम जीव; तोऱ्पते–हार जायँ क्या; नरकन् वॅल्वते–नारकी (रावण) जीत जाये; वॅल्वतुम् पावमो–पाप ही जीत पा जाय; वेतम् पोय्क्कुमो–क्या वेद झूठे बनेंगे; अऱम् इल्लैयो–धर्म नहीं रहा क्या; ॲन्न–ऐसा; इरङ्गि–दुःखी होकर; एङ्गिनाळ्–रोयीं। ९३७

दुःखपीड़ित मुझे इन उत्तम ने अभयदान किया। कहा कि मत डरो। ये भले मानुस हारें, यह क्या न्याय है? नारकी रावण जीत जाता है—यह क्या? पाप ही विजयी होगा क्या? वेद झूठे हो गये हैं क्या? ('सत्यमेव जयते' कहते हैं वेद।) क्या धर्म नहीं रहा?—ऐसा-ऐसा कहकर वे मुरझायीं, रोयीं। ९३७

❀ नाणिले तुरैहॉंडु नडन्द नम्बिमीर्
नीणिलै यऱ्नॅऱि निन्ऱु ळोर्क्कॅलाम्
आणियै युन्दैयर्क् कमैन्द वन्बनैक्
काणिय वम्मॆनक् कलङ्गि विम्मिनाळ् 938

नाण् इलेन्–निर्लज्ज मेरा; उरै कॉण्डु–वचन मानकर; नटन्त नम्पिमीर्–जो चले, वे गुणपूर्ण; नीळ् निलै–चिर स्थिर; अऱम् नॅऱि–धर्ममार्ग पर; निन्ऱु उळोर्क्कु ॲलाम्–जो स्थित हैं, उन सबके; आणियै–धुरंधर और; उन्तैयर्क्कु–आपके पिता के; अमैन्त नण्पनै–युक्त मित्र को; काणिय–देखने के लिए; वम्–आइए; ॲन्न–कहकर; कलङ्कि विम्मिनाळ्–रोयीं, सिसकीं। ९३८

मैं निर्लज्ज हूँ। मेरी बात पर जो चले, वे पूर्णपुरुष! चिरकाल से स्थिर धर्ममार्गगामियों के लिए जटायु धुरन्धर थे। वे आपके पिता के योग्य मित्र थे। उनको देखने के लिए आइए—कहती हुई वे उद्विग्न होकर सिसकीं। ९३८

ॲल्लियल् विशुम्बिडै यिरुन्द नेमियाय्
शॉल्लिय वऱ्नॅऱि तॉडर्न्द तोऴैमै
नल्लिय लरुङ्गडन् कऴित्त नम्बियैप्
पुल्लुदि योवॅनप् पॊरुमि येङ्गिनाळ् 939

ॲल् इयल्–प्रकाशमय; विशुम्बु इडै–आकाश में; इरुन्त नेमियाय्–विद्यमान चक्रवर्ती (दशरथ); शॊल् इयल्–प्रशंसनीय; अऱ नॅऱि तॉटर्न्त–धर्ममार्गगामी; तोऴमै–मित्रता के लिए योग्य; नल् इयल् अरुम् कडन्–अच्छे शास्त्रों में कथित श्रेष्ठ कर्तव्य; कऴित्त–जो कर चुके; [illegible]–पुण्यात्मा जटायु को; पुल्लुतियो–वहाँ आलिंगन कर लेंगे क्या; ॲन्न–कहकर; पॊरुमि–आँसू भरकर; एङ्गिनाळ्–रोयीं। ९३९

प्रकाशमय आकाश (स्वर्ग) में विद्यमान चक्रवर्ती! प्रशंसनीय धर्मसम्मत मित्रता के शास्त्रविहित कर्तव्य को पूरा कर चुके हैं, वे जटायु

उधर आ रहे हैं। उनका आलिंगन कर लेंगे न? —सीताजी सिसकियाँ भरती हुई रोयीं। ९३९

कऱ्पळि यामैयॆन् कडमै यायिनुम्
पॊऱ्पळि यावलम् बॊरुन्दुम् बोर्वलात्
विऱ्पळि युण्डदु वितैयिनेन् वन्द
इऱ्पळि युण्डदॆन् ऱिरङ्गि येङ्गिताळ् 940

कऱ्पु अळियामै—पातिव्रत्य की रक्षा; ऍन् कटमै—मेरा कर्तव्य है; आयिनुम्—तो भी; पॊऱ्पु अळिया—तेजोमय; वलम् पॊरुन्तुम्—बल से युक्त; पोर् वलान्—युद्धवीर, श्रीराम का; विल् पळि उण्टतु—कोदण्ड अपयश का भाजन हुआ; वितैयितेन् वन्त—पापी मेरे जन्म का; इल् पळि उण्टतु—कुल भी निन्द्य हो गया; ऍन्ऱु—कहकर; इरङ्कि एङ्किताळ्—आर्द्र होकर रोयीं। ९४०

अपने पातिव्रत्य का पालन करना मेरा कर्तव्य है, सही। तो भी अब इस कार्य से तेजोमय बलसंयुक्त युद्धवीर श्रीराम के कोदण्ड पर बट्टा लग गया है। पापिनी मैंने जिस कुल में जन्म लिया, उस जनककुल पर अपयश का धब्बा लग गया। हाय! कहती हुई सीताजी व्यग्र होकर रोयीं। ९४०

❀ एङ्गुवा डऩिमैयु मिऱहि ळऩ्दवऩ्
आङ्गुरु निलैमैयु मरक्क ऩोक्किऩाऩ्
वाङ्गिऩऩ् ऱेरिडै वैत्त मण्णॊडुम्
वीङ्गुदोण् मीक्कॊडु विण्णि ऩेहिऩाऩ् 941

एङ्कुवाळ् तऩिमैयुम्—रोनेवाली सीताजी की निस्सहायता; इऱकु इऴन्तवन्—पंखहीन हुए जटायु की; आङ्कु उऱु—वहाँ की (मरणासन्न); निलैमैयुम्—स्थिति को; अरक्कन् नोक्किनान्—राक्षस ने देखा; तेर् इटै वैत्त—रथ में रखी हुई; मण् ओटुम्—भूमि के अंश के साथ; वाङ्कितन्—उठा लेकर; वीङ्कु तोळ् मी कॊटु—पुष्ट और उन्नत कन्धों पर रखकर; विण्णित् एकितान्—आकाश में गया। ९४१

राक्षस ने देखा कि अब देवी निस्सहाय हो गयी हैं। उधर जटायु भी मरणोन्मुख अवस्था में थे। सन्दर्भ का लाभ उठाकर उसने सीताजी को भूमि के अंश के साथ रथ से उठाया। अपने उन्नत और स्थूल कन्धों पर धारण किये वह आकाश में चला। ९४१

❀ विण्णिडै वॆय्यव ऩेहुम् वेहत्ताल्
कण्णॊडु मऩमवै शुऴऩ्ऱ कऱ्पिऩाळ्
उण्णिऱै वुणर्वऴिन् दॊऩ्ऱु मोर्न्दिलळ्
मण्णिडैत् तऩ्नैयु मऱन्दु शाम्बिऩाळ् 942

विण् इटै—आकाश में; वॆय्यवन्—क्रूर के; एकुम् वेकत्ताल्—जाने की तीव्र गति के कारण; कण् ओटु मतम् अवै—आँखों के साथ मन भी; चुऴन्ऱ—चकित हुआ;

कऱ्पिनाळ्-वैसी पतिव्रता सीताजी; **उळ् निऱ़ै उणर्वु अऴिन्तु**-मन की प्रज्ञा खोकर; **ओन्ऱुम् ओर्न्तिलळ्**-कुछ नहीं जानतीं; **तन्नैयुम् मऱन्तु**-अपनी सुध भी खोकर; **मण् इटै**-भूमि (के अंश) पर; **चाम्पिनाळ्**-मूच्छित पड़ी रहीं। ६४२

रावण आकाश-मार्ग से अति तीव्र गति में जा रहा था। उसके कारण देवी सीता की आँखें चकरा गयीं। मन भी चक्कर खाने लगा। पतिव्रता देवी की प्रज्ञा ही निष्क्रिय हो गयी। कुछ समझ नहीं पायी। आखिर मूर्च्छित होकर वह भूमि के अंश पर गिरीं और मुरझायीं। ९४२

❀ एहिन अरक्कनुम् ॲरुवै वेन्दनुम्
मोहवॅन् दुयर्शिऱि दाऱि मुन्निये
माहमे नोक्किनान् वञ्जन् वल्लैयिल्
पोहुदल् कण्डहम् बुलर्न्दु शॊल्लुवान् 943

अरक्कनुम्-निशाचर भी; **एकिनन्**-गया; **ॲरुवै वेन्तनुम्**-गीधों के राजा भी; **मोक वॅम् तुयर्**-मूर्च्छा के कठोर दुःख से; **चिऱितु आऱि**-कुछ शान्त होकर; **मुन्निये**-स्मरण करते हुए; **माकम् मेल् नोक्किनान्**-आकाश में ऊपर देखा; **वञ्चन् वल्लैयिल् पोकुतल् कण्टु**-वंचक का शीघ्र जाना देखकर; **अकम् पुलर्न्तु**-मन में तप्त होकर; **चॊल्लुवान्**-कुछ कहने लगे। ६४३

रावण आगे बढ़ता जा रहा था। जटायु मूर्च्छा के कठोर दुःख से बाहर आये। उनको धीरे-धीरे घटित बातें स्मरण आने लगीं। उन्होंने ऊपर देखा। रावण सीताजी को लिये जा रहा था। जटायु का मन सूख गया। वे कुछ कहने लगे। ९४३

❀ वन्दिलर् मैन्दर्दाम् मरुहिक् कॅय्दिय
वॅन्दुयर् तुडैत्तन रॅन्नु मॆय्प्पुहऴ्
तन्दिलर् विदियिनार् दरुम वेलियैच्
चिन्दिनर् मेलिनिच् चॅयलॆ नाङ्गॊलो 944

मैन्तर् ताम्-मेरे पुत्र; **वन्तिलर्**-नहीं आये; **मरुकिक्कु**-वधू पर; **ॲय्तिय**-आया; **वॅम् तुयर्**-कठोर दुःख; **तुटैत्तनर् ॲन्नुम्**-दूर कर दिया, यह; **मॆय् पुकऴ्**-सच्चा यश; **तन्तिलर्**-नहीं पाया (नहीं दिलाया उन्होंने); **वितियिन् आर्**-विधियों से विशिष्ट (या **वितियित्तार्**-विधि ने); **तरुम वेलियै**-धर्म के बाड़े को; **चिन्तित्तर्**-खोल दिया; **मेल्**-आगे; **चॅयल्**-करने योग्य काम; **ॲन् आम् कॊल्**-क्या होगा। ६४४

ओफ़! पुत्र नहीं आये। उन्होंने वधू का कठोर दुःख दूर करके यश नहीं लिया (न मुझे ही दिलाया)। विधिविशिष्ट धर्म के बाड़े को तोड़ दिया। आगे का कार्य क्या होगा?। ९४४

❀ वॅऱ्ऱिय ऱळरॅनिन् मिन्नि नुण्णिडैप्
पॊऱ्ऱॊडिक् किन्निलै पुहुदऱ् पालदो

उऱ्ऱदै यिऩ्ऩदेऩ् ऩुणर हिऱ्ऱिलेऩ्
शिऱ्ऱवै वञ्जऩै मुडियच् चॆय्ददो 945

वॆऩ्ऱियर्–विजयशील राम और लक्ष्मण; उळर् ऍऩिल्–वहाँ रहे होते तो; मिऩ्ऩिऩ् नुण् इडै–बिजली-सी क्षीण-कटि; पॊऩ् तॊटिकु–स्वर्ण-कंकणालंकृता (सीता) पर; इ निलै–यह दशा; पुकुतल् पालतो–आ सकती थी क्या; उऱ्ऱतै–वहाँ जो हुआ, उसे; उणरकिऱ्ऱिलेऩ्–समझ नहीं पाता; चिऱ्ऱवै वञ्चतै–छोटी माता की वंचना; मुटिय चॆय्ततो–सफल हो रही है क्या। ९४५

राम और लक्ष्मण पराक्रमी और विजयी हैं। वे अगर वहाँ रहते होते तो विद्युत-सी क्षीण-कटि और स्वर्ण-कंकणालंकृता देवी पर यह दशा आ सकती? उधर क्या हुआ, यह मैं जान नहीं पाता। सौतेली माता की वंचना सफलीभूत हो रही है क्या? । ९४५

※ पञ्जणै पाम्बणै याहप् पळ्ळिशेर्
अञ्जऩ वण्णऩे यिराम ऩादलाल्
वॆञ्जिऩ वरक्कऩाल् वॆल्लड् पालऩो
वञ्जऩै यिऴैत्तऩऩ् कळ्ळ मायैयाल् 946

पाम्पु–शेषनाग पर; पञ्चु अणै आक–रुई की शय्या पर जैसे; पळ्ळि चेर्–शयन जो करते हैं; अञ्चऩ वण्णऩे–वे अंजनवर्ण विष्णुदेव ही; इरामऩ् आतलाल्–श्रीराम हैं, इसलिए; वॆम् चिऩम् अरक्कऩाल्–निर्मम क्रोधी राक्षस द्वारा; वॆल्लल् पालऩ् ओ–जेय है क्या; कळ्ळ मायैयाल्–चोरी की माया से; वञ्चऩै इऴैत्तऩऩ्–कपट किया है राक्षस ने। ९४६

वे श्रीराम शेषनाग पर रुई की शय्या पर जैसे शयनकर्ता श्रीमन्नारायण ही हैं। क्या वे निर्मम क्रोधी रावण द्वारा जेय हैं? नहीं। इसलिए उनकी कुछ हानि नहीं हुई होगी। रावण ने अवश्य माया द्वारा ही यह वंचना की है! । ९४६

वेरऱ वरक्करै वॆऩ्ऱु वॆम्बऴि
तीरुमॆऩ् शिऱुवऩुन् दीण्ड वञ्जुमाल्
आरियऩ् ऱेवियै यरक्क ऩम्मलर्प्
पेरुल हऴित्तवऩ् पिऴैप्पिल् शाबत्ताल् 947

ऍऩ् चिऱुवऩुम्–मेरा बालक भी; अरक्करै वेर् अऱ वॆऩ्ऱु–राक्षसों को जीतकर निर्मूल करके; वॆम् पऴि तीरुम्–इस क्रूर काम का बदला ले लेगा; अम् मलर्–सुन्दर कमलासन; पेर् उलकु अऴित्तवऩ्–विश्वसर्जक के; पिऴैप्पु इल् चापत्ताल्–अनिवार्य शाप के कारण; आरियऩ् तेवियै–पुरुषोत्तम की पत्नी को; तीण्ट अञ्चुम्–स्पर्श करने से डरेगा। ९४७

मेरा बालक, श्रीराम, राक्षसों को अवश्य जीतकर उनका मूल से नाश कर देगा और बदला ले लेगा। विश्वस्रष्टा कमलासन का शाप है, वह

वृथा नहीं होगा, इसलिए रावण पुरुषोत्तम की पत्नी सीता का स्पर्श नहीं करेगा। डर के कारण वह उसका अपमान नहीं करेगा। ९४७

परुञ्जिऱै	यिऩ्ऩत	पऩ्ऩि	युऩ्ऩुवाऩ्
अरुञ्जिऱै	युऱ्ऱ	ळार्मै	ऩामतम्
पॉरुञ्जिऱै	यिऱ्ऱदे	पूवै	कऱ्पॆऩुम्
इरुञ्जिऱै	यऱादॆऩ	विडरि	ऩीङ्गिऩाऩ् 948

परुञ्चु इऱै–गीधों के राजा; अरुम् चिऱै उऱ्ऱतळ् आम्–कठोर कारा में पहुँच गयी; ॲऩा–ऐसा; मतम् उऩ्ऩुवाऩ्–मन में अनुमान करते; इऩ्ऩत पऩ्ऩि–ऐसी बातें कहते हुए; पॉरुम् चिऱै–युद्धोपयोगी पंख; इऱ्ऱते–कट गये तो भी; पूवै–सारिका-सी सीता का; कऱ्पॆऩुम् इरुम् चिऱै–पातिव्रत्य रूपी रक्षण; अऱातु ॲऩ–व्यर्थ नहीं होगा, यह सोचकर; इटरिऩ् नीङ्किऩाऩ्–दुःखनिवृत्त हुए। ९४८

गृध्रराज जटायु अपने मन में अनुमान लगाते कि सीता कारा में रखी गयी है। यह सब कहकर वे आगे सोचते कि जिनको लेकर मैं युद्ध कर सकता था, वे पंख कट गये और मैं सीता की रक्षा नहीं कर सका। पर सारिका-सी सीतादेवी का पातिव्रत्य है —वह पंख नहीं कटेगा और उसका खूब संरक्षण करेगा। यह सोचकर वे दुःखनिवृत्त हुए। ९४८

❀ अञ्जिऱैक्	कुरुदिया	ऱळिन्दु	शोरवुम्
वञ्जियै	मीट्टिलॅ	ऩॅऩ्ऩु	माऩमुम्
शॅञ्जॅवे	मक्कळ्मेऱ्	चॅऩ्ऱ	कादलुम्
नॅञ्जुऱत्	तुयिऩ्ऱऩ	ऩुणर्वु	नीङ्गलाऩ् 949

अम् चिऱै कुरुति आऱु–श्रेष्ठ पंखों से निकली रक्त-नदी; अळिन्तु–सूखी; चोरवुम्–बहुत दुर्बल हुए, तो भी; वञ्चियै–लता (-सी सीता) को; मीट्टिलॆऩ्–नहीं लौटाया; ॲऩ्ऩुम् माऩमुम्–इससे उत्पन्न अपमान; मक्कळ् मेल्–और अपने बालकों पर; चॅञ्चॅवे चॅऩ्ऱ–सीधा लगाया; कातलुम्–प्रेम; नॅञ्चु उऱ–मन में घर किये रहे; उणर्वु नीङ्कलाऩ्–प्रज्ञा नहीं खोकर; तुयिऩ्ऱतऩ्–निद्रित अवस्था में रहे। ९४९

जटायु के पंखों से नदी के समान रक्त जो बह रहा था, वह यथासमय सूख गया। रक्त-विहीन होकर उनका शरीर कृश हो गया और वे शिथिल पड़ गये। तब भी उनके मन में सीताजी को न लौटा सकने से उत्पन्न अपमान की ग्लानि और अपने (मित्र के) बालकों पर रखा गम्भीर प्रेम सजग था। वे प्रज्ञा को सजग रखते हुए निद्रावस्था में पड़े रहे। ९४९

❀ वञ्जियै	यरक्कऩुम्	वल्लै	कॊण्डुपोय्च्
चॅञ्जॅवे	तिरुवुरुत्	तॊण्ड	वञ्जुवाऩ्
नञ्जिय	लरक्कियर्	नडुव	णायिडैच्
चिञ्जुव	मरत्तिडैच्	चिऱैवैत्	ताऩरो 950

अरक्कतुम्–राक्षस ने; वञ्चियै–लता-सी सीता को; तिरु उरु तीण्ट–शरीर-स्पर्श करने से; अञ्चुवान्–डरकर; आय् इटै–उस (लंका) में; चिञ्चुव मरत्तु इटै–शिंशुपा (अशोक) तरु के तले; नञ्चु इयल्–विष-तुल्य स्वभाव वाली; अरक्कियर् नटुवण्–राक्षसियों के मध्य; चॅञ्चॅवे–अच्छी तरह से; चिरै वैत्तान्–बन्दी बनाकर रखा। ६५०

राक्षस रावण ने सीताजी के श्रीशरीर को स्पर्श नहीं किया। उसे भय था। उन्हें लंका में ले गया। वहाँ अशोक वन में शिंशुपा वृक्ष के तले उन्हें रखा; और विष का-सा स्वभाव रखनेवाली राक्षसियों का पहरा बैठाया। ९५०

❀ इन्निलै यितैयवर् शॅयलि यम्बिताम्
पॉन्निलै मातिन्बिन् ऱॊडर्न्दु पोहिय
मन्निलै यरिहॅन् मङ्गै येविय
पिन्नवन् ऱन्निलै पेशु वामरो 951

इ निलै–ऐसा; इतैयवर् चॅयल्–इनका काम; इयम्पिताम्–(हमने) कहा; पॊन् निलै मातिन् पिन्–स्वर्णवर्ण मृग के पीछे; तॊटर्न्तु पोकिय–लगे हुए जो गये; मन् निलै अऱिक–उन नाथ की हालत जानो; ॲन–कहकर; मङ्कै एविय–जिनको देवी ने भेजा, उन; पिन्नवन् तन् निलै–अनुज की स्थिति; पेचुवाम्–कहेंगे। ६५१

अब तक हम (कवि रावण, जटायु, सीताजी आदि) इनकी करनी कहते रहे। अब हम अनुज लक्ष्मण की बात करेंगे, जो सीताजी से स्वर्णमृगानुगामी प्रभु की स्थिति जानने के हेतु प्रेषित थे। ९५१

ऑरुमह डनिमैयै युन्नि युळ्ळुरुम्
परुवरल् मीदिडप् पदैक्कु नॅञ्जितान्
पॅरुमहन् ऱनैत्तनिप् पिरिन्दु पेदुरुम्
तिरुनहर्त् तीरुमप् परदन् शॅय्हैयान् 952

ऑरु मकळ्–अकेली देवी की; ततिमैयै उन्नि–तनहाई की चिन्ता करके; उळ् उरुम् परवरल्–अन्दर का दुःख; मीतु इट–अधिक हुआ और; पतैक्कुम् नॅञ्चितान्–धड़कता दिल लेकर; पॅरु मकन् तनै–पुरुषोत्तम श्रीराम को; तति पिरिन्तु–अकेले छोड़कर; पेतुरुम्–दुःखी रहनेवाले; तिरु नकर् तीरुम्–अयोध्या के श्रीनगर को छोड़ जानेवाले; अ परतन् चॅय्कैयान्–उन भरत की-सी स्थिति में रहे। ६५२

लक्ष्मण के मन में अकेली उत्तम देवी सीता के एकाकीपन की चिन्ता थी और तज्जनित दुःख उमड़ आ रहा था। इसलिए वे बहुत उद्विग्न हुए थे। तब उनके मन की दशा भरत की-सी थी, जो श्रीराम से बिदा होकर अयोध्या नगरी को लौट रहे थे। ९५२

❀ तॆण्डिरैक् कलमॆन विरैविऱ् चॆल्हिन्ऱान्
पुण्डरी हत्तडङ् गाडु पूत्तॊरु
कॊण्डलवन् निलिनृदनृल कोलत् तान्ऱनैक्
कण्डनन् मननॆनक् कळिक्कुङ् गण्णिनान् 953

तॆळ् तिरै–स्वच्छ लहरों के समुद्र में; कलम् ॲन–पोत के समान; विरैविल् चॆल्किन्ऱान्–वेग के साथ (जो) चलते हैं; ओरु कॊण्टल्–एक मेघ; पुण्टरकिम् तटम् काटु पूत्तु–कमलपुष्प कानन के समान खूब पुष्पित हैं (जिसमें); वन्तु इऴिन्त ॲन्न–(भूमि पर) उतरा हो जैसे; कोलत्तान् तनै–सौन्दर्यवान श्रीराम को; मनम् ॲन कळिक्कुम् कण्णिनान्–मन ही की तरह आँखों में भी आनन्द के साथ; कण्टनन्–देखा (उन लक्ष्मण ने)। ९५३

लक्ष्मण साफ़ लहरों से युक्त समुद्र में पोत के समान सवेग गये। उन्होंने, पुष्पित कमलों के साथ आनेवाले मेघ के समान जो आ रहे थे, उन श्रीराम के दर्शन किये। तब उनका मन ही क्या उनकी आँखें भी आनन्द से भर गयीं। ९५३

❀ तुणॆन्नुम् मव्वुरै तॊडरत् तोहैयुम्
पॆण्णॆनुम् बेदमै मयक्कप् पेदिनाल्
उळ्ळिरै शोरुमॆन् ऱूश लाडुमक्
कण्णनु मिळवलैक् कण्णि नोक्किनान् 954

तुण् ॲन्नुम्–भय से कँपा देनेवाले; अ उरै–उस (मारीच के) शब्द को; तॊटर–अपने पास आने पर सुनकर; तोकैयुम्–कलापी (सी सुन्दर सीता) देवी भी; पॆण् ॲन्नुम् पेतैमै–स्त्री-सुलभ अबोधता के; मयक्क–भ्रमित करने से; पेतिनाल्–भ्रम से; उळ् निरै चोरुम्–मन का धैर्य खो जायगी; ॲन्ऱु–यह सोचकर; ऊचल् आटुम्–चंचल बने; अ कण्णनुम्–उन सुन्दराक्ष ने भी; इळवलै–अपने कनिष्ठ को; कण्णिन् नोक्किनान्–आँखों से देखा। ९५४

उधर श्रीराम ने भी अपने अनुज को देखा। जब उन्होंने मारीच का डरानेवाला दुहाई का शब्द सुना था, तभी उन्हें लग गया कि कलापी-सी सुन्दरी सीता ने उसे सुना अवश्य होगा। स्त्री-सुलभ मोह के कारण वे भ्रमित होंगी और अधीर हो जायँगी। इसलिए सुन्दराक्ष श्रीराम का मन डाँवाँडोल था। उन्होंने लक्ष्मण को देखा। ९५४

पुन्शोऱ् कडनृद पहुवा यरक्कन् ऱुरैपॊय् यॆनादु पुलर्वाळ्
वन्शोऱ् कडनुदु मडमङ्गै यॆव निलैदेर वनृद मरुळो
तन्शोऱ् कडनृदु तळर्हिन्ऱ नॆञ्ज मुडैयेन् मरुङ्गु तनिये
ॲन्शोऱ् कडनृदु मनमुन् दळर्नृद विळवीरन् वनृद वियल्बे 955

पुल् चोऱ्कळ् तन्त–(अर्थहीन) अल्प शब्दवाची; पकु वाय् अरक्कन्–खुले मुख के राक्षस के; उरै पॊय् ॲन्नातु–शब्द को असत्य न मानकर; पुलर्वाळ्–शोकतप्त

होकर; वन् चॉऱ्कळ् तन्तु-कठोर शब्द कहकर; मट मङ्कै एव-हठी बाला के भेजने से; तन् चॉल् कटन्तु-अपना वादा तोड़कर; तळर्किन्ऱ-शिथिल; नॅञ्चम् उटैयेन् मरुङ्कु-मन के मेरे पास; ॲन् चॉल् कटन्तु-मेरी आज्ञा का भी उल्लंघन करके; इळ वीरन्-छोटे वीर का; तनिये वन्त इयल्पु-अकेले आने का कार्य; निलै तेर वन्त-मेरी स्थिति जानने के लिए आने का; मरुळो-मोह का काम है क्या। ९५५

उन्हें अनुमान हुआ कि अनर्थकारी शब्दवाची, खुले मुख के मारीच के शब्दों को सत्य मानकर हठीली सीतादेवी ने कठोर शब्द कहकर लक्ष्मण को जाने को मजबूर किया होगा ! फलस्वरूप लक्ष्मण अपनी स्थिर राय को भी ताक पर रखकर संकटग्रस्त मेरे समीप, मेरी भी आज्ञा का उल्लंघन करके मेरी हालत जानने के लिए आया है ! उसका आगमन क्या इसी भ्रम का फल है ? । ९५५

ॲन्ऱुन्नि यॅन्नै विदियार् मुडित्त दॅन्ऩॅण्णि निन्ऱ विऱैयॅप्
पॉन्ऱुन्नु विऱ्कै यिळवीरन् वन्दु पुन्तैता ळिरैञ्जु पॉळ्दिन्
मिन्ऱुन्नु नूलिन् मणिमार् बळुन्द विरैवोडु पुल्लि युरुहा
निन्ऱुन्नि वन्द निलैयॅन्ऩगॉ लॅन्ऱु नॅडियोन् विळम्ब नॉडिवान् 956

ॲन्ऱु उन्नि-ऐसा सोचकर; वितियार् मुटित्ततु ॲन्नै-विधिदेव ने क्या किया; ॲन ॲण्णि-ऐसा विचार कर; निन्ऱ इऱैयै-स्तब्ध खड़े रहे (श्रीराम) प्रभु के; पॉन् तुन्नु-सौन्दर्य भरे; विल् कै-धनुर्हस्त; इळ वीरन् वन्तु-कनिष्ठ भ्राता ने आकर; पुनै ताळ् इऱैञ्चु पॉळुतिल्-सुन्दर चरणों पर नत (जब) हुए, तब; मिन् तुन्नु-बिजली जुड़ी हो, ऐसा; नूलिन् मणि मार्पु-उपवीत-सहित सुन्दर वक्ष को; अळुन्त-खूब दबाकर; विरैवु ओटु पुल्लि-सवेग आलिंगन करके; उरुका निन्ऱु-द्रवीभूत हो, खड़े रहकर; उन्नि वन्त निलै-सोचकर आने का हेतु; ॲन् कॉल्-कौन सा है; ॲन्ऱु-ऐसा; नॅटियोन् विळम्प-त्रिविक्रम ने पूछा तो; नॉटिवान्-(लक्ष्मण ने) कहा। ९५६

श्रीराम ऐसा सोचते हुए स्तब्ध खड़े के खड़े रह गये। विधिदेव के इस विधान का फल क्या होगा ? —इसकी उन्हें चिन्ता हुई। तब सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण ने पास आकर उनके चरणों पर नमस्कार किया। श्रीराम ने अपने विद्युत-सम उपवीत से अलंकृत अपने वक्ष के साथ उन्हें कसकर आलिंगन कर लिया। फिर अधीर होकर पूछा कि क्या सोचकर तुम इधर आये ? तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया। ९५६

इल्ला निलत्ति नियैयाद वॅञ्जॉ लॅळ्वञ्जि यॅव्व मुऱयान्
वल्वा यरक्क नुरैयाहु मॅन्न मदियाण् मरुक्क मुऱुवाळ्
निल्लादु मऱ्ऱि दऱिपोदि यॅन्न नॅडियोय् पुयत्तिन् वलियॅन्
ऩॉल्लान् मनत्ति नडैयाळ् शिनत्तिन् मुनिवोडु निन्ऱु तुवळ्वाळ् 957

निलत्तिल् इल्ला-अलौकिक; इयैयात-असम्बद्ध; वॅम् चॉल् ॲळ-(बुहाई के)

उन भयंकर शब्दों के उठने पर; वञ्चि अँव्वस् उऱ्–लता-सी देवी ने दुःख पाया; यान्–मैंने; वल् वाय् अरक्कन् उरै आकुम्–कठोर मुख के राक्षस का शब्द है; अँन्न–कहा, तब; मतियाळ्–न मानीं; मरुक्कम् उरुवाळ्–घबड़ाती हुई; नॅटियोय् पुयत्तिन् वलि–श्रेष्ठ आपके भुजबल पर; अँन् चॉल्लाल्–मेरे कहने पर भी; मतत्तिन् अटैयाळ्–विश्वास न करके; चितत्तिन् मुनिवु ओटु–क्रोध और खीझ के साथ; इतु अरि–यह जान आओ; निल्लातु पोति–खड़े मत रहो, जाओ; अँन्न–कहकर; निन्ऱु तुवळ्वाळ्–खड़ी होकर मुरझायीं। ९५७

भाई! जब वह अलौकिक और असम्बद्ध दिल दहलानेवाला शब्द उठा, तब देवी ने उसे सुना और गहरे दुःख से अभिभूत हुईं। मैंने कहा कि यह कठोर-मुख मारीच का शब्द है। पर वे नहीं मानीं। घबड़ा गयीं। मैंने त्रिविक्रम, आपके भुजबल की महिमा कही। तो भी वे आश्वस्त नहीं हुईं और उनका मन में धैर्य नहीं हुआ। कोप और खीझ के साथ उन्होंने कहा कि जाकर पता लगा लो। खड़े मत रहो। चलो जल्दी। यह कहकर वे खड़ी रहकर मुरझायीं। ९५७

एहातु निऱ्ऱि यॅतिन्या नॅरुप्पि लिडैवीऴ्वॅ नॅन्ऱु मुडुहा
माहान हत्ति निडैयोड लोडु मनन्नञ्जि वञ्जि विनैयेन्
पोहादु निऱ्कि लिऱवा दिरुक्कै पुणरा ळॅन्नक्कॉ डुणरा
आहादि रुक्कै यऱलन् ऱॅनक्कॉ डिवणुवन्द दॅन्न वमलन् 958

एकातु निऱ्ऱि अँतिल्–विना गये खड़े रहोगे तो; यान्–मैं; नॅरुप्पिन् इटै वीऴ्वॅन्–आग में कूद पडूँगी; अँन्ऱु–कहकर; मुटुका–सत्वर; मा कानकत्तिन् इटै–बड़े जंगल में; ओटल् ओटुम्–दौड़ीं तो; मनन् अञ्चि–मन में डरकर; विनैयेन्–पापी मैं; पोकातु निऱ्किल्–(आपकी खोज में) गये विना खड़ा रहा तो; वञ्चि–लता (सी देवी); इऱवातु इरुक्कै–विना मरे जीवित रहना; पुणराळ्–न धरेंगी; अँन कॉटु उणरा–ऐसा सोच-जानकर; इरुक्कै आकातु–यहाँ ठहरना उचित नहीं होगा; अऱन् अन्ऱु–धर्म भी नहीं होगा; अँन कॉटु–ऐसा मानकर; इवण् वन्ततु अँन्न–यहाँ आया, कहा तो; अमलन्–निर्मल प्रभु। ९५८

फिर उन्होंने कहा कि विना गये खड़े रहोगे, तो मैं दावाग्नि में कूदकर मर जाऊँगी। यह कहकर वे सत्वर वन की अग्नि की तरफ़ दौड़ने लगीं। मेरे मन में भय समा गया। पापी मैं खड़ा रहता तो निश्चित था कि देवी मरे विना नहीं रहतीं। यह निश्चय जानकर और यह विचार कर कि वहाँ रहना उचित नहीं है, न वह धर्म ही, यहाँ आ गया। तब निर्मल श्रीराम (ने सोचा)। ९५८

शावा दिरुत्त लिलळान्न दुऱ्ऱ ददैयो तडुक्क मुडिया
दावा वलक्क णुरुवा ळुरैत्त पॉरुळो वहत्ति नडैयाळ्
कावा निलत्तिन् वरुमेद मऱ्ऱ दॉळियादु कैक्कॉ ळहलप्
पोवार् पिरिक्क मुयल्वार् पुणर्त्त पॉरुळा मिदॅन्ऱु तरुळा 959

चावातु इरुत्तल् इलळ्–जीवित न रहेगी; आन्तु उऱ्ऱतु–ऐसी स्थिति हो गयी; अतैयो तट्कक मुटियातु–उसको तो रोक नहीं सकते; आ आ–हाय, हाय; अलक्कण् उरुवाळ्–बहुत दुःख पा गयीं; उरैत्त पौरुळो–लक्ष्मण के कहने का तात्पर्य; अकत्तिन् अटैयाळ्–अपने मन में न धरा; कावान् निलत्तिन्–संरक्षणहीन उस स्थान पर; एतम् वरुम्–संकट होगा; अतु ऑऴियातु–वह निवार्य नहीं; पिरिक्क मुयल्वार्–अलग करने के प्रयत्न में लगे हुए लोग; कै कॉट्टु–हथियाकर; अकल पोवार्–बहुत दूर चले जायँगे; पुणर्न्त पौरुळ्–वंचकों का षड्यन्त्र; आम् इतु–होगा यही; ऍन्ऱु तेरुळा–ऐसा बूझकर। ९५९

हाँ ! सीता जीवित नहीं रहेगी, यह स्थिति आ गयी थी। उसको रोकना असम्भव था। हाय, हाय ! वह बहुत दुःखी रहेगी। इसने जो कहा, उसका सत्य उसके मन में घर कर नहीं सका। अब वहाँ उसका संरक्षण कुछ नहीं है। इसलिए वहाँ कोई विपदा आये विना नहीं रहेगी। हमको अलग करना चाहते थे लोग। उनकी वंचना का कार्य है यह ! यह उन्हें सूझ गया। ९५९

वन्दाय् तिऱत्ति लुळदन्ऱु कुऱ्ऱ मडवाण् मरुक्क मुरुवाळ्
चिन्दा कुलत्तो डुरैशॅय्द शॅय्है यदुतीदु मन्ऱु तॅळिवाय्
मुन्दे तडुक्क वॊऴिया दॅडुत्त विनैयेन् मुडित्त मुडिवाल्
अन्दो कॆडुत्त दॆनवुन्ति युन्नि यऴियाद वुळ्ळ मऴिया 960

वन्ताय् तिऱत्तिन्–आगत तुम्हारे पक्ष में; कुऱ्ऱम् उळतु अन्ऱु–अपराध नहीं है; मरुक्कम् उरुवाळ् मटवाळ्–(मृग-ग्रहण पर) आतुर रही उस हठीली का; चिन्ता-कुलत्तु ऑटु–आतुरता के साथ; उरै चॅय्त चॅय्कै इतु–वह (पकड़ देने का) वचन कहने का काम; तीतुम् अन्ऱु–बुरा भी नहीं था; तॅळिवाय्–असंदिग्ध रूप से; मुन्ते तट्कक–तुमने मुझे रोका, तो भी; ऑऴियातु–विना माने; ऍटुत्त विनैयेन्–उस कार्य पर प्रवृत्त पापी मेरे; मुटित्त मुटिवाल्–कृत कार्य से; अन्तो कॅटुत्ततु–हाय ! उस काम ने मुझे नष्ट कर दिया; ऍन–ऐसा; उन्ति उन्नि–सोच-सोचकर; अऴियात उळ्ळम्–अचंचल मन के; अऴिया–अधीर होते। ९६०

तब उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि तुम आ गये। इसमें तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। हरिण के प्रति इच्छा से आकुल होकर हठीली उसने जो मुझसे कहा था, वह भी बुरी बात नहीं थी। तुमने तो पहले ही निश्चित रूप से जाना था कि वह मायामृग है ! तुमने मुझे रोका भी। पर पापी मैंने उसको अनसुनी करके यह काम किया। उस मेरे कृत्य ने अब सारा काम नष्ट कर दिया है। श्रीराम ये बातें बार-बार सोचने लगे। उनका अचंचल मन भी अधीर हो गया। तब श्रीराम चिन्ताकुल होकर; । ९६०

पाणित्तु निन्ऱु पयन्ताव दॆन्नै पयिल्पूवै यन्न कुयिलेक्
काणिऱ् कलन्द तुयर्दीरु मन्ऱि ययलिल्लै यॆन्ऱु कडुहिच

चेणुऱ् उऱुत्तऱ् नॆऱियूडु शॆऩ्ऱ शिलैवाळि यऩ्ऩ विशैपोय्
आणिप् पशुम्बॊ ऩऩैया ळिरुन्द वविर्शोलै वल्लै यणुहा 961

पाणित्तु निऩ्ऱू–विलम्ब करके खड़े रहने से; पयऩ् आवतु ॲऩ्ऩै–फल क्या होगा; पूवै अऩ्ऩ पयिल्–सारिका-सी मधुरभाषिणी; कुयिलै–कोकिला (सीता) को; काणिल्–वहाँ देखेंगे तो; कलन्त तुयर् तीरुम्–हमें हुआ यह दुःख दूर होगा; अऩ्ऱि–नहीं तो; अयल् इल्लै–कोई दूसरा (उपाय) नहीं है; ॲऩ्ऱू–कहकर; कट्कि–जल्दी; चेण् उऱ्ऱु अकऩ्ऱ–लम्बी दूर तक बढ़ते चलनेवाले; नॆऱि ऊटु–मार्ग में; चॆऩ्ऱ चिलै वाळि अऩ्ऩ–भेजे हुए अपने शर के समान; विचै पोय्–वेग के साथ जाकर; आणि पचुम् पॊऩ्–खरे स्वर्ण; अऩैयाळ्–सदृश देवी; इरुन्त–जहाँ रहीं, उस; अविर् चोलै–विद्यमान आश्रम को; वल्लै अणुका–शीघ्र पहुँचकर। ९६१

'इधर विलम्ब करने से क्या लाभ होगा ? हम वहाँ जाकर सारिका-सम मधुरभाषिणी कोकिला-सी सीताजी को देख लेंगे तो हम पर आयी यह विपदा टलेगी। उसके सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है।' —यह कहकर श्रीराम वेग के साथ आगे बढ़े। मार्ग लम्बा था, बढ़ता हुआ जाता था। वे सत्वर अपने ही प्रेरित शर के समान अतिवेग से गये और आश्रम में आये, जहाँ चोखे स्वर्णवर्ण-सम सीताजी रही थीं। ९६१

* ओडि वन्दवऩ् शालैयिऩ् शोलैयि ऩुदवुम्
तोडि वर्न्दपूञ् जुरिहुळ् लाडऩैक् काणाऩ्
कूडु तऩ्ऩुडै यदुपिरिन् दारुयिर् कुऱिया
नेडि वन्दडु कण्डिल दामॆऩ निऩ्ऱाऩ् 962

ओटि वन्तवऩ्–जो भागते आये, वे; चालैयिऩ्–पर्णशाला में; चोलैयिऩ्–आश्रम के उद्यान से; उतवुम्–दत्त; तोटु इवर्न्त–दल-संकुल; पूम्–पुष्पालंकृत; चुरि कुळ्लाळ् तऩै–घुँघराले केश की सीता को; काणाऩ्–न देखकर; तऩ्ऩुटैयतु कूटु पिरिन्तु–अपना शरीर छोड़ जाकर; कुऱिया–लौट आने पर; आर् उयिर्–श्रेष्ठ जीव; अतु कण्टिलतु आम् ॲऩ–उसको नहीं देखता हो जैसे; निऩ्ऱाऩ्–ठिठके खड़े रहे। ९६२

वे सीताजी को देखने की आशा से ही आये। उनकी कल्पना थी कि उस आश्रम के बाग के फूलों से अपने घुँघराले केश को सजाकर सीताजी उनको मिल जायँगी। पर सुकेशिनी वहाँ नहीं दिखीं। कोई जीव अपने शरीर को छोड़कर जाय और फिर लौट जाकर उसको वहाँ न पाए तो उसकी स्थिति कैसी होगी ? (श्रीराम प्राण से और सीताजी शरीर से उपमित हैं।) श्रीराम उसी स्थिति में ठिठके खड़े रहे, क्योंकि सीताजी पतिप्राणा थीं। ९६२

कैत्त शिन्दैयऩ् कऩङ्गुळै यणङ्गिऩैक् काणाऩ्
उय्त्तु वाळ्दऱ्कु वेऱोरु पॊरुळिल ऩुदव

वैत्त मानिदि मण्णीडु मऱैत्तन वाङ्गिप्
पॉय्त्तु ळोर्हॉळत् तिहैत्तु निन्ऱानैयुम् पोन्ऱान् 963

कनङ्कुळै–भारी कुण्डलधारिणी; अणङ्किनै–देवी भगवती को; काणान्–न देखकर; कैत्त चिन्तैयन्–खीज-भरे मन के होकर; उतव–सहायतार्थ; मण्णीट्टु मऱैत्तन वैत्त–धरती में छिपाकर रखा हुआ; मा निति–बड़ा (गुप्त) धन; पॉय्त्तु उळोर् वाङ्कि–वंचक चोरों ने उठाकर; कॉळ्–ले लिये हों और; तिकैत्तु–भ्रमित होकर; निन्ऱानैयुम्–जो खड़ा रहा; पोन्ऱान्–उसके समान हो गये। ९६३

जब श्रीराम ने सीताजी को वहाँ नहीं देखा, तो वे बहुत खिन्न हो गये। मौके पर काम आयगा, इस विचार से किसी ने धरती के अन्दर धन गाड़ रखा था। पर उस धन को वंचक चोर उठा ले गये, तो उस मनुष्य की दशा क्या होगी ? श्रीराम उसके समान तरसते रह गये। ९६३

मण्शु ळन्ऱदु माल्वरै शुळन्ऱदु मदियोर्
ऍण्शु ळन्ऱदु शुळन्ऱदु वॅरिहड लेळुम्
विण्शु ळन्ऱदु वेदमुञ् जुळन्ऱदु विरिञ्जन्
कण्शु ळन्ऱदु शुळन्ऱदु कदिरोडु मदियुम् 964

मण् चुळन्ऱतु–धरती घूमी; माल् वरै चुळन्ऱतु–बड़े पर्वत घूमे; मतियोर् ऍण् चुळन्ऱतु–ज्ञानियों का विचार चक्रित हुआ; अ ऍरि कटल् एळुम्–तरंगाकुल सातों समुद्र; चळन्ऱतु–घूमे; विण् चुळन्ऱतु–आकाश घूमा; वेतमुम् चुळन्ऱतु–वेद भी चलित हुए; विरिञ्चन्–विरंचि की; कण्–आठों आँखें; चुळन्ऱत–चक्रित हुईं; कतिर् ओटु मतियुम्–सूर्य के साथ चन्द्र भी; चुळन्ऱतु–घूमे। ९६४

जब विश्वात्मा का मन खिन्न हो गया, तो विश्व का क्या हाल हो ? सब के सब विचलित हो गये। धरती घूमी; बड़े पर्वत घूम गये। ज्ञानियों के विचार चलित हो गये। सातों तरंगाकुल समुद्र घूमे (आलोडित हुए)। आकाश, वेद —सब विचलित हो गये। विरंचि की आठों आँखें घूमने लगीं। सूर्य और चन्द्र भी चक्रित हुए। ९६४

अऱत्तैच् चीऱुङ्गॉ लरुळैयै चीऱुङ्गॉ लमरर्
तिऱत्तैच् चीऱुङ्गॉन् मुनिवरैच् चीऱुङ्गॉ ऱीयोर्
मऱत्तैच् चीऱुङ्गॉ लॅन्ऩ्गॉलो मुडिवॅन्ऱु मऱैयिन्
निऱत्तैच् चीऱुङ्गॉ नॅडुनदहै योर्नॅ नडुङ्ग 965

नॅट्टुम् तकैयोन्–अत्युन्नत श्रेष्ठ प्रभु; अऱत्तै चीऱुम् कॉल्–धर्म पर कोप करेंगे; अरुळैये चीऱुम् कॉल्–करुणा पर ही खीझ उठेंगे; अमरर् तिऱत्तै–देवों के पराक्रम पर; चीऱुम् कॉल्–उबल पड़ेंगे; मुनिवरै चीऱुम् कॉल्–मुनिगण से गुस्सा करेंगे; तीयोर् मऱत्तैये–खलों की वीरता को; चीऱुम् कॉल्–ललकारेंगे; मऱैयिन् निऱत्तैयो–वेदों के प्रकारों से; चीऱुम् कॉल्–क्रोध करेंगे; ऍन्न–सोचकर; ऍन्न कॉल् ओ मुटिवु–क्या ही होगा फल; ऍन्ऩु–सोचकर डरते हुए; नटुङ्क–डरते। ९६५

यह स्थिति देखकर सबके मन में अपार भय हो गया। ये सर्वोन्नत श्रेष्ठ श्रीराम अब किस पर अपना कोप उतारेंगे ? धर्म पर, दया ही पर, या देवों के पराक्रम पर ? तपस्वी मुनियों पर उबल पड़ेंगे या खलों की वीरता को ललकारेंगे ? या वेदों के प्रकारों से ही अपनी खीझ दिखाने वाले हैं ? इनके क्रोध का नतीजा क्या होगा ? इस तरह डरकर, । ९६५

नील मेतियन् नॅडियवन् मननिलै तिरिय
मूल कारणत् तवनॊडु मुलहॅला मुऱ्ऱुम्
काल मामॅनक् कडैयिडु कणिक्करुम् पॊरुळ्हळ्
मेल कीऴुर कीऴन मेलुरुम् वेलै 966

नील मेनि–नीले रंग के; अ नॅटियवन्–उन पुरुषोत्तम का; मन निलै तिरिय–मन की स्थिति बदल गयी, तब; मूल कारणत्तु अवन् ओटु–(सृष्टि के) मूल कारण ब्रह्माजी के साथ; उलकॅलाम्–सभी विश्वों के; मुऱ्ऱुम् कालम् आम् ॲन–समाप्त हो जाने का काल आ गया-सा; कटै इटु कणिक्क अरुम्–इतना है ऐसा जिनकी गणना नहीं हो सकती; पॊरुळ्कळ्–वे सभी पदार्थ; मेल कीऴ् उऱ–ऊपर के नीचे हुए; कीऴन मेल् उरुम्–नीचे के ऊपर हुए; वेलै–उस समय। ९६६

नीले वर्ण के पुरुषोत्तम श्रीराम का मन क्रोध से विकार पा गया था। तब ब्रह्माजी से लेकर सारे विश्व के नाश हो जाने का प्रलयकाल आ गया हो, ऐसा विश्व के असंख्य पदार्थ अस्त-व्यस्त हो गये। ऊपर के पदार्थ नीचे आ गये और नीचे के ऊपर चले गये। तब। ९६६

तेरि नाऴियुन् दॅरिन्दनन् दीण्डुद लञ्जिप्
पारि नोडुङ्गॊण् डहन्ऱदुम् बार्त्तनम् बयनिन्
ऱोरुन् दन्मैयी दॆन्नॆन्ब दुरनिला दवर्पोल्
दूरम् बोवदन्मुन् ऱॊडर्दुमॆन् ऱिळैयवन् शॊन्नान् 967

इळैयवन्–अनुज ने; तेरिन् आऴियुम्–रथ का चक्र(-चिह्न) तॆरिन्ततम्–देखते हैं; तीण्टुतल् अञ्चि–(देवी का शरीर) स्पर्श करने से डरकर; पारिन् ओटु–भूमि (के अंश) के साथ; कॊण्टु अकन्ऱतुम्–ले जाना भी; पार्त्तोम्–समझा; उरन् इलातवर् पोल्–निर्बलों के समान; पयन् इन्ऱु–विना किसी लाभ के; ओरुम् तन्मै ईतु–सोचता रहना, यह; ॲन् ॲन्पतु–क्या कहा जाय; तूरम् पोवतन् मुन्–बहुत दूर जाने से पहले; तॊटर्तुम्–अनुगमन करेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा; चॊन्नान्–बोला। ९६७

अनुज लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया कि भाई ! इधर रथ के पहियों के चिह्न देखते हैं। यह भी देखते हैं कि शत्रु, देवी के शरीर का स्पर्श करने से डरकर भूमि के अंश के साथ लेके गया है। फिर हम निर्बलों के समान यहाँ खड़े रहकर सोचते रहें, यह क्या है ? उसके बहुत दूर जाने के पहले ही हम उसका अनुगमन करते हुए चलें। ९६७

आम देयिनि यावदॅन् ऱमलनु ममैयत्
ताम वार्हणप् पुट्टिलु मुदलिय ताङ्गि
वाम माल्वरै मरनिवै मडिदर वयवर्
बूमि मेलवन् ऱेर्शॅन्ऱ नॅडुनॅरिप् पोनार् 968

अमलनुम्–पवित्र प्रभु; आम्–हाँ; अते इनि आवतु–वही अब करना है; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; अमैय–उसके अनुसार; वयवर् ताम्–विजयशील (दोनों); वार् कणै पुट्टिलुम्–शरों के तूणीर; मुतलिय ताङ्कि–आदि धारण कर; वाम माल् वरै–मनोरम और बड़े-बड़े पर्वतों और; मरन् इवै–पेड़ों आदि को; मटि तर–तोड़ते हुए; पूमि मेल्–भूमि पर; अवन् तेर् चॅन्ऱ–उसका रथ जहाँ गया था; नॅटु नॅऱि पोनार्–लम्बे मार्ग में गये। ९६८

निरंजन भगवान ने स्वीकारा कि हाँ ! वही अब करना है। फिर विजयशील दोनों उसी सुझाव के अनुसार तूणीर आदि लिये हुए उस लम्बे मार्ग पर चले, जिसमें रथ उन्नत पर्वतों और तरुओं को तोड़ गिराता हुआ चला था। ९६८

मण्णिन् मेलवन् तेर्शॅन्ऱ शुवडॅला मायन्दु
विण्णि नोङ्गिय दॉरुनिलै मॅय्युरु वॅन्द
पुण्णि नूडुरु वेलॅन मनमिहप् पुळुङ्गि
ऍण्णि नामिनिच् चॅय्वदॅन् निळवले यॅन्ऱान् 969

अवन् तेर्–उसका रथ; मण्णिन् मेल् चॅन्ऱ–धरती पर जो गया था; चुवटु ऍलाम् मायन्तु–वह चिह्न सब लुप्त हो गया; विण्णिन् ओङ्कियतु–अन्तरिक्ष में उठने का; ऑरु निलै–एक भान; मॅय् उऱ–सत्य लगा तो; वॅन्त पुण्णिन् ऊटु–आग से हुए व्रण में; उऱु वेल् ऍन–भाला घुसा हो, ऐसा; मनम् मिक पुळुङ्कि–मन में अत्यधिक क्लेश लेकर; इळवले–लघु भाई; नाम् इनि ऍण्णि चॅय्वतु–हम सोचकर करें; ऍन्–क्या; ऍन्ऱान्–पूछा। ९६९

जाते-जाते उन्होंने देखा कि रथचक्र के चिह्न नहीं रह गये हैं। और ऐसा लग रहा था कि रथ ऊपर अन्तरिक्ष में उठा था। तब श्रीराम का मन ऐसा दुःख पाने लगा, मानो अग्निजनित व्रण में भाला घुस गया हो। बहुत क्लेश पाकर उन्होंने अपने भाई से पूछा कि अनुज ! अब सोचकर हम क्या काम करें ? । ९६९

तॅऱ्कु नोक्किय दॅनुम्बॉरु डॅरिन्ददत् तिण्डेर्
मऱ्कु नोक्किय तिरळ्पुयत् तण्णले वानुम्
विऱ्कु नोक्किय पहळियि नॅडिदनुरु विम्मि
निऱ्कु नोक्किलॅन् पयनॅन विळैयव नॅन्ऱान् 970

इळैयवन्–अनुज ने; मऱ्कु नोक्किय–मल्लाभिलाषी; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धों के; अण्णले–प्रभु; अ तिण् तेर्–वह बलवान रथ; तॅऱ्कु नोक्कियतु–दक्षिण की

तरफ़ गया है; अँतुम् पॉरुळ्–यह विषय; तॅरिन्ततु–जानने में आया है; वानुम्–अन्तरिक्ष भी; विऱ्कु नोक्किय–आपके धनुष से प्रेरित; पकऴियिन् नॅटितु अन्ऱु–शर के जाने की दूरी से अधिक नहीं है; विम्मि निऱ्कु नोक्किल्–तरस के साथ खड़े रहकर देखते रहने से; ॲन् पयन्–क्या लाभ है; ॲन–ऐसा; नेर्न्तान्–उत्तर दिया। ९७०

लक्ष्मण ने उत्तर में कहा कि मल्लाभिलाषी कन्धों से युक्त महानुभाव! हमने यह जान लिया कि वह भारी रथ दक्षिण की ओर गया है। आकाश में ही गया हो तो क्या? आपका शर न पहुँचे, उतनी दूर का तो नहीं है आकाश! तरसते हुए निष्क्रिय रह जाने से क्या लाभ होगा?। ९७०

आहु मन्नदे करुममॅन् ऱत्तिशै नोक्कि
एहि योशनै यिरण्डुशॅन् ऱारिडै यॅदिर्न्दार्
माह मालवरै कालपॊर मरिन्ददु मानप्
पाह वीणैयिन् कौडियॊन्ऱु किडन्ददु पार्मेल् 971

अन्नते करुमम् आकुम्–वही करना होगा; ॲन्ऱु–यह सोचकर; अ तिचै नोक्कि एकि–उस दक्षिण दिशा में जाकर; योचनै इरण्टु चॅन्ऱार्–दो योजन चले; इटै–मार्ग में; माक माल् वरै–गगनोन्नत बड़ा पर्वत; काल् पॊर–प्रभंजन से प्रताड़ित हो; मरिन्ततु मान–नीचे गिर गया हो जैसे; पाक वीणैयिन्–टूटी वीणा की; कॊटि ऑन्ऱु–एक ध्वजा; पार् मेल् किटन्ततु–भूमि पर पड़ी रही; ॲतिर्न्तार्–सामने देखा। ९७१

श्रीराम ने लक्ष्मण का आशय समझा। कहा कि चलो वही करना है। वे दोनों दक्षिण में दो योजन दूर चले। मार्ग में उन्हें वीणांकित एक ध्वजा का अंश भूमि पर पड़ा दिखाई दिया। वह ऐसा लगा, मानो एक पर्वत ही आँधी के सामने टूटकर गिरा हो। ९७१

कण्डु कण्डह रोडुमक् कारिहै पॊरुट्टाल्
अण्ड रादियर् कारमर् विळैत्तदॅन् ऱयिर्त्तान्
तुण्ड वाळिनिर् चुडर्क्कॊडि तुणिन्द दॅन्ऱुणराप्
पुण्ड रिहक्कण् णमलनुक् किळैयवन् पुहन्ऱान् 972

कण्टु–देखकर; अ कारिकै पॊरुट्टाल्–उन देवी (को बचाने) के हेतु; कण्टकरोटु–उन खलों के साथ; अण्टर् आतियर्क्कु–देवों आदि लोगों को; आर् अमर् विळैन्ततु–कठोर युद्ध करना पड़ गया है; ॲन्ऱु–ऐसा; अयिर्त्तान्–(श्रीराम ने) संशय किया; इळैयवन्–अनुज ने; तुण्ट वाळितिल्–(जटायु की) चोंच रूपी तलवार से; चुटर् कॊटि–उज्ज्वल ध्वजा; तुणिन्ततु–कटी; ॲन्ऱु उणरा–ऐसा ताड़कर; पुण्टरिक कण् अमलनुक्कु–पुण्डरीकाक्ष निर्मल प्रभु को; पुकन्ऱान्–समझाया। ९७२

वह देखकर श्रीराम को संशय हुआ कि देवों ने सीताजी को बचाने के लिए बड़ा युद्ध किया होगा। पर लक्ष्मण को सूझा कि जटायु की

चोंच से ही शत्रु की ध्वजा खण्डित हुई है। तब वे पुण्डरीकाक्ष निरंजन श्रीराम से बोले। ९७२

नोक्कि ऩालैय नॉय्दिव णॅय्दिय नुन्दै
मूक्कि ऩालिदु मुरिऩ्दमै मुडिऩ्दाऩ् मॉय्म्बिऩ्
ताक्कि ऩाऩ्डु वडुत्तदु तॅरिहिलन् दमियन्
याक्कै तेम्बिडु मॅण्णरुम् बरुवङ्ग ळिऱन्दाऩ् 973

ऐय-महिमावान; नोक्किताल्-(विचार कर) देखें तो; इवण् नॉय्तु ऍय्तिय-यहाँ शीघ्र जो आये, वे; नुन्तै-आपके पिता (तुल्य जटायु); मूक्किताल्-(की) चोंच से; इतु मुरिन्तमै-इसका टूटना; मुटिन्ततु-निश्चित है; मॉय्म्पिन्-पूरा बल लगाकर; ताक्कितान्-(जटायु) भिड़े हैं; नटु अटुत्ततु-मध्य में क्या हुआ, यह; तॅरिकिलम्-नहीं जानते; ऍण् अरुम्-असंख्यक; परुवङ्कळ्-वर्षों का काल; इऱन्तान्-जिनका बीता है, उन; तमियन्-एकाकी का; याक्कै-शरीर; तेम्पिटुम्-थका पड़ा होगा। ९७३

महानुभाव! खूब ध्यान लगाकर सोचें तो मालूम होगा कि यहाँ जटायु तुरत आ गये थे और आपके पिता (तुल्य) उनकी चोंच से यह ध्वजा टूटी थी। यह निश्चित है। जटायु अपने पूरे बल के साथ उससे भिड़े होंगे। बीच में क्या हुआ, हम यह जान नहीं पाते। हाँ! जटायु वयोवृद्ध है। एकाकी लड़े थे। इसलिए उनका शरीर थक गया होगा। ९७३

नन्ऱु शालवु नडुक्करु मिडुक्किना मुन्नम्
शॅन्ऱु कूडलाम् बॊऴुदॆलान् दडुप्पदु तिडन्नाल्
वॅन्ऱु मीट्किनु मीट्कुमाल् वेऱुर वॆण्णि
निन्ऱु ताऴ्त्तॊरु पयनिलै यॆन्ऱलु नॆडियोन् 974

चालवुम् नन्ऱु-बहुत अच्छा; नाम् नटुक्करुम् मिटुक्कित्-हम अप्रतिहत वेग के साथ; मुन्नम् चॆन्ऱु-आगे जाकर; कूटलाम्-उनसे मिलेंगे; पॊऴुतु ऍलाम्-आज सारा दिन; तटुप्पतु-जटायु का शत्रु को रोके रखना; तिटन्-निश्चय है; वॆन्ऱु-जीतकर; मीट्कितुम् मीट्कुम्-लौटायें भी, यह सम्भव है; वेऱु उऱ ऍण्णि-अन्य बातें सोचते हुए; निन्ऱु ताऴ्त्ततु-रहकर विलम्ब करने से; ऒरु पयन् इलै-कोई लाभ नहीं है; ऍन्ऱलुम्-(लक्ष्मण के) कहने पर; नॆटियोन्-पुरुषोत्तम। ९७४

वह भी बहुत अच्छा हुआ। हम अप्रतिहत वेग के साथ आगे बढ़ें। हम जटायु को मिल सकेंगे। यह सम्भव है कि जटायु आज दिन भर शत्रु को रोक रखेंगे। शायद वे शत्रु को जीतकर देवी को बचा भी सकते हैं। अन्य बातें सोचते हुए यहाँ विलम्ब करने से कोई लाभ न होने का। —लक्ष्मण ने कहा। तब पुरुषोत्तम— । ९७४

तॊडर्व देनल् मामॆनप् पडिमिशैच् चुऱ्ऱिप्
पडरुङ् गालॆनक् करङ्गॆनच् चॆल्बवर् पारिन्
मिडल्हॊळ् वॆञ्जिलै विण्णिडु विन्मुऱिन् दॆन्नक्
कडलिन् माड्डयर् तिरैयॆनक् किडन्ददु कण्डार् 975

तॊटर्वतु ए–पीछा करते जाना ही; नलम् आम् ॲंत–भला है, कहने पर; पटि मिचै–भूमि पर; चुऱ्ऱि पटरुम् काल्–घूमती हुई जानेवाली हवा; ॲंत–के समान; करङ्कु ॲंत–वातचक्र के समान; चॆल्पवर्–जो गये; विण् इटु विल्–आकाश का इन्द्रधनुष; मुऱिन्तु अन्न–टूटा पड़ा हो जैसा; कटल् माटु–समुद्र में; उयर् तिरै–उठनेवाली लहर; ॲंत–के समान; तरैयिल्–पृथ्वी पर; मिटल् कॊळ् वॆम् चिलै–बड़ा भारी भयंकर धनु; किटन्ततु–पड़ा रहा; कण्टार्–देखा। ९७५

बोले— हाँ ! आगे अनुगमन में जाना ही भला है। दोनों वायुवेग और (पतंग ?) वातचक्र के वेग के साथ आगे गये। तब उन्होंने एक भारी भयंकर धनुष को पड़ा देखा, जो टूटे इन्द्रधनुष के समान या समुद्र में उठती ऊँची लहर के समान था। ९७५

शिलैहि डन्ददा लिलक्कुव तेवर्नीर् कडैन्द
मलैहि डन्दन्न वलियदु वडिविनान् मदियॆण्
कलैहि डन्दन्न काट्चिय दिदुकडित् तॊडित्तान्
निलैहि डन्दवा नोक्कॆन नोक्किन निन्ऱान् 976

इलक्कुव–लक्ष्मण; किटन्ततु चिलै–जो पड़ा रहता है, यह धनुष; तेवर् नीर् कटैन्त मलै–देवों ने जिससे समुद्र-मन्थन किया, उस पर्वत; ॲंत–के समान; वलियतु–कठोर है; वटिविनाल्–आकार में; मति ॲंण् कलै–चन्द्र की आठवें दिन की कला; किटन्तु अन्न–पड़ी रही जैसे; काट्चियतु–दृश्यमान है; इतु कटितु ऒटित्तान्–इसको जिसने शीघ्र तोड़ा है; निलै किटन्तवा–उसकी शक्ति का प्रकार; नोक्कु ॲंत–अनुमान करो, कहकर; नोक्किनन्–धनु को देखते हुए; निन्ऱान्–(श्रीराम) खड़े रहे। ९७६

उसको देखकर श्रीराम ने कहा कि यह देखो। कितना भारी और सुदृढ़ है ! देवों ने समुद्र-मन्थन के लिए जिस पर्वत का उपयोग किया था, उसी के समान यह बलवान है। इसका आकार आठवें दिन के चन्द्र के समान है। इसको जिसने तोड़ा होगा, उसका शौर्य कितना होगा ? अनुमान कर लो। यह कहकर श्रीराम उसको विस्मय के साथ देखते खड़े रहे। ९७६

निन्ऱु पिन्नरु नॆडुनॆऱि कडन्दुर निमिरच्
चॆन्ऱु नोक्किनर् तिरिशिहैक् कॊडुनॆडुञ् जूलम्
ऒन्ऱुम् पल्हणै मळैयुरै पुट्टिलो रिरण्डुम्
कुन्ऱु पोलवण् किडन्ददण् डदिशयङ् गॊण्डार् 977

निन्ऱु–वहाँ स्थित होकर; पिन्ऩरुम्–(चले) फिर भी; नॅट्टु नॅरि कटन्तु–लम्बा मार्ग तय करके; उऱ निमिर चॅन्ऱु–बिल्कुल सीधे जाकर; तिरि चिकै कॉट्टु–तीन सिरों का; नॅटुम् चूलम् ऑन्ऱुम्–एक लम्बा शूल और; पल् कणै मळै उऱ–अनेक शरों के समूह जिनमें थे; पुट्टिल् ओर् इरण्टुम्–दो तूणीरों को; कुन्ऱु पोल्–पर्वतों के समान; अवण् किटन्त–वहाँ पड़ा हुआ; नोक्किनर्–देखा; कण्टु–देखकर; अतिचयम् कॉण्टार्–विस्मित हुए। ६७७

फिर वहाँ से वे चले। सीधे मार्ग में बहुत दूर चले। वहाँ एक लम्बा और भयंकर त्रिशूल और दो बहुत अस्त्रों से भरे तूणीर पड़े मिले। पर्वतों के समान उनको देखकर उन्हें अधिक विस्मय हुआ। ९७७

मऱित्तुज् जॅन्ऱनर् वानिडै वयङ्गुऱ वळङ्गि
ऑऱिक्कुज् जोदिहळ् यावैयुन् दॉक्कन वॅन्लाय्
नॅरिक्कॉळ् कान्नह मऱैदर निरुदर्हो नॅञ्जिल्
पऱित्तु वीशिय कवशमुङ् गिडन्ददु पार्त्तार् 978

मऱित्तुम् चॅन्ऱतर्–आगे और भी गये; वान् इटै–आकाश में; वयङ्कु उऱ–शोभा प्रकट करते हुए; वळङ्कि–देकर; ऑऱिक्कुम्–उससे प्रकाश छिटकाते हुए; चोतिकळ् यावैयुम्–सभी ज्योतिपुंजों का; तॉक्कन ॲन्तल् आय्–समूह बना हो, ऐसा; निरुतर् कोन् नॅञ्चिल्–राक्षसाधिप के वक्ष से; पऱित्तु वीचिय–छीनकर जो फेंका गया था; कवचमुम्–उस कवच को; नॅरि कॉळ् कान्नकम्–मार्ग के जंगल को; मऱैतर–छिपाते हुए; किटन्ततु–पड़ा हुआ; पार्त्तार्–देखा। ६७८

फिर वे आगे चले। वहाँ रावण का कवच पड़ा मिला, जिसको जटायु ने राक्षसाधिपति रावण के वक्ष से छीनकर फेंका था। वह चन्द्र-सूर्य आदि सभी ज्योतिपुंजों के समूह के समान पड़ा था, जो आकाश को भी उज्ज्वलता प्रदान कर स्वयं प्रकाशमान रहते हैं। वह मार्ग के सामने के वन को छिपाये हुए पड़ा था। ९७८

कान्गि डन्ददु मऱैदरक् काल्वयक् कलिमात्
तान्गि डन्दुळिच् चारदि किडन्दुळिच् चार्न्दार्
ऊन्गि डन्दोळि रुदिरमुङ् गिडन्दुळ दुलहिन्
वान्गि डन्ददु पोल्वदु किडन्दुळि वन्दार् 979

काल् वय कलि मा–पैरों में बल और तेज़ी रखनेवाले अश्व; कान् मऱै तर–जंगल को छिपाते हुए; किटन्ततु–(मरे) पड़े रहे; किटन्तुळि–जहाँ पड़े रहे, उस स्थान को; चार्न्तार्–गये; चारति किटन्तुळि–और सारथी जहाँ (मरा) पड़ा रहा, वह स्थान; ऊन् उलकिन्–इस पृथ्वी पर; वान् किटन्ततु पोल्–व्योम पड़ा रहा हो, ऐसा; ऊन् किटन्तु–मांसखण्ड बिखरे रहे; ऑळिर् उतिरमुम् किटन्तुळ–चमकीला रक्त भी छितरा रहा; किटन्तुळि–जहाँ वह पड़ा रहा, वहाँ; वन्तार्–वे आये। ६७६

वे फिर उस स्थान पर आये, जहाँ रावण के अश्वों की लाशें पड़ी

थीं। रावण के अश्व ऐसे थे, जिनके पैरों में अपार बल था और अति तीव्र गति भी। आगे सारथी जहाँ मरा पड़ा था, वहाँ आये। फिर उस स्थान पर आये जहाँ रक्त और मांसखण्ड छितरे पड़े थे, जिसके कारण अरण्य भी आकाश-सा दिख रहा था। ९७९

कण्ड लङ्गुदङ् गैत्तलम् विदिर्त्तनर् कविन्नार्
विण्ड लन्दुरन् दिरुदियिन् विरिहदिर्प् परुदि
मण्ड लम्बल मण्मिशैक् किडन्देन्न मणियिन्
कुण्ड लम्बल कुलमणिप् पूण्गळिन् कुप्पै 980

इरुतियिन्–कल्पान्त में; विरि कतिर् पल–व्यापक किरणों के अनेक; परुति मण्टलम्–सूर्यमण्डल; कविन् आर्–सौंदर्य भरे; विण् तलम् तुरन्तु–व्योम को छोड़कर; मण् इटै किटन्तु अन्न–भूमि पर गिरे पड़े हों, ऐसा; कुण्टलम् पल–अनेक कुण्डलों और; कुल मणि पूण्कळिन् कुप्पै–श्रेष्ठ रत्नाभरणों के समूहों को; कण्टु–देखकर; अलङ्कु तम् कै तलम्–(उन्होंने) अपने आकर्षक हाथों को; वितिर्त्तनर्–आश्चर्य से झटकाया। ९८०

एक स्थान पर अनेक कुण्डल पड़े मिले। वे कल्पान्तकाल के सूर्यमण्डलों के समान लगे, जो आकाश छोड़कर भूमि पर गिरे पड़े हों। अनेक श्रेष्ठ रत्नाभरणों के ढेर भी दिखाई दिये। इन सबको देखकर उन दोनों ने अपने मनोहर हाथों को झटकारा (आश्चर्य के प्रदर्शन में)। ९८०

तोळ णिक्कुलम् बलवुळ कुण्डलत् तॊहुदि
वाळि मैप्पन पलवुळ मणिमुडि पलवाल्
नाळ नैत्तैयुङ् गडन्दनन् रमियनन् दादै
आळि यॊप्पवर् पलरुळर् पॊरुदन रिळैयोय् 981

इळैयोय्–लघु भाई; तोळ् अणि कुलम् पल उळ–कन्धों के आभरण-समूह अनेक हैं; वाळ् इमैप्पन–प्रकाशमय; कुण्टल तॊकुति–कुण्डलवृन्द; पल उळ–अनेक हैं; मणि मुटि पल आल्–रत्नकिरीट अनेक हैं, इसलिए; नाळ् अनैत्तैयुम् कटन्तनन्–अनेक आयु के दिन जिनके बीते हैं, वे; नम् तातै तमियन्–हमारे पिता एक रहे; पॊरुतनर्–और उनसे लड़नेवाले; आळि ऒप्पवर्–शरभ-बली; पलर् उळर्–अनेक रहे हैं। ९८१

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता से कहा कि भाई! भुजाओं के आभरणों के अनेक समूह दिखाई देते हैं। उज्ज्वल अनेक कुण्डलवृन्द देखते हैं। रत्नकिरीट भी अनेक मिलते हैं। इसलिए ऐसा लगता है कि वयोवृद्ध हमारे पिता एकाकी थे और उनसे जो लड़े, वे शरभ-सदृश बलशाली अनेक रहे होंगे। ९८१

तिरुवि नायह नुरैशॆयच् चुमित्तिरैच् चिङ्गम्
तरुवि नीळिय तोळ्पल तलैपल वॆन्राल्

पौरुदु तादैयै यित्तनै नॆरिक्कॊडु पोनान्
ऑरुव नेयव निरावण नामॆन वुरैत्तान् 982

तिरुविन् नायकन्—लक्ष्मीपति के; उरै चॆय—वह कहने पर; चुमित्तिरै चिङ्कम्—सुमित्रा के पुत्र सिंह (सदृश लक्ष्मण); तरुविन् नीळिय—तरु के समान लम्बे; तोळ् पल—भुजाएँ अनेक हैं; तलै पल—सिर अनेक हैं; ऎन्राल्—तो; तातैयै इत्तनै पौरुतु—पिता के साथ इतना टकराकर; नॆरि कॊटु पोनान्—अपने मार्ग पर जो गया; ऑरुवत्ते—वह वही एक है; अवन् इरावणन् आम्—वह रावण ही होगा; ऎन—ऐसा; उरैत्तान्—कहा। ९८२

जब लक्ष्मीपति ने यह कहा, तब सुमित्रा-सुत सिंह-सदृश लक्ष्मण ने कहा कि प्रभु ! पेड़ के समान लम्बी भुजाएँ अनेक दिखती हैं। सिर भी अनेक दिखाई देते हैं। तो हमारे पिता से जो लड़कर अपने मार्ग पर गया है, वह एक ही हो सकता है। वह रावण ही होगा। ९८२

❀ मडलु णाट्टिय तारिळै योन्शॊलै मदिया
मिडलु णाट्टङ्ग डीयुह नोक्किनन् विरैवान्
उडलु णाट्टिय कुरुदियम् बरवैयि नुम्बर्क्
कडलु णाट्टिय मलैयन्न तादैयैक् कण्डान् 983

मटल् उळ् नाट्टिय—पुष्पदलों को अन्दर रखकर गुँथी हुई; तार्—मालाधारी; इळैयोन्—अनुज लक्ष्मण के; चॊलै—शब्द को; मतिया—मानकर; मिटल् उळ्—सुदृढ़ मन; नाट्टङ्कळ्—और आँखों से; ती उक—आग उगलते हुए; नोक्कितन् विरैवान्—अन्वेषण करते हुए गये; उटल् उळ् नाट्टिय—शरीर को अन्दर रखते हुए; कुरुति परवैयिन्—रक्त के सागर में; कटल् उळ् नाट्टिय वरै ऎन—समुद्र में गाड़े पर्वत के समान; तातैयै—पिता को; कण्टान्—देखा। ९८३

पुष्पदलबद्ध मालाधारी लक्ष्मण का कथन श्रीराम को मान्य लगा। तब उनको अपार क्रोध हुआ। उनके मन में मानो आग भर गयी और आँखों ने आग उगली। वे अन्वेषण करते हुए आगे चले और एक स्थान पर रक्त-सागर-मध्य, क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरुपर्वत के समान जटायु के शरीर को उन्होंने देखा। ९८३

❀ तुळ्ळि योङ्गुशॆन् दामरै नयनङ्गळ् शॊरियत्
तळ्ळि योङ्गिय वमलनुऱन् ऱनियुयिर्त् तादै
वळ्ळि योन्ऱिरु मेनियिन् ऱळनिऱ वण्णन्
वॆळ्ळि योङ्गलि लञ्जन मलैयॆन वीळ्न्दान् 984

ओङ्कु चॆम् तामरै नयनङ्कळ्—उत्कृष्ट लाल कमल-सम नयनों से; तुळ्ळि चॊरिय तळ्ळि—आँसू की बूँदें ढलकाते हुए; ओङ्किय अमलन्—दुःख में बढ़े हुए निरंजन भगवान श्रीराम; तन् तनि उयिर् तातै—अपने प्राण-सम पिता; वळ्ळियोन्—और उदार जटायु के; तिरु मेनियिन्—श्रीशरीर पर; तळल् निऱ वण्णन्—अग्निवर्ण (शिवजी) के;

वॆळ्ळि ओङ्कलिल्–चाँदी के कैलास पर्वत पर; अञ्चत्त मलै ऍत्त–अंजनगिरि के समान; वीऴ्न्तान्–जा गिरे । ६८४

उनको देखकर श्रीराम की श्रेष्ठ कमल-सम आँखों से अश्रु के कण ढलक आये। दुःख से अभिभूत होकर अकलुष श्रीराम अपने प्राणप्रिय और उदारमन जटायु के श्रीशरीर पर ऐसे गिरे, जैसे अग्निवर्ण शिवजी के चाँदी के कैलास पर्वत पर कोई अंजन-पर्वत गिरा हो। ९८४

❀ उयिर्त्ति लन्नॊरु नाऴिहै युणर्विलन् कॊल्लॆन्
रयिर्त्त तम्बिपुक् कङ्गैयि नॆडुत्तन नरुविप्
पुयर्क लन्दनीर् तॆळित्तलुम् पुण्डरी हक्कण्
पॆयर्त्तुप् पय्यप्पय वयर्वुतीर्न् दिन्नैयन पेशुम् 985

ऒरु नाऴिहै उयिर्त्तिलन्–एक घड़ी (उन्होंने) साँस नहीं छोड़ी; उणर्वु इलन् कॊल्–क्या मूर्च्छित हैं; ऍन्ऱु अयिर्त्त तम्पि–ऐसा सन्देह करके लघु भ्राता ने; पुक्कु अम् कैयिन् ऍटुत्तनन्–पास जाकर अपने हाथों में उठा लिया; पुयल् अरुवि कलन्त–मेघ और सरिता के मिश्रित; नीर् तॆळित्तलुम्–जल को छिड़कने पर; पुण्टरीक कण् पॆयर्त्तु–कमल-सम आँखों को खोलकर; पय पय–धीरे-धीरे; अयर्वु तीर्न्तु–स्वस्थ होकर; इन्नैयन पेचुम्–यों बोले (श्रीराम)। ६८५

एक घड़ी उन्होंने साँसें नहीं छोड़ीं। लक्ष्मण को शंका हो गयी कि क्या भाई मूर्च्छित हो गये हैं? उन्होंने पास जाकर श्रीराम को अपने सुन्दर हाथों में लेकर उठाया। वर्षाजल और सरिता का जल दोनों का मिश्रित जल लाकर उनके मुख पर छिड़का। तब श्रीराम ने पुण्डरीक-सम नेत्र को खोलकर धीरे से (निम्नोक्त) बातें कहीं। ९८५

❀ तन्दादैयरैत् तनयर् कॊलै नेर्न्दार्
मुन्दारे युळ्ळार् मुडिन्दान् मुन्नैयॊरुवन्
ऍन्दाये यॆर्काह नीयु मिरन्दनैयो
अन्दो विन्नैये नरुङ्गूर्र मानेने 986

तम् तातैयरै–अपने पिताओं की; कॊलै नेर्न्तार्–मृत्यु के कारण (जो) बने (वे); तनयर्–पुत्र; मुन्नु आरे उळ्ळार्–पहले कौन रहे हैं; मुन्नै मुटिन्तान् ऒरुवन्–पहले ही एक (दशरथ) चल बसे; ऍन्ताय् ए–हे मेरे पिता; ऍर्कु आक–मेरे कारण; नीयुम् इरन्तनैयो–आप भी मर गये क्या; अन्तो–हाय; विन्नैयेन्–पापी मैं; अरुम् कूर्र्म्–कठोर यम; आनेने–हो ही गया। ६८६

हाय! क्या अपने ही पिताओं के घातक पुत्र पहले कभी कहीं हुए हैं? पहले ही एक, चक्रवर्ती दशरथ, मृत्यु को प्राप्त हो गये। हे मेरे तात, जटायु जी! मेरे निमित्त आप भी चल बसे! हाय! पापी मैं आपका मारक यम बन गया! । ९८६

पिन्नुरुव दोरादे पेदुरुवेन् पॆण्बालाळ्
तन्नुरुव ट्रीर्प्पान् ट्रलियुरुव दोरादे
उन्नुरवु नीतीर्त्तता योरुरवु मिल्लादेन्
ऍन्नुरुवान् वेण्डि यिडरुरुवे नॆन्दाये 987

ऍन्दाये–मेरे तात; तनि उरुवतु ओराते–एकाकी होने की चिन्ता न करके; पॆण् पालाळ् तन्–स्त्री जाति का; उरुवल् तीर्प्पान्–कष्ट दूर करने के लिए; उन् उरवु नी तीर्त्ताय्–अपना रिश्ते का कर्तव्य अदा किया; पिन् उरुवतु ओराते–आगे क्या होगा, यह न जानते हुए; पेतु उरुवेन्–संकटग्रस्त और; ओर् उरवुम् इल्लातेन्–अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहा, ऐसा मैं; ऍन् उरुवान् वेण्टि–किस प्रयोजन की चाह करके; इटर् उरुवेन्–कष्ट सहूँ। ९८७

मेरे तात ! आप अकेले रहे। उसका विचार न करके स्त्री जाति की एक को कष्ट में देखकर उसको बचाने के लिए आपने अपने रिश्ते का कर्तव्य अपनी जान से अदा किया है ! आगे क्या होगा ? —यह न जानते हुए मैं चिन्ताग्रस्त हूँ। अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहे हैं ! फिर किस प्रयोजन को चाहकर मैं कष्ट सहूँगा ? । ९८७

माण्डेने यन्ट्रो मरैयोर् कुरैमुडिप्पान्
पूण्डेन् विरद मदन्ना नुयिर्पोरुप्पेन्
नीण्डेन् मरम्बोल निन्ट्रोळिन्द पुन्ट्रोळिलेन्
वेण्डेनिम् मामायप् पुन्बिरवि वेण्डेने 988

मरैयोर्–वेदज्ञ ऋषियों का; कुरै मुटिप्पान्–चिन्ता दूर करने का; विरतम् पूण्टेन्–व्रत धारण किया है; अतनाल् उयिर् पॊरुप्पेन्–उसी कारण प्राण रख लूंगा; मरम् पोल नीण्टेन्–वृक्ष के समान ऊँचा बढ़कर; निन्रु ऒळिन्त–वृथा रहनेवाला; पुन् तॊळिलेन्–क्षुद्रकर्मी मैं; माण्टेने अन्ट्रो–मृतक ही (सम) हूँ न; इ माय पुन् पिरवि–यह माया का क्षुद्र जन्म; वेण्टेन् वेण्टेने–नहीं चाहता, नहीं ही चाहता। ९८८

मैंने प्रतिज्ञा की है कि वेदज्ञ ऋषियों का कष्ट दूर करूँगा और उनकी चिन्ता मिटाऊँगा। उसी कारण मैं प्राणधारण करूँगा। पेड़ के समान लम्बा बना हूँ। पर निरर्थक क्षुद्रकर्मी हो गया हूँ। मृतक (-सा) हूँ न ? यह मायाजन्य क्षुद्र जन्म नहीं चाहता। नहीं ही चाहता। ९८८

❀ ऍन्ट्रारम् बर्रुण्ण वेन्ट्रोयैच् चान्ट्रोयैक्
कॊन्ट्रानु निन्ट्रान् कॊलैयुण्डु नीहिडन्दाय्
वन्ट्राट् चिलैयेन्दि वाळिक् कडल्शुमन्दु
निन्ट्रेनु निन्ट्रे नॆडुमरम्बो निन्ट्रेने 989

ऍन् तारम् परुरु उण्ण–मेरी दारा दूसरे के कैद में ग्रस्त है; एन्ट्रायै–(उसको बचाने का भार) लेनेवाले आपको; चान्ट्रोयै–गुणपूर्ण को; कॊन्ट्रानुम्–जिसने मारा,

वह भी; निऩ्ऱाऩ्–जीवित रहता है; नी कॊलै उण्टु किटन्ताय्–आप मौत खाकर पड़े हैं; वल् ताळ् चिलै–सारयुक्त बाजुओं के धनुष का; एन्ति–धारण करके; वाळि कटल् चुमन्तु–शरों का सागर (अंबार) ढोते हुए; निऩ्ऱेऩुम्–जो रहता, वह मैं भी; निऩ्ऱेऩ्–निरर्थक रहता हूँ; नॆट्टु मरम् पोल् निऩ्ऱेऩ्–लम्बे पेड़ के समान (बेकार) खड़ा हूँ। ९८९

मेरी गृहिणी किसी दूसरे की कैद में है। उसको मुक्त करने का भार आपने अपने ऊपर लिया। ऐसे श्रेष्ठ गुणपूर्ण आपको जिसने हत किया, वह अब भी जीवित रहता है! आप उसके द्वारा हत होकर पड़े हैं। मैं भी हूँ अपने सुदृढ़ और कठोर धनुष का और शरों के सागर-सम अंबार का धारण करके! हाय! लम्बे पेड़ के समान खड़ा हूँ!। ९८९

शॊल्लुडैया रॆऩ्बो लिऩियुळरो तॊल्विऩैयेऩ्
इल्लुडैयाळ् काण विरहुडैया यॆण्णिलाप्
पल्लुडैया युऩ्ऩैप् पडैयुडैयाऩ् कॊऩ्ऱेह
विल्लुडये निऩ्ऱेऩ् विऱलुडैये यल्लेऩो 990

इल् उटैयाळ् काण–मेरी गृहिणी के देखते; विरकु उटैयाय्–बलशाली; ऍण् इला पल् उटैयाय्–असंख्य दाँत वाले; पटै उटैयाऩ्–अनेक हथियारों का स्वामी; उऩ्ऩै कॊऩ्ऱु एक–आपको मारकर गया और; तॊल् विऩैयेऩ्–पूर्वकर्म का भागी मैं; विल् उटैयेऩ्–धनु लेते हुए; निऩ्ऱेऩ्–खड़ा हूँ; विऱल् उटैयेऩ् अल्लेऩो–बड़ा बलवान हूँ न; इऩि–आगे; ऍऩ् पोल्–मेरे समान; चॊल् उटैयार्–प्रशंसा के पात्र; उळरो–होंगे क्या। ९९०

मेरी गृहिणी देखती रही और बलशाली और अनेक दाँतों से युक्त तात! अनेक हथियारों का स्वामी, शत्रु आपको मारकर चला गया। और पूर्वकर्मफल का भागी मैं धनु धारण करते हुए इधर बेकार रहता हूँ! मैं भी बलशाली हूँ न! आह! आगे मेरे समान प्रशंसा का पात्र कौन होगा?। ९९०

❀ अऩ्ऩ पलपलवुम् पऩ्ऩि यऴुमयङ्गुम्
तऩ्ऩिह रिलादाऩुम् दम्बियुमत् तऩ्मैयराय्
उऩ्ऩु मुणर्वुशिऱि दुण्मुळैप्पप् पुळ्ळरशऩ्
इऩ्ऩुयिर्प्पा ऩऩ्बा लिरुवरैयु नोक्किऩाऩ् 991

तऩ् निकर् इलातातुम्–अनुपमित; अऩ्ऩ पल पलवुम् पऩ्ऩि–वैसी अनेक बातें कहकर; अऴुम् मयङ्कुम्–रोते-कलपते चकित रहे; तम्पियुम्–कनिष्ठ भी; अ तऩ्मैयराय्–उन्हीं की तरह; उऩ्ऩुम्–सोचते रहे; पुळ् अरचऩ्–पक्षियों के, राजा ने भी; उणर्वु चिऱितु–प्रज्ञा थोड़ा; उळ् मुळैप्प–जाग उठी, तब; इऩ् उयिर्प्पाऩ्–सुखद श्वास निकालकर; इरुवरैयुम्–दोनों को; अऩ्पाल् नोक्किऩाऩ्–प्रेम से देखा। ९९१

अन्य उपमारहित श्रीराम ऐसी विविध बातें कहते हुए विलापे। उनके कनिष्ठ भ्राता भी दु:खी हुए। तब जटायु धीरे-धीरे होश में आये। सुख की साँस लेते हुए उन्होंने उन दोनों भाइयों पर प्रेम की दृष्टि फेरी। ९९१

❀ उऱ्ऱ दुणरा दुयिरुलैय वॆय्दुयिर्प्पान्
कॊऱ्ऱवरैक् कण्डान्ऱन् नुळ्ळङ् गुळिर्प्पुऱ्ऱान्
इऱ्ऱ विरुशिऱहु मिन्नुयिरु मेळुलहुम्
पॆऱ्ऱनने यॊत्तेन् पॆयर्त्तेन् पळियॆन्ऱान् 992

उऱ्ऱतु उणरातु–क्या हुआ, यह नहीं समझकर; उयिर् उलैय–विकल-प्राण हो; वॆय्तुयिर्प्पान्–आह भरी; कॊऱ्ऱवरै कण्टान्–राजकुमारों को देखा; तन् उळ्ळम् कुळिर्प्पु उऱ्ऱान्–उनका मन सन्तापरहित और शान्त हुआ; इऱ्ऱ इरु चिरकुम्–कटे हुए दोनों पंख; इन् उयिरुम्–मधुर प्राण; एळ् उलकुम्–सातों लोक; पॆऱ्ऱनने ऒत्तेन्–मुझे प्राप्त हो गये, ऐसा महसूस करता हूँ; पळि पॆयर्त्तेन्–निन्दा से भी छूट जाऊँगा; ऎन्ऱान्–कहा। ९९२

जटायु को पता नहीं था सीताजी का क्या हुआ। उन्होंने ठण्डी आहें भरीं। कराहने लगे। जब उन्होंने इन राजा भाइयों को देखा तो उनका मन थोड़ा सन्तापरहित हुआ। उन्हें ऐसा लगा कि उनके कटे पंख, प्रिय प्राण और सातों लोक उन्हें प्राप्त हो गये हों। उन्होंने सोचा कि मेरी निन्दा भी (कि मैंने न सीता को बचाया, न उनका समाचार इनको दिया) अब मिट जायगी। ९९२

❀ पाक्कियत्ता लिन्ऱॆन् पयनिल् पळियाक्कै
पोक्कुहिन्ऱेन् कण्णुऱ्ऱेन् पुण्णियरे वम्मिन्ऩॆन्ऱु
ताक्कि यरक्कन् महुडत् तलैतहर्त्त
मूक्किना लुच्चि मुऱैमुऱैये मोक्किन्ऱान् 993

पुण्णियरे–हे पुण्यात्माओ; इन्ऱु–आज; ऎन्–अपना; पयन् इल्–निरर्थक; पाक्कियत्ताल् पळि–निन्द्य; याक्कै–शरीर को; पोक्कुकिन्ऱेन्–त्याग रहा हूँ; पाक्कियत्ताल् कण् उऱ्ऱेन्–भाग्यवश तुमको देख पाया; वम्मिन्–आओ; ऎन्ऱु–कहकर; अरक्कन् मकुट तलै–राक्षस के किरीटशोभित सिरों को; ताक्कि तकर्त्त–आक्रमण करके छिन्न-भिन्न जिससे किया; मूक्किताल्–उस नाक से; उच्चि–उनके सिर को; मुऱै मुऱैये–बारी-बारी से अनेक बार; मोक्किन्ऱान्–सूँघने लगे। ९९३

उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण का अभिनन्दन किया। पुण्यात्माओ! आज मैं अपना निरर्थक और निन्द्य शरीर त्याग रहा हूँ। भाग्यवश तुम्हारे दर्शन हुए। आओ, आओ, स्वागत है। यह कहते हुए उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण के सिर उस नाक (चोंच) से बार-बार सूँघा, जिससे

उन्होंने रावण के किरीटधर सिरों को नोचकर छिन्न-भिन्न कर दिया था। ९९३

❀ वञ्जनैयाल् वन्द वरवॆन्ब दॆन्नुडैय
नॆञ्जहमे मुन्ने निनैवित्त दानालुम्
अञ्जॊन् मयिलै यरुन्ददियै नीङ्गिनिरो
ॲञ्जलिला वाऱ्ऱ लिरुवीरु मॆन्ऱुरैत्तान् 994

वन्त वरवु–आगत कार्य; वञ्चनैयाल् ॲन्पतु–(रावण के) कपट से हुआ, यह; ॲन्नुटैय नॆञ्चकमे–मेरे मन ने; मुन्ने निनैवित्ततु–पहले ही स्मरण (भान) कराया; आतालुम्–तो भी; अम् चॊल् मयिलै–सुन्दर बोली वाली कलापी-सी (सीता को); अरुन्ततियै–अरुन्धती-सी सीता को; ॲञ्चल् इला–अक्षय; आऱ्ऱल् इरुवीरुम्–बलशाली तुम दोनों; नीङ्कि निरो–अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या; ॲन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा प्रश्न किया। ९९४

आगे कहा— यह जो हुआ वह रावण का वंचना द्वारा साधित कार्य है —यह मेरा मन पहले ही कह रहा था। पर एक बात पूछता हूँ। मधुरवाणी, कलापी-सी सुन्दर और अरुन्धती-सी देवी सीता को अक्षय-बलशाली तुम दोनों अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या ? । ९९४

❀ ॲन्ऱव नियम्बलु मिळैय कोमहन्
ऑन्ऱुमाण् डुरुपॊरु ळॊऴिवु ऱावहै
वन्ऱिऱन् मायमान् वन्द दादिया
निन्ऱदु निहऴ्न्ददु निरप्पि नानरो 995

ॲन्ऱु–ऐसा; अवन् इयम्पलुम्–उनके कहने पर; इळैय कोमकन्–छोटे राजकुमार ने; आण्टु–वहाँ; उऱु पॊरुळ्–घटी हुई बातें; ऑन्ऱुम् ऑऴिवु उऱा वकै–विना कोई अंश छोड़े; वल् तिऱल् मायम् मान्–बहुत कुशल माया के हरिण के; वन्ततु आति आ–आने से लेकर; निन्ऱतु निकऴ्न्ततु–जो होकर बीतीं; निरप्पितान्–वर्णन कीं। ९९५

जब उन्होंने यह प्रश्न किया, तब लघुराजकुमार लक्ष्मण ने अति कुशल मायामृग के आने से लेकर सारी घटनाएँ क्रमवार, विना कोई अंश छोड़े बता दीं। ९९५

❀ आऱ्ऱला नव्वुरै यरैय वाणैयाल्
एऱ्ऱुणर्न् दॆण्णियव् वॆरुवै वेन्दनुम्
माऱ्ऱरुन् दुयरिवर् मनक्कॊ ळावहै
तेऱ्ऱुद नन्ऱॆन विनैय शॆप्पुवान् 996

आणैयाल्–श्रीराम की आज्ञा लेकर; आऱ्ऱलान्–समर्थ लक्ष्मण के; अ उरै अऱैय–वह वचन कहने पर; अ ॲरुवै वेन्तनुम्–वे गृध्रराज भी; एऱ्ऱु उणर्न्तु–हृदयंगम

करके; ऍण्णि–सोचकर; भारुरु अरुम्–अनाश्वासनीय; तुयर्–दुःख को; इवर् मनम् कॊळा वकै–ये मन में न रखें, इस तरह; तेरुरुतल्–ढाढस देना; नन्रु ॲन–अच्छा होगा, सोचकर; इन्नैय चॅप्पुवान्–यों बोले। ९९६

लक्ष्मण ने वे बातें श्रीराम की आज्ञा लेकर ही कहीं। उनकी बातें सुनकर गृध्रराज ने उन्हें हृदयंगम किया। देखा कि वे अत्यधिक दुःखी हैं। कष्ट अनिवार्य हो गया था। पर यह दुःख उनके मन को न सताए, इसकी व्यवस्था करनी थी। ढाढस दिलाना था। यह सोचकर जटायु बोले। ९९६

❀ अदिशय	मॊरुवरा	लमैक्क	लाहुमो
तुदियरु	पिरविधि	निन्नब	तुन्बन्दान्
विदिवय	मॅन्बदै	मेरकॊ	ळाविडिन्
मदिवलि	यालविदि	वॅल्ल	वल्लमो 997

ऑरुवराल्–किसी से; अतिचयम्–अतिशय (अस्वाभाविक); अमैक्कल् आकुमो–रचा जा सकता है क्या; तुति अरु–प्रशंसा के लिए अयोग्य; पिरवियिन्–जन्म में; इन्प तुन्पम् तान्–सुख और दुःख; विति वयम् ॲन्पतै–विधिवश होते हैं, यह बात; मेल् कॊळ्ळा विटिल्–हम मानकर नहीं चलेंगे; मति वलियाल्–तो अपनी बुद्धि के बल से; विति–विधि को; वॅल्ल वल्लमो–जीत सकते हैं क्या। ९९७

कोई भी असाधारण अतिशयपूर्ण काम नहीं कर सकता। (विधि के विपरीत जाना असाधारण काम है।) यह जन्म प्रशंसा के योग्य नहीं है। इसमें जो भी दुःख-सुख आते हैं, वे सब विधि के विधान के अनुसार आते हैं। इसको मानकर चलना ही ठीक है। नहीं तो अपने बुद्धिबल से विधि को जीतने का बल हममें है क्या? । ९९७

तॅरिवुरु	तुन्बम्वन्	दून्रच्	चिन्दैयै
इरिवुशॅय्	दॊऴियुमी	दिळ्ळै	नीरदाल्
पिरिवुशॅय्	दुलहॅलाम्	पॅरुविप्	पान्रलै
अरिवुशॅय्	विदियिनार्क्	करिदुण्	डाहुमो 998

उलकु ॲलाम्–लोकों के सभी जीवों को; पिरिवु चॅय्तु–विविध श्रेणियों में बाँटकर; पॅरुविप्पान्–रचनेवाले ब्रह्माजी के; तलै–पाँच शिरों में एक को; अरिवु चॅय्–जिसने काटा उस; वितियिनार्क्कु–विधिदेवता के लिए; अरितु उण्टाकुमो–कठिन कुछ हो सकता है क्या; तॅरिवु उरु–साफ़ प्रकट रहनेवाला; तुन्पम् वन्तु ऊन्र–दुःख आकर जम गया तब; चिन्तै इरिवु चॅय्तु–मन को जर्जर करके; ऒऴियुम् ईतु–कर्तव्य से विरत रह जाना, यह; इळ्ळै नीरतु–अज्ञता का काम है। ९९८

ब्रह्माजी स्वयं लोक-सृजक हैं। अनेक तरह की जीवराशियों की सृष्टि का काम उन्हीं के हाथ होता है। पर उनके सिरों में से एक को शिवजी ने काट लिया था। यह काम जिस विधि ने किया था, उस विधि के लिए

कौन सा काम कठिन या असाध्य होगा ? इसलिए जो दुःख सामने आता है, उसके सामने मन हारना और मारना और कर्म-विरत हो रहना अज्ञता होगा। ९९८

अलक्कणु मिन्बमु मणुहु नाळवै
विलक्कुव मॆन्वदु मॆय्यिर् राहुमो
इलक्कुमुप् पुरङ्गळै यॆय्द विल्लियार्
तलैक्कलत् तिरन्ददु तवत्तिन् पालदो 999

मु पुरङ्कळै–त्रिपुरों को; इलक्कु ॲय्त–लक्ष्य बनाकर जिन्होंने शर चलाया; विल्लियार्–उन धनुर्धर शिवजी का; तलै कलत्तु इरन्ततु–ब्रह्म-कपाल में भिक्षा माँगना; तवत्तिन् पालतो–उनकी तपस्या के लिए योग्य था क्या; अलक्कणुम् इन्पमुम्–दुःख और सुख; अणुकुम् नाळ–जब आते हैं, तब; अवै विलक्कुवम् ॲन्पतु–उनको निवार देंगे, समझना; मॆय्यिऱ्ऱु आकुमो–सचमुच हो सकता है क्या। ९९९

शिवजी बड़े ही प्रसिद्ध धनुर्धर थे। उन्होंने त्रिपुर को जलानेवाला अस्त्र छोड़ा था। पर उन्हीं को ब्रह्म-कपाल हाथ में लेकर ब्रह्महत्या दोष के पाप के कारण भिक्षा माँगते फिरना पड़ा था। यतिराज शिवजी की तपस्या और यह संकट —दोनों में कोई मेल है क्या ? इसलिए जब दुःख या सुख आते हैं हम उनको रोक देंगे, यह कहना सचमुच साध्य हो सकेगा क्या ? । ९९९

* पॊङ्गुवॆङ् गोळरा विशुम्बु पूत्तन
वॆङ्गदिर्च् चॆल्वनै विळुङ्गि नीङ्गुमाल्
अङ्गणमा ञालत्तै विळक्कु मायदिर्त्
तिङ्गळु मोरुमुऱै वळरुम् तेयुमाल् 1000

पॊङ्कु वॆम् कोळ् अरा–उबलनेवाले भयंकर (राहु-केतु के) सर्प-ग्रह; विचुम्पु पूत्तु अन–आकाश में फूल के समान; वॆम् कतिर् चॆल्वनै–उष्णकिरण सूर्यदेव को; विळुङ्कि नीङ्कुम्–निगल जाते हैं; अम् कण् मा ञालत्तै–सुन्दर और विशाल पृथ्वी को; विळक्कुम्–प्रकाश देनेवाला; आय् कतिर् तिङ्कळुम्–श्रेष्ठ किरणों का चन्द्र भी; ऒरु मुऱै वळरुम् तेयुम्–एक बार बढ़ता है, एक बार घटता है। १०००

उबलनेवाले सर्प-रूप के ग्रह, राहु और केतु आकाश में विकसित पुष्प के समान विद्यमान, उष्णकिरण सूर्यदेव को निगल लेते हैं। इस विशाल व सुन्दर पृथ्वी को प्रकाश प्रदान करता है चन्द्रमा। श्रेष्ठ किरणों के उसका क्या हाल है ? पन्द्रह दिन उसे घटना और पन्द्रह दिन बढ़ना पड़ता है। १०००

अन्दरम् वरुदलु मनैय तीर्दलुम्
शुन्दरत् तोळिनिर् तीन्मै नीरवाल्

मन्दिर विसैयवर् गुरुविन् वाय्मॊऴि
इन्दिर नुऱ्ऱन वॆण्ण वॊण्णुमो 1001

मन्तिर–मंत्रणा में चतुर; इमैयवर् कुरुविन्–देवगुरु (बृहस्पति) का; वाय् मॊऴि–उपदेश; इन्तिरन् उऱ्ऱन–(सुनकर तदनुसार चलनेवाले) इन्द्र को जो कष्ट प्राप्त हुए; ऎण्ण ऒण्णुमो–उनको गिना जा सकता है क्या; चुन्तर तोळितीर्–सुन्दर-बाहु वीर; अन्तरम् वरुतलुम्–कष्टों का आना; अतैय तीर्तलुम्–और उनका हट जाना; तॊन्मै नीर–सनातन प्रकृति के हैं। १००१

सलाहें देने में समर्थ देवगुरु के उपदेशों के अनुसार चलता है देवेन्द्र। पर उसको भी (नारद, दुर्वासा, गौतम आदि द्वारा शप्त होकर) कितने कष्ट सहने पड़े —क्या उनकी गणना हो सकती है? इसलिए, सुन्दर-बाहु वीर! दिन के फेर आते-जाते हैं। यह सनातन है। १००१

❀ तडैक्करुम् बॆरुवलिच् चम्ब रप्पॆयर्क्
कडैत्तॊऴि लवुणनार् कुलिशक् कैयिनान्
पडैत्तनन् पऴियदु पहऴि विल्वलायत्
तुडैत्तन नुन्दैतन् कुववुत् तोळिनाल् 1002

पकऴि विल् वलाय्–शर-धनुर्विद्या-विशारद; तटैक्कु अरुम्–अवार्य; पॆरु वलि–बड़ा बलशाली; चम्पर पॆयर्–शंबर नाम के; कटै तॊऴिल्–नीच कर्मी; अवुणताल्–राक्षस द्वारा; कुलिच कैयितान्–कुलिशपाणी (इन्द्र) ने; पऴि पटैत्ततन्–अपमान पाया; अतु–उस (अपमान) के; उन्तै–तुम्हारे पिता ने; तन् कुववु तोळिताल्–अपनी बलवान भुजाओं के (पराक्रम के) द्वारा; तुटैत्ततन्–पोंछ दिया। १००२

शर चलाने की धनुर्विद्या में विशारद राम! अप्रतिहत अपार बली था शंबर। नीचकर्मी उसके हाथ कुलिशपाणी इन्द्र अपमानित हुआ। तुम्हारे पिता ने अपनी उन्नत भुजाओं के बल से उस अपमान को पोंछ दिया। १००२

❀ पिळ्ळैच्चॊल् किळिय नाळैप् पिरिवुऱ् ऱुऱ्ऱ पॆऱ्ऱि
तळ्ळुऱ्ऱ वऱमुन् देवर् तुयरमुन् दन्द देयाल्
कळ्ळप्पो ररक्क रॆन्नुङ् गळैहळैक् कळैन्दु वाऴ्दि
पुळ्ळुक्कुम् पुलम्बु पेयक्कुन् तायन्न पुलवु वेलोय् 1003

पुळ्ळुक्कुम्–पक्षियों को; पुलम्पु पेय्क्कुम्–(भूख से) प्रलाप करनेवाले भूतों को; ताय् अन्न–माता के समान; पुलवु वेलोय्–मांस-दायी भाला के धारक; चॊल् किळि अनाळै–तुतलाती और शुकी-सी सीता से; पिरिवु उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–बिछुड़ चुके हो, यह उपलब्धि; तळ्ळुऱ्ऱ अऱमुम्–ग्लानिगत धर्म; तेवर् तुयरमुम्–और देवों के दुःख का; तन्तते आल्–दिया हुआ है; कळ्ळ पोर् अरक्कर ऎन्नुम्–मायायुद्ध-चतुर राक्षस रूपी; कळैयित्तै–(नींद) व्यर्थ पौधों को; कळैन्तु–निरा देकर; वाऴ्ति–चिरजीव रहो। १००३

ऐसे भाले के धारक, राम ! जो माता के-से प्रेम के साथ पक्षियों और प्रलाप करनेवाले पिशाचों को भूख मिटाते हुए मांस खिलाता है। धर्म क्षीण हो गया है और देव दुःखी हैं। उन्हीं दो बातों से तोतली बोली वाली शुकी-सी सीता से वियुक्त होकर कष्ट उठाने का यह कार्य हो गया है। तुम चोर के स्वभाव वाले मायावी राक्षसों को खेत के निराने योग्य (नींद) घास-पौधों के समान काट मिटाओ और चिरजीव रहो। १००३

वडुक्कण्वार् कून्द लाळै यिरावणऩ् मण्णि ऩोडुम्
ॲडुत्तऩ ऩेहु वाऩै यॅदिर्न्दॅऩ दाऱ्ऱल् कॊण्डु
तडुत्तऩॆ ऩाव दॆल्लान् दवत्ताऩ् तन्द वाळाल्
पडुत्तऩ ऩिङ्गु वीऴ्न्दे ऩिडुविऩ्ऱु पट्ट दॆऩ्ऱाऩ् 1004

वट् कण्–आम के टिकोरे के समान आँखें; वार् कून्तलाळै–और लम्बा केश; इनके साथ शोभनेवाली सीता को; इरावणऩ्–रावण जो; मण्णिऩ् ओटुम्–भूमि के अंश के साथ; ॲटुत्तु एकुवाऩै–उठाये दौड़ा जा रहा था, उसका; ॲतिर्न्तु आऱ्ऱल् कॊण्टु ॲतिर्न्तु–अपने बल से सामना करके; आवतु ॲल्लाम्–भरसक; तटुत्तऩॆऩ्–रोका (मैंने); तवत्तु–तपस्या से; अरऩ् तन्त–हर की दी हुई; वाळाल्–तलवार से; पटुत्तऩऩ्–मुझे निहत कर दिया (रावण ने); इङ्कु वीऴ्न्तेऩ्–यहाँ गिर गया; इतु इऩ्ऱु पट्टतु–आज मेरा यह हाल हुआ; ॲऩ्ऱाऩ्–(जटायु ने) बताया। १००४

आम के टिकोरे के समान आँखों से भूषित और सुन्दर केशिनी सीता को रावण भूमि के अंश के साथ उठाये ले जा रहा था। मैंने उसका अपने बल के साथ सामना किया। उसको रोका। पर उसके हाथ में चन्द्रहास तलवार थी, जो उसे उसके तप के फलस्वरूप शिवजी द्वारा दी गयी थी। उसने उसका प्रयोग करके (अपने निजी बल से नहीं) मुझे आहत कर दिया। मेरे पंख कट गये और मैं गिर गया हूँ। यही यहाँ जो हुआ वह वृत्तान्त है। १००४

कूऱिऩ माऱ्ऱम् जॆऩ्ऱु शॆवित्तलङ् गुरुहा मुऩ्ऩम्
ऊऱिऩ वुदिरञ् जॆङ्ग णुयिर्त्तऩ वुयिर्प्पुच् चॆन्दी
एऱिऩ पुरुव मॆऩ्मे लिरिन्दऩ शुडर्ह ळॆङ्गुम्
कीऱिऩ दण्ड कोळङ् गिऴिन्दऩ गिरिह ळॆल्लाम् 1005

कूऱिऩ माऱ्ऱम्–(उनका) कहा वचन; चॆवि तलम् चॆऩ्ऱु–कर्ण तक जाकर; कुरुका मुऩ्ऩम्–लग जाय, इसके पूर्व ही; चॆम् कण्–उनकी लाल आँखों में; उतिरम् ऊऱिऩ–रक्त निकल आया; उयिर्प्पु–साँसें; चॆम् ती उयिर्त्तऩ–गरम आग से मिश्रित आयीं; पुरुवम्–भौंहें; मॆऩ् मेल्–ऊपर, ऊपर; एऱिऩ–चढ़ीं; ॲङ्कुम्–सर्वत्र; चुटर्कळ् इरिन्तऩ–अंगार छितरे; अण्ट कोळम् कीऱिऩ–अण्डगोल फट पड़ा; किरिकळ् ॲल्लाम्–सारे पर्वत; किऴिन्तऩ–चिर गये। १००५

जब जटायु ने यह बात कही, तब श्रीराम कोपोद्विग्न हुए। लाल

आँखों में खून भर आया। साँसें आग से मिश्रित-सी निकलीं। भौंहें तन गयीं। कोप के अंगार सर्वत्र छितरे। सारे अण्डगोल फटे और सभी पर्वत चिरे। १००५

मण्णहन् दिरिय निन्ऱ मालवरै तिरिय मऱ्ऱैक्
कण्णहन् पुनलुङ् गालुङ् गदिरोंडु तिरियक् कावल्
विण्णहन् दिरिय मेलै विरिञ्जनुन् दिरिय वीरन्
ऍण्णरुम् पॊरुळ्ह ळॆल्ला मॆन्बदु तॆरिन्द दन्ऱे 1006

मण् अकम् तिरिय–पृथ्वी विपर्यस्त हुई; माल् वरै तिरिय–बड़े-बड़े पर्वत घूमे; मऱ्ऱै–और; कण् अकन् पुनलुम्–विस्तृत जलाशय और; कालुम्–पवन; कतिर् ऑटुम्–सूर्य व चन्द्र के साथ; तिरिय–घूम गये; कावल् विण् अकम्–सबकी स्थिरता की रक्षा करनेवाला आकाश; तिरिय–घूमा; मेलै विरिञ्चनुम्–इन सबके ऊपर के ब्रह्मा भी; तिरिय–अव्यवस्थित हुए; वीरन्–(इसलिए) वीर श्रीराम; ऍण् अरुम् पॊरुळ्कळ् ऍल्लाम्–अगणित सभी पदार्थों के अन्दर हैं; ऍन्पतु–यह तथ्य; तॆरिन्ततु–विदित हुआ। १००६

धरती घूम उठी। बड़े पर्वत अस्त-व्यस्त हुए। और विस्तृत जल, अनिल, सूर्य और चन्द्र चकरा गये। सबको स्थिरता देनेवाला अन्तरिक्ष विपर्यस्त हो गया। पुरातन सर्वोपरि ब्रह्मा भी अस्थिर हो गये। इस विपर्यय से यह तथ्य साबित हुआ कि श्रीराम अगणित सभी पदार्थों के अन्तर्यामी हैं। १००६

कुऱित्तवॆङ् गोवम् यार्मेऱ् कोळुङ्ङ् गॊल्लॆन् ऱञ्जि
वॆऱित्तुनिन् ऱुलह मॆल्लाम् विम्मुरु हिन्ऱ वेलै
पॊऱिप्पिदिर् पडरच् चॆन्दीप् पुहैयॊडुम् बॊडिप्पप् पॊम्मॆन्
ऱॆऱिप्पदोर् मुऱुव ऱोन्ऱ विरामनु मियम्ब लुऱ्ऱान् 1007

कुऱित्त वॆम् कोवम्–श्रीराम के मन में उदित कोप; यार् मेल् कोळुरुम् कोल्–किस पर जा लगेगा; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; अञ्चि–डरकर; वॆऱित्तु निन्ऱु–तनकर खड़े हो गये; विम् उरुकिन्ऱ वेलै–जब अभिभूत हुए, तब; इरामनुम्–श्रीराम भी; पॊऱि पितिर् पटर–अग्निकणों के छितरते; चॆम् ती–लाल अग्नि के; पुकै ऑटुम् पॊटिप्प–धुएँ के साथ उठते; ऍऱिप्पतु ओर् मुऱुवल्–दिल दहलानेवाले हास के; पॊम् ऍन्ऱु तोन्ऱ–'भम्' शब्द के साथ (फूटकर) प्रकट होते; इयम्पल् उऱ्ऱान्–बोले। १००७

अब सारे लोकवासी यह सोचते हुए भयभीत हुए कि श्रीराम का क्रोध किस पर उतरेगा? भय से अभिभूत हो वे तनकर दुःख करते हुए खड़े रह गये। श्रीराम ने 'भम्' शब्द के साथ अट्टहास किया। तब अंगारे छितरे। लाल रंग की आग धुएँ के साथ जल उठी। वे बोले। १००७

❀ पॆण्डनि ऑरुत्ति तन्नैप् पेदैवा ळरक्कन् पट्रिक्
कॊण्डन नेह नीयिक् कोळुरक् कुलुङ्गल् शॆल्ला
ॲण्डिशै यिरुदि यान वुलहङ्ग ळिवट्रै यिन्ने
कण्डवा नवर्ह ळोडुम् कळैयुमा ट्रिन्रु काण्डि 1008

तनि पॆण् ऑरुत्ति तन्नै–अकेली रही एक स्त्री को; पेतै वाळ् अरक्कन्–मति-हीन क्रूर राक्षस; पट्रि कॊण्टनन् एक–पकड़ लेकर गया और; नी इ कोळ् उर्–आप पर यह संकट आया और; कुलुङ्कल् चॆल्ला–कम्पित नहीं होता हुआ; ॲण् तिचै इरुति आन–आठों दिगन्त; उलकङ्कळ् इवट्रै–इन सारे लोकों को; कण्ट वानवर्कळोटुम्–इसके दर्शक देवों के साथ; इन्ने कळैयुम् आरु–अभी कैसे ध्वस्त करता हूँ, वह प्रकार; इन्रु काण्टि–आज देखिए। १००८

हाय! एकाकिनी एक स्त्री को मतिहीन क्रूर राक्षस पकड़कर ले गया! आप पर यह विपदा आयी है! इनको देखकर आठों दिशाओं के अन्दर रहनेवाले लोकों के वासी कम्पित नहीं हुए। देव भी यह देखते रह गये। अब मैं इन सभी लोकों और देवों को कैसे विध्वस्त कर देता हूँ, देखिए। १००८

तारहै युदिरु माऱुन् दनिक्ककदिर् पिदिरु माऱुम्
पेरहल् वान मॆङ्गुम् पिऱङ्गॆरि पिऱक्कु माऱुम्
नीरॊडु निलनु मट्रु निन्ऱवुन् दिरिन्द यावुम्
वेरॊडु पऱियु माऱुम् विण्णवर् विळियु माऱुम् 1009

तारकै उतिरुम् आऱुम्–तारे कैसे चूते हैं, वह प्रकार और; तनि कतिर् पितिरुम् आऱुम्–अद्वितीय सूर्य कैसे चूर-चूर होकर गिरता है, वह और; पेर् अकल् वानम् ॲङ्कुम्–अति विशाल गगन में; पिऱङ्कु ॲरि–उज्ज्वल अग्नि; पिऱक्कुम् आऱुम्–कैसे जल उठती, वह और; नीर् ऑटु निलनुम्–जल और पृथ्वी; मट्रुम्–और अन्य; निन्ऱवुम् तिरिन्त यावुम्–अचल और चल सभी पदार्थ; वेर् ऑटु पऱियुम् आऱुम्–जड़ के साथ कैसे नष्ट होते हैं, वह प्रकार; विण्णवर् विळियुम् आऱुम्–देव कैसे मिट जाते हैं, वह प्रकार। १००९

तारे चू पड़ेंगे। अद्वितीय सूर्य चूर-चूर होकर गिरेगा। विशाल गगन में सर्वत्र बड़े प्रकाश के साथ आग जल उठेगी। पृथ्वी और समुद्र और उनमें रहनेवाले अचल और चल सभी जीव निर्मूल हो जायँगे। यह सब कैसे होते हैं और देव कैसे विनष्ट होते हैं (यह प्रकार देखिए)। १००९

इक्कण मॊन्ऱि निन्ऱु वेळ्ळिनो डॆळु मेल्हीळ्
मिक्कन पॊन्ऱु तोन्ऱु मुलहङ्गळ् वीयु माऱुम्
तिक्कुडै यण्ड कोळप् पुऱत्तवुन् दीयन्दु नीरिन्
मॊक्कुळि नुडैयु माऱुङ् गाणॆन मुनिद लोडुम् 1010

मेल् कीऴ् मिक्कत्त पोत्तुरु तोत्तुरुम्—ऊपर और नीचे व्याप्त रहनेवाले; नित्तुर—स्थायी; एऴिन्‌ ओटु एऴ् उलकङ्कळ्—सात और सात चौदहों भुवन; वीयुम् आरुम्—कैसे ध्वस्त होते हैं, वह प्रकार; तिक्कु उटै—आठों दिशाओं के अन्दर; अण्ट कोळम्—रहनेवाले अण्डगोल; पुरत्तवुम्—अन्य बाह्याण्ड; तीयन्तु—जलकर; नीरिन्‌ मोक्कुळिन्—जल के बुलबुले के समान; उटैयुम् आरुम्—कैसे अदृश्य होते हैं, वह; इ कणम् ऑत्तुरिल्—इसी एक क्षण में; काण् ऍन्त—देखिए, कहकर; मुनितल् ओटुम्—जब श्रीराम कुपित हुए, तब। १०१०

ऊपर और नीचे व्याप्त होकर जो शानदार लगते हैं, वे चौदहों भुवन अब तहस-नहस हो जायँगे। आठों दिशाओं के अन्तर्गत रहनेवाले सारे अण्डगोल और बाह्याण्ड भी जलकर जल के बुलबुले के समान अदृश्य हो जायँगे। वे सब कैसे होते हैं वह रीति अभी, इसी एक क्षण में देख लीजिए। यह कहते हुए जब श्रीराम कोप दिखा रहे थे तब— । १०१०

वॅन्ऱुडर्क् कडवुण् मीण्डु मेरुविन् मऱैय लुऱ्ऱान्
ऍन्ऱलि ट्रिशैयि नित्तुर यानैयु मिरियल् पोत्त
तुञ्जित्त वुलह मॅल्ला मॅन्बदॅन् तुणिन्द नॅञ्जन्
अञ्जित्त तिळैय कोवु मयलुळोर्क् कवदि युण्डो 1011

वॅम् चुटर्—गरम किरणों के; कटवुळ्—(सूर्य) देव; मीण्टु—फिर; मेरुविल् मऱैयल् उऱ्ऱान्—मेरु के पीछे छिपने लगे; ऍन्चल् इल्—अप्रमत्त; तिचैयिन् नित्तुर यानैयुम्—दिशाओं में स्थित गज भी; इरियल् पोत्त—अस्त-व्यस्त हो भागे; उलकम् ऍल्लाम् तुञ्चित्त—सारे लोक के जीव स्तब्ध बने; ऍन्पतु ऍन्—ऐसा कहना क्या; तुणिन्त नॅञ्चत्त—सुदृढ़-मन; इळैय कोवुम्—लघुराज भी; अञ्चित्तन्—भयभीत हुए; अयल् उळोर्क्कु—अन्य लोगों (के भय) की; अवति उण्टो—सीमा है क्या। १०११

गरम किरणमाली भी मेरु के पीछे जा छिपे। अचल दिग्गज भी इधर-उधर भागे। सारा विश्व निष्क्रिय हो गया —यह कहना क्या अर्थ रखता है ? अदम्य साहसी लघुराज भी डर गये तो अन्यों के भय की सीमा भी हो सकती थी क्या ? । १०११

इव्वऴि निहऴुम् वेलै यॅरुवैहट् करशन् यादुम्
शॅव्वियोय् मुनियल् वाऴि तेवरु मुनिवर् तामुम्
वॅव्वलि वीर निन्नाल् वेरुमॅन् ट्रेमाक् कित्तुरार्
ऍव्वलि कॊण्डु वॅल्वा रिरावणन् शॅयलै यॅन्ना 1012

इ वऴि निकऴुम् वेलै—जब ऐसी बात हुई; ऍरुवैकट्कु अरचन्—गीधों के राजा; चॅव्वियोय्—पुरुषोत्तम; यातुम् मुनियल्—कुछ भी क्रोध मत करो; वाऴि—सौभाग्यवान जिओ; वॅल् वलि वीर—परंतप बली वीर; तेवरुम् मुनिवर् तामुम्—देव और मुनि; इरावणन् चॅयलै—रावण के कृत्य को; निन्नाल् वेरुम्—तुम्हारे द्वारा जीतने (रुकवाने) का; ऍन्ऱु एमाक्कित्तुरार्—विचार करके मुदित हैं; ऍ वलि कॊण्टु—वे किस पराक्रम से; वॅल्वार्—जीतेंगे; ऍन्ना—कहकर। १०१२

जब यह सब हो रहा था, तब गृध्रराज ने श्रीराम को समझाया। नेक श्रीराम! तुम कुछ गुस्सा मत करो। सौभाग्यमय जीवन जिओगे। विजयी पराक्रमी वीर! देव और मुनि तो यह सोचते हुए आनन्द का अनुभव कर रहे हैं कि तुम्हारे द्वारा रावण के अत्याचार निरस्त होंगे। वे कौन सा बल लेकर रावण को जीत सकेंगे ? । १०१२

नाट्चॅय्द कमलत् तण्ण नल्हिन नवैयि लाऱ्ऱल्
तोट्चॅय्द वीर मॅऩ्ऩिऱ् कण्डऩै शॉल्ल वुण्डो
ताट्चॅय्य नळिनत् तोने मुदलिनर् तलैपत् तुळ्ळाऱ्
काट्चॅय्हिन् ऱार्ह ळन्ऱि यऱञ्जॅय् हिन्ऱार्हळ् यारे 1013

नाळ् चॅय्त–आयु निर्धारित करनेवाले; कमलत्तु अण्णल्–कमलासन देव के द्वारा; नल्कित–दिये गये; नवैयिल् आऱ्ऱल्–अमोघ शक्ति की; तोळ् चॅय्त वीरम्–भुजाओं के बल-पराक्रम को; ॲन्निल् कण्टऩै–मेरे विषय में देखा; चॉल्ल उण्टो–फिर कहना है क्या; ताळ् चॅय्य नळिनत्ततोने मुतलिनर्–नालसहित कमल पर आसीन ब्रह्मा से लेकर सभी; तलै पत्तु उळ्ळार्क्कु–दशग्रीव का; आळ् चॅय्किन्ऱार्कळ्–कैंकर्य करते हैं; अन्ऱि–सिवाय इसके; अऱम् चॅय्किन्ऱार्कळ् यारे–धर्म-कर्म करनेवाले कौन हैं। १०१३

सब जीवों के आयु-विधायक ब्रह्मा ने रावण को कितना भुजबल वर के रूप में दिया है, वह कितना निर्दोष है, यह तुमने मेरी गति से जान लिया है न ? फिर उसके सम्बन्ध में बताने को क्या है ? नाल-सहित कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा आदि सभी देवता दशग्रीव की सेवा टहल करते हैं। उसके सिवा अपने धर्म-कर्म करते कौन हैं ? । १०१३

तॅण्डिरै युलहन् दन्ऩिऱ् चॅऱुनर्माट् टेवल् शॅय्तु
पॅण्डिरिन् वाळव रन्ऱे यिदुवन्ऱो देवर् पॅऱ्ऱि
पण्डुल हळन्दो नल्हप् पाऱ्कड लमुद मन्नाळ्
उण्डिल राहि लिन्ना ळन्नवर्क् कुयद लुण्डो 1014

तॅळ् तिरै उलकम् तन्ऩिल्–स्पष्ट समुद्र से घिरी पृथ्वी में; चॅऱुनर् माट्टु–अपने शत्रु रावणादि राक्षसों के यहाँ; एवल् चॅय्तु–सेवा-टहल करके; पॅण्टिरिन् वाळ्वर्–स्त्रियों का-सा जीवन बिता रहे हैं; तेवर् पॅऱ्ऱि–देवों का भाग्य; इतु अन्ऱो–यही है न; पण्टु उलकु अळन्तोन्–पहले (त्रिविक्रम बनकर) जिन्होंने लोकों को नापा; पाल् कटल् अमुतम् नल्क–उन्होंने क्षीरसागर के अमृत को देवों को दिया; अ नाळ् उण्टु इलर् आकिल्–उस दिन वे नहीं खाते तो; इ नाळ्–आजकल; अन्नवर्क्कु–उन लोगों का; उय्तल् उण्टो–जीवित रहना होता क्या। १०१४

स्वच्छ समुद्र-वलयित भूतल में, वे देव अपने शत्रु रावण की सेवा-टहल करते हुए स्त्रियों के समान जीवन बिता रहे हैं। यही उनकी स्थिति है ! इन देवों को अगर क्षीरमथन से क्षीरसागर से प्राप्त अमृत त्रिविक्रम

द्वारा न मिलता होता, आज रावण के शासन काल में ये जीवित रह सकते क्या ? । १०१४

❀ वम्बिळै कोङ्गै वञ्जि वन्नत्तिडैत् तमियळ् वैहक्
कॉम्बिळै मानिन् पिन्बोय्क् कुलप्पळि कूट्टिक् कॉण्डीर्
अम्बिळै वरिविर् चॅङ्गै यैयन्मी रायुङ् गालै
उम्बिळै यॅन्ब दल्ला लुलहञ्जॅय् पिळैयु मुण्डो 1015

अम्पु इळै–शरासन; वीर विल् चॅङ्कै–सबन्ध धनु अपने लाल हाथ में रखनेवाले; ऐयन्मीर्–मेरे तात; वम्पु इळै–अँगिया से बद्ध; कोङ्कै वञ्चि–स्तनों से भूषित लता(-सी सीता); वन्तुतु इटै तमियळ् वैक–वन में अकेली रही, तब; कॉम्पु इळै–सींगों-सहित; मानिन् पिन् पोय्–मृग के पीछे जाकर; कुल पळि–कुल का अपमान; कूट्टि कॉण्टीर्–सम्पादित कर लिया; आयुम् कालै–विचार करने पर; उम् पिळै ऍन्पतु अल्लाल्–तुम्हारा कसूर है, इसके सिवा; उलकम् चॅय् पिळैयुम् उण्टो–संसार (के वासियों) का कोई अपराध है क्या । १०१५

सबन्ध शरासनधारी लाल हाथ के हे वीरो ! मेरे पुत्रो ! अँगियावद्ध स्तनों वाली लता-सदृश सीता जब जंगल में एकाकिनी रही, तब तुम उसे छोड़कर श्रृंगसहित हरिण को पकड़ने गये और अपने कुल का अपयश ग्रहण कर आये । सोचकर देखो तो गल्ती तुम्हारी ही है । संसार का किया कोई अपराध है क्या ? । १०१५

आदलाल् मुनिवा यल्लै यरुन्ददि यनैय कऱ्पिन्
कादला डुयर नीक्कित् तेवर्तङ् गरुत्तु मुऱ्ऱि
वेदनूऩ् मुऱैयिन् यावुम् विदियुळि निऱुवि वेऱु
तोदुळ तुडैत्ति यॅन्ऱान् शेवडिक् कमलञ् जेर्वान् 1016

चे अटि कमलम् चेर्वान्–(श्रीमन्नारायण के) लाल (श्रेष्ठ) चरण-कमल पहुँचने को जो थे (मरणोन्मुख); आतलाल्–इसलिए; मुनिवाय् अल्लै–कोप मत करो; अरुन्तति अनैय कऱ्पिन्–अरुन्धती-सी पतिव्रता देवी; कातलाळ्–तुम्हारी प्रिया का; तुयरम् नीक्कि–दुःख दूर कर; तेवर् तम् करुत्तु मुऱ्ऱि–देवों की प्रार्थना पूरी करके; वेत नूल् मुऱैयिन्–वेद-शास्त्र में उक्त विधि के अनुसार; यावुम् विति उळि निऱुवि–सब धर्म विधिवत संस्थापित करके; वेऱु तीतु उळ–अन्य जितनी भी बुराइयाँ हैं; तुटैत्ति–उनको दूर करो; ऍन्ऱान्–(जटायु ने) कहा । १०१६

जटायु अब श्रीविष्णु भगवान के लाल कमलचरण को पहुँचने की स्थिति में थे । उन्होंने श्रीराम को आशीष दिया । श्रीराम ! तुम किसी पर क्रोध मत करो । अरुन्धती-समान पातिव्रत्यशीला, अपनी प्रिया सीता का दुःख हरण करो । देवों की प्रार्थना पूरी करो । वेद-शास्त्र-विहित सभी धर्मों को संस्थापित करो । और अन्य कष्ट, जो भी पृथ्वी पर हों, उनका निरसन कर दो । १०१६

पुयनिऱ् वण्ण ताण्डप् पुण्णियन् पुहन्ऱ शॊल्लैत्
तयरदन् पणियी दॆन्नच् चिन्दैयिऱ् ऱळुवि निन्ऱान्
अयलिनि मुनिव दॆन्नै यरक्करै वरुक्कम् तीर्क्कुम्
शॆयलिनिच् चॆयलॆन् ऱॆण्णिक् कण्णिय शीऱ्ऱन् दीर्न्दान् 1017

पुयल् निऱ वण्णन्–मेघवर्ण ने; अ पुण्णियन् पुकन्ऱ चॊल्लै–उन पुण्यात्मा के कहे वचनों को; आण्टु–तब; तयरतन् पणि ईतु–दशरथ की आज्ञा है यह; ऍन्न–ऐसा; चिन्तैयिल् तळुवि निन्ऱान्–अपने मन में धारण कर लिया; इनि अयल् मुनिवतु ऍन्नै–अब दूसरों पर क्रोध करना क्या है; अरक्करै वरुक्कम् तीर्क्कुम्–राक्षसों के वर्गों का नाश करने का; चॆयल् इनि चॆयल्–काम ही कर्तव्य है; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; कण्णिय चीऱ्ऱम् तीर्न्तान्–अपनाया क्रोध दूर कर दिया। १०१७

मेघवर्ण श्रीराम ने उनकी आज्ञा को दशरथ की आज्ञा के समान हृदयंगम कर लिया। 'अब अन्यों से रुष्ट होना क्या अर्थ रखता है? आगे मेरा कार्य राक्षसों के वर्गों को विध्वस्त करना ही है!' —यह सोचकर श्रीराम ने अपने मन में सृष्ट क्रोध को शान्त कर लिया। १०१७

❀ आयपिन् ऩमलन् ऱानु मैयनी यमैदि यॆन्न
वायिडै मॊऴिन्द दन्ऱि मऱ्ऱॊरु शॆयलु मुण्डो
पोयदव् वरक्क ऩॆङ्गे पुहलॆनप् पुळ्ळिन् वेन्दन्
ओय्विन् ऩुणर्वु तेय वुरैत्तिल ऩुयिरुन् दीर्न्दान् 1018

आय पिन्–(शान्त) होने के बाद; अमलन् तानुम्–अकलुष (पवित्र) श्रीराम भी; ऐय–तात; नी–आप; अमैति–शान्त हों; वाय् इटै–मुख से; ऍन्न मॊऴिन्ततु–आपने जो कहा; अन्ऱि–उसके सिवा; मऱ्ऱु ऒरु चॆयलुम् उण्टो–दूसरा कोई काम (मुझसे) होगा क्या; अ अरक्कन्–वह राक्षस; पोयतु ऍङ्के–गया कहाँ; पुकल् ऍन्न–कहिए, कहने पर; पुळ्ळिन् वेन्तन्–खगराज ने; ओय्विन्–श्लथ होकर; उणर्वु तेय–प्रज्ञा खोकर; उरैत्तिलन्–नहीं कहा; उयिरुम् तीर्न्तान्–प्राण छोड़ गये। १०१८

अपना क्रोध शान्त करने के बाद अकलुष श्रीराम ने जटायु से मधुर ढंग से कहा कि तात! आप शान्त हों। आपने जो अपने मुख से आज्ञा कही है, उसके सिवा कोई और कार्य मुझसे होगा क्या? नहीं होगा। आप यह बतायें कि वह राक्षस गया कहाँ? इसका उत्तर खगराज दें इसके पहले ही वे श्लथ होकर प्रज्ञा खोकर प्राणहीन हो गये। उत्तर दे नहीं पाये। १०१८

शीदङ्गॊण् मलरु ळोनुन् देवरु मॆन्ब दॆन्ने
वेदङ्गळ् काणगि लामै वॆळिनिन्ऱे मऱैयुम् वीरन्
पादङ्गळ् कण्णिऱ् पार्त्तान् पडिवङ्गॊ ळॆण्डिय पञ्ज
बूदङ्गळ् विळियु नाळुम् पोक्किला वुलहम् बुक्कान् 1019

चीतम् कॊळ् मलर् उळोनुम्–शीतलतायुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा; तेवरुम्–देव; ॲन्पतु ॲन्ने–उनकी बात क्या; वेतङ्कळ् काण्किलामै–वेदों ने भी नहीं देखा, ऐसे; वॆळि निन्ऱे–ज्ञानातीत हो रहनेवाले; मऱैयुम् वीरन्–और अगोचर वीर श्रीराम के; पातङ्कळ् कण्णिल् पार्त्तान्–चरणों के दर्शन करते हुए; पटिवम् कॊळ्–विविध रूपों में परिवर्तित होनेवाले; पञ्च पूतङ्कळ्–पाँच भूत; विळियुम् नाळुम्–जिस दिन में विनष्ट हो जाते हैं, उस युगान्त में भी; पोक्कु इला–अविनष्ट रहनेवाले; उलकम्–परमपद में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १०१९

शीतल कमलपुष्प पर आसीन ब्रह्मा और अन्य देव क्या ? स्वयं वेदों के लिए भी श्रीराम अगोचर थे। ऐसे परमेश्वर के चरण की अन्तिम स्मृति करते हुए जटायु ने प्राण-त्याग किया था। इसलिए वे उस परमपद श्रीवैकुण्ठ में पहुँच गये, जो सारे भूतों को विनष्ट करनेवाले युगान्त में भी अक्षय रहता है। १०१९

वीडव नॆय्दुम् वेलै विरिञ्जत्ते मुदल मेलोर्
आडवर्क् करश नोडुन् दम्बियु मऴुदु शोरक्
काडमर् मरमुम् मावुङ् गऱ्कळुङ् गरैन्दु शाय्न्द
शेडरुम् बारु ळोरुङ् गरञ्जिरञ् जेर्त्ता रन्ऱे 1020

अवन् वीटु ॲय्तुम् वेलै–उनके मोक्षप्राप्ति के समय; आटवर्क्कु अरचन् ओटुम्–पुरुषोत्तम के साथ; विरिञ्चत्ते मुतल मेलोर्–विरंचि आदि स्वर्गवासी देव; तम्पियुम्–और कनिष्ठ भ्राता; अऴुतु चोर–रोते-मुरझाते थे, तब; काटु अमर्–जंगल में रहनेवाले; मरमुम् मावुम्–वृक्ष और जानवर; कऱ्कळुम्–पर्वत भी; करैन्तु चाय्न्त–द्रवीभूत होकर नीचे गिर गये; चेटरुम् पार् उळोरुम्–नागलोकवासी और पृथ्वीवासी लोगों ने; करम्–अपने हाथ; चिरम् चेर्त्तार्–सिर पर रख लिये। १०२०

जब जटायु को मोक्षप्राप्ति हुई, तब पुरुषोत्तम श्रीराम के साथ ब्रह्मादि देवता, श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता सब मुख खोलकर रोये। कानन में विद्यमान तरु और जानवर और पर्वत पिघलकर धराशायी हुए। नागलोकवासियों और भूलोकवासियों ने अपने सिर पर हाथ रख लिये और मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। १०२०

अऱन्दलै निन्ऱि लाद वरक्कनि ताण्मै तीर्न्देन्
तुऱन्दनॆन् ऱिवञ्जॆय् वेनो तुऱप्पनो वुयिरैच् चॊल्लाय्
पिऱन्दनॆन् पॆऱ्ऱु निन्ऱ पॆऱ्ऱियाऱ् पॆऱ्ऱ तादै
इऱन्दन निऱुन्दु ळेन्या नॆन्शॆय्हे निळव लॆन्ऱान् 1021

इळवल्–छोटे भैया; अऱम् तलै निन्ऱु इलात–धर्म पर स्थित न रहनेवाले; अरक्कनाल्–राक्षस के हाथों; आण्मै तीर्न्तेन्–मेरा पौरुष परास्त हो गया; पिऱन्ततॆन्–(दशरथ का) पुत्र पैदा हुआ; पॆऱ्ऱि निन्ऱ पॆऱ्ऱियाल्–मित्र-पुत्र को अपना

पुत्र मानने के जटायु के भाव के कारण; पॅट्र् तातै–पिता के स्थान-प्राप्त पिता; इऱन्ततत्–मर गये; इरुन्तु उळेन् यात्–रह गया मैं; तुऱन्ततॆन्–सभी त्यागकर; इत्ति तवम् चॅय्वेतो–आगे तपस्या करूँगा; उयिरै तुऱप्पॅतो–(या) प्राण त्याग दूँ; ऍन् चॅय्केन्–क्या करूँ; ऍन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। १०२१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि छोटे भैया! उस अधर्मी रावण के हाथों मेरे पौरुष को हीनता आ गयी। दशरथ के पुत्र के रूप में पैदा हुआ। वे चल बसे। बाद जटायु ने मुझे अपना पुत्र माना। वे पिता भी चल बसे। मैं अब रह गया। सबको त्यागकर संन्यासी बनूँ और तपस्या करूँ? या अपने प्राण ही त्याग दूँ? क्या करूँ?। १०२१

ऍन्ऱलु मिळैय कोवु मिऱैवनै यिऱैञ्जि याण्डुम्
वॅन्ऱियाय् विदियिन् ऱन्मै पऴुदिल विळैन्द दन्ऱो
नित्ऱिनि नितैव दॅन्ने नॅरुक्कियव् वरक्कर् तम्मैक्
कॊन्ऱपि नन्ऱो वॅय्य कॊडुन्दुयरक् कुळिप्प दॅन्ऱान् 1022

ऍन्ऱलुम्–कहने पर; इळैय कोवुम्–लघुराज ने; इऱैवनै इऱैञ्चि–भगवान से विनय के साथ; वॅन्ऱियाय्–विजयी; याण्टुम्–सदा; वितियिन् तन्मै–विधि का विधान; पऴुतु इल–अचूक; विळैन्ततु अन्ऱो–सफल होता है न; इति निन्ऱु–अब खड़ा होकर; नितैवतु ऍन्ने–सोचने को क्या है; अ अरक्कर् तम्मै–उन निशाचरों को; नॅरुक्कि–आक्रमण करके; कॊन्ऱ पिन् अन्ऱो–मारने के बाद तो; वॅय्य कॊट्टु तुयर्–सन्तापी कठोर दुःख में; कुळिप्पतु–मग्न रहना है; ऍन्ऱान्–कहा। १०२२

जब श्रीराम ऐसा कहते हुए क्लान्त हुए, तब लघुराज लक्ष्मण ने प्रभु को नमस्कार करके निवेदन किया। विजयी वीर! विधि का विधान अचूक है! सदा सफल होता है न? फिर चुप रहकर सोचने से क्या होगा? उन राक्षसों को हमला करके नाश करने के बाद ही न दुःख में मग्न रहने की बारी आयेगी!। १०२२

ऍन्दैयी दियम्बिऱ् ऱॆन्ने यॆळिमैयै याहि येऴैच्
चन्दवार् कुऴलि नाळैत् तुऱन्ददै तणिदि येनुम्
उन्दैयै युयिरुण् डोनै युयिरुण्णु मूऱ्ऱ मिल्लाच्
चिन्दैयै याहि निन्ऱु शॅय्वदॆन् शॅय्है यॆन्ऱान् 1023

ऍन्तै–मेरे पितृसम; ईतु इयम्पिऱ्ऱु ऍन्नै–यह कहा क्यों; ऍळिमैयै आकि–दीन की तरह; एऴै चन्त वार् कुऴलिताळै–कोमल और सुकेशिनी से; तुऱन्ततै–बिछुड़ गये; तणिति ऍनुम्–(उससे उत्पन्न क्रोध को) थाम लेंगे तो भी; उन्तैयै–आपके पिता (-समान जटायु) के; उयिर् उण्टोनै–प्राण हरनेवाले को; उयिर् उण्णुम् ऊऱ्ऱम् इल्ला–मारने के साहस से हीन; चिन्तैयै आकि निन्ऱु–मन के होकर; चॅय्वतु ऍन् चॅय्कै–जो करेंगे, वह क्या काम है; ऍन्ऱान्–कहा। १०२३

उन्होंने आगे यह भी कहा। मेरे पिता (-से भाई)! आप ऐसा

हीन वचन क्यों करते हैं ? हीन-दीन बनकर आपने अबला सुकेशिनी सीताजी से वियोग पाया है ! उसका दुःख शायद आप सह भी लें तो भी अपने पिता (सम) जटायु के घातक रावण को मारने के प्रयास से विरत मन को लेकर आप क्या करेंगे ? । १०२३

❀ अव्वऴि यिळवल् कूऱ वऱिवऩु मयर्वु नीङ्गि
इव्वऴि यिऩैय वॆण्णि नेऴैमैप् पाल दॆऩ्ऩा
वॆव्वऴि पॊऴियुङ् गण्णीर् विलक्किऩऩ् विऴिन्द तादै
शॆव्वऴि युरिमै यावुन् दिरुत्तुवञ् जिऱुव वॆन्ऱाऩ् 1024

इळवल्–कनिष्ठ के; अ वऴि कूऱ–वैसा कहने पर; अऱिवऩुम्–सर्वज्ञ भी; इ वऴि–अब; इऩैय ॲण्णिऩ्–इस तरह सोचता रहूँ तो; एऴैमै पालतु–(बुद्धि-) हीनता होगी; ॲऩ्ऩा–विचारकर; अयर्वु नीङ्कि–थकावट त्यागकर; वॆम् वऴि–क्लेश के कारण; पॊऴियुम् कण्णीर्–बहनेवाले आँसू को; विलक्किऩऩ्–रोक लिया; चिऱुव–छोटे भैया; विऴिन्त तातै–मृत पिता का; उरिमै यावुम्–कर्तव्य सब दाह-कर्म; चॆम् वऴि–उचित रीति से; तिरुत्तुवम्–पूर्ण रूप से करेंगे; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा । १०२४

जब छोटे भाई ने यह बात कही, तो सर्वज्ञ श्रीराम ने यह सोचा । हाँ ! अब इस भाँति सोचता रहना बुद्धिहीनता होगा । इसलिए वे सँभले । दुःखदायी घटनाओं के कारण जो आँसू आ रहे थे, उनको भी उन्होंने रोक लिया । फिर भाई से कहा कि छोटे भैया ! पिता का दाह-कर्म यथाविधि सुसम्पन्न करें । १०२४

इऩ्दऩ माह वॆण्डुङ् गारहि लीट्टत् तोडुम्
शन्दनङ् गुवित्तु वॆण्डु तरुप्पैयुन् दिरुत्तिप् पूवुम्
शिन्दिऩ ऩरणि तऩ्ऩाऱ् तीक्कडैन् दियऱ्ऱित् तॆण्णीर्
तऩ्दऩऩ् ऱादै तऩ्ऩैत् तडक्कैयि नॆडुत्तुच् चार्वाऩ् 1025

इऩ्तऩम् आक वेण्टुम्–इंधन बनने योग्य; कार् अकिल् ईट्टत्तु ओटुम्–काले अगरु के काष्ठों की राशि के साथ; चन्तनम् कुवित्तु–चन्दन-काष्ठ सजाकर; वेण्टु तरुप्पैयुम्–आवश्यक कुश; तिरुत्ति–बना लेकर; पूवुम् चिन्तिऩऩ्–फूल भी बिछाकर; अरणि तऩ्ऩाल्–अरणी से; ती कटैन्तु इयऱ्ऱि–मथकर अग्नि उत्पन्न करके; तॆळ् नीर् तऩ्तऩऩ्–स्वच्छ जल से स्नान कराके; तातै तऩ्ऩै–पिता के शरीर को; तट कैयाल् ॲटुत्तु–विशाल हाथों से उठा लेकर; चार्वाऩ्–(चिता के पास) आये । १०२५

ईंधन के रूप में काली अगरु की लकड़ियाँ और चन्दन की लकड़ियाँ रखकर चिता बनायी गयी । दर्भ बिछाये गये । फूल भी छिड़काये गये । अरणि मथकर आग जलायी गयी । फिर स्वच्छ जल से जटायु के शरीर को नहलाया गया । श्रीराम जटायु को अपने हाथों से उठा ले गये । १०२५

एन्दिन निरुहै तन्ना लेऱ्ऱिन नीमन् दन्मेल्
शान्दोडु मलरु नीरुज् जोरिन्दनन् ऱलैयिर् चारक्
कान्दॅरि कज़ल मूट्टिक् कडन्मुऱ् कडवा वण्णम्
नेऱ्न्दन निरम्बु नन्नून् मन्दिर नॅऱियिन् वल्लान् 1026

निरम्पु नल् नूल्–समस्त श्रेष्ठ शास्त्रों में; मन्तिर नॅऱियिल्–कथित मन्त्रों के प्रयोग में; वल्लान्–समर्थ श्रीराम ने; इरु कै तन्ताल्–अपने दोनों हाथों में; एन्तितन्–धारण करके; ईमम् तन् मेल् एऱ्ऱितन्–चिता पर चढ़ाया; चान्तु ओटु मलरुम् नीरुम्–चन्दन के साथ फूल और जल; चॊरिन्ततन्–छिड़के; तलैयिल् चार–सिरहाने पर; कान्तु ऍरि–जलती आग को; कज़ल मूट्टि–खूब जले, ऐसा लगाकर; कटन् मुऱै–कर्म-क्रम; कटवा वण्णम्–न छूटे, इस प्रकार; नेर्न्ततन्–संस्कार किये। १०२६

श्रीराम स्वयं समस्त शास्त्रज्ञ थे। उन्होंने अपने दोनों हाथों में जटायु को धारणकर चिता पर रखा। चन्दन, फूल और जल छिड़के। सिरहाने में आग लगायी। उन्होंने सारा पितृसंस्कार यथाविधि सम्पन्न किया। १०२६

तळित्तन दनैय मेनि तामरै कॊळ्ळुमु शॅन्देन्
तुळित्तन वनैय वॅन्नत् तुळ्ळिशोर् वॅळ्ळक् कण्णन्
कुळित्तनन् कान याऱ्ऱिऱ् कुळित्तपिन् कॊण्ड नन्नीर्
अळित्तन नरक्कर् चॅऱ्ऱ शोऱ्ऱत्ता नवलन् दीर्प्पान् 1027

तळि ततनु अनैय मेनि–मेघ-सम शरीर; तामरै कॊळ्ळुमु–कमल पर शोभित; चॅम् तेन्–लाल शहद; तुळित्तन अनैय ऍन्न–की बूँदें पड़ी हों, ऐसा; तुळ्ळि चेर्–अश्रुकणों से युक्त; वॅळ्ळ कण्णन्–प्रवाहमय आँखों के श्रीराम; कान याऱ्ऱिल्–जंगली नदी में; कुळित्तनन्–नहाये; कुळित्त पिन्–नहाने के बाद; अरक्कन् चॅऱ्ऱ चीऱ्ऱत्तान्–राक्षस द्वारा हारने से उत्पन्न क्रोध से आक्रान्त जटायु का; अवलम् तीर्प्पान्–दुःख दूर करने के लिए; कॊण्ट–(जल) ले आकर; नल् नीर्–श्रेष्ठ उदक-दान; अळित्तनन्–किया। १०२७

मेघवर्ण श्रीराम की कमल-सी आँखों से शहद की बूंदों के समान अश्रुजल प्रवहित हो रहा था। वे जाकर जंगली नदी में नहाये। जटायु के मन में रावण के हाथों हारने पर क्रोध रहा था। उसको शान्त करने के हेतु श्रीराम ने पवित्र जल ले आकर उदकक्रिया की। १०२७

मोट्टिनि युरैप्प दॅन्ने विरिज्जने मुदल मेलुळोर्
काट्टिय वुयिरुह ळॅल्ला मरुन्दिन कळित्त पोलाम्
पूट्टिय कैह ळालप् पुळ्ळिनुक् करशैक् कॊळ्हॅन्
ऱूट्टिय नन्नी रैय नुण्डनो रॊत्त दन्ऱे 1028

पूट्टिय कैकळाल्–(अंजलि मुद्रा में) बने हाथों से; अ पुळ्ळितुक्कु अरचै–उस खगराज को; कॊळ्कॅन्ऱु–ग्रहण कीजिए, कहकर; ऊट्टिय नल् नीर्–जो उदक दान

किया गया, वह पवित्र जल; ऐयत् उण्ट नीर् ओतुततु–भगवान श्रीराम के पीत जल के समान हो गया; विरिञ्चत्ते मुतल–ब्रह्मा आदि; मेल् कीऴ् काट्टिय–ऊपर और नीचे के भुवनों में रहनेवाले; उयिर्कळ् ॲल्लाम्–सभी जीवों ने; अरुन्तित–पीकर; कळित्त–आनन्दानुभव किया; मीट्टु–फिर; इति उरैप्पतु ॲन्ने–कहना क्या है। १०२८

जब उन्होंने अपने अंजलि-सम्पुट से जटायु को जलदान किया, तब मानो वह उनके ही उदर में पहुँच गया। उसके फलस्वरूप ब्रह्मा से लेकर ऊपर और नीचे के सभी लोकों के जीवों ने जल का अशन कर आनन्दानुभव किया! फिर कहने को क्या है? । १०२८

पल्वहैत् तुऱैयिल् वेदप् पलिक्कडन् पलवु मुट्रि
विल्वहैक् कुमर नित्ऱ वेलैयित् वेलै शार्न्दान्
तॊल्वहैक् कुलत्तिन् वन्दान् ऱुन्बत्ताऱ् पुनलुन् दोय्न्दु
शॆल्वहैक् कुरिय वॆल्लाञ् जॆय्हुवा नॆन्न वॆय्योन् 1029

पल् वकैयिल्–(शास्त्र-विहित) विविध प्रकार से; वेत–वेदोक्त विधि के अनुसार; पलि कटन् पलवुम्–बलि आदि अनेक दान; मुट्रि–पूरा करके; विल् वकै कुमरन्–धनुर्धर कुमार; निन्ऱ वेलैयित्–जब रहे, तब; वॆय्योन्–सूर्य; तॊल् वकै कुलत्तिन् वन्तान्–प्राचीन (काश्यप-)कुल में आये; तुन्पत्ताल्–(जटायु की मृत्यु से) उत्पन्न दुःख से; पुनलुम् तोयन्तु–जल में स्नान करके; चॆल् वकैक्कु उरिय–गम्य श्रेष्ठ गति में पहुँचाने योग्य; ॲल्लाम्–सभी (तर्पण) संस्कार; चॆय्कुवान् ॲन्न–मानो स्वयं करेंगे, ऐसा; वेलै चार्न्तान्–(पश्चिमी) सागर में मग्न हुए। १०२९

धनुर्धर श्रीराम अनेक रूप से शास्त्रों में विहित वेदसम्मत बलिदान आदि संस्कार पूरा किया। जब वे उनसे निवृत्त हुए, तब सूर्य भी पश्चिमी सागर में डूब गये। शायद वे भी प्राचीन काश्यपकुल में आये जटायु को उद्गति में पहुँचाने के लिए पितृकर्म करने के हेतु गये। सूर्य जटायु के ज्ञाति थे। १०२९

10. अयोमुहिप् पडलम् (अयोमुखी पटल)

अन्दिवन् दणुहुम् वेलै यव्वऴि यवरु नीङ्गिच्
चिन्दुरच् चॆन्नित् ताण्डोर् मैवरैच् चेक्कै कॊण्डार्
इन्दिरऱ् कडङ्गल् शॆल्ला विराक्कद रॆऴुन्द वॆन्न
वॆन्दुयरक् कूरऱ मान विरियिरुळ् वीङ्गिऱ् ऱन्ऱे 1030

अन्ति वन्तु अणुकुम् वेलै–जब सन्ध्यावेला आयी, तब; अवरुम्–वे भी; अ वऴि नीङ्कि–वहाँ से चलकर; आण्टु–उस वन में; चिन्तुर चॆन्नित्तु–लाल शिखरों से युक्त; ओर् मै वरै–एक काले पर्वत पर; चेक्कै कॊण्टार्–ठहरे; इन्तिरऱ्कु अटङ्कल् चॆल्ला–इन्द्र के वश में न आनेवाले; इराक्कतर् ॲऴुन्तनु ॲन्न–राक्षस

उठे हों, ऐसा; वॆम् तुयरुक्कु–असह्य (विरह-)वेदना का; ऊऱ्ऱम् आन–बलदायक; विरि इरुळ्–विस्तृत अन्धकार; वीङ्किऱ्ऱु–घना हो आया। १०३०

शाम आ गयी। श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ से चलकर एक अरुण-शिखर काले पर्वत पर जाकर ठहरे। तब अन्धकार, देवेन्द्र का वश तोड़कर चले आनेवाले राक्षसों के समूह के समान घना फैला। १०३०

तेऩुह वरुवि शिऩ्दित् तॆरुमर लुरुव पोलक्
कातमु मलैयु मॆल्लाङ् गण्णित्ती रुहुक्कुङ् गङ्गुल्
मानमुञ् जिऩमुन् दादै मरणमुममैन्द शिन्दै
ञानमुन् दुयरुन् दम्मुण् मलैन्दॆन नलिन्द दन्ऱे 1031

कातमुम् मलैयुम् ॲल्लाम्–वन, पर्वत, सभी; तॆरुमरल् उरुव पोल–दुःखी होते हों जैसे; उकु तेन्–जो चूते उस शहद (कणों)को; अरुवि–(और) सरिताओं को; चिन्ति–बहाकर; कण्णिन् नीर् उकुक्कुम्–अश्रुजल बहानेवाला; कङ्कुल–अन्धकार; मानमुम्–स्वाभिमान; चिनमुम्–और क्रोध; तातै मरणमुम्–पिता (-सम जटायु का) मरण-दुःख; अमैन्त चिन्तै–इनसे भरे (श्रीराम और लक्ष्मण के) मन में; ञानमुम् तुयरुम्–ज्ञान और दुःख; तम्मुळ् मलैन्तु ॲन–आपस में टकराते हों, जैसे; नलिन्ततु–(अन्धकार ने) बढ़ती पायी। १०३१

श्रीराम और लक्ष्मण की व्यथा देखकर मानो वन और पर्वत दुःखी हुए। वन शहद रूपी आँसू बरसा रहे थे और पर्वत सरिताओं के रूप में अश्रु की धारा बहा रहे थे। अन्धकार ऐसा आक्रान्त करता हुआ बढ़ा, जैसा स्वाभिमान, क्रोध और पितृ-मरण-दुःख से भरे श्रीराम और लक्ष्मण के मन में ज्ञान और दुःख दोनों में परस्पर टकराहट हुई थी और दुःख प्रबल हो आया था। १०३१

मॆय्युऱ् वुणर्वु शॆल्ला वऱिवितै वितैयि ऩक्कुम्
पॊय्युऱु पिऱवि पोलप् पोक्करुम् बॊङ्गु कङ्गुल्
नॆय्युऱु नॆरुप्पिन् वीङ्गि निमिर्तर वुयिर्प्पु नीळक्
कैयुऱ् वुऱुहिन् ऱाराऱ् काणलाङ् गरैयिऱ् ऱन्ऱे 1032

मॆय् उणर्वु उऱ चॆल्ला–सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित; अऱिवितै–बुद्धि को; वितैयिन् ऊक्कुम्–कर्मफलानुसार चलानेवाले; पॊय् उऱु पिऱवि पोल–अनित्य जन्म की तरह; पोक्कु अरुम्–अनिवार्य; पॊङ्कु कङ्कुल्–वर्धनशील अन्धकार; नॆय् उऱु नॆरुप्पिन् वीङ्कि–घृत-लगी अग्नि के समान बढ़कर; निमिर् तर–फैला तब; उयिर्प्पु नीळ–लम्बी साँस छोड़कर; कैयुऱ्वु–निष्क्रिय; उऱुकिन्ऱाराल्–बने रहे तब; काणलाम् करैयिऱ्ऱु–अवश्य किनारा वाला हो गया। १०३२

सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित बुद्धि को जैसे अनित्य जन्म कर्मफल के रास्ते में हठात् चलाता है, वैसे वह दुर्दम वर्धनशील निशा घृतपीत अग्नि के

समान बढ़ती चली और निःश्वास छोड़ते हुए जो दुःखी हो रहे थे उन दोनों के लिए उसका तट (अन्त) अदृश्य हो रहा। १०३२

यामदु तॅरिद ऱेड्ऱा मिऩ्ऩुयिर्च् चऩहि यॅऩ्ऩुम्
कामरु तिरुवै नीत्तो मुहमदि काण्गि लादो
तेमरु तॅरियल् वीरऩ् कण्णॅऩत् तॅरिन्द शॅय्य
तामरै कङ्गुर् पोदुङ् गुविन्दिल तऩ्मै यॅऩ्ऩो 1033

ते मरु–दिव्य गन्ध वाली; तॅरियल् वीरऩ्–मालाधारी वीर; कण् ॲऩ तॅरिन्त–के नेत्र के समान विद्यमान; चॅय्य तामरै–लाल कमलपुष्प; कङ्कुल् पोतुम्–रात में भी; कुविन्तिल–बन्द नहीं हुए; इऩ् उयिर्–मधुर प्राण-सम; चऩकि ॲऩ्ऩुम्–जानकी नाम की; कामरु तिरुवै–अपनी सुन्दर श्री को; नीत्तो–त्यागकर; मुक मति–मुख-चन्द्र; काण्किलातो–न देखकर; ॲऩ्ऩो–और किस कारण; याम् अतु–हम वह; तॅरितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सकते। १०३३

दिव्यगन्धपूर्ण मालाधारी श्रीराम के नेत्रों के समान जो लाल कमल-पुष्प रहे, वे उन्मीलित नहीं हुए। रात का समय था तब भी वे बन्द नहीं हुए। क्या कारण था ? उनकी श्री उनसे अलग हो गयी, इसलिए ? या उनका मुख चन्द्र नहीं दिखाई दिया, इसलिए ? या कोई अन्य कारण था ? हमें विदित नहीं होता ! । १०३३

पॅण्णियर् ड्रीब मऩ्ऩ पेरॅळि लाट्टि माट्टु
नण्णिय पिरिवु शॅय्द नवैयिऩा रवर्हळ् शिन्दै
ॲण्णिय दड्रिद ऱेड्ऱा मिमैप्पिल विराम ऩॅऩ्ऩुम्
पुण्णियऩ् कण्णुम् वऩ्ऱोट् टम्बिहण् पोऩ्ऱ वऩ्ऱे 1034

पॅण् इयल्–स्त्री जाती की; तीपम् अऩ्ऩ–दीप के समान; पेर् ॲळिलाट्टि माट्टु–अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति; नण्णिय–किया गया; पिरिवु–वियोग; चॅय्त–जिन्होंने करवाया; नवैयिऩार् अवर्कळ्–उन पापियों ने; चिन्तै ॲण्णियतु–मन में (क्या) सोचा, वह; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं पाते हम; इरामऩ्–श्रीराम; ॲऩ्ऩुम् पुण्णियऩ् कण्णुम्–पुण्यपुरुष की आँखें; वऩ तोळ्–बली भुजाओं के; तम्पि कण् पोऩ्ऱतु–छोटे भाई की आँखों की-सी (हालत में) रहीं। १०३४

पापी राक्षसों ने स्त्री-स्वरूप दीप-सी अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति श्रीराम-वियोग का बहुत बड़ा अपराध किया था। वे लोग क्या सोचते रहे ? यह जानने का सामर्थ्य हममें नहीं है। पर पुण्यपुरुष श्रीराम की आँखें और वीरबाहु लक्ष्मण की आँखें —ये निर्निमेष रहीं। १०३४

वण्डुळर् कोदैच् चीदै वाण्मुहम् बॉलिय वाऩिल्
कण्डऩॆ ऩॆऩ्ऩु वीरर् काण्डोरु कावल् काट्टत्

तण्डमिऴ्त् तॆऩ्ऱ् लॆऩ्ऩुङ् गोळरात् तवऴुञ् जारल्
विण्डलम् विळङ्गुञ् जॆव्वि वॆण्मदि विरिन्द दऩ्ऱे 1035

वण्टु उळर्–भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; कोतै चीतै–वैसी केश वाली सीता का; वाळ् मुकम्–प्रकाशमय मुख; वाऩिल् पॊलिय–आकाश में शोभा; कण्टलॆऩ् ॲऩ्ऩ–मैंने देखा, ऐसा; वीरऩ्कु–श्रीरघुवीर को; आण्टु–तब; ओरु कातल् काट्ट–एक (मोहक भ्रम) पैदा करते हुए; तण् तमिऴ् तॆऩ्ऱल् ॲऩ्ऩुम्–शीतल मधुर मलयपवन रूपी; कोळ् अरा–भयंकर सर्प; तवऴुम् चारल्–जहाँ मन्द-मन्द चलता था, उस पर्वत तल में; विण् तलम् विळङ्कुम्–आकाश में शोभायमान; चॆव्वि–आकर्षक; वॆण् मति–श्वेत चन्द्रमा; विरिन्ततु–चाँदनी फैलाता हुआ निकला। १०३५

तब चन्द्र उदित हो आया, मानो वह वीर रघुवर श्रीराम के मन में यह मोहक प्यारा भ्रम पैदा करना चाहता था कि मैंने आकाश में सुकेशिनी सीता का मुख देखा था, जिसके केश पर भ्रमर बैठे कुरेदते हैं। जिस पर्वत के ऊपर यह चन्द्र दिखाई दिया, उस पर्वत-तल में शीतल मधुर (तमिऴ का अर्थ मधुर है) मलयपवन भी मन्द-मन्द बहा। पर वह श्रीराम के लिए भयंकर सर्प के समान रेंगता लगा! । १०३५

कळियुडै यऩङ्गक् कळ्वऩ् करन्दुरै कङ्गुऱ् कालम्
वॆळिपडुत् तुलह मॆल्लाम् विळक्किय निलविऩ् वॆळ्ळम्
नळियिरुट् पिळम्बॆऩ् ऱीण्डु नञ्जॊडु कलन्द नाहत्
तुळैयॆयिऱ् ऱूऱ्ऱ लुऱ्ऱ कऩलॆऩच् चुट्ट दऩ्ऱे 1036

कळि उटै–मत्त; अऩङ्क कळ्वऩ्–चोर अनंग; करन्तु उरै–जब छिपा रहता है; कङ्कुल् कालम्–उस रात के समय में; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोक को; वॆळिप्पटुत्तु विळक्किय–श्वेत प्रकट करनेवाला; निलविऩ् वॆळ्ळम्–चाँदनी का प्रवाह; ईण्टु–अब; नति इरुळ् पिळम्पु ॲऩ्ऱु–अधिक अन्धकार के पुंज के समान मान्य; नञ्चु ऒटु कलन्त–विष से मिला; नाक–सर्प के; तुळै ॲयिऱ्ऱु–छिद्रसहित दाँत से; ऊऱ्ऱल् उऱ्ऱ–रिसनेवाले; कऩल् ॲऩ–(विष की) आग के समान; चुट्टतु–जलाने लगा। १०३६

उस रात को, जिसमें मत्त चोर अनंग छिपा फिरता था, चन्द्र सारे जग को उज्ज्वल करता हुआ उदित हुआ। पर वह उस विषाग्नि के समान जलाने लगा, जो अन्धकारपुंज के समान काला और विषैले नाग के दाँत के छिद्र से बाहर निकला था। १०३६

इडम्बडु माऩऩ् ऱुऩ्ब मिरण्डुम् वन्दुऱ्ऱ पोऴ्दिल्
विडम्बरऩ् दऩैय दाय वॆण्णिला वॆदुप्प वीरऩ्
पडम्बरऩ् दऩैय वल्हुऱ् पाल्परऩ् दऩैय तोञ्जोल्
तडम्बड कण्णि नाडऩ् ऱऩिमैयै निऩैय लुऱ्ऱाऩ् 1037

इटम् पटु–विशाल; मातम्–अपमान; तुन्पम्–दुःख; इरण्टुम्–दोनों; वन्तु उऱ्ऱ पोऴ्तिन्–जब प्राप्त हुए, तब; विटम् परन्तु अतैय–विष फैला जैसे; वॆळ् निला वॆतुप्प–श्वेत चन्द्रमा ने तप्त किया तो; वीरन्–श्रीरघुवीर; पटम् परन्तु अतैय–(सर्प-) फन खुला (जो है) वैसा; अल्कुल–वरांग; पाल् परन्त अतैय–दूध-भरा हो वैसी; तीम् चॊल्–मधुर बोली; तटम् पटु कण्णिताळ्–विशाल आँखें, इनसे युक्त सीताजी का; तत्तिमैयै–एकाकीपन को; नित्तैयल् उऱ्ऱान्–सोचने लगे। १०३७

श्रीराम को अपमान और दुःख का अनुभव सताने लगा। इसलिए श्वेत चन्द्रमा, शरीर में विष व्याप्त हो ऐसा उन्हें तपाने लगा। तब वे श्रीरघुवीर सर्पफन के समान विशाल वरांग, दुग्धसम मधुर बोली और विशाल आँखें —इनसे शोभित सीताजी के एकाकीपन के बारे में सोचने लगे। १०३७

मडित्त वायन् वयङ्गु मुयिर्प्पिनन्
तुडित्तु वीङ्गि यॊडुङ्गुरु तोळिनन्
पॊडित्त तण्डळिर्प् पूवॊडु माल्करि
ऒडित्त कॊम्बनै याडिऱ्ऱ् तुन्नुवान् 1038

मटित्त वायन्–ओंठ चबाते हुए; वयङ्कुम् उयिर्प्पित्तत–ठण्डी आह भरते हुए; तुटित्तु वीङ्कि–तड़पकर, फूलकर; ऒटुङ्कुरु तोळिनन्–फिर शिथिल पड़नेवाले कन्धों से युक्त श्रीराम; पॊटित्त तण् तळिर्–तभी प्रकट हुए शीतल पल्लवों; पूवोटुम्–और फूलों के साथ; माल् करि–बड़े हाथी द्वारा; ऒटित्त–तोड़ी गयी; कॊम्पु अतैयाळ्–पुष्पशाखा-तुल्य; तिऱत्तु–(सीताजी) के सम्बन्ध में; उन्तुवान्–सोचने लगे। १०३८

वे ओंठ चबाते हुए दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगे। उनके कन्धे फूल उठते फिर पतले हो जाते। वे उन सीताजी के सम्बन्ध में सोचने लगे, जो सद्यप्रकटित कोमल पल्लवों और फूलों के साथ किसी गज द्वारा तोड़ी गयी पुष्पशाखा के समान थीं। १०३८

वाङ्गु विल्लन् वरुम्वरु मॆन्ऱिरु
पाङ्गु नीणॆऱि पार्त्तन ळॊवॆन्नुम्
वीङ्गु वेलै विरितिरै यामॆन
ओङ्गि योङ्गि यॊडुङ्गु मुयिर्प्पिनान् 1039

वीङ्कु वेलै–उमगते हुए समुद्र की; विरि तिरै आम् ऎत–बढ़ती हुई तरंगों के समान; ओङ्कि ओङ्कि ऒटुङ्कुम् उयिर्प्पितान्–फूलकर थमनेवाली साँसों के साथ; वाङ्कु विल्लन्–झुके धनुष के साथ; वरुम् वरुम्–आयेंगे, आयेंगे; ऎन्ऱु–सोचकर; इरु पाङ्कुम्–दोनों ओर; नीळ् नॆऱि पार्त्ततळो–लम्बी बाट जोहती रही क्या; ऎन्तुम्–श्रीराम यह कहते। १०३९

श्रीराम की साँसें उमगते सागर की उठती लहरों के समान उठतीं

और गिरतीं। वे सोचते कि शायद सीता यह सोचकर कि झुके धनुष के साथ श्रीराम आ जायँगे, अवश्य आ जायँगे दोनों ओर लम्बा बाट जोह रही हों। १०३९

ॲन्ऩि	तॆन्दऩ	ळॆऩ्बदु	शालुमो
मिऩ्ऩि	तॆन्द	विलङ्गु	मॆयिऱ्ऱिऩाऩ्
निऩ्ऩि	ऩॆऩ्ऱु	नॆरुक्किय	पोदवळ्
ॲन्ऩि	तॆन्दऩ	ळोवॆऩ	वॆण्णुमाल् 1040

मिन्नु नितॆन्नत–विद्युत का स्मरण दिलानेवाले; विलङ्कुम् ॲयिऱ्ऱिताऩ्–शोभायमान दाँत वाले; निल् निल् ॲन्ऱु–खड़ा रह, खड़ा रह कहते हुए; नॆरुङ्किय पोतु–(रावण) जब नियराया तब; अवळ्–(सीता) उसने; ॲन् नितॆन्नतऩळो–क्या सोचा होगा; ॲन्पतु चालुमो–यह समझना साध्य है क्या; ॲन् नितॆन्नतऩळ् ओ–क्या सोचकर चिन्तित हुई; ॲऩ ॲण्णुम्–ऐसा विचार करते (श्रीराम)। १०४०

विद्युत का स्मरण दिलानेवाले दाँतों से युक्त रावण, 'ठहर जा, खड़ी रह' कहता हुआ जब सीता के पास आया, तब सीताजी ने क्या सोचा होगा? श्रीराम यह समझने का प्रयास करते। नहीं। यह अनुमान करना साध्य नहीं है! बेचारी! क्या ही सोचा होगा? यह प्रश्न करते हुए श्रीराम दुःख का अनुभव करते। १०४०

नञ्जु	कालु	नहैनॆडु	नाहत्तिऩ्
वञ्ज	वायिऩ्	मदियॆऩ	मट्कुवाळ्
वॆञ्जि	नञ्जॆ	यरक्करत्तम्	वॆम्मैयै
अञ्जि	नाऩ्गॊलॆऩ्	ऱैयुऱु	मालॆऩ्बाऩ् 1041

नञ्चु कालुम्–विष-स्रावक; नकै नॆटु नाकत्तिऩ्–दाँतों वाले (राहु नाम के) लम्बे सर्प के; वञ्च वायिऩ्–भयंकर मुख में (ग्रस्त); मति ॲऩ–चन्द्र के समान; मट्कुवाळ्–क्षीण होनेवाली सीता; वॆम् चिऩम् चॆय्–भयंकर क्रोधकारी; अरक्कर् तम् वॆम्मैयै–राक्षसों के क्रोध से; अञ्चिऩाऩ् कॊल्–श्रीराम डर गये शायद; ॲऩ्ऱु ऐयुऱुम् आल्–ऐसा संशय करती होगी; ॲऩ्पाऩ्–ऐसा (श्रीराम) सोचते। १०४१

फिर सोचते— विष-स्रावक दाँतों के (राहु) सर्प के मुख में ग्रस्त चन्द्र के समान सीता क्षीण होती होगी। वह शायद ऐसा संशय करती है कि भयंकर क्रोधी राक्षसों की क्रूरता से श्रीराम भयभीत हो गये हैं। १०४१

पूण्ड	मानमुम्	बोक्करुङ्	गादलुम्
तूण्ड	निऩ्ऱिडै	तोमुरु	मारुयिर्
मीण्डु	मीण्डु	वॆदुप्प	वॆदुम्बिऩाऩ्
वेण्डु	मोवॆऩक्	किऩ्ऩमुम्	विल्लॆऩ्बाऩ् 1042

पूण्ट मानमुम्–प्राप्त अपमान; पोक्कु अरुम् कातलुम्–और अचल (सीता-)

प्रेम (से); तूण्ट निऩ्ऱु-प्रेरित होकर; इटै-मध्य में; तोम् उऴम्-कष्ट उठानेवाले; आर् उयिर्-अपने प्रिय प्राणों को; मीण्टुम् मीण्टुम्-पुनःपुनः; वेंतुप्प-तापने से; वेंतुम्पिऩाऩ्-संतप्त श्रीराम; इऩ्ऩमुम्-अब भी; ॲऩक्कु-मुझे; विल् वेण्टुमो-धनु चाहिए क्या; ॲऩ्पाऩ्-कहते। १०४२

उनके प्राण टिके रहे तो उसका कारण अपमान का भाव और अचल (सीता-) प्रेम की प्रेरणा था। तो भी वे प्राण पुनःपुनः तप्त हो रहे थे। इसलिए वे खिन्नमन होकर यह अपने से पूछते कि क्या मुझे अब भी एक धनु रखना है ? । १०४२

विल्लै नोक्कि नहुमिह वीङ्गुतोळ्
कल्लै नोक्कि नहुङ्गडैक् काल्वरुम्
शॊल्लै नोक्कित् तुणुक्कुरुन् दॊन्मऱै
ॲल्लै नोक्किनर् यावरु नोक्कुवान् 1043

तॊल् मऱै ॲल्लै-नोक्किनर्-प्राचीन वेदों के पारंगत; यावरुम्-सभी (ज्ञानियों) द्वारा; नोक्कुवाऩ्-वन्द्य; विल्लै नोक्कि नकुम्-धनु को देखकर हँसते; मिक वीङ्कुम्-अति पुष्ट; तोळ् कल्लै नोक्कि-कन्धों के पर्वतों को देखकर; नकुम्-हँसते; कटै काल् वरुम्-अन्त में मिलनेवाला; चॊल्लै नोक्कि-निन्दा का कथन सोचकर; तुणुक्कु ॲऩुम्-सिहर उठते। १०४३

श्रीराम सनातन वेदों के पारंगत ज्ञानियों से भी अन्वेषित परमपुरुष थे। वे अपने धनु को देख (उसकी व्यर्थता पर) हँसते। अपने उन्नत पर्वत-सम कन्धों को देखकर हँसते। आखिर जो अपमान होगा, उसकी कल्पना करके सिहर उठते। १०४३

कूदिर् वाडैवॆङ् गूऱ्ऱिऩै नोक्किऩाऩ्, वेद वेळ्वि विदिमुऱै मेविय
शीदै यॆऩ्ऩैविट्टुत् तीर्न्ददऩ ळोवॆऩुम्, पोद हम्मॆऩप् पॊम्मॆऩ वुयिर्प्पिऩाऩ् 1044

कूतिर् वाटै वॆम् कूऱ्ऱिऩै-शरद की उदीची हवा रूपी निर्मम यम को; नोक्किऩाऩ्-देखकर; पोतकम् ॲऩ-गज के समान; पॊम् ॲऩ उयिर्प्पिऩाऩ्-'बम्ह' शब्द के साथ निःश्वास छोड़ते हुए; वेत वेळ्वि विति मुऱै-वेदोक्त होम आदि करके; मेविय-विवाहित; चीतै-सीता; ॲऩ्ऩै विट्टु-मुझसे; तीर्न्ततळो-(सदा के लिए) छूट गई क्या; ॲऩुम्-कहते। १०४४

शरदकालीन ठण्डी उदीची के समान बहनेवाली वायु रूपी यम को देखकर गज के समान श्रीराम ने 'बम्ह' शब्द के साथ निःश्वास छोड़ा। फिर सोचा कि क्या वेदविहित होम आदि करके जिस सीता को मैंने ब्याहा था, वह मुझे छोड़कर सदा के लिए चली (मर) गयी ? । १०४४

निऩ्ऱु पल्लुयिर् काऩ्ऱऱ्कु नेर्न्दयाऩ्, ॲऩ्ऱु णक्कुल मङ्गैयै येऩ्ऱिळै
तऩ्ऱु यर्क्कड ऱीर्क्कुञ् जदिरिलेऩ्, ऩऩ्ऱु नऩ्ऱॆऩ् वलियॆऩ नाणुमाल् 1045

निन्ऱु–राजा रहकर; पल् उयिर् कात्तऱ्कु–नाना जीवों की रक्षा करने हेतु; नेर्न्त यान्–नियत मैं; ऍन् तुणै–अपनी संगिनी; कुल मङ्कै–उच्च कुलीन; ओर एन्तिळै तन्–एक रमणी को; तुयर् कटल् तीर्क्कुम्–दुःख-सागर से तारने की; चत्तिर् इलेन्–शक्ति नहीं रखता; ऍन् वलि नन्ऱु–मेरा बल बड़ा अच्छा है; नन्ऱु ऍन–अच्छा है, कहकर; नाणुम्–शरमाते। १०४५

मैं राजा बनने को हूँ और राजा का काम है अनेक जीवों की रक्षा करना। किन्तु मैं अपनी ही संगिनी को, उच्च कुलोद्भवा सुन्दरी स्त्री को दुःख-सागर से तारने में असमर्थ साबित हो गया। हाँ! मेरी शक्ति का भी क्या कहना? मेरा बल बड़ा अच्छा, अच्छा है! यह कहते हुए श्रीराम लज्जा प्रकट करते। १०४५

शायुन् दम्बि तिरुत्तिय तण्डळिर्, तीयु मङ्गवै तीय्दलुञ् जॅव्विरुन्
दायु मावि पुळुङ्ग वळुङ्गुमाल्, वायुम् नॅञ्जुम् बुलर मयङ्गुवान् 1046

वायुम् नॅञ्चुम्–मुख और गला; पुलर–सूख जाते; मयङ्कुवान्–वे बेहोश हो जाते; तम्पि तिरुत्तिय–अनुज के द्वारा अच्छी तरह सजाए गये; तण् तळिर्–शीतल पल्लवों पर; चायुम्–लेटते; अङ्कु अवै तीयुम्–वे तब झुलस जाते; तीय्तलुम्–झुलसते ही; चॅम् इरुन्तु–सीधे बैठे; आयुम्–मन में तर्क करते; आवि पुळुङ्क–प्राणतप्त होकर; अळुङ्कुम्–जर्जर हो जाते। १०४६

श्रीराम का मुख सूख गया। गला सूख गया। लक्ष्मण ने शीतल पल्लवों को बिछाकर अच्छी शय्या बना दी थी। श्रीराम बेहोश-से होकर उस पर लेटते। पर पल्लवों के झुलस जाने से वे उठ बैठते। बैठे हुए मन में तर्क करते। प्राणों के सूखने से शिथिल पड़ जाते। १०४६

पिरिन्द वेदुहॉल् पेरबि मानङ्गॉल्
तॅरिन्द दिल्लै तिरुमलर्क् कण्णिमै
पॉरुन्द वायिरङ् गऱ्पङ्गळ् पोक्कुवान्
इरुन्दुङ् गण्डिलन् कङ्गुलि नीऱरो 1047

तिरु मलर् कण् इमै–सुन्दर कमल-सम आँख के पलकों के; पॉरुन्त–लगने की उतनी देर में; आयिरम् कऱ्पङ्कळ् पोक्कुवान्–सहस्र कल्प जो मिटा सकते हैं; इरुन्तु–(वे) बैठे रहकर; कङ्कुलिन् ईऱु–रात का अन्त; कण्टिलन्–देख नहीं पाये; पिरिन्त एतु कॉल्–वियोग उसका कारण था क्या; पेर् अपिमानम् कॉल्–गम्भीर प्रेम क्या; तॅरिन्ततु इल्लै–विदित नहीं हुआ। १०४७

वे श्रीराम स्वयं परमात्मा थे, जिनके पलकों के लगने की उतनी देर में अनेक कल्प बीत सकते थे। पर अब वे श्रीराम काले अँधेरे की रात का अन्त न होता समझ कष्ट उठा रहे हैं! इसका क्या कारण है? सीता-वियोग है या सीता का प्रेम? विदित नहीं होता। १०४७

वॅऩ्ऱि विऱ्कै यिळैयव मेलॅलाम्
ऑऩ्ऱु पोल वुलप्पिल नाट्कडाम्
निऩ्ऱु काण्डियऩ् ऱॆऩॆडुङ् गङ्गुराऩ्
इऩ्ऱु नीळ्वदऱ् केदुवॅऩ् ऱॆऩ्ऩुमाल् 1048

(लक्ष्मण से) वॅऩ्ऱि विल् कै–विजयी धनुर्हस्त; इळैयव–छोटे भैया; मेल् ॲलाम्–पहले सदा; ऑऩ्ऱु पोल–एक ही सम; उलप्पु इल नाट्कळ्–लम्बे दिनों में; निऩ्ऱु काण्टि अऩ्ऱे–(अनिद्र) रहकर देखते रहे न; इऩ्ऱु नॆटुम् कङ्कुल्–आज की यह लम्बी रात; नीळ्वतऱ्कु–इस तरह बढ़ती है, इसका; एतु ॲऩ्–हेतु क्या है; ॲऩ्ऩुम्–(श्रीराम) पूछते। १०४८

श्रीराम अपने दुःखोद्वेग में लक्ष्मण से पूछते कि छोटे भैया ! पहले समान रूप से सभी दिनों में तुम अनिद्र हो जागते रहे हो ! आज यह रात इतनी लम्बी बन रही है। इसका कारण क्या है ? । १०४८

नीण्ड मालै मदियिऩै नित्तलुम्
मीण्डु मीण्डु मॅलिन्दऩै वॆळ्हुवाय्
पूण्ड पूणवळ् वाण्मुहम् बोदर
ईण्डु शाल विळङ्गिऩै यॆऩ्ऩुमाल् 1049

मालै नीण्ट मतियिऩै–सन्ध्या में ही पूर्ण बने चन्द्र को; नितुतलुम्–दिने-दिने; मीण्टुम् मीण्टुम्–पुनःपुनः; मॅलिन्तऩै वॆळ्कुवाय्–(अपनी हीनता पर) घटते लजाते थे; पूण्ट पूणवळ्–आभरणभूषिता सीता के; वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुख के; पोतर–कहीं चले जाने से; ईण्टु चाल विळङ्किऩै–यहाँ अपना ठाठ दिखाते हो; ॲऩ्ऩुमाल्–कहते। १०४९

सन्ध्या में ही श्रीराम ने पूर्णचन्द्र को देखा। तो पूछ बैठे कि चाँद ! तुम दिनोंदिन सीताजी के मुख से तुलने की शक्ति न रखने के कारण लज्जित और क्षीण हुए जाते रहे ! अब आभरणभूषित सीताजी का उज्ज्वल मुख यहाँ नहीं रहता, क्या इसी कारण अपना ठाठ दिखा रहे हो ? । १०४९

नीणि लावि ऩिशैनिऱै तऩ्गुलत्, ताणि यऩ्ऩ पऴिवर वऩ्ऩदु
नाणि नाडु कडन्दऩ ऩाङ्गोलो, शेणु लान्दऩित् तेरव ऩॆऩ्ऩुमाल् 1050

चेण् उलाम्–उच्च आकाश में संचार करनेवाले; तति तेर् अवऩ्–अनुपम (एक-चक्र) रथ के रथी सूर्य; नीळ् निलाविऩ्–विस्तृत चाँदनी-सम; इचै निऱै–प्रशंसा से भरे; तऩ् कुलत्तु–अपने कुल पर; आणि अऩ्ऩ पऴि वर–कील के समान (गम्भीर गड़ा) अपयश आया, इसलिए; अऩ्ऩतु नाणि–उससे शरम खाकर; नाटु कटन्तऩऩ् आम् कॊलो–देश छोड़कर चला गया क्या; ॲऩ्ऩुम्–कहते। १०५०

यह सूर्य कहाँ गये ? आकाश में अप्रमेय एकचक्र-रथ में संचार करनेवाले सूर्य क्या यह सोचकर लज्जा के कारण इस देश से बाहर हो गये

कि हमारे कुल की विस्तृत चाँदनी-सम कीर्ति मिट गयी और उस पर कलंक लग गया है ? श्रीराम यह प्रश्न करते । १०५०

शुट्ट कड़्गु नॅडिदॅतच् चोर्हिन्ऱात्
मुट्टि ळन्द नॅडुमुडक् कोनॊडुम्
कट्टि वाळरक् कन्गदि रोनैयुम्
इट्ट नन्गॊ लिरुञ्जिरै यॆन्नुमाल् 1051

चुट्ट कड़्कुल-(श्रीराम को) जिसने जलाया, वह रात; नॅटितु ॲन-लम्बी है, सोचकर; चोर्किन्ऱात्-मुरझाते हैं; वाळ् अरक्कन्-कठोर राक्षस ने; मुट्टु इळन्त-घुटनों से रहित; नॅटु मुट कोन् ओटुम्-बड़े लंगड़े साथी अरुण के साथ; कतिरोनैयुम्-सूर्य को भी; कट्टि-बाँधकर; इरुम् चिरै-बड़ी कारा में; इट्टतन् कॊल्-बन्द कर दिया क्या; ॲन्नुम्-कहते । १०५१

यह रात लम्बी है और मुझे जलाती है ! ऐसा अनुभव करके श्रीराम बहुत वेदना से छटपटाते । वे अनुमान लगाते कि क्रूर राक्षस ने घुटनों से रहित लँगड़े अरुणदेव (सूर्य-सारथी) के साथ सूर्य को भी बाँधकर बड़ी और विकट कारा में बन्द रख दिया है ! । १०५१

तुडियि नेरिडै तोन्ऱल ळामॆनिल्
कडिय कारिरुट् कड़्गुलिन् कऱ्पम्बोय्
मुडियु माहिन् मुडियुमिम् मूरिनीर्
नॅडिय नानिल मॆन्न निनैक्कुमाल् 1052

तुटियिन् नेर्-डमरू-समान; इटै-कमर वाली; तोन्ऱलळ् आम् ॲनिल्-मुझसे न देखी जायगी; कटिय-घृणित; कार् इरुळ्-काले अन्धकार की; कङ्कुलिन्-रात रूपी; कऱ्पम् पोय् मुटियुम् आकिल्-कल्प अन्त हो जायगा तो; इ मूरि नीर्-इस बलवान सागर से; नॅटिय नाल् निलम्-(घिरी) विस्तृत चतुर्विधा भूमि भी; मुटियुम्-मिट जायगी; ॲन्न निनैक्कुम्-यह विचार करते । १०५२

श्रीराम यह सोचते कि डमरू-सी कटि वाली मेरी सीता मेरे सामने प्रकट नहीं होगी और उसी स्थिति में काले अन्धकार की यह रात रूपी कल्प अन्त हो जायगा तो यह बलवान सागर से वलयित पृथ्वी भी मिट जायगी । १०५२

तिऱत्ति नादन शॅय्दवत् तोरुऱ, ऒऱुत्तु ञालत् तुयिर्तमै युण्डुळल्
मऱत्ति नार्हळ् वलिन्दनर् वाळ्वरेल्, अऱत्ति नालिनि यावदॆ नॆन्नुमाल् 1053

तिऱत्तु-शक्ति से; चॅय् तवत्तोर्-कर्तव्य तप के तपस्वी; इन्नातन उऱ-कष्ट पायें; ऒऱुत्तु-ऐसा उनको पीड़ित करके; ञालत्तु उयिर् तमै उण्टु-लोकों के वासी जीवों को खाकर; उळल्-घूमते हैं (जो); मऱत्तितार्कळ्-वे बली राक्षस;

वलिन्ततर् वाऴ्वरेल्-(वैसे ही) अत्याचार करते जीते रहेंगे तो; इत्ति अऱत्तिताल् आवतु-अब धर्म से होनेवाला; ॲन्-क्या; ॲन्ऩुम्-कहते। १०५३

ये राक्षस अपने मनोबल के साथ कर्तव्य तपस्या में लीन रहनेवाले तपस्वियों को कष्ट देते हैं और त्रस्त करते हैं। वे विश्व के सारे जीवों को खाते फिरते हैं। वे इसी प्रकार आततायी बने जीवित रहेंगे तो धर्म से क्या होनेवाला है? —श्रीराम दुःख के साथ सोचते। १०५३

तेनिऩ् ऱॅय्वत् तिरुनॅडु नाण्शिलैप्, पूनिन् ऱॅय्युम् पॉरुहणै वीरऩुम्
मेनिऩ् ऱॅय्य विमलऩै नोक्किनाऩ्, तानिऩ् ऱॅय्य किलान्तडु माऱुवान् 1054

तेनिन्-भ्रमरों की बनी; तॅय्व तिरु नॅटु नाण्-दिव्य सुन्दर लम्बी ज्या को; चिलै-(इक्षु-) धनु में बाँधकर; पॉरु कणै पू-संग्रामकारी पुष्प-शर; निन्ऱु ॲय्युम्-लगातार चलानेवाले; वीरऩुम्-वीर मन्मथ ने भी; मेल् निन्ऱु-आकाश में स्थित होकर; ॲय्य-शर चलाते; विमलऩै नोक्किनान्-विमलमूर्ति श्रीराम को निशान बनाकर देखा; तान् निन्ऱु ॲय्यकिलान्—खुद चला नहीं पाया; तटुमाऱिऩान्-डगमगाया। १०५४

मन्मथ भ्रमरों की ज्यासहित इक्षु-धनु में पुष्प-शर संधानकर काम-समर करनेवाला है। उसने आकाश में स्थित होकर विमलमूर्ति श्रीराम पर शर चलाने के विचार से निशाना लगाया। पर उसमें हिम्मत नहीं रही। वह डगमगा गया। १०५४

उऴन्द	**योहत्**	**तॉरुमुदल्**	**कोबत्ताल्**
इऴन्द	**मेनियु**	**मॅण्णि**	**यिरङ्गुवान्**
कॅऴुन्दु	**णॅक्कॉरु**	**वन्मै**	**किडैक्कुमो**
पऴन्दु	**यर्क्कुप्**	**परिवुऱुम्**	**पान्मैयाल् 1055**

उऴन्त योकत्तु—गम्भीर योगावस्था में (जो) रहे; ऑरु मुतल्—अद्वितीय आदि-देव शिव के; कोपत्ताल्—क्रोध से; इऴन्त मेनियुम् ॲण्णि—अपना गँवाया शरीर स्मरण कर; इरङ्कुवान्-पछतानेवाले; पऴम् तुयर्क्कु—पुराने कष्ट के लिए; परिवुऱुम् पान्मैयाल्—दुःख करते रहते समय; तुणैक्कु—सहायक बनने को; ऑरु कॅऴुम् वन्मै—(नया) एक प्रबल साहस; किडैक्कुमो—प्राप्त हो सकता है क्या। १०५५

गम्भीर योगरत आदिदेव शिवजी पर उसने एक बार शर चलाया था। फलस्वरूप शिवजी के क्रोध से उसका शरीर जल गया। वह उसका स्मरण करके दिनोंदिन दुःखी हो रहा था। ऐसे पुराने दुःख में मग्न रहनेवाले उसको सहायक के रूप में साहस दिलानेवाली हिम्मत हो सकती है क्या? । १०५५

नील	**मान**	**निऱत्त**	**निनैन्दवै**
शूल	**माहत्**	**तॉऴैवुऱुम्**	**वेलैयिन्**

मूल मामलर् मुन्नवन् मुऱ्ऱुरुम्
काल मामॅतक् कङ्गुल् कऴिन्ददे 1056

नीलम् आत निऱ्तत्तन्–नील; नितैंन्तु–ऐसा सोचकर; अवै–उन विचारों के; चूलम् आक–शूल की तरह; तॉळैवु उरुम्–सालते; वेलैयिन्–समय; मूलम्–सृष्टिमूल; मा मलर् मुन्नवन्–उत्कृष्ट (नाभी-)कमल में जो प्रकट हुए थे, वे (ब्रह्मा); मुऱ्ऱु उरुम्–जब अन्त हो जाते हैं; कालम् आम् ॲत–वह काल आ गया हो, ऐसा; कङ्कुल् कऴिन्ततु–रात बीती। १०५६

नील श्रीराम ऐसा सोच रहे थे और वे विचार उनको शूल के समान साल रहे थे। तब रात बीती और ऐसा लगा कि रात कल्पकाल तक रही हो और सृष्टि के मूल, श्रीविष्णु के नाभि-कमल-वासी ब्रह्मा का कल्प अभी पूरा हुआ हो। १०५६

वॅळ्ळञ् जिलम्बुम् पाऱ्कडलिन् विरुम्बुन् दुयिलै वॅरुत्तळियुम्
कळ्ळुञ् जिलम्बुम् बूङ्गोदै कऱ्पिन् कडलिऱ् पडिवाऱ्कुप्
पुळ्ळुञ् जिलम्बुम् बॊऴिल्शिलम्बुम् पुनलुञ् जिलम्बुम् पुनैहोल
उळ्ळुञ् जिलम्बुञ् जिलम्बावे लुयिरुण् डाहुम् वहैयुण्डो 1057

वॅळ्ळम् चिलम्पुम् पाल् कटलिल्–अधिक गर्जनशील क्षीरसागर में; विरुम्पुम् तुयिलै–प्यारी निद्रा को; वॅरुत्तु–त्यागकर; अळियुम् कळ्ळुम्–भ्रमरों और मधु से; चिलम्पुम्–शब्दायमान; पूम् कोतै–सुन्दर माला से अलंकृत; कऱ्पिन् कटलिल्–पतिव्रता सीता के प्रेम के सागर में; पटिवाऱ्कु–मग्न रहनेवाले को (समझाते हुए); पुळ्ळुम् चिलम्पुम्–पक्षी बोले; पॊऴिल् चिलम्पुम्–उद्यानों ने शोर किया; पुनलुम् चिलम्पुम्–(जलाशय का) जल शब्दित हुआ; पुनै कोल–(उनसे नया उत्साह तथा) नई रौनक पाकर; उळ्ळुम् चिलम्पुम्–(श्रीराम का) मन भी बोल उठा; चिलम्पा वेल्–(ये सब) शब्द नहीं करते तो; उयिर् उण्टाकुम् वकै उण्टो–(मूर्च्छा में रही) जान के लौट आने का मार्ग हो सकता है क्या। १०५७

सवेरा हो गया। शब्दायमान क्षीरसागर में शयन छोड़कर भ्रमर और शहद से शब्दित केश वाली सीताजी के पातिव्रत्य रूपी शील-सागर में जो मग्न रहते थे, उन श्रीराम को पक्षीगण, उपवन, जल आदि शब्द करके सवेरा होने का समाचार सुनाने लगे। तब श्रीराम के मन में एक उत्साह भर गया, मानो मन भी बोलने लगा। अगर ये सब शब्द नहीं होते तो श्रीराम के प्राणों के पुनः लौट आने का मार्ग कैसे होता? । १०५७

मयिलुम् पॅडैयु मुडऩ्ऱिरिय मानुङ् गलैयु मरुविवरप्
पयिलुम् बिडियुङ् गडहळिरुम् वरुव तिरिव पाऱ्किन्ऱान्
कुयिलुङ् गरुम्बुञ् जॅळुन्देनुम् कुळलुम् याळुम् कॊळुम्बाहुम्
अयिरु ममुदुञ् जुवैतोऱ्त्त मॊऴियैप् पिरिन्दा लळियानो 1058

मयिलुम् पॅटैयुम्–मोर और मोरनी; उटन् तिरिय–साथ-साथ घूमते हैं; मानुम्

कलैयुम्–हरिण और हरिणी; मरुवि वर–पास-पास आते हैं; पयिलुम् पिटियुम्–मिले रहनेवाले हथिनियाँ और; कटकरियुम्–मत्तगज; वरुव तिरिव–आते, घूमते हैं; पार्क्किन्ऱान्–(उनको) देखते हैं; कुयिलुम्–कोयल; करुम्पुम्–ईख; चॅळुम् तेऩुम्–गाढ़ा शहद; कुळ्ळुम्–और वंशी; याळुम्–वीणा; कॉळम् पाकुम्–गाढ़ी चाशनी; अयिरुम्–खाण्ड; अमुतुम्–अमृत; चुवै तीर्त्त–इनकी मधुरता को मात देनेवाली; मॉळियै–बोली वाली (सीता) से; पिरिन्ताल्–बिछुड़े रहें, तब; अळियातो–घुलेंगे नहीं क्या। १०५८

श्रीराम अपने सामने देखते हैं कि मोर और मोरनी, हरिण और हरिणी और हाथी और हथिनी —इनके जोड़े साथ-साथ घूमते फिरते हैं। वे तो सीताजी से बिछुड़े रहते हैं। सीताजी इतनी मधुरभाषिणी थीं कि उनकी वचन-मधुरता के सामने कोयल की कूक, ईख का रस, बाँसुरी का नाद, गाढ़े शहद का स्वाद, वीणा का स्वर, खांड की रुचि सब फीका पड़ गया था। तो फिर उनका मन नहीं घुलेगा क्या ? । १०५८

मुडिनाट् टियकोट् टुदयत्तिऩ् मुऱ्ऱ वुऱ्ऱाऩ् मुतुकङ्गुल्
विडिनाट् कण्डुङ् गिळिमिळऱ्ऱु मॅऩ्शॉर् केळा वीरऱ्काण्
डडिनाट् चॅन्दा मरैयॉदुङ्गु मत्तऩ मिलळाल् यातडैत्त
कडिनाट् कमलत् तॆऩवविळ्त्तुक् काट्टु वाऩ्बोर् कदिर्वॅय्योऩ् 1059

मुटि नाट्टिय–किरीटभूषित-सी दिखती; कोट्टु उतयत्तिऩ्–शिखर-सहित उदयगिरि पर; कतिर् वॅय्योऩ्–गरम किरणमाली; मुतु कङ्कुल्–लम्बी रात का; विटि नाळ् कण्टुम्–अन्त और दिन का उदय देखकर भी; किळि मिळऱ्ऱुम्–शुक की सी बोली वाली सीता की; मॅऩ् चॉल् केळा–मृदु-मधुर बोली न सुनने से (दुःखी); वीरऱ्कु–वीर श्रीराम को; आण्टु–तब; अटि नाळ्–पहले; चॅम् तामरै ऑतुङ्कुम् अऩ्ऩम्–लाल कमल पर रहनेवाली हंसिनी (सीता); याऩ् अटैत्त–(जिसको कल) मैंने बन्द कराया; कटि नाळ् कमलत्तु–सुगन्धित इस नवीन कमल में; इलळ् ॲऩ–नहीं हैं, कहते हुए; अविळ्त्तु काट्टुवाऩ् पोल्–मानो खोलकर दिखा रहे हों, ऐसा; मुऱ्ऱ उऱ्ऱाऩ्–पूर्ण प्रकाशमय प्रकट हुए। १०५९

शिखर-किरीटी उदयगिरि पर सूर्य पूर्णरूप से प्रकट हुए। उनकी रश्मि से कमल खिले। वे कमल पिछली रात बन्द हुए थे। लम्बी रात बीत गयी और सवेरा हो गया। तो भी श्रीराम को शुक-सम मधुरभाषिणी सीताजी की मीठी वाणी सुनने को नहीं मिली थी। वे दुःखी थे। (इन सब बातों को मिलाकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि) सूर्य ने कमलों को पिछली रात बन्द कराया था और अब उनको खोलकर श्रीराम को दिखाया कि उन सुगन्धित व नवविकसित कमलों में कमलनिवासिनी, हंसिनी-सम सीताजी नहीं हैं। १०५९

पॉळिलै नोक्कुम् पॉळिलुऱैयुम् पुळ्ळै नोक्कुम् बूङ्गॉम्बिऩ्
ॲळिलै नोक्कु मिळमयिलि ऩियलै नोक्कु मियल्बाऩाळ्

कुऴलै नोक्किक् कॊङ्गैयिणैक् कुवट्टै नोक्कि यक्कुवट्टिन्
तॊऴिलै नोक्कित् तन्तुडैय तोळै नोक्कि नाट्कऴिप्पान् 1060

पूम् कॊम्बिन् ॲऴिलै नोक्कुम्–पुष्पलता-सदृश सुन्दर; इळ मयिलिन् इयलै नोक्कुम्–बालमयूर की छटा-सदृश; इयल्पु आताळ्—आभायुक्त; कुऴलै नोक्कि–(सीताजी के) केश का स्मरण करके; पॊऴिलै नोक्कुम्–(श्रीराम) उद्यान को देखते; इणै कॊङ्कै कुवट्टै–स्तनद्वय के पर्वतशिखरों का; नोक्कि–स्मरण करके; पॊऴिल् उऱैयुम्–उद्यान में रहनेवाले; पुळ्ळै नोक्कुम्–(चक्रवाक-)पक्षियों को देखते; अ कुवट्टिन् तॊऴिलै नोक्कि–उन पर (आलिंगन) का अपना व्यवहार स्मरण करके; तन्तुटैय तोळै नोक्कि–अपने कन्धों की (भाग्यहीनता) सोचकर; नाळ् कऴिप्पान्–दिन बिताते। १०६०

(विरही का मन प्रिया के रूप का स्मरण करने से बहुत दुःखी होता है। कुछ वस्तुएँ उस स्मरण को उद्दीप्त करती हैं।) श्रीराम पुष्पलता-सी सुन्दर और बालमयूर-सी आभा वाली सीताजी का केश स्मरण करते और उपवन को देखते। दोनों पर्वतशिखर-सम स्तनों की याद करते और उपवन में रहनेवाले चक्रवाक पक्षी को देखते। उन स्तनों से आलिंगन करने के अपने प्रणय-व्यापार का स्मरण करते और अपने कन्धों की भाग्य-हीनता पर विचार करते। वे ऐसे ही दिन को बिताने लगे। १०६०

अन्न कालै यिळवीर नडियिन् वणङ्गि नॆडियोयप्
पॊन्नै नाडा दीण्डिरुत्तल् पॊरुळो वॆन्नप् पुहऴोनुम्
शॊन्न वरक्क निरुक्कुमिडन् दुरुवियऱिदुन् दॊडर्न् दॆन्न
मिन्नुञ् जिलैयार् मलैतॊडर्न्द वॆयिल्वॆङ् गानम् बोयिनराल् 1061

अन्न कालै–उस समय; इळैय वीरन्–कनिष्ठ वीर लक्ष्मण के; अटियिन् वणङ्कि–पैरों पर नमस्कार करके; नॆटियोय्–महान; अ पॊन्नै नाटातु–उन स्वर्ण (-सम सीता) का अन्वेषण न करके; ईण्टु इरुत्तल्–यहाँ (व्यर्थ) रहना; पॊरुळो–अर्थ-भरा (काम) है क्या; ॲन्न–कहने पर; पुकऴोनुम्–प्रशंसित श्रीराम ने भी; चॊन्न अरक्कन् (जटायु-)कथित राक्षस; इरुक्कुम् इटम्–का वासस्थान; तॊटर्न्तु–निरन्तर; तुरुवि अऱितुम्–खोज देखेंगे; ॲन्न–(कहा) कहने पर; मिन्नुम्–चमकते; चिलैयार्–धनुओं के धारक; मलै तॊटर्न्त–पर्वत से लगे; वॆयिल् वॆम् कानम्–धूप में कठोर वन में; पोयितर्–चले। १०६१

तब लघु भाई वीर लक्ष्मण ने उनको नमस्कार किया और विनय सुनायी। महान ! स्वर्ण-समाना सीताजी का अन्वेषण किये विना यहाँ बैठे रहना कोई अर्थ रखता है क्या ? तब प्रशंसा योग्य श्रीराम ने भी हामी भरी। हाँ ! जटायु द्वारा कथित उस राक्षस (रावण) के स्थान का अन्वेषण करें। सर्वत्र ढूँढ़कर देखें। फिर दोनों चमकदार धनुर्धर धूप में जंगल में ढूँढ़ते हुए गये। १०६१

आशै शुमन्द नॅडुङ्गरि यन्नार्, पाशिलै तुन्रु वनम्बल पिन्नाक्
काशरु कुन्ऱिनीं डारु कडन्दार्, ओशनै यॉन्बदो डॉन्बदु शॅन्ऱार् 1062

आचै चुमन्त–दिशावाही; नॅटुम् करि अन्नार्–बड़े गजों से तुल्य वे; पचुमै इलै तुन्ऱु–हरे पत्तों से पूर्ण; वनम् पल–अनेक वनों को; पिन्ना–पीछे छोड़कर; काचु अरु–निर्दोष; कुन्ऱिन् ओटु–पर्वतों के साथ; आऱु–नदियों को; कटन्तार् पार करके; ऑन्पतु ऑटु ऑन्पतु योचनै–नौ और नौ (अठारह) योजन दूर; चॅन्ऱार्–गये। १०६२

दिशावाही बड़े गजों से तुल्य वे वीर हरे पत्तों से पूर्ण अनेक वनों को पीछे छोड़ते हुए, निर्दोष पर्वतों और गहरी नदियों को पार कर अठारह योजन दूर चले। १०६२

मट्पडि शॅय्द तवत्तिनिन् वन्द, कट्पडि कोदैयै नाडिनर् काणार्
उट्पडि कोब मुयिर्प्पॊडु पोङ्गप्, पुट्पडि युङ्गुळिर् वार्पॊळिल् पुक्कार् 1063

मण् पटि चॅय्त–अणुओं से निर्मित इस भूमि के किये; तवत्तिनिल् वन्त–तप के फलस्वरूप अवतरित; कळ् पटि कोतैयै–शहद-जमे केश वाली को; नाटिनर्–ढूँढ़कर; काणार्–न देख पाये; उळ् पटि कोपम्–अन्दर जमा रहा कोप; उयिर्प्पु ऑटु पोङ्क–निःश्वास के साथ निकल आया; पुळ् पटियुम्–जिसमें खग रहते थे; कुळिर् वार् पॊळिल्–उस शीतल विशाल उद्यान में; पुक्कार्–प्रविष्ट हुए। १०६३

पर सीताजी, जो अणुओं की बनी इस पृथ्वी की तपस्या के फलस्वरूप अवतरित हुई थीं, कहीं भी दिखाई नहीं दीं। उनको न पाकर उन वीरों का कोप निःश्वास के रूप में प्रकट हुआ। तब वे एक ऐसे उपवन में पहुँचे जो शीतल, विशाल और पक्षियों से पूर्ण था। १०६३

आरियर् शिन्दै यलक्क णरिन्दान्, नारियै यॅङ्गणु नाडिन नाडिप्
पेरुल हॅङ्गु मुळन्ऱिरुळ् पिन्ना, मेरुविन् वॅङ्गदिर् मीळ मरैन्दान् 1064

आरियर्–श्रेष्ठ (श्रीराम और लक्ष्मण) के; चिन्तै अलक्कण् अऱिन्तान्–मन के दुःख के ज्ञाता; वॅम् कतिर्–गरम किरणों के सूर्य; पेर् उलकु ऍङ्कुम्–विस्तृत लोक भर में; उळन्ऱु–सायास घूमकर; नारियै–स्त्री-रत्न को; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; नाटिनन्–खोजकर; इरुळ् पिन्ना–अँधेरे को पीछा करते आने देते हुए; मेरुविन् मीळ मरैन्तान्–मेरु के पीछे छिप गये। १०६४

तब सूर्य भी अस्त हो गये। आर्य वीर, श्रीराम और लक्ष्मण का दुःख उन्हें मालूम था। वे भी शायद सायास सर्व स्थानों में नारीरत्न सीताजी का अन्वेषण करके थक गये। इसलिए वे मेरु के पीछे छिप गये और अन्धकार उनके पीछे लगा हुआ आ गया। १०६४

अरण्डरु	हुञ्जॅरि	यञ्जम्	पुञ्जम्
उरण्डन	पोलिरु	ळॅङ्गणु	मुन्दन्

तॆरुण्डरि विल्ववर् शिन्दैयिन् मुन्दि
इरुण्डन मादिर मॆट्टु मिरण्डुम् 1065

चॆरि अञ्चत पुञ्चम्–घने अंजनपुंज; उरण्टन पोल्–मानो टकराते हों; इरुळ्–अन्धकार; अरण्टु–सहमकर; अरुकुम् ऍङ्कणुम् उन्त–पार्श्व में सब ओर ढकेलने से; तॆरुण्टु–भ्रमित हो; अरिवु इल्लवर् चिन्तैयिन्–ज्ञान से हीन बने मनुष्य के मन के समान; मुन्ति–(समय से) पहले ही; मातिरम् ऍट्टुम् इरण्टुम्–आठों और दोनों (ऊपर और नीचे) दिशाएँ; इरुण्टत्–अन्धकारमय हो गयीं। १०६५

वह अँधेरा घना था। ऐसा लगता था कि अंजनपुंज आपस में टकराकर, ढकेला जाकर और डर के कारण सब स्थानों में प्रेषित किये गये हों। दसों दिशाओं (ऊपर और नीचे की ओर मिलाकर) में वह इस प्रकार व्याप्त रहा, जिस प्रकार भ्रमित बुद्धि वाले के मन में अज्ञान व्याप्त रहता है। १०६५

इळिक्करै यिञ्जॊ लियैन्दन पूवै
किळिक्करै युम्बॊळिर् किञ्जुह वेलि
ऒळिक्करै मण्डिल मॊत्तुळ दङ्गोर्
पळिक्करै कण्डदिल् वैहल् पयिन्ड्रार् 1066

इळिक्कु–'इळि' स्वर से; अरै–तुल्य; इन् चॊल् इयैन्त–मधुर स्वर में बोलनेवाले; पूवै–'नाहणवाय्' नामक पक्षी; किळिक्कु अरैयुम्–शुकों को जहाँ बोली सिखा रहे थे; पॊळिल्–एक उपवन में; किञ्चुक वेलि–किंशुक वृक्षों के घेरे में; अङ्कु–वहाँ; ऒळि–प्रकाश में; करै मण्टिलम् ऒत्तु उळतु–कलंक-सहित चन्द्रमण्डल के समान; ओर् पळिक्कु अरै–एक स्फटिक-शिला; कण्टु–देखकर; अतिल्–उसमें; वैकल् पयिन्ड्रार्–ठहरे रहे। १०६६

श्रीराम और लक्ष्मण एक स्फटिक-शिला पर ठहरे। वह शिला एक उपवन के मध्य में थी और कलंकसहित चन्द्रमण्डल के समान प्रकाशमान थी। उस उपवन के चारों ओर किंशुक वृक्षों का घेरा था और उसमें 'नाहणवाय्' नामक पक्षी शुकों को बोलना सिखा रहे थे। उन पक्षियों की बोली 'इळि' स्वर के समान मीठी थी (तमिऴ की संगीत-विद्या में सात स्वर हैं, जिनके नाम इळि, कुरल्, तुत्तम्, कैक्किळै, उळै, विळरि और तारम् हैं।)। १०६६

अव्विडै यॆय्दिय वण्ण लिरामन्
वॆव्विडै पोलिळ वीरनै वीर
इव्विडै नाडिनै नीर्कॊणर् हॆन्ड्रान्
तॆव्विडै विल्लव नुन्दनि शॆन्ड्रान् 1067

अ इटै ऍय्तिय–वहाँ जो आये; अण्णल् इरामन्–महिमायुक्त श्रीराम ने; वॆम् विटै पोल्–क्रुद्ध ऋषभ-तुल्य; इळ वीरनै–छोटे वीर को; वीर–वीर; इ इटै–अब;

नीर् नाटित्तै–जल खोजकर; कॉणर्क–लाओ; ऍन्ऱान्–कहा; तॅव् इटै–शत्रु को भगानेवाले; विल्लवनुम्–धनुर्धर भी; तनि चॅन्ऱान्–एकाकी चले। १०६७

वहाँ पहुँचने के बाद महिमायुक्त श्रीराम ने क्रुद्ध ऋषभ-सम छोटे वीर से कहा कि वीर! अब जाकर कहीं से (पेय) जल ढूँढ़कर लाओ। शत्रु को भगाने की शक्ति रखनेवाले धनुर्धर लक्ष्मण भी उस रात में अकेले जल के अन्वेषण में चल पड़े। १०६७

ऍङ्गणु नाडिनन् नीरिडै काणान्
शिङ्ग मॅनत्तमि यन्ऱिरि वानै
अङ्ग वनत्तु ळयोमुहि यॅन्नुम्
वॅङ् णरक्कि विरुम्बिनळ् कण्डाळ् 1068

ऍङ्कणुम् नाटित्तन्–सब कहीं ढूँढ़ा; नीर् इटै काणान्–जल का स्थान नहीं देखा; चिङ्कम् ऍन–सिंह के समान; तमियन्–अकेले; तिरिवानै–घूमनेवाले उनको; अङ्कु अ वनत्तुळ्–वहाँ उस वन में; अयोमुकि ऍन्नुम्–अयोमुखी नाम की; वॅम् कण् अरक्कि–क्रूर राक्षसी ने; विरुम्पितळ्–प्यार करके; कण्टाळ्–देखा। १०६८

लक्ष्मण बहुत देर घूमे। पर जल कहीं दिखाई नहीं दिया। तब एक क्रूर राक्षसी ने उनको देख लिया। उसका नाम अयोमुखी था। उसने सिंह-समान घूमनेवाले उनको प्यार की दृष्टि से देखा। १०६८

नन्मदि योर्पुहल् मन्दिर नामच्
चॊन्मदि यावर विऱ्ऱॊडर् हिऱ्पाळ्
तन्मद नोडुदन् वॅम्मै तणित्ताळ्
मन्मद नामिव नॆन्नु मतत्ताळ् 1069

नल् मतियोर् पुकल्–श्रेष्ठ बुद्धिमानों द्वारा उच्चरित; मन्तिर नामम्–मन्त्र-नामों के; चॊल्–शब्दों को; मतिया–मानकर जो स्तम्भित होता; अरविल्–(नीच) सर्प के समान; तॊटर्किऱ्पाळ्–अनुगमन करती हुई; तन् मतन् ओटु–अपने काममद के साथ; तन् वॅम्मै–अपनी गरमी को; तणित्तु आळ्–शान्त करके वश में रखनेवाले; मन्मतताम् इवन्–मन्मथ ये हैं; ऍन्नुम् मतत्ताळ्–ऐसा विचार करती हुई (वह)। १०६९

वह नीच सर्प के समान थी, जो निपुण ओझा के मन्त्रों से भी बद्ध और कीलित नहीं होता है। उस अयोमुखी ने उनका पीछा करते हुए यह धारणा कर ली कि ये मन्मथ हैं और ये ही मेरा काममद और काम-ताप शान्त करके मेरे ऊपर शासन कर सकते हैं। १०६९

अळुन्दिय शिन्दैय ळाहि यरक्कि
ऍळुन्दुयर् काद लुळन्ऱॅदिर् निन्ऱाळ्

पुऴुङ्गुमॆऩ् नोयॆंडप् पुल्लुवॆ ऩ्ऩ्ऱि
विऴुङ्गु वॆऩॊवॆऩ विम्म लुऴऩ्ऱाऴ् 1070

अरक्कि–वह राक्षसी; अऴुन्तिय चिन्तैयळ् आकि–लक्ष्मण में मग्न मन वाली होकर; ॲऴुन्तु उयर्–उठकर उमड़नेवाले; कातलिऩ् उऴऩ्ऱु–प्रेम से अभिभूत होकर; ॲऩ् नोय् कॆट–अपना ॲतिर् निऩ्ऱाळ्–सामने खड़ी रही; पुऴुङ्कुम्–तापनेवाला; पुल्लुवॆऩ्–आलिंगन कर लूँगी; अऩ्ऱि–नहीं तो; विऴुङ्कुवॆंतो–रोग दूर करते हुए; या इसको निगल ही जाऊँ; ॲन–सोचकर; विम्मल् उऴऩ्ऱाळ्–आर्तता से भर गयी। १०७०

उसका मन लक्ष्मण पर अटक गया। प्रेम का ज्वर उठा और बढ़ने लगा। असाध्य पीड़ा सहते हुए वह उनके सामने आयी और आप ही आप कहने लगी कि मैं इसका ऐसा आलिंगन करूँगी कि मुझे वेदना देने वाला यह कामरोग शान्त हो जाय। या शायद अपनी इच्छा की प्रबलता के कारण उठाकर निगल जाऊँगी क्या? ऐसा सोचती हुई वह आर्तता से भर गयी। १०७०

इरन्दॆऩ नॆय्दिय पोदियै यादु
करन्दऩ नॆऩ्ऩिर् कॊण्डुह डऩ्दॆऩ्
मुरञ्जिऩिऩ् मेवि मुयङ्गुवॆ ऩॆऩ्ऩा
विरैन्दॆदिर् वन्दऩ डीयिऩुम् वॆय्याळ् 1071

तीयिऩुम् वॆय्याळ्–आग से भी क्रूर; इरन्ततॆऩ्–याचना करती हुई; ॲय्तियपोतु–जाऊँ तब; इयैयातु–सम्मत न होकर; करन्ततऩ् ॲऩ्ऩिल्–(दया से) वंचित करा देगा तो; नऩि कॊण्टु–(इसको) बलात् लेकर; कटन्तु–यहाँ पार कर; ॲऩ् मुरञ्चिऩिल् मेवि–अपनी गुफा में जाकर; मुयङ्कुवॆऩ्–मिल लूँगी; ॲऩ्ऩा–निश्चय कर; विरैन्तु ॲतिर् वन्तऩळ्–सवेग सामने आयी। १०७१

अग्नि से भी अधिक क्रूर उस राक्षसी ने आगे विचार किया कि जब मैं इसके पास जाकर प्रेम की याचना करूँगी तब अगर वह इनकार करके अपनी दया से मुझे वंचित करेगा, तो बलात् उसे उठा लूँगी, अपनी गुफा में ले जाकर मनमाने रूप से उससे मिल लूँगी। इस निश्चय के साथ वह उनके सामने सवेग आयी। १०७१

उयिर्प्पि नॆरुप्पुमिऴ् हिऩ्ऱऩ वॊऩ्ऱ
ॲयिऱ्ऱिऩ् मलैक्कुल मॆण्णिल वुण्णुम्
वयिऱ्ऱळ् वयक्कॊडु माशुणम् वीशुम्
कयिऱ्ऱि ऩशैत्त मुलैक्कुऴि कण्णाळ् 1072

उयिर्प्पिऩ्–साँसों के साथ; नॆरुप्पु उमिऴ्किऩ्ऱ–आग उगलनेवाले; ॲयिऱ्ऱिऩ् मलै कुलम्–दाँतों वाले गजसमूहों को; ऑऩ्ऱ–एक साथ; ॲण् इल उण्णुम्–अगणित

खानेवाले; वयिऱ्ऱऴ्-पेट की; वय कोंटु माचुणम्-बली भयंकर अजगर की; वीचुम् कयिऱ्ऱित्-लपेटी रस्सी से; अचैत्त-बँधे; मुलै-स्तनों और; कुऴि कण्णाऴ्-खूब धँसी हुई आँखों वाली थी। १०७२

(उसका वर्णन सात पद्यों में पाया जाता है।) उसका पेट था, जो कि साँस के साथ आग निकालनेवाले पर्वत-सम गजों के अनगिनत समूहों को समा सकता था। उसके स्तन बलवान भयंकर अजगर लपेटकर बाँधे गये थे। आँखें गढ़ों के समान धँसी हुई थीं। १०७२

पऱ्ऱिय कोळरि याळि पणिक्कण्
तॅऱ्ऱिय पादच् चिलम्बु तरित्ताळ्
इऱ्ऱुल हियावैयु मीऱुऱु मन्नाळ्
मुऱ्ऱिय जायिऱु पोलु मुहत्ताळ् 1073

पऱ्ऱिय-गृहीत; कोळरि-सिंहों; याळि-और शरभों को; पणि कण् तॅऱ्ऱिय-फणी सर्प से गूँथकर; चिलम्पु तरित्ताळ्-उसके नूपुर पहने हुए थी; यावैयुम्-सभी लोक; इऱु ईऱु उऱुम्-(जिस दिन) पूर्णरूप से नष्ट होंगे; अ नाळ्-उस दिन के; मुऱ्ऱिय-पूर्णरूप से विवर्धित; जायिऱु पोलुम्-सूर्य की तरह; मुकत्ताळ्-(दाहक) मुख की। १०७३

उसके पैरों के नूपुर साँपों से गुँथे हुए सिंह थे, जिनको उसने स्वयं पकड़ा था। उसका मुख उस युगान्तकालीन गर्मी में पूर्णरूप से बढ़े हुए सूर्य के समान सन्तापक था, जिस (युगान्त) में सारे लोक विनष्ट हो जाते हैं और सबका अन्त हो जाता है। १०७३

आऴि वऱक्क मुहक्क वमैन्द
मूऴै यॅत्तप्पोलि मॊय्बिल वायाळ्
कूऴै पुऱत्तु विरिन्ददॊर् कॊट्पाल्
ऊऴि नॅरुप्पि नुरुत्तनै यॊप्पाळ् 1074

आऴि वऱक्क-समुद्र को सुखाते हुए; मुकक्क-उठा लेने के लिए; अमैन्त-बने; मूऴै ॲत्त-कलछे के समान; पॊलि-दृश्यमान; मॊय् पिल वायाळ्-मजबूत, बड़ी गुफा-सदृश मुख वाली; पुऱत्तु कूऴै विरिन्ततु-पार्श्व में केश लटकते रहे; ओर् कॊट्पाल्-उसके दृश्य से; ऊऴि नॅरुप्पित् उरु तनै-युगान्त की अग्नि के रूप की; ऒप्पाळ्-समानता करनेवाली। १०७४

उसका गुफा-सा बड़ा मुख एक कलछे के समान था, जो कि समुद्र को एक दम शुष्क करते हुए सारा जल उठा सकता था। उसके सिर के पार्श्वों में कम लम्बे (लाल) केश लटकते थे, जिसके कारण वह युगान्तकालीन अग्नि के समान दिखाई दी। १०७४

तडितड वप्पल तलैतऴु वित्ताळ्
नॆडिदडै यक्कुडऱ् कॊऴुवु निणत्ताळ्
अडितड वप्पड वरव मशैक्कुम्
कडिदड वत्तिऩ ऴुरुमु कऱिप्पाळ् 1075

तटि तटव–मांस की खोज में; पल तलै तऴुवि–अनेक स्थानों में ढूंढ़ते हुए जाकर; ताळ्–उसके पैर; नॆटितु अटैय–बहुत दूर गये, इसलिए; कुटर् कॊऴुवु निणत्ताळ्–मांस-भरे पेट वाली; पट अरवम् अटि तटव–फनसहित सर्प उसके पैरों को छूते रहें, ऐसा; अचैक्कुम्–(उन सर्पों को) लपेटी; कटि तटवत्तिनळ्–कटि वाली; उरुमु कऱिप्पाळ्–वज्रघोष के समान दाँत किटकिटानेवाली। १०७५

मांस की खोज में उसके पैर दूर-दूर तक गये थे और उसका पेट मांस से भरपूर था। उसकी कमर में सर्प बँधे थे, जिनके फन उसके पैरों को छूते थे। जब वह दाँत किटकिटाती तब वज्र का-सा नाद निकलता। १०७५

इवैयिऱै यॊप्पऩ वॆऩ्ऩ विऴिप्पाळ्
अवैकुऴि रक्कडि तऴलु मॆयिऱ्ऱाळ्
कुवैकुलै यक्कडल् कुमुऱु वुरैप्पाळ्
नवैयिल् पुवित्तिरु नाल नटप्पाळ् 1076

इवै इऱै ऒप्पऩ–ये युगान्त की अग्नि के समान हैं; ऎऩ्ऩ–ऐसा; विऴिप्पाळ्–तरेरनेवाली; अवै कुऴिर–उनको ठण्डे बनाते हुए; कटितु–कठोर रीति से; अऴलुम् ऎयिऱ्ऱाळ्–प्रज्वलित दाँत वाली; कुवै–पर्वत आदि; कुलैय–अस्त-व्यस्त करते हुए; कटल् कुमुऱ–सागर को उथल-पुथल करते हुए; उरैप्पाळ्–बोलनेवाली; नवै इल् पुवि तिरु–निर्मल भूदेवी को; नाल–धँसाते हुए; नटप्पाळ्–पग धरकर चलनेवाली। १०७६

जब वह तरेरती तब उसकी आँखें युगान्त की अग्नि के समान लगतीं। पर ज्वलन्त दाँतों के सामने उनकी उग्रता कम हो गयी लगती। जब वह बात करती, तब पर्वत जैसे ऊँचे टीले जर्जर हो जाते और सागर में उथल-पुथल मच जाता। जब वह पग रखकर चलती, तब निर्मल भूदेवी में गड्ढे पड़ जाते। १०७६

नीळर वच्चरि ताऴ्है निरैत्ताळ्
आळर वप्पुलि यार मणैत्ताळ्
याळियि नैप्पल तालि यिशैत्ताळ्
कोळरि यैक्कॊडु ताऴ्कुऴै यिट्टाळ् 1077

नीळ् अरव चरि–लम्बे सर्प रूपी कंकणों को; ताऴ् कै निरैत्ताळ्–लटकनेवाले हाथों में पहने रहती; अरवम्–गरजनेवाले; आळ् पुलि–बलवान बाघों का; आरम्–हार; अणैत्ताळ्–धारण करनेवाली; पल आळियित्तै–अनेक शरभों को; तालि

इचैत्तुताळ्–मंगल-सूत्र से बाँधे रखनेवाली; कोळरियै कोट्टु–ताकतवर सिंहों को लेकर; ताळ् कुळै इट्टाळ्–लटकनेवाले कुण्डल बनाकर पहनी हुई। १०७७

उसने कंकणों के रूप में लम्बे सर्पों की पंक्ति पहन रखी थी। गरजनेवाले व्याघ्रों को गूँथकर उसने हार के रूप में पहना था। उसके मंगल-सूत्र से अनेक शरभ बँधे थे। उसके कर्ण-कुण्डल बली सिंह थे। १०७७

निन्ऱन ळाशैयि नीर्हलु ळुङ्गण्
कुन्ऱि निहर्प्प कुळिर्प्प विळिप्पाळ्
मिन्ऱिरि हिन्ऱ वॅयिऱ्ऱिन् विळक्काल्
कन्ऱिरु ळिर्ऱिरि कोळरि कण्डान् 1078

नीर् कलुळुम् कण्–जल बहानेवाली उसकी आँखें; कुन्ऱि निकर्प्प–घुँघची के समान रहतीं; कुळिर्प्प–प्रेमार्द्रता के साथ; विळिप्पाळ्–लक्ष्मण पर दृष्टि चलाती हुई वह; आचैयिन् निन्ऱनळ्–लगावट के साथ खड़ी रही; मिन् तिरिकिन्ऱ–बिजली के समान चमकनेवाली; ऍयिऱ्ऱिन्–दन्तपंक्तियों के; विळक्काल्–दीप से; कन्ऱु इरुळिल् तिरि–घने अँधेरे में घूमनेवाले; कोळरि–सिंह (लक्ष्मण) ने; कण्टान्–उसको देखा। १०७८

उसकी आँखें घुँघचियों के समान थीं और उनसे जल बह रहा था। वह लक्ष्मण पर प्रेमार्द्र दृष्टि डालती हुई खड़ी रही। उसके दाँतों से बिजली की चमक निकल रही थी। सिंह-सदृश लक्ष्मण ने उस घने जंगल में घूमनेवाली उसको उसके दाँतों के प्रकाश में देखा। १०७८

पण्डैयि नाशि यिळन्दु पदैक्कुम्
तिण्डिऱ लाळॊडु ताडहैच् चीराळ्
कण्डह राय वरक्कर् कणत्तोर्
ऑण्डॊडि यामिव ळॆन्ब दुणर्न्दान् 1079

पण्टैयिन्–पहले; नाचि इळन्तु–नाक आदि कटकर; पतैक्कुम्–जो छटपटायी; तिण् तिऱलाळ् ऒटु–उस अत्यधिक बलयुक्त राक्षसी के साथ; ताटकै चीराळ्–ताड़का से तुल्य; कण्टकर् आय अरक्कर्–लोककंटक राक्षसों के; कणत्तु–दल से सम्बद्ध; ऑण्टॊटि आम् इवळ्–स्त्री होगी यह; ऍन्पतु उणर्न्तान्–यह विषय लक्ष्मण ने ताड़ लिया। १०७९

उन्होंने ताड़ लिया कि यह नाक खोकर जो छटपटाती रही, उस शूर्पणखा के साथ ताड़का आदि के राक्षस-कुल से सम्बद्ध स्त्री ही होगी। १०७९

पाविय रामिवर् पण्बिलर् नम्बाल्
मेविय कारणम् वेऱिलै यॆन्बान्
मावियल् कानिन् वयङ्गिरुळ् वन्दाय्
यावळ डीयुरै शॆय्हडि दन्ऱान् 1080

पण्पु इलर्–गुणहीन; पावियर् आम्–पापी; इवर्–ऐसी स्त्रियाँ; नम् पाल् मेविय कारणम्–हमारे पास आती हैं, उसका कारण; वेरु इलै–(कामेच्छा के सिवा) दूसरा नहीं है; ॲन्पान्–ऐसा सोचकर; मा इयल् कातिल्–भयंकर जानवरों से भरे जंगल में; वयक्कु इरुळ् वन्ताय्–घने अन्धकार में आयी हो; यावळ् अटी–तू कौन है, री; कटितु उरै चॅय्–जल्दी उत्तर दो; ॲन्ऱान्–पूछा। १०८०

गुणहीन, पापिनी ये राक्षसनारियाँ हमारे पास एक ही कुविचार लेकर आती हैं। उनके पास उसके सिवा कोई दूसरा हेतु नहीं रहता! उन्होंने उसे डाँटकर पूछा कि री! भयंकर जानवरों से भरे इस जंगल में तू आयी है। तू कौन है? । १०८०

पेशिन	**तुक्कॅदिर्**	**पेशुर**	**नाणाळ्**
ऊशलु	**ळन्दयर्**	**शिन्दैय**	**ळुन्दान्**
नेशमिल्	**वन्बिन**	**नाहिय**	**निन्बाल्**
आशॅयिन्	**वन्द**	**वयोमुहि**	**यॅन्ऱाळ् 1081**

ऊचल् उळन्तु–दुबिधा के झूले में झूलते हुए; अयर् चिन्तैयळुम्–शिथिल-मन उसने; पेचिततुक्कु–प्रश्नकर्ता से; तान् ॲतिर् पेचुर–सामने बोलने से; नाणाळ्–न लजाकर; नेचम् इल् वन्पितन् आकिय–मैत्री बनाने में चतुर; निन् पाल्–तुम्हारे प्रति; आचैयिन्–राग से; वन्त–आगत; अयोमुकि ॲन्ऱाळ्–अयोमुखी हूँ, कहा। १०८१

अयोमुखी का मन दुबिधा में पड़ा और वह आर्त हुई। उससे प्रश्न करनेवाले लक्ष्मण के सामने बोलते हुए उसे कोई लज्जा का अनुभव न हुआ। उसने कहा कि तुम मित्रता बनाने में चतुर हो। मैं तुम्हारे प्रति प्यार करके आयी हूँ। मेरा नाम अयोमुखी है। १०८१

पिन्नु मुरैप्पवळ् पेरॅळिल् वीरा, मुन्नम् मॊरुत्तर् तॊडामुलै योडुन्
पॊन्निन् मणित्तड मार्बु पुणर्न्दॅन्, इन्नुयि रैक्कडि दीहुदि यॅन्ऱाळ् 1082

पिन्नुम् उरैप्पवळ्–और भी बोलती; पेर् ॲळिल् वीर–बड़े ही सुन्दर वीर; मुन्नम् ऑरुत्तर् तॊटा मुलैयॊटु–पहले किसी के द्वारा अस्पृष्ट स्तनों के साथ; उन्–तुम्हारे; पॊन्निन्–स्वर्णवर्ण; मणि तट मार्पु–सुन्दर विशाल वक्ष से; पुणर्न्तु–लगा लेकर; ॲन् इन् उयिरै–अपने प्यारे प्राणों को; कटितु ईकुति–जल्दी दिला दो; ॲन्ऱाळ्–कहा। १०८२

उसने और भी कहा कि अति सुन्दर वीर! मेरे स्तन पहले किसी के द्वारा अभोग हैं। उनको अपने स्वर्णवर्ण सुन्दर और विशाल वक्ष से लगा लो और मुझे शीघ्र प्राणदान करो। उसने प्रार्थना की। १०८२

आरिय	**शिन्दैय**	**ळः(ह्)दुरै**	**शॅय्यच्**
चीरिय	**कोळरि**	**कण्गळ्**	**शिवन्दान्**

माऱ्‌इल वाऱ्‌हणै यिव्वुरै वायिल्
कूऱ्‌िडि निऩ्‌ऩुडल् कूऱ्‌िडु मॆऩ्‌ड्राऩ् 1083

आऱ्‌िय चिन्तैयळ्-विश्वास के कारण आश्वस्तमना उसके; अ.'.तु उरै चॆय्य-वह कहने पर; चीऱ्‌िय कोळरि-कुपित सिंह (लक्ष्मण) ने; इ उरै-यह वचन; वायिल् कूऱ्‌िटिऩ्-अपने मुख से फिर कहोगी; माऱु इल-तो अबाध; वार् कणै-लम्बे शर; निऩ् उटल्-तेरे शरीर के; कूऱ्‌िटुम् ऍऩ्‌ड्रात्-टुकड़े-टुकड़े कर देंगे; ऍऩ्‌ड्राऩ्-कहा। १०८३

अयोमुखी के मन में आशा का उदय हुआ था, इस कारण उसका मन आश्वस्त और शान्त था। उसका वचन सुनकर पुरुषसिंह लक्ष्मण को क्रोध आ गया। उसने डाँट बतायी— तू इस बात को दुहरायेगी तो मेरे अबाध लम्बे शर तेरे शरीर के टुकड़े कर देंगे। १०८३

मऱ्‌ऱव ऩव्वुरै चॆप्प मऩत्ताल्
चॆऱ्‌ऱिलळ् कैत्तुणै चॆऩ्‌ऩियिऩ् वैत्ताळ्
कॊऱ्‌ऱव नीयॆऩै वऩ्‌दुयिर् कॊळ्ळप्
पॆऱ्‌ऱिडि निऩ्‌ऱु पिऱऩ्‌दऩॆऩ् ऱॆऩ्‌ड्राळ् 1084

मऱ्‌ऱु-और; अवऩ् अ उरै चॆप्प-उनके वह वचन कहने पर; मऩत्ताल् चॆऱ्‌ऱिलळ्- मन में कुपित नहीं हुई; कै तुणै-हाथों के जोड़े को; चॆऩ्‌ऩियिल् वैत्ताळ्-सिर पर रखा; कॊऱ्‌ऱव-नायक; नी वऩ्‌तु-तुम आओ; उयिर् कॊळ्ळ-और मेरे प्राण हरो; पॆऱ्‌ऱिटिऩ्-यह भाग्य मिलेगा तो; इऩ्‌ऱु पिऱऩ्‌तऩॆऩ्-आज ही मेरा जन्म (सफल) हुआ; ऍऩ्‌ड्राळ्-कहा। १०८४

लक्ष्मण का वचन सुनकर अयोमुखी के मन में कोप नहीं हुआ। उसने अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर पर रखे और चिरौरी में कहा कि हे मेरे राजा! तुम आकर मेरे प्राण हरो, वह भाग्य मिला तो समझूंगी कि मैंने आज ही जन्म लिया! । १०८४

वॆङ्गद मिल्लवळ् पिऩ्‌ऩरुम् मेलोय्
इङ्गु नऱुम्बुऩ ऩाडुदि यॆऩ्‌ऩिऩ्
अङ्गै यिऩालॆऩै यञ्जलै यॆऩ्‌ड्राल्
गङ्गैयि नीर्हॊणर् वॆऩ्‌गडि वॆऩ्‌ड्राळ् 1085

वॆम् कतम् इल्लवळ्-भयंकर क्रोध न करती हुई उसने; पिऩ्‌ऩरुम्-फिर भी; मेलोय्-श्रेष्ठ गुण वाले; इङ्कु-यहाँ; नऱुम् पुऩल्-मधुर जल; नाटुति ऍऩ्‌ऩिल्-ढूंढ़ते फिरते हो तो; अम् कैयिऩाल्-अपने सुन्दर हाथ से; ऍऩै अञ्चलै-मुझे मत डरो; ऍऩ्‌ड्राल्-कहोगे (अभयदान करोगे) तो; कङ्कैयिऩ् नीर्-गंगा का जल ही; कटितु कॊणर्वॆऩ्-बहुत जल्दी ला दूंगी; ऍऩ्‌ड्राळ्-कहा। १०८५

अयोमुखी ने, विना कठोर शत्रुता के भाव के ही आगे कहा कि

श्रेष्ठ गुण वाले ! तुम मधुर जल की खोज में ही न फिरते हो ? तुम मुझे अपने सुन्दर हाथ से अभयमुद्रा दिखाते हुए कहो कि मत डरो, तो मैं गंगा का जल ही बहुत वेग के साथ लाकर दूँगी । १०८५

सुमित्तिरैच् चेयवळ् शॉऱ्ऱत्त शॉल्लैक्
कमित्तिलन् निऩ्निरु कादॊडु नाशि
तुमिप्पदऩ् मुऩ्नह लॆऩ्बदु शॊल्ल
इमैत्तिलळ् निऩ्ऱऩ ळिऩ्ऩ निऩैन्दाळ् 1086

चुमित्तिरै चेय्–सौमित्र के; चॊऱ्ऱऩ चॊल्लै–उसके कहे हुए वचनों को; कमित्तिलन्–क्षम्य नहीं समझकर; निन् इरु कातॊटु–तेरे दो कानों के साथ; नाचि–नाक को भी; तुमिप्पतन् मुन्–काट दूँ, इसके पहले ही; अकल् ऍऩ्पतु–हट जाओ, ऐसा; चॊल्ल–कहने पर; इमैत्तिलळ्–निर्निमेष; निन्ऱनळ्–खड़ी रही; इन्ऩ निनैन्ताळ्–यों सोचा । १०८६

सौमित्र ने उसकी बात को क्षम्य नहीं माना । उन्होंने कहा कि मैं तेरे दोनों कानों के साथ तेरी नाक को काट दूँ, इसके पहले ही भाग जा ! यह सुनकर वह कुछ देर ताकती खड़ी रही । वह यों सोचने लगी । १०८६

ऍडुत्तनॆ नेहिनॆ नॆऩ्मुळै तऩ्नुळ्
अडॆत्तिवऩ् वॆम्मै यडक्किय पिऩ्ऱै
उडऱ्पडु मालुड नेयुरु नऩ्मै
तिडत्तिदु वेनल नॆऩ्ऱॆदिर् शॆऩ्ऱाळ् 1087

ऍटुत्तनॆन् एकिनॆन्–इसको ले जाकर; ऍन् मुळै तन्नुळ्–अपनी गुफा में; अटैत्तु–बन्द करके; इवन् वॆम्मै–इसका क्रोध; अटक्किय पिन्ऱै–शान्त करने के बाद; उटन्पटुम् आल्–वह सम्मत हो जायगा, तब; नन्मै उटने उऱुम्–मेरा भाग्य तुरत जाग जायगा; इतुवे–यही; तिटत्तु नलम्–पक्का भला है; ऍन्ऱु–सोचकर; ऍतिर् चॆन्ऱाळ्–सामने (पास) गयी । १०८७

मैं इसको वलात् उठाकर ले जाऊँगी और अपनी गुफा में रखकर उसे शान्त कर लूंगी । तब वह मेरी इच्छा पूरी करने को सम्मत हो जायगा । उसी क्षण मेरा भाग्य जाग जायगा । यही उपाय हितकारी है । यह विचारकर वह उनके सामने गयी । १०८७

मोहनॆ यॆऩ्बदु मुऩ्दि मुयऩ्ऱाळ्
माहनॆ डुङ्गिरि पोलियै वव्वा
एहिऩ ळुम्बरि ऩिऩ्दुवॊ डेहम्
मेहमॆ नुम्बडि नॊय्दिऩिऩ् वॆय्याळ् 1088

वॅय्याळ्–क्रूरा ने; मुऩ्ऩि–सवेग सामने जाकर; मोकत्तै अॅऩ्पतु मुयऩ्ऱाळ्–मोहिनी डालने का प्रयास किया; माक नॅट्टुम् किरि–गगनव्यापी एक बड़े पर्वत; पोलियै–समान (लक्ष्मण) को; वव्वा–पकड़ लेकर; नॊय्तितिल्–जल्दी; उम्परिऩ्–आकाश में; इन्तु ओट्टु एकुम् मेकम्–इन्दु के साथ दौड़नेवाले मेघ; अॅऩुम्पटि–जैसा; एकिऩळ्–जाने लगी। १०८८

उस क्रूरा ने उन पर मोहनी डालने का कार्य करके गगनव्यापी पर्वत-सम उनको पकड़कर उठाया और सवेग आसमान में चन्द्रसहित मेघ के समान जाने लगी। १०८८

मन्दरम् वेलैयिऩ् वन्ददुम् वाऩत्, तिन्दिर ऩूर्मुहि लॅन्ऩलु माऩाळ्
वॅन्दिऱल् वेल्हॊडु शूरडुम् वीरच्, चुन्दर ऩूर्दरु तोहैयु मॊत्ताळ् 1089

मन्तरम् वेलैयिऩ् वन्ततुम्–मन्दरपर्वत-सहित सागर-सम; वाऩत्तु इन्तिरऩ् ऊर्–आकाश में इन्द्र-वाही; मुकिल् अॅऩ्ऩलुम्–मेघ के समान; आताळ्–लगी; वॅम् तिऱल् वेल् कॊट्टु–कठोर और मजबूत शक्ति लेकर; अट्टुम्–शूरपद्म को जिन्होंने मारा, उन; वीर–वीर; चुन्तरऩ्–सुन्दर देव षण्मुख के; ऊर् तरुम्–वाहन; तोकैयुम् ऒत्ताळ्–मोर के समान भी बनी। १०८९

तब लक्ष्मण के साथ राक्षसी कैसे लगी? मन्दरपर्वत-सहित सागर के समान और इन्द्र को लेकर चलनेवाले मेघ के समान लगी। और भी कठोर और सारयुक्त शक्ति से जिन्होंने शूरपद्म को मारा था, उन वीर और सुन्दर षण्मुख को ले जानेवाले मयूर के समान भी लगी (मोर षण्मुख का वाहन माना जाता है। शूरपद्म ही मोर बना था।)। १०८९

आङ्गवण् मार्बॊडु कैयि ऩडङ्गिप्
पूङ्गऴल् वार्शिलै मोऴि पॊलिन्दाऩ्
वीङ्गिय वॅञ्जिऩ वीऴ्मद वॅम्बोर्
ओङ्ग लुरिक्कु मुरुत्तिर ऩॊत्ताऩ् 1090

आङ्कु–तब; पूम् कऴल्–सुन्दर पायल; वार् चिलै–लम्बा धनुष (इनसे युक्त); मोऴि–वीर लक्ष्मण; अवळ् मार्पु ऒट्टु–उसके वक्ष और; कैयिऩ् अटङ्कि–हाथों के अन्दर समाकर; पॊलिन्ताऩ्–शोभे, तब; वीङ्किय–बढ़ा हुआ; वॅम् चिऩम्–कठोर क्रोध और; वीऴ् मतम्–बहता मदजल; वॅम् पोर्–(इनके साथ) जिसने युद्ध किया; ओङ्कल्–उस गज को; उरिक्कुम्–उधेड़नेवाले; उरुत्तिरऩ् ऒत्ताऩ्–रुद्र-सम लगे। १०९०

लक्ष्मण कैसे दिखे? सुन्दर पायलधारी धनुर्धर वीर लक्ष्मण, जो उसके वक्ष पर हाथों के क्रोड के अन्दर समा गये थे, रुद्र के समान शोभे जो अति क्रुद्ध मदस्रावी योद्धा गज को उधेड़ रहे हों। १०९०

इप्पडि यत्तव ळॆहिऩ ऴिप्पाल्
अप्पिडै तेडि नडन्द वॆन्ताविऩ्

तुप्पुडै मालूवरै तोन्ऱिल नॆन्ना
वॆप्पुडै मॆय्यॊडु वीरन् मॆलिन्दान् 1091

अन्नवळ् इ पटि एकितळ्–वह इस तरह गयी; इ पाल्–इस ओर; वॆप्पु उटै–पिपासा से; मॆय् उटै वीरन्–(तपित) श्रीशरीर के वीर श्रीराम; अप्पु इटै तेटि–जल-थल खोजते हुए; नटन्त–जो चला; ऎन् आवि–मेरा प्राण-सम; तुप्पु उटै–मजबूत; माल् वरै–बड़े पर्वत के समान; तोन्ऱिलन्–(लक्ष्मण) नहीं (आता) दिखता; ऎन्ना–सोचकर; मॆलिन्तान्–कातर हुए। १०६१

एक ओर वह लक्ष्मण को पकड़ लेकर उधर जा रही थी, तो दूसरी ओर यहाँ प्यास से तप्त शरीर के श्रीराम इस बात को लेकर दुःखी हुए कि जल-थल के अन्वेषण में जो गया, वह मेरा प्राण-सम प्यारा भाई और मज़बूत और बड़े पर्वत के समान लक्ष्मण अब भी नहीं दिखाई देता है। १०९१

वॆय्दाहिय कानिडै मेवरुनीर्, ऐदादलि नोवय लॊन्ऱुळदो
नॊय्दाय्वर वेहमु नॊय्दिलनाल्, ऎय्दादॊऴि यानिदु वॆन्नैहॊलाम् 1092

वॆय्तु आकिय कान् इटै–कठोर इस जंगल में; मेवु अरु नीर्–मिलनेवाला शुद्ध जल; ऐतु आतलिन्–अपूर्व है, इसलिए; अयल् ऒन्ऱु उळतो–और कोई (संकट) आ गया; नॊय्ताय् वर–शीघ्र आने में; वेकमुम् नॊय्तु इलन् आल्–मन्द-गति नहीं है; ऎय्तातु ऒऴियान्–विना आये नहीं रहेगा; इतु ऎन्नै कॊल् आम्–यह किस कारण है। १०६२

वे सोचने लगे कि क्या कारण है? इस बीहड़ भयंकर वन में शुद्ध जल का मिलना अपूर्व है? या कोई अन्य संकट आ पड़ा? वह तो वेग में मन्दता न करनेवाला है। उसका स्वभाव ही ऐसा है कि जल्दी आयेगा। विलम्ब नहीं करेगा। इतनी देर तक उसे आना चाहिए था। फिर ऐसा क्यों हुआ? । १०९२

नीर्कॊण्डनै यिव्वऴि नेडिनैपोय्, शार्हॆन्ऱनॆ नित्तुणैच् चार्हिलनाल्
वार्कॊण्डणि कॊङ्गैयै वव्विनर्पाल्, पोर्कॊण्डन नोपॊरु ळुण्डिदॆना 1093

इ वऴि नेटिनै पोय्–इस मार्ग में ढूँढ़ते चलकर; नीर् कॊण्टनै–जल लेकर; वार्क ऎन्ऱनन्–आ जाओ, मैंने कहा था; इ तुणै–अब तक; चार्किलन् आल्–नहीं आया है, इसलिए; वार् कॊण्टु अणि–अँगिया से अलंकृत; कॊङ्कैयै–स्तनों (की सीता) को; वव्वितर् पाल्–पकड़कर जो ले गये, उनसे; पोर् कॊण्टननो–युद्ध करने लग गया क्या; इतु पॊरुळ् उण्टु–ऐसा एक कार्य हुआ होगा; ऎना–सोचकर। १०६३

मैंने ही उसे जल ढूँढ़ लाने के लिए भेजा। 'जल्दी आ जाओ' यह कहकर ही उसे भेजा था। वह तो अब तक नहीं आया। तब क्या उसे अँगियाबद्ध स्तनों की देवी को जो हर ले गये थे, उन राक्षसों के साथ

लड़ाई हो गयी ? ऐसा कुछ हुआ होगा, अवश्य ! —राम ने यह सोचा । १०९३

अञ्जोंऱ्किळि यन्न वणङ्गिनैमुन्, वञ्जित्त विरावणन् वव्वित्तो
नञ्जिऱ्कॉडि यान्नड लैत्तॉऴिलाल्, तुञ्जुऱ्ऱन्ऩो विदि यिन्ऱुणिवाल् 1094

किळि अन्न–शुक के समान; अम् चॉल् अणङ्कितै–मधुर-वाणी देवी को; मुन्नु वञ्चित्त–पहले हर ले जो गया, वह; इरावणन्–रावण; वव्वित्तो–पकड़ ले गया क्या; वितियिन् तुणिवाल्–मेरी विधि की प्रबलता से; नञ्चिल् कॉटियान्–विष से भी हिंस्र; नटलै तॉऴिलाल्–(उस राक्षस की) वंचना के कार्य से; तुञ्चुऱ्ऱत्तो–मर गया क्या । १०९४

क्या वही रावण इसको भी पकड़ ले गया, जिसने शुकी-सी मधुर-भाषिणी सीता को धोखे से हर लिया था ? या मेरी विधि की प्रबलता से, विष से भी हिंस्र उस रावण के कपट-कार्य से वह मर गया ? । १०९४

वरिविऱ्कै यॅन्नारुयिर् वन्दिलन्नाल्, तरुशॉऱ्करु देन्नॊरु तैयलैयान्
पिरिवित्तनॆ ऩॆन्बदॊर् पीऴैपॆरुत्, तॆरिवित्तिड वावि यिऴन्दन्नो 1095

वरि विल् कै–सबन्ध धनुर्हस्त; ऍन् आरुयिर्–मेरा प्राणप्यारा भाई; वन्तु इलन् आल्–आया नहीं है; यान्–मैंने; तरु चॉल् करुतेन्–उसके समयानुकूल कहे वचन को न मानकर; ऑरु तैयलै–अप्रमेय स्त्री को; पिरिवित्तनॅन्–अपने से बिछुड़वा लिया; ऍन्पतु–इस; ओर् पीऴै–एक दुःख के; पॅरुत्तु ऍरिवित्तिट–बहुत जलाने पर; आवि–प्राणों को; इऴन्तत्तो–छोड़ दिया क्या । १०९५

सबन्ध धनुर्हस्त, मेरा प्राण-प्यारा लक्ष्मण आया नहीं है । मैंने उसकी बात न मानकर अपनी अनुपम स्त्री को अलग करा दिया। यह दुःख शायद उसे बहुत सन्ताप दे रहा था । तब क्या उस दुःख के कारण उसने अपने प्राण छोड़ दिये ? । १०९५

उण्डाहिय कारिरु ळूडॊरुवेन्, कण्डानवन् वेऱॊरु कण्णिलन्नाल्
पुण्डानुरु नॆञ्जु पुऴुङ्गुरुवेन्, ऍण्डानिल नॆङ्ङन्न नाडुहॆन्नो 1096

उण्टु आकिय–वन (जो) आया है; कार् इरुळ् ऊटु–इस घने अन्धकार में; ऑरुवेन्–एकाकी मेरी; कण् तान् अवन्–आँख वही है; वेऱु ऑरु कण्–और कोई आँख; इलॅन् आल्–मेरी नहीं है, इसलिए; पुण् तान् उऱु–पहले ही जो विक्षत है; नॅञ्चु–उस मन में; पुऴुङ्कु उरुवेन–अधिक तप्त मैं; ऍण् तान् इलन्–विचार-विमूढ़ हो गया हूँ; ऍङ्ङनम्–किस प्रकार; नाटुकॅन्नो–खोजूँगा । १०९६

जो घना अन्धकार फैल आया है, उसमें मैं अकेला हूँ । वही मेरी आँख है ! उसको छोड़ कोई दूसरी आँख मेरी नहीं है । पहले से ही मेरा मन विद्ध और व्रणी है । अब मैं और भी उत्तप्त हुआ हूँ । मन

सोचता भी नहीं, विमूढ़ हो गया है। इस स्थिति में मैं क्योंकर उसको ढूँढ़ने चलूँ ? । १०९६

तऴ्ळावितै येऩ्ऱति यारुयिराय्, उऴ्ळायीरु नीयु मॊळित्ततैयो
पिऴ्ळाय्पॆरि याय्पिऴै शॆय्दतैयाल्, कॊळ्ळादुल हुऩ्ऩैयि दोहॊडिदे 1097

तऴ्ळा वितैयेऩ्–अप्रतिबद्ध विधिबद्ध मेरे; तत्ति आर् उयिराय् उऴ्ळाय्–अद्वितीय प्राण-सम रहनेवाले; ऑरु नीयुम् ऑळित्ततैयो–वैसे तुम भी अदृश्य हो गये क्या; पिऴ्ळाय्–बेटे; पॆरियोय्–बड़े; पिऴै चॆय्तत्ते आल्–अपराध किया है तुमने, तदर्थ; उलकु उऩ्ऩै कॊळ्ळातु–लोक तुमको सही नहीं मान लेगा; इतु ओ कॊटितु–यह अवश्य कठोर है। १०९७

अबाध विधि से बद्ध मेरे प्यारे प्राण (-सम) हे लक्ष्मण ! तुम भी मुझे छोड़ कहीं जा छिप गये क्या ? उम्र में छोटे ! बुद्धि में बड़े ! तुमने यह काम करके एक कठोर अपराध कर दिया ! लोक इसको सही नहीं मानेगा। यह तुम्हारा कार्य अवश्य बड़ा कठोर है ! । १०९७

पेराविडर् वन्दऩ पेर्क्कवलाय्, तीराविडर् तन्दतै तॆव्वर्तॊऴुम्
वीरावॆतै यॆङ्ङऩ् वॆऱुत्ततैयो, वारायपुऱ मित्तुणै वैहुदियो 1098

वन्तत–जो हम पर आये; पेरा इटर्–उन अवार्य संकटों को; पेर्क्क–दूर करने में; वलाय्–समर्थ; तीरा इटर्–अमिट दुःख; तन्ततै–(मुझे) दिला दिया; तॆव्वर् तॊऴुम् वीरा–शत्रु द्वारा भी पूज्य वीर; ऍतै ऍङ्ङऩ् वॆऱुत्ततैयो–मुझसे क्योंकर घृणा की; इ तुणै–इतनी देर; पुऱम्–बाहर; वैकुतियो–रह सके क्या; वाराय्–आ जाओ। १०९८

हमारे ऊपर आये अवार्य संकटों को दूर करने में समर्थ हे भाई ! तुमने मुझे अप्रतिबद्ध संकट दे दिया। शत्रु-शंसित वीर ! तुमने कैसे मुझसे घृणा की ? इतनी देर कहीं बाहर ठहर जाओगे क्या ? आओ, मेरे पास आ जाओ। १०९८

ऍऩ्ऩैत्तरु मॆन्दैयै यॆऩ्ऩैयरैप्, पॊऩ्ऩैप्पॊरु हिऩ्ऱ पॊलऩ्गुऴैयाळ्
तऩ्ऩैप्पिरि वेऩुळ ऩावदुताऩ्, उऩ्ऩैप्पिरि याद वुयिर्प्पलवो 1099

ऍऩ्ऩै तरुम् ऍन्तैयै–अपने जनक अपने पिता को; ऍऩ्ऩयरै–अपनी माताओं को; पॊऩ्ऩै पॊरुवुकिऩ्ऱ–कांचना (श्रीलक्ष्मी) से तुल्य; पॊलऩ् कुऴैयाळ् तऩ्ऩै–स्वर्णकुण्डल-धारिणी सीता को; पिरिवेऩ्–छोड़कर अलग जो रहता हूँ; आवतु ताऩ्–जीवित रहता हूँ, वह भी; उयिर्प्पु उऩ्ऩै–अपना जीवन, तुमसे; पिरियात अलवो–विलग नहीं हुआ, उसी कारण न। १०९९

मैं अपने पिता से, अपनी माताओं से और स्वर्णकुण्डलधारिणी 'कांचना' (लक्ष्मी) सी सीता से बिछुड़कर भी जीवन धारण करता हूँ, तो वह प्राण-सम कभी विलग न होकर तुम साथ रहे —इसी कारण ! । १०९९

पॉऱ्ऱोडिवर् हिऩ्ऱ पॉलङ्गुळैयाळ्, तऱ्ऱेडि यिरुन्दु तयङ्गिडुवेऩ्
निऱ्ऱेडि वरुन्द निरप्पित्तैयो, ऍऩ्ऱेडिऩै वन्द विळङ्गळिऱे 1100

ऍऩ् तेटिऩै वन्त–मुझे ही ढूँढ़ते हुए (प्राप्य समझकर) मेरे पीछे आये हुए; इळम् कळिऱे–कलभ; पॉऩ् तोट्टु इवर्किऩ्ऱ–स्वर्ण के दलों से युक्त; पॉलन् कुऴैयाळ् तऩ्–सुन्दर कुण्डलधारिणी को; तेटि–खोजते हुए; इरुन्तु तयङ्किट्टुवेऩ्–यहाँ जो हिचकता रहता हूँ; निऩ् तेटि वरुन्त–तुमको खोजकर कष्ट उठाऊँ; निरप्पित्तैयो–ऐसी लाचारी बना दी क्या। ११००

केवल मेरी सेवा का अर्जन करने के लिए मेरे साथ आये हुए कलभ-सम लक्ष्मण ! दलोंसहित कमल-समान स्वर्ण के बने कर्णाभरणों से भूषित सीता की खोज में मैं यहाँ ठहरा हुआ दुःख उठा रहा हूँ। अब क्या तुमने तुम्हें खोजने की लाचारी भी पैदा कर दी है ? । ११००

इऩ्ऱेयिऱ वादॉऴि येऩॅमरो, पॉऩ्ऱादॉऴि यार्पुहल् वारुळराल्
ऑऩ्ऱायिऩि वुऩ्गिळै योरॅयॅलाम्, कॉऩ्ऱाय्कॉडि यायिदु वुङ्गुणमो 1101

इऩ्ऱे–आज ही; इऱवातु ऑऴियेऩ्–बिना मरे नहीं रहूँगा; पुकल्वार उळराल्–(यह समाचार) सुनानेवाले होंगे, इसलिए; ऍमर् ओ पॉऩ्ऱातु ऑऴियार्–हमारे जन बिना मरे नहीं रहेंगे; उऩ् किळैयोरॅ ऍलाम्–अपने सारे बन्धुजनों को; इति ऑऩ्ऱाय् कॉऩ्ऱाय्–तुमने अब एक साथ मरवा दिया; कॉटियाय्–निर्मम हो; इतुवुम् कुणमो–यह भी (अच्छा) गुण है क्या। ११०१

(अब इसका फल क्या होगा— जानते हो ?) मैं मरे बिना नहीं रहूँगा। यह समाचार ले जानेवाले कोई अवश्य हो जायँगे। वह सुनकर हमारे बन्धुजन भी मर जायँगे, अवश्य। तो अपने सारे बन्धु-लोगों को तुम ही एक साथ मरवानेवाले बन जाओगे। इसलिए तुम बड़े ही निर्मम बन गये। यह भी कोई श्लाघ्य गुण है क्या ? । ११०१

मान्दामुदऩ् मऩ्ऩवर् तम्वऴियिल्, वेन्दाहै तुऱन्दपिऩ् मॅय्युऱवोर्
तान्दामॉऴि यत्तमि येऩुडऩे, पोन्दायॅऩै विट्टऩै पोयिऩैयो 1102

मान्ता मुतल्–मान्धाता से लेकर; मऩ्ऩवर् तम् वऴियिल्–राजाओं से अपनाये गये मार्ग में; वेन्तु आकै–राजा बनना; तुऱन्त पिऩ्–त्यागने के बाद; मॅय् उऱवोर्–सच्चे बन्धुजन; ताम् ताम् ऑऴिय–सब दूर रह गये; तमियेऩ् उटऩे–अकेले मेरे साथ; पोन्ताय्–आये; ऍऩै–मुझे; विट्टऩै–छोड़कर; पोयिऩैयो–चले गये क्या। ११०२

मान्धाता के काल से लेकर जो प्रथा चली आ रही थी, मैंने उसका उल्लंघन किया और राजा बनना छोड़ा। तब मेरे सभी रिश्तेदार छूट गये, पर तुम एक ही अकेले रह गये और मेरे साथ आये। ऐसे तुम अब मुझे छोड़कर चले गये क्या ? । ११०२

ॲन्ऩावुरै यावॆळुम् वीळुमिरुन्, दुन्ऩावुणर् वोय्वुरु मॊन्ड्रलवाल्
मिन्ऩादिडि यादिरुळ् वाय्विळैवी, दॆन्ऩामॆन्ऩु मॆन्ड्रति नायहन्ऩे 1103

ॲन् तति नायकन्–मेरे (कवि के) अद्वितीय ईश्वर; ॲन्ऩा उरैया–यों कहते हुए; ॲळुम्–उठकर खड़े होते; वीळुम्–गिर जाते; इरुन्तु–उठ बैठकर; उन्ऩा–(अपने कष्टों का) विचार कर; उणर्वु ओय्वु उरुम्–सुध-बुध खो जाते; मिन्ऩातु इटियातु–(बिजली के) चमके विना वज्र नहीं गिरता; इरुळ् वाय्–अन्धकार में; विळैवु–हुआ; ईतु ॲन्ऩाम्–यह क्या है; ॲन्ऩुम्–कहते; ऒन्ड्रु अल–एक नहीं, (अनेक तरह से) दुःख का अनुभव किया। ११०३

(कवि कहते हैं—) इस तरह मेरे अद्वितीय परमनायक कहते हुए उठते; फिर शिथिल होकर गिर जाते। फिर उठ बैठते और अपने कष्टों का स्मरण करके सुध-बुध खो जाते। सोचते कि विना बिजली की चमक के वज्र नहीं गिरता। अँधेरे में यह जो हुआ, उसका कारण क्या है? (क्या और भी विपदाएँ मिलकर आनेवाली हैं?) एक नहीं, अनेक प्रकार से वे चिन्ता करते दुःखी हो रहे थे। ११०३

नाडुम्बल शूळल्ह डोरुनडन्, दोडुम्बॆयर् शॊल्लि युळैन्दुयिर्पोय्
वाडुम्वहै शोरु मयङ्गुरुमाल्, आडुङ्गळि मामद यानैयनान् 1104

आटुम्–हिलने-डोलने के स्वभाव वाले; कळि मा मत–अति मदमत्त; यानै अनान्–गज-सम श्रीराम; पल चूळल्कळ् तोरुम्–अनेक स्थानों में; नटन्तु नाटुम्–जाकर ढूँढ़ते; पॆयर् चॊल्लि ओटुम्–नाम लेते हुए दौड़ते; उळैन्तु–आकुल होकर; उयिर् पोय् वाटुम् वकै–प्राण जाकर मुरझा जायँ, ऐसा; चोरुम्–जर्जर बनते; मयङ्कुरुम्–मूच्छित हो जाते। ११०४

हिलता रहने के स्वभाव के अभिमानी और मत्तगज के समान श्रीराम अनेक स्थानों में जाकर ढूँढ़ने लगे। लक्ष्मण का नाम लेते हुए दौड़े। अधिक दुःख के कारण प्राण सूखने-से लगे। थककर मूच्छित हुए। ११०४

कमैयाळॊडु मॆन्ऩुयिर् कावलिनिन्, ड्रिमैयादव निन्ऩुणै ताळ्वुरुमो
शुमैयायुल हूडुळ् रॊल्विनैयेर्, कमैयादुहॊल् वाळ्वरि येन्ऩुमाल् 1105

कमैयाळ् ओटुम्–क्षमाशालिनी सीता के साथ; ॲन् उयिर्–मेरे भी प्राणों की; कावलिन् निन्ड्रु–रक्षा में रहकर; इमैयातवन्–अनिद्र (जो रहा) वह; इ तुणै ताळ्वुरुमो–इतना विलम्ब करेगा; उलकु ऊटु–संसार में; चुमैयाय् उळल्–भार बनकर घूमनेवाले; तॊल् विनैयेऱ्कु–प्राचीन विधिबद्ध मुझे; वाळ्वु अमैयातु कॊल्–(सन्तोषमय) जीवन प्राप्त नहीं होगा क्या; अऱियेन्–कुछ नहीं जान पाता; ॲन्ऩुम्–कहते (पछताते)। ११०५

लक्ष्मण क्षमाशालिनी सीता के साथ मेरे प्राणों की रक्षा में दत्तचित्त अनिद्र रहा। क्या वह अपने वश से इतना विलम्ब करेगा? संसार का भार बनकर घूमनेवाले, प्राचीन विधिविताड़ित मुझे सन्तोष का जीवन नहीं

मिलेगा क्या ? कुछ भी जान नहीं पाता। —श्रीराम ऐसा सोचते हुए बहुत शोकसंतप्त हुए। ११०५

अऱप्पालुळ देलवऩ् मुऩ्ऩवऩायुप्, पिऱप्पाऩुऱिल् वऩ्दु पिऱक्कवॆऩ्ऩा
मऱप्पाल्वडि वाळ्होडु मऩ्ऩुयिरैत्, तुऱप्पाऩुऱु हिऩ्ऱ तॊडर्च्चियिऩ्वाय् 1106

अऱम् पाल् उळतु एल्–धर्म-पक्ष कोई है तो; अवऩ्–वह लक्ष्मण; मुऩ्ऩवऩाय्–मेरा अग्रज बनकर; पिऱप्पाऩ् उरिल्–जन्म ले पाये तो; वऩ्तु पिऱक्क अॆऩ्ऩा–आकर जन्म ले, कहकर; मऱम् पाल्–दृढ़ता के साथ; वटि वाळ् कॊटु–तीक्ष्ण करवाल लेकर; मऩ्–नाथ श्रीराम; उयिरै तुऱप्पाऩ् उऱुकिऩ्ऱ–प्राण-त्याग करने को; तॊटर्च्चियिऩ् वाय्–जब उद्यत हुए, उसके आरम्भ में। ११०६

श्रीराम ने आत्महत्या कर लेने का निश्चय कर लिया। 'अगर धर्म का पक्ष स्थिर रहा तो मेरे छोटे भाई लक्ष्मण का मेरे अग्रज के रूप में जन्म लेना साध्य हो तो हो।' यह कहते हुए उन्होंने तलवार ली। राजाराम अपने प्राण त्यागने के लिए प्रस्तुत हुए। तब आत्महत्या के कार्य के प्रारम्भ में ही—। ११०६

पेर्ऩ्दाऩॆडु मायैयि ऩिऱ्पिरिया, ईर्ऩ्दाऩव ळाशि पिडित्तिळैयोऩ्
शोर्ऩ्दाळिडु पूशल् शॆवित्तॊळैयिल्, शेर्ऩ्दार्दलु मेतिरु माऱॆरुळा 1107

इळैयोऩ्–छोटे भाई; नॆटु मायैयितिल्–लम्बे माया-मोह से; पिरिया–छूटकर; पेर्ऩ्ताऩ्–उससे अलग होकर; अवळ् नाचि पिटित्तु–उसकी नाक पकड़कर; ईर्ऩ्ताऩ्–काट दी; चोर्ऩ्ताळ्–उससे वह दुर्बल हुई; इटु पूचल्–उसने जो (रुदन-)स्वर निकाला वह; चॆवि तॊळैयिल् चेर्ऩ्तु आर्तलुम्–ज्योंही कर्ण-विवर में भरा, त्योंही; तिरुमाल्–श्रीविष्णु (के अवतार श्रीराम); तॆरुळा–सजग होकर। ११०७

उधर छोटे भाई लक्ष्मण राक्षसी की माया से मिली मोहावस्था से छूटे। उन्होंने राक्षसी के बन्धन से अलग होकर उसकी नासिका पकड़कर (करवाल से) काट दी। उससे वह राक्षसी पीड़ित हुई और बल खोकर रुदन-स्वर निकालने लगी। वह स्वर श्रीविष्णु के कर्णविवर में आकर भर गया। तभी श्रीराम अपनी भ्रमित अवस्था से सचेत हुए। ११०७

पऱऱॊहु काऩहत् तरक्कर् पल्हळल्
मुऱऱॊरु वॆञ्जमर् मुयल्हिऩ् ऱारॆदिर्
उऱऱिय वोशैयऩ् ऱॊरुत्ति यूऱुपट्
टऱऱिय कुरलव ळरक्कि यामॆऩा 1108

परल् तॊकु काऩकत्तु–कंकड़-भरे जंगल में; अरक्कर्–राक्षस; पल् कळल् मुऱऱु–अनेक पायलों को बजने देते हुए; ऒरु वॆम् चमर्–एक भयंकर युद्ध; मुयल्किऩ्ऱार्–जो करते हैं उन; ऎतिर्–के सामने; उऱऱिय–उच्च स्वर में निकाला गया; ओचै अऩ्ऱु इतु–शब्द है नहीं, यह; ऒरुत्ति–एक स्त्री का; ऊऱु पट्टु–

संकटग्रस्त होकर; अरऱ्ऱिय कुरल्–रुदन का स्वर है; अवळ्–वह; अरक्कि आम् अँता–राक्षसी ही है, यह सोचकर। ११०८

श्रीराम ने सोचा कि यह स्वर राक्षसों का स्वर नहीं है, जो कंकड़ीले जंगल में अपनी पायलों को बजने देते हुए युद्ध कर रहे हों और अपने शत्रुओं के सामने उच्च स्वर में नाद उठा रहे हों। किन्तु यह एक स्त्री का कष्ट में पड़कर निकाला हुआ रुदन-स्वर है। वह स्त्री कोई राक्षसी ही होगी। —यह सोचकर—। ११०८

अङ्गियि नॅ़ड्डुम्बडै वाङ्गि याङ्गदु
शॅङ्गॅयिऱ् करियवऩ् ऱिरिक्कुम् वेलॅयिल्
पॉङ्गिरु ळप्पुऱत् तुलहम् बुक्कदु
कङ्गुलुम् बहलॅऩप् पॉलिन्दु काट्टिऱ्ऱे 1109

करियवऩ्–नीलवर्ण; नॅट्टुम् पटै–लम्बा शर; चॅम् कैयिऩ् वाङ्कि—लाल (सुन्दर) हाथ में लेकर; आङ्कु–तब; अतु–उसको; अङ्कियिल्–आग्नेयास्त्र के रूप में; तिरिक्कुम् वेलॅयिल्–प्रयोग करते समय; पॉङ्कु इरुळ्–बढ़ा हुआ अन्धकार; अ पुऱत्तु उलकम्–उस तरफ़ के लोक में; पुक्कतु–जा पहुँचा; कङ्कुलुम्–रात भी; पकल् अॅऩ–दिन के समान; पॉलिन्तु–प्रकाशमय बनकर; काट्टिऱ्ऱु–दिखाई दिया। ११०९

नीलवर्ण श्रीराम ने एक लम्बा शर लिया, उसे आग्नेयास्त्र के रूप में अभिमन्त्रित करके प्रेषित किया। तो अन्धकार अण्ड के उस पार के लोक में चला गया। इसलिए रात भी दिन के समान प्रकाशमय बन गयी। ११०९

नॅ़ड्डुवरै पॉडिपड निवन्द मामरम्
ऑडिपड निलमहळ् ळुळैय वूङ्गॅलाम्
शडशड वॅऩ्ऩुमौलि तळैप्पच् चालवुम्
मुडुहिऩऩ् कालिऩ्वॅङ् गालिऩ्मुम् मैयाऩ् 1110

वॅम् कालिऩ् मुम्मैयाऩ्–प्रतापी पवन के तिगुने वेग से; नॅट्टु वरै पॉटि पट–बड़े पर्वतों को चूर करते हुए; निवन्त मा मरम् ऑटि पट–ऊँचे बड़े वृक्षों को तोड़ते हुए; निल मकळ् उळैय–भूमिदेवी को दुःख देते हुए; ऊङ्कु अॅलाम्–सभी ओर; चट चट अॅऩुम् ऑलि–'तड़', 'तड़' शब्द; तळैप्प–अधिक होने देते हुए; कालिऩ्–पैदल; चालवुम् मुटुकिऩऩ्–जल्दी-जल्दी गये। १११०

श्रीराम सवेग जाने लगे। उनकी गति प्रतापी पवन की गति की त्रिगुणी थी। उस वेग में बड़े-बड़े पर्वत चूर हुए। ऊँचे और बड़े तरु गिरे। भूदेवी भी दुःखीं। सब ओर 'तड़-तड़' शब्द भर उठा। वे इस रीति से पैदल चले। १११०

ऑरुङ्गुयर्न् दुलहिन्मे लूळिप् पेर्च्चियुळ्
करुङ्गडल् वरुवदै यनैय काट्चियान्
पॆरुन्दुणैत् तम्मुनै नोक्किप् पिन्नवन्
वरुन्दलै वरुन्दलै वळ्ळि योयॆन्ना 1111

ऊळि पेर्च्चि उळ्–युगान्तर में; उलकिन् मेल्–पृथ्वी पर; करुम् कटल्–नीला सागर; ऑरुङ्कु उयर्न्तु–एक साथ उमँगकर; वरुवतु अनैय–आता हो जैसे; काट्चियान्–दृश्यमान; पॆरुम् तुणै–परमपालक; तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; पिन्नवन्–अनुज लक्ष्मण; वळ्ळियोय्–उदार प्रभु; वरुन्तलै वरुन्तलै ऎन्ना–कातर नहीं हों, कातर मत होइए, कहते हुए। ११११

श्रीराम युगांतर के काल में उठकर भूमि पर बढ़ते चलनेवाले समुद्र के समान प्रचण्ड वेग से जा रहे थे। परमरक्षक अपने ज्येष्ठ को उस तरह आते देखकर लक्ष्मण ने कहा कि उदार प्रभु! दुःखी मत हों! दुःखी मत हों। (ऐसा कहकर—)। ११११

वन्दनॆ नडियनेन् वरुन्दल् वाळिनिन्
अन्दमि लुळ्ळमॆन् ऱरियक् कूऱुवान्
शन्दमॆन् मलर्पुरै शरणञ् जार्न्दनन्
शिन्दिन नयनम्वन् दनैय शॆय्हैयान् 1112

चिन्तिन नयनम्—खोया हुआ नेत्र; वन्तु अनैय चॆय्कैयान्–फिर मिला हो, ऐसा कार्य करते हुए लक्ष्मण; वन्तनॆन् अटियनेन्–आ गया, दास मैं; वरुन्तल्–दुःखी मत हों; निन् अन्तम् इल् उळ्ळम्–आपका अनन्त प्रेम-भरा मन; वाळि–जिए; ऎन्ऱु–ऐसा; अऱिय कूऱुवान्–समझाते हुए जो बोले; चन्तम् मॆन् मलर् पुरै—सुन्दर, कोमल कमल-सम; चरणम्–(श्रीराम के) चरणों पर; चार्न्तनन्–नमे। १११२

लक्ष्मण की पुनःप्राप्ति श्रीराम के लिए खोये नयन की पुनःप्राप्ति के समान अतिशय सुखदायक थी। वे, यह कहते हुए कि दास मैं आ गया। आपका अनन्त प्रेम-भरा मन जिए, जिससे श्रीराम को अपना आना विदित हो जाय, आये और सुन्दर और कोमल कमल-सम श्रीराम-चरणों पर विनत हुए। १११२

ऊऱ्ऱुरु कण्णिनी रॊळुह निन्ऱवन्
ईऱ्ऱिळङ् गन्ऱिनैप् पिरिवुऱ् ऱेङ्गिनिन्
ऱाऱ्ऱला दरऱ्ऱुव दरिदि नॆय्दिडप्
पाऱ्ऱुरु पनिमुलै यावित् पान्मैयान् 1113

ऊऱ्ऱु उरु–स्रोत के समान (बहनेवाले); कण्णिन् नीर् ऒळुक–आँखों के आँसू बहाते हुए; निन्ऱवन्–स्थित होकर श्रीराम; ईऱ्ऱु इळम् कन्ऱिनै–अपने ब्याये छोटे बछड़े से; पिरिवु उऱ्ऱु–अलग होकर; एङ्कि निन्ऱु–तरसते हुए रहकर; आऱ्ऱलातु–सह न सकने से; अरऱ्ऱुवतु–रँभाती रही; अरितिन् ऎय्तिट–फिर वह बछड़ा अकस्मात

मिल गया; पाल् तुरु–तब दूध से भरकर; पति मुलै आविन्–काँपनेवाले थन की गाय की-सी; पान्मैयान्–स्थिति में आकर। १११३

श्रीराम की आँखों से आँसू स्रोत से बहनेवाले जल के समान निकल आये। वे उस गाय की स्थिति में आये, जो अपने अभी ब्याये बछड़े को खो चुकी और वियोग की असह्य वेदना से रँभाती रही हो और जिसके पास अकस्मात बछड़ा आ गया हो, जिससे उसका थन दूध से भरकर काँपने लगा हो! । १११३

तळुविनन् पन्मुरै तारैक् कण्णिनीर्क्
कळुविन नाण्डवन् कनह मेनियै
वळुविनै यामॅन मनक्कॊ डेङ्गिनेन्
ऑळुवॅन मलैयॅन वियैन्द तोळिनाय् 1114

आण्टु–तब; अवन् कनक मेनियै–उनके स्वर्ण-सम सुन्दर शरीर को; पन् मुरै तळुविनन्–अनेक बार गले से लगाकर; कण्णिन् नीर् कळुविनन्–अश्रुजल से नहला दिया; ऑळु ऑन मलै ऑन–खम्भे के समान और पर्वत के समान; इयैन्त–बने; तोळिनाय्–कन्धों वाले; वळुविनै आम्–खो गये; ऑन–ऐसा; मनम् कॊण्टु–मन में धारणा करके; एङ्किनेन्–आर्त रहा। १११४

श्रीराम ने लक्ष्मण के कनकवर्ण शरीर को अनेक बार अपने आलिंगन में भर लिया। अपने आँसू से उन्हें नहलाया। खम्भे-सम और पर्वत-सम कन्धों वाले! तुम खो ही गए, ऐसा मन में निश्चय करके मैं बहुत आर्त रहा। १११४

ऑन्नैयङ् गॅय्दिय दियम्बु वायॅन
अन्नव नः(ह्)दॆला मरियक् कूरलुम्
इन्नलु मुवहैयु मिरण्डु मॆय्दिनान्
तन्नल दोरुपॊरु डनक्कु मेलिलान् 1115

तन् अलतु–खुद को छोड़; ऑरु पॊरुळ्–कोई वस्तु; तनक्कु मेल् इलान्–जिनके ऊपर न रही, उन श्रीराम ने; अङ्कु ऎय्तियतु ऎन्नै–वहाँ क्या हुआ; इयम्पुवाय्–बतलाओ; ऑन–ऐसा (पूछा,) पूछने पर; अन्नवन्–लक्ष्मण के; अः:तु ऎलाम् अरिय कूरलुम्–समझाकर कहने पर; इन्नलुम्–दुःख; उवकैयुम्–और सन्तोष; इरण्टुम् ऎय्तिनान्–दोनों का अनुभव किया। १११५

श्रीराम ने, जिनके ऊपर उनको छोड़कर कोई नहीं रहा, लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वहाँ क्या हुआ? 'बतलाओ' कहने पर लक्ष्मण ने वहाँ की घटी सारी बातें समझाकर कहीं। तब श्रीराम को एक साथ दुःख और सन्तोष दोनों का अनुभव हुआ। १११५

आय्वुरु पॅरुङ्गड लहत्तु ळायित्तार्
पाय्दिरै वरुन्दोरुम् बरियर् पालरो
तीय्वित्तैप् पिऱ्विवॅञ् जिरैयिर् पट्टयाम्
ओय्वुरु तुयर्वर वुट्क नोन्मैयो 1116

आय्वु उरु–विचारणीय; पॅरुम् कटल अकत्तुळ् आयित्तार्–विशाल समुद्र में जो फँस गया; पाय् तिरै–(वह) लहराती आती लहर; वरुम् तोरुम्–जब-जब आती है, तब; परियल् पालरो–क्षुब्ध हो सकता है क्या; ती वित्तै–बुरे कर्म के कारण; पिऱ्वि वॅम् चिरैयिल्–जन्म रूपी (बन्धन में) कारा में; पट्ट नाम्–पड़े हमें; ओय्वु अरु–निरन्तर; तुयर् वर–कष्ट के आने पर; उट्कल्–कातर होना; नोन्मैयो–साहस का हेतु होगा क्या। १११६

लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया। जब कोई समुद्र-मध्य फँस गया, तो यह विचारणीय बात है कि हर लहर के आते समय उसे दुःख करना क्या कोई अर्थ रखता है ? कर्मगति के अनुसार जन्म की कारा में बन्द हमें निरन्तर संकट आते रहेंगे। तब कातर होना क्या साहस का लक्षण होगा ? । १११६

मूवहै यमररु मुलह मुम्मैयुम्
मेवरुम् पहैयॅत्तक् काह मेल्वरिन्
एवरे कडप्पव रॅम्बि नीयुळै
आवदे वलियिनि यरणुम् वेण्डुमो 1117

ॲम्पि नी उळै–भैया, तुम हो; इनि वलि आवते–अब शक्ति मिल गयी; अरणुम् वेण्टुमो–और कोई रक्षण चाहिए क्या; मू वकै अमररुम्–त्रिदेव; उलकम् मुम्मैयुम्–त्रिलोक; मेवु अरुम् पकै–दुस्तर शत्रु; ॲत्तक्कु आक–मेरे, बनकर; मेल् वरिन्–चढ़ आयें तो भी; एवरे कटप्पवर्–कौन मुझे पार पा सकेगा। १११७

श्रीराम ने उत्साह के साथ उत्तर दिया। भैया ! तुम मेरे कनिष्ठ सहोदर साथ हो ! मेरा साहस बढ़ गया। अब मुझे और किसी रक्षण की आवश्यकता पड़ेगी क्या ? (नहीं।) त्रिदेव क्या त्रिलोक भी मिलकर मेरे साथ शत्रुता करके चढ़ आयें तो क्या कोई मुझे हरा सकेगा ? । १११७

पिरिववर् यावरुम् बिरिह पेरिडर्
वरुवन यावैयुम् वरुह वार्हळल्
शॅरुवलि वीरनिर् ट्रीरु मल्लडु
परुवर लॅन्वयिर् पयिलर् पालदो 1118

पिरिपवर् यावरुम्–छोड़नेवाले सभी; पिरिक–छोड़ जायें; वरुवत–आनेवाले; पेर् इटर्–बड़े कष्ट; यावुम् वरुक–सब आ जायँ; चॅरु वलि–युद्धसाहसी; वार् कळल् वीर–लम्बी पायल से शोभित वीर; परुवरल्–(मेरे सारे) दुःख; नित् तीरुम्–

तुम्हारे द्वारा दूर हो जायँगे; अल्लतु–नहीं तो; ॲन् वयिन्–मेरे पास; पयिलल् पालतो–आ सकेंगे क्या। १११८

मुझे छोड़ जानेवाले भले छोड़ जायँ! आनेवाले सारे संकट आ जायँ। युद्ध में साहस दिखानेवाले पायलधारी वीर! आनेवाले संकट तुम्हारे द्वारा निवारित हो जायँगे। नहीं तो वे मेरे पास आ सकेंगे क्या ? । १११८

वन्ऱॉॉळिल् वीरपोर् वलिय रक्कियै
वॅन्ऱुपिन् मीण्डॅन ॲॅनवि ळम्बिनाय्
पुन्ऱॉॉळि लनैयवळ् पुरिन्द शीऱ्ऱत्ताल्
कॊन्ऱिलै पोलुमाऱ् कूऱुवा यॅन्ऱान् 1119

वल् तॉॅळिल् वीर–कठोर (युद्ध-)कार्य में दक्ष; पोर् वलि अरक्कियै–युद्ध में बल दिखानेवाली राक्षसी को; वॅन्ऱु–जीतकर; पिन्–फिर; मीण्टॅन्–लौट आया; ॲॅन विळम्पिनाय्–ऐसा कहा; अनैयवळ्–उसके; पुन् तॉॅळिल् पुरिन्त–नीच कार्य करने से उत्पन्न; चीऱ्ऱत्ताल्–कोप से; कॊन्ऱिलै पोलुम्–मारा नहीं क्या; कूऱुवाय्–कहो; ॲॅन्ऱान्–कहा। १११९

कठोर युद्धकार्य में दक्ष वीर! तुमने कहा था कि युद्ध में बल दिखानेवाली राक्षसी को जीतकर लौट आया। उसने बुरा और नीच काम किया था। उससे क्रुद्ध होकर तुमने उसे मारा नहीं क्या ? बताओ— श्रीराम ने जानना चाहा। १११९

तॉॅळैपडु मूक्कॊडु शॅवितु मित्तुह
वळैयॅयि ऱिदळॊडु मरिन्दु माऱ्ऱिय
अळवैयिऱ् पूशलिट् टरऱ्ऱि ताळॅन
इळैयवन् विळम्बिनिन् ऱिरुहै कूप्पिनान् 1120

तॉॅळै पटु–छेद बने, ऐसा; मूक्कु ओटु–नाक के साथ; चॅवि–(उसके) कान; इतळ् ओटुम्–अधरों के साथ; वळै ॲॅयिऱुम्–वक्र दाँतों को; तुमित्तु उक–टुकड़े कर गिराते हुए; अरिन्तु तलवार से काटकर; माऱ्ऱिय अळवैयिल्–उसको विकृत बनाया, तब; पूचल् इट्टु–शोर मचाते हुए; अरऱ्ऱिताळ्–विलापी; ॲॅन–ऐसा; इळैयवन् विळम्पि–छोटे भाई ने कहकर; निन्ऱु–खड़े होकर; इरु कै कूप्पिनान्–दोनों हाथ जोड़े। ११२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि नहीं। मैंने उसकी नाक को, छेद बन जाय ऐसा; अधरों और वक्र दाँतों को खण्ड होकर गिर जायँ, ऐसा तलवार से काटा। उसको इस तरह विकृत कर दिया। तभी वह ऊँचे स्वर में चिल्लाई। यह कहकर लक्ष्मण ने श्रीराम के सामने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर वह स्थिर खड़े रहे। ११२०

तॉल्लिरु डन्रिट्कॉलत् तॉडङ्गि ताळैयुम्
कॉल्ललै नाशियैक् कोय्दु नीक्किनाय्
वल्लैनी मनुमुदन् मरबि नोर्यॆनप्
पुल्लिन तुवहैयिर् पॉरुमि विम्मुवान् 1121

तॉल् इरुळ् ततिल्—बहुत घने अन्धकार में; कॉल—तुम्हें मारने का; तॉटङ्कि-ताळैयुम्—जिसने उपक्रम किया, उसे भी; कॉल्ललै—तुमने नहीं मारा; नाचियै कोय्तु नीक्किनाय्—नाक को काटकर अलग किया; मनु मुतल् मरपित्तोय—मनु-प्रभृति के कुलोत्पन्न; नी वल्लै—तुम (उस कुल की रीति के पालन में) समर्थ निकले; ॲन—कहकर; उवकैयिल् पॉरुमि—सन्तोष से भरकर; विम्मुवान्—फूल उठे; पुल्लितन्—आलिंगन कर लिया। ११२१

श्रीराम ने वह सुनकर साधुवाद दिया। इस घने अन्धकार के समय में उसने तुम्हें मारने का उपक्रम किया था। तो भी तुमने उसे केवल नाक काटकर जीवित छोड़ दिया। मनुप्रभृति कुल में उत्पन्न कुमार! तुम उस कुल की रीति के पालन में समर्थ निकले। श्रीराम अत्यधिक आनन्द से भर उठे। उन्होंने लक्ष्मण का आलिंगन कर लिया। ११२१

पेररुन् दुयरिडै पॅयर्त्तु ळारॅन
वीरनुन् दम्बियुम् विडिय नोक्कुवार्
वारुणम् निनैन्दनर् वान नीरुण्डु
तारणित् ताङ्गॉरु गिरियिर् ऱङ्गिनार् 1122

पेर् अरुम् तुयर्—दूर करने में कठिन दुःख से; इडै पॅयर्त्तु उळार् ॲन—थोड़ा निवृत्त हुए जैसे; वीरतुम् तम्पियुम्—श्रीरघुवीर और उनके छोटे भाई; विटियल् नोक्कुवार्—प्रभात की प्रतीक्षा में; वारुणम् निनैन्तनर्—वरुण-मन्त्र-जाप कर; वान नीर् उण्टु—आकाशगंगा का जल पीकर; तारणित्तु—आराम करके; अङ्कु—वहाँ; ऒरु किरियिल्—एक गिरि पर; तङ्किनार्—ठहरे। ११२२

दोनों भाइयों का कठोर और अनिवार्य दुःख थोड़ा शान्त हुआ। प्रभात की प्रतीक्षा करनी थी। उन्होंने वरुणमन्त्र का जाप किया, तो आकाशगंगा का जल प्राप्त हुआ। उसको पीकर उन्होंने अपनी प्यास बुझा ली। फिर वे वहाँ एक गिरि के थल पर ठहरे। ११२२

कल्लहल् वॆळ्ळिडैक् कानि नुण्मणल्
पल्लव मलर्ह्हॊडु पडुत्त पायलिल्
ॲल्लैयि ऱुयरिनो डिरुन्दु शाय्न्दनन्
मॆल्लडि यिळैयवन् वरुड वीरने 1123

वीरन्—श्रीरघुवीर; कानिल्—जंगल में; अकल् कल् वॆळ्ळिटै—विशाल पर्वत

के खुले थल में; नुण् मणल्—बारीक बालू पर; पल्लवम् मलर् कॉट्टु—पल्लवों और फूलों को; पट्टुत्त पायलित्—(लक्ष्मण द्वारा) बिछाकर बनी शय्या में; मॅल् अटि—कोमल चरणों को; इळैयवन् वरुट—कनिष्ठ के सहलाते; ॲल्लै इल् तुयरित् ओट्टु इरुन्तु—अपार दुःख के साथ रहकर; चाय्न्तनन—लेटे। ११२३

गिरि के ऊपर खुले थल में लक्ष्मण ने बारीक बालू बिछाया। उसके ऊपर पल्लवों और फूलों को डसाकर शय्या बनायी। श्रीराम अपार दुःख का अनुभव करते हुए उस शय्या पर लेटे। लक्ष्मण उनके कोमल चरण दाबते-सहलाते रहे। ११२३

मयिलियल् पिरिन्दपिन् मान नोयिनाल्
अयिल्विल नॊरुपॊरु ळवल मॅय्दलाल्
तुयिल्विल नॆन्बदु शॊल्लर् पालदो
उयिर्नॆडि दुयिर्प्पिडै यूश लाडुवान् 1124

मयिल् इयल् पिरिन्त पिन्—मयूर की-सी आभा वाली सीता के वियोग के बाद; मान नोयिनाल्—अपमान के रोग से; ऑरु पॊरुळ् अयिल्वु इलन्—कोई भी पदार्थ न खाकर; अवलम् ॲय्तलाल्—श्रीराम शोकातुर रहे, इसलिए; नॆटितु उयिर्प्पु इटै—लम्बी साँसों के मध्य; उयिर् नॆटितु ऊचल् आटुवान्—जिनके प्राण झूलते रहे वे; तुयिल्वु इलन्—अनिद्र रहे; ॲन्पतु—यह भी; चॊल्लर्पालतो—कहना चाहिए क्या। ११२४

मयूर की-सी छटा वाली सीताजी से वियुक्त होने के बाद श्रीराम को अपमान का रोग खाये जाता था। इसलिए वे कुछ खाते नहीं थे। दुःख सहते रहने से ठण्डी आहें भरते थे और प्राण मानो उनके कारण झूले में पड़कर डोल रहे थे। वे अनिद्र ही रहे —यह भी कहने की आवश्यकता है क्या ? । ११२४

मानवळ् मॅय्यिरै मरक्क लामैयिन्
आनदो वन्रॆनि लरक्कर् मायमो
कानह मुळ्वदुङ् गण्णि नोक्कुङ्गाल्
शानहि युरुवॆनत् तोन्रुन् दन्मैये 1125

काननकम् मुळुवतुम्—जंगल भर में; कण्णिन् नोक्कुम् काल्—अपनी आँखों से देखता हूँ, तब; चानकि उरु ॲन—जानकी का रूप ही; तोन्रुम् तन्मै—दिखाई देता है, वह प्रकार; मानवळ्—मानवती (या मानवी); मॅय्—(सीताजी) के रूप को; इऱै मरक्कलामैयिन्—किंचित भी नहीं भूलता, इसलिए; आनतो—ऐसा होता है क्या; अन्रु ॲनिल्—नहीं तो; अरक्कर् मायमो—राक्षसों की माया है। ११२५

श्रीराम को सर्वत्र सीता को ही देखने का भ्रम हो रहा था। उन्होंने आप ही आप पूछा कि अपनी आँखों से जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ जंगल भर में जानकी का रूप ही दिखाई देता है। ऐसी बात क्यों ? उस

माननीया का रूप मैं सदा स्मरण कर रहा हूँ, इसलिए ? या यह राक्षसों की माया से होती है ? । ११२५

करुङ्गुळ्ऱ् चेयरिक् कण्णि कऱ्पितोर्क्
करुङ्गल मरुङ्गुवन् दिरुप्प वाशैयाल्
ऑरुङ्गुऱ्त् तळुवुवॅ नूरु काण्गिलेन्
मरुङ्गुल्पो लाननदो वडिवु मॅल्लवे 1126

करुम् कुळल्–काले केश से; चेय् अरि कण्णि–और लाल लकीरों से युक्त आँखों से भूषित; कऱ्पितोर्क्कु–पतिव्रता स्त्रियों का; अरुम् कलम्–श्रेष्ठ आभरण सम सीताजी; मरुङ्कु वन्तु इरुप्प–मेरे पार्श्व में आकर रहती; आचैयाल्–प्रेम से; ऑरुङ्कु उऱ–खूब कसकर; तळुवुवॅन्–आलिंगन करता; ऊरु काण्किलेन्–स्पर्श का अनुभव नहीं मिलता; वटिवुम्–उसका शरीर भी; मॅल्ल–धीरे-धीरे; मरुङ्कुल् पोल् आनतो–उसकी कटि के समान (अविद्यमान) हो गया क्या। ११२६

(उन्हें अनोखा अनुभव होता है। वे कहते हैं—) काला केश, लाल डोरों से युक्त आँखें —इनसे भूषित और पतिव्रता स्त्रियों के लिए आभरण-सम जो हैं, वह सीता मेरे पास आकर रही। तब अनुराग के कारण मैंने उसे कसकर आलिंगन किया। पर वह मेरे आलिंगन में नहीं आयी। स्पर्श का अनुभव ही नहीं हुआ। तब क्या उसका शरीर भी उसकी कमर के समान अविद्यमान हो गया ? । ११२६

पुण्ड रिहप्पुदु मलरिऱ् ऱेन्बॊदि
तॊण्डैयञ् जेयॊळित् तुवर्त्त वायमु
दुण्डॅन् ऩॊण्डव ळुळैय ळल्लळाल्
कण्डुयि लन्ऱियुङ् गनवुण् डाहुमो 1127

पुतु पुण्टरिक मलरिल्–नये कमल-पुष्प में; तेन् पॊति–शहद से भरे; तॊण्टै–बिम्ब-फल के समान; अम्–सुन्दर; चेय् ऑळि–लाल प्रकाश से युक्त; तुवर्त्त–प्रवाल-सम; वाय् अमुतु उण्टॅन्–अधरामृत का पान किया; ईण्टु–अब; अवळ्–वह; उळैयळ् अल्लळ् आल्–पार्श्वस्था नहीं है, इसलिए; कण् तुयिल् इन्ऱियुम्–आँखें जब नहीं सोतीं, तब भी; कनवु उण्टाकुमो–स्वप्न होगा क्या। ११२७

(और एक भ्रम देखिए।) नवविकसित कमल के समान उसके मुख में शहद-भरे अधर हैं, जो बिम्बफल-समान हैं, और प्रवाल के समान भी। मैंने उन अधरों का अमृत-पान किया। पर असल में वह मेरे पास नहीं पायी गयी। फिर क्या वह स्वप्न था ? मैं तो निद्रारहित समय बिताता हूँ। अनिद्र अवस्था में भी स्वप्न होगा क्या ? । ११२७

मण्णितुम् वानितु मऱ्ऱै मून्ऱितुम्
ऑण्णितुम् बॅरियदो रिडर्वन् दॅय्दिताल्

तण्णरुङ् गरुङ्गुळ्ऴ् चन्हन् मामहळ्
कण्णिनु नॅडियॅयो कौडिय कङ्गुले 1128

मण्णितुम् वानितुम्–पृथ्वी में और आकाश से; मर्रै मून्रितुम्—अन्य तीनों भूतों से; ऍण्णितुम्–भावना से; पॅरियतु ओर्—बड़ी एक; इटर् वन्तु ऍय्तिताल्–विपदा आयगी तो; कौटिय कङ्कुले–क्रूर रात; तण् नरुम्—शीतल सुगन्धित; करुम् कुळल्–काली केशिनी; चनकन् मा मकळ्—जनक की श्रेष्ठ पुत्री की; कण्णितुम्–आँखों से; नॅटियॅयो–अधिक बड़ी होगी क्या। ११२८

(श्रीराम रात्रि से पूछते हैं कि) पृथ्वी, आकाश और अन्य तीन जल, अनिल और अनल आदि भूतों से भी, मन के विचारों से बड़ी कोई व्यथा मुझे होगी तो, हे क्रूर रात ! तुम सीता की आँखों से भी बड़ी हो जाओगी क्या— जिस सीता के शीतल सुगन्धित काले केश हैं और जो जनक की महान पुत्री है ? । ११२८

अप्पुडै यलङ्गुमी नमरु मार्हलि
उप्पुडै यिन्दुवॅन् रुदित्त वूळित्ती
वॅप्पुडै विरिहदिर् वॅदुप्प मॅय्यॅलाम्
कौप्पुळम् बौडित्तदो कौदिक्कुम् वानमे 1129

अलङ्कु मीन्–संचरणशील मछलियाँ; अमरुम्–जिसमें वास करती हैं, उस; अप्पु उटै–जल-भरे; आर् कलि–शब्दायमान समुद्र; उ पुटै–के मध्य; इन्तु ऍन्रु–चन्द्र नाम के साथ; उतित्त–उदित; ऊळि ती–युगान्त की अग्नि की; वॅप्पु उटै—गरम; विरि कतिर्–विस्तृत किरणें; वॅतुप्प–जलाती हैं, तो; कौतिक्कुम् वानम्–तपते आकाश के; मॅय् ऍल्लाम्–शरीर पर; कौप्पुळम् पौटित्ततो–फफोले बने हैं क्या। ११२९

आकाश में नक्षत्र देखकर श्रीराम सोचते हैं कि क्या ये आकाश के शरीर में निकले फफोले हैं, जो संचरणशील मछलियों से भरे समुद्र-मध्य-उत्पन्न इन्दु नाम की युगान्त की अग्नि की गरम किरणों के तपाने से निकल आये हैं ? । ११२९

इन्नन विन्नन पन्नि यीडळिन्दु
मन्नवर् मन्नन् मदलै मयङ्गिनान्
अन्नन कण्डन नल्हिन नॅन्नत्
तुन्निय शॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् तोन्रिनान् 1130

इन्नन इन्नन–ऐसी-ऐसी बातें; पन्नि–कहते हुए विलाप कर; ईटु अळिन्तु–बल खोकर; मन्नवर् मन्नन्–राजाधिराज के; मतलै–पुत्र; मयङ्कितान्–सुधिहीन हो गये; अन्नन कण्टनन्–उन (के कष्टों) को देखकर; अल्कितन् ऍन्न–(स्वयं) दुःखी हैं, समझकर; तुन्निय–घनी; चॅम् कतिर् चॅल्वन्–लाल किरणों के सूर्य; तोन्रिनान्—(धीरज बँधाने के लिए) प्रकट हुए। ११३०

श्रीराम ऐसी-ऐसी बातें कहकर बहुत प्रलाप कर रहे थे। राजाधिराज दशरथ के पुत्र श्रीराम, सत्त्व खोकर सुधहीन हो गये। ये सारी बातें सूर्य ने देखीं। श्रीराम बहुत संकट उठा रहे हैं—यह विचार कर (उनको मानो धीरज दिलाने के लिए) लाल किरणों से घने रूप से युक्त किरणमाली प्रकट हो आये। ११३०

11. कवन्दन् वदैप् पडलम् (कबन्ध-वध पटल)

निलम्बॊऱ् यिलदॆंन निमिर्न्द कऱ्पिनाळ्
नलम्बॊऱ् कूर्दरु मयिलै नाडिये
अलम्बुरु पऱवैयु मऴुव वामॆनप्
पुलम्बुरु विडियलिऱ् कडिदु पोयिनार् 1131

निलम् पॊऱै इलतु—भूमिदेवी क्षमाशील नहीं (इनके सामने); ऍन—ऐसा; निमिर्न्त—बढ़ी हुई (क्षमाशीला); कऱ्पिनाळ्—पतिव्रता; नलम् पॊऱै—सौंदर्य-भार को; कूर्तरु—अधिक वहन करनेवाली; मयिलै—मयूराभा (सीता) को; नाटिये—खोजते हुए; अलम्पु उरु पऱवैयुम्—उड़ते रहनेवाले पक्षी भी; अऴुव आम्—रोते हैं, ऐसा कहा जाय; ऍन—इस रीति से; पुलम्पु उरु—पक्षियों के बोल से भरे; विटियलिल्—प्रभात समय में; कटितु पोयितार्—सवेग गये (दोनों भाई)। ११३१

प्रभातकाल हुआ तो पक्षी शब्द करते हुए उड़ जाने लगे। तब ऐसा लगता था, मानो वे भी रो रहे थे। दोनों वेग के साथ भूमि की क्षमाशीलता को नहीं के बराबर कर देनेवाली क्षमा-भार से युक्त, अत्यन्त सुन्दरी, पतिव्रता व मयूराभा सीताजी को खोजते हुए चले। ११३१

ऐयैन् दडुत्त योशनैयि निरट्टि यडवि पुडैयुडुत्त
वैयन् दिरिन्दार् कदिरवनुम् वानि नाप्पण् वन्दुऱ्ऱान्
ऍय्युञ् जिलैक्कै यिरुवरुञ्जॆंन् ऱिरुन्दे नीट्टि यॆव्वुयिरुम्
कैयिन् वळैत्तु वयिऱ्ऱडक्कुङ् गवन्दन् वनत्तिन् कण्णुऱ्ऱार् 1132

ऐ ऐन्तु अटुत्त योचनैयिन्—पाँच के पाँच (पचीस) योजन की; इरट्टि—दुगुनी (पचास योजन) दूर; अटवि पुटै उटुत्त वैयम्—जंगल में फैली भूमि में; तिरिन्तार्—खोजते फिरे; कतिरवनुम्—सूर्य भी; वानिन् नाप्पण्—आकाश-मध्य; वन्तु उऱ्ऱान्—आ पहुँचे; ऍय्युम् चिलै कै—शरप्रेषक धनुर्हस्त; इरुवरुम्—दोनों; चॆन्ऱु—चलकर; इरुन्ते नीट्टि—(एक ही स्थान पर) रहकर ही हाथ बढ़ाकर; ऍ उयिरुम्—किसी भी जीव को; कैयिल् वळैत्तु—अपने हाथों से समेटकर; वयिऱु अटक्कुम्—अपने पेट में समा लेनेवाले; कवन्तन्—कबन्ध के; वनत्तिन् कण्—वन में; उऱ्ऱार्—आ पहुँचे। ११३२

वे उस जंगली मार्ग में पचास योजन चले। तब सूर्य भी आकाश-मध्य आ गये। धनुर्हस्त दोनों कबन्ध के वन में पहुँच गये। कबन्ध

एक ही स्थान पर रहकर अपने दोनों हाथों का घेरा बनाता और उनके क्रोड में आनेवाले सभी प्राणियों को समेट लेकर अपने पेट में डाल लेता। ११३२

ऍऱुप्पिनङ् गडैयुऱ् यानै येमुदल्
उऱुप्पुडै युयिरॆला मुलैन्दु शाय्न्दन
वॆरुप्पुरु नोक्किन वॆरुवु हिन्ऱन
पऱिप्परु वलैयिडैप् पट्ट पान्मैय 1133

यानैये मुतल्–गज से लेकर; ऍऱुम्पु इनम् कटै उऱ–चींटियों के कुल तक; उऱुप्पु उटै–अंगों-सहित; उयिर् ऍलाम्–प्राणी सब; उलैन्तु–संकट में पड़कर; चाय्न्तन–मर जाते थे; वॆरुप्पु उऱु–ताकनेवाली; नोक्किन–आँखों के (सिंह, बाघ आदि); वॆरुवुकिन्ऱन–भयभीत होते थे; पऱिप्पु अऱु–अलग करने अयोग्य; वलै इटै पट्ट–जाल में फँसे हुए जैसे; पान्मैय–हो जाते थे। ११३३

गजसमूह से लेकर चींटीसमूह तक के सारे प्राणी इस तरह उसके वश में आ जाते और कष्ट उठाकर मर जाते। भयानक आँखों वाले जानवर (जैसे सिंह, बाघ आदि) भी डर जाते। अकाट्य जाल में फँस गये हों, ऐसी स्थिति में सभी जानबर रह जाते। ११३३

मरबुऴि निऱुत्तिलन् पुरक्कु माण्बिलन्
उरनिल नॊरुवनाट् टुयिर्हऴ् पोल्वन
वॆरुवुव शिन्दुव कुविव विम्मलो
डिरिवन मयङ्गुव वियल्बु नोक्किनार् 1134

मरपु उऴि निऱुत्तिलन्–(प्रजाजनों को) उन उनके सम्प्रदाय पर नहीं स्थित रखता; पुरक्कुम् माण्पु इलन्–पालन का श्रेय नहीं रखता; उरन् इलन्–बल नहीं रखता; ऒरुवन्–ऐसे एक राजा के; नाट्टु उयिर्कऴ् पोल्वन–राज्य के जनों के समान (रहनेवाले); वॆरुवुव–डरनेवाले; चिन्तुव–अस्त-व्यस्त भागनेवाले; कुविव–एक जगह पर एकत्रित होनेवाले; विम्मल् ओटु इरिवन–तड़पते हुए दौड़नेवाले; मयङ्कुव–मूर्च्छित पड़े हुए; इयल्पु–ऐसे रहनेवालों (प्राणियों) की स्थिति; नोक्किनार्–देखी। ११३४

वहाँ प्राणियों की हालत ऐसे राजा के राज्य के प्रजाजनों की-सी हो गयी, जो प्रजाजनों को उनके अपने-अपने योग्य मार्ग में स्थिर रख नहीं सकता, उनका पालन करने का श्रेय नहीं रखता और जो बली नहीं रहता। वे प्राणी भयभीत हो जाते; बिखर जाते; एक जगह पर एकत्रित होते; तड़पते हुए भागते या मूर्च्छित हो जाते। श्रीराम ने उनकी यह स्थिति देखी। ११३४

माल्वरै युरुण्डन वरुव मामरम्
काल्बऱिन् दिऱुवन कान याऱुहऴ्

मेलुळ तिशैयोडुम् वॅळिह ळावन
शूल्मुदिर् मेहङ्गळ् शुरुण्डु वीळ्वन 1135

माल् वरै–बड़े पर्वत; उरुण्टन वरुव–जो लुढ़कते आते हैं; मा मरम्–बड़े वृक्ष; काल् परिन्तु–जड़ों के कटने से; इऱुवन–टूटकर (जो) गिरते हैं; कान याऱुकळ्–जंगली नदियाँ; मेल् उळ तिचै ऑटुम्–अपने सामने की दिशाओं के साथ; वॅळिकळ् आवन–खुला मैदान जो बनी हैं; चूल् मुतिर्–जलगर्भित; मेकङ्कळ्–मेघ; चुरुण्टु वीळ्वन–(जो) घूमकर गिर जाते हैं। ११३५

उन्होंने यह भी देखा कि प्रकृति कैसे विकृत हो रही थी। बड़े-बड़े पर्वत लुढ़क आ रहे थे। बड़े वृक्ष जड़ से उखड़कर गिर रहे थे। जंगली नदियाँ तटों के प्रदेश के साथ ऊसर मैदान बन गयी थीं। जल-भरे मेघ घूम-मुड़कर गिर रहे थे। ११३५

नाऱ्ऱिशैप् परवैयु मिऱुदि नाळुऱक्
काऱ्ऱिशैत् तॅळवॅळुन् दुलह मॅङ्गणुम्
एऱ्ऱिशैत् तुयर्न्दुवन् दिडुङ्गु हिन्ऱन
पोऱ्ऱिशैच् चुऱ्ऱिय करत्तुट् पुक्कुळार् 1136

नाल् तिचै परवैयुम्–चारों दिशाओं के समुद्र; इऱुति नाळ् उऱ–युगान्त के आने से; काऱ्ऱु इचैत्तु ॲळ–आँधी के शोर के साथ बहने के कारण; उलकम् ॲङ्कणुम् एऱ्ऱु–सारे लोकों को अपने अन्दर समा लेकर; इचैत्तु–बहुत ही उच्च घोष निकालते हुए; उयर्न्तु वन्तु–उमँगकर; इटुङ्कुकिन्ऱन पोल्–मिल आते हों जैसे; तिचै चुऱ्ऱिय–चारों दिशाओं में लपेटकर आनेवाले; करत्तु उळ्–(कबन्ध के) करों के घेरे में; पुक्कु उळार्–प्रविष्ट हुए हो गये। ११३६

वे कबन्ध के हाथों के घेरे के अन्दर पहुँच गये। वे हाथ युगान्त में शोर के साथ पवनोद्वेलित होकर सारे विश्व को लीलते हुए उठ आ रहे हों, ऐसा बढ़ते हुए आकर घेरा बना रहे थे। ११३६

तेमॊऴि तिऱत्तिना लरक्कन् शेनैवन्
देमुऱ वळैन्ददॆन् ऱुवहै यॅय्दिनार्
नेमिमाल् वरैयदु नॅरुक्कु हिन्ऱदे
आमॆन लायहै मदिट्कु ळायिनार् 1137

नेमि माल् वरै अतु–चक्रवाल पर्वत ही; नॅरुक्कुकिन्ऱते आम्–कसकर लपेटते हों; ॲन्न आय–जैसे आये; कै मतिट्कु उळ्–कर रूपी चहारदीवारी के अन्दर; आयिनार्–जो फँस गए; ते मॊऴि तिऱत्तिनाल्–शहद-सी बोली वाली सीता के निमित्त; अरक्कन् चेनै वन्तु–राक्षस-सेना ने आकर; एम् उऱ वळैन्ततु–उत्साह के साथ हमें घेर लिया है; ॲन्ऱु–यह विचार कर; उवकै ॲय्तिनार्–(दोनों) खुश हुए। ११३७

हाथों की चहारदीवारियाँ बन गयीं। वे चक्रवालपर्वत के समान थे। तब दोनों ने अनुमान किया कि मधु-मधुर-भाषिणी सीता के निमित्त

राक्षसप्रभु रावण की सेना उत्साह के साथ आ घेर गयी है। उन्हें इस बात से हर्ष हुआ। ११३७

इळवलै नोक्कित् तिराम तेळैयै
उळैवुशॅ यिरावण तुऱैयु मूरुमिव्
वळवैय दाहुद लऱिदि ययनम्
किळर्पॅरुन् दुयरमुङ् गोण्ड दामॅन्ऱान् 1138

इरामतुम्–श्रीराम ने भी; इळवलै–लघुराज को; नोक्कितत्–देखकर; ऐय–तात; एळैयै–अबला सीता को; उळैवु चॅय् इरावणन्–त्रास देता हुआ रावण; उऱैयुम् ऊरुम्–जहाँ रहता है, वह नगर भी; इ अळवैयतु आकुतल्–इसी सीमा के अन्दर है; अऱिति–जान लो; नम् किळर्–हमारा उत्थानशील; पॅरुम् तुयरमुम्–बड़ा दुःख भी; कोण्टतु आम्–मिटा, हो जायगा। ११३८

श्रीराम ने अपने छोटे भाई से कहा कि तात! सीता को त्रास देने वाले रावण का वासस्थान इसी सीमा के अन्दर है। यह जान लो। तब हमारा बढ़ती पर रहनेवाला दुःख भी मिट गया समझो। ११३८

मुऱ्ऱिय वरक्कर्द मुळङ्गु तानैयेल्
एऱ्ऱिय मुरशॊलि येङ्गुञ् जङ्गॊलि
पॅऱ्ऱिल दामॅनिऱ् पिऱिदॊन् ऱामॅनच्
चॊऱ्ऱनन् निळैयवन् ऱॊऴुदु मुन्निन्ऱान् 1139

इळैयवन्–अनुज; मुऱ्ऱिय–हमको जो घेर आयी हैं; अरक्कर् तम्–राक्षसों की; मुळङ्कु तानै–शब्दायमान सेनाएँ हैं; ॲल्–तो; ॲऱ्ऱिय मुरचु ऒलि–प्रहरित भेरियों का नाद; एङ्कुम् चङ्कु ऒलि–ध्वनित शंखों का नाद; पॅऱ्ऱु इलतु आतलिन्–नहीं पाया जाता, इसलिए; पिऱितु ऒन्ऱु आम् ॲन–दूसरी कोई वस्तु है, यह; चॊऱ्ऱतन्–कहकर; तॊऴुतु मुन् निन्ऱान्–नमस्कार करते हुए सामने स्थित रहे। ११३९

तब कनिष्ठ भ्राता ने तर्क पेश किया। भैया! हमको शब्दायमान राक्षस-सेना घेरती आ रही हो तो भेरियाँ पिटेंगी और शंख बजेंगे और भेरियों का नाद और शंखों की ध्वनि सुनाई देगी। यह इन नादों से युक्त नहीं है। इसलिए यह कोई दूसरी वस्तु है। लक्ष्मण यह विनय के साथ कहकर श्रीराम के सामने अंजलिबद्ध हो खड़े हुए। ११३९

तॅळ्ळिय वमुदॆळत् तेवर् वाङ्गिय
वॅळ्ळॆयिऱ् ऱरवन्दान् वेऱॊर् नाहन्दान्
तळ्ळरुम् वालीडु तलैयि नाल्वळैत्
तुळ्ळुऱक् कवर्वदे योक्कु मूऴियाय् 1140

ऊऴियाय्–युगपुरुष; तॅळ्ळिय–स्वच्छ; अमुतु ॲऴ–अमृत निकल आए; तेवर् वाङ्किय–ऐसा, देवों ने जिसको लेकर मन्थन किया; वॅळ् ॲयिऱ्ऱु अरवम् तान्–

श्वेत दाँतों का नाग (वासुकी) हो; वेरु ऑरु नाकम् तान्–या कोई दूसरा नाग हो; तळ् अरु वाल् ओट्टु–दुर्वार पूँछ के साथ; तलैयिताल् वळैत्तु–सिर को घुमाकर, मण्डल बनाकर; उळ् उऱ–उस मण्डल के अन्दर; कवर्वते ऑक्कुम्–पकड़ लेता हो, ऐसा है। ११४०

लक्ष्मण आगे बोले— युगान्त में भी अमर रहनेवाले परमपुरुष! यह श्वेत दाँतों से युक्त वासुकी नाग हो सकता है, जिसका उपयोग कर देवों ने सागर-मन्थन किया था। या कोई दूसरा नाग होगा, जो अपनी पूँछ और अपने सिर को मोड़कर मण्डल बना रहा है और उसके अन्दर सबको ले रहा है। ११४०

ॲन्ऱिवै विळम्बिय विळवल् वाशहम्
नन्ऱॅन निनैन्दन नडन्द नायहन्
ऑन्ऱिरण् डियोशनै युळ्पुक् कोङ्गऱान्
निन्ऱॅन विरुन्दवक् कवन्द नेर्शॅन्ऱार् 1141

ॲन्ऱु इवै–इस तरह ये; विळम्पिय–जिन्होंने कहे; इळवल् वाचकम्–उन कनिष्ठ भ्राता का वचन; नटन्त नायकन्–आगे जो जाते रहे, उन नायक श्रीराम ने; नन्ऱु ॲन निनैन्तनन्–अच्छा (ठीक) समझा; ऑन्ऱु इरण्टु योचनै–एक-दो योजन; उळ् पुक्कु–(उस घेरे के) अन्दर और जाकर; ओङ्कल् तान् निन्ऱु–पर्वत ही खड़ा है; ॲन–ऐसा; इरुन्त–जो रहा; अ कवन्तन् नेर् चॅन्ऱार्–उस कबन्ध के सामने पहुँचे। ११४१

लक्ष्मण के इन वचनों को श्रीराम ने सुना और कहा कि अच्छा कहा। दोनों आगे चले और उन्नत पर्वत के समान दृश्यमान उस कबन्ध के सामने आये। ११४१

वॅयिऱ्चुड रिरण्डिनै मेरु माल्वरैक्
कुयिऱ्ऱिय वामॅनक् कॉदिक्कुङ् गण्णिनान्
ॲयिऱ्ऱिडैक् किडैयिरु काद मीण्डिय
वयिऱ्ऱिडै वायॅनु महर वेलैयान् 1142

वॅयिल् चुटर् इरण्टिनै–धूप देनेवाले दो सूर्यों को; मेरु माल् वरै–मेरु के बड़े पर्वत में; कुयिऱ्ऱिय आम्–जटित किया गया हो; ॲन–जैसे; कॉतिक्कुम् कण्णितान्–प्रज्वलित आँखों का; ॲयिऱ्ऱु इटैक्कु इटै–दाँत और दाँत के मध्य; इरु कातम् ईण्टिय–दो मील-दशकों की दूरी के साथ; वयिऱ्ऱु इटै–पेट में; वाय् ॲनुम्–मुख रूपी; मकर वेलैयान्–मकरालय वाला। ११४२

(भयंकर कबन्ध का वर्णन किया जाता है यों।) महामेरु पर दो गरम किरणमालियों को जटित किया गया हो, ऐसा उसकी दोनों आँखें ज्वलन्त रहीं। उसका मुख पेट के अन्दर धँसा हुआ था; उसके दाँत

और दाँत के मध्य दो योजनों का अन्तर रहा। वह मुख क्या था मकरालय (-सा) था। ११४२

ईण्डिय पुलवरो डवुण रिन्दुवैत्
तीण्डिय नॅडुवरैत् तॅय्व मत्तिऩैप्
पूण्डुयर् वडमिरु पुडैयित्
वाङ्गलिन्
नीण्डऩ किडन्दऩ निमिर्न्द कैयिऩान् 1143

ईण्टिय पुलवर् ओटु–एकत्रित देवों के साथ; अवुणर्–असुर; इन्तुवै–चन्द्र को; तीण्टिय–स्थिर-स्तम्भ बनाकर; नॅटु वरै–बड़े (मेरु) पर्वत को; तॅय्व मत्तिऩै–दिव्य मथानी को; पूण्टु–रखकर; उयर् वटम्–वासुकी की रस्सी से; इरु पुटैयिन् वाङ्कलिन्–दोनों पार्श्वों में बारी-बारी से खींचने से; नीण्टु अॅन्त–लम्बा बना पड़ा रहा जैसे; निमिर्न्त कैयिऩान्–ऊपर उठे हाथों वाला। ११४३

देवों और असुरों ने एकत्रित होकर चन्द्र को स्थिर-थम्भ के रूप में गाड़ा। बड़े मन्दर को दिव्य मथानी बनाया। बड़े वासुकी नामक सर्प को उस पर लपेटकर दोनों ओर खड़े होकर बारी-बारी से खींचा। उस दिन लम्बा बनकर वासुकी जैसा दिखता था, वैसा ही कबन्ध के हाथ लम्बे और मोटे बन पड़े थे। ११४३

तॊहैक्कऩऱ् करुमहऩ् ऱुरुत्तित् तूम्बॅऩप्
पुहैक्कॊडिक् कऩलॊडु पॊडिक्कु मूक्किऩान्
पहैत्तहै नॅडुङ्गडल् परुहुम् पावहऩ्
शिहैक्कॊऴुन् दॆऩवॆदिर् तिरुहुम् नाविऩान् 1144

करुमकऩ्–लुहार की; तॊकै कऩल्–अधिक आग की भाथी में; तुरुत्ति तूम्पु अॅन्त–लगी रहनेवाली धौंकनी की नाक (नली) के समान; कऩल् ऒटु कॊटि पुकै–आग के साथ लताओं के आकार में फैलनेवाला धूम; पॊटिक्कुम्–निकालनेवाली; मूक्किऩान्–नाक का; पकै तकै–शत्रुता के साथ; नॅटुम् कटल् परुकुम्–विशाल सागर को पी लेनेवाली; पावकऩ्–बड़वाग्नि की; चिकै कॊऴुन्तु अॅन्त–ज्वालाशिखा के समान; तिरुकुम्–घूमती रहनेवाली; नाविऩान्–जीभ वाला। ११४४

उसकी नाक से लुहार की अधिक अग्निसहित भाथी से लगी हुई धौंकनी की नाक के समान आग और लता के आकार में धुआँ निकल रहा था। (सागर का) शत्रु बनकर विशाल सागर को जो बड़वाग्नि पी (सोख) रही थी, उस बड़वाग्नि की ज्वालाशिखा के समान घूमती रहती हुई जीभ वाला था वह कबन्ध। ११४४

पुरण्डर विडैवर वॆरुविप् पुक्कुऱै
अरण्डऩै नाडियो ररुवि माल्वरै

मुरण्डहु मुळैनुळै मुळुवॆण् डिङ्गळै
इरण्डुकू रिट्टॆन्न विलङ्गॆ यिऱ्ऱिनान् 1145

अरवु पुरण्टु इटै वर–(राहु) सर्प को लोटते हुए अपने पास आते देखकर; वॆरुवि–भय खाकर; पुक्कु उऱै–घुसकर वास करने योग्य; अरण् तनै नाटि–सुरक्षित स्थान ढूँढ़कर; ओर् अरुवि माल् वरै–सरिताओं-सहित एक पर्वत पर; मुरण् तकु–प्रबल; मुळै नुळै–गुफा में प्रविष्ट; मुळु वॆण् तिङ्कळै–पूर्ण-श्वेत चन्द्र को; इरण्टु कूऱु इट्टु ऎन–दो अंशों में काट लिया गया हो, ऐसा; इलङ्कु–दृश्यमान; ऎयिऱ्ऱिनान्–वक्रदांतों का। ११४५

उसके वक्रदाँत उस पूर्णचन्द्र के दो टुकड़ों के समान थे, जो राहु-केतु के सर्पों को पास आते देखकर डर से भाग गया, और सरिताओं-सहित बड़े एक पर्वत की शक्तियुत गुफा में घुसा हो और वहाँ जिसके दो टुकड़े हो गये हों। ११४५

ओदनीर् मण्णिवै मुदल वोदिय
पूदमो रैन्दिनिऱ् पॊरुन्दिऱ् ऱन्ऱिये
वेदनूल् वरन्मुऱै विदिक्कु मैम्बॆरु
पादहन् दिरण्डुयिर् पडैत्त पण्बिनान् 1146

ओतम् नीर्–शीतल जल; मण्–पृथ्वी; इवै मुतल–इनको आदि में रखकर; ओतिय–गणित; पूतम् ओर् ऐन्तिनिल्–पाँच एक भूतों का; पॊरुन्तिऱ्ऱु अन्ऱिये–न बनकर; वेत नूल्–वेद-शास्त्रों में; वरन् मुऱै–यथाक्रम; वितिक्कुम्–विहित; ऐम् पॆरुम् पातकम्–पाँच महापातक; तिरण्टु उयिर् पटैत्त–मिलकर प्राणवन्त हो गये; पण्पिनान्–ऐसे प्रकार वाला। ११४६

उसका शरीर शीतल जल, पृथ्वी आदि कथित पाँचों भूतों का बना नहीं लगता था। पर वेदों और शास्त्रों में वर्जित पाँचों महापातकों (हत्या, चोरी, असत्यवाचन, सुरापान, गुरुनिन्दा या परस्त्री-प्रेम, जुआ, सुरापान, असत्यवाचन, दान देते समय रोकना —ये पंच महापातक माने जाते हैं।) का मिलकर बना और प्राणवन्त हुआ-सा था। ११४६

वॆय्यवॆङ् गदिर्हळै विळुङ्गुम् वॆव्वरा
शॆय्तॊळि लिलतुयिल् शॆविथिन् ऱॊळ्ळैयान्
पॊय्हिळर् वन्मैयिऱ् पुरियुम् पुन्मैयोर्
वॆहुरु नरहैयुम् नहुम्व यिऱ्ऱिनान् 1147

वॆय्य वॆम् कतिर्कळै–गरम और प्रिय (शीतल) किरणों वाले सूर्य और चन्द्र के; विळुङ्कुम्–खादक; वॆम् अरा–भयंकर (राहु-केतु) सर्प; चॆय् तॊऴिल् इल–निष्क्रिय होकर; तुयिल्–आकर जहाँ सोते हैं; चॆवियिन् तॊळ्ळैयान्–कर्ण-विवर वाला; किळर् वन्मैयिन्–बढ़ती कठोरता से; पॊय् पुरियुम्–असत्य-वादन (आदि दुष्कर्म) करनेवाले;

पुत्मैयोर्–नीच लोग; **वैकुरुम्**–जहाँ वास करते हैं; **नरकैयुम्**–उस नरक का भी; **नकुम्**–परिहास करनेवाले; **वयिऱ्ऱिताऩ्**–पेट का। ११४७

सूर्य गरम किरणों के हैं और चन्द्र प्रिय शीतल किरणों के। इन दोनों को राहु और केतु नाम के सर्प पकड़कर निगल लेते हैं। ये दोनों अपना काम छोड़कर कबन्ध के कर्ण-विवरों में जाकर सोते रहते हों, ऐसे कानों वाला था वह। असत्य-कथन आदि नीच काम करनेवालों को जहाँ जाकर रहना पड़ता है, उस नरक को भी लजानेवाला था, उसका पेट। ११४७

मुऱ्ऱिय वुयिरॅला मुरुङ्ग वारित्ताऩ्
पऱ्ऱिय करत्तिऩऩ् पणैत्त पण्णैयिल्
तुऱ्ऱिय पुहुतरु तोऱ्ऱत् ताऩमऩ्
कोऱ्ऱवाय् तऱ्चॅयल् कुऱित्त वायिऩाऩ् 1148

मुऱ्ऱिय–जिनको घेर लिया; **उयिर् ऍलाम्**–उन सभी प्राणियों को; **मुरुङ्क**–मिटाकर; **तान् वारि पऱ्ऱिय**–जिनसे पकड़ता है; **करत्तिऩऩ्**–ऐसे हाथों का; **पणैत्त पण्णैयिल्**–मोटे झुण्डों में; **तुऱ्ऱिय**–ठूँसे हुए (प्राणी); **पुकु तरुम्**–घुसते हैं; **तोऱ्ऱत्ताल्**–उस दृश्य से; **नमऩ् कोऱ्ऱ वाय् तऩ्**–यम के राजद्वार का; **चॅयल्**–कार्य; **कुऱित्त**–जिसकी ओर संकेत करता है (समान); **वायिऩाऩ्**–ऐसा मुख वाला। ११४८

उसके हाथ अपने क्रोड के घेरे में आये हुए सभी प्राणियों को मिटाने के काम में लीन थे। बड़े-बड़े झुण्डों में अनेक प्राणी उसके मुख में ठूँसे जा रहे थे। उस दृश्य को देखकर यम का सुरक्षित राजद्वार स्मरण आता था। ११४८

ओलमार् कडलॅऩ मुऴङ्गु मोदैयाऩ्
आलमे यॅऩविरुण् डऴऩ्ऱ वाक्कैयाऩ्
नीलमाल् नेमियिऱ् ऱलैयै नीक्किय
कालने मियैप्पॉरुङ् गवन्दक् काट्चियाऩ् 1149

ओलम् आर्–गर्जनशील; **कटल् ॲॅऩ**–सागर-सम; **मुऴङ्कुम् ओतैयाऩ्**–कोलाहलमय शब्द वाला; **आलमे ॲॅऩ**–हलाहल के ही समान; **इरुण्टु**–काले; **अऴऩ्ऱ**–उष्ण; **आक्कैयाऩ्**–शरीर का; **नील माल् नेमियिल्**–नील श्रीविष्णु के चक्रायुध से; **तलैयै नीक्किय**–सिर-कटे; **काल नेमियिल्**–कालनेमि के समान; **पॅरुम् कवन्त**–बड़े कबन्ध के; **काट्चियाऩ्**–दृश्य वाला। ११४९

उसका बोल गर्जनशील सागर के शोर के समान था। उसका शरीर हलाहल के समान काला और गरम था। नीले वर्ण के श्रीविष्णु के चक्रायुध के द्वारा सिर-कटे कालनेमि नामक राक्षस के कबन्ध के समान

उसका आकार दिखता था। (कालनेमि के सौ सिरों और हाथों को श्रीविष्णु ने अपने चक्रायुध चलाकर काटा था। वही कालनेमि पीछे कंस बना था। यह पुराणांतर में कहा गया है। इसका उल्लेख अयोध्याकाण्ड में भी आया है।)। ११४९

ताक्किय तणप्पिल्का लॅट्रियत् तन्नुडै
मेक्कुयर् कोंडुमुडि यिऴन्द मेरुनेर्
आक्कैयि निरुन्दवन् ऱन्नै यव्वऴि
नोक्किन रिरुवरु नुणङ्गु केऴ्वियार् 1150

तणप्पु इल् काल्–अप्रतिहत पवन के; ताक्किय ऍट्रिय–वेग से बहकर झटका देने से; तन् उटॅ–अपने; मेक्कु उयर्–ऊपर उठे हुए; कोंटु मुटि–उन्नत शृंगों को; इऴन्त–जिसने खोया है; मेरु नेर्–ऐसे मेरु के समान; इरुन्तवन्–जो रहा; तन्नै–उस कबन्ध को; नुणङ्कु केऴ्वियार्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान के; इरुवरुम्–(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों ने; अ वऴि–वहाँ; नोक्कितर्–देखा। ११५०

उसका शरीर उस मेरु के समान था, जिसके उन्नत शृंग दुर्धर्ष वेग से बहनेवाले पवन के झटके से टूटकर गिरे हों। सूक्ष्म श्रवणज्ञान के स्वामी दोनों, श्रीराम और लक्ष्मण ने वहाँ ऐसे कबन्ध को देखा। ११५०

नीर्पुहु नॅडुङ्गड लडङ्गु नेमिशूऴ्
पार्पुहु नॅडुम्बहु वायॅप् पार्त्तनर्
शूर्पुह वरियदो ररक्कर् तोंन्मदिल्
ऊर्पुहु वायिलो विदुवॅन् ऱुन्निनार् 1151

नीर् पुकु–जल जिसमें प्रवेश करता है; नॅटुम् कटल् अटङ्कु–वे विशाल समुद्र जिसमें समाविष्ट हैं; नेमि चूऴ्–और (जो) चक्रवालगिरि से घिरी हुई है; पार् पुकु–वह भूमि जिसमें प्रविष्ट हो सकती है; नॅटुम् पकु वायॅ–उस बड़े और खुले मुख को; पार्त्ततर्–(उन्होंने) देखा; चूर् पुकल् अरियतु–सूर्य जिसमें प्रवेश नहीं कर सकता, ऐसा; ओर्–एक; अरक्कर्–राक्षसों का; तोंल् मतिल् ऊर्–प्राचीन प्राचीरों से आवृत नगर में; पुकु–प्रवेश करानेवाला; वायिलो इतु–द्वार क्या यह; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नितार्–सोचा। ११५१

श्रीराम और लक्ष्मण ने देखा कि उसके मुख के अन्दर सारी नदियों के जल को समा लेनेवाले सारे सागरों को अपने अन्दर लिये हुए चक्रवालगिरि से आवृत पृथ्वी जा सकती है! उन्होंने सन्देह किया कि क्या यह सूर्य के लिए भी अगम प्राचीन प्राचीरों से आवृत लंका नगर का द्वार है?। ११५१

अव्वऴि यिऴैयव नमैन्दु नोक्किये
वॅव्विय वॅरुपॅरुम् बूदम् विल्वलाय्

ववियिय तनगैयिन् वळैत्तु वायप्पेयुम्
शॅय्वदॆ निवणॆनच् चॅम्मल् शॅप्पुवान् 1152

अ वळि–तब; इळैयवऩ्–कनिष्ठ भ्राता (के); अमैन्तु नोक्कियॆ–खूब देखकर; विल् वलाय्–धनुर्विद्याविदग्ध; वॆव्वियतु ओरु पेरुम् पूतम्–भयंकर एक भूत; ववियिय–अपने द्वारा पकड़े गये प्राणियों को; तऩ् कैयिल् वळैत्तु–अपने हाथों से समेट लेकर; वाय् पॆयुम्–अपने मुख में डालनेवाला है; इवण् चॅय्वतु ऎऩ्–यहाँ करना क्या; ऎऩ–कहने पर; चॅम्मल्–प्रभु श्रीराम; चॅप्पुवाऩ्–बोले। ११५२

तब लक्ष्मण ने कबन्ध को खूब ध्यान से देखा। फिर श्रीराम से कहा कि धनुर्विद्या-निपुण! यह भयंकर भूत है, जो अपने क्रोड में आने वाले सभी प्राणियों को हाथ से लेकर अपने मुख में डाल लेता है! अब हम क्या करें? —लक्ष्मण ने यह प्रश्न किया। ११५२

तोहैयुम् बिरिन्दनळ् ऎन्दै तुञ्जिनान्
वेहवॆम् बळिशुमन् दुळल वेण्डिलेन्
आहलिन् यानिति यिदनुक् कामिडम्
एहुदि यीण्डुनिन् ड्रिळव लाण्डॆन्ड्रान् 1153

इळवल्–छोटे भैया; तोकैयुम् पिरिन्तनळ्–मयूराभा (जानकी) बिछुड़ गयी; ऎन्तै तुञ्चिताऩ्–मेरे पिता (जटायु) चिरनिद्रा में लग गये; वेक वॆम् पळि–अकस्मात आया यह कठोर अपयश; चुमन्तु–ढोता हुआ; उळल वेण्टलेऩ्–संकट में फिरना नहीं चाहता; आकलिऩ्–इसलिए; याऩ्–मैं; इति इततुक्कु–अब इसका; आमिटम्–(आमिश =) खाद्य मांस (या मेरा स्थान); ईण्टु निऩ्ऱु–यहाँ से; एकुति–चलो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ११५३

तब श्रीराम ने नैराश्य से यों कहा— छोटे भैया! मयूर की-सी छटा वाली सीता बिछुड़ गयी। मेरे पिता (-सम) जटायु चिर निद्रा में लीन हो गये; अकस्मात आयी यह निंदा ढोता फिरना मैं नहीं चाहता। इसलिए अब मेरा स्थान उसका भोजन बनना है। (आमिटम्— आमिष का भी तमिळ रूप है; आम् इटम्— करके बननेवाला स्थान अर्थ भी किया जा सकता है।) तुम मुझे छोड़कर यहाँ से चले जाओ। ११५३

ईन्ड्रव रिडर्प्पड वॆम्बि तुन्पुड्रच्
चान्ड्रवर् तुयरुड्रप् पळिक्कुच् चान्ड्रमायत्
तोन्ड्रलि नॆन्नुयिर् तुड्रन्द पोदलाल्
ऊन्ड्रिय पॆरुम्बडर् तुडैक्क वॊण्णुमो 1154

ईन्ऱवर्–मेरे जनक-जननी; इटर् पट–कष्ट भोगते हैं; ऎम्पि–मेरा कनिष्ठ भरत; तुऩ्पुऱ–दुःखी है; चाऩ्ऱवर् तुयर् उऱ–उत्तम (वसिष्ठ आदि) लोग संकट में पड़े हैं; पळिक्कु–अपयश के लिए; चाऩ्ऱुम् आय्–एक दृष्टान्त बना; तोऩ्ऱलिऩ्–पैदा हुआ हूँ, इसलिए; ऎऩ् उयिर् तुऱन्त पोतु अलाल्–बिना प्राण त्यागे; ऊऩ्ऱिय–

स्थिर रूप से हुए; पॅरुम् पटर्–इन बड़े दुःखों को; तुटैक्क ऑण्णुमो–मिटा सकेंगे क्या। ११५४

मेरे कारण मेरे माँ-बाप दुःखी हुए। मेरा कनिष्ठ भरत संकट में है। बड़े और आदरणीय वसिष्ठ आदि दुःख में हैं। और भी मैं अपकीर्ति का दृष्टान्त बना पैदा हुआ हूँ! इसलिए मेरे विना इस बड़े और गहरे दुःख का मिटना सम्भव है क्या ? । ११५४

इल्लियल् बुडैयनी रळित्त विन्शौलाळ्
वल्लिवल् लरक्कर्दम् मनैयु ळाळॅनच्
चौल्लिनन् मलैयॅनच् चुमन्द तूणियन्
विल्लिनन् शॅल्वनो मिदिलै वेन्दन्बाल् 1155

इल् इयल्पु उटैय नीर्–गृहस्थ धर्म का; अळित्त–पालनकारिणी; इन् चौलाळ्–मधुरभाषिणी; वल्लि–लता (-समाना); अरक्कर् तम् मनै उळाळ्–राक्षसों के घर में है; ऍन–ऐसा; मितिलै वेन्तन् पाल्—मिथिलापति के पास; चौल्लि–कहता हुआ; नल् मलै–श्रेष्ठ पर्वत; ऍन चुमन्त–के समान ढोये जानेवाले; तूणियन् विल्लितन्–तूणीरों व धनु के साथ; चॅल्वनो–जाऊँगा क्या। ११५५

गृहस्थ धर्म की अच्छी पालिका, मधुरभाषिणी और लता-समाना सीता राक्षसों के घर में है! श्रेष्ठ पर्वत के समान यह तूणीर और धनु ढोते हुए मैं क्या मिथिलेश के पास यह समाचार देने जाऊँ ? । ११५५

तळैयविळ् कोदैयैत् ताङ्ग लाऱ्ऱलन्
इळैपुरन् दळित्तन्मे लिवर्न्द कादलन्
उळनॅन वुरैत्तलि नुम्ब रानॅन
विळैदलन् ऱादलिन् विळिद नन्ऱॅन्ऱान् 1156

तळै अविळ् कोतैयै–प्रफुल्ल पुष्पों की मालाधारिणी सीता को; ताङ्कल् आऱ्ऱलन्–संरक्षित करने की शक्ति से हीन; इळै पुरन्तु अळित्तल् मेल्–(पर) (इला) भूमि के पालन-शासन पर; इवर्न्त कातलन्–उमँगते प्रेम का; उळन्–है; ऍन–ऐसा; उरैत्तलिन्–कहे जाने से; उम्परान् ऍन विळैतल्–स्वर्गवासी कहे जाने का यह कार्य; नन्ऱु आतलिन्–अच्छा है, इसलिए; विळितल्–मरना; नन्ऱु ऍन्ऱान्–अच्छा होगा, कहा। ११५६

लोग यों कहकर मेरी निंदा करेंगे कि श्रीराम में विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीता का पालन करने की शक्ति नहीं रही। पर भूमि का पालन और शासन करने की इच्छा तो खूब रही! इस अपवाद से 'वह स्वर्गवासी हो गया' यह कहा जाना अच्छा है। इसलिए मेरा मर जाना ही श्रेयस्कर है! श्रीराम ने अपार खेद के साथ अपनी भर्त्सना के ये वचन कहे। ११५६

आण्डा तिन्न पन्निड वैयर् किळवीरन्
ईण्डा युन्बिन् नेयिन शॅय्दे यिडर्वन्दु
मूण्डान् मुन्ने यारुयि रोडु मुडियादे
मीण्डे पोदर् कामॅन्नि नन्रॅन् विन्नैयॅन्ड्रान् 1157

आण्टान्-जगद्रक्षक; इतत-इस भाँति; पन्निट-बोले, तब; ऐयर्कु-प्रभु से; इळ वीरन्-छोटे वीर; उन् पिन्-आपके पीछे; ईण्टु आय्-यहाँ आकर; एयित चॅय्ते-आज्ञा-पालन करके; इटर् वन्तु मूण्टाल्-आफ़त आ गयी तो; मुन्ने-आपके पहले ही; मुटियाते-बिना मरे ही; आर् उयिर् ओटु-प्रिय प्राणों के साथ; मीण्टे पोतर्कु आम्-लौट जाने ही योग्य रहा; ऍन्निल्-तो; नन्रु ऍन् वित्तै-बड़ी अच्छी होगी न मेरी सेवा; ऍन्ड्रान्-कहा। ११५७

जगन्नायक ने यह सब गहरे शोक के साथ कहा। तब छोटे वीर लक्ष्मण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा कि भाई! यह भी खूब रहा। आपके साथ वन में आया आपकी अज्ञाओं का पालन करने का, आप पर संकट आया तो आपके पहले अपनी जान दे देने का संकल्प करके। अब प्रिय प्राण लेकर लौट जाने के ही लिए योग्य समझा जाऊँ, तो मेरी सेवा बड़ी श्लाघनीय होगी न? ११५७

ऍन्ड्रा नन्तान् पिन्नु मिशैप्पा निडर्दन्नै
वॅन्ड्रा रन्ड्रो वीरर्ह ळावार् मेलाय
तन्ड्राय् तन्दै तम्मु नॅन्नुन्दन् मैयर्मुन्ने
पॉन्ड्रा निन्ड्रा नीङ्गुव दन्ड्रो पुहळम्मा 1158

ऍन्ड्रान् अन्तान्-ऐसा कहकर लक्ष्मण; पिन्नुम् इचैप्पान्-और भी बोले; इटर् तन्नै-दुःख को; वॅन्ड्रार् अन्ड्रो-जीतनेवाले ही तो; वीरर्कळ् आवार्-वीर होते हैं; तन् ताय्-अपनी माता; तन्तै-पिता; तन् मुन्-अपना अग्रज; ऍन्नुम् तन्मैयर्-ऐसे पद में रहनेवालों को; मुन्ने पॉन्ड्रा-अपने पहले मरने देते हुए; निन्ड्राल्-कोई जीवित रहा तो; पुकळ् नीङ्कुवतन्ड्रो-उसकी कीर्ति चली नहीं जायगी क्या; अम्मा-माँ। ११५८

लक्ष्मण ने और भी कहा। संकट आए तो उस पर विजय पानेवाले ही वीर कहे जायँगे न? अपनी माँ, अपने पिता और अग्रज आदि बड़ों को मरने देकर कोई जीवित रहेगा तो क्या उसकी कीर्ति मिट नहीं जायगी? । ११५८

माने यन्ना डन्नोडु तम्मुन् वरैयारुम्
काने वेहक् कण्डुयिल् कॉळ्ळान् ड्रन्निहात्तर्
काना नॅन्ने यॅन्ड्रवर् मुन्ने यवरन्ड्रित्
ताने वन्दा नॅन्ड्रपिन् वेड्रोर् तवरुण्डो 1159

माने अन्नाळ्-हरिणी ही सम; तन् ओटु-सीताजी के साथ; तम् मुन्-अपने

बड़े भाई के; वरै आरुम्–बाँसों से पूर्ण; काते वैक–जंगल में ही रहते समय; कण् तुयिल् कॉळ्ळान्–अनिद्र रहा; तनि कातृतर्कु आतान्–अनुपम रक्षक रहा; ऍन्ऩे–क्या ही (खूब); ऍन्ऩवर्–जिन्होंने ऐसा कहा, वे; अवरे इन्ऱि–उनके विना ही; मुन्ऩे–उनके पहले ही; ताते वन्तान्–खुद आ गया; ऍन्ऱु पिन्–कहेंगे, फिर; वेऱु ओर् तवऱु–उससे बढ़कर कोई और दोष; उण्टो–हो सकता है क्या। ११५६

लोगों ने यह देखकर आश्चर्य के साथ मेरी सराहना की कि हरिणी-सी सीताजी के साथ जो गये, उन अपने ज्येष्ठ भ्राता के साथ लक्ष्मण जंगल गया और रक्षणकर्ता बना। अब उनको ही यह कहने का मौका मिल जाय कि लक्ष्मण उनको छोड़कर उनके आने से पहले ही लौट आ गया तो (कितना बड़ा दोष हो जायगा ?) इससे बढ़कर कोई दोष हो सकता है ? । ११५९

ऍन्ऱा युन्मुन् ऩेयिन यावुम् मिशैयिन्ऩल्
पिन्ऱा दॆय्दिप् पेरिशै याळर् कळिवुण्डेल्
पॊन्ऱा मुन्ऩम् बॊन्ऱुदि यॆन्ऱा ळुरैपॊय्या
निन्ऱा लन्ऱो निन्ऱदु वाय्मै निलैयम्मा 1160

ऍन् ताय्–मेरी माता ने; उन् मुन्–तुम्हारा ज्येष्ठ भाई; एयिन यावुम्–जो आज्ञाएँ देगा, वह सब; इचै–पूरा करो; इन्ऩल्–विपदाएँ आयें तो; पिन्ऱातु–पीछे मत रहो और; ऍय्ति–आगे जाकर अपने ऊपर धारण कर लो; पेर् इचै आळर्कु–प्रकीर्तित उनके; अळिवु उण्टेल्–मरने की नौबत आयगी तो; पॊन्ऱा मुन्ऩम्–उनके मरने के पहले; पॊन्ऱुति–तुम मर जाओ; ऍन्ऱाळ्–यह कहा है; उरै–उनका वचन; पॊय्या निन्ऱाल् अन्ऱो–असत्य नहीं होगा, तभी तो; वाय्मै निलै निऱ्पतु–सत्य स्थिर होगा; अम्मा–माँ। ११६०

मेरी माता ने मुझे आदेश दिया था कि तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम जो भी आज्ञाएँ देंगे, वे सब पूरा करो। विपदा आयेगी तो पीछे मत रहो, पर आगे बढ़कर तुम उसे अपने ऊपर ले लो। शायद मरने की स्थिति आने की सम्भावना देखते हो तो उनके मरने के पहले तुम मरण का वरण कर लो। उस आदेश के अनुसार चलूँ तभी न मेरा सत्यव्रत स्थिर होगा ? । ११६०

ऍऱ्पॆऱ् ऱाळुम् यानु मॆन्ऩैत्तोर् वहैयालुम्
निऱ्पॆऱ् ऱाट्कु निऱ्कु निन्नैप्पुम् पिऴैयामल्
नऱ्पोऱ् ऱोळाय् नल्लवर् पेण नन्निनिऱ्कुम्
शॊऱ्पॆऱ् ऱान्मऱ् ऱारुयिर् पेणित् तुऱवेमाल् 1161

नल् पॊन् तोळाय्–श्रेष्ठ और सुन्दर कन्धों वाले; ऍन् पॆऱ्ऱाळुम् यानुम्–मेरी जननी और मैं; निन् पॆऱ्ऱाट्कुम्–आपकी जननी और; निऱ्कुम्–आपके प्रति; ऍन्नैत्तु ओर् वकैयालुम्–किसी भी तरह से; निनैप्पुम् पिऴैयामल्–विना मन बदले; नल्लवर्

ण–श्रेष्ठ लोगों द्वारा श्लाघ्य रीति से; नत्ति निऱ्कुम्–अच्छी तरह अचल रहनेवाली; ोल् पॆऱ्ऱाल्–(साधु-)वचन प्राप्त करेंगे तो; मऱ्ऱु–उसको छोड़कर; आर् उयिर् णि–अपने प्राणों के पालन में; तुऱवोम्–आपका कैंकर्य नहीं छोड़ेंगे । ११६१

उत्तम और मनोरम स्वर्ण-सम कन्धों वाले ! मेरी जननी को और मुझे यह ख्याति मिल जाय कि हम आपकी जननी और आपके प्रति उत्तम मनुष्यों से श्लाघ्य होकर स्थिरमन रहे । जब इसकी सम्भावना है, तब उसके विपरीत अपने प्राणों के लोभ से अपने कर्तव्य छोड़ देंगे क्या ? । ११६१

ओदुङ् गालप् पल्पॊरुण् मुऱ्ऱुऱ् ऱॊरुवाद
वेदञ् जॊल्लुन् दॆवरुम् वीयुङ् गडैवीयाय्
मादङ् गन्दिन् ऱुय्न्दिव नत्तिन् ऱलैवाऴुम्
पूदङ् गॊल्लप् पॊन्ऱुदि यॆन्निऱ् पॊरुळुण्डो 1162

ओतुम् काल्–सच कहा जाय; पल् पॊरुळ्–जग के सारे पदार्थ; मुऱ्ऱु उऱ्ऱु–जब मिट जायँगे; ऒरुवात–अमर; अ वेतम् चॊल्लुम्–उन वेदों में कथित; तेवरुम्–देव भी; वीयुम् कटै–मिट जायँगे, उस युगान्त में; वीयाय्–अमर रहनेवाले आप; मातङ्कम् तिन्ऱु–गजों को खाकर; उय्न्तु–जीवित; इ वतत्तिन् तलै–इस कानन में; वाऴुम्–रहनेवाले; पूतम् कॊल्ल–भूत के द्वारा मारे जाकर; पॊन्ऱुति ऎन्तिल्–मर जायँगे तो; पॊरुळ् उण्टो–उसका कोई अर्थ रहता है क्या । ११६२

सच कहा जाय, हे प्रभु ! आप कौन हैं ? जब प्रपंच की सारी सृष्टि मिट जायगी और अमर वेदों से प्रशंसित देवता लोग भी नहीं रह जायँगे, उस युगान्तकाल में भी आप अमर रहनेवाले हैं । ऐसे आप, हाथी खाते हुए जीवित रहनेवाले इस काननवासी भूत के मारते मर जायँगे ? इस कथन का कोई अर्थ हो सकता है क्या ? । ११६२

केट्टार् कॊळ्ळार् कण्डवर् पेणार् किळर्पोरिल्
तोट्टार् कोदैच् चोर्कुऴ ऱन्नैत् तुवळामल्
मीट्टा नॆन्नुम् बेरिशै कॊळ्ळान् शॆरुवॆल्ल
माट्टान् माण्डा नॆन्ऱलिन् मेलुम् वशैयुण्डो 1163

केट्टार् कॊळ्ळार्–सुननेवाले नहीं मानेंगे; कण्टवर् पेणार्–देखनेवाले नहीं चाहेंगे; तोटु आर् कोतै–विकसित दलों के पुष्पों की मालाधारिणी; चोर् कुऴल् ऩत्तै–बिखरे केश की सीतादेवी को; तुवळामल्–दुःख में न छोड़कर; मीट्टान् ऎन्तुम्–मुक्त कर लाया, यह; पेर् इचै कॊळ्ळान्–बड़ा यश प्राप्त नहीं करके; चॆरु वॆल्ल माट्टान्–युद्ध में जीत न पा सका; माण्टान्–मर गया; ऎन्ऱ पिन्–यह कथन होने के बाद; मेलुम्–उससे बढ़कर; वचै उण्टो–निंदा होगी क्या । ११६३

जो कोई सुनेगा वही नहीं मानेगा । जो कोई देखेगा वही नहीं चाहेगा । लोग यह कहें कि विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीतादेवी

को दुःख से निवृत्त कर लौटा नहीं लाया, न किसी युद्ध में विजय पायी; पर श्रीराम मर गया —इससे बढ़कर क्या निंदा होगी ? । ११६३

तणिक्कुन् दन्मैत् तन्ऱॆन्ि लन्ऱित् तहैवाळाल्
कणिक्कुन् दन्मैत् तन्ऱु विडत्तिऱ् कनल्बूदम्
पिणिक्कुङ् गैयुम् बॅय्पिल वायुम् पिळैयामल्
तुणिक्कुम् वण्णङ् गाणुदि तुन्बन् दुऱवॅन्ऱान् 1164

विटत्तिल्—विष के समान; कनल् पूतम्—जलता यह भूत; कणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु—कुछ गण्य नहीं है; इ तकै वाळाल्—(हमारी) इन उत्तम तलवारों द्वारा; तणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु—नहीं काटा जा सकता है; ॲतिल् अन्ऱु—ऐसा भी नहीं है; पिणिक्कुम् कैयुम्—जकड़नेवाले इन हाथों को; पॅय् पिल वायुम्—गुफा के समान मुख को, जिसमें वह सारे जीवों को समेटकर डाल लेता है; पिळैयामल्—अचूक रीति से; तुणिक्कुम् वण्णम्—काट लेता हूँ, वह रीति; काणुति—देखिए; तुन्पम् तुऱ—शोक छोड़ दीजिए; ॲन्ऱान्—कहा । ११६४

यह विष-समान जलनेवाला भूत कुछ गण्य नहीं है ! इन उत्तम तलवारों से न मारा जा सकेगा —ऐसा भी नहीं। अब देख लीजिए। मैं कैसे सभी जीवों को जकड़ लेनेवाले इसके हाथों को और गुफा के समान मुख को छिन्न-भिन्न कर देता हूँ। आप दुःख करना छोड़ दें। —लक्ष्मण ने ऐसा कहा । ११६४

ॲन्ना मुन्ने शॊल्लु मिळङ्गो विऱैयोऱ्कु
मुन्ने शॆल्ल मुन्नव नन्ना निन्मुन्दत्
तन्ने रिल्लात् तम्बि तडुप्पान् पिऱरिल्लै
अन्नो कण्ड वुम्बरुम् वॅय्दुऱ् ऱळुदाराल् 1165

ॲन्ना—ऐसा; मुन्ने चॊल्लुम्—(करने के) पूर्व ही वादा करके; इळम् को—लघुराज; इऱैयोऱ्कु—भगवान (श्रीराम) के; मुन्ने चॆल्ल—आगे गये; मुन्नवन्—ज्येष्ठ श्रीराम; अन्नानित्तुम्—उनके भी; मुन्त—आगे गये; तन् नेर् इल्ला—अप्रमेय; तम्पि—छोटे भाई; तटुप्पान्—रोकने लगे; पिऱर् इल्लै—(उनको रोकने) कोई दूसरे नहीं थे; कण्ट उम्परुम्—इसको देख देव भी; वॅय्तुऱ्ऱु—शोकाकुल होकर; अळुतार्—रोये; अन्नो—हाय । ११६५

लक्ष्मण ने कार्य के पहले ही वादा कर दिया। लघुराज यह कहकर (उसको चरितार्थ करने के विचार से) श्रीराम के आगे कबन्ध के मुख की तरफ़ जाने लगे। श्रीराम भी उनको पीछे करके आगे जाने लगे। तब अनुपमेय छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को रोका। इस तरह दोनों ने आपस में एक दूसरे को रोका। देवों ने यह देखा और यह भी देखा कि उन दोनों को रोकनेवाला कोई अन्य नहीं है। तब वे शोक से रोने लगे। ११६५

इत्तैय राहिय विरुवरु मुहत्तिरु कण्बोल्
कत्तैयुम् वार्हळल् वीरर्शॅन् रणुहलुङ् गवन्दन्
वित्तैयि नॅय्दिय वीरर्नीर् यावर् कॉलॅन्न
नित्तैयु नॅञ्जित रिमैत्तिल रुरुत्तनर् निन्ऱार् 1166

इत्तैयर् आकिय–ऐसे; कत्तैयुम् वार् कळल्–क्वणनशील बड़ी पायलधारी; वीरर् इरुवरुम्–दोनों वीर; मुकत्तु इरु कण् पोल्–मुख की दोनों आँखों के समान; चॅन्ऱु अणुकलुम्–ज्योंही जाकर नियराये, त्योंही; कवन्तन्–कबन्ध के भी; वित्तैयिन् ऍय्तिय–कर्म-प्रेरित हो आये; वीरर् नीर्–वीर तुम; यावर् कॉल्–कौन हो; ऍन्न–पूछने पर; नित्तैयुम् नॅञ्चितर्–सोचते हुए मन के साथ; उरुत्ततर्–क्रुद्ध बनकर; इमैत्तिलर्–अपलक; निन्ऱार्–(तरेरते) खड़े रहे। ११६६

क्वणनशील पायलधारी दोनों वीर एक ही मुख की दोनों आँखों के समान जाकर कबन्ध के पास पहुँचे। कबन्ध ने उनसे पूछा कि कर्म-परिपाक से इधर आगत तुम दोनों वीर कौन हो ? यह सुनकर दोनों वीर क्रुद्ध हुए और कुछ सोचते हुए उसको तरेरने लगे। उस स्थिति में वे खड़े रहे। ११६६

अळिन्दु ळारल रिहळ्ळ्तदन रॅन्नॆयॅन् ऱळन्ऱान्
पॉळिन्द कोपत्तन् पॉरिक्कतल् विळितॉरुम् बॉडिप्प
विळुङ्गु वॅन्न वीङ्गलुम् विण्णुऱ वीरर्
ऍळुन्द तोळ्हळै वाळ्हळा लरिन्दन रिट्टार् 1167

अळिन्तुळ्ळार् अलर्–(मुझे देखकर भी) ये भय से निस्पंद नहीं हुए; ऍन्नै इकळ्न्ततर्–मेरा अपमान करते हैं; ऍन्ऱु अळन्ऱान्–यह सोचकर खौल उठा; तन् कोप पॉरि कतल्–अपनी अंगार के साथ कोपाग्नि; विळि तॊरुम्–दोनों आँखों द्वारा; पॉटिप्प–प्रकट करते हुए; विळुङ्कुवान् ऍन–निगल लूँगा, इस विचार से; वीङ्कलुम्–शरीर को फुलाने पर; वीरर्–दोनों वीरों ने; विण् उऱ ऍळुन्त–आकाश से लगते हुए जो उठे, उन कन्धों को; वाळ्कळाल्–तलवारों से; अरिन्ततर्–काटकर; इट्टार्–गिराया। ११६७

कबन्ध सोचने लगा कि यह क्या नई बात है ? ये मुझे देखकर भयभीत होकर मूर्च्छित नहीं हो रहे ! मेरा अपमान करते हैं। उसकी कोपाग्नि अंगारों के साथ उसकी दोनों आँखों से प्रकट होने लगी। उसने उनको निगलने के विचार से अपना शरीर फुलाया। तब दोनों वीरों ने आकाश तक उठे हुए उसके हाथों को अपनी तलवारों से काटकर गिरा दिया। ११६७

कैह ळर्ऱवॅङ् गुरुदिया ऱॊळुक्किय कवन्दन्
मॅय्यिन् मेर्कॊडु किळक्कुरप् पॅरुनदि विरवुम्

शैय मानॅडुन् दाळ्तडत् तनिवरै तन्नो
डैय नीङ्गिय पेरॅळि लुवमैय नानान् 1168

कैकळ् अऱ्ऱु–कटे हाथों का होकर; वॅम् कुरुति आऱु–गरम रक्त की नदी; ऑळुक्किय कवन्दन्–बहाता हुआ कबन्ध; मेय्यिन्–अपने शरीर में; मेऱ्कु ऑट्टु किळक्कु–पश्चिम से पूर्व तक; उऱ–जाती हुई; पॅरु नति विरवुम्–बड़ी नदी (कावेरी) से युक्त; चैय मा नॅटु–सह्य नाम के लम्बे-चौड़े और; ताळ् तट–विस्तृत तराइयों के; तनि वरै तन्नॊटु–श्रेष्ठ पर्वत के साथ; ऐयम् नीङ्किय–सन्देह-रहित; पेर् ॲळिल्–अतीव सुन्दर; उवमैयन् आतान्–तुल्य बन गया। ११६८

कटे हाथों के साथ शरीर पर रक्त की नदी बहाते हुए जो रहा, उस कबन्ध का शरीर सह्याद्रि से असंदिग्ध और सुन्दर रूप से तुल्य हो गया, जिस पर कावेरी की लम्बी नदी पश्चिम से लेकर पूर्व के छोर को छूती हुई बहती है। ११६८

आळु नायह तङ्गैयिऱ् ऱीण्डिय वदनाल्
मूळुम् शाबत्तिन् मुन्दिय तीविनै मुडित्तान्
तोळुम् वाङ्गिय तोमुडै याक्कैयैत् तुऱवा
नीळ नीङ्गिय पऱवैयिन् विण्णुऱ निमिर्न्दान् 1169

आळुम् नायकन्–लोकपालक जगन्नाथ प्रभु श्रीराम ने; अम् कैयिल्–अपने सुन्दर हस्त से; तीण्टिय अतताल्–स्पर्श किया, उससे; मूळुम् चापत्तिन्–प्रभावपूर्ण शाप के कारण; मुन्तिय–आरब्ध; तीविनै–पाप को; मुडित्तान्–मिटाकर; तोळुम् वाङ्किय–कटी भुजाओं के साथ; तोम् उटै याक्कैयै–दोषयुक्त शरीर को; तुऱवा–छोड़कर; नीळम् नीङ्किय–नीड़ को त्यागकर आये; पऱवैयिन्–पक्षी के समान; विण् उऱ निमिर्न्तान्–आकाश को स्पर्श करते हुए बढ़ा। ११६९

उसके शरीर पर भुवनगोप्ता जगन्नायक श्रीराम के सुन्दर हाथ का स्पर्श हो गया था। इसलिए सारे पाप कट गये, जो प्रबल शाप के कारण उसे लगे थे और फल दे चुके थे। भुजाओं-रहित दोषसहित अपना शरीर छोड़कर वह नीडमुक्त पक्षी के समान आकाश में एक दिव्य रूप में खड़ा हो गया। ११६९

विण्णि निन्ऱवन् विरिञ्जनै मुदलिनर् यार्क्कुम्
कण्णि निन्ऱव निवनॅनक् करुत्तुऱ वुणर्न्दान्
ऍण्णि यन्नवन् गुणङ्गळै वाय्दिऱन् दिशैत्तान्
पुण्णि यम्बयक् किन्ऱुळि यरियदॅप् पॊरुळे 1170

विण्णिन् निन्ऱवन्–आकाश में खड़ा होकर; विरिञ्चनै मुतलिनर्–ब्रह्मादि; यार्क्कुम्–सभी को; कण्णिन् निन्ऱवन्–दृष्टि के सामने स्थित; इवन् ॲन–भगवान ये हैं, यह; करुत्तु उऱ उणर्न्तान्–मन में स्थिर रूप से जान लिया; अन्नवन् कुणङ्कळै–उनके कल्याणगुणों को; ऍण्णि–स्मरण कर; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; इचैत्तान्–

गान किया; पुण्णियम्–पुण्य; पयक्किऩ्ऱुऴि–जब फलीभूत होता है, तब; ऍ पॉरुळे अरियतु–कौन सी वस्तु दुर्लभ है। ११७०

आकाश में खड़ा होकर उसने अपने मन में यह स्थिर रूप से जान लिया कि ये ही वे परमदेव हैं, जो विरंचि आदि देवताओं की (ध्यान-) दृष्टि के लक्ष्य बने हैं। वह उनके कल्याणगुणों का स्मरण करके गान करने लगा। हाँ! जब पुण्य फलीभूत होने लगता है, तब कौन सी वस्तु दुर्लभ होती है? । ११७०

ईऩ्ऱवऩो वॆप्पॊरुळु मॆल्लैतीर् नल्लऱत्तिऩ्
शाऩ्ऱवऩो तेवर् तवत्तिऩ् ऱऩिप्पयऩो
मूऩ्ऱु कवडाय् मुळैत्तॆऴुन्द मूलमो
तोऩ्ऱि यरुवितैयेऩ् शाबत् तुयर्तुडैत्ताय् 1171

तोऩ्ऱि–मेरे सामने प्रकट होकर; अरु वितैयेऩ्–दुस्तर पापी (मेरे); चाप तुयर्–शाप का दुःख; तुटैत्ताय्–मिटानेवाले; ऍ पॉरुळुम् ईऩ्ऱवऩो–सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं क्या; ऍल्लै तीर्–सीमाहीन; नल् अऱत्तिऩ्–श्रेष्ठ धर्म के; चाऩ्ऱु अवऩो–प्रमाण जो हैं, वे हैं क्या; तेवर् तवत्तिऩ्–देवों के तप के; तऩि पयऩो–श्रेष्ठ फलस्वरूप हैं क्या; मूऩ्ऱु कवटु आय्–त्रिशाखा में; मुळैत्तु ऍऴुन्त–प्रकट होनेवाले; मूलमो–उनके मूल हैं क्या। ११७१

मेरे सामने प्रकट होकर कठोर पापी मेरा शाप-दुःख दूर करनेवाले हे प्रभु! क्या आप ही चराचर के जनक हैं? अनन्त धर्मपथ के पथिकों के लिए प्रमाणस्वरूप आप ही हैं क्या? आप देवों के कठिन तप के फलस्वरूप अवतरित परमपुरुष हैं? या ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूपी त्रिशाखाओं के मूल परब्रह्म हैं? । ११७१

मूलमे यिल्ला मुदल्वऩे नीमुयलुम्
कोलमो यार्क्कुन् दॆरिवरिय कॊळ्हैयवाल्
आलमो वालि तडैयो वडॆक्किडन्द
बालऩो वेलैप् परप्पो पहराये 1172

मूलमे इल्ला–अनादि; मुतल्वऩे–मूलपुरुष; नी मुयलुम्–आप जो लेते हैं; कोलमो–वे रूप; यार्क्कुम् तॆरिवु अरिय–सबके लिए अज्ञ; कॊळ्कैय–तथ्यों के आधार हैं; आल्–इसलिए; आलमो–(प्रलय के बाद उत्पन्न) वह वृक्ष हैं क्या; आलिऩ् अटैयो–उस वट का पत्र है क्या; अटै किटन्त पालऩो–पत्र पर पड़े रहे शिशु हैं क्या; वेलै परप्पो–(वह वट-वृक्ष जिसमें है) वह सागर-विस्तार है क्या; पकराय्–समझाइए। ११७२

अनादि आदिपुरुष! आप स्वेच्छा से जो रूप लेते हैं, उनके तथ्य किसी के ज्ञानगम्य नहीं होते। आपका मूल रूप क्या है? प्रलय के जलविस्तार के मध्य प्रकट होनेवाला वट-वृक्ष है? या उसका पत्र?

या उस पत्र के शायी शिशु ? या वही जल-विस्तार ? समझाइए कौन सा है ? । ११७२

निन्शॅय्है कण्डु नितैंन्दन्नवो नीण्मऱैहळ्
उन्शॅय्है यन्नवैताम् जोंन्न वोंळुक्किन्नवो
ॲन्शॅय्देन् मुन्न मिच्चॅय्है यॅय्दिताय्
पिन्शॅय्व दिल्लाप् पॅरुञ्जॅल्व नीपॅऱ्ऱाय् 1173

पिन् चॅय्वतु इल्ला–और भी जोड़ा जाय ऐसा जो नहीं; पॅरुम् चॅल्वम्–ऐसे बड़े (मोक्ष) धन के; पॅऱ्ऱाय् नी–स्वामी हैं आप; नीण् मऱैकळ्–अनन्त वेदों ने; निन् चॅय्कै कण्टु–आपके कार्य देखकर; नितैंन्तन्नवो–स्मरण करके कहे; अन्नवै ताम्–(या) वे; उन् चॅय्कै–आपके कृत्यों को; चॉन्न ऑळुक्किन्नवो–निर्धारित कर कहनेवाले हैं; इ चॅय्कै ॲय्तिताय्–यह (मुझे तारने का) काम करने की कृपा की; मुन्नम् ॲन् चॅय्तेन्–(इनके योग्य) पहले मैंने क्या पुण्य किया था । ११७३

आप मोक्षनिधि के स्वामी हैं। वह निधि ऐसी है, जिसमें और जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती, न जोड़ना ही सम्भव है। वेदों ने आपके कार्य देखकर वर्णन किये हैं या उनके कहे अनुसार आप कार्य करते हैं ? आपने मेरे प्रति यह जो हित-कार्य किया है, उसके योग्य मैंने क्या पुण्य किया था ? । ११७३

काण्बार्क्कुङ् गाणप् पडुम्बॉरुट्कुङ् गण्णाहिप्
पूण्बाय्पो निऱ्ऱियाल् यादॉन्ऱुम् पूणादे
माण्बा लुलहै वयिऱ्ऱॊळित्तु वाङ्गुदियाल्
आण्बालो पॅण्बालो वप्पालो वॅप्पालो 1174

काण्पार्क्कुम्–दर्शकों और; काणप्पटम् पॉरुट्कुम्–दृश्य पदार्थों की; कण्णाकि–दृष्टि बनकर; यातु ऑन्ऱुम् पूणाते–बिना किसी का धारण किये ही; पूण्पाय् पोल–धारक के समान; निऱ्ऱि–स्थित हैं; उलकै–सर्वलोकों को; माण्पाल्–दिव्यशक्ति से; वयिऱ्ऱु ऑळित्तु–उदर में छिपाये रखकर; वाङ्कुति आल्–(कल्पारम्भ में) फिर से बाहर लाते हैं; आण् पालो–आप पुरुष जाति हैं; पॅण्पालो–स्त्री; अप्पालो–दोनों के परे हैं; ॲ पालो–कौन जाति हैं । ११७४

आप दर्शकों और दृश्यों की आँखें हैं! आप सचमुच किसी का धारण नहीं करते पर देखने में धारण करते से स्थित हैं! [यह गीता के (९-५) श्लोक का भाव है। श्लोक यह है— "न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥" इसको ऐसे ही मनन करके समझना है।] अपनी (शक्ति) महिमा से प्रपंच को अपने उदर में छिपा लेते हैं और बाद प्रकट करते हैं! क्या आप पुरुष जाति के हैं या स्त्री जाति के ? या दोनों नहीं है ? या दोनों के परे कोई (नपुंसक) जाति हैं ? कौन सा लिंग है आपका ? । ११७४

आदिप् पिरमनुनी यादिप् परमनुनी
आदियॅनुम् बौरुळुक् कप्पालुण् डायिनुनी
शोदिनी शोदिच् चुडर्प्पिळम्बुम् नीयॅनुरु
वेदमुरै शॅय्दाल् वॅळ्हारो वेरुळ्ळार् 1175

आति पिरमनुम् नी–सृष्टिमूल ब्रह्मा भी आप हैं; आति परमनुम् नी–उनके भी दि परब्रह्म भी आप हैं; आति ऍनुम् पॊरुळुक्कु–आदि कहलानेवाले तत्त्व के भी; पाल् उण्टु आयिनुम्–परे कुछ हो तो; नी–वह भी आप हैं; चोति नी–ज्योति-रूप हैं आप; चोति चुटर् पिळम्पुम्–ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी; नी ऍनुरु–प ही हैं, यह; वेतम् उरै चॅय्ताल्–वेद कहते हैं तो; वेरु उळ्ळार्–वेदबाह्य सम्प्रदायों देव; वॅळ्कारो–नहीं शरमायेंगे क्या। ११७५

सृष्टि के मूल ब्रह्मा आप ही हैं। उनके भी आदि आप ही हैं। गर आदि के आदि कुछ हैं तो वह भी आप ही हैं। आप ज्योतिस्वरूप ब हैं। ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी आप ही हैं। यह वेदों का ष्कर्ष है। यह सुनकर अन्य सम्प्रदाय जिनको आदिदेव कहते हैं, वे देव हाने पर नहीं शरमायेंगे क्या? । ११७५

ऍण्डिशैयुन् दिण्शुवरा येळ्ळॆळ् निलैयॅडुत्त
अण्डप् पॆरुङ्गोयिर् कॅल्ला मळ्हाय
मण्डलङ्गळ् मून्रिन् मेनिन्रु मलराद
पुण्डरिह मॊट्टिन् पॊहुट्टो पुरैयम्मा 1176

ऍण् तिचैयुम्–आठों दिगन्त; तिण् चुवराय्–सबल भित्तियाँ बने हैं; एळ् एळ् ऍटुत्त–ऐसे चौदह तल्लों में बने; अण्ट पॆरुम् कोयिर्कु ऍल्लाम्–अण्डों के बने र्ण मन्दिर से; अळ्कु आय–अधिक सुन्दर; मण्टलङ्कळ् मून्रिन् मेल् निन्रु–र्य, चन्द्र, नक्षत्र-) त्रिमण्डलों के ऊपर स्थित होकर; मलरात–अविकसित; पुण्टरिकम् टिन्–कमलकली का; पॊकुट्टो–कर्णिका (परमपद); पुरै–आपका वासस्थान है ; अम्मा–री मैया। ११७६

चौदह लोकों का एक अण्ड है। उनमें हर एक दिगन्त की भित्तियों आवृत है। वह अण्ड मन्दिर के समान है। उस सुन्दर मन्दिर के र सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र —तीन मण्डल हैं। उनके ऊपर अविकसित ल की कली है। उसकी कर्णिका जो है (परमपद) क्या वही आपका स्थान है? । ११७६

मण्बा लमरर् वरम्बारुङ् गाणाद
ऍण्बा लुयर्न्द वॅरियोङ्गु नल्वेळ्वि
उण्बायुनी यूट्टुवाय् नीयिरण्डु मॊक्किन्र
पण्बा ररिवार् पहर्वाय् परमेट्टि 1177

परमेट्टि–परमेष्ठी; मण् पाल् अमरर्–भूसुर; आरुम्–कोई भी; वरम्पु काणात–जिसका ठिकाना नहीं देख पाते; ऍण्पाल् उयर्न्त–संख्या में बढ़े; ऍरि ओङ्कु–जिनमें अग्नि पाली जाती है, उन; नल् वेळ्वि–श्रेष्ठ यज्ञों में; उण्पाय् नी–(हवि-) भोक्ता भी आप हैं; ऊट्टुवाय् नी–अन्य देवों को भोग करानेवाले भी (या हवि देनेवाले भी) आप ही हैं; इरण्टुम् ऑक्किन्नर–(भोजनदाता, भोजनकर्ता) दोनों के साथ रहने का; पण्पु–प्रकार; अऱिवार् यार्–जाननेवाले कौन हैं। ११७७

परमेष्ठी ! भूसुर असंख्य यज्ञ करते हैं। उनमें अग्निदेव का आवाहन होता है और उनके पास हवि अर्पित की जाती है। उस हवि के भोक्ता भी आप हैं और उसका उच्छिष्ट देवताओं को आहार करानेवाले भी आप ही हैं। (हवि के देनेवाले भी आप हैं।) भोक्ता तथा भोजनदाता दोनों आप ही एक साथ रहते हैं। यह महिमा जान सकनेवाले कौन हैं ? । ११७७

निऱ्कु नॆडुनीत्त नीरिन् मुळैत्तॆऴुन्द
मॊक्कुळे पोल मुहुळित्त वण्डङ्गळ्
ऑक्कवुयर्न् दुन्नुळे तोन्ऱि यॊळिक्किन्ऱ
पक्क मऱिदऱ् कॆळिदो परम्बरने 1178

परम्परने–परात्पर; निऱ्कुम् नॆटुम् नीत्तम्–विपुल महाप्रलय के; नीरिन्–जल में; मुकुळित्त–कली के समान उठे; अण्टङ्कळ्–अण्डगोल; ऑक्क उयर्न्तु–एक साथ ऊपर आकर; उन् उळे तोन्ऱि–आपके अन्दर से प्रकट होकर; ऑळिक्किन्ऱ–फिर कल्पान्त के प्रलय में छिप जाते हैं; पक्कम्–वह पक्ष; अऱितऱ्कु ऍळितो–जानने के लिए सुलभ है क्या। ११७८

परात्पर ब्रह्म ! महाप्रलय के जलविस्तार में से कली के समान अण्ड निकलकर ऊपर आते हैं। वे आप ही के अन्दर से बाहर प्रकट होते हैं, फिर यथासमय कल्पान्त के प्रलय में आप ही में समा जाते हैं ! यह आपका अतिशय पक्ष यथार्थ रूप में समझ लेना सुलभ है क्या ? । ११७८

मायप् पिऱवि मयनीक्कि माशिल्लाक्
कायत्तै नल्हित् तुयरित् करैयेऱ्ऱिप्
पेयॊत्तेन् बेदैप् पिणक्करुत्त वॆम्बॆरुमान्
नायॊत्ते नॆन्न नलनिऴैत्ते नानॆन्रान् 1179

माय पिऱवि–वंचकमय (राक्षस-)जन्म-सुलभ; मयल् नीक्कि–मोह हटाकर; माचु इल्ला–निर्दोष; कायत्तै नल्कि–शरीर को देकर; तुयरित् करै एऱ्ऱि–दुःख (सागर) के तीर पर चढ़ाकर; पेय् ऑत्तेन्–भूत के समान; पेतै पिणक्कु–अज्ञता से गृहीत पातकमय जीवन; अऱुत्त–काटनेवाले; ऍम्पॆरुमान्–मेरे प्रभु; नाय् ऑत्तेन् नान्–श्वान-सम मैंने; ऍन्न नलन् इऴैत्तेन्–क्या ही सुकर्म किया था। ११७९

मेरा वंचक राक्षस-जन्म था, उससे अत्यन्त मोह में फँसा हुआ था।

ापने उस मोह का जाल काट दिया। फिर यह निर्दोष दिव्य शरीर दान किया। दुःख-सागर के तीर पर चढ़ा दिया। भूत के समान मेरे जीवन का बन्धन काटकर मुझे उबारनेवाले हे प्रभु! मैं कुत्ते का जीवन ाता रहा था। मैंने क्या ही सुकार्य किया था? आपकी निर्हेतुक करुणा ी कितनी बड़ी है!। ११७९

ऍऩ्ऱाङ् गिऩिदियम्बि यिऩ्ऱरियक् कूऱुवॅऩेल्
ऑऩ्ऱादु तेव रुऱुदिक् कॅऩवुऩ्ऩात्
तऩ्ऱायैक् कण्णुऱ्ऱ कऩ्ऱऩैय तऩ्मैयऩाय्
निऩ्ऱाऩैक् कण्डा नॅऱिनिऩ्ऱार् नेर्निऩ्ऱाऩ् 1180

ऍऩ्ऱाङ्कु–ऐसा; इतितु इयम्पि–सन्तोषक रीति से स्तुति करके; इऩ्ऱु–अब; ऱिय कूऱुवॅऩेल्–प्रकट कहूँ तो; तेवर् उऱुतिक्कु–देवों के हित में; ऑऩ्ऱातु–उचित हीं रहेगा; ऍऩ उऩ्ऩा–यह सोचकर; तऩ् तायै कण् उऱ्ऱ–अपनी माँ को जिसने खा हो, उस; तऩ्मैयऩाय्–(बछड़े की-सी) स्थिति में आकर; निऩ्ऱाऩै–जो खड़ा रहा, स कबन्ध को; नॅऱि निऩ्ऱार्–धर्मपथिकों को; नेर् निऩ्ऱाऩ्–सामने आकर दर्शन ेनेवाले (श्रीराम) ने; कण्टाऩ्–देखा। ११८०

स्तुति में इतना कहा कबन्ध ने। वह और भी कहना चाहता था। लेकिन, 'और भी कहूँ तो अवतार-रहस्य खुल जायगा। वह देवों के हित में अच्छा नहीं रहेगा।' यह सोचकर वह बिछुड़ी माता गाय से पुनः प्राप्त बछड़े की-सी हालत में अत्यन्त आनन्द के साथ चुप खड़ा रह गया। ज्ञानमार्गियों को उनके ध्यान में दर्शन देनेवाले श्रीराम ने उसको उस स्थिति में देखा। ११८०

पारा यिळैयवऩे पट्टविवऩ् वेऱॊर्
पेराळऩ् ऱाऩा यॊळियोङ्गु पॅऱ्ऱियऩाय्
नेराहा यर्तिऩ् निऱ्किऩ्ऱा नीयिवऩै
आरा यॅऩववऩुम् यार्हॊलो नीयॅऩ्ऱाऩ् 1181

इळैयवऩे–अनुज; पाराय्–देखो; पट्ट इवऩ्–(हमारे हाथों) मरा यह; वेऱु ॊर्–अन्य एक; पेर् आळऩ् ताऩाय्–सम्मान्य (व्यक्ति) बनकर; ऑळि ओङ्कु–ज में उन्नति; पॅऱ्ऱियऩ् आय्–प्राप्त करके; नेर् निऱ्किऩ्ऱाऩ्–हमारे सामने खड़ा; नी इवऩै आराय्–तुम इसको परख लो; ऍऩ्–(श्रीराम के) कहने पर; अवऩुम्–न्होंने भी; नी यार् कॊलो–तुम कौन हो तो; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा। ११८१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को सुझाया कि छोटे भैया! देखो। जिसको हमने मारा था, वह बहुत सम्मान के योग्य और तेजोमय रूप में खड़ा है। पता लगा लो कि वह सचमुच कौन है? तब लक्ष्मण ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो?। ११८१

शन्दप्पू णलङ्गल् वीरन् दनुवंनु नामत् तेऩोर्
कन्दर्प्पन् शाबत् तालिक् कडैप्पडु पिऱवि कण्डेन्
वन्दुर्ऱीर् मलर्क्कै तोण्ड मुन्नुडै वडिवु पॆऱ्ऱेन्
ऍन्दैक्कु मॆन्दै नीर्या निशैप्पदु केण्मि नॆन्ऱान् 1182

चन्तम् पूण्–सुन्दर आभरण; अलङ्कल् वीरन्–और मालाधारी वीर; तनु ऍनुम् नामत्तेन्–तनु का नामधारी हूँ; ओर् कन्तर्प्पन्–एक गन्धर्व हूँ; चापत्ताल्–शाप के कारण; इ कटै पटु पिऱवि–यह नीच जन्म; कण्टेन्–प्राप्त कर चुका था; वन्तु उऱ्ऱीर्–आप पधारे; मलर् कै तीण्ट–(आपके) कमल-सम हाथों के स्पर्श से; मुन् उटै वटिवम्–मूल रूप; पॆऱ्ऱेन्–प्राप्त किया; ऍन्तैक्कुम् ऍन्तै नीर्–मेरे पिता के पिता आप; इचैप्पतु–मेरा विनय-कथन; केण्मिन्–सुनिए; ऍन्ऱान्–कहा। ११८२

तव उसने उत्तर दिया। वह सुन्दर आभरणों से और हारों से भूषित था। उसने कहा कि मैं तनु नामधारी गन्धर्व हूँ। किसी शापवश इस नीच जन्म को प्राप्त हुआ था। आप कृपा करके आये और आपके कमल-हस्तों के स्पर्श से मुझे अपना पूर्वरूप प्राप्त हो गया। मेरे पिता के पिता! मैं कुछ सुनाता हूँ। आप सुनिए। ११८२

कणैयुलाञ् जिलैयि ऩीरैक् काक्कुन रिल्लै येनुम्
इणैयिला डऩ्नै नाडऱ् केयिन शॆय्दऱ् केऱ्कुम्
पुणैयिला दवर्क्कु वेलै पोक्करि दऩ्न दॆपोल्
तुणैयिला दवर्क्कु मिऩ्ऱाऱ् पहैप्पुलत् तॊलैत्तु नीक्कल् 1183

कणै उलाम् चिलैयिऩीरै–शरासन-हस्त आपको; काक्कुनर् इल्लै–रक्षित करने में समर्थ कोई नहीं है; एतुम्–तो भी; इणै इलाळ् तऩ्ऩै–अप्रमेय (सीताजी को); नाटऱ्कु–खोजने के हेतु; एयित–आवश्यक; चॆय्तऱ्कु–(काम) करने को; एऱ्कुम्–(सहायता प्राप्त करना) उचित होगा; पुणै इलातवर्कु–नाव जिनके पास नहीं है, उन्हें; वेलै पोक्कु–समुद्र-तरण; अरितु–कठिन है; अऩ्ऩते पोल्–उसी तरह; पकै पुलम् तॊलैत्तु–शत्रु का समर में संहार करके; नीक्कल्–दूर करना; तुणै इलातवर्क्कुम्–सहायक-हीनों के लिए; इऩ्ऱु–(सम्भव) नहीं है। ११८३

यह सर्वविदित है कि शरासनधारी आपकी सहायता करने का सामर्थ्यशाली कहीं नहीं है। तो भी अनुपम देवी सीता को खोजने हेतु आवश्यक और योग्य कार्य करने के लिए कुछ लोगों को सहायक बना लेना ही उचित होगा। जिसके पास नाव नहीं, उसे समुद्र पार करना कठिन है! वैसे ही समरांगण में शत्रुओं का नाश करना हो तो निस्सहायों के लिए साध्य नहीं है। ११८३

पऴिप्परु निलैमै याण्मै पहर्वदॆन् पदुम पीडत्
तुऴिप्पॆरुन् दहैमै शान्ऱु वन्दण ऩुयिर्त्त वॆल्लाम्

ऴिप्पदऱ् कौरुव नात्त वण्णलु मरिदि रन्ऱे
ऴिप्परुन् दिऱल बूद गणत्तॊडु मुऱैयु मुण्मै 1184

पऴिप्पु अऱु-अनिंद्य; निलैमै आण्मै-आपके स्थान और पौरुष का; पकर्वतु
न्-क्या कहना; पतुम पीटत्तु उऴि-पद्मपीठ पर (के); पॆरुम् तकैमै चान्ऱ-
कृष्ट और शानदार; अन्तणन् उयिर्त्त-ब्रह्मा द्वारा सृष्ट; ऍल्लाम्-सारे (लोकों
जीवों) को; अऴिप्पतर्कु-संहार करनेवाले; ऒरुवन् आन अण्णलुम्-एक
ईश्वर भी; ऒऴिप्पु अरुम्-अलग न होनेवाले; तिऱल् अ-बलशाली; पूत
णत्तॊटुम्-भूतगणों के साथ; उऱैयुम् उण्मै-रहते हैं, सो तथ्य; अऱितिर् अन्ऱे-
प जानते हैं न। ११८४

आपके अनिंद्य गौरव और पौरुष (वीरता) का कहना क्या? पद्मपीठासीन ब्रह्मा से सृष्ट सारे लोकों के संहारक हैं शिवजी। वे भी अपने बलशाली भूतगणों को सदा साथ रखते हैं। यह तथ्य आप जानते ही हैं न? । ११८४

ायदु शॆयहै यॆन्ब दऱत्तुऱै नॆऱियि नॆण्णित्
ीयवर्च् चेर्हि लादु शॆव्वियोर्च् चेरुम् शॆय्है
ायिनु मुयिर्क्कु नल्हुञ् जवरियैत् तलैप्पट् टन्नाळ्
ुयदोर् नॆऱियॆ यॆय्दि यिरलैयङ् गुन्ऱ मेऱि 1185

अऱ तुऱै नॆऱियिन् ऍण्णि-धर्म-मार्ग का विचार करके; तीयवर् चेर्किलातु-बुरों
नहीं मिलकर; चॆव्वियोर् चेरुम् चॆय्कै-अच्छों के साथ मिलने का काम; चॆय्कै
न्पतु आयतु-कर्तव्य-कर्म है; उयिर्क्कु-जीवों को; तायितुम्-माता से बढ़कर;
ल्कुम्-सहायक; चवरियै-शबरी को; तलैप्पट्टु-मिलकर; एयतु-उनसे निर्दिष्ट;
ऱियै ऍय्ति-मार्ग पर जाकर; इरलै अम् कुन्ऱम् एऱि-ऋष्यमूक पर्वत पर
ढ़कर। ११८५

धर्म-मार्गों का अवलम्बन करके, विना बुरों की संगति किये अच्छों के साथ मिलना अब कर्तव्य कर्म है। आप शबरी के पास जाकर उनसे मिलिए। वे माता से भी अधिक हित करेंगी। वे मार्ग बतायेंगी। आप उनके बताये मार्ग को पकड़कर जाइए और ऋष्यमूक (ऋष्य— एक तरह का हरिण है, उसके नाम से भूषित) पर्वत पर चढ़कर—। ११८५

दिरवन् शिऱुव नान कनहवा णिऱत्ति नानै
दिरॆदिर् तऴुवि नट्पि निनिदमर्न् दवनि नीण्ड
दिर्पोरु तोऴि नाळै नाडुदल् विऴुमि दॆन्रान्
दिर्कळल् वीरर् तामु मन्नदे यमैव दानार् 1186

कतिरवन् चिऱुवन् आन-सूर्य का पुत्र; कनक वाळ् निऱत्तिनानै-उज्ज्वल कनक-
र्ण (सुग्रीव) को; ऍतिर् ऍतिर् तऴुवि-आमने-सामने मिलकर; नट्पिन् इनितु
मर्न्तु-मित्रता में सुख से रहकर; अवनिन्-उसकी सहायता के साथ; ईण्ट-शीघ्र;

वॅतिर् पॉरु–वाँस के समान; तोळित्ताळै–कंधों की (सीता) को; नाट्टुतल्–खोजना; विळुमितु ॲन्नरात्–श्रेयस्कर होगा, कहा; अतिर् कळल् वीरर् तामुम्–क्वणनशील पायलधारी वीर भो; अन्नते–वही; अमैवतु आत्तार्–करने में लगे। ११८६

वहाँ सुग्रीव से मिलिए। वह कनकवर्ण वानरनायक सूर्य का पुत्र है। उसके साथ मित्रता कर लीजिए। उसकी सहायता लेकर बाँस के समान कन्धों वाली सीतादेवी को खोजिए। वही श्रेष्ठ होगा। कबन्ध की यह सलाह मानकर क्वणनशील पायलधारी वीर श्रीराम और लक्ष्मण चलने लगे। ११८६

आतपिन् ऱॊळुदु वाळ्त्ति यन्दरत् तवनुम् बोतात्
मातवक् कुमरर् तामु मत्तिशै वळिक्कॊण् डेहि
कानमु मलैयु नीङ्गिक् कङ्गुल्वन् दिरुक्कुङ् गालै
आतैयि निरुक्कै यॅन्नु मदङ्गन दडुक्कल् शेर्न्दार् 1187

आतपिन्–उसके बाद; अवतुम्–वह (कबन्ध) भी; तॊळुतु वाळ्त्ति–विनय और स्तुति करके; अन्तरत्तु पोतात्–आकाश में गया; मात्तव कुमरर् तामुम्–मानव-कुमार भी; अ तिचै वळि कॊण्टु एकि–उस दिशा में राह बनाकर गये; कानमुम् मलैयुम् नीङ्कि–कानन और पर्वत पार करके; कङ्कुल् वन्तु–रात आकर; इरुक्कुम् कालै–जब जम गयी, तब; आतैयिऩ् इरुक्कै ऍऩ्ऩुम्–गज का स्थान कहलानेवाले; मतङ्कन् अतु–मातंग ऋषि के; अटुक्कल्–पर्वत पर; चेर्न्तार्–पहुँचे। ११८७

उसके बाद कबन्ध भी उनकी विनय के साथ स्तुति करके स्वर्ग चला गया। मानव (मनुकुल-जात) वीर भी कबन्ध की निर्दिष्ट (दक्षिण) दिशा में गये। अनेक कानन और पर्वत पार करके वे जाते रहे। खूब रात हो गयी, तब वे मातंग ऋषि के पर्वत पर आये। वहाँ मातंग (हाथी) रहते थे। ११८७

12. शवरि पिऱप्पु नीङ्गु पडलम् (शबरी जन्म-विमोचन पटल)

कण्णिय तरुदर् कॊत्त कऱ्पहत् तरुवु मॅन्न
उण्णिय नल्हुऌ जॅल्व मुऱुनरुञ् जोलैच् चालै
ॲण्णिय वित्तब मन्ऱित् तुन्बङ्ग ळिल्लै यात
बुण्णियम् पुरिन्दोर् वैहुन् दुऱक्कमे पोलु मन्ऱे 1188

कण्णिय–इच्छित; तरुतऱ्कु ऒत्त–(पदार्थ) देने में समर्थ; कऱ्पक तरुवुम् ऍऩ्ऩ–कल्पतरु के समान; उण्णिय–खाद्य (फलादि को); नल्कु–देनेवाले; चॆल्वम् उऱुम्–समृद्ध; चोलै–उपवनों से पूर्ण; चालै–(मातंग का) आश्रम; ऍण्णिय इऩ्पम् अऩ्ऱि–सबसे गण्य सुख के सिवा; तुऩ्पङ्कळ् इल्लै आत–दुःख जहाँ नहीं है; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्–पुण्यपुरुष जहाँ रहते हैं; तुऱक्कमे पोलुम्–स्वर्ग के समान था। ११८८

शबरी का आश्रम इच्छित सभी मनोकामनाओं को पूरा करनेवाले

कल्पतरु कहा जा सकता था। खाद्य फल आदि यथेष्ट दे सके, उतने समृद्ध उपवन उसके चारों ओर थे। उसी आश्रम में मातंग मुनि रहते थे। वह पुण्यकृतों का प्राप्ति-स्थान साक्षात् स्वर्ग ही था, जहाँ चाहे हुए सभी सुख ही सुख मिलते हैं। कोई दुःख नहीं होता। ११८८

अन्नदा मिरुक्कै नण्णि याण्डुनिऩ् ऱळविल् कालम्
तऩ्नैये निऩैन्दु नोऱ्कुञ् शवरियैत् तलैप्पट् टऩ्नाट्
किऩ्नुरै यरुळित् तीदिऩ् ऱिरुन्दनै पोलु मॆऩ्ऱाऩ्
मुऩ्नवर् किदुवॆऩ् ऱॆण्ण लावदोर् मूल मिल्लाऩ् 1189

अवर्कु मुऩ्–उनके पूर्व; इतु–ये; ऍऩ्ऱु ऍण्णल् आवतु–ऐसा मानने योग्य; ओर्–कोई; मूलम् इल्लाऩ्–(जिनका) मूल नहीं है; अऩ्नतु आम्–(वे श्रीराम) ऐसे; इरुक्कै नण्णि–स्थान में पहुँचकर; आण्टु निऩ्ऱु–वहाँ रहकर; अळवु इल् कालम्–अगणित काल तक; तऩ्नैये–अपना (श्रीराम का) निऩैन्तु–ध्यान करके; नोऱ्कुम्–जो तपस्या करती रहीं; चवरियै तलैप्पट्टु–उन शबरी से मिलकर; अऩ्नाट्कु–उनको; इऩ् उरै अरुळि–मधुर उपदेश देकर; तीतु इऩ्ऱु–बिना कष्ट के; इरुन्तनै पोलुम्–रहीं, शायद; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ११८९

श्रीराम आदिदेव थे। उनके पूर्व कोई नहीं रहे। वे सृष्टि के मूल थे। वे उस प्रख्यात मातंगाश्रम पर आये। वहाँ शबरी श्रीराम का ही ध्यान करते हुए अकूत काल से तपस्या कर रही थीं। श्रीराम उनसे मिले और उनका कुशल-क्षेम सम्बन्धी प्रश्न किया। आप बिना किसी कष्ट के सुखी तो रहती हैं न ? ११८९

आण्डव ळऩ्बि नेत्ति यळुदिऴि यरुविक् कण्णळ्
माण्डदॆऩ् मायप् पाशम् वन्ददु वरम्बिल् कालम्
पूण्डमा दवत्तिऩ् शॆल्वम् बोयदु पिऱवि यॆऩ्ऱाळ्
वेण्डिय कॊणर्न्दु नल्हि विरुन्दुशॆय् दिरुन्द वेलै 1190

आण्टु–तब; अवळ्–शबरी; अरुवि कण्णळ्–सरिता के समान आँसू की धारा वाली आँखों के साथ; अऩ्पिऩ् एत्ति–भक्ति के साथ स्तुति करके; ऍऩ् माय पाचम्–मेरी माया का पाश; माण्टतु–मिट गया (आपके दर्शन से); वरम्पु इल् कालम्–असीम काल से; पूण्ट–मैंने जो धारण कर लिया था, उस; तवत्तिऩ् चॆल्वम्–उस तप का भाग्य; वन्ततु–आ मिला; पिऱवि पोयतु–जन्म कट गया; ऍऩ्ऩा–कहकर; वेण्टिय–निवेदनार्ह; कॊणर्न्तु–(फल आदि) लाकर; नल्कि–देकर; विरुन्तु चॆय्तु–आतिथ्य करके; इरुन्त वेलै–जब रहे, तब। ११९०

तब शबरी की आँखों से भक्ति के कारण आँसू की धारा सरिता के समान बहने लगी। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। कहा कि स्वामी ! आपके दर्शन से मेरा मायापाश कट गया। निस्सीम काल से मैं तपस्या कर रही हूँ। उसका सुफल आज मुझे मिल गया। मेरा जन्म-मोचन हो

गया है। फिर उन्होंने उनके भोजन के योग्य फल आदि लाकर अतिथि-सत्कार किया। जब श्रीराम और लक्ष्मण विश्रांत रहे, तब— । ११९०

ईशनुङ् गमलत् तोनु मिमैयवर् यारु मॅन्दै
वाशवन् ऱानु मीण्डु वन्दनर् महिऴ्न्दु नोक्कि
आशरु तवत्तुक् कॅल्लै यणुहिय दिरामऱ् काय
पूशनै विरुम्बि यॅम्बाऱ् पोदुदि यॅन्ऱु पोनार् 1191

ऍन्तै–मेरे पिता; ईचनुम्–शिवजी और; कमलत्तोनुम्–कमलासन; इमैयवर् यारुम्–सुर सब; वाचवन् तानुम्–वासव भी; ईण्टु–यहाँ; वन्तनर्–आये; मकिऴ्न्तु नोक्कि–सन्तोष के साथ मुझे देखकर; आचु अऱु–निर्दोष; तवत्तिऱ्कु ऍल्लै–तप का अन्त, सिद्धि का काल; अणुकियतु–निकट आ गया; इरामऱ्कु आय–श्रीराम की; पूचनै विरुम्पि–पूजा प्यार के साथ करके; ऍम् पाल् पोतुति–हमारे पास पहुँच जाओ; ऍन्ऱु पोनार्—कहके गये। ११९१

शबरी बोलीं। मेरे तात! कमलासन, सभी देव और वासव यहाँ आये थे। उन्होंने मुझे सन्तोष के साथ देखकर कहा कि तुम्हारे निर्दोष तप का सिद्धिकाल आ गया। तुम श्रीराम की पूजा करना चाहती हो। वह पूरा करके हमारे पास आ जाओ। ११९१

इरुन्दनॆ नॆन्दै नीयीण् डॆय्दुदि यॆन्नुन् दन्मै
पॊरुन्दिड विन्ऱु तानॆन् पुण्णियम् बूत्त दॆन्ऱ
अरुन्दवत् तरशि तन्नै यन्बुऱ नोक्कि यॆङ्गळ्
वरुन्दुरु तुयरन् दीर्त्ता यम्मनै वाऴि यॆन्ऱान् 1192

ऍन्तै–नाथ; नी ईण्टु ऍय्तुति–आप इधर पधारेंगे; ऍन्नुम् तन्मै–यह हालत; पॊरुन्तिट–जब हुई; इरुन्तनॆन्–(प्रतीक्षा में) रही; इन्ऱु तान्–आज ही; ऍन् पुण्णियम्–मेरा पुण्य; पूत्ततु—फूला (फलीभूत हुआ); ऍन्ऱ–ऐसा जिन्होंने कहा; अरुम् तवत्तु अरचि तन्नै–कठिन तपस्या की, उन रानी को; अन्पु उऱ–कृपा के साथ; नोक्कि–देखकर; अम्मनै–माताजी; ऍङ्कळ् वरुन्तुरु–हमें कष्ट देनेवाले; तुयरम्–श्रम-दुःख को; तीर्त्ताय्–दूर किया; वाऴि–जिओ; ऍन्ऱान्–कहा। ११९२

मेरे नाथ! आप यहाँ पधारेंगे— जब इसका भान लगा तभी से मैं आपकी प्रतीक्षा में रह रही हूँ। आज ही मेरा पुण्य सफलीभूत हुआ। जब शबरी ने राम से यह आदरवचन कहा, तब श्रीराम ने उन तपस्विनियों में रानी से कहा कि माता! आपने हमारा श्रम और श्रमजनित दुःख दूर किया। आप चिरजीव रहें। ११९२

अन्नहनु मिळैय कोवु मन्नुऱव णुऱैन्द पिन्नै
विन्नैयरु नोन्बि नाळु मॆय्म्मैयि नोक्कि वॆय्य

त्तैपरित् तेरोत् मैन्द तिरुन्दवत् तुळक्किल् कुन्ऱम्
नितैवरि दायर् कौत्त नॅऱियॅला नितैन्दु शॊन्नाळ् 1193

अत्तकतुम्–अनघ के; इळैय कोवुम्–और लघुराज के; अन्ऱु–उस दिन; अवण्–वहाँ; उरैन्त पिन्ऱै–ठहरने के बाद; वित्ते अऱु–कर्ममुक्त; नोन्पित्ताळुम्–तपस्विनी ने भी; मॅय्मैयिन् नोक्कि–यथार्थ रूप से देखकर; वॅय्य–गरम; तुत्तै परि–शीघ्रगामी अश्वों के; तेरोन्–रथ पर जानेवाले (सूर्य) का; मैन्तन्–पुत्र, सुग्रीव; इरुन्त–जहाँ रहा; अ तुळक्कु इल्–उस अचल; कुन्ऱम्–पर्वत के; नितैवु अरितु आयर्कु–मन से जानने में कठिन; ऑत्त–जो रहा; नॅऱि ऍलाम्–मार्ग सभी; नितैन्तु चॊन्नाळ्–स्मरण करके बताया। ११९३

अनघ श्रीराम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण उस दिन वहीं ठहरे। बाद कर्मभंजक तपस्विनी ने सच्चे भाव से श्रीराम और लक्ष्मण से शीघ्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार दीप्तियुत सूर्य के पुत्र, सुग्रीव के वासस्थान के पर्वत के मार्ग बताए। वे इतने जटिल थे कि मन में धारण करना भी कठिन था। पर उन्होंने अपनी स्मृति से उस अचल ऋष्यमूक पर्वत को जाने के सारे मार्ग ठीक-ठीक बता दिये। ११९३

वीट्टिनुक् कमैव दात मॅय्त्तॅऱि वॅळियिऱ् ऱाहक्
काट्टुरु मऱिञ रॅन्न वन्नवळ् कळऱिऱ् ऱॅल्लाम्
केट्टन नॅन्ब मन्नो केळ्वियाऱ् चॅविहण् मुऱ्ऱुम्
तोट्टव रुणर्वि नुण्णु ममिळ्दत्तिन् शुवैयाय् निन्ऱान् 1194

केळ्वियाल्–उपदेश-श्रवण द्वारा; चेविकळ्–कर्ण (जिनके); मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तोट्टवर्–विद्ध हुए (भरे हुए) हैं; उणर्विन्–(वे ज्ञानी) अपनी अनुभूति द्वारा; उण्णुम्–(जिसको) भोगते हैं; अमुतत्तिन्–उस अमृत (रूपी) ज्ञान की; चुवैयाय् निन्ऱान्–जो रुचि के रूप में स्थित हैं, उन (श्रीराम ने); वीट्टिनुक्कु अमैवतु आत–मोक्ष के; मॅय् नॅऱि वॅळि–सच्चे मार्ग को; इऱ्ऱु आक–यही है, ऐसा; काट्टुरुम्–दरसानेवाले; अऱिञर् ऍन्न–ज्ञानियों (गुरुओं) के समान; अन्नवळ्–उन्होंने; कळऱिऱ्ऱु ऍल्लाम्–जो कहा, वह सब; केट्टतन्–ध्यान देकर सुना; ऍन्प–ऐसा बड़े लोग कहते हैं। ११९४

श्रीराम कौन थे और उन्होंने किस विधि शबरी का मार्ग-दर्शन सुना? श्रेष्ठ उपदेशों से जिनके कर्ण भर गये थे, उनकी अनुभूति के लक्ष्य हैं वे। व उन ज्ञानियों से भुगते हुए ज्ञान रूपी अमृत के स्वाद थे। वे विनय के साथ ऐसे सुनते रहे, मानो शबरी कोई ज्ञानी गुरु हों, जो मोक्ष का मार्ग साफ़-साफ़ बता रहे हों। कवि कहते हैं कि ऐसा बड़े लोगों का कहना है! । ११९४

पित्तव ळुळन्दु पॅऱ्ऱ योहत्तिन् पॅऱ्ऱियाले
तन्नुड ऱुरन्दु तात्त तनिमैयिन् वीडु शार्न्दाळ्

अन्नदु कण्ड वीर रदिशय मळविन् ऍय्दिप्
पॊन्नडिक् कळलह ळार्प्पप् पुहन्ऱमा नॆऱियिऱ् पोनार् 1195

पिन्–उसके बाद; अवळ्–शबरी; उळन्तु पॆऱ्ऱ–परिश्रम से प्राप्त; योकत्तिन् पॆऱ्ऱियाले–योग के फलस्वरूप; तन् उटल्–अपना शरीर; तुऱन्तु–त्यागकर; अ तनिमैयिन्–उस अद्वितीय; वीटु–मुक्तिपद को; चार्न्ताळ्–गयीं; अन्नतु कण्ट–उसको देखकर; वीरर्–(श्रीराम और लक्ष्मण) वीरों ने; अळवु इन्ऱु–अपार; अतिचयम् ऍय्ति–विस्मय पाकर; पॊन् अटि–सुन्दर चरणों की; कळल्कळ् आर्प्प–पायलों को बजने देते हुए; पुकन्ऱ–शबरी-कथित; मा नॆऱियिल्–बड़े मार्ग पर; पोनार्–गये। ११९५

यह कहने के बाद शबरी ने कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त योगशक्ति के बल से अपना शरीर छोड़ दिया। वे मोक्षपद को प्राप्त हो गयीं। श्रीराम और लक्ष्मण को यह देखकर अपार विस्मय हुआ। फिर वे अपने सुन्दर चरणों की पायलों को बजने देते हुए उस दुरूह और विकट मार्ग पर जाने लगे, जिसका सम्यक् वर्णन शबरी ने किया था। ११९५

तण्णॆनुङ् गानुङ् गुन्ऱु नदिहळुन् दविरप् पोनार्
मण्णिडै वैह ऱोऱुम् वरम्बिला दाडु माक्कळ्
कण्णिय विनैह ळॆन्नुङ् गट्टळल् कळिद लाले
पुण्णिय मुरुविऱ् ऱन्न पम्बैयाम् पॊय्है पुक्कार् 1196

तण् ऍन्नुम्–शीतल; कानुम् कुन्ऱुम्–वनों और पर्वतों को और; नतिकळुम्–नदियों को; तविर–पार करते हुए; पोनार्–जो गये; मण् इटै–(वे) भूमि पर; वरम्पु इलातु–अपार बनकर; वैकल् तोऱुम्–दिने-दिने; आटुम् माक्कळ्–स्नान करनेवाले लोगों ने; कण्णिय–जान-बूझकर जो किये; वितैकळ् ऍन्नुम्–वे कर्म रूपी; कट्टळल्–अग्निपुंज; कळितलाले–दूर हो जाते हैं, इसलिए; पुण्णियम् उरुविऱ्ऱु अन्न–पुण्यस्वरूप आया जैसे; पम्पै आम्–पंपा नाम के; पॊय्कै–सर पर; पुक्कार्–पहुँचे। ११९६

वे अनेक शीतल वनों, पर्वतों और नदियों को पार कर जाते रहे और पंपासर के तीर पर आ गये। उस पंपासर में दिने-दिने असंख्य लोग आकर स्नान करते और अपने पापों को निवार देते थे। उनके पापों का अग्निपुंज वहाँ मिट जाता था। इसलिए वह सर मूर्तपुण्य के समान लगा। ११९६

॥ अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

तमिऴ

कम्ब रामायण

किष्किन्धा-
सुन्दरकाण्ड

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।

श्रीराम-पञ्चायतन

श्री स्वामी चिन्मयानन्द बाम्बे यज्ञशाला

श्री शेषाद्रि १४-११-७६

मदुरै

धन्य ॐ

हरि: ओम्, हरि: ओम्, हरि: ओम्, प्रणाम ।

कम्बर रामायण के पूरे दस हज़ार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने क लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें ।

प्रेम प्रेम प्रम

(प्रेमसहित)

ॐ चिन्मयानन्द

कम्बन-मणिमण्डपम्

तमिऴनाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन द्वारा स्थापित

आचार्य ति० शेषाद्रि का अभिनन्दन

कारैक्कुडी के 'कम्बन कळगम्' द्वारा इस अनुवाद का भव्य स्वागत

बालकाण्ड की भूमिका में कारैक्कुडी के निवासी, कम्बन कळगम् के निर्माता, संचालक और अध्यक्ष श्री कम्बन अडिप्पॉडि (कम्बन-चरणरेणु) जी की चर्चा दी गयी है। उस संदर्भ में उक्त कळगम् द्वारा हर वर्ष चलायी जानेवाली 'कम्ब जयन्ती' के उत्सव की बात भी कही गयी है। वह उत्सव चार दिनों का होता है और उसकी समाप्ति कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान

में वहाँ होती है, जहाँ कम्बन की समाधि पर बना मन्दिर-सा मण्डप रहता है। फाल्गुन (सौर गणना के अनुसार) महीने के 'हस्त नक्षत्र' का दिन कम्ब रामायण के प्रकाशन का दिन माना जाता है। (शकाब्द ८०७ के फाल्गुन यानी फ़रवरी सन् ८९६ ई० के दिन वह प्रकाशित हुआ।) इसलिए यह उत्सव उस दिन कम्बन की पूजा-अर्चना के साथ समाप्त होता है।

इस उत्सव में तमिळ्नाडु के मूर्द्धन्य विद्वान् और अन्य गण्यमान्य सज्जन भाग लेकर अपने भाषणों, कविताओं और चर्चाओं द्वारा अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। यह शानदार जलसा है और कम्बन अडिप्पॉडि जी कोई बात उठा नहीं रखते। यह उत्सव कारैक्कुडी में बन रहे कम्ब-मण्डप में चलता है।

इस साल 'कम्ब-मेला' में दो विशेष बातों का आयोजन था। कम्बन के दो विद्वान् भक्तों की स्मृति में चित्रों का अनावरण एक बात था, और इस अनुवाद-ग्रंथ के प्रणेता का अभिनन्दन दूसरी बात।

मार्च १८ से २१वीं ता० तक मनाये गये इस उत्सव में पहले ही दिन की सभा के कार्यक्रम में ये दोनों अच्छे कार्य सम्पन्न हुए।

इस सभा के तमिळ्नाडु के वित्तमंत्री श्री वी० आर्० नॅडुञ्जॅळियन जी सभापति रहे। प्रधान न्यायमूर्ति जस्टिस् मु० मु० इस्माइल ने उद्घाटन किया। (इनकी लिखी भूमिका बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है।) तमिळ्नाडु विधान कौंसिल के अध्यक्ष मान्य म० पॉ० शिवज्ञान ग्रामणी जी ने वी० वी० एस् अय्यर के चित्र का अनावरण किया और उनका गुणगान समुचित रूप से किया। यह साल व० वे० सु० अय्यर के जन्म का सौवाँ साल है। उन्हीं ने पहले-पहल कम्बन की रचना का विश्व के श्रेष्ठतम कवियों की रचनाओं के साथ तुलना करके कम्बन को उनसे भी आगे निकली मेधा का स्वामी साबित किया। उनका 'A study of Kamban' 'कम्बन —एक अध्ययन' बड़ा ही उत्कृष्ट, प्रामाणिक और महत्त्व का विद्वतापूर्ण ग्रन्थ है। वी० वी० एस्० (व-वे-सु) अय्यर तमिळ्नाडु के 'तिलक' थे।

कोयम्बत्तूर के प्रसिद्ध मिल-मालिक जी० के० सुन्दरम् जी ने तॅ० पो० मीनाक्षी सुन्दरम् के चित्र का अनावरण किया। तॅ० पो० मी०,

जिनको यहाँ गुरुदेव कहके सम्बोधित करने की प्रथा है, बहुभाषाविद्, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के प्रथम उपकुलपति थे। उन्हीं ने पहले-पहल कम्बन का समूचा ग्रन्थ एक ही जिल्द में संकलन करके पुस्तक के प्रकाशन में सहायता दिलायी थी।

बाद मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने श्री शेषाद्रि और ग्रन्थ की सराहना की। इनकी लिखी भूमिका भी बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है। उन्होंने अपनी संस्तुति के भाषण में कहा कि तमिऴभाषियों के लिए हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, 'ने, का, के, की' आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं। तमिऴनाडु में रहनेवाले इने-गिने हिन्दी के अधिकारी विद्वानों में आचार्य ति० शेषाद्रि एक हैं।

फिर उन्हीं ने कम्बन की महत्ता बतायी। अनुवाद के दो-एक स्थलों का उल्लेख करके बताया कि अनुवाद सफल हुआ है।

यहाँ की प्रथा के अनुसार उन्होंने कम्बन कऴगम् की ओर से ज़री की कारीगरी से युक्त रेशमी शाल उढ़ाकर अनुवादक का सम्मान किया।

असल में यह कार्य तमिऴ देश के समूचे कम्बन प्रेमियों के सम्मान का प्रदर्शक है और ट्रस्ट और अनुवादक इस पर गर्व कर सकते हैं।

अनुवादक की अवतरणिका

अयोध्या-अरण्यकाण्ड की भूमिका (अनुवादक की अवतरणिका) में तमिऴ के वाक्यों में आनेवाले शब्दों के मूल रूपों को छाँटने में जो कठिनाई सम्भवनीय है, उसे दूर करने (कम से कम करने) के विचार से शब्द-विचार पर कुछ बातें कही गयीं। अब उसी को मद्दनजर रखकर सन्धि-सम्बन्धी कुछ विस्तार करना चाहता हूँ।

सन्धि ध्वनियों के मेल से होती है। वहाँ विग्रह आसान है। पर शब्दों का जहाँ योग के कारण रूप-परिवर्तन होता है, जो आम तौर से समास के कारण होता है, वहाँ विग्रह आसान नहीं है। यों ही शब्दों को खण्डित करने से काम नहीं चलेगा। अतः समास के कारण होनेवाली सन्धि-सम्बन्धी बातें जानना आवश्यक हो जाता है। असल में तमिऴ में 'पुणर्च्चि' के प्रकरण में जो तत्त्व बताये जाते हैं वे अधिकांश समास के ही नियम हैं, यद्यपि 'पुणर्च्चि' का अर्थ मेल, सन्धि या योग है।

पुणर्च्चि

1 पुणर्च्चि (लक्षण)— शब्दों के अपने क्रम में मेल या योग को "पुणर्च्चि" कहते हैं। इसमें "समास, सन्धि और योग" तीनों का समावेश है। ये दो तरह की हैं:—

पहली— वेऱ्ऱुमैप् पुणर्च्चि— जब पूर्वशब्द का अपर शब्द से विभक्ति के "योग" या समास बनता है, उसे 'वेऱ्ऱुमैप् पुणर्च्चि' कहते हैं। (इसके अंतर्गत हिन्दी का तत्पुरुष समास आता है।) इसमें कारक-चिह्न लुप्त भी रह सकते हैं, प्रकट भी।

उदाहरण :

कारकचिह्न लुप्त	कारकचिह्न प्रकट	कारकचिह्न	विभक्ति
पाल् कुटित्तान् (दूध पिया)	पालैक् कुटित्तान् (दूध को पिया)	ऐ (को)	दूसरी
तलै वणङ्किनान् (सिर नवाया)	तलैयाल् वणङ्किनान् (सिर से नमन किया)	आल् (से)	तीसरी
परतन् मैन्तन् (भरत-सुत)	परतनुक्कु मैन्तन् (भरत को सुत)	कु (को)	चौथी

(यहाँ हिन्दी में छठी विभक्ति होती है।)

मलै वीऴरुवि (पर्वत-उतरती नदी)	मलैयिन् वीऴरुवि (पर्वत से उतरती नदी)	इन् (से)	पाँचवीं
मुरुकन् वेल् (मुरुग-भाला)	मुरुकन्तु वेल् (मुरुगन का भाला)	अतु (का)	छठी
कुकै नुऴैन्तान् (गुहा-घुसा)	कुकैक्कण् नुऴैन्तान् (गुहा में घुसा)	कण् (में)	सातवीं
पाल्+कुटम्=पाऱ्कुटम्	पाले उटैय कुटम्	मध्यमपदलोपी कर्मधारय	

दूसरी— अल्वऴिप् पुणर्च्चि— अन्य सभी समस्त (या संयुक्त) शब्द "अल्वऴिप् पुणर्च्चि" के कहे जाते हैं। "अल्" का अर्थ "इतर" या अन्य या 'जो यह नहीं'।

उदाहरण :

(क) पाय्पुलि— विनैत्तौहै (कृदन्त) के प्रयोग से बननेवाले समस्त शब्द 'पाय्' का अर्थ 'झपटता', 'झपटा' और आगे 'झपटनेवाला' है— पुलि=बाघ है।

(ख) पचुम् पुल् (हरी घास) पण्पुत्तौहै— गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य का समास है।

(ग) कयल् विऴि— (मछली-सी आँख)उवमैत्तौहै— उपमेय तथा उपमित शब्दों का मेल।

(घ) इराप्पहल्— इरा+पकल्=रात (और) दिन (द्वन्द्व समास)।

(ङ) कयल् विळि वन्ताळ्— यहाँ "मछली-सी आँख वाली आयी" अर्थ है। यह 'अन्मोऴित्तौहै' (कर्मधारय समास) में बना समास है।

2 "पुणर्च्चि" दो तरह से साधी जाती है—

(अ)1 स्वाभाविक या केवल संयोग— इरामन् वन्तान् (राम आया), माट् पुल् मेय्न्ततु (बैल ने घास चरी।)

2 विकारयुक्त—मेल होते वक़्त पूर्व शब्द के आखिर में और पूर्व व अपर शब्दों के बीच परिवर्तन या विकार हो जाते हैं।
उदाहरण : कलै+चॅल्वि=कलैच्चॅल्वि।

(आ) विकार तीन तरह के होते हैं— आगम, परिवर्तन और लोप।
आगम—कलै+चॅल्वि=कलैच्चॅल्वि— आगम है 'च्' आया है। (कला में निपुण स्त्री इसका अर्थ है। 'कलै' और 'चॅल्वि' का समास नहीं बना तो अर्थ भिन्न होगा; उनको अलग-अलग लेना पड़ेगा।)

पू+त्तोट्टम्=पून् दोट्टम्—आगम है। पू और तोट्टम् अलग-अलग रहें तो दोनों के अलग-अलग अर्थ करना पड़ेगा। पर यहाँ यह समस्त शब्द है। अर्थ 'फूलों का बाग' है।

परिवर्तन—मरम्+चायन्तदु=मरञ्जायन्तदु(अर्थ—पेड़ गिरा।) यहाँ म् ञ् में परिवर्तित हो गया।

लोप—मरम्+वेर्=मरवेर्— (अर्थ— पेड़ की जड़) यहाँ म् का लोप हो गया।

तमिऴ में इस तरह के समासगत संधि के विस्तृत नियम होते हैं। उनके रूप के किंचित् ज्ञान के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

संधि में परुष व्यंजनों का द्वित्व

तमिऴ में परुष वर्ग के अक्षरों के द्वित्व का मुख्यत्व है। द्वित्व के विना अर्थ भी बदल जाता है; समास ही भिन्न हो जाता है। अतः पहले उन स्थलों का विवरण उदाहरण-सहित दिया जाता है।

नोटः— यहाँ तमिऴ के वर्णों के वर्गीकरण का स्मरण करना सुविधाजनक होगा :

अ आदि बारह स्वर— स्वरवर्ण के हैं।

क, च, ट, त, प, ऱ— ये परुष अक्षर, "वल्लॅऴुत्तु" या "वलि" या वल् इऩम् के परुषवर्ण या परुषगण के अक्षर हैं।

ङ, ञ, ण, न, म, ऩ— ये कोमल वर्ण "मॅल् इऩम्" कोमल वर्ण या कोमल गण के हैं।

य, र, ल, व, ऴ, ळ— ये मद्धिम वर्ण के अक्षर "इडैयिऩम्" के कहे जाते हैं।

3 (क) विभक्ति-समास में वे स्थल जहाँ परुष वर्ण का द्वित्व होता है :

1 द्वितीया तत्पुरुष के विग्रह करते समय द्वित्व होता है :

अणैयै+कट्टिऩाऩ्=अणैयैक्कट्टिऩाऩ्। (आक्कल्) सृजन
कट्टैयै+तऱित्ताऩ्=कट्टैयैत्तऱित्ताऩ्। (अऴित्तल्) नाश
ऊरै+शेर्न्दाऩ्=ऊरैच्चेर्न्दाऩ्। (अडैदल्) प्राप्ति
उलहै+तुऱन्दाऩ्=उलहैत्तुऱन्दाऩ्। (नीत्तल्) त्याग
पुलियै+पोऩ्ऱवऩ्=पुलियैप्पोऩ्ऱवऩ्। (ऑत्तल्) समता
पॊरुळै+पॅऱ्ऱाऩ्=पॊरुळैप्पॅऱ्ऱाऩ्। (उडैमै) स्वामीत्व

2 चौथी विभक्ति के बने समस्त शब्दों के विग्रह करते समय :

नम्बिक्कु+कॊडुत्ताऩ्=नम्बिक्कुक्कॊडुत्ताऩ्। (कॊडै) दान

पाम्बुक्कु + पहै कीरि = पाम्बुक्कुप्पहै कीरि। (पहै) शत्रुता
औवॅक्कु + कबिलर् नण्बर् = औवॅक्कुक्कबिलर्। (नण्बर्) मित्रता
वॅन्ऱवर्क्कु + कळल् तक्कदु = वॅन्ऱवर्क्कुक्कळल्। (तक्कदु) उचितता
नूलुक्कु + पञ्जु = नूलुक्कुप्पञ्जु। (अदुवादल्) वही बनना
कूलिक्कु + शॅय्द वेलै = कूलिक्कुच्चॅय्द वेलै। (पॉरुट्टु) तदर्थ
कण्णनुक्कु + तम्बि मुरुहन् = कण्णनुक्कुत्तम्बि मुरुहन्। (क्रम)

3 छठी विभक्ति में अवर वर्ग के नामों के बाद परुषाक्षरों का द्वित्व हो जाता है :

यानै + कादु = यानैक्कादु। (गजकर्ण)
कुदिरै + शॅवि = कुदिरैच्चॅवि। (अश्वकर्ण)
पाम्बु + तलै = पाम्बुत्तलै। (सर्पसिर)
पूनै + पार्वै = पूनैप्पार्वै। (मार्जारदृष्टि)

4 सातवीं विभक्ति पर आधारित समास में :

कूण्डु + किळि = कूण्डुक्किळि। (पिंजरे का तोता)
तण्णीर् + पाम्बु = तण्णीर्प्पाम्बु।
मलै + कुहै = मलैक्कुहै।

5 परुष वर्ण के ह्रस्व 'उ' के बाद परुष अक्षर आवे तो उसका द्वित्व हो जाता है :

वाक्कु + कॉडु = वाक्कुक्कॉडु। कॉक्कु + शिऱहु = कॉक्कुच्चिऱहु।
पाक्कु + तूळ् = पाक्कुत्तूळ्। अच्चु + पलहै = अच्चुप्पलहै।

6 स्थानवाचक शब्द के उपांत अक्षर कोमल (मॅल्लॅळुत्तु) व्यंजन हों तो परुष व्यंजनों का द्वित्व हो जाता है :

इङ्गु + कण्डान् = इङ्गुक्कण्डान्।
अङ्गु + शॅन्ऱान् = अङ्गुच्चॅन्ऱान्।
आङ्गु + तेडिनान् = आङ्गुत्तेडिनान्।
ऍङ्गु + पोनाय् = अङ्गुप्पोनाय् ?
ईङ्गु + कण्डान् = ईङ्गुक्कण्डान्।
आण्डु + शॅन्ऱान् = आण्डुच्चॅन्ऱान्।
ईण्डु + तेडिनान् = ईण्डुत्तेडिनान्।
याण्डु + पोनाम् = याण्डुप्पोनाय् ?

7 एकाक्षर शब्द के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व हो जाता है :

पू + कडै = पूक्कडै पू + चॅण्डु = पूच्चॅण्डु
ती + पुहै = तीप्पुहै ई + तलै = ईत्तलै
तै + पॉङ्गल् = तैप्पॉङ्गल्

3 (ख) इतर समास-गठन में परुष अक्षरों का द्वित्व :

1 अरै, पादि (आधा) के बाद आनेवाले परुषाक्षर :
अरै+काशु=अरैक्कासु। पादि+शुमै=पादिच्चुमै।

2 ह्रस्व अक्षर के आगे के परुष का द्वित्व होता है :
कऩा+कण्डेऩ्=कऩाक्कण्डेऩ्।
पला+चुळै=पलाच्चुळै।
उला+तमिऴ्=उलात्तमिऴ्।
इरा+पहल्=इराप्पहल्।

3 दो ह्रस्वाक्षरों के शब्दों के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व होता है :
कौशु+कडित्तदु=कौशुक्कडित्तदु।
उडु+शिदऱियदु=उडुच्चिदऱियदु।
कणु+तोऩ्ऱियदु=कणुत्तोऩ्ऱियदु।
वडु+पिळन्ददु=वडुप्पिळन्ददु।

4 नकारात्मक शब्दों का अन्तिम स्वर जहाँ लुप्त है, वहाँ :
कलैया+कून्दल्=कलैयाक्कून्दल्।
नाडा+शिऱप्पु=नाडाच्चिऱप्पु।
काणा+तॅय्वम्=काणात्तॅय्वम्।
माणा पिऱप्पु=माणाप्पिऱप्पु।

5 अकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :
पाड+केट्टाऩ्=पाडक्केट्टाऩ्।
पाड+शौन्ऩाऩ्=पाडच्चौन्ऩाऩ्।
कूऱ+तॅरिन्दाऩ्=कूऱत्तॅरिन्दाऩ्।
आऱ+पौरुत्ताऩ्=आऱप्पौरुत्ताऩ्।

6 इकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :
केट्टालऩ्ऱि+कौडाऩ्=केट्टालऩ्ऱिक्कौडाऩ्।
उणविन्ऱि+शॅत्ताऩ्=उणविन्ऱिच्चॅत्ताऩ्।
तेडि+तन्दाऩ्=तेडित्तन्दाऩ्।
ओडि+पोऩाऩ्=ओडिप्पोऩाऩ्।

7 उन शब्दों के आगे, जिनका अन्तिम स्वर ह्रस्व हो और उपान्त कोमल वर्ग का हलन्त व्यंजन हो :
अऩ्बु+तळै=अऩ्बुत्तळै।

8 गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य से बने समस्त शब्दों में :
वट्ट + कोट्टै = वट्टक्कोट्टै। पच्चै + पुडैवै = पच्चैप्पुडैवै।

9 दो नामों के (रूपी या संज्ञित अर्थ में) बने समस्त शब्दों में :
तै + तिङ्गळ् = तैत्तिङ्गळ्। शारै + पाम्बु = शारैप्पाम्बु।

10 अ, इ—संकेतात्मक प्रत्यय और ऍ प्रश्नात्मक प्रत्यय के आगे :
अ + करुम्बु = अक्करुम्बु। इ + शङ्गु = इच्चङ्गु।
ऍ + पन्दु = ऍप्पन्दु ?

11 'अन्त' (उस); 'इन्त' (इस) और 'ऍन्त' (कौन) इन प्रश्नवाचक शब्दों के आगे :
अन्द + कुदिरै = अन्दक्कुदिरै। इन्द + शिलै = इन्दच्चिलै।
ऍन्द + तट्टु = ऍन्दत्तट्टु ? ऍन्द + पडम् = ऍन्दप्पडम् ?

12 अप्पडि (वैसा), इप्पडि (ऐसा); ऍप्पडि (कैसा) इन शब्दों के आगे :
अप्पडि + कूऱिनात् = अप्पडिक्कूऱिनात्।
इप्पडि + शॅय्दात् = इप्पडिच्चॅय्दात्।
ऍप्पडि + पाडिनात् = ऍप्पडिप्पाडिनात् ?

13 'इऩि' (अब, आगे); 'तऩि' (अकेला); "मट्रै", "मट्रु" (अलावा, अन्य, इतर) इन शब्दों के आगे :
इऩि + पोहलाम् = इऩिप्पोहलाम्।
तऩि + पळक्कम् = तऩिप्पळक्कम्।
मट्रु + कण्डवै = मट्रुक्कण्डवै।
मट्र + पौरुळ्हळ् = मट्रप्पौरुळ्हळ्।
मट्रै + कूरुहळ् = मट्रैक्कूरुहळ्।

वे स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होता

4 (क) विभक्ति-समास में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होता :

1 कर्म, तत्पुरुष समास में जहाँ विग्रह नहीं किया गया है:—
कवै + कट्टिनात् = कवै कट्टिनात्। (सृजन)
काडु + कॊन्ड्रात् = काडु कॊन्ड्रात्। (नाश)
ऊर् + शेर्न्दात् = ऊर् शेर्न्दात्। (प्राप्ति)
उयिर् + तुऱन्दात् = उयिर् तुऱन्दात्। (त्याग)
पुलि + पोन्ड्रात् = पुलि पोन्ड्रात्। (समता)
पुहळ् + पॅट्रात् = पुहळ् बॅट्रात्। (स्वामीत्व)

2 तीसरी विभक्ति के 'ऑटु, ओटु' के चिह्नों के आगे नहीं होगा—
ऍन्नोडु+कऱ्ऱान्=ऍन्नोडु कऱ्ऱान्।
महत्नोडु+शेऱ्न्दान्=महत्नोडु शेऱ्न्दान्।
ऍन्नोडु+तङ्गिनान्=ऍन्नोडु तङ्गिनान्।
वेलनोडु+पोनान्=वेलनोडु पोनान्।

3 पाँचवीं विभक्ति के 'इरुन्तु, निन्ऱु' चिह्नों के आगे नहीं होता—
मरत्तिलिरुन्दु+कुदित्तान्=मरत्तिलिरुन्दु कुदित्तान्।
वीट्टिनिन्ऱु+पुऱप्पट्टान्=वीट्टिनिन्ऱु पुऱप्पट्टान्।

4 छठी विभक्ति के चिह्नों के आगे नहीं होगा—
कण्णनदु+कुळल्=कण्णनदु कुळल्।
वेलनुडैय+शिऱप्पु=वेलनुडैय शिऱप्पु।
ऍन+कैहळ्=ऍन कैहळ्।

4 (ख) इतर सन्धियों में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होगा :

1 उच्च जाति के साधारण नामों (जातिवाचक संज्ञाओं) के आगे—
तम्बि+शिऱियवन्=तम्बि शिऱियवन्।
शॅल्वि+पॅरियळ्=शॅल्वि पॅरियळ्।
ताय्+शिऱन्दवळ्=ताय् शिऱन्दवळ्।
ताय्+शिऱन्ददु=ताय् शिऱन्ददु।

2 उन सभी कृदन्तीय विशेषणों को छोड़, जिनके अन्तिम स्वर लुप्त हों—
पाराद+काडु=पाराद काडु (नकारात्मक)
पुदिय+शिङ्गम्=पुदिय शिङ्गम् (संकेतात्मक)
पायन्द+तवळै=पायन्द तवळै (खुला)

3 अवर जाति के वाचक पूर्ण क्रिया के शब्दों के आगे—
मुळङ्गिन+शङ्गुहळ्=मुळङ्गिन शङ्गुहळ्।
आऱ्ऱन+पऱैहळ्=आऱ्ऱन पऱैहळ्।
पाडिन+कुमिल्हळ्=पाडिन कुमिल्हळ्।
करैन्दन+काक्कैहळ्=करैन्दन काक्कैहळ्।

4 "चॅय्यिय"—(करने) जैसी अपूर्ण क्रिया के आगे—
उण्णिय+शॅन्ऱान्=उण्णिय शॅन्ऱान्। (खाने गया)
नोटः—यह कविता में ही प्रयुक्त होता है।

5 'मिया' की पूरक ध्वनि के आगे—
केण्मिया+शॅल्व=केण्मिया शॅल्व !

शॅन्‌मिया+तम्‌बि=शॅन्‌मिया तम्‌बि !

केण्‌मिया—केण्—सुनो; शॅन्‌मिया=शॅल=चल—यह भी कविता में आता है।

6 आकारान्त, नकारात्मक बहुवचन की पूर्ण क्रियाओं के आगे नहीं होता :
वारा+किळिहळ्=वारा किळिहळ्।
तिन्‌ना+पुलिहळ्=तिन्‌ना पुलिहळ्।
पाडा+कुयिल्‌हळ्=पाडा कुयिल्‌हळ्।

7 कर्ता अगर ऐकारान्त हो तो सन्धि में द्वित्व नहीं होता :
यानै+पॅरियदु=यानै पॅरियदु। पूनै+शिऱियदु=पूनै शिऱियदु।

8 प्रश्नसूचक शब्द के आगे द्वित्व नहीं होता :
कण्णा+केळ्=कण्णा केळ्। वेला+शॅल्=वेला शॅल्।
मुरुहा+ता=मुरुहा ता। कुप्‌पा+पो=कुप्‌पा पो।

9 क्रिया और संज्ञा मिलकर जहाँ समस्त शब्द बने हों, वहाँ द्वित्व नहीं होता :
कत्‌तु+कडल्=कत्‌तुकडल्। ऑलि+शङ्‌गु=ऑलिशङ्‌गु।
मोदु+तिरै=मोदुदिरै। तॅळि+पॊरुळ्=तॅळिपॊरुळ्।

10 ह्रस्वान्त शब्दों के उपान्त अक्षर परुष जहाँ नहीं हो, वहाँ द्वित्व नहीं होगा :
नाडु+कळित्‌तदु=नाडु कळित्‌तदु।
ॲह्(.·.)गु+कडिदु=ॲ.·.गु कडिदु।
कयिऱु+शिऱिदु=कयिऱु शिऱिदु।
पन्‌दु+तन्‌दान्=पन्‌दु तन्‌दान्।
कॊय्‌दु+शॅल्=कॊय्‌दु शॅल्।

11 कुछ मामूली उकार के आगे द्वित्व नहीं होगा :
कदवु+तिऱन्‌ददु=कदवु तिऱन्‌ददु। नालु+पेर्=नालु पेर्।

12 कुछ संख्यावाचक शब्दों के आगे परुष का द्वित्व नहीं होगा :
ऑन्‌ऱु+कॊडु=ऑन्‌ऱु कॊडु। ऑरु+काशु=ऑरु काशु।
इरण्डु+शिङ्‌गम्=इरण्डु शिङ्‌गम्। इरु+शीर्=इरु शीर्।
मून्‌ऱु+किळि=मून्‌ऱु किळि। नान्‌गु+काल्=नान्‌गु काल्।
ऐन्‌दु+तलै=ऐन्‌दु तलै। आऱु+शेवल्=आऱु शेवल्।
एळु+कडल्=एळु कडल्। ऑन्‌बदु+पळम्=ऑन्‌बदु पळम्।

13 वह, यह (कर्तावाचक) निश्चयार्थक सर्वनामों के आगे :
अदु+शिऱिदु=अदु शिऱिदु। इदु+पॆरिदु=इदु पॆरिदु।

4 (ग) अन्य स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होगा :

1 'ऍंतु', 'एतु', 'यातु' क्या एकवचन; 'ऍवै', 'यावै' क्या बहुवचन प्रश्नवाचक सर्वनामों के आगे :
ऍंदु+तङ्गिऱ्ऱु ?=ऍंदु तङ्गिऱ्ऱु ? एदु+पै ?=एदु पै ?
यादु+शॆय्दाय् ?=यादु शॆय्दाय् ? ऍवै+शॆन्ऱन ?=ऍवै शॆन्ऱन ?
यावै+कण्डन ?=यावै कण्डन ?

2 'अव्वळवु' (उतना), 'इव्वळवु' (इतना), 'ऍव्वळव' (कितना) —इन शब्दों के आगे :
अव्वळवु+पॊरुळ्=अव्वळवु पॊरुळ्।
इव्वळवु+कालम्=इव्वळवु कालम्।
ऍव्वळवु+शुरुक्कम्=ऍव्वळवु शुरुक्कम् ?

3 अत्तनै (उतना), इत्तनै (इतना), ऍत्तनै (कितना) —इन शब्दों के आगे :
अत्तनै+काक्कै=अत्तनै काक्कै।
इत्तनै+शॆल्वम्=इत्तनै शॆल्वम्।
ऍत्तनै+पॆरिदु !=ऍत्तनै पॆरिदु !

4 पटि (ऐसा) के प्रत्यय के बाद :
तॆरिमुम्बडि+कूऱिनान्=तॆरिमुम्बडि कूऱिनान्।
उवक्कुम्बडि+शिऱन्दान्=उवक्कुम्बडि शिऱन्दान्।
काणुम्बडि+तोन्ऱिनान्=काणुम्बडि तोन्ऱिनान्।
महिऴुम्बडि+पेशिनान्=महिऴुम्बडि पेशिनान्।

5 'शिल', 'पल' (कुछ) :
शिल+कऱ्कळ्=शिल कऱ्कळ्। पल+शॊऱ्कळ्=पल शॊऱ्कळ्।
शिल+तडॆहळ्=शिल तडॆहळ्। पल+पयिर्हळ्=पल पयिर्हळ्।

6 आ, ओ, ए, या —इन प्रश्नसूचक शब्दों के आगे :
अवना+शॆन्ऱान् ?=अवना शॆन्ऱान् ?
अवनो+कण्डान् ?=अवनो कण्डान् ?
यारे+शॆय्दार् ?=यारे शॆय्दार् ?
या+कूऱिनाय्=या कूऱिनाय् ?

7 निश्चयार्थक 'ए'कार-युक्त शब्दों के आगे :
इवऩे+शॅय्दवऩ् !=इवऩे शॅय्दवऩ् !

5 उटम्पटु मॅय् (मिलानेवाला व्यंजन)— पास-पास स्वर ही आएँ तो उन्हें मिलाने के लिए य और व के व्यंजनों का आगम होता है :

'य्' आया है :—
मणि+अऴहिदु=मणियऴहिदु
ती+ॲऴ्न्ददु=तीयॅऴ्न्ददु
कै+इदु=कैयिदु
अवऩे+अऴहऩ्=अवऩेयऴहऩ्

'व्' का आगम हुआ है :—
विळ+अऴहिदु=विळवऴहिदु
पला+अऴहिदु=पलावऴहिदु
कडु+अऴहिदु=कडुवऴहिदु
पू+अऴहिदु=पूवऴहिदु
नॊ+अऴहिदु=नॊव्वऴहिदु
को+अऴहिदु=कोवऴहिदु

6 प्रश्नवाचक या निश्चयवाचक शब्दों (सर्वनामों) का मेल :
(कौन, क्या) ॲ+अणि=ॲव्वणि; ॲ+याऩै=ॲव् याऩै।
(उस) अ+अणि=अव्वणि; अ+याऩै=अव् याऩै।
यहाँ अपर शब्द का आरम्भाक्षर य या व है। तब हलन्त व का आगम हुआ है। य को छोड़ अन्य व्यंजन आएँ तो उस-उस व्यंजन का द्वित्व हो जाता है। [पहले (10) में आया है।]

7 ह्रस्व उ का मेल— नाकु+अरिदु=नाकरिदु— ह्रस्व उ का लोप हो गया और क्+अ मिलकर क हो गया। अपर शब्द यकारारम्भ हो तो ह्रस्व उ ह्रस्व इ बन जाता है :
नाकु+यातु=नाकियातु।
कुछ स्थानों में ह्रस्व उ के बाद 'ऐ' का आगम होता है। उदा :
पण्टु+कालम्=पण्टैक्कालम्। इऩ्ऱु+कूलि=इऩ्ऱैक्कूलि।

8 गुणी नामों का मेल— अधिकांश गुणवाचक शब्द (संज्ञाएँ) 'मै' में अन्त होते हैं। उनको लेकर गुणी का समस्त शब्द जब बनते हैं, तो समास निम्नलिखित प्रकार से बनते हैं :
उटमै+अऩ्=उटैयऩ्—मै का लोप।

करुमै+अत्=करियत्—मै का लोप और उ का इ में विकार।
पचुमै+तार्=पॅन्तार्—मै का लोप; चु का विकार; त् का न् में विकार।

9 व्यंजनान्त शब्दों की सन्धि— पूर्व शब्द व्यंजनान्त हो और अपर शब्द स्वरान्त तो पहले के व्यंजन से यह स्वर संयुक्त हो जाता है :
उदा : नेरम्+इल्लै=नेरमिल्लै। पाल्+आट्ु=पालाट्ु।

10 केवल एक ह्रस्व अक्षर और हलन्त के बने शब्दों के आगे स्वरारम्भ शब्द आएँ, तो निम्नलिखित विकार होता है :
मण्+अरितु=मण्णरितु। पॉन्+अरितु=पॉन्नरितु।

11 'म'कारान्त शब्दों की संधि— इसमें पहले 'म्' का लोप हो जाता है; फिर स्वरान्त बनकर तत्संबंधी विधियों के अनुसार परिवर्तन पाता है। उदा :

1 मरम्+अडि=मरवडि (म् का लोप; मिलानेवाला व्यंजन का आगम।)
2 मरम्+कोडु=मरक्कोडु (म् का लोप+क का द्वित्व)
3 मरम्+वेर्=मरवेर् (म् का लोप; फिर केवल संयोग : विकार
मरम्+नार्=मरनार् नहीं।)
4 (अ) उण्णुम्+चोरु=उण्णुञ्जोरु (म् का ञ् में बदलना।)
(आ) अहम्+चॅवि=अञ्जॅवि—म् का लोप म् का च वर्ग के कोमल ञ् में परिवर्तन।
अहम्+कै=अङ्गै— म् का लोप; म् का क वर्ग के कोमल ग् में परिवर्तन।

12 ण, न की समास-संधि विधि :

1 शिरु कण्+कळिरु=शिरु कट्कळिरु— ण् का ट् में परिवर्तन
पॉन्+तट्टु=पॉर्रट्टु— न् का र् में परिवर्तन
2 मण्+ञाट्चि=मण्ञाट्चि
पॉन्+नीट्चि=पॉन्नीट्चि
मण्+वन्मै=मण्वन्मै
पॉन्+याप्पु=पॉन्याप्पु
विभक्ति-समास है। इसमें केवल संयोग यानी विना परिवर्तन के मेल हो जाता है।
3 मण्+कटितु=मण्कटितु इतर-समास है— परुषगण, (अनुनासिक)

मण्+आन्ड्रतु=मण्आन्ड्रतु — कोमल गण और मद्धिम गण
मण्+याप्पु=मण्याप्पु — —तीनों के व्यंजनों के साथ
पौन्+कटितु=पौन्कटितु — स्वाभाविक मेल या संयोग हो
पौन्+आन्ड्रतु=पौन्आन्ड्रतु — जाता है।
पौन्+याप्पु=पौन्याप्पु

13 ल, ळकारान्त शब्दों की विधि :

1 कल्+कुड़ै=कड़्कुड़ै — विभक्ति-समास है-- ल ड़ में और
मुळ्+कुड़ै=मुट्कुड़ै — ळ ट में बदल गया।

2 कल्+कुड़ितु=कल् कुड़ितु या कड़्कुरितु — इतर समास है
मुळ्+कुड़ितु=मुट् कुड़ितु--या मुट्कुड़ितु — विकल्प है।

3 कल्+ञॅरिन्ततु=कन् ञॅरिन्ततु — इतर समास है- कोमल वर्ण
मुळ्+ञॅरिन्ततु=मुण् ञॅरिन्ततु — के सामने विकार पाता है।
कल्+ञॅरि=कन् ञॅरि — विभक्ति-समास है, यहाँ भी ल न
मुळ्+ञॅरि=मुण् ञॅरि — में और ळ ण में बदल जाता है।

4 कल्+यातु=कल् यातु — मद्धिम गण के अक्षर के सामने
मुळ्+यातु=मुळ् यातु — दोनों तरह के समासों में अपरिवर्तन
कल्+याप्पु=कल् याप्पु — के स्वाभाविक संयोग होता है।
मुळ्+याप्पु=मुळ् याप्पु

14 न, ल, ण के आगे त, न के सम्बन्ध में :

1 पौन्+तीतु=पौन्ड्रीतु — न, ल के आगे का त ड़ में
कल्+तीतु=कड़्ड़ीतु — बदल जाता है।

2 पौन्+नन्ड़ु=पौन्नन्ड़ु — न न में बदल जाता है।
कल्+नन्ड़ु=कन्नन्ड़ु

3 मण्+तीतु=मण्टीतु — त ट में बदलता है।
मुळ्+तीतु=मुट्टीतु

4 मण्+नन्ड़ु=मण्णन्ड़ु — न ण में बदलता है।
मुळ्+नन्ड़ु=मुण्णन्ड़ु

15 य, र और ऴकारान्त शब्दों के सम्बन्ध में :

1 वेय्+कटितु=वेय्कटितु — इतर समास है—
वेर्+कटितु=वेर्कटितु — अपरिवर्तित मेल है।
वोऴ्+कटितु=वोऴ् कटितु

2 मॅय्+कीर्त्ति=मॅय्क्कीर्त्ति — इतर समास है।
कार्+परुवम्=कार्प्परुवम् — क, प आदि का द्वित्व होता है।
पूऴ्+पऱवै=पूऴ्प्पऱवै

3 नाय्+काल्=नाय्क्काल् — विभक्ति-समास है। परुष अक्षर
तेर्+काल्=तेर्क्काल् — का द्वित्व होता है।
पूऴ्+काल्=पूऴ्क्काल्

4 वेय्+कुऴल्=वेयङ्गुऴल्, वेय्क्कुऴल् — विभक्ति-समास है।
आर्+कोट्टु=आरङ्गोड्डु, आर्क्कोट्टु — विकल्प है।

अब तक सन्धि के विविध रूपों का परिचय दिया गया है। उद्देश्य यही है कि जहाँ समस्त शब्द दिये गये हैं, वहाँ मूल शब्दों की परख हो जाय। पर इसका कितना उपयोग हुआ या होता है, वह तब तक हमें मालूम नहीं हो सकता जब तक कोई पाठक कम्ब रामायण के इस अनुवाद के द्वारा कम्बन को ही नहीं 'तमिऴ' भाषा को समझने का प्रयास न करे और अपना अनुभव न बतलाए।

आशा है कि शीघ्र ही ऐसे एक नहीं, अनेक जिज्ञासु पाठक हिन्दी-ज्ञाता तमिऴप्रेमी निकल आएँगे।

तब ये देखेंगे कि और भी सहायता की आवश्यकता पड़ती है। प्रयत्न करने पर वह भी उन्हें मिल जाएगा।

ति० शेषाद्रि

सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमर भारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिळ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

अचलाद्रि चलायमान

शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये। अचलायतन में ही सीमित न रहकर हिमञ्चल अब अञ्चल-अञ्चल की सैर करने लगे। तमिळ रूपाम्बरा ने नागरी पटम्बर भी धारण कर लिया। तमिळ का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिळ-जन तक सीमित नहीं है। लेखन और उच्चारण, दोनों पद्धतियों पर उसका नागरी लिप्यन्तरण और राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरलानुवाद, इसका अधिकांश प्रकाशित होकर अब अखिल राष्ट्र की वस्तु बन चुकी है।

पृष्ठभूमि

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया। और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी लगभग ५००० पृष्ठ का यह वृहत् संस्करण सम्पूर्णप्राय है। वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी वृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी और युद्धकाण्ड तीव्रगति में यन्त्रस्थ है। इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम पुनः और बारम्बार नमन करते हैं। तमिळ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और

ट्रस्ट के विद्वानों एवं शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति —इस बल पर हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं। इसलिए यह चरितार्थ है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये।

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई० से अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का शृंगार; विशेष रूप से तमिऴ लिपि की जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिऴ ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू नायडू; कम्बन्चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिऴनाडु के चीफ़् जस्टिस् श्री एम्० एम्० स्माइल; जस्टिस श्री महाराजन; स्व० श्री० के० सन्थानम् आदि के प्राक्कथन; और सर्वोपरि, आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद —यह सब बालकाण्ड में अक्षरशः मुद्रित हैं।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है। आवाज़ए ख़ल्क़, नक़्क़ारए ख़ुदा! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रही हैं। विशेष रूप से तमिऴनाडु में ही, ग्रन्थ और ग्रन्थकार एवं ट्रस्ट के आजीवन न्यासी आचार्य ति० शेषाद्रि का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। एक स्थल पर, उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिऴनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन!

अयोध्या-अरण्यकाण्ड

श्री प्रभुदास बी० पटवारी, तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत् कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं तत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा ॥" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छवि को निखारा है। गांधीयुग से अद्यावधि निरन्तर राष्ट्रसेवी तमिळ्नाडु के जाने-माने महापुरुष श्री० ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिळ्नाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अरण्य-अयोध्याकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

नवप्रकाशित इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय बनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने–का–के–की आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर ग़ौर करना चाहिए। डॉ० शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुंजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी हैं। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी-जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिळ्-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको और अधिक कठिनाई प्रतीत होगी।

इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें सहिष्णुता और उदारता से काम लेना चाहिए।

उसी प्रकार तमिऴभाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है। तमिऴ में, वे एक ही अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप तमिऴभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है। इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिऴ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया। अन्यथा आज के युग में वह राष्ट्र की भाषा-समस्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती।

अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले सभी (लगभग पाँच) खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिऴभाषा और तमिऴकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिऴ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। प्रथम दो जिल्दों के तारतम्य में, प्रस्तुत खण्ड में भी अनुवादक की चल रही अवतरणिका में, सन्धि-समास के फलस्वरूप उच्चारण-वैभिन्न्य का विश्लेषण दिया गया है।

महर्षि कम्बर्

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर ग्रन्थकार का नाम मैंने 'महर्षि कम्बर्' दिया है। कई शुभचिन्तकों को कम्बर् के लिए 'महर्षि' शब्द उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ। "कम्बर् विवाहित गृहस्थ था, कम्बर् के वंश-परिवार पर विपरीत किंवदन्तियाँ भी हैं, आदि-आदि।" मेरा नम्र निवेदन है कि ऋषि-महर्षि प्रायः सब पुत्र-कलत्र वाले हुए हैं। महर्षि होने के लिए अविवाहित होगा, ऐसा कोई विधान नहीं है। रहा लोक-आक्षेप, तो उस त्रास से गोस्वामी तुलसीदास, सन्त एकनाथ, सन्त ज्ञानेश्वर जैसे भी नहीं बच पाये। देवभाषा संस्कृत के अतिरिक्त, एक देशज भाषा 'तमिऴ' में रामचरित की रचना! यही क्या कम अपराध था कम्बर् का। शुद्धाशुद्ध का तथ्य तो अतीत के अन्तराल में है। हमारे सामने तो प्रेरणा-स्रोत की महत्ता प्रधान है। नागरी लिपि की सार्वभौमिकता का उद्‌घोष करनेवाले जस्टिस शारदा-चरण मित्र मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं। 'वंदेमातरम्' मंत्र के मूलस्रोत बंकिम

ऋषि कहे जाते हैं। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का शंखनाद करनेवाले तिलक, 'भगवान्' पदवी से प्रख्यात हुए।

कम्बर्-काव्य को, विद्वान् १२०० वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं। तब से तमिळ का यह जीवन्त अद्भुत महाकाव्य, जनता और विद्वानों, सभी में शीर्षस्थ सम्मान-प्राप्त है। और आज १२०० वर्षों के बाद, वह नागरी लिपि का नव-कलेवर धारण कर, न केवल अखिल राष्ट्र, वरन् विश्व में भारतीय वाङ्मय की छटा बिखेरने जा रहा है। हम गौरवान्वित हैं, आत्मविभोर हैं, उस युगपुरुष के लिए नत-मस्तक हैं। कम्ब को 'महर्षि' सम्बोधित करने के लिए और चाहिए क्या ? प्रत्येक खण्ड के प्रकाशन के समय वे हमारे लिए स्मरणीय हैं।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०१६ पृष्ठों का तृतीय खण्ड प्रस्तुत है। शेष दो खण्ड लगभग, २५०० पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। युद्धकाण्ड पूर्वार्ध और युद्धकाण्ड उत्तरार्ध। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, और राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ–३

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

(तमिऴ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८०की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही को ग्रहण किया गया।

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिऴ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप ॆ ॊ ; े ो हैं।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ, ऴ	ள ळ
ற ऱ, ऱ	ன ऩ, ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

तमिऴ उच्चारण—कुछ तत्त्व

[तमिऴ के व्यञ्जनों में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिऴ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिऴ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२है।

लब्धलिपि	ह्रस्व:—अ इ उ ॲ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)	—	1 मात्रा
	दीर्घ:— आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
	"आय्दम" (उपस्वर)—∴	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि	ह्रस्व—ऐ और औ	—	1 मात्रा
	ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
	ह्रस्व—'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोट:— आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ लें और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अत: बाद के पदों में ऐ कै...आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षर:) मूल १८ हैं

लब्धलिपि	वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
	मॅल्लॅऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
	इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य़ र ल व ऴ ळ

अलब्धलिपि : ह, ग, ज, ड, द, ब। ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से यह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट—तमिळ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डु,पाक्कु, उड्गट्कु, कऱ्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम् —शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता है। उदाहरण : अच्चु, पॉऱ्चटै, वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद— संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै।
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्—मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन्, मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉऱ्पु। अन्यत्र यह 'ब' के समान ध्वनित है।

विशेष: न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं; जैसे— अरङ्गन्, इरामन् उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण : अरम्— रेती; अऱम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और ऩ के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे— निन्पॅरुञ् को निन्बॅरुञ् पढ़ना चाहिए, पर निन्पॅरुञ् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर ज़ोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी गल्ती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक़्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

विषय-सूची

किष्किधाकाण्ड

सुन्दरकाण्ड

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

किष्किन्दा काण्डम्

कडवुळ् वाळ्त्तु (ईश्वर वन्दना)

❀ मून्ऱुरु वॆंनक्कुण मुम्मै यामुदल्, तोन्ऱुरु वॆंवैयुमम् मुदलैच् चॊल्लुदऱ्
केन्ऱुरु वमैन्दवु मिडैयि निन्ऱवुम्, शान्ऱुरु वुणर्विन्क् कुवन्द दायिनान् 1

मुतल्–परमात्मा; मुम्मै कुणम् आम्–तीन गुणों के; मून्ऱु उरु अॅन–तीन देव हैं, जैसे; तोन्ऱु उरु अॅवैयुम्–व्यक्त सभी रूप; अ मुतलै चॊल्लुतऱ्कु–उस परब्रह्म को कहने के लिए; एन्ऱु उरु अमैन्तवुम्–योग्य रूप जिनके हैं, वे; इटैयिल् निन्ऱवुम्–मध्य में स्थित जो हैं, वे; चान्ऱु उरु–उन सबके साक्ष्य (श्रीराम) उणर्विन्क्कु–हमारी अनुभूति के लिए; उवन्ततु आयिनान्–परम भोग्य बन प्रकट हुए। १

आदि परब्रह्म हमारे ज्ञान के विषय बनकर श्रीराम के रूप में अवतरित हुए। वे तीन गुणों के त्रिदेव, सृष्टि के सारे जीव, पदार्थ आदि, परब्रह्म के द्योतक अर्चावतार और उनके मध्य पाये जानेवाले जीवन्मुक्त लोग इन सभी के साक्षी रूप रहनेवाले हैं। तात्पर्य यह कि ये सब परब्रह्म के ही रूप हैं। वैष्णव मत के अनुसार ये सब परब्रह्म श्रीमन्नारायण के शरीर हैं और वे सर्वशरीरी हैं। १

1. पम्बैप् पडलम् (पम्पा पटल)

तेन्बडि मलरदु शॆंङ्गण् वॆंङ्गैमा, तान्बडि हिन्ऱदु तॆंळिवु शान्ऱदु
मीन्बडि मेहमुम् बडिन्द वीङ्गुनीर्, वान्बडिन् दुलहिडैक् किडन्द माण्बदु 2

तेन् पटि मलरतु–(वह सर ऐसा–) भ्रमरावृत पुष्पों का; चॆंम् कण्–लाल आँखों के और; वॆंम्–डरावने; कै मा–करि; पटिकिन्ऱतु–गोते लगाते हैं, जिसमें; तॆंळिवु चान्ऱतु–स्वच्छता के साथ है; मीन् पटि–नक्षत्रसहित; मेकमुम् पटिन्त–मेघों से युक्त; वीङ्कु नीर् वान्–अधिक जल के साथ आकाश ही; उलकु इटै–पृथ्वी पर; पटिन्तु किटन्त–पड़ा रहता हो; माण्पतु–ऐसा विलक्षण है। २

पम्पा सर का वर्णन किया जाता है। सर प्राकृतिक बड़ा तालाब है। वह सर ऐसे पुष्पों से भरा है, जिन पर (शहद या) भ्रमरकुल रहता है; जिसमें लाल आँखों वाले डरावने करि आकर नहाते हैं। वह ऐसा दृश्यमान है, मानो नक्षत्रों और मेघों से अलंकृत और विपुल जलराशि से भरा आकाश ही भूमि पर आकर पड़ा हुआ हो। २

ईऱ्ऱदनुण्	पळिङ्गॆऩ्ऩ	तॆळिन्द	वीऱ्म्बुऩल्
पेर्ऩ्दॊळिर्	नवमणि	पडर्न्द	पित्तिहैच्
चेर्ऩ्दुळिच्	चेर्ऩ्दुळि	निऱत्तैच्	चेर्दलाऩ्
ओर्ऩ्दुणर्	विल्लव	रुळ्ळ	मॊप्पदु 3

ईर्न्त–तराशे हुए; नुण् पळिङ्कु–सूक्ष्म स्फटिक; ऍऩ–जैसे; तॆळिन्त–स्वच्छ रहनेवाला; ईर्म् पुऩल्–(उसका) शीतल जल; पेर्न्तु–(वायु के कारण) चलकर; ऑळिर्–उज्ज्वल; नव मणि पटर्न्त–नवरत्न जिनमें जड़े रहते हैं; पित्तिकै–उन किनारों की भित्तियों पर; चेर्न्तुळि चेर्न्तुळि–जब-जब लगता है, तब; निऱत्तै चेर्तलाल्–उन रंगों से प्रभावित होता है, इसलिए; ओर्न्तु–अनुमान (तर्क आदि) करके; उणरवु इल्लवर्–अनुभवज्ञान जिन्होंने प्राप्त नहीं किया है; उळ्ळम्–उनके मन का; ऑप्पतु–साम्य रखनेवाला है। ३

काट-छाँटकर सुन्दर बनाया गया स्फटिक-सम है उसका जल। वह शीतल जल लहरों के रूप में चलकर नवविध रत्नों से युक्त और जाज्वल्यमान प्राकृतिक तट-भित्तियों से टकराता है। जब-जब वह ऐसा टकराता है, तब वह उन नवरत्नों का प्रतिबिम्ब पाकर रंग-बिरंगा लगता है। तब वह उनके मन का सादृश्य करता है, जो अपनी तरफ़ से तर्क, अनुमान आदि करके तत्त्व जान नहीं पाते और दृढ़ धारणा न रहने से सन्देह के कारण जिनके मन का रंग बदलता रहता है। ३

कुवाऩ्मणऱ्	ऱडन्दॊरुम्	पवळक्	कॊम्बिवर्
कवाऩर	शऩ्ऩमुम्	पॆडैयुङ्	गाण्डलिल्
तवानॆडु	वाऩहन्	दयङ्गु	मीनॊडुम्
उवामदि	युलप्पिल	वुदित्त	वॊत्तदु 4

कुवाल्–लगे हुए; मणल् तटम् तॊऱुम्–बालू के ढेर-ढेर पर; पवळम् कॊम्पु–प्रवाल-लता पर; इवर्–रहते जैसे; कवाऩ्–पैरों वाले; अरचु अऩ्ऩमुम्–राजहंस; पॆटैयुम्–और हंसिनियाँ; काण्टलिऩ्–दिखाई देते हैं, इसलिए; तवा नॆटु वाऩकम्–अक्षय विस्तृत आकाश में; तयङ्कुम् मीऩ् ओटुम्–विद्यमान उडुओं के साथ; उवा मति–पूर्णचन्द्र; उलप्पु इल–असंख्यक; उतित्त ऑत्ततु–उदित हुए हों, ऐसे लगा। ४

उस सर के मध्य और किनारों पर यत्र-तत्र बालू के टीले देखे जाते हैं। उन पर अपने लाल पैरों के कारण प्रवाल-लता के समान दिखनेवाले राजहंस और उनकी हंसिनियाँ बैठे रहते हैं। उससे वह सर ऐसा लगता है, मानो

अक्षय आकाश उज्ज्वल नक्षत्रों के साथ हो और उसमें अनेक पूर्णचन्द्र उदित हुए हों। ४

ओदनी	रुलहमु	मुयिर्हळ्	यावैयुम्
वेदपा	रहरैयुस्	विदिप्प	वेट्टनाळ्
शीदनी	रुवरियैच्	चॅहुक्क	वाङ्गोरु
कादिहा	दलन्रु	कडलि	तन्नदु 5

काति कातलन्–गाधिनंदन ने; ओतम् नीर् उलकमुम्–समुद्रजलावृत पृथ्वी; उयिर्कळ् यावैयुम्–(और) सभी जीवों को; वेत पारकरैयुम्–वेदपारगों को; वितिप्प–सृजित करना; वेट्ट नाळ्–(जिस दिन) चाहा उस दिन; चीत नीर् उवरियै–शीतल जल-भरे समुद्रों को; चॅकुक्क–दबाने के लिए (मान घटाने के लिए); आङ्कु–वहाँ; तरु–सृष्ट; ऑरु कटलिन् अन्नतु–अन्य एक सागर-जैसा था। ५

गाधितनय विश्वामित्र ने एक बार समुद्रों से घिरे भुवनों, उनमें सभी तरह के जीवों और वेदपारंगत ब्राह्मणों को अलग से सृष्ट करना चाहा था। यह पम्पा सर उस समुद्र के जैसा लगा, जिसे उस दिन विश्वामित्र ने शीतल जल-भरे समुद्र के मानमर्दन के लिए सरजा था। ५

ऑऱ्पडर्	नाहर्द	मिरुक्कै	यीदॅन्नक्
किऱ्पदोर्	काट्चिय	दॅन्निनुङ्	गेळुरुक्
कऱ्पह	मनैयवक्	कविञर्	काट्टिय
शॉऱ्पॊरु	ळामॅनत्	तोन्रु	हिन्ऱदु 6

नाकर् तम्–नागों का; ऑल् पटर्–प्रकाश से भरा; इरुक्कै–वासस्थान (पाताललोक); ईतु ॲन–यह है, ऐसा; किऱ्पतु–इशारा करता सा; ओर् काट्चियतु–दृश्यमान है; ऍन्निनुम्–तो भी; केळ् उरु–छवि के साथ; कऱ्पकम् अनैय–कल्पतरु के समान; कविञर् काट्टिय–कवियों द्वारा वर्णित; चॉल् पॊरुळ् आम्–शब्दों के अर्थगाम्भीर्य के ही; ॲन–समान; तोन्ऱुकिन्ऱतु–दिखाई देता है। ६

'नागों का प्रकाशमय लोक यही है' —ऐसा इंगित कर रहा हो, ऐसा दृश्यमान था वह सर। साथ-साथ कल्पतरु के समान (शब्द और अर्थ दोनों की दृष्टि से) कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों के प्रकाशमय अर्थों के समान भी दिखता है। नागलोक अनेक रत्नों की राशियों के कारण प्रकाशमय रहता है। वह प्रकाश पम्पा सर के जल में प्रतिबिंबित होता है। इसलिए वह सर ऐसा दिखता है, मानो यह संकेत करता हो कि यही नागलोक है। वह सर बहुत गहरा है और उसका जल स्वच्छ है। कवि के शब्द कल्पतरु से उपमित हैं क्योंकि दोनों वांछित और अधिक अर्थ दे सकते हैं। ६

कळनवि	लन्नमे	मुदल	कण्णहन्
तळमलर्प	पुळ्ळीलि	तळङ्गि	यिन्नवोर्

किळवियॆत् इऱिवरुङ् गिळर्च्चित् तादलिन्
वळनहर्क् कूलमे पोलु माण्बदु 7

कळम् नविल्–मधुर बोलनेवाले; अन्नम् मुतल–हंस आदि; कण् अकल्–विशाल; तळ मलर्–दलयुक्त कमलपुष्पों पर रहनेवाले; पुळ् ऑलि–पक्षियों का कलरव; तळङ्कि–अधिक रहता है; इन्नतु ओर् किळवि–यह अमुक की ध्वनि है; अऱिवु अरु–यह जानना कठिन है; किळर्च्चितु–ऐसा कोलाहलमय है; आतलिन्–इसलिए; वळ नकर्–समृद्ध नगर की; कूलमे पोलुम्–पण्यवीथी जैसे; माण्पतु–विलक्षण है। ७

विशाल दलसंकुल कमलपुष्पों पर हंस आदि पक्षी कलरव करते हुए रहते हैं। उनमें कौन से पक्षी क्या बोलते हैं, यह समझा नहीं जाता। ऐसी अधिक और मिश्रित ध्वनि के कारण वह सर किसी बड़े नगर के बाज़ार के समान लगता है। ७

अरिमलर्प् पङ्गयत् तन्न मॆङ्गणुम्
पुरिहुळल् पुक्किडम् पुहल्हि लादयाम्
तिरुमुह नोक्कलॆं मिऱन्दु तीर्दुमॆन्
ऱॆरिपुहु वनवॆन्नत् तोन्ऱु मीट्टदु 8

ऎङ्कणुम्–सर्वत्र; अरि मलर्–लाल लकीरों से युक्त; पङ्कयत्तु–कमलपुष्पों पर रहते हुए; अन्नम्–मराल; पुरि कुळल्–सँवारकर बँधे हुए केश वाली सीताजी का; पुक्किटम्–प्रवेशस्थल; पुकल्किलात–न (जान) कहनेवाले; याम्–हम; तिरुमुकम् नोक्कलॆम्–(श्रीराम का) श्रीमुख नहीं देखेंगे; इऱन्तु तीर्तुम्–मर मिटेंगे; ऎन्ऱु–यह निश्चय करके; ऎरि पुकुवन ऎन्न–अग्निप्रवेश करते हों जैसे; तोन्ऱुम्–दिखते हैं; ईट्टतु–वह सर ऐसा है। ८

उस सर में सर्वत्र लाल कमलपुष्पों का घना समूह है। उन कमलों के मध्य हंस पक्षी पाये जाते हैं। उनको देखने पर ऐसा लगता है कि वे हंस आग में प्रवेश कर रहे हों! क्यों? उनके मन में (शायद) यह विचार है— (मेढ़ी में) गूँधकर गाँठ के रूप में बँधी चोटी से अलंकृत सीताजी के रहने का स्थान हम नहीं जानते, इसलिए श्रीराम से बता भी नहीं सकते। ऐसे हम श्रीराम का मुख नहीं देखेंगे और आग में घुसकर अपनी जान त्याग लेंगे। ८

काशडै विळङ्गिय काट्चित् तायिनुम्
माशडै पेदैमै यिडैम यक्कलाल्
आशडै नल्लुणर् वनैय दामॆनप्
पाशडै वयिन्ऱोऱुम् परन्द पण्बदु 9

माचु अटै–दोषयुक्त; पेतैमै–अज्ञता; इटै मयक्कलाल्–मध्य में आकर मोह में डाल लेती है, इसलिए; आचु अटै–दोषपूर्ण हो जानेवाले; नल् उणर्वु अनैय–उत्तम ज्ञान के समान; काचु अटै विळङ्किय–रत्नोंसहित उज्ज्वल होकर; काट्चित्तु

आयित्तुम्–दृश्यमान होने पर भी; वयित्तु तोंरुम्–स्थल-स्थल पर; पाचटै परन्त–काई फैली थी; पण्पतु–ऐसा विशिष्टतायुक्त था वह । ६

मोती, रत्न आदि उस सर के तल में पड़े थे। जल की स्वच्छता के कारण वे बाहर दिखाई दे रहे थे। ऐसे दृश्य होने पर भी कहीं-कहीं काई, सेवार आदि के कारण जल ढका हुआ था और मोती, रत्न आदि अदृश्य रहे। वह दृश्य उस ज्ञान के समान लगा, जो अज्ञान के कारण मोहाच्छादित हो जाता हो। ९

कळिप्पडा मनत्तवन् काणिऱ् कऱ्पॅन्नुम्
किळिप्पडा मॉऴियवळ् विऴियित्तु केळॅन्नत्
तुळिप्पडा नयनङ्ग डुळिप्पच् चॊरुमॅन्
ऱॊळिप्पडा दायिडै यॊळिक्कु मीनदु 10

कळि पटा–आनन्द जिसमें नहीं रहता; मनत्तवन्–उस मन के श्रीराम; काणिल्–हमें देखेंगे तो; कऱ्पु ॲन्नुम्–मूर्तिमान पातिव्रत्य; किळि पटा–शुक में भी अप्राप्य; मॉऴि अवळ्–(मधुर-)भाषिणी उन (सीता) की; विऴियित्तु केळ् ॲन्त–आँखों का बन्धु समझकर; तुळि पटा–कभी (अश्रु-)कण जिनमें न पड़े थे; नयनङ्कळ् तुळिप्प–उन नेत्रों में आँसू की बूंदें ढलकाते हुए; चोरुम्–दुःखी होंगे; ॲन्ऱु–सोचकर; ऑळि पटातु–रूप व्यक्त नहीं करते हुए; अ इटै–उस सर में; ऑळिक्कुम्–अपने को छिपा लेनेवाली; मीन्तु–मछलियों से युक्त है (वह सर)। १०

उस सर में मछलियाँ रहीं पर वे छिपी रहीं। उसका कारण क्या था ? शायद उनको यही भय था कि श्रीराम आनन्दरहित मन के हैं। उनकी दृष्टि हम पर पड़ेगी तो उन्हें पातिव्रत्य की मूर्ति, शुक में भी अप्राप्य (मधुर) भाषण वाली सीताजी की आँखें स्मरण हो आयेंगी और अपनी आँखों से जो कभी अश्रु बहाने के आदी नहीं हैं, वे आँसू बहाते हुए शिथिल पड़ जायँगे। ऐसे मीनों से भरा हुआ वह सर था। १०

कळैपडु मुत्तमुङ् गलुऴिक् कार्मद
मळैपडु तरळमु मणियुम् वारिनेर्
इऴैपडर्न् दन्नैयनी ररुवि यॅय्दलान्
कुऴैपडु मुहत्तियर् कोलम् बोल्वदु 11

कळै पटु–बाँसों में उत्पन्न; मुत्तमुम्–मोतियों; कलुऴि–पंकिल; कार् मत मऴै–काले मद-नीर से युक्त मेघों (गजों) से; पटु–प्राप्य; तरळमुम्–मोतियों को और; मणियुम्–अनेक रत्नों को; वारि–बटोर लेकर; नेरिऴै पटर्न्तु–सुन्दर आभरण-भूषित; नीर् अरुवि–सरिता-जल; ॲय्तलाल्–आया है, इसलिए; कुऴै पटु मुकत्तियर्–कुण्डलधारिणी मुखों की स्त्रियों के; कोलम् पोल्वतु–सौंदर्य के समान सौंदर्य रखनेवाला है वह सर। ११

वह सर कर्णकुण्डलधारिणी सुन्दरियों का-सा सौन्दर्य रखता था, क्योंकि उसमें बाँसों से उत्पन्न मोती, पंकिल मदनीर वाले मत्तगजों से उत्पन्न मोती और अनेक प्रकार के रत्न, इनको बहा लेती आकर सरिताएँ उससे मिलती थीं। ११

पॉङ्गुवॅङ्	गडहरि	पॉदुळि	याडलिऩ्
कङ्गुलि	ऍदिर्पॉरु	कलविप्	पूशलिल्
अङ्गनॉन्	दलशिय	विलैयि	ऩाय्वळै
मङ्गैयर्	वडिवॅऩ	वरुन्दु	मॅय्यदु 12

पॉङ्कु–उमग उठनेवाला; वॅम् कट–उष्ण मदनीर वाले; करि–मातंग; पॉतुळि आटलिऩ्–गोते लगाते हैं, इसलिए; कङ्कुलिऩ्–रात के समय में; ऍतिर् पॉरु–सामने से आलिंगन के; कलवि पूचलिल्–संभोग-समर में; अङ्कम् नॉन्तु–अंगों में शिथिल पड़कर; अलचिय–थकित हुई; आय् वळै–चुने हुए कंकणभूषित; विलैयिऩ् मङ्कैयर्–वेश्याओं का; वटिवु ॲऩ–शरीर के समान; वरुन्तुम्–कष्ट उठानेवाले; मॅय्यतु–शरीर का है। १२

उस सर में उष्ण मदस्रावी गज गोते लगाते हैं। उससे वह सर उन आभरणभूषिता वेश्याओं के शरीर के समान थकित अंगों का हो जाता है, जो रात के समय सामने प्राप्त संभोग-समर में अपने शरीर की शक्ति खोकर श्रांत हो रहती हैं। १२

विण्डोडु	नॅडुवरैत्	तेऩुम्	वेऴत्तिऩ्
वण्डुळर्	नऱुमद	मऴैयु	मण्डलाल्
उण्डवर्	पॅरुङ्गळि	युऱलि	ऩोदियर्
तॉण्डैयङ्	गऩियिदऴ्त्	तुप्पिऱ्	चाऩ्ऱदु 13

विण् तॉटु–आकाशस्पर्शी; नॅटु वरै–उन्नत पर्वतों से झरनेवाला; तेऩुम्–शहद; वेऴत्तिऩ्–गजों का; वण्टु उळर्–भ्रमर जिसमें पैठकर चूसते हैं; नऱु मत मऴैयुम्–सुगन्धित मद-वारि; मण्टलाल्–आकर मिलते हैं, इसलिए; उण्टवर्–(उस सर के जल को) पीतेवाले; पॅरुम् कळि उऱलिऩ्–बहुत आनन्दयुक्त होते हैं, इसलिए; ओतियर्–रमणियों के; तॉण्टै अम् कऩि इतऴ्–बिम्बफल-सम अधरों के; तुप्पिल् चाऩ्ऱतु–(अमृत) पान के समान है। १३

गगनस्पर्शी और बड़े पर्वतों से शहद की धारा आती है। मत्तगजों के भ्रमराकुलित और सुगन्धित दान की धारा आती है। वे धाराएँ आकर उस सर में मिल जाती हैं। उस सर का जल पीने से लोग मदमत्त हो जाते हैं। इसलिए वह सर सुकेशिनी बिम्बाधरा स्त्रियों के अधरों की समानता करता है (और जल अधर-मधु की)। १३

आरिय	मुदलिय	पदिऩॆण्	पाडैयिल्
पूरिय	रॊरुवऴि	पुहुन्द	पोऩ्ऱऩ

ओर्‌विल किळविह् ऑौत्ऱी डोप्पिल
शोर्‌विल विळम्बुपुट् टुवन्ऱु हिन्ऱदु 14

आरियम् मुतलिय–संस्कृत आदि; पतिन् अण् पाटैयिल्–अठारह भाषाओं के; पूरियर्–अल्पज्ञ लोग; ओरु वळि–एक स्थान पर; पुकुन्त पोनुंरल–मिलकर शोर मचाते जैसे; ओर्‌वु इल–स्वच्छ नहीं हैं; किळविकळ्–शब्द; ऑनूड्रोट्‌ ऑप्पु इल–परस्पर सम नहीं; चोर्‌वु इल–दुर्बल नहीं हैं; विळम्पु–(ऐसे) बोलनेवाले; पुळ्–पक्षीगणों से; तुवन्ऱकित्ऱतु–भरा है । १४

आर्य (संस्कृत) आदि अठारह भाषाओं के अपढ़ बोलनेवाले एक स्थान पर इकट्ठे हो गये हों, ऐसे, अस्पष्ट और परस्पर विपरीत और अथक रूप से बोलनेवाले पक्षीगणों से पूर्ण है (वह सर) । १४

तानुयि रुड्रत्तन्नित् तळुवुम् पेडैयै
ऊनुयिर् पिरिन्दॆन्नप् पिरिन्द वोदिमम्
वानर महळिर्‌तम् वयङ्गु नूपुरत्
तेनुह्रु मळ्ळैयैच् चेविधि नोर्प्पदु 15

तान् उयिर् उड्र–अपने प्राणों के साथ; तन्नि तळुवुम्–खूब आलिंगन करनेवाली; पेटैयै–हंसिनी को; उयिर् ऊन् पिरिन्ततु ॲन्न–प्राण शरीर को छोड़ गये हों जैसे; पिरिन्त ओतिमम्–अलग जो गया वह हंस; वान् अर मकळिर् तम्–आकाशलोक की सुरबालाओं की; वयङ्कु–मनोरम; नूपुर तेन् उकु–नूपुरों की शहद-सी उठनेवाली; मळ्ळैयै–मधुर, तुतली-सी बोली को; चॆवियिन् ओर्‌प्पतु–अपने कानों से सुनते हैं, ऐसा है वह सर । १५

उस सर में व्योमराज्य की अंगनाएँ आकर स्नान कर रही हैं। उनकी बोलियाँ उनके नूपुरों की ध्वनि ही के समान मनोरम हैं। हंस उन मधुर बोलियों को कान देकर सुनते हैं। कौन हंस ? वे हंस, जो अपनी हंसिनियों से शरीर त्यागकर जानेवाले प्राणों के समान छोड़ अलग हुए हैं। कैसी हंसिनियाँ ? वे हंसिनियाँ, जो इन हंसों के साथ इस तरह पाश-बद्ध रहीं, मानो प्राणों से प्राण लगाकर अपूर्व रीति से आलिंगन कर रही थीं। १५

ईऱिड लरियमाल् वरैनित् ड्रीर्‌त्तिळि
आऱिडु विरैयहि लार मादिया
ऊऱिड वॊण्णह रुरैत्त वॆण्डळच्
चेऱिडु परणियिर् ड्रिहळ्न् देशवु 16

ईऱु इटल्–अन्त निर्धारित करना; अरिय–(जिसका) कठिन है; माल् वरै नित्ऱु–बड़े पर्वत से; ईर्‌त्तु इळि–बहाते हुए नीचे बहनेवाली; आऱु इटु–नदियों द्वारा लाकर डाले हुए; विरै अकिल्–सुगन्धित अगरु; आरम् आतिया–चन्दन के काठ आदि; ऊऱिट–पड़े घुलते रहते हैं, इसलिए; ऑळ् नकर्–श्रेष्ठ नगर में लोगों द्वारा;

उरत्त–पीसकर; वॆण् तळ चेरु–सफ़ेद चन्दन का लेप; इट्टु–जिसमें रखा गया हो; परणियिल्–उस पात्र के समान; तिकऴुम्–मनोरम रहनेवाले; तेचतु–सौंदर्य का (है वह सर)। १६

अपरिमित बड़े पर्वत से नदियाँ सुगन्धित अगरु, चन्दन आदि की लकड़ियाँ बहा ले आयीं और वे उस सर में पड़ी घुली रहीं। तब वह सर श्रेष्ठ नगरवासियों के द्वारा घिसकर तैयार किये हुए चन्दनलेप के पात्र के समान दिखा। १६

नव्वि नोक्किय रिदऴ्निहर् कुमुदत्ति नरुन्देन्
वव्वि मान्दलिन् कळिमयक् कुरुवन महरम्
अॆव्व मोङ्गिय विरप्पॊडु पिरप्पिवै यॆन्नक्
कव्वु मीनॊडु मुऴुहिन वॆऴुवन करण्डम् 17

मकरम्–मकर; नव्वि नोक्कियर्–मृगाक्षियों के; इतऴ् निकर्–अधरों के समान; कुमुतत्तिन्–कुमुदपुष्पों के; नरुम् तेन्–सुबासपूर्ण मधु को; वव्वि मान्तलिन्–लेकर पीते हैं, इसलिए; कळि मयक्कु–सुरापायी-प्राप्य नशा; उरुवन–प्राप्त करते हैं; अॆव्वम् ओङ्किय–दुःखप्रवृद्ध; इरप्पु ओटु पिरप्पु–मरण और जन्म; इवै अॆन्त–ऐसे हैं, इसका संकेत करते-से; कव्वु मीन् ऒटु–अपने द्वारा ग्रस्त मछलियों के साथ; करण्टम्–करंड; मुऴुकित अॆऴुवन–उस (सर के) जल में डूबते हैं, उतराते हैं। १७

उसमें मकर थे। मृगनयनी सुन्दरियों के अधरों के समान जो उस सर में कुमुद-कुसुम थे, उनसे सुगन्धपूर्ण शहद रिसता रहा। उसको पीकर वे मकर सुरापायी के-से नशे में रहे। उसमें करंड पक्षी मछलियाँ पकड़ते रहे। उन मछलियों के साथ वे कभी जल के अन्दर घुसते, कभी बाहर निकलते। उसे देखकर ऐसा लगा मानो वे, दुःखबहुल जन्म और मरण का चक्र यही है—यह दरसा रहे हों। १७

कवळ यानैय नार्कन्दक् कडिनरुङ् गमलत्
तवळै यीहल मावदु शॆय्दुमॆन् ऱरुळित्
तिवळ वन्नङ्ग डिरुनडै काट्टुव शॆङ्गण्
कुवळै काट्टुव दुवरिदऴ् काट्टुव कुमुदम् 18

कवळ यानै–कवलभक्षी गज; अतार्कु–सम (श्रीराम) को; अन्त कटि नरुम् कमलत्तु अवळै–उस श्रेष्ठ सुगन्धित कमल की (निवासिनी) सीता को; ईकलम्–(ढूंढ़ लाकर) नहीं देते; आवतु चॆय्तुम्–तो भी जितना हो सकेगा, उतना करेंगे; अॆन्ऱु अरुळि–ऐसा कृपा करके; अन्नङ्कळ्–हंस; तिवळ–प्रकट रूप से; तिरु नटै काट्टुव–(सीताजी की-सी) श्रेष्ठ चाल दिखाते हैं; कुवळै–नीलोत्पल; चॆम् कण् काट्टुव–(सीताजी की-सी) लाल आँखें दिखाते हैं; कुमुतम्–(लाल) कुमुद; तुवर् इतऴ् काट्टुव–लाल अधर दिखाते हैं। १८

उसमें हंस चल-फिर रहे थे। वे मानो सीताजी की चाल का श्रीराम को स्मरण दिला रहे थे। उनका विचार था कि हम कवलग्राही गज-सदृश श्रीराम को सुगन्धपूर्ण कमल की निवासिनी श्री सीताजी को ढूँढ़ लाकर दे नहीं पाये। कम से कम उनकी-सी चाल दिखाएँ। उनके मन में कृपा थी। वैसे ही नीलोत्पल के फूलों ने देवी की लाल डोरोंसहित आँखों का और कुमुदों ने लाल अधरों का दृश्य दरसाया। १८

पॅय्ह लत्गळि त्तिलङ्गॉळि मरुङ्गॊडु पिऱ्ळ
वैह लुम्बुत्तल् कुडैबवर् वान्र महळिर्
शॅय्है यन्नङ्ग ळेन्दिय शेडिय रॆन्नप्
पॉय्है यन्नङ्ग ळेन्दिय पूङ्गॊम्बु पॊलिव 19

पॅय् कलन्कळिन्–(उतारकर) रखे गये आभरणों से; इलङ्कु ऑळि–निसृत प्रकाश; मरुङ्कु ऑट्ट पिऱ्ळ–पास के स्थानों से भिन्न छटा देते हैं; वैकलुम–दिनों-दिन; पुत्तल् कुटैपवर्–जल में स्नान करनेवाले; वान् अर मकळिर्–आकाश की अप्सरा स्त्रियों के; चॅय्कै अन्नङ्कळ्–कृत्रिम हंसों को; एन्तिय–उठा ले आनेवाली; चेटियर् अन्न–दासियों के समान; पूम् कॊम्पु–पुष्पशाखाएँ; पॊय्कै अन्नङ्कळ्–सर के हंसों को; एन्तिय–धारण करती हुई; पॊलिव–शोभायमान हैं। १६

उसमें रोज आकाशलोकवासिनी अप्सराएँ आकर स्नान करती थीं। उनके साथ उनकी दासियाँ आयीं और उनके हाथों में उन अप्सराओं के मनोरंजन के लिए बने कृत्रिम हंस थे। उन अप्सराओं ने अपने आभरण उतारकर वहाँ यत्र-तत्र रखे थे। उनकी कांति वहाँ के पदार्थों से अलग चित्र-विचित्र छटा दिखा रही थी। वहाँ की पुष्पलताएँ अपने ऊपर बैठे हंसों के साथ उन अप्सराओं की चेरियों के समान लगीं, जिनके हाथों में कृत्रिम हंस थे। १९

एलु नीणिळ लिडैयिडै यॅरित्तलिऱ् पडिहम्
पोलुम् वार्पुनल् पुहुन्दुळ वामॆन्प् पॊङ्गि
आलु मीन्गणम् वॆरुवुऱ् वलम्वर वञ्जक्
कूल मामरत् तिरुञ्जिरै पुलर्त्तुव कुरण्डम् 20

एलुम्–युक्त; नीळ् निऴल्–लम्बी छायाएँ; इटै इटै–बीच-बीच में; ऑरितलिन्–पड़ती हैं, इसलिए; पटिकम् पोलुम् वार् पुनल्–स्फटिक-से विस्तृत जलतल में; पुकुन्तुळ आम् ॲॅन–घुसे हों जैसे; आलुम्–क्रीडामग्न; मीन् कणम्–मछलियों के समूह; वॆरुवु उऱ्–डर से; अलम् वर–घबड़ाकर; पॊङ्कि अञ्च–चंचल और कातर होते; कुरण्टम्–(ऐसे) बगुले; कूल मा मरत्तु–तट पर के आम्रतरुओं पर; इरुम् चिरै–अपने बड़े पंखों को; पुलर्त्तुव–सुखा रहे हैं। २०

उसके किनारों पर पेड़ थे और उन पेड़ों की शाखाओं पर बैठे हुए बक अपने बड़े पक्षों को सुखा रहे थे। उनकी परछाईं उस सर के

स्फटिक-स्वच्छ जल में यत्र-तत्र पड़ती थी। मछलियों ने सोचा कि सचमुच बक घुस गये हैं। इसलिए वे भयातुर होकर घबड़ाते हुए चकित और थकित हो रहीं। ऐसे दृश्यों का था वह सर। २०

अङ्गोर्	बाहत्ति	नञ्जन	मणिनिऴ	लडैयप्
पङ्गु	वेऱदिर्	पदुमरा	हत्तोळि	पायक्
कङ्गु	लुम्बह	लुम्मॅनप्	पॉलिवन	कमलम्
मङ्गै	मार्तुणै	मुलैयॅनप्	पॉलिवन	वाळम् 21

अङ्कु–वहाँ (उस सर के); ओर् पाकत्तिन्–एक भाग में; अञ्चनमणि–नीली मणियों की; निऴल् अटैय–छटा पड़ती है, तो; वेऱु पङ्कु अतिल्–दूसरे भाग में; पतुमराकत्तिन् ऒळि–पद्मराग का प्रकाश; पाय–फैला है; पॉलिवन कमलम्–(तब) शोभा के साथ विद्यमान कमल; कङ्कुलुम् पकलुम् ऎन–रात और दिन के (बन्द और खुले कमलों के) रहते हैं और; वाळम्–चक्रवाक; मङ्कै मार्–स्त्रियों के; तुणै मुलै ऎन–स्तनद्वयों के समान; पॉलिवन–रूप में शोभते हैं। २१

वहाँ एक भाग में नीलमणियों की कांति पड़ी रही। दूसरी ओर पद्मराग का लाल प्रकाश पड़ा रहा। इसलिए वहाँ के कमल रात और दिन में जैसे क्रमशः बन्द और खिले रहे। (नीलमणियों की काली कांति अँधेरा-भरी रात के समान थी और पद्मराग का प्रकाश धूप के समान।) चक्रवाक पक्षी (देखने में) स्त्रियों के स्तनों के समान लगे। २१

वलिन	डत्तिय	वाळॅन	वाळैहळ्	पाय
ऑलिन	डत्तिय	तिरैतॊरु	मुहळ्वन	नीर्नाय्
कलिन	डक्कळैक्	कण्णुळ	रॅननडङ्	गविनप्
पॉलिवु	डैत्तॆनत्	तेरैहळ्	पुहळ्वन	पोलुम् 22

वलि नटत्तिय–बल के साथ चलायी गयी; वाळ् ऎन–तलवार के समान; वाळैकळ् पाय–'वाळै' नाम की मछलियाँ झपटती हैं; ऑलि नटत्तिय–ध्वनिपूर्ण; तिरै तॊऱुम्–तरंगों में; कलि नट–मनोरंजक नर्तन करनेवाले; कळै कण्णुळर् ऎन–बाँस (गाड़कर उस पर) नर्तन दिखानेवाले नटों के समान; नीर् नाय्–जलकूकर; उकळ्वन–लुढ़कते हैं; नटम् कविन–और नर्तन का-सा खेल दिखाते हैं और; तेरैकळ्–दादुर; पॉलिवु उटैत्तु ऎन–(तुम्हारा नाच) श्रेष्ठता से युक्त है, कहकर; पुकळ्वन पोलुम्–वाहवाही करते से हैं। २२

(उस सर में कुछ अनोखे दृश्य पाये जाते हैं।) 'वाळै' नाम की मछलियाँ बहुत वेग और शक्ति के साथ चलायी गयी तलवार के समान झपटती थीं। तरंगों के मध्य जल-कूकर (एक जलजन्तु) बाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटों के समान लुढ़क-लुढ़ककर तमाशा दिखा रहे थे। दादुर उनको देखकर वाहवाही दे रहे थे। २२

अऩ्ऩ दाहिय वहऩ्बुऩऱ् पॊय्हैयै यणहिक्
कऩ्ऩि यऩ्ऩमुङ् गमलमु मुदलिय कण्डाऩ्
तऩ्ऩि ऩीङ्गिय तळिरियऱ् कुरुहिऩऩ् ऱळर्वाऩ्
उऩ्ऩु नल्लुणर् वॊडुङ्गिडप् पुलम्बिड लुऱ्ऱाऩ् 23

अऩ्ऩतु आकिय–ऐसे (दृश्यों के); अकल् पुतल्–विशाल जल-फैलाव के; पॊय्कैयै–सर के; अणुकि–पास जाकर; कऩ्ऩि अऩ्ऩमुम्–बालमरालों; कमलमुम्–और कमलों; मुतलिय–आदि (सब) को; कण्टाऩ्–देखकर; तऩ्ऩिऩ् नीङ्किय–अपने से अलग जो चली गईं; तळिर् इयर्कु–पल्लवनिभ सीताजी के लिए; उरुकिऩऩ्–द्रवीभूत होकर; तळर्वाऩ्–दुखते हुए; उऩ्ऩुम् नल् उणर्वु–विवेकी बुद्धि के; ऒटुङ्किट–मन्द पड़ने के कारण; पुलम्पिटल् उऱ्ऱाऩ्–(श्रीराम) विलाप करने लगे। २३

श्रीराम अपने छोटे भाई के साथ ऐसे पम्पा सर पर आये। उसमें रहनेवाले बाल-मरालों और कमलों को देखा। उन्हें उनसे बिछुड़ी पल्लव-निभ सीताजी का स्मरण सताने लगा। उनका मन द्रवीभूत हो गया। दुःख के कारण धैर्य, बुद्धि भी मन्द पड़ गयी। तब वे यों विलाप करने लगे। २३

वरियार् मणिक्काल् वरालिऩमे मडवऩ् ऩङ्गा ळॆऩ्ऩैनीङ्गित्
तरिया नडैया ळिलळालॆऱ् ऱॆऩ्द वेदुऩ् दहवेयाल्
ऎरिया निऩ्ऱ वारुयिरुक् किरङ्गि ऩाली दिशैयऩ्ऱो
पिरिया दिरुन्दीर्क् कॊरुमाऱ्ऱम् पेशिऱ् पूशल् पॆरिदामो 24

वरि आर्–लकीरों से युक्त; मणि काल्–सुन्दर परों (रूपी डैनों) से युक्त; वराल् इऩमे–'वराल' मछलियों के समूह; मट अऩ्ऩङ्काळ्–बालमराल; ऎऩ्ऩै नीङ्कि–मुझे छोड़कर; तरिया–अलग जी नहीं सकतीं; नटैयाळ्–ऐसे स्वभाव की; इलळ्–(सीता मेरे साथ अब) नहीं है; ऎऩ् तन्त–मेरे लिए दिया गया सन्देश; एतुम्–कोई; तकवे–अच्छा होगा; ऎरिया निऩ्ऱ–जलनेवाले; आर् उयिर्क्कु–मेरे प्यारे प्राणों के लिए; इरङ्किऩाल्–सहानुभूति करेंगे तो; ईतु–यह; इचै अऩ्ऱो–(तुम्हारे लिए) प्रशंसा का विषय होगा न; पिरियातु–अवियुक्त; इरुन्तीर्क्कु–जो रहते हो, उन तुमको; ऒरु माऱ्ऱम् पेचिल्–(उसके सम्बन्ध में) एक बात कहना; पूचल्–टंटा; पॆरितु–बड़ा; आमो–हो जायगा क्या। २४

रेखाओं से युक्त डैनों वाली हे 'वराल' मछलियो! हंसो! अब सीताजी मेरे पास नहीं रहतीं। उनका स्वभाव ऐसा है कि वे मुझे छोड़कर अलग जीवित नहीं रह सकतीं। उसने तुम्हारे पास कुछ भी कहा हो तो वह मुझसे कह दो। यही उचित होगा। मेरे प्राण उसके विना जल रहे हैं। दया करके यह सहायता करोगे तो वह तुम्हारी कीर्ति का हेतु बनेगा। तुम तो नर-मादा अपृथक् रहते हो। कुछ मुझे बताओगे तो टंटा बढ़ जायगा क्या? । २४

वण्ण नरुन्दा मरैमलरुम् वाशक् कुवळै नाण्मलरुम्
पुण्णि नॅरियु मोरुनॅञ्जम् बोदियु मरुन्दिऱ् ऱरुम्बोय्हाय्
कण्णु मुहमुङ् गाट्टुवाय् वडिवु मोरुहाऱ् काट्टायो
ऑण्णु मॅन्ऩि नः(ह्)दुदवा दुलोवि ऩारु मुयर्न्दारो 25

वण्ण नरुम्–सुन्दर और सुबासित; तामरै मलरुम्–कमलपुष्प; वाच नाळ् कुवळै मलरुम्–सुबासित और तत्कालविकसित कुवलयपुष्प; पुण्णिन् ऍरियुम्–व्रण के समान जलनयुक्त; ओरु नॅञ्चम्–(मेरे) एक मन में; पोतियुम् मरुन्तिल्–घाव पर लिपे मलहम के समान; तरुम्–दरसानेवाले; पोय्काय्–हे सर; कण्णुम् मुकमुम्–आँखें और मुख; काट्टुवाय्–दिखाते हो; वटिवुम्–सारा रूप; ओरु काल्–एक बार; काट्टायो–नहीं दिखाओगे क्या; ओण्णुम् ऍन्तिल्–हो सकता है तो; अ.·.तु उतवातु–(जो दे सकते हैं) उसको न देकर; उलोविन्ऩारुम्–लोभ दिखानेवाले भी; उयर्न्तारो–श्रेष्ठ बन सकेंगे क्या (बन नहीं सकेंगे)। २५

हे सर ! मेरा मन व्रण से जल रहा है। तुम सुन्दर और सुबासपूर्ण कमलकुसुमों और सुबासित और नवविकसित नीलोत्पल के फूलों को दिखा रहे हो और वह मेरे मन पर मलहम का काम दे रहा है ! तुम इस तरह सीताजी की आँखों और मुख को दरसा रहे हो ! क्या उसका सारा रूप नहीं दिखाओगे एक बार ? हो सकता है तो दिखाने की दया करो। वह न करके लोभ दिखाओगे तो लोभी भी उत्कृष्ट हो सकते हैं क्या ? । २५

विरिन्द कुवळै चेदाम्बल् विरैमॅन् कमलङ् गोडिवळ्ळै
तरङ्ग नॅरुङ्गु वरालामै यॅन्ऩिऱ् तहैय तमैनोक्कि
मरुन्दि ऩॅया ळवयवङ्ग ळवैनिऱ् कण्डेऩ् वल्लरक्कऩ्
अरुन्दि यहल्वाऩ् शिन्दिऩवो वावि युरैत्ति यामऩ्ऱे 26

विरिन्त कुवळै–विकसित नील कुवलय; चॅम्मै आम्पल्–लाल कुमुद; विरै मॅल् कमलम्–वासपूर्ण कोमल कमल; कोटि वळ्ळै–'वळ्ळै' नाम की लता; तरङ्कम् नॅरुङ्कु–तरंगों के बीच पास-पास संचार करनेवाले; वराल्–'वराल' नामक मीन; आमै–कछुए; ऍन्ऩ इ तकैय तमै–इस प्रकार के जीवों को (देखकर); वावि–हे सर; मरुन्तिन् अन्ऩैयाळ्–देवामृत के समान सीता के; अवयवङ्कळ्–अंगों को; निन् कण्टेन्–तुम्हारे पास देखता हूँ; वल् अरक्कन्–बली राक्षस (रावण); अरुन्ति अकल्वान्–उसको खाकर जो गया; चिन्तिन्ऩवो–तब बिथुर गये, क्या ये; उरैत्ति–बताओ। २६

श्रीराम ने विकसित नीलोत्पल के फूलों को, लाल कुमुदों को और सुन्दर सुबासित कोमल कमलों को देखा। 'वळ्ळै' नाम की लता देखी, जिसके पत्ते मनुष्य के कानों के आकार के लगते हैं। लहरों के मध्य 'वराल' मछलियाँ और कछुए भी दिखाई दिये। (तो उन्हें क्रमशः सीता की आँखें, अधर, मुख, कान, पिंडली, उत्चरण आदि स्मरण हो आ गये।) उन्होंने सर से कहा कि हे सर ! तुम्हारे पास मैं अमृत-समाना सीताजी के अवयवों

को देखता हूँ। क्या वे तब विथुरे गिरे हैं, जब बली राक्षस रावण सीता को खाते हुए जाता रहा ? । २६

ओडा निन्ऱ कळिमयिले शायऱ् कौदुङ्गि युळ्ळळिन्दु
कूडा दारिऱ् ऱॅरिहिन्ऱ नीयु माहङ् गुळिरन्दायो
तेडा निन्ऱ वॅन्नुयिरैत् तॅरियक् कण्डाय् शिन्दैयुवन्
दाडा निन्ऱा यायिरङ्ग णुडैयायक् कौळिक्कु माऱुण्डो 27

ओटा निन्ऱ–दौड़ते फिरनेवाले; कळि मयिले–मुदित मोर; चायऱ्कु ऑतुङ्कि–(सीता की) आभा के सामने (हार मानकर) हटकर; उळ् अळिन्तु–मन मारकर; कूटातारिल्–शत्रु के समान; तॅरिकिन्ऱ–दिखनेवाले; नीयुम्–तुम भी; आकम् कुळिर्न्तायो–मन में आनन्दानुभव करते हो क्या; तेटा निन्ऱ–जिसकी मैं खोज कर रहा हूँ; ऍन् उयिरै–उस मेरे प्राणसमाना को; तॅरिय कण्टाय्–तुमने खूब देखा है; चिन्तै उवन्तु आटा निन्ऱाय्–अब सन्तोष के साथ नाचते हो; आयिरम् कण् उटैयाय्क्कु–सहस्र-नेत्र तुमसे; ऑळिक्कुम् आऱु उण्टो–छिपने का रास्ता भी है क्या २७

(श्रीराम एक मयूर से पूछते हैं—) हे दौड़ते फिरनेवाले मयूर ! सीताजी की आभा के सामने तू हार गया था। मन मारकर तू शत्रुवत् व्यवहार करता-सा दीखता है ! अब तेरा मन ठण्डा हो गया न ? तूने मेरी प्राण-सम सीता को खूब देखा है ! अब मुदितमन हो नाच रहा है ! तेरे सहस्र नेत्र हैं ! तुझसे कोई वस्तु अनदेखी रह सकेगी क्या ? । २७

अडैयी रॅन्नि मॉरुमाऱ्ऱ मरिन्द दुरैयी रन्नत्तिन्
पॅडैयी रौन्ऱुम् पेशीरो पिळ्ळैया देऱ्कुम् पिळ्ळैत्तीरो
नडैनी रळियच् चॅय्दारार् नडुवि लादार् ननियवरो
डुडैयीर् पहैदा नुमैनोक्कि युवक्किन् ऱेनै मुनिवीरो 28

अन्नत्तिन् पॅटैयीर्–हंस-स्त्रियो; अटैयीर् ऍन्निनुम्–पास नहीं आओगी तो भी; अऱिन्ततु–जाना; ऑरु माऱ्ऱम्–एक समाचार; उरैयीर्–मुझे बताओ; ऑन्ऱुम् पेचीरो–कुछ न कहोगी क्या; पिळ्ळैयातेऱ्कुम्–निरपराधी के प्रति भी; पिळ्ळैत्तीरो–अपराध करोगी; नटु इलातार्–तटस्थता (कमर) जिसके पास नहीं है; नटै नीर् अळिय चॅय्तार्–तुम्हारी चाल (के गर्व) को मिटाया; यार्–किसने था; अवरोटु पकै तान्–उनके साथ शत्रुता; नति उटैयीर्–भले ही रखो; उमै नोक्कि–तुम्हें देखकर; उवक्किन्ऱेनै–हर्षित होनेवाले मुझसे; मुनिवीरो–गुस्सा करोगी क्या। २८

(हंसिनियों से उपालम्भ—) हे हंसकुमारियो ! तुम मेरे पास नहीं आओगी। सही। पर सीता के सम्बन्ध में कुछ समाचार कहो। क्या नहीं कहोगी ? मैंने तो तुम्हारा कोई अपराध नहीं किया। निरपराध के प्रति भी अपराध करोगी क्या ? कटिहीन ('नडु' का अर्थ तटस्थता भी है— अतः तटस्थता से रहित) किसने तुम्हारा चाल का गर्व चूर किया ?

सीता ने ही न ? उसके साथ शत्रुता तुम भले ही करो। मैं तो तुमको देखकर आनन्द से भर जाता हूँ। मुझसे भी खीझ दिखाओगी क्यों ? । २८

पॊऩ्बाल् पॊरुवुम् विरैयल्लि पुल्लिप् पॊलिऩ्द पॊलऩ्दादु
तऩ्बार् ऱ्ळ्वुङ् गुळल्वण्डु तमिळ्प्पाट् टिशैक्कुऩ् दामरैये
ॲऩ्बा लिल्लै यप्पालो विरुप्पा रल्लर् विरुप्पुडैय
उऩ्बा लिल्लै यॆऩ्ऱक्का लॊळिप्पा रोडु मुऱवुण्डो 29

पॊऩ् पाल्–स्वर्ण का-सा गुण; पॊरुवुम्–रखनेवाले; विरै अल्लि–सुवासित दलों के; पुल्लि पॊलिऩ्त–अन्दर शोभनेवाले और; पॊलऩ् तातु–स्वर्ण-सम मकरन्द; तऩ् पाल् वळ्वुम्–जिन पर लगे रहते हैं; कुळल् वण्टु–बाँसुरी-ध्वनि वाले भ्रमर; तमिळ् पाट्टु–मधुर संगीत; इचैक्कुम्–(जिनमें रहकर) गाते हैं; तामरैये–ऐसे कमल-पुष्पो; ॲऩ् पाल् इल्लै–(सीता) अब मेरे साथ नहीं है; अप्पालो इरुप्पार् अल्लर्–अलग कहीं रहनेवाली भी नहीं है; विरुप्पु उटैय–प्रेमासक्त; उऩ् पाल्–तुम पर; इल्लै ॲऩ्ऱक्काल्–नहीं है, कहोगे तो; ऒळिप्पारोटुम्–छिपा रखनेवालों के साथ; उऱवु उण्टो–मित्रता हो सकती है क्या। २९

हे कमलपुष्पो ! तुम्हारे दल स्वर्ण के समान हैं। उन पर मकरन्द भरा है। उस मकरन्द-धूल पर भ्रमर लोटते हुए अपने शरीरों पर उसे मल लेकर खूब गुंजार कर रहे हैं ! सीता मेरे साथ नहीं है। वह ऐसी है जो अन्यत्र रह ही नहीं सकती। (वह या तो मेरे साथ रहेगी या अपनी नैहर तुम पर।) अगर तुम यह कहो कि वह यहाँ नहीं, तो वह झूठ ही होगा। छिपाकर रखनेवालों के साथ मित्रता कैसे रखी जायगी ? । २९

ऒरुवा शहत्तै वाय्तिऱन्दिङ् गुदवाय् पॊय्है युळ्ळॊडुङ्गुम्
तिरुवा यऩैय शेदाम्बर् कयले किडन्द शॆङ्गिडैये
वॆरुवा वॆदिर्निऩ् ऱमुदुयिर्क्कुम् वीळिच् चॆव्विक् कॊळ्ङ्गऩिवाय्
तरुवा यव्वा यिऩ्ऩमिळ्दुऩ् तण्णॆऩ् मॊळियुऩ् दारायो 30

पॊय्कैयुळ्–सर के अन्दर; ऒटुङ्कुम्–दबे रहनेवाले; तिरुवाय् अऩैय–सीताजी के श्रीसम्पन्न अधरों के समान; चॆम्मै आम्पऱ्कु–लाल कुमुदकुसुमों के; अयले किटन्त–पास रहनेवाली; चॆम् किटैये–लाल खुखरो; वॆरुवा–निर्भय होकर; ऎतिर् निऩ्ऱु–सामने रहकर; अमुतु उयिर्क्कुम्–अमृत बहानेवाले; वीळि कॊळुम् कति–"वीळि" (नाम) के पुष्ट फल के (सदृश); चॆव्वि वाय्–(सीता के) लाल मुख को; तरुवाय्–दरसाते हो; अ वायिऩ्–उस मुख के; इऩ् अमिळ्तुम्–मधुर अमृत को भी; तण् ऎऩ्–शीतल; मॊळियुम्–बोली को भी; तारायो–नहीं दोगे क्या; ऒरु वाचकत्तै–एक वचन; वाय् तिऱन्तु–अपना मुख खोलकर; इङ्कु उतवाय्–कहने की, यहाँ, कृपा करो तो। ३०

हे लाल 'किटै' (खुखरी ?) लता, जो सर के अन्दर सीता के मुख के

समान लाल कुमुदों के पास पड़ी हो ! (किटै लाल रंग की जललता है। उसकी उपमा अधर से दी जाती है।) तुम मेरे सामने मधुस्रावी, 'वीळि' के फल के समान (सीता के) सुन्दर अधरों को दिखा (स्मरण करा) रही हो ! क्या तुम उन अधरों का अमृतपान और उनकी बोली का स्वाद नहीं दिलाओगी ? मुख खोलकर एक बात करो तो बड़ी दया होगी। ३०

अलक्क णुऱ्ऱेर् काऱ्ऱुवदऱ् कडवुण् डन्ऱो कौडिवळ्ळाय्
मलर्क्कोम् बनैय मडच्चीदै कादे मऱ्ऱीन् ऱल्लैयाल्
पौलक्कुण् डलमुङ् गौड्ङ्गुळैयुम् पुनैताळ् मुत्तिन् पौऱ्ऱोडुम्
विलक्कि वन्दाय् काट्टायो वित्तुम् बूशल् विरुम्बुदियो 31

कौटि वळ्ळाय्–हे 'वळ्ळै' लता; मलर् कौम्पु अनैय–पुष्पशाखा-सदृश; मटम् चीतै–बाला सीता के; काते–कर्ण; मऱ्ऱु ऒन्ऱु अल्लै आल्–(तू) दूसरा कुछ नहीं है तो; पौलन् कुण्टलमुम्–स्वर्णकुण्डलों; कौटुम् कुळैयुम्–वक्र ताटंकों को; पुनै ताळ्–पहने हुए, लटकनेवाले; मुत्तिन् पौन् तोटुम्–मोती के स्वर्ण कर्णफूलों को; विलक्कि वन्ताय्–छोड़कर आये हो; काट्टायो–(सीता को) दिखाओगी नहीं क्या; अलक्कण् उऱ्ऱेर्क्कु–दुःख को प्राप्त मुझे; आऱ्ऱुवतऱ्कु–दुःखशमन के लिए; अटैवु उण्टु अन्ऱो–मार्ग होगा न; इन्नुम् पूचल् विरुम्पुतियो–आगे भी मुझसे झगड़ा चाहती हो क्या। ३१

हे 'वळ्ळै' लता ! तुम पुष्पलता-सदृश बाला सीता के कान ही हो ! और कुछ नहीं। स्वर्णकुण्डल, वक्र ताटंक और मोती-जड़ित स्वर्ण कर्णफूल (विना पहने) त्यागकर आयी हो ! क्या तुम मुझे उस सीता को नहीं दरसाओगी ? मैं दुःखदग्ध हूँ। दिखाओगी तो दुःख बुझाने में सहायता मिलेगी। फिर क्यों और भी मुझसे झगड़ा रखना चाहती हो ? । ३१

पञ्जु पूत्त विरऱ्पदुमम् पवळम् बूत्त वडियाळॆन्
नॆञ्जु पूत्त तामरैयि निलय मुवन्दा णिऱम्बूत्त
मञ्जु पूत्त मळैयनैय कुळलाळ् कण्बोन् मणिक्कुवळाय्
नञ्जु पूत्त तामॆन्न नहुवा यॆन्नै नलिवायो 32

पञ्चु पूत्त–लाक्षारंजित; विरल्–उँगलियों; पतुमम् पवळम् पूत्त–पद्मों में प्रवाल जटित हों, ऐसे; अटियाळ्–चरणों वाली; ऎन् नॆञ्चु–मेरे मन के; पूत्त तामरैयिन्–विकसित कमल पर; निलयम् उवन्ताळ्–वास चाव के साथ करनेवाली; निऱम् पूत्त–रंगीन; मञ्चु पूत्त–सुन्दरता-भरे; मळै अनैय–मेघ-सम; कुळलाळ्–केश वाली की; कण् पोल्–आँख के सदृश रहनेवाले; मणि कुवळाय्–सुन्दर कुवलय-कुसुम; नञ्चु पूत्ततु ऎन्न–विष फैलता हो, ऐसा; नकुवाय्–हँसी दिखाते हो; ऎन्नै नलिवायो–मुझे त्रास दोगे क्या। ३२

(नीलोत्पल के फूल से श्रीराम कहते हैं—) लाक्षारसरंजित उँगलियों, प्रवाल-जड़ित पद्मों के समान चरणों से भूषित; मेरे मन रूपी विकसित

कमल पर वास चाहनेवाली; और सुन्दर काले रंग के मेघ के समान केश वाली सीता की आँख के समान दृश्यमान नीलोत्पल के फूल ! तुम मुझ पर विष की-सी दृष्टि डालते हुए हँस रहे हो ! मुझे सताओगे क्या ? । ३२

ऍन्ऱु यावुयिर्क् किन्ऱव नॆडविऴ्, कॊन्ऱै याविप् पुऱत्तिवै कूऱियान्
पॊन्ऱु यादुम् पुहल्हिलै पोलुमाल्, वन्ऱ याविलि यॆन्न वरुन्दिनान् 33

ऍन्ऱु–ऐसा; अया उयिर्क्किन्ऱवन्–ठण्डी आहें भरनेवाले; आवि पुऱत्तु–सर के पास; एट्टु अविऴ् कॊन्ऱै–(दलों से पूर्ण) फूलों से युक्त अमलतास तरु; इवै–ये बातें; यान् कूऱि–मैं, कहकर; पॊन्ऱ–मर जाऊँगा, तब भी; यातुम्–कुछ भी; पुकलकिलै पोलुम्–नहीं कहोगे शायद; आल्–तो; वन्–कठोर; तयाविलि–निर्दय हो; ऍन्न–कहकर; वरुन्तिनान्–दुःखी हुए । ३३

इस तरह श्रीराम विलाप करते हुए ठण्डी आहें भरते रहे । फिर उन्होंने सर के पास रहे अमलतास के तरुओं को देखकर कहा कि विकसित पुष्पों से भरे हे अमलतास ! देखो । मैं इस तरह दुखड़ा रोते-रोते मर जाऊँगा । इस स्थिति में मुझे देखकर भी तुम कुछ आश्वासन के वचन नहीं कहते हो । तुम अवश्य कठोर और निर्मम हो । ३३

वार ऴित्तिळ मापिडि वायिडैक्, कार ऴिक्कलु ऴक्करुङ् गैम्मलै
नीर ऴिप्पदु नोक्किन निऩ्ऱनन्, पेर ऴिक्कुप् पिऱन्दविल् लायिनान् 34

पेर् अऴिक्कु–बड़ी दया का; पिऱन्त इल्–जन्मस्थान; आयिनान्–जो रहे; वार् अऴित्तु–बड़े प्रेम का पात्र; इळ मा पिटि वाय् इटै–छोटी आयु की बड़ी हथिनी के मुख में; कार् अऴि–काले भ्रमरों के; कलुऴ–तितर-बितर भागते; करुम् कै मलै–काले करि को; नीर् अऴिप्पतु–जल पिलाते हुए; नोक्कितन्–देखते हुए (श्रीराम) निऩ्ऱनन्–खड़े रहे । ३४

श्रीराम बड़ी दया के जन्मस्थान थे । उन्होंने एक दृश्य देखा । एक काला हाथी अपनी सूँड़ से जल लेकर अपने गहरे प्रेम का पात्र, हथिनी के मुख में डाल रहा था । तब काले भ्रमर चकित होकर उड़ रहे थे । श्रीराम ने यह दृश्य देखा तो वे स्तब्ध खड़े रह गये । ३४

आण्डव् वळ्ळलै यन्बॆनु मारणि, पूण्ड तम्बि पॊऴुदु कऴिन्ददाल्
ईण्डि रुम्बुन ऱोय्न्दुत् तिशैयॆन, नीण्ड वन्गऴ ऱाऴ्नॆडि योयॆन्ऱान् 35

आण्टु–तब; अन्पु ऍतुम्–प्रेम नाम का; आर् अणि पूण्ट–अपूर्व आभरण-धारी; तम्पि–अनुज (ने); अ वळ्ळलै–उन उदार प्रभु को; पॊऴुतु कऴिन्तटु आल्–(दिन का) समय बीत गया, इसलिए; नॆटियोय्–बढ़े हुए (या बड़े यशस्वी); ईण्टु–यहाँ; इरुम् पुतल् तोय्न्तु–इस बड़े जलाशय में स्नान करके; उन् इचै ऍन्त–आपकी कीर्ति के समान; नीण्टवन्–लम्बे (सर्वव्यापी); कऴल् ताऴ्–(श्रीमन्नारायण) के चरणों की पूजा करें; ऍन्ऱान्–कहा । ३५

तब प्रेम रूपी उत्तम आभरणधारी लक्ष्मण ने उदार प्रभु श्रीराम से विनय की कि दिन बीत गया। सन्ध्या आ गयी। इसलिए, हे लम्बे (श्रीशरीर के या) यश के धारक! यहाँ इस जलाशय में स्नान करें और आपके यश के समान सर्वत्र व्याप्त श्रीमन्नारायण की चरण-वन्दना करें। ३५

अरशु मव्वक्ळि निन्ऱरि देहियत्, तिरैशॅय् तीर्त्तमुञ् जॅय्दव मुण्मैयाल्
वरैशॅय् मामद वारण नाणुऱ, विरैशॅय् पूम्बुन लाडलै मेयिनान् 36

अरचुम्–राजा राम ने भी; अ वळि निन्ऱु–वहाँ से; अरितु एकि–सायास जाकर; अ तिरै चॅय् तीर्त्तमुम्–उस तरंगसंकुल सर के जल की; चॅय् तवम्–की हुई तपस्या; उण्मैयाल्–रही, इसलिए; वरै चॅय्–पर्वत-सम; मा मत वारणम्–बहुत मदस्रावी हाथी को भी; नाण् उऱ–लजाते हुए; विरै चॅय् पूम् पुनल्–सुबासपूर्ण पुष्पों से भरे जल में; आटलै–स्नान में; मेयिनान्–प्रवृत्त हुए। ३६

राजा राम भी वहाँ से सायास सर के पास गये। तरंग उठानेवाले उस सरोवर के जल का सुकृत था। इसलिए श्रीराम ने उसमें स्नान करना अपनाया। तब पर्वताकार और मदस्रावी गज भी उनको देखकर लजा गया। ऐसा उन्होंने स्नान किया। ३६

नीत्त नीरि नॅडियवन् मूळ्हलुम्, तीत्त कामत् तॅऴहदिर्त् तीयिनाल्
काय्त्ति रुम्बैक् करुमहक् कम्मियन्, तोय्त्त तण्बुन लॊत्तदत् तोयमे 37

नॅटियवन्–लम्बोतरे; नीत्तम् नीरिल्–उस बड़े प्रवाह के सर के जल में; मूळ्कलुम्–(श्रीराम ने) जब स्नान किया; तीत्त–तब उनके शरीर को ताप देनेवाले; कामम्–विरह की; तॅऴ कतिर् तीयिनाल्–जलती ज्वाला की अग्नि के कारण; अ तोयम्–वह जल; करुमकन् कम्मियन्–लोहार; इरुम्पै काय्त्तु–लोहे को तपाकर; तोय्त्त–(जिस जल में) डुबोया; तण् पुनल्–उस ठण्डे जल के; ऒत्ततु–समान बन गया (गरम हो गया)। ३७

जब लम्बे क़द के श्रीराम ने उस जल में स्नान किया, तब उनके शरीर को तपानेवाली विरहाग्नि ने उस जल पर अपना प्रभाव दिखाया। जब लुहार लोहा तपाकर ठण्डे जल में डालता है, तब वह जल गरम हो जाता है। वैसे ही उस सर का जल भी गरम हो गया। ३७

आडिन्ना नन्नमा यरुमऱैहळ् पाडिनान्
नीडुनीर् मुन्नैनू नॅरिमुऱैयि नेमिताळ्
शूडिनान् मुनिवरैत् तॊळ्दुपूज् जोलैवाय्
माडुतान् वेहिना नॅरिहदिर् वेहिनान् 38

अन्नमाय्–हंस का रूप लेकर; अरु मऱैकळ्–अपूर्व वेदों को; पाटिनान्–जिन्होंने गाया; मुन्नै नूल् नॅरि मुऱैयिन्–(उन श्रीराम ने) प्राचीन शास्त्रों की बतायी विधि के

अनुसार; नीट्टु नीर् आटितान्–विस्तृत जलाशय में स्नान करके; नेमि ताळ् चूटितान्–चक्रधर (विष्णु) देव के चरणों की; चूटितान्–वन्दना की; मुनिवरै तॊऴुतु–मुनियों की पूजा करके; पूम् चोलै वाय्–एक बगीचे में; माट्टुतान्–एक ओर; वैकितान्–ठहरे; ऎरि कतिर्–जलानेवाला सूर्य भी; वैकितान्–अस्त हुआ। ३८

श्रीराम विष्णु के अवतार थे। विष्णु ने एक बार हंस का अंशावतार लेकर ब्रह्मा को वेद गाकर सिखाये थे। उन्होंने पम्पा सर में प्राचीन शास्त्रोक्त रीति से स्नान करके श्री चक्रधर नारायण के चरणों की पूजा की। फिर वहाँ के मुनियों को नमस्कार करके वे एक बगीचे में गये। उसमें एक ओर ठहरे। तब किरणमाली भी अस्त हुआ। ३८

अन्दियाळ् वन्दुता ऩणुहवे यव्वयिऩ्
शन्दवार् कॊङ्गैया डऩिमैता ऩायहऩ्
शिन्दिया नॊन्दुतेय् पॊऴुदवण् शीदनीर्
इन्दुवा ऩुन्दुवा ऩॆरिहदि रायिऩाऩ् 39

अन्तियाळ्–सन्ध्यादेवी; वन्तु–आकर; अणुकवे–निकट पहुँची; अ वयिन्–तब; नायकन्–नायक; चन्त–सुन्दर; वार्–अँगियाबद्ध; कॊङ्कैयाळ्–स्तनों वाली सीताजी का; तनिमैतान्–अकेलापन; चिन्तिया–सोचकर; नॊन्तु–दुःख से; तेय् पॊऴुतु–जब विगलित हुए, तब; अवण्–वहाँ; चीत नीर्–(समुद्र के) शीतल जल को; वान् उन्तुवान्–आकाश में उछालनेवाला; इन्तु–चन्द्र; ऎरि कतिर्–तापक सूर्य(-सा); आयितान्–बन गया (श्रीराम के लिए।)। ३९

सन्ध्या देवी आ पहुँची। तब श्रीराम को सीतादेवी का स्मरण आया। नायक श्रीराम सुन्दर अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीताजी का निस्सहाय एकाकीपन स्मरण करके दुःखी हुए। दुःख से कृश होने लगे। तब चन्द्र उदित हुआ। वह शीतल समुद्र-जल को आकाश तक उछालने वाला है। पर श्रीराम के लिए वह जलानेवाले सूर्य के समान बहुत गरम लगा। ३९

पूवॊडुङ् गिऩविरवु पुळ्ळॊडुङ् गिऩपॊरुविल्
मावॊडुङ् गिऩमरऩु मिलैयॊडुङ् गिऩकिळिहळ्
नावॊडुङ् गिऩमयिल्ह णडमॊडुङ् गिऩकुयिल्हळ्
कूवॊडुङ् गिऩपिळिरु कुरलॊडुङ् गिऩकळिरु 40

पू ऒटुङ्कित–फूल बन्द हुए; विरवु–अनेक प्रकार के मिश्रित; पुळ्–पक्षी; ऒटुङ्कित–(जाकर) दुबक गये; पॊरुवु इल्–उपमाहीन; मा ऒटुङ्कित–प्राणी छिप गये; मरतुम् इलै ऒटुङ्कित–तरुओं के पत्ते भी संकुचित हो गए; किळिकळ्–शुकों की; ना–जिह्वाएँ; ऒटुङ्कित–बन्द हो गयीं; मयिल्कळ्–मोरों का; नटम्–नाच; ऒटुङ्कित–बन्द हुए; कुयिल्कळ्–कोयलों की; कू–कूकें; ऒटुङ्कित–

बन्द हुईं; कळिऱु–पुरुषगजों के; पिळिऱु कुरल्–चिंघाड़ने की ध्वनियाँ; ओट्टङ्कित–बन्द हो रहीं। ४०

रात का आगमन हो गया। इसलिए उस सर के फूल सब बन्द हो गये। विविध तरह के पक्षी अपने-अपने घोंसलों में जाकर दुबक गये। उपमाहीन अनेक जानवर जाकर अपने-अपने स्थानों में बन्द हो गये। बड़े पेड़ों के पत्ते बन्द हुए। शुकों की बोली, मोरों का नाच, कोयलों की कूकें, हाथियों की चिंघाड़ —सब बन्द हो रहीं। ४०

मण्डुयिऩ्ऱ ऩ्ऩिलैय मलैतुयिऩ्ऱ ऩमरुविल्
पण्डुयिऩ्ऱ ऩ्विरवु पऩितुयिऩ्ऱ ऩ्पहरुम्
विण्डुयिऩ्ऱ ऩ्हळ्दुम् विऴितुयिऩ्ऱ ऩ्पळुदिल्
कण्डुयिऩ्ऱ ऱिलऩ्ऩॆडिय कडरुयिऩ्ऱ ऱोर्हळिऱु 41

मण् तुयिऩ्ऱऩ–पृथ्वी के सब सो गये; निलैय मलै–अचल पर्वत; तुयिऩ्ऱऩ–सोये; मरु इल्–निर्मल; पण्–जलाशय; तुयिऩ्ऱऩ–सो गये; विरवु पऩि तुयिऩ्ऱऩ–व्याप्त हिम भी सो गया; पकरुम् विण्–(बड़ा) कहलानेवाला आकाश भी; तुयिऩ्ऱऩ–निःशब्द हुए; कळुतुम्–भूतगण ने भी; विऴि तुयिऩ्ऱऩ–आँखें मूंद लीं; नॆटिय कटल्–विशाल (क्षीर-)सागर पर; तुयिऩ्ऱ ओर् कळिऱु–निद्रा करनेवाले अप्रतिम हाथी, श्रीराम; पऴुतु इल्–निर्मल; कण् तुयिऩ्ऱिलऩ्–आँखें मूंदकर नहीं सोये। ४१

पृथ्वी, अचल पर्वत, निर्मल जलाशय, सर्वत्र व्याप्त हिम, गौरवान्वित आकाश —सभी निःशब्द हो गये। भूतों ने भी आँखें मूंद लीं। पर क्षीर-सागर पर निद्रा करने के आदी जो थे, गजश्रेष्ठ-तुल्य उन श्रीराम ने अपनी निर्मल आँखें नहीं मूँदीं। ४१

पॊङ्गिमुऱ् ऱियवुणर्वु पुणर्दलुम् पुहैयिऩॊडु
पङ्गमुऱ् ऱतैयविऩै परिवुऱुम् बडिमुडिविल्
कङ्गुलिऱ् ऱदुकमल मुहमॆडुत् तदुकडलिल्
वॆङ्गदिर्क् कडवुळॆऴ विमलऩ्ऱॆऩ् दुयरिऩॆऴ 42

मुऱ्ऱिय उणर्वु–पूर्णज्ञान; पॊङ्कि पुणर्तलुम्–प्राप्त होने पर; पुकैयिऩॊटु–धुएँ के साथ; पङ्कम् उऱ्ऱ अतैय–पंक मिल गया हो, ऐसा; विऩै–उसके कर्म; परिवु उऱुम्पटि–जैसे नष्ट होते हैं, वैसे; मुटिवु इल्–अनन्त रीति से, लम्बी रही; कङ्कुल्–रात; इऱ्ऱतु–समाप्त हुई; कटलिल्–समुद्र पर; वॆम् कतिर्–गरम किरणों के; कटवुळ् ऎऴ–(सूर्य-)देव उठे; विमलऩ्–विमल प्रभु को; वॆम् तुयरिऩ् ऎऴ–कठोर (विरह-)दुःख से मुक्त कराने के लिए; कमलम्–कमल; मुकम् ऎटुत्ततु–विकसित हुए। ४२

जैसे-तैसे अनन्त लगनेवाली वह रात ऐसे बीती, जैसे सम्पूर्ण ज्ञान के प्राप्त होने पर धुएँ और पंक के मिश्रण के समान रहनेवाला कर्म (पाप) मिट

जाता है। समुद्र से उष्णकिरण सूर्यदेव उगे। कमल भी विमल विष्णुदेव श्रीराम के दुःख के निवारणार्थ विकसित हुए। ४२

कालैये	कडिदुनॅडि	देहिऩार्	कडल्कविऩ्
शोलयॅय्	मलैतऴुवु	काऩ्ऩी	ऩॅऱितॊलैय
आलयॅय्	तुऴऩियह	ऩाडरार्	कलियमिऴ्दु
पोलवे	युरैशॅय्पुऩ्	मानैऩा	डुदल्पुरिज़र् 43

आलै एय् तुऴऩि–इक्षुशालाओं से निकलनेवाली ध्वनि से भरे; अकल् नाटर्–(और) विशाल (कोसल) देश के वे; आर् कलि अमिऴ्तु पोलवे–शब्दायमान सागर से उत्पन्न अमृत के ही समान; उरै चॅय्–बोलनेवाली; पुऩ मानै–वनमृगी (-सी सीताजी) को; नाट्टल् पुरिज़र्–खोजने में प्रवृत्त हो; कटल् कविऩुम्–समुद्रतुल्य; चोलै एय्–उपवनों से पूर्ण; मलै तऴुवुम्–पर्वतों से मिलित; काऩल् नीळ् नॅऱि–कंकड़ीले और लम्बे मार्ग; तॊलैय–तय करने के विचार से; कालैये–सवेरे ही; कटितु–सवेग; नॅटितु–बहुत दूर; एकिऩार्–गये। ४३

इक्षुशाला से उत्पन्न ध्वनि वाले विशाल कोसल देश के स्वामी दोनों क्षीरसागरोत्पन्न अमृत के समान बोलनेवाली वनमृगी-सी सीतादेवी को खोजने के हेतु सवेग जाने लगे। उन्हें समुद्र-सम विशाल उपवनों से भरे और पर्वत-मिलित कंकड़ीले मार्ग तय करने थे। इसलिए वे उदयकाल में ही बहुत जल्दी-जल्दी बहुत दूर चले गये। ४३

2. अनुमप् पडलम् (हनुमान पटल)

अॅय्तिऩार्	शवरिनॅडि	देयमाल्	वरैयॅळिदिऩ्
नॊय्दिऩे	ऱिऩदऩि	नोऩ्मैहूर्	कवियरशु
शॅय्वदोर्	हिलनिवर्ह	डॅव्वरा	मॅऩवॅरुवि
उय्दुना	मनविरॅवि	ऩोडिऩाऩ्	मलैमुऴैयिऩ् 44

अॅय्तिऩार्–(वैसे जो) गये; चवरि नॅट्टितु एय–शबरी से साफ़ निर्दिष्ट; माल् वरै अततिल्–बड़े पर्वत पर; अॅळितिऩ्–अनायास; नॊय्तिऩ्–शीघ्र; एऱिऩर्–चढ़े; नोऩ्मै कूर्–क्षमाशील; कवि अरचु–कपिराज (सुग्रीव); इवर्कळ्–ये; तॅव्वर् आम्–शत्रु हैं; अॅऩ वॅरुवि–ऐसा डरकर; चॅय्वतु ओर्किलऩ्–क्या करना, यह न जान कर; नाम् उय्तुम् अॅऩ–हम बच जायें, यह सोचकर; मलै मुऴैयितिल्–पर्वतगुफा में; विरैविऩ् ओटिऩाऩ्–शीघ्र भागा। ४४

ऐसे जो गये, वे दोनों शबरी द्वारा साफ़ निर्दिष्ट ऋष्यमूक पर्वत पर अनायास और शीघ्रता से चढ़ते चले। उस पर कपिराज सुग्रीव बैठा था। वह क्षमा के साथ उस पर्वत पर रहता था। उसने इन दोनों को देखा तो डर गया कि ये धनुर्धर वीर शत्रु ही हैं। अब क्या करना होगा

—यह न जानता हुआ वह 'हम बच जायँ' —इस विचार से पर्वत की गुफा की ओर भागने लगा। ४४

कालिन्मा मदलैयिवर् काण्मिन्नो करुवुडैय
वालियै वलित्रुवरवि नार्हडाम् वरिशिलैयर्
नीलमाल् वरैयनैयर् नीदियाय् निन्नैदियॆन्न
मूलमोर् हिलन्मरुहि योडिनान् मुळैयदनिन् 45

कालिन् मा मतलै–पवनदेव के श्रेष्ठ पुत्र; इवर् काण्मिन्–इनको देखो; वरि चिलैयर–सबन्ध धनुर्धर; नील माल् वरै अनैयर्–नीले, बड़े पर्वत से तुल्य हैं; करु उटैय–वैर रखनेवाले; वालि एवलिन्–वाली की प्रेरणा से; वरविनार्कळ् ताम्–आनेवाले हैं अवश्य; नीतियाय्–नीतिज्ञ; निनैति–सोचो; ऎन्न–कहकर; मूलम्–हेतु; ओर्किलन्–न जानकर; मरुकि–घबड़ाकर; मुळै अततिल्–उस गुफा के अन्दर; ओटिनान्–दौड़ा। ४५

तब उसने हनुमान से कहा कि पवनदेव के महान पुत्र! इनको निहारो। सबन्ध धनुर्धर, नील पर्वत-सम दृश्यमान —ये अवश्य वैरी वाली की प्रेरणा से ही (हमें तंग करने) आये हैं। नीतिज्ञ मारुति! तुम खूब सोचो! ऐसा कहकर उनके आगमन का हेतु न समझ सकने के कारण घबड़ाहट में पड़कर गुफा के अन्दर भाग गया। ४५

अव्विडत् तवर्मरुहि यञ्जिनॆञ् जळियमैदि
वॆव्विडत् तिन्नैमरुहु तेवर्ता नवर्वॆरुवत्
तव्विडत् तनियरुळुन् दाळ्शडैक् कडवुळॆन्न
इव्विडत् तिन्निदिरुमि नञ्जलॆन् ट्रिडैयुदवि 46

अ इटत्तु–वहाँ; अवर्–वे; मरुकि अञ्चि–घबड़ाते हुए डरकर; नॆञ्चु अळि अमैति–(जब) चित्ताक्रान्त रहे, तब; वॆम् विटत्तिनै–(सागर-मन्थन के समय प्रकट हुए) भयंकर विष को देखकर; मरुकु–जो घबड़ाए; तेवर् तानवर् वॆरुव–वे देव और दानव भयभीत हुए, तब; तव्विट–डर दूर करने; तनि अरुळुम्–जिन्होंने अपूर्व कृपा की; ताळ् चटै कटवुळ् ऎन्न–उन प्रलम्ब जटाधारी शिवदेव के समान; इ इटत्तु–यहीं; इनितु इरुमिन्–सुख से रहें; अञ्चल्–नहीं डरें; ऎन्ऱु–ऐसा; इटै उतवि–बीच में सहायता करके (कहकर)। ४६

उस पर्वत पर सुग्रीव आदि वानरवीर घबड़ाहट के साथ भयातुर हुए। तब सागर-मन्थन के अवसर पर भयंकर विष से भयभीत देवों व दानवों की सहायता में जिन्होंने उसको खाकर कृपा की, उन प्रलंब जटाधारी शिवजी के समान हनुमान उठा। उसने उनको आश्वासन प्रदान किया कि यहीं सुख से रहें। भय मत करें। ४६

अञ्जनैक् कॊरुशिरुव नञ्जनक् किरियनैय
मञ्जनैक् कुरुहियॊरु माणिनर् पडिवमॊडु
वॆञ्जिनत् तॊऴिलर्तव मॆय्यर्कैच् चिलैयरॆन
नॆञ्जयिर्त् तयन्मरैय निन्ऱुकर् पिनिनिनैयुम् 47

अञ्चनैक्कु ऑरु चिरुवन्–अंजना का अप्रतिम पुत्र हनुमान; ऑरु नल् माणि–एक श्रेष्ठ ब्रह्मचारी के; पटिवमॊटु–रूप में; अञ्चतम् किरि अनैय–अंजनगिरि-तुल्य; मञ्चनै–सुन्दर श्रीराम के; कुरुकि–पास आकर; अयल् मऱैय निन्ऱु–अलग अदृश्य खड़े होकर; वॆम् चिन तॊऴिलर्–भयंकर क्रोधी कर्मरत; तव मॆय्यर्–तपस्वी वेश के शरीर वाले; कै चिलैयर्–हाथ में धनु लिये हुए; ऍन–यह देखकर; नॆञ्चु अयिर्त्तु–मन में शंका करके; कऱ्पिनिन्–विद्वत्ता का आधार लेकर; निनैयुम्–विचार करने लगा। ४७

यह कहकर अंजना के अप्रतिम पुत्र ने एक उत्तम ब्रह्मचारी का वेश लिया। वह अंजनगिरि-तुल्य श्रीराम के पास आया, छिपा खड़ा रहा। वे क्रोध से कार्य करनेवाले लगते हैं। पर उनका तपस्वी का वेश है। और हाथ में धनु रखते हैं। यह देखकर हनुमान निश्चय नहीं कर सका कि ये कौन हैं। उसके मन में संशय पैदा हुआ। तब वह अपनी विद्वत्ता से प्राप्त ज्ञान के आधार पर सोचने लगा। ४७

देवरॊप् परुतलैव रामुदर् ऱेवरॆन्निन्
मूवर्मर् ऱिवरिरुवर् मूरिविऱ् कररिवरै
यावरॊप् पवरुलहिन् यादिवर्क् करियपॊरुळ्
केवलत् तिवर्निलैमै तेर्वदॆक् किऴमैकॊडु 48

ऑप्पु अरु–उपमाहीन; तेवर् तलैवर् आम्–देवों के प्रधान; मुतल् तेवर् ऍन्निन्–आदिदेव हैं तो; अवर् मूवर्–वे तीन हैं; इवर् इरुवर्–ये तो दो हैं; मूरि विल् करर्–बलवान धनु के धारक हैं; उलकिल्–संसार में; इवरै ऑप्पवर्–इनकी समानता करनेवाले; यारे–कौन हैं; इवर्क्कु–इनके लिए; अरिय–असाध्य; पॊरुळ् यातु–पदार्थ क्या है; केवलत्तु इवर् निलैमै–अपूर्व इनकी स्थिति; ऍ किऴमै कॊटु–किसके नाते से; तेर्वतु–जाना जायगा। ४८

ये अनुपम देवों के प्रधान त्रिदेव नहीं हो सकते। क्योंकि वे तीन हैं। ये तो दो ही हैं। इनके हाथ में कठोर धनु है। संसार में इनकी टक्कर का कौन मिल सकता है ? ये खोजते फिरें, ऐसी इनके लिए असाध्य वस्तु क्या है ? निपट अद्वितीय इनका समाचार किस नाते से जाना जायगा ? । ४८

शिन्दैयिर् चिऱिदुदुयर् शेर्वुऱत् तॆरुमरलिन्
नॊन्दयरत् तनरॆन्नु नोवुऱुञ् जिऱियरलर्

अन्दरत् तमरर्शिरु मानिडप् पडिवर्मयर्
शिन्दनैक् कुरियपॊरु डेडुदरू कुरुनिलैयर् 49

चिन्तैयिल्–मन में; चिरितु तुयर्–थोड़ी ग्लानि; चेर्वु उरु–उठी, इसलिए; तॆरुमरलिन्–उस गड़बड़ी में; नॊन्तु अयर्त्ततर्–पीड़ित होकर थके हैं; ऎन्निनुम्–तो भी; नोवु उरुम्–अभिभूत होनेवाले; चिरियर् अलर्–शक्तिहीन नहीं हैं; अन्तरत्तु अमरर्–आकाश के अमर; चिरु मानिट पटिवर्–छोटे मानवरूप में आये हैं; मयर्–मोहक; चिन्तनैक्कु उरिय–चिन्ता योग्य; पॊरुळ्–पदार्थ कोई; तेट्टुतरुकु उरु–खोजने में प्रवृत्त; निलैयर्–स्थिति वाले हैं। ४९

उनके मन में थोड़ी ग्लानि अवश्य हुई है। घबड़ाहट से ये अवश्य कुछ क्लांत हैं। तो भी बिल्कुल अभिभूत हो जायँ, ऐसी ओछी प्रकृति या शक्ति के भी नहीं हैं। इसलिए आकाशवासी अमर देव ही कम महत्त्व के मानवी रूप लेकर आये हैं। उनके मन को मोहनेवाली और चिन्ता के योग्य किसी वस्तु की खोज में लगे रहनेवाले से लगते हैं। ४९

दरुममुन् दहवुमिवै तनमॆनुन् दहैयरिवर्
करुममुम् पिरिदॊरुपॊरुळ् करुदियन् रदुकरुदिन्
अरुमरुन् दनैयदिडै यळिवुवन् दुळददनै
इरुमरुङ् गिनुनॆडिदु तुरुवुहिन् ररिवर्हळ् 50

इवर्–ये; तरुममुम् तकवुम् इवै–धर्म और शालीनता, इनको; तनम् ऎनुम्–धन माननेवाले; तकैयर्–स्वभाव के हैं; करुममुम्–मनोरथ(कार्य) भी; पिरितु ओर् पॊरुळ्–दूसरी वस्तु; करुति अन्रु–चाहकर नहीं; अतु करुतिन्–उसको सोचें, तो; इवर्कळ्–ये; अरु मरुन्तु अनैयतु–उत्तम देवामृत-सम; इटै अळिवु वन्तु उळतु–(कुछ) बीच में खो गया है; अतनै–उसको; इरु मरुङ्किनुम्–(दायें, बायें) दोनों ओर; नॆटितु–बहुत दूर तक; तुरुवुकिन्ऱतर्–(छानकर) खोजते हैं। ५०

ये धर्म और गौरव को धन माननेवाले लगते हैं। इनके मनोरथ का कार्य भी किसी अन्य वस्तु की चाह का नहीं लगता। देवामृत-सा कोई पदार्थ बीच में खो गया है। उसको वे दायें और बायें बहुत दूर तक खोजते आते हैं। ५०

कदमॆनुम् बॊरुण्मैयिलर् करुणैयिन् कडलनैयर्
इदमॆनुम् पॊरुळलदॊ रियल्बुणर्न् दिलरिवर्हळ्
शदमनज् जुरुनिलैयर् तरुमनज् जुरुशरिदर्
मदननज् जुरुवडिवर् मरुलियज् जुरुविरुलर् 51

कतम् ऎनुम् पॊरुण्मै इलर्–वैरी स्वभाव के नहीं हैं; करुणैयिन् कटल् अनैयर्–करुणा के सागर के समान हैं; इतम् ऎनुम् पॊरुळ् अलतु–हितार्थ से इतर; इवर्कळ्–ये; ओर् इयल्पु–एक गुण; उणर्न्तिलर्–नहीं जानते (रखते); चतमन् अञ्चुरु–शतमख भी डरे; निलैयर्–ऐसे शानदार; तरुमन् अञ्चुरु–धर्मदेवता भी डरें, ऐसे;

चरितर्–चरित्र वाले; मतऩ्ऩ्–मन्मथ; अञ्चुरु–डरे, ऐसा; वटिवर्–सौंदर्यवान; मऱलि–यम भी; अञ्चुरु–डरे, ऐसा; विऱलर्–पराक्रमी। ५१

ये वैर रखनेवाले लोगों का-सा क्रोध नहीं रखते। करुणा के समुद्र के समान हैं। परहित को छोड़कर कोई दूसरा अर्थ चाहनेवाले स्वभाव के नहीं लगते। इन्द्र भी इनका पौरुष देखकर डरेगा। धर्मदेवता भी इनका चरित्र देखकर डरेगा। मदन इनका रूप देखकर डरेगा। यम भी डरे ऐसी वीरता के हैं ये। ५१

ऍऩ्बऩ पलवु मॆण्णि यिरुवरै यॆय्द नोक्कि
अऩ्बिऩ ऩुरुहु हिऩ्ऱ वुळ्ळत्त ऩार्वत् तोरै
मुऩ्बिरिन् दऩैयर् तम्मै मुऩ्ऩिऩा ऩॆऩ्ऩ निऩ्ऱाऩ्
तऩ्बॆरुङ् गुणत्ताऱ् ऱऩ्ऩैत् ताऩल दॊप्पि लादाऩ् 52

तऩ् पॆरुम् कुणत्ताल्–अपने महान गुणों के कारण; तऩ्ऩै ताऩ् अलतु–आपको आपको छोड़; ऒप्पु इलाताऩ्–उपमा नहीं रखनेवाले; ऍऩ्पऩ पलवुम्–ऐसे अनेक; ऍण्णि–विचार करके; इरुवरै–दोनों के; ऍय्त नोक्कि–समीप जाने का निश्चय करके; अऩ्पिऩोटु–प्रेम के साथ; उरुकुकिऩ्ऱ–पसीजनेवाले; उळ्ळत्तऩ्–मन का; आर्वत्तोरै–प्रियों से; मुऩ् पिरिन्तु–पहले अलग होकर; अऩैयर् तम्मै–उनसे; मुऩ्ऩिऩाऩ्–मिले; ऍऩ्ऩ–जैसे; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। ५२

अपने उन्नत गुणों के कारण अपने आप को छोड़ कोई दूसरी उपमा न रखनेवाले हनुमान ने इस तरह अनेक प्रकार से सोचकर उनके पास जाना चाहा। प्रेमार्त मन के साथ विछोह के बाद पुनः प्रियों से मिलनेवाले के समान उनके सामने खड़ा रहा। ५२

तऩ्गऩ्ऱु कण्ड वऩ्ऩ तऩ्मैय तरुहट् पेळ्वाय्
मिऩ्गऩ्ऱु मॆयिऱ्ऱुक् कोण्मा वेङ्गैयॆऩ् ऱिऩैय वेयुम्
पिऩ्शॆऩ्ऱु कादल् कूरप् पेळ्हणित् तिरङ्गु हिऩ्ऱ
ऍऩ्गऩ्ऱु हिऩ्ऱ वॆण्णिऱ् पऱ्पल विवरै यम्मा 53

तरुकण्–निर्भयता; पेळ् वाय्–(और) खुला (बड़ा) मुख; मिऩ् कऩ्ऱुम्–बिजली को विह्वल करनेवाले; ऍयिऱ्ऱु–दाँत, इनसे युक्त; कोळ् मा–सिंह; वेङ्कै–व्याघ्र; ऍऩ्ऱु इऩैयवेयुम्–कथित ये भी; तऩ् कऩ्ऱु कण्टु अऩ्ऩ–अपने वत्सों को देखा हो, ऐसे; तऩ्मैय–(वात्सल्य-)गुण के होकर; पिऩ् चॆऩ्ऱु–उनके पीछे जाकर; कातल् कूर–प्रेमाधिक्य के साथ; पेळ्कणित्तु–आँखें मूँदकर; इरङ्कुकिऩ्ऱ–अनुताप दिखाते हैं; इवरै–इन्हें; पल्पल ऍण्णि–अनेक प्रकार से मानकर; ऍऩ् कऩ्ऱुकिऩ्ऱ–क्यों अनुताप करते हैं; अम्मा–हाय री माँ। ५३

(हनुमान ने और भी देखा।) बिजली को भी मात देनेवाले रूप से प्रकाशमय दाँतों वाले अपने मुख खोले सिंह और व्याघ्र आदि सहस्र

जानवर भी उनको अपने वत्सों को जैसे वात्सल्य के साथ देखते और आँखें मूँदकर रंज प्रकट करते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक प्रकार से सोचकर ये क्यों ऐसे रंज दिखाते हैं ? । ५३

मयिल्मुदऱ् पऱवै यॅल्ला मणिनिऱत् तिवर्दम् मेत्ति
वॅयिलुऱऱ् किरङ्गि मीदाय् विरिशिऱॅप् पन्दर् नीङ्गा
इयल्वहुत् तॅय्दु हिन्ऱ विन्मुहिऱ् कणङ्ग ळेङ्गुम्
पयिल्वुऱत् तिवलै शिन्दिप् पयप्पयत् ताळुम् पाङ्गर् 54

मयिल् मुतल्–मयूर आदि; पऱवै ॲल्लाम्–खग सब; मणि निऱत्तु–मनोरम रंगों के; इवर् तम् मेत्ति–इनके श्रीशरीर पर; वॅयिल् उऱऱ्कु–धूप पड़ेगी, इसकी; इरङ्कि–चिन्ता करके; मीतु आय्–इनके ऊपर जाकर; विरि चिऱै–खुले पंखों का; पन्तर् नीङ्का–वितान न छोड़ें, इस तरह; इयल् वकुत्तु–सुन्दर ढंग से रचना करके; ॲय्तुकिन्ऱ–इनके साथ जाते हैं; इत्त मुकिल् कणङ्कळ्–श्रेष्ठ मेघों के समूह; ॲङ्कुम्–सब स्थानों पर; पयिल्वु उऱ–(इनसे) लगे रहकर; तिवलै चिन्ति–बूँदें गिराते हुए; पय पय–धीरे-धीरे; पाङ्कर–इनके समीप; ताळुम्–नीचे-नीचे जाते हैं। ५४

इन सुन्दरवर्ण वीरों के शरीर पर धूप लगती देखकर मयूर आदि पक्षी दुःखी हैं। वे इनके ऊपर अपने पंख फैलाकर वितान-सा बनाये उनके साथ-साथ इस रीति से चलते हैं कि वे उस वितान के नीचे से अलग न हो जायँ। श्रेष्ठ मेघवृन्द भी, ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ-वहाँ छोटी बूँदें गिराते हुए उनके साथ-साथ धीरे-धीरे जाते हैं। वे नीचे-नीचे ही जाते हैं। ५४

❀ कायॅरि कत्तलुङ् गऱ्कळ् कळ्ळुडै मलरे पोलत्
तूयशॅङ् गमल पादन् दोय्दॊऱुङ् गुळैन्दु तोन्ऱुम्
पोयित तिशैह डोऱु मरन्ॊडु पुल्लु मॅल्लाम्
शाय्वुऱुन् दॊळुव पोलिङ् गिवर्हळो दरुम मावार् 55

काय् ॲरि कत्तलुम्–जलती आग के समान तपनेवाले; कऱ्कळ्–कंकड़ आदि; तूय–पवित्र; चॅम् कमल पातम्–लाल चरण-कमलों के; तोय् तॊऱुम्–लगते-लगते; कळ् उटै मलरे पोल–मधु-भरे पुष्पों के समान; कुळैन्तु तोन्ऱुम्–मृदुल बन जाते हैं; पोयित तिचैकळ् तोऱुम्–ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, उन सभी दिशाओं में; मरन् ॲॊटु पुल्लुम् ॲल्लाम्–तरुओं के साथ घास आदि सभी; इङ्कु तॊळुव पोल्–इस ओर प्रणाम करते जैसे; चाय्वुऱुम्–नत रहते हैं; तरुमम् आवार्–ये धर्ममूर्ति हैं; इवर्कळो–ये, क्या। ५५

(और भी विस्मयकारी बातों को देखता है हनुमान।) कंकड़, जो जलती अग्नि के समान जलाते हैं, इनके पवित्र और लाल कमल-से चरण लगते हैं तो शहद-भरे फूलों के समान कोमल हो जाते हैं। वे जिन-जिन दिशाओं में जाते हैं, वहाँ रहनेवाले तरु, घास आदि पादप इन्हीं की ओर झुक जाते हैं, मानो वे इनको प्रणाम कर रहे हों। ५५

❀ तुऩ्बित्तैत् तॊडक्कु मायत् तॊल्वित्तै तुडैत्तु नीक्कित्
तॆऩ्बुलत् तऩ्ऱि मीळा नॆऱियुय्क्कुन् देव रोताम्
ऎऩ्बॆलाक् कुरुहु हिऩ्ऱ दिवर्हिऩ्ऱ दळविल् कादल्
अऩ्बिऩुक् कवदि यिल्लै यडैवॆऩ्गॊ लऱिद ऱेऱ्ऱेऩ् 56

तुऩ्पित्तै–कष्टों को; तॊटक्कुम्–श्रृंखला में देनेवाले; माय तॊल् वित्तै–माया-जनित कर्म को; तुटैत्तु नीक्कि–पोंछ मिटाकर; तॆऩ् पुलत्तु अऩ्ऱि–दक्षिण में (यम) लोक न भेजकर; मीळा नॆऱि–आवर्त्तनहीन, मोक्षमार्ग में; उय्क्कुम्–पहुँचानेवाले; तेवरो ताम्–देव हैं क्या; ऎऩ्पु–हड्डियाँ; ऎऩक्कु–मेरी; उरुकुकिऩ्ऱ–पानी हो जाती हैं; अळविल् कातल्–अपार स्नेह; इवर्किऩ्ऱतु–उठता है; अऩ्पिऩुक्कु–प्रेम का; अवति इल्लै–ठिकाना नहीं रहता; अटैवु ऎऩ् कॊल्–उपलब्धि क्या होगी; अऱितल् तेऱ्ऱेऩ्–जान नहीं पाता। ५६

(हनुमान अनुभव करता है कि उसके तन-मन में एक अगाध दैवी प्रेम व्याप्त हो रहा है।) आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक दुःखों को श्रृंखला में देनेवाले हैं पूर्वकृत कर्म। उनका नाश करके, दक्षिण के यमलोक में जाने से बचाते हुए मोक्षलोक में, जहाँ से लौटना नहीं होता, पहुँचना हो तो आदि परमात्मा देवों की कृपा से ही वह साध्य है। (हनुमान पूछता है कि) क्या ये ही वे देव हैं ? वह कहता है कि मेरी हड्डियाँ जलप्राय हो रही हैं। अपार प्रेम उमड़ आता है। इनके प्रति उठनेवाले प्रेम का ठिकाना नहीं रहता। इसके फलस्वरूप क्या ही सौभाग्य जागने वाला है ? वह जान नहीं पाता। ५६

❀ इव्वऴि यॆण्णि याण्डव् विरुवरु मॆय्द लोडुम्
शॆव्वऴि युळ्ळत् ताऩुन् दॆरिवुऱ वॆदिर्शॆऩ् ऱॆय्दिक्
कव्वॆयिऩ् ऱाह नुङ्गळ् वरवॆऩक् करुणै योऩुम्
ऎव्वऴि नीङ्गि योय्नी यारॆऩ वियम्ब लुऱ्ऱाऩ् 57

चॆम् वऴि उळ्ळत्ताऩुम्–नेकमार्गगामी मन के हनुमान (के) भी; इ वऴि ऎण्णि–इस तरह सोचकर; आण्टु–वहाँ; अ इरुवरुम्–उन दोनों के; ऎय्तलोटुम्–आने पर; ऎतिर् चॆऩ्ऱु–सामने जाकर; तॆरिवु उऱ ऎय्ति–प्रकट रूप से पास पहुँचकर; नुङ्कळ् वरवु–आपका आगमन; कव्वै इऩ्ऱु–अमंगलरहित (शुभ); आक–हो; ऎऩ–कहने पर; करुणैयोऩुम्–कृपालु (के) भी; नी–तुम; ऎ वऴि–कहाँ से; नीङ्कियोय्–आनेवाले हो; यार्–कौन; ऎऩ–पूछने पर; इयम्पल् उऱ्ऱाऩ्–(हनुमान) बोलने लगा। ५७

हनुमान नेकमन था। वह इस तरह सोचता रहा। तब श्रीराम और लक्ष्मण उसके पास आ गये। हनुमान उनके पास प्रकट होकर उनके सामने जा खड़ा हुआ और अभिनन्दन-वचन बोला कि आपका आगमन अशुभहीन (शुभ) हो। कृपालु श्रीराम ने पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो और कौन हो ? हनुमान इसका उत्तर यों देने लगा। ५७

❀ मञ्जॅन्नत् तिरण्ड कोल मेत्तिय महळिर्क् कॅल्लाम्
नञ्जॅन्नत् तहैय वाहि नळिरिरुम् बनिक्कुत् तेम्बाक्
कञ्जमौत् तलर्न्द शॅय्य कण्णयान् काऱ्ऱिन् वेन्दर्
कञ्जनै वयिऱ्ऱिल् वन्दे नाममु मनुम नॅन्बेन् 58

मञ्चु अॅन्न–मेघ-सम; तिरण्ट कोल–अधिक सुन्दर; मेत्तिय–शरीर वाले; मकळिर्क्कु अॅल्लाम्–सभी स्त्रियों के लिए (जो आप पर दृष्टि डालती हैं); नञ्चु अॅन्न–विष के-से; तकैय आकि–स्वभाव की बनकर; नळिर् इरुम् पनिक्कु–शीतल और कड़े हिम के सामने भी; तेम्पा–न मुरझानेवाले; कञ्चम् ऑत्तु–कमल के समान; अलर्न्त–विकसित; चॅय्य कण्ण–लाल आँखों वाले; यान्–मैं; काऱ्ऱिन्–वेन्तर्कु–वायुदेव का; अञ्चनै वयिऱ्ऱिल्–अंजना के गर्भ में; वन्तेन्–उत्पन्न हुआ (पुत्र) हूँ; नाममुम्—नाम भी; अनुमन्–हनुमान; अॅन्पेन्–कहा जाता हूँ। ५८

बहुत ही सुन्दर मेघवर्ण ! ऐसी आँखों वाले, जो सभी दर्शक स्त्रियों के लिए विष के समान हैं और शीतल ओस के पड़ने पर भी न मुरझाने वाले कमल के समान विकसित और लाल हैं ! मैं वायुदेव का अंजना के गर्भ से आया पुत्र हूँ। मेरा नाम हनुमान है। ५८

❀ इम्मलै यिरुन्दु वाऴु मॅरिहदिर्प् परिदिच् चॅल्वन्
शॅम्मलुक् केवल् शॅय्वेन् ऱेवनुम् वरवु नोक्कि
विम्मलुऱ् ऱन्नैया नेव विन्नविय वन्दे नॅन्ऱान्
अॅम्मलेक् कुलमुन् दाऴ विशैशुमन् दॅऴुन्द तोळान् 59

इचै चुमन्तु–कीर्ति धारण कर; अॅ मलै कुलमुम्–किसी भी पर्वतकुल को; ताऴ–नीचा दिखाते हुए; अॅऴुन्त तोळान्–उन्नत उठे कंधों वाले (हनुमान) ने; इ मलै–इस पर्वत पर; इरुन्तु वाऴुम्–रहकर वास करनेवाले; अॅरि कतिर्—गरम किरणों के; परिति–सूर्य के; चॅल्वन्–प्यारे पुत्र; चॅम्मलुक्कु–प्रभु (सुग्रीव) का; एवल् चॅय्वेन्–आज्ञाकारी हूँ; तेव–भगवान; नुम् वरवु नोक्कि–आपका आना देखकर; अन्नैयान्–उनके; विम्मल् उऱ्ऱु–घबड़ाकर; एव–प्रेरित करने पर; विन्नविय–पूछने के लिए; वन्तेन्–आया; अॅन्ऱान्–कहा। ५९

किसी भी पर्वतकुल को मात देनेवाली रीति से उन्नत और कीर्तिभारवाही कन्धों के हनुमान ने आगे कहा कि इस पर्वत पर गरम किरणमाली सूर्यदेव का पुत्र वास कर रहे हैं। उनका मैं सेवक हूँ और उनकी आज्ञाएँ मान रहा हूँ। आपका आगमन देखकर वे घबड़ा गये। उनसे प्रेरित होकर मैं आपसे आपके सम्बन्ध में पूछने आया हूँ। ५९

❀ माऱ्ऱमः(ह्) दुरैत्त लोडुम् वरिशिलैक् कुरिशिन् मैन्दन्
तेऱ्ऱमुऱ् ऱिवनि नूङ्गुच् चॅव्वियो रिन्मै तेऱि
आऱ्ऱलु निऱैवुङ् गल्वि यमैदियु मऱिवु मॅन्नुम्
वेऱ्ऱुमै यिवनो डिल्लै यामॅन विळम्ब लुऱ्ऱान् 60

माऱ्ऱम्–उत्तर; अ.ः.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; वरि चिलै–सबन्ध धनु के; कुरिचिल् मैन्तन्–चक्रवर्ती-कुमार; तेऱ्ऱम् उऱ्ऱु–आश्वस्त होकर; इवतिन् ऊङ्कु–इससे बढ़कर; चेव्वियोर् इन्मै–श्रेष्ठ का अभाव; तेऱ्ऱि–निश्चित रूप से जानकर; आऱ्ऱलुम्–पराक्रम; निऱैवुम्–गुणपूर्णता; कल्वि अमैतियुम्–विद्या से प्राप्त विनय; अऱिवुम्–और ज्ञान; ॲन्नुम्–आदि ये गुण; इवन्नोटु वेऱुमै इल्लै आम्–इससे परे नहीं हैं; ॲन्न–सोचकर; विळम्पल् उऱ्ऱान्–(लक्ष्मण से) बोलने लगे। ६०

हनुमान ने यह उत्तर दिया तो सबन्ध धनुर्धर चक्रवर्तीतनय श्रीराम को विश्वास हो गया। इससे बढ़कर उत्तम कोई नहीं होगा। यह निश्चय हुआ। पराक्रम, गुणपूर्णता, विद्या से प्राप्त विनय और ज्ञान —ये विशेषताएँ इससे पृथक् नहीं होंगी। यह धारणा बना लेकर श्रीराम लक्ष्मण से यों बोले। ६०

❀ इल्लाद वुलहत् तॅङ्गु मिङ्गिव निशैहळ् कूरक्
कल्लाद कलैयुम् वेदक् कडलुमे यॅन्नुङ् गाट्चि
शॊल्लाले तोन्ऱिऱ्ऱ् ऱन्ऱे यार्कॊलिच् चॊल्लिन् शॆल्वन्
विल्लार्तो ळिळैय वीर विरिञ्जनो विडैवल् लानो 61

इङ्कु–इस पृथ्वी में; इचैकळ् कूर–कीर्ति बढ़े, ऐसा; इवन् कल्लात–इसने जो नहीं सीखे; कलैयुम्–शास्त्र और; वेत कटलुम्–वेदों का सागर; उलकत्तु ॲङ्कुमे–संसार में कहीं; इल्लात–नहीं होंगे; ॲन्नुम्–इसका; काट्चि–प्रत्यक्ष प्रमाण; चॊल्लाले तोन्ऱिऱ्ऱु–इसके वचन से मिल जाता है; अन्ऱे–न; इ–यह; चॊल्लिन् चॆल्वन्–वाग्देवी-पुत्र (वचनसमर्थ); यार् कॊल्–कौन होगा; विल् आर् तोळ्–धनुधारी कन्धों के; इळैय वीर–छोटे वीर; विरिञ्चनो–विरंचि है; विटै वल्लानो–या ऋषभवाहन शिव हैं। ६१

धनुधारी भुजा वाले छोटे वीर! इस संसार में ऐसे शास्त्र या वेद-सागर नहीं हैं, जो इसने नहीं सीखे हैं। इससे उसकी कीर्ति विवर्धित रहती है। उसके वचन इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। है न यह बात? यह सरस्वतीपुत्र (भाषण-चतुर) कौन होगा? ब्रह्मदेव होगा या ऋषभ-वाहन समर्थ शिवजी ही होगा? । ६१

माणियाम् बडिव मन्ऱु मऱ्ऱिवन् वडिव मैन्द
आणियिव् वुलहुक् कॆल्ला मॅन्नला माऱ्ऱऱ् केऱ्ऱ
शेणुयर् पॆरुमै तन्नैच् चिक्कऱत् तॆळिन्देन् पिन्नरक्
काणुदि मॆय्म्मै यॆन्ऱु तम्बिक्कुक् कळऱिक् कण्णन् 62

मैन्त–तात; इवन् वटिवम्–इसका सच्चा रूप; माणियाम् पटिवम् अन्ऱु–ब्रह्मचारी का रूप नहीं है; मऱ्ऱु–फिर; इ–इस; उलकुक्कु ॲल्लाम्–सारे संसार के लिए; आणि ॲन्नलाम्–धुर कह सकते हैं; आऱ्ऱऱ्कु एऱ्ऱ–इसके पराक्रम के

अनुरूप; चेण् उयर्–बहुत ही उत्कृष्ट; पॅरुमै तन्नै–गौरव को; चिक्कु अर्–संशयहीन रीति से; तॅळिन्तेन्–जान गया; पिन्तर्–बाद; मॅय्म्मै–सच्चाई; काणुति–देखोगे; ॲन्ऱु–ऐसा; तम्पिक्कु–भाई को; कण्णन्–सबके नेत्रस्वरूप श्रीराम; कळ्ऱि–कहकर। ६२

तात ! तुम जो ब्रह्मचारी का इसका वेश देख रहे हो, वह उसका सच्चा रूप नहीं है। फिर वह इस सारे संसार का धुर है ! इसका पराक्रम और उसके अनुरूप उसकी श्रेष्ठता —इनको मैं साफ़ पहचान रहा हूँ। तुम भी बाद उसको देखोगे। यह लक्ष्मण से कहकर श्रीराम—। ६२

❀ ॲव्वळि यिरुन्दान् शॊन्न कविक्कुलत् तरशन् याङ्गळ्
अव्वळि यवनैक् काणु मरुत्तियि नणुह वन्देम्
इव्वळि निन्नै युऱ्ऱु वॆमक्कुनिन् निन्शॊ लन्न
शॆव्वळि युळ्ळत् तानैक् काट्टुदि तॆरिय वॆन्ऱान् 63

चॊन्न–(तुमसे) उक्त; कवि कुलत्तु अरचन्–कपिकुलाधिपति; ॲ वळि इरुन्तान्–किस स्थान पर रहते हैं; याङ्कळ्–हम; अ वळि–वहाँ (जाकर); अवनै काणुम्–उनको देखेंगे (उनसे मिलेंगे); अरुत्तियिन्–चाह के साथ; अणुक वन्तेम्–मिलने आये हैं; इ वळि–यहाँ; निन्नै उऱ्ऱु–तुमसे मिलकर; ॲमक्कु–हमें; निन् इन् चॊल् अन्न–तुम्हारे ही मधुर वचन के समान; चॆम् वळि उळ्ळत्तानै–सीधे मन के उनको; तॆरिय–परिचित कराते हुए; काट्टुति–दरसाओ; ॲन्ऱान्–कहा। ६३

हनुमान से बोले। उक्त वानरराज कहाँ हैं ? हम उन्हीं को उधर जाकर मिलने की उत्कंठा लेकर आये हैं। अब तुम हमें मिल गये हो। तुम्हारे मधुर वचन के समान ही मधुर-स्वभाव उनसे हमें मिला दो और परिचय करा दो। उन्हें दरसाओ। ६३

मादिरप् पॊरुप्पो डॊङ्गि वरम्बिला वुलहिन् मऱ्ऱिप्
पूदरप् पुयत्तु वीरर् नुम्मॊक्कुम् बुनिदर् यारे
आदरित् तवनैक् काण्डऱ् कणुहिनि ऱॆन्नि नन्नान्
तीदवित् तरिदिर् चॆय्द शॆय्दवच् चॆल्व नन्ऱे 64

मातिर पॊरुप्पोटु–दिशाओं को घेरकर रहनेवाले (चक्रवाल गिरि) के साथ; ओङ्कि–समान रूप से उन्नत; वरम्पु इला–निस्सीम; उलकिन्–लोक में; इ–यहाँ के; पूतर पुयत्तु–भूधर-सम कन्धों के; वीरर्–वीर; नुम् ऒक्कुम्–आपके समान; पुनितर्–पवित्र पुरुष; यारे–और कौन हैं; अवनै काण्टऱ्कु–उनको देखने के लिए; आतरित्तु–चाव के साथ; अणुकितिर् ॲन्निन्–पधारे हों तो; अन्नान्–वे; तीतु अवित्तु–पाप मिटाकर; अरितिल् चॆय्त–कष्ट के साथ कृत; चॆय्तव चॆल्वम्–कर्तव्य तपस्या का धन; नन्ऱे–बड़ा अच्छा है ही। ६४

(हनुमान श्रीराम और लक्ष्मण से शिष्टता के साथ बोला।) दिशाओं

को घेरते हुए चक्रवाल पर्वत जो है, उनके साथ-साथ और उतने ही उन्नत बढ़े हुए भूधर-तुल्य कन्धों वाले वीर ! आपके समान पवित्र पुरुष दूसरे कौन होंगे ? यह बात है कि आप स्वयं उनसे मिलने की चाह लेकर पधारे हैं, तो पाप शान्त करते हुए उन्होंने जो कर्तव्य तपस्या की है वह भाग्य-धन निश्चय ही श्रेष्ठ है ! । ६४

इरवितन्　पुदल्वन्　रन्नै　यिन्दिरन्　पुदल्व　नॆन्नुम्
परिविलन्　शीऱप्　पोन्दु　पऱुवरऱ्　कॊरु　वनाहि
अरुवियङ्　गुन्ऱि　नॆम्मो　डिरुन्दन　नवन्बाऱ्　चॆल्वम्
वरुवदो　रमैविन्　वन्दीर्　वरैयिनुम्　वळर्न्द　तोळीर् 65

वरैयितुम् वळर्न्त तोळीर्–पर्वतों से भी उन्नत कन्धों वाले; इरवि तन् पुतल्वन् तन्नै–रवि-कुमार पर; इन्तिरन् पुतल्वन् ऍन्नुम्–इन्द्र के कुमार; परिवु इलन्–दयाहीन; चीऱ–(वालि) के क्रोध करने पर; पऱुवरऱ्कु ऑरुवन् आकि–दुःखसंतप्त निस्सहाय एकाकी बनकर; अरुवि अम् कुन्ऱिल्–नदीसहित (ऋष्यमूक) पर्वत पर; पोन्तु–आकर; ऍम्मोटु–हमारे साथ; इरुन्ततन्–रहते हैं; अवन् पाल्–उनके पास; चॆल्वम् वरुवतु–संपत्ति आती हो; ओर् अमैविन्–ऐसी एक रीति में; वन्तीर्–आप पधारे हैं। ६५

भूधरों से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले ! रविसूनु सुग्रीव पर इन्द्र-पुत्र निर्दय वालि ने क्रोध दिखाया। सुग्रीव दुःखाक्रांत हुए। निस्सहाय और एकाकी बनकर वे सरिताओं से भूषित इस पर्वत पर आये और हमारे साथ (छिपे) रह रहे हैं। अब उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो जाय, ऐसा एक सन्दर्भ बनाते हुए आप पधारे हैं (या आप ही सम्पत्ति के समान पधारे हैं) । ६५

ऑडुङ्गलि　लुलहम्　यावु　मुवन्दन　वुदवि　वेळ्वि
तॊडङ्गित　मऱ्ऱु　मुऱ्ऱत्　तॊल्लऱन्　दुणिवर्　शान्ऱोर्
कॊडुङ्गुलप्　पहैञ　नाहिक्　कॊल्लिय　वन्द　कूऱ्ऱै
नडुङ्गिनर्क्　कबय　नल्हु　मदनिनु　नल्ल　दुण्डो 66

चान्ऱोर्–श्रेष्ठ लोग; ऑटुङ्कल् इल्–अक्षय; उलकम् यावुम्–सारे लोक में; उवन्तन–लोग जो चाहते हैं; उतवि–उनको वह देकर; तॊटङ्कित वेळ्वि–आरब्ध यज्ञ आदि; मऱ्ऱुम्–अन्य कार्य; मुऱ्ऱ–पूरा करने के लिए; तॊल् अऱम्–प्राचीन धर्म पर; तुणिवर्–दृढ़ रहेंगे; कुल कॊटुम्–जीवकुल के भयंकर; पकैञन् आकि–शत्रु बनकर; कॊल्लिय वन्त–मारने आये; कूऱ्ऱै–यम से; नटुङ्कितर्क्कु–भयभीत हुए लोगों को; अपयम्–अभय-प्रदान; नल्कुम् अततितुम्–करने के उस काम से; नल्लतु उण्टो–अधिक श्रेष्ठ हैं क्या। ६६

श्रेष्ठ लोग प्राचीन धर्मों का पालन इसलिए करते हैं कि वे अक्षय संसार में सबको उनके माँगे पदार्थ दान दें और अपने आरब्ध यज्ञादि शास्त्रविहित

कर्म पूरा करें। पर जीवकुल का शत्रु बनकर आनेवाले यम से भयभीत लोगों को अभयदान देने से बड़ा धर्म कोई हो सकता है क्या ? । ६६

ॲम्मैये कात्ति रॅन्र् लॅळिदरो विमैप्पि लादोर्
तम्मैये मुदलिट् टान्र् शराशरञ् जमैत्त वाऱ्ऱल्
मुम्मैया मुलहुङ् गाक्कु मुदल्वर्नीर् मुरुहच् चॅव्वि
उम्मैये पुहल्बुक् केमुक् किदिन्वरु मुरुदि युण्डो 67

इमैप्पु इलातोर्—जो पलक नहीं गिराते; तम्मैये मुतल् इट्टु—उन देवों से लेकर; आन्र्—श्रेष्ठ; चराचरम् चमैत्त आऱ्ऱल्—जड़जंगमजग सृष्ट करने के सामर्थ्य के साथ; मुम्मैयाल् उलकम् काक्कुल्—त्रिलोकपालन करनेवाले; मुतल्वर् नीर्—परम देव आप ही हैं; ॲम्मैये—हम अकिंचन को; कात्तिर् ॲन्ऱल्—रक्षित करें, यह कहना; ॲळितु—छोटी बात है; मुरुक चॅव्वि उम्मैये—दिव्य सौंदर्ययुक्त आपके ही; पुकल् पुक्केमुक्कु—शरण आये हमें; इतिन्—इस (आपकी कृपा) से बढ़कर; वरुम् उरुति उण्टो—मिलनेवाला हित अन्य हो सकता है क्या। ६७

हे वीर ! आप अपलक देवों से लेकर चराचरमय सारे जग की सृष्टि करने के साथ-साथ त्रिलोक के पालन करने का भी सामर्थ्य रखनेवाले परम देव हैं। ऐसे आपसे, हमारी रक्षा की प्रार्थना करना बहुत ही अल्प विषय है। दिव्य सौन्दर्यमय आपकी शरण आये हैं —इससे बढ़कर और किस लाभ को अधिक हितकारी मानें ? । ६७

❀ यारॅन विळम्बु हेना नॅङ्गुलत् तिरॅवर् कुम्मै
वीरर्नीर् पणित्ति रॅन्ऱान् मॅय्म्मैयिन् वेलि पोल्वान्
वार्हळ लिळैय वीरन् मरबुळि वाय्मै यावुम्
शोर्विल निलैमै यॅल्लान् दॅरिवुरच् चॊल्ल लुऱ्ऱान् 68

मॅय्म्मैयिन् वेलि पोल्वान्—सत्य(-खेत) के घेरे के समान (सत्यसेतु) हनुमान ने; नान्—दास मैं; ॲम् कुलत्तु इऱैवर्क्कु—हमारे कुल के नायक को; उम्मै—आपको; यार् ॲन विळम्पुकेन्—कौन कहकर परिचय दूं; वीरर्—वीर; नीर पणित्तिर्—आप आज्ञा दीजिए; ॲन्ऱान्—पूछा; वार् कळल्—(स्वर्ण की) ढली पायल से भूषित; इळैय वीरन्—लघु वीर लक्ष्मण ने; वाय्मै यावुम्—सभी सच्ची घटनाएँ; चोर्विलन्—बिना कोई अंश छोड़े; मरपुळि—यथाक्रम; निलैमै ॲल्लाम्—सारी स्थिति; तॅरिवु उर—साफ़ करते हुए; चोल्लल् उऱ्ऱान्—कहना प्रारम्भ किया। ६८

हनुमान ने, जो सत्य के खेत के घेरे के समान (सत्यसेतु) था, आगे बहुत ही चातुर्य के साथ पूछा कि हे वीर ! अपने कुल के नायक सुग्रीव के पास मैं आपका कौन सा परिचय दूं ? आपको कौन बतलाऊँ ? आप ही आज्ञा दें। तब स्वर्ण की ढली पायल से अलंकृत छोटे वीर लक्ष्मण सारी सच्ची घटनाएँ बिना छूट के साफ़ समझाते हुए बताने लगे। ६८

❀ शूरियऩ् मरबिऱ् ऱोऩ्ऱिच् चुडर्नॆडु नेमि याण्ड
आरिय ऩमरर्क् काहि यशुरर् याबि युण्ड
वीरियऩ् वेळ्वि मुऱ्ऱि विण्णुल होडु माण्ड
कारियऱ् करुणै यऩ्ऩ कण्णहऩ् कविहै मऩ्ऩऩ् 69

चूरियऩ् मरपिल्–सूर्य के वंश में; तोऩ्ऱि–प्रकट होकर; चुटर् नॆटु नेमि–उज्ज्वल, बड़ा (आज्ञा-)चक्र; आण्ट–जिन्होंने चलाया; आरियऩ्–वे उत्तम राजा; अमरर्क्कु आकि–सुरों के लिए; अचुरर्–(शंबर आदि) असुरों के; आवि उण्ट–प्राण खाने (हरने) वाले; वीरियऩ्–प्रतापी; वेळ्वि मुऱ्ऱि–यज्ञ सम्पन्न करके; विण् उलकोटुम्–आकाश का भूमि के साथ; आण्ट–जिन्होंने शासन किया; कार् इयल्–मेघ का स्वभाव; करुणै अऩ्ऩ–(जो कृपा है) उसके समान कृपालु; कण् अकल्–विशाल; कविकै मऩ्ऩऩ्–छत्रधारी। ६६

सूर्यवंशोत्पन्न; उज्ज्वल और विशाल आज्ञाचक्र चलानेवाले; सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम; देवों के हितार्थ शंबरासुर आदि असुरों के मारक प्रतापी; अनेक यज्ञ सुसम्पन्न करके जिन्होंने आकाश के साथ भूमि पर शासन किया; मेघ के समान करुणा का स्वभाव रखनेवाले और विशाल छत्र (राज्य)-धारी; । ६९

[इसके बाद टी०के०सी के संकलन में निम्नलिखित पद पाया जाता है। यद्यपि प्रस्तुत संकलन में उसको क्षेपक माना गया है, तो भी चूंकि टी०के०सी इसे प्रामाणिक मानते हैं, इसलिए हम मूल पद और भावार्थ दे रहे हैं।]

❀ पुयऱ्ऱु मतत्तिण् कोट्टुप् पुहर्मलैक् किऱैयै यूर्न्दु
मयऱ्ऱु मवुणर् यारु मडिदर वरिविऱ् कॊण्ड
इयऱ्ऱु पुलमैच् चॆङ्गोऩ् मऩुमुदल् यारु मीव्वात्
तयरदऩ् कऩह माडत् तडमदि लयोत्ति वेन्दऩ् (69 अ)

मेघ के समान मद बहानेवाले, कठोर दाँतों से युक्त और मुख पर लाल बिन्दियों के साथ दृश्यमान गजराज पर चढ़कर जिन्होंने धनु के सहारे युद्ध किया और सारे असुरों को मरवाया; जो सहज मेधावी, नेक दण्डधर और मनु से लेकर किसी भी राजा से अनुपमेय (अधिक) सुशासक थे, दशरथ नाम के वे स्वर्णमहलों से भरी, विशाल प्राचीरों-सहित अयोध्यानगरी के राजा थे। ६९ (अ)

❀ अऩ्ऩवऩ् शिऱुव ऩामिव् वाण्डहै यऩ्ऩै येवत्
तऩ्ऩुडै युरिमैच् चॆल्वन् दम्बिक्कुत् तहवि नल्हि
ऩऩ्ऩॆडुङ् गाऩञ् जेर्न्दा ऩाममु मिराम ऩॆऩ्बाऩ्
इऩ्ऩॆडुञ् जिलैव लाऩुक् केवल्शॆय् यडियऩ् याऩ् 70

अऩ्ऩवऩ् चिऱुवऩ् आम्–उनका पुत्र; इ आण् तकै–ये पुरुषश्रेष्ठ; अऩ्ऩै एव–माता की आज्ञा से; तऩ् उटै उरिमै चॆल्वम्–अपने स्वत्व का राज्यधन; तम्पिक्कु–

अपने छोटे भाई को; तकविन्‌ नल्‌कि–उदारता के साथ देकर; नल्‌ नॅट्टम्‌ कातम्‌–बहुत ही बड़े जंगल में; चेर्‌न्तात्‌–आ गये; नाममुम्‌ इरामन्‌ ॲन्‌पान्‌–नाम के भी श्रीराम हैं; इ–इन; नॅट्टम्‌ चिलै–बड़े धनु में; वलात्तुक्कु–समर्थ श्रीराम की; एवल्‌ चॅय्‌–सेवा करनेवाला; अटियन्‌–दास; यान्‌–मैं हूँ। ७०

ये पुरुषश्रेष्ठ उनके पुत्र हैं। माता की आज्ञा मानकर ये अपने स्वत्व का राज्य आदि धन अपने छोटे भाई के हाथ उदारता के साथ सौंप कर इस अति विपुल कानन में पधारे हैं। इनका नाम भी सुनो— श्रीराम है। इन लम्बे और धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम की सेवा करनेवाला किंकर हूँ मैं। ७०

❀ ॲन्‌ड्रवन्‌ ट्रोर्‌ड्र मादि यिरावण निळ्ळैत्त मायप्‌
पुन्‌ड्रॉळि लिरुदि याहप्‌ पुहुन्‌दुळ पॉरुळ्ह ळॅल्लाम्‌
ऑन्‌ड्रुमाण्‌ डॉळिवु ड्राम लुणर्‌त्तिन नुणर्‌त्तक्‌ केट्टु
निन्‌ड्रवक्‌ कालिन्‌ मैन्‌द नॅडिदुवन्‌ दडियिर्‌ ड्राळ्न्‌दान्‌ 71

ॲन्‌ड्रु–ऐसा; अवन्‌ तोट्रम्‌ आति–उनके अवतार से लेकर; इरावणन्‌ इऴैत्त–रावण-कृत; माय पुन्‌ तॉळिल्‌–वंचनापूर्ण नीच काम; इरुति आक–तक; पुकुन्तु उळ–घटित; पॉरुळ्कळ्‌ ॲल्लाम्‌–सारी घटनाएँ; ऑन्ड्रुम्‌–(कुछ) एक भी; ऑळिवु उड्रामल्‌–न छोड़कर; आण्टु–तब; उणर्‌त्तितन्‌–जतलायीं; उणर्‌त्त केट्टु–बतायी गयी बातें सुनकर; निन्‌ड्र–उनके सामने स्थित; अ कालिन्‌ मैन्‌तन्‌–वह पवनकुमार; नॅटितु उवन्‌तु–बहुत प्रसन्न होकर; अटियिल्‌–उनके चरणों पर; ताळ्न्तान्‌–झुका। ७१

लक्ष्मण ने ऐसा श्रीराम के अवतार से लेकर रावण-कृत वंचक नीच कर्म तक की सारी घटनाएँ विना किसी अन्तर के कह सुनायीं। वह सुनकर वायुकुमार बहुत प्रसन्नता के साथ श्रीराम के श्रीचरणों पर झुका। ७१

❀ ताळ्‌दलुन्‌ दहाद शॅय्‌द दॅन्‌नैनी दरुम मन्‌ड्राल्‌
केळ्‌विनूल्‌ मरैव लाळा वॅन्‌ड्रन नॅन्‌नक्‌ केट्ट
पाळियन्‌ दडन्‌दोळ्‌ वॅन्‌रि मारुदि पदुमच्‌ चॅङ्‌गण्‌
आळिया यडिय नेनु मरिहुलत्‌ तॊरुव नॅन्‌ड्रान्‌ 72

ताळ्‌तलुम्‌–झुकने पर; केळ्‌विनूल्‌ मरै–श्रौत और स्मार्त वेदों के; वलाळा–विद्वान; नी–तुमने; तकाततु चॅय्‌ततु–अनुचित किया; ॲन्नै–वह क्यों; तरुमम्‌ अन्‌ड्रु–धर्मसम्मत नहीं है; ॲन्‌ड्रतन्‌–श्रीराम ने कहा; ॲन्‌न–कहना; केट्ट–सुनकर; पाळि–स्थूल; अम्‌–सुन्दर; तटम्‌ तोळ्‌–विशाल कन्धों के; वॅन्‌रि–विजयी; मारुति–मारुति ने; पतुमम्‌ चॅम्‌ कण्‌ आळियाय्‌–लाल कमल-सी आँखों के चक्रधारी; अटियतेनुम्‌–दास मैं भी; अरि कुलत्तु–कपिकुल का; ऑरुवन्‌–एक हूँ; ॲन्‌ड्रान्‌–कहा। ७२

उसके प्रणाम करने पर श्रीराम ने पूछा कि हे! यह क्या कर रहे हो?

श्रवण द्वारा वेद और शास्त्रों में दक्षताप्राप्त विप्र ! यह अनुचित कार्य किया, वह क्यों ? यह धर्मसम्मत नहीं है। यह सुनकर स्थूल, सुन्दर, विशाल और विजयी भुजाओं वाले हनुमान ने निवेदन किया कि पद्मपत्र-अरुणाक्ष ! चक्रधारी ! दास मैं भी उसी कपिकुल का एक हूँ। ७२

❀ मिऩ्ऩुरुक् कॊण्ड विल्लोर् वियप्पुऱ वेद नऩ्ऩूल्
पिऩ्ऩुरुक् कॊण्ड वॆऩ्ऩुम् पॆरुमैयाम् बॊरुळुम् नाणप्
पॊऩ्ऩुरुक् कॊण्ड मेरु पुयत्तिऱ्कु मुवमै पोदात्
तऩ्ऩुरुक् कॊण्डु निऩ्ऱाऩ् ऱरुमत्तिऩ् ऱऩिमै तीर्प्पाऩ् 73

तरुमत्तिऩ् तऩिमै–धर्म का एकाकीपन (धर्म की निस्सहायता); तीर्प्पाऩ्–दूर करनेवाला; मिऩ् उरु कॊण्ट–विद्युतस्वरूप; विल्लोर्–धनुर्धरों को; वियप्पु उऱ–विस्मय में डालते हुए; वेतम् नल् नूल–वेद आदि शास्त्रों ने; पिऩ् उरु कॊण्टतु ऎऩ्ऩुम्–बाद यह रूप लिया हो, ऐसा; पेरुमै आम् पॊरुळुम्–गौरव नामक तत्त्व भी; नाण–लजा जाय, ऐसा; पॊऩ् उरु कॊण्ट–स्वर्णरूप; मेरु–मेरु पर्वत भी; पुयत्तिऱ्कु–(हनुमान की) भुजा की; उवमै पोता–उपमा न बन सके, ऐसा; तऩ् उरु कॊण्टु–अपना रूप (विश्वरूप) लेकर; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। ७३

यह कहकर धर्म की निस्सहायता दूर करने के लिए धर्मसहायक के रूप में अवतरित हनुमान अपना निजी (बड़ा भारी) रूप लेकर उनके सामने खड़ा हुआ। तब विद्युतस्वरूप धनु के धारक श्रीराम और लक्ष्मण अपार विस्मय में पड़ गये। वेद आदि शास्त्रों ने एक नया रूप लिया हो, ऐसा; गौरव का तत्त्व भी उनकी गुरुता को देखकर लजा जाय, ऐसा; स्वर्णमय मेरुपर्वत भी उनकी भुजा की उपमा न बन सके, ऐसा वह हनुमान दृश्यमान रहा। ७३

कण्डिल नुलह मूऩ्ऱुङ् गालिऩाऱ् कडन्दु कॊण्ड
पुण्डरी हक्क णाऴिप् पुरवलऩ् पॊलऩ्गॊऴ् शोदिक्
कुण्डल वदऩ मॆऩ्ऱाऱ् कूऱलाऩ् दहैमैत् तॊऩ्ऱो
पण्डैनूऱ् कदिरोऩ् शॊल्लप् पडित्तऩऩ् पडिव मम्मा 74

उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों को; कालिऩाल्–अपने श्रीचरणों से; कटन्तु कॊण्ट–नापकर (जिन्होंने) तीर्ण किया; पुण्टरीक कण्–वे पुण्डरीकाक्ष; आऴि–चक्रधर; पुरवलऩ्–जगन्नाथ; पॊलऩ् कॊऴ् चोति–स्वर्णमय उज्ज्वल; कुण्टल–कुण्डलों से भूषित; वततम्–(हनुमान का) आनन; कण्टिलऩ् ऎऩ्ऱाल्–नहीं देख पाये तो; पण्टै नूल्–अति प्राचीन शास्त्र (व्याकरण आदि); कतिरोऩ् चॊल्ल–सूर्य के सिखाने पर; पटित्तऩऩ्–जिन्होंने अध्ययन किये थे; पटिवम्–उनका आकार; कूऱल् आम् तकैमैत्तु ऒऩ्ऱो–वर्णन-योग्य एक विषय है क्या। ७४

तब अपने श्रीचरणों से जिन्होंने त्रिलोक को तीर्ण किया था, वे पुंडरीकाक्ष चक्रधर प्रभु स्वर्णमयकुण्डल-भूषित हनुमान का मुख देख नहीं

सके तो उस हनुमान का रूप वर्ण्य एक विषय हो सकता है क्या, जिसने सूर्य से शिक्षा लेकर प्राचीन व्याकरणादि शास्त्रों का अध्ययन किया था ? । ७४

❀ ताट्पडाक् कमल मन्न तडङ्गणान् ऱम्बिक् कम्मा
कोट्पडा तिन्ऱ नीक्किक् किळर्पडा दाहि यॆन्ऱुम्
नाट्पडा मऱैह ळानु नवैपडा ञानत् तालुम्
कोट्पडाप् पदमै यॆय कुरक्कुरुक् कॊण्ड दॆन्ऱान् 75

ताळ् पटा–नाल पर जो न उगा हो; कमलम् अन्त–उस कमल के समान; तटम् कणान्–विशाल आँखों वाले; तम्पिक्कु–अपने छोटे भाई से; ऐय–तात; कोळ् पटा नितृऱ–अधोस्थितियाँ; नीक्कि–छोड़कर; किळर् पटातु आकि–अमन्द न पड़कर; ऍन्ऱुम्–सदा; नाळ् पटा–कालातीत; मऱैकळालुम्–वेदों द्वारा; नवै पटा–(और) निर्दोष; ञानत्तालुम्–ज्ञान द्वारा; कोळ् पटा–अग्राह्य; पतमे–तत्त्व ने ही; कुरक्कु उरु–वानर का रूप; कॊण्टतु–लिया है; ऍन्ऱान्–कहा; अम्मा–मैया री । ७५

श्रीराम ऐसे कमल के दल के समान विशाल आँखों वाले थे, जो मामूली नाल पर नहीं उगा था (जो दिव्य था)। उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा कि भैया! यह देखो। यह मामूली वानर का रूप नहीं। यह उस सनातन तत्त्व का वानर-रूप है, जो नीची स्थितियों और गतियों से परे है; जो सदा प्रकाशमय है; जो कालातीत है; और जो वेदों और निर्दोष ज्ञान द्वारा भी अग्राह्य है ! आहा मैया ! कितना अद्भुत है ! । ७५

❀ नल्लन निमित्तम् बॆऱ्ऱे नम्बियैप् पॆऱ्ऱेम् नम्बाल्
इल्लैये तुन्ब मान दिन्बमु मॆय्दिऱ् ऱामाल्
विल्लिना यिन्नैयन् बोलाङ् गविकुलक् कुरिशिल् वीरन्
चॊल्लिना लेवल् शॆय्वा नवनिलै शॊल्लऱ् पाऱ्ऱो 76

विल्लिताय्–धनुर्धर; नल्लन–अच्छे; निमित्तम्–शकुन; पॆऱ्ऱेम्–पाये (हमने); नम्पियै पॆऱ्ऱेम्–(उसी से) पुरुषनायक यह मिला है; नम्पाल्–(अब) हमारे पास; तुन्पम् आततु–संकट; इल्लैये–नहीं रहे; इन्पमुम्–सुख भी; ऍय्तिऱ्ऱु आम्–मिल गये; इन्नैयन्–ऐसा (वीर); कवि कुल कुरिचिल्–वानरकुल-पति; वीरन्–(और) वीर (सुग्रीव) की; चॊल्लिताल्–आज्ञा के वचन के अनुसार; एवल् चॆय्वान् पोल् आम्–कैंकर्य करनेवाला लगता है तो; अवन् निलै–उसकी स्थिति; चॊल्लल् पाऱ्ऱो–(श्रेष्ठता) बतायी जा सकती है क्या । ७६

श्रीराम ने आगे कहा— धनुधारी लक्ष्मण ! हमारे शुभ शकुन हो गये। तभी पुरुषनायक यह प्राप्त हुआ है। अब हमारे पास कोई संकट नहीं रहा। सुख ही सुख आ गया। ऐसा यह वीर कपिकुल के

राजा का आज्ञाकारी दास है —यह सुनते हैं। तब तो वह राजा कैसा होगा ? उसकी श्रेष्ठता बतायी जा सकेगी क्या ? । ७६

❀ अॅन्ऱह मुवन्दु कोल मुहमलर्न्दि दिनिदि निन्ऱ
कुन्ऱुऱऴ् तोळि ताऩै नोक्किय कुरक्कुच् चीयम्
शॅन्ऱवन् ऱन्ऩै यिन्ऩे कॊणर्हिन्ऱेन् शिऱिदु पोऴ्दु
वॅन्ऱियि रिरुत्ति रॅन्ऩा विडैपॅऱ्ऱु विरैविऩ् पोऩान् 77

अॅन्ऱु–ऐसा कहकर; अकम् उवन्तु–मन से मुदित होकर; कोलम् मुकम् मलर्न्तु–सुन्दर मुख पर सन्तोष प्रकट करते हुए; इतितिन् निन्ऱ–प्रसन्न खड़े रहे; कुन्ऱु उऱऴ्–पर्वत-सम; तोळितानै–कन्धों वाले को; नोक्किय–देखकर; कुरक्कु चीयम्–वानरसिंह; चॅन्ऱु–जाकर; इन्ऩे–अभी; अवन् तन्ऩै–उनको; कॊणर्किन्ऱेन्–लाता हूँ; वॅन्ऱियिर्–विजयी वीर; चिऱितु पोऴ्तु–थोड़ी देर; इरुत्तिर्–ठहरिए; अॅन्ऩा–कहकर; विटै पॅऱ्ऱु–विदा लेकर; विरैविल् पोनान्–शीघ्र गया । ७७

ऐसा श्रीराम ने प्रफुल्ल-चित्त होकर कहा। उनका मुख भी सन्तोष के कारण प्रकाशमय हो रहा। बहुत ही प्रसन्नता के साथ अपने सामने स्थित पर्वत-सम भुजा वाले श्रीराम को वानरसिंह हनुमान ने देखकर निवेदन किया कि विजयी वीर ! मैं अभी जाकर उन्हें बुला लाता हूँ। थोड़ी देर ठहरे रहें। हनुमान ने यह कहकर उनसे आज्ञा ली। फिर वह बहुत शीघ्र चला । ७७

3. नट्पुप् पडलम् (मैत्री पटल)

पोऩमन् दरमणिप् पुयनॅडुम् बुहऴिऩान्
आऩदन् ऩरिहुलत् तरशन्मा डणुहिऩान्
यानुमुन् कुलमुमिव् वुलहुमुय्न् दनमॅऩा
मानवन् गुणमॅला निनैयुमा मदियिऩान् 78

पोन–जो गये; मन्तरम्–मंदरगिरि-सम; मणि पुयम्–सुन्दर भुजा वाला; नॅटुम् पुकऴिनान्–बड़े यश वाला; मानवन्–मानव श्रीराम के; कुणम् अॅलाम्–सर्व कल्याणगुणगणों के; निनैयुम्–स्मरणकारी; मा मतियिनान् आन–बड़ा बुद्धिमान जो था; यानुम्–मैं भी; उन् कुलमुम्–तुम्हारा कुल और; इ उलकुम्–यह लोक; उय्न्तनम्–तर गये; अॅन्ऩा–कहते हुए; तन्–(हनुमान) अपने; अरि कुलत्तु अरचन् माटु–वानरकुल के राजा के पास; अणुकिनान्–पहुँचा । ७८

हनुमान मन्दर पर्वत-सम सुन्दर भुजाओं के और बहुत बड़ी कीर्ति के स्वामी सम्मान्य श्रीराम के सब दिव्य और कल्याणगुणों का स्मरण करते हुए चला। कपिकुल-राज सुग्रीव के पास यह कहते हुए पहुँचा कि मैं तर गया; आप तर गये और आपके कुल का भी उद्धार हो गया । ७८

मेलवन् तिरुमहर् कुरैचॆय्दान् विरैचॆय्दार्
वालियॆन् ऱळविला वलियिना नुयिर्तॆरक्
कालऩ्वन् दनऩिडर् कडलहडन् दनमॆना
आलमुण् डवनिनिन् ऱरुनडम् बुरिहुवान् 79

आलम् उण्टवतिन्–हलाहल (विष-) पायी के समान; निन्ऱु–स्थित होकर; अरु नटम् पुरिवान्–अतिशय नृत्य करनेवाला; विरै चॆय्–सुबासदायी; तार्–माला-धारी; वालि–वाली; ऍन्ऱु–नाम के; अळवु इला–अपार; वलियितान्–बली के; उयिर् तॆर–प्राणों को तोड़ने; कालन् वन्ततन्–यम आ गया; इटर् कटल्–संकटसागर; कटन्ततॆम्–तारण कर लिया; ऍना–यह; मेलवन्–ऊपर के (सूर्य) देव के; तिरुमकर्कु–सुपुत्र से; उरै चॆय्तान्–बोला। ७९

हनुमान हलाहलविषपायी शिवदेव के समान नृत्य करते हुए बोला कि सुगन्ध छिटकानेवाली माला के धारक और अपार बली वाली के प्राण हरने के लिए यम आ गये। हम भी दुःख-सागर पार कर गये! हनुमान ने आकाशचारी सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से ये बातें कहीं। ७९

मण्णुळार् विण्णुळार् माऱुळार् वेऱुळार्
ऍण्णुळार् दिचैयुळा रियलुळा रिचैयुळार्
कण्णुळा रायिनार् पहैयुळार् कळिनॆडुम्
पुण्णुळा राऱुयिर्क् कमिळ्दमे पोलुळार् 80

मण् उळार्–भूलोकवासी; विण् उळार्–व्योमवासी; माऱु उळार्–इतर (पाताल) लोकवासी; वेऱु उळार्–अन्य लोग; तिचै उळार्–दिशाओं के वासी; ऍण् उळार्–स्मरण करनेवालों के लिए; इयल् उळार्–बुद्धि-रूप जो रहते हैं; इचै उळार्–कीर्तिस्वरूप जो रहते हैं; कण् उळार्–नेत्रस्वरूप जो रहते हैं; आयितार्–वे बने रहते हैं; पकै उळार् जिनके शत्रु हैं; कळि नॆटुम् पुण् उळार्–और जिनके (शत्रु द्वारा) प्राप्त बड़े गहरे घाव हैं; आर् उयिर्क्कु–उन जीवों के लिए; अमिळ्तमे पोल्–अमृत के ही समान; उळार्–रहनेवाले (वे वीर हैं।)। ८०

हनुमान ने श्रीराम का और भी गुणगान किया। वे वीर पृथ्वी में, व्योम में, इनसे अलग नागलोक में, इतर लोकों में या किसी भी दिशा में रहनेवालों में अपना स्मरण करनेवाले भक्तजनों के लिए बुद्धि, कीर्ति और नेत्रों के समान सहायता करनेवाले हैं। उनमें जिनके शत्रु हैं और जिन्हें शत्रु के कारण बहुत गहरे व्रण (पीड़ा और दुःख) हो गये हैं, उनके लिए देवामृत के समान (तापहारी) हैं। ८०

चूळिमाल् यानैयार् तोळुहळ् ऱयरवन्
पाळिया रुलहॆला मोरुवळिप् पडरवाळ्
आळियान् मैन्दर्पे ररिविना रळहिनार्
उळिया लिनिदुनक् करचुदन् दुदविनार् 81

चूऴि–मुखपट्ट-सहित; माल् यानैयार्–बड़े गजों के स्वामी राजाओं से; तॊऴ कऴल्–नमस्कृत पायल-चरण; तयरतन्–दशरथ; पाऴि आर् उलकु अॅलाम्–बड़े-बड़े सभी लोकों को; ऑरुवऴि पटर–अपने शासनाधीन कर चलाते (पालते) हुए; वाऴ्–जो रहे; आऴियान्–उन चक्रवर्ती के; मैन्तर्–पुत्र हैं; पेर् अऴकित्तार्–बड़े ही सुन्दर; अऱिवित्तार्–और मेधावी; ऊऴियाल्–विधिवत; उनक्कु–आपको; इनितु अरचु तन्तु–सुख से राज्य प्रदान कर; उतवित्तार्–उपकार करनेवाले हैं। ८१

(हनुमान श्रीराम का चरित्र और परिचय यों देता है—) वे चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र हैं, जिनके पायल-चरणों पर मुखपट्ट से अलंकृत बड़े गजों के स्वामी राजा लोग विनत होते थे और जो सभी विश्वों को अपने एकछत्र शासन के अधीन करके चलाते रहे थे। वे बड़े ही सुन्दर हैं और मेधावी भी। वे ही विधिवत आपको राज्य प्रदान करके उपकार करनेवाले हैं। ८१

नीदियार् करुणैयिन् नॅऱियिनार् नॅऱिवयिन्
पेदिया निलैमैया रॅवरिनुम् पॅरुमैयार्
पोदिया दळविला वुणर्विनार् पुहऴिनार्
कादियार् शेय्दरुङ् गडवुळ्वॅम् बडैयिनार् 82

नीतियार्–(और) न्यायी; करुणैयिन् नॅऱियिनार्–करुणा के मार्ग पर चलनेवाले; नॅऱि वयिन्–न्याय-मार्ग से; पेतिया निलैमैयार्–न हटने के स्वभाव वाले; ॲवरिनुम्–किसी से भी; पॅरुमैयार्–अधिक सम्मान्य; पोतियातु–विना पर-बोधन के ही; अळवु इला–अपार; उणर्विनार्–प्रतिभाशाली; पुकऴिनार्–कीर्तिमान; कातियार् चेय्–गाधिपुत्र; तरुम्–(द्वारा) दिये गये; कटवुळ्–दिव्य; वॅम् पटैयिनार्–प्रतापी अस्त्रों वाले। ८२

(और भी—) वे न्यायी हैं। करुणावलम्बी हैं। न्यायमार्ग से न हटनेवाले किसी से भी ये अधिक गौरववान हैं। विना किसी के बोधन से ही वे प्रतिभावान अपार ज्ञानी रहते हैं। बड़े कीर्तिमान और गाधिपुत्र कौशिकजी के द्वारा प्रदत्त दिव्य और प्रतापी अस्त्रों वाले हैं। ८२

वेलिहऱ् चिनवुता डहैविऴिन् दुरुळविऱ्
कोलियक् कॊडुमैयाळ् पुदल्वनैक् कॊन्ऱुदन्
कालियऱ् पॊडियिना नॅडियहऱ् पडिवमाम्
आलिहैक् कुरियपे रुरुवळित् तरुळिनान् 83

वेल् इकल्–त्रिशूल लेकर युद्ध करनेवाली; चिनवु ताटकै–क्रोधी ताड़का; विऴिन्तु उरुळ–मरकर गिर पड़े, ऐसा; विल् कोलि–धनु प्रयोग करके; अ कॊटुमैयाळ्–उस अत्याचारिणी के; पुतल्वनै कॊन्ऱु–पुत्र (सुबाहु) को मारकर; तन् काल् इयल्–अपने श्रीचरणों पर लगी; पॊटियिनाल्–धूली से; नॅटिय कल्–बड़े प्रस्तर के; पटिवम् आम्–रूप में रही; आलिकैक्कु–अहल्या को; उरिय–उनका अपना; पेर् उरु–मान्य रूप; अळित्तु–देकर; अरुळिनान्–कृपा की। ८३

उन्होंने त्रिशूल लेकर लड़नेवाली ताड़का को अपने धनु को झुकाकर (अस्त्र चलाकर) मारा; उस अत्याचारिणी के पुत्र सुबाहु को मारा। और अपने चरणों पर लगी धूल के पवित्र प्रताप से उन्होंने (श्रीराम ने) बड़े पत्थर के रूप में पड़ी जो रहीं, उन अहल्या को उनका अपना रूप दिलाकर उपकार किया था। ८३

नल्लुरुप् पमैयुनम् बियरिन्मुन् नवनयन्
दॅल्लुरुप् परियपे रॅरिशुडर्क् कडवुडन्
पल्लिरुत् तवन्वलिक् कमैतियम् बहमॅनुम्
विल्लिरुत् तरुळिनान् मिदिलैपुक् कणॅयुनाळ् 84

नल् उरुप्पु अमैयुम्–शुभ अंग-लक्षणों के बने; नम्पियरिन्–नायकों में; मुन्नवन्–ज्येष्ठ श्रीराम; मितिलै पुक्कु–मिथिला में प्रवेश कर; अणॅयुम् नाळ्–जब गये तब; अॅल् उरुप्पु–प्रकाश की किरणों के; अरिय–अपूर्व; पेर्–बड़े; अॅरि चुटर् कटवुळ् तन्–गरम किरणमाली सूर्यदेव के; पल् इरुत्तवन्–दाँत जिन्होंने तोड़े थे; वलिक्कु अमै–उन शिवजी की शक्ति के अनुरूप बने; तियम्पकम् अॅनुम्–त्र्यंबक नाम के; विल् नयन्तु–धनु को प्यार के साथ उठाकर; इरुत्तु अरुळिनान्–तोड़कर कृपा की। ८४

दोनों लक्षणपूर्ण अंगों के सुन्दर रूपधर हैं। उनमें ज्येष्ठ श्रीराम ने मिथिला में जाकर रहते समय, गरम किरणमाली सूर्यदेव के दाँतों के भंजक शिवजी के धनुष को तपाक से उठाया और भग्न करके उपकार किया। (दक्ष-यज्ञ के अवसर पर शिवजी ने सूर्य के दाँत तोड़े थे।)। ८४

उळैवयप् पुरवियान् नुदववुर् रोरुशॉलाल्
अळविल्कर् पुडैयशिर् रवैपणित् तरुळलाल्
वळैयुडेप् पुणरिशूळ् महितलत् तिरुवॅलाम्
इळैयवर्क् कुदवियित् तलैयॅळुन् दरुळिनान् 85

उळै वयम्–अयालसहित बलवान; पुरवियान्–अश्वों के स्वामी (दशरथ) से; उतव उर्रु–दिया जाकर; अळवु इल् कर्पु उटैय–अपार पातिव्रत्यशीला; शिर्रवै–छोटी माता के; ओरु चॉलाल्–एक वचन के कारण; पणित्तु अरुळलाल्–आज्ञा देने से; पुणरि चूळ् वळै उटै–समुद्र से जो घेरी गयी है; मकितलम् तिरु अॅलाम्–भू की सम्पत्ति, सब; इळैयवर्कु–छोटे भाई को; उतवि–उपकार-बुद्धि के साथ देकर; इ तलै–इस ओर; अॅळुन्तरुळितान्–कृपा करके पधारे हैं। ८५

अयाल वाले बलिष्ठ अश्वों के स्वामी चक्रवर्ती दशरथ ने अपनी इच्छा से राज्य को श्रीराम को दिया। पर बड़ी पातिव्रत्यशीला श्रीराम की विमाता कैकेयी को दशरथ ने वर का वचन दिया था। उसकी प्राप्ति में विमाता ने श्रीराम को आज्ञा दिलायी कि वन जाओ। उस आज्ञा को

मानकर समुद्रवलयित राज्यश्री और अपनी सारी सम्पत्ति को अपने छोटे भाई (कैकेयी के पुत्र) को देकर के श्रीराम इस ओर पधारे हैं। ८५

तॅव्विरा	**वहैनॅडुऱ्**	**जिहैविरा**	**मऴुवित्ताऩ्**
अव्विरा	**मन्नैयुमा**	**वलितॉलैत्**	**तरुळित्ताऩ्**
इव्विरा	**हवऩ्वॅहुण्**	**डॅऴुमिरा**	**वन्नैयन्नाम्**
अव्विरा	**दन्नैयिरा**	**वहैदुडैत्**	**तरुळित्ताऩ् 86**

इ इराकवऩ्–इन श्रीराम ने; तॅव् इरा वकै–शत्रु ही न रहें, ऐसा; नॅट्टम् चिकै–लम्बी ज्वालाओं से; विरा–युक्त; मऴुवित्ताऩ्–परशु वाले; अ इरामऩैयुम्–उन (परशु-) राम को; मा वलि तॉलैत्तुतु–उनका बल मिटाकर (हराकर); अरुळित्ताऩ्–(लोक का) उपकार किया; वॅकुण्टु ॲऴुम्–कुपित हो चढ़ आनेवाले; इरा अन्नैयन् आम्–रात्रि के समान काले; अ विराधऩै–उस विराध को भी; इरा वकै–जीवित न रहे, ऐसा; तुटैत्तु–मिटाकर; अरुळित्ताऩ्–कृपा की। ८६

इन्हीं श्रीराम ने उन परशुराम का बल मिटाया था, जिनके अग्निशिखा-वृत्त परशु ने मही को शत्रुहीन बना दिया था; यह इनकी कृपा थी। वही नहीं। रात के समान काला विराध कोप के साथ उन पर चढ़ आया। श्रीराम ने उसका भी नाश करके लोकोपकार किया। ८६

करऩ्मुदऱ्	**करुणैयऱ्**	**ऱवर्हडऱ्**	**पडैयॉडुम्**
शिरमुहच्	**चिलैहुनित्**	**तुदवुवाऩ्**	**तिशैयुळाऱ्**
परमुहप्	**पहैदुमित्**	**तरुळुवाऩ्**	**परमराम्**
अरऩ्मुदऱ्	**रलैवरुक्**	**कदिशयत्**	**तिऱलित्ताऩ् 87**

करऩ् मुतल्–खर आदि; करुणै अऱ्ऱवर्–करुणाहीन (को); कटल् पटैयॉटुम्–सागर-सी सेना के साथ; चिरम् उक–उनके मस्तकों को गिराते हुए; चिलै कुनित्तु–धनुष झुकाकर; उतवुवाऩ्–(देवों और मानवों का) उपकार किया; तिचै उळार्–सभी दिशाओं में रहनेवाले; पर मुक पकै–वैरी शत्रुओं को; तुमित्तु–मिटाकर; अरुळुवाऩ्–कृपा करनेवाले हैं; परमर् आम्–श्रेष्ठ देव; अरऩ् मुतल् तलैवरुक्कु–हर आदि प्रधान देवताओं के लिए भी; अतिचय–विस्मय देनेवाली; तिऱलिताऩ्–शक्ति रखनेवाले हैं। ८७

(वही नहीं —) खर आदि नृशंस निशाचरों और उनकी सागर-सम सेना को श्रीराम ने उनके सिर काटकर मिटाया और देवों और मानवों का बड़ा उपकार किया। श्रीराम ऐसे हैं, जो सभी दिशाओं में रहनेवाले शत्रुओं का नाश करके उपकार करेंगे। श्रेष्ठ हर आदि प्रधान देवों को भी विस्मय हो जाय, वे ऐसे शक्तिशाली हैं। ८७

आयमा	**नाहर्दा**	**ऴाऴिया**	**न्नेयलाल्**
कायमा	**न्नायिन्नाऩ्**	**यावन्ने**	**कावला**

नीयमा नेर्दिया तिरुदमा रीशनार्
मायमा नायिनान् मायमा नायिनान् 88

कावला–हमारे पालक; आर् माय–अधिक मायावी; मान् आयिनान्–मृग जो बना; निरुत मारीचन्–उस राक्षस मारीच के लिए; मा यमान् आयिनान्–बड़े यम बने; आय–उचित; मा नाकर्–श्रेष्ठता से युक्त देवों से; ताळ्–नमस्कृत; आळि याते अलाल्–चक्रधारी विष्णु के सिवा; मान् कायम् आयिनान्–मानवशरीरी बने; यावते–और कौन हैं; नी–आप; अ मान्–उन महान पुरुष से; नेर्ति–जाकर मिलें। ८८

राजन! राक्षस मारीच मायामृग बना। श्रीराम उसके लिए बड़ा यम बन गये। वे अवश्य चक्रधारी श्रीविष्णु हैं, जिनके चरणों पर देव विनत होते हैं? फिर कौन ऐसे मानव बन सकते हैं? आप आइए और उन महान विभूति से मिलिए। (इस पद में माय मान् में श्लेष है। माय मान् = मायावी मृग; मा यमान् = बड़ा यम। 'मान्' शब्द के और दो अर्थ हैं— मानव और महान; 'मायम्' का 'मरने' अर्थ भी है।)। ८८

उक्कवन् दववुडर् पोरैतुरन् दुयर्पदम्
पुक्कवन् दमुनमक् कुरैशेयुम् बुरैयवो
तिक्कवन् दरनेडुन् दिरळ्करज् जेलवुतोळ्
अक्कवन् दनुनिनैन् दमरर्ताळ् शवरिपोल् 89

अम्–श्रेष्ठ; तव–तपस्या से; उटर् पोरै–शरीर का भार; तुरन्तु–गिराकर; उक्क–जो दिवंगत हुईं; अमरर् निनैन्तु–देवों द्वारा ध्यान कर; ताळ्–नमस्कृत; चवरि पोल्–शबरी के समान; तिक्कु अवम् तर–सभी दिशाओं में संकट फैलाकर; नेटु तिरळ् करम्–लम्बे और स्थूल हाथों को; चॅलवु तोळ्–चलानेवाले कन्धों से युक्त; अ कवन्तनुम्–वह कबन्ध भी; उयर् पतम् पुक्क–उच्च पद पहुँचा, वह; अनुतमुम्–महिमा; नमक्कु–हमें; उरै चॅयुम्–कथन योग्य हो, ऐसा; पुरैयवो–सुलभ है क्या। ८९

शबरी थीं, जो श्रेष्ठ तपस्या से शरीर-भार छुड़ाकर मरीं। देव भी उनका स्मरण करके नमस्कार करते हैं। उन्हें मोक्ष दिया प्रभु ने। कबन्ध था, जो अपने हाथों को सारी दिशाओं में फैलाकर बड़ा उत्पात मचा रहा था। वह भी इन्हीं की कृपा से मोक्ष पहुँचा। श्रीराम की इस महिमा का सम्यक् वर्णन क्या हमारे लिए सुलभ है? । ८९

मुनैवरुम् पिउरुमे मुडिवरुम् बहलॅलाम्
इनैयर्वन् दुरुवरॅन् रियवउम् पुरिहुवार्
विनैयॅनुज् जिउदुडन् दुयर्पवम् विरवितार्
अनैयरॅन् उरैशॅयहे तिरविदन् पुदल्वने 90

इरवि तन् पुतल्वने–हे सूर्यसूनु; मुनैवरुम् पिउरुम्–मुनि और अन्य लोग;

इतैयवर् वन्तु–ये आकर; उठ्रवर् ॲन्ऱु–उपकार करेंगे, यह समझकर; मुटिवु अरुम्–अनन्त; पकल् ॲलाम्–काल तक; इयल् तवम् पुरिकुवार्–उत्तम तपस्या करते हुए; विनै ॲन्नुम् चिऱै–कर्मबन्धन की कारा; तुऱन्तु–तुड़ाकर; उयर् पतम्–श्रेष्ठ (मोक्ष) पद; विरवितार्–पहुँचे; ॲंतैयर्–ऐसे ये कैसे महान हैं; ॲन्ऱु–यह; उरै चॅय्केन्–कथन करूँ। ९०

हे सूर्यसूनु ! मुनिगण और अन्य ऋषि आदि इन्हीं के आगमन और कृपा की प्रतीक्षा में लम्बे काल तक कठोर तपस्या करते हैं और कर्मबन्धन की कारा काटकर सर्वोत्कृष्ट मोक्षपद को प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति में इनके बारे में, ये कौन हैं, कैसे हैं ? यह विवरण मैं कैसे दे सकूँगा ? । ९०

मायैयान् मदियिला निरुदर्होन् मनैवियैत्
तीयका नॅऱियिनुय्त् तननवट् टेडुवान्
नीयैया तवमिळैत् तुडैमैया नॅंडुमनम्
तूयैया वुडैमैया लुऱविनैत् तुणिहुवार् 91

ऐया–प्रभु; मति इला–बुद्धिहीन; निरुतर् कोन्–राक्षसराज; मायैयाल्–प्रपंच से; मनैवियै–श्रीराम की पत्नी को; तीय कान् नॅऱियिन्–कठोर वनमार्ग में; उय्त्ततन्–ले गया; अवळ् तेट्टुवान्–उनको खोजने के लिए; नी–आप; तवम् इऴैत्तु–सुकृत कर चुके; उटैमैयाल्–उससे; मनम्–और मन में; नॅटुम् तूयैया उटैमैयाल्–अति पवित्रता रखते हैं, इसलिए; उऱविनै–आपकी मैत्री; तुणिकुवार्–प्राप्त कर लेने का निश्चय किया है। ९१

प्रभु ! जड़मति राक्षसपति प्रपञ्च रचकर श्रीराम की पत्नी को कठोर कानन-मार्ग में हर ले गया। उन्हीं की खोज में वे इधर आये। आपका सुकृत है और आपका मन पवित्र है। इसीलिए वे आपकी मैत्री तीव्रता से चाहते हैं। ९१

तन्दिरुन् दनररुट् टलैमैयैप् पहैञनाम्
इन्दिरन् शिऱुवनुक् किऴदियिन् ऱिशैदरुम्
पुन्दियिन् पॅरुमैयाय् पोदॅन् ऱुरैशॅय्दान्
मन्दिरङ् गॅऴुमुनून् मरबुणर्न् दुदवुवान् 92

कॅऴुमुनूल्–श्रेष्ठ शास्त्रसम्मत; मन्तिरम् मरपु–मंत्रणा का क्रम; उणर्न्तु–जानकर; उतवुवान्–उपकार करनेवाले (हनुमान) ने; पुन्तियिन् पॅरुमैयाय्–श्रेष्ठ बुद्धिशाली; अरुळ् तलैमैयै–कृपा-विशेष को; तन्तिरुन्तनर्–वे आपको प्रदान करने को प्रस्तुत हैं; पकैञर् आम्–शत्रु; इन्तिरन् चिऱुवनुक्कु–इन्द्रपुत्र (वाली) का; इऴति–अन्त; इन्ऱु इचै तरुम्–अब हो जायगा; पोतर्–जाइए; ॲन्ऱु–ऐसा; उरै चॅय्तान्–कथन किया। ९२

हनुमान शास्त्रज्ञ था। मन्त्रणा देने का क्रम, जानता था। उसने सुग्रीव से आगे कहा कि श्रेष्ठ बुद्धिशाली ! वे आप पर विशेष कृपा रखते

हैं। आपके शत्रु, इन्द्र के पुत्र, वाली का अन्त अब आ जायगा। इसलिए आप उनके पास जाइए। ९२

अन्नवा मुरैयॆला मऱिविन्ना लुणर्न्दुवान्
उन्नैये युडैयवॆर् करियदॆप् पॊरुळरो
पॊन्नैये पॊरुवुवाय् पोदॆनप् पोदुवान्
तन्नैये यन्नैयवन् शरणमुवन् दणुहिनान् 93

अन्न आम्–वैसे; उरै ॲलाम्–वे वचन; अऱिविनाल्–बुद्धि से; उणर्कुवान्–समझकर; पॊन्नैये–(सुग्रीव ने) स्वर्ण से ही; पॊरुवुवाय्–तुल्य; उन्नैये उटैय–तुमको प्राप्त; ॲर्कु–मुझे; ॲ पॊरुळ्–कौन सी वस्तु; अरियतु–दुर्लभ है; पोतु–चलो; ॲन–कहकर; पोतुवान्–निकला; तन्नैये अन्नैयवन्–स्वोपम; चरणम् वन्तु–(श्रीराम के) चरणों के पास आकर; अणुकिनान्–पहुँचा। ९३

सुग्रीव ने हनुमान की कही सारी बातें सुनीं। बुद्धिसंगत समझा। उसने हनुमान से कहा कि स्वर्ण ही सम (मूल्यवान या सुन्दर) हनुमान! तुम्हें सहायक के रूप में मैंने पाया है। वैसे मुझे दुर्लभ वस्तु कौन सी होगी? आओ। फिर वह स्वोपम श्रीराम के चरणों पर आ पहुँचा। ९३

❀ कण्डन नॆन्ब मन्नो कदिरवन् शिऱुवन् कामर्क्
कुण्डलन् दुऱन्द कोल वदनमुङ् गुळिर्क्कुङ् गण्णुम्
पुण्डरी हङ्गळ् पूत्तुप् पुयऱ्ऱॊइप् पॊलिन्द तिङ्गळ्
मण्डल मुदयज् जॆय्द मरगदक् किरियन् नानॆ 94

कतिरवन् चिऱुवन्–किरणमाली के पुत्र ने; पुण्टरीकङ्कळ्–कमल; पूत्तु–विकसित होकर; पुयल् तळीइ–मेघ से मिलकर; पॊलिन्त–शोभायमान; तिङ्कळ् मण्टलम्–चन्द्रमण्डल; उतयम् चॆय्त–उदित हो; मरकत किरि–ऐसे मरकतपर्वत; अन्नानै–जैसे का; कामर्–मनोरम; कुण्टलम् तुऱन्त–कुण्डल-रहित; कोल वततमुम्–सुन्दर वदन; कुळिर्क्कुम् कण्णुम्–और स्नेहशीतल आँखों के; कण्टनन्–दर्शन किये। ९४

सूर्यसूनु सुग्रीव ने आकर श्रीराम के दर्शन किये। श्रीराम एक मरकत-गिरि के समान थे, जिस पर अनेक कमल खिले थे और जिस पर मेघावृत चन्द्र-मण्डल उदित हुआ था। उनके मुख के दर्शन किये, जो मनोरम कुण्डलों से रहित थे। उनकी आँखों के दर्शन किये जो स्नेह-शीतल थीं। ९४

❀ नोक्किन नॆडिदु निन्ऱा नॊॅडिवरुङ् गमलत् तण्णल्
आक्किय वुलह मॆल्ला मन्ऱुतॊट् टिन्ऱु हाऱुम्
पाक्कियम् बुरिन्द वॆल्लाङ् गुविन्दिरु पडिव माहि
मेक्कुयर् तडन्दोळ् वॆन्ऱि वीरराय् विळैन्द वॆन्बान् 95

नोक्कितन्–दर्शन करके; नॆटितु निन्ऱान्–बहुत देर (मुग्ध) खड़ा रहा;

नोटिवु अरुम्–अवर्ण्य; कमलत्तु अण्णल्–कमल के देव ब्रह्मा से; आक्किय–सृष्ट; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोकों द्वारा; अन्ऱु तॊट्टु–उस दिन से लेकर; इन्ऱु काऱुम्–अब तक; पुरिन्त पाक्कियम् ॲल्लाम्–कृत पुण्य सब; कुविन्तु–इकट्ठा होकर; इरु पटिवम् आकि–दो दिव्य मूर्तियाँ बने; मेक्कु उयर्–खूब उन्नत; तटम् तोळ्–विशाल भुजाओं के; वॆन्ऱि वीरराय्–विजयी वीरों के रूप में; विळैन्त–व्यक्त हुआ है; ॲन्पान्–ऐसा सोचने लगा (सुग्रीव)। ९५

देखा तो सुग्रीव मन्त्रमुग्ध-सा बहुत देर विस्मित खड़ा रह गया। उसने सोचा कि अवर्णनीय श्रेष्ठ कमलासन ब्रह्मा द्वारा सृष्ट सारे विश्वों का उस दिन से लेकर अब तक किया हुआ जो पुण्य है, वही दो मूर्तियाँ बनकर श्रेष्ठ उन्नत भुजाओं के साथ विजयी वीरों के रूप में व्यक्त हुआ है ! । ९५

❀ तेरिन्ऱॆ तमरर्क् कॆल्लान् देवरान् देवरॆन्ऱे
माऱियिप् पिऱप्पिल् वन्दार् मानुड राहि मन्ऩो
आऱुहॊळ् शडिलत् तानु मयनुमॆन् ऱिवर्ह ळादि
वेऱुळ कुळुवै यॆल्ला मानुडम् वॆन्ऱ दन्ऱे 96

माऱि–रूप बदलकर; मानुटर् आकि–मनुष्य बनकर; इ पिऱप्पिल् वन्तार्–इस जन्म में आये हुए ये; अमरर्क्कु ॲल्लाम्–सभी देवों के; तेवर् आम् तेवर्–देव परमदेव हैं; ॲन्ऱु–ऐसा; तेरिन्तॆन्–साफ़ समझ लिया; आऱु कॊळ्–गंगाधर; चटिलत्तानुम्–जटाधारी महादेव और; अयनुम्–ब्रह्मा; ॲन्ऱु–कहलानेवाले; इवर्कळ् आति–इनसे लेकर; वेऱु उळ कुळुवै ॲल्लाम्–अन्य सभी वृन्दों को; मानुटम् वॆन्ऱतु–मानवता ने जीत लिया है। ९६

ये दोनों देवों के देव परमदेव के ही अवतार हैं। परमेश्वर ने ही अपना रूप बदलकर मनुष्य-जन्म लिया है। गंगाधर जटाधारी महादेव, ब्रह्मा आदि अनेक वृन्दों के देवों के जन्म को मनुष्य-जन्म ने हरा दिया है ! मानव जाती का ही भाग्य रहा कि ये परमदेव मानव बन आये। ९६

❀ ॲन्ऩनिनैन् दिनैय वॆण्णि यिवर्हिन्ऱ काद लोदक्
कन्ऩॆहडर् ऱिरैयुळ् ळाळ्न्दु कण्णिणै कळिप्प नोक्कि
अन्ऩहर्क् कुऱुहि नानव् वण्णलु मरुत्ति कूरप्
पुन्ऩमलर्त् तडक्कै नीट्टिप् पोन्दिनि दिरुत्ति यॆन्ऱान् 97

ॲन्ऩ निनैन्तु–ऐसा सोचकर; इनैय ॲण्णि–यों विचार करके; इवर्किन्ऱ–उमगनेवाले; कातल् ओतम्–प्रेम-जल के; कन्ऩै कटल्–शब्दायमान समुद्र की; तिरैयुळ् आळ्न्तु–तरंगों में मग्न होकर; कण् इणै–अक्षद्वय; कळिप्प–मुदित करते हुए; नोक्कि–दर्शन करके; अनकर्–अनघ के; कुऱुकिनान्–समीप गया; अ अण्णलुम्–उन महिमावान प्रभु ने भी; अरुत्ति कूर–वांछा के बढ़ते; पुन्ऩै मलर–सुन्दर कमल-सम; तटम् कै–(और) विशाल हाथों को; नीट्टि–बढ़ाकर; पोन्तु–

(स्वागत में); पोन्तु–इधर आकर; इतितु इरुत्ति–सुख से रहो; ॲन्ड्रान्–कहा। ९७

ऐसी-ऐसी बातें सुग्रीव ने सोचीं। और आगे भी अनेक विचार करते हुए श्रीराम और लक्ष्मण के प्रति उमड़ आनेवाले स्नेहजल के शब्दायमान सागर की तरंगों में मग्न हुआ। अपनी आँखों को मुदित करते हुए उनके दर्शन किये। इस परवश स्थिति में सुग्रीव श्रीराम के पास पहुँचे। अनघ श्रीराम की भी वांछा बढ़ी। उन्होंने सुन्दर कमल-सम अपने हाथ बढ़ाकर उसका स्वागत किया और कहा कि आओ! इधर सुख से रहो। ९७

तवावलि यरक्क रॅन्नुन् दवाविरुट् पहैयैत् तळ्ळिक्
कुवालऱ निरुत्तऱ् केऱ्ऱ कालत्तिन् कूट्ट मौत्तार्
अवामुद लरुत्त शिन्दै यत्तहनु मरियिन् वेन्दुम्
उवावुऱ वन्दु कूडु मुडुपदि यिरवि यौत्तार् 98

अवा मुतल् अऱुत्त–राग को जड़ से उखाड़कर रहे; चिन्तै अत्तकनुम्–मन के अनघ श्रीराम और; अरियिन् वेन्तुम्–कपिराज; उवा उऱ–अमावस्या के आने पर; वन्तु कूटुम्–आ मिलनेवाले; उटुपति इरवि–उडुपति और किरणमाली के; ऑत्तार्–समान रहे; तवा वलि–अक्षय बली; अरक्कर् ॲन्नुम्–राक्षस रूपी; तवा इरुळ् पकैयै–अखण्डित अन्धकार शत्रु को; तळ्ळि–मिटाकर; कुवाल् अऱम्–पुंजीभूत धर्म को; निऱुत्तऱ्कु–स्थापित करने के लिए; कालत्तिन् कूट्टम्–उपयुक्त काल के संगम के; ऑत्तार्–समान लगे। ९८

श्रीराम ने राग को मूल से उखाड़कर फेंक दिया था। अनघ वे और वानरराज सुग्रीव मिले, तो उनका मिलन अमावस्या के दिन उडुपति चन्द्र और किरणमाली रवि के सम्मिलन-सा था। अक्षय बलशाली राक्षस रूपी अखण्डित अन्धकार-शत्रु को मिटाने के लिए और पुंजीभूत धर्म की संस्थापना करने के लिए संगमित कालों के समान था। ९८

कूट्टमुऱ् ऱिरुन्द वीरर् कुऱित्तदोर् पौरुट्कु मुन्नाळ्
ईट्टिय तवमुम् पिन्न मुयऱ्चियु मियैन्द वौत्तार्
वीट्टुम्वा ळरक्क रॅन्नुन् दीविनै वेरिन् वाङ्गक्
केट्टुणर् कल्वि योडु ञानमुङ् गिडैत्त वौत्तार् 99

कूट्टम् उऱ्ऱु इरुन्त–एकत्रित रहे; वीरर्–वीर; कुऱित्ततु ओर् पौरुट्कु–निश्चित कोई कार्य साधने के लिए; मुन् नाळ्–पूर्व के दिनों में; ईट्टिय तवमुम्–की हुई तपस्या; पिन्नर् मुयऱ्चियुम्–और बाद का प्रयत्न; इयैन्ततु–मिले; ऑत्तार्–जैसे लगे; वीट्टुम् वाळ्–घातक तलवार-सरीखे; अरक्कर् ॲन्नुम्–राक्षस रूपी; ती विनै–पातक को; वेरिन् वाङ्क–मूल से उखाड़ने के लिए; केट्टु उणर् कल्वियोटु–श्रवण से प्राप्त विद्या को; ञानमुम्–ज्ञान भी; किटैत्ततु–प्राप्त हुआ हो; ऑत्तार्–ऐसा लगे। ९९

श्रीराम और सुग्रीव का मिलन और कैसा था ? किसी निश्चित कार्य की सिद्धि के लिए पूर्वकृत तपस्या का फल और तत्काल का प्रयत्न —दोनों मिल गये हों, ऐसा भी लगा। और भी खूनी तलवार-से राक्षसों के रूप में रहे पातक को मूल से मिटाने के हेतु श्रवण से प्राप्त विद्या को तत्त्व का ज्ञान भी प्राप्त हो गया हो, ऐसा भी लगा। ९९

ॐ आयदो रवदि यिऩ्क णरुक्कऩ्शे यरशै नोक्कित्
तीविऩै तीय नोऱ्ऱा रॆऩ्ऩिऩ्यार् शॆल्व निऩ्ऩै
नायह तुलहुक् कॆल्ला मॆऩ्ऩला नलमिक् कोयै
मेयिऩॆऩ् विदिये नल्हिऩ् मेवला हादॆऩ् ऩॆऩ्ऱाऩ् 100

आयतु ओर्–ऐसे एक; अवतियिऩ् कण्–समय में; अरुक्कऩ् चेय्–अर्कपुत्र; अरचै नोक्कि–राजा राम को देखकर; चॆल्व–प्रभु; उलकुक्कु ऎल्लाम्–सारे लोकों के; नायकऩ् ऎऩ्ऩलाम्—नायक मानें, उसके योग्य; नलम् मिक्कोयै–श्रेष्ठता रखनेवाले; निऩ्ऩै–आपके पास; मेयिऩॆऩ्–आ गया; ती विऩै तीय–पाप जल जायँ, ऐसी; नोऱ्ऱार्–तपस्या के कर्ता; ऎऩ्ऩिल् यार्–मेरे समान कौन होंगे; वितिये नल्किऩ्–जब विधि ही अनुकूल रहे, तब; मेवल् आकातु–अप्राप्य; ऎऩ्–क्या है। १००

उस मिलन के समय सूर्यसूनु सुग्रीव ने राजा राम से यों निवेदन किया। प्रभु ! सारे लोकों के नायक के योग्य श्रेष्ठता रखनेवाले आपके पास मैं आ गया हूँ। कठोर पाप को मिटानेवाली तपस्या के श्रेष्ठ कर्ता मेरे समान कौन होंगे ? जब विधि स्वयं उपकार करने को अनुकूल हो जाती है, तब कौन सी वस्तु होगी जो दुर्लभ हो ? । १००

मैयरु तवत्ति ऩाऩ शवरियिम् मलैयि ऩीवऩ्
वॆय्दिऩै यिरुन्द तऩ्मै यियम्बिऩळ् याङ्ग ळुऱ्ऱ
कैयरु तुयर निऩ्ऩाऱ् कडप्पदु करुदि वन्दोम्
ऐयनिऱ् ऱीरुमॆऩ्ऩ वरिहुलत् तलैवऩ् शॊल्वाऩ् 101

ऐय–श्रेष्ठ; मै अऱ–अकलंक; तवत्तिऩ् आऩ–तपस्या में रत; चवरि–शबरी ने; इ मलैयिल्–इस पर्वत पर; नी वन्तु ऎय्तितै–तुम आये रहे; इरुन्त तऩ्मै–रहने की बात; इयम्पिताळ्–कही थी; याङ्कळ् उऱ्ऱ–हमको प्राप्त; कै अऱ तुयरम्–निष्क्रिय बनानेवाला दुःख; निऩ्ऩाल् कटप्पतु करुति–तुम्हारी सहायता से दूर करें, समझ; निऩ् तीरुम्–तुम दूर करोगे, सोचकर; वन्तोम्–आये हैं; ऎऩ्ऩ–(श्रीराम के) यह कहने पर; अरि कुल तलैवऩ्–वानरकुल का नायक; चॊल्वाऩ्–बोला। १०१

उसके उत्तर में श्रीराम ने यह श्रीवचन उच्चारे। श्रेष्ठ सुग्रीव ! निर्दोष तपस्विनी शबरी ने हमें तुम्हारे इस ऋष्यमूक पर्वत पर आकर वास करने की बात बतायी थी। हम यही सोचकर तुम्हारे पास आये कि हम पर जो मनुष्य को निष्क्रिय बना सकनेवाली विपदा आयी है, वह तुम्हारी

सहायता से दूर होगी। श्रीराम ने जब यह बात कही तब वानरकुलाधीश ने यों कहा। १०१

❀ मुरणुडैत् तडक्कै योच्चि मुन्नवन् पिन्वन् देनै
इरुणिलैप् पुरत्तिन् कारु मुलहॅङ्गुन् दॉडर विक्कुन्
ररणुडैत् ताह वुय्न्दे नारुयिर् तुरक्क वञ्जिच्
चरणुनैप् पुहुन्दे नेन्नैत् ताङ्गुद ररुम मॅन्ऱान् 102

मुन्नवन्–मेरे अग्रज के; पिन् वन्तेनै–अनुज, मुझ पर; मुरण् उटै–बलिष्ठ; तटम् कै–विशाल हाथ; ओच्चि–उठाते हुए; इरुळ् निलै–अन्धकारनिलय; पुरत्तिन् काऱुम्–इस अण्ड के बाहर तक; उलकु ऍङ्कुम्–विश्व भर में; तॉटर–पीछा करने पर; आर् उयिर्–प्यारे प्राण; तुरक्क अञ्चि–छोड़ने से डरकर; इ कुन्ऱु–इस (ऋष्यमूक) पर्वत के; अरण् उटैत्तु आक–मेरे रक्षक रहते; उय्न्तेन्–बचा; चरण् उनै पुकुन्तेन्–आपकी शरण में आया हूँ; ऍन्नै ताङ्कुतल्–मुझे अपना लेना (और मेरी सहायता करना); तरुमम्–आपका धर्म है; ऍन्ऱान्–कहा। १०२

प्रभु! मेरे बड़े भाई ने अपने ही अनुज मुझ पर अपना बलवान हाथ उठाकर खदेड़ा। विश्व भर में, अण्ड के बाहर तक जहाँ अँधेरा भरा है उसने मेरा पीछा करके मुझे भगाया। मैं मरने से डरता था। अच्छा हुआ कि यह पर्वत मेरा रक्षण कर सकता था। मैं इधर आया तभी जीवित बच सका। ऐसा मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरी रक्षा करना आपका धर्म है! । १०२

❀ ॲन्ऱवक् कुरङ्गु वेन्दै यिरामनु मिरङ्गि नोक्कि
उन्ऱनक् कुरिय विन्ब तुन्बङ्ग ळुळ्ळ मुन्नाळ्
शॆन्ऱन पोह मेल्वन् दुरुवन तीर्प्प लन्न
निन्ऱन वॆन्नक्कु निऱ्कु नेरॆन मॊऴियु नेरा 103

ऍन्ऱ–ऐसा जिसने कहा; अ कुरक्कु वेन्तै–उस वानरपति को; इरामनुम्–श्रीराम (ने); इरङ्कि नोक्कि–अनुताप के साथ देखकर; उन् तनक्कु उरिय–तुम्हारे अपने; इन्प तुन्पङ्कळ् उळ्ळ–सुख-दुःख जो हैं; मुन् नाळ् चॆन्ऱन–उनमें जो पहले हो चुके हैं; पोक–उनको जाने दो; मेल् वन्तु उऱुवन–जो आगे आयेंगे; तुन्पङ्कळै–उन दुःखों को; तीर्प्पल्–दूर कर दूँगा; अन्न निन्ऱन–वैसे जो स्थित हैं; ऍनक्कुम् निऱ्कुम् नेर्–वे मेरे और तुम्हारे लिए समान रहेंगे; ऍन–यह; मॊऴियुम् नेरा–वचन देकर। १०३

श्रीराम ने ऐसा कहनेवाले सुग्रीव पर दया की दृष्टि फेरी। कहा कि देखो सुग्रीव! तुम्हारे हक में जितने सुख-दुःख होंगे, उनमें जो बीत गये वे तो बीत गये। पर आगे जो दुःख होंगे उनका निवारण मैं अवश्य करूँगा। अभी जो बाकी हैं आने को, उनको तुम भी मेरे समान हक के समझ लो। प्रभु श्रीराम ने यह वचन दिलाया। १०३

❀ मऱ्ऱिनि युरैप्प दॆन्ने वानिडै मण्णि निन्नैच्
चॆऱ्ऱव रॆन्नैच् चॆऱ्ऱार् तीयरे यॆनिनु निन्नो
डुऱ्ऱव रॆनक्कु मुऱ्ऱा रुन्किळै यॆनदॆन् कादर्
चुऱ्ऱमुन् चुऱ्ऱ नीयॆन् निन्नुयिरत् तुणैव नॆन्ऱान् 104

मऱ्ऱु–और; इनि–आगे; उरैप्पतु–कहने के लिए; ऍन्ने–क्या है; वान् इटै–आकाश में; मण्णिल्–पृथ्वी में; निन्नै चॆऱ्ऱवर्–तुम्हारे शत्रु; ऍन्नै चॆऱ्ऱार्–मेरे भी शत्रु हैं (मैं वैसा मानूंगा); निन्नोटु उऱ्ऱवर्–तुम्हारे साथी मित्र; तीयरे ऍनिनुम्–दुष्ट ही क्यों न हों; ऍनक्कुम् उऱ्ऱार्–मेरे भी मित्र होंगे; उन् किळै–तुम्हारे नातेदार; ऍनतु–मेरे हैं; ऍन् कातल् चुऱ्ऱम्–मेरे प्यारे रिश्तेदार; उन् चुऱ्ऱम्–तुम्हारे बन्धु हैं; नी–तुम; ऍन्–मेरे; इन्–प्यारे; उयिर् तुणैवन्–प्राणसखा हो; ऍन्ऱान्–कहा। १०४

फिर आगे बोले— फिर कहने को क्या है ? इतना मान लो कि आकाश में हो, चाहे पृथ्वी में, जो भी तुम्हारे त्रासक शत्रु हैं वे मेरे भी शत्रु होंगे। तुम्हारे साथी मित्र मेरे मित्र होंगे। तुम्हारे बन्धु मेरे बन्धु और मेरे प्यारे रिश्तेदार तुम्हारे बान्धव ! तुम मेरे प्यारे प्राणसखा हो ! । १०४

❀ आर्त्तदु कुरक्कुच् चेनै यञ्जनैच् चिऱुवन् मेनि
पोर्त्तन पॊडित्त रोम पुळहङ्गळ् पूविन् मारि
तूर्त्तनर् विण्णोर् मेहम् जॊरिन्दन कनह मण्णल्
वार्त्तैयॆक् कुलत्तु ळोर्क्कु मऱैयिनु मॆय्यॆन् ऱुन्ना 105

अण्णल् वार्त्तै–महिमावान प्रभु का वचन; ऍ कुलत्तु उळोर्क्कुम्–किसी भी कुल के लोगों के लिए; मऱैयिनुम्–वेदवचन से भी (अधिक); मॆय्–सत्य है; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्ना–सोचकर; कुरक्कु चेनै–वानर-सेना ने; आर्त्ततु–आनन्दारव किया; अञ्चनै चिऱुवन्–अंजना के पुत्र की; मेनि–श्रीदेह पर; पॊटित्त रोम पुळकङ्कळ्–प्रफुल्ल रोम-पुलक; पोर्त्त–भर गये; विण्णोर्–देवों ने; पूविन् मारि–पुष्पवर्षा करके; तूर्त्तनर्–(भूमि को) पाट दिया; मेकम्–मेघों ने; कनकम्–कनक की; चॊरिन्तन–वर्षा करायी। १०५

महिमामय प्रभु श्रीराम का यह वचन सुनकर वानर-सेना आनन्दनाद कर उठी। 'यह प्रभु का वचन किसी भी (वानर, मानव, देव या प्राणी) कुल के सभी लोगों के लिए सत्य है और वेद-वाक्य से भी अधिक सत्य है' —इसी धारणा से वे वीर हर्षोन्मत्त हो उठे। अंजनासुत की श्रीदेह रोमांच से ढक गयी। देवों ने पुष्पवर्षा करके भूमि को छिपा दिया। मेघों ने कनकवर्षा करायी। १०५

❀ आण्डॆळुन् दडियिर् ऱाळ्न्द वञ्जनैच् चिङ्गम् वाळि
तूण्डि डडन्दोण मैन्द तोळ्नु नोयुम् वाळि

ईण्डुनुङ् गोयि लॅय्दि यितिदिन्ति निरुक्कै काण
वेण्डुदुम् मरुळु हॅन्नडान् वीरनुम् विळुमि दॅन्नडान् 106

आण्टु–तब; ॲळुन्तु–उठ आकर; अटियिल् ताळ्न्त–श्रीराम-चरण पर विनत हुआ; अञ्चनै चिङ्कम्–अंजनापुत्र सिंह-सदृश हनुमान ने; तूण् तिरळ्–स्तम्भ-सम स्थूल; तटम् तोळ्–और विशाल कन्धों वाले; मैन्त–बलवान वीर; वाळि–जियें; तोळनुम् नीयुम्–आपका मित्र और आप; वाळि–(चिरकाल) जिएँ; ईण्टु–अब; नुम् कोयिल् ॲय्ति–अपना मन्दिर जाकर; इनितिन्–सुख से; निन्नु इरुक्कै–आपका (आराम से) रहना; काण वेण्टुतुम्–देखना चाहते हैं; अरुळुक–कृपा करें; ॲन्नुडान्–प्रार्थना की; वीरनुम्–श्री वीरराघव ने भी; विळुमितु–यह श्रेष्ठ है; ॲन्नुडान्–कहा (सम्मति प्रकट की)। १०६

तब हनुमान उठा। श्रीराम के पास आकर उनके चरणों पर विनत हुआ। अंजनासुत, केसरी-सदृश हनुमान ने निवेदन किया कि स्तम्भ-सम स्थूल और विशाल कन्धों वाले बली वीर! जिएँ आप। आपका मित्र और आप चिरकाल जिएँ। अब आप अपने मन्दिर में सुख से पधारें और प्रसन्नता के साथ आराम करें। इसके हम दर्शन करना चाहते हैं। यह निवेदन सुनकर श्रीवीरराघव ने भी श्रीवचन उच्चारा कि हाँ! यह अच्छी बात है! । १०६

एहित्त रिरवि शेयु मिरुवरु मरिह ळेरुम्
ऊहवॅञ् जेनै शूळ्वन् दडियिणै युवन्दु वाळ्त्त
नाहमु नरन्दक् कावु नळिनवा विहळु मल्हिप्
पोहबू मियैयु मेशुम् पुदुमलर्च् चोलै पुक्कार् 107

इरवि चेयुम्–रविसुत (और); इरुवरुम्–(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों; अरिकळ् एऱुम्–वानरों में केसरी-सम हनुमान; वॅम्–भयंकर; उक चेनै–और वानर-सेना के; चूळ् वन्तु–घेरते आकर; अटियिणै–चरणद्वय; उवन्तु वाळ्त्त–भक्ति के साथ वन्दना करते; एकितर्–चले; नाकमुम्–पुंनाग और; नरन्तम् कावुम्–नारंगी के बागों; नळिन वाविकळुम्–और कमलसरों से; मल्कि–खूब भरे होकर; पोक पूमियैयुम्–भोगभूमि (स्वर्ग) को भी; एचुम्–शरम से डालनेवाले; पुतुमलर् चोलै–नवविकसित पुष्पोद्यान में; पुक्कार्–पहुँचे। १०७

उनके सम्मत होने पर रविसुत सुग्रीव, श्रीराम और लक्ष्मण दोनों और वानरकेसरी हनुमान सब उठे और चलने लगे। वानर-सेना ने उनके चरणों में विनत होकर उनकी स्तुति की। वे एक नवविकसित पुष्पोद्यान में पहुँचे, जिसमें पुंनाग, नारंगी आदि के तरु लसे थे और कमलसर पाये गये। वह भोगभूमि स्वर्ग का भी उपहास करनेवाला (उतना मनोरम और सुहावना) उद्यान था। १०७

आरमु महिलुन् दुन्नि यविर्पळिक् करैय ळावि
नारनिन् ड्रतपोर् ड्रोन्ड्रि नवमणित् तडङ्ग णीडुम्
पारमु मरुङ्गुन् दॆय्वत् तरुवुयर् मरत्ति नाडुम्
शूरर महळि रूश ड्रुवन्ड्रिय शुम्मैत् तन्रे 108

आरमुम् अकिलुम्–चन्दनतरुओं और अगरु के वृक्षों से; तुन्ति–ठस भरकर; अविर् पळिङ्कु अरै–उज्ज्वल स्फटिक-चट्टानों से; अळावि–शोभायमान; नारम् निन्ऱत पोल्–(उनमें) जल स्थित हो; तोन्ऱि–ऐसा भ्रम पैदा करते हुए; नव मणि तटङ्कळ्–नवरत्न-खचित तडागों के; नीटुम्–लम्बे; पारमुम् मरुङ्कुम्–तटों और पास के स्थलों में; तेय्व तरु–देवलोक के कल्पतरु-सम; उयर्–उन्नत; मरत्तिन्–वृक्षों पर; आटुम्–झूलनेवाले; चूर् अर मकळिर्–देवबालाओं के; ऊचल्–झूले; तुवन्ऱिय–जो खूब मचाते हैं; चुम्मैत्तु–उस शोर से भरा है, (वह उद्यान)। १०८

उसमें चन्दनतरु और अगरु के पेड़ बहुत थे। प्रकाशमय स्फटिक-चट्टानें थीं। वे ऐसी दिखीं मानो उनमें जल भरा हो। नवरत्नों से शोभित तडाग थे। उनके कूलों पर और उनके आसपास दिव्य कल्पतरु के समान अनेक ऊँचे वृक्ष थे। उन पर देवनारियाँ झूले बाँधकर झूल रही थीं। वह उद्यान उनकी कोलाहलध्वनि से भरा था। १०८

अयर्विल् केळ्विशा लड्रिञर् वेलैमुन्
पयिल्विल् कल्वियार् पॊलिविल् पान्मैपोल्
कुयिलु मामणिक् कुळ्मु शोदियाल्
वॆयिलुम् वॆळ्ळिवॆण् मदियिन् मेम्बडा 109

अयर्वु इल्–अप्रमत्त; केळ्वि चाल्–श्रवणज्ञान से युक्त; अऱिञर् वेलै मुन्–ज्ञानी पंडितों के सागर (वृन्द) के सामने; पयिल्वु इल्–अनभ्यस्त; कल्वियार्–विद्या वाले; पॊलिवु इल्–जैसे नहीं चमकते; पान्मै पोल्–वैसी रीति से; कुयिलुम्–जड़ित; मा मणि कुळुमु–अनेक रत्नों की सम्मिलित; चोतियाल्–ज्योति से; वॆयिलुम्–धूप भी; वॆळ्ळि वॆण् मतियिन्–चाँदी के से श्वेत चन्द्र की तरह; मेम्पटा–प्रकाश में उन्नत नहीं रहती। १०९

उसमें अनेक तरह के रत्न पाये गये। उनके प्रकाश के सामने धूप भी श्वेत चाँदनी से अधिक उज्ज्वल नहीं रही। वह ऐसा रहा, जैसा अप्रमत्त श्रवण-ज्ञान से भरे विद्वानों के (सागर) समूह के सामने विद्या से अनभ्यस्त लोग नहीं चमकते। १०९

एय वन्नदा मिन्निय शोलैवाय्, मेय मैन्दनुङ् गवियिन् वेन्दनुम्
तूय पूवणप् पॊलिन्दु तोन्ड्रिनार्, आय वन्बिना रळव ळावुवार् 110

एय–(ऐसी विशेषता से) युक्त; अन्नतु आम्–उस; इन्निय–सुहावने; चोलै वाय्–उद्यान में; मेय मैन्तनुम्–आगत वीर श्रीराम; कवियिन् वेन्तनुम्–कपिराज;

तूय पू अणै–पवित्र पुष्पासन पर; पॉलिन्तु तोन्रिनार्–शोभायुक्त विराजे; आय अन्पिनार्–गम्भीर प्रेम के साथ; अळवळावुवार्–स्नेहसम्भाषण करने लगे। ११०

ऐसे विशिष्ट सुखद उद्यान में श्रीराम और कपिकुलेश दोनों पधारे और एक पवित्र पुष्पासन पर विराजे। दोनों बराबर स्नेह के साथ वार्तालाप करने लगे। ११०

कनियुङ् गन्दमुम् कायुन् दूयन
इनिय यावैयुङ् गॉणर यारिनुम्
पुनिदन् मज्जनत् तॉळिल्पु रिन्दुपिन्
इनिदि रुन्दुनल् विरुन्दु मायिनान् 111

कनियुम्–फलों और; कन्तमुम्–कन्दों; कायुम्–खाद्य कच्चे फलों को; तूयन–पवित्र और; इनिय–मधुर; यावैयुम्–सब; कॉणर–लोग लाये, तब; यारिनुम् पुनितन्–सर्वश्रेष्ठ पावनमूर्ति; मज्चन तॉळिल्–स्नानकार्य; पुरिन्तु–करके; पिन्–पश्चात; इनितु इरुन्तु–सुख से रहकर; नल् विरुन्तुम्–श्रेष्ठ अतिथि भी; आयिनान्–बने (आतिथ्य स्वीकार किया)। १११

स्नेह के साथ जब वे बोलते रहे तब वानर फल, कन्द, तरकारी आदि लाये, जो पावन और मधुर थे। सर्वश्रेष्ठ पावन (और पावनकारी) भगवान ने स्नानकार्य किया। फिर सुख से आसीन होकर आतिथ्य को स्वीकार किया। १११

विरुन्दु माहियम् मॅय्म्मै यन्बिनो
डिरुन्दु नोक्किनॉन् दिरैवन् शिन्दियाप्
पॉरुन्दु नन्मनैक् कुरिय पूवैयैप्
पिरिन्दु ळाय्हॉलो नीयुम् पिन्नॅन्ड्रान् 112

अ मॅय्म्मै अन्पितोटु–उस तरह सच्चे प्रेम के साथ; इरुन्तु–रहकर; इरैवन्–भगवान श्रीराम ने; विरुन्तुम् आकि–आतिथ्य स्वीकार करके; नोक्कि–सुग्रीव पर दृष्टि डालकर; नॉन्तु–खेद करके; चिन्तिया–विचार करके; पॉरुन्तु–योग्य; नल् मनैक्कु उरिय–सद्गृहिणी; पूवैयै–स्त्री से; पिन्–बाद; नीयुम्–तुम भी; पिरिन्तु उळाय् कॉल्–वियुक्त हो गये क्या; ॲन्ड्रान्–प्रश्न किया। ११२

श्रीराम ने सुख से आतिथ्य स्वीकार किया। तब उनकी दृष्टि सुग्रीव पर पड़ी। उनके मन में सुग्रीव के अकेलेपन पर ध्यान गया। वे दुःखी हुए। उन्होंने उससे पूछा कि फिर तुम भी आखिर अपनी योग्य गृहिणी स्त्री से वियुक्त हो गये क्या? । ११२

ॲन्ड्र वेलैयि नॅळ्न्दु मारुदि
कुन्ड्रु पोलनिन् ड्रिरुहै कूप्पिनान्

निन्ऱ नीदियाय् नॅडिदु केट्टियाल्
ऑन्ऱु नान्उनक् कुरॅप्प दुण्डॅना 113

ऍन्ऱ वेलैयिल्—प्रश्न करते समय; मारुति—मारुति; कुन्ऱु पोल ऍऴुन्दु निन्ऱु—पर्वत-सम उठ खड़ा हुआ और; इरुकै—दोनों हाथ; कूप्पिनान्—जोड़े; निन्ऱ नीतियाय्—अचल नीतिमान; नान्—मैं; उनक्कु—आपसे; उरॅप्पतु—निवेदन करूँ, वह; ऑन्ऱु उण्टु—एक बात है; नॅटितु केट्टि—लम्बी (है) सुन लें; ऍना—कहकर। ११३

जब श्रीराम ने सुग्रीव से यह प्रश्न किया, तब मारुति पर्वत के समान उठ खड़ा हुआ और दोनों हाथ जोड़कर यों बोला। अचल नीतिमान स्वामी! आपसे एक बात निवेदन करनी है। उसको आप पूरा-पूरा आदि से अन्त तक सुनिए। ११३

नालु वेदमा नवैयि लाऱ्ऱलि
वेलि यन्नदोर् मलैयिन् मेलुळान्
शूलि यिन्नरुट् टुरैयिन् मुऱ्ऱिनान्
वालि यॅन्नुळान् वरम्बि लाऱ्ऱलान् 114

नालु वेतमाम्—चार वेद रूपी; नवै इल्—निर्दोष; आर् कलि—समुद्र ही; वेलि अन्नतु—रक्षा-भित्तियाँ जिसकी हों; ओर् मलैयिन् मेल्—ऐसी एक गिरि (कैलास) पर; उळान्—रहनेवाले; चूलियिन्—शूली महादेव की; अरुळ् तुरैयिन्—कृपा से; मुऱ्ऱिनान्—पूर्ण; वरम्पिल् आऱ्ऱलान्—असीम बलशाली; वालि—वाली; ऍन्ऱु उळान्—नामक एक है। ११४

निर्दोष, वेद रूपी और शब्दायमान समुद्रों को रक्षण-भित्तियों के रूप में जिसने पाया है, उस कैलासपर्वत पर रहनेवाले शूली महादेव की कृपा का पूर्ण पात्र और असीम बलिष्ठ वाली नाम का एक वानरराज है। ११४

कळरुन् देवरो डवुणर् कण्णिनिन्
ऱुळलु मन्दरत् तुरुवु तेय्वुऱ
अळलुङ् गोळरा वहडु तीयॅळच्
चुळलुम् वेलैयैक् कडेयुम् दोळिनान् 115

कळरुम्—प्रशंसित; तेवरोटु—देवों के साथ; अवुणर्—दानव; कण्णि निन्ऱु—(अमृत-प्राप्ति का) लक्ष्य लेकर, (दोनों ओर) खड़े होते; उऴलुम्—घूमनेवाला; मन्तरत्तु—मन्दर पर्वत का; उरुवु—आकार; तेय्वु उऱ—घिसे ऐसा; अऴलुम्—क्रुद्ध; कोळ् अरा—भयंकर सर्प, वासुकी के; अकटु ती ऍऴ—पेट से आग निकले, ऐसा; चुऴलुम् वेलैयै—मथित समुद्र को; कटैयुम् तोळिनान्—अकेला मथनेवाले बलिष्ठ कन्धों का। ११५

अमृत निकालने के उद्देश्य से देवों और दानवों ने वासुकी-लपेटे मन्दर पर्वत को घुमाया था। तब मन्दर के आकार को घिसाकर क्षीण कराते

हुए और क्रुद्ध भयंकर वासुकी नाग अपने पेट से आग उगले —ऐसा वाली ने अकेले ही मन्दर पर्वत को घुमाया था और समुद्र बिल्कुल क्षुब्ध हो गया। (यह वृत्तान्त वाल्मीकी में नहीं पाया जाता।) ऐसा भुजबली है वह। ११५

निलनु नीरमाय् नॆरुप्पुङ् गाऱ्ऱुमाय्
उलैविल् पूदनान् गुडैय वाऱ्ऱलान्
अलैयिन् वेलैशूऴ् किडन्द वाऴिमा
मलैयि निन्ऱुमिम् मलैयिन् वावुवान् 116

निलतुम्–भूमि; नीरम् आय्–व जल बने; नॆरुप्पुम् काऱ्ऱुम् आय्–अनल और अनिल बने; उलैव ईल्–अक्षय; पूतम् नान्कु उटैय–(जो हैं) उन चार भूतों के सम्मिलित; आऱ्ऱलान्–बल से युक्त; अलैयिन् वेलै–तरंगसमेत समुद्र से; चूऴ् किटन्त–घिरे रहे; आऴि मा मलैयिन् निन्ऱुम्–चक्रवाल पर्वत से; इ मलैयिल्–इस पर्वत पर; वावुवान्–उछलकर कूदेगा। ११६

वाली भूमि, जल, अनल और अनिल —इन चारों भूतों का सम्मिलित बल रखता है। तरंग-भरे बाह्य समुद्रों से घिरे चक्रवाल पर्वत से उछलकर वह इस पर्वत पर एक दम कूद सकता है। ११६

किट्टु वार्पॊरक् किडैक्कि नन्नवर्प्
पट्ट नल्वलम् बाह मॆय्दुवान्
ऎट्टु मादिरत् तिरुदि नाळुमुऱ्
ऱुट्ट मूर्त्तिताळ् पणियु माणैयान् 117

पॊर किट्टुवार्–लड़ने आनेवाले; किटैक्किन्–मिल गये तो; अन्नवर् पट्ट–उनमें रहनेवाले; नल् वलम्–श्रेष्ठ बल का; पाकम्–(आधा) भाग; ऎय्तुवान्–खुद प्राप्त कर लेगा; ऎट्टु मातिरत्तु–आठों दिशाओं के; इऱुति–अन्त तक; नाळुम् उऱ्ऱु–रोज जाकर; अट्ट मूर्त्ति–(वहाँ अधिष्ठित रहनेवाले) अष्टमूर्तियों के; ताळ्–चरणों की; पणियुम्–पूजा करने का; आणैयान्–नियम रखनेवाला। ११७

जो कोई उससे युद्ध करने आयगा, उसका आधा बल वाली को मिल जायगा। ऐसा वर उसे प्राप्त है। (यह बात वाल्मीकी में नहीं पायी जाती। श्रीराम ने छिपकर वाली को मारा, इसकी सफ़ाई में यह वर इंगित किया जाता है।) वह प्रतिदिन आठों दिशाओं के अन्त तक जाता है और वहाँ अधिष्ठित अष्टमूर्तियों की पूजा कर आता है। यह उसका नियम बना है। ११७

कालशै लादवन् मुन्नरुक् कन्नवॊळ्
वेल्शै लादवन् माऱ्बिन् वॆन्नुऱ्ऱान्

वाल्शॅ लादवा यलदि रावणन्
कोल्शॅ लादवन् कुडैशॅ लादरो 118

अवन् मुन्नर्–उसके सामने; काल् चॅलातु–पवन नहीं चलता; अवन् मार्पिन्–उसके वक्ष में; कन्त वेळ्–स्कन्द (कार्तिकेय) देव की; वेल् चॅलातु–शक्ति नहीं निफर सकती; वॅन्रियान्–विजयी (की); वाल् चॅलात–पूँछ जहाँ नहीं जाती; वाय् अलतु–उस जगह के सिवा अन्यत्र (यानी जहाँ उसकी पूँछ जाती वहाँ नहीं); इरावणन् कोल्–रावण का (राज) दण्ड; चॅलातु–नहीं जायगा; अवन् कुटै–उसका छत्र भी; चॅलातु–नहीं चलेगा। ११८

उस वाली के सामने पवन नहीं चलता। उसके वक्ष में स्कन्ददेव की शक्ति घात नहीं कर सकती। (स्कन्ददेव कार्तिकेय हैं।) रावण का दण्ड और छत्र वहीं चल सकेंगे, जहाँ वाली की पूँछ नहीं गयी हो। रावण का अधिकार वाली के अधिकार से सीमित रह गया है। ११८

मेरु वेमुदर् किरिहळ् वेरॉडुम्, पेरु मेयवन् पेरु मॅन्नॅडुम्
कारुम् वान्मुङ् गदिरु नाहमुम्, तूरु मेयवन् पॅरिय तोळ्हळाल् 119

अवन् पेरुमेल्–वह चलेगा तो; मेरुवे मुतल् किरिकळ्–मेरु ही आदि पर्वत; वेरॉटुम्–जड़ के साथ; पेरुमे–उखड़ जायेंगे; अवन् पॅरिय तोळ्कळाल्–उसकी बड़ी भुजाओं से; नॅटुम् कारुम्–बड़े-बड़े मेघ और; वानमुम्–आकाश; कतिरुम्–चन्द्र और सूर्य और; नाकमुम्–स्वर्गलोक; तूरुमे–परस्पर टकराकर मिट जायेंगे। ११९

जब वह चलता है, तब उसके वेग से चालित पवन के कारण मेरु आदि सभी पर्वत जड़ से उखड़ जाते हैं। उसके कन्धों से टकराकर बड़े-बड़े मेघ, आकाश, चन्द्र और सूर्य और स्वर्गलोक तक चूर हो जा सकते हैं। ११९

पारि डन्दवॅम् बन्रि पण्डैनाळ्, नीर्हि डन्दपे रामै नेरुळान्
मार्बि डन्दमा वॅन्तिनु मर्रवन्, तार्हि डन्दतो डहैय वल्लदो 120

पार् इटन्त–भूमि को उखाड़नेवाले; वॅम् पन्रि–अतिबलिष्ठ वराह (विष्णु का अवतार) भी; पण्टै नाळ्–प्राचीनकाल में; नीर् किटन्त–जल में रहा; पेर् आमै–बड़ा कच्छप (विष्णु का अवतार) भी; नेर् उळान्–उसके समान हैं; मार्पु इटन्त–हिरण्य का वक्ष-विदारक; मा ॲन्तिनुम्–नरसिंह भी; अवन्–उसके; तार् किटन्त तोळ्–माला से अलंकृत कन्धों को; तकैय वल्लतो–परास्त करने की शक्ति रखता क्या। १२०

वह, भूमि को जिन्होंने खोद निकाला उन विष्णु का अवतार, बड़ा वराह, और प्रलयजल में पड़ा रहा, विष्णु का, अवतार कच्छप —इनकी-सी शक्ति रखनेवाला है। नरसिंह भी, जिन्होंने हिरण्यकशिपु के वक्ष को विदीर्ण किया था, इसके भुजबल को परास्त कर सकेंगे क्या? नहीं। १२०

पडर्न्द नीणॅडुन् दलैप रप्पिमी
दडर्न्दु पारिडन् दनैय नन्दनुम्
किडन्दु ताङ्गुमिक् किरियिन् मेयिनान्
नडन्दु ताङ्गुमिप् पुवन नाळॅलाम् 121

अनन्ततनुम्–अनन्त नाग भी; पटर्न्त–खुले; नीळ् नॅटु–लम्बे-चौड़े; तलै–अपने सहस्र सिरों को; परप्पि–फैलाकर; मीतु अटर्न्तु–उन पर रही; पार् इटम् तनै–भूमि को; किटन्तु ताङ्कुम्–उसके नीचे रहकर ढो रहा है; इ किरियिन् मेयिनान्–इस पर्वत पर रहनेवाला वाली तो; इ पुवनम्–इस भुवन को; नाळ् ऍलाम्–अनेक काल से; नटन्तु ताङ्कुम्–चलते हुए ही धारण करता रहा है। १२१

अनन्तनाग इस भूमि को अपने सहस्र सिरों को फैलाकर, भूमि के नीचे रहकर ही उसे धारण कर रहा है। पर इस पर्वत पर रहनेवाला वाली चलते हुए ही बरसों से इसका धारण कर रहा है। १२१

कडलॉ लिप्पदुङ् गाल्श लिप्पदुम्
मिडल रुक्कर्तेर् मीदु शल्वदुम्
तॉडरिन् मड्ड्रवन् शुळियु मॅन्ड्रलाल्
अडलिन् वॅड्ड्रिया ययलि नावबो 122

अटलिन् वॅड्ड्रियाय्–युद्धविजेता; कटल् ऑलिप्पतुम्–समुद्र का गर्जन करना; काल् चलिप्पतुम्–पवन का संचार करना; मिटल् अरुक्कर्–शक्तिमन्त (द्वादश) आदित्यों का; तेर् मीतु चॅल्वतुम्–रथों पर सवार होकर संचार करना; तॉटरिन्–(वाली के) पास जायें तो; अवन् चुळियुम्–वह क्रोध करेगा; ऍन्ड्र अलाल्–यह (कारण) छोड़कर; मड्ड्र अयलिन्–अन्य कारणों से; आववो–होते हैं क्या। १२२

हे युद्धविजेता ! समुद्र गरजता है, वायु बहती रहती है, बलवान द्वादश आदित्य रथों पर सवार हो संचार कर रहे हैं ! यह सब क्यों ? वे वाली से डरते हैं। सोचते हैं कि अगर हम उसके पास जायँ तो वह कुपित होगा। अन्य कोई हेतु है क्या ? नहीं। १२२

वॅळ्ळ मेळ्ळुपत् तुळ्ळ मेरुवैत्
तळ्ळ लानदो ळरियिन् रातैयान्
उळ्ळ मॉन्ड्रियॅव् वुयिरुम् वाळ्ळुमाल्
वळ्ळ लेयवन् वलियिन् वन्मैयाल् 123

वळ्ळले–उदार दानी; मेरुवै तळ्ळल् आत–मेरु को भी ढकेलने की शक्ति वाले; तोळ्–कन्धों के; वॅळ्ळम् ऍळ्ळुपत्तु उळ्ळ–सत्तर 'वॅळ्ळम्' के; अरियिन् तानैयान्–वानरों की सेना का स्वामी; अवन् वलियिन्–उसकी शक्ति के; वन्मैयाल्–आधिक्य से; ऍ उयिरुम्–सभी जीव; उळ्ळम् ऑन्ड्रि–उसके साथ मन मिलाकर, मेल के साथ; वाळ्ळुम्–जीते हैं। १२३

हे वदान्य ! उसके पास सत्तर 'वॆळ्ळम्' या समुद्र वानरवीरों की बनी सेना है। (एक हाथी, एक रथ, तीन अश्व, पाँच पदाति —ये मिलकर एक 'पंक्ति' बनते हैं। तिगुणे के हिसाब से सेनामुख, गुल्म, गण, वाहिनी, पृतना, चमू, अनीकिनी होती है। दस अनीकिनियों की एक अक्षौहिणी होती है। फिर अठगुणे के हिसाब से एक, कोटि, शंख, बिन्द, कुमुद, पद्म, देश और समुद्र होता है —शुक्रनीति से न०वे० रा० द्वारा उद्धृत।) उसके प्रताप के आधिक्य के कारण सभी जीव उसका आदर करके मेल के साथ रहते हैं। १२३

मळैयि	डिप्पुरा	वयवॆंञ्	जीयमा
मुळैयि	डिप्पुरा	मुरण्वॆङ्	गालुमॆन्
तळैतु	डिप्पुरच्	चारु्वु	राववन्
विळैवि	डत्तिन्मेल्	विळियै	यञ्जलाल् 124

विळियै अञ्चल् आल्—उसके गर्जन से डरते हैं, इसलिए; अवन्—उसके; विळैवु इटत्तिन् मेल्—चाहे (वास के) स्थान के ऊपर; मळै इटिप्पु उऱा—मेघ वज्रघोष नहीं निकालते; वयम् वॆम्—विजयी भयंकर; चीयमा—सिंह जानवर; मुळै—गुफाओं में; इटिप्पु उऱा—गर्जन नहीं करते; मुरण् वॆम् कालुम्—बली, भयंकर पवन भी; मॆन् तळै—मृदु पत्तों में; तुटिप्पु उऱ—स्पन्दन पैदा करते हुए; चार्वु उऱा—उनके पास नहीं बहता। १२४

वाली गरज उठेगा, इसी डर से जहाँ वह चाह के साथ रहता है, उसके ऊपर मेघ वज्र नहीं गिराते। विजयशील सिंह जानवर अपनी गुफा में भी गर्जन नहीं करते। बलवान भयंकर पवन भी पल्लवों को भी हिलाते हुए नहीं बहता। १२४

मॆय्क्कॊळ्	वालिनाल्	मिडलि	रावणन्
तॊक्क	तोळुऱत्	तॊड्ड्ब	डुत्तनाळ्
पुक्कि	लादवुम्	पॊळ्िय	रत्तनीर्
उक्कि	लादवु	मुलहम्	यावदो 125

मॆय् कॊळ् वालिताल्—अपने शरीर का एक अंग, पूँछ से; मिटल् इरावणन्—अति बलिष्ठ रावण के; तॊक्क तोळ्—राशि के कन्धों को; उऱ—खूब कसकर; तॊटर् पटुत्त नाळ्—जिस दिन (वाली ने) बाँधा था; पुक्कु इलातवुम्—(उस दिन) वह जिन लोकों में नहीं गया; पॊऴि अरत्त नीर्—बहनेवाला रक्त; उक्कु इलातवुम्—जहाँ नहीं गिरा; उलकम् यावतो—वे लोक कौन हैं। १२५

(एक बार वाली समुद्रतट पर सन्ध्यावन्दन कार्य में निरत था। रावण ने पीछे से उसको अपनी बीसों भुजाओं से बाँधा।) वाली ने उसके बीसों कंधों को एक साथ कसकर अपनी पूँछ से बाँध लिया। उसी स्थिति में उसको उठा लेते हुए वाली सभी लोकों में घूमा। तब कौन सा लोक बचा था, जिसमें वाली नहीं गया था और जहाँ रावण का रक्त नहीं गिरा था ? । १२५

इऩ्दि	रऩ्ऱऩिप्	पुदल्व	ऩिऩ्ऩळिच्
चन्दि	रऩ्ऱळैत्	तऩैय	तऩ्मैयाऩ्
अऩ्द	हऩ्ऱऩक्	करिय	वाणैयाऩ्
मुऩ्दि	वऩ्दऩ	ऩिवऩिऩ्	मॊय्म्बिऩाय् 126

मॊय्म्पिऩाय्–शक्तिमन्त; इऩ्तिरऩ् तऩि पुतल्वऩ्–इन्द्र का अनुपम वह पुत्र; इऩ् अळि–सुखद; चन्तिरऩ्–चन्द्र; तळैत्तु अतैय–शोभायमान हो, ऐसा; तऩ्मैयाऩ्–विशिष्ट (श्वेत वर्ण का) है; अन्तकऩ् तऩक्कु अरिय–यम के लिए भी अलंघ्य; आणैयाऩ्–आज्ञाकारी है; इवऩिऩ्–इन (सुग्रीव) का; मुऩ्ति वऩ्तऩऩ्–अग्रज है। १२६

शक्तिमान ! इन्द्र का वह अनुपम पुत्र वाली श्वेत रंग का है और सुखद शोभायमान चन्द्र के समान है। उसकी आज्ञा ऐसी है कि यम के लिए भी टालना कठिन है। वह इन सुग्रीव का अग्रज भ्राता है। १२६

अऩ्ऩ	वऩ्ऩॆमक्	करश	ऩाहवेऩ्
ड्रिऩ्ऩ	वऩ्ऩिळम्	बदमि	यऱ्ऱुनाळ्
मुऩ्ऩ	वऩ्गुलप्	पहैञऩ्	मुट्टिऩाऩ्
मिऩ्ऩॆ	यिऱ्ऱुवा	ळवुणऩ्	मेऩ्मैयाऩ् 127

अऩ्ऩवऩ्–वह; ऎमक्कु अरचऩ् आक–हमारा राजा रहा, तब; इऩ्ऩवऩ्–ये; इळम् पतम् एऩ्ऱु–युवराज के पद का धारण करके; इयऱ्ऱु नाळ्–शासन करते रहे, तब; मेऩ्मैयाऩ्–शक्ति में बढ़ा हुआ; मुऩ्–पूर्व से ही; अवऩ् कुल पकैञऩ्–वाली का कुलवैरी जो रहा, वह; मिऩ् ऎयिऱ्ऱु–उज्ज्वल वक्र दन्तार; वाळ् अवुणऩ्–तलवारधारी दानव; मुट्टिऩाऩ्–(वाली से) भिड़ा। १२७

वह वाली हमारा राजा रहा। ये सुग्रीव युवराज के पद पर थे। जब ये राज्य कर रहे थे, तब अति बलिष्ठ, वाली का कुलवैरी और बिजली-सम वक्रदंतार और तलवारधारी (मायावी नाम का) दानव वाली से आकर भिड़ा। १२७

मुट्ट	निऩ्ऱवऩ्	मुरणु	रत्तिऩाल्
ऒट्ट	वञ्जिनॆञ्	जुलैय	वोडिऩाऩ्
वट्ट	मण्डलत्	तरिदु	वाऴ्वॆऩा
ऎट्ट	रुम्बिल	मदऩि	लॆय्दिऩाऩ् 128

मुट्ट–टकराने पर; निऩ्ऱवऩ्–जो अड़ा रहा वह वाली; मुरण् उरत्तिऩाल्–बलवान वक्ष से; ऒट्ट–प्रहार करने लगा; अञ्चि–डरकर; नॆञ्चु उलैय–मन में व्यग्र होकर; ओटिऩाऩ्–भागा; वट्ट मण्टलत्तु–गोल भूमण्डल में; वाऴ्वु अरितु ऎऩा–जीना कठिन है, जानकर; ऎट्टु अरुम्–पहुँचने में कठिन; पिलम् अततिल्–एक बिल में; ऎय्तिऩाऩ्–घुस गया। १२८

जब असुर भिड़ने आया, तब वाली अड़ा रहा और अपने वक्ष से उस पर प्रहार किया। असुर डरा और जान लेकर भागा। 'इस गोल भूमण्डल पर कहीं भी रहना खतरे से खाली नहीं' —यह जानकर वह ऐसे एक बिल में घुस गया, जहाँ जाना बहुत ही कठिन था। १२८

ॲय्दु	कालैयिप्	पिलनु	ळॅय्दियान्
नॉय्दि	नङ्गवड्	कॉलुवॅ	नोन्मैयाल्
शॅय्दि	कावनी	शिरिदु	पोळ्दॅना
वॅय्दि	नॅय्दिनान्	वॅहुळि	मेयिनान् 129

ॲय्तु काले–जब घुसा; वॅकुळि मेयिनान्–क्रुद्ध (वाली); यान्–मैं; इ पिलनुळ् ॲय्ति–बिल में जाकर; नोन्मैयाल्–शक्ति से; नॉय्तिन्–शीघ्र; अङ्कु–वहाँ; अवन् कॉल्वॅन्–उसको मारूँगा; नी–तुम; चिऱितु पोळ्तु–थोड़ी देर; कावल् चॅय्ति–रक्षण का काम करो; ॲना–कहकर; वॅय्तिन्–शीघ्र; ॲय्तिनान्–(बिल में) गया। १२९

जब वह घुस गया तो वाली को अपार क्रोध हुआ। उसने सुग्रीव को आज्ञा दी कि मैं इसमें जाऊँगा और अपने बल से इसको शीघ्र मारकर आ जाऊँगा। तुम इसकी रखवाली करो, थोड़ा समय। यह कहकर वाली शीघ्र उस बिल में घुस गया। १२९

एहि	वालियु	मिरुदुवे	ळीडेळ्
वेह	वॅम्बिलन्	दडवि	वॅम्मैशाल्
मोह	मोडमर्	मुयल्विन्	वैहिडच्
चोह	मॅय्दिनिन्	रुणैदु	ळङ्गिनान् 130

वालियुम्–वाली भी; वॅम् पिलम् वेकम् एकि–भयंकर बिल में घुसकर; एळ् ओटु एळ् इरुतु–चौदह ऋतुओं के काल तक; तटवि–टटोलकर; वॅम्मै चाल्–उग्र; मोकम् ओटु–उत्साह के साथ; अमर् मुयल्विन्–युद्ध के प्रयत्न में; वैकिट–लगा रहा, तब; निन् तुणै–आपके भाई (सुग्रीव); चोकम् ॲय्ति–शोकाकुल होकर; तुळङ्किनान्–घबड़ा गया। १३०

वाली उसके अन्दर गया। उस असुर को ढूँढ़ता रहा। चौदह ऋतुओं का (अट्ठाईस मास का) काल बीत गया। आखिर उसको पाकर वाली उग्र रूप से दत्तचित्त होकर उसके साथ लड़ने में लगा हुआ था। इधर आपके भाई सुग्रीव चिन्ताग्रस्त होकर (शायद वाली मर गया क्या ? इस संशय के कारण) घबड़ाये रहे। १३०

अळद	ळुड्गुरु	मिवनै	यन्बिनिल्
तॉळुदि	रन्दुनिन्	डॉळिलि	दादलाल्

अऴुदु वॆन्ऱियाय् अरशु कॊळ्हॆन्ऱॆन्
पऴुदि तॆन्ऱनन् परियु नॆञ्जिनान् 131

ॲऴुतु वॆन्ऱियाय्–उल्लेखनीय विजयशाली; अऴुतु अऴुङ्कुरुम्–रोते और दुःखी; इवनै–इनको; अन्पितिल् तॊऴुतु–स्वामी-भक्ति के साथ नमस्कार करके; इरन्तु–प्रार्थना में; निन् तॊऴिल् इतु–आपका कार्य है यह; आतलाल्–इसलिए; अरचु कॊळ्क–राज्य लो; ॲन–हमारे कहने पर; परियुम् नॆञ्चितान्–(भ्रातृस्नेह से) विह्वलमन; इतु पऴुतु–यह गलत है; ॲन्ऱनन्–कहा। १३१

वर्णनयोग्य विजयशील ! बहुत काल तक सुग्रीव दुःख के साथ रोते रहे। तब हम वानरों ने इनसे प्रार्थना की। शासन करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार का कार्य है। आप जाकर राज्य पर अधिकार करें। पर भ्रातृवियोग से दुःखी इन्होंने कहा कि यह गलत काम है। वे सम्मत नहीं हुए। १३१

ॲन्ऱु तानुमव् वऴियि रुम्बिलम्
शॆन्ऱु मुन्नवऱ् ऱेडु वेऩवऱ्
कॊन्ऱु ळान्ऱनैक् कॊलवॊ णादॆनिल्
पॊन्ऱु वेनॆनप् पुहुदन् मेयिनान् 132

ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; अ वऴि–उसी रास्ते से; इरुम् पिलम् चॆन्ऱु–बड़े बिल में जाकर; मुन्नवन् तेट्टुवेन्–अपने बड़े भाई को ढूँढूँगा; अवन् कॊन्ऱु उळान् तनै–उसके हन्ता को; कॊल ऑणातु ॲनिल्–मार नहीं सकूँगा तो; पॊन्ऱुवेन्–स्वयं मर जाऊँगा; ॲन–यह ठानकर; तानुम्–स्वयं भी; पुकुतल् मेयिनान्–घुसने लगे। १३२

उन्होंने यह ठाना कि मैं इसी मार्ग से इस बिल में घुस जाऊँगा और बड़े भाई की टोह लगाऊँगा। समझिए कि उनको असुर ने मारा है और उसे मैं मार नहीं सकूँगा, तो मैं स्वयं आत्महत्या कर लूँगा। यह निश्चय सुनाकर वे उसी बिल में प्रवेश करने लगे। १३२

तडुत्तु वल्लवर् तणिवु शॆय्दुनोय्
कॆडुत्तु मेलैयोर् किळत्तु नीदियाल्
अडुत्त कावलुम् मरशु माणॆयिल्
कॊडुत्त दुण्डिवन् कॊण्ड दिल्लैयाल् 133

वल्लवर्–समर्थ, बड़े वानर लोगों ने; तडुत्तु–रोककर; तणिवु चॆय्तु–समाधान करके; नोय् कॆट्टुत्तु–दुःख का रोग दूर करके; मेलैयोर्–पूर्व के लोगों के; किळत्तु नीतियाल्–कथित नीतिवाक्यों के अनुसार; अट्टुत्त कावलुम् अरचुम्–प्राप्त पालन और शासन का पद; आणॆयिल्–क्रम के अनुकूल; कॊट्टुत्ततु उण्टु–दिया, यही सत्य है; इवन् कॊण्टतु इल्लै–इन्होंने खुद लिया नहीं था। १३३

तब चतुर, समर्थ बुजुर्ग लोगों ने उनको रोका और सान्त्वना दिलायी;

और दुःखरोग से निवृत्त कराया। पूर्व के विद्वानों के कथित धर्म के अनुसार पालन और शासन का ज़िम्मा उनका हो गया था। इसलिए उन्होंने राज्य का भार नियमानुसार उन्हें सौंप दिया। यही सच्ची घटना है। सुग्रीव ने स्वयं राज्य नहीं लिया था। १३३

अऩ्ऩ	नाळिऩ्मा	यावि	यप्पिलत्
तिऩ्ऩ	वायिल्	डेरु	मॆऩ्ऩयाम्
पॊऩ्ऩिऩ्	माल्वरॆप्	पॊरुप्पॊ	ळित्तुवे
ऱुऩ्ऩु	कुऩ्ऱॆला	मुडऩ	डुक्किऩेम् 134

अऩ्ऩ नाळिल्–उन दिनों; याम्–हम; मायावि–मायावी; अ पिलत्तु–उस बिल के; इऩ्ऩ वायिल् ऊडु–इस द्वार के द्वारा; एऱुम् ऎऩ्ऩ–चढ़कर बाहर आयगा (तो); ऎऩ्ऩ–ऐसा सोचकर; पॊऩ्ऩिऩ् माल् वरै पॊरुप्पु–स्वर्ण का बड़ा मेरुपर्वत; ऒऴित्तु–छोड़कर; वेऱु उऩ्ऩु–अन्य गण्य; कुऩ्ऱु ऎलाम्–सभी पर्वतों को; उडऩ् अडुक्किऩेम्–उस द्वार पर चुन दिया। १३४

जब यह सब हुआ तो हमने सोचा कि मायावी इस द्वार से बाहर आ जाएगा तो अनर्थ हो जाएगा। इस डर से हमने उसको बन्द कर अपनी रक्षा करना चाहा। अतः मेरुपर्वत को छोड़कर अन्य सारे गण्य भारी पर्वतों को उठाकर हमने उस द्वार के सामने चुन दिया। १३४

शेम	मव्वऴिच्	चॆय्दु	शॆङ्गदिर्क्
कोम	हऩ्ऱऩैक्	कॊण्डु	वन्दियाम्
मेवु	कुऩ्ऱिऩ्मेल्	वैहुम्	वेलैवाय्
आवि	युण्डऩ	ऩवऩै	यऩ्ऩवऩ् 135

याम्–हम; अ वऴि–उस द्वार को; चेमम् चॆय्तु–सुरक्षित (बन्द) करके; चॆम् कतिर्–लाल किरणों के सूर्य के; कोमकऩ् तऩै–सुपुत्र को; कॊण्टु वन्तु–ले आकर; मेवु कुऩ्ऱिऩ् मेल्–(हमारे वास के लिए) बने पर्वत पर; वैकुम् वेलै वाय्–रहते थे, तब; अवऩै–उस असुर के; अऩ्ऩवऩ्–उस वाली ने; आवि उण्टऩऩ्–प्राण पी लिये (हर लिये)। १३५

इस तरह उस द्वार को खूब बन्द करके, हमने सुरक्षा का बन्दोबस्त किया। लाल किरणों के स्वामी सूर्य के सुत को पर्वत पर ले आये। हम यहाँ निश्चिन्त अपना समय बिताने लगे। उधर क्या हुआ? वाली ने मायावी के प्राणों का पान कर लिया (मार डाला)। १३५

ऒऴित्त	वऩ्ऩुयिर्क्	कळ्ळै	युण्डुळम्
कळित्त	वालियुङ्	गडिदि	ऩॆय्दिऩात्
विळित्तु	निऩ्ऱुवे	ऱुरॆप्पॆ	ऱानिऱुऩ्
दळित्त	वाऱ्ऩऩ्	ऱिळव	लारॆऩा 136

ऑळितृतवन्–जो छिपा रहा उसके; उयिर् कळ्ळै–प्राणसुरा को; उण्टु–पान करके; उळम् कळित्त–मनमस्त; वालियुम्–वाली भी; कटितिन् अॅय्तितान्–वेग के साथ आकर; विळित्तु निन्ऱु–टेर लगाता रहा; वेऱु उरै पॅऱान्–उत्तर नहीं पाकर; इळवलार्–युवराज का; इरुन्तु अळितृत–यहाँ रहकर उपकार करने का; आऱु–यह प्रकार; नन्ऱु अॅन्ता–अच्छा रहा, कहकर। १३६

बिल में जो छिपा था, उस मायावी के प्राण वाली के लिए सुरा-सम लगे। यानी वाली उसको मारकर सन्तोष से भर गया। मनमस्त होकर वह द्वार पर आकर क्या देखता है? द्वार बन्द है। टेर लगाता है; कोई उत्तर नहीं मिलता। हा! युवराज का यहाँ रखवाली करके मेरा उपकार करने का यह तरीका भी बड़ा अच्छा रहा! यह कहा। १३६

वाल्वि शैत्तुवान् वळिनि मिर्न्तुउऱ
काल्पॅ यर्त्तवन् कडिदु दैत्तलुम्
नील्नि ऱत्तवा नॅडुमु हट्टवुम्
वेलै पुक्कवुम् बॅरिय वॅर्पॅलाम् 137

अवन्–उसके; वान् वळि–आकाश में; निमिर्न्तु उऱ–उठी रहे, ऐसा; वाल् विचैत्तु–पूँछ ऊपर करके; काल् पॅयर्त्तु–पैर उछालकर; कटितु उतैत्तलुम्–जोर से (लात) मारने पर; पॅरिय वॅर्पु अॅलाम्–सारी बड़ी गिरियाँ; नील् निऱत्त–नील; वान्–आकाश की; नॅटु मुकट्टवुम्–ऊँची चोटी को (तक पहुँची हुई) हो गयीं; वेलै पुक्कवुम्–और समुद्र में मग्न (हो गईं)। १३७

उसने अपनी पूँछ आकाश की चोटी से लगाते हुए उठायी। बड़े वेग के साथ पैर उछालकर लात मारी तो द्वार पर के सारे पर्वत उड़ गये। एक अंश के आकाश पर गये और बाकी समुद्र में जा गिरे। १३७

एऱि नात्तव नॅवरु मञ्जुरच्
चीऱि नानॅडुञ् जिहर मॅय्दिनान्
वेऱि लादवन् बुदवु मॅय्म्मैयाम्
आऱि नानुम्वन् दडिव णङ्गिनान् 138

अवन्–वह; ॲवरुम् अञ्चुऱ–सबको भयभीत करते हुए; एऱिनान्–बिल के बाहर चढ़ आया; चीऱिनान्–क्रोध दिखाते हुए; नॅटुम् चिकरम् अॅय्तिनान्–विशाल उन्नत शिखर पर आ पहुँचा; वेऱु इलात–निर्विकार; अन्पु उतवु–भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर; मॅय्म्मै आम्–सत्य के; आऱिनानुम्–मार्ग में चलनेवाले सुग्रीव भी; वन्तु–सामने आकर; अटि वणङ्कितान्–उसके चरणों पर नत हुए। १३८

वह ऊपर चढ़कर बिल के बाहर निकला। सबको भयभीत करते हुए अत्यन्त क्रोध के साथ वह इस पर्वत के विशाल और उन्नत शिखर पर चढ़ आया। सत्यमार्गगामी सुग्रीव निर्विकार भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर उसके सामने आये और चरणों पर नत हुए। १३८

वणङ्गि यण्णनिन् वरवि लामैयाल्
उणङ्गि युन्वळिप् पडर वुन्नुवेऱ्
किणङ्ग रिन्मैया लिऱैव वुन्नुडैक्
कणङ्गळ् कावलुन् कडन्मै यॆन्ऱनर् 139

वणङ्कि–नमस्कार करके; अण्णल्–महिमामय; निन्–आपका; वरवु–आगमन; इलामैयाल्–नहीं हुआ, इसलिए; उणङ्कि–मुरझाकर; उन् वळि पटर–आपकी खोज में आना; उन्नुवेऱ्कु–जो सोचा वैसे मुझे; इऱैव–हे नाथ; उन्नुटै कणङ्कळ्–आपके ही इन वृन्दों ने; इणङ्कर् इन्मैयाल्–सम्मत न होने से; कावल् उन् कटन्मै–शासन तुम्हारा ज़िम्मा है; ऍन्ऱनर्–कहा। १३९

नमस्कार करके उन्होंने वाली से निवेदन किया कि महिमावान ! आप बहुत दिन तक लौट नहीं आये। मैं मुरझाया और मैं आपका अनुगमन करना ही चाहता था। पर आपके इन वानरवृन्दों ने उससे सहमत न होकर मुझसे आज्ञा दी कि शासन करना तुम्हारा कर्तव्य है; ज़िम्मा है। १३९

आणै यञ्जियिव् वरशै यॆय्दिवाऴ्
नाणि लादनी नवैयुळ् वॆहिन्नाय्
पूणु लावुदो ळिनैपॊ ऱायॆनक्
कोणि नानॆडुङ् गॊडुमै कूऱिनान् 140

पूण् उलावु–आभरण जिन पर हिलते हैं, ऐसे; तोळिनै–भुजा वाले; पॊऱाय्–क्षमा कीजिए; ऍन–विनय करने पर; आणै अञ्चि–इनकी आज्ञा से डरकर; इ अरचै–इस राज्य को; ऍय्ति–लेकर; वाऴ्–रहनेवाले; नाण् इलात नी–निर्लज्ज तुम; नवैयुळ् वॆकिन्नाय्–अपराध कर चुके हो; कोणितान्–विकृतमन; नॆटुम् कॊटुमै–बड़े कठोर वचन; कूऱितान्–बोला। १४०

आभरणालंकृत भुजा वाले भाई ! क्षमा करें। सुग्रीव ने यह विनय की। पर वाली का मन वक्र हो गया था। उसने अपराध लगाया कि उनकी आज्ञा से डरकर तुम राज्य लेकर भोग कर रहे हो। तुम निर्लज्ज हो ! तुम अपराध कर चुके हो। विकृतमन वाली ने कितने ही कठोर शब्द कहे। १४०

अडलॄह डन्ददो ळवनै यञ्जिवॆम्
कुडलॄह लङ्गियॆङ् गुलमॊ डुङ्गमुन्
कडलॄह डैन्दवक् करद लङ्गळाल्
उडलॄह डैन्दन निवनु लॆन्दनन् 141

अटल् कटन्त–अतिक्रान्त; तोळ् अवनै–भुजबल वाले उससे; अञ्चि–डरकर; ऍम् कुलम्–हमारे समूह; वॆम् कुटल्–तप्त आँतों के; कलङ्कि–विचलित होते;

ऑट्टुङ्क–दुबके रहे; मुन् कटल् कटैन्त–पूर्वकाल में जिनसे समुद्र मथा था; अ करतलङ्कळाल्–उन हाथों से; उटल् कटैन्ततन्–(सुग्रीव का) शरीर मथ दिया; इवन् उलैन्ततन्–ये व्याकुल हुए। १४१

वाली का भुजबल बल के माप का भी अतिक्रमण कर गया था। उसके डर के कारण हमारे समूह के वानरों की आँतें तक तप्त हो गयीं, विचलित हो गयीं। हम दुबके खड़े रहे। तब वाली ने अपने हाथों से, जिनसे उसने क्षीरसागर को मथा था, सुग्रीव को प्रहार करके त्रस्त किया। ये सुग्रीव बहुत व्याकुल हुए। १४१

नक्क	रक्कडऱ्	पुऱत्तु	नण्णुनाळ्
शॅक्कर्	मॅय्त्तनिच्	चोदि	शेऱ्हलाच्
चक्क	रप्पोरुप्	पिन्ऱ	लैक्कुमप्
पक्क	मुऱ्ऱवऱ्	कडिदु	पऱ्ऱिनान् 142

नक्करम्–नक्रों से युक्त; कटल् पुऱत्तु–समुद्रों के भी उस पार; नण्णुम् नाळ्–(जब सुग्रीव) गये तब; चॅक्कर् मॅय्–लाल शरीर के; तनि चोति–अनुपम ज्योतिस्वरूप (सूर्य); चेर्कला–जहाँ पहुँच नहीं पाते; चक्करम् पोरुप्पिन्–चक्रवाल गिरि के; तलैक्कुम्–तल के भी; अ पक्कम् उऱ्ऱु–उस पार जाकर; अवन् कटितु पऱ्ऱिनान्–उनको जल्दी पकड़ लिया। १४२

सुग्रीव भागा। नक्रसहित समुद्रों के उस पार जाकर रहा। वाली चक्रवाल गिरि के उस पार, जहाँ लाल शरीर के अनुपम ज्योतिपुंज सूर्य भी पहुँच नहीं पाते, गया और सुग्रीव को पकड़ लिया। १४२

पऱ्ऱि	यञ्जलन्	पळियै	वॅञ्जिनम्
मुऱ्ऱि	निन्ऱदन्	मुरण्व	लिक्कैयाल्
ॲऱ्ऱु	वानॅडुत्	तॅळुद	लुम्बिळैत्
तऱ्ऱ	मीन्ऱुपॅऱ्	ऱिवन	हन्ऱनन् 143

पऱ्ऱि–पकड़कर; पळियै अञ्चलन्–लोकनिन्दा से न डरकर; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध; मुऱ्ऱि निन्ऱ–से भरे; तन् मुरण् वलि कैयाल्–अपने अति बलिष्ठ हाथों से; ॲऱ्ऱुवान्–पटकने के विचार से; ॲटुत्तु ॲळुतलुम्–उठाते हुए उठा तो; इवन्–ये; अऱ्ऱम् ओन्ऱु–एक मौका; पॅऱ्ऱु–पाकर; पिळैत्तु अकन्ऱनन्–बचकर भाग गये। १४३

वाली 'भ्रातृत्रासक के रूप में लोक-निन्दा का पात्र बनूंगा' इस बात से भी नहीं डरा। उसने अति क्रोध के साथ अपने क्रूर हाथों से सुग्रीव को पकड़ लिया। उनको वेग से पटकने के विचार से उसने अपने हाथ उठा लिये। तब सुग्रीव किसी विध मौका पाकर बच गये और भाग आये। १४३

ऎन्दै मऱ्ऱव नॆयिऱ तुक्कुमेल्, अन्द हऱ्कुमो ररण मिल्लैयाल्
इन्द वॆऱ्पिन्वन् दिवणि रुन्दतन्, उन्द वुऱ्ऱदोर् शाब मुण्मैयाल् 144

ऎन्तै–हमारे धाता; अवन्–(वाली) वह; ऎयिऱु अतुक्कुमेल्–दाँत पीसेगा तो; अन्तकऱ्कुम्–यम के लिए भी; ओर् अरणम्–कोई पनाह; इल्लै–नहीं मिलेगी; आल्–इसलिए; उन्त–(मतंग मुनि द्वारा) दिया जाकर; उऱ्ऱतु ओर् चापम्–मिला एक शाप; उण्मैयाल्–है, उससे; इवन्–ये; इन्त वॆऱ्पिन् वन्तु–इस गिरि पर आकर; इरुन्ततन्–ठहरे हैं। १४४

हनुमान ने जारी किया। हमारे धाता! वाली दाँत पीसता दिखता तो यम को भी पनाह नहीं मिलती। इसलिए सुग्रीव का बचना कठिन हो गया। तो भी कुपित मतंग मुनि का दिया हुआ शाप है कि वह इधर नहीं आ सकता। इसलिए सुग्रीव इस पर्वत पर आकर ठहरे हैं। १४४

उरुमै यॆन्ऱिवऱ् कुरिय तारमाम्, अरुम रुन्दैयु मवन्वि रुम्बिनान्
इरुमै युन्दुरन् दिवणि रुन्दतन्, करुम मिङ्गिदॆङ् गडवु ळॆन्ऱनन् 145

ऎम् कटवुळ्–हमारे ईश्वर; इवऱ्कु–इनके; उरुमै ऎन्ऱु–रुमा नाम की; उरिय तारम् आम्–इनकी अपनी पत्नी; अरु मरुन्तैयुम्–दुर्लभ अमृत को भी; अवन् विरुम्पिनान्–उसने अपने पास कामना के साथ रख लिया है; इवन्–ये; इरुमैयुम्–(पत्नी, राज्य) दोनों को; तुऱन्तु–त्यागकर; इरुन्ततन्–रहते हैं; इङ्कु करुमम् इतु–यहाँ का वृत्तान्त यह है; ऎन्ऱतन्–(हनुमान ने) कहा। १४५

हमारे भगवान! सुग्रीव के रुमा नाम की, दिव्य अमृत-समान पत्नी है। वाली ने उसे भी कामना के साथ अपने पास रख लिया है। ये पत्नी व राज्य, दोनों से वंचित होकर इधर आकर ठहरे हैं। यही घटित वृत्तान्त है। हनुमान ने सारी बातें कह सुनायीं। १४५

❋ पॊय्यि लादवन् वरन्मुऱै यम्मॊऴि पुहल
ऐय नायिरम् पॆयरुडै यमरर्क्कु ममरन्
वैय नुङ्गिय वायिदऴ् तुडित्तदु मलर्क्कण्
शॆय्य तामरै याम्बलम् पोदॆनत् तिहऴ्न्द 146

पॊय् इलातवन्–असत्य-रहित (सत्यसंध); वरन् मुऱै–यथाक्रम; अ मॊऴि पुकल–वह वृत्तान्त बोला, तब; आयिरम् पॆयरुटैय–सहस्रनामी; ऐयन्–प्रभु; अमरर्क्कुम् अमरन्–देवाधिदेव के; वैयम् नुङ्किय–भुवनों को (प्रलयकाल में) निगलनेवाले; वाय् इतऴ्–मुख के अधर; तुटित्ततु–फड़के; कण्–आँखें रूपी; चॆय्य–लाल; तामरै मलर्–कमल के फूल; आम्पल् अम् पोतु ऎन–लाल कुमुद-सुमन के समान (अत्यधिक लाल); तिकऴ्न्त–हो गये। १४६

हनुमान कभी झूठ बोलनेवाला नहीं था। सत्यसंध था। उसने क्रमवार सारी घटनाएँ कह सुनाया तो सहस्रनामधारी देवाधिदेव के प्रलयकाल में

विश्व को निगलनेवाले मुख के अधर फड़क उठे। उनके लाल कमल-सम आँखें कुमुद-सम अत्यधिक लाल हो गयीं। उन्हें बड़ा क्रोध हुआ। १४६

❀ ईर नीङ्गिय शिऱ्ऱवै शॊऱ्ऱत्त ऎन्ऩ
वार नीङ्गला विळवऱ्कु मन्ऩर
शुरिमैप् पार मीन्दवन् परिविल
नॊरुवन्ऩ तिळैयोन् तारम्
वौवित्त ऎन्ऩ्ऱशॊऱ् ऱरिक्कुमा ऱुळदो 147

ईरम् नीङ्किय–स्नेहार्द्रता से रहित; चिऱ्ऱवै–विमाता ने; चॊऱ्ऱतळ्–कहा; ऎन्ऩ–वह मानकर; वारम् नीङ्कला–प्यारे; इळवऱ्कु–छोटे भाई भरत को; मन् अरचु–स्थायी राज्य के; उरिमै पारम्–स्वत्व का भार; ईन्तवन्–जिन्होंने दे दिया; परिवु इलन्–प्यार-रहित; ऒरुवन्–एक (वाली) ने; तन् इळैयोन् तारम्–अपने छोटे भाई की पत्नी को; वौवितन्–ग्रस लिया; ऎन्ऱ चॊल्–यह कथन; तरिक्कुम् आऱु–सहेगा, इसका कोई मार्ग; उळतो–है क्या। १४७

(श्रीराम अपने छोटे भाइयों के अगाध प्रेमी थे।) स्नेहहीन विमाता के कहने पर उन्होंने अत्यक्त प्यार के अपने छोटे भाई भरत को अपने स्वत्व के राज्य का भार सौंप दिया था। ऐसे श्रीराम इस बात को सुनकर सह लें कि किसी ने अपने छोटे भाई की पत्नी को ग्रस लिया है, यह कैसे सम्भव हो सकता है? इसका मार्ग कहाँ? । १४७

❀ उलह मेळिऩो डेळुम्वन् दवनुयिर्क् कुदवि
विलहु मॆन्ऩिनुम् विल्लिडै वाळियिन् वीट्टित्
तलैम योडुनिन् ऱारमु मुतक्किन्ऱु तरुवॆन्
पुलैम योयव नुऱैविडङ् गाट्टॆनप् पुहन्ऱाऩ् 148

उलकम्–लोक; एळिन् ओटु एळुम्–सात और सात (चौदहों) के वासी; वन्तु–मिल आकर; अवन् उयिर्क्कु–उसके प्राणों के; उतवि–(रक्षण में) सहायता करें; विलकुम्–और मेरे विरोध व्यवहार करें; ऎन्ऩितुम्–तो भी; विल् इटै–अपने धनुष से (प्रेषित); वाळियिन्–शरों से; वीट्टि–उनको मारकर; तलैमैयोटु–नेतृत्व (राज-पद) के साथ; निन् तारमुम्–तुम्हारी पत्नी को भी; इन्ऱु–अभी; उतक्कु तरुवॆन्–तुम्हें दिलाऊँगा; पुलैमैयोय्–बुद्धिमान; अवन् उऱैवु इटम्–उसका वासस्थान; काट्टु–दिखाओ; ऎन्ऩ–ऐसा; पुकन्ऱान्–श्रीवचन उच्चारे। १४८

(उन्होंने सुग्रीव को वचन दिया।) चौदहों लोकों के वासी मिलकर आवें, उसकी प्राण-रक्षा में मेरा विरोध करें तो भी मैं अपने धनु से प्रेरित शरों से उनका वध कर दूंगा। फिर तुम्हें तुम्हारा राज्य और तुम्हारी पत्नी दोनों को मुक्त कराकर तुम्हें सौंप दूंगा। बुद्धिमान सुग्रीव! अब मुझे उसका वासस्थान दिखाओ। श्रीराम ने यह कहा। १४८

ऍऴुन्दु पॆरुव हैप्पॆरुन् दिरैक्कड लिरैप्प
अऴुन्दु तुन्बत्तिन् करैकण्ड कडह्ळि ऱनैयान्
विऴुन्द दॆयिनि वालिदन् वलियॆन विरुम्बा
मॊऴिन्द वीरऱ्किया मॆण्णुव दुण्डॆन मॊऴिन्दान् 149

उवकै–सन्तोष का; पॆरुम् तिरै–उत्तुंग तरंगों का; कटल्–सागर; इरैप्प–शोर कर उठा; अऴुन्तु तुन्पत्तिन्–गहरे दुःख का; करै कण्ट–तट देखकर; कटम् कळिऱु अनैयान्–मत्तहाथी-सम (सुग्रीव); इन्नि–अब; वालि तन् वलि–वाली का बल; विऴुन्तते–मिटा; ऍन–ऐसा सोच; विरुम्पा–चाह के साथ; ऍऴुन्तु–उठकर; मॊऴिन्त–(वादे का वचन) कहनेवाले; वीरऱ्कु–वीर से; याम् ऍण्णुवतु–हमें सोचने का; उण्टु–(एक कार्य) है; ऍन–ऐसा; मॊऴिन्तान्–बोले। १४९

यह सुनकर सुग्रीव आनन्दानुभव करने लगा। आनन्द का, बड़ी-बड़ी लहरों का गहरा सागर गरज उठा। मत्तगज-सा सुग्रीव दुःख के सागर के पार आ गया। उसे लगा कि अब वाली अपना बल खो गया। तपाक से वह उठा। फिर जिन्होंने वाली को मारने का वादा किया था, उन श्रीराम से निवेदन किया कि अब हमें एक बात के सम्बन्ध में सोचना है। १४९

अन्नैय वाण्डुरैत् तनुमन्ने मुदलिय वमैच्चर्
निन्नैवुङ् गल्वियु नीदियुञ् जूऴ्च्चियु निऱैन्दार्
ऍन्नैय रन्नव रॊडुम्वे ऱिरुन्दन ऩिरवि
तन्नैय ऩव्वऴिच् चमीरणन् महनुरै तरुवान् 150

इरवि तनैयन्–सूर्यपुत्र; अन्नैय–ऐसा; आण्टु उरैत्तु–वहाँ कहकर; निनैवुम्–धारणाशक्ति; कल्वियुम्–विद्या; नीतियुम्–नीति का ज्ञान; चूऴ्च्चियुम्–मन्त्रणा; निऱैन्तार्–इनसे भरे; अनुमने मुतलिय–हनुमान आदि; अमैच्चर्–मन्त्री; ऍनैयर्–जितने थे; अन्नवरोटुम्–उन सबके साथ; वेऱु इरुन्तनन्–अलग (मन्त्रणाकार्य में लगे) रहे; अ वऴि–तब; चमीरणन् मकन्–समीरण-सूनु; उरै तरुवान्–सलाह देने लगा। १५०

सुग्रीव यह कहकर हनुमान आदि जितने मंत्री थे, उन सबको लेकर अलग गया। वे मंत्री सोचकर सलाह देने में समर्थ थे। उनमें विद्या थी। वे नीति और राजतन्त्र जाननेवाले थे। तब समीरणसूनु हनुमान सुग्रीव को यों समझाने लगा। १५०

उन्नि नेनुन्ऱ नॊळ्ळत्ति नुऱ्ऱदै युरवोय्
अन्न वालियैक् कालनुक् कळिप्पदो राऱ्ऱल्
इन्न वीरऱ्पा लिल्लैयॆन् ऱयिर्त्तनै यिनियान्
शॊन्न केट्टवै कडैप्पिडिप् पायॆनच् चॊन्नान् 151

उरवोय्–शक्तिमन्त; उन् तन्–आपके; उळ्ळत्तिन्–मन में; उऱ्ऱतै–जो उठा उसको; उन्नित्तेन्–मैं ताड़ गया; अन्न वालियै–उस (अति बली) वाली को; कालनुक्कु अळिप्पतु–यम को (मेहमान के रूप में) दिलाने का; ओर् आऱ्ऱल्–ऐसा बल; इन्न वीरर् पाल्–इन वीरों के पास; इल्लै–नहीं है; ऍन्ऱु–यह मानकर; अयिर्त्तनै–शंकित हैं; इनि–अब; यान्–मेरा; चॊन्न केट्टु–कहना सुनकर; अवै–उनके अनुसार; कटै पिटिप्पाय्–काम कीजिए; ऍन–कहकर; चॊन्नान्–आगे बोले। १५१

बलिष्ठ राजा ! आपके मन का भाव मैं ताड़ गया। आप संशय करते हैं कि ऐसे बली वाली को यम के पास पहुँचाने की शक्ति इन वीरों के पास नहीं है। अब मेरा कहना सुनिये और उनको मानकर आगे का काम कीजिए। १५१

शङ्गु शक्करक् कुऱियुळ तडक्कैयिऩ् ऱाळिल्
ऍङ्गु मित्तुणै यिलक्कणम् यावर्क्कु मिल्लै
शॅङ्गण् विऱ्करत् तिरामनत् तिरुनॆडु माले
इङ्गु दित्तन नीण्डऱ निऱुत्तुदऱ् किन्नुम् 152

तट कैयिल्–विशाल हाथों में; ताळिल्–और पादों में; चङ्कु चक्कर कुऱि–शंख-चक्र के निशान; उळ–हैं; ऍङ्कुम्–कहीं भी; यावर्क्कुम्–किसी के; इ तुणै–इतने; इलक्कणम् इल्लै–अंग-लक्षण नहीं हैं; चॅम् कण्–लाल आँखों; विल् करत्तु–और धनु से युक्त हाथ के; इरामन्–ये श्रीराम; अ तिरु नॆटुमाले–वे श्रीमहाविष्णु ही हैं; ईण्टु–अब; इन्नुम्–अब भी; अऱम् निऱुत्तुतऱ्कु–धर्म स्थापित करने के लिए; उतित्तनन्–अवतार ले प्रकट हुए हैं। १५२

श्रीराम के विशाल हाथों और श्रीचरणों में शंख-चक्र के चिह्न हैं। ये लक्षण कहीं भी, किसी में भी नहीं पाये जाते। इसलिए लाल आँखों वाले ये धनुर्धर श्रीराम वे महाविष्णु ही हैं। वे ही अब धर्मसंस्थापनार्थ श्रीराम का अवतार लेकर प्रकट हुए हैं। १५२

शॅरुक्कुम् वन्ऱिऱऱ् ऱिरिपुरन् दीयॅळच् चिन्नविक्
करुक्कुम् वॆञ्जितक् कालन्ऱन् कालमुङ् गालाल्
अरुक्कुम् बुङ्गव नाण्डपे राडहत् तनिविल्
इरुक्कुन् दन्मैयम् मायवऱ् कन्ऱियु मॆळिदो 153

चॅरुक्कुम्–लोकत्रासक; वन् तिऱल्–कठोर बली; तिरिपुरम् ती ऍळ–त्रिपुर को जलाकर; चिन्नवि करुक्कुम्–बिगड़कर कोप करनेवाले; वॆम् चितम्–भयंकर क्रोधी; कालन् तन् कालमुम्–यम के काल को भी; कालाल् अरुक्कुम्–अपने श्रीचरण से काट लेनेवाले; पुङ्कवन् आण्ट–पुंगव शिवजी के प्रयोग में रहे; पेर् आटकम् तनि विल्–बड़े, स्वर्ण के, अनुपम धनुष को; इरुक्कुम् तन्मै–तोड़ देने का काम; अ मायवऱ्कु अन्ऱियुम्–उन मायावी के सिवा; ऍळितो–किसी के लिए सुलभ है क्या। १५३

शिवजी बड़े क्रोधी हैं। उनके रौद्र क्रोध के सामने लोक-त्रासक त्रिपुर जलकर खाक हुए थे। वे बड़े प्रतापी हैं। (मार्कण्डेय को बचाने के लिए) उन्होंने अपने श्रीचरण से यमदेव की आयु भी मिटा दी थी। ऐसे पुंगव के स्वर्णमेरु-सम (स्वर्णमय) बहुत बड़े त्र्यम्बक नाम धनुष को तोड़ना क्या साधारण काम है? वह कार्य उन मायावी महाविष्णु के सिवा किसी अन्य के लिए सुलभ है क्या? । १५३

ॲन्नै यीन्ऱव नुलहङ्ग ळियावैयु मीन्ऱान्
तन्नै यीन्ऱवऱ् कडिमैशॅय् तवमुनक् क:(ह्)दे
उन्नै यीन्ऱवॅऱ् कुरुपद मुळदॅन्ऱ वुरैत्तान्
इन्न तोन्ऱले यवन्ऱिदऱ् केदुवुण् डिऱैयोय् 154

इऱैयोय्–राजा; ॲन्नै ईन्ऱवन्–मेरे जनक पिता; इ उलकङ्कळ्–इन सारे लोकों के; ईन्ऱान् तन्नै–स्रष्टा ब्रह्मा को; ईन्ऱवऱ्कु–जिन्होंने अपनी नाभी में प्रकट कराया, उनका; अटिमै चॅय्–कैंकर्य करो; अ:ते–वही; उनक्कु तवम्–तुम्हारा तप-कर्म है; उन्नै ईन्ऱ–तुम्हारे जनक; ॲऩ्ऱकु–मुझे भी; उऱु पतम्–श्रेष्ठ पद; उळतु–मिल जायगा; ॲन–ऐसा; उरैत्तान्–बोले थे; इन्न तोन्ऱले–ये महापुरुष ही; अवन्–वे (महाविष्णु) हैं; इतऱ्कु–इसका; एतु उण्टु–हेतु भी है। १५४

हे राजा! मेरे पिता ने मुझसे पहले ही कहा है कि सर्वलोक-स्रष्टा ब्रह्मा के भी स्रष्टा महाविष्णु का कैंकर्य करो। यही तुम्हारे लिए तपोसाधना होगी। तुम कैंकर्य करोगे तो मुझे भी श्रेष्ठ पद मिल जायगा। उनसे निर्दिष्ट महाविष्णु ये ही श्रीराम हैं। इसका हेतु भी है। १५४

तुन्बु तोन्ऱिय पॊऴुदुडन् ऱोन्ऱुव नॆवर्क्कुम्
मुन्बु तोन्ऱले यऱिदऱ्कु मुडिवॆन्नॆन् ऱियम्ब
अन्बु शान्ऱॆन वुरैत्तन नैयवॆन् याक्कै
ऍन्बु तोन्ऱल वुरुहिन विनिप्पिऱि दॆवन्नो 155

ऐय–प्रभु; मुन्पु–पहले; तोन्ऱलै–स्वामी को; अऱितऱ्कु–पहचानने का; मुटिवु ॲन्–निर्णय हेतु क्या है; ॲन्ऱु–ऐसा; इयम्प–पूछने पर; ॲवर्क्कुम्–किसी पर; तुन्पु तोन्ऱिय पॊऴुतु–बड़ा दुःख होगा, तब; उटन् तोन्ऱुवन्–तुरन्त प्रकट होंगे; अन्पु–(जो सहज रूप से) उठेगा, वह प्रेम; चान्ऱु–प्रमाण है; ॲन उरैत्तनन्–ऐसा बताया; ॲन् याक्कै–मेरे शरीर की; ॲन्पु तोन्ऱल–हड्डियाँ, नहीं रह गयी हों, ऐसा; उरुकिन–पिघल गयीं; इनि–आगे; पिऱितु ॲवन्नो–अन्य प्रमाण क्या चाहिए। १५५

नायक! मैंने अपने पिता से पूछा कि भगवान को पहचानने का निश्चित उपाय क्या है? तब उन्होंने कहा कि जब किसी पर विपदा आती है, तब वे तुरन्त प्रकट होते हैं। उनके दर्शन करने पर प्रेम उमड़

आयगा। वही प्रमाण होगा। उसी के अनुसार जब मैंने पहले इनके दर्शन किये, तभी मेरा शरीर प्रेम से भर गया और मेरी हड्डियाँ तक अपनी कठोरता त्यागकर पिघल गयीं। उस पर किस प्रमाण की जरूरत है ? । १५५

पिऱिदु मऩ्ऩवऩ् पॅरुवलि याऱ्ऱलैप् पॅरियोय्
अऱिदि यॅऩ्ऩिऩुण् डुबायमः(ह्) दरुम्बॅरु मरङ्गळ्
नॅऱियि निऩ्ऱऩ वेऴिऩॊऩ् ऱुरुवविन् नॅडियोऩ्
पॊऱिहॊळ् शॆम्जरम् पोवदु काणॆऩप् पुहऩ्ऱाऩ् 156

पॅरियोय्–महान; पिऱितुम्–और भी; अऩ्ऩवऩ्–उनके; पॅरु वलि–बड़े बल के; आऱ्ऱलै–पराक्रम को; अऱिति ॲंऩ्ऩिऩ्–जानना चाहें तो; उपायम् उण्टु–एक उपाय है; अः तु–वह; नॅऱियिल् निऩ्ऱऩ–मार्ग में जो खड़े हैं; अरुम्–उत्तम; पॅरु मरङ्कळ्–बड़े वृक्ष; एऴिऩ्–सात में; ऒऩ्ऱु उरुव–एक को भेदकर; इ नॅटियोऩ्–इन महापुरुष का; पॊऱि कॊळ्–धनुष से लगे; चॅम् चरम्–सीधे शर का; पोवतु–जाना (उपाय) है; ॲंऩ–ऐसा; पुकऩ्ऱाऩ्–कहा; काण्–देखो। १५६

महानुभाव ! और भी कहूँ। आप इनके बड़े बल का प्रताप जानना चाहें तो एक उपाय है। मार्ग में जो सात बड़े और अपूर्व सालवृक्ष हैं, उनमें एक से इन महापुरुष का शर निफर जायगा तो वही यह जानने का उपाय होगा। हनुमान ने सुग्रीव को ऐसा बताया। १५६

नऩ्ऱु नऩ्ऱॆऩ नऩ्ऩॆडुङ् गुऩ्ऱमु नाणुम्
तऩ्ऱु णैत्तऩि मारुदि तोळिणै तऴुविच्
चॆऩ्ऱु शॆम्मलैक् कुऱुहियाऩ् शॆप्पुव दुळदाल्
ऒऩ्ऱु केळॆऩ विरामऩु मुरैत्तियः(ह्) दॆऩ्ऱाऩ् 157

नऩ्ऱु नऩ्ऱु ॲंऩ–अच्छा है, अच्छा, ऐसा; तऩ् तऩि तुणै–अपने अद्वितीय मित्र; मारुति–मारुति के; नल् नॅटुम् कुऩ्ऱमुम्–श्रेष्ठ बड़े पर्वत भी जिनके सामने; नाणुम्–लाज से भर जायेंगे ऐसे; तोळ् इणै–दोनों कन्धों को; तऴुवि–पाशबद्ध करके; चॅऩ्ऱु–वहाँ से जाकर; चॅम्मलै कुऱुकि–पुरुषोत्तम के पास पहुँचकर; याऩ् चॅप्पुवतु–मेरा निवेदन; ऒऩ्ऱु–एक; उळतु आल्–है, इसलिए; केळ् ॲंऩ–सुनिए (ऐसा) कहने पर; इरामऩुम्–श्रीराम ने भी; अः तु उरैत्ति–वह कहो; ॲंऩ्ऱाऩ्–कहा। १५७

सुग्रीव ने कहा कि अच्छा ! तुम्हारा कहा उपाय बहुत ही अच्छा है ! फिर सुग्रीव ने हनुमान के पर्वतहासी कंधों के जोड़े को कसकर आलिंगन किया। फिर वे राजा राम के पास आये। सुग्रीव ने श्रीराम से निवेदन किया कि आपसे एक प्रार्थना है। श्रीराम ने कहा कि सुनाओ। १५७

4. मरामरप् पडलम् (सालवृक्ष पटल)

एह वेण्डुमिन् नॅऱियॅन विनिदुहॊण् डेहि
माह नोण्डदु कुऱुहिड निमिर्न्दन मरङ्गळ्
आह वज्जिनो डिरण्डिनॊन् ऱुरुवनिन् नम्बु
पोह वेयॅन्ऱन् मनत्तिडर् पोमॅनप् पुहन्ऱान् 158

इ नॅऱि–इस मार्ग से; एक वेण्टुम्–जाना है; ऍन–कहकर; इनितु–आराम से; कॉण्टु एकि–ले जाकर; नोण्टतु माकम्–विशाल आकाश को भी; कुऱुकिट–ऊँचाई में कम करते हुए; निमिर्न्तन–उन्नत जो उगे थे; मरङ्कळ्–सालवृक्ष; अञ्चिन् ओटु इरण्टु आक–पाँच के साथ दो (सात) में; ऑन्ऱु उरुव–एक को बेधते हुए; निन् अम्पु पोकवे–आपका शर चलेगा तो; ऍन् तन् मनत्तु–मेरे मन का; इटर् पोम्–दुःख दूर हो जायगा; ऍन–ऐसा; पुकन्ऱान्–कहा। १५८

सुग्रीव श्रीराम और लक्ष्मण को 'इस मार्ग से जाना है' कहते हुए ले गया और उस स्थान पर आया, जहाँ गगन को भी नीचे छोड़कर उन्नत उगे हुए सात सालवृक्ष खड़े थे। 'उनमें एक को आपका शर वेध जायगा तो मेरे मन का कष्ट दूर हो जायगा' —सुग्रीव ने श्रीराम से निवेदन किया। १५८

मऱुवि लादवन् कूऱलुम् वानवर्क् किऱैवन्
मुऱुवल् शॅय्दवन् मुन्नुिय मुयर्चियै मुन्नि
ऍऱुळ्व लित्तडन् दोळिनर् शिलैयै नाणेऱ्ऱि
अऱिवि नालळप् परियवर् ऱरुहुशॅन् ऱणैन्दान् 159

मऱु इलातवन्–अकलंक (सुग्रीव) के; कूऱलुम्–वह कहने पर; वानवर्क्कु इऱैवन्–देवों के देव; अवन् मुन्नुिय–उसके अभिप्राय का; मुयर्चियै–प्रयास; मुन्नि–ताड़कर; मुऱुवल् चॅय्तु–मुस्कुराकर; ऍऱुळ् वलि–अधिक शक्तियुत; तटम् तोळिल्–विशाल कन्धे पर के; नल् चिलैयै–श्रेष्ठ धनु में; नाण् एऱ्ऱि–प्रत्यंचा चढ़ाकर; अऱिविनाल्–बुद्धि से; अळप्पु अरियवर्ऱु–जिनको जानना कठिन है, उन; अरुकु चॅन्ऱु–के पास जा; अणैन्तान्–पहुँचे। १५९

अकलंक सुग्रीव ने यह प्रार्थना कही, तो देवाधिदेव ताड़ गये कि यह क्या जानने का प्रयास कर रहा है! मुस्कुराते हुए उन्होंने अपने कंधे से धनुष लिया और उस पर प्रत्यंचा चढ़ायी। फिर वे उन सालवृक्षों के पास गये, जिनके सम्बन्ध में बुद्धि पूर्ण रूप से जान नहीं सकती थी। १५९

ऊऴि पेरिनुम् पेर्विल वुलहङ्ग ळुलैन्दु
ताऴुङ् गालत्तुन् दाऴ्विल तयङ्गुपे रिरुळ्शूऴ्
आऴि मानिलन् दाङ्गिय वरुङ्गुलक् किरिहळ्
एऴ माण्डुवन् दॊरुवऴि निन्ऱॅन वियैन्द 160

ऊऴि पेरितुम्–युग बदला तो भी; पेर्वु इल–(स्थान) न बदलनेवाले; उलकङ्कळ्–लोक; उलन्तु–मिटकर; ताऴुम्–जब नष्ट हो जाते हैं; कालत्तुम्–उस काल में भी; ताऴ्वु इल–अक्षय रहनेवाले; तयङ्कु पेर् इरुळ्–चकित करनेवाले विपुल अन्धकार से; चूऴ्–घिरी; आऴि मा निलम्–समुद्रवलयित बड़ी पृथ्वी को; ताङ्किय–धारण करनेवाले; अरुम् कुल किरिकळ्–श्रेष्ठ कुलपर्वत; एऴुम्–सातों; आण्टु वन्तु–वहाँ आकर; ओरु वऴि निन्ऱ–एकत्र खड़े हो; अँत–ऐसा; इयैन्त–बने रहनेवाले। १६०

वे वृक्ष ऐसे थे, जो युग के बदलते समय में भी अचल रहते थे। सारे लोकों के नष्ट होते समय में भी वे विना किसी आफ़त के रहनेवाले थे। चक्रित करनेवाले अन्धकार के साथ रहनेवाले सातों भूधर कुलपर्वत वहाँ एकत्र हो गये हों, ऐसे दृश्यमान थे वे तरु। १६०

कलैहण् डोङ्गिय मदियमुङ् गदिरवन् ऱानुम्
तलैहण् डोङ्दर् करुन्दवम् पुरिदरुम् शारल्
मलैहण् डोमॅन्ब दल्लदु मलर्मिशै ययर्कुम्
इलैहण् डोमॅनत् तॅरिप्परुन् दरत्तन वेऴुम् 161

एऴुम्–सातों; कलै कण्टु–कलाओं के साथ; ओङ्किय मतियमुम्–पूर्णचन्द्र और; कतिरवन् तानुम्–सूर्य भी; तलै कण्टु–उनके सिर देखकर; ओट्टदर्कु–उनके ऊपर जाने के लिए; अरुम् तवम् पुरि तरुम्–कठिन तपस्या करते हैं; मलर् मिचै अयर्कुम्–कमल पर के अज के लिए भी; चारल् मलै कण्टोम्–कोई पर्वततल देखा; अँन्पतु अल्लतु–यह कहने के सिवा; इलै कण्टोम् अँत–पत्र देखे, यह; तॅरिप्पु अरुम्–कहना असम्भव; तरत्तत–इस प्रकार के हैं। १६१

सोलहों कलाओं के साथ परिपूर्ण चन्द्र और सूर्य भी उनकी चोटी देखने को तरसें और तदर्थ तपस्या करें, इतने ऊँचे थे वे तरुराज! स्वयं कमलासन ब्रह्मा भी उनका तना देखें और समझें कि हमने पर्वत के तल देखे हैं। क्योंकि वे पत्र देख नहीं पाते ताकि समझें कि ये वृक्ष हैं। ऐसे थे वे तरु। १६१

ऑक्क नाळॅला मुळल्वन वुलैविल वाह
मिक्क दोर्पोरु ळुळदॅन वेरुहण् डिलॅमाल्
तिक्कुम् वानमुञ् जॅरिन्दवत् तरुनिऴर् चीदम्
पुक्कु नीङ्गलिर् ऱळर्विल विरविदेर्प् पुरवि 162

नाळ् अँलाम्–सारे दिन, एक समान; ऑक्क–एक साथ; उऴल्वत–घूमनेवाले; इरवि तेर्–सूर्य के रथ के; पुरवि–अश्व; तिक्कुम्–दिशाओं और; वातमुम्–आकाश में; चॅरिन्त–फैले; अ तरु–उन तरुओं को; चीतम् निऴल्–शीतल छाया में; पुक्कु नीङ्कलिन्–घुसकर जाते हैं, इसलिए; तळर्वु इल–अथक होकर; उलैवु इल आक–संकट-रहित रहते हैं, इसका; वेऱु ओर् पोरुळ्–दूसरा कोई कारण; मिक्कतु–श्रेष्ठ; उळतु अँत–है, यह; कण्टिलॅम्–हमने नहीं देखा (जाना)। १६२

सूर्य के रथ के अश्व एक साथ घूमते हैं और हर दिन घूमते हैं। पर वे थकते नहीं, निर्बल नहीं होते। क्यों ? इसका कारण क्या है ? दिशाओं में और अन्तरिक्ष भर में व्याप्त इन वृक्षों की ठंढी छाया में वे प्रवेश करते और उनसे होकर जाते हैं। इससे श्रेष्ठ कोई कारण होगा —हम नहीं जानते। १६२

नीडु नाट्कळुङ् गोट्कळु मॅन्बमे तिवन्दु
माडु तोर्रुव मलरॅन्प् पॉलिहिन्र् वळत्त
ओडु माच्चुडर् वॅण्मदिक् कुट्करुप् पुयर्न्द
कोडु तेय्त्तलिर् कळङ्गमुर् रामॅनुङ् गुरिय 163

नीटु–लम्बे (काल से रहनेवाले); नाट्कळुम्–नक्षत्र और; कोट्कळुम्–ग्रह; ॲन्प–जो हैं वे; मेल् निवन्तु–ऊपर रहकर; माटु तोर्रुव–उनके पार्श्व में दिखाई देते हैं; मलर् ॲन–उनके फूलों के रूप में; पॉलिकिन्र्–दृश्यमान; वळत्त–इस विशेषता के साथ; ओटुम्–संचारी; मा चुटर्–श्रेष्ठ किरणों के; वॆळ् मतिक्कु–श्रेष्ठ चन्द्र के; उळ् करुप्पु–अन्तर्गत कलंक; उयर्न्त कोटु–ऊँची शाखाओं के; तेय्त्तलिल्–रगड़ने से; उर्र कळङ्कम्–बना कलंक; आम्–है; ॲनुम्–ऐसा कहने योग्य; कुरिय–निशान वाले हैं। १६३

सनातन ग्रह और नक्षत्र इन पेड़ों के पार्श्व में रहते हैं और वे इनके फूलों के समान लगते हैं। ऐसे दृश्यमान हैं ये पेड़। आकाशचारी चन्द्र में कलंक है, वह क्या है ? इन तरुओं की शाखाओं के रगड़ने से ही वह अंश चूर्ण होकर चू गया ! उसी से लगा हुआ वह कलंक है। इसके निशान रखनेवाले हैं वे तरु। १६३

तीद रुम्बॅरुञ् जाहैह ळ्ळैत्तदोर् शॅयलात्
वेद मॅन्तवुन् दहुवन विशुम्बिनु मुयर्न्द
आदि यण्डमुन् बळित्तव नुलहिलङ् गवनूर्
ओदि मन्दुणॅप् पॅडैयोडुम् बुडैयिरुन् दुरैव 164

तीतु अरुम्–अविनश्वर; पॆरुम् चाकैकळ्–बड़ी-बड़ी शाखाएँ; तळैत्तत्तु–समृद्ध हैं; ओर् चॅयलाल्–उस धर्म के कारण; वेतम् ॲन्तवुम्–वेद भी कहने; तकुवत–योग्य हैं; विचुम्पितुम्–आकाश से भी; उयर्न्त–ऊँचे हैं; आति–प्राचीन; अण्टम्–अण्डगोलों के; मुन्पु अळित्तवन्–पूर्व सृजक (ब्रह्मा) के; उलकिल् अङ्कु–(सत्य-) लोक में वहाँ; अवन् ऊर्–उनका वाहन; ओतिमम्–हंस; तुणै पॆटैयोटुम्–संगिनी हंसिनी के साथ; पुटै इरुन्तु–एक ओर रहकर; उरैव–जीवन बिताते हैं, ऐसे हैं ये तरु। १६४

अविनश्वर शाखाओं से युक्त होने के कारण ये वेद भी कहे जाने योग्य हैं। ये आकाश से भी ऊँचे हैं; इसलिए आदि अण्डगोल के पुरातन स्रष्टा के लोक में जो उनका वाहन हंस है, वह अपनी स्त्रीहंस के साथ इन्हीं पेड़ों की बगल में वास करता है। १६४

नाऱ्ऱ मलर्प्पो दडैहनि नत्तैमुद नाना
वीऱ्ऱिन् मण्डलत् तियावैयुम् वीऴ्हिल याण्डुम्
काऱ्ऱ लम्बिनुङ् गलितॆडु वानिडैक् कलनद
आऱ्ऱिन् वीऴ्न्दुपो यलैहडऱ् पाय्दरु मियल्ब 165

काऱ्ऱु अलम्पितुम्–हवा हिला दे तो भी; नाऱ्ऱम् मलर्कु–सुवासपूर्ण; पोतु–फूल; अटै–पत्ते; नतै कनि–कलियाँ और फल; मुतल–आदि; नाना वीऱ्ऱिन्–अनेक खण्ड बनकर; यावैयुम्–वे सब; मण् तलत्तु–पृथ्वीतल में; याण्टुम्–कहीं भी; वीऴ्किल–गिरनेवाले नहीं; वान् इटै कलन्त–आकाश में ही पड़ी रही; आऱ्ऱिन्–गंगा में; वीऴ्न्तु–गिरकर; पोय्–(बहते हुए) जाकर; कलि नॆटुम्–शोर-भरे; अलै कटल्–तरंग समेत समुद्र में; पाय् तरुम्–मिल जाते हैं; इयल्प–वैसे प्रकार के हैं। १६५

हवा बहुत प्रबल रूप से हिलाये तो भी उनके सुगन्धपूर्ण फूल, पत्ते, कलियाँ और फल छितरकर भूमि पर कहीं नहीं गिरते। पर वे आकाश-गंगा में तिरकर गर्जनशील तरंगायित समुद्र में जा मिलते हैं। १६५

अडिय नान्मऱै यन्दण नण्डत्तुक् कप्पाल्
मुडियिन् मेऱ्चॆन्ऱ मुडियन वादलिन् मुडिया
नॆडिय मालन्न निलैयन नीरिडैक् किडन्द
पडियिन् मेनिन्ऱ मेरुमाल् वरैयिनुम् परिय 166

नान् मऱै अन्तणन्–चतुर्वेदी ब्रह्मा के; अणटत्तुक्कु अटिय–अण्डों के मूल से भी नीचे गयी हुई जड़ वाले थे; अप्पाल्–उस (अण्ड) के भी परे; मुटियिन् मेल्–शिखर के भी ऊपर; चॆन्ऱ–गये हुए; मुटियन–शिखर के; आतलिन्–इस कारण; मुटिया–अनन्त; नॆटिय माल्–त्रिविक्रम महाविष्णु; अन्न–के समान; निलैयन–दृश्यमान हैं; नीर् इटै किटन्त–समुद्रमध्य पड़ी रहनेवाली; पटियिन् मेल्–भूमि पर; निन्ऱ–स्थायी; मेरु माल् वरैयितुम्–मेरु के बड़े पर्वत से भी; परिय–मोटे हैं। १६६

चतुर्वेदी ब्रह्मा के अण्ड के मूल तक इनकी जड़ें गयी हैं। इनकी शिखाएँ उस ब्रह्माण्ड की चोटी के ऊपर भी गयी हैं। इसलिए वे त्रिविक्रम महाविष्णु के समान आकार के लगते हैं। समुद्र-मध्य-स्थित भूमि पर स्थायी रहनेवाले मेरु से ये अधिक स्थूल हैं। १६६

वळ्ळ लिन्दिरन् मैन्दऱ्कुन् दम्बिक्कुम् वयिर्त्त
उळ्ळ मेयॆन वॊन्ऱिनॊन् ऱुळ्वयिर्प् पुडैय
तॆळ्ळु नीरिडैक् किडन्दपार् शुमक्किन्ऱ शेडन्
वॆळ्ळि वॆण्बडङ् गुडैन्दुकोळ् पोहिय वेर 167

वळ्ळल्–दानी; इन्तिरन्–इन्द्र के; मैन्तऱ्कुम्–पुत्र वाली और; तम्पिक्कुम्–छोटे भाई सुग्रीव के; वयिर्त्त उळ्ळमे ऎन–वैरी मन के समान; ऒन्ऱिन् ऒन्ऱु–

(उन पेड़ों में) एक से बढ़कर एक; वयिर्प्पु उटैय-हीर वाले हैं; तॆळ्ळु नीर् इटै-शुद्धजल के समुद्रमध्य; किटन्त-पड़ी रहनेवाली; पार्-भूमि को; चुमक्कित्र-धारण करनेवाले; चेटन्-शेषनाग के; वॆळ्ळि वॆण्-पटम्-चाँदी के समान श्वेत फन को; कुटैन्तु-छेदकर; कीऴ् पोकिय-पाताल में गयी हुई; वेर-जड़ों वाले हैं। १६७

दानी इन्द्र के पुत्र और उसके भाई सुग्रीव के मन के वैर के ही समान इनके एक-एक का सत भी कठोर हो गया था। शुद्धजल सागरमध्य-स्थित भूमि के धारक शेषनाग के फनों को छेदकर जो नीचे गयी थीं, ऐसी जड़ों के थे ये वृक्ष। १६७

शॆन्ऱु तिक्किनै यळन्दन तिशैहळिऱ् ऱेवर्
ऎन्ऱु निऱ्कुमॆन् ऱिशैप्पन विरुशुडर् तिरियुम्
कुन्ऱि नुक्कुयरन् दहन्ऱन यादिनुङ् गुऱुहा
ऒन्ऱि नॊन्ऱिडै नॆडिदियोशनै युडैय 168

चॆन्ऱु-बढ़कर; तिक्कितै-दिशाओं को; अळन्तन-नापनेवाले; तिचैकळिल् तेवर्-दिशाओं के (दिग्पाल) देव; ऎन्ऱुम् निऱ्कुम्-हमेशा उन्हीं पर रहते हैं; ऎन्ऱु इचैप्पन- ऐसा वर्ण्य हैं; इरु चुटर्-दो प्रकाशपुंज सूर्य और चन्द्र; तिरियुम्-जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्ऱितुक्कु-उस मेरुपर्वत से बढ़कर; उयर्न्तु अकन्ऱन-उन्नत और विशाल बने हैं; यातिनुम् कुऱुका-किसी से भी कम नहीं; ऒन्ऱितुक्कु ऒन्ऱिन् इटै-एक दूसरे के बीच; नॆटितु-लम्बाई (दूरी); ओरु योचनै उटैय-एक योजन की रखनेवाले थे। १६८

वे ऐसे व्यापक हैं, मानो वे दिशाओं को नापते हों। दिग्पालक इन्हीं पर रहते हों—ऐसे वर्णनीय हैं। मेरुपर्वत से भी, जिसकी दोनों प्रकाशपुंज, सूर्य और चन्द्र परिक्रमा करते हैं, उन्नत और विशाल हैं। वे किसी से भी कम नहीं हैं। उनकी आपस की, एक-दूसरे से, दूरी एक योजन की थी। १६८

आय मामर मनैत्तैयु नोक्किनिन् ऱमलन्
तूय वार्हणै तुरप्पदो रादरन् दोन्ऱच्
चेय वानमुन् दिशैहळुञ् जॆविडुऱत् तेवर्क्
केय लाददोर् पयम्वरच् चिलैयिना णॊऱिन्दान् 169

आय-वैसे; मा मरम् अनैत्तैयुम्-सभी बड़े वृक्षों को; अमलन्-निरंजन श्रीराम ने; नोक्कि निन्ऱु-देखते खड़े रहकर; तूय वार् कणै-पवित्र लम्बे शर को; तुरप्पतु-छोड़ने की; ओर् आतरम्-एक प्रबल इच्छा; तोन्ऱ-होने से; चेय वानमुम्-दूर के आकाशवासी और; तिचैकळुम्-दिशाओं के वासी; चॆविटु उऱ-बहरे हो जायें, ऐसा; तेवर्क्कु-देवों को; एय् अलात-अपरिचित; ओर् पयम् वर-एक भय हो जाय, ऐसा; चिलैयिन् नाण्-धनु की प्रत्यंचा; ऎऱिन्तान्-खींचकर ध्वनि निकाली। १६९

निरंजन श्रीराम ऐसे उन पेड़ों को गौर से देखते खड़े रहे। उनके मन में उत्कण्ठा हुई कि पवित्र और लम्बा शर चलाऊँ। तब उन्होंने प्रत्यंचा को खींचकर टंकार पैदा की। उससे अधिक दूर के देवलोकवासियों और सभी दिशाओं के रहनेवाले लोगों के कान बहरे हो गये। देवों को एक अभूतपूर्व डर हो गया। १६९

ऑक्क निऩ्ड्रदॆव् वुलहमु मङ्गङ्गे योशॆ
पक्क निऩ्ड्रवर्क् कुड्ड्रदु पहर्वदॆप् पडियो
दिक्क यङ्गळ् मयङ्गिऩ दिशैहळुन् दिहैत्त
पुक्क यऩ्बदि शलिप्पुड्र वॊलित्तदप् पोर्विल् 170

ओचै–वह ज्यास्वर; ॲ उलकमुम्–सारे लोकों में; अङ्कङ्के–यत्र-तत्र; ऑक्क निऩ्ड्रतु–समान रूप से फैला; पक्कम् निऩ्ड्रवर्क्कु–पास स्थित लोगों पर; उड्रतु–जो बीता; पकर्वतु–वह कहना; ऍप्पटियो–कैसे हो; तिक् कयङ्कळुम्–दिग्गज भी; मयङ्कित्त–बेहोश हुए; तिचैकळुम्–दिशाएँ; तिकॆत्त–अस्त-व्यस्त हुईं; अ पोर् विल्–उस (श्रीराम के) युद्ध-धनुष की ध्वनि; अयन् पति–ब्रह्मा के (सत्य-) लोक को भी; चलिप्पु उड्र–चंचल करते हुए; पुक्कु ऑलित्ततु–घुसकर गूंजी। १७०

वह ज्यास्वन सारे लोकों में यत्र-तत्र समान रूप से व्याप गया। उन वृक्षों के पास जो रहे, उन पर कैसे बीता, यह क्या कहा जाय? आठों दिग्गज बेहोश हो गये। दिशाएँ भ्रमित हो गयीं। श्रीराम के उस युद्ध-धनु की ध्वनि ब्रह्मा के सत्यलोक में घुसी, तो वह लोक भी डगमगा गया। १७०

अरिन्द मऩ्शिलै नाणॆडि दार्त्तलु ममरर्
इरिन्दु नीङ्गिऩर् कड्पत्ति निऩ्दियॆन् ड्रयिर्त्तार्
परिन्द तम्बियै पाड्गुनिऩ् ड्रात्मड्ड्रॆप् पल्लोर्
पुरिन्द तऩ्मैयै युरैशॆयिड् पळियवर्प् पुणरुम् 171

अरिन्तमऩ्–अरिन्दम (परंतप) श्रीराम; चिलै नाण्–धनु का डोरा; नॆंदिवु आर्त्तलुम्–देर तक ध्वनि करता रहा तो; अमरर्–देव; कड्पत्तिऩ् इड्ति–कल्पान्त; ऍन्ड्रु–कहकर; अयिर्त्तार्–शंकित ए; इरिन्तु नीङ्कितर्–अस्त-व्यस्त भागे; परिन्त तम्पियै–स्निग्ध छोटे भाई ही; पाक्कु निऩ्ड्रार्–पास खड़े रहे; मड्ड्र पल्लोर्–अन्य अनेक लोगों ने; पुरिन्त तऩ्मैयै–जो किया वह कार्य; उरै चॆयिल्–कहें तो; पळि–निन्दा; अवर् पुणरुम्–उनकी होगी। १७१

अरिन्दम श्रीराम के धनुष का डोरा बहुत देर तक टंकार निकालता रहा। देवों को शंका हो गयी कि कल्पान्त आ गया। इसलिए वे अस्त-व्यस्त होकर भागे। केवल लक्ष्मण ही पास खड़े रहे, जो कि श्रीराम पर अगाध भक्ति रखते थे। अन्य अनेकों ने क्या किया, यह कहने लगें तो उनकी निन्दा होगी। १७१

ॲय्दल् काण्डुङ्गौ लिन्नुमॆन् ऱरिदिन्वन् दॆय्दिप्
पॊय्यिन् मारुदि मुदलिनर् पुहलुरुम् बॊऴुदिल्
मॊय्हॊऴ् वार्शिलै नाणिनै मुऱैयुऱ वाङ्गि
वॆय्य वाळियै याळुडै विल्लियुम् विट्टान् 172

पॊय् इल्–असत्य-रहित (सत्यसंध); मारुति मुतलिनर्–मारुति आदि; इन्नुम्–और भी; ॲय्तल् काण्टुम् कॊल्–शर चलाना भी देखना है क्या; ऍन्ऱु–कहकर; अरितिन् वन्तु ॲय्ति–सप्रयास आ पहुँचकर; पुकल् उऱुम् पॊऴुतु–समीप आते समय; आळुटै विल्लियुम्–हमारे कैंकर्य-प्राप्त धनुर्धर श्रीराम ने भी; मॊय् कॊऴ्–सुदृढ़; वार् चिलै–लम्बे धनुष के; नाणिनै–डोरे को; मुऱै उऱ–यथाविधि; वाङ्कि–खींचकर; वॆय्य वाळियै–भयंकर शर को; विट्टान्–चलाया । १७२

सत्यसंध मारुति आदि यही सोचने लगे कि आगे श्रीराम का शर चलाना देखना भी है क्या ? वे बहुत प्रयास के साथ श्रीराम के पास धीरे-धीरे आये। तब हमारे कैंकर्य के अधिकारी श्रीराम ने सुदृढ़ अपने चाप के डोरे को यथाविधि खींचकर एक भयंकर शर चलाया । १७२

एऴु मामर मुरुविक्की ऴुलहमॆन् ऱिशैक्कुम्
एऴु मूडुपुक् कुरुविप्पिन् नुडनडुत् तियन्ऱ
एऴि लामैयान् मीण्डदव् विराहवन् पहऴि
एऴु कण्डपि नुरुवुमा लॊऴिवदन् ऱिन्नुम् 173

इराकवन्–श्रीराघव का; अ पकऴि–वह बाण; एऴु मा मरम्–उन सातों बड़े वृक्षों को; उरुवि–बेधकर; कीऴ् उलकम्–नीचे के लोक; ऍन्ऱु–ऐसा; इचैक्कुम् एऴुम्–कहलानेवाले सातों को; ऊटु पुक्कु–मध्य घुसकर; उरुवि–उस तरफ़ बाहर आकर; पिन्–बाद; उटन् अटुत्तु–साथ लगे; इयन्ऱ–रहनेवाले; एऴु इलामैयाल्–सप्तक न रहने के कारण; मीण्टतु–लौट आया; इन्नुम्–आगे भी; एऴु कण्ट पिन्–कोई सप्तक देखता तो उसके बाद; उरुवुम्–भेद जाता; ऑऴिवतु अन्ऱु–छोड़नेवाला नहीं था । १७३

श्रीराघव का वह बाण सातों सालवृक्षों को भेदकर बाहर निकला। फिर सातों लोकों के मध्य घुसकर निफरा। उसके बाद अन्य कोई सप्तक (सात वस्तुओं का सम्मिलित समूह) न पाकर लौट आया। और कोई सप्तक मिल जाता, तो वह अवश्य भेदकर पार होता। छोड़ता नहीं। १७३

एऴु वेलैयु मुलहमे लुयर्न्दन वेऴुम्
एऴु कुन्ऱमु मिरुडिह ळॆऴुवरुम् बुरवि
एऴु मङ्गैय रेऴुवरु नडुङ्गिन रॆन्ब
एऴु पॆऱ्ऱदो विक्कणेक् किलक्कमॆन् ऱॆण्णि 174

एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्र; उयर्न्तन–ऊपर रहनेवाले; मेल् उलकम्–उपरिलोक;

एऴुम्–सातों; एऴु कुन्ऱमुम्–सातों पर्वत; इरुटिकळ्–ऋषि; ऍऴुवरुम्–सप्तक; पुरवि एऴुम्–सातों अश्व (सूर्य के रथ के); मङ्कैयर् ऍऴुवरुम्–सातों कन्याएँ; इ कणैक्कु–इस शर का; इलक्कम्–निशान; एऴु–सप्तक; पॆऱ्ऱतो–बनेगा क्या; ऍन्ऱु ऍण्णि–यह सोचकर; नटुङ्कितर्–भयभीत हो गए। १७४

तब सृष्टि में जितने सप्तक थे, वे सब भयभीत हो गये। (नमक, इक्षुरस, सुरा, घृत, दधि, दुग्ध, शुद्धजल के) समुद्र-सप्तक; (भूलोक, भुवलोक, स्वर्लोक, जन, महा, तपो, सत्य के सातों) उपरिलोक; (कैलास, हिम, मन्दर, विन्ध्य, निषध, हेमकूट, गन्धमादन —ये सातों) गिरियाँ; (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगिरा —ये) ऋषि-सप्तक; (गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, दृष्टुप, जगती —ये छन्द, जो सूर्यरथ के अश्व हैं —ये सातों) अश्व; (ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, नारायणी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डी —ये) सप्तकन्याएँ —ये सब सप्तक इस संशय से भयभीत हुए कि इस शर का निशान कोई भी सप्तक होगा ! । १७४

अन्न दायिनु मऱत्तिनुक् कारुयिर्त् तुणैवन्
ॲन्नुन् दन्मैयै नोक्कित रियावरु मॆवैयुम्
पॊन्निन् वार्हऴर् पुदुनऱुन् दामरै पूण्डु
शॆन्नि मेऱ्कॊण्ड वरुक्कन्शे यिवैयिवै शॆप्पुम् 175

अन्नतु आयिनुम्–वैसा हुआ तो भी; अऱत्तिनुक्कु–धर्म का; आर् उयिर् तुणैवन् ॲन्नुम्–बहुत ही प्राणप्यारा रहने का; तन्मैयै–उनका स्वभाव; यावरुम् ॲवैयुम्–सारे लोगों और सारे जीवों ने; नोक्कितर्–समझा (समझकर भय त्याग दिया); पॊन्निन् वार् कऴल्–स्वर्ण की बड़ी पायल के; पुतु नऱुम् तामरै–नवीन सुगन्धित शहदयुक्त कमलों (चरणों) को; पूण्टु–पकड़कर; चॆन्नि मेल् कॊण्ट–अपने सिर पर जिसने रख लिया; अरुक्कन् चेय्–वह सूर्यकुमार; इवै इवै चॆप्पुम्–यों-यों बोलने लगा। १७५

तो भी उनको यह विश्वास था कि श्रीराम धर्म के प्राणप्यारे संगी हैं। इसलिए वे सभी भयमुक्त हुए। तब सूर्यपुत्र सुग्रीव स्वर्ण की बनी बड़ी पायलों से शोभित और नवविकसित सुगन्धपूर्ण कमल के समान रहनेवाले श्रीराम-चरणों को सिर पर धारण करके (चरणों पर दण्डवत में सिर रखकर) निम्नोक्त स्तुति की बातें कहने लगा। १७५

वैयनी वानुनी मऱ्ऱुनी मलरिन्मेल्
ऐयती यालिमा मालुनी यरतुनी
शॆय्यती वितैनॆऱुन् देवुनी नायिनेल्
उय्यवन् दुदविता युलहमुन् दुदविनाय् 176

वैयम् नी–भूमि भी आप हैं; वानम् नी–आकाश भी आप; मऱ्ऱुम् नी–अन्य भूत भी आप; मलरिन् मेल् ऐयन्–(कमल-)पुष्प पर वास करनेवाले देव (ब्रह्मा भी);

नी–आप हैं; आऴि मा मालुम्–क्षीरसागर-शायी महाविष्णु भी; नी–आप; अरतुम् नी–हर भी आप; ती वितै तॅऱुम्—पापनाशक; चॅय्य तेवुम् नी–श्रेष्ठ देव भी आप; उलकु–प्रपंच को; मुन्तु उतवितात्–पहले सृष्ट करनेवाले आपने; नायितेन् उय्य–कुत्ते के समान मेरे उद्धार के लिए; वन्तु उतवितात्–आकर उपकार किया। १७६

आप भूमि हैं; आकाश व अन्य भूत भी आप हैं। कमलासन ब्रह्मा, क्षीरसागरशायी महाविष्णु, हर आदि सब हैं। पापनाशक श्रेष्ठ देवता भी आप ही हैं। लोकपिता आपने ही इस प्रपंच को सृष्ट किया। ऐसे आपने स्वयं आकर मेरे उद्धार का बड़ा उपकार किया है। १७६

ॲन्तॅतक् करियदॅप् पॉरुळुमॅर् कॅळियदाल्
उन्तॅयित् तलैविडुत् तुदवितार् विदियितार्
अन्तैयॉप् पुडैयवन् नडियरुक् कडियन्यान्
मन्तवर्क् करशवॅन् ऱुरैशॅय्दान् वशैयिलान् 177

वचै इलान्–निर्दोष सुग्रीव ने; मन्तवर्क्कु–राजाओं के; अरच–राजा; वितियितार्–विधि के देव ने; उन्तै–आपको; इ तलै विट्टुत्तु–यहाँ भिजवाकर; उतवितार्–उपकार किया है; ॲन्–क्या; ॲनक्कु–मेरे लिए; अरियतु–दुर्लभ है; ॲ पॉरुळुम्–कोई भी वस्तु; ॲऩ्कु–मेरे लिए; ॲळियतु आल्–सुगम है, इसलिए; अन्तै ऑप्पु उटैय–मातृ-सम; उन्–आपके; अटियरुक्कु–दासों का; यान् अटियन्–मैं किंकर हूँ; ॲन्ऱु–ऐसा; उरै चॅय्तान्–कथन किया। १७७

निर्दोष सुग्रीव ने और भी निवेदन किया। राजाधिराज! विधि ने आपको यहाँ भिजवाकर मेरा बहुत बड़ा उपकार किया है! अब मेरे लिए कौन सी बात दुर्लभ है? कोई भी बात सुगम है! इसलिए मैं माता-तुल्य आपके दासों का भी दास बन गया। १७७

आडिनार् पाडिना रङ्गुमिङ् गुङ्गलन्
दोडिना रुवहैया नऱवैयुण् डुणर्हिलार्
नेडिनाम् वालिहा लनैयेंना नॅडिदुनाळ्
वाडिनार् तोळॅलाम् वळरमऱ् ऱवरॅलाम् 178

नॅटितु नाळ् वाटितार्–बहुत दिन से व्यथित; अवर् ॲलाम्–वे सब; वालि कालनै–वाली के यम को; नेटिताम्–ढूँढ़कर पा गये; ॲना–कहकर; उवकैयिन् नऱवै–सन्तोष का सुरा; उण्टु–पीकर; उणर्किलार्–आपा भूलकर; तोळ् ॲलाम् वळर–भुजाओं के वर्धित होते; आटितार्–नाचे; पाटितार्–गाये; अङ्कुम् इङ्कुम्–इधर-उधर; कलन्तु–मिलकर; ओटितार्–दौड़े। १७८

वे वानर बहुत दिनों से संकटग्रस्त और व्यथित रहे थे। अब उन्हें यह सन्तोष हो गया कि हम वाली के काल को ढूंढ़ रहे थे और वह श्रीराम के रूप में मिल गया। आनन्द सुरा का काम करने लगा। पिये हुए के

समान वे आपा भूलकर नाचे-गाये। उनके कन्धे फूल उठे। वे वृन्दों में मिलकर यत्र-तत्र दौड़े। १७८

5. तुन्दुबिप् पडलम् (दुन्दुभि पटल)

अण्डमुम् महिलमु मडेयवन् इत्तलिडैप्
पण्डुवॅन् ददुनॅडुम् पशैवइन् दिडिनुम्वान्
मण्डलन् दॉडुवदम् मलैयित्मेत् मलैयॅन्तक्
कण्डतन् रुन्दुबिक् कडलन्ना नुडलरो 179

अण्टमुम्–अण्डगोल और; अकिलमुम्–उसके अन्तर्निहित सारे लोक; अटैय–एक साथ; अन्रु–प्रलय के उस दिन; अतल् इटै–आग में; पण्टु–पहले; वॅन्ततु–जल गये; नॅटुम् पचै वइन्तिटिनुम्–(रक्त आदि) लस के बहुत दिनों से सूखने पर भी; वान् मण्टलम् तॉटुवतु–आकाश-मण्डल को छूनेवाला; कटल् अतान्–समुद्र-सम; तुन्तुपि उटलै–दुन्दुभी के (मृत) शरीर को; अ मलैयिन् मेल्–उस पर्वत पर रहनेवाले; मलै ॲत–अन्य पर्वत के समान; कण्टतन्–(श्रीराम ने) देखा। १७९

[श्रीराम ने दुन्दुभि की लाश को देखा। दुन्दुभि महिष का-सा रूप वाला था। इसको मय का पुत्र भी माना जाता है। वाल्मीकी के अनुसार श्रीराम ने सालवृक्ष-छेदन के पहले दुन्दुभि के पंजर को अपने पैर के अँगूठे से उछाला था।]

वह दुन्दुभि का पंजर सारे अण्डगोल के और उसके अन्तर्हित सभी लोकों के पूर्व प्रलयकाल में अग्नि में जलने पर जो अवशेष रह सकता था, उसके समान था। रक्त आदि सूख गया था, तो भी वह इतना ऊँचा था कि आकाश को छू रहा था। समुद्र के समान वह फैला पड़ा था। श्रीराम ने उस मृत शरीर (अस्थिपंजर) को देखा, जो ऋष्यमूक पर्वत पर पड़े रहनेवाले दूसरे पर्वत के समान लगता था। १७९

तॅन्बुलक् किऴवनूर् मयिडमो विशैयित्वाऴ्
वन्बुलक् करिमडिन् ददुहॊलो महरमीन्
ॲन्बुलप् पुइवुलइन् ददुहॊलो विदुवॅन्ना
उन्बुलक् कुरियनी युरॅयॆया यॆत्तववन् 180

इतु–यह; तॅन् पुलम् किऴवन्–दक्षिण दिशा के अधिदेव की; ऊर्–सवारी; मयिटमो–महिष है; तिचैयिन् वाऴ्–दिशाओं में वास करनेवाले; वन्पु–बलिष्ठ; उलम् करि–(गजों में) मोटा एक गज; मटिन्ततु कॊलो–मरा है क्या; मकर मीन्–मगर-मच्छ; उलप्पु उइ–जीवन खोकर; ॲन्पु उलर्न्ततु कॊलो–उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी हैं क्या; ॲन्ना–सोचकर; उन् पुलक्कु उरिय–तुम्हारी जानकारी में आयी हुई बात को; नी–तुम; उरै चॅयाय्–बताओ; ॲन्न–पूछने पर; अवन्–सुग्रीव भी। १८०

श्रीराम ने उसको देखकर सुग्रीव से पूछा कि सुग्रीव ! यह पंजर दक्षिण दिशा के अधिदेव यम का वाहन महिष है ? या आठ बलिष्ठ मोटे दिग्गजों में एक मरा पड़ा है ? या किसी मगरमच्छ के मरने पर उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी हैं ? आश्चर्य के साथ ऐसा पूछने के बाद श्रीराम ने कहा कि तुम जो जानते हो, वह बताओ। सुग्रीव ने यों उत्तर दिया। १८०

तुन्दुबिप् पॆयरुडैच् चुडुशिनत् तवुणन्मी
इन्दुवैत् तॊडनिमिर्न् दॆऴुमरुप् पिणैयिनान्
मन्दरक् किरियॆनप् पॆरियवन् महरनीर्
शिन्दिडक् करुनिऱत् तरियिनैत् तेडुवान् 181

मी इन्तुवै–ऊपर, चन्द्र को; तॊट–स्पर्श करते हुए; निमिर्न्तु ऎऴु–ऊपर की ओर उठे हुए; मरुप्पु इणैयिताऩ्–शृंगद्वय-सहित था; मन्तर किरि–मन्दर पर्वत; ऎऩ–जैसे; पॆरियवऩ्–बड़ा आकारवाला; तुन्तुपि–दुन्दुभि; पॆयरुटै–नाम का; चुटु चितत्तु–जलानेवाले क्रोध का; अवुणऩ्–दानव; मकर नीर् चिन्तिट–मकरालय (समुद्र) का जल विलोड़ित करके; करु निऱत्तु–काले रंग के; अरियिऩै–हरि को; तेटुवाऩ्–ढूँढ़ चला। १८१

एक दुन्दुभि दानव था। उसके दो सींग थे, जो आकाश में चन्द्र को स्पर्श कर दें, इतने ऊँचे ऊपर को उठे हुए थे। उसका आकार मन्दर पर्वत के समान बड़ा था। उसका क्रोध अग्नि के समान जलानेवाला था। वह मकरालय में इतने ज़ोर से घुसा कि उसका जल छलककर छितर गया। वह काले रंग के महाविष्णु को (युद्ध करने के लिए) ढूँढ़ते हुए चला। १८१

अङ्गुवन् दरियॆदिर्न् दमैदियॆन् नॆन्ऱलुम्
पॊङ्गुवॆञ् जॆरुविनिऱ् पॊरुदियॆन् ऱुरैशॆयक्
कङ्गैयिन् कणवनक् करैमिडऱ् ऱमलने
उङ्गदप् पॆरुवलिक् कॊरुवनॆन् ऱुरैशॆय्दान् 182

अङ्कु–वहाँ; अरि वन्तु–हरि आये; ऎतिर्न्तु–सामने रहकर; अमैति ऎऩ्–योजना क्या है; ऎऩ्ऱलुम्–पूछने पर; पॊङ्कु–क्रोध जिसमें उमड़े, उस; वॆम् चॆरुविऩिल्–भयंकर युद्ध में; पॊरुति–मुझसे भिड़ो; ऎऩ्ऱु उरै चॆय–यह कहने पर; कङ्कैयिन् कणवऩ्–गंगा के पति; अ करै मिटऱ्ऱु–वे विष-कण्ठ; अमलऩे–निर्मल ईश्वर ही; उम्–तुम्हारे (जैसे लोगों को); कत पॆरुवलिक्कु–क्रोधशील बड़े बल के योग्य; ऒरुवऩ्–एक (शत्रु) है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उरै चॆय्ताऩ्–कहा। १८२

तब वहाँ हरि सामने आये। उन्होंने दानव से पूछा कि अभिप्राय क्या है ? दानव ने उत्तर दिया कि मेरे साथ क्रोध उभाड़नेवाली रीति से युद्ध करो। तब हरि ने कहा कि चलो गंगा के पति के पास। विषकण्ठ

वे ही तुमको तृप्तिदायक युद्धदान कर सकेंगे। तुम बहुत ही क्रोधशील और बड़ी शक्ति के रखनेवाले हो। १८२

कडिदुशॆंन्‌ ऱवनुमक्‌ कडवुडन्‌ कयिलैयैक्‌
कॊडियकॊम्‌ बितिऩ्मड्डुत्‌ तॆळ्ळुदलुङ्‌ गुऱुहिमुन्‌
नॊडिदिनिन्‌ कुऱैयॆन्‌ ऱलुनुवन्‌ ऱनन्दरो
मुडिविल्वॆञ्‌ जॆरुवॆन्‌क्‌ कुदवुवान्‌ मुयल्हॆन्ना 183

अवनुम्‌—वह भी; कटितु चॆन्ऱु—जल्दी जाकर; अ कटवुळ्‌ तन्‌—उन ईश्वर के; कयिलैयै—कैलास पर्वत को; कॊटिय कॊम्पितिल्‌—भयंकर सींगों से; मट्टुत्तु—उखाड़ लेकर; ऍळुतलुम्‌—उठा, तो; मुन्‌ कुरुकि—सामने आकर (शिवजी); निन्‌ कुऱैयै—अपनी चाह; नॊटिति—कहो; ऍन्ऱलुम्‌—बोले, तो; मुटिवु इल्‌—असीम; वॆम्‌ चॆरु—कठोर युद्ध; ऍनक्कु उतवुवान्‌—मुझे देकर उपकार करने का; मुयल्क—प्रयत्न करें; ऍन्ना—यह; नुवन्ऱनन्‌—(दुन्दुभि) बोला। १८३

वह वेग के साथ चला। उसने ईश्वर शिव के कैलास को अपने सींगों से खोदकर उठा लिया। तब शिवजी उसके सामने आये और पूछा कि तुम्हारी चाह क्या है? दानव ने कहा, मुझसे असीम काल तक भयंकर युद्ध करने का प्रयत्न कीजिए। १८३

मूलमे वीरमे मूडिन्ना योड्डुपोर्‌
एलुमो तेवर्पा लेहॆन्ना वेविनान्‌
शालनाळ्‌ पोर्शॆय्वा यादियेऱ्‌ चारल्पोय्‌
वालिपा लेयॆन्ना वानुळोर्‌ वानुळान्‌ 184

मूलमे—आदि से ही; वीरमे मूटिन्नायोट्टु—वीरता में मग्न रहनेवाले तुमसे; पोर्‌ एलुमे—युद्ध शक्य है क्या; तेवर्‌ पाल्‌ एकु ऍन्ना—देवों के पास जाओ, ऐसा; एविनान्‌—प्रेरित किया; वान्‌ उळोर्‌—व्योमवासियों के; वान्‌ उळान्‌—ऊपर रहनेवाले इन्द्र; चाल नाळ्‌—अनेक दिन; पोर्‌ चॆय्वाय्‌ आति—युद्ध करनेवाले हो; एल्‌—तो; वालि पाले—वाली के पास ही; पोय्‌ चारल्‌—जाकर मिलो; ऍन्ना—ऐसा। १८४

शिवजी ने कहा कि तुम आदि से ही वीरता से आवृत बड़े वीर हो! तुम्हारे साथ युद्ध करने की शक्ति मुझमें है क्या? तुम देवों के पास जाओ। उन्होंने उसे देवों के पास भेजा। (वह उनके पास गया।) देवों के राजा इन्द्र ने उनसे कहा कि अगर तुममें बहुत लम्बे काल तक युद्ध करने की चाह है, तो वाली के पास ही जाओ। १८४

अन्ऩवन्‌ विडवुवन्‌ दवनुम्वन्‌ दरिहडम्‌
मन्ऩव वरुहपोर्‌ शॆयवॆन्ना मलैयिनैच्‌
चिन्ऩपिन्‌ नम्बडुत्‌ तिडवलुम्‌ जिनवियॆन्‌
मुन्ऩवन्‌ मुन्ऩर्वन्‌ दवनॊडुम्‌ मुनैवलुम्‌ 185

अन्ऩवन् विट–इन्द्र के भेजने पर; अवऩुम्–उस (दुन्दुभि) के; उवन्तु वन्तु–मुदित आकर; अरिकळ् तम् मन्ऩव–वानरों के राजा; पोर् चॅय–युद्ध करने; वरुक–आओ; ऍऩ्ऩा–कहकर; मलैयिऩै–वाली के वास के पर्वत को; चिन्ऩ पिन्ऩम् पट्टुत्तिट्टलुम्–छिन्न-भिन्न करने पर; ऍऩ् मुन्ऩवन्–मेरे अग्रज; चिऩवि–कुपित हो; मुन्ऩर् वन्तु–सामने आकर; अवऩोटु–उसके साथ; मुऩैतलुम्–लड़े, तब । १८५

इन्द्र ने ऐसा कहकर उसे भेज दिया। दुन्दुभि भी बहुत खुश होकर वाली के पास आया। वानरराज! आओ, हमसे भिड़ो! यह कहते हुए उसने वाली के पर्वत को तहस-नहस किया। तो मेरे बड़े भाई क्रुद्ध हुए और आकर उससे भिड़ने लगे। १८५

इरुवरुऩ् जॅरुवुरुम् पॊळुदिऩिऩ् ऩवर्हळॅऩ्
ऱॊरुवरुम् जिऱिदुणर्न् दिलर्हळॅव् वुलहमुम्
वॅरुवरुन् दहैयिऩार् विऴुवर्निऩ् ऱॅऴुवराल्
मरुवरुन् दहैयर्ता ऩवर्हळ्वा ऩवर्हडाम् 186

इरुवरुम्–दोनों; चॅरु उऱुम् पॊऴुतिऩ्–जब भिड़े तब; इऩ्ऩवर्कळ् ऍऩ्ऱु–कौन हैं, ऐसा; ऒरुवरुम्–कोई भी; उणर्न्तिलर्कळ्–समझ नहीं पाये; ऍ उलकमुम्–किसी भी लोक के वासी; वॅरुवरुम् तकैयिऩार्–देखकर भयभीत हो जायें, ऐसे रचित वे; विऴुवर्–गिरेंगे; निऩ्ऱु ऍऴुवर् आल्–फिर उठेंगे, इसलिए; ताऩवर्–दानव; वाऩवर्कळ् ताम्–और देवों को भी; मरुवु–पास आना; अरुम् तकैयर्–असम्भव हो, ऐसी स्थिति वाले। १८६

दोनों जब लड़े तो वे इतने गुँथ गये कि किसी के लिए भी अलग-अलग पहचानना कठिन हो गया। वे दोनों ऐसे थे कि किसी भी लोक के वासी उनको देखकर भयभीत हो जायँ। ऐसा वे भिड़ते हुए कभी गिर जाते; कभी उठ जाते कि दानव, देव सभी उनके समीप आ नहीं सके। १८६

तीयॅऴुन् ददुविशुम् बुऱ्ऱॅडुन् दिशैमिशैप्
पोयॅऴुन् ददुमुऴक् कुडऩॅऴुन् ददुपुयल्
तोयमुम् बुणरियुन् दॊडर्तडङ् गिरिहळुम्
शायऴिन् दऩवडित् तलमॅडुत् तिडुदलाल् 187

अटि तलम्–पैरों को; ऍटुत्तिट्टलाल्–बदलकर रखने से; ती–आग; विचुम्पु उऱ–आकाश छूते हुए; ऍऴुन्ततु–उठी; मुऴक्कु–गर्जन; नॅटुम् तिचै मिचै–लम्बी दिशाओं में; पोय् ऍऴुन्ततु–जाकर गूंज उठा; पुयल्–मेघ; उटऩ् ऍऴुन्ततु–साथ उठे; तोयमुम्–जलाशय; पुणरियुम्–समुद्र; तटम् तॊटर् किरिकळुम्–और बड़े श्रेणीबद्ध पर्वत; चाय् अऴिन्तऩ–प्रभाहीन हो गये (महिमाहीन हो गये या सौंदर्य-विहीन हो गये)। १८७

वे जब पैंतरे बदलते तब आग उठ जाती और आकाश तक फैल

जाती। उनका गर्जन सारी दिशाओं में जाकर गूँज उठा। मेघ भी उसके साथ उठ जाते। शुद्ध जलाशय, समुद्र और बड़ी पर्वतश्रेणियाँ अपना-अपना सौन्दर्य खो गयीं। सब मिट गये। १८७

अऱ्ऱदा हियशॅरुप् पुरिवुरु मळविन्ऩिल्
कॉऱ्ऱवा लियुम्वयक् कुववुतोळ् वलियिन्ऩाल्
पऱ्ऱिया शयिन्ऩवऩ् पणॅमरुप् पिणॅपरित्
तॅऱ्ऱिऩा ऩवऩुम्वा ऩिडियिन्ऩिन् ऱुरऱ्ऱिऩाऩ् 188

अऱ्ऱतु आकिय–उस प्रकार के; चॅरु–युद्ध को; पुरिवुरुम् अळविन्ऩिल्–जब वे करते रहे, तब; कॉऱ्ऱ वालियुम्–साहसी वाली ने भी; वयम् कुववु–विजयी और पुष्ट; तोळ् वलियिन्ऩाल्–भुजबल से; अवऩ्–उसके; पणॅ–स्थूल; मरुप्पु इणॅ–सींगों के जोड़े को; पऱ्ऱि–पकड़कर; परित्तु–नोच लेकर; आचॅयिन्–दिशाओं में; ॲऱ्ऱिऩाऩ्–फेंका; अवऩुम्–वह (दुन्दुभि) भी; वाऩ् इटियिन्–आकाश में होनेवाले वज्र के समान; निन्ऱु–खड़ा होकर; उरऱ्ऱिऩाऩ्–गरजा। १८८

दोनों में ऐसा युद्ध हो रहा था। तब साहसी वाली ने अपनी विजयी, पुष्ट और उन्नत भुजाओं के बल से दानव के दोनों सींगों को तोड़ लेकर दूर दिशाओं में फेंक दिया। वह भी वहीं रहकर वज्र के समान गरजने लगा। १८८

कवरियङ् गिरियिन्ऩैक् करदलङ् गॊडुतिरित्
तिवर्दलुङ् गुरुदिपट् टुयर्नॅडुन् दिशैतॊरुम्
तुवरणिन् दन्ऩवॅन्ऩप् पॊशितुदैन् दन्ऩदुणॅप्
पवर्नॅडुम् बणॅमदम् बयिलुम्वन् गिरिहळे 189

कवरि अम् किरियिन्ऩै–महिष के आकार के सुन्दर पर्वत के समान उस दुन्दुभि को; करतलम् कॊट्टु–(वाली) हाथों से; तिरित्तु–घुमाते हुए; इवर्तलुम्–घूमा तो; कुरुति पट्टु–(उस दानव का) रक्त आ लगा, इसलिए; उयर् नॅटुम्–विशाल व उन्नत; तिचॅ तॊरुम्–आठों दिशाओं में; तुणॅ–मिले रहे; पवर्–पास-पास के; नॅटुम्–बड़े; पणॅ–स्थूल; मतम् पयिलुम्–मदमत्त; वन् किरिकळ्–बलिष्ठ गिरि-सम गज; तुवर् अणिन्तत ॲन्त–लाल रंग से रंगित हो गये जैसे; पॊचि–(रक्त के) लेप से; तुतॅन्तन–युक्त हो गये। १८९

वाली महिषाकार सुन्दर पर्वत-सम उसको अपने हाथों में उठाकर घुमाते हुए स्वयं घूमने लगा। तब उस असुर के रक्त से आठों परस्पर मित्र, बड़े, मोटे और मदस्रावी दिग्गज लाल रंग के बने से लिप्त हो गये। १८९

पुयल्हडन् दिरवितऩ् पुहल्हडन् दयलुळोर्
इयलुमण् डिलमिहन् दॅन्ऩैयवन् दविरमेल्

वयिरवऩ् करदलत् तवऩ्वलित् तॆऱियवऩ्
रुयिरुम्विण् पडरविव् वुडलुमिम् बरिऩ्ऱरो 190

अवऩ्–वह; पुयल् कटन्तु–मेघमण्डल पार करके; इरवि तऩ् पुकल्–सूर्य-मार्ग; कटन्तु–पार करके; अयल् उळोर् इयलुम्–उनके परे अन्य देवों के भी; मण्टिलम् इकन्तु–मण्डलों को पार करके; अॆंतैयवुम्–अन्य लोकों को भी; तविर–छोड़ते हुए; मेल्–ऊपर; वयिर–कठोर; वऩ् कर तलत्तु–बलिष्ठ हाथों से; वलित्तु ऍऱिय–ज़ोर से फेंकने पर; अऩ्ऱु–तब; उयिरुम् विण् पटर–प्राणों के स्वर्ग में जाते; इ उटलुम्–यह शरीर भी; इम्परित् अरो—इस लोक में पड़ा रह गया न। १९०

वाली ने अपने बहुत ही बलवान हाथों से उसको ऐसा ले पटका कि वह मेघमण्डल, सूर्यमण्डल, देवलोक और अन्य लोकों को पार कर जाये। तब उसके प्राण स्वर्ग में चले गये और उसका शरीर इस भूमि पर पड़ा, इस भूमि का हो गया न ? । १९०

मुट्टिवाऩ् मुहडुशॆऩ् ऱणवियिम् मुडैयुडल्
कट्टिमाल् वरैयैवऩ् दुरुदलिऱ् करुणैयाऩ्
इट्टशा बमुमॆऩ्ऩक् कुदवुमिव् वियल्बिऩिल्
पट्टवा मुळ्ळुवदुम् बरिविऩा लुरैशॆय्दाऩ् 191

इ मुटै–यह दुर्गन्धपूर्ण; उटल् कट्टि–शरीर का मांसपिण्ड; वाऩ् मुकटु–आकाश की छत को; मुट्टि चॆऩ्ऱु–टकराते हुए जाकर; अणवि–वहाँ लगा रहने के बाद; माल् वरैयै–इस बड़े (ऋष्यमूक) पर्वत पर; वन्तु उऱ्ऱतलिल्–आ गिरा, तब; करुणैयाऩ्–करुणामय (मतंग ऋषि) का; इट्ट चापमुम्–दिया गया शाप भी; ऍऩक्कु उतवुम्–मेरा उपकारी बना; इ इयल्पिऩिल्–इस प्रकार से; पट्टवा मुळ्ळुवतुम्–जो कष्ट सहना पड़ा, वह सब; परिविऩाल्–पीड़ा के साथ; उरै चॆय्ताऩ्–(सुग्रीव ने) कह सुनाया। १९१

यह दुर्गन्धपूर्ण शरीर, मांसपिण्ड ऊपर गया, आकाश की छत से टकराया और इस बड़े पर्वत पर आ गिरा। तब करुणामय मतंग ऋषि ने यह देखकर वाली को शाप दे दिया। वही शाप अब मेरा बड़ा उपकारी बना रहता है। इस प्रकार से सुग्रीव ने अपने सारे कष्टों की कहानी वेदना के साथ सुना दी। १९१

केट्टऩ ऩमलऩुङ् गिळन्द वाऱॆलाम्
वाट्टॊऴि लिळवलै यिदऩ्ऩै मैन्दनी
ओट्टॆऩ ववऩ्कळल् विरलि ऩुन्दिऩाऩ्
मीट्टदु विरिञ्जऩा डुऱ्ऱु मोण्डदे 192

अमलऩुम्–निरंजन प्रभु ने भी; किळन्त आऱु ऍलाम्–कथित सभी बातों को; केट्टऩऩ्–सुना; वाळ् तॊऴिल्–करवालकार्य में चतुर; इळवलै–छोटे भाई से;

मैन्त–वीर भाई; नी–तुम; इततै–इसको; ओट्टु–दूर करो; ॲंत–कहा तो; अवन्–उन्होंने भी; कळल् विरलिन्–पैर की उँगलियों से; उन्तिनान्–उछाला; अतु–वह पंजर; मीट्टु–फिर एक बार; विरिञ्चन् नाट्टु उड्रु–विरंचि का लोक जाकर; मीण्टतु–लौट आया। १६२

यह सब श्रीराम ने सुना। उन्होंने तलवार चलाने में अत्यन्त चतुर अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा कि वीर भाई! इसको यहाँ से हटाओ। लक्ष्मण ने भी उसको अपने पैरों की उँगली से उछाला, तो वह पंजर फिर एक बार विरंचिलोक जा लौटा १९२

6. कलन् काण् पडलम् (आभरण-दर्शन पटल)

आयिडै यरिक्कुल मशनि यञ्जिड
वाय्तिड्रन् दार्त्तदु वळ्ळ लोङ्गिय
तूयवच् चोलैयि लिरुन्द शूळ्ल्वाय्
नायह वुणर्त्तुव दुण्डु नातॆन्ना 193

अ इटै–तब; अरि कुलम्–वानरवृन्द; अचनि अञ्चिट–वज्र को भयभीत करते हुए; वाय् तिड्रन्तु–मुख खोलकर; आर्त्ततु–शोर मचा उठे; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम भी; ओङ्किय–उन्नत; नल्–अच्छे; तूय–पवित्र; चोलैयिल्–उद्यान में; इरुन्त–जब रहे; चूळ्ल् वाय्–उस समय; नायक–नायक; नान् उणर्त्तुवतु–मेरी समझाने की; उण्टु–एक बात है; ॲंना–कहकर। १६३

तब वानरवृन्दों ने मुख खोलकर सन्तोष का बड़ा हल्ला मचाया। दानी श्रीराम ऊँचे तरुओं से पूर्ण एक सुन्दर और पवित्र उपवन में जाकर ठहरे। तब सुग्रीव ने कहा कि नायक! मेरा एक निवेदन है। १९३

इव्वळि यामियैन् दिरुन्द दोरिडै
वॅव्वळि यिरावणन् कॉणर मेलैनाळ्
शॅव्वळि नोक्किनॆम् देवियें कॉलाम्
कव्वैयि नरड्रिनळ् कळिन्द शेणुळाळ् 194

मेलै नाळ्–पहले किसी दिन; इ वळि–यहाँ; याम् इयैन्तु–हम मिलकर; इरुन्तनु ओर् इटै–जब रहे तब; वॅम् वळि–दुराचारी; रावणन्–रावण द्वारा; कॉणर–लायी जाकर; कळिन्त चेण् उळाळ्–बहुत दूर आकाश में जो रहीं; कव्वैयित्–(एक स्त्री ने) दुःख से; अरड्रिनळ्–विलाप किया; चॅम्मै वळि–अब खूब; नोक्किनॆम्–सोचकर देखा; तेवियें कॉल् आम्–देवी सीता ही होंगी शायद। १६४

उसने कहा— पहले किसी दिन हम यहाँ एकत्र होकर बैठे हुए थे। तब दुराचारी रावण एक स्त्री को उठाये ले जा रहा था। वह बहुत दूर में दुःख से विलाप कर रही थीं। अब सोचता हूँ तो लगता है कि वे देवी सीता ही थीं। १९४

उऴैयरि तुणर्त्तुव दॆऩ्ऩ्ब दुऩ्ऩियो
कुऴैपॊरु कण्णिऩाळ् कुऱित्त दोर्ऩ्दिलॆम्
मऴैपॊरु कण्णिणै वारि योडुदऩ्
इऴैपॊदिन् दिट्टऩळ् याङ्ग ळॆऱ्ऱऩॆम् 195

कुऴै पॊरु–कुण्डलों से टकरानेवाली; कण्णिऩाळ्–आँखों की वे; उऴैयरिऩ्–पास जो रहे उन हमसे; उणर्त्तुवतु–(अपनी स्थिति) बताना; ऎऩ्पतु उऩ्ऩियो–यह सोचकर; कुऱित्ततु–उनका अभिप्राय; ओर्ऩ्तिलॆम्–जान नहीं सके; तऩ् इऴै–अपने आभरणों को; पॊतिन्तु–बाँधकर; मऴै पॊरु–बारिश के समान; इणै कण्–जोड़ी की आँखों से; वारियोटु–बहनेवाली अश्रुधारा के साथ; इट्टऩळ्–नीचे डाल दिया; याङ्कळ्–हमने; एऱ्ऱऩॆम्–लेकर रख लिया। १९५

तब उन्होंने अपने आभरणों को वस्त्रखण्ड में बाँधकर आँखों से बहनेवाली अश्रुधारा के साथ हमारे सामने नीचे डाला। यह उन्होंने क्या सोचकर किया ? हम ही पास रहे, हमको अपनी स्थिति समझाना चाहती थीं, यही कारण था ? या कोई और ? हम नहीं जानते। हमने भी उन्हें उठाकर रखा है। १९५

वैत्तऩॆ मिव्वऴि वळ्ळ निऩ्वयिन्
उय्त्तऩ तन्दपो दुणर्दि यालॆऩाक्
कैत्तलत् तऩ्ऩवै कॊणर्न्दु काट्टिऩान्
नॆय्त्तलैप् पाल्हलन् दऩैय नेयत्तान् 196

नॆय् तलै–शहद से; पाल् कलन्तऩैय–दूध मिला जैसे; नेयत्ताऩ्–स्निग्ध; वळ्ळल्–दानी प्रभु; उय्त्तऩ–ऐसे जो डाले गये, उनको; इ वऴि वैत्तऩॆम्–यहाँ रखा है; निऩ् वयिऩ्–आपके पास; तन्त पोतु–जब देंगे तब; उणर्ति–आप समझ लेंगे; ऎऩा–कहकर; अऩ्ऩवै–उन आभरणों को; कै तलत्तु–अपने हाथों में; कॊणर्न्तु–ले आकर; काट्टिऩाऩ्–दिखाया (सुग्रीव ने)। १९६

सुग्रीव का स्नेह शहदमिश्रित दूध के समान मधुर और गाढ़ा था और पवित्र भी। वैसे स्नेही सुग्रीव ने आगे कहा कि वदान्य ! वे आभरण, जिनको उन्होंने नीचे डाला था, इधर ही हैं। उनको हम आपके पास लाकर दें तो आप समझ सकेंगे कि वे क्या उन्हीं के हैं। यह कहकर सुग्रीव अपने हाथ में उन आभरणों को ले आया और श्रीराम को दिखाया। १९६

तॆरिवुऱ नोक्किऩऩ् ऱॆरिवै मॆय्यणि
ऎरिहऩ लॆय्दिय मॆऴुहिऩ याक्कैपोय्
उरुहिऩ तॆऩ्ऩिलॆ मुयिरुक् कूऱ्ऱमाय्प्
परुहिऩ तॆऩ्ऩिलॆम् बहर्व दॆऩ्गॊलाम् 197

तॆरिवै मॆय् अणि–देवी के शरीर को अलंकृत करते जो रहे उनको; तॆरिवु उऱ–

ध्यान देकर; नोक्कित्तन्–श्रीराम ने निहारा; अँरि अऩल्–जलती अग्नि में; अँय्तिय–पड़े; मॅळुकिऩ्–मोम के समान; याक्कै पोय्–शरीर के; उरुकिऩन्–कृश हुए (पिघल गये); अँऩ्किलॅम्–यह नहीं कह सकते; उयिरुक्कु ऊऱ्ऱम् आय्–प्राण की संजीवनी समझकर; परुकित्तऩ् अँऩ्किलॅम्–पिया, यह भी कह नहीं सकते; पकर्वतु–कहने के लिए; अँऩ् कोल् आम्–क्या ही है। १६७

देवी सीता के शरीर को अलंकृत करते जो रहे, उन आभरणों को श्रीराम ने ध्यान से देखा। तब उनकी स्थिति क्या रही? आग में पड़े मोम के समान शरीर द्रवीभूत हो गया? ऐसा कह नहीं सकते। या प्राणों की संजीवनी मानकर उनको उन्होंने पी लिया—यह भी नहीं कह सकते। फिर हम क्या कह सकेंगे?। १९७

नल्हुव वॅऩ्ऩिति नङ्गै कॉङ्गैयैप्
पुल्हिय पूणुमक् कॉङ्गै पोऩ्ऱऩ
अल्हुलि नणिहळु मल्हु लायिऩ
पल्हलन् पिऱवुमप् पडिव मायवे 198

नङ्कै कॉङ्कैयै–देवी के उरोजों को; पुल्किय–जो आलिंगन करते रहे; पूणुम्–वे आभरण; अ कॉङ्कै पोऩ्ऱऩ–उन्हीं स्तनों के समान बने (दिखे); अल्कुलिऩ् अणिकळुम्–कटि-प्रदेश के आभरण भी; अल्कुल् आयिऩ–कटि-प्रदेश ही बने; पल्कलऩ्–अनेक आभरण; पिऱवुम्–अन्य भी; अ पटिवम् आयिऩ–उन्हीं अंगों के रूप में दिखे (जिन पर वे पहने गये थे); इति–इसके अलावा; नल्कुवतु–आभरण कर सकते हैं; अँऩ्–क्या (उपकार)। १६८

उन आभरणों ने सीता के उन अंगों का स्मरण दिलाकर बड़ा उपकार किया। उरोजों से जो आभरण लगे रहे, वे (हार आदि) उरोज ही बन गये! कटिप्रदेश के मेखला आदि आभरण वही अंग बन गये। अन्य अंगों के आभरण भी वे अंग बन गये। (श्रीराम के मन में उन अंगों की स्मृति जागी और वह तीव्र हो गयी।) वे आभरण इसके सिवा क्या उपकार कर सकते थे?। १९८

विट्टपे रुणर्विऩै विळित्त वॅऩ्गॅंतो
अट्टऩ वुयिरैयव् वणिह ळॅऩ्गॅंतो
कॉट्टिऩ शान्दॅऩक् कुळिर्न्द वॅऩ्गॅंतो
शुट्टऩ वॅऩ्गॅंतो यादु शॉल्लुहेन् 199

अ अणिकळ्–उन आभरणों ने; विट्ट–जो छूट गयी थी; पेर् उणर्विऩै–(श्रीराम की) उस प्रज्ञा को; विळित्त–बुलाकर लौटा दिया; अँऩ्कॅतो–कहूँ; उयिरै–प्राणों को; अट्टऩ–मार दिया; अँऩ्कॅतो–कहूँ; कॉट्टिऩ–ऊपर उड़ेले गये; चान्तु अँऩ–चन्दन के समान; कुळिर्त्त–शीतल बनाया; अँऩ्कॅतो–कहूँ; चुट्टऩ–जलाया; अँऩ्कॅतो–कहूँ; यातु चॊल्लुकेऩ्–क्या बता सकता हूँ। १६६

उन आभरणों ने श्रीराम की छूटी प्रज्ञा को फिर से जाग्रत् कर दिया —ऐसा कहूँ ? या उन्होंने उनके प्राण जला (मिटा) दिये —कहूँ ? अधिक परिमाण में लिप्त चन्दन के समान शरीर को शीतल (सुखी) बनाया —कहूँ ? या श्रीशरीर को ताप दिया —कहूँ ? क्या कहूँ, मैं ? । १९९

मोन्दिड नरुमल रान मॉय्म्बिनिल्
एन्दिड वुत्तरी यत्तै येयन्दन
शान्दमु मायौळि तळुवप् पोर्त्तलाल्
पून्दुहि लानवप् पूवै पूण्गळे 200

अ–उन; पूवै–कोमल सारिका-सम देवी के; पूण्कळ्–आभरण; मोन्तिट–सूँघने के लिए; नरु मलर् आत–सुगन्धित फूल बने (उन्होंने सूँघा); मॉय्म्पिनिल्–अपने कन्धों पर; एन्तिट–धारण करने पर; उत्तरीयत्तै–उत्तरीय के; एय्न्तन–स्थान में रहे; चान्तमुम्–चन्दन भी; आय्–बने और; औळि तळुव–शोभा देते हुए; पोर्त्तलाल्–शरीर पर धारण करने से; पूम् तुकिल्–सुन्दर वस्त्र भी; आन–बने । २००

श्रीराम को वे आभरण कैसे-कैसे लगे ! उन्होंने उन्हें सूँघा तो वे फूल हो गये । (फूल के समान उन्होंने उन्हें सूँघा ।) कन्धों पर धारण किया तो वे उत्तरीय बने । चन्दन बने और शोभा बढ़ाते हुए उनके अंगों के आवरण बने । तब वे सुन्दर वस्त्र भी बने । २००

ईर्त्तन शॅङ्गणीर् वॅळ्ळम् यावैयुम्
पोर्त्तन मयिर्प्पॅरुम् बुळहम् पॉङ्गुतोळ्
वेर्त्तन नॅन्गॅनो वॅदुम्बि नानॅन्गो
तीर्त्तनै यव्वळि यादु शॅप्पुहेन् 201

ईर्त्तन–बहकर जो आया; चॅम् कण् नीर् वॅळ्ळम्–लाल अश्रुप्रवाह; यावैयुम्–सबको; मयिर् पॅरुम् पुळकम्–रोमांच ने; पोर्त्तन–ढक दिया; पॉङ्कु तोळ्–प्रफुल्ल कन्धे; वेर्त्तनन्–स्वेदयुक्त हो गये; ॲन्कॅनो–कहूँ; वॅतुम्पितान्–तप्त हुए; ॲन्को–कहूँ; तीर्त्तनै–भगवान की; अ वळि–वह स्थिति; यातु चॅप्पुकेन्–क्या कह सकता । २०१

श्रीराम की आँखों से अश्रु की धारा बहती आयी और उनके शरीर पर लगी रही । पर रोमांच ने उसको ढक दिया । तब क्या कहा जाय ? यह कहूँ कि उनके पुष्ट कन्धे स्वेदयुक्त हो गये ? या यह कहूँ कि विरहताप से तप्त हो गये ? तीर्थ, भगवान श्रीराम की तब की स्थिति का क्या कहूँ ? । २०१

विडम्बरन् दनैयदोर् वॅम्मै मीक्कॉळ
नॅडुम्बॊळु दुणर्विनो डुयिर्प्पु नीङ्गिय

तडम्बॅरुङ् गणणत्तै ताङ्गि नान्रन
दुडम्बितिऱ् चॅरिमयिऱ् शुरुक्कोण् डोडवे 202

विटम् परन्त–विष फैला; अत्तैयतु–ऐसा; ओर् वॅम्मै–एक ताप; मी कोळ–अधिक हुआ; नॅटुम् पॊळुतु–बहुत देर तक; उणर्वित्तोटु–सुध के साथ; उयिर्प्पु–श्वास; नीङ्किय–खोया रहा; तटम् परुम् कण्णत्तै–(जिनका) उन आयतविशालाक्ष को; तत्तु उटम्पितिल्–अपने शरीर पर के; चॅरि मयिर्–घने बालों के; चुरु कॊण्टु ओट–झुलसने देते हुए; ताङ्कितान्–(सुग्रीव ने) धारण कर लिया। २०२

उनके शरीर भर में विष फैला जैसा ताप बढ़ गया। वे बहुत देर तक सुध-बुध खोये रहे। सुग्रीव ने उन आयतविशालाक्ष श्रीराम को अपने शरीर पर धारण कर लिया। ताप इतना था कि सुग्रीव के शरीर के बाल झुलस गये। २०२

ताङ्गिन निरुत्तियत् तुयरन् दाङ्गुरा
देङ्गिय नॅञ्जिन निरङ्गि विम्मुवान्
वीङ्गिय तोळिनाय् वित्तैयि तेनुयिर्
वाङ्गिनॅ निव्वणि वरुवित् तेयॅना 203

ताङ्कितन्–धारण कर; इरुत्ति–रखते हुए; अ तुयरम्–वह (उनका) दुःख; ताङ्कुरातु–सह नहीं सक कर; एङ्किय–दुखनेवाले; नॅञ्चितन्–मन के साथ; वीङ्किय–फूले हुए; तोळिनाय्–कन्धों वाले; वित्तैयितेन्–यह कार्यकर्त्ता मैं; इ अणि वरुवित्ते–ये आभरण मँगाकर ही; उयिर् वाङ्कितॅन्–आपके प्राण हर चुका; ऍन्ना–कहकर; इरङ्कि–अनुताप से; विम्मुवान्–भर गया। २०३

सुग्रीव श्रीराम के दुःख से कातर हुआ। श्रीराम को अपने अंक में धारण करते हुए सुग्रीव ने कहा कि प्रफुल्ल भुजा वाले! मैं अनुचित काम का करनेवाला बन गया। ये आभरण मँगाकर मैंने आपके प्राणों को खतरे में डाल दिया। वह बहुत दुःख से भर गया। २०३

अयनुडै यण्डत्ति नप्पु रत्तैयुम्
मयर्वऱ नाडियॅन् वलियुङ् गाट्टियुन्
उयर्पुहळ्त् तेवियै युदवऱ् पालनाल्
तुयरुळन् दयर्दियो शुरुदि नूल्वलाय् 204

चुरुति नूल् वलाय्–श्रुतिशास्त्रविद्वान्; अयत् उटै–ब्रह्मा के; अण्टत्तिन्–अण्ड के; अ पुरत्तैयुम्–पार के स्थानों में भी; मयर्वु अऱ–बिना भ्रम के; नाटि–खोजकर; ऍन् वलियुम्–अपना बल भी; काट्टि–दिखाकर; उन् उयर् पुकळ्–आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी; तेवियै–धर्मपत्नी को; उतवल् पालन्–ले आने को बद्ध हूँ; आल्–इसलिए; तुयर् उळन्तु–दुःख में पड़कर; अयर्तियो–श्रान्त होंगे क्यों। २०४

उसने आगे आश्वासन दिया। श्रुतिशास्त्रव्युत्पन्न! ब्रह्माण्ड के

उस पार भी जाकर सब स्थलों में विना प्रमाद के ढूँढ़कर, अपने बल से आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी धर्मपत्नी सीताजी को ले आने का संकल्पबद्ध हूँ। फिर आप क्यों दुःखमग्न होकर श्रान्त हों ? । २०४

तिरुमह　ळनैयवत्　तैय्वक्　कऱ्पिताळ्
वॆरुवरच्　चॆय्दुळ　वॆय्य　वऩ्बुयम्
इरुबदु　मीरैन्दु　तलैयु　निऱ्कवुऩ्
ओरुहणैक्　काऱ्ऱुमो　वुलह　मेऴुमे 205

तिरुमकळ् अनैय–श्रीलक्ष्मी-सदृश; अ तैय्व कऱ्पिताळ्–उन पतिव्रता देवी को; वॆरुवर चॆय्तु उळ–जिसने भयभीत किया है; वॆय्यवऩ्–उस नृशंस की; पुयम् इरुपतुम्–बीसों भुजाएँ; ईर् ऐन्तु तलैयुम्–दसों सिर; निऱ्क–रहें; उऩ् ओरु कणैक्कु–आपके एक शर के सामने; उलकम् एऴुम्–सातों लोक; आऱ्ऱुमो–ठहर सकेंगे क्या। २०५

श्रीलक्ष्मी-सदृश पतिव्रता सीता को भयभीत करते हुए जो कष्ट देता रहता है, उस क्रूर रावण के बीस भुजाएँ और दस सिर हैं। तो क्या ? उनको रहने दीजिए। आपके एक शर के सामने सातों लोक टिक सकेंगे क्या ? । २०५

ईण्डुनी　यिरुन्दरु　ळेऴो　डेऴॆनप्
पूण्डपे　रुलहङ्गळ्　वलियिऱ्　पुक्किडैत्
तेण्डियव्　वरक्कनैत्　तिरुहित्　तेवियैक्
काण्डिया　निव्वऴिक्　कॊणरुङ्　गैप्पणि 206

ईण्टु–यहीं; नी इरुन्तु अरुळ्–आप रहने की कृपा करें; एऴ् ओटु एऴ् ऎऩ–सात और सात; पूण्ट–के बने; पेर् उलकङ्कळ्–लोकों में; वलियिल् पुक्कु–अपने बल से प्रवेश करके; इटै–वहाँ; तेण्टि–खोजकर; अ अरक्कनै–उस राक्षस को; तिरुकि–मरोड़कर; तेवियै–देवी सीता को; इ वऴि कॊणरुम्–इधर लाने का; कै पणि–मेरा हस्तकौशल (कार्यकौशल) काण्टि–देखिए। २०६

श्रीमान आप यहीं रहने की कृपा करें। चौदह की संख्या के इन बड़े लोकों में मैं अपने बल से प्रवेश करूँगा। देवी को ढूँढूँगा। उस राक्षस रावण का शरीर मरोड़ दूँगा। फिर सीताजी को इधर सम्मान सहित ले आऊँगा। मेरी कार्यकुशलता देखिए आप। २०६

एवलॆय्　तुणैवरेम्　याङ्ग　ळीङ्गिवऩ्
तावरुम्　बॆरुवलित्　तम्बि　नम्बिनिऩ्
शेवह　मिदुवॆनिऱ्　चिऱुह　नोक्कलॆऩ्
मूवहै　युलहुनित्　मौऴियिऩ्　मुऩ्दुमो 207

याङ्कळ्–हम; एवल् चॆय्–आज्ञाकारी; तुणैवरेम्–साथी हैं; ईङ्कु इवऩ्–यहाँ

रहनेवाले ये (लक्ष्मण); ता अरुम्–अप्रतिहत; पॅरु वलि–बड़े बलवान; तम्पि–कनिष्ठ भ्राता हैं; नम्पि–नायक; निन् चेवकम्–आपकी वीरता; इतु ॲतिल्–यह है तो; चिरुक नोक्कल्–लघुता देखना; ॲन्–क्यों; मू वकै उलकुम्–तीनों (वर्गों के) लोक; निन् मॊऴियिन्–आपकी आज्ञा; मुनतुमो–लाँघकर जायेंगे क्या। २०७

आपके आज्ञाकारी सेवक और सखा हम हैं। और यहाँ पास जो हैं, वे लक्ष्मण दुर्द्धर्ष बड़े बलवान हैं। नायक! आपकी शक्ति तो वैसी है। तव क्यों आप अपने को अल्प के रूप में देखें? क्या पाताल, भूलोक, देवलोक —ये तीनों वर्गों के लोक आपकी आज्ञा को लाँघ सकेंगे? । २०७

पॅरुमैयो रायितुम् पॅरुमै पेशलार्
करुममे यल्लदु पिऱ्ऱिदॅन् कण्डदु
दरुमनी यल्लदु तन्नितु वेऱुण्डो
अरुमैये दुन्नक्कुनिन् ऱवलङ् गूर्दियो 208

पॅरुमैयोर् आयितुम्–प्रशंसायोग्य हों तो भी; करुममे अल्लतु–कार्य करना छोड़कर; पॅरुमै पेचलार्–अपनी प्रशंसा नहीं करते रहते; पिऱितु ॲन् कण्टतु–फिर क्या देखा गया; तरुमम्–धर्म; नी अल्लतु–आपके सिवा; तन्नितु वेऱु–अलग दूसरा; उण्टो–है क्या; उनक्कु–आपके लिए; अरुमै एतु–कठिन क्या है; निन्ऱु–रहकर; अवलम्–दुःख; कूर्तियो–करेंगे क्या। २०८

बड़े समर्थ लोग भी करनी करते हैं। अपनी प्रशंसा कहते नहीं फिरते। यह बड़ा तथ्य है। इसको छोड़ दूसरा तथ्य कहाँ? धर्म आप ही हैं। दूसरा कुछ नहीं है। आपके लिए दुर्गम क्या है? फिर आप ऐसा रहकर क्यों दुःख कर रहे हैं? । २०८

मुळरिमेल् वैहुवान् मुरुहन् ऱन्नवन्
तळिरियल् बाहत्तान् ऱडक्कै याऴियान्
अळवियॊन् ऱावदे यन्ऱि यॆयमिल्
किळवियाय् तन्नित्तनिक् किडप्प रोतुणै 209

ऐयम् इल्–असंदिग्ध; किळवियाय्–वचन बोलनेवाले; मुळरि मेल्–कमल पर; वैकुवान्–आसीन (ब्रह्मा); मुरुकन् तनृत–'मुरुगन' (कार्तिकेय का तमिळ नाम) के जनक; अ तळिरियल्–उस पल्लव-समान पार्वतीदेवी के; पाकत्तान्–अर्द्धाङ्गी; तट कै आऴियान्–विशाल हस्त में चक्र रखनेवाले (चक्रधारी) विष्णु; अळवि–मिलित होकर; ऑन्ऱु आवते अन्ऱि–एक बनें तब के सिवा; तनि तनि–पृथक्-पृथक् वे; तुणै किटप्परो–आपकी समानता कर सकेंगे क्या। २०९

कमलासन, मुरुगन की माता पार्वती को अंग में रखनेवाले अर्धनारीश्वर और विशाल हाथ में चक्र रखनेवाले चक्रधारी विष्णु —तीनों सम्मिलित हो एक बने आवें, तो शायद वे आपकी समानता कर सकेंगे। पृथक्-पृथक् वे आपकी समानता कर सकेंगे क्या? । २०९

ऍन्ऩुडैच् चिरुकुरै मुडित्त लोण्डॊरीइप्
पिन्ऩुडैत् तायिनु माह बेदुरुम्
मिन्ऩिडैच् चनहियै मीट्टु मीडुमाल्
पॊन्ऩुडैच् चिलैयिनाय् विरैन्दु पोयॆन्ऩरात् 210

पॊन् उटै–सौंदर्ययुक्त; चिलैयिनाय्–धनुर्धर; ऍन्ऩुटै–मेरी; चिरु कुरै–छोटी याचना; मुटित्तल्–पूरा करना; पिन्ऩुटैत्तु आयिनुम्–पीछे हो तो; आक–हो; ईण्टु ऑरीइ–अब उसको रहने देकर; विरैन्तु पोय्–शीघ्र जाकर; पेतु उरुम्–पीड़ित रहनेवाली; मिन् इटै–विद्युत्कटि; चनकियै–जानकी को; मीट्टु–छुड़ाकर; मीळ्तुम्–लौट आयँगे (हम); ऍन्ऩरान्–कहा (सुग्रीव ने)। २१०

सुन्दर धनुर्धारी ! मेरी छोटी प्रार्थना बाद को देखी जाय ! उसको अब छोड़ दें। हम अभी जायँगे। रावण के हाथों त्रस्त, विद्युत्कटि सीता को उससे मुक्त कराके लेकर लौट आयँगे। २१०

ऍरिहदिर्क् कादल निन्नैय कूरलुम्
अरुवियङ् गण्डिरन् दन्बि नोक्किनान्
तिरुवुरै मार्बनुन् दॆळिवु तोन्ऱिड
ऑरुवहै युणर्वुवन् दुरैप्प दायिनान् 211

ऍरि कतिर्–दाहक किरणों के सूर्य के; कातलन्–प्यारे (पुत्र) के; इन्नैय कूरलुम्–यह कहने पर; तिरु उरै–श्रीनिवास; मार्पनुम्–वक्ष वाले; तॆळिवु तोन्ऱिट–प्रज्ञा पाकर; ऑरु वकै उणर्वु–एक तरह से सुध; वन्तु–मिलने से; अरुवि–(अश्रु की) नदी बहानेवाली; अम्–सुन्दर; कण्–आँखें; तिऱन्तु–खोलकर; अन्पिन् नोक्कितान्–स्नेह के साथ देखकर; उरैप्पतु आयिनान्–कहने लगे। २११

गरम किरणमाली के पुत्र, सुग्रीव, के यह कहने पर श्रीनिलयवक्ष (महाविष्णु) के अवतार श्रीराम एक तरह से सचेत हुए। सुन्दर और अश्रुसरिता की अपनी आँखें खोलकर उन्होंने सुग्रीव से ये बातें कहीं। २११

विलङ्गॆळिऱ् ऱोळिनाय् विन्नैयि नेनुमिव्
विलङ्गुविऱ् करत्तिनॆ निरुक्क वेयवळ्
कलन्गळित् तन्ळिदु करुपिन् मेवियि
पॊलन्गुळैत् तॆरिवैयर् पुरिन्दु ळोर्हळ्यार् 212

विलङ्कु ऍळिल्–पर्वतसुन्दर; तोळिनाय्–कन्धों वाले; विनैयिनेनुम्–दुर्भाग्यशाली मेरे; इ इलङ्कु विल्–इस देखने योग्य धनु के; करत्तिनॆन्–रखनेवाले हाथों के; इरुक्कवे–रहते हुए भी; अवळ्–उसने; कलन् कळित्ततळ्–अपने आभरण त्यागे; इतु–यह कार्य; करुपिन् मेविय–गृहस्थ धर्म में लगी हुई; पॊलन् कुळै तॆरिवैयर्–स्वर्णकुण्डलधारिणी स्त्रियों में; पुरिन्तुळोर्कळ्–जो करने को मजबूर हुई हैं; यार्–वे कौन हैं। २१२

पर्वत जैसे और सुन्दर कन्धों वाले ! मैं बड़ा अभागा हूँ। हाथ में

यह शोभायमान धनु लिये हुये रहता हूँ! तो भी सीता को अपने आभरण उतारने पड़े। गृहस्थी में लगी हुई स्त्रियों में और किसका यह दुर्भाग्य रहा है? । २१२

वाणडुङ्	गण्णियॅन्	वरवु	नोक्कयान्
ताणॅडुङ्	गिरियॊडुन्	दरुक्क	डम्मॊडुम्
पूणॊडुम्	पुलम्बिये	पॊऴुदु	पोक्कियिन्
नाणॅडुञ्	जिलैशुमन्	दुऴल्वॅ	नाणिलेन् 213

वाळ् नॅट्टुम् कण्णि—तलवार-सी आयत आँखों वाली सीता; ॲन् वरवु नोक्क—मेरी राह देख रही हैं, तब; यान्—मैं; ताळ्—तलों के साथ; नॅट्टुम् किरि ऑटुम्—उन्नत पर्वतों से; तरुक्कळ् तम् ऑटुम्—वृक्षों के साथ; पूण् ऑटुम्—इन आभरणों के साथ; पुलम्पिये—विलाप करते हुए ही; पॊऴुतु पोक्कि—समय व्यतीत करके; इ नाण्—इस डोरेसहित; नॅट्टुम् चिलै—लम्बे धनुष को; चुमन्तु—ढोते हुए; नाण् इलेन्—निर्लज्ज होकर; उऴल्वॅन्—संकटग्रस्त रह रहा हूँ। २१३

तलवार के समान आँखों वाली सीता मेरी बाट जोह रही है! पर मैं यहाँ विशाल तलोंसहित गिरियों, वृक्षों और आभरणों को देखकर विलाप करता हुआ, और इस बड़े धनुष को बेकार ढोता हुआ, निर्लज्ज (लाजहीन) दुःख सह रहा हूँ। ("नाण्"—डोरा; लाज)। २१३

आऱुडन्	शॅल्बव	ररिवै	मार्दमै
वेऱुळोर्	वलिशॅयिन्	विलक्कि	वॅञ्जमत्
तूऱुरत्	तम्मुयि	रुहुप्प	रॅन्तैये
तेऱिनळ्	पुन्गणोय्	तीर्क्क	हिऱ्ऱिलेन् 214

आऱु—मार्ग में; उटन् चॅल्पवर्—साथ चलनेवाली; अरिवै मार् तमै—स्त्रियों को; वेऱु उळोर्—पराये लोग; वलि चॅयिन्—त्रास देते हैं तो; विलक्कि—उनको हटाकर; वॅम् चमत्तु—भयंकर युद्ध में; ऊऱु उऱ—कष्ट आने पर; तम् उयिर् उकुप्पर्—अपनी जान दे देते; ॲन्तैये तेऱिनळ्—मुझी पर निर्भर जो रहीं, उनका; पुन्कण् नोय्—दुःखरोग को; तीर्क्ककिऱ्ऱिलेन्—नहीं दूर कर सक रहा हूँ। २१४

मार्ग में अपने साथ आनेवाली स्त्री पर कोई अत्याचार करे, तो भी लोग उस अत्याचारी को रोकते हैं। कठोर युद्ध में अपने प्राण भी दे देते हैं। पर मुझे देखो। मेरे ही ऊपर सब तरह से निर्भर है सीता। उसका दुःख दूर करने में भी मैं असमर्थ हूँ। २१४

इन्दिरङ्	कुरियदो	रिडुक्कण्	डीर्त्तिहल्
अन्दहर्	करियपो	रवुणर्	ऱॆयत्तनैं
ॲन्दमर्	ऱवतिन्वन्	दुॅवित्त	यान्ऱिलैं
वॅन्दुयरक्	कॊडम्बळि	विल्लिङ्	ऱाङ्गिनेन् 215

अँन्तै–मेरे पिता ने; इन्तिरऱ्कु उरियतु–इन्द्र का; ओर् इडुक्कण्–एक संकट; तीर्त्तु–दूर करके; अन्तकऱ्कु अरिय–यम के लिए भी असाध्य; इकल् पोर् अवुणन्–विरोधी, युद्ध में चतुर दानव (शम्बर) को; तेय्त्ततन्–मिटाया; मऱ्ऱु–इसके विपरीत; अवतिल् वन्तु–उनके पुत्र के रूप में आकर; उतित्त–पैदा जो हुआ; यान्–वह मैं; वॆम् तुयर्–कठोर दुःखदायी; कॉडुम् पऴि–घोर अपमान; इ विल्लिल्–इस धनुष पर; ताङ्कितेन्–उठा रहा हूँ। २१५

मेरे पिता ने इन्द्र का संकट दूर किया। यम के लिए भी दुर्द्धर्ष वैरी और युद्ध-चतुर शंबरासुर को कठोर युद्ध में मारा। किन्तु मैं हूँ उनका ही पुत्र! इस धनुष पर कठोर दुःखदायी क्रूर निन्दा ढो रहा हूँ। २१५

करुङ्गड ऱॊट्टत्तर् गङ्गै तन्दत्तर्
पॊरुम्बुलि मानॊडु पुऩलु मूट्टिनर्
पॆरुन्दहै यॆन्गुलत् तरशर् पिन्नॊरु
तिरुन्दिऴै तुयरनान् ऱीर्क्क हिऱ्ऱिलेन् 216

करुम् कटल्–काले समुद्र के; तॊट्टत्तर्–खननकारी; कङ्कै तन्तत्तर्–गंगा को भूमि पर जो लाये, वे; पॊरुम् पुलि–झगड़ालू व्याध को; मान् ओटु–हरिण के साथ; पुऩलुम् ऊट्टित्तर्–(एक ही घाट पर) पानी पिलानेवाले; पॆरुम् तकै–बड़े ही श्रेष्ठ; ऍन् कुलत्तु अरचर्–मेरे कुल के राजा; पिन्–उनके बाद; नान्–मैं; ऑरु–एक; तिरुन्तु इऴै–श्रेष्ठ आभरणभूषित स्त्री का; तुयरम्–दुःख; तीर्क्ककिऱ्ऱिलेन्–दूर कर नहीं सक रहा हूँ। २१६

हमारे पूर्वजों में सागर-खननकारी (सगरपुत्र) रहे। गंगा नदी को भूमि पर लानेवाले (भगीरथ) रहे। शत्रु व्याध को हरिण के साथ एक ही घाट में जल पिलानेवाले (मान्धाता) थे। ऐसे प्रख्यात राजा थे मेरे पूर्वज। उनके ही कुल में उत्पन्न मैं एक (अपनी ही) स्त्री का दुःख दूर नहीं कर सक रहा हूँ। २१६

विरुम्बॆऴि लॆन्दैयार् मॆय्म्मै वीयुमेल्
वरुम्बऴि यॆन्ऱियान् महुडम् जूडलेन्
करुम्बऴि शॊल्लियैप् पहैजन् कॆक्कॊळप्
पॆरुम्बऴि शूडिनेन् पिऴैत्त वॆन्नरो 217

विरुम्पु–मनोरम; ऍऴिल्–शानदार; ऍन्तैयार्–मेरे पिता का; मॆय्म्मै वीयुम् एल्–(वचन) सत्य भंग हो जायगा तो; पऴि वरुम्–निन्दा होगी; ऍन्ऱु–सोचकर; यान्–मैंने; मकुटम् चूटलेन्–मुकुट धारण नहीं किया; करुम्पु अऴि–ईख को हरानेवाली; चॊल्लियै–बोली वाली को; पकैजन्–शत्रु; कै कॊळ–ले गया; पॆरुम् पऴि–बड़ा अपमान; चूटितेन्–धारण कर लिया; पिऴैत्ततु ऍन्–क्या ही गल्ती की है। २१७

मेरे पिताजी सबके मनों का हरण करनेवाले रूप के स्वामी थे। उनका वचन भंग हो जायगा तो बड़ा अपयश होगा। इस डर से शायद मैंने मुकुट धारण नहीं किया। किन्तु इक्षुरस के स्वाद को भी फीका बनानेवाली मधुर बोली वाली सीता को रावण के हाथ कैद होने देकर मैंने बड़ी निन्दा ग्रहण कर ली। कैसी ही भयंकर गलती हो गयी है मेरे हाथों? । २१७

ॲन्ऩनोन् दिन्ऩऩ पन्ऩि येङ्गिये
तुन्ऩरुन् दुयरत्तुच् चोर्हिन् ड्रान्ड्रै
पन्ऩरुङ् गदिरवन् पुदल्वन् पैयुळ्पार्त्
तन्ऩवॅन् दुयरॅनु मळक्कर् नीक्किऩान् 218

ॲन्ऩ–ऐसा; नोन्ऩु–दुःखी होकर; इन्ऩऩ पन्ऩि–ऐसी बातें कहते हुए; एङ्कियॆ–तरसते हुए; तुन्ऩ अरुम्–असह्य; तुयरत्तु–शोक से; चोर्किन्ड्रान् तनै–लटनेवाले को; पन्ऩ अरुम्–अकथनीय; पैयुळ्–पीड़ा को; कतिरवन् पुतल्वन्–सूर्यसुत ने; पार्त्तु–देखकर; अन्ऩ–उस; वॅम् तुयर् ॲन्ऩुम्–कठोर दुःख रूपी; अळक्कर्–समुद्र के; नीक्किऩान्–पार कराया। २१८

श्रीराम ने दुःख के साथ ऐसी-ऐसी बातें कहीं। उनका मन आक्रान्त हो गया। असह्य दुःख के कारण वे निर्बल हो रहे। ऐसे उनके दुःख को सूर्यपुत्र ने देखा। उसने अपनी परिचर्या से धीरज दिलाकर उनको उस कठोर दुःख के सागर को पार कराया। २१८

ऐयनी याऱ्ऱलि ऩाऱ्ऱि ऩेन्ऩला
दुय्वने यॆन्ऩक्किदि ऩुऱुदि वेऱुण्डो
वैयहत् तिप्पऴि तीर माय्वदु
शॆय्वॅऩिन् कुऱैमुडित् तन्ऱिच् चॆय्हलेन् 219

ऐय–प्यारे; नी–तुमने; आऱ्ऱलिन्–शान्त कराया; आऱ्ऱिऩेन् अलातु–शान्त हुआ, नहीं तो; उय्वने–जी सकता था क्या; ॲन्ऩक्कु–मेरे लिए; इतिन्–इस (तुम्हारी मित्रता) से बढ़कर; उऱुति–हितकारी; वेऱु–दूसरा; उण्टो–है क्या; वैयकत्तु–संसार में; इ पऴि तीर–इस अपमान को पोंछने के लिए; माय्वतु चॆय्वॆऩ्–मर जाऊंगा; निन् कुऱै–तुम्हारी शिकायत; मुटित्तु अन्ऱि–दूर किये बगैर; चॆय्कलेन्–वैसा नहीं करूंगा। २१९

श्रीराम किसी विध सम्हले। उन्होंने सुग्रीव से कहा कि तुम्हारे ही कहने से मैं सम्हल रहा हूँ। नहीं तो मैं कहाँ जीवित रह पाता? तुम्हारी मित्रता से बढ़कर कोई हित भी है? यह अपयश कठोर है। उससे बचने के लिए मैं मर जाऊँगा। पर तुम्हारी माँग पूरी किये विना मैं ऐसा नहीं करूँगा। २१९

ऍन्ऱ्रन्	निराहव	निन्नैय	कालैयिल्
वन्ऱिऱन्	मारुदि	वणङ्गि	नोक्कितान्
कुन्ऱिवर्	तोळिन्नाय्	कूऱल्	वेण्डुव
दॊन्ऱुळ	ददन्नैनी	युवन्दु	केळॅन्ना 220

ऍन्ऱ्रतन्–कहा; इराकवन्–श्रीराघव ने; इन्नैय कालैयिल्–उस समय; वन्तिऱल्–अधिक बलशाली; मारुति–मारुति ने; वणङ्कि नोक्कितान्–नमस्कार करके देखा; कुन्ऱु इवर्–पर्वत-सम; तोळिन्नाय्–कन्धों वाले; कूऱल् वॆण्टुवतु–निवेदन-योग्य; ऒन्ऱु उळतु–एक बात है; अतन्नै–उसको; नी–आप; उवन्तु–मन देकर; केळ्–सुनिए; ऍन्ना–कहकर। २२०

श्रीराम ने सुग्रीव को यों वादा दिलाया। तब बहुत बली मारुति ने श्रीराम को नमस्कार करके उनसे निवेदन किया कि पर्वतभुज! एक बात का निवेदन है। कृपा करके सुनें। यह सुनाकर आगे—। २२०

कॊडुन्दिऱल्	वालियैक्	कॊन्ऱु	कोमहन्
कडुङ्गदि	रोन्मह	नाक्किक्	कैवळर्
नॆडुम्बडै	कूट्टिना	लन्ऱि	नेडरि
दडुम्बडै	यरक्कन	दिरुक्कै	याणैयाल् 221

कॊटुम्–निर्मम; तिऱल्–बलिष्ठ; वालियै–वाली को; कॊन्ऱु–मारकर; कटुम्–अधिक गरम; कतिरोन्–किरणों वाले सूर्य के; मकन्–पुत्र को; कोमकन् आक्कि–राजा बनाकर; आणैयाल् (सुग्रीव की) आज्ञा द्वारा; कै वळर्–युद्धाभ्यस्त; नॆटुम् पटै–बड़ी सेना को; कूट्टिनाल् अन्ऱि–एकत्रित किये बिना; अटुम् पटै–घातक सेना वाले; अरक्कततु–राक्षस का; इरुक्कै–वासस्थान; नेटु अरितु–ढूँढ़ना कठिन (काम) है। २२१

पहले क्रूर पराक्रमी वाली को मारना है। फिर गरम किरणमाली सूर्यदेव के पुत्र को राजा बनाना और समर के सब प्रकारों में समर्थ सेना को एकत्र करना चाहिए। तभी, घातक सेना के स्वामी रावण का वासस्थान ढूँढ़कर उसका पता लगाया जा सकता है। नहीं तो वह दुस्साध्य है। २२१

वानदो	मण्णदो	मऱ्ऱुम्	वॆऱ्पदो
एन्नैमा	नाहर्त	मिरुक्कैप्	पालदो
तेन्नुळर्	तॆरियलाय्	तॆळिव	दन्ऱुनाम्
ऊन्नुडै	मान्नुड	माव	दुण्मैयाल् 222

तेन् उळर्–भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; तॆरियलाय्–ऐसी माला से भूषित; वानतो–आकाश में का है; मण्णतो–भूतल का; मऱ्ऱुम्–अन्य; वॆऱ्पतो–पर्वतप्रदेश का; एन्नै–अन्य; मा–विशाल; नाकर् तम् इरुक्कै–नागों के वास के; पालतो–स्थान में है; नाम्–हम; ऊन्नुटै–मांस के; मान्नुटम् आवतु उण्मै–मानव-शरीर के हैं; आल्–इसलिए; तॆळिवतु अन्ऱु–निश्चित रूप से जानने योग्य नहीं। २२२

ऐसी माला से शोभायमान प्रभु, जिस पर भ्रमर कुरेदते रहते हैं! उन राक्षसों का वासस्थान आकाश में है, या इस भूतल में? या कहीं अन्य पर्वतस्थलों में? या अन्य नाग आदि लोगों के वास के लोक में है? हम सब मानवशरीरी हैं। (वानर और नर दोनों का शरीर एक-सा माना गया है, देवों के दिव्य शरीरों और राक्षसों के राक्षस-शरीरों से भिन्न।) इस कारण हम निश्चित रूप से जानते नहीं। २२२

ऍव्वुल हत्तिनु मिमैप्पि नॅय्दुवर्
वव्वुव रव्वळि महिऴ्न्द यावैयुम्
वॅव्विनै वन्दॆन वरुवर् मीळ्वराल्
अव्वव रुऱैविड मऱियर् पालदो 223

इमैप्पिन्–पलक मारते समय के अन्दर; ऍ उलकत्तिनुम्–किसी भी लोक में; ऍय्तुवर्–जायँगे; अ वळि–वहाँ; मकिऴ्न्त यावैयुम्–जिनको पसन्द करते हैं, उन सबको; वव्वुवर्–हथिया लेंगे; वॅव्विनै–कठोर पूर्व-कर्म; वन्ततु ऍन–आ गया हो, ऐसा; वरुवर्–आ जायँगे; मीळ्वर्–लौट जायँगे; अ अवर् उऱैविटम्–ऐसे उनका वासस्थान; अऱियल् पालतो–जानने योग्य है क्या। २२३

वे पलक मारते समय के अन्दर कहीं भी, किसी भी लोक में जा पहुँचने वाले होते हैं। वे वहाँ जो भी उनको भावे उन वस्तुओं का अपहरण कर लेंगे। बुरे पूर्वकर्म जैसे अचूक रीति से और अकस्मात आते हैं, वैसे वे भी आ जाते हैं। वैसे ही वापस भी चले जाते हैं। ऐसे उनके वासस्थान का पता लगाया जा सकता है क्या? । २२३

ऒरुमुऱै येपरन् दुलहम् यावैयुम्
तिरुमह ळुऱैविडन् देर वेण्डुमाल्
वरन्मुऱै नाडिडिल् वरम्बिन् ऱालुल
हरुमैयुण् डळप्परु माण्डुम् वेण्डुमाल् 224

वरन्मुऱै–क्रमेण स्थान-स्थान में; नाटिटिल्–खोजना हो; उलकु–संसार; वरम्पु इन्ऱु–असीम है; आल्–इसलिए; अरुमै उण्टु–कठिनाई है; अळप्पु अरुम् आण्टुम्–असंख्यक वर्षों का समय भी; वेण्टुम् आल्–(खोजने के लिए) चाहिए; आल्–इसलिए; ऒरु मुऱैये–एक ही समय; उलकम् यावैयुम्–सारे लोक में; परन्तु–फैलकर; तिरुमकळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी का; उऱैविटम्–वासस्थान; तेर वेण्टुम्–ढूंढ़ लेना चाहिए। २२४

श्रीलक्ष्मी (सीता) जी को एक-एक स्थान पर क्रम से ढूंढ़ने लगें, तो लोक की सीमा कहाँ है? वह तो असीम है! उसमें बहुत अधिक कठिनाई है। उस रीति से अधिक काल तक ढूंढ़ना पड़ेगा। इसलिए श्रीदेवी को एक साथ दुनिया भर में व्यापकर ढूंढ़ना चाहिए। २२४

एऴुपत् ताहिय वॆळ्ळत् तॆण्बडै
ऊऴियिऱ् कडलॆऩ वुलहम् बोर्क्कुमाल्
आऴियैक् कुडिप्पिऩु मयऩ्शॆ यण्डत्तैक्
कीऴ्मडुत् तॆडुप्पिऩुङ् गिडैत्तल् शॆय्युमाल् 225

एऴु पत्तु आकिय–सत्तर; वॆळ्ळत्तु ऒण्–'वॆळ्ळम्' की संख्या की; पडै–(वानरों की) सेना; ऊऴियिल् कटल् ऎऩ–प्रलयसागर के समान; उलकम्–सारे संसार पर; पोर्क्कुम्–छा जायगी; आल्–इसलिए; आऴियै–समुद्र (जल) को; कुटिप्पिऩुम्–पीना हो; अयऩ् चॆय् अण्टत्तै–ब्रह्मा-सृष्ट अण्ड को; कीऴ् मटुत्तु–नीचे से उखाड़कर; ऎटुप्पिऩुम्–उठा लेना हो; किटैत्तल्–जो भी सामने आयें; चॆय्युम्–वे कार्य कर देंगे। २२५

सत्तर 'वॆळ्ळम्' की संख्या की सेनाएँ आयँगी, तो वह प्रलयसमुद्र के समान सारे लोक पर छा जायँगी। समुद्र को पीना (सोखना) हो। चाहे ब्रह्माण्ड को जड़ से उखाड़ उठाना हो, जो भी काम आ जाय वह करने में समर्थ हैं। २२५

आदला लऩ्ऩदे यमैव दामॆऩ
नीदियाय् निऩैन्दऩॆ ऩॆऩ्ऩि हऴ्त्तिऩाऩ्
सादुवा मॆऩ्ऱवऩ् तऩुविऩ् शॆल्वऩुम्
बोदुनाम् वालिपा लॆऩ्ऩप् पोयिऩार् 226

नीतियाय्–राजनीतिनिपुण; आतलाल्–इसलिए; अऩ्ऩते–वही (कार्य); अमैवतु आम्–करना (उचित) है; ऎऩ–ऐसा; निऩैन्तऩॆऩ्–सोचा मैंने; ऎऩ निकऴ्त्तिऩाऩ्–ऐसा कहा; चातु आम् ऎऩ्ऱ–साधु कहनेवाले; अ–उन; तऩुविऩ् चॆल्वऩुम्–धनुर्धर ने भी; वालि पाल्–वाली के पास; पोतुम् नाम्–जाएँ हम; ऎऩ्ऩ–कहा, तब; पोयिऩार् (सब) चले। २२६

राजनीति के अच्छे ज्ञाता! वही काम (वानर-सेना इकट्ठी करके भेजना) उचित है। यही मेरा विचार है। हनुमान ने यह निवेदन किया। वही साधु है —धनुधन श्रीराम ने सहमति दिलायी। फिर कहा कि हम वाली के पास जायँ। तब सब चले। २२६

7. वालि वदैप् पडलम् (वालि-वध पटल)

वॆङ्ग णाऴि येऱु मोऴि मावुम् वेह नाहमुम्
शिङ्ग वेऱि रण्डॊ डुन्दि रण्ड वऩ्ऩ शॆय्हैयार्
तङ्गु शाल मूल मार्त माल मेल मालॆपोल्
पॊङ्गु नाह मुऩ्दु वऩ्ऱ शार लूडु पोयिऩार् 227

वॆम् कण्–भयानक आँखों वाले; आऴि एऱुम्–पुरुषशरभ; मोऴि मावुम्–और साहसपूर्ण बाघ और; वेकम् नाकमुम्–गतिमान गज; चिङ्क एऱु–पुरुषसिंह;

इरण्टॉटुम्–दो के साथ; तिरण्ट ॲन्त–एकत्र हुए जैसे; चॅय्कैयार्–कर्मण्य; तङ्कु–वहाँ रहनेवाले; चालम्–सालवृक्ष; मूलम्–'मूलम' नाम के तरु; आर्–अगस्त; तमालम्–तमाल; एलम्–एला नाम के (जटाधारी) तरु; मालै पोल्–हारों की तरह; पोङ्कु–पुष्पबहुल; नाकमुम्–पुंनाग; तुवन्ऱ–इनसे खूब भरे; चारल् ऊटु–पर्वत-प्रदेशों से होकर; पोयिनार्–चले। २२७

जैसे भयंकर आँख वाला (नर) "याळि", साहसपूर्ण बाघ औरतीव्रगामी गज दो पुरुषसिंहों के साथ एकत्र हो जाते हों, वैसे सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, तार और श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ के पर्वतप्रदेशों से होकर चले जहाँ साल, अगस्त, एला और हारों के समान पुष्पगुच्छों के साथ शोभायमान पुंनाग आदि तरुविशेष घने रूप से उगे थे। २२७

उळैयु लानॅ डुङ्गण् माद रूश लूश लल्लवेल्
तळैयु लावु शन्द लरन्द शारल् शार लल्लवेल्
मळैयु लावु मुन्ऱि लल्ल मन्ऱ नाऱ शण्बहक्
कुळैयु लावु शोलै शोलै यल्ल पॊन्शॅय् कुन्ऱमे 228

उळै–हरिणी के समान; उलाम्–चकित देखनेवाली; नॅटु कण्–आयत आँखों से भूषित; मातर्–स्त्रियों के; ऊचल्–झूले; ऊचल् अल्ल एल्–झूले नहीं तो; तळै उलावु–पत्ते जिन पर हिलते हैं, उन; चन्तु–चन्दन के पेड़ों से भरे; चारल्–पर्वतप्रदेश; चारल् अल्ल एल्–ऐसे प्रदेश नहीं तो; मळै उलावु–मेघविहार; मुन्ऱिल्–(पर्वतों के) आँगन; अल्ल–(वे) नहीं तो; मन्ऱल् नाऱ–सुबासित; कुळै उलावु–पत्ते जिन पर झूलते हैं, उन; चण्पकम् चोलै–चम्पक वन; चोलै अल्ल–(चम्पक) वन नहीं तो; पॊन् चॅय्–स्वर्णदृश्य; कुन्ऱमे–गिरियाँ। २२८

उस पर्वत-मार्ग में कोई न कोई मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। हरिणों की-सी और आयत आँखों वाली स्त्रियों के झूले; वे जहाँ नहीं थे, वहाँ चन्दन तरुओं के प्रदेश जिनके पत्ते हिल रहे थे। नहीं तो मेघविहार पर्वतांगन या चंपकवन और उसके तरुओं पर सुबासित पल्लव हिल रहे थे। चंपकवन जहाँ नहीं पाये गये, वहाँ स्वर्णसम गिरियाँ विद्यमान थीं—इस तरह मार्ग के सभी भाग मनोरम थे। २२८

अऱङ्ग णाऱ मेत्ति यार रिक्क णङ्ग ळोडुमङ्
गिऱङ्गु पोदु मेऱ पोदु मीऱि लाद वोशैयाल्
कऱङ्गु वारह ळऱक लन्क लिप्प मुन्दु कण्मुहिळ्न्
तुऱङ्गु मेह मुम्मु णरन्दु मोदु लावुमे 229

अऱङ्कळ् नाऱम् मेत्तियार्–धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण; अरि कणङ्कळोटुम्–वानरगण के साथ; अङ्कु–वहाँ; इऱङ्कु पोतुम्–उतरते समय; एऱ पोतुम्–चढ़ते वक्त; ईऱ इलात–सदा; ओचैयाल्–शब्द के साथ; कऱङ्कु वार् कळल्–क्वणनशील बड़ी पायल रूपी; कलन्–आभरण; कलिप्प–ध्वनि निकाल रहे थे; मुन्तु–पहले;

कण् मुकिऴ्त्तु–आँखें मूंदकर; उऱङ्कु–जो सो रहे थे; मेकमुम्–वे मेघ भी; उणर्न्तु–जागकर; मीतु उलावुम्–आकाश में संचार करने लगे। २२९

धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण वानरगण के साथ उस मार्ग में कभी नीचे उतरते, कभी चढ़ाई पर चढ़ते जा रहे थे। तब उनकी क्वणनशील पायलें निरन्तर बज रही थीं। उस ध्वनि से सुप्त मेघ भी जाग गये और आकाश में संचार करने लग गये। २२९

नीडु नाह मूडु मेह मोड नीरु मोडवे
आडु नाह मोड मात्त यात्तै योड वाळिपोम्
माडु नाह नीडु शारल् वाळै योडुम् वावियू
डोडु नाह मोड वेङ्गै योडुम् यूह मोडवे 230

नीटु नाकम् ऊटु–लम्बे पर्वतों से होकर; मेकम् ओट–मेघ भागते; नीरुम् ओट–जल बहता; आटुम् नाकम्–फन फैलाकर नाचनेवाले सर्प; ओट–भागते; मातम् यात्तै ओट–बड़े गज दौड़ते; आळि पोम्–शरभसंचार के; माटु–पास में; माकनीटु–स्वर्ग रहे, ऐसे विशाल; चारल्–प्रदेशों में; वावि ऊटु–सरों के अन्दर; वाळैयोटुम्–'वाळै' मीनों के साथ; ओटु नाकम्–भागनेवाले सर्प; ओट–भागते; वेङ्कैयोटु–बाघों के साथ; ऊकम्–काले (मुख वाले) बन्दर; ओट–भागते। २३०

वहाँ सर्वत्र स्पन्दन था। लम्बे पर्वतों पर से मेघों का संचार; जल का बहाव; फन फैलाए हुए नाचनेवाले सर्पों की गति; बड़े गजों का भागना; 'याळियों' का इधर-उधर जाना; स्वर्ग तक विस्तृत पर्वतप्रदेश के जलाशयों में 'वाळै' मछलियों और सर्पों का संचार या बाघों के साथ काले मुख वाले बन्दरों का जाना-आना —इस तरह वह मार्ग सर्वत्र गतिमय था। २३०

मरुण्ड माम लैत्त डङ्गळ् शॅल्ल लाव दल्लमाल्
तॅरुण्डि लाद मत्त यात्तै शीऱ्ऱि नित्ऱि डित्तलाल्
इरुण्ड काळ् हिऱ्ऱ डत्तॊ डिऱ्ऱु लर्न्द शन्दुवन्
दुरुण्ड पोद ळिन्द तेऩॊ ळुक्कु पेरि ळुक्किऩ 231

माल्–मोह से; तॅरुण्टु इलात–जो छूटे नहीं थे; मत्त–मत्त; यात्तै–गज; चीऱ्ऱि निऩ्ऱु–कोप के साथ; इटित्तलाल्–झपटते, इसलिए और; इरुण्ट–काले; काळ्–कठोर गूदे के; अकिल् तटत्तु ओटु–अगरु-काष्ठों के साथ; इऱ्ऱु–टूटकर; उलर्न्त–सूखे हुए; चन्तु–चन्दन के पेड़; वन्तु–आकर; उरुण्ट पोतु–जब लुढ़कते हैं, तब; अळिन्तु–छत्तों के टूटने से निकली; तेऩ् ओळुक्कु–शहद की धारा से उत्पन्न; पेर् ओळुक्किऩ्–बड़ी फिसलन थी, इसलिए; मरुण्ट–भ्रामक; मा मलै तटङ्कळ्–बड़े पर्वत-प्रदेश; चॅल्लल् आवतु अल्ल–यात्रा के लिए सुगम नहीं थे। २३१

वहाँ के मार्ग में जाना खतरे से खाली नहीं था। कारण ? मद में चूर मत्त हाथी कोप के साथ मार्ग में झपटने को तैयार खड़े थे। कठिन

हीर (गूदा) के काले अगरुकाष्ठ और चन्दन के तरु जब कटकर लुढ़कते तब शहद के छत्ते टूट जाते थे और शहद बड़ी धारा में बहने लगता। उससे फिसलन हो जाती थी। इसलिए पर्वततराइयों के वे मार्ग किसी को भी भ्रमित कर सकते थे। उनमें जाना सुलभ नहीं था। २३१

मिन्नल्म णिक्कु लन्दु वन्ऱि विल्ल लर्न्दु विण्गुलाय्
अन्नल्प रप्प लोंप्प मीदि मैप्प वन्द विप्पपोल्
पुन्नल्प रप्प लोंप्पि रुन्द पोन्प रप्पु मॆन्बराल्
इन्नय विड्ड डक्कै वीर रेऱ हिन्ड कुन्ड्रमे 232

इन्नय–ऐसे; विल् तट कै–धनु रखनेवाले विशाल हस्तों के; वीरर्–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण); एड्रकिन्ड–जिस पर चढ़ते हैं वह; कुन्ड्रम्–पर्वत; मिन्नल्–रह-रहकर चमकनेवाले; मणि कुलम्–रत्न-समूह; तुवन्ऱि–भरा था और; विल् अलर्न्तु–कान्ति बिखेरकर; विण् कुलाय्–आकाश तक; अन्नल् परप्पल् ओप्प–आग फैलाते जैसे; मीतु–उस पर्वत पर; इमैप्प–प्रकाश छिटकाते हैं तब; वन्तु अविप्प पोल्–(उस आग को) आकर बुझाते जैसे; पुन्नल् परप्पल्–जल डाल रहे हों; ओप्पु इरुन्त–जैसे रहनेवाले; पोन् परप्पुम्–स्वर्णराशि भी; (इरुन्त–रही;) ऎन्पर्–कहते हैं। २३२

ऐसे वीर जिस पर्वत पर चढ़ते जाते थे, उसमें रत्नों की विपुल राशियाँ थीं। उनसे जो लाल रंग की कान्ति छूट रही थी, उसको देखकर ऐसा लगा मानो आकाश में बहुत दूर आग फैल गयी हो। वहाँ स्वर्णों के स्थल भी थे और वे, उस आग को बुझाने के लिए जल पसार दिया गया हो, ऐसे लगे। २३२

तेन्नि ळुक्कु शारल् वारि शॆल्ल मीदु शॆल्लुनाळ्
मीन्नि ळुक्कु मन्ऱि वान्न विल्लि ळुक्कुम् वॆण्मदिक्
कून्नि ळुक्कु माऱु लावु कोळि ळुक्कु मॆन्बराल्
वान्नि ळुक्कु मेल वाश मन्ड नाऱु कुन्ड्रमे 233

वान्–देवों को भी; इळुक्कुम्–खींचनेवाले; एलम् वाचम् मन्ड्रल्–एलाबास से बासित; कुन्ड्रम्–उस पर्वत पर; तेन् इळुक्कु चारल्–शहद की धारा से युक्त पर्वतढालों में; वारि चॆल्ल–जल बहता है, तब; मीतु चॆल्लुम्–ऊपर संचार करनेवाले; नाळ् मीन्–नक्षत्रों को; इळुक्कुम्–खींचकर ले जाता है; अन्ऱि–अलावा; वान् विल्–इन्द्रधनुष को भी; इळुक्कुम्–खींचता है; वॆण् मति कून्–श्वेत चन्द्र के वक्र अंश को; इळुक्कुम्–खींचता; माऱु–परस्पर विपरीत; उलावु–संचार करनेवाले; कोळ् इळुक्कुम्–(नव-) ग्रहों को खींचता; ऎन्पर्–(ऐसा लोग) कहते हैं। २३३

उसमें एले के वृक्ष थे। उनकी सुगन्धि देवों को भी आकृष्ट कर रही थी। उस पर्वत पर, जिस पर शहद की धारा बह रही थी, जल भी

बह रहा था। वह जलधारा आकाश के नक्षत्र, इन्द्रधनुष, चन्द्र का वक्र अंश और परस्पर विपरीत चलनेवाले नवग्रह —इन सबको खींच लेती। २३३

मरुवि याडुम् वावि तोरुम् वान् यारु पायुमवन्
दिरुवि यार्द इड्गण् मीनि नेरु पायु मारुपोल्
अरुवि पायु मौन्ऱि ऱौन्ऱि नातै पायु मेनलिल्
कुरुवि पायु मोडि मन्दि कोडु पायु माडॅलाम् 234

माट्टु ऍलाम्–पार्श्वों में सब ओर; मरुवि–उतरकर; आटुम्–जिनमें लोग स्नान करते हैं, उन; वावि तोरुम्–तालाबों में, हर एक में; वान् यारु–आकाशगंगा; वन्तु पायुम्–आकर बहती; मीतिन् एरु–बड़ी-बड़ी मछलियाँ; इरुवि आर्–बाल-कटे कोदों के पौधों से भरे; तटङ्कळ्–खेतों में; पायुम्–झपटते; आरु पोल्–नदियों की ही तरह; अरुवि पायुम्–नाले बहते हैं; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱिन्–एक-एक (नाले) में; आनै पायुम्–हाथी झपटते हैं; एनलिल्–कोदों के खेतों पर; कुरुवि पायुम्–चिड़ियाँ झपटती हैं; मन्ति–वानर; ओटि–भागकर; कोट्टु पायुम्–तरुशाखाओं (या पर्वतश्रृंगों) पर झपटते हैं। २३४

वहाँ पर्वत के तलों में जो जलाशय थे उनमें आकाशगंगा बही। उन जलाशयों के मोटे-मोटे मीन उन खेतों के कोदों के पौधों पर झपटे, जिनकी बालें कट गयी थीं। वहाँ के बरसाती नाले भी नदियों के समान (विशाल) बह रहे थे। उनमें हाथी झपटते रहते थे। कोदों के खेतों पर चिड़ियाँ झपटतीं। बन्दर तरुशाखाओं पर भागते और झपटते थे। २३४

अन्न दाय कुन्ऱि नारु शॅन्ऱ वीर रैन्दोडॅन्
दॅन्न लाय योश नैक्कु मुम्ब रेऱि इम्बरिल्
पौन्नि नाडि ऴिन्द दन्न वालि वाऴ्पॉ रुप्पिडम्
तुन्नि नार्हळ् यादु शॅय्दु मॅन्ऱु शॊऱ्ऱ पोदिन्ऩ 235

अन्नतु आय–वैसे रहनेवाले; कुन्ऱिन् आरु–पर्वत-मार्ग से; चॅन्ऱ–जो गये वे; वीरर्–श्रीराम आदि वीर; एन्तु ओट्टु एन्तु–पाँच के साथ पाँच; ऍन्नतल् आय–(दस) कहलानेवाले; योचनैक्कुम्–योजन से भी; उम्पर् एऱि–ऊपर चढ़कर; इम्परिल्–इस लोक में; पौन्निन् नाटु–(अमरावती) स्वर्णपुरी; इऴिन्ततु अन्न–उतरकर आया हो जैसे; वालि वाऴ्–वाली के वास के; पौरुप्पु इटम्–पर्वतस्थान को; तुन्नितार्कळ्–गये; यातु चॅय्तुम्–क्या करेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; चॊऱ्ऱ पोतिन्–पूछने पर। २३५

ऐसे पर्वत-मार्ग पर श्रीराम आदि वीर दस योजन दूर ऊपर चले। वाली जहाँ वास करता था, उस पर्वत-नगर किष्किन्धा के पास पहुँचे। वह स्थान स्वर्णपुरी अमरावती-सा लगा जो आकाश से उतरकर वहाँ रह गयी हो। वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाय? । २३५

अव्वि डत्ति राम नीय ळैत्तु वालि यान्पेर्
वॅव्वि डत्तिन् वन्दु पोर्वि ळैक्कु मेल्वै वेरुनिन्
ऱॅव्वि डत्तु णिन्द मैन्द दॅन्ग रुत्ति दॅन्ऱन्
तॅव्व डक्कुम् वॅन्ऱि यान् नन्ऱि दॅन्रु शिन्दिया 236

अ इटत्तु—तब; इरामन्—श्रीराम ने; अळैत्तु—(सुग्रीव को पास) बुलाकर; नी—तुम; वालि आन्—वाली नाम के; पेर् वॅम् विटत्तिन्—बड़े भयंकर विष के साथ; वन्तु—आकर; पोर् विळैक्कुम्—जब युद्ध करो; एल्वै—तब; वेरु निन्ऱु—अलग खड़ा रहकर; अॅव्विट—बाण चलाने को; तुणिन्तु—ठाना है; अमैन्तत्तु इतु—निश्चय यह; अॅन् करुत्तु—मेरी राय है; अॅन्ऱन्—कहा; तॅव् अटक्कुम्—शत्रु-संहार कर; वॅन्ऱियान्—विजय चाहनेवाला (सुग्रीव) भी; इतु नन्ऱु—यही अच्छा है; अॅन्ऱु—ऐसा; चिन्तिया—सोचकर। २३६

तब श्रीराम ने सुग्रीव को अपने पास बुलाया और कहा कि तुम बड़े और भयंकर विष, वाली, को ललकारो। जब तुम उसके विरुद्ध युद्ध करो तब मैं अलग रहकर उसके ऊपर बाण चलाऊँ, यही मेरी राय है। शत्रु वाली के नाश में तुला हुआ, विजय का चाहक सुग्रीव ने उत्तर में कहा कि हाँ! वही अच्छा है। २३६

वार्त्तै यन्न दाह वान्ि यङ्गु तेरि नान्महन्
नीर्त्त रङ्ग वेलै यञ्ज नील मेह नाणवे
वेर्त्तु मण्णु ळोरिन् विण्णु ळोरि रिन्दु विम्ममेल्
आर्त्त वोशै यीश नुण्ड वण्ड मुऱ्ऱु मुण्डदे 237

वार्त्तै अन्नतु—श्रीराम का वचन वैसा; आक—रहा तो; वान् इयङ्कु—आकाशचारी; तेरितान् मकन्—रथ के स्वामी सूर्य का पुत्र; तरङ्क नीर् वेलै—तरंगाकुल समुद्र को; अञ्च—भयभीत करते हुए; नील मेकम् नाण—नीले मेघों को लजाने देते हुए; मण् उळोरिन्—भूतलवासियों के समान; विण् उळोर्—स्वर्गवासी भी; वेर्त्तु—पसीना-पसीना होकर; इरिन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; विम्म—दुःख से भर जायें, ऐसा; मेल् आर्त्त ओचै—तिस पर निकाला शोर; ईचन् उणट—महाविष्णु से खादित; अण्टम् मुऱ्ऱुम्—अण्ड भर को; उण्टतु—(लील गया) खा गया। २३७

श्रीराम ने ऐसा कहा तो सुग्रीव ने घोर गर्जन-नाद निकाला। आकाशचारी रथ के स्वामी सूर्य के पुत्र के उस नाद के सामने तरंगायमान समुद्र डर गया। नीले मेघ लजा गये। भूमि के वासी जैसे सुरलोकवासी भी पसीना-पसीना होकर अस्त-व्यस्त हो गये और घबड़ाहट से भर गये। उसका नाद सारे ब्रह्माण्ड को लील गया, जिसको भगवान महाविष्णु ने प्रलय के अवसर पर अपने उदर में समा लिया था। २३७

इडित्तु रप्पि वन्दु पोरॅ दिर्त्ति येल डर्प्पतॅन्
ऱडित्त लङ्गळ् कॉट्टि वाय्म डित्त डत्त लङ्गुतोळ्

पुडैत्तु नित्रु ळैत्त पूशल् पुक्क दॅन्ब मिक्किडम्
तुडिप्प वङ्गु ऱङ्गु वालि तिण्शॅ वित्तॉ ळॅक्कणे 238

वन्तु–आकर; पोर् ॲतिर्त्तियेल्–युद्ध में सामना करो तो; अटर्प्पॅन्–मार दूंगा; ॲन्रु–कहकर; इटित्तु उरप्पि–डाँट बतायी और; अटि तलङ्कळ् कॉट्टि–पैरों को ज़ोर से पटककर; वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; अटुत्तु अलङ्कु तोळ्–पार्श्व में फड़कते रहनेवाले कन्धों को; पुटैत्तु–ठोंकते हुए; नित्रु उळैत्त पूचल्–रहकर जो (शोर) मचाया, वह शोर; इटम् मिक्कु–बायें अंगों के अधिक; तुटिप्प–फड़कते; अङ्कु–वहाँ (किष्किन्धा नगर में); उऱङ्कु–सोते रहनेवाले; वालि–वाली के; तिण् चॅवि तॉळै कण्—बलयुक्त कर्ण-विवर में; पुक्कतु–घुसा; ॲन्प–कहते हैं। २३८

'तुम आकर मेरे साथ युद्ध करो तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूँगा' —ऐसा सुग्रीव ने डाँट के साथ बताया। उसने ललकार के साथ पैरों से शब्द निकालते हुए पैंतरे बदले। अधरों को मोड़ लिया; कन्धे ठोंके। ऐसा जो शोर उसने मचाया वह वाली के बलवान कर्णविवर में जा पहुँचा। तब वह सो रहा था। जब उसने यह सुना तब उसके बायें अंग बहुत फड़के। २३८

❀ मार्पॅरुङ् कडहरि मुळक्कम् वाळरि
एऱ्पदु शॅवित्तलत् तॅन्न वोङ्गिय
आर्प्पॉलि केट्टन नमळि मेलॊरु
पाऱ्कडल् किडन्ददे यनैय पान्मैयान् 239

अमळि मेल्–सेज पर; ऑरु पाल् कटल्–एक क्षीरसागर; किटन्तते अनैय–पड़ा रहा हो, ऐसे ही; पान्मैयान्–दृश्य वाली ने; माल्–भ्रमित; पॅरुम् कट करि–बड़े व मत्त गज की; मुळक्कम्–चिंघाड़ को; वाळ् अरि–भयंकर सिंह; चॅवि तलत्तु–कान से; एऱ्पतु ॲन्न–सुनता हो जैसे; ओङ्किय–उठा हुआ; आर्प्पु ऑलि–ललकार का स्वर; केट्टनन्–सुना। २३९

अपनी शय्या पर वाली क्षीरसागर के समान लेटा हुआ था। मदहोश मत्तगज की चिघाड़ सुननेवाले सिंह के समान वाली ने सुग्रीव की ललकार का उच्च नाद सुना। २३९

❀ उरुत्तनन् पॊरवॅदिर्न् दिळव लुऱ्ऱमै
वरैत्तडन् दोळिनान् मनत्ति नॅण्णिनान्
शिरित्तनन् नव्वॊलि तिशैयि नप्पुऱत्
तिरित्तदव् वुलहमॊ रेळॊ डेळैये 240

वरै तटम् तोळिनान्–पर्वत-सम विशाल कन्धों वाले ने; इळवल्–कनिष्ठ भ्राता; उरुत्तनन्–कोप करके; पॊर–लड़ने के हेतु; ॲतिर्न्तु उऱ्ऱमै–सामने आया है, यह बात; मनत्तिन् ॲण्णिनान्–मन में सोची; चिरित्तनन्–हँसा; अ ऑलि–उस

ध्वनि ने; तिचैयिन् अ पुऱत्तु–दिगन्त के उस पार जाकर और; अ उलकम्–श्रेष्ठ लोक; ओर् एऴोटु एऴै–(सात और सात) चौदहों को; इरित्ततु–भय से अस्त-व्यस्त करा दिया। २४०

पर्वतविशाल कन्धों वाले वाली ने जब सोचा कि मेरा छोटा भाई सुग्रीव मुझसे युद्ध करने आया है तो उसे हँसी आ गयी। वह हँस उठा। वह ध्वनि दिगन्त के उस पार भी चौदहों लोकों पर छायी, जिससे सारे लोक काँप उठे। २४०

ऍऴुन्दतन् वल्विरैन् दिरुदि यूऴियिल्
कॉऴुन्दिरैक् कडल्हिळर्न् दन्नैय कॉळ्हैयान्
अऴुन्दिय दक्किरि यरुहिन् माल्वरै
विऴुन्दन तोळ्पुडै विशैत्त काऱ्ऱिने 241

ऊऴि इरुतियिन्–युगान्त में; कॉऴुम् तिरै–बड़ी-बड़ी लहरों का; कटल्–समुद्र; किळर्न्ततु–उमँग उठा हो; अन्नैय–जैसी; कॉळ्कैयान्–अवस्था में वाली; वल् विरैन्तु–बहुत तेजी से; ऍऴुन्ततन्–उठा; अ किरि–वह पर्वत; अऴुन्तियतु–दब गया; तोळ् पुटै–भुजाओं को; विचैत्त–ठोंकने से उठी; काऱ्ऱिन्–हवा के कारण; अरुकिन् माल् वरै–पास के बड़े पर्वत; विऴुन्तन–गिर गये। २४१

वाली शीघ्र उस प्रकार उठा जैसे युगान्त में बड़ी लहरों वाला सागर उमँग उठा हो! उस (के भार और वेग) से वह पर्वत धँस गया। कंधों के ठोंकने से जो हवा चलित हुई उसके कारण पास के बड़े-बड़े पर्वत टूटकर गिरे। २४१

पोय्प्पॉडित् तन्मयिर्प् पुऱत्त वॅम्बॊऱि
काय्प्पॉडुऱ् ऱॆऴुवड कन्नलुङ् गण्कॆडत्
तीप्पॊडित् तन्विऴि तेवर् नाट्टिनुम्
मीप्पॊडित् तन्पुहै युयिर्प्पु वीङ्गवे 242

वॅम् पॊऱि–गरम अंगारे; मयिर् पुऱत्त–शरीर के बालों के ऊपर; पोय्–आकर; पॊटित्तन–छितरे; विऴि–आँखों ने; काय्प्पु ओटु–क्रोध के साथ; उऱ्ऱु ऍऴु–मिलकर ऊपर उठनेवाली; वट कन्नलुम्–बड़वाग्नि की; कण् कॆट–आँखों को चौंध से खराब करते हुए; ती पॊटित्तन–आग निकाली; उयिर्प्पु–श्वास; वीङ्कवे–वेग के साथ ऊपर आया तब; पुकै–धुआँ; तेवर् नाट्टिनुम्–देवलोक में भी; मी–ऊपर जाकर; पॊटित्तन–प्रकट हुआ। २४२

भयंकर कोपाग्नि शरीर पर के बालों के ऊपर अंगारों के रूप में प्रकट हुई। आँखों से आग निकली। उसको देखकर भयंकर क्रोध के साथ (भयंकर रूप से भभककर) उठनेवाली बड़वाग्नि भी चौंधिया गयी! उसके निःश्वास बढ़े और उनसे धुआँ उठकर ऊपर गया और सुरलोक में जाकर फैल गया। २४२

❀ कैक्कोडु	कैत्तलम्	बुडैप्पक्	कावलिऩ्
तिक्कयङ्	गळुमदच्	चॅरुक्कुच्	चिऩ्दिऩ
उक्कऩ	वुरुमिऩ	मुलैन्द	वुम्बरुम्
नॅक्कऩ	नॅरिन्दऩ	निऩ्ऱ	कुऩ्ऱमे 243

कै कोटु–हाथ से; कै तलम्–हथेली; पुटैप्प–(वाली ने) पीटी; कावलिऩ्–लोकरक्षण में लगे रहनेवाले; तिक्कयङ्कळुम्–दिग्गजों ने भी; मत चॅरुक्कु–मदमस्ती (पौरुष) को; चिऩ्तिऩ–त्याग दिया; उरुम् इऩम्–वज्रसमूह; उक्कऩ–चूर हो चू गये; उम्परुम्–आकाशलोक भी; उलैन्त–क्लान्त हो गये; निऩ्ऱ कुऩ्ऱम्–अचल गिरियाँ भी; नॅक्कऩ–टूटे; नॅरिन्तऩ–चूर्ण हो गये। २४३

वाली ने हाथ से हाथ पीटा। तो पृथ्वी के रक्षण में खड़े रहनेवाले दिग्गजों ने अपना मद और शक्ति त्याग दी। वज्र निर्बल होकर गिर गये। देवलोक डगमगा गये। अचल पर्वत भी दलक गये। २४३

वन्दऩॆऩ्	वन्दऩॆ	ऎऩ्ऱ	वाशहम्
इन्दिरि	मुदऱ्ऱिशै	यॆट्टुङ्	गेट्टऩ
शन्दिरऩ्	मुदलिय	तार	हैक्कुळाम्
शिन्दिऩ	ववऩ्मुडिच्	चिहरन्	दीण्डवे 244

वन्तऩॆऩ्–आ गया; वन्तऩॆऩ्–आ गया; ऎऩ्ऱ वाचकम्–वे शब्द; इन्तिरि मुतल् तिचै–इन्द्र की (पूर्व) दिशा आदि; ऎट्टुम्–आठों दिशाओं में; केट्टऩ–सुनाई दिये; अवऩ्–उसके; मुटि चिकरम्–किरीट-शिखर के; तीण्ट–छूने से; चन्तिरऩ् मुतलिय–चन्द्र आदि; तारकै कुळाम्–ताराओं के समूह; चिन्तिऩ–नीचे गिर गये। २४४

वाली ने उच्च स्वर में ललकार का उत्तर दिया— आ गया। अभी आ गया। वे शब्द इन्द्र की पूरब दिशा से लेकर सारी दिशाओं में गूँज उठे। उसके किरीट की चोटी के लगने से चन्द्र और सितारों के समूह नीचे चू गये। २४४

वीशिऩ	काऱ्ऱिऩ्वेर्	पऱिन्दु	वॆऱ्पिऩम्
आशैयै	युऱ्ऱऩ	वण्डप्	पित्तिहै
पूशिऩ	वॆण्मयिर्प्	पुऱत्त	वॆम्बॊऱि
कूशिऩ	ऩन्दहऩ्	कुलैन्द	दुम्बरे 245

वीचिऩ काऱ्ऱिऩ–(वाली के उठने के वेग से) चालित हवा के कारण; वॆऱ्पु इऩम्–पर्वतसमूह; वेर् पऱिन्तु–जड़ कटकर; आचैयै–दिशाओं में जा; उऱ्ऱऩ–पहुँचे; वॆण्मयिर्–(शरीर के) सफ़ेद बालों के; पुऱत्त–ऊपर; वॆम् पॊऱि–कोपाग्नि (जो उठी) उसके कण; अण्ट पित्ति कै–अण्ड की भित्तियों पर; पूचिऩ–पोत गये; अन्तकऩ्–यम; कूचिऩऩ्–संकोच में पड़ गया; उम्पर्–स्वर्गलोक; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हुआ। २४५

उसके वेग से हवा चलित हुई। तब पर्वत-वृन्द मूल से कटकर दिशाओं में जा लगे। श्वेत बालों के ऊपर से निकले अंगारे अण्ड-भित्तियों से जा लगे। यम भी वाली को देखने से संकोच करने लगा। स्वर्ग अस्त-व्यस्त हो गया। २४५

कडित्तवा यॅयिरुहु कनल्हळ् कार्विशुम्
बिडित्तवा लुहुमुरु मिन्नत्तिऱ् चिन्दिन
तडित्तुवीऴ्न् दन्नवॅन्नत् तहर्न्दु शिन्दिन
वडित्ततोळ् वलयत्तिन् वयङ्गु काशरो 246

कटित्त वाय्–मुख में पिसते; ॲयिऱु उकु–दाँतों से निकली; कनल्कळ्–अग्नि के कण; कार्—मेघों के; विचुम्पु इटित्त आल्–आकाश में टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; उरुम् इनत्तिल्–वज्र-समूह के समान; चिन्तिन–गिरे; वटित्त–श्रेष्ठ; तोळ् वलयत्तिन्–बाहुवलय में; वयङ्कु काचु–दृश्यमान रत्न; तटित्तु वीऴ्न्तन्न ॲन्न–तड़ितें गिरतीं जैसे; तकर्न्तु चिन्तिन–टूटकर गिरे। २४६

वाली ने दाँत पीसे। तब दाँतों से अंगारे निकले। वे आकाश में गरजते मेघों से निकलकर गिरनेवाली तड़ितों के समान छितरे। उसके सुन्दर बाहुवलयों से रत्न अलग होकर गाजों के समान चू पड़े। २४६

आलमु नाऱ्ऱिशैप् पुनलु नाहरुम्
मूलमु मुऱ्ऱिड मुडिविऱ् ऱीक्कुमक्
कालमु मॊत्तनन् कडलिऱ् ऱान्कडै
आलमु मॊत्तन नॅवरु मज्जवे 247

ॲवरुम् अञ्च–कोई भी भयभीत हो, ऐसा; आलमुम्–यह भूमि और; नाल् तिचै पुनलुम्–चारों दिशाओं के समुद्र और; नाकरुम्–देव; मूलमुम्–सृष्टि के मूल (भूत आदि); मुऱ्ऱिट–(इनको) नाश करते हुए; मुटिविल्–युगान्त में; तीक्कुम्–जला डालनेवाले; अ कालमुम्–उस प्रलयकाल के; ऒत्तनन्–समान भी रहा; कटलिल्–(क्षीर-) सागर में; तान् कटै–खुद उससे मथने से निकले; आलमुम्–हलाहल के; ऒत्तनन्–समान भी रहा। २४७

उस वाली को देखकर सब कोई भयभीत हो गये। तब वह प्रलय-काल के समान लगा जो भूमि, चारों ओर के सागर, देवगण और इन सबके मूलतत्त्व आदि सभी का अन्त करते हुए जला डालता है। और भी उस हलाहल के समान भी लगा, जिसको उसी ने खुद क्षीरसागर मथकर उससे प्रकट कराया था। २४७

❀ आयिडैत् तारैयॅन् ऱुमुदिऱ् ऱोन्ऱिय
वेयिडैत् तोळिना ळिडैवि लक्किनाळ्

वायिडेप् पुहैवर वालि कण्वरुम्
तीयिडेत् तन्नॅडुङ् गून्द ऱोहिन्ऱाळ् 248

अ इटै–तब; तारै ऍन्ऱु–तारा नाम की; अमुतिल् तोन्ऱिय–अमृत के समान दृश्यमान; वेय् इटै तोळिऩाळ्–बाँस-से प्राप्त कन्धों वाली (वाली-पत्नी) ने; वाय् इटै–मुख से; पुकै वर–धुआँ निकलने देते हुए; वालि कण् वरुम्–वाली की आँखों में प्रकट; ती इटै–अग्नि में; तन् नॅटुम् कून्तल्–अपने लम्बे केश को; तीकिन्ऱाळ्–जलने देती हुई; इटै विलक्किनाळ्–बीच में आकर रोका। २४८

तब तारा ने आकर उसे रोका। तारा अमृत के समान प्रकट हुई। बाँस के समान कन्धों वाली वाली की पत्नी तारा के लम्बे केश उस अग्नि में झुलसे जो वाली के मुख से धुआँ छोड़ते हुए उसकी आँखों में जल रही थी। २४८

❀ विलक्कलै विड्डुविड्डु विळितुतु ळानुरम्
कलक्कियक् कडलुहडैन् दमुदु कण्डॅन
उलक्कविन् नुयिर्हुडित् तॉल्लै मीळ्हुवॅन्
मलैक्कुल मयिलॅन मडन्दै कूऱुवाळ् 249

मलै कुल मयिल्–पर्वतवासिनी सुन्दर मोरनी; विलक्कलै–मत रोको; विट्टु विट्टु–छोड़ो, छोड़ो; अ कटल्–(तब या) उस सागर को; कटैन्तु–मथकर; अमुतु कण्टु–अमृत निकाला (मैंने); ऍन–वैसे ही; विळित्तु उळान्–ललकारनेवाले का; उरम् कलक्कि–बल मिटा करके; उलक्क–उसको मारकर; इन् उयिर् कुटित्तु–उसके प्यारे प्राण पीकर; ऑल्लै–शीघ्र; मीळ्कुवॅन्–लौट आऊँगा; ऍन–कहने पर; मटन्तै–वह नारी; कूऱुवाळ्–बोली। २४९

वाली ने उससे कहा कि पर्वतकुलकेकिनी! मुझे मत रोको। छोड़ दो, छोड़ दो। उस दिन जैसे सागर मथकर अमृत निकाला, उसी तरह आज ललकारनेवाले सुग्रीव का बल मिटाकर, उसे मिटा दूँगा और उसके प्यारे प्राण पीकर शीघ्र लौट आऊँगा। तब तारा ने कहा। २४९

❀ कॉऱ्ऱव निन्बॅरुङ् गुववुत् तोळ्वलिक्
किऱ्ऱनन् मुन्नैना ळीड्डुण् डेहुवान्
पॅऱ्ऱिलन् पॅरुन्दिऱल् पॅयर्त्तुम् पोर्शॅयऱ्
कुऱ्ऱदु नॅडुन्दुणै युडैमै यालॅन्ऱाळ् 250

कॉऱ्ऱव–राजा; मुन्नै नाळ्–पहले दिन; निन्–आपके; कुववु पॅरुम् तोळ्–पुष्ट, बड़े कन्धों के; वलिक्कु–बल के सामने; इऱ्ऱनन्–हारकर; ईट्टु उण्टु–अपमानित होकर; एकुवान्–जो भागा; पॅरु तिऱल्–(वह अब) बहुत शक्ति; पॅऱ्ऱिलन्–पा नहीं गया है; पॅयर्त्तुम्–फिर भी; पोर् चॅयऱ्कु–युद्ध करने के लिए; उऱ्ऱतु–आना; नॅटुम् तुणै–बहुत बड़ी सहायता; उटैमैयाल्–प्राप्त करने के कारण; ऍन्ऱाळ्–कहा। २५०

राजा ! पहले यही सुग्रीव आपके पुष्ट बड़े कन्धों के बल के सामने हारा, अपमानित हुआ और भागा। उसे अब कोई बड़ी शक्ति तो प्राप्त नहीं हुई है। तो भी वह लड़ने आया है। इसका कारण उसकी किसी बड़ी सहायता की प्राप्ति है। —तारा ने ऐसा कहा। २५०

मूऩ्ऱॅऩ मुऱ्ऱिय मुडिविल् पेरुल
हेऩ्ऱुड ऩुऱ्ऱऩ वॅऩक्कु नेरॅऩत्
तोऩ्ऱिऩुन् दोऱ्ऱवै तॉलेयु मॅऩ्ऱऱ्कुच्
चाऩ्ऱुळ वऩ्ऩवै तैयल् केट्टियाल् 251

तैयल्–दयिता; मूऩ्ऱु ॲंऩ–तीन की संख्या में; मुऱ्ऱिय–पूर्ण बने; मुटिवु इल्–अनन्त; पेर् उलकु–बड़े लोकों के वासी; ॲंऩक्कु नेर् ॲंऩ–मेरे सामने; एऩ्ऱु–विरोध करके; उटऩ् उऱ्ऱऩ–साथ मिलकर; तोऩ्ऱिऩुम्–आकर प्रकट हों तो भी; अवै तोऱ्ऱु–वे हारकर; तॉलैयुम्–मिट जायँगे; ॲंऩ्ऱऱ्कु–इसके लिए; चाऩ्ऱु उळ–प्रमाण हैं; अऩ्ऩवै–उनको; केट्टि–सुनो; (आल्–पूरक ध्वनि)। २५१

वाली ने कहा— दयिता ! स्वर्ग, मध्य, पाताल —तीनों श्रेणियों के असंख्यक और बड़े लोक, सारे, मिलकर मेरे विरुद्ध युद्ध करने आयें तो भी वे हारकर मिट जायँगे। इसके प्रमाण हैं। बतलाता हूँ। सुनो। २५१

मन्दर नॅडुवरै मत्तु वाशुहि
अन्दमिल् कडेहयि ऱडेह लाळियान्
शन्दिरन् ऱूणॅदिर् तरुक्किन् वाङ्गुवार्
इन्दिरन् मुदलिय वमर रेनैयोर् 252

मन्तर–मन्दर के; नॅटवरै–बड़े पर्वत को; मत्तु–मथानी; वाचुकि–वासुकी को; अन्तम् इल्–बहुत लम्बी; कटै कयिऱु–नेती; आळियान्–चक्रधारी महाविष्णु को; अटै कल्–(पर्वत को धँसने से रोकने का) आधार-प्रस्तर; चन्तिरऩ्–चन्द्र को; तूण्–स्थिर स्तम्भ (खूँटा, जिसके सहारे मथानी बँधी रहती है); तरुक्किऩ्–गर्व के साथ; ॲंतिर् वाङ्कुवार्–आमने-सामने रहकर खींचनेवाले; इन्तिरऩ् मुतलिय अमरर्–इन्द्रादि देव; एऩैयोर्–और अन्य (असुर) थे। २५२

(क्षीरसागर-मन्थन की बात लो।) मन्दरपर्वत को मथानी, वासुकी की लम्बी नेती बनायी गयी। चक्रधारी महाविष्णु पर्वत के नीचे आधार-प्रस्तर बने रहे, ताकि पर्वत घूमते समय धँस न जाय। चन्द्र को स्थिरस्तम्भ बनाकर उसी से मथानी सुरक्षित की गयी। गर्व के साथ दोनों पक्षों में इन्द्रादि सुरगण और असुर रहकर नेती को खींचने लगे। २५२

पॅयर्वुऱ वलिक्कवु मिडुक्किल् पॅऱ्ऱियार्
अयर्वुऱ लुऱ्ऱवै नोक्कि यानवु

तयिरॆंनक् कडैन्दवर्क् कमुदन् दन्ददुम्
मयिलियड़् कुयिन्मौऴि मऱक्कर् पालदो 253

मयिल् इयल्–मोर की-सी छटा; कुयिल् मौऴि–कोकिल की वाणी वाली; पॆयर्वु उऱ–घुमाते हुए; वलिक्कवुम्–खींचने पर; मिट्कु इल्–निर्बल; पॆऱ्‌ऱियार्–दम वाले; अयर्वु उऱल् उऱ्‌ऱतै–थक गये, उसे; नोक्कि–देखकर; यान्–मेरा; अतु–उसे; तयिर् ऍंन–दही के समान; कटैन्तु–मथकर; अवर्क्कु–उन्हें; अमुतम् तन्ततुम्–अमृत दिलाना; मऱक्कल् पालतो–भूलने योग्य है क्या। २५३

मयूराभा कोकिलवाणी तारा! वे मन्दरपर्वत को घुमाने लगे। पर उनमें योग्य बल नहीं था। इसलिए वे थक गये। उसको मैंने देखा तो मैं गया और दही के समान सागर को मथ डाला। अमृत निकालकर दिया। वह सामर्थ्य भुलाने की बात है क्या? । २५३

❀ आऱ्‌ऱलि नमररु मवुणर् यावरुम्
तोऱ्‌ऱन रॆंनैयवर् शॊल्लर् पालदो
कूऱ्‌ऱुमॆंन् पॆयर्शॊलक् कुलैयु मारिनि
माऱ्‌ऱवर् काहिवन् दॆंदिरु माण्बिनार् 254

आऱ्‌ऱलिन्–मेरी शक्ति के सामने; अमररुम्–देव और; अवुणर् यावरुम्–दानव सब; तोऱ्‌ऱनर्–जो हारे; ऍंनैयवर्–कितने हैं; चॊल्लल् पालतो–(हिसाब) कहा जा सकता है क्या; कूऱ्‌ऱुम्–यम भी; ऍंन् पॆयर्–मेरा नाम; चॊल–लेने पर; कुलैयुम्—भय से काँप जायगा; माऱ्‌ऱवर्कु–मेरे शत्रु का; आकि वन्तु–(सहायक) बन आकर; इनि–अब; ऍंतिरुम्–लड़े; माण्पिनार्–ऐसी शक्ति रखनेवाले; आर्–कौन हैं। २५४

मेरे सामने अमर और असुर कितने ही हारे हैं! उनकी गणना भी हो सकती है क्या? यम भी, मेरा नाम लिया जाय तो भय से काँप जायगा! फिर कौन हैं जो इतना हौसला रखते हैं कि मेरे सामने आकर युद्ध करें? । २५४

❀ पेदैय रॆंदिर्हुव रॆंनिनुम् बॆऱ्‌ऱुडै
ऊदिय वरङ्गळु मुरमु मुळ्ळदिल्
पादियु मॆंन्नदाऱ् पहैप्प दॆंङ्ङनम्
नीतुय रॊऴिहॆंन निन्ऱु कूऱिनान् 255

पेतैयर्–बुद्धिहीन; ऍंतिर्कुवर्–लड़ेंगे; ऍंनिनुम्–तो भी; पॆऱ्‌ऱटै–उनके प्राप्त; ऊतियम् वरङ्कळुम्–शक्तियाँ और वर; उरमुम्–बल; उळ्ळतिल्–जो हैं, उनका; पातियुम् ऍंन्ततु–आधा मेरा होगा; आल्–इसलिए; पकैप्पतु ऍंङ्ङनम्–विरोध करेंगे कैसे; नी–तुम; तुयर्–दुःख; ऒऴिक–छोड़ो; ऍंन–ऐसा; निन्ऱु–सावधानी के साथ; कूऱिनान्–(आश्वासन का वचन) कहा (वाली ने)। २५५

समझो कि कुछ जड़मति हैं जो युद्ध करने आ जायँ। (मेरे प्राप्त वरदान के बल से) उनके वर, बल और सामर्थ्य —सबके आधे भाग मेरे हो जायँगे। फिर वे कैसे मेरा विरोध करेंगे ? तुम अपना दुःख छोड़ दो। वाली ने तारा को धीरज देते हुए सावधानी से कहा। २५५

❀ अऩ्ऩदु	केट्टव	ळरश	वायवऱ्
किऩ्ऩुयिर्	नट्पमैऩ्	दिराम	ऎऩ्ऩवऩ्
उऩ्ऩुयिर्	कोडलुक्	कुडऩ्वन्	दाऩ्ऩत्
तुऩ्ऩिय	वऩ्बिऩर्	शॊल्लिऩा	रॆऩ्ऱाळ् 256

अऩ्ऩतु केट्टवळ्–उसको सुनकर (तारा ने); अरच–राजा; इरामऩ् ऎऩ्पवऩ्–श्रीराम नाम के; आयवर्कु–उनका; इऩ् उयिर् नट्पु–प्राणप्यारा मित्र; अमैन्तु–बनकर; उऩ् उयिर् कोट्लुक्कु–तुम्हारे प्राण हरने के लिए; उटऩ् वन्ताऩ्–साथ आये हैं; ऎऩ–ऐसा; तुऩ्ऩिय–निकट के; अऩ्पिनर्–स्नेहियों ने; चॊल्लिऩार्–कहा; ऎऩ्ऱाळ्–बोली। २५६

यह सुनकर तारा ने उत्तर दिया। राजा ! बात ठीक नहीं है। हमारे निकट के स्नेहियों ने कोई बात कही है। श्रीराम नाम के कोई सुग्रीव के प्राणप्यारे मित्र बनकर आपके प्राण हरने के लिए उसके साथ इधर आये हैं। २५६

❀ कुऴैत्तवल्	लिरुविऩैक्	कूऱु	काण्गिला
दऴैत्तय	रुलहिऩुक्	कऱत्ति	ऩारॆलाम्
इऴैत्तवऱ्	कियल्बल	वियम्बि	यॆऩ्शॆय्दाय्
पिऴैत्तऩै	पावियुऩ्	पॆण्मै	यालॆऩ्ऱाऩ् 257

पावि–पापिनी; कुऴैत्त–संकटदायी; वल् इरु विऩैक्कु–बलवान दोनों कर्मों (पाप, पुण्य) का; ऊऱु–नाश; काण्किलातु–(उपाय) न देखकर; अऴैत्तु–बुलाते हुए; अयर्–दुःखी; उलकिऩुक्कु–लोकवासियों को; अऱत्तिऩ् आऱु ऎलाम्–धर्म के मार्ग सब; इऴैत्तवर्कु–अपने चरित्र से सिखाया जिन्होंने, उन श्रीराम के लिए; इयल्पु अल–अनुपयुक्त; इयम्पि–कहकर; ऎऩ् चॆय्ताय्–क्या ही (अपचार) किया है; उऩ् पॆण्मैयाल्–अपनी स्त्री-बुद्धि के कारण; पिऴैत्तऩै–अपराध किया (या बच गयीं); ऎऩ्ऱाऩ्–वाली ने कहा। २५७

(वाली को श्रीराम का नाम सुनकर क्रोध आ गया। क्षुब्ध भी हुआ।) वाली बोला— पापिनी ! (क्या बात करती हो ? श्रीराम कौन हैं, जानती हो?) पूर्वकर्म, पाप और पुण्य, दोनों मनुष्यों को निरन्तर सताते हैं। उनका अन्त न पाकर जीव छटपटाते हैं। निवारण का कोई उपाय न देखकर वे श्रीराम को बुलाते हैं, तो वे आकर जीवों को धर्म के मार्ग सब अपने आचरणों द्वारा बताते हैं। ऐसे श्रीराम के सम्बन्ध में अनुचित

बातें कहती हो ! यह बड़ा अपचार है ! तुम स्त्री हो ! इसीलिए तुमने यह अपराध किया है ('पिळैत्तल्' का दूसरा अर्थ 'जीवित बच जाना' है !)। २५७

❀ इरुमैयु नोक्कुरु मियल्बि नाऱ्किदु
पॅरुमैयो वीङ्गिदिऱ् पॅरुव वॅन्गोलो
अरुमैयि निन्ऱुयि रळिक्कु माऱुडैत्
तरुममे तविर्क्कुमो तन्नैत् तान्रो 258

इरुमैयुम्–(पूर्व, अपर) दोनों पक्षों को; नोक्कुरुम्–सोच-देखनेवाले; इयल्पि–नार्क्कु–स्वभाव वाले श्रीराम के लिए; इतु पॅरुमैयो–यह (काम) गौरव है क्या; इङ्कु–यहाँ; इतिल्–इस (मित्रता) में; पॅरुवतु–लाभ; ॲन् कोलो–क्या है; अरुमैयिन् निन्ऱु–दुर्लभ रहकर; उयिर अळिक्कुम्–जीवों की रक्षा करने का; आऱु उटै–कार्यकारी; तरुममे–धर्म स्वयं; तन्नै तान्–अपने आप को; तविर्क्कुमो–नष्ट कर लेगा क्या। २५८

वाली आगे बोला। श्रीराम निष्पक्ष दोनों ओर ध्यान देनेवाले स्वभाव के हैं। उनके लिए यह काम गौरवदायी है क्या ? और भी इससे उनको मिलेगा भी क्या ? धर्म दुर्गम है और जीवरक्षण का सामर्थ्य रखता है। क्या वह स्वयं अपना नाश करा लेगा ? । २५८

❀ एऱ्ऱपे रुलहॅला मॅय्दि यीन्ऱवळ्
माऱ्ऱव ळेवमऱ् ऱवडन् मैन्दनुक्
काऱ्ऱरु मुवहैया लळित्त वैयनैप्
पोऱ्ऱलै यिन्नन पुहऱ्ऱ् पालैयो 259

एऱ्ऱ–(पिता द्वारा) भरण किये हुए; पेर् उलकु ॲलाम्–विशाल लोक (राज्य-अधिकार) सब; ॲय्ति–प्राप्त करके; ईन्ऱवळ्–जननी की; माऱ्ऱवळ्–सौत के; एव–आज्ञा देने पर; मऱ्ऱु–फिर; अवळ् तन् मैन्तनुक्कु–उनके पुत्र को; आऱ्ऱ अरुम्–(अन्यों द्वारा) करने में असाध्य; उवकैयाल्–सन्तोष के साथ; अळित्त–जिन्होंने दिया; ऐयनै–उन प्रभु को; पोऱ्ऱलै–नहीं सराहा; इन्नन–ऐसी (निन्दा की) बातें; पुकलल् पालैयो–कह सकोगी क्या। २५९

अपने पिता के भरण में रहे सारे लोकों का अधिकार पाकर भी उन्होंने अपनी विमाता के कहने पर उसे उनके पुत्र के हाथ में असाध्य प्रेम के साथ सौंप दिया। ऐसे महान पुरुष की सराहना नहीं करतीं पर ऐसी निन्दा की बातें करोगी ! । २५९

❀ निन्ऱपे रुलहॅला नॅरुङ्गि नेरितुम्
वॅन्ऱिवॅञ् जिलैयलाऱ् पिऱितुम् वेण्डुमो
तन्रुणै यॊरुवरुन् दन्निल् वेऱिलान्
पुन्ऱॊळिऱ् कुरङ्गॊडु पुणरु नट्पॅनो 260

निऱ्ऱ-स्थायी; पेर् उलकु ऍलाम्-बड़े-बड़े सभी लोक; नॆरुक्कि-मिलकर; नेरितुम्—लड़ें तो भी; वॆऩ्ऱि-विजयदायी; वॆम्-भयंकर; चिलै अलाल्-धनु को छोड़कर; पिऱितुम्-अन्य सहायता भी; वेण्टुमो-उन्हें चाहिए क्या; तऩ् तुणै—अपने सदृश; तऩ्ऩिल्-अपने से; वेऱु ऒरुवरुम्-अन्य कोई; इलाऩ्-नहीं ऐसे (श्रीराम); पुल् तॊऴिल्-अल्पकृत; कुरङ्कोटु-वानर के साथ; पुणरुम् नट्पु-करे, ऐसी मित्रता; ऍन्तो-क्यों। २६०

ये लोक, जो युग-युग से रहते हैं, सभी मिलकर उनका सामना करें तो भी अपने एक कोदण्ड के सिवा किसी और (चीज़) की सहायता लेनेवाले वे नहीं हैं। उनकी बराबरी का और कोई नहीं रहता। ऐसे वे अल्पकर्मी वानर के साथ मित्रता क्यों बना लेंगे ? । २६०

❀ तम्बिय रल्लदु तऩक्कु वेऱुयिर्
इम्बरि ऩिल्लॆऩ ऍण्णि येय्ऩ्दवऩ्
ऍम्बियुम् याऩुमुऱ् ऱॆदिर्ऩ्द पोरिऩिल्
अम्बिडै तॊडुक्कुमो वरुळि ऩाऴियाऩ् 261

तम्पियर् अल्लतु-छोटे भाइयों के सिवा; तऩक्कु-अपने; वेऱु उयिर्-अलग प्राण; इम्परिल्—इस लोक में; इल्—नहीं; ऍऩ-ऐसा; ऍण्णि-सोचकर; एय्ऩ्तवऩ्—उनसे मिलकर रहनेवाले; अरुळिऩ् आऴियाऩ्—करुणासागर; ऍम्पियुम् याऩुम्-मैं और मेरा भाई; उऱ्ऱु ऍतिर्ऩ्त-(जिसमें) लगे लड़ते हैं; पोरिऩिल्-(उस) लड़ाई में; इटै—बीच में आकर; अम्पु तॊटुक्कुमो-बाण चलायेंगे क्या। २६१

वे ऐसे हैं जिनके इस लोक में अपने अनुजों के अलावा प्राण हैं ही नहीं। और जो उनसे हेल-मेल के साथ रहते हैं। वे करुणासागर हैं। ऐसे वे क्या उस युद्ध में बीच में आकर बाण चलायेंगे, जिसमें मैं और मेरे भाई भिड़ रहे हैं ? । २६१

❀ इरुत्तिनी यिङ्ङैयिव ऩिमैप्पिल् कालैयिल्
उरुत्तुयिर् कुडित्तव ऩुडऩ्वन् दारैयुम्
करुत्तऴित् तॆय्दुवॆऩ् कलङ्ग लॆऩ्ऱऩऩ्
विरैक्कुऴल् पिऩ्ऩुरै विळम्ब वञ्जिऩाळ् 262

नी—तुम; इङ्ङै—कुछ देर; इवण् इरुत्ति—ठहरो; इमैप्पु इल्—पलक भी न मारो; कालैयिल्—उस समय के अन्दर; उरुत्तु—कोप दिखाकर; उयिर् कुटित्तु—प्राण पीकर; अवऩ् उटऩ् वन्तारैयुम्—उसके साथ आये हुओं को भी; करुत्तु अऴित्तु—विफल-मनोरथ करके; ऍय्तुवॆऩ्—लौट आऊँगा; कलङ्कल्—क्षुब्धमत हो; ऍऩ्ऱऩऩ्—कहा; विरै कुऴल्-सुगन्धित केश वाली; पिऩ्—आगे; उरै विळम्प—बात करने से; अञ्चिऩाळ्—डरी। २६२

तुम थोड़ी देर यहीं ठहरो। पलक भी न मार सको उतनी देर के अन्दर मैं कोप करके सुग्रीव को मार डालूँगा। और उसके साथ आये हुओं का

मनोरथ विफल करके लौट आ जाऊँगा। तुम मत घबड़ाओ। वाली ने धीरज दिया। आगे सुगन्धित केशिनी तारा कुछ न बोली। वह कुछ कहने से डरती थी। २६२

ऑल्लैच् चॅरुवेट् टुयर्वन्पुय वोङ्ग लुम्बर्
ॲल्लैक्कु मप्पा लिवर्हिन्ऱ विरण्डि नोडुम्
मल्लर् किरियिन् ऱलैवन्दनन् वालि कीऴ्पाल्
तॉल्लैक् किरियिन् ऱलैतोन्ऱिय ञायि ऱॅन्न 263

वालि—वाली; ऑल्लै—जल्दी; चॅरु वेट्टु—युद्ध करना चाहकर; उयर्—फूल उठनेवाले; उम्पर् ॲल्लैक्कुम्—स्वर्ग की सीमा के पार भी; इवर्किन्ऱ—उन्नत; वन् पुय—बलवान भुजा रूपी; ओङ्कल्—पर्वत; इरण्टिनोटुम्—दो के साथ; कीऴ् पाल्—पूर्व दिशा में; तॉल्लै किरियिन् तलै—प्राचीन (उदय-)गिरि के शिखर पर; तोन्ऱिय—प्रकट; ञायिऱु ॲन्न—सूर्य के समान; मल्लल् किरियिन् तलै—वैभवयुक्त गिरि के ऊपर; वन्तनन्—आया। २६३

वाली को युद्ध प्यारा था। उसके बारे में सोचते ही उसके कंधे फूल उठे। वे देवों के लोकों के पार भी उन्नत हुए। पूर्व दिशा की प्राचीन उदयगिरि पर प्रकट होनेवाले सूर्य के समान वाली अपने दोनों उन्नत भुजाओं के साथ शोभता हुआ वैभवपूर्ण उस गिरि पर आया। २६३

निन्ऱा नॅदिर्या वरुनॅञ्ज नडुङ्गि यञ्जत्
तन्ऱोळ् वलियाऱ् ऱहैमाल्वरै शालुम् वालि
कुन्ऱू डुवन्दुऱ् ऱनन्गो ळवुणन् कुऱित्त
वन्ऱू णिडैत्तोन् ऱियमानर शिङ्ग मॅन्न 264

तन् तोळ् वलियाल्—अपने भुजबल से; तकै माल् वरै—शालीन बड़े (मेरु) पर्वत की; चालुम्—समता करनेवाला (वाली); कोळ् अवुणन् कुऱित्त—नृशंस राक्षस (हिरण्यकशिपु) द्वारा निर्दिष्ट; वल् तूण् इटै—कठोर खम्भे से; तोन्ऱिय—प्रकट; मा—माननीय; नरचिङ्कम् ॲन्न—नृसिंह के समान; ॲतिर् यावरुम्—सामने (आये) सभी को; नॅञ्चम् नटुङ्कि—दिल दहलकर; अञ्च—भयभीत होने को विवश करते हुए; कुन्ऱु ऊटु वन्तु—पर्वत से होकर आया और; निन्ऱान्—स्थित रहा। २६४

वाली अपने भुजबल में बड़े और श्रेष्ठ मेरुपर्वत से तुल्य था। जब क्रूर राक्षस हिरण्यकशिपु ने खम्भे का निर्देश किया (और प्रह्लाद को ललकारा कि तेरा हरि इसमें है क्या ?) तब उस कठोर स्तम्भ के मध्य से नृसिंह प्रकट हुए। उन्हीं नृसिंह-मूर्ति के समान वाली सामने आये सभी के मन में भय भरते हुए गिरियों की घाटियों से होता हुआ आया और खड़ा रहा। २६४

आर्क्किन्ऱ पिन्नोन् ऱनैनोक्किनन् ऱानु मार्त्तान्
वेर्क्किन्ऱ वानत् तुरुमेऱु वॅडित्तु वीऴ्प्

पोर्क्कित्ऱ वॅल्ला वुलहुम्बॉदिर् वुऱ्ऱ पूशल्
कार्क्कुत्ऱ मत्ऩा निलन्दाविय कालि नॅऩ्ऩ 265

आर्क्कित्ऱ–गर्जन करनेवाले; पित्तोन् तत्तै–अनुज को; नोक्कितन्–देखकर; तानुम् आर्त्तान्–उसने भी नारे लगाये; वेर्क्कित्ऱ–स्वेदयुक्त; वानत्तु–आकाश के; उरुम् एऱु–वज्रराज; वॅरित्तु–तनकर; वीऴ–गिरें, ऐसे; कार्कुत्ऱम् अन्तान्–काले मेघ-सम महाविष्णु के; निलम् ताविय–लोकमापक; कालिन् अन्न–श्रीचरणों के समान; पूचल्–उनके घोष; पोर्क्कित्ऱ–(भू को) आवृत रहनेवाले; ऍल्ला उलकुम्–सारे लोकों में; पॉतिर्वु उऱ्ऱ–भर गये। २६५

उसने अपने गर्जन करनेवाले अनुज को देखा। उसने भी मारू नारे लगाये। उस दिन काले मेघतुल्य महाविष्णु के श्रीचरण सब जगह फैले। तब स्वेदयुक्त आकाश के वज्रसमूह भी भय से नीचे चू पड़े। उन्हीं श्रीचरणों के समान वाली और सुग्रीव के घोषों का शब्द सब लोकों में व्याप्त हुआ। २६५

अव्वेलै यिराम नुमत्बुडैत् तम्बिक् कैय
शॅव्वे शॅलनोक् कुदितानवर् देवर् निऱ्क
ऑव्वेलै यॅम्मेरु वॅक्कालॉडॅक् काल वॅन्दी
वॅव्वे ऱुलहत् तिवर्मेनियै मानु मॅन्ऱान् 266

अ वेलै–तब; इरामतुम्–श्रीराम भी; अन्पु उटै–प्यारे; तम्पिक्कु–अपने छोटे भाई से; ऐय–सुन्दर भाई; चॅव्वे चॅल–खूब ध्यान देकर; नोक्कुति–देखो; तानवर् तेवर् निऱ्क–दानव और देव एक ओर रहें; वॅव्वेऱु उलकत्तिन्–पृथक्-पृथक् रहनेवाले लोकों में; ऍ वेलै–कौन सा सागर; ऍ मेरु–कौन सा मेरु; ऍ काल् ऒटु–कौन से पवन के साथ; ऍ काल वॅम् ती–कौन सी प्रलयकालीन नाशकारी आग; इवर् मेनियै–इनके शरीर की; मानुम्–समता करेगी। २६६

(श्रीराम को वाली और सुग्रीव के रूप को देखकर विस्मय हुआ।) श्रीराम अपने प्यारे भाई से बोले। सुन्दर भाई! ध्यान देकर निहारो। देव और दानव एक ओर रहें! पृथक्-पृथक् रहनेवाले इन लोकों में कौन सा सागर, कौन सा मेरु, पवन या कालानल —इनके रूप और आकार की समता कर सकेगा? । २६६

वळ्ळर् किळैयान् पहर्वानिवन् ऱन्मुन् वाणाळ्
कॉळ्ळक् कॉडुङ् गूऱ्ऱुवतैक् कॉणर्न् दान्कुरङ्गित्
ऑळ्ळर् कुरुम्बोर् शॅयवॅय्दिलॅ मॅन्नु मिन्नल्
उळ्ळत्ति नूऩ्ऱ वुणर्वुऱ्ऱिलॅ नॉन्ऱु मॅन्ऱान् 267

वळ्ळर्कु इळैयान्–दानी प्रभु के अनुज; पकर्वान्–कहते; इवन्–यह सुग्रीव; तन् मुन्–अपने ज्येष्ठ भ्राता की; वाळ् नाळ् कॉळ्ळ–आयु हरने के लिए; कॉटुम् कूऱ्ऱुवतै–क्रूर यम को; कॉणर्न्तान्–यहाँ लाया है; कुरङ्कित्–वानरों से;

ऍऴ्ळऱ्कु उरुम्–निन्द्य; पोर् चॅय–युद्ध करने; ऍय्तिनॅम्–आये हैं; ऍन्ऩुम्–इसका; इन्ऩल्–दुःख; उळ्ळत्तिन्–चित्त में; ऊन्ऱ–गड़ गया, इसलिए; ओन्ऱुम्–कुछ भी; उणर्वु उऱ्ऱिलॅन्–सोच नहीं पाता; ऍन्ऱान्–कहा। २६७

यह सुनकर वदान्य श्रीराम के अनुज ने कहा कि यह अपने ज्येष्ठ भाई को शत्रु मानकर उसकी आयु को हरने के निमित्त भयंकर यम को इधर लाया है! वानरों के साथ, गर्हण योग्य युद्ध करने के लिए हम भी आये हैं। यह दुःख मेरे चित्त में गड़ा हुआ है। अतः मैं कुछ सोच नहीं पाता। २६७

आऱ्ऱादु पिन्ऩुम् पहर्वान्ऱत् ताऱ ळुङ्गत्
तेऱ्ऱादु शॅय्वार् हळैत्तेरुदल् शॅव्वि दन्ऱाल्
माऱ्ऱा ऩॅन्ऩत्तन् मुन्ऩैक्कॉल्लिय वन्दु निन्ऱान्
वेऱ्ऱार्ह डिऱत्ति वन्ऩ्ऱञ्जमॅन् वीर ऍन्ऱान् 268

आऱ्ऱातु–शोक न सह सककर; पिन्ऩुम्–और भी; पकर्वान्–कहते; वीर–वीर; अऱत्तु आऱु–धर्म का मार्ग; अऴुङ्क–नष्ट करते हुए; तेऱ्ऱातु–विवेचन न करके; चॅय्वार्कळै–(बुरे काम) करनेवालों को; तॅरुतल्–(मित्र) समझना; चॅव्वितु अन्ऱु–ठीक नहीं होगा; तन् मुन्ऩै–अपने ज्येष्ठ को; माऱ्ऱान् ऍन्ऩ–शत्रु कहकर; कॉल्लिय–मारने के लिए; वन्तु निन्ऱान्–आकर खड़ा है; वेऱ्ऱार्कळ् तिऱत्तु–परायों के प्रति; इवन् तञ्चम्–इसका शरण्यभाव; ऍन्–कैसा होगा; ऍन्ऱान्–(लक्ष्मण) बोले। २६८

लक्ष्मण के लिए यह क्षोभ असहनीय रहा। अपने को शान्त बना नहीं सके। वे आगे बोले– वीर भ्राता! धर्ममार्ग नष्ट करके अविवेकी कार्य करनेवालों को सहायक चुन लेना श्लाघनीय काम नहीं है। यह अपने ज्येष्ठ भ्राता को शत्रु मानकर उसे मारने के निमित्त आ खड़ा है। परायों के प्रति इसका शरण्यभाव कौन सा मूल्य रखेगा? (सर्वशरण्य श्रीराम के सामने सुग्रीव को श्रीराम का शरण्य मानना खलता है। अतः 'तञ्चम्' का अर्थ 'इसका शरण में आना और आपका मानना' —किया जाता है। तब 'परायों के प्रति' —अर्थ नहीं होगा 'पराये हमारी' यह अर्थ होगा।)। २६८

अत्ता विदुहे ळॅन्ऩवारियन् कूऱु वातिप्
पित्ताय विलङ्गि नॊऴुक्किनॅप् पेश लामो
ऍत्तायर् वयिऱ्ऱि नुम्बिन्पिऱन् दोर्ह ळॅल्लाम्
ऒत्ताऱ् परदन् पॅरिदुत्तम नाद लुण्डो 269

अत्ता–तात; इतु केळ्–यह सुनो; ऍन्ऩ–ऐसा; आरियन्–महिमावान श्रीराम; कूऱुवान्–बोलने लगे; पित्तु आय–पागल; इ विलङ्किन्–इस मृगप्राय के; ऒऴुक्कितै–चरित्र को; पेचल् आमो–चर्चा योग्य मानेंगे क्या; ऍ तायर्–

किसी भी माता की; वयिऱ्ऱितुम्–कोख में; पिन् पिऱन्तोर्कळ्–अनुज के रूप में उत्पन्न; ॲल्लाम्–सभी की; ऑत्ताल्–तुलना करें तो; परतन्–भरत के समान; पॅरितु उत्तमन्–बहुत श्रेष्ठ; आतल्–बननेवाले; उण्टो–कोई हैं क्या। २६९

तब महिमावान श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि तात! यह सुनो। ये पागल और मृगप्राय हैं। उनके चरित्र चर्चा के विषय बन सकेंगे क्या? (नहीं।) (किसी भी माता से उत्पन्न अनुज जब अपने अग्रजों से हेल-मेल के साथ रहें तो भरत बहुत उत्तम माना जायगा क्या? —यह सीधा अर्थ लगता है। पर हेय लगता है। इसलिए यह अर्थ किया गया है—) अगर किसी भी माता से उत्पन्न सभी अनुजों की भरत से तुलना की जाय तो भरत के समान उत्तम कोई पाया जायगा क्या? । २६९

विऱ्ऱाङ्गु वॅऱ्पन्न् नविलङ्गॅळ्ळिऱ् ऱोळ मॅय्म्मै
उऱ्ऱार् शिलरल् लवरेपल रॅन्न्ब दुण्मै
पॅऱ्ऱा रुळैप्पॅऱ् ऱपयन्पॅरुम् पॅऱ्ऱि यल्लाल्
अऱ्ऱार् नवॅयॅन् ऱलुक्काहुन रार्हॉ लॅन्ऱान् 270

विल् ताङ्कु–धनु धारण करनेवाले; वॅऱ्पु अन्न–पर्वत-सम; इलङ्कु–वर्तमान; ॲळ्ळिल्–सुन्दर; तोळ–भुजा वाले; मॅय्म्मै उऱ्ऱार्–सचमुच बड़प्पन के रखनेवाले; चिलर्–थोड़े हैं; अल्लवरे–जो नहीं; पलर्–वे अनेक हैं; ॲन्पतु–यह मसल; उण्मै–सत्य है; पॅऱ्ऱार् उळै–(मित्र-रूप में) प्राप्त लोगों के पास; पॅऱ् पयन्–प्रापनीय हित की; पॅरुम्–प्राप्त; पॅऱ्ऱि अल्लाल्–उपलब्धि के सिवा; नवै अऱ्ऱार्–दोषरहित हैं; ॲन्ऱुलुक्कु–ऐसा कहने योग्य; आकुनर्–बननेवाले; आर् कॉल्–कौन हैं; ॲन्ऱान्–कहा। २७०

धनुर्धारी पर्वततुल्य सुन्दर भुजा वाले! दुनिया में सच्चे (श्रेष्ठ आचरणशील) मनुष्य कम हैं। इसके विपरीत रहनेवाले ही अधिक संख्या में हैं। यह मसल सत्य है। मित्र के पास प्राप्य हित जो होगा उसे लेना है। वही लाभ है। उसे छोड़कर दोष देखना आरम्भ करो तो दोषहीन कहलाने योग्य कौन हैं इस संसार में? । २७०

वीरत् तिऱलो रिवरित्तन् विळम्बुम् वेलै
तेरिऱ् ऱिरिवान् महनिन्दिरन् शॅम्म लॅन्ऱिप्
पारिऱ् ऱिरियुम् बतिमाल्वरै यन्न पण्बार्
मूरित् तिशैया तैयिरण्डॅन्न मुट्टि तारे 271

वीरम् तिऱलोर् इवर्–वीर और बलिष्ठ ये; इन्न विळम्पुम् वेलै–जब ऐसा बोलते रहे, तब; तेरिल् तिरिवान्–रथचारी; मकन्–(सूर्य का) पुत्र; इन्तिरन् चॅम्मल्–इन्द्र का पुत्र; ॲन्ऱु–कहलानेवाले; इ पारिल्–इस भूमि पर; तिरियुम्–संचार करते हुए; पतिमाल् वरै–हिमाच्छादित बड़े पर्वतों के-से; पण्पार्–रूप वाले; मूरि–बलवान; तिचै यानै–दिग्गज; इरण्टु–दो; ॲन्न–जैसे; मुट्टिनार्–आपस में भिड़े। २७१

ये दोनों बलिष्ठ वीर आपस में ऐसी बातें कर रहे थे। तब रथचारी सूर्य का पुत्र सुग्रीव और इन्द्र का पुत्र वाली दोनों भूतल पर संचार करनेवाले हिमपर्वत के समान दिखते हुए दो बलवान दिग्गजों के समान आपस में भिड़े। २७१

कुऩ्ऱॊडु कुऩ्ऱॊत् ततऱ्कोळरि कॊऱ्ऱ वल्ले
ऱॊऩ्ऱॊडु शॆऩ्ऱॊऩ् ऱॆदिरुऱ्ऱऩ वेयु मॊत्तार्
निऩ्ऱार् तिरिन्दार् नॆडुञ्जारि निलन्दि रिन्द
वऩ्ऱोट् कुयवऩ् ऱिरिमट्कलत् ताऴि यॆऩ्ऩ 272

कुऩ्ऱु ओटु–पर्वत के साथ; कुऩ्ऱु–पर्वत (टकराता हो); ऒत्ततऩ्–ऐसे रहे; कॊऱ्ऱ–विजयी; वल्–बलिष्ठ; एऱु कोळरि–(नर) सिंह; ऒऩ्ऱोटु ऒऩ्ऱु–परस्पर; ऍतिर् चॆऩ्ऱु–सामने आकर; उऱ्ऱतवेयुम्–भिड़ने लगे; ऒत्तार्–ऐसे; निऩ्ऱार्–रहते हुए; नॆटुम् चारि–(दायें और बायें) दूर-दूर तक चक्कर लगाये; वल् तोळ्–बलवान कन्धों के; कुयवऩ् तिरि–कुम्हार के घुमाये हुए; मण् कलत्तु–मिट्टी के बर्तन बनाने के; आऴि अऩ्ऩ–चक्र के समान; निलम्–भूमि (के जीव) तिरिन्त–डगमगायी (अस्त-व्यस्त हुए)। २७२

दो पर्वत टकराते जैसे, विजयी, ताकतवर दो सिंह आपस में भिड़ते जैसे दोनों दायें और बायें घूमे। तब बलवान कन्धों के कुलाल से घुमाए हुए मृत्पात्र के समान भूमि चक्रित हुई। भूमि के वासी डगमगा गये। २७२

तोळॊडु तोडेय्त् तलिऱ्ऱॊऩ्ऩिलऩ् दाङ्ग लाऱ्ऱात्
ताळॊडु ताडेय्त् तलिऱ्ऱऩ्द तऴऱ्पि ऱङ्गल्
वाळॊडु मिऩ्ऩो डुवपोऩ्ॆडु वाऩि ऩोडुम्
कोळॊडु कोळुऱ् ऱऩवॊत्तडर्त् ताऱ्ऱॊ दित्तार् 273

तोळ् ओटु–(एक के) कन्धे के साथ; तोळ् तेय्त्तलिल्–(दूसरे का) कन्धा टकराता तो; तॊल् निलम्–पुरातन भूमि; ताङ्कल् आऱ्ऱा–सहन कर नहीं सके, ऐसा; ताळ् ओटु ताळ्–पैर से पैर; तेय्त्तलिऩ्–टकराता, इस कारण; तन्त–उत्पन्न; तऴल् पिऱङ्कल्–अग्निपुंज; वाळ् ओटु–प्रकाश के साथ; मिऩ् ओटुव पोल्–विद्युत चलती जैसे; नॆटु वाऩिल्–विशाल गगन में; ओटुम्–सवेग चलनेवाले; कोळ् ओटु कोळ्–ग्रह के साथ ग्रह; उऱ्ऱऩ ऒत्तु–टकराते जैसे; कॊतित्तार्–उबले; अटर्न्तार्–लड़े। २७३

उनके कन्धे भिड़े। पुरातन भूमि को भी असह्यता का अनुभव दिलाते हुए उनके पैर आपस में टकराये। तब अग्नि का पुंज उठा। वह विस्तृत आकाश में बिजली के समान सवेग व्याप चला। वे दो ग्रहों के समान आपस में बहुत क्रोध के साथ लड़े। २७३

तन्दोळ् वलिमिक् कवर्तामोरु ताय्व यिड़्रिन्
वन्दोर् मडमङ् गैपोरुट्टु मलेंद लुड़्ड़ार्
शिन्दो डरियुण्कट् टिलोत्तमै कादड़् चेंड़्ड़
सुन्दोब सुन्दप् पेयर्त्तोल्लेयि नोरु मोत्तार् 274

तम् तोळ् वलि–(अपने) अपने भुजबल में; मिक्कवर्–बढ़े हुए; ताम ओरु ताय् वयिड़्रिन्–दोनों एक ही माता की कोख से; वन्तोर्–जनित; मट मङ्कै पोरुट्टु–एक बाला स्त्री के कारण; मलैतल् उड़्ड़ार्–गुथने लगे, वे; चिन्तु ओट्टु–सिंधु को हराने (भगाने) वाले; अरि–लाल डोरों से युक्त; उण् कण्–अंजनयुक्त; नेत्रों वाली; तिलोत्तमै–तिलोत्तमा के; कातल्–प्रेम के कारण; चेंड़्ड़–जो लड़े; चुन्त उपचुन्त पेयर्–सुन्द-उपसुन्द नाम के; तोल्लैयित्तोरुम्–प्राचीन राक्षसों की भी; ओत्तार्–समानता करते थे। २७४

वे दोनों भुजबल में बढ़े हुए थे। दोनों एक ही माता की कोख से जने थे। अब वे एक बाला स्त्री (रूमा) के निमित्त लड़ते हुए सुन्द-उपसुन्द के समान दिखे, जो लाल डोरों से युक्त और अंजनभूषित आँखों वाली तिलोत्तमा के निमित्त आपस में लड़े थे। (इसका वृत्तान्त यों है— ये दोनों हिरण्यकशिपु के वंश में आये दानव थे। वे लोकों को बहुत त्रस्त करते थे। महाविष्णु ने विश्वकर्मा द्वारा तिलोत्तमा नाम की अप्सरा को सृष्ट कर इनके पास भेजा। ये दोनों उस पर आसक्त हुए। तिलोत्तमा ने कहा कि मैं तुम दोनों में श्रेष्ठतर बलशाली से विवाह कर लूँगी। दोनों आपस में लड़कर मर गये।)। २७४

कडलोन् ड्रिनोंडोन् ड्रुमलैक्ककवुङ् गावन् मेरुत्
तिडलोन् ड्रिनोंडोन् ड्रमर्शेय्यवुज् जीड़्ड़ मेन्ब
दुडलहोण् डिरण्डाहि युडड़्ड़वुङ् गण्डि लादेम्
मिडलिङ् गिवर्वेन् दोळ्डि़्कोप्पन वेड़ु काणेम् 275

कटल् ओन्ड्रिन् ओट्टु ओन्ड्रु–एक समुद्र दूसरे समुद्र के साथ; मलैक्ककवुम्–टकराये; कावल्–भूमि का रक्षक; मेरु तिटल्–मेरुपर्वत; ओन्ड्रिनोट्टु ओन्ड्रु–(दो भाग बनकर) आपस में; अमर् चेय्यवुम्–लड़े; चीड़्ड़म् एन्पतु–कोप नाम का गुण; इरण्टाकि–दो भागों में बँटकर; उटल् कोण्टु–(मानव-) शरीर लेकर; उटड़्ड़वुम्–एक दूसरे को सताएँ; कण्टिलातेम्–नहीं देखा, ऐसे हम; इङ्कु–यहाँ; इवर्–इनके; मिटल् वेम् तोळिड़्कु–कठोर साहसपूर्ण युद्धकृत्य को; ओप्पन–समता करनेवाले; वेड़ु काणेम्–कुछ नहीं देखते। २७५

हमने दो समुद्रों को आपस में टकराता नहीं देखा है। मेरुपर्वत का दो भाग बनकर आपस में भिड़ना नहीं देखा है। न ही कोप को दो भागों में बँटकर परस्पर गुँथते देखा है। और इन साहसी वीरों के युद्धकार्य की उपमाएँ भी नहीं देखते। २७५

ऊहङ् गळिता यहर्वेङ्ग णुमिळ्न्द तीयाल्
मेहङ् गळ्करिन् दत्तवेंर्पु मॅरिन्द तिक्किन्
नाहङ् गणडुङ् गित्तनातिल मुङ्गु लेन्द
माहङ् गळैनण्णिय विण्णवर् पोय्म रैन्दार् 276

ऊकङ्कळिन्–वानरों के; नायकर्–नायकों की; वॅम् कण्–उग्र आँखों की; उमिळ्न्त–उगली; तीयाल्–आग से; मेकङ्कळ् करिन्तत–मेघ झुलस गये; वॅर्पुम् ॲरिन्त–पर्वत जल गये; तिक्कित्–दिशाओं के; नाकङ्कळ्–हाथी; नटुङ्कित–काँप उठे; नातिलमुम्–चतुर्विधा भूमि भी; कुलैन्त–अस्त-व्यस्त हुए; माकङ्कळै–आकाशलोकों में; नण्णिय–वास करनेवाले; विण्णवर्–स्वर्गवासी; पोय् मरैन्तार्–(कहीं) जाकर छिप गए। २७६

उन वानरनायकों की भयानक आँखों से जो आग निकली, उससे मेघ झुलस गये। पर्वत जल गये। दिग्गज काँपे। चतुर्विधा भूमि थर्रायी। आकाशवासी देव कहीं जाकर छिप गये। २७६

विण्मे लित्तरो नॅडुवॅर्पित् मुहट्टि त्तारो
मण्मे लित्तरो पुऱमादिर वीदि यारो
कण्मे लित्तरो वॅन्नयावरुङ् गाण नित्रार्
पुण्मे लिरत्तम् पॉडिप्पक्कडिप् पार्पु डैप्पार् 277

विण् मेलित्तरो–व्योम के ऊपर के हैं; नॅटु वॅर्पित्–बड़े पर्वत के; मुकट्टित्तारो–शिखर के हैं; मण् मेलित्तरो–भूतल के हैं; पुऱम्–बाह्य; मातिरम्–दिशाओं की; वीतियारो–वीथियों के हैं; कण् मेलित्तरो–(हमारे) दृष्टिपथ के हैं; ॲन्न–ऐसा; यावरुम्–सबके; काण–दृष्टिगोचर होते हुए; नित्रार्–(घूमते) रहनेवाले; पुण् मेल्–व्रणों पर; इरत्तम्–रक्त; पॉटिप्प–ढलकाते; कटिप्पार्–काटते; पुटैप्पार्–पीटते (लड़ते)। २७७

सभी जगह रहनेवालों ने उन्हें अपने-अपने स्थान पर देखा। तो यह सन्देह उठा कि क्या वे आकाश में रहकर लड़ रहे हैं? या बड़े पर्वत के शिखर पर? या भूमि पर? या अण्ड के बाहर की वीथियों पर? या हमारी ही दृष्टि के पथ में रहकर लड़ रहे हैं? ऐसा लड़ते हुए उन्होंने परस्पर एक दूसरे को काटा और पीटा। तब गम्भीर व्रण हुए और उन पर रक्त ढलक आया। २७७

एळीत् तुलहन् दिशैयॅट्टी डिरण्डु मुट्टि
आळिक् किळरार् कलिक्कॅम्मडङ् गार्प्पि त्तोवै
पाळित् तडन्दो ळित्तमार्बिनुङ् गेहळ् पाय
ऊळिक् किळर्हा रिडियॊत्तदु कुत्तु मोवै 278

आर्प्पित्त् ओतै–उनके गर्जन का स्वर; उलकम् एळ्–सातों लोकों में; ऑत्तु–जैसे; तिचै–दिशाओं; ॲट्टु ओटु इरण्टुम्–आठ और दो (दस) में; मुट्टि–जा

टकराकर; आऴि किळर्–समुद्र की उमड़ से; आर् कलिक्कु–उत्पन्न उच्च स्वर से; ऐम्मटङ्कु–पाँच गुना (अधिक था); पाऴि–सारयुक्त; तटम् तोळितुम्–विशाल कन्धों पर; मार्पितुम्–वक्ष पर; कैकळ् पाय–हाथों को चलाते हुए; कुत्तुम् ओलै–घूंसा मारने से उत्पन्न ध्वनि; ऊऴि किळर्–युगान्त में उठनेवाले; कार् इटि–मेघों के गर्जन; ऑत्ततु–के समान थी। २७८

उन्होंने नारे लगाये। गर्जन किया। वह स्वर सातों लोकों में व्याप्त हुआ। वैसे ही वह आठों दिगन्तों से जा टकराया। उमड़नेवाले सागर की ध्वनि से वह स्वर पाँच गुना अधिक था। हाथ चलाकर उन्होंने आपस में कन्धों पर और वृक्षों पर घूंसा मारा। वह स्वर युगान्त में घुमड़नेवाले बादलों के वज्र के समान था। २७८

वॅव्वा यॅयिट्रात् मिडल्वीरर् कडिप्प मीच्चॅन्
ऱुव्वा यॅळुशो रिहळाशैह डोरुम् वीश
अॅव्वा युमॅळुन् दहॉळुत्जुडर् मीत्गळ् यावुम्
शॅव्वा यॅनिहर्त् तनशॆक्करै यॉत्त मेहम् 279

मिटल् वीरर्–बलिष्ठ वीरों के; वाय् वॅम् ऍयिट्राल्–अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से; कटिप्प–काटने से; अ वाय्–उन मुखों से; ऍळु–निकलनेवाला; चोरि–रक्त; मी चॅन्ऱु–ऊपर जाकर; आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; वीच–व्याप्त हुआ, तब; ऍ वायुम्–कहीं भी; ऍळुन्त–उदित; कॉळुम् चुटर्–विपुल कान्ति के; मीन्कळ् यावुम्–नक्षत्र सभी; चॅव्वाय्–मंगल ग्रह; निकर्त्तन–के समान लगे; मेकम्–मेघ; चॅक्करै ऑत्त–लाल गगन के समान लगे। २७९

उन बलिष्ठ वीरों ने अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से एक दूसरे को काटा। तब रक्त जो बह आया, आकाश में उछलकर सभी दिशाओं में फैल गया। उससे विपुल प्रकाशमय नक्षत्र, जहाँ कहीं भी उदित हुए, मंगलग्रह के समान (लाल) हो गये। मेघ भी लाल (सन्ध्या-) गगन के समान बन गये। २७९

वॅन्द वल्लिरुम् बिडैनॆडुङ् गूडङ्गळ् वीळच्
चिन्दि यॆङ्गणुञ् जिदऱुव पोऱ्पॊऱि तॆऱिप्प
इन्दि रन्महत् पुयङ्गळु मिरविशे युरत्तुम्
शन्द वन्तॆडुन् दडक्कैह डाक्कलिऱ् ऱहर्व 280

वॅन्त–खूब तप्त; वल्–घने; इरुम्पु इटै–लोहे पर; नॆटु कूटङ्कळ्–बड़े हथौड़ों के; वीळ–पीटने से; पॊऱि तॆऱिप्प–अंगारे छूटते; ऍङ्कणुम् चिन्ति–सब ओर गिरते; चितऱुव पोल्–छितरते हैं जैसे; इन्तिरन् मकन्–इन्द्रपुत्र के; पुयङ्कळुम्–कन्धे और; इरवि चेय्–रविकुमार का; उरत्तुम्–वक्ष; चन्तम्–सुन्दर; वल्–ताकतवर; नॆटुम् तटम् कैकळ्–लम्बे विशाल हाथों के; ताक्कलिल्–प्रहारों से; तकर्व–(पिटकर) खण्ड-खण्ड हुए। २८०

जब खूब तप्त लोहे पर भारी हथौड़ों की चोटें पड़ती हैं, तब लोहे के छोटे-छोटे तप्त कण चारों ओर उड़ते हैं। वैसे ही इन्द्रपुत्र के कन्धों से और सूर्यसूनु के वक्ष से, उनके आपस की बलिष्ठ सुन्दर हाथों की चोटों के कारण, अंश छूटकर उड़ने लगे। २८०

उरत्ति ऩाऩ्मडुत् तुन्दुवर् पादमिट् टुदैप्पर्
करत्ति ऩाल्विशैत् तॅऱ्ऱुवर् कडिप्पर्निऩ् ऱिडिप्पर्
मरत्ति ऩालडित् तुरप्पुवर् पॊरुप्पिऩम् वाङ्गिच्
चिरत्तिऩ् मेलॅऱिन् दोऱुक्कुवर् तॅऴिप्परती विऴिप्पर् 281

उरत्तिऩाल्—छाती से; मट्तुतु—टकराकर; उन्तुवर्—ढकेलते; पातम् इट्टु—पैर बढ़ाकर; उतैप्पर्—लात मारते; करत्तिऩाल्—हाथों से; विचैत्तु—वेग के साथ; ऍऱ्ऱुवर्—ठेलते; कटिप्पर्—काटते; निऩ्ऱु—अड़कर; इटिप्पर्—टकराते; मरत्तिऩाल्—तरुओं से; अटित्तु—पीटकर; उरप्पुवर्—चिल्लाते; पॊरुप्पु इऩम्—गिरि-समूह; वाङ्कि—उखाड़ लेकर; चिरत्तिऩ् मेल्—सिरों पर; ऍऱिन्तु—फेंककर; ऒऱुक्कुवर्—दण्ड देते; तॅऴिप्पर्—नारे लगाते; ती विऴिप्पर्—आग्नेय दृष्टि करते। २८१

वे एक दूसरे को अपनी छाती से टकराकर ढकेलते; पैरों से लात मारते; हाथों से वेग के साथ पीटते। दाँतों से काटते। खड़े होकर धक्का देते। तरुओं से पीटकर चिल्लाते। पर्वतसमूह लेकर सिर पर फेंककर दण्डित करते। गर्जन करते। अग्नि के समान लाल आँखों के साथ तरेरते। २८१

ऎडुप्पर् पऱ्ऱियुऱ् ऱॊरुवरै यॊरुवर्विट् टॅऱिवर्
कॊडुप्पर् वन्दुरङ् गुत्तुवर् कैत्तलङ् गुळिप्पक्
कडुप्पि ऩिऱ्पॆरुङ् गऱङ्गॆऩच् चारिहै पिऱङ्गत्
तडुप्पर् पिऩ्ऱुव रोऩ्ऱुवर् तऴुवुवर् विऴुवर् 282

ऒरुवरै ऒरुवर्—एक दूसरे को; पऱ्ऱि उऱ्ऱु—पकड़ लेकर; ऎटुप्पर्—उठाते; विट्टु ऍऱिवर्—दूर फेंकते; उरम्—छाती; वन्तु—आकर; कॊटुप्पर्—आगे करते; कै तलम् कुऴिप्प—हाथों को (मुट्ठियों को) धँसाते हुए; कुत्तुवर्—घूँसा मारते; कटुप्पिऩिल्—अतिवेग से; पॆरु कऱङ्कु ऎऩ—बड़े वातचक्र के समान; चारिकै पिऱङ्कु—दायें और बायें पैंतरे बदलते हुए; तटुप्पर्—रोकते; पिऩ्ऱुवर्—पीछे हटते; ऒऩ्ऱुवर्—गुँथे रहते; तऴुवुवर्—लपेट लेते; विऴुवर्—नीचे गिरते। २८२

वे एक दूसरे को पकड़ लेते और दूर फेंकते। सामने आकर छाती आगे करते। ऐसा घूँसा देते कि मुट्ठियाँ ही शरीर के अन्दर धँस जायँ। प्रबल वातचक्र के समान वे पैंतरे बदलते और रोकते। कभी पीछे हटते; कभी गुँथ जाते, चपेट में लेते और नीचे गिर जाते। २८२

वालि तालुरम् वरिन्दन्नर् नॆरिन्दुह वलिप्पर्
कालि तान्नॆडुङ् गाल्पिडित् तुडर्रुवर् कळल्वर्
वेलि नालुर् वॆरिन्दन्न विरल्वलि युहिराल्
तोलि नाक्कैह णॆडुवरै मुळैयॆन्नत् तॊळैप्पर् 283

वालितताल्—पूँछ से; उरम् वरिन्ततर्—वक्ष लपेटकर; नॆरिन्तु उक—दलककर गिरने देते हुए; वलिप्पर्—खींचते; कालिताल्—पैर से; नॆटु काल्—लम्बे पैर को; पिटित्तु—मरोड़, पकड़कर; उटर्रुवर्—पीड़ा देते; कळल्वर्—उस बन्धन से बच जाते; वेलिताल्—भाले को; उर ऎरिन्तन्न—खूब गड़ाकर फेंका गया हो, ऐसा; विरल् वलि—अति कठोर; उकिराल्—नाखूनों से; तोलिन्—चमड़े से ढके; आक्कैकळ—शरीरों पर; नॆटु वरै मुळै—बड़ी पर्वत-गुफाओं; ऎन्न—के समान; तॊळैप्पर्—छेद बना देते। २८३

एक दूसरे की छाती को अपनी पूँछ से लपेट लेकर ऐसा खींचते कि शरीर ही दलककर चू जाय! पैरों से पैर पकड़कर खींचते और दुःख देते। पकड़ से बच जाते। शक्ति के प्रहार के समान अपने तेज कठोर नाखूनों को चलाकर चमड़े-मढ़े उनके शरीरों पर छेद ही लगा देते, जो पर्वत की गुफाओं के समान दिखते। २८३

मण्ण हत्तन मलैहळु मरङ्गळु मर्रुम्
कण्ण हत्तितिर् रोन्रिय यावैयुङ् गैयाल्
ऎण्ण हप्परित् तॆरिदलि नॆर्रलि निर्र
विण्ण हत्तिनै मरैत्तन मरिहडल् वीळ्न्द 284

मण् अकत्तन—पृथ्वी के; मलैकळुम्—पर्वतों; मरङ्कळुम्—और तरुओं को; मर्रुम्—और; कण् अकत्तितिल्—दृष्टिपथ में; तोन्रिय—प्रकट; यावैयुम्—सभी को; कैयाल्—हाथों से; ऎण् नक—गिनती को परिहास करते हुए (अनगिनत); परित्तु—तोड़ लेकर; ऎरितलिल्—एक दूसरे पर फेंकते; ऎर्रलिल्—प्रहार करते, इसलिए; इर्र—टूटे वे; विण्णकत्तिनै—व्योममण्डल को; मरैत्तन—ढकनेवाले; मरि कटल्—उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में; वीळ्न्त—गिरनेवाले बने। २८४

वे भूमि के हों, या आकाश के सभी पर्वतों और तरुओं और दृष्टि में पड़नेवाले सारे पदार्थों को तोड़कर उठा लेते और फेंकते। ऐसे पदार्थों की संख्या गिनती में ही न आ सकती थी। उनके शरीरों से लगकर वे टूट जाते और आकाश को ढकनेवाले या उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में गिरनेवाले बन जाते थे। २८४

वॆरुविच् चायन्दनर् विण्णवर् वेरॆन्नै विळम्बल्
ऒरुवर्क् काण्डम रॊरुवरुन् दोर्रिल रुडन्रु
शॆरुविर् रुय्त्तलिर् चॆङ्गतल् वॆण्मयिर्च् चॆल्ल
मुरिपुर् कातिडै यॆरिपरन् दन्नवॆन् मुनैवार् 285

आण्ट्रु अमर्–वहाँ के युद्ध में; ऑरुवरुम्–कोई; ऑरुवर्क्कु–किसी से; तोऱ्ऱिलर्–नहीं हारा; उटन्ऱु–कष्ट उठाकर; चॅरुविल्–युद्ध में; तुय्त्तलिन्–मग्न रहे, इसलिए; चॅम् कऩल्–लाल कोपाग्नि; वॅण् मयिर्–उनके (शरीर के) श्वेत रोमों द्वारा; चॅल्ल–प्रकट हुई, इसलिए; मुरि पुल्–सूखी घास के; कान् इटै–वन में; ऎरि परन्तत–आग फैल गयी; ॲत्त–जैसे; मुत्तैवार्–लड़े; विण्णवर्–व्योमवासी; वॅरुवि–डरकर; चाय्न्ततर्–अस्थिर हुए; वेऱु विळम्पल्–अलावा कहना; ऎन्तै–क्या। २८५

तब जो युद्ध हुआ, उसमें कोई किसी से न हारा। एक दूसरे को पीड़ा देते हुए स्वयं कष्ट उठाकर लड़ रहे थे। तब कोपाग्नि उनके श्वेत बालों पर बाहर दिखाई दे रही थी। तब सूखी घास के वन में आग फैल रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित हो रहा था। वे इस भाँति युद्ध कर रहे थे। उसको देखकर व्योमवासी देव भी भय से अस्थिर हो गये। फिर इस लड़ाई का और कैसा वर्णन किया जाय ? । २८५

अऩ्ऩ तऩ्मैय राऱ्ऱलि ऩमर्पुरि पॉऴुदिऩ्
वऩ्ऩॆ डुन्दडत् तिरळ्पुयत् तऱुदिऱल् वालि
शॊऩ्ऩ तम्बियैत् तुम्बियै यरितॊलैत् तॆऩ्ऩ
कॊऩ्ऩ हङ्गळिऩ् करङ्गळिऩ् कुलैन्वुह मलैन्दाऩ् 286

अऩ्ऩ–ऐसे; तऩ्मैयर्–रंग-ढंग के वे; आऱ्ऱलिऩ्–बल लगाकर; अमर् पुरि पॉऴुतिऩ्–जब लड़े, तब; वल्–बलवान; नॅटु–लम्बे; तटम्–विशाल; तिरळ्–स्थूल; पुयत्तु–भुजा वाले; अटु तिऱल्–शत्रुसंहारक बलशाली; वालि–वाली ने; चॊऩ्ऩ तम्पियै–जिसने ललकार सुनाई, उस लघु भाई से; तुम्पियै–हाथी को; अरि–सिंह; तॊलैत्तु ऎऩ्ऩ–जैसे मिटा देगा वैसे; कॊल् नकङ्कळिल्–घातक नाखूनों से; करङ्कळिल्–व हाथों से; कुलैन्तु उक–जर्जर हो गिर जाए, ऐसा; मलैन्ताऩ्–युद्ध किया। २८६

जब ऐसे रंग-ढंग के वाली और सुग्रीव अपना सारा बल लगाकर लड़ रहे थे तब बलवान, लम्बे, विशाल और स्थूल हाथों वाला वाली सुग्रीव से, जिसने उसको ललकारा था, इस तरह लड़ा जैसे एक सिंह हाथी का बल मिटाता है। उसने अपने कठोर घातक नाखूनों और हाथों से सुग्रीव पर प्रहार करते हुए लड़ाई की। तब सुग्रीव निर्बल होकर गिर गया। २८६

[इसके बाद तीन अतिरिक्त पद हैं, जिनका सार है— वाली के प्रहारों से जर्जर होकर सूर्यसूनु प्रभु श्रीराम के पास गया और क्षोभ के साथ उलाहना की। प्रभु ने कहा कि मुझे भेद नहीं दिखाई दिया। अब पुष्पित लता पहनके जाओ। दुःखो मत।

सिर पर नक्षत्र-माला जैसा पुष्पहार पहने हुए सुग्रीव व्याघ्र के समान वज्रनाद को मात देनेवाले गर्जन के साथ युद्ध करने आया और शत्रुतप वाली को मुट्ठी से मारकर त्रस्त कर दिया।

शंकितमन वाली ने गुस्से के साथ ऐसा घूरा कि यम भी डर गया। फिर मन्दहास के साथ उसने अपने हाथों और पैरों से सूर्यपुत्र के मर्मस्थलों पर ऐसा प्रहार किया कि सुग्रीव मूर्च्छित हो गया।

ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि तीनों पद क्षेपक हैं। किसी वाल्मीकी-भक्त तमिळ-विद्वान् द्वारा बनाये गये हैं। कथा के रवैये को ये साफ़ रोकते हैं।]

कक्कि नातुयि रुयिर्प्पोडुञ् जॅविहळिड् कण्णिन्
उक्क ताङ्गॅरिप् पडलैयो डुदिरत्ति नोदम्
तिक्कु नोक्किनन् शॅङ्गदि रोन्महन् शॅरुक्किप्
पुक्कु मीक्कोडु नॅरुक्किन निन्दिरन् पुदल्वन् 287

आङ्कु–तब; चॅम् कतिरोन् मकन्–किरणमाली के पुत्र ने; उयिर्प्पोटुम्–निःश्वास के साथ; उयिर्–प्राणों को; कक्कितान्–उगला; चॅविकळिल्–कानों; कण्णिल्–व आँखों से; उतिरत्तिन् ओतम्–रक्त का प्रवाह; ऎरि पटलै ओटु–अग्निपटल के साथ; उक्कतु–निकला और बूँदें छिड़कीं; तिक्कु नोक्किनन्–सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ायी; इन्तिरन् पुतल्वन्–इन्द्र-पुत्र वाली ने; चॅरुक्कि–आवेग के साथ; मी कोटु पुक्कु–और भी उसके पास जाकर; नॅरुक्कितन्–कष्ट दिया। २८७

तब सुग्रीव का दम फूल गया। प्राण निकलने लगे। कानों और आँखों से रक्त का प्रवाह अग्निपटल के साथ निकलकर बहा। वह सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ाने लगा। तब इन्द्रपुत्र वाली ने आवेग के साथ उसके पास जाकर और भी यंत्रणा दी। २८७

ऍडुत्तुप् पारिडै यॅड्रुवॅन् पऱ्ऱियॅन् ऱिळवल्
कडित्त लत्तिनुङ् गळुत्तिनुन् दन्निरु करङ्गळ्
मडुत्तु मीक्कॊण्ड वालिमेऱ् कोलॊन्ऱु वाङ्गित्
तॊडुत्तु नाणॊडु तोळुऱत् तिराहवन् ऱुरन्दान् 288

पऱ्ऱि ऍटुत्तु–पकड़कर उठाकर; पार् इटै–भूमि पर; ऍऱ्ऱुवॆन्–पटक दूंगा; ऎन्ऱु–कहकर; इळवल्–छोटे भाई को; कटि तलत्तितुम्–कमर में; कळुत्तितुम्–व गले में; तन् इरु करङ्कळ् मटुत्तु–अपने दोनों हाथों को देकर; मी कोण्ट (सुग्रीव को) जिसने ऊपर उठाया; वालि मेल्–उस वाली पर; इराकवन्–श्रीराघव ने; कोल् ऒन्ऱु वाङ्कि–एक बाण लेकर; तॊटुत्तु–धनुष पर संधानकर; नाण् ऒटु–डोरे के साथ; तोळ् उऱत्तु–कन्धा मिले, ऐसा डोरा खींचकर; तुरन्तात्–चलाया। २८८

तब वाली ने सोचा कि इसको उठाकर भूमि पर पटक दूं। इसलिए उसने सुग्रीव की कमर पर एक हाथ और कन्धे पर एक हाथ देकर उसे उठा लिया। तभी श्रीराम ने एक बाण लेकर धनु में रखा, डोरा कन्धे तक खींचकर बाण को छोड़ दिया। २८८

कारुम् वार्शुवैक् कदलियिन् कतियिनैक् कळियच्
चेरुञ् जूशियिऱ् चॅन्ऱदु निन्ऱदॅन् शॅप्प
नीरु नीर्दरु नॅरुप्पुम्वन् काऱ्ऱुङ्गीऴ् निरन्द
पारुञ् जार्वलि पडैत्तव नुरत्तैयप् पहऴि 289

अ पकऴि–वह बाण; नीरुम्–जल; नीर् तरु नॅरुप्पुम्–जल का जनक अनल; वल् काऱ्ऱुम्–(उसका जनक) बलवान अनिल; कीऴ्–नीचे; निरन्त–व्याप्त; पारुम्–थल; चार्–इनका सम्मिलित; वलि पटैत्तवन्–बल जिसमें था, उस वाली के; उरत्तै–छाती में; कारुम्–पके; वार् चुवै–अति स्वादिष्ट; कतलियिन् कतियितै–कदली-फल में; कळिय चेरुम्–घुस जानेवाली; चूचियिन्–सूई के समान; चॅन्ऱतु–शीघ्र घुसा; चॅप्प निन्ऱतु–कहने के लिए रहा जो; ऍन्–वह क्या है। २८९

वाली असाधारण रूप से बलवान था। उसमें जल, जल का जनक अनल, उसका जनक अनिल और पृथ्वी —इन सब भूतों का सम्मिलित बल था। ऐसे वाली के वक्ष में वह शर सूई के समान घुसा जो पके और अति स्वादिष्ट कदलीफल में घुस रही हो! अब कहने के लिए क्या बचा है? (इसका यह अर्थ भी किया जा सकता है कि वह रुका। क्या समझाने को रुका?।)। २८९

अलङ्गु तोळ्वलि यऴिन्ददन् ऱम्बियै यरुळान्
वलङ्गॉळ् पारिडै यॅऱ्ऱुवा नुऱ्ऱपोर् वालि
कलङ्गि वल्विशैक् काल्हिळर्न् दॅऱिवुरुङ् गडैनाळ्
विलङ्गन् मेरुवुम् वेर्पऱिन् दालॆन वीऴ्न्दान् 290

अलङ्कु तोळ् वलि–शोभायमान कन्धों का बल; अऴिन्त–जिसका मिट गया; तन् तम्पियै–उस अपने भाई को; अरुळान्–दया न दिखाकर; वलम् कॉळ्–कठोर; पार् इटै–भूमि पर; ऍऱ्ऱुवान्–पटकने को; उऱ्ऱ–प्रस्तुत; पोर् वालि–योद्धा वाली; कलङ्कि–हड़बड़ाकर; वल्–प्रबल; विचै काल्–वेगवान पवन; किळर्न्तु–उठकर; ऍऱिवु उरुम्–सबको (जब) उड़ा देता है; कटै नाळ्–उस युगान्त के दिन में; विलङ्कल् मेरुवुम्–मेरुपर्वत भी; वेर् पऱिन्ताल् ऍन्न–जड़ से उखड़ गया हो, ऐसा; वीऴ्न्तान्–नीचे गिरा। २९०

शर के लगने से वह निर्दय वाली गिरा जिसने भुजबल खोकर कष्टग्रस्त अपने भाई को कठोर भूमि पर पटकना चाहा। वह बलवान योद्धा था। वह वाली चक्कर खाकर ऐसा गिरा, मानो युगान्त में, प्रबल रूप से उठकर सभी जीवों व पदार्थों को उखाड़ देनेवाले पवन के आघात से जड़ से उखड़कर मेरुपर्वत गिरा हो। २९०

ऍऴुन्दु वान्मुह डिडित्तुहप् पडुप्पलॆन् ऱिवरुम्
उऴुन्दु पेर्वुऴित् तिशैतिरिन् दिरुप्पलॆन् ऱुरुक्कुम्

विळुन्दु पारितै वेरोडुम् पऱिप्पलॆन् ऱोरुम्
अळुन्दु मिच्चर मॆय्दव नार्हॊलॆन् ऱयिर्क्कुम् 291

ऍळुन्दु–उठकर; वान् मुकटु–आकाश-शिखर को; इटित्तु–धक्का देकर; उक पट्टुप्पल् ऍन्ऱु–गिरा दूंगा, कहते हुए; इवरुम्–ऊपर उठता; उळुन्दु पेर्वु उळि–उड़द के लुढ़कने की देर में; तिचै तिरिन्दु–चारों दिशाओं में घूमकर; इऱुप्पल् ऍन्ऱु–तोड़-फोड़ डालूंगा, कहते हुए; उरुक्कुम्–कोप दिखाता; विळुन्दु–नीचे झपटकर; पारितै–भूमि को; वेर् ऑटुम्–जड़ के साथ; पऱिप्पल्–उखाड़ लूंगा; ऍन्ऱु ओरुम्–यह सोचता; अळुन्दुम्–गड़नेवाला; इ चरम्–यह शर; ऍय्तवन्–चलानेवाला; आर् कॊल्–कौन है तो; ऍन्ऱु–ऐसा; अयिर्क्कुम्–सन्देह करता। २६१

वाली सँभलकर उठा। फिर 'आकाश की चोटी को धक्का देकर गिरा दूंगा' यह कहते हुए उठता। 'उड़द के एक बार घूमने के समय के अन्दर ही सारी दिशाओं में घूमकर सारी वस्तुओं को तोड़-फोड़कर मिटा दूंगा' —ऐसा कहकर अपना गुस्सा दिखाता। 'झपटकर इस भूमि को जड़ से खोद दूंगा' —ऐसा विचार करता। फिर संशय उठाता कि इस तरह मेरी छाती में गड़नेवाले शर का प्रेरक कौन होगा ? । २९१

ऍऱ्ऱुङ् गैयितै निलत्तोडु मॆरिप्पॊऱि पिऱक्कच्
चुऱ्ऱु नोक्कुरुञ् जुडुशरत् तैत्तुणैक् करत्ताल्
पऱ्ऱि वालिनुम् कालिनुम् पल्लिनुम् बऱिप्पात्
उऱ्ऱी णामैयि तुलैवुरु मलैयॆत वुरुळुम् 292

कैयितै–हाथ को; निलत्तोटु–भूमि पर; ऍऱ्ऱुम्–पीटता; ऍरि पॊऱि–अंगारे; पिऱक्क–छितराते हुए; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; नोक्कुरुम्–देखता; चुटु चरत्तै–जलानेवाले उस शर को; तुणै करत्ताल्–दोनों हाथों से; पऱ्ऱि–पकड़कर; वालितुम् कालितुम् पल्लितुम्–पूंछ से, पैरों से और दाँतों से; पऱिप्पात्–उखाड़ता; उऱ्ऱु–उखाड़ते; ऑणामैयित्–न उखड़ने पर; उलैवु उरुम्–दुःखी होता; मलै ऍन–पर्वत के समान; उरुळुम्–लोटता। २६२

(क्षोभ और क्रोध की दशा में) वह हाथ से धरती को पीटता। आँखों से अंगारे निकालते हुए चारों ओर दृष्टि दौड़ाता। जलानेवाले उस शर को वह पूंछ, हाथों और दाँतों से पकड़कर बाहर खींचने का प्रयास करता। पर उस काम को असाध्य पाकर खीझ उठता। पर्वत के समान भूमि पर लोटता। २९२

दॆव रोवॆन वयिर्क्कुमत् तेवरिच् चॆयलुक्
काव रोववर्क् काऱ्ऱलुण् डोवॆनु मयलोर्
एव रोवॆत नहैशॆयु मौरुवतै यिऱैवर्
मूव रोडुमॊप् पात्तॆय लामॆत मुतियुम् 293

तेवरो–क्या देव हैं; अॅऩ्–ऐसा; अयिर्क्कुम्–संशय करता; अ तेवर्–वे देव; इ चॅयलुक्कु–इस काम के लिए; आवरो–(योग्य) होंगे क्या; अवर्क्कु–उनमें; आऱ्ऱल् उण्टो–शक्ति है क्या; अॅऩुम्–पूछता; अयलोर्–दूसरे; एवरो अॅऩ्–कौन हैं, कहकर; नकै चॅयुम्–हँस उठता; इऱैवर् मूवरोटुम्–तीनों देवों की; ऑप्पाऩ्–समानता करनेवाले; ऑरुवऩ्–उन अकेले देव का; चॅयल् आम्–काम है; अॅऩ्–कहकर; मुऩियुम्–कुपित होता। २६३

उसे सन्देह हुआ कि क्या देवों ने यह शर चलाया होगा ? पर क्या देवता लोग ऐसा काम करने को सम्मत होंगे ? उनमें शक्ति भी है ? फिर दूसरे कौन होंगे ? वह हँस उठता। फिर सोचता कि त्रिदेवों के समान बल रखनेवाले, अपार महिमावान, किसी अद्वितीय देव ने ही किया होगा ! यह सोचकर वह कोपवश हो जाता। २९३

नेमि दाऩ्कॉलो नीलहण् डऩ्ऩॅडुञ् जूलम्
आमि दाङ्गॉलो वऩ्ऱॅऩिऱ् कुऩ्ऱुरु वयिलुम्
नाम विऩ्दिरऩ् वच्चिरप् पडॅयुमॅऩ् ऩडुवण्
पोमॅ ऩुऩ्दुणॅप् पोदुमो यादॅऩप् पुऴुङ्गुम् 294

नेमि ताऩ् कॉलो–चक्रायुध (सुदर्शन) ही है क्या; नीलकण्टऩ्–नीलकंठ शिवजी का; नॅटु चूलम्–लम्बा त्रिशूल; इतु आम् कॉलो–यह है क्या; अऩ्ऱु अॅऩिल्–नहीं तो; कुऩ्ऱु उरुवु–(क्रौंच-) पर्वत भेद जो गया; अयिलुम्–(कार्तिकेय की) शक्ति भी; इऩ्तिरऩ्–इन्द्र का; नाम–भयानक; वच्चिर पटॅयुम्–वज्रायुध भी; अॅऩ् नटुवण्–मेरे बीच से; पोम् अॅऩुम्–जायँ ऐसा; तुणॅ–उतना; पोतुमो–(सशक्त) बने हैं क्या; यातु–कौन सा है; अॅऩ्–यह सोचकर; पुऴुङ्कुम्–व्याकुल होता। २६४

'यह जो मेरी छाती को विद्ध कर रहा है, क्या महाविष्णु का सुदर्शन चक्रायुध है ? या नीलकण्ठ शिवजी का लम्बा त्रिशूल है ? नहीं तो क्रौंच पर्वत को जिसने वेधा, वह कार्तिकेय की शक्ति हो या इन्द्र का भयानक वज्रायुध हो, वे मेरे शरीर के मध्य में भेदकर नहीं जा सकेंगे। यह कौन सा है ?' ऐसा सोचते हुए वाली व्याकुल हुआ। २९४

विल्लि ऩाऱ्ऱुरप् परिदिव्वॅञ् जरमॅऩ वियक्कुम्
शॉल्लि ऩाऩॅडु मुऩिवरो तूण्डिऩा रॅऩ्ऩुम्
पल्लि ऩाऱ्पऱिप् पुरुम्बल हालुऩ्दऩ् ऩुरत्तैक्
कल्लि यार्प्पॉडु परिक्कुमप् पहऴियैक् कण्डाऩ् 295

तऩ् उरत्तै–अपनी छाती को; कल्लि–छेदकर; आर्प्पु ऑटु–शब्द के साथ; परिक्कुम्–घुस जो रहा; अ मकऴियै–उस बाण को; कण्टाऩ्–देखकर; इ वॅम् चरम्–यह सन्तापक शर; विल्लिऩाल्–धनु द्वारा; तुरप्पु अरितु–प्रेषणीय नहीं है; अॅऩ् वियक्कुम्–ऐसा विस्मय करता; चॉल्लिऩाल्–अपने (अमोघ) शब्दों से; नॅटु मुऩिवरो–महर्षियों ने; तूण्टिऩार्–प्रेरित किया क्या; अॅऩ्ऩुम्–सोचता; पल कालुम्–

अनेक बार; पल्लिन्नाल्-अपने दाँतों से; पर्रिप्पुरुम्-(काट) निकालने का प्रयास करता। २६५

फिर उसने बाण को देख लिया जो उसके कठोर वक्ष को बड़े शब्द के साथ भेद रहा था। उसे आश्चर्य हुआ कि क्या यह बाण किसी धनु द्वारा प्रेषित भी किया जा सकता है? उसने विचार किया कि क्या महर्षियों ने अपने अमोघ (मन्त्र-) वचन से इसे प्रेरित किया? अनेक बार उसने अपने दाँतों से बाहर खींच लेने का प्रयास किया। २९५

शरमॅ नुम्बडि तॅरिन्ददु पलपडच् चलित्तॅन्
उरमॅ तुम्बद मुयिरोडु मुरुविय वॊत्रॅक्
करम्ि रण्डिनुम् वालिनुङ् गालिनुङ् गळर्रिप्
परम नन्नवन् पॅयररि हुवॅन्नॅनप् पर्रिप्पान् 296

चरम् ॲनुम् पटि तॅरिन्ततु-शर है, ऐसा मालूम हो गया; पल पट-अनेक प्रकार से; चलित्तु ॲन्-चंचल होने से क्या (लाभ); उरम् ॲनुम् पतम्-वक्ष नाम के स्थान को; उयिर् ऑटुम्-मेरे प्राणों के साथ; उरुविय ऑत्रै-भेद जानेवाले इस अद्वितीय शर को; करम् इरण्टिलुम्-दोनों हाथों से; वालिनुम्-पूँछ से; कालिनुम्-व पैरों से; कळर्रि-अपनी छाती से निकालकर; परमन्-बड़े ही श्रेष्ठ; अन्नवन्-उस (चलानेवाले) का; पॅयर्-नाम; अरिकुवॅन्-जान लूँगा; ॲन-सोचकर; परिप्पान्-निकालने लगा। २६६

वाली ने कुछ निश्चय किया। 'यह मालूम हो गया कि यह बाण है। तब अनेक प्रकारों से चंचल होने से क्या लाभ होगा? यह शर मेरी छाती को मेरी जान के साथ भेदकर चल रहा है! इस अपूर्व शर को मैं अपनी पूँछ और पैरों का उपयोग करके बाहर खींच लूँगा और उसका नाम देख लूँगा जो परमवीर लगता है।' यह निश्चय करके वह उस बाण को खींचने लगा। २९६

ओङ्ग रुम्पॅरुन् दिर्लुडै मनत्तनुळ् ळत्तन्
वाङ्गि नान्मर्रव् वाळियै याळिपोल् वालि
आङ्गु नोक्किन रमररु मवुणरुम् पिर्रुम्
वीङ्गि नार्हडोळ् वीररै यार्विय वादार् 297

याळि पोल्-'याळी' (नामक भयंकर जानवर) की तरह; वालि-वाली ने; ओङ्कु-वर्धनशील; अरुम् पॅरुम्-अपूर्व, बड़ा; तिरल् उटै-बलसंयुक्त; मनत्तन्-मन वाला; उळ्ळत्तन्-जीवट का (जो था); अ वाळियै-उस बाण को; वाङ्कितान्-जोर से पकड़ लिया; आङ्कु नोक्किनर्-वहाँ देखा; अमररुम्-देवों और; अवुणरुम्-दानवों और; पिर्रुम्-अन्यों ने; तोळ् वीङ्कितार्कळ्-उनके कन्धे (विस्मय और गर्व से) फूल उठे; वीररै-वीरों की; वियवातार-प्रशंसा न करनेवाले; यार्-कौन हैं। २६७

वाली 'याळी' (बहुत ही बलवान अप्राप्य या कल्पित जानवर) के समान बलिष्ठ था। मन का भी बहुत बड़ा साहसी था। बड़ा ही जीवट का था। उसने उस बाण को पकड़कर आगे जाने से रोक दिया। यह बड़ा ही वीरता का काम था। देवों, दानवों और अन्यों ने उसे देखा तो उनकी भुजाएँ भी फूल उठीं। उनके मन में उतनी उमंग भर गयी। हाँ! वीरों को देखकर कौन विस्मय और उमंग से नहीं भरता ? । २९७

⁂ वाशत् तारवऩ् मार्बॆऩ्ऩु मलैवऴङ् गरुवि
ओशैच् चोरियै नोक्किऩ तुडऩ्पिऱप् पॆऩ्ऩुम्
पाशत् तार्पिणिप् पुण्डवऩ् तम्बियुम् बशुङ्गण्
नेशत् तारैहळ् शोरितर नॆडुनिलञ् जेर्न्दाऩ् 298

वाचम् तार्–सुबासित माला; अवऩ्–(पहने हुए) उसके; मार्पु ऍऩुम्–वक्ष रूपी; मलै वऴङ्कु–पर्वत से निःसृत; अरुवि–सरिता-सदृश; ओचै चोरियै–शब्दायमान रक्त को; उटऩ् पिऱप्पु–सहोदर के; ऍऩ्ऩुम्–उस; पाचत्ताल्–पाश से; पिणिप्पु उण्ट–बद्ध; अ तम्पियुम्–वह भाई (सुग्रीव) भी; नोक्किऩऩ्–देखकर; पचुम् कण्–स्नेहार्द्र आँखों से; नेच तारैकळ्–प्रेम के आँसू; चोरि तर–बहाते हुए; नॆटु निलम् चेर्न्ताऩ्–लम्बी धरती पर गिरा। २९८

सुवासित मालाधारी वाली का वक्ष पर्वत के समान था। उससे रक्त की सरिता बह चली। शोर के साथ बहनेवाले रक्त को सुग्रीव ने देखा। वह सहोदर-प्रेम के पाश से बद्ध था। उसकी प्रेमार्द्र आँखों से बलात् भ्रातृस्नेह-जनित आँसू की धाराएँ बहने लगीं और वह धरती पर लम्बा व चित गिर गया। २९८

⁂ पऱित्त वाळियैप् परुवलित् तडक्कैयाऱ् पऱ्ऱि
इऱुप्पॆ ऩॆऩ्ऱुहॊण् डॆऴुन्दऩऩ् मेरुवै यिरण्डाय्
मुऱिप्पॆ ऩॆऩ्ऩिऩू मुऱिवदऩ् ऱामॆऩ मॊऴियाप्
पॊऱित्त नामत्तै यऱिहुवा ऩोक्किऩऩ् पुहऴोऩ् 299

पऱित्त वाळियै–(अन्दर) धँसते हुए उस बाण को; परु वलि–अधिक बली; तट कैयाल्–विशाल हाथ से; पऱ्ऱि–पकड़कर; इऱुप्पॆऩ्–तोड़ूँगा; ऍऩ्ऱु कॊण्टु–कहते हुए; ऍऴुन्तऩऩ्–उठा; मेरुवै–मेरु को; इरण्टाय्–दो (टुकड़ों) में; मुऱिप्पॆऩ् ऍऩ्ऩिऩुम्–तोड़ सकता हूँ, तो भी; मुऱिवतु अऩ्ऱु आम्–यह टूटनेवाला नहीं है; ऍऩ्ऱु मॊऴिया–ऐसा कहते हुए; पुकऴोऩ्–स्तुत्य वाली; पॊऱित्त–अंकित; नामत्तै–नाम को; अऱिकुवाऩ्–जानने के लिए; नोक्किऩऩ्–देखा। २९९

वाली ने बाण को बाहर निकाल दिया। 'मैं अपने बहुत ही बलवान और विशाल हाथों से उसे पकड़कर तोड़ दूँगा' —यह विचार करके उठा। पर उसे कहना पड़ा कि मेरु को भी दो खण्डों में तोड़ सकता हूँ। पर इसको

तोड़ना असाध्य है। यह कहते हुए उसने उसमें अंकित नाम को जानने के लिए उस पर दृष्टि चलायी। २९९

❀ मुम्मैशा लुलहुक् कॅल्ला मूलमन् दिरत्तै मुऱ्ऱुम्
तम्मैये तमक्कु नल्हुन् दतिप्पॅरुम् बदत्तैत् ताने
इम्मैये मरुमै नोय्क्कु मरुन्दिनै यिराम वॅन्नुम्
शॅम्मैशेर् नामन् दन्नैक् कण्गळिऱ् ऱॅरियक् कण्डान् 300

मुम्मै चाल्–त्रिविध; उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे लोकों के; मूल मन्तिरत्तै–मूल मन्त्र को; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तमक्कु–उनके भक्तों को; तम्मैयै नल्कुम्–नामी को ही दिलानेवाले; तनि पॅरुम् पतत्तै–अद्वितीय श्रेष्ठ पद को; ताने–स्वयं; इम्मैये मऱुमै नोय्क्कुम्–इह-पर भवरोग के; मरुन्तिनै–औषध को; इराम ऍन्नुम्–राम के; चॅम्मै चेर्–महान; नामम् तन्नै–नाम को; कण्कळिल्–आँखों से; तॅरिय–स्पष्ट रूप से; कण्टान्–देखा। ३००

(वहाँ वाली ने क्या नाम देखा ?) त्रिविध, भूमि, मध्य और पाताल के लोकों का आधार मन्त्र; भक्तों को पूर्णतः अपने (नामी) को दिला देनेवाला विशिष्ट अद्वितीय शब्द; इह-पर के भवरोग का श्रेष्ठ औषध; राम का महिमामय नाम —इसको वाली ने साफ़-साफ़ अपनी आँखों से देखा। ३००

❀ इल्लऱन् दुऱन्द नम्बि यॅम्मनोर्क् काहत् तङ्गळ्
विल्लऱन् दुऱन्द वीरन् ऱोन्ऱलाल् वेद नन्नूल्
शॊल्लऱन् दुऱन्दिलाद सूरियन् मरबुन् दॊल्लै
नल्लऱन् दुऱन्द दॅन्ना नहैवर नाणुक् कॊण्डान् 301

इल्लऱम्–गृहस्थ धर्म के; तुऱन्त–त्यागी (जो वन में आये हैं); नम्पि–नायक; ऍम्मनोर्क्कु आक–हम लोगों के लिए; तङ्कळ्–अपना; विल् अऱम्–धनु-धर्म; तुऱन्त–त्यागी; वीरन्–वीर; तोन्ऱलाल्–अवतार से; वेतम् नल् नूल्–वेदों के श्रेष्ठ शास्त्रों में; चॊल्–प्रतिपादित; अऱम्–धर्म; तुऱन्तिलात–जिसने नहीं त्यागा; चूरियन् मरपुम्–उस सूर्यकुल ने भी; तॊल्लै नल् अऱम्–प्राचीन सद्धर्म; तुऱन्ततु–त्याग दिया; ऍन्ना–सोचकर; नकै वर–हँसी के आने से; नाणु कॊण्टान्–शरम खायी। ३०१

(वाली सोचने लगा।) घर-बार छोड़कर वन में आये हुए श्रीराम हम जैसे वानरों के कार्य में अपने धनु-धर्म को त्याग चुके —ऐसे वीर श्रीराम के जन्म लेने से वेदशास्त्र-विहित धर्ममार्ग से न हटनेवाला सूर्यवंश भी सनातन सद्धर्म छोड़नेवाला हो गया। उसे हँसी आयी। और शरम का अनुभव हुआ। ३०१

❀ वॆळ्हिडु महुडञ् जाय्क्कुम् वॅङ्गिपडच् चिरिक्कु मीट्टुम्
उळहिड मिडुवन् दान्नो रोङ्गङ मोवॅन् ऱुत्तम्

मुळ्हिडुङ् गुऴियिर् पुक्क मूरिवॆङ् गळिनल् यानै
तॊळ्हीडुङ् गिडन्द वॆन्नत् तुयरुऴन् ऱऴिन्दु शोर्वान् 302

वॆळ्किट्टुम्–शरम का अनुभव करता; मकुटम्–किरीट को (सिर को); चाय्क्कुम्–झुकाता; वॆंटि पट–ठठाकर; चिरिक्कुम्–हँसता; मीट्टुम्–फिर; उळ्किट्टुम्–चिन्तामग्न होता; इतुवुम्–यह भी; ओर्–एक; ओङ्कु–उत्कृष्ट; अऱम् तान्तो–धर्म है क्या; ऍन्ऱु उन्नुम्–ऐसा सोचता; कुऴियिल् पुक्क–एक गड्ढे में गिरा हुआ; मूरि-बलवान; वॆम्–भयंकर; कळि नल् यानै–मत्त, श्रेष्ठ हाथी; मुळ्किट्टुम्–अन्दर खींचनेवाले; तॊळ्कु ऒट्टुम्–पंक में; किटन्तत्तु ऍन्न–फँस गया हो, ऐसा; तुयर् उऴन्ऱु–दुःख में पड़कर; अऴिन्तु–बल खोकर; चोर्वान्–थक जाता। ३०२

वाली शरम का अनुभव करता; किरीट (सिर) को झुकाता; ठठाकर हँसता। फिर गम्भीर रूप से चिन्तामग्न हो जाता। सोचने लगता कि क्या यह भी एक श्रेष्ठ धर्म है! गड्ढे में पंक में पड़कर धँसनेवाले सबल भयंकर और मत्त गज के समान वह दुःखी होकर छटपटाया, बल खोकर बहुत शिथिल हो गया। ३०२

❀ इऱैदिऱम् बिनन्ना लॆन्ने यिऴिन्दुळो रियऱ्कै यन्नित्
मुऱैदिऱम् बिनन्ना लॆन्ऱु मॊऴिहिन्ऱ मुहत्तान् मुन्नर्
मऱैदिऱम् बाद वाय्मै मन्नर्क्कु मनुविर् चॊल्लुम्
तुऱैदिऱम् बामर् काक्कत् तोन्ऱितान् वन्दु तोन्ऱ 303

इऱै तिऱम्पित्तन्–राजा धर्मच्युत हो गये; आल्–इसलिए; इऴिन्तुळोर्–नीच लोगों की; इयऱ्कै–स्थिति; ऍन्ने–क्या होगी; ऍन्निन्–मेरे सम्बन्ध में; मुऱै तिऱम्पित्तनाल्–तो क्रम-भंग कर दिया है; ऍन्ऱु–ऐसा; मॊऴिकिन्ऱ–आपसे आप बोलते रहनेवाले; मुकत्तान् मुन्नर्–मुख के वाली के सामने; वाय्मै–सच्चे; मन्नर्क्कु–राजाओं के लिए; मनुविल् चॊल्लुम्–मनु में कथित; मऱै–वेद-विचार के; तिऱम्पात–विपरीत जो न जाते थे; तुऱै–उन मार्गों की; तिऱम्पामल्–नष्ट न होने देते हुए; काक्क–रक्षा करने के हेतु; तोन्ऱितान्–अवतरित श्रीराम; वन्तु तोन्ऱ–उसके सामने आये, तब। ३०३

स्वयं राजाराम ने धर्ममार्ग छोड़ दिया, तो नीच लोगों की क्या हस्ती है? वह भी राजाराम ने मेरे सम्बन्ध में क्रम-भंग कर दिया है! वाली यों आप से आप कह ही रहा था कि उसके सामने श्रीराम आ प्रकट हुए। ये श्रीराम मनु-शास्त्र में राजाओं के सम्बन्ध में निर्दिष्ट वेदतत्त्व के विपरीत न चलने का क्रम सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुए थे। ३०३

❀ कण्णुऱ्ऱान् वालि नीलक् कार्मुहिल् कमलम् बूत्तु
मण्णुऱ्ऱु वरिवि लॆन्दि वरुवदे पोलु मालॆप्
पुण्णुऱ्ऱ निऱत्तिऱ् चोरि पॊङ्गिये पॊडिप्प नोक्कि
ऍण्णुऱ्ऱा यॆन्शॆय् दायॆन् ऱेशुवा नियम्ब लुऱ्ऱान् 304

नीलम् कार् मुकिल्–काला वर्षाकालीन मेघ; कमलम् पूत्तु–विकसित कमल धारण करके; वरि विल् एन्ति–सबन्ध धनुष लेकर; मण् उऱ्ऱु–भूमि पर आकर; वरुवते पोलुम्–आता हो जैसे; माले–महाविष्णु को; कण् उऱ्ऱान् वालि–आँखों से देखकर वाली; पुण् उऱ्ऱ–व्रणयुक्त; निऱत्तिल्–छाती से; चोरि–रक्त; पोङ्किये–उमड़कर; पोटिप्प–उठा, उस स्थिति में; नोक्कि–देखकर; ॲन्न् (ॲण्) उऱ्ऱाय्–क्या सोचा; ॲन् चॅय्ताय्–क्या किया; ॲन्ऱु–ऐसा; एचुवान्–भर्त्सना देते हुए; इयम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ३०४

वाली ने श्रीराम को देखा, जो एक काले वर्षाकालीन मेघ के समान थे। उस मेघ में कमल खिले थे। वह धनुष लिये हुए धरती पर आ रहा था। वाली की छाती के व्रण से रक्त उमड़ आ रहा था। वाली ने श्रीराम से पूछा कि क्या सोचा और क्या किया है तुमने ? वह और भी उन्हें भर्त्सना देने लगा। ३०४

❀ वाय्मैयु मरबुङ् गात्तु मन्नुयिर् तुऱन्द वळ्ळल्
तूय्मैयन् मैन्द नेनी बरदन्मुन् ऱोन्ऱि नाये
तोमैतान् पिऱरैक् कात्तुत् तान्शॅय्दाऱ् ऱीदन् ऱामो
ताय्मैयु मऱैयुम् नट्पुन् दरुममुन् दळुवि निन्ऱाय् 305

ताय्मैयुम्–मातृवत्सलता; मऱैयुम्–और वेदसम्मत बर्ताव; नट्पुम्–और मैत्री; तरुममुम्–और धर्म; तळुवि निन्ऱाय्–इनको अपनाये रहनेवाले; वाय्मैयुम्–सत्य और; मरपुम्–कुलाचार का; कात्तु–पालन कर; मन् उयिर् तुऱन्त–अपने नित्य प्राण जिन्होंने छोड़े थे; वळ्ळल्–उन दानी; तूय्मैयन्–और पवित्र पुरुष दशरथ के; मैन्तते–पुत्र; नी–तुम; परतन् मुन्–भरत के पहले; तोन्ऱिनाये–(अग्रज के रूप में) पैदा हो गये; तीमै–बुराई; पिऱरै कात्तु–दूसरों से बचाकर; तान् चॅय्ताल्–वह खुद करे तो; तीतु अन्ऱु आमो–(बुराई) बुराई नहीं रहेगी क्या। ३०५

मातृवत्सलता, वेदमार्ग, मैत्री, धर्म आदि को अपनाए रहनेवाले श्रीराम! दशरथ सत्य और अपने कुल के आचार का सम्यक् पालन करके उसी के अर्थ अपने प्राण भी त्याग चुके। ऐसे दानी और पवित्र दशरथ के पुत्र! तुम कैसे भरत के अग्रज हो पैदा हुए ? दूसरों को बुराई करने से रोको और स्वयं बुराई करो तो वह बुराई, बुराई नहीं रहेगी क्या ? । ३०५

कुलमिदु कल्वि यीदु कॊऱ्ऱमी दुऱ्ऱु निन्ऱ
नलमिदु बुवन मून्ऱिन् नायह मीदु निन्ऱोळ्
वलमिदिव् वुलहन् दाङ्गुम् वण्मैयी दॅन्ऱाऱ् ऱिण्मै
अलमरल् शॅय्य लामो वरिन्दिरुन् दयरन्दु ळार्पोल् 306

इतु कुलम्–यह तुम्हारा कुल है; कल्वि ईतु–तुम्हारी विद्या यह है; कॊऱ्ऱम् ईतु–विजय यह है; उऱ्ऱु निन्ऱ–तुम्हारे जन्मसिद्ध; नलम्–अच्छे गुण; इतु–ये हैं; पुवनम् मून्ऱिन्–तीनों लोकों का; नायकम् ईतु–नायकत्व यह है; निन् तोळ् वलम् इतु–तुम्हारा भुजबल यह है; इ उलकम् ताङ्कुम्–यह संसार-भरण करने की; वण्मै

ईतु–वदान्यता यह है; अॅन्ऱाल्–तो; अऱिन्तिरुन्तु–जानते हुए भी; अयर्न्तु उळार् पोल्–भ्रान्त के समान; तिण्मै अलमरल्–गुण-दृढ़ता में चंचलता लाना; चॅय्यलामो–कर सकते हो क्या। ३०६

(सारा संसार तुम्हारी प्रशंसा करता है कि) इनका कुल यह (उत्कृष्ट); विद्या ऐसी; विजय यह; इन्हें प्राप्त अच्छे गुण ये हैं। तीनों भुवनों का नायकत्व यह जो इनका है। इनका भुजबल ऐसा। भुवन का गोप्तृत्व यह। तो यह सब जानते हुए भी मोहित मनुष्य के समान ऐसी दृढ़ता को अस्थिर करा देना क्या तुम्हें शोभा देगा ? । ३०६

❀ कोवियऱ् ऱरुम मुङ्गळ् कुलत्तुदित् तोर्हट् कॅल्लाम्
ओवियत् तॅळुद वॊण्णा वुरुवत्ता युडैमै यन्ऱो
आवियैच् चनहन् पॅऱ्ऱ वन्नत्तै यमिऴ्दिन् वन्द
देवियैप् पिरिन्द पिन्नैत् तिहैत्तनै पोलुञ् जॅय्है 307

ओवियत्तु अॅऴुत ऑण्णा–आपका चित्र न बन सके, ऐसे; उरुवत्ताय्–अपार रूप वाले; को इयल् तरुमम्–राजधर्म; उङ्कळ् कुलत्तु–तुम्हारे कुल में; उतित्तोर्कट्कु अॅल्लाम्–उत्पन्न सभी की; उटैमै अन्ऱो–सम्पत्ति है न; आवियै–प्राण (-समाना) सीता को; चतकन् पॅऱ्ऱ–जनक की जनायी गयी; अन्नत्तै–हंसिनी देवी को; अमिऴ्तिन् वन्त–अमृत के समान तुम्हारे पास आयी हुई; तेवियै–देवी को; पिरिन्त पिन्नै–छोड़ने के बाद; चॅय्कै–काम में; तिकैत्तनै पोलुम्–अस्त-व्यस्त हो गये शायद। ३०७

हे ऐसे रूपवान, जिसका चित्र नहीं बन सकता ! राजधर्मपालन तुम्हारे कुल में उत्पन्न सभी का धन है ! (फिर तुमने उसका भंग क्यों किया ?) प्राण-सम, जनकदुहिता हंसिनी-सी, अमृततुल्य सीतादेवी के वियोग के बाद तुम्हारा मन भ्रमित और कार्य अस्थिर हो गया है क्या ? । ३०७

❀ अरक्कन्नो रऴिवु शॅय्दु कऴिवन्ने लदऱ्कु माऱोर्
कुरक्कर शदन्नैक् कॊल्ल मनुनॆऱि कूऱिऱ् ऱुण्डो
इरक्कमॆङ् गुहुत्ता यॆन्बा लॅप्पिऴै कण्डा यप्पा
परक्कऴि विदुनी पूण्डाऱ् पुहऴैयार् परिक्कर् पालार् 308

अरक्कन्–राक्षस रावण; ओर् अऴिवु चॅय्तु–एक हानि करके; कऴिवतेल्–चला जाय तो; अतऱ्कु माऱु–उसके प्रीतिकार में; ओर् कुरक्कु अरचु अतन्नै–एक वानरराज को; कॊल्ल–मारने को; मत नॆऱि–मनु-धर्म ने; कूऱिऱ्ऱु उण्टो–कहा है क्या; इरक्कम्–दया को; ऍङ्कु–कहाँ; उकुत्ताय्–गिरा दिया; ऍन् पाल्–मुझमें; ऍ पिऴै–कौन सा अपराध; कण्टाय्–देखा; इतु परक्कऴिवु–यह बड़ा अपयश; नी पूण्टाल्–तुम धारण करो तो; पुकऴै–यश को; यार्–कौन; परिक्कल् पालार्–भरण करने योग्य रहेंगे। ३०८

(क्या ही विचित्र विडम्बना है !) राक्षस कोई हानि कर गया तो

दूसरे वानरराज को मारने की आज्ञा मनुधर्म देता है क्या ? दया तुमने कहाँ छोड़ी ? मुझमें क्या अपराध देखा ? यह बड़ा अपयश है ! अगर तुम अपयश धारण कर लोगे तो यश का पात्र कौन बन सकेगा ? रे बाप ! । ३०८

ऑलिहड लुलहन् दन्नि लूर्दरु कुरङ्गिन् माडे
कलियद्रु कालम् वन्दु कलन्ददो करुणै वळ्ळाल्
मॅलियवर् पाल देयो विळुप्पमु मॊळुक्कन् दानुम्
वलियवर् मॅलिवु शॅय्दार् पुहळन्द्रि वशैयु मुण्डो 309

करुणै वळ्ळाल्–करुणा-दानी; ऑलि कटल्–शब्दायमान समुद्रवसना; उलकम् तन्निल्–लोक में; ऊर् तरु–रेंगनेवाले; कुरङ्किन् माटे–वानरों के हक में ही; कलि अतु कालम्–कलि (नाशक) काल; वन्तु कलन्ततो–आ मिल गया क्या; विळुप्पमुम्–सभ्यता और; ऑळुक्कम् तानुम्–सदाचरण; मॅलियवर् पालतेयो–निर्बलों के लिए ही विहित हैं क्या; वलियवर्–बलवान; मॅलिवु चॅय्ताल्–नीच काम करें; पुकळ् अन्रि–यश के सिवा; वचैयुम् उण्टो–निन्दा (नहीं) होगी (शायद) क्या । ३०९

अपरिमित दयावान ! शब्दायमान समुद्रमध्य स्थित भूलोक में क्या रेंगते चलनेवाले वानरों पर ही कलि (नाश का) काल आ छा गया ? सभ्यता (श्रेष्ठता) सदाचार आदि निबलों के लिए ही विहित हैं ? बलवान लोग नीच काम करें तो यश मिलेगा और भर्त्सना नहीं होगी न ? । ३०९

कूट्टॊरु वरैयुम् वेण्डाक् कॊऱ्ऱव पॅऱ्ऱ तादै
पूट्टिय शॅल्व माङ्गोर् तम्बिक्कुक् कॊडुत्तुप् पोन्दु
नाट्टॊरु करुमञ् जॅय्दाय् यॅम्बिक्किव् वरशै नल्हिक्
काट्टॊरु करुमञ् जॅय्दाय् करुमन्दा निदन्मे लुण्डो 310

कूट्टु–सहायक; ऑरुवरैयुम्–किसी की; वेण्टा–अपेक्षा नहीं करनेवाले; कॊऱ्ऱव–विजयराघव; पॅऱ्ऱ तातै–जनक ने; पूट्टिय चॅल्वम्–जो सम्पत्ति दिलायी; आङ्कु–उसे वहाँ; ओर्–श्रेष्ठ; तम्पिक्कु–भाई को; कॊट्टुत्तु–देकर; पोन्तु–जाकर; नाट्टु–जनपद में; ऑरु करुमम् चॅय्ताय्–एक (अनोखा) कार्य किया; ऍम्पिक्कु–मेरे भाई को; इ अरचै–इस राज्य को; नल्कि–देकर; काट्टु–जंगल में; ऑरु करुमम् चॅय्ताय्–एक कार्य किया; इतन् मेल्–इससे बड़ा; करुमम् तान् उण्टो–कर्म कोई होगा क्या । ३१०

किसी दूसरे की सहायता की अपेक्षा न करनेवाले विजयी ! तुम्हारे जनक ने तुम्हें स्वत: जो सम्पत्ति दी, उसे तुमने अपने श्रेष्ठ भाई को देकर जनपद में एक अनोखा कार्य कर दिखाया । फिर मेरे भाई को यह राज्य देकर यहाँ जंगल में एक कार्य किया । इससे बढ़कर कोई काम हो सकता है क्या ? । ३१०

अऱ्रैहुळ ललङ्गल् वीरर्क् कडुत्तदे पुरिव दाण्मैल्
तुरैयॅन लायिऱ् ऱन्ऱे तॊन्मैयि नन्नूर् कॅल्लाम्
इऱैवनी यॆन्नैच् चॆय्द तीदॆनि लिलङ्गै वेन्दै
मुरैयल शॅय्दा नॆन्ऱु मुनिदियो मुनिवि लादाय् 311

मुनिवु इलाताय्–क्रोधविहीन; अऱै कऴल्–शब्द करनेवाली पायल के धारक; अलङ्कल्–मालाधारी; वीरर्क्कु–वीरों के लिए; अटुत्तते–योग्य (काम) ही; पुरिवतु–करना; आण्मै तुऱै ॲन्ऩल्–पुरुषोचित काम कहना; आयिऱ्ऱु अन्ऱे–होता है न; तॊन्मैयित्–प्राचीन; नल् नूऱ्कु–श्रेष्ठ शास्त्रों के; ॲल्लाम्–सबके; इऱैवन् नी–नायक तुमने; ॲन्नै चॆय्ततु ईतु–मेरे प्रति जो किया, यह; ॲनिल्–तो; इलङ्कै वेन्तै–लंकापति से; मुऱै अल–अनुचित काम; चॆय्तान् ॲन्ऱु–किया, ऐसा; मुनितियो–गुस्सा करोगे क्या। ३११

हे क्रोधविहीन राम ! शब्द करती रहनेवाली पायलधारी वीर के लिए योग्य काम करना ही पुरुषोचित माना जायगा न ? तुम सभी प्राचीन शास्त्रों के नायक हो ! तुमने यह काम कर दिया; फिर लंकापति के सम्बन्ध में 'अनुचित व्यवहार किया' कहकर कोप करोगे क्या ? । ३११

इरुवर्पो रॆदिरुङ् गालै यिरुवरु नल्लुऱ् ऱारे
ऑरुवर्मेऱ् करुणै तूण्ड वॊरुवर्मे लॊळित्तु निन्ऱु
वरिशिलै कुऴैय वाङ्गि वायम्बु मरुमत् तॆय्दल्
तरुममो पिऱिदॊन् ऱामो तक्किल दॆन्नुम् बक्कम् 312

इरुवर्–दो; पोर् ॲतिरुम् कालै–युद्ध में परस्पर जब लड़ते हैं तब; इरुवरुम्–दोनों; नल् उऱ्ऱारे–(समान रूप से) अच्छे (मित्र) हैं ही; ऑरुवर् मेल्–उनमें एक पर; करुणै तूण्ट–करुणा के प्रेरित करने पर; ऑळित्तु–छिपा; निन्ऱु–रहकर; ऑरुवर् मेल्–(दूसरे) एक पर; वरि चिलै–सबन्ध धनु; कुऴैय–झुकाते हुए; वाङ्कि–डोरा (खींचकर); वाय् अम्पु–तीक्ष्णमुखी शर को; मरुमत्तु–मर्मस्थान पर; ॲय्तल्–चलाना; तरुममो–धर्म (हो सकता) है; पिऱितु–इतर; ऑन्ऱु–एक; आमो–होगा; तक्किलतु–अनुचित; ॲन्नुम् पक्कम्–की तरफ़ ही (माना) जायगा। ३१२

जब दो मनुष्य, जो हमारे लिए समान रूप से अपरिचित हैं, आपस में युद्ध करते हैं, तब दोनों समान रूप से हमारे होते हैं। तब एक के प्रति करुणा करके, उससे प्रेरित होकर आड़ में से सबन्ध धनु को झुकाकर तीक्ष्णमुखी बाण को दूसरे के मर्म पर चलाना धर्म होगा या धर्मेतर ? वह अवश्य अनुचित, अधर्म के पक्ष में ही माना जायगा। ३१२

*वीर मन्ऱु विदियन्ऱु मॅय्म्मैयिन्
वार मन्ऱुनिन् मण्णिनुक् कॅन्नुडल्

बार मन्ऱु पहैयन्ऱु पण्बॊऴिन्
दीर मन्ऱियि दॆन्शॆय्द वाऱरो 313

वीरम् अन्ऱु–वीरता (का काम) नहीं है; विति अन्ऱु–युद्धधर्म की विधि नहीं; मॆय्म्मैयिन्–सत्य की; वारम् अन्ऱु–सीमा में भी नहीं; निन् मण्णिनुक्कु–तुम्हारे इस राज्य में; ऎन् उटल्–मेरा शरीर; पारम् अन्ऱु–भार नहीं है; पकै अन्ऱु–शत्रुता नहीं; पण्पु ऒऴिन्तु–शील त्यागकर; ईरम् अन्ऱि–स्नेह-हीन होकर; इतु–यह; ऎन् चॆय्त आऱु–क्या करने का प्रकार है। ३१३

तुम्हारा व्यवहार वीरता का परिचायक नहीं है; न ही वह विधिसम्मत है। वह सत्य की सीमा के अन्दर भी नहीं आता। तुम्हारे राज्य की भूमि पर मेरा शरीर असह्य भार भी नहीं बना था। मैं तुम्हारा शत्रु भी तो नहीं। अपना शील-स्वभाव छोड़कर, आर्द्रता (दया) का भाव त्यागकर तुमने यह जो कार्य किया है वह किस काम में आयगा? । ३१३

इरुमै नोक्किनिन् ऱियावर्क्कु मॊक्किन्ऱ
अरुमै याऱ्ऱलन् ऱोवऱङ् गाक्किन्ऱ
पॆरुमै यॆन्बदि दॆन्बिऴै पेणल्विट्
टॊरुमै नोक्कि यॊरुवर् कुदवलो 314

इरुमै–दोनों तरफ़; नोक्कि निन्ऱु–समान रूप से देखकर; यावर्क्कुम् ऒक्किन्ऱ–सर्वमान्य; अरुमै–श्रेष्ठ कर्म; आऱ्ऱल् अन्ऱो–करना न; अऱम् काक्किन्ऱ–धर्म-रक्षण करने का; पॆरुमै ऎन्पतु–बड़प्पन है; पिऴै पेणल् विट्टु–दोष से बचकर; ऒरुमै नोक्कि–एकतरफ़ा होकर; ऒरुवर्क्कु उतवल् ओ–एक की सहायता करना ही; इतु ऎन्–यह क्या (न्याय) है। ३१४

दोनों पक्षों का विचार करके सर्वमान्य रीति से श्रेष्ठ व्यवहार करना ही न धर्मपालन का गौरवमय कार्य होगा! दोषपूर्ण कार्य से बचना छोड़कर पक्षपाती बनकर किसी एक की सहायता करना (ऐसा माना जायगा) क्या? यह क्या नीति है? । ३१४

शॆयलैच् चॆऱ्ऱ पहैतॆऱु वान्ऱॆरिन्
दयलैप् पऱ्ऱित् तुणैयमैन् दायॆनिन्
पुयलैप् पऱ्ऱुमव् वॆङ्गरि पोक्कियोर्
मुयलैप् पऱ्ऱुव दॆन्न मुयऱ्चियो 315

चॆयलै चॆऱ्ऱ–(तुम्हारे गृहस्थी-सम्बन्धी) कार्य को जिसने मिटाया; पकै–उस शत्रु को; तॆऱुवान्–मारने के लिए; तॆरिन्तु–सोचकर; अयलै पऱ्ऱि–एक पराये को (मित्र के रूप में) लेकर; तुणै अमैन्ताय्–उसके सहायक बने; ऎनिल्–तो; पुयलै पऱ्ऱुम्–मेघ को खींचनेवाले; अ वॆम् करि–उस भयंकर हाथी को; पोक्कि–जाने देकर; ओर् मुयलै–एक खरगोश को; पऱ्ऱुवतु–मित्र बना लेना; ऎन्न मुयऱ्चियो–कैसा प्रयास है। ३१५

तुम्हारी गृहस्थी को मिटाकर जो गया उस शत्रु को मारना चाहते हो। उपाय सोचकर तुमने अन्य की सहायता ली है। तुमने उसको अपना सहायक बना लिया है। ठीक ! तो मेघ को भी छीन लेनेवाला भयंकर गज है— उसको (या मेघ-सम हाथी को भी पछाड़नेवाले सिंह को —यानी मुझे) छोड़कर एक खरगोश को (मित्र के रूप में) पकड़ लेना कैसा (बुद्धिमत्ता का) प्रयास है ? । ३१५

❀ कारि यन्ऱ निऱत्त कळङ्गमोन्ऱ
ऊरि यन्ऱ मदिक्कुळ दामॆन्बर्
सूरि यन्मर बुक्कुमोर् तॊन्मऱु
आरि यन्बिऱन् दाक्किनै यामरो 316

ऊर् इयन्ऱ–संचारी; मतिक्कु–चन्द्र में; कार् इयन्ऱ निऱत्त–काला रंग वाला; कळङ्कम् ऒन्ऱु–कलंक एक; उळतु आम्–रहता है; ऎन्पर्–कहते हैं; चूरियन्–सूर्य के; तॊल् मरपुक्कुम्–प्राचीन वंश के लिए; ओर् मऱु–एक कलंक; आरियन्–श्रेष्ठ पुरुष (तुमने); पिऱन्तु–पैदा होकर; आक्किनै आम्–लगा लिया है। ३१६

संचरणशील चन्द्र में काले रंग का कलंक है। यह सब लोक कहते हैं। (सूर्य में नहीं है, पर) प्राचीन सूर्यकुल पर भी श्रेष्ठ तुमने पैदा होकर धब्बा लगा दिया है क्या ? । ३१६

मऱ्ऱॊ रुत्तन् वलिन्दऱै कूववन्
दुऱ्ऱ वॆन्नैयॊ ळित्तुयि रुण्डनी
इऱ्ऱि दऱ्पि न्निहलरि येऱॆन
निऱ्ऱि पोलुङ् गिडन्द निलत्तरो 317

मऱ्ऱु ऒरुत्तन्–दूसरे किसी (एक) के; वलिन्तु–जबरदस्ती से; अऱै कूव–(युद्ध के लिए) ललकारने पर; वन्तु उऱ्ऱ–जो आया उस; ऎन्नै–मुझे; ऒळित्तु–छिपा रहकर; उयिर् उण्ट नी–प्राण खा लिये ऐसे तुम; इऱ्ऱु इतन् पिन्–इस घटना के बाद; किटन्त निलत्तु–जिस पर मैं पड़ा हूँ, उस भूमि पर; इकल्–युद्ध में चतुर; अरि एऱु अन–नरकेसरी के समान; निऱ्ऱि पोलुम्–(शान के साथ) खड़े भी रहो क्या। ३१७

किसी ने (जो तुम्हारे किसी नाते का नहीं) मुझे ज़बरदस्ती आकर युद्ध के लिए ललकारा और मैं युद्ध करने आया। ऐसे मेरे प्राणों को तुमने छिपे रहकर हर लिया। यह करने के बाद तुम, जहाँ मैं (शराहत हो) पड़ा हूँ, वहाँ आकर खड़े हो, मानो युद्ध-चतुर नरकेसरी हो ! । ३१७

❀ नूलि यऱ्कैयु नुङ्गुलत् तन्वैयर्
पोलि यऱ्कैयुम् शीलमुम् पोऱ्ऱलै

वालि येप्पडुत् तायलै मन्नर
वेलि यैप्पडुत् ताय्विरल् वीरने 318

नूल् इयर्कैयुम्–शास्त्रोक्त क्रमों को; नुम् कुल–तुम्हारे कुल के; तन्तैयर् पोल्–पुरखों के समान; इयर्कैयुम्–उनके स्वभाव को; चीलमुम्–और उनके शील को; पोऱ्ऱलै–मानकर नहीं चले; वालियै पट्टुत्ताय् अलै–वाली को नहीं मारा है; मन् अऱम्–राजधर्म की; वेलियै–रक्षक बाड़ को; पट्टुत्ताय्–नष्ट कर दिया है; विऱल् वीरने–प्रतापी वीर हो क्या। ३१८

शास्त्रों में जो कहे गये हैं वे गुण, तुम्हारे कुल के पुरखों से प्राप्त गुण, शील आदि को तुम मानकर नहीं चले। तुमने वाली को मारा नहीं है; पर वास्तव में राजधर्म की रक्षक बाड़ को मिटा दिया है। क्या तुम सचमुच प्रशंसायोग्य प्रतापी वीर हो ? । ३१८

❀ तार मऱ्ऱोरु वन्गोळत् तन्गैयिल्
पार वॆञ्जिलै वीरम् बळिप्पदे
नेरु मन्ऱु मऱैन्दु निरायुदन्
मार्बि नॆय्यवो विल्लिहल् वल्लदे 319

तारम्–(तुम्हारी) पत्नी को; मऱ्ऱु ऒरुवन्–किसी अन्य ने; कॊळ–हर लिया, तब; तन् कैयिल्–अपने हाथ में; पारम् वॆम् चिलै–भारी और भयंकर धनु; वीरम्–वीरता का; पळिप्पतु–परिहास करता है; नेरम् अन्ऱु–सामने से नहीं; मऱैन्तु–छिपकर; निरायुतन् मार्पिन्–निरायुध के वक्ष में; ऎय्यवो–(शर) चलाने के कारण क्या; विल् इकल–धनुर्युद्ध में; वल्लतु–समर्थ कहा जाना। ३१६

तुम्हारी पत्नी को किसी ने हर लिया। तब तुम्हारे हाथ का भारी भयंकर धनु तुम्हारी वीरता का परिहास कर रहा है! (तुम्हारा कोदण्डपाणी नाम ही किस काम का ?) सामने से नहीं, आड़ में रहकर आयुधहीन रिक्त हाथ मेरे वक्ष में शर चलाना ही धनुर्युद्ध में तुम्हारे सामर्थ्य का परिचायक बनेगा ? । ३१९

❀ ऎन्ऱु तानु मॆयिऱु पॊडिपडत्
तिन्ऱु कान्ऱु विळिवळित् तीयुह
अन्ऱु वालि यनैयन कूऱिनान्
निन्ऱ वीर निनैय निहऴ्त्तुवान् 320

ऎन्ऱु–ऐसा; अ वालि तानुम्–उस वाली ने; ऎयिऱु पॊटि पट–दाँतों को चूर्ण बनाते हुए; तिन्ऱु–पीसकर; विळि वळि–आँखों द्वारा; ती कान्ऱु उक–आग प्रकट होकर छितर जाय ऐसा; अन्ऱु–तब; अनैयन–वे बातें; कूऱिनान्–कहीं; निन्ऱ वीरन् तानुम्–सामने स्थित वीर भी; इनैय–यों; निकऴ्त्तुवान्–कहने लगे। ३२०

वाली ने दाँत चूर-चूर हो जायँ, ऐसा दाँत पीसते हुए, आँखों से

अंगारे निकाल छितराते हुए ऐसी बातें कहीं। तब वहाँ जो स्थित थे वे श्रीराम भी यों बोले। ३२०

पिलम्बुक कायनॅ॒डु नाळ्पॅय रायॅऩाप्
पुलम्बुऱ् ऱुऩ्वऴिप् पोदलुऱ् ऱाऩ्ऱऩॅक्
कुलम्बुक् काऩ्ऱ मुदियर् कुऱिक्कोळीइ
अलम्बुत् तारव नीयर शॅऩ्ऱलुम् 321

पिलम् पुक्काय्–बिल में (तुमने) प्रवेश किया; नॅटु नाळ्–बहुत दिन तक; पॅयराय्–नहीं लौटे; ऍऩा–इसलिए; पुलम्पु उऱ्ऱु–विलाप करके; उऩ् वऴि–तुम्हारे मार्ग में; पोतल् उऱ्ऱाऩ् तऩॅ–जाने को उद्यत (सुग्रीव) को; कुलम् पुक्कु–तुम्हारे कुल में जनमे हुए; आऩ्ऱ मुतियर्–श्रेष्ठ वृद्ध लोग; कुऱि कोळीइ–उसका संकल्प जानकर; अलम्पु तारव–हिलती मालाधारी; नी अरचु–तुम राजा हो; ऍऩ्ऱलुम्–कहने पर। ३२१

(मायावी का पीछा करते हुए) तुम बिल में घुसे। बहुत दिनों तक लौट नहीं आये। यह देखकर सुग्रीव दुःखी हुआ और विलाप करते हुए तुम्हारे पीछे तुम्हारे मार्ग में जाने को उद्यत हुआ। तब तुम्हारे कुल के वृद्ध लोगों ने उसका आशय ताड़ लिया। उससे कहा कि हिलनेवाली माला से शोभित सुग्रीव ! तुम हमारे राजा हो। तब। ३२१

वाऩ माळवॅऩ् ऱम्मुऩॅ वॅत्तवऩ्
ताऩु माळक् किळॅयु मिऱत्तडिऩ्
दियाऩु माळ्वॅऩि रुऩ्दर शाळ्हिलॅऩ्
ऊऩ माऩ वुरॅपहर्ऩ् दीरॅऩ 322

ऍऩ् तम् मुऩॅ–मेरे अग्रज को; वाऩम् आळ वॅत्तवऩ् ताऩुम्–स्वर्गपालन करने जिसने भेज दिया, वह मायावी; माळ–मर जाए; किळॅयुम् इऱ–और उसका परिवार मिट जाय, ऐसा; तटिऩ्तु–मारकर; याऩुम्–मैं भी; माळ्वॅऩ्–मर जाऊँगा; इरुन्तु–(जीवित) रहकर; अरचु–राज्य; आळ्किलॅऩ्–नहीं पालूँगा; ऊऩम् आऩ–निकृष्ट; उरॅ–बात; पकर्ऩ्तीर्–बतायी; ऍऩ–कहने पर। ३२२

सुग्रीव ने कहा कि मेरे बड़े भाई को इस राक्षस ने स्वर्ग में उसका पालन करने के लिए भेज दिया। उसको उसके परिवारों के साथ मार दूँगा और स्वयं भी मर जाऊँगा। जीवित रहकर शासन न करूँगा। तुम लोगों ने निकृष्ट बात की सलाह दी है। मैं नहीं मानूँगा। ३२२

पऱ्ऱि याऩ्ऱ पडॅत्तलॅ वीररुम्
मुऱ्ऱु णर्ऩ्द मुदियरु मुऩ्बरुम्
ऍऱ्ऱु ऱुम्मर शॅय्दिलॅ यॅलॅऩक्
कॉऱ्ऱ नऩ्मुडि कॉण्डिलत् कोदिलाय् 323

आन्ऱ-श्रेष्ठ; पटै तलै वीररुम्-सेनापति वीरों ने और; मुऱ्ऱुणर्न्त-पूर्णज्ञ; मुतियरुम्-वयोवृद्ध लोगों ने और; मुन्परुम्-अन्य अगुओं ने; पऱ्ऱि-पकड़कर; अरचु ॲय्तिलैयेल्-राज्य न लोगे तो; ॲऱ्ऱु उऱुम्-क्या गति (वानरों को) प्राप्त होगी; ॲन-कहा, तब भी; अ कोतु इलान्-उस निर्दोष (सुग्रीव) ने; कोऱ्ऱम् नल् मुटि-राजकीय श्रेष्ठ किरीट को; कॊण्टिलन्-स्वीकार नहीं किया। ३२३

उसको सुनकर उत्तम सेनापति वीरों, पूर्णज्ञानी वयोवृद्ध लोगों और अन्य मुखियाओं ने मिलकर उसको पकड़ लिया और कहा कि सोचो ! अगर तुम राज्य न लोगे तो वानरों की गति क्या होगी ? तब भी उस निरपराध सुग्रीव ने राजकीय श्रेष्ठ मुकुट को नहीं अपनाया। ३२३

वन्द नित्तै वणङ्गि महिळ्न्दनन्
ॲन्दै यॆन्कणि ननतव राऱ्ऱलिन्
तन्द दुन्नर शॆन्ऱु तरिक्किलेन्
मुन्दै युऱ्ऱदु शॊल्ल मुनिन्दुनी 324

वन्त निन्नै-(फिर) आये हुए तुमको; मकिळ्न्तनन्-हर्षित होकर; वणङ्कि-नमस्कार करके; ॲन्तै-पितृतुल्य; इनत्तवर्-समूह के लोगों ने; ॲन् कण्-मेरे पास; आऱ्ऱलिल्-(तर्क के) जोर से; तन्त-जो सौंपा; उन् अरचु-उस तुम्हारे राज्य को; तरिक्किलेन्-वहन नहीं किया; ॲन्ऱु-ऐसा; मुन्तै उऱ्ऱतु-पूर्व-वृत्तान्त को; चॊल्ल-कहा, तब भी; नी-तुम; मुनिन्तु-कुपित होकर। ३२४

फिर तुम लौट आये। तुमको लौट आये देखकर सुग्रीव अपार हर्षित हुआ। उसने तुमको नमस्कार करके कहा कि पिता-सम मेरे भाई ! हमारे समूह के वानरों ने तर्क के ज़ोर से मेरे पास यह राज्य सौंपा। पर तुम्हारा वह राज्य मैंने नहीं लिया। इस तरह उसने पूर्ववृत्तान्त सुनाया। पर तुम नहीं माने और कुपित हुए। ३२४

कॊल्ल लुऱ्ऱनै युम्बियैक् कोदवऱ्
किल्लै यॆन्ब दुणर्न्दु मिरङ्गलै
अल्ल ल्शॆय्य लुनक्कब यम्बिळै
पुल्ल लॆन्नवुम् पुल्ललै पॊङ्गिनाय् 325

उम्पियै-अपने भाई को; कॊल्लल् उऱ्ऱनै-निहत करने लगे; अवऱ्कु-उसका; कोतु इल्लै-कोई अपराध नहीं; ॲन्पतु-यह; उणर्न्तुम्-जानकर भी; इरक्कलै-दया नहीं की; अल्लल् चॆय्यल्-त्रास मत दो; उनक्कु अपयम्-तुम्हारी शरण हूँ; पिळै पुल्लल्-मुझ पर अपराध मत लगाओ; ॲन्नवुम्-प्रार्थना करने पर भी; पुल्ललै-नहीं माने; पॊङ्किनाय्-उबल पड़े। ३२५

कोप करके तुम अपने भाई को मारने लगे। वह निरपराध है, यह जानकर भी तुमने दया नहीं दिखाई। उसने विनय की कि मुझे त्रास मत

दो। मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझे अपराधी मत मानो। फिर भी तुमने उसकी बात नहीं मानी और उस पर कोप दिखाया। ३२५

ऊऱ्ऱ	मुऱ्ऱुडै	यातुन्तक्	कारमर्
तोऱ्ऱु	मंन्ऱु	तॊऴुदुयर्	कैयनैक्
कूऱ्ऱ	मुण्णक्	कॊडुप्पॆंन्न्	ऍण्णिनाय्
नाऱ्ऱि	शैक्कुम्	पुऱत्तैयु	नण्णिनान् 326

ऊऱ्ऱम्–बल; मुऱ्ऱु उडैयान्–पूर्ण रखनेवाले; उनक्कु–तुम्हारे सामने; आर् अमर् तोऱ्ऱम्–होनेवाले इस युद्ध में हारा; ऍन्ऱु–विनय करके; तॊऴुतु उयर्–अंजलिबद्ध और ऊपर उठाए हुए; कैयनै–हाथों वाले को; कूऱ्ऱम् उण्ण–यम को खाने; कॊडुप्पॆन्–दे दूंगा; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्णिनाय्–सोचा (तुमने); नाल् तिचैक्कुम्–(वह) चारों दिगन्तों के; पुऱत्तैयुम्–उस पार को भी; नण्णिनान्–गया। ३२६

सुग्रीव ने यह भी कहा कि तुम्हारे पास सम्पूर्ण बल है। हमारे बीच हुए इस युद्ध में मैं हार मान लेता हूँ। उसने यह कहकर हाथ जोड़े और नमस्कार की मुद्रा में ऊपर उठाये। तुमने उसे यम का भोजन बनाने का संकल्प किया। वह भागा और दिगन्तों के पार के प्रदेशों में जा पहुँचा। ३२६

अन्न	तन्मै	यऱिन्दु	मरुळलै
पिन्न	वन्निव	नॆन्बदुम्	पेणलै
वन्नि	तानिडु	शाब	वरम्बुडैप्
पॊन्म	लैक्किव	नण्णलिऩ्	पोहलै 327

अन्न तन्मै–उसकी वैसी स्थिति; अऱिन्तुम्–जानकर भी; अरुळलै–दया नहीं दिखाई; इवन् पिन्नवन्–यह अनुज है; ऍन्पतुम्–यह बात भी; पेणलै–नहीं मानी; वन्नि तान्–महर्षि (मतंग) के; इटु–दिये हुए; चापम् वरम्पु उटै–शाप की सीमा के अन्तर्गत; पॊन् मलैक्कु–सुन्दर ऋष्यमूक पर्वत को; इवन् नण्णलिन्–यह आया, इसलिए; पोकलै–नहीं गये (तुम)। ३२७

वह भय से भागा —यह जानते हुए भी तुमने दया नहीं की। 'आखिर यह मेरा अनुज है!' यह नाता भी तुमने नहीं माना। यह स्थान मतंग मुनि (वर्णी का अपभ्रंश रूप प्रयुक्त है —अतिवर्णी के अर्थ में।) के शाप से निर्दिष्ट सीमा के अन्दर यह ऋष्यमूक पर्वत पड़ा है। वह उधर पहुँच गया, इसलिए तुम उधर नहीं गये। ३२७

ईर	मावदु	मिऱ्पिऱप्	पावदुम्
वीर	मावदुङ्	गल्वियिन्	मॆय्न्नॆऱि

वार मावदु मऱ्ऱॊरु वन्बुणर्
तार मावदॆत् ताङ्गुम् तरुक्कदो 328

ईरम् आवतुम्–दया जो है; इल् पिऱप्पु आवतुम्—कुलीनता जो है; वीरम् आवतुम्–वीरता जो है; कल्वियिन्–विद्या द्वारा; मॆय् नॆऱि—सच्चे धर्ममार्ग की; वारम् आवतुम्–श्रेष्ठता जो है; मऱ्ऱु ऒरुवन्–(वह) किसी दूसरे की; पुणर्–भोग की हुई; तारम् आवतै–पत्नी को; ताङ्कुम्–अपना बना लेने का; तरुक्कु अतो–घमण्ड होगा क्या। ३२८

दया, कुलीनता, वीरता, शिक्षा द्वारा प्राप्त सदाचार, निष्ठा —इन सबमें परोपभुक्त दारा के ग्रहण को सहने की शक्ति है क्या ? । ३२८

मऱन्दि ऱम्बल् वलियमॆ नामतम्
पुऱन्दि ऱम्ब लॆळियवर्प् पॊङ्गुदल्
अऱन्दि ऱम्ब लरुङ्गडि मङ्गैयर्
तिऱन्दि ऱम्ब ऱॆळिवुडै योर्क्कॆलाम् 329

तॆळिवु उडैयोर्क्कु ऎलाम्–सुलझे हुए विचार वाले सभी के लिए; अरुम् कडि–श्रेष्ठ गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली; मङ्कैयर् तिऱम्–स्त्रियों के सम्बन्ध में; तिऱम्पल्–अतिक्रमण; वलियम् ऎना–हम बली हैं, समझकर; मऱम् तिऱम्पल्–वीरता का दुरुपयोग; मनम् पुऱम् तिऱम्पल्–अन्तःकरण की उपेक्षा करना; ऎळियवर् पॊङ्कुतल्–निर्बलों पर क्रोध करना; अऱम् तिऱम्पल्–धर्म के विपरीत (कार्य) हैं। ३२९

सभी सद्विवेकियों के लिए गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली स्त्रियों के प्रति अतिक्रम का व्यवहार करना, अपने बल के घमण्ड में अन्तःकरण का उल्लंघन करना, निर्बलों पर उबल पड़ना —ये काम अधार्मिक हैं। ३२९

दरुम मित्तन् ऎन्नुन्दहैत् तन्मैयुम्
इरुमै युन्दॆरिन् दॆण्णलै यॆण्णिनाल्
अरुमै युम्बिदन् नारुयिर्त् तेवियैप्
पॆरुमै नीङ्गिड वॆय्दप् पॆऱुदियो 330

तरुमम् इन्ततु–धर्म यह है; ऎनुम्–ऐसा इंगित; तकै तन्मैयुम्–उसकी विशेष गति; इरुमैयुम्–और इह-पर दोनों; तॆरिन्तु–खूब विश्लेषण करके; ऎण्णलै–तुमने नहीं सोचा; ऎण्णिनाल्—सोचा होता तो; अरुमै उम्पि तन्—प्यारे अनुज की; आर् उयिर् तेवियै–प्राणप्यारी पत्नी को; पॆरुमै नीङ्किट–गौरव त्यागते हुए; ऎय्त पॆऱुतियो–हथिया पाओगे क्या। ३३०

तुमने धर्म, उसकी श्रेष्ठता, पाप-पुण्य, इह-पर —इनका विचार नहीं किया। अगर किया होता तो अपने प्यारे अनुज की पत्नी को अपनी बनाकर गौरव खोते क्या ? । ३३०

आद लानु मवन्नॅनक् कारुयिर्क्
काद लान्ॅन लानुनिर् कट्टनॅन्
एदि लारॅयु मॅळियरॅन् ऱारॅयुम्
तीदु तीर्प्पदॅन् शिन्दैक् करुत्तरो 331

आतलानुम्–इसीलिए; अवन्–वह (सुग्रीव); ॲनक्कु–मेरा; आर् उयिर्–प्यारे प्राण-सम; कातलान्–मित्र है; ॲतलानुम्–उससे भी; निन् कट्टनॅन्–तुमको मिटाया; एतु इलारॅयुम्–निरपराधों को और; ॲळियर्–दीन; ॲन्ऱारॅयुम्–लोगों को; तीतु तीर्प्पतु–हानि से बचाना; ॲन् चिन्तै करुत्तु–मेरे मन का संकल्प है। ३३१

इन कारणों से और वह मेरा प्राणप्यारा मित्र है —इस नाते मैंने तुम्हें मारा। निर्दोष और निर्बल लोगों को हानि से बचाना मेरा संकल्प है। ३३१

पिळैत्त तन्मै यिदुवॅनप् पेरॅळिल्
तळैत्त वीर नुरैशॅयत् तक्किला
दिळैत्त वालि यियल्बल वित्तुणै
विळैत्ति रत्तॊळि लॅन्न विळम्बुवान् 332

पिळैत्त तन्मै–अपराध करने का प्रकार; इतु ॲन–यह है ऐसा; पेर् ॲळिल्–बड़ी सुन्दरता से; तळैत्त वीरन्–पूर्ण वीर श्रीराम के; उरै चॅय–कहने पर; तक्कु इलातु–अनुचित; इळैत्त–जिसने किया; वालि–वाली; इ तुणै–इतने; इयल्पु अल–(हमारे सम्बन्ध में) साध्य नहीं हैं; विळै तिरम्–मनमाना; तॊळिल्–काम करना ही; ॲन्न विळम्पुवान्–कहकर समझाने लगा। ३३२

यही तुम्हारा अपराध है। —ऐसा अतिसुन्दर श्रीराम ने वाली को बताया। अनुचित आचरण वाले वाली ने उत्तर में कहा कि ये सब धर्म हमारी जाति के योग्य नहीं हैं। मनमाना करना ही हमारा धर्म है। वह आगे बोला। ३३२

ऐय नुङ्ग ळरुङ्गुलक् कऱ्पिनप्
पॊय्यिन् मङ्गैयर्क् केय्न्द पुणर्च्चिपोल्
शॅय्दि लन्ॅनमैत् तेमलर् मेलवन्
ॲय्दि नॅय्दिय दाह वियऱ्ऱिनान् 333

ऐय–प्रभु; नुङ्कळ्–तुम लोगों की; अरुम् कुल–श्रेष्ठ जाति के; कऱ्पिन्–पातिव्रत्य पर आधारित; अ पॊय् इल् मङ्कैयर्क्कु–उन असत्यहीन स्त्रियों के; एय्न्त–योग्य; पुणर्च्चि पोल्–विवाह-मिलन के समान; ॲमै–हमको; तेमलर् मेलवन्–दिव्य कमलासन ब्रह्मा ने; चॅय्तिलन्–(संभोग-विधान) नहीं दिया है; ॲय्तिन्–संयोग हुआ तो; ॲय्तियतु–संभोग बना, ऐसा; इयऱ्ऱितान्–विधान बनाया है। ३३३

प्रभु ! आपकी जाति में पातिव्रत्यशीला और सच्ची (पति-भक्ति रखनेवाली) स्त्रियों के योग्य विवाह-विधान हैं। ऐसे विधान हमारे लिए कमलासन ब्रह्मा ने नहीं बनाये हैं। पर 'संयोग हुआ तो संभोग करो' का विधान ही दिया है। ३३३

मणमु मिल्लै मऱैनॆऱि वन्दन
गुणमु मिल्लैक् कुलमुदऱ् कॊत्तन
उणर्वु शॆन्ऱुऴिच् चॆल्लु मॊऴुक्कलाल्
निणमु नॆय्यु मिणङ्गिय नेमियाय् 334

निणमुम्–(शत्रु-) मांस; नॆय्युम्–और घृत; इणङ्किय–मिलकर लगे हुए; नेमियाय्–चक्रधारी; उणर्वु चॆन्ऱ उऴि–मन जहाँ गया; चॆल्लुम् ऒऴुक्कु–वहीं जाने का चरित्र है; अलाल्–उसके सिवा; मऱै नॆऱि–वेदमार्ग से; वन्तन–आये; मणमुम् इल्लै–विवाह-विधान नहीं; कुल मुतऱ्कु–तुम्हारे (मानव) कुल के; ऒत्तन–समान; कुणमुम् इल्लै–(हमारे पास) गुण भी नहीं। ३३४

शत्रुमांस और घृत से लिप्त चक्र के धारण करनेवाले वीर ! मन जहाँ प्रेरित करता है, वहीं जाना हमारा आचार है। उसके सिवा वेद-सम्मत विवाह नहीं है; न ही तुम्हारे मानवकुलोचित गुण हैं हममें। ३३४

पॆऱ्ऱि मऱ्ऱिदु पॆऱ्ऱदॊर् पॆऱ्ऱियिल्
कुऱ्ऱ मुऱ्ऱिलॆ नीयिदु कोडियाल्
वॆऱ्ऱि यऱ्ऱदॊर् वॆऱ्ऱियि नायॆनच्
चॊऱ्ऱ चॊऱ्ऱुरैक् कुऱ्ऱदु शॊल्लुवान् 335

वॆऱ्ऱि अऱ्ऱतु–(सच्ची) विजय से हीन; ऒर् वॆऱ्ऱियिनाय्–श्रेष्ठ विजयी; पॆऱ्ऱि इतु–(हमारी जाति की) स्थिति यह है; पॆऱ्ऱतु ऒर् पॆऱ्ऱियिल्–जन्म-प्राप्त धर्म के अनुसार; कुऱ्ऱम् उऱ्ऱिलॆन्–दोषयुक्त न हुआ हूँ; नी इतु कोटि–तुम इसको मन में धारण करो; ऎन–ऐसा; चॊऱ्ऱ–कहे हुए; चॊल् तुरैक्कु–वचनक्रम के; उऱ्ऱतु–योग्य उत्तर को; चॊल्लुवान्–श्रीराम देने लगे। ३३५

हे झूठे विजयी ! यह हमारी जाति को मिली रीति है। उसके अनुसार देखा जाय तो मुझ पर कोई दोष नहीं लगा है। तुम यह बात मन में धारण कर लो। वाली ने जब ऐसा कहा तो श्रीराम उसके विचारक्रम को ध्यान में रखकर योग्य उत्तर देने लगे। ३३५

नलङ्गॊ डेवरिऱ् ऱोन्ऱि नवैयऱक्
कलङ्ग लावऱ नन्ॆऱि काण्डलिन्
विलङ्ग लामै विळङ्गिय वादलान्
अलङ्ग लाय्क्कि वडुप्पदन् ऱामरो 336

नलम् कॊळ्–सद्गुणी; तेवरिल्–देवों से (या के समान); तोन्ऱि–पैदा होकर;

नवै अऱ्-निर्दोष; कलङ्कला-भ्रमविहीन; अऱम् नल् नॅरि-धर्म का अच्छा मार्ग; काणुट्टलिन्-जानते हो, उससे; विलङ्कु अलामै-जानवर न रहना; विळङ्कियतु-साफ़ मालूम होता है; आतलाल्-इसलिए; अलङ्कलाय्क्कु-मालाधारी तुम्हें; इतु अट्टुप्पतु अन्ऱु-यह उचित नहीं; आम्-होगा । ३३६

श्रेष्ठ गुण वाले देवों से (या देवों के समान) तुम पैदा हुए। निर्दोष और भ्रमरहित रीति से तुम धर्म की अच्छी गति को जानते हो। इससे साफ़ है, तुम जानवरों में नहीं हो। इसलिए, हे मालाधारी वीर ! यह कार्य तुम्हारे योग्य नहीं था । ३३६

पॊऱियिन् याक्कैय दोपुल नोक्किय
अऱिविन् मेलदन् ऱोवरत् ताऱुदान्
नॅऱियि नोन्मैयै नेर्निन् ऱुणर्न्दनी
पॆऱुदि योपिऴै युऱ्ऱुऱु पॆऱ्ऱिदान् 337

अऱत्तु आऱु तान्-धर्म की गति; पॊऱियिन् याक्कैयतो-इन्द्रियसहित शरीर पर आश्रित रहेगी क्या; पुलन् नोक्किय-इन्द्रियों का आश्रय; अऱिविन् मेलतु अन्ऱो-विवेक पर स्थित है न; नॅऱियिन् नोन्मैयै-धर्ममार्ग का बल; नेर् निन्ऱु-सीधे प्रत्यक्ष रीति से; उणर्न्त नी-जाननेवाले तुम; पिऴै उऱ्ऱु-अपराध करके; उऱु-प्राप्त होनेवाले; पॆऱ्ऱितान्-पद को; पॆऱुतियो-पाओगे क्या । ३३७

धर्म का आचरण क्या इन्द्रियों के आगार शरीर पर निर्भर रहेगा ? वह तो इन्द्रियों को वश में रखनेवाली विवेकबुद्धि पर आधारित है। तुम प्रत्यक्ष रूप से धर्म की शक्ति को जानते हो। फिर अपराध करने की स्थिति को ही तुम अपनाओगे क्या ? । ३३७

माडु पऱ्ऱि यिडङ्गर् वलित्तिडक्
कोडु पऱ्ऱिय कॊऱ्ऱवर् कूयदोर्
पाडु पॆऱ्ऱ वुणर्विन् पयत्तिनाल्
वीडु पॆऱ्ऱ विलङ्गुम् विलङ्गरो 338

इटङ्कर्-एक नक्र; पऱ्ऱि-पकड़कर; माट्टु-एक ओर; वलित्तिट-खींचता रहा, तब; पाट्टु पॆऱ्ऱ-उत्कृष्ट; उणर्विन् पयत्तिनाल्-भावना के फलस्वरूप; कोट्टु पऱ्ऱिय-शंख (पांचजन्य) रखनेवाले; कॊऱ्ऱवन्-विजयी (श्रीमहाविष्णु को); कूयतु-पुकारकर; ओर्-परम; वीट्टु पॆऱ्ऱ-पद जिसने प्राप्त किया; विलङ्कुम्-वह जानवर भी; विलङ्कु अरो-जानवर था क्या । ३३८

(तुम गजेन्द्र की बात जानते हो।) नक्र ने उसको पकड़ा और जल की ओर खींचा। गजेन्द्र की बुद्धि श्रेष्ठ थी। उसने पाञ्चजन्य शंख के धारक महाविष्णु को पुकारा। उसे मोक्षपद मिल गया। क्या वह भी जानवर ही माना जाय ? । ३३८

शिन्दै नल्लऱत् तिन्वळिच् चेर्दलाल्
पैन्दॉ डित्तिरु विन्बरि वाऱुवान्
वॅन्दॉ ळिऱुऱै वीडुपॅऱ् ऱॆय्दिय
ऍन्दै युम्मॅरु वैक्कर शल्लनो 339

नल् अऱत्तिन् वळि–सद्धर्मपथ पर; चिन्तै चेरतलाल्–मन गया, इसलिए; पैन्तॉटि–स्वर्णकंकणालंकृता; तिरुविन्–श्रीलक्ष्मी (सीता) का; परिवु–दुःख; आऱुवान्–कम करने के हेतु; वॅम् तॉळिल् तुऱै–भयंकर (युद्ध-) कर्म में; वीटु पॅऱ्ऱु–मोक्ष प्राप्त कर; ऍय्तिय–जो गये; ऍन्तैयुम्–मेरे पिता (तुल्य) जटायु भी; ऍरुवैक्कु अरचु–गीधों के राजा; अल्लनो–नहीं थे क्या। ३३९

(जटायु की बात लो।) उनका मन श्रेष्ठ धर्मपथगामी था। इसलिए वे स्वर्णकंकणधारिणी श्रीलक्ष्मीजी सीता का दुःख कम करने गये और रावण के साथ घोर युद्धकर्म में प्रवृत्त हुए। उसमें उन्हें मोक्षपद प्राप्त हो गया। क्या वह गीधों (पक्षियों) के राजा नहीं हैं ? । ३३९

नन्ऱु तीदॆन् ऱियर्ऱॆरि नल्लऱि
विन्ऱि वाळ्व दन्ऱोविलङ् गिन्तियल्
निन्ऱ नन्नॆऱि नीयऱि यानॆऱि
ऒन्ऱु मिन्मैयुन् वाय्मै युणर्त्तुमाल् 340

नन्ऱु तीतु ऍन्ऱु–अच्छा, बुरा यह; इयल् तॆरि–(और) उनका स्वभाव जाननेवाले; नल् अऱिवु इन्ऱि–अच्छे विवेक के बिना; वाळ्वतु अन्ऱो–जीना न; विलङ्किन् इयल्–जानवरों का स्वभाव है; निन्ऱ नल् नॆऱि–सुस्थापित अच्छे मार्गों में; नी–तुम; अऱिया नॆऱि–जो नहीं जानते वह मार्ग; ऒन्ऱुम् इन्मै–कुछ नहीं है, यह बात; उन् वाय्मै–तुम्हारे वचन ही; उणर्त्तुम्–बता देंगे। ३४०

जानवर का लक्षण है क्या ? कौन सी बात अच्छी है, कौन सी बुरी —इसके ठीक-ठीक लक्षण के ज्ञान के विना रहना ही तो जानवरों का स्वभाव है ! इस संसार में सुस्थापित धर्म-मार्गों में तुमको अज्ञात कोई भी मार्ग नहीं है —यह तथ्य तुम्हारे वचनों से साफ़ प्रकट होता है ! । ३४०

तक्क विन्न तहादन वॆन्नवॆन्
ऱॊक्क वुन्नल राहि युयर्न्दुळ
मक्क ळुम्विलङ् गेमनु विन्नॆऱि
पुक्क वेलव् विलङ्गुम् बुत्तेळिरे 341

इन्न तक्क–क्या-क्या ग्राह्य हैं; इन्न तकातन–क्या-क्या अग्राह्य हैं; ऍन्ऱु–यह; ऒक्क–सबको लेकर; उन्नलर् आकि–विचार न करनेवाले बनकर; उयर्न्तु उळ–(जन्म से) उच्चता प्राप्त; मक्कळुम्–मानव भी; विलङ्के–पशु ही हैं; अ विलङ्कुम्–वे पशु भी; मनुविन् नॆऱि–मनुनीति; पुक्कवेल्–(सम्मत मार्ग में) प्रवेश करें तो; पुत्तेळिरे–देव ही (मान्य) होंगे। ३४१

जो जन्म से उत्कृष्ट मानव पैदा हुए हैं, पर यह विवेक नहीं करते कि क्या ग्राह्य है, क्या अग्राह्य और सबको तोलकर कोई सही निर्णय नहीं करते वे पशु ही हैं! पर वे जन्मजात पशु भी मनुनीति के अनुसार चलने लगें तो वे देवों के समकक्ष होंगे। ३४१

काल	ऩाऱ्ऱल्	कडिन्द	कणिच्चियाऩ्
पालि	ऩाऱ्ऱिय	पत्ति	पयत्तलाऩ्
मालि	ऩाऱ्ऱरु	वऩ्बॆरुम्	बूदङ्गळ्
नालि	ऩाऱ्ऱलु	माऱ्ऱुऴि	नण्णिऩाय् 342

कालऩ् आऱ्ऱल्–यम के बल को; कटिन्त–जिन्होंने प्रभावहीन बनाया; कणिच्चियाऩ् पालिऩ्–उन परशुधर शिवजी के प्रति; आऱ्ऱिय–तुमने जो की; पत्ति पयत्तलाल्–उस भक्ति के फलीभूत होने से; मालिताल्–शिवजी के सद्भाव के कारण; तरु–दत्त; वल् पॆरुम् पूतङ्कळ्–बलिष्ठ और बड़े भूतों के; नालिऩ्–चारों (अनल, अनिल, जल, थल) के; आऱ्ऱलुम्–प्रताप को; माऱ्ऱु उऴि–दूर करने की शक्ति; नण्णिऩाय्–प्राप्त की (तुमने)। ३४२

तुमने काल के प्रभाव का निरसन करनेवाले शिवजी की भक्ति की। शिवजी ने तुम पर दयाभाव रखा और उसके फलस्वरूप तुममें अनल, अनिल, जल और थल —इन चारों प्रबल भूतों के बल को भी बेकार करने की शक्ति आ गयी थी। ३४२

मेव	रुन्दरु	मत्तुऱै	मेविऩार्
एव	रुम्बवत्	तालिऴिन्	दोर्हळुम्
ताव	रुन्दव	रुम्तम	दऩ्मैशाल्
देव	रुम्मुळर्	तीमै	तिरुत्तिऩार् 343

मेवु अरुम्–दुष्प्राप्य; तरुम तुऱै–धर्ममार्ग पर; मेविऩार् एवरुम्–लगे हुए सब कोई; पवत्ताल्–पाप के कारण; इऴिन्तोर्कळुम्–निकृष्ट बने हुए लोग; ता अरुम्–दोषहीन; तवरुम्–तपस्वी; तम–अपने; तऩ्मै चाल्–गुणों में उत्कृष्ट; तेवरुम्–देव (इनमें); तीमै तिरुत्तिऩार्–बुराई करनेवाले; उळर्–हैं। ३४३

सभी तरह के लोगों में महान भी हैं और क्षुद्र भी पाये जाते हैं। दुर्गम धर्मपथ के पथी, पाप के कारण पतित लोग, निर्दोष तपस्वी, अपने गुणों के कारण उच्च बने हुए देव —सबमें ऊँचे भी हैं, ओछे भी। ३४३

इऩैय	दादलि	ऩॆक्कुलत्	तियावर्क्कुम्
विऩैयि	ऩाल्वरु	मेऩ्मैयुङ्	गीऴ्मैयुम्
अऩैय	तऩ्मै	यऱिन्दु	मऴित्तऩै
मऩैयिऩ्	माट्चियॆऩ्	ऱाऩ्मनु	नीदियाऩ् 344

मऩु नीतियाऩ्–मनुनीति पर चलनेवाले श्रीराम; इऩैयतु आतलिऩ्–ऐसी स्थिति

है, इसलिए; अँ कुलत्तु यावर्क्कुम्–किसी भी जाती के सभी के लिए; मेन्मैयुम्–गौरव और; कीऴ्मैयुम्–क्षुद्रता; वित्तैयिताल्–उनके कर्म से; वरुम्–प्राप्त होती हैं; अत्तैय तन्मै–वह रीति; अरिन्तुम्–जानते हुए भी; मत्तैयिन्–गृहस्थी का; माट्चि–गौरव; अऴित्तनै–मिटा दिया; ॲन्ऱान्–बोले। ३४४

मनुनीति के अनुसार चलनेवाले श्रीराम ने वाली से और भी कहा—यही सच्ची स्थिति है। किसी भी कुल के किसी को भी महत्ता या क्षुद्रता उसके कर्म के अनुसार ही प्राप्त होगी। यह सब जानते हुए भी तुमने गृहस्थी का गौरव मिटा दिया। ३४४

अव्वुरै यमैयक् केट्ट वरिक्कुलत् तरशु मान्ऱ
शॅव्वियो यत्तैय दाहच् चॅरुक्कळत् तुरुत्तॅय् दादे
वॅव्विय पुळिञ्ञ नॅन्न विलङ्गितै मऱैन्दु विल्लाल्
ॲव्विय दॅन्नै यॅन्ऱा निलक्कुव नियम्ब लुऱ्ऱान् 345

अ उरै–वे वचन; असैय–ध्यान से; केट्ट–सुनकर; अरि–वानर; कुलत्तु–कुल का; अरचुम्–राजा वाली भी; आन्ऱ–उत्कृष्ट; चॅव्वियोय्–सदाचारी; अत्तैयतु आक–वही हो; चॅरु कळत्तु–युद्धभूमि में; उरुत्तु–कोप करके; ॲय्ताते–न आकर; वॅव्विय–क्रूर; पुळिञन् ॲन्न–व्याध के समान; विलङ्कितै–अलग (या पशु को); मऱैन्तु–आड़ में रहकर; विल्लाल् ॲव्वियतु–धनु से शर चलाना; ॲन्नै–कैसा (न्याय) है; ॲन्ऱान्–पूछा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; इयम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ३४५

वाली ने श्रीराम का कहना ध्यान से सुना। कपिकुलराज ने पूछा कि उत्कृष्ट सदाचारी! तुम्हारा कहना सही रहे! पर युद्धभूमि में कोप के साथ प्रकट न होकर पशु को मारनेवाले क्रूर व्याध के समान तुमने (अलग रहकर) धनुष से शर चलाया। यह कैसा (धर्म) है? उसका उत्तर लक्ष्मण देने लगे। ३४५

मुन्बुनिन् ऱम्बि वन्दु शरणबुह मुऱैयि लोयैत्
तॅन्बुलत् तुय्प्पॅ नॅन्ऱु शॅप्पिनन् शॅरुवि नीयुम्
अन्बिनै युयिरुक् काहि यडैक्कल मियानु मॅन्बाय्
ॲन्बदु करुदि यण्णल् मऱैन्दुनिन् ऱॅय्द वॅन्ऱान् 346

निन् तम्पि–तुम्हारे भाई के; मुन्पु वन्तु–पहले आकर; चरण् पुक–शरण माँगने पर; मुऱै इलोयै–अधर्मी तुम्हें; तॅन् पुलत्तु–दक्षिणी प्रदेश में (यमपुरी में); उय्प्पॅन्–पहुँचा दूँगा; ॲन्ऱु–ऐसा; चॅप्पितन्–(श्रीराम ने) कहा; चॅरुविल्–युद्ध में; नीयुम्–तुम भी; उयिरुक्कु अन्पितै–प्राणों के मोह में; आकि–पड़कर; यानुम् अटैक्कलम्–मैं भी शरणप्रार्थी हूँ; ॲन्पाय्–कहोगे; ॲन्पतु करुति–यह सोचकर; अण्णल्–महिमायुक्त श्रीराम का; मऱैन्तु निन्ऱु–आड़ लेकर; ॲय्ततु–चलाना; ॲन्ऱान्–कहा। ३४६

तुम्हारे भाई ने पहले आकर श्रीराम की शरण माँगी और श्रीराम

ने वादा किया कि दुराचारी तुम्हें यमपुरी भिजवा दूँगा। युद्ध में तुम भी प्राणों के मोह में पड़कर शरण माँगोगे तो क्या किया जायगा ? यही सोचकर श्रीराम ने आड़ में से शर चलाया। ३४६

कविकुलत् तरशु मन्न कट्टुरै करुत्तिऱ् कॊण्डान्
अवियुरु मनत्त नाहि यऱत्तिऱ नऴियच् चॆय्यान्
पुवियिडै यण्ण लॆन्ब दॆण्णिनिऱ् पॊरुन्द मुन्ने
शॆवियुरु केऴ्विच् चॆल्वन् शॆन्नियि निरैञ्जिच् चॊन्नान् 347

कवि कुलत्तु अरचुम्–वानरकुलाधिपति ने भी; अन्न कट्टुरै–वह व्याख्या; करुत्तिल् कॊण्टान्–समझ ली; अवि उरु–शान्त; मनत्तन् आकि–मन वाला बनकर; अण्णल्–महिमामय श्रीराम; पुवि इटै–भूमि पर; अऱम् तिऱन्–धर्म की श्रेष्ठता को; अऴिय चॆय्यान्–मिटने न देंगे; ॲन्पतु–यह तथ्य; ऍण्णिनिल् पॊरुन्त–चिन्तन में आया, तो; चॆवि उरु–कर्ण द्वारा; केऴ्वि चॆल्वन्–श्रवणज्ञान के धनी के; मुन्ने–सामने; चॆन्नियिन् इरैञ्चि–सिर से नमस्कार करके; चॊन्नान्–बोला। ३४७

वानरकुलाधिपति ने उनके हेतुकथन पर ध्यान दिया। बात समझी। शान्त-मन हुआ। उसके मन में यह विश्वास जगा कि महिमामय श्रीराम भूमि पर धर्म की स्थिति को बिगाड़नेवाला कोई काम नहीं करेंगे। इस तथ्य के जानने पर वाली श्रवण-ज्ञान-धन श्रीराम के सामने सिर झुकाकर नमस्कार करके बोला। ३४७

तायॆन वुयिर्क्कु नल्हित् तरुममुन् दहवुञ् जार्वुम्
नीयॆन निन्ऱ नम्ब नॆऱियिनि नोक्कु नेर्मै
नायॆन निन्ऱ वॆम्बा नवैयुऱ लुणर लामे
तीयन पॊऱुत्ति यॆन्ऱान् शिऱियन शिन्दि यादान् 348

चिऱियत चिन्तियातान्–छोटी बातों की ओर ध्यान न देनेवाला; ताय् ॲन–माता के समान; उयिर्क्कु–जीवों को; नल्कि–हित देकर; तरुमुम्–धर्म; तकवुम्–और तटस्थता; चार्वुम्–आधार; नी–आप; ॲन निन्ऱ–ऐसे विद्यमान; नम्प–नायक; नॆऱियिनिल्–श्रेष्ठ मार्ग पर; नोक्कुम् नेर्मै–स्थित होकर विचार करने की श्रेष्ठता के आधार पर; नाय् ॲन–कुत्ते के समान; निन्ऱ–रहनेवाले; ऍम् पाल्–हमारे; नवै उऱल्–दोषयुक्त होने की बात; उणरलामे–विचारणीय है क्या; तीयन–बुराइयाँ; पॊऱुत्ति–क्षमा कीजिए; ॲन्ऱान्–बोला। ३४८

वाली छोटी बातों पर ध्यान देनेवाला नहीं था। (परमपदप्राप्ति, श्रीराम की महिमा आदि के सामने अपना दुःख और क्रोध भूल गया।) हे नायक ! माता के समान जीवों का हित करनेवाले ! धर्म, तटस्थता और आश्रय आप ही हैं, ऐसे विद्यमान श्रीराम ! धर्म-मार्ग पर स्थित रहकर विचार करनेवाले आप श्वान-सम हमारी दोषयुक्तता का विश्लेषण करेंगे क्या ? हमारी बुराइयों को क्षमा कर दीजिए। ३४८

इरन्दनन् पिन्नु मॅन्दै यावदु मॅण्ण ट्रेर्राक्
कुरङ्गॅनक् करुदि नायेन् कूरिय मननत्तुक् कॉळ्ळेल्
अरन्दैवॅम् बिऱवि वॅन्नोय्क् करुमरुन् दनैय वैया
वरन्दरु वळ्ळा लॊन्ऱु केळॆन मऱित्तुञ् जॊल्वान् 349

पिन्नुम्–फिर भी; इरन्ततन्–विनय करता हुआ; ऍन्तै–विधाता; अरन्तै–दुःखमूल; वॅम् पिऱवि ऍन्–भयानक जन्म रूपी; नोय्क्कु–रोग के; अरु मरुन्तु अनैय–श्रेष्ठ औषध-समान; ऐया–प्रभु; वरम् तरु–वरदायी; वळ्ळाल्–दानी; यावतुम् ऍण्णल् तेऱ्ऱा–किंचित भी विवेक न रखनेवाले; नायेन्–मुझ दास को; कुरङ्कु ऍन करुति–वानर समझकर; कूऱिय–कहे गये; मननत्तु कॉळ्ळेल्–मन में न रखिए; ऒन्ऱु केळ्–एक बात सुनिए; ऍन–ऐसा; मऱित्तुम्–आगे भी; चॊल्वान्–कहने लगा। ३४९

वाली ने यह कहकर आगे विनय की। विधाता! दुःखमूल भयंकर भवरोग के दिव्य औषध, प्रभु! याचित वरों को देनेवाले दानी! विवेक-हीन वानर हूँ आपका दास मैं। इसका विचार करके आप मेरी कही हुई बातों को मन में न रखें। और भी एक विनय है, सुनिए। ३४९

एवुहूर् वाळिया लॅय्दुना यडियनेन्
आविपोम् वेलैवा यऱिवुदन् दरुळिनाय्
मूवर्नी मुदल्वनी मुऱ्ऱुनी मऱ्ऱुनी
पावनी दरुमनी पहैयुनी युऱवुनी 350

एवु–प्रेरित; कूर् वाळियाल्–तीक्ष्ण शर से; ऍय्तु–चलाकर; नाय् अटियनेन्–श्वान से मुझ दास को; आवि पोम्–प्राणों के चलने के; वेलै वाय्–समय पर; अऱिवु तन्तु अरुळिनाय्–ज्ञान प्रदान कर दया दिखायी; मूवर् नी–आप त्रिदेव हैं; मुतल्वन् नी–उनके आदि भी आप; मुऱ्ऱुम् नी–ये सारे आप ही; मऱ्ऱुम् नी–अन्य सभी आप ही; पावम् नी–पाप आप ही; तरुमम् नी–धर्म भी आप; पकैयुम् नी–शत्रु भी आप; उऱवुम् नी–सम्बन्धी भी आप हैं। ३५०

आपने तीक्ष्ण बाण चलाकर मुझे मारा और मरते समय आकर दास को ज्ञान देकर बड़ा उपकार किया। आप त्रिदेव हैं; त्रिदेवों में आदि हैं। संसार के सारे पदार्थ आप ही हैं। अन्य भी आप ही हैं। आप पाप, धर्म, शत्रु, बन्धु सब हैं। ३५०

पुरमॅला मॅरिशॅय्दोन् मुदलिनोर् पॊरुविला
वरमॅला मुरुवियॅन् वशैयिला वलिमैशाल्
उरमॅला मुरुवियॅन् नुयिरॅला मुरुवुनिन्
शरमलाऱ् पिऱिदुवे ऱुळदरो दरुममे 351

पुरम् अलाम्–त्रिपुर सारा; ऍरि चॅय्तोन्–जिन्होंने जला दिये वे रुद्र; मुतलिनोर्–आदि देवों के; पॊरुवु इला–अनुपम; वरम् ऍलाम्–सभी वरों को;

उरुवि–दूर करके; ऍऩ्–मेरे; वचै इला–अनिन्द्य; वलिमै चाल्–बलयुक्त; उरम् ऍलाम् उरुवि–वक्ष सब वेधकर; ऍऩ् उयिर् ऍलाम्–मेरे सारे प्राणों को; उरुवुम्–विद्ध करनेवाले; निऩ् चरम् अलाल्–आपके शर के अलावा; तरुमम्–धर्म; पिऱितु वेऱु–अन्य कोई; उळतु अरो–है क्या। ३५१

त्रिपुरदाहक शिवदेव आदिदेवताओं ने मुझे अनुपम वर दिये थे। उन सबको विफल करके, अनिंद्य और सबल मेरे वक्ष को और प्राणों को विद्ध करके जानेवाला आपका उत्तम बाण ही धर्म है। उसके सिवा धर्म अलग कहीं है क्या ? । ३५१

[अतिरिक्त पद— बड़े पराक्रमी शिवजी अपने भक्तों को उच्च वर (परमपद) दिलाने की शक्ति रखते हैं। वह आपके नाम के सदा स्मरण करने से ही उन्हें प्राप्त हुई। ऐसे आपके मैंने प्रत्यक्ष दर्शन कर लिये। फिर मेरे लिए दुर्लभ क्या है ?]

यावरु मॅवैयुमा यिरुदुवुम् बयऩुमाय्
पूवुनल् वॅऱियुमॊत् तॊरुवरुम् पॊदुमैयाय्
यावनी यावदॆऩ् ऱऱिविऩा ररुळिऩार्
तावरुम् पदमॆऩक् करुमैयो तऩिमैयोय् 352

तऩिमैयोय्–अकेले देवता; यावरुम्–सब कोई और; ऍवैयुम् आय्–बस कुछ बनकर; इरुतुवुम् पयऩुम् आय्–ऋतुएँ और उनके फल बनकर; पूवुम् नल् वॅऱियुम् ऑत्तु–पुष्प और सुगन्ध के समान; ऑरुवु अरुम्–अपृथक् रहनेवाले; पॊतुमैयाय्–सम रहनेवाले; नी यावऩ्–आप कौन हैं; यावतु–कैसे हैं; ऍऩ्ऱु–यह बात; अऱिविऩार् अरुळिऩार्–ज्ञान ने दिखा दी; ता अरुम् पतम्–अकलंक परमपद; ऍऩक्कु अरुमैयो–मेरे लिए दुर्लभ है क्या। ३५२

अद्वितीय श्रीराम ! सब कोई, सब कुछ, ऋतुएँ और उनके फल सभी में, पुष्प में सुगन्ध के समान समान रूप से व्याप्त रहते हैं आप। मुझे इसका ज्ञान हो गया कि आप कौन हैं और आपकी प्रकृति क्या है। अब मेरे लिए अनिद्य परमपद भी दुर्लभ रहेगा क्या ? नहीं। ३५२

उण्डॆऩुऩ् दरुममे युरुवमाय् निऩ्ऱनिऩ्
कण्डलॆऩ् मऱ्ऱिनिक् काणवॆऩ् कडवऩो
पण्डॊडिऩ् ऱळवुमे यॆऩ्पॆरुम् बऴविऩै
दण्डमे यडियऩेऱ् कुऱुपदन् दरुवदे 353

उण्टु ऍऩुम्–(सनातन रूप से) है ऐसा; तरुममे–धर्म ही; उरुवमाय् निऩ्ऱ–स्वरूप में विद्यमान; निऩ् कण्टलॆऩ्–आपके दर्शन मैंने कर लिये; मऱ्ऱु–अलावा; इति काण ऍऩ् कटवऩो–और भी किसी के दर्शन करनेवाला बनूंगा क्या; ऍऩ्–मेरे; पॆरुम् पऴम् विऩै–बड़े और पूर्वकृत कर्म; पण्टु ऑटु–आदि से लेकर; इऩ्ऱु अळवुमे–आज तक के ही; तण्टमे–यह दण्ड ही; अटियऩेऱ्कु–मुझ दास को; उऱु पतम्–परमपद; तरुवते–दिला देगा। ३५३

धर्म के अस्तित्व को धर्मस्वरूप आपमें मैंने देख लिया। फिर आगे क्या देखना चाहूँगा ? मेरे पूर्वकृत कर्म पहले से आज तक ही रहे। (अब मिट गये।) आपने जो दण्ड दिया वही मुझे परमपद दिला देगा। ३५३

मऱ्ऱिति युदवि युण्डो वाऩिऩु मुयर्न्द माऩक्
कॊऱ्ऱव वुऩ्ऩै यॆऩ्ऩैक् कॊल्लिय कॊणर्न्दु तॊल्लैच्
चिऱ्ऱिऩक् कुरङ्गि ऩोडुन् दिरिवुरच् चॆय्द चॆय्है
वॆऱ्ऱर शॆय्दि यॆम्बि वीट्टर शॆऩ्ऩक्कु विट्टाऩ् 354

वाऩिऩुम् उयर्न्त–व्योम से भी उन्नत; माऩ कॊऱ्ऱव–सम्मान्य विजयी; ऎम्पि–मेरे छोटे भाई ने; ऎऩ्ऩै कॊल्लिय–मुझे मरवाने; उऩ्ऩै–आपको; कॊणर्न्तु–लाकर; तॊल्लै–प्राचीन; चिऱ्ऱ इऩ कुरङ्कित्तोटुम्–अल्प जाति के वानरों के स्वभाव के; तिरिवु उऱ–विपरीत; चॆय्त चॆय्कै–जो किया उस कार्य से; वॆऱ्ऱै अरचु–कोरा राज्य; ऎय्ति–प्राप्त करके; ऎऩक्कु–मुझे; वीटु अरचु–परमपद का मोक्ष-राज्य; विट्टाऩ्–प्राप्त करने दिया; मऱ्ऱु इति–इससे श्रेष्ठ कोई; उतवि–सहायता; उण्टो–हो सकती है क्या। ३५४

व्योम से भी उन्नत महिमा के विजयी स्वामी ! मेरा अनुज मुझे मारने आपको ले आया। इस कार्य द्वारा उसने क्षुद्र जाति के वानरों के स्वभाव के विपरीत एक बड़ा श्रेष्ठ काम किया है। इससे उसने स्वयं कोरा वानराधिपत्य लेकर मुझे परमपद मोक्ष का राज्य दिला दिया। इससे बढ़कर उसके हाथों क्या उपकार हो सकता है ? । ३५४

ओविय वुरुव नाये नुळदॊऩ्ऱु पॆऱुव दुऩ्बाल्
पूविय ऩऱव माऩ्दिप् पुऩ्दिवे ऱुऱ्ऱ पोऴ्दिल्
तीविऩै यियऱ्ऱु मेऩु मॆम्बियैच् चीऱि यॆऩ्मेल्
एविय पहऴि यॆऩ्ऩुङ् गूऱ्ऱिऩै येव लॆऩ्ऱाऩ् 355

ओविय उरुव–चित्रसमान रूपवान; नायेऩ्–दास का; उऩ् पाल्–आपसे; पॆऱुवतु–माँग लेना; ऒऩ्ऱु उळतु–एक है; पू इयल्–पुष्पों से प्राप्य; नऱवम् माऩ्ति–मधु पीकर; पुऩ्ति–बुद्धि; वेऱु उऱ्ऱ पोऴ्तिल्–बदल जब जाती है, तब; ती विऩै इयऱ्ऱुमेऩुम्–बुरे कार्य कर लेगा तो भी; ऎम्पियै चीऱि–मेरे भाई पर गुस्सा करके; ऎऩ् मेल् एविय–मुझ पर प्रेषित; पकऴि ऎऩ्ऩुम्–शर रूपी; कूऱ्ऱिऩै–यम को; एवल्–मत चला दें; ऎऩ्ऱाऩ्–यह प्रार्थना की। ३५५

चित्र-सम रूपवान ! मुझ दास को आपसे एक याचना करनी है। पुष्पों से प्राप्य मधु को पीकर उस नशे में बुद्धि खोकर मेरा भाई अगर कोई बुरा काम करेगा, तो आप उस पर गुस्सा करके मुझ पर जो शर के रूप में यम को प्रेरित किया उसे उस पर न चलाइएगा। ३५५

इऩ्ऩ मॊऩ्ऱिरप्प दुण्डा लॆम्बियै युम्बि माऱ्हळ्
तऩ्मुऩैक् कॊल्वित् ताऩॆऩ् ऱिहऴ्वरेऱ् ऱडुत्ति तक्कोय्

मुन्नमे मॊऴिन्दा यन्ऱे यिवन्कुऱै मुडिप्प देय
पिन्निवन् विनैयिन् शॆय्है यदनैयुम् बिऴैक्क लामो 356

तक्कोय्–उत्तम; इन्नम् ऑन्ऱु–और एक; इरप्पतु–याचना; उण्टु–है; उम्पिमारकळ्–आपके छोटे भाई; ऍम्पियै–मेरे अनुज की; तन् मुनै–अपने अग्रज को; कॊल्वित्तान्–मरवाया (सुग्रीव ने); ऍन्ऱु–कहकर; इकऴ्वरेल्–निन्दा करें तो; तडुत्ति–उनको रोकिए; ऐय–प्रभु; इवन् कुऱै–इसका कष्ट; मुटिप्पतु–दूर करना; मुन्नमे–पहले ही; मॊऴिन्ताय् अन्ऱे–आपने वचन दिया न; पिन्–फिर; इवन् विनैयिन्–इसके प्रारब्ध के; चॆय्कै अततैयुम्–परिणाम-कर्म से; पिऴैक्कल्–बचना; आमो–साध्य है क्या। ३५६

उत्तम गुण वाले! और एक प्रार्थना है। अगर आपके भाई मेरे भाई की, यह कहकर निन्दा करेंगे कि उसने अपने बड़े भाई को मरवा दिया तो आप उनको रोक दें। आपने इसकी याचना पूरी करने का वादा किया था। उस सिलसिले में वह जो काम करेगा उसके फल से बच सकेंगे क्या? । ३५६

मऱ्ऱिलॆ नॆन्निन् माय वरक्कनै वालिऱ् पऱ्ऱिक्
कॊऱ्ऱव निन्गट् टन्दु कुरक्कियऱ् ऱॊऴिलुङ् गाट्टप्
पॆऱ्ऱिलॆन् कडन्द शॊल्लिऱ् पयनिलै पिऴैप्प दिन्ऱि
उऱ्ऱदु शॆय्हॆन् ऱालु मुरियनिव् वनुम नॆन्ऱान् 357

कॊऱ्ऱव–विजयी राजा राम; मऱ्ऱु इलॆन्–और कुछ करनेवाला न रहा; ऍन्निनुम्–तो भी; माय अरक्कनै–वंचक राक्षस को; वालिल् पऱ्ऱि–पूंछ में बाँधकर; निन् कण् तन्तु–आपके पास सौंपकर; कुरङ्कु इयल् तॊऴिलुम्–वानरयोग्य कार्य; काट्ट पॆऱ्ऱिलॆन्–दिखा नहीं पाया; कटन्त–बीती बात; चॊल्लिल्–कहने में; पयन् इलै–कोई लाभ नहीं है; पिऴैप्पतु इन्ऱि–गलती के बिना; उऱ्ऱतु–यह जो मिला है; चॆय्क–वह काम करो; ऍन्ऱालुम्–कहने पर; इ अनुमन्–यह हनुमान; उरियन् ऍन्ऱान्–समर्थ है, कहा। ३५७

(वाली ने आगे कहा—) विजयशील श्रीराम! और कुछ नहीं कर सका तो भी वंचक राक्षस को पूँछ से बाँधकर आपके पास लाता और अपना वानर-सामर्थ्य दिखाता। वह भाग्य नहीं रहा। पर जो बीत चुका, उसको अब कहने से क्या लाभ है? पर यह जो हनुमान है उसे, 'जो आ गया, इस काम को करो'— की आज्ञा दी जाय तो वह पूर्ण रूप से समर्थ है। ३५७

अनुमनॆन् बवनै याऴि येयनिन् शॆय्य शॆङ्गैत्
तनुवॆन निनैदि मऱ्ऱॆन् तम्बिनिन् तम्बि याह
निनैदियोर् तुणैव रिन्नो रनैयव रिलैनी योण्डव्
वनिवैयै नाडिक् कोडि वानिनु मुयरन्द तोळाय् 358

अनुमन् ॲन्पवत्तै–हनुमान नाम के उसको; निन्–आपका; चॅय्य–सुन्दर; चॅम् कै तत्तु ॲन–लाल हाथ का धनु; निनैति–समझिए; आळि ऐय–चक्रधारी प्रभु; वानित्तुम्–आकाश से भी अधिक; उयर्न्त–उन्नत; तोळाय्–कन्धे वाले; मट्रु–और भी; ॲन् तम्पि–मेरे भाई को; निन् तम्पि आक–अपने भाई के रूप में; निनैति–समझें; इन्तोर् अनैयवर्–इनसे तुल्य; ओर् तुणैवर्–एक साथी; इलै–दूसरा नहीं होगा; ईण्टु–ऐसी स्थिति में; नी–आप; अ–उन; वत्तियै–देवी को; नाटि–ढूँढ़कर; कोटि–प्राप्त कर लीजिए। ३५८

चक्रधारी देव ! आकाश से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले ! इस हनुमान को आप अपने लाल हाथ का सुन्दर धनु मान लीजिए। और मेरे छोटे भाई को अपना छोटा भाई मान लीजिए। इनके समान आपको दूसरा सहायक नहीं मिलेगा। उनकी सहायता से आप अपनी पत्नी सीतादेवी को ढूँढ़कर प्राप्त कर लीजिए। ३५८

ॲन्ड्रवर् कियम्बिप् पिन्न रिरुन्दन निळव रन्नैत्
तन्रुणैत् तडक्कै नीट्टि वाङ्गिनन् ड्ळुवि मैन्द
ऑन्रुनक् कुरैप्प दुण्डा लुरुदियः(ह्) दुणर्न्दु कोडि
कुन्रिनु मुयर्न्द तोळाय् वरुन्दले यॅन्रु कूरुम् 359

ॲन्रु–ऐसा; अवर्कु इयम्पि–उनसे कहकर; पिन्तर्–पीछे; इरुन्ततन्–जो रहा, उस; इळवल् तन्नै–लघु भाई को; तन् तुणै–अपने जोड़े के; तट कै–विशाल हाथ; नीट्टि–बढ़ाकर; वाङ्कितन्–खींच लेकर; तळुवि–गले लगाते हुए; मैन्त–बेटे; कुन्रितुम् उयर्न्त–पर्वत से भी बढ़े हुए; तोळाय्–कन्धों वाले; ऑन्रु–एक बात; उनक्कु–तुमसे; उरुति–हितकारी; उरैप्पतु–कहनी; उण्टु–है; अ..तु–उसे; उणर्न्तु–समझकर; कोटि–मान लो; वरुन्तलै–दुःख मत करो; ॲन्रु–कहकर; कूरुम्–बोला। ३५९

वाली ने यह सब श्रीराम से कहा। फिर उसने अपने दोनों हाथ बढ़ाकर अपने पीछे खड़े रहे सुग्रीव को पकड़कर अपने पास खींच लिया और गले लगा लिया। फिर उससे कहा कि बेटे ! पर्वत से भी अधिक बढ़े हुए कन्धों वाले ! तुमसे एक बात कहनी है। उसे सुनो, समझो और मन में धारण करो। दुःख मत करो। वह समझाकर कहने लगा। ३५९

मऱैहळुम् मुनिवर् यारुम् मलर्मिशै ययनुम् मट्रैत्
तुरैहळिन् मुडिवुम् जॉल्लुन् दुणिपॊरु डिणिविर् कूक्कि
अऱैहळ लिराम नाहि यऱनॆरि निऱुत्त वन्द
तिऱैयॊरु शङ्गै यिन्ऱि यॆण्णुदि यॆण्ण मिक्कोय् 360

ऍण्णम् मिक्कोय्–सोच-विचार में समर्थ; मऱैकळुम्–वेद; मट्रै–और अन्य ग्रन्थों के बताये हुए; तुऱैकळित् मुटिवम्–मार्ग का अन्त; मुनिवर् यारुम्–सभी मुनिगण;

मलर् मिचै अयतुम्–कमलासन ब्रह्मा; चॊल्लुम्–जो बताते हैं; तुणि पॊरुळ्–वह निश्चित तत्त्व; तिणि विल्–सारयुक्त धनु; तूक्कि–उठाए हुए; अरै कऴल्–क्वणित पायलधारी; इरामन् आकि–श्रीराम बनकर; अऱ नॆऱि निऱुत्त–धर्ममार्ग प्रतिष्ठापनार्थ; वन्ततु–आया है; इऱै–थोड़ा भी; ऒरु चङ्कै इन्ऱि–कोई संशय विना; ऎण्णुति–समझो। ३६०

सोच-विचार करने में समर्थ सुग्रीव ! ये जो श्रीराम हैं वह परम-तत्त्व हैं, जिसकी सत्ता का दृढ़ता से वेद घोषित करते है; अन्य ग्रन्थों का विषय है; जिसके बारे में सारे मुनिगण और कमलासन बतलाते हैं। वही तत्त्व क्वणनशील पायलधारी श्रीराम बनकर हाथ में कठोर धनुष लिये हुए संसार में धर्म-मार्ग को सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुआ है ! इसको विना किसी शंका या संशय के मान लो। ३६०

निऱ्किन्ऱ शॆल्वम् वेण्डि नॆऱिनिन्ऱ पॊरुळ्ह ळॆल्लाम्
कऱ्किन्ऱ विवन्ऱन् नामङ् गरुदुव विवनैक् कण्डाय्
पॊऱ्कुन्ऱ मनैय तोळाय् पॊदुनिन्ऱ निलैमै नोक्किन्
ऎऩ्कॊन्ऱ वलिये शालु मिदऱ्कॊन्ऱु मेदु वेण्डा 361

पॊन् कुन्ऱम् अनैय–मेरुपर्वत-सदृश; तोळाय्–भुजा वाले; निऱ्किन्ऱ–शाश्वत; चॆल्वम् वेण्टि–पद (परमपद) चाहकर; नॆऱि निन्ऱ–धर्ममार्ग पर स्थित; पॊरुळ्कळ् ऎल्लाम्–सभी जीव; इवन् तन् नामम्–इनका नाम; कऱ्किन्ऱ–जप करते हैं; इवनै करुतुव–इनका ध्यान करते हैं; कण्टाय्–जानते हो; पॊतु निन्ऱ–तटस्थ; निलैमै नोक्किन्–स्थिति में रहकर देखें तो; ऎन् कॊन्ऱ–मुझे मारने की; वलिये–शक्ति ही; चालुम्–प्रमाण होगा; इतऱ्कु–इसके लिए; ऒन्ऱुम्–और कोई; एतु वेण्टा–हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

मेरुपर्वत-सम कन्धों वाले ! शाश्वत परमपद प्राप्त करने के हेतु धर्म-मार्ग पर जानेवाले सभी जीव इनका ही नाम जपते हैं और ध्यान करते हैं। तुम यह जान लो। तटस्थ रहकर देखा जाय तो इसका प्रमाण वही उनकी शक्ति है जिसने मुझे मारा। और अन्य किसी हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

कैदव मियऱ्ऱि याण्डुङ् गऴिप्परुङ् गणक्कि ऱीमै
वैहलुम् पुरिन्दु ळारुम् वानुयर् निलैयै वळ्ळल्
ऎय्दवर् पॆऱुव रॆन्ऱा विणैयडि यॆय्दि येवल्
शॆय्दवर् पॆऱुव दैय शॆप्पलाऱ् जिऱुमैत् तामो 362

ऐय–तात; कैतवम् इयऱ्ऱि–कैतव करके; याण्टुम्–कभी भी; कऴिप्पु अरु–अनिवार्य; कणक्कु इल्–असंख्यक; तीमै–पापकार्य; वैकलुम्–हर दिन; पुरिन्तुळारुम्–जिन्होंने किये वे भी; वळ्ळल्–उदार श्रीराम के द्वारा; ऎय्तवर्–प्रेरित शर के लक्ष्य बने (और मरे) तो; वान् उयर् निलैयै–अत्युच्च परमपद को;

पऱुवर् ॲऩ्ऱाल्–पा जायेंगे, तो; इणै अटि ॲय्ति–उनके चरणद्वय की शरण लेकर; एवल् चॅय्तवर्–उनका कैंकर्य करनेवाले; पॅऱुवतु–जो प्राप्त करेंगे; चॅप्पल् आम्–(वह पद) कहने योग्य; चिऱुमैत्तु आमो–लघु विषय होगा क्या। ३६२

तात! जो वंचक काम करते रहते हैं, दुर्वार असंख्यक पाप सदा करते हैं वे भी, इन उदार प्रभु से प्रेरित शर से मरेंगे तो अतिश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जायँगे। तब जो इनके चरणद्वय की शरण में रहकर इनकी सेवा करते हैं, उनको जो पद प्राप्त होगा क्या वह इतना अल्प होगा कि वर्णन का विषय बने ? । ३६२

अरुमैयॅन् विदियि नारे युदवुवा नमैन्द काले
इरुमैयु मॅय्दि नाय्मऱ् ऱिनिच्चॅयर् पाल दॅण्णिन्
तिरुमऱु मार्ब नेवल् शॅऩ्नियिऱ् चेर्त्तिच् चिन्दै
ऑरुमैयि निऱुवि मुम्मै युलहिनु मुयर्दि यन्ऱे 363

वितियितारे–विधि ही; उतवुवान् अमैन्त काले–जब उपकार करने को उद्यत हो जाती है, तब; अरुमै ॲन्–अगम क्या; इरुमैयुम् ॲय्तिताय्–(तुम) इह-पर दोनों हित पा चुके; इति–आगे; चॅयल् पालतु–कर्तव्य; ऍण्णिन्–सोचो तो; तिरुमऱु मार्पन्–श्रीवत्सांकितवक्ष; एवल्–(श्रीराम) की आज्ञाओं को; चॅन्नियिल् चेर्त्ति–सिर पर धारण करो; चिन्तै–मन को; ऑरुमैयिन्–एक हो मार्ग पर (अचल); निऱुवि–रखकर; मुम्मै उलकित्तुम्–तीनों विध लोकों में; उयर्ति–श्रेष्ठता प्राप्त कर लो। ३६३

जब स्वयं विधिदेवता उपकार करने को उद्यत हो जाते हैं, तब क्या वस्तु दुर्लभ होगी ? तुम भाग्यवान हो। इह-पर दोनों हित पा चुके हो ! आगे का कर्तव्य सोचो तो यही है कि, श्रीवत्सांकितवक्ष श्रीराम की आज्ञाओं को शिरोधार्य करो; मन को एक मार्ग में चलाओ और त्रिविध लोकों में सर्वश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जाओ। ३६३

मदवियल् कुरक्कुच् चॅय्है मयर्वॊडु माऱ्ऱि वळ्ळल्
उदवियै युन्नि यावि युऱ्ऱिटत् तुदवु हिऱ्ऱि
पदवियै यॅवर्क्कु नल्हुम् पण्णवन् पणित्त यावुम्
शितैविल शॅय्दु नॊय्दिऱ् ऱीर्वरुम् बिऱवि तीर्दि 364

मत इयल्–मत्त स्वभाव के; कुरक्कु चॅय्कै–वानर-कृत्यों को और; मयर्वॊटु–भ्रम को; माऱ्ऱि–दूर करके; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम की; उतवियै–सहायता को; उन्नि–सोचकर; उऱ्ऱिटत्तु–(उन पर) जब विपदा आयगी, तब; आवि उतवुकिऱ्ऱि–अपने प्राण भी देकर (सेवा करो); पतवियै–परमपद को; ॲवर्क्कुम् नल्कुम्–(भक्त) किसी को भी देनेवाले; पण्णवन्–कृपालु स्वभाव के; पणित्त–(श्रीराम के) आज्ञा किये हुए; यावुम्–सभी कार्य; चितैवु इल–विघ्ना कमी के; चॅय्तु–करके; तीर्वु अरुम्–दुर्वार; पिऱवि–जन्म को; नॊय्तिल्–सुगम रीति से; तीर्त्ति–दूर करो। ३६४

अपना मस्त वानर-प्रकृति का कृत्य और भ्रम छोड़ दो। उदार प्रभु का उपकार स्मरण रखो। जब उन पर कोई विपदा आये तो अपने प्राण देकर निवारण करो। वे भक्तों में भेद करनेवाले नहीं हैं। किसी को भी अपना परमपद दिलानेवाले उदार प्रभु हैं। वे जो भी कहेंगे उनको निर्दोष रीति से कार्यान्वित करो। इस प्रकार अपना जन्म-बन्धन शीघ्र काट लो। ३६४

अरशियऱ् पारम् पूरित् तयर्त्तनै यिहऴा दैयन्
मरैमलर्प् पादम् नीङ्गा वाऴ्दि मन्न रॆन्बार्
ऍरियतऱ् कुरिय रॆन्ऱे यॆण्णुदि यॆण्णम् यावुम्
पुरिदिशिऱ् ऱडिमै कुऱ्ऱम् पॊऱुप्परॆन् ऱॆण्ण वेण्डा 365

अरचु इयल्–राज्य-शासन के; पारम्–भार पर; पूरित्तु–मुदित होकर; अयर्त्तत्तै–भ्रमित हो; इकऴातु–(श्रीराम को) अल्प मत मानो; ऐयन् मरै मलर् पातम्–(और) श्रीराम के कमल-चरणों से; नीङ्का–अलग मत जाओ; वाऴ्ति–इस तरह जीवन बिताओ; मन्नर् ऍन्पार्–राजा कहलानेवाले; ऍरि अतऱ्कु–जलती आग की समानता पाने के; उरियर् ऍन्ऱे–योग्य हैं, यही; ऍण्णुति–समझो; ऍण्णम् यावुम्–उनके विचार सब; पुरिति–कार्यान्वित करो; चिऱु अटिमै–मैं छोटा दास हूँ; कुऱ्ऱम् पॊऱुप्पर्–अपराध क्षमा करेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्ण वेण्टा–विचार नहीं रखना चाहिए। ३६५

राज्य-शासन के भार से मुदित होकर या भूलकर उनको अल्प मत मानो। प्रभु श्रीराम के कमल-चरणों से अलग मत होओ। उनकी ही शरण में जीवन बिताओ। राजा जलती आग के समान है। उन्हें वसा ही रहने का अधिकार है। यह विचार करके उनके सभी विचारों को कार्यान्वित करो। 'हम छोटे दास हैं, वे हमारी भूलें क्षमा कर देंगे' —ऐसा कभी मत सोचो। ३६५

*** ऍन्ऩवित् तहैय वाय वुऱुदिहऴ् यावु मेङ्गुम्**
पिन्ऩवऱ् कियम्बि निन्ऱ पेरॆऴि लानै नोक्कि
मन्ऩवर्क् करशन् मैन्द मऱ्ऱिवन् ऱुऱ्ऱत् तोडुम्
उन्ऩडैक् कलमॆन् ऱुय्त्ते युयर्हर मुच्चि वैत्तान् 366

ऍन्ऩ–इस तरह; इ तकैय आय–ऐसे; उऱुतिकऴ् यावुम्–सब हितों का; एङ्कुम्–दुःखी; पिन्ऩवऱ्कु–अपने अनुज को; इयम्पि–उपदेश देकर; निन्ऱ–सामने स्थित; पेर् ऍऴिलानै–अतिसुन्दर श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; मन्ऩवर्क्कु अरचन् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इवन्–यह; चुऱ्ऱत्तोटुम्–इसके परिवार के साथ; उन् अटैक्कलम्–आपकी शरण में है; ऍन्ऱु उय्त्तु–कहकर उसे उनके पास सौंपकर; उयर् करम्–उठाये हुए हाथ; उच्चि वैत्तान्–(वाली ने) अपने सिर पर रखे। ३६६

इस भाँति वाली ने अपने दुःखी भाई को ऐसे हितोपदेश दिये। फिर

अपने सामने स्थित अतिरूपवान श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह सुग्रीव अपने परिवारों के साथ आपकी शरण में है। यह कहकर वाली ने सुग्रीव को श्रीराम के आगे किया। फिर उसने अपने हाथ जोड़कर सिर पर रख लिये। ३६६

❀ वैत्तपिऩ् तुरिमैत् तम्बि मामुह नोक्कि वल्लै
उय्त्तनै कॉणर्दि युत्ऱ ओङ्गरु महनै यॅऩ्ऩ
अत्तलै यवनै येवि यळैत्तलि तणैन्दा ऩॅऩ्ऩ
कैत्तलत् तुवरि नीरैक् कलक्किनान् पयन्द काळै 367

वैत्त पिन्–रखने (नमस्कार करने) के बाद; उरिमै तम्पि–अपने ही छोटे भाई का; मा मुकम् नोक्कि–उत्तम मुख देखकर; उन् तन्–तुम्हारे; ओङ्कु अरु मकनै–श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र (अंगद) को; वल्लै–शीघ्र; उय्त्तनै–बुला; कॉणर्ति–लाओ; ॲन्न–कहकर; अ तलै–वहाँ; अवनै एवि–उसको भिजवाकर; अळैत्तलिन्–बुलवाने पर; कै तलत्तु–हाथों से; उवरि नीरै कलक्किनान्–(जिसने) समुद्रजल को मथा, उस वाली का; पयन्त काळै–पुत्र ऋषभ-सम अंगद; अणैन्तान्–आया (ॲन्न)। ३६७

सिर पर जुड़े हाथ रखकर नमस्कार करने के बाद वाली ने अपने भाई के गौरवमय मुख को देखकर कहा कि सुग्रीव ! तुम जाओ और अपने श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र अंगद को बुला लाओ। वाली ने सुग्रीव को भिजवाकर बुलवाया। समुद्र को अपने हाथों से जिसने मथा था, उस वाली का पुत्र ऋषभतुल्य अंगद आया। ('ॲन्न' का इधर अर्थ नहीं किया गया यद्यपि उसका अर्थ 'कहते हैं' भी है।) पूरक ध्वनि। ३६७

❀ शुडरुडै मदिय मॅन्नत् तोन्ऱलुन् दोन्ऱि याण्डुम्
इडरुडै युळ्ळत् तोरै यॅण्णिनु मुणर्न्दि लादान्
मडरुडै नऱुमॅन् शेक्कै मलैयन्ऱि युदिर वारिक्
कडरिडैक् किडन्द कादऱ् ऱादैयैक् कण्णिऱ् कण्डान् 368

चुटर् उटै–प्रकाशमय; मतियम् ॲन्न–चन्द्र के समान; तोन्ऱलुम्–कुँअर भी; याण्टुम्–कहीं भी; इटर् उटै उळ्ळत्तोरै–संकटग्रस्त लोगों को; ॲण्णितुम्–अपनी कल्पना में भी; उणर्न्तिलातान्–जो नहीं जानता था, वह; तोन्ऱि–आकर; मटर् उटै–सुमन दलों से युक्त; नऱु मॅन्–सुगन्धित और कोमल; चेक्कै मलै अन्ऱि–शय्या रूपी पर्वत पर न; उतिर वारि–रक्तप्रवाह रूपी; कटर् इटै–समुद्रमध्य; किटन्त–पड़े रहे; कातल् तातैयै–प्यारे पिता को; कण्णिल् कण्टान्–अपनी आँखों से देखा (अंगद ने)। ३६८

वाली का कुमार भूलकर भी किसी को दुःख देनेवाला नहीं था। दुःखी मनुष्य को उसने कल्पना में भी नहीं देखा था। वह प्रकाशमय पूर्णचन्द्र के समान आ प्रकट हुआ। उसने देखा कि वाली पंखुड़ियों की

बनी शय्या रूपी पर्वत पर नहीं लेटा था, पर रक्त-समुद्र के मध्य पड़ा था। उसने अपनी आँखें फाड़कर उस दृश्य को देखा। ३६८

❀ कण्डहण् कऩलु नीरुङ् गुरुदियुङ् गाल मालैक्
कुण्डल मलम्बु हिऩ्ऱ कुववुत्तोट् कुरिशि ऱिङ्गळ्
मण्डल मुलहिल् वन्दु किडन्ददम् मदियिऩ् मीदा
विण्डल मदऩि ऩिऩ्ऱोर् मीऩ्विऴुन् दॆऩ्ऩ वीऴ्न्दाऩ् 369

कण्ट कण्–देखनेवाली आँखों ने; कऩलुम्–अग्नि को और; नीरुम्–जल को; कुरुतियुम्–रक्त को; काल–निकाला और; कुण्टलम् अलम्पुकिऩ्ऱ–कुण्डल जिन पर लगे डोलते हैं; मालै कुववु–और जो माला से भूषित हैं, उन; तोळ्–कन्धों से भूषित; कुरिचिल्–राजकुमार; तिङ्कळ् मण्टलम्–चन्द्रमण्डल; उलकिल् वन्तु–भूमि पर आकर; किटन्ततु–पड़ा रहा; अ मतियिऩ् मीता–उस चन्द्रमण्डल पर; विण् तलम् अतऩिऩ् निऩ्ऱु–आकाश से; ओर् मीऩ्–एक नक्षत्र; विऴुन्तु ऎऩ्ऩ–गिरा, जैसे; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा। ३६९

उसकी उन आँखों से आग उठी और जल रक्त के साथ बह निकला। अंगद के कन्धे ऊँचे थे। उन पर कुण्डल डोल रहे थे। वे माला से अलंकृत थे। वह राजकुमार आकर वाली पर गिरा। तब ऐसा लगा मानो चन्द्रमण्डल भूमि पर पड़ा हो और उस पर आकाश से एक तारा आकर गिरा हो। ३६९

❀ ऍन्दैये यॅन्दै येयिव् वॅऴुदिरै वळाहत् तियार्क्कुम्
शिन्दैयाऱ् चॅय्है यालोर् तीविऩै शॅय्दि लादाय्
नॊन्दऩै यदुदा ऩिऱ्क निऩ्मुह नोक्किक् कूऱ्ऱुम्
वन्ददे यऩ्ऱो वञ्जा दारदऩ् वलियैत् तीर्प्पार् 370

ऍन्तैये–पिता; ऍन्तैये–मेरे पिता; इ ऍऴु तिरै–इन सातों समुद्रों से; वळाकत्तु–वलयित भूमि में; यार्क्कुम्–किसी को भी; चिन्तैयाल्–मन से; चॅय्कैयाल्–और कृत्य से; ओर् ती विऩै चॅय्तिलाताय्–कोई हानि न करनेवाले; नॊन्तऩै–अब दुःखग्रस्त हो गये; अतु ताऩ् निऱ्क–वह तो रहे एक ओर; निऩ् मुकम् नोक्कि–आपके मुख को देखते हुए; कूऱ्ऱुम्–मृत्यु भी; अञ्चातु–विना भय खाये; वन्तते अऩ्ऱो–आ गयी न; आर्–कौन; अतऩ् वलियै–उसके बल को; तीर्प्पार्–तोड़ देगा। ३७०

(अंगद विलाप करने लगा।) मेरे पिताजी! मेरे पिताजी! आपने सातों समुद्रों से वलयित इस भूमि पर किसी का अहित नहीं सोचा, न ही किया। ऐसे आप अब कष्ट में पड़े हैं। हाय! वह एक ओर रहे! आज यह अनोखी बात हो गयी है कि यम ने भी आपके सम्मुख आने का साहस किया! अब कौन है जो उसका घमण्ड चूर करे?। ३७०

तऱैयडित् तटुपोऱ् ऱीरात् तहैयवित् तिशैह डाङ्गुम्
करैयडिक् किळिवु कण्ड कण्डह नॆञ्ज मुन्ऱऩ्
निऱैयडिक् कोल वालि निलैमैयै निनैयुन् दोऱुम्
पऱैयडिक् किन्ऱ वन्दप् पयमऱप् पऱन्द दन्ऱे 371

तऱै–खूँटे; अटित्ततु पोल्–गाड़े गये हों, ऐसे; तीरा तकैय–अचल रहनेवाले; इ तिचैकळ् ताङ्कुम्–इन दिशाओं के भारवाही; करै अटिक्कु–ओखली के समान पैरों के गजों को; इळिवु कण्ट–हरानेवाले; कण्टकन्–कंटक रावण का; नॆञ्चम्–मन; उन् तन्–आपकी; निऱै–स्थूल; अटि–अग्रभाग से युक्त; कोल–सुन्दर; वालित्–पूँछ की; निलैमैयै–(शक्ति की) स्थिति को; निनैयुम् तोऱुम्–जब-जब स्मरण करता है तब; पऱै अटिक्किन्ऱ–ढोल-सा थर्रानेवाला; अन्तप्पयम्–वह भय; अऱ–अलग; पऱन्ततु अन्ऱे–भाग गया न। ३७१

आपकी मृत्यु से रावण के मन का भय मिट जायगा। रावण खूँटों के समान अचल रहकर दिशाओं को ढोनेवाले, ओखली के समान पैरों वाले दिग्गजों को हराकर उनको हेय बना दिया था। उस कंटक का मन आपकी सुन्दर और स्थूल अग्र भाग की पूँछ का स्मरण करते हर समय पिटे ढोल के समान थर्राता था। अब वह भय उड़ गया। ३७१

❀ कुलवरै नेमिक् कुन्ऱ मॆन्ऱवा नुयर्न्द कोट्टित्
तलैहळु निन्बोऱ् ऱाळिऱ् ऱळुम्बिनित् तविर्न्द वन्ऱे
मलैयुड ऩरवु मऱ्ऱु मदियमुम् बलवुन् दाङ्गि
अलैहडल् कडैय वेण्डि ऩारिनिक् कडैव रैया 372

ऐया–श्रेष्ठ; कुल वरै–आठों कुलपर्वत; नेमि कुन्ऱम्–चक्रवालपर्वत के; वान् उयर्न्त कोट्टित्–गगनस्पर्शी पर्वत के; तलैकळुम्–शिखर भी; निन्–आपके; पोन् ताळिल्–सुन्दर पैरों के कारण; तळुम्पु–पड़े चिह्नों से; इति–अब; तविर्न्त अन्ऱे–रिक्त हो गये न; मलैयुटन्–मन्दरपर्वत के साथ; अरवुम्–सर्प (वासुकी); मतियमुम्–चन्द्र; मऱ्ऱुम् पलवुम्–और अन्य सभी; ताङ्कि–धारण करके; अलै कटल्–तरंगपूर्ण समुद्र का; कटैय वेण्टित्–मथन करना हो; आर् इति कटैवर्–कौन मथेगा। ३७२

श्रेष्ठ! आपके पैरों के लगने से आठों कुलपर्वतों और गगनस्पर्शी चक्रवालपर्वत के शिखरों पर घिसने के चिह्न लगे हुए थे। अब वे उनसे रहित हो जायँगे। मन्दरपर्वत, वासुकी नाग, चन्द्र और अन्य उपकरण तैयार करके तरंगपूर्ण समुद्र को मथना पड़े तो कौन मथेगा?। ३७२

पञ्जिन्मॆल् लडियाळ् पङ्गन् पदयुह मलॢल यादुम्
अञ्जलित् तडियाच् चॆङ्गै याणैया यमरर् यारुम्
ऎञ्जल रिरुन्दा रुण्णा दिन्नमु दीन्द नीयो
तुञ्जिनै वळ्ळि योर्ह णिन्नितित् यार् शॊल्लड् पालार् 373

पञ्चित्न् मॅल् अटियाऴ्–रुई से भी अधिक कोमल चरणों की पार्वतीदेवी के; पङ्कन्–अर्द्धांगी के; पत युकम् अल्ल–चरणद्वय को छोड़कर; यातुम् अञ्चलित्तु अऱिया–किसी की अंजलि करना जिन्होंने नहीं जानने का; आणै–नियम रखा था; चॅम् कैयाय्–ऐसे लाल हाथों वाले; अमरर् यारुम्–सभी देव; अॅञ्चलर् इरुन्तार्–अमर रहते हैं (आपके मथने से प्राप्त अमृत खाकर); इन् अमुतु–वह मधुर अमृत; उण्णातु–बिना भोगे; ईन्त नीयो–उन्हें देकर आप; तुञ्चितै–मृतक हो गये; निन्ऩिन्–आपसे बढ़कर श्रेष्ठ; वळ्ळियोर्कळ्–दानी; चॊल्लल् पालार्–कहाने योग्य; यार्–कौन हैं। ३७३

रुई से भी कोमलचरणा पार्वती को आधा शरीर जिन्होंने दिया है, उन शिवजी के चरणद्वय को छोड़कर आपके हाथों ने किसी की अंजलि करना न जाना था। यह आपका प्रण था। ऐसे लाल हाथों वाले! आपकी कृपा और परिश्रम से अमृत निकला। उसे आपने देवों को दे दिया। वे अमर रह गये। पर आप मर गये। आपसे बढ़कर श्रेष्ठ दानी कहलानेवाले कौन होंगे ? । ३७३

आयत्त पलवुम् बन्ऩि यळुङ्गिनन् पुळुङ्गि नोक्कित्
तीयुरु मॅळ्हिऱ् चिन्दै युरुहिन्ऩन् शॅङ्गण् वालि
नीयिनि ययर्वा यल्लै यॅन्ऱुदन् नॅञ्जिऱ् पुल्लि
नायह ऩिरामन् शॅय्द नल्विनैप् पयन्ऩी दॅन्ऱान् 374

आयत्त पलवुम्–ऐसी बहुत बातें; पन्ऩि–बार-बार कहकर; पुळुङ्कि–तप्त होकर; अळुङ्किनन्–दुःखी हुआ और; नोक्कि–(वाली को) देखकर; ती उरु मॅळुकिल्–आग में गलते मोम के समान; चिन्तै उरुकिनन्–द्रवमन हो गया; चॅम् कण् वालि–लाल बनी आँखों वाले वाली ने; नी–तुम; इनि–अब से; अयर्वाय् अल्लै–दुःखी मत हो; अॅन्ऱु–(धीरज में) कहकर; तन् नॅञ्चिल्–अपने गले से; पुल्लि–लगाकर; नायकन् इरामन्–नायक श्रीराम का; चॅय्त ईतु–कृत यह कार्य; नल् विनै पयन्–सौभाग्य का फल है; अॅन्ऱान्–कहा (वाली ने)। ३७४

अंगद ऐसी बातें कहते हुए विलाप करता रहा। वह बहुत तप्त और दुःखी हुआ। वह वाली को देखकर अग्नि-तप्त मोम के समान द्रवमन हो गया। तब वाली ने अंगद को धीरज देते हुए कहा कि पुत्र ! दुःख मत करो। फिर उसने अपने पुत्र को गले से लगाते हुए कहा कि सर्वलोकनायक श्रीराम ने जो किया है, यह मेरे सौभाग्य का फल है। ३७४

तोन्ऱलु मिऱत्त ऱानुन् दुहळऱत् तुणिन्दु नोक्किन्
मून्ऱुल हत्ति नोर्क्कुम् मूलत्ते मुडिन्द वन्ऱे
यान्ऱव मुडैमै यालिव् विऱुदिवन् दियैन्द दियार्क्कुम्
शान्ऱॆन निन्ऱ वीरन् ऱात्वन्दु वीडु तन्दान् 375

तोन्ऱलुम्–जन्म लेना; इऱत्तल् तानुम्–और मरना; तुकळ् अऱ–दोषहीन; तुणिन्तु नोक्किन्–दृढ़ता से विचारा जाय तो; मून्ऱु उलकत्तित्तोर्क्कुम्–तीनों लोकों के वासियों के लिए; मूलत्ते–आरम्भ में ही; मुटिन्त–निश्चित विषय हैं; यान्–मैं; तवम् उटैमैयाल्–पूर्वकृत तपस्या वाला था, इसलिए; इ इऱुति–ऐसा अन्त; वन्तु इयैन्ततु–आ मिला; यार्क्कुम्–सभी के; चान्ऱु ऑन–साक्षी-रूप में; निन्ऱ–स्थित; वीरन्–वीर श्रीराम ने; तान् वन्तु–स्वयं पधारकर; वीटु तन्तान्–मोक्ष दिलाया। ३७५

अंगद ! जन्म और मरण तीनों लोकों के वासियों के सम्बन्ध में पूर्व-निर्धारित विषय हैं। मैंने तपस्या की थी, इसलिए ऐसा दुर्लभ अन्त हुआ। तभी तो सबके साक्षीरूप-स्थित ये श्रीराम स्वतः मेरे पास आये और इन वीर श्रीराम ने मुझे मोक्षपद दिला दिया। ३७५

❀ पालमै तविर्दि यॅन्शॊऱ् पऱ्ऱुदि यॅन्नि नैय
मेलॊरु पॊरुळु मिल्ला मॅय्प्पॊरुळ् विल्लुन् दाङ्गिक्,
काल्तरै तोय निन्ऱु कट्पुलक् कुऱ्ऱ दम्मा
माल्तरुम् बिऱवि नोय्क्कु मरुन्दॆन वणङ्गु मैन्द 376

ऐय–तात; पालमै तविर्ति–बालपना छोड़ दो; ऍन् चॊल्–मेरा कहना; पऱ्ऱुति–मानो; ऍन्तिन्–तो; मेल् ऒरु पॊरुळुम् इल्ला–जिसके परे या ऊपर कोई तत्त्व नहीं है; मॅय् पॊरुळ्–वह सनातन तत्त्व; विल्लुम् ताङ्कि–धनु भी लेकर; काल्–पैरों को; तरै तोय–भूमि पर रखते हुए; निन्ऱु–स्थित रहकर; कण् पुलक्कु उऱ्ऱतु–दृष्टिगोचर हुआ; मैन्त–पुत्र; माल् तरुम्–मोहजनक; पिऱवि नोय्क्कु–भवरोग का; मरुन्तु ऍन–औषध मानकर; वणङ्कु–इनका नमन करो; अम्मा–मैया री। ३७६

(वाली ने अंगद को सलाह दी।) बेटे ! बालपन छोड़ दो। मेरी बात मानो। ये श्रीराम, वही तत्त्व है जिससे परे कोई तत्त्व नहीं है। वह सनातन तत्त्व हाथ में एक धनु भी लिये हुए और धरती पर चरण रखते हुए दृष्टिगोचर हुआ है। इसलिए, हे पुत्र ! इनकी वन्दना करो, यह मानकर कि ये मोहक भवरोग के औषध हैं। ३७६

❀ ऍन्नुयिर्क् किऱुदि शॅय्दा नॅन्बदै यिऱैयु मॅण्णा
दुन्नुयिर्क् कुऱुदि शॅय्दि यिवऱ्कम रुऱ्ऱ दुण्डेल्
पॊन्नुयिर्त् तॊळिरुम् बूणाय् पॊदुनिन्ऱु दरुमम् पोऱ्ऱि
मन्नुयिर्क् कुऱुदि शॅय्वान् मलरडि तॊळुदु वाळ्दि 377

पॊन् उयिर्त्तु–स्वर्ण से निर्मित होकर; ऒळिरुम्–ज्वलन्त रहनेवाले; पूणाय्–आभरणधारी; ऍन् उयिर्क्कु–मेरे प्राणों का; इऱुति चॅय्तान्–अन्त कराया; ऍन्पतै–यह बात; इऱैयुम् ऍण्णातु–बिलकुल न सोचकर; उन् उयिर्क्कु–अपने जीवन का; उऱुति चॅय्ति–हित करा लो; इवर्क्कु–इनको; अमर् उऱ्ऱतु उण्टेल्–(शत्रुओं से) लड़ाई हो गयी तो; पॊतु निन्ऱु–तटस्थ रहकर; तरुमम् पोऱ्ऱि–धर्म का पक्ष

लो; मन्नु उयिर्क्कु–सनातन जीवों के; उऱुति चॅय्वान्–हितकारी इनका; मलर् अटि–चरण-कमल; तॊऴुतु–वन्दित कर; वाऴ्ति–जीवन बिताओ। ३७७

स्वर्णनिर्मित, कांतियुक्त आभूषणभूषित अंगद ! श्रीराम ने मेरे प्राणों का अन्त करा दिया, इस बात का किंचित भी विचार मत करो। अपने जीवन का हित साध लो। इनको कभी युद्ध करने का मौका आ जाय तो तटस्थता न छोड़कर धर्म का पालन करो। ये सनातन जीवों के हितकारी हैं। इनके चरणों की पूजा-वन्दना करके उनकी सेवा में जीवन बिताओ। ३७७

ऍन्ऱन निन्नैय वाय वुऱुदिहळ् यावुञ् जॊल्लित्
तन्ऱुणैत् तडक्कै यारत् तनयनैत् तऴुविच् चालक्
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तिण्डोट् कुरक्किनत् तरशन् कॊऱ्ऱप्
पॊन्ऱिणि वयिरप् पैम्बूट् पुरवलन् ऱन्नै नोक्कि 378

कुन्ऱिनुम् चाल उयर्न्त–पर्वत से भी अत्यधिक उन्नत; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कन्धों से युक्त; कुरङ्कु इनत्तु अरचन्–वानरकुलाधिपति; ऍन्ऱनन्–ऐसा; इनैय आय–इस तरह के; उऱुतिकळ् यावुम्–सब हितकारी बातें; चॊल्लि–कहकर; तन् तुणै तट कै–अपने जोड़े के विशाल हाथों से; तनयनै–पुत्र को; आर तऴुवि–कसकर आलिंगन करके; कॊऱ्ऱम्–विजयी; पैम् पॊन् तिणि–उत्तम स्वर्णमय; वयिरम् पूण्–हीरे-जड़े आभरणों से भूषित; पुरवलन् तन्नै–जगद्रक्षक को; नोक्कि–देखकर। ३७८

पर्वतों से भी अत्यधिक उन्नत कन्धों वाले वानराधिपति वाली ने ऐसा इस तरह की हित की बातें कहीं। फिर उसने अपने दोनों विशाल हाथों से अपने पुत्र का कसकर आलिंगन किया। उसके बाद वाली ने विजयशील और स्वर्णमय, हीरे-जटित आभरणधारी जगन्नाथ श्रीराम की ओर देखकर— । ३७८

※ नॅय्यडै नॅडुवेऱ् ऱानै नीनिऱ निरुद रॅन्नुम्
तुय्यडैक् कनलि यन्न तोळिनन् ऱॊऴिलुन् दूयन्
पॊय्यडै युळ्ळत् तार्क्कुप् पुलप्पडाप् पुनिद मऱ्ऱुन्
कैयडै याहु मॅन्ऱव् विरामऱ्कुक् काट्टुङ् गालै 379

पॊय् अटै–असत्यमिलित; उळ्ळत्तार्क्कु–मन वालों को; पुलप्पटा–अदृश्य; पुनित–पवित्र पुरुष; नॅय् अटै–घृतसिक्त; नॅटु वेल्–लम्बे भालों के धारक वीरों को; चेनै–सेना वाले; नील् निऱ निरुतर् ऍन्नुम्–काले रंग के राक्षस रूपी; तुय् अटै–कपास के गट्ठर के लिए; कनलि अन्न–अग्नि-सम; तोळिनन्–कन्धे वाला है; तॊऴिलुम्–कार्य में; तूयन्–पवित्र है; मऱ्ऱु–अब; उन् कैयटै आकुम्–आपका धरोहर होगा; ऍन्ऱु–कहकर; अ इरामऱ्कु–उन श्रीराम को; काट्टुम् कालै–दिखाने (सौंपने) पर। ३७९

वाली ने सम्बोधित किया कि असत्य-मन जीवों को अगोचर रहनेवाले पवित्र पुरुष ! इस अंगद के कन्धे घृत-लगे भालों वाले वीरों की सेना के स्वामी, काले रंग के राक्षस रूपी रुई की गठरियों के लिए अग्नि के समान हैं। यह अपने कृत्यों में भी पवित्र रहनेवाला है। अब से यह आपका धरोहर है। यह कहकर जब उसने अंगद को श्रीराम के आगे किया, तब। ३७९

❀ तऩ्ऩडि ताऴ्द लोडुन् दामरैत् तडङ्ग णातुम्
पॊऩ्ऩुडै वाळै नीट्टि नीयिदु पॊऱ्ऱुति यॆऩ्ऱाऩ्
अॆऩ्ऩलु मुलह मेऴु मेत्तिऩ विऱ्ऩदु वालि
अऩ्निलै तुऱन्दु वाऩुक् कप्पुऱत् तुलह माऩाऩ् 380

तामरै तट कणातुम्–आयत-कमलाक्ष ने भी; तन् अटि ताऴ्तलोटुम्–अपने पैरों पर (उसके) झुकने पर; पॊन् उटै वाळै नोट्टि–स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ाकर; नी–तुम; इतु–इसको; पॊऱ्ऱुति–धारण कर लो; अॆन्ऱान्–कहा (उसे दिया); अॆन्नलुम्–कहते ही; उलकम् एऴुम् एत्तिन–सातों लोकों ने स्तुति की; वालि–वाली; अ निलै–वह स्थिति; तुऱन्तु–छोड़कर; वानुक्कु–स्वर्ग के; अ पुऱत्तु–उस पार के; उलकन् आनान्–विष्णुलोक (वैकुण्ठ या परमपद) वासी बना। ३८०

अंगद श्रीराम के चरणों में नत हुआ। विशाल-कमलाक्ष श्रीराम ने अपनी स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ायी और अंगद से कहा कि इसको धारण करो। (श्रीराम ने उसे अंगरक्षक का पद दिया।) श्रीराम के यह कहते ही सातों लोकों के वासियों ने श्रीराम की स्तुति की और अंगद को बधाई दी। तब वाली अपनी भूलोकवास की स्थिति से छूटकर उस परमलोक में पहुँच गया, जो देवों के स्वर्गलोक से भी परे, ऊपर है। ३८०

कैयव ऩॆहिऴ्द लोडुङ् गडुङ्गणै कालऩ् वालि
वॆय्यमार् बहत्तुट् टङ्गा दुरुविमेक् कुयर मीप्पोयत्
तुय्यनीर्क् कडलुट् टोय्न्दु तूय्मल रमरर् तूव
ऐयऩ्वॆन् विडाद कॊऱ्ऱत् तावम्वन् दडैन्द दऩ्ऱे 381

अवण्–तब; कै–उसके हाथों के; नॆकिऴ्तलोटुम्–ढीले पड़ते ही; कटुम् कणै कालन्–कठोर शर रूपी यम; वालि–वाली के; वॆय्य–सुदृढ़; मार्पु अकत्तु उळ्–वक्ष के अन्दर; तङ्कातु–न रहकर; उरुवि–निफरकर; मेक्कु उयर–ऊपर उठकर; मी पोय्–दूर जाकर; तुय्य नीर् कटलुळ्–शुद्ध-जल-सागर में; तोय्न्तु–मग्न होकर; तूय् मलर्–पवित्र पुष्प; अमरर् तूव–देवों के बरसाते; ऐयन्–प्रभु की; वॆन्–पीठ को; विटात–छोड़ जो अलग नहीं होता; कॊऱ्ऱत्तु–जो विजय का आधार है, उस; आवम्–तूणीर में; वन्तु–आकर; अटैन्ततु–पहुँचा। ३८१

वाली के हाथ (जो बाण को पकड़े हुए थे) ढीले हो गये तो कठोर बाण (यम) वाली के सुदृढ़ वक्ष से निफरकर बाहर आया। आकाश में ऊपर

बहुत दूर गया। शुद्धजल के सागर में नहा उठा। फिर उस तूणीर में आकर घुस गया जो श्रीराम की पीठ से कभी अलग नहीं होता था और जो श्रीराम की विजयों का आधार था। ३८१

वालियु मेहि नान्विण् वरम्बिला वाऱ्ऱ लोडुम्
पालिया मुन्नर् निन्ऱ परिदिशेय् शॅङ्गै पऱ्ऱि
आलिलैप् पळ्ळि यानु मङ्गद नोडुम् बोनान्
वेल्विऴित् तारै केट्टाळ् वन्दवन् मॅय्यिल् वीऴ्न्दाळ् 382

वालियुम्–वाली भी; विण् एकितान्–परमपद गया; आल् इलै पळ्ळियानुम्–वटपत्रशायी विष्णु (के अवतार श्रीराम) भी; वरम्पु इला–असीम; आऱ्ऱलोटुम्–बल के साथ; मुन्नर् निन्ऱ–सामने स्थित; परिति चेय्–सूर्यपुत्र के; चॅङ्कै–लाल हाथों को; पऱ्ऱि–पकड़कर; पालिया–कृपा का प्रदर्शन करके; अङ्कतनोटुम्–अंगद को साथ लेकर; पोनान्–(परे) गये; वेल् विऴि–बर्छी-सी आँखों वाली; तारै केट्टाळ्–तारा ने सुना; वन्तु–आकर; अवन् मॅय्यिल्–उस (वाली) के शरीर पर; वीऴ्न्ताळ्–गिरी। ३८२

वाली स्वर्ग (परमपद) पहुँच गया। सुग्रीव अपार बल के साथ सामने खड़ा था। श्रीराम वटपत्रशायी (विष्णु प्रलयकाल में एक शिशु के रूप में प्रलय-प्रवाह के ऊपर एक वटपत्र पर शयन की मुद्रा में रहते हैं, ऐसा पुराणों का कथन है।) विष्णु के अवतार थे। उन्होंने सूर्यपुत्र सुग्रीव का हाथ पकड़कर अपनी कृपा जतायी। फिर वे अंगद को साथ लेकर वहाँ से अलग हो गये। भाले की-सी आँखों वाली तारा ने समाचार सुना तो वह भागती आकर वाली के शरीर पर गिरी। ३८२

कुङ्गुमङ् गॊट्टियन्न कुविमुलैक् कुवट्टिऱ् कॊत्त
पॊङ्गुवॆङ् गुरुदि पोर्प्पप् पुरिहुळल् शिवप्पप् पॊऱ्ऱोळ्
अङ्गव नलङ्गल् मार्बिऱ् पुरण्डन ळहन्ऱ शॆक्कर्
वॆङ्गदिर् विशुम्बिऱ् ऱोन्ऱु मिन्नॆन्नत् तुवळु मॅय्याळ् 383

कुवि मुलै–उठे हुए स्तनों के; कुवट्टिऱ्कु ऒत्त–पर्वतशिखरों के लिए उपयुक्त रीति से; कुङ्कुमम् कॊट्टि अन्न–कुंकुम डाला गया हो, ऐसा; पॊङ्कु–उमगनेवाले; वॆम् कुरुति–गरम रक्त; पोर्प्प–(स्तनों पर) ढँककर जम गया; पुरि कुऴल्–घुंघराले बाल; चिवप्प–लाल हुए; अङ्कु–वहाँ; पॊन् तोळवन्–सुन्दरबाहु; अलङ्कल् मार्पिल्–(वाली के) माला से अलंकृत वक्ष पर; अकन्ऱ चॆक्कर्–विशाल लाल गगन में; वॆम् कतिर्–गरम सूर्यकिरणों के; विचुम्पिल्–आकाश में; तोन्ऱुम्–प्रकटित; मिन् ॲन्न–विद्युत के समान; तुवळुम् मॅय्याळ्–तड़पनेवाले शरीर की होकर; पुरण्टनळ्–लोटी। ३८३

पर्वतशिखरों के समान उसके स्तनों पर कुंकुम जम गया हो, ऐसा उमड़नेवाला गरम रक्त जम गया। उसके घुँघुराले केश भी लाल हो

गये। वह उस बिजली के समान सुन्दर कन्धों वाले वाली के शरीर पर पड़कर तड़पी, मानो लाल सन्ध्यागगन के विशाल आकाश में बिजली तड़प रही हो। ३८३

वेय्ङ्गुळल् विळरि नल्याळ् वीणैयॆन् ऱितैय नाण
एङ्गिन ळिरङ्गि विम्मि युरुहिन ळिरुहै कूप्पित्
ताङ्गिन डलैयिऱ् चोर्न्दु शरिन्दुताळ् कुळल्ह डळ्ळि
ओङ्गिय तुयराऱ् पन्नि यिन्नन वरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ् 384

वेय् कुळल्–वंशीनाद; विळरि नल् याळ्–'विळरि' (रुदन का) राग का 'याळ्' का स्वर; वीणै–वीणा का नाद; ऍन्नुरु इतैय–ऐसे स्वरों को; नाण–शरमाते हुए; एङ्कितळ्–रोती हुई; इरङ्कि–दुःखी होकर; विम्मि–सिसककर; उरुकितळ्–पानी-पानी होकर; तलैयिल्–सिर पर; इरु कै कूप्पि–दोनों हाथ जोड़े; ताङ्कितळ्–रखकर; चोर्न्तु–थककर; ताळ् कुळल्कळ्–लटकनेवाले केशों को; तळ्ळि–हटाकर; ओङ्किय तुयराल्–बढ़ते दुःख से; पन्नि–विविध प्रकार से विलाप करते हुए; इन्नन–यों; अरऱ्ऱल् उऱ्ऱाळ्–रोने लगी। ३८४

उसके रुदन-स्वर के सामने वंशीनाद, 'विळरि' के शोकगीत निकालने वाली 'याळ्' का स्वर और वीणा की ध्वनि भी शरम का अनुभव करे, ऐसी मधुर ध्वनि में वह रो रही थी। असह्य दुःख से वह सिसकी। दोनों हाथ जोड़कर उसने अपने सिर पर रखे। शिथिलता का अनुभव किया। केश उसके मुख पर बिखर रहे थे, उसने उनको हटाया। बढ़ते दुःख से पीड़ित होकर वह विविध बातें कहते हुए विलाप करने लगी। ३८४

❀ वरैशेर् तोळिडै नाळुम् वैहुवेन्
करैशे राविड रॆल्लै कण्डिलेन्
उरैशे रायुयि रेयॆन् नुळ्ळमे
अरैशे यानिदु काण् वञ्जिनेन् 385

उरै चेर्–प्रकीर्तित; आर् उयिरे–मेरे प्राण; ऍन् उळ्ळमे–मेरे मन; अरैचे–राजा; वरै चेर्–पर्वत-सम; तोळ् इटै–कन्धों में; नाळुम्–सदा; वैकुवेन्–रहनेवाली; करै चेरा–पार न पाऊँ, ऐसा; इटर्–दुःख; ऍल्लै कण्टिलेन्–इसका किनारा नहीं देखती; यान्–मैं; इतु काण–यह देखने से; अञ्चितेन्–डरती हूँ। ३८५

मेरे प्राण-सम और कीर्तिमान नाथ! मेरे मन (के वासी)! राजा! तुम्हारे पर्वत-सम कन्धों के मध्य सदा (निश्चिन्त और सुखी) रहती थी। अब अपार दुःख आ गया। उसका छोर देख नहीं पाती। इसको देखने से मैं भय खाती हूँ। ३८५

तुयरा लेतोलै याद वॆत्तैयुम्
पयिरा योपहै याद पण्बिनोय

शॆयिर्ती रायविदि यात्त दॆय्वमे
उयिर्पो तालुड लारु मुय्वरो 386

पकैयात–वैर न करनेवाले; पण्पित्तोय्–शीलवान; तुयराले–दुःख से; तॊलैयात–जो नहीं मरी; ॲन्नैयुम्–मुझे भी; पयिरायो–न बुलाओगे क्या; चॆयिर् तीराय्–मेरा अपराध भूल जाओ; विति आत्त–विधिदत्त; तॆय्वमे–मेरे देव; उयिर् पोताल्–प्राणों के छूटने पर; उटलारुम्–शरीर भी; उय्वरो–टिकेगा क्या। ३८६

मुझसे कभी न खीझनेवाले मेरे पति! इस दुःख में भी मैं नहीं मरी। ऐसे मुझे सम्बोधित न करोगे क्या? मेरे अपराध का विस्मरण कर दो। विधिदत्त मेरे पतिदेव! प्राण छूट जायँ तो शरीर भी रह सकेगा क्या? 'उडलार्' में 'आर्' चेतनवाचक प्रत्यय लगा है; काकु है।)। ३८६

नऱिदा नल्लमिऴ् दुण्ण नल्हलिऩ्
पिऱिया विऩ्ऩुयिर् पॆऱ्ऱ पॆऱ्ऱिदाम्
अऱिया रोनम नार दऩ्ऱॆऩिऩ्
शिऱिया रोवुब हारञ् जिन्दियार् 387

नमतार्–यमदेव; नऱितु आम्–स्वादिष्ट और सुबासपूर्ण; नल् अमिऴ्तु–श्रेष्ठ अमृत; उण्ण–खाने को; नल्कलिऩ्–(तुम्हारे) देने से; पिऱिया–अमर; इऩ् उयिर्–प्यारे प्राणों को; पॆऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–प्राप्त करने का लाभ; ताम् अऱियारो–आप जानते नहीं क्या; अतु अऩ्ऱु ऍऩिल्–वैसा नहीं तो; उपकारम् चिन्तियार्–कृतघ्न; चिऱियारो–अल्प जीव हैं क्या। ३८७

तुमने देवों को अमृत दिया। यमदेव ने भी सुगन्धित स्वादिष्ट अमृत तुमसे लेकर पिया था। तभी वे अमर बने। इस प्राप्ति की सच्ची स्थिति को वे नहीं जानते क्या? नहीं तो वे क्या कृतघ्न और क्षुद्रप्रकृति हैं?। ३८७

अणङ्गार् पाहऩै याशै तोऱुमुऱ्
ऱुणङ्गा वॊण्मलर् कॊण्डु ळऩ्बोडुम्
इणङ्गाक् काल मिरण्डॊ डॊऩ्ऱिऩुम्
वणङ्गा दित्तुणै वैह वल्लैयो 388

आशै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; उऱ्ऱु–जाकर; उळ् अऩ्पोटुम्–आन्तरिक भक्ति के साथ; इणङ्का–रहकर; उणङ्का–अमलिन (ताज़े); ऒळ् मलर्–प्रकाशमय पुष्पों को; कॊण्टु–ले; कालम् इरण्टॊटु–(प्रातः और सन्ध्या) दो कालों के साथ; ऒऩ्ऱिऩुम्–(मध्याह्न) एक में; अणङ्कु आर्–नारी को दिये हुए; पाकऩै–अर्द्धांग वाले (शिव) की; वणङ्कातु–पूजा किये विना; इ तुणै–इतनी देर; वैक वल्लैयो–रह सकनेवाले हो क्या। ३८८

तुम्हारी आदत थी कि दिशा-दिशा में जाकर प्रातःकाल, मध्याह्न

और सायंकाल, तीनों बेर अर्द्धनारीश्वर की नवीन सुगन्धित पुष्पों से पूजा करते थे। अब वह किये विना पड़े रहते हो। इतनी देर विना पूजा किये रह सकते हो क्या ? । ३८८

वरैयार्	तोळ्पॊडि	याड	वैहुवाय्
तरैमे	लायुरु	तत्मै	यीदॆत्त
करैवे	नित्ऱिडु	पूशल्	कण्डुमौत्
ऱुरैया	यॆत्वयि	तूत	मियावदो 389

तरै मेलाय्–धरती पर; वरै आर् तोळ्–पर्वतोपम कन्धों पर; पॊटि आट–धूल लगने देते हुए; वैकुवाय्–पड़े रहनेवाले; उरु तत्मै–तुम्हारी प्राप्त दशा; ईतु ॲत–यही क्या, कहकर; करैवेत् नात्–चिल्लाती मैं; इत्ऱु इटु–आज जो मचाती; पूचल्–वह शोर; कण्टुम्–देख (सुन) कर भी; ऑत्ऱु उरैयाय्–कुछ न कहते हो; ॲत् वयित्–मेरे पास; ऊतम्–कमी (अपराध, दोष); यावतो–क्या है तो। ३८९

कन्धों पर धूल लगने देते हुए धरती पर पड़े रहनेवाले ! तुम्हारी यह दशा हुई। यह कहते हुए मैं रो रही हूँ। मैं इतना रार मचा रही हूँ। तो भी तुम कुछ भी कह नहीं रहे हो ? मुझमें क्या दोष हो गया ? । ३८९

नैया	नित्ऱतॆ	नात्ि	ऱुन्दिङ्ङत्
मॆय्वा	नोर्तिरु	नाडु	मेवितत्य्
ऐया	नीयॆत	दावि	यॆत्ऱदुम्
पॊय्यो	पॊय्युरै	याद	पुण्णिया 390

पॊय् उरैयात–असत्य न बोलनेवाले; पुण्णिया–पुण्यपुरुष; नात्–मैं; इङ्ङत्–यहाँ; इरुन्तु–रहकर; नैया नित्ऱतॆत्–मलिन हो रही हूँ; मॆय् वातोर् तिरु नाटु–सत्यदेव की स्वर्गभूमि; मेवितत्य्–पहुँच गये; ऐया–नायक; नी–तुम; ॲत्तु आवि–मेरे प्राण हो; ॲत्ऱतुम्–(जो) कहा (तुमने) वह; पॊय्यो–झूठ ही है क्या। ३९०

कभी असत्य न बोलनेवाले पुण्यपुरुष ! मैं यहाँ रहकर कुम्हला रही हूँ और तुम सत्यदेव के वैकुण्ठलोक में पहुँच गये। हे नाथ ! तुम कहते रहे कि तुम (तारा) मेरे प्राण हो। वह असत्य हो गया क्या ? । ३९०

❀ शॆरुवार्	तोळनित्	शिन्दैयु	ळॆत्तिल्
मरुवार्	वॆञ्जर	मॆतैयुम्	वव्वुमाल्
ऑरुवे	तुळ्ळुळे	याहि	लुय्वियाल्
इरुवे	मुळ्ळिरु	वेमि	रुन्दिलेम् 391

चॆरु आर् तोळ–युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले; नित् चिन्तै–तुम्हारे मन में; उळॆत् ॲतिल्–रही तो; मरुवार्–शत्रु (श्रीराम) का; वॆम् चरम्–क्रूर शर; ॲतैयुम्

वव्वुमाल्–मुझे भी मारकर ले गया होता; ऒरुवेऩ् उळ्–अकेली मेरे मन में; उळै आकिल्–तुम रहते तो; उय्ति आल्–बचे रह जाते; इरुवेम् उळ्–दोनों के अन्दर; इरुवेम् इरुऩ्तिलेम्–परस्पर नहीं रहे हैं। ३६१

युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले ! अगर मैं तुम्हारे मन में रहती होती तो शत्रु का क्रूर शर मुझे भी मार के जाता ! तुम ही मेरे, जो अब अकेली रह गयी हूँ, मन में रहते तो तुम अब बचे रहते। इसलिए साफ़ यह है कि न तुम मेरे मन के अन्दर रहे, न मैं तुम्हारे मन में। ३९१

※ ऎंऩ्दाय् नीयमिऴ्‌ दीय यामॆलाम्
उय्ऩ्दे मॆंऩ्ऱुब हार मुऩ्ऩुवार्
नऩ्दा नाण्मलर् शिऩ्दि नण्बॊडु
वऩ्दा रोवॆदिर् वाऩु ळोरॆलाम् 392

वाऩ् उळोर् ऎंलाम्–स्वर्गवासी (देव) सब; उपकारम् उऩ्ऩुवार्–उपकार मानकर; ऎंऩ्ताय्–पिता-सम; नी–तुमने; अमिऴ्तु–अमृत; ईय–दिया; याम् ऎंलाम्–(इससे) हम सब; उय्ऩ्तेम्–अमर बने; ऎंऩ्ऱु–कहकर; नऩ्ता–कभी न मुरझानेवाले; नाळ् मलर्–नवीन (कल्प) पुष्प; चिऩ्ति–बरसाकर; नण्पु ऒट्टु–मैत्री के साथ; ऎंतिर् वऩ्तारो–अगवानी करने आये क्या। ३६२

क्या सभी स्वर्गवासी कृतज्ञ बनकर तुम्हारी अगवानी करने आये ? क्या उन्होंने यह कहा कि पिता-सम ! तुमने अमृत दिया और हम अशन करके अमर रहते हैं ? क्या उन्होंने तुम पर कभी न मुरझानेवाले नवीन कल्पसुमन बरसाये। ३९२

ओया वाळि यॊळित्तुनिऩ् ऱॆय्यवे
एया वऩ्द विराम ऩॆऩ्ऱुळाऩ्
वाया लेयिऩ ऩॆंऩ्ऩिऩ् वाऴ्वॆलाम्
ईया योवमिऴ्‌ देयु मीहुवाय् 393

ऒळित्तु निऩ्ऱु–(आड़ में) छिपे रहकर; ओया वाळि–(बिना मारे) न चलनेवाला शर; ऎंय्यवे–चलाने के हेतु; एया वऩ्त–(सुग्रीव द्वारा) प्रेरित जो आये; इरामऩ् ऎंऩ्ऱु–श्रीराम नाम के एक; उळाऩ्–हैं; वायाल्–(वे) अपने मुख से; एयिऩऩ् ऎंऩ्ऩिऩ्–माँगते तो; अमिऴ्तु एयुम्–अमृत ही; ईकुवाय्–दान देनेवाले तुम; वाऴ्वु ऎंलाम्–जीवनाधार सब सम्पत्ति (राज्य आदि); ईयायो–नहीं देते क्या। ३६३

श्रीराम सुग्रीव से प्रेरित होकर, आड़ से अपना अमोघ बाण चलाने आये। अगर वे राम अपना मुख खोलकर तुमसे माँगते तो अमृत को भी दूसरों को जो दे चुके वैसे तुम अपने जीवन का आधार, सब सम्पत्ति, राज्य आदि नहीं दे देते क्या ? । ३९३

शॊऱ्ऱेऩ् मुऩ्दुर वऩ्ऩ शॊऱ्कॊळाय्
अऱ्ऱा तऩ्ऩदु शॆय्ह लाऩॆऩ

उऱ्ऱा युम्बियै यूऴि काणुनी
इऱ्ऱाय् नानुनै यॅन्ऱु काण्बॅनो 394

मुन्तुऱ-पहले ही; चॊऱ्ऱेन्-मैंने कहा; अन्न चॊल्-वह कहना; कॊळाय्-तुमने नहीं माना; अऱ्ऱान्-वे; अन्ततु चॅय्कलान्-वह काम नहीं करेंगे; ॲन-कहकर; उम्पियै-अपने छोटे भाई के सामने; उऱ्ऱाय्-(लड़ने के लिए) आ पहुँचे; ऊऴि काणुम्-अनेक युगपर्यन्त रहकर उनको देखने की आयु रखनेवाले तुम; इऱ्ऱाय्-चल बसे; नान्-मैं; उनै-तुम्हें; ॲन्ऱु-कब; काण्पॅनो-देखूँगी। ३६४

पहले ही, जब तुम जाने लगे तभी, मैंने कहा था (कि श्रीराम आये हैं)। पर तुमने वह कथन नहीं माना। 'वे वैसा करनेवाले नहीं हैं।' —यह कहकर भाई से लड़ने आ गये। तुम्हारी आयु इतनी लम्बी है कि युग-युग तक जीवित रहते। पर अब मर गये। कब मैं तुमको देखूँगी ? । ३९४

* नीऱा मेरुवु नीनॅ रुङ्गिनाल्
माऱोर् वाळियुन् मार्बै यीर्वदो
तेऱेन् यानिदु तेवर् मायमो
वेऱोर् वालि कॊलाम्वि ळिन्दुळान् 395

नी नॅरुङ्कितल्-तुम नियराओ तो; मेरुवुम्-मेरुपर्वत भी; नीऱ आम्-भस्म हो जायगा; माऱ-तुम्हारे विरोध में; ओर् वाळि-एक बाण; उन् मार्पै-तुम्हारे वक्ष को; ईर्वतो-चीर गया, यह क्या; यान् इतु तेऱेन्-मैं यह नहीं मानूँगी; तेवर् मायमो-देवों की माया है क्या; विळिन्तु उळान्-मरे जो पड़े हैं; वेऱ-(व) दूसरे; ओरु-एक; वालि कॊलाम्-वाली ही हैं। ३६५

तुम पास जाओ तो मेरु भी भस्मीभूत हो जायगा। ऐसे तुम्हारे वक्ष को कोई बाण चीर गया क्या ? मैं विश्वास नहीं कर पाती। यह देवों की माया होगी ? ये जो मरे पड़े हैं शायद दूसरे कोई वाली हैं क्या ? । ३९५

तहैशेर् वण्बुहऴ् तिन्ऱु तम्बियार्
पहैनेर् वारुळ रान पण्बिनाल्
उहवे शिन्दै युलन्द ळिन्ददाल्
महने कण्डिलै योनम् वाऴ्वॅलाम् 396

मकने-पुत्र (अंगद); तम्पियार्-(तुम्हारे पिता के) छोटे भाई; तकै चेर्-आदर योग्य; वण् पुकऴ्-श्रेष्ठ प्रशंसा को; तिन्ऱु-मिटाकर; पकै नेर्वार्-शत्रुता करनेवाले; उळर् आन-हैं, ऐसे; पण्पिनाल्-व्यवहार से; नम् वाऴ्वु ॲलाम्-हमारा सारा जीवन; उकवे-चूर-चूर हो गया; चिन्तै-(इसलिए) मन भी; उलन्तु-कुम्हलाकर; अऴिन्ततु-मर गया; कण्टिलैयो-नहीं देखा। ३६६

(तारा ने अपने पुत्र, अंगद, से कहा—) पुत्र अंगद ! देवर ने गौरवयोग्य विपुल यश को खा (मिटा) लिया और शत्रुता के व्यवहार से

हमारे जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अब हमारा मन मुरझाया हुआ आक्रांत है। यह नहीं देखते क्या ? । ३९६

अरुमन्	दऱ्ऱ	महऱ्ऱुम्	विल्लियार्
ऑरुमॆन्	दऱ्कु	मडाद	दुन्निनार्
तरुमम्	बऱ्ऱिय	तक्क	वर्क्कॆलाम्
करुमङ्	गट्टळॆ	यॆन्ऱल्	कट्टदो 397

अरुमन्तु–अपूर्व औषध के समान; अऱ्ऱम् अकऱ्ऱुम्–दुःख दूर करनेवाले; विल्लियार्–धनुर्धर श्रीराम ने; ऑरु मॆन्तऱ्कुम्–किसी वीर के; अटाततु–न योग्य; उन्नितार्–(सोच) कर दिया है; तरुमम् पऱ्ऱिय–धर्मदृढ़; तक्कवर्क्कु ॲलाम्–सभी श्रेष्ठ लोगों के लिए; करुमम्–उनका कृत्य; कट्टळॆ–कसौटी है; ॲन्ऱल्–यह मसल; कट्टतो–मिटाया गया क्या। ३९७

श्रीराम अपूर्व औषध के समान दुःखनिवारक धनुर्धर हैं। पर उन्होंने ऐसा काम किया है, जो किसी भी वीर को नहीं सोहता। यह कथन है कि धर्मावलम्बी श्रेष्ठ लोगों के कृत्य ही उनकी श्रेष्ठता की कसौटी हैं। पर क्या वह कथन अब निरर्थक हो गया ? । ३९७

ॲन्ऱा	ळिन्नन	पन्नि	यिन्नलो
डॊन्ऱा	वुळ्ळुणर्	वेदु	मुऱ्ऱिलाळ्
निन्ऱा	ळन्निलै	नोक्कि	नीदियाल्
वन्ऱाण्	माल्वरै	यन्न	मारुदि 398

ॲन्ऱाळ्–कहकर; इन्नत–इस प्रकार; पन्नि–बार-बार कहकर; इन्नलोटु–दुःख के साथ; ऑन्ऱा–एक बनकर; उळ् उणर्वु–अन्तर्चेतना; एतुम् उऱ्ऱिलाळ्–कुछ भी न रखती हुई; निन्ऱाळ्–भ्रमित खड़ी रही; अ निलै–वह स्थिति; नोक्कि–देखकर; नीतियाल्–न्याय (-व्यवहार) में; माल् वरै अन्न–बड़े मेरु के समान (उत्कृष्ट और दृढ़); वल् ताळ्–अपार कार्यशक्ति-सम्पन्न; मारुति–मारुति ने। ३९८

तारा ऐसी बहुत बातें बार-बार कहकर विलापती रही। उसका मानो दुःख के साथ एकाकार हो गया। सुध-बुध खो दी और भ्रमित खड़ी रह गयी। हनुमान ने, जो अपने न्यायपालन में मेरु के समान उन्नत और दृढ़ था और कर्मण्य भी, —। ३९८

मडवार्	शूळ्	मडन्दै	तन्नैवाळ्
इडमे	वुम्बडि	येवि	वालिपाल्
कडन्या	वुङ्गडै	हण्डु	कण्णनो
डुडना	वुऱ्ऱ	वॆलामु	णर्त्तिनान् 399

मटवार् चूळ्–स्त्रियों के मध्य रहनेवाली; अ मटन्तै तन्नै–उस स्त्री (तारा) को; वाळ् इटम्–वासस्थान; मेवुम्पटि–जाने को; एवि–प्रेषित करके; वालि

पाल्–वाली के प्रति; कटऩ् यावुम्–कर्तव्य सब संस्कार; कटै कण्टु–पूरा कराकर; उटत्ता–तुरत; कण्णतोटु–पद्माक्ष के पास; उऱ्ऱ ऍलाम्–जो हुआ, वह सब; उणर्त्तिऩाऩ्–कह सुनाया। ३९९

स्त्रियों के मध्य रही उसको अपने अन्तःपुर में भिजवा दिया। फिर अंगद द्वारा वाली के प्रति कर्तव्य दाहकर्म आदि पूर्णरूप से कराया। पश्चात वह कमलाक्ष श्रीराम के पास गया और सारा वृत्तान्त समझा दिया। ३९९

(इसके बाद के तीन अतिरिक्त पदों का सार—) सूर्य अस्त हुआ। तब सूर्यमण्डल वाली के ही मुख के समान लाल था। श्रीराम ने रात का समय सीता का स्मरण करते हुए दुःख में बिताया। दूसरे दिन सवेरे सूर्य अपने पुत्र का अभिषेक देखने के इरादे से शीघ्र उदित हो गये। सुग्रीव के पास श्रीदेवी को पहुँचने में सुविधा हो, इस हेतु उन्होंने कमलों का द्वार खोल दिया।

8. अरशियर् पडलम् (राज्य-शासन पटल)

अदुहा लत्तव् वरुट्कु नायहऩ्
मदिशा ऱम्बियै वल्लै येविऩाऩ्
कदिरोऩ् मैन्दऩै येय कैहळाल्
विदियाऩ् मौलि मिलैच्चु वायॆऩा 400

अतु कालत्तु–उस समय; अ अरुट्कु नायकऩ्–उन करुणानाथ श्रीराम ने; मति चाल्–बुद्धि-श्रेष्ठ; तम्पियै–अनुज से; ऐय–सुन्दर भाई; कतिरोऩ् मैन्तऩै–सूर्यपुत्र का; कैकळाल्–अपने हाथों से; वितियाल्–विधिवत; मौलि–मुकुट; मिलैच्चुवाय्–धारण कराओ; ऍऩा–ऐसा; वल्लै–शीघ्र; एविऩाऩ्–आज्ञा सुनाई। ४००

तब करुणामय प्रभु श्रीराम ने बुद्धिश्रेष्ठ अपने कनिष्ठ को तुरन्त आज्ञा दी कि सुन्दर भाई! जाओ अपने हाथों से विधिवत सूर्यपुत्र सुग्रीव का मुकुटधारण कराओ। ४००

अप्पो दङ्गरु णिऩ्ऱ वण्णलुम्
मॆय्प्पोर् मारुदि तऩ्ऩै वीरनी
इप्पो देहॊण रिऩ्ऩ शॆय्विऩैक्
कॊप्पाम् यावैयु मॆऩ्ऱ णर्त्तलुम् 401

अरुळ् निऩ्ऱ–(श्रीराम की) कृपा (आज्ञा) माननेवाले; अण्णलुम्–महिमावान लक्ष्मण के भी; अप्पोतु–तभी; अङ्कु–वहीं; मॆय् पोर्–धर्म-योद्धा; मारुति तऩ्ऩै–मारुति से; वीर–वीर; नी–तुम; इऩ्ऩ–इस; चॆय् विऩैक्कु–कर्तव्य कृत्य के लिए;

ऑप्पु आम्–योग्य; यावैयुम्–सभी उपकरणों को; इप्पोते कॉणर्–अभी लाओ; ऍन्ऱु उणर्त्तलुम्–ऐसा कहते ही। ४०१

श्रीराम की कृपापूर्ण आज्ञाओं के सदा माननेवाले महिमावान लक्ष्मण ने तभी और वहीं धर्मयुद्धनिपुण हनुमान से कहा कि वीर! इस मंगल-कार्य के लिए योग्य और आवश्यक उपकरण जुटाकर अभी लाओ। ४०१

मण्णु	नीर्मुदन्	मङ्ग	लङ्गळुम्
ऍण्णुम्	बॊन्मुडि	यादि	यावैयुम्
नण्णुम्	वेलैयि	नम्बि	तम्बियुम्
तिण्णञ्	जॆय्वन	शॆय्दु	शॆम्मलै 402

मण्णुम्–अभिषेक का; नीर् मुतल्–पुण्यजल आदि; मङ्कलङ्कळुम्–मंगलद्रव्य; ऍण्णुम्–प्रशंसनीय; पॊन् मुटि–स्वर्णमुकुट; आति यावैयुम्–आदि सभी; नण्णुम् वेलैयिल्–जब आये तब; नम्पि–पुरुषनायक के; तम्पियुम्–अनुज भी; चॆम्मलै–(वानर-) नायक के लिए; तिण्णम् चॆय्वत–अवश्य कर्तव्य; चॆय्तु–(संस्कार) करवाकर। ४०२

उनकी आज्ञा सुनते ही हनुमान कार्यतत्पर हुआ और अभिषेक-जल आदि मंगलसाधन और गण्य स्वर्णमुकुट आदि उपकरण आ गये। तब पुरुषनायक श्रीराम के कनिष्ठ लक्ष्मण ने वानरनायक के प्रति आवश्यक अभिषेकपूर्व कर्तव्य संस्कार आदि करवाया। ४०२

मऱैयो	राशि	वळङ्ग	वानुळोर्
नऱैदोय्	नाण्मलर्	तूव	नन्नॆऱिक्
किऱैयोन्	ऱन्निळै	योनव्	वेन्दलैत्
तुऱैयोर्	नून्मुऱै	मौलि	शूट्टिनान् 403

मऱैयोर्–विप्रों के; आचि वळङ्क–आशीर्वचन कहते; वानुळोर्–स्वर्गवासियों के; नऱै तोय् नाण् मलर् तूव–सुरभियुक्त ताज़े फूल बरसाते; नल् नॆऱिक्कु–श्रेष्ठ आचरण के; इऱैयोन्–नायक; तन्–के; इळैयोन्–अनुज ने; अ एन्तलै–उस राजा को; तुऱैयोर् नूल् मुऱै–आचार्यों के शास्त्रों के अनुसार; मौलि चूट्टिनान्–मुकुट धारण करवाया। ४०३

फिर धर्मावलम्बी श्रेष्ठ नायक के भाई ने उस सम्मानित सुग्रीव का विधिवत मुकुटधारण करवाया। तब विप्रों ने आशीर्वचन उच्चारे। स्वर्ग के देवों ने सुरभिमय ताज़े कल्पसुमन बरसाये। ४०३

पॊन्मा	मौलि	पुनैन्दु	पॊय्यिलान्
तन्मा	नक्कळ	ऱाळुम्	वेलैयिल्
नन्मार्	बिऱ्ऱळु	वुऱ्ऱ	नायहन्
शॊन्नान्	मुऱ्ऱिय	शॊल्लि	नॆल्लैयान् 404

पोन् मा मौलि पुनैन्तु–स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करके; पोय् इलान्–सत्यसंध; तन् माऩम् कऴल्–(श्रीराम के) आदरणीय चरणों पर; ताऴुम् वेलैयिल्–(जब सुग्रीव) झुका तब; नल् मार्पिल्–अपने श्रेष्ठ वक्ष से; तऴुवुऱ्ऱ–लगा लेकर; मुऱ्ऱिय चोल्लिन्–वेदों के; अल्लैयान्–शीर्षस्थ; नायकन्–जगन्नायक; चोन्नान्–बोले। ४०४

सुग्रीव स्वर्णनिर्मित बड़ा किरीट पहनकर सत्यसंध श्रीराम के आदरणीय चरणों पर आ झुका। श्रीराम ने उसे अपने श्रीवक्ष से लगा लिया। फिर अर्थपूर्णवेदों के शीर्षस्थ (या अर्थपूर्णशब्दों के सर्वोन्नत अधिकारी) जगन्नायक सुग्रीव को (निम्नलिखित) उपदेश देने लगे। ४०४

ईण्डुनिन् ऱेहि नीनिन् निन्निय लिरुक्कै यॅय्दि
वेण्डुव मरबि नॅण्णि विदिमुऱै यियऱ्ऱि वीर
पूण्डपे ररशुक् केऱ्ऱ यावैयुम् बुरिन्दु पोरिन्
माण्डवन् मैन्द नोडुम् वाऴ्दिनऱ् ऱिरुविन् वैहि 405

वीर–वीर; नी–तुम; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकि–जाकर; निन्–अपने; इन् इयल्–सुहावने; इरुक्कै–वासस्थान; अॅय्ति–पहुँचकर; वेण्टुव–कर्तव्य; मरपिन्–यथापरम्परा; अॅण्णि–विचारकर; विति मुऱै–विधिवत; इयऱ्ऱि–करके; पूण्ट–अपनाये गये; पेर् अरचुक्कु–बड़े शासन-कार्य के; एऱ्ऱ–योग्य; यावैयुम्–सभी; पुरिन्तु–सम्पन्न करते हुए; पोरिल्–युद्ध में; माण्टवन्–जो मरा, उसके; मैन्तनोटुम्–पुत्र (अंगद) के साथ; नल् तिरुविन्–श्रेष्ठ वैभव में; वैकि–रहकर; वाऴ्ति–जीवन व्यतीत करो। ४०५

तुम यहाँ से सुखपूर्वक जाओ। अपने मधुर और निजी वासस्थान पहुँचो। कर्तव्य यथाक्रम सोचो और यथाविधि करो। अपनाये गये राज्यशासन के योग्य सभी कृत्य पूरा करते हुए युद्धनिहत वाली के पुत्र के साथ श्रेष्ठ सुख-वैभव में रहो। ४०५

वाय्मैशा लऱिविन् वाय्न्द मन्दिर मान्द रोडुम्
तीमैती रॊऴुक्किन् निन्ऱु तॆऱुदॊऴिन् मऱव रोडुम्
तूय्मैशाल् पुणर्च्चि पेणित् तुहळऱु तॊऴिलै याहिच्
चेय्मैयो डणिमै यिन्ऱित् तेवरिऱ् ऱॆरिय निऱ्ऱि 406

वाय्मै चाल्–सत्यपूर्ण; अऱिविन् वाय्न्त–बुद्धिशाली; मन्तिरम् मान्तरोटुम्–मंत्रणा के (मन्त्री) लोगों के साथ; तीमै तीर्–बुराई-रहित; ऒऴुक्किन्–आचरण में; निन्ऱु–रहकर; तॆऱु तॊऴिल्–संहारकारी; मऱवरोटुम्–(सेना) वीरों के साथ; तूय्मै चाल्–पवित्र; पुणर्च्चि पेणि–मेल का व्यवहार चाहकर; तुकळ् अऱु–दोषहीन; तॊऴिलै–कर्मी; आकि–बनकर; चेय्मैयोटु–दूरी के साथ; अणिमै इन्ऱि–निकटता भी छोड़कर; तेवरिल् तॆरिय–देवों के समान; निऱ्ऱि–रहो। ४०६

सत्यसंध और बुद्धिमान मन्त्रियों के साथ बुराई-रहित आचरण करो,

और संहारकारी (सेना के) वीरों के साथ पवित्र मेल का व्यवहार करो। तुम स्वयं दोषरहित आचरण करो। प्रजाजनों से न बहुत दूर रहो, न अत्यधिक समीप रहो। देवों के समान सम्मानित रहो। ४०६

पुहैयुडैत् तॅऩ्ऩि नुण्डु पॉङ्गऩ लङ्गॅऩ् ऱुऩ्ऩुम्
मिहैयुडैत् तुलह नूलोर् विऩयमुम् वेण्डऱ् पाऱ्ऱे
पहैयुडैच् चिन्दै यार्क्कुम् पयऩुऱ पण्बिऱ् ऱीरा
नहैयुडै मुहत्तै याहि यिऩ्ऩुरै नलहु नावाल् 407

उलकम्–संसार के (अनुभवी) लोग; पुकै उटैत्तु ऍऩिऩ्–धुआँ रहा तो; अङ्कु–वहाँ; पॊङ्कु अऩल्–लपलपानेवाली आग; उण्टु–है; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩुम्–ऐसा (अनुमान) कहने का; मिकै उटैत्तु–ज्ञान रखते हैं; नूलोर् विऩयमुम्–शास्त्रज्ञों के कहे कूटव्यवहार भी; वेण्टल् पाऱ्ऱे–अपेक्षित है; पकै उटै चिन्तैयार्क्कुम्–शत्रुता मन में रखनेवाले लोगों के प्रति भी; पयऩ् उऱ–फलदायक; पण्पिल् तीरा–व्यवहार से न हटकर; नकै उटै मुकत्तै–हासवदन; आकि–बनकर; नावाल्–जीभ से; इऩ् उरै–मधुर वचन; नलकु–बोलो। ४०७

धुआँ दिखायी दिया तो लोग कहते हैं कि वहाँ भभक उठनेवाली आग भी है। यह अनुमान का प्रमाण है। यह भी आवश्यक है। साथ-साथ ग्रन्थों में शास्त्रज्ञों ने जो लिख रखा है, उस पर भी (आगम-प्रमाण में भी) विश्वास रखो। तुम्हारे प्रति शत्रुता रखनेवालों के प्रति सुफल-दायक बर्ताव करने का गुण मत छोड़ो। हँसमुख रहो। जिह्वा से मधुर वचन बोलो। ४०७

तेवरुम् वॆः(ह्)हऱ् कॊत्त शॆयिरु शॆल्व मः(ह्)दुऩ्
कावल दरुमैत् तॆऩ्ऱा लऩ्ऩदु करुदिक् काण्डि
एवरु मिऩिय नण्ब रयलवर् विरवा रॆऩ्ऱिम्
मूवहै यियलो रावर् मुऩैवर्क्कु मुलह मूऩ्ऱिऩ् 408

तेवरुम्–देव भी; वॆ·.कऱ्कु ऒत्त–अपने लिए चाहें, इस योग्य; चॆयिरु अऱ–कमीहीन; चॆल्वम् अ·.तु–सम्पत्ति वह; उऩ कावलतु अरुमैत्तु–तुम्हारे संरक्षण में आ मिली है; ऍऩ्ऱाल्–कहें तो; अऩ्ऩतु करुति–वह सोचकर; काण्टि–देखो; मुऩैवर्क्कुम्–मुनियों के लिए भी; उलकम् मूऩ्ऱिऩ्–तीनों लोकों के; एवरुम्–कोई भी; इऩिय नण्पर्–मधुर मित्र; विरवार्–अरि; अयलवर्–अन्य (उदासीन); ऍऩ्ऱु–ऐसे; इ मूवकै–इन तीन प्रकारों के; इयलोर् आवर्–स्वभाव वाले होते हैं। ४०८

तुम्हारे पास ऐसी सम्पत्ति मिली है, जिसको देखकर देव भी अपने लिए चाहें। इसलिए तुम उसका महत्त्व जानो और उसका ठीक तरह से पालन करो। मुनियों के लिए भी अरि, मित्र, उदासी —इन तीनों तरह के लोगों से सम्बन्ध रखना पड़ता है। ४०८

शॅय्वन शॅय्दल् याण्डुन् तीयन शिन्दि थामल्
वॆवन वन्द पोदुम् वशैयिल विनिय कूऱल्
मॆय्शॊलल् वळङ्गल् यावुम् मेविन वॆः(ह्)ह लिन्मै
उय्वन वाक्कित् तम्मो डुयर्वन वुवन्दु शॅय्वाय् 409

याण्टुम्–(अरि, मित्र, उदासीन) सभी के प्रति; तीयत्त चिन्तियामल्–बुराई न सोचकर; चॆय्वत चॆय्तल्–करनी करना; वॆवत–निन्दा-कथनों के; वन्त पोतुम्–(कानों में) लगने पर भी; वचै इल–कटुवचन छोड़कर; इतिय कूऱल्–मधुर भाषण करना; मॆय् चॊलल्–सत्य ही बोलना; यावुम् वळङ्कल्–सबका दान देना; मेवित–परधन; वॆ.ःकल् इन्मै– न ग्रसना; उय्वत आक्कि–(मनुष्यों का) उद्धार कराकर; तम्मोटु उयर्वत–खुद भी उत्कृष्ट बनते हैं; उवन्तु चॆय्वाय्–(ऐसे व्यवहार) चाव के साथ करो। ४०९

अरि, मित्र उदासी —इन तीनों के प्रति कभी भी बुराई मत सोचो। कर्तव्य योग्य कृत्य करो। अपवाद कानों में पड़ें तो भी कटु शब्द मत कहो, पर मधुर भाषण ही करो। खूब दान करो। परधन मत चाहो। ऐसे कृत्य तुम्हें भी उभारेंगे और स्वयं भी उत्कृष्ट होते रहेंगे। इनको चाह के साथ करो। ४०९

शिऱियरॆन् ऱिहळ्न्दु नोवु शॅय्वन शॅय्यन् मऱ्ऱिन्
नॆऱियिहन् दियानोर् तीमै यिळैत्तला लुणर्च्चि नीण्डु
कुऱियदा मेति याय कूनियाऱ् कुववुत् तोळाय्
वॆऱियन वॆय्दि नॊय्दिन् वॆन्दुयर्क् कडलिन् वीळ्न्देन् 410

कुवव् तोळाय्–पुष्ट कन्धों वाले; चिऱियर् ॲन्ऱु–छोटे (अल्प या लघु) ऐसा; इकळ्न्तु–(सोचकर) उपेक्षा करके; नोवु चॆय्वत–दुःखदायी कृत्य; चॆय्यल्–मत करो; मऱ्ऱु–और भी; यात्–मैंने; इ नॆऱि–यह सिद्धान्त; इकन्तु–छोड़कर; ओर् तीमै–एक बुराई; इळैत्तलाल्–की, इसलिए; उणर्च्चि नीण्टु–(शत्रुता की) भावना बढ़कर; कुऱियतु आम्–छोटी; मेति आय–देह वाली; कूनियाल्–कुब्जा द्वारा; वॆऱियत–अभाव; ॲय्ति–प्राप्त करके; नॊय्तिन्–शीघ्र; वॆम् तुयर्–कठोर दुःख के; कटलिन्–सागर में; वीळ्न्तेन्–गिरा। ४१०

पुष्ट कन्धों वाले! अल्प (छोटा, या नीच, या लघु) समझकर किसी की उपेक्षा या अपमान मत करो और उनको दुःखी मत करो। देखो। मैंने इस सिद्धान्त का उल्लंघन कर एक बुराई की। इसलिए छोटी देह वाली कुब्जा का वैर-भाव बढ़ा और फलस्वरूप मुझे अभावों का सामना करना पड़ा और मैं क्रूर दुःख-सागर में गिर गया। ४१०

मङ्गैयर् पॊरुट्टा लॆय्दु मान्दर्क्कु मरण मॆन्ऱल्
शङ्गैयिन् ऱुणर्दि वालि शॅय्हैयाऱ् चालु मिन्नुम्

अङ्गवर् तिऱत्ति ताऩे यल्ललुम् बऴियु मादल्
ऎङ्गळिऱ् काण्डि यऩ्ऱे यिदऱ्कुवे ऱुवमै युण्डो 411

मङ्कैयर् पॊरुट्टाल्–नारियों के कारण; माऩ्तर्क्कु–पुरुषों को; मरणम् ऎय्तुम्–मरण प्राप्त होगा; ऎऩ्ऱल्–यह तथ्य; वालि चॆय्कैयाल्–वाली के कृत्य से; चङ्कै इऩ्ऱु–शंका के विना;.: उणर्ति–जान लो; चालुम्–प्रमाण (पर्याप्त) होगा; इऩ्ऩुम्–और भी; अवर् तिऱत्तिऩाते–उनके निमित्त; अल्ललुम्–संकट और; पऴियुम् आतल्–अपकीर्ति होती है, यह; ऎङ्कळिल्–हममें; काण्टि अऩ्ऱे–देखते हो न; इतऱ्कु–इसके लिए; वेऱु–अन्य कोई; उवमै उण्टो–उपमा है क्या। ४११

स्त्रियों के कारण पुरुषों को मृत्यु भी प्राप्त होगी —यह तथ्य वाली के व्यवहार से शंका के विना जान लो। यही श्रेष्ठ प्रमाण है। और उनके ही निमित्त संकट और अपवाद प्राप्त हो सकते हैं —यह तथ्य हमारी बाबत साबित हुआ है। दूसरे उदाहरण भी चाहिएँ क्या? । ४११

नायह नल्ल नम्मै नऩिपयन् दॆडुत्तु नल्हुम्
तायॆऩ विनिदु पेणत् ताङ्गुदि ताङ्गु वारै
आयदु तऩ्मै येऩु मऱवरम् बिहवा वण्णम्
तीयन वन्द पोदु शुडुदियाऱ् ऱीमै योरै 412

नायकन् अल्लन्–स्वामी नहीं; नम्मै–हमें; पयन्तु ऎट्टुत्तु–जनाकर; नऩि नल्कुम्–खूब पालनेवाली; ताय्–माता; ऎऩ–ऐसा (मानकर); इऩितु पेण–(प्रजा) तुमसे प्रेम-भरा व्यवहार करे, ऐसा; ताङ्कुवारै–भरणयोग्य प्रजाजनों का; ताङ्कुति–भरण करो; आयतु तऩ्मै एऩुम्–वैसे व्यवहार के होने पर भी; तीयन वन्त पोतु–हानि (किसी के द्वारा) आयी तो; तीमैयोरै–बुरा करनेवाले को; अऱम् वरम्पु–धर्म की सीमा; इकवा वण्णम्–लाँघे विना; चुट्टुति–जलाओ (दण्ड दो)। ४१२

प्रजा तुम्हें स्वामी न माने; पर अपनी जननी और पालन करने वाली धात्री समझे, और तुम्हारी सेवा करे। ऐसा तुम भरण-योग्य प्रजा का पालन करो। तो भी बुराई किसी के द्वारा आयी तो हानिकारी को, धर्म की सीमा का उल्लंघन किये विना, दण्ड दो। ४१२

इऱत्तलुम् पिऱत्त लाऩु मॆऩ्बन विरण्डुम् याण्डुम्
तिऱत्तुऴि नोक्किऩ् चॆय्द विऩैदरत् तॆरिन्द वऩ्ऱे
पुऱत्तिनि युरैप्प वॆंऩ्ऩे पूविऩ्मेऱ् पुनिदऱ् केनुम्
अऱत्तिऩ दिऱुदि वाऴ्नाट् किऱुदियः(ह्) दुऱुदि यऩ्ब 413

अऩ्प–स्नेही; तिऱत्तु उऴि–समर्थ-रूप से; नोक्किन्–देखें तो; इऱत्तलुम्–मरना और; पिऱत्तल् ताऩुम्–जन्म लेना; ऎऩ्पत इरण्टुम्–दोनों; याण्टुम्–सदा; चॆय्त विऩै तर तॆरिन्त अऩ्ऱे–पूर्वकृत कर्म के फलस्वरूप होते हैं न; पूविऩ् मेल्–(कमल) पुष्प पर आसीन; पुनितऱ्कु एऩुम्–पवित्र (ब्रह्मा) देव के लिए भी;

अऱत्तित्तु इऱुति–धर्म का अन्त; वाऴ् नाट्कु इऱुति–आयु का अन्त है; अ.ु तु उऱुति–वह निश्चित है; इति–आगे; पुऱत्तु–अन्य; उरैप्पतु ॲन्ऩे–कहना क्या है ? । ४१३

प्रिय मित्र ! खूब विदग्धता के साथ सोचा जाय तो जन्म और मरण पूर्वकृत कर्मों के ही फल हैं। है न ? महाविष्णु के नाभि-कमल पर उदित पवित्र ब्रह्मा के लिए भी धर्म-कर्म का अन्त आयु का अन्त ला देगा। वह शाश्वत है और ध्रुव है। फिर क्या कहा जाय ? । ४१३

आक्कमुङ् गेडुन् दाऩ्जॅ यऱत्तॉडु पाव माय
पोक्किवे ऱुण्मै तेऱार् पॉरुवरुम् बुलमै नूलोर्
ताक्किन वॊन्ऱो डॊन्ऱु तरुक्करुऱ् जॅरुविऱ् ऱक्कोय्
पाक्किय मन्ऱि यॅन्ऱुम् पावत्तैप् पऱ्ऱ लामो 414

तक्कोय्–योग्य; ऑन्ऱोटु ऑन्ऱु–एक दूसरे के साथ; ताक्कित–टकराकर; तरुक्कु उऱुम्–जहाँ गर्व दरसाया जाता है, उस; चॅरुवित्–युद्ध में; आक्कमुम् केटुम्–उत्कर्ष और अपकर्ष; ताम् चॅय्–अपने से किये हुए; अऱत्तॉटु पावम् आय–धर्म और पाप के फलस्वरूप मिलनेवाले हैं; पोक्कि–वह छोड़कर; वेऱु उण्मै–अन्य कारणों का रहना; पॉरुवु अरुम्–अनुपम; पुलमै नूलोर्–विद्वान् शास्त्रज्ञ; तेऱार्–नहीं मानते; पाक्कियम् अन्ऱि–पुण्यकर्म छोड़कर; पावत्तै–पाप को; ॲन्ऱुम्–कभी; पऱ्ऱलामो–कर सकते हैं क्या । ४१४

योग्य सुग्रीव ! युद्ध में, जहाँ लोग परस्पर टकराते हैं और अभिमान दिखाते हैं, अभ्युदय और नाश अपने किये पुण्य और पाप के लाये हुए होते हैं। विद्वान् शास्त्रज्ञ लोग उसका और किसी कारण का होना नहीं मानते। इसलिए सौभाग्यकारी पुण्यकर्म छोड़कर नाशकारी पापकार्य कभी भी किये जा सकते हैं क्या ? । ४१४

इन्ऩवै तहैमै यॅन्ब वियल्बुऴि मरबि ऩॆण्णि
मन्ऩर शियऱ्ऱि यॅऩ्गण् वरुवऴि मारिक् कालम्
पिन्ऩुऱ मुऱैयि ऩुन्ऱऩ् पॅरुङ्गडऱ् चेऩै योडुम्
तुन्ऩुदि पोदि यॅन्ऱान् सुन्दर ऩवऩुञ् जॊल्वान् 415

इन्ऩवै तकैमै–ये योग्यताएँ हैं; ॲन्प–कहते हैं (लोग); इयल्पु उऴि–शास्त्र-सम्मत रीति से; मरपिन् ॲण्णि–यथाक्रम विचार कर; मन् अरचु–स्थायी राज्य; इयऱ्ऱि–(राज) करके; मारि कालम्–वर्षाकाल के; पिन् उऱ–बीतने पर; ॲन् कण्–मेरे पास; वरु वऴि–जब आओगे तब; मुऱैयिन्–उचित प्रकार से; उन् तन्–अपनी; पॅरु कटल्–विशाल सागर-सम; चेऩैयोटुम्–सेना के साथ; तुन्ऩुति–आ जाओ; पोति–अब जाओ; ॲन्ऱान्–कहा; सुन्तरन्–सुन्दर श्रीराम ने; अवऩुम्–वह भी; चॊल्वान्–बोला । ४१५

ये सब शासक के लिए योग्य विचार और व्यवहार हैं। ऐसा लोग कहते हैं। इसलिए शास्त्र में उक्त रीति से और परम्परा के क्रम के अनुसार शाश्वत राज्य करो। फिर वर्षाकाल के बीतने पर मेरे पास आ जाओ। जब आओ, तब अपनी विशाल सागर-सम सेना को भी साथ ले आओ। अब तुम जाओ। —सुन्दर श्रीराम ने कहा। तब सुग्रीव उत्तर में यों बोला। ४१५

कुरङ्गुरै यिरुक्कै यॅऩ्ऩुङ् गुऱ्ऱमे कुऱ्ऱ मल्लाल्
अरङ्गॉळिल् तुरक्क नाट्टुक् करशॅऩ्ऱ लाहु मऩ्ऱे
मरङ्गिळ ररुविक् कुऩ्ऱिऩ् वळ्ळनी मऩत्ति ऩॅम्मै
इरङ्गिय पणियाञ् जॅय्य विरुत्तियार् चिऩ्ऩा ळॅम्बाल् 416

वळ्ळल्–वदान्य; कुरङ्कु उऱै–वानरों के रहने का; इरुक्कै–स्थान; ऍऩ्ऩुम्–कहा जाता है, यही; कुऱ्ऱमे–दोष; कुऱ्ऱम् अल्लाल्–दोष है, नहीं तो; ऍऴिल् अरङ्कु–सुन्दर मंच (सुधर्मा) से शोभित; तुरक्कम् नाट्टुक्कु–स्वर्गदेश का; अरचु ऍऩल्–राजा है, कहने योग्य; आकुम्–है; मरम् किळर्–तरुलसित; अरुवि कुऩ्ऱिल्–सरितापूर्ण पर्वत पर; नी–आप; मऩत्तिऩ्–चित्त में; ऍम्मै–हमारे प्रति; इरङ्किय–सहानुभूति के साथ दी गयी; पणि–सेवा की आज्ञाएँ; याम् चॅय्य–हमें करने देते हुए; चिल् नाळ्–कुछ दिन; ऍम् पाल्–हमारे पास; इरुत्ति–रहिए। ४१६

हमारे वासस्थान के सम्बन्ध में इतना ही दोष है कि वह वानरों का वासस्थान है, अगर वह दोष हो! नहीं तो वह 'सुधर्मा' नाम के सभाभवन के साथ शोभनेवाले स्वर्ग का भी नायक (स्वर्ग से अधिक भव्य) है। हमारे पर्वत पर तरु हैं और सरिताएँ हैं। आप जो भी आज्ञा देने की कृपा करेंगे, हम उनको कार्यान्वित कर देंगे। आप कुछ दिनों तक हमारे पास रहने की कृपा करें। ४१६

अरिऩ्दम निऩ्ऩै यण्मि यरुळुक्कु मुरिये माहिप्
पिरिन्दुवे ऱॅय्दुञ् जॅल्वम् वॅऱुमैयिऱ् पिऱिदऩ् ऱामाल्
करुन्दडङ् गण्णि ऩाळै नाडलाङ् गालङ् गाऱुम्
इरुन्दरु डरुदि यॅम्मो डॅऩ्ऱडि यिणैयिऩ् वीऴ्न्दाऩ् 417

अरिन्तम–शत्रुहंता; निऩ्ऩै अण्मि–आपकी शरण में आकर; अरुळुक्कुम्–कृपा के; उरियोमाकि–पात्र बनकर; पिरिन्तु–आपसे बिछुड़कर; वेऱु ऍय्तुम्–अलग रहकर भोगने का; चॅल्वम्–विभव; वॅऱुमैयिल् पिऱितु अऩ्ऱु आम्–अभाव से पृथक् नहीं है; करु तटम् कण्णिताळै–काली और आयत आँखों वाली (सीतादेवी) को; नाटल् आम्–खोजने का; कालम् काऱुम्–काल आते तक; ऍम्मोटु इरुन्तु–हमारे साथ रहकर; अरुळ् तरुति–उपकार करें; ऍऩ्ऱु–कहकर; अटि इणैयिऩ्–चरणद्वय पर; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा। ४१७

शत्रुहन्ता वीर हे श्रीराम ! आपकी शरण में आकर, आपकी कृपा के पात्र रहने के बाद आपसे बिछुड़कर अलग जो भी भोग भोगेंगे, वे अभाव से भिन्न नहीं होंगे ! काली और विशाल आँखों वाली देवी सीता के अन्वेषण के लिए योग्य काल के आने तक आप हमारे साथ रहने की कृपा कीजिए। सुग्रीव ने यह विनय करते हुए श्रीराम के चरणयुगल पर गिरकर प्रणाम किया। ४१७

एन्दलु मिदन्नैक् केळा विन्निळ मुरुव नार
वेन्दमै यिरुक्कै यॆम्बोल् विरदियर् विळैदर् कौव्वा
पोन्दव णिरुप्पि नॆम्मैप् पोट्रुवे पॊळ्दु पोमाल्
तेर्न्दिति दियट्रु मुन्र नरशियर् ट्रुमन् दीर्दि 418

एन्तलुम्–राजाराम भी; इतनै केळा–यह सुनकर; इन् इळ मुरुवल्–मधुर मन्दहास; नार–प्रकट करते हुए; वेन्तु अमै–राजकीय; इरुक्कै–भवन में रहना; ऍम् पोल्–हम जैसे; विरतियर्–तपोव्रती लोगों के लिए; विळैतर्कु ऑव्वा–चाहनीय नहीं है; अवण् पोन्तु–वहाँ आकर; इरुप्पिन्–रहें तो; ऍम्मै पोट्रुवे–हमारे सत्कार करने में ही; पॊळुतु पोम्–समय बीत जायगा; आल्–इसलिए; तेर्न्तु–छानबीन कर; इनितु इयट्रुम्–सुख से जो करोगे; उन् तन्–उस तुम्हारे; अरचियल् तरुमम्–शासन-धर्म से; तीर्ति–तुम हट जाओगे। ४१८

श्रीराजाराम ने भी यह सुनकर मधुर मन्दहास करते हुए उत्तर दिया। हम तपोव्रती हैं। हमारे लिए राजकीय भवन में रहना चाहने योग्य काम नहीं है। और भी अगर हम वहाँ आकर रहें तो हमारी सेवा-टहल में तुम लोगों का सारा समय कट जायगा। और उससे तुम सोच-विचारकर करणीय अपने शासनकार्य के धर्म से च्युत हो जाओगे। ४१८

एळिरण् डाण्डि यान्पोन् वॆरिवनत् तिरुक्क वेन्ट्रेन्
वाळिया यरशर् वैहुम् वळनहर् वैह लॊल्लेन्
पाळियन् दडन्दोळ् वीर पार्क्किलै पोलु मन्ट्रे
याळिशै मॊळियो डन्ट्रि यानुरु मिन्ब मॆन्नो 419

वाळियाय्–जयजीव; एळ् इरण्टु आण्टु–सात के दो (चौदह) साल; यान् पोन्तु–मैं जाकर; ऍरि वनत्तु–जलते वन में; इरुक्क–रहना; एन्ट्रेन्–मैंने मान लिया; अरचर् वैकुम्–राजा जहाँ रहते हैं; वळ नकर्–उस समृद्ध नगर में; वैकल् ऑल्लेन्–रहने को सम्मत नहीं होऊँगा; पाळि–सबल; अम्–सुन्दर; तटम् तोळ्–विशाल कन्धों वाले; वीर–वीर; याळ् इचै–'याळ्'-ध्वनि-सी मधुर; मॊळियोटु अन्ट्रि–बोली की सीता के बिना; यान् उरुम्–मैं जो भोगूं, वह; इन्पम्–सुख; ऍन्नो–किस मूल्य का; पार्क्किलै पोलुम्–शायद तुमने नहीं सोचा क्या। ४१९

जयजीव ! मैंने चौदहों साल दाहक वन में वास करने का वचन दिया है। तब तक राजाओं के वासस्थान, समृद्ध नगरों में रहना नहीं मानूंगा।

और भी, हे सबल सुन्दर विशाल कन्धों वाले वीर ! 'याऴ' की ध्वनि-सी मधुरभाषिणी सीता के विना जो भी मुझे सुख-भोग मिले, वह किस काम का ? यह तुम नहीं देखते शायद ! । ४१९

देविवे उ़रक्कन् वेंत्त शिऱैयिनु ळिरुप्पत् तान्उ़न्
आवियन् दुणैव नोडु मळविडऱ् करिय विन्बम्
मेवित्ता निऱाम नॆंन्ऱा लैयविव् वॆय्य माऱ्ऱम्
मूवहै युलह मुऱ्ऱुङ् गालत्तु मुऱ्ऱ वऱ्ऱो 420

ऐय—श्रेष्ठ सुग्रीव; तेवि—मेरी गृहिणी; वेऱु—अलग; अरक्कन् वेंत्त—राक्षस-रक्षित; चिऱैयितुळ्—कारागृह में; इरुप्प—रहती है, तब; इरामन्—श्रीराम; तान्—स्वयं; तन् आवि अम् तुणैवनोडुम्—अपने प्राणप्यारे सखा के साथ; अळविटऱ्कु अरिय—अगण्य; इन्पम्—सुखभोग; मेवितान्—अपनाए रहा; ऍन्ऱाल्—लोग कहें तो; इ वॆय्य माऱ्ऱम्—यह कठोर अपवाद-कथन; मूवकै उलकम्—त्रिवर्ग के लोकों के; मुऱ्ऱुम् कालत्तुम्—मिटने के समय में भी; मुऱ्ऱवऱ्ऱो—मिटेगा क्या। ४२०

श्रेष्ठ सुग्रीव ! मेरी गृहिणी सीता रावणरक्षित कारागृह में है। तब 'राम अपने प्यारे प्राणसम सखा के साथ अपार सुख-भोग में मस्त रहा !' —यह अपवाद अगर लोग कहने लगें तो क्या वह अपयश त्रिवर्ग के लोकों के नाश होने पर भी मिटेगा ? । ४२०

इल्लऱन् दुऱन्दि लादो रियऱ्कैयै यिळन्दु पोरिन्
विल्लऱन् दुऱन्दु वाऴ वॆंळ्हिनॆंन् मेन्मै यल्लाच्
चिल्लऱम् बुरिन्दु निन्ऱ तीमैह डीरु माऱु
नल्लऱन् दॊंडर्न्द नोन्बि नवैयऱ नोऱ्प नाळुम् 421

इल् अऱम्—गृहस्थधर्म; तुऱन्तिलातोर्—अमुक्त; इयऱ्कैयै—लोगों का आचार-व्यवहार; इळन्तु—छोड़कर; पोरिन्—युद्ध में; विल् अऱम्—धनुधर्म; तुऱन्तु—छोड़कर; वाऴ वॆंळ्किनॆंन्—जीने से शरमाता हूँ; मेन्मैयल्ला—जो उत्कृष्ट नहीं; चिल् अऱम्—क्षुद्र धर्म; पुरिन्तु निन्ऱ—जो मैंने आचरण किया है; तीमैकळ्—उनसे मिलनेवाले कष्ट; तीरुम् आऱु—दूर करने हेतु; नल् अऱम् तॊंटर्न्त—सद्धर्मानुचारी; नोन्पिन्—व्रत के पालन में; नाळुम्—रोज; नवै अऱ—निर्दोष रीति से; नोऱ्पल्—तपस्या करूँगा। ४२१

गृहस्थी में रहनेवालों के योग्य रहन-सहन या व्यवहार मैंने त्याग दिया। साथ-साथ युद्ध में धनु-धर्म जो है, उसका भी उल्लंघन कर दिया। इस स्थिति में अपने जीवित रहने में मुझे शरम का अनुभव होता है। जो धर्म मैंने अब तक अपनाए वे अल्प हैं और श्रेष्ठ नहीं हैं। उनके पालन से जो हानियाँ सम्भवनीय हैं, उनको दूर करने के वास्ते मैं सदाचरण व्रत के पालन में स्थित होकर प्रतिदिन तप करूँगा, ताकि दोष सब दूर हों। ४२१

अरशियर् कुरिय यावु माऱ्ऱुळि याऱ्ऱि यान्ऱ
करैशॅयर् करिय शेनैक् कडलॊडुन् दिङ्ग णान्गिन्
विरशुव दॆन्बा निन्नै वेण्डिनॆन् वीर वॆन्ऱान्
उरैशॆयर् कॊळिदु माहि यरिदुमा मॊळुक्कि निन्ऱान् 422

उरै चॅयर्कु–कहने के लिए; ऑळितुम् आकि–सुलभ रहकर; अरितुम् आम्–(करने के लिए) कठिन जो है; ऑळुक्किल्–उस आचरण में; निन्ऱान्–स्थित रहनेवाले श्रीराम; वीर–वीर; अरचु इयर्कु–राजकाज के लिए; उरिय यावुम्–योग्य आवश्यक सभी; आऱ्ऱुळि–करनेयोग्य रीति से; आऱ्ऱि–करके; आन्ऱ–श्रेष्ठ; करै चॅयर्कु अरिय–पार पाने में कठिन; चेनै कटलॊटुम्–सेना-सागर के साथ; तिङ्कळ् नान्किल्–महीनों, चार, में; ऍन् पाल्–मेरे पास; विरचुक–आ मिलो; निन्नै वेण्टिनॆन्–तुमसे याचना करता हूँ; ऍन्ऱान्–बोले। ४२२

सदाचार ऐसे हैं, जिनका कथन सुलभ है पर आचरण कठिन है। श्रीराम ऐसे सदाचरण में स्थिर रहनेवाले थे। उन्होंने सुग्रीव से कहा कि वीर! राजकाज ठीक सँभालो। फिर अपार सेना के सागर के साथ चार मास की अवधि में मेरे पास आ जाओ। तुमसे मेरी यह याचना है। ४२२

मऱ्ऱुत्तॊरु माऱ्ऱङ् गूऱान् वानुयर् तोऱ्ऱत् तन्नान्
कुऱिप्पऱिन् दॊळुहन् मादो कोदिल राव लॆन्ना
नॆऱिप्पडर् कण्गळ् पॊङ्गि नीर्वर नॆडिदु ताळ्न्दु
पॊऱिप्परुन् दुन्ब मुन्नाक् कविक्कुलत् तरशन् पोनान् 423

कविकुलत्तु अरचन्–कपिकुल का राजा; मऱ्ऱुत्तु–उत्तर में; ओर माऱ्ऱम्–कोई वचन; कूऱान्–न बोला; वान् उयर्–बहुत उत्कृष्ट; तोऱ्ऱत्तु–(तपो-) वेशधारी; अन्नान्–उनका; कुऱिप्पु अऱिन्तु–मनोभाव जानकर; ऒळुकल्–उसके अनुसार आचरण करना; कोतु इलर् आतल्–निर्दोष काम करनेवाले का गुण होगा; ऍन्ना–यह सोचकर; पटर् कण्कळ्–विशाल आँखों से; नीर् पॊङ्कि–जल को उमड़कर; नॆऱि वर–धारा में बहाते हुए; नॆटितु ताळ्न्तु–पट गिरकर; पॊऱिप्पु अरु–अकूत; तुन्पम् उन्ना–दुःख मन में रखे; पोनान्–गया। ४२३

यह सुनकर कपिकुलराज ने कुछ उत्तर नहीं दिया। अति श्रेष्ठ तपवेशधारी श्रीराम का तात्पर्य समझा। माना कि उनका मन जानकर उसी के अनुकूल चलना निर्दोष आचरण वाले के लिए युक्त है। आँखों से आँसू बहाते हुए सुग्रीव श्रीराम के चरणों में पट गिरा। नमस्कार कर उठा और अपार दुःख लेकर किष्किन्धा की ओर चल दिया। ४२३

वालिहा दलनु माण्डु मलरडि वणङ्गि नानै
नीलमा मेह मन्न नॆडियव नरुळि नोक्किच्
चीलनी युडैयै याव लिवन्शिरु तावै यॆन्ना
मूलमे तन्द नुन्दै यासॆन मुऱैयि निऱ्ऱि 424

मलर् अटि–कमल-चरण पर; वणङ्कितान्–जिसने प्रणाम किया; वालि कातलतुम्–उस वाली के पुत्र को भी; आण्टु–वहाँ; नीलम् मा मेकम् अन्न–नीले, बड़े मेघ के समान; नॅटियवन्–उत्तम श्रीराम; अरुळिन्–कृपापूर्वक; नोक्कि–देखकर; नी–तुम; चीलम् उटैयै–शीलवान; आतल्–बनो; इवन्–इसे; चिऱु तातै ऍन्ना–छोटे पिता न मानकर; मूलमे तन्त–जन्म-दाता; नुन्तै आम् ऍन–अपने पिता ही मानकर; मुऱैयिन् निऱ्ऱि–उसी (बान्धव्य-) क्रम में बर्ताव करो। ४२४

तब वाली का पुत्र भी श्रीराम के चरणों पर नत हुआ। नीले, बड़े मेघ-सम श्रीराम ने उस पर कृपाकटाक्ष डालकर कहा कि तुम शीलवान बने रहो। इस सुग्रीव को छोटे पिता मत मानो। पर जनक पिता ही मानो। उस रिश्ते के गौरव का पालन करो। ४२४

ऍन्नमऱ् ऱिनैय कूऱि येहवऱ् ऱॊडर वॅन्ऱान्
पॊन्नडि वणङ्गि मऱ्ऱप् पुहऴुडैक् कुरिशिल् पोनान्
पिन्नर्मा रुदियै नोक्किप् पेरॅऴिल् वीर नीयुम्
अन्नव नरशुक् केऱ्ऱ दाऱ्ऱुदि यऱिवि नॅन्ऱान् 425

ऍन्न–कहकर; मऱ्ऱुम्–और; इत्तैय कूऱि–ऐसी बातें कहकर; अवन् तॊटर–उसका पीछा करके; एकु–जाओ; ऍन्ऱान्–कहा; मऱ्ऱु–उसके पश्चात्; अ पुकऴ् उटै–वह कीर्तिमान; कुरिचिल्–कुँअर; पॊन् अटि वणङ्कि–सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके; पोनान्–गया; मारुतियै–मारुति को; नोक्कि–देखकर; पिन्नर्–फिर; पेर् ऍऴिल् वीर–अतिसुन्दर वीर; नीयुम्–तुम भी; अन्नवन्–उसके; अरचुक्कु एऱ्ऱतु–राज्य के योग्य; अऱिविन्–अपनी बुद्धि से; आऱ्ऱुति–(काम) करो; ऍन्ऱान्–कहा। ४२५

श्रीराम ने यह कहा और भी ऐसे हित-वचन कहे। फिर आज्ञा दी कि सुग्रीव के पीछे जाओ। पश्चात वह प्रकीर्तित कुमार अंगद श्रीराम के सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके किष्किन्धा की ओर चल पड़ा। श्रीराम ने मारुति से कहा कि अतिसुन्दर वीर! तुम भी जाओ और सुग्रीव के शासनकार्य में युक्त सहयोग के कार्य अपने बुद्धिबल के आधार पर साधो। ४२५

पॊय्त्तलि लुळ्ळत् तन्बु पॊऴिहिन्ऱ पुणर्च्चि यानुम्
इत्तलै यिरुन्दु नाये नेयिन वॅन्नक्कुत् तक्क
कैत्तॊऴिल् शॅय्वॅ नॅन्ऱु कऴलिणै वणङ्गुङ् गालै
मॅय्त्तलै निन्ऱ वीर निव्वुरै विळम्ब लुऱ्ऱान् 426

पॊयत्तल् इल्–असत्य जिसमें नहीं था; उळ्ळत्तु–ऐसे मन के; अन्पु पॊऴिकिन्ऱ–(और) भक्ति अधिक; पुणर्च्चियानुम्–रखनेवाले के; नायेन्–दास मैं; इ तलै इरुन्तु–यहीं रहकर; एयित–आप जो आज्ञा देंगे, ऍन्तक्कु तक्क–और अपने योग्य; कैत् तॊऴिल्–छोटी-मोटी सेवाएँ; चॅय्वॅन्–करूँगा; ऍन्ऱु–कहकर;

कळ्ल् इणै–चरणयुगल पर; वणङ्कुम् कालै–नमस्कार करते समय; मॅय् तलै नित्र् वीरन्–सत्यसंध वीर (श्रीराम); इ उरै–यह बात; विळम्पल् उड्रान्–कहने लगे। ४२६

असत्यहीन और भक्ति से लबालब भरे मन वाले हनुमान ने विनय की कि दास मैं यहीं रह जाऊँ! आप जो भी आज्ञा करेंगे, जो मुझसे साध्य है, वे छोटी-मोटी सेवाएँ बजाऊँगा। यह कहते हुए उसने श्रीराम के चरणों पर नमस्कार किया; तब सत्यसंध श्रीराम ने यों कहा। ४२६

निरम्बिता नॊरुवन् कात्त निड्रॆयर शिरुदि नित्र्
वरम्बिला ददनै मड्रोर् तलैमहन् वलिदिर् कॊण्डाल्
अरुम्बुव नलनुन् दीङ्गु माहलि नैय नित्बोर्
पॆरुम्बॊरै यरिवि नोरा निलैयितैप् पॆरुव दम्मा 427

निरम्पितान्–पूर्णयोग्य; ऑरुवन्–एक (वाली); कात्त–द्वारा पालित; निरै अरचु–समृद्ध राज्य; इरुति नित्र्–अन्तिम; वरम्पु इलाततु–सीमा-रहित है; अततै–उसे; मड्रु ओर् तलै मकन्–कोई दूसरा राजा; वलितिन् कॊण्टाल्–बलात् हथिया लेगा तो; नलतुम् तीङ्कुम्–लाभ और हानि; अरुम्पुव–होंगी; आकलिन्–इसलिए; ऐय–महिमामय; नित्पोल्–तुम्हारे समान; पॆरुम् पॊरै–बड़े सहनशील और; अरिवितोराल्–बुद्धिमान लोगों द्वारा ही; निलैयितै पॆरुवतु–स्थिरता पा सकता है। ४२७

पूर्णकुशल वाली द्वारा पालित राज्य समृद्ध और निस्सीम है। उसको कोई अन्य राजा बलात् हथिया लेगा तो लाभ और हानियाँ निकल आयँगी। इसलिए उसे सुरक्षित करना है। महिमावान हनुमान! वह स्थिरता देने का कार्य तुम जैसे बड़े ही सहनशील और बुद्धिमान के हाथों ही हो सकेगा। ४२७

आन्ड्रवर् कुरिय दाय वरशितै निरुवि यप्पाल्
एन्ड्रॆनक् कुरिय दाय करुममु मियड्रड् कॊत्त
शान्ड्रवर् नित्ति निल्लै यादलार् ड्रुमन् दाने
पोन्ड्रनी याते वेण्ड वत्तलैप् पोदि यॆन्ड्रान् 428

आन्ड्रवरुकु–उत्तम सुग्रीव के; उरियतु आय–स्वत्व के; अरचितै–राज्य को; निरुवि–सुसंगठित करके; अप्पाल्–बाद; ऍतककु उरियतु आय–मेरे प्रति कर्तव्य; करुममुम्–कार्य भी; एन्ड्रु–हाथ में लेकर; इयड्रड्कु ऑत्त–करने योग्य; चान्ड्रवर्–श्रेष्ठ व्यक्ति; नित्तिन् इल्लै–तुम्हारे समान कोई नहीं है; आतलाल्–इसलिए; तरुमम् ताने पोन्ड्र–धर्म ही-सम; नी–तुम; याते वेण्ट–मेरी ही याचना से; अ तलै पोति–उधर जाओ; ऍन्ड्रान्–कहा। ४२८

श्रेष्ठ सुग्रीव के अधिकार में आये राज्य को पहले सुरक्षित करो।

फिर मेरे प्रति कर्तव्य करो। इसके लिए तुमसे बड़ा श्रेष्ठ कोई नहीं है। इसलिए धर्मावतार-सम तुम मेरी याचना मानो और वहाँ जाओ। ४२८

आऴियाऩ् ऩैय कूऱ वाणैयी दाहि ऩ:(हृ)दे
वाऴियाय् पुरिवॆ ऩॆऩ्ऱु वणङ्गिमा रुदियुम् बोऩाऩ्
शूऴिमाल् याऩै यऩ्ऩ तम्बियो डॆऴुन्दु तॊल्लै
ऊऴिना यहऩुम् वेऱो रुयर्दडङ् गुऩ्ऱ मुऱ्ऱाऩ् 429

आऴियाऩ्–(सुदर्शन-) चक्रधारी श्रीराम (के); अऩैय कूऱ–वैसा कहने पर; मारुतियुम्–हनुमान भी; वाऴियाय्–जयजीव; आणै–आज्ञा; ईदु आकिऩ्–यह हो तो; अ:ते पुरिवॆऩ्–वही करूँगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; पोऩाऩ्–गये; तॊल्लै–पुरातन; ऊऴि नायकऩुम्–युगनायक श्रीराम भी; चूऴि माल्–मुखपट्ट पहने हुए और बड़े; याऩै अऩ्ऩ–गज के समान; तम्पियोटु ऎऴुन्तु–भाई के साथ उठकर; वेऱु ओर्–दूसरे एक; उयर् तट कुऩ्ऱम्–उन्नत विशाल पर्वत पर; उऱ्ऱाऩ्–पहुँचे। ४२९

सुदर्शन नाम के चक्रधारी श्रीराम के ऐसा कहने पर मारुति ने विनय के साथ कहा कि जयजीव! यही आपकी आज्ञा है तो उसी के अनुसार चलूँगा। फिर वह उनको नमस्कार करके चला गया। बाद पुरातन युगों के नायक श्रीराम मुखपट्ट पहने हुए बड़े हाथी के समान अपने भाई लक्ष्मण को साथ लेकर दूसरे एक बड़े (प्रश्रवण) पर्वत पर जा पहुँचे। ४२९

आरिय ऩरुळिऩ् पोयव् वहऩ्मलै यहत्त ऩाऩ
सूरियऩ् महऩु माऩत् तुणैवरुङ् गिळैयुञ् जुऱ्ऱत्
तारैयै वणङ्गि यऩ्ऩा डायॆऩत् तऩ्द शॊऱ्कळ्
शीरियर् शॊल्ले यॆऩ्ऩच् चॆव्विदि ऩरशु शॆय्दाऩ् 430

आरियऩ् अरुळिऩ्–आर्यश्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा के अनुसार; पोय्–जाकर; अ अकऩ् मलै–उस विशाल (किष्किन्धा) पर्वत के; अकत्तऩ् आऩ–स्थल में रहनेवाला; चूरियऩ् मकऩुम्–सूर्य के पुत्र ने भी; माऩम् तुणैवरुम्–सम्मान्य साथी; किळैयुम्–और बन्धु; चुऱ्ऱ–घेर आये; तारैयै वणङ्कि–तारा को नमस्कार करके; अऩ्ऩाळ् तायॆऩ–उसके द्वारा मातृ-सम; तऩ्त चॊऱ्कळ्–कहे हुए शब्दों को; चीरियर् चॊल्ले–उत्तम लोगों के उपदेश-वचन ही; ऎऩ्ऩ–मानकर; चॆव्वितिऩ्–उत्तम रूप से; अरचु चॆय्ताऩ्–राज्य किया। ४३०

आर्य श्रीराम की आज्ञा लेकर सुग्रीव अपने साथियों (मन्त्रियों आदि) और बान्धवों के साथ अपने पर्वत पर पहुँचा। वहाँ का होकर उसने तारा को नमस्कार किया। उसने जो भी माता के समान कहा उसे उत्तम, बड़े लोगों के उपदेशों का-सा गौरव देते हुए सुग्रीव राज्य करता रहा। ४३०

वळवर शॆय्दि मऱ्ऱ वाऩर वीरर् यारुम्
किळैञरि ऩुदव वाणै किळर्दिशै यळप्पक् केळो
डळविल वाऱ्ऱ लाण्मै यङ्गद ऩरङ्गोळ् शॆल्वत्
तिळवर शियऱ्ऱ वेवि यिऩिदिऩि तिरुन्दा ऩिप्पाल् 431

वळम् अरचु ॲय्ति–सब तरह से समृद्ध राज्य पाकर; मऱ्ऱ–अन्य; वाऩर वीरर् यारुम्–सभी वानर वीरों के; किळैञरिऩ् उतव–रिश्तेदारों के समान साथ देते; आणै–आज्ञा के; किळर् तिचै–वर्तमान सभी दिशाओं में; अळप्प–मापते (मान्य रहते); अळवु इल आऱ्ऱल्–अपार शक्तिशाली; आण्मै अङ्कतऩ्–पौरुषयुक्त अंगद को; केळोटु–अपने बन्धु-बान्धवों के साथ; अऱम् कॊळ् चॆल्वत्तु–धर्मसम्मत रीति से प्राप्त वैभव के साथ; इळवरचु इयऱ्ऱ–युवराज का अधिकार चलाने की; एवि–आज्ञा देकर; इतितिऩ् इरुन्ताऩ्–सुखपूर्वक रहा; इप्पाल्–इसके पश्चात्। ४३१

सुग्रीव सर्वसमृद्ध राज्य का राजा बना। अन्य वानरवीर उसका रिश्तेदारों के समान साथ दे रहे थे। उसकी आज्ञा वर्तमान सभी दिशाओं में मानी गयी। सुग्रीव ने अपार बल और पौरुष से युक्त अंगद को युवराज के पद पर रहकर अपने रिश्तों के साथ धर्मसम्मत रीति से प्राप्त धन-वैभव को भोगने की आज्ञा दी। इस स्थिति में सुग्रीव सुख के साथ राज्य करता रहा। ४३१

9. कार्कालप् पडलम् (वर्षाकाल पटल)

मावियल् वडदिशै निऩ्ऱुम् माऩवऩ्
ओविय मेय्ॲऩ वॊळिक्क विऩ्गुलाम्
देवियै नाडिड मुऩ्दिऩ् तॆऩ्ऱिशैक्
केविय तूदॆऩ विरवि येहिऩाऩ् 432

ओवियमे ॲऩ–चित्र के ही समान; ऒळि–प्रकाशमय; कविऩ् कुलाम्–सौन्दर्ययुक्त; तेवियै–देवी सीता को; नाटिट–ढूँढ़ने के लिए; मुऩ्ऩति–(किसी के जाने से) पूर्व ही; माऩवऩ्–मनुकुल सम्भूत श्रीराम के द्वारा; तॆऩ् तिचैक्कु–दक्षिण दिशा में; एविय–प्रेषित; तूतु ॲऩ–दूत के समान; इरवि–सूर्य; मा इयल्–श्रेष्ठ मान्य; वट तिचै निऩ्ऱुम्–उत्तर दिशा से; एकिऩाऩ्–(दक्षिण की तरफ़) गये। ४३२

दक्षिणायन आरम्भ हुआ। सूर्य ने अपना दक्षिण की ओर गमन आरम्भ किया। सूर्य श्रीराम के दूत के समान लगे, जिनको श्रीराम ने चित्र-सम सुन्दर देवी सीता को खोजने के लिए सबसे पहले भेजा हो। वे उत्तम उत्तर दिशा छोड़कर दक्षिण में गये। ४३२

पैविरि पः(ह्)ऱलैप् पान्द ळॆन्दिय
मॊय्निलत् तहऴियिऩ् मुऴङ्गु नीर्ॲयिऩ्

वॆय्यवऩ् विळक्कमा मेरुप् पॊऩ्ऱिरि
मैयह लॊत्तदु मऴैत्त वाऩमे 433

मऴैत्त वाऩम्–मेघाच्छन्न आकाश; पै विरि–फन फैले हुए; पल् तलै–अनेक सिरों के; पान्तऴ्–शेषनाग द्वारा; एन्तिय–वहित; मॊय् निलम्–सशक्त भूमि रूपी; तकळियिल्–दिये में; मुऴङ्कुम्–शब्दायमान; नीर् नॆयिन्–समुद्र रूपी घृत से; मेरु पॊन् तिरि–मेरु रूपी सुन्दर वर्तिका पर; वॆय्यवन् विळक्कम् आ–सूर्य की ज्वाला का; मै अकल्–काजल पारने के बर्तन; ऒत्ततु–के समान लगा। ४३३

आकाश मेघाच्छन्न था। वह काजल पारने के एक बहुत बड़े बर्तन के समान लगा। फैले हुए फनों वाले शेषनाग द्वारा वहित भूमि रूपी दिये में शब्दायमान समुद्रजल रूपी घृत डालकर मेरु की सुन्दर वर्तिका रखी गयी और सूरज की ज्वाला से जो धुआँ उठा वह आकाश पर जम गया। ४३३

नण्णुद लरुङ्गड नञ्ज नुङ्गिय
कण्णुदल् कण्डत्तिऩ् काळ मामॆऩ
विण्णह मिरुण्डदु वॆयिलिऩ् वॆङ्गदिर्
तण्णिय मॆलिन्दऩ तऴैत्त मेहमे 434

विण् अकम्–आकाश; नण्णुतल् अरु–अगम; कटल् नञ्चम्–(क्षीर-)सागरोत्पन्न विष के; नुङ्किय–खादक; कण्नुतल्–भालनेत्र शिवजी के; कण्टत्तिन्–कण्ठ में; काळम् आम् ऎन–(जो है) उस हलाहल के समान; इरुण्टतु–काला बना; वॆयिलिन्–सूर्य की; वॆम् कतिर्–गरम किरणें; तण्णिय–शीतल बनीं और; मॆलिन्तऩ–कृश (मन्द) पड़ गयीं; मेकम्–मेघ; तऴैत्त–पुष्ट हुए (घुमड़ आये)। ४३४

आकाश भालनेत्र शिवजी के कण्ठ के विष के समान काला बना, जो अतिभीषण था, क्षीरसागर से निकला था और जिसको उन्होंने निगल लिया था। सूर्य की गरम किरणें शीतल और कृश पड़ गयीं। वैसे मेघ घने रूप से इकट्ठे हुए। ४३४

नञ्जिऩि नळिर्नॆडुङ् गडलि ऩङ्गैयर्
अञ्जऩ नयऩत्ति ऩविऴ्न्द कून्दलिऩ्
वञ्जऩै यरक्कर्दम् वडिविऩ् चॆय्हैयिऩ्
नॆञ्जिऩि ऩिरुण्डदु नील वाऩमे 435

नीलम् वानम्–नीला आकाश; नञ्चितिन्–विष के समान; नळिर्–शीतल; नॆटु कटलिन्–विशाल सागर के समान, और; नङ्कैयर्–स्त्रियों के; अञ्चनम् नयनत्तिन्–कजरारे नेत्रों के समान; अविऴ्न्त कून्तलिन्–खुले केश के समान; वञ्चनै अरक्कर् तम्–वंचक राक्षसों के; वटिविन्–शरीर के समान; चॆय्कैयिन्–उनके कृत्यों के समान; नॆञ्चिनिन्–उनके मन के समान; इरुण्टतु–काला बना रहा। ४३५

नीला आकाश हलाहल के समान, शीतल व विशाल समुद्र के

समान, स्त्रियों के कजरारे नेत्र के समान, और उनके खुले केश के समान लगता था। और भी वह वंचक राक्षसों के शरीर के समान, उनके नृशंस कृत्यों के समान और उनके मन के समान काला बना हुआ था। ४३५

नाट्कळि नऴिर्हड नार नावुऱ्
वेट्कैयिऱ् परुहिय मेह मिन्नुव
वाट्कैहण् मयङ्गिय शॅरुविन् वार्मदप्
पूट्कैह णिऱत्तपुण् डिऱप्प पोन्ऱवे 436

नाळ्–(उसी या बहुत) दिन की; कळित्–ताड़ी के समान; नळिर् कटल् नारम्–शीतल समुद्रजल को; ना–जीभ से; उऱ–अधिक; वेट्कैयिन्–चाव के साथ; परुकिय–(जिन्होंने) पिया था; मेकम्–वे मेघ; मिन्नुव–जो चमके; वाळ् कैकळ्–तलवारधारी हाथ; मयङ्किय–जिसमें टकराए; चॅरुविन्–लड़ाई में; वार् मत–बहनेवाले मदजल के; पूट्कैकळ्—हाथी; निऱत्त पुण्–छाती के व्रणों को; तिऱप्प–दिखाते हों; पोन्ऱ–जैसे दिखे। ४३६

मेघों ने (उसी दिन की या) बहुत दिनों की ताड़ी के समान शीतल समुद्रजल को बहुत ही चाव के साथ पी लिया था। उनमें रह-रहकर बिजलियाँ कौंध रही थीं। तब वे मेघ मदनीर बहाते हुए बड़े-बड़े हाथियों के समान लगे, जो युद्ध में तलवार लेकर लड़नेवाले वीरों के हाथ से चोटें खा चुके हों। बिजलियाँ उनके खुले व्रणों के समान लगीं। ४३६

नीनिऱप् पॅरुङ्गरि निरैत्त नोर्त्तॅन्नच्
चूनिऱ मुहिऱ्कुलन् दुवन्ऱिच् चूऴ्दर
मानिऱ नॅडुङ्गडल् वारि मूरिवान्
मेनिऱैन् दुळदॅन मुळक्क मिक्कदे 437

चूल्–जलगर्भ; निऱम्–काले रंग के; मुकिल्–मेघों के; कुलम्–समूह; नील् निऱम्–नीले रंग के; पॅरुम् करि–बड़े-बड़े हाथी; निरैत्त नोर्त्तु अॅन्न–पंक्तियों में खड़े किये गये हों, ऐसा; तुवन्ऱि–सटकर; चूऴ् तर–घेर आये; माल् निऱम्–काले रंग के; नॅटु कटल्–विशाल सागर का; वारि–जल; मूरि वान् मेल्–विस्तृत आकाश में; निऱैन्तु उळतु अॅन्न–फैला रहा, ऐसा; मुळक्कम् मिक्कतु–अधिक शोर मचाते हुए रहे। ४३७

काली घटाओं के समूह पंक्तियों में स्थित हाथियों के समान आकाश में चारों ओर घेरे रहे। तब वज्र कड़क उठे। वह दृश्य ऐसा था, मानो विशाल समुद्र का जल आकाश में उठ फैलकर गर्जन कर रहा हो। ४३७

अरिप्पॅरुम् बॅयरवन् मुदलि नोरणि, विरिप्पवु मौत्तन वॅऱ्पिन् मीदुती
ऍरिप्पवु मौत्तन वेशि लाशैहळ्, शिरिप्पवु मौत्तन तॅरिन्द मिन्नॅलाम् 438

तॅरिन्त मिन् अॅलाम्–प्रकटित सभी बिजली की रेखाएँ; अरि–हरि का; पॅरुम्

पॅयरवऩ्–बड़ा नाम जिसका था; मुतलित्तोर्–उस इन्द्र आदि देवताओं के; अणि विरिप्पवुम् ऑतुतत–आभरणों की कान्ति फैलाती हों, जैसी भी रहीं; वॅऱ्पिऩ् मीतु–पर्वतों पर; ती ऍरिप्पवुम्–आग जलती हो; ऑतुतत–जैसी भी दिखीं; एचु इल्–अनिन्द्य; आचैकळ्–दिशाएँ; चिरिप्पवुम्–हँसती हों; ऑतुतत–जैसी भी दिखीं। ४३८

बिजलियाँ, जो कौंध उठीं, हरि कहलानेवाले इन्द्र आदि देवों के आभरणों की चमक दिखती जैसी लगीं। वे ऐसा भी लगीं, मानो पर्वत पर आग जल रही हो। अनिंद्य दिशाएँ हँस रही हों, ऐसा भी लगीं। ४३८

यादिरक् करुमहऩ् मारिक् कार्मळै
यादिऩु मिरुण्डविण् णिरुऩ्दॅक् कुप्पैयिऩ्
कूदिर्वॅङ् गाऩ्ॅडुऩ् दुरुत्तिक् कोळमैत्
तूदुवॅङ् गऩलुमि ळुलैयु मौत्तदे 439

यातिऩुम् इरुण्ट विण्–किसी भी वस्तु से (सबसे) अधिक जो काला रहा, वह आकाश; मातिरम् करुमकऩ्–दिशा रूपी लुहार; मारि कार् मळै–वर्षाकालीन काले मेघों के; इरुन्त कुप्पॅयिल्–कोयलों के ढेर में; वॅम् कूतिर् काल्–वेगवान शारदीय पवन रूपी; नॅटुम् तुरुत्ति कोळ् अमैत्तु–बड़ी भाथी में जोर लगाकर; ऊतु–हवा चलाकर उभाड़ी गयी; वॅम् कऩल्–गरम आग के कणों को; उमिळ्–निकालनेवाली; उलैयुम्–भट्ठी के भी; ऑत्ततु–समान था। ४३९

आकाश एक दम काले से काला हो गया। काला आकाश, मेघ, शारदीय पवन, बिजलियाँ —यह सब देखकर कवि कल्पना करते हैं कि दिशा लुहार बनी; वर्षाकालीन मेघ कोयलों का ढेर। अतिवेगवान उदीची पवन भाथी से निकलनेवाली हवा बनी और उस हवा द्वारा अग्नि प्रज्वलित हो उठी और ज्वालाएँ दिखीं। इस साज में आकाश लुहार की भट्ठी बन गया। ४३९

पिरिन्दुरै महळिरुम् बिलत्त पाऩ्दळम्
ऍरिन्दुयिर् नडुङ्गिड विरवि यिऩ्गदिर्
अरिन्दऩ वामॅऩ वशऩि नावॅऩ
विरिन्दऩ तिशैतॊरु मिशैयिऩ् मिऩ्ॅलाम् 440

मिचैयिऩ्–आकाश में; तिचै तॊरुम्–हर दिशा में; मिऩ् ऍलाम्–सभी बिजलियाँ; इरवियिऩ् कतिर्–रवि की किरणें; अरिन्तऩ आम् ॲऩ–जो काटकर रखी गयी हों, ऐसी; अचति ना ॲऩ–अशनि की जिह्वाओं के समान; पिरिन्तु उऱै–बिछुड़कर रहनेवाली; मकळिरुम्–स्त्रियों को और; पिलत्त पाऩ्तळुम्–बाँबियों में रहनेवाले साँपों को; ऍरिन्तु–झुलसकर; उयिर् नटुङ्किट–प्राणविकम्पित होने देते हुए; विरिन्तऩ–सर्वत्र फैली दिखायी दीं। ४४०

आकाश में सब ओर विजलियाँ कौंध उठीं। वे रविकिरणों के

समान थीं, जिनको काटकर रखा गया हो। वे अशनि-जिह्वाओं के समान भी लगीं। पतिवियुक्त स्त्रियों और बिलों में रहनेवाले साँपों को भय-विकंपित करते हुए वे सब ओर कौंधती दिखायी दीं। ४४०

शूडिऩ मणिमुडित् तुहळिल् विज्जैयर्
कूडुरै नीक्किय कुरुदि वाट्कळुम्
आडवर् पॅयर्दीरु माशै याऩैयिऩ्
ओडैह ळॊळिपिऱळ् वऩवु मौत्तवे 441

चूटिऩ मणि मुटि–धृत-रत्न-किरीट; तुकळ् इल्–अनिन्द्य; विज्चैयर्–विद्याधर; कूटु उऱै–म्यानों से; नीक्किय–बाहर निकाली गयी; कुरुति वाट्कळुम्–रक्तरंजित तलवारों (के समान भी थीं); आटवर्–दिग्पालकों के; पॅयर् तोऱुम्–स्थान-परिवर्तन के समय में; आचै याऩैयिऩ्–दिग्गजों के; ओटैकळ् ऒळि–मुखपट्ट अपनी कान्ति; पिऱळ्वऩवुम्–रह-रहकर प्रकट कर रहे हों, ऐसी भी लगीं। ४४१

वे बिजलियाँ रत्नमुकुटधारी विद्याधरों की म्यान से निकली हुई रक्तरंजित तलवारों के समान भी लगीं; और वे उन दिग्गजों के मुखपट्ट की कौंधों के समान भी दिखायी दीं, जो कि दिग्पालों के स्थान बदलकर जाते समय खुद जाते थे। (इन्द्र आदि आठ दिग्पाल हैं। उनके आठ गज हैं। इन्द्र का ऐरावत है; अग्नि का पुण्डरीक; यम का वामन; नैऋत का कुमुद; वरुण का अंजन; वायु का पुष्पदन्त; कुबेर का सार्वभौम और ईशान का सुप्रदीप है)। ४४१

ऍण्वहै नाहङ्ग डिशैह ळॆट्टैयुम्
नण्णिऩ नावळैत् तऩैय मिऩ्ऩहक्
कण्णुदऱ् मिडऱ्ऱऩक् करुहिक् कार्विशुम्
बुण्णिऱै युयिर्प्पॅऩ वूदै यूदिऩ 442

ऍण् वकै नाकङ्कळ्–(आठों दिशाओं के) आठ प्रकार के नाग; तिचैकळ् ऍट्टैयुम्–आठों दिशाओं को; नण्णिऩ–पास जाकर; ना वळैत्तु अऩैय–जिह्वाएँ बढ़ाकर घेर लेते हों, ऐसा; मिऩ् नक–बिजली के चमकते; कार् विचुम्पु–काले मेघ; कण्णुतल् मिटऱ्ऱु अऩ–भालनेत्र शिव के कण्ठ के समान; करुकि–झुलसकर काले बनकर; उळ् निऱै–अन्दर के; उयिर्प्पु अऩ–श्वास के समान; ऊतै–उदीची हवा को; ऊतिऩ–निकालते रहे। ४४२

बिजलियाँ आठ प्रकार के (वासुकी, अनन्त, तक्षक, शंखपाल, कुलिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक) सर्पों की जिह्वाओं के समान लगीं, जिनको वे सर्प निकालकर दिशाओं को चाटने के लिए अपने चपेट में ला रहे हों। काले मेघ भाल में अग्निमयनेत्र से भूषित शिव के कण्ठ के समान काले बने। मानो वे अपने अन्दर के श्वासों को निकाल रहे हों, ऐसी उदीची हवा बही। ४४२

तलैमयुङ् गीऴ्मैयुन् दविर्द लिन्ऱियॆ
मलयिनु मरत्तिनु मऱ्ऱु मुऱ्ऱिनुम्
विलैनिनैन् दुळवऴि विरुम्बुम् वेशैयर्
उलैवुरु मुळमॆन्न वुलाय दूदैये 443

ऊतै–वह पवन; तलैमैयुम् कीऴ्मैयुम्–ऊँचे और नीचे स्थानों में; तविर्तल् इन्ऱियॆ–(भेद न करते हुए) किसी को न छोड़कर; मलैयितुम्–पर्वतों पर; मरत्तितुम्–तरुओं पर; मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱितुम्–अन्य सभी स्थानों पर; विलै निनैन्तु–सिर्फ़ दाम ही सोचकर; उळ वऴि–धन जहाँ हो वहीं; विरुम्पुम्–प्रेम दिखानेवाली; वेचैयर्–वेश्याओं के; उलैव् उरुम्–चंचल; उळम् ऎन्न–मन के समान; उलायतु–संचार करता रहा। ४४३

वह हवा ऊँच-नीच का भेद नहीं करके पर्वतों, तरुओं और अन्य सभी स्थलों पर बही और केवल धन का ही विचार करके (मनुष्य के गुणों का विचार किये विना ही) धन जहाँ से प्राप्त होता है, वहीं प्रेम दिखानेवाली वेश्याओं के चंचल मन के समान संचार करने लगी। ४४३

अऴुङ्गुरु महळिर्द मन्बिर् ऱीर्न्दवर्
पुऴुङ्गुरु पुणर्मुलै कॊदिप्पप् पुक्कुलाय्क्
कॊऴुङ्गुरैत् तशैयिनै यरिन्दु कॊण्डदु
विऴुङ्गुरु पेयॆन्न वाडै वीङ्गिऱ्ऱे 444

वाटै–उदीची (अतिशीतल) पवन; तम् अन्पिल् तीर्न्तवर्–अपने पति के प्रेम से बिछुड़कर; अऴुङ्कुरु–दुःखित रहनेवाली; मकळिर्–स्त्रियों के; पुऴुङ्कुरु पुणर् मुलै–तप्त स्तनद्वयों को; कॊतिप्प–और तप्त करते हुए; पुक्कु उलाय्–(उन पर) लगते हुए बहकर; कॊऴुम्–मांसल; कुरै तचैयितै–(स्तनों के) मांसखण्डों को; अरिन्तु कॊण्टु–काट लेकर; अतु विऴुङ्कुरु–उनको निगलने में लगे; पेय् ऎन्न–पिशाच के समान; वीङ्किऱ्ऱु–और अधिक चला। ४४४

वह उदीची शीतल हवा विरहिणी स्त्रियों के तप्त स्तनद्वयों को और भी ताप देती हुई उन पर लगी वर्द्धित होकर बही। तब वह पिशाच के समान लगी, जो उनके मांसल स्तनों को काटकर बोटी-बोटी खाना चाहता हो। ४४४

आर्त्तॆऴु तुहळ्विशुम् बडैत्त लानुमिन्
कूर्त्तॆऴु वाळॆनप् पिऱऴुङ् गॊट्पिनुम्
तार्प्पॊरुम् बणैयिन्विण् डळङ्ग लानुमप्
पोर्प्पॊरुङ् गळमॆनप् पॊलिन्द दुम्बरे 445

आर्त्तु–नर्दन करते हुए; ऎऴु तुकळ्–उठनेवाली धूल; विचुम्पु–आकाश को; अटैत्तलानुम्–ढँक लेती, इसलिए और; मिन्–बिजलियाँ; कूर्त्तु ऎऴु–तीक्ष्णता लिये रहनेवाली; वाळ् ऎन्न–तलवार के समान; पिऱऴुम्–झमकते हुए;

कोट्पितुम्—घूमती हैं, इसलिए; विण्—मेघ; तार्—हारालंकृत; पेरुम् पणैयित्—बड़े ढोलों के समान; तळङ्कलानुम्—शब्द करते हैं, इसलिए; उम्पर्—आकाश; अ पेरु पोर् कळम् अँत—रम्य समरभूमि के समान; पोलिन्ततु—शोभा। ४४५

धूल ऊपर उठी और भीषण ध्वनि के साथ उठी। उसने आकाश को ढँक दिया। और बिजलियाँ तीक्ष्णता लिये घूमनेवाली तलवारों के समान कौंधीं। मेघ ढोलों के समान गरज उठे। इस साज के कारण आकाश सुन्दर और विशाल समरांगण-सा लगा। ४४५

इन्नहैच् चनहियैप् पिरिन्द वेन्दल्मेल्
मन्मदन् मलर्क्कणै वळङ्गि नानप्
पोन्नेंडुङ् गुन्ऱिन्मेऱ् पोळिन्द तारैहळ्
मिन्नोडुन् दुवन्ऱिन मेह राशियै 446

इन् नकै चनकियै—मधुर मन्दहास वाली जानकी से; पिरिन्त—बिछुड़े रहनेवाले; एन्तल् मेल्—(राजा-) राम पर; मन्मतन्—मन्मथ ने; मलर् कणै—पुष्पशर; वळङ्किनान्—चलाये; अँत—जैसे; मिन्नोटुम्—बिजली के साथ; तुवन्ऱिन—मिले आये; मेक राचि—मेघों की राशियों ने; पोन्—सुन्दर; नेंटुम् कुन्ऱिन् मेल्—बड़े पर्वत पर; तारैकळ्—धारें; पोळिन्त—बरसायीं। ४४६

बिजलियोंसहित मेघराशियाँ पर्वतों पर जो धारें गिरा रही थीं, वह ऐसा था मानो मारदेव मधुर मन्दहासकारिणी सीताजी से वियुक्त राजाराम पर अपने पुष्प-शर छोड़ रहा हो। ४४६

कल्लिडैप् पडुन्दुळित् तिवलै कारिडुम्
विल्लिडैच् चरमेन विशैयित् वीळ्न्दन
शॅल्लिडैप् पिऱन्दशॅङ् गनल्हळ् शिन्दिन
अल्लिडै मणिशिदऱ् दळलि यऱ्ऱल्पोल् 447

कार् इटु—मेघ-मध्य; विल्लिटै चरम् अँत—इन्द्रधनुष के शरों के समान; कल् इटै—चट्टानों के मध्य; पटुम्—गिरनेवाली; तुळि तिवलै—वर्षा की बूँदें; विचैयित् वीळ्न्तन—बहुत वेग के साथ गिरीं; चॅल् इटै—अशनियों से; पिऱन्त—छूटे; चॅम् कनल्कळ्—लाल अंगारे; मणि—रत्न; अल्लिटै चितऱ्न्तु—अन्धकार में छितरकर; अळल् इयऱ्ऱल् पोल्—ज्वाला-सम प्रकाश फैलाते हों जैसे; चिन्तिन—गिरे। ४४७

मेघों से गिरनेवाली बूँदें उनमें रहनेवाले इन्द्रधनुष से निकले शर के समान वेग के साथ गिरीं। मेघों से निकली अशनि के लाल अंगारे रात में रत्नों की ज्योतियों के समान यत्र-तत्र गिरे। ४४७

मळ्ळर्हण् मरुपडै मान यानैमेल्
वॅळ्ळिवे लॅरिवन पोन्ऱ मेहङ्गळ्

तऴळरुन् दुळिपडत् तहर्न्दु शाय्हिरि
पुऴळिवॆंङ् गडहरि पुरऴ्व पोन्ऱवे 448

मऱु पटै–योद्धा; मऴळर्कऴ् मात्त–वीरों के समान; यानै मेल्–हाथियों पर; वॆऴ्ळि वेल्–श्वेत शक्तियाँ (भाले); ऍऱिवन–फेंक रहे हों; पोन्ऱ मेकङ्कऴ्–ऐसे मेघों की; तऴ अरुम्–दुर्निवार; तुळि–धारें; पट–लगीं, इससे; तकर्न्तु चाय्–ढहकर गिरती; किरि–गिरियाँ; पुऴ्ळि–बिंदियों-सहित रहनेवाले (उत्तम लक्षण के); वॆम्–भयंकर; कट–मत्त; करि–हाथी; पुरऴ्व पोन्ऱवे–लोटते जैसे लगे। ४४८

मेघ शत्रुसंहारक वीर थे। गिरियाँ हाथी थीं। मेघों ने श्वेत भालाओं के समान बूँदें गिरायीं। गिरियाँ उन दुर्निवार धारों के सामने टूटकर ऐसे लुढ़क पड़ीं, मानो लाल बिंदियों के अच्छे लक्षणों से भरे भयंकर और मस्त हाथी लोटते हों। ४४८

वानिडु तन्नॆंडङ् गरुप्पु विन्मऴै
मीनॆंडुङ् गॊडियवन् पहळि वीऴ्तुळि
तानॆंडुञ् जार्तुणै पिरिन्द तन्मैयर्
ऊनुडै युडम्बॆला मुरुक्क लॊत्तवे 449

मऴै–मेघ; मीन् नॆंटु कॊटियवन्–मत्स्यांकित बड़ी पताका वाला बना; वान् इटु तनु–मेघमध्य प्रकट इन्द्रधनुष; नॆंटु करुप्पु विल्–लम्बा इक्षु-धनुष; वीऴ् तुळि–गिरती धारें; पकळि–(उसके) शर; नॆंटुम् चार्–लम्बे पर्वत के पादप्रदेश; तुणै पिरिन्त–विरही; तन्मैयर–की हालत में; ऊन् उटै उटम्पु ऍलाम्–मांससहित शरीरों को; उरुक्कल् ऑत्त–गलाते हों जैसे। ४४९

मेघ मकरांकित ध्वजा वाला मार बना। इन्द्रधनुष उसका लम्बा इक्षु-धनुष बना; मेघों से गिरनेवाली बूँदें उसके शर बनीं। और लम्बे पर्वत-चरण-प्रदेश विरही जनों के समान विगलित शरीर और हड्डियों वाले हो रहे। ४४९

तीर्त्तनुङ् गविहळुञ् जॆरिन्दु नम्बहै
पेर्त्तन रिनियॆनप् पेशि वानवर्
आर्त्तॆन वार्त्तन मेह मायमलर्
तूर्त्तन वॊत्तन तुळि वॆऴ्ळमे 450

तीर्त्तनुम्–पवित्र श्रीराम; कविकळुम्–और वानर; चॆरिन्तु–एकत्र हुए, इसलिए; इनि–अब; नम् पकै–हमारे शत्रुओं को; पेर्त्तनर्–उन्होंने दूर कर दिया; ऍन पेचि–ऐसा कहकर; वानवर्–देवता लोग; आर्त्तु ऍन–आनन्दरव करते हों जैसे; मेकम्–मेघों ने; आर्त्तन–गर्जन किया; तुळि वॆऴ्ळम्–बूँदों की राशियाँ; आय् मलर् तूर्त्तन–चुने हुए (उत्तम) पुष्प (जो) बरसाये गये; ऑत्तन–उनके समान लगीं। ४५०

मेघगर्जन देवों के आनन्दघोष के समान लगा, जो यह कह रहे हों कि

श्रीराम और वानरों का मेल हो गया और अब वे हमारे शत्रुओं (रावण आदि राक्षसों) को हटा देंगे। मेघ के गिरते जलकण देवों के आनन्द के साथ गिराये श्रेष्ठ चुने हुए पुष्पों के समान रहे। ४५०

वण्णविऱ् करदलत् तरक्कन् मण्णोडुम्
विण्णिडैक् कडिदुहॊण् डेहुम् वेलैयिल्
पॆण्णिऩुक् करुङ्गल मनैय पॆय्वळै
कण्णॆनप् पॊऴिन्ददु काल मारिये 451

वण्णम् विल्–सुन्दर धनु(-शोभित); करतलत्तु–हाथों वाले; अरक्कन्–राक्षस; मण्णोटुम्–धरती (के अंश) के साथ; कॊण्टु–लेकर; विण्णिटै–आकाश में; कटितु–सवेग; एकुम् वेलैयिल्–जब जाता रहा, तब; पॆण्णिऩुक्कु–स्त्रियों के; अरु कलम् अनैय–दुर्लभ आभरण के समान; पॆय्वळै–कंकणधारिणी सीता की; कण् ऎन–आँखों के समान; कालम् मारि–मौसमी बारिश; पॊऴिन्ततु–बरसी। ४५१

जब सुन्दर धनुर्धर रावण एक योजन धरती के अंश के साथ सीताजी को लेकर आकाश में जा रहा था, तब स्त्रियों का अलभ्य आभरण मानी जानेवाली [—दक्षिण की सधवाएँ मंगलसूत्र पहनती हैं, जिसमें श्रीलक्ष्मीदेवी की मूर्ति से अंकित तमग़े (पदक) के आकार का आभरण रहता है और ऐसा मंगलसूत्र आभरणों में श्रेष्ठ माना जाता है। वस्तुतः वही अन्य आभरण पहनने का अधिकार भी देता है।] और कंकणहस्ता सीतादेवी की आँखों ने अश्रु बरसाया। वर्षाकालीन मेघों ने उन्हीं नेत्रों की भाँति अधिक जल बरसाया। ४५१

परञ्जुडर्प् पण्णवन् पण्डु विण्डॊडर्
पुरञ्जुड विडुशरम् बुरैयु मिन्निनम्
अरञ्जुडप् पॊऴिनिमि रयिलि ऩाडवर्
उरञ्जुड वुळैन्दनर् पिरिन्दु ळॊरॆलाम् 452

परम् चुटर्–उत्तम ज्योतिर्मय; पण्णवन्–शिवदेव; पण्टु–प्राचीनकाल में; विण् तॊटर् पुरम्–आकाश में संचार करनेवाले त्रिपुरों को; चुट–जलाने के लिए; विटु चरम्–जो शर चलाते थे, उनकी; पुरैयुम्–समानता करनेवाली; मिन्निनम्–बिजलियों के समूह; अरम् चुट–रेती के रगड़ने से; पॊऴि निमिर्–अंगारे निकालनेवाले; अयिलिन्–भाले के समान; आटवर्–(विरही) पुरुषों के; उरम् चुट–दिल को जलाती थीं; पिरिन्तु उळोर् ऎलाम्–(उससे) विरही सभी; उळैन्ततर्–दुःखी हुए। ४५२

महान ज्योतिस्वरूप शिवजी के, आकाश-संचारी त्रिपुरों को जलाने हेतु छोड़े गये शरों-जैसी बिजलियों ने रेती से रगड़कर उज्ज्वल रहनेवाली बर्छियों के समान विरही पुरुषों के हृदयों को जलाया। वे सब उद्विग्न हुए। ४५२

पॉरुडरप् पोयिऩ्ऱप् पिरिन्द पॉय्युडर्
कुरुडरु तेर्मिशै युयिर्हॉण् डुय्त्तलाऩ्
मरुडरु पिरिवॅऩ्ऩुम् माशु णङ्गॉडक्
करुडऩैप् पॉरुविऩ काल मारिये 453

पॉरुळ् तर–अर्थार्जन के लिए; पोयितर्–गये हुए नायकों से; पिरिन्त–वियुक्त; पॉय् उटऱ्कु–व निर्जीव शरीर वाली नायिकाओं के पास; उरुळ् तरु–लुढ़क चलनेवाले पहियों के; तेर् मिचै–रथों पर; उयिर् कॉण्टु–(उनके) प्राणों को लेकर; उय्त्तलाऩ्–मिलाती है; कालम् मारि–(इसलिए) मौसमी बारिश; मरुळ् तरु–भ्रान्त करनेवाले; पिरिवु ॲऩ्ऩुम्–वियोग रूपी; माचुणम् कॅट–साँप को नाश करते हुए (आगत); करुटऩै–गरुड़ की; पॉरुविऩ–समानता कर रही थी। ४५३

अर्थार्जन के लिए नायक प्रवास पर चले गये थे। उनके वियोग में स्त्रियाँ निर्जीव शरीरवत रहीं। अब उनके पास मानो उनकी जानें लेकर नायक घूमते आनेवाले चक्रों से युक्त रथों पर वापस आ गये। उनको लानेवाली वर्षा संज्ञाहीन करनेवाले विरह रूपी साँप का नाश करते हुए आगत गरुड़ के समान लगी। ४५३

मुऴङ्गिऩ मुऱैमुऱै मूरि मेहनीर्
वऴङ्गिऩ मिडैवऩ माऩ याऩैहळ्
तऴङ्गिऩ पॉऴिमदत् तिवलै ताऴ्दरप्
पुऴुङ्गिऩ वॅदिरॅदिर् पॉरुव पोऩ्ऱवे 454

मूरि मेकम्–सबल मेघ; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; मुऴङ्किऩ–गरजे; नीर् वऴङ्किऩ–जल बरसाते हुए; मिटैवऩ–(जो) घुमड़ आये (वे); माऩम् याऩैकळ्–बड़े-बड़े हाथी; तऴङ्किऩ–चिघाड़ते हुए; पॉऴि मतम् तिवलै–बहनेवाले मदनीर की धार के; ताऴ्तर–गिरते; पुऴुङ्किऩ–कोप करके; ॲतिर् ॲतिर्–आमने-सामने; पॉरुव पोऩ्ऱ–लड़ते-जैसे (दिखे)। ४५४

बड़े-बड़े मेघ रह-रहकर गरजे, जल बरसाते हुए घुमड़ आये। तब वे ऐसे बड़े गजों के समान लगे जो चिघाड़ते और मदनीर बहाते हुए गुस्से के साथ आपस में टकरा रहे हों। ४५४

विशैहॉडु मारुद मऱित्तु वीशलाल्
अशैवुऱु शिऱुतुळि यप्पु मारियिऩ्
इशैवुऱऴुऩ् दॅडुप्पऩ विशैय वायिऱुऩ्
दिशैयॉडु तिशैशॅरुच् चॅय्व पोऩ्ऱवे 455

विचै कॉटु–वेग के साथ; मारुतम्–हवा के; मऱित्तु वीचलाल्–रह-रहकर बहने से (मेघ); अप्पु मारियिऩ्–शर-वर्षा के समान; इचैवु उऱऴुन्तु–आपस में मनमुटाव के साथ; ॲटुप्पऩ–बढ़नेवाले; अचैवु उऱु–हिलनेवाले; चिऱु तुळि–छोटे-

छोटे कणों के साथ; इचैय-युक्त हो; आय् इरुम्-सुन्दर बड़ी; तिचै ऑट्टु तिचै-दिशाएँ आपस में; चॅरु चॅय्व पोऩ्ऱ-युद्ध करती जैसी (दिखीं)। ४५५

प्रबल प्रभञ्जन रह-रहकर अतिवेग के साथ बह रहा था। इसलिए शर-वर्षा के समान जल की बूँदें आपस में टकरा उठीं। तब ऐसा लगा, मानो सुन्दर व बड़ी दिशाएँ आपस में युद्ध कर रही हों। ४५५

विळैयुरु पॉरुडरप् पिरिन्द वेन्दर्वन्
दुळैयुऱ वुयिरुऱ वुयिर्क्कु मादरिऩ्
मळैयुऱ मणमुऱ मलर्न्दु तोऩ्ऱिऩ
कुळैयुऱप् पॉलिन्दऩ वुलवैक् कॉम्बॅलाम् 456

विळै उरु-स्पृहणीय; पॉरुळ्-अर्थ; तर-अर्जन हेतु; पिरिन्त-वियुक्त हुए; वेन्तर्-नायकों के; वन्तु उळै उऱ-लौट आकर मिलने पर; उयिर् उऱ-जान में जान आयी और; उयिर्क्कुम्-(सन्तोष की) साँसें जो छोड़ती हैं, उन; मातरिऩ्-(नायिकाओं) स्त्रियों के समान; उलवै कॉम्पु ऍलाम्-सूखे पेड़ों की सभी शाखाएँ; मळै उऱ-बारिश के होने से; मणम् उऱ-सुगन्धि से भरकर; कुळै उऱ-पत्तों से युक्त होकर; पॉलिन्तऩ-शोभायमान हुईं और; मलर्न्तु तोऩ्ऱिऩ-विकसित (मनोरम) रहीं। ४५६

इच्छित धनार्जन के लिए नायक अपनी प्रियतमाओं को छोड़कर गये थे। अब वे आकर मिल गये और विरहिणियों की जान में जान आ गयी। उनकी साँसें भी यथावत स्वस्थ लग गयीं। उनके समान सूखे पेड़ों की सभी शाखाएँ वर्षाकाल के आगमन से पल्लवों से भरकर प्रफुल्लमन दिखायी दीं। ४५६

पाडलम् वरुमै कूरप् पहलवऩ् पशुमै कूरक्
कोडल्हळ् पॅरुमै कूरक् कुवलयञ् जिरुमै कूर
आडिऩ मयिल्हळ् पेशा दडङ्गिऩ कुयिल्ह ळऩ्बर्क्
केडुऱत् तळर्न्दार् पोऩ्ऱुऩ् दिरुवुऱक् किळर्न्दार् पोऩ्ऱुम् 457

पाटलम्-पाटल वृक्ष; वरुमै कूर-(पुष्पहीन हो) दीन हुए; पकलवऩ्-दिनकर; पचुमै कूर-शीतल बना; कोटल्कळ्-'कोडल' के पौधे; पॅरुमै कूर-(पुष्पित हो) शानदार लगे; कुवलयम्-कुवलय; चिऱुमै कूर-म्लान हुए; मयिल्कळ्-मोर; तिरु उऱ-श्रीसम्पन्न (धनी) होने पर; किळर्न्तार्-उत्साहित हुए; पोऩ्ऱु-जैसे; आटिऩ-नाच उठे; कुयिल्कळ्-कोयलें; अऩ्पर् केटु उऱ-मित्रों की दुर्गति पर; तळर्न्तार्-जो शिथिल हुए हों; पोऩ्ऱु-उनके समान; पेचातु अटङ्किऩ-अवाक् रह गयीं। ४५७

पाटलवृक्ष हीनता को (पुष्पों से हीन होने के कारण) प्राप्त हो गये। सूर्य शीतलता को प्राप्त हो गये। 'कोडल' ('कांदळ्' भी कहते हैं। इनके पंचदलीय पुष्प अपने नालों के साथ स्त्री के हाथों के समान लगते

हैं।) पुष्प शानदार हो गये। कुवलय म्लान पड़ गये। मोर, सम्पत्ति के प्राप्त होने पर इतरानेवालों के समान नाच उठे। कोयलें, अपनों की दीन दशा देखकर शिथिल पड़नेवाले लोगों के समान मौन रह गयीं। ४५७

वाळॅयिऱ्‌ ऱरवम्‌ बोल वाऩ्ऱलै तोऩ्ऱ वार्ऩ्द
ताळुडैक्‌ कोड ऱम्मै तळीइयत्त काद ऱङ्ग
मीळल ववैयु मऩ्ऩ विळैवत्त वुणर्वु वीऩ्द
कोळर वॅऩ्ऩप्‌ पिऩ्ऩि यवर्ऱोडुङ्‌ गुळैन्दु शाय्न्द 458

वाळ्‌ ऍयिऱु अरवम्‌–तलवार-जैसे दाँत वाले सर्प; वाऩ्‌ तलै पोल–अपने उठे हुए सिर के समान; तोऩ्ऱ वार्ऩ्त–दिखते हुए जो बढ़े थे; ताळ्‌ उटै–ऐसे तनों से युक्त; कोटल्‌ तम्मै–'कोडल' पौधों से; कातल्‌ तङ्क–प्रेम के साथ; तळीइयत्त–लिपटकर; मीळल–अलग नहीं हुए; अवैयुम्‌–वे (पौधे) भी; अऩ्ऩ विळैवत्त–वही चाह रखते हुए; उणर्वु वीऩ्त–काटने की स्वाभाविक भावना जिनसे दूर हो गयी थी, ऐसे; कोळ्‌ अरव्‌ ऍऩ्ऩ–बड़े सर्पों के समान; अवर्ऱोटुम्‌ पिऩ्ऩि–उनके साथ लिपटकर; कुळैन्तु–झुके हुए; चाय्न्त–उन पर गिरे पड़े थे। ४५८

उठे हुए सिर वाले सर्पों के समान लम्बे नालों के 'कोडल' पुष्पों को तलवार-से दाँत वाले सर्पों ने सर्प ही समझ लिया। इसलिए वे बहुत ही प्रेम के साथ उनसे लिपटे, विना छोड़े, पड़े रहे। वे पुष्प भी, दंशनसंज्ञाशून्य सर्प-सम वैसे ही प्यार से उनके साथ लिपटकर झुके पड़े रहे। ४५८

नाऩिऱच्‌ चुरुम्बुम्‌ वण्डुम्‌ नवमणि यणियिऱ्‌ चारत्‌
तेऩुह मलर्न्दु शाय्न्द शेयिदळ्क्‌ कान्दट्‌ चॅम्बू
वेऩिलै वॅऩ्ऱ दम्मा कारॅऩ्ऩ वियन्दु नोक्कि
माऩिलक्‌ किळत्ति कैहण्‌ मऱित्तत्त पोऩ्ऱ मऩ्ऩो 459

नाल्‌ निऱम्‌–नाना रंग के; चुरुम्पुम्‌ वण्टुम्‌–भ्रमर और भ्रमरियाँ; नवमणि अणियित्‌–नवरत्नजटित आभरण के समान; चार–(उन फूलों पर) बैठे; तेऩ्‌ उक–शहद निकालते हुए; मलर्न्तु–फूलकर; चाय्न्त–झुके हुए; चेय्‌ इतळ्‌–लाल पंखुड़ियों के; कान्तळ्‌ चॅम्पू–रक्तकांतळ (या कोडल) के फूल; माल्‌ निलम्‌ किळत्ति–महीयसी पृथ्वी-स्त्री के; नोक्कि–(ऋतु-उत्सव) देख; वेऩिलै–वसन्त को; वॅऩ्ऱतु कार्‌–जीत लिया वर्षा ने; अम्मा–मैया री; मऱित्तत्त–(कहते हुए विस्मय-प्रकटन में) मोड़े हुए; कैकळ्‌ पोऩ्ऱ–हाथों के समान थे। ४५९

'कोडल' पुष्पों पर भ्रमर और भ्रमरियाँ नवरत्नाभरण के समान बैठी थीं। शहद बरसाते हुए वे पुष्प झुके रहे। तब उन लाल पंखुड़ियों के रक्त 'कांदळ्' के पुष्प भूमिदेवी के हाथ के समान लगे, मानो भूमि ने विस्मय से यह कहते हुए अपने हाथों की तदनुकूल मुद्रा में मोड़ रखा हो कि वर्षा ने वसन्त को शोभा में हरा लिया है। ४५९

ॲळ्ळिड विडमीन् ड्रिन्ड्रि यॅळुन्दन विलङ्गु कोबम्
तळ्ळुऱ्‌त् तलैवर् तम्मैप् पिरिन्दवर् तळुवत् तूय
कळ्ळुडे योदि यार्दङ् गलवियिड़् पलहाड़् कान्ड़
वॅळ्ळडैत् तम्बड़् कुप्पै शिदर्न्दॅन विरिन्द मादो 460

ॲळ् इट–तिल डालने के लिए (भी); इटम् ऑन्ऱु इन्ऱि–स्थान न रहा, ऐसा; ॲळुन्तन–उठकर; इलङ्कु–प्रकट; कोपम्–इन्द्रगोप; तळ्ळुऱ–अलग होकर; तम्मै पिरिन्तवर्–अपने को छोड़कर जो गये थे; तलैवर्–वे नायक; तळुव–लौट आ मिले, तब; तूय कळ् उटै–शुद्ध शहद से युक्त; ओतियार्–केश वाली स्त्रियों की; तम् कलवियिल्–अपने समागम में; पल काल् कान्ऱ–अनेक बार थूकी हुई; वॅळ् अटै–पान की; तम्पल् कुप्पै–पीक की अधिक छींटें; चितर्न्तु ॲन–बिखरी पड़ी हों, ऐसा; विरिन्त–फैले रहे। ४६०

सब जगह इन्द्रगोप के कीड़े प्रकट होकर ऐसा पड़े हुए थे कि तिल धरने को भी अन्तर नहीं मिलता था। वह दृश्य शहद-भरे केश वाली उन स्त्रियों की अनेक बार थूकी हुई व छितरी पड़ी पीकों के समान था, जिनके साथ उनसे थोड़े समय के लिए बाहर गये हुए उनके नायक आकर मिल रहे थे। ४६०

नन्नॅडुङ् गान्दट् पोदि ऩरैविरि कडुक्कै मॅन्बूत्
तुन्निय कोबत् तोडुन् दोन्ड्रिय तोड़्ड़न् दुम्बि
इन्निशै मुरल्व नोक्कि यिरुनिल महळ्कै येन्दिप्
पॉन्नॊडुङ् गाशै नीट्टिक् कॊडुप्पदे पोन्ड़ दन्ड़े 461

नल्–सुन्दर; नॅटु–लम्बे; कान्तळ् पोतिल्–'कांदल' पुष्प पर; नऱै विरि–शहद-भरे; कटुक्कै मॅल् पू–अमलतास के कोमल फूल; तुन्निय कोपत्तोटुम्–आकर मिले हुए इन्द्रगोपों के साथ; तोन्ऱिय–जो दिखते हैं; तोऱ्ऱम्–वह दृश्य; इन् इचै–मधुर गीत; मुरल्व–गुंजारनेवाले; तुम्पि नोक्कि–भ्रमरों को देखकर; इरु निल मकळ्–महीयसी भूमिदेवी; कै एन्ति–हाथ उठाकर; नीट्टि–बढ़ाकर; पॊन्नॊटुम्–स्वर्ण के साथ; काचै–रत्नों को; कॊटुप्पते–दे रही हो, उसी के; पोन्ऱतु–समान था। ४६१

सुन्दर और लम्बे 'कांदल' पुष्पों पर शहद-भरे अमलतास के (पीले) फूल गिरे पड़े थे और इन्द्रगोप के (लाल) कीड़े भी रहे। वह दृश्य ऐसा था, मानो माननीय भूमिदेवी मधुर गीत गानेवाले भ्रमरों को उपहार देने के लिए अपने हाथों को बढ़ाकर स्वर्ण के साथ रत्न प्रदान कर रही हों। ४६१

तोङ्गनि नाव लोङ्गुग् जेणुयर् कुन्ड्रिड़् चॅम्बोत्
वाङ्गिन कॊण्डु पारित् मण्डुमाल् याड़ मान

वेङ्गैनन् मलरुङ् गॊन्ऱै विरिन्दन वीयु मीर्त्तुत्
ताङ्गिन कलुऴि शॆन्ऱु तलैमयक् कुऱुव तम्मिल् 462

तीम्–मधुर; कनि–फल (-धारी); नावल् ओङ्कुम्–जामुन के पेड़ जिस पर रहते हैं; चेण् उयर् कुन्ऱिन्–आकाश तक उन्नत मेरु पर्वत से; वाङ्किन–गृहीत; चॆम्पॊन् कॊण्टु–स्वर्ण बहाते हुए; पारिल्–धरती पर; मण्टु–पुष्कल रीति से बहनेवाली; माल् याऱु–बड़ी नदी (जम्बू नाम की ?); मान–के समान; वेङ्कै नल् मलरुम्–'वेंगै' पेड़ के पुष्पों और; कॊन्ऱै–अमलतास तरु पर; विरिन्तन वीयुम्–विकसित पुष्पों को; ईर्त्तु ताङ्किन–बहाते हुए ले आती हुई; कलुऴि–पंकिल बरसाती नदियाँ; चॆन्ऱु–बहकर; तम्मिल्–आपस में; तलै मयक्कु उऱुव–मिलकर मिश्रित हो जाती हैं। ४६२

मधुरफलयुक्त जामुन के पेड़ों से भरे मेरु के उन्नत पर्वत से जम्बू नदी स्वर्ण खींच लाते हुए नीचे की ओर बह रही है। इस पर्वत पर पंकिल नाले 'वेंगै' और 'कॊन्ऱै' (अमलतास ?) के फूलों को बहा लेते आ रहे थे और उस उत्तम जम्बू नदी की समानता करने का प्रयास कर रहे थे। ४६२

किळैत्तुणै मळलै वण्डु किन्नर निहर्त्त मिन्नुम्
तुळिक्कुरन् मेहम् वळ्वार्त् तूरियन् दुवैप्प पोन्ऱ
वळैक्कैयर् पोन्ऱ मञ्ञै तोन्ऱिह ळरङ्गिन् माट्टु
विळक्किन मोत्त काण्बोर् विऴियॊत्त विळैयिन् मॆन्बू 463

किळै–'किळै' नाम का राग; तुणै–सम; मळलै वण्टु–मधुरस्वर भ्रमर; किन्नरम् निकर्त्त–किन्नर 'याऴ्'; निकर्त्त–के समान थे; मिन्नुम् तुळि–चमकती बूंदों से युक्त और; कुरल् मेकम्–गरजनेवाले मेघ; वळ् वार् तूरियम्–स्थूल चमड़े के फ़ीतों से बँधे हुए ढोल; तुवैप्प पोन्ऱ–बजते जैसे हैं; मञ्ञै–मोर; वळै कैयर् पोन्ऱ–कंकणधारिणी स्त्रियों के समान हैं; तोन्ऱिकळ्–'कांदल'; अरङ्किन् माट्टु–रंगमंच पर; विळक्कु इनम्–दीपावलियों; ऒत्त–के समान थे; विळैयिन् मॆल्पू–'विळै' के कोमल फूल; काण्पोर् विऴि ऒत्त–दर्शकों की आँखों के समान थे। ४६३

"कैक्किळै" राग-सी ध्वनि करनेवाले भ्रमर 'किन्नर याऴ्' (वीणा-सा वाद्य) की समानता करते थे। चमकनेवाले जलकणों से भरे गर्जनशील मेघों ने बजनेवाले चमड़े के फ़ीतों से बँधे ढोलों की समानता की। मोर कंकणधारिणी स्त्रियों के समान लगे। 'कांदल' पुष्प नाट्य मंच पर के दीपों के समान लगे। काले 'विळै' के फूलों ने दर्शकों की आँखों की समानता की। ४६३

पेडैयु ञिमिरुम् बायप् पॆयर्वुऴिप् पिऱक्कु मोशै
ऊडुऱत् ताक्कुन् दोऱु मॊल्लॊलि पिऱप्प नल्लार्

आडियर् पाणिक् कॊक्कु मारिय वमिऴ्दप् पाडर्
कोडियर् ताळङ् गॊट्टत् मलर्न्दक् दाळ मौत्त 464

ञिमिरुम्–भ्रमर और; पेटैयुम्–भ्रमरियाँ; पाय–टकराते हुए; पॆयर्वुऴि–जब उड़ती हैं; पिऱक्कुम् ओचै–तब निकलनेवाला शब्द; ऊटु उऱ–मध्य जाकर; ताक्कुम् तोऱुम्–गुंजार करती हैं, तब; पिऱप्प–निकलनेवाली; ऒल् ऒलि–'ऒल' की ध्वनि; नल्लार् आटु इयल्–देवांगनाओं के नृत्य से लयीभूत; पाणिक्कु ऒक्कुम्–करताल के समान रहती हैं; मलर्न्तु कूताळम्–विकसित 'कूदालि' के फूल; आरिय–कुशल; अमिऴ्तम्–नर्तकों के अमृत-सम; पाटल्–गीतों के अनुकूल; कोटियर्–नर्तक; ताळम् कॊट्टल् ऒत्त–ताल देते जैसे लगे। ४६४

जब भ्रमर और भ्रमरियाँ आपस में टकराते हुए उड़ती हैं, तब जो नाद उठता है, वह दोनों और परस्पर मिलते हुए जो शब्द करती हैं, वह देवांगनाओं के करताल के समान लगते हैं। 'कूदाली' के फूल उन श्रेष्ठ नर्तकियों के नृत्य के अनुकूल बजनेवाले झाल के समान दिखे। ४६४

वऴैदुरु कान याऱु मानिलक् किऴत्ति मक्कट्
कुऴैदुरु मलैमाक् कॊङ्गै शुरन्दपा लॊऴुक्कै यॊत्त
विऴैवुरु वेट्कै नाळुम् वेण्डिनर्क् कुदव वेण्डिक्
कुऴैदोरुङ् गनहन् दूङ्गु कर्पह निहर्त्त कॊन्ऱै 465

वऴै तुरु–पुन्नाग तरुओं के मध्य बहनेवाली; कानयाऱु–जंगली नदियाँ; मा निलम् किऴत्ति–सम्मान्य भूदेवी; मक्कट्कु–अपनी सन्तानों के लिए; उऴै तुरु–पास में संकुलित रहनेवाले; मलै मा कॊङ्कै–पर्वत रूपी बड़े स्तनों से; चुरन्त–निस्रित; पाल् ऒऴुक्कै–दूध की धारा के; ऒत्त–समान थीं; कॊन्ऱै–अमलतास; विऴैवु उऱु–चाहनेवाली; वेट्कै–इच्छा के कारण; नाळुम्–प्रतिदिन; वेण्टिनर्क्कु–याचना करनेवालों को; उतव वेण्टि–सहायता देना चाहकर; कुऴै तोऱुम्–पत्ते-पत्ते पर; कनकम् तूङ्कुम्–स्वर्ण लटकाये रहनेवाले; कर्पकम् निकर्त्त–कल्पतरुओं के समान थे। ४६५

पर्वत पर जंगली नदियाँ बह रही थीं। उनके कूलों पर घने पुन्नाग के पेड़ उगे थे। उन नदियों को देखने पर ऐसा लगा, मानो भूमिदेवी अपनी सन्तानों के लिए अपने गिरियों के स्तनों से दूध बहा रही हो और दूध की धाराएँ ही वे नदी हों। अमलतास के पेड़ उन कल्प-तरुओं के समान लगे, जो अपने पत्तों के मध्य सतत याचकों को देने के लिए स्वर्ण लिये खड़े हों। ४६५

पूवियल् पुऱव मॆङ्गुम् पॊऴिवरि वण्डु पोर्प्पत्
तीविय कळिय वाहिच् चॆरुक्किन कामच् चॆव्वि
ओविय मात्ग डोऱु मुरैत्तऱ वुरिञ्जि यॊण्गेऴ्
नावियिन् मणङ्ग णाऱुक् कलैयॊडुम् बुलन्द नव्वि 466

पू इयल् पुऱवम्–पुष्प-भरे वन; ॲङ्कुम्–सर्वत्र; पॊऱि वरि–चित्तियों से भरे मधुरगायक; वण्टु पोऱ्प्प–भ्रमर भीड़ लगाए हुए थे; तीविय कळिय आकि–मधुर आनन्ददायक बनकर; चॆरुक्कित–इतराते रहे; कामम् चॆव्वि–प्रेमाधिक्य के कारण; ओवियम्–चित्र-सम; मान्कळ् तोऱुम्–हर मृग पर; उरैत्तु–रगड़कर; अऱ उरिञ्चि–खूब मलने से; ऒळ् केळ्–परिपक्व; नावियिन् मणङ्कळ्–कस्तूरी की सुगन्ध; नाऱ्–निकल रही थी, इसलिए; कलैयॊटुम्–उन मृगों से; नव्वि–मृगियाँ; पुलन्त–रूठ गयीं। ४६६

वहाँ के पुष्पतरुओं से पूर्ण वनों में, सर्वत्र चित्तियोंसहित शरीर वाले गुंजनशील भ्रमर आनन्द प्रदान करते हुए मँड़रा रहे थे। नरमृग प्रेम की भावना से प्रेरित होकर अन्य मृगों से रगड़-रगड़ाकर आये। उन पर परिपक्व कस्तूरी की गन्ध आ रही थी। उन मृगों से उनकी प्रिया मृगियाँ (यह समझकर) रूठ गयीं (कि ये कस्तूरीमृगियों से मिलकर आये हैं।)। ४६६

तेरि नन्नॆडुन् दिशैशॆलच् चॆरुक्कऴिन् दॊडुङ्गुम्
कूर यिन्नॆडुङ् गण्णॊनक् कुविन्दन कुवळै
मार नन्नवर् वरवुहण् डुवक्किनुऱ महळिर्
मूरन् मॆन्नगुरु मुरुवलॊत् तरुम्बिन मुल्लै 467

तेरित्तन्–रथी बनकर; नॆटु तिचै–बहुत दूर; चॆल–जाने से (अपने प्रिय के); चॆरुक्कु अऴिन्तु–दर्पहीन (आनन्दहीन) होकर; ऒटुङ्कुम्–कृश होनेवाली; कूर्–(नायिका के) तीक्ष्ण; अयिल्–भाले के समान; नॆटु कण् ऒत्त–लम्बी आँखों के समान; कुवळै–कुवलय; कुविन्तत–मुकुलित हुए; मारन् अन्नवर्–मन्मथ-सम; वरवु कण्टु–(नायकों का) आगमन देखकर; उवक्किनुऱ–आनन्दित होनेवाली; मकळिर्–स्त्रियों के; मॆल्–कोमल; कुऱु मुरुवल्–मन्दहास के; मूरल्–दाँतों; ऒत्तु–के समान; मुल्लै–कुंद; अरुम्पित–पुष्पित हुए। ४६७

कुवलय, उन गर्वहीन और कृश हुई विरहिणियों की भाले-सी तीक्ष्ण और आयत आँखों के समान मुकुलित हो गये, जिनके पति रथारूढ़ हो बहुत दूर चले गये हैं। मन्मथ-सम अपने नायकों को आते देख हर्षित होनेवाली स्त्रियों के सहास दाँतों के समान कुन्दकलियाँ उग आयीं। ४६७

कळिक्कु मञ्ञैयैक् कण्णुळ रिनमॆनक् कण्णुऱ्
ऱळिक्कु मन्नरिऱ् पॊन्वळङ् गिनमलै यरुवि
वॆळिक्कण् वन्दकार् विरुन्दॆन विरुन्दुहण् डुळ्ळम्
कळिक्कु मङ्गैयर् मुहमॆनप् पॊलिन्दन कमलम् 468

कळिक्कुम् मञ्ञै–हर्षित मोरों को; कण्णुळर् इतम् ऎन–नटवर्ग समझकर; कण्णुऱ्ऱु–उनका नृत्य देखकर (उससे खुश होकर); अळिक्कुम्–पुरस्कार दान करनेवाले; मन्नरित्–राजाओं की तरह; मलै अरुवि–पर्वत-सरिताएँ; पॊन् वळङ्कित–स्वर्ण दे रही थीं; वॆळि कण् वन्त–आकाश में प्रकट; कार्–मेघों को;

विरुन्तु ॲत्त–अतिथि समझकर; निरुन्तु कण्टु–अतिथि (का आगमन) देखकर; उळ्ळम् कळिक्कुम्–मनमुदित; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; मुकम् ॲन्न–मुखों के समान; कमलम्–कमल; पॉलितन्त–सुशोभित हुए। ४६८

पर्वत-नदियों ने आनन्दनृत्य-लीन मयूरों को देखकर, बाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटवृन्द को देखकर उपहार देनेवाले राजाओं के समान स्वर्ण को बहुतायत से छितरा दिये। आकाश में प्रकट मेघों को मेहमान समझकर कमल उन स्त्रियों के समान सुशोभित हुए, जो कि मेहमानों के आगमन से प्रफुल्लमन हो जाती हैं। ४६८

शरद नाण्मल रियावैयुङ् गुडैन्दन तडविच्
चुरद नूलॅरि विडरॅनत् तेन्कॊण्डु तॊहुप्प
बरद नून्मुऱै नाडहम् बयनुऱप् पहुप्पान्
इरद मीट्टुरुङ् गविञरैप् पॊरुवित्त तेनी 469

चुरत नूल् ॲरि–कामशास्त्रज्ञ; विटर् ॲन्न–विटपुरुषों के समान; नाळ् मलर् यावैयुम्–सद्यविकसित सभी फूलों को; चरतम् कुटैन्तत–मधु में घुसकर; तटवि–स्पर्श कर; तेन् कॊण्टु–रस लेकर; तॊकुप्प–संचय करनेवाले; तेनी–भ्रमर; परतम् नूल् मुऱै–भरत के (नाट्य) शास्त्र के क्रम से; नाटकम्–नाट्य; पयन् उऱ–उपादेय रीति से; पकुप्पात–बनाने के लिए; इरतम् ईट्टुरुम्–(नव-) रसों का सम्पादन करनेवाले; कविञरै–कवियों की; पॊरुवित्त–समानता करते थे। ४६९

मधुमक्खियों ने फूल-फूल पर बैठकर खूब पैठकर मधुर पुष्परस संचित किया। इसमें वे कोकशास्त्रज्ञ विटपुरुषों के समान थे। बाद उन्होंने उसे शहद में परिवर्तित कर दिया। इसमें वे भरत ऋषि के नाट्यशास्त्र में कहे अनुसार नाटक में रसों के सम्पादक कवियों के समान रहे। ४६९

नोक्कि ऩाऩमै नोक्कळि कण्डनुण् मरुङ्गुल्
ताक्क णङ्गरुञ् जीदैक्कुत् ताक्करुन् दुऩ्बम्
आक्कि ऩाऩम दुरुवित्ॅन् ऱॆरुम्बॆऱ लुवहै
वाक्कि ऩाऩुरै यामॆन्क् कळित्तऩ माऩ्गळ् 470

नोक्किऩाल्–दर्शनीयता से; नमै–हमारी; नोक्कु–दृष्टि को; अळि कण्ट–हरानेवाली; नुण् मरुङ्कुल्–पतली कमर की; ताक्कु अणङ्कु–(चंचल-)लक्ष्मीदेवी के समान; अरुम् चीतैक्कु–अपूर्व सीताजी को; ताक्कु अरु–असह्य; तुऩ्पम्–दुःख; नमतु उरुविऩ्–हमारा-सा रूप लेकर; आक्किऩाऩ्–(मारीच ने) दिलाया; ॲऩ्ऱु–यह सोचकर; पॆऱल् अरुम्–दुर्लभ; उवकै–आनन्द को; वाक्किऩाल् उरैयाम्–मुख से नहीं कहेंगे; ॲऩ्ऩ–यह विचार कर; माऩ्कळ्–हरिण; कळित्तऩ–मौन रूप से हर्षित हुए। ४७०

हिरण इतराये। उन्हें इस बात का ठसक हो गया था कि मारीच ने अपनी दर्शनीयता से दर्शक की दृष्टि को हरनेवाली और पतली कमर से

शोभित लक्ष्मीदेवी से तुल्य सीताजी को असह्य दुःख देने की बात जब सोची, तब हमारा ही रूप धरकर कष्ट दिया। पर वे मौन ही रहे; क्योंकि उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि हम अपना मुख खोलकर अपना आनन्द प्रकट नहीं करेंगे। ४७०

नीडु नॆञ्ज़ुरु नेयत्ता नॆंडिदुरप् पिरिन्दु
वाडु हिन्ऱन मरुळुरु कादलिन् मयङ्गिक्
कूडु नन्नदित् तडन्दोरुङ् गुडैन्दन पडिवुर्
राडु हिन्ऱन कॊळुनरैप् पॊरुविन वन्नम् 471

नॆंटितु उऱ–दीर्घ (बहुत) काल तक; पिरिन्तु–वियुक्त रहकर; नॆञ्चु उऱु–मन में रहनेवाले; नीटु नेयत्ताल्–गहन प्रेम से; वाटुकिन्ऱ–म्लान होकर; मरुळ् उऱु–मोहक; कातलिन् मयङ्कि–प्यार के साथ भ्रान्त हो; कूटुम्–जहाँ आ मिले हैं; नल् नति–उन उत्तम नदियों के; तटम् तॊऱुम्–तल-तल में; कुटैन्तन–गोते लगाते हुए; पटिवुऱ्ऱु–वहीं रहकर; आटुकिन्ऱन–(जो) क्रीड़ा करते हैं, वे; अन्नम्–हँस; कॊळुनरै–पतियों की; पॊरुविन–समानता करते थे। ४७१

हंस वहुत काल तक दूर रहे। फिर मन के गम्भीर प्रेम के कारण व्याकुल और मोहक प्रेम के वश में होकर नदी-तटों पर आ जाते हैं और वे जल में गोते लगाकर क्रीड़ा करते हैं। वे विरही पतियों के समान हैं। अर्थश्लेष के द्वारा यह पद दोनों पर (हंसों और पतियों पर) लागू होता है। ४७१

कारॆ नुम्बॆयरक् करियवन् मार्बिनिऱ् कदिर्मुत्
तार मॆन्नवुम् बॊलिन्दन वळप्परु मळक्कर्
नीर्मु हन्दमा मेहत्ति नरुहुर निरैत्त
कूरम् वॆण्णिरत् तिरैयॆनप् परप्पन कुरण्डम् 472

अळप्प अरुम्–अगणित (अपार); अळक्कर्–समुद्र से; नीर् मुकन्त–जल सोखकर जानेवाले; मा मेकत्तिन्–काले मेघ के; अरुकु उऱ–पार्श्व में; निरैत्त–पंक्ति में; वॆळ् निऱम् कूरुम्–श्वेत रंग की; तिरैयॆन–लहरों के समान; परप्पन कुरण्टम्–उड़नेवाले बगुले; कार् ऎन्नुम् पॆयर्–मेघश्याम नाम के; करियवन्–श्यामदेव महाविष्णु के; मार्पिऩिल्–वक्ष में रहनेवाले; कतिर् मुत्तु आरम् ऎन्नवुम्–शोभायमान मुक्ताहार के समान; पॊलिन्तन–शोभायमान थे। ४७२

अपार सागर से जल सोखकर काले मेघ आकाश में संचार करते हैं। उनके पास श्वेत तरंगों के समान पंक्तिबद्ध होकर बगुले उड़ते हैं। वे नीलमेघश्याम महाविष्णुवक्ष के मुक्ताहार के समान लगते हैं। ४७२

मरुवि नीङ्गलॆॆल् लातॆंडु मालैय वानिऱ्
परुव मेहत्ति नरुहुरक् कुरुहिनम् बरप्प

तिरुवि नायह् निवन्नंनत् तेमरै तॅरिक्कुम्
ऑरुवन् मार्बिनि नुत्तरी यत्तैयु मौत्त 473

मरुवि–इकट्ठा होकर; नीङ्कल् चॅल्ला–अन्तर न देकर; नॆंटु मालैय–लम्बी पंक्ति बाँधकर; वानित्–आकाश में; परुवम् मेकत्तिन्–मौसमी मेघों के; अरुकु उऱ–पास में लगे; पऱप्प–जो उड़ते हैं, वे; कुरुकु इनम्–सारसों का वृन्द; तिरुविन् नायकन्–श्रीलक्ष्मी के नायक; इवन् ॲंत–ये हैं, ऐसा; ते मऱै–दिव्य वेदों से; तॅरिक्कुम्–प्रतिपादित; ऑरुवन्–अप्रमेय (श्रीविष्णु) के; मार्पितिल्–वक्ष में; उत्तरीयत्तैयुम्–उत्तरीय की भी; औत्त–समानता करते थे। ४७३

सारस पक्षी भी पंक्तियों में उड़ते हैं। वे सटे हुए जाते हैं। वे आकाश में वर्षाकालीन काले मेघों के पास लगे हुए उड़ते हैं। वे वेदों द्वारा प्रतिपादित श्रियःपति महाविष्णु के वक्ष पर के उत्तरीय के समान भी लगते हैं। ४७३

तेन वामलर्त् तिशैमुहन् मुदलिनर् तॅळिन्दोर्
ञान नायह नवैयऱ नोक्कित नल्हक्
कानम् यावैयुम् बरप्पिय कण्णंनच् चनहन्
मानै नाडिनिन् ऱळैप्पन पोन्ऱन मञ्ञै 474

तेन् अवाम्–मधु-भ्रमरों से इच्छित; मलर्–कमल पर के; तिचैमुकन्–चतुर्मुख; मुतलिनर्–आदि; तॅळिन्तोर्–विशद ज्ञानियों के; ञान नायकन्–ज्ञान के विषय, नायक श्रीराम का; नवै–दुःख; अऱल्–दूर होना; नोक्कित–चाहते हुए; नल्क–उनके पास सीताजी को ले आकर उपकार करने के विचार से; कानम् यावैयुम्–जंगल भर में; परप्पिय कण् ॲंत–फैलायी गयी आँखें हों, ऐसे; मञ्ञै–मोर; चनकन् मानै–जनक की हरिणी को; नाटि निन्ऱु–खोजते हुए; अऴैप्पन पोन्ऱन–बुलाते हों जैसे हैं। ४७४

श्रीराम भ्रमरावृत कमल पर आसीन ब्रह्मा आदि के ज्ञान का विषय हैं। उन्हें पत्नी के विरह से जनित अपार दुःख है। उसे दूर करने के लिए उनकी पत्नी को ढूँढ़कर ला देंगे। इस उपकार के लिए मयूर सर्वत्र अपनी आँखें (दृष्टि) भेजकर जनक की दुहिता हरिणी-सी सीता को ढूंढ़ रहे हों और बुला रहे हों, ऐसे लगे। ४७४

उऱवॅ दुप्पुरुङ् गौडुन्दॊऴिल् वेनिला नौऴिय
तिऱनि नंप्पुरुङ् गारॅनुज् जॅव्वियोन् शेर
निऱम नत्तुरु कुळिर्प्पिपि नॅडुनिल मडनवॅ
पुऱम यिर्त्तलम् बौडित्तन पोन्ऱन पशुम्बुल् 475

पचुम् पुल्–हरी घासें; वॅतुप्पु उऱ–तप्त करते हुए; उऱम्–आनेवाले; कॊटुम् तॊऴिल्–क्रूरकर्म; वेतिलान्–ग्रीष्मराज के; तिऱम् ऒऴिय–बल को मिटाते हुए; नितैप्पु उऱ–सबके मन में आनेवाले; कार् ॲंतुम् चॅव्वियोत्–वर्षाकाल रूपी श्रेष्ठ गुण

वाले राजा के; चेर–आ जाने पर; नॅटु निरम्–विशाल विस्तार की; निलम् मटन्तै–भूमिदेवी; मनत्तु उरु–मन में हुई; कुळिर्प्पितिन्–शीतलता के कारण; पुरम् मयिर् तलम्–शरीर के रोंगटे; पॉटित्तन–पुलकित हुए हों; पोन्ऱन–ऐसे लगीं। ४७५

घासें भूमिदेवी के पुलकित रोंगटों के समान लगीं। तप्त करनेवाले क्रूरकर्मी ग्रीष्मराज का आतंक दूर करते हुए सर्वप्रिय वर्षाकाल आ गया। इससे भूमि के विशाल शरीर भर में शीतलता (आनन्द) के कारण पुलक भर गये। ४७५

शॅम्जॅ वेलवर् शरिशिलैक् कुरिशिल रिरुण्ड
कुञ्जि शेयॊळि कदुवुरप् पुदुनिरङ् गॊडुक्कुम्
पञ्जि पोर्त्तमॆल् लडियॆनप् पॊलिन्दन पदुमम्
वञ्जि पोलियर् मरुङ्गॆन नुडङ्गिन वल्लि 476

चॅम् चॅव्वेलवर्–(रक्त के कारण) लाल हुए तीक्ष्ण भालाओं के धारक; चॅरि चिलै कुरिचिलर्–सबन्ध धनुर्धर वीर, इनके; इरुण्ट कुञ्चि–काले केश; चेय् ऑळि कतुवुर–लाल कान्ति से रंजित हो, ऐसा; पुतु निरम् कॊटुक्कुम्–नई रौनक़ देनेवाला; पञ्चि पोर्त्त–लाक्षारसरंजित; वञ्चि पोलियर्–वल्लरी-सी स्त्रियों के; मॅल् अटि अॅन–कोमल चरणों के समान; पतुमम् पॉलिन्तन–कमल शोभे; मरुङ्कु अॅन–(उनकी) कमरों के समान; वल्लि नुटङ्कित–पुष्पलताएँ लचकीं। ४७६

कमल वल्लरी-तुल्य रमणियों के चरणों के समान कोमल रहे। लाक्षारसरंजित वे चरण, रक्तरंजित भालाधारी और सबन्ध धनुर्धर वीरों के काले केशों को (अपने आघातों से) नया रंग देनेवाले थे। उन स्त्रियों की कमर के समान लताएँ लचकीं। ४७६

नीयि रन्नवळ् कुदलैय रादलि नॆडिप्
पोयत् तैयलैत् तरुदिरॆन् ऱिराहवन् पुहलत्
तेय मॆङ्गणुन् दिरिन्दन पोन्दिडैत् तेडिक्
कूय वायक्कुरल् कुऱैन्दबोर् कुऱैन्दन कुयिल्हळ् 477

नीयिर्–आप लोग; अन्नवर् कुतलैयर् आतलिन्–उनकी-सी मधुर (अस्पष्ट) तोतली बोली वाली हैं, इसलिए; नॆटि पोय्–खोजते जाकर; अत्तैयलै–उन रमणी को; तरुतिर्–ला दीजिए; ऍन्ऱु–यह; इराकवन् पुकल–श्रीराम के कहने पर; कुयिल्कळ्–कोयलों ने; तेयम् ऍङ्कणुम्–देश भर में; तिरिन्तन पोन्तु–घूमते हुए जाकर; इटै तेटि–उन-उन स्थानों में खोजकर; कूय आय्–टेर लगाकर; कुरल्–गला; कुऱैन्त पोल्–बैठ गया हो, ऐसा; कुऱैन्तन–बोलना छोड़ दिया। ४७७

कोयलें अब मौन रहीं। क्यों? श्रीराघव ने उनसे कहा था कि सीताजी की बोली भी तुम्हारी जैसी है। उसे ढूँढ़कर लाओ। वे देश भर में टेर

लगाती हुई घूमीं। उन्होंने उसमें अपना गला फाड़ दिया, अब गले के बैठ जाने के कारण वे मौन हैं। यह कवि की उत्प्रेक्षा है। ४७७

पॉऴिन्द मानिलस् बुऱ्ऱरक् कुमट्टिय पुनिऱ्ऱा
अॅऴुन्द वाम्बिह ळिडऱिन शॅऱितयि रेय्त्त
मॉऴिन्द तेनुडै मुहिऴ्मुलै याय्च्चियर् मुळविऱ्
पिऴिन्द पाल्वऴि नुरैयिनैप् पॉरुविन पिडवम् 478

पॉऴिन्त मा निलम्–वर्षा-प्राप्त भूमि ने; पुल् तर–घास उगायी, इसलिए; कुमट्टिय–उसे खाकर जो अघा गयीं; पुतिऱु आ–हाल में ब्यायी हुई गायों ने; अॅऴुन्त आम्पिकळ–उगे हुए कुकुरमुत्तों को; इटऱित्त–ठोकर मारकर छितरा दिया; तयिर् चॅऱि–(वे) दहीखण्ड; एय्त्त–के समान लगे; पिटवम्–'पिडव' नामक पौधों के फूल; मॉऴिन्त तेन् उटै–बोली के रूप में शहद बरसानेवाली; मुकिऴ् मुलै–नवोदित स्तनों वाली; आय्च्चियर्–ग्वालबालाओं के; मुळविल् पिऴिन्त–दुग्धपात्रों से निकले; पाल्–दूध से; वऴि–छलकनेवाले; नुरैयित्तै–झाग के; पॉरुवित्त–समान रहे। ४७८

भूमि को अधिक वर्षा प्राप्त हो गयी। उसने अधिक घास पैदा करायी। हाल में ब्यायी हुई गायों ने उस घास को खूब चरा और अघा गयीं। उन्होंने अपने पैरों से अपनी गति में कुकुरमुत्तों को तोड़कर छितरा दिया। वे कुकुरमुत्ते दहीखण्डों के समान दिखे। 'पिडव' नाम के फूल यत्र-तत्र दिखे। वे मधुमधुर बोली और नवोदित स्तनों वाली ग्वालबालाओं द्वारा दूध के पात्रों में ढाले गये दूध के झाग के समान लगे। ४७८

वेङ्गै नाऱिन कॉडिच्चियर् वडिक्कुऴल् विरैवण्
डेङ्ग नाहमु नाऱिन नुळैच्चिय रैम्बाल्
आङ्गु नाण्मुल्लै नाऱिन वाय्च्चिय रोदि
आङ्ग रुऱ्पल मुळत्तियर् पित्तिहै नाऱु 479

कॉटिच्चियर्–पर्वतीय स्त्रियों के; वटि कुऴल्–कंघी करके बँधे केश; वेङ्कै विरै नाऱित–'वेंगै' फूलों का गन्ध निकाल रहे थे; नुळैच्चियर्–(समुद्रतटीय प्रदेश की) धीवर स्त्रियों के; ऐम्पाल्–केश; वण्टु एङ्क–भ्रमर गुंजार करें, ऐसा; नाकमुम् नाऱित–सुरपुन्नाग के (फूलों के कारण) सुबास से पूर्ण थे; आङ्कर्–पास; उऴत्तियर्–(खेतों के प्रदेश की) कृषकबालाओं के; पित्तिकै–केश; उऱ्पलम् नाऱु–उत्पल की गन्ध दे रहे थे; आङ्कु–वहाँ; आय्च्चियर्–ग्वालिनों के; ओति–केश; नाळ् मुल्लै नाऱित–नवविकसित कुंदपुष्प का गन्ध दे रहे थे। ४७९

पार्वत्य देश वाली 'कॉडिच्ची' स्त्रियों के बँधे केश से 'वेंगै' फूलों का सुबास आ रहा था। समुद्रतटप्रदेश वाली धीवरबालाओं के केश से सुरपुन्नाग की गन्ध आ रही थी और उस पर भ्रमर मँडरा रहे थे। पार्श्व में

कृषकस्त्रियों के केश से लाल उत्पल का सुबास आ रहा था। उन पर्वत-प्रदेशों में ग्वालिनों के केश कुन्दपुष्पगन्ध से भरे थे। ४७९

तेरैक् कॉण्डपे रल्हुला डिरुमुहङ् गाणान्
आरैक् कण्डुयि रार्रुवा नल्लुणर् वळिन्दान्
मारर् कॅण्णिल्बल् लायिर मलर्क्कणै वहुत्त
कारैक् कण्डनन् वॅन्दुयर्क् कौरुहरै काणान् 480

तेरै कौण्ट–रथसदृश; पेर् अल्कुलाळ्–विशाल कटि वाली; तिरु मुकम् काणान्–(सीताजी का) श्रीमुख न देखकर; माररकु–मन्मथ के लिए; ऍण् इल्–अगण्य; पल् आयिरम्–अनेक सहस्र; मलर् कणै–पुष्पशर; वकुत्त–जिसने सृष्ट कर दिया, उस; कारै–वर्षाकाल को; कण्टनन्–देखकर; वॅम् तुयर्क्कु–कठोर दुःख (सागर) का; ओरु करै–पार; काणान्–न देखकर; नल् उणर्वु–होश; अळिन्तान्–खो गये; आरै कण्टु–किसको देखकर; उयिर् आर्रुवान्–प्राण धारण करेंगे। ४८०

रथ-सदृश विशाल कटिप्रदेश वाली सीताजी का मुख श्रीराम को देखने को नहीं मिला। लेकिन कामदेव के वास्ते असंख्य अनेक सहस्र पुष्प-शर उत्पन्न करनेवाले वर्षाकाल को देखा। वे अपने दुःख-सागर का अन्त नहीं देख पाये। अतः वे बेसुध हो गये। बेचारे श्रीराम किसको देखकर अपनी जान बचाते? । ४८०

अळविल् कारॅनु मप्पॅरुम् बरुवम्वन् दणैन्दाल्
तळर्व रॅन्बदु तवम्बुरि वोरुक्कुन् दहुमाल्
किळवि तेनिनु ममिळ्दिनुङ् गुळैत्तवळ् किळैत्तोळ्
वळवि युण्डवन् वरुन्दुमॅन् ऱालदु वरुत्तो 481

अळवु इल्–अपार; कार् ऍनुम्–वर्षा की; अ पॅरुम् परुवम्–वह श्रेष्ठ ऋतु; वन्तु अणैन्ताल्–आ गयी तो; तळर्वर्–शिथिल पड़ जायँगे; ऍन्पतु–यह बात; तवम् पुरिवोरुक्कुम्–तपस्या करनेवालों के लिए भी; तकुम्–लागू होगी; आल्–इसलिए; वळ्किळै तोळ्–बड़े बाँस के समान कन्धों वाली (सीतादेवी) की; तेनिनुम्–शहद में; अमिळ्तिनुम्–और अमृत में; कुळैत्त–घुली; किळवि–(मधुर) बोली का; वळवि उण्टवन्–खूब स्वादन जिन्होंने किया था; वरुन्तुम् ऍन्राल्–वे दुःखी रहे तो; अतु वरुत्तो–वह साधारण दुःख होगा क्या। ४८१

अतिगहन और अपार वर्षाकाल जब आता है, तब लोग शिथिलमन हो जाते हैं। यह कथन मुनियों के विषय में भी सत्य है। श्रीराम ने बाँस-सम कन्धों वाली सीताजी के मधु-सुधा-मिश्रित वचन जी भर सुने थे। अब वे दुःख से पीड़ित हैं, तो क्या वह दुःख साधारण दुःख होगा? । ४८१

कावि युङ्गरुङ् गुवळैयु नॅय्दलुङ् गायाम्
बूवै युम्बौरु वानवन् पुलम्बिनन् ऱळर्वान्

आवि युऱ्जिड़ि दुण्डुहों लामॅन्न वयर्न्दान्
तूवि यन्नमन् नाडिऱ्रन् तिवैयिवै शॉल्लुम् 482

कावियुम्—नीलोत्पल और; करुम् कुवळैयुम्—नीलकुवलय; नॅय्तलुम्—और 'नॅय्दल'; कायाम् पूवैयुम्—और अतसी पुष्पों की; पोरुवान्—समानता करनेवाले; अवन्—वे श्रीराम; पुलम्पितन्—विलाप करते हुए; तळर्वान्—शिथिल हुए; आवियुम्—प्राण भी; चिऱ्रितु उण्टु कोल् आम्—थोड़े हैं क्या; ॲन्न—ऐसा; अयर्न्तान्—बेसुध हुए; तूवि अन्नम् अन्नाळ्—मृदु पर वाली हंसिनी-सदृश; तिऱ्रतु—(सीताजी) के प्रति; इवै इवै चोल्लुम्—ये बातें कहते। ४८२

नीलोत्पल, कुवलय, 'नॅय्दल' और अतसी पुष्पों के-से रंग वाले श्रीराम विलाप करते हुए बेसुध हो रहे। इस बात का भी संशय हो रहा कि प्राण हैं या नहीं। वे कोमलपंख हंसिनी-सी सीताजी के सम्बन्ध में निम्नोक्त बातें कहने लगे। ४८२

वारेय् मुलैया ळैमऱैक्कु नर्वाळ्
ऊरेयऱि येनुयि रोडु ळल्वेन्
नीरे युडैया परुणिन् निलैयो
कारे यॅन्नदा विहलक् कुदियो 483

कारे—काले मेघ; वार् एय् मुलैयाळै—अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीता को; मऱैक्कुनर्—छिपाये रखनेवालों को; वाळ् ऊरे—वास की बस्ती को भी; अऱियेन्—नहीं जानते हुए; उयिरोटु—प्राणसह; उळल्वेन्—घूमता फिरता हूँ; नीरे उडैयाय्—पानी (आन) रखते हो; अरुळ्—करुणा; निन् इलैयो—तुम्हारे पास नहीं है क्या; ॲन्नतु आवि—मेरे प्राणों को; कलक्कुतियो—आकुलित करोगे क्या। ४८३

काले मेघ! मैं अँगिया-बद्ध स्तनों वाली सीताजी को छिपाये रखने वालों का वासस्थान नहीं जानता। प्राण ढोकर घूम रहा हूँ। तुम जल (आन) से भरे हो! पर तुममें दया (आर्द्रता) नहीं है क्या? मेरे प्राणों को सताओगे क्या? । ४८३

वॅप्पार् नॅडुमिन् निॅयिऱ् ऱुवॅहुण्
डॅप्पा लुम्विशुम् बितिरुण् डॅळुवाय्
अप्पा दहवञ् जवरक् करैये
ऑप्पा युयिर्हॊण् डलवो वलैयो 484

वॅप्पु आर्—ज्वलन्त; नॅटु मिन्तिन्—लम्बी बिजलियों के; ॲयिऱ्ऱै—दाँतों वाले; इरुण्टु—काले होकर; वॅकुण्टु—कोप करके (गरजकर); विशुम्पिन्—आकाश में; ॲप्पालुम्—सभी ओर; ॲळुवाय्—प्रकट होते; अ पातकम्—उन पातक; वञ्चम्—कपटी; अरक्करैये ऑप्पाय्—राक्षसों की ही समता करते हो; उयिर् कॊण्टु अलतु—प्राण लिये विना; ओवलैयो—न हटोगे क्या। ४८४

कठोर और लम्बी बिजलियों रूपी दन्तोरे ! काले होकर, गुस्सा करते हुए (गरजते हुए) आकाश में सर्वत्न प्रकट हो ! तुम भी उन पातक और वंचक राक्षसों की समता करते हो ! मेरी जान लिये विना हटोगे नहीं क्या ? । ४८४

अयिलेय्	विऴियार्	विळैया	रमिऴ्दिऩ्
कुयिलेय्	मॊऴियारक्	कॊणराय्	कॊडियाय्
तुयिले	तॊरुवे	नुयिर्शोर्	वुणर्वाय्
मयिले	यॆऩ्ऩैनी	वलिया	डुदियो 485

मयिले–मोर; अयिल् एय् विऴियार्–भाला-जैसी आँखों वाली; विळै–(क्षीर-सागर-) उत्पन्न; आर्–मधुर; अमिऴ्तिऩ्–अमृत और; कुयिल् एय्–कोकिल की-सी; मॊऴियार्–बोली वाली सीता को; कॊणराय्–ढूँढ़कर नहीं लाओगे; कॊटियाय् नी–क्रूर हो तुम; तुयिलेऩ्–अनिद्र; ऑरुवेऩ्–(अकेला) विरही; उयिर् चोर्वु–मेरे प्राणों की शिथिल हालत; उणर्वाय्–जानते हो; ऍऩ्ऩै–(ऐसे) मेरे प्रति; वलि–अपना (बल) सामर्थ्य; आट्टुतियो–दिखाओगे (सताओगे) क्या । ४८५

मयूर ! तुम भाले-सी आँख वाली और क्षीरसागरोत्पन्न अमृत-सम और कोयल की कूक की-सी बोली वाली सीताजी को ढूँढ़ नहीं लाओगे क्या ? तुम भी बहुत क्रूर हो ! मुझे नींद नहीं आती और मेरी शिथिलता जानते हो । तब भी तुम अपना बल दिखाओगे क्या ? । ४८५

मऴैवा	डैयॊडा	डिवलिऩ्	दुयिर्मेल्
नुऴैवाय्	मलर्वाय्	नॊडियाय्	कॊडिये
इऴैवा	णुदला	रिडैपो	लिडैये
कुऴैवा	यॆऩ्दा	विहुऴैक्	कुदियो 486

कॊटिये–लता; मऴै वाटैयॊट्टु–वर्षाकालीन (उदीची) हवा में; आटि–हिलकर; वलिऩ्तु–बलात्; उयिर् मेल्–मेरे प्राणों में; नुऴैवाय्–प्रवेश करोगी; मलर्वाय्–खिलोगी; इऴै–भ्रमर से अलंकृत; वाळ् नुतलार्–प्रकाशमय माथे वाली की; इटै पोल्–कमर के समान; इटैये–मध्य में; कुऴैवाय्–झुकते हुए; ऍऩ्तु आवि–मेरे प्राणों को; कुऴैक्कुतियो–निर्बल बनाओगी क्या; नॊटियाय्–कहो । ४८६

हे लताओ ! वर्षाकालीन हवा में हिलकर बलात् मेरे अन्दर घुस जाती हो ! पुष्पसहित (प्रफुल्ल) रहती हो । भ्रमर से अलंकृत भाल वाली सीताजी की कमर के समान लचकती हो ! मेरे प्राणों को भी लचकाओगी क्या ? बताओ । ४८६

विळैयेऩ्	विळैवा	नवैमॆय्	मैयिऩिऩ्
द्रिळैये	नुणर्वे	नवैयिऩ्	मैयिऩाल्
पिळैये	नुयिरो	डुपिरिऩ्	दऩराल्
उळैये	यवरॆव्	वुळैया	रुरैयाय् 487

उळैये–हिरन; विळैवु–चाहनीय; आत्तवै–जो हैं; विळैयेन्–उनको नहीं चाहता; मॅय्मैयिन् निन्ऱु–सत्य से; इळैयेन्–नहीं हटूँगा; उणर्वेन्–(तथ्य) समझूँगा; अवै–वे ज्ञान; इन्मैयिनाल्–नहीं रहे, इसलिए; पिळैयेन्–अपराधी हो गया; उयिरोटु पिरिन्तनर्–(सीता) प्राणों के साथ बिछुड़ गयीं; अवर्–वे; ऍ उळैयार्–किस स्थान में हैं; उरैयाय्–कहो। ४८७

हे हरिण! प्यारी वस्तुओं की चाह नहीं रखता। सत्य-मार्ग से नहीं हटता। समझदार हूँ। पर ये सब गुण छूट गये; तभी तो मैंने अपराध किया और तभी तो जीते-जी मुझे वे छोड़कर चली गयीं। वे कहाँ हैं? बताओ, भला। ४८७

पयिल्बा डहमॅल् लडिपञ् जनैयार्
शॅयिरे दुमिला रॊडुतो रुदियो
अयिरा दुडने यहल्वा यलैयो
उयिरे कॅडुवा युऱ्वोर् हिलैयो 488

उयिरे–मेरे प्राण; पयिल्–शोभाकारी; पाटकम्–'पाडगम' नाम के (चरण के) आभरणों से भूषित; मॅल् अटि–कोमल चरण; पञ्चु अनैयार्–रुई के समान (जिनके) हैं; चॅयिर्–दोष; एतुम्–कुछ; इलारॊटु–(जिनका) नहीं है, उनके साथ; तोरुतियो–(मुझे छोड़कर) जाओगे क्या; अयिरातु–विना विलम्ब किये; उटने–उनके साथ ही, तभी; अकल्वाय् अलैयो–हट गये होगे न; कॅटुवाय्–नाशवान; उऱवु–(मेरा-सीता का) सम्बन्ध; ओर्किलैयो–(तभी) न समझे क्या। ४८८

मेरे प्राण! सुन्दर पादकटक-भूषित व रुई-से चरणों वाली, अनिंद्य सीताजी के साथ तुम भी मुझे छोड़ जाओगे क्या? अगर जाने का विचार रखते तो अविलम्ब चले जाते! हे नाशवान! उनका मेरा नाता नहीं जानते?। ४८८

ऑन्ऱैप् पहराय् कुऴलुक् कुडैवाय्
वन्ऱैप् पुऱनोळ् वयिरत् तिनैये
कॊन्ऱैक् कॊडियाय् कॊणर्हिन् ऱिलैये
ऍन्ऱैक् कुऱवा हविरुन् दनैये 489

कॊन्ऱै कॊटियाय्–अमलतास के क्रूर (तरु); कुऴलुक्कु–सीताजी के केश के सामने; उटैवाय्–हार गया; वल्–दृढ़; तॆप्पु उऱु–गड़े हुए; नीळ् वयिरत्तिनै–गम्भीर वैर रखनेवाला है; ऑन्ऱै–एक भी; पकराय्–नहीं बोलता; कॊणर्किन्ऱिलै–(सीता को) नहीं लाता; ऍन्ऱैक्कु उऱवाक इरुन्तनै–किस दिन (कब) तू बन्धु (मित्र) रहा। ४८९

अमलतास, क्रूर! तुम्हारे फल सीताजी के केशों के सामने हारे! इसलिए मेरे साथ गम्भीर वैर पालते हो! यह उत्तर दो! उनको तुम मेरे पास ले नहीं आते। तुम कब मेरे मित्र रहे?। ४८९

कुरावरुम् बनैय कूर्वा ळॅयिऱ्ऱुवॅङ् गुरुळै नाहम्
विरावुवॅङ् गडुविऱ् कॉल्लु मॅल्लिणर् मुल्लै वॅय्दिन्
उरावरुन् दुयर मूट्टि योय्वऱ मलैव दॉन्ऱो
इरावण कोब निऱ्क विन्दिर कोब मॅन्नो 490

कुरा अरुम्पु–"कुरा" तरु की कलियों के; अनैय–समान; कूर् वाळ् ऍयिऱ्–तीक्ष्ण और उज्ज्वल दाँतों के; वॅम् नाकम्–भयंकर सर्प के; कुरुळै–बच्चे में; विराव्–(स्वाभाविक रूप से) रहनेवाले; वॅम् कटुविन्–भीषण विष के समान; कॉल्लुम्–मुझे मारनेवाली; मुल्लै–कुन्दलता की; मॅल् इणर्–कोमल कलियाँ; वॅय्तिन् उराव्–ताप देते हुए आनेवाले; अरुन्तुयरम्–असह्य दुःख को; मूट्टि–बढ़ाकर; ओय्व् अऱ–निरन्तर; मलैवतु–संघर्ष करती हैं; ऑन्ऱो–क्या वही एक है; इरावणन् कोपम् निऱ्क–रावण का कोप तो एक तरफ़ रहता है; इन्तिर कोपम् ऍन्नो–इन्द्र का कोप भी क्यों। ४९०

कुन्दलताओं की कोमल कलियाँ 'कुरबक' पुष्प-सदृश दाँतों वाले भयंकर बालसर्पों के विष के समान मुझे सन्तापक और असह्य दुःख देते हुए मेरे साथ अथक रीति से लड़ रही हैं! क्या यही एक है? रावण का कोप एक ओर रहता है तब ये असंख्यक इन्द्रगोप क्यों आ निकले हैं? [इस पद के पिछले अंश का भाव-चमत्कार तमिळ में गोप, कोप दोनों को एक ही समान लिखने पर आधारित है। पहले ही रावण का कोप (दुष्कृत्य) सता रहा है; अब ये इन्द्रगोप क्यों आकर सताने लगे? कुन्दकली से सीताजी की दन्तावली की याद आ जाती है और इन्द्रगोप से उनके अधरों की स्मृति। दोनों उनको पीड़ा दे रही हैं]। ४९०

ओडैवा णुदलि ताळै यॊळिक्कला मुबाय मुन्नि
नाडिमा रीच नारो राडह नव्वि यातार्
वाडैयाय्क् कूऱ्ऱि तारु मुरुविनै माऱ्ऱि वन्दार्
केडुशूळ् वार्क्कु वेण्डु मुरुक्कॊळक् किडैत्त वन्ऱे 491

मारीचनार्–मारीच; ओटै वाळ्–ललाट-पट्ट से अलंकृत और उज्ज्वल; नुतलिताळै–भाल वाली सीता को; ऑळिक्कलाम् उपायम्–छिपाने का उपाय; उन्नि–सोचकर; नाटि–ढूँढ़कर; ओर्–अनुपम; आटकम् नव्वि–स्वर्णमृग; आतार्–बने; कूऱ्ऱितारुम्–(महाशय) यम भी; वाटैयाय्–उदीची (जाड़े की) हवा के रूप में; उरुविनै–अपना रूप; माऱ्ऱि–बदलकर; वन्तार्–आये; केटु चूळ्वार्क्कु–हानि करनेवालों को; वेण्टुम् उरु–मनचाहे रूप; कॊळ–लेना; किटैत्तत अन्ऱे–सम्भव हो गया न। ४९१

मारीच महाशय ने (मुझे क्लेश देना चाहा और) ताज से अलंकृत उज्ज्वल भाल वाली सीता को (हर लेकर) छिपाने का मार्ग सोचा और कोई उपाय निर्णय किया और तदनुसार अनुपम स्वर्ण-मृग के रूप में अपना रूप बदल लिया! वैसे ही यम महाराज भी उदीची (जाड़े का) पवन

में रूप बदलकर आ पधारे ! हानि करना चाहनेवालों को मन-चाहा रूप लेने का मौका मिल गया न ! । ४९१

अरुविऩै यरक्क रॅऩ्ऩ वन्दर मदऩिल् यावुम्
वॅरुवर मुळङ्गु हिऩ्ऱ मेहमे मिऩ्ऩु हिऩ्ऱाय्
तरुवलॅऩ् ऱिरङ्गि ऩायो तामरै तुऱन्द तैयल्
उरुविऩैक् काट्टिक् काट्टि यॊळिक्किऩ्ऱा यॊळिक्किऩ् ऱायाल् 492

अरुविऩै—दुष्कृत्य; अरक्कर् अॅऩ्ऩ—राक्षसों के समान; अऩ्तरम् अतऩिल्—आकाश में; यावुम् वॅरुवर—सबको भयभीत होने देते हुए; मुळङ्कुकिऩ्ऱ—गरजनेवाले; मेकमे—मेघ; मिऩ्ऩुकिऩ्ऱाय्—चमक दिखाते हो; तरुवल् अॅऩ्ऱु—उन्हें दिला दूंगा, ऐसा; इरङ्कितायो—दया दिखायी क्या; तामरै तुऱन्त—जिसने कमल त्यागा; तैयल्—उस दयिता के; उरुविऩै काट्टि काट्टि—रूप को (बिजली के रूप में) दिखाते-दिखाते; ऑळिक्किऩ्ऱाय्—छिपाते; ऑळिक्किऩ्ऱाय्—छिपाते; (आल्—पूरक ध्वनि) । ४९२

हे मेघ ! जो दुष्कृत्य राक्षसों के समान आकाश में रहकर सबको डराते हुए गरज रहे हो ! तुम (सीतादेवी के समान) चमक दिखा रहे हो। पर तुमने उनको मेरे पास सौंपने की दया तो नहीं की न ? कमल त्यागकर जो आयी हैं उन देवी का रूप दिखाते, छिपाते; दिखाते और छिपाते हो ! । ४९२

उण्णिऱैन् दुयिर्क्कुम् वॅम्मै युयिर्चुड वुलैयु मुळ्ळम्
पुण्णुऱ वाळि तूर्त्तल् पळुदिऩ् पोदि मार
अॅण्णुरु कल्वि युळ्ळत् तिळैयव ऩिऩ्ऩे युऩ्ऩैक्
कण्णुरु मायिऩ् पिऩ्ऩै यारवऩ् शीऱ्ऱङ् गाप्पार् 493

मार—मारदेव; उळ् निऱैन्तु—सारे शरीर में भरकर; उयिर्क्कुम्—निकलनेवाली; वॅम्मै—गरमी (तपन); उयिर् चुट—मेरे प्राणों को जलाती है; इति—आगे; उलैयुम् उळ्ळम्—दुखनेवाला मन; पुण् उऱ—व्रण-लगा हो, ऐसा; वाळि तूर्त्तल्—शर छिड़काना; पळुतु—व्यर्थ काम है; पोति—हट जाओ; अॅण् उरु—मान्य; कल्वि उळ्ळत्तु—विद्या-पूर्ण मन वाले; इळैयवऩ्—मेरा छोटा भाई; इऩ्ऩे—अभी; उऩ्ऩै—तुमको; कण् उऱुम् आयिऩ्—देख लेगा तो; पिऩ्ऩै—बाद; अवऩ् चीऱ्ऱम्—उसके क्रोध को; काप्पार्—बचानेवाला (रोकनेवाला); यार्—कौन है । ४९३

मन्मथ ! विरहताप अन्दर सब जगह भरकर बाहर भी प्रकट हो गया और वह मेरे प्राणों को जला रहा है। उससे मेरा मन अत्यधिक जर्जर है। तिस पर चोट करते हुए शर छिड़काना व्यर्थ है। सम्मान्य विद्वान् मेरा छोटा भाई अभी तुम्हें देखेगा तो फिर उसके कोप को रोकनेवाला कौन होगा ? । ४९३

विल्लुम्वॅङ् गणैयुम् वीरा वॅञ्जमत् तञ्जि नार्मेल्
पुल्लुन वल्ल वाऱ्ऱल् पोऱ्ऱलर्क् कुरित्तु पोलाम्
अल्लुनन् पहलु नीङ्गा यनङ्गनी यरुळिऱ् ऱीर्न्दाय्
शॅल्लुमॅन् ऱॅळिवन् दोर्मेऱ् शॅलुत्तलुञ् जीर्मैत् तामो 494

वीरा–वीर; वॅम् चमत्तु–भयंकर युद्ध में; अञ्चित्तार् मेल्–भयातुर मनुष्यों पर; विल्लुम्–धन और; वॅम् कणैयुम्–भयंकर शर (प्रयोग); पुल्लुन अल्ल–युक्त नहीं है; आऱ्ऱल्–शुद्ध वीरता का; पोऱ्ऱलर्क्कु–मान न करनेवालों के लिए; उरित्तु पोलाम्–उचित है शायद; अनङ्क–मन्मथ; नी–तुम; अरुळिन् तीर्न्ताय्–करुणा-त्यक्त हो; अल्लुम्–रात; नल् पकलुम्–और श्रेष्ठ दिन भी; नीङ्काय्–हट जाते नहीं; चॅल्लुम् ॲन्ऱु–चलेगा, यह समझकर; ॲळि वन्तोर् मेल्–निर्बलों पर; चॅलुत्तुतलुम्–(बल का) प्रयोग करना भी; चीर्मैत्तु आमो–अच्छा होगा क्या। ४६४

वीर ! घोर समर में भयभीत लोगों पर धनु-शर का प्रयोग उचित नहीं है। शायद यह वीरता को न माननेवालों के विषय में युक्त है ? अनंग ! तुम दया से तो छूट गये; पर दिन और रात मुझे छोड़ नहीं जाते ! वहीं बलप्रयोग कारगर होगा, यह समझकर निर्बलों पर प्रयोग करना श्लाघ्य काम होगा क्या ? । ४९४

ॲन्ऩवित् तहैय पन्ऩि यीडळिन् दिरङ्गु हिन्ऱ
तन्ऩैयॊप् पानै नोक्कित् तहैयाळिन् दयर्न्द तम्बि
निन्ऩैयॅत् तहैयै याह निनैन्दनै नॅडियो येन्ऩाच्
चॅन्ऩियिऱ् चुमन्द कैयन् ऱेऱ्ऱुवान् शॅप्प लुऱ्ऱान् 495

ॲन्ऩ–ऐसा; इत्तकैय–ऐसी बातें; पन्ऩि–कहकर; ईटु अळिन्तु–शक्ति खोकर; इरङ्कुकिन्ऱ–रोनेवाले; तन्ऩै ऑप्पानै–स्वोपम (श्रीराम) को; नोक्कि–देखकर; तकै अळिन्तु–दृढ़ता खोकर; अयर्न्त–थके हुए; तम्पि–लघुभ्राता; चॅन्ऩियिल् चुमन्त कैयन्–सिर-धृत-हस्त हो; तेऱ्ऱुवान्–ढाड़स देने हेतु; नॅटियोय्–महिमावान; निन्ऩै–अपने को; ॲत्तकैयै आक–कैसे मनुष्य; निनैन्तनै–समझ गये; ॲन्ऩा–कहकर; चॅप्पल् उऱ्ऱान्–बोलने लगे। ४६५

ऐसा, ऐसी विभिन्न बातें कहते हुए शक्ति खोकर श्रीराम दु:खी हो रहे थे। तब स्वोपम श्रीराम को देखकर उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने, जो सब खोकर थक गये थे, सिर पर हाथ धरकर, कहा कि हे महिमामय ! आपने अपने को क्या और कैसा समझा है ? फिर वे उनको आगे ढाड़स दिलाने हेतु निम्न प्रकार बोले। ४९५

कालनीळितु कारुमारियुम् वन्ददॅन्ऱ कवर्च्चियो
नीलमेनि यरक्कर्वीरम् निन्ऩैन्वळुङ्गिय नीर्मैयो
वालिशेनै मडन्दैवेहिड नाडवारलि लामैयो
शालनूलुणर् केळ्वियोर् तळर्न्ददॅन्ऩै तवत्तिन्ऩोय् 496

चाल–खूब; नूल् उणर्–शास्त्रज्ञान; केळ्वि–श्रवणज्ञान के; वीर–वीर; तवत्तित्तोय्–तपस्वी; कार् कालमुम् नीळितु–वर्षाकाल लम्बा है; मारियुम् वन्ततु–बारिश भी आ गयी; ॲन्नूर्–यह; कवऱ्चियो–दुःख है क्या; नीलम् मेति–काले शरीरों के; अरक्कर् वीरम् निनैन्तु–राक्षसों के पराक्रम को सोचकर; अळुङ्किय–क्षीण हुए; नीर्मैयो–मन वाले हो गये क्या; मटन्तै–देवी; वैकुम्–जहाँ रहती हैं; इटम्–वह स्थान; नाट–ढूँढ़ने के लिए; वालि चेनै–वाली की सेना का; वारल्–आगमन; इलामैयो–नहीं हुआ इसलिए क्या; तळर्न्ततु ॲन्नै–विगलित होना क्यों। ४९६

शास्त्र के पठन और श्रवण से प्राप्त पुष्कल ज्ञान के धनी! वीर! तपस्वी! वर्षाकाल दीर्घ है; बारिश भी खूब आयी! यह सोचकर आप चिन्ताग्रस्त हैं क्या? या काले शरीरों के राक्षसों का प्रताप सोचकर मन टूट गया है? या देवी का स्थान ढूँढ़ने के लिए वाली की सेना का आगमन नहीं हुआ, वही कारण है? यह मन की शिथिलता क्यों? । ४९६

मऱैतुळङ्गिनु मदितुळङ्गिनुम् वानुमाळ्हडल् वैयमुम्
निऱैतुळङ्गिनु निलैतुळङ्गुरु निलैमैनिन्वयि निऱ्कुमो
पिऱैतुळङ्गुव वनैयपेरॅयि ऱुडैयपेदैयर् पॅरुमैनिन्
इऱैतुळङ्गुरु पुरुववॅञ्जिलै यिडैतुळङ्गुर विऱ्कुमो 497

मऱै तुळङ्किनुम्–वेद विपरीत बनें तो भी; मति तुळङ्किनुम्–चन्द्र भ्रमित हो जाय तो भी; वानुम्–आकाश और; आळ् कटल्–गहरे समुद्र-मध्य; वैयमुम्–भूमि; निऱै तुळङ्किनुम्–स्थिति खो दें तो भी; निलै तुळङ्कुरुम् निलैमै–स्थिति खोने का स्वभाव; निन् वयिन्–आपके पास; निऱ्कुमो–रहेगा क्या; पिऱै–चन्द्रकलाएँ; तुळङ्कुव अनैय–चमकती-जैसे; पेर् ॲयिऱु–बड़े दाँतों के; उटैय–रखनेवाले; पेतैयर्–बुद्धिहीनों का; पॅरुमै–(शक्ति का) महत्त्व; निन्–आपके; इऱै तुळङ्कुरु–स्वामीत्व-प्रदर्शक; पुरुवम् वॅञ्चिलै–भौंहें रूपी भयंकर धनुषों के; इटै तुळङ्कुर–मध्यभाग के काँपने पर; इऱ्कुमो–(टिका) रहेगा क्या। ४९७

चाहे वेद ही अस्त-व्यस्त क्यों न हों; भले ही चन्द्र का स्थिति-विपर्यय हो आवे; आकाश और गम्भीर-सागरमध्यस्था भूमि अपनी स्थिति खो जाय तो भी स्थैर्यस्खलन आपके पास होगा क्या? चन्द्रकलाओं के समान चमकने वाले दाँतों से युक्त राक्षसों का पराक्रम स्वामित्वद्योतक आपकी भौंहों रूपी भयंकर धनुओं के मध्यभाग के काँपने पर टिक सकेगा क्या? । ४९७

अनुमनॅन्बव नळवऱिन्दन मऱिञवङ्गद नादियोर्
ॲनैयरॅन्बदॊ रिरुदिहण्डिल मॅळ्ळुबदॆन्ऱॆणु मियल्बिनार्
विनैयिनॅन्दुयर् विरवुतिङ्गळुम् विरैवुशॆन्ऱुऱ वॅळिदिनिन्
तनुवॆनुन्दिरु नुदलिवन्दनळ् शरदमॆन्ऱुयर् तविर्दिये 498

अऱिञ–ज्ञानी; अनुमन् ॲन्पवन्–हनुमान कहलानेवाले के; अळवु–(सामर्थ्य का) माप; अऱिन्तनम्–जान गये; अङ्कतन् आतियोर्–अंगद आदि; ॲळ्ळुवतु

ऍतुरु ऍणुम्–सत्तर (वॆळ्ळम्) की गिनती में; इयल्पित्तार्–आनेवाले; ऍत्तैयर्–कितने (वीर) हैं; ऍन्पतु–इसका; ओर् इरुति–एक निर्णय; कण्टिलम्–हमने नहीं जाना; वितैयिऩ्–बुरे कर्म (फल) के समान; वॆम् तुयर्–तापक दुःख; विरवु–देनेवाले; तिङ्कळुम्–मास भी; विरैवु चॆऩ्ऱत–जल्दी बीत गये; निऩ्–आपके; तनु ऍऩुम्–धनु-सम; तिरु नुतलि–श्रीयुक्त ललाट वाली; ऍळितितिल् वन्तनळ्–सुगम रीति से आ गयीं; चरतम्–यह ध्रुव है; वल् तुयर्–कठोर दुःख; तविर्ति–छोड़ दीजिए। ४९८

ज्ञानी ! हमने जान लिया कि हनुमान (के प्रताप) का माप क्या है ! अंगद आदि वीरों की सेना सत्तर (वॆळ्ळम) की संख्या में बतायी गयी। पर असल में वे कितने हैं ? उनकी गणना की सीमा हमने नहीं देखी। बुरे कर्म-फल के समान कठोर दुःखदायी (शरत्ऋतु के) मास भी बीत गये। अब आपके धनु के समान ललाट वाली देवी आपसे सुगमता से आकर मिल गयीं, समझिए। यह ध्रुव है। इसलिए अब यह कठोर दुःख छोड़ दीजिए। ४९८

मऱैयऱिन्दवर् वरवुहण्डुमै वलियुमव्वञ्जहर् वळियॊडुम्
कुऱैयवॆन्ऱिडर् कळैवॆऩ्ऩ्ऱऩै कुऱैमुडिन्ददु विदियिऩाल्
इऱैववङ्गव रिऱुदिहण्डिनि दिशैपुनैन्दिमै यवर्हडाम्
उऱैयुमुम्बरु मुदविनिऩ्ऱरु ळुणर्वळिन्दिड लुऱुदियो 499

इऱैव–प्रभु; मऱै अऱिन्तवर्–(आपका) रहस्य जाननेवालों का; वरवु कण्टु–(दण्डक वन के ऋषिगणों का) आगमन देखकर; उमै वलियुम्–आप लोगों को त्रास देनेवाले; वञ्चकर्–राक्षसों के; वळियॊटुम् कुऱैय–सन्तति के साथ नाश हों, ऐसा; वॆन्ऱु–हराकर; इटर् कळैवॆऩ्–कष्ट दूर करूंगा; ऍऩ्ऱऩै–वचन दिया (आपने); वितियिऩाल्–विधिवशात्; कुऱै मुटिन्ततु–कष्ट दूर हो गया (या राक्षसों के हाथ अपराध हो गया और वे मरेंगे); इनि–अब; अङ्कु अवर् इऱुति कण्टु–वहाँ उनका अन्त करके; इतितु–सुख से; इचै पुऩैन्तु–प्रशंसा पाकर; इमैयवर्कळुक्कुम्–देवों का भी; ताम् उऱैयुम् उम्परुम्–उनका वासस्थान स्वर्गलोक; उतवि निऩ्ऱु–दिलाकर; अरुळ्–उपकार करें; उणर्वु अळिन्तिटल्–धैर्य खोना; उऱुतियो–हितकारी है क्या। ४९९

हे प्रभु ! आपका अवतार-रहस्य जिन्हें मालूम था वे आपके पास (शरण माँगने) आये। उनके आगमन पर आपने वादा किया कि हम आपके त्रासक कपटी राक्षसों को उनकी सन्तति के साथ नष्ट करते हुए हरायेंगे और आपका कष्ट दूर करेंगे। विधिवशात् (उसी वचन के अनुसार) उनका कष्ट दूर हो गया। (या राक्षस ने अपराध कर दिया और आप उसको विना किसी संकोच के दण्ड दे सकते हैं।) अब उनका अन्त कीजिए। सुख से यश अर्जन करते हुए देवों को भी उनका स्वर्ग दिला दीजिए। उसके विपरीत इस तरह धैर्य खोना हितकारी हो सकता है क्या ? । ४९९

कादुहोर्र् निन्नक्कलादु पिर्र्क्कॅव्वारु कलक्कुमो
वेदलैक्किड मादल्वीरदै यन्रुपेदमै यामरो
पोदुपिऱ्पड लुण्डिदोर्पोरु ळन्ड्रियिन्रु पुणर्त्तियेल्
यादुनक्किय लाददॅन्दै वरुन्दलॅन्न वियम्बिनान् 500

अॅन्तै–मेरे पिता (सदृश); कातु कोर्र्म्–संहारक विजय; निनक्कु अलातु–आपको छोड़; पिर्र्क्कु–अन्यों (राक्षसों) को; अॅव्वारु कलक्कुमो–कैसे मिलेगी; वेतनैक्कु इटम् आतल्–वेदना का शिकार होना; वीरतै अन्रु–वीरता नहीं; पेतैमै आम् अरो–अज्ञता नहीं होगा क्या; पोतु पिन्पटल्–समय का अनुकरण करना; इतु ओर् पोरुळ् उण्टु–यह एक लोकरीति का विषय है; अन्रि–उसके अलावा; इन्रु पुणर्त्तियेल्–आज ही प्रयत्न करें तो; उनक्कु इयलाततु–आपके लिए अशक्त; यातु–क्या है; वरुन्तल्–दुःख मत कीजिए; अॅन्न–ऐसा; इयम्पिनान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ५००

मेरे पिता-तुल्य ! शत्रुसंहारजन्य विजय आपको छोड़ अन्य की हो कैसे सकेगी ? वेदनाग्रस्त होना वीरता नहीं है। यह अज्ञता होगा। हाँ ! समय का अनुसरण करना है, यह एक बात लोकमान्य है ! पर उसको न मानकर आज ही प्रयास करें तो आपके लिए असाध्य क्या है ? इसलिए मन मत मारिए। —लक्ष्मण यों बोले। ५००

शोर्रतम्बि युरैक्कुणर्न्दुयिर् शोर्वोडुङ्गिय तोल्लैयोन्
इर्रविन्न लियक्कमॅय्दिड वैहल्पर्पल वेहमेल्
उर्रुनिन्र विनैक्कोडुम्बिणि योन्ड्रिन्मेलुड नोन्ड्राय्
मर्रुम्वॅम्बिणि पर्रिनालॅन वन्ददिर्न्ददु मारिये 501

उयिर् चोर्वु–जीवन के दुर्बल होने से; ओटुङ्किय–शरीर और मन में शिथिल जो हुए; तोल्लैयोन्–उन पुरुष-पुरातन के; तम्पि–छोटे भाई के; चोर्र् उरैक्कु–कहे वचनों से; उणर्न्तु–सुध पाकर; इर्र् इन्तल्–त्यक्त-दुःख हो; इयक्कम् अॅय्तिट–चलते-फिरते हुए; पर्पल–अनेक; वैकल्–दिन; एक–बीते; मेल्–बाद; उर्रु निन्र–आ लगे; विनै–कर्म-सम; कोटुम् पिणि–क्रूर रोग पर; मर्रुम् वॅम् पिणि ओन्रु–और अन्य एक भयंकर रोग; उटन् उराय् पर्रिनाल् अॅन्न–साथ आकर पकड़ गया हो, ऐसा; मारि–(दुबारा) वर्षा; अॅतिर्न्तु वन्ततु–सामने आयी। ५०१

श्रीराम का शरीर निर्बल था और उनकी जान भी दुर्बल हो गयी थी। अब वे अपने छोटे भाई के वचन सुनकर थोड़ा आश्वस्त हुए और उनका मन साफ़ हुआ। दुःख-विमुक्त हुए और चलने-फिरने लगे। ऐसा अनेक दिन व्यतीत हुए। तब प्राप्त कर्मफल के समान, मानो एक रोग पर दूसरा आ लगा हो, ऐसा अपर-वर्षाकाल भी आ गया। (वर्षाऋतु के पूर्व अपर दोनों अंशों में वर्षा होती है। बीच में एक अंश ऐसा है जब पानी नहीं बरसता)। ५०१

निऱैन्दन	नॆडुङ्गुळ	नॆरुङ्गिन	तरङ्गम्
कुऱैन्दन	करुङ्गुयिल्	कुळिर्न्दवुयर्	कुन्ऱम्
मऱैन्दन	तडन्दिशै	वरुन्दिनर्	पिरिन्दार्
उऱैन्दन	महन्ऱिलुड	नन्ऱिलुयि	रॊन्ऱि 502

नॆटुम् कुळन् निऱैन्तन–बड़े-बड़े तालाब भर गये; तरङ्कम्–(उन पर) तरंगें; नॆरुङ्कित–अधिक उठीं; करुङ्कुयिल्–काली कोयलें; कुऱैन्तन–मौन हो रहीं; उयर् कुन्ऱम्–ऊँची गिरियाँ; कुळिर्न्त–शीतल हुईं; तट तिचै–विशाल दिशाएँ; मऱैन्तन–(वर्षा में) छिप गयीं; पिरिन्तार्–बिछुड़े लोग; वरुन्तिनर्–दुःखी हुए; मकन्ऱिल पऱवैकळ्–'महन्ऱिल्' नामक जल-पक्षी; अन्ऱिलुटन्–मादा पक्षियों के साथ; उयिर् ऑन्ऱि–एकप्राण हो; मऱैन्तन–छिप गये (संश्लिष्ट रहे)। ५०२

बारिश से सभी बड़े-बड़े तालाब भर गये। उन पर तरंगें लगातार उठीं। काले रंग की कोयलें मौन हुईं। ऊँचे पर्वत शीतल हुए। विशाल दिशाएँ (मेघों में) छिप गयीं। वियोगी लोग दुःखी हुए। क्रौंच पक्षी क्रौंचियों के प्राणों में प्राण मिलाकर ऐसे सटे रहे कि वे अदृश्य हो गये। ५०२

पाशिळै	मडन्दैयर्	पळिप्पिलह	लल्हुल्
तूशुतॊड	रूशननि	वॆम्मैतॊडर्	वुऱ्ऱॆ
वीशियदु	वाडैयॆरि	वॆन्दविरि	पुण्वीळ्
आशिलयिल्	वाळियॆन	वाशैपुरि	वार्मेल् 503

आचै पुरिवार् मेल्–(विरह की अवस्था में) प्रेम से भरी; पळिप्पिल् अकल् अल्कुल्–निर्दोष विशाल कटिप्रदेश; पाचु इळै–सुन्दर आभरण (इनसे अलंकृत); मटन्तैयर् मेल्–स्त्रियों पर; तूचु–उनके वस्त्रों; तॊटर् ऊचल्–झूलनेवाले झूलों पर; नन्ि तॊटर्वुऱ्ऱु–खूब लगकर; वॆन्त विरिपुण्–आग लगने से बने बड़े व्रण पर; वीळ्–लगनेवाले; आचु इल्–अचूक; अयिल् वाळि ऍन–तीक्ष्ण शर के समान; वाटै–उदीची (बरसाती) हवा ने; वॆम्मै–गरमी; वीचियतु–दिलायी। ५०३

उदीची हवा अनिंद्य विशाल जघनप्रदेशों से और उत्तम आभरणों से शोभित वियोगिनी स्त्रियों के कपड़ों पर और उनके झूलों पर खूब लगी और आग से बने व्रण में लगनेवाले दोषहीन और तीक्ष्ण भाले के समान उन्हें अपार ताप दे रही थी। ५०३

वेलैनिऱै	वुऱ्ऱन	वॆयिऱ्कदिर्	वॆदुप्पुम्
शीलमळि	वुऱ्ऱपुन	लुऱ्ऱुरुवु	शॆप्पिन्
कालमऱि	वुऱ्ऱुणर्दल्	कन्नलळ	वल्लाल्
मालैपह	लुऱ्ऱदॆन	वोर्वरिदु	मादो 504

वेलै–समुद्र; निऱैवु उऱ्ऱन–भर गये; वॆयिल् कतिर्–सूर्य की किरणें; वॆतुप्पुम् चीलम्–गरमी देने का गुण; अळिवुऱ्ऱ–छोड़ गयीं; पुनल् उऱ्ऱु–जल जिसमें से गिरकर;

उरुवु–निकलता है; चॅप्पिन् कन्नल्–उस नीर के बने समयमापक पात्र के; अळवु–माप से; कालम् अरिवुर्–समय जानकर; उणर्दल् अल्लाल्–समझे बिना; मालै पकल्–शाम, सवेरा; उट्रुतु–आया; ॲन्न ॲार्वु–यह जानना; अरितु–कठिन हो गया; (मातु ओ–पूरक ध्वनियाँ)। ५०४

समुद्र भर गये। सूर्य की किरणों का तापक गुण नष्ट हो गया। समय का ज्ञान उस यन्त्र से ही प्राप्त हो सका, जिसमें जल ऊपर के पात्र से नीचे के पात्र में रंध्रों द्वारा गिरता है। नहीं तो सन्ध्या, दिन आदि काल का बोध होना असाध्य हो गया। ५०४

नॅर्किळिय नॅर्पॊदि निरम्बित्त निरम्बाच्
चॊर्किळिय नर्किळिह डोहैयवर् तूयमित्
पर्किळि मणिप्पडर् तिरैप्परदर् मुन्ट्रिल्
पॊर्किळि विरित्तन शिनैप्पॊदुळु पुन्नै 505

तोकैयवर्–कलापी-सी स्त्रियों की; निरम्पा चॊर्कु–अपूर्ण (अस्पष्ट) बोली (तोतली) के सामने; इळ्िय–हार जाने से; नल् किळिकळ्–सुन्दर तोते; नॅल् किळिय–धान चीरते हुए; नॅल् पॊति निरम्पित–धानों के ढेरों में छिप गये; तूय–(ललनाओं के) शुद्ध; मित् पर्कु–चमकदार दाँतों के सामने; इळि–हारनेवाले; मणि–मोती; पटर् तिरै–फैलनेवाली सागर-लहरों से; परतर् मुन्ट्रिल्–(स्पृष्ट) धीवरों के आँगनों में; चितै पॊतुळ्–पुष्प-बहुल; पुन्नै –'पुन्नै' के तरु; पॊन् किळि–स्वर्ण-बँधे वस्त्र के समान; विरित्तन–लगे। ५०५

शुक जाकर धान की बालियों को तोड़ते हुए उनके बीच जा छिपे। (कवि की उत्प्रेक्षा है कि) वे मयूरसंकाश स्त्रियों की सुमधुर, अस्पष्ट तोतली बोली के सामने हारकर जा छिपे। स्त्रियों के चमकीले दाँतों के सामने जो हारे वे मुक्तागण समुद्रतटप्रदेश के लोगों के आँगनों में, जहाँ समुद्र की तरंगें बहती थीं, ऐसे पड़े दीखे, मानो पुष्प-भरी शाखादार 'पुन्नै' के वृक्षों ने स्वर्णभरी गाँठों को खोलकर बिखेर दिया हो। ५०५

निरङ्गरुहु कङ्गुल्पह नित्रनिलै नीङ्गा
अरङ्गरुदु शिन्दमुनि यन्दणरि तालिप्
पिरङ्गरु नॅडुन्दुळि पडप्पॅयर्विल् कुन्ट्रित्
उरङ्गलिल् विलङ्गलिल नित्रुयर् वेळम् 506

निरम् करुकु–रंग में काली; कङ्कुल्–रात्रि में (और); पकल्–दिन में; नित्रु निलै नीङ्का–अपनी स्थिति से न हटकर; अरम् करुतु चिन्तै–धर्म-चिन्तन-रत मन वाले हो; मुनि अन्तणरित्–(कामादि को) तिरस्कृत करनेवाले मुनियों के समान और; पिरङ्कु–शोभायमान; अरु–अपूर्व; नॅटु आलि तुळि पट–बड़ी-बड़ी जल की बूँदों के लगने से (पर भी); पॅयर्वु इल्–अचल (रहनेवाले); कुन्ट्रित्–पर्वत के समान; उयर् वेळम्–ऊँचे हाथी; उरङ्कल् इल्–बिना सोये; विलङ्कल् इल–हिले बिना; नित्रु–खड़े रहे। ५०६

काली अँधेरी रात में और दिन में भी ऊँचे हाथी अनिद्र और अचल खड़े रहे। तब वे उन मुनियों के समान लगे जो अपने तप में अचल और धर्म पर स्थिरमन रहे, और जिन्होंने कामादि दोषों पर कोप दिखाया था (उनको हटा दिया था)। उनके ऊपर पानी की बूँदें गिर रही थीं। तब भी वे हाथी पर्वतों के समान अचल खड़े रहे। ५०६

शन्दिनडै   घिऱ्पडलै   वेदिहै   तडन्दो
ऱन्दियि   डहिऱ्पुहै   नुऴैन्दकुऴि   रन्नम्
मन्दितुयि   लुऱ्ऱमुऴै   वन्कडु   वनङ्गत्
तिन्दियम   वित्ततनि   योहरि   निरुन्द 507

कुळिर् अन्नम्–शीत (से प्रभावित) हंस; चन्तिन्–चन्दन के (तरु के); अटैयित् पटलै–पत्रों के छाजन के झोंपड़ों में रहनेवाली; वेतिकै–वेदियों पर; तटम् तोऱ–हर होमकुण्ड में; अन्ति इटु–सन्ध्याकालों में डाली गयी; अकिल्–अगरु की लकड़ियों के; पुकै–धुएँ में; नुऴैन्त–(ठण्ड से बचने) घुसे; मन्ति–वानरियाँ; मुऴै–गुफाओं में; वल् कटुवन्–बलवान वानरों की; अङ्कत्तु–गोद में; तुयिलुऱ्ऱ–सोयीं; इन्तियम् अवित्त–(वे वानर) इन्द्रियनिग्रही; तनि योकरिन्–अनुपम योगियों के समान; इरुन्त–(निश्चल) रहे। ५०७

ठण्ड से हंस पीड़ित हुए तो वे चन्दन-पत्रों से आच्छादित ऋषियों के आश्रम के अन्दर गये। वहाँ सन्ध्याकालों में वेदियों पर होम-कुण्डों में अगरु की लकड़ियाँ जलायी जाती थीं। उनके धुएँ में घुसकर हंस घाम का अनुभव करते थे। वानरियाँ पर्वतकन्दराओं में तगड़े वानरों की गोदी में सोयीं। वे वानर भी इन्द्रियनिग्रही और उत्कृष्ट योगियों के समान अचल बैठे रहे। ५०७

आशिल्शुनै   वालरुवि   यायिऴैय   रैम्बाल्
वाशमण   नाऱलिल   वानमणि   वन्गाल्
ऊशल्वऱि   दानविद   णोण्मणिहळ्   विण्मेल
वीशलिल   वानिनॆडु   मारितुळि   वीश 508

वानिन्–आकाश से; नॆट्टुळि–लम्बी धारों की; मारि वीच–बरसात होती रही, इसलिए; आचु इल्–निर्दोष; चुनै–स्रोतें; वाल् अरुवि–(और) उत्तम सरिताएँ; आय् इऴैयर्–चुने हुए आभरणों से भूषित स्त्रियों के; ऐम्पाल् वाचम्–केशों की सुगन्धि से; मणम् नाऱल् इल–गन्ध देनेवाले नहीं; आन–बने; मणि वल् काल्–रत्नयुक्त दृढ़ खम्भों से बँधे; ऊचल्–झूले; वऱितु आन–खाली रहे; इतण्–मचान; ऑळ् मणिकळ्–चमकदार रत्न; विण् मेल्–आकाश में; वीचल् इल–फेंकने (-वालियों) से हीन हुए। ५०८

आकाश से लम्बी धारों में पानी बरस रहा था। इसलिए अनिंद्य स्रोतों और श्रेष्ठ सरिताओं के जल से उत्तम आभरणधारिणी अंगनाओं

के केश का सुवास नहीं आ रहा था (क्योंकि वे उनमें स्नान करने नहीं गयीं)। नवरत्नखचित खम्भों पर झूलनेवाले झूले खाली रहे। मचानों से रत्न आकाश में फेंके नहीं गये (क्योंकि मचान पर बैठकर कोई रखवाली नहीं करता था और पत्थर के स्थान पर रत्न नहीं फेंकता था)। ५०८

करुन्दहैय तण्शिनैय कैदैमडल् कादल्
तरुन्दहैय पोदुहिळै यिऱ्पुडै तयङ्गप्
पॅरुन्दहैय पीऱ्चिऱैयौ डुक्कियिडै पेरा
दिरुन्दकुरु हिन्पॅडैपि रिन्दवर्ह ळॅन्न 509

करु तकैय–काले रंग की; तण् चितैय–शीतल डालों वाले; कैतै–केतकी के; मटल्–फूल; कातल् तरु तकैय–चाह पैदा करने योग्य; पोतु–कलियाँ; किळैयिल्–बन्धुओं के समान; पुटै तयङ्क–चारों ओर आसपास खड़ी रहीं; कुरुकिन् पॅटै–सारसी; पॅरु तकैय–बड़े और सुन्दर; पॊन् चिऱै–आकर्षक पंखों को; ऑटुक्कि–समेटकर; इटै पेरातु–अपने स्थान से न हटकर; पिरिन्तवर्कळ् ऍन्न–वियोगिनियों की तरह; इरुन्त–विद्यमान रहीं। ५०९

सारसियाँ अपने पंखों को बन्द करके अपने-अपने स्थान पर वियोगिनियों की भाँति बैठी हुई थीं। उनके चारों ओर काले और शीतल पत्तों वाले केवड़े के झाड़ों के सुन्दर फूल और मनोहर कलियाँ रिश्तेदारों के समान (उन वियोगिनियों को ढाड़स बँधाती-सी) विद्यमान रहीं। ५०९

पदङ्गमुळ वौत्तविशै पत्तिमिऱु पन्न
विदङ्गळि नडित्तिड विहऱ्पवळि मेवुम्
मदङ्गियरै यौत्तमयिल् वैहुमर मूलत्
तॊदुङ्गिन वुळैक्कुल मळैक्कुल मुळक्क 510

पतङ्कम्–विहंग; मुळवु ऑत्त–मृदंग के समान रहे; पल् तिमिऱु–विविध भ्रमर; इचै–संगीत; पन्न–गाये; मयिल्–मोर; वितङ्कळिन् नटित्तिट–विविध रूप से नृत्य किये जानेवाले; विकऱ्पम् वळि–अनेक नाचों में; मेवुम्–विदग्ध; मतङ्कियरै नर्तकियों; ऑत्त–के समान रहे; मळै कुलम्–मेघकुल के; उळक्क–भीत करने से; उळै कुलम्–हरिणसमूह; वैकुम् मरम्–नाच जहाँ हो रहे थे, उन पेड़ों के; मूलत्तु–तले; ऑतुङ्किन–आ ठहरे। ५१०

विविध जलपक्षी अपनी ध्वनि के कारण मृदंग के समान लगे। विविध भ्रमर संगीत (का-सा नाद) उठा रहे थे। मोर उन नर्तकियों के समान नाच रहे थे, जो अनेक तरह के तालों के लय में होनेवाले विविध नृत्यों में दक्ष थीं। मेघ-गर्जन से भयभीत हुए हिरण-समूह उन पेड़ों के तले जा ठहरे जहाँ ये नृत्य और गान आदि हो रहे थे। ५१०

विळक्कॉळि यहिऱ्पुहै विऴुङ्गमळि मॅल्गॊम्
बिळैक्कुमिडै मङ्गैयरु मैन्दर्हळु मेऱत्
तळत्तहु मलर्त्तविशि कन्दुनहु शन्दिऩ्
तॊळैत्तुयिलु वन्दुतुयिल् वुऱ्ऱहुळिर् तुम्बि 511

मॅल् कॊम्पु–पतली लता भी; इळैक्कुम्–जिसकी उपमा बनने से विछुड़ जाती है; इटै–ऐसी कमरों की; मङ्कैयरुम्–स्त्रियाँ और; मैन्तर्कळुम्–पुरुष; अकिल् पुकै–अगरु का धुआँ; विळक्कु ऑळि–दीपों के प्रकाश को; विऴुङ्कु–जहाँ निगल रहा था; अमळि–उस शय्या पर; एऱ–चढ़े; कुळिर् तुम्पि–शीतल भ्रमर; तळ तकु–त्यागने को मजबूर होकर; मलर् तविचु–फूलों की सेज; इकन्तु–त्यागकर; नकु चन्तिऩ्–सुन्दर रहनेवाले चन्दनतरुओं के; तॊळै–कोटरों में; तुयिल्–सोना; उवन्तु–चाहकर; तुयिल्वुऱ्ऱ–(आये और) सोये। ५११

पतली पुष्पलता से भी अधिक पतली कमर वाली दयिताएँ और उनके नायक पुरुष शय्याओं पर चढ़े। वहाँ अगरु का धुआँ दीप के प्रकाश को निगल रहा था। शीतल ('तुम्पि' जाति के) भ्रमरों को पुष्पशय्या त्यागना पड़ गया। वे चन्दनतरुओं के कोटरों में चाह के साथ जाकर सोये। ५११

तामरै मलर्त्तविशि कन्दुदहै यन्नम्
मामर निरैत्तॊहु पॊदुम्बरुळै बहत्
तेमर तडुक्किद णिडैच्चॅऱ्ऱि कुरम्बैत्
तूमरु वॅयिऱ्ऱिय रॊडन्बर् तुयिल्वुऱ्ऱार् 512

तकै अऩ्ऩम्–उत्तम हंस; तामरै मलर्–कमल-पुष्प का; तविचु इकन्तु–अपना आसन त्यागकर; मा मरत् निरै–बड़े वृक्षों की पंक्तियों से; तॊकु–भरे; पॊतुम्पर् उळै–उपवनों में; वैक–ठहरते हैं और; तेम् मरत् अटुक्कु–सुगन्धपूर्ण लकड़ियाँ चुनकर बने; इतण् इटै चॅऱ्ऱि–मचानों पर बने; कुरम्पै–छोटे-छोटे झोंपड़ों में; तू मरुवु–शुद्ध; ऍयिऱ्ऱियरॊटु–दाँतों वाली किरातिनियों के साथ; अऩ्पर्–उनके प्रेमी; तुयिल्वुऱ्ऱार्–सोये। ५१२

सुन्दर हंस विहंगों ने कमलशय्या त्याग दीं। वे जाकर बागों में रहे जहाँ बड़े-बड़े वृक्ष पंक्तियों में खड़े थे। सुबासपूर्ण काष्ठखण्डों को चुनकर उन ढेरों पर झोंपड़े बनाये गये थे। उन झोंपड़ों में वनप्रदेश-वासी व्याध लोग अपनी पवित्र दाँतों वाली स्त्रियों के साथ सोये। ५१२

वळ्ळिपुडै शुऱ्ऱियुयर् शिऱ्ऱिलै मरन्दो
ऱॅळ्ळरुम ऱिक्कुरुळॊ डण्डर्ह ळिरुन्दार्
कळ्ळरि नॊळित्तुळ नॅडुङ्गळु दॊडुङ्गि
मुळ्ळॅयिऱु तिन्ऱुपशि मूळ्हिड विरुन्द 513

वळ्ळि पुटै चुऱ्ऱि–'वळ्ळि' की लताओं से, चारों ओर से घिरे रहनेवाले; उयर्–

ऊँचे उगे; चिऱ्ऱु इलै–छोटे-छोटे पत्तों के; मरम् तोऱु–पेड़-पेड़ के तले; अॅळ्ळ अरु–अनिंद्य; मऱि कुरुळोटु–पालनयोग्य बाल-बकरियों के साथ; अण्टर्कळ्–गोप लोग; इरुन्तार्–ठहरे रहे; कळ्ळरिन्–चोरों के समान; ऑळितत्तु उऴल्–छिपे-छिपे फिरनेवाले; नॅटु कळुतु–बड़े-बड़े भूत भी; ऑटुङ्कि–शिथिल होकर; मुळ् ऍयिऱु–काँटे-सदृश अपने दाँतों को; तिन्ऱु–खाते हुए; पचि मूळ्किट–भूख में मग्न; इरुन्त–रहे। ५१३

छोटे-छोटे पत्तों के साथ पेड़ खड़े थे। उनके चारों ओर 'वळ्ळी' नाम की लताएँ फैली थीं। उनके तले पालनयोग्य बाल-बकरों की रक्षा करते हुए गोपलोग रहे। चोरों के समान छिपे-छिपे घूमनेवाले भूत और पिशाच कहीं जा नहीं सके। उनको भूख सता रही थी। अतः वे अपने ही दाँतों को खाते हुए रह गये। ५१३

शरम्बयि नॅ़डुनदुळि निमिर्न्दपुयल् शार
उरम्बॅयर् विल्वन्करि करन्दुऱ वॊडुङ्गा
वरम्बह नॅ़डुम्बिरशम् वैहल्पल वैहुम्
मुरम्बिति निरम्बल मुळैञ्जिडै नुळैन्द 514

निमिर्न्त पुयल्–ऊपर रहे मेघों से; चरम् पयिल्–शर-सम बरसनेवाली; नॅटु तुळि–लम्बी धारें; चार–पड़ीं तो; उरम् पॅयर्वु इल्–साहस न खोकर; वल् करि–बलवान हाथी भी; ऑटुङ्का–सिकुड़कर; वरम्पु अकल्–बड़े-बड़े; नॅटु पिरचम्–अनेक छत्ते; पल वैकल्–अनेक दिनों से; वैकुम्–जहाँ रहे, उन; मुरम्पितिल्–टीलों पर; निरम्पल–ठहर नहीं सके; करन्तु उऱ–(बरसात से) बचकर रहने हेतु; मुळैञ्चु इटै–गुफाओं में; नुळैन्त–घुसे। ५१४

उन्नत आकाश में ऊपर रहनेवाले मेघों से शरों के समान पानी की बूँदें गिर रही थीं और वे हाथियों पर ज़ोर से लगीं। हाथी मन में दृढ़ और शरीर में सबल थे। तो भी वे उन उन्नत भू-भागों पर नहीं रह सके, जहाँ बड़े-बड़े शहद के छत्ते अनेक दिनों से थे। वे छिपकर रहने के विचार से चट्टानों के बीच गुफाओं में जा रहे। ५१४

इत्तहैय मारियिडै तुन्नियिरु ळॅय्द
मैत्तहु विळिक्कुऱु नहैच्चनहत् मान्मेल्
उयत्तवुणर् विऱ्ऱित नॅरुप्पिडै युयिर्प्पात्
वित्तह निलक्कुवतै मुत्तितन् विळम्बुम् 515

इत्तकैय मारियिटै–ऐसी वर्षा में; इरुळ् तुन्नि ऍय्त–अन्धकार आ गया, तब; वित्तकन्–विद्यासम्पन्न श्रीराम; मैतकु विळि–अंजन-लगी आँखें; कुऱु नकै–मन्दहास (इनसे युक्त); चनकन् मान् मेल्–जनक-दुहिता, हरिणी-सी जानकी पर; उयत्त–रखे गये; उणर्विल्–(प्रेम के) भाव से; तिनम्–रोज; नॅरुप्पिटै उयिर्प्पान्–

आग-सा गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए; इलक्कुवनै मुन्निनन्—लक्ष्मण को देखकर; विळम्पुम्—बोले। ५१५

बारिश ऐसी थी और सर्वत्र अन्धकार का राज्य हो गया। तब विद्वान् श्रीराम अंजनरंजित सुन्दर आँखों और मृदु-मन्दहास के साथ मनोरम लगनेवाली जनकसुता पर के प्रेम के कारण आग के समान गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए लक्ष्मण से (यों) बोले। ५१५

मळैक्करु मिन्नॅयिऱ् ऱरक्कन् वञ्जनै
इळैप्पॅरुङ् गॊङ्गैयु मॅदिर्वुऱ् ऱिन्नलिन्
उळैत्तन ळुलैन्दुयि रुलक्कु मेलिनिप्
पिळैप्परि दॆन्नक्कुमि दॆन्न पॆऱ्ऱियो 516

करु मळै—काले मेघ-सम और; मिन् ऍयिऱु—बिजली-जैसे दाँत वाले; वञ्चनै—कपट से; इळै पॆरु कॊङ्कैयुम्—भूषणमण्डित पुष्ट स्तनों की सीताजी भी; इन्नलिन् ऍतिर्वुऱ्ऱु—कष्ट का सामना करके; उळैत्तनळ्—दुःखी होकर; उलैन्तु—मुरझाकर; उयिर् उलक्कुमेल्—प्राण छोड़ देंगी तो; ऍनक्कुम्—मेरे लिए भी; ऒन्ऱिनुम् पिळैप्पु अरितु—किसी विध जीना दूभर हो जायगा; इतु ऍन्न पॆऱ्ऱियो—यह भी क्या भाग्य है। ५१६

काले मेघ के समान रंग के और बिजली के समान दाँतों के रावण के कपट-कार्य से आभरणभूषिता पीनस्तनी सीता कष्ट का सामना करते हुए अधिक दुःख के कारण मर जाय, तो मेरे लिए भी जीवित रहने का कोई मार्ग न रहेगा। यह कैसी स्थिति है ? । ५१६

तूनिऱच् चुटुशरन् दूणि तूङ्गिड
वानुऱप् पिऱङ्गिय वयिरत् तोळोडुम्
यानुऱक् कडवदे यिदुवु मिन्निलै
वेनिऱत् तुऱ्ऱदोत् तुळियुम् वीहिलेन् 517

तू—पवित्र; निऱम्—और अच्छे रंग वाले; चुटु चरम्—सन्तापक शर; तूणि—तूणीर में; तूङ्किट—बेकार रहे; वान् उऱ—आकाश छूते हुए; पिऱङ्किय—उन्नत; वयिरम्—सुदृढ़; तोळोटुम्—कन्धों के साथ; यान्—मैं; इतुवुम् उऱ कटवतु ए—यह (दुःख) भी भोगूँ क्या; इ निलै—यह स्थिति; वेल्—भाला; निऱत्तु उऱ्ऱतु ऒत्त—छाती पर लगा, ऐसी है; उळियुम्—तो भी; वीकिलॆन्—नहीं मरा। ५१७

तूणीर में पवित्र, मनोरम रंग वाले और सन्तापक शरों को बेकार पड़े रहने देते हुए अपने आकाश छूते हुए-से ऊँचे बढ़े कन्धों के साथ मैं इस स्थिति में आने अर्ह हूँ क्या ? यह स्थिति, भाला वक्ष में घुस गया-जैसी है। तो भी (क्या आश्चर्य—) मैं मरा नहीं ! । ५१७

तॆरिहणै मलर्हळाऱ् ऱिऱन्द नॆञ्जोडुम्
अरियवन् ऱुयरोडुम् यानुम् वेहुवेन्

ऍरियुमिन् मिन्मिमणि विळक्कि निन्रुणेक्
कुरीइयिनम् बॅडैयॉडुन् दुयिल्व कूट्टिनुळ् 518

कुरीइ इनम्–चिड़ियों का दल; ऍरियुम्–उज्ज्वल; मिन्मिनि–जुगुनू रूपी; मणि विळक्किन्–सुन्दर दीपों के प्रकाश में; इन् तुणै पॅटैयॉटुम्–अच्छी साथिन, मादा चिड़ियों के साथ; कूट्टिनुळ्–अपने घोंसलों में; तुयिल्व–सोते हैं; यानुम्–मैं तो; तॅरि कणै मलर्कळाल्–चुनकर फेंके गये (मन्मथ-) शरों से; तिरन्त–विदीर्ण; नॅञ्चॉटुम्–हृदय के साथ; अरिय–असह्य; वल्–कठोर; तुयरॉटुम्–दुःख के साथ; वैकुवेन्–रह रहा हूँ। ५१८

देखो ! चिड़ियाँ भी अपने घोंसलों में अपनी प्यारी मादा चिड़ियों के साथ सुख से सोती हैं और जुगनू के दीप उन घोंसलों में प्रकाश दे रहे हैं। इधर मैं हूँ जो कामदेव के चुने हुए पुष्पशरों से विदीर्ण हृदय के असह्य और कठोर दुःख के साथ रह रहा हूँ। ५१८

वानह मिन्निनु मळैमु ळङ्गिनुम्, यानह मॅलिहुवे नॅयिऱ्ऱ रावॅनक्
कानहम् पुहुन्दियान् मुडित्त कारियम्, मेनहुङ् गीळ्नहु मिनियॅन् वेण्डुमाल् 519

वान् अकम्–आकाश; मिन्निनुम्–चमकता तो भी; मळै–मेघ; मुळङ्गिनुम्–गरजते तो भी; ऍयिऱ्ऱ अरा ॲन–विषदन्त सर्प के समान; यान्–मैं; अकम् मॅलिकुवेन्–शिथिलमन पड़ जाता हूँ; यान्–मैं; कान् अकम्–जंगल में; पुकुन्तु–प्रवेश करके; मुटित्त कारियम्–जो पूरा किया वह कार्य; मेल् नकुम्–(देखकर) व्योमवासी हँसेंगे; कीळ्–नीचे के लोकवासी भी; नकुम्–हँसेंगे; इनि–अब; ॲन् वेण्टुम्–और (दुर्भाग्य) क्या चाहिए। ५१९

जब आकाश में बिजली चमकती है या वज्र कड़कता है, तो विष-दाँत सर्प के समान दहल उठता हूँ। यही जंगल में आकर मैंने जो किया वह काम है। इसको देखकर ऊपर व्योमवासी हँसेंगे और नीचे भूमिवासी भी हँसेंगे। आगे (मेरे लिए) और क्या चाहिए ? । ५१९

मऱन्दिरुन् दुय्हलॅन् मारि यीदॅनिन्, इऱन्दुविण् शेर्वदु शरद मिप्पळि
पिऱन्दुपिन् ऱीर्वलो पिन्न रन्नदु, तुऱन्दुशॅन् ऱुऱुवलो तुयरिन् वैहुवेन् 520

तुयरिन् वैकुवेन्–दुःखपीड़ित मैं; मऱन्तु इरुन्तु–(सीता को) भूले रहकर; उय्कलॅन्–जीवित नहीं रहूँगा; मारि–वर्षा; ईतु ॲनिन्–ऐसी होगी तो; इऱन्तु–मरकर; विण् चेर्वतु–स्वर्ग पहुँचना; चरतम्–ध्रुव है; इ पळि–यह अपमान; पिऱन्तु–दूसरा जन्म लेकर; पिन्–बाद; तीर्वलो–दूर करूँगा क्या; पिन्नर्–बाद तब; अन्नतु–(अपमान से छूटने की) वह दशा; तुऱन्तु–संन्यासी बनकर; चॅन्ऱु–जाकर; उऱुवलो–पाऊँ क्या। ५२०

दुःखमग्न मैं सीता को भूलकर जीवित रह नहीं सकता। यही वर्षा है (वर्षा यही करती रहेगी), तो मेरा मरकर स्वर्ग जाना ध्रुव है ! फिर यह अपयश फिर एक जन्म लेकर (रावण को परास्त करके) दूर

किया जायेगा ? या दूसरे जन्म में गृहस्थी छोड़ जाकर, संन्यासी बनूँ और इस अपमान को दूर कर पाऊँ ? । ५२०

ईण्डुनिन् ऱरक्करद मिरुक्कै यामिनिक्
काण्डलिऱ् पऱ्पल कालङ् गाण्डुमाल्
वेण्डुव दन्ऱिदु वीर नोय्दॆऱ
माण्डनॆ नॆन्ऱदु माट्चिप् पालदाम् 521

वीर–वीर; याम्–हम; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; इऩि–आगे; अरक्कर् तम् इरुक्कै–राक्षसों का स्थान; काण्टलिल्–ढूँढ़ पाना चाहें तो; पऱ्पल कालम्–अनेक दिन; काण्टुम्–बीतेंगे, देखेंगे; आल्–इसलिए; इतु–यह (खोज); वेण्टुवतु अन्ऱु–नहीं चाहिए; नोय्तॆऱ –(वियोग-) रोग के कष्ट देने से; माण्टनॆऩ् ऍऩ्ऱतु–मर गया, यह; माट्चिप् पालतु आम्–श्रेयस्कर होगा । ५२१

वीर ! हम यहाँ रहकर राक्षस का वासस्थान ढूंढ़ पाना चाहें तो उसमें अनेक दिन लग जायँगे । इसलिए यह खोजने का काम नहीं चाहिए । (वियोग-) रोग के कारण मर जाऊँ, यही श्लाघ्य है, यशदायी काम है । ५२१

शॆंपपुरुक् कनैयविम् मारिच् चीहरम्
वॆप्पुरुप् पुरञ्जुड वॆन्दु वीवदो
अप्पुरुक् कॊण्डवा णॆंडुङ्ग णायिऴै
तुप्पुरुक् कुमुदवा यमुदन् दुय्त्तयान् 522

अप्पु उरु–शर का रूप; कॊण्ट–लेकर रहनेवाली; वाऴ्–प्रकाशमान; नॆटुम् कण्–आयत आँखों वाली; आय् इऴै–चुने हुए आभरणभूषिता सीता के; तुप्पु उरु–प्रवाल-सम; कुमुतम् वाय्–कुमुद-सम अधरों का; अमुतम्–अमृत; तुय्त्त–जिसने पान किया, वह; यान्–मैं; इ मारि चीकरम्–इस वर्षा के सीकरों के; चॆम्पु उरुक्कु अनैय–पिघले ताँबे के समान; वॆप्पु उरुप्पु–गर्मी के साथ; उरम् चुट–हृदय को जलाते; वॆन्तु–जलकर; वीवतो–मर जाऊँ क्या । ५२२

सीता की आँखें शर के रूप की हैं, आयत हैं और उज्ज्वल । उसके आभरण चुने हुए और मनोरम हैं । उसके अधर प्रवाल-सम लाल और कुमुद के समान सुन्दर हैं । उसके अधरों के रस का मैं पान कर चुका हूँ । ऐसा मैं पिघले ताँबे के समान गरमी के साथ गिरनेवाले इन वर्षा के सीकरों के मेरे हृदय को जलाते मन तपकर मर जाऊँ क्या ? । ५२२

नॆय्यडै तीयॆदिर् निऱुवि निऱ्किवळ्, कैयडै यॆन्ऱवच् चन्हन् कट्टुरै
पॊय्यडै याक्किय पॊऱियि लेनॊडु, मॆय्यडै यादिनि विळिद नन्ऱरो 523

नॆय् अटै–घृतवर्धित; ती ऍतिर्–(होम-) अग्नि के सामने; निऱुवि–स्थित कर; निऱ्कु–आपके पास; इवळ्–यह सीता; कैयटै–धरोहर है; ऍऩ्ऱ–ऐसा

(जिन्होंने) कहा; अ चत्तकन्–उन जनक के; कट्टुरै–वचन को; पॉय् अटै–असत्य-मिला; आक्किय–जिसने बनाया; पॉरि इलेन्नॉट्टु–उस अभागे मेरे पास; मॅय्–सत्य; अटैयातु–नहीं ठहरेगा; इत्ति–अब; विळितल् नन्ऱु–मरना अच्छा है। ५२३

राजा जनक ने घृत-लगी होमाग्नि के सामने सीता को स्थित कर मुझसे कहा कि यह आपका धरोहर है! मैंने उनके उस विश्वास के वचन को झूठा बना दिया। मैं बड़ा अभागा हूँ। मेरे पास सत्य नहीं रह सकता। इसलिए मर जाना ही अच्छा है! । ५२३

तेऱ्ऱुवाय् नीयुळै याहत् तेऱ्ऱिनित्
ऱाऱ्ऱुवे नानुळ नाह वाय्बळै
तोऱ्ऱुवा ळल्लळित् तुन्ब मारिनि
माऱ्ऱुवार् तुयर्क्कोरु वरम्बुण् डाहुमो 524

तेऱ्ऱुवाय्–सान्त्वना देनेवाले; नी उळै–तुम हो; आक–ऐसा होने पर, और; तेऱ्ऱि नित्ऱु–आश्वस्त हो; आऱ्ऱुवेन्–दृढ़ रहनेवाला; नान् उळन् आक–मैं रहूँ, तब; आय् वळै–चुने हुए कंकण पहने रहनेवाली सीता; तोऱ्ऱुवाळ् अल्लळ्–इधर आकर प्रकट होनेवाली नहीं; इ तुन्पम्–यह दुःख; इति–अब; आर् माऱ्ऱुवार्–कौन दूर करेगा; तुयर्क्कु–इस दुःख का; ओर् वरम्पु–(एक) ठिकाना; उण्टाकुमो–होगा क्या। ५२४

भाई! तुम मुझे सान्त्वना दो और मैं आश्वस्त होकर रहता रहूँ, तो क्या सीता स्वतः आकर प्रकट होगी? नहीं। वह आनेवाली नहीं है। यह वियोगदुःख दूर करेगा कौन? इस दुःख की कोई सीमा भी है? । ५२४

विट्टपोर् वाळिहळ् विरिञ्जत् विण्णैयुम्
शुट्टपो दिमैयवर् मुदल तॊल्लैयोर्
पट्टपो दुलहमु मुयिरुम् बऱ्ऱऱक्
कट्टपो दल्लदु मयिलैक् काण्डुमो 525

पोर्–युद्ध में; विट्ट–प्रेषित; वाळिकळ्–शर; विरिञ्चत्–ब्रह्मा के; विण्णैयुम्–लोक को भी; चुट्ट पोतु–जला दें; इमैयवर् मुतल–सुर आदि; तॊल्लैयोर् प्राचीन लोग; पट्ट पोतु–मर जायँ; उलकमुम् उयिरुम्–लोकों को और लोकवासियों को; पऱ्ऱु अऱ–निशान मिटाकर; चुट्ट पोतु–जला डालूँ; अल्लतु–नहीं तो; मयिलै काण्कुमो–मयूरनिभ सीता को देख सकूँगा क्या। ५२५

युद्ध हो, मैं शर छोड़ूँ और वे शर ब्रह्मा के सत्यलोक को जला दें; सुर आदि प्राचीन लोग मर जायँ; सभी लोक और लोकवासी नामोनिशान न छोड़कर मिट जायँ—बिना ऐसा हुए मैं अपनी मोर-सी सुन्दरी सीता को देख पाऊँगा क्या? । ५२५

दरुममॆन् ऱॊरुपॊरु ळळ वञ्जियान्, तॆरुमरुहिऱ्पदु शॆऴ्ऴर् देवरो
डॊरुमैयिन् वन्दन रेनु मुय्हलार्, उरुमॆन्न वॊलिपडु मुरवि लोयॆन्ऱान् 526

उरुम् ॲन्न–अशनि के समान; ऑलि पटुम् (ज्या-) स्वन देनेवाला; उरम्–दृढ़; विलोय्–धनु के धारक; यान्–मेरा; तॆरुमरुकिऱ्पतु–भ्रमित रहना; तरुमम् ॲन्नुम् ऑरु पॊरुळ्–धर्म नाम के उस चीज़ को; तळ्ळ–उपेक्षित करने से; अञ्चि–डरकर; चॆऴुनर्–शत्रु; तेवरोटु–देवों के साथ; ऑरुमैयिन्–एकत्र हो; वन्तनर् एनुम्–आयें तो भी; उय्कलार्–बचेंगे नहीं; ॲन्ऱान्–(श्रीराम ने) कहा। ५२६

वज्रघोष-सी टंकार से युक्त धनु के धारण करनेवाले! मैं अब भ्रमित-सा चुप रहता हूँ, क्यों? मालूम है? धर्म नाम का जो मार्ग है, उसका उल्लंघन करने से डरता हूँ। ये शत्रु देवों से मिलकर एकत्र हो आयें तो भी वे बच नहीं पायेंगे। यह निश्चित है! श्रीराम यों बोले। ५२६

इळवलु मुरैशॆय्वा नॆण्णु नाळिन्नि, उळवल कूदिरु मिऱुदि युऱ्ऱदाल्
कळवुशॆय् दवनुऱै काणुङ् गालमी, दळविऱन् दयर्वदॆ नाणै याऴियाय् 527

इळवलुम्–लघुस्वामी ने भी; उरै चॆय्वान्–उत्तर में कहा; आणै आऴियाय्–आज्ञाचक्रधर; ॲण्णुम् नाळ्–निर्धारित (अवधि) दिन; इन्नि उळ अल–अब नहीं रहे; कूतिरुम्–शरत्काल भी; इऱुति उऱ्ऱतु–अन्त हो गया; कळवु चॆय्तवन्–(देवी की) चोरी जिसने की, उसका; उऱै–वासस्थान; काणुम् कालम्–(ढूँढ़) लेने का काल; इतु–यह (आ गया); अळवु इऱन्तु–सीमा पारकर (अत्यधिक); अयर्वतु ॲन्–आयास करना क्यों। ५२७

लघुभ्राता ने भी उत्तर दिया कि आज्ञाचक्रधारी! हमने जो अवधि बनायी थी उसके दिन अब बाकी नहीं रहे। शरत्काल भी व्यतीत हो गया। देवी सीता को जो चुरा ले गया है उसका वासस्थान ढूँढ़ पाने का समय अभी आ गया है। अब आपका अपार दुःख करना क्यों? । ५२७

तिरैशॆयत् तिण्गड लमिऴ्दञ् जॆङ्गणान्
उरैशॆयत् तरिन्नुमत् तॊऴिलु वन्दिलन्
वरैमुदऱ् कलप्पैहण् माडु नाट्टित्तन्
कुरैमलर्त् तडक्कैयार् कडैन्दु कॊण्डनन् 528

तिरै चॆय्–तरंगकारी; अ तिण् कटल्–वह सशक्त (क्षीर-) सागर; अमिऴ्तम्–अमृत को; चॆम् कणान्–अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के; उरै चॆय–(दे दो) कहने पर; तरित्नुम्–दे सकता था, तो भी; अ तॊऴिल्–वह (आज्ञा चलाने का) काम; उवन्तिलन्–न चाहकर; वरै मुतल्–पर्वत आदि; कलप्पैकळ्–उपकरण; माटु नाट्टि–पार्श्व में स्थापित करके; तन्–अपने; कुरै–(आभरणों के कारण) ध्वनि उठानेवाले; मलर्–कमल-सम; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; कटैन्तु–मथकर ही; कॊण्टनन्–(अमृत) पाया (श्रीविष्णुदेव ने)। ५२८

तरंगकारी वह सबल क्षीरसागर अरुणाक्ष श्रीविष्णु के कहने मात्र से

अमृत निकाल दे सकता था। पर श्रीविष्णु ने वैसा प्राप्त करना नहीं चाहा। (वे काल, उपकरण, प्रयास आदि के महत्त्व को स्थापित करना चाहते थे, इसलिए) मन्दरपर्वत आदि उपकरण यथास्थान स्थापित करके उन्होंने आभरणों के कारण ध्वनि निकालनेवाले अपने कमल-सम हस्तों से समुद्र को मथा। तब जाके अमृत ग्रहण किया। ५२८

मऩत्तिऩि नुलहॅलाम् वहुत्तु वाय्प्पॅयुम्
निऩैप्पिऩ ऩायिऩु नेमि योडुवे
ऱॅऩैप्पल पडॅक्कल मेऩ्दि यारैयुम्
विऩैप्पॅरुञ् जूऴ्च्चियिऩ् पॊरुदु वॅल्लुमाल् 529

मनत्तितिन्–मन (के संकल्प मात्र) से; **उलकु ॲलाम्**–सारे लोकों को; **वकुत्तु**–बनाकर; **वाय् पॅयुम्**–अपने मुख में डाल सकनेवाले; **नितैप्पितन्**–संकल्प-शक्ति के हों तो भी; **नेमियोटु**–चक्र के साथ; **वेरु**–अन्य; **ॲतै**–कितने ही; **पल नॅटम् पटॅक्कलम्**–अनेक हथियार; **एन्ति**–धारण करके; **यारैयुम्**–(दुष्कृत) सभी को; **वित**–युद्धोचित; **पॅरुम् चूऴ्च्चियिन्**–गम्भीर उपायों द्वारा; **पॊरुतु**–सामना करके; **वॅल्लुम्**–जीतते हैं। ५२९

और भी वे विष्णुदेव सारे लोकों की सृष्टि करके फिर उन्हें निगल लेने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह उनके संकल्प मात्र से हो सकता है। तो भी वे अपना चक्रायुध और अन्य कितने ही हथियारों का प्रयोग करके, और अनेक युद्धतंत्रों को अपनाकर किसी भी शत्रु का संहार करते हैं। ५२९

कण्णुडै नुदलिऩऩ् कणिच्चि वाऩवऩ्, विण्णिडैप् पुरञ्जुड वॅहुण्ड मेलैनाळ्
ॲण्णिय शूऴ्च्चियु मीट्टिक् कॊण्डवुम्, अण्णले यॊरुवरा लऱैयर् पालवो 530

अण्णले–महिमायुक्त; **कण् उटै नुतलितन्**–भाल-नेत्र (शिवजी); **कणिच्चि वातवन्**–परशु शस्त्रधर; **विण् इटै**–आकाश में; **पुरम् चुट**–त्रिपुर जलाने हेतु; **वॅकुण्ट**–कुपित हुए, तब; **मेलै नाळ्**–उस पहले के दिन; **ॲण्णिय चूऴ्च्चियुम्**–जो सोचे वे उपाय; **ईट्टि**–संग्रह कर; **कॊण्टवुम्**–जो लिये (वे उपकरण); **ऒरुवराल् अऱैयर् पालवो**–किसी से वर्णित हो सकते हैं क्या। ५३०

महिमावान! भालनेत्र परशुधर शिवजी की बात लीजिए। त्रिपुर-दहन के लिए उन्होंने संकल्प किया। उन्हें क्रोध आया। तब क्या-क्या उपाय किये, क्या-क्या हथियारों को जुटा लिया—यह सब वर्ण्य हो सकता है क्या? । ५३०

आहुनर् यारैयुन् दुणैव राक्किप्पिऩ्, एहुऱु नाळिडै यॅय्दि यॅण्णुव
शेहुऱप् पऩ्मुऱै तॅरुट्टिच् चॅय्दपिऩ्, वाहैयॅऩ् ऱॊरुपॊरुळ् वळुवर् पालदो 531

आकुतर् यारैयुम्–(सहायक) बननेवाले सभी को; **तुणॅवर आक्कि**–साथी बना लेकर; **ॲण्णुव**–विचारणीय; **चेकु उऱ**–दृढ़ रूप से; **पल मुऱै तॅरुट्टि**–अनेक बार

स्पष्ट करके; पिन्–बाद; एकुरु–जाने के; नाळ् इटै–दिन में; ऍय्ति–जाकर; चॅय्त पिन्–(कार्य) करने के उपरान्त; वाकै–विजय; ऍन्र् ओरु पॉरुळ्–नामक एक विषय; वळुवल् पालवो–चूक जा सकेगा क्या। ५३१

सहायकों को एकत्र कर लेना, विचारणीय बातों पर ध्यान देकर, बार-बार सोचना, बाद निश्चय पर आना, गमन के योग्य समय पर जाना, कार्यस्थल पर पहुँचना —इस रीति से काम होने पर विजय नामक चीज़ बच सकेगी क्या ? । ५३१

अऱत्तुऱै तिऱम्बिन राक्क राऱ्ऱलान्
मऱत्तुऱै नमक्कॅन वलिक्कुम् वन्मैयोर्
तिऱत्तुऱै नन्नॅऱि तिऱम्ब लुण्डॅनिन्
पुऱत्तिनि यार्तिऱम् बुहऴुम् वाहैयुम् 532

अऱम् तुऱै–धर्म-मार्ग; तिऱम्पितर्–जो छोड़ गये, वे; अरक्कर्–राक्षस; आऱ्ऱलान्–(शरीर, वर और सेना के) बल से; मऱम् तुऱै–पाप-मार्ग; नमक्कु ऍन–हमारा, ऐसा; वलिक्कुम्–सोचनेवाले; वन्मैयोर्–कठोरमन हैं; तिऱम् तुऱै–उत्तम रीति के; नल् नॅऱि–सन्मार्ग से; तिऱम्पल् उण्टु–डिग जायँगे; ऍनिन्–तो; पुऱत्तु इति–फिर अब; पुकऴुम् वाकैयुम्–कीर्ति और विजय; यार् तिऱम्–किसके पास होगी। ५३२

धर्ममार्गातिक्रमी हैं राक्षस लोग। वे शरीर, वर और सेना के बल पर विश्वास रखते हैं और उनका मन पाप-मार्ग को अपना समझने की कठोरता रखता है ! वे उत्तम रीति के सन्मार्ग से हटकर व्यवहार करते हैं। फिर जीत और कीर्ति कहाँ जा सकेगी ? आपको छोड़कर उनकी हो सकती है क्या ? । ५३२

पॅन्दॉडिक् किडर्हळै परुवम् पैयवे, वन्दडुत् तुळदिनि वरुत्त नीङ्गुवाय्
अन्दणर्क् कामऱ मरक्कर्क् काहुमो, सुन्दरत् तनुवलाय् शॉल्लु नीयॅन्ऱान् 533

पॅन्तॉटिक्कु–कुन्दन-भूषण-अलंकृत सीताजी के; इटर् कळै–दुःख-निवारण का; परुवम्–काल; पैयवे वन्तु–धीरे आकर; अटुत्तु उळतु–पास पहुँचा है; इनि–अब; वरुत्तम्–दुःख; नीङ्कुवाय्–छोड़ दें; अऱम्–धर्म; अन्तणर्क्कु आम्–दयावानों का होगा; अरक्कर्क्कु–(नृशंस) राक्षसों का; आकुमो–होगा क्या; चुन्तरम्–सुन्दर; तनु वलाय्–धनु-समर्थ; नी चॉल्लु–आप कहिए; ऍन्ऱान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ५३३

कुन्दन-निर्मित आभरण-भूषित सीतादेवी के कष्टों को दूर करने का समय अब धीरे-धीरे आकर पास पहुँच गया है। अब आप दुःख छोड़ दें। धर्म-मार्ग दयावानों का है। नृशंस राक्षसों का हो सकता है क्या ? हे सुन्दर धनुर्विद्याविशारद ! आप ही कहें। —लक्ष्मण यों बोले। ५३३

उऱुदिय:(ह्) देयॆऩ वुणर्न्द वूऴियाऩ्
इऱुदियुण् डॆहॊलिम् मारिक् कॆऩ्बदोर्
तॆऱुतुय रुऴऩ्दऩऩ् ऱेयत् तेय्वुशॆऩ्
ऱऱुदियै यडैन्ददप् परुव माण्डुपोय् 534

अ.ं.तु उऱुतिये–(उनका कहा) वह हितकारी है; ॲऩ–ऐसा; उणर्न्त–जो समझे, वे; ऊऴियाऩ्–युगपति (जब); इ मारिक्कु–इस वर्षा का; इऱुति उण्टु कॊल्–अन्त होगा क्या; ॲऩ्पतु–ऐसा, सोचकर; ओर् तॆऱु तुयर्–एक गहन दुःख से; उऴऩ्तऩऩ्–पीड़ित होकर; तेय–कृश हुए (तब); अ परुवम्–वह वर्षाकाल; आण्टु–अपना शासन पूरा करके; पोय्–जाकर; तेय्वु चॆऩ्ऱु–क्षीण होता हुआ; अऱुतियै अटैन्ततु–अन्त को प्राप्त हुआ। ५३४

श्रीराम ने अपने छोटे भाई के वचन सुने और माना कि उनके वचन हितकारी हैं। वे यह सोचकर दुःखी थे कि क्या इस वर्षा का अन्त भी कहीं होगा और उसी चिन्ता में घुलकर कृश हो रहे थे। अब वह काल अपना अधिकार चलाने के बाद धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और अन्त को मिल गया। ५३४

मऴ्हलिल् पॆरुङ्गॊडै मरुवि मण्णुळोर्, उऴ्हिय पॊरुळॆला मुदवि यऱ्ऱपो
दॆऴ्हलि लिरवलर्क् कीव दिऩ्मैयाल्, वॆऴ्हिय माऩ्दरिऩ् वॆळुत्त मेहमे 535

मऴ्कल् इल्–अक्षय; पॆरु कॊटै–बड़ी दानशीलता; मरुवि–जन्म से लेकर; मण् उळोर्–पृथ्वीलोकवासी; उऴ्किय–जो चाहते थे; पॊरुळ् ॲलाम्–पदार्थ सब; उतवि–देकर; अऱ्ऱ पोतु–धनहीन हो जाने पर; ॲऴ्कल् इल्–अनुपेक्षणीय; इरवलर्क्कु–याचकों को; ईवतु इऩ्मैयाल्–देने को न रहने के कारण; वॆऴ्किय–लाज का अनुभव करनेवाले; माऩ्तरिऩ्–(दानी) मनुष्यों के समान; मेकम्–मेघ; वॆळुत्त–श्वेत बन गये। ५३५

तब मेघ श्वेत हो गये। वे उन दानशील उदार पुरुषों के समान श्वेत हो गये, जो जन्मजात अक्षय दानशीलता के कारण अपने सारे धन पृथ्वीवासी सभी याचकों को उनकी इच्छानुसार देने के बाद अब अनुपेक्षणीय याचक को देने के लिए कुछ न रहने के कारण लज्जायुक्त हो गये हों। ५३५

तीविऩै नल्विऩै यॆऩ्ऩत् तेऱियप्, पेय्विऩैप् पॊरुडऩै यऱिन्दु पॆऱ्ऱदोर्
आय्विऩै मॆय्युणर् वणुह वाशुऱु, मायैयिऩ् माय्न्ददु मारिप् पेरिरुळ् 536

तीविऩै–पापकृत्य; नल्विऩै–पुण्यकार्य; ॲऩ्ऩ तेऱि–क्या, यह सोच-विचारकर; पेय् विऩै–उस पिशाचकृत्यप्रेरक; पॊरुळ् तऩै–धन को; अऱिन्तु–पहचानकर; पॆऱ्ऱु–प्राप्त; ओर्–अनुपम; आय्विऩै–विवेकशील; मॆय् उणर्वु–तत्त्वदर्शन; अणुक–आ जाने पर; आचु उऱु–दोषपूर्ण; मायैयिऩ्–माया (अविद्या) की तरह; मारि पेर् इरुळ्–मेघों के कारण उत्पन्न बड़ा अन्धकार; माय्न्ततु–मिट गया। ५३६

शरत्काल के आते ही मेघाच्छादन से बना रहा अन्धकार हट गया। वह वैसे हट ही गया, जैसे विवेकशील तत्त्वज्ञान के आने पर दोषपूर्ण मायाजन्य अविद्या हट जाती है। यह तत्त्वज्ञान कैसा? पाप-पुण्य की विवेचना करके, शुद्धमन होने पर पापकारी धन का स्वभाव मालूम हो जाता है। उसके फलस्वरूप यह तत्त्वज्ञान प्राप्त होता है!। ५३६

मूळमर् मुऱ्ऱुऱ मुरश विन्दबोल्, कोळमै कणमुहिल् कुमुऱ लोविन
नीळडु कणैयेनत् तुळियु नीङ्गिन, वाळुरै युऱ्ऱॅन मऱैन्द मिन्नॅलाम् 537

मूळ् अमर्–छिड़ा हुआ युद्ध; मुऱ्ऱु उऱ–समाप्त होने पर; मुरचु–भेरियाँ; अविन्त पोल्–बन्द हुई जैसे; कोळ् अमै–सबल; कणम् मुकिल्–मेघगण; कुमुऱल् ओवित–गर्जन-रहित हो गये; नीळ्–लम्बे; अटु–संहारक; कणै ॲन–शरों के समान; तुळियुम्–बूँदें भी; नीङ्कित–गिरने से रह गयीं; वाळ्–तलवारें; उऱै–म्यान में; उऱ्ऱु ॲन–चली गयीं, जैसे; मिन् ॲलाम्–सभी बिजलियाँ; मऱैन्त–छिप गयीं। ५३७

परस्पर वैर के कारण युद्ध छिड़ जाता है। जब युद्ध बन्द हो जाता है तब भेरियों का बजना भी बन्द हो जाता है और भेरियाँ चुप्पी साध लेती हैं न! वैसे ही सशक्त मेघ गर्जनहीन हो गये। बूँदें, जो लम्बे संहारक शरों के समान गिरती थीं, रुक गयीं। तलवारें म्यानों में छिप जाती हैं न! वैसे ही बिजलियाँ भी अदृश्य हो गयीं। ५३७

तडुत्तदा णॅडुन्दडङ् गिरिह डाळ्वरै, अडुत्तनी रॊळिन्दन वरुवि तुङ्गिन
ॲडुत्तनू लुत्तरि यत्तॊ डॅय्दिनिन्, ऱुडुत्तवा निऱत्तुहि लॊळिन्द पोन्ऱवे 538

तटुत्त–मार्गरोधक; ताळ्–पाद-प्रदेश वाले; नॆटु तट किरिकळ्–ऊँचे और चौड़े पर्वतों की; ताळ्वरै–तराइयों में; अटुत्त–रहा; नीर्–जल; ऒळिन्तन–सूख गये; अरुवि–सरिताएँ; तुङ्कित–वहीं; ॲटुत्त–धृत; नूल् उत्तरियत्तॊटु–सूती उत्तरीय के साथ; ॲय्ति निन्ऱु–युक्त रहकर; उटुत्त–पहने हुए; वाल् निऱम् तुकिल्–श्वेत रंग के (अधो-)वस्त्र से; ऒळिन्त–रहित हुए; पोन्ऱ–जैसे रहे। ५३८

उन्नत और विशाल पर्वतों की तराइयों में जमा रहा जल बह गया। पर ऊपर से बहनेवाली सरिताओं में जल था। तब ऐसा लगता था मानो पर्वत के श्वेत अधोवस्त्र हट गये और वे श्वेत कपास के उत्तरीयों के साथ खड़े थे। ५३८

मेहमा मलैहळिन् पुऱत्तु वीदलान्, माहमा ऱियावैयुम् वारि यऱ्ऱन
आहैयाऱ् ऱहविळन् दळिवि तन्बीरुळ्, पोहवा ऱॊळुहलान् शॆल्वम् बोन्ऱवे 539

माकम् याऱु–ऊपर बहनेवाली नदियाँ; यावैयुम्–सभी; मेकम्–मेघों के; मा मलैकळिन् पुऱत्तु–बड़े पर्वतों के ऊपर से; वीतलाल्–हट जाने से; वारि अऱ्ऱन–

जलहीन हो गयीं; आकैयाल्-इसलिए; तकवु इळन्तु-योग्यता खोकर; अळिवु इल्-अमोघ; नल् पॉरुळ्-शुभकारी (पुण्य-) तत्त्व; पोक-रिक्त हो जाने से; आऱु ऑऴुकलान्-सन्मार्ग पर न चलनेवाले का; चॅल्वम्-धन (जो मिट जायगा); पोऩ्ऱ-उसके समान थीं। ५३९

मेघ छँट गये और पर्वत के ऊपरी भाग में बहनेवाली नदियाँ जलहीन हो रहीं। कोई आदमी कुमार्गगामी है, तब योग्य और अमोघ स्वभाव का पुण्य क्षीण हो जाता है और फलस्वरूप धन भी चला जाता है। उन नदियों का जल भी उसी तरह शून्य हो गया। ५३९

कडन्दिऱन् दॅऴुहळि ऱतैय कार्मुहिल्
इडन्दुऱन् देहलिऱ् पॉलिन्द दिन्दुवुम्
नडन्दिऱ नविल्वुऱु नङ्गै मार्मुहम्
पडन्दिऱन् दुरुवलिऱ् पॉलियुम् पान्मैपोल् 540

कटम्-मदनीर; तिऱन्तु ऍऴु-अत्यधिक खुलकर जिन पर बहता है; कळिऱु अतैय-उन हाथियों के समान; कार् मुकिल्-काले मेघ; इटम् तुऱन्तु-आकाश स्थल छोड़कर; एकलिन्-चले (जाने से); इन्तुवुम्-इन्दु भी; पटम् तिऱन्तु-पट खोलते हुए; उरुवलिन्-हटाने पर; तिऱम् नटन्-कलापूर्ण नृत्य; नविल्वुऱु-करनेवाली; नङ्कैमार्-नर्तकी स्त्रियों के; मुकम्-मुखों के; पॉलियुम् पान्मै पोल्-शोभने के प्रकार के समान; पॉलिन्ततु-शोभा। ५४०

काले मेघ अत्यधिक मद बहानेवाले गजों के समान थे। वे आकाश को छोड़कर चले गये। तब इन्दु उदित हुआ। पर्दे के खुलने पर चतुर नर्तकियों का मनोरम मुख जैसे शोभायमान दिखता है, वैसे ही वह इन्दु शोभायमान लगा। ५४०

पाशिऴै मडन्दैयर् पहट्टु वॅम्मुलै, पूशिय शन्दनम् पुऴुहु कुङ्गुमम्
मूशिन मुयङ्गुशे ऱुलर मॉण्डुऱ, वीशिय नऱुम्बॊडि विण्डु वाडैये 541

पाचिऴै मटन्तैयर्-कुन्दन के बने आभरणों से भूषित स्त्रियों के; पकटु वॅम् मुलै-(हाथी के) कुम्भों-सम आकर्षक स्तनों पर; पूचिय-चर्चित; चन्ततम्-चन्दन का लेप और; पुऴुकु-कस्तूरी का लेप; कुङ्कुमम्-केसर का लेप; मूचित-इनके मिश्रण से; मुयङ्कु चेऱु-प्रणयोत्तेजन के लिए (वक्ष व स्तनों पर अंकित) चित्र का लेप; उलर-सुखाते हुए; विण्टु वाटै-पर्वतीय पवन; नऱुम् पॊटि-सुगन्धित मकरन्द; मॉण्टु-लेकर; उऱ-खूब; वीचिय-बहा। ५४१

अब पर्वतों पर से बहनेवाली जाड़े की हवा सुबासित मकरन्दकण को ले आकर स्त्रियों पर लीप देती थी। अतः उनके स्तनों और वक्षों पर जो चन्दन, कुंकुम और कस्तूरी का लेप लगा हुआ था, वह सूख गया। ५४१

मन्नवन् ऱलैमहन् वरुत्त मार्ऱुवान्
नन्नॅडुम् बरुवम्वन् दणहिऱ् ऱाहलाल्

पॊऩ्ऩिऩै नाडिय पोदु मॆऩ्बपोल्
अऩ्ऩमुऩ् दिशैदिशै यहऩ्ऱ विण्णिऩ्वाय् 542

मऩ्ऩवऩ्–चक्रवर्ती (दशरथ) के; तलै मकऩ्–ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के; वरुत्तम् माऱ्ऱुवाऩ्–दुःख को दूर करने के लिए; नल् नॆट्टु–अच्छा और लम्बा; परुवम्–काल; वन्तु अणुकिऱ्ऱु–आकर नियराया; आकलाल्–इसलिए; पॊऩ्ऩित्तै–देवी को; नाटिय–खोजते; पोतुम्–हम जायँ; ऎऩ्प पोल्–कहते जैसे; अऩ्ऩमुम्–हंस भी; विण्णिऩ् वाय्–आकाश में; तिचै तिचै–दिशा-दिशा में; अकऩ्ऱ–दूर-दूर (उड़ते) गये। ५४२

हंस पंक्तियाँ बाँधे आकाश में दिशा-दिशा में उड़ रहे थे। 'चक्रवर्ती दशरथ के श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम का दुःख दूर करने का दीर्घ रूप से अच्छा रहनेवाला काल आ गया है। अब हम भी जाकर स्वर्णसुन्दरी सीता को खोजें' —हंस शायद यही सोचकर उड़ रहे थे! । ५४२

तञ्जिऱै यॊडुङ्गिऩ तऴुवु मिऩ्ऩलिऩ्, नॆञ्जुऱु मम्मरुम् निऩैप्पु नोडिऩ
मञ्जुऱु नॆडुमऴै पिरिद लाऩ्मयिल्, अञ्जिऩ मिदिलैनाट् टऩ्ऩ मॆऩ्ऩवे 543

मयिल्–मोर; मञ्चु उऱु–मेघों की; नॆटु मऴै–अधिक वर्षा; पिरितलाऩ्–रुक गयी, इसलिए; तम् चिऱै ऒटुङ्कित–वन्द किये हुए पंख वाले हो गये; तऴुवुम् इऩ्ऩलिऩ्–लगे दुःख के कारण; नॆञ्चु उऱु–मन में उठे; मम्मरुम्–भ्रम; निऩैप्पुम्–सोच; नीटित–बढ़े; मितिलै नाट्टु अऩ्ऩम् ऎऩ्ऩ–मिथिला की हंसिनी (सीता) के समान; अञ्चित–क्षीण-आनन्द हुए। ५४३

मेघ लुप्त हो गये और वर्षा रुक गयी। इसलिए मोरों ने अपने पंखों को समेट लिया। उनके मन में दुःख भर गया और भ्रम तथा धूमिल विचारों ने घर कर लिया। मिथिला में जनित, मोर (समान सीताजी) के समान वे सन्तोषहीन हो रहे। ५४३

वञ्जऩैत् तीविऩै मऱन्द मादवर्
नॆञ्जॆऩत् तॆळिन्दनीर् निरन्दु तोऩ्ऱुव
पञ्जॆऩच् चिवक्कुमॆऩ् पादप् पेदैयर्
अञ्जऩक् कण्णॆऩप् पिऱऴ्न्द वाडऩ्मीऩ् 544

वञ्चऩै तीविऩै–वंचक कार्योद्दीपक पाप-कर्म; मऱन्त मातवर्–जिन्हें मालूम ही नहीं था, उन महान तपस्वियों के; नॆञ्चु ऎऩ–मन के समान; निरन्तु तोऩ्ऱुव–फैला पड़ा था; तॆळिन्त नीर्–स्वच्छ जल; आटल् मीऩ्–(उसमें) क्रीड़ा करनेवाली मछलियाँ; पञ्चु ऎऩ–लाल रुई कहने भर से; चिवक्कुम्–लाल होनेवाले; मॆल् पातम्–कोमल चरणों की; पेतैयर्–स्त्रियों की; अञ्चऩम् कण् ऎऩ–अंजन-लगी आँखों के समान; पिऱऴ्न्त–चलित थीं। ५४४

सब जगह जल वंचना और पाप न जाननेवाले श्रेष्ठ तपोधनों के मन के समान शुद्ध स्वच्छ हो गया। उसमें मछलियाँ उन स्त्रियों की आँखों

के समान चलित थीं, जिनके पैर महावर का नाम लेते ही लाल हो जाते हैं (लाक्षारस लगाने की आवश्यकता ही नहीं होती थी)। ५४४

ऊडिय मडन्दैयर् वदन मॉत्तन, ताडॉरु मलर्न्दन मुदिर्न्द तामरै
कूडिनर् तुवरिदळ्क् कोलङ् गॉण्डन, शेडुरु नरुमुहै विरिन्द शॅङ्गिडै 545

ताळ् तॉरुम्–नाल-नाल पर; मलर्न्तन–जो खिले थे; मुतिर्न्त—वर्धित; तामरै–कमल के फूल; ऊटिय–रूठी हुई; मटन्तैयर्–स्त्रियों के; वतनम् ऑत्तन–मुखों के समान थे; चेटु उरु–ऊँची उगी; नरु मुकै विरिन्त–सुवासित कलियाँ जिन पर खिली थीं; चॅम् किटै–वे लाल "किटै" (खुखरी ?) नाम की जल-लताएँ; कूटिनर्–प्रिय के साथ मिली हुई स्त्रियों के; तुवर् इतळ्–लाल अधरों की; कोलम् कॉण्टन–सुन्दरता से युक्त हो गयीं। ५४५

नाल-नाल पर कमल पूर्णता को प्राप्त होकर रूठी हुई स्त्रियों के मुखों के समान एक ओर झुक गये। लाल 'किटै' (खुखरी ?) नाम की लता, जिसमें सुवासित कलियाँ ऊपर खिल आयी थीं, स्त्रियों के लाल अधरों का-सा रूप दिखाने लगी। ५४५

कल्वियिऱ् ऱिहळ्हणक् कायर् कम्बलै
पल्विदच् चिऱाअरॅऩप् पहर्व वल्लरि
शॅल्लिडत् तल्लदॊन् ऱुरैत्तल् शॅय्हला
नल्लऱि वाळरि नविन्द नावॅलाम् 546

कल्वियिल् तिकळ्–विद्या के कारण प्रसिद्ध; कणक्कायर्–पाठशाला के अध्यापक के अधीन; कम्पलै–उच्च शोर के साथ सीखनेवाले; पल्वितच् चिऱार् ॲंत–अनेक तरह के बालकों के समान; पकर्व–जो बोल (टेर) लगा रहे थे; वल् अरि यावुम्–जोरदार मेंढक सब; चॅल् इटत्तु अल्लतु–जहाँ बात मानी जाय, उस स्थान को छोड़कर अन्यत्र; ऑन्ऱु–कोई बात; उरैत्तल् चॅय्या–न कहनेवाले; नल् अऱिवाळरिन्–चतुर विद्वानों के समान; ना अविन्त–मौन (-जिह्वा) हो गये। ५४६

पहले मेंढक अध्यापक के सामने उच्च स्वर में पाठ दुहरानेवाले बटुओं के समान टेर लगा रहे थे। अब वे उन विद्वानों के समान मौन-जिह्वा हो गये, जो अनुपयुक्त तथा सम्मानहीन स्थलों में कोई बात नहीं करते। ५४६

शॅऱिपुनऱ् पून्दुहि ऱिरैक्कै याऱ्ऱिरैत्
तुरुदहक् कान्मडुत् तोडि यॉवनोर्
ॲरुळ्वलिक् कणवनै यॅय्दि याऱॅलाम्
मुरुवलिक् कित्ऱन पोन्ऱ मुत्तॅलाम् 547

मुत्तु ॲलाम्–मोती सभी; चॅऱि पुतल्–घने जल रूपी; पू तुकिल्–सुन्दर वस्त्रधारिणी; याऱु ॲलाम्–सभी नदियाँ; तिरै कैयाल्–तरंग रूपी हाथों से;

तिरैत्तु–समेटकर; उरु तक–कसकर; काल् मटुत्तु–पैरों से लपेटकर; ओटि–दौड़कर; ओतम् नीर्–सरितापति रूपी; अॅऴुवलि–अतिवली; कणवर्त अॅय्ति–पति को मिलकर; मुरुवलिक्किन्ऱन–हँसती हों; पोन्ऱ–ऐसे लगे। ५४७

जल का स्वच्छ वस्त्र पहने हुए नदियाँ जो बह रही थीं, वे लहरों रूपी हाथों को उठाते हुए, नालों से होकर, सवेग बहीं और सरितापति, अपने पति का आलिंगन करके बहुत आनन्दित हुई। उनकी हँसी के समान मोती चमकते थे। (काल में श्लेष है— पैर या चरण और नाला। स्त्रियाँ पैरों पर चलती हैं और नदियाँ नालों के रूप में बहती हैं।) । ५४७

शॊन्निऱै केळ्वियिऱ् ऱॊडर्न्द मान्दरिन्
इन्निऱप् पशलैयुऱ् ऱिरुन्द मादरिन्
तन्निऱम् बयप्पय नीङ्गित् तळ्ळरुम्
पॊन्निऱम् बॊरुन्दिन पूहत् तारॆलाम् 548

पूकम् तारु–पूग-गुच्छे; अॅलाम्–सभी; चॊल् निऱै–बहुप्रशंसित; केळ्वियिन्–शास्त्र-श्रवण के लिए; तॊटर्न्त–यात्रा पर निकले; मान्तरिन्–पुरुषों (के वियोग) से; इन् निऱम् पचलै–मनोरम हरे रंग को; उऱ्ऱिरुन्त–प्राप्त; मातरिन्–स्त्रियों के समान; तम् निऱम्–अपना हरा रंग; पयप्पय–धीरे-धीरे; नीङ्कि–खोकर; तळ्ळ अरुम्–अनिंद्य; पॊन्निऱम्–स्वर्ण के-से रंग से; पॊरुन्तिन–युक्त हुए। ५४८

पूग के गुच्छे अपना (हरा) रंग खोकर स्वर्ण-वर्ण हो गये। जब प्रेमी श्रेष्ठ गुरु से श्रवणज्ञानार्जन हेतु चला जाता है, तब उसकी वियोगिनी के शरीर में एक तरह का हरा रंग फैल जाता है। पूग के गुच्छों का रंग पहले वैसा (हरा) था। पीछे वह रंग बदल जाता है। ५४८

पयिन्ऱुडल् कुळिर्प्पवुम् बळ्ळ नीत्तवण्
इयन्ऱिल विळवॆयि लॆळुदु मॆय्यन
वयिन्ऱॊरुम् वयिन्ऱॊरु मडित्त वायन
तुयिन्ऱन विडङ्गर्मात् तडङ्ग डोरुमे 549

इटङ्कर् मा–मगर प्राणी; पयिन्ऱु–(जल में अधिक काल से) पड़े रहने के कारण; उटल् कुळिर्प्पवुम्–शरीर के ठण्डा होने से; अवण् इयन्ऱिल–गहरे स्थानों में न रहकर; पळ्ळम् नीत्तु–तडागों को छोड़कर; इळ वॆयिल्–बालसूर्य-किरणों से; अॅळुतुम् मॆय्यन–लिप्त-शरीरी होकर; तटङ्कळ् तोरुम्–तडागों के तटों पर; वयिन् तोरुम् वयिन् तोरुम्–स्थान-स्थान पर; मटित्त वायन–मुख बन्द कर; तुयिन्ऱन–सोये। ५४९

मगरों का शरीर अधिक गहरे जल में बहुत दिन पड़े रहने से ठण्डा हो गया। इसलिए वे तीरों पर यत्र-तत्र मुख बन्द किये सोते हुए दिखाई दिये और उनके शरीरों पर धूप पड़ रही थी। ५४९

कॊञ्जुरुङ् गिळिनॆडुङ् गुदलै कूडिन, अञ्जिऱै यऱुपद वळह वोळिय
ऎञ्जलिल् कुळैयन विडैनु डङ्गुव, वञ्जिहळ् पॊलिन्दन महळिर् मानवे 550

वञ्चिकळ्–'वञ्जि' नाम की लताएँ; कॊञ्चुरुम् किळि–तुतलानेवाले शुकों के; नॆटु कुतलै–दीर्घ बोलों से; कूटिन–युक्त होकर; अम् चिऱै–मनोरम पंखों के; अरु पतम् अळकम्–षट्पदों के रूप में केश की; ओळिय–पंक्तियों के साथ रहतीं; ऎञ्चल् इल्–अक्षय; कुळैयन–पत्रों सहित (आभरणों सहित); इटै नुटङ्कुव–मध्य में लचकती; मकळिर् मान–स्त्रियों के समान; पॊलिन्तन–शोभीं। ५५०

('वंजी' लताओं और स्त्रियों में श्लेष है।) 'वंजी' लताओं पर शुक बैठकर मधुर बोली में बोल रहे थे। भ्रमर पंक्तियों में लगे बैठे थे। वे ही केश थे। लता पर बहुत पत्ते थे और स्त्रियों पर बहुत आभरण पाये जाते हैं। ('कुळै' के 'छोटे पत्ते' और 'आभरण' दोनों अर्थ हैं।) लताएँ लचकीली थीं। स्त्रियों की कमरें लचकीली होती हैं। (अतः) वे लताएँ स्त्रियों के समान थीं। ५५०

मळैपडप् पॊदुळिय मरुदत् तामरै
तळैपडप् पेरिलैप् पुरैयिऱ् ऱङ्गुव
विळैपडप् पॆडैयॊडु मॆळ्ळ नळ्ळिहळ्
पुळैयडैत् तॊडुङ्गिन पॊच्चै माक्कळ्बोल् 551

मळै पट–बारिश के कारण; पॊतुळिय–पनपे; मरुतम् तामरै–'मरुद' प्रदेश के कमल की लताएँ; तळै पट–पत्रों से युक्त हुईं; पेर् इलैयिल्–उनके बड़े पत्तों के; पुरैयिल्–मध्य; तङ्कुव–जो ठहरते हैं; नळ्ळिकळ्–केकड़े; विळै पट–प्यार के होने से; पॆटैयॊटम्–केकड़ियों के साथ; पॊच्चै माक्कळ् पोल्–अपराधी लोगों के समान; पुळै–अपनी बिलों को; मॆळ्ळ अटैत्तु–(मिट्टी से) चुपके से बन्द करके; ऒटुङ्किन–छिपे रहे। ५५१

पानी खूब बरसा था। 'मरुदम' (खेत और बागों के) प्रदेश में कमल की लताओं पर पत्ते घने रूप से उग आये थे। केकड़े उनमें ठहरे थे। अब वे अपनी प्यारी केकड़ियों के साथ बाहर निकल आये और मिट्टी में बिल बनाकर उसमें घुस गये। और उसका मुख मिट्टी से बन्द करके वे अपराधी लोगों के समान छिपे रहने लगे। ५५१

अळित्तन मुत्तिनन् दोऱ्प वाननम्
वॆळित्तॆदिर् विळिक्कवुम् वॆळ्हि मॆन्मैयाल्
ऒळित्तन वामॆन वॊडुङ्गु हण्णन
कुळित्तन मण्णिडैक् कून नन्दॆलाम् 552

कूनल् ननतु ऎलाम्–कूबड़ वाले घोंघे सभी; अळित्तन–अपने जाये; मुत्तु इतम्–मोतियों की राशि के; तोऱ्प–हार जाने से; आननम् ऎतिर्–(हरानेवाली स्त्रियों के) आननों के सामने; वॆळित्तु–प्रकट होकर; विळिक्कवुम्–दृष्टि पड़ने से;

वॆळ्कि–लजाकर; मेऩ्मैयाल् ऒळित्तत्त आम्–मानो बड़प्पन के कारण छिपे; ऎत्त–ऐसा कहने योग्य रीति से; ऒट्टुङ्कु कण्णत्–उन्मीलित आँखों के साथ; मण्णिटै–पंक के अन्दर; कुळित्तत्त–मग्न हुए। ५५२

घोंघे भी मिट्टी के अन्दर आँखें मूँदकर मग्न हो छिपे रहे। उन्होंने मोती दिये थे। वे मोती स्त्रियों के दाँतों से होड़ लगा नहीं सके और हार गये। इसलिए घोंघों को अपमान लगा! वे उन स्त्रियों के सामने प्रकट रूप से आना नहीं चाहते। यह किसी को मालूम नहीं था। सभी समझने लगे कि ये घोंघे अपने बड़प्पन के कारण स्वयं ही मिट्टी के अन्दर चले गये हैं। ५५२

10. किट्किन्दैप् पडलम् (किष्किन्धा पटल)

अऩ्ऩ काल महलु मळविऩिल्, मुऩ्ऩ वीर ऩिळवलै मुऩ्बिऩोय्
शॊऩ्ऩ वॆल्लैयि नूङ्गिनुम् तूङ्गिनऩ्, मऩ्ऩन् वन्दिल नॆऩ्शॆय्द वाऱरो 553

अऩ्ऩ कालम्–वैसा काल; अकलुम् अळविऩिल्–जब बीता तब; मुऩ् अव् वीरऩ्–अग्रगण्य वीर श्रीराम; इळवलै (नोक्कि)–अपने छोटे भाई को देखकर; मुऩ्पिऩोय्–बली; चॊऩ्ऩ ऎल्लैयिऩ्–कथित अवधि के; ऊङ्किऩुम्–बीत जाने पर भी; मऩ्ऩऩ्–राजा (सुग्रीव); तूङ्किऩऩ्–देर करता है; वन्तिलऩ्–नहीं आया; चॆय्त आऱु–(वचन-पालन) करने का ढंग भी; ऎऩ्–कैसा। ५५३

जब वह (वर्षा) काल बीता तब वीरों में अग्रगण्य वीर श्रीराम लघुभ्राता लक्ष्मण से बोले। बली वीर! हमने जो अवधि निर्धारित की थी, वह बीत गयी। उसके बाद भी राजा सुग्रीव देर करता है। नहीं आया है। उसका वचनपालनक्रम भी कैसा है, देखो। ५५३

पॆऱल रुन्दिरुप् पॆऱ्ऱुद विप्पॆरुम्, तिऱनि ऩैन्दिलऩ् शीर्मैयिऱ् ऱीर्न्दनऩ्
अऱम ऱन्दऩ ऩऩ्बु किडक्कनम्, मऱऩ ऱिन्दिलन् वाऴ्विन् मयङ्गिऩाऩ् 554

पॆऱल् अऱु–दुष्प्राप्य; तिरु पॆऱ्ऱु–(राज्य-) धन पाकर; उतवि–सहायता का; पॆरुम् तिऱल्–बड़ा महत्त्व; निऩैन्तिलऩ्–न सोचा (उसने); चीर्मैयिऩ्–सदाचरण से; तीर्न्तऩऩ्–डिग गया; अऱम्–धर्म; मऱन्तऩऩ्–भुला दिया; अऩ्पु किटक्क–स्नेह एक ओर रहे; नम् मऱऩ्–हमारी वीरता; अऱिन्तिलऩ्–नहीं जानी; वाऴ्विऩ्–राज्य-जीवन में; मयङ्किऩाऩ्–भ्रमित रह गया। ५५४

हमारी सहायता से उसे दुष्प्राप्य राजधन मिला। वह इस सहायता का महत्त्व नहीं समझता। उचित आचरण से डिग गया। उसने कृतज्ञता, वचन-पालन आदि धर्म भी भुला दिया। स्नेह भी भूल गया, वह एक ओर रहे! हमारी वीरता भी भूलकर तो वह राज-जीवन में मोहित हो रहता है। ५५४

नन्ऱि कॊन्ऱु नट्पिनै नारऱुत्, तॊन्ऱु मॆय्म्मै शिदैत्तुरै पॊय्त्तुळान्
कॊन्ऱु नीक्कुदल् कुऱ्ऱत्तु नीङ्गुमाल्, शॆन्ऱु मऱ्ऱवन् शिन्दैयैत् तेऱ्हुवाय् 555

नन्ऱि कॊन्ऱु–कृतघ्न बनकर; अरु नट्पिनै–अच्छी मित्रता का; नार् अऱुत्तु–बन्धन (सम्बन्ध) काटकर; ऑन्ऱुम्–सुबद्ध; मॆय्म्मै–सत्य को; पळुताक्कि–बिगाड़कर; उरै पॊय्त्तुळान्–जो वचन को भी झूठा बना चुका, उसे; कॊन्ऱु नीक्कुतल्–मारकर हटाना; कुऱ्ऱन्तु–अपराध से; नीङ्कुम्–हटा रहेगा; आल्–इसलिए; चॆन्ऱु–जाकर; अवन् चिन्तैयै–उसका मन; तेर्कुवाय्–परख आओ। ५५५

जो आदमी कृतघ्न बनता है, उत्तम मित्रता का सम्बन्ध तोड़ता और सबके लिए पालनयोग्य सत्य को भी बिगाड़ता है और वचन-भंग करता है, उसको मार-मिटाना अपराध नहीं होगा। इसलिए तुम जाकर उसका अभिप्राय जान आओ। ५५५

वॆम्बु कण्डहर् विण्बुह वेरऱुत्, तिम्बर् नल्लऱञ् शॆय्य वॆडुत्तविल्
कॊम्बु मुण्डरुङ् कूऱ्ऱमु मुण्डॆङ्गळ्, अम्बु मुण्डॆन्ऱु शॊल्लुनम् माणैये 556

वॆम्पु कण्टकर्–नृशंस दुष्टों को; विण् पुक–स्वर्ग पहुँचाते हुए; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल बनाकर; इम्पर्–इहलोक में; नल् अऱम् चॆय्य–सद्धर्मस्थापन के लिए; ऍंटुत्त–जो हाथ में लिया है, हमने; विल् कॊम्पुम्–धनुर्दण्ड भी; उण्टु–है; अरुम्–दुर्द्धर्ष; कूऱ्ऱमुम् उण्टु–यम भी है; ऍङ्कळ् अम्पुम् उण्टु–हमारे शर भी हैं; ऍन्ऱु–ऐसा; नम् आणै–हमारी शपथ; चॊल्लु–कहो। ५५६

हमारे पास यह धनुर्दण्ड है, जिसको हमने नृशंस दुष्कृतों को आकाश में भेजने और इस लोक में सद्धर्म-स्थापन करने के लिए रखा है। और यम भी है, मरा नहीं है। हमारे शर भी हैं। यह सब स्मरण कराके हमारी आज्ञा सुनाओ। ५५६

नञ्ज मन्न वरैनलिन् दालदु, वञ्ज मन्ऱु मनुवळक् कादलान्
अञ्जि लम्बदि लॊन्ऱऱि यादवन्, नॆञ्जि निन्ऱु निलाव निऱुत्तुवाय् 557

नञ्चम् अन्नवरै–विष-समान खलों को; नलिन्ताल्–दण्डित करें तो; अतु–वह; मनु वळक्कु–मनुनीति है; आतलाल्–इसलिए; वञ्चम् अन्ऱु–वंचना नहीं है; अञ्चिल् अम्पतिल्–पाँचवीं उमर में या पचासवीं उमर में; ऑन्ऱु अऱियातान्–जो (कर्तव्य) कुछ नहीं जानता; नॆञ्चिल्–उसके मन में; निन्ऱु निलाव–स्थिर रूप से रहे, ऐसा; निऱुत्तुवाय्–यह विचार रखो। ५५७

विष-सम खलों को दण्ड देना मनुधर्म-सम्मत कार्य है। वह कपट या वञ्चना नहीं होगा। सुग्रीव, लगता है कि पाँच (साल की आयु) में भी कुछ नहीं समझा (सीख चुका है); और पचास में भी कुछ नहीं जानता। उसके मन में बात बैठ जाय, ऐसा समझाओ। ५५७

ऊरु माळु मरशुनुञ् जुऱ्ऱमुम्, नीरु माळुदि रेयॆंनिल् नेर्न्दनाळ्
वारुम् वार लिरेयॆंनिन् वानरप्, पेरु माळु मॆंनुम्बोरुळ् पेशुवाय् 558

नीरुम्–तुम और; नुम् चुऱ्ऱमुम्–तुम्हारा परिवार; आळुम्–जहाँ शासन करता है; ऊरुम्—वह नगर और; अरचुम्–राज्य; आळुतिरे–(पर) शासन करना चाहो; ऍंनिल्–तो; नेर्न्त नाळ्–कथित दिन में; वारुम्–आओ; वारलिरे ऍंनिन्–नहीं आओगे तो; वानरम् पेरुम् माळुम्—वानर का नाम-निशान मिट जायगा; ऍंनुम्–यह; पॊरुळ्–विषय; पेचुवाय्—कहो। ५५८

उनसे कहो— तुम और तुम्हारा शासकदल यह चाहता है कि किष्किन्धा नगरवास और राज्य-शासन टिका रहे तो निर्णीत समय में, (सीता के अन्वेषणार्थ) आ जाओ हमारे पास। अगर नहीं आओगे, तो वानर का नाम-निशान नहीं रहेगा और सब वानर मिट जायँगे। ५५८

इन्नु नाडुदु मिङ्गिवर्क् कुम्वलि, तुन्नि नारै यॆंनत्तुणिन् दारॆंनिन्
उन्नै यॊप्प वुलहॊरु मून्ऱिनुम्, निन्न लाऱ्पिऱ रिन्मै निहळ्त्तुवाय् 559

इङ्कु–यहाँ; इन्नुम्–और भी; इवर्क्कु–इन (श्रीराम और लक्ष्मण) से बढ़कर; वलि तुन्नितारै–बलवानों को; नाटुतुम्–ढूँढ़ लें (सहायक बना लें); ऍंन–ऐसा; तुणिन्तार् ऍंनिन्–निश्चय करते हैं, तो; उलकु ऒरु मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; उन्नै ऒप्प–तुम्हारे समान; निन् अलाल्–तुम्हारे सिवा; पिऱर् इन्मै–दूसरे का अभाव; निकळ्त्तुवाय्–कहोगे। ५५९

समझो कि वे हमसे बलवानों की सहायता ढूँढ़ लेने का विचार रखते हैं, तो कहना, लक्ष्मण, कि तुम्हारे समान वीर इन तीनों लोकों में तुम्हारे सिवा नहीं मिल सकता। ऐसे वीर का अभाव उनसे कहो। ५५९

नीदि यादि निहळ्त्तिनै निन्ऱदु, वेदि याद पॊळुदु वॆंहुण्डिडल्
शादि यादवर् शॊऱ्ऱरत् तक्कनै, पोदि यादियॆंन् ऱान्पुहळ्प् पूणिनान् 560

पुकळ् पूणिनान्–प्रशंसा-आभरण; निन्ऱु–अवधान करके; नीति आति–नीति आदि; निकळ्त्तिनै–समझाकर; अतु–वह; वेतियात पॊळुतु–उनके मन में जब नहीं घुसा तो; नी–तुम; वॆंकुण्टिटल्–कोप करना; चातियातु–न करके; अवर् चॊल्–उनका (उत्तर-) वचन; तर तक्कनै–(यहाँ मेरे पास) कहो; पोति आति–चलता बनो; ऍंन्ऱान्–कहा। ५६०

श्रीराजाराम, जिनका आभरण प्रशंसा ही थी, ज़रा ठहरे। अवधान करके बोले कि लक्ष्मण नीति का उपदेश दो। अगर तुम्हारा वचन उनके मन में प्रवेश नहीं करता तो तुम क्रोध को मत अपनाओ। आकर मेरे पास उनका कथन कह दो। यही तुम्हारा कर्तव्य है। ५६०

आणै शूडि यडितॊळु दाण्डिऱै, पाणि यादु पडर्वोन् पळिपडात्
तूणि तूक्कित् तॊडुशिलै तॊट्टरुञ्, जेणि नीङ्गिनन् शिन्दैयि नीङ्गलान् 561

आणै चूटि–(श्रीराम की आज्ञा को) शिरोधार्य करके; अटि तॉळ्तु–पैरों पर नमन करके; आण्टु–वहाँ; इरै–ज़रा भी; पाणियातु–विलम्ब किये विना; पटर्वोन्–जो चले; पळि पटा–अनिंद्य (अक्षय); तूणि तूक्कि–तूणीर कन्धे पर लेकर; तॉटु चिलै–शरप्रेषक धनु; तॉट्टु–लेते हुए; चिन्तैयिन्–मन से; नीङ्कलान्–(श्रीराम को) न हटाकर (स्मरण करते हुए); अरुम् चेणिल्–जहाँ पीछा करना कठिन है, उस लम्बे मार्ग में; नीङ्किनन्–चले। ५६१

लक्ष्मण ने भगवान श्रीराम की आज्ञा को शिरोधार्य करके उनके चरणों पर प्रणाम किया। फिर वहाँ से विना विलम्ब किये जाने लगे। वे अक्षय तूणीर अपने कन्धे पर उठाते हुए, और शरप्रेषक धनु को साथ लिये हुए श्रीराम के स्मरण के साथ लम्बे मार्ग में ऐसे चले कि उनका उस मार्ग में पीछा कोई नहीं कर सकता था। ५६१

मारु नितृर मरनु मलैहळुम्, नीरु शॅनृरु नॅडुनॅरि नीङ्गिड
वेरु शॅतृरनन् मॅय्म्मैयि तोङ्गिय, आरु शॅतृरव नाणैयि नेहुवान् 562

मॅय्म्मैयिन्–सत्य के; ओङ्किय आरु–उत्तम मार्ग में; चॅनृरवन्–चलनेवाले श्रीराम की; आणैयिन् एकुवान्–आज्ञा पर चलनेवाले लक्ष्मण; मारु नितृर–मार्ग में बाधा-रूप में रहे; मरनुम् मलैकळुम्–वृक्ष और पर्वत; नीरु चॅनृरु–चूर होकर; नीङ्किट–अलग हुए; वेरु–अन्य; नॅटु नॅरि–लम्बे मार्ग में; चॅनृरनन्–गये। ५६२

सत्य के उन्नत मार्ग पर चलनेवाले श्रीराम की आज्ञा लेकर जो लक्ष्मण चले, उनके मार्ग में रहनेवाले पर्वत और वृक्ष उनकी गमन-गति से चूर होकर अलग हो गये। वे (ऐसे बने) दूसरे मार्ग से चले। (शायद वे पूर्वपरिचित अभ्यस्त मार्ग से जाना सुरक्षित नहीं समझे)। ५६२

विण्णु ऱत्तॊडर् मेरुविन् शीर्वरै, मण्णु ऱप्पुक्क ळुन्दिन मादिरम्
कण्णु ऱत्तॆरि वुऱ्ऱदु कट्चॆवि, उण्णि ऱक्कळऱ् चेवडि यूनृऱलाल् 563

कट्चॅवि–नेत्र-कर्ण (आदिशेषनाग) के अवतार लक्ष्मण के; ऑळ् निऱम्–उज्ज्वल रंग की; कळल्–पायल से अलंकृत; चेवटि–सुन्दर पैरों को; ऊनृऱलाल्–रोपकर रखने से; विण् उऱ तॊटर्–आकाश स्पर्श करते हुए उन्नत; मेरुविन्–मेरु पर्वत की; चीर् वरै–ऊँचाई जितनी; कण् उऱ तॆरिवुऱ्ऱु–दृष्टिगोचर; मातिरम्–दिशाएँ; मण् उऱ–भूमि में; पुक्कु–जाकर; अळुन्तिन–धँस गयीं। ५६३

आदिशेष नाग के अवतार लक्ष्मण के उज्ज्वल पायलों से अलंकृत सुन्दर पैरों के लगने से, आकाशस्पर्शी उन्नत मेरुपर्वत जितना ऊँचा था, उतना गहरा, संदृश्य दिशाएँ सब पाताल में धँस गयीं। ५६३

वॅम्बु कानिडॆप् पोहिनृर वेहत्ताल्, उम्बर् तोयु मरामरत् तूडुशॆल्
अम्बु पोनृरन नन्ऱडल् वालितन्, तम्बि मेऱ्चॆलु मानवन् ऱम्बिये 564

अनृऱु–तब; अटल् वालि तन्–बलवान वाली के; तम्पि मेल्–सुग्रीव के प्रति;

चॅलुम्–चलनेवाले; मातवन् तम्पि–मनुकुल में उत्पन्न श्रीराम के लघुभ्राता लक्ष्मण के; पोकिन्ऱ–गमन के; वेकत्ताल्–वेग से; वॅम्पु काऩिटै–गरम जंगल में; उम्पर् तोयुम्–गगन-चुम्बी; मरामरत्तु ऊटु चॅल्–सालवृक्षों के मध्य जानेवाले; अम्पु पोऩ्ऱऩऩ्–शर के समान लगे। ५६४

तब बलवान वाली के लघु भ्राता सुग्रीव के पास, जो मनुवंश के श्रीराम के छोटे भाई चले, वे अपने चलने की तीव्र गति से, गरम जंगल में सालवृक्षों के मध्य चलते हुए श्रीराम के शर के समान लगे। ५६४

माडु वॅऩ्ऱियोर् मादिर यानैयैच्, चेडु तुऩ्ऱु शॅडिलॉरु तिक्किऩ्मा
नाडु हिऩ्ऱदु नण्णिय काल्पिडित्, तोडु हिऩ्ऱदु मॉत्तुळ नायिनान् 565

चेटु तुऩ्ऱु–महिमायुक्त; ऑरु तिक्किन् मा–एक दिग्गज; माटु–पास रहनेवाले; ओर् वॅऩ्ऱि मातिरम् यानैयै–अनुपम और एक दिग्गज को; नाटुकिन्ऱतु–ढूँढ़ता; नण्णिय चॅटिल्–स्वाभाविक मद-गन्ध का; काल् पिटित्तु–मार्ग लेकर; ओटुकिन्ऱतुम्–जो दौड़ता है, उसके भी; ऑत्तु उळन् आयिनान्–समान बने। ५६५

एक महान दिग्गज अपूर्व विजयी और एक दिग्गज को ढूँढ़ते हुए, उसके स्वाभाविक मद की गन्ध द्वारा टोह लगाकर भाग रहा हो, लक्ष्मण वैसे भी लगे। ५६५

उरुक्कॉ ळॊण्गिरि यॊऩ्ऱिनिऩ् ऱॊऩ्ऱिऩैप्
पॊरुक्क वॅय्दिऩन् पॊऩ्ऩॊळिर् मेऩियान्
अरुक्कन् मावुद यत्तिनिऩ् ऱत्तमाम्
परुप्प दत्तिनै यॅय्दिय पण्बिनाल् 566

अरुक्कन्–सूर्य; मा उतयत्तिन् निऩ्ऱु–बड़ी उदयगिरि से; अत्तम्–जहाँ अस्त होता है, उस; परुप्पतत्तिनै–पर्वत को; ऍय्तिय–जाता जिस रीति से; पण्पिनाल्–उस रीति से; पॊन् ऑळिर् मेनियान्–स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी; उरु कॊळ्–बड़े आकार के; ऑळ् किरि–उज्ज्वल पर्वत; ऑऩ्ऱिन् निऩ्ऱु–एक से; ऑऩ्ऱिनै–दूसरे एक पर्वत पर; पॊरुक्क–जल्दी; ऍय्तिनन्–पहुँचे। ५६६

सूर्य बड़ी उदयगिरि से अस्तगिरि पर जिस रीति से जाता है, उसी रीति से स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी लक्ष्मण बड़े आकार के और उन्नत और उज्ज्वल एक पर्वत (माल्यवान) से दूसरे पर्वत की तरफ़ (किष्किन्धा) की तरफ़ सवेग गये। ५६६

तऩ्ऩु णैत्तमै यऩ्ऩति वाळियिऩ्, चॅऩ्ऱु शेणुयर् किट्किन्दै शेर्न्दवन्
कुऩ्ऱि निऩ्ऱॊरु कुऩ्ऱिऩिऩ् कुप्पुऱुम्, पॊऩ्ऱु ळङ्गुळैच् चीयमुम् बोऩ्ऱऩन् 567

तन् तुणै–अपने साथी; तमैयन्–और बड़े भ्राता श्रीराम के; तन्न वाळियिन्–अप्रमेय शर के समान; चॅन्ऱु–जाकर; चेण् उयर्–गगन छूते हुए; उयर्–उन्नत; किट्किन्तै चेर्न्तवन्–जो किष्किन्धा पहुँचे; कुऩ्ऱिन् निऩ्ऱु–एक गिरि से; ऑरु

कुऩ्ऱिनिल्–दूसरी एक गिरि पर; कुप्पुऱुम्–झपटनेवाले; पोऩ् तुळक्कु–स्वर्णवर्ण; उळै–अयाल वाले; चीयमुम्–सिंह के; पोऩ्ऱऩ–समान भी शोभे। ५६७

अपने साथी और बड़े भ्राता श्रीराम के अनुपम शर के समान बहुत तीव्र गति से चलकर गगनोन्नत किष्किन्धा पर जो पहुँचे, वे लक्ष्मण एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर झपटनेवाले स्वर्णोज्ज्वल अयाल के पुरुषकेसरी के समान भी शोभे। ५६७

कण्ड वाऩरङ् गालऩैक् कण्डॆऩ, मण्डि योडिऩ वालि महऱ्कैया
कॊण्ड शीऱ्ऱत् तिळैयोऩ् कुऱुहिऩाऩ्, चण्ड वेहत्ति ऩाऩॆऩ्ऱु शाऱ्ऱलुम् 568

कण्ट वाऩरम्–इनको जिन वानरों ने देखा, वे वानर; कालऩै कण्टु–यम को देख गये; ऎऩ–ऐसा; मण्टि ओटिऩ–मिलकर भागे; वालि मकऱ्कु–वाली-पुत्र से; ऐया–सुन्दरराज; इळैयोऩ्–लघु भाई लक्ष्मण; कॊण्ट चीऱ्ऱत्तु–अपनाये क्रोध से; चण्ट वेकत्तिऩाऩ्–प्रचण्ड वेगवान बनकर; कुऱुकिऩाऩ्–आ गये; ऎऩ्ऱु–ऐसा; चाऱ्ऱलुम्–कहते ही। ५६८

वानरों ने श्रीलक्ष्मण को देखा। मानो यम का साक्षात्कार कर लिया हो, ऐसा वे भागे और अंगद के पास गये। उससे बोले कि सुन्दर युवराज! लक्ष्मण अत्यधिक क्रोधी बनकर प्रचण्ड वेग के साथ आ पहुँचे हैं। यह कहते ही— । ५६८

अऩ्ऩ तोऩ्ऱलु माण्डॊऴि लाऩ्वर, विऩ्ऩ दॆऩ्ऱऱि वाऩ्मरुङ् गॆय्दिलाऩ्
मऩ्ऩऩ् मैन्दऩ् मऩक्करुत् तुट्कॊळाप्, पॊऩ्ऩिऩ् वार्हऴऱ् ऱादैयिऱ् पोयिऩाऩ् 569

अऩ्ऩ तोऩ्ऱलुम्–वह राजकुमार भी; आण् तॊऴिलाऩ् वरवु–पुरुषोचित कार्य करनेवाले (वीर) के आने का कारण; इऩ्ऩतु–(क्या) यही है; ऎऩ्ऱु अऱिवाऩ्–यह जानने के लिए; मरुङ्कु–उनके पास; ऎय्तिलाऩ्–नहीं गया; मऩ्ऩऩ् मैन्तऩ्–चक्रवर्ती के पुत्र का; मऩम् करुत्तु–मनोभाव; उट् कॊळा–ताड़कर; पॊऩ्ऩिऩ्–स्वर्णनिर्मित; वार् कऴल्–बड़ी पायल के धारक; तातै–पिता के; इल् पोयिऩाऩ्–महल में गया। ५६९

वह राजकुमार अंगद भी लक्ष्मण के पास यह जानने के लिए नहीं गया कि पौरुषकर्म लक्ष्मण किस अभिप्राय से आये हैं ? लेकिन वह ताड़ गया कि लक्ष्मण का मनोभाव क्या है। इसलिए वह दीर्घ स्वर्ण-पायलधारी अपने पिता (चाचा) के महल में गया। ५६९

नळऩि यऱ्ऱिय नायहक् कोयिलुळ्, तळम लर्त्तहैप् पळ्ळियिऱ् ऱाऴ्हुऴल्
इळमु लैच्चिय रॆऩ्दडि तैवर, विळैतु यिऱ्कु विरुन्दु विरुम्बुवाऩ् 570

नळऩ् इयऱ्ऱिय–नल-निर्मित; नायकम्–राजसी; कोयिलुळ्–महल में; तळम् मलर् तकै–पल्लव और पुष्पों से भरी; पळ्ळियिल्–शय्या पर; ताऴ् कुऴल्–प्रलम्ब केश; इळ मुलैच्चियर्–बालस्तनी स्त्रियों के; ऎऩ्तु अटि–स्तुत्य पैरों को;

तैवर–सहलाते; विळै–वर्तमान; तुयिऱ्कु–निद्रा का; विरुन्तु–अतिथि रहना; विरुम्पुवाऩ्–चाहनेवाला और । ५७०

वानर नल के द्वारा निर्मित राजायोग्य महल के अन्दर पल्लव-पुष्प-शय्या पर सुग्रीव सो रहा था। प्रलम्ब केश और बालस्तनों से युक्त वानर-स्त्रियाँ उसके पूज्य पैरों को सहला रही थीं। वह ऐसा सो रहा था, मानो निद्रादेवी का मेहमान बना रहना चाहता हो। ५७०

तॆळ्ळि योर्हि लाऩ्बॆरुञ् जॆल्वमाम्, कळ्ळि ऩालदि हङ्गळित् ताऩ्कदिर्प्
पुळ्ळि मातॆंडुम् पॊऩ्वरै पुक्कदोर्, वॆळ्ळि माल्वरै यॆऩ्ऩ विळङ्गुवाऩ् 571

तॆळ्ळि–खूब स्पष्ट; ओर्किलाऩ्–विचार न करनेवाला; पॆरु चॆल्वम् आम्–विपुल धन रूपी; कळ्ळिऩाल्–सुरा-पान के कारण; अतिकम् कळित्ताऩ्–अधिक मत्त; कतिर् पुळ्ळि–किरणपुंज; मा नॆटु–अत्युन्नत; पॊऩ् वरै–स्वर्ण (मेरु) पर्वत में; पुक्कतु–प्रवेश करके रहनेवाले; ओर्–अनुपम; वॆळ्ळि माल् वरै ऎऩ्ऩ–रजतपर्वत के समान; विळङ्कुवाऩ्–शोभनेवाला । ५७१

(सुप्त सुग्रीव का वर्णन ५७०वें पद से लेकर सात पद्यों तक हुआ है।) सुग्रीव साफ़ सोचने में असमर्थ (था); अपार धन रूपी सुरा के पान से अतिमस्त; किरणपुञ्जों के साथ बहुत उन्नत हिमालय पर्वत के अन्दर घुसकर रहनेवाली एक श्वेत, उज्ज्वल और विपुल रजत-गिरि के समान शोभायमान (था)। ५७१

सिन्दु वारन् दिरुनऱै तेक्कहिल्, चन्द मामयिऱ् चायलर् ताळ्हुळल्
कन्द मामलर्क् काडुह डाविय, मन्द मारुदम् वन्दुऱ वैहुवाऩ् 572

चिन्तुवारम्–'सिंदुवार' नामक तरु; तिरु नऱै–सुगन्धयुक्त लता; तेक्कु–सागौन के वृक्ष; अकिल्–अगरु; चन्तम्–सुन्दर; मा मयिल् चायलर्–श्रेष्ठ मोरों की-सी छटा वाली; ताळ्कुळल्–(स्त्रियों के) प्रलम्ब केश के; कन्तम्–वास से पूर्ण; मा मलर् काटुकळ्–विपुल पुष्प-वन; ताविय–(इन पर से) बहता आया; मन्त मारुतम्–मन्द मारुत; वन्तु उऱ–आ बहे, ऐसा; वैकुवाऩ्–(सोता) जो रहा वह। ५७२

सिधुवार-तरु, सुबासित लताएँ, सागौन, अगरु आदि वृक्ष और सुन्दर मयूरनिभ छटा वाली स्त्रियों के प्रलम्ब केश पर के पुष्पवन, इनके ऊपर से बहनेवाली हवा उसको सहला रही थी; वैसा सुप्त। ५७२

तित्ति यानिऩ्ऱ शॆङ्गऩि वाय्च्चियर्, मुत्त वाणहै मुळ्ळॆयि ṟूऱुतेऩ्
पित्तु मालुम् पिऱवुम् पॆरुक्कलाऩ्, मत्त वारण मॆऩ्ऩ मयङ्गिऩाऩ् 573

तित्तिया निऩ्ऱ–मधुर रहनेवाले; चॆम् कऩि–लाल (बिम्ब) फल के समान; वाय्च्चियर्–अधरों की स्वामिनियों के; मुत्तम्–मोती-सम; वाळ् नकै–उज्ज्वल हास के; मुळ् ऎयिऱु–तीक्ष्ण दाँतों से; ऊऱु–रिसनेवाले; तेऩ्–शहद-सम रसीला द्रव; पित्तुम् मालुम्–पागलपन, मोह और; पिऱवुम्–अन्य (कामादि) मनोविकारों को;

पॆरुक्कलान्–बढ़ाता रहा, इसलिए; मत्त वारणम् अॆन्न–मत्तगज के समान; मयक्कितान्–मोहित जो पड़ा रहा। ५७३

मधुर व लाल बिंब-सम अधरों वालियों के मुक्तासदृश उज्ज्वल हास दिखानेवाले तीक्ष्ण दाँतों के मध्य से, रिसनेवाला रस (जो) पागलपन, मोह और कामादि अन्य विकृति उत्पन्न करनेवाला था। (उसका) पान करने के कारण मत्त गज के समान मोह-मुग्ध। ५७३

महुड कुण्डल मेमुदन् मण्डनत्, तुहुनॆ डुञ्जुडर्क् कर्रै युलावलाल्
पहल वन्शुडर् पाय्पनि माल्वरै, तहम लर्न्दु पॊलिन्दु तयङ्गुवान् 574

मकुट कुण्टलमे मुतल्–किरीट, कुण्डलादि; मण्टनत्तु–अलंकारों से; उकुम्–निकलनेवाले; नॆटु चुटर् कर्रै–लम्बी किरणों का समूह; उलावलाल्–(उसके) शरीर पर लगता चला, इसलिए; पकलवन्–सूर्य की; चुटर्–किरणें; पाय्–जिस पर लगती हैं, उस; माल्—बड़े; पति वरै तक–शीतल उदयाचल के समान; मलर्न्तु–प्रफुल्ल; पॊलिन्तु–शोभायमान हो; तयङ्कुवान्—रहनेवाला। ५७४

उस पर किरीट, कुण्डल आदि अलंकार के आभरणों से कान्ति की दीर्घ किरणों का पुंज लग रहा था। इसलिए सूर्य-रश्मिरंजित बड़े और शीतल उदयाचल के समान खिलता हुआ और उज्ज्वल रूप लिये हुए (सो रहा था)। ५७४

किडन्द तन्गिडन् दारैक् किडैत्तिरु
तडङ्गै कूप्पिनन् रारैमित् ताट्टन्द
मडङ्गल् वीरनन् मार्रम् विळम्बुवान्
तॊडङ्गि नानव नैत्तुयि नीक्कुवान् 575

किटन्ततन्–लेटा रहा; किटन्तारै–पड़े रहे उसके; तारै–तारा-संज्ञित; मिन्ताळ्–बिजली-समाना के; तन्त–जाये; मटङ्कल् वीरन्–पुरुषसिंह-सम वीर ने; किटैत्तु—पास जाकर; इरु तटकै–दोनों विशाल हाथ; कूप्पिनन्–जोड़े; अवनै–उसको; तुयिल् नीक्कुवान्–निद्रा से जगाने के लिए; नल् मार्रम्–अच्छे वचन; विळम्पुवान्–कहने; तॊटङ्कितान्–लगा। ५७५

सुग्रीव ऐसा सो रहा था। विद्युत् के समान कान्तिमय शरीर वाली तारा का पुत्र पुरुष-केसरी अंगद उसके पास गया। वह अपने दोनों विशाल हाथों को जोड़कर सुग्रीव को निद्रा से जगाने के निमित्त अच्छे और हितकारी शब्द कहने लगा। ५७५

ऎन्दै केळव् विरामर् किळैयवन्, शिन्दै युण्णॆडुञ् जीर्रन् दिरुमुहम्
तन्द ळिप्पत् तडुप्परुम् वेहत्तान्, वन्द नन्नुन् मनक्करुत् तियार्देन्रान् 576

ऎन्तै–मेरे पिता; केळ्–सुनो; अ–उन; इरामर्कु–श्रीराम के; इळैयवन्–कनिष्ठ भ्राता; चिन्तैयुळ् नॆटु चीर्रम्—मन का गम्भीर कोप; तिरुमुकम्–श्रीमुख

के; तन्तु अळिप्प–बाहर प्रकट होने देते हुए; तट्टप्पु अरु–दुर्वार; वेकत्तान्–वेग के साथ; वन्ततन्–आये हैं; उन् मतम् करुत्तु–आपके मन का भाव; यातु–क्या है; ॲन्ऱान्–(अंगद ने) पूछा। ५७६

मेरे पिताजी ! सुनिये। उन श्रीराम के भाई लक्ष्मण आये हैं। उनके मुख पर उनका आन्तरिक अत्यन्त कोप झलक रहा है। अदम्य वेग के साथ आये हैं। उनके सम्बन्ध में आपका विचार क्या है ? । ५७६

इन्नैय माट्रम् मिशैत्तन्न नॅन्बदोर्, निन्नैवि लान्ॅडुञ् जॅल्व नॅरुक्कवुम्
नन्नैन ऱुन्दुळि नञ्जु मयक्कवुम्, तन्नैयु णर्न्दिलन् मॅल्लणैत् तङ्गिनान् 577

(सुग्रीव तो) नॅटु चॅल्वम्–विपुल धन-मद के; नॅरुक्कवुम्–मन को वश में रखने के कारण; नरु नन्नै तुळि–सुवासित सुरा की बूँदों रूपी; नञ्चु मयक्कवुम्–विष चेतना-हरण कर चुका, इसलिए; तन्नै उणर्न्तिलन्–(अपनी सुधि ले नहीं सका) होश में नहीं आया; इन्नैय माट्रम्–ऐसे वचन; इचैत्ततन्–(अंगद ने) कहा; ॲन्पतु ओर् निन्नैवु–यह कोई ज्ञान; इलान्–न रखनेवाला; मॅल् अणैयिल्–मृदु सेज पर; तङ्किनान्–पड़ा रहा। ५७७

विपुल धन का मद और सुरापान का मद —इन दोनों के उसके मन पर हावी आने के कारण सुग्रीव अपनी सुध-बुध नहीं रखता था। अंगद क्या कह रहा है, इसका भी उसको कुछ बोध नहीं हुआ। इसलिए वह कोमल शय्या पर निद्रामग्न रह गया। ५७७

आद लालव् वरशिळङ् गोळरि, यादु मुन्नि यियट्रुव दिन्मैयाल्
कोदिल् शिन्दै यनुमनैक् कूवुवान्, पोदन् मेयिनन् पोदह मेयनान् 578

आतलाल्–इसलिए; पोतकमे अनान्–बालगज-सम; अ इळ अरचु कोळरि–वह युवराजकेसरी (अंगद); मुन्नि–सोचकर; इयट्रुवतु–करणीय; यातुम् इन्मैयाल्–कुछ नहीं रहा, इसलिए; कोतु इल् चिन्तै–उलझन-रहित मन वाले; अनुमनै–हनुमान को; कूवुवान्–बुलाने; पोतल् मेयिनान्–जाने लगा। ५७८

सुग्रीव की यह स्थिति होने से कलभ-सम वह युवराज-केसरी सोचने लगा कि अब क्या किया जाय ? उसके सामने करने योग्य कोई काम नहीं सूझा। इसलिए वह निर्दोष-मन हनुमान को बुलाने चला। ५७८

मन्दि रत्तनि मारुदि तन्नॉडुम्, वॅन्दि रट्पडै वीरर् विराय्वर
अन्द रत्तित्वन् दन्नदन् कोयिलै, इन्दि रट्कु महन्मह नॅय्दिनान् 579

इन्तिरट्कु मकन्–इन्द्रपुत्र का; मकन्–पुत्र; मन्तिरम्–मंत्रणा में; तनि–अद्वितीय; मारुति तन्नॊटुम्–मारुति के साथ; वॅम् तिरल्–अत्यधिक साहस के; पटै वीरर्–सेनावीरों के; विराय् वर–साथ लगे आते; अन्तरत्तिन् वन्तु–बाहर आया और; अन्नै तन् कोयिलै–माता के महल में; ॲय्तिनान्–पहुँचा। ५७९

इन्द्रपौत्र और मंत्रणाचतुर वायुकुमार दोनों वहाँ से बाहर निकले।

कठोर बल के वीरों की सेना उनके पीछे-पीछे आयी। अंगद अपनी माता के महल में गया। ५७९

ऍय्दि मेऱ्चॅयत् तक्कदॅत् ॲन्ऱलुम्, शॅय्दिर् शॅय्दऱ् करुनॅडुन् दीयत्त
नॉय्दि लन्नवै नीक्कवु नोक्कलिर्, उय्दिर् पोलु मुदविहोन् ऱॆरॅन्ना 580

ऍय्ति–पहुँचकर; मेल्–आगे; चॅय्यत् तक्कतु–करने योग्य; ॲन्–क्या है; ॲन्ऱलुम्–पूछने पर; चॅय्तऱ्कु अरु–अकरणीय; नॅट्टुम् तीयत्त–बहुत बुरे कामों को; नॉय्तिल् चॅय्तिर्–अनायास कर दिया (तुम लोगों ने); अन्नवै–उनको; नॉय्तिल् नीक्कवुम्–जल्दी दूर करने को; नोक्कलिर्–सोचा भी नहीं; उतवि कॉन्ऱोर्–कृतघ्न बने; उय्तिर् पोलुम्—बचोगे क्या; ॲन्ना–कहकर। ५८०

अंगद ने माता से पूछा कि अब क्या करना है? यह पूछते ही तारा डाँट वताने लगी। तारा ने कहा— अकरणीय और बुरे काम को अनायास तुम लोगों ने कर दिया। करके भी उसका निवारण करने का उपाय नहीं सोचा। कृतघ्न हो तुम! बच सकोगे क्या? । ५८०

मीट्टु मॉन्ऱु विळम्बुहिन् ऱाळ्पडै
कूट्टु मॅन्ऱुमैक् कॉऱ्ऱवन् कूऱिय
नाट्टि ऱम्बिनुन् नाट्टिऱम् बुम्मॅन्नक्
केट्टि लीरिनिक् काण्डिर् किडॅत्तिराल् 581

मीट्टुम्–और; ऑन्ऱु–एक बात; विळम्पुकिन्ऱाळ्—तारा कहती है; उमै–तुम लोगों से; पटै कूट्टुम्–सेना एकत्र करो; ॲन्ऱु–ऐसा; कॉऱ्ऱवन्–श्रीविजयराघव के; कूऱिय नाळ्–कथित दिन के; तिऱम्पिन्–बीत जाने पर; उम् नाळ्–तुम्हारे (जीवन के) दिन; तिऱम्पुम्–पूरे हो जायँगे; ॲन्न–कहने पर; केट्टिलीर्–नहीं सुना (तुम लोगों ने); इनि काण्टिर्–अब देखोगे; किटॅत्तिर्–(अब) फँस गये। ५८१

तारा आगे बोली। मैंने तुमको समझाया था कि विजयी श्रीराम ने सेना-संग्रह की अवधि निर्धारित की है। और अगर वह अवधि बीत जायगी तो तुम्हारे जीवन की अवधि भी खतम हो जायगी। पर तुमने नहीं सुना। अब उसका फल भुगतोगे। अब खूब फँसे! । ५८१

वालि यारुयिर् कालनुम् वाङ्गविऱ्, कोलि वालिय शॅल्वङ् गॉडुत्तवर्
पोलु मालुम्बु ऱत्तिरुप् पारिदु, शालु मालुङ्ग डत्मैयि नोर्क्कॅलाम् 582

वालि आरुयिर्–वाली के प्यारे प्राणों को; कालनुम् वाङ्क–कालदेव ले ले, ऐसा; विल् कोलि–धनु झुकाकर; वालिय–उज्ज्वल; चॅल्वम्–राजधन; कॉटुत्तवर् पोलुम्–जिन्होंने दिया वे क्या; उम् पुऱत्तु—आपसे उपेक्षित; इरुप्पार्–रहेंगे; इतु–यह उपेक्षा; उङ्कळ् पोलुम्–तुम्हारे समान; तत्मैयितोर्क्कु–स्वभाव वालों को ही; ॲलाम्–सब तरह से; चालुम्–योग्य होगी। ५८२

श्रीराम ने अपने धनु के बल से वाली के प्यारे प्राणों को कालदेव के हाथ में सौंप दिया। क्या वैसे राम तुमसे उपेक्षणीय हैं ? यह उपेक्षा शायद तुम जैसे कृतघ्नों को सोह सकती है ! । ५८२

देवि नोङ्गवत् तेवरिर् चोरियन्, आवि नीङ्गितन् पोलयर् वानदु
पावि यादु परुहुदिर् पोलुनुम्, कावि नाण्मलर्क् कण्णियर् कादनीर् 583

तेवि नीङ्क–देवी के अलग होने पर; अ तेवरिल् चोरियन्–देवों में श्रेष्ठ श्रीराम; आवि नीङ्कितन् पोल्–प्राणविहीन के समान; अयर्वान्–शिथिल होते हैं; अतु पावियातु–उसकी चिन्ता न करके; नुम्–(तुम्हारी) अपनी; नाळ् कावि मलर्–सद्यविकसित नीलोत्पल फूल के समान; कण्णियर्–आँखों वाली (पत्नियों) के; कातल् नीर्–प्रेम-रस; परुकुतिर् पोलुम्–पान करते रहोगे क्या। ५८३

देवी के वियोग में देवों में श्रेष्ठ श्रीराम निर्जीव होकर शिथिल पड़े हुए हैं। तुम उसकी चिन्ता नहीं करके सद्य-विकसित नीलोत्पल के सदृश आँखों वाली अपनी पत्नियों का प्रेम-रस पान कर रहे हो न ? । ५८३

तिरम्बि निर्मॅय् शिदैत्ती रुदवियै, निरम्बॉ लीइरुङ्ग डीविनै नेर्न्ददाल्
मरञ्जॅय् वानुरिन् माळुदिर् मर्रिनि, पुरञ्जॅय् दावदॅ नॅन्गिन्र पोदिन्वाय् 584

मॅय् तिरम्पित्तीर्–सत्य लाँघ चुके; उतवियै चितैत्तीर्–कृतज्ञता को मार चुके हो; निरम् पॊलीइर्–रंग ही (गौरव ही) नष्ट कर चुके हो; उङ्कळ् तीवितै–तुम्हारा दुर्भाग्य; नेर्न्ततु–आ गया; मरम् चॅय्वान् उरिन्–वीरता दिखाने (लड़ने) चलोगे तो; माळुतिर्–मर जाओगे; इनि–अब; पुरम् चॅय्तु–उपेक्षा करने से; आवतु–होगा; ॲन्–क्या है; ॲन्किन्र पोतिन् वाय्–जब यह (तारा) बोल रही थी, तब। ५८४

तुम लोगों ने सत्य छोड़ दिया। कृतघ्न बन गये। इस बुरे गुण के कारण तुम्हारी छवि ही मिट गयी। बुरे कर्म अपने फल देने आ गये। अपनी वीरता के बल पर लड़ने जाओगे तो मर जाओगे। अब मुकरने से क्या होगा ? तारा यह कह ही रही थी कि— । ५८४

कोळु रुत्तर् करिय कुरक्किनम्, नीळॅ ळुत्तॊ डरुन्नॆडु वायिलैत्
ताळु रुत्तित् तडवरै तन्दन, मूळु रुत्ति यडुक्किन मॊय्म्बिनाल् 585

कोळ् उरुत्तर्कु अरिय–नाशदुस्साध्य; कुरक्कु इनम्– वानरगणों ने; नीळ् ॲळु–लम्बी लोहे की सिटकिनियों से; तॊटरम्–बन्द होने योग्य; नॆटु वायिलै–विशाल द्वार को (कपाट को); ताळ् उरुत्ति–सिटकिनी लगाकर; मॊय्म्पिताल्–शरीर-बल के जोर से; तटवरै–चट्टानों को; तन्तत–ले आकर; मूळुरुत्ति–जोड़कर; अटुक्कित–चुन रखा। ५८५

वहाँ वानरगणों ने, जिनको मारना आसान नहीं था, लोहे की लम्बी सिटकिनियों से बड़े द्वार-कपाट को सुरक्षित किया और उसके पीछे बड़ी-बड़ी चट्टानें, अपने बल से ले आकर, जोड़ रखीं। ५८५

शिक्कु रक्कडै शेमित्त शॅय्हैय, तॉक्कु रुत्त मरत्त तुवन्‌रिन
पुक्कु रुक्किप् पुडैत्तु मॅनप्पुरम्, मिक्कि रुत्तन वीरनु मेयिनान् 586

कटै चिक्कुर्-द्वार को खूब; चेमित्त-सुरक्षित करनेवाले; चॅय्कॅय-कृत्यकारी वानर; पुक्कु उरुक्कि-(अगर वह अन्दर किसी विध आ जायें तो) सामने जाकर डाँटेंगे; पुटैत्तुम्-और पीटेंगे; ॲंत-सोचकर; तोक्कुरुत्त-पंक्तियों में रखे हुए; मरत्त-तरुओं के साथ; तुवन्‌रित-मिल आये; पुरम्-द्वार के पास; मिक्कु इरुत्तन-खचाखच सटे रहे; वीरनुम् मेयिनान्-वीर लक्ष्मण भी आ गये। ५८६

इस तरह किले के द्वार को सुरक्षित रूप से बन्द करने के बाद वानर यह सोचकर कि अगर वह किसी तरह अन्दर आयगा तो डाँट-डपट करके पीटेंगे, बड़े-बड़े वृक्षों को लिये हुए दल बाँधे खड़े थे। तब तक वीर लक्ष्मण भी आ गये। ५८६

काक्क वोकरुत् तॅन्‌रु कदत्तिनाल्, पूक्कु मूरर् पुरवलर् पुङ्गवन्
ताक्क णङ्गुरै तामरैत् ताळिनाल्, नूक्कि नानक् कदविनै नॉय्दिनिन् 587

कतत्तिताल्-क्रोध की; मूरल् पूक्कुम्-हँसी प्रकट करते हुए; पुरवलर् पुङ्कवन्-राजश्रेष्ठ ने; काक्कवो कटत्तु-बचने का अभिप्राय है क्या; ॲंन्‌रु-सोचकर; ताक्कणङ्कु उरै-(विजय-) लक्ष्मी के आश्रय; तामरै ताळिताल्-कमलों के जैसे चरणों से; अ कतवितै-उस कपाट को; नॉय्तितित्-लघु-प्रहार करके; नूक्कितान्-हटाया। ५८७

बन्द द्वार को देखकर लक्ष्मण ने एक क्रोध की हँसी हँसी। राज-पुंगव ने सोचा, यह स्वरक्षा का उपाय है क्या? अपने श्रीयुक्त कमल-चरण से उस किवाड़ पर लघु प्रहार किया। ५८७

कावन् मामदि लुङ्गद वुङ्गडि, मेवुम् वायि लडुक्किय वॅऱ्पॉडुम्
तेवु शेवडि तीण्डलुन् दीण्डरुम्, पाव मामॅनप् पऱ्ऱळिन् दिऱ्ऱवाल् 588

तेवु-दिव्य; चे अटि-सुन्दर चरणों के; तीण्टलुम्-स्पर्श करते ही; कावल् मा मतिलुम्-नगर-रक्षक प्राचीर; कतवुम्-और कपाट; कटि मेवुम्-सुरक्षा के लिए; वायिल् अटुक्किय-द्वार पर जोड़कर रखे हुए; वॅऱ्पॉटुम्-पत्थरों के साथ; तीण्टरुम्-अस्पृश्य; पावम् आम् ॲंत-पाप के समान; पऱ्ऱु अळिन्तु-लगाव छोड़कर; इऱ्ऱ-मिट गये। ५८८

दिव्य और सुन्दर (लक्ष्मण के) चरणों के स्पर्श मात्र से नगर-रक्षक प्राचीर और किवाड़, किवाड़ के पीछे चुनी हुई चट्टानों के साथ पाप के समान जिनका स्पर्श भी भयंकर है, आधार खोकर गिरकर मिट गये। ५८८

नॉय्दि नोन्‌कद वुम्मुदु वायिलुम्, शॅय्द हन्‌मदि लुन्‌दिशै योशनै
ऐयि रण्डि नळवडि यऱ्‌रुह, वॅय्दि तिन्‌ऱ कुरङ्गु वॅरुक्कोळ 589

नोन् कतवुम्–कठोर किवाड़; मुतु वायिलुम्–और प्राचीन द्वार; कल् चॅय्त मतिलुम्–पत्थरों का प्राचीर; नोय्तिल्–आसानी से; अटि अऱ्ऱु–आधार खोकर; तिचै–दिशाओं में; ऐ इरण्टु–दस (पाँच के दो); योचनैयिन्–योजनों की दूरी तक; उक–गिरे, तो; कुरङ्कुम्–वानर भी; वॅरु कॊळा–भय खाकर; वॅय्तिन् निन्ऱ–तप्तमन रहे। ५८९

कपाट सशक्त था। पत्थर का बना नगर-द्वार भी प्राचीन था। पर वे सब लक्ष्मण के चरण-प्रहार से आधार खोकर गिर गये और दिशाओं में दस योजन तक छितर गये। वानर भय खाकर तप्त-मन खड़े रहे। ५८९

परिय मामदि लुम्बडर् वायिलुम्, शरिय वीऴ्न्दु तहर्न्द मुडित्तलै
नॅरिय नॅञ्जु पिळक्क नॅडुन्दिशै, इरिय लुऱ्ऱन विऱ्ऱिल विन्नुयिर् 590

परिय मा मतिलुम्–चौड़े बड़े प्राचीर भी; पटर् वायिलुम्–विशाल द्वार भी; चरिय–ढहकर; वीऴ्न्तु–गिरे; तकर्न्त–और मिटे; मुटि तलै–सिर का भाग; नॅरिय–टूटा; नॅञ्चु पिळप्प–विदीर्ण-मन हो; इन् उयिर्–प्यारे प्राणों से; इऱ्ऱिल–हीन नहीं हुए (वानर); नॅटु तिचै–दूर दिशाओं में; इरियल् उऱ्ऱन–छितरकर भाग गये। ५९०

चौड़ा और ऊँचा प्राचीर और विशाल द्वार ढहकर गिरे और मिटे। प्राचीरों के शिरोभागों पर दरार पड़ गयी। इसको देखकर वानरों का मन भी विदीर्ण हो गया। वे अपने प्यारे और बचे हुए प्राणों को लेकर सभी दिशाओं में अलग-अलग भाग गये। ५९०

पहर वेयु मरिदु परिन्दॅऴु, पुहरिल् वानर मञ्जिय पूशलान्
शिहर माल्वरै शॅन्ऱु तिरिन्दुऴि, महर वेलैयै यॊत्तदु मानहर् 591

परिन्तु–उद्विग्न होकर; ॲऴु–जो भागे; पुकर् इल्–निरपराध; वानरम्–वानरों ने; अञ्चिय पूचलान्–डर से जो शोर मचाया, उससे; मानकर्–वह बड़ा नगर; चिकरम् माल् वरै–शिखर-सहित बड़ा (मन्दर) पर्वत; चॅन्ऱु तिरिन्तुऴि–जब (सागर में) प्रविष्ट हो घूमा; मकरम् वेलैयै–तब के मकरालय के; ऒत्ततु–समान था; पकरवेयुम् अरितु–कहना दुस्साध्य है। ५९१

वानरसमूह बहुत दुःखी होकर अपना स्थान छोड़कर भागे। बेचारे वे वानर निरपराध थे। इनके भय के कारण नगर में बड़ा शोर मच गया। तब वह नगर उस मकरालय के समान लगा, जिसमें शिखरसहित बड़ा मन्दरपर्वत घुसकर घूम रहा था। ५९१

वान रङ्गळ् वॅरुवि मलैयॊरीइक्, कानॊ रुङ्गु पडरवक् कार्वरै
मीनॊ रुङ्गिय वानह मीनॅलाम्, पोन पिन्बॊलि वऱ्ऱदु पोन्ऱदे 592

वानरङ्कळ्–वानर; वॅरुवि–भयभीत होकर; मलै ऒरीइ–(किष्किन्धा)

पर्वत त्यागकर; ऑरुङ्कु–एक साथ; कान् पटर–(पास के) जंगल में चले गये, इसलिए; अ कार् वरै–वह मेघाच्छादित पर्वत; मीन् नॅरुङ्किय–उडुगणों से भरा; वानकम्–आकाश; मीन् ॲलाम् पोन पिन्–नक्षत्रों के जाने के बाद; पॉलिवु अऱ्ऱतु–शोभा खो जाता; पोन्ऱतु–जैसे, वैसा लगा। ५६२

वानर भय से उस किष्किन्धा पर्वत को छोड़कर पास के जंगलों में, झुण्डों में भाग गये। इसलिए मेघाच्छादित वह किष्किन्धा गिरि उस नक्षत्रवान आकाश के समान दिखायी दी, जिसके सभी नक्षत्र लुप्त हो गये हों। ५९२

अन्न कालैयि नाण्डहै याळ्ळियान्, पॉन्नि नन्नहर् वीदियिर् पुक्कनन्
शॉन्न तारैयैच् चुऱ्ऱिनर् निन्ऱवर्, ॲन्न शॅय्हुव दॅय्दिन नॅन्ऱनर् 593

अन्न कालैयिन्–उस समय; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के; आळियान्–(आज्ञा-) चक्र लक्ष्मण; पॉन्निन्–सुन्दर; नल् नकर्–श्रेष्ठ नगर की; वीतियिल्–वीथी में; पुक्कनन्–प्रवेश करके चले; चॉन्न तारैयै–जिसने सचेतन-वचन कहे, उस तारा को; चुऱ्ऱिनर्–घेरे; निन्ऱवर्–जो खड़े थे, वे (अंगद आदि); ॲय्तिनन्–आ ही गये; ॲन्न चॅय्कुवतु–क्या करें; ॲन्ऱनर्–(ऐसा घबड़ाकर) बोले। ५६३

तब पुरुषश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के आज्ञाचक्र के समान लक्ष्मण उस सुन्दर और अच्छे नगर की वीथी में प्रविष्ट हुए। पहले जिस तारा ने सचेतन के वचन कहे थे, उसको घेरे हुए अंगद आदि खड़े थे। जब उनको मालूम हुआ कि लक्ष्मण नगर में आ गये तो वे घबड़ाये और पूछने लगे कि आ ही गये, अब क्या करें ?। ५९३

नीरॅ लामय नीङ्गुमि नेर्न्दियान्, वीर नुळ्ळम् विनवुव लॅन्ऱलुम्
पेर निन्ऱनर् यावरुम् पेर्हलात्, तारै शॅन्ऱन डार्हुळ लारॉडुम् 594

नीर् ॲलाम्–तुम सभी; अयल् नीङ्कुमिन्–अलग हट जाओ; यान् नेर्न्तु–मैं मिलकर; वीरन् उळ्ळम्–वीर का अभिप्राय; विनवुवल्–पूछ लूंगी; ॲन्ऱलुम्–(तारा के) यह कहने पर; यावरुम्–सभी; पेर–हटकर; निन्ऱनर्–खड़े हुए; तारै–तारा; पेर्कला–पीछे नहीं (आगे); तार्कुळलारॉटुम्–पुष्पालंकृत केश वालियों के साथ; चॅन्ऱनळ्–गयी। ५६४

तारा ने उनसे कहा, तुम सब यहाँ से हट जाओ। मैं उनसे मिलूंगी और जान लूँगी कि वीर उनका अभिप्राय क्या है ? तारा के ऐसा कहने पर सभी वानर हटकर खड़े हो गये। तारा पीछे नहीं गयी, लेकिन पुष्पालंकृत केश वाली अपनी सखियों के साथ आगे बढ़ी। ५९४

उरैशॅय् वानर वीर रुवन्दुरै, अरैशर् वीदि कडन्दहन् कोयिलेप्
पुरशै यानैयन् नान्पुह लोडुमव्, विरैशॅय् वार्हुळर् ऱारै विलक्किनाळ् 595

पुरचै–गले की रस्सी (कलापक) सहित; यानै अन्नान्–गजसदृश लक्षमण; उरै चॅय्–प्रकीर्तित; वानर वीरर्–वानर वीर; उवन्तु उरै–जहाँ खुशी से रहे; अरैचर् वीति–उस राजवीथी को; कटन्तु–पार करके; अकल् कोयिलै–(सुग्रीव के) विशाल महल में; पुकलोटुम्–प्रवेश करते ही; अ–उस; विरै चॅय्–सुबासपूर्ण; वार् कुऴल्–लम्बे केश वाली; तारै–तारा ने; विलक्किनाऴ्–रोका। ५९५

कलापक (गले की रस्सी) सहित गजराज-सम लक्ष्मण प्रकीर्तित वानर वीरों के प्यारे वासस्थान, राजवीथी को पारकर सुग्रीव के विशाल महल में पहुँचे। तब प्राकृतिक-सुबास-भरे केश वाली तारा ने उसके मार्ग को रोका। ५९५

विलङ्गि मॅल्लियल् वॅण्णहै वॅऴ्वळै
इलङ्गु नुण्णिडै येन्दिळ मॅन्मुलैक्
कुलङ्गॉ डोहै महळिर् कुऴात्तिनाल्
वलङ्गॉळ् वीरन् वरुम्वऴि माऱ्ऱिनाऴ् 596

विलङ्कि–आड़े आकर; मॅल् इयल्–कोमल प्रकृति; वॅळ् नकै–श्वेत दाँत; वॅळ् वळै–श्वेत कंकण; इलङ्कुम्–(विद्युत् के समान) शोभायमान; नुण् इटै–सूक्ष्म कमर; एन्तु–उठे हुए; इळ–बाल; मॅल् मुलै–कोमल स्तन; कुलम् कॉळ्–श्रेष्ठ; तोकै–मयूर की-सी आभा; मकळिर्–(इनसे युक्त) स्त्रियों के; कुऴात्तिनाल्–झुण्ड की सहायता से; वलम् कॉळ् वीरन्–दाहिनी ओर से जो आ रहे थे, उन वीर श्रीलक्ष्मण का; वरुम् वऴि–आने का मार्ग; माऱ्ऱिनाऴ्–रोका। ५९६

सुकुमारी, श्वेत दाँत, श्वेत कंकण, विद्युत-सम पतली कमर, उन्नत वाल-स्तन —इनके साथ शोभायमान मयूरनिभ स्त्रियों के समूहों का उपयोग करके तारा ने दाहिनी ओर से आनेवाले वीर लक्ष्मण का मार्ग रोका। ५९६

विल्लुम् वाळुम् मणियॉडु मिन्निड, मॅल्ल रिक्कुरन् मेहलै यार्त्तिडप्
पल्व हैप्पुरु वक्कॉडि पम्बिड, वल्लि यायम् वलत्तिनिल् वन्ददे 597

विल्लुम्–धनु-सम (वक्र); वाळुम्–तलवार-सम प्रकाशपुंज; अणियॉटु–आभरणों के साथ मिलकर; मिन्तिट–चमके; मॅल् अरि कुरल्–नूपुर के अन्दर के छोटे कंकड़ों का स्वर; मेकलै–मेखला की ध्वनि; आर्त्तिट–(मारू) नारे से लगे; पल् वकै पुरुवम्–विविध भौंहें रूपी; कॉटि–(युद्ध के) झंडे; पम्पिट–घने रूप से भरे रहे; वल्लि आयम्–स्त्रियों की सेना; वलत्तिऩिल्–दल-बल के साथ; वन्तत–आयी। ५९७

वानर-स्त्रियों का समूह क्या था, वह एक अलंघ्य सेना थी। धनु-सम वक्र और तलवार के समान लम्बी कान्तियाँ आभरणों के साथ मिलकर विद्युत के समान चमक रही थीं। छोटे-छोटे कंकड़ों से भरे नूपुरों और मेखलाओं से उठनेवाला नाद भेरीनाद-सा था। विविध भौंहें युद्ध के

झण्डों के समान दिखायी दीं। इस साज के साथ स्त्री-समूह की सेना ने दल-बल सहित आकर लक्ष्मण को घेर लिया। ५९७

आर्क्कुनू पुरङ्गळ् बेरि यल्हत्तर् रडन्दे रौत्त
पोर्क्कणवॅम् बुरुवम् विल्ला मॅल्लियर् वळैन्द पोदु
पेर्क्करुञ् जीर्रम् पेर मुहम्बॅयर्न् दौदुङ्गिर् रल्लाल्
पार्क्कवु मञ्जि नान्प् परुवरै यन्नैय तोळान् 598

आर्क्कुम्–स्वरित; नूपुरङ्कळ्–नूपुर; पेरि–भेरियाँ बने; अौत्त अल्कुल्–सुडौल कटि-प्रदेश; तट तेर्–विशाल रथ; वॅम् पुरुवम्–प्यारी भौंहें; पोर् कण् विल्ला–युद्ध में धनुष (यह लेकर); मॅल्लियर्–सुकुमारियों ने; वळैन्त पोतु–जब घेर लिया तब; अ–वे; परु वरै–बड़े पर्वत; अन्नैय–समान; तोळान्–लक्ष्मण; पेर्क्क अरु–दुर्वार; चीर्रम्–कोप; पेर–छोड़कर; मुकम् पॅयर्न्तु–मुख मोड़कर; ऑतुङ्किर्रु–दूसरी तरफ़ करने; अल्लाल्–के सिवा; पार्क्कवुम्–देखने से भी; अञ्चिनान्–डरे। ५९८

स्वरित नूपुर भेरियाँ बने। सुडौल कटि-प्रदेश बड़े-बड़े रथ बने। प्यारी भौंहें युद्धकारी धनु बनीं। इनके साथ जब स्त्री-सेना ने लक्ष्मण को घेर लिया तब, विशाल पर्वत के समान उन्नत कन्धों वाले लक्ष्मण का दुर्वार क्रोध दूर हो गया। उनका मुख दूसरी ओर मुड़ गया। वे उनको देखने से भी डरे। ५९८

तामरै वदनञ् जाय्त्तुत् तनुनॅडुन् दरैयि नून्रि
मामियर् कुळुविन् वन्दा नामॅन मैन्दन् निर्पप्
पूमियि लणङ्ग नार्दम् पौदुविडैप् पुहुन्दु पौर्रोळ्
तूमन नॅडुङ्गट् टारै नडुङ्गुवा ळिन्नैय शौन्नाळ् 599

मैन्तन्–वीर कुमार; तामरै वतनम् चाय्त्तु–कमल-सम वदन झुकाकर; नॅटु तनु–लम्बे धनु को; तरैयिल् ऊन्रि–भूमि पर टेककर; मामियर् कुळुविन्–सासों के समुदाय में; वन्तान् आम् ॲन–फँस गये जैसे; निर्प–संकुचित खड़े रहे; पौन् तोळ्–सुन्दर भुजाओं; तू मनम्–पवित्र मन; नॅटुम्कण्–आयत आँखों वाली; तारै–तारा; पूमियिल् अणङ्कु अनार् तम्–भूलोक में सुरांगनाओं के समान रहनेवाली वानर-स्त्रियों के; पौतुविटै–दल में; पुकुन्तु–घुसकर; नटुङ्कुवाळ्–कंपन के साथ; इन्नैय–यों; चौन्ताळ्–बोली। ५९९

वीर राजकुमार ने अपना सिर झुका लिया। वे भूमि पर अपने लम्बे धनुष को टेककर ऐसे खड़े रहे, मानो कोई जवान पुरुष सासों के मध्य फँस गया हो। तब सुन्दर भुजा वाली, पवित्र मन वाली और आयताक्षी तारा भूमि में रहनेवाली देवांगनाओं के समान उन रमणियों के दल को चीरकर सामने आयी और काँपती वाणी में बोलने लगी। ५९९

अन्दमिल् काल नोऱ्ऱ वाऱ्ऱलुण् डायि नन्ऱि
इन्दिरन् मुदलि नोर्क्कु मॅय्दला मियल्बिऱ् ऱन्ऱे
मैन्दनिन् पादङ् गॉण्डॅम् मनैवरप् पॅऱ्ऱु वाऴ्न्देम्
उय्न्ददनम् विनैयुन् दीर्न्दे मुऱुदिवे ऱिदन्मे लुण्डो 600

मैन्त–वीर कुमार; अन्तम् इल्–(आपका आगमन) अनन्त; कालम्–काल; नोऱ्ऱ–हमने तपस्या की, उसका; आऱ्ऱल्–बल; उण्टायिन् अन्ऱि–नहीं होगा तो; इन्तिरन् मुतलितोर्क्कुम्–इन्द्रादि देवों को भी; ॲय्तलाम्–प्राप्य; इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱे–गुण का नहीं है न; निन् पातम् कॉण्टु–अपने श्रीचरण से (चलकर); ॲम् मनै–हमारे घर में; वर पॅऱ्ऱु–आ पाये; वाऴ्न्तेम्–हम सफल-जन्म हो गये; विनैयुम् तीर्न्तेम्–कर्म-मुक्त हुए; उय्न्ततम्–हमारा उद्धार हो गया; इतन् मेल्–इससे बढ़कर; उऱुति–हित; वेऱु उण्टो–और कोई है क्या। ६००

हे वीरकुमार ! आप पैदल चलके इतनी दूर आये हैं। यह आपका आगमन, अनन्त काल तक तपस्या करो, तभी हो सकता है। नहीं तो इन्द्र आदि के लिए भी यह भाग्य प्राप्य रीति का नहीं है। आपके अपने पैरों से चलकर हमारे घर में आगमन से हम उत्कृष्ट जीवन पा गये। हमारा बुरा कर्म मिट गया। हमारा उद्धार हो गया। इससे बढ़कर हितकारी विषय और कुछ है क्या ? —नहीं है। ६००

वॅय्दिनी वरुद नोक्कि वॅरुवुनुञ् जेनै वीर
शॅय्दिदा नुणर्हि लादु तिरुवुळन् दॅरित्ति यॅन्ना
ऐयनी यरुळिन् वेन्द नडियिणै पिरिह लादाय्
अॅय्दिय दॅन्नै यॅन्ऱा ळिशैयिनु मिनिय शॉल्लाळ् 601

इचैयिनुम्–संगीत से भी; इनिय–मधुर; चॉल्लाळ्–भाषिणी; वीर–वीर; नी–आपका; वॅय्तिन् वरुतल् नोक्कि–वेग के साथ आना देखकर; चॅय्ति तान्–समाचार; उणर्किलातु–न जान सककर; नुम् चेनै–आपकी सेना; वॅरुवुम्–डरती है; तिरु उळम्–अपने मन की बात; तॅरित्ति–बताइए; ॲन्ना–कहकर (आगे); ऐय–सुन्दर वीर; अरुळिन् वेन्तन्–करुणामय राजाराम के; अटि इणै–चरणद्वय; पिरिकलाताय् नी–छोड़ जो न सकते हैं, वैसे आपका; ॲय्तियतु–आगमन (का हेतु); ॲन्नै–क्या है; ॲन्ऱाळ्–बोली। ६०१

तारा की वाणी संगीत से भी मधुर थी। उसने लक्ष्मण से कहा कि हे वीर ! तुम्हारा सवेग आना देखकर समाचार न जानने के कारण आपकी वानर-सेना डरेगी। कृपया आप अपना मनोभाव कहें। उसने आगे जारी किया— सुन्दर कुमार ! आप तो दया के अधिपति श्रीराम के श्रीचरणों से कभी अलग होनेवाले नहीं हैं। ऐसे आप इधर पधारे हैं —उसका क्या हेतु है ? । ६०१

आऱ्हीला वुरैशॅय् दारॅत् ऱुरुळ्वरच् चीऱ्ऱ मः(ह्)हाप्
पाऱ्हुला मुळ्वॅण् डिङ्गळ् पहल्वन्द पडिवम् बोलुम्
एऱ्हुला मुहत्ति ऩाळै यिऱैमुह मॅडुत्तु नोक्कित्
ताऱ्हुला मलङ्गत्त मार्बत् तायरै नित्तैन्दु नैन्दात् 602

अलङ्कल्–हिलनेवाली; तार्–माला से; कुलाम मार्पन्–अलंकृत वक्ष वाले; अरुळ् वर–कृपा के होने पर; चीऱ्ऱम् अ.'.का–क्रोध कम करके; उरै चॅय्तार्–भाषण किया; आर् कॉलो–किसने तो; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; कुलाम्–गोल; मुळु–पूर्ण; वॅण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; पंकल्–दिन में; पार् वन्त–भूमि पर आया हो, ऐसा; पटिवम् पोलुम्–रूप वाली (को); एर् कुलाम्–सौंदर्यमय; मुकत्तिनाळै–मुख वाली को; मुकम्–मुख; इऱै ऍटुत्तु–थोड़ा उठाकर; नोक्कि–देखकर; तायरै नितैन्तु–अपनी माताओं को स्मरण करके; नैन्तान्–दुःखी हुए। ६०२

हिलनेवाली पुष्पमाला से भूषित लक्ष्मण के मन में दया आयी। क्रोध कम हुआ। ऐसा बोलनेवाली कौन होगी ? यह समझने के लिए जब उसने थोड़ा मुख उठाकर तारा का सुन्दर मुख देखा, जो गोल राका-चन्द्र, दिन में ही भूमि पर आया-सा (मन्दप्रभ) लगता था, तब उन्हें अपनी (विधवा) माताओं का स्मरण आया और वे बहुत दुःखी हुए। ६०२

मङ्गल वणियै नीक्कि मणियणि तुऱन्दु वाशक्
कॉङ्गलर् कोदै माऱ्ऱिक् कुङ्गुमञ् जान्दङ् गॉट्टा
पॉङ्गुवॅम् मुलैहळ् पूहक् कळुत्तॊडु मऱैयप् पोर्त्त
नङ्गैयैक् कण्ड वळ्ळल् नयनङ्गळ् पनिप्प निन्ऱात् 603

मङ्कलम् अणियै–अहिवात के आभरणों को; नीक्कि–दूर करके; मणि अणि–नवरत्नाभरण; तुऱन्तु–त्यागकर; वाचम्–सुगन्धपूर्ण; कॉङ्कु अलर्–शहद-भरी; कोतै–पुष्पमाला को; माऱ्ऱि–हटाकर; कुङ्कुमम् चान्तम्–कुंकुम-चन्दन; कॉट्टा–न लगाकर; पॉङ्कु वॅम् मुलैकळ्–पीन और प्यारे स्तनों को; पूकम् कळुत्तॊटु–पूगतरु-सम कन्धों के साथ; मऱैय–छिपाते हुए; पोर्त्त–ओढ़े (रहनेवाली); नङ्कैयै–स्त्री तारा को; कण्ट–जिन्होंने देखा; वळ्ळल्–वे प्रभु; नयनङ्कळ्–आँखों को; पनिप्प–अश्रु से भरने देते हुए; निन्ऱात्–खड़े रहे। ६०३

उस पर अहिवात के आभरण नहीं थे। मणियाँ नहीं थीं। सुवासित और शहद-भरे पुष्पों की मालाएँ त्याग दी गयी थीं। कुंकुम, चन्दन आदि के लेप का श्रृंगार नहीं था। पीन और गरम स्तनों को पूग-तरु-सम कन्धों के साथ ओढ़नी के अन्दर छिपाये रखकर तारा खड़ी थी। यह देखकर दयानिधि लक्ष्मण की आँखों से आँसू आ गये। वे वैसे ही स्तब्ध खड़े रहे। ६०३

इन्नैयरा मन्नै यीन्ऱ विरुवरु मॅन्न वॅन्द
निनैविना नयर्प्पुच् चॅन्ऱ नॅञ्जिन नॆडिदु निन्ऱान्
विनविनाट् कॅदिरोर् माऱ्ऱम् विळम्बवुम् वेण्डु मॅन्ऱप्
पुन्नैहुळ लाट्कु वन्द कारियम् पुहल्व दानान् 604

ॲन्नै ईन्ऱ-मेरी जननियाँ; इरुवरुम्-दोनों; इन्नैयर् आम्-ऐसी ही (विधवा-वेश में) होंगी; ॲन्न-ऐसे; वॅन्त निनैविनान्-झुलसानेवाले विचार से; अयर्प्पु चॅन्ऱ-थकित; नॅञ्चिनान्-मन वाले हो; नॅटितु निन्ऱान्-लम्बी देर तक जो खड़े रहे; विनविनाट्कु-अपने से प्रश्न करनेवाली से; ॲतिर् ओर् माऱ्ऱम्-उत्तर में एक बात; विळम्पवुम् वेण्टुम्-कहना भी है; ॲन्ऱु-यह सोचकर; अ पुन्नै कुऴलाट्कु-उस सुन्दर केश वाली से; वन्त कारियम्-आगमन का हेतु; पुकल्वतु आनान्-कहने लगे। ६०४

वे सोचने लगे— मेरी दोनों माताएँ (कैकेयी का स्मरण नहीं हुआ) ऐसी ही दिखेंगी। इस तापक विचार से उनका मन दुर्बल हुआ। बहुत देर तक वैसे ही खड़े रहे। बाद सोचा कि प्रश्न करनेवाली को उत्तर देना चाहिए। इसलिए वे सुकेशिनी तारा से अपने आगमन का अभिप्राय इन शब्दों में कहने लगे। ६०४

शेन्नैयुम् यानुन् देडित् तेवियैत् तरुवॅ नॆन्ऱु
मानवर् कुरैत्त माऱ्ऱ मऱन्दन नरुक्कन् मैन्दन्
आनव नमैदि वल्लै यऱियॅन वरुळिन् वन्देन्
मेन्निलै यनैयान् शॅय्है विळैन्दवा विळम्बु हॆन्ऱान् 605

अरुक्कन् मैन्तन्-सूर्यसूनु ने; चेन्नैयुम्-सेना और; यानुम्-मैं; तेवियै-देवी सीता को; तेटि तरुवॆन्-खोज लाऊँगा; ॲन्ऱु-ऐसा; मानवर्कु-मनुकुलोदित श्रीराम को; उरैत्त माऱ्ऱम्-जो दिया, वह वचन; मऱन्तनन्-(सुग्रीव) भूल गया; आनवन् अमैति-उसका अभिप्राय; वल्लै अऱिति-जल्दी जान आओ; ॲन्न-ऐसा (श्रीराम के) कहने पर; अरुळिन्-उस आज्ञा को लेकर; वन्तेन्-आया; मेल् निलै-उच्चस्थिति के; अनैयान् चॅय्कै-उसका समाचार; विळैन्तवा-जैसे होता है; विळम्पुक-वैसा कहो; ॲन्ऱान्-बोले। ६०५

"सूर्य-पुत्र ने मनुकुल-दीपक श्रीरामजी को वचन दिया था कि मैं और मेरी सेना देवी सीता को खोजकर लायगी। वह उसको भूल गया। उसका मन जान आओ।" श्रीराम ने मुझसे यह कहा और उनकी आज्ञा पर मैं इधर आया हूँ। उत्कृष्ट राजधन जिसे मिला है, उस सुग्रीव के कार्य के सम्बन्ध में आप ही कहें —लक्ष्मण ने यह कहा। ६०५

शीऱुवा यल्लै यॆय शिऱियवर् तीमै शॅय्दाल्
आऱुवाय् नीय लान्मऱ् ऱारुळ रयर्न्दा नल्लन्

वेरुवे ऱुलह् मॅङ्गुन् दूदरै विडुत्त वल्लै
ऊरुमा नोक्कित् ताळ्त्ता नुदविमा ऱुदवि युण्डो 606

ऐय–प्रभु; चिऱियवर्–छोटे लोग; तीमै चॅय्ताल्–अपराध करें तो; चीऱ्वाय् अल्लै–कोप मत करें; आऱ्वाय्–शान्त हों; नी अलाल्–(इस योग्य) आपके सिवा; मऱ्ऱु आर् उळर्–और कौन हैं; अयर्न्तान् अल्लन्–(सुग्रीव) भूले नहीं हैं; उलकम् ॲङ्कुम्–विश्व भर में; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; तूतरै विटुत्तु–दूतों को भेजकर; अ ॲल्लै–उन स्थलों से; ऊरुमा नोक्कि–उनके आने की प्रतीक्षा करते हुए; ताळ्त्तान्–विलम्ब किया (उन्होंने); उतवि–आपकी की हुई सहायता का; माऱु उतवि–प्रतीकार सहायता; उण्टो–भी (हो सकती) है क्या। ६०६

(तारा ने उत्तर दिया कि) प्रभु ! छोटे लोग बुराई करें तो बड़े आपको क्रोध नहीं करना चाहिए। शान्त हो जाइये। अगर आप शान्त नहीं हो सकेंगे, तो और कौन हैं जिनमें यह गुण होगा ? और भी सुग्रीव कुछ नहीं भूले हैं। संसार भर में उन्होंने दूत भेजे हैं। उनके आने की प्रतीक्षा में वे विलम्ब कर रहे हैं। आपने जो उपकार किया, उसका प्रत्युपकार हो भी सकता है क्या ? । ६०६

आयिर कोडि तूद ररिक्कण मळैप्प वाण
पोयिनर् पुहुदु नाळुम् पुहुन्ददु पुहल्पुक् कोर्क्कुत्
तायिनु मिनिय नीरे तणिदिरार् ऱरुम मः(ह्)दाल्
तीयन शॅय्या रायिन् यावरे शॅऱुन रावार् 607

आयिर कोटि तूतर्–सहस्र करोड़ (असंख्यक) दूत; अरि कणम् अळैप्प–वानर-गणों को बुला लाने; आणै पोयिनर्–(सुग्रीव की) आज्ञा से चले हैं; पुकुतुम् नाळुम्–उनके आने का दिन भी; पुकुन्ततु–आ गया; पुकल् पुक्कोर्क्कु–शरणागतों के लिए; तायिनुम् इनिय–माता से बढ़कर प्यारे रहनेवाले; नीरे–आप ही; तणितिर्–कोप शान्त करने अर्ह हैं; अ∴तु तरुमम्–वही धर्म है; तीयत चॅय्यार् आयिन्–अगर बुरा काम करते ही नहीं; चॅऱुनर् आवार्–कोपभाजन या दंड्य होगा; यावरे–कौन। ६०७

सहस्रकोटि (असंख्यक) दूत वानर-समूहों को ले आने के लिए सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले हैं। उनके लौट आने का समय भी आ गया है। शरणागतों के लिए आप माता से भी प्यारे हैं। आपका क्रोध शान्त हो। वही धर्म है। बुरे काम करनेवाले होंगे ही नहीं तो क्रोध करने योग्य या दण्डनीय कौन होंगे ? (अपराध हो ही जाते हैं। तभी तो क्षमा की बात भी आती है।) । ६०७

अडैन्दवर्क् कबय नीवि रहळिय वळविल् शॅल्वम्
तॊडर्न्दुनुम् बणियिर् ऱीर्न्दा लदुवुनुन् दॊळिले यन्ऱो

मडन्दैदन् पौरुट्टाल् वन्द वाळमरक् कळत्तु माण्डु
किडन्दिल रॆन्तिर् पिन्नु निर्कुमो केण्मै यम्मा 608

नीविर्–आप; अटैन्तवर्क्कु–आपकी शरण में आये हुए लोगों को; अपयम् अरुळिय–अभय के साथ जो दी; अळवु इल् चॆल्वम्–वह अनन्त सम्पत्ति; तॊटर्न्तु–मिली, उस कारण; नुम् पणियिन्–आपकी सेवा की; तीर्न्ताल्–उपेक्षा करें तो; अतुवुम्–वह भी; नुम् तॊळिले–आपका ही कार्य; अन्ऱो–होगा न; मटन्तै तन्–रमणी सीता के; पॊरुट्टाल् वन्त–कारण प्राप्त; वाळ् अमर् कळत्तु–तलवार के युद्ध की भूमि में; माण्टु किटन्तिलर्–मरकर पड़े नहीं रहे; ऍन्तिन्–तो; पिन्नुम्–उसके बाद भी; केण्मै–मित्रता; निर्कुमो–टिकेगी क्या। ६०८

सुग्रीव आपकी शरण में आये थे। आपने उनको अभय प्रदान किया। और उन्हें फलस्वरूप अपार वैभव और सुख-भोग मिल गया। उसमें भूलकर अगर सुग्रीव आपकी सेवा त्यागेंगे तो वह भी आपके ही कृत्य का फल समझा जायगा न? सीतादेवी के कारण तलवार के साथ लड़ने योग्य युद्ध जो आयगा, उसमें वे मरे नहीं पड़ेंगे तो मित्रता भी टिकेगी क्या? । ६०८

शॆम्मैशे रुळ्ळत् तीर्हळ् शॆय्दपे रुदवि तीरा
वॆम्मैशेर् पहैयु माऱ्ऱि यरशुवीऱ् ऱिरुक्क विट्टीर्
उम्मैये यिहळ्व रॆन्नि नॆळिमैया यॊऴिव दॊन्ऱो
इम्मैये वऱुमै यॆय्दि यिरुमैयु मिऴप्प रन्ऱे 609

चॆम्मै चेर् उळ्ळत्तीर्कळ्–निष्पक्षता से सुसंस्कृत मन वाले (आप) ने; चॆय्त पेर् उतवि–जो (उपकार) किया, वह बड़ा उपकार; तीरा–भुलाया नहीं जा सके, ऐसा; वॆम्मै चेर्–भयंकर; पकैयुम् माऱ्ऱि–शत्रु को मारकर; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क विट्टीर्–राजा बन बैठने दिया (आपने सुग्रीव को); उम्मैये इकऴ्वर्–आपकी ही उपेक्षा करेंगे; ऍन्तिन्–तो; ऍळिमैयाय् ऒऴिवतु ऒन्ऱो–(वह उपेक्षा) यों ही आसानी से चली जायगी क्या; इम्मैये वऱुमै ऍय्ति–इसी जन्म में अभावग्रस्त होकर; इरुमैयुम्–इह-पर दोनों को; इऴप्पर् अन्ऱे–खो देंगे न। ६०९

उत्कृष्ट मन वाले आपने उपकार किया। वह बड़ा उपकार भुलाया न जाय, ऐसा आपने उनके सन्तापक शत्रु तो मारा और उन्हें राजसिंहासन पर शान के साथ आसीन कराया। अगर वे आपकी उपेक्षा करेंगे तो क्या वह आसानी से (विफल) हो जायगी? इसी जन्म में दरिद्र बनकर वे इह-पर दोनों हितों से वंचित न हो जायँगे? । ६०९

आण्डुपोर् वालि याऱ्ऱन् माऱ्ऱिय दम्बोन् ऱायिन्
वेण्डुमो तुणैयु नुम्बाल् विल्लिनु मिक्क दुण्डो
तेण्डुवाऱ्त् तेडु हिन्ऱोर् देवियै यदनैच् चॆव्वे
पूण्डुनिन् ऱुय्त्तऱ् पालार् नुङ्गळ्ल् पुहुन्दु ळोरुम् 610

आण्टु–तब (वाली-युद्ध के समय); पोर् वालि–योद्धा वाली का; आऱ्ऱल्–बल का; माऱ्ऱियतु–नाश करना; अम्पु ऑन्ऱु–आपका ही एक शर है; आयिऩ्–तो; तुणैयुम्–सहायक भी; वेण्टुमो–चाहिए क्या; नुम् पाल्–आपके पास रहनेवाले; विल्लिऩुम् मिक्कतु–धनु से बढ़कर बलवान; उण्टो–सहायक हैं क्या; तेवियै तेण्टुवार्–देवी सीता के अन्वेषक; तेटुकिऩ्ऱीर्–खोजते हैं (इतना ही); नुम् कळ्ल्–आपके चरणों में; पुकुन्तुळोरुम्–आगत सुग्रीव आदि; अततै–उस (सेवाकार्य) को; चॅव्वे पूण्टु निऩ्ऱु–अच्छे प्रकार से लेकर पूरा करके; उय्तल् पालार्–उद्धार पाने अर्ह हैं। ६१०

(असल में आप सहायक नहीं चाहते।) आपके एक ही शर ने योद्धा वाली के बल को नष्ट किया। तब आपको सहायक भी चाहिए क्या? आपके धनु से बढ़कर कोई (सहायक) क्या होगा? आप तो सीता देवी के अन्वेषकों की खोज में हैं। आपके शरणागत सुग्रीव आदि वह सेवाकार्य अच्छी तरह से करें —यह उनका कर्तव्य ही है। ६१०

ऑऩ्ऱव ळुरैत्त माऱ्ऱम् यावैयु मिन्निदु केट्टु
नऩ्ऱुणर् केळ्वि याळ नरुळ्वर नाणुट् कॊण्डाऩ्
निऩ्ऱऩ निऱ्ऱ लोडु नीत्तनऩ् मुनिवॆंन् ऱुऩ्ऩा
वऩ्ऱुणै वयिरत् तिण्डोण् मारुदि मरुङ्गु वन्दाऩ् 611

ऑऩ्ऱु–ऐसा; अवळ् उरैत्त माऱ्ऱम्–उसके कहे वचन; यावैयुम्–सब; इऩ्ऩितु–ससंतोष; केट्टु–सुनकर; नऩ्ऱु उणर्–अच्छी तरह जाने हुए; केळ्वि–याळऩ्–श्रवण-ज्ञान के रखनेवाले लक्ष्मण; अरुळ् वर–करुणा के आने से; नाण् उळ् कॊण्टु–लाज से युक्त होकर; निऩ्ऱाऩ्–खड़े रहे; निऩ्ऱलोटुम्–स्थित रहते ही; मुनिवु नीत्तनऩ्–क्रोध छोड़ गये; ऑन्ऱु उऩ्ऩा–ऐसा सोचकर; वल् तुणै–बलवान सहायक; वयिरम् तिण् तोळ्–सारयुक्त और कठोर भुजाओं वाला; मारुति–मारुति; मरुङ्कु वन्ताऩ्–पास आया। ६११

तारा ने जो कुछ कहा, वह सब लक्ष्मण ने सन्तुष्ट होकर सुना। लक्ष्मण ने शास्त्र खूब सुने थे और उनको खूब समझ लिया था, यानी वे बड़े ही शिष्ट थे। उन्हें दया आ गयी और लज्जायुक्त हो खड़े रह गये। जब वे ऐसे खड़े हो गये, तब हनुमान को, जिसके युगल कन्धे बड़े और सुदृढ़ थे, आश्वासन हो गया कि लक्ष्मण का क्रोध दूर हो गया। इसलिए हनुमान उनके पास आया। ६११

वन्दडि वणङ्गि निऩ्ऱ मारुदि वदऩ नोक्कि
अन्दमिल् केळ्वि नीयु मयर्त्तऩै याहु मऩ्ऱे
मुन्दिऩ शॅय्है यॆऩ्ऱाऩ् मुनिविनु मुळैक्कु मऩ्बाऩ्
ऑन्दॆकेट् टरुळु हॆंऩ्ऩा वियम्बिऩ नियम्ब वल्लाऩ् 612

मुनिविनुम्–क्रोध में भी; मुळैक्कुम्–उत्पन्न; अऩ्पाऩ्–स्नेह वाले (लक्ष्मण) ने; वन्तु–आकर; अटि वणङ्कि–पैरों पर नमस्कार करके; निऩ्ऱ–जो खड़ा रहा,

उस; मारुति वत्तम् नोक्कि–मारुति का मुख देख; अन्तम् इल्–अनंत; केळ्वि–श्रवण-ज्ञान रखनेवाले; नीयुम्–तुम भी; मुन्तित्त चॆय्कै–पहले (जो) हुआ (वह) काम; अयर्त्तत्तै अन्ऱे–भूल गये न; ऎन्ऱान्–कहा; इयम्प वल्लान्–वाग्विदग्ध; ऎन्तै–पिता-सम; केट्टु अरुळुक–सुनने की कृपा करें; ऎन्ऱा–यह कहकर; इयम्पिनन्–आगे बोला। ६१२

लक्ष्मण ऐसे थे कि क्रोध करते हुए भी प्रेम रखनेवाले थे। अपने पैरों पर नमन करनेवाले मारुति का मुख देखकर लक्ष्मण बोले— अपार श्रवण-ज्ञान रखनेवाले हो तुम! तुमने भी पहले जो हुआ उसको भुला दिया न? तब वाग्विदग्ध हनुमान ने कहा कि पिता (तुल्य)! सुनने की कृपा करें। आगे वह यों बोला। ६१२

शिदैवहल् कादल् ऱायैत् तन्दैयैक् कुरुवैत् तॆय्वप्
पदवियन् दणरै यावैप् पालरैप् पावै मारै
वदैपुरि हुनर्क्कु मुण्डा माऱ्ऱला माऱ्ऱन् माया
उदविहॊन् ऱार्क्कॊन् ऱेनु मौळिक्कला मुबाय मुण्डो 613

चितैवु अकल्–अक्षय; कातल् तायै–वात्सल्यभरी माता को; तन्तैयै–और पिता को; कुरुवै–गुरु को; तॆय्वम् पतवि–देवपदासीन; अन्तणरै–ब्राह्मणों को; आवै–गायों को; पालरै–बालों को; पावैमारै–स्त्रियों को; वतै पुरिकुनर्क्कुम्–जो मारते हैं (हत्या करते हैं), उनके लिए भी; माऱ्ऱलाम् आऱ्ऱल्–परिहार का उपाय; उण्टाम्–होता है; माया–अविस्मरणीय; उतवि कॊन्ऱार्क्कु–सहायता (मारनेवालों) भूलनेवालों (कृतघ्नों) के लिए; ऒळिक्कलाम् उपायम्–निवारण का उपाय; ऒन्ऱेनुम्–एक भी; उण्टो–है क्या। ६१३

संसार में अक्षय प्रेम रखनेवाली माता की और पिता, गुरु, देवतुल्य ब्राह्मण, गाय, बालक, स्त्री —इनकी हत्या करना बड़ा पाप है। पर ऐसे पाप का भी प्रायश्चित्त हो सकता है। कृतघ्नता का परिहार कहीं एक भी है क्या? । ६१३

ऐयनुम् मोडु मॆङ्ग ळरिक्कुलत् तरश नोडुम्
मॆय्युरु केण्मै याह मेलैनाळ् विळैव दाय
शॆय्हैयॆन् शॆय्है यन्ऱो वत्नदु शिदैयु मायिन्
उय्वहै यॆवर्क्कु मुण्डो वुणर्वुमा शुण्ड दन्ऱो 614

ऐय–सुन्दर; नुम्मोटुम्–आपके; अरिकुलत्तु–और वानरकुल के; ऎङ्कळ् अरचनोटुम्–हमारे राजा सुग्रीव के बीच; मॆय् उरु–सच्ची रीति से बनी; केण्मै–मित्रता; आक–हो ऐसा; मेलै नाळ्–पहले; विळैवतु आय–जो हुआ; चॆय्कै–वह काम; ऎन् चॆय्कै अन्ऱो–मेरा काम था न; अन्नतु–वह मित्रता; चितैयुम् आयिन्–टूट जायगी तो; उय्वकै–उद्धार का मार्ग; ऎवर्क्कुम्–किसी के लिए भी; उण्टो–होगा क्या; उणर्वु–हमारी बुद्धि; माचु उण्टतु अन्ऱो–कलंकित बन जायगी न। ६१४

सुन्दर राजकुमार! आपके साथ वानरकुल के हमारे राजा की सच्ची मित्रता स्थापित हुई। क्या वह काम मेरा नहीं है? अगर वह टूट जायगी तो उससे जो पाप होगा उससे बचने का किसी के लिए क्या मार्ग होगा? उसका अर्थ यही होगा न कि हमारी बुद्धि धूमिल हो गयी! । ६१४

देवरुन् दवमुञ् जॅय्यु नल्लइत् तिइमु मर्रुम्
यावैयु नीरे यॅन्ब दॅन्वयिऱ् किडन्द दॅन्दाय्
आवदु निऱ्क शेरु मरणुण्डो वरुळुण् डन्ऱेल्
मूवहै युलहङ् गाक्कु मॉय्म्बिनीर् मुनिवुण् डाग्ल् 615

ॲन्ताय्–पिता (-सम); चॅय्युम् तवमुम्–हमारी की जानेवाली तपस्या; तेवरुम्–हमारे देव; मर्रुम् यावैयुम्–अन्य सभी कुछ; नीरे–आप ही हैं; ॲन्पतु–यह विचार; ॲन् वयिन्–मेरे मन में; किटन्ततु–घर किये है; आवतु निऱ्क–वह जो है एक ओर रहे; मूवकै उलकम्–त्रिवर्ग के लोकों का; काक्कुम्–पालन करने का; मॉय्म्पिनीर्–बल रखनेवाले; अरुळ–आपकी कृपा ही; उण्टु–हमारे लिए है; अन्ऱेल्–नहीं तो; मुनिवु उण्टाताल्–कोप करेंगे तो; चेरुम्–हम जा लगें, ऐसी; अरण् उण्टे–रक्षा का स्थान भी है क्या। ६१५

हमारे पिता (तुल्य)! हमारे तप आप हैं। हमारे देव आप ही हैं। हमारे अन्य सभी कुछ आप ही हैं। यह विचार मेरे मन में घर किये है। वह एक ओर रहे— तीनों लोकों का पालन करने में समर्थ! आपकी कृपा ही हमारी गति है! अगर कृपा न रहे और क्रोध भी हो जाय तो हम कहाँ जायँगे, जहाँ हमें शरण मिलेगी? । ६१५

मऱन्दिलन् कवियिन् वेन्दन् वयप्पडै वरुविप् पारै
तिऱन्दिऱ मेवि यन्नार् शेर्वदु पार्त्तुत् ताऴ्त्तान्
अऱन्दुणै नुमक्कुत् तान्ऱन् वाय्मैयै यऴिक्कु मायिन्
पिऱन्दिल नन्ऱे यॉन्ऱो नरहमुम् पिऴैप्प दन्ऱाल् 616

कवियिन् वेन्तन्–कपिराज; मऱन्तिलन्–नहीं भूले; वय पटै–विजय-वाहिनी को; वरुविप्पारै–बुला लानेवालों को; तिऱम् तिऱम्–(पृथ्वी के) भाग-भाग में; एवि–भेजकर; अन्नार् चॅर्वतु–उनके आने की; पार्त्तु–(राह) देखते हुए; ताऴ्त्तान्–विलम्ब किया (सुग्रीव ने); अऱम् तुणै–धर्म-मित्र; नुमक्कु–आपके विषय में; तान्–स्वयं; तन् वाय्मैयै–अपने सत्य का (वचन का); अऴिक्कुम् आयिन्–भंग कर देंगे तो; पिऱन्तिलन् अन्ऱो–जनित नहीं है न (जन्म वृथा हो गया न); ऑन्ऱो–क्या वही एक है; नरकमुम्–नरक भी; पिऴैप्पतु अन्ऱु–छोड़ेगा नहीं। ६१६

कपिकुलपति भूले नहीं हैं। विजयवाहिनी को बुलाने के लिए दूत भेजे जा चुके हैं। दूतों को स्थान-स्थान पर भेजकर वे उनके लौट आने

का रास्ता देख रहे हैं। आप धर्मपालक हैं। अगर आपके प्रति सत्य व्यवहार को सुग्रीव बिगाड़ देंगे तो वे पैदा हुए ही नहीं, ऐसा न समझे जायँगे (जन्म असफल हुआ रहेगा न) ? यह एक बुरा नतीजा ही नहीं— उन्हें नरक का वास भी मिलने से नहीं चूकेगा। ६१६

उदवाम लौरुवन् शॆय्द वुदविक्कुल् कैम्मा ऱाह
मदवातै यनैय मैन्द मऱ्ऱु मौन्ऱुलहि लुण्डो
शिदैयाद शॆरुवि लन्नात् मुन्शॆन्ऱु शॆरुनर् मार्बिन्
उदैयातॆ लुदैयुण् डावि युलैयाते लुरवॆन् मन्नो 617

मतम् आतै–मत्तगज; अतैय मैन्त–समान वीर; उतवामल्–विना उपकृत हुए ही; ऑरुवन् चॆय्त–जिसने किया; उतविक्कु–उस उपकार के; कैम्माऱु आक–बदले में; मऱ्ऱुम् ऑन्ऱु–और कुछ; उलकिल्–संसार में; उण्टो–होगा क्या; चितैयात चॆरुविल्–पूर्ण युद्ध में; अन्तात् मुन् चॆन्ऱु–उसके पूर्व ही जाकर; चॆरुनर् मार्पिल्–शत्रु के वक्ष में; उतैयातेल्–बाण गड़ा न दे तो भी; उतै उण्टु–बाण से आहत होकर; आवि उलैयातेल्–प्राण नहीं छोड़ेगा तो; उरवु ॲन्–(फिर) उससे नाता क्या; (मन्–ओ… पूरक ध्वनियाँ)। ६१७

मत्तगज-सदृश महावीर ! अहेतुक उपकार का कोई प्रत्युपकार इस संसार में सम्भव है क्या ? घोर युद्ध में उन (उपकारी) के पहले ही जाकर शत्रु के वक्ष पर बाण चलाना (या लात मारना) चाहिए। अगर वह न हो सके तो शत्रु का शर वक्ष में लेकर प्राण छोड़ नहीं देगा तो ऐसे उपकृतों के साथ सम्बन्ध से क्या होनेवाला है ? । ६१७

ईण्डिनि निऱ्ऱ लॆन्ब दिनियदो रियल्बिऱ् ऱन्ऱाल्
वेण्डल रऱिव रेलुङ् गेण्मैदीर् विनैयिऱ् ऱामाल्
आण्डहै याळि मौय्म्बि नैयनी रळित्त शॆल्वम्
काण्डिया लुन्मुन् वन्द कविक्कुलक् कोनौ डॆन्ऱान् 618

आण् तकै–पौरुषयुक्त; आळि–'याळि' (नामक बलवान जानवर) के समान; मौय्म्पिन्–बलवान; ऐय–प्रभु; नी–आप; ईण्टु–यहाँ; इनि–अब भी; निऱ्ऱल् ॲन्पतु–खड़े रहने का यह काम; इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱु–(मित्रता के लिए) स्वाभाविक नहीं; वेण्टलर्–शत्रु लोग; अऱिवरेल्–जान लेंगे तो; नुम् केण्मै–आपकी मित्रता; तीर् वितैयिऱ्ऱु आम्–टूट जाय, ऐसा अनर्थकारी हो जायगा; नीर् अळित्त चॆल्वम्–आपने दिया, यह धन; उन् मुन् वन्त–आपके अग्रज (के रूप में सम्मानित); कवि कुलम्–कपिकुल के; कोन् ओटु–राजा के साथ; काण्टि–आकर निहार लें; ॲन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ६१८

पौरुषयुक्त "याळि" सदृश बलवान प्रभु ! आप आगे भी यहाँ खड़े रहेंगे, तो वह मधुर-सम्बन्ध का लक्षण नहीं होगा। शत्रु जानेंगे तो हमारी मित्रता के नाश का कारण बन जायगा। आपने जो वैभव

हमें दिलाया उसे, और आपके बड़े भाई के रूप में स्वीकृत हमारे वानरयूथों के पति सुग्रीव को आकर निहारें। हनुमान ने आमन्त्रित किया। ६१८

मारुदि माऱ्ऱङ् गेट्ट मलैपुरै वयिरत् तोळान्
तीर्विन्नै शॅन्ऱु निन्ऱ शीऱ्ऱत्तान् शिन्दै शॅय्दान्
आरिय नरुळिऱ् रीर्न्दा नल्लन्वन् दडुत्त शॅल्वम्
पेर्वरि दाहच् चॅय्द शिऱुमैया नॅन्नुम् बॅऱ्ऱि 619

मारुति–मारुति का; माऱ्ऱम् केट्ट–उत्तर सुननेवाले; मलै पुरै–पर्वत की समानता करनेवाले; वयिरम् तोळान्–सारयुक्त कन्धों वाले; तीर् विन्नै चॅन्ऱु–हटने पर तत्पर; निन्ऱ–जो रहा; चीऱ्ऱत्तान्–वैसा क्रोध जिनका था (क्रोध-रहित हो); आरियन् अरुळिल्–आर्य श्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा की; तीर्न्तान् अल्लन्–उपेक्षा नहीं की है; वन्तु अदुत्त चॅल्वम्–अपने को प्राप्त वैभव-सुख-भोग को; पेर्वु अरितु आक–भूलना कठिन था, इसलिए; चॅय्त चिऱुमैयान्–अल्पकर्मा हो गया है; ॲन्नुम् पॅऱ्ऱि–यह स्वाभाविक फल; चिन्तै चॅय्तान्–मन में सोचा (लक्ष्मण ने)। ६१९

लक्ष्मण ने मारुति के वचन सुने। अब पर्वतोन्नत भुजा वाले वे गतक्रोध हो गये थे। उन्हें पता लग गया कि सुग्रीव ने श्रीराम की आज्ञा की उपेक्षा नहीं की है, वरन् यह नई प्राप्त सम्पत्ति का गुण था जो उसे सुख-भोग से अलग होने नहीं दे रहा था। इसके कारण वह गुणहीन हो गया था। लक्ष्मण ने इस तथ्य को समझा। ६१९

अन्नैयदु करुदिप् पिन्न ररिक्कुलत् तवनै नोक्कि
निन्नैयोरु माऱ्ऱ मिन्ने निहळ्त्तुव दुळदु निन्बाल्
इन्नैयन वुरैत्तऱ् केऱ्ऱ वॅण्णुदि यिवैनी यॅन्ना
वन्नैहळल् वयिरत् तिण्डोण् मन्निळङ् गुमरन् शॊल्वान् 620

अन्नैयतु करुति–उसको सोचकर; पिन्तर्–बाद; वन्नै कळल्–सुनिर्मित वीर-कटक; वयिरम् तिण् तोळ्–हीर के समान कठोर कन्धे; मन् इळम् कुमरन्–(इनके साथ शोभायमान) चक्रवर्तीकुमार; अरि कुलत्तवन्नै–वानरकुल के उस (हनुमान) को; नोक्कि–देखकर; इन्ने–अभी; निन्नै–तुम्हें; ओर माऱ्ऱम्–एक समाचार; निकळ्त्तुवतु–कहना; उळतु–(रहता) है; इन्नैयन–यह; निन्पाल् उरैत्तऱ्कु–तुम्हारे पास; एऱ्ऱ–कहने योग्य है; नी इवै ॲण्णुति–तुम ये बातें सोचो; ॲन्ना–कहकर; चॊल्वान्–कहने लगे। ६२०

यह सोचकर, कारीगरीयुक्त स्वर्ण-पायलों और वज्र-सम कठोर भुजाओं से भूषित राजकुमार लक्ष्मण ने वानरकुल के हनुमान से कहा कि मारुति! तुमसे कुछ बातें कहनी हैं। ये बातें तुम्हीं से कहने योग्य है। तुम सुनो और उन पर विचार करो। वे आगे यों बोले। ६२०

देवियैक् कुऱित्तुच् चॅऱ्ऱ शीऱ्ऱमु मानत् तीयुम्
आवियैक् कुऱित्तु निन्ऱ वैयतै यदनैक् कण्डेन्
कोवियऱ् ऱरुमम् नीङ्गक् कॉडुमैयो डुऱवु कूडिप्
पावियऱ्क् केऱ्ऱ शॅय्यक् करुदुवल् पऴियुम् पारेन् 621

तेवियै कुऱित्तु–देवी सीता (के हरण के कारण; चॅऱ्ऱ–शत्रु के प्रति हुआ; चीऱ्ऱमुम्–रोष और; मातम्–(अप-) मान की; तीयुम्–आग दोनों; ऐयतै आवियै कुऱित्तु–प्रभु श्रीराम के प्राणों को लक्ष्य बनाकर; निन्ऱ–(क्रियाशील) खड़े हैं; अततै कण्टेन्–इसको मैंने देखा; को इयल्–राजा के लिए उचित; तरुमम् नीङ्क–धर्म छोड़कर; कॉटुमैयोटु–क्रूरता से; उऱवु कूटि–सम्बन्ध स्थापित करके; पावियऱ्कु–पापी जनों के; एऱ्ऱ–योग्य; चॅय्य–(काम) करना; करुतुवल्–सोचूँगा; पऴियुम्–(उससे मिलनेवाली) निन्दा; पारेन्–की भी परवाह नहीं करूँगा। ६२१

श्रीराम की बात सोचो। देवी के अपहरण से उत्पन्न शत्रुता-भरा क्रोध और अपमान-भावना की आग उनके प्राणों को खाये जा रही है। उसको प्रत्यक्ष देखकर मेरे मन में यह भाव उठा कि राजधर्म छोड़ दूँ; क्रूरता के धर्म से नाता जोड़ लूँ और पापी-योग्य (आत्म-) घातक कार्य कर लूँ; और इसमें अपयश की परवाह नहीं करूँ। ६२१

आयिनु मॅन्नै याने याऱ्ऱिनि ऱावि युय्न्दु
नायहन् ऱनैयुन् देऱ्ऱ नाळ्पल कऴिन्द वन्ऱेल्
तीयुमिव् वुलह मून्ऱुन् देवरुम् वीव रॊन्ऱो
वीयुनल् लऱमुम् बोहा विदियैयार् विलक्कऱ् पालार् 622

आयिनुम्–तो भी; ऍन्नै–अपने को; यान्ते आऱ्ऱि निन्ऱु–स्वयं शान्त करके; आवि उय्न्तु–प्राणधारण करके; नायकन् तन्नैयुम्–नायक श्रीराम को भी; तेऱ्ऱ–ढाढ़स दिलाने में; नाळ् पल कऴिन्त–अनेक दिन बीत गये; अन्ऱेल्–नहीं तो; इ उलकम् मून्ऱुम्–ये तीनों लोक; तीयुम्–जल जाते; तेवरुम् वीवर्–देव भी मर जाते; ऑन्ऱो–यही एक है क्या; नल् अऱमुम्–श्रेष्ठ धर्म भी; वीयुम्–मिट जाते; पोका–अटल; वितियै–विधि को; विलक्कल् पालार्–टाल सकनेवाले; यार्–कौन हैं। ६२२

तो भी मैंने स्वयं अपने को धीरज बँधा लिया। अपने प्राणों को रख लिया। नायक श्रीराम को भी ढाढ़स दिलाया। इसी में अनेक दिन बीत गये। नहीं तो (अगर हम अपना गुस्सा शान्त नहीं करते तो), ये तीनों लोक जल जाते! देवगण मिट जाते। क्या वहीं तक समाप्त होता? श्रेष्ठ धर्म भी मिट जाते। अनिवार्य प्रारब्ध कर्म का निवारण कौन कर सकता है? । ६२२

उन्नैक्कण् डुङ्गोन् ऱन्नै युऱ्ऱिडत् तुदवुम् बॆऱ्ऱिक्
कॆन्नैक्कण् डन्नबोऱ् कण्डिङ् गित्तुणै नॆडिदु वैहित्

तऩ्ऩैक्कॊण् डिरुन्दे ताऴ्त्ता ऩऩ्ऱेऩिर् ऱऩुवोऩ् ऱाले
मिऩ्ऩैक्कण् डऩैया डऩ्ऩै नाडुदल् विलक्कर् पाऱ्ऱो 623

उऩ्ऩै कण्टु-(श्रीराम) तुम्हें देखकर; उऱ्ऱ इटत्तु-संकट के अवसर पर; उतवुम् पॆऱ्ऱिक्कु-उपकार करने के स्वभाव में: उम् कोऩ् तऩ्ऩै-तुम्हारे राजा को; ॲऩ्ऩै कण्टतऩ् पोल्-(जैसे) मुझे देखते हैं, वैसे (भाई) मानकर; इ तुणै-इतना; नॆटितु वैकि-लम्बा काल बिताकर; तऩ्ऩै कॊण्टु-अपने को (किसी तरह) जीवित; इरुन्ते ताऴ्त्ताऩ्-रखते हुए क्षमाशील रहे; अऩ्ऱु ॲऩिऩ्-नहीं तो; तऩु ओऩ्ऱाले-धनु, एक से; मिऩ्ऩै कण्टु अऩैयाळ् तऩ्ऩै-विद्युत्-सी दिखनेवाली सीताजी को; नाटुतल्-खोजना; विलक्कल् पाऱ्ऱो-रोका जा सकता है क्या। ६२३

श्रीराम ने तुम्हें देखकर तुम्हारे राजा को मेरे समान (अपना भाई) माना। अपने उपकारी स्वभाव के अनुकूल समय पर सहायता की। सुग्रीव के प्रति सम्मानभाव के ही कारण वे इतने दिन अपने प्राणों की रक्षा करते रह गये। नहीं तो वे अपने धनु की सहायता से ही अपनी विद्युत्-सम कान्ति वाली देवी को खोज लेते! उनको उस काम से रोका जा सकता है क्या? । ६२३

ऑऩ्ऱुमो वाऩ मऩ्ऱि युलहमुम् पदिऩा लुळ्ळ
वॆऩ्ऱिमाक् कडलु मेऴेऴ् मलैयुळ्ळ वॆऩ्ऩ वेयाय्
निऩ्ऱदो रण्डत् तुळ्ळे यॆऩिऩदु नॆडिय दोऩ्ऱो
अऩ्ऱुनीर् शॊऩ्ऩ माऱ्ऱन् दाऴ्वित्तल् करुम मऩ्ऱाल् 624

वाऩम्-आकाश; ऑऩ्ऱुमो-केवल एक है क्या; अऩ्ऱि-वही नहीं; पतिऩाल् उळ्ळ-चौदह (की संख्या में) रहनेवाले; उलकमुम्-लोक और; वॆऩ्ऱि-विजयी; मा कटल्-बड़े समुद्र; एऴुम्-सातों; मलै एऴुम्-पर्वत सात; उळ्ळ-(इसके अन्दर) हैं; ॲऩ्ऩवे-ऐसा; आय् निऩ्ऱ-स्थित रहनेवाले; ओर् अण्टत्तु उळ्ळे-एक अण्ड में; ॲऩिऩ्-(कहीं एक कोने में) रहती हैं तो; अतु-वह (वहाँ पहुँचना); नॆटियतु ऑऩ्ऱो-बड़ा काम है क्या; अऩ्ऱु-उस दिन; नीर् चॊऩ्ऩ माऱ्ऱम्-तुमने जो दिया, वह वचन; ताऴ्वित्तल्-(पालन करने में) देरी करना; करुमम् अऩ्ऱु-(योग्य) काम नहीं। ६२४

आकाश क्या? चौदहों लोक, अजेय सातों समुद्र, सातों कुलगिरियाँ आदि से भरे इस अण्ड में कहीं किसी भी कोने में क्यों न हो, अगर देवी रहेंगी तो उनको ढूँढ़कर ले आना क्या कोई अतिकठिन काम होगा? लेकिन तुम लोगों ने जो वचन दिया, उसकी उपेक्षा करके विलम्ब करना तुम्हारे लिए योग्य काम नहीं है! । ६२४

ताऴ्वित्ती रल्लीर् पऩ्ऩा डरुक्किय वरक्कर् तम्मै
वाऴ्वित्ती रिमैयोर्क् किऩ्ऩल् वरुवित्तीर् मरबिर् ऱीराक्

केळवित्ती याळर् तुन्नबङ् गिळर्वित्तीर् पावन् दन्नै
मूळवित्तीर् मुनिया दानै मुनिवित्तीर् मुडिदि रॅन्ऱान् 625

ताळ्वित्तीर् अल्लीर्–विलम्ब (ही) नहीं किया; पल् नाळ् तरुक्किय–कई दिनों से घमण्ड के साथ फिरनेवाले; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; वाळ्वित्तीर्–जीवित रख दिया; इमैयोर्क्कु–देवों को; इन्नल् वरुवित्तीर्–कष्ट दिलाया; मरपिन् तीरा–धर्म-क्रम से दूर न जानेवाले; केळ्वि–श्रवण-ज्ञानी; ती आळर्–अग्निहोत्री ब्राह्मणों के; तुन्पम् किळर्वित्तीर्–दुःख को बढ़ाया; पावम् तन्नै–पाप को; मूळवित्तीर्–उकसाया; मुनियातानै–जो (साधारण रूप से) क्रोध नहीं करते, उन श्रीराम को; मुनिवित्तीर्–क्रोध करने को मजबूर कर दिया; मुटितिर्–मरो; अॅन्ऱान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ६२५

तुमने केवल विलम्ब ही नहीं किया! (तुम्हारे विलम्ब से अन्य अनर्थ भी हो गये।) बहुत काल से गर्व के साथ फिरनेवाले राक्षसों की आयु को तुमने बढ़ने दिया! देवों को कष्ट दिलाया। यथाविधि अर्जित शास्त्रज्ञान रखनेवाले और यागाग्नि के पालक मुनियों का दुःख बढ़ाया। पाप को वर्धित कर दिया। जो साधारण रूप से कोप नहीं करते, उन श्रीराम को क्रोध से युक्त कर दिया। मरो सब! —लक्ष्मण ने झुँझलाहट के साथ कहा। ६२५

तोन्ऱलः(ह्) दुरैत्त लोडु मारुदि तॉळुदु तॉल्लै
आन्ऱन् लरिज पोय पॉरुण्मनत् तडैप्पा यल्लै
एन्ऱदु मुडिये मॅन्नि निऱत्तुमित् तिरत्तुक् कॅल्लाम्
शान्ऱिनि याने पोन्दुन् ऱन्मुनैच् चार्दि यॅन्ऱान् 626

तोन्ऱल्–सुन्दर राजकुमार (के); अः.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहते ही; मारुति–हनुमान; तॉळुतु–नमस्कार करके; तॉल्लै–प्राचीन; आन्ऱ–श्रेष्ठ; नूल्–ग्रन्थों के; अरिज–ज्ञाता; पोय पॉरुळ्–बीती बातें; मनत्तु–मन में; अटैप्पाय् अल्लै–रखें मत; एन्ऱतु–लिया हुआ काम; मुट्टियेम्–पूरा नहीं करेंगे; ऍन्निन्–तो; इऱत्तुम्–प्राण छोड़ देंगे; इ तिऱत्तुक्कु ऍल्लाम्–इन सब बातों के लिए; इनि–आगे; नाने चान्ऱु–मैं खुद साक्षी हूँ; पोन्तु–अन्दर पधारकर; उन् तन् मुनै चार्ति–अपने बड़े भाई से मिलिए; ऍन्ऱान्–कहा। ६२६

जब सुन्दर सुमित्रानन्दन ने यह बात कही, तब मारुति ने नमस्कार करके कहा कि हे प्राचीन और श्रेष्ठ शास्त्रों के विद्वान्! बीती बातों को मन में मत रखिये। हम अपने वचन के अनुसार अपनायी हुई सेवा पूर्ण न करेंगे तो हम मर जायँगे। इन सबका मैं ही साक्षी रहूँगा। आप अन्दर पधारें और अपने बड़े भाई के स्थान में रहनेवाले सुग्रीव से मिलें। ६२६

मुन्तुनी शॊल्लिऱ् ऱन्ऱो मुयन्ऱदु मुयऱ्चि दानुम्
इन्तुनी यिशैत्त शॆय्वा नियैन्दन मॆन्ऱु कूऱि
अन्नदो रमैदि यान्ऱ नरुळ्शिऱि दऱिवा नोक्किप्
पॊन्निन्वार् शिलैयि नानु मारुदि योडुम् बोनान् 627

पॊन्निन्–स्वर्ण के; वार् चिलैयितानुम्–ढले धनु के धारक (लक्ष्मण) भी; मुन्तुम्–पहले भी; मुयन्ऱतु मुयऱ्चि तानुम्–हमने जो किया, वह कार्य भी; नी चॊल्लिऱ्ऱु अन्ऱो–तुम्हारा कहा हुआ था न; इन्तुम्–आगे भी; नी इचैत्त–तुम जो कहो; चॆय्वान्–वह करने को; इयैन्ततम्–सम्मत हैं; ऎन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; अन्नतु ओर्–वैसी एक; अमैतियान् तत्–स्थिति में रहनेवाले; अरुळ् (सुग्रीव की) दया; चिऱितु–थोड़ा; अऱिवान्–समझने का; नोक्कि–विचारकर; मारुतियोटुम्–मारुति के साथ; पोनान्–गये। ६२७

पिघले स्वर्ण से निर्मित धनु के धारक लक्ष्मण ने हनुमान से यों कहा। पहले जो प्रयास हमने अपना लिये थे, वे भी तुम्हारे ही कहे हुए थे न? वैसे ही आगे भी हमने तुम्हारी बात मानने को स्वीकार किया है। फिर वे पूर्वकथित स्थिति में रहनेवाले सुग्रीव का मनोभाव जानने के विचार से मारुति के साथ गये। ६२७

अयिल्विऴिक् कुमुदच् चॆव्वायच् चिलैनुद लन्नप् पोक्किन्
मयिलियऱ् कोडित्ते रल्हुन् मणिनहैत् तिणिवेय् मॆन्ऱोट्
कुयिन्मॊऴिक् कलशक् कोङ्गे मिन्निडैक् कुमिऴेऱ् मूक्किन्
पुयलियऱ् कून्दन् मादर् कुऴात्तोडुन् दारै पोनाळ् 628

तारै–तारा; अयिल् विऴि–भाले के समान आँखें; कुमुतम् चॆव्वाय्–कुमुद जैसे लाल अधर; चिलै नुतल्–(और) धनुसदृश भौंहें; अन्नम् पोक्किन्–हंस की-सी चाल; मयिल् इयल्–कलापी-सी छटा; कोटि तेर् अल्कुल्–पताकाओं से अलंकृत रथ के समान कटि-प्रदेश; मणि नकै–मुक्ता-सम दाँत; तिणि वेय्–सुदृढ़; मॆन् तोळ्–मृदुल कन्धे; कुयिल् मॊऴि–कोयल की-सी बोली; कलचम् कोङ्कै–स्वर्णकलश-सम उरोज; मिन् इटै–विद्युत्-सी कमर; कुमिऴ्–'कुमिऴ' नामक फूल के समान; एर्–सुन्दर; मूक्किन्–नाक; पुयल् इयल् कून्तल्–मेघ-सम केश; मातर् कुऴात्तोटुम्–(इनसे युक्त) स्त्रियों के समूह के साथ; पोताळ्–लौट चलीं। ६२८

तारा अपनी दासियों और सहेलियों के वृन्दों के साथ लौट चली। वे स्त्रियाँ भी कितनी सुन्दर थीं! भाले के समान आँखें, कुमुद जैसे अधर, धनु के आकार की भौंहें, हंस की-सी चाल, मयूर-सम आभा, ध्वजालंकृत रथों के समान कटि-प्रदेश, मोतियों के समान दाँतों की सुन्दरता, सुदृढ़ वंशवृक्ष के समान कोमल कन्धे, कोकिल का-सा कण्ठस्वर, स्वर्ण कलश-सम उरोज, बिजली-सी कमर और 'कुमिऴ' नामक फूल के समान नासिका और काले मेघ के समान केश —हर एक स्त्री का यह साज था।

(तारा की वैधव्य-स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने के लिए स्त्रियों का यह वर्णन कवि द्वारा विशेष रूप से किया गया है।) । ६२८

वल्लमन् दिरिय रोडु वालिहा दलनु मैन्दन्
अल्लियङ् गमल मन्न अडिपणिन् दच्चन् दीरन्दान्
विल्लियु मवनै नोक्कि विरैविनॅन् वरवु वीर
शॊल्लुदि नुन्दैक् कॅन्ऱा नन्ऱॅनत् तॊऴुदु पोनान् 629

वालि कातलनुम्–वाली का प्यारा (पुत्र) भी; वल्ल–समर्थ; मन्तिरियरोटु–मन्त्रियों के साथ; मैन्तन्–(राजकुमार) लक्ष्मण के; अल्लि–पंखुड़ियों-सहित; अम् कमलम् अन्न–सुन्दर कमल के समान जो रहे; अटि पणिन्तु–(उनके) चरणों पर नमस्कार करके; अच्चम् तीर्न्तान्–भय-विमुक्त हुआ; विल्लियुम्–धनुर्धर (लक्ष्मण) ने भी; अवनै नोक्कि–उसको देखकर; वीर–वीर; ॲन् वरवु–मेरा आना; नुन्तैक्कु–अपने पिता को; विरैविन्–जल्दी; चॊल्लुति–कहो; ॲन्ऱान्–कहा; नन्ऱु–अच्छा; ॲन–कहकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोतान्–(अंगद) गया। ६२९

वाली के पुत्र अंगद ने लक्ष्मण को देखा, जो राजनीति और उससे सम्बन्धित शास्त्रों में कुशल मन्त्रियों के साथ आ रहे थे। उसने लक्ष्मण के पंखुड़ियों सहित खिले हुए सुन्दर कमल के समान चरणों पर झुककर नमस्कार किया। लक्ष्मण की करुणा देखकर उसका भय जाता रहा। धनुर्धर लक्ष्मण ने अंगद से कहा— वीर! तुम जाओ और अपने पिता से मेरा आना बताओ। अंगद, "अच्छा" कहकर नमस्कार करके चला। ६२९

पोनपिन् ऱादै कोयिल् पुक्कवन् पॊलन्गॊऴ् पादम्
तानुऱप् पऱ्ऱि मुऱ्ऱुन् दैवन्दु तडक्कै वीरन्
मानवर् किळैयोन् वन्दुन् वायिलिन् पुऱत्तान् चीऱ्ऱम्
मीनुयर् वेलै मेलुम् पॆरिदिदु विळैन्द दॆन्ऱान् 630

तट कै वीरन्–बड़े हाथों वाले (अंगद) ने; पोन् पिन्–जाने के पश्चात्; तातै कोयिल् पुक्कु–पिता के महल में जाकर; अवन्–उसके; पॊलम् कॊऴ् पातम्–सुन्दरता-युक्त चरणों को; तान् उऱ पऱ्ऱि–खूब पकड़कर; मुऱ्ऱुम् तै वन्तु–पूर्णरूप से सहलाकर; मानवर्क्कु–श्रीराम के; इळैयोन्–कनिष्ठ; वन्तु–आकर; उन् वायिलिन् पुऱत्तान्–आपके महल के द्वार के बाहर खड़े हैं; चीऱ्ऱम्–उनका क्रोध; मीन् उयर्–मकर-भरे; वेलै मेलुम्–समुद्र से बढ़कर; पॆरितु–अधिक है; इतु विळैन्ततु–यह (कार्य) हुआ है; ॲन्ऱान्–कहा। ६३०

विशाल और दीर्घ हाथों वाला वीर अंगद वहाँ से चलकर अपने (छोटे) पिता के महल के अन्दर गया। उसने सुग्रीव के स्वर्ण-सम पैरों को पकड़कर सहलाया और कहा कि सम्मान्य श्रीराम के छोटे भ्राता लक्ष्मण

तुम्हारे महल के द्वार पर खड़े हैं। उनका क्रोध मकरालय से भी बड़ा है। यह समाचार है। ६३०

अऱिवुऱ्ऱ महळिर् वॆळ्ळ मलमरु ममलै नोक्किप्
पिऱिवुऱ्ऱ मयक्कत् तान्मुन् दुऱ्ऱदोर् पॆऱ्ऱि योरान्
शॆऱिपॊऱ्ऱा रलङ्गल् वीर शॆय्दिलङ् गुऱ्ऱ नम्मैक्
कऱुवुऱ्ऱ पॊरुळुक् कॆन्नो कारणङ् गण्ड दॆन्ऱान् 631

अऱिवु उऱ्ऱ मकळिर् वॆळ्ळम्–बात जो जान गयीं, उन स्त्रियों की भीड़ के; अलमरुम्–थर्राने के; अमलै–शोर को; नोक्कि–देखकर; पिऱिवु उऱ्ऱ मयक्कत्तान्–छूटे हुए भ्रम वाले (सुग्रीव) ने; मुन्तु–पहले; उऱ्ऱतु ओर् पॆऱ्ऱि–जो हुआ वह समाचार; ओरान्–न जानकर; चॆऱि पॊन् तार्–पक्के सोने के हारों से भूषित; अलङ्कल् वीर–मालाधारी वीर; कुऱ्ऱम् चॆय्तिलॆम्–(हमने) कोई अपराध नहीं किया; नम्मै–हम पर; कऱुवु उऱ्ऱ पॊरुळुक्कु–क्रोध करने की बात के लिए; कारणम् कण्टतु–हेतु देखा; ऎन्नो–क्या; ऎन्ऱान्–पूछा। ६३१

सुग्रीव ने थोड़ा जागकर देखा। अंगद के वहाँ आने से वहाँ रहनेवाली स्त्रियों में खलबली-सी मची हुई थी। सुग्रीव अपने मोह से छूटकर पूर्ण रूप से जागा। उसको बीती बातों का कोई ज्ञान नहीं रहा। उसने अंगद से पूछा कि हे स्वर्णघनहारधारी वीर! हमने अपराध तो कुछ नहीं किया। फिर हम पर क्रोध करने का क्या कारण उन्हें मिला है? । ६३१

इयैन्दना ळल्लै नीशॆन् ऱॆय्दलै शॆल्व मॆय्दि
वियन्दनै युदवि कॊन्ऱाय् मॆय्यिलै यॆन्न वीङ्गि
उयर्न्ददु शीऱ्ऱ मऱ्ऱ दुऱ्ऱदु शॆय्य मुऱ्ऱुम्
नयन्दॆरि यनुमन् वेण्ड नल्हिन नम्मै यिन्ऩुम् 632

इयैन्त नाळ्–सहमत दिनों को; ऎल्लै–अवधि पर; नी–आप; चॆन्ऱु ऎय्तलै–जा नहीं पहुँचे; चॆल्वम् ऎय्ति–विभव प्राप्त कर; वियन्तनै–इतराते हैं; उतवि कॊन्ऱाय्–उपकार का हनन कर चुके; मॆय् इलै–सत्य पालन नहीं है; ऎन्न–ऐसा सोचकर; चीऱ्ऱम्–क्रोध; वीङ्कि–बढ़कर; उयर्न्ततु–उठा; नयम् मुऱ्ऱुम्–नीति की सभी बातें; तॆरि अनुमन्–जो जानता है, उस हनुमान ने; अतु उऱ्ऱतु–उसके (शमन करने) योग्य (कार्य); चॆय्य–किया और; वेण्ट–प्रार्थना की, तब; नम्मै–हमको इन्ऩुम्–अब भी; नल्कितन्–जीवित रहने दिया। ६३२

अंगद ने सुग्रीव से आगे कहा कि आप निर्धारित अवधि के दिन में श्रीराम के पास नहीं गये। सुख-भोग में इतराते रहे। कृतघ्न बन गये। और झूठे हो गये। ऐसा समझकर लक्ष्मण का कोप बढ़ा-चढ़ा। तब नीति और न्याय-मार्ग सब जाननेवाले हनुमान ने लक्ष्मण के क्रोध को दूर

करने योग्य उपचार किये और लक्ष्मण से विनय की। उसी के फलस्वरूप आज उन्होंने हमको जीवित रहने दिया है। ६३२

वरुहिन्ऱ वेह नोक्कि वानर वीरर् वानैप्
पॊरुहिन्ऱ नहर वायिऱ् पॊऱ्कद वडैत्तुक् करुकुन्
ऱुरुहोन्ऱ मिल्ला वण्णम् वाङ्गित्त रडुक्कि मऱ्ऱुम्
तॆरिहिन्ऱ शिनत्ती पॊङ्गच् चॆरुच्चॆय्वान् शॆरुक्कि निन्ऱार् 633

वानर वीरर्–वानर वीर; वरुकिन्ऱ वेकम् नोक्कि–लक्ष्मण का आगमन देखकर; वानै पॊरुकिन्ऱ–गगनस्पर्शी; नकरम् वायिल्–नगर-द्वार; पॊन् कतवु–स्वर्णकपाट; अटैत्तु–बन्द करके; अरुकु–पास; ऒन्ऱुम् इल्ला वण्णम्–कोई न रहे, वैसा; कल् कुन्ऱु–चट्टानों को; वाङ्कित्तर्–ले आकर; अटुक्कि–जोड़कर रखा; मऱ्ऱुम्–और; तॆरिकिन्ऱ–प्रकट जो हो रहा; चिनम् ती–उस क्रोध की आग के; पॊङ्क–भभकते; चॆरु चॆय्वान्–युद्ध करने; चॆरुक्कि निन्ऱार्–गर्वोन्नत खड़े रहे। ६३३

लक्ष्मण बहुत तीव्र गति से आ रहे थे। उनकी गति देखकर वानर वीरों ने आकाश से टकरानेवाले हमारे नगर-द्वार को बन्द किया और वहाँ मिलनेवाली गिरियों को, बिना एक को छोड़े ले आकर कपाट के पीछे जोड़ रखा। और वे अपनी क्रोधाग्नि को प्रकट करते हुए लक्ष्मण से लड़ने के लिए सन्नद्ध खड़े रहे। ६३३

आण्डहै यदनै नोक्कि यम्मलर्क् कमलत् ताळिल्
तीण्डिनन् ऱीण्डा मुन्नन् दॆऱ्कॊडु वडक्कुच् चॆल्ल
नीण्डहल् मदिलुङ् गोऱ्ऱ वायिलु निरैत्त कुन्ऱुङ्
कीण्डन तहर्न्दु पिन्नैप् पॊडियॊडुङ् गॊळीइय वन्ऱे 634

आण् तकै–पौरुषयुक्त लक्ष्मण ने; अतनै नोक्कि–उसको देखकर; अम्–सुन्दर; कमलम् मलर्–कमलसुमन-सम; ताळिल्–चरणों से; तीण्टिनन्–स्पर्श किया; तीण्टा मुन्नम्–छूने से पहले; तॆऱ्कॊटु वटक्कु चॆल्ल–दक्षिण से उत्तर में खिंचा; नीण्ट कल् मतिलुम्–लम्बा पत्थर का प्राचीर और; कॊऱ्ऱम् वायिलुम्–विजयद्वार; निरैत्त कुन्ऱुम्–जोड़कर रखे हुए पर्वत भी; तकर्न्तु–टूटकर; कीण्टन–बिखर गये; पिन्नै–बाद; पॊटियॊटुम् कॊळीइय–धूल के साथ मिल गये। ६३४

पौरुषपूर्ण लक्ष्मण ने वानरों का वह कृत्य देखा और अपने सुन्दर कमल-चरणों से कपाट पर लात मारी। उनके चरण स्पर्श के लगने से पूर्व ही उत्तर-दक्षिण में फैले रहे वे पत्थर के प्राचीर और विजयद्वार और वहाँ जुड़ी रही गिरियाँ —सब टूटकर छितर गयीं और चूर होकर धूल से मिल गयीं। ६३४

अन्निलै कण्ड तिण्डो ळरिक्कुलत् तनिह मम्मा
अॆन्निलै युऱ्ऱ दॆन्गॆन् याण्डुप्पुक् कॊळित्त दॆन्गॆन्

अन्निलै कण्ड वन्नै आयिळै यायत् तोडु
मिन्निलै विल्लि नानै वळियॆदिर् विलक्कि निन्राळ् 635

अ विलै कण्ट—उस स्थिति को जिन्होंने देखा, उन; तिण् तोळ्—सुदृढ़ कन्धों वाले; अरिकुलत्तु—वानरकुल के वीरों की; अतिकम्—सेना; ॲ निलै उऱ्ऱतु—किस स्थिति को पहुँच गयी; ॲन्केन्—कहूँगा; याण्टु पुक्कु—कहाँ जाकर; ऑळित्ततु—छिप गयी; ॲन्केन्—कहूँ; अ निलै कण्ट—(जिसने) उस स्थिति को देखा वह मेरी माता; आय् इळै—सुन्दर आभरणालंकृत; आयत्तोदु—स्त्रियों के समूह के साथ; मिन् इलै—विद्युत् की चमक का आश्रय; विल्लितानै—जो धनु था, उसके धारक के; ॲतिर्—सामने; वळि विलक्कि—मार्ग रोके; निन्राळ्—खड़ी रहीं। ६३५

उस हालत को देखकर बली भुजाओं वाले वानर वीरों की उस सेना की क्या स्थिति हुई, यह मैं क्या कहूँ? कहाँ जाके छिप गयी, यह कैसे कहूँ? वानर-सेनाओं की वह स्थिति देखकर मेरी माता तारा चुने हुए आभरणों से अलंकृत स्त्रियों के समूह के साथ लक्ष्मणजी के, जिनके हाथ में विद्युच्छटाधारी धनु था, मार्ग में जाकर उनको रोका। ६३५

मङ्गैयर् मेनि नोक्कान् मैन्दनु मनत्तु वन्द
पॊङ्गिय शीऱ्ऱ माऱ्ऱिप् पुहल्हिलन् पॊरुमि निन्ऱान्
नङ्गैयु मिनिदु कूऱि नायह नडन्द दॆन्नो
ऍङ्गळ्पा लॆन्नक् केट्टा ळिलवलुम् वरवु शॊन्नान् 636

मैन्तनुम्—कुमार; मङ्कैयर् मेति—रमणियों के रूप; नोक्कान्—नहीं देखते; मनत्तु—मन में; वन्त पॊङ्किय—आकर जो उफन रहा था, वह; चीऱ्ऱम् माऱ्ऱि—क्रोध दूर करके; पुकल्किलन्—नहीं बोलते; पॊरुमि नितृरान्—भाव-भरे खड़े रहे; नङ्कैयुम्—रमणी-नायिका तारा ने; इतितु कूऱि—मधुर वचन कहकर; नायक—नाथ; ऍङ्कळ् पाल्—हमारे पक्ष में; नटन्ततु ऍन्नो—हुआ क्या; ऍन्न—ऐसा; केट्टाळ्—पूछा; इळवलुम्—कनिष्ठ राजा ने भी; वरवु—आने का कारण; चॊन्नान्—बताया। ६३६

राजकुमार लक्ष्मण ने न उन स्त्रियों का रूप अपनी आँख उठाकर देखा, न अपने मन का क्रोध दबाते हुए कुछ कहा। लेकिन वे गुस्से से भरे खड़े रहे। तब स्त्रियों में नायिका (तारा) मेरी माता ने लक्ष्मण से मधुर वचन कहे। वे बोलीं— प्रभु! आप हमारे पास (श्रीराम को अकेला छोड़कर) इधर पैदल आये हैं। वह क्यों? इस प्रश्न के उत्तर में लक्ष्मण ने अपने आगमन का कारण बताया। ६३६

अदुपॆरि दरिन्द वन्नै यन्नवन् शीऱ्ऱ माऱ्ऱि
विदिमुऱै मरन्दा नल्लन् वॆञ्जिनच् चेनै वॆळ्ळम्
कदुमॆनक् कॊणरुन् दूदु कल्लदर् शॆल्ल वेवि
ऍदिर्मुऱै यिरुन्दा नॆन्ऱा ळिदुविङ्गुप् पुहुन्द दॆन्ऱान् 637

अतु–वह; पॅरितु–खूब (विस्तृत रूप से); अऱिन्त–(जिन्होंने) जान लिया उन; अऩ्ऩै–माता तारा ने; अऩ्ऩवन् चीऱ्ऱम्–उनका क्रोध; आऱ्ऱि–शान्त करके; विति मुऱै–आज्ञा का प्रकार; मऱन्ताऩ् अल्लऩ्–भूले नहीं हैं; वॅम् चिऩम्–भयंकर क्रोध-युक्त; चेऩै वॅळ्ळम्–सेना की बाढ़ को; कतुमॅऩ–तुरन्त; कॊणरुम्–लानेवाले; तूतु–दूतों को; कल् अतर् चॅल्ल–पर्वत-मार्ग में जाने को; एवि–आज्ञा देकर; ॲतिर् मुऱै–उनकी प्रतीक्षा में; इरुन्ताऩ्–रहे; ॲऩ्ऱाळ्–कहा; इतु–यही; इङ्कु–यहाँ; पुकुन्ततु–घटकर रहा; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (अंगद ने)। ६३७

कारण को ठीक तरह से जानकर मेरी माता ने उनका क्रोध शान्त करते हुए कहा कि सुग्रीव श्रीराम की आज्ञा का प्रकार नहीं भूले हैं। अत्यन्त क्रोधशील वानर-सेना के बहुत बड़े अंश को जल्दी ले आने के लिए ऐसा करनेवाले दूतों को पर्वतमार्ग में जाने के लिए भेजकर वे उन दूतों की प्रतीक्षा में हैं। अंगद ने यह समाचार देकर सुग्रीव से कहा कि यही यहाँ हुआ समाचार है। ६३७

शॊऱ्ऱलु मरुक्कन् ऱोऩ्ऱल् शॊल्लुवाऩ् मण्णिऩ् विण्णिऩ्
निऱ्कुरि यारहळ् याव रऩैयवर् शिऩत्ति ऩेर्न्दाल्
विऱ्कुरि यारित् तऩ्मै वॆहुळियिऩ् विरैवि ऩॆय्द
ॲऱ्कुरै यादु नीरी दियऱ्ऱिय दॆऩ्गॊ लॆऩ्ऱाऩ् 638

चॊऱ्ऱलुम्–कहने पर; अरुक्कन् तोऩ्ऱल्–अर्कपुत्र; चॊल्लुवाऩ्–बोला; अऩैयवर् चिऩत्तिऩ्–वे क्रोध के साथ; नेर्न्ताल्–आएँ तो; मण्णिऩ्–भूलोक में; विण्णिऩ्–व्योमलोक में; निऱ्क उरियार्कळ्–खड़े रह सकनेवाले; यावर्–कौन होंगे; विऱ्कु उरियार्–धनुर्वीर; इ तऩ्मै–इस प्रकार; वॆकुळियिऩ्–कोप के साथ; विरैविऩ् ऍय्त–सवेग आयें और; ॲऱ्कु उरैयातु–मुझसे न कहकर; नीर्–तुम लोगों ने; ईतु इयऱ्ऱियतु–यह किया; ॲऩ् कॊल्–क्या कारण है; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। ६३८

अंगद के यह कहने पर सूर्यपुत्र बोला। अगर श्रीराम और लक्ष्मण कोप करके लड़ने आयें, तो उनके सामने टिक सकनेवाले भूमि पर या आकाश में कौन हैं? धनुर्धर वे वीर इतनी जल्दी कोप के साथ इधर आये हैं, इसकी खबर मुझे न देकर तुम लोगों ने ऐसा किया है। इसका कारण क्या है? । ६३८

उणर्त्तिऩॆऩ् मुऩ्ऩर् नीयः(ह्) दुणर्न्दिलै युणर्विऩ् ऱीर्न्दाय्
पुणर्प्पदॊऩ् ऱिऩ्मै नोक्कि मारुदिक् कुरैप्पाऩ् पोऩॆऩ्
इणर्त्तॊहै यीऩ्ऱ पॊऱ्ऱा रॆरुळ्वलित् तडन्दो ळॆन्दाय्
कणत्तिडै यवऩै नीयुङ् गाणुदल् करुम मॆऩ्ऱाऩ् 639

इणर् तॊकै ईऩ्ऱ–फूलों के गुच्छों से बनी; पॊऩ् तार्–सुन्दर माला से अलंकृत; ॲरुळ् वलि–बहुत बल से युक्त; तट तोळ्–विशाल भुजा वाले; ॲऩ्ताय्–मेरे पिता; मुऩ्ऩर् उणर्त्तिऩॆऩ्–पहले समझाया; नी–आप; उणर्विल् तीर्न्ताय्–बेसुध रहे;

अ.'.तु उणर्न्तिलै–वह नहीं समझे; पुणर्प्पतु–उपाय; ऑन्रु इन्मै–एक नहीं रहा, वह; नोक्कि–देखकर; मारुतिक्कु–हनुमान के पास; उरैप्पान्–कहने के लिए; पोतेन्–गया; फणत्तिटै–एक पल के अन्दर; अवर्त–उनसे; नीयुम्–आप भी; काणुतल्–जा मिलें; करुमम्–(वही) कर्तव्य है; ॲन्रान्–कहा। ६३९

सुग्रीव के ऐसा पूछने पर अंगद ने उत्तर दिया— फूलों के गुच्छों की बनी सुन्दर माला से अलंकृत सशक्त कन्धों वाले मेरे तात ! मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया। लेकिन आप बेसुध रहे। इसलिए आपने नहीं समझा। तब मैंने करने योग्य कोई काम नहीं रहा दिखा। इसलिए मैं मारुति के पास कहने गया। एक पल के अन्दर आप श्रीलक्ष्मणजी से जाकर मिलें। यही आपको अब करना है। ६३९

उऱवुण्ड शिन्दै यान् मुरैशॅय्वा नॊरुवर्क् किन्नम्
पॅऱ्ऱुण्डे यवरा लीण्डियान् पॅऱ्ऱ पेरुदविच् चॅल्वम्
इऱवुण्डाळ् पॊरुट्टाऱ् ऱीरा दिरुन्दपे रिडरै यॆल्लाम्
नऱवुण्डु मऱन्देन् काण नाणुवॆन् मैन्द वॆन्ऱान् 640

उऱवु उण्ट–श्रीराम के प्रति मित्रता से युक्त; चिन्तैयान्–मन वाला; उरै चॅय्वान्–वचन बोला; मैन्त–पुत्र; अवराल्–उनके द्वारा; ईण्टु–यहाँ; यान् पॅऱ्ऱ–जो मैंने प्राप्त किया; पेर् उतवि चॅल्वम्–वह उपकार और धन-वैभव; ऑरुवर्कु–किसी से; इन्नम् पॅऱल्–और प्राप्त करना; उण्टे–हो सकता है क्या; इऱवु उण्टाळ्–अलग जो हो गयीं, उन; पॊरुट्टाल्–सीतादेवी के हेतु; तीरातु इरुन्त–बिना दूर हुए जो रहा, वह; पेर् इटरै ॲल्लाम्–सभी बड़ा दुःख; नऱवु उण्टु–सुरा पान कर; मऱन्तेन्–भूले रहा; काण–(लक्ष्मण से) भेंट करने से; नाणुवन्–शरमाता हूँ; ॲन्ऱान्–कहा। ६४०

श्रीराम के प्रति जिसके मन में मित्रता का नाता था, वह सुग्रीव अंगद से बोला— पुत्र, श्रीराम जी के द्वारा जो परमोपकार का धन मुझे मिला है, वह क्या किसी दूसरे को प्राप्य हो सकता है ? (मैं यह जानता हूँ। लेकिन) सीताजी के वियोग से श्रीराम पर जो अचल संकट आया है, उसको मैं सुरा पीकर उसके नशे में भूल गया था। इसलिए अब लक्ष्मणजी को देखने से शर्माता हूँ। ६४०

एयित नऱवल् लान्मऱ् ऱेळैमैप् पाल दॆन्नो
तायवळ् मनैवि यॆन्नुन् दॆळिविन्ऱेऱ् ऱुरुम मॆन्नाम्
तीविनै यॆन्दि नॊन्ऱा मन्ऱियुन् दिरुक्कु नोङ्गा
मायविन् मयङ्गु हिन्ऱाम् मयक्किन्मेन् मयक्कुम् वॆन्नाम् 641

एयिन–मुझमें लगी हुई; नऱवु अल्लाल्–सुरापान की आदत के सिवा; मऱ्ऱु–और कोई; एळैमैप्पालतु–मूर्खता की प्रवृत्ति; ॲन्नो–कौन सी है; तायवळ्–माता; मनैवि–पत्नी; ॲन्नुम्–इनमें भेद करने की; तॆळिवु इन्ऱेल्–स्पष्ट बुद्धि

नहीं हो तो; तरुमम्–अन्य धर्मों का पालन; ॲन् आम्–क्या होगा; ती वित्तै–महापातक; एन्तिन् ऑन्ड्राम्–पाँच में एक है; अन्ड्रियुम्–और भी; तिरुक्कु नीङ्का–वंचना से जुड़ी हुई; मायैयिल्–माया के वश में; मयङ्कुकिन्ड्राम्–मोहित हैं; मयक्किन् मेल्–(ऐसे) मोह के ऊपर; मयक्कुम् वेंत्ताम्–सुरापान का नशा चढ़ा दिया (हमने)। ६४१

मेरे पास यही एक बुरी आदत लगी हुई है। इस सुरापान के अलावा और कोई दुर्गुण मेरे पास क्या है? यह सुरापान ऐसा है, जो माता और पत्नी में भी भेद जानने की बुद्धि को हर लेता है। फिर मनुष्य के पास अन्य धर्म रहा तो क्या लाभ है। यह सुरापान की आदत पाँच (हत्या, असत्य, चोरी, सुरापान और गुरु-निन्दा) महापातकों में एक है। और भी, हम पहले ही कपटी माया के वश में हैं। उस माया-मोह के ऊपर हमने यह नशा भी जोड़ दिया है। ६४१

तॅळिन्दुती वित्तैयैत् तीर्न्दोर् पिड़वियैत् तीर्व रॅन्ना
विळिन्दिला वुणर्वि नोरुम् वेदमुम् विळम्ब वेयुम्
नॅळिन्दुड़ै पुळुवै नीक्कि नड़वुण्डु निरैहिन् ड्रेनाल्
अळिन्दहत् तॅरियुन् दीयै नॅय्यिना लविक्किन् ड्रामाल् 642

तॅळिन्तु–मन में साफ़ होकर; तीवित्तैयै–बुरे कर्मों को; तीर्न्तोर्–जिन्होंने त्यागा है, वे; पिड़वियै तीर्वर्–जन्म से छूट जायँगे; ॲन्ना–ऐसा; विळिन्तिलर्–अभ्रान्त; उणर्वित्तोरुम्–ज्ञान रखनेवालों और; वेतमुम् वेदों का; विळम्पवेयुम्–कहा हुआ होने पर भी; नॅळिन्तु उड़ै–रेंगते रहनेवाले; पुळुवै–कीड़ों को; नीक्कि–हटाकर; नड़वु उण्टु–ताड़ी पीकर; निरैकिन्ड्रेन्–संतुष्ट रहता हूँ; अळिन्तकम्–वेदी पर; ॲरियुम् तीयै–जलती आग को; नॅय्यिताल्–घी द्वारा; अविक्किन्ड्राम्–बुझाते हैं। ६४२

विवेक प्राप्त कर जिनका मन शुद्ध हो गया है, और जिन्होंने उस विवेक के फलस्वरूप पाप-कर्म को छोड़ दिया है, वे जन्म-कर्म से छूट जाते हैं। अविनश्वर ज्ञान से युक्त तत्त्वज्ञ लोग और वेदों ने यही कहा है। उसको जानकर भी मैं ताड़ी से, उसमें रेंगते रहनेवाले कीड़ों को हटाकर उसे पीता हूँ और अघाता हूँ। यह ऐसा काम है कि हम यज्ञ-वेदी पर जलनेवाले आग को आग से बुझाने का (मूर्ख) प्रयास करें। ६४२

तन्नैत्ता नुणरत् तीरुन् दहैयरु पिड़वि यॅन्ब
वॆन्नत्तान् मड़ैयु मड़्ड़ैत् तुड़ैहळु मिशैत्त वॅल्लाम्
मुन्नैत्तान् ड़न्नै योरा मुळ्प्पिणि यळुक्किन् मेले
पिन्नैत्तान् पॅऱुव दम्मा नड़वुण्टु तिहैक्कुम् बित्ते 643

तान् तन्नै उणर–कोई अपना आत्मस्वरूप पहचाने तब; तकै अरु–गौरवहीन; पिड़वि ॲन्पतु–जन्म; तीरुम्–छूट जाता है; ॲन्नत्तान्–ऐसा ही; मड़ैयुम्–वेद

और; मऱ्ऱै तुऱैकळुम्–अन्य शास्त्र; ऍल्लाम्–सभी; इचैत्त–कहते हैं; मुन्नै– पहले ही; तान् तन्नै ओरा–आत्मा को न पहचानने का; मुळ्ळु पिणि–पूर्ण रोग और; अळुक्कित् मेले–कल्मश जो है, उस पर; पिन्नै–फिर भी; नऱवु उण्टु– ताड़ी पीकर; तिकैक्कुम् पित्तु–भ्रमित हो रहने का पागलपन; पॅऱुवतु–पाना (उचित है क्या ?)। ६४३

स्वस्वरूप जानने पर यह क्षुद्र जन्म मिट जायगा। यही वेद और अन्य वेदांग, शास्त्र आदि समझाते हैं। पहले ही हमने शरीर पाया है, जो आत्मज्ञानहीनता के कारण हमें मिला है और जो रोगपूर्ण और मलिन है। तिस पर नशा पैदा करनेवाले पान से मोह का पागलपन ताड़ी पीकर प्राप्त कर लेना कैसा काम है ? मैया री ! । ६४३

चॅऱ्ऱदुम् बहैञर् नट्टार् शॅय्दपे रुदवि तानुम्
कऱ्ऱदुङ् गण्कू डाहक् कण्डदुङ् गलैव लाळर्
शॊऱ्ऱदु मानम् वन्दु तॊडर्न्ददुम् बडर्न्दु तुन्बम्
उऱ्ऱदु मुणर्व रायि नुऱुदिवे ऱिदनि नुण्डो 644

पकैञर् चॅऱ्ऱतुम्–शत्रु द्वारा किया हुआ और; नट्टार् चॅय्त–मित्रकृत; पेर् उतवि तानुम्–बड़ा उपकार; कऱ्ऱतुम्–सीखा हुआ; कण् कूटाक–अपनी आँखों से; कण्टतुम्–दर्शित; कलैवलाळर्–शास्त्रज्ञों का; चॊऱ्ऱतुम्–कहा हुआ और; मानम् वन्तु–गौरव का आकर; तॊटर्न्ततुम्–लगना; तुन्पम् पटर्न्तु–दुःख का आकर; उऱ्ऱतुम्–लगना; उणर्वर् आयिन्–(यह सब) परखकर जानेंगे तो; इततिन् वेऱु– इससे अलग; उऱुति उण्टो–कोई हित होगा क्या। ६४४

शत्रु का वैर करना, मित्रकृत बड़ा उपकार, विद्या का ज्ञान, अपनी आँखों से देखी हुई बात, शास्त्रोक्त विषय, सम्मान की प्राप्ति, दुःख का आगमन —इन बातों की स्थिति को कोई ठीक-ठीक जान ले, तो इससे बढ़कर हितकारी क्या हो सकता है ? । ६४४

वञ्जमुङ् गळवुम् बॊय्यु मयक्कमु मरबिल् कॊट्पुम्
तञ्जमॆन् ऱारै नीक्कुन् दन्मैयुङ् गळिप्पुन् दाक्कुम्
कञ्जमॆल् लणङ्गुन् दीरुङ् गळ्ळिनाल् लरुन्दि नारै
नञ्जमुङ् गॊल्व दल्ला नरहिनै नल्हा दन्ऱे 645

कळ्ळिताल्–सुरा (-पान) से; वञ्चमुम्–छल; कळवुम्–चोरी; पॊय्युम्– असत्य; मयक्कमुम्–मोह; मरपिल्–परम्पराविरुद्ध; कॊट्पुम्–आचरणचक्र; तञ्चम् ऍन्ऱारै–शरणागतों को; नीक्कुम् तन्मैयुम्–छोड़ देने का दुर्गुण; कळिप्पुम्– मद; ताक्कुम्–(ये सब) दुःख देंगे; कञ्चम् मॆल् अणङ्कुम्–कमलवासिनी कोमल श्रीदेवी भी; तीरुम्–छोड़ जायगी; नञ्चमुम्–विष भी तो; अरुन्तिनारै–पान करनेवाले को मारना छोड़; नरकित्तै–नरक को; नल्कातु–नहीं बिलायगा। ६४५

इस सुरापान से छल, चोरी, झूठ, मोह, परम्पराविरुद्ध आचरणचक्र,

शरणागत को भगा देने का गुण, घमण्ड आदि मद्यप को सताते हैं। और भी कमल-निवासिनी कोमलांगी श्री भी उसको छोड़ जाती है। विष भी पीनेवाले को मारता है, पर नरक में नहीं भेजता। लेकिन यह ताड़ी नरक दिला देती है। ६४५

केट्टत्त नऱ्वाऱ् केडु वरुमॅन्नक् किळत्तु मच्चॊल्
काट्टिय दनुम नीदिक् कल्वियाऱ् कडन्द दल्लाल्
मीट्टिनि युरैप्प दॅन्नॆ विरैविन्वन् दडैन्द वीरन्
मूट्टिय वॅहुळि यानाम् मुडिवदऱ् कैय मुण्डो 646

नऱ्वाल्–ताड़ी (पीने) से; केडु वरुम्–हानि होगी; ॲन्न–ऐसा; केट्टतन्–(मैंने) सुना है; किळत्तुम्–कथित; अ चॊल्–उस बात ने; काट्टियतु–(अपनी यथार्थता) दिखा दी; मीट्टु इनि–और आगे; उरैप्पतु–कहना; ॲन्नॆ–क्या है; कटन्ततु–(आफ़त) पार की; अनुमन् नीति–हनुमान के नीतिशास्त्र के; कल्वियाल्–अध्ययन (-ज्ञान) से; अल्लाल्–नहीं तो; विरैविन् वन्तु–सवेग आ; अटैन्त वीरन्–जो पहुँचे उन वीर (लक्ष्मण) के; मूट्टिय वॅकुळियाल्–उभरे हुए क्रोध से; नाम्–हमारे; मुटिवतऱ्कु–मर मिटने में; एयम् उण्टो–सन्देह रहा क्या। ६४६

ताड़ी पीने से हानि होगी, यह मैंने सुना भर था। अब देखता हूँ कि उसने अपना सारा बल दिखा दिया है। और आगे कहने को क्या है? जो संकट होनेवाला था उससे हम बचे, हनुमान की नीति-बुद्धि से। नहीं तो त्वरित गति से आगत वीर लक्ष्मण के उभरते क्रोध से हमारे मर जाने में कोई सन्देह रहा है क्या ? । ६४६

ऐयना नञ्जि नेनिन् नऱविनि नरिय केडु
कैयिना लन्ऱि येयुङ् गरुदुदल् करुम मन्ऱाल्
वॅय्यदा मदुवै यिन्नुम् विरुम्बिनॆ नॆन्निन् वीरन्
शॆय्यदा मरैह ळन्न शेवडि शिदैत्ते नॆन्ऱान् 647

ऐय–सुन्दर; इ नऱविनिन्–इस ताड़ी की; अरिय केटु–अवार्य हानि से; नान् अञ्चिनेन्–मैं डरा; कैयिनाल् अन्ऱिये–हाथ से ही नहीं; करुतुतलुम्–मन से स्पर्श करना भी; करुमम् अन्ऱु–करनेयोग्य काम नहीं है; वॅय्यतु आम्–भयंकर; मतुवै–मद्य को; इन्नुम् विरुम्पिनेन्–और चाहा; ॲन्निन्–तो; वीरन्–वीर श्रीराम के; चॆय्य तामरैकळ्–लाल कमलों के; अन्न–समान; चे अटि–लाल चरणों में (विश्वास); चितैत्तेन्–नष्ट करनेवाला बनूँगा; ॲन्ऱान्–कहा (सुग्रीव ने)। ६४७

सुन्दर अंगद ! मैं इस मद्यपान के अहित करने के गुण से डरा। हाथ में लेना क्या, इसका मन में विचार लाना भी योग्य काम नहीं। यह सुरा बड़ी भयंकर है। आगे भी इसको चाहूँ तो वीर श्रीराम के लाल कमल-सम सुन्दर चरणों के प्रति अपराध करनेवाला बन जाऊँगा। —सुग्रीव ने यह सब कहा। ६४७

ऍऩ्ऱुकॉण् डियम्बि यण्णऱ् कॅदिर्हॊळऱ् कियॅन्द वॅल्लाम्
नऩ्ऱुकॉण् डिऩ्ऱु नीये नणुहॆऩ ववनै येवित्
तऩ्ऱुणैत् तेवि मार्हळ् तमरॉडुन् दळुवत् तानुम्
निऩ्ऱऩऩ् नॅडिय वायिऱ् कडैत्तलै निवन्द नीरान् 648

ऍऩ्ऱु–ऐसा; निवन्त नीरान्–उत्कृष्ट स्वभाव वाले; इयम्पि कॉण्टु–कहते हुए; अण्णऱ्कु–महिमावान (लक्ष्मण) के; ऍतिर्कॉळऱ्कु–स्वागत के लिए; इयॅन्त ऍलाम्–योग्य सभी पदार्थ; नऩ्ऱु कॉण्टु–भलीभाँति लेकर; इऩ्ऱुम् नीये–अब भी तुम्हीं; नणुकु–पास जाओ; ऍऩ–ऐसा; अवनै एवि–उस (अंगद) को भेजकर; तन् तुणै तेविमार्कळ्–अपनी संगिनी पत्नियों के; तमरॉटुम् तऴुव–अपने रिश्तेदारों के साथ घेरकर आते; तानुम्–खुद भी; नॅटिय वायिल्–उन्नत द्वार के; कटैत्तलै–मुख पर; निऩ्ऱऩऩ्–खड़ा रहा। ६४८

उत्कृष्ट गुण-प्राप्त सुग्रीव ऐसा कहते हुए उठा और अंगद से बोला कि लक्ष्मण के स्वागतार्ह सभी साज लेकर अभी तुम्हीं जाओ। अंगद को भेजने के बाद सुग्रीव आकर महल के गोद्वार पर प्रतीक्षा में खड़ा रहा। उसके साथ उसकी संगिनी पत्नियाँ अन्य रिश्तेदारों के साथ उसको घेरे खड़ी रहीं। ६४८

उरैत्तशॅञ् जान्दुम् बूवुम् चुण्णमुम् बुहैयु मूळिन्
निरैत्तपॉऱ् कुडमुन् दीब शालमु निहरिल् मुत्तुम्
कुरैत्तॅळु विदानत् तोडु तॉङ्गलुङ् गॉडियुञ् जङ्गुम्
इरैत्तिमिळ् मुरशुम् मुऱ्ऱु मियङ्गिन वीदि यॅल्लाम् 649

उरैत्त–घिसकर बना; चॅम् चान्तुम्–श्रेष्ठ चन्दन-लेप और; पूवुम्–फूल; चुण्णमुम्–सुगन्ध-चूर्ण; पुकैयुम्–धुआँ; ऊऴिन् निरैत्त–पंक्ति में रखे हुए; पॉऩ् कुटमुम्–स्वर्णकलश (पूर्णकुम्भ); तीपचालमुम्–दीपजाल; निकर् इल्–अनुपम; मुत्तुम्–मोती; कुरैत्तु ऍऴु–शब्दायमान; वितानत्तॉटु–वितानों के साथ; तॊङ्कलुम्–झालर और; कॉटियुम्–ध्वजाएँ और; चङ्कुम्–शंखनाद; इरैत्तु इमिऴ्–ज़ोर से शोर करनेवाली; मुरचुम्–भेरियाँ और; मुऱ्ऱुम्–सभी; वीति ऍल्लाम्–वीथियों भर में; इयङ्कित–भर गये। ६४९

तब किष्किन्धा नगर की वीथियों में सभी मंगल द्रव्य और अन्य साज भर गये। खूब पिसा हुआ लाल चन्दन-लेप, फूल, सुगन्धचूर्ण धूप, पंक्तियों में रखे हुए जल-भरे स्वर्णकलश, दीप-जाल, अनुपम मुक्तामालाएँ, शब्द के साथ उठनेवाले वितान, मोरपंखों के झालर, ध्वजाएँ —इनके साथ शंख और ज़ोर से बजनेवाली भेरियाँ आदि दिखायी दीं। ६४९

तूयतिण् पळिङ्गिऱ् चॅय्द शुवर्हळिऱ् ऱलत्तिऱ् चुऱ्ऱिल्
नायह मणियिऱ् चॅय्द नऩिनॅडुन् दूणि ऩाप्पण्
शायॅपुक् कुऱलाऱ् कण्डो रयर्वुऱ तहैवि लोडुम्
आयिर मैन्दर् वन्दा रुळरॆऩप् पॊलिन्द दव्वूर् 650

अ ऊर्–वह नगर; तूय–पवित्र; तिण् पळिङ्किन्–कठिन स्फटिक की; चॅय्त चुवर्कळिन्–बनी हुई दीवारों के; तलत्तिल्–तल में; चुर्रिल्–और चारों ओर; नायकम् मणियिन् चॅय्त–अत्युत्कृष्ट मणियों के बने; नत्ति नॅटुम् तूणिन्–बहुत ऊँचे खम्भों के; नाप्पण–मध्य; चायै पुक्कु उर्लाल्–(श्रीलक्ष्मण के रूप की) परछाइँ के जा लगने से; कण्टोर्–दर्शक; अयर्वु उर्–थक जायँ, ऐसे; तर्क विल्लोटुम्–महान धनु के साथ; आयिरम् मैन्तर्–सहस्र-सहस्र वीर कुमार; वन्तार् उळर्–आये हैं; ॲन्त–ऐसा; पॉलिन्ततु–शोभायमान हुआ। ६५०

(लक्ष्मण वीथी में आ रहे थे; तब) किष्किन्धा के घर की दीवारें दृढ़ और शुद्ध स्फटिक की बनी थीं। खम्भे भी श्रेष्ठ नवरत्न-जड़े थे। लक्ष्मण का रूप उन पर प्रतिबिम्बित हुआ। तब ऐसा लगा कि हज़ारों वीर कुमार दर्शकों के मन को भ्रांत करनेवाले धनु लेकर आ रहे हों। ६५०

अङ्गदन् पॅयर्त्तुम् वन्दाण् डडिदॉळु दानै यैयन्
ॲङ्गिरुन् दानुङ् गोमा नॅन्र्लु मॅदिर्हो ळॅण्णि
मङ्गुर्रोय् कोयिर् कॉर्रक् कडैत्तलै मरुङ्गु नित्रान्
शिङ्गवे र्रनैय वीर शॅय्दवच् चॅल्व नॅन्रान् 651

पॅयर्त्तुम्–लौटकर, फिर; आण्टु वन्तु–वहाँ आकर; अटि तॉळुतान्–जिसने चरणों पर सिर झुकाया; अङ्कतनै–उस अंगद को; ऐयन्–प्रभु लक्ष्मण (के); उम् कोमान्–तुम्हारे राजा; ॲङ्कु इरुन्तान्–कहाँ रहा; ॲन्र्लुम्–पूछते ही; चिङ्कम् ऐर् अनैय–पुरुषसिंह-सदृश; वीर–वीर; चॅय् तवम्–संपन्न तपस्वी; चॅल्वन्–धन के स्वामी; ॲतिर् कोळ् ॲण्णि–अगवानी करने के विचार से; मङ्कुल् तोय्–जिस पर मेघ ठहरते हैं; कोयिल्–उस महल के; कॉर्रम् कटैत्तलै–विजय-द्वार के; मरुङ्कु नित्रान्–पास खड़े हैं; ॲन्रान्–कहा। ६५१

अंगद ने फिर वहाँ आकर लक्ष्मण के चरणों पर नमस्कार किया। तब सुन्दर लक्ष्मण ने अंगद से पूछा कि तुम्हारा राजा रहा कहाँ? यह प्रश्न करने पर अंगद ने उत्तर दिया— पुरुषसिंह-सम वीर! पुण्यधन! सुग्रीव आपके स्वागत का विचार लेकर मेघाश्रय योग्य विजय द्वार के पास खड़े हैं। ६५१

शुण्णमुन् दूशुम् वीशिच् चूडहत् तॉडिक्कै मादर्
कण्णहन् कवरिक् कर्रैक् कालुरक् कलैवॅण् डिङ्गळ्
विण्णुर् वळर्न्द दॅन्न वॅण्गुडै विळङ्ग वीर
वण्णविर् करत्तान् मुन्नर्क् कविक्कुलत् तरशन् वन्दान् 652

चूटकम्–चूड़े; तॉटि–'तोडि' आदि; कै–जिन्होंने हाथ में पहने हैं; मातर्–वे स्त्रियाँ; चुण्णमुम्–सुगन्धचूर्ण और; तूचुम् वीचि–वस्त्र बिखेरकर; कण् अकल्–विशाल; कवरि कर्रै–चामरों की राशियों से; काल् उर्–हवा करती हैं, वैसे; कलै–कलाओं से पूर्ण; वॅळ् तिङ्कळ्–श्वेत चाँद; विण् उर्–आकाश स्पर्श

करते हुए; वळर्न्ततु अॅन्त–वढ़ गया हो ऐसे; वॅळ् कुटै–श्वेतछत्र; विळङ्क–शोभायमान हैं, ऐसे; वीरम्–वीरोचित; वण्णम् विल्–सुन्दर धनु के; करत्ताऩ्–धारक हस्तों वाले; मुऩ्ऩर्–के सामने; कविकुलत्तु अरचऩ्–कपिकुलराज; वन्ताऩ्–आया। ६५२

सुग्रीव आया। (उसके जुलूस का ठाट देखिये।) चूड़े और "तौंड़ी" नाम के कंकणधारिणी वानर-नारियाँ सुगन्ध-चूर्ण और वस्त्र उछालते हुए और विशाल चामर डुलाकर हवा करते हुए आयीं। सोलहों कलाओं से पूर्ण श्वेत चन्द्र आकाश में लगे शोभित हो रहे हों —ऐसे श्वेतछत्र दिखायी दे रहे थे। इस ठाट के साथ कपिकुलाधिपति पौरुषयुक्त और सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण के सामने आया। ६५२

अरुक्किय मुदल वाय वरुच्चतैक् कमैन्द यावुम्
मुरुक्किदऴ् महळि रेन्द मुरशिऩ मुहिलि ऩार्प्प
इरुक्किऩ मुऩिव रोद विशैदिशै यळप्प याणर्त्
तिरुक्किळर् शॅल्व नोक्कित् तेवरु मरुळच् चॅऩ्ऱाऩ् 653

मुरुक्कु इतऴ्–कँटीले पलाश के फूल के समान अधरों की; मकळिर्–स्त्रियाँ; अरुक्कियम् मुतल आय–अर्घ्य आदि (पूजार्ह); यावुम् एन्त–सब लेती आयीं; मुरचु इऩम्–भेरियों के समूहों ने; मुकिलिऩ्–मेघों के समान; आर्प्प–घोष किया; मुऩिवर्–मुनियों ने; इरुक्कु इऩम्–ऋचाओं (वेद-मन्त्रों) का; ओत–उच्चारण किया; इचै–संगीत; तिचै–दिशाओं को; अळप्प–मापता रहा; याणर् तिरु–नव वैभवयुक्त; किळर् चॅल्वम्–पुष्कल धन को; नोक्कि–देखकर; तेवरुम् मरुळ–देव भ्रमित हुए; चॅऩ्ऱाऩ्–(इस साज के साथ) सुग्रीव चला। ६५३

कँटीले पलाश तरु के पुष्पों के समान अधर वाली अंगनाएँ अर्घ्य आदि पूजा की सामग्रियाँ हाथ में लेती हुई आयीं। भेरियों का समूह मेघों के समान गर्जन कर रहा था। मुनिगण वेदपारायण करते हुए आये। संगीत का नाद दिशाओं को माप (व्याप्त कर) रहा था। सुग्रीव के नव-वैभव को देखकर देव भी चकित हो गये। इस रीति से सुग्रीव गया। ६५३

वॅम्मुलै महळिर् वॅळ्ळ मीऩॅऩ विळङ्ग विण्णिल्
शुम्मैवाऩ् मदियङ् गुऩ्ऱिर् ऱोऩ्ऱिय वॅऩ्ऩवुन् दोऩ्ऱिच्
चॅम्मलै यॅदिर्हो ळॅण्णित् तिरुवीङ्गु मलर्न्द शॅल्वन्
अम्मलै युदयज् जॅय्युन् दादैयु मन्नैय ऩाऩाऩ् 654

चॅम्मलै–नायक को; अॅतिर् कोळ् अॅण्णि–स्वागत करना चाहकर; तिरुवीङ्गु मलर्न्त–राज्यश्री के साथ प्रफुल्ल; चॅल्वऩ्–धनी; वॅम्मुलै–मनोरम उरोजों वाली; मकळिर् वॅळ्ळम्–स्त्रियों की बाढ़ के; विण्णिल् मीऩ् अॅऩ–आकाश में नक्षत्रों के समान; विळङ्क–शोभित होते; कुऩ्ऱिल् तोऩ्ऱिय–(उदय-) गिरि पर प्रकट हुए; चुम्मै वाऩ्–अधिक उज्ज्वल; मतियम् अॅऩ्ऩवुम्–चन्द्र के समान भी; तोऩ्ऱि–प्रकट होकर;

अ मलै उतयम् चॆय्युम्–उस पर्वत पर उदीयमान; तातैयुम् अन्नैयन्–पिता (सूर्य) के समान भी; आतान्–लगा। ६५४

नायक लक्ष्मण के स्वागतार्थ आनेवाला वैभवशाली सुग्रीव उदयगिरि पर उदित होनेवाले शोभायमान चन्द्र के समान दिखा। उसके चारों ओर मनोरम स्तन वाली स्त्रियों का बड़ा समूह आकाशस्थित नक्षत्र-वृन्द के समान शोभ रहे थे। सूर्यपुत्र उदयगिरि पर प्रकट अपने पिता सूर्य के समान भी शोभायमान दिखा। ६५४

तोऱ्ऱिय वरिक्कुलत् तरशैत् तोन्ऱलुम्
एऱ्ऱॆदिर् नोक्किन नॆळ्न्द दव्वऴि
शीऱ्ऱमङ् गदुदनैत् तॆळिन्द शिन्दैयाल्
आऱ्ऱिनन् करुमत्ति नमैदि युन्नुवान् 655

तोन्ऱलुम्–कुमार (लक्ष्मण) ने भी; तोऱ्ऱिय अरि कुलत्तु अरचै–सामने प्रकट हुए वानरकुल के राजा को; ऎतिर् एऱ्ऱु–स्वागत करके; नोक्किनन्–निहारा; अ वऴि–तब; चीऱ्ऱम् ऎऴुन्ततु–कोप हुआ; करुमत्तिन् अमैति–कार्य की स्थिति; उन्नुवान्–सोचकर; अङ्कु–वहाँ; अतु तनै–उस (क्रोध) को; तॆळिन्त चिन्तैयाल्–सुलझे हुए विवेक से; आऱ्ऱिनन्–शान्त कर लिया। ६५५

महिमावान राजकुमार लक्ष्मण ने अपने सामने प्रकट हुए सुग्रीव को आँखों में आँख डालकर देखा। तब उनके मन में क्रोध उमड़ आया। लेकिन कर्तव्य की रीति का विचार कर लक्ष्मण ने क्रोध को अपने विवेक के बल से शान्त कर लिया। ६५५

ऎळुविनु मलैयिनु मॆळुन्द तोळ्हळाल्
तऴुविन रिरुवरुन् दऴुवित् तैयलार्
कुऴुवॊडुम् वीरर्दङ् गुऴात्ति नोडुम्बुक्
कॊऴिविलाप् पॊऱ्कुऴात् तुऱैयु ळॆय्दिनार् 656

इरुवरुम्–दोनों; ऎळुवितुम्–लोहे के स्तम्भों; मलैयिनुम्–और पर्वतों; ऎन्न–के समान; ऎऴुन्त तोळ्कळाल्–बढ़ी हुई भुजाओं से; तऴुविनर्–परस्पर गले लगे; तऴुवि–आलिंगन करके; तैयलार्–स्त्रियों के; कुऴुवॊटुम्–समूहों के साथ और; वीरर् तम्–वीरों के; कुऴात्तितोटुम्–दलों के साथ; ऒऴिवु इला–अक्षय; पॊऱ्कुऴात्तु–स्वर्णराशियों से भरे; उऱैयुळ–महल में; पुक्कु–प्रवेश करके; ऎय्तिनार्–पहुँचे। ६५६

दोनों ने अपनी लोहे के खम्भे और पर्वत-जैसी भुजाओं से परस्पर आलिंगन किया। फिर परस्पर मिले हुए वे अक्षय स्वर्ण से भरे महल के अन्दर चले। उनके साथ वानर-नारी-वृन्द और वीरों के दल चले। ६५६

अरियणै यमैन्ददु हाट्टि यैयवीण्
डिरुवॅन्नक् कविक्कुलत् तरश नेवलुम्
तिरुमह डलैमहन् पुल्लिर् चेरवॅर्
कुरियदो वि:(ह)दॅन्न वुरॅत्तुप् पिन्नरुम् 657

कवि कुलत्तु अरचन्–वानरकुलाधिपति (के); अमैन्तत्तु–सुरचित; अरि अणै–सिंहासन को; काट्टि–दिखाकर; ऐय–प्रभु; ईण्टु इरु—यहाँ विराजिए; ऍन्न–ऐसा; एवलुम्–प्रार्थना करने पर; तिरुमकळ् तलैमकन्–श्रीलक्ष्मी के पति के; पुल्लिल् चेर–घास पर बैठे रहते; इ.:तु–यह; ऍऱ्कु उरियतो–मेरे योग्य होगा क्या; ऍन उरॅत्तु–ऐसा कहकर; पिन्नरुम्–फिर भी। ६५७

कपिकुल-पति सुग्रीव ने सुनिर्मित श्रेष्ठ सिंहासन को दिखाकर प्रार्थना की कि नाथ! इस पर विराजिये। उसके उत्तर में लक्ष्मण ने कहा कि जब लक्ष्मीपति महाराज श्रीराम घास की भूमि पर बैठे रहें, तब यह मेरे योग्य होगा क्या? और भी (आगे बोले।)। ६५७

कल्लणै मनत्तितै युडैक्कै केशियाल्
ऍल्लणै मणिमुडि तुऱन्द वॅम्मुनार्
पुल्लणै वैहयान् पॉन्शॅय् पूत्तॉडर्
मॅल्लणै वैहलुम् वेण्डु मोवॅन्ऱान् 658

कल् अणै–पत्थर-सम; मनत्तितै उटै–मन वाली; कैकेयियाल्–कैकेयी के कारण; ऍल् अणै–कांतिमय; मणि मुटि–सुन्दर किरीट; तुऱन्त–जिन्होंने त्याग दिया; ऍम् मुनार्—मेरे ज्येष्ठ (के); पुल् अणै–घास की शय्या पर; वैक–रहते समय; यान्–मैं; पॉन् चॅय्–स्वर्णनिर्मित; पू तॉटर्–पुष्प-भरे; मॅल् अणै–कोमल आसन पर; वैकलुम्–आसीन होऊँ, यह भी; वेण्टुमो–करना चाहिए क्या; ऍन्ऱान्–कहा। ६५८

प्रस्तरमना कैकेयी के वर के कारण मेरे ज्येष्ठ श्रीराम कांतिपूर्ण मुकुट को त्यागकर जंगल में आये। वे मेरे बड़े भाई घासों की बनी शय्या पर लेटते हैं। तब मैं स्वर्ण-निर्मित सुमन-भूषित इस कोमल आसन पर बैठूं, क्या यह श्लाघ्य होगा?। ६५८

ऍन्ऱव नुरैत्तलु मिरवि कादलन्
निन्ऱनन् विम्मितन् मलर्क्कण् णीरुहक्
कुन्ऱॅन वुयर्न्दवक् कोयिर् कुट्टिम
वन्ऱलत् तिरुन्दनन् मनुविन् कोमहन् 659

ऍन्ऱु–ऐसा; अवन्–उनके; उरैत्तलुम्–कहने पर; इरवि कातलन्–सूर्य-सूनु; मलर् कण्–कमल-सी आँखों से; नीर् उक–आँसू गिराते हुए; विम्मितन्–दुःख से भरकर; निन्ऱनन्–खड़ा रहा; मनुविन् कोमकन्–मनुकुल के राजकुमार भी;

कुन्ऱु अन्न–पर्वत के समान; उयर्न्त अ कोयिल्–उन्नत उस महल के; कुट्टिमम् वल् तलत्तु–कोष्ठ की कठोर भूमि पर; इरुन्ततन्–बैठे। ६५९

लक्ष्मण के वैसा कहने पर सूर्य का प्यारा पुत्र कमलदल के समान अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए दुःख से भरा खड़ा रहा। तब मनु के कुल में उत्पन्न राजकुमार पर्वत के समान ऊँचे बने उस महल के अन्दर पत्थरों के बने एक कृत्रिम चबूतरे पर बैठ गये। ६५९

मैन्दरु मुदियरु महळिर् वॆळ्ळमुम्
अन्दमि ऩोक्किऩ रळुद कण्णिऩर्
इन्दिय मवित्तव रॅऩवि रुन्दऩर्
नॊन्दऩर् तळर्न्दऩर् नुवल्व दोर्हिलर् 660

मैन्तरुम्–पुरुष और; मुतियरुम्–वृद्ध लोग; मकळिर्–स्त्रियों की; वॆळ्ळमुम्–भीड़; अन्तम् इल्–छविहीन; नोक्किऩर्–दृष्टि और; अळुत कण्णिऩर्–रोती आँखों वाले; नुवल्वतु–क्या कहना, यह; ओर्किलर्–नहीं जानते; नॊन्तऩर्–दुःखी हो; तळर्न्तऩर्–शिथिल होकर; इन्तियम् अवित्तवर् ऎऩ–इन्द्रिय-नाशक के समान; इरुन्तऩर्–रहे। ६६०

उसको देखकर वहाँ रहनेवाले वयस्क पुरुष, ज्ञानवृद्ध लोग, स्त्रियों का बड़ा समूह —सभी की आँखों से पानी बरसने लगा और उनका सौन्दर्य ही मिट गया। वे कुछ भी कह नहीं सके, क्योंकि उन्हें मालूम ही नहीं हो रहा था— क्या कहना है? वे चिन्ताकुल होकर शिथिल हो गये। इन्द्रिय-निग्रही मुनियों के समान वे (अचल) खड़े रहे। ६६०

मञ्जऩ विदिमुऱै मरबि ऩाडियॆ, यॆञ्जलि लिऩ्ऩमु दरुन्दिऩ् यामॆलाम्
उञ्जऩ मिऩियॆऩ वरशु रैत्तलुम्, अञ्जऩ वण्णऩुक् कऩुशऩ् कूऱुवाऩ् 661

अरचु–राजा (सुग्रीव) के; विति मुऱै मरपिऩ्–शास्त्रोक्त रीति से; मञ्चऩम् आटियॆ–स्नान करके; ऎञ्चल् इल्–निर्दोष; इऩ् अमुतु–मधुर भोजन; अरुन्तिऩ्–भोग करेंगे तो; याम् ऎलाम्–हम सब; इति उय्ञ्चऩम्–अब उद्धार पा जायँगे; ऎऩ–ऐसा; उरैत्तलुम्–कहने पर; अञ्चऩ वण्णऩुक्कु–अंजनवर्ण (श्रीराम) के; अनुचऩ्–अनुज; कूऱुवाऩ्–कहने लगे। ६६१

राजा सुग्रीव ने लक्ष्मण से प्रार्थना की। आप शास्त्रोक्त रीति से मज्जन करके खूब स्वादिष्ट भोजन करें तो हम कृतार्थ होंगे। जब सुग्रीव ने यह कहा, तब अञ्जनवर्ण अयोध्यापति श्रीराम के अनुज ने यों कहा। ६६१

वरुत्तमुम् पळियुमे वयिऱु मीक्कॊळ
इरुत्तुमॆऩ् ऱालॆमक् किऩिय दियावदो
अरुत्तियुण् डायिऩु मवलऩ् दाऩ्ऱळोइक्
करुत्तुवे ऱुऱ्ऱपि नमिळ्दुङ् गॆक्कुमाल् 662

वरुत्तमुम्–दुःख और; पळिधुमे–अपमान के; वयिऱ्‌ मी कौळ–पेट में भरे रहते; इरुत्तुम्–हम जीवित हैं; ॲन्ड्राल्–तो; ॲमक्कु–हमें; इत्तियतु–सुख देनेवाला; यावतु–क्या है; अरुत्ति उण्टायित्तुम्–इच्छा होने पर भी; अवलम् तळीइ–शोकग्रस्त हो; करुत्तु–मन; वेऱु उऱ्‌ऱ् पित्–बिगड़ गया तो; अमिळ्‌तुम्–अमृत भी; कंक्कुम्–कड़ुआ लगेगा; (तान्, आल्)। ६६२

हमारा पेट दुःख और निन्दा से भरा है। हम ऐसे ही जीवित रहते हैं। तो हमको स्वादिष्ट लगनेवाला कौन सा पदार्थ होगा ? जब इच्छा होगी तो भी अगर दुःख के कारण चित्त व्याकुल है तो अमृत भी कड़ुआ लगेगा न ? । ६६२

मूट्टिय पळ्रियॅन्नु मुरुङ्गु तीयवित्, ताट्टिन्नै गङ्गैनी ररशन् ऱेवियैक्
काट्टिन्नै यॅन्नितॅमैक् कडलि नारमु, दूट्टिन्नै याऱ्‌पिऱि दुयवु मिल्लैयाल् 663

अरचन् तेवियै–राजाराम की देवी को; काट्टिनै ॲत्तिन्–लाकर दिखाओ तो; ॲमै–हम पर; मूट्टिय–लगी हुई; पळि ॲतुम्–कलंक रूपी; मुरुङ्कु ती–ऐंठकर जलनेवाली आग को; अवित्तु–बुझाकर; कङ्कै नीर्–गंगा-जल में; आट्टिनै–स्नान करा दिया (वैसा अनुभव होगा); कटलित् आर् अमुतु–(क्षीर-) सागर के अतिश्रेष्ठ अमृत का; ऊट्टिनै–भोजन कराया; पिऱितु–बाद; उयवुम् इल्लै–कोई दुःख भी नहीं होगा। ६६३

अगर तुम राजाराम की रानी सीतादेवी को ढूँढ़ लाकर दिखा दो तो हमारे निन्दा रूपी ऐंठकर जलनेवाले अनल को बुझाकर गंगा-स्नान कराने वाले बन जाओगे। क्षीरसागर से उत्पन्न श्रेष्ठ अमृत को खिलानेवाले बन जाओगे। फिर हमारा कोई दुःख नहीं रहेगा। ६६३

पच्चिलै किळ्ङ्गुकाय् परम नुङ्गिय, मिच्चिले नुकर्वदु वेऱु तान्नॊन्ऱु
नच्चिले नच्चिन्ने नायि नायुण्ड, ॲच्चिले यदुविदऱ् कैय मिल्लैयाल् 664

पचु इलै–शाक-पात; किळङ्कु–(और) कन्द; काय्–कच्चे फल; परमन्–परममान्य श्रीराम के; नुङ्किय–खाने के बाद; मिच्चिले तान्–बचे हुए पदार्थ ही; नुकर्वतु–मेरे खाद्य हैं; वेऱु ऒन्ऱुम्–और कुछ; नच्चिलेन्–नहीं चाहूँगा; नच्चितेत् आयिन्–चाहूँगा तो; अतु–वह; नाय् उण्ट ॲच्चिले–श्वान-जूठन होगा; इतऱ्‌कु ऐयम् इल्लै–इसमें संशय नहीं है। ६६४

हरा शाक, कन्द और कच्चे फल —यही श्रीराम भोजन करते हैं। उनके भोजन के बाद जो बचता है, वही जूठन मेरा खाद्य है। उसको छोड़कर, और कोई वस्तु मैं नहीं चाहूँगा। अगर चाहूँगा तो वह कुत्ते का जूठन होगा। इसमें कोई संशय नहीं है। ६६४

अत्ऱियु मौत्ऱुळ दैय यात्तिन्निच्
चॆन्ऱतॆन् कौणर्न्दडै तिरुत्ति नालवु

नुन्ऱुणैक् कोमह नुहर्व दाहलान्
इन्ऱिरै ताऴ्त्तलु मिनिदन् ऱॅमॅन्ऱान् 665

ऐय–वानरनायक; अन्ऱियुम्–और भी; ऒन्ऱु उळतु–एक बात है; यान् इत्ति चॅन्ऱॅर्तन्–मैं अब जाऊँ; कॊणर्न्तु–फल-मूल लाऊँ; अटै तिरुत्तित्ताल्–पत्तल परोसूँ तभी; अतु–वही; नुन् तुणै–तुम्हारे मित्र; कोमकन्–राजकुमार का; नुकर्वतु–भोज्य होगा; आकलान्–इसलिए; इन्ऱु–अब; इरै ताऴ्त्तलुम्–थोड़ा भी विलम्ब करना; इनितु अन्ऱु आम्–भला नहीं होगा; ऎन्ऱान्–लक्ष्मण ने कहा। ६६५

अधिपति ! इसके अलावा और एक बात है। मैं अब जाकर कन्द-मूलादि ले आकर पत्र पर परोसूँ, तो वही तुम्हारे मित्र राजकुमार श्रीराम का भोजन होगा। इसलिए अब थोड़ा विलम्ब करना भी अच्छा नहीं होगा। ६६५

वानर वेन्दनु मितिदिन् वैहुदल्, मानवर् तलैमह तिडरिन् वैहवे
आनदु कुरक्किनत् तॅमर्हट् कामॅन्ना, मेनिलै यऴिन्दहम् विम्मि नानरो 666

वानर वेन्तनुम्–वानराधिपति भी; मानवर्–मनुकुल के; तलै मकन्–श्रेष्ठ पुत्र के; इटरिन् वैक–दुःखी रहते; इनितिन् वैकुतल्–सुख से (विलम्ब करता) रहना; आनतु–जो है वह; कुरङ्कु इनत्तु–वानर-जाति के; ऎमर्कट्कु आम्–हमारी प्रकृति है; ऎन्ना–कहकर; मेल् निलै अऴिन्तु–अपना धैर्य खोकर; अकम् विम्मितान्–चित्तविह्वल हुआ। ६६६

लक्ष्मण का यह वचन सुनकर वानरराज सुग्रीव ने दुःख के साथ कहा कि हाँ ! ठीक है। मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम जब दुःख-मग्न हैं, तब सुख में समय बिताना वानर-जाति के हमें ही सोह सकता है। सुग्रीव विचलित होकर चित्ताकुलित हुआ। ६६६

ऍऴुन्दनन् पॊरुक्कॅन विरवि कान्मुळै
विऴुन्दकण् णीरिनन् वॅरुत्त वाऴ्विनन्
अऴिन्दयर् शिन्दैय ननुमर् काण्डॊन्ऱु
मॊऴिन्दनन् वरनुळैप् पोदन् मुन्नुवान् 667

इरवि काल् मुळै–सूर्यपुत्र सुग्रीव; पॊरुक्कॆन ऍऴुन्तनन्–तपाक से उठा; विऴुन्त कण् नीरिनन्–बहते आँसुओं वाला; वॅरुत्त वाऴ्विनन्–और विरक्त जीवन वाला; अऴिन्तु अयर्–जो क्षीण होकर थक गया, ऐसे; चिन्तैयन्–मन वाला होकर; वरन् उळै–उत्तम श्रीराम के पास; पोतल् मुन्नुवान्–जाने को उद्यत हुआ और; आण्टु–तब; अनुमर्कु–हनुमान से; ऒन्ऱु मॊऴिन्तनन्–(उसने) एक (बात) कही। ६६७

फिर सुग्रीव ससंभ्रम उठा। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। उसे अपने जीवन से ही विरक्ति होने लगी। वह विचलित और थकित मन

का हो गया। श्रेष्ठ श्रीराम के पास जाने का विचार करके उसने हनुमान से एक बात कही। ६६७

पोयिऩ तूदरिऱ् पुहुदुञ् जेऩैयै, नीयुडऩ् कॊणरुदि नॆऱिव लोयॆऩ
एयिऩ ऩनुमऩै यिरुत्ति योण्डॆऩ, नायह निरुन्दुळ्ळिक् कडिदु नण्णिऩाऩ् 668

नॆऱिवलोय्–उपाय में समर्थ; पोयिऩ तूतरिऩ्–जो गये हैं, उन दूतों के साथ; पुकुतुम् चेऩैयै–आनेवाली सेना को; नी–तुम; उटऩ् कॊणरुति–साथ ले आओ; ॲऩ–ऐसा और; ईण्टु इरुत्ति–(तब तक) यहाँ रहो; ॲऩ–ऐसा; अनुमऩै–हनुमान को; एयिऩऩ्–आज्ञापित करके; नायकऩ् इरुन्त उळ्ळि–जहाँ नायक श्रीराम रहे, उस स्थान को; कटितु–सवेग; नण्णिऩाऩ्–चला। ६६८

युद्ध-विज्ञान-विशारद वायुपुत्र! दूत सेना लाने गये हैं न? वे जो सेना लायेंगे उसे लेकर तुम आ जाना। तब तक यहीं रहो। हनुमान से यह आज्ञा सुनाने के बाद सुग्रीव, नायक श्रीराम के यहाँ सवेग जाने लगा। ६६८

अङ्गद	ऩुडऩ्ऱॆल	वरिहण्	मुऩ्ऱॆल
मङ्गैय	रुळ्ळमुम्	वळ्ळियुम्	बिऩ्ऱॆलच्
चङ्गैयि	लिलक्कुवऩ्	ऱळ्ळुवित्	तम्मुऩिल्
शॆङ्गदि	रोऩ्महऩ्	कडिदु	शॆऩ्ऱऩऩ् 669

चॆम् कतिरोऩ्–लाल किरणमाली का; मकऩ्–पुत्र सुग्रीव; चङ्कै इल्–संशयहीन (ज्ञानी); इलक्कुवऩ् तळुवि–लक्ष्मण का आलिंगन करते हुए; अङ्कतऩ् उटऩ् चॆल–अंगद के साथ आते; अरिकळ्–वानरों के; मुऩ् चॆल्–आगे जाते; मङ्कैयर् उळ्ळम्–स्त्रियों के मनों के; पिऩ् चॆलवुम्–पीछे आते; वळ्ळि पिऩ् चॆलवुम्–मार्ग के पीछे रह जाते; तम् मुऩ् इल्–अपने ज्येष्ठ भ्राता (मान्य) श्रीराम के यहाँ; कटितु चॆऩ्ऱऩऩ्–शीघ्र गया। ६६९

लाल प्रकाश-किरणों वाले सूर्य का पुत्र सुग्रीव असंशयमन लक्ष्मण को आलिंगन में लेकर जाने लगा। अंगद साथ गया। वानर आगे गये। वानर-नारियों का मन उसके पीछे-पीछे गया। मार्ग पीछे छूटता गया। इस रीति से सुग्रीव श्रीराम की तरफ़, जो कि उसके ज्येष्ठ भ्राता (के समान) थे, शीघ्र गया। ६६९

ऒऩ्बदि ऩायिर कोडि यूहन्दऩ्, मुऩ्ऱॆलप् पिऩ्ऱॆल ञाङ्गर् मॊय्प्पुर
मऩ्बॆरुङ् गिळैञरु मरुङ्गु शुऱ्ऱुर, मिऩ्बॊरु पूणिऩाऩ् शॆल्लुम् वेलैयिल् 670

ऒऩ्पतिऩ् आयिर कोटि–नौ सहस्र कोटि; यूकम्–सेना; तऩ् मुऩ् चॆल–उसके सामने गयी और; पिऩ् चॆल–पीछे गयी; ञाङ्कर्–(दोनों) पार्श्वों में; मॊय्प्पुर–घने रूप से मिल आयी; मऩ् पॆरु किळैञरुम्–और बहुत उत्कृष्ट बन्धु-बान्धव; चुऱ्ऱुर–

चारों ओर घेर आये; मिन् पॊरु पूणितान्–बिजली-सम आभरण वाला; चॆल्लुम् वेलैयिल्–जब चला तब। ६७०

नौ सहस्र कोटि वानर वीर उसके आगे, पीछे, और पार्श्वों में सटे हुए चले। उत्तम बन्धु-बान्धव भी चारों ओर घेरकर चले। विद्युत् से होड़ लगानेवाले कान्तिमय आभरणों से भूषित सुग्रीव जब चलने लगा तब (आगे के पद में वाक्य जारी है)। ६७०

कॊडिवऩ मिडैन्दऩ कुमुरु बेरियिऩ्, इडिवऩ मिडैन्दऩ पणिल मेङ्गिऩ
तडिवऩ मिडैन्दऩ तयङ्गु पूणॊळि, पॊडिवऩ मॆऴुन्दऩ वाऩम् बोर्क्कवे 671

कॊटि वऩम्–ध्वजाओं के जंगल; मिटैन्तऩ–जुटे; कुमुरुम् पेरियिऩ्–गरजनेवाली भेरियों के; इटि वऩम्–वज्रघोष के जंगल; मिटैन्तऩ–मिल आये; पणिलम् एङ्किऩ–शंख बज उठे; तयङ्कु पूण्–चमकनेवाले आभरणों की; ऒळि तटि वऩम्–कान्ति रूपी तड़ितों का वन; मिटैन्तऩ–भर आया; वाऩम् पोर्क्क–आकाश को ढँकते हुए; पॊटि वऩम्–धूल का जंगल; ऎऴुन्तऩ–उठा। ६७१

ध्वजाओं का वन (समूह) मिल आया। नर्दन करनेवाली भेरियों के शब्दों का वन (समूह) भर आया। शंख बज उठे। प्रकाश-प्रसारक आभरणों की कान्तियों के पुञ्ज भरे। आकाश को ढँकते हुए धूलि-वन (समूह) उठकर फैला। ६७१

पॊऩ्ऩिऩिऩ् मुत्तिऩिऩ् पुऩैमॆऩ् डूशिऩिऩ्
मिऩ्ऩिऩ मणियिऩिऩ् पळिङ्गिऩ् वॆळ्ळियिऩ्
पिऩ्ऩिऩ विशुम्बिऩुम् बॆरिय पॆट्पुऱ
तुऩ्ऩिऩ शिविहैवॆण् गविहै शुऱ्ऱिऩ 672

पॊऩ्ऩिऩिऩ्–स्वर्ण के; मुत्तिऩिल्–मोतियों से; पुऩै मॆल्–सुन्दर और महीन; तूचिऩिऩ्–वस्त्रों से; मिऩ्ऩिऩ मणियिऩिल्–चमकती मणियों से; पळिङ्किऩ्–स्फटिक से; वॆळ्ळियिऩ्–चाँदी से; पिऩ्ऩिऩ–बनी हुई; चिविकै–शिविकाएँ; तुऩ्ऩिऩ–सटी हुई आयीं; वॆळ् कविकै–श्वेत छत्र; विचुम्पिऩुम् पॆरिय–आकाश से भी बड़ी; पॆट्पु उऱ–मनोरम रीति से; चुऱ्ऱिऩ–घूमती आयीं। ६७२

शिविकाएँ मिल आयीं, जो स्वर्ण, मोती, सुन्दर महीन वस्त्र, चमकनेवाली मणियों, स्फटिक और चाँदी से निर्मित थीं। श्वेत-छत्र ऐसे और इतने घूमते आये कि उनका फैलाव आकाश से भी अधिक विशाल लगा। ६७२

वीरऩुक् किळैयवऩ् विळङ्गु शेवडि, पारिऩिऩ् चेऱलुम् परिदि मैन्दऩुम्
तारिऩिऩ् पॊलऩ्गऴ ऱळङ्गत् तारणिऩ्, तेरिऩिऩ् चॆऩ्ऱऩऩ् चिविकै पिऩ्शॆल 673

वीरऩुक्कु इळैयवऩ्–वीर श्रीराम के लघुभ्राता के; विळङ्कु–शोभायमान; चे अटि–सुन्दर चरण; पारितिल्–भूमि पर; चेऱलुम्–पड़ते चले तो; परिति मैन्तऩुम्–सूर्यपुत्र भी; तारितिल्–हारों और पायलों की; पॊलम् कऴल्–मनोरम ध्वनि

को; तळक्कुक–उठने देते हुए; चिविकै पिन्–पालकियों के (उसके) पीछे; चॅल–चलते; तारणि तेरिल्–भूमि रूपी रथ पर; चॅन्ऱतन्–चला। ६७३

वीर श्रीराघव के कनिष्ठ भ्राता के लाल चरण भूमि पर चलने लगे, तो सूर्यपुत्र भी धरती रूपी रथ पर (यानी भूमि पर पैदल) चलने लगा। तब उसके पैरों पर बँधी हुई वीर पायलें शब्दित हुईं। उसकी शिविका उसके पीछे आयी। ६७३

ॲय्दिनन्	मानव	निरुन्द	माल्वरै
नॉय्दिनिऱ्	चेनैपिन्	बॊऴिय	नोन्गऴल्
ऐयविऱ्	कुमरनुन्	दान्	मङ्गदन्
कैतॊडरुन्	दयल्चॅलक्	कादल्	मुन्चॅल 674

नोन् कऴल्–तगड़े कड़ों के धारक; ऐय विल्–सुन्दर धनुर्धर; कुमरनुम्–कुमार लक्ष्मण भी; तानुम्–आप (सुग्रीव) के साथ; चेनै पिन्पु ऒऴिय–सेना को पीछे छोड़कर; अङ्कतन्–अंगद के; कै तॊटर्नुतु–हाथ से लगे हुए (पास-पास); अयल् चॅल–साथ आते; कातल् मुन् चॅल–(श्रीराम के पास पहुँचने की) इच्छा के आगे जाते; मानवन्–सम्मान्य प्रभु श्रीराम; इरुन्त माल् वरै–जहाँ रहे, उस पर्वत पर; नॉय्तितिल्–शीघ्र; ॲय्तितन्–पहुँचे। ६७४

ठोस रूप से बनी पायल और सुन्दर धनु —इनके साथ शोभायमान लघुदेव लक्ष्मण और सुग्रीव साथ-साथ जाने लगे। अंगद उनके पार्श्व में उनसे लगा हुआ जा रहा था। वानर-सेना पीछे जा रही थी। और श्रीराम-मिलन की उत्कण्ठा उनके आगे (उनको ले) जा रही थी। वे मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम जहाँ रहते थे, उस पर्वत पर जा पहुँचे। ६७४

कण्णिय	कणिप्पपरुज्	जॅल्वक्	कादल्विट्
टण्णलै	यडिदॊऴ	वणैयु	मन्बिनाल्
नण्णिय	कविक्कुलत्	तरश	नामवेल्
पुण्णियऱ्	ऱॊऴवरुम्	बरदन्	पोन्ऱनन् 675

कण्णिय–सबको विस्मय में डालनेवाले; कणिप्पु अरुम्–अगणित; चॅल्वम् कातल्–धन का प्रेम; विट्टु–त्यागकर; अण्णलै–प्रभु श्रीराम के; अटि तॊऴ–चरणों की पूजा करने हेतु; अणैयुम्–उठे हुए; अन्पिनाल्–भक्तिभाव के साथ; नण्णिय–जो आया; कवि कुलत्तु अरचन्–कपिकुलपति; नाम वेल्–डरावने भाले वाले; पुण्णियन्–पुण्य-मूर्ति श्रीराम को; तॊऴ वरुम्–नमस्कार करने आनेवाले; परतन् पोन्ऱनन्–भरत के समान लगा। ६७५

सर्वमान्य और अगणित विपुल सम्पत्ति का प्यार त्यागकर कपिकुल-पति श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने के लिए उत्पन्न भक्ति के साथ श्रीराम के पास जा पहुँचा। तब वह भयावह भालाधारी श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने आनेवाले भरत के समान लगा। ६७५

पिरिव्वरुन् दम्बियुम् बिरियप् पेरुल
हिरुदियिऱ् ऱानॅन विरुन्द वेन्दलै
अरॆमणित् तारिनो डारम् बार्दोंडच्
चॅरिमलर्च् चेवडि मुडियिऱ् ऱीण्डिनान् 676

पिरिवु अरु–कभी अलग न होनेवाले; तम्पियुम् पिरिय–कनिष्ठ भ्राता के भी अलग हो जाने से; पेर् उलकु इऱुतियिल्–बड़े लोकों के अन्तिम काल में (युगान्त में); तान् ॲन इरुन्त–अकेले, आप ही रहनेवाले (महाविष्णु के समान जो रहे); एन्तलै–उन महाप्रभु के; अरॆ मणि तारिनोटु आरम्–क्वणित मणियों की मालाओं के साथ मुक्ताहारों को भी; पार् तॉट–भूमि को स्पर्श करने देते हुए; चॅरि मलर् चे अटि–उत्फुल्ल पद्म के समान लाल चरणों को; मुटियिन्–अपने सिर से; तीण्टिनान्–स्पर्श किया। ६७६

लक्ष्मण किसी भी हालत में श्रीराम से अलग होनेवाले नहीं थे। अब वे भी इनको अकेले छोड़कर चले गये थे। इसलिए ये श्रीराम सृष्टि के अन्त में, जब सारे लोग लुप्त हो जाते हैं, निपट एकाकी रहनेवाले श्रीविष्णु के समान अकेले रहे। तब सुग्रीव ने उनके दल-लसित, कमलपुष्प-सम लाल चरणों पर अपना सिर लगाते हुए नमस्कार किया। तब उसके वक्ष में रहनेवाली रत्न और मोती की मालाएँ भी भूमि पर लगीं। उनके आपस में टकराने से शब्द निकल रहा था। ६७६

तीण्डिय कुरिशिलैच् चिलैयि राहवन्
नीण्डपॉऱ् ऱडक्कैया नॅडिदु पुल्लिनान्
मूण्डॅऴु वॅहुळिपो यॉळिप्प मुन्बुपोल्
ईण्डिय करुणैतन् दिरुक्कै येवियॆ 677

तीण्टिय कुरिचिलै–स्पर्श करनेवाले राजा को; चिलै इराकवन्–कोदण्डपाणी श्रीराघव ने; नीण्ट–दीर्घ; पॉन्–सुन्दर; तट–विशाल; कैयाल्–करों से; नॅटितु–खूब; पुल्लिनान्–आलिंगन किया; मूण्टु ॲऴु–उफनकर उठा; वॅकुळि–क्रोध; पोय् ऑळिप्प–जाकर छिप गया; मुन्पु पोल्–पूर्व की तरह; ईण्टिय करुणै–अधिक स्नेह; तन्तु–दिखाकर; इरुक्क एवि–बैठने की आज्ञा देकर। ६७७

अपने चरण-स्पर्शी महिमायुक्त सुग्रीव को कोदण्डपाणी श्रीराम ने अपने दीर्घ और सुन्दर हाथों से उठाकर गले लगा लिया। उनके मन में जो क्रोध उठा और बढ़ रहा था, वह ठण्डा पड़कर लुप्त हो गया। उन्होंने पहले का जैसा प्रेम दिखाया और बैठने की आज्ञा देकर; । ६७७

अयलिनि दिरुत्तिनित् नरशु माणैयुम्
इयल्बिनि तियैन्दवे यिनिदिन् वैहुमे
पुयल्बॉरु तडक्कैनो पुरक्कुम् बल्लुयिर्
वॅयिलिल देहुडै यॆन्नवि नायिनान् 678

अयल्–पास में; इनितु–सुख से; इरुत्ति–बिठा लेकर; निन् अरचुम्–तुम्हारा राज्य और; आणैयुम्–शासन; इयल्पिनिल्–शास्त्रोक्त रीति से; इयैन्ततवे–मिलकर चलते हैं न; पुयल् पोंरु–मेघ-सम (दानी); तटकै नी–विशाल हस्त तुम; पुरक्कुम् पल् उयिर्–जिनका पालन करते, वे अनेक जीव; इनितिन् वैकुमे–सुख से रहते हैं न; कुटै–श्वेतछत्र; वॅयिल् इलते–आतपहीन है न; ॲन्न विनायिनान्–ऐसा पूछा। ६७८

अपने पास सुख से बिठा लिया और पूछा कि तुम्हारा राज्य और शासन शास्त्रोक्त प्रकार से युक्त हैं। मेघसम (दानी) हाथों वाले तुमसे पालित होकर विविध जीव और प्राणी सुख से रहते हैं ? तुम्हारा श्वेतछत्र आतप-रहित है ? (क्या तुम प्रजा को किसी भी कष्ट से बचा रहे हो ?)। ६७८

पौरुळुडै यव्वुरै केट्ट पोळ्दुवान्, उरुळुडैत् तेरिनान् पुदल्व नूळियाय्
इरुळुडै युलहिनुक् किरवि यन्ननिन्, अरुळुडै येऱ्कवै यरिय वोॅन्ऱान् 679

पॉरुळ् उटै–अर्थ-भरा; अ उरै–वह वचन; केट्ट पोळ्तु–जब सुना तब; वान्–आकाश में; उरुळ् उटै–चलनेवाले; तेरिनान्–रथ के स्वामी सूर्य के; पुतल्वन्–पुत्र (ने); ऊळियाय्–युगपुरुष; इरुळ् उटै उलकिनुक्कु–अँधेरा-भरी दुनिया के; इरवि अन्न–रवि के समान; निन्–आपकी; अरुळुटैयेऱ्कु–कृपा के पात्र मुझे; अवै अरियवो–वे कार्य कठिन हैं क्या; ॲन्ऱान्–कहा। ६७६

श्रीराम के वचन अर्थ-भरे थे। यह सुनकर आकाशचारी एकचक्र-रथ के स्वामी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र ने जवाब दिया कि युगान्त में अमर रहनेवाले, हे देवदेव ! अँधेरे से भरी रही भूमि के रवि के समान आप रहते हैं। ऐसे आपकी कृपा के पात्र मुझे यह काम कठिन है क्या ?। ६७९

पिन्नरुम् विळम्बुवान् पेदै येनुन, दिन्नरु ळुदविय शॅल्व मॅय्दिनेन्
मन्नव निन्बणि मऱुत्तु वैहियॅन्, पुन्निलैक् कुरक्कियल् पुदुक्कि नेॅन्ऱान् 680

पिन्नरुम्–आगे भी; विळम्पुवान्–कहा; मन्नव–राजन्; पेतैयेन्–जड़मति (मैं) ने; उनतु इन् अरुळ् उतविय–आपके कृपादत्त; चॅल्वम् ॲय्तिनेन्–धन पाया; निन् पणि–आपकी आज्ञा; मऱुत्तु–भुलाकर; वैकि–रहा और; ॲन्–मेरा (अपना); पुल् निलै–क्षुद्र स्थिति का; कुरक्कु इयल्–वानर-स्वभाव; पुतुक्किनेन्–नये रूप से दिखा दिया; ॲन्ऱान्–कहा। ६८०

सुग्रीव आगे बोला। रामराज ! मैं बुद्धिहीन हूँ। आपकी कृपा से मुझे अधिक सम्पत्ति मिली। तो भी मैंने आपकी आज्ञा की उपेक्षा कर दी और उसके द्वारा मैंने अपना क्षुद्र वानर का स्वभाव नये रूप से दिखला दिया। ६८०

पॅरुन्दिशै यनैत्तैयुम् पिशैन्दु नेडियान्
तरुन्दहै यमैन्दुमत् तन्मै शॅय्दिलेन्

तिरुन्दिळै तिरुत्तिनाऱ् ऱॅळिन्द शिन्दैनी
वरुन्दिनै यिरुप्पयान् वाऴ्विन् वैहिनेन् 681

पॅरुम् तिचै अनैत्तैयुम्–सभी बड़ी दिशाओं में; यान् पिचैन्तु नेटि–मैं खाक छानकर ढूंढ़कर; तरुम्–(देवी सीता को) लाऊँ; तकै–वह सामर्थ्य; अमैन्तुम्–रहता है तो भी; अ तन्मै–उस प्रकार; चॅय्तिलेन्–न करके; तिरुन्तु इऴै–श्रेष्ठ आभरण वाली (सीताजी); तिरुत्तिनाल्–के कारण; तॅळिन्त चिन्तै–विवेकमन; नी–आप; वरुन्तिनै–दुःखी हो; इरुप्प–रहते; यान्–मैं; वाऴ्विल्–(सुखी) जीवन में; वैकिनेन्–डूबा रह गया। ६८१

सुग्रीव ने जारी किया। सभी लम्बी दिशाओं में जाऊँ, खाक छानूं और देवी सीताजी को ले आऊँ —यह शक्ति मुझमें है। तो भी मैंने ऐसा नहीं किया। सुन्दर कारीगरी से युक्त आभरण-धारिणी सीताजी के कारण आपका सदा-विवेकी मन भी विचलित हुआ। आप दुःखी रहे, तब भी मैंने अपने सुखी जीवन में समय बिताया। ६८१

इनैयन यानुडै यियल्बु मॅण्णमुम्
निनैवुमॅन् ड्रालिनि निन्ड्रि यान्शॅयुम्
विनैयुनल् लाण्मैयु विळम्ब वेण्डुमो
वनैहऴल् वरिशिलै वळ्ळि योयॅन्ड्रान् 682

वनै कऴल्–कारीगरीयुक्त पायलधारी; वरि चिलै–सबन्ध धनुर्धर; वळ्ळियोय्–वदान्य; यान् उटै–मेरे पास जो रहता है; इयल्पुम्–वह स्वभाव और; ऍण्णमुम्–विचार; निनैवुम्–स्मरण; इनैयन–ऐसे हैं; ऍन्ड्राल्–तो; इनि–आगे; यान्–मैं; निन्ऱु चॅयुम्–(मित्र की) स्थिति में जो करूँगा; विनैयुम्–वह कार्य; नल् आण्मैयुम्–और श्रेष्ठ पुरुषोचित सामर्थ्य भी; विळम्प वेण्टुमो–कहना भी चाहिए क्या; ऍन्ड्रान्–कहा। ६८२

सुनिर्मित पायल और सबन्ध धनु के स्वामी, वदान्य ! मेरा स्वभाव, मेरे विचार और मेरे स्मरण ऐसे हैं तो आगे मैं आपका साथी बनकर जो करूँगा उन कार्यों का और मेरी श्रेष्ठ वीरता का क्या कहा जाय ? । ६८२

तिरुवुरै मार्बनुन् दीर्न्द दैयुम्वन्, दॉरुवरुङ् गालमुन् नुरिमै योरुरै
तरुविनैत् ताहैयिऱ् ड्राऴ्विऱ् ड्राहुमो, बरदनी यिनैयन पहर्दियो वॅन्ड्रान् 683

तिरु उरै–श्रीनिवास; मार्पनुम्–वक्ष वाले भी; ऑरुव् अरु–जल्दी जो नहीं बीतता; कालम्–वह वर्षाकाल; वन्तु–आकर; तीर्न्ततैयुम्–चला गया और; उन् उरिमै–अपना कर्तव्य पहचानकर; ओर् उरै–जो कहते हो, वह वचन; तरु विनैत्तु–सीता को लाकर देने का कार्यवाची है; आकैयिन्–इसलिए; ताऴ्विऱ्ऱ आकुमो–(तुम्हारे वचन और कार्य) नीच हो सकते हैं क्या; परतन् नी–भरत (समान) तुम; इनैयन–ऐसी बातें; पकर्तियो–क्यों कहो; ऍन्ड्रान्–बोले। ६८३

(पछतावे के साथ सुग्रीव ने वे शब्द कहे थे।) श्रीवक्ष श्रीराम ने उत्तर

में कहा— शीघ्र बीतनेवाला वर्षाकाल भी आकर चला गया। तुम अपना उत्तरदायित्व समझकर बात करने लगे। तुम्हारे वचनों में सीता को ढूँढ़ लाने का संकल्प झलकता है। फिर इसमें क्षुद्रता कहाँ ? तुम मेरे लिए भरत के समान हो। फिर ऐसी बातें क्यों कहो ? । ६८३

आरियन् पिन्नरु ममैन्दु नन्गुणर्, मारुदि यॅव्वऴि मरुवि ताॅन्नच्
चूरियन् कान्मुळै तोन्रु मालवन्, नीरिरुम् परवैयि नॅडिय शेनैयान् 684

आरियन्–आर्य श्रीराम (के); पिन्नरुम्–फिर भी; अमैन्तु–कहने को उद्यत होकर; नन्कु उणर्–खूब समझदार; मारुति–मारुति; अॅ वऴि–कहाँ; मरुविन्तान्–रहता है; ॲन्त–कहने पर; चूरियन् कान् मुळै–सूर्य का पुत्र; अवन्–वह; नीर् इरुम् परवैयिन्–जल-भरे बड़े समुद्र के समान; नॅटिय चेनैयान्–बहुत विशाल सेना वाला होकर; तोन्रुम्–आ जायगा। ६८४

आर्य श्रीराम ने और कुछ कहने को उद्यत होकर पूछा कि त्रिकालज्ञ और विवेकी मारुति कहाँ है ? उसके उत्तर में सूर्यसूनु ने कहा— वह जल-भरित सागर-सम विशाल सेना वाला बनकर आयगा। ६८४

कोडियो रायिरङ् गुरित्त तूदुवर्, ओडि नॅडुम्बडै कॊणर लुऱ्ऱ्दाल्
नाडरक् कुरित्तदु मिन्ऱु नाळैयव्, वाडलन् दानैयो डवनु मॅय्दुमाल् 685

ओर् आयिरम् कोटि–एक सहस्र कोटि; कुरित्त–गणित; तूतुवर्–दूत; नॅटु पटै–विशाल सेना; कॊणरल् ओटिनर्–लाने दौड़े हैं; तर–(सेना) लाने; कुरित्ततु नाळुम्–निर्धारित दिन भी; उऱ्ऱतु–आ गया; आल्–इसलिए; इन्ऱु नाळै–आज या कल; अ–उस; आटल् अम् तानैयोटु–शक्तिमान सेना के साथ; अवनुम् ॲय्तुम्–वह भी आ जायगा। ६८५

एक सहस्र कोटि गणित दूत विशाल वानर-सेना को ले आने के लिए वेग के साथ गये हैं। उनके लौट आने के लिए निर्धारित दिन भी आ गया। इसलिए आज या कल सशक्त उस बड़ी सेना के साथ हनुमान भी इधर आ जायगा। ६८५

विरुम्बिय विरामनुम् वीर निऱ्कदोर्, अरुम्बॊरु ळाहुमो वमैदि नन्ऱॅन्ना
पॅरुम्बह लिऱन्ददु पॅयर्दि निन्बडै, पॊरुन्दुऴि वावॅन्त तॊऴुदु पोयिनान् 686

विरुम्पिय इरामनुम्–(सुग्रीव से) स्नेह करनेवाले श्रीराम (के); वीर–वीर; निऱ्कु–तुम्हारे लिए; अतु–वह; ओर् अरुम् पॊरुळ् आकुमो–एक कठिन काम होगा क्या; अमैति–विनय; नन्ऱु–भली है; ॲन्ना–कहकर; पॅरुम् पकल्–लम्बा दिन; इऱन्ततु–पूरा हो गया; पॅयर्ति–निकलो; निन् पडै–तुम्हारी सेना; पॊरुन्तुऴि–जब आकर मिल जायगी; वा–आओ; ॲन्त–कहने पर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोयिनान्–चला। ६८६

सुग्रीव को प्यार करनेवाले श्रीराम ने सुग्रीव से प्रोत्साहन के शब्द में

कहा कि हे वीर ! तुम्हारे लिए यह काम कोई कठिन काम है क्या ? लेकिन तुम्हारी विनय श्लाघनीय है। उन्होंने आगे कहा कि देखो ! लम्बा दिन का समय पूरा हो गया। अब चलो और जब सेना एकत्रित हो आयगी तब आ जाओ। श्रीराम की यह आज्ञा लेकर सुग्रीव उनको नमस्कार करके चला। ६८६

अङ्गदऱ् किनियन वरुळि यॆयपोय्त्, तङ्गुदि युन्दैयो डॆन्ऱु तामरैच्
चॆङ्गणान् ऱम्बियुन् दानुज् जिन्दैयिन्, मङ्गैयु मव्वऴि यन्ऱु वैहिनान् 687

तामरै–कमल-सी; चॆम् कणान्–लाल आँखों वाले; अङ्कतऱ्कु–अंगद से; इनियन–मधुर; अरुळि–(वचन) कहकर; ऐय–तात; पोय्–जाकर; उन्तैयोटु–अपने पिता के साथ; तङ्कुति–रहो; ऎन्ऱु–कहकर; तम्पियुम्–अपने छोटे भाई (के साथ जो प्रत्यक्ष थे) और; चिन्तैयिन् मङ्कैयुम्–(जो मन में रहीं उन) देवी (के साथ) और; तानुम्–स्वयं; अन्ऱु–उस निशा में; अव्वऴि–वहाँ; वैकिनान्–ठहरे। ६८७

पद्माक्ष श्रीराम ने अंगद से मधुर वचन कहे और आज्ञा दी— सुन्दर वीर ! तुम भी जाओ और अपने पिता के साथ रहो। फिर वे मन में सीता की चिन्ता और पास में लक्ष्मण को रखते हुए अकेले वहाँ रहे। ६८७

अन्ऱव णिरुत्तन नलरि कीऴ्टिशैप्, पॊन्ऱिणि नॆडुवरै पॊलिवु ऱादमुन्
वन्ऱिऱऱ् ऱूदुवर् कूव वानरक्, कुन्ऱुरऴ् नॆडुम्बडै यडैन्द कूऱुवाम् 688

अन्ऱु–उस रात; अवण्–वहाँ (माल्यवान पर्वत) पर; इरुत्तनन्–ठहरे; अलरि–सूर्य (के); कीऴ् तिचै–पूर्व दिशा में; पॊन् तिणि–स्वर्णमय; नॆटु वरै–बड़ी (उदय-) गिरि पर; पॊलिवु उऱात–शोभायमान होने से; मुन्–पहले; वल् तिऱल्–अधिक सशक्त; तूतुवर्–दूतों के; कूव–पुकारने पर; कुन्ऱु उऴ्–पर्वत-सम; वानरम्–वानरों की; नॆटु पटै–विशाल सेना; अटैन्ततु–आ पहुँची; कूऱुवाम्–यह कहेंगे। ६८८

उस रात भर में वे उस माल्यवान पर्वत पर रहे। सूर्य के पूर्व दिशा की स्वर्णिम उदयगिरि पर शोभायमान दिखने से पूर्व ही बहुत बलवान दूतों के बुलाने पर पर्वत-सम वानरों की विशाल सेना कैसे आ पहुँची ? इसका अब विवरण देंगे। ६८८

11. तानैकाण् पडलम् (सेना-संदर्शन पटल)

आनै यायिर मायिरत् तॆऴुवलि यमैन्द
वान रादिप रायिर रुडन्वर वहुत्त
कूनन् माक्कुरङ् गैयिरण् डायिर कोडित्
तानै योडमच् चदवलि यॆन्बवन् शाऱ्न्दान् 689

अ चत वलि अँन्पवन्–वह शतबली नाम का वीर; आयिरम् आयिरत्तु–सहस्र-सहस्र (दस लाख); आनै–गजों के; अँरुळ् वलि अमैन्त–विकट बल से युक्त; आयिरर् वानर अतिपर्–सहस्र वानर-यूथप; उटन् वर–साथ आते; वकुत्त–दल-बद्ध; कूनल्–कूबड़े; मा–बड़े; ऐ इरण्टु–दस; आयिर–सहस्र; कोटि–कोटि; कुरङ्कु–वानरों की; तानैयोटु–सेना के साथ; वन्तान्–आया। ६८९

शतवली नामक वानर वीर आया; जिसके साथ दस-दस लाख गजों के-से बल वाले वानराधिपति आये। और उनके पीछे व्यूहों में बद्ध दस सहस्र करोड़ झुकी पीठ वाले वानरों की सेना आयी। ६८९

ऊन्रि मेरुवै यॅडुक्कुरु मिडुक्किनुक् कुरिय
तेन् ऱॅरिन्दुणडु तॅळिवुरु वानरच् चेनै
आनृर पत्तुनू ऱायिर कोडियो डमैयत्
तोन्रि नान्वन्दु शुशेडण ॲनुम्बॅयर्त् तोन्ऱल् 690

चुचेटणन् अँनुम् पॅयर् तोन्ऱल्–सुषेण नामक वीर; मेरुवै–मेरुपर्वत को; ऊन्रि अँटुक्कुम्–उखाड़कर उठा लेने की; मिटुक्कितुक्कु उरिय–शक्तिसम्पन्न; तेन् तॅरिन्तु उण्टु–सुरा का (परिमाण) जानकर पान करके; तेळिवु उरु–स्वच्छ (मन वाली); आनृर वानर चेनै–श्रेष्ठ वानर-सेना; पत्तु नूरायिर कोटि योटु–दस लाख सहस्र के साथ; अमैय–युक्त होकर; वन्तु तोन्रिनान्–आकर प्रकट हुआ। ६९०

सुषेण नामक बड़े वीर आये। उसके साथ उत्कृष्ट दस लाख कोटि वानरों की सेना आयी। वे वीर मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखते थे। मात्रा जानकर पिये हुए थे, उनके मन में कोई भ्रम नहीं था (ऐसे वीरों के साथ सुषेण आया।)। ६९०

ईऱिल् वेलैयै यिमैप्पुरु मॅल्लैयिऱ् कलक्किच्
चेरु काणगुरुन् दिऱल्हॅळ वानरच् चेनै
आऱॅ णायिर कोडिय दुडन्वर वमुदिन्
माऱि लामॉळि युरुमैयैप् पयन्दवन् वन्दान् 691

ईरु इल्–जिसके विस्तार का अन्त नहीं; वेलैयै–उस सागर को; इमैप्पुरुम् ॲल्लैयिल्–पलक मारते समय के अन्दर; कलक्कि–विलोडकर; चेरु काणकुरुम्–पंकिल बना सकनेवाले; मारु इला–अनुपम; अमुतिन् मॉळि–अमृतवाणी; उरुमैयै–रुमा (सुग्रीव-पत्नी) को; पयन्तवन्–जिसने जन्म दिया था, वह; तिरल् कॅळु–शक्तिसम्पन्न; वानर चेनै–वानर-सेना; आरु ॲणायिर कोठि–छः के आठ (अड़तालीस) की; अतु–उसके; उटन् वर–साथ आते; वन्तान्–आया। ६९१

बाद अनुपम अमृत-सम बोली वाली रुमा का पिता आया, जो अपार सागर को भी पलक मारते समय के अन्दर मथकर पंकिल बना सकता था। उसके साथ सशक्त अड़तालीस करोड़ की वानर-सेना आयी। ६९१

ऐम्ब दायनू ऱायिर कोडियॅण् णमैन्द
मॊय्म्बु माल्वरै पुरैनॅडु वानर मॊय्प्प
इम्बर् ञालत्तुम् वानत्तु मॅऴुदिय चीर्त्ति
नम्ब नैत्तन्द केशरि कडलॅन्न नडन्दान् 692

इम्पर् ञालत्तुम्–इस संसार में; वानत्तुम्–व्योम में; ॲऴुतिय चीर्त्ति–अंकित कीर्ति रूपी; नम्पतै तन्त–महिमावान वीर (हनुमान) को; तन्त–जन्म देनेवाला; केचरि–केसरी नाम का सेनापति; ऐम्पतु आय–पचास के; नूऱायिर कोटि–लाख करोड़; ॲण् अमैन्त–संख्या के; माल् वरै पुरै–श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत-सम; मॊय्म्पु नॅटु वानरम्–भुजा वाले वानरों (की सेना) के; मॊय्प्प–साथ आते; कटल् ॲन्न–समुद्र के समान; नटन्तान्–आया। ६९२

भूलोक और व्योम-लोक में भी जिसकी कीर्ति अंकित थी, ऐसे यशस्वी श्रेष्ठ हनुमान के जनक केसरी पचास लाख कोटि में गिनी हुई, कैलास पर्वत-सम भुजा वाले और सशक्त वानरों की लम्बी सेना से घिरा हुआ आया। ६९२

मुनियु मामॅनि नरुक्कनै मुरणऱ मुरुक्कुम्
तनिमै ताङ्गिय वुलहैयुञ् जलम्वरिऱ् कुमैक्कुम्
कुनियु माक्कुरङ् गीरिरण् डायिर कोडि
अनिक मुन्वर वान्पॅयर्क् कण्णन्वन् दडैन्दान् 693

मुनियुम् आम् ॲनिन्–क्रोध करे तो; अरुक्कनै–सूर्य को; मुरण् अऱ–निर्बल बनाते हुए; मुरुक्कुम्–मार देगा; चलम् वरिन्–उग्र कोप होगा तो; तनिमै–अकेले ही; ताङ्किय उलकैयुम्–(हमको) धरती रहनेवाली भूमि को भी; कुमैक्कुम्–ध्वस्त कर देगा; कुनियुम्–(ऐसे) झुके रहनेवाले; मा कुरङ्कु–बड़े-बड़े वानर; ईर् इरण्टु–दो के दो (चार); आयिर कोटि–सहस्र कोटि (की); अनिकम् मुन् वर–सेना के सामने जाते; आन् पॅयर् कण्णन्–गाय की आँख नाम का (गवाक्ष); वन्तु अटैन्तान्–आ पहुँचा। ६९३

गवाक्ष आया और उसके सामने एक बहुत बड़ी वानर-सेना आयी। उसकी संख्या चार सहस्र कोटि थी। उसके वीर ऐसे थे कि क्रोध करें तो सूर्य को भी निर्बल करके मार दें। और उग्र क्रोध हो तो हमको धारण करनेवाली धरती को भी ध्वस्त कर दें। वे वीर आकार में बड़े थे और उनकी पीठ झुकी हुई थी। ६९३

मण्गॊळ् वाळॅयिऱ् ऱॆन्नत्तिन् वलियॅन्न वयिरत्
तिण्गॊण् माल्वरै मयिर्प्पुऱत् तनवॅनत् तिरण्ड
कण्गॊ ळायिर कोडियि निरट्टियिऱ् कणित्त
ॲण्गि नीट्टङ्गॊण् डॆरुळ्वलित् तूमिर निरुत्तान् 694

ॲरुळ् वलि–अतिबली; तूमिरन्–धूम्र; मण् कॊळ्–भूमि को उखाड़नेवाले;

वाळ् ऍयिऱ्-श्वेत दाँतों से भूषित; एऩ्ऩुतिऩ्-(श्रीविष्णु के अवतार) वराह के समान; वलियऩ्-बली; वयिरम्-सारयुक्त; तिण् कोळ्-सशक्त; माल् वरै-बड़े पर्वत; मयिर् पुऱ्ऱुतऩ-इनके बाल की जड़ में समा जायँगे, ऐसा; तिरण्ट-मोटे-तगड़े; कण् कोळ्-विशाल विस्तार के; आयिरम् कोटियिऩ् इरट्टियिल्-सहस्र कोटि के दुगुने; कणित्त-गिने हुए; ऍण्किऩ् ईट्टम् कोण्टु-रीछों का दल लेकर; इऴुत्ताऩ्-आ पहुँचा। ६९४

अत्यधिक बली धूम्र भूमि को उत्पाटित करनेवाले श्रीविष्णु के वराहावतार के समान बड़े बलवान दो सहस्र कोटि में गणित रीछों का समूह ले आया। वे रीछ इतने तगड़े थे कि सुदृढ़ और कठोर बड़े पर्वत भी उनके एक रोम के मूल में समा सकते थे। ६९४

तऩिव रुन्दडङ् गिरियॆऩप् पॆरियवऩ् शलत्ताल्
निऩैयु नॆञ्जिऱ वुरुमॆऩ वुरुक्कुऱ निलैयऩ्
पऩश नॆऩ्बवऩ् पऩ्ऩिरण् डायिर कोडिप्
पुऩिद वॆञ्जिऩ वानरप् पडैहॊडु पुहुन्दाऩ् 695

तऩि वरुम् तट किरि ऍऩ-अकेले आनेवाला बड़ा पर्वत है, ऐसा मान्य; पॆरियवऩ्-भीमकाय; चलत्ताल्-अतिक्रोध से; निऩैयुम् नॆञ्चु इऱ-सोचनेवालों के मन को तोड़ दे, ऐसा; उरुम् ऍऩ-गाज के समान; उरुक्कुऱ-पिघलानेवाले; निलैयऩ्-स्वभाव का; पऩचऩ्-पनस (नाम का यूथप); पऩ्ऩिरण्टु आयिर कोटि-द्वादश सहस्र कोटि; पुऩितम् वॆम् चिऩम्-पवित्र (पर) भयंकर क्रोधी; वानरम् पटै कॊण्टु-वानर-सेना को साथ लेकर; पुकुन्ताऩ्-आ पहुँचा। ६९५

पनस नामक वानर यूथप बारह हज़ार करोड़ पवित्र पर भयंकर वानरों की सेना के साथ आ पहुँचा। वह यूथप अकेले उठकर आनेवाले पर्वत के-से आकार का था। उसका दुर्दम क्रोध सोचनेवाले के मन को भी तोड़ सकता था, और वज्र के समान उसको चूर-चूर कर सकता था। ६९५

इडियु माऴ्हडऩ् मुऴक्कमुम् वॆरुक्कोळ विशैक्कुम्
मुडिविल् पेर्मुऴक् कुडैयऩ विशैयऩ मुरण
कॊडिय कूऱ्ऱैयु मॊप्पऩ पदिऱ्ऱैन्दु कोडि
नॆडिय वानरप् पडैहॊण्डु पुहुन्दऩ ऩीलऩ् 696

नीलऩ्-नील; इटियुम्-वज्र-नाद; आऴ् कटल्-और गहरे समुद्र के; मुऴक्कमुम्-गर्जन को; वॆरु कोळ-भयभीत करते हुए; इचैक्कुम्-उठनेवाले; मुटिवु इल्-अपार; पेर् मुऴक्कु-बड़ा शोर; उटैयऩ-रखनेवाले और; विचैयऩ-वेगवान; मुरण-विभिन्न; कॊटिय कूऱ्ऱैयुम्-क्रूर यम को भी; ऒप्पऩ-समता करनेवाले; पतिऱ्ऱैन्तु-दस के पाँच (पचास); कोटि-कोटि (की); नॆटिय वानरम् पटै-विशाल वानर-सेना; कॊण्टु-साथ लेकर; पुकुन्तऩऩ्-प्रविष्ट हुआ। ६९६

नील, वज्र और गम्भीर सागर के गर्जन को भय से स्तब्ध करते हुए उठनेवाले ज़ोर के घोष से युक्त, वेगवान, विविध प्रकार के, और क्रूर यम की बराबरी करनेवाले पचास करोड़ वानरों की सेना को लेकर पहुँचा। ६९६

इळैत्तु वेऱॊरु मानिलम् वेण्डुमॆन्ऱ् इरङ्ग
मुळैत्त मुप्पदि नायिर कोडियिऩ् मुऱ्ऱुम्
विळैत्त वॆञ्जिऩत् तरियिऩम् वॆरुवुऱ् विळिक्कुम्
अळक्करोडुमक् कवयऩॆऩ् ऱवऩ्वन् दडैन्दाऩ् 697

अ कवयऩ् ऍऩ्ऩुपवऩुम्–गवय नाम का वह भी; वेऱु ऑरु–अन्य एक; मा निलम् वेण्टुम्–बड़ी भूमि चाहिए; ऍऩ्ऱु–कहकर; इळैत्तु इरङ्क–दुःखी होकर मन कृश हो, ऐसा; मुळैत्त–जो प्रकट हुए; मुप्पतिऩ् आयिरम् कोटि–तीस सहस्र कोटि; मुऱ्ऱुम् विळैत्त–भूतल भर में व्याप्त; वॆम् चिऩत्तु–भयंकर क्रोध से युक्त; अरि इऩम्–वानर-समूह; वॆरुवु उऱ–भय उत्पन्न करते हुए; विळिक्कुम्–तरेरनेवाले; अळक्करोटुम्–(सेना-) सागर के साथ; वन्तु अटैन्ताऩ्–आ पहुँचा। ६९७

गवय (गज?) नामक वीर आया, और उसके साथ एक बड़ा सेना-सागर आया। उसको देखकर लोगों के मन में यह दया का भाव उठता था कि (यह भूमि उनके संचार के लिए पर्याप्त नहीं है और) दूसरी पृथ्वी चाहिए। उनकी संख्या तीस हजार करोड़ की थी। अत्युग्र सिंह भी डर जाय, ऐसा तरेरनेवाले वीर थे उस सेना के वानर। ६९७

माह रत्तत्त वरत्तत्त मलैयत्त निलैय
वेह रत्तवॆङ् गण्णुमिऴ् वॆयिलत्त मलैयिऩ्
आह रत्तिऩुम् बॆरियत्त वाऱैन्दु कोडि
शाह रत्तॊडुन् दरीमुह ऩॆऩ्बवऩ् शाऱ्न्दाऩ् 698

तरीमुकऩ् ऍऩ्पवऩ्–दरीमुख नाम का वह; मा करत्तत्त–मोटी भुजाओं वाले; वरत्तत्त–अनेक वर जिन्हें प्राप्त थे; मलैयत्त–पर्वत-सम सुदृढ़; वेकरत्त–उग्र; वॆम् कण्–भयंकर आँखों से; उमिऴ् वॆयिलत्त–निकलते अंगारों वाले; मलैयिऩ् आकरत्तिऩुम्–पर्वताकार से; पॆरियत्त–बड़े; आऱु ऐन्तु कोटि–छः के पाँच (तीस) करोड़; चाकरत्तॊटुम्–(सेना-) सागर के साथ; चाऱ्न्ताऩ्–आ मिला। ६९८

दरीमुख तीस करोड़ सेना के समुद्र के साथ आ पहुँचा। उसके वीरों के हाथ बहुत मोटे थे। उन्हें श्रेष्ठ वर मिले थे। पर्वत से भी कठोर वे बहुत ही उग्र, आँखों से अंगारे उगलनेवाले और गिरियों से भी बड़े आकार के थे। ६९८

आयि रत्तरु नूऱ्हो डियिऱ्कडै यमैन्द
पायि रप्पॆरुम् बडैहॊण्डु परवैयिऱ् ऱिरैयिऩ्

तायु रुत्तुड लेवरत् तडनॆंडु वरैयै
एयु रुप्पुयच् चाम्बवॆंन् बवनुम्वन् दिरुत्तान् 699

तट–विशाल; नॆंटु–ऊँचे; वरै एय्–पर्वत के समान; उरु–आकार के; पुयम्–कन्धों वाले; चाम्पन् ॲन्पवनुम्–जाम्बवान नाम का वह भी; परवैयिन् तिरैयिन्–सागर-तरंगों के समान; ताय्–छलाँग लगाते हुए; उरुत्तु–वैर के साथ; उटत्ते वर–साथ आनेवाले; आयिरत्तु अरु नूरु–एक सहस्र छः सौ; कोटियिन्–करोड़ की संख्या के; कटै अमैन्त–सर्वत्र व्याप्त; पायिरम् पॆरुम् पटै–महिमामय बड़ी सेना; कॊण्टु–साथ लेकर; वन्तु इरुत्तान्–आ पहुँचा। ६९९

पर्वतोन्नत भुजाओं वाला जाम्बवान, समुद्र तरंगों के समान छलाँग मारते आनेवाले एक सहस्र छः सौ करोड़ की संख्या के वीरों की बड़ी सेना लिये आ पहुँचा। ६९९

वहुत्त तामरै मलरय निशिशरर् वाणाळ्
उहुत्ति नीयॆंनप् पॊरुवरुम् बॆरुवलि युडैयान्
पहुत्त पत्तुनू ऱायिरप् पत्तियि निरण्ड्
तॊहुत्त कोडिवॆंम् बडैहॊण्डु दुन्मुहन् तॊडर्न्दान् 700

पॊरुवु अरुम्–अप्रमेय; पॆरु वलि उटैयान्–बड़ा बली; तुन्मुकन्–दुर्मुख; वकुत्त–लोकसर्जक; तामरै मलर्–(विष्णु की नाभि रूपी) कमल-पुष्प पर आसीन; अयन्–ब्रह्माजी (के); निचिचरर् वाळ्नाळ्–निशिचरों की आयु के दिनों को; नी उकुत्ति–तुम ही समाप्त करो; ॲन–कहने पर; पकुत्त–व्यूह-बद्ध; पत्तु नूऱायिरम्–दस लाख; पत्तियिन्–पंक्तियों में; तॊकुत्त–लगे आनेवाले; इरण्टु कोटि–दो करोड़ की; वॆम् पटै कॊण्टु–भयंकर सेना लेकर; तॊटर्न्तान्–(उनका) अनुगमन करता आया। ७००

अप्रतिम बलशाली दुर्मुख ऐसे वीरों को ले आया, जिनको लोकसर्जक कमलासन ब्रह्मा ने शायद यह कहकर बनाया था कि तुम्हीं निशिचरों की आयु का अन्त कर दो। दस-दस लाखों के दलों में विभक्त उन वीरों की कुल संख्या दो करोड़ थी। ७००

कोडि कोडिनू ऱायिर वॆण्णॆंनक् कुविन्द
नीडु वॆञ्जिनत् तरियिन मिरुपुडै नॆरुङ्ग
मूडु मुम्बरु मिम्बरुम् बूळियित् मूळ्हत्
तोडि वर्न्दतार्क् किरिपुरै दुमिन्दतुन् दॊडर्न्दान् 701

तोटु इवर्न्त–दलयुक्त; तार्–पुष्पमालाधारी; किरिपुरै–पर्वत-सम; तुमिन्तनम्–द्विविद भी; कोटि कोटि नूऱायिरम्–कोटि-कोटि लाख; ॲण् ॲन–संख्या में; कुविन्त–एकत्रित; नीटु वॆम् चिनत्तु–बहुत भयंकर क्रोधी; अरि इनम्–वानरवृन्द; इरु पुटै नॆरुङ्क–दोनों पार्श्वों में लगे आए; मूटुम् उम्परुम् इम्परुम्–

भूमि को ढँकनेवाला आकाश और भूमि दोनों को; पूऴियिल् मूऴ्क–धूल में छिपने देते हुए; तोटर्न्तान्–बाद आया। ७०१

दलयुक्त फूलों की माला पहने हुए पर्वत-सम द्विविद नामक वीर कोटि-कोटि लाखों के, अतिक्रोधी वानर यूथों के मध्य आया। उनके चलने के कारण जो धूल उठी, उसमें भूमि के ऊपर फैला हुआ आकाश और भूतल दोनों डूब गये। ७०१

इयैन्द पत्तुनू ऱायिरप् पत्तॅनुङ् गोडि
उयर्न्द वॅञ्जिन वानरप् पडैयोडु मोरुङ्गे
शयन्द नक्कोरु वडिवॅनत् तिऱल्होडु तऴैत्त
मयिन्दन् मऱ्कश कोमुहन् ऱन्नोडुम् वन्दान् 702

चयम् ततक्कु ओरु वटिवु ॲन–विजय को मिला एक रूप है, ऐसा लगनेवाले; तिऱल् कोटु–वल के साथ; तऴैत्त–उत्कृष्ट; मयिन्तन्–मयन्द; मल्–मल्ल; कच कोमुकन् तन्नोटुम्–गजगोमुख के साथ; इयैन्त–युक्त; पत्तु नूऱायिरम् पत्तु ॲनुम्–सौ लाख; कोटि–कोटि; उयर्न्त वॅम् चितम्–अति भयंकर क्रोधी; वानरम् पटैयोटुम्–वानर-सेना के साथ; ओरुङ्के वन्तान्–मिलकर आया। ७०२

मैंद आया जो विजय का ही साक्षात् रूप था। वह मल्ल गजगोमुख को भी साथ लाया। उनके साथ सौ सहस्र कोटि उत्कृष्ट और क्रोधी वानरों की सेना आयी। ७०२

कऱङ्गु पोल्वन काऱ्ऱिनुङ् गूऱ्ऱिनुङ् गडिय
पिऱङ्गु तॅण्डिरैक् कडल्पुडै पॅयर्न्दॅनप् पॅयर्व
मऱङ्गोऴ् वानर मोन्बदु कोडियॅण् वहुत्त
तिऱङ्गोऴ् वॅञ्जिनप् पडैहोडु कुमुदनुञ् जेर्न्दान् 703

कुमुतनुम्–कुमुद; कऱङ्कु पोल्वन–पतंग के समान (उड़नेवाले); काऱ्ऱिनुम् कूऱ्ऱिनुम् कटिय–पवन से भी (तेज) और यम से भी क्रूर; पिऱङ्कु–शोभनेवाली; तॅऴ् तिरै–स्वच्छ वीचियों का; कटल्–समुद्र; पुटै पॅयर्न्तु ॲन–स्थान बदला हो, ऐसा; पॅयर्व–स्थान बदलती जानेवाली; ओन्पतु कोटि–नौ करोड़ की; ॲण् वकुत्त–संख्या में गणित; तिऱम् कोऴ्–बली; वॅम् चितम्–भयंकर क्रोधी; मऱम् कोऴ्–दूसरों की वीरता को परास्त करनेवाली; वानरम् कोटु–वानर-सेना को साथ ले; चेर्न्तान्–आ पहुँचा। ७०३

कुमुद, पतंग-सम, पवनदेव और यमराज से भी कठोर और ऐसा चलनेवाले मानो स्वच्छ वीची वाला समुद्र स्थान बदलकर आ रहा हो, नौ करोड़ वानरों की सेना ले आया। वे वानर मन और शरीर दोनों के बड़े बली और साहसी व क्रोधी थे। ७०३

कैयञ् जाशर मुडैयवक् कडवुळैक् कण्डु
मॅय्यञ् जादवन् मादिरञ् जिऱ्ऱिदॅन्न विरिन्द
वैयञ् जाय्दरत् तिरिदुरु वानरच् चेनै
ऐयञ् जायिर कोडिहॉण् डनुमन्वन् दडैन्दान् 704

अम् कै–सुन्दर किरणें; चाचरम् उटैय–हज़ारों के साथ रहनेवाले; अ कटवुळै–उस (सूर्य-) देव को; कण्टुम्—देखकर भी; मॅय् अञ्चातवन्–शरीर में थोड़ा भी कम्पन न लानेवाले; अनुमन्–हनुमान; मातिरम् चिऱ्ऱितु–दिशाएँ (इसके सामने) छोटी हैं; ॲन्न विरिन्त–ऐसा विशाल; वैयम्–भूमि; चाय्तर–एक ओर धँस जाय, ऐसा; तिरितरु–घूमनेवाली; ऐ अञ्चु–पचीस; आयिरम् कोटि–सहस्र कोटि; वानर-चेनै–वानर-सेना; कॉण्टु–साथ लिये; वन्तु अटैन्तान्–आ पहुँचे। ७०४

सहस्रों सुन्दर किरणों को करों के रूप में रखनेवाले सूर्यदेव को सामने से देखकर भी जिसके शरीर में कोई कम्पन नहीं होता था, वह हनुमान दिशाओं को छोटा बनाते हुए और भूमि को एक ओर झुकाते हुए आनेवाले पचीस हज़ार करोड़ वानरों की सेना लेकर आया। ७०४

नॉय्दिऱ् कूडिय शेनैनू ऱायिर कोडि
ॲय्दत् तेवरु मॅन्गॉलो मुडिवॅन्ब दॅण्ण
मैयल् चिन्दैया लन्दहन् मरुक्कुऱ्ऱ मयङ्गत्
तॅय्वत् तच्चन्मॅय्त् तिरुनॅडुङ् गादलन् शेर्न्दान् 705

तॅय्वम् तच्चन्–देवशिल्पी (विश्वकर्मा) का; मॅय् तिरु–सच्चा प्रतिरूप; नॅटु कातलन्–उसका बहुत प्यारा पुत्र (नल); तेवरुम्–देवता भी; मुटिवु ॲन् कॉलो–इसका पार कहाँ; ॲन्पतु ॲण्ण–यह सोचें, ऐसा; अन्तकन्–अन्तक (यम); मैयल् चिन्तैयाल्–भ्रमित मन में; मरुक्कुऱ्ऱ–मोहित होकर; मयङ्क–चकित हो; नॉय्तिन् कूटिय–सहसा एकत्रित; नूऱायिर कोटि–सहस्र (सहस्र) कोटि; चेनै ॲय्त–सेना को अपने साथ आने देते हुए; चेर्न्तान्–आ पहुँचा। ७०५

देवशिल्पी का जो प्रतिरूप ही लगता था वह उसका पुत्र नल, अपने साथ एकत्रित लाख-लाख कोटि के वानरों की सेना लेकर आया। वह सेना इतनी विशाल थी कि देव भी यह विस्मय करने लगे कि इसका अन्त कहाँ और यम भी भ्रमित और अधीर हो गया। ७०५

कुम्ब नुङ्गुलच् चङ्गनु मुदलिनर् कुरङ्गिन्
तम्बॅ रुम्बडैत् तलैवरॄह डरवन्द तानै
इम्बर् निन्ऱवर्क् कॅण्णरि दिराहव नावत्
तम्बॅ नुन्दुणैक् कुरियमर् ऱुरैप्परि वळवे 706

कुम्पनुम्–कुम्ब व; कुलम् चङ्कनुम्–कुलीन शंख; मुतलिनर्–आदि; तम् पॆरु–अपनी-अपनी बड़ी; कुरङ्किन् पटै तलैवर्कळ्–वानर-सेना के पति; तर वन्त–

अपने साथ आयी; तानै–सेना; इम्पर् निन्ऱवर्क्कु–भूतलवासियों के लिए; ऍण्णरितु–गिनना असम्भव है; इराकवन् आवत्तु–श्रीराघव के तूणीर के; अम्पु ऍन्नुम् तुणैक्कु उरिय–अस्त्र जितने हैं, उतने लगनेवाले; अळवु मऱ्ऱु–दूसरी गणना; उरैप्परितु–कहना कठिन है। ७०६

कुम्भ और कुलीन शंख आदि अपनी बड़ी-बड़ी वानर-सेनाओं के साथ आये। उनकी वानर-सेनाएँ इस लोक के वासियों द्वारा गिनी नहीं जा सकती थीं। श्रीराघव के तूणीर में रहनेवाले शरों के उतने हैं, यह कहा जा सकता था। और कोई गणना सम्भव नहीं। ७०६

तोयि　लाऴियो　रेऴुनीर्　शुवऱ्ऱॅण्　डुहळाम्
शायि　नण्डमु　मेरुवु　मोरुङ्गुडन्　शरियुम्
एयिन्　मण्डल　मॅळ्ळिड　विडमिन्ऱि　यिरियुम्
कायिन्　वॅङ्गनर्　कडवुळु　मिरवियुङ्　गरियुम् 707

तोयिल्–(यह सेना-समूह) गोता लगाएँ तो; आऴि–समुद्र; ओर् एऴुम्–सातों; नीर् चुवऱ्ऱि–जल सूखकर; वॅळ् तुकळ् आम्–श्वेत धूल बन जावें; चायिन्–एक ओर झुकें तो; अण्टमुम्–यह अण्ड और; मरुवुम्–मेरु; ओरुङ्कु–एक साथ; उटन् चरियुम्–उनके साथ झुक जाते; एयिन्–घूमने लगें तो; मण् तलम्–यह भूमि; ऍळ् इट–तिल धरने को; इटम् इन्ऱि–स्थान नहीं हो; इरियुम्–जायगी; कायिन्–क्रोध करें तो; वॅम् कनल् कटवुळुम्–भयंकर अग्निदेव और; इरवियुम्–रवि; करियुम्–झुलसेंगे। ७०७

ऐसी बड़ी सेना आकर एकत्रित हुई; अगर वह समुद्र में मग्न हो, तो सातों समुद्र सूख जायें और सफ़ेद धूल मात्र रह जायें। अगर वह एक ओर पिल पड़े तो भूमण्डल और मेरु उसके साथ उसी ओर धँस जायें। अगर वह संचार करने लगे तो भूतल पर तिल रखने को भी स्थान नहीं मिले। अगर वह क्रोध करे तो भयंकर अनलदेव और अर्कदेव जलकर काले पड़ जायें। ७०७

ऍण्णि　नान्मुह　रॅऴुपदि　नायिरर्क्　कियला
उण्णि　नण्डङ्ग　ळोर्बिडि　युण्णवु　मुदवा
कण्णि　नोक्कुरिऱ्　कण्णुद　लानुक्कुङ्　गदुवा
मण्णिन्　मेल्वन्द　वानरत्　तानैयिन्　वरम्बे 708

मण्णिन् मेल्–भूमि पर; वन्त–एकत्रित हो आयी; वानर तानैयिन्–वानर-सेना का; वरम्पु–विस्तार (सीमा); ऍण्णिन्–विचार करें तो; नान्मुकर्–चतुर्मुख; ऍऴुपतिनायिरर्क्कु–सात सहस्रों के लिए भी; इयला–असम्भव है; उण्णिन्–खाने लगें; अण्टङ्कळ्–सारे अण्ड; ओर् पिटि उण्णवुम्–एक ग्रास खाने के लिए भी; उतवा–पर्याप्त नहीं होंगे; कण्णिन् नोक्कुरिन्–आँखों से देखने लगें तो; कण्णुतलानुक्कुम्–भालनेत्र (शिवजी) के लिए भी; कतुवा–देखना असम्भव है। ७०८

भूमि पर जो वानर-सेना एकत्रित हो आयी, उसकी संख्या गिनना हो तो सत्तर हज़ार चतुर्मुखों के लिए भी असम्भव है। इस सेना के लिए खाना हो तो सारे अण्ड एक ग्रास भी नहीं बनें। आँखों से देखना हो तो भाल-नेत्र शिवजी की दृष्टिपथ में न समा सके। ७०८

ऑडिक्कु मेल्वड मेरुवै वेरॉडु मॉडिक्कुम्
इडिक्कु मेन्नॆडु वानह मुहट्टैयु मिडिक्कुम्
पिडिक्कु मेऱ्पॆरुङ् काऱ्ऱैयुङ् गूऱ्ऱैयुम् बिडिक्कुम्
कुडिक्कु मेऱ्कड लेऴैयुङ् गुडङ्गैयिऱ् कुडिक्कुम् 709

ऑटिक्कुमेल–तोड़ने लगे; वट मेरुवै–तो उत्तर के मेरु को; वेरॉटुम् ऑटिक्कुम्–मूल से तोड़ देंगे; इटिक्कुमेल्–गिराना चाहें; नॆट्टु वानक मुकट्टैयुम्–विशाल आकाश की चोटी को भी; इटिक्कुम्–गिरा देंगे; पिटिक्कुमेल्–ग्रसना चाहें तो; पॆरु काऱ्ऱैयुम्–बड़े पवन को; कूऱ्ऱैयुम्–और यम को; पिटिक्कुम्–पकड़ लें; कुटिक्कुमेल्–पान करें तो; कटल् एऴैयुम्–सातों समुद्रों को; कुटङ्कैयिन्–हथेली में लेकर; कुटिक्कुम्–पी लेंगे। ७०९

वे सेनाएँ तोड़ने की इच्छा करें तो उत्तर के मेरु को जड़ से उखाड़ कर तोड़ लेतीं। आकाश की छत से भी टकरातीं। मन करें तो महान पवन और यम को भी पकड़ लें। पान करने की इच्छा करें तो सप्त समुद्रों के जल को चुल्लू में भरकर पी जायें। ७०९

आऱु पत्तॆऴु कोडियर् वानरर्क् कदिबर्
कूऱु तिक्किनुक् कप्पुरङ् गुप्पुरऱ् कुरियार्
माऱिल् कॊऱ्ऱव निनैत्तन मुडिक्कुऱुम् वलियर्
ऊऱु मिप्पॆरुज् जेनैहॊण् डॆऴिदिन्वन् दुऱ्ऱार् 710

कूऱु तिक्कितक्कु–प्रथित चारों दिगन्त के; अप्पुरम्–उस पार भी; कुप्पुरऱ्कु–लपकने का; उरियार्–सामर्थ्य रखनेवाले; माऱु इल्–अप्रमेय; कॊऱ्ऱवन्–उनके राजा (सुग्रीव); नितैत्तत–जो सोचेगा; मुटिक्कुऱुम्–उन सबको पूरा करने का; वलियर्–सामर्थ्य रखनेवाले; आऱु पत्तु ॲऴु–सड़सठ; कोटियर्–करोड़; वानरर्क्कु अतिपर्–वानर-सेनापति; ऊऱुम्–उत्तरोत्तर बढ़े आनेवाली; इ पॆरु चेतै–इस बड़ी सेना को; कॊण्टु–लिये हुए; ॲऴितिन्–अनायास; वन्तु उऱ्ऱार्–आ पहुँचे। ७१०

ऐसी बढ़ती जाती-सी लगनेवाली विपुल सेना को लेकर सड़सठ वानर यूथप आ पहुँचे। वे चतुर्दिशाओं के पार भी छलाँग मारकर पहुँच सकते थे। उनमें इतना साहस था कि उनका अनुपम राजा सुग्रीव जो भी सोचता था वह काम पूरा कर दिखाते। ७१०

एऴु माहडऱ् परप्पिनुम् बरप्पॆन विशैप्पच्
चूऴम् वानरप् पडैयॊडव् वीररुन् दुवन्ऱि

आळि मापरित् तेरवऩ् कादल ऩडिहळ्
वाळि वाळियॆऩ् ऱुरैत्तऩर् तूविऩर् वणङ्गि 711

अ वीररुम्–उन वीरों ने भी; एळु मा कटल् परप्पिऩुम्–सात महासमुद्रों के विस्तार से भी; परप्पु ॲन्न–इसका अधिक विस्तार है, ऐसा; इचैप्प–लोग कहें, इतनी बड़ी; चूळुम् वानरम् पटॆयॊटु–घेरे रहनेवाली वानर-सेना के साथ; तुवन्ऱि–पास आकर; आळि मा परि–एक चक्र और बड़े अश्वों से युक्त; तेरवन् कातलन्–रथ के स्वामी सूर्य के प्यारे पुत्र के; अटिकळ्–श्रीचरण; वाळि वाळि–जिए, जिए; ॲन्ऱु उरैत्तु–ऐसा जयघोष करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; अलर् तूविऩर्–पुष्प बरसाए। ७११

वे वानर वीर सातों समुद्रों के विस्तार से भी अधिक विस्तृत कही जा सकनेवाली वानर-सेना के साथ मिलकर आये। उन्होंने एकचक्ररथी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र सुग्रीव की यह कहते हुए स्तुति की कि आपके श्रीचरण जियें, जियें। उस पर पुष्प भी बरसाये। ७११

अऩैय दाहिय शेऩैवन् दिरुत्तलु मरुक्कऩ्
तऩैय नॊय्दिऩिऱ् ऱयरदऩ् पुदल्वऩैच् चार्न्दाऩ्
निऩैयु मुन्नम्वन् दडैन्ददु निऩ्बॆरुञ् जेऩै
विऩैयिऩ् कूऱ्ऱुव कण्डरु णीयॆऩ विळम्बुम् 712

अऩैयतु आकिय–ऐसी वह; चेऩै वन्तु–सेना आकर; इरुत्तलुम्–रही, तब; अरुक्कऩ् तऩैयऩ्–अर्कपुत्र; तयरतऩ् पुतल्वऩै–दाशरथी श्रीराम के पास; नॊय्तिऩिल्–शीघ्र; चार्न्ताऩ्–पहुँचा; विऩैयिऩ् कूऱ्ऱुव–पापारि; निऩैयुम् मुन्नम्–स्मरण करने से पहले; निऩ् पॆरु चेऩै–आपकी बड़ी सेना; वन्तु अटैन्ततु–आ गयी; कण्टरुळ् नी–कृपादर्शन कर लीजिए आप; ॲऩ विळम्पुम्–ऐसा कहा। ७१२

ऐसी सेना के आ एकत्रित होने पर अर्कपुत्र, सुग्रीव दशरथ के पुत्र श्रीराम के पास वेग के साथ आया। उसने उनसे निवेदन किया कि हे पाप के अन्तक ! आप सोचें, इसके पहले ही आपकी बड़ी सेना आ गयी। उस पर दृष्टि लगाने की कृपा करें। ७१२

ऐय नुम्मुवन् दहमॆऩ मुहमलर्न् दरुळित्
तैय लाळ्वरक् कण्डऩ ऩामॆऩत् तळिर्प्पाऩ्
ॲय्दि नाऩ्ङ्गोर् नॆडुवरैच् चिहरत्ति ऩिरुक्कै
वॆय्य वऩ्महऩ् पॆयर्त्तुमत् ताऩैयिऩ् मीण्डाऩ् 713

ऐयऩुम्–सुन्दरराज श्रीराम; उवन्तु–आनन्द करके; अकम् ॲऩ–भीतर जैसे; मुकम्–मुख भी; मलर्न्तु–मोद-विकसित करके; अरुळि–कृपा के साथ; तैयलाळ् वर–पत्नी को आते; कण्टऩम् ॲऩ–देखा हो जैसे; तळिर्प्पाऩ्–फूल उठे; अङ्कु–वहाँ; ओर् नॆटु वरै–एक बड़े पर्वत के; चिकरत्तिऩ् इरुक्कै–शिखर के स्थल पर;

ऍय्तितान्–पहुँचे; वॅय्यवन्–आतपकारी (सूर्य) का; मकन्–पुत्र; पॅयर्त्तुम्–लौटकर; अ तानैयित्–उस सेना के पास; मीण्टान्–चला। ७१३

सुन्दर श्रीराम मुदित हुए। जितना उनका मन मुदित हुआ, उतना ही उनका श्रीमुख भी प्रफुल्लित हुआ। देवी ही आ गयी हों, इस भाँति उत्साहित होकर वे एक उन्नत पर्वत के शिखर के स्थल पर जा पहुँचे। तब सूर्यपुत्र अपनी सेना के पास लौट आया। ७१३

ऍट्टुत् तिक्कैयु मिरुनिलप् परप्पैयु मिमैयोर्
वट्ट विण्णैयु मऱ्ऱिहड लनैत्तैयु मऱैयत्
तॉट्टु मेलॅळुन् दोङ्गिय तूळियिऱ् पूळि
अट्टिच् चॅम्मिय निऱैहुड मॉत्तदिव् वण्डम् 714

ऍट्टु तिक्कैयुम्–आठों दिशाओं को; इरु निल परप्पैयुम्–विशाल भूमि के विस्तार को; इमैयोर् वट्टम्—देवों के गोल; विण्णैयुम्–स्वर्गलोक को; मऱ्ऱि कटल्–जिन पर लहरें मुड़-मुड़कर (तीर से) टकराती हैं, उन; अनैत्तैयुम्–सभी (सातों) सागरों को; मऱैय–छिपाते हुए; तॉट्टु–भूमि पर और उससे; मेल् ॲळुन्तु–ऊपर व्याप्त करके; ओङ्किय–उठी हुई; तूळियिन्–धूल से; इ अण्टम्–यह अण्डगोल; पूळि अट्टि–धूल से भरकर; चॅम्मिय–सम्पूर्ण हुए; निऱै कुटम्–पूर्णकुम्भ; ऑत्ततु–के समान लगा। ७१४

सेना ने आठों दिशाओं, बड़ी भूमि के विस्तृत स्थल और देवों के गोल व्योम देश और समुद्रों को, जिन पर लहरें उठकर तीरों से टकराकर वापस मुड़ती थीं, एकदम ढक दिया। तब धूल बहुत उठी और ऊपर चढ़ी; जिससे यह अण्ड धूल-भरे पूर्णकलश के समान दिखा। ७१४

अत्ति यॉप्पॅन्ऩि ऩन्ऩवै युणर्न्दव रुळराल्
वित्त हर्क्किऩि युरैक्कला मुवमैवे ऱियादो
पत्ति रट्टिनन् पहलिर वॉरुवलर् पार्प्पार्
ॲत्ति ऱत्तिनु नडुवुहण् डिलर्मुडि वॅवऩो 715

अत्ति–अब्धि; ऑप्पु ऍतिन्–सानी है, कहें तो; अन्नवै–उनको; उणर्न्तवर्–पूर्णरूप से जो देख (जान) चुके; उळर्–वे हैं; इति–अब; वित्तकर्क्कु–विद्वानों को; उरैक्कलाम् उवमै–कथनीय उपमा; वेऱु यातो–और दूसरी क्या है; पत्तु इरट्टि–दस के दुगुने (बीस) दिन; नल् पकल् इरवु—रात और दिन; ऑरुवलर्–बिना रुके; पार्प्पर्–जिन्होंने देखा, उन श्रीराम और लक्ष्मण ने; ऍ तिऱत्तितुम्–किसी विध; नटुवु कण्टिलर्–इन सेना का मध्य भाग नहीं देखा; मुटिवु ऍवऩो–फिर अन्त कहाँ (देखा जाय)। ७१५

इस सेना की सागर समानता कर सकते हैं—ऐसा कहें तो सागरों की सीमा के ज्ञाता मिलते हैं। (पर इस सेना का अन्त कोई देख नहीं सका।)

फिर विद्याप्रवीणों के पास उल्लेख-योग्य उपमा कहाँ है ? श्रीराम और लक्ष्मण ने बीस दिन और बीस रात लगातार देखा तो भी किसी विध से इस सेना का मध्यभाग भी न देख सके। फिर इसका अन्त देखना कैसे हो सकता है ? । ७१५

विण्णिऱ् ऱीम्बुन लुलहत्ति नाहरिऩ् वॆऩ्ऱि
ऒण्णिऱ् ऱानल दॊप्पिल नॆऩ्गिऩ्ऱ विरामऩ्
कण्णिऱ् चिन्दैयिऱ् कल्वियिऩ् ञानत्तिऱ् करुदि
अण्णऱ् ऱम्बियै नोक्किन नुरैशॆय्व दानान् 716

वॆऩ्ऱि ऒण्णिल्–विजयशीलता पर विचार करें; तानू अलतु–स्वयं उन्हीं को छोड़कर; विण्णिऩ्–व्योम में; तीम्पुनल्–मधुर सागर-वलयित; उलकत्तिल्–भूतल में और; नाकरिऩ्–नागलोक में; ऒप्पु इलन्–कोई उपमा नहीं रखनेवाले; इरामऩ्–श्रीराम (ने); कण्णिन्–अपनी आँखों से; चिन्तैयिऩ्–मन से; कल्वियिऩ्–विद्या से; ञानत्तिऩ्–बुद्धि से; करुति–सोचकर; अण्णल् तम्पियै–महिमावान् भ्राता को; नोक्किनऩ्–देखा और; उरै चॆय्वतु आनान्–वचन कहने लगे। ७१६

श्रीराम की विजयशीलता के सम्बन्ध में विचार करने लगें तो वे अपनी समानता स्वयं आप ही कर सकते हैं। नहीं तो आकाश में, सुखद समुद्र-वलयित भूमि में और नागों के पाताललोक में उनके समान कौन हैं ? ऐसे अप्रमेय श्रीराम ने अपनी आँखों से, मन से और शास्त्रज्ञान और विवेचना द्वारा उस सेना के विस्तार को देखा और समझा और अपने महिमामय भाई सुमित्रानन्दन से कहना आरम्भ किया। ७१६

अडल्हॊण् डोङ्गिय शेनैक्कु नामुनम् मऱिवाऩ्
उडल्हण् डोमिनि मुडिवुळ काणुमा ऱुळदो
मडल्हॊण् डोङ्गिय वलङ्गलाय् मण्णिडै माक्कळ्
कडल्हण् डोमॆऩ्बर् यावरे मुडिवुऱक् कण्डार् 717

मटल् कॊण्टु–पंखुड़ियों से पूर्ण; ओङ्किय–श्रेष्ठ (फूलों की); अलङ्कलाय्–मालाधारी; नामुम्–हमने भी; नम् अऱिवाल्–अपनी बुद्धि से; अटल् कॊण्टु–बल लिये; ओङ्किय–बढ़ी हुई; चेनैक्कु–इस सेना का; उटल् कण्टोम्–शरीर (मध्य भाग) देखा; इनि उळ–आगे रहनेवाले; मुटिवु–अन्त को; काणुम् आऱु–देखने का मार्ग; उळतो–है क्या; मण् इटै–भूतल में; माक्कळ्–लोग; कटल् कण्टोम्–सागर देखा; ऎन्पर्–कहेंगे; मुटिवु उऱ–आर-पार पूरा करके; कण्टार्–जो देख चुके; यावरे–कौन हैं। ७१७

दल-लसे पुष्पों की बनी श्रेष्ठ माला के धारक ! हम दोनों ने अपने बुद्धिबल से वीरता के साथ उत्कृष्ट इस बड़ी वानर-सेना के मध्य भाग को एक तरह से देख लिया। उसका अन्तिम भाग देखने का कोई मार्ग भी है

क्या ? भूलोकवासी कहने को तो कह देते हैं कि हमने सागर देख लिया है, पर असल में कौन लोग हैं, जिन्होंने पूर्णरूप से समुद्र को देख चुके हैं ? । ७१७

ईशऩ् मेऩियै यीरॆऩ्दु दिशैहळै योण्डिव्
वाशिल् शेऩैयै यॆम्बॆरुम् बूदत्तै यऱिवैप्
पेशुम् पेच्चिऩैच् चमयङ्गळ् पिणक्कुरुम् पिणक्कै
वाश मालैया यावरे मुडिवॆण्ण वल्लार् 718

वाचम् मालैयाय्–सुबासपूर्ण मालाधारी; ईचऩ् मेऩियै–ईश्वर के शरीर को; ईरॆऩ्तु तिचैकळै–दसों दिशाओं को; ऐम् पॆरुम् पूतत्तै–पाँच महाभूतों को; अऱिवै–ज्ञान के विस्तार को; पेचुम् पेच्चिऩै–कहे हुए वचनों को; चमयङ्कळ्–मतों के; पिणक्कुरुम्–तर्क के; पिणक्कै–झगड़ों को और; ईण्टु–यहाँ; इ–इस; आचु इल्–अनिन्द्य; चेऩैयै–सेना को; यावरे–कौन ही; मुटिवु ऍण्ण–गुनकर पूरा करने को; वल्लार्–समर्थ होंगे । ७१८

सुगन्ध-मालाधारी ! ईश्वर का श्रीरूप, दसों दिशाएँ, पञ्चमहाभूत, सूक्ष्मज्ञान, उच्चरित वचन, धर्मों का वैमनस्य और यहाँ यह अनिंद्य सेना ! इन सबको गुनकर अन्त बतानेवाला कौन है ? । ७१८

इऩ्ऩ शेऩैयै मुडिवुऱ विरुन्दिव णोक्किप्
पिऩ्ऩैक् कारियम् बुरिदुमे ऩाळ्पल पॆयरुम्
उऩ्ऩिच् चॆयुहैमे लोरुप्पड लुरुवदे युऱुदि
ऍऩ्ऩ वीरऩैक् कैदॊळु दिळैयव ऩियम्बुम् 719

इऩ्ऩ चेऩैयै–इस सेना को; इवण् इरुन्तु–यहाँ रहकर; मुटिवु उऱ–पूर्ण रूप से; नोक्कि–देखकर; पिऩ्ऩै–तदनन्तर; कारियम् पुरितुमेल्–कार्य में लगें तो; नाळ् पल–अनेक दिन; पॆयरुम्–व्यतीत हो जायेंगे; उऩ्ऩि–विचारकर; चॆयक मेल्–कार्य पर; ओरुप्पटल्–चित्त लगाकर; उरुवते–लग जाना ही; उऱुति–हितकारी है; ऍऩ्ऩ–ऐसा (श्रीराम ने) कहा, तब; इळैयवऩ्–कनिष्ठ; वीरऩै–वीर श्रीराम से; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; इयम्पुम्–बोले । ७१९

ऐसी सेना को हम यहाँ रहकर पूर्णरूप से देखें और बाद को कोई कार्य करने को सोचें तो अनेक दिन बीत जायेंगे । इसलिए (सेना-संदर्शन को यहीं छोड़कर) आगे के कर्तव्य का विचारकर कार्य में लग जाना ही हित-कार्य है । श्रीराम का यह वचन सुनकर लक्ष्मण ने वीरराघव को नमस्कार किया और कहा । ७१९

याव दॆव्वुल हत्तिऩि ऩीङ्गियवर्क् कियऱ्ऱल्
आव दाहुव दरियदॊऩ् ऱुळदॆऩ्ऩ लामे
देव देवियॆऩ् तेडुव दॆऩ्बदु शिऱिदाल्
पावऩ् दोऱ्ऱदु तरुममे वॆऩ्ऱदिप् पडैयाल् 720

तेव–देव; ईङ्कु–यहाँ; इवर्क्कु–इनके लिए; ऍ उलकत्तितिऩ्–किस लोक में; इयर्ऱल् यावतु–करना क्या है; आकुवतु–करणीय वह; आवतु–कृत हो जायगा; अरियतु–कठिन; ऒऩ्ऱु–एक काम; उळतु ऍऩल्–है कहना; आमे–होगा क्या; तेवियै–देवी (सीता) को; तेटुवतु ऍऩ्पतु–खोजने का काम; चिऱितु–अल्प है; इ पटैयाल्–इस सेना के कारण; पावम् तोऱ्ऱतु–पाप हारा; तरुमने वॆऩ्ऱतु–धर्म ही जीता। ७२०

देव ! किसी भी लोक में जो भी आवश्यक काम हैं, वे काम करना इस सेना के वीरों के लिए बाएँ हाथ का खेल हैं। उनके लिए असाध्य कहने योग्य कोई काम है क्या ? देवी को ढूँढ़ पाना इनके लिए बहुत छोटा काम है। इस सेना के कारण समझ लीजिये कि पाप हार गया और धर्म जीत गया। ७२०

तरङ्ग नीरॆळु तामरै नाऩ्मुहऩ् ऱऩ्द
वरङ्गॊळ् पेरुल हत्तिलिऩ् मऱ्ऱैमऩ् ऩुयिर्हळ्
उरङ्गॊण् माल्वरै युयिर्पडैत् तॆऴुन्दऩ वॊक्कुम्
कुरङ्गिऩ् माप्पडैक् कुऱैयिडप् पडैत्तऩऩ् कॊल्लाम् 721

तरङ्कम् नीरॆळु–लहरों से युक्त जल में उगनेवाले; तामरै–कमल पर उदित; नाऩ्मुकऩ्–चतुर्मुख ने; तन्त–सृष्ट; वरम् कॊळ्–वरीयता-प्राप्त; पेर् उलकत्तितिल्–बड़े जग (में) के; मऱ्ऱै–अन्य; मऩ् उयिर्कळ्–जीवसमूह को; उयिर् पटैत्तु ऍऴुन्तत–जीवित हो उठे हुए; उरम् कॊळ्–बलवान; माल् वरै ऒक्कुम्–बड़े पर्वतों की समता करनेवाले; कुरङ्किऩ् मा पटैक्कु–वानरों की बड़ी सेना के लिए; उऱैइट–मापन-संकेत के रूप में रखने के लिए; पटैत्तऩऩ् कॊल् आम्–शायद सृष्ट किया था। ७२१

लहरोद्वेलित जल में उत्पन्न जलज-फूल में उद्भूत ब्रह्मदेव के द्वारा सृष्ट इस वर पृथ्वी में जो अन्य जीव हैं, उनकी संख्या अब जो उठ आये हैं, उन बलवान पर्वत-सम वानरों की सेना की गिनती के लिए निर्धारित प्रतिनिधि-मापक चिह्न हों, इस कारण ही ब्रह्मा ने संसार को सृष्ट किया है। [जब बड़ी संख्या को गिनना पड़ता है, तब यह प्रथा है कि बड़ी संख्या के एक अंश को किसी और पदार्थ की अदद को प्रतिनिधि-सूचक निशान (मापक) बनाया जाय। उदाहरणार्थ एक सहस्र रुपया गिनने पर एक कौड़ी रखी जाती। इस तरह से कौड़ियाँ रखते जाते हैं और आखिर में कौड़ियों को गिनकर कुल रुपयों का हिसाब लगाया जाता है। इस (मापक) कौड़ी को हम तमिऴ में "उऱै" कहते हैं। संसार का हर जीव वानर-सेना के एक अंश का प्रतिनिधि-चिह्न है। यह कवि का कथन है।]। ७२१

ईण्डु ताळ्क्किन्ऱ दॆन्निनि यॆण्डिशै मरुङ्गुम्
तेण्डु वार्हळै वल्लैयिऱ् चॆलुत्तुव दल्लाल्
नीण्ड नूल्वला यॆन्ऱन निळैयव नॆडियोन्
पूण्ड तेरवन् कादलऱ् कॊरुमॊऴि पुहलुम् 722

नीण्ट नूल् वलाय्–श्रेष्ठ शास्त्रों में व्युत्पन्न; ऍण् तिचै मरुङ्कुम्–आठों दिशाओं के स्थानों में; तेण्टुवार्कळै–अन्वेषकों को; वल्लैयिन्–शीघ्र; चॆलुत्तुवतु अल्लाल्–भेजे विना; इति–अब; ईण्टु–यहाँ; ताऴ्क्किन्ऱतु ऍन्–विलम्ब करना क्यों; ऍन्ऱनन्–कहा; इळैयवन्–लक्ष्मण ने; नॆटियोन्–त्रिविक्रम श्रीराम; पूण्ट तेरवन्–अश्व-जुते रथ के; कातलऱ्कु–सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से; ऑरु मॊऴि पुकलुम्–एक बात कही। ७२२

महिमायुक्त शास्त्रों के ज्ञाता ! अब चारों दिशाओं के स्थानों में अन्वेषण-कर्ताओं को प्रेषित करना छोड़कर विलम्ब क्यों किया जाय ? लक्ष्मण के ऐसा कहने पर त्रिविक्रम श्रीराम ने सप्तांश्वरथी सूर्य के पुत्र सुग्रीव से कहने लगे। ७२२

12. नाडविट्ट पडलम् (अन्वेषण-प्रेषण पटल)

वहैयु मानमु मारॆदिऱ् ताऱ्ऱु, पहैयु मिन्ऱि निरन्दु परन्दॆऴु
तहैविल् शेनैक् कमैदि शमैन्ददोर्, तॊहैयु मुण्डुहॊ लोवॆन्च् चॊल्लिनान् 723

वकैयुम्–व्यूह-रचना; मानमुम्–और देहाभिमान; माऱु ऍतिर्न्तु–वैर करके; आऱ्ऱुऱु पकैयुम्–युद्ध करने की शत्रुता; इन्ऱि–विना; निरन्तु–व्यवस्थित होकर; परन्तु–व्याप्त होकर; ऍऴु–जो उठ आयी है; तकैवु इल् चेनैक्कु–उस दुर्दम सेना को; अमैति चमैन्ततु–गिनती के लिए निर्धारित; ओर् तॊकैयुम्–एक संख्या भी; उण्टु कॊल्लो–है क्या; ऍन चॊल्लिनान्–ऐसा कहा (श्रीराम ने सुग्रीव से)। ७२३

श्रीराम ने सुग्रीव से बधाई के रूप में प्रश्न किया कि विना व्यूह-रचना, शरीराभिमान और परस्पर विरोध के जो दुर्वार वानर-सेना खुद पंक्ति-बद्ध होकर इधर उठ आ जुड़ी है, उसकी गिनती का हिसाब लगाने के लिए कोई संख्या भी है क्या ? । ७२३

एऱ्ऱ वॆळ्ळ मॆऴुपदि निऱ्ऱवॆन्, ऱाऱ्ऱ लाळ रऱिविन मैत्तदोर्
माऱ्ऱ मुण्डदु वल्लदु मऱ्ऱुमोर्, ईऱ्ऱु मुण्डॆन् ऱिशैत्तिडऱ् कॊण्णुमो 724

एऱ्ऱ–योग्य; वॆळ्ळम् ऍऴुपतिन्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की संख्या में; इऱ्ऱ–बनी है; ऍन्ऱु–ऐसा; आऱ्ऱलाळर् अऱिविन्–संख्या-शास्त्र में निपुण लोगों की समक्ष में; अमैन्ततु ओर् माऱ्ऱम्–बना एक कथन; उण्टु–रहता है; अतु अल्लतु–उसके सिवा; मऱ्ऱुम् ओर् ईऱ्ऱुम् उण्टु–और कोई संख्या-सीमा है; ऍन्ऱु इचैत्तिटऱ्कु–ऐसा कहने के लिए; ऑण्णुमो–साध्य है क्या। ७२४

सुग्रीव ने उत्तर दिया— गणितज्ञ विद्वानों ने कहा है कि सत्तर

"वॆळ्ळम्" (प्रवाह) वीरों की यह सेना है। उस कथन पर विश्वास करने के सिवा इस सेना का हिसाब लगाने के लिए और कोई मार्ग नहीं है। ७२४

ऎऩ्ऱु रैत्त वॆरिहदिर् मैन्दऩै, वॆऩ्ऱि विऱ्कै यिरामऩ् विरुप्पिऩाऩ्
निऩ्ऱि निप्पल पेशियॆऩ् ऩॊऩ्ऱि, शॆऩ्ऱि ऴैप्पऩ शिन्दऩै शॆय्हॆऩ्ऱाऩ् 725

ऎऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा जिसने कहा; ऎरि कतिर् मैन्तऩै–तापक किरणमाली के पुत्र से; वॆऩ्ऱि विल् कै–विजयकोदण्डपाणी; इराकवऩ्–श्रीराघव ने; विरुप्पिऩाऩ्–प्यार के साथ; इति–अब; निऩ्ऱु पल पेचि–खड़े होकर अनेक तरह से बोलने से; ऎऩ्तो–लाभ क्या; नॆऱि चॆऩ्ऱु–मार्ग जाकर; इऴैप्पऩ–कर्तव्य (कार्य); चिन्तऩै चॆय्क–सोचो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ७२५

तापक किरणमाली के पुत्र को, जिसने यह शब्द कहा, विजय कोदण्डपाणी श्रीराघव ने स्नेह के साथ देखकर उससे कहा— अब खड़े होकर विविध बातें बनाने से क्या लाभ होगा? यथाक्रम कर्तव्य कार्य पर सोचो। ७२५

अवऩु मण्ण लनुमऩै यैयनी, पुवऩ मूऩ्ऱुनिऩ् ऱादैयिऱ् पुक्कुऴल्
तवऩ वेहत् तॊरुतऩित् तऩ्मैयाल्, कवऩ माक्कुरङ् गिऩ्शॆयल् काट्टुवाय् 726

अवऩुम्–उसने भी; अण्णल् अनुमऩै–महिमावान हनुमान से; ऐय–तात; नी–तुम; पुवऩम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों में; निऩ् तातैयिऩ्–अपने पिता के समान; पुक्कु उऴल्–प्रवेश कर घूमने की; तवऩम् वेकत्तु–धावन-गति के; ऒरु तऩि–एक विशिष्ट; तऩ्मैयाल्–स्वभाव से; कवऩम्–गमन में; मा कुरङ्किऩ् चॆयल्–बड़े वानर का कृत्य; काट्टुवाय्–दिखाओ। ७२६

तब उस सुग्रीव ने महान हनुमान से कहा, तुम अपने पिता के समान तीनों लोकों में घुसकर संचार करने की तीव्र गति रखते हो। अब अपनी बड़ी वानर-क्रिया दिखाओ। ७२६

एहि येन्दिऴै तऩ्ऩै यिरुन्दुऴि, नाह नाडुह नाऩिल ऩाडुह
पोह बूमियुम् नाडुह पुक्कुनिऩ्, वेह मीण्डु वॆळिप्पड वेण्डुमाल् 727

नी–तुम; एकि–जाकर; एन्तु इऴै–अलंकारकारी आभरणधारिणी सीताजी के; इरुन्त उऴि तऩ्ऩै–रहने के स्थान को; नाकम्–नागलोक में; नाटुक–ढूँढ़ो; नाऩिलम् नाटुक–चतुर्विधा-भूमि पर ढूँढ़ो; पोक पूमियुम्–भोगलोक (स्वर्गलोक) में ढूँढ़ो; निऩ् वेकम्–तुम्हारा वेग; ईण्टु–इसमें; वॆळिप्पट वेण्टुम्–प्रगट होना चाहिए। ७२७

तुम यहाँ से चलो और नागलोक में जाकर अलंकारकारी आभरण-भूषित अबोध सीतादेवी के रहने का स्थान ढूँढ़ो। चतुर्विधा इस पृथ्वी

पर भी खोजो, फिर भोग-भूमि स्वर्ग में भी अन्वेषण करो। इस काम में तुम्हारी गति का वेग प्रकट किया जाय। ७२७

तॆन्ऱि शॆक्क णिरावणन् ऱेणहर्, ऎन्ऱि शॆक्किन्ऱ दॆन्ननऱि विन्नणम्
वन्ऱि शॆक्किनि मारुदि नीयलाल्, वॆन्ऱि शॆक्कुरि यार्पिऱर् वेण्डुमो 728

इरावणन् चेण् नकर्–रावण का लम्बा-चौड़ा नगर; तॆन् तिचै कण्–दक्षिण दिशा में; ऎन्ऱु–ऐसा; ऎन् अऱिवु–मेरी बुद्धि; इन्नणम्–यों; इचैक्किन्ऱतु–समझाती है; मारुति–मारुति; इनि–अब; वल् तिचैक्कु–उस बलवान दिशा में (जाकर); वॆन्ऱु–विजय पाकर; इचैक्कु–यशस्वी बनने के लिए; उरियार्–योग्य; नी अलाल्–तुम्हारे सिवा; पिऱर् वेण्टुमो–दूसरा चाहिए क्या। ७२८

मेरा मन कहता है कि रावण का उन्नत और विशाल नगर कहीं दक्षिण में ही है। मारुति! इसलिए वह दिशा कठिन दिशा हो गयी है। तुम वहाँ जाओ और विजयी बनो। इस यश का योग्य पात्र तुम ही हो। और किसी का विचार करने की ज़रूरत है क्या? । ७२८

तारै मैन्दनुञ् जाम्बनुन् दामुदल्, वीरर् यावरु मेम्बडु मेन्मैयार्
ऱेर्ह निन्नॊडुन् दिण्डिऱर् चेनैहळ्, पेर्ह वॆळ्ळ मिरण्डॊडुम् बॆऱ्ऱियाल् 729

तारै मैन्तनुम्–तारा का पुत्र; चाम्पनुम्–और जाम्बवान; मुतल्–आदि; मेम्पटु मेन्मैयोर्–उन्नत महिमामय; वीरर् यावरुम्–वीर सब; निन्नॊटुम् चेर्क–तुम्हारे साथ मिलें; वॆळ्ळम् इरण्टॊटुम्–दो 'वॆळ्ळम्' की संख्या में; तिण् तिऱल्–कठोर बल वाली; चेनैकळ्–सेनाएँ; पॆऱ्ऱियाल्–शान के साथ; पेर्क–उठें (तुम्हारे साथ)। ७२६

तारा-पुत्र अंगद, जाम्बवान आदि अतिश्रेष्ठ वीर तुम्हारे साथ मिलकर जायँ। दो "प्रवाह" संख्या की बलवान सेनाएँ युक्त शान के साथ तुम्हारी सहायता के लिए चलें। ७२९

वळ्ळ ऱेवियै वञ्जित्तु वौविय, कळ्ळ वाळरक् कन्ऱॆलक् कण्डदु
तेळ्ळि योयन्ऱु तॆन्ऱिशै यॆन्बदोर्, उळ्ळ मुम्मॆनक् कुण्डॆन वुन्नुवाय् 730

तॆळ्ळियोय्–सुलझी हुई बुद्धि वाले; वळ्ळल् तेवियै–उदार दानी प्रभु श्रीराम की देवी को; वञ्चित्तु–छल करके; वौविय–जिसने अपहरण किया; कळ्ळम् वाळ् अरक्कन्–उस चोर क्रूर राक्षस को; अन्ऱु चॆल–उस दिन जाते हुए; कण्टतु–(जिस दिशा में) देखा, वह; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा है; ऎन्पतु–यह; ओर् उळ्ळमुम्–एक स्मरण भी; ऎनक्कु उण्टु–मुझे है; ऎन–ऐसा; उन्नुवाय्–समझ लो। ७३०

सुलझी हुई बुद्धि वाले! वदान्य श्रीराम की देवी को धोखा देकर जो हर ले गया वह चोर, क्रूर राक्षस उस दिन जिस दिशा की ओर जाता

दिखायी दिया, वह दक्षिण दिशा है। ऐसा मेरा स्मरण है। यह भी तुम विचार लो। ७३०

ईण्डु निन्ऱॅऴुन्दीरॆन्दु नूऱॆऴिल्, तूण्डु शोदिक् कॊडुमुडि तोन्ऱुमाल्
नीण्ड नेमिकॊलामॆन नेर्तॊऴ, वेण्डुम् विन्दम लैयिनै मेवुवीर् 731

नीङ्कळ्–तुम लोग; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; ॲऴुन्तु–निकलकर; ॲऴिल् तूण्टु चोति–सुन्दर और ज्योतिर्मय; ईर् ऐन्तु नूऱु–दस सौ; कॊटु मुटि तोन्ऱुमाल्–शिखरों के दिखने के कारण; नीण्ट नेमि कॊलाम्–बड़े आकार के विष्णु हैं क्या; ॲन–ऐसा समझकर; नेर् तॊऴ वेण्टुम्–सामने जाकर नमस्कार करने योग्य; विन्त मलैयितै–विन्ध्यपर्वत को; मेवुवीर्–जा पहुँचो (गे)। ७३१

सुग्रीव ने उनसे कहा— तुम लोग यहाँ से चलकर विन्ध्यपर्वत पहुँच जाओ। विन्ध्यपर्वत के सुन्दर और उज्ज्वल सहस्र शिखर हैं। इसलिए वह बहुत ऊँचे क़द के श्रीविष्णु के समान वंद्य है। ७३१

तेडि यम्मलै तीर्न्दपिन् ऱेवरुम्, आडु हिन्ऱ दरुपद मैन्दिनैप्
पाडु हिन्ऱदु पन्मणि यालिरुळ्, ओडु हिन्ऱ नरुमदै युन्नुवीर् 732

अ मलै–उस पर्वत पर; तेटि तीर्न्त पिन्–खोज चुकने के बाद; तेवरुम् आटुकिन्ऱतु–देव भी जिसमें आकर स्नान करते हैं; अऱु पतम्–षट्पद; ऐन्तिनै पाटुकिन्ऱतु–(जिसमें) पंचम स्वर में गाते हैं; पल् मणियाल्–(जिसमें रहनेवाली) विविध मणियों के कारण; इरुळ ओटुकिन्ऱ–अँधेरा भाग जाता है; नरुमतै–उस नर्मदा नदी को; उन्नुवीर्–स्मरण रखो। ७३२

उस पर्वत पर खोज लेने के बाद उस नर्मदा नदी को जाओगे, जिसमें देवगण भी आकर स्नान करते हैं और जिसके ऊपर बहनेवाले फूलों पर बैठकर भ्रमर पंचमस्वर में गाते हैं; और जिसके अन्दर रहनेवाले विविध रत्नों के कारण अँधेरा भाग जाता है। ७३२

वाम मेहलै वानर मङ्गैयर्, काम वूशर् कळियिशैक् कळ्ळिनाल्
तूम मेनि यशुणन् दुयिल्वुरुम्, एम कूड मॆन्नुमलै यॆय्दुवीर् 733

वामम् मेकलै–सुन्दर मेखलालंकृत; वान् अर मङ्कैयर्–देवांगनाओं के; कामम् ऊचल्–मोहक झूलों पर से; कळि इचै–आनन्द-संगीत रूपी; कळ्ळिनाल्–सुरा से; तूमम् मेनि–धुएँ के रंग का; अचुणम्–'अशुण' नाम का प्राणी; तुयिल्वु उऱुम्–निद्रारत जहाँ होता है; एम कूटम्–उस हेमकूट; ॲन्नुम् मलै–नामक पर्वत को; ॲय्तुवीर्–जाओगे। ७३३

फिर तुम हेमकूट पर पहुँच जाओ। वहाँ देखोगे कि मनोरम मेखला-धारिणी देवांगनाएँ प्यारे झूलों पर झूलते हुए मोद के वश होकर गाती हैं और उस गान की सुधा का पान कर धुएँ-से रंग वाले "अशुण" नामक प्राणी सोते हैं। ७३३

नोय्दि नम्मलै नीङ्गि नुमरोडुम्, पोय्है यिन्गरै पिऱ्पडप् पोदिराल्
शॅय्य पॅण्णैक् करैप्पॅण्णै यिऱ्चिल, वैह ट्टेडिक् कडिदु वळिक्कॉळ्वीर् 734

अम्मलै–उस पर्वत से; नोय्तिन् नीङ्कि–शीघ्र हटकर; नुमरॉटुम्–अपने वानर वीरों के साथ; पॉय्कैयिन् करै–वहाँ के तालाब के तीर को; पिन् पट–पीछे रहने देते हुए; पोतिर्–जाकर; चॅय्य पॅण्णै–लाल (गोरे) रंग की देवी को; पॅण्णै करैयिल्–'पॅण्णै' नाम की नदी के तट पर; चिल वैकल्–कुछ दिन; तेटि–खोजकर; कटितु वळि कॉळ्वीर–जल्दी अपनी राह लो। ७३४

तुम लोग वहाँ से जल्दी हट जाओ और अपने साथी, वानर वीरों के साथ आगे चलो। वहाँ एक तालाब है, उसको पीछे छोड़कर बढ़ो। पश्चात् "पॅण्णै" नाम की नदी के कछार पर उन गोरे रंग की सीतादेवी को कुछ दिन खोजो। फिर आगे जल्दी चलो। ७३४

ताङ्गु मारहिऱ् ऱुणणरुज् जन्दनम्, वीङ्गु वेलि विदर्प्पमु मॅल्लॅन्
नोङ्गि नाडु नॅडियन पिऱ्पडत्, तेङ्गु वार्पुनऱ् ऱण्डहज् जेर्दिराल् 735

ताङ्कुम्–गंध-भार-वाहक; आर्–अगस्त्य और; अकिल्–अगरुतरु; तण् नऱुम् चन्ततम्–शीतल सुगन्धित चन्दन; वीङ्कु वेलि–जिसकी बाड़ बने हैं; वितर्प्पमुम्–विदर्भ देश को; मॅल्लॅन् नीङ्कि–शान्ति के साथ पार करके; नॅटियत्त नाटु–विस्तृत (अनेक) देशों को; पिन् पट–पीछे छोड़ते हुए; तेङ्कु–अधिक; वार् पुतल्–जलसमृद्ध; तण्टकम्–दण्डक में; चेर्तिर्–पहुँच जाओ। ७३५

फिर विदर्भ देश आयगा। सुगन्धित अगरु वृक्ष और शीतल सुगन्धित चन्दन तरु उसकी बाड़ बने हुए हैं। उस देश को भी पार करो और बहुत विशाल अनेक प्रदेशों को पीछे छोड़ते हुए दण्डकवन में पहुँच जाओ, जो अत्यन्त जलसमृद्ध है। ७३५

पण्ड हत्तियन् वैहिय दाप्पहर्, तण्ड हत्तदु ताबदर् तम्मैयुट्
कण्ड हत्तुयर् तीर्वदु काण्डिराल्, मुण्ड हत्तुरै यॅन्ऱोरु मोय्म्बॊळिल् 736

मुण्टकत्तुरै–'मुण्डकघाट'; ऍन्ऱ–नाम का; ओरु मोय्म् पॊळिल्–एक घना उपवन; पण्टु अकत्तियन्–प्राचीन अगस्त्य का; वैकियतु–वासस्थान; आ पकर्–ऐसा कहा जाता है; तण्टकत्ततु–(वह) दण्डक वन में है; तापतर्–तपस्वी लोग; तम्मै उळ् कण्टु–अन्दर आत्मदर्शन करके; अकम् तुयर् तीर्वतु–(जहाँ) आध्यात्मिक ताप को हर लेते हैं; काण्टिर्–जाकर देखो। ७३६

वहाँ मुण्डक घाट नाम का एक वृक्षपूर्ण वन मिलेगा। वह दण्डकारण्य में है, जहाँ अगस्त्य रहे, कहे जाते हैं। वहीं तपस्वी लोग आत्मदर्शन करके अपने मन का ताप हर लेते हैं। उस स्थान को देखो। ७३६

आल नल्लऱत् तोरुन्नु नऱ्पॊरुळ्, पोल निन्ऱु पॊलिवदु पूम्बॊळिल्
शील मङ्गैयर् वायॅनत् तोङ्गनि, काल मिन्ऱिक् कनिवदु काण्डिराल् 737

पूम् पॊऴिल्–पुष्प-बहुल वह उपवन; आलम्–भूमि के; नल्लऱत्तोर्–सद्धर्मियों के; उन्नुम् नऱ्पॊरुळ् पोल–मन के सद्विषयों के समान; निन्ऱु पॊलिवतु–शोभा के साथ रहता है; चीलम् मङ्कैयर् वाय् अॅन्न–शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान; तीम् कनि–मधुर फलों को; कालम् इन्ऱि–पर्व-बाहर भी (हमेशा); कनिवतु–फलनेवाला है; काण्टिर्–देख लो । ७३७

वह पुष्पपूर्ण मुण्डक घाट उस श्रेष्ठ वस्तु के समान शोभायमान है, जिसे सद्धर्मी लोग चाहते हैं। उसमें शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान मधुर फल फलते हैं, और अकाल में भी फलते हैं। उसको देख लो । ७३७

नयन नल्गिमै यार्तुयि लार्नन्ऱि, अयन मिल्लै यरुक्कनुक् कव्वऴि
शयन मादर् कलवि तलैत्तरुम्, पयनु मिन्बमु नीरुम् पयक्कुमाल् 738

नयनम्–(वहाँ रहनेवाले) अपनी आँखें; नन्कु इमैयार्–नहीं झपकाते; ननि तुयिलार्–अधिक नहीं सोते; अरुक्कनुक्कु–सूर्य का; अव्वऴि–वहाँ; अयनम् इल्लै–मार्ग नहीं; चयनम्–शय्या में; मातर् कलवि तलै–स्त्रियों के साथ संभोग से; तरुम्–प्राप्य; पयनुम्–सुख; इन्पमुम्–और आनन्द; नीरुम्–और जल (से प्राप्य समृद्धि); पयक्कुम्–देनेवाला है (वह स्थान) । ७३८

वहाँ के वासी पलक नहीं गिराते हैं। खूब नहीं सोते। सूर्य को वहाँ मार्ग नहीं मिलता। वह स्थान भोग-शय्या में स्त्री-संगम का सुख, आनन्द और शीतल जल —सभी देनेवाला है । ७३८

आण्डि ऱन्दुपिऩ् नन्दरत् तिन्दुवैत्, तीण्डु हिन्ऱदु शॅङ्गदिर्च् चॅल्वनुम्
ईण्डु ऱैन्दल देहल मॅन्बदु, पाण्डु विन्मलै यॅन्नुम् बरुप्पदम् 739

आण्टु इऱन्तु–वहाँ से चलकर; पिन्–बाद; अन्तरत्तु इन्तुवै–आकाश के चन्द्र को; तीण्टुकिन्ऱतु–स्पर्श करनेवाले; चॅम् कतिर् चॅल्वनुम्–लाल किरणमाली भी; ईण्टु उऱैन्तु–यहाँ ठहरे; अलतु–विना; एकलम् अॅन्पतु–नहीं जायँगे, ऐसा (जिसको देखकर) सोचते हैं; पाण्टुविन् मलै अॅनुम् परुप्पतम्–पाण्डुगिरि नामक पर्वत (है देखो) । ७३९

उस मुण्डकोपवन को छोड़कर आगे जाओ तो पाण्डुपर्वत नामक पर्वत देखोगे। वह आकाश के चन्द्र को स्पर्श करता हुआ रहता है। उसको देखकर लाल किरणमाली भी यह सोचता है कि हम यहाँ कुछ देर ठहरे विना आगे नहीं चलेंगे । ७३९

मुत्तीर्त्तुप् पॊन्ऱिरट्टि मणियुरुट्टि मुदुनीत्त मुन्ऱि लायर्
मत्तीर्त्तु मरनीर्त्तु मलैयीर्त्तु मानीर्त्तु वरुव दियार्क्कुम्
पुत्तीर्त्तिट् टलैयामर् पुलवर्ना डुदवुवदु पुनिद मान
अत्तीर्त्तत महन्गोदा विरियॅन्ब रम्मलैयि नरुहिर् ऱम्मा 740

मुतु नीत्तम्–प्राचीन प्रवाह; मुत्तु ईर्त्तु–मोती ले आता हुआ; पॊन् तिरट्टि–और स्वर्ण बहाता हुआ; मणि उरुट्टि–रत्न खींचता; आयर् मुन्ऱिल्–गोपों के

आँगनों से; मत्तु ईर्त्तुम्–मथानियों को लेता हुआ; मरन् ईर्त्तु–तरुओं को लाता हुआ; मलै ईर्त्तु–गिरियाँ लेता हुआ; मान् ईर्त्तु–और पशुओं को बहा ले आता हुआ; वरुवतु–आनेवाला है; यार्क्कुम्–किसी भी स्नान करनेवाले को; पुत्तु ईर्त्तिट्टु–'पुत्' नामक नरक से खिंचकर; अलैयामल्–घूमे विना; पुलवर् नाट्टु–स्वर्गलोक; उतवुवतु–दिलानेवाला है; पुत्तितम् आन अ तीर्त्तम्–पवित्र वह तीर्थ (नदी); अकल् कोतावरि ॲन्पर्–चौड़ी गोदावरी कहते; अ मलैयिन्–उस (पाण्डु) गिरि के; अरुकिरुरु–पास रहनेवाली है। ७४०

आगे जाओ। गोदावरी नदी मिलेगी। उसका सनातन प्रवाह मोती बहा ले आता है। स्वर्ण-कर्ण इकट्ठा कर लाता है। रत्नों को लुढ़काकर ले आता है। गोपों के आँगन से मथानी को, पेड़ों को, चट्टानों को और अनेक पशुओं को खींच ले आता है। उसमें जो भी स्नान करते हैं, वे (अपुत्र होने पर भी) "पुत्" नामक नरक से बच जाते हैं; और देवलोक पहुँच जाते हैं। वह गोदावरी पवित्र जल वाली है। और वह उस उपरोक्त पाण्डुपर्वत के पास बहती रहती है। ७४०

अव्वारु कडन्दप्पा लरत्तारॆ यॅनत्तॅळिन्द वरुळि नारुम्
वॅव्वारु मॅनक्कुळिर्न्दु वॅयिलियङ्गा वहैयिलङ्गुम् विरिपूञ् जोलै
ॲव्वारु मुरत्तुवन्ऱि यिरुळोड मणियिमैप्प दिमैयोर् वेण्डत्
तॅव्वारु मुहत्तोरुवन् तनिक्किडन्द शुवणत्तैच् चेर्दिर् मादो 741

अ आरु कटन्तु–उस नदी को पार करके; अप्पाल्–बाद; अरत्तु आरे ॲत–धर्ममार्ग ही सम, और; तॅळिन्त अरुळिन्–स्वच्छ करुणा पर; नारुम्–विकसित; वॅम्–प्यारा; आरु ॲत्तवुम्–नीति के मार्ग के समान; कुळिर्न्तु–शीतल बना; वॅयिल् इयक्का वकै–धूप न लगे, इस प्रकार; इलङ्कुम्–शोभायमान रहनेवाला; विरि पू चोलै–विकसित फूलों से भरा उद्यान; ॲ आरुम्–सर्वत्र; उर तुवन्ऱि–खूब (जिसके किनारों पर) पाया जाता है; इरुळ् ओट–(और) अन्धकार को भगाते हुए; मणि इमैप्पतु–रत्न चमकते हैं (जिसमें); इमैयोर् वेण्ट–देवों की प्रार्थना पर; तॅव् आरुमुकत्तु ओरुवन्–शत्रुसंहारक, छः मुख वाले देव (षण्मुख); तनि किटन्त–अकेले जिस पर रहे; चुवणत्तै–उस सुवर्ण (सोन) नदी को; चेर्तिर्–जा पहुँचो। ७४१

उस गोदावरी नदी को भी पारकर तुम लोग "शोण" नदी पर पहुँच जाओ। वह धर्म-मार्ग और पवित्र कृपा के फलस्वरूप उपलब्ध होनेवाले सन्मार्ग के समान शीतल है। उसके दोनों ओर प्रफुल्ल पुष्पवह तरुओं से पूर्ण बाग हैं, जिनके अन्दर सूर्य की किरणें पहुँच नहीं पातीं। उसके दोनों कूलों पर मणियाँ प्रकाश फैलाती और अँधेरे को भगाती रहती हैं। उसी में देवताओं की प्रार्थना पर शत्रुसंहारक षण्मुख (या विघ्न-हर विनायक) पड़े रहे। ७४१

शुवणनदि कडन्दप्पाऱ् चूरियकान् दहमॆन्नत् तोन्ऱि मादर्
कवणुमिऴ्हल् वॆयिलियङ्गुङ् गनवरैयुञ् जन्दिरहान् दहमुङ् गाण्बीर्
अवणवैनीत् तेहियपिन् नहनाडु पलकडन्दा लनन्द नॆन्बान्
उवणपदिक् कॊळित्तुऱैयुङ् गॊङ्गणमुङ् गुलिन्दमुञ्जॆन् ऱुरुदिर् मादो 742

चुवण नति कटन्तु–सुवर्ण नदी को पार करके; अप्पाल्–उस तरफ़; चूरिय कान्तकम् ऍन्न तोन्ऱि–सूर्यकान्ति नाम से विख्यात (गिरि); मातर् कवण् उमिऴ् कल्–(जिस पर) स्त्रियों के ढेलाबाँसों से निकले पत्थर; वॆयिल् इयङ्कुम्–प्रकाश फैलाते हैं; कनम् वरैयुम्–उस भारी पर्वत को और; चन्तिर कान्तकमुम्–चन्द्रकान्त को भी; काण्पीर्–देखोगे; अवण्–वहाँ; अवै नीत्तु–उनको छोड़कर; एकिय पिन्–जाने के बाद; अकल् नाटु–विस्तृत देश; पल कटन्ताल्–अनेक पार करेंगे तो; अनन्तन् ऍन्पान्–अनन्तनाग; उवणपतिक्कु ऒळित्तु–खगपति गरुड़ से छिपकर; उऱैयुम्–जहाँ रहता है; कॊङ्कणमुम्–कोंकण देश को और; कुलिन्तमुम्–कुलिन्द देश को; चॆन्ऱु उऱुतिर्–जा पहुँचोगे। ७४२

"शोण" नदी को पारकर तुम सूर्यकान्तपर्वत पर पहुँचोगे। उस पर्वत पर खेतों की रखवाली करते हुए स्त्रियाँ पायी जाएँगी, जिनके ढेलेबाँसों से निकलनेवाले पत्थर (बहुमूल्य रत्न) धूप जैसा प्रकाश फैलाते हैं। आगे चन्द्रकान्तपर्वत पर भी खोज लगाओ। फिर उन पर्वतों को छोड़कर आगे अनेक विशाल पर्वतों को पार करो तो कोंकण देश में जाओगे, जहाँ आदिशेष खगपति गरुड़ से डरकर छिपा रहता है। उसके आगे कुलिन्द देश है, वहाँ पहुँचोगे। ७४२

अरनदिह नुलहळन्द वरियदिह नॆन्ऱुरैक्कु मऱिवि लोर्क्कुप्
परहदिचॆन् ऱडैवरिय परिशेपोऱ् पुहलरिय पण्बिऱ् ऱामाल्
सुरनदियि नयलदुवान् ऱोय्हुडुमिच् चुडर्त्तॊहैय तॊऴुदोर्क् कॆल्लाम्
वरनदिहन् दरुन्दहैय वरुन्दिया नॆडुमलैयै वणङ्गि यप्पाल् 743

अरन् अतिकन्–हरदेव ही श्रेष्ठ हैं; उलकु अळन्त–लोकमापक; अरि अतिकन्–हरि ही श्रेष्ठ हैं; ऍन्ऱु उरैक्कुम्–ऐसा कहनेवाले; अऱिवु इलोर्क्कु–अज्ञों के लिए; परकति चॆन्ऱु–उत्तम गति में जाकर; अटैवु अरिय–रहना कठिन है; परिचे पाल्–वैसी रीति से; पुकल् अरिय पण्पिऱ्ऱु–प्रवेश पाना (जहाँ) कठिन; आम्–है; चुर नतियिन् अयलतु–सुरगंगा के पास रहनेवाली; वान् तोय्–आकाशस्पर्शी; कुटुमि–शिखरों पर (जिसके); चुटर् तॊकैयतु–प्रकाशपुंज (सूर्य व चन्द्र) ठहरते हैं; तॊऴुतोर्क्कु ऍल्लाम्–नमन करनेवाले सभी को; अतिकम् वरन् तरुम्–अधिक वरदायी; तकैय–महिमा वाला; अरुन्तति आम्–अरुन्धती नाम का; नॆटुमलैयै–बड़ा पर्वत, उसे; वणङ्कि–नमस्कार करके; अप्पाल्–तदनन्तर। ७४३

उसके आगे अरुन्धती नाम का बड़ा और श्रेष्ठ पर्वत रहता है। वह इतना अगम है जितना श्रेष्ठ-गति उन लोगों के लिए अगम है, जो इस बात को लेकर झगड़ा करते हैं कि हरदेव श्रेष्ठ हैं या त्रिलोकमापक हरि

श्रेष्ठ हैं। वह सुरगंगा के बिल्कुल पास है। उसके गगनस्पर्शी शिखरों पर दोनों प्रकाशपुञ्ज, सूर्य और चन्द्र आश्रय लेते हैं। जो उसकी पूजा करते हैं, उसको वह उत्तम वर देनेवाला है। उस पर्वत को (दूर से) नमस्कार करके आगे—। ७४३

अञ्जुवरुम् वॅञ्जुवरत्तु माऱुमहन् पॅरुञ्जुनैयु महिलोङ्गारम्
मञ्जिवरु नॅडुङ्गिरियुम् वळनाडुम् पिऱ्पडप्पोय् वळिमेऱ् चॅन्ऱाल्
नञ्जुवरु मिडऱ्ऱरवुक् कमिऴ्दुनत्ति कॊडुत्तायैक् कलुऴ नीक्कुम्
अॅञ्जिन्मर हदप्पॊरुप्पै यिऱैञ्जियदन् पुऱञ्जार वेहिर् मादो 744

अञ्चवरुम्–डरावना; वॅम् चुरतुम्–कठोर मरुप्रदेश; आऱुम्–नदियों को; अकल् पॅरु चुनैयुम्–विशाल और बड़े तालाबों को; अकिल्–अगरु; ओङ्कु आरम्–ऊँचे चन्दनतरु; मञ्चु–मेघों तक; इवरुम्–जिन पर उगे हैं; नॅटुम् किरियुम्–ऊँचे पर्वतों को; वळम् नाटुम्–समृद्ध जनपदों को और; पिन् पट–पीछे छोड़कर; पोय्–जाकर; वऴि मेल् चॅन्ऱाल्–आगे मार्ग पर जाओगे तो; कलुऴन्–गरुड़ ने; नञ्चु वरुम्–विषैले; मिटऱु–दाँत वाले; अरवुक्कु–नागों को; अमिऴ्तु नत्ति कॊटुत्तु–अमृत अधिक देकर; आयै नीक्कुम्–अपनी माता को (दासता से) छुड़ाया (जहाँ); अॅञ्चिल्–निर्दोष; मरकत पॊरुप्पै–मरकतगिरि को; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; अतन् पुऱम् चार–उसके पार्श्व के मार्ग में; एकिर्–आगे जाओ। ७४४

सबको भयभीत करनेवाला मरुप्रदेश, नदियाँ और चौड़े झरने, अगरु और उन्नत चन्दन तरु जहाँ मेघों का स्पर्श करते हुए उगे हैं; उन पर्वतों और समृद्ध देशों को पीछे छोड़ते हुए जाओगे तो उस मरकतपर्वत को देखोगे, जहाँ गरुड़ ने विषदन्त नागों को अमृत दिलाकर अपनी माता को गुलामी से छुड़ाया था। उसको नमस्कृत करके उसके पास का मार्ग पकड़कर आगे जाओ। (पुराण की कथा है कि कश्यप मुनि की दो पत्नियों में गरुड़ की माता विनता अपनी सौत नागमाता कद्रू की दासी बनी थी। तो उसकी दासता को काटकर छुड़ाने के लिए कद्रू ने शर्त लगायी कि अमृत लाकर दो। गरुड़ ने अमृत-कलश लाकर दिया।) ।७४४

वडशॊऱ्कुन् दॅन्शॊऱ्कुम् वरम्बाहि नान्मऱैयु मऱ्ऱै नूलुम्
इडैशॊऱ्ऱ पॊरुट्कॆल्ला मॆल्लैयदाय् नल्लऱत्तुक् कोऱाय् वेऱु
पुडैशुऱ्ऱुन् दुणैयिन्ऱिप् पुहऴ्पॊदिन्द मॆय्ये पोऱ् पूत्तु निन्ऱ
उडैशुऱ्ऱुन् दण्शार लोङ्गियवेङ् गडत्तिऱ्चॆन् ऱुऱुदिर् मादो 745

वटचॊऱ्कुम् तॆन् चॊऱ्कुम्–संस्कृत और तमिऴ की; वरम्पु ओकि–सीमा बनकर; नाल् मऱैयुम्–चारों वेद और; मऱ्ऱै नूलुम्–अन्य शास्त्र; इटै चॊऱ्ऱ–अपने में जिनकी चर्चा करते हैं; पॊरुट्कॆल्लाम्–उन विषयों का; ऍल्लैयताय्–शीर्षस्थ और; नल् अऱत्तुक्कु–श्रेष्ठ धर्म का; ईऱाय्–प्रमाण और; पुटै चुऱ्ऱुम्–पास घेरे रहे; तुणै वेऱु इन्ऱि–जोड़ किसी के विना; पुकऴ् पॊतिन्त–प्रशंसा के पात्र; मॆय्ये पोल्–शरीर के

समान; पूत्तु निऩ्ऱ–शोभित रहनेवाले; उटै चुऱ्ऱुम्–वस्त्र के समान लपेटे रहनेवाले; तण्चारल्–शीतल चरण-प्रदेशों-सह; ओङ्किय–ऊँचे; वेङ्कटत्तिल्–श्रीवेंकटगिरि पर; चॅऩ्ऱु उऱुतिर्–जा पहुँचो। ७४५

आगे तुम श्री वेंकटगिरि के पास पहुँच जाओगे। वह संस्कृत और तमिऴ के प्रदेशों के बीच की सीमा है। उसमें चतुर्वेदों और अन्य शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित सर्वश्रेष्ठ "वस्तु" (परमतत्त्व) रहती है। वह सारे धर्मों की श्रेष्ठ व्याख्या है। उसके साथ मिलाने योग्य और कोई उपमान नहीं मिलता। यशवेष्टित शरीर के समान उसको शीतल तराइयाँ घेरे रहती हैं। वह उन्नत और पवित्र गिरि है। ७४५

इरुविऩैयु मिडैविडा वॅव्विऩैयु मियऱ्ऱादे यिमैयो रॅय्दुम्
तिरुविऩैयु मिडुपदऩ्देर् चिऱुमैयैयु मुऱैयॊप्पत् तॅळिन्दु नोक्किक्
करुविऩैय दिप्पिऱविक् कॅऩ्ऱुणर्न्दङ् गदुकळैयुङ् गडैयिल् ञानत्
तरुविऩैयिऩ् पॅरुम्बहैञ राण्डुळरीण् डिरुन्दुमडि वणङ्गऱ् पालार् 746

इरु विऩैयुम्–दोनों कर्म (पाप और पुण्य); इटै विटा–निरन्तर; ऍव् विऩैयुम्–कोई कर्म; इयऱ्ऱामे–विना किये; इमैयोर् ऍय्तुम्–देवों को प्राप्त; तिरुविऩैयुम्–भोग-कर्म और; इटु पतम् तेर्–(भीख में) दिये खाने की अपेक्षा में; चिऱुमैयैयुम्–रहनेवाले क्षुद्र जीवन को; मुऱै ऒप्प–सम क्रम से; तॅळिन्तु नोक्कि–साफ़ विवेचना करके; इ पिऱविक्कु–इस जन्म का; करुविऩै अतु–वह गर्भ का कर्म है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उणर्न्तु–समझकर; अतु–उस कर्म को; अङ्कु–वहीं; कळैयुम्–त्यागनेवाले; कटै इल् ञानत्तु–असीम ज्ञान के; अरु विऩैयिऩ्–दुर्निवार कर्म के; पॅरु पकैञर्–बड़े शत्रु; आण्टु उळर्–वहाँ रहते हैं; ईण्टु इरुन्तुम्–यहीं से भी; अटि वणङ्कल् पालार्–चरण-वन्द्य हैं। ७४६

उस पर्वत में दुर्वार, पाप-पुण्य दोनों कर्मों के प्रबल शत्रु, श्रेष्ठ महात्मा रहते हैं। उन्हें पाप-पुण्य और लगातार लग करके आनेवाले सभी कर्मों के सम्बन्ध में खूब ज्ञात है। इसलिए वे निष्काम हैं। वे देवों से प्राप्य भोगमय जीवन और भीख में मिलनेवाले भोजनापेक्षी और दुःखमय मानवजीवन, इन दोनों के समदर्शी हैं। जन्म का हेतु ये ही पाप और पुण्य हैं—इसको खूब जानकर उस कर्म-बन्धन को वही काटनेवाले अपार तत्त्वज्ञ हैं। वे महात्मा यहाँ से भी प्रणम्य हैं। ७४६

शूदहऱ्ऱुन् दिरुमऱैयोर् तुऱैयाडु निऱैयाऱुञ् जुरुदित् तॊऩ्नूल्
मादवत्तो रुऱैविडनु मळैयुऱङ्गु मणित्तडनु वाऩ मादर्
कोदमॊत्त किऩ्ऩरङ्ग ळिऩ्ऩरम्बु वरुडुदॊरुङ् गिळक्कु मोदै
पोदहत्तिऩ् मळक्कऩ्ऱुम् बुलिप्पऱळु मुरङ्गिडऩुम् बॊरुन्दिर् ऱम्मा 747

चूतु अकऱ्ऱुम्–कपट को त्यागनेवाले; तिरु मऱैयोर्–सुन्दर ब्राह्मण लोग; आटु–जहाँ स्नान करते हैं; तुऱै–उन घाटों से; निऱै–पूर्ण; आऱुम्–नदियाँ; चरुति–

वेद; तॊल् नूल्–सनातन शास्त्र (के ज्ञाता); मातवत्तोर्–महान तपस्वी; उऱैवु इटत्तुम्–जहाँ वास करते हैं, वे आश्रम; मळै उऱङ्कुम्–जहाँ मेघ आश्रय लेते हैं; मणि तटत्तुम्–वे रत्न-भरे स्थान; वानम् मातर्–(और) देवांगनाओं के; कीतम् ऒत्त–गीत के समान; किन्नरक्कळ्–किन्नर (वाद्यों) के; इन् नरम्पु–मधुर (नादोत्पादक) तन्त्रियों को; वरुट्टु तोऱुम्–मींडते वक़्त; किळक्कुम्–उठनेवाले; ओतै–नाद से; पोतकत्तिन्–गज के; मळ कन्ऱुम्–छोटे कलभ और; पुलि पऱळुम्–बाघ के शावक; उऱङ्कु–(जहाँ एक साथ) सोते हैं; इटनुम्–वे स्थान; पॊरुन्तिऱ्ऱु–इनसे युक्त है (वह तिरुवेंकटगिरि)। ७४७

उसमें छल-कपट छोड़कर रहनेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण जिनमें स्नान करते हैं, वे घाटों से भरी नदियाँ; श्रुति और पुराने शास्त्रों के विशिष्ट ज्ञाता बड़े तपस्वियों का वासस्थान; वे स्थल जो रत्नजड़ित हैं और जिन पर मेघ सुप्त रहते हैं; देवांगनाओं के गीत के लय के साथ किन्नर अपने वाद्य की तंत्रियों से जो स्वर निकालते हैं, उस स्वर को सुनकर कलभ और व्याघ्रशावक जहाँ साथ-साथ सोते हैं वे स्थल —ये सभी हैं। ७४७

कोडुरुमाल् वरैयदनैक् कुरुहुदिरे लुन्नॆडिय कॊडुमै नीङ्गि
वीडुरुदि रादलान् विलङ्गुदिरप् पुऱत्तुनीर् मेवु तॊण्डै
नाडुरुदि रुऱ्ऱदनै नाडियदऱ् पिन्नैयवै नळिनीर्प् पॊन्निच्
चेडुरुदण् पुनऱ्ऱॆय्वत् तिरुनदियि निरुहरैयुन् दॆरिदिर् मादो 748

कोटु उरु–शिखरोंसहित; माल् वरै अतनै–बड़े उस पर्वत के; कुरुकुतिरेल्–पास जाओ तो; उम् नॆटिय कॊटुमै–तुम्हारा अधिक पाप; नीङ्कि–छूटेगा और; वीटु उरुतिर्–मोक्ष पा जाओगे; आतलान्–इसलिए; विलङ्कुतिर्–दूर से ही हट जाकर; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़ के; नीर् मेवु–जलसमृद्ध; तॊण्टै नाटु–"तॊण्डै" (नाम के) देश को; उरुतिर्–जाओ; उऱ्ऱु–वहाँ पहुँचकर; अतनै नाटि–वहाँ खूब खोजकर; अतन् पिन्नै–उसके बाद; नळि नीर्–उत्तम जल से पूर्ण; पॊन्नि चेटु उरु–'पोन्नी' नाम की श्रेष्ठतायुक्त; तण् पुनल्–शीतल जल; तॆय्वम् तिरु नतियिन्–दिव्य श्रीनदी के; इरु करै अवैयुम्–दोनों तीरों पर; तॆरितिर्–देवी की खोज लगाओ। ७४८

शिखरों से भरे उस पर्वत के पास तुम लोग जाओगे तो तुम्हारे सारे पाप दूर हो जायँगे और तुम मोक्ष को प्राप्त हो जाओगे। इसलिए उससे बचकर आगे रहनेवाले जलसमृद्ध "तॊण्डै" (बिम्ब) प्रदेश में जाओ और वहाँ खूब अन्वेषण करो। फिर उस कावेरी नदी के दोनों किनारों पर खोजो जो "पॊन्नी" के नाम से विख्यात है और जो देखने में बहुत सुन्दर है। वह नदी शीतल जल से भरी और दिव्य है। ७४८

तुऱक्कमुऱ्ऱार् मनमॆन्नत् तुऱैहॆळ्ळुनीर्च् चोणाडु कडन्दार् ऱॊल्लै
मऱक्कमुऱ्ऱा रदनयले मऱैनवुऱैव रव्वळिनीर् वल्लै येहि
उऱक्कमुऱ्ऱार् ऒन्नूऱ्ऱा रॆनुमुणर्वि नीडुमीदुङ्गि मणिया रोङ्गऱ्
पिऱक्कमुऱ्ऱ मलैनाडु नाडियहन् ऱमिळ्नाट्टिऱ् पॆयर्दिर् मादो 749

तुरक्कम् उऱ्ऱार्–स्वर्गगत; मतम् अॅन्न–(लोगों के) मन के समान; तुऱै कॅऴु नीर्–घाटों से युक्त धारा वाली कावेरी के जल से; चोणाटु–(समृद्ध) 'चोऴ नाडु' (चोऴ देश); कटन्ताल्–पार करोगे तो; अतन् अयले–उसके समीप ही; तॉल्लै–पूर्व-कर्म; मऱक्कम् उऱ्ऱार्–जो भूल चुके हैं, वे; मऱैन्तु उऱैवर्–छिपे-छिपे वास करते होंगे; नीर्–तुम लोग; अ वऴि–उस मार्ग में; वल्लै एकि–शीघ्र जाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱार्–निद्रा में रत रहनेवाले; अॅन् उऱ्ऱार्–क्या पाये; अॅनुम् उणर्विनॉटुम्–इस समझ के साथ; ऑतुक्कि–हट जाकर; मणि आर्–रत्न-भरे; ओङ्कल् पिऱक्कम्–पर्वतों के तलों से; उऱ्ऱ–युक्त; मलै नाटु–पर्वत-प्रदेश में; नाटि–खोजकर; पिऱकु–बाद; अकल् तमिऴ् नाट्टिल्–विस्तृत तमिऴनाडु में; पॅयर्तिर्–जाओ। ७४६

स्वर्गगत लोगों के मन के समान कावेरी का जल स्वच्छ है और वह देश पवित्र है, जिसमें यह नदी बहती है। उसके पार्श्व में पूर्व कर्म को जो भूले हुए हैं, वे मुनिवर छिपे-छिपे वास कर रहे हैं। तुम उस मार्ग को अविलम्ब पार कर लो। सुप्त रहनेवाले क्या पायेंगे ? —इस मसल का स्मरण करते हुए आगे रत्नमय उन्नत पर्वतों के देश में देवी का पता लगाओ। उसके बाद विशाल तमिऴ देश में (पाण्ड्य देश में) पहुँच जाओ। ७४९

तॅन्ऱमिऴ्नाट् टहन्पॉदियिऱ् ऱिरुमुनिवन् ऱमिऴ्च्चङ्गञ् जेर्हिऱ् पोरेल्
अॅन्ऱुमवन् नुऱैविडमा मादलिनाल् नम्मलैयै यिडत्तिट् टेहिप्
पॉन्ऱिणिन्द पुनल्पॅरुहुम् पॉरुनैयॅनुन् दिरुनदिपिन् बॉऴिय नाहक्
कन्ऱुवळर् तडञ्जारन् मयेन्दिरमा नॅडुवरैयुङ् गडलुङ् गाण्डिर् 750

तॅन् तमिऴ् नाडु–दाक्षिणात्य तमिऴ देश में; अकल् पॉतियिल्–विशाल 'पॉदिहै' गिरि पर; तिरु मुनिवन्–श्री (अगस्त्य) मुनि के; तमिऴ् चङ्कम्–तमिऴ संघ में; चेर्किऱ्पोरेल्–पहुँचोगे तो; अॅन्ऱुम्–सदा; अवन् उऱैवु इटम् आम्–उनका रहने का स्थान है वह गिरि; आतलिनाल्–इसलिए; अम् मलैयै–उस पर्वत को; इटत्तु इट्टु–बायीं ओर छोड़कर (परिक्रमा करते हुए); एकि–जाकर; पॉन् तिणिन्त–स्वर्ण-कणों से भरे; पुनल् पॅरुकुम्–जल से पूर्ण; पॉरुनै अॅनुम्–'पॉरुनै' नाम की (ताम्रपर्णी); तिरु नति–श्रीनदी; पिन्पु ऑऴिय–पीछे रह जाय, ऐसा आगे जाकर; नाकम् कन्ऱु–कलभ; वळर्–जहाँ पलते हैं; तट चारल्–वैसी विशाल तराइयों से युक्त; मयेन्तिरम् आम्–महेन्द्र की; नॅटु वरैयुम्–बड़ी गिरि को और; कटलुम्–समुद्र को; काण्टिर्–देखो (गे)। ७५०

उस देश में "पॉदिहै" का बड़ा पर्वत है। वहीं श्री अगस्त्य मुनि का तमिऴ-संग प्राप्त होगा। वही अगस्त्य का स्थायी वासस्थान है। उसके दाहिनी ओर से आगे जाओ और स्वर्णकण-मिश्रित जल वाली ताम्रपर्णी नाम की नदी को भी छोड़कर आगे बढ़ो। महेन्द्रपर्वत आयगा, जिसकी तराइयों में हाथी के बच्चे बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। उसके पास ही दक्षिणी समुद्र भी रहता है। ७५०

आण्डुकडन् दप्पुऱत्तु मॅप्पुऱत्तु मॉरुतिङ्ग ळवदि याहत्
तेण्डियिवण् वन्दडॆंदिर् विडैहोडिर् कडिदॅन्ऩच् चॅप्पुम् वेलै
नीण्डवत्तु मारुदियै निऱैयरुळा लुऱनोक्कि नीदि वल्लोय्
काण्डियॅनिऱ् कुऱिकेट्टि यॅन्ऩवेऱु कॉण्डिरुन्दु कळऱ लुऱ्ऱान् 751

आण्टु कटन्तु–उस स्थान को पार करके; अ पुऱत्तुम्–उसके उस तरफ़; अँ पुऱत्तुम्–सभी ओर; ऑरु तिङ्कळ्–एक महीना; अवति आक–अवधि बनाकर; तेण्टि–अन्वेषण करके; इवण् वन्तु–यहाँ आ; अटैतिर्–पहुँचो; कटितु–अविलम्ब; विटै कोटिर्–विदा लो; अॅन्ऩ चॅप्पुम् वेलै–(सुग्रीव के) यों कहते समय; नीण्टवत्तुम्–(लम्बोतरा श्रीत्रिविक्रम के अवतार) श्रीराम भी; मारुतियै–मारुति को; निऱै अरुळाल्–सम्पूर्ण कृपा के साथ; उऱ–खूब; नोक्कि–देखकर; नीति वल्लोय्–नीतिशास्त्र-विदग्ध; काण्टि अॅतिन्–देखोगे तो; कुऱि केट्टि–लक्षण सुन लो; अॅन्ऩ–कहकर; वेऱु कॉण्टु इरुन्तु–अलग ले जाकर रहे और; कळऱल् उऱ्ऱान्–बोलने लगे। ७५१

उस स्थान को पार कर उस तरफ़ और सब ओर एक मास की अवधि तक खोज लगाओ। फिर इधर आ पहुँचो। चलो, जल्दी बिदा लो। सुग्रीव ने जब यह आज्ञा सुनायी, तब विश्वाकार श्रीराम ने मारुति पर कृपा-दृष्टि दौड़ायी। और कहा— नीतिशास्त्रज्ञ! सीता को देखो तो उसकी पहचान के लक्षण सुन लो। फिर उसे अलग ले जाकर श्रीराम सीताजी के (पादादिकेश) अंग-लक्षण बताने लगे। ७५१

पाऱ्कडऱ् पिऱन्द शॅय्य पवळत्तैप् पञ्जि यूट्टि
मेऱ्पड मदियज् जूट्टि विरहुऱ निऱैन्द नॉय्य
काऱ्ऱहै विरल्ह ळैय कमलमुम् बिऱवुङ् गण्डाल्
एऱ्पिल वॅन्ब दन्ऱि यिणैयडिक् कुवमै यॅन्ऩो 752

ऐय–भद्र; नॉय्य–कोमल; काल् तकै विरल्कळ्–पैरों की उँगलियाँ; पाल् कटल् पिऱन्त–क्षीराब्धि में उत्पन्न; चॅय्य पवळत्तै–लाल प्रवाल-खण्डों को; पञ्चि ऊट्टि–लाल लाक्षारस लगाकर; मेल् पट–उनके ऊपर; मतियम् चूट्टि–चन्द्रों को जड़ित कर; विरकु उऱ–शालीनता से युक्त रीति से; निऱैन्त–बनाया गया, ऐसे हैं; कमलमुम्–कमल और; पिऱवुम्–अन्य (उपमेय) वस्तुएँ; कण्टाल्–इनको देखें तो; एऱ्पिल–योग्य नहीं हैं; अॅन्पतु अन्ऱि–ऐसा कहना छोड़कर; इणै अटिक्कु–चरण-युगल की; उवमै अॅन्ऩो–उपमेय (वस्तु) क्या है। ७५२

उत्तम वीर! उसके मृदुल चरण की सुन्दर उँगलियों का लक्षण सुनो। क्षीरसागर में उत्पन्न श्रेष्ठ प्रवालखण्डों का लाक्षारस में सनकर उनके ऊपर चन्द्रों को टिकाकर बहुत ही कुशलता के साथ वे पंक्ति में बनायी गयी हैं। कमल और अन्य ऐसे पदार्थ, सोचने पर, उनके उपमान बनने के लिए योग्य नहीं हैं। यही कहना पड़ेगा। नहीं तो उसके दोनों चरणों के लिए योग्य उपमान कहाँ से मिलेगा? । ७५२

तुऱक्कम् उऱ्ऱार्–स्वर्गगत; मतम् ऍन्त–(लोगों के) मन के समान; तुऱै कॉळु नीर्–घाटों से युक्त धारा वाली कावेरी के जल से; चोणाटु–(समृद्ध) 'चोळ नाडु' (चोळ देश); कटन्ताल्–पार करोगे तो; अतन् अयले–उसके समीप ही; तॉल्लै–पूर्व-कर्म; मऱक्कम् उऱ्ऱार्–जो भूल चुके हैं, वे; मऱैन्तु उऱैवर्–छिपे-छिपे वास करते होंगे; नीर्–तुम लोग; अ वऴि–उस मार्ग में; वल्लै एकि–शीघ्र जाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱार्–निद्रा में रत रहनेवाले; ऍन् उऱ्ऱार्–क्या पाये; ऍन्नुम् उणर्विऩॉटुम्–इस समझ के साथ; ऑतुक्कि–हट जाकर; मणि आर्–रत्न-भरे; ओङ्कल् पिऱक्कम्–पर्वतों के तलों से; उऱ्ऱ–युक्त; मलै नाटु–पर्वत-प्रदेश में; नाटि–खोजकर; पिऱकु–बाद; अकल् तमिऴ् नाट्टिल्–विस्तृत तमिऴनाडु में; पॅयर्तिर्–जाओ। ७४९

स्वर्गगत लोगों के मन के समान कावेरी का जल स्वच्छ है और वह देश पवित्र है, जिसमें यह नदी बहती है। उसके पार्श्व में पूर्व कर्म को जो भूले हुए हैं, वे मुनिवर छिपे-छिपे वास कर रहे हैं। तुम उस मार्ग को अविलम्ब पार कर लो। सुप्त रहनेवाले क्या पायेंगे? —इस मसल का स्मरण करते हुए आगे रत्नमय उन्नत पर्वतों के देश में देवी का पता लगाओ। उसके बाद विशाल तमिऴ देश में (पाण्ड्य देश में) पहुँच जाओ। ७४९

तॆन्ऱमिऴ्नाट् टहन्पॊदियिऱ् ऱिरुमुनिवन् ऱमिऴ्च्चङ्गञ् जेर्हिऱ् पीरेल्
ऎन्ऱुमव नुऱैविडमा मादलिना नम्मलैयै यिडत्तिट् टेहिप्
पॊन्ऱिणिन्द पुनल्पॆरुहुम् पॊरुनैयॆनुन् दिरुनदिपिन् बॊऴिय नाहक्
कन्ऱुवळर् तडञ्जारन् मयेन्दिरमा नॆडुवरैयुङ् गडलुङ् गाण्डिर् 750

तॆन् तमिऴ् नाडु–दाक्षिणात्य तमिऴ देश में; अकल् पॊतियिल्–विशाल 'पॊदिहै' गिरि पर; तिरु मुनिवन्–श्री (अगस्त्य) मुनि के; तमिऴ् चङ्कम्–तमिऴ संघ में; चेर्किऱ्पीरेल्–पहुँचोगे तो; ऍन्ऱुम्–सदा; अवन् उऱैवु इटम् आम्–उनका रहने का स्थान है वह गिरि; आतलिताल्–इसलिए; अम् मलैयै–उस पर्वत को; इटत्तु इट्टु–बायीं ओर छोड़कर (परिक्रमा करते हुए); एकि–जाकर; पॊन् तिणिन्त–स्वर्ण-कणों से भरे; पुनल् पॆरुकुम्–जल से पूर्ण; पॊरुनै ऍन्नुम्–'पॊरुनै' नाम की (ताम्रपर्णी); तिरु नति–श्रीनदी; पिन्पु ऑऴिय–पीछे रह जाय, ऐसा आगे जाकर; नाकम् कन्ऱु–कलभ; वळर्–जहाँ पलते हैं; तट चारल्–वैसी विशाल तराइयों से युक्त; मयेन्तिरम् आम्–महेन्द्र की; नॆटु वरैयुम्–बड़ी गिरि को और; कटलुम्–समुद्र को; काण्टिर्–देखो (गे)। ७५०

उस देश में "पॊदिहै" का बड़ा पर्वत है। वहीं श्री अगस्त्य मुनि का तमिऴ-संग प्राप्त होगा। वही अगस्त्य का स्थायी वासस्थान है। उसके दाहिनी ओर से आगे जाओ और स्वर्णकण-मिश्रित जल वाली ताम्रपर्णी नाम की नदी को भी छोड़कर आगे बढ़ो। महेन्द्रपर्वत आयगा, जिसकी तराइयों में हाथी के बच्चे बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। उसके पास ही दक्षिणी समुद्र भी रहता है। ७५०

आण्डुकडन् दप्पुरत्तु मॅप्पुरत्तु मॊरुतिङ्ग ळवदि याहत्
तेण्डियिवण् वन्दडैदिर् विडैहोडिर् कडिदॆन्नच् चॆप्पुम् वेलै
नीण्डवनु मारुदियै निरैयरुळा लुरनोक्कि नीदि वल्लोय्
काण्डियॆनिर् कुरिकेट्टि यॆनवेरु कॊण्डिरुन्दु कळर लुर्रान् 751

आण्टु कटन्तु—उस स्थान को पार करके; अ पुरत्तुम्—उसके उस तरफ़; ॲ पुरत्तुम्—सभी ओर; ऑरु तिङ्कळ्—एक महीना; अवति आक—अवधि बनाकर; तेण्टि—अन्वेषण करके; इवण् वन्तु—यहाँ आ; अटैतिर्—पहुँचो; कटितु—अविलम्ब; विटै कोटिर्—विदा लो; ॲन्न चॆप्पुम् वेलै—(सुग्रीव के) यों कहते समय; नीण्टवतुम्—(लम्बोतरा श्रीत्रिविक्रम के अवतार) श्रीराम भी; मारुतियै—मारुति को; निरै अरुळाल्—सम्पूर्ण कृपा के साथ; उर—खूब; नोक्कि—देखकर; नीति वल्लोय्—नीतिशास्त्र-विदग्ध; काण्टि ॲतिन्—देखोगे तो; कुरि केट्टि—लक्षण सुन लो; ॲन्न—कहकर; वेरु कॊण्टु इरुन्तु—अलग ले जाकर रहे और; कळरल् उर्रान्—बोलने लगे। ७५१

उस स्थान को पार कर उस तरफ़ और सब ओर एक मास की अवधि तक खोज लगाओ। फिर इधर आ पहुँचो। चलो, जल्दी बिदा लो। सुग्रीव ने जब यह आज्ञा सुनायी, तब विश्वाकार श्रीराम ने मारुति पर कृपा-दृष्टि दौड़ायी। और कहा— नीतिशास्त्रज्ञ! सीता को देखो तो उसकी पहचान के लक्षण सुन लो। फिर उसे अलग ले जाकर श्रीराम सीताजी के (पादादिकेश) अंग-लक्षण बताने लगे। ७५१

पार्कडर् पिरन्द शॆय्य पवळत्तैप् पञ्जि यूट्टि
मेर्पड मदियम् जूट्टि विरहुर निरैन्द नॊय्य
काररहै विरल्ह ळैय कमलमुम् बिरवुङ् गण्डाल्
एर्पिल वॆन्ब दन्रि यिणैयडिक् कुवमै यॆन्नो 752

ऐय—भद्र; नॊय्य—कोमल; काल् तर्क विरल्कळ्—पैरों की उँगलियाँ; पाल् कटल् पिरन्त—क्षीराब्धि में उत्पन्न; चॆय्य पवळत्तै—लाल प्रवाल-खण्डों को; पञ्चि ऊट्टि—लाल लाक्षारस लगाकर; मेल् पट—उनके ऊपर; मतियम् चूट्टि—चन्द्रों को जड़ित कर; विरकु उर—शालीनता से युक्त रीति से; निरैत्त—बनाया गया, ऐसे हैं; कमलमुम्—कमल और; पिरवुम्—अन्य (उपमेय) वस्तुएँ; कण्टाल्—इनको देखें तो; एर्पिल—योग्य नहीं हैं; ॲन्पतु अन्रि—ऐसा कहना छोड़कर; इणै अटिक्कु—चरण-युगल की; उवमै ॲन्नो—उपमेय (वस्तु) क्या है। ७५२

उत्तम वीर! उसके मृदुल चरण की सुन्दर उँगलियों का लक्षण सुनो। क्षीरसागर में उत्पन्न श्रेष्ठ प्रवालखण्डों का लाक्षारस में सनकर उनके ऊपर चन्द्रों को टिकाकर बहुत ही कुशलता के साथ वे पंक्ति में बनायी गयी हैं। कमल और अन्य ऐसे पदार्थ, सोचने पर, उनके उपमान बनने के लिए योग्य नहीं हैं। यही कहना पड़ेगा। नहीं तो उसके दोनों चरणों के लिए योग्य उपमान कहाँ से मिलेगा? । ७५२

नीमॅया युणर्दि यॆय निरैवळै महळिर्क् कॆल्लाम्
वाय्मैया लुवमै याह मदियरि पुलवर् वैत्त
आमैया मॅऩ्ऱ पोदु मल्लत्त शॊल्लि ऩालुम्
यामयाऴ़् मऴ़लै याडऩ् पुरवडिक् किऴ़ुक्क मऩ्ऩो 753

ऐय–सौम्य; निरै वळै–पंक्तियों में पहने कंकणों की स्वामिनी; मकळिर्क्कु ऍल्लाम्–सभी स्त्रियों के (उत्चरणों के) लिए; उवमै आक–उपमा के रूप में; मति अऱि पुलवर्–अपनी सूझ से सभी समझनेवाले विद्वान्; वाय्मैयाल् वैत्त–सच्चे रूप से जिसका निर्धारण कर चुके हैं; आमैयाम्–कछुआ है; ऍऩ्ऱ पोतुम्–कहें तब भी; अल्लत्त–इसके विना अन्य भी; चॊल्लिऩालुम्–कहें; यामम् याऴ़्–अर्धनिशा में सुनायी देनेवाली याऴ़् (वीणा) के नाद के समान; मऴ़लैयाऴ़् तन्–मधुरभाषिणी सीता के; पुऱवटिक्कु–उत्चरणों के लिए; इऴ़ुक्कम्–अगौरव ही है; नी–तुम; मॅयाय्–सच; उणर्ति–मानो। ७५३

महिमावान हनुमान! पंक्तियों में कंकण पहननेवाली स्त्रियों के उत्चरणों के लिए अपनी बुद्धि से सभी विषयों का ग्रहण कर सकनेवाले विद्वान् लोगों ने कछुए को उपमान निर्दिष्ट किया है। वही कहो, या और कुछ कहो, अर्द्धरात्रि में मन को मोहनेवाली "याऴ़्" की ध्वनि के समान मधुर-वाणी सीतादेवी के उत्चरणों के लिए ऐसे उपमान कहना उन चरणों का अपमान ही होगा। ७५३

विऩैवरा लरिय कोदै पेदैमॅऩ् कणैक्काल् मॅय्य
निऩैवरा लरिय विऩ्ऩ नेर्पडप् पुलवर् पोऱ्ऱुम्
शिऩैवराल् पहऴ़ि यावम् नॅऱ्चिऩै यॆऩ्ऩुञ् जिऱ्पम्
ऍऩैवरार् पहरु मीट्ट यातुरैत् तिऩ्ब मॅऩ्ऩो 754

मॅय्य–सत्यसंध; विऩैवराल्–चित्रकारों द्वारा; अरिय–चित्रणदुर्लभ; कोतै–केश वाली; पेतै–अबोध देवी की; मॅल्–कोमल; कणैक्काल्–पिण्डलियाँ; निऩैवराल्–अतिशय सूझ वालों के लिए भी; अरिय–उनकी उपमा ढूंढ़ना कठिन हो; इऩ्ऩ–इस प्रकार की हैं; पुलवर्–विद्वान्; नेर् पट–समान कहकर; पोऱ्ऱुम्–जिनकी प्रशंसा करते हैं; चिऩै वराल्–वे गाभिन 'वराल' मछलियाँ भी; पकऴ़ि आवम्–शर-तरकश और; चिऩै नॅल्–धान का गाभा; ऍऩ्ऩुम्–ऐसे; चिऱ्पम्–कथन; ऍऩैवराल् पकरुम्–सबसे कहे जाते हैं; ईट्ट–युक्त भी हैं; यान् उरैत्तु–मैं भी कहूँ तो; इऩ्पम् ऍऩ्ऩो–आनन्द कहाँ। ७५४

सत्यवान! उस सीतादेवी की, जिसके केश का चित्रकारों को चित्र बनाना कठिन है, मृदुल पिंडलियाँ ऐसी हैं जिनका ऊहापोह करनेवाले बड़े चतुर लोग भी उपमान नहीं ढूँढ़ सकते हैं। साधारण रूप से विद्वान् लोग गर्भिणी वराल नामक मछली, तूणीर कोश को और धानसहित (धान के) पौधे आदि की बातें करते हैं। वे तो साधारण रूप से योग्य उपमान हो

सकते हैं। पर उनको मैं दुहराऊँ, इसमें क्या आनन्द मिल सकता है? । ७५४

अरम्बैयॅन् उळह मादर् कुरङ्गिनुक् कमैन्द वॉप्पिन्
वरम्बैयुङ् गडन्द पोदु मऱ्ऱुरै वहुक्क लामो
नरम्बैयु ममिऴ्द नाऱु नऱवैयु नळिर्नीर्प् पणैक्
करुम्बैयुङ् गडन्द शॉल्लाळ् कवार्किदु करुदु कण्डाय् 755

अळकम् मातर्–अलकालंकृत स्त्रियों के; कुरङ्कितुक्कु–ऊरुओं के लिए; अरम्पै ॲन्नुरु–कदली; अमैन्त–कथित; ऑप्पिन् वरम्पैयुम्–समानता की सीमा को भी; कटन्त पोतु–(सीता के ऊरु) लाँघ गये, तब; मऱ्ऱु उरै–और कोई बात; वकुक्कलामो–कही जा सकती है क्या; नरम्पैयुम्–तन्त्री (वीणा) को; अमिऴ्तम् नाऱुम्–अमृत की मिठास से भरे; नऱवैयुम्–मधु को; नळिर् नीर् पणै–शीतल जल-सिंचित खेतों के; करुम्पैयुम्–ईखों के रस को; कटन्त–जिसने अपनी मधुरता में हराया है; चॉल्लाळ्–ऐसी बोली वाली सीतादेवी के; कवार्कु–ऊरुओं के सम्बन्ध में; इतु–यह (मेरा कथन); करुतु–तुम सोच लो; (कण्टाय्–पूरक ध्वनि)। ७५५

अलकशोभिता स्त्रियों के ऊरुओं को कदली वृक्ष से उपमित करते हैं। लेकिन सीता के ऊरु इस उपमा को पार कर गये हैं। तो और कोई उपमान कहना हो सकता है क्या ? तंत्री नाद, अमृत-सम मधुर मधु, जल-समृद्ध खेतों में उत्पन्न ईख का रस —इन सबको जिस सीता के वचनों ने हरा दिया है, उसके ऊरु के सौन्दर्य को मेरी बातों से जान लो। ७५५

वाराऴिक् कलशक् कॉङ्गै वञ्जिपोल् मरुङ्गु लाडन्
ताराऴिक् कलैशा रल्हुल् रडङ्गडर् कुवमै तक्कोय्
पाराऴिप् पिडरिर् ऱाङ्गुम् पान्दळुम् पनिवॅन् ऱोङ्गुम्
ओराऴित् तेरुङ् गण्ड वुनक्कुना नुरैप्प दॅन्नो 756

तक्कोय्–सुयोग्य; वार्–अँगियाबद्ध; आऴि–चक्रवाक; कलचम्–और कलश-सम; कॉङ्कै–स्तनों और; वञ्चि पोल्–'वञ्जि' नाम की लता के समान; मरुङ्कुलाळ् तन्–कमर से भूषित (सीतादेवी) के; तार्–किंकिणी से अलंकृत; आऴि–गोल-गोल; कलै चार्–मेखला-वलयित; अल्कुल् तट कटऱ्कु–वरांग के विशाल सागर-प्रदेश को; उवमै–उपमा; आऴि पार्–सागर-मेखला पृथ्वी को; पिटरिल् ताङ्कुम्–अपने सिरों पर धारण करनेवाले; पान्तळुम्–शेषनाग को; पनि वॅन्ऱु–(और) हिम को जीतकर; ओङ्कुम्–उन्नत रहनेवाले; ओर् आऴि तेरुम्–एक चक्र (सूर्य) के रथ को; कण्ट–जिसने प्रत्यक्ष देखा है, उस; उनक्कु–तुमसे; नान् उरैप्पतु–मैं कहूँ, ऐसा; ॲन्नो–क्या है। ७५६

सुयोग्य ! अँगियाबद्ध, चक्रवाक और स्वर्णकलश-सम स्तन और "वंजी"नाम की लता के समान कमर से शोभित सीतादेवी के किंकिणी हारों से अलंकृत भग रूपी बड़े समुद्र का उपमान मैं क्या कहूँ ? तुमने समुद्र-मेखला पृथ्वी को अपने सिर पर धरनेवाले आदिशेष का फन देखा है। और

ओस को थमाकर ऊपर उठनेवाले सूर्य के एकचक्र-रथ का पीठ भी देखा है। (तुम जान सकते हो कि सीता का कटि-प्रदेश कैसे इनसे भी सुन्दर है।) ऐसे तुमसे मैं क्या कहूँ ? । ७५६

शट्टहन् दन्नै नोक्कि यारैयुम् जमैक्कत् तक्काळ्
इट्टिडै यिरुक्कुन् दन्मै यियम्बक्केट् टुणर्दि यॅन्निन्
कट्टुरैत् तुवमै काट्टक् कट्पोरि कदुवा कैयिल्
तॊट्टवॅर् कुणर लामद् रुण्डॅन्नुज् जॊल्लु मिल्लै 757

चट्टकम् तन्नै नोक्कि–रूप-सौन्दर्य देखकर (आदर्श बनाकर); यारैयुम् चमैक्क–कितनी भी बड़ी सुन्दरी की सृष्टि की जा सके; तक्काळ्–ऐसी रूप वाली सीता की; इट्टु इडै–पतली कमर; इरुक्कुम् तन्मै—जैसा रहता है, वह प्रकार; इयम्प केट्टु–मैं कहूँ और तुम सुनो; उणर्ति—और समझो; ॲन्निन्–तो; कट्टु उरैत्तु–निश्चित रूप से कहकर; उवमै काट्ट–उपमा दिखाना हो तो; कण् पोरि–आँख की इन्द्रिय; कतुवा–देख नहीं सकती; कैयिल् तॊट्ट–हाथ से जिसने स्पर्श किया है; ॲर्कु–उस मुझसे; उणरल् आम्–साध्य हो सकती है; मड्ड उण्टु–अन्यथा, 'है'; ॲन्नुम् चॊल्लुम्–ऐसा कथन; इल्लै–नहीं। ७५७

सीता के रूप को नमूना बनाकर ब्रह्मदेव कितनी ही बड़ी सुन्दरी की सृष्टि कर सकते हैं। ऐसी मनोरम रमणी की छोटी कमर का लक्षण मैं कहूँ और तुम सुनो —यह कठिन है। क्योंकि आँखों से देखा जाय, तभी न कल्पना के सहारे उपमान ढूँढ़ा जा सकता है। सिर्फ़ मैंने स्पर्श करके देखा है। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि उसके कमर है। अन्यथा उसकी कमर के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है। ७५७

आलिलै पडिवन् दीट्टु मैयनुण् पलहै नॊय्य
पाल्निड्रत् तट्टम् वट्टक् कण्णडि पलवु मिन्न
पोलुमॅन् ड्रुरैत्त पोदुम् पुन्नैन्दुरै पोदुमै पार्क्किन्
एलुमॅन् ड्रिशैक्कि नेला विदुवयिड् ड्रियर्कै यिन्नुम् 758

पोतुमै पार्क्किन्–सामान्य रूप से देखें तो; आल् इलै–वटपत्र; पटिवम् तीट्टुम्–चित्र खींचने के लिए उपयुक्त; ऐय नुण् पलकै–बहुत पतला फलक; नॊय्य–पतली; पाल् निड्रम्–दुग्धवर्ण; तट्टम्–(चाँदनी की) थाली; वट्टम् कण्णटि–गोलाकार दर्पण; इन्न पलवुम्–और ऐसी अन्य वस्तुओं; पोलुम्–के समान रहेगा (उदर); ॲन्ड्र उरैत्त पोतुम्–ऐसा कहने पर भी; पुन्नैन्तुरै–यह सब मनगढ़न्त कथन हैं; एलुम् ॲन्ड्र–(उपमित) हो सकते हैं, ऐसा; इचैक्किन्–कहना चाहें तो; एला—नहीं हो सकते; इतु—यह; वयिड्ड इयर्कै–उनके उदर की प्रकृति है; इन्नुम्–और। ७५८

साधारण रूप से देखने पर स्त्रियों का उदर वटपत्र से, पतले चित्र-पलक से, बहुत ही पतले दुग्ध-सम श्वेत चाँदी की थाली से और गोल आईने

से उपमित किया जाता है। लेकिन यह कोरी कल्पना है। वे उसकी समानता कर सकते हैं, ऐसा कहा जायगा क्या ? नहीं। समानता नहीं कर सकते, क्योंकि उसके उदर की प्रकृति ऐसी है। ७५८

शिङ्गलिल् शिरुहू दाळि नन्दियिन् रिरट्पूच् चेर्न्द
पॉङ्गुपॉर् रोंळैयॅन् रालुम् बुल्लिय वुवमैत् तामाल्
अङ्गव ळुन्दि यॉक्कुञ् जुळियॅनक् कणित्त दुण्डाल्
गङ्गयै नोक्किच् चेरि कडलिनु नॅडिदु कर्रोय् 759

कटलितुम्–सागर से भी; नॅटितु–विशाल (शास्त्रों के); कर्रोय्–विद्वान्; चिङ्कल् इल्–सिकुड़न-रहित; चिरु कूताळि–छोटा 'कूदाली' का फूल; नन्तियिन्–'नॅदि' नाम के पौधे का; तिरळ् पू–वर्तुलाकार फूल; चेर्न्त–इनमें रहनेवाले; पॉङ्कु पॉत् तॉळै–बड़ा सुन्दर गड्ढा (सा भाग); ॲन्ड्रालुम्—कहें तो भी; पुल्लिय उवमैत्तु–क्षुद्र उपमाएँ होगा; चुळि–(गंगा नदी की) भँवर; अवळ्–उसकी; उन्ति ऑक्कुम्–नाभि की समानता करेगी; ॲत–ऐसा; अङ्कु—वहाँ (जब मैंने गंगा पार की तब); कणित्तनु उण्टु–मैंने विचारा था; कङ्कयै नोक्कि–(इसलिए) गंगा (की भँवर) को देखकर; चेरि–सोच 'चलो'। ७५९

सागर से भी विशाल विद्या के स्वामी! सीता की नाभि का उपमान असंकुचित "कूदाली" का फूल, या "नंदिवर्त" नाम के गोल फूल का सुन्दर कटोरा सा भाग कहा जा सकता है। लेकिन वे अल्प उपमान हैं। जब मैंने गंगा पार की तब मेरे मन में यह भाव उठा कि गंगा की भँवर सीता की नाभि की समानता कर सकती है। इसलिए तुम भी गंगा का स्मरण कर उसकी नाभि को पहचान चलो। ७५९

मयिरॉळुक् कॅनवॅन् रुण्डाल् वल्लिशेर् वयिर्रित् मर्रॅन्
उयिरॉळुक् कदर्कु वेण्डु मुवमैयॉन् रुरैक्क वेण्डिन्
शॅयिरिल्शिर् रिडैया युर्र शिरुहॉडि नुडक्कन् दीरक्
कुयिलुरुन् दमैय वैत्त कॉळ्हॉम्बॅन् रुणर्न्दु कोडि 760

वल्लि चेर्–वल्लरी-सम; वयिर्रित्–उदर की; मयिर् ऑळुक्कु–रोमराजी; ॲत ऑन्रु उण्टु–ऐसा है; ॲन् उयिर् ऑळुक्कु–मेरे जीवन की ही राजि (रेखा) है; अतर्कु–उसकी; वेण्टुम् उवमै–सर्वमान्य उपमा; ऑन्रु–एक; उरैक्क वेण्टित्–कहना हो; चॅयिर् इल्–अनिन्द्य; चिरु इटैयाय्–क्षीण कमर; उर्र–जो बनी; चिरु कॉटि–छोटी लता का; नुटक्कम् तीर–संकोच छोड़ बढ़े, इस वास्ते; कुयिल् उरुत्तु–खूब गाड़कर; अमैय वैत्त–स्थापित; कॉळ् कॉम्पु–अलान; ॲन्रु–ऐसा; कोटि–समझ लो। ७६०

लतासमाना देवी के दिव्य उदर में रोमराजी है। उसको मेरी ही जान का प्रवाह समझो। उसका सर्वमान्य उपमान कहना हो तो वह

असम्भव है। अनिंद्य कमर रूपी छोटी लता अपनी थकावट उतार ले, उसके लिए गड़े हुए आलम्ब के रूप में उसको समझ लो। ७६०

अल्लियून् ऱिडुमॅन्ऱञ्जि यरविन्दन् दुऱन्दाट् कम्बॊन्
वल्लिमून्ऱुळवाऱ् कोल वयिऱ्ऱिन्मऱ् ऱवैयु मार
विल्लिमून्ऱुलहिन् वाऴ् मादरुन् दोऱ्ऱ सॅय्म्मै
शॊल्लियून्ऱियवाम् वॆऱ्ऱि वरैयॆनत् तोन्ऱु मन्ऱे 761

अल्लि–पंखुड़ियाँ; ऊन्ऱिटुम्–चुभेंगी; ऍन्ऱु अञ्चि–ऐसा डरकर; अरविन्तम्–अरविन्द को; तुऱन्ताट्कु–जिसने त्यागा उस सीता के; कोलम् वयिऱ्ऱिल्–मनोहर उदर में; अम् पॊन्–सुन्दर स्वर्ण रंग की; मून्ऱु वल्लि–त्रिवली; उळ–हैं; अवैयुम्–वे बल; मारन् विल्लि–मन्मथ धनुर्धर द्वारा; मून्ऱु उलकिनुम्–तीनों लोकों में; वाऴुम्–रहनेवाली; मातर्–स्त्रियों का; तोऱ्ऱ–इनसे हारने का; मॆय्म्मै–सत्य समाचार; चॊल्लि–ढिंढोरा पीटकर; ऊन्ऱिय–स्थापित; वॆऱ्ऱि वरै–विजयसूचक लकीरें; आम्–हैं; ऍन–ऐसा; तोन्ऱुम्–विळङ्कुम्–लगती है। ७६१

सीता वही कमला है, जिसने इस डर से कमल छोड़ा कि उसकी पंखुड़ियाँ चुभेंगी और दर्द देंगी। उसके मनोरम उदर में त्रिबली है। वह स्वर्णलता के समान है। वे तीन बल धनुवीर मन्मथ की खींची हुई रेखाएँ हैं, जिनको उसने इस तथ्य को घोषित करने के लिए खींचा था कि तीनों लोकों की वासिनी स्त्रियाँ इस सीता के सामने सौन्दर्य में हार गयीं। ७६१

शॅप्पॆन्बॆन् कलश मॅन्बॆन् शॆव्विळ नीरुन् देर्वॆन्
तुप्पॊन्ऱु तिरळ्शू दॆन्बॆन् शॊल्लुवॆन् ऱुम्बिक् कॊम्बैत्
तप्पिन्ऱिप् पहलित् वन्द शक्कर वाह मॆन्बॆन्
ऑप्पॊन्ऱु मुलैक्कुक् काणेन् पलनिनैन् दुऴल्वॆ निन्नुम् 762

मुलैक्कु–उरोजों की; ऑप्पु–उपमा; ऑन्ऱुम् काणेन्–कुछ नहीं देखता; चॆप्पु–रत्न की डिबिया; ऍन्पॆन्–कहूँगा; कलचम्–स्वर्ण-कलश; ऍन्पॆन्–कहूँगा; चॆव् इळनीरुम्–लाल डाभ; तेर्वॆन्–विचार करूँगा; तुप्पु ऑन्ऱु–प्रवाळ तराशकर; तिरळ्–गोल बनाया हुआ; चूतु ऍन्पॆन्–जुए का गोटा कहूँगा; तुम्पि–हाथी के; कॊम्पै–दन्त-द्वय; चॊल्लुवॆन्–कहूँगा; तप्पु इन्ऱि–विना नागा के; पकलिल् वन्त–अह (दिन) में आये; चक्करवाकम् ऍन्पॆन्–चक्रवाक कहूँगा; इन्नुम् पल निनैन्तु–और अनेक (उपमाएँ) सोचता; उऴल्वॆन्–फिरूँगा। ७६२

स्तनों का कोई उपमान मैं नहीं देखता। इसलिए रत्न-डिबिया कहता हूँ, कलश कहता हूँ, लाल और कच्चे नारियल के फलों को चुनता हूँ और प्रवाल का तराशकर गोल बनाया हुआ गोटा कहता हूँ। कभी गजदन्त-युगल को, कभी दिन में अचूक रीति से आये चक्रवाक को कहता हूँ। और कितने ही अन्य उपमानों को सोचता फिरता हूँ। ७६२

करुम्बुकण् डालुम् कान्शेर् काम्बुकण् डालु मालि
अरुम्बुकण् डारै शोर वऴङ्गुवे नरिव दुण्डो
शुरुम्बुकण् डालुङ् गोदै तोळिणैक् कुवमै शॉल्ल
इरुम्बुकण् डन्नैय नॅञ्ज मॅन्नक्किलै यिशैप्प वॅन्नो 763

करुम्पु कण्टालुम्–ईख को देखते समय और; कान् चेर्–वनों में उत्पन्न; काम्पु कण्टालुम्–बाँस को देखते समय; कण् अरुम्पु–आँखों से निकली; आलि तारै–अश्रुधारा; चोर–गिराते हुए; अऴुङ्कुवेन्–दुःखमग्न हो रहा हूँ; अरिवतु उण्टो–(उसको छोड़कर) उपमा जानता हूँ क्या; चुरुम्पु कण्टु–भ्रमर देखकर; आलुम्–जिन पर मँड़राते हुए गुंजारते हैं, उन; कोतै तोळ् इणैक्कु–केशों से भूषित सीता के स्कन्धद्वय की; उवमै चॉल्ल–उपमा कहूँ; ॲॅनक्कु–मेरे; इरुम्पु कण्टन्नैय–लोहे के समान; नॅञ्चम् इलै–मन नहीं है; इचैप्पतु ॲॅन्नो–फिर कहूँ क्या। ७६३

ईख को देखता हूँ या जंगल में बाँसों को देखता हूँ तो मेरी आँखों से अश्रु की धारा बहती है और मैं उद्विग्न हो जाता हूँ। (ऐसा रोने के सिवा) उसके कन्धों के उपमान को समझ सकता हूँ क्या ? उस सुकेशिनी के दोनों कन्धों की, जिन पर भ्रमर गुंजार करते हैं, उपमा, सोच-समझकर बताने के लिए मेरे पास लोहा-सा दिल नहीं है। फिर मैं क्या कहूँ ? कैसे कहूँ ? । ७६३

मुन्गैये यॊप्प दॊन्ऱुम् उण्डुमून् ऱुलहत् तुळ्ळुम्
ॲॅन्गैये यिऴुक्क मन्ऱे यियम्बिनुङ् गान्द ळॅन्ऱल्
वन्गैयाऴ् मणिक्कै यॅन्ऱन् मऱ्ऱॊन्ऱै युणर्त्त लन्ऱि
नन्गैया डडक्कै यामो नलत्तिन्मे नलमुण् डामो 764

मून्ऱु उलकत्तुळ्ळुम्–तीनों लोकों में; मुन् कै–अग्रहस्त को; ऑप्पतु–समता करनेवाली; ऑन्ऱुम्–एक (वस्तु); उण्टु–है; ॲॅन्कैये–ऐसा कहना ही; इऴुक्कम् अन्ऱे–गलत है न; इयम्पिनुम्–कहें तो भी; मणि कै–उसके सुन्दर अग्रहस्त को; कान्तळ् ॲॅन्ऱल्–'कान्दळ' पुष्प कहना; वन्कै–निर्मम वचन है; याऴ् ॲॅन्ऱल्–'याऴ' कहना; मऱ्ऱु ऑन्ऱै उणर्त्तल्–दूसरी किसी वस्तु को कहना होगा; अन्ऱि–उसके विना; नन् कैयाळ्–सुन्दर हाथों वाली सीता के; तटक्कै आमो–विशाल हस्त होंगे क्या (वे); नलत्तिन् मेल्–सुन्दरता से बढ़कर; नलम् उण्टामो–सुन्दर हो सकता है क्या। ७६४

तीनों लोकों में सीता के (अग्र) हस्त से उपमित होने योग्य कोई चीज़ है—यह कहना ही दोषपूर्ण है न ? इस मजबूरी से उसके सुन्दर हाथों को "कांदळ" पुष्प कहना निर्मम वचन है। "याऴ" कहूँ तो वह किसी और बात का संकेत हो जायेगा। इसके सिवा वे देवी के हस्तों के उपमान हो सकेंगे क्या ? सौन्दर्य से बढ़कर कोई चीज सुन्दर हो सकती है कहीं ? । ७६४

एलक्को डीन्ऱ पिण्डि यिळन्दळिर् किडक्क याणर्क्
कोलक्कर् पहत्तिन् कामर् कुऴैनरुङ् गमल मॆन्बू
नूलोक्कु मरुङ्गु लाड नूबुर मलम्बु कोलक्
कालुक्कुत् तोलैयु मॆन्ऱाऱ् कैक्कॊप्पु वैक्क लामो 765

पिण्टि—अशोक के; एल कोट्ु—सुबासित शाखाओं के; ईन्ऱ—दिए गये; इळम् तळिर्—छोटे पल्लव; किटक्क—एक ओर रहें; याणर् कोलम्—अनोखे सौंदर्य वाले; कऱ्पकत्तिन्—कल्पतरु के; कामर् कुऴै—मनोहर पत्ते और; कमलम् नऱुम् मॆन् पू—कमल के सुगन्धित और कोमल फूल; नूल् ऒक्कुम्—सूत्र (सूक्ष्म); मरुङ्कुलाऴ् तन्—कमर वाली सीता के; नूपुरम् अलम्पुम्—जिन पर से नूपुर नाद करते हैं, उन; कोलम् कालुक्कुम्—अतिसुन्दर चरणों के सामने; तोलैयुम्—हारकर हट जायँगे; ऎन्ऱाल्—तो; कैक्कु ऒप्पु—उसके हाथों की उपमा; वैक्कल्—कहना; आमो—(ठीक) होगा क्या। ७६५

अशोक-तरु की सुबासित शाखाओं में उगे पल्लव एक ओर रहें। नित-नवीन कल्पतरु के प्यारे पल्लव और सुगन्धित और कोमल कमल के फूल भी और सूत्र-सी कमर वाली सीता के नूपुर-क्वणन-द्योतित सुन्दर चरणों की उपमा नहीं बन सकते और हारकर पिछड़ जाते। तो उनको सीता के हस्तों से उपमित करना युक्त हो सकता है क्या ? । ७६५

वॆळ्ळिय मुऱुवऱ् चॆव्वाय् विळङ्गिऴै यिळम्बॊऱ् कॊम्बिन्
वळ्ळुहिर्क् कुवमै नम्मान् मयर्वऱ वहुक्क लामो
ऎळ्ळुदिर् नीरे मूक्कै यॆन्ऱुकॊण् डिवऱि यॆन्ऱुम्
किळ्ळैहण् मुरुक्किन् पूवैक् किऴिक्कुमे लुरैक्क लामो 766

वॆळ्ळिय मुऱुवल्—श्वेत दशन; चॆव्वाय्—अरुण अधर; विळङ्कु इऴै—(कान्ति के साथ) रहनेवाले आभूषण; इळ पॊन्—(इनसे युक्त) बाल, सुन्दर; कॊम्पिन्—पुष्पलता-सी जानकी के; वळ् उकिर्क्कु—तीक्ष्ण नखों की; उवमै—उपमा; नम्माल्—हमसे; मयर्वु अऱ—असंशय रीति से; वकुक्कलामो—दी जा सकती है क्या; किळ्ळैकळ्—तोते; नीरे—तुम; मूक्कै—हमारी चोंचों की; ऎळ्ळुतिर्—अवहेलना (इस बात पर कि हमारी चोंचें सीताजी के नखों की बराबरी नहीं कर सकतीं) करते हो; ऎन्ऱु कॊण्टु—ऐसा मानकर; इवऱि—गुस्सा करके; मुरुक्किन् पूवै—(काँटेदार) पलाशफूलों को; ऎन्ऱुम्—सदा; किऴिक्कुमेल्—चीरते हैं तो; उरैक्कलामो—(तोतों की चोंचों को सीताजी के नखों की उपमा) कह सकते हैं क्या। ७६६

श्वेत दन्त, लाल अधर और कान्तिपूर्ण आभरण से सुशोभित बाल स्वर्णलता, जानकी के तेज़ नखों की उपमा हम जैसों से भ्रमरहित रीति से रची जा सकती है क्या ? शुक, कंटक-पलाश-पुष्पों को सीता के अधर मानकर चोंचों से नोचकर फाड़ते हैं—वह इसलिए कि वे उनसे इस बात से क्रुद्ध हैं कि वे पुष्प उनकी चोंचों की निन्दा करते हैं। तो शुक-चोंच को उपमान कह सकते हैं क्या ? । ७६६

अङ्गैयु मडियुङ् गण्डा लरविन्द निऩैयु मापोल्
शॆङ्गदिर् शिदऱि नीलञ् जॆरुक्किय दॆय्व वाट्कण्
मङ्गैदऩ् कळुत्तै नोक्कि वळरिळङ् गमुहुम् वारिच्
चङ्गमु निऩैदि यायि ऩवैयॆऩ्ऱु तुणिदि तक्कोय् 767

तक्कोय्–सुयोग्य; अम् कैयुम्–सुन्दर हाथों और; अटियुम् कण्टाल्–चरणों को देखें तो; अरविन्तम् निऩैयुमा पोल्–जैसे अरविन्द याद आते हैं, वैसे ही; चॆम् कतिर् चितऱि–लाल किरणें बिखेरते हुए; नीलम् चॆरुक्किय–नीले रंग से युक्त; तॆय्वम्–दिव्य; वाळ् कण् मङ्कै–तलवार-सी आँखों वाली सीता के; कळुत्तै नोक्कि–ग्रीवा को देखकर; वळर् इळ कमुकुम्–ऊँचा उगनेवाले सुपारी के पेड़ और; वारि–समुद्र में उत्पन्न; चङ्कमुम्–शंख को; निऩैति आयिऩ्–(उपमेय) सोचोगे तो; नवै ऎऩ्ऱु–गलती है, ऐसा; तुणिति–निश्चय कर लो। ७६७

सुयोग्य मारुति ! सीता के सुन्दर हस्त और चरणों को देखें तो अरविन्द का स्मरण जैसे हो आता है, वैसे ही लाल कान्ति बिखेरते हुए नीले रंग वाले दिव्य तलवार-सम नेत्रों वाली सीता के कण्ठ को देखकर ऊँचे उगनेवाले गुवाक तरु और समुद्र में मिलनेवाले शंख को स्मरण करोगे तो समझ लो कि वे दोषपूर्ण हैं। ७६७

पवळमुङ् गिडैयुङ् गॊव्वैप् पऴऩुम्बैङ् गुमुदप् पोदुम्
तुवळ्विल विलवम् कोब मुरुक्कॆऩ्ऱित् तॊडक्कञ् जालत्
तवळमॆऩ् ऱुरैक्कुम् वण्णञ् जिवन्दुदेऩ् ऱदुम्बु माहिऩ्
कुवळैयुण् कण्णि वण्ण वायदु कुऱियु मः(ह्)दे 768

कुवळै उण् कण्णि–कुवलय-सम और काजल-लगी हुई आँखों वाली सीताजी का; वण्णम् वाय् अतु–सुन्दर मुख; पवळमुम्–प्रवाल; किटैयुम्–'किडै' (नाम की जल-लता) और; कॊव्वै पऴऩुम्–बिम्बफल; पै कुमत पोतुम्–ताजा कुमुद-सुमन और; तुवळ्वु इल–जिसमें सिकुड़न नहीं पड़ा हो; इलवम्–वह सेमर का फूल; कोपम्–इन्द्रगोप (कीड़े); मुरुक्कु–काँटेदार पलाश के फूल; ऎऩ्ऱ इ तॊटक्कम्–ये आदि; चाल तवळम्–(इसके सामने) धवल ही हैं; ऎऩ्ऱु उरैक्कुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; चिवन्तु–लाल बना; तेऩ् ततुम्पुम्–और शहद से भरा रहता है; आकिऩ्–तो; कुऱियुम् अ.·.तु–निर्देश (उपमान) भी वही है। ७६८

नीलोत्पल-निभ और अञ्जनरंजित आँखों वाली सीता का मुख (अधर) इतना लाल है कि उसके सामने प्रवाल "किडै" (खुखरी ?) नाम की लता का तना, बिम्बफल, ताजा कुमुद, नवीन सेमर का फूल, इन्द्रगोप कीड़ा आदि सभी उसके सामने श्वेत कहे जायँगे। वह मधुभरा और शोभायमान है। बल्कि उसका उपमान भी वही है। ७६८

शिवन्ददो रमुद मिल्लैत् तेऩिल्लै युळवॆऩ् ऱालुम्
कवर्न्दपो दऩ्ऱि युळ्ळ निऩैप्पवोर् कळिप्पु नलुहा

पवर्न्दवा णुदलि नाडन् पवळवाय्क् कुवमै पावित्
तुवन्दपो दुवन्द वण्ण मुरैत्तपो दुरैत्त दामो 769

चिवन्ततु ओर्–लाल रंग का कोई; अमुतम् इल्लै–अमृत नहीं; तेन् इल्लै–शहद नहीं; उळ अँन्ऱालुम्–हों तो भी; कवर्न्त पोतु अन्ऱि–उठाकर खाये विना; उळ्ळम् निनैप्प–मन में सोचने मात्र से; ओर् कळिप्पु–अतुल आनन्द; नल्का–नहीं देंगे; पवर्न्त–सुनिर्मित; वाळ् नुतलिनाळ् तन्–उज्ज्वल ललाट वाली सीता के; पवळम् वाय्क्कु–प्रवाल-सम मुख (अधरों) का; उवमै पावित्तु–उपमान सोचकर; उवन्त पोतु–जब मन हुआ तब; उवन्त वण्णम्–अपनी कल्पना के अनुरूप; उरैत्त पोतु–कहा जाय तब; उरैत्ततु–वैसा सही कहा गया; आमो–हो जायगा क्या। ७६६

लाल रंग का अमृत नहीं होता। वैसा शहद भी नहीं होता। अगर होंगे तो भी उनको उठाकर विना खाये स्मरणमात्र से वे आनन्द नहीं देते। सुरचित, प्रकाशमय ललाट वाली सीता के प्रवालाधरों का उपमान सोचकर जैसा मन को रुचता है, वैसा कहने से ठीक तरह से कहना हो जायेगा क्या ? । ७६९

मुल्लैयु मुरुन्दु मुत्तु मुऱुवलॆन् ऱुरैत्त पोदु
शॊल्लैयु ममुदुम् बालुन् तेनुमॆन् ऱुरैक्कत् तोन्ऱुम्
अल्लदॊन् ऱाव दिल्लै यमुदिऱ्कु मुवमै युण्डो
वल्लैये लऱिन्दु कोडि माऱिला वाऱु शान्ऱोय् 770

माऱु इला आऱु–अनुपम अनेक प्रकारों से; चान्ऱोय्–श्रेष्ठ; मुऱुवल्–सीताजी के दाँत; मुल्लैयुम्–कुन्दकलियाँ और; मुरुन्तुम्–मोरपंख (की रीढ़ का) सफ़ेद मूल; मुत्तुम्–और मोती हैं; ऍन्ऱु उरैत्त पोतु–ऐसा (उपमा) कहने पर; चॊल्लैयुम्–उसके वचन को; अमुतुम्–अमृत और; पालुम्–दूध और; तेनुम्–शहद को; ऍन्ऱु उरैक्क–(उपमान के रूप में) कहने को; तोन्ऱुम्–मन में सूझेगा; अल्लतु–(कहने का रीतिपालन मात्र) होने के सिवा; आवतु ऑन्ऱु इल्लै–सधता कुछ नहीं; अमुतिऱ्कुम् उवमै उण्टो–अमृत का भी उपमान है क्या; वल्लैयेल्–सामर्थ्य हो तो; अऱिन्तु कोटि–जान लो। ७७०

अनुपम अनेक प्रकार से श्रेष्ठ ! सीता के दाँत कुन्दकलियों और मोर-पंख के सफ़ेद नोक की समानता करेंगे। तो उसकी वाणी की तुलना में अमृत, दूध और शहद को कहने का विचार उठेगा। फिर कहने के लिए कहना छोड़कर (उपमा का) कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। अमृत का भी कोई उपमान है क्या ? तुममें सामर्थ्य हो तो तुम ही दाँतों का सौन्दर्य अनुमान कर लो। ७७०

ओदियु मॆळ्ळुन् दॊळ्ळैक् कुमिळ्मूक् कॊक्कु मॆन्ऱाल्
शोदिशॆय् पॊन्नु मिन्नु मणियुम्बोऱ् ऱुळङ्गित् तोन्ऱा

एदुवु मिल्लै वल्ला रॆळ्दुवार्क् कॊळ्द वॊण्णा
नोदियै नोक्कि नीये निनैदिया नॆडिदु काण्बाय् 771

नॆटितु काण्पाय्–दीर्घदर्शी; ओतियुम्–गिरगिट (की नाक); ऍळ्ळुम्–तिल का फूल और; तॊळ्ळै कुमिळ्म्–रंध्रसहित 'कुमिल' नामक फूल; मूक्कु–सीता की नाक की; ऑक्कुम् ऍन्ऱाल्–समानता करेंगे कहें तो; चोति चॆय्–ज्योतिमय; पॊन्ऩुम्–स्वर्ण; मिन्ऩुम्–चमकती; मणियुम् पोल्–मणि की तरह; तुळङ्कि तोन्ऱा–(वे) प्रभापूर्ण नहीं दिखते; एतुवुम् इल्लै–उनमें हेतु भी नहीं है; ऍळुतुवार् वल्लार्क्कु–चित्र खींचने में समर्थ (चितेरे) के लिए भी; ऍळुत ऑण्णा–जिसका चित्र लिखना असम्भव है, उस; नोतियै नोक्कि–प्रकार को देखकर; नीये निनैति–तुम ही कल्पना कर लो। ७७१

दीर्घदर्शी ! गिरगिट, तिल का फूल, रन्ध्रसहित "कुमिळ्" नामक फूल आदि देवी की नासिका की समानता करेंगे —अगर ऐसा कहें तो वे कान्तिमय स्वर्ण और चमकनेवाली मणियों के समान शोभासहित नहीं दिखते। उनमें ऐसी शोभा का कोई हेतु भी नहीं है। इस नासिका की सुन्दरता के, जिसका चतुर चितेरा भी चित्रण नहीं कर सकता, प्रकार को तुम ही नेक रीति से सोच-समझ लो। ७७१

वळ्ळैहत् तरिहै वाम मयिर्विनैक् करुवि यॆन्ऩप्
पिळ्ळैह ळुरैत्त वॊप्पैप् पॆरियव रुरैक्किऩ् पित्ताम्
वॆळ्ळिवॆण् डोडु शॆय्द विळुत्तवम् विळैन्द दॆन्ऱे
उळ्ळुदि युलहुक् कॆल्ला मुवमैक्कु मुवमै युण्डो 772

वळ्ळै–'वळ्ळै' (नाम की जललता के) पत्र; कत्तरिकै–कैंची (रूपी); वामम्–अच्छा; मयिर् विनै करुवि–बाल बनाने का औजार; ऍन्ऩ–ऐसा; पिळ्ळैकळ्–बालकों के; उरैत्त–कथित; ऑप्पै–उपमान को; पॆरियवर्–बड़े विद्वान् लोग; उरैक्किन्–कहें तो; पित्तु आम्–पागलपन होगा; वॆळ्ळि वॆण् तोटु–अत्यधिक श्वेत कर्णाभरण; चॆय्त–कृत; विळु तवम्–महान तप ने; विळैत्ततु–पैदा किया; ऍन्ऱे उळ्ळुति–ऐसा ही समझो; उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे लोकों के; उवमैक्कुम्–उपमान का भी; उवमै उण्टो–अन्य उपमान हो सकता है क्या। ७७२

स्त्रियों के कानों को "वळ्ळै" नाम की जललता के पत्र के साथ और बाल काटनेवाली कैंची के साथ लोग उपमित करते हैं। ये बालकों के कहे उपमान हैं। बुद्धिमान बड़े लोग अगर ऐसा कहें तो वह पागलपन है। श्वेत चाँदी के ताटंकों ने कड़ी तपस्या की थी; वे ही सीता के कान के रूप में पैदा हो गयी हैं। सीता के कान दुनिया की सभी वस्तुओं के लिए उपमान हैं। उनके लिए और कोई उपमान हो सकता है क्या ? । ७७२

पॆरियवाय्प् परवै यॊव्वा पिऱिदॊऩ्ऱु नित्तैन्दु पेश
उरियवा यॊरुव रुळ्ळत् तॊड्ड्गुव वल्ल वुण्मै
तॆरियवा यिरक्का नोक्किऩ् ऱेवर्क्कुन् देव ऩॆऩ्ऩक्
करियवाय् वॆळिय वाहुम् वाट्टडङ् गण्ग ळम्मा 773

तेवर्क्कुम् तेवऩ्–देवदेव (श्रीनारायण); ऎऩ्ऩ–जैसा; करिय आय्–काली बनकर; वॆळिय आकुम्–श्वेत भी रहनेवाली; वाळ् तट कण्कळ्–तलवार-सम विशाल आँखों को; उण्मै तॆरिय–सच्चाई जानने हेतु; आयिरम् काल् नोक्किऩ्–सहस्र बार देखें तो; पॆरिय आय्–विशाल; परवै–समुद्र भी; ऒव्वा–उपमान नहीं बन सकता; पिऱितु ऒऩ्ऱु–फिर अन्य कोई; नित्तैन्तु पेच–सोचकर कहने योग्य; ऒरुवर् उळ्ळत्तु–किसी के मन में; ऒट्टुक्कुव अल्ल–समानेवाले नहीं हैं; अम्मा–मैया री। ७७३

देवाधिदेव विष्णु के समान नीले और श्वेत रंग से युक्त तलवार-सम उसकी बड़ी आँखों का सच्चा रूप देखने के इरादे से सहस्र बार देखो, तो भी वे विशाल सागर के उपमान को मान ही नहीं सकेंगी। उनकी आँखें ऐसी नहीं, जिनको कोई पूर्ण रूप से मनोगत करके अन्य उपमान द्वारा वर्णित कर सकें। ७७३

केळॊक्कि ऩऩ्ऱि यॊऩ्ऱु किळत्तिऩाऱ् कीऴ्मैत् तामे
कोळॊक्कु मॆऩ्ऩि नल्लाऱ् कुऱियॊप्पक् कूऱिऱ् ऱऩ्ऱाल्
वाळॊक्कुम् वडिक्क णाडऩ् पुरुवत्तुक् कुवमै वैक्किऩ्
ताळॊक्क वळैन्दु निऱ्प विरण्डिल्लै यऩड्ग शावम् 774

वाळ् ऒक्कुम्–तलवार-सदृश; वटि कणाळ्–सुन्दर आँखों वाली; तऩ् पुरुवत्तुक्कु–की भौंहों की; उवमै वैक्किऩ्–उपमा कहें तो; केळ् ऒक्किऩ् अऩ्ऱि–परस्पर सम वे अपने ही समान हैं, इसके सिवा; ऒऩ्ऱु–अन्य किसी वस्तु को; किळत्तिऩाल्–उपमान कहें तो; कीऴ्मैत्तु आम्–अल्प ही होगा; कोळ् ऒक्कुम्–हमारी (मनोधर्म) कल्पना में समानता होगी; ऎऩ्ऩिऩ् अल्लाल्–उसे छोड़कर; कुऱि ऒप्प–उपमा-धर्म के अनुसार; कूऱिऱ्ऱु अऩ्ऱाल्–कहा गया नहीं होगा; ताळ् ऒक्क–दोनों छोर समान हैं; वळैन्तु निऱ्प–ऐसा झुके हुए जो हैं; इरण्टु अनङ्क चापम्–वे दो अनंगचाप; इल्लै–संसार में (प्राप्य) नहीं हैं। ७७४

तलवार के समान तीक्ष्ण नेत्रों वाली सीताजी की भौंहों की उपमा रचना चाहें तो कठिन है। क्योंकि परस्पर सम वे अपने ही समान हैं। दूसरी वस्तु को लेकर उपमित करने का प्रयास नीच काम है। ऐसा करना अपने-अपने विचार के अनुरूप कथन हो सकता है, पर सचमुच उपमा का कार्य अर्थपूर्ण नहीं होगा। दोनों ओर के दण्ड सुडौल रूप से झुके रहें —ऐसे दो अनंगचाप दुनिया में नहीं हैं। (इसलिए अनंगचाप भी कहा नहीं जा सकता।)। ७७४

नऩ्ऩाळु नळिऩ नाणु मुहत्तिऩळ् नुदलै नाडिप्
पऩ्ऩाळुम् पऩ्ऩि याऱ्ऱा मदियॆऩुम् पण्ब दाहि
मुऩ्ऩाळिऩ् मुळैवॆण् डिङ्गण् मुळनाळुङ् गुऱैये याहि
ऎऩ्ऩाळुम् वळरा दॆऩ्ऩि निऱैयॊक्कु मियल्बिऱ् ऱामे 775

मुन् नाळिल्–(शुक्ल पक्ष के) आरम्भ के दिनों में; मुळै–उदित; वॆळ् तिङ्कळ्–श्वेत (कला-चाँद); नल् नाळ्–अच्छे दिवा में; नळिनमुम्–कमल भी; नाणुम्–शरमायेगा; मुकत्तिनळ्–ऐसी आनना; नुतलै–के ललाट को; नाटि–जाँच करके; पल् नाळुम् पन्नि–अनेक काल वही विचारकर; आऱ्ऱा–सह न सककर; मति ऎनुम् पण्पतु आकि–(चिन्तक) (पूर्ण-) चन्द्र कहलाने की योग्यता पाकर (भी); मुळु नाळुम् कुऱैये आकि–पूर्णिमा के दिन में भी कला से हीन रहता है; ऎं नाळुम् वळरातु–कभी भी पूर्ण नहीं बनता; ऎन्निन्–तो; इऱै ऒक्कुम्–तो जरा भी समानता करने का; इयल्पिऱ्ऱु आम् ए–भाग्यवान होगा क्या। ७७५

शुक्लपक्ष का कलाचन्द्र और मध्याह्न में खिला हुआ कमल भी जिसको देखकर लज्जा से युक्त होते हैं, वैसे मुख वाली सीता के ललाट के सौन्दर्य को अनेक दिन तक चन्द्र सोचता रहा और उसे असह्य लगा। वह चन्द्र तो कहाता है, लेकिन पूर्णिमा के दिन भी सारी कलाओं से पूर्ण नहीं रहता। तो वह सीता के ललाट की कुछ-कुछ ही समता कर सकेगा। (चन्द्र को तमिळ में "मदि" कहते हैं। मदि का अर्थ सतत चिन्तन है। वह चन्द्र सीता के ललाट का हमेशा चिन्तन करता रहा— इसलिए उसका "मदि" यानी 'चिन्तक' नाम उपयुक्त है।)। ७७५

वऩैबव रिल्लै यऩ्ऱे वनत्तुणाम् वन्द पिऩ्ऩै
अऩैयऩ वॆऩिनुन् दान्द मळहुक्को रळिवुण् डाहा
विऩैशॆयक् कुळऩ्ऱ वल्ल विदिशॆय विळैन्द नीलम्
पुऩैमणि यळह मॆऩ्ऱुम् पुदुमैया मुवमै पूणा 776

नाम्–हमारे; वनत्तुळ् वन्त पिन्नै–वन में आने के पश्चात्; वनैपवर् इल्लै–केशशृंगार करनेवाला नहीं है; अन्ऱे–न; ताम् अनैयन ऎनितुम्–केश ऐसे रहे तो भी; तम् अळकुक्कु–अपनी मनोहारिता में; ओर् अळिवु उण्टाका–कुछ कमी नहीं रखते; विनै चॆय कुळन्ऱ अल्ल–कलाकृत्य के आधार पर घुंघराले नहीं बने; विति चॆय–ब्रह्मा के ऐसा सृजन करने से; विळैन्त–ऐसे बने हैं; नीलम् मणि पुनै–नीली मणि के समान (ललाट पर हिलनेवाले); अळकम्–अलक; ऎन्ऱुम् पुतुमै आम्–नित-नवीन हैं; उवमै पूणा–किसी भी उपमान को धारण नहीं करेंगे। ७७६

हमारे वन में आने के बाद सीता के अलकों को सँवारने-सजाने वाले कोई नहीं हैं न ? ऐसी स्थिति में भी उनकी रमणीयता में कोई कमी नहीं हुई। क्योंकि उनका घुँघरालापन कृत्रिम रूप से आया नहीं है। लेकिन ब्रह्मदेव की सृष्टि में ही वे केश ऐसे बने हैं। ऐसे नीले रत्न के

समान ललाट के ऊपर के वे अलक नित-नवीन हैं। वे किसी भी उपमान को सह नहीं सकते। ७७६

कॊण्डलिन् कुऴवि याम्बल् कुनिशिलै वळ्ळै कॊऱ्ऱक्
कॅण्डैयॊण् डरळ मॆन्ऱिक् केण्मैयिऱ् किडन्द तिङ्गण्
मण्डिल वदन मॆन्ऱु वैत्तनन् विदियो नीयप्
पुण्डरी हत्तै युऱ्ऱ पॊळुदु पॊरुन्दित् तेर्वाय् 777

कॊण्टलिन् कुऴवि–मेघखण्ड; आम्पल्–लाल कुमुद; कुनि चिलै–झुके धनुष; वळ्ळै–'वळ्ळै' (जल-लता) के पत्र; कॊऱ्ऱम् कॅण्टै–मत्त (कॅण्डै नाम की) मछलियाँ; ऑळ् तरळम्–उज्ज्वल मोती; ऍन्ऱु–ऐसे; इक् केण्मैय–इनसे उपमेय वस्तुएँ; किटन्त–जिस पर रहती हैं; तिङ्कळ् मण्टिलम्–चन्द्रमण्डल को; वितियोन्–विधाता ने; वतनम् ऍन्ऱु–वदन के नाम पर; वैत्तनन्–रचित कर रखा; नी–तुम; अ पुण्टरीकत्तै–उस (मुख-) कमल को; उऱ्ऱ पॊऴुतु–जब पास से देखोगे तब; अतु पॊरुन्ति–उस (मेरे कथन) को सही लगता हुआ; तेर्वाय्–जानोगे। ७७७

ब्रह्मदेव ने ऐसे एक चन्द्रमण्डल को ही सीता के श्रीमुख के रूप में रच लिया था, जिसमें मेघखण्ड, रक्त कुमुद, वक्र धनुष, "वळ्ळै" लता, मत्त मत्स्य, कान्तिमय मुक्ताएँ आदि उपमान योग्य वस्तुएँ रहती हों। जब तुम उस कमल-मुख को पास से देखोगे तो समझ लोगे कि मैं सही वर्णन ही कर रहा हूँ। ७७७

कारिनैक् कळित्तुक् कट्टिक् कळ्ळिनो डावि यूट्टिप्
पेरिरुट् पिऴम्बु तोय्त्तु नॆऱिवुऱीइप् पिऱङ्गु कऱ्ऱैच्
चोर्हुऴऱ् ऱॊहुदि यॆन्ऱु चुम्मैशॆय् दनैय दम्मा
नेर्मैयैप् परुमै शॆय्द निऱैनऱुङ् गून्द नीत्तम् 778

नेर्मैयै–सूक्ष्मता को; परुमै चॆय्त–घनीभूत जो किये गये; निऱै नऱु–वे सुवासपूर्ण; कून्तल् नीत्तम्–केशों की राशि; कारिनै–जल-भरे काले मेघ को; कळित्तु कट्टि–काटकर, बाँधकर; कळ्ळिनोटु–मधु के साथ; आवि–(अगरु आदि का) धुआँ; ऊट्टि–मिलाकर; पेर् इरुळ् पिऴम्पु–घने अन्धकार-पुंज में; तोय्त्तु–निमग्न करके; नॆऱिवु उऱीई–कुंचित करके; पिऱङ्कु–शोभायमान; कऱ्ऱै–घना; चोर् कुऴल् तॊकुति–लटकनेवाले केश का जाल; ऍन्ऱु–कहकर; चुम्मै चॆय्तु अनैयतु–भार बनाया गया हो ऐसी है। ७७८

उसकी सुवासित केशराशि सूक्ष्म की घनीभूत वस्तु है। काले मेघ को चीरकर बाल बनाये गये और उनकी राशि बाँधी गयी। उसमें सुरा और धुआँ चढ़ाया गया। फिर उसको घने अन्धकार-पुञ्ज में सन लिया। फिर उसमें कुंचन रचित कर लटकनेवाला बनाकर केश नाम दिया गया और वह सीता का केश-भार बन गया (उसका केश वैसा ही है)। ७७८

कुळल्पडैत् तियाळैच् चॆय्दु कुयिलॊडु किळियुङ् गूट्टि
मळलैयुम् पिऱवुन् दन्दु वडित्तहैम् मलरिन् मेलान्
इळैपॊरु मिडैयि नाड ळिन्शॊऱ्क ळियैयच् चॆय्दान्
पिळैयिल दुवमै काट्टप् पॆऱ्ऱिलन् पॆरुङ्गॊ लिन्नुम् 779

कुळल् पटैत्तु–वंशी बनाकर; याळै चॆय्तु–'याळ' बनाकर; कुयिलॊटु किळियुम् कूट्टि–और कोयल के साथ शुक की सृष्टि करके; मळलैयुम् पिऱवुम्–मधुर तुतली बोली और अन्य ऐसी मधुर वस्तुएँ; तन्तु–बनाकर; वटित्त–अभ्यस्त; कै–हाथों वाले; मलरिन् मेलान्–कमल पर आसीन (ब्रह्मा ने); इळै पॊरुम्–सूत्र से लड़नेवाली; इटैयिनाळ् तन्–कमर वाली सीता के; इन् चॊऱ्कळ्–मधुर-भाषण को; इयैय–युक्त रीति से; चॆय्तान्–बनाया; पिळै इलतु–निर्दोष; उवमै काट्ट–उपमान दिखाने (बनाने); पॆऱ्ऱिलन्–नहीं पाये; इन्नुम् पॆरुम् कॊल्–आगे ही बनायेंगे क्या। ७७९

ब्रह्मा के हस्तों ने "वंशी" बनायी, "याळ" बनायी और कोयल और शुक की सृष्टि की। अस्पष्ट तुतली वाणी का भी सृजन किया। इस तरह कमलासन ब्रह्मदेव के हाथ (सीता की वाणी से उपमित होने योग्य वस्तुओं की सृष्टि के) अभ्यस्त थे। सूत्र को भी पराजित करनेवाली पतली कमर से शोभित जानकी की मधुर वाणी तब जाकर बनायी। तो भी वह उनको निर्दोष रीति से उपमान बनने की शक्ति नहीं दे सका। आगे भी उपमानयोग्य वस्तु बनायेगा क्या ? —हम नहीं जानते। ७७९

वानिन्ऱ वुलह मून्ऱुम् वरम्बिन्ऱि वळर्न्द वेनुम्
नानिन्ऱ शुवैमऱ् ऱॊन्ऱो वमुदन्ऱि नल्ल दिल्लै
मीनिन्ऱ कण्णि नाडन् मॆन्मॊळिक् कुवमै वेण्डिन्
तेनॊन्ऱो वमिळ्द मॊन्ऱो ववैशॆविक् किन्बञ् जॆय्या 780

वान् निन्ऱ उलकम् मून्ऱुम्–स्वर्ग आदि स्थायी त्रिलोक; वरम्पु इन्ऱि–असीम रूप से; वळर्न्त एनुम्–फैल गये हैं तो भी; मीन् निन्ऱ–मछली-सम; कण्णिनाळ् तन्–आँखों वाली सीता की; मॆल् मॊळिक्कु–कोमल वाणी का; उवमै वेण्टिन्–उपमान चाहो तो; तेन् ऒन्ऱो–या तो शहद एक है; अमिळ्तम् ऒन्ऱो–या दूध एक है; अवै–(पर) वे; चॆविक्कु–कानों को; इन्पम् चॆय्या–आनन्द नहीं दे सकते; मऱ्ऱॊन्ऱु अमुतो–अन्य देवामृत तो; ना निन्ऱ–जिह्वा का; चुवै अन्ऱि–स्वाद छोड़कर; नल्लतु इल्लै–अन्य गुण से युक्त नहीं है। ७८०

स्वर्ग आदि तीनों लोक असीम रीति से विस्तृत हैं। तो भी मीनाक्षी सीता की मृदुल वाणी के वचनों का उपमान कहना चाहें तो शहद एक है और दूध एक है। लेकिन वे श्रुतिमधुर नहीं हैं। और एक अमृत है, वह भी जीभ को मधुर लग सकता है, पर दूसरा गुण उसमें नहीं है। ७८०

पूवरु मळलै यन्नम् पुत्तैमडप् पिडियॅन् ऱिन्न
तेवरु मरुळत् तक्क शॅलविन्न वॅन्निनुन् देऱेन्
पावरुङ् गिळमैत् तॊन्मैप् परुणिदर् पहरुम् बत्ति
नावरुङ् गिळविच् चॅव्वि नडैवरु नडैय णल्लोय् 781

नल्लोय्–सत्पुरुष; पू वरुम्–कमल के फूलों के साथ सम्पर्क-रखनेवाले; मळलै–मधुरभाषी; अन्नम्–हंस; पुत्तै–सुन्दर; मटम् पिटि–बाल-हथिनी; ऍन्ऱ् इन्न–आदि ऐसे; तेवरुम् मरुळ तक्क–देवों को भी आश्चर्य में डालनेवाली; चॅलविन्न–चाल वाले हैं; ऍन्निनुम्–तो भी; तेऱेन्–उपमान नहीं चुनूँगा; पा वरुम् किळमै–(आशु) कविता बनाने की शक्ति के अधिकारी; तॊन्मै परुणितर्–सनातन और श्रेष्ठ विद्वान्; पकरुम्–जो रचना करते हैं; पत्ति–लगातार; ना वरुम् किळवि–जिह्वा से निकलनेवाली उस वाणी की; चॅव्वि नटै–प्रवाह-प्रसादपूर्ण शैली की; वरुम्–समानता करनेवाली; नटैयळ्–चाल की है। ७८१

भलेमानुस, कमल पर रहनेवाले और अस्पष्ट बोली वाले हंस, सुन्दर बाल-हथिनियाँ आदि की चाल ऐसी है कि देव भी देखकर चक्रित हो जाते हैं। तो भी मैं उनको उपमान मानने में तृप्ति नहीं पाता। आशु कविता बनानेवाले ज्ञानवृद्ध विद्वानों की जीभ से निकलनेवाले वाक्यों की रचना-शैली की समानता करनेवाली चाल से युक्त है सीता। ७८१

ऍन्निऱ मुरैक्केन् मावि निळन्दळिर् मुदिरु मऱ्ऱॅप्
पॊन्निऱङ् गरुहु मॅन्ऱान् मणिनिऱ मुवमै पोदा
मिन्निऱ् नाणि यॅङ्गुम् वॅळिप्पडा दॊळिक्कुम् वेण्डिन्
तन्निऱन् दान्ने यॊक्कु मलर्निऱञ् जमळ्क्कु मन्ऱे 782

माविन्–आम्र का; इळम् तळिर्–कोमल पल्लव; मुतिरुम्–(सीता के शरीर की आभा के सामने) पका दिखेगा; पॊन् निऱम्–स्वर्ण का रंग भी; करुकुम्–काला दिखेगा; ऍन्ऱाल्–तो; मणि निऱम्–रत्नों की प्रभा में; उवमै पोता–उपमान बनने का दम नहीं; मिन् निऱम्–बिजली का रंग; नाणि–लजाकर; ऍङ्कुम् वॅळिप्पटातु–कहीं भी प्रकट न होकर; ऑळिक्कुम्–छिप जायगा; मलर् निऱम्–कमलपुष्प का रंग; चमळ्क्कुम्–खेद करेगा; ऍ निऱम् उरैक्केन्–कौन सा रंग बताऊँ; वेण्टिन्–कहना ही चाहिए तो; तन् निऱम्–उसकी ही शोभा (का रंग); तान्ने ऑक्कुम्–खुद उसी से उपमेय है। ७८२

आम्रपल्लव, उसके रंग के सामने पके और फीके लगते हैं। स्वर्ण का रंग काला लगता है, तो रत्न की उपमा योग्य छवि नहीं दिखा सकती। बिजली का रंग लजाकर कहीं प्रकट नहीं होगा और छिप जायगा। कमल की छटा पछताकर पीछे हट जायगी। तो कौन सा रंग कहूँ मैं ? उसका रंग उसी के रंग के समान है। ७८२

मङ्गैय रिवळै यॊप्पार् मऱ्ऱिल रॆऩ्ऩुम् वण्णम्
शङ्गैयि लुळ्ळन् दाने शाऩ्ऱॆऩक् कॊण्डु शाऩ्ऱोय्
अङ्गव णिलैमै यॆल्ला मळन्दऱिन् दरुहु शार्न्दु
तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नाट्कुच् चॆप्पॆऩप् पिऩ्ऩुञ् जॆप्पुम् 783

चाऩ्ऱोय्–श्रेष्ठ मारुति; इवळै ऑप्पार्–इसकी समानता करनेवाली; मऱ्ऱु मङ्कैयर्–कोई अन्य रमणियाँ; इलर्–नहीं; ऍऩ्ऩुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; चङ्कै इल्–संशयरहित; उळ्ळम् ताऩे–अपने ही मन को; चाऩ्ऱु ऍऩ कॊण्टु–प्रमाण मानकर; अङ्कु–वहाँ; अवळ् निलैमै ऍल्लाम्–उसकी स्थिति सभी; अळन्तु अऱिन्तु–परखकर, समझकर; अरुकु चार्न्तु–समीप जाकर; तिङ्कळ्–चन्द्र-सम; वाळ् मुकत्तिऩाट्कु–और उज्ज्वल मुख वाली उससे; चॆप्पु–कहो; ऍऩ–कहकर; पिऩ्ऩुम्–फिर भी; चॆप्पुम्–श्रीराम बोले। ७८३

श्रेष्ठ गुण वाले ! इसकी समानता करनेवाली और कोई स्त्री नहीं है। इस प्रकार अपने अशंकित मन को प्रमाण मानकर सीताजी को ढूँढ़ लो। वहाँ उसकी स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर, हो सके तो पास जाओ और चन्द्रानना से ये बातें कहो। यह कहने के बाद श्रीराम यों बोले। ७८३

मुऩ्ऩैनाण् मुऩियॊडुम् मुदियनीर् मिदिलैवाय्च्
चॆऩ्ऩिनीण् मालैयाऩ् वेळ्विका णियशॆल
अऩ्ऩमा डुन्दुऱैक् करुहुनिऩ् ऱाडलैक्
कऩ्ऩिमा डत्तिडैक् कण्डदुम् कळ्ऱुवाय् 784

मुऩ्ऩै नाळ्–पहले किसी दिन; मुऩियॊटुम्–विश्वामित्र मुनि के साथ; मुतिय नीर्–पूर्ण-जल; मितिलै वाय्–मिथिला में; चॆऩ्ऩि–सिर पर; नीळ् मालैयाऩ्–बड़ी माला धारण करनेवाले (जनक) का; वेळ्वि काणिय–यज्ञ देखने; नाऩ् चॆल–जब मैं गया तब; अऩ्ऩम् आटु–जहाँ हंस खेल रहे थे, उस; तुऱैक्कु अरुकु–(कृत्रिम) जलाशय के पास; कऩ्ऩि माटत्तिटै–कन्या-सौध पर; निऩ्ऱाळ् तऩै–स्थित उसको; कण्टतुम्–जो मैंने देखा; कळ्ऱुवाय्–वह (समाचार) कहो। ७८४

कभी पहले मैं मुनि विश्वामित्र के साथ जलसमृद्ध मिथिला में मालाधारी सिर के महाराजा जनक के यज्ञ को देखने गया। तब उस जलाशय के पास, जिसमें हंस क्रीडा कर रहे थे, "कन्यासौध" पर सीता खड़ी थी। उसको मैंने जो देखा, वह बात उससे कहो। ७८४

वरैशॆय्दाळ् विल्लिऱुत् तवत्तमा मुऩियॊडुम्
विरशिऩा ऩल्लनेल् विडुवल्या ऩुयिरॆऩाक्
करैशॆया वेलैयिऱ् पॆरियका दलळॆरिन्
दुरैशॆय्दा ळः(ह्)दॆला मुणरनी युरैशॆय्वाय् 785

करै चॅया वेलैयिऩ्–अपार समुद्र-सम; पॅरिय कातलळ्–अतिगहन प्रेम करनेवाली; वरै चॅय् विल् ताळ्–(मेरु) पर्वत-सम धनु का दण्ड; इरुत्तवऩ्–तोड़नेवाला; अ मा मुतियॊटुम्–उस महान (कौशिक) मुनि के साथ; विरचिताऩ्–जो आया; अल्लनेल्–वह नहीं हो तो; याऩ् उयिरै विट्टुवल्–मैं अपना प्राण त्याग दूँगी; ॲता–ऐसा; तॅरिन्तु–समझदारी से विचारकर; उरै चॅय्ताळ्–(उसने) वचन कहा; अ.'.तु ॲलाम्–वह सब; उणर–समझाते हुए; नी–तुम; उरै चॅय्वाय्–कहो। ७८५

सीता का प्रेम अपार सागर-सम विशाल है। उसने खूब सोचकर प्रण किया कि अगर पर्वत-धनु का भंजक उस दिव्य मुनि के साथ आया हुआ नहीं होगा तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। वह समाचार समझाकर कहो। ७८५

शूऴिमाल् यातैयिऩ् रुणैमरुप् पिणैयॅतक्
कॆऴिला वऩमुलैक् किरिशुमन्ऩ् दिडैवदोर्
वाऴिवाऩ् मिऩ्तिळङ् गॊडियिऩ्वन् दाळैयऩ्
ऱाऴिया ऩरशवैक् कण्डदुम् मऱैहुवाय् 786

चूऴि माल्–मुखपट्ट से अलंकृत बड़े; यातैयिऩ्–गज के; तुणै मरुप्पु इणै ॲत–परस्पर सम दन्त-द्वय के समान; कॆऴ् इला–पर उनसे जो उपमेय नहीं; वतम्–मनोरम; मुलै किरि–स्तनगिरियों को; चुमन्तु–ढोते हुए; इटैवतु–जो बल खाती है; ओर वाऩ् मिऩ्–आकाश की एक बिजली की; इळ कॊटियिऩ्–एक लता के समान; वन्ताळै–आती हुई को; अन्ऱु–उस दिन; आऴियाऩ्–चक्रवर्ती (जनक) की; अरचवै–राजसभा में; कण्टतुम्–मेरा देखना भी; अऱैकुवाय्–कहना। ७८६

मैंने सीता को चक्रवर्ती जनक की राजसभा में उस दिन देखा, जब वह मुखपट्टालंकृत गजराज के दन्तद्वय-सम बल्कि उनसे अतुल्य स्तन-गिरियों को ढोने के कारण वल खाती हुई आकाश की अनुपम बिजली की बाललता-सदृश आ रही थी। ७८६

मुऩ्बुना ऩरिहिला मुऴिनॅडुङ् गाऩिले
ॲऩ्बिऩ्ऩे पोदुवाऩ् निनैदियो वेऴैनी
इऩ्बमा यारुयिर्क् किऩियैया यिऩ्ऩियिऩ्
तुऩ्बमाय् मुडिदियो वॅऩ्ऱदुम् जॊल्लुवाय् 787

ऐऴै–अबोध; नी–तुम; मुऩ्पु–पहले; नाऩ्–मैं; अऱिकिला–जिसको नहीं जानता; मुऴि नॅटु–झुलसे, विशाल; कातिले–वन में; ॲऩ् पिऩ्ऩे–मेरे पीछे; पोतुवाऩ्–आने का; नितैतियो–विचार रखती हो क्या; इऩ्पम् आय्–(अब तक) सुख देनेवाली रहकर; आर् उयिर्क्कु इतियै आयितै–प्राण-प्यारी रहीं; इऩि–आगे; तुऩ्पम् आय्–दुःख (दायी) बनकर; मुटितियो–बन चुकोगी क्या; ॲऩ्ऱतुम्–ऐसा मेरा कहना भी; चॊल्लुवाय्–उससे कहो। ७८७

"अबोध ! जला-भुना जंगल मेरे लिए अकिंचित है। उस बड़े जंगल में मेरे पीछे आने की बात सोचती हो क्या ? अब तक तुम आनन्ददायिनी रहीं, प्राणप्यारी रहीं। आगे दुःख-कारण बन चुकोगी क्या ?" यह मैंने उससे जो कहा वह उसे बताओ। ७८७

आत्तपे	ररशिळन्	इडविशेर्	वायुत्तक्
कियात्तला	दत्तवेला	मिनियवो	वित्तियेंन्ना
मीनुला	नेंडुमलरक्	कण्णित्तीर्	विळविळुन्
दूतिला	वुयिरित्वेंन्	दयर्वदु	मुरैशॅय्वाय् 788

आत्त पेर् अरचु–तुम्हारा जो बना वह साम्राज्य; इळन्तु–खोकर; अटवि चेर्वाय्–वन जानेवाले; इति–आगे; यात् अलातत्त ऍलाम्–मेरे विना सभी; उत्तक्कु इतियवो–तुम्हारे लिए मीठे होंगे क्या; ऍन्ना–ऐसा; कोंटुमै कूरि–निष्ठुरता का वचन कहकर; मीन् उलाम्–मछली-सी; नॅटु मलर्–आयत कमल-सम; कण्णित् नीर् विळ–आँखों से आँसू बहने देते हुए; विळुन्तु–नीचे गिरकर; ऊन् निला उयिरित्–शरीर में न टिकनेवाली जान के समान; वॅन्तु–जलकर; अयर्वतुम्–उसका छटपटाना भी; उरै चॅय्वाय्–उससे कहो। ७८८

तब सीता ने कहा कि अपना जो हुआ, उस राज्य को खोकर जंगल जानेवाले ! आगे मुझसे रहित सभी वस्तुएँ सुखदायिनी हो रहेंगी क्या ! यह आर्तवचन कहते हुए उसने मछली के समान चंचल और आयत कमल-सम आँखों से आँसू बहाये और नीचे गिर गयी। शरीर छोड़कर जाने को उद्यत प्राणों के समान छटपटायी और दुःखतप्त होकर शिथिल हुई। यह सब बात उसे स्मरण कराओ। ७८८

मल्लत्मा	नहर्दुरन्	देहुनाण्	मदितोंडुम्
कल्लित्मा	मदित्मणिक्	कडैहडन्	दिडुदत्मुन्
ऍल्लैतीर्	वरियवेंङ्	गानम्या	दोवॅन्नच्
चॊल्लिन्ना	ळः(ह्)दॆला	मुणरनी	शॊल्लुवाय् 789

मल्लल् मा नकर्–सर्वसमृद्ध बड़े नगर (अयोध्या) को; तुरन्तु–त्यागकर; एकुम् नाळ्–(वन) जाने के दिन; मति तोंटुम्–चन्द्रस्पर्शी; कल्लित् मा मतिल्–पत्थरों के बड़े प्राचीरों के; मणि कटै–रत्नमय गोद्वार को; कटन्तिटुतत् मुन्–पार करने के पूर्व ही; ऍल्लै तीर्वु अरिय–असीम; वॆम् कातम्–भयंकर वन; यातो–कौन सा है; ऍन्न–ऐसा; चॊल्लिताळ्–पूछा (उसने); अ..तु ऍलाम्–वह सब; नी–तुम; उणर चॊल्लुवाय्–समझाकर कहो। ७८६

जब हम सर्वसमृद्ध, विशाल अयोध्या नगर छोड़कर जाने लगे तब चन्द्रस्पर्शी विशाल प्रस्तरप्राचीरों के गोद्वार को पार करने से पूर्व ही उसने प्रश्न किया कि असीम भयंकर जंगल कौन सा है ? उसका वह प्रश्न करना उसे समझाकर कहो। ७८९

इत्तैयवा उरैशेया विनिदिन्ने हुदियॆन्ना
वत्तैयुमा मणिनत्मो दिरमळित् तरिञनिन्
वित्तैयॆला मुडिहॆन्ना विडैहॊडुत् तुदवलुम्
पुत्तैयुम्वार् कळलिन्ना नरुळॊडुम् पोयिन्नान् 790

इत्तैय आरु–इस रीति से; उरै चॆया–बातें करके; इतितिन्–सुख से; एकुति ऍन्ना–चलो कहकर; मा मणि वत्तैयुम्–उत्तम रत्न-जड़े; नल् मोतिरम्–श्रेष्ठ मुंदरी को; अळित्तु–देकर; अरिञ–विद्वान्; निन् वित्तै ऍलाम्–तुम्हारे सारे काम; मुटिक–पूरे हों; ऍन्ना–कहकर; विटै कॊटुत्तु उतवलुम्–बिदा देकर कृपा दिखायी तो; पुत्तैयुम् वार् कळलितान्–धृत पायल वाले चरणों के श्रीराम की; अरुळॊटुम्–कृपा को पुरस्सर करके; पोयित्तान्–(हनुमान) चला। ७९०

श्रीराम ने हनुमान से ये सारे अभिज्ञान-समाचार कहे; 'सुख से जाओ' कहकर आशीर्वाद दिये। फिर श्रेष्ठ रत्नजटित मुँदरी उसके हाथ में धर कर उन्होंने कहा कि विज्ञ ! तुम्हारे कार्य सिद्ध हों ! यह कहकर बिदा दी। तब हनुमान सबन्ध पायलधारी श्रीराम की आज्ञा लेकर उनकी कृपा को पुरस्सर करके चल पड़ा। ७९०

अङ्गदक् कुरिशिलो डडुशिनत् तुळवराम्
वॆङ्गदत् तलैवरुम् विरिहडर् पडैयॊडुम्
पॊङ्गुविर् रलैवरैत् तॊळुदुमुन् पोयिनार्
शॆङ्गदिर्च् चॆल्वत्तैप् पणिवुरुञ् जॆन्नियार् 791

अङ्कतन् कुरिचिलोटु–कुमार अंगद के साथ; अटु चित्ततु–संहारक क्रोधी; उळवर् आम्–वीर; वॆम् कतम्–(और) भयंकर आवेगपूर्ण; तलैवरुम्–यूथप; चॆम् कतिर् चॆल्वत्तै–लाल किरणमाली के पुत्र (सुग्रीव) के आगे; पणिवुरुम्–झुके हुए; चॆन्नियार्–सिरों वाले होकर; पॊङ्कु विल् तलैवरै–अतिश्रेष्ठ धनुर्वीरों को; तॊळुतु–नमस्कृत करके; विरिकटल्–विशाल सागर-सम; पटैयॊटुम्–सेना के साथ; मुन् पोयितार्–आगे गये। ७९१

अंगद के साथ संहारक क्रोधशील अन्य आवेगपूर्ण भयंकर वानर वीर लाल किरणमाली सूर्य के पुत्र को नमस्कार करके, और श्रेष्ठ धनुर्वीर श्रीराम और लक्ष्मण के आगे सिर झुकाकर प्रणमन करने के बाद विशाल सागर-सम वानर-सेना लेकर प्रस्थान कर गये। ७९१

कुडदि शैक्कण् णिडबन् कुबेरन्वाळ्, वडदि शैक्कट् चदवलि वाशवन्
इडदि शैक्कण् विन्दन् विरर्रुरु, पडैयो डुर्रुप् पडर्हॆन्नप् पन्नित्तान् 792

कुट तिचैक्कण्–पश्चिम दिशा में; इटपन्–ऋषभ; कुपेरन् वाळ्–कुबेराबाद; वट तिचैक्कण्–उत्तर दिशा में; चतवलि–शतबली और; वाचवन् इटम्–वासवी; तिचैक्कण्–(पूर्व) दिशा में; विन्तन्–विन्द; विरल् तरु–विजयदायिनी; पटैयॊटु उरुरु–सेना को लेकर; पटर्क–चलें; ऍन–ऐसा; पन्नित्तान्–कहा। ७९२

"पश्चिम दिशा में ऋषभ, कुबेर-दिशा (उत्तर) में शतवली, इन्द्र-दिशा (पूरब) में विंद विजयशील दो वॆळ्ळम् सेना को लेकर चलें।" —सुग्रीव ने यह आज्ञा सुनायी। ७९२

वॆऱ्ऱि वानर वॆळ्ळ मिरण्डॊडुम्, शुऱ्ऱि योडित् तुरुवि यॊरुमदि
मुऱ्ऱु ऱादमुन् मुऱ्ऱुदि रिव्विडॆक्, कॊऱ्ऱ वाहैयि नीरॆन्नक् कूऱिनान् 793

कॊऱ्ऱम् वाकैयिनीर्–विजयी और 'वाहै' माला के धारण योग्य वीर; वॆऱ्ऱि वानरम्–विजयशील वानर; वॆळ्ळम् इरण्टुटन्–दो 'वॆळ्ळम्' (संख्या) के साथ; चुऱ्ऱि ओटि–घूम दौड़कर; तुरुवि–खूब खोज लगाकर; ऒरु मति–एक मास के; मुऱ्ऱुऱात मुन्–पूरा होने से पूर्व; इ इटै–यहाँ पर; मुऱ्ऱुतिर्–आ जाओ; ऎन्न कूऱिनान्–ऐसा (सुग्रीव ने अन्य वानर वीरों से) कहा। ७९३

"विजय पाकर 'वाहै' की माला पहनने की क्षमता रखनेवाले वीर! तुम दो-दो 'वॆळ्ळम्' सेना के साथ जाओ। सब स्थानों में जाओ और ढूँढ़ो। एक मास के पूरा होने से पूर्व ही यहाँ लौट आ जाओ।" —सुग्रीव ने यह दृढ़ आज्ञा सुना दी। ७९३

13. पिलम् पुक्कु नीङ्गु पडलम् (बिल-प्रवेश व निर्गमन पटल)

पोयिनार् पोयपिन् पुऱनॆडुन् दिशैहडो, ऱेयिना निरविहा दलनुमे यिनपॊरुट्
कायिना रवरुमङ् गन्नना ळवदियिऱ्, ऱायिना रुलहिनैत् तहैनॆडुन् दानैयार् 794

पोयिनार–वे सब चले गये; पोय पिन्–जाने के बाद; इरवि कातलतुम्–रविपुत्र ने भी; पुऱम् नॆटु तिचैकळ् तोऱु–(दक्षिण से) इतर सभी लम्बी दिशाओं में; एयिनान्–आज्ञा देकर भेजा; एयित पॊरुट्टु–आज्ञा-पालन-रत; आयिनार्–होकर; उलकिनै–भूमि को; तकै–रोकने में समर्थ; नॆटु तानैयार्–बड़ी सेना वाले; अवरुम्–वे वानर-यूथप भी; अन्न नाळ्–उतने दिनों की; अवतियिल्–अवधि का ध्यान करते हुए; तायिनार्–भाग चले। ७९४

अंगदादि वीर, सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले गये। उनके जाने के बाद सूर्यसूनु ने अन्य दिशाओं में जानेवाले वीरों को भी बिदा कर भेजा। वे भी राजाज्ञा पर सीतान्वेषण के काम में प्रवृत्त हो जाने लगे। उनके पास सारे संसार को रोक सकनेवाली बलवान सेना थी। वे निश्चित अवधि के अन्दर आने के विचार से जल्दी जाने लगे। ७९४

कुन्ऱिशैत् तनवॆन्नक् कुववुतोळ् वलियिनार्
मिन्ऱिशैत् तिडुमिडॆक् कॊडियैना डिनर्विराय्
वन्ऱिशैप् पडरुमा रॊळियवण् डमिऴ्ऴडैत्
तॆन्ऱिशैच् चॆन्ऱुळार् तिरनॆडुत् तुरैशॆय्वाम् 795

कुन्ऱु इचैतुतन–पर्वत ही लगे हैं ऐसा; कुववु तोळिनान्–पुष्ट कन्धों वाले; मिन्

तिचैत्तिटम्–विद्युत् की भ्रान्ति उत्पन्न करनेवाली; इटै कौटि–कमर वाली, लता-सी सीता को; नाटित्तर् विराय्–खोजनेवाले बनकर; वल् तिचै पटरुम्–अन्य दिशाओं में जो गये; आरु ऑऴिय–उनका प्रकार छोड़कर; वण् तमिऴ् उटै–समृद्ध तमिऴ भाषा जहाँ प्रचलित है; तॆन् तिचै–उस दक्षिण दिशा में; चॆन्रु उळार्–जो गये उनका; तिऱन्–सामर्थ्य; ऑट्टुतु–लेकर; उरै चॆय्वाम्–बखानेंगे। ७९५

पर्वत-सम उनके कन्धे थे। और वे भुजबली विद्युत् को भ्रमित करनेवाली कमर से भूषित पुष्पलता-सी सीता की खोज में गये। हम उनकी बात छोड़ देंगे, जो दक्षिणेतर दिशाओं में गये। और तमिऴ-भाषी दक्षिण-दिशागामी वानर वीरों की बात कहेंगे। ७९५

शिन्दुरा हत्तौडुन् दिरण्मणिच् चुडर्शॆरिन्
दन्दिवा नत्तिनिन् ड्रविर्दला नरविनो
डिन्दिया ड्रॆय्दला निरैवन्मा मौलिपोल्
विन्दैना हत्तिन्मा डॆय्दिनार् वॆय्दिनाल् 796

चिन्तु राकत्तॊटुम्–सिन्दूर कणों के साथ; तिरळ् मणि चुटर्–वर्तुल रत्नों की कान्ति; चॆरिन्तु–मिश्रित हो; अन्ति वानत्तिन्–सन्ध्या-गगन के समान; निन्रु अविर्तलान्–शोभायमान है, इसलिए; अरविनॊटु–सर्पों के साथ; इन्तु यारु ऎय्तलान्–चन्द्र और आकाशगंगा भी है, इसलिए; इरैवन् मा मौलि पोल्–परमेश्वर के जटाजूट के समान; विन्तै नाकत्तिन्–विन्ध्यपर्वत के; माटु–पार्श्व में; वॆय्तिनाल्–जल्दी; ऎय्तिनार्–जा पहुँचे। ७९६

वे विन्ध्यपर्वत के पास सवेग गये। विन्ध्यपर्वत शिवजी के बड़े जटाजूट के समान था। क्योंकि सिन्दूर और वर्तुल माणिक्यों की प्रभा के कारण सन्ध्यागगन के समान था। उस पर (शिवजी पर जैसे) सर्प, चन्द्र आकाश-गंगा थी। ७९६

अन्नॆडुङ् गुन्रमो डविर्मणिच् चिहरमुम्
पॊन्नॆडुङ् गोडुमुडिप् पुरैहळुम् पुडैहळुम्
नन्नॆडुन् दाळ्वरै नाडिनार् नवैयिलार्
पन्नॆडुङ् गालमा मॆन्नवोर् पहलिडै 797

नवै इलार्–अनिन्द्य वे; अ नॆटु कुन्रमोटु–उस ऊँचे पर्वत के साथ; अविर् मणि चिकरमुम्–कान्तियुक्त रत्नों से पूर्ण शिखरों; पॊन् नॆटु कोटु मुटि–सुन्दर उन बड़े शिखरों पर रहनेवाली; पुरैकळुम्–गुहाओं; पुटैकळुम्–और पास के स्थानों; नल् नॆटु ताळ्वरै–सुन्दर विशाल तराइयों में; ओर् पकलिटै–एक दिन; पल् नॆटु कालम् आम्–अनेक दिन हों; ऎन्न–ऐसा; नाटिनार्–खोजा। ७९७

अनिंद्य उन वीरों ने उस उन्नत विन्ध्यपर्वत पर उज्ज्वल रत्नमय शिखरों, उन सुन्दर शिखरों में पायी जानेवाली गुहाओं, पार्श्वों और

मनोरम तराइयों में एक दिन खोजा। उस एक दिन में इतना काम हो गया कि अनेक दिनों का काम हो गया हो, ऐसा लगा। ७९७

मल्लन्मा ञालमोर् मरुवुरा वहैयित्तच्
चिल्ललो दियैयिरुन् दुरैविडन् देडुवार्
पुल्लिना रुलहित्तैप् पोंदुविला वहैयित्ताल्
ऍल्लैमा कडल्हळे याहुमा रॅय्दित्तार् 798

मा कटल्कळे–बड़े समुद्र ही; ऍल्लै आकुम्–उपमान (सीमा) हैं; आऌ–इस प्रकार; ऍय्तित्तार्–जो चले; मल्लल् मा ञालम्–(वे) समृद्ध भूमिदेवी; ओर् मऌ उरा–किंचित भी दोषयुक्त न हो; वकैयित्–इस प्रकार अवतरित; अ चिल् अल् ओति–उन स्वर्णबन्धनयुक्त केश वाली सीताजी; इरुन्त–जहाँ ठहरीं, उस; उऱैविटम् ऐ–वासस्थान को; तेटुवार्–खोजते हुए; उलकित्तै–सारी पृथ्वी पर; पोंतु इला वकैयित्ताल्–अन्यों के लिए भी सम-स्थान न हो, ऐसा; ऍय्तित्तार्–व्याप गये। ७९८

पृथ्वी की सीमाएँ, जो सागर हैं, उनके ही समान थे, वे वानर वीर। वे सर्वसमृद्ध भूदेवी को दोषहीन बनाने के लिए अवतरित सुन्दर शिरोभूषण-सज्जित अलका-भूषित सीतादेवी के स्थान को खोजते हुए सारे संसार में इस तरह फैले कि दूसरों के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया। ७९८

विण्डुपो यिऴिवर्मे ऩिमिर्वर्विण् पडर्वर्वेर्
उण्डमा मरत्तिऩ्स् मलैयित्त्वा युऱैयुत्तीर्
मण्डुपा रदत्तित्वा ऴुयिर्हळम् मदियित्तार्
कण्डिला दत्तवयत् कण्डिला दत्तहोलाम् 799

अ मतियित्तार्–सुमति वे; विण्टु–अलग-अलग दल बनकर; पोय् इऴिवर्–नीचे की ओर जाते; मेल् निमिर्वार्–ऊपर उठते; विण् पटर्वर्–आकाश में उड़ते; वेर् उण्ट–जड़-द्वारा जल लेनेवाले; मा मरतित्–बड़े तरुओं और; अ मलैयित् वाय्–उस पर्वत पर; उऱैयुम् नीर् मण्टु–जमा होकर रहनेवाले जलाशयों से भरे; पार् अततित्–स्थलों में; वाऴ्–वास करनेवाले; उयिर्–जीव; कण्टिलातत–जिनको उन्होंने नहीं देखा हो, ऐसे हों तो; अयत् कण्टिलातत आम्–वे, वे ही होंगे जिनको अजदेव ने नहीं बनाया होगा। ७९९

बुद्धिशाली वीर, कभी अलग-अलग दलों में जाते, कभी नीचे उतरते, कभी चढ़कर ऊपर जाते थे; कभी आकाश में उछलते —इस तरह वे गये। (जड़ों के द्वारा जल सोखनेवाले) पादपों से भरे उस पर्वत पर जलाशयों से भरे थलों पर रहनेवाले अगर कोई जीव हों जिनको उन्होंने नहीं देखा, तो वे ही होंगे जिनको ब्रह्मा ने नहीं बनाया था। (यानी उन्होंने सभी जीवों को देख लिया।)। ७९९

एहिऩार्	योशऩै	येऴॊ	डेऴुपार्
शेकरत्	तॆऩ्ऱिशैक्	कडिदु	शॆल्हिऩ्ऱार्
मेहमा	लैयिऩॊडुम्	विरवि	मेदियिऩ्
नाहुशेर्	नरुमदै	यारु	नण्णिऩार् 800

पार् चेकरम्–पृथ्वी का शिरोभूषण-स्वरूप; तॆऩ् तिचै–दक्षिणी दिशा में; कटितु चॆल्किऩ्ऱार्–तेज जानेवाले वे; एऴॊटु एऴु–सात और सात (चौदह); योचऩै–योजन; एकिऩार्–चले; मेतियिऩ् नाकु–भैंसों की पड़ियों; मेकम् मालैयिऩोटुम्–मेघमालाओं के साथ; विरवि चेर्–जहाँ मिली रहती हैं; नरुमतै आरु–उस नर्मदा नदी पर; नण्णिऩार्–आये। ८००

दक्षिण दिशा भूमि का शिरोभूषण है। उस दिशा में वे चौदह योजन जाकर नर्मदा नदी के तीर पर आये जहाँ छोटी आयु की भैंसें, काले मेघों के साथ मिश्रित रहती हैं। ८००

अऩ्ऩमा	डिडङ्गऴु	ममरर्	नाडियर्
तुऩ्ऩिया	डिडङ्गऴुन्	दुरक्क	मेयवर्
मुऩ्ऩिया	डिडङ्गऴुञ्	जुरुम्बु	मूशुदेऩ्
पऩ्ऩिया	डिडङ्गऴुम्	बरन्दु	शुऱ्ऱिऩार् 801

अऩ्ऩम् आटु इटङ्कऴुम्–हंसों के क्रीडा-स्थलों; अमरर् नाटियर्–देवलोक-वासिनियों के; तुऩ्ऩि आटु–मिलकर स्नान करने योग्य; इटङ्कऴुम्–स्थानों; तुरक्कम् मेयवर्–स्वर्गवासी देवों के; मुऩ्ऩि आटु इटङ्कऴुम्–चाह के साथ आकर जहाँ संचार करते हैं, उन स्थलों; चुरुम्पु–भ्रमर; मूचु तेऩ्–फूलों पर मँड़रानेवाली मधुमक्खियाँ; पऩ्ऩि आटु–भन्नाते हुए जहाँ उड़ती रहती हैं; इटङ्कऴुम्–उन स्थानों में; परन्तु–व्यापकर; चुऱ्ऱिऩार्–घूमे (घूमकर देखा उन्होंने)। ८०१

हंसों के क्रीडा-स्थलों, देवांगनाओं के स्नान-घाटों, स्वर्ग-वासियों के संचार-स्थलों और उन स्थलों में जहाँ भ्रमर और मधुमक्खियाँ भनभनाते हुए उड़ती हैं—सभी स्थानों में वे ढूँढ़ते चले। ८०१

पॆऱलरुन्	दॆरिवैयै	नाडुम्	वॆऱ्ऱियार्
अऱलरुङ्	गून्दलु	मऴह	वण्डुशूऴ्
निऱैनरुन्	दामरै	मुहमु	नित्तिल
मुऱुवलुङ्	गाण्बराऩ्	मुऴुदुङ्	गाण्गिलार् 802

पॆऱल् अरु–अप्रतिम; तॆरिवैयै नाटुम्–देवी को खोजने के; वॆऱ्ऱियार्–काम में लगे उन्होंने; अऱल्–बालुका में; नरु कून्तलुम्–सुबासित केश; अऴकम् वण्टु–(और) अलक रूपी भ्रमरों से; चूऴ्–आवृत; निऱै नरु–सुगन्धपूर्ण; तामरै मुकमुम्–कमल में मुख; नित्तिलम् मुऱुवलुम्–मोती में दाँत; काण्पर्–देखा; मुऴुतुम् काण्किलार्–(उनका) सम्पूर्ण रूप नहीं देख पाये। ८०२

अप्रमेय सीताजी की खोज में लगे वे वीर सीताजी के केश को काले बालूकणों के विस्तार में, मुख को अलक-सम अलिकलित कमल के फूल में, दन्तावली को मुक्ताराशि में देख सके। पर उनका पूर्ण रूप वे कहीं देख न पाये। ८०२

शॅरुमद याक्कैयर् तिरुक्किल् शिन्दैयर्
तरुमद यावियै तळुवु तन्मैयर्
पॉरुमद यानैयुम् बिडियुम् पुक्कुळल्
नरुमदै यामॅन्नु नदियै नीङ्गिनार् 803

चॅरु मतम् याक्कैयर्–युद्ध-मत्त-शरीरी; तिरुक्कु इल्–वैषम्य-रहित; चिन्तैयर्–मन वाले; तरुमम्–धर्म; तया–दया; इवै तळुवुम् तन्मैयर्–इनसे युक्त स्वभाव वाले; पॉरुमतम् यानैयुम्–झगड़ालू मत्तगज (और); पिटियुम्–हथिनियाँ; पुक्कु उळल्–जहाँ उतरकर क्रीडा करते हैं; नरुमतै आम् ऍन्नुम्–नर्मदा संज्ञित; नतियै–नदी को; नीङ्कितार्–छोड़ (आगे) चले। ८०३

युद्धमदमत्तशरीरी, अनन्यमन, धर्म-दयावान स्वभाव वाले उन्होंने नर्मदा नदी को, जिसमें झगड़ालू गज और हथिनियाँ प्रवेशकर क्रीडा कर रहे थे, तैरकर पार किया। ८०३

तामकू डम्तिरै तीर्त्त शङ्गमुम्, नामकू डप्पॅरुन् दिशैयै नल्हिय
वामकू डच्चुडर् मणिव यङ्गुरुम्, एमकू डत्तडङ् गिरियै अॅय्दिनार् 804

ताम कूटम्–प्रभामय शिखरों से उत्पन्न; तिरै तीर्त्त चङ्कमुम्–लहर-भरे जलाशयों का जमघट; वामम् कूटम् चुटर् मणियुम्–(और) सुन्दर कान्ति-पुंज रत्नों की राशियाँ; वयङ्कुरुम्–जहाँ रहती हैं; नामम् कूटु–नामी; अ पॅरु तिचैयै–उस बड़ी दिशा का; नल्किय–रक्षक; एम कूटम्–हेमकूट; तट किरियै–(नामक) विशाल पर्वत पर; अॅय्तिनार्–जा पहुँचे। ८०४

वे हेमकूट (सात कुलगिरियों में एक) पहुँचे, जिसके शिखरों से तरंगों से पूर्ण नदियाँ बह रही थीं; जिस पर तेजपुञ्ज मणियाँ रहती थीं और जो प्रसिद्ध उस (दक्षिण) दिशा का रक्षक था। ८०४

माड्डुरु गिरिहळु मरनु मऱ्ऱवुम्, शूडुरु पॉन्नॅनप् पॉलिनदु तोन्ऱुरप्
पाड्डुरु शुडरॉळि परप्पु हिन्ऱदु, वीड्डुरु मुलहिनुम् विळङ्गु मॅय्यदु 805

माटु उरु–पार्श्वस्थित; किरिकळुम्–गिरियाँ; मरनुम्–तरु; मऱ्ऱवुम्–और अन्य वस्तुएँ; चूटुरु पॊन् अॅन–तप्त स्वर्ण के समान; पॊलिनतु तोन्ऱुर–प्रभामय दिखें, ऐसा; पाटु उरु चुटर् ऑळि–महान उज्ज्वल प्रकाश; परप्पुकिन्ऱतु–फैलाता है; वीटु उरुम् उलकिनुम्–स्वर्गलोक से भी; विळङ्कु मॅय्यतु–अधिक दर्शनीय रूप का है। ८०५

वह इतनी कान्ति बिखेरता था कि पास वाली गिरियाँ, तरुकुल और अन्य वस्तुएँ तप्त सोने के समान कान्तिमय लगीं। स्वर्गलोक से भी वह शानदार लगा। ८०५

पऱवैयुम् पल्वहै विलङ्गुम् पाडमैन्, दुऱैवन कनहनुण् पूऴि यॊट्टलाऩ्
निऱैनॆडु मेरुवैच् चेर्न्द नीरवाय्प्, पॊऱैनॆडुम् बॊन्नॊळि पॊऴियुम् पॊऱ्पतु 806

पाटु–उसकी बगलों में; अमैन्तु–लगकर; उऱैवन–रहनेवाले; पऱवैयुम्–पक्षीगण; पल् वकै विलङ्कुम्–अनेक तरह के जानवर; कनकम् नुण पूऴि–स्वर्ण के बारीक कणों के; ऑट्टलाल्–लगने से; निऱै नॆटु मेरुवै चेर्न्त–बड़े और ऊँचे मेरु पर्वतवासी हों; नीर आय्—ऐसे लगकर; पॊऱै नॆटु पॊन् ऑळि–भारी स्वर्ण की कान्ति; पॊऴियुम्—बरसानेवाली; पॊऱ्पतु–शोभा से युक्त है। ८०६

उसमें इतने बृहत् रूप से स्वर्ण अपनी कान्ति फैला रहा था कि उसमें रहनेवाले पक्षी और विविध पशु, अपने ऊपर लगे हुए स्वर्णकणों के कारण मेरुपर्वतवासी ही-सम लगते थे। ८०६

परविय कनहनुण् पराहम् पाडुऱ, ऑरिशुडर्च् चॆम्मणि यीट्टत् तोडिऴि
अरुवियु नदिहळु मलङ्गु तीयिडै, उरुहुपॊन् पाय्वपोन् ऱॊऴुहु हिन्ऱदु 807

परविय–बिखरे रहे; कनकम् नुण् पराकम्–बारीक स्वर्णकण; पाटुऱ–उस पर जमे रहे, अतः; ऑरि चुटर्–कान्तिपूर्ण; चॆम् मणि–लाल पद्मरागों की; ईट्टत्तोटु–राशि के साथ; इऴि–उतरनेवाले; अरुवियुम् नतिकळुम्–झरने और नदियाँ; अलङ्कु ती इटै–जलती आग में; उरुकु–पिघला; पॊन्–स्वर्ण; पाय्व पोन्ऱु–बहता हो, ऐसा; ऑऴुकुकिन्ऱतु–बहनेवाली नदियों का है वह। ८०७

सर्वत्र फैले रहे स्वर्ण-सूक्ष्म-कणों और कान्तिमय पद्मरागों के साथ सरिताएं वह रही थीं। वे भी जलती अग्नि के मध्य बहनेवाले पिघले स्वर्ण के समान लगीं। ८०७

विञ्जैयर पाडलुम् विशुम्बिन् वॆळ्वळैप्,
पञ्जिन्मॆल् लडियिना राडऱ् पाणियुम्
कुञ्जर मुऴक्कमुङ् गुमुरु पेरियिन्
मञ्जिन मुरऱ्ऱलुम् मयङ्गु माण्बदु 808

विञ्चैयर् पाटलुम्–विद्याधरों के गाने; विचुम्पिन्–व्योमलोक की; वॆळ्वळै–श्वेत कंकणधारिणी; पञ्चिन्–लाक्षारसरंजित (या रूई-समान); मॆल् अटियिनार्–मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के; आटल् पाणियुम्–नृत्य और ताल के नाद; कुञ्चरम् मुऴक्कमुम्–हाथियों की चिंघाड़; कुमुरु पेरियिन्–थर्रानेवाली भेरियों के समान; मञ्चु इनम्–मेघ-समूहों के; मुरऱ्ऱलुम्–वज्रनाद; मयङ्कुम्–जहाँ मिश्रित रहते हैं; माण्पतु–ऐसी महिमा का है वह पर्वत। ८०८

उस पर, विद्याधरों के गाने के स्वर, स्वर्ग की श्वेतकंकणधारिणी और

रूई-सम मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के नृत्यानुयायी ताल-स्वर, हाथियों की चिंघाड़, भेरी का-सा मेघसमूहों का गर्जन —यह सब सुनाई दे रहे थे। वह ऐसी विशिष्ट स्थिति का था। ८०८

अनैयदु नोक्किना रमर रञ्जुरुम्
विनैवल निरावण निरुक्कुम् वॆऱ्पॆनुम्
निनैविन रुवर्न्दुयर्न्द् दोङ्गु नॆञ्जिनर्
शिनमिहक् कनऱ्पोरि शिन्दु शॆङ्गणार् 809

अनैयतु नोक्किनार्–उसको देखकर; अमरर् अञ्चुरुम्–देवों को भयभीत करनेवाले; विनैवलन्–अत्याचारी; इरावणन्–रावण का; इरुक्कुम् वॆऱ्पु–रहने का पर्वत है; ऍनुम् निनैविनर्–ऐसा सोचते मन के; उवन्तु–(और) संतोष करके; उयर्न्तु ओङ्कु–उमड़ उठनेवाले; नॆञ्चितर्–चित्त (उत्साह) वाले; चिनम् मिक–कोप के बढ़ने से; कनल् पोऱि–अंगारे; चिन्तु–बरसानेवाली; चॆम् कणार्–लाल आँखों वाले (हो गये वे वानर वीर)। ८०९

उन्होंने उस हेमकूट को देखा और सोचा कि यह देवों को भी भयभीत करते हुए नृशंस कर्म करनेवाला रावण का (त्रिकोण) पर्वत है। उनका मन संतोष और उत्साह से भरकर उमंग में आया। साथ-साथ क्रोध के कारण उनकी आँखें कोप के अंगारे उगलती हुई लाल बन गयीं। ८०९

इम्मलै काणुदु मेळै मानैयच्
चॆम्मलै नोक्कुदुञ् शिन्दै तोदॆन
विम्मलुऱ् ऱुवहैयिन् विळङ्गु मुळ्ळत्तर्
अम्मलै येऱिना रच्च नीङ्गिनार् 810

इम् मलै–इस पर्वत पर; एळै मान–अबोध हरिणी-सी देवी को; काणुतुम्–देखेंगे; अ चॆम्मलै–उन महानुभाव के; चिन्तै तोतु–मन के दुःख को; नीक्कुतुम्–दूर कर लेंगे; ऍन–ऐसा सोचकर; विम्मल् उऱ्ऱु–(आशा से) भरकर; उवकैयिन् विळङ्कुम् उळ्ळत्तर्–प्रसन्नचित्त होकर; अच्चम् नीङ्कितार्–भयमुक्त होकर; अ मलै एऱितार्–उस पर्वत पर चढ़े। ८१०

"इस पर्वत पर हम अबोध हरिणी-सी सीताजी को ढूँढ़ेंगे। वे मिल जायँगी और हम प्रभु श्रीराम की चिन्ता दूर कर देगें।" ऐसा सोचकर वे हर्ष से फूल उठे। और भय से मुक्त हुए। ८१०

इरिन्दन करिहळुम् याळि योट्टमुम्
विरिन्दको ळरिहळुम् वॆरुवि नोङ्गित
तिरिन्दन रॆङ्गणुन् दिरुवैक् काण्गिलर्
पिरिन्दनर् शिन्दनै पिऱिदोर् रामॆन 811

करिकळुम्–हाथी और; याळि ईट्टमुम्–'याळि' (कल्पित कोई जानवर जो सिंह के समान थे)-समूह; इरिन्तऩ–तितर-बितर हो गये; विरिन्त–व्याप्त; कोळ् अरिकळुम्–घातक सिंह; वॆरुवि नीङ्कित्त–डरकर भाग गये; ऒङ्कणुम्–पर्वत पर सर्वत्र; तिरिन्तऩर्–घूमे; तिरुवै–श्रीलक्ष्मी को; काण्किलर्–न देख पाकर; पिऱितु ऒऩ्ऱाम्–(यह नहीं) अन्य कोई स्थान है; ऎऩ चिन्तत्ते–ऐसा चिन्तन लेकर; पिरिन्तत्तर्–अलग जाने लगे। ८११

उन वानर वीरों को देखकर हाथी, 'याळि' नाम के (सिंह-समान) जानवरों के झुण्ड, घातक सिंह —सब भयभीत होकर भाग गये। वे सब पर्वत पर सर्वत्र घूमे। पर श्रीदेवी के दर्शन न पा सके। तभी उन्हें सूझा कि यह रावण का स्थान नहीं है, कोई दूसरा है। वे वहाँ से हट कर आगे चले। ८११

ऐम्बदिऱ् ऱिरट्टिहा वदत्ति ऩालहऩ्
ऱुम्बरैत् तॊ‌ट्डुवदौत् तुयर्वि ऩोङ्गिय
शॆम्बॊऩऱ् किरियैयोर् पहलिऱ् ऱेडिऩार्
कॊम्बिऩैक् कण्डिलर् कुप्पुऱ् ऱेहिऩार् 812

ऐम्पतिऱ्ऱु इरट्टि–पचास के दुगुने (सौ); कावतत्तिऩाल्–काद (कोस); अकऩ्ऱु–चौड़ा; उम्परै तॊट्टुवतु ऒत्तु–आकाश को स्पर्श करता-सा; उयर्वित् ओङ्किय–उन्नत; चॆम् पॊऩ्–लाल स्वर्ण-सम (सुन्दर); नल् किरियै–उस हेमकूट पर्वत पर; ओर् पकलिल्–दिन भर; तेटिऩार्–खोजने पर भी; कॊम्पिऩै–पुष्पलता (सीताजी) को; कण्टिलर्–न देख पाये; कुप्पुऱ्ऱु–उतरकर; एकिऩार्–आगे चले। ८१२

उस पर्वत का विस्तार एक सौ कोस का था। वह गगनोन्नत था। वह लाल स्वर्णमय था। उस पर दिवा भर खोजने पर भी उन्हें पुष्पलता-सी देवी नहीं मिलीं। फिर वे उस पर से उतरकर आगे जाने लगे। ८१२

वॆळ्ळमो रिरण्डॆऩ विरिन्द शेऩैयैत्
तॆळ्ळुनी रुलहॆलाम् दिरिन्दु तेडिनीर्
ऎळ्ळरु महेन्दिरत् तॆम्मिऩ् कूडुमॆऩ्
ऱुळ्ळिऩा रुयर्नॆडु मोङ्ग नीङ्गिऩार् 813

वॆळ्ळम् ओर् इरण्टु–दो 'वॆळ्ळम्'; ऎऩ विरिन्त–की संख्या में विस्तृत; चेऩैयै–सेना से; नीर्–तुम; तॆळ्ळुम् नीर्–स्वच्छ जल से आवृत; उलकु ऎलाम्–सारे लोक में; तिरिन्तु तेटि–घूमकर खोज लेने के बाद; ऎळ् अरु–अनिंद्य; मकेन्तिरत्तु–महेन्द्रपर्वत पर; ऎम्मिल् कूटुम्–हमारे पास आ मिलो; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उळ्ळिऩार्–विचार कहकर; उयर् नॆटुम् ओङ्कल्–उन्नत विशाल पर्वत से; नीङ्किऩार्–(अंगदादि नायक) हटे। ८१३

तब अंगद ने दो 'वॅळ्ळम्' संख्या वाली सेना से कहा कि तुम स्वच्छ जलावृत भूमि पर सर्वत्र जाकर खोजो। फिर अनिंद्य महेन्द्रपर्वत पर हमारे पास आकर मिलो। फिर वे हेमकूटपर्वत को छोड़कर चले। ८१३

मारुदि मुदलिय वयिरत् तोळ्वयप्
पोर्वलि वीररे कुळ्मिप् पोहिऩ्ऱार्
नीर्ॲऩुम् बॅयरुमन् नॅऱियि नीङ्गिडच्
चूरियऩ् वॅरुवुमोर् शुरत्तैत् तुऩ्ऩिऩार् 814

मारुति मुतलिय–मारुति आदि; वयिरम् तोळ्–सुदृढ़ कन्धों वाले; वयम् पोर्–विजयदायी युद्ध में; वलि वीररे–पराक्रम दिखानेवाले वीर ही; कुळ्मि पोकिऩ्ऱार्–दल बाँधकर चले; अ नॅऱियिऩ्–उस मार्ग में; नीर् ॲऩुम् पॅयरुम्–जल का नाम तक; नीङ्किट–नहीं रहा, इसलिए; चूरियऩ् वॅरुवुम्–सूर्य को भी भयभीत करनेवाले; ओर् चुरत्तै–एक मरुप्रदेश को; तुऩ्ऩिऩार्–जा पहुँचे। ८१४

मारुति आदि वज्रस्कन्ध युद्ध-विजयी वीर ही एक दल में चले। एक मरुप्रदेश में आये, जहाँ जल का निशान तक नहीं पाया गया और उस कारण गरम किरणमाली भी वहाँ आने से डरते थे। ८१४

पुळ्ळडै याविलङ् गरिय पुल्लोडुम्, कळ्ळडै मरऩिल कल्लुन् दीन्दुहुम्
उळ्ळिडै यावुनुण् पॊडियॊ डोडलिऩ्, वॅळ्ळिडै यल्लदोऩ् ऱिल्लै वॅञ्जुरम् 815

अ वॅम् चुरम्–उस उष्ण मरुप्रदेश में; पुळ् अटैया–पक्षी नहीं आते; विलङ्कु अरिय–जानवर अदृश्य; पुल्लोटुम्–घास के साथ; कळ् अटै–शहद-भरे पुष्पों के; मरऩ् इल–तरु प्राप्य नहीं; कल्लुम्–पत्थर भी; तीन्तु उकुम्–जलकर राख बन जाता; उळ् इटै यावुम्–अन्तर्गत सभी; नुण् पॊटियोटु–चूर-चूर होकर; ओटलिऩ्–उड़ जाते हैं, इसलिए; वॅळ् इटै अल्लतु–खाली स्थान के सिवा; ऒऩ्ऱु इल्लै–कुछ नहीं। ८१५

उस रेगिस्तान में पक्षी नहीं आये। जानवर देखना दुर्लभ था। घास या शहद भरे-फूलों के वृक्ष नहीं दिखायी दिये। पत्थर भी जल-भुनकर राख बन गया। उसमें रहनेवाले सभी पदार्थ चूर-चूर होकर उड़ रहे थे; इसलिए वहाँ शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं था। ८१५

नऩ्बुल ऩडुक्कुऱ वुणर्वु मैन्दऱप्, पुऩ्बुऱ याक्कैहळ् पुळुङ्गिप् पॊङ्गुवार्
तॆऩ्बुलत् तवऩॆरि नरहिऱ् चिन्दिय, अॆऩ्बिल्पल् लुयिरॆऩ वॆम्मै यॆय्दिऩार् 816

नल् पुलऩ्–स्वस्थ इन्द्रियाँ; नटुक्कुऱ–काँपीं; उणर्वु–बुद्धि; मैन्तु अऱ–क्षीण होकर मिट गयी; पॆरुम् पुऩ् पुऱ–प्रभाहीन, बड़े बाह्य; याक्कैकळ्–शरीर; पुळुङ्कि–स्वेद से भर गये; पॊङ्कुवार्–तप्तमन हुए; तॆऩ् पुलत्तवऩ्–दक्षिणी दिशा के अधिदेव (यम) के; ॲॆरि नरकिल्–जलते नरक में; चिन्तिय–गिरे हुए; ॲॆऩ्पु

इल्–अस्थिहीन; पल् उयिर् अँत–अनेक जीवों के समान; वॅम्मै ऍय्तिनार्–झुलसे। ८१६

वहाँ पहुँचकर उनकी इन्द्रियाँ काँप गयीं। चेतना खो गयी। बड़े बाह्यशरीर स्वेदयुक्त हो गये। उनका मन तप्त हो गया। दक्षिणी दिशा के स्वामी यम के जलते नरक में पड़े अस्थिहीन जीवों के समान वे शरीर और मन से तप्त-विगलित हो रहे। ८१६

नीट्टिय	नावित्तर्	निलत्तिऱ्	ऱीण्डुदो
रूट्टिय	वॅम्मैया	लुलयुङ्	गालित्तर्
काट्टिनुङ्	गायन्दुदङ्	गायन्	दीदलाल्
शूट्टहन्	मेलॅळु	पॊरियिऱ्	ऱुळ्ळिनार् 817

नीट्टिय नावित्तर्–बाहर निकली जीभ वाले; निलत्तिल्–भूमि पर; तीण्टु तोरु–ज्यों-ज्यों स्पर्श करते, त्यों-त्यों; ऊट्टिय–लगनेवाली; वॅम्मैयाल्–गरमी से; उलैयुम् कालित्तर–छाले-भरे पैरों वाले; काट्टिनुम्–मरुप्रदेश से भी; कायन्तु–जलन पाकर; तम् कायम्–अपने शरीरों के; तीतलाल्–झुलसने से; चूट्ट कल् मेल्–तप्त प्रस्तर-पात्र से; ॲळु पॊरियिन्–उठनेवाले खील के समान; तुळ्ळिनार्–उछले। ८१७

उनकी जीभें बाहर लटकने लगीं। जब कभी भूमि से उनका स्पर्श हुआ तो नीचे से लगनेवाली गर्मी की वजह से पैरों में छाले पड़ गये। उनका शरीर उस मरुप्रदेश से भी अधिक तप्त हो गया तो तप्त कुण्डी में से उछलनेवाली खीलों के समान छटपटाने लगे। ८१७

ऑदुङ्गला	निळलित्तैक्	काण्गि	लादुयिर्
पिदुङ्गला	मुडलिन्नर्	मुडिविल्	पीळैयार्
पदङ्गडीप्	परुहिडप्	पदैक्किन्	ऱार्पल
विदङ्गळा	नॅडुम्बिल	वळियित्	मेविनार् 818

ऑतुङ्कल् आम्–पनाह लें, ऐसी; निळलितै–छाँह को; काण्किलातु–न देखकर; उयिर् पितुङ्कल् आम्–जान जिनसे बाहर निकलने को थी, ऐसे; उटलित्तर्–शरीर वाले बनकर; मुटिवु इल्–असीम; पीळैयार्–वेदनापीड़ित; पतङ्कळ्–पैरों को; ती परुकिट–आग खा लेती है, इसलिए; पतैक्किन्ऱार्–छटपटाते हैं; पल वितङ्कळाल्–अनेक प्रकारों से सोचकर; नॅटु पिलम् वळियिल्–बड़ी बिल के मार्ग में; मेविनार्–बढ़े। ८१८

कहीं कोई छाँह नहीं दिखी जहाँ वे पनाह पा सकें। प्राण शरीर से बाहर निकलने को हो गये। असीम पीड़ा से, अग्निभुक्त पैरों के साथ वे तड़प उठे। उनसे बचने के विविध उपाय सोचने के बाद आखिर वे एक बिल के द्वार पर आये। ८१८

मीच्चॅल वरिदिऩि विळियि ऩल्लदु
तोच्चॅल वौळियवुम् तडुक्कुन् दिण्बिल
वाय्च्चॅल ऩऩ्ऱॆऩ मऩत्ति ऩॆण्णिऩार्
पोय्च्चिल वऱिदुमॆऩ् ऱदनिऱ् पोयिऩार् 819

इऩि—अब; विळियिऩ् अल्लतु—मरना छोड़कर; मी चॅलवु—आगे जाना; अरितु—असम्भव है; तिण् पिलम्—बलवान बिल के; वाय् चॅलल्—द्वार से अन्दर जाना; ती—मरु की आग से युक्त; चॅलवु ऑळियवुम्—(मरुप्रदेश में) बढ़ने से भी; तटुक्कुम्—रोकेगी; नऩ्ऱु—(अतः) बिल में जाना ही अच्छा है; ऎऩ—ऐसा; मऩत्तिऩ् ऎण्णिऩार—मन में सोचा; पोय्—जाकर; चिल अऱितुम्—कुछ जान लेंगे; ऎऩ्ऱु—कहते हुए; अततिल्—उसमें; पोयिऩार्—गये। ८१६

"मरने के सिवा अब आगे जाना असम्भव है। इस बड़े बिल के द्वार से अन्दर जाने से कम से कम सन्तापक मरु में जाने से बच सकेंगे। इसलिए इसमें घुस जाना ही भला है।" यह सोचकर वे उसमें घुस गये। उनका यह भी विचार था कि अन्दर जाकर थोड़ा देखें भी। ८१९

अक्कणत् तप्पिलत् तहणि यॆय्दिऩार्
तिक्किऩॊ डुलहुऱच् चॆऱिन्द देङ्गिरुळ्
ऎक्किय कदिरवऱ् कञ्जि येमुऱप्
पुक्कदे यऩैयदोर् पुरैपुक् कॆय्दिऩार् 820

अ कणत्तु—उस क्षण में; अ पिलत्तु अकणि—उस बिल के अन्दरूनी स्थान पर; ऎय्तिऩार्—जाकर; तिक्किऩॊटु—चारों दिशाओं के साथ; उलकु उऱ—लोकों में भी लगा रहा; चॆऱिन्त तेङ्कु इरुळ्—घना जमा अन्धकार; ऎक्किय—ऊपर चढ़े हुए; कतिरवऱ्कु अञ्चि—सूर्यदेव से डरकर; एमुऱ—रक्षा पाने के लिए; पुक्कते—इसमें घुस गया हो; अऩैयतु—ऐसी एक; पुरै—गुहा में; पुक्कु—प्रवेश करके; ऎय्तिऩार्—चले। ८२०

वे वीर जब अन्दर एक गुहा में आये, जहाँ का अँधेरा ऐसा लगा मानो सारी दिशाओं में और सारी पृथ्वी पर जमा हुआ अन्धकार आकाश में चढ़े सूर्य से डरकर अपने जीवन की सुरक्षा को उसी के अन्दर साध्य मानकर उधर आ गया हो। ८२०

ऎऴुहिलर् कालॆडुत् तेहु मॆण्णिलर्
वऴियुळ दामॆऩु मुणर्वु माऱिऩार्
इऴुहिय नॆय्यॆऩु मिरुट् पिऴम्बिऩुळ्
मुऴुहிய मॆய्யரா युयिர்ப்பு मूट்டिऩार் 821

ऎऴुकिलर्—नहीं उठते; काल् ऎटुत्तु—पैर रखकर; एकुम् ऎण् इलर्—बढ़ने की इच्छा नहीं करते; वऴि उळतु आम्—मार्ग भी है; ऎऩुम् उणर्वु—यह विचार; माऱिऩार्—बदल गया; इऴुकिय नॆय्—घने जमे हुए घी के समान; इरुळ् पिऴम्पिऩुळ्—

अँधेरे के पुंज में; मुऴुकिय–मग्न; मॅय्यराय्–शरीर वाले होकर; उयिर्प्पु मुट्टिनार्–ठण्डी आहें भरने लगे। ८२१

तब वे खड़े हो गये। उनके पैर नहीं उठे। आगे डग देने को मन नहीं हो रहा था। आगे मार्ग भी होगा —यह सोच नहीं सके। जमे हुए घी के समान उस अन्धकार में उनके शरीर मानो मग्न हो गये। उनका दम फूलने लगा। ८२१

निऩ्ऱऩर् शॅय्वदोर् निलैमै योर्हलर्, पॊऩ्ऱिऩ रामॅऩप् पॊरुमु पुऩ्दियर्
वऩ्ऱिऱऩ् मारुदि वल्लै योवॅमै, इऩ्ऱिदु काक्कवॆऩ् ऱिरन्दु कूऱिऩार् 822

चॅय्वतु–करणीय; ओर् निलैमै–कोई निर्णय; ओर्कलर्–जान नहीं पाते; निऩ्ऱऩर्–स्तब्ध खड़े रहे; पॊऩ्ऱिऩर् आम् ऍऩ–मर गये, ऐसे; पॊरुमु पुऩ्तियर्–निराशा-भरे मन वाले होकर; वल् तिऱल् मारुति–अति बलिष्ठ मारुति; इऩ्ऱु–अब; ऍमै–हमें; इतु काक्क वल्लैयो–इस (दुःख) से बचा सकोगे क्या; ऍऩ्ऱु–कहकर; इरन्तु कूऱिऩर्–प्रार्थना का वचन कहा (वानर वीरों ने)। ८२२

वे किंकर्तव्यमूढ़ हो खड़े रह गये। मरणावस्था को पहुँच गये हों, ऐसा दुःखी होकर अन्य वानर वीर हनुमान से विनय-याचना करने लगे कि हनुमान! अब हमें इस संकट से बचा सकोगे क्या? । ८२२

उय्वुरुत् तुवॆऩ्मऩ मुलैयि रूऴिऩ्वाल्, मॅय्युऱप् पऱ्ऱुदिर् विडुहि लीरॆऩ
ऐयऩक् कणत्तिऩि लहलु नीळ्नॆऱि, कैयिऩिऱ् ऱडविवॆङ् गालि ऩेहिऩाऩ् 823

उय्वु उऱुत्तुवॆऩ्–जीवित करूँगा (बचाऊँगा); मऩम् उलैयिर्–मन मत मारो; ऊऴिऩ्–क्रम से (एक के पीछे एक) खड़े होकर; वाल्–मेरी पूँछ को; मॅय् उऱ–दृढ़ रूप से; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ लो; विट्टुकिलीर्–छोड़ो मत; ऍऩ–कहकर; अ कणत्तिऩिल्–उसी क्षण; ऐयऩ्–नायक; अकलुम् नीळ् नॆऱि–गम्य उस लम्बे मार्ग में; कैयिऩाल् तटवि–अपने हाथ से टटोलते हुए; वॆम् कालिऩ्–जल्दी पैदल; एकिऩाऩ्–गया। ८२३

मारुति ने आश्वासन दिया कि बचाने का उपाय करूँगा। मन मत मारो। एक के पीछे एक खड़े होकर मेरी पूँछ पकड़ लो। मत छोड़ो। जब उन्होंने उसकी पूँछ को पकड़ लिया, तब हनुमान अपने हाथ से रास्ता टटोलते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा। ८२३

पऩ्ऩिरण् डियोशऩै पडर्न्द मॅय्यिऩऩ्
मिऩ्ऩिरण् डऩैयहुण् डलङ्गळ् विल्लिडत्
तुऩ्ऩिरु डॊलैन्दिडत् तुरुवि येहिऩाऩ्
पॊऩ्ऩॆडुङ् गिरियॆऩप् पॊलिन्द मेऩियाऩ् 824

नॆट्टु पॊऩ् किरि–बड़ी स्वर्णगिरि; ऍऩ पॊलिन्त–(के) समान छविपूर्ण-शरीरी; पऩ्ऩिरण्टु योचऩै–बारह योजन; पटर्न्त मॅय्यिऩऩ्–विशाल देह का; मिऩ् इरण्टु

अत्तैय–दो बिजलियों के समान; कुण्टलक्कळ्–कुण्डलों के; विल् इट–प्रकाश फैलाने से; तुन्न् इरुळ्–घना अन्धकार; तोलैन्तिट–मिटा, तब; तुरुवि एकिनान्–खोजते हुए बढ़ा। ८२४

उन्नत स्वर्ण (मेरु) पर्वत-सम शोभायमान-शरीरी हनुमान का शरीर बारह योजन का बढ़ गया। बिजली के समान उसके दो कुण्डलों ने प्रकाश छिटकाया। उस प्रकाश में घना अन्धकार छँटा। उसी प्रकाश में मार्ग ढूँढ़ते हुए वह आगे गया। ८२४

कण्डनर् कडिनहर् कहनत् तोंणगदिर्
मण्डल मऱैन्दुऱैन् दनैय माण्बदु
विण्डल नाणुऱ विळङ्गु हिन्ऱदु
पुण्डरि हत्तवळ् वदनम् बोन्ऱदु 825

कटि नकर् कण्टनर्–(अन्दर जाकर) उन्होंने एक सुन्दर नगर देखा; ककनत्तु–आकाश में; ऑळि कतिर् मण्टलम्–प्रकाशमय किरणों का सूर्यमण्डल; मऱैन्तु उऱैन्तु अनैय–छिपा रहता हो, ऐसा; माण्पतु–शानदार है; विण् तलम्–स्वर्गलोक; नाण् उऱ–लजावे, ऐसा; विळङ्कुकिन्ऱतु–शोभता है; पुण्टरिकत्तवळ्–कमला श्रीलक्ष्मी के; वतनम् पोन्ऱतु–वदन के समान है। ८२५

वहाँ वीरों ने एक श्रेष्ठ नगर को देखा। वह ऐसा शोभायमान था, मानो प्रकाश की किरणों का सूर्यमण्डल उधर आकर छिपा रह रहा हो। स्वर्ग को भी लजाते हुए वह शोभा दे रहा था। कमलनिवासिनी लक्ष्मी-देवी के श्रीवदन के समान लग रहा था। ८२५

कऱ्पहक् कावदु कमलक् काडदु, पॊऱ्पॆरुङ् गोपुरप् पुरिशै पुक्कदु
अऱ्पुद ममररु मॆय्द लावदु, शिऱ्पमु मयन्मनम् वरुन्दिच् चॆय्ददु 826

कऱ्पकम् कावतु–कल्प-काननयुक्त है; कमलम् काटतु–कमल-वन उसमें है; पॊन् पॆरु कोपुरम्–स्वर्णमय गुम्बजों के साथ; पुरिचै पुक्कतु–प्राचीर बने हैं; अमररुम्–अमरगण को भी; अऱ्पुतम् ऎय्तल् आवतु–विस्मित करनेवाला; चिऱ्पमुम्–शिल्प-कार्य; मयन्–मय का; मनम् वरुन्ति–मन को कष्ट देकर (मन लगाकर); चॆय्ततु–किया हुआ। ८२६

उसके अन्दर कल्पकानन था। कमलसर थे। स्वर्णिम मीनारों के साथ प्राचीर थे। अमर लोग भी उसको देखकर विस्मित हों —ऐसी शोभा वाला था वह। वहाँ कि शिल्पकारी मय के द्वारा परिश्रम उठाकर की गयी थी। ८२६

इन्दिर नहरमु मिणैयि लादहु, मन्दिर मणियिनिऱ् पॊन्निन् मन्नियॆ
अन्दरत् तविर्शुड रङ्गिन् ऱायिनुम्, उन्दरु मिरुडुरन् दोळिर निऱ्पबु 827

इन्तिरन् नकरमुम्–इन्द्र का नगर भी; इणै इलाततु–इसका साम्य नहीं कर सकता; अन्तरत्तु–आकाश में; अविर् चुटर्–उदित सूर्य व चन्द्र; अङ्कु इन्ऱु–वहाँ नहीं हैं; आयितुम्–तो भी; मन्तिरम् मणियिऩिल्–प्रासादों में जड़ित मणि-माणिकों और; पोन्ऩिन् मन्ऩुतियै–स्वर्ण से; उन्त अरुम्–जिसका निकालना कठिन हैं; इरुळ्–उस अन्धकार को; तुरन्तु–दूर करके; ओळिर निऱ्पतु–प्रकाशमय रहता है। ८२७

इन्द्र की अमरावती भी उसकी समानता नहीं कर सकती थी। आकाश के प्रकाशमण्डल सूर्य और चन्द्र वहाँ नहीं थे; तो भी वह नगर अपने सौधों पर जड़ित मणियों और स्वर्ण के द्वारा दुर्निवार अन्धकार दूर करके प्रकाशमय रह रहा था। ८२७

पुविपुहळ् शॅन्ऩिपे रबयन् ऱोळ्पुहळ्, कविहड मनैयॅनक् कनह राशियुम्
शविवियुडैत् तूशुमॅन् शान्दु मालैयुम्, अविरिळैक् कुप्पैयु मळवि लादतु 828

पुवि पुकळ्–लोकसंशित; चॅन्ऩि पेर् अपयन्–कुलोत्तुंग और अभय नामधारी चोळ राजा के; तोळ् पुकळ्–भुजबल की प्रशंसा में गानेवाले; कविकळ् तम् मनै–कवियों के भवनों; ॲन–के समान; कनकम् राचियुम्–स्वर्णराशि; चवि उटै तूचुम्–प्रकाशमय स्वर्णाम्बर और; मॅल् चान्तुम्–कोमल चन्दन का लेप; मालैयुम्–मालाएँ; अविर् इळै कुप्पैयुम्–कान्तिमय आभरणों के ढेर; अळवु इलाततु–अपार हैं वहाँ। ८२८

लोकशंसित कुलोत्तुंग और अभय नाम के चोळ राजा के प्रशंसक भाट-कवियों के घरों के समान, कनकराशि, उज्ज्वल स्वर्णवस्त्र, चन्दन, सुवासित मालाएँ, कान्तिमय आभरणों के ढेर —इनसे वह इतना भरा था कि कोई गणना नहीं हो सकती थी। ('कुलोत्तुंग' का नाम देखकर कुछ विद्वान् कम्बन् के काल का अनुमान लगाते हैं। पर कुलोत्तुंग एक ही नहीं था।)। ८२८

पयिल्हुरल् किण्गिणिप पदत्त पावैयर्
इयल्पुडै मैन्दरॅन् ऱियक्कि लामैयाल्
तुयिलवुम् नोक्कवुम् तुणैय दन्ऱियॆ
उयिरिला वोविय मॅन्ऩु मॊप्पदु 829

पयिल् कुरल्–क्वणनशील; किण्किणि पतत्त–मंजीरों से युक्त पैरों वाली; पावैयर्–रमणियाँ; इयल्पुटै मैन्तर्–(और) श्रेष्ठ गुणों के पुरुष; ॲन्ऱु–इनके; इयक्कु इलामैयाल्–संचार के न होने से; तुयिलवुम् नोक्कवुम्–मूँदने, खोलने के; तुणैयतु–दो परस्पर मिले कार्य के; अन्ऱिये–विना ही; उयिर् इला–निर्जीव रहनेवाला; ओवियम् ॲन्ऩुम्–चित्र कहो; ऒप्पतु–उसके योग्य है। ८२९

वहाँ क्वणनशील नूपुरचरणा स्त्रियों और सद्‌गुणपूर्ण पुरुषों का संचार नहीं पाया गया। इसलिए वह निर्जीव चित्र के समान था जो सो या जाग नहीं सकता है। ८२९

अमिऴ्दुर ऴयिनियै यडुत्त वुण्डियुम्
तमिऴ्निहर् नऱवमुन् दनित्तण् डेऱलुम्
इमिऴ्हऩिप् पिऱक्कमुम् पिऱवु मिन्नन
कमऴ्वुऱत् तोऩ्ऱिय कणक्किल् कोट्पदु 830

अमिऴ्तु उऱऴ्–देवसुधा-सम; अयिनियै अटुत्त–भात आदि; उण्टियुम्–भोजनपदार्थ; तमिऴ् निकर् नऱवमुम्–तमिऴ-सम मधुर मधु; तनि तण् तेऱलुम्–विशेष शीतल सुरा; इमिऴ् कनि पिऱक्कमुम्–मधुर फलों की राशि और; इन्नन पिऱवुम्–ऐसे अन्य पदार्थ; कमऴ्वु उऱ–मीठी गन्ध के साथ; तोऩ्ऱिय–जहाँ भरे थे; कणक्कु इल् कोट्पतु–ऐसा अपार महिमामय है। ८३०

और उसमें यह विशेषता थी कि वहाँ देवामृत-सम भोजन, तमिऴ-मधुर शहद, अनुपम शीतल मद्य, मधुर फलों की राशियाँ और ऐसी अन्य वस्तुएँ अपार रूप से प्राप्त थीं। ८३०

कन्निनॆंडु मानहर मन्नदॆदिर् कण्डार्
इन्नहर मामिहलि रावणन दूरॆन्
ऱुन्नियुरै याडिनरु वन्दनर् वियन्दार्
पॊन्निनॆंडु वायिलद नूडिनिदु पुक्कार् 831

अन्नतु–वैसे; कन्नि–नितनवीन; नॆंटु मा नकरम्–लम्बे-चौड़े नगर को; ऎतिर् कण्टार्–सामने देखा (वानरों ने); इ नकर्–यह नगर; इकल् इरावणनतु–शत्रु रावण का; ऊर् आम्–नगर है; ऎन्ऱु उन्नि–ऐसा सोचकर; उरै आटिनर्–आपस में बात करते हुए; उवन्तनर्–खुश हुए; वियन्तार्–विस्मित हुए; पॊन्निन् नॆंटुवायिल्–स्वर्णपुरी के गोद्वार; अतन् ऊटु–से; इनितु–सुख से; पुक्कार्–घुसकर गये। ८३१

ऐसे बहुत शानदार उस नित्यजीवी नगर को उन्होंने सामने जाकर देखा। सोचा कि यह रावण का नगर है। वे आपस में उस विचार के आधार पर बात करते हुए बहुत आनन्द और विस्मय से भर गये। फिर उस विशाल स्वर्णमय नगर के गोद्वार से सुख से प्रविष्ट होकर चले। ८३१

पुक्कनह रत्तिनिदु नाडिनर् पुहुन्दार्
मक्कळ्कडै तेवर्तलै वानुलहिन् वैयत्
तॊक्कवुऱै वोरुरुव मोवियम लान्मऱ्
ऱॆक्कुऱियि नुळ्ळवुमॆ दिरन्दिलर् तिरिन्दार् 832

पुक्क नकरत्तु–प्रविष्ट नगर में; इनितु–खूब; नाटिनर् पुकुन्तार्–खोजना आरम्भ करके; तेवर् तलै–देवों से लेकर; मक्कळ् कटै–मानव तक; वान् उलकिन्–स्वर्गलोक के; वैयत्तु ऒक्क–और भूलोक के साथ; उऱैवोर् उरुवम्–वासियों के रूप; ओवियम् अलाल्–चित्र बनकर रहे, इसके सिवा; मऱ्ऱु–कोई दूसरा; कुऱियिन् उळ्ळवुम्–जीवन के लक्षण के साथ रहनेवाले; ऎतिरन्तिलर्–किसी को नहीं देखा; तिरिन्तार्–घूमे। ८३२

उस नगर में प्रविष्ट होकर उन्होंने उत्साह के साथ खोजना आरम्भ किया। देवों से लेकर मनुष्य तक, देवलोक और मानवलोक में रहनेवालों के चित्र थे, पर कहीं भी जीव का निशान नहीं मिला। वे ऐसे ही घूम-घूमकर देखने लगे। ८३२

वावियुळ पॉय्हैयुळ वाशमलर् नाऱुम्
कावुमुळ काविविळि यार्मॉऴिह ळॅन्नक्
कूवुमिळ मॅन्कुयिल्हळ् पूवैकिळि कोलत्
तूविमड वन्नमुळ तोहैशुव डिल्लै 833

वावि उळ–वापियाँ हैं; पॉय्कै उळ–तडाग हैं; वाच मलर् नाऱुम्–पुष्प-सुगन्ध भरे; कावुम् ऊळ–बाग हैं; कावि विळियार्–नीलोत्पलाक्षी; मॉऴिकळ् ॲन्न–(रमणियों) की वाणी के समान; कूवुम्—कूकनेवाली; इळ मॅल् कुयिल्कळुम्–छोटी कोमल कोयलें हैं; पूवै–सारिकाएँ; किळि–शुक; कोलम् तूवि–सुन्दर परों वाले; मटम् अन्नम्–बाल-मराल; उळ—हैं; तोकै–कलापी-निभ; चुवटु–(सीता का) निशान; इल्लै–नहीं। ८३३

उस नगर में वापियाँ थीं; सरोवर थे। सुवासपूर्ण पुष्पों के उद्यान थे। नीलोत्पलाक्षियों के समान कूकनेवाली बाल, कोमल कोयलें, सारिकाएँ, शुक और मनोरम परों से युक्त बाल-मराल पाये गये। पर कलापी-सी सुन्दर सीता का कोई पता नहीं मिला। ८३३

आयनह रत्तितियल् बुळ्ळुऱ वरिन्दार्
मायैहॉलॅ नक्करुदि मऱ्ऱुनितै वुऱ्ऱार्
तीयपिल नुट्पिऱवि शॅन्ऱविदु वॊन्ऱो
तूयदु तुऱक्कमॅन नॅञ्जुतुणि वुऱ्ऱार् 834

आय नकरत्तिन्–उस नगर की; इयलपु–सच्ची स्थिति को; उळ् उऱ अऱिन्तार्–अन्दर रहकर जिन्होंने जान लिया, उन्होंने; मायै कॉल्–माया क्या; ॲन करुति–ऐसा सोचकर; तीय पिलत्तुळ्–बुरे विवर में; पिऱवि चॅन्ऱ–हमारा जन्म हो गया; मऱ्ऱु नितैवुऱ्ऱार्–दूसरा विचार किया; इतु ऑन्ऱो–यही एक है; तूयतु तुऱक्कम्–पवित्र स्वर्ग है; ॲन–ऐसा; नॅञ्चु तुणिवुऱ्ऱार्–मन में दृढ़ कर लिया। ८३४

वे उस नगर की यथार्थ स्थिति को भीतर से जान गये। उन्हें सन्देह हुआ कि यह कोई माया है क्या? हमारा जन्म भयंकर पाताल में हो गया! यह भी विचार उनके मन में उठा। फिर सोचने लगे कि क्या वही एक विचार हो सकता है; नहीं! यह पवित्र स्वर्ग ही है। उनका यह दृढ़ विचार हो गया। ८३४

इऱन्दिल मिदऱ्कुरिय दॆण्णियिल मेदुम्
मऱन्दिल मयिर्प्पितॊ डिमैप्पुळ मयक्कम्

पिऱन्दवर् शॆयऱ्कुरिय शॆय्दल्पिऴै यॆऩ्ऱाल्
तिऱन्दॆरिव दॆऩ्ऩॆऩ विशैत्तनर् तिहैत्तार् 835

इऱन्तिलम्–(स्वर्गवासी होना कैसे)हम मरे तो नहीं; इतऱ्कु–इसकी; उरियवु–बात; ऍण्णि इलम्–सोची नहीं; एतुम् मऱन्तिलम्–हम किसी बात को भूले नहीं; अयिर्प्पिऩोटु–संशय के साथ; इमैप्पु उळ–पलक का गिरना भी चल रहा है; इऩ्ऱु–अब; मयक्कम् पिऱन्तवर्–भ्रमग्रस्त के; चॆयऱ्कु उरिय–करने योग्य काम; चॆय्तल् पिऴै–करना गलत है; ऍऩिऩ्–तो; तिऱम् तॆरिवतु—अपनी स्थिति जानना; ऍऩ्–कैसा; ऍऩ–ऐसा; इचैत्तनर्–आपस में बोलते हुए; तिकैत्तार्–भ्रान्त हुए। ८३५

(उन्हें इस विचार पर आपत्ति लगी।) स्वर्ग पहुँचने के लिए हम मरे तो नहीं हैं। यहाँ आने की बात हमने सोची भी नहीं थी। बीती बातें हम याद करते हैं— वे नहीं भूलीं। मन में संकल्प-विकल्प उठते हैं और हमारी पलकें उठती-गिरती हैं। अब भ्रान्त लोगों के समान कार्य करना गलत होगा। तो हम सच्चा हाल जानें कैसे? यों आपस में बोलते हुए वे चकित खड़े रहे। ८३५

शाम्बवऩव नॊऩ्ऱुरैशॆय् वाऩॆऴु शलत्ताल्
काम्बनैय तोळियै यॊळित्तपडु कळ्वऩ्
नाम्बुह वमैत्तपॊऱि नऩ्ऱुमुडि विऩ्ऱाल्
एम्बलिऩि मेलैविदि याऩ्मुडियु मॆऩ्ऱाऩ् 836

चाम्पऩ् अवऩ्–जाम्बवान जो था उसने; ऒऩ्ऱु–एक बात; उरै चॆय्वाऩ्–कही; ऍऴु चलत्ताल्–स्वाभाविक छल से; काम्पु अऩैय–बाल-बाँस के समान; तोळियै–कन्धों वाली सीता को; ऒळित्त–जिसने छिपाकर रखा; पटु कळ्वऩ्–बड़े चोर (रावण) का; नाम् पुक अमैत्त–हमारे प्रवेश के लिए रचित; पॊऱि–यन्त्रजाल; नऩ्ऱु–अच्छा है; मुटिवु इऩ्ऱु–इसका निस्तार नहीं; एम्पल्–हमारा सन्तोष; इऩि–अब; मेलै वितियाल्–पूर्व कर्म के फल-स्वरूप; मुटियुम्–दूर हो जायगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (जाम्बवान ने)। ८३६

तब जाम्बवान ने हताश होकर एक बात कही। हमें फँसाकर कष्ट देने के विचार से पक्के चोर रावण का, जिसने छल से वंशतरु-सम कन्धों वाली सीता को हर ले जाकर छिपा रखा है, बनाया हुआ यह फंदा भी बहुत भला है! इसका कोई अन्त नहीं दिखता। हमारा सन्तोष अब प्रारब्ध से दूर जायगा। ८३६

इऩ्ऱुपिल नीदिडैयि नेऱरि दॆऩिऱ्पार्
तिऩ्ऱुशह रर्क्कदिह माहिनऩि शॆऱुम्
अऩ्ऱदॆऩिऩ् वञ्जनै यरक्कर यडङ्गक्
कॊऩ्ऱॆऴुदु मञ्जलॆऩ मारुदि तुऩ्ऩॊदिताऩ् 837

मारुति–मारुति; इन्ऩु–अब; इटैयिल्–मध्यस्थित; पिलऩ् ईतु–इस बिल से; एऱ अरितु–ऊपर चढ़कर जाना दुस्तर है; ॲनिऩ्–तो; चकररक्कु–सगर-पुत्रों से; नऩि अतिकम् आकि–बढ़कर अतिबली बनकर; पार् तिऩ्ऱु–भूमि को चीरकर; चेऱुम्–पहुँच जायँगे; अतु अऩ्ऱु ॲनिऩ्–वह नहीं (हो सका) तो; वञ्चऩै अरक्करै–वंचक राक्षसों को; अटङ्क कॊऩ्ऱु–पूर्ण रूप से मारकर; ॲऴुतुम्–उठ चलेंगे; अञ्चल्–डरो मत; ॲऩ–ऐसा; कॊतित्ताऩ्–(मारुति ने) तप्त होकर कहा। ८३७

तब मारुति ने वीर वचन कहे। इस बिल से साधारण रूप से, ऊपर पहुँचना दुस्साध्य है, तो हम सगरपुत्रों से भी अधिक बलवान होकर भूमि को चीरते हुए सुख से बाहर चले जायँगे। अगर वह सम्भव नहीं तो वंचक राक्षसों को समूल नष्ट करके छोड़ेंगे। मत डरो। हनुमान का मन कोपाक्रान्त था। ८३७

मऱ्ऱवरु मऱ्ऱदु मऩक्कॊळ वलित्तार्
उऱ्ऱऩर् पुरत्तिडैयव् वॊण्शुडरि ऩुळ्ळोर्
नऱ्ऱव मऩैत्तुमुरु नण्णियॊळि पॆऱ्ऱ
कऱ्ऱैविरि पॊऱ्चडैयि ऩाळैयॆदिर् कण्डार् 838

मऱ्ऱवरुम्–(अंगदादि) अन्य वीरों ने; अतु मऩम् कॊळ्ळ–उस वचन के मन में (ठीक) लगने से; वलित्तार्–(वैसा ही) संकल्प करके; पुरत्तु इटै–नगर-मध्य; उऱ्ऱऩर्–जाकर; अ ऑण् चुटरित्तुळ्–अतिप्रकाशमय उस नगर में; नल् तवम् अऩैत्तुम्–श्रेष्ठ तप सारा; ओर् उरु नण्णि–एक (स्त्री-) रूप लेकर; ऑळि पॆऱ्ऱ–प्रभाशालिनी जो रहा; कऱ्ऱै विरि–उलझे केशों की; पॊऩ् चटैयिताळै–स्वर्णमय जटा वाली (स्वयंप्रभा) को; ॲतिर् कण्टार्–सामने देखा (उन्होंने)। ८३८

यह सुनकर अंगदादि अन्य वीरों में ऐसा ही कोप उदित हुआ। उन्होंने भी वही संकल्प किया। फिर वे नगर के अन्दर गये। उस प्रकाशमय नगर के मध्य उन्होंने तपस्विनी स्वयंप्रभा को देखा। वह तपस्या की मूर्ति बनी थी। उसकी जटाजूट सुन्दर और बड़ी थी। ८३८

मरुङ्गलश वऱ्कलै वरिन्दुवरि वाळम्
पॊरुङ्गलश मॊक्कुमुलै माशुपुडै पूशिप्
पॆरुङ्गलै मदित्तिरु मुहत्तळ्पिऱळ् शॆङ्गेऴ्
करुङ्गयल् कळिर्ऱिहळ्हण् मूक्कुनुदि काण 839

पॆरु कलै मति–महिमामय सोलह कलापूर्णचन्द्र-सम; तिरु मुकत्तळ्–सुन्दर-मुखी; मरुङ्कु अलच–कमर को दुःख देते हुए; वऱ्कलै वरिन्तु–वल्कल बाँधे; वरि वाळम् पॊरुम्–रेखायुक्त चक्रवाक पक्षी के समान और; कलचम् ऑक्कुम्–कलश-सम; मुलै पुटै–स्तनों पर; माचु पूचि–धूल लगने देते हुए; पिऱळ्–चंचल; चॆम् केऴ्–लाल रंग की; करु कयल्कळिऩ्–काली मछलियों के समान; तिकऴ्–शोभित; कण्–आँखों; मूक्कु नुति काण–नासिकाग्र को देखती रहीं, वैसा। ८३९

उसका श्रीमुख सोलहों कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान था। उसने कमर को दुःख देते हुए वल्कल बाँधा था। उसके रेखायुक्त, चक्रवाक और स्वर्ण-कलश के समान स्तनों पर गर्द जमी थी। चंचल और लालिमा और कालिमा के साथ शोभायमान 'कॅण्डै' मछलियों के समान उसकी आँखें नासिकाग्र पर लगी हुई थीं। ८३९

तेरत्तैय	वल्हुल्शॅरि	तिण्गदलि	शॅप्पुम्
ऊरुविन्नो	डॉडुङ्गुऱ	वॉडुक्कियुऱ	वॉल्हुम्
नेरिडै	शलिप्पऱ	निऱुत्तिनिमिर्	कॉङ्गैप्
पारमु	ळॉडुक्कुऱ	वुयिर्प्पिडै	परिप्प 840

तेर् अत्तैय अल्कुल्–रथ-सम कटिप्रदेश को; चॅरि–पुष्ट; तिण् कतलि चॅप्पुम्–प्रवृद्ध कदली-सम; ऊरुविन्नोटु–ऊरुओं के साथ; ऑटुङ्कुऱ ऑटुक्कि–लगाकर दबाये हुए; उयिर्प्पु इटै परिपप–श्वास को रोकने से; उऱ ऑल्कुम्–खूब चलित होनेवाली; नेर् इटै चलिप्पु–पतली कमर का हिलना; अऱ निऱुत्ति–एक दम रोककर; निमिर् कॉङ्कै पारम्–उन्नत स्तन-भार को; उळ् ऑटुक्कुऱ–दबकर रहने देते हुए। ८४०

रथ-सदृश भगप्रदेश को उसने परस्पर सम रम्भोरुओं के मध्य दबाकर रख लिया था। प्राणायामसाधना से उसकी चंचल कमर भी स्थिर रही। उन्नत स्तनभार भी उस योगमुद्रा के अन्दर छिपे हुए थे। ८४०

तामरै	मलर्क्कुवमै	शाल्बुऱ	तळिर्क्कैप्
पूमरुवु	पॉऩ्चॅरि	कुऱङ्गॉडु	पॉरुन्दक्
काममुद	लुट्ऱपहै	काऱळर	वाशै
नाममडि	यप्पुलनु	नल्लऱिवु	पुल्ह 841

तामरै मलर्क्कु–कमल-फूल का; उवमै–उपमान बनने; चाल्पु उऱ–योग्य; तळिर् कै–पल्लवहस्त; पू मरुवु–सुन्दरतायुक्त; पॉन्–स्वर्णवर्ण; चॅरि कुऱङ्कॉटु–सटे हुए ऊरुद्वय से; पॉरुन्त–लगाए; कामम् मुतल्–कामादि; उट्ऱ पकै–अंतश्शत्रु; काल् तळर्–मिटाकर; आचै नामम् मटिय–राग का नाम तक नाश करके; पुलऩम्–इन्द्रियों को भी; नल् अऱिवु पुल्क–श्रेष्ठ बुद्धि के वश में रखते हुए। ८४१

कमल के फूल के उपमान बन सकनेवाले पल्लव-हस्त सुन्दर, स्वर्णिम और परस्पर सम ऊरुओं पर लगे थे। कामादि अन्तःशत्रु नष्ट हो गये थे। राग का निशान भी न रहा। उनकी इन्द्रियाँ भी अच्छे मार्गगामिनी बनी थीं। ८४१

नॆऱिन्दुनिमिर्	कऱ्ऱैनिऱै	योदिनॆडु	नीलम्
शॆऱिन्दशडै	युऱ्ऱदु	तलत्तिन्नॆरि	शॆल्लप्

पऱ्ऩिऩ्दुविऩै पऱ्ऱऱ मऩप्पॅरिय पाशम्
पिरिऩ्दुपॅय रक्करुणै कण्वऴि पिऱङ्ग 842

नॅऱिन्तु–कुंचित होकर; निमिर्–उठे हुए; कऱ्ऱै–जटाओं (राशियों) में; निऱै–भरे; नॅट्टु नीलम् ओति–लम्बे काले केश; चॅरिन्त चटै उऱ्ऱतु–उलझी हुई जटाओं में परिवर्तित रहे; तलत्तिऩ् नॅऱि चॅल्ल–उनको भूमि पर लोटने देते हुए; विऩै पऱ्ऱिन्तु–कर्मबन्धन छूटकर; पऱ्ऱु अऱ–मिट गया; मतम्–मन का; पॅरिय पाचम्–बलवान पाश; पिरिन्तु पॅयर–छूटकर अलग हो जाय, ऐसा; करुणै–करुणा; कण् वऴि–आँखों द्वारा; पिऱङ्क–प्रकट करते हुए। ८४२

घुँघराले, लम्बे केशजाल जटा बनकर लटक रहे थे और भूमि पर लोट रहे थे। पूर्वकर्म-फल उससे छूट गये थे। मन पाशों से मुक्त था। उनकी दृष्टि में करुणा व्यक्त हो रही थी। ८४२

इरुन्दत्त ऴिरुन्दवळै यॅय्दित्त रिऱैञ्जा
अरुन्ददि यॅऩत्तहैय शोदैयव ळाहप्
परिन्दत्तर् पदैत्तत्तर् पणित्तहुऱि पण्बिल्
तॅरिन्दुणर्दि मऱ्ऱिवळ्हॉ ऱेवियॅऩ लोडुम् 843

इरुन्तत्तळ्–रहीं; इरुन्तवळै–ऐसा जो रहीं, उनके; ॲय्तित्तर्–पास पहुँचकर; इऱैञ्चा–नमस्कार करके; अरुन्तति ॲऩ्ऩ तकैय–अरुन्धती-सम सीता; अवळ् आक–वही हैं ऐसा; परिन्तत्तर्–सोचकर (मन में) आदर किया; पतैत्तत्तर्–उद्विग्न होकर; इवळ् तेवि कॉल्–यही देवी सीता हैं क्या; पणित्त कुऱि–श्रीराम निर्दिष्ट लक्षणों की कसौटी में; पण्पिल् तॅरिन्तु–कसकर परखो और; उणर्ति–समझो; ॲऩ्ऩलोट्टुम्–कहने पर। ८४३

इस साज के साथ वह योगरत थी। वे वानर उसके पास गये और नमस्कार कर उठे। उसको सीता ही समझकर वे स्नेहार्द्र होकर उत्तेजित हुए। उन्होंने हनुमान से पूछा कि क्या यही देवी सीता हैं; श्रीराम ने उनके लक्षण तुमसे जो बताये हैं, उनके आधार पर परखकर कहो! तब। ८४३

ॲक्कुऱियॉ डॅक्कुण मॆडुत्तिव णिशैक्कॆऩ्
इक्कुऱि युडैक्कॉडि यिरामऩ्मऩै याळो
अक्कुवड मुत्तमणि यारमदऩ् नेर्निऩ्
ऱॉक्कुमॆऩि ऩॉक्कुमॆऩ मारुदि युरैत्ताऩ् 844

मारुति–मारुति; ॲ कुऱियॊट्टु–किस अंगलक्षण के साथ; ॲ कुणम्–कौन सा गुण; इवण् ॲटुत्तु–यहाँ लेकर; इचैक्कॆऩ्–(इसके पास है) कहूँ; इ कुऱि उटै कॉटि–इन लक्षणों की यह लता; इरामऩ् मऩैयाळो–श्रीराम की पत्नी होगी क्या; अक्कु वटम्–अस्थिमाला; मुत्तम् मणि आरम् अतऩ्–मुक्ता व मणिमाला की; नेर् निऩ्ऱु ऑक्कुम्–समकक्ष बनकर समानता कर सकेगी; ॲऩिऩ्–तो; ऑक्कुम्–(यह भी) समानता करेगी; ॲऩ–ऐसा; उरैत्ताऩ्–बोला। ८४४

मारुति ने उत्तर दिया कि कौन से लक्षण कहूँ, जो इसके पास हैं ? ऐसे अंगों वाली लता यह श्रीरामकी देवी हो सकती है क्या ? अगर कहीं अस्थिमाला मुक्ताहार या रत्नहार की समानता कर सके तो यह सीताजी की समानता कर सकेगी। ८४४

अन्नपॊऴु	दिन्गणव	णङ्गुमऱ्ऱि	वुऱ्ऱाळ्
मुन्ननैय	रल्लनॆऱि	मुन्दिन्नरह	ळॆन्नत्
तुन्नरिय	पॊन्नहरि	यिन्नुऱैवि	रल्लीर्
अॆन्नवर	वियावरुरै	शॆय्म्मॆन	विशैत्ताळ् 845

अन्न पॊऴुतिन् कण्–उसी समय; अ अणङ्कुम्–वह स्वयंप्रभा; अऱ्ऱिवुऱ्ऱाळ्–समाधि से जागी; मुन्–अपने सामने; अनैयर्–वे; अल्ल नॆऱि–अनुचित रीति से; मुन्तिन्नर्कळ्–आये हैं; अॆन्न–ऐसा सोचकर; तुन्न अरिय–अगम; पॊन् नकरियिन्–इस स्वर्णनगरी में; उऱैविर् अल्लीर्–वास करनेवाले नहीं हो; वरवु अॆन्न–आना कैसे; यावर्–कौन हो; उरै चॆय्म्–उत्तर कहो; अॆन्न–ऐसा; इचैत्ताळ्–प्रश्न किया। ८४५

तभी वह स्त्री भी समाधि से जागी। अपने सामने उनको देखकर उसने समझ लिया कि ये अनुचित मार्ग से इधर आए हुए हैं। उसने पूछा कि तुम अगम इस स्वर्णपुरी के वासी नहीं लगते हो ! फिर इधर आना क्योंकर हुआ ? तुम कौन हो ? उत्तर दो। ८४५

वेदनै	यरक्करॊरु	मायैविळै	वित्तार्
शीदैयै	यॊळित्तनर्	मऱैत्तपुरै	तेर्वुऱ्
ऱेदमि	लऱत्तुऱै	निऱुत्तिय	विरामन्
तूदरुल	हिऱ्ऱिरिदु	मॆन्नुमुरै	शॊन्नान् 846

वेतनै अरक्कर्–(संसार को) पीड़ा देनेवाले राक्षसों ने; ऑरु मायै–एक माया-कार्य; विळैवित्तार्–किया; चीतैयै ऑळित्तनर्–सीतादेवी को छिपा दिया; एतम् इल्–अनिन्द्य; अऱम् तुऱै–धर्ममार्ग; निऱुत्तिय–जिन्होंने स्थिर किया; इरामन् तूतर्–उन श्रीराम के दूत (हम); मऱैत्त पुरै–सीताजी को जहाँ छिपा रखा होगा, उन स्थानों का; तेर्वुऱ्ऱु–अन्वेषण करते हुए; उलकिल् तिरितुम्–संसार में घूमते हैं; अॆन्नुम् उरै–यह वचन; चॊन्नान्–(हनुमान ने) कहा। ८४६

हनुमान ने उत्तर दिया। आततायी राक्षसों ने एक माया रची और सीताजी को हर ले जाकर कहीं छिपा रखा है। निर्दोष धर्म के संस्थापक श्रीराम के दूत हैं हम। सीताजी के छिपे हुए स्थान की खोज में हम संसार में घूम रहे हैं। ८४६

अॆन्ऱलु	मिरुन्दव	ळॆऴुन्दन	ळिरङ्गिक्
कुन्ऱनैय	दायदॊरु	पेरुवहै	कॊण्डाळ्

नत्रुवर वाहनड तम्बुरिव लॅन्ना
नित्रन णॅडुङ्गणिणै नीर्हलुळु नीराळ् 847

ऍन्र्लुम्-कहते ही; इरुन्तवळ्-जो बैठी हुई थी; ऍळुन्तनळ्-वह स्वयंप्रभा उठी; इरङ्कि-आर्द्र होकर; कुन्रु अतैयतु आयतु-पर्वत-सम; ऑरु पेर्-उतना अधिक; उवर्कै-आनन्द; कॉण्टाळ्-अनुभव किया; वरवु नन्रु आक-आगमन शुभ हो; नटनम् पुरिवल्-आनन्द-नृत्य करूँगी; ऍन्ना-कहकर; नॅटु कण् इणै-आयत अक्षद्वय से; नीर् कलुळुम् नीराळ्-अश्रु बहानेवाली होकर; नित्रनळ्-खड़ी रही। ८४७

यह सुनते ही स्वयंप्रभा, जो बैठी थी, उठ खड़ी हुई। उन पर स्नेह करके 'पर्वत-जितने' आनन्द का अनुभव करने लगी। "तुम्हारा आगमन शुभ हो। मैं नाचूँगी!" उसने कहा और वह अपनी दोनों आयत आँखों से आनन्दाश्रु बहाती हुई ठक खड़ी रही। ८४७

ऍव्वुळै यिरुन्दन निरामनॅन याणर्च्
चॅव्वुळै नॅडुङ्गणवळ् शॅप्पिडुद लोडुम्
अव्वुळै निहळ्न्ददनै यादियिनॊ डन्दम्
वॅव्विळैविल् शिन्दैनॅडु मारुदि विरित्तान् 848

इरामन्-श्रीराम; ऍ उळै-कहाँ; इरुन्तनन्-रहे; ऍन-ऐसा; याणर् चॅव् उळै-विचित्र सुन्दर मृग की-सी; नॅटु कण् अवळ्-आयत आँखों वाली, उसके; चॅप्पिटुतलोटुम्-पूछते ही; वॅ विळैवु इल्-तापक राग रूपी दोषरहित; चिन्तै-मन के; नॅटु मारुति-महिमावान मारुति ने; अ उळै-उस स्थान पर; निकळ्न्ततनै-जो हुआ वह; आतियिनॊटु-आदि से लेकर; अन्तम्-अन्त तक; विरित्तान्-विस्तार के साथ कहा। ८४८

जवान और सुन्दर मृग की-सी आँखों वाली स्वयंप्रभा ने पूछा कि श्रीराम रहे कहाँ? तब हानिकारक राग-रहित मन वाले महिमामय हनुमान ने श्रीराम का चरित्र आद्योपान्त वर्णन किया। ८४८

केट्टवळु मॅन्नुडैय केडिरव मिन्ने
काट्टियदु वीडॅन विरुम्बिनन्नि कानीर्
आट्टियमिळ् दन्नशुवै यिन्नडिशि लन्बो
डूट्टिमन नुळ्हुळिर विन्नुरै युरैत्ताळ् 849

केट्टु-सुनकर; अवळुम्-उसने भी; ऍन्नुटैय केटु इल् तवम्-मेरे अनिन्द्य तप ने; इन्ने-आज ही; वीटु काट्टियतु-(शाप-) मुक्ति दिलायी; ऍन-कहकर; विरुम्पि-उन वीरों से स्नेह दिखाकर; कान् नीर्-सुगन्धमिश्रित जल से; नन्नि आट्टि-खूब स्नान करवाकर; अमिळ्तु अन्न चुवै-अमृत-सम स्वादपूर्ण; इन् अटिचिल्-मधुर भोजन; अन्पोटु ऊट्टि-प्यार के साथ खिलाकर; मतन् उळ् कुळिर-उनके मन को आन्तरिक रूप से शीतलता (सुख) प्रदान करते हुए; इन् उरै-मधुर वचन; उरैत्ताळ्-कहे। ८४९

यह श्रवण करके स्वयंप्रभा ने कहा कि मेरे निर्दोष तप ने आज मुझे शापमुक्ति दिला दी है ! उसे उन पर प्रेम उमड़ आया और उसने उनका सुगन्धयुक्त जल से स्नान करवाकर देवामृत-सम स्वादयुक्त भोजन खिलाया। उसने उनके मन को खुश करनेवाले मधुरवचन से अभिनन्दन किया। ८४९

मारुदियु मऱ्ऱवण मलर्च्चरण् वणङ्गा
यारिनह रुक्किऱैवर् यादुनि निऩ्यऱ्पेर्
पार्पुहऴ् तवत्तिनै पणित्तरुळु हॆऩ्ऱाऩ्
शोर्हुऴलु मऱ्ऱवऩै डुऱ्ऱपडि शॊऩ्ऩाळ् 850

मारुतियुम्–मारुति ने भी; अवळ् मलर् चरण् वणङ्का–उसके कमल-चरण पर नमस्कार करके; यार्–कौन; इ नकर्क्कु–इस नगर के; इऱैवर्–राजा हैं; निऩ् इयल् पेर्–आपका शुभनाम; यातु–क्या है; पार् पुकऴ्–संसार-प्रशंसित; तवत्तिनै तपस्विनी; पणित्तु अरुळुक–कहने की कृपा करें; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा; चोर् कुऴलुम्–उसने भी, जिसकी जटा भूमि पर लोटती थी; अवनोटु–उस (हनुमान) से; उऱ्ऱ पटि–जैसा हुआ वैसा; चॊऩ्ऩाळ्–बखाना। ८५०

मारुति ने उसके कमल-चरणों पर झुककर नमस्कार किया और यह जानना चाहा कि इस नगर के पति कौन हैं ? आपका नाम क्या है ? लोकशंसित तपस्विनी ! कहिए। तब स्वयंप्रभा ने, जिसका केश भूमि पर लोट रहा था, अपना चरित्र यथावत् कहा। ८५०

नूऩ्मुह नुतित्तनॆऱि नूऱुवर नॊय्दा
मेऩ्मुह निमिर्न्दुवॆयिल् कालॊडु विऴुङ्गा
माऩ्मुह नलत्तवऩ् मयऩ्शॆय्द तवत्ताल्
नाऩ्मुह नळित्तुळदिम् मानहर नल्लोय् 851

नल्लोय्–साधु; माऩ् मुकम्–मृग-मुख; नलत्तवऩ्–श्रेष्ठ; मयऩ्–मय ने; नूल् मुकम्–योग-शास्त्र में; नुतित्त–सूक्ष्म रूप से कथित; नॆऱि नूऱु वर–सौ-सौ प्रकारों से; नॊय्तु आ–अनायास; मुकम् मेल् निमिर्न्तु–मुख ऊपर करके; वॆयिल् कालॊटु विऴुङ्का–धूप और हवा का अशन करते हुए; चॆय्त–जो (तपस्या) की; तवत्ताल्–उस तपस्या से; इ मा नकरम्–यह बड़ा नगर; नाऩ् मुकऩ् अळित्तुळतु–चतुर्मुख का दिया हुआ है। ८५१

साधु ! मृगमुख मय ने योगशास्त्रविहित सूक्ष्म प्रकारों के अनुसार अनायास मुख ऊपर करके धूप और पवन का ही अशन करते हुए कठोर तपस्या की। तब चतुर्मुख से तपस्या के फलस्वरूप यह नगर उसे प्रदान किया गया। ८५१

अऩ्ऩदिदु तानव ऩरम्बैयरु ळाङ्गोर्
नऩ्नुदलि नाणमुलै नयऩ्दनऩ नल्लाळ्

अँन्नुयिर नाळवळै यान्व निरप्पप्
पॊन्नुलहि निन्ऱिदु पिलत्तिडै पुणरत्तेन् 852

इतु अन्ततु–यह नगर ऐसा है; तानवन्–दानव (मय) ने; अरम्पैयरुळ्–अप्सराओं में; आङ्कु ओर्–वहाँ एक; नल् नुतलिनाळ्–सुन्दर भाल वाली (अप्सरा) के; मुलै नयन्ततन्–स्तन-(सुख) भोग चाहा; अ नल्लाळ्–वह सुन्दरी; अॅन् उयिर् अन्नाळ्–मेरी प्राण-समाना है; अवन् इरप्प–उस (मय) के प्रार्थना करने पर; यान् मैंने; अवळै–उसको; पॊन् उलकिन् निन्ऱु–स्वर्गलोक से; इतु पिलत्तिटै–इस बिल में; पुणरत्तेन्–पहुँचाया। ८५२

यह नगर ऐसा बना। उस दानव ने अप्सराओं में एक सुन्दर ललाट वाली के स्तनों (भोग) की इच्छा की। वह अतिसुन्दरी मेरी सहेली थी। उस दानव ने मेरी सहायता की याचना की और मैंने उस अप्सरा को स्वर्गलोक से यहाँ इस बिल में पहुँचाया। ८५२

पुणर्न्दवळु मन्नवनु मन्ऱिल्विळै पोहत्
तुणर्न्दिलर् नॅडुम्बहलिम् मानह रुऱैन्दार्
कणङ्गुळैयि नाळॊडुयर् कादलॊरु वादुऱ्
ऱिणङ्गिवरु पाशमुडै येनुड निरुन्देन् 853

अवळुम् अन्नवनुम्–वह (हेमा नामक अप्सरा) और मय; पुणर्न्तु–मिले; अन्ऱिल् विळै–क्रौंच पक्षियों का भी मन लुभानेवाले; पोकत्तु–भोग में; उणर्न्तिलर्–भूले रहे; नॅटु पकल्–लम्बे काल तक; इ मा नकर् उऱैन्तार्–इस बड़े नगर में रहे; कणम् कुळैयिनाळॊटु–मोटे कुण्डलों वाली उसके साथ; उयर् कातल् ऑरुवातु–श्रेष्ठ प्रेम को न छोड़कर; उऱ्ऱु इणङ्कि वरु–उसके साथ मिली रहनेवाली; पाचम् उटैयेन्–और उस पर आसक्त मैं; उटन् इरुन्तेन्–उनके साथ रही। ८५३

वे इतने गहरे सम्भोग में लगे रहे कि क्रौंचपक्षी भी वैसे सम्भोग की कामना करे! सब कुछ भूलकर वे अनेक दिन अपने मिलन-वैभव में डूबे, इधर रह गये। भारी कुण्डलधारिणी से मेरा स्नेह गाढ़ा था, इसलिए मैं भी उसके साथ यहाँ रही। ८५३

इरुन्दुपल नाळ्हळियु मॅल्लैयिनि नल्लोय्
तिरुन्दिळैयै नाडिवरु देवरिऱै शीऱिप्
पॅरुन्दिऱलि नानैयुयि रुण्डुपिळै यॅन्ऱम्
मुरुन्दुनिहर् मूरनहै याळैयु मुनिन्दान् 854

नल्लोय्–साधु; इरुन्तु–उनको मिले रहकर; पल नाळ् कळियुम्–अनेक दिन जब बीते; ऍल्लैयिनिन्–उस समय; तिरुन्तु इऴैयै–श्रेष्ठ आभरणधारिणी (हेमा) को; नाटि वरु–चाहते हुए जो आया; तेवर् इऱै–वह देवेन्द्र; चीऱि–कोप करके; पॅरु तिऱलिनानै–अतिबली (मय) को; उयिर् उण्टु–मारकर; अ मुरुन्तु निकर्

मूरल्–मोरपंख के नीचे के श्वेत भाग के समान दाँतों और; नकैयाळैयुम्–मन्दहास से युक्त उस पर; पिळै ऍन्ऱु–अपराध कहकर; मुनिन्तान्–कुपित हुआ। ८५४

श्रेष्ठ गुणों वाले ! लम्बे अरसे के बाद सुन्दर कारीगरी युक्त आभरणधारिणी की देवेन्द्र ने टोह लगायी। कोप करके उसने बली मय को मार दिया। फिर उससे, जिसके दाँत मोर-पंख के श्वेत मूलभाग के समान मनोरम थे, क्रोध से कहा कि तुमने बड़ा अपराध किया है। ८५४

मुनिन्दवळै युऱ्ऱशॅयल् मुऱ्ऱुमॊऴि हॅन्ऩक्
कनिन्दतुवर् वायवळु मॅन्ऩैयिवळ् कण्णाल्
वत्तॅन्दुमुडि वुऱ्ऱदॆऩ मऩ्ऩवऩुमि दॆल्लाम्
निऩॅन्दिव णिरुत्तिनहर् कावनिऩ दॅन्ऱाऩ् 855

मुनिन्तु–क्रुद्ध होकर; अवळै–उससे; उऱ्ऱ चॅयल्–जो हुआ; मुऱ्ऱुम् मॊऴिक–पूरा कहो; ऍन्ऩ–कहने पर; कनिन्त–पके; तुवर् वायवळुम्–प्रवाल-सम अधर वाली ने; ऍन्ऩै–मुझे (दिखाकर); कण्णाल्–आँखों के इशारे से; इवळ् वत्तॅन्त–इसका आयोजित; मुटिवुऱ्ऱतु–पूरा हुआ; ऍन–कहा, तब; मन्ऩवनुम्–देवराज ने; इतु ऍल्लाम् निनॅन्तु–यह सारा सोचकर; इवण् इरुत्ति–यहीं रह जाओ; नकर् कावल्–नगर-रक्षा का भार; निन्तु–तुम्हारे ऊपर है; ऍन्ऱान्–आज्ञा की। ८५५

गुस्से में उसने उससे पूछा कि सारा हाल बता दो। तब प्रवृद्ध प्रवालाधरा ने (जिसका नाम हेमा था) मुझे पकड़ लेकर आँखों के इशारे से जताया कि इसी के द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। देवराज ने सोचा और मुझसे कहा कि तुम यहीं अकेली रह जाओ। इस नगर का रक्षण-कार्य तुम्हारा है। ८५५

ऍन्ऱलुम् वणङ्गियिरु ळेहुनॅऱि यॆन्नाळ्
ऑन्ऱुरै यॅनक्कुमुडि वॆन्ऱुरैशॆ यामुन्
वन्ऱिऱलि रामनरुळ् वानरर्हळ् वन्दाल्
अन्ऱुमुडि वाहुमिड रॆन्ऱव नहन्ऱान् 856

ऍन्ऱलुम्–कहने पर; वणङ्कि–नमस्कार करके; इरुळ् एकुम् नॆऱि–अन्धकार (दुःख) दूर होने का मार्ग; ऍ नाळ्–कब (होगा); ऍनक्कु मुटिवु ऑन्ऱु–मुझे एक अवधि; उरै–बताइए; ऍन्ऱु–ऐसा; उरै चॅयामुन्–(मेरे) पूछने के पूर्व; अवन्–देवेन्द्र ने; वल् तिऱल् इरामन्–बहुत बलवान श्रीराम की; अरुळ् वानरर्कळ्–कृपापूर्ण आज्ञा लेकर आनेवाले वानर; वन्ताल्–आयेंगे तो; इटर् मुटिवु आकुम्–दुःख अन्त को प्राप्त होगा; ऍन्ऱु–कहकर; अकन्ऱान्–अपने स्थान को चले गये। ८५६

इन्द्र ने यह आज्ञा सुनायी तो मैंने उससे, नमस्कार करके पूछा कि यह अन्धकार (शाप का दुःख) छूटेगा कब ? कुछ अवधि निर्धारित कर कहिए। उसके पूछने के पूर्व ही देवेन्द्र यह कहते हुए हट गया कि अतिसशक्त

श्रीराम की आज्ञा लेकर उनके दूत, वानर, जब यहाँ आयँगे तब तुम्हारा कष्ट दूर होगा। ८५६

उण्णवुळ पूशवुळ शूडवुळ वीन्ऱो
वण्णमणि याडैयुळ मऱ्ऱुमुळ पॅऱ्ऱेऩ्
अण्णलवै विट्टुमै यडैन्दिडुदल् वेण्डि
ऍण्णरिय पल्पह लिरुन्दव मिऴैत्तेऩ् 857

अण्णल्–महिमामय; उण्ण उळ–इधर भोजन करने के लिए बहुत (वस्तुएँ) हैं; पूच उळ–शरीर पर मलने के लिए बहुत हैं; चूट उळ–सिर पर धारण करने के लिए बहुत हैं; ऑन्ऱो–यही क्या; वण्णम् मणि आटै–सुन्दर रंगों के मनोरम वस्त्र हैं; मऱ्ऱुम् उळ–अन्य पदार्थ भी हैं; पॅऱ्ऱेऩ्–ये सब प्राप्त हैं मुझे; अवै विट्टु–उनको त्यागकर; उमै अटैन्तिट्टुतल् वेणिटि–तुमसे मिलने की साध लेकर; ऍण् अरिय पल् पकल्–असंख्यक अनेक दिन; इरु तवम् इऴैत्तेऩ्–कठोर तप करती रही। ८५७

महात्मा! यहाँ खाने के लिए खूब है। देह पर मलने के लिए चन्दन आदि है। केशालंकार के लिए आवश्यक वस्तुएँ हैं। यही हैं क्या? रंग-बिरंगे सुन्दर वस्त्र हैं। अन्य कितने ही भोग-पदार्थ यहाँ प्राप्त हैं! तो भी मैंने उन पर आसक्ति नहीं रखी। तुम लोगों को देखने की इच्छा लेकर मैं अनेक दिनों से अचिंत्य कठोर तप करती रही। ८५७

ऐयिरुब दोशऩै यमैन्दपिल मैया
मॅय्युळदु मेलुलह मेऱुनॅऱि काणेऩ्
उय्युनॅऱि युण्डुदवु वीरॅऩि ऩुबायम्
शॅय्युमुवहै शिन्दैयि ऩिऩैत्तिर्शिऱि दॅऩ्ऱाळ् 858

ऐया–श्रेष्ठ; अमैन्त पिलम्–बना हुआ यह बिल; ऐ इरुपतु योचऩै मॅय्–सौ योजन दूर के विस्तार का; उळतु–है; मेल् उलकम्–ऊपर के (सुर) लोक में; एऱु नॅऱि–चढ़ने का मार्ग; काणेऩ्–मुझे नहीं दिखता; उतवुवीर् ऎऩिऩ्–सहायता करेंगे तो; उय्युम् नॅऱि–बचने का मार्ग; उण्टु–मिलेगा; उपायम् चॅय्युम् वकै–उपाय करने का प्रकार; चिन्तैयिऩ्–मन में; चिऱितु निऩैत्तीर्–थोड़ा सोच लो; ऎऩ्ऱाळ्–कहा (स्वयंप्रभा ने)। ८५८

बड़े पुरुष! यह बिल शतयोजन विस्तार का है। स्वर्ग जाने का मार्ग मुझे नहीं दिखता। तुम्हीं सहायता करोगे तभी निस्तार होगा। उसके उपाय के बारे में थोड़ा सोचो। स्वयंप्रभा ने यह याचना की। ८५८

अऩ्ऩदु कुऱित्तरिवै कूऱवनु माऩुम्
मऩ्ऩबुलऩ् वॅऩ्ऱुवरु मादवण् मलर्त्ताळ्

शॅन्ऱितियिऩ् वणङ्गिननि वानवर्हळ् शेरुम्
पॉन्ऩुलह मीहुवॅ निनक्कॅन्ऩल् पुहन्ऱान् 859

अन्नतु कुऱित्तु–उस मार्ग के बारे में; अरिवै कूऱ–स्त्री के कहने पर; अनुमानुम्–मारुति ने भी; मन्नु पुलन् वॅन्ऱ वरु–युक्त इन्द्रियों को जो जीत चुकी, उस; मातवळ्–महातपस्विनी के; मलर् ताळ्–कमल-चरणों को; चॅन्ऱितियिन् वणङ्कि–सिर झुकाकर नमस्कार करके; नितक्कु–आपको; वानवर्कळ्–देव; नति चेरुम्–जहाँ खूब एकत्रित हैं; पॉन् उलकम्–उस देवलोक को; ईकुवन्–प्रदान करूँगा; ऍन्ऩल् पुकन्ऱान्–यह कथन किया। ८५९

स्वर्गलोक-मार्ग की बात जब स्वयंप्रभा ने कही तब हनुमान ने शरीर के साथ लगी रहनेवाली इन्द्रियों की विजयिनी स्वयंप्रभा के चरणों को नमस्कार किया और कहा कि मैं आपको देवों से भरे स्वर्ग (-वास) को दिला दूँगा। ८५९

मुळैत्तलै यिरुट्कडलिन् मूळ्हिमुडि वेमैप्
पिळैत्तुयि रुयिर्क्कवरुळ् शॅय्द पॅरियोने
इळैत्तिशॅय लायविनै यॅन्ऱन रिरन्दार्
वळुत्तरिय मारुदियु मन्नदु वलित्तान् 860

मुळै तलै–इस बिल में; इरुळ् कटलिल्–अन्धकार-सागर में; मूळ्कि–डूबकर; मुटिवेमै–जो मरने को थे, ऐसे हमें; उयिर् पिळैत्तु उयिर्क्क–जान बचाकर जीवित रहने; अरुळ् चॅय्त–देने की कृपा करनेवाले; पॅरियोते–श्रेष्ठ; चॅयल् आय वितै–अब करणीय कृत्य; इळैत्ति–करो; ऍन्ऱतर्–कहते हुए; इरन्तार्–(वानरों ने) याचना की; वळुत्तु अरिय–जिसकी पूर्ण प्रशंसा दुर्लभ है; मारुतियुम्–उस मारुति ने भी; अन्नतु वलित्तान्–वही निश्चय किया। ८६०

तब अन्य वानर वीरों ने हनुमान से याचना की कि हे दयावान श्रेष्ठ गुणी! जिसने बिल के अन्दर अन्धकार में दम घुटकर मरणोन्मुख रहे हमें जीवन दिलाने की कृपा की! अब जो करना है वह शीघ्र करो। तब उस हनुमान ने वही करने का संकल्प कर लिया, जिसकी प्रशंसा पूर्ण रूप से करना असम्भव था। ८६०

नडुङ्गन्मि ऩॅन्ऩुञ्जॉलै नविन्ऱुनहै नाऱ
मडङ्गलि ऩॅळुन्दुमळै येऱरिय वानत्
तॊडुङ्गलिल् पॅरुन्दलै पुऱत्तुलहॊ डोन्ऱ
नॅडुङ्गॆहळ् शुमन्दुनॆड् वाऩुऱ निमिर्न्दान् 861

नटुङ्कन्मिन्–मत डरो; ऍन्नुम् चॉलै–यह कथन; नविन्ऱु–करके; नकै नाऱ–मन्दहास को प्रकट होने देते हुए; मटङ्कलिन् ऍऴुन्तु–सिंह के समान उठकर; मऴै एऱु अरिय–जहाँ मेघों के लिए भी उठ जाना कठिन है, उस; वानत्तु उलकोटु–व्योमलोक के साथ; ऑटुङ्कल् इल्–जो छोटा नहीं था उस; पॅरु तलै–बड़े सिर

को; पुऱत्तु उलकोट्टु ओत्तऱ–बाह्यलोक से लगाते हुए; नेट्टु कैकळ् चुमन्तु–बड़े हाथों को उठा, बढ़ाकर; नेट्टु वान् उऱ–अपने शरीर को आकाश भर में व्याप्त करता हुआ; निमिर्न्तान्–ऊँचा बढ़ा। ८६१

हनुमान ने आश्वासन का वचन दिया कि डरो मत। मन्दहास करते हुए वह पुरुषसिंह के समान उठा। तब उसका बहुत बड़ा सिर आकाश से जा लगा, जहाँ मेघों का चढ़ जाना भी कठिन था। उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और वे बाह्यलोक को छू गये। आकाश में व्यापते हुए वह ऊँचा बढ़ा। ८६१

ऍडुत्तुयर् शुडर्प्पुय मिरण्डुमॅयि ऱॆन्न
मरुत्तुमह ऩप्पडि यिडन्दुऱ वळर्न्दान्
करुत्तुनिमिर् कण्णिनॆदिर् कण्डवर् कलङ्ग
उरुत्तुल हॆडुत्तहरु माविनैयु मॊत्तान् 862

मरुत्तु मकन्–मरुतपुत्र; ऍटुत्तु उयर्–उठाये गये उन्नत; चुटर् पुयम् इरण्टुम्–दीप्तियुत दोनों हाथों को; ऍयिऱु ऒन्न–दाँतों के समान शोभित होने देते हुए; निमिर् कण्णिन् ऍतिर्–ऊँची उठी हुई आँखों के सामने; कण्टवर्–देखनेवाले; करुत्तु कलङ्क–चित्ताक्रान्त हों, ऐसा; अ पटि इटन्तु–उस बिल (के ऊपरी भाग) को चीरकर; उऱ वळर्न्तान्–ऊँचा बढ़ा; उलकु उरुत्तु ऍटुत्त–भूमि को क्रोध के साथ जिन्होंने उठाया; करु मावितैयुम्–बड़े आकार के वराह के; ऒत्तान्–समान लगा। ८६२

वायुपुत्र के दोनों उठे हुए उज्ज्वल हाथ दाँतों के समान लगे। वह ऐसा बढ़ गया कि उसको जिस किसी ने भी सामने से देखा उसका जी धक हो जाय। तब वह उस वराह (अवतार) के समान लगा, जिसने भूमि को (असुर पर) गुस्से के साथ अपने दाँतों के भीतर उठा लिया था। ८६२

मावडि वुडैक्कमल नान्मुहन् वहुक्कुम्
तूवडि वुडैच्चुडर्होळ् विण्डलै तॊळैक्कुम्
मूवडि कुऱित्तुमुऱै यीरडि मुडित्तान्
पूवडि वुडैप्पोरुविल् शेवडि पुरैन्दान् 863

मा वटिवु उटै–श्रेष्ठ रूपवान; कमलम् नान् मुकन्–नाभिकमलभव चतुर्मुख द्वारा; वकुक्कुम्–सृष्ट; तू वटिवु उटै–पवित्र दृश्य; चुटर् कोळ्–व (सूर्य और चन्द्र दो) तेजपुंजों से युक्त; विण्–आकाश के; तलै–उच्च भाग को; तॊळैक्कुम्–छेदकर; जो गया; मू अटि कुऱित्तु–तीन 'चरण' भर भूमि माँगकर; मुऱै–क्रम से; ईर् अटि मुटित्तान्–दो चरणों में ही नाप (जिन्होंने) लिया; पू वटिवु उटै–(उन) सुन्दर-रूप; पोरुवु इल्–अप्रतिम; चे अटि–श्रीचरणों की; पुरैन्तान्–समानता कर रहा था। ८६३

बड़े ही सुरूप (विष्णु के) नाभि-कमल से उत्पन्न चतुर्मुख से रचित पवित्ररूप सूर्य आदि तेजपुंजों से युक्त आकाश की छत को चीरते हुए

त्रिविक्रम का सुन्दर चरण गया था, जिन्होंने बलि से तीन चरणों की उतनी भूमि माँगी थी और आकाश और भूमि को दो ही चरणों में नाप लिया। हनुमान उस सुन्दर और लाल श्रीचरण के समान भी लगा। ८६३

एऴिरुब दोशनै यिडनुदुपडि यिन्मेल्
ऊऴुऱ वॆळुन्ददनै युम्बरु मॊडुङ्गप्
पाऴिपोरु वन्बिलनु णिन्ऱुपडर् मेल्बाल्
आऴियि नॆऱिन्ददनुम नाऴियॆन वार्त्तान् 864

अनुमन्–हनुमान; एऴ् इरुपतु योचनै इटन्तु–एक सौ चालीस योजन का छेद बनाकर; पाऴि पोरु–गुहा-सम; वल् पिलत्तुळ् निन्ऱु–कठोर बिल के अन्दर से; पटियिन् मेल्–भूमि पर; ऊऴ् उऱ ॲळुन्तु–क्रम से चढ़कर; अतनै–उस बिल-नगर को; उम्परुम् ओटुङ्क–देवों को भी भयभीत होने देते हुए; पटर् मेल् पाल् आऴियिन्–विशाल पश्चिमी सागर में; ॲऱिन्तु–फेंककर; आऴि ॲन–समुद्र के समान; आर्त्तान्–गरजा। ८६४

हनुमान उस बिल के एक सौ चालीस योजन विस्तार के भाग को चीरकर ऊपर भूमि पर आया। फिर उस नगर को उसने देवों के मन में भय भरते हुए उठाकर विस्तृत सागर में फेंक दिया। फिर वह सागर के समान नाद कर उठा। ८६४

ॲन्ऱुमुळ मेल्हड लियक्किल्बिल तीवा
निन्ऱुनिलै पॆऱ्ऱुळदु नीणुदलि योडुम्
कुन्ऱुपुरै तोळव रॆळुन्दुनॆऱि कॊण्डार्
पॊन्ऱिणि विशुम्बिनिडै नन्नुदलि पोनाळ् 865

ॲन्ऱुम् उळ–सदा रहनेवाले; मेल् कटल्–पश्चिमी सागर में; इयक्कु इल्–अनश्वर; पिल तीवु आ–बिलद्वीप के नाम से; निन्ऱु निलै पॆऱ्ऱुळतु–विद्यमान और स्थायी है; नीळ् नुतलियोटुम्–लम्बे ललाट वाली (स्वयंप्रभा) के साथ; कुन्ऱु पुरै–पर्वत-सम; तोळवर्–कन्धों वालों ने; ॲऴुन्तु–निकलकर; नॆऱि कॊण्टार्–अपनी राह ली; नल् नुतलि–सुन्दर ललाट वाली; पॊन् तिणि–स्वर्णजड़ित; विचुम्पिनिटै–देवनगर में; पोनाळ्–चली। ८६५

वह नगर अब भी सदा रहनेवाले पश्चिमी सागर-मध्य बिलद्वीप नाम के साथ विद्यमान है। पर्वतोन्नत कन्धों वाले वानर वीर स्वयंप्रभा के साथ बाहर आये। उन्होंने आगे का मार्ग लिया। सुन्दर ललाट वाली स्वयंप्रभा स्वर्णमय स्वर्गपुरी चली। ८६५

मारुदिवलित् तहैमै पेशिमऱ वोरुम्
पारिडै नडन्दुपह लॆल्लबड रप्पोय्

नीरुडैय पॉय्हैयिनि नीळ्हरै यडैन्दार्
तेरुडै नॅडुन्दहैयु मेलैमलै शॅन्ड्रान् 866

मऱवोरुम्–वीर भी; मारुति वलि तकैमै–मारुति का बल-विक्रम; पेचि–कहते हुए; पकल् ॲल्लै पटर–दिन के अन्त तक; पारिटै नटन्तु–भूमि पर पैदल; पोय्–चलकर; नीर् उटैय पॉय्कैयिन्–जल-भरे एक तडाग के; नीळ् करै–दीर्घ तीर पर; अटैन्तार्–पहुँचे; तेरुटै नॅटु तकैयुम्–एकचक्ररथी महिमावान देव (सूर्य) भी; मेलै मलै–पश्चिमी (अस्त-) गिरि; चॅन्ड्रान्–गये। ८६६

पराक्रमी वानर वीर हनुमान के बल की स्थिति की प्रशंसा के वचन कहते हुए दिन के अन्त तक चले और एक जलाशय के बड़े तट पर आये। तब एकचक्ररथी सूर्यदेवता भी पश्चिमी (अस्त) अचल पहुँच गया। ८६६

14. आरु शॅल् पडलम् (मार्ग-गमन पटल)

कण्डार् पॉय्हैक् कण्णह तन्नीर् कैयार
उण्डार् तेनु मॉण्गनि कायु मॉरुशूऴल्
कॉण्डा रन्ड्रो विन्ऱुयिल् कॉण्ड कुऱियुन्नित्
तण्डा वॅन्ऱित् तानवन् वन्दान् ऱहविल्लान् 867

कण्टार्–देखकर; कण् अकल्–विशाल; पॉय्कै–जलाशय में; नल् नीर्–अच्छे जल को; कै आर–हाथों से खूब उठाकर; उण्टार्–(वानरों ने) पिया; तेनुम्–शहद और; ऑण् कनि कायुम्–श्रेष्ठ फल और खाद्य कच्चे फलों को; उण्टार्–खाया; ऑरु चूऴल्–एक ओर; इन् तुयिल् कॉण्टार्–सुख से सो गये; कॉण्ट कुऱि उन्नि–उनके निद्रामग्न होने का आसरा पाकर; तण्टा वॅन्ऱि–अप्रतिहत विजयशील; तकवु इल्लान्–गुणहीन; तानवन्–एक दानव; वन्तान्–वहाँ आया। ८६७

वानर वीरों ने उस सरोवर को देखा और उस विशाल जलाशय से जल उठाकर जी-भर पिया। शहद पिया और वहाँ प्राप्त मधुर फलों को खाया। फिर वे वहाँ एक ओर लेटे और सो गये। उनके सोने की टोह पाकर एक दानव उधर आया, जो अच्छे गुण वाला नहीं था और जो अक्षुण्ण विजयशील था। ८६७

मलैये पोल्वान् माल्हड लॉपपान् मऱमुऱ्ऱिक्
कॉलैये शॅय्वान् कूऱ्ऱै निहर्प्पान् कॉडुमैक्कोर्
निलैये पोल्वा नीर्मै यिलादा तिमिर्तिङ्गळ्
कलैये पोलुङ् गाल वॅयिऱ्ऱान् कनल्कण्णान् 868

मलैये पोल्वान्–पर्वत ही सम; माल् कटल् ऑप्पान्–विशाल समुद्र के समान; मऱम् मुऱ्ऱि–कठोरता में बढ़ा हुआ; कॉलैये चॅय्वान्–हत्या करनेवाला; कूऱ्ऱै निकर्प्पान्–यम की समानता करनेवाला; कॉटुमैक्कु–क्रूरता का; ओर् निलैये–एक आश्रयस्थान; पोल्वान्–सम रहनेवाला; नीर्मै इलातान्–किसी भी अच्छे गुण से

विहीन; निमिर्–आकाश में उठकर शोभित रहनेवाले; तिङ्कळ् कलैये पोलुम्–चन्द्र-कला के समान; काल ऍयिर्रात्–भयंकर दन्तुला; कतल् कण्णात्–अग्निसम आँखों वाला। ८६८

वह पर्वत के ही समान आकार का और समुद्र के समान काला और लम्बा-चौड़ा था। वह अत्यधिक नृशंसकारी घातक यम के समान था। अत्याचार का आगार था। अच्छा गुण उसमें कोई नहीं था। उसके वक्र दाँत आकाश में उठे अर्धचन्द्र के समान थे। धधकती आँखों वाला था। ८६८

करुवि मामळै कैह डाविमी, दुरुव मेत्तिशॅन् रुलवि यॊर्र्लाल्
पॊरुविन् मारिमे लॊळुहु पॊर्पित्ताल्, अरुवि पाय्दरुङ् गुन्र मेयतान् 869

करुवि–(लोकवृद्धि का) साधन; मा मळै–बड़े मेघ; कैकळ् ताविं–उसके हाथों में कूदकर; मेति मीतु–शरीर पर; उरुवि चॅन्रु–सरककर; उलवि–फैलकर; ऑर्र्लाल्–जमे रहते हैं, इसलिए; पॊरुवु इल् मारि–समता-रहित बारिश; मेल् ऑळुकु–उसके ऊपर गिरती है; पॊर्पित्ताल्–उस शोभा से; अरुवि पाय् तरुम्–जिस पर सरिताएँ बहती हैं, वैसी; कुन्रमे अन्नान्–गिरि के ही समान रहनेवाला। ८६९

मेघ, जो लोकसमृद्धि के कारण हैं, उसके हाथों में कूदते और उसके शरीर पर चलते जम जाते। और उपमाहीन बारिश भी उस पर गिरती थी। इसलिए वह सरिताओं से युक्त पर्वत के समान लगता था। ८६९

वान वर्क्कुमर् रवर्व लिक्कुनेर्, तान वर्क्कुमे वरिय तन्मैयान्
आन वक्कल नवत्तॊ डाडवे, रेत वर्क्कुमॊन् रॅण्ण वॊण्णुमो 870

वानवर्क्कुम्–देवों; मर्रु–और; अवर् वलिक्कु–उनकी वीरता की; नेर् तानवर्क्कुम्–समानता करनेवाले दानवों के लिए भी; मेवु अरिय–अजेय; तन्मैयान् आन–स्वभाव वाला; अ कलन्–वह खल था; अवत्तॊटु आट–उसके साथ लड़ना; वेरु एतवर्क्कुम्–अन्य किसी के लिए भी; ऑन्रु ॲण्ण ऑण्णुमो–कुछ सोचने योग्य हो सकेगा क्या। ८७०

वह इतना बलशाली था कि देव और उनके समान बली दानव उसको जीत नहीं सकते थे। तब उस खल के साथ युद्ध करने की बात कोई सोच ही सकता है क्या? । ८७०

पिर्ङ्गु पङ्गियान् पॅयरुम् बॅट्पित्तिल्
कर्ङ्गु पोन्रुळान् पिशैयुङ् गैयितान्
अर्ङ्गॊळ् शिन्दयार् नॆरिशॆ लयर्वित्ताल्
उर्ङ्गु वारॆवन् दॊल्लै यॅय्दितान् 871

पिर्ङ्कु पङ्कियान्–ध्यानाकर्षक केश वाला; पॅयरुम् पॅट्पितिल्–चलने के प्रकार में; कर्ङ्कु पोन्रुळान्–पतंग की गति वाला; पिचैयुम् कैयितान्–हाथ मलते हुए;

अऱम् कॊळ् चिन्तैयार्–धर्मरत मन वाले; नॆऱि चॆल् अयर्वित्ताल्–मार्ग-गमन की थकावट से; उऱङ्कुवारै–सोनेवाले उनके पास; ऒल्लै वन्तु–तेजी से आकर; ऍय्तित्तान्–पहुँचा। ८७१

ध्यान आकर्षित करते हुए विद्यमान केश वाला, गति में पतंग के समान वह अपने हाथों को मलता हुआ पथ-श्रान्त, निद्रामग्न, धर्म-चित्त वानरों के पास आया। ८७१

पॊय्है यॆन्नदॆन् ऱुणर्न्दुम् बुल्लियोर्
ऍय्दि नार्हळ्या रिदुवॆ नावॆना
ऐय नङ्गद नलङ्गल् मार्बिनिल्
कैयिन् मोदिनान् काल नेयनान् 872

कालत्ते अनान्–यम ही सम; पॊय्कै–जलाशय; ऍन्नतु ऍन्ऱु–मेरा है, यह; उणर्न्तुम्–जानकर भी; पुल्लियोर् क्षुद्र; यार् ऍय्तिनार्कळ्–कौन आये हैं; इतु ऍना–यह क्या है; ऍना–कहते हुए; ऐयन् अङ्कतन्–नायक अंगद के; अलङ्कल् मार्पितिल्–मालाधारी वक्ष पर; कैयिन् मोतिनान्–हाथों से पीटा। ८७२

यम-सम उस दानव ने ऐसा कहते हुए अंगद के मालालंकृत वक्ष पर अपने हाथों से प्रहार किया कि ये क्षुद्र लोग कौन हैं, जो यह जानकर भी इस सरोवर पर आये हैं कि यह मेरा है। यह क्या है, क्या है यह ?। ८७२

मऱ्ऱ मैन्दनु मुऱक्क माऱिनान्
इऱ्ऱि वन्गोला मिलङ्गै वेन्दॆना
ऍऱ्ऱि नानॆने ऱॆऱ्ऱि नानवन्
मुऱ्ऱि नानिहऱ् कादि मूर्त्तियान् 873

अ मैन्तनुम्–उस बलिष्ठ कुमार ने भी; मऱ्ऱु–उस पर; उऱक्कम् माऱिनान्–निद्रा से छूटकर; इऱ्ऱु–अब; इवन्–यह; इलङ्कै वेन्तु कॊल् आम्–लंकाधिपति ही है शायद; ऍना–ऐसा सोचकर; ऍऱ्ऱिनानै–पीटनेवाले उसे; नेर् ऍऱ्ऱिनान्–बदले में पीटा; इकऱ्कु–बल का; आति मूर्त्तियान्–आदिदेव-सम; अवन्–वह; मुऱ्ऱिनान्–समाप्त हुआ। ८७३

उस बली अंगद ने भी निद्रा से जागकर पीटनेवाले उस दानव का "क्या यही लंकाधिपति है शायद" —यह सोचते हुए प्रतिप्रहार किया। पराक्रम के अधिष्ठाता के समान लगनेवाला वह दानव इस प्रकार से आहत होकर मर गया। ८७३

इडियुण् डाङ्गणो रोङ्ग लिऱ्ऱदीत्
तडियुण् डान्ऱळर्न् दलऱि वीऴ्दलुम्

तोंडियिन् ऱोळ्विशैत् तॆळुन्दु शुऱ्ऱिऩार्
पिडियुण् डारॆऩत् तुयिलुम् बॆऱ्ऱियार् 874

आङ्कण्–तब; ओर् ऒङ्कल्–एक पर्वत; इडि उण्टु–वज्राहत हो; इऱ्ऱु ऒऩ्ऩु–ढहकर गिरा हो, ऐसा; अटि उण्टाऩ्–पीटा जाकर; तळर्न्तु–निर्बल हो; अलऱ्ऱि वीऴ्तलुम्–चिल्लाते हुए जब वह गिरा; पिटि उण्टार् ऎऩ–भूत-ग्रस्तों के समान; तुयिलुम् पॆऱ्ऱियार्–सोने की स्थिति में रहे वे; तॊटियिऩ् तोळ्–कंकणभूषित भुजाओं को; विचैत्तु–हिलाते हुए; ऎऴुन्तु–उठकर आये और; चुऱ्ऱिऩार्–उसे घेर गये। ८७४

अंगद से पीटा जाकर वह दानव वज्राहत पर्वत गिरता हो जैसा बल खोकर चिल्लाते हुए नीचे गिर गया। तब भूतग्रस्त के समान जो रहे थे, वे वानर जागे और वलयभूषित भुजाओं को हिलाते हुए आकर अंगद को घेर गये। ८७४

यार् कॊलामिव ऩिऴैत्त दॆऩ्ऩॆऩात्, तारै शेयिऩैत् तऩिवि ऩायिऩाऩ्
मारु देयऩ्मऱ् ऱवऩुम् वाय्मैशाल्, आरि यादॆरिन् दऱिहि लेऩॆऩ्ऱाऩ् 875

इवऩ् यार् कॊल् आम्–यह कौन हो सकता है; इऴैत्तवु ऎऩ्–इसका किया हुआ क्या; ऎऩा–ऐसा; मारुतेयऩ्–वायुपुत्र ने; तारै चेयिऩै–तारासुत से; तऩि विनायिऩाऩ्–विशेष रूप से प्रश्न किया; अवऩुम्–उसने भी; वाय्मै चाल्–सत्यनिष्ठ; आरिया–श्रेष्ठ; तॆरिन्तु अऱिकिलेऩ्–जानता-समझता नहीं; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (उत्तर में)। ८७५

वायुपुत्र ने तारापुत्र से विशेष रूप से प्रश्न किया कि यह कौन है? इसने क्या किया? तब अंगद ने उत्तर दिया कि हे सत्यसन्ध साधु! मैं कुछ नहीं जानता-समझता। ८७५

याऩि वऩ्ऱनैत् तॆरिय वॆण्णिऩेऩ्, तूनि वन्दवेऱ् ऱुमिर ऩॆऩ्ऩुम्बे
राऩिव् वाऴ्बुऩऱ् पॊय्है याऴुमोर्, ताऩ वऩ्ऩॆऩच् चाम्बन् शाऱ्ऱिऩाऩ् 876

चाम्पऩ्–जाम्बवान ने; याऩ् इवऩ् तऩ्ऩै–मैंने इसके सम्बन्ध में; तॆरिय ऎण्णिऩेऩ्–जानने के विचार से सोचा; तू निवन्त–(शत्रु-) मांसपूर्ण; वेल्–भालाधारी; तुमिरऩ् ऎऩ्ऩुम् पेराऩ्–धूम्र नाम का है; इ आऴ् पुऩल्–इस गहरे जल के; पॊय्कै–सरोवर का; आऴुम्–शासन करनेवाला; ओर् ताऩवऩ्–एक दानव है; ऎऩ–ऐसा; चाऱ्ऱिऩाऩ्–कहा। ८७६

तब जाम्बवान ने कहा कि मैंने इसके सम्बन्ध में खूब सोचकर देखा। शत्रु-मांसावृत भालाधारी यह धूम्र नाम का है। इस सरोवर का स्वामी और रक्षक है एक दानव। ८७६

वेऱु मॆय्द्दुवा रुळर्हॊ लामॆऩात्, तेऱि यिऩ्ऱयिर् शॆलवु तोऱ्ऩुळार्
वीऱु शॆञ्जुडर्क् कडवुळ् वेलैवाय, नाऱ नाणमलर्प् पॊण्णे नाडुवार् 877

वेरुम्–अन्य भी; अॅय्तुवार् उळर्–आनेवाले होंगे; कॉलाम् ॲना–शायद क्या, ऐसा शंकित होकर; इन् तुयिल् तेरि–मधुर निद्रा से जागकर; चॅलवु तीर्नतु उळार्–आगे जाना जिन्होंने रोका था, वे वीर; वीरु–गौरवमय; चॅम् चुटर् कटवुळ्–लाल किरणों के स्वामी सूर्य के; वेलै वाय् नारु–सागर के ऊपर उग आने पर; नाण् मलर्–सद्यविकसित कमल की; पॅण्णै–देवी की; नाटुवार्–खोज करते हुए चले। ८७७

वानर वीर यह शंका करते हुए आगे जाना रोककर खड़े रहे कि इसके अनुकरण में और कुछ लोग भी आ सकते हैं। अब गौरववान सूर्य पूर्वी सागर के ऊपर उग आया। इसलिए वे नवविकसित कमलासना श्री लक्ष्मीदेवी (के अवतार, सीता) की खोज में आगे जाने लगे। ८७७

पुण्णै वॅम्मुलैप् पुळिन मेय्तडत्, तुण्ण वाम्बलिन् नमिळ्द मूरुवाय्
वण्ण वॅण्णहैत् तरळ वाण्मुहप्, पॅण्णै नण्णिनार् पॅण्णै नाडुवार् 878

पॅण्णै नाटुवार्–देवी को खोजते जानेवाले; पुळ् नै–चक्रवाक पक्षी जिनको देखकर इस बात से दुःखी होते हैं (कि हम इनकी समानता न कर पाते); वॅम् मुलै–ऐसे स्तनों के स्थान में; पुळिनम् एय्–बालू के टीलों से युक्त; तटत्तु–तटों से; उण्ण–पान करने पर; अमिळ्तम् ऊरुम्–अमृत बहानेवाले; आम्पलिन् वाय्–लाल कुमुद रूपी अधरों से; वण्ण वॅळ् नकै–श्वेत रंग के दाँतों के स्थान में; तरळम्–मोतियों से; वाळ् मुकम्–कमल रूपी सुन्दर मुखों से शोभित; पॅण्णै–"पॅण्णै" (के पास); नण्णिनार्–पहुँचे। ८७८

सीताजी की खोज में लगे वे 'पॅण्णै' नाम की नदी पर आये। ('पॅण्' का अर्थ तमिळ में 'स्त्री' है। उसका कर्म कारक 'पॅण्णै' होता है। कवि का चातुर्य यह बताता है कि 'पॅण्' की खोज में लगे वे 'पॅण्णै' के पास आ गये। फिर श्लेष के द्वारा उस नदी और 'पॅण्' या 'स्त्री' में साम्य दिखाता है।) नदी के मध्य बालू के टीले (पुलिन) थे, वे ऐसे स्तनों के स्थान में रहे, जिनके कारण चक्रवाक पक्षी दुःखी होते हैं। (मानव-स्तनों से हार मानकर वे दुःखी होते हैं। पुलिनों पर पहुँचने के लिए वे लालायित होते हैं।) पान करने पर अमृत स्रवनेवाले अधर कुमुद हैं। श्वेत मुक्ताएँ दाँत हैं। कमल मुख हैं। ८७८

तुरैयुन् दोहैनिन् राडु शूळलुम्, कुरैयुञ् जोलैयुङ् गुळिर्न्द शारनीर्च्
चिरैयुन् दॅळ्ळुपून् दडमुन् दॅण्बळिक्, करैयुन् देडिना रड़िविन् कोडियार् 879

अरिविन् कोटियार्–ज्ञानशिखर; तुरैयुम्–घाटों; तोकै–मोर; निन्रु आटुम्–जहाँ स्थित होकर नाचते हैं; चूळलुम्–उन स्थानों; कुरैयुम्–पुलिनों; चोलैयुम्–बागों; कुळिर्न्त चारल्–शीतल पवन करनेवाले; नीर् चिरैयुम्–जलाशयों; तॅळ्ळु पूम् तटमुम्–स्वच्छ, सुन्दर उद्यानों; तॅळ् पळिक्करैयुम्–और शुद्ध स्फटिक चट्टानों पर; तेटिनार्–ढूँढ़ा। ८७९

वे वानर वीर मूर्धन्य ज्ञानी हैं। उन्होंने स्नानघाटों, मयूर-नृत्य-स्थलों, पुलिनों और पास के बागों में सीताजी के लिए ढूँढ़ा। पवन को शीतल करनेवाले जलाशयों और सुगन्धित करनेवाले पुष्पोद्यानों में भी उन्होंने ढूँढ़ देखा। ८७९

अणिहॉ ळ्ळित्तुवन् दॅवरु माडित्ताऱ्, पिणिहॉ ळ्ळित्तवॅम् बिऱवि वेरित्वन्
तुणिहॉ ळ्ळित्तरुञ् जुळिह डोरुनन्, मणिहॉ ळ्ळित्तिडुन् दुऱैयित् वैहित्ताऱ् 880

अणि कॉळ्ळित्तु वन्तु–सुन्दरता को पछोड़ (संग्रह कर) लेते हुए; आटित्तार् ऍवरुम्–स्नान करनेवाले हर किसी का; पिणि कॉळ्ळित्त–व्याधिग्रस्त; वॅम् पिऱवि वेरित्–भयंकर जन्ममूल के; वन् तुणि कॉळ्ळित्तु–कठोर अंश लेते हुए; अरुम् चुळिकळ् तोऱुम्–अगम भँवरों में; नल् मणि कॉळ्ळित्तिटुम्–श्रेष्ठ रत्न लेते हुए आनेवाली नदी के; तुऱैयिन्–एक घाट में; वैकित्तार्–(वे वानर वीर) ठहरे। ८८०

वह पवित्र नदी सुन्दरता को मानों छाँट लेकर ग्रहण किये बहती थी। (वह मनोरम थी।) जो भी उसमें स्नान करते उनके भवबाधा के मूल, कठोर जन्म की जड़ के अंशों, और भँवरों में मणियों को लेती हुई आ रही थी। वे उस नदी के तट पर एक ओर ठहरे। ८८०

आडु पॅण्णॅनी राऱु मेऱित्ताऱ्, काडु नण्णित्ताऱ् मलैह डन्दुळाऱ्
वीडु नण्णित्ता रॅन्न वीशुनीऱ्, नाडु नण्णित्ताऱ् नाडु नण्णित्ताऱ् 881

नाटु नण्णित्तार्–अन्वेषण में लगे; आटु नीर्–स्नानयोग्य जल से भरी; पॅण्णै आऱुम्–'पॅण्णै' नामक नदी को; एऱित्तार्–पार करके; काटु नण्णित्तार्–अनेक जंगल पार किये; मलै कटन्तु उळार्–पर्वत पार किये; वीटु नण्णित्तार् ऍन्न–मानो मोक्षलोक गये हों, ऐसा; वीचु नीर्–जल-समृद्ध; नाटु नण्णित्तार्–एक देश के पास आये। ८८१

फिर सीताजी की खोज में प्रवृत्त होकर वे उस पवित्र नदी को तैरकर ऊपर तट पर चढ़े, जिसके जल में लोग आकर स्नान करते थे। आगे अनेक पर्वतों और वनों को पार कर एक जलसमृद्ध देश पर ऐसे आये मानो मोक्षलोक को आ गये हों। ८८१

तशन वप्पॅयर्च् चरळ शण्बहत्, तशन वप्पुलत् तहणि नाडॉरीइ
उशन वप्पॅयर्क् कवियु दित्तपेर्, इशॅवि दर्प्पना डॅळिदि नॅय्दित्ताऱ् 882

तचनवम् पॅयर्–दशनव नाम के; चरळ चण्पकत्तु–सुन्दर चम्पकतरुओं से भरे; अचन अ पुलत्तु–खाद्यपदार्थोत्पादक भूमि से युक्त; अकणि नाटु–'मरुदम' (खेतों के) प्रदेश को; ऒरीइ–पार कर; उचन अ पॅयर्–'उशनस' नाम के; कवि–कवि (भगवान शुक्र); उतित्त–जहाँ जनमे उस; पेर् इचै–बड़े नामी; वितर्प्प नाटु–विदर्भदेश; ऍळितिन्–अनायास; ऍय्तित्तार्–जा पहुँचे। ८८२

उस देश का नाम दशनव था। उसमें चम्पकवन अधिक थे और खाद्योत्पादक धान के खेतों का 'मरुदम्' प्रदेश था। उसको पार कर वे विदर्भ देश में अनायास आये, जो उशनस-संज्ञित कवि शुक्र का जन्म-स्थान था। ८८२

वेद रुप्पमण् डलत्तिल् वन्दुपुक्, कॅय्द रुप्पमत् तनैयु मॅय्दिनार्
पॅय्द रुप्पैनूल् पिरळु मेनियार्, शॅय्द वत्तुळार् वडिविर् ऱेडिनार् 883

वेतरुप्प मण्टलत्तिल्—विदर्भ देश में; **वन्तु पुक्कु**—आ प्रवेश करके; **अॅय्तु अरुप्पम् अत्तत्तैयुम्**—जाने योग्य सभी स्थानों में; **अॅय्तित्तार्**—गये; **पॅय् तरुप्पै**—(कमर में) दर्भ की बनी रस्सी और; **नूल्**—(वक्ष में) यज्ञोपवीत; **पिऱळु मेत्तियार्**—जिनको शोभित करते हैं, ऐसे शरीर वाले; **चॅय् तवत्तु उळार्**—श्रेष्ठ तप-मार्ग में प्रवृत्त; **वटिविल्**—ब्राह्मण (ब्रह्मचारियों के) वेश में; **तेटित्तार्**—(उन्होंने) सीता को खोजा। ८८३

विदर्भ देश में आकर वे सभी स्थानों में गये, जहाँ जाना था। वहाँ उन्होंने दर्भ की बनी करधनी और यज्ञोपवीत पहने हुए तपस्वी ब्राह्मणों के वेश में घूमकर ढूँढ़ा। ८८३

अन्न तन्मैया लऱिञर् नाडियच्, चॅन्नॅल् वेलिशूळ् तिरुनत् ताडॊरीइत्
तन्नै यॅण्णुमत् तहैपु हुन्दुळार्, तुन्नु दण्डहङ् गडिदु तुन्निनार् 884

अऱिञर्—विज्ञ वे; **अन्न तन्मैयाल्**—उस प्रकार से; **नाटि**—सीता का पता लगाने; **अ**—उस; **चॅम् नॅल् वेलि चूळ्**—लाल रंग के धानों के खेतों से घिरे; **तिरु नल् नाटु**—श्रीसम्पन्न अच्छे देश को; **ऒरीइ**—छोड़कर; **तन्नै अॅण्णुम्**—आत्मध्यानलीन; **अ तकै**—रहने की उस स्थिति (समाधि) में; **पुकुन्तुळार्**—जो पहुँचे हैं; **तुन्नु**—उनसे भरे; **तण्टकम्**—दण्डक वन को; **कटितु तुन्नित्तार्**—शीघ्र पहुँचे। ८८४

विज्ञ वानर उस रीति से विदर्भ देश में सीताजी को खोजने के बाद लाल धानों के खेतों से पूर्ण उस देश को छोड़कर आगे चले। फिर दण्डकारण्य गये, जहाँ आत्मध्यानरत समाधिस्थ योगी बड़ी संख्या में रहते थे। ८८४

उण्ड हत्तुळा रुऱैयु मैम्बॉरिक्, कण्ड हर्क्करुङ् गाल नायिनार्
दण्ड हत्तैयुन् दडवि येहिनार्, मुण्ड हत्तुऱै कडिदु मुऱ्ऱिनार् 885

उण्टु—विषय-सुख भोगते हुए; **अकत्तुळ् आर्**—शरीर में; **उऱैयुम्**—(रत) रहनेवाले; **ऐम्पॊऱि कण्टकर्क्कु**—पंचेन्द्रिय रूपी कंटकों के; **अरुम् कालन् आयितार्**—प्रबल यम जो बने हैं; **तण्टकत्तैयुम्**—उनके (वास के) दण्डक वन में भी; **तटवि**—खोजकर; **एकित्तार्**—आगे गये; **मुण्टकत् तुऱै**—मुण्डकघाट पर; **कटितु मुऱ्ऱित्तार्**—शीघ्र जा ठहरे। ८८५

वे पाँच इन्द्रिय रूपी कंटकों के, जो विषय-भोग करते हुए शरीर में रहते हैं, प्रबल शत्रु थे। उनके दण्डक वन को भी उन वीरों ने खूब

टटोलकर देखा। (सीताजी नहीं मिलीं।) वे आगे चले। फिर मुण्डकघाट नामक स्थान पर शीघ्र जा पहुँचे। ८८५

अळ्ळ नीरॅला ममरर् मादरार्, कॊळ्ळै मामुलैक् कलवै कोदैयिर्
कळ्ळु नाऱ्लिर् कमल वेलिवाळ्, पुळ्ळु मीनुणा पुलवु तीर्दलाल् 886

अळ्ळल् नीर् ॲलाम्–पंकिल जल सब; अमरर् मातरार्–देवांगनाओं के; मा मुलै–पीन स्तनों पर के; कॊळ्ळै कलवै–अधिक चन्दन ले; कोतैयिल् कळ्ळुम्–और माला के मधु की; नाऱ्लिल्–गन्ध से भरा है, इसलिए; कमल वेलि वाळ्–उस मुण्डकघाट में रहनेवाले; पुळ्ळुम्–पक्षी भी; पुलवु तीर्तलाल्–मांसगन्ध से रहित होने के कारण; मीन् उणा–मछलियाँ नहीं खाते। ८८६

वहाँ देवांगनाएँ आकर स्नान करती थीं। उनके स्तनों पर लगा अधिक चन्दनलेप और माला के फूलों पर का शहद वहाँ के जल के तल में रहनेवाला पंक को भी सुवासित कर देता था। अतः वहाँ की मछलियों ने अपनी स्वाभाविक दुर्गन्ध छोड़ दी और वहाँ के पक्षी उनको पकड़कर नहीं खाते थे। ८८६

कुञ्ज रङ्गुडैन् दॊळुहु कॊट्पदाल्, विञ्जै मन्नर्पाल् विरह मङ्गैमार्
नञ्जु वीणॅयि नडत्तु पाडलात्, अञ्जु वार्हणी ररुवि याऱ्रो 887

विञ्चै मन्नर् पाल्–विद्याधर राजाओं की; विरक मङ्कै मार्–विरहिणी विद्याधर-स्त्रियाँ; नञ्चु–मन विगलित होकर; वीणॅयिन्–वीणा पर; नटत्तु पाटलाल्–जो गीत स्वरित करते हैं, उनसे; अञ्चुवार्–प्रभावित स्त्रियों की; कण् नीर् अरुवि आऱु–आँखों के जल की बहनेवाली नदी में; कुञ्चरम्–गज; कुटैन्तु ऒळुकुम्–गोते लगाकर स्नान करते हैं; कॊट्पु अतु–ऐसी स्थिति का है वह। ८८७

उस मुण्डकघाट पर विरहिणी विद्याधर स्त्रियों के अपने विद्याधर राजाओं के विरह में वीणा के साथ गाये गये गानों को सुनकर वहाँ की स्त्रियाँ दुःख करती थीं और उनकी आँखों से अश्रुजल झरनों के समान बहने लग जाता था। वे नदियाँ इतनी बड़ी और गहरी थीं कि मातंग भी उनमें गोते लगाकर स्नान करते थे। ८८७

कमुह वार्नॅडुङ् गत्तह बूशलिल्, कुमुद वायित्तार् कुयिलै येशुवार्
शमुह वाळियुन् दनुवुम् वाण्मुहत्, तमुद पाडलार् मरुवि याडुवार् 888

कुमुत वायित्तार्–कुमुदमुख; कुयिलै एचुवार्–पिकहासिनी; चमुकम् वाळियुम्–शरसमूहों (सी आँखों) और; तनुवुम्–धनुओं (भौंहों) वाली; वाळ् मुकत्तु–उज्ज्वल मुखों वाली; अमुत पाटलार्–अमृत-मधुर गान करनेवाली (स्त्रियाँ); कमुक–क्रमुकतरुओं से बद्ध; वार् नॅटुम् कत्तक ऊचलिल्–लम्बे और ऊँचे झूलों पर; मरुवि आटुवार्–मिलकर झूलती हैं। ८८८

वहाँ क्रमुक पेड़ों से बद्ध स्वर्ण के झूलों पर स्त्रियाँ झूलती हुई आनन्द

मना रही थीं। उन स्त्रियों के अधर लाल कुमुद के समान थे। उनकी वाणी कोयल का परिहास करती थी। उनके मुख उज्ज्वल थे, जिनमें शर-समूह के समान आँखें और धनुओं के समान भौंहें थीं। वे सुधा के समान मधुर गीत गाती हुई झूल रही थीं। ८८८

इऩैय वायवॊण् डुऱैयै यॆय्दिऩार्, निऩैयुम् वेलैवाय् नॆडिदु तेडुवार्
वऩैयुम् वार्हुऴऩ् मादैक् कण्डिलार्, पुऩैयु नोयिऩार् कडिदु पोयिऩार् 889

इऩैय आय–ऐसे एक; **ऑळ् तुऱैयै**–सुन्दर घाट पर; **ऍय्तिऩार्**–पहुँचे; **नॅटितु तेटुवार्**–बहुत दूर और देर से खोज लगाते आनेवाले वे; **वऩैयुम् वार् कुऴल्**–सुन्दर लम्बे केश वाली; **मातै**–देवी को; **कण्टिलार्**–देख न पाये; **पुऩैयुम् नोयिऩार्**–अधिकृत दुःख वाले बनकर; **निऩैयुम् वेलै वाय्**–जब सोच रहे थे, तब; **कटितु पोयिऩार्**–शीघ्र चले। ८८९

ऐसे सुन्दर मुण्डकघाट पर आये और वे खूब छान-बीन कर खोजने लगे। बहुत देर तक खोजने पर भी वे सँवारे हुए केश वाली सीताजी को देख न पाये। दुःख से अभिभूत हो वे सोचने लगे। फिर वे वहाँ से आगे चले। ८८९

नीण्ड मेऩिया नॆडिय ताळिऩिऩ्, ईण्डु कङ्गैवन् दिऴिव दॆऩ्ऩलाय्प्
पाण्डु वम्मलै पडर्वि शुम्बिऩैत्, तीण्डु हिऩ्ऱतण् शिहर मॆय्दिऩार् 890

नीण्ट मेऩियाऩ्–त्रिविक्रमावतार में जिन्होंने बहुत बड़ा रूप धरा उनके; **नॅटिय ताळिऩ् निऩ्ऱु**–दीर्घ चरण से; **ईण्टु**–यहाँ; **कङ्कै वन्तु इऴिवतु**–आकाशगंगा आकर गिरती है क्या; **ऍऩ्ऩल् आय्**–ऐसा मान्य; **पाण्टु अम् मलै**–पाण्डु नाम के उस पर्वत के; **पटर् विचुम्पिऩै तीण्टुकिऩ्ऱ**–विस्तृत आकाश को छूनेवाले; **तण् चिकरम्**–शीतल शिखर पर; **ऍय्तिऩार्**–पहुँचे ८९०

वे पाण्डुपर्वत के गगनचुम्बी शिखर पर पहुँचे। त्रिविक्रम के श्रीचरण को धोती हुई जो निकली वह गंगा मानो इधर आकर बह रही हो, वैसा शीतल लगता था वह (श्वेत वर्ण) पर्वत। ८९०

इरुळ ऱुत्तुमी दॆऴुन्द दॆण्णिला, मरुळ ऱुत्तुवण् शुडर्व ऴङ्गलाल्
अरुळ् ऱुत्तिला वडल रक्कऩ्मेल्, उरुळ् ऱुत्ततिण् कयिलै यॊत्तदाल् 891

इरुळ् अऱुत्तु–अन्धकार काटकर; **मीतु ऍऴुन्त**–आकाश में उठा हुआ; **तॆळ्निला**–स्वच्छ चाँद; **मरुळ् उऱुत्तु**–मोहक; **वण् चुटर्**–घना प्रकाश; **वऴङ्कल् आल्**–फैलाता है, इसलिए; **अरुळ् उऱुत्तुईला**–दया के अनुत्पादक मन वाले; **अटल् अरक्कऩ् मेल्**–बली राक्षस (रावण) पर; **उरुळ् उऱुत्त**–उसे लुढ़काते हुए जिसने उसको दबाया; **तिण् कयिलै**–उस कठोर कैलास; **ऑत्ततु**–के समान थी (वह पाण्डु गिरि)। ८९१

वह उस कैलासपर्वत के समान लगा, जिसने निर्मम रावण को नीचे

लुढ़काते हुए दबोच दिया; क्योंकि उस पर संसार पर फैले हुए अन्धकार को मिटाते हुए जो चन्द्र आकाश पर उठा था, वह मादक और पुष्कल चाँदनी को उसके ऊपर बरसा रहा था। ८९१

विण्णुऱ निवन्द शोदि वॆळ्ळिय कुन्ऱ मेविक्
कण्णुऱ नोक्क लुऱ्ऱार् कळियुऱक् कनिन्द कामर्प्
पण्णुऱु किळविच् चॆव्वाय्प् पडैयुऱु नोक्कि ताळै
ऎण्णुऱु तिऱत्तुङ् गाणा रिडरुऱु मनत्त रॆय्त्तार् 892

विण् उऱ–गगन छूते हुए; निवन्त–उन्नत; चोति–ज्योतिर्मय; वॆळ्ळिय कुन्ऱम् –श्वेत रंग के उस (पाण्डु) पर्वत पर; मेवि–चढ़कर; कण् उऱ नोक्कल् उऱ्ऱार्–सीताजी को (ढूँढ़) देखने के काम में प्रवृत्त; कळि उऱ–उनको आनन्द देते हुए; कनिन्त–सम्यक् बने; कामर् पण् उऱु–चाहनीय गीत के समान; किळवि चॆव्वाय्–बोली बोलनेवाले लाल अधर; पटै उऱु–(भाले, तलवार आदि) हथियारों के समान; नोक्कित्ताळै–आँखों वाली सीताजी को; ऎण् उऱु तिऱत्तुम्–ध्यान के साथ ढूँढ़े हुए सभी स्थानों में; काणार्–(कहीं भी) न देख पाकर; इटर् उऱु मनत्तर्–दुःख-ग्रस्त मन वाले होकर; ऎय्त्तार्–शिथिल हुए। ८९२

आकाश का स्पर्श करते हुए उन्नत ज्योतिमय उस श्वेत पर्वत पर जाकर खूब देखने लगे। पर मन को आनन्द देते हुए सुस्वरित मोहक गाने के समान बोली वाली और भाला, तलवार आदि के समान आँखों वाली सीताजी को न देख पाने के कारण दुःखी बनकर श्रान्त हुए। ८९२

ऊदैपोल् विशैयिन् वॆङ्ग णुळुवैपोल् वयव रोङ्गल्
आदियै यहन्ऱु शॆल्वा ररक्कनाल् वञ्जिप् पुण्ड
शीदपो हिन्ऱाळ् कून्दल् वळ्ळीइवन्दु पुवनत्ञ् जेर्न्द
कोदैपोऱ् किडन्द कोदा वरियिनैक् कुऱुहिच् चॆन्ऱार् 893

ऊतै पोल्–पवन-सदृश; विचैयिन्–वेगवान; वॆम् कण्–भयभीत करनेवाली आँखों के; उळुवै पोल्–बाघों के समान; वयवर्–वीर; ओङ्कल् आतियै–पर्वत आदि स्थान को; अकन्ऱु–छोड़कर; चॆल्वार्–आगे बढ़े; अरक्कनाल्–राक्षस (रावण-) द्वारा; वञ्चिप्पु उण्ट–अपहृत; चीतै पोकिन्ऱाळ्–हो जानेवाली सीता के; कून्तल् वळ्ळीइ वन्तु–केश से सरक आकर; पुवनम् चेर्न्त–भूमि पर पड़ी; कोतै पोल्–माला के समान; किटन्त–पड़ी हुई; कोतावरियिनै–गोदावरी के; कुऱुकिच् चॆन्ऱार्–समीप गये। ८९३

पवन के समान गति वाले और भयानक आँखों के बाघों के समान बलशाली वे वीर उस पर्वत को भी छोड़कर आगे बढ़े। सामने गोदावरी नदी दिखायी दी। वह सीताजी के, जो रावण से अपहृत हो जा रही थीं, केश से गिरी हुई माला के समान लगती थी। ८९३

ऍऴुहिन्ऱ तिरैयिऱ् ऱाहि यिऴिहिन्ऱ मणिनीर् याऱु
तॊऴुहिन्ऱ शनहन् वेळ्वि तॊडङ्गिय शुरुदिच् चॊल्लाल्
उऴुहिन्ऱ पॊऴुदि नीन्ऱ वॊरुमहट् किरङ्गि ञालम्
अऴुहिन्ऱ कलुऴि वारि यामॆनप् पॊलिन्द दन्ऱे 894

ऍऴुकिन्ऱ–उठनेवाली; तिरैयिऱ्ऱु आकि–तरंगों से युक्त होकर; इऴिकिन्ऱ–पर्वत से झरनेवाली; मणि नीर् याऱु–मणिसम जल की नदी; तॊऴुकिन्ऱ–वन्दनीय; चनकन् वेळ्वि तॊटङ्किय–जनकयज्ञारम्भार्थ; चुरुति चॊल्लाल्–वेदोक्त रीति से; उऴुकिन्ऱ पॊऴुतिन्–जोतते समय; ईन्ऱ–(भूमि द्वारा) दत्त; ऒरु मकट्कु–अप्रमेय देवी के; इरङ्कि–दुःख से सहानुभूति में कातर होकर; ञालम्–माता भूमि; अऴुकिन्ऱ–जो रोयीं उससे निकली; कलुऴि वारि आम्–अश्रुधारा है, ऐसा; पॊलिन्ततु–दृश्य देती रही। ८६४

उस पर तरंगें उठती-गिरती थीं। मणि-सम स्वच्छता के साथ वह नदी पर्वत से उतर रही थी। जब पूज्य जनक ने यज्ञारम्भ में वेदमन्त्रों के साथ हल चलाया तब भूमिदेवी ने सीता को जनाया था। उस अप्रतिम देवी को रावण हर ले गया और माता भूमि सहानुभूति से आँसू बहाने लगी। यह गोदावरी नदी उस भूमिदेवी की अश्रुधारा के समान लगती थी। ८९४

आशिल्पे रुलहिऱ् काण्बोर् अळवैनू लॆन्नलु माहिक्
काशॊडु कन्हन् दूविक् कविनुऱक् किडन्द कान्या
ऱेशिल्पो ररक्कन् मार्बि निऱैपऱित् तॆरुवं वेन्दन्
वीशिय वडह मोक्को ळीदॆन विळङ्गिऱ् ऱन्ऱे 895

काचॊटु कनकम् तूवि–रत्न व स्वर्ण छितराते हुए; कविन् उऱ–आकर्षणयुक्त; किटन्त कान् याऱु–बहनेवाली वह जंगली नदी; आचु इल्–दोषहीन; पेर् उलकिल्–इस बड़ी भूमि पर; काण्पोर्–उसको देखनेवाले; अळवै नूल् ऍन्नलुम् आकि–तर्कशास्त्र-सम बनकर; ऍरुवै वेन्तन्–गीधों के राजा द्वारा; एचु इल्–अनिन्द्य; पोर् अरक्कन्–युद्धचतुर राक्षस (रावण) के; मार्विन् इटै–वक्षमध्य से; परित्तु वीचिय–छीनकर फेंके हुए; मी कोळ् वटकम् ईतु ऍन–श्रेष्ठ रत्नहार क्या यह, ऐसा; विळङ्किऱ्ऱु–शोभित रही। ८६५

वह उन्मत्त नदी अपनी लहर-हस्तों द्वारा रत्न के साथ स्वर्ण बिखेरती हुई बह रही थी। वह अनिंद्य इस भूमि पर दर्शकों के लिए तर्कशास्त्र के समान शोभायमान थी। (तर्कशास्त्र अनेक अर्थों को देनेवाला है, यह नदी भी अनेक वस्तुओं को देनेवाली है।) वह रावण के रत्नहार के समान भी लगी, जिसको गीधों के राजा जटायु ने छीनकर फेंक दिया था। ८९५

अन्नदि मुऴुदु नाडि याय्वलै मयिळै याण्डुम्
शन्निदि युऱ्ऱि लावार् नॆडिदुयिन् ऱविरच् चॆन्ऱार्

इऩ्ऩदी दिलाद दीदॆऩ् ऱियावैयु मॆण्णुङ् गोळार्
शॊऩ्ऩदी विऩैह डीर्क्कुज् जुवणहत् तुऱैयिऱ् पुक्कार् 896

इऩ्ऩतु ईतु–यहाँ यह है; इलाततु ईतु–जो नहीं है, वह यह है; यावैयुम्–(ऐसा जानकर) सभी को; ऍण्णुम् कोळार्–सोचकर देखने की प्रवृत्ति वाले; अ नति मुळ्ळुम्–उस नदी-प्रदेश भर में; नाटि–खोजकर; आय् वळै मयिलै–(श्रेष्ठ) चुने हुए कंकण-धारिणी मयूर-निभ सीता के; याण्टुम्–कहीं भी; चऩ्ऩितियुऱ्ऱिलातार्–दर्शन न करके; नॆटितु–लम्बे मार्ग को; पिऩ् तविर–पीछे छोड़ते हुए; चॆऩ्ऱार्–आगे बढ़े; चॊऩ्ऩ–शास्त्रों में कथित; तीविऩैकळ्–पापों का; तीर्क्कुम्–निवारण करनेवाली; चुवणकम्–शोणक (शोन); तुऱैयिऱ् पुक्कार्–के तट के प्रदेश में प्रविष्ट हुए। ८९६

वे वानर वीर बुद्धिमान थे। यहाँ रहता यह है, यहाँ यह नहीं रहता —इस तरह खूब सोच-समझनेवाले उन्होंने नदी तट पर सर्वत्र अन्वेषण किया। पर कहीं भी चुने हुए श्रेष्ठ कंकण वाली कलापी-सी सुन्दरी सीता को देख नहीं पाये। लम्बे मार्ग को तय करते हुए वे बढ़ते चले। फिर पापनाशक शोण नदी पर आये। ८९६

शुरुम्बॊडु तेऩुम् वण्डु मऩ्ऩमुऩ् दुवऩ्ऱिप् पुळ्ळुम्
करुम्बॊडु शॆऩ्ऩॆऱ् काडुङ् गमलवा विहळु मल्हिप्
पॆरुम्बुऩल् मरुदज् जूऴ्न्द किडक्कैपिऩ् किडक्कच् चॆऩ्ऱार्
कुरुम्बैनीर् मुरज्जुज् जोलैक् कुलिन्दमुम् पुऱत्तुक् कॊण्डार् 897

चुरुम्पॊटु–भ्रमरों के साथ; तेऩुम् वण्टुम्–मधुमक्खियाँ और अलिकुल; अऩ्ऩमुम्—और हंस; पुळ्ळुम्–और अन्य पक्षी; तुवऩ्ऱि–मिलकर; करुम्पॊटु–ईख के साथ; चॆ नॆल् काटुम्–शालि के खेत; कमल वाविकळुम्–कमलसर; मल्कि–अधिक हैं; पॆरुम् पुऩल्–अधिक जल के साथ; मरुतम् चूऴ्न्त–'मरुदम्' प्रदेशों से आवृत; किटक्कै–स्थान; पिऩ् किटक्क—पीछे रह जाये, ऐसा; चॆऩ्ऱार्—जो गये; कुरुम्पै नीर्–डाभ; मुरञ्चुम्–जहाँ अधिक संख्या में हैं; चोलै–ऐसे नारियल के खेतों के बागों से पूर्ण; कुलिन्तमुम्–कुलिंद देश को भी; पुऱत्तु कॊण्टार्–पीछे छोड़ चले। ८९७

बाद वे उन जलसमृद्ध 'मरुदम' प्रदेशों को पार करके गये, जिनमें ईख और लाल धान के खेत भरपूर थे और जहाँ भ्रमर, मधुमक्खियाँ, हंस और अन्य पक्षी कसरत से पाये गये और अनेक कमल-सर थे। वे कुलिन्द देश में आये, जहाँ नारियल के फलों सहित नारियल के तरुओं के घने भाग थे। वहाँ खोजने के बाद उसको भी छोड़ वे बढ़े। ८९७

कॊङ्गण मेळु नीङ्गिक् कुडहडऱ् ऱरळक् कुप्पै
शङ्गणि पाऩ नॆय्द ऱण्बुऩ ऱविर वेहित्
तिङ्गळिऩ् कॊऴुन्दु शुऱ्ऱुज् जिमयनीळ् कोट्टुत् तेवर्
अङ्गैहळ् कप्प निऩ्ऱ वरुन्दविक् करुह रानार् 898

कोङ्कणम् एऴुम्–कोंकण के सातों भागों को; नीङ्कि–छोड़कर; कुट कटल्–पश्चिमी सागर में उत्पन्न; तरळक् कुप्पै–मुक्ताओं के ढेर; चङ्कु–शंख; अणि पात्तल्–सुन्दर नीलोत्पल पुष्प; नॅय्तल्–'नॅय्दल' के फूल; तण् पुत्तल्–इनसे पूर्ण शीतल जलाशयों वाले प्रदेशों को; तविर एकि–छोड़ जाकर; तिङ्कळिन् कॊऴुन्तु–चन्द्र-पल्लव, चाँदनी से; चुऱ्ऱुम्–आवृत; चिमय–शिखरों वाले; नीळ् कोट्टु–लम्बे शीर्ष भागों से युक्त; तेवर् अङ्कैकळ्–देवों के सुन्दर हाथ; कूप्प–जुड़े रहें, ऐसे; निन्ऱ–उन्नत; अरुन्ततिक्कु–अरुन्धती गिरि; अरुकर् आनार्–के समीपस्थ हुए। ८९८

फिर वे कोंकण देश के सातों भागों को पार करके उन स्थानों में गये जहाँ पश्चिमी सागर में उत्पन्न शंख, नीलोत्पल और 'नेय्दल' के फूल से भरी शीतल नीची ज़मीन थी। आगे वे अरुन्धती पर्वत के पास पहुँचे। उस पर्वत के शिखरों को चन्द्र का पल्लव रूपी चाँदनी आवृत करती थी। उसके शिखर ऊँचे थे। वह पर्वत इतना ऊँचा उठा हुआ था कि देवतागण भी उसके सामने अंजलिबद्ध खड़े रहे। ८९८

अरुन्ददिक् करुहु शॆन्ऱाण् डऴहितुक् कऴहु शॆय्दाळ्
इरुन्ददिक् कुणर्न्दि लादा रेहिना रिडैयर् मादर्
पॆरुन्ददिक् करुन्देन् माऱु मरहदप् पॆरुङ्गुन् ऱॆय्दि
इरुन्ददिऱ् ऱीर्न्दु शॆन्ऱार् वेङ्गडत् तिरुत्त कालै 899

अरुन्ततिक्कु–अरुन्धती गिरि के; अरुकु चॆन्ऱु–पास जाकर; आण्ट–वहाँ; अऴकितुक्कु–सुन्दरता को; अऴकु चॆय्ताळ्–सुन्दरता प्रदान करनेवाली (अति सुन्दर); इरुन्त तिक्कु–(सीता) जहाँ रहीं, वह दिशा; उणर्न्तिलातार्–न जान सके; एकिनार्–जो जाते हुए; इटैयर् मातर्–ग्वालिन-स्त्रियाँ; पॆरुम् ततिक्कु–अपने अधिक दही को; अरुम् तेन् माऱुम्–बदले में देकर जहाँ अप्राप्य शहद प्राप्त करती हैं; मरकत पॆरुम् कुन्ऱु–बड़ी मरकतगिरि; ऎय्ति–पहुँचकर; इरुन्तु–(कुछ देर) ठहरकर; अतिल् तीर्न्तु–उससे हटकर; चॆन्ऱार्–आगे जाते बने; वेङ्कटत्तु–वेंकटगिरि पर; इरुत्त कालै–जब आये रहे, तब। ८९९

अरुंधती के पास जाने पर भी उन्हें 'सुन्दरता को सुन्दरता दिलानेवाली' सीताजी का पता नहीं लगा। वे आगे जाकर मरकतपर्वत पर आये, जहाँ गोपांगनाएँ अपना जमा हुआ दधि देकर उसके बदले में पर्वत-कुमारियों से शहद लेती थीं। वहाँ कुछ देर ठहरने के बाद उसको भी त्यागकर जब वे श्रीवेंकटगिरि पर आये, तो (देखा)। ८९९

मुनैवरु मरुव लोरु मुन्दैनाट् चिन्दै मूण्ड
विनैवरु नॆऱियै माऱ्ऱु मॆय्युणर् वोरुम् विण्णोर्
अॆनैवरु ममरर् मादर् यावरुञ् जित्त रॆन्बोर्
अनैवरु मरुवि नन्नीर् नाळमुवन् दाड हिन्ऱार् 900

मुत्तवरुम्–महर्षियों; मरैवलोरुम्–और वेदवित ब्राह्मणों ने; मुन्तै नाळ्–पूर्व-जन्म में; चिन्तै मूण्ट–मन लगाकर जो किया, उसके फलस्वरूप मिलनेवाले; वित्तै वरु नॅरियै—जन्म-मार्ग को; मारुरुम्—बदलनेवाले; मॅय् उणर्वोरुम्–तत्त्वज्ञ और; विण्णोर् अॅत्तवरुम्–सभी देवता; अमरर् मातर् यावरुम्–सभी देवांगनाएँ; चित्तर् अॅन्पोर् अत्तवरुम्–सिद्ध जाति के सभी; अरुवि नल् नीर्–नदी के पवित्र जल में; नाळुम्–प्रतिदिन; वन्तु आटुकिन्रार्—आकर स्नान करते हैं। ९००

उस गिरि पर महर्षि लोग, वेदपाठी ब्राह्मण, वे तत्त्वज्ञ जो प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मिलनेवाले नरक-मार्ग को रोककर सन्मार्ग अपना सकते हैं, देवता लोग, देवांगनाएँ और सिद्ध लोग आकर वहाँ की पवित्र नदी में स्नान करते हैं। ९००

पॅय्द वैम्बॉरि युम्बॅरुङ् गाममुम्, वैद वॅञ्जॉलुम् मङ्गैयर् वाट्कणित्
अॅय्द वञ्जह वाळियु मॅण्णरुच्, चॅय्द वम्बल शॅय्हुनर् देवराल् 901

तेवर्–देवता लोग; पॅय्त–मदमत्त; ऐम् पॉरियुम्–पंचेन्द्रिय को; पॅरुम् काममुम्–बड़ी कामेच्छा को (और); वैत वॅम् चॉलुम्—गाली के कठोर वचनों; मङ्कैयर्—स्त्रियों के; वाळ् कणित्–तलवार-सी आँखों से; अॅय्त—प्रेषित; वञ्चक वाळियुम्–वंचक (दृष्टि रूपी) शरों को; अॅण् अरु–उनके अभिप्राय को नष्ट करते हुए (जीतकर); चॅय् तवम्—करणीय तप; पल चॅय्कुतर्–विविध रूप से करनेवाले बने हैं। ९०१

उस श्रीवेंकटाद्रि पर देवगण भोगाभिलाषी पञ्चेन्द्रिय, कामवासना, दूसरों की गाली के वचनों और स्त्रियों की तलवार-सम आँखों के फेंके हुए दृष्टि रूपी शरों पर विजय पाकर तपस्या कर रहे थे। ९०१

वलङ्गॉ णेमि मळैनिर वानवन्
अलङ्गु ताळिणै ताङ्गिय वम्मलै
विलङ्गुम् वीडुरु हिन्ऱन मॅय्न्नॅरिप्
पुलन्गॉळ् वार्हट् कत्तैयदु पॉय्क्कुमो 902

वलम् कॉळ् नेमि–विजयशील सुदर्शन चक्रधर; मळै निर वानवन्–मेघश्याम विष्णुदेव (वेंकटपति) के; अलङ्कु ताळ् इणै—शोभायमान चरणद्वय को; ताङ्किय–धारण करनेवाले; अ मलै–उस वेंकटाद्रि पर रहनेवाले; विलङ्कुम्–जानवर भी; वीटु उरुकिन्रत—मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं; मॅय् नॅरि–सच्चा मार्ग; पुलन् कॉळ्वार्क्कु–(पर) जाकर जितेंद्रिय बने हुओं के लिए; अत्तैयतु—वह मोक्षप्राप्ति; पॉय्क्कुमो–अप्राप्य हो सकती है क्या। ९०२

विजयशील सुदर्शनचक्रधर और मेघश्याम श्री विष्णुदेव के उज्ज्वल चरणद्वय के धारक उस वेंकटाचल पर रहनेवाले पशु भी मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। तब उत्तम उपायों द्वारा इन्द्रियों का दमन जो कर चुके हैं, उन तपस्वियों के लिए मोक्ष चूका रहेगा क्या ? । ९०२

आय कुन्ऱितै यॅय्दि यरुन्दवम्, मेय शॅल्वरै मेविऩर् मॅय्न्नॆऱि
नाय हऩ्ऱऩै नाळुम् वणङ्गिय, तूय नऱ्ऱवर् पादङ्गळ् शूडिऩार् 903

आय कुऩ्ऱितै—ऐसे उस पर्वत को; ॲय्ति—पहुँचकर; अरुम् तवम् मेय—कठिन तप में लगे हुए; चॅल्वरै—तपोधनों के पास; मेविऩर्—जाकर; मॅय् नॅऱि नायकऩ् तऩै—मोक्षदायक स्वामी श्रीवेंकटनाथ की; नाळुम् वणङ्किय—प्रतिदिन जिन्होंने पूजा की उन; तूय नल् तवर्—पवित्र श्रेष्ठ तपस्वियों के; पातङ्कळ् चूटिऩार्—चरणों पर अपने सिर धरे। ९०३

वानरयूथप उस श्रीवेंकटाचल पर गये। कठिन तप में लीन उन तपोधनों के पास पहुँचे। वे प्रतिदिन मोक्ष के स्वामी श्रीवेंकटाचलपति की पूजा करनेवाले थे। वानरों ने उन पवित्र और उत्तम तपस्वियों के पादारविन्द को अपने शीशों में धर लिया (दण्डवत की)। ९०३

शूडि याण्डच् चुरिहुळऱ् ऱोहैयैत्, तेडि वार्पुऩऱ् ऱॆण्डिरैत् तॊण्डैनऩ्
नाडु नण्णुहिऩ् ऱार्मऱै नावलर्, वेड मेयिऩर् वेण्डुरु मेवुवार् 904

वेण्टु उरु—मनमाने रूप; मेवुवार्—ले सकनेवाले वे, चूटि-चरणों पर सिर नवाकर; आण्टु—उस पर्वत पर; अ चुरि कुळल् तोकैयै—उन घुँघराले केशों वाली (सीता) को; तेटि—खोजकर; मऱै नावलर्—वेदवित ब्राह्मणों का; वेटम् मेयिऩर्—वेश धरकर; तॆळ् तिरै—स्वच्छ लहरों वाले; वार् पुऩल्—अधिक जल से भरे; तॊण्टै नल् नाटु—'तोण्डै' नामक श्रेष्ठ देश में; नण्णुकिऩ्ऱार्—पहुँचते हैं। ९०४

वे वानर कामरूप थे। वे पूर्वोक्त तपस्वियों के चरणों को नमस्कार करके उस पर्वत पर घुँघराले केश वाली सीताजी की खोज में लगे। पर वे मिलीं नहीं। अतः वेदवित ब्राह्मणों का वेश धरकर आगे गये और 'तॉण्डै' प्रदेश में आये, जो तरंगों से पूर्ण श्रेष्ठ जलाशयों से समृद्ध था। ९०४

कुऩ्ऱु शूऴ्न्द कडत्तॊडुङ् गोवलर्, मुऩ्ऱिल् शूऴ्न्द पडप्पैयु मॊय्पुऩल्
शॆऩ्ऱु शूऴ्न्द किडक्कैयुन् दॆण्डिरै, मऩ्ऱु शूऴ्न्द परप्पु मरुङ्गॆलाम् 905

कुऩ्ऱु चूऴ्न्त—पर्वतों से घिरे हुए; कटत्तॊटुम्—जंगली (कंकड़ीले) प्रदेश; कोवलर् मुऩ्ऱिल् चूऴ्न्त—ग्वालों के आँगनों को घेरते हुए रहनेवाले; पटप्पैयुम्—बाग और; मॊय् पुऩल—अधिक जलराशि; चॆऩ्ऱु चूऴ्न्त—जहाँ भरी रहती है; किटक्कैयुम्—ऐसे खेतों के प्रदेश; तॆळ् तिरै मऩ्ऱु—स्वच्छ तरंगों से आवृत; मऩ्ऱु चूऴ्न्त—जहाँ बालू के टीले रहते हैं; परप्पुम्—ऐसे समुद्रतटीय प्रदेश; मरुङ्कु ॲलाम्—सर्वत्र (पाये जाते हैं, ऐसा देश है वह देश)। ९०५

उस 'तॉण्डै' देश में पाँचों प्रकार के भूभाग थे। पर्वतावृत कंकड़ीले जंगल (पालै); ग्वालों के आँगनों के सामने बाग; जलसमृद्ध 'मरुदम्' (खेतों के प्रदेश) और स्वच्छ समुद्री लहरों से आवृत बालू के स्थलों से

युक्त 'नॅयदल' (समुद्र-तटीय प्रदेश) आदि पाँचों भूभाग, कुरिञ्जि, मुल्लै, मरुदम्, नॅय्दल और पालै उस देश में पाये गये। ९०५

शूल डिप्पल विन्शुळै तूङ्गुदेन्, कोल डिप्प वॅरीइक्कुल मळ्ळरेर्च्
चाल डित्तरुम् जालियिन् वॅण्मुळै, तोल डिक्किळै यन्नन् दुवैप्पन 906

कुलम् मळ्ळर्–झुण्डों में कृषक; एर् कोल् अटिप्प–जब जोतते और (बैलों को) वेत्र से मारते हैं; तोल् अटि—चमड़े से संयुक्त पैरों वाले; किळै अन्नम्–हंसों के समूह; वॅरीइ–डरकर; चूल् अटि–गर्भ (फल) को जड़ में ही धारण करनेवाले; पलविन् चुळै—कटहल के फलों से; तूङ्कु तेन्–चूनेवाले शहद द्वारा; चाल् अटि तरुम्–हल के द्वारा बने कूँड़ों में पले हुए; चालियिन् वॅळ् मुळै–शालि के श्वेत अंकुरों को; तुवैप्पन–पैरों से रौंदनेवाले बने हैं। ९०६

झुण्डों में कृषक हल जोतते हैं और बैलों को अपने बेंतों से पीटते हैं। उससे डरकर हंसकुल, जिनके पैर चमड़े से मिले हुए होते हैं, भागते हैं और कूँड़ों में उन शालि के अंकुरों को रौंद देते हैं। वे अंकुर उस कटहल के फलों के रस से उगे हैं। वे ऐसे कटहल के तरु हैं, जिनकी जड़ में ही कटहल के फल लगते हैं। ९०६

शॅरुहु रुङ्गणिऱ् ऱेङ्गु वळैक्कुलम्, अरुहु रङ्गुम् वयन्मरुङ् गाय्च्चियर्
इरुहु रङ्गु पिऱङ्गिय वाळैयिऱ्, कुरुहु रङ्गुङ् गुयिलुन् दुयिलुमाल् 907

वयन् मरुङ्कु–खेतों में; चॅरु कुरुम् कणिल्–चंचल पुतलियों की आँखों के समान; तेम् कुवळै कुलम्–मधुमक्खियों-सहित कुवलय; अरुकु उऱङ्कुम्–पास-पास सोते हैं (बन्द रहते हैं); आय्च्चियर्–ग्वालिनों के; इरु कुऱङ्कु–दो ऊरुओं के समान; पिऱङ्किय–शोभायमान; वाळैयिल्–कदली तरुओं पर; कुरुकु उऱङ्कुम्–सारस सोते हैं; कुयिलुम् तुयिलुम्–कोयलें भी सोती हैं। ९०७

वहाँ के खेतों में कुमुद-कलियाँ मीलित हैं, जो अपने ऊपर रहनेवाली मधुमक्खियों के कारण ग्वालिनों की चंचल पुतलियोंसहित आँखों के समान लगती हैं। ग्वालिनों के पुष्ट ऊरुओं के समान केले के तरुओं पर सारस सोते हैं, कोयलें भी सोती हैं। ९०७

तॅरुवि नार्प्पुऱुम् बल्लियन् देर्मयिल्, करुवि मामळै यॅन्ऱु कळिप्पुऱा
पॉरुनर् तण्णुमैक् कन्नमुम् बोहल, मरुवि नार्क्कु मयक्कमुण् डाङ्गॉलो 908

तॅरुविन् आर्प्पु उऱुम् वीथियों में बजनेवाले; पल्लियम्–वाद्यों को; तेर्–सुनकर समझनेवाले; मयिल्–मोर; करुवि मा मळै ऍन्ऱु–बारिश के कारणभूत मेघ समझकर; कळिप्पु उऱा–मुदित नहीं होते; अन्नमुम्–हंस भी; पॉरुनर् तण्णुमैक्कु–नर्तकों के मृदंग-नाद से डरकर; पोकल–नहीं हटते; मरुविनार्क्कु–चिर-परिचितों में; मयक्कम् उण्टाम् कॉलो–भ्रम होगा क्या। ९०८

वीथियों में (सौधों के अन्दर से) विविध वाद्य बज उठते हैं। उनको सुनकर मोर यह समझकर खुश नहीं होते और नाचते कि वे बारिश के मूलभूत कारण जो मेघ हैं उनका गर्जन है। वैसे ही नर्तक लोगों के मृदंग की ध्वनि सुनकर हंस इस डर से नहीं भागते कि वह मेघगर्जन है। क्योंकि लोगों को परिचित वस्तुओं के सम्बन्ध में संशय या भ्रम हो सकता है क्या ? । ९०८

तेरै वॆऩ्ऱुयर् तॆङ्गिळम् पाळैयै, नारै यॆऩ्ऱिळङ् गॆण्डै नडुङ्गुव
तारै वऩ्ऱलैत् तण्णिळ वाम्बलैच्, चेरै यॆऩ्ऱु पुलम्बुव तेरैये 909

तेरै वॆऩ्ऱु–रथ को जीतकर; उयर्–ऊँचे उगे हुए; तॆङ्कु–नारियल के; इळम् पाळैयै–छोटे डण्ठलों को (बालों की); इळम् कॆण्टै–छोटी 'कॆण्डै' मछलियाँ; नारै ॲऩ्ऱु–सारस समझकर; नटुङ्कुव–भयभीत होती है; तारै–लम्बी; वऩ् तलै–बड़े अग्रभाग की; तण् इळ आम्पलै–शीतल छोटी कुमुदकलियों को; तेरै–दादुर (मेंढक); चेरै ॲऩ्ऱु–"शारै" साँप समझकर; पुलम्पुव–कलपते हैं। ९०९

रथों से भी ऊँचे नारियल के तरुओं पर सफ़ेद डंठल दिखायी देते हैं। उनको देखकर 'केण्डै' नाम की मछलियाँ सारस समझ लेती हैं और भय खाती हैं। वैसे ही शीतल और बाल-कुमुद-कलियों को 'शारै' सर्प समझकर दादुर (मेंढक) डरते हैं और चिल्लाते हैं। ९०९

नळ्ळि वाङ्गु कडयिळ नव्वियर्, वॆळ्ळि वाल्वळै वीशिय वॆण्मणि
पुळ्ळि नारै शिऩैपॊरि यादवॆऩ्, ऱुळ्ळि यामै मुदुहि ऩुडैप्पराल् 910

नळ्ळि वाङ्कु–केकड़ों को पकड़नेवाली; इळ–जवान; कटै नव्वियर्–नीच जाति की मृगनयनियाँ; वॆळ्ळि वाल् वळै–श्वेत प्रकाशमय शंखों से; वीचिय–निकली हुई; वॆण् मणि–श्वेत मुक्ताओं को; पुळ्ळि नारै–चित्तियों वाले सारस के; पॊरियात चिऩै–न टूटे अण्डे; ॲऩ्ऱु–समझकर; आमै मुतुकिल्–कछुओं की पीठ पर; उटैप्पर्–तोड़ती हैं। ९१०

उस देश में नीचकुल की मृगनयनी नारियाँ केकड़े पकड़ती हैं। तब श्वेतशंखों से निकले श्वेत मोती पाये जाते हैं। वे उनको चित्तियों से भरे सारस के अण्डे समझ लेती हैं और उनको कछुए की पीठ पर मारकर तोड़ने का प्रयास करती हैं। ९१०

शेट्टि ळङ्गडु वऩ्शिऱु पुऩ्गैयिऱ्, कोट्ट तेम्बल विऩ्गऩिक् कूऩ्शुळै
तोट्ट मैऩ्दबॊ दुम्बरिऱ् ऱूङ्गुतेऩ्, ईट्ट मङ्गदिऱ् ऱोय्त्तिऩि दुण्णुमाल् 911

चेट्ट इळम् कटुवऩ्–बहुत छोटी उम्र का बन्दर; चिऱु पुऩ् कैयिल्–अपने बहुत छोटे हाथ से; कोट्ट–डाल पर के; तेम् पलाविऩ् कऩि–मधुर कटहल के फल के; कऩ् चुळै–वक्र कोओं को; तोट्टु–नोच लेकर; अमैन्त पॊतुम्परिल्–जहाँ वह रहा

उस बाग में; तुङ्कु तेन्–लगातार झरनेवाले शहद की; ईट्टम् अङ्कु अतिल्–वहाँ धार में; तोय्त्तु–मग्न कर लेकर; इनितु उण्णुम्–मजे के साथ खाता था। ९११

(उस तॉण्डै देश की समृद्धता देखिए:) एक छोटा वानर अपने छोटे हाथ से मीठे कटहल के फल से कोए नोच लेता है। वहाँ बाग में शहद लगातार झर रहा है। उसमें मग्न करके उस कोए को खाता है। ९११

अन्न तॉण्डैनन् ताडु कडन्दहन्, पॉन्नि नाडु पॉरुविल दॆय्दिनार्
शॆन्नॆ लुङ्गरुम् बुङ्गमु हुञ्जॆरिन्, दिन्नल् शॆय्यु नॆरियरि देहुवार् 912

अन्न–ऐसे; तॉण्टै नल् नाटु–'तॉण्डै' नाम के अच्छे देश को; कटन्तु–पार करके; अकल्–विस्तृत; पॉरुवु इलतु–और अनुपम; पॉन्नि नल् नाटु–कावेरी के श्रेष्ठ देश; ऍय्तिनार्–पहुँचे; चॆम् नॆलुम्–लाल शालि के धान और; करुम्पुम्–ईख; कमुकुम्–और गुवाक के तरुओं से; चॆरिन्तु–पूर्ण हो; इन्नल् चॆय्युम्–जो मार्ग कष्ट देता था; नॆरि–उस मार्ग में; अरितु एकुवार्–सायास गये। ९१२

ऐसे समृद्ध उस देश को पार कर वे कावेरी (पॉन्नि) देश में आये। उस विशाल देश में मार्ग सुगम नहीं था, क्योंकि ईख, शालि, क्रमुकतरु आदि उतने घने रूप से उगे हुए थे। ९१२

कॉडिरु ताङ्गिय वाय्क्कुळु नारैवाळ्, तडरु ताङ्गिय कूनिळन् दाळैयिन्
मिडरु ताङ्गुम् विरुप्पुडैत् तीङ्गनि, इडरु वार्नरुन् देनि निळ्क्कुवार् 913

कॉटिरु ताङ्किय–जबड़ों के साथ युक्त; वाय्–चोंचों वाले; कुळु–झुण्डों में रहनेवाले; नारै वाळ्–सारस जहाँ रहते हैं; तटरु ताङ्किय–पत्ते ढोते हुए; कून–झुके हुए; इळम् ताळैयिन्–छोटी आयु के नारियल के पेड़ों के; मिटरु–गले में; ताङ्कुम्–धृत; विरुप्पुटै–प्यारे लगनेवाले; तीम् कनि–मीठे फलों को (जो नीचे गिरे पड़े हैं); इटरु वार्–पैरों से ठोकर मारकर जो चलते हैं; नरुम् तेनिन्–वे वहाँ के सुवासित शहद में; इळुक्कुवार्–फिसलते बनते हैं। ९१३

सारस की चोंचों से चमड़े की थैली का-सा अंग लगा हुआ है। ऐसी चोंचों से युक्त सारस पक्षी उस देश में कसरत से पाये जाते हैं। उस देश में सब जगह डंठलों वाले नारियल के तरुओं के ऊपर से नारियल के प्यारे लगनेवाले मीठे फल गिर पड़े हैं। लोग पैदल चलते हैं तो उनसे ठोकर खाते हैं; और, पास शहद बहता रहता है और उसमें फिसल जाते हैं। ९१३

कुळुवु मीन्वळर् कुट्ट मॆन्नक्कॊळा, ऍळुवु पाड लिमिळ्हरुप् पेन्दिरत्
तॉळुहु शार्रहन् कूनॆयि नूळ्मुरै, मुळुहि नीर्क्करुङ् गाक्कै मुळैक्कुमे 914

करु नीर् काक्कै–काले करंड; कुळुवु–मिलकर; मीन् वळर्–मछलियाँ जहाँ पलती हैं; कुट्टम् ऍन–छोटे कुण्ड; कॊळा–समझकर; ऍळुवु–उठकर; पाटल् इमिळ्–गाने के समान स्वर देनेवाले; करुप्पेन्तिरत्तु–ईख के यन्त्रों (कोल्हुओं)

से; ऑळ्कु–निकलकर जो वह रहा था; चाऱु–वह रस; अकन् कूनैयिन्–भरे बड़े कुण्डों में; ऊळ् मुऱै–क्रम से; मुळ्कि मुळैक्कुम्–गोते लगाकर उठते थे। ९१४

वहाँ ईख के कोल्हुओं से बहनेवाले इक्षुरस से भरे कुण्डे हैं। उनको काले रंग के करंड पक्षी मछलियों के साथ रहनेवाले कुण्ड समझकर उनमें बारी-बारी से गोते लगाते और ऊपर उठते हैं। ९१४

पूनॅ रुङ्गिय पुळ्ळुऱै शोलैहळ्, तेनॉ रुङ्गु शॉरिदलिऱ् ऱॆऱ्विल
मीनॆ रुङ्गुरुम् वॆळ्ळ मॆन्नावॆरीइ, वान रङ्गण् मरङ्गळिन् वैहुमाल् 915

पू नॆरुङ्किय–फूलों पर घने रूप से मिलकर मँड़रानेवाले; पुळ् उऱै–भ्रमर जहाँ रहते हैं; चोलैकळ्–वे बाग; तेन्–शहद; ऑरुङ्कु–अधिक; चॊरितलिन्–गिराते हैं, तो; तेर्विल–(सच्चाई) न जानकर; मीन् नॆरुङ्कुरुम्–मछलियों से भरा; वॆळ्ळम् ऎन्ना–प्रवाह समझकर; वॆरीई–डरकर; वानरङ्कळ्–वानर; मरङ्कळिन् वैकुम्–पेड़ों के ऊपर ही रह जाते हैं। ९१५

वहाँ के बागों में फूल अधिक हैं और उन पर भौंरे गूँजते, मँड़राते रहते हैं। वहाँ शहद इतना बहता है कि वानर उसमें मछलियों के साथ बहनेवाले प्रवाह का धोखा खाते हैं, और डर के मारे डालों से नीचे नहीं उतरते। ९१५

अनैय पॊन्नि यहन्बुन नाडॊरीइ, मनैयिन् माट्चि कुलामलै मण्डलम्
विनैयि नीङ्गिय पण्बिनर् मेयिनार्, इनिय शॆन्दमिऴ् नाडुशॆन् ऱॆय्दिनार् 916

विनैयिन् नीङ्किय–बुरे कर्म से छटे हुए; पण्पिनर्–श्रेष्ठ गुणी वे वानर; अनैय–उस समृद्ध; पॊन्नि अकल्–कावेरी-सिंचित विशाल; पुनल् नाटु–उर्वर प्रदेश (चोळ देश) को; ऑरीई–छोड़कर; मनैयिन् माट्चि–गृहस्थी का गौरव; कुलाम्–जहाँ विद्यमान था; मलै मण्टलम्–पार्वत्य देश (चेर देश); मेयिनार्–पहुँचे; इनिय चॆन्तमिऴ् नाटु–मधुर श्रेष्ठ तमिळ देश (पाण्ड्य देश); ऎय्तिनार्–पहुँचे। ९१६

बुरी प्रवृत्तियों से मुक्त और सुसंस्कृत वे वानरयूथप ऐसे समृद्ध, कावेरी-सिंचित और विशाल चोळ देश को पारकर पार्वत्यप्रदेश चेर नाडु में आये, जहाँ गृहस्थी के सारे श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे। बाद वे प्यारे और मधुर तमिळ (पाण्ड्य) देश में आये। ९१६

अत्ति रुत्तहु नाट्टिनै यण्डर्ना, डॊत्ति रुक्कुमॆन् ऱालुरै यॊक्कुमो
ऎत्ति ऱत्तिनु मेऴुल हुम्बुहऴ्, मुत्तु मुत्तमि ऴुन्दन्दु मुन्दुमो 917

अ तिरु तकु–उस श्रीसम्पन्न; नाट्टिनै–देश को; अण्टर् नाटु–देवलोक की; ऑत्तिरुक्कुम्–समानता करनेवाला; ऎन्ऱाल्–कहें तो; उरै ऑक्कुमो–कथन योग्य होगा क्या; ऎ तिऱत्तिनुम्–किसी भी विध; एऴ् उलकुम् पुकऴ्–सातों लोकों में शंसित; मुत्तुम्–मोती और; मु तमिऴुम्–(गद्य, गीत, नाटक की) त्रिविधा तमिळ; तन्तु–देकर; मुन्तुमो–वह देवलोक बढ़ सकेगा क्या। ९१७

'उस श्रेष्ठ श्रीसम्पन्न देश की देवलोक समानता कर सकता है', ऐसा कहें तो क्या वह कथन ठीक हो सकेगा ? नहीं। किसी भी तरह देखें—सभी लोकों में प्रशंसित मोती और त्रिविधा (गद्य, गीत और नाटक तीनों शैलियों में साहित्यसम्पन्न) तमिळ के लिए वह कहाँ जायगा ? स्वर्ग ये दोनों दिला सके तभी न श्रेष्ठता में इतना बढ़ सकेगा ? । ९१७

ऍन्ऱ तॆन्ऱमिळ् नाट्टिलै यॆङ्गणुम्, शॆन्ऱु नाडित् तिरिन्दु तिरुन्दिनार्
पॊन्ऱु वारिर् पॊरुन्दितर् पोयिनार्, तुन्ऱ लोदियैक् कण्डिलर् तुन्बिनार् 918

तिरुन्तिनार्—सुसंस्कृत वे वीर; ऍन्ऱ—ऐसे उक्त (यशस्वी); तॆन् तमिळ् नाट्टिलै—दक्षिणी तमिळ देश में; ऍङ्कणुम् तिरिन्तु—सर्वत्र घूमकर; तुन्ऱु नल् ओतियै—घने काले केश वाली (सीता) को; कण्टिलर्—न देख पाते; तुन्पिनार्—दुःखी होकर; पॊन्ऱुवारिल्—मरणोन्मुख-से; पॊरुन्तितर्—हतोत्साह; पोयिनार्—जाते रहे। ९१८

सुसंस्कृत उन वीरों ने दक्षिणी तमिळ देश में सर्वत्र घूमकर अन्वेषण किया। लेकिन काले घने केश वाली देवी कहीं न मिलीं। वे दुःखमग्न होकर मरणोन्मुख से शिथिल बने जाने लगे। ९१८

वन्ऱि शैक्कलि ऱन्नम येन्दिरक्, कुन्ऱि शैत्तदु वल्लैयिर् कूडिनार्
तॆन्ऱि शैक्कडर् चीहर मारुदम्, निन्ऱि शैक्कु नॆडुनॆरि नीङ्गिनार् 919

तॆन् तिचै कटल्—दक्षिणी सागर की; चीकर मारुतम्—सीकरों से युक्त वायु; निन्ऱु इचैक्कुम्—स्थिर रूप से शब्द के साथ जहाँ बह रही थी; नॆटु नॆरि नीङ्कितार्—लम्बे मार्ग तय करके; वन् तिचै कळिऱु अन्न—सबल दक्षिणी दिशा के वाहक गज के समान; इचैत्तु—(और सुग्रीव से) जो कहा गया था; मयेन्तिरक् कुन्ऱु—उस महेन्द्र पर्वत पर; वल्लैयिल् कूटिनार्—शीघ्र जा पहुँचे। ९१९

वे उस लम्बे मार्ग में गये, जहाँ दक्षिणी सागर की बूँदों से युक्त हवा शब्द के साथ चल रही थी। फिर वे शीघ्र महेन्द्रपर्वत पर आ गये, जिसका संकेत सुग्रीव ने दिया था और जो बलिष्ठ दक्षिणी दिशा के धारक दिग्गज के समान था। ९१९

15. सम्पादिप् पडलम् (सम्पाति पटल)

मळैत्तविण् णहमॆन मुळङ्गि वानुऱ
इळैत्तवॆण् डिरेक्कर मॆडुत्ति लङ्गैयाळ्
उळैत्तडङ् गण्णियॆन् नुळैयॆन् ऱोडिवन्
वळैप्पदे कडुक्कुमव् वाळि नोक्कितार् 920

मळैत्त—वर्षागर्भ; विण् अकम् ॲत—मेघों के समान; मुळङ्कि—गर्जन करते हुए; वान् उऱ—आकाश से लगाकर; इळैत्त—उठी हुई; वॆण् तिरै करम्—श्वेत

तरंग रूपी हाथों को; ऍट्टुत्तु–उछालते हुए; इलङ्कैयाळ्–लंकादेवी; उळै तट कण्णि–हरिण की-सी आयत आँखों वाली (सीता); ऍन् उळै–मुझमें है; ऍन्ऱु–कहती हुई; ओटि वन्तु–दौड़ती आकर; अऴैप्पते–मानो बुला रही हो; कट्कुम्–ऐसा लगनेवाले; अ आऴि–उस समुद्र को; नोक्किनार्–देखा (उन्होंने)। ६२०

उन्होंने दक्षिणी समुद्र को देखा। वह मेघों के समान गर्जन करता हुआ ऐसा लगा, मानो अपने श्वेत तरंग रूपी हाथों को ऊपर उठाते हुए लंका की देवी उनको यह कहते हुए आमन्त्रित कर रही हो कि हरिणी की-सी, आयत आँखों वाली सीता मेरे यहाँ है। ९२०

विरिन्दुनी रॅण्डिशै मेवि नाडिऩिर्
पॊरुन्दुदिर् मयेन्दिरत् तॆन्ऱु पोक्किय
अरुन्दुणैक् कविहळा मलहिल् शेनैयुम्
पॆरुन्दिरैक् कडलॆनप् पॆयर्त्तुङ् गूडिऱ्ऱे 921

नीर्–तुम लोग; विरिन्तु–व्यापकर; ऍण् तिचै–आठों दिशाओं में; मेवि–जाकर; नाटिऩिर्–खोजने के बाद; मयेन्तिरत्तु–महेन्द्र पर्वत पर; पॊरुन्तुतिर्–आकर मिलो; ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; पोक्किय–जिनको भेजा था; अरु तुणै–उन प्रिय साथी; कविकळ् आम्–वानरों की; अलकिल् चेतैयुम्–अपार सेना भी; पॆरु तिरै कटल् ऍऩ–उत्तुंग-तरंग-सागर के समान; पॆयर्त्तुम्–लौटकर; कूटिऱ्ऱु–आ मिली। ६२१

वहाँ वह सेना भी उनके पास आ मिल गयी, जिसको अंगदादि वीरों ने वहाँ यह कहकर भेज दिया था कि तुम सब आठों दिशाओं में जाकर सीतादेवी को ढूँढ़ो और बाद महेन्द्रपर्वत पर आकर हमसे मिल जाओ। वह सेना ऐसी आयी मानों बड़ी लहरों वाला दूसरा सागर आया हो। ९२१

अऱ्ऱदु नाळ्वरै यवदि काट्चियुम्
उऱ्ऱिल मिराहव नुयिरुम् बोन्ऱुमाल्
कॊऱ्ऱव नाणैयुङ् गुऱित्तु निन्ऱनम्
इऱ्ऱदु नम्जॆय लिन्ऱॆन् ऱॆण्णिनार् 922

नाळ् वरै अवति–अवधि के दिन; अऱ्ऱतु–पूरे हो गये; काट्चियुम्–(सीता के) दर्शन भी; उऱ्ऱिलम्–न प्राप्त कर सके; इराकवन्–श्रीराघव के; उयिरुम्–प्राण भी; पोन्ऱुम्–छूट जायँगे; नम् कॊऱ्ऱवन्–हमारे राजा की; आणैयुम्–आज्ञा; कुऱित्तु निन्ऱतम्–मानकर चले; इति–अब; नम् चॆयल्–हमारा काम; इऱ्ऱतु–पूरा हो गया; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्णिनार्–वीर सोचने लगे। ६२२

तब वानरयूथप सोच में पड़ गये। अवधि बीत गयी। देवी के दर्शन भी नहीं हो सके। यह समाचार पायँगे तो श्रीराम अपने प्राण त्याग देंगे। हमारे राजा की आज्ञा के हम बद्ध हैं। अब हमारा कार्य इति (अन्त) को पहुँच गया। ९२२

अरुन्दवम् बुरिदुमो वन्नॅ दन्ऱॅनिन्
मरुन्दरु नॅडुङ्गडु वुण्डु मायदुमो
तिरुन्दिय दियादद्ु शॅयद्ु तीरदुमॅन्
ऱिरुन्दनर् तम्मुयिर्क् किऱुदि यॅण्णुवार् 923

तम् उयिर्क्कु–अपने प्राणों का अन्त; ऍण्णुवार्–संकल्प करके; अरुम् तवम्–कठोर तप; पुरितुमो–करें; अन्नतु–वह; अन्ऱु ऍन्निन्–नहीं तो; मरुन्तु अरम्–लाइलाज; नॅटु–बहुत घातक; कटु–विष को; उण्टु–खाकर; मायतुमो–मर जायँ; तिरुन्तियतु यातु–(इन दो में) श्रेष्ठ क्या है; अतु–वह; चॅयतु तीर्तुम्–कर चुकेंगे; ऍन्ऱु–कहकर; इरुन्ततर्–रहे। ६२३

वे अपने प्राण त्यागने की बात भी सोचने लगे। हम जाकर क्या कठोर तपस्या करें? नहीं तो क्या प्रत्यवाय-रहित भयंकर विष खाकर मर जायँ? इनमें बेहतर क्या है? वही कर जायँगे। —ऐसा निश्चय किया उन्होंने। ९२३

करैपोरु कनैहडल् कनह मालवरै
निरैतुवन् ऱियवॅन नॅडिदि रुन्दवर्क्
कुरैशॅयुम् बोरुळुळ दॅनवु णर्त्तिनान्
अरशिळङ् गोळरि ययरुञ् जिन्दैयान् 924

अरचु इळम्–युवराज; कोळ् अरि–सिंह-सदृश (अंगद); अयरुम् चिन्तैयान्–व्याकुल-मन हो; करै पोरु–तट से टकरानेवाले; कतै कटल्–गर्जनशील सागर के पास; कनक माल् वरै निरै–स्वर्ण मेरुपर्वतों की श्रेणियाँ; तुवन्ऱिय ऍन्न–भरी खड़ी हों जैसे; नॅटितु इरुन्तवर्क्कु–बड़ी संख्या में रहे वीरों से; उरै चॅयुम् पोरुळ्–कहने की एक बात; उळतु–है; ऍन्न–कहकर; उणर्त्तितान्–बताने लगा। ६२४

युवराजकेसरी अंगद बहुत शिथिल-मन हुआ। उसने उन वानर-नायकों से, जिनके कन्धे सागर-तीर के पास रहनेवाले स्वर्णपर्वत के शिखरों की लसी श्रेणियों के समान थे, कहा कि तुमसे कहने की एक बात है। वह कहने लगा। ९२४

नाडिनाङ् गॉणरुदु नळिनत् ताळैवात्, मूडिय वुलहिनै मुऱ्ऱु मुट्टियॅन्
ऱाडवर् तिलहनुक् कन्बि नारॅनप्, पाडवम् विळम्बिनम् पळियिन् मूळ्हिनोम् 925

नाम्–हम सब; वान् मूटिय–आकाश से आच्छन्न; उलकम्–संसार; मुऱ्ऱम् मुट्टि नाटि–भर में सामने जाकर खोजते हुए; नळिनत्ताळै–कमलाजी को; कॉणरुतुम् ऍन्ऱु–लाएँगे, कहकर; आटवर् तिलकनुक्कु–पुरुष-तिलक को; अन्पित्तार् ऍन्न–प्यारों के समान; पाटवम्–पटु वचन; विळम्पित्तम्–कहा; पळियिन् मूळ्कित्तोम्–अब निंदा में डूब गये। ६२५

हमने पुरुषतिलक श्रीराम से पटुता के साथ यह वादा किया कि हम

आकाश से आच्छादित भूमि पर सर्वत्र ढूँढ़कर सीताजी को लाकर समर्पित करेंगे; मानो हम बड़े स्नेही हों। पर अब अपयश में मग्न हो गये। ९२५

शॅय्दुमॅन् इमैन्ददु शॅय्दु तीर्न्दिलॅम्
नॉय्दुशॅन् ऱुऱ्ऱदु नुवल हिऱ्ऱिलॅम्
ऑय्दुमवन् दॅन्नबदो रिऱैयुङ् गण्डिलॅम्
उय्दुमॅन् ऱालिदो ऱुरिमैत् ताहुमो 926

चॅय्तुम् ऑन्ऱु–कर देंगे, कहकर; अमैन्ततु–जिसको हाथ में लिया; चॅय्तु तीर्न्तिलॅम्–कर नहीं चुके; नॉय्तु चॅन्ऱु–शीघ्र (अवधि के बीत जाने के पहले) जाकर; उऱ्ऱतु–जो घटा उसको; नुवलकिऱ्ऱिलॅम्–निवेदन नहीं कर सके; वन्तु ऑय्तुम्–सिद्धि मिल जायगी; ओर् इऱैयुम्–इसका कोई आसरा; कण्टिलॅम्–नहीं देखते; उय्तुम् ऑन्ऱाल्–जीते रहेंगे तो; इतु–यह; ओर् उरिमैत्तु–कोई योग्य काम; आकुमो–होगा क्या। ९२६

जो कर चुकने का वादा किया, उसे हम कर नहीं पाये। न तो यही कर सके कि अवधि के पूर्व ही उनके पास जाकर सच्ची घटना कह देते। अब कार्यसिद्धि होने का कोई आसरा देखते नहीं। इस स्थिति में जीवित रहना चाहें तो वह क्या योग्य काम होगा ? । ९२६

ऑन्दैयु मुनियुमॅम् मिऱैयि रामनुम्
शिन्दनै वरुन्दुमच् चॅय्है काणगुऱेन्
नुन्दुवॅ नुयिरिनै नुणङ्गु केळ्वियीर्
पुन्दियि नुऱ्ऱदु पुहल्वि रॅन्ऱान् 927

ऑन्तैयुम् मुनियुम्–मेरे पिता भी कुपित होंगे; ऑम् इऱै–हमारे प्रभु; इरामनुम्–श्रीराम भी; चिन्तनै वरुन्तुम्–खिन्न-मन होंगे; अ चॅय्कै–वह कार्य; काण्कुऱेन्–(अपनी आँखों) देख न सकूँगा; उयिरिनै नुन्तुवॅन्–प्राण त्याग दूंगा; नुणङ्कु–सूक्ष्म; केळ्वियीर्–श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान से युक्त; पुन्तियिन् उऱ्ऱतु–तुम्हारी बुद्धि में जो उठता है; पुकल्विर्–(वह विचार) कहो; ऑन्ऱान्–कहा। ९२७

इस स्थिति में हम उनके पास जायँगे तो मेरे पिता (चाचा) कुपित होंगे। हमारे प्रभु श्रीराम का मन दुःखी होगा। उनको मैं नहीं (देख) सह सकूँगा। इसलिए मैं अपने प्राण त्याग दूँगा। सूक्ष्म श्रवण से प्राप्त ज्ञान रखनेवाले ! तुम जो अपनी बुद्धि में आता है, वह कहो। अंगद ने उनसे कहा। ९२७

विळुमिय दुरैत्तनै विशयम् वीऱ्ऱिरुन्
दॅळुवीडु मलैयॉडु मिहलुन् दोळिनाय्
अळुदुमो विरुन्दुनम् मन्बु पाळ्बडत्
तॉळुदुमो शॅन्ऱॅनच् चाम्बन् शॉल्लिनान् 928

चाम्पन्–जाम्बवान; विचयम् वीऱ्ऱिरुन्तु–विजयांकित; ॲऴुवोट्टुम्–स्तम्भ और; मलैयोट्टुम्–पर्वत के साथ; इकलुम्–टकरानेवाले (समान रहनेवाले); तोळित्ताय्–कन्धों के; विऴुमियतु–श्रेष्ठ बात; उरैत्तनै–कही; इरुन्तु–जीवित रहकर; अऴुतुमो–रोयेंगे क्या; नम् अऩ्पु–अपने प्रेम को; पाऴ् पट–कलंकित करते हुए; चॆन्ऱु–जाकर; तॊऴुतुमो–(श्रीराम और सुग्रीव की) सेवा करेंगे; ॲन्त–ऐसा; चॊल्लित्तान्–कहा। ९२८

तब जाम्बवान ने कहा। विजयांकित व स्तम्भ और पर्वत की टक्कर के कन्धों वाले! तुमने (क्या ही) उत्तम बात कही! (तुम मरो और उसके बाद) हम जीवित रहकर रोते रहें? अपने प्रेम को कलंकित करते हुए हम उनके पास जाकर उनकी सेवा करते रहेंगे क्या? । ९२८

मीण्डिति यॊन्ऱुनाम् विळम्ब मिक्कदॆन्
माण्डुरु वदुनल मॆन्ऩव लित्तनॆम्
आण्डहै यरशिळङ् गुमर वन्ऩदु
वेण्डलि निऩ्ऩुयिर्क् कुरुदि वेण्डुदुम् 929

आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; अरचु इळम् कुमर–युवराज कुमार; मीण्टु–लौट जाकर; इति–अब; नाम्–हमसे; ऒन्ऱु विळम्प–एक बात कहने के लिए; मिक्कतु ॲन्–बची क्या है; माण्टु उऱुवतु–मर जाना; नलम् ॲन्–श्लाघ्य है, ऐसा; वलित्तनॆम्–निश्चय किया है हमने; अन्ऩतु वेण्टलिन्–वह चाहते हैं, इसलिए; निन् उयिर्क्कु–तुम्हारे प्राणों की; उऱुति–रक्षा का निश्चय; वेण्टुतुम्–चाहते हैं। ९२९

पुरुषश्रेष्ठ! राजकुमार अंगद! वहाँ लौटकर हमारे पास उन्हें देने के लिए क्या समाचार बाकी है? इसलिए हमने मरने का निश्चय किया है। जब हम मरना चाहते हैं तब हम यह निश्चय कर लेना चाहते हैं कि तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा। ९२९

ॲन्ऱव नुरैत्तलु मिरुन्द वालिशेय्
कुन्ऱुरऴ् ॲन्वळर् कुववुत् तोळित्तीर्
पॊन्ऱिनीर् मडिययान् पोव तेलदु
नन्ऱदो वुलहमु नयक्कल् पालदो 930

ॲन्ऱु अवन् उरैत्तलुम्–ऐसा उसके कहते ही; इरुन्त वालि चेय्–उसको जो सुनता रहा वह वाली-पुत्र; कुन्ऱु उरऴ् ॲन्त–पर्वत से टकराते-से; वळर्–बढ़े हुए; कुववु तोळित्तीर्–पुष्ट कन्धों वाले; नीर् पॊन्ऱि मटिय–तुम सब मर जाओ और; यान् पोवतेल्–मैं वहाँ जाऊँ तो; अतु नन्ऱतो–वह ठीक होगा क्या; उलकमुम्–लोक (श्रेष्ठ लोग) भी; नयक्कल् पालतो–स्वागत करें, ऐसा होगा क्या। ९३०

जाम्बवान ने यों कहा। अंगद जो सुनता रहा कहने लगा। पर्वत से टकरानेवाले के समान बढ़े हुए पुष्ट कन्धों वाले! तुम सबको

मरने देकर मैं अकेले वहाँ जाऊँ तो वह श्लाघ्य होगा क्या ? लोकसम्मत होगा क्या ? । ९३०

शात्र्रवर् पळियुरैक् कञ्जित् तन्नुयिर्
पोन्र्रवर् मडिदरप् पोन्दु ळान्ॅन
आन्र्रपे रुलहुळो रऱैदन् मुन्नम्यान्
वान्रोंडर् हुवॅन्नॅन मऱित्तुङ् गूरुवान् 931

चान्र्रवर्–श्रेष्ठ लोगों के; पळि उरैक्कु–निन्दा-वचन से; अञ्चि–डरकर; तन् उयिर् पोन्र्रवर्–अपने प्राण-सम लोगों को; मटि तर–मरने देकर; पोन्तुळान्–आ गया; ॲन–ऐसा; आन्र्र–उत्कृष्ट; पेर् उलकु उळोर्–विशाल लोकों के वासी; अऱैतल् मुन्नम्–कहें, इसके पूर्व ही; यान्–मैं; वान् तॊटर्कुवॅन्–स्वर्ग चला जाऊँगा; ॲन–कहकर; मऱित्तुम् कूरुवान्–और भी कहा । ९३१

" 'बड़े लोगों के अपवाद-कथन से डरकर अंगद अपने प्राण-सम मित्रों को मरने देकर स्वयं जीवित आ गया ।' संसार के श्रेष्ठ लोग यह निन्दा करें —इसके पूर्व ही मैं स्वर्गवासी हो जाऊँगा ।" —यह कहकर अंगद आगे बोला । ९३१

ॲल्लैनम् मिरुदि यायक्कु मॅन्दैक्कुम् याव रेनुम्
शॊल्लवुङ् गूडुङ् गेट्टार् रुञ्जवु मडुक्कुङ् गण्ड
विल्लियु मिळैय कोवुम् वीवदु तिण्ण मच्चॊल्
मल्लनी रयोत्ति पुक्काल् वाळ्वरो बरतन् मऱ्ऱोर् 932

नम् इऱुति ॲल्लै–हमारे अन्त का परिणाम; यावरेनुम्–कोई; याय्क्कुम्–मेरी माता को; ॲन्तैक्कुम्–मेरे पिता (सुग्रीव) को; चॊल्लवुम् कूटुम्–(समाचार) दिला सकेगा; केट्टाल्–वे सुनें तो; तुञ्चवुम् अटुक्कुम्–मर भी सकते हैं; कण्ट–देखकर; विल्लियुम्–धन्वी श्रीराम; इळैय कोवुम्–और छोटे राजा (लक्ष्मण) का; वीवतु–मरना; तिण्णम्–ध्रुव है; अ चॊल्–वह समाचार; मल्लल् नीर्–अधिक जलसमृद्ध; अयोत्ति पुक्काल्–अयोध्या पहुँचे तो; परतन् मऱ्ऱोर्–भरत आदि अन्य; वाळ्वरो–जीवित रहेंगे क्या । ९३२

समझो कि हम सब यहाँ मर गये । तो यह समाचार कोई न कोई मेरे पिता को सुना देगा । तब वे मर जायँगे । उसको देखकर हमारे प्रभु धन्वी श्रीराम और छोटे राजा लक्ष्मण मर जायँगे । यह ध्रुव है । यह समाचार समृद्ध अयोध्या जायगा तो भरत आदि और अन्य लोग जीवित रहेंगे क्या ? । ९३२

बरदनुम् पिन्नु ळोनुम् बयन्दॅडुत् तवरु मूरुम्
शरदमे मुडिवर् कॅट्टेन् शत्तहियॅन् रुलहन् जाऱ्ऱुम्

विरदमा दवत्तिन् मिक्क विळक्किना लुलहत् तियार्क्कुम्
करैतॆरि विलाद दुत्बम् विळैन्दवा वॆन्नक्क लुळून्दान् 933

परतनुम्–भरत; पिन् उळोनुम्–और उनके अनुज; पयन्तु ऍट्टुत्तवरुम्–और उनकी जननियाँ; ऊरुम्–और नगरवासी; चरतमे मुटिवर्–निश्चय ही मरेंगे; कॆट्टेन–मैं मिटा; चनकि–जानकी; ऍन्रु उलकम् चाट्रुम्–ऐसा लोक-शंसित; विरत मातवत्तिन् मिक्क–व्रतधारिणी, तपस्या में श्रेष्ठ; विळक्किनाल्–दीप-सी देवी के कारण; उलकत्तु–इस संसार में; यार्क्कुम्–सबके लिए; करै तॆरिवु इलात–जिसका पार नहीं दिखता, ऐसा (अपार); तुत्पम्–दुःख; विळैन्त आ–पैदा हो गया तो; ऍन्–ऐसा कहकर; कलुळ्न्तान्–उद्विग्न हुआ। ९३३

"भरत, उनके अनुज, इन भ्राताओं की जननियाँ और नगरवासी सभी निश्चय ही मर जायँगे। हाय ! मैं मिटा ! व्रतधारिणी महान तपस्विनी जानकी संज्ञित इन दीप-सी देवी के कारण संसार के सभी लोगों को कितना दुःख पैदा हो गया !" अंगद ऐसा कहते हुए अधीर हुआ। ९३३

पॊरुप्पुरुळ् वयिरत् तिण्डोट् पॊरुशिनत् ताळि पोल्वान्
तरिप्पिला दुरैत्त माट्रन् दडुप्परुन् दहैमैत् ताय
नॆरुप्पैये विळैत्त पोल नॆञ्जमु मरुहक् केट्टु
विरुप्पिना लवनै नोक्कि विळम्बिन ऱॆण्गिन् वेन्दन् 934

पॊरुप्पु उरुळ्–पर्वत-सम; वयिरम् तिण् तोळ्–वज्र-दृढ़ कन्धों वाला; पॊरु चिनत्तु–युद्ध-सन्नद्ध; आळि पोल्वान्–'याळि'-सा अंगद; तरिप्पु इलातु–अधीर होकर; उरैत्त माट्रम्–जो बोला, वह कथन; तडुप्पु अरुम् तकैमैत्तु आय–अवार्य प्रकार की; नॆरुप्पैये–आग को ही; विळैत्त पोल–लगाया हो, ऐसा; नॆञ्चम् मरुक–चित्त के आक्रान्त होने से; केट्टु–सुनकर; ऍण्किन् वेन्तन्–रीछों का राजा; विरुप्पिताल्–प्यार से; अवनै नोक्कि–उसको देखकर; विळम्पिनन्–बोला। ९३४

पर्वत-सम वज्रदृढ़ कन्धों वाला, युद्धरत 'याळि' के समान वह अंगद अधीर होकर ऐसा जो बोला वह वचन अवार्य आग के समान लगा और जाम्बवान का मन तप्त और उद्विग्न हुआ। रीछों के राजा जाम्बवान ने अंगद से प्यार के साथ यों कहा। ९३४

नीयुनिन् ऱादैयु नीङ्ग निन्गुलत्, तायम्वन् दवर्क्कॊरु तनय रिल्लैयाल्
आयदु करुदिनॆ मन्न दन्रॆनिन्, नायह रिरुदियुम् नविलर् पालदो 935

नीयुम्–तुम्हारे और; निन् तातैयुम्–तुम्हारे पिता के; नीङ्क–सिवा; निन् कुल तायम् वन्तवर्क्कु–तुम्हारे कुल में अधिकार के साथ उत्पन्न; ऒरु तनयर् इल्लैयाल्–एक पुत्र नहीं है, इसलिए; आयतु करुतिनॆम्–वैसा विचार किया हमने; अन्ततु अन्रु–वह नहीं; ऍनिल्–तो; नायकर् इरुतियुम्–हमारे नायकों का मरना भी; नविलल् पालतो–कहना ठीक है क्या। ९३५

अंगद ! तुम भी मर जाओगे और तुम्हारे तात (सुग्रीव) भी चले गये तो तुम्हारे वंश में राजा बनने के लिए कोई पुत्र नहीं है। इसीलिए हमने चाहा कि तुम जीवित रहो। तुम अपने मरने की बात नहीं उठाते तो अपने प्रभुओं की मृत्यु की बात कहाँ उठती ? हमारा यह बात करना उचित भी होता ? । ९३५

एहिनी यव्वऴि यॆय्दि यिव्वऴित्, तोहैयैक् कण्डिला वहैयुज् जॊल्लियॆम्
शाहैयु मुणर्त्तुदि तविर्दि शोहम्बोर्, वाहैया यॆऩ्ऱऩऩ् वरम्बि लाऱ्ऱलाऩ् 936

वरम्पु इल् आऱ्ऱलाऩ्–असीम बलशाली; पोर् वाकैयाय्–(अंगद से) युद्धविजयी; नी–तुम; एकि–जाओ; अ वऴि ऎय्ति–वहाँ पहुँचो; इ वऴि–इधर; तोकैये कण्टिला–मयूराभा सीता की अप्राप्ति का; वकैयुम् चॊल्लि–प्रकार (समाचार) कहकर; ऎम् चाकैयुम्–हमारा मरना भी; उणर्त्तुति–समझा दो; तविर्ति चोकम्–छोड़ो शोक को; ऎऩ्ऱऩऩ्–कहा। ९३६

असीम बली जाम्बवान ने अंगद को सलाह दी कि युद्ध-विजयी वीर ! तुम वहाँ जाओ। इधर हमारा सीतान्वेषण का विफल प्रयास कहो। हमारी मृत्यु का भी समाचार दो। तुम शोक करना छोड़ दो। ९३६

अवऩवै युरैत्तपिऩ् ऩनुमऩ् शॊल्लुवाऩ्
पुवऩमूऩ् ऱिऩुमॊरु पुडैयिऱ् पुक्किलॆम्
कवऩमाण् डवरॆऩक् करुत्ति लारॆऩत्
तवऩवे हत्तुनीर् शलित्ति रोवॆऩ्ऱाऩ् 937

अवऩ्–उस (जाम्बवान) के; अवै–वे वचन; उरैत्त पिऩ्–कहने के बाद; अनुमऩ्–हनुमान; चॊल्लुवाऩ्–कहने लगा; पुवऩम् मूऩ्ऱिऩुम्–तीनों लोकों में; ऒरु पुटैयिल्–एक भाग में भी; पुक्किलॆम्–पूर्ण रूप से प्रवेश न कर पाये; तवऩ वेकत्तु नीर्–सूर्य की-सी गति वाले तुम; कवऩम् माण्टवर् ऎऩ–गमन-शक्ति मिट गयी हो, ऐसा; करुत्तु इलार् ऎऩ–और मन नहीं हो, ऐसा; चलित्तिरो–चलित हो गये क्या; ऎऩ्ऱाऩ्–बोला। ९३७

जब जाम्बवान ने अपनी बात कही तब हनुमान ने कहा कि वीरो ! हमने अभी तक तीनों लोकों में एक कोना भी पूर्णरूप से खोजा नहीं है ! सूर्य की-सी गति रखनेवाले तुम क्या कहने लग गये ? क्या ऐसे चलित गये मानो तुमने जाने की शक्ति खो दी हो, या आगे जाने का मन रखते नहीं हो। ९३७

पिऩ्ऩरुङ् गुरुवाऩ् पिलत्तिल् वाऩत्तिल्
पॊऩ्वरैक् कुडुमियिऱ् पुऱत्ति ऩण्डत्तिल्
नऩ्ऩुदऱ् ऱेवियैक् काण्डु नामॆऩिल्
शॊऩ्ऩ नाळवदियै यिऱैवऩ् शॊल्लुमो 938

पिन्नरुम् कूरुवान्–और भी कहा; पिलत्तिल्–बिल (पाताल) में; वानत्तिल्–स्वर्ग में; पॉन् वरै–स्वर्ण-पर्वत (मेरु) के; कुटुमियिल्–शिखर में; पुरत्तित् अण्टत्तिल्–बाह्यांड में; नल् नुतल् तेवियै–मनोरम भाल वाली देवी को; नाम् काण्टुम्–हम पा जायेंगे; ॲनिल्–तो; इऱैवन्–राजा से; चॊन्न नाळ् अवतियै–कथित दिनों की अवधि को; चॊल्लुमो–कहेंगे क्या (सुग्रीव आदि)। ९३८

हनुमान आगे बोला। पाताल में, स्वर्ग में और स्वर्णमय मेरुपर्वत के शिखर पर या बाह्याण्डों में जाकर सुन्दर भाल वाली को खोज पा लें तब भी क्या सुग्रीव अवधि के उल्लंघन की बात कहेंगे? । ९३८

नाडुद लेनल मिन्नु नाडियत्, तोडलर् कुळलिदन् ऱुयरिऱ् चॆन्ऱमर्
वीडिय शडायुवैप् पोल वीडुदल्, पाडव मल्लदु पऴियिऱ् ऱामॆन्ऱान् 939

नाटुतले नलम्–अन्वेषण करना ही अच्छा है; इन्नुम् नाटि–और खोजकर; अ–उन; तोट्टु अलर्–पुष्पालंकृत; कुळलि तन्–सुकेशिनी को; तुयरिल् चॆन्ऱु–दुःख में जाकर; अमर् वीटिय–जिसने युद्ध में प्राण दिये; चटायुवै पोल–उस जटायु के समान; वीटुतल्–हमारा मरना भी; पाटवम्–पाटव है; अल्लतु–नहीं तो; पऴियिऱ्ऱु आम्–अपयशकारी होगा; ॲन्ऱान्–बोला। ९३९

इसलिए अन्वेषण ही अच्छा है। इसलिए आगे ढूँढ़ेंगे और उस जटायु के समान, जिसने सीता के दुःखनिवारणार्थ युद्ध करके अपने प्राण छोड़ दिये थे, अन्वेषण-कार्य में प्राण देना ही पाटव होगा। नहीं तो ऐसा मरना निन्दा का कारण बन जायगा। ९३९

ॲन्ऱलुङ् गेट्टन नॆरुवै वेन्दन्ऱन्, पिन्ऱुणै याहिय पिऴैप्पिल् वाय्मैयान्
पॊन्ऱिन नॆन्ऱशॊऱ् पुलम्बु नॆञ्जिनन्, कुन्ऱॆन नडन्दवर्क् कुऱुहन् मेयिनान् 940

ॲन्ऱलुम्–कहने पर; ॲरुवै वेन्तन्–गीधों का राजा सम्पाति; तन् पिन् तुणैयाकिय–अपना अनुज; पिऴैप्पु इल् वाय्मैयान्–अडिग सत्यसंध; पॊन्ऱिनन्–मरा; ॲन्ऱ चॊल्–यह समाचार; केट्टनन्–सुनकर; पुलम्पु नॆञ्चिनन्–रोते मन के साथ; कुन्ऱु ॲन–पर्वत के समान; नटन्तु–चलकर; अवर् कुऱुकल्–उनके समीप; मेयिनान्–आने लगा। ९४०

जब हनुमान ने जटायु का नाम लिया, तब सम्पाति उसे सुन रहा था। गीधों के राजा, सम्पाति ने सुना कि मेरा अनुज, प्रिय जटायु, अडिग सत्यसन्ध मरा। तो उसका मन दुःख से भर गया। वह रोने लगा। वह एक पर्वत के समान चलता हुआ उनके पास जाने लगा। ९४०

मुऱैयुडै यॆम्बियार् मुडिन्द वावॆनाप्, पऱैयिडु नॆञ्जिनन् पदैक्कु मेनियन्
इऱैयुडैक् कुलिशवे लॆऱिह लामुनम्, शिऱैयुऱु मलैयॆनच् चॆल्लुञ् जॆय्हैयान् 941

मुऱैयुटै–न्यायमार्गी; ॲम्पियार्–मेरा भाई; मुटिन्त आ–मरा कैसा; ॲन–ऐसा; पऱै इटु–(ढोल के समान) थर्रानेवाले; नॆञ्चितन्–मन का; पतैक्कुम्

मेतियन्–काँपनेवाले शरीर के साथ; इऱै उटै–देवेन्द्र का; कुलिच वेल्–कुलिश नामक हथियार के; ऍऱिकला मुतम्–फेंकने से पहले; चिऱै उरु–पंखसहित; मलै ऍन–रहे पर्वत के समान; चॆल्लुम्–जाने का; चॆय्कैयान्–काम करनेवाला। ९४१

'न्यायमार्गी मेरा भाई मरा कैसे ?' इस संशय से उसका मन थर्राने लगा। शरीर काँपने लगा। वह उस पर्वत के समान तेज़ी से आया, जो देवेन्द्र के वज्रायुध फेंककर काटने से पहले पंखसहित था। ९४१

मिडलुडै यॆम्बियै वीट्टु वॆञ्जिनप्, पडैयुळ रायिनार् पारिल् यारॆना
उडलिनै यिऴिन्दुपो युवरि नीरुहक्, कडलिनैप् पुरैयुरु मरुविक् कण्णिनान् 942

मिटलुटै ऍम्पियै–शक्तिमन्त मेरे भाई को; वीट्टुम्–मार सकनेवाले; वॆम् चितम्–भयंकर क्रोध के साथ; पटैयुळर् आयिनार्–हथियार रखनेवाले; पारिल्–इस संसार में; यार् ऍना–कौन है, ऐसा सोचते हुए; उटलिनै इऴिन्तु–शरीर से गिरकर; पोय्–चलनेवाले; उवरि नीर् पुक–नमकीन अश्रु बहाने से; अ कटलिनै–उस समुद्र को; पुरै उरुम्–समानता करनेवाली; अरुवि कण्णिनान्–सरिता-सी आँखों वाला। ९४२

उसके मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा था कि अतिबली मेरे भाई को मार सकनेवाले, बड़े क्रोध के साथ हथियार चलानेवाले इस संसार में कौन हैं ? उसकी आँखों से नमकीन अश्रु निकलकर उसके शरीर पर से गिरा और भूमि पर जमा होने लगा। तब उसकी आँखें समुद्र के समान लगीं और अश्रु नदी के समान। ९४२

उऴुङ्गदिर् मणियणि युमिऴु मिन्ननान्
मऴुङ्गिय नॆडुङ्गणिन् वऴङ्गु मारियान्
पुऴुङ्गुवा नऴुङ्गिनान् पुडवि मीदिनिल्
मुऴङ्गिवन् दिऴिवदोर् मुहिलुम् बोल्हिन्ऱान् 943

उऴुम् कतिर् मणि–तराशी हुई कान्तियुत मणियाँ; अणि–जिनमें जड़ित हों, ऐसे आभरणों से; उमिऴुम्–निःसृत; मिन् अनान्–बिजली के समान रहनेवाला; मऴुङ्किय–कुण्ठित; नॆटु कणिन्–दीर्घ आँखों से; वऴङ्कु मारियान्–निकलनेवाली (अश्रु) धारा से युक्त; पुऴुङ्कुवान्–दुःखतप्त; अऴुङ्कितान्–उद्विग्न; पुटवि मीतितिल्–भूमि पर; मुऴङ्कि वन्तु–शब्द करते हुए; इऴिवतु–उतरकर आनेवाले; ओर् मुकिलुम् पोल्किन्ऱान्–एक मेघ के समान दिखनेवाला। ९४३

उसके शरीर से मणि-जटित आभरण से जैसी कान्ति छूट रही थी। उसकी मन्द-प्रभ और दीर्घ आँखों से बारिश के समान आँसू गिर रहा था। उसका मन वेदनाविद्ध था। दुःख के साथ आता हुआ वह गर्जन के साथ आनेवाले एक मेघ के समान भी लग रहा था। ९४३

वऴिऴियु मरङ्गळु मलैयु मण्णुऱत्
तॆऴ्ऴुनुण् पॊडिपडक् कडिदु शॆल्हिन्ऱान्

तळ्ळुवन् काल्बोरत् तरणि यिड्रुवळ्
वॆळ्ळियम् बॆरुमलै पॊरुवु मेन्नियान् 944

वळ्ळियुम्–लताएँ; मरङ्कळुम्–और वृक्ष; मण् उऱ–भूमि पर गिरते हैं; मलैयुम्–पर्वत भी; तॆळ्ळु नुण् पॊटि पट–स्वच्छ और महीन चूर्ण बनते हैं; कटितु चॆल्किन्ऱान्–ऐसा वेग के साथ चलता है; तळ्ळु वन् काल्–उत्पाटक बलवान पवन; पॊर–ढकेलता है, इसलिए; तरणियिल् तवळ्–भूमि पर मन्द गति से आनेवाले; वॆळ्ळि–चाँदी के; अम् पॆरु मलै—सुन्दर श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत की; पॊरुवु–समानता करनेवाले; मेन्नियान्–आकार का। ९४४

वह इतनी तीव्र गति से आया कि लताएँ और तरु धराशायी हो गये। पर्वत चूर-चूर हो गये। वह सबको उखाड़ फेंक सकनेवाले पवन के ढकेलने से भूमि पर चलते आनेवाले कैलास के चाँदी के बड़े पर्वत के समान भी लग रहा था। ९४४

ऎय्दिन निरुन्दव रिरियल् पोयिनार्
ऐयनम् मारुदि यळ्लुङ् गण्णिनान्
कैदव निशिशर कळ्ळ वेडत्तै
उय्दिहॊ लिन्नॆन्ना वुरुत्तु मुन्निन्ऱान् 945

ऎय्तिन्नन्–आया; इरुन्तवर्–(वहाँ जो) रहे वे; इरियल् पोयिनार्–तितर-बितर हुए; ऐयन्–नायक; अ मारुति–वह मारुति; अळ्लुम् कण्णिनान्–जलती आँखों के साथ; कैतव–वंचक; निचिचर–निशिचर; कळ्ळ वेटत्तै–कपटवेश-धारी; इनि उय्ति कॊल्–अब बचोगे क्या; ऎन्ना–कहते हुए; उरुत्तु–कोप दिखाकर; मुन् निन्ऱान्–उसके सामने जा खड़ा रहा। ९४५

वह वानरों के पास आया। तब वानर डर के मारे तितर-बितर हो गये। तब नायक मारुति ने गुस्से से भरकर सम्पाति को डाँटा। उसकी आँखें जलती आग के समान थीं। उसने कहा— वञ्चक ! निशिचर ! कपटवेशधारी ! अब तुम बचोगे क्या ? ऐसा डाँटते हुए हनुमान उसके सामने जा खड़ा हुआ। ९४५

वॆङ्गदम् वीशिय मनत्तन् विम्मलन्
पॊङ्गिय शोरिनीर् पॊळ्ळियुङ् गण्णितान्
शङ्गैयिड् चळ्क्किल नॆन्नुन् दन्मैयै
इङ्गिद वहैयिन्ना लॆय्द नोक्किनान् 946

वॆम् कतम्–क्रूर कोप से; वीचिय–रिक्त; मनत्तन्–मन वाला; विम्मलन्–सिसकियाँ भरनेवाला; पॊङ्किय चोरी–ऊपर उठी हुई, वर्षा के समान; नीर् पॊळ्ळियुम् कण्णितान्–अश्रुजल बहाती हुई आँखों वाला; चङ्कै इल्–निस्संदेह;

चळक्कु इलन्–झगड़ालू नहीं; अँन्नुम् तन्मैयै–ऐसे स्वभाव को; इङ्कित वकैयिनाल्–इंगितों के प्रकारों से; अँय्त नोक्कितान्–खूब देख लिया (हनुमान ने)। ९४६

हनुमान ने उसे सावधानी से देखा। सम्पाति के मन में नृशंस क्रोध नहीं पाया गया। वह सिसकियाँ भर रहा था और उसकी आँखों से अश्रुजल की बारिश-सी हो रही थी। निस्सन्देह रूप से यह बुरा नहीं है। हनुमान ने उसके स्वभाव को इंगितों से जान लिया। ९४६

नोक्किन निन्ऱन नुणङ्गु केळ्वियान्
वाक्किना लॊरुमॊऴि वळङ्ग लादमुन्
ताक्करुञ् जडायुवैत् तरुक्कि नालुयिर्
नोक्किन रियारदु निरप्पु वीरॆन्ऱान् 947

नुणङ्कु केळ्वियान्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञानी; नोक्कितन्–देखते हुए; निन्ऱतन्–खड़ा रहा; वाक्किनाल्–मुख से; ऑरु मॊऴि–एक बात; वळङ्कलात मुन्–कहने से पहले ही; ताक्करुम् चटायुवै–अप्रतिहत जटायु को; तरुक्किनाल्–अपने बल से; उयिर् नीक्कितर्–प्राणहीन करनेवाला; यार्–कौन था; अतु–उसको; निरप्पुवीर्–विस्तार से कहो; अँन्ऱान्–(सम्पाति ने) प्रश्न किया। ९४७

हनुमान सूक्ष्मश्रवणज्ञानी था। जब वह सम्पाति को देखता ही खड़ा रहा तब उसके मुख से बात निकलने के पूर्व ही सम्पाति ने पूछ लिया कि जटायु पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता। ऐसे जटायु के प्राण निकालनेवाला कौन है? ज़रा सविस्तार कहो। ९४७

उन्नैनी युळ्ळवा ऱुरैप्पि नुऱ्ऱदु
पिन्नैया निरप्पुदल् पिऴैप्पिन् ऱाहुमाल्
ऍन्नमा ऱुदियॆदि ऱॆरुवै वेन्दनुम्
तन्नैया दन्मैयैच् चाऱ्ऱन् मेयिनान् 948

मारुति–हनुमान (के); उन्नै–अपने को (सम्बन्ध में); नी–तुम; उळ्ळ आऱु–यथार्थ रीति से; उरैप्पिन्–कहोगे तो; पिन्नै–बाद; यान्–मैं; उऱ्ऱतु–जो हुआ; निरप्पुतल्–पूरा कहूँगा, यह कहना; पिऴैप्पु इन्ऱु–गलत नहीं; आकुम्–होगा; ऍन्न–कहने पर; ऍतिर्–उत्तर में; ऍरुवै वेन्तनुम्–गीधों का राजा भी; तन्नै आम्–अपनी; तन्मैयै–बात; चाऱ्ऱल् मेयिनान्–कहने लगा। ९४८

उस पर मारुति ने कहा कि अगर तुम अपने बारे में यथार्थ समाचार कहो तो मैं सारा विवरण दे दूँगा। वही गलती-रहित होगा। उसके उत्तर में गीधों के राजा ने अपना यथार्थ हाल कहा। ९४८

मिन्बिऱन् दालॆन विळङ्गॊ यिऱ्ऱिनाय्, अन्बिऱन् दाऱ्हळि ऩदिह ऩाहियॆन्
पिन्बिऱन् दान्रुणैप् पिरिन्द पेदैयेन्, मुन्बिऱन् देनॆन मुडियक् कूऱिनान् 949

मिन् पिऱन्ताल् अँत–बिजली उठी जैसे; विळङ्कु–चमकनेवाले; अँयिऱ्ऱिनाय्–दन्तुले; अऩ्पु इऱन्तार्कळिऩ्–स्नेहहीन; अतिकऩ् आकि–से बढ़कर; अँन् पिन् पिऱन्तान्–मेरे अनुज से; तुणै पिरिन्त–संग से त्यक्त; पेतैयेन्–बेचारा मैं; मुन् पिऱन्तेन्–उसका अग्रज हूँ; अँन्–कहकर; मुटिय–पूरा (वृत्तान्त); कूऱितान्–कहा। ९४९

हनुमान से सम्पाति ने कहा कि हे विद्युत्-सम दाँत वाले! अब मैं निर्ममों से अधिक निर्मम हो गया हूँ। अपने भाई के साथ से हीन हो गया हूँ। दयनीय मैं उसका ज्येष्ठ भाई हूँ। फिर उसने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। ९४९

कूऱिय वाशहङ् गेट्ट कोदिलान्, ऊऱिय तुन्बत्ति नुवरि युट्पुहा
एऱिन नुणर्त्तिन निहलि रावणन्, वीऱिय वाळिडै विळैन्द दामॅन्ऱान् 950

कूऱिय वाचकम्–(सम्पाति का) कहा वचन; केट्ट–जिसने सुना; कोतु इलान्–अकलंक; ऊऱिय तुऩ्पत्तिन्–गहरे दुःख के; उवरियुळ् पुका–सागर में डूबकर; एऱिनन्–कूल पर चढ़ा; इकल्–शत्रु रावण की; वीऱिय वाळ् इटै–शान के साथ चलायी हुई तलवार की वार से; विळैन्ततु आम्–(जटायु का मरण) हुआ; अँन्ऱान्–(हनुमान ने) कहकर; उणर्त्तिनन्–समझाया। ९५०

सम्पाति का हाल सुनकर अकलंक हनुमान ने गहरे दुःख-सागर से डूबने के बाद कूल पर चढ़कर सम्पाति से कहा कि शत्रु रावण की शान के साथ चलायी गयी तलवार की वार से जटायु का मरण हो गया। ९५०

अव्वुरै केट्टलु मशनि येऱ्ऱिनाल्, तव्विय गिरियॆनत् तरैयिन् वीऴ्न्दनन्
वॆव्वुयि रावुयर् पदैप्प विम्मिनान्, इव्वुरै यिव्वुरै यॆडुत्ति यम्बिनान् 951

अ उरै केट्टलुम्–उस वचन को सुनते ही; अचनि एऱ्ऱिनाल्–भयंकर गाज से; तव्विय–चलित हुई; किरि अँन–गिरि के समान; तरैयिल् वीऴ्न्तनन्–भूमि पर गिरा; वॆव् उयिरा–गरम साँसें छोड़ते हुए; उयिर् पतैप्प–प्राणों के छटपटाते; विम्मिनान्–सिसकियाँ भरीं; इ उरै इ उरै–निम्न बातें; अँटुत्तु इयम्पिनान्–बताने लगा (सम्पाति)। ९५१

वह समाचार सुनते ही सम्पाति वज्राहत गिरि के समान नीचे गिर गया। गरम साँसें निकलीं और प्राण छटपटाने लगे। सिसकते हुए वह यों बोला। ९५१

इळैया नीळ्शिऱ हन्ऱु वॆन्दुहत्, तळैया नन्नुयिर् पोव ऌक्कदाल्
वळैया नेमियन् वन्मै शाल्वलिक्, किळैया नेयिदु वॆन्न मायमो 952

इळैया–जो कभी नहीं थकते; नीळ् चिऱकु–वे मेरे पक्ष; अऩ्ऱु वॆन्तु उक–उस दिन जलकर गिर गये तब; तळैयातेन्–प्रतिबद्ध मेरे; उयिर् पोतल्–प्राण चले गये होते तो; तक्कतु–उचित होता; वळैया नेमियन्–नेक आज्ञाचक्रधर (दशरथ)

के; वन्मै चाल् वलिक्कु–कठोर बल से; इळैयाते–कम बली नहीं हो तुम; इतु ॲन्त मायमो–यह क्या ही माया है । ९५२

उस दिन जब मेरे बलवान पंख, जो कभी नहीं थकते थे, जलकर नष्ट हुए उसी दिन प्रतिबद्ध होकर जीवित रहने से मर जाता तो अच्छा होता। हे अनुज ! जिसका बल नेक दण्डधर दशरथ के बल से कुछ भी कम नहीं था ! यह क्या माया-कार्य हो गया ? । ९५२

मलरो तिऩ्ऱुळऩ् मण्णुम् विण्णुमुण्, डुलैया नीडऱ मिऩ्ऩु मुण्डरो
निलैयार् कऱ्पमु निऩ्ऱ दिऩ्ऱुनी, इलैया ऩायिदु वॆऩ्ऩ तऩ्मैयो 953

मलरोन्–कमलासन; निन्ऱुळन्–जीवित है; मण्णुम् विण्णुम्–भूमि और आकाश; उण्टु–ज्यों के त्यों हैं; उलैया नीटु अऱम्–अक्षय श्रेष्ठ धर्म भी; इन्नुम् उण्टु–अब भी है; निलै आर्–स्थायी; कऱ्पमुम्–काल कल्प भी; निन्ऱतु–रहता है; इन्ऱु–आज; नी इलै आताय्–तुम नहीं रहे हो गये; इतु–यह; ॲन्त तन्मैयो–क्या ही क्रम-गति है । ९५३

अभी कमलासन जीवित है ! भूमि, आकाश, अचल धर्म, सतत काल कल्प —सभी अविनष्ट हैं ! पर तुम नहीं रहे ! यह क्या विधिक्रम है ? । ९५३

उडऩे यण्ड मिरण्डु मुऩ्दुयिर्त्, तिडनाम् वन्दिरु वेमु मॆय्दिऩोम्
विडनी येदऩिच् चॆऩ्ऱ् वीरमुम्, कडऩो वॆङ्गलु ळुऱ्कु मेऩमैयाय् 954

वॆम् कलुळऱ्कुम्–बली गरुड़ से भी; मेन्मैयाय्–बढ़कर रहनेवाले; मुन्तु–पहले; अण्टम् इरण्टुम्–दो अण्डे; उयिर्त्तिट–हुए तब; उटने–एक साथ; नाम् इरुवेमुम्–हम दोनों; वन्तु ॲय्तिनोम्–आकर पैदा हुए; विट–छोड़कर; नीये–तुम ही; तनि चॆन्ऱ–अकेले गये; वीरमुम्–वह वीरता; कटनो–क्रम है क्या । ९५४

बलवान गरुड़ से भी अधिक बलशाली ! पहले दो अण्डे हुए जिनमें से हम दोनों एक साथ बाहर आये। अब तुम मुझे छोड़कर अकेले ही चले गये ! यह कैसा वीरकृत्य ? । ९५४

ऒऩ्ऱा मूऩ्ऱुल हत्तु ळोरैयुम्, वॆऩ्ऱा ऩॆऩ्ऩिऩुम् वीर निऱ्कुनेर्
निऩ्ऱा ऩेयव् वरक्क ऩिऩ्ऩैयुम्, कॊऩ्ऱा ऩेयि:(ह्) दॆऩ्ऩ कॊळ्हैयो 955

वीर–वीर; ऒन्ऱा–अपनी अधीनता न माननेवाले; मून्ऱु उलकत्तु उळोरैयुम्–तीनों लोकों के वासियों को; अ अरक्कन्–उस राक्षस ने; वॆन्ऱान् ॲन्निनुम्–जीता तो भी; निऱ्कु नेर् निन्ऱाते–तुम्हारे सामने खड़ा रह सका क्या; निन्नैयुम् कॊन्ऱाते–तुम्हें मार भी सका क्या; इतु ॲन्त कॊळ्कैयो–यह क्या कुसमाचार सुनता हूँ । ९५५

वीर ! उस रावण ने अपनी अधीनता न माननेवाले तीनों लोकों को युद्ध में जीत लिया, सही। पर वह क्या युद्ध में तुम्हारे विरुद्ध खड़ा हो सका ? तुम्हें मार सका ? यह कैसा विचित्र समाचार है ? । ९५५

अॅन्ऱॅन् ऱेङ्गि यिरङ्गि यिऩ्ऩलाल्, पॊऩ्ऱुन् दऩ्मै पुहुन्द पोदवऩ्
कॊऩ्ऱुञ् जॊऱ्कॊ डुणर्च्चि नल्हिऩान्, वऩ्ऱिण् डोळ्वरै यऩ्ऩ मारुदि 956

ऍऩ्ऱु ऍऩ्ऱु–ऐसा, ऐसा; एङ्कि इरङ्कि–तरसकर रोकर; इऩ्ऩलाल्–दुःख से; पॊऩ्ऱुम् तऩ्मै–मरण-स्थिति को; पुकुन्त पोतु–जब सम्पाति पहुँच गया तब; वऩ् तिण् वरै अऩ्ऩ–कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम; तोळ् मारुति–कन्धों वाले मारुति ने; अवऩ्कु–उससे; ऒऩ्ऱुम् चॊल् कॊण्टु–अनुकूल शब्दों से; उणर्च्चि नल्किऩाऩ्–धीरज बँधाया। ९५६

सम्पाति इस तरह विलाप करते हुए तरस और दुःख के बढ़ने से आसन्नमरण हो गया। तब कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम कन्धों वाले हनुमान ने अनुकूल वचन कहकर धीरज दिलाया। ९५६

तेऱ्ऱत् तेऱि यिरुन्द शॅङ्गणाऩ्, कूऱ्ऱॊप् पाऩ्कॊलै वाळ रक्कऩो
डेऱ्ऱुप् पोर्शॅय्द दॅऩ्ऩि मित्तॅऩक्, काऱ्ऱिऩ् शेयिदु कट्टु रैक्कुमाल् 957

तेऱ्ऱ–धीरज देने पर; तेऱि इरुन्त–सँभला जो रहा, उस; चॅम् कणाऩ्–अरुणाक्ष (सम्पाति) ने; कूऱ्ऱु ऒप्पाऩ्–यम-सम (जटायु) को; कॊलै वाळ्–घातक तलवारधारी; अरक्कऩोटु–राक्षस के; एऱ्ऱु–सामने जाकर; पोर् चॅय्ततु–युद्ध करना; ऍऩ् निमित्तु–(पड़ा) किस हेतु; ऍऩ–पूछने पर; काऱ्ऱिऩ् चेय्–पवन-पुत्र ने; इतु–यह; कट्टुरैक्कुम्–कहा। ९५७

हनुमान के धैर्य देने से सँभलकर उस अरुणाक्ष सम्पाति ने पूछा कि यम-सम जटायु का घातक तलवार (चन्द्रहास) के धारक रावण से लड़ना किस निमित्त हुआ ? हनुमान ने उत्तर दिया। ९५७

ऍङ्गो मानव् विराम ऩिल्लुळाळ्, शॅङ्गो लाऩ्महळ् शीदै शॅव्वियाळ्
वॅङ्गोल् वञ्जऩ् विळैत्त मायैयाल् तङ्गो ऩैप्पिरि वुऱ्ऱ तऩ्मैयाळ् 958

ऍम् कोमाऩ्–हमारे नायक; अ इरामऩ्–उन श्रीराम की; इल् उळाळ्–गृहिणी; चॅम् कोलाऩ्–न्यायसम्मत आज्ञा-दण्डधर; मकळ्–(जनक) की दुहिता; चॅव्वियाळ्–उत्तम; चीतै–सीतादेवी; वॅम् कोल् वञ्चऩ्–क्रूर दण्डधर वंचक रावण की; विळैत्त–की हुई; मायैयाल्–माया से; तऩ् कोऩै–अपने राजा (पति) से; पिरिवुऱ्ऱ तऩ्मैयाळ्–बिछुड़ी हुई स्थिति वाली हो गयी। ९५८

हमारे प्रभु नायक श्रीराम की गृहिणी, नीतिसम्मत शासक जनकराज की दुहिता और उत्तम देवी सीता क्रूर शासक वञ्चक रावण के माया-कार्य से अपने पति से वियुक्त हो गयीं। ९५८

कॊण्डे हुङ्गॊलै वाळ रक्कऩैक्, कण्डा ऩॆम्बि यरङ्ग इक्कलाऩ्
वण्डार् कोदैयं वॆत्तु नीङ्गॆऩाऩ्, तिण्डे रानॆदिर् शिऩ्दै शीऱिऩाऩ् 959

कॊण्टु एकुम्–उनको ले जानेवाले; कॊलै वाळ् अरक्कऩै–घातक तलवारधारी

राक्षस को; अऱम् कटक्कलान्–धर्म का उल्लंघन न करनेवाले; उम्पि–तुम्हारे भाई ने; कण्टान्–देखा; वण्टु आर् कोतैयै–भ्रमरावृत मालाधारिणी सीता को; वैत्तु–छोड़कर; नीङ्कु–हट जाओ; ऎंता–कहकर; तिण् तेरान् ऎतिर्–सुदृढ़ रथ वाले (रावण) के विरुद्ध; चिन्तै चीऱ्ऱितान्–मन का कोप दिखाया। ९५९

संहारक तलवारधारी रावण उन्हें ले जा रहा था। तब धर्म का उल्लंघन न करनेवाले तुम्हारे भाई जटायु ने उसे देख लिया। उसने रावण से कहा कि भ्रमरावृत मालाधारिणी देवी को यहीं छोड़कर भाग जाओ। फिर क्रुद्धमन उसने रथ पर जानेवाले रावण का सामना किया। ९५९

शीऱित् तीयव नेऱु तेरैयुम्, कीऱित् तोळ्हळ् किऴित्त ऴित्तपिन्
तेऱित् तेवर्ह डेवन् तॆय्ववाळ्, वीऱप् पॊन्ऱिनन् मॆय्म्मै योॆन्ऱान् 960

मॆय्म्मैयोन्–सत्यसंध जटायु; चीऱि–कुपित होकर; तीयवन्–खल के; एऱु तेरैयुम्–सवार हुए रथ को; कीऱि–तोड़कर; तोळ्कळ्–उसके कन्धों को; किऴित्तु–चीरकर; अऴित्त पिन्–मिटाने के बाद; तेऱि–(रावण ने) धैर्य अवलम्बित कर; तेवर्कळ् तेवन्–देवाधिदेव की; तॆय्व वाळ्–दिव्य तलवार (चन्द्रहास) को; वीऱ–चलाया; पॊन्ऱिनन्–(तब जटायु) मरा; ऎन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ९६०

सत्यसंध जटायु ने क्रोध के साथ रावण के वाहन रथ को तोड़ा; उसके कन्धों को क्षत-विक्षत किया। उसको हरा दिया। बाद रावण ने दृढ़संकल्प हो देवाधिदेव, परमेश्वर-प्रदत्त दिव्य तलवार से वार किया। तब जटायु (पंखों के कट जाने से) मर गया। ९६०

(मूल-टीकाकार इधर एक सरस बात कहते हैं। युद्ध के सिलसिले में रावण ने जटायु से जान लिया कि जटायु का मर्मस्थान पंखों में था। जटायु ने सत्य कह दिया था। पर रावण ने झूठ कहा कि मेरे प्राणों का मर्मस्थान पैर का अँगूठा है। यह वृत्तान्त एक शैवसंत ज्ञानसम्बन्ध मूर्ति के स्तुतिगीतों में पाया जाता है। इसी के आधार पर इस पद्य में जटायु को 'सत्यसंध' कहा गया है।)

पैन्दार्त् तोळ· निरामन् पत्तिनि, शॆन्दाळ् वञ्जि तिऱत्ति ऱन्दवन्
मैन्दा रॆम्बि वरम्बिल् शीर्त्तियो, डुय्न्दा नल्ल दुलन्द दुण्मैयो 961

पैन्तार् तोळन्–नवीन पुष्पों की मालाधारी कन्धों वाले; इरामन् पत्तिनि–श्रीराम की धर्मपत्नी; चॆम् ताळ्–लाल चरण की; वञ्चि–वल्लरी-सी सीता; तिऱत्तु–के निमित्त; इऱन्तवन्–जो मरा; मैन्तु आर्–बलयुक्त; ऎम्पि–(वह) मेरा भाई; वरम्पु इल् चीर्त्ति योटु–अपार यश के साथ; उय्न्तान्–अमर हो गया; अल्लतु–ऐसा कहे बिना; उलन्ततु–मरा कहना; उण्मैयो–सत्य (कथन) होगा क्या। ९६१

नवीन पुष्पों की माला से अलंकृत श्रीराम की धर्मपत्नी, लाल (ललाई लिये) चरणों की, लता-सी देवी के निमित्त मरा मेरा भाई! वह बड़ा बलशाली है। अपार यश के साथ वह तर गया! ऐसा कहना छोड़कर 'हत हो गया' कहना क्या सत्यकथन होगा ? । ९६१

अऱमन् तानुड नॆम्बि यन्बित्तो, डुऱवुन् नावुयिर् ऑन्ऱ वोवित्तान्
पॆऱवॊण् णाददोर् पॆऱ्ऱि पॆऱ्ऱवर्, किऱवॆन् नामिदि लिन्ब मियावदे 962

ऍम्पि–मेरे अनुज भाई ने; अऱम् अन्नानुटन्–धर्म-विग्रह श्रीराम से; अन्पित्तोटु उऱवु उन्ना–प्रेम का नाता मानकर; उयिर् ऑन्ऱ–प्राण लगाने से; ओवित्तान्–(प्राण) दे दिये; पॆऱ ऑण्णाततु–अप्राप्य; ओर्–अनुपम; पॆऱ्ऱि–लाभ; पॆऱ्ऱवर्कु–जिसे मिला उस जटायु के लिए; इऱवु ऍन्नाम्–मरा कहना क्या गौरव देगा; इतिल्–इससे बढ़कर; इन्पम्–सुखद; यावते–क्या होगा। ९६२

मेरे भाई ने धर्ममूर्ति श्रीराम के साथ अपना नाता जोड़ लिया। उसमें उसके प्राण मिले हुए थे। इसलिए उसने प्राण छोड़ दिये और सम्बन्ध निबाह लिया! दुष्प्राप्य लाभ उसे मिल गया। ऐसे उसके सम्बन्ध में मृत्यु के शब्द का प्रयोग क्या अर्थ रखेगा ? इस मरण से बढ़कर आनन्द-दायक क्या हो सकता है ? । ९६२

वाळ्वित् तीरॆनै मैन्दर् वन्दुनीर्, आऴ्वित् तीरलिर् तुन्ब वाऴिवाय्
केळ्वित् तीविनै कीऱ्ऱि नीरिरुळ्, पोऴ्वित् तीरुरै पॊय्यि नीङ्गिनीर् 963

केळ्वि–श्रवण से; तीविनै कीऱ्ऱीर्–पाप का नाश कर चुकनेवाले; इरुळ्–(अज्ञान-) तिमिर को; पोऴ्वित्तीर्–तोड़ चुके; उरै पॊय्यिन्–असत्य-कथन से; नीङ्कित्तीर्–दूर रहनेवाले; मैन्तर्–वीर; नीर् वन्तु–तुम लोगों ने आकर; ऍनै–मुझे; तुन्प आऴि वाय्–दुःख-सागर में; आऴ्वित्तीर् अलीर्–डुबो दिया नहीं; ऍनै वाळ्वित्तीर्–मुझे तार दिया। ९६३

तुम लोगों ने श्रवण-ज्ञान से अपना पाप नष्ट कर दिया है! अज्ञान-तिमिर को भगा दिया है! असत्य-कथन से दूर रहनेवाले हो गये। हे ऐसे वीर! तुमने इधर आकर जटायु की मृत्यु का समाचार सुनाकर दुःख-सागर में मग्न नहीं कराया। पर मुझे तार दिया। ९६३

ऍल्ली रुम्मव् विराम नाममे, शॊल्ली रॆन्शिऱै तोन्ऱुम् जोर्विला
नल्ली रप्पय नण्णु नल्लशॊल्, वल्लीर् वाय्मै वळर्क्कुम् माण्बित्तीर् 964

नल्ल चॊल् वल्लीर्–श्रेष्ठ वक्ता; वाय्मै वळर्क्कुम्–सत्यपालक; माण्पित्तीर्–गौरवपूर्ण; ऍल्लीरुम्–तुम सब; अ इराम नाममे–उन श्रीराम का ही नाम; चॊल्लीर्–कहो; ऍन् चिऱै–मेरे पंख; तोन्ऱुम्–प्रकट हो (उग) आयेंगे; चोर्वु इला–अक्षय; नल् ईर पयन्–अच्छी कृपा का फल; नण्णुम्–मिलेगा। ९६४

हे मंगलवक्ता! सत्यपालक गौरवशाली! तुम सब अब श्रीराम के

नाम का उच्चारण करो। तो मेरे पंख उग आयेंगे। श्रीराम की अचल कृपा का फल मिलेगा। ९६४

ऍन्ऱा नत्तदु काण्डुम् यामॆना, निन्ऱार् निन्ऱुऴि नील मेनियान्
नन्ऱा नाम नविन्ऱु नल्हिनार्, वन्ऱोळान्शिऱै वानम् दायवे 965

ऍन्ऱान्–(सम्पाति ने) ऐसा कहा; याम् अन्नतु काण्टुम्–हम वह देखेंगे; ऍना–कहकर; निन्ऱार्–स्थित हुए; निन्ऱुऴि–उसी स्थिति में; नील मेनियान्–नीलवर्ण; नन्ऱु आम् नामम्–(श्रीराम का) शुभ नाम; नविन्ऱु नल्किनार्–उच्चारण कर हित किया; वन् तोळान् चिऱै–सबल कन्धों वाले सम्पाति के पंख; वानम् ताय–आकाश तक बढ़ गये। ९६५

सम्पाति ने ऐसा कहा। वानरों को कुतूहल हुआ। सोचा कि वह करामात देखेंगे। वहीं खड़े होकर उसी स्थिति में वे श्रीराम के शुभनाम का उच्चारण करने लगे, यह बड़ा उपकार हुआ। बलिष्ठ कन्धों वाले सम्पाति के पंख उगकर आकाश को छूते हुए बढ़ गये। ९६५

शिऱैबॆऱ् ऱान्ऱिहऴ् हिन्ऱ मेनियान्, मुऱैबॆऱ् ऱामुल हॆङ्गुम् मूडिनान्
निऱैबॆऱ् ऱावि नॆरुप्पु यिर्क्कुम्वाळ्, उऱैपॆऱ् ऱालॆन लामु ऱुप्पिनान् 966

चिऱै पॆऱ्ऱान्–पंख-प्राप्त; तिकऴ्किन्ऱ–शोभनेवाले; मेनियान्–शरीर का; मुऱै पॆऱ्ऱु आम्–क्रम से सृष्ट; उलकु ऍङ्कुम्–सारे भूतल को; मूटिनान्–ढँककर; निऱै पॆऱ्ऱु–खूब वर्धित होकर; आवि नॆरुप्पु–धुआँ-सहित अग्नि; उयिर्क्कुम्–निकालनेवाली; वाळ्–तलवार; उऱै पॆऱ्ऱाल् ऍनल् आम्–म्यान पा गयी जैसे; उऱुप्पिनान्–अंगों-सहित हुआ। ९६६

तब सम्पाति पंखसहित होकर शोभायमान दिखा। उसने क्रम से बढ़े हुए अपने पंखों से सारी भूमि को ढँक दिया। वह पूर्णरूप से सर्वांग-सम्पन्न होकर एक तलवार के समान लगा, जिससे धुआँसहित आग-सी निकल रही हो और जो म्यान में रखी जा चुकी हो। ९६६

तॆरुण्डान् मॆय्प्पॆयर् शॆप्प लोडुम्वन्, दुरुण्डा नुऱ्ऱ पयत्तै युन्निनार्
मरुण्डार् मानवर् कोनै वाऴ्त्तिनार्, वॆरुण्डार् शिन्दै वियन्दु विम्मुवार् 967

तॆरुण्टान्–ज्ञानियों द्वारा जो परब्रह्म बताये जाते हैं; मॆय्प्पॆयर्–उन श्रीराम का सत्य नाम; चॆप्पलोटुम्–उच्चारण (जप) करने पर; वन्तु उरुण्टान्–जो लोटता-पोटता आया; उऱ्ऱ पयत्तै–उसको मिली उपलब्धि; उन्निनार्–सोचकर; मरुण्टार्–विस्मय-विमूढ़ हुए; वॆरुण्टार्–डरे; वियन्तु–आश्चर्य से; चिन्तै विम्मुवार्–मन भरा हो; मानवर् कोनै–नरपुंगव की (या मनुकुलपुंगव की); वाऴ्त्तिनार्–स्तुति की। ९६७

वानर वीरों ने ज्ञानियों द्वारा परब्रह्मनिर्दिष्ट श्रीराम के नाम की महिमा देखी। सम्पाति लोटता-पोटता हुआ आया था। पर श्रीराम के

नाम के जप करने से उसके पंख उग आये। उस करामात को देखकर वे विस्मित हुए। उन्हें भय भी हुआ। आश्चर्य से भरकर उन्होंने नरपुंगव मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम की स्तुति की। ९६७

अऩ्ऩा नैक्कडि दञ्ज लित्तुनी, मुऩ्ऩा ळुऱ्ऱदु मुऱ्ऱु मोदॅनच्
चॊऩ्ऩार् शॊऱ्ऱदु शिन्दै तोय्वुऱत्, तऩ्ऩा लुऱ्ऱदु ताऩ्वि ळम्बुवान् 968

अऩ्ऩातॆ–उससे; कटितु–शीघ्र; अञ्चलित्तु–हाथ जोड़कर; नी–तुम; मुऩ् नाळ् उऱ्ऱतु–पहले जो घटनाएँ घटीं; मुऱ्ऱुम्–पूरा; ओतु–कहो; ऎऩ–ऐसा; चॊऩ्ऩार्–कहा; ताऩ्–वह; चॊऱ्ऱतु–उनका कहना; चिन्तै तोय्वु उऱ–मन में प्रभाव कर गया, इसलिए; तऩ्ऩाल् उऱ्ऱतु–आप बीती को; विळम्पुवाऩ्–कहने लगा। ६६८

उन्होंने तुरन्त पंख-प्राप्त सम्पाति को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और याचना की कि पहले जो हुआ वह सारा वृत्तान्त पूर्णरूप से कहो। उनकी बात ने उस पर प्रभाव किया। उसने आप-बीती बातों का यों विवरण दिया। ९६८

तायॆऩत् तहैय नण्बीर् शम्बादि शडायु वॆंन्बेम्
शेयॊळिच् चिऱैय वेहक् कळुहिऩुक् करशु शॆय्वेम्
पाय्दिरैप् परवै ञालम् पडरिरुळ् परुहुम् पण्बिन्
आय्हदिर्क् कडवुट् टेरू ररुणऩुक् कमैन्द मैन्दर् 969

ताय् ऎऩ तकैय–माता मानने योग्य; नण्पीर्–मित्रो; चम्पाति चटायु ऎऩ्पेम्–सम्पाति और जटायु नाम के हम; चेय् ऒळि चिऱैय–लाल प्रकाशमय पंखों वाले; वेक–अति वेगी; कळुकिऩुक्कु–गीधों के; अरचु चॆय्वेम्–राजा रहे; पाय् तिरै परवै–लपकती आनेवाली लहरों वाले समुद्र से वलयित; ञालम्–भूमि पर; पटर् इरुळ्–व्याप्त अन्धकार को; परुकुम् पण्पिऩ्–दूर करने में समर्थ; आय् कतिर् कटवुळ्–श्रेष्ठ किरणों के सूर्यदेव के; तेर् ऊर्–रथ के सारथी; अरुणऩुक्कु–अरुण के; अमैन्त मैन्तर्–योग्य पुत्र। ६६६

माता-सम मान्य मित्रो! हम सम्पाति और जटायु नाम के दो भाई हैं। हम लाल प्रकाशमय पंखों वाले और अतिवेगी गीधों पर शासन करनेवाले हैं। लहराती आनेवाली तरंगसंकुल सागर से वलयित इस भूमि के अन्धकार के नाशक किरणमाली सूर्यदेव के रथ के सारथी, अरुण के युक्त पुत्र हैं। ९६९

आयुय रुम्बर् नाडु काण्डुमॆंन् ऱॆऴुन्दु तळ्ळ
मीयुयर् विशुम्बि ऩूडु मेक्कुऱच् चॆल्लुम् वेलै
काय्हदिर्क् कडवुट् टेरैक् कण्णुऱ्ऱेङ् गण्ण् ऱामुऩ्
तीयॆयुऩ् दीय्क्कुऩ् वॆय्वच् चॆङ्गदिर्च् चॆल्वऩ् शीऱि 970

अ उयर् उम्बर् नाटु–उस उत्कृष्ट देवलोक को; काण्टुम् ऍऩ्ऱु–देखने को; ऍम् अऱिवु तळ्ळ–हमारी बुद्धि ने प्रेरित किया तो; मी उयर् विचुम्पिऩ् ऊटु–ऊपर रहनेवाले आकाश में; मेक्कु उऱ–ऊँचे; चॆल्लुम् वेलै–जब चले तब; काय् कतिर्–सन्तापक किरणों के; कटवुळ् तेरै–देव (सूर्य) के रथ को; कण् उऱ्ऱेम्–आँखों से देखा; कण्णुऱामुऩ–देखने से पहले ही; तीयैयुम् तीय्क्कुम्–आग को भी जला सकनेवाले; तॆय्वम्–देवता; चॆम् कतिर् चॆल्वऩ्–लाल किरणमाली के; चीऱि–कुपित होते। ९७०

हमारी इच्छा हुई की स्वर्गलोक जाकर देखें। उससे प्रेरित होकर हम आकाश में ऊपर उड़े। तब जलानेवाली किरणों के स्वामी सूर्यदेव का रथ दृष्टि में पड़ा। उसको देखते ही आग को भी जला सकनेवाले लाल किरणों के स्वामी सूर्य ने कोप करके—। ९७०

मुऩ्दिय वॆम्बि मेऩि मुरुङ्गऴऩ् मुडुहुम् वेलै
ऍऩ्दैनो कात्ति यॆऩ्ऱाऩ् याऩिरुञ् जिऱैयु मेऩ्दि
वऩ्दऩॆऩ् मऱैत्त लोडु मऱ्ऱवऩ् मऱैयप् पोऩाऩ्
वॆऩ्दुमॆय् यिऱहु तीय्ऩ्दु विऴुऩ्दऩॆऩ् विळिहि लादेऩ् 971

मुऩ्तिय–मेरे आगे जो गया; ऍम्पि मेऩि–मेरे भाई के शरीर को; मुरुङ्कु अऴल्–दाहक अग्नि से; मुटुकुम् वेलै–जलाने लगी, तब; ऍऩ्तै–तात; नी कात्ति–तुम बचाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; याऩ्–मैंने भी; इरुम् चिऱैयुम् एन्ति–दोनों पंखों पर (धूप) धारण करके; वऩ्तऩॆऩ् आकर; मऱैत्तलोटुम्–उसको छिपा लिया तब; अवऩ् मऱैय पोऩाऩ्–वह (मेरे पंखों के नीचे) छिपे-छिपे गया; मॆय् वॆन्तु–(इसलिए मेरा) शरीर झुलस गया; इऱकु तीय्न्तु–पंख जल गये; विळिकिलातेऩ्–मरा नहीं; विऴुन्तऩॆऩ्–(भूमि पर) गिर गया। ९७१

मेरे आगे (मुझसे पहले) जानेवाले मेरे भाई के शरीर को अपनी किरण की दाहक आग से दग्ध किया। तब अनुज ने मुझसे याचना की कि तात ! मुझे बचाओ। मैंने अपने पंख फैला लिये और उसको उनके नीचे कर लिया। वह उनके नीचे छिपे-छिपे आने लगा। पर मेरा शरीर झुलस गया और पंख जल गये। भाग्य से मरा नहीं। मैं नीचे गिर गया। ९७१

मण्णिडै विऴुन्द वॆन्ऩै वाऩिडै वयङ्गु वळ्ळल्
कण्णिडै नोक्कि युऱ्ऱ करुणैयाऱ् चऩहऩ् कादऱ्
पॆण्णिडै यीट्टिऩ् वन्द वाऩर रिमाऩ् पेरै
ऍण्णिडै युऱ्ऱ कालत् तिऱहुपॆऱ् ऱॆऴुदि यॆऩ्ऱाऩ् 972

मण् इटै विऴुन्त–भूमि पर गिरे हुए; ऍऩ्ऩै–मुझे; वाऩिटै–आकाश में; वयङ्कुम् वळ्ळल्–शोभनेवाले देवता ने; कण्णिटै नोक्कि–आँखों से देखकर; उऱ्ऱ

करुणैयाल्–हुई करुणा के साथ; चत्तकन् कातल् पॅण्–जनक की प्यारी दुहिता; इटै ईट्टिन् वन्त–(के निमित्त) मध्य आनेवाले; वानरर्–वानर; इरामन् पेरै–श्रीराम नाम का; ॲण्णिटै उऱ्ऱ कालत्तु–जब जाप करेंगे, उस समय; इऱकु पॅऱ्ऱु–पंख पाकर; ॲऴुति–उठोगे; ॲन्ऱान्–यह करुणा-वचन कहा। ९७२

आकाशचारी सूर्यदेव ने भूमि पर गिरे हुए मुझे देखा और मुझ पर हुई करुणा से कृपावचन कहा कि जनक की प्यारी दुहिता के निमित्त (उनकी खोज में) वानर वीर आयँगे। जब वे श्रीराम के दिव्य नाम का जाप करेंगे तब तुम्हारे पंख उग आयँगे और तुम उड़ सकोगे। ९७२

ॲम्बियु मिडरिन् वीऴ्वा नेयदु मऱुक्क वञ्जि
अम्बरत् तियङ्गुम् याणर्क् कऴुहिनुक् करश नानान्
नम्बिमी रीवंन् दन्मै नीरिव णडैन्द वाऱ्ऱै
उम्बरु मुवप्पत् तक्की रुणर्त्तुमि नुणर वॅन्ऱान् 973

उम्परुम् उवप्प तक्कीर्–देवों से भी प्रशंसनीय; नम्पिमीर्–श्रेष्ठ वीर; इटरिन् वीऴ्वान्–मेरे दुःख से दुःखमग्न; ॲम्पियुम्–मेरा भाई; एयतु मऱुक्क–मेरी आज्ञा इनकार करने से; अञ्चि–डरकर; अम्परत्तु–आकाश में; इयङ्कुम्–उड़नेवाले; याणर् कऴुकिनुक्कु–बलिष्ठ गीधों का; अरचन् आनान्–राजा बना; ईतु–यही; ॲम् तन्मै–हमारा वृत्तान्त है; नीर्–तुम्हारे; इवण्–यहाँ; अटैन्त आऱ्ऱै–पहुँचने का हाल; उणर उणर्त्तुमिन्–समझाकर बताओ; ॲन्ऱान्–कहा। ९७३

देवों से भी प्रशंसनीय काम करनेवाले! श्रेष्ठ वीरो! मेरा अनुज बहुत दुःखी हुआ। मेरी आज्ञा टालने से डरकर उसने मेरी बात मान ली और वह आकाशचारी बलिष्ठ पंखों वाले गीधों का राजा बना। यही हमारा वृत्तान्त है। अब कहो तुम्हारे इधर आने का वृतान्त। सम्पाति ने यह पूछा। ९७३

ॲन्ऱलु मिरामन् ऱन्नै येत्तिन रिऱैञ्जि यॅन्दाय्
पुन्ऱॊऴि लरक्कन् मऱ्ऱत् तेवियैक् कॊण्डु पोन्दान्
तॅन्ऱिशै यॅन्न वुन्नित् तेडिनाम् वन्दु मॅन्ऱार्
नन्ऱुनीर् वरुन्दल् वेण्डा नानिदु नविल्व लॅन्ऱान् 974

ॲन्ऱलुम्–(सम्पाति के यों) कहने पर; इरामन् तन्नै–श्रीराम की; एत्तिनर्–स्तुति की; इऱैञ्चि–प्रार्थना करके; ॲन्ताय्–तात; पुन् तॊऴिल् अरक्कन्–नीचकर्मी राक्षस; अ तेवियै–उन देवी को; तॆन् तिचै कॊण्टु पोन्तान्–दक्षिण दिशा में ले गया; ॲन्न–ऐसा; उन्नि–विचार कर; नाम् तेटि वन्तुम्–हम खोजते हुए आये; ॲन्ऱार्–कहा (वानरों ने); नन्ऱु–अच्छा; नीर् वरुन्तल् वेण्टा–तुम दुःख न करना; नान् इतु नविल्वल्–मैं इसके सम्बन्ध में कहूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ९७४

सम्पाति के यों पूछने पर वानरों ने श्रीराम की स्तुति की और विनय

प्रकट की। फिर उन्होंने कहा कि तात ! वह क्षुद्रकर्मी राक्षस उन देवी सीता को दक्षिण की ओर ले गया। इस विचार से हम उनकी खोज में इधर आये। तब सम्पाति ने उत्तर में कहा कि अच्छा ! मैं इसके सम्बन्ध में कहूँगा। सुनो। ९७४

पाहॊत्तॣ कुदलै याळैप् पादह वरक्कत् पऱ्ऱिप्
पोहित्ऱ पॊऴुदु कण्डेन् पुक्कत्त निलङ्गै पुक्कु
वेहित्ऱ वुळ्ळत् ताळै वॆञ्जिऱै यहत्तु वैत्तान्
एहुमिन् काण्डि राङ्गे यिरुन्दत ळिऱैवि यिन्तुम् 975

पाकु ऒत्तॣ–चासनी-सम; कुतलैयाळै–मधुरभाषिणी को; पातक अरक्कन्–पातक राक्षस; पऱ्ऱि–पकड़कर; पोकित्ऱ पॊऴुतु–जब जा रहा था, तब; कण्टेन्–मैंने देखा; इलङ्कै पुक्कतन्–लंका में घुस गया; पुक्कु–वहाँ जाकर; वेकित्ऱ उळ्ळत्ताळै–दग्धचित्त उनको; वॆम् चिऱै अकत्तु–कठोर कारागृह में; वैत्तान्–रख लिया; इऱैवि–देवी; इन्तुम्–अब भी; आङ्के–वहीं; इरुन्ततळ्–रहती हैं; एकुमिन् काण्टिर्–जाकर देख लो। ९७५

जब रावण चासनी-सम मधुरभाषिणी सीता को ले जा रहा था तब मैंने उसे देखा। वह लंका में गया और वहाँ जाकर उसने दग्ध मन वाली सीतादेवी को भयंकर कारागृह में वन्दी बनाकर रखा है। ईश्वरी अब भी वहीं हैं। जाकर देखो। ९७५

ऍल्लीरुञ् जॆऱ्ऱलॆन्ब दॆळिदन्ऱव् विलङ्गै मूदूर्
वल्लीरे लॊरुवरेहि मऱैन्दव णॊऴुहि वाय्मै
शॊल्लीरे तुयरै नीक्कित् तोहैयैत् तॆरुट्टि मीडिर्
अल्लीरे लॆन्शॊऱ् ऱेऱि युणर्त्तुमि नऴहर्क् कम्मा 976

अ इलङ्कै मूतूर–उस प्राचीन नगर, लंका में; ऍल्लीरुम्–तुम सबका; चेऱल् ऍऩ्पतु–पहुँचना; ऍळितु अऩ्ऱु–आसान नहीं; वल्लीरेल्–कर सको तो; ऒरुवर् एकि–एक जाकर; अवण् मऱैन्तु ऒऴुकि–वहाँ छिपे-छिपे चलकर; वाय्मै चॊल्लीर्–श्रीराम के वचनों को कहो; तोकैयै–मयूरनिभ देवी को; तुयरै नीक्कि–दुःखमुक्त करके; तॆरुट्टि–धीरज दिलाकर; मीटिर्–लौट आओ; अल्लीरेल्–नहीं तो; ऍन् चॊल् तेऱि–मेरे कहने पर विश्वास करके; अऴकर्कु–सुन्दरराज से; उणर्त्तुमिन्–बताओ; (अम्मा–पूरक ध्वनि)। ९७६

पर उस प्राचीन लंका नगर में तुम सबका जाना सुलभ काम नहीं है। अगर कर सको तो तुममें से एक जाओ। वहाँ छिपे-छिपे घूमो और देवी से मिलकर श्रीराम के कहे वचन कह दो। देवी को दुःख-मुक्त कर दो और लौट आओ। अगर यह नहीं कर सको तो तुम मेरी बात पर विश्वास करो और सुन्दरराज श्रीराम से जाकर निवेदन कर दो। ९७६

काक्कुन रिन्मै यालक् कळ्हिन मुळ्दुङ् गन्ऱिच्
चेक्कॅविट् टिरियल् पोहित् तिरिदरु मदनेत् तोर्प्पान्
पोक्कॅनक् कडुत्त दाहुम् नल्लदु पुरिमि नॅन्ना
मेक्कुऱ विशेयिऱ् चॅन्ऱान् शिऱैयिताल् विशुम्बु पोर्प्पान् 977

काक्कुनर् इन्मैयाल्–रक्षक न होने से; अ कळ्कु इनम्–वह गीधों का समूह; मुळ्तुम्—सारा; कन्ऱि–दुःखी होकर; चेक्कै विट्टु–वासस्थान छोड़कर; इरियल् पोकि–तितर-बितर जाकर; तिरि तरुम्–फिरेगा; अततै तीर्प्पान्–उस (स्थिति) को दूर करने; पोक्कु–उनके पास जाना; ॲन्क्कु अट्टुततु आकुम्–मेरा योग्य कर्तव्य है; नल्लतु पुरिमिन्–जो बेहतर लगे वह करो; ॲन्ना–कहकर; चिऱैयिताल्–अपने पंखों से; विचुम्पु पोर्प्पान्–आकाश को छाता हुआ; मेक्कु उऱ–ऊपर; विचैयिल्–वेग के साथ; चॅन्ऱान्–गया। ६७७

गीधों का कुलरक्षक राजा के विना दुःखी होगा और वासस्थान छोड़कर तितर-बितर हो जायगा। उसको कष्ट से बचाने के लिए मेरा उनके पास जाना आवश्यक है। मैंने जो दो उपाय कहे, उनमें जो बेहतर जँचता है वह करो। ऐसा कहकर उसने अपने पंख फलाये जिससे आकाश ही आच्छादित हो गया! वह ऊपर उड़कर अतिवेग से चला गया। ९७७

16 मयेन्दिरप् पडलम् (महेन्द्र पटल)

पॉय्युर शॅय्यान् पुळ्ळर शॅन्ऱे पुहलुऱ्ऱार्
कय्युऱै नॅल्लित् तन्मैयि नॅल्लाङ् गरैहण्डाम्
उय्युऱै पॅऱ्ऱा नल्लवै यॅल्ला मुऱ्ॲण्णिच्
चॅय्युमि नॉय्दिऱ् चॅय्वहै यावुम् शॅयवल्लीर् 978

पुळ् अरचु–गीधों का राजा; पॉय् उऱै चॅय्यान्–झूठी बात नहीं कहेगा; ॲन्ऱे–यही; पुकलुऱ्ऱार्–कहते हुए; कै उऱै नॅल्लि तन्मैयिन्–करतलामलकवत; ॲल्लाम् करै कण्टाम्–सब साफ़ जान गये हैं; उय् उऱै–बचानेवाला समाचार; पॅऱ्ऱाम्–पा गये; नल्लवै ॲल्लाम्–भलाकारी सब; उऱ ॲण्णि–खूब सोचकर; चॅय्वकै यावुम्–करणीय सब; नॉय्तिल् चॅय वल्लीर्–जो शीघ्र कर सकते हो; चॅय्युमिन्–कर लो। ६७८

गीधों का राजा झूठ नहीं बोलेगा। इस विश्वास पर वे आपस में बोलने लगे। किन्हीं ने कहा कि करतलामलकवत हमने सब ठीक-ठीक जान लिया। हमको बचानेवाला शुभवचन मिल गया। अब जो अच्छा होगा वही सोचकर शीघ्र काम करने का सामर्थ्य जिनमें है, वे तुम लोग करो। ९७८

माळ वलित्ते मन्ऱुमिम् माळा वशैयोडु
मीळवु मुऱ्ऱे मन्नवै तीरुम् वॅळिपॅऱ्ऱेम्

काळ निऱत्तो डॊप्पवर् माळक् कडराावुऱ्
ऱाळु नलत्तो राळुमि नॆम्मा रुयिरम्मा 979

माळ वलित्तेम्–मरने का निश्चय किया; ॲनृऱुम्–सदा; इ–इस; माळा वचैयोटुम्–अचल अपयश के साथ; मीळवुम् उऱ्ऱेम्–लौट जाना भी सोचा; अन्नवै तीरुम्–उनको दूर करते हुए; वॆळि पॆऱ्ऱेम्–मार्ग पा लिया; काळ निऱत्तोटु–विष-वर्ण का; ऒप्पवर्–साम्य रखनेवाले (राक्षस); माळ–मरे, इसके निमित्त; कटल् तावुऱ्ऱु–समुद्र लाँघकर; आळुम नलत्तीर–जाने का पौरुष रखनेवाले; ॲम् आरुयिर्–हमारे प्यारे प्राणों को; आळुमिन्–सुरक्षित करो। ६७६

उन्होंने आगे कहा। हमने मरने की बात सोची थी। फिर देवी को खोजे बिना ही अचल अपयश लेकर लौट जाने का संकल्प भी किया। पर वे दोनों स्थितियाँ अब टल गयीं। कुछ अच्छा मार्ग दिखायी देने लगा है। इसलिए हममें, जिनमें काले विष के-से रंग वाले राक्षसों को मारने का मौका पैदा करने के निमित्त समुद्र लाँघकर जाने का सामर्थ्य है, वे हमारे प्राणों की रक्षा करें। ९७९

शूरियन् वॆऱ्ऱिक् कादल नोडुञ् जुडर्विऱ्कै
आरिय नैच्चॆन् ऱेदॊळ् दुऱ्ऱ दऱैहिऱ्पिन्
शीरिय दन्ऱु तेरुदल् कॊऱ्ऱच् चॆयलम्मा
वारिह डप्पार् याव रॆनत्तम् वलिशॊल्वार् 980

वॆऱ्ऱि–विजयी; चूरियन् कातलन्नोटुम्–सूर्य के प्यारे पुत्र के साथ; चुटर् विल्–उज्ज्वल धनु को; कै आरियनै–हाथ में लिये रहनेवाले आर्य को; चॆन्ऱे–जाकर; तॊळुतु–नमस्कार करके; उऱ्ऱतु–बीती बात; अऱैकिऱ्पिन्–कहेंगे तो; चीरियतु अन्ऱु–श्लाघ्य नहीं होगा; तेरुतल्–खोजना; कॊऱ्ऱ चॆयल्–विजयसूचक काम है; वारि कटप्पार्–समुद्र लाँघ सकनेवाले; यावर् ॲन–हममें कौन है, पूछने पर; तम् वलि–अपना-अपना बल; चॊल्वार्–बखानने लगे। ६८०

जिस कार्य को करने की आज्ञा ले आये, उसे पूरा किये बिना हमारा सूर्य के प्यारे पुत्र सुग्रीव और उज्ज्वल धनु के धारक श्रीराम के पास जाना और नमस्कार करके बीती बातों को कहना श्लाघ्य नहीं होगा। सीताजी का अन्वेषण ही वीरोचित कार्य है। इसलिए हममें कौन हैं, जो इस समुद्र को लाँघ सकते हैं? इस प्रश्न पर सब अपने-अपने बल का प्रमाण देने लगे। ९८०

नीलन् मुदऱ्पेर् पोर्हॆळु कॊऱ्ऱ नॆडुवीरर्
शाल वुरॆत्तार् वारि हडक्कुन् दहविन्मै
वेलै कडप्पॆन् मीळ सिडुक्किन् ऱॆनविट्टान्
वालि यळिक्कुम् वीर वयप्पोर् वशैयिल्लान् 981

नीलन् मुतल्–नील आदि; पेर्–बड़े; पोर् कॆळु–युद्ध-चतुर; कॊऱ्ऱम् नॆटु वीरर्–विजय पाने में श्रेष्ठ वीर; वारि कटक्कुम् तकवु–समुद्र लाँघने की शक्ति का; इन्मै–अभाव; चाल–खूब; उरैत्तार्–बोले; वालि अळिक्कुम्–वाली दत्त; वीर वयम् पोर्–वीरता और विजयशीलता के साथ युद्ध करनेवाला; वचै इल्लान्–अनिंद्य अंगद ने; वेलै कटप्पॆन्–समुद्र लाँघ जाऊँगा; मीळ–लौटने को; मिटुक्कु इन्ऱु–शक्ति नहीं; ॲन–ऐसा; विट्टान्–पूरा किया (वचन)। ९८१

नील आदि युद्ध-समर्थ वीरों ने अपने में समुद्र-तरण की शक्ति का अभाव स्पष्ट रूप से मान लिया। वाली के पुत्र, वीरविजयी योद्धा अंगद ने कहा कि मैं समुद्र के उस पार चला जाऊँगा। पर लौट आने की शक्ति मुझमें नहीं है। ऐसा कहकर उसने अपने को छुड़ा लिया। ९८१

वेद मनैत्तुन् दॆर्दर वॆट्टा वोरुमॆय्यन्
पूदल मुऱ्ऱु मोरडि वैत्तुप् पॊलिपोळ्दिन्
मादिर मॆट्टुज् जूळ्परै वैत्ते वरमेरु
मोद विळैत्ते ताळुळै वुऱ्ऱेन् विऱन्मॊय्म्बोर् 982

नालु मुकत्तान्–चतुर्मुख के; उतवुऱ्ऱान्–दत्त पुत्र (जाम्बवान) ने; विऱल् मॊय्म्पोर्–बलवान कन्धों वाले; वेतम् अनैत्तुम्–सारे वेद; तेर् तर–खोज देखें तब भी; ॲट्टा–अप्राप्य; ओरु मॆय्यन्–एक दिव्यशरीरी; पूतलम् मुऱ्ऱुम्–सारी भूमि को; ओर् अटि वैत्तु–एक पग में समाकर; पॊलि पोळ्तिन्–जब शोभायमान रहे, तब; मातिरम् ॲट्टुम्–आठों दिशाओं में; परै वैत्ते–ढिढोरा पीटते हुए; चूळ् वर–घूमता गया; मेरु मोत–तब मेरु से टकराया और; इळैत्ते–थककर; ताळ् उळैवु उऱ्ऱेन्–मेरे पैरों में दर्द हुआ। ९८२

(चतुर्मुखपुत्र जाम्बवान ने कहा कि) हे शक्तिमन्त वीर! जब सारे वेदों के ज्ञान के परे रहनेवाले दिव्यशरीरी त्रिविक्रम सारी भूमि को एक चरण के अन्दर नापते हुए शोभ रहे थे तब मैं ही भूमि भर में उस बात का ढिंढोरा पीटते हुए घूमा। तब मेरु से टकराया और मेरे पैरों में दर्द हो गया। ९८२

आदलि निप्पे रार्हलि कुप्पुऱ् ऱहळिञ्जि
मीदु कडत्तित् तीयव रुट्कुम् वित्तॆयोडुम्
शीदै तनैत्तेर्न् दिङ्गुडन् मीळुन् दिऱनिन्ऱॆन्
ऱोदि यिऱुत्ता नालु मुहत्ता नुदवुऱ्ऱान् 983

आतलिन्–इसलिए; इ पेर् आर् कलि–इस बड़े समुद्र को; कुप्पुऱ्ऱु–पारकर; अकळ् इञ्चि–खाई और प्राचीरों के; मीतु कटत्ति–पार जाकर; तीयवर् उट्कुम्–क्रूर राक्षसों को भय देनेवाले; वित्तॆयोटुम्–कर्म के साथ; चीतै तनै–सीताजी को; तेर्न्तु–खोज पाकर; इङ्कु उटन् मीळुम्–यहाँ तुरन्त लौट आने का; तिऱन्–बल; इन्ऱु–नहीं; ॲन्ऱु–ऐसा; ओति इऱुत्तान्–कह दिया। ९८३

इसलिए अब इस समुद्र को लाँघने, खाई और प्राचीरों को पार कर जाने और उन बुरे राक्षसों को भयभीत करते हुए साहस दिखाकर सीताजी को खोज पाकर लौट आने की शक्ति मुझमें आज नहीं है। (—कहा चतुर्मुख-सूनु ने)। ९८३

यामिनि यिप्पो दारिडर् तुय्त्तिङ् गिनियारैप्
पोमॆंन वॆंप्पे मॆंन्बदु पुन्मैप् पुहळ्न्ऱे
कोमुदल् वर्क्के ऱाहिय कॊंऱ्ऱक् कुमरानम्
नाम निरुत्तिप् पेरिशै तॆक्कु नवॆयिल्लोन् 984

अयन् मैन्तन्–ब्रह्मा का पुत्र; को मुतल्वर्क्कु–वानर नायकों में; एऱाकिय–सिंह-सम; कॊऱ्ऱ कुमरा–राजकुमार; याम् इनि इ पोतु–हम आगे अब; आर् इटर् तुय्त्तु–बहुत कष्ट सहते हुए; इङ्कु–यहाँ से; इनियारै–इच्छा करनेवालों को; पोम् ऍन वॆप्पेम्–जाओ कह भेजें; ऍन्पतु–यह; पुन्मै पुकऴ् अन्ऱे–यश पर कलंक होगा न; नम् नामम् निरुत्ति–हमारा नाम अमर करके; पेर् इचै–बड़ा यश; तॆक्कुम्–दिलानेवाला; नवै इल्लोन्–निर्दोष। ९८४

जाम्ववान को हनुमान का स्मरण आया। उसने अंगद से कहा। वानरयूथपों में सिंह, अंगद! हम अब क्यों संकट उठा रहे हैं? जो जाने को सम्मत होंगे, उनको भेजने की बात सोच रहे हैं? यह हमारे यश पर बट्टा होगा न? हमारा नाम अमर करनेवाला, बड़ा यश दिलानेवाला निर्दोष—। ९८४

आरियन् मुन्नर्प् पोदुऱ वुऱ्ऱ वदनानुम्
कारिय मॆंण्णिच् चोर्वऱ मुऱ्ऱुङ् गडनानुम्
मारुदि यॊंप्पार् वेऱिलै यॆंन्ना वयन्मैन्दन्
शोरियन् मऱ्ऱो ळाण्मै तॆरिप्पा निवैशॆप्पुम् 985

आरियन्–श्रीराम से; मुन्नर्–पहले; पोतुऱ उऱ्ऱ–जाकर (सुग्रीव को) सखा बना दिया; अततानुम्–उस कारण; कारियम् ऍण्णि–कर्तव्य समझकर; चोर्वु अऱ–बिना किसी शैथिल्य के; मुऱ्ऱुम्–पूरा करनेवाली; कटनानुम्–कर्तव्यपरता के कारण; मारुति ऒप्पार्–मारुति की समानता करनेवाला; वेऱु इलै–और कोई नहीं है; ऍन्ना–कहकर; अयन् मैन्तन्–ब्रह्मा के पुत्र ने; चोरियन्–श्रेष्ठ हनुमान का; मल् तोळ् आण्मै–मल्लयुद्ध में चतुर भुजबल; तॆरिप्पान्–समझाने के लिए; इवै चॆप्पुम्–निम्नलिखित ये वचन कहने लगा। ९८५

और श्रीराम से नाता जोड़कर उस कारण और कर्तव्य को समझकर उसको पूरा करने में तत्पर रहनेवाला जो हनुमान है, उसके समान और कोई नहीं है। फिर जाम्बवान उस हनुमान से उस मल्लवीर के भुजबल का वर्णन करते हुए यों बोला। ९८५

मेलै विरिञ्जन् वीयिनुम् वीया मिहैनाळीर्
नूलै नयन्दु नुण्णि दुणर्न्दीर् नुवऱ्क्कीर्
कालनु मञ्जुङ् गाय्शिन मॊय्म्बीर् कडनिन्ऱीर्
आल मुहर्न्दा नॆन्न वयप्पो रडर्हिऱ्पीर् 986

मेलै विरिञ्चन्–सर्वश्रेष्ठ विरंचि; वीयितुम्–मर जायँ तो भी; वीया–अक्षय; मिकै नाळीर–लम्बी आयु वाले हो; नूलै–शास्त्रों को; नयन्तु–चाहकर; नुण्णितु उणर्न्तीर्–सूक्ष्म रूप से जानते हो; नुवल् तक्कीर्–भाषण-समर्थ; कालतुम् अञ्चुम्–यम को भी डरानेवाले; काय् चित्त–भयंकर क्रोध के साथ; मॊय्म्पीर–शक्ति रखनेवाले हो; कटन् निन्ऱीर्–कर्तव्य पर अटल रहनेवाले; आलम् नुकर्न्तान् अॆन्न–हलाहल-भोगी (शिवजी) के समान; वय पोर्–विजयी युद्ध में; अटर्किऱ्पीर्–सबका हनन कर सकनेवाले होओगे। ९८६

सर्वश्रेष्ठ देवता ब्रह्मा चाहे मिट जायँ तो भी तुम अचल, अक्षय आयु वाले हो! शास्त्र के सूक्ष्म ज्ञान रखनेवाले; भाषणविदग्ध; यम को भी भयभीत करनेवाले क्रोधयुक्त बलवान; कर्तव्यपरायण और हलाहलभक्षक शिवजी के समान युद्ध में शत्रुसंहारक हो तुम। ९८६

वॆप्पुऱु शॆन्दी नीर्वळि यालुम् विळियादीर्
शॊप्पुऱु दॆय्वप् पल्बडै यालुञ् जिदैयादीर्
ऒप्पुऱि नॊप्पार् नुम्मल दिल्लो रॊरुहाले
कुप्पुऱि नण्डत् तप्पुऱ मेयुङ् गुदिहॊळ्वीर् 987

वॆप्पु उऱु–गरम; चॆम् ती–लाल आग से (और); नीर्–जल; वळियालुम्–और पवन से; विळियातीर्–तुम मरनेवाले नहीं; चॆप्पु उऱु–कथित; पल् तॆय्व पटैयालुम्–विविध दिव्यास्त्रों से; चितैयातीर्–तुम अभेद्य हो; ऒप्पुऱिन्–तुलना करके देखें तो; ऒप्पार्–तुम्हारे समान; नुम् अलतु–तुमको छोड़; इल्लोर्–कोई नहीं है; ऒरु काले कुप्पुऱिन्–एक ही छलाँग में; अण्टत्तु अप्पुऱमेयुम्–इस अण्ड के उस पार भी; कुति कॊळ्वीर्–जाकर कूद सकोगे। ९८७

गरम लाल अग्नि, जल और पवन से भी तुम मर नहीं सकते। प्रशंसित विविध दिव्यास्त्रों द्वारा भी तुम अभेद्य हो। उपमा ढूँढ़ने पर अपने समान तुम ही हो; और कोई तुम्हारी समानता नहीं कर सकता। एक ही छलाँग में तुम इस अण्ड के उस पार कूद सकते हो!। ९८७

नल्लवु मॊन्ऱो तीयवु नाडि नवैतीरच्
चॊल्लवुम् वल्लीर् कारिय नीरे तुणिहिऱ्पीर्
वॆल्लवुम् वल्लीर् मीळवुम् वल्लीर् मिडलुण्डेल्
कॊल्लवुम् वल्लीर् तोळ्वलि यॆन्ऱुङ् गुऱैयादीर् 988

नल्लवम् ऒन्ऱो–अच्छे ही क्या; तीयवुम् नाटि–बुरे भी सोचकर; नवै तीर–

दोष दूरकर; चॊल्लवुम् वल्लीर्–बोलने में चतुर होओगे; कारियम् नीरे तुणिकिऱ्पीर्–कर्तव्य तुम ही निश्चय कर सकते हो; वॆल्लवुम् वल्लीर्–सफल भी होओगे; मीळवुम् वल्लीर्–(कार्य पूरा कर) लौट सकोगे; मिटल् उण्टेल्–युद्ध होगा तो; कॊल्लवुम् वल्लीर्–मार भी सकोगे; तोळ् वलि–भुजबल में; ॲन्ऱुम् कुऱैयातीर्–कभी हीन नहीं होओगे। ९८८

अच्छा, बुरा —सबकी विवेचना करके दोषहीन बातें कहने में तुम समर्थ हो। क्या करना है —यह तुम ही निश्चय करके उसको करने का सफलता पाने का और सफल होकर लौट आने का अद्भुत सामर्थ्य रखनेवाले हो। वहाँ कोई लड़ने आवे और युद्ध छिड़ जाय तो तुम उनको मार भी सकते हो। तुम्हारे भुजबल में कभी क्षीणता नहीं पड़ेगी। ९८८

मेरु किरिक्कु मीदुऱ निऱ्कुम् पॆरुमॆय्यीर्
मारि तुळिक्कुन् दारै यिडुक्कुम् वरवल्लीर्
पारै यॆडुक्कुम् नोन्मै वलत्तीर् पळियऱ्ऱीर्
शूरिय नैच्चॆन् ऱॊण्गै यहत्तुन् दीडवल्लीर् 989

मेरु किरिक्कुम्–मेरु गिरि से भी; मीतु उऱ निऱ्कुम्–उन्नत रहनेवाले; पॆरु मॆय्यीर्–बड़े शरीर वाले; मारि तुळिक्कुम्–वर्षा से गिरनेवाली; तारै इटुक्कुम्–धार के बीच से भी; वरवल्लीर्–आ सकनेवाले हो; पारै ॲटुक्कुम्–भूमि को भी उठाने की; नोन्मै वलत्तीर्–बड़ी शक्ति रखनेवाले; पळि अऱ्ऱीर्–अनिंद्य हो; चॆन्ऱु–ऊपर जाकर; चूरियनै–सूर्यदेव को; ऑळ्–अपने उज्ज्वल; कै अकत्तुम्–हाथ से; तीट वल्लीर्–स्पर्श कर सकते हो। ९८९

तुम्हारा शरीर मेरुपर्वत से भी बड़ा है। फिर भी बारिश की दो धारों के बीच से जा निकलने की शक्ति रखते हो! भूमि को उठाने की क्षमता तुममें है। इतना होते हुए भी अनिंद्य हो। ऊपर जाकर सूर्य को अपने उज्ज्वल हाथ से छूने की शक्ति रखनेवाले हो तुम। ९८९

अऱिन्दु तिऱत्ता ऱॆण्णि यऱत्ता ऱऴियामै
मऱिन्दुरु ळप्पोर् वालियै वॆल्लु मदिवल्लीर्
पॊरिन्दिमै यार्होन् वच्चिर बाणम् बुहमूऴ्ह
ऎऱिन्दुऴि यिऱ्ऱोर् पुन्मयि रेनु मिऴवादीर् 990

तिऱत्तु आऱु–श्रेष्ठ मार्ग; ऎण्णि अऱिन्तु–सोच-समझकर; अऱत्तु आऱु अऴियामै–धर्म-मार्ग न बिगाड़कर; वालियै–वाली को; पोर्–युद्ध में; मऱिन्तु उरुळ–औंधे गिरकर लोटने देते हुए; वॆल्लुम्–जिताने को; मति वल्लीर्–बुद्धिशक्ति से युक्त थे; इमैयार् कोन्–देवराज; वच्चिर पाणम्–वज्र-बाण; पॊरिन्तु–आग उगलते हुए; पुक मूऴ्क–शरीर में घुसकर धँस जाय ऐसा; ऎऱिन्तुऴि–फेंकेगा तब भी; ओर् पुन् मयिरेनुम्–एक छोटा बाल भी; इऱ्ऱु इऴवातीर्–नष्ट नहीं होगा, ऐसे बलवान हो तुम। ९९०

तुमने ही श्रेष्ठ उपाय सोचकर धर्म का मार्ग बिगाड़े बिना वाली को युद्ध में मरकर लौटने दिया। वह तुम्हारी ही बुद्धि-शक्ति का परिणाम था। देवराज का वज्र आग उगलते हुए आकर तुम्हारे शरीर पर घुस जाये तो भी वह तुम्हारा एक छोटा बाल भी नष्ट नहीं कर सकता —तुम ऐसे क्षमताशाली वीर हो। ९९०

पोर्मु नॆदिर्न्दाऩ् मूवुल हेनुम् बॊरुळाहा
ओर्विल् वलङ्गॊण् डॊल्हलिल् वीरत् तुयर्दोळीर्
पारुल हॆङ्गुम् पेरिरुळ् शीक्कुम् पहलोऩ्मुऩ्
तेर्मु ऩडन्दे यारिय नूलुन् दॆरिवुऱ्ऱीर् 991

मू उलकेनुम्–तीनों लोक भी; पोर् मुऩ्–युद्ध में सामने; ॲतिर्न्ताल्–लड़ें तो; पोरुळ् आका–कोई चीज न मानकर; ओर्वु इल्–दूसरों के लिए अगम; वलम् कोण्टु–बल के साथ; ऑल्कल् इल्–अक्षुण्ण; वीरत्तु–साहस के साथ; उयर्–उन्नत रहनेवाले; तोळीर्–भुजाओं वाले; पार् उलकु ॲङ्कुम्–भूतलों के साथ अन्य लोकों में सर्वत्र; पेर् इरुळ्–घने अन्धकार को; चीक्कुम्–मिटानेवाले; पकलोऩ् मुऩ्–दिवाकर के सामने; तेर् मुऩ् नटन्ते–उसके रथ के सामने (मुख करते हुए) चलते-चलते ही; आरिय नूलुम्–संस्कृत के ग्रन्थों का भी; तॆरिवुऱ्ऱीर्–अध्ययन कर चुके हो। ९९१

तीनों लोक भी युद्ध में तुम्हारा सामना करेंगे तो भी वे कुछ चीज नहीं रहेंगे। तुम्हारा बल कोई जान भी नहीं सकता। बड़े बलिष्ठ और अक्षय साहसी हो! बल और साहसयुक्त कन्धों वाले! सभी लोकों के अन्धकारनाशक सूर्यदेव के सामने उनकी ओर मुख करके चलते हुए तुमने उनसे सभी संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया था। ९९१

नीदिय निऩ्ऱीर् वाय्मै यमैन्दीर् निऩैवालुम्
मादर् नलम्बे णादु वळर्न्दीर् मऱैयॆल्लाम्
ओदि युणर्न्दी रूऴि हडन्दी रुलहीनुम्
आदि ययऩ्ऱा नॆॕऩ यादु मऱैहिऩ्ऱीर् 992

नीतियिऩ् निऩ्ऱीर्–नीति पर अटल रहनेवाले; वाय्मै अमैन्तीर्–सत्यसंध; मातर् नलम्–स्त्री-सुख; निऩैवालुम्–मन से भी; पेणातु–न चाहकर; वळर्न्तीर्–बड़े हुए हो; मऱै ॲल्लाम्–सारे वेदों का; ओति उणर्न्तीर्–अध्ययन करके अर्थ जानते हो; ऊऴि–युग को भी; कटन्तीर्–बिताकर रहनेवाले हो; उलकु ईनुम्–लोकसर्जक; आति अयऩ्–आदि ब्रह्मा; ताऩे–ये ही हैं; ॲऩ–ऐसा; यातुम्–सबसे; अऱैकिऩ्ऱीर्–कहे जाते हो। ९९२

तुम नीति पर अटल रहनेवाले हो; सत्यसंध हो। मन से भी स्त्री-सुख नहीं चाहकर बड़े हुए ब्रह्मचारी हो! वेदों को पढ़कर उनका अर्थ जान

चुके हो। तुम्हारी आयु युग से भी बड़ी है! तुमको 'लोग ब्रह्मा ही मान लें', इतने गौरवशाली हो। ९९२

अण्णल मैन्दर् कन्बुशि रन्दी रदनात्
कण्णियु णरन्दीर् करुमनु मक्के कडनॅन्नत्
तिण्णिद मैन्दीर् शॅय्दुमु डिप्पीर् शिदैयादीर्
पुण्णिय मॊन्ऱे यॅन्ऱु निलैक्कुम् पॊरुळ्हॊण्डीर् 993

अण्णल् अ मैन्तर्कु–महिमामय उन श्रीराम के प्रति; अन्पु चिरन्तीर्–प्रेम में बढ़े हुए हो; अतनाल–उस निमित्त; करुमम्–कर्तव्य; कण्णि–सोचकर; उणर्न्तीर्–समझ गये; नुमक्के कटन् ॲन्न–अपना ही उत्तरदायित्व समझकर; तिण्णितु अमैन्तीर्–निश्चय कर लिया; चॅय्तु मुटिप्पीर्–पूरा कर चुकोगे; चितैयातीर्–अच्छेद्य हो; निलैक्कुम् पॊरुळ्–शाश्वत वस्तु; पुण्णियम् ऒन्ऱे–पुण्य ही है; ॲन्ऱु कॊण्टीर्–ऐसी धारणा बना ली है। ९९३

महिमामय श्रीराम के भक्तों में तुम सर्वश्रेष्ठ हो। उसी कारण तुमने यह कर्तव्य विचारकर अपना लिया। यह अपना उत्तरदायित्व समझकर कार्यरत हुए। तुम इसमें सफल भी हो जाओगे। तुम अच्छेद्य हो! 'शाश्वत वस्तु पुण्य ही है' —इस तथ्य पर तुम विश्वास रखनेवाले हो। ९९३

अडङ्गवुम् वल्लीर् कालम दन्ऱे लमर्वन्दाल्
मडङ्गन् मुनिन्दा लन्न वलत्तीर् मदिनाडित्
तॊडङ्गिय दॊन्ऱो मुऱ्ऱुमु डिक्कुन् दॊऴिल्वल्लीर्
इडङ्गॅड वॆव्वा यूऱुकि डैत्ता लिडैयादीर् 994

कालम् अतु अन्ऱेल्–अनुकूल काल नहीं है तो; अटङ्कवुम् वल्लीर्–सब्र करके दबे रह सकनेवाले हो; अमर् वन्ताल्–युद्ध हुआ तो; मटङ्कल् मुनिन्ताल् अन्न–मानो सिंह कुपित हो गया हो; वलत्तीर्–ऐसा बल दिखानेवाले हो; मति नाटि–बुद्धि से तर्क करके; तॊटङ्कियतु ऒन्ऱो–अकेला आरब्ध कर्म ही क्या; मुऱ्ऱुम्–उससे सम्बद्ध सभी कार्य; मुटिक्कुम्–पूरा करने के; तॊऴिल् वल्लीर्–कार्य-कुशल हो; इटम् कॅट–संदर्भ बुरा हो; वॆम् वाय् ऊऱु–और भयंकर बाधा; किटैत्ताल्–आये तो भी; इटैयातीर्–पीछे हटनेवाले नहीं हो। ९९४

काल अनुकूल नहीं लगता तो तुम शान्त रहना जानते हो। युद्ध आया तो क्रुद्ध सिंह के समान बल का प्रयोग कर सकते हो। बुद्धि से सोचकर जो कार्य हाथ में लेते हो वही नहीं, उसके साथ संबद्ध सभी कार्यों को सफलतापूर्वक कर चुकने की कार्यकुशलता रखनेवाले हो। संदर्भ बिगड़ जाय और भयंकर बाधा उपस्थित हो तो तुम डरकर पिछड़नेवाले नहीं हो। ९९४

ईण्डिय कॊऱ्ऱत् तिन्दिर नॆन्बान् मुदल्यारुम्
पूण्डुन डक्कु नन्नॆऱि यानुम् पॊऱैयानम्
पाण्डिदर् नीरे पाऱ्त्तिनि दुय्क्कुम् बडिवल्लीर्
वेण्डिय पोदे वेण्डुरु वॆय्दुम् विनैवल्लीर् 995

कॊऱ्ऱत्तु ईण्टिय–वीरतापूर्ण; इन्तिरन् अॆन्पान् मुतल्–इन्द्र आदि; यारुम्–सभी; पूण्टु नटक्कुम्–जिस मार्ग को अपनाकर चलते हैं; नल् नॆऱियानुम्–ऐसे अच्छे आचरण से; पॊऱैयानुम्–क्षमा से; पाण्टितर् नीरे–पण्डित तुम ही हो; पाऱ्त्तु–खूब सोचकर; इनितु उय्क्कुम्पटि–अच्छे प्रकार से (कार्य) करने में; वल्लीर्–चतुर हो; वेण्टिय पोते–इच्छा करते ही; वेण्टु उरु अॆय्तुम्–मनचाहा रूप लेने के; विनै वल्लीर्–कार्य में भी कुशल हो। ९९५

बलसमृद्ध देवेन्द्र आदि जिस मार्ग को महत्त्व देते हैं, उसी मार्ग पर चलने और क्षमता रखने से तुम पंडित हो ! तर्क-वितर्क करके किसी भी काम को योग्य रीति से चलाने में तुम दक्ष हो। जब चाहो तभी मन-माना रूप लेने के कार्य में तुम बड़े कुशल हो। ९९५

एहुमि नेहि यॆम्मुयिर् नल्ही रिशैकॊळ्ळीर्
ओहै कॊणर्न्दॆ मन्नैयु मिन्नर् कुऱैयिल्लाच्
चाहर मुऱ्ऱुन् दाविडुम् नीरिक् कडऱावुम्
वेहम मैन्दी रॆन्ऱुवि रिञ्जन् महन्विट्टान् 996

नीर्–तुम; ई–इस; कटल् तावुम्–समुद्र लाँघने की; वेकम् अमैन्तीर्–गमनगति से युक्त हो; एकुमिन्–तुम जाओ; ओकै कॊणर्न्तु–खुशखबरी लाकर; अॆम् उयिर्–हमारे प्राण; नल्कीर्–रक्षित करके; इचै कॊळ्ळीर्–यश अर्जित कर लो; अॆम् अन्नैयुम्–हमारी जननी (सीतादेवी) भी; कुऱैवु इल्ला–अक्षय; इन्तल् चाकरम्–दुःख-सागर; मुऱ्ऱुम्–पूरा लाँघ सकेंगी; अॆन्ऱु–कहकर; विरिञ्चन् मकन्–ब्रह्मा के पुत्र ने; विट्टान्–अपनी बात समाप्त की। ९९६

तुम्हारे पास समुद्र-तरण की गमन-शक्ति है। तुम ही जाओ और सन्तोष-समाचार लाओ। हमारी जान बचाओ और यशस्वी बनो। हमारी जगज्जननी जानकी भी दुःख-सागर-तरण कर लेंगी। जाम्बवान ने अपनी बात यह कहकर समाप्त की। ९९६

चाम्बनि यम्बत् ताळ्वद नत्ता मरैनाप्पण्
आम्बल्वि रिन्दा लन्न शिरिप्पा नऱिवाळन्
कूम्बलॊ डुञ्जेर् कैक्कम लत्तन् कुलमॆल्लाम्
एम्बल्व रत्तन् शिन्दै तॆरिप्पा निवैशॊन्नान् 997

चाम्पन् इयम्प–जाम्बवान के कहने पर; अऱिवाळन्–बुद्धिमान-हनुमान; ताळ्वतत्तम् तामरै–उतरे हुए चेहरे रूपी कमल; नाप्पण–के मध्य; आम्पल् विरिन्ताल्

अन्नत–कुमुद विकसित हुआ जैसे; चिरिप्पात्–मन्दहास करते हुए; कूम्पलोंट्टुम् चेर्–जोड़कर बन्द किये हुए; कै कमलत्तन्–हस्त-कमल; कुलम् ॲल्लाम्–सारे समूह के; एम्पल् वर–(वानरों को) आनन्द देते हुए; तन् चिन्तै–अपने मन की बात; तॅरिप्पात्–प्रकट करने हेतु; इवै चॊन्नात्–ये (निम्न) वचन कहे। ९९७

जाम्बवान की बात सुनकर बुद्धिमान हनुमान के उतरे हुए रहे कमल-मुख में कुमुद-सा एक मन्दहास छिटका। अपने दोनों हाथों को बन्द कमल के समान जोड़कर उसने अपने वानरकुल के सभी के मन में आनन्द भरते हुए निम्नोक्त बातें कहीं। ९९७

नोयिरे निन्नैयिन् मुन्ने नॆडुन्दिरैप् परवै येऴुम्
तायुल हन्नैत्तुम् वॆन्रु तैयलैत् तरुदर् कॊत्तोर्
पोयिदु पुरिदि यॆन्रु पुलमैतीर् पुन्मै काण्डर्
केयिति रॆन्नि नॆन्निर् पिरन्दवर् याव रिन्नुम् 998

नीयिरे निन्नैयिन्–आप स्वयं सोचें तो; मुन्ने–पहले ही; नॆट्टुम् तिरै–उत्तुंग तरंगों वाले; परवै एऴुम्–सातों समुद्रों को; ताय्–लाँघकर; उलकु अन्नैत्तुम् वॆन्रु–सभी लोकों को जीतकर; तैयलै–सीतादेवी को; तरुतर्कु–ले आने; ऑत्तिर्–योग्य हैं; पोय्–तुम जाओ; इतु पुरिति ॲन्रु–यह काम करो, कहकर; पुलमै तीर् पुन्मै–अपनी बुद्धिहीन जड़ता को; काण्टर्कु–देख-समझने को; एयित्तिर्–(मुझे) प्रेरित किया, आपने; ॲन्निन्–तो; ॲन्निल्–मुझसे बढ़कर; पिरन्तवर्–सफल-जन्म; इन्नुम् यावर्–और कौन हैं। ९९८

हे जाम्बवान! आप मन करते तो आप स्वयं पहले ही उत्तुंग तरंगोद्वेलित सातों सागरों का तरण करते, सारे लोकों को हरा देते और देवी को ला देते। आपमें इतनी सामर्थ्य है। लेकिन आपने मुझसे आज्ञा दी कि तुम जाओ और यह काम करो, ताकि मैं अपनी बुद्धि-हीनता को जान लूँ! तो मुझसे बढ़कर सफल-जन्म कौन होगा? । ९९८

मुऱ्ऱुनी रुलह मुऱ्ऱुम् विऴुङ्गुवान् मुऴङ्गि मुन्नीर्
उऱ्ऱदे यॆन्निनु मण्ड मुडैन्दुपो युयर्न्द देनुम्
इऱ्ऱैनुम् मरुळ मॆङ्गो नेवलु मिरण्डु पालुम्
कऱ्ऱैवार् शिऱैह ळाहक् कलुऴनिऱ् कडप्पल् काण्डिर् 999

नीर् मुऱ्ऱुम्–जलवलयित; उलकम् मुऱ्ऱुम्–संसार भर को; विऴुङ्कुवान्–निगलने के लिए; मुऴङ्कि–गर्जन करते हुए; मुन्नीर् उऱ्ऱते–समुद्र उमग आये; ॲन्निनुम्–तो भी; अण्टम्–अण्ड; उटैन्तु पोय्–टूटकर; उयर्न्ततेनुम्–आकाश ऊँचा हो जायगा तो भी; इऱ्ऱै–अब; नुम् अरुळुम्–आपकी कृपा और; ॲम् कोन्–हमारे नाथ श्रीराम की; एवलुम्–आज्ञा; इरण्टु पालुम्–दोनों बाजुओं में; कऱ्ऱै वार् चिऱैकळ् आक–संकुलित और लम्बे पंख बनाकर; कलुऴनिल्–गरुड़ के समान; कटप्पल्–तरण करूँगा; काण्टिर्–देखो। ९९९

अब जल-घिरे भूतल भर को लीलने के लिए (त्रि-विध जल का) समुद्र ही क्यों न उमड़ आए, या अण्ड ही फूटे और आकाश ऊपर उड़ जाए, तो भी आपके आशीर्वाद और हमारे प्रभु की आज्ञा दोनों को दो बाजुओं के पक्ष बनाकर मैं गरुड़ के समान इस सागर को लाँघ लूँगा। देखो। ९९९

ईण्डिऩि दुऱैमिऩ् याऩे यॅऱिहड लिलङ्गै यॅय्दि
मीण्डिवण् वरुदल् काऱुम् विडैदम्मिऩ् विरैवि ऩॆऩ्ऩा
आण्डव रुवन्दु वाऴ्त्त वलर्मऴै यमरर् तूवच्
चेण्डोँडर् शिमयत् तॅय्व मयेन्दिरत् तुम्बर्च् चॅऩ्ऱाऩ् 1000

यात्ते–मैं ही; अॅऱि कटल्–तरंगाकुल समुद्र के मध्य रहनेवाली; इलङ्कै–लंका में; अॅय्ति–जाकर; मीण्टु इवण् वरुतल्–लौट यहाँ आऊँ; काऱुम्–तब तक; ईण्टु–यहाँ; इतितु–सुख से; उऱैमिऩ्–ठहरो; विरैविऩ्–शीघ्र; विटै तम्मिऩ्–विदा दो; अॅऩ्ऩा–कहने पर; आण्टु–तब; अवर्–उन वीरों के; उवन्तु वाऴ्त्त–संतोष के साथ बधाई देते; अमरर्–देवों के; अलर् मऴै–पुष्प-वर्षा; तूव–गिराते; चेण् तॊटर्–आकाशव्यापी; चिमय–शिखरों-सह; तॅय्व–दिव्य; मयेन्तिरत्तु–महेन्द्र के; उम्पर्–ऊपरी भाग पर; चॅऩ्ऱाऩ्–गया। १०००

मेरे अकेले ही उठती तरंगों वाले समुद्र-मध्य-स्थित इस लंका में जाकर लौट आते तक तुम लोग निश्चिन्त होकर यहीं रहो। शीघ्र बिदा दो। —हनुमान ने यों कहा। तब उन वानर वीरों ने आनन्द के साथ बधाई दी। देवों ने फूल बरसाये। हनुमान गगनचुंबी शिखरों वाले उस महेन्द्रपर्वत पर चढ़ चला। १०००

पॊरुवरु वेलै तावुम् पुन्दियाऩ् पुवऩन् दाय
पॆरुवडि वुयर्न्द मायोऩ् मेक्कुऱप् पॆयर्न्द ताऴ्पोल्
उरुवरि वडिवि ऩुम्ब रोङ्गिऩ ऩुवमै यालुम्
तिरुवडि यॆऩ्ऩुन् दऩ्मै यावर्क्कुन् दॆरिय निऩ्ऱाऩ् 1001

वेलै तावुम्–समुद्र-तरण में लगा हुआ; पॊरुव् अरु–अप्रतिम; पुन्तियाऩ्–बुद्धिमान; पुवतम् ताय–भूमि को जिन्होंने नापा; पॆरुवटिवु उयर्न्त–बहुत बड़े आकार में वर्द्धित; मायोऩ्–उन मायावी श्रीविष्णु के; मेक्कु उऱ–ऊपर जाकर; पॆयर्न्त–व्याप्त; ताऴ् पोल्–श्रीचरण के समान; उरुवु अरि–सबके लिए दृश्य; वटिविऩ्–रूप में; उम्पर्–आकाश में; ओङ्कितऩ्–ऊँचा बढ़ा; तिरुवटि अॅऩ्ऩुम् तऩ्मै–'श्रीचरण' का युक्तत्व; उवमैयालुम्–उपमा के रूप में भी; यावर्क्कुम् तॆरिय–सबके दृष्टिगोचर होते हुए; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। १००१

तब समुद्र-तरण में प्रवृत्त बुद्धिमान हनुमान त्रिभुवन-मापक त्रिविक्रम-देव के श्रीचरण के समान लगा, जो आकाश में जाकर व्याप्त हुआ था। उसको विष्णुभक्त 'छोटे विष्णुपाद' (शिऱिय तिरुवडि) के नाम से आदर

करते हैं। वह "तिरुवडि (श्रीचरण)" नाम अब उपमा के रूप में भी सार्थक हुआ। उस स्थिति में वह ऐसा खड़ा रहा कि सब उसको देख सकें। १००१

पार्निऴल् परप्पुम् पॊऱ्ऱेर् वॆयिऱ्कदिर्प् परिदि मैन्दऩ्
पोर्निऴल् परप्प मेलोर् पुहऴॆऩ वुलहम् बुक्कुत्
तार्निऴल् परप्पुन् दोळाऩ् ऱडङ्गड ऱावा मुऩ्ऩम्
नीर्निऴ लुवरि तावि यिलङ्गैमेऱ् चॆल्ल निऩ्ऱाऩ् 1002

मेलोर् पुकऴ् ॲन–उत्तम लोगों के यश के समान; तार् निऴल्–हारों का प्रकाश; परप्पुम् तोळाऩ्–छिटकानेवाली भुजाओं वाला; उलकम् पुक्कु–राक्षस-नगर में घुसकर; निऴल्–अपने प्रकाश को; पार् परप्पुम्–भूमि पर फैलानेवाले; पॊन् तेर्–स्वर्ण-रथ का; वॆयिल् कतिर्–और गरम धूप का स्वामी; परिति–सूर्य, उसके कुल के; मैन्तऩ्–पुत्र श्रीराम के; पोर् निऴल् परप्प–युद्ध का साहस फैलाने के लिए; तट कटल् तावा मुऩ्ऩम्–विशाल सागर को लाँघने से पूर्व; नीर् निऴल्–जल में उसकी छाया; उवरि तावि–समुद्र पार करके; इलङ्कै मेल् चॆल्ल–लंका पर गयी, ऐसा; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। १००२

श्रेष्ठ लोगों के यश के समान वह बहुत बड़ा, उत्कृष्ट और उन्नत था। उसके कन्धों से मणियों के हार की कांति छूट रही थी। वह लंका में प्रवेश करके, भूलोक में अपना प्रकाश फैलानेवाले सूर्यदेव के वंशज श्रीराम की युद्ध-वीरता की धूम मचाने हेतु उठनेवाला था। उसके काले सागर के तरण के पूर्व ही उसकी छाया नमक-समुद्र को पार कर लंका नगर पर जा रही। ऐसा खड़ा था वह। १००२

पहुवाय मडङ्गल् वैहुम् पडर्वरै मुऴुदु मूऴ्ह
उहुवाय विडङ्गॊॅ णाहत् तॊऩ्ऩवाल् शुऱ्ऱि यूऴिऩ्
नॆहुवाय शिहर कोडि नॆरिवऩ तॆरिय निऩ्ऱाऩ्
महवामै मुदुहिऱ् ऱोऩ्ऱु मन्दर मॆऩ्ऩलु माऩाऩ् 1003

पकु वाय–खुले मुख के; मटङ्कल् वैकुम्–सिंह जहाँ रहते थे; पटर् वरै–वह विशाल पर्वत; मुऴुतुम्–पूर्ण रूप से; मूऴ्क–धँस गया; ऊऴिऩ्–क्रम से; नॆकुवाय–टूटे हुए; चिकर कोटि–अनेक शिखर; नॆरिवऩ–चूर हुए; विटम् उकुवाय–विष निकालनेवाले मुखों के; कॊऴ् नाकत्तु–प्राणहर सर्प; ऒऩ्ऩ वाल्–के समान अपनी पूंछ को; चुऱ्ऱि–अपने शरीर पर लपेटकर; तॆरिय निऩ्ऱाऩ्–सब देख सकें, इस रीति से खड़ा रहा; मक आमै मुतुकिल्—(तब) वह श्रीविष्णु के अवतार कच्छप की पीठ पर; तोऩ्ऱुम्–जो खड़ा रहा उस; मन्तरम् ॲऩ्ऩलुम्–मन्दरपर्वत जैसा भी; आऩाऩ्–बना रहा। १००३

वह विशाल महेन्द्रपर्वत मुख-खोले अनेक सिंहों के साथ नीचे पूर्ण रूप से धँस गया। उसके शिखर सभी एक-एक करके फूटे और चूर-चूर हो गये। इस तरह हनुमान विषैले घातक सर्प के समान अपने लांगूल को

अपने शरीर पर लपेटे उस पर्वत पर सबके सामने ऐसा खड़ा रहा, मानो श्रीविष्णु के अवतार कच्छप पर स्थित मन्दर पर्वत हो। १००३

मिऩ्ऩॆंडुङ् गॊण्ड ऱाळिऩ् वीक्किय कऴलि ऩार्प्पत्
तऩ्ऩॆंडुऩ् दोऱ्ऱम् वाऩोर् कट्पुलत् तॆल्लै ताव
वऩ्ऩॆंडुञ् जिहर कोडि मयेन्दिर मण्डम् ताङ्गुम्
पॊऩ्ऩॆंडुऩ् दूणिऩ् पाद शिलैयॆऩप् पॊलिय निऩ्ऱाऩ् 1004

मिऩ् नॆंटुम् कॊण्टल्–बिजली-सहित बड़ा मेघ; ताळिऩ् वीक्किय–अपने पैरों में बद्ध; कऴलिऩ्–पायल के समान; आर्प्प–स्वरित होते; तऩ् नॆंटुम् तोऱ्ऱम्–अपने बड़े आकार के; वाऩोर् कण् पुलत्तु–देवों की दृष्टि-पथ के; ताव–पार जाते; वल् नॆंटुम्–कठोर और बड़े; चिकर कोटि–अनेक शिखरों-सहित; मयेन्तिरम्–महेन्द्र पर्वत; पात चिलै ॲत–पादप्रदेश के समान; पॊलिय–प्रकाशमान दिखा; अण्टम् ताङ्कुम्–इस अण्डगोल को धारण करनेवाले; पॊऩ् नॆंटुम् तूणिऩ्–स्वर्ण के ऊँचे खम्भे के समान; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। १००४

विद्युत्सहित मेघ उनके चरणों में बद्ध चरणवलय के समान नाद कर रहे थे। उनका बड़ा रूप देवों के दृष्टिपथ के भी आगे दिख रहा था। शिखर-युत महेन्द्रपर्वत उसके चरणतल के समान लग रहा था। इस रीति से हनुमान अण्डगोल का वहन करते रहनेवाले स्वर्णस्तम्भ के समान खड़ा रहा। १००४

॥ किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ॥

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

सुन्दरकाण्डम्

1. कडल् तावु पडलम् (समुद्र-तरण पटल)

कडवुळ् वाऴ्त्तु (ईश्वर-स्तुति)

❀ अलङ्गलिऱ् ट्रोन्ऱुम् बॊय्म्मै यरवॆऩप् पूद मैन्दुम्
विलङ्गिय विहारप् पाट्टिऩ् वेऱुपा डुऱ्ऱ वीक्कम्
कलङ्गुव दॆवरैक् कण्डा लवरॆऩ्ब कैवि लेन्दि
इलङ्गैयिऱ् पॊरुदा रन्ऱे मऱैहळुक् किऱुदि यावार् 1

अलङ्कलिल्–माला पर; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; पॊय्म्मै अरवु–मिथ्या सर्प; ॲंत–के समान; पूतम् ऐन्तुम्–पाँचों भूतों के; विलङ्किय–बने; विकारप्पाट्टिन्–परिवर्तन के; वेऱु पाटु उऱ्ऱ–बदले हुए; वीक्कम्–बहुत्व (के रूप); ॲवरै कण्टाल्–जिनके दर्शन से; कलङ्कुवतु–दूर होता है; अवर्–वे ही; मऱैकळुक्कु–वेदों के; इऱुति आवार्–अन्त (उपनिषद्-प्रतिपाद्य) विषय हैं; अन्ऱे–उन्होंने ही न; कै विल् एन्ति–हाथ में धनु लेकर; इलङ्कैयिल् पॊरुतार्–लंका में युद्ध भी किया; ॲन्प–ऐसा (तत्त्वदर्शी लोग) कहते हैं। १

माला पर सर्प का विपरीत ज्ञान जैसा होता हो वैसे पाँचों भूतों के परिवर्तन् और मिश्रण पर बने इस प्रपञ्च का निराकरण किनके दर्शन के फलस्वरूप होगा ? वे ही वेदान्त (उपनिषद्)-प्रतिपादित परब्रह्म हैं और उन्होंने हाथ में धनुष लेकर लंका में युद्ध किया था। यही तत्त्वविदों का कहना है। १

नूल् (ग्रन्थ)

आण्डहै याण्ड वाऩोर् तुऱक्कना डुऱुहिऱ् कण्डाऩ्
ईण्डवु ताऩ्गोल् वेले यिलङ्गैयॆऩ् ऱॆय मॆय्दा
वेण्डरुम् विण्णा डॆऩ्ऩुम् मॆय्म्मैहण् डुळ्ळ मॊट्टाऩ्
काण्डहुङ् गॊळ्है युम्ब रिल्लॆऩक् करुत्तुट् कॊण्डाऩ् 2

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ (हनुमान) ने; आण्टु–वहाँ; वानोर् तुरक्क नाट्टु–देवताओं का स्वर्गलोक; अरुकिल् कण्टान्–अपने पास में देखा; ईण्टतु तान् कोल्–यहीं का तो क्या; वेलै इलङ्कै–समुद्रवलयित लंका नगर; ऍन्ऱु–ऐसा; ऐयम्–ऍय्ता–संशय करके; वेण्टु अरुम्–(फिर) जिसको देखने की आवश्यकता नहीं; विण्णॊट्टु–व्योमलोक; ऍन्ऩुम् मॅय्म्मै कण्टु–है, यह सत्य जानकर; उळ्ळम् मीट्टान्–अपने मन को फिरा लिया; काण् तकुम् कॊळ्कै–देखने का कार्य; उम्पर् इल्–आकाशलोक में नहीं; ऍन–ऐसा; करुत्तु उट् कॊण्टान्–विचार मन में कर लिया। २

पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने वहाँ (जब वह अपने बड़े रूप में खड़ा रहा) पास में देवलोक को देखा। एक पल उसे भ्रम हुआ कि क्या यही समुद्र-वलयित लंका नगरी है। फिर उसे ज्ञात हो गया कि यह व्योमलोक है, जहाँ जाना आवश्यक नहीं है। यह सत्य जान लेने पर उसने अपने विचार को बदल लिया। उसने विचारा कि 'मेरा खोजने का कार्य स्वर्ग में नहीं है'। २

कण्डन तिलङ्गै मूदूरक् कडिपॊळिऱ् कनह नाञ्जिल्
मण्डल मदिलुङ् गॊऱ्ऱ वायिलु मणियिऱ् चॅय्द
वॅण्डळक् कळब माड वीदियुम् बिऱवु मॅल्लाम्
अण्डमुन् दिशैह ळॅट्टु मदिरत्तोळ् कॊट्टि यार्त्तान् 3

इलङ्कै मूतूर्–लंका के प्राचीन नगर के; कटि पॊळिल्–रक्षक उद्यान; कनक नाञ्चिल्–स्वर्णमय प्राचीरों के भाग; मण्टल मतिलुम्–और गोल परकोटे; कॊऱ्ऱम् वायिलुम्–विजयद्वार; मणियिऱ् चॅय्द–मणि-जड़ित; वॅण् तळ कळप–श्वेत चूना-लेप लगे हुए; माट वीतियुम्–सौधों की वीथियों; पिऱवुम् ऍल्लाम्–और अन्य सभी को; कण्टनन्–देखकर; अण्टमुम्–अण्डों और; तिचैकळ् ऍट्टुम्–आठों दिशाओं को; अतिर–कँपाते हुए; तोळ् कॊट्टि–भुजा ठोंककर; आर्त्तान्–नर्दन किया। ३

उसने पर्वत पर से देखा तो उसे प्राचीन लंका नगर के रक्षक उद्यान, स्वर्ण-प्राचीरों के विशिष्ट भाग, गोलाकार प्राचीर, विजयद्वार, श्वेत चूने की मणिमय दीवारों के बने सौधों वाली वीथियाँ और अन्य विषय भी दिखायी दिये। तब उसने आनन्द और उत्साह के साथ अपने कन्धे ठोकते हुए गर्जन किया, जिससे आठों दिशाएँ और अण्डगोल थर्रा उठे। ३

वन्ऱन्द वरिहॊ णाहम् वयङ्गळ लुमिळ्म् वाय
पॊन्ऱन्द मुळैह डोरुम् पुऱत्तुराय्प् पुरण्डु पॊन्द
निन्ऱन्द मिल्ला नून्ऱ नॅरिन्दुकी ळ्ळुन्दि नीलक्
कुन्ऱन्दन् वयिऱु कीऱिप् पिदुङ्गिन कुडर्हण् मान 4

अन्तम् इल्लान्–चिरंजीव के; निन्ऱु ऊन्ऱ–खड़े होकर पैर दबाने से; नील कुन्ऱम्–नीला पर्वत; नॅरिन्तु–टूटकर; कीळ् अळुन्ति–नीचे धंसकर; तन् वयिऱु

कीऱि–अपने पेट के चिरने से; पितुङ्कित्त कुटर्कळ् मात्त–बाहर निकली आँतों के समान; पोंन् तन्त–स्वर्णदायी; मुळैकळ् तोऱुम्–सभी गुहाओं से; वन् तन्त–कठोर दाँतों के; वरि कोंळ्–धारीदार; नाकम्–सर्प; वयङ्कु अळल्–जलती (विष की) आग; उमिळुम् वाय–उगलते मुख के साथ; पुऱत्तु–बाहर; उराय्–मलते हुए; पुरण्टु–लोटते हुए; पोन्त–आये। ४

चिरजीव हनुमान ने पर्वत को अपने पैर से दबाया और उससे नीले रंग का वह पर्वत नीचे धँसा। तब उसकी स्वर्णमय कन्दराओं से कठोर दाँतों वाले और धारीदार चमड़े वाले सर्प अपने मुखों से जलता विष निकालते हुए लोटते और टकराते हुए बाहर आये। वे उस पर्वत की आँतों के समान लगे, जो पर्वत के दबने से बाहर निकल रही हों। ४

पुहलरु मुळैयुट् टुञ्जुम् पोंङ्गुळैच् चीयम् बोंङ्गि
उहलरुङ् गुरुदि कक्कि युळ्ळुऱ नॅरिन्द वूळिन्
अहलरुम् बरवै नाण वरऱ्ऱुरु कुरल वाहिप्
पहलॊळि करप्प वानै मऱैत्तन पऱवै यॅल्लाम् 5

पुकल् अरुम्–प्रवेश-निरोधक; मुळैयुळ्–गुफाओं में; तुञ्चुम्–सुप्त; पोंङ्कु उळै–छिटके हुए अयाल वाले; चीयम्–सिंह; पोंङ्कि–उठकर; उकल् अरुम्–जिसको कभी उसने निकाला नहीं था; कुरुति कक्कि–रक्त वमन करते हुए; उळ्–अन्दर; उऱ नॅरिन्त–खूब दब गये; पऱवै अॅल्लाम्–सभी पक्षी; ऊळिन्–युगान्त में; अकल्–विस्तृत; अरुम्–दुस्तर; परवै नाण–समुद्र को लजाते हुए; अरऱ्ऱु कुरल–चिल्लाते कण्ठ के; आकि–बनकर; पकल् ऑळि करप्प–सूर्य का प्रकाश छिप जाए, ऐसा; वानै–आकाश को; मऱैत्तन–ढकते हुए छा गये। ५

उस पर्वत में कन्दराएँ थीं, जो दुर्गम थीं। उनमें सिंह सो रहे थे। अब वे सिंह अपने अयालों को उछालते हुए क्रोध और डर से उठे और रक्त बहाते हुए अन्दर ही दब गये और उनके शरीर से रक्त निकल आया, जो कभी बाहर दिख ही नहीं सका था। उस पर जो पक्षी थे, वे युगान्त-कालीन विशाल समुद्र के गर्जन के समान आर्तनाद उठाते हुए ऊपर उड़े और सूर्य का प्रकाश और आकाश छिप गये। ५

मॊय्युरु शॅविह डाळ्न्दु मुदुहुऱ मुऱैका ऱळ्ळ
मैयुरु विशुम्बि नूडु निमिर्न्दवान् मदिय मञ्ज
मॅय्युरत् तळीइय मॅल्लॅन् पिडियॊडुम् वॅरुव लोडुम्
कैयुऱ मरङ्गळ् शुऱ्ऱिप् पिळिऱित्त कळिनल् यानै 6

कळि नल् यानै–मत्त और उत्तम गज; मॊय् उरु–सबल; चॅविकळ्–कर्ण; ताळ्न्तु–झुककर; मुतुकु उऱ–पीठ से लगे रहें ऐसा; मुऱै काल् तळ्ळ–क्रम से पैर न रख सककर लड़खड़ाते; मै उरु विचुम्पिन् ऊटु–मेघ-भरे आकाश में; निमिर्न्त वाल्–उठायी हुई दुम के कारण; मतियम् अञ्च–चन्द्र डर गया; मॅय् उऱ तळुविय–

शरीर पर लिपटी हुई; मॆल्लॆन् पिडियॊटुम्–कोमल हथिनियों-सहित और; वॆरुवलोटुम्–भय के साथ; मरङ्कळ् कै उऱ चुऱ्ऱि–पेड़ों को सूँड़ों से पकड़ते हुए; पिळिऱ्ऱ–चिंघाड़ते रहे। ६

उसमें मत्तगज थे। वे डर से चलने लगे। उनके कान पीठ पर लगाये हुए थे। उनके पैर डगमगाये। उनकी दुम ऊपर को आकाश में उठी हुई थी, जिसको देखकर चन्द्र भी डर गया। उनको कोमल हथिनियाँ लपेटे हुए थीं। वे हाथी तरुओं को अपनी सूँड़ों से लपेटकर चिंघाड़े। ६

पॊन्पिऱळ् शिमैयक् कोडु पॊडियुऱप् पॊऱियुञ् जिन्द
मिन्पिऱळ् कुडुमिक् कुन्ऱम् वॆरिनुऱ नॆरियुम् वेलै
पुन्पुऱ मयिरुम् पूवाक् कट्पुलम् पुऱत्तु नाऱा
वन्पऱळ् वायिऱ् कौवि वल्लिय मिरिन्द मादो 7

पॊन् पिऱळ्–स्वर्णमय; चिमयम् कोटु–शिखर-चोटी; पॊटि उऱ–चूर हुई और; पॊऱियुम् चिन्त–अंगारे निकले; मिन् पिऱळ्–विद्युत्-सम चमकते; कुटुमि कुन्ऱम्–शिखर वाले पर्वत की; वॆरिन्–पीठ; उऱ नॆरियुम् वेलै–जब खूब दलकी तब; वल्लियम्–बाघ; पुऱम्–बाहर; पुन् मयिरुम्–छोटे बाल; पूवा–(जिनके) नहीं उगे थे; कण्–(जिनकी) आँखों की; पुलम्–इन्द्रिय; पुऱत्तु नाऱा–बाहर नहीं दिखती थी; वन् पऱळ्–(ऐसे अपने) वलिष्ठ शावकों को; वायिल् कौवि–अपने मुख में पकड़े हुए; इरिन्त–तितर-बितर भागे। ७

उसके स्वर्णमय शिखर चूर हुए और उनसे अंगारे निकलकर छिटके। विद्युत्-सी कान्ति वाले शिखर के उस पर्वत की पीठ खूब दलक गयी। तब बाघ उन शावकों को अपने मुख में पकड़कर ले भागे, जिनके शरीर के बाल उग नहीं आये थे और जिनकी आँखों की इन्द्रिय भी बाहर दिखती नहीं थी। ७

तेक्कुरु शिहरक् कुन्ऱन् दिरिन्दुमॆय्न् नॆरिन्दु शिन्दत्
तूक्कुरु तोलर् वाळर् तुरुदत्ति नॆऴुन्द तोऱ्ऱम्
ताक्कुरु शॆरुवि नेर्न्दार् ताळऱ वीशत् तावि
मेक्कुऱ विशॆत्ता रॆन्नप् पॊलिन्दनर् विञ्जै वेन्दर् 8

तेक्कु उऱ–सागौन के पेड़ों से पूर्ण; चिकरम् कुन्ऱम्–शिखर-सह पर्वत के; तिरिन्तु मॆय् नॆरिन्तु–विकृत होकर टूटकर; चिन्त–गिरते; विञ्चै वेन्तर्–विद्याधर राजा; तूक्कुऱु–ऊपर उठाकर पकड़ी हुई; तोलर्–ढाल वाले; वाळर्–और तलवारधारी; तुरुतत्तिन्–त्वरितता से; ऎऴुन्त तोऱ्ऱम्–जो उठे वह दृश्य; ताक्कु उऱु–टकरानेवाले; चॆरुविल् नेर्न्तार्–युद्ध में सामना करने आये हुओं के; ताळ् अऱ–प्रयत्नों को निष्फल करते हुए; वीच–तलवार चलाने के लिए; मेक्कु उऱ–ऊपर उछलते हुए; तावि विचैत्तार्–लपककर चले; ऎन्न–ऐसा; पॊलिन्ततर्–लगे। ८

वह महेन्द्रपर्वत, जिस पर सागौन के वृक्ष थे, विकृत होकर फट गया। तब विद्याधर राजा लोग तलवारों और ढालों को ऊपर उछालते हुए त्वरित-गति से उठे। वह दृश्य ऐसा लगा मानो वे युद्ध में लड़ने आये हुए शत्रुओं के प्रयासों को विफल बनाने के विचार से ऊपर उठते हुए लपककर जा रहे हों। ८

तारहै शुडर्हण् मेह मॅन्ट्रिवै तविरत् ताळ्न्दु
पारिडै यळुन्दु हिन्ड्र पडर्नॅडुम् बनिमाक् कुन्ड्रम्
कूरुहिर्क् कुववुत् तोळान् कूम्बॅनक् कुमिळि पॊङ्ग
आर्हलि यळुवत् ताळुङ् गलमॅन लायिड् ड्रन्ड्रे 9

तारकै–नक्षत्रमण्डल; चुटर्कळ्–सूर्य-चन्द्र-मण्डल; मेकम्–मेघमण्डल; ऍन्ड्र इवै–आदि इनको; तविर–छोड़कर; ताळ्न्तु–नीचे जाकर; पार् इटै–भूमि में; अळुन्तुकिन्ड्र–धँसनेवाला; नॅटुम् पटर्–लम्बा-चौड़ा; पति मा कुन्ड्रम्–हिमाच्छादित महेन्द्रपर्वत; कूर् उकिर्–तीक्ष्ण नखों और; कुववु तोळान्–पुष्ट कन्धों वाला हनुमान; कूम्पु ऍन–मस्तूल हो ऐसा; आर् कलि अळुवत्तु–समुद्र में गहरे स्थान में; कुमिळि पॊङ्क–बुल्लों को उठाते हुए; आळुम् कलम्–डूबनेवाला पोत; ऍनल् आयिड्ड्रु–हो, ऐसा बना। ९

वह पर्वत नक्षत्रमण्डल, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल और मेघमण्डल के निकट तक चला गया था। अब वह उस स्थान को छोड़कर नीचे जाने लगा। तब वह अतिविस्तृत शीतल पर्वत एक पोत के समान लगा, जो बुलबुलों को ऊपर निकालते हुए समुद्र की गहराई में डूब रहा हो; और हनुमान उस मग्नशील पोत के मस्तूल के समान लगा। ९

तादुहु नरुमॅन् शान्दङ् गुङ्गुमङ् गुलिहन् दण्णॅन्
पोदुहु पॊलन्दा दॅन्ड्रित् तॊडक्कत्त यावुम् पूशि
मीदुरु शुनैनी राडि यरुविपो लॅहित्तम् वीळ्व
ओदिय कुन्ड्रङ् गोरिक् कुरुदिनीर् शॊरिव दॊत्त 10

तातु उकु–चूर्ण के रूप में गिरे; नरु–सुबासित; मॅन् चान्तम्–मृदु चन्दन; कुङ्कुमम्–केसर; कुलिकम्–इंगुर; तण् ऍन् पोतु–शीतल पुष्पों के; उकु–गिराये; पॊलम् तातु–स्वर्णवर्ण मकरन्द; ऍन्ड्रु इ तॊटक्कत्त यावुम्–आदि सभी; पूचि–मलते हुए; मीतु उरु–ऊपर रहनेवाले; चुनै नीर्–झरने के जल में; आटि–स्नान करके; अरुवि वीळ्व पोल्–नदियाँ गिरतीं जैसे; ऍकितम् वीळ्व–हंस पक्षी गिरते हैं; ओतिय कुन्ड्रम्–ऐसा वर्णित पर्वत; कोरि–शरीर के फटने से; कुरुति नीर् चॊरिवतु–रक्त बहाता हो; ऒत्त–जैसे लगा। १०

उस पर्वत से हंस नीचे झरनों के समान गिरने लगे। उन पर चन्दन का चूर्ण, केसर, इंगुदी, शीतल पुष्पों का स्वर्णवर्ण मकरन्द और ऐसी

बुकनियाँ लगी हुई थीं। (ये सब उन अप्सराओं के शरीर से गिरी थीं, जो वहाँ स्नान करने आयी थीं।) वह दृश्य ऐसा लगा मानो पर्वत के शरीर के टूटने से रक्त की धारा बह रही हो। (इस पद्य में 'अँहिनम्' शब्द है, अतः हंसों की बात कही गयी है। पाठान्तर 'अरुवि' है। तब झरने ही रक्त की नदियों का दृश्य उपस्थित करते थे। यह अर्थ लगाया जा सकता है।)। १०

कडलुरु मत्ति यॅन्नक् कार्वरै तिरियुङ् गालै
मिडलुरु पुलन्गळ् वॅन्ऱ मॅय्त्तवर् विशुम्बि नुऱ्ऱार्
तिडलुरु किरियिऱ् ऱन्दम् जॅय्विनै मुऱ्ऱि मुऱ्ऱा
उडलुरु पाशम् वीशा दुम्बर्च्चॅल् वारै यॊत्तार् 11

कार् वरै–काला पर्वत; कटल् उरु मत्तु इतु ऍन्न–समुद्र-मध्य मथानी है यह, ऐसा कहने योग्य रीति से; तिरियुम् कालै–घूमता रहा; मिटल् उरु–शक्तिमान; पुलन्कळ् वॅन्ऱ–इन्द्रियविजेता; मॅय्तवर्–सच्चे तपस्वी; विचुम्पिन् उऱ्ऱार्–आकाश में चले गये; तिटल् उरु–टीलों वाले; किरियिल्–उस पर्वत पर; तम् तम् चॅय्विनै मुऱ्ऱि–अपना-अपना कर्तव्य (तप) पूरा करके; उटल् उरु पाचम्–देहाभिमान; मुऱ्ऱा वीचातु–पूर्ण रूप से न त्यागकर; उम्पर् चॅल्वारै–आकाश में (सशरीर) जानेवालों; ऑत्तार्–के समान दिखे। ११

मेघमण्डित होने से काला दिखनेवाला वह पर्वत समुद्र में मथानी के समान जब घूमा, तब सशक्त इन्द्रियों के निग्रही सच्चे तपस्वी आकाश में जाने लगे। तब वे ऐसे लगे मानो पर्वत के उन्नत समतल स्थलों पर अपना तपोकर्म पूरा करके सशरीर ही, शरीर-सम्बन्ध छोड़े विना ही ऊपर स्वर्ग में जा रहे हों। ११

वॅयिलियऱ् कुन्ऱङ् गीऱि वॅडित्तलु नडुक्क मॅय्दि
मयिलियऱ् ऱळिर्क्कै मादर् तळीइक्कॊळप् पॊलिन्द वानोर्
अयिलॅयिऱ् ऱरक्क नळ्ळत् तिरिन्दना ळणङ्गु पुल्लक्
कयिलैयि लिरुन्द तेवैत् तनित्तनि कडुत्तल् शॅय्दार् 12

वॅयिल् इयल्–उज्ज्वल; कुन्ऱम्–पर्वत; कीऱि वॅटित्तलुम्–जब दरार पड़कर टूटा; मयिल् इयल्–कलापी-सी; तळिर्क्कै मातर्–पल्लव-समान हाथों वाली अप्सराओं ने; नटुक्कम् ऍय्ति–काँपती हुई; तळीइक् कॊळ–आलिंगन कर लिया तो; पॊलिन्त–उस स्थिति में शोभायमान; वानोर्–व्योमवासी; अयिल् ऍयिऱु–तीक्ष्ण दाँतोंवाले; अरक्कन्–राक्षस के; अळ्ळ–उठाने पर; तिरिन्त नाळ्–जब कैलास पर्वत घूम उठा, उस दिन; अणङ्कु–देवी उमा के; पुल्ल–आलिंगन कर लेने से; कयिलैयिल्–उस कैलास पर्वत पर; इरुन्त–रहे; तेवै–देव (शिव) के; तनि तनि–एक-एक; कटुत्तल् चॅय्तार्–समान दिखे। १२

वह उज्ज्वल पर्वत दरार खाकर फूटा। तब मयूरनिभ पल्लवहस्त

देवतरुणियों ने डरकर अपने प्रेमियों का आलिंगन कर लिया। उनके साथ शोभनेवाले वे देवगण एक-एक उन परमेश्वर के समान लगे, जिनको उमादेवी ने तीक्ष्ण दाँतों वाले रावण के कैलासपर्वत को उखाड़ लेने और उस पर्वत के घूमने पर कैलासपति का आलिंगन कर लिया था। १२

ऊऱिय नऱवै युण्ड कुऱ्ऱनद मुणर्व युण्णच्
शीऱिय मनत्तर् दॆय्व मडन्दैय रूड ऱीर्वुऱ्
ऱाऱिन रञ्जु हिन्ऱा रन्बरत् तळुवि युम्बर्
एऱिन रिट्टु नीत्त पैङ्गिळिक् किरङ्गु हिन्ऱार् 13

ऊऱिय नऱवै–पुरानी सुरा को; उण्ट कुऱ्ऱम्–पीने के दोष से; तम् उणर्वै–अपनी चेतना को; उण्ण–नष्ट करने से; चीऱिय मनत्तर्–कुपित मन वाली; तॆय्व मटन्तैयर्–देवरमणियाँ; ऊटल्–रूठन (जो पालती थीं, उस) को; तीर्वुऱ्ऱु–(अब पर्वत की स्थिति के कारण) छोड़कर; आऱितर्–शान्त हुईं; अञ्चुकिन्ऱार्–भय से त्रस्त हैं; अन्परै तळुवि–प्रियों को आलिंगन में ले; उम्पर् एऱितर्–आकाश में चढ़ गयीं; इट्टु नीत्त–जो छोड़े गये हैं; पैङ्किळिक्कु–छोटे शुकों के लिए; इरङ्कुकिन्ऱार्–दुःखी होती हैं। १३

देवांगनाएँ अपने पतियों से रूठी हुई थीं, क्योंकि उन्होंने पुरातन सुरा का पान कर लिया था, जिसके फलस्वरूप देवों का मन भ्रान्त था और स्त्रियों की इच्छा पूरी नहीं हुई थी। अब चूँकि पर्वत हिलने और धँसने लगा, इसलिए वे अपनी रूठन छोड़कर शान्त हो गयीं और भय खाकर उनसे लिपटकर व्योमलोक जाने लगीं। जाते-जाते वे अपने शुकों को छोड़ जाने के कारण दुःखी हो रही थीं। १३

इत्तिऱ निहऴुम् वेलै यिमैयवर् मुनिवर् मऱ्ऱुम्
मुत्तिऱत् तुलहत् तारु मुऱैमुऱै विशुम्बिन् मॊय्त्तार्
तॊत्तुरु मलरुञ् जान्दुञ् जुण्णमु मणियुन् दूवि
वित्तह शेऱि यॆन्ऱार् वीरतुम् विरैव दानान् 14

इ तिऱम् निकऴुम् वेलै–इस तरह जब सब हो रहे थे, तब; इमैयवर्–व्योमवासी; मुनिवर्–मुनि; मऱ्ऱुम् मु तिऱत्तु उलकत्तारुम्–और अन्य त्रिलोकवासी; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; विचुम्पिन् मॊय्त्तार्–आकाश में आकर जुट गये; तॊत्तु उऱु मलरुम्–गुच्छों में फूल; चान्तुम्–चन्दन; चुण्णमुम्–सुगन्ध-चूर्ण; मणियुम्–और रत्न; तूवि–बरसाकर; वित्तक–निपुण; चेऱि–चलो; ऎन्ऱार्–कहा (उन्होंने); वीरतुम्–वीर भी; विरैवतु आतान्–गतिमान हुआ। १४

जब ऐसी बातें हो रही थीं तब देवगण, मुनिवृन्द और तीनों लोकों के वासी पंक्तियों में आकाश में जमा हो गये। उन्होंने फूल के गुच्छों, चन्दन और सुगन्ध-चूर्ण बरसाते हुए हनुमान से कहा कि कार्यनिपुण ! चलो ! वीर हनुमान भी जाने में वेग दिखाने लगा। १४

कुऱुमुनि कुडित्त वेलै कुप्पुऱ कॊळहैत् तादल्
वॆऱुविदु विशयम् वैहुम् विलङ्गऱ्ऱो ळलङ्गल् वीर
शिऱिदिदॆंन् ऱिहळऱ् पालै यल्लैनी शेऱि यॆन्ऱाङ्
गुऱुवलित् तुणैवर् शॊन्ना रॊरुप्पट्टान् पॊरुप्पै यॊप्पान् 15

विचयम् वैकुम्–विजयनिलय; विलङ्कल् तोळ्–पर्वत-सम कन्धों; अलङ्कल् वीर–और माला से युक्त वीर; कुऱु मुनि कुटित्त–छोटे रूप के मुनि से (अगस्त्य से) जो पिया गया उस; वेलै–समुद्र को; कुप्पुऱ कॊळ्कैत्तु आतल्–लाँघने का उद्देश्य करना; वॆऱुवितु–व्यर्थ है; इतु चिऱितु–यह छोटा है; ऎन्ऱु–ऐसा सोचकर; इकळऱ् पालै अल्लै–अवहेलना करनेवाला मत बनो; नी चेऱि–तुम सावधानी से जाओ; ऎन्ऱु–ऐसा; उऱु वलि तुणैवर्–सबल साथियों ने; आङ्कु चॊन्नार्–तब कहा; पॊरुप्पै ऒप्पान्–पर्वत की समानता करनेवाला हनुमान; ऒरुप्पट्टान्–सम्मत हुआ। १५

"विजय-माला-भूषित कन्धों वाले वीर!" उसके अतिबलवान मित्रों ने चेतावनी दी। "छोटे आकार के ऋषि अगस्त्य ने इसको पी लिया था। अतः तुम इसे छोटा मत समझो। मत सोचो कि यह तरण-सुलभ है। वह व्यर्थ होगा। इसको छोटा समझकर इसकी अवहेलना मत करो। तुम सावधान होकर इसको लाँघो और उस पार पहुँच जाओ।" पर्वत-सम हनुमान ने उनकी बात मान ली। १५

इलङ्गैयि नळविऱ् ऱन्ऱा लिव्वुरु वॆंड्त्त तोऱ्ऱम्
विलङ्गवु मुळदन् ऱॆन्ऱु विण्णवर् वियन्दु नोक्क
अलङ्गऱाळ् मार्बम् मुन्ऱाळन् दडित्तुणै यळुत्त लोडुम्
पुलन्दॆरि मलैयुन् दाळुम् बूदलम् बुक्क मादो 16

ऎंदुत्त–जो उसने लिया था; इ उरु तोऱ्ऱम्–इस रूप की ऊँचाई; इलङ्कैयिन् अळविऱ्ऱु अन्ऱु–लंका में समानेवाली नहीं है; विलङ्कवुम् उळतु अन्ऱु–रोकी भी नहीं जा सकती; ऎन्ऱु–कहते हुए; विण्णवर्–व्योमवासी; वियन्तु–विस्मय करके; नोक्क–देखने लगे; अलङ्कल् ताळ्–मालाएँ जिस पर लटकती थीं; मार्पन्–वैसे वक्ष वाला; मुन् ताळ्न्तु–आगे की ओर झुककर; अटि तुणै अळुत्तलोटुम्–ज्योंही जोड़े के पैरों को दबाने लगा, त्योंही; पुलन् तॆरि मलैयुम्–जिसके कुछ भाग दिख रहे थे, वह पर्वत; ताळुम्–उसके पार्श्व के छोटे-छोटे शिखर भी; पूतलम् पुक्क–भूमि में धँस गये। १६

देवों ने उसका रूप देखा। विस्मित हुए कि हनुमान का इतना बड़ा रूप लंका में समा भी नहीं सकता। यह दुर्वार भी है। तब लटकती माला से अलंकृत वक्ष वाले हनुमान ने दोनों पैरों को दबाया। तो कुछ-कुछ ऊपर दिखनेवाले स्थलों का वह पर्वत भूमि में धँस गया और साथ-साथ पार्श्व में रही गिरियाँ भी धँस गयीं। १६

वाल्विशैत् तॆंडुत्तु वन्ऱाण् मडक्किमार् बॊंडुक्कि मान्त्
तोल्विशैत् तुणैहळ् पॊंङ्गक् कळुत्तित्तैच् चुरुक्कित् तूण्डिक्
काल्विशैत् तिमैप्पिल् लोर्क्कुम् कट्पुलन् दॆरिया वण्णम्
मेल्विशैत् तॆळुन्दा नुच्चि विरिञ्जन्ना डुरिञ्ज वीरन् 17

वीरन्–वीर; वाल् विचैत्तु ऎंट्टुत्तु–लांगूल को फटकारकर; वन् ताळ् मटक्कि–बलवान पैरों को मोड़कर; मार्पु ऒंटुक्कि–वक्ष सिकोड़कर; मान–बड़े; विचै–विजयशील; तोल् तुणैकळ्–जोड़े के कन्धों को; पॊंङ्क–फुलाकर; कळुत्तित्तै चुरुक्कि–ग्रीवा को अन्दर खींचकर; तूण्टि–फिर बाहर करके; काल् विचैत्तु–पवन-सी गति पैदा करके; इमैप्पु इल्लोर्क्कुम्–अपलक देवों के लिए भी; कण् पुलम् तॆरिया वण्णम्–आँखों से अदृश्य होकर; मेल् विचैत्तु–ऊपर की तरफ़ वेग करके; उच्चि विरिञ्चन् नाटु–बहुत ऊपर के ब्रह्मलोक से; उरिञ्च–टकराते हुए; ऎंळुन्तान्–उठा। १७

वीर हनुमान की मुद्रा देखिए। उसने अपना लांगूल फटकारा। अपने सीने को संकुचित किया। बड़े और विजयभूषित कन्धों को फुलाते हुए ग्रीवा को अन्दर खींचकर फिर बाहर उछाला। पवन के समान इतने वेग से वह ऊपर उठा कि अपलक देवों की आँखें भी उसे उठते हुए नहीं देख सकीं और सबसे ऊपर रहनेवाला ब्रह्मा का लोक उससे टकरा गया। १७

आयव नॆंळुद लोडु मरुम्बण मरङ्ग डामुम्
वेयुयर् कुन्ऱुम् वॆन्ऱि वेळमुम् पिऱवु मॆल्लाम्
नायहन् पणियी दॆन्ना नळिर्हड लिलङ्गै तामुम्
पाय्वन वॆन्न वानम् बडर्न्दन पळुव मान 18

आयवन्–उसके; ऎंळुतलोटुम्–उछलने पर; अरुम् पणै–अपूर्व और बड़ी शाखाओं वाले; मरङ्कळ् तामुम्–तरु; वेय् उयर्–और बाँस के पेड़ों के साथ उन्नत रहे; कुन्ऱुम्–छोटे-छोटे पर्वत; वॆन्ऱि वेळमुम्–विजयी गज; पिऱवुम् ऎंल्लाम्–अन्य सभी; नायकन् पणि ईतु–नायक (श्रीराम) का कार्य यह है; ऎंन्ना–समझकर; तामुम्–वे खुद; नळिर् कटल् इलङ्कै पाय्वन ऎंन्न–शीतल समुद्र-मध्य लंका में कूदते-से; वानम् पळुवम् मान–आकाश को उद्यान-सा बनाते हुए (उछलकर); पटर्न्तन–फैले। १८

जब वह उछल उठा तब बड़ी-बड़ी डालों-सहित वृक्ष, ऊँचे बाँसों के पेड़ों के साथ गिरियाँ और विजयी गज और अन्य पदार्थ भी साथ उछल उठे और शीतल समुद्रवलयित लंका की ओर उड़े, मानो वे इसे नायक श्रीराम की सेवा समझकर उड़ते हों और आकाश को ही उपवन का दृश्य देते हुए फैल गये। १८

इशैयुडै यण्णल् शॅन्ऱ वेहत्ता लॅऴुन्द कुन्ऱुम्
पशैयुडै मरनु मावुम् पल्लुयिरक् कुलमुम् वल्ले
तिशैयुऱच् चॅन्ऱु शॅन्ऱु शॅरिहड लिलङ्गै शेरुम्
विशैयिल वाहित् ताऴन्दु वीऴ्न्दन वॅन्न वीऴ्न्द 19

इचै उटै अण्णल्–यशस्वी, महान् हनुमान के; चॅन्ऱ वेकत्ताल्–जाने की गति से; ॲऴुन्त–खुद जो (उखड़) उठे; कुन्ऱुम्–चट्टानें; पचै उटै मरनुम्–नमीयुक्त तरु; मावुम्–और जानवर; पल् उयिर्क्कुलमुम्–अनेक जीवराशियाँ; वल्लै–वेग के साथ; तिचै उऱ–हनुमान की दिशा में बढ़ते-बढ़ते; चॅन्ऱु चॅन्ऱु–जा-जाकर; चॅरि कटल्–पास रहनेवाले समुद्र से वलयित; इलङ्कै चेरुम् विचै–लंका में जाने की वेगशक्ति; इलवाकि–न होने से; ताऴ्न्तु वीऴ्न्तन–नीचे की ओर गिरे; ॲन्न–जैसे; वीऴ्न्त–गिरे। १९

प्रशंसित महानुभाव हनुमान के गति-वेग में फँसकर गिरियाँ और जीवन्त तरु, गज आदि जानवर और अन्य अनेक जीवराशियाँ जल्दी-जल्दी हनुमान की ओर चल-चलकर समुद्र में गिर गयीं, क्योंकि उनमें स्वतः समृद्ध जल वाले समुद्र से वलयित लंका पहुँचने की शक्ति नहीं थी। १९

मावॊडु मरमु मण्णुम् वल्लियु मऱ्ऱु मॆल्लाम्
पोवदु पुरिन्द वीरन् विशैयिनाऱ् पुणरि पोर्क्कत्
तूवित्न कीऴु मेलुन् दूर्न्दन शुरुदि यन्न
शेवहन् शीऱ मुन्नञ् जेदुवु मियन्ऱ मादो 20

वीरन् पोवतु–हनुमान ने चलने के लिए; पुरिन्त विचैयिताल्–जो वेग अपनाया उससे; मावॊटु मरमुम्–जानवरों के साथ वृक्ष; मण्णुम्–जमीन और; वल्लियुम्–लताएँ; मऱ्ऱुम् ॲल्लाम्–अन्य सभी; पुणरि पोर्क्क–समुद्र को पाटने के लिए; तूवित–बिखरे; कीऴुम् मेलुम्–नीचे और ऊपर; तूर्न्तन–फैले; चुरुति अन्न चेवकन्–वेद-सम प्रतापी श्रीराम; चीऱ मुन्नम्–वरुणदेव पर कोप करे, इसके पूर्व ही; चेतुवुम्–सेतु-रूप; इयन्ऱ–बने। २०

वीर हनुमान की गति के वेग के कारण जानवर, तरु, जमीन, लताएँ और अन्य वस्तुएँ इतनी उड़ीं और समुद्र और आकाश में, ऊपर और नीचे बिखरीं। उनको देखकर ऐसा लगा, मानो वेद-से श्रीराम के कोप करने से पूर्व ही सेतु वन रहा हो। २०

कीण्डदु वेलै नन्नीर् कीऴुऱक् किडन्द नाहर्
वेण्डिय वुलह मॆल्लाम् वॆळिप्पड मणिहळ् मिन्न
आण्डहै यदनै नोक्कि यरविनुक् करशन् वाऴ्वुम्
काण्डहु तवत्त नानॆन् यानॆनक् करुत्तिर् कॊण्डान् 21

नल् वेलै नीर्–अच्छे समुद्र का जल; कीण्टतु–चिरा; कीऴ् उऱ किटन्त–

उसके नीचे जो रहा; नाकर् वेण्टिय–नागों का प्यारा; अलकम् ॲल्लाम्–लोक सारा; वॅळिप्पट–बाहर प्रकट हो गया तो; मणिकळ् मिन्न–मणियाँ चमकने लगीं तब; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; अतनै नोक्कि–उसको देखकर; यान्–मैं; अरविन्क्कु अरचन्–नागराज का; वाऴ्वुम्–(वैभव) जीवन भी; काण् तकु–देखने का; तवत्तन् आतेन्–भाग्यवान हुआ; ॲन–ऐसा; करुत्तिल्–मन में; कोण्टान्–विचार किया। २१

अच्छे समुद्र का जल फट गया। नीचे रहा नागों का प्यारा पाताल-लोक प्रकट हुआ और मणियाँ चमकीं। पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने उनको देखा और अपने को इस कारण बड़ा भाग्यवान समझा कि उसे नागराज के जीवन का वैभव देखने को मिला। २१

वॅय्दुवान् शिऱैयि नानीर् वेलैयैक् किऴिय वीशि
नॊय्दिना लमुदङ् गॊण्ड नोन्मैयै नुवलु नाहर्
उय्दुना मॅन्ब दॆन्ने युरुवलिक् कलुऴ नूऴिन्
ॲय्दिना नामॆन् ऱञ्जि यलक्कणुऱ् ऱिरियल् पोनार् 22

वान् चिऱैयिनाल्–बड़े-बड़े पंखों को; नीर् वेलैयै–जलनिधि को; किऴिय–चीरते हुए; वीचि–झटकाकर; वॅय्तु नॊय्तिनाल्–बहुत ही क्षिप्र गति से; अमुतम् कॊण्ट–(गरुड़ के) अमृत उठा लेने की; नोन्मैयै–कुशलता को; नुवलुम् नाकर्–हमेशा कहते थे जो, वे नाग; ऊऴिन्–हमारे प्रारब्ध से; उरुवलि–बड़ा पराक्रमी; कलुऴन्–गरुड़; ॲय्तिनान् आम्–आ गया तो; नाम् उय्तुम् ॲन्पतु–हम बचेंगे कहना; ॲन्ने–कैसा, ऐसा; अञ्चि–डरकर; अलक्कण् उऱ्ऱु–उद्विग्न होकर; इरियल् पोनार्–तितर-बितर हो गये। २२

वहाँ के नाग सदा गरुड़ की बात लेकर बात कर रहे थे। गरुड़ ने अपने बड़े पक्षों को झटकाकर समुद्रजल को विभक्त किया और झट अमृत को शीघ्र और अनायास उठा लिया था। उसके बल की बात का स्मरण करते जो रहे वे नाग अब समुद्रजल को दो भागों में विभक्त करते हुए आनेवाले हनुमान को गरुड़ ही समझने लग गये। यह कहते हुए वे डरकर उद्विग्नता के साथ तितर-बितर हो गये कि हमारे प्रारब्ध के कारण भयानक बलयुक्त गरुड़ फिर से आ रहा है। हम बचेंगे कैसे ? । २२

तुळ्ळुरु महर मीन्ग डुडिप्पुरच् चुऱवु तूङ्ग
ऊऴिय पनैमीन् ऱुञ्जत् तिवलैय दूऴिक् कालिन्
वळ्ळुहिर् वीरन् शॆल्लुम् विशैपॊऱा मरुहि वारि
तळ्ळिय तिरैहण् मुन्दुऱ् ऱिलङ्गैमेऱ् ऱवऴ्न्द मादो 23

ऊऴि–युगान्तकालीन; तिवलैयतु–सीकर-सहित; कालिन्–पवन के समान; वळ् उकिर् वीरन्–तीक्ष्ण-नख वीर की; चॆल्लुम् विचै–गमन-गति; पॊऱा–न सह सककर; तुळ्ळुरु–उछलनेवाली; मकर मीन्कळ्–मगर-मछलियाँ; तुटिप्पु उऱ–

छटपटायीं; चुऱवु तुञ्क–'शुऱा' नामक मच्छ निश्चेष्ट पड़े रहे; ऑळ्ळिय–रौनक-दार; पत्तै मीन्–'पत्तै' नामक मच्छ; तुञ्च–मर गये; वारि मरुकि–समुद्र विलोडित हुआ; तळ्ळिय तिरैकळ्–उससे चालित तरंगें; मुन्तु उऱ्ऱु–आगे जाकर; इलङ्कै मेल् तवऴ्न्त–लंका पर बहीं। २३

हनुमान युगान्तकालीन जलसीकरवाही पवन के समान जा रहा था। तीक्ष्ण नाखूनों से युक्त उस वीर के वेग को न सह सकने से चंचल मगरमच्छ छटपटाये। 'शुरा' नामक मच्छ अचेत पड़े रहे। प्रकाशमय 'पत्तै' नामक मच्छ मर गये। समुद्र आलोडित हुआ और तरंगें आगे जाकर लंका पर बहीं। २३

इडुक्कुरुम् बॉरुळ्ह ऍन्ऩा मॆण्डिशै शुमन्द यानै
नडुक्कुऱ विशुम्बिऩ् चॅल्लु नायहन् ऱूद ऩाहम्
ऑडुक्कुरु काल वन्गाऱ् ऱडियॊडु मॊडित्त वन्नाळ्
मुडुक्कुऱक् कडलिऩ् चॅल्लु मुत्तलैक् किरियु मॊत्ताऩ् 24

ऍण् तिचै चुमन्त–आठ दिशाओं के वाहक; यानै–दिग्गज; नटुक्कु उऱ–कोप गये; विचुम्पिल्–ऐसा, आकाश में; चॅल्लुम्–जानेवाला; नायकन् तूतन्–नायक श्रीराम का दूत; नाकम् ऑटुक्कुरु कालम्–(जब पवन के साथ स्पर्द्धा में) आदिशेषनाग ने (मेरु को) दबाये रखा था; वन् काल्–बलवान पवन ने; तटियॊटुम्–विद्युत् के साथ; ऑटित्त अ नाळ्–तोड़ा था, उस दिन; मुटुक्कुऱ–वेग के साथ; कटलिल् चॅल्लुम्–समुद्र में जानेवाले; मुत्तलै किरियुम्–त्रिकूट पर्वत के भी; ऑत्तान्–समान लगा; इटुक्कु उऱुम्–बीच में आनेवाली; पॊरुळ्कळ्–वस्तुओं का हाल; ऍन् आम्–क्या होगा। २४

अष्ट दिग्गज काँपे। इस तरह जो आकाश में उड़ा जा रहा था, वह श्रीराम नायक का दूत हनुमान त्रिकूट पर्वत के समान लगा, जो समुद्र की तरफ़ जा रहा था। एक बार शेषनाग और पवन में अपनी-अपनी शक्ति के प्रदर्शन में स्पर्द्धा हो गयी। शेषनाग ने मेरुपर्वत को लपेटकर दबा दिया था। सबल पवन ने उस दिन विद्युत् के साथ उस पर्वत को तोड़ दिया था। तब उस पर्वत का तीन शिखरों वाला अंश अलग टूटा और वही त्रिकोण या त्रिकूट पर्वत कहा गया। (वह समुद्र में जा गिरा। उसी के ऊपर लंका नगर का निर्माण हुआ।) हनुमान जाते हुए उस पर्वत के समान लगा। २४

कॊट्पुरु पुरवित् तॆय्वक् कूऱ्ऱुदिक् कुलिशत् ताऱ्कुम्
कट्पुलङ् गदुव लाहा वेहत्ताऱ् कडलु मण्णुम्
उट्पडक् कूडि यण्ड मुऱवुळ शॆलवि नॊऱ्ऱैप्
पुट्पह विमानन् दानव् विलङ्गमेऱ् पोव दॊत्तान् 25

कॉट्पु उरु–ज़ोर का चक्कर काटनेवाले; तॅय्व पुरवि–(उच्चैःश्रवा नाम के) दिव्य अश्व के; कूर् नुति–तीक्ष्ण नोक के; तॅय्व कुलिचत्ताऴ्कुम्–दिव्य कुलिश के स्वामी (इन्द्र) के लिए भी; कण् पुलम् कतुवल् आका–आँख की इन्द्रिय द्वारा ग्रहण न हो सके ऐसी; वेकत्ताल्–गति के कारण; कटलुम् मण्णुम्–समुद्र और भूमि; उट्पटक्कूटि–दोनों अपने अन्दर समा जायँ इतना बड़ा होकर; अण्टम् उऱ–अण्ड की चोटी के भाग को छूता हुआ; उळ चॅलवित्–चलने की गति के कारण; ऑऱ्ऱ् पुट्पक विमातम् तात्–अनुपम पुष्पकयान स्वयं; अव् इलङ्कै मेल्–उस लंका पर; पोवतु ऑत्तात्–जाता हो, ऐसा लगा। २५

बहुत तेज़ घूमनेवाले (उच्चैःश्रवा नाम के) अश्व और तीक्ष्ण नोक वाले दिव्य वज्रायुध का स्वामी इन्द्र की आँखें भी उसको नहीं देख सकीं —हनुमान इतनी तेज़ी से उड़ा जा रहा था। वह इतने बड़े आकार का था कि भूमि और समुद्र दोनों एक साथ उसमें समा जायँ। अण्ड की चोटी के भाग से लगता हुआ वह महान् और अनुपम पुष्पक विमान के समान लगा जो लंका की तरफ़ जा रहा हो। २५

विण्णव रेत्त वेद मुनिवर्हळ् वियन्दु वाळ्त्त
मण्णव रिऱैञ्जच् चॅल्लु मारुदि मऱमुऱ् कूर
अण्णल्वा ळरक्कन् ऱन्नै यमुक्कुवॅ त्रिन्न मॅन्नाक्
कण्णुद लॉळियच् चॅल्लुङ् गयिलैयङ् गिरियु मॉत्तान् 26

विण्णवर् एत्त–स्वर्गवासियों के स्तुति करते; वेत मुनिवर्कळ्–वेदज्ञ मुनियों के; वियन्तु वाळ्त्त–विस्मित होकर साधुवाद देते; मण्णवर् इऱैञ्च–भूलोकवासियों के प्रणमन करते; चॅल्लुम् मारुति–चलनेवाला हनुमान; मऱम् मुत् कूर–वैर-भावना के बढ़ने के कारण; इन्नम्–और भी; अण्णल् वाळ्–महिमामय (चन्द्रहास) तलवार के स्वामी; अरक्कन् तन्नै–राक्षस रावण को; अमुक्कुवॅन् ऎन्ना–दबाऊँगा कहकर; कण्णुतल् ऑळिय–भालनेत्र शिवजी से रहित होकर; चॅल्लुम्–जानेवाले; कयिलै अम् किरियुम्–श्रेष्ठ कैलास पर्वत के भी; ऑत्तात्–समान रहा। २६

देवलोग हनुमान की स्तुति कर रहे थे। वेदज्ञ मुनिगण साधुवाद कर रहे थे। भूमि के वासी नमस्कार कर रहे थे। इस रीति से जा रहा था हनुमान। उसके मन में वैर-भाव उमग आ रहा था। तब वह उस सुन्दर कैलास पर्वत के समान लगा जो यह संकल्प करके भालनेत्र शिवजी को त्याग कर दौड़ रहा हो कि मैं महिमामय चन्द्रहास तलवारधारी राक्षस रावण को और भी दबोच लूँगा। २६

केळ्ळा मुळ्ळि लाविऱ् किळरॉळि यिरुळेक् कोऱप्
पाळिमा मेरु नाण विशुम्बिडेप् पडर्न्द तोळान्
आळिशू ळुलह मॅल्ला मरुङ्गतन् मुरुङ्ग वुण्णुम्
ऊळिनाळ् वडपाऱ् ऱोन्ऱु मुवामुळ मदियु मॉत्तान् 27

केऴ् उलाम्–श्वेत प्रकाशपूर्ण; मुऴु निलाविल्–पूर्णचन्द्र के समान; किळर् ऒळि–अपने में रहनेवाली कांति द्वारा; इरुळै कीऱ–अन्धकार को चीरते हुए; पाऴि–बहुत बड़े; मा मेरु नाण–महान् मेरु को लजाते हुए; विचुम्पिटै–आकाश में; पटर्न्त तोळान्–उड़नेवाले विशाल कन्धों का हनुमान; आऴि चूऴ्–समुद्रवलयित; उलकम् ऎल्लाम्–भूतल सभी; अरुङ्कतल्–असह्य अग्नि; मुरुङ्क उण्णुम्–जलाते हुए जिस दिन भक्षण कर लेती है, उस; ऊऴि नाळ्–युगान्तकाल में; वट पाल्–उत्तर में; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; उवा मुऴु मतियुम्–पौणिमा के पूर्णचन्द्र के भी; ऒत्तान्–समान लगा। २७

हनुमान में चाँदनी के समान तेज था। उसने अन्धकार को हटा दिया। उस प्रकाश के सहारे वह ऐसा उड़ रहा था कि महामेरु भी शरमा जाए। वह तब उस युगान्तकालीन पूर्णिमा के पूर्णचन्द्र के समान लगा जब इस समुद्र-मेखला पृथ्वी को असह्य आग नाश करके भक्षण कर रही हो। २७

माणियाम् वेडन् दाङ्गि मलरयर् करिवु माण्डोर्
आणिया वुलहुक् कॅल्ला मऱप्पॊरु णिरप्पु मण्णल्
शेणुयर् नॅडुनाट् टीर्न्द तिरिदलैच् चिरुवन् ऱन्नैक्
काणिय विरैविर् चॅल्लुङ् गनहमाल् वरैयु मॊत्तान् 28

माणि आम्–ब्रह्मचारी (वटु) का; वेटम् ताङ्कि–वेश धरकर; मलर् अयऱ्कु–कमलासन ब्रह्मा के समान; अऱिवु माण्टु–बुद्धि में श्रेष्ठ होकर; उलकुक्कु ऎल्लाम्–सारे लोकों के लिए; ओर् आणि आ–एक धुरी के समान; अऱप्पॊरुळ्–धर्म-विषय; निरप्पुम् अण्णल्–भरनेवाला महानुभाव; नॆटु नाळ् तीर्न्त–बहुत दिन से वियुक्त; चेण् उयर् तिरितलै चिऱुवन् तन्नै–श्रेष्ठ त्रिकूट पर्वत रूपी पुत्र को; काणिय–देखने के लिए; विरैविल् चॆल्लुम्–सवेग जानेवाले; कनक माल् वरैयुम्–स्वर्णपर्वत मेरु के भी; ऒत्तान्–समान लगा। २८

हनुमान ब्रह्मचारी बटु के वेश में था। वह कमलासन के समान बुद्धिमान था। वह धर्मधुरंधर था। वह तब उस कनकमेरुपर्वत के समान लगा, जो अपने से बहुत काल से वियुक्त अपने पुत्र त्रिकूट पर्वत से मिलने हेतु बहुत तेज़ी से लंका जा रहा हो। २८

मऴैहिऴित् तुदिर मीन्गण् मरिहडल् पाय वानम्
कुऴैवुऱत् तिशैहळ् कीऱ मेरुवुङ् गुलुङ्गक् कोट्टिन्
मुऴैयुडैक् किरिहण् मुऱ्ऱु मुडिक्कुवान् मुडिवु कालत्
तऴिवुऱक् कडुहुम् वेहत् तादैयु मनैय ऩानान् 29

मीन्कळ्–(आकाश की मछलियाँ =) तारे; मऴै किऴित्तु–मेघों को छेदते हुए; उतिर–चू पड़ें; मरि कट–मुड़ आनेवाली तरंगों का समुद्र; पाय–भूमि पर बहे; वानम्–स्वर्ग; कुऴैवु उऱ–अस्त-व्यस्त हों; तिचैकळ् कीऱ–दिशाएँ फट जायँ; मेरुवुम् कुलुङ्क–मेरु भी झकझोर जाय, ऐसा और; कोट्टिन्–शिखरों में; मुऴै उटै–कन्दराओं-

सहित रहनेवाले; किरिकळ् मुऱ्ऱुम् मुटिक्कुवान्–सारे पर्वतों का नाश करने के लिए; मुटिवु कालत्तु–युगान्तकाल में; अऴिवु उऱ–मिट जाने के लिए; कट्कुम्–वेग के साथ जानेवाले; वेक तातैयुम्–(उसके) वेगयुक्त पिता (वायु) के भी; अतैयन् आतान्–समान लगा। २९

युगान्तकाल में तारे मेघों को चीरकर चू पड़ते हैं। तीर से टकराकर मुड़नेवाली तरंगों का समुद्र भूमि पर फैलने लग जाता है। आकाश अस्त-व्यस्त हो जाता है। दिशाएँ टूट जाती हैं। मेरु हिल जाता है। पवन शिखरों और उनमें कन्दराओं-सहित रहनेवाले पर्वतों को चूर करने के लिए बहता है। हनुमान उस अपने पिता के समान युगान्तकालीन-सी स्थिति उत्पन्न करते हुए जा रहा था। २९

तडक्कैना लैन्दु पत्तुत् तलैहळु मुडैयान् ऱाने
अडक्कियैम् बुलन्गळ् वॅन्ऱ तवप्पय नऱुद लाले
कॅडक्कुऱि याहि माहम् किऴक्कॅऴु वऴक्कु नीङ्गि
वडक्कॅऴुन् दिलङ्गै शॅल्लुम् परुदिवा नवनु मॊत्तान् 30

नालैन्तु–(चौके पाँच) बीस; तट कै–विशाल हाथों और; पत्तु तलैकळुम् उटैयान्–दस सिरों वाला; ताने–स्वयं; ऐम् पुलन्कळ्–पाँचों इन्द्रियों का; अटक्कि–निग्रह कर; वॅन्ऱ–विजय पाने की; तव पयन्–तपस्या के फल; अऱुतलाले–रिक्त हो गये इसलिए; कॅट–उसके नष्ट होने का; कुऱि आकि–एक निशान बनकर; माकम्–आकाश में; किऴक्कु ऍऴु–पूर्व दिशा में उगने की; वऴक्कु नीङ्कि–प्रकृति छोड़कर; वटक्कु ऍऴुन्तु–उत्तर में उगकर; इलङ्कै चॅल्लुम्–लंका पर जानेवाले; परुति वानवनुम्–सूर्यदेव के भी; ऒत्तान्–समान था। ३०

बीस-हस्त, दस-सिर रावण ने इन्द्रिय-निग्रह करके उन इन्द्रियों पर विजय पाकर तपस्या की थी। उस तपस्या का फल अन्त को प्राप्त हो गया। इसलिए उसके नाश के निशान के रूप में सूर्य पूरब में उगना छोड़कर उत्तर में उग रहा हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करता हुआ हनुमान लंका की तरफ़ उड़ रहा था। ३०

पुऱत्तुऱ लञ्जि वेऱो ररणम्बुक् कुऱैदल् पोक्कि
मऱत्तॊऴि लरक्कन् वाऴु मानहर् मनुविन् वन्द
तिऱत्तहै यिराम नॆन्नुञ् जेवहऱ् पऱ्ऱिच् चॆल्लुम्
अऱत्तहै यरशन् ऱन्बो राऴियु मनैय नानान् 31

मऱम् तॊऴिल्–नृशंसकारी; अरक्कन् वाऴुम्–राक्षस जिसमें रहता था; मा नकर्–उस नगर के; पुऱत्तु उऱल्–बाहर रहने से भी; अञ्चि–डरकर; वेऱु ओर् अरणम्–किसी दूसरे रक्षित स्थान में; पुक्कु उऱैतल्–जाकर रहना; पोक्कि–छोड़कर मनुविन् वन्त–वैवस्वत मनु के कुल में उत्पन्न; तिऱत्तकै–प्रतापी; इरामन् ऍन्नुम् चेवकन्–श्रीराम नाम के वीर का; पऱ्ऱिच् चॆल्लुम्–अवलम्ब लेकर चलनेवाले;

अऱत्तकै अरचन् तन्–धर्मदेवता के; पोर् आऴियुम्–समर-चक्र; अनैयन् आनान्–समान रहा। ३१

लगता है कि धर्मदेवता का चक्र क्रूरकर्मी राक्षसों के वासस्थान उस महानगर के बाहर रहने से भी डरकर कहीं दूसरे सुरक्षित स्थान में रहता था। अब वह उस स्थान से बाहर आकर मनुकुलोत्पन्न प्रतापी श्रीराम के बल का आश्रय लेकर लंका पर जा रहा है। ऐसे धर्मदेवता के समरयोग्य चक्र के समान भी लगा हनुमान। ३१

अडलुलान् दिहिरि मायर् कमैन्ददन् ताऱ्ऱल् काट्टक्
कुडलॅला मवुणर् शिन्दक् कुन्ऱॆनक् कुऴित्तु निन्ऱ
तिडलॅलान् तॊडर्न्दु शॆल्लच् चेण्विशुम् बॊदुङ्गत् तॆय्वक्
कडलॅलाङ् गडक्कत् तावुम् कलुऴनु मनैय नानान् 32

अटल् उलाम्–शक्तिसम्पन्न; तिकिरि–चक्रधारी; मायर्कु अमैन्त–मायावी देव श्रीविष्णु के अधीन रहनेवाले; तन् आऱ्ऱल् काट्ट–अपने पराक्रम दिखाते हुए; अवुणर् ऍल्लाम्–सभी असुरों की; कुटल् चिन्त–आँतों के गिरते; कुन्ऱु ऍन कुऴित्तु निन्ऱ– पर्वत नाम के साथ रहनेवाले; तिटल् ऍलाम्–सभी टीलों को; तॊटर्न्तु चॆल्ल–लगातार पार करके; चेण् विचुम्पु–ऊपर का आकाश; ऒतुङ्क–दूर हटा; तॆय्वक् कटल् ऍलाम्–सभी दैवी सागरों को; कटक्क तावुम्–पार करने के लिए झपटनेवाले; कलुऴनुम् अनैयन् आनान्–गरुड़ के समान भी बना। ३२

प्रबल चक्रधारी मायावी श्रीविष्णु के अधीनस्थ अपना सारा बल प्रदर्शन करते हुए, गरुड़ अपनी माता की दासता के निवारणार्थ पहले गया था न! तब असुरों की आँतें छितरीं। वह पर्वतों को टीलों के समान पार करता गया। आकाश भी दूर हट गया। सभी समुद्रों का उसने तरण किया। हनुमान उस गरुड़ के समान गया। (यह कहानी इसके पूर्व भी इंगित की गयी है।)। ३२

नालिनो डुलह मून्ऱु नडुक्कुऱ वडुक्कु नाहर्
मेलिन्मे निन्ऱ काऱुम् जॆन्ऱको लत्तिन् विण्डु
कालिना लळन्द वान मुहट्टैयुङ् गडक्कक् काल
वालिना लळन्दा नॆन्ऱु वानवर् मरुळच् चॆन्ऱान् 33

अट्टुक्कु मॅलिन् मेल्–एक के ऊपर एक; निन्ऱ नालितोट मून्ऱु–स्थित चार और तीन (सात); नाकर् उलकम् काऴम्–सभी नाग (स्वर्ग) लोकों को; नटुक्कुऱच् चॆन्ऱ–कँपाते हुए जो बढ़ चले; कोलत्तिन्–अति सुन्दर; विण्टु–श्रीविष्णु ने; कालिताल् अळन्त–अपने पैरों से जिसको मापा; वात मुकट्टैयुम्–उस आकाश की चोटी को भी; कटक्क–पार करके; काल वालिताल्–कालदेव-सम अपनी पूँछ से;

अळन्तान्–(हनुमान ने) माप लिया; ऍन्ऱु–ऐसा; वानवर्–देवता; मरुळ–चक्ित हो जाएँ ऐसा; चॆन्ऱान्–गया। ३३

शोभायमान त्रिविक्रमदेव बनकर श्रीविष्णु ने एक के ऊपर एक रहनेवाले सातों देवलोकों को भय में डालते हुए अपने श्रीचरण से आकाश को नापा था। उस आकाश की चोटी को भी पार करने के निमित्त हनुमान अपनी कालदेव-सम पूँछ से उसको नाप रहा है क्या ? ऐसा सोचते हुए देव चक्रित हुए। ऐसा हनुमान जा रहा था। ३३

वॆळित्तुप्पिन् वेलै तावुम् वीरन्वाल् वेद मेय्क्कुम्
अळित्तुप्पि ननुम नॆन्नु मरुन्दुणै पॆऱ्ऱ तायुम्
कळित्तुप्पुन् ऱॊळिन्मे निन्ऱ वरक्करहण् णुऱुव ऍन्न
ऒळित्तुप्पिन् शॆल्लुङ् गाल पाशत्तै यॊत्त दन्ऱे 34

वॆळि तुप्पिन्–सविस्तार और प्रवालयुक्त; वेलै तावुम्–समुद्र लाँघनेवाले; वेतम् एय्क्कुम्–वेद से तुल्य; वीरन् वाल्–महावीर (हनुमान) का लांगूल; कळित्तु–ताड़ी पीकर; पुन् तॊळिल् मेल् निन्ऱ–नीच कर्म अपनाए रहनेवाले; अरक्कर् कण् उऱुवर्–राक्षस देख लेंगे; ऍन्न–ऐसा सोचकर; अळि–करुणा व; तुप्पिन्–बल से युक्त; अनुमन् ऍन्नुम्–हनुमान के रूप में; अरुन्तुणै पॆऱ्ऱताय्–अपूर्व सहायक पाकर; पिन् ऒळित्तु चॆल्लुम्–उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जानेवाले; काल पाचत्तै–यम-पाश के; ऒत्तलु–समान रहा। ३४

बड़े विस्तार के और प्रवालयुक्त समुद्र को वेद-सम वीर हनुमान लाँघ रहा था। तब उसका लांगूल कालपाश के समान लगा। यह कालपाश (लांगूल) मद्यप और नीचकर्मी राक्षसों की दृष्टि में पड़ने से डरकर करुणामय प्रतापी हनुमान की सहायता पाकर उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जा रहा हो —ऐसा लग रहा था। ३४

मेरुवै मुळ्ळुदुञ् जूळ्न्दु मीदुऱ्ऱ वेह नाहम्
कार्निऱत् तण्ण लेवक् कलुळन्वन् दुऱ्ऱ कालैच्
चोर्वुऱु मनत्त दाहिच् चुऱ्ऱिय चुऱ्ऱु नीङ्गिप्
पेर्वुऱु हिन्ऱ वाऱु मॊत्तदप् पिऱङ्गु पेळ्वाल् 35

पिऱङ्कु पेळ्–शोभायमान बड़ा; अ वाल्–वह लांगूल; कार् निऱत्तु–काले वर्ण के; अण्णल्–महिमावान श्रीविष्णु के; एव–आज्ञा देने पर; कलुळन् वन्तु उऱ्ऱ–गरुड़ जब आया; कालै–तब; मेरुवै–मेरुपर्वत को; मुळ्ळुतुम् चूळ्न्तु–पूरा लपेटकर; मीतुऱ्ऱ–उसके ऊपर फन फैलाये जो रहा; वेक नाकम्–भयंकर वेगवान शेषनाग; चोर्वुऱु मनत्ततु–थकित-मन; आकि–होकर; चुऱ्ऱिय चुऱ्ऱु नीङ्कि–अपनी लपेटें हटाकर; पेर्वु उऱुकिन्ऱ आऱुम्–अलग हटता जाता हो; ऒत्ततु–ऐसा भी लगा। ३५

एक बार नीलवर्ण श्रीविष्णु की प्रेरणा पर गरुड़ मेरुपर्वत के पास

आया। तब वहाँ शेषनाग उस पर्वत को पूरी तरह से लपेटकर उसके ऊपर अपना फन फैलाये हुए था। गरुड़ को देखकर डर के मारे वह अपनी लपेट निकालकर दूर भागने लगा। हनुमान की बड़ी और शोभायमान पूँछ उस शेषनाग के समान लगी। ३५

कुऩ्ऱॊडु कुणिक्कुङ् गॊऱ्ऱक् कुववुत्तोट् कुरक्कुच् चीयम्
शॆऩ्ऱुऱु वेहत् तिण्गा लॆऱिदरत् तेवर् वैहुम्
मिऩ्ऱॊडर् वाऩत् ताऩ विमाऩङ्गळ् विशैयिऱ् ऱम्मिल्
ऒऩ्ऱॊडॊऩ् ऱुडैयत् ताक्कि माक्कड लुऱ्ऱ मादो 36

कुऩ्ऱॊटु कुणिक्कुम्–पर्वत-तुल्य; कॊऱ्ऱम्–विजय-वाहक; कुववु तोळ्–स्थूल कन्धों वाला; कुरक्कु चीयम्–वानर केसरी; चॆऩ्ऱु उऱु–उसके गमन से उत्पन्न; वेकम् तिण् काल्–वेगवान और प्रबल प्रभंजन; ऎऱितर–बहा, अतः; मिऩ् तॊटर्–उज्ज्वल; वाऩत्तु आऩ–आकाश में उड़नेवाले; तेवर् वैकुम् विमाऩङ्कळ्–देवगण जिनमें बैठे हुए जाते थे, वे यान; विचैयिल्–पवन के झोंकों से; तम्मिल् ऒऩ्ऱॊट ऒऩ्ऱु–आपस में एक दूसरे से; ताक्कि उटैय–टकराकर टूटे; मा कटल् उऱ्ऱ–बड़े समुद्र में गिरे। ३६

हनुमान के कन्धे विजय के आगर थे। पर्वत-सम थे। ऐसे वानर-केसरी के गमन से बहुत वेगवान प्रभंजन उठा। उसके झोंके खाकर आकाश में बिजली के साथ चलते रहे देव-यान आपस में टकराये, टूटे और समुद्र में गिर गये। ३६

वलङ्गैयिऩ् वयिर वेदि वैत्तवऩ् वैहु नाडुम्
कलङ्गुऱ वेहु वाऩ्ऱऩ् करुत्तॆऩ्ऩॊ लॆऩ्ऩुङ् गऱ्पाल्
विलङ्गयि लॆयिऱ्ऱु वीरऩ् मुडुहिय वेहम् वॆय्योर्
इलङ्गैयि ऩळवऩ् ऱॆऩ्ऩा विम्बरऩा डिरिन्द दऩ्ऱे 37

वलङ्कैयिऩ्–दाहिने हाथ में; वयिर एति–वज्रायुध; वैत्तवऩ्–धारण करनेवाला (इन्द्र); वैकुम् नाटुम्–जहाँ रहता है वह लोक; कलङ्कुऱ–अस्त-व्यस्त हो; एकुवाऩ् तऩ्–ऐसा जानेवाले का; करुत्तु ऎऩ् कॊल्–अभिप्राय क्या है; ऎऩ्ऩुम् कऱ्पाल्–इस विचार से; इम्पर् नाटु–यह लोक; विलङ्कु अयिल् ऎयिऱ्ऱु–अलग-अलग और तीक्ष्ण रहनेवाले दाँतों का; वीरऩ्–वीर; मुटुकिय वेकम्–जिसके साथ जाता है, वह वेग; वॆय्योर् इलङ्कैयिऩ्–क्रूर राक्षसों की लंका; अळवु अऩ्ऱु–तक का नहीं (को सीमा बनाकर नहीं); ऎऩ्ऩा–सोचकर; अऩ्ऱु–उस दिन; इरिन्ततु–डरकर भागा। ३७

उसे देखकर यह लोक सोचने लगा कि यह अपने दाहिने हाथ में वज्रायुध धारण करनेवाले इन्द्र के वासस्थान को भी भयभीत करता हुआ जा रहा है। इसका अभिप्राय क्या होगा? बेढंगे दाँतों से युक्त इस वीर का वेग क्रूर राक्षसों की लंका तक सीमित होगा, ऐसा नहीं लगता। इस विचार से डरकर वह भाग गया। ३७

ओशनै युलप्पि लाद वुडम्बमैन् दुडय वॅन्नत्
तेशमु नूलुम् जॉल्लुन् दिमिङ्गिल किलङ्ग ळोडुम्
आशैयै युऱ्ऱ वेलै कलङ्गवन् ऱणल् याक्कै
वीशिय कालिन् वीन्दु मिदन्दन मीन्ग ळॅल्लाम् 38

उलप्पिलात–अक्षुण्ण; उटम्पु–शरीर; ओचनै अमैन्नुटैय–एक योजन बड़ा है, ऐसा बना; ॲन्न–ऐसा; तेचमुम् नूलुम्–देशवासी और ग्रन्थ; चॉल्लुम्–जिनके बारे में कहते हैं; तिमिङ्किल किलङ्कळोटुम्–'तिमिंगिलगिलों' के साथ; आचैयै उऱ्ऱ वेलै–दिगन्त तक फैला हुआ सागर; कलङ्क–क्षुब्ध हुआ; अन्ऱु–तब; अण्णल् याक्कै–महान् हनुमान के शरीर से; वीचिय कालिन्–बहे पवन से; मीन्कळ् ॲल्लाम्–सभी मछलियाँ; वीन्तु मितन्तन–मरकर तिरे। ३८

उसके शरीर के वेग से चलने के कारण प्रबल रूप से पवन उठकर बहने लगा। तब ऐसे 'तिमिंगिलगिल' नामक जन्तुओं से, जिनके सम्बन्ध में लोक और ग्रन्थ कहते हैं कि उनका अक्षुण्ण शरीर एक योजन विस्तार का है, भरा समुद्र क्षुब्ध हो उठा। तब सभी मछलियाँ मरकर तिर गयीं। (तिमिंगिल से भी बड़े जन्तु को कवि तिमिंगिलगिल कहते हैं।)। ३८

पॉरुवरु मुरुवत् तन्नान् पोहिन्ऱ पोदु वेहम्
तरुवन तडक्कै तळ्ळा निमिर्च्चिय तम्मु ळॉप्प
ऑरुवरुङ् गुणत्तु वळ्ळ लोरुयिर्त् तम्बि यॅन्नुम्
इरुवरु मुन्नर्च् चॅन्ऱा लॉत्तदव् विरण्डु पालुम् 39

पॉरुवु अरुम्–अप्रमेय; उरुवत्तु अन्नान्–आकार वाला वह; पोकिन्ऱ पोतु–जब जाता रहा तब; वेकम् तरुवन–उसे वेग देनेवाले; तळ्ळा निमिर्च्चिय–विना थके बढ़े रहनेवाले; तम्मुळ् ऑप्प–परस्पर समान रहनेवाले; तटक्कै–विशाल हाथ; अ इरण्टु पालुम्–उसके दोनों पार्श्वों में; ऑरुवु अरुम्–अचल; कुणत्तु वळ्ळल्–गुणशील महानुभाव श्रीराम और; ओर् उयिर् तम्पि–उनका अनुपम प्राणप्यारे भाई लक्ष्मण; ॲन्नुम् इरुवरुम्–दोनों; मुन्नर् चॅन्ऱाल् ऑत्त–आगे जाते जैसे लगे। ३९

जब अतुल रूप से बढ़े अपने शरीर को ले हनुमान जा रहा था, तब उसके हस्त उसे गतिवेग दे रहे थे। वे हाथ परस्पर सम थे। वे थकते नहीं थे और सदा आगे रहते थे। उनको देखकर ऐसा लगा, मानो सद्गुण-सम्पन्न श्रीराम और उनके प्राणप्यारे अनुज लक्ष्मण दोनों उसकी रक्षा करते हुए बगल में आगे जा रहे हों। ३९

इन्नाह मन्ना नॆऱिहालॆन वेहुम् वेलॆत्
तिन्नाह माविऱ् चॆऱिकोळ्त्तिशै कावल् शॆय्युम्

कैन्नाह मन्नाट् कडल्वन्ददोर् काट्चि तोन्ऱ
मैन्नाह मॅन्नु मलैवानुऱ वन्द दन्ऱे 40

इ नाकम् अन्नतान्–यह पर्वत-सम हनुमान; ऍरि काल् ॲत–आँधी की तरह; एकुम् वेलै–जब जा रहा था; मैन्नाकम् ऍन्नुम् मलै–मैनाक कथित पर्वत; तिक् नाक माविल्–दिग्गजों में; चॅरि कोऴ् तिचै–धनी पूर्व दिशा की; कावल् चॅय्युम्–रक्षा करनेवाला; कै नाकम्—शुण्डी; अ नाळ्–उस दिन; कटल् वन्ततु–(क्षीर-) सागर से उठ आये; ओर् काट्चि तोन्ऱ–ऐसे एक दृश्य-सा उपस्थित करते हुए; वान् उऱ–आकाश को स्पर्श करते हुए; वन्ततु–आया। ४०

जब पर्वत-सम हनुमान आँधी के समान जा रहा था, तब मैनाकपर्वत आकाश को स्पर्श करता हुआ समुद्र से ऊपर उठ आया। तब वह उस ऐरावत गज के समान लगा जो आठ दिग्गजों में धनी पूर्व दिशा की रक्षा करनेवाला है। मैनाक का उठ आना, उस दिन ऐरावत के क्षीरसागर से उठ आने के समान लगा। ४०

मीयोङ्गु शॅम्बॊन् मुडियायिरम् मिन्नि मैप्प
ओया वरुवित् तिरळुत्तरि यत्तै यॉप्पत्
तीयो रुळरा हियकालवर् तीमै तीर्प्पान्
मायोन् महरक् कडन्निन्ऱॆऴ् माण्ब दाहि 41

मी ओङ्कु–ऊपर उठे हुए; चॅम् पॊन् आयिरम् मुटि–लाल स्वर्णमय सहस्र शिखर; मिन्न् इमैप्प–चमक रहे थे; ओया अरुवित्तिरळ्–अक्षय नदी-समूह; उत्तरियत्तै ऑप्प–उत्तरीय के समान लगा; तीयोर् उळराकिय काल्–क्रूर लोग जब अत्याचार करते हैं तब; तीमै तीर्प्पान्–उनके दुष्कृत्यों के निराकरणार्थ; मायोन्–श्रीविष्णु; मकर कटल् निन्ऱु–मकरालय से; ऍऴुम् माण्पतु आकि–उठ आते, जैसी छवि के साथ। ४१

उस पर्वत का मकरालय से बाहर निकलकर आना मायावी श्रीविष्णु के 'दुष्कृतां विनाशाय' क्षीरसागर की शेषशय्या से उठकर आने के समान लगा। 'श्रीविष्णु सहस्रशीर्षाः पुरुषः' हैं। इस पर्वत के भी हजार लाल स्वर्णमय शिखर हैं, जिनसे कान्ति छूट रही है। श्रीविष्णु के उत्तरीय के स्थान पर पर्वत पर भी नित्य पूर्ण सरिताएँ बह रही हैं। मैनाक का एक नाम हिरण्यनाभ भी है। वह विष्णु का भी नाम है। ४१

नूलेन्नु केळ्वि नुहरार्पुल नोक्क लुऱ्ऱार्
पोलेन्दि निन्ऱ तनियाण्मॅय् पॊऱादु नीङ्गक्
कालाळ्न्द ळुन्दिक् कडल्पुक्कुळिक् कच्च माहि
मालेन्द वोङ्गु नॅडुमन्दर मेयु मान्ऱ 42

नूल् एन्नु केळ्वि–शास्त्रोक्त ज्ञान; नुकरार्–जो नहीं सुनते; पुलन् नोक्कल् उऱ्ऱार्–और इन्द्रियानुयायी है उन; पोल्–के समान; एन्ति निन्ऱ–(क्षीरसागर-

मथन के समय मन्दरगिरि को) जो धारण करती रही; तऩियाळ्–वह निस्सहाय भूदेवी; मॅय् पॊऱातु–शरीर न सह सकने से; नीङ्क–डगमगायी; काल्–मन्दरगिरि का नीचे का भाग; आऴ्न्तु अऴुन्ति–गहरे धँसकर; कटल् पुक्कुऴि–समुद्र के अन्दर चला गया तब; माल्–मायापति (श्रीविष्णुदेव); कच्चम् आकि–कच्छप बनकर; एन्त–उसको अपनी पीठ पर धारण करने लगे; ओङ्कुम्–तब जो ऊपर आकर खड़ा रहा; नॅटु मन्तरमेयुम् मात–उस बड़े मन्दर के समान भी। ४२

क्षीरसागर-मथन के समय मन्दरपर्वत भूमि पर रखकर घुमाया गया। तब निस्सहाय भूदेवी उसको धारण नहीं कर सकी और मन्दरपर्वत उन लोगों की तरह नीचे जाने लगा, जो शास्त्रोक्त ज्ञान का अनुसरण न करके इन्द्रियों के दास बनकर विषय-भोग में लीन रहते हैं। तो श्रीविष्णु कच्छप बने और उन्होंने मन्दरपर्वत को अपनी पीठ पर रखवा लिया। उस मन्दरपर्वत के पुन: उठते वक़्त जैसा दृश्य था वैसा ही दृश्य अब इस उठते हुए मैनाक पर्वत का था। ४२

तळ्ळर् करुनऱ् चिऱैमाडु तऴैप्पॊ डोङ्ग
ॲळ्ळर् करुनन् निऱमॅल्लै यिलादु पॊङ्ग
वळ्ळर् कडलैक् कॅडनीक्कि मरुन्दु वौवि
उळ्ळुऱ् ऱॅऴुमो रुवणत्तर शेयु मॊप्प 43

तळ्ळऱ्कु अरु–दुर्निवार; नल् चिऱै–श्रेष्ठ पक्ष; माटु–पार्श्वों में; तऴैप्पॊटु ओङ्क–पुष्कल रीति से उठे हुए थे; ॲळ्ळऱ्कु अरु–अनिंद्य; नल् निऱम्–अच्छी छवि; ॲल्लै इलातु–असीम रीति से; पॊङ्क–बिखरी; वळ्ळल् कटलै–समृद्ध सागर को; कॅट नीक्कि–विकृत करते हुए चीरकर; मरुन्तु वौवि–अमृत पकड़ते हुए; उळ्ळुऱ्ऱु ॲऴुम्–समुद्र के अन्दर से बाहर उठ आनेवाले; ओर् उवणत्तु अरचेयुम्–अनुपम पक्षीराज गरुड़; ऑप्प–के भी समान। ४३

वह गरुड़राज के समान भी लगा। दुर्वार दो घने पक्षों को दोनों बाजुओं में ले, अनिंद्य आकर्षक देहकान्ति बिखेरते हुए जलसमृद्ध समुद्र को चीरकर गरुड़ गया और अमृत ग्रहणकर उस समुद्र से बाहर निकला था। उस समय का-सा दृश्य अब यह पर्वत उपस्थित कर रहा था। ४३

आऩ्ऱाऴ् नॅडुनीरिडै यादियॊ डन्द माहित्
तोऩ्ऱादु निऩ्ऱा ऩ्रुडोऩ्ऱिड मुनृदु तोऩ्ऱुम्
मूऩ्ऱा मुलहत् तॊडुमुऱ्ऱुयि राय मुऱ्ऱुम्
ईऩ्ऱाऩै योऩ्ऱ शुवणत्तनि यण्ड मॅन्ऩ 44

आऩ्ऱु आऴ्–बहुत गहरे; नॅटु नीरिटै–प्रलयसागर में; आतियॊटु अन्तम् आकि–आदि व अन्त; तोऩ्ऱातु–न जानने देते हुए; निऩ्ऱाऩ्–जो खड़े रहे; अरुळ् तोऩ्ऱिट–उन श्रीविष्णु के मन में (सृष्टि की) कृपा के उदित होने पर; मुन्तु तोऩ्ऱुम्–सर्वप्रथम जो प्रकट हुए; मूऩ्ऱु आम् उलकत्तॊटम्–त्रिभुवनों के साथ; मुऱ्ऱु

उयिराय–पूर्ण जीवों के साथ; मुऱ्ऱुम् ईन्ऱानै–(जिन्होंने) सभी का सृजन किया; ईन्ऱ–उन ब्रह्मा को; ईन्ऱ–जिसने बाहर प्रकट कराया; तनि चुवण अण्टम् अँत–उस अप्रतिम स्वर्ण के अण्डे के समान । ४४

प्रलय के दिनों में आदि और अन्त प्रकट न होने देते हुए विश्वरूप में रहे श्रीनारायणदेव । उनके मन में सृष्टि रचने की इच्छा हुई । तब एक अण्ड हुआ, जिससे लोकसर्जक, आदिसृष्टि ब्रह्मा उद्भूत हुए । यह पर्वत उस स्वर्णअण्ड के समान लगा । ४४

इन्नीरि लॅन्नैत् तरुमॅन्दैयै यॅय्दि यन्ऱिच्
चॅन्नीर्मै शॅय्ये नॅनच्चिन्दनै शॅय्दु नॉय्दिन्
अन्नीरिल् वन्द मुदलन्दण नादि नाळम्
मुन्नीरिल् मूळ्हित् तवमुऱ्ऱि मुळैत्त वापोल् 45

अन् नीरिल्–उस प्रलयजल में; नॉय्तित् वन्त–शीघ्र जो प्रगट हुए; मुतल् अन्तणन्–पहले ब्राह्मण ब्रह्मा; इन्नीरिल्–इस जल में; अँन्नै तरुम्–मेरे सर्जक; ऍन्तैयै–मेरे जनक को; अॅय्ति अन्ऱि–प्राप्त किये विना; चॅन्नीर्मै–अपना श्रेष्ठ काम; चॅय्येन् अॅन–नहीं करूँगा, ऐसा; चिन्तनै चॅय्तु–सोचकर; आति नाळ्–प्रथम दिवस; अ मुन्नीरिल्–उस समुद्र में; मूळ्कि–मग्न रहकर; तवम् मुऱ्ऱि–तप पूरा करके; मुळैत्तवा पोल्–बाहर उग आये, वैसे ही । ४५

उस प्रलयजल से उत्पन्न ब्रह्मा ने संकल्प किया कि अपने सर्जक नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन किये विना मैं अपने सृष्टिकर्म में न लगूँगा; तो उसी प्रथम दिवस में वह उस जल के अन्दर तपस्या करने पैठ गये । तप पूरा करके जो वे बाहर निकल आये, उनके भी समान दिखा यह पर्वत । ४५

पूवालिडै यूरु पुहुन्दु पॉऱादु नॅञ्जिल्
कोवामुनि शीऱिड वेलै कुळित्त वॅल्लाम्
मूवामुद नायहन् मीळ मुयन्ऱ वन्नाळ्
तेवाशुरर् वेलैयिल् वन्दॅऴु तिङ्ग ळॅन्न 46

पूवाल्–माला के कारण; इटैयूरु पुकुन्तु–बाधा आयी; नॅञ्चिल् पॉऱातु–मन की क्षमा खोकर; कोवा मुनि–गुस्सेवर (दुर्वासा) मुनि के; चीऱिट–कोप से शाप देने पर; वेलै कुळित्त–जो समुद्र में चले गये; अॅल्लाम्–वे सब; मीळ–फिर से मिलें, तदर्थ; मूवा–अमर; मुतल् नायकन्–आदिदेव (की आज्ञा से); तेवाचुरर् मुयन्ऱ–देवों और असुरों ने जिस दिन प्रयत्न किया; अनाळ्–उस दिन; वेलैयिल्–उस सागर से; वन्तु अॅऴु–उठ जो आया; तिङ्कळ् अॅन्न–उस चन्द्र के समान । ४६

(दुर्वासा ने श्रीलक्ष्मी की भक्तिन से प्राप्त माला इन्द्र को दी । उसने उसे ऐरावत को पहना दिया ।) उस माला सम्बन्धी (इन्द्र के दर्पपूर्ण अभद्र) व्यवहार से कष्ट हो गया । (अपमान न सह सककर क्रोधी स्वभाव

के) दुर्वासा कुपित हुए। उसके फलस्वरूप देव-वैभव सारे समुद्र में जाकर डूब गये। उनको फिर से बाहर लेने के लिए अमर आदिनायक श्रीविष्णु ने उपाय बताया और तदनुसार देवों और असुरों ने क्षीरसागर-मंथन किया। उस समय पूर्णचन्द्र उग आया था। उसी के समान लगा मैनाक। ४६

निऱङ्गुङ्गुम मॊप्पत्त नीनिऱम् वाय्न्द नीरिऩ्
इऱङ्गुम्बव ऴक्कोडि शुऱ्ऱित्त शॆम्बॊ ऩॆय्न्द
पिऱङ्गुज्जिह रप्पडर् मुऩ्ऱि ऱॊऱुम्बि णावो
डुऱङ्गुम्मह रङ्ग ळुयिर्प्पॊ डुणर्न्दु पेर 47

निऱम्–रंग में; कुङ्कुमम् ऒप्पत्त–कुंकुम के समान हैं; नील् नीऱम् वाय्न्त–नीले रंग से भी युक्त; नीरिऩ् इऱङ्कुम्–जल में फैलनेवाली; पवळक्कोटि–प्रवाल-लताओं से; चुऱ्ऱित्त–आवृत; चॆम् पॊऩ् एय्न्त–लाल स्वर्णमय; पिऱङ्कुम्–शोभाशाली; चिकरम् पटर्–शिखरों के; मुऩ्ऱिल् तोऱुम्–अग्रभागों में; पिणाओटु–अपनी स्त्री-जातियों के साथ; उऱङ्कुम्–सोनेवाले; मकरङ्कळ्–मगरमच्छ; उयिर्प्पॊटु–निःश्वास के साथ; उणर्न्तु–जागकर; पेर–जाने लगे (ऐसा)। ४७

मैनाक के शिखर कुंकुम वर्ण के भी थे। उन पर नीला रंग भी फैला था। जल में फैलनेवाली प्रवाललताएँ उनको लपेटे थीं। उन पर लाल स्वर्ण जमा था और उनसे कान्ति छूट रही थी। उन शिखरों के तलों पर मगरमच्छ अपनी स्त्री-मच्छों के साथ जो रहे थे, अब वे जागकर इधर-उधर भागने लगे। ऐसे दृश्यों के साथ वह पर्वत निकल आ रहा था। ४७

कूऩ्शूऩ्मुदि रिप्पि कुरैक्क निरैत्त पाशि
वाऩ्शूऩ्मळै यॊप्प वयङ्गु पळिङ्गु मुऩ्ऱिल्
ताऩ्शूलि नाळिऱ् ऱहैमुत्त मुयिर्त्त शङ्गम्
मीऩ्शूळ्वरु मम्मुळु वॆण्मदि वीऱु कोऱ 48

वाऩ् चूल् मळै ऒप्प–आकाश के जलगर्भित मेघों के समान; निरैत्त पाचि–उस पर्वत पर जमी हुई परतों की काई; वयङ्कु–जिन पर रहती है उन; पळिङ्कु मुऩ्ऱिल्–स्फटिक पत्थर के आँगनों में; कूऩ्–वक्र; चूल् मुतिर्–पूर्ण-गर्भ; इप्पि–सीपियाँ; कुरैक्क–स्वर करती हैं; चङ्कम्–शंख; चूलि नाळिल्–प्रसव-समय; ताऩ् उयिर्त्त–जनित; तकै मुत्तम्–श्रेष्ठ मोतियों के साथ; मीऩ् चूळ् वरुम्–ताराओं से घिरे हुए; अ वॆण् मुळु मति–उस श्वेत पूर्ण चन्द्र का; वीऱु कोऱ–शान कम करते हुए। ४८

उस पर्वत के अग्रभाग के स्फटिक पत्थरों पर आकाश के जलगर्भित मेघों के समान काई फैली थी। उसमें रहकर वक्र रूप की गर्भिणी शुक्तियाँ नाद उठा रही थीं। शंखों के जनाये मोती बिखरे पड़े थे। इस साज में

वह पर्वत उस श्वेत पूर्णचन्द्र के शान को कम करता हुआ उठ रहा था, जिसके चारों ओर तारागण घेरे आ रहे हों। ४८

पल्लायिर मायिरङ् गाशिनम् बाडि मैक्कुम्
कल्लार्शिम यत्तडङ् गैत्तल नीण्डु काट्टित्
तौल्लार्हलि युट्पुह मूऴ्हि वयङ्गु तोऱ्ऱत्
तॅल्लामणि योट्ट मुहन्दॅऴु वानु मॅन्न 49

पल् आयिरम् आयिरम्–अनेक सहस्र-सहस्र; काचु इनम्–रत्नराशियाँ; पाटु इमैक्कुम्–सुन्दर रूप से कान्ति बिखेरती हैं; कल् आर् चिमय तटम्–प्रस्तरमय शिखर-तल; कै तलम्–(रूपी) हाथों को; नीण्टु काट्टि–बढ़ाते हुए; तौल् आर् कलियुळ्–प्राचीन समुद्र में; पुक मूऴ्कि–(मोती-संग्रह करने हेतु) गोते लगाकर; वयङ्कु तोऱ्ऱत्तु–उज्ज्वल रूप के; ऍल्ला मणि ईट्टम्–सारे मोतियों के समूहों को; मुकन्तु–लेते हुए; ऍऴुवातुम् ऍन्न–ऊपर उठ आनेवाले (गोताखोरों) के समान भी। ४९

उसके शिखर ऊपर बढ़े हुए थे और उन पर सहस्र-सहस्र रत्न चमक रहे थे। वे शिखर उसके हाथों के समान थे। इसलिए वह उस गोताखोर के समान लगा जो प्राचीन समुद्र में डूबकर अपने हाथों में अत्युज्ज्वल मणियों की राशियाँ लेते हुए बाहर निकल आ रहा हो। ४९

मनैयिर्पौलि माह नॅडुङ्गॉडि मालै येय्प्प
विनैयिर्पौलि वॅळ्ळरु वित्तिर डुङ्गि वीऴ
निनैविऱ्कड लूडॅऴ लोडु मुणर्न्दु नीङ्गाच्
चुनैयिर्पनै मीऩ्ऱिमि लोडु तॊडर्न्दु तुळ्ळ 50

निनैविल्–कुछ निश्चय करके; कटलूटु ऍऴलोटुम्–समुद्र से जब पर्वत उठ आया; मनैयिल् पौलि–भवनों में शोभा के साथ विद्यमान; माक नॅटुङ्कॊटि मालै–आकाश-व्यापी पताकाओं की श्रेणी; एय्प्प–के समान; विनैयिल् पौलि–पुण्य के समान रहनेवाले; वॅळ् अरुवि तिरळ्–श्वेत रंग के झरने; तूङ्कि वीऴ–ऊपर से नीचे बहते हैं; पनै मीन् तिमिलोटु–(जिनमें) पनै नामक मछलियाँ, तिमिल नामक मच्छों के साथ; नीङ्का–अटल रहती हैं; चुनैयिल्–उन पर्वतीय तालाबों से; उणर्न्तु–बात समझकर; तॊटर्न्तु तुळ्ळ–क्रम से उछलती हैं, ऐसे। ५०

वह पर्वत कोई संकल्प लेकर उठ आ रहा था। तब उस पर बहनेवाली सरिताएँ भवनों पर फहरानेवाली आकाशव्यापी पताकाओं की राशियों और सत्कर्मों के समान (जो निरन्तर क्रियाशील हैं) लगीं। तब वहाँ के स्रोतों से 'पनै' और 'तिमिल' नामक मच्छ स्थिति समझकर इधर-उधर तड़पकर भागने लगे। वे उन स्रोतों में बहुत दिनों से थे और उनसे कभी अलग नहीं हुए थे। ५०

कॉडुनालॉ डिरण्डु कुलप्पहै कुर्र् मूत्रुम्
शुडुञानम् वॅळिप्पड वुय्न्द तुयक्कि लार्बोल्
विडनाह मुळैत्तलै विम्म लुळन्दु वोड्गि
नॅडुनाळ् पॉरैयुर्र् वुयिर्प्पु निमिर्न्दु निर्प 51

कॉट्रम्–क्रूर; नालॉट् इरण्टु–चार के साथ दो (छः); कुल पकै–शत्रुसमूह; मून्रु कुर्रमुम्–तीन दोष; चुटु–दग्धकारी; ञातम्–ज्ञान के; वॅळिप्पट–प्रकट होने पर; उय्न्त–उससे बचे हुए; तुयक्किलार् पोल–निर्लिप्तों के समान; मुळैत्तलै–कन्दराओं में; नॅटु नाळ्–बहुत दिनों से; विम्मल् उळन्तु–दम घुटकर कष्ट उठाने से; वोङ्कि–शरीर सूझकर; पॉरै उर्र–बन्द रहे; विट नाकम्–विषैले सर्प के; उयिर्प्पु–साँस के; निमिर्न्तु निर्प–उत्थित होते (वह पर्वत उठा)। ५१

काम-क्रोधादि षड्रिपुओं को और त्रिदोषों (अज्ञान, अन्यथा ज्ञान और विपरीत ज्ञान) के दाहक, सच्चे ज्ञान-प्राप्त व निर्लिप्त महात्माओं के समान कन्दराओं में, जो बहुत दिन से दम घुटने से व्यथित पड़े थे, उन व्यालों के श्वास चलने लगे थे। यह साध्य करता हुआ वह पर्वत ऊपर उठा। ५१

ऍळुन्दोडि विण्णोडु मण्णोक्क विलङ्गु माडि
उळुन्दोडु कालत् तिडैयुम्बरि नुम्ब रोङ्गिक्
कॉळुन्दोडि निन्र् कॉळुङ्गुन्रै वियन्दु नोक्कि
अळुन्दामनत् तण्ण लिदॅन्गॉ लॅनाव यिर्त्तान् 52

इलङ्कुम् आटि–प्रकाशमय आईने पर; उळुन्तु ओट्टु–उड़द के दौड़ने के; कालत्तु इटै–काल में; ऍळुन्तु ओटि–ऊपर आकर जो फैला रहा; विण्णॊटु मण् ऑक्क–आकाश-भूमि को एक करके; उम्परिन् उम्पर ओङ्कि–आकाश पर सर्वत्र छाकर; कॉळुन्तु ओटि–शिखर फैलाकर; निन्र–जो स्थित रहा; कॉळुम् कुन्रै–बड़े पर्वत को; अळुन्ता मनत्तु–अदम्य-मन; अण्णल्–महिमावान ने; नोक्कि वियन्तु–देखकर विस्मित होकर; इतु ऍन् कॉल्–यह क्या है; ऍना–ऐसा; अयिर्त्तान्–संशय किया। ५२

एक शीशे पर उड़द का एक दाना जितनी कम देरी में लुढ़कता चला जायगा, उतनी देर के अन्दर मैनाक जल के ऊपर उठा और भूमि और आकाश में सर्वत्र व्याप गया। वह आकाश के ऊपर भी चला गया। अदम्य-मन महान् हनुमान ने इसको देखा, और विस्मित होकर संशय किया कि यह क्या है ?। ५२

नीर्मेर् पडर्नन् नॅडुङ्गुन्रु निमिर्न्दु निर्रल्
शीर्मेर् पडरा दॅनच्चिन्दै युणर्न्दु शॅल्वान्
वेर्मेर् पडवन् रलैकोळ्प्पड नूक्कि विण्णोर्
ऊर्मेर् पडरक् कडिदुम्बरि नूडु पाय्न्दान् 53

नीर् मेल्–समुद्र-जल पर; पटर्–व्याप्त; नल् नॆंटुम् कुन्ऱु–अच्छा और बड़ा पर्वत; निमिरन्तु निऱ्ऱल्–जो उन्नत खड़ा रहा वह काम; चीर् मेल् पटरातु–अच्छे उद्देश्य का नहीं होगा; ऎंन–ऐसा; चिन्तै उणर्न्तु–मन में सोचकर; चॆंल्वान्–जो जाता रहा वह; वेर् मेल् पट–निचले भाग को ऊपर; वन् तलै कीऴ् पट–बलवान सिर का भाग नीचे करके; नूक्कि–ढकेलकर; विण्णोर् ऊर् मेल् पटर–देवलोक पर व्यापने के विचार से; उम्परिन् ऊटु–अन्तरिक्ष में; कटितु पायन्तान्–वेग से चला। ५३

इस तरह उस पर्वत का सामने आकर तनकर खड़ा रहना अच्छे आशय का नहीं हो सकता। यह सोचकर हनुमान ने आगे बढ़कर उसे ऐसा ढकेल दिया कि उसका सिर नीचे की ओर और तल ऊपर की ओर आ गया। हनुमान आकाश में देवलोक की ओर उठा। ५३

उन्दामु तुलैन्दुयर् वेलै यॊळित्त कुन्ऱम्
शिन्दाकुल मुऱ्ऱु पिन्नरुन् दीर्वि लन्बाल्
वन्दोङ्गि याण्डोर् शिऱुमानिड वेड माहि
ऎंन्दायिदु केळॆंन्न विन्न विशैत्त दन्ऱे 54

उयर् वेलै–उत्तुंग (तरंगों वाले) समुद्र में; ऒळित्त कुन्ऱम्–छिपा रहा वह (मैनाक) पर्वत; उन्ता मुन्–उससे ढकेला जाकर; उलैन्तु–संकटग्रस्त होकर; चिन्ताकुलम् उऱ्ऱु–चिन्ताकुल हुआ; पिन्नरुम्–बाद भी; तीर्विल्–अक्षय; अन्पाल्–प्रेम से; आण्टु–वहाँ; ओर् चिऱु–एक छोटे; मानिट वेटम् आकि–मनुष्य का रूप ले; वन्तु ओङ्कि–आकर सीधे खड़े होकर; ऎंन्ताय्–मेरे तात; इतु केळ्–यह सुनो; ऎंन्न–ऐसा कहकर; इन्न इचैत्ततु–यों बोला। ५४

इस व्यवहार से मैनाक के शरीर में चोट और मन में टीस लगी। बहुत दिन से समुद्र के अन्दर छिपा-लुका पड़ा रहा वह प्रेम से प्रेरित होकर उठ आया था। अब उस अटल प्रेम के कारण वह एक छोटा मानव-रूप धरकर हनुमान के पास आकर खड़ा हुआ और बोला। मेरे तात! सुनो। ५४

वेऱ्ऱुप् पुलत्तो नलनैय विलङ्ग लॆंल्लाम्
माऱ्ऱुच् चिऱैयॆंन् ऱरिवच्चिर माण वोच्च
वीऱ्ऱुप् पडनू ऱियवेलैयिन् वेलै युय्त्तुक्
काऱ्ऱुक् किऱैव नॆंनैक्कात्तन नन्बु कान्द 55

ऐय–तात; वेऱ्ऱुप् पुलत्तोन्–शत्रु; अलन्–नहीं हूँ; अरि–इन्द्र ने; विलङ्कल् ऎंल्लाम्–सभी पर्वतों के; चिऱै माऱ्ऱु–पक्षों को दूर करो; ऎंन्ऱु–कहकर; वच्चिरम्–वज्रायुध को; माण ओच्च–खूब चलाया; वीऱ्ऱुप्पट–पक्ष अलग हों ऐसा; नूऱिय वेलैयिन्–काटा जब गया तब; काऱ्ऱुक्कु इऱैवन्–पवनदेव ने; अन्पु कान्त–प्रेम प्रकट करके; ऎंनै–मुझे; वेलै उय्त्तु–समुद्र में पहुँचाकर; कात्तनन्–बचाया। ५५

मित्र ! मैं विरोधी पक्ष का नहीं हूँ। जब इन्द्र ने पर्वतों के पक्षों को छेदने के लिए वज्र चलाया तब पवनदेव ने मुझ पर प्रेम प्रकट करके मुझे समुद्र में छोड़ा और मेरी जान बचायी। ५५

अऩ्ऩाऩरुङ् गादल ऩादलि ऩऩ्बु तूण्ड
ॲऩ्ऩालुऩक् कोण्डु शॅयर्कुरित् ताय तऩ्मै
पॊऩ्ऩार्शिह रत्तिड्रै यारिऩै पोदि यॆऩ्ड्रे
उऩ्ऩावुयर्न्¹ **दैऩुयर् विर्कु मुयर्न्द तोळाय् 56**

उयर्विर्कुम्–उन्नत से भी; उयर्न्त–बढ़े हुए; तोळाय्–कन्धों वाले; अऩ्ऩात्–उस (पवनदेव) के; अरुम् कातलऩ्–प्यारे पुत्र हो तुम; आतलिऩ्–इसलिए; अऩ्पु तूण्ट–प्रेम से प्रेरित होकर; ॲऩ्ऩाल्–अपने से; उऩक्कु–तुम्हारे प्रति; चॅयर्कु उरित्ताकिय–करणीय; तऩ्मै–काम; पॊऩ् आर् चिकरत्तु–स्वर्णमय शिखर-प्रदेश पर; इड्रै–थोड़ी देर; आरिऩै–विश्राम कर लो और; पोति–जाओ; ॲऩ्ड्रे–ऐसा; उऩ्ऩा–कहने के लिए ही; उयर्न्तेऩ्–समुद्र के ऊपर बढ़ आया। ५६

ऊँचे से ऊँचे कन्धों वाले ! तुम उस वायुदेव के प्यारे पुत्र हो। इसलिए प्रेम से प्रेरित होकर मैं तुम्हें कुछ करूँ वह यही है कि तुम मेरे स्वर्ण-भरे शिखर पर कुछ देर विश्राम करके जाओ। यही सोचकर मैं ऊपर आया हूँ। ५६

कार्मेहवण् णऩ्बणि पूण्डवऩ् कालिऩ् मैन्दऩ्
तेर्वाऩ्वरु हिऩ्ड्रऩऩ् शीदैयैत् तेव रुय्यप्
पेर्वाऩयल् शेड्रि यिदिड्पॆरुम् बेड्रि लॆऩ्ऩ
नीर्वेलैयु मिऩ्ऩ दुरैत्तदु नीदि निऩ्ड्राय् 57

नीति निऩ्ड्राय्–नीतिनिष्ठ; नीर् वेलैयुम्–जलसमृद्ध समुद्र; कार् मेक वण्णऩ्–मेघश्याम की; पणि पूण्टवऩ्–सेवा का व्रती; कालिऩ् मैन्तऩ्–और पवनकुमार; तेवर् उय्य–देवों को तारने हेतु; चीतैयै तेर्वाऩ्–सीता को खोजते हुए; पेर्वाऩ्–जानेवाला; वरुकिऩ्ड्रऩऩ्–आ रहा है; अयल् चेड्रि–उसके पास जाओ; इतिल्–इससे; पॆरुम् पेड्रु–बड़ा भाग्य; इल्–नहीं; ॲऩ्ऩ–ऐसा; इऩ्ऩतु–ये वचन; उरैत्ततु–बोला। ५७

हे नीतिनिष्ठ ! जल-भरे समुद्र ने भी मुझसे कहा कि मेघश्याम श्रीराम की सेवा में प्रवृत्त पवनकुमार देवों के रक्षणार्थ सीताजी की खोज में जाता हुआ आ रहा है। उसके पास जाओ। इससे बढ़कर कोई सौभाग्य नहीं है। ५७

नड्ड्रायिऩु नल्ल नमक्किव ऩॆऩ्ऩु नाडि
इड्ड्रेयिड्रै यॆय्दियि शॆऩ्ददु कोडि यॆऩ्ऩाल्

पॊऱ्ऱारहन् मार्बद मिल्लुळै वन्द पोदे
उऱ्ऱार्शॆयन् मऱ्ऱुमुण् डोवॆन्न वुऱ्ऱु रैत्तान् 58

पॊन् तार्–स्वर्णहारालंकृत; अकल् मार्प–विशाल वक्ष वाले; इवन्–यह; नल् तायितुम्–अच्छी माता से भी; नमक्कु नल्लन्–हमारे लिए हितकारी है; ऎन्ऱु नाटि–ऐसा मानकर; इऱ्ऱे–अभी; इऱ् ऎय्ति–कुछ देर आकर; ऎन्ताल् इचैन्ततु–मुझसे जो हो सकता है; कोटि–उसको ग्रहण करो; तम् इल् उळ्–अपने गृह में; वन्त पोते–आते ही; उऱ्ऱार्–घर का स्वामी; चॆयल् मऱ्ऱुम् उण्टो–दूसरा काम करेगा क्या; ऎन्न–ऐसा; उऱ्ऱु–पास आकर; उरैत्तान्–(मैनाक ने) कहा। ५८

मैनाक आगे बोला। स्वर्णहारालंकृत विशाल वक्ष वाले! मेरे सम्बन्ध में यह मानो कि 'यह माता से भी हितू है!' अभी थोड़ी देर मुझ पर विश्राम करो और मेरा अल्प आतिथ्य ग्रहण करो। अपने घर पर किसी को आते देखकर तभी उसका आतिथ्य करो —इससे बढ़कर कर्तव्य क्या है? । ५८

उरैत्तानुरै यालिव नॊरिल नॆन्ब दुन्नि
विरैत्तामरै वाणमुहम् विट्टुवि ळङ्ग वीरन्
शिरित्तानळ वेशिऱि दत्तिशैच् चॆल्ल नोक्कि
वरैत्ताणॆडुम् पॊऱ्कुडु मित्तलै माडु कॊण्डान् 59

वीरन्–प्रतापी; उरैत्तान् उरैयाल्–वक्ता के वचन से; इवन् ऊऱु इलन्–यह निर्दोष है; ऎन्पतु उन्नि–यह बात मानकर; विरै तामरै मुकम्–सुगन्धित कमल-सा मुख; वाळ् विट्टु विळङ्क–उज्ज्वल रूप से शोभायमान हो, ऐसा (प्रसन्न) हो करके; चिऱितु अळवे चिरित्तान्–थोड़ा मुस्कुराया; अ तिचै नोक्कि–उस दिशा की तरफ़; चॆल्ल–गया; ताळ् वरै–तलहटियों-सहित; नॆटुम् पॊन् कुटुमि–उन्नत स्वर्णमय शिखरों वाले उस पर्वत के; तलै माटु कॊण्टान्–ऊपरी भाग के पास गया। ५६

महावीर ने मैनाक का वचन सुना। समझ गया कि यह अहित करनेवाला नहीं है। उसके सुगन्धित कमल-सम आनन को अधिक शोभित करते हुए हनुमान के मुख में एक मन्दहास उत्पन्न हुआ। वह उस मैनाक की दिशा में जाकर तलहटियों-सहित उस मैनाक के स्वर्णमय शिखर-प्रदेश में रुका। ५९

वरुन्देनदु वॆन्ऱुणै वानवन् वैत्त कादल्
अरुन्देनिनि यादुमॆन् नाशै निरप्पि यल्लाल्
पॆरुन्देन्पिळि शारनिन् नन्बु पिणित्त पोदे
इरुन्देनुहर्न् दॆनिदन् मेलिनि यीव दॆन्नो 60

वरुन्तेन्–संकट नहीं पाऊँगा; अतु–वह; ऎन् तुणै–मेरे सहायक; वानवन्–देव (श्रीराम); वैत्त कातल्–मुझ पर जो रखते हैं, उस प्रेम का फल है; इनि–अब भी; ऎन् आचै निरप्पि अल्लाल्–अपनी कामना पूरी किये बिना; यातुम्

अरुन्तेन्–कुछ नहीं खाऊँगा; नित् अऩ्पु–तुम्हारा प्यार; पॆरुम् तेन् पिऴि–अति मधुर मधु-रस; चार–मिला है; पिणितृत पोते—उसने जब मुझे बद्ध किया तभी; इरुन्तेन् नुकर्न्तेन्–ठहरकर भुगतनेवाला बन गया; इति–अब; इतन् मेल्–इससे बढ़कर; ईवतु ॲऩ्तो–देने के लिए क्या रखा है। ६०

हनुमान ने कहा। मैं यात्रा से श्रांत नहीं होऊँगा। मेरे सहायक प्रभु श्रीराम की मुझ पर कृपा उसका कारण है। मेरी कामना पूरी नहीं हो तब तक कुछ नहीं खाऊँगा। तुम्हारे प्रेम ने बहुत ही प्रिय शहद के-से मधुर रस के साथ मुझे बद्ध कर लिया। उसी से मेरा ठहरना और आतिथ्य भोगना हो गया, समझो। इससे बढ़कर तुम दोगे क्या ? । ६०

मुऩ्बिऱ्चिऱन् दारिडै युळ्ळवर् कादन् मुऱ्ऱप्
पिऩ्बिऱ्चिऱन् दार्गुण नऩ्ऱिदु पॆऱ्ऱ याक्कैक्
कॆऩ्बिऱ्चिऱन् दायदॊ रूऱ्ऱमुण् डॆऩ्ऩ लामे
अऩ्बिऱ्चिऱन् दायदॊर् पूशनै यार्ह णुण्डे 61

मुऩ्पिऩ्–बल में; चिऱन्तारिटै–श्रेष्ठ लोगों पर; कातल् उळ्ळवर्–प्यार रखनेवाले; मुऱ्ऱ–प्रेम के बढ़ने से; पिऩ्पिऱ् चिऱन्तार्—पीछे श्रेष्ठ बन जाते हैं; कुणम् नऩ्ऱितु–यह गुण उत्तम ही है; पॆऱ्ऱ याक्कैक्कु–प्राप्त शरीर को; ॲऩ्पिल् चिऱन्तायतु–अस्थि से बढ़कर; ओर् ऊऱ्ऱम्–बलदायक; उण्टु–और कोई है; ॲऩ्ऩलामे–ऐसा कहा जा सकता है क्या; पूचनै–पूजा-सत्कार में; अऩ्पिऩ् चिऱन्तु आयतु–प्यार से बढ़कर कुछ; ऊऱ्ऱम्–बल; यार्कण्–किसके पास; उण्टु–है। ६१

धार्मिक बल में श्रेष्ठ महानों के प्रति प्रेम रखनेवाले पीछे जीवन में श्रेष्ठ बन जाते हैं। यह गुण अच्छा ही है। (प्रारब्ध-) प्राप्त इस शरीर को बल देनेवाला, अस्थि को छोड़कर और किसी को कह सकते हैं क्या ? वैसे ही वन्दना के लिए प्रेम से बढ़कर बल किसके पास है ? । ६१

ईण्डेकडि देहि विलङ्ग लिलङ्गै यॆय्दि
आण्डाऩडि मैत्तॊऴि लाऱ्ऱलि ऩाऱ्ऱ लुण्डे
मीण्डाऩुहर् वेऩुऩ् विरुन्दॆऩ वेण्डि मॆय्म्मै
पूण्डाऩवऩ् कट्पुलम् बिऱ्पड मुऩ्बु पोऩाऩ् 62

मॆय्म्मै पूण्टान्–सत्यवान; ईण्टे–अभी; कटितु एकि–शीघ्र जाकर; विलङ्कल् इलङ्कै–(त्रिकूट) पर्वत पर स्थित लंका में; ॲय्ति–जाकर; आण्टान्–मेरे स्वामी का; अटिमै तॊऴिल्–दास-योग्य काम; आऱ्ऱलिऩ्–पूरा करने से; आऱ्ऱल् उण्टे–दूसरा कार्य है क्या; मीण्टाल्–लौट आऊँ तब; नुऩ् विरुन्तु–तुम्हारी दावत; नुकर्वेन्–भोगूँगा; ॲऩ्ऩ–कहकर; वेण्टि–प्रार्थना करके; अवन् कट्पुलम्–मैनाक की दृष्टि; पिन् पट–बिछुड़ जाय ऐसा; मुऩ्पु पोऩाऩ्–आगे गया। ६२

सत्यसंध हनुमान ने आगे कहा। अभी त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका जाऊँ, अपने स्वामी श्रीराम की सेवा का कर्तव्य अदा करूँ, इसके

अतिरिक्त कोई कर्तव्य है क्या ? वह काम पूरा करके लौट आऊँ, तब मैं तुम्हारा आतिथ्य स्वीकार अवश्य करूँगा। फिर उसने मैनाक से विदा माँगी और वह इतनी तेज़ी से इतनी दूर आगे बढ़ गया कि मैनाक की दृष्टि पीछे रह गयी। ६२

शॆव्वान्कदि रुङ्गुळिर् तिङ्गळुन् देवर् वैहुम्
वॆव्वेरु विमानमु मीनॊंडु मेह मऱ्ऱुम्
ऍव्वायुल हत्तवु मीण्डि यिरिन्द तम्मिल्
ऒव्वादन वॊत्तिड वूऴिवॆङ् गालु मॊत्तान् 63

चॆव् वान् कतिरुम्–लाल गगन में शोभित किरणमाली; कुळिर् तिङ्कळुम्–और शीतल चन्द्र; तेवर् वैकुम्–देव जिनमें वास करते थे; वॆव्वेरु विमानमुम्–वे विविध विमान; मीनॊंटु–नक्षत्र; मेकम्–मेघ; मऱ्ऱुम् ऍवायवुम्–और अन्य सभी स्थानों में रहनेवाले; उलकत्तवुम्–लोकों के; ईण्टि–एक स्थान पर आकृष्ट होकर; इरिन्त तम्मिल्–फिर जो तितर-बितर हुए; ऒव्वातन–कभी जो पहले साथ नहीं थे; ऒत्तिट–उनको साथ करते हुए; ऊऴि वॆम् कालुम् ऒत्तान्–युगान्त की वायु के समान भी रहा। ६३

युगान्त के पवन के वेग में सब वस्तुएँ तितर-बितर हो जाती हैं और आपस में इस तरह मिल जाती हैं जैसे वे पहले नहीं मिली थीं। उसी पवन के समान हनुमान बढ़ता चला कि लाल गगन के किरणमाली और शीतल चन्द्र, नक्षत्र, देवों के यान और मेघ और अन्य सारे लोकों के सभी पदार्थ ऐसे विक्षिप्त हुए कि उनमें अभूतपूर्व सहवास हो गया। ६३

नीर्मेऱ्कडन् मेनिमिर् हिन्ऱ निमिर्च्चि नोक्काप्
पार्मेऱ्ऱवऴ् शेवडि पाय्नड वाप्प दत्तॆन्
तेर्मेऱ्कुदि कॊण्डव नित्तिरञ् जिन्दै शॆय्दान्
आर्मेऱ्कॊलॆन् ऱॆण्णि यरुक्कनु मैय मुऱ्ऱान् 64

नीर् मेल् कटल् मेल्–जल को अपने ऊपर धारण करनेवाले समुद्र पर; निमिर्किन्ऱ–ऊपर चलनेवाले (हनुमान) की; निमिर्च्चि नोक्का–ऊपर की स्थिति देखकर; तवऴ् चेवटि–घुटनों चलनेवाले लाल (मृदु) चरण; पार् मेल् पाय्–भूमि पर दौड़कर; नटवा पतत्तु–जब चले नहीं उस पर्व में; ऍन् तेर् मेल्–मेरे रथ पर; कुति कॊण्टवन्–उछलकर कूदा था; इ तिऱम्–यह इस तरह; आर् मेल् चिन्तै चॆय्तान् कॊल्–किस पर (झपटने का) संकल्प करता है; ऍन्ऱु–ऐसा; अरुक्कनुम् ऍण्णि–सूर्य ने भी सोचकर; एयम् उऱ्ऱान्–संशय किया। ६४

जलधि के ऊपर चलनेवाले हनुमान का वेग और उत्थान देखा अर्क ने। वह सोचने लगा कि यह वही है जो उस शैशव में, जबकि उसके मृदुल चरण भूमि पर नहीं चलने लगे थे, उछलकर मेरे रथ पर कूदा था। सूर्य

के मन में प्रश्न उठा कि यह अब किस पर कूदने का संकल्प लिये जाता है ? । ६४

वाळॊत्तॊळिर् वालॆयि ऱूळिऩ् मरुङ्गि मैप्प
नीळॊत्तुयर् तोळिऩ् विशुम्बु निऱैन्द मॆय्यिल्
कोळॊत्तवऩ् मेऩि विशुम्बिरु कूऱु शॆय्युम्
नाळॊत्तदु मेलॊळि कीऴिरु ळुऱ्ऱ ञालम् 65

वाळ् ऑत्तु–तलवार के समान; ऑळिर् वाल् ऍयिऱु–चमकनेवाले बड़े दाँत; मरुङ्कु–(दोनों) बाजुओं में; ऊळिऩ्–क्रम से; इमैप्प–प्रकाश छिटकाते हैं; नीळ् ऑत्तु–लम्बाई में सम; उयर् तोळिऩ्–उन्नत कन्धों के साथ; कोळ् ऑत्तवऩ्–(राहु या केतु के) ग्रह के समान; मेऩि–(हनुमान का) शरीर; विचुम्पु निऱैन्त–जो आकाश भर में व्यापा; मॆय्यिल्–उस प्रकार में; विचुम्पु–आकाश को; इरु कूऱु चॆय्युम्–दो भागों में विभक्त जिस दिन किया गया; नाळ् ऑत्ततु–उस दिन के समान लगा; मेल् ञालम्–उसके ऊपर के लोकों को; ऑळि–प्रकाश; कीऴ् ञालम्–नीचे के लोकों को; इरुळ्–अन्धकार; उऱ्ऱ–प्राप्त हो गया। ६५

हनुमान के दाँत तलवार के समान थे। और वे दोनों बाजुओं में चमक रहे थे। उसकी भुजाएँ परस्पर सम थीं और उसके कन्धे ऊपर उठे हुए थे। उसका शरीर (राहु या केतु के) ग्रह के समान था। ऐसा वह आकाश भर में छा गया था। इसलिए आकाश को दो भागों में विभक्त करनेवाले काल के समान लगा। उसके ऊपर के लोक प्रकाश से भरे और नीचे के लोक अन्धकार से भर गये। ६५

मूऩ्ऱुऱ्ऱ तलत्तिडै मुऱ्ऱिय तुऩ्बम् वीप्पाऩ्
एऩ्ऱुऱ्ऱु वन्दाऩ् वलिमॆय्म्मै युणर्त्तु नीयॆऩ्
ऱाऩ्ऱुऱ्ऱ वाऩोर् कुऱैनेर वरक्कि याहित्
तोऩ्ऱुऱ्ऱु निऩ्ऱाळ् शुरशॆप्पॆयर्च् चिन्दै तूयाळ् 66

आऩ्ऱु–भीड़ लगाये; उऱ्ऱ–आगत; वाऩोर्–देवों ने; मूऩ्ऱु उऱ्ऱ तलत्तिटै–तीनों (स्वर्ग, मध्य, पाताल) तलों में; मुऱ्ऱिय तुऩ्पम्–प्रवृद्ध दुःख को; वीप्पाऩ्–नाश करने के लिए; एऩ्ऱुऱ्ऱु–दायित्व लेकर; वन्ताऩ्–जो आया है; वलि मॆय्म्मै–उसके बल की स्थिति को; नी उणर्त्तु–तुम बताओ; ऍऩ्ऱु–ऐसा; कुऱै नेर–प्रार्थना की तब; चुरचॆ पॆयर्–सुरसा नाम की; चिन्तै तूयाळ्–पवित्रमना; अरक्कि आकि–राक्षसी बनकर; तोऩ्ऱुऱ्ऱु–प्रकट होकर; निऩ्ऱाळ्–खड़ी रही। ६६

तब देव उधर एकत्र हो आये। उन्होंने सुरसा से कहा कि यह हनुमान तीनों लोकों की ग्लानि दूर करने का दायित्व अपनाकर आया है। उसकी सच्ची शक्ति की परीक्षा लो और हमको बताओ। इस पर सुरसा नाम की नेक मन वाली देवी एक राक्षसी का रूप धरकर मारुति के सामने आकर प्रकट हुई। (सुरसा को वाल्मीकि नागमाता कहते हैं।)। ६६

पेऴ्वायॊ ररक्कि युरुक्कॊडु पॅट्पि नोङ्गिक्
कोऴ्वायरि यिऩ्गुलत् तायहॊडुङ् गूऱ्ऱु मुट्क
वाऴ्वायॆऩक् कामिड मायवरु वायहॊ लॆऩ्ऩा
नीऴ्वाय्विशुम् बिऱ्ऱऩ दुच्चि नॆरुक्कि निऩ्ऱाऴ् 67

पेऴ् वाय्–वड़े मुख की; ओर् अरक्कि उरु–एक राक्षसी का रूप; कॊंडु–लेकर; पॅट्पित् ओङ्कि–शान के साथ ऊँचा उठकर; कोऴ् वाय्–पराक्रमी; अरियित् कुलत्ताय्–वानरकुलज; कॊट्टुम् कूऱ्ऱुम्–क्रूर यम को भी; उट्क वाऴ्–भयभीत करते हुए रहनेवाले; वाय् ऍऩक्कु–मुख वाली मुझे; आमिटमाय्–आमिष भोजन बनकर; वरुवाय् कॊल्–आये क्या; ऍऩ्ऩा–ऐसा कहती हुई; तऩतु उच्चिवाय्–अपने सिर से; नीऴ् विचुम्पित् नॆरुक्कि–विशाल आकाश को दबाते हुए; निऩ्ऱाऴ्–खड़ी रही। ६७

वहुत ही बड़े मुख के साथ राक्षसी का रूप लेकर वह शान से खड़ी हुई और हनुमान से बोली। हे बलवान वानरकुलोद्भव! आओ! यम को भी भयभीत करनेवाले मेरे मुख का आमिष बनकर आये हो? —यह कहकर अपने सिर को आकाश से लगाती हुई स्थित हो गयी। ६७

तीयेयॆऩ लाय पशिपप्पिणि तीर्त्तल् शॆय्वाऩ्
आयेविरै वुऱ्ऱॆऩै यण्मिऩै वण्मै याळ
नीयेयिऩि वन्दु निणङ्गॊळ् पिणङ्गॆ यिऱ्ऱिऩ्
वायेपुहु वाय्वऴि मऱ्ऱिलै वाऩि लॆऩ्ऱाळ् 68

वण्मैयाळ–दानशील; तीये ऍऩलाय–आग ही कहो, ऐसी; पचिप्पिणि–भूख के रोग को; तीर्त्तल् चॆय्वाऩ् आये–दूर करनेवाले ही बनकर; विरैवुऱु–शीघ्रता अपनाकर; ऍऩै–मेरे; अण्मिऩै–पास आये; इऩि–आगे भी; नीये–तुम ही; वन्तु–आकर; निणम् कॊऴ्–मांसयुक्त; पिणङ्कु ऍयिऱ्ऱित्–वेढंगे रूप से रहनेवाली दन्त-पंक्तियों के; वाये–मुख में ही; पुकुवाय्–घुस जाओ; वाऩित्–आकाश में; मऱ्ऱ वऴि–दूसरा मार्ग; इलै ऍऩ्ऱाळ्–नहीं है कहा। ६८

वड़े उपकारी दाता! आग ही कहने योग्य है मेरी बुभुक्षा! उस रोग को शान्त करने के निमित्त तुम त्वरा के साथ मेरे पास आये हो! और भी आप ही आप इस मुख में आ जाओ, जिसके दाँत पंक्तियों में नहीं हैं और जिसके दाँतों के बीच मांस फँसा हुआ है! आकाश में और कोई रास्ता नहीं, जिससे तुम बच निकलो। ६८

पॆण्बालॊरु नीपशिप् पीऴै यॊरुक्क नॊन्दाय्
उण्बायॆऩ दाक्कैयै यानुद वऱ्कु नेर्वल्
विण्बालवर् नायह नेव लिऴैत्तु मीण्डाल्
नण्बालॆऩच् चॊल्लिऩ नल्लऱि वाळ नक्काळ् 69

नल् अऱिवाळऩ्–सद्बुद्धि के स्वामी (ने); नी ऑरु पॅण्पाल्–तुम स्त्री-जाति हो; पचि पीळै–भूख का कष्ट; ऑरुक्क–सताने से; नॊन्ताय्–पीड़ित हो; विण्पालवर्–स्वर्गवासियों के; नायकऩ्–नायक श्रीराम की; एवल्–आज्ञा; इळैत्तु–पूरा करके; मीण्टाल्–लौट आऊँ तो; ऎन्तु आक्कैयै–अपने शरीर को; यान्–मैं; उण्पाय् ऎन्ऩ–खाओ कहकर; नण्पाल्–मित्रता के साथ; उतवऱ्‌कु नेर्वल्–देने को सम्मत हो जाऊँगा; ऎन्ऩ चॊल्लिऩऩ्–ऐसा कहा हनुमान ने; नक्काळ्–सुरसा हँसी। ६६

अच्छे बुद्धिमान हनुमान ने इसके उत्तर में कहा कि तुम स्त्री-जाति हो! बेचारी तुम्हें भूख का दुःख सता रहा है और तुम पीड़ित हो रही हो। देवों के नायक श्रीराम की आज्ञा पूरा करके लौट आऊँ तब मैं अपने शरीर को स्नेह के साथ तुम्हें खाने के लिए सौंप दूँगा। यह सुनकर सुरसा हँसी। ('हनुमान यह कहकर हँसा' का भी पाठ है।)। ६९

कायन्देळुल	हङ्गळङ्	गाणनिऩ्	याक्कै	तऩ्ऩै
आऱ्ऩ्देपशि	तीर्वॅऩ्	दाणैयॅऩ्	ऱऩ्ऩळ्	शॊऩ्ऩाळ्
ओर्न्दानुमु	वन्दॊरु	वेऩ्ऩि	दूऴिल्	पेऴ्वाय्च्
चेर्न्देहु	हिऩ्ऱे	ऩॆऩैयामॆऩिऱ्	ऱिऩ्ऱि	ऎऩ्ऱाऩ् 70

अऩ्ऩळ्–उसने; एऴुलकङ्कळुम् काण–सातों लोकों के देखते; काय्न्तु–कोप दिखाकर; निऩ् याक्कै तऩ्ऩै–तुम्हारे शरीर को; आर्न्ते पचि तीर्वॆऩ्–खाकर ही भूख मिटाऊँगी; इतु आणै–यह निश्चित है; ऎऩ्ऱु चॊऩ्ऩाळ्–ऐसा कहा; ओर्न्तातुम्–उसका आशय जिसने ताड़ लिया, उसने भी; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ऑरुवेऩ्–बचकर नहीं जाऊँगा; निऩतु–तुम्हारे; ऊऴिल्–बेढंगे; पेऴ् वाय्–बड़े मुख में; चेर्न्तु एकुकिऩ्ऱेऩ्–घुसकर जाऊँगा; आम् ऎऩिल्–हो सका तो; ऎऩ्ऩै तिऩ्ऱिटु–मुझे खा लो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ७०

सुरसा ने कहा कि मैं तुम्हारे शरीर को सातों लोकों के देखते कोप के साथ खाकर ही अपनी भूख मिटाऊँगी। यह निश्चित है। हनुमान ने उसका मन ताड़ लिया। उत्साह के साथ कहा कि ठीक है। मैं हटकर नहीं चलूँगा। तुम्हारे बेढंगे और बड़े मुख से होकर ही जाऊँगा। हो सके तो मुझे खा लो। ७०

अक्कालै	यरक्कियु	मण्ड	मत्तन्द	माहप्
पुक्कानिरै	याद	पुळैप्पॅरु	वाय्ति	ऱन्दु
विक्कादुवि	ऴुङ्गनिऩ्	ऱाळदु	नोक्कि	वीरऩ्
तिक्कानॆऱि	वाय्शिऱि	दाम्वहै	शेणि	ऩॊण्डाऩ् 71

अक्कालै–उस समय; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; अण्टम् अत्तऩ्तमाक पुक्काल्–अनन्त अण्ड भी घुसें तो; निऱैयात पुऴै–न भरनेवाले द्वार के; पॅरुवाय् तिऱन्तु–बड़े मुख को खोलकर; विक्कातु–विना हिचकी लिये ही; विऴुङ्क–निगलने के लिए; निऩ्ऱाळ्–खड़ी रही; वीरऩ्–महावीर ने; अतु नोक्कि–वह देखकर; तिक्काम्

नॆरि–दिगन्त तक व्याप्त; वाय्–उसके मुख को; चिरितु आम् वकै–छोटा (अपर्याप्त) बनाते हुए; चेणिन्–आकाश में; नीण्टान्–बड़ा रूप लिया। ७१

तब सुरसा ने अपना मुख इतना बढ़ाया कि अगणित अण्ड घुसें तो भी वह पूर्ण न हो। बिना हिचकी के ही हनुमान को निगल लेने के लिए वह सन्नद्ध खड़ी रही। वीर ने देखा और दिगंतों में फैले हुए उसके मुख-विवर को छोटा बनाते हुए (यानी उससे बढ़कर) वह आकाश में प्रवृद्ध हुआ। ७१

नीण्डा नुडने शुरुङ्गानिमिर् वायि डत्तिन्
ऊण्डा नॆनवुऱ् ऱोरुयिर्प्पुयि राद मुन्नम्
मीण्डा नदुकण् डन्नर्विण्णुऱै वोर्ह ळॆम्मै
आण्डा निवनॆन् ऱलर्तूयॆनॆडि दाशि शॊन्नार् 72

नीण्टान्–जो बड़ा हुआ; उटने चुरुङ्का–तुरन्त छोटा बना; निमिर् वायिटत्तिन्–बढ़े हुए सुरसा के मुखविवर में; ऊण् तान् ऎन्न–ग्रास के समान; उऱ्ऱु–प्रविष्ट होकर; ओरु उयिर्प्पु–एक श्वास के; उयिरात मुन्नम्–निकलने से पहले ही; मीण्टान्–बाहर आ गया; विण् उऱैवोर्कळ्–आकाशवासी देवों ने; अतु कण्टत्तर्–उसको देखकर; इवन् ऎम्मै आण्टान्–इसने हमको पालित कर लिया; ऎन्ऱु–कहकर; अलर् तूय्–पुष्प बरसाकर; नॆटितु–पुष्कल; आचि चॊन्नार्–आशीर्वाद दिये। ७२

ऐसा बड़ा रूप लेकर हनुमान झट छोटा बन गया और सुरसा के बहुत बड़े मुख में उसके ग्रास के रूप में घुसा और साँस भरने से पहले ही बाहर आ गया। देवों ने यह अद्भुत कार्य देखा और कहा कि इसने हमें पालित कर लिया। उन्होंने उस पर फूल बरसाये और आशीर्वाद के वचन कहे। ७२

मॆन्मेऱ् पडर्मॆय् यिनतानवळ् वीक्क नीङ्गित्
तन्मे नियळा यवळ्तायिनु मन्बु ताऴ
ऎन्मेन् मुडिया दनवॆन्ऱिनि देत्ति निन्ऱाळ्
पॊन्मे नियनु मिनिदाशि पुनैन्दु पोनान् 73

मॆन् मेल् पटर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; मॆय्यिनतु–शरीर वाली; आनवळ्–जो बनी थी, वह; वीक्कम् नीङ्कि–सूजन छोड़कर; अवळ् तन् मेनियळाय्–अपना निजी रूप लेकर; तायिनुम् अन्पु ताऴ–माता से भी अधिक वात्सल्य के साथ; मेल् मुटियातन–आगे तुमसे जो न हो सके ऐसा; ऎन्–क्या है; ऎन्ऱु–कहकर; इनितु एत्ति–सुखद रूप से प्रशंसा करती; निन्ऱाळ्–खड़ी रही; पॊन् मेनियनुम्–स्वर्णवर्ण हनुमान भी; इनितु–सुखद; आचि पुनैन्तु–आशीर्वचन कहकर; पोनान्–चला। ७३

सुरसा का शरीर उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। अब वह मोटापा कम करके यथावत बनी। माता से भी अधिक स्नेह के साथ उसने हनुमान को

साधुवाद दिया कि आगे तुमसे जो न हो सकेंगे, ऐसे कौन कार्य हैं? उसने हनुमान को मुदित करते हुए उसकी संस्तुति की। स्वर्णवर्ण हनुमान भी उसको आशीर्वाद देकर (या उसके आशीर्वाद लेकर) आगे चला। ७३

कीदङ्ग ळिशैत्ततर् कित्तरर् कीद नितुर्
पेदङ्ग ळियम्बित्तर् पेदैय राडन् मिक्क
पूदङ्ग डौडर्न्दु पुकऴ्न्दन्न पूशु रेशर्
वेदङ्ग ळियम्बित्तर् तॆन्ऱल् विरुन्दु शॆय्य 74

तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन के; विरुन्तु चॆय्य–दावत (आनन्द) देते; कित्तरर्–किन्नर लोगों ने; कीतङ्कळ् इचैत्ततर्–गीत गाये; पेतैयर्–स्त्रियों ने; कीतम् नितुर् पेतङ्कळ्–गीतों के भेद; इयम्पित्तर्–गाये; आटल् मिक्क पूतङ्कळ्–नर्तनशील भूत; तॊटर्न्तु–लगातार; पुकऴ्न्तत्न–स्तुति करते रहे; पूचुरेचर्–भूसुरेशों ने (ब्राह्मण-श्रेष्ठों ने); वेतङ्कळ्–वेदमन्त्र; इयम्पित्तर्–उच्चारे (मन्त्र-आशीर्वाद कहे)। ७४

मलयपवन ने हनुमान को आनन्दित किया। किन्नर गाये। स्त्रियों ने भेद-प्रभेद के साथ गीत गाये। नर्तनसमर्थ भूतों ने उनके अनुरूप प्रशंसा के वचन उच्चारे। भूसुरों ने वेदमन्त्र उच्चारण कर आशीर्वाद दिया। ७४

मन्दार मुन्दु महरन्द मणन्द वाडै
शॆन्दा मरैवाण् मुहत्तुच् चॆऱिवेर् शिदैक्कत्
तन्दा मुलहत् तिडैविज्जैयर् पाणि ताळाक्
कन्दार वीणैक्कळि शॆज्जॆविक् कादु नुङ्ग 75

मन्तारम् उन्तु–मन्दार-निःसृत; मकरन्तम् मणन्त–मकरन्द-सुगन्धित; वाटै–उदीची हवा ने; चॆन्तामरै–लाल कमल-सम; वाळ् मुकत्तु–(हनुमान के) उज्ज्वल मुख पर; चॆऱि–बहुत रहनेवाले; वेर् चितैक्क–स्वेदकणों को दूर किया; विज्चैयर्–विद्याधरों के; तम् ताम् उलकत्तिटै–अपने-अपने लोक में रहकर; पाणि ताळा–तालबद्ध; कन्तारम्–गान्धारस्वरकारी; वीणैक् कळि–वीणा का मधु (आनन्द); चॆम् चॆवि कातु–हनुमान के श्रेष्ठ श्रवणेन्द्रियों ने; नुङ्क–सुना (सुनते हुए हनुमान गया)। ७५

मन्दार-सुगन्ध-वाही पराग से युक्त पवन ने (हनुमान के) अरुणकमल-सम और उज्ज्वल मुख में रहे स्वेदकणों को सुखाया। विद्याधर लोग अपने-अपने लोक में स्थित होकर ताल-बद्ध गांधार राग में वीणा के सहारे गा रहे थे। हनुमान अपने कानों में उस मधुर-गीत मधु का ग्रहण करता हुआ चला। ७५

वॆङ्गार् निऱप्पुणरि वॆऱेयु मीत्तुऱप्
पॊङ्गार् कलिप्पुत्त ऱरप्पॊलिव देपोल्

इङ्गार् कडत्तिरॅंतै यॅऩ्ऩा वॅळुन्दाळ्
अङ्गार तारॅपिऱि दालाल मऩ्ऩाळ् 76

पिऱितु–अन्य एक; आलालम् अऩ्ऩाळ्–हलाहल-समाना; अङ्कारतारॅ–अंगारतारा नाम की राक्षसी; ॲंतै–मुझे; इङ्कु कटत्तिर्–उपेक्षित करके जानेवाले; आर्–कौन हो; ॲऩ्ऩा–कहती हुई; अ पॉङ्कु आर्कलि पुऩल्–उस उमंगभरे समुद्र के जल के; वेऱ्ऱेयुम् ऑऩ्ऱु–दूसरे ही एक; कार् निऱ–काले रंग के; पुणरि–समुद्र को; तर–पैदा करने से; पॉलिवते पोल्–विद्यमान उसके समान; ॲळुन्ताळ्–(उस समुद्र में से) उठ आयी। ७६

तव हलाहल-समाना अंगारतारा नाम की राक्षसी बाधा बनकर आयी। यहाँ कौन है मुझे पार कर जानेवाला ? वह समुद्र के ऊपर ऐसे उठ आयी मानो उमड़ते हुए उस समुद्र ने एक और काले समुद्र को पैदा कर दिया हो। (इसका नाम मूल में सिंहिका है।)। ७६

कादक् कडुङ्गुऱि कणक्किरुदि कण्णाळ्
पादच् चिलम्बिऩॉलि वेलैयॉलि पम्ब
वेदक् कॉळुञ्जुडरै नाडिनॅऱि मेऩाळ्
ओदत्ति नोडुमदु कैडवरै यॉत्ताळ् 77

कात कणक्कु–दस मील के हिसाब की; इऱुति–दूरी के अन्त तक; कटुम् कुऱि कण्णाळ्–वेग से देखनेवाली आँखों-सहित वह; पात चिलम्पिऩ् ऑलि–पायलों की ध्वनि के; वेलै ऑलि–समुद्र-स्वर के समान; पम्प–स्वरित होते; मेल् नाळ्–प्राचीन दिनों में; वेत कॉळुम् चुटरै–वेदान्त-विषय श्रीविष्णु को उद्देश्य करके; नॅऱि नाटि–मार्ग अन्वेषण करते हुए; ओतत्तिऩ् ओटु–समुद्र में जो दौड़े; मतु कैटवरै–उन मधु-कैटभों के; ऑत्ताळ्–समान थी। ७७

उसकी दृष्टि इतनी तीव्र थी कि वह एक 'काद' (दस मील) की दूरी तक की वस्तुओं को पहचान सके। उसकी पायल की ध्वनि समुद्र-गर्जन के समान उठ रही थी। वह उन मधु-कैटभों के समान थी, जो प्राचीन समय में वेदान्त के विषय श्रीविष्णु की खोज में समुद्र-मार्ग में दौड़े आये थे। ७७

तुण्डप् पिऱैत्तुणै यॅऩच्चुड रॅयिऱ्ऱाळ्
कण्डत् तिडैक्करै युडैक्कडवुळ् कैम्मा
मुण्डत् तुरित्तवुरि यान्मुळरि वन्दान्
अण्डत् तिऩुक्कुऱै यमैत्तऩेय वायाळ् 78

पिऱै तुणै तुण्टम् ॲत–चन्द्र के दो खण्डों के समान; चुटर्–प्रकाश छिटकानेवाले; ॲयिऱ्ऱाळ्–वक्र दाँतों से युक्त थी; कण्टत्तु इटै–कण्ठ में; करै उटै–(विष) कलंकसहित; कटवुळ्–देव शिवजी; कैम्मा मुण्टत्तु–शुंडी के शरीर से; उरित्त

उरियाल्–उधेड़ी गयी खाल से; मुळरि वन्तान्–कमलभव ब्रह्माजी द्वारा सृष्ट; अण्टत्तिन्कुकु–अण्ड के लिए; उऱ्ऱ् अमैत्तत्तैय–एक आवरण बनाया गया हो ऐसे; वायाळ्–मुखविवर वाली। ७८

उसके दो खड्गदाँत थे, जो चन्द्र के दो खण्डों के समान थे। उसका मुख बहुत बड़ा था और वह भूमि पर आच्छादित उस गज-चर्म के समान था जिसको नीलकण्ठ शिव ने गज से उधेड़कर भूमि को ढँक दिया हो। ७८

निन्ऱा णिमिर्न्दलै नडुङ्गडलि नीर्दन्
वन्ऱा ळलम्बमुडि वान्मुहडु वौव
अन्ऱाय् तिऱत्तव नऱत्तै यरुळोडुम्
तिन्ऱा ळौरुत्तियिव ळॆन्बदु तॆरिन्दान् 79

नॆटुम् अलै–लम्बी लहरों के; कटलिन् नीर्–समुद्र का जल; तन् वन् ताळ् अलम्प–उसके कठोर पैरों को धो रहा था; मुटि–सिर; वान् मुकटु–आकाश की चोटी से; वौव–टकरा गया; निमिर्न्तु निन्ऱाळ्–ऊँची होकर खड़ी रही; आय् तिऱत्तवन्–विवेकपूर्ण हनुमान; अन्ऱु–तब; इवळ्–यह; अऱत्तै–धर्म को; अरुळोटुम्–दया के साथ; तिन्ऱाळ् ऑरुत्ति–भक्षण कर लिया (जिसने) ऐसी एक है; ऎन्पतु–यह बात; तॆरिन्तान्–ताड़ ली। ७६

बहुत बड़ी तरंगों वाला समुद्र उसके सबल पैरों को धो रहा था। उसका सिर आकाश की चोटी को छू रहा था। इस तरह आकर जो खड़ी हुई उसको बुद्धिमान हनुमान ने देखा तो समझ लिया कि यह धर्म-दया की भक्षिका है! । ७९

पेळ्वा यहत्तलदु पेरुलह मूडुम्
नीळ्वा नहत्तिनिडै येहुनॆऱि नेरा
आळ्वा नणुक्कनव ळाळ्पिल वयिऱ्ऱैप्
पोळ्वा निनैत्तिनैय वाय्मॊऴि पुहन्ऱान् 80

आळ्वान्–स्वामी श्रीराम के; अणुक्कन्–अन्तरंग सेवक ने; पेर् उलकम् मूटुम्–विशाल विश्व के आच्छादक; नीळ् वानकत्तिन् इटै–विस्तृत आकाश में; पेळ् वाय् अकत्तु अलतु–इसके बड़े मुखविवर से होकर नहीं तो; एकुम् नॆऱि–गम्य मार्ग; नेरा–न पाकर; अवळ् आळ् पिल वयिऱ्ऱै–उसके गहरे बिल के समान पेट को; पोळ्वान् निनैत्तु–चीरने का विचार करके; इनैय वाय्मॊऴि–ये वचन; पुकन्ऱान्–कहे। ८०

स्वामी श्रीराम के अन्तरंग सेवक हनुमान ने यह भी जान लिया कि विशाल विश्व के आच्छादक आकाश में आगे जाने का अंगारतारा के मुख-विवर के अलावा कोई मार्ग नहीं है। उसने निश्चय कर लिया कि उसके

विल-सम गहरे पेट को चीरकर जाना पड़ेगा। उसने अंगारतारा से यों कहा। ८०

शाया वरन्दळुवि नायतळिय पिन्नुम्
ओया वुयरन्दविशै कण्डुमुणर् किल्लाय्
वाया लळन्दुनॆडु वान्वळि यडैत्ताय्
नीयारै यॆन्नैयिव णिन्ऱनिलै यॆन्ऱान् 81

चाया वरम् तळुवित्ताय्–छाया (द्वारा) ग्रहण-शक्ति के वर से तुमने मुझे खींच लिया; तळिय पिन्नुम्–खींचने के बाद भी; ओया उयर्न्त–जो थमता नहीं पर बढ़ता है, वह; विचै कण्टुम्–वेग देखकर भी; उणर्किल्लाय्–नहीं समझीं (मेरी शक्ति); नॆटु वान्–बड़े आकाश में; वायाल् अळन्तु–मुख फैलाकर; वळि अटैत्ताय्–मार्ग अवरोध किया; नी यारै–तुम कौन हो; इवण् निन्ऱ निलै–इधर खड़े होने का कारण; ऍन्नै–क्या है; ऍन्ऱान्–पूछा (हनुमान ने)। ८१

तुम्हें किसी की छाया पकड़कर उसे खींच लेने का वर प्राप्त है। उसके बल से तुमने मुझे खींच लिया। तब भी मेरा वेग कम न हुआ। उसको देखकर भी तुम मेरा बल सोच नहीं सकीं। लम्बे आकाश को अपने मुख से व्याप्त कर मार्ग रोक दिया। कौन हो तुम? यहाँ खड़े होने का कारण क्या है? हनुमान ने यह प्रश्न किया। ८१

पॆण्बा लॆनक्करुदु पॆऱ्ऱियॊळि युऱ्ऱाल्
विण्बा लवर्क्कुमुयिर् वीडुवदु मॆय्यॆ
कण्बा लडुक्कवुयर् कालन्वरु मेनुम्
उण्बा लरुत्तियदॊ ळिप्परि दॆन्ऱाळ् 82

पॆण्पाल्–स्त्री-जात; ऍन करुतु पॆऱ्ऱि–ऐसा मानने का भाव; ऒळि–त्याग दो; उऱ्ऱाल्–मैं सामने आयी तो; विण्पाल् अवर्क्कुम्–व्योमलोकवासियों का भी; उयिर् विटुवतु–प्राण त्यागना; मॆय्यॆ–ध्रुव है; उयर् कालन्–बलवर्धित यम भी; कण् पाल् अटुक्क–मेरी आँख में पास; वरुमेनुम्–आया तो; उण्पाल् अरुत्तियतु–खाने की इच्छा; ऒळिप्पतु अरितु–निवारण करना कठिन है; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८२

अंगारतारा ने उत्तर दिया कि तुम मुझे स्त्री समझने की बात छोड़ दो। मेरे साथ टकरायें तो देवगणों की जानें भी चली जायँगी, यह निश्चित है। बल में बढ़ा हुआ यम भी मेरी आँखों में पड़ जाय तो उसे खा लेने की मेरी इच्छा दुर्निवार है। ८२

तिऱन्दाळ् वयिऱ्ऱिन्वळि यण्णलिडै शॆन्ऱान्
अऱन्दा नरऱ्ऱिय दयर्त्तमर रॆय्त्तार्
इऱन्दा नॆनक्कॊडा रिमैप्पदनिन् मुन्नम्
पिऱन्दा नॆनप्पॆरिय कोळरि पॆयर्न्दान् 83

तिऱन्ताळ्-(उसने अपना मुख) खोला; अण्णल्-महिमावान; इटै वऴि-उससे होकर; वयिऱ्ऱिन् चॆन्ऱान्-पेट में गया; अऱम्-धर्मदेवता; अयर्त्तु-थकित होकर; अरऱ्ऱियतु-रोया; इऱन्तान् ऍन्त कॊट्टु-मर गया समझ लेकर; अमरर् ऍय्त्तार्-देवगण व्याकुल हुए; इमैप्पतनिन् मुन्नम्-पलक मारने के अन्दर; पिऱन्तान् ऍन्न-जन्म लिये, ऐसा कहने योग्य रीति से; पॆरिय कोळरि-महान् सिंह; पॆयर्न्तान्-बाहर आया। ८३

यह कहकर अंगारतारा ने अपना मुख खोला। महिमावान हनुमान उस मुख में घुसकर उसके पेट में चला गया। तब धर्मदेवता स्वयं डरकर श्रान्त हुआ और रोने लगा। देव लोग यह सोचकर थकित हुए कि हनुमान मर गया है। पर पलक मारने के अन्दर बली सिंह, हनुमान मानो दूसरा जन्म लिया हो ऐसा, बाहर आ गया। ८३

कळ्वा यरक्किकद ऱक्कुडर् कणत्तिल्
कॊळ्वार् तडक्कैयन् विशुम्बिन्मिशै कॊण्डान्
मुळ्वाय् पॊरुप्पिन्मुऴै यॆय्दिमिह नॊय्दिन्
उळ्वा ऴरक्कॊडॆऴु तिण्कलुऴ नॊत्तान् 84

कळ् वाय् अरक्कि-ताड़ी पीनेवाले मुख की वह राक्षसी; कतऱ-चिल्लायी; वार् कुटर्-लम्बी आँतों को; कॊळ् तटक्कैयन्-जिनमें ले लिया था, ऐसे विशाल हाथों वाला; कणत्तिल्-एक पल में; विचुम्पिन् मिचै कॊण्टान्-आकाश पर चला गया; मुळ् वाय्-काँटों-सहित; पॊरुप्पिन् मुऴै-पर्वत-कन्दरा में; ऍय्ति-घुसकर; मिक नॊय्तिन्-बहुत सुगम रीति से; उळ् वाऴ्-(कन्दरा के) अन्दर रहनेवाले; अरक्कॊटु ऍऴु-साँपों के साथ उठनेवाले; तिण्-बलवान; कलुऴन् ऒत्तान्-गरुड़ के समान लगा। ८४

सुरापायी मुख वाली अंगारतारा को चिल्लाने देते हुए हनुमान उसकी आँतों को पकड़ लेकर आकाश में उठा। एक ही पल में इस तरह उठते हुए उसे देखकर बलवान गरुड़ का स्मरण आया, जो कंटकाकीर्ण कन्दरा में घुसकर बहुत ही सुगमता से कन्दरा के अन्दर रहे साँपों को पकड़कर ऊपर उठ आ रहा हो। ८४

शाहा वरत्तलैव रिऱ्ऱिलह मन्नान्
एहा वरक्किकुडर् कॊण्डुड नॆऴुन्दान्
माहाल् विशैक्कवड मण्णिलुऱ वालो
डाहाय मुऱ्ऱकद लिक्कुवमै यानान् 85

चाका वर तलैवरिल्-चिरंजीवी वर-प्राप्त लोगों में; तिलकम् अन्नान्-तिलक-सम हनुमान; एका-(राक्षसी के पेट में) जाकर; अरक्कि कुटर्-राक्षसी की आँतें; उटन् कॊण्टु-साथ लेकर; ऍऴुन्तान्-(जो) उठ आया; माकाल् विचैक्क-बड़े पवन के चलने से; वटम् मण्णिल् उऱ-डोरी को भूमि पर छोड़कर; वालॊटु आकायम्

उऱ्ऱ्–दुम के साथ आकाश में गये; कतलिक्कु–पतंग का; उवमै आतान्–उपमान बना। ८५

चिरंजीवी महानों में तिलक-सम हनुमान, जो उसके पेट में घुसकर आँतें लेकर ऊपर उड़ रहा था, उस पतंग के समान लगा जो वेगवान पवन से चालित हो, जिसका डोरा नीचे भूमि पर पड़ा हो और जो पूँछ के साथ आकाश में उड़ रहा हो। ८५

आर्त्तनर्हळ् वानवर्ह डानव रळुङ्गा
वेर्त्तनर् विरिञ्जनुम् वियन्दुमलर् वॅळ्ळम्
तूर्त्तन नहन्कयिलै यिऱ्ऱॊलै विलोनुम्
पार्त्तनन् मुनित्तलैव राशिहळ् पहर्न्दार् 86

वानवर्कळ् आर्त्तनर्कळ्–व्योमवासियों ने आनन्दघोष किये; तानवर्–दानव; अळुङ्का–दुःखी हुए; वेर्त्तनर्–पसीने से युक्त हो गये; विरिञ्चनुम्–ब्रह्मा ने भी; वियन्तु–विस्मित होकर; मलर् वॅळ्ळम्–पुष्पवर्षा; तूर्त्तनन्–(बरसाकर समुद्र को) पाट दिया; अकन् कयिलैयिल्–विशाल कैलास पर्वत पर (से); तॊलैविलोनुम्–अक्षर पुरुष (श्रीशिव) ने; पार्त्तनन्–भी देखा; मुनि तलैवर्कळ्–ऋषिश्रेष्ठों ने; आचिकळ् पकर्न्तार्–आशीर्वाद दिया। ८६

देवों ने आनन्दनाद उठाया। दानव व्याकुल हुए और उनके शरीर पसीने से भर गये। विरंचि ने भी विस्मित होकर इतने सुमन बरसाये कि समुद्र ही पट गया। विशाल कैलासपर्वतवासी अमर श्रीशिवजी ने भी देखकर आनन्द का अनुभव किया। मुनिवरों ने आशीर्वचन कहे। ८६

माण्डा ळरक्कियवळ् वाय्वयिऱु काऱुम्
कीण्डा निमैप्पिडैयिन् मेरुकिरि कीळाय्
नीण्डान् वयक्ककदि निनैप्पिनॆडि दॆन्नप्
पूण्डा नरुक्कनुयर् वानिन्वळि पोनान् 87

अरक्कि माण्टाळ्–(अंगारतारा) राक्षसी मर गयी; अवळ् वाय्–उसके मुख को; वयिऱु काऱुम्–उदर तक; कीण्टान्–चीर दिया; इमैप्पिटैयिन्–पलक मारने के समय के अन्दर; मेरु किरि–मेरुपर्वत को; कीळाय्–नीचा बनाकर; नीण्टान्–विशाल रूप धर लिया; निनैप्पिन्–मन (की गति) से भी; नॆटितु–बड़ी है; ऎन्न–ऐसी; वयक्ककति–गमन-गति; पूण्टान्–अपना ली; अरुक्कन् उयर्–सूर्य के ऊँचे; वानिन् वळि–आकाश-मार्ग में; पोनान्–गया। ८७

राक्षसी अंगारतारा मर गयी। हनुमान ने उसका मुख पेट तक चीर लिया। फिर एक ही पल में अपना शरीर इतना बढ़ा लिया कि मेरु भी उसके सामने छोटा लगा। मनोवेग से भी अधिक वेग बनाकर वह सूर्य के आकाश के मार्ग में चला। ८७

चॉऱ्ऱार्हळ् चॉऱ्ऱपहै पल्तॉहैय दन्ऱो
मुऱ्ऱा मुडिन्दनॆंड्ड वानिनिडै मुन्नीर्
इऱ्ऱावि यॆऱ्ऱॆनिनुम् यानिनि यिलङ्गै
उऱ्ऱाल् विलङ्गुमिडै यूरॆन वुणर्न्दान् 88

चॉऱ्ऱार्कळ्–जिन्होंने मुझसे कहा; चॉऱ्ऱ–उन्होंने जो कहा; पकै–बाधाएँ; पल् तॊकैयतु अन्ऱो–अनेक समूहों की है न; ऎऱ्ऱु ऎंतिनुम्–जो भी हों; मुऱ्ऱा मुटिन्त–अनन्त बने; मुन्नीरिल्–समुद्र के ऊपर; नॆटु वानिन् इटै–लम्बे आकाश में; तावि–लाँघ जाकर; यान् इलङ्कै उऱ्ऱाल्–मैं लंका जाऊँ तो; इनि–उस पर; इटैयूऱु–बाधाएँ; विलङ्कुम्–दूर होंगी; ऎंन उणर्न्तान्–ऐसा समझा। ८८

हनुमान ने तब सोचा कि सुग्रीव आदि ने जो कहा वह ठीक ही है। बाधाओं के समूह बहुत होते हैं। चाहे जो हों इस अनन्त समुद्र को लाँघकर लंका में पहुँच जायँगे तभी बाधाएँ दूर होंगी। हनुमान ने यह समझा। ८८

ऊऱुकडि दूऱुवन वूऱिलऱ मुन्नात्
तेऱलि लरक्कर्पुरि तीमैयवै तीर
एऱुम्वहै यिङ्गुळदि रामवॆन वॆल्लाम्
माऱुमदिन् माऱुपिऱि दिल्लॆन वलित्तान् 89

ऊऱु–कष्ट; कटितु ऊऱुवन–शीघ्र हो जाते हैं; ऊऱु इल् अऱम्–अक्षय धर्म; उन्ना–न माननेवाले; तेऱल् इल्–विवेकहीन; अरक्कर्–राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै अवै तीर–उन हानियों को दूर करने के लिए; एऱुम् वकै–तरण के मार्ग; इङ्कु उळतु–यहाँ है; इराम ऎंन–'राम' कहने पर; ऎल्लाम् माऱुम्–सब बदल जायेंगे; अतिन्–उससे बढ़कर; माऱु पिऱितु इल्–विकल्प अन्य नहीं; ऎंन–ऐसा; वलित्तान्–निश्चय किया। ८९

कष्ट अकस्मात आ जाते हैं। अक्षय धर्ममार्ग न जाननेवाले और विवेकहीन राक्षसों द्वारा दिये जानेवाले संकटों का सागर तारकर उद्धार पाने का एक मार्ग यही है। वह है 'श्रीराम' नाम का जाप। उससे सभी बाधाएँ दूर हो जायँगी। इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। हनुमान ने ऐसा निश्चय कर लिया। ८९

तशुम्बुडैक् कन्नह नाऱ्जिऱ् कडिमदि ऱणित्तु नोक्का
अशुम्बुडैप् पिरशत् तॆय्वक् कऱ्पह नाट्टै यणुमि
विशुम्बिडैच् चॆल्लुम् वीरन् विलङ्गिवे ऱिलङ्गै मूदूऱ्प्
पशुम्बुडैच् चोलैत् ताङ्गोर् पवळमाल् वरैयिऱ् पायन्दान् 90

अचुम्पु उटै–चिपचिपे; पिरचम्–शहद-भरे; कऱ्पक–कल्पतरुओं से पूर्ण; तॆय्व नाट्टै–देवलोक के; अणुमि–पास जाकर; विचुम्पु इटै–व्योममार्ग में; चॆल्लुम्

वीरन्—जानेवाले वीर; तणित्तु—झुककर; तचुम्पु उटै—स्वर्णकलशों से युक्त; नाञ्चिल्—'नांजिल' नाम के अंगों के; कतक कटि मतिल्—स्वर्णनिर्मित रक्षा-प्राचीर को; नोक्का—देखा; वेरु विलङ्कि—मार्ग बदलकर; इलङ्कै मूतूर् अङ्कु—लंका के प्राचीन नगर में एक ओर; पुटै पचुम् चोलैत्तु—पास में हरे बागों के साथ रहनेवाले; ओर् पवळ माल् वरैयिल्—एक प्रवाल गिरि पर; पाय्न्तान्—कूदा। ९०

हनुमान देवलोक के समीप से जा रहा था, जिसमें चिपचिपे शहद से युक्त कल्पतरु कसरत से पाये जाते हैं। उसने नीचे झुककर लंका के 'नांजिल' नाम के अंगों और स्वर्ण-कलशों से युक्त नगररक्षक प्राचीरों को देखा। फिर उसने अपना मार्ग बदल लिया। आगे जाकर वह एक प्रवालगिरि पर कूदा, जो प्राचीन लंका नगरी के एक भाग में था और जिस पर हरे-हरे बाग थे। ९०

मेक्कुरच् चॅल्वोन् पाय वेलैमे लिलङ्गै वॅर्पु
नूक्कुरुत् तङ्गु मिङ्गुन् दळ्ळुरत् तुळङ्गु नोन्मै
पोक्कुरर् किडॆयू राहप् पुयलॊडु पॊदिन्द वाडै
ताक्कुरत् तहर्न्दु शायुङ् गलमॆन वायिर् रन्रे 91

वेलै मेल्—समुद्र पर; मेक्कु उर चॅल्वोन्—ऊपर जो चलता रहा वह; पाय—नीचे जब कूदा; इलङ्कै वॅर्पु—लंका का (विद्रुम) पर्वत; नूक्कुरुत्तु—झुककर; अङ्कुम् इङ्कुम्—इधर-उधर; तळ्ळुर—हिला; तुळङ्कुम्—डुला; नोन्मै—वह प्रकार; पुयलोटु पॊतिन्त वाटै—वर्षा-सह झंझा से; पोक्कुरर्कु—गमन में; इटैयूरु आक—बाधा पाकर; ताक्कु उर—झकझोरे जाने पर; तकर्न्तु—टूटकर; चायुम्—डूबनेवाले; कलम् अॅन—पोत के समान; आयिर्रु—हो गया। ९१

ऊपर जो उड़ रहा था वह हनुमान ज्योंही उस गिरि पर वेग से कूदा तो वह एक ओर झुक गया। इधर-उधर उसके हिलने-डुलने के ढंग से वह उस पोत के समान लगा, जो मेघसहित झंझा द्वारा गमन में बाधा पाकर झकझोरे जाने से टूटकर समुद्र में डूब रहा हो। ९१

मण्णडि युर्रु मीदु वानुरु वरम्बिन् रन्मै
ऑण्णडि यर्र कुन्रि निलैत्तुनिन् रुर्रु नोक्कि
विण्णिडै युलह मॆन्नु मॆल्लियन् मेनि नोक्कक्
कण्णडि वैत्त दन्न विलङ्गैयैत् तॆरियक् कण्डान् 92

अटि मण् उर्रु—पैर भूमि में लगा रहा; मीतु—चोटी; वान् उरुम्—आकाश से लगा जो रहा; वरम्पिन् तन्मै—उसकी माप का हिसाब; ऑण् अटि उर्र—न हो सका ऐसे; कुन्रिन्—पर्वत पर; निलैत्तु निन्रु—स्थिर खड़ा होकर; उर्रु नोक्कि—ध्यान से देखकर; विण्णिटै उलकम् अॅन्नुम्—व्योमलोक रूपी; मॆल्लियल्—कोमल स्त्री; मेति नोक्क—अपना शरीर (प्रतिबिम्ब) देखने के लिए; कण्णटि वैत्ततु—आईना रखा गया; अन्न—जैसी; इलङ्कैयै—लंकापुरी को; तॆरिय कण्टान्—सामने से देखा। ९२

उस पर्वत का पैर भूमि पर था और उसका सिर आकाश को छू रहा था। उसके आकार का नापना कठिन था। उस पर हनुमान स्थिर-रूप से खड़ा हुआ। उसने वहीं से लंका को देखा, जो स्वर्गलोक रूपी अंगना के अपने शरीर का सौन्दर्य देखने के वास्ते रखे हुए आईने के समान लगा। ९२

नन्नहर् तन्नै नोक्कि नळिनक्कै मरित्तु नाहर्
पॉन्नह रिदनै यॊक्कु मॆन्बदु पुल्लि दम्मा
अन्नह रिदनि नन्रे यण्डत्तै मुळ्दु माळ्वान्
इन्नह रिरुन्दु वाळ्वा नदुवदर् केदु वॆन्रान् 93

नल् नकर् तन्नै–श्रेष्ठ नगर को; नोक्कि–देखकर; नळिन कै मरित्तु–कमलहस्त हिलाकर; नाकर् पॊन्नकर्–देवों की स्वर्णपुरी (अमरावती); इतनै ऒक्कुम्–इसके समान रहेगी; ऎन्पतु–कहना; पुल्लितु–अर्थहीन है; इतनिन्–इससे बढ़कर; अ नकर्–वह नगर; नन्रे–सुन्दर होगी क्या; अण्टत्तै मुळुतुम्–सारे अण्डों पर; आळ्वान्–शासन करनेवाला; इन् नकर् इरुन्तु वाळ्वान्–इस नगर में रहता है; इ–यह गौरव; अतर्कु एतु–उसका हेतु है; ऎन्रान्–कहा (अम्मा–विस्मय ध्वनि)। ९३

हनुमान ने उस श्रेष्ठ नगर को देखकर अपने कमलहस्तों को विस्मय-सूचक मुद्राओं में हिलाता हुआ अपने आप कहा कि देवों की स्वर्ण-नगरी अमरावती इसके समान होगी क्या? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। क्या वह नगर इससे बढ़कर सुन्दर हो सकेगा? सारे अण्ड का शासन रावण यहीं रहकर करता है, उसका हेतु ही इसका अमरावती से अधिक सुन्दर होना है! । ९३

माण्डदोर् निलत्तिर् रामॆन् रुणर्त्तुदल् वाय्मैत् तन्राल्
वेण्डिय वेण्डि नॆय्दि वॆरुप्पित्रि विळैन्दु तुय्क्कुम्
ईण्डरुम् बोह विन्ब मीरिल दियाण्डुक् कण्डाम्
आण्डदु तुरक्क मःरि)दे यरुमरैत् तुणिवु मम्मा 94

वेण्टिय–इच्छित वस्तुएँ; वेण्टिन् ऎय्ति–इच्छित प्रकार से प्राप्त करके; वॆरुप्पु इन्रि–अघाये विना; विळैन्तु–चाह के साथ; तुय्क्कुम्–भोगा जानेवाला; ईण्ट अरुम्–अलभ्य; पोक इन्पम्–भोगसुख; ईरु इलतु–अनन्त रूप से; याण्टु कण्टोम्–जहाँ देखते हैं हम; आण्टतु तुरक्कम्–वही स्वर्ग है; अरु मरै–श्रेष्ठ वेदों का भी; तुणिवुम् अ.'.ते–निर्णय भी वही है; अतु–वह; माण्ट–महिमावान; ओर् निलत्तिरु आम्–एक स्थान में होगा; ऎन्रु–ऐसा उणर्त्तुतल्–समझाना; वाय्मैत्तु अन्रु–सच्चा नहीं होगा। ९४

स्वर्ग क्या है? जो भी चाहें वह सब वैसे ही जहाँ प्राप्त हों; और जहाँ

उनका अलभ्य सुख-भोग अन्तहीन प्रकार से सम्भव हो —उसी को स्वर्ग कहा जाता है। श्रेष्ठ वेद भी वैसा ही कहते हैं। उस स्वर्ग को एक स्थान विशेष में रहता हुआ बताना सच नहीं है ! । ९४

उट्पुल	मॆळ्नू	ऱॆन्ब	रोशनै	युलह	मून्ऱिल्
तॆट्पुरु	पॊरुळ्ह	ळॆल्ला	मिदनुळैच्	चॆऱिन्द	वॆन्ऱाल्
नुट्पुल	नुणङ्गु	केळ्वि	नुळैविन	रऱिवि	नोङ्गुम्
कट्पुल	वरम्बिऱ्	ऱन्ऱे	काट्चियुङ्	गरैयिऱ्	ऱम्मा 95

उट्पुलम्–(लंका का) आन्तरिक विस्तार; ऍळु नूरु ओचनै–सात सौ योजन; ऍन्पर्—कहते हैं; उलकु मून्ऱिल्–तीनों लोकों में; तॆट्पु उरु पॊरुळ्कळ्–साफ़ जाने जानेवाली वस्तुएँ; ऍल्लाम्–सभी; इतन् उळै–इसमें; चॆऱिन्त–पूर्ण रूप से पायी जाती हैं; ऍन्ऱाल्–कहें तो; नुण् पुलम्–सूक्ष्मबुद्धि; नुणङ्कु केळ्वि–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञानी; नुळैवित्तर्–अन्वेषकों के; अऱिविन् ओङ्कुम्–बुद्धि से बढ़े हुए; कण् पुल–मन के करण की; वरम्पिऱ्‌रु अन्ऱु–सीमा के अन्दर आनेवाला नहीं है; काट्चियुम्–दृष्टि-गत की भी; करैयिऱ्‌रु–सीमा हो जायगी। ९५

लंका नगर का आन्तरिक विस्तार सात सौ योजन का बताया जाता है। तीनों लोकों में प्राप्य सभी चुने हुए पदार्थ इस लंका में भरपूर हैं। तो यह उन लोगों की मनो-दृष्टि में भी समानेवाला नहीं है, जिनकी सूक्ष्म-बुद्धि का श्रेष्ठ श्रवण-ज्ञान द्वारा खूब विकास हुआ है। आँखों द्वारा दृश्य विस्तार की भी सीमाएँ होती हैं। ९५

2. ऊर् तेडु पडलम् (लंका-नगर-अन्वेषण पटल)

❀ पॊन्गॊण्	डिळैत्तमणि	यॆक्कॊडु	पॊदिन्द
मिन्गॊण्	डमैत्तवॆयि	लैक्कॊडु	शमैत्त
ऍन्गॊण्	डियऱ्‌ऱियवॆ	नत्तॆरि	विलाद
वन्गॊण्डल्	विट्टुमदि	मुट्टुवन	माडम् 96

माटम्–सौध; पॊन् कॊण्टु इळैत्त–स्वर्णनिर्मित हैं; मणियै कॊटु पॊतिन्त–मणि-जड़ित हैं; मिन् कॊण्टु अमैत्त–विद्युत् से रचित हैं; वॆयिलै कॊटु चमैत्त–धूप के बने; ऍन् कॊण्टु इयऱ्‌ऱिय ऍन–किसके (साथ) निर्मित हैं; ऍन–यह; तॆरिवु इलात—अज्ञात है; वन् कॊण्टल् विट्टु–बलवान मेघों को पार करके; मति मुट्टुवन–चन्द्र से टकरानेवाले हैं। ९६

लंका नगर के प्रासाद स्वर्णनिर्मित हैं। मणिजड़ित हैं। या विद्युत् के बने हुए हैं ! शायद सूर्य-रश्मि के बने हैं ! उनको देखकर ऐसे भाव उठते हैं। पर असल में वे किसके बने हैं —यह जानना कठिन है ! वे मेघमण्डल को पारकर चन्द्रमण्डल से टकरा रहे हैं। ९६

नाहाल यङ्गळोडु नाहरुल हुन्दम्
पाहार् मरुङ्गुतुयि लॅन्नवुयर् पण्ब
आहाय मञ्जवहत्त् मेरुवै यनुक्कुम्
माहाल् वळङ्गुशिरु तॅन्द्रलॅन्न नित्र 97

नाकालयङ्कळोटु–देव-प्रासादाओं के साथ; नाकर् उलकुम्–सुरलोक; तम्–लंका के; पाकु आर् मरुङ्कु–आंशिक रिक्त स्थानों में; तुयिल् ॲन्न–रहते हों, ऐसा; उयर् पण्प–ऊँचाई रखते हैं; आकायम् अञ्च–आकाश को डराते हुए; अकल् मेरुवै–विशाल मेरु को; अनुक्कुम्–शिथिल होने देते हैं; मा काल्–प्रबल प्रभंजन को; वळङ्कु चिरु तॅन्द्रल् ॲन–बहनेवाले मन्द मलयपवन बनाते हुए; नित्र–स्थित थे (वे लंका के सौध)। ९७

देवों के महलों के साथ देवलोक इन सौधों के मध्य स्थलों में हों, इस तरह ये उन्नत हैं। आकाश को डराते हुए जो खड़ा रहता है, वह मेरुपर्वत भी इसको देखकर काँप जाता है। बहुत प्रबल प्रभञ्जन भी उनके विषय में मन्द दक्षिणी पवन के समान शक्तिहीन बन जाय, ऐसी दृढ़ता के साथ वे खड़े हैं। ९७

माहारिन् मिन्गॉडि मडक्किन रडुक्कि
मीहार मॅङ्गणु नरुन्दुहळ् विळक्कि
आहाय कङ्गैयिनै यङ्गैयिनि लळ्ळिप्
पाहाय शॅञ्जॊलवर् वीशुपडु कारम् 98

कारम्–वे सौध; पाकु आय–चासनी-सम; चॅञ् चॊलवर्–मधुर बोली वाली दासियों द्वारा; मा कारिन्–बड़े मेघों की; मिन् कॊटि–बिजली की लताओं को; मटक्कितर् अटुक्कि–मोड़कर गट्ठा बाँधकर; मी कारम् ॲङ्कणुम्–सौधों के ऊपरी भागों में सर्वत्र; नरुम् तुकळ्–सुगन्धित धूल; विळक्कि–झाड़ देकर; अङ्कैयितिल्–चुल्लू में; आकाय कङ्कैयिनै–आकाशगंगा (के जल) को; अळ्ळि–भर लेकर; वीचु पटु–छिड़के जाते हैं। ९८

उन प्रासादों में चासनी-सम बोली वाली दासियाँ विद्युत्-किरणों का बना झाड़ू लेकर बुहारती हैं और वहाँ कूड़े के रूप में जो पड़ा है, उस सुगन्ध-चूर्ण को दूर करती हैं। आकाशगंगा से हाथ में जल लेकर छिड़कती हैं। ९८

पञ्जि यूट्टिय पाडमै किण्किणिप् पदुमच्
चॅञ्जॅ विच्चॅळ्म् बवळत्तिन् कॊळुञ्जुडर् चिदरि
मञ्जि नञ्जन निरुमरैत् तरक्कियर् वडित्त
अञ्जि लोदियो डमैवन ववॅदमक् कुवमै 99

पञ्चि ऊट्टिय–लाक्षारस-रंजित; पाटु अमै–कारीगरीयुक्त; किण्किणि–

पायलों से अलंकृत; पतुमम्-पद्मचरणों की; चॅम् चॅवि-ललाई; चॅळुम् पवळत्तिन्-पुष्ट विद्रुम की; कॉळुम् चुटर्-प्रवृद्ध कांति; चितरि-बिखेरकर; मञ्चिन्-मेघों का; अञ्चन निरम्-अंजनवर्ण; मरैत्तु-छिपाकर; अरक्कियर् वटित्त-राक्षसियों के अलंकृत; अम् चिल् ओतियोंटु-सुन्दर (लाल रंग के) अल्प केशों से; अवै तमक्कु-उनसे; उवमै अमैवन-उपमित होने योग्य बने हैं। ९९

वहाँ देवांगनाएँ दासी का काम कर रही हैं। लाक्षारस-रंजित और कारीगरीयुक्त पायलों से अलंकृत उनके चरणों की विद्रुमलालिमा मेघों पर पड़ती है, जिससे मेघों की कालिमा छिप जाती है। तब वे मेघ राक्षसियों के अलंकृत (ताम्रवर्ण के) अल्प केशों के समान लगते हैं। ९९

नान नाण्मलर्क् कर्पह नरुविरै नानूर
पानम् वायुर वॅरुत्तदा ळारुडैप् परवै
तेन वाम्विरैच् चॅळुङ्गळु नीर्त्तुयिल् शॅय्य
वान यारुदम् मरमियत् तलन्दॉरु मडुप्प 100

नान कर्पक-कस्तूरीगन्ध-सुगन्धित कल्पतरु के; नाळ् मलर्-नवविकसित पुष्पों के; नरु विरै नानूर-अच्छी सुगन्धि से युक्त; पानम्-शहद; वाय् ऊर-उनके मुख में झरता है; वॅरुत्त-उचटकर; आरु ताळ् उटै परवै-षड्पदी (भ्रमर); तेन्-भ्रमरियाँ; अवाम्-जिसको बहुत चाहती हैं; वान यारु-आकाशगंगा के; विरै चॅळुम्-सुवासित और बड़े; कळुनीर्-'कळुनीर' नाम के पुष्प में; तुयिल् चॅय्य-सुलाने देते हुए; तम् अरमिय तलम् तॉरुम्-उनके सभी हर्म्यों में; मटुप्प-आकर भर गये (ऐसे सौध स्थित हैं)। १००

उन सौधों के हर्म्यों में भ्रमर आकर बसते हैं। उनके मुख से कस्तूरी-गन्ध से भरपूर कल्पतरु के नवविकसित फूलों के अच्छे बास के साथ शहद चूता है। वे भ्रमर उसको पीते-पीते उचट जाते हैं। भ्रमरियाँ आकाश-गंगा के सुगन्धित लाल कुमुद फूलों पर सोना चाहती हैं। इसीलिए वे षड्पद उन हर्म्यों पर आकर ठहरते हैं। १००

कुळलुम् वीणयुम् याळुमॅन् रिनैयन कुळैय
मळलै मॅन्मॉळि किळिक्किरुन् दळिक्किनुर महळिर्
शुळलुम् नन्नॅडुन् दडमणिच् चुवर्दॉरुन् दुवन्रुम्
निळलुन् दम्मैयुम् मॅय्म्मैनिन् ररिवरु निलैय 101

कुळलुम्-वंशी और; वीणयुम्-वीणा और; याळुम्-'याळ' नामक वाद्य; ऍन्रिनैयन-आदि ऐसे वाद्य; कुळैय-शिथिल पड़ जायँ ऐसा; मॅन् मळलै मॉळि-कोमल तुतली बोली; इरुन्तु-स्वयं रहकर; किळिक्कु-शुकों को; अळिक्किन्र मकळिर्-जो सिखा रही थीं, वे स्त्रियाँ; चुळलुम्-प्रकाशवलयित; नल्-श्रेष्ठ; नॅटुम्-बड़े; तटमणि-बड़े रत्नों से युक्त; चुवर् तॉरुम्-सभी दीवारों पर; तुवन्रुम्-(बड़ी संख्या में) दिखनेवाले; निळलुम्-प्रतिबिम्बों और; तम्मैयुम्-अपनों को;

मॅय्म्मै नित्ऱ-सच्चे रूप से; अरिवु अरु-जानना कठिन है; निलैय-ऐसे प्रासाद थे वे। १०१

उन प्रासादों में स्त्रियाँ रहकर शुकों को वंशी, वीणा और 'याळ्' नामक वाद्य को मधुरता में हरानेवाली बोली सिखाती रहती हैं। तब उनके प्रतिबिम्ब प्रकाश-भरी, ऊँची और सुन्दर दीवारों पर पड़ जाते हैं। ये स्त्रियाँ उनमें और अपने में भेद नहीं कर पातीं। १०१

इत्तैय माडङ्ग ळिन्दिरऱ् कमैवर वॅडुत्तु
वत्तैयु माट्चिय वॅन्तिलच् चॉल्लुमा शुण्णुम्
अत्तैय दामॅति तरक्करदन् दिरुवुक्कु मळवै
नित्तैय लामन्ऱि युवमैयु मन्नदा निरकुम् 102

इत्तैय माटङ्कळ्-ऐसे प्रासाद; इन्तिरऱ्कु अमैवर-इन्द्र के वास के योग्य रीति से; ॲट्टुत्तु वत्तैयुम्-रचित और सज्जित; माट्चिय-शानदार है; ॲन्तिल्-कहें तो; अ चॉल्लुम्-वह कथन भी; माचु उण्णुम्-दोषपूर्ण होगा; अत्तैयताम् ॲतित्-वैसा है तो; अरक्कर् तम् तिरुवुक्कुम्-राक्षसों के वैभव की; अळवै-सीमा; नित्तैयलाम् अन्ऱि-कल्पना कर सकें तो कर सकते हैं, उसको छोड़; उवमैयुम्-उपमा कहने लगें; अन्नता निऱ्कुम्-वह भी (वैसी) दोषपूर्ण होगी। १०२

ये सौध इन्द्र के रहने योग्य रीति से बने हैं क्या ? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। तब सोचिए ऐसे सौधों के स्वामी राक्षसों के वैभव का क्या कहा जाय ? मन से अनुमान लगा सकते हैं, बस। उसको छोड़कर उपमान कहें तो वह भी असफल और निरर्थक ही होगा। १०२

मणिह ळॅत्तुणै पॅरियत्त माल्तिरु मार्बित्
अणियुङ् गाशित् महत्तऱत्त वुळवॅत्ति लरिदाल्
तिणियु नत्तॅडुन् दिरुनहर् दॅय्वमात् तच्चत्
तुणिवित् वन्दवत् तॉट्टळ हिळैत्तवत् तॉळिल्हळ् 103

मणिकळ् ॲतुतत्तै पॅरियत्त-मणियाँ कितनी ही बड़ी क्यों न हों; माल्-विष्णुदेव के; तिरु मार्पित्-श्रीवक्ष में; अणियुम् काचितुम्-जो पहनते हैं, उस (कौस्तुभ-) मणि से; अकत्तऱत्त उळ-बड़ी हैं; ॲतिल् अरितु-कहा जाय, यह कहना दुर्लभ है; तॅय्व मा तच्चत्-श्रेष्ठ देवशिल्पी; तुणिवित् वन्तु-निश्चय लेकर आया; नल् नॅटुम् तिरु नकर्-अच्छा और बड़ा श्रीनगर (लंका) में; अवत् तॉट्टु-उसने अपने हाथ से स्पर्श करके; अळकु इळैत्तत-जिन्हें सुन्दर बनाया; अत् तॉळिल् कळ्-वे शिल्पकार्य; तिणियुम्-सौन्दर्य से कूट-कूटकर भरे हैं। १०३

अन्यत्र प्राप्य मणियाँ चाहे जितनी बड़ी या उत्कृष्ट हों पर श्रीविष्णु के वक्षःस्थल की कौस्तुभमणि से बड़ी हो ऐसी मणि का मिलना दुर्लभ है। वैसे ही बहुत ही कुशल देवशिल्पी ने इस उत्तम लक्षणों से पूर्ण सुन्दर लंका

नगरी में अपनी कला की जो कारीगरियाँ स्वयं रची हैं, वे अत्यन्त सौन्दर्य से भरपूर हैं। १०३

मरम डङ्गलुङ् गऱ्पह मतैयॆलाङ् गतहम्
अरम डन्दैयर् शिलदिय ररक्कियर्क् कमरर्
उरम डङ्गिवन् दुळैयरा युळ्लहुव रॊरुवर्
तरम डङ्गुव दन्ऱिदु तवञ्जॆयत् तहुमाल् 104

मरम् अटङ्कलुम्–वहाँ के सारे वृक्ष; कऱ्पकम्–कल्पतरु हैं; मनै ऎलाम्–सारे गृह; कनकम्–स्वर्णनिर्मित हैं; अरक्कियर्क्कु–राक्षसियों की; अरमटन्तैयर्–देवस्त्रियाँ; चिलतियर्–दासियाँ हैं; अमरर्–सुर लोग; उरम् अटङ्कि वन्तु–बल खोकर आये; उळैयराय् उळ्लकुवर्–चपरासियों के रूप में घेरकर आते हैं; इतु–यह; ऒरुवर्–किसी की; तरम् अटङ्कुवतु अन्ऱु–योग्यता के अधीन होनेवाला नहीं है; तवम् चॆयतकुम्–तप ही कर्तव्य है। १०४

वहाँ तरु सब कल्पतरु हैं। भवन सब स्वर्णभवन हैं। राक्षसियों की दासियाँ देवांगनाएँ हैं। देवता लोग अपना अधिकार खोकर सेवा-टहल करते घूमते हैं। यह सब किसी की योग्यता के अधीनस्थ हो सकते हैं क्या ? नहीं यह सब तपस्या के ही फलस्वरूप मिल सकते हैं। इसलिए तप ही सबके लिए करणीय काम है। १०४

तेव रॆन्बवर् यारुमित् तिरुनहर्क् किऱैवर्
केवल् शॆय्बवर् शॆय्हिला दवरॆव रॆन्निन्
मूवर् तम्मुळु मिरुवरॆन् ऱालिनि मुयलिल्
ताविन् मादव मल्लदु पिऱिदॊन्ऱु तहुमो 105

तेवर् ऎन्पवर् यारुम्—देव सभी; इ तिरुनकर्क्कु–इस श्रीनगर के; इऱैवर्क्कु–राजा के; एवल् चॆय्पवर्–कैंकर्य करनेवाले हैं; चॆय्किलातवर्–न करते; ऎवर्–कौन; ऎन्निन्–पूछें तो; मूवर् तम्मुळुम्–त्रिदेवों में; इरुवर्–दो हैं; ऎन्ऱाल्–तो; इनि मुयलिल्–अब प्रयास करने; ता इल्–निर्दोष; मा तवम्–महान् तप; अल्लतु–छोड़कर; पिऱितु ऒन्ऱु–दूसरा कोई; तकुमो–योग्य हो सकता है क्या। १०५

सारे देवता इस श्रीनगर के स्वामी रावण की दासता करनेवाले ही हैं। कौन हैं जो वैसा नहीं करते ? त्रिमूर्तियों में दो ही हैं —श्रीविष्णु और शिवजी। तो फिर प्रयत्न किस बात का करना है ? निर्दोष महान् तप को छोड़कर और कोई प्रयत्न करने योग्य है क्या ? । १०५

पोरि यन्ऱन तोऱ्ऱवॆन् ऱिहळ्दलिऱ् पुऱम्बोय्
नेरि यन्ऱवन् ऱिशैदॊऱु निन्ऱमा निऱक
आरि यन्ऱनित् तॆय्वमाक् कळिऱुमो राळिच्
चूरि यन्ऱनित् तेरुमे यिन्नहर्त् तॊहाद 106

पोर् इयऩ्ऱऩ–युद्ध करके; तोऱ्ऱ–हार गये; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इकऴ्तलिल्–अवमाने जाने से; पुऱम् पोय्–अलग एक ओर जाकर; नेर् इयऩ्ऱ–आमने-सामने; वऩ् तिचै तॊऱुम्–सुदृढ़ दिशा-दिशा में; निऩ्ऱ मा–जो दिग्गज खड़े हैं, वे; निऱ्क–एक ओर रहें; आरियऩ्–हरिहर-पुत्र शास्ता का; तत्ति–अप्रमेय; तॆय्व–दिव्य; मा कळिऱुम्–महान् (वाहन) गज और; चूरियऩ्–सूर्य का; ओर आऴि तत्ति तेरुमे–अनुपम एक-चक्र-रथ ही; इ नकर्–इस नगर में; तॊकात–न मिल पाये। १०६

लंका में सभी गज और रथ थे। पर उनमें केवल निम्नांकित गज और रथ नहीं मिले थे। आठ दिग्गज जो रावण से लड़कर हार गये और अपमानित होकर सभी दिशाओं में जाकर खड़े हो गये थे; और वह उत्तम गज जो हरिहर-पुत्र 'शास्ता' का वाहन है। रथों में सूर्य का एकचक्र-रथ नहीं मिला था। (क्षीरसागर-मंथन से उद्भूत अमृत को प्राप्त करने के लिए देवासुरों में लड़ाई मची। तब विष्णु मोहनी का रूप धर आये थे। तब शिवजी उन पर मोहित हो गये। उनके पुत्र पैदा हो गया। दक्षिण में उन हरिहरपुत्र देव की बड़ी महिमा है। वे 'शास्ता' कहे जाते हैं।)। १०६

वाऴ् मऩ्ऩुयिर् यावैयु मॊरुवऴि वाऴुम्
ऊऴि नायहऩ् ऱिरुवयि ऱॊत्तुळ दिव्वूर्
आऴि यण्डत्ति ऩरुक्कऩ्ऱ ऩलङ्गुदेर्प् पुरवि
एऴु मल्लऩ वीण्डुळ कुदिरैह ळॆल्लाम् 107

इव् वूर्–यह नगर; वाऴुम् मऩ् उयिर् यावैयुम्–संसार में जीनेवाले अक्षय सभी जीव; ऑरु वऴि वाऴुम्–जिसमें एक साथ मिलकर रहते हैं; ऊऴि नायकऩ्–युगान्त में श्रीविष्णु के; तिरु वयिऱु ऑत्तुळतु–दिव्य उदर के समान था; आऴि अण्टत्तिऩ्–गोल अण्ड के (अश्वों में); अरुक्कऩ् तऩ्–सूर्य के; अलङ्कु तेर्–हिलनेवाले रथ में जुते हुए; पुरवि एऴुम्–सातों अश्व; अल्लऩ–जो नहीं थे; कुतिरैकळ् ॲल्लाम्–वे सभी अश्व; ईण्टु उळ–यहाँ हैं। १०७

यह लंका नगर युगान्तकाल में सभी जीवों का वासस्थान जो श्रीविष्णु का श्रीउदर है, उसके समान लगा। इसमें अण्ड के सभी अश्व पाये गये; केवल सूर्य के हिलते चलनेवाले रथ के सातों अश्व उनमें नहीं मिले थे। १०७

तऴङ्गु पेरियि ऩरवमुम् तहैनॆडुङ् गळिऱु
मुऴङ्गु मोदैयु मूरिनीर् मुऴक्कॊडु मुऴङ्गुम्
कॊऴुङ्गु रऱ्पुदुक् कुदलैयर् नूबुरक् कुरलुम्
वऴङ्गु पेररुम् जदिहळु वयिऩ्ऱॊऱु मऱैयुम् 108

तऴङ्कु–बजनेवाली; पेरियिऩ् अरवमुम्–भेरी का नाद; तकै–श्रेष्ठ; नॆटुम्

कळिऱ्–बड़े गजों की; मुळङ्कुम् ओतैयुम्–चिंघाड़ का नाद; मूरि नीर्–अत्यधिक जल से भरे समुद्र के; मुळक्कोटु मुळङ्कुम्–गर्जन के साथ मिलकर उठते हैं; कोळुम् कुरल्–गम्भीर कण्ठ के साथ; पुतु कुतलैयर–नित-नवीन रूप से मधुर लगनेवाली तुतली बोली वाली स्त्रियों की; नूपुर कुरलुम्–नूपुर की ध्वनि; वळङ्कु–उनके किये; पेर् अरुम् चतिकळुम्–श्रेष्ठ नर्तन के अपूर्व पदन्यास से उत्पन्न ध्वनि; वयिन् तोरुम्–स्थान-स्थान पर; ओलिक्कुम्–सुनायी देती है। १०८

उस नगर में भेरियों का नाद और श्रेष्ठ गजों के चिंघाड़ने की ध्वनि दोनों विस्तृत जल-तल से युक्त समुद्र के गर्जन के साथ मिलकर सुनाई देते हैं। नितनवीन लगनेवाले पुष्कल, मधुर कंठस्वर वाली स्त्रियों के नूपुरों का मोहक नाद उनके नृत्य-मुद्रा में मञ्च पर पड़नेवाले चरण चापों की ध्वनि के साथ मिलकर यत्र-तत्र सुनाई देता है। १०८

मरह दत्तितु मऱ्ऱुळ मणियितुममैत्त
कुरह दत्तनित् तेरॅला मुऱैन्दिडुङ् गूडम्
इरवि वॅट्किड विमैक्किन्ऱ वियर्कैय वॅन्ऱाल्
नरह मोक्कुमा नन्नॅडुन् दुऱक्कमिन् नहर्क्कु 109

मरकतत्तितुम्–मरकत और; मऱ्ऱुळ मणियितुम्–अन्य मणियों की; अमैतुत–रचित; कुरकत तति तेर् ॲलाम्–अनुपम सभी अश्वरथ; उऱैन्तिटुम्—जहाँ रहते हैं; कूटम्–वे शालाएँ; इरवि वॅट्किट–सूर्य को लजाते हुए; इमैक्किन्ऱ इयर्कैय–छटा बिखेरती हैं, ऐसे स्वभाव की हैं; ॲन्ऱाल्—तो; इ नकर्क्कु–इस नगर के सामने; नल् नॅटुम् तुऱक्कम्–बड़ा अच्छा कहलानेवाला स्वर्ग; नरकम् ओक्कुम्–नरक के समान लगेगा। १०९

वहाँ की रथ-शालाएँ, जो मरकत और अन्य रत्नों के साथ निर्मित थीं और जिनमें अश्व-जुते रथ रहते थे, सूर्य को भी लजाते हुए तेजोमय लगती थीं। तो सोचें! बहुत ही श्रेष्ठ कहकर प्रशंसित स्वर्ग भी इसके सामने नरक था। १०९

तिरुहु वॅञ्जिनत् तरक्करुङ् गरुनिऱन् दीर्न्दार्
अरुहु पोहिन्ऱ तिङ्गळु मरुवऱ्ऱ दळ्हैप्
परुहु मिन्नहर्त् तुन्नोळि परत्तलिऱ् पशुम्बोन्
उरुहु हिन्ऱदु पोन्ऱुळ दुलहशू ऴुवरि 110

अळकै परुकुम्–सौन्दर्य-समन्वित; इ नकर्–इस नगर की; तुन् ओळि–पुष्कल कान्ति; परत्तलिन्–व्यापती है, इसलिए; तिरुकु वॅम् चिनत्तु–बुरे और भयंकर कोप वाले; अरक्करुम्–राक्षस भी; करु निऱम् तीर्न्तार्–काले रंग से मुक्त हो गये; अरुकु पोकिन्ऱ–पास से जानेवाला; तिङ्कळुम्–चन्द्र भी; मऱु अऱ्ऱतु–कलंकहीन हो गया; उलकु चूळ् उवरि–पृथ्वी को घेरे रहनेवाला समुद्र; पचुम् पोन्–चोखा स्वर्ण; उरुकुकिन्ऱतु पोन्ऱु उळतु–पिघलता-सा है। ११०

सौन्दर्य को जिसने अपने में समाहित कर लिया था, उस लंका नगरी की कान्ति के पड़ने से राक्षस भी काले रंग से मुक्त हो गये थे। पास से जानेवाला चन्द्र भी कलंक-हीन हो गया। पृथ्वी को घेरे रहनेवाला सागर भी पिघलते स्वर्ण के समान लगा। ११०

अण्ड मुऱ्ऱवुम् विळुङ्गिरु ळहऱ्ऱिनिऩ् ऱहल्वाऩ्
कण्ड वत्तनिक् कडिनहर् नॆंडुमतै कदिर्हट्
कुण्ड वाऱ्ऱलॆंऩ् ऱुरैप्परि दॊप्पिडिऱ् ऱम्मुऩ्
विण्ड वाय्च्चिऱु मिऩ्मिनि यॆंऩ्ऩवुम् विळङ्गा 111

अ तत्ति कटि नकर्—उस अनुपम सुरक्षित नगर के; नॆंटु मतै—उन्नत प्रासाद; अण्टम् मुऱ्ऱवुम्—अण्ड भर को; विळुङ्कु इरुळ्—लीलनेवाले अन्धकार को; अकऱ्ऱि निऩ्ऱु—दूर करके खड़े हैं; अकल् वाऩ् कण्ट—विस्तृत आकाश को स्पर्श करते हैं; अ आऱ्ऱल्—वह शक्ति; कतिर् कट्कु—अन्य (सूर्य आदि) ज्योतिपुंजों के पास; उण्टु—है; ॲंऩ्ऱु—ऐसा; उरैप्परितु—कहना कठिन है; ऑप्पिटिल्—तुलना करें तो; तम्मुऩ्—उनके सामने; विण्ट वाय्—खले मुख के; चिऱु मिऩ्मिति—छोटे खद्योत; ॲंऩ्ऩवुम्—सम भी; विळङ्का—प्रकाशमान नहीं होंगे। १११

उस अनुपम व सुरक्षित नगर के उच्च प्रासाद अण्डग्रासक अँधेरे को भगाते हुए और विशाल आकाश में व्याप्त खड़े थे। वह शक्ति द्वादश आदित्य आदि तेजोवानों के पास है —यह कहना ठीक नहीं होगा। तुलना करेंगे तो वे इनके सामने विदीर्ण (खुले) मुख वाले खद्योत-सम भी नहीं रह सकेंगे। १११

तेऩुञ् जाऩ्दमु माऩ्मदच् चॆंऱिनऱुञ् जेऱुम्
वाऩ नाण्मलर् कऱ्पह मलर्हळ् वयमाऩ्
ताऩ वारियि नीरॊडुम् बडुत्तलिऩ् ऱळीइय
मीऩुन् दाऩुमोर् वॆंऱिमणङ् गमळुमाल् वेलै 112

तेऩुम्—शहद; चाऩ्तमुम्—चन्दन; माऩ्मत—कस्तूरी; चॆंऱि—मिश्रित; नऱुम् चेऱुम्—सुगन्धित लेप; वाऩ मलर्—स्वर्ग में पुष्पित; नाळ् कऱ्पक मलर्कळुम्—सद्यविकसित कल्पसुमन; वय मा—सशक्त गजों के; ताऩ वारियिऩ् नीरॊटुम्—मदधार के जल के साथ; वेलै पटुत्तलिल्—बहकर समुद्र में जा मिलते हैं, अतः; ताऩुम्—वह समुद्र और; तळीइय मीऩुम्—उस पर रहनेवाली मछलियाँ; ओर् वॆंऱि मणम्—अनुपम गम्भीर सुगन्ध; कमळुम्—देती हैं। ११२

शहद, चाँद, मृग-कस्तूरी का लेप, स्वर्गलोक के सदाबहार कल्पतरु के नवविकसित फूल —ये सब सशक्त गजों के मद-नीर के साथ मिलकर समुद्र में पहुँच जाते हैं। इस कारण समुद्र और समुद्र में रहनेवाली मछलियों से एक अनुपम सुगन्ध छिटकती है। ११२

तॅय्वत् तच्चनैप् पुहऴ्दुमो शॅङ्गणवा ळरक्कन्
मॅय्यॊत् ताऱ्ऱिय तवत्तॅये वियत्तुमो विरिञ्जन्
ऐयप् पाडिला वरत्तॅये मदित्तुमो वऱियात्
तॊय्यऱ् चिन्दैयेम् यावरै यावदॆन्ऱु तुदिप्पेम् 113

तॅय्व तच्चनै–देवशिल्पी विश्वकर्मा की; पुकऴ्तुमो–प्रशंसा करें; चॆङ्कण् वाळ् अरक्कन्–रक्ताक्ष भयंकर राक्षस; मॆय् ऒत्तु–(की) शरीर को कष्ट देते हुए की गयी; तवत्तॅयै वियत्तुमो–तपस्या से विस्मित होंगे; विरिञ्चन्–विरंचि के दिये; ऐयप्पाटु इला–अमोघ; वरत्तॅये–वर की ही; मतित्तुमो–गणना करें; अऱिया–न जानते; तॊय्यल् चिन्तैयेम्–निर्बल मन वाले हम; यावरै–किसकी; यातु ऎन्ऱु–क्या ही कहकर; तुतिप्पेम्–प्रशंसा करें। ११३

इसको देखकर क्या देवशिल्पी विश्वकर्मा की प्रशंसा करें ? या भयंकर रक्ताक्ष रावण की कायक्लेश-सहित की गयी तपस्या की महिमा पर विस्मय करें ? या विरंचि के द्वारा दिये गये अमोघ वरों को मान्यता दें ? किंकर्तव्यविमूढ़ होकर लटनेवाले मन को लेकर हम इन तीनों में किसकी और कैसी प्रशंसा करें ? । ११३

वानम् निलत्तुम् बॅऱुमारिनि मऱ्ऱु मुण्डो
कानम् बॊऴिलु मिवैशॅङ्गन हत्ति नालुम्
एनैम् मणियालु मियऱ्ऱिय वेनुम् यावुम्
तेनुम् मलरुङ् गनियुन्दरच् चॅय्द शॅय्है 114

कानम् पॊऴिलुम् इवै–वन, उपवन ये हैं; चॆम् कनकत्तितालुम्–लाल (चोखे) कनक से; एनै मणियालुम्–अन्य मणियों से; इयऱ्ऱियवेनुम्–निर्मित तो भी; यावुम्–वे सब; तेनुम् मलरुम्–शहद और पुष्प; कनियुम् तर–फल देते हैं; चॆय्त चॆय्कै–ऐसा कार्य; वानुम् निलत्तुम्–आकाश और भूमि; इनि पॆऱुमाऱु–अब कर पायें; मऱ्ऱुम् उण्टो–यह और कहीं है क्या। ११४

लंका के वन और उद्यान लाल (चोखे) स्वर्ण और अन्य मणियों के पादपों आदि के बने हैं। तो भी उनसे शहद, फूल और फल प्राप्त होते हैं। ऐसा (रत्न-स्वर्ण तरुओं और लताओं से इनको दिलाने का) काम स्वर्ग या भूलोक में और कहीं हो, इसका कोई मार्ग है क्या ? । ११४

नीरुम् वैयमु नॆरुप्पुमे निमिर्नॆडुङ् गालुम्
मारि वानमुम् वळङ्गल वाहुन्दम् वळर्च्चि
ऊरि निन्नॆडुङ् गोबुरत् तुयर्च्चिहण् डुणर्न्दाल्
मेरु वॆङ्गनम् विळर्क्कुमो मुळुमुऱ्ऱुम् वॆळ्हि 115

ऊरित्–लंकापुरी में की; इ नॆटुम् कोपुरम्–ये लम्बी मीनारें; तम् वळर्च्चि–अपनी ऊँचाई से; नीरुम्–जल; वैयमुम–भूमि; नॆरुप्पुम्–अनल और; मेल् निमिर्

नॅट्टुङ्कालुम्–ऊपर उठकर फैलनेवाला पवन; मारि वानुमुम्–और मेघों से युक्त आकाश; वळुङ्कल आकुम्–इनको आने से रोकती हैं; उयर्च्चि कण्टु–ऊँचाई देखकर; उणर्न्ताल्–समझना हो तो; मेरु–मेरुपर्वत; वॅळ्कि–लजाकर; मुळु मुरुम्–पूर्ण रूप से; अॅङ्ङनम् विळर्क्कुमो–कितना ही पांडुर हो जायगा। ११५

इस नगर की मीनारें बहुत उन्नत रहकर जल, भूमि, अग्नि ऊपर उठकर बहनेवाला पवन और मेघाश्रय आकाश —किसी को लंका के अन्दर आकर संचार करने नहीं देतीं। उनकी ऊँचाई की बात मेरु सोचे तो वह मन में लज्जा का अनुभव कर शरीर का कितना ही पांडुर हो जायगा ? (भय या लाज से शरीर का रंग श्वेत हो जाता है।)। ११५

मुन्नम् यावरु मिरावणन् मुनियुमॅन् रॅण्णिप्
पॊन्निन् मानहर् मीच्चॅलान् कदिरॅनप् पुहल्वार्
कन्नि यारॅयि नुयर्च्चिहण् डिदुकडप् परिदॅन्
रुन्नि नाडॊरुम् विलङ्गिनन् पोदलै युणरार् 116

मुन्नम्–पहले; यावरुम्–सब; कतिर्–सूर्य का; कन्नि आरॅयिन्–सुरक्षा के प्राचीरों की; उयर्च्चि कण्टु–ऊँचाई देखकर; इतु कटप्परितु–यह लाँघना कठिन है; अॅन्रु उन्नि–ऐसा सोचकर; नाटॊरुम्–प्रतिदिन; विलङ्कितन्–हटकर; पोतलै–जाना; उणरार्–न जानकर; इरावणन् मुनियुम्–रावण कोप करेगा; अॅन्रु अॅण्णि–ऐसा सोचकर; पॊन्निन् मा नकर्–श्रेष्ठ स्वर्णपुरी के; मी चॅलान्–ऊपर से नहीं जाता; अॅन पुकल्वार्–ऐसा कहते रहे। ११६

लंका नगर के रक्षक प्राचीरों की ऊँचाई को देखकर सूर्य ने सोचा कि इसको पार करना असम्भव है। अतः वह प्रतिदिन उनसे हटकर दूर जाता था। पर पहले सबको यह बात नहीं विदित हुई। वे तो यही कहते थे कि 'रावण कोप करेगा' —इस विचार से सूर्य स्वर्णपुरी लंका के ऊपर से नहीं जाता था। ११६

तीय शॅय्हुन रमररा लनैयवर् शेरुम्
वायि लल्लदोर् वरम्बमैक् कुवॅनॅन मदियाक्
काय मॅन्नुमक् कणक्करु पदत्तैयुङ् गडक्क
एयु नन्मदि लिट्टनन् कयिलैयन् रॅडुत्तान् 117

अन्रु–उस दिन; कयिलै अॅटुत्तान्–जिसने कैलास को उठा लिया; तीय चॅय्कुनर् अमरर्–हमारी हानि करनेवाले देव हैं; अनैयवर्–वे; चेरुम् ओर् वायिल् अल्लतु–आवें तो एक ही मार्ग से आवें, यह सोचकर उसको छोड़कर; (ओर्) वरम्पु अमैक्कुवॅन्–रुकावट डालूँगा; अॅन मतिया–यह सोचकर; कायम् अॅन्नुम्–आकाश के; कणक्कु अरु–असीम; अ पतत्तैयुम् कटक्क–स्थान को भी पार करके; एयुम् नल् मतिल्–बहुत ही बलवान प्राचीर; इट्टनन्–बनाया (उस रावण ने)। ११७

कैलास के उत्थापक रावण ने सोचा कि देवगण हमारे हानिकारक हैं। वे व्योमलोक में हैं और सुगमता से लंका में आ सकते हैं। उनका आने का मार्ग एक ही होना चाहिए। अतः राजद्वार को छोड़कर आकाश का मार्ग बन्द कर दूँगा। इसलिए उसने उन प्राचीरों को आकाश से भी अधिक ऊँचा और बलवान बनवा दिया था। ११७

करङ्गु कालुपुहा कार्पुहा कदिर्पुहा कनलि
मरम्बु हार्वेन्निन् वानवर् पुहारेन्नल् वम्बे
तिरम्बु कालत्तुम् यावैयुञ् जिदैयिनुञ् जिदैया
अरम्बु हामैया लऴियुमिप् पदियेन्न वयिर्त्तान् 118

करङ्कु काल्–ववण्डर बनाकर वहनेवाली हवा; पुका–वहाँ प्रवेश नहीं कर सकती; कार्–मेघ; पुका–घुसेंगे नहीं; कतिर् पुका–सूर्य की किरणें अन्दर नहीं जा सकतीं; कनलि–आग के; मरम्–क्रूर काम; पुका–नहीं चल सकते; ऍन्निन्–तो; वानवर् पुकार्–सुर नहीं आयँगे; ऍन्तल्–कहना; वम्पे–व्यर्थ है; तिरम्पु कालत्तुम्–प्रपंचनाश के समय में भी; यावैयुम् चितैयितुम्–अन्य सभी मिट जायँगे तो भी; चितैया अरम्–जो नष्ट नहीं होगा, वह धर्म भी; पुकामैयाल्–नहीं पहुँचता, इसलिए; इप्पति अऴियुम्–(उसी कारण) यह पुर नष्ट होगा; ऍन्न–ऐसा; अयिर्त्तान्–संशय किया (मारुति ने)। ११८

इस नगर के अन्दर चक्रवात प्रवेश नहीं कर सकता। मेघ नहीं घुसते। किरणें अन्दर नहीं जातीं। आग की क्रूर करनियाँ नहीं पहुँचतीं। ऐसा कहने के बाद यह कहना कि 'देव नहीं आयेंगे' व्यर्थ है! लोक-नाश के समय में भी, जब सभी मिट जाते हैं, जो नहीं मिटता वह धर्म भी नहीं प्रवेश कर पाता! उसी एक कारण से यह लंका नगरी नष्ट हो जायगी! यह सोचकर हनुमान ने सन्देह किया। ११८

कॊण्डल् वान्ऱिरैक् कुरैहड लिडैयदायक् कुडुमि
ऍण्ड वाविशुम् बॆट्टनिन् ऱिमैक्किन्ऱ वियल्बाल्
पण्ड रावणप् पळ्ळिया नुन्दियिर् पयन्द
अण्ड मेयुमॊत् तिरुन्ददिव् वणिनह रमैदि 119

कॊण्टल्–मेघमिश्रित; वान् तिरै–बड़ी तरंगें; कुरै कटल्–जिसमें गरजती हैं, उस समुद्र के; इटैयतु आय्–मध्य में स्थित; कुटुमि–मकानों के शिखर; ऍण् तवा–अमाप; विचुम्पु ऍट्ट–आकाश को छूते हुए; निन्ऱु–खड़े हैं; इमैक्किन्ऱ इयल्पाल्–और प्रकाश बिखेरते हैं, उस रीति से; इ अणि नकर्–इस सुन्दर नगर की; अमैति–रचना; अरावणै पळ्ळियान्–शेषशायी (श्रीविष्णु) ने; पण्टु–पहले; उन्तियिल् पयन्त–अपने उदर से जो जनाया था; अण्टमेयुम् ऒत्तिरुन्ततु–उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान भी था। ११९

यह नगर उस समुद्र के मध्य में था, जिसमें मेघ जमे थे और लहरें

गरज रही थीं। उसके सौधों के शिखर अनन्त आकाश को पहुँचे हुए थे और प्रकाशमय थे। इससे वह नगर उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान लगा, जो शेषशायी भगवान श्रीविष्णु के श्रीउदर से उत्पन्न हुआ था। ११९

पाडु वार्पल रॅन्रितिन्मर् ट्वरितुम् बलराल्
आडु वारॅन्ति तवरितुम् बलरुळ रमैदि
कूडु वारिडै यितृतियङ् गॉट्टुवार् वीडिल्
वीडु काणुगुरुन् देवराल् विळूनडङ् गाण्बार् 120

पाट्टुवार्–गानेवाले; पलर्–अनेक हैं; अॅन्तितृ–तो; अवरितुम् मर्रु–उनसे अधिक अन्य; पलर्–अनेक; आट्टुवार्–नाचते हैं; अॅन्तित्–तो; अमैति कूट्टुवार्–ताल-मेल (समाँ) बैठानेवाले; इटै–मध्य में; इत्रतियम् कॉट्टुवार्–मृदंग आदि बजानेवाले; अवरितुम् पलर् उळर्–उनसे अनेक हैं; वीटिल् वीटु–अबाध मोक्ष; काण्कुरुम्–देखना चाहनेवाले; तेवराल्–देवों द्वारा; विळु नटम्–श्रेष्ठ नृत्य; काण्पार्–देखते हैं। १२०

गानेवाले बहुसंख्यक हैं तो नाचनेवाले उनसे भी अधिक संख्या में हैं। तो लयन-क्रिया में लगे हुए और 'मर्दल' नामक (ढोल-सा) वाद्य बजानेवाले उनसे भी अधिक संख्या में। ये सब देव (करते) थे, जो अबाध मोक्ष के आकांक्षी थे। राक्षस लोग उनके ये नृत्य देखकर आनन्दानुभव कर रहे थे। १२०

वान मादरो डिहलुवर् विज्जैयर् महळिर्
आन मादरो डाडुव रियक्कियर् रवरैच्
चोनै वार्हुळ लरक्कियर् तॉडर्हुवर् तॉडर्न्दाल्
एनै नाहिय रुनडक् किरियैयायन् दिरुप्पार् 121

विज्चैयर् मकळिर्–विद्याधर-स्त्रियाँ; वात मातरोटु–अप्सराओं से; इकलुवर्–(नाच में) होड़ लगातीं; आत मातरोटु–उन (विद्याधर-स्त्रियों) से; इयक्कियर् आटुवर्–यक्षबालाएँ (स्पर्द्धा करके) नाचतीं; अवरै–उनका; चोनै वार् कुळल्–मेघ-सम और लम्बे केश वाली; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; तॉटर्कुवर्–अनुकरण करके नाचती हैं; अव्वारु तॉटर्न्ताल्–वैसा सिलसिला जब रहता; एनै–जो छूटी रहीं वे; नाकियर्–नाग-स्त्रियाँ; अरु नट किरियै–श्रेष्ठ नृत्यकार्य का; आयन्तु इरुप्पार्–विश्लेषण करती रहतीं। १२१

विद्याधरियाँ देवांगनाओं से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। यक्षकन्याएँ उन विद्याधरियों से स्पर्द्धा करती हैं। काले मेघों के समान केश वाली राक्षसबालाएँ उन यक्षस्त्रियों से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। जब वे सब ऐसा नाच रही हैं तब जो बची रहीं वे नागकन्याएँ उस नृत्य-कार्य के अनुकूल क्रियाओं में ध्यान देती रहतीं। १२१

इऴैयु माडैयु मालैयुञ् जान्दमु मेन्दि
उऴैय रॅन्ननिन् ऱुदवुव निदियङ्ग ळींरुवर्
विऴैयुम् बोहमे यिङ्गिदु वाय्हींडु विळम्बिल्
कुऴैयु नॅञ्जिनाल् निनैयिनु माशॆन्ऱु कॊळ्ळुम् 122

नितियङ्कळ्–नव निधियाँ; उऴैयर् ॲन्न–पार्श्ववर्ती दासों के समान; निन्ऱु–रहकर; इऴैयुम्–आभरणों; आटैयुम्–वस्त्रों; मालैयुम्–मालाओं और; चान्तमुम्–चन्दन को; एन्ति–उठाकर; उतवुव–देती हैं (राक्षस-स्त्रियों को); इङ्कु–यहाँ (लंका में); ऑरुवर् विऴैयुम्–एक राक्षसी जो इच्छा करती और पा लेती है; पोकमे–वह भोग ही; इतु–इतना है (तो); वाय् कॊटु विळम्पिल्–(भोग की महिमा) मुख से कहने लगें तो; कुऴैयुम्–(मुख) थक जायगा; नॅञ्चिनाल् निनैयिनुम्–मन से सोचने लगें तो; माचॆन्ऱु कॊळ्ळुम्–सोचना भी अपराध होगा। १२२

(महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, वर आदि) नवनिधियाँ हमेशा साथ रहनेवाली दासियों की तरह आभरणों, वस्त्रों, मालाओं और चन्दन को उठाते हुए पास रहती हैं और राक्षसियों को यथा-समय देती हैं। यही वहाँ की एक-एक राक्षसी के मनमाने भोग की स्थिति है। शब्दों द्वारा वर्णन करने का प्रयास करेंगे तो वाणी थक जायगी। मन में सोचना भी अपराध ही होगा। १२२

पॊन्निन् माल्वरै मेन्मणि पॊऴिन्दन्न पॊरुव
उन्नि नान्मुहत् तॊरुवनिन् ऱूऴ्मुऱै युरैप्पप्
पन्नि नाळ्बल पणियुळन् दरिदिनिऱ् पडैत्तान्
शॊन्न वानवर् तच्चना मिन्नहर् तुदिप्पान् 123

इन् नकर्–इस (लंका) नगर को; नान् मुकत्तॊरुवन्–चतुर्मुख; उन्नि निन्ऱु–सोचकर; ऊऴ् मुऱै–रचना-क्रम को; पन्नि उरैप्प–ज्यों-ज्यों कहते रहे; चॊन्न–जिससे कहा गया; वानवर् तच्चन्–उस देवशिल्पी (विश्वकर्मा) ने; तुतिप्पान्–स्तुत्य रीति से; पॊन्निन् माल् वरै मेल्–स्वर्ण (मेरु) महापर्वत पर; मणि पॊऴिन्तन्न पॊरुव–रत्न बरसाये गये हों जैसे; पल नाळ्–अनेक दिन; पणि उऴन्तु–परिश्रम करके; अरितिनिल्–अपूर्व रीति से; पटैत्तान्–रचा। १२३

चतुर्मुख ब्रह्मा खूब सोच-सोचकर रचना का क्रम बताते रहे और देवशिल्पी विश्वकर्मा ने अनेक दिन परिश्रम करके इस नगर को सबसे स्तुत्य रीति से ऐसा अपूर्व रच लिया मानो स्वर्णमेरु पर अनेक रत्न बरसाये गये हों। १२३

महर वीणैयिन् मन्दर कीदत्तु मरुन्द
शहर वेलैयि नार्हलि दिशैमुहन् दळुवुम्
शिहर माळिहैत् तलन्दॊरुन् दॆरिवैयर् तीरुम्
अहरु तूमत्ति नऴन्दिन मुहिऱ्कुल मनैत्तुम् 124

मकर वीणैयिन्–मकराकार वीणा के; मन्तर कीततुतु–मन्द स्वर में; चकर वेलैयिन्–सागर की; आर् कलि–बड़ी ध्वनि; मऱैन्त–छिप गयी; चिकर माळिकै–सशिखर महलों के; तिचै मुकम् तळुवुम्–दिशाओं के अन्तों को छूनेवाले; तलम् तोऱुम्–तलों में; तॅरिवैयर्–स्त्रियाँ; तीऱ्ऱुम्–जो अपने केशों को रमा रही थीं; अकरु तूमत्तिन्–उस अगरु के धूप में; मुकिल् कुलम्–मेघराशियाँ; अळुन्तित्त–दब गयीं। १२४

मकर के आकार की वीणा से जो मंथरस्वर उठा उसमें सगरपुत्र-खनित सागर के गर्जन लीन हो गये। सौध-शिखरों के दिगंत तक व्याप्त तलों पर स्त्रियाँ अपने केशों को जो अगरु-धूप लगा रही थीं, उस धूप में मेघसमूह छिप गये। १२४

पळिक्कु माणिहैत् तलन्दोरु मिडन्दोरुम् बशुन्देन्
तुळिक्कुङ् गऱ्पहत् तण्णरुञ् जोलैह डोरुम्
अळिक्कुन् देऱ्लुण् डाडिनर् पाडिन राहिक्
कळिक्किन् ऱारलाऱ् कवल्हिन्ऱा रोरुवरैक् काणेम् 125

पळिङ्कु माळिकै–स्फटिकनिर्मित महलों के; तलम् तोऱुम्–स्थल-स्थल में; कऱ्पकम्–कल्पतरु; इटम् तोऱुम्–यत्र-तत्र; पचुम् तेन्–ताजे शहद को; तुळिक्कुम्–जिनमें गिराते थे; तण् नऱुम्–(उन) शीतल सुगन्धित; चोलैकळ् तोऱुम्–नन्दनवनों में; अळिक्कुम्–(जो प्रेमी) देते हैं; तेऱल् उण्टु–ताड़ी को पीकर; आटिनर् पाटिनर् आकि–नाचनेवाली, गानेवाली बनकर; कळिक्किन्ऱार् अलाल्–मत्त जो रहती हैं (राक्षसियाँ) उनको छोड़कर; कवल्किन्ऱार्–चिन्तित रहनेवाली; ऑरुवरै काणेम्–किसी (एक) को नहीं देखते। १२५

स्फटिक-निर्मित प्रासादों में सर्वत्र, और ऐसे शीतल-सुगन्धित उद्यानों में सर्वत्र, जहाँ कल्पवृक्ष ताजा शहद गिराते हैं, प्रेमियों द्वारा दी गयी ताड़ी को पीकर नारियाँ मत्त हो नाचती-गाती हैं। उनको छोड़कर कोई चिन्ता-मग्न रहनेवाले नहीं दिखते। १२५

तेऱल् मान्दिनर् तेनिशै मान्दिनर् शॅव्वाय्
ऊऱल् मान्दिन रिन्नुरै मान्दिन रूडल्
कूऱल् मान्दिन रनैयवर्त् तोळुदवर् कोबत्
ताऱल् मान्दिन ररक्कियर्क् कुयिरन्न वरक्कर् 126

अरक्कियर्क्कु–राक्षसियों के लिए; उयिर् अन्न–प्राण-सम; अरक्कर्–राक्षसों ने; तेऱल् मान्तिनर्–ताड़ी पी; तेनिचै मान्तिनर्–मधु (मधुर) गीत सुना; चॅव्वाय् ऊऱल्–लाल अधर-रस का; मान्तिनर्–पान किया; इन् उरै–मधुर वाणी का; मान्तिनर्–भोग किया; ऊटल् कूऱल्–रूठन के वचन; मान्तिनर्–सन्तोष के साथ सुने; अनैयवर् तॉळुतु–उनको नमस्कार करके; अवर् कोपत्तु आऱल्–उनके कोप का शान्त होना; मान्तिनर्–देख आनन्द पाया। १२६

राक्षसियों के प्राणप्यारे राक्षसों ने उनका दिया मद्यपान किया; मधुमधुर संगीत का (पान) स्वादन किया; लाल अधरों के रस का पान किया। उनकी मीठी वाणी का रस पिया। फिर रूठन के समय के कठोर वचन भी आनन्द के साथ सुन लिये। उस पर उनको नमस्कार करके उनके शान्त होने का मोद-रस भोगा। १२६

ऑरित्त कुङ्गुमत् तिळमुलै यॅऴ़ुदिय तॊयिल्हळ्
करुत्त मेऩियिऱ् पॊलिन्दऩ वूडलिऱ् कऩऩ्ऱु
मऱिक्क णोक्कियर् मलरडिप् पङ्गयप् पञ्जिल्
कुऱित्त कोलङ्गळ् पॊलिन्दिल वरक्कर्तङ् गुञ्जि 127

इळमुलै–बाल स्तनों पर; कुङ्कुमत्तु ॲऴ़ुतिय–कुंकुम से लिखित; ऑरित्त–प्रकाशमय; तॊयिल्कळ्–शृंगारचित्र; करुत्त मेतियिल्–(राक्षसियों के) काले शरीर पर; पॊलिन्तत–शोभे; ऊटलिल् कतऩ्ऱु–रूठन में कोप करके; मऱिक्कण् नोक्कियर्–जो तरेरीं उन मृगनयना राक्षसियों के; पङ्कय मलरटि–पंकज-सम चरणों में; कुऱित्त कोलङ्कळ्–(महावर के) लिखित चित्र; अरक्कर् तम् कुञ्चि–राक्षसों के सिरों पर; पॊलिन्तिल–शोभित नहीं लगे। १२७

स्त्रियों के तरुण स्तनों पर कुंकुम-लेप से चित्रकारी जो बनी थी, उसके उज्ज्वल चित्र राक्षसों के काले शरीर पर लगे और चमके। पर रूठकर गुस्से के साथ देखनेवाली राक्षसी-नारियों के पंकज-चरणों पर चित्रित चित्र-कारी राक्षसों के सिर पर लगी (राक्षसियों के प्रणय-कलह की चेष्टा में लात मारने से); पर उनके केशों पर नहीं चमकी (क्योंकि उनके केश का रंग पहले ही लाल था)। १२७

विळरिच् चॊल्लियर् कोदैयाल् वेलैयुण् मिडैन्द
पवळक् काडॆऩप् पॊलिन्दडु पडॆनॆडुङ् गण्णाल्
कुवळैक् कोट्टहङ् गडुत्तदु कुळिर्मुहक् कुऴ़ुवाल्
मुळरिक् कातह माऩदु मुऴ़ङ्गुनी रिलङ्गै 128

मुऴ़ङ्कु नीर् इलङ्कै–शब्दायमान समुद्र से वलयित लंका; विळरिच् चॊल्लियर्–'विळरि' नाम की तान के समान बोली वाली; कोतैयाल्–(राक्षसियों के) ताम्र-केशों से; वेलैयुळ् मिटैन्त–समुद्र के अन्दर रहनेवाले; पवळक्काटु–प्रवालवन; ॲत–के समान; पॊलिन्ततु–शोभी; पटै नॆटुम् कण्णाल्–हथियारों-सदृश आयत आँखों के कारण; कुवळै कोट्टकम्–कुवलय-भरे तडाग; कटुत्ततु–के समान रही; कुळिर् मुक कुऴ़ुवाल्–उनके शीतल (मनोरम) मुखों के समूहों के कारण; मुळरि कातकम् आततु–कमल-वन बनी। १२८

गर्जनशील जलमय सागर के मध्य लंका प्रवाल वन के समान दिखी, वहाँ की 'विळरि' राग के समान मीठी बोलनेवाली राक्षस-नारियों के सिर

के केशों के कारण। उनके हथियार-सम नेत्रों के कारण कुवलयसंकुल जलाशय के समान लगी और शीतल (मनोरम) मुखों को लेकर कमलवन (-सी) बन गयी। १२८

ॲळ्न्दनर् तिरिन्दु वैहु मिडत्तदा यिन्ऱु काऱुम्
किळिन्दिल तण्ड मॅन्नु मिदनैये किळप्प दल्लाल्
अळिन्दुनिन् ऱाव दॅन्ने यलरुळो नादि याह
ऑळिन्दवे ऱुयिर्ह ळॅल्ला मरक्करुक् कुऱैयुम् बोदा 129

अण्टम्–यह अण्ड; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; ॲळुन्तनर्–(राक्षस) उठे; तिरिन्तु–घूमे; वैकुम्–और रहे; इटत्तताय्–उनको स्थान देती रही; किळिन्तिलतु–तो भी फटी नहीं; ॲन्नुम् इतनैये–इस बात को; किळप्पतु अल्लाल्–विस्मय के साथ कहने के सिवा; अळिन्तु निन्ऱु–मन में थक जाने से; आवतु ॲन्ने–होगा क्या; अलर् उळोन् आतियाक–कमलासन आदि; ऑळिन्त वेऱु–बाकी अन्य सभी; उयिर्कळ् ॲल्लाम्–जीवराशियाँ; अरक्करुक्कु–राक्षसों के लिए; उऱैयुम् पोता–गिनती के निशान भी नहीं बन सकतीं। १२९

यह अण्ड आज तक राक्षसों के घूमने, फिरने और रहने का स्थान रहकर भी बिना चिरे वैसे ही यथावत रहता है! यह विस्मय प्रकट करके मन को तृप्त कर लेने के सिवाय मन मारे रहने से क्या मिलनेवाला है? कमलासन ब्रह्मा से लेकर सारे जीव लंका के राक्षसों की संख्या के प्रतिनिधि-चिह्न भी नहीं बन सकते। १२९

कायत्तार् पॅरियर् वीरङ् गणक्किल रुलहङ् गल्लुम्
आयत्तार् वरत्तिन् ऱन्मै यळवर्ऱा रऱिद रेर्ऱा
मायत्ता रवर्क्कॅङ् गेनुम् वरम्बुमुण् डामे मर्ऱोर्
तेयत्तार् तेयञ् जेरल् तॅऱुविलार् शॅरुविर् चेरल् 130

कायत्ताल्–(लंकावासी सभी) आकार में; पॅरियर्–बड़े हैं; वीरम्–वीरता में; कणक्कु इलर्–अमाप हैं; उलकम् कल्लुम्–पृथ्वी को भी उखाड़नेवाले; आयत्तार्–कार्यचतुर हैं; वरत्तिन् तन्मै–वरों की संख्या; अळवर्ऱार्–अनगिनत (वाले) हैं; अऱितल् तेर्ऱा–न जानने योग्य; मायत्तार्–मायावी हैं; अवर्क्कु वरम्पुम्–उनकी सीमा भी; ॲङ्केनुम् उण्टामे–कहीं हो सकती है क्या; मर्ऱोर् तेयत्तार्–अन्य देश के लोगों का; तेयम् चेरल्–इस देश में पहुँचना; तॅऱुविलार्–बलहीन लोगों का; चॅरुविल् चेरल्–युद्ध में जाना (सा) होगा। १३०

लंका नगर के राक्षस आकार में बड़े हैं। वीरता में भी अमाप हैं। संसार को ही खोद लेने का उपाय रच सकनेवाले हैं। उनसे प्राप्त वरों की गणना नहीं। ऐसे माया-कार्य करनेवाले, जिन्हें दूसरे जान नहीं सकते। उनकी संख्या या वीरता की सीमा भी है? अन्य देशवासियों का इस लंका

में आना युद्ध-सामर्थ्य न रखनेवाले दुर्बलों का युद्ध में जाने के समान होगा। (तॅरुविलार् चॅरुविऱ् चेऱल्— का यह अर्थ है। पाठान्तर तॅरुविलोर् तॅरुविऱ् चेऱल्— का अर्थ होगा— एक वीथी से दूसरी वीथी में जाना देश से देश जाने के समान होगा।)। १३०

कऴलुलाङ् गालुङ् गाल वेलुलाङ् गैयुम् कान्ऱुम्
अऴलुलाङ् गण्णू मिल्ला वाडव रिल्लै यन्नार्
कुऴलुलाङ् गळिवण् डार्क्कुङ् गुञ्जियार् पञ्जि कुन्ऱा
मऴलैयाऴ्क् कुदलैच् चॅव्वाय् मादरु मिल्लै मादो 131

कऴल् उलाम्–पायलें जिन पर हिलती रहती हैं; कालुम्–वे पैर और; काल वेल्–यम-से भाले; उलाम् कैयुम्–जिनमें क्रियाशील रहते हैं वे हाथ; कान्ऱुम् अऴल्–धधकती आग; उलाम्–जिनमें जलती रहती है; कण्णुम्–वे आँखें; इल्ला–जिनके नहीं हैं; आटवर् इल्लै–ऐसे पुरुष नहीं हैं; अन्नार्–उनके; कळि वण्टु–मत्त भ्रमर; आर्क्कुम्–जिन पर गुंजार करते (मँड़राते) हैं; कुऴल् उलाम्–घुंघुराले और हिलनेवाले; कुञ्चियाल्–केशों से; पञ्चि कुन्ऱा–महावर जिनका पोंछा नहीं गया हो; मऴलै याऴ् कुतलै–(ऐसी) सुस्वर वीणा की-सी बोली और; चॅव्वाय्–लाल अधरों वाली; मातरुम्–स्त्रियाँ; इल्लै–नहीं हैं। १३१

वहाँ ऐसे पुरुष नहीं पाये जाते जिनके पैरों में पायलें रहकर नहीं हिलतीं; जिनके हाथों में यम के समान भयंकर भाले नहीं घूमते; और जिनकी आँखों में आग (तेज़) नहीं जलती। ऐसी राक्षस-नारियाँ भी पायी नहीं जातीं, जो मधुर वीणा के स्वर के समान मीठी वाणी और लाल अधरों से युक्त नहीं थीं और जिनके चरणों का महावर उन पुरुषों के मदमत्त भ्रमरों से गुञ्जित और लच्छेदार केशों द्वारा मिटा नहीं हो। १३१

कळ्ळुऱक् कन्निन्द पङ्गि यरक्करैक् कडुत्त कादल्
पुळ्ळुऱत् तॊडरु मेनि पुलालुऱक् कडिदु पोव
वॆळ्ळुरुप् पॆयिऱ्ऱ चॆय्य तलैयिन करिय मॆय्य
उळ्ळुऱक् कळित्त कुन्ऱि नुयर्च्चिय वोडै यानै 132

ओटै यानै–मुखपट्टों से अलंकृत गज; कातल्–चाह के साथ; पुळ् उऱ–भ्रमर साथ लगकर; तॊटरुम्–जिनके पीछे जाते हैं; मेनि–शरीर; पुलाल् उऱ–मांस-गन्ध से युक्त हैं, जैसे; कटितु पोव–तेजी से जाते हैं; वॆळ् उरुप्पु ऍयिऱ्ऱ–श्वेत दाँत वाले हैं; चॆय्य तलैयित्त–ताम्र रंग के सिर वाले हैं; करिय मॆय्य–काले शरीर वाले हैं; उळ् उऱ–अन्दर से; कळित्तल–मोद-भरे हैं; कुन्ऱिन् उयर्च्चिय–पर्वत-सम ऊँचे हैं; कळ् उऱ–शहद-सम; कन्नित–लाल; पङ्कि–केश वाले; अरक्करै–राक्षसों; कटुत्त–के समान हैं। १३२

मुखपट्टालंकृत गज तेज़ भागते हैं। उनके शरीर से मांस की गन्ध निकलती है और कामना के साथ भ्रमर उनके पीछे चलते हैं। वे श्वेतवर्ण

दाँतों वाले हैं; लाल सिरों वाले काले शरीरी; मन में मस्ती लिये हुए; पर्वत के समान ऊँचे। इससे वे शहद के समान लाल रंग वाले केशों से युक्त राक्षसों के समान लगते थे। १३२

वळ्ळिनुण् मरुङ्गु लॅन्न वान्वर् महळि रुळ्ळम्
तळ्ळुऱप् पाणि तळ्ळा नडम्बुरि तडङ्गण् मादर्
वॅळ्ळिवॅण् मुऱुव ऱोन्ऱु मुहत्तियर् वॅळ्हु हिन्ऱार्
कळ्ळिशै यरक्कर् मादर् कळित्तिडु कुरवै काण्बार् 133

वळ्ळि–लता-समान; नुण् मरुङ्कुल् ॲन्न–अपनी क्षीण कमरों के समान; उळ्ळम् तळ्ळुऱ–मन के लचकते; पाणि तळ्ळा नटम्–तालबद्ध नृत्य; पुरि–करनेवाली; तटङ्कण् मातर्–आयतनयना स्त्रियाँ; वानवर् मकळिर्–देवांगनाएँ; वॅळ्ळि वॅण्–चाँदी-सम श्वेत; मुऱुवल्–हास; तोन्ऱुम्–जिन पर प्रकट है; मुकत्तियर्–ऐसे मुख वाली; वॅळ्कुकिन्ऱार्–लजाते हुए; कळ् इच–ताड़ी पीकर गानेवाली; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियों के; कळित्तिट्ट कुरवै–किये 'कुरवै' नाम के नाच को; काण्पार्–देखती हैं। १३३

सुरनंदिनियाँ राक्षस-कुमारियों का 'कुरवै' नृत्य लज्जा का अनुभव करती हुई देख रही हैं। विशाल आँखों वाली देवांगनाएँ अपनी कमरों के समान लचकते मन के साथ तालबद्ध लय-सहित नाच सकनेवालियाँ हैं। वे अब श्वेत दाँतों को प्रकट करती हुई उनका नाच देख रही हैं! 'कुरवै' नृत्य में स्त्रियाँ परस्पर तालियाँ पीटते हुए नाचती हैं। (देवांगनाएँ इसलिए लज्जा का अनुभव करतीं और मन्दहास करती हैं कि वे राक्षसियाँ नशे में रहती हैं और उनके शरीरों पर वस्त्र ठीक नहीं रहते।)। १३३

ऑरुत्तलो निऱ्क मऱ्ऱॅम् मुयर्पडैक् कॊरुङ्गिव् वूर्वन्
दिरुत्तलु मॅळिदा मऱ्ऱुम् यावर्क्कु मियक्क मुण्डे
करुत्तवा ळरक्कि मारु मरक्करुङ् गळित्तु वीशि
वॅरुत्तपूण् वॅरुक्कै याले तूर्मिव् वीदि यॅल्लाम् 134

ऑरुत्तलो निऱ्क–युद्ध करना एक ओर रहे; ऍम् उयर् पटैक्कु–हमारी श्रेष्ठ (वानर) सेना के लिए; इव्वूर्–इस नगर में; ऑरुङ्कु वन्तु–एक साथ आकर; इरुत्तलुम्–आ पहुँचना भी; ऍळितु आम्–सुलभ हो सकता है; मऱ्ऱुम्–तो भी; यावर्क्कुम्–उन सबके लिए; इयक्कम् उण्टे–संचार के लिए स्थान मिलेगा क्या; करुत्त वाळ्–काली छटा से युक्त; अरक्कि मारुम् अरक्करुम्–राक्षसियों और राक्षसों ने; कळित्तु–उतारकर; वीचि वॅरुत्त–जिनको फेंक दूर किया है; पूण् वॅरुक्कैयाले–आभरणों की पुष्कल राशि से; इ वीति ऍल्लाम्–ये सारी वीथियाँ; तूर्म्–पट गयी हैं। १३४

(हनुमान सोचता है—) हमारी सेना का इधर आकर युद्ध करना एक ओर रहे; शायद उनका एकत्र होकर इधर आना सुगम होगा। पर

उन वीरों के लिए इधर चलना-फिरना सुगम होगा क्या ? सभी वीथियाँ तो उन आभरणों से पटी हुई हैं, जिनको काले प्रकाश वाले राक्षसों और राक्षसियों ने उकताकर उतार फेंका था । १३४

वडङ्गळुङ् गुळैयुम् बूणु मालैयुञ् जान्दुम् यानैक्
कडङ्गळुङ् गलिन माविलालिळियुङ् गणक्कि लाद
इडङ्गळि निडङ्ग डोरुम् यारोडु मडुत्त वॅल्लाम्
अडङ्गिय दॅन्नि लॅन्ने याळियि नाळ्न्द दुण्डो 135

वटङ्कळुम्-हार और; कुळैयुम्-कुण्डल और; पूणुम्-आभरण; मालैयुम्-मालाएँ; चान्तुम्-चन्दन; यानैक् कटङ्कळुम्-गजों के मदनीर की धाराएँ; कलित मा-रास से युक्त अश्वों की; विलाळियुम्-लार और झाग; कणक्किलात-अमाप हैं; इटङ्कळिन् इटङ्कळ् तोरुम्-अनेक स्थलों में; यारॊटु मटुत्त-नदियों से मिलकर; ऍल्लाम्-सभी; अटङ्कियतु ऍन्निन्-(इस समुद्र में) समा गये तो; आळियिन् आळ्न्ततु-इस समुद्र से अधिक गहरा; ऍन्ने उण्टु-क्या ही है । १३५

(इस पद्य में समुद्र की गहराई का संकेत है ।) हार, कुण्डल, आभरण, पुष्प-मालाएँ, चन्दन, हाथियों का मदजल, लगाम-लगे अश्वों के मुख से निकलनेवाला झाग —ये सब यत्र-तत्र अत्यधिक परिमाण में नदियों से मिलकर समुद्र में आ समाहित हो गये । तो उस समुद्र से गहरा क्या है ? । १३५

विऱ्पडै पॅरिदॅन् गेन्नो वेऱ्पडै मिहुमॅन् गेन्नो
मऱ्पडै युडैत्तॅन् गेन्नो वाट्पडै मलिवॅन् गेन्नो
कऱ्पणन् दण्डु पिण्डि पालमॅन् ऱिनैय कान्दु
नऱ्पडै पॅरिदॅन् गेन्नो नायहऱ् कुरैक्कु नाळिल् 136

नायकऱ्कु-अपने स्वामी से; उरैक्कुम् नाळिल्-जब कहूँ तब; विऱ्पटै-धनुर्धर वीरों की सेना; पॅरितु-बड़ी है; ऍन्केन्नो-कहूँ क्या; वेऱ्पटै-भालाधारी वीरों की सेना; मिकुम् ऍन्केन्नो-अधिक है कहूँ; मल् पटै उटैत्तु-मल्लों की सेना रखता है; ऍन्केन्नो-कहूँ; वाळ् पटै-तलवार-धारी वीरों की सेना; मलिवु ऍन्केन्नो-अधिक है कहूँ; कऱ्पणम्-काँटेदार गदा; तण्टु-दण्ड; पिण्टिपालम्-भिंदिपाल; ऍन्ऱु-आदि; इनैय कान्तुम्-ऐसे हथियारों से भूषित; नऱ्पटै-(वीरों की) अच्छी सेना; पॅरितु-बड़ी है; ऍन्केन्नो-कहूँ क्या । १३६

(हनुमान अपने आप कहने लगा ।) जब मैं अपने स्वामी श्रीराम से जा मिलूँ और यहाँ की सेना-स्थिति बताऊँ तो क्या कहूँगा ? धनुर्धर वीरों की सेना बड़ी है, कहूँ ? या भालाधारी वीरों की सेना बड़ी है —कहूँ ? मल्लों की सेना को बड़ा कहूँ या तलवारधारी वीरों की सेना को ? या यही कहूँगा कि 'कर्पणम्' नामक काँटेदार गदा, दण्ड, भिंदिपाल आदि चलानेवाले वीरों की सेना बड़ी है ? । १३६

ऍन्ऱ्न तिलङ्गै नोक्कि यितैयन पिऱवु मॆण्णि
निन्ऱव णरक्कर् वन्दु नेरिनु नेरव रॆन्ऩात्
तन्ऱहै यरिय मेनि शुरुक्कियच् चारल् शार्न्दु
कुन्ऱिडै यिरुन्दान् वॆय्योन् कुडकडर् कुळिप्प दानान् 137

इलङ्कै नोक्कि–लंका को देखकर; ऍन्ऱनन्–ऐसा कहते हुए; इतैयत–यों; पिऱवुम्—और अन्य बातें; ऍण्णि निन्ऱु–सोचते हुए खड़े रहकर; अवण्–वहाँ; अरक्कर् वन्तु–राक्षस आकर; नेरितुम्–मिलें तो; नेर्वर्–मिल सकेंगे; ऍन्ना–सोचकर; तन् तकै अरिय–अपने ही सम अपूर्व; मेनि–शरीर को; चुरुक्कि–संग्रह करके; अ कुन्ऱिटै–उस (प्रवाल) पर्वत के; चारल्–पार्श्व में; चार्न्तु इरुन्तान्–जाकर रहा; वॆय्योन्–किरणमाली; कुट कटल्–पश्चिमी सागर में; कुळिप्पतु आनान्–डूबने लगा। १३७

हनुमान प्रवाल पर्वत पर विराजे हुए यह सब सोच रहा था। तब उसे विचार आया कि राक्षस लोग वहाँ आ सकेंगे —इसकी सम्भावना है। इसलिए उसने अपने आकार को, जो उसके उन्नत स्वभाव के ही अनुरूप बड़ा था, छोटा कर लिया। फिर वह पर्वत के पार्श्वस्थल में जाकर रहा। तभी उष्णकिरण सूर्य भी पश्चिमी सागर में डूबा। १३७

एय्विनै यिरुदियिर् चॆल्व मॆय्दिनान्
आय्विनै मनत्तिला नऱिञर् शॊऱ्कॊळात्
वीविनै निनैक्किला नॊरुवन् मॆय्यिलात्
तीविनै यॆनविरुळ् शॆऱिन्द दॆङ्गुमे 138

एय्विनै–पूर्वकर्म से; इरुति इल् चॆल्वम्–अपार धन; ऍय्तितान्–जिसे प्राप्त हो; मनत्तु आय्विनै–मन में सोचकर कार्य करनेवाला; इलान्–जो नहीं है; अऱिञर् चॊल्–विद्वानों का कहना; कॊळात्–जो ग्रहण नहीं करता; वीविनै–अपने मरण को; निनैक्किलान्–जो नहीं सोचता; मॆय्यिलात्–जो सत्यसंध नहीं; ऒरुवत्–ऐसे एक के; तीविनै अॆत–पाप के समान; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; इरुळ्–अन्धकार; चॆऱिन्ततु–घने रूप से छा गया। १३८

तब अन्धकार छाने लगा। वह अन्धकार उस पापी के पाप के समान फैला जिसके पास पूर्व-सुकृत्य के फलस्वरूप धन मिला था; पर जिस अविवेकी असत्यवादी और ज्ञानी के उपदेशों को न सुननेवाले ने अपने सम्भाव्य मरण की बात भी नहीं सोची और पापकर्म करना आरम्भ कर दिया। १३८

करित्तमून् ऱॆयिलुडैक् कणिच्चि वानवन्
ऍरित्तलै यन्दण रिळैत्त यानैयै
उरित्तपे ऱुरिवैया लुलहुक् कोरुरै
पुरित्तन नान्मुह नॆन्नुम् बॊऱ्पदे 139

करित्तुत मून्रू ऍयिल्–दग्ध-त्रिपुर; उटै–जिनके द्वारा बना; कणिच्चि वानवन्–"तप्त लोहा" के आयुध-धारी देव श्री शिवजी ने; ऍरितलै–यागाग्नि में; अन्तणर्–(दारुका वन के) ऋषियों ने; इळैत्तुत–जिसको सृष्ट किया; यानैयै–उस गज को; उरित्तुत–उधेड़कर; पेर् उरिवैयाल्–उस बड़े चर्म से; नान्मुकन् उलकुक्कु–चतुर्मुख-सृष्ट इस संसार पर; ओर् उरै पुरित्ततन्–एक चादर उढ़ा ली; ऍन्नुम्–ऐसा कहने योग्य; पोऱ्पतु–रीति का था (वह अन्धकार)। १३९

दारुका वन के ऋषियों ने त्रिपुरांतक, परशु (या तप्त लोहे को हथियार के रूप में) रखनेवाले शिवजी को मारने के लिए होमाग्नि में एक हाथी को सृष्ट कराया था। शिवजी ने उस गज को मारकर उसका चर्म उधेड़ लिया। अब यह अंधकार उस गजचर्म के समान था, जिसे शिवजी ने चतुर्मुखरचित संसार पर उढ़ा दिया हो। १३९

अणङ्गरा वरशर्हो नलवि लाण्डॅलाम्
पणङ्गिळर् तलैतोरु मुयिर्त्त पाय्विडम्
उणङ्गलि लुलहॅला मुऱैयि नुण्डुवन्
दिणङ्गॅरि पुहैयॊडु मॅळ्न्द दॅन्नवे 140

अणङ्कु अरा–परपीड़क सर्पों का; अरचर् कोन्–राजा ने; अळविल् आण्टु ऍलाम्–असंख्यक वर्षों से; पणम् किळर् तलै तोऱुम्–खुले फनों के अपने सिरों से; उयिर्त्तत–जो निकाला; पाय् विटम्–वह बहनेवाला विष; उणङ्कल् इल्–अक्षय; उलकॅलाम्–लोकों को; मुऱैयिन्–क्रम से; उण्टु वन्तु–नाश करके आकर; इणङ्कु–मिलित; ऍरि पुकैयोटुम्–आग और धुएँ के साथ; ऍळुन्ततु–छा उठा हो; ऍन्नवे–इस रीति से (छाया)। १४०

और भी वह अंधकार विष के समान भी लगा। कष्टदायक सर्पों के राजा आदिशेषनाग के खुले फनों वाले सिरों से अब तक जितना विष निकला था वह सब मिलकर अक्षय लोकों को क्रम से लीलकर आया हो और आग और धुएँ के साथ छा उठा हो —ऐसा लगा वह अंधकार। १४०

वण्मैनीङ् गानॅडु मरबिन् वन्दवप्
पॅण्मैनीङ् गादहऱ् पुडैय पेदैयत्
तिण्मैनीङ् गादवन् शिऱैवैत् तानॅनुम्
वॅण्मैनीङ् गियपुहऴ् विरिन्द दॅन्नवे 141

वण्मै नीङ्का–दानशीलता से जो रहित न हुआ; नॅटु मरपिन् वन्त–उस लम्बे कुल में उत्पन्न; अ पॅण्मै नीङ्कात–उस स्त्रीत्व-संयुक्त; कऱ्पुटैय पेतैयै–चरित्रवती अबोध बाला सीताजी को; तिण्मै नीङ्कातवन्–जो बलहीन नहीं रहा उस (सबल रावण) ने; चिऱै वैत्तान्–कारागृह में बन्द किया; ऍनुम्–यह; वॅण्मै नीङ्किय पुकऴ्–(असित यश =) निन्दा; विरिन्ततु–फैली; ऍन्नवे–जैसे (अन्धकार फैला)। १४१

वह अन्धकार प्रकाश (गौरव) से रहित उस अपयश के समान फैला कि दानशीलता से अविच्छिन्न दीर्घ कुल में उत्पन्न और स्त्रीत्व के गौरव से अत्यक्त चरित्रवती सती सीता को अवलहीन रावण ने कठोर कारा में बन्द कर रखा। (वॅण्मै नीङ्किय पुकऴ् की शब्द-योजना अनूठी है। उसका सीधा अर्थ 'यश, जिससे श्वेतता दूर हो गयी हो' —है)। १४१

अव्वऴि यव्विरुळ् परन्द वायिडै
ॲव्वऴि मरुङ्गिनु मरक्क रॅय्दिनार्
शॅव्वऴि मन्दिरत् तिशैय राहैयाल्
वॅव्वऴि यिरुडर मदित्तु मीच्चॅल्वार् 142

अ वऴि—उस रीति से; अ इरुळ्—वह अन्धकार; परन्त आ इटै—जब फैला तब; अरक्कर्—राक्षस; ॲ वऴि मरुङ्कित्तुम्—सब स्थानों में; ॲय्तिनार्—आये; मन्तिर चॅम् वऴि—मन्त्रों के बल से अच्छे मार्ग बनाकर; तिचैयर्—सभी दिशाओं में जा सकनेवाले होने के कारण; वॅम् इरुळ् वऴि तर—भयंकर अन्धकार ने भी मार्ग दिया; मतित्तु—उसका मथन करके; मी चॅल्वार्—आगे गये। १४२

जब अन्धकार वैसा फैल रहा था तब राक्षस सब स्थानों में आ गये और मन्त्रबल से जाने का सामर्थ्य रखने के कारण अन्धकार उन्हें रोक नहीं सका; बल्कि उसने मार्ग दिये। वे उस अन्धकार को रौंदते और पीसते हुए आगे जाने लगे। १४२

इन्दिरन् वळनहर्क् केहु वारॅऴिल्, चन्दिर नुलहिनैच् चार्हु वार्शलत्
तन्दह नुरैयुळै यणुहु वारयिल्, वॅन्दॊऴि लरक्कन देवन् मेयिनार् 143

अयिल्—भालाधारी; वॅम् तॊऴिल्—क्रूरकर्मा; अरक्कततु—राक्षस रावण की; एवल् मेयितार्—आज्ञा धारण कर; इन्तिरन् वळ नकर्क्कु—इन्द्र के समृद्ध नगर; एकुवार्—जाते; ॲऴिल्—सुन्दर; चन्तिरन् उलकित्तै—चन्द्रलोक; चार्कुवार्—पहुँचते; चलत्तु—कोपिष्ठ; अन्तकन् उरैयुळै—यम के वासस्थान के; अणुकुवार्—निकट जाते। १४३

वे राक्षस क्रूरकर्मा रावण के आज्ञाकारी थे। वे इन्द्र के समृद्ध नगर जाते; सुन्दर चन्द्रलोक पहुँचते। क्रोधशील यम के वासस्थान में ही जा पहुँचते थे। १४३

पॊन्नहर् मडन्दैयर् विञ्जैप् पूवैयर्
पन्नह वतिदैय रियक्कर् पावैयर्
मुन्निनर् पणिमुऱै मारि मुन्दुवार्
मिन्निन मिडैन्दॅन विशुम्बिन् मेर्चॅल्वार् 144

पॊन्नकर् मटन्तैयर्—सुररमणियाँ; विञ्चै पूवैयर्—विद्याधर-विलासिनियाँ; पन्नक

वऩितैयर्–पन्नग-कन्याएँ; इयक्कर् पावैयर्–यक्षनन्दिनियाँ; पणि मुऱ्ऱि–अपनी सेवाएँ पूरा करके; मुऩ्ऩितर्–एक के पहले एक; मुऩ्ऩुवार्–लौट जातीं; मिऩ् इऩम् मिटैन्दॆऩ–बिजली के समूह एकत्र हो जाएँ, जैसे; विचुम्पिऩ् मेल्–आकाश में; चॆल्वार्–गयीं। १४४

सुरनन्दिनियाँ, विद्याधरबालाएँ, पन्नगकन्याएँ, यक्षकुमारियाँ —ये सब लंका में अपनी सेवाएँ समाप्त करके एक के पहले एक अपने-अपने स्थान को जा रही थीं। वे बिजलियों के समूह के समान आपस में मिलकर आकाशमार्ग में जा रही थीं। १४४

तेवरु	मवुणरुञ्	जॆङ्ग	णाहरुम्
मेवरु	मियक्करुम्	विज्जै	वेऩ्दरुम्
एवरुम्	विशुम्बिरु	ळिरिय	वीण्डिऩार्
तावरुम्	बणिमुऱ्ऱ	तळुवुन्	दऩ्मैयार् 145

ता अरुम्–निरन्तर; पणि मुऱ्ऱ तळुवुन्–सेवा-क्रम अपनाने के; तऩ्मैयार्–स्वभाव वाले; तेवरुम् अवुणरुम्–देव और दानव; चॆम् कण् नाकरुम्–लाल आँखों के नाग लोग; मेवरुम् इयक्करुम्–प्यारे लगनेवाले यक्षगण और; विज्चै वेन्तरुम्–विद्याधर राजा; एवरुम्–आदि सभी; विचुम्पु इरुळ् इरिय–आकाश से अन्धकार को दूर करते हुए; ईण्टिऩार्–एकत्रित हुए। १४५

देवता लोग, दानव, लाल आँखों वाले नाग, मोहक शरीर वाले यक्ष, विद्याधर राजा आदि विविध देव जातियों के समूह भी आकाश में अन्धकार को दूर करते हुए जा रहे थे। वे सब बिना भूल-चूक के अपनी-अपनी सेवाएँ पूरा करके जा रहे थे। १४५

चित्तिरप्	पत्तियिऱ्	ऱेवर्	चॆऩ्ऱऩर्
इत्तुणै	ताऴ्त्तऩम्	मुऩियु	मॆऩ्ऱुतम्
मुत्तिऩा	रङ्गळुम्	मुडियु	मालैयुम्
उत्तरी	यङ्गळुम्	शरिय	वोडुवार् 146

चित्तिर पत्तियिल्–चित्रों की पंक्तियों में जैसे; चॆऩ्ऱऩर्–जो गये; तेवर्–वे देव लोग; इ तुणै ताऴ्त्तऩम्–इतनी देर विलम्ब कर लिया; मुऩियुम्–गुस्सा करेगा (रावण); ऎऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; तम् मुत्तिऩ् आरङ्कळुम्–उनके मुक्ताहार और; मुटियुम्–किरीट; मालैयुम्–मालाएँ; उत्तरीयङ्कळुम्–और उत्तरीय; चरिय–इनको गिरने देते हुए; ओटुवार्–भागते चले। १४६

चित्रों की पंक्तियों के समान वे देव जाते रहे। "आज इतना विलम्ब हो गया; रावण कुपित होगा।" इस विचार से वे इतनी त्वरित गति से भागे कि उनके मुक्ताहार, किरीट, पुष्पमालाएँ और उत्तरीय शरीर पर से खिसककर नीचे गिरते जाते थे। १४६

तीण्डरुन् दीविनै तीक्कत् तीन्दुपोय्
माण्डर् वुलर्न्ददु मारु दिप्पॅयर्
आण्डहै मारिवन् दळिक्क वायिडै
ईण्डर् मुळैत्तॅन मुळैत्त दिन्दुवे 147

तीण्ट अरुम्–जिनके पास जाना असम्भव है; तीविनै तीक्क–उन पापों के जलाने से; अऱम्–धर्म; तीन्तु पोय्–जल गया और; माण्टु–मरकर; अऱ उलर्न्ततु–पूरा-पूरा सूख गया; मारुति पॅयर्–मारुति नामक; आण्टकै मारि–पुरुषश्रेष्ठ रूपी वर्षा ने; वन्तु अळिक्क–आकर कृपा की, इससे; आयिटै–तब; ईण्टु (अऱम्) मुळैत्तु–फिर से (धर्म) अंकुरित हुआ; ॲॅन–ऐसा कहने योग्य रीति से; इन्तु मुळैत्ततु–चन्द्र उग आया। १४७

(तब चन्द्र उग आया— उसका वर्णन देखिए।) मानो धर्म को अस्पृश्य भयंकर पाप ने जला दिया। वह जला, मरा और एक दम सूख गया। अब मारुति नाम की वर्षा ने आकर कृपा बरसायी तो वह फिर से जीवित हो आया। उस धर्म के जैसे इन्दु उदित हुआ। १४७

वन्दन निराहवन् रूदन् वाळ्न्दनन्
ॲन्दैये यिन्दिर नामॅन् ऱेमुऱा
अन्दमिल् कीळ्त्तिशै यळह वाणुदल्
शुन्दरि मुहमॅनप् पॉलिन्दु तोन्ऱिऱ्ऱे 148

इराकवन् तूतन् वन्तनन्–श्रीराघव-दूत आया; ॲन्तैयै इन्तिरन्–हमारे धाता इन्द्र; वाळ्न्तनन् आम्–जीवन्त हो गये; ॲन्ऱु–कहकर; एमुऱा–मुदित होकर; अन्तम् इल् कीळ्त्तिचै–अनन्त पूर्व दिशा रूपी; अळक वाळ् नुतल्–अलकावृत उज्ज्वल भाल वाली; चुन्तरि–सुन्दरी के; मुकम् ॲन–आनन के समान; इन्तु–चन्द्र; पॉलिन्तु तोन्ऱिऱ्ऱु–शोभायमान लगा। १४८

वह चन्द्र पूर्वदिशा रूपी श्वेत भाल वाली सुन्दरी के मुख के समान शोभा, जो इस विचार से प्रफुल्लित हुई थी कि श्रीराघव का दूत आ गया और मेरे धाता इन्द्र जीवन्त हो गये। १४८

कऱ्ऱैवॅण् कवरिपोल् कडलिन् वॅण्डिरै
चुऱ्ऱुनिन् ऱलमरप् पॉलिन्दु तोन्ऱिऱ्ऱाल्
इऱ्ऱदॆन् पहैयॅन वॅळुन्द विन्दिरन्
कॉऱ्ऱवॅण् गुडैयॅनक् कुळिर्वॅण् डिङ्गळे 149

ॲन् पकै–मेरा शत्रु; इऱ्ऱतु–मिट गया; ॲन ॲळुन्त–ऐसा सोचकर जो उठा; इन्तिरन्–इन्द्र के; वॅण् कॉऱ्ऱ कुटै ॲन–श्वेत विजय-छत्र के समान; कुळिर् वॅण् तिङ्कळ्–शीतल श्वेत चन्द्र; कटलिन् वॅण् तिरै कऱ्ऱै–समुद्र की श्वेत तरंगों के समूह के; वॅण् कवरि पोल्–श्वेत चँवर के समान; चुऱ्ऱुम् निन्ऱु–चारों ओर रहकर; अलमर–हिलते; पॉलिन्तु तोन्ऱिऱ्ऱु–शोभायमान प्रकट हुआ। १४६

वह चन्द्र इन्द्र के विजयी श्वेत छत्र के समान उगा जो इस विचार से प्रफुल्लित हो उठे थे कि अब मेरा शत्रु मिट गया। जैसे उस छत्र के आसपास चँवर डुलाये जाते हैं और हिलते हैं, वैसे ही इस उदीयमान चन्द्र के चारों तरफ़ समुद्र की श्वेत तरंगें लहर रही थीं। १४९

तॆरिन्दोंऴिर्	तिङ्गळ्वॆण्	कुडत्ति	नाऱ्ऱिरै
मुरिन्दुयर्	पाऱ्कडत्	मुहन्दु	मूरिवान्
शॊरिन्ददे	यामॆंनत्	तुळ्ळि	मीनोंडुम्
विरिन्ददु	वॆण्णिला	मेलुङ्	गीऴुमे 150

वॆण्णिला–श्वेत चाँदनी; मूरि वान्–बड़ा आकाश; तेरिन्तु–जान-बूझकर; ऑळिर् तिङ्कळ्–ज्वलन्त चन्द्र रूपी; वॆण् कुटत्तिनाल्–सफ़ेद घट द्वारा; तिरै मुरिन्तु उयर्–जिसमें लहरें टूटकर गिरतीं और फिर उठती हैं; पाल् कटल् मुकन्तु–उस क्षीर-सागर से भरकर; चॊरिन्तते आम् ॲॆन–उलीच रहा हो, ऐसा; तुळ्ळि मीनॊटुम्–बूँदों रूपी नक्षत्रों के साथ; मेलुम् कीऴुम्–ऊपर और नीचे; विरिन्ततु–फैली। १५०

(चाँदनी कैसी थी?) मानो बड़े आकाश ने सोच-विचारकर उज्ज्वल चन्द्र रूपी घट में उठती-गिरती लहरों से भरे क्षीरसागर से क्षीर भर लेकर उड़ेल दिया। नक्षत्र रूपी बूँदों के साथ वह चाँदनी ऊपर-नीचे सब जगह फैली। १५०

अरुन्दवन्	शुरबिये	यादि	वानमा
विरिन्दपे	रुदयमा	मडिवॆण्	डिङ्गळा
वरुन्दलिल्	पशुङ्गदिर्	वळङ्गु	तारैयाच्
चॊरिन्दपा	लॊत्तदु	निलविन्	ऱोऱ्ऱमे 151

अरुन्तवन् चुरपिये–अपूर्व तपस्वी वसिष्ठ की सुरभि ही; आति वानमा–क्षितिज हो; मटि–उसका थन; विरिन्त पेर् उतयमाम्–विशाल और बड़े 'उदय' का; वॆण् तिङ्कळा–श्वेत चन्द्र हो; वरुन्तलिल्–बिना कष्ट के; वळङ्कु तारै–निकलनेवाली (दुग्ध) धारा ही; पचुम् कतिरा–चन्द्र की बालकिरणें हों; चॊरिन्त पाल् ऑत्ततु–ऐसे गिरे दूध के समान रहा; निलविन् तोऱ्ऱम्–चाँदनी का दृश्य। १५१

(कवि की कल्पना में वह चाँदनी सुरभि के दूध के समान भी थी।) अतिश्रेष्ठ तपस्वी (वशिष्ठ मुनि) की कामधेनु ही अन्तरिक्ष बनी हो; उसका थन बड़ा श्वेत चन्द्र हो; उससे अनायास निकलनेवाले दूध की धारा ही चाँदनी हो —ऐसा लगा वह चाँदनी का दृश्य। १५१

ऍण्णुडै	यनुमन्मे	लिऴिन्द	पूमऴ
मण्णिडै	वीऴ्हिल	मऱित्तुम्	बोहिल
अण्णल्वा	ळरक्कनै	यञ्जि	यायहदिर्
विण्णिडैत्	तॊत्तिन	पोन्ऱ	मीनॆलाम् 152

मीन् ॲलाम्–आकाश के नक्षत्र सब; ॲण् उटै–कर्तव्य की चिन्ता में रत; अनुमन् मेल्–हनुमान पर; इळिन्त पू मळै–गिरी पुष्प-वर्षाएँ हैं; अण्णल् वाळ् अरक्कत्तै–गौरवयुक्त तलवारधारी राक्षस (रावण) से; अञ्चि–डरकर; मण्णिटै वीळ्किल–भूमि पर नहीं गिरीं; मरित्तुम् पोकिल–लौटकर ऊपर भी नहीं गयीं; आय् कतिर्–शुद्ध किरणों से युक्त; विण् इटै–अन्तरिक्ष में; तोत्तित्त पोन्र–लटकती जैसे लगीं। १५२

आकाश में तारे प्रकट हुए। वे कर्तव्य-रत हनुमान के ऊपर देवों द्वारा बरसाये गये पुष्पों के समान लगे, जो तलवारधारी रावण से डरकर न नीचे पृथ्वी पर गिरे, न ऊपर ही जा सके और जो बीच में लटके रहे। १५२

ॲल्लियि	न्निमिरिरुट्	कुऱैयु	मिव्विरुळ्
कल्लिय	निलविन्वॅण्	मुऱियुङ्	गौवित्त
पुल्लिय	पहैयॅन्नप्	पॊरुव	पोन्ऱन
मल्लिहै	मलर्त्तोऱुम्	वदिन्द	वण्डॅलाम् 153

मल्लिकै मलर् तोऱुम्–चमेली के सभी फूलों पर; वतिन्त वण्टु ॲलाम्–जो रहे वे सभी भ्रमर; ॲल्लियित्–रात के; निमिर् इरुळ् कुऱैयुम्–भरे अन्धकार के खण्ड; इ इरुळ् कल्लिय–इस अन्धकार द्वारा खोदकर लिये गये; निलविन् वॅण् मुऱियुम्–चाँदनी के सफ़ेद खण्ड; कौवित्त–आपस में दाँतों से पकड़ लेकर; पुल्लिय पकै ॲन्न–पकड़ में आये शत्रुओं के समान; पॊरुव पोन्ऱन–झगड़ते जैसे लगे। १५३

चमेली के फूलों पर भ्रमरों को देखकर ऐसा लगा, मानो रात में व्याप्त अन्धकार के खण्ड और उस अन्धकार को नोचनेवाली चाँदनी के खण्ड आपस में प्रबल शत्रुता के साथ परस्पर ग्रसकर भिड़ रहे हों। १५३

वीशुऱु	पशुङ्गदिर्क्	कऱ्ऱै	वॅण्णिला
आशुऱ	वॅङ्गणु	नुळैन्द	ळायदु
काशुऱु	कडिमदि	लिलङ्गैक्	कावलूर्त्
तूशुऱ	यिट्टदु	पोन्ऱु	तोन्ऱिऱ्ऱे 154

पचुम् कतिर् कऱ्ऱै–शीतल किरणों की राशियों को; वीचुऱु वॅण् निला–छिटकानेवाली श्वेत चाँदनी; आचु उऱ–शीघ्रता से; ॲङ्कणुम् नुळैन्तु–सर्वत्र घुसकर; अळायतु–फैली जो; काचु उऱु–रत्नजड़ित; मतिल् इलङ्कै–प्राचीरों की (घिरी) लंका; कटि कावल् ऊर्–(के) सुरक्षित नगर के; तूचु उऱ–वस्त्रावरण; इट्टतु पोन्ऱु–लगाया गया हो, ऐसा; तोन्ऱिऱ्ऱु–लगी। १५४

शीतल किरणों की राशियाँ बिखरनेवाली चाँदनी शीघ्र सर्वत्र घुसकर व्याप गयी। उसको देखकर ऐसा लगा मानो मणिमण्डित प्राचीरों वाली व पहरे से सुरक्षित लंका पर श्वेत वस्त्र का खोल चढ़ा दिया गया हो। १५४

इहऴ्वरुम् बॆरुङ्गुणत् तिराम नॆय्ददोर्
पहऴियिऩ् शॆलवॆऩ्ऩ वनुमऩ् पऱ्ऱिऩाल्
अहऴ्पुहुऩ् दरणपुहुऩ् दिलङ्गै याङ्गवऩ्
पुहऴ्पुहुऩ् दुलायदोर् पॊलिवुम् बोऩ्ऱदे 155

इकऴ्वु अरुम्–अनिंद्य; पॆरुङ् कुणत्तु–उन्नत गुणों के; इरामऩ् ऎय्ततु–श्रीराम के चलाये हुए; ओर् पकऴियिऩ्–एक बाण के; चॆलवु ऎऩ्ऩ–जाने के समान; अनुमऩ्–हनुमान के; पऱ्ऱिऩाल्–संग से; इलङ्कै–लंका की; अकऴ् पुकुन्तु–परिखा में घुसकर; अरण् पुकुन्तुम्–अन्य रक्षण-स्थलों में घुसकर; आङ्कु–वहाँ; अवऩ् पुकऴ्–उनका यश; पुकुन्तु उलायतु–घुसकर फैला हो; ओर् पॊलिवुम् पोऩ्ऱतु–ऐसी एक शोभा के समान भी लगी। १५५

अनिंद्य गुणश्रेष्ठ श्रीराम के चलाये एक अमोघ बाण की भाँति हनुमान जा रहा था। उसकी संगति के बल से चाँदनी लंका की खाई में घुसी, और अन्य सुरक्षा के स्थलों में घुसी और ऐसी महिमा पा गयी मानो वह श्रीराम का यश हो जो सर्वत्र व्याप गया था। १५५

अव्वऴि यनुमऩु मणुह लाम्वऴि
ऎव्वऴि यॆऩ्बदे युणर्वि ऩॆण्णिऩाऩ्
शॆव्वऴि यॊदुङ्गिऩऩ् ऱेव रेत्तप्पोय्
वॆव्वऴि यरक्करूर् मेवल् मेयिऩाऩ् 156

चॆव्वऴि–श्रेष्ठ मार्ग पर; ऒतुङ्किऩऩ्–चलने के स्वभाव का; अनुमऩुम्–हनुमान भी; तेवर् एत्त–देवों के स्तुति करते; पोय्–जाकर; वॆम् वऴि अरक्कर्–पर-पीड़क मार्ग (व्यवहार) का अवलम्बन करनेवाले राक्षसों के; ऊर् मेवल् मेयिऩाऩ्–नगर में जाना चाहकर; अव् वऴि–तब; ऎव् वऴि–किस मार्ग से; अणुकल् आम् वऴि–अन्दर जाने का रास्ता है; ऎऩ्पतै–उसको; उणर्विऩ् ऎण्णिऩाऩ्–मन में सोचने लगा। १५६

उत्तम मार्गगामी हनुमान का संकल्प था कि देवों की स्तुति का भागी बनकर मैं भयंकर मार्ग पर चलनेवाले राक्षसों की लंका में जाऊँ, इसलिए वह विचारने लगा कि किस विध वहाँ जाऊँ ?। १५६

आऴियह ऴाहवरु कावमरर् वाऴ्म्
एऴुलहिऩ् मेलैवॆळि काऱुमुह डेऱिक्
केऴरिय पॊऩ्कॊडु शमैत्तकिळर् वॆळ्ळत्
तूऴिदिरि नाळुमुलै यामदिलै युऱ्ऱाऩ् 157

आऴि अकऴाक–समुद्र को ही परिखा बनाकर; अरुका–अक्षय; अमरर् वाऴ्म्–देवों के वासस्थान; एऴ् उलकिऩ्–सातों लोकों के; मेलै वॆळि काऱुम्–ऊपर के अन्तस्थल तक; मुकटु एऱि–अपनी चोटी पहुँचाकर; अरिय–अपूर्व; केऴ् पॊऩ्

कॉट्टु–रंग के स्वर्ण से; चमैत्तत–निर्मित; ऊळि किळर् वॅळ्ळत्तु–युगान्त में उठनेवाले प्रलय-समुद्र के कारण; तिरि नाळुम्–जब लोक मिट जाते हैं उस दिन में भी; उलैया–जो नष्ट नहीं होता; मतिलै–उस प्राचीर पर; उऱ्ऱान्–पहुँचा। १५७

वह लंका के प्राचीर पर जा पहुँचा। उस प्राचीर की खाई समुद्र ही था। वह देवों के वास के सातों लोकों के ऊपर के खुले आकाश तक ऊँचा उठा था। बहुत सुन्दर वर्ण वाले स्वर्ण से निर्मित था। युगांतकालीन व उफनकर आनेवाले प्रवाह में भी वह नष्ट होनेवाला नहीं था। १५७

कलङ्गलिल्ह डुङ्गदिर्हण् मीदुकडि देहा
अलङ्गलयिल् वञ्जहनै यञ्जियॅन्नि नन्ऱाल्
इलङ्गैमदि लिङ्गिदनै येऱलरि दॅन्ऱे
विलङ्गियहल् हिन्ऱनवि रैन्दॅन्न वियन्दान् 158

अलङ्कल्–मालाधारी; अयिल् वञ्चकनै–भाला रखनेवाले वंचक से; अञ्चि–डरकर; कलङ्कल् इल्–अचल; कट्टुम् कतिर्कळ्–गरम (सूर्य-) किरणें; मीतु–इस प्राचीर पर; कटितु एका–शीघ्र नहीं जा सकतीं; ऍन्निन्–कहें तो; अन्ऱु–नहीं; इङ्कु–यहाँ; इलङ्कै मतिल् इतनै–लंका के प्राचीर इस पर; एऱल् अरितु–चढ़ना कठिन है; ऍन्ऱे–समझकर ही; विलङ्कि–उससे हटकर; विरैन्तु अकल्किन्ऱन–शीघ्र दूर चलती हैं; ऍन्न–ऐसा सोचकर; वियन्तान्–विस्मित हुआ (हनुमान)। १५८

मालालंकृत भालाधारी रावण से डरकर धीर सूर्य किरणें भी इस प्राचीर के ऊपर से शीघ्र नहीं जायँगी —ऐसा कहना युक्तिसंगत नहीं होगा। उन्हें यह विदित था कि वे इस प्राचीर के ऊपर चढ़ नहीं पायँगी। इसलिए वे दूर से ही शीघ्र चली जाती हैं। यह सोचकर हनुमान विस्मय-विभोर हुआ। १५८

तॅव्वळवि लादविऱै तेऱलरि दम्मा
अव्वळव दन्ऱरण मण्डमिडै याह
ऍव्वळवि नुण्डुवॅळि यीऱुमदु वॅन्ना
वॅव्वळ वरक्कनै मनक्कॉळ वियन्दान् 159

तॅव् अळवु इलात–शत्रु असंख्यक हैं; इऱै–थोड़ा भी; तेऱल्–जानना; अरितु–कठिन है; अरणम्–गढ़; अण्टम्–अण्ड को; इटैयाक–अपने मध्य में लेने के लिए; वॅळि–अन्तरिक्ष; ऍ अळविन् उण्टु–जितना है; अ अळवल् अन्ऱु–केवल उतना विस्तृत नहीं है; ईऱुम् अतु–उसका अन्त भी वैसे ही (अपार है); ऍन्ना–ऐसा सोचकर; वॅम् वळ अरक्कनै–भयंकर और धनी राक्षस (रावण की समृद्धि) को; मनम् कॉळ–मन में सोचकर; वियन्तान्–विस्मित हुआ। १५६

(हनुमान आगे सोचता है—) शत्रु असंख्यक हैं। उनका बल ताड़ना बहुत कठिन लगता है। गढ़ ऐसा बड़ा है कि उसके मध्य सारा अण्ड समा

जाय —उतने तक सीमित नहीं। उसका अन्त पाना भी वैसे ही कठिन है। इस तरह सोचते-सोचते हनुमान ने भयानक रूप से वैभवशाली रहनेवाले रावण की बात सोची और वह विस्मय से भर गया। १५९

मडङ्गलरि येरुमद माल्हळिरु नाण
नडन्दुदलि येपुहटु नम्बिनलि मूदूर्
अडङ्गरिय तानैययि लन्दहन दाणैक्
कडुन्दिशैयिन् वायनैय वायिलैदिर् कण्डान् 160

मटङ्कल्—यम के समान; अरि एरु—नरसिंह और; मत माल् कळिरुम्—मत्त और बड़े गज को; नाण—शरम का अनुभव करने देते हुए; नटन्तु—चलकर; नलि मूतूर्—अति प्राचीन नगर में; ततियै पुकुतुम्—अकेले जानेवाले; नम्पि—महिमामय हनुमान ने; अटङ्करिय तानै—गिनती में न आनेवाली सेना के; अयिल् अन्तकन्तु—भालाधारी यम की; आणै—आज्ञा के अधीन रहनेवाले; कटुम् तिचैयिन् वाय् अनैय—क्रूर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान; वायिल्—(लंका के) राजद्वार को; ऍतिर् कण्टान्—सामने देखा। १६०

महिमावान हनुमान पैदल चलकर पुरातन नगरी लंका की ओर गया। उसकी चाल देखकर स्वयं नरकेसरी और बड़ा तथा मत्त गज भी लज्जा का अनुभव करते थे। वह गोद्वार पर पहुँचा जो उस भयंकर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान था, जो असंख्य सेना का स्वामी और भाले के धारक यम की है। १६०

मेरुवै निरुत्तिवॅळि शॅय्ददुहॊल् विण्णोर्
ऊर्बुह वमैत्तपडु काल्हॊलुल हेळुम्
शोर्विल निलैक्कनडु विट्टदॊरु तूणो
नीर्बुहु कडर्कुवळि यॊवॆन निनैन्दान् 161

मेरुवै निरुत्ति—मेरुपर्वत को खड़ा करके; वॅळि चॅय्ततु कॊल्—द्वार बनाया गया क्या शायद; विण्णोर् ऊर् पुक—देवलोक में पहुँचने के लिए; अमैत्त—रचित; पटु काल् कॊल्—सीढ़ियाँ हैं क्या; उलकु एळुम्—सातों लोकों को; चोर्विल निलैक्क—शिथिल न होकर स्थिर रखने के लिए; नटु विट्टतु—बीच में निर्मित; ऒरु तूणो—एक खम्भा है क्या; कटर्कु—समुद्र का; नीर् पुकु—जल-प्रवेश के लिए; वळियो—मार्ग है क्या; ऍन—ऐसा-ऐसा; निनैन्तान्—सोचा। १६१

मेरुपर्वत को लाकर खड़ा किया गया और उसके मध्य (द्वार का) खुला स्थान खोदकर बनाया गया क्या? क्या यह देवों के लंका में प्रवेश करने के लिए रखी गयी सीढ़ी है? सातों लोक शिथिल होकर अस्तव्यस्त गिर न जायँ, तदर्थ उनके मध्य गाड़ा गया खम्भा है? या समुद्र को भरने के लिए जल बहे उसके लिए बनाया गया मार्ग है? —हनुमान तोरण-द्वार के बारे में ऐसा सोचने लगा। १६१

एऴुलहिऩ् वाऴुमुयिर् यावैयु मॅदिर्ऩ्दाल्
ऊऴिऩ्मुऱै यिऩ्ऱियुड ऩेपुहुमि दॊऩ्ऱो
वाऴियरि यङ्गुवऴि यीदॆऩ वहुत्ताल्
आऴियुळ वेऴिऩळ वऩ्ऱुपहै यॆऩ्ऱाऩ् 162

एऴ् उलकिऩ्–सातों लोकों के; वाऴुम् उयिर् यावैयुम्–वासी सभी जीव; ऍतिर्ऩ्ताल्–सामने आवें तो; ऊऴिऩ् मुऱै इऩ्ऱि–विना किसी क्रम के; उटऩे पुकुम्–एक साथ घुस सकेंगे; इतु ऑऩ्ऱो–यही एक है क्या; वाऴियर्–यहाँ रहनेवाले; इयङ्कुम् वऴि ईतु–आते-जाते हैं इसी मार्ग से; ऍऩ–ऐसा; वकुत्ताल्–विचार करके सोचें; पकै–तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण; आऴि एऴिऩ् अळवु–सातों समुद्रों की नाप का; उळ अऩ्ऱु–है नहीं (उससे अधिक है); ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १६२

मानो कि सातों लोकों के जीव एक साथ इस नगर में घुसने आयँ तो वे विना क्रम से जाने की आवश्यकता के एक साथ प्रवेश कर सकेंगे — ऐसा विशाल है यह द्वार। उसका गौरव क्या यही एक है? यह लंका नगर के वासियों के आने-जाने का द्वार है —इसको लेकर सोचा जाय तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण सातों समुद्रों का उतना बड़ा है, यह मानना भी सही नहीं होगा (यानी यह उनसे भी अधिक विपुल है)। हनुमान ने यों सोचा। १६२

वॅळ्ळमॊरु नूऱॊडिरु नूऱुमिडै वीरर्
कळ्ळवितै वॅव्वलि यरक्करिरु कैयुम्
मुळ्ळॅयिऱुम् वाळुमुऱ मुऩ्ऩमुऱै निऩ्ऱार्
ॲळ्ळरिय कावलितै यण्णलु मॅदिर्ऩ्दाऩ् 163

ऑरु नूऱॊटु इरु नूऱु–तीन सौ; वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम' संख्या के; मिटै वीरर्–योद्धा वीर; कळ्ळ वितै–वंचक काम; वॅम् वलि–और गजब का बल; अरक्कर्–इनसे युक्त राक्षस; इरु कैयुम्–दोनों ओर; मुळ् ऍयिऱुम्–काँटे के समान दाँत; वाळुम्–तलवारें; उऱ–लेकर; मुऩ्ऩ मुऱै–युद्धसन्नद्ध; निऩ्ऱार्–खड़े थे; ॲळ् अरिय–अनुपेक्षणीय; कावलितै–पहरे को; अण्णलुम्–महिमावान ने भी; ऍतिर्ऩ्ताऩ्–सामने देखा। १६३

उस द्वार के दोनों ओर राक्षस खड़े थे। उनकी संख्या (एक और दो) तीन सौ 'वॅळ्ळम्' थी। वे मायावी थे और भयंकर वीर थे। उनके मुखों में काँटों के समान तेज़ दाँत थे और हाथों में तलवारें थीं। वे ऐसे खड़े थे मानो युद्ध-सन्नद्ध हों। हनुमान ने उस अनिन्द्य पहरे को अपनी आँखों से देखा। १६३

शूलमऴु वाळॊडयि ऱोमर मुलक्कै
कालवरि विऱ्पहऴि कप्पण मुशुण्डि
कोलकणै नेमिकुलि शऩ्जुरिहै कुन्दम्
पालमुद लायुदम् वलत्तिऩर् परित्तार 164

चूलम्–त्रिशूल; मऴु–परशु; वाळोंटु–तलवार के साथ; अयिल्–भाले; तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; काल वरिविल्–यम-सम सबन्ध धनु; पकळि–अस्त्र; कप्पणम्–काँटेदार गदा; मुचुण्टि–भुशुण्डी नाम का हथियार; कोल कणै–सुन्दर वक्र दण्ड; नेमि–चक्र; कुलिचम्–कुलिश; चुरिकै–छुरा; कुन्तम्–कुन्त; पालम्–भिंदिपाल; मुतल् आयुतम्–आदि आयुध; वलत्तिनर्–वली वे; परित्तार्–अपने हाथों में लिये रहे। १६४

वे अपने हाथों में निम्नांकित हथियार रखते थे— शूल, परशु, तलवार, भाला, तोमर, मूसल, यम-सम सवन्ध धनु; अस्त्र, काँटेदार गदा, "भुशुण्डी" नाम का हथियार, सुन्दर वक्र-दण्ड, चक्र, कुलिश, छुरी, कुंत और भिंदिपाल आदि। १६४

अङ्गुश नॆडुङ्गव णडुत्तुडल् विशिक्कुम्
वॆङ्गुशैय पाशमिवै वॆय्यपयिल् कैयर्
शॆङ्गुरुदि यन्नशॆरि कुञ्जियर् शिनत्तोर्
पङ्गुनि मलर्न्दॊळिर् पलाशवन मॊत्तार् 165

अङ्कुचम्–अंकुश; नॆटुम् कवण्–लम्बे ढेलवाँस; अटुत्तु–पास जाकर; उटल् विचिक्कुम्–शरीर को बाँधनेवाला; वॆम् कुचैय पाचम्–भयंकर रास के समान पाश; इवै–आदि इनको; पयिल्–लेकर अभ्यस्त; वॆय्य कैयर्–कठोर हाथों वाले; चॆम् कुरुति अन्न–लाल रक्त के समान; चॆरि कुञ्चियर्–घने बाल वाले; चितत्तोर्–क्रोधी; पङ्कुनि–फाल्गुन में; मलर्न्तु–खिलकर; ऒळिर्–प्रकाश छिटकानेवाले; पलाच वतम् ऒत्तार्–काँटेदार पलाश-वन के समान रहे। १६५

अंकुश, लम्बे ढेलवाँस (गोफना) शत्रु को शरीर में लगकर कसनेवाला भयंकर बन्धन-सा पाश —इनके साथ अभ्यस्त सशक्त हाथों वाले थे वे राक्षस। उनके केश रक्त-सम लाल थे। विना कारण के क्रोध करनेवाले थे। फाल्गुन महीने में फूल-खिले काँटेदार पलाश-तरु-वन के समान लगे। १६५

अळक्कवरि दाहिय कणत्तॊडय निऱ्कुम्
विळक्किन मिरुट्टिनै विऴुङ्गियॊळि काल
वळक्करिय कालन्मन मुट्कुमणि वायिल्
इळक्कमिल् कडर्पडै यिरुक्कैयै यॆदिर्न्दान् 166

अयल्–उनके पास; अळक्क अरिताकिय–असंख्यक; कणत्तॊटु–गणों के साथ; निऱ्कुम्–रखे हुए; विळक्कु इतम्–दीपों के समूह; इरुट्टितै–अन्धकार को; विऴुङ्कि–निगलकर; ऒळि काल–प्रकाश दे रहे थे; वळ–घने; करिय–काले रंग के; कालन्–यमदेव के; मतम् उट्कुम्–मन को डरानेवाले; मणि वायिल्–सुन्दर द्वार पर; इळक्कम् इल्–अशिथिल; कटल् पटै–सागर-सी सेना का; इरुक्कै–रहना; ऎतिर्न्तान्–सामने देखा। १६६

हनुमान ने उनके पास और एक अचल सागर-सम सेना का विस्तार

पड़ा हुआ देखा। वहाँ असंख्यक दीप जल रहे थे, जो अन्धकार को लील रहे थे। वह सेना उस द्वार के समीप ही थी, जिसे देखकर अत्यन्त काले रंग का यम भी डर जाता था और जो रत्नों से खचित सुन्दर था। १६६

ऍव्वमर	**रॅव्ववुण**	**रॅव्वरुळ**	**रॅन्ने**
कव्वॅमुदु	**वायिलि**	**नॅडुङ्गडै**	**कडप्पार्**
तॅव्वरिवर्	**शेममिदु**	**शेवहनुम्**	**यामुम्**
वॅव्वमरिन्	**मेलिनियॅ**	**नाय्विळैयु**	**मॅन्ऱान्** 167

कव्वै—आरवयुक्त; मुतु वायिलिन्—प्राचीन किले के द्वार के; नॅटुङ्कटै—लम्बे किनारे को; ऍ अमरर्—कौन देव; ऍ अवुणर्—कौन दानव; कटप्पार्—पार करेंगे; ऍव्वर् उळर्—कौन हैं (अन्य); ऍन्ने—क्या ही खूब है; इवर् तॅव्वर्—ये हैं शत्रु; इतु चेमम्—यह उनका संरक्षण; चेवकनुम्—नायक श्रीराम और; यामुम्—हम; इनि मेल्—आगे जो करेंगे; वॅम् अमरिन्—उस भयंकर युद्ध में; ऍनाय् विळैयुम्—क्या होने वाला है; ऍन्ऱान्—हनुमान ने आप ही आप कहा। १६७

वह द्वार आरवपूर्ण था। उसका किनारा बहुत लम्बा था। उसको कौन देव पार कर सकता था? कौन असुर था जो उसे पार कर जाये? फिर कितनों के पास इतना साहस था? इसका महत्त्व कितना है? ऐसे हैं हमारे शत्रु! उनके पहरे का बल ऐसा है! तो जब हमारे स्वामी और हम आकर युद्ध छेड़ देंगे तो उस भयंकर युद्ध का फल क्या होगा? —हनुमान इस भाँति अपने आप शंका के स्वर में बोला। १६७

करुङ्गडल्	**कडप्पतरि**	**दन्ऱुनहर्क्**	**कावल्**
पॅरुङ्गडल्	**कडप्पदरि**	**दॅण्णमिऱै**	**पेरा**
दरुङ्गडन्	**मुडिप्परि**	**दारमर्**	**किडैप्पिन्**
नॅरुङ्गमर्	**विळैप्परॅन्डु**	**नाळॅन्न**	**निनैन्दान्** 168

करुम् कटल्—काले सागर को; कटप्पतु—पार करना; अरितु अन्ऱु—असाध्य काम नहीं; नकर् कावल्—नगर की रक्षा (रक्षक सेना) का; पॅरुम् कटल्—बड़ा सागर; कटप्पतु अरितु—पार करना कठिन है; आर् अमर् किटैप्पिन्—बड़ा युद्ध होगा तो; नॅटु नाळ्—अनेक दिनों तक; नॅरुङ्कु अमर् विळैप्पर्—घमासान युद्ध करेंगे; ऍण्णम्—(सीताजी के अन्वेषण का) मेरा संकल्प; इऱै पेरातु—किंचित भी पूरा नहीं होगा; अरुम् कटन्—और मेरा महान् कर्तव्य; मुटिप्पतु अरितु—पूरा करना असाध्य होगा; ऍन्न निनैन्तान्—ऐसा सोचा। १६८

हनुमान ने और सोचा— इस काले सागर का तरण कठिन नहीं होगा। पर नगर-रक्षक सेना-सागर को पार करना अवश्य दुस्तर होगा। अगर बड़ा युद्ध छिड़ जायगा तो ये लोग बहुत काल तक घमासान युद्ध करेंगे। तब सीताजी के अन्वेषण का मेरा मंन्शा कुछ भी सफल नहीं होगा और अपना कर्तव्य पूरा करना दुःसाध्य हो जायगा। १६८

वायिल्वऴि शेऱ्लरि दन्ऱियुम् वलत्तोर्
आयिलवर् वैत्तवऴि येहलऴ हन्ऱाल्
काय्हदि रियक्किन्मदि लैक्कडिदु ताविप्
पोयिनहर् पुक्किडुवॅ नॆन्ऱोरयल् पोनान् 169

वायिल् वऴि–तोरण द्वारा; चेऱल् अरितु–अन्दर जाना असाध्य है; अन्ऱियुम्–और भी; वलत्तोर् आयिल्–बलवान हों तो; अवर् वैत्त वऴि–उनके द्वारा निर्मित मार्ग से; एकल्–जाना; अऴकन्ऱु–ठीक नहीं होगा; काय् कतिर्–जलानेवाले सूर्य का; इयक्कु इल्–संचार जिस पर नहीं है; मतिलै–उस प्राचीर को; कटितु तावि–शीघ्र लाँघकर; पोय्–(पार) जाकर; इ नकर्–इस नगर में; पुक्किटुवॅन्–प्रवेश कर लूँगा; ॲन्ऱु–ऐसा निश्चय करके; ओर् अयल्–एक तरफ़; पोनान्–गया। १६९

इस किले के द्वार से होकर अन्दर जाना असाध्य है! और भी बलवान वीरों के लिए शत्रु के निर्मित द्वार का उपयोग करना अच्छा नहीं होगा। यह प्राचीर ऐसा है कि जलानेवाले सूर्य की किरणें भी इस पर सञ्चार नहीं करतीं। इसको कूदकर पार करूँगा और अन्दर पहुँच जाऊँगा। —ऐसा सोचकर हनुमान द्वार को छोड़कर प्राचीर के पास दूसरे स्थान पर गया। १६९

नाणा ऴुन्दा नल्हिय काव नन्मूदूर्
वाणा ळन्नाळ् पोवदन् मेले वऴिनिन्ऱाळ्
तूणा मॅन्नुन् दोळुडै यानैच् चुडरोनैक्
काणा वन्द कट्चॅवि यॅन्नक् कनल्हण्णाळ् 170

नाळ् नाळुम्—दिने-दिने; तान् कावल् नल्किय–अपने द्वारा संरक्षित; नन्मूतूर–बहुत पुरातन नगर की; वाऴ् नाळ् अन्नाळ्–आयु-सी रहनेवाली; कनल् कण्णाळ्–अंगार उगलनेवाली आँखों की; चुटरोनै काणा वन्त–सूर्य को देखकर आये; कट्चॅवि ॲन्न–श्रवणाक्ष (सर्प) राहु के समान; तूण् आम् ॲन्नुम्—खम्भे ही माने जाने योग्य; तोळ् उटैयानै–कन्धों वाले के; मेले पोवतन् वऴि–आगे जाने के मार्ग में; निन्ऱाळ्–(आकर) खड़ी हुई। १७०

(तब लंकादेवी सामने आयी।) लंकादेवी अपनी संरक्षित नगरी की आयु के ही समान थी। उसकी आँखों से अंगारे निकल रहे थे। वह लंकादेवी स्तम्भ-सम कन्धों वाले हनुमान के सामने इस तरह आयी मानो सूर्य को देखकर राहु सर्प आ रहा हो और उसके मार्ग में उसे रोकती हुई खड़ी हो गयी। १७०

ॲट्टुत् तोळा नालु मुहत्ता ऴलहेऴुम्
तॊट्टुप् पेरुञ् जोदि निऱत्ताळ् शुऴल्कण्णाळ्
मुट्टिप् पोरिन् मूवुल हत्तै मुदलोडुम्
कट्टिच् चोरुङ् गालन् वलत्ताळ् कमैयिल्लाळ् 171

ऍट्टु तोळाळ्–अष्टभुजा; नालु मुक्त्ताळ्–चतुर्मुखी; उलकु एळुम्–सातों लोकों को; तॉट्टु पेरुम्–स्पर्श कर लौटनेवाले; चोति निरत्ताळ्–प्रकाशमय वक्ष वाली; चुळल् कण्णाळ्–चारों ओर घूमनेवाली दृष्टि की; मूवुलकत्तै–तीनों लोकों से; पोरिल् मुट्टि–युद्ध में टकराकर; मुतलोटुम् कट्टि–मूल से बाँधकर; चीरुम्–कोप करनेवाली; कालन् वलत्ताळ्–यम का-सा बल रखनेवाली; कमै इल्लाळ्–क्षमा न करनेवाली। १७१

(१७०वें पद से १७६वें पद तक लगातार उस लंकादेवी का वर्णन है।) उसके आठ भुजाएँ थीं। चार मुखों की उसका वक्ष ज्योतिर्मय था और वह तेज सातों लोकों को छूकर आ सकता था। उसकी आँखें घूम रही थीं। वह इतनी शक्तिमती दिखी कि वह तीनों लोकों को युद्ध में समूल बाँध ले सकती थी। उसका क्रोध भी उतना भयंकर था। यम की-सी शक्ति रखनेवाली उसमें क्षमा करने का गुण नहीं था। १७१

पारा निन्ऱा ळॆण्डिशै तोरुम् बलरप्पाल्
वारा निन्ऱा रोवॆन्न मारि मळैयेपोल्
आरा निन्ऱा णूबुर मच्चन् दरुताळाळ्
वेरा मॅय्याळ् मिन्ऩि ऩिमैक्कु मिळिर्पूणाळ् 172

अच्चम् तरु–भय पैदा करनेवाले; ताळाळ्–पैरों की; नूपुरम्–नूपुर; मारि मळैये पोल्–वर्षाऋतु की वर्षा के समान; आरा निन्ऱाळ्–बजाते हुए खड़ी रही; वेरा मॅय्याळ्–स्वेद-पूर्ण शरीर वाली; मिन्निन् इमैक्कुम्–बिजली-से चमकनेवाले; मिळिर् पूणाळ्–प्रकाशमय आभरण वाली; ऍण् तिचै तोरुम्–आठों दिशाओं के; अप्पाल्–उधर से; पलर्–अनेक; वारा निन्ऱारो ऍन्न–आ रहे हैं क्या; पारा निन्ऱाळ्–ऐसा देखती रही। १७२

उसके भयंकर पैरों पर पायलें पड़ी थीं। वह उन्हें हिला रही थी; जिससे वर्षाऋतु की वर्षा के समान शब्द निकल रहा था। उसके शरीर पर स्वेद बह रहा था। विद्युत्-से चमकनेवाले उज्ज्वल आभरणों से वह अलंकृत थी। वह सारी दिशाओं को देख रही थी। यह टोह लगाने के लिए कि क्या दूर से कोई आ तो नहीं रहा हो? । १७२

वेल्वाळ् शूलम् वॆङ्गदै पाशम् विळिशङ्गम्
कोल्वाळ् शाबङ् गॊण्ड करत्ताळ् वडकुन्ऱम्
पोल्वा डिङ्गट् पोळि ऩॆयिऱ्ऱाळ् पुहैवायिल्
काल्वाळ् काणिऱ् कालनु मुट्कुङ् गदमिक्काळ् 173

वेल्–भाला; वाळ्–तलवार; चूलम्–शूल; वॆम् कतै–भयंकर गदा; पाचम्–पाश; विळि चङ्कम्–बजनेवाला शंख; कोल्–बाण; वाळ् चापम्–उज्ज्वल चाप; कॊण्ट करत्ताळ्–लिये हुए हाथों वाली; वट कुन्ऱम् पोल्वाळ्–उत्तर के मेरु के समान रहनेवाली; तिङ्कळ् पोळिन्–चन्द्र के खण्डों के समान; ऍयिऱ्ऱाळ्–दाँतों वाली; वायिल्–मुख से; पुकै काल्वाळ्–धुआँ निकालनेवाली; काणिल्–देखने पर; कालनुम् उट्कुम्–काल भी डर जाए; कतम् मिक्काळ्–ऐसा अधिक क्रोध से युक्त। १७३

उसके हाथों में भाला, तलवार, शूल, भयानक गदा, पाश, शंख, अस्त्र और प्रकाशमय धनु थे। उत्तर के मेरु पर्वत के समान आकार वाली उसके दाँत चन्द्र के टुकड़ों के समान थे। उसके मुख से धुआँ-सा निकल रहा था। वह इतना क्रोधी लगी कि यम भी देखे तो डर जाय! । १७३

अञ्जु　वणत्ति　ताडै　युडुत्ता　ळरवॆल्लाम्
अञ्जु　वणत्तिऩ्　वेह　मिहुत्ता　ळरुळिल्लाळ्
अञ्जु　वणत्ति　नुत्तरि　यत्ता　ळलैयारुम्
अञ्जु　वणत्तिऩ्　मुत्तॊळि　रारत्　तणिकॊण्डाळ् 174

अञ्चु वणत्तिऩ्–पंचरंगी; आटै उटुत्ताळ्–वस्त्र पहने हुए थी; अरवॆल्लाम्–सभी सर्प; अञ्चु–डरें; उवणत्तिऩ्–ऐसे गरुड़ की; वेकम् मिकुत्ताळ्–सी गति में बढ़ी हुई; अरुळ् इल्लाळ्–करुणा से हीन; अम् चुवणत्तिऩ्—श्रेष्ठ स्वर्ण के; उत्तरियत्ताळ्–उत्तरीय से भूषित थी; अलै आरुम्–तरंगों से युक्त; अम्–(समुद्र-) जल में; चु–सुन्दर; वळ्–प्रकाशमय; नत्तिऩ् मुत्तु–शंख-जनित; ऑळिर्–जिसमें प्रकाश देते रहते हैं, ऐसे; आरत्तु अणि–हार रूपी आभरण; कॊण्टाळ्–धारण किये हुए थी। १७४

वह पञ्चरंगी वस्त्र पहने थी। उसकी गति गरुड़ की-सी थी जिसे देखकर सारे सर्प डर जाते हैं। वह अकरुण थी। स्वर्णोत्तरीय और लहरसंकुल समुद्र-शंख-जनित मोतियों का हार उसके शरीर को अलंकृत कर रहे थे। (इस पद में यमकालंकार है)। १७४

शिन्दा　रत्तिऩ्　शॆच्चै　यणिन्दा　ळॆळिनूल्याऴ्
अन्दा　रत्तिऩ्　नेर्वरु　शॊल्ला　ळरैतुम्बि
कन्दा　रत्ति　ऩिऩ्ऩिशै　पन्तिक्　कळिकूरुम्
मन्दा　रत्तिऩ्　मालै　यलम्बु　महुडत्ताळ् 175

आरत्तिऩ्–चन्दन के; चिन्तु–छलककर फैले; चॆच्चै–लेप को; अणिन्ताळ्–मले हुए थी; याऴ् ऎळि नूल्–'याऴ्' (एक तरह की वीणा) सम्बन्धी शास्त्रों में उक्त; अम् तारत्तिऩ्–सुन्दर "तारा" स्वर के; नेर् वरु चॊल्लाळ्–समान निकलनेवाली वाणी की; अरै तुम्पि–गुंजारनेवाले भ्रमर; इऩ् कन्तारत्तिऩ् इचै–मधुर 'गांधार' स्वर; इचै पत्ति–संगीत गाते हुए; कळि कूरुम्–(जिन पर) मत्त रहते थे; मन्तारत्तिऩ्–(वैसे) मन्दार-पुष्पों की; मालै अलम्पुम्–माला हिल रही थी; मकुटत्ताळ्–ऐसे मुकुट वाली। १७५

वह चन्दन-लेप से चर्चित थी। 'याऴ्' (वीणा) के स्वरों के सम्बन्ध में बतानेवाले संगीतशास्त्र में वर्णित 'दारा' स्वर (उच्च स्वर) के से स्वर में बोलनेवाली थी। उसके सिर पर एक मुकुट था। उस पर मन्दार-पुष्पों की माला हिल रही थी। उस माला पर गांधार-स्वर में गुंजारते हुए भ्रमर मद-मत्त हो बैठे हुए थे। १७५

ऍल्ला मुट्कु माळियि लङ्गै यिहन्मूदूर्
नल्ला ळव्वूर् वैहुरै पोलुम् नयनत्ताळ्
निल्लाय् निल्ला यॅन्रुरै नेरा निनैयामुन्
वल्ले शॅन्राण् मारुदि कण्डान् वरुहॅन्रान् 176

ऍल्लाम् उट्कुम्–सभी जीवों को भय दिलाते हुए; आळि इलङ्कै इकल् मूतूर्–समुद्रवलयित प्राचीन व बलवान (लंका) नगर का; नल्लाळ्–हित करनेवाली; अव्वूर वैकु–उस नगर के रहने के; उरै पोलुम्–स्थान के समान; नयनत्ताळ्–आँखों वाली; निल्लाय् निल्लाय्–खड़े रहो, खड़े रहो; ऍन्रु उरै नेरा–कहते हुए; निनैया मुन्–सोचने की देर के अन्दर; वल्ले चॅन्राळ्–शीघ्र गयी; मारुति–हनुमान ने; कण्टान्–देखा; वरुक–आओ; ऍन्रान्–कहा। १७६

वह सबको भयभीत करनेवाले समुद्र से वलयित प्राचीन नगर लंका की हितैषिणी थी। उसकी आँखें मानो लंका का वासस्थान थीं। उसने हनुमान को देख लिया। रुको, खड़े हो जाओ —चिल्लाती हुई वह सोचने की देर के अन्दर तेज़ चली। हनुमान ने भी उसे देख लिया और बुलाया कि आओ। १७६

आहा शॅय्दा यञ्जलै पोलु मरिविल्लाय्
शाहा मूलन् दिन्रुळल् वार्मेऱ् चलमॅन्नाम्
पाहा रिञ्जिप् पॉन्मदि ऱाविप् पहैयादे
पोहा यॅन्राळ् पॉङ्गळ लॅन्नप् पुहैकण्णाळ् 177

पॉङ्कु अळल् ऍन्न–दहकती आग के समान; पुकै कण्णाळ्–धुएँ-सहित आँखों वाली; चाका मूलम्–शाक और कन्द; तिन्रु उळल्वार् मेल्–खाते फिरनेवालों पर; चलम् ऍन् आम्–क्रोध करने से क्या होगा; अऱिविल्लाय्–बुद्धिहीन; आका–जो करना नहीं चाहिए; चॅय्ताय्–वह काम किया है (तूने); अञ्चलै पोलुम्–शायद भय का अनुभव नहीं किया क्या; पाकु आर्–सुन्दरता से युक्त; पॉन् इञ्चि मतिल्–स्वर्ण-निर्मित किले के प्राचीर को; तावि–लाँघकर; पकैयाते–शत्रुता मत करो; पोकाय्–चले जाओ; ऍन्राळ्–(डाँटकर) कहा। १७७

उसकी आँखें धूम निकाल रही थीं, मानो वे भभककर जलती आग हों। उसने सोचा कि शाखामृग (पेड़ों पर रहनेवाले पशु या शाक-भाजी खानेवाला जीव) पर कोप करके क्या मिलेगा? तो भी उसने डाँट बतायी–मूर्ख! तुमने वह काम किया जो किसी को इस नगर में नहीं करना चाहिए। तुममें भय नहीं है शायद क्या? सुन्दर और स्वर्णमय प्राचीर पर कूदकर मेरी शत्रुता मोल मत लो। चलो दूर। १७७

कळिया वुळ्ळत् तण्णन् मनत्तिऱ् कदमूळ
विळिया निन्ऱे नीदि नलत्तिन् विनैयोर्वान्

अळिया तिव्वूर् काणु नलत्ता लणैहिऩ्ऱेऩ्
ॲळियॆ ऩुऱ्ऱाल् याव दुऩक्किङ् गिळवॆऩ्ऱाऩ् 178

कळिया उळ्ळत्तु–स्वाभाविक रूप से जिसका मन गर्वोन्मत्त न होता था; अण्णल्–उस महिमावान हनुमान ने; मऩत्तिल् कतम् मूळ–मन में क्रोध के उठने से; विळिया निऩ्ऱु–उसको रोककर; नीति नलत्तिऩ्–न्यायमार्ग के हित; वित्तै ओर्वाऩ्–कार्य का महत्त्व जाननेवाला बनकर; अळियाऩ्–(लंका-दर्शन का) इच्छुक बनकर; इव् ऊर् काणुम्–इस पुरी को देखने की; नलत्ताल्–सदिच्छा से; अणैकिऩ्ऱेऩ्–आता हूँ; ॲळियेऩ्–गरीब मैं; उऱ्ऱाल्–आया तो; उऩक्कु–तेरा; इङ्कु–यहाँ; इळवु–नुक़सान; यावतु–क्या है; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। १७८

महिमामय हनुमान अनुद्विग्नमन (या कभी डींग मारनेवाला नहीं) था। उसके मन में कोप उठा। पर उसने उसे दबा दिया। नीति-मार्ग के कार्य को जाननेवाले उसने उस लंकादेवी से शांति के साथ कहा कि मैं लंका देखने की अच्छी इच्छा करके यहाँ आया। मैं गरीब आया तो तुम्हारी क्या हानि हो गयी ? । १७८

ॲऩ्ऩा मुऩ्ऩ मेहॆऩ वेहा दॆदिर्माऱ्ऱम्
शॊऩ्ऩाय् नीये याव ऩडातॊल् पुरमट्टाऩ्
अऩ्ऩा रॆय्दऱ् कञ्जुव रम्मा यळियत्ताय्
उऩ्ऩा लॆय्दु मूरहॊ लिव्वूरॆऩ् ऱुरनक्काळ् 179

ॲऩ्ऩा मुऩ्ऩम्–यह कह चुकने के पूर्व ही; एकु ॲऩ–जाओ कहूँ तब भी; नीये एकातु–तुम ही, न चलकर; ॲतिर् माऱ्ऱम् चॊऩ्ऩाय्–उत्तर में बोलते हो; अटा–रे; नी–तुम; यावऩ्–कौन हो; तॊल्–प्राचीन; पुरम्–त्रिपुरों को; अट्टाऩ्–जिन्होंने जलाया था; अऩ्ऩार्–उन शिवजी के समान (लोग) भी; ॲय्तऱ्कु–यहाँ आने से; अञ्चुवर्–डरते हैं; अळियत्ताय्–करुणा योग्य; इ ऊर्–यह पुर; उऩ्ऩाल् ॲय्तुम् ऊर् कॊल्–तुम्हारे आने योग्य पुर है क्या; ॲऩ्ऱु–कहकर; उऱ–खूब; नक्काळ्–हँसी। १७९

हनुमान अपना वचन पूरा करे इसके पूर्व ही उसने कहा कि जाओ, कहती हूँ; पर जाते नहीं और बात बनाते हो ! रे तुम कौन हो ? त्रिपुरान्तक जैसे देव भी इधर आने से डरते हैं ! तुम करुणा के योग्य हो ! यह क्या ऐसा सस्ता नगर है कि तुम आओ ? यह कहकर वह खूब हँसी (अम्मा-मैया री !)। १७९

नक्का ळैक्कण् डैयऩ् मऩत्तॊर् नहैकॊण्डाऩ्
अक्का नीदा ऩार्शॊल वन्दा युऩदावि
उक्का लऩ्ऱि योडलै यॆऩ्ऱा ळिऩियिव्वूर्
पुक्का लऩ्ऱिप् पोहलॆ ऩॆऩ्ऱाऩ् पुहऴ्हॊण्डाऩ् 180

ऐयऩ्–आदरणीय; नक्काळै कण्टु–हँसनेवाली को देखकर; मऩत्तु–मन में;

ओर् नकै कोंण्टान्–हँसा; अक्काल्–तब; आर् तान् चॊल–किसके ही कहने से; नी वन्ताय्–तुम आये; उत्तु आवि–तुम्हारे प्राण; उक्काल् अन्ऱि–मिटे विना; ओटलै–नहीं भागोगे; ऍन्ऱाळ्–कहा (लंकादेवी ने); पुकऴ् कोंण्टान्–यशस्वी हनुमान ने; इन्नि–इतना होने के बाद; इ ऊर् पुक्काल् अन्ऱि–इस पुरी में घुसे विना; पोकलॆन्–नहीं जाऊँगा; ऍन्ऱान्–कहा। १८०

हँसती हुई उसको देखकर महिमावान हनुमान मन में हँसा। तब उससे लंकादेवी ने पूछा कि तुम किसकी आज्ञा से यहाँ आये? मरोगे तभी भागोगे? नहीं तो चलोगे नहीं क्या? तिस पर यशस्वी हनुमान ने अपना हठ दिखाया— अव इसको देखें बग़ैर लौट नहीं जाऊँगा। १८०

वञ्जङ् गॊण्डान् वान्र मल्लन् वरुहालन्
तुञ्जुङ् गण्डा लॆन्नै यिवन्शूऴ् तिरैयाऴि
नञ्जङ् गॊण्ड कण्णुद लैप्पो नहुहिन्ऱान्
नॆञ्जङ् गण्डे कल्लॆन निन्ऱे नितैहिन्ऱाळ् 181

वरु कालन्–(मेरा शत्रु बनकर) आनेवाला यम भी; ऍन्नै कण्टाल्–मुझे देखे तो; तुञ्चुम्–मर जायगा; इवन्–यह तो; तिरै चूऴ् आऴि–लहरों से आवृत समुद्र के; नञ्चम् उण्ट–विष के खादक; कण्णुतलै पोल्–भाल-नेत्र (शिवजी) के समान; नकुकिन्ऱान्–हँसता है; वञ्चम् कोंण्टान्–मन में वंचना रखता है; वान्रम् अल्लन्–वानर नहीं है; नॆञ्चम् कण्टु–मन ताड़कर; कल् ऍन–पत्थर के समान; निन्ऱु–अचल खड़ा रहकर; नितैकिन्ऱाळ्–सोचती है। १८१

यह सुनकर लंकादेवी सोचने लगी। मुझसे शत्रुता करने यम आयगा तो वह मर जायगा। यह तो भालनेत्र शिव के समान हँसता है, जिन्होंने लहरावृत समुद्र से निकले विष को निगल लिया। यह वंचक है। सचमुच वानर नहीं होगा। वह हनुमान का मन समझने का प्रयास करती हुई पत्थर के समान अचल खड़ी रही। १८१

कॊल्वा मन्ऱेल् कॊऴुम् मिव्वू रॆन्नल्कॊण्डाळ्
वॆल्वाय् नीयेल् वेऱि यॆन्नत्तन् विऴितोरुम्
वल्वाय् तोरुम् वॆङ्गतल् पॊङ्ग मदिवानिल्
शॆल्वा यॆन्ना मूविलै वेलैच् चॆलविट्टाळ् 182

कॊल्वाम्–इसको मार देंगे; अन्ऱेल्–नहीं तो; इव्वूर्–यह पुर; कोऴुम्–नष्ट हो जायगा; ऍन्नल्–ऐसा; कोण्टाळ्–सोचकर; नी वॆल्वायेल्–तुम जीत सको तो; वेऱि–जीत लो; ऍन्न–ऐसा कहकर; वॆम् कनल्–भयंकर (कोप की) अग्नि; तन् विऴि तोरुम्–अपनी आँख-आँख में; वल् वाय् तोरुम्–बलवान मुखों से; पॊङ्क–निकलने देते हुए; मति वानिल्–चन्द्र के आकाश में; चॆल्वाय् ऍन्ना–जाओ कहते हुए; मू इलै वेलै–त्रिशूल को; चॆल विट्टाळ्–(उसने) जाने को फेंका। १८२

उसने संकल्प किया कि हम इसे मार दें। नहीं तो इस नगर का

नाश हो जायगा। उसने हनुमान से कहा कि तुम जीत सकते हो तो जीतो ! फिर उसने अपनी आँखों और बलवान (आठों) मुखों से आग उगलती हुई त्रिशूल को उस पर चलाया और चिल्लायी कि चलो चन्द्र के आकाश में (= स्वर्ग में = मरो।)। १८२

तडित्ता मॅन्ऩत् तऩ्ऩॅदिर् शॅल्लुन् दळल्वेलैक्
कडित्ता ऩाहम् विण्णिऩ् मुरिक्कुङ् गलुळऩ्बोल्
ऑडित्ताऩ् कैया लुम्ब रुवप्प वुयर्कालम्
पिडित्ता णॅञ्जन् दुणॅत्त वॅण्णम् बिळैयादाऩ् 183

तटित्तु आम् ऍऩ्ऩ–तडित् ही कहने योग्य; तऩ् ऍतिर् चॅल्लुम्–अपनी ओर आनेवाले; तळल् वेलै–अग्नि-सम शूल को; ऍण्णम् पिळैयाताऩ्–अपने संकल्प में कभी न चूकनेवाले ने; कटित्ताऩ्–अपने दाँतों से काटा; उम्पर् उवप्प–देवों को आनन्द देते हुए; उयर् कालम् पिटित्ताळ्–बहुत काल जो जीवित रह गयी उसके; नॅञ्चम् तुणॅत्त–मन को भय से भरते हुए; कैयाल्–हाथों से; विण्णिल्–आकाश में; कलुळऩ्–गरुड़; नाकम् मुरिक्कुम् पोल्–सर्प को जैसे तोड़ता हो; ऑटित्ताऩ्–तोड़ दिया। १८३

वह शूल तडित् के समान हनुमान की ओर आ रहा था। दृढ़संकल्प हनुमान ने उस अग्नि-सम शूल को अपने दाँतों से पकड़ लिया। फिर उसने उसको आकाश में गरुड़ साँप को जैसे तोड़े वैसे हाथ से पकड़कर तोड़ दिया। उसे देखकर देव हर्षित हुए और लम्बी आयु वाली लंका का मन दहल उठा। १८३

इऱ्ऱुच् चूल नीऱॅळल् काणा वॅरियोंप्पाळ्
मऱ्ऱुत् तॅय्वप् पल्बडै कॊण्डे मलैवाळै
उऱ्ऱुक् कैया लायुद मॅल्ला मॊळियामल्
पऱ्ऱिक् कॊळ्ळा विण्णि लॅऱिन्दाऩ् पळियिल्लाऩ् 184

चूलम् इऱ्ऱु–शूल टूटकर; नीऱु ऍळल् कण्टु–चूर्ण हुआ देखकर; ऍरि ऑप्पाळ्–आग के समान भभककर; मऱ्ऱु–अन्य; पल् तॅय्व पटै–अनेक दिव्य आयुधों को; कॊण्टे–ले; मलैवाळै–लड़नेवाली उसके; उऱ्ऱु–पास जाकर; आयुतम् ऍल्लाम्–सभी आयुधों को; पळियिल्लाऩ्–अपयश से हीन हनुमान ने; ऑळियामल्–बिना बाकी छोड़े; कैयाल् पऱ्ऱि कॊळ्ळा–अपने हाथों से पकड़कर; विण्णिल् ऍऱिन्ताऩ्–आकाश में फेंक दिया। १८४

शूल को टूटकर चूर्ण होते देख अग्निसमाना लंकादेवी अन्य दिव्य आयुध चलाकर युद्ध करने लगी। अनिंद्य हनुमान ने उन सबको पकड़कर आकाश में फेंक दिया। १८४

वऴङ्गुन् दॅय्वप् पलबडै काणाण् मळैवान्मेल्
मुऴङ्गुम् मेह मॅन्न मुरड्रि मुत्तिहिन्ड्राऴ
कऴङ्गुम् बन्दुम् कुन्रुहो डाडुङ् गरमोच्चित्
तऴङ्गुञ् जॅन्दीच् चिन्द वडित्ता डहविल्लाऴ् 185

तकवु इल्लाळ्–योग्यताहीन (लंकादेवी); वऴङ्कुम्–अपने द्वारा चलाये गये; तॅय्वप् पल् पटै–अनेक दिव्यायुधों को; काणाळ्–न देखकर; मेल् वान्–ऊपर आकाश में; मुऴङ्कुम्–गरजनेवाले; मळै मेकम् ॲन्न–जल-भरे मेघ के समान; मुरड्रि–नारे लगाते हुए; मुत्तिकिन्ड्राळ्–कोप करके; तऴङ्कुम् चॅन् ती–शब्द के साथ लाल आग; चिन्त–बरसाती हुई; कुन्रु कोटु–गिरियों से; कऴङ्कुम् पन्तुम्–"कऴङ्कु" नाम के गोल बीजों और गेंदों को ले; आटुम्–खेलनेवाले; करम् ओच्चि–हाथों को उठाकर; अटित्ताळ्–मारा। १८५

लंका ने देखा कि वह जो भी हथियार फेंक रही थी उनका कहीं पता नहीं। वह बरसनेवाले घटाटोप के समान गरजकर कोप के साथ पर्वतों को उखाड़कर फेंकने लगी; मानो वह गेंद या 'कऴङ्गु' नाम के गोल बीज को खेल में उछाल रही हो। उनमें से आग निकलने लगी। वह हाथ उठाकर ज़ोर से हनुमान को उन पर्वतों से मारने लगी। १८५

अडिया मुन्न मङ्गै यनैत्तु मोरुकैयाल्
पिडिया वॅन्ने पॅण्णिवऴ् कॊल्लिऱ् पिळैयॅन्ना
ऑडिया नॅञ्जत् तोरडि कॊण्डा नुयिरोडुम्
इडियेरुण्ड माल्वरै पोन्मण् णिडैवीऴ्न्दाऴ् 186

अटिया मुन्नम्–मारने से पहले; अङ्कै अनैत्तुम्–उसके सुन्दर सभी (आठों) हाथों को; ओरु कैयाल्–अपने एक हाथ में; पिटिया–पकड़ लेकर; ॲन्ने–यह क्या है; इवळ् पॅण्–यह स्त्री है; कॊल्लिल् पिळै–मारने पर (ही तो) अपराध लगेगा; ॲन्ना–सोचकर; ऑटियात्–न हिचककर; नॅञ्चत्तु–उसके हृदय पर; ओर् अटि कॊण्टान्–एक प्रहार किया; इटि एरु–बहुत बड़े वज्र से; उण्ट–आहत; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उयिरोटुम्–प्राणों के साथ; मण्णिटै वीऴ्न्ताळ्–पृथ्वी पर गिरी। १८६

लंका के उन्हें छोड़ने से पूर्व ही हनुमान ने अपने हाथ से उसके आठों हाथों को ग्रस लिया। वह इस विचार से थकित नहीं हुआ कि यह क्या? यह तो स्त्री है। इसको जान से मारना ही तो अपराध होगा। (हम जान से नहीं मारेंगे)। उसने लंका के वक्ष पर एक प्रहार किया। वह प्रहार पाकर अशनि-प्रहरित बड़े पर्वत के समान लंका पृथ्वी पर गिर गयी। उसके प्राण नहीं गये। १८६

विऴुन्दा णॊन्दाऴ् वॅङ्गुरु दिच्चॅम् बुनल्वॅऴ्ळत्
तऴुन्दा निन्ड्रा णान्मुह नारद मरुऴ्न्ड्रि

ऍऴुन्दाळ् यारुम् यावैयु मॆल्ला वुलहत्तुम्
तॊऴुन्दाळ् वीरन् रूदुवन् मुननिन् ऱिवैशॊन्ऩाळ् 187

विऴुन्ताळ्–गिरी और; नॊन्ताळ्–पीड़ित हुई; वॆम् कुरुति–गरम रक्त के; चॆम् पुतल् वॆळ्ळत्तु–लाल जल के प्रवाह में; अऴुन्ता निन्ऱाळ्–मग्न हुई; नान् मुकनारतम्–चतुर्मुख ब्रह्मा का; अरुळ् ऊन्ऱि–कृपावचन मन में ले; ऍऴुन्ताळ्–उठी; ऍल्ला उलकत्तुम्–सभी लोकों में; यारुम् यावैयुम्–सभी विवेकी जीव (देव, मानव आदि) और सभी अविवेकी जीव (पशु, पक्षी आदि); तॊऴुम्–जिनकी स्तुति करते हैं; ताळ्–ऐसे चरणों के; वीरन्–वीर नायक श्रीराम के; तूतुवन् मुन् निन्ऱु–दूत के सामने खड़ी होकर; इवै–ये बातें; चॊन्ताळ्–कहीं। १८७

लंकादेवी जो, नीचे गिरी, बहुत दुःखी हुई। गरम रक्त के प्रवाह में डूबी। फिर चतुर्मुख ब्रह्माजी ने कृपा करके जो कहा था उसका चिंतन करती हुई वह उठी। फिर सर्ववन्द्यचरण श्रीराम के दूत हनुमान के सामने खड़ी होकर यों बोली। १८७

ऐयके ळबय नल्हु मयनरु ळमैदि याहि
ॲय्दियिम् मूदूर् काप्पॆ त्रिलङ्गैया वेन्ऩुम् यान्
शॆय्दॊऴि लिऴुक्कि युळ्ळन् दिहैत्तिन्दच् चिरुमै युऱ्ऱेन्
उय्दियॆन् ऱळित्ति यान्ऩु मुणर्त्तुव लुण्मै यॆन्ऱाळ् 188

ऐय–आदरणीय; केळ्–सुनो; अपयम् नल्कुम्–अभयप्रदान करनेवाले; अयन्–ब्रह्माजी की; अरुळ् अमैतियाकि–कृपा का सम्बल लेकर; इ मूतूर ॲय्ति–इस प्राचीन नगर में आकर; काप्पॆन्–संरक्षण करती आ रही हूँ; यान्ऩे इलङ्कै आवेन्ऩुम्–मैं स्वयं लंका (नाम की) हूँ; चॆय् तॊऴिल्–अपने कर्तव्य (संरक्षण) कार्य में; इऴुक्कि–चूक गयी; उळ्ळम् तिकैत्तु–मन भ्रमित हो गया; इन्त चिरुमै–यह लघुता; उऱ्ऱेन्–पा गयी; उय्ति–बच जाओ; ऍन्ऱु–कहकर; अळित्ति–अभयदान दो; यान्ऩुम्–मैं भी; उण्मै–सत्य; उणर्त्तुवल्–बता दूंगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। १८८

आदरणीय! सुनो। अभयप्रदायक अजदेव की कृपा का सम्बल लेकर मैं इस लंका का संरक्षण करती आयी। मेरा नाम भी लंका है। अपने पहरे के काम में जरा-सी चूक हुई और मन भ्रमित हो गया। उसके फलस्वरूप इस लघुता को पहुँच गयी हूँ। तुम अभयदान दो और मुझे जीवित छोड़ दो। मैं तुमको सत्य घटना बताऊँगी। १८८

ऍत्तनै कालङ् गाप्पॆन् यानिन्द मूदू रॆन्ऱु
मुत्तनै विनवि नेऱ्कु मुरणवलिक् कुरङ्गॊन् ऱुन्ऩैक्
कॆत्तलन् दन्ऩार् ऱॊण्डिक् कायन्दवन् ऱॆन्ऩैक् काण्डि
चित्तिर नहरम् बिन्ऩैच् चिदैवदु तिण्ण मॆन्ऱान् 189

मुत्तनै–मुक्त (उन ब्रह्माजी) से; यान्–मैं; इन्त मूतूर्–इस प्राचीन नगर की; ऍत्तनै कालम्–कितना समय; काप्पॆन्–रक्षा करूंगी; ऍन्ऱु–ऐसा;

वित्तवित्तेऱ्कु–पूछनेवाली मुझसे; मुरण् वलि–बहुत सबल; कुरङ्कु ऑन्ऱु–एक वानर; उन्ऩै–तुम्हें; कै तलम् तन्ऩाल्–हाथ से; तीण्टि–स्पर्श कर; काय्न्त अन्ऱु–जब क्रोध दिखायगा; ऍन्ऩै काण्टि–उस दिन मुझसे मिलोगी; चित्तिर नकरम्–सुन्दर (लंका) नगर; पिन्ऩै–बाद; चितैवतु–मिट जायगा; तिण्णम्–ध्रुव है; ऍन्ऱान्–कहा (ब्रह्मा ने)। १८६

मुक्त ब्रह्माजी से मैंने पूछा कि मैं कितने दिन इस प्राचीन नगर पर पहरा दूँ ? तव उन्होंने कहा कि अति बलिष्ठ एक वानर आयगा और अपने हाथ से स्पर्श कर तुम्हें दण्ड देगा। तव तुम अपना कार्य छोड़कर मुझसे आकर मिलोगी। उसके पश्चात उस सुन्दर नगर का नाश हो जायेगा। यह ध्रुव है। १८९

अन्ऩदे मुडिन्द दैय वऱम्वॅल्लुम् बावन् दोऱ्कुम्
ऍन्ऩुमी दियम्ब वेण्डुन् दहैयदो यिऩिमऱ् ऱुन्ऩाल्
उन्ऩिय वॅल्ला मुऱ्ऱु मुनक्कुमुऱ् ऱाद दुण्डो
पॊन्ऩहर् पुहुदि यॅन्ऩाप् पुहऴ्न्दव ळिऱैञ्जिप् पोऩाळ् 190

ऐय–आदरणीय; अन्ऩते–वही; मुटिन्ततु–क्रियान्वित हुआ; अऱम् वॅल्लुम्–धर्म की जय होगी; पावम् तोऱ्कुम्–पाप की पराजय होगी; ऍन्ऩुम् ईतु–यह कथन; इयम्प वेण्टुम् तकैयतो–समझाने की आवश्यकता भी है क्या; इऩि–आगे; उन्ऩाल्–तुमसे; उन्ऩिय ॲल्लाम्–सोचा जो जायगा वह सभी; मुऱ्ऱुम्–पूरा होगा; उतक्कुम्–तुमसे; मुऱ्ऱाततु–असाध्य; उण्टो–कुछ होगा क्या; पॊन् नकर् पुकुति–स्वर्णनगरी में प्रवेश करो; ऍन्ऩा–ऐसा; पुकऴ्न्तवळ्–उसकी महिमा गाकर; इऱैञ्चि–विनय करके; पोऩाळ्–चली। १६०

महिमावान ! ब्रह्माजी की वाणी अब चरितार्थ हो गयी। हाँ ! धर्म जीतेगा और पाप हार जायगा। यह कथन दुहराने की आवश्यकता भी है क्या ? आगे तुम जो भी चाहोगे वह सब पूरा होगा। तुमसे बन नहीं पड़े, ऐसा कोई कार्य भी होगा क्या ? जाओ ! स्वर्णनगर में प्रवेश करो। यह कहकर लंकादेवी ने हनुमान की सम्मान-सहित स्तुति की और विनय प्रदर्शन करके चली गयी। १९०

वीरतुम् विरुम्बि नोक्कि मॅय्म्मैये विळैवु मः(ह्)दॅन्
ऩारियन् कमल पाद महत्तुऱ वणङ्गि याण्डप्
पूरिय रिलङ्गै मूदूरप् पॊन्मदि ऱाविप् पुक्काऩ्
शीरिय पालिन् वेलैच् चिऱुपिरै तॅळित्त दन्ऩान् 191

वीरतुम्–वीर हनुमान; विरुम्पि नोक्कि–प्यार से देखकर; मॅय्म्मैये–सच ही; विळैवुम् अ.्.तु–सम्भाव्य भी वही; ऍन्ऱु–सोचकर; आरियन् कमल पातम्–आर्य श्रीराम के कमल-चरणों का; अकत्तु उऱ–मन में लगाकर (स्मरण कर); वणङ्कि–नमस्कार करके; चीरिय–श्रेष्ठ; पालिन् वेलै–क्षीर-सागर में; चिऱु पिरै–

छोटा-सा जामन; तॆळित्ततु अऩ्ऩाऩ्–जो छिड़का गया हो उसके समान; आण्टु–तब; अ–उन; पुरियर्–नीच लोगों के; इलङ्कै मूतूर्–प्राचीन लंका नगर में; पॊऩ् मतिल् तावि–स्वर्ण-प्राचीर को लाँघकर; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुआ। १६१

वीर हनुमान ने उस पर प्यार की दृष्टि डाली। मन में सोचा कि उसका कहना सच है। वही होनेवाला है। उसने आर्य श्रेष्ठ श्रीराम के चरण-कमलों का ध्यान किया। फिर उसने जग-विख्यात नीच राक्षस लोगों के उस प्राचीन लंका नगर में, स्वर्णप्राचीर को लाँघकर प्रवेश किया। उसका प्रवेश श्रेष्ठ क्षीरसागर में जामन की बूँद के छिड़कने के समान था (सब विगड़ जानेवाला है)। १९१

वाऩ्ऱॊडर् मणियिऱ् चॆय्द मैयऱु माड कोडि
आऩ्ऱपे रिरुळैच् चीत्तुप् पहल्शॆय्द वळ्है नोक्कि
ऊऩ्ऱिय वुदयत् तुच्चि यॊऱ्ऱॆवा नुरुळैत् तेरोऩ्
तोऩ्ऱिऩऩ् कॊल्लो वॆऩ्ऩा वऱिवऩुन् दुणुक्कङ् गॊण्डाऩ् 192

वाऩ् तॊटर्–आकाश से लगे; मणियिऱ् चॆय्त–रत्ननिर्मित; मै अऱु–निर्दोष; माट कोटि–(कोटि-कोटि) असंख्यक सौध; आऩ्ऱ–घने; पेर् इरुळै–गहरे अन्धकार को; चीत्तु–दूर करके; पकल् चॆय्त–(रात को) दिन में बदल रहे थे, उस; अळकै नोक्कि–सौन्दर्य को देखकर; ऊऩ्ऱिय–स्थायी; उतयत्तु उच्चि–उदय के वर्धन में; वाऩ्–आकाशचारी; ऒऱ्ऱै उरुळैत्तेरोऩ्–एकचक्ररथी; तोऩ्ऱिऩऩ् कॊल्लो–उग आया क्या; ऎऩ्ऩा–ऐसा; अऱिवऩुम्–बुद्धिमान हनुमान भी; तुणुक्कम् कॊण्टाऩ्–ठिठक गया। १६२

उस नगर में कितने ही प्रासाद थे। सब गगनव्यापी थे। रत्नों से जड़ित थे। वे घने और विशाल अन्धकार को दूर करके दिन-सा बना रहे थे। उस सौंदर्य को देखकर बुद्धिमान हनुमान भी ज़रा ठिठक गया कि क्या स्थायी और उदयकालीन वर्धन ले एकचक्ररथी सूर्य आ गया है!। १९२

मॊय्म्मणि माड मूदूर् मुळुदिरु ळहऱ्ऱुऩ् दाऩे
सॆय्म्मैयै युणर्वि ऩाऩो मिहैयॆऩ विलङ्गिप् पोऩाऩ्
इम्मदि लिलङ्गै नाप्प पॆय्दुमेऱ् ऱऩ्मु ऩॆय्दुम्
मिम्मिऩि यल्ल ऩोवव् वॆयिऱ्कदिर् वेऩ्द ऩम्मा 193

मॊय् मणि–घने रत्नों से जड़ित; माट–सौधों से भरे; मूतूर्–वह प्राचीन नगर; ताऩे–अकेले; इरुळ् मुळुतु–सारे अन्धकार को; अकऱ्ऱुम् सॆय्म्मैयै–हटा रहा था, इस तथ्य को; उणर्विताऩ्–समझकर; अ–वह; वॆयिल् कतिर् वेन्तऩ्–गरम किरणों का अधिपति (सूर्य); मिकै–(अपना आना) अनावश्यक; ऎऩ–समझकर; विलङ्किप् पोताऩ्–दूर से चला गया; इ मतिल् इलङ्कै नाप्पण्–इस प्राचीरवलयित

लंका के मध्य; अँय्तुमेल्–आयगा तो; तन् मुन्–उसके सामने; अँय्तुम्–आनेवाले; मिम्मिनि अल्लतो–खद्योत नहीं होगा क्या। १६३

घने रूप से रत्नों से निर्मित सौधों से भरा नगर स्वयं और अकेले सारे अन्धकार को मिटा रहा था। इस तत्त्व को हनुमान ने देखा और सोचा कि गरम किरणों का स्वामी सूर्य यह सोचकर लंका के पास न आकर दूर ही से चला गया कि वहाँ मेरा जाना अनावश्यक है। अगर वह प्राचीरों से युक्त इस नगर के मध्य आयगा तो वह खद्योत के समान क्या अल्प-प्रकाश न हो जायगा ? । १९३

पॉशिवुरु पशुम्बॉर् कुन्रिर् पॉन्मदि नडुवट् पूत्तु
वशैयर विळङ्गुञ् जोदि मणियिना लमैत्त माडत्
तशैविलिव् विलङ्गै मुदू रारिरु ळिन्मै यालो
निशिशर रायि नारन् नॅडुनहर् निरुद रॅल्लाम् 194

पॉचिवु उरु–पिघलनेवाले; पचुम् पॉन्–हरे (चोखे और पीले) स्वर्ण के; कुन्रिल्–(त्रिकूट) पर्वत पर; पॉन् मतिल् नट्टवण्–स्वर्ण-प्राचीरों के मध्य; पूत्तु–खिलकर; वचैयर्–निर्दोष; विळङ्कुम्–शोभित; चोति मणियिनाल्–ज्योतिमय मणियों से निर्मित; माटत्तु–सौधों से युक्त; अचैवु इल्–अचल; इ इलङ्कै मूतूर्–इस प्राचीन लंका में; आर् इरुळ्–भरा अन्धकार; इन्मैयालो–नहीं है, क्या इसलिए; अ नॅट्टु नकर्–उस विशाल नगर के; निरुतर् ॲल्लाम्–राक्षस सभी; निचिचरर् आयिनार्–निशिचर बन गये। १६४

पिघलने का स्वभाव रखनेवाले उस पीले स्वर्ण के पर्वत पर वह प्राचीन लंका बसा था। स्वर्ण प्राचीरों के मध्य था। उसमें निर्दोष रत्नों से युक्त और प्रकाश फैलानेवाले अनेक प्रासाद थे। वह अकंपन था। उस नगर में कभी अँधेरा नहीं होता था। हनुमान ने यह सोचा तो उसे एक बात सूझी। "तब क्या इसी कारण इस विशाल नगर के राक्षस लोग निशाचर (रात में चलनेवाले) बन गये ?" । १९४

ॲन्रन नियम्बि वीदि येहुद लिळुक्क मॅन्नात्
तन्रहै यरिय मेनि शुरुक्किमा ळिहैयिर् चारच्
चॅन्रन नॅन्ब मन्नो तेवरुक् कमुद मोन्द
कुन्रॅन वयोत्ति वेन्दन् पुहळॅनक कुववुत् तोळान् 195

तेवरुक्कु–देवों को; अमुतम् ईन्त–जिसने अमृत दिलाया; कुन्रु ॲन–उस मन्दर पर्वत के समान रहनेवाले; अयोत्ति वेन्तत्–अयोध्याधिपति के; पुकळ् ॲन–यश के समान; कुववु–विशाल; तोळान्–भुजा वाला; ॲन्रतन् इयम्पि–ऐसा आप ही आप कहते हुए; वीति एकुतल्–वीथियों पर जाना; इळुक्कम् ॲन्ना–गलत समझकर; तन् तकै–अपने स्वभाव के अनुरूप रहनेवाले; अरिय–अतिशय बृहत्; मेनि–

शरीर को; चुरुक्कि–छोटा बनाकर; माळिकैयिल् चार–प्रासादों से लगे-लगे; चॅन्ऱतन्–गया; ॲन्नप–ऐसा लोग कहते हैं। १६५

हनुमान के कन्धे देवों को अमृत दिलानेवाले मन्दरपर्वत के समान (ऊँचे) थे और अयोध्याधिप के यश के समान विशाल। ऐसे हनुमान ने यह सोचा कि वीथियों के मध्य से जाना गलत होगा। उसने अपने गुणों के अनुरूप वृहत्, अपने अनोखे शरीर को छोटा कर लिया। वह भवनों के पास लगे-लगे जाने लगा। १९५

आत्तुरु शालै तोरु मातैयिन् कूडन् दोरुम्
मात्तुरु माडन् दोरुम् वाशियिन् पन्दि तोरुम्
कात्तुरुञ् जोलै तोरुङ् गरुङ्गडल् कडन्द कालाल्
पूत्तोरुम् वाविच् चॅल्लुम् बॊऱिवरि वण्डिर् पोनान् 196

करुम् कटल्–काले (रंग के) समुद्र को; कटन्त कालाल्–जिन (पैरों) से लाँघा उन पैरों से; आ तुरु–गायों से भरी; चालै तोरुम्–गोशालाओं में; आतैयिन् कूटम् तोरुम्–गजशालाओं में; मा तुरु–अनेक पशुओं के; माटम् तोरुम्–स्थलों में; वाचियिन् पन्ति तोरुम्–अश्वशालाओं में; का तुरुम्–संरक्षित; चोलै तोरुम्–उद्यानों में; पू तोरुम्–हर फूल पर; वावि चॅल्लुम्–बैठकर फिर उड़ जानेवाले; पॊऱि वरि वण्टिन्–चित्तियों और रेखाओं से युक्त भ्रमर की भाँति; पोनान्–हनुमान गया। १६६

हनुमान पैदल चलकर गया। उसके वे पैर थे जिन्होंने काले सागर को लाँघकर पार किया था। गोशालाएँ, गजशालाएँ, विविध पशुओं के बाँधने के स्थान, अश्वशालाएँ आदि देखता चला। संरक्षण-युक्त उद्यानों में भी अन्वेषण करता हुआ वह बिन्दियों और धारियों से युक्त भ्रमर के समान चला जा रहा था। १९६

पॅरियना ळॊळिकॊ णाना विदमणिप् पित्तिप् पत्ति
शॊरियुमा निळलङ् गङ्गे शुर्ऱलाल् कालिन् ऱोन्ऱल्
करियनाय् वॅळिय नाहिच् चॅय्यनायक् काट्टुङ् गाण्डर्
करियना यॅळिय नान्दन् नहत्तुरै यळह नेपोल् 197

पॅरिय–बड़े; नाळ्–नक्षत्रों के; ऑळि कॊळ्–प्रकाश से युक्त; नानाविद मणि पित्ति पत्ति–विविध मणि-जड़ित भित्तियों की पंक्तियाँ; चॊरियुम्–जो छिटकाती हैं; मा निळल्–वे श्रेष्ठ ज्योतियाँ; अङ्कङ्के–यत्र-तत्र; चुर्ऱलाल्–घेरती हैं, इसलिए; कालिन् तोन्ऱल्–वायुपुत्र; काण्टर्कु–देखने के लिए; अरियनाय्–दुर्लभ; ॲळियनाम्–पर सुलभप्राप्य रहकर; तन् अकत्तु उरै–अपने हृदय में स्थित; अळकने पोल्–सुन्दर श्रीराम के समान; करियनाय्–(एक स्थान पर विष्णु की भाँति) काला; वॅळियन् आकि–दूसरे स्थान श्वेत (ब्रह्मा) बनता; चॅय्यनाय्–(तीसरे स्थान पर रुद्र की तरह) लाल; काट्टम्–दरसाता। १६७

वहाँ के प्रासादों की दीवारें नाना मणियों से जड़ित थीं, जो नक्षत्रों के समान प्रकाश बिखेर रही थीं। स्थल-स्थल पर वह प्रकाश पुञ्जीभूत था। उनके बीच से जाते हुए हनुमान कभी लाल, कभी काला और कभी श्वेत वर्ण का हो जाता था। तब वह शिवजी, विष्णु और ब्रह्माजी के समान लगा। ये तीनों उन सुन्दर श्रीराम के ही विविध रूप हैं जो कि प्रत्यक्ष देखने को कठिन और ध्यान में प्राप्त करने को सुलभ होकर हनुमान के मन में विराजे हुए थे। १९७

ईट्टुवार् तवम लान्मर् ऱीट्टिना लियैव दिन्मै
काट्टुवार् विदिया रिन्नुङ् गाण्गिऱ्पार् काण्मि नम्मा
पूट्टुवार् मुलैपॉ ऱाद पॉय्यिडै नैयप् पूनीर्
आट्टुवा रमरर् माद राडुवा ररक्कर् मादर् 198

वितियार्–विधाता; ईट्टुवार्–अर्जन करनेवाले; तवम् अलाल्–तप के सिवा; मऱ्ऱु ईट्टिनाल्–अन्य (धन आदि) अर्जन करें तो; इयैवतु इन्मै–युक्त नहीं होता इसको; काट्टुवार्–अनेक प्रकार से दरसा देंगे; इन्तुम् काण्किऱ्पार्–और भी देखना चाहनेवाले; काण्मिन्–देख लें; अमरर् मातर्–देवांगनाएँ; पूट्टु वार् मुलै–अँगियाबद्ध स्तनों के; पॊऱात पॊय् इटै–भार को न सह सकनेवाली, और नहीं है ऐसा क्षीण रहनेवाली कमर के; नैय–दुःखी होते; पू नीर्–पुष्प-मिले जल से; आट्टुवार्–स्नान करातीं; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियाँ; आटुवार्–स्नान करतीं; अम्मा–आश्चर्य है मैया। १९८

विधाता लोगों को यह दरसाते हैं कि कमाना हो तो तप का फल कमाना है। अन्य धन आदि कमाने में कोई युक्तता नहीं है। यह आगे भी वे साबित करते रहेंगे। और जो इस बात का प्रमाण देखना चाहते हैं वे इधर देख लें। देवांगनाएँ अँगियाबद्ध भारी कुचों को सह न सकनेवाली और अभाव का सन्देह पैदा करने की उतनी क्षीण अपनी कमरों को दुःख देती हुई राक्षस-स्त्रियों को पुष्प (वास) -भरे जल से नहलाती हैं और वे राक्षस-स्त्रियाँ स्नान कर रही हैं। १९८

कानह मयिल्ह ळॅन्नक् कळिमड वन्न मॅन्न
आनन कमलप् पोदु पॉलिदर वरक्कर् मादर्
तेनुहु शरळच् चोलैत् तॅय्वनी राऱ्ऱिऱ् ऱॅण्णीर्
वानवर् महळि राट्ट मज्जन माडु वारे 199

तेन् उकु–शहद जहाँ चूता है; चरळ चोलै–(तरुओं से भरे) उन उद्यानों में; तॅय्व नीर्–दैवी जल से भरी; आऱ्ऱु–(आकाशगंगा) नदी के; तॆळ् नीरिल्–स्वच्छ जल में; वानवर् मकळिर्–देवबालाएँ; मञ्चनम् आट्ट–मज्जन कराती हैं और; कानक मयिल्कळ् ॲन्न–वन-मयूरों के समान; कळि मट अन्नम् अन्न–मत्त बाल-मरालों के भी समान; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियाँ; आनन कमलम् पोतु–

मुख-कमल; पॉलितर–शोभें ऐसा; मञ्चनम् आट्वारै–मज्जन करनेवाली जो हैं, उनको। १९९

शहद चूनेवाले पेड़ों से भरे उद्यानों में देवललनाएँ दिव्य आकाशगंगा के स्वच्छ जल में राक्षसियों को स्नान करा रही हैं और वे राक्षसियाँ वन-मयूरों और मत्त बालमरालों के समान मुख रूपी कमलों को खिलाते हुए स्नान कर रही थीं। हनुमान ने उनको देखा। १९९

इलक्कण मरबिऱ् केऱ्ऱ वॅळ्वहै नरम्बि नल्याळ्
अलत्तहत् तळिर्क्कै नोव वळन्दॅडुत् तमैत्त पाडल्
कलक्कुऱ मुळङ्ग नोक्किक् कन्नियर् शेडि मार्हळ्
मलर्क्कैयान् माडत् तुम्बर् मळैयिन्वाय् पॉत्तु वारै 200

इलक्कण मरपिऱ्कु–शास्त्रोक्त रीति से; एऱ्ऱ–युक्त; ॲळ्ळु वकै–सात तरह के; नरम्पिन्–(स्वर निकालनेवाली) तन्त्रियों के साथ रहनेवाली; नल् याळ्–श्रेष्ठ 'याळ्' नाम की वीणा को; अलत्तक–लाक्षारससिक्त; तळिर्क्कै–पल्लव-समान उँगलियों को; नोव–दुखाते हुए; अळन्तु ॲटुत्तु–ताल के अनुसार मापकर; अमैत्त पाटल–गाया गाना; कलक्कुऱ–बिगाड़ते हुए; मुळङ्क–(मेघ) गरजे तब; नोक्कि–देखकर; कन्नियर् चेटिमार्कळ्–देवकन्याएँ जो चेरियाँ थीं; मलर् कैयाल्–अपने पुष्पहस्तों से; माटत्तु उम्पर्–सौधों के ऊपर; मळैयिन् वाय्–मेघों के मुखों को; पॉत्तुवारै–बन्द करनेवालियों को। २००

स्त्रियाँ (याळ नाम की) वीणा का वादन कर रही थीं। उनमें सात स्वरों के लिए सात तंत्रियाँ लगी थीं। उनका वादन शास्त्र-शुद्ध था। उस संगीत में खलल पहुँचाते हुए प्रासादों के ऊपर आकाश में मेघ गरजने लगे तो चेरियों ने अपने पुष्प-सम हाथों से उनका मुख बन्द कराया। २००

शन्दप्पूम् बन्दर् वेय्न्द तमनिय वरङ्गिर् ऱङ्गिच्
चिन्दित्त दुदवुम् दॅय्व मणिविळक् कॉळिरुञ् जेक्कै
वन्दुऱ्ऱ निरुत्त माक्कळ् विळम्बिन नॅऱिव ळामल्
कन्दर्प्प महळि राडु नाडहङ् गाणगिन् ऱारै 201

चन्त–सुन्दर; पूम् पन्तर् वेय्न्त–पुष्पों के वितान जहाँ तने थे; तमनिय अरङ्किल्–स्वर्णनिर्मित नाट्यभवनों में; चिन्तित्तत्तु उतवुम्–मन की चाही चीज देनेवाला; तॅय्व मणि विळक्कु–दिव्य मणिदीप; ऑळिरुम्–प्रकाश दे रहा था; चेक्कै तङ्कि–आसनों पर आसीन होकर; वन्तुऱ्ऱ निरुत्त माक्कळ्–आकर खड़े हुए नृत्य-आचार्यों के; विळम्पिन नॅऱि–कहे मार्ग से; वळामल्–न डिगकर; कन्तर्प्प मकळिर्–गन्धर्वकन्याएँ; आटुम् नाटकम्–जो नाटक प्रदर्शन करती हैं, उन नाटकों को; काण्किन्ऱारै–देखनेवालों को (हनुमान देखता गया)। २०१

(हनुमान कैसे-कैसे लोगों को देखता गया? —उनकी सूची दी जाती

है।) स्वर्ण-निर्मित रंगमञ्च है। उसमें सुन्दर पुष्पों का वितान तना है। चिन्तामणि (जो माँगी हुई वस्तु दिला सकती है) दीप का काम दे रही है। उधर आसनों पर बैठे हैं राक्षस लोग। गंधर्व-स्त्रियाँ नर्तन-शास्त्र के ज्ञाताओं के निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार नाच दिखा रही हैं। उनको और राक्षस दर्शकों को (हनुमान ने देखा)। २०१

तिरुत्तिय पळिक्कु वेदित् तॆळ्ळिय वेलुह ळॆन्नक्
करुत्तियल् पुरैक्कु मुण्गट् करुङ्गयल् शॆम्मै काट्ट
वरुत्तिय कॊऴुनर् तम्बाल् वरम्बित्ऱि वळर्न्द कामम्
अरुत्तिय पयिर्क्कु नीर्पो लरुनऱ वरुन्दु वारै 202

तिरुत्तिय–सुनिर्मित; पळिक्कु वेति–स्फटिक वेदियों पर; तॆळ्ळिय वेल्कळ् ऍन्न–साफ़ (तीक्ष्ण) भालों के समान; करुत्तु इयल्पु–मन की बात; उरैक्कुम्–कहनेवाले; उण् कण्–काजलयुक्त; करुम् कयल्–काली आँखें रूपी कयल मछलियाँ; चॆम्मै काट्ट–लाल दिखें ऐसा; वरुत्तिय–दुःख देनेवाले; कॊऴुनर्–पति लोग; तम् पाल्–अपने पास; वरम्पु इत्ऱि–सीमा-रहित; अरुत्तिय–प्यार से जनाकर; वळर्न्त–पालित; काम पयिर्क्कु–काम रूपी पौधे को; नीर् पोल्-जलवत; अरु नऱवु–श्रेष्ठ सुरा को; अरुन्तुवारै–पीनेवालियों को। २०२

उसने सुरचित स्फटिक-वेदियों पर राक्षस-स्त्रियों को देखा जो सुरापान कर रही थीं। (उनके पति उनको दुःख देकर चले गये थे। अब लौटने पर स्त्रियाँ रूठी हुई थीं।) उनकी कजरारी आँखें भाले के समान तीक्ष्ण थीं और उनके मन (के रोष) को प्रतिबिम्बित कर रही थीं। पतियों ने मनवा लिया और उन्हें असीम प्रेम (काम की तृप्ति द्वारा) दे रहे थे। उस काम रूपी पौधे को मानो वे सुरा रूपी जल से सींच रही थीं। २०२

कोदऱु कुवळै नाट्टङ् गॊऴुनर्हण् वण्णम् कॊळ्ळत्
तूदुळङ् गनियै वॆन्ऱु तुवर्त्तवाय् वॆण्मै तोन्ऱ
मादरु मैन्दर् तामु मॊरुवर्पा लॊरुवर् वैत्त
कादलङ् गळ्ळुण् डार्पोल् मुऱैमुऱै कळिक्किन् ऱारै 203

कोतु अऱ–निर्दोष; कुवळै नाट्टम्–कुवलय-सी आँखों ने (राक्षसियों की); कॊऴुनर्–प्रेमी पतियों की; कण् वण्णम्–आँखों का रंग; कॊळ्ळ–अपना लिया; तूतुळङ् कतियै वॆन्ऱु–"तूदुळम्" नाम की लता के लाल फलों को (रंग में) हराकर; तुवर्त्त वाय्–जो लाल था, उस मुख के; वॆण्मै तोन्ऱ–श्वेत दिखते; मातरुम् मैन्तर् तामुम्–पुरुष और स्त्रियाँ जो; ऒरुवर् पाल् ऒरुवर् वैत्त–परस्पर करते थे; कातल् अम् कळ्ळुण्टार् पोल्–उस प्रेम रूपी सुरा का पान कर रहे हों; मुऱै मुऱै कळिक्किन्ऱारै–बारी-बारी से सुखानुभव करनेवालों को। २०३

(इस पद्य में भी संगम का दृश्य है।) स्त्रियों की निर्दोष नील

कुवलय-सी आँखों में वीर पतियों की आँखों का रंग उतर आया। (उनकी आँखें लाल हो गयीं।) 'तूदुळम्' नामक लता के लाल फलों के समान जो उनके लाल अधर थे वे अब श्वेत हो गये। स्त्रियाँ और पुरुष आपसी प्रेम की सुरा को पान कर बारी-बारी से सुखभोग का रस लूट रहे थे। उनको हनुमान ने देखा। २०३

विऱ्पडर् पवळप् पादत् तलत्तह मॅळ्दि मेत्ति
पॊऱ्पळ विल्ला वाशम् बुत्तैनरुङ् गलवै पूशि
अऱ्पुद वडिक्कण् वाळिक् कञ्जन मॅळ्दि यम्बॊन्
कऱ्पहङ् गॊडुक्क वाङ्गिक् कलन्ऱॅरिन् दणिहिन्ऱारै 204

विल् पटर्–शोभा छिटकानेवाले; पवळ पाततु–प्रवाल-सम पैरों पर; अलत्तकम् ॲळुति–महावर लगाकर; अळवु इल्ला–असीम; पॊऱ्पु मेत्ति–सुन्दरता से शोभनेवाले अपने शरीरों पर; वाचम् पुत्तै–सुवासित; नरुङ् कलवै–श्रेष्ठ चन्दन; पूचि–चर्चित करके; अऱ्पुत कण्–अद्भुत आँखों रूपी; वटि वाळिक्कु–तीक्ष्ण शरों पर; अञ्चनम् ॲळुति–अंजन लगाकर; अम् पॊन् कऱ्पकम्–श्रेष्ठ स्वर्ण-कल्पतरु; कलन् कॊटुक्क–आभरण देते; वाङ्कि–उन्हें लेकर; तॆरिन्तु–उनमें से चुनकर; अणिकिन्ऱारै–जो पहनती हैं उनको। २०४

कुछ राक्षसियाँ शृंगार कर रही हैं। कान्ति फैलाते रहे प्रवालरंग के चरणों पर महावर लगातीं; अपार सुन्दर शरीर पर सुगन्धित चन्दन का लेप लगा लेतीं; विस्मयकारी आँखों के शरों में अञ्जन लगातीं और मनोरम स्वर्ण कल्पतरु के दिये हुए आभरण लेकर अपने को विभूषित करतीं। इस दृश्य को हनुमान ने देखा। २०४

पुलियडु मदुहै मैन्दर् पुदुप्पिऴै युयिरैप् पुक्कु
नलिविड वमुद वाया नच्चुयिर्त् तयिर्क णल्लार्
मॅलिवुडै मरुङ्गुन् मिन्ऩि नलमरच् चिलम्बु विम्मि
ऒॊलिपड वुदैक्कुन् दोरु मयिर्पुळ हुदिक्किन्ऱारै 205

अयिल् कण् नल्लार्–भाले के समान आँखों वाली राक्षसियाँ; पुलि अटु–व्याघ्र-जेता; मतुकै मैन्तर्–बलवान (उनके) वीर पतियों द्वारा; पुतु पिऴै–(कृत) नवीन अपराध; पुक्कु–मन में घुसकर; उयिरै नलिवु इट–प्राणों को त्रस्त कर रहा है, इसलिए; अमुत वायाल्–अमृत-मुख से; नच्चु उयिर्त्तु–विष निकालते हुए; मॆलिवु उटै मरुङ्कुल्–क्षीण कमर को; मिन्तिन् अलमर–बिजली के समान तड़पने देते हुए; चिलम्पु–नूपुरों के; विम्मि ऒलि पट–उमग कर शब्द देते; उतैक्कुम् तोऱुम्–(पतियों पर) लातें लगाते समय; मयिर् पुळकु उतिक्किन्ऱारै–जिनके शरीर पुलकित होते हैं, उनको। २०५

भाले-सी आँखों वाली राक्षसी नारियाँ अपने व्याघ्रजयी वीर पतियों के किसी नये अपराध से रूठ गयीं। वह अपराध उनके मर्म पर लग

गया। प्राण विह्वल हो गये। वे अब अमृत-भरे मुख के द्वारा विष-भरी लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। उनकी कमरें बिजली के समान तड़पकर शिथिल हुईं। तब वे नूपुरों को शब्दित करते हुए लातें मारने लगीं तो उन स्त्रियों के (या पतियों के) शरीर पुलक से भर गये। २०५

उळ्ळडै मयक्का लुणगण् शिवन्दुवाय् वॆण्मै यूरित्
तुळ्ळिडैप् पुरुवङ् गोट्टित् तुडिक्कवेर् पॉडिक्कत् तूय
वॆळ्ळिडै मरुङ्गु लार्दम् मदिमुहम् वेऱॊत्ऱाहिक्
कळ्ळिडैत् तोन्ऱ नोक्किक् कणवरैक् कतल्हित्ऱारै 206

तूय–स्वच्छ; **वॆळ् इटै**–शून्य स्थान के समान; **मरुङ्कुलार्**–कमर वालियाँ; **उळ् उटै मयक्काल्**–(सुरा-पान के) आन्तरिक नशे से; **उण् कण्**–कजरारी आँखें; **चिवन्तु**–लाल करके; **वाय् वॆण्मै ऊऱि**–मुखों के सफ़ेद बनते; **तुळ् पुरुवम्**–चलित भौंहों के; **इटै कोट्टि**–मध्यभाग के कुंचित होकर; **तुटिक्क**–तड़पते; **वेर् पॉटिक्क**–स्वेद के बूँदों में निकलते; **कळ् इटै**–सुरा के (पात्र के) अन्दर; **तम् मति मुकम्**–उनके मुख के; **वेऱॊन्ऱाकित् तोन्ऱ**–दूसरे रूप में प्रतिबिंबित होते; **नोक्कि**–उसको देखकर; **कणवरै**–अपने पतियों के साथ; **कतल्कित्ऱारै**–(उस प्रतिबिंब को अपने पति द्वारा छिपाये रखी गयी अन्य स्त्री समझकर) कोप करनेवालियों को। २०६

राक्षसी नारियों की कमरें इतनी महीन थीं कि स्वच्छ शून्य स्थान-सी लग रही थीं। सुरापान से उत्पन्न नशे में उनकी आँखें लाल हो गयीं, अधर श्वेत बन गये। चञ्चल भौंहों के मध्यभाग कुंचित होकर फड़क उठे। शरीर पर स्वेदकण भर आये। उन्होंने अपने सुरापात्र के अन्दर अपने ही मुखों को देखा। पर उनके चन्द्रानन विकृत लगे। तो उन्होंने समझ लिया कि उनके पतियों ने अन्य स्त्री को छिपा रखा है। वे अपने पतियों से कोप करने लगीं। ऐसी नारियों को भी हनुमान ने देखा। २०६

आलैयित् मलैयिऱ् चालि मुळैयिऱ्ऱि लमुद वाशच्
चोलैयिऱ् ऱुवश रिल्लिऱ् चोनहर् मत्तैयिऱ् ऱूय
वेलैयिऱ् कॊळ्ळॊ णाद वेऱ्कणार् कुमुदच् चॆव्वाय्
वालॆयिऱ् ऱूऱु तीन्देऩ् मान्दित्तर् मयङ्गु वारै 207

आलैयिल्–ईख में; **मलैयिल्**–पर्वत में; **चालि मुळैयित्तिल्**–शालि के अंकुर में; **अमुत वाच**–मधुर सुगन्धित; **चोलैयिल्**–उद्यानों में; **तुवचर् इल्लिल्**–मधु-विक्रेता के घर में; **चोतकर् मत्तैयिल्**–यवनों के घरों में; **तूय वेलैयिल्**–पवित्र क्षीरसागर में; **कॊळ ऑणात**–अप्राप्य; **वेल् कणार्**–भाला-सी आँखों वाली स्त्रियों के; **कुमुत चॆव्वाय्**–कुमुद-मुख के; **वाल् ऍयिऱ्ऱु**–श्वेत दाँतों के मध्य; **ऊऱु तीन्तेत्**–बहनेवाले मधुर रस को; **मान्तित्तर्**–पान करके; **मयङ्कुवारै**–मोहित रहनेवालों को। २०७

उसने पुरुषों को भी देखा, जो अपनी प्रेमिकाओं का अधर-रस पी कर मदमत्त हुए थे। वह रस ऐसा था, जो ईख में, पर्वतों पर, शालि के

अंकुरों में, सुवासित उद्यानों में मधुविक्रेता के घर में, यवनों के भवनों में या पवित्र क्षीरसागर से भी प्राप्य नहीं था। २०७

नलनुरु कणवर् तम्मै नवैयुरप् पिरिन्दु विम्मुम्
मुलैयुरु कलवै तीय मुळ्ळिला मुळरिच् चॅङ्गेळ्
मलर्मिशै मलर्पूत् तॅन्न वळैक्कैयाल् वदनन् दाङ्गि
अलमरु मुयिरि नोडु नॅडिदुयिर्त् तयर्हिन् ऱारै 208

नलन् उरु–हित करनेवाले; कणवर् तम्मै–पतियों से; नवै उर–दुःखग्रस्त होकर; पिरिन्तु–बिछुड़कर; विम्मुम्–उभर उठनेवाले; मुलै उरु–स्तनों में लिप्त; कलवै तीय–लेप के सूखते; मुळ्ळिल्ला–काँटा-हीन; चॅम् केळ् मुळरि मलर् मिचै–लाल, सुन्दर कमल फूल पर; मलर् पूत्तॅन्न–और एक फूल फूला हो जैसे; वळै कैयाल्–कंकणमण्डित हाथ पर; वतनम् ताङ्कि–वदन का धारण करके; अलमरुम् उयिरितोटुम्–अकुलाते प्राणों के साथ; नॅटितु उयिर्त्तु–ठंडी लम्बी आहें भरकर; अयर्किन्ऱारै–थकित होनेवालियों को। २०८

कुछ स्त्रियाँ अपने प्रेमियों से बिछुड़ी थीं। वे अच्छे और अच्छे गुणों से भरे प्रेमी थे। प्रेमिकाओं को वियोग-दुःख सताने लगा। उनके फड़कते स्तनों का चन्दन-लेप सूख गया। उनके प्राण छटपटाने लगे। इस स्थिति में वे अपनी हथेलियों पर मुख रखे गुमसुम बैठी थीं। तब ऐसा लगा मानो काँटे-रहित नाल वाले कमल के एक लाल फूल पर और एक कमल फूला हो। वे निःश्वास छोड़ते हुए शोक-थकित हो रही थीं। २०८

एदियङ् गॊळ्ळुनर् दम्बा लॅय्दिय काद लाले
तादियङ् गमळिच् चेक्कै युयिरिला वुडलिर् चार्वार्
मादुयर् काद रूण्ड वळियिन्मेल् वैत्त कण्णार्
तूदियर् मुरुव नोक्कि युयिर्वन्दु तुडिक्किन् ऱारै 209

एति–आयुधधारी; अम्–रूपवान; कॊळ्ळुनर् तम् पाल्–पतियों पर; ऍय्तिय–रखे हुए; कातलाले–प्रेम के कारण; उयिरिला उटलिन्–निर्जीव शरीर के समान; तातु इयङ्कु–पराग से भरी; अमळि चेक्कै–गद्देदार शय्या पर; चार्वार्–जा गिरतीं; मा तुयर्–बहुत दुःख देनेवाली; कातल् तूण्ट–कामेच्छा की प्रेरणा से; वळियिन् मेल्–राह पर; वैत्त कण्णार्–बिछाई आँखों के साथ; तूतियर् मुरुवल् नोक्कि–दूतियों की मुस्कुराहट देखने से; उयिर् वन्तु–प्राण फिर से पाकर; तुटिक्किन्ऱारै–तड़पनेवालियों को। २०९

(और कुछ विरहिणियों का चित्रण है—) ये स्त्रियाँ अपने प्यारे वीर पतियों पर अगाध प्रेम रखती हैं। वे वीर हथियारधारी हैं। वे दूर गये हैं और ये विरहिणियाँ अपनी सुध-बुध खोकर निर्जीव-सी वन जाती हैं और शय्या पर जाकर गिर जाती हैं, जिस पर पराग फैलाया गया है। उनकी

कामेच्छा तीव्र हो जाती है और उनकी आँखें पतियों के आने की राह पर लगी हुई हैं। तब दूतियाँ आती हैं और उनके मुखों में हँसी की झलक देखकर नायिकाएँ आश्वासन पाती हैं। उनके गये प्राण फिर आ जाते हैं और वे बेचैन होती हैं। हनुमान ने उनको देखा। २०९

शङ्गोड्ड शिलम्बु नूलुम् बादशा लहमुन् दाळप्
पोंङ्गुपेर् मुरश मार्प्प विल्लुरै तॅय्वम् बोऱ्ऱिक्
कोंङ्गलर् कून्दऱ् चॅव्वा यरम्बैयर् पाणि कोट्टि
मङ्गल कीदम् पाड मलर्प्पलि वहुक्किन् ऱारै 210

चङ्कोट्टु–शंख-कंगनों के साथ; नूलुम् चिलम्पुम्–मंगलसूत्र और नूपुर; पातचालकमुम्–'पादजालक' नामक पैंजनियाँ; ताळ–लटकीं; पोङ्कु पेर् मुरचम्–ऊँचा शब्द करनेवाली भेरियाँ; आर्प्प–बजीं; कोङ्कु अलर्–सुगन्धित फूलों के साथ शोभनेवाले; कून्तल्–केश; चॅव्वाय्–लाल अधर; अरम्पैयर्–(इनसे युक्त) अप्सराएँ; पाणि कोट्टि–तालियाँ पीटती हुई; मङ्कल कीतम् पाट–मंगल-गीत गा रही हैं; इल् उऱै तॅय्वम्–गृहस्थ देवताओं को; पोऱ्ऱि–पूजा करके; मलर् पलि–फूलों की बलि; वकुक्किन्ऱारै–जो चढ़ाते हैं उन लोगों को। २१०

अप्सराएँ तालियाँ पीटकर मंगल-गीत गा रही थीं। तब उनके शंख-कंगन, मंगलसूत्र, पैरों के नूपुर, पैंजनी आदि आभरण लटके। भेरियाँ ठनकती थीं। सुवासित पुष्पों से अलंकृत केश और लाल अधरों वाली अप्सराएँ गा रही थीं और राक्षसियाँ अपने घर के देवताओं को पुष्प-बलि (पुष्पाञ्जलि) चढ़ा रही थीं। हनुमान ने उनको देखा। २१०

इऴैतोडर् विल्लुम् वाळु मिरुळोड्ड मलैय याणर्क्
कुऴैतोडर् नयनक् कूर्वेल् कुमरर्नॅञ् जुरुवक् कोट्टि
मुऴैतोडर् शङ्गु पेरि मुहिलॅन मुऴङ्ग मूरि
मऴैतोडर् मञ्जै यॅन्न विळावोड्ड वरुहिन् ऱारै 211

इऴै तोटर्–आभरणों से छूटनेवाले; विल्लुम् वाळुम्–धनु और तलवार के आकार के प्रकाश की रेखाएँ; इरुळोटु मलैय–अन्धकार के साथ युद्ध करतीं; याणर् कुऴै तोटर्–सुन्दर कुण्डलों तक आयत; नयनम्–आँखें; कूर् वेल्–रूपी तीक्ष्ण भालों को; कुमरर्–वीर तरुणों के; नॅञ्चु उरुव–वक्षों को छेदते हुए; कोट्टि–वक्र गति से चलाकर; मुऴै तोटर् चङ्कु–अन्दर छेद के साथ रहनेवाले शंख; पेरि–भेरियाँ; मुकिलॅन मुऴङ्क–मेघों के समान गरजती हैं; मूरि मऴै तोटर्–मेघ को देखकर नाचनेवाले; मञ्जै ॲन्न–मोरों के समान; विळावोटु–मंगल उत्सव मनाते हुए; वरुकिन्ऱारै–आनेवाली नवोढ़ा स्त्रियों को। २११

हनुमान ने नवोढ़ा युवतियों को देखा। उनके अंगों में आभरण शोभ रहे थे, जिनसे प्रकाश छूटता था और वह प्रकाश तलवारों और धनुओं के रूप में था और अन्धकार से युद्ध कर रहा था। वे सुन्दर कर्ण-कुण्डलों

तक आयत आँखों रूपी तीक्ष्ण भालों को अपने तरुण प्रेमियों के दिलों को निफर जाय, ऐसा वक्र-रीति से फेंक रही थीं। भेरियाँ और शंख मेघों के गर्जन के समान नाद उठा रहे थे। इस साज के साथ वे मेघ देखकर नाचनेवाले मोरों के समान विवाहोत्सव में लगे आ रही थीं। २११

पळ्ळियिऩ् मैन्दरोडु मूडिय पणुवु नीङ्गि
उळ्ळिय कलविप् पूश लुडऱ्ऱुदऱ् कुरिय नॆञ्जर्
मॆळ्ळवे यिमैयै नीक्कि यञ्जऩ विळुदु वेय्न्द
कळ्ळवा णयऩ मॆऩ्ऩुम् वाळुऱै कळिक्किऩ् ऱारै 212

पळ्ळियिल्–शय्या में; मैन्तरोटु–अपने प्रेमियों के साथ; ऊटिय पणुपु–रूठने की बात; नीङ्कि–छोड़कर; उळ्ळिय–वांछित; कलविप् पूचल्–संगम-समर; उटऱ्ऱुतऱ्कु उरिय–करने में दत्त; नॆञ्चर्–चित्तवालियाँ; मॆळ्ळवे–धीरे-धीरे; इमैयै नीक्कि–पलकें खोलकर; अञ्चत्त इळुतु वेय्न्त–अंजनरंजित; कळ्ळ वाळ् नयतम्–वंचक और उज्ज्वल आँखों; ॲऩ्ऩुम्–रूपी; वाळ्–तलवारों को; उऱै कळिक्किऩ्ऱारै–म्यान से बाहर जो निकालती रहीं, उनको। २१२

शय्या में विनोदपूर्ण दृश्य उपस्थित हो रहे थे। प्रेमिका, जो पति से रूठ गयी थी, अब रूठन छोड़कर सम्भोग की इच्छा करती है। वह धीरे-धीरे मनोरम नयन रूपी तलवारों को अपनी (म्यान-) पलकों को खोलकर बाहर निकाल रही है! ऐसी प्रेमिकाओं को हनुमान ने देखा। २१२

ओविय मऩैय माद रूडिऩ् रुणर्वो डुळ्ळम्
मेविय करण मऱ्ऱुङ् गॊळ्ळुनरो डॊळिय मीण्डु
तूवियम् बेडै यॆऩ्ऩ मिऩ्ऩिडै तुवळ वेहि
आवियुन् दामु मेपुक् करुङ्गद वडैक्किऩ् ऱारै 213

ओवियम् अऩैय मातर्–चित्र-सम स्त्रियाँ; ऊटित्तर्–रूठीं; उणर्वोटु–बोध के साथ; उळ्ळम् मेविय करणम् मऱ्ऱुम्–मन आदि अन्तःकरण और अन्य सब; कॊळ्ळुनरोटु ऑळिय–प्रेमियों के साथ चले गये; तूवि अम् पेटै–मृदु पर वाली हंसिनी; ॲऩ्ऩ–के समान; मिऩ् इटै–बिजली-सी कमर; तुवळ–बल खा गयी; मीण्टु–फिर; आवियुम् तामुमे–प्राण और स्वयं; पुक्कु एकि–प्रविष्ट हो, जाकर; अरुम् कतवु–कष्ट के साथ कपाट को; अटैक्किऩ्ऱारै–बन्द करनेवालियों को। २१३

चित्र-सम स्त्रियाँ अपने प्रेमियों के चले जाने से रुष्ट थीं। वे बाहर आकर खड़ी रहीं। उनके मन आदि अन्तःकरण प्रेमियों के साथ चले गये। अब वे ठहरना निरर्थक समझकर अन्दर आयीं। तब वे कोमल परों वाली हंसिनी के समान कमरों को लचकाती हुई केवल अपने प्राणों को अपने साथ ले बहुत कष्ट के साथ किवाड़ बन्द कर रही थीं। हनुमान ने ऐसी स्त्रियों को देखा। २१३

किन्नर मिदुनम् बाडक् किळर्मळै किळित्तुत् तोन्ऱुम्
मिन्नॅनत् तरळम् वेय्न्द वॅण्णिऱ विमान मूर्न्दु
पन्नह महळिर् शुऱ्ऱिप् पलाण्डिशै परवप् पण्णैप्
पॊन्नहर् वीदि तोऱुम् बुदुमनै पुहुहिन्ऱारै 214

पण्णै–स्त्रियों की भीड़ से भरी; पॊन्नकर्–स्वर्णनगरी की; वीति तोऱुम्–सड़क-सड़क में; किन्नर मितुनम् पाट–किन्नर-मिथुन गा रहे हैं; चुऱ्ऱि–घेरकर; पन्नक मकळिर्–पन्नगकन्याएँ; पलाण्टिचै परव–'अनेक बरस जिओ' (जयजीव) का मंगल-गान गाती हैं; किळर् मळै–शोभायमान मेघों को; किळित्तु तोन्ऱुम्–चीरकर प्रकट होनेवाली; मिन् ॲन–बिजली के समान; तरळम् वेय्न्त–मुक्ताओं से अलंकृत; वॅण्णिऱ विमानम् ऊर्न्तु–श्वेतवर्ण विमानों पर सवार होकर; पुतु मनै पुकुकिन्ऱारै–नये घरों में प्रवेश करनेवालों को। २१४

उस स्वर्ण नगरी की, जिसमें नारियाँ बहुत संख्या में पायी गयीं, वीथी-वीथी में किन्नर (जाति के पक्षी) -जोड़े गाते पाये गये। पन्नग-रमणियाँ घूम-घूमकर जयजीव के गान गा रही थीं। मेघ चीरकर प्रकट होनेवाली बिजली के समान मुक्ताओं से अलंकृत यानों पर बैठे हुए लोग अपने नये घरों में प्रवेश कर रहे थे। हनुमान ने उनको देखा। २१४

कोवैयुङ् गुळैयु मिन्नक् कॊण्डलिन् मुरश मार्प्पत्
तेवर्निन् ऱाशि कूऱ मुनिवर्शो बनङ्गळ् शॅप्पप्
पावैयर् कुळाङ्गळ् शूळप् पाट्टॊडु वान नाट्टुप्
पूवैयर् पलाण्डु कूऱप् पुदुमणम् बुणर्हिन्ऱारै 215

कॊण्टलिन्–मेघ के समान; मुरचम् आर्प्प–भेरियाँ बजती हैं; तेवर्–देव; निन्ऱु–खड़े होकर; आचि कूऱ–आशीर्वाद देते हैं; मुनिवर्–मुनिगण; चोपनङ्कळ्–चॅप्प–वेदमन्त्र द्वारा मंगल शब्द उच्चारण करते हैं; पावैयर् कुळाङ्कळ्–स्त्रियों के समूह; पाट्टॊटु–गाना गाते हुए; चूळ–घेरकर आते हैं; वान नाट्टु पूवैयर्–व्योमलोक की अंगनाएँ; पलाण्टु कूऱ–जयजीव का गान करती हैं; कोवैयुम् कुळैयुम्–हार और कुण्डल; मिन्न–चमकते हैं; पुतु मणम् पुणर्किन्ऱारै–इस साज के साथ अभिनव विवाहोत्सव में लगे हुओं को। २१५

जल-भरे मेघों के समान भेरियाँ नर्दन कर उठीं। देवगण स्थित होकर आशीर्वाद दे रहे थे। मुनिगण मंगल-वचन कह रहे थे। स्त्रियों के समूह गाते हुए घेरे आये। अप्सराएँ जयजीव के गान गा रही थीं। इस साज के साथ आभरणों और कुण्डलों को चमकने देते हुए नवविवाह में लगे रहे लोगों को भी देखा, हनुमान ने। २१५

इयक्किय रक्कि मार्ह णाहिय रॅञ्जिल् विञ्जै
मुयऱ्कड़ै यिलाद तिङ्गण् मुहत्तियर् मुदलि नोरै

मयक्कऱ्‌ नाडि यॅङ्गुम्‌ मारुदि मलैयिऩ्‌ वैहुम्‌
कयक्कमि ऱुयिऱ्‌चिक्‌ कुम्ब कऩ्ऩऩैक्‌ कण्णिऩ्‌ कण्डाऩ्‌ 216

इयक्कियर्‌–यक्षस्त्रियाँ; अरक्किमार्कळ्‌–राक्षसनारियाँ; नाकियर्‌–नाग-कन्याएँ; अॅऴ्चिल्‌ विञ्चै–निर्दोष विद्या के लोक की; मुयल्‌ कऱै इलात–शशककलंक से हीन; तिङ्कळ्‌ मुकत्तियर्‌–पूर्णचन्द्र के समान आननवालियाँ; मुतलित्तोरै–आदि स्त्रियों को; अॅङ्कुम्‌ मयक्कु अऱ–बिना कहीं भूल-चूक के; नाटि–खोजकर; मारुति–हनुमान ने; मलैयिऩ्‌ वैकुम्‌–पर्वत के समान रहनेवाले; कयक्कम्‌ इल्‌–अचल; तुयऱ्चि–निद्रा में मग्न; कुम्पकऩ्ऩऩै–कुम्भकर्ण को; कण्णिल्‌ कण्टाऩ्‌–अपनी आँखों से देखा। २१६

हनुमान ने इस रीति से सीताजी को यक्ष-स्त्रियों में खोजा। राक्षसियों, नागिनों, विद्याधर लोक की शशक-कलंक-हीन चन्द्रानना स्त्रियों और अन्य स्त्रीवृन्दों में खोजा। कोई सन्देह का स्थान न छोड़कर सर्वत्र और सावधानी के साथ उसने खोज लगायी। फिर उसकी आँखें कुम्भकर्ण पर लगीं, जो वड़े पर्वत के समान आकार के साथ अचल और गहरी निद्रा में चूर पड़ा था। २१६

ओशऩै येऴहऩ्‌ ऱुयर्न्द दुम्बरिऩ्‌, वाशवऩ्‌ मणिमुडि कवित्त मण्डबम्‌
एशऱ विळङ्गुव दिरुळै यॅण्वहै, आशैयि ऩिलैहॅड वहऱ्ऱि याऩ्ऱदु 217

वाचवऩ्‌ मणि मुटि–देवेन्द्र का रत्नकिरीट; उम्परिऩ्‌ कवित्त–जिसके ऊपर औंधा रखा हुआ था; मण्टपम्‌–वह मण्डप; एऴु योचऩै–सात योजन; अकऩ्ऱु उयर्न्ततु–चौड़ा और ऊँचा था; एचऱ–अक्षय; विळङ्कुवतु–शोभा से भरा था; इरुळै–अन्धकार को; निलै कॅट–स्थान न देकर; अॅण्‌ वकै आचैयिऩ्‌–आठों दिशाओं में; अकऱ्ऱि–भगाकर; आऩ्ऱतु–उज्ज्वल बना रहता था। २१७

(कुम्भकर्ण का वर्णन—)कुम्भकर्ण जिस महल में सो रहा था, उसकी ऊँचाई और चौड़ाई सात योजन थी। उस मण्डप के ऊपर इन्द्र का मणि-मुकुट रखा हुआ था। वह निरन्तर शुद्ध प्रकाश फैला रहा था। अन्धकार को रहने का स्थान न देकर आठों दिशाओं में भगाते हुए उन्नत खड़ा था वह मकान। २१७

अऩ्ऩद नडुवणो रमळि मीमिशैप्‌, पऩ्ऩह वरशॅऩप्‌ परवै ताऩॅऩत्‌
तुऩ्ऩिरु ळॊरुवऴित्‌ तॊक्क दामॅऩ, उऩ्ऩरुन्‌ दीविऩै युरुक्कॊण्‌ डॅऩ्ऩवे 218

अऩ्ऩतऩ्‌ नटुवण्‌–उसके मध्य; ओर्‌ अमळि मीमिचै–एक शय्या पर; पऩ्ऩक अरचु अॅऩ–नागराज के समान; परवै ताऩ्‌ अॅऩ–समुद्र ही की भाँति; तुऩ्‌ इरुळ्‌–घना अन्धकार; ऒरु वऴि–एक स्थान में; तॊक्कतु आम्‌ अॅऩ–पुंजीभूत हो गया हो ऐसा; उऩ्ऩ अरुम्‌ तीविऩै–अचिन्त्य पाप; उरु कॊण्टॅऩ्ऩवे–साकार बन आये हों ऐसा। २१८

उस भवन के मण्डप के मध्य एक शय्या थी। उस पर वह पन्नग-

राजा के समान लेटा हुआ था। वह समुद्र के भी समान लगा। सारा अन्धकार एक स्थान पर एकत्र हो गया हो, ऐसा और सभी पापों ने आकार लिया हो, ऐसा भी (वह दिख रहा था)। २१८

मुन्नि्य कनैहडन् मुळुहि मूवहैत्, तन्नियल् कदियोंडुन् दळुवित् तादुहु
मन्नॆडुङ् गऱ्पह वनत्तु वैहिय, इन्निळन् दॆन्ऱल्वन् दिळुहि येहवे 219

तादु उकु–पराग चूनेवाले; मन् नॆटुम्–स्थायी तथा विशाल; कऱ्पक वनत्तु–कल्पक तरुओं के वन में; वैकिय–जो रहा; इन् इळम् तॆन्ऱल्–वह मधुर; मन्द मलयपवन; मुन्निय–अपने सामने रहे; कनै कटल् मुळुकि–गर्जनशील सागर में डूबकर; तन् इयल्–अपने स्वभाव की; मूवकै कतियोटुम् तळुवि–त्रिविध (मन्द, साधारण, त्वरित) गति अपनाकर; वन्तु इळुकि–आकर (उसके शरीर में) लगकर; एकवे–जाता रहा, तब। २१९

मन्द मलयपवन, जो पराग चूनेवाले अमर कल्पवन में संचार कर रहा था, समक्ष रहे शब्दायमान समुद्र में डूबकर अपनी त्रिविध (मन्द, साधारण और तीव्र) गतियों में आता था और उसके शरीर का स्पर्श करके जाता था। २१९

वानवर् महळिर्हाल् वरुड मामदि, आननङ् गण्डमण् डबत्तु ळाय्हदिर्क्
कानहु कान्दमीक् कान्ऱ कामर्नीर्त्, तूनिऱ नऱुन्दुळि मुहत्तिऱ् ऱोऱ्ऱवे 220

वानवर् मकळिर्–सुरनन्दिनियाँ; काल् वरुट–उसके पैर सहला रही थीं; आननम् मामति–उनके आनन रूपी श्रेष्ठ चन्द्र को; कण्ट–जहाँ देख सके; मण्टपत्तुळ्–उस मण्डप के अन्दर; आय् कतिर्–श्रेष्ठ प्रकाश-किरणों को; काल्–प्रकट करनेवाले; नकु–शोभायमान; कान्तम्–चन्द्रकान्त पत्थर; मी कान्ऱ–ऊपर जो निकाला; कामर्–मधुर; तू निऱ–स्वच्छ रंग की; नऱुम्–सुवासित; नीर् तुळि–जल की बूंदें; मुकत्तिल् तोऱ्ऱवे–उसके मुख पर पड़कर झलक रही हैं, उस स्थिति में। २२०

देवललनाएँ उसके पैर सहला रही थीं। उनके आनन रूपी चन्द्र की सन्निधि के कारण, उस मण्डप के अन्दर श्रेष्ठ प्रभा फैलानेवाली चन्द्रकान्त मणियों से जल की बूँदें निस्रित हुईं। वे शुद्ध और सुगन्धित बूँदें कुम्भकर्ण के मुख पर छितरी दिखीं। २२०

मूशिय उयिर्प्पॆंनु मुडुहु वादमुम्
आशैयिन् पुऱत्तिडै यळवि वन्मैयाल्
नाशियि नळवैयि नडत्तक् कण्डवन्
कूशिनन् कॊदित्तनन् विदिर्त्त कैयिनान् 221

मूचिय–गहरा; उयिर्प्पु ऎंतुम्–साँस रूपी; मुटुकु वातमुम्–तीव्र पवन भी; आचैयिन् पुऱत्तिटै–दिशाओं के पार; अळवि–फैलकर; वन्मैयाल्–जोर के कारण;

नाचियिऩ् अळवैयिऩ्–नाक तक; नटत्तक् कण्टु–लौटाना देखकर; अवऩ्–वह (हनुमान); वितिर्त्त कैयिताऩ्–हाथ उछालते हुए; कूचिऩऩ्–हवा के लगने से डरकर; कोतित्ततऩ्–कुपित हुआ। २२१

उसका श्वास बहुत ही घना, झञ्झा के समान था और वह दिगन्त तक फैलता गया। फिर कुम्भकर्ण के अन्दर खींचने के बल से लौट आया। उसको उसकी नासिका से छूटने और लौट आने का प्रकार देखकर हनुमान हाथ हिलाते हुए प्रभावित हुआ। उसे भय लगा और उसने उस हवा के मार्ग से अपने को बचाये रखा। उसे अपार क्रोध आया। २२१

पूळियिऩ् ऱोहैविशुम् बणवप् पोय्प्पुहुम्
केळिल्वॅङ् गॉडियव ऩुयिर्प्पुक् केडिला
वाळिय वुलहॅलान् दुडैक्कु मारुदम्
ऊळियिऩ् वरवुपार्त् तुळल्व दॉत्तवे 222

पूळियिऩ् तोकै–धूल का समूह; विचुम्पु अणव–आकाश छूते हुए; पोय् पुकुम्–जा लगता है; केळ् इल्–अनुपम; वॅम् कॊटियवऩ्–भयंकर क्रूर (कुम्भकर्ण) का; उयिर्प्पु–श्वास; केटिला–अक्षय रीति से; वाळिय–रहनेवाले; उलकॅलाम्–सारे लोकों को; तुटैक्कुम् मारुतम्–मिटानेवाला चण्डमारुत है; ऊळियिऩ् वरवु–प्रलय का आगमन; पार्त्तु–देखकर (प्रतीक्षा करते हुए); उळल्वतु ऒत्त–घूम रहा हो, ऐसा लगा। २२२

कुम्भकर्ण ने जो उच्छ्वास छोड़े उनके कारण धूलपटल उठी और आकाश तक छा गयी। उस अनुपम क्रूर राक्षस के भयंकर श्वास क्या थे साक्षात् लोकनाशक चण्डमारुत थे, जो युगान्त की प्रतीक्षा में घूमता रहा हो। २२२

पहैयॅऩ मदियिऩैप् पहुत्तुप पाडुऱ
अहैयिल्पेळ् वाय्मडुत् तरुन्दु वाऩॆऩप्
पुहैयॊडु मुळङ्गुपे रुयिर्प्पुप् पॊङ्गिय
नहैयिला मुळ्मुहत् तॅयिऱु नाऱवे 223

मतियिऩै–चन्द्र को; पकै ऎऩ पकुत्तु–शत्रु समझकर उसको दो भागों में चीरकर; अकै इल्–न बिगड़नेवाले; पेळ् वाय्–अपने बड़े मुख के (दोनों ओर); पाटु उऱ–युक्त रीति से; मटुत्तु–घुसाकर; अरुन्तुवाऩ् ऎऩ–खाता हो जैसे; पुकैयॊटु मुळङ्कु–धुएँ के साथ शब्द करनेवाला; पेर् उयिर्प्पु–बड़ा श्वास; पॊङ्किय–जिसमें उभर आता था; नकैयिला–उस हास-हीन; मुळ्मुकत्तु–बड़े मुख में; ऎयिऱु तोऩ्ऱ–वक्र दाँत प्रकट करते हुए। २२३

उसके मुख के दोनों ओर वक्रदन्त दिखायी दिये। वे पूर्णचन्द्र के दो खण्डों के समान लगे। ऐसा लगा कि कुम्भकर्ण ने चन्द्र को शत्रु

मानकर उसके दो टुकड़े किये और अपने मुख में दोनों कोरों में डालकर उसे खा रहा हो ! धुएँ के साथ (खुर्राटे के) शब्द निकालनेवाले उसके हास-हीन भयंकर बड़े मुख में उसके वक्रदाँत ऐसे लगे । २२३

तडैपुहु मन्दिरन् दहैन्द नाहम्बोल्
इडैपुह लरियदो रुऱक्क मॅय्दिनान्
कडैयुह मुडिवॅनुङ् गाल मोर्न्दयल्
पुडैपॅय रानॅडुङ् गडलुम् बोलवे 224

तटै पुकु मन्तिरम्–वेग मिटानेवाले मन्त्र द्वारा; तकैन्त नाकम् पोल्–रोके गये नाग की तरह; कटै युक मुटिवॅतुम्–(चौथे) आख़िरी युग का अन्त; कालम्–काल; ओर्न्तु–देखकर (प्रतीक्षा करके); अयल् पुटै पॅयरा–बाज़ू में न हटनेवाले (और चुप पड़े रहनेवाले); नॅटुम् कटलुम्–विशाल सागर; पोल–के समान; इटै पुकल् अरियतु–मध्य पहुँचकर जिसका भंग न किया जा सका; ओर् उऱक्कम्–ऐसी एक निद्रा में; ॲय्तिनान्–मग्न रहा । २२४

अवरोधनमन्त्र-बद्ध नाग के समान, और युगांत की प्रतीक्षा में, इधर-उधर न चलकर अवरुद्ध पड़े हुए विशाल सागर के समान कुम्भकर्ण अभग्न, गहरी निद्रा में मग्न पड़ा था । २२४

आव दाहिय तन्मैय वरक्कनै यरक्कर्
कोवॅ नानिऩ्ऱ कुणमिलि यिवनॅनक् कॊण्डान्
काव नाट्टङ्गळ् पॉऱियुहक् कनलॅनक् कनऩ्ऱान्
एव नोविव निऱैवर् मूवर्हळॅ नुमीट्टान् 225

आवताकिय–ऐसी; तन्मैय–स्थिति में रहे; अरक्कनै–राक्षस (कुम्भकर्ण) को; इवन् मूवर् इऱैवर्कळ्–यह तीन राक्षस-पतियों के; ॲतुम् ईट्टान्–समूह में एक है; एवनो–कौन है; इवन्–यह; अरक्कर् को ॲना निऩ्ऱ–राक्षसों का राजा जो है वह; कुणमिलि–गुणहीन (रावण) ही; ॲनक् कॊण्टान्–ऐसा मान लिया; कावल् नाट्टङ्कळ्–रक्षणसमर्थ आँखों में; पॉऱि उक–अंगारे उगलते हुए; कनलॅन–आग के समान; कनऩ्ऱान्–कुपित हुआ । २२५

हनुमान ने इस तरह सोते हुए कुम्भकर्ण को देखकर विचार किया कि यह तीन राक्षसों में एक होगा । वह उनमें कौन होगा ? फिर उसने सोचा कि यही वह राक्षसाधिपति, गुणहीन रावण होगा । यह विचार करते ही उसके मन में अत्यन्त क्रोध उमड़ उठा । उसकी आँखों से अंगारे छूटने लगे । वह ऐसा आग-बबूला हो गया मानो वही आग बना हो । २२५

कुऱुहि नोक्किमऱ् ऱवनॅऩले यॊरुबदुङ् गुऩ्ऱत्
तिऱुहु तिण्बुय मिरुबदु मिवऱ्किलॆ यॆऩ्ना
मऱुहि येरिय मुऩिवॅनुम् वडवॆङ् गऩले
अऱिवॆ ऩम्बॆरुम् बरवैयम् बुनलिऩा लवित्तान् 226

मऱ्ऱु–फिर; कुऱुकि नोक्कि–पास जा, देखकर; अवऩ्–उसके; तलै ओरु पतुम्–दस सिर; कुऩ्ऱत्तु इऱुकु–पर्वत सम सुदृढ़; तिण् पुयम्–कठोर भुजाएँ; इरुपतुम्–बीसों; इवऩ् कु इलै–इसके नहीं हैं; ऍऩ्ऩा–यह देखकर; मऱुकि–अस्त-व्यस्त होकर; एऱिय–जो चढ़ा; मुतिवु ऍऩुम्–उस क्रोध रूपी; वटवै वॆम् कऩलै–भयंकर बड़वाग्नि को; अऱिवु ऍऩुम्–विवेक रूपी; पॆरुम् अम् परवै–विशाल, सुन्दर सागर के; पुऩलिऩाल्–जल से; अवित्ताऩ्–बुझा दिया। २२६

हनुमान ने फिर भी उसके निकट जाकर निहारा। इसके रावणोचित दस सिर और पर्वत-सम कठोर बीस हाथ नहीं थे। तब वह भ्रमित हुआ और उसने क्रोध रूपी बड़वाग्नि को विवेक के विशाल समुद्र के जल से शान्त किया। २२६

अवित्तु निऩ्ऱॆव ऩाहिलु माहॆऩ् ऱङ्गै
कवित्तु नीङ्गिडच् चिलपह लॆऩ्बदु करुदाच्
चॆविक्कुत् तेऩॆऩ विराहवऩ् पुहऴिऩैत् तिरुत्तुम्
कविक्कु नायह ऩवैयव ऩुऱैयुळैक् कडऩ्दाऩ् 227

इराकवऩ् पुकऴिऩै–श्रीराम के यशोगान को; चॆविक्कु–कानों के लिए; तेऩ् ऍऩ–मधु के रूप में; तिरुत्तुम्–जो बना रहा था; कविक्कु नायकऩ्–वह कपिश्रेष्ठ; अवित्तु निऩ्ऱु–कोप को शान्त करके; ऍवऩाकिलुम् आक–कोई भी हो; ऍऩ्ऱु–कहकर; चिल पकल्–कुछ दिन; नीङ्किट–जायँ; ऍऩ्पतु करुता–यह सोचकर; अङ्कै कवित्तु–हथेली को औंधा करके (मुद्रा दिखाकर); अवैयवऩ्–उसके; उऱैयुळै–वासस्थान, भवन को; कटन्ताऩ्–पार कर गया। २२७

वानरनायक हनुमान, जो श्रीराम के यश को श्रवणामृतकारी बनाता था, अपने क्रोध को बुझाकर कुछ देर खड़ा रहा। फिर सोचा कि ख़ैर ! चाहे जो कोई भी हो ! बेचारा कुछ दिन निश्चिन्त सोये ! अपनी हथेली को तदनुकूल मुद्रा बनाकर अभयदान किया और तत्पश्चात वह कुम्भकर्ण के वासगृह को पार कर आगे गया। २२७

माड कूडङ्गण् माळिहै योळिहण् महळिर्
आड रङ्गुह ळम्बलन् देवरा लयङ्गळ्
पाडल् वेदिहै पट्टिमण् डबमुदऱ् पलवुम्
नाडि येहिऩ ऩिराहवऩ् पुहऴॆऩु नलत्ताऩ् 228

इराकवऩ् पुकऴ्–यह श्रीराम के यश का ही दूसरा रूप है; ऍऩुम्–ऐसा मान्य; नलत्ताऩ्–गुणों वाला; माटम् कूटङ्कळ्–अट्टालिकाओं, भवनों; माळिकै ओळिकळ्–भवनों की कतारों में; मकळिर्–स्त्रियों के; आटु अरङ्कुकळ्–खेल के मंचों; अम्पलम्–सभामण्डपों; तेवरालयङ्कळ्–देवालयों; पाटल् वेतिकै–गान के भवनों; पट्टि मण्टपम्–विद्या-विवादमण्डपों; मुतल् पलवुम्–आदि अनेक स्थानों में; नाटि–खोजता हुआ; एकिऩऩ्–गया। २२८

हनुमान श्रीराम का यश ही माना जाय ऐसा श्रेष्ठ और गुणपूर्ण था। वह सीताजी को खोजते हुए अनेक सौधों, भवनों की पंक्तियों, स्त्रियों के खेल के मञ्चों, विद्या-विवादमण्डपों, देवालयों, संगीतसभामण्डपों आदि सभी स्थानों में भ्रमण करता गया। २२८

मणिहॊळ् वायिलिऱ् चाळरत् तलङ्गळिऩ् मलरिल्
कणिहॊ णाळत्तिऱ् कालॆऩप् पुहैयॆऩक् कलक्कुम्
नुणुहुम् वीङ्गुमऱ् ऱिवऩिलै यावरे नुवल्वार्
अणुविऩ् मेरुवि ऩाऴियाऩ् ऩॆऩच्चॆलु मऱिवोऩ् 229

आऴियाऩ् ॲऩ–चक्रधारी (विष्णु भगवान) के समान; अणुविऩ्–अणु के रूप में; मेरुविऩ्–मेरु के समान; चॆलुम्–जा सकनेवाला; अऱिवोऩ्–बुद्धिमान; मणि कॊळ् वायिलिल्–रत्नालंकृत द्वारों; चाळरत् तलङ्कळिल्–झरोखों में; मलरिल्–पुष्पों; कणि कॊळ्–सूक्ष्म; नाळत्तिल्–नालों में; काल् ॲऩ–हवा के समान; पुकै ॲऩ–धुएँ के समान; कलक्कुम्–जाता; नुणुकुम्–बहुत ही महीन रूप में पहुँचता; वीङ्कुम्–स्थूल हो जाता; इवऩ् निलै–इसकी स्थिति; यावरे–कौन ही; नुवल्वार्–बता सकता है। २२९

हनुमान बुद्धिमान और चतुर था। वह कभी धुएँ के समान जाता, कभी हवा के समान। मणिमण्डित कपाटों वाले द्वारों, झरोखों में ही क्या? सूक्ष्म नालों में और फूलों पर भी खोज लगाता जा रहा था। अणु से भी छोटा और मेरु से भी बड़ा बनकर चक्रधारी विष्णुदेव के समान जाने का सामर्थ्य रखनेवाले उसके सम्बन्ध में कौन बता सकेगा?। २२९

एऩ्द लिव्वहै यॆव्वऴि मरुङ्गिऩु मॆय्दिक्
काऩ्दण् मॆल्विरऩ् मडऩ्दैयर् यारैयुङ् गाण्बाऩ्
वेऩ्दर् वेदियर् मेलुळोर् कीऴुळोर् विरुम्बप्
पोऩ्द पुण्णियऩ् कण्णहऩ् कोयिलुट् पुक्काऩ् 230

एऩ्तल्–सम्मान्य; काऩ्तळ् मॆल् विरल्–'कान्दळ' (नामक पुष्प) के समान मृदु उँगलियों वाली; मटऩ्तैयर्–रमणियाँ; यारैयुम्–सभी को; काण्पाऩ्–देखता; इव्वकै–इस रीति से; ॲ वऴि मरुङ्किऩुम्–सभी मार्गों व स्थलों में; ॲय्ति–जाकर; वेऩ्तर्–राजा; वेतियर्–ब्राह्मण; मेलुळोर्–उच्च; कीऴुळोर्–और नीच; विरुम्प–सभी के प्रिय; पोऩ्त पुण्णियऩ्–जो प्रकट हुआ था, उस धर्मात्मा (विभीषण) के; कण् अकऩ् कोयिलुळ्–विशाल महल में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुआ। २३०

सम्मान्य हनुमान 'कान्दळ' पुष्प के समान उँगली वाली रमणियों में भी सीताजी की खोज करता चला। इस तरह सभी भागों और स्थलों में घूमते हुए वह विभीषण के विशाल महल में आया। विभीषण राजा लोग, ब्राह्मण, देव, नाग सभी लोगों के प्यार और सम्मान का पात्र था। २३०

पळिक्कु वेदिहैप् पवळत्तिन् कूडत्तुप् पशुन्देन्
तुळिक्कुङ् गऱ्पहप् पन्दरिऱ् करुनिऱत् तोर्बाल्
वॆळुत्तु वैहुद लरिदॆन ववरुरु मेवि
ऒळित्तु वाळ्हिन्ऱ दरुममन् तान्ऱनै युऱ्ऱान् 231

पळिक्कु वेतिकै–स्फटिक के चबूतरे पर; पवळत्तिन् कूटत्तु–प्रवाल-मण्डप में; पचुन् तेन्–नव मधु; तुळिक्कुम्–बूंदों में गिरानेवाले; कऱ्पक पन्तरिल्–कल्पपुष्प-वितान के नीचे; करु निऱत्तोर् पाल्–काले रंग वाले राक्षसों के मध्य; वॆळुत्तु–श्वेत-रंग में; वैकुतल् अरितु–रहना कठिन है; ऎन–समझकर; अवर् उरु–उनका रंग; मेवि–लेकर; ऒळित्तु–छिपे; वाळ्किन्ऱ–रहनेवाले; तरुमम् अन्नान् तनै–धर्म-सम उसके; उऱ्ऱान्–पास आया। २३१

विभीषण धर्मदेवता के समान लगा, जो काले रंग वाले राक्षसों के मध्य श्वेत रंग के साथ रहना ख़तरे की बात समझकर उनका-सा काला रंग अपनाये हुए रहा! एक प्रवालमण्डप में मधुवर्षी कल्प सुमनों के वितान के नीचे स्फटिक के चबूतरे पर विभीषण सो रहा था। हनुमान ने उसको देखा। २३१

उऱ्ऱु निन्ऱव नुणर्वैत्तन् नुणर्विना लुणर्न्दान्
कुऱ्ऱ मिल्लदोर् कुणत्तिन निवनॆनक् कॊण्डान्
शॆऱ्ऱ नीङ्गिय मनत्तिन नॊरुदिशै शॆन्ऱान्
पॊऱ्ऱै माडङ्गळ् कोडियोर् नॊडियिडैप् पुक्कान् 232

उऱ्ऱु निन्ऱु–पास स्थित होकर; अवन् उणर्वै–उसके मनोभाव को; तन् उणर्विनाल्–अपनी मनोशक्ति द्वारा; उणर्न्तान्–समझ गया; इवन्–यह; कुऱ्ऱम् इल्लतु–अकलंक; ओर् कुणत्तिनन्–गुण वाला सज्जन है; ऎन कॊण्टान्–यह जान लिया; चॆऱ्ऱम् नीङ्किय–क्रोधहीन; मनत्तिनन्–मन वाला बनकर; ऒरु तिचै चॆन्ऱान्–एक ओर गया; ओर् नॊटि इटै–एक पल में; पॊऱ्ऱै माटङ्कळ् कोटि–पर्वत-सम सौधों की पंक्ति में; पुक्कान्–जाकर खोजने लगा। २३२

हनुमान ने विभीषण के निकट जाकर अपने मन की शक्ति से उसका सच्चा स्वभाव समझ लिया। यह अकलंक गुणश्रेष्ठ सज्जन है। यह जानकर हनुमान का क्रोध दूर हो गया। वहाँ से निकलकर वह एक ही पल के अन्दर अनेक पर्वतोपम प्रासादों में घुसकर सीताजी की खोज लगाता चला। २३२

मुन्द रम्बैयर् मुदलिनर् मुळुमदि मुहत्तुच्
चिन्दु रम्बयिल् वायच्चियर् पलरैयुन् दॆरिन्दु
मन्दि रम्बल फडन्दुदन् मनत्तिन्मुन् शॆल्वान्
इन्दि रन्शिरै यिरुन्दवा यिलिन्कडै यॆदिर्न्दान् 233

मुन्तु–पहली श्रेणी के; मुळ्ळमति मुकत्तु–पूर्णचन्द्र के समान आननों में; चिन्तुरम् पयिल्–लाल रंग के; वाय्च्चियर्–अधरों के साथ रहनेवाली; अरम्पैयर् मुतलित्तर् पलरैयुम्–रम्भा आदि अनेक स्त्रियों को; तॆरिन्तु–देखकर; पल मन्तिरम् कटन्तु–अनेक घरों को पार कर; तन् मनत्तिन् मुन् चॆल्वान्–अपने मन से भी आगे जाता हुआ; इन्तिरन् इरुन्त–(पहले) इन्द्र जहाँ कैद रहा; चिऱै वायिलिन् कटै–उस कारागृह के द्वार को; ऍतिर्न्तान्–सामने देखा। २३३

उनमें रम्भा आदि चन्द्रानना सिंदूराधरा देवांगनाओं को देखकर हनुमान आगे गया। अनेक प्रासादों को पार करके हनुमान अपने मन की गति से भी अधिक तीव्र गति से चलकर उस कारागृह के द्वार पर पहुँचा जिसमें देवेन्द्र कभी बन्दी रहा। २३३

एदि येन्दिय तडक्कैयर् पिऱैयॆयि ट्रिलङ्ग
मूदु रैप्पॆरुङ् गदैहळुम् बिदिर्हळु मॊऴिवार्
ओदि लायिर मायिर मुरुवलि यरक्कर्
कादु वॆञ्जिनक कळियिनर् कावलैक् कडन्दान् 234

ओतिल्–कहें तो; एति एन्तिय–आयुधधारी; तटक्कैयर्–विशाल हाथों के; कातु वॆञ्चिन–घातक भयंकर क्रोध रूपी सुरापान से; कळियिनर्–मत्त; पिऱै ऍयिऱु इलङ्क–अर्धचन्द्राकार (वक्र) दाँतों को प्रकट करते हुए; मूतुरै पॆरु कतैकळुम्–पुराने बड़े चरित्रों और; पितिर्कळुम्–पहेलियों को; मॊऴिवार्–आपस में कहते हुए; आयिरम् आयिरम्–सहस्र-सहस्र; उरु वलि अरक्कर्–अतिबली राक्षसों के बने; कावलै–पहरे को; कटन्तान्–पार करके अन्दर गया। २३४

वहाँ की स्थिति कहनी हो— तो आयुधधारी, शत्रुसंहारक और क्रोध रूपी आसवपान से मत्त सहस्र-सहस्र अति बली राक्षस आपस में पुराने चरित्र और पहेलियाँ कहते हुए पहरा दे रहे थे। हनुमान उस पहरे को पार कर आगे गया। २३४

मुक्क णोक्किनन् मुऱैमह नऱुवहै मुहमुम्
तिक्कु नोक्किय पुयङ्गळुञ् जिलकरन् दनैयान्
ऒक्क नोक्कियर् कुळात्तिडै युऱङ्गुहिन् ऱानैप्
पुक्कु नोक्किनन् पुहैपुहा वायिनुम् बुहुवान् 235

पुहै पुका–जहाँ धुआँ भी प्रवेश नहीं कर सकता; वायिनुम्–वहाँ भी; पुकुवान्–जो घुस सकता था, वह हनुमान; पुक्कु–प्रविष्ट होकर; मुक्कण् नोक्कितन्–त्रिनेत्र शिवजी के; मुऱै मकन्–औरस पुत्र; अऱुवकै मुकमुम्–(कार्तिकेय) छः मुखों; तिक्कु नोक्किय पुयङ्कळुम्–दिशाओं की ओर बढ़े हुए करों में; चिल करन्तनैयान्–कुछ को छिपा लिया हो ऐसा; ऒक्क नोक्कियर्–एक समान उसकी ओर आँखें किये; कुळात्तिटै–सोनेवाली स्त्रियों के समूह के मध्य; उऱङ्कुकिन्ऱानै–जो सो रहा था उसको (इन्द्रजित् को); नोक्कितन्–देखा (हनुमान ने)। २३५

धुएँ के लिए भी अगम्य स्थानों में घुसकर जा सकनेवाला हनुमान इन्द्रजित् के शय्यागृह में भी घुस गया। परमेश्वर के औरस पुत्र कार्तिकेय के समान इन्द्रजित् पड़ा हुआ सो रहा था, जिन्होंने अपने अन्य हाथों और दिशाव्यापी करों को छिपा लिया हो। उसके पास उसी की ओर आँखें लगाये रहनेवाली स्त्रियों का समूह लेटा था। २३५

वळैयुम् वाळॅयिऱ् ऱरक्कनो कणिच्चियान् मह्नो
अळैयिल् वाळरि यनैयवन् यावनो वरियेन्
इळैय वीरनु मेन्दलु मिरुवरुम् बलनाळ्
उळैयुम् वॅञ्जम मिवऩुड नुळदॆन वुणर्न्दान् 236

अळैयिल्–कन्दरा में; वाळ् अरि–भयंकर सिंह; अनैयवन्–सदृश यह; वळैयुम्–वक्र; वाळ् ऍयिऱु–उज्ज्वल दाँतों का; अरक्कनो–राक्षस है क्या; कणिच्चियान् मकनो–परशुधर (या जलते लोहे का आयुध रखनेवाले शिवजी) का पुत्र है: यावनो–और कौन है; अऱियेन्–नहीं जानता; इळैय वीरनुम्–छोटे वीर (लक्ष्मण); एन्तलुम्–और सम्मान्य बड़े वीर श्रीराम; इरुवरुम्–दोनों; पलनाळ्–अनेक दिन; इवऩुटन् उळैयुम्–इसके साथ भिड़ेंगे; वॅम् चमम्–ऐसा भयंकर युद्ध; उळतु–होने को है; ऍन उणर्न्तान्–ऐसा अनुमान कर लिया, हनुमान ने। २३६

हनुमान ने उसको देखकर मन में सन्देह किया— क्या यह, जो कन्दरा में रहनेवाले क्रूर सिंह के समान सो रहा है, वक्रदन्त राक्षस है? या शिवजी का सुपुत्र 'मुरुगन' (कार्तिकेय) ही है? कौन है? मैं नहीं जान पाता। जो हो, इसके साथ छोटे राजा लक्ष्मण और सम्मान्य श्रीराम को अनेक दिन लड़ना पड़ेगा। ऐसा घमासान युद्ध होने को है! —हनुमान ने यह विश्वास कर लिया। २३६

इवनै यिन्दुणै युडैयपो रिरावण नॅन्ने
पुवन मून्ऱैयुम् वॅन्ऱदोर् पॊरुळॆनप् पुहऱल्
शिवनै नान्मुहत् तॊरुवनैत् तिरुनॆडु मालाम्
अवनै यल्लवर् निहर्प्पव रॆन्बदु मऱिवो 237

चिवनै–शिवजी को; नान् मुकत्तु ऑरुवनै–चतुर्मुख ब्रह्मा को; तिरु नॆटु मालाम् अवनै–श्री त्रिविक्रम विष्णु को; अल्लवर्–छोड़ अन्य कोई; निकर्प्पवर्–इसकी समानता करेंगे; ऍन्पतुम्–ऐसा कहना भी; अऱिवो–बुद्धिमत्ता होगा क्या; इवनै–इसको; इन् तुणै–विश्वस्त सहायक के रूप में; उटैय–जिसने प्राप्त किया है; पोर् इरावणन्–युद्धोत्साही रावण; पुवनम् मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों का; वॅन्ऱतु–जयी हुआ; ओर् पॊरुळ–(सो) कोई (बड़ी) बात हो; ऍन पुकऱल्–ऐसा कहना; ऍन्ने–क्या बात है। २३७

इसकी समानता शिव, चतुर्मुख और त्रिविक्रम इन त्रिदेवों से अन्य कोई भी कर सकेंगे —यह कहना बुद्धिसंगत होगा क्या? (नहीं होगा)। इसको

रावण ने अपने सहायक के रूप में पाया है, तो युद्धप्रिय उसके तीनों लोकों के जीतने में कौन सी बड़ाई है ? । २३७

ऍऩ्ऱु	कैम्मरित्	तिडेनिऩ्ऱु	कालत्तै	यिहप्प
दऩ्ऱु	पोवदॆऩ्	ऱायिर	मायिरत्	तडङ्गात्
तुऩ्ऱु	माळिहै	योळिह	डुरिशऱत्	तुरुविच्
चॆऩ्ऱु	तेडिऩ	ऩिन्दिर	शित्तिऩैत्	तीऱ्न्दाऩ् 238

ऍऩ्ऱु–ऐसा कहकर; कै मरित्तु–हाथ मटकाकर; इटै निऩ्ऱु–बीच में खड़ा रहकर; कालत्तै इकप्पतु–समय नष्ट करना; अऩ्ऱु–(उचित) नहीं; पोवतु–जाना; ऍऩ्ऱु–सोचकर; इन्तिर चित्तिऩै–इन्द्रजित् को; तीऱ्न्ताऩ्–छोड़ गया; आयिरम् आयिरत्तु–सहस्र-सहस्र की गिनती में भी; अटङ्का–जो समा नहीं सके; तुऩ्ऱु–सटे रहे; माळिकै ओळिकळ्–सौधों की पंक्तियों में; तुरिचु अऱ–बिना भूल-चूक के; तुरुवि चॆऩ्ऱु–टटोलते हुए जाकर; तेटिऩऩ्–खोजा । २३८

यह कहते हुए उस भाव के समर्थन में उसने अपना हाथ झटकाया। फिर विचार किया कि स्थान-स्थान में खड़ा होकर समय नष्ट करना अच्छा नहीं है, पर जाना ही कर्तव्य है। उसने इन्द्रजित् को रहने देकर आगे सहस्र-सहस्र सौधों की पंक्तियों में घुस-घुसकर बिना भूल या चूक के टटोलता हुआ जाता रहा। २३८

अक्कऩ्	माळिहै	कडन्दुपोय्	मेलदि	हायऩ्
तॊक्क	कोयिलुन्	दम्बिय	रिल्लमुन्	दुरुवित्
तक्क	मन्दिरत्	तलैवर्हण्	मऩैहळुन्	दडविप्
पुक्कु	नीङ्गिऩ	ऩिराहवऩ्	शरमॆऩप्	पुहऴोऩ् 239

पुकऴोऩ्–यशस्वी; अक्कऩ् माळिकै–अक्षकुमार के महल को; कटन्तु–पार करके; मेल् पोय्–आगे जाकर; अतिकायऩ् तॊक्क–अतिकायनिवसित; कोयिलुम्–प्रासाद में भी; तम्पियर् इल्लमुम्–कनिष्ठ भ्राताओं के गृहों में भी; तुरुवि–खोजकर; तक्क–योग्य; मन्तिरत् तलैवर्कळ्–मन्त्रीश्रेष्ठों के; मऩैकळुम्–गृहों में भी; इराकवऩ् चरमॆऩ–श्रीराघव के बाण की तरह; पुक्कु–प्रवेश करके; तटवि–खोजकर; नीङ्किऩऩ्–आगे गया। २३९

यशस्वी हनुमान अक्षकुमार के महल को पार कर अतिकाय के प्रासाद में आया। उसको भी छोड़कर उनके कनिष्ठ भ्राताओं के भवनों में गया। वहाँ खोजने के बाद सुयोग्य मन्त्रीवर्यों के महलों में जाकर खोज लगायी। वह श्रीराघव के शर के समान चलता रहा। २३९

इऩ्ऩ	रामिरुम्	बॆरुम्बडैत्	तलैवर्ह	ळिरुक्कैप्
पॊऩ्ऩिऩ्	माळिहै	यायिर	कोडियुम्	बुक्काऩ्
कऩ्ऩि	मामदिऱ्	पुरत्तवऩ्	करन्दुऱै	काण्बाऩ्
शॊऩ्ऩ	मूऩ्ऱिऩु	णडुवण	दहळियैत्	तॊडर्न्दाऩ् 240

इन्तर् आम्–ऐसे ही; इरुमॅपॆरुम्–बहुत बड़े; पटैत्तलैवर्कळ्–सेनापतियों के; इरुक्कै–वासस्थान; आयिर कोटि–सहस्र कोटि; पॊन्तिन् माळिकैयुम्–स्वर्णप्रासादों में भी; पुक्कान्–प्रवेश करके; कन्ति मा मतिल् पुरत्तु–नित्य और बड़े प्राचीरों के अन्दर; अवन्–रावण के; करन्तु उऱै–छिपकर रहने का स्थान; काण्पान्–देखने के लिए; चॊन्न मून्ऱितुळ्–(पहले) कथित तीन रक्षक खाइयों में; नट्टुवणतु–बीच की; अकऴियै–खाई के पास; तॊटर्न्तान्–जा पहुँचा। २४०

इस तरह ऐसे बहुत बड़े-बड़े सेनापतियों के सहस्र-सहस्र स्वर्णनिर्मित सौधों में गया। वह रावण के स्थान को देखने को उत्सुक था, जहाँ रावण छिपा रहता था। पहले ही कहा गया है कि उस अचल और अविनश्वर प्राचीर के अन्दर तीन महल थे, जो तीन खाइयों के मध्य थे। अब वह उनके बीच में रहनेवाली खाई के पास गया। २४०

तनिक्क डक्कळि ऱैनवॊरु तुणैयिलान् ऱाय
पनिक्क डऱ्पॆरुङ् गडवुडन् परिबवन् दुडैप्पान्
इनिक्क डप्पदन् ऱेऴ्हडल् किडन्ददॆन् ऱिशैत्तान्
कनिक्क डऱ्कदिर् तॊडर्न्दव नहऴियैक् कण्डान् 241

कनिक्कु–(सूर्य को फल समझकर उस) फल के लिए; अटल् कतिर्–गरम किरणमाली पर; तॊटर्न्तवन्–जो झपटा था; तनि–अप्रमेय; कटम् कळिरु अॅन्न–मत्त गज के समान; ऒरु तुणैयिलान्–अकेला; ताय–लाँघ गया, इसलिए; पनिक् कटल् पॆरुम् कटवुळ्–शीतल सागर का अधिष्ठाता बड़ा देवता (वरुण); तन् परिपवम् तुटैप्पान्–(हनुमान के तरण से प्राप्त) अपने परिभव को पोंछने के लिए; इति कटप्पतु अन्ऱु–अब नहीं लाँघ सकेगा; एऴ् कटल् किटन्ततु–सात समुद्र मिलकर एक हो पड़ा है; अॅनऱु इचैत्तान्–ऐसा सोचा (हनुमान ने); अकऴियै कण्टान्–उस खाई को देखा। २४१

यह हनुमान वही है जिसने अपने बचपन में सूर्य को फल समझकर उस पर छलाँग मारी थी। वह अकेले मदमत्त गज के समान समुद्र लाँघ आया था। इस पर जल के अधिष्ठाता वरुणदेव ने अपना अपमान मान लिया और अब सातों समुद्र अलंघ्य बनकर हनुमान के सामने आकर पड़े रहे! ऐसी खाई को हनुमान ने सामने देखा। २४१

पाऴि नन्नॆडुङ् गिडङ्गॆन वुणर्वॆनेल् पल्पेर्
ऊऴि कालनिन् ऱुलहॆलाङ् गल्लिनु मुलवा
आऴि वॆञ्जिनत् तरक्कनै यञ्जियाऴ् कडल्हळ्
एऴु मिन्नहर्च् चुलायकॊ लामॆन निन्नैन्दान् 242

पाऴि–बड़ी; नल् नॆटुम् किटङ्कु–अच्छी और लम्बी परिखा; अॅन–ऐसा; उणर्वॆनेल्–मानूँगा तो (नहीं); पल् पेर् निन्ऱु–अनेक लोग खड़े होकर; ऊऴि कालम्–युगों तक; उलकॆलाम् कल्लितुम्–सारे लोकों को खोद डालें; उलवा–तो भी ऐसा नहीं बन सकता; आऴ् कटल्कळ् एऴुम्–सातों गहरे समुद्र; आऴि वॆम्

चित्तुतु–आज्ञाचक्र चलानेवाले क्रूर क्रोधी; अरक्कनै अञ्चि–राक्षस से डरकर; इ नकर्–इस नगर को; चुलाय कोल् आम्–घेर आये हैं शायद क्या; अॅन्न तितॆन्नान्–ऐसा सोचा (हनुमान ने)। २४२

हनुमान ने विस्मय के साथ विचारा। इसको लम्बी खाई समझना कोई मतलब नहीं रखता! अनेक लोग युग-युगान्तर में सारे लोकों को खोद डालें तब भी ऐसी खाई नहीं बन सकती। लगता है कि सातों समुद्र आज्ञाचक्रधारी, क्रूर और क्रोधी रावण से डरकर इस नगर को घेरे पड़े हैं! । २४२

आय दाहिय वहन्नुबुन लहळियै यडॆन्दान्
ताय वेलैयि निरुमडि विशैकॊण्डु ताविप्
पोय कालत्तुम् बोक्करि दामॆन्रु पुहन्रान्
नाय हन्नपुहळ् नडायपे रुलहॆला नडन्दान् 243

नायकन् पुकळ् नटाय–नायक श्रीराम का यश जहाँ फैला था; पेरुलकॆलाम्–उस बड़े विश्व में सर्वत्र; नटन्तान्–जो घूम आया; आयतु आकिय–ऐसी; अकन् पुनल्–विशाल जलराशि को; अकळियै अटॆन्तान्–खाई को पहुँचा; ताय वेलैयिन्–पहले तरित समुद्र से; इरु मटि विचै–दुगुनी तीव्र-गति; कॊण्टु–अपनाकर; तावि पोय कालत्तुम्–लाँघ चलूँ तो भी; पोक्कु अरितु आम्–तारना कठिन होगा; अॅन्रु पुकन्रान्–ऐसा (आप ही आप) बोला। २४३

हनुमान उन सभी लोकों में घूम आया था (या व्याप आया था), जहाँ हमारे नायक प्रभु श्रीराम का यश व्याप्त है। वह उस खाई के पास आया। आप ही आप कहने लगा कि जिस गति से मैंने समुद्र को लाँघा उसकी दुगुनी तीव्र गति से लाँघने पर भी यह खाई पार नहीं कर सकूँगा। २४३

मेक्कु नाल्वहै मेहमुङ् गीळ्विळत्, तूक्कि नालन्न तोयत्त दायत्तुयर्
आक्कि नान्बडै यन्नन वहळियै, वाक्कि नालुरै वॆक्कवु माहुमो 244

मेक्कु–ऊपर के; नाल् वकै मेकमुम्–नानाविध मेघ; कीळ् विळ–नीचे गिरे; तूक्किनाल् अन्न–उनको उठा रही हो ऐसी; तोयत्तताय्–जलमय; तुयर् आक्कितान्–लोकों को क्षुब्ध करनेवाली; पटै अन्न–(रावण की) सेना के समान रही; अकळियै–खाई को; वाक्किताल्–शब्दों से; उरै वॆक्कवुम् आकुमो–वर्णित किया जा सकता है क्या। २४४

उसमें इतना जल भरा था कि लगता था कि नानाविध मेघ नीचे गिर गये हों और उस खाई ने उन्हें अपने में धारण कर लिया हो। वह लोक-त्रासक रावण की सेना के समान विशाल थी। उस खाई की महिमा शब्दों द्वारा वर्ण्य हो सकेगी क्या? । २४४

आतै मुम्मद मुम्बरि याऴियुम्, मान मङ्गैयर् कुङ्गुम वारियुम्
नात़ मादर् नऱैहुळ ऩावियुम्, तेऩु मारमुन् देय्वैयु नाऱुमे 245

आतै मुम्मतमुम्–गजों के त्रिमद-नीर; परि आऴियुम्–अश्वों के मुख का झाग; मात–मान्य; मङ्कैयर् कुङ्कुम वारियुम्–स्त्रियों के कुंकुम-जल के प्रवाह; नातम् मातर्–स्नान करनेवाली स्त्रियों के; कुऴल् नऱै नावियुम्–केशों पर लगी खुशबूदार कस्तूरी; तेऩुम्–शहद; आरमुम्–और मालाएँ; तेय्वैयुम्–और अन्य लेप; नाऱुम्–(उसमें) गन्ध देते थे। २४५

उसमें गजों के (वीज, आँखों और गण्डस्थल के) तीनों मदनीर; अश्वों की लारें, मान्य महिलाओं के कुंकुम का जल, स्नान करनेवाली स्त्रियों के केश में मली कस्तूरी, शहद, मालाएँ; अन्य सुगन्धित लेप —सभी की गन्ध पायी गयी। २४५

उन्ऩ नारै महऩ्ऱिल् पुदावुळिल्, अन्ऩम् कोऴिवण् डानङ्ग ळाऴिप्पुळ्
किन्ऩ रङ्गुरण् डङ्गिलुक् कञ्जिरल्, चॆन्ऩङ् गाहङ् गुणालम् शिलम्बुमे 246

उन्ऩम्–(एक तरह का) हंस; नारै–सारस; मकऩ्ऱिल्–करांकुल पक्षी; पुता–'पुता' नामक (वड़ा) पक्षी; उळिल्–'उऴळु' नामक पक्षी; अन्ऩम्–हंस; कोऴि–जलमुर्गा; वण्टाऩम्–और एक तरह के बड़े सारस; आऴिप् पुळ्–चक्रवाक; किन्ऩरम्–किन्नर; कुरण्टम्–करंड; किलुक्कम्–किलुक नामक पक्षी; अम् चिरल् चॆन्ऩम्–चिरल और चेन्नम नाम के पक्षीगण; काकम्–कौए; कुणालम्–कुणाल नामक पक्षी; चिलम्पुमे–चहकते रहे। २४६

उसमें सभी जलपक्षी चहक रहे थे। 'उन्नम', नारै (सारस), करांकुल, पुदा (दूसरी तरह का सारस), 'उळिल', हंस, 'जलकुक्कुट', 'वंडानम' (तीसरी तरह का वड़ा सारस), चक्रवाक, किन्नर, करण्ड, 'किलुक', चिरल,चेन्नम, कौए, कुणाल आदि पक्षी थे। २४६

नलत्त मादर् नऱैयहि लावियुम्, अलत्त हक्कुळम् बुञ्जॆऱिन् दाडिऩ
इलक्क णक्करि योडिळ मॆन्ऩडैक्, कुलप्पि डिक्कुमो रूडल् कॊडुक्कुमाल् 247

नलत्त मातर्–मनोरम रमणियों के; नऱै अकिल्–सुबासित अगरु का; आवियुम्–धुआँ और; अलत्तक्क कुळम्पुम्–लाक्षा का लेप; चॆऱिन्तु आटिऩ–खूब अपने शरीरों पर लग जाएँ, ऐसा जो स्नान कर आये; इलक्कणक् करियोटु–उन लक्षणयुक्त हाथियों से; इळ मॆन्ऩटै–अतिमन्द गति वाली; कुल पिटिक्कुम्–उत्तम जाति की करिणियों को; ओर् ऊटल् कॊटुक्कुम्–रूठन पैदा कर देते। २४७

उसमें सुलक्षण मत्तगज स्नान कर आए तो उनके शरीर पर से सौंदर्यगुणपूर्ण स्त्रियों के केश का अगरुधूम, लाक्षारस आदि की गन्ध लग गयी। वह छोटी आयु की मन्द गति वाली हथिनियों की, इन हाथियों से रूठन का कारण बन गयी और वे रूठ गयीं। २४७

नऱवु नाऱिय नाणरुन् दामरै, तुऱैह डोरु मुहिऴ्त्तन तोन्ऱुमाल्
शिऱैयि नॆय्दिय शॆल्वि मुहत्तिन्नो, डुऱवु तामुडै यारॊडुङ् गार्हळो 248

नऱवु नाऱिय–मधु-गन्ध भरे; नाळ् नरुम् तामरै–नवविकसित सुगन्धित कमल; तुऱैकळ् तोरुम्–सभी घाटों में; मुकिऴ्त्तन–बन्द; तोन्ऱुम्–दिखते हैं; चिऱैयिन् ऎय्तिय–कारा में आयी; चॆल्वि–देवी के; मुकत्तित्तोटु उऱवु उटैयार्–मुख से रिश्ता माननेवाले; ताम् ऒटुङ्कार्कळो–स्वयं म्लान नहीं होंगे क्या। २४८

उस खाई के घाट में शहद की गन्ध से युक्त उसी दिन खिले कमल बन्द दिखे। कारण ? कारा में वन्दिनी रही देवी सीता के मुख के साथ नाता रखनेवाले कौन म्लान हुए विना रह सकेंगे ? । २४८

पळिङ्गु शॆऱ्ऱिक् कुयिऱ्ऱिय पायॊळि, विळिम्बुम् वॆळ्ळमु मॆय्दॆरि यादुमाल्
तॆळिन्त शिन्दैय रुञ्जिऱि यार्हळो, डळिन्द पोदऱि दऱ्कॊळि दावरो 249

पळिङ्कु चॆऱ्ऱि–स्फटिक पत्थर खूब सटा बिछाकर; कुयिऱ्ऱिय–सम बनाया गया; पाय् ऒळि–उज्ज्वल; विळिम्पुम्–किनारा और; वॆळ्ळमुम्–जल; मॆय् तॆरियातु–सत्य न जाना जाय ऐसा रहते हैं; माल् तॆळिन्त चिन्तैयरुम्–मोह-रहित शुद्धमन; चिऱियार्कळोटु–अशुद्धमन नीचों के साथ; अळिन्त पोतु–जब मिले रहते हैं; अऱितऱ्कु–पृथक्-पृथक् जानने के लिए; ऎळितु आवरो–सुलभ रहेंगे क्या। २४९

खाई के किनारे स्फटिक-पत्थरों से निर्मित थे। अतः जल में और उसमें भेद नहीं दिखायी दे रहा था। वह ऐसा है मानो मोहमुक्त परिशुद्ध मन वाले ज्ञानी कलंक-मन नीच लोगों से मिल गये हों ! तब उनमें भेद परखना सुलभ होगा क्या ? २४९

नील मेमुद नन्मणि नित्तिलम्, मेल कीऴयल् माऱॊळि वीशलाल्
पालिन् वेलै मुदऱ्पल वेलैयुम्, काल्ह लन्दन वॆय्ॆनक् काट्टुमाल् 250

नीलमे मुतल्–नीलम आदि; नन्मणि–श्रेष्ठ रत्न; नित्तिलम्–मोती; मेल् कीऴ्–ऊपर, नीचे; अयल्–पार्श्वों में; माऱु ऒळि–विभिन्न प्रकाश; वीचलाल्–बिखेरते हैं, इसलिए; पालिन् वेलै मुतल्–क्षीर-सागर आदि; पल वेलैयुम्–अनेक सागर; काल्–युगान्त के पवन के कारण; कलन्तनवे–मिश्रित हो गये; ऎन–ऐसा; काट्टुम्–दरसाते हैं। २५०

उस खाई में नीलम आदि श्रेष्ठ रत्न बारी-बारी से विभिन्न तथा विविध छटाएँ विखेर रहे थे। इसलिए वह, क्षीरसागर आदि अनेक समुद्र पवनचालित हो एक हो गये हों —ऐसी लगी। (समुद्र सात हैं —लवण, इक्षु, सुरा, घृत, दधि, क्षीर और जल के)। २५०

अन्न वेलै यहऴियै यार्हलि, ऎन्न वेहडन् दिञ्जियुम् बिऱ्पडत्
तुन्न रुङ्गडि मानहर् तुन्निनान्, पिन्न रॆय्दिय तन्मैयुम् बेशुवाम् 251

अन्‌त–ऐसी; वेलै अकऴियै–सागर-सम खाई को; आर् कलि ऒन्‌तवे–बड़े शब्दायमान सागर को जैसे; कटन्‌तु–लाँघकर; इञ्चियुम् पिऱ्पट–प्राचीरों को भी पीछे छोड़ करके; तुऩ्‌तरुम्–अगम; कटि मा नकर्–सुरक्षित बड़े नगर में; तुऩ्‌ऩितान्–पहुँचा; पिऩ्‌तर्–उसके बाद; ऒय्‌तिय तऩ्‌मैयुम्–जो हुआ वह समाचार; पेचुवाम्–कहेंगे। २५१

ऐसी परिखा को हनुमान ने शब्दायमान सागर को जैसे लाँघकर पार किया। फिर प्राचीरों को भी पार करके अगम उस सुरक्षित नगर में प्रविष्ट हुआ। फिर क्या हुआ ? —यह बताएँगे। २५१

करिय नाळिहै पादियिल् कालनुम्, वॅरुवि योडु मरक्करदम् वॅम्बदि
ऑरुव नेयॊरु पन्‌तिरण् डियोशनैत्, तॅरुवु मुम्मैनू ड्रायिरन् देडिनान् 252

कालनुम्–यम भी; वॅरुवि ओटुम्–डर कर भाग जाए, ऐसा; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; वॅम् पति–उस भयंकर नगर में; करिय नाळिकै–काली रात के समय; पातियिल्–के आधे में; ऑरु पन्‌तिरण्टु योचनै–बारह योजन की; मुम्मै नूऱायिरम् तॅरुवुम्–तीन लाख की वीथियों में; ऑरुवने–अकेले ही; तेटिनान्–(हनुमान ने) खोजा। २५२

वह राक्षसों का भयंकर नगर यम को मन में भय भरकर भगानेवाला था। उसमें काली अँधेरी रात के आधे समय के अन्दर वह अकेले बारह योजन लम्बी तीन लाख वीथियों में सीताजी की खोज कर चुका। २५२

वेरियु मडङ्गिन नॅडुङ्गळि विळैक्कुम्
पारियु मडङ्गिन वडङ्गियदु पाडल्
कारिय मडङ्गिनर्हळ् कम्मियर्हण् मुम्मैत्
तूरिय मडङ्गिन तॊडङ्गिय दुरक्कम् 253

वेरियुम् अटङ्कित–मद्यपों का शब्द थम गया; नॅटुम् कळि विळैक्कुम्–अधिक आनन्ददायी; पारियुम्–वाद्य भी; अटङ्कित–थम गये; पाटल् अटङ्कियतु–गाने बन्द हुए; कम्मियर्कळ्–कारीगरों ने; कारियम् अटङ्कितर्कळ्–अपने काम बन्द किये; मुम्मै तूरियम्–तीन तरह की भेरियाँ; अटङ्कित–रुक गयीं; उऱक्कम्–नींद; तॊटङ्कियतु–आरम्भ हो गयी। २५३

उस अर्धनिशा में सुरापायी लोगों का शोर बन्द हो गया। अधिक आनन्ददायी वाद्यों का बजना बन्द हो गया। गाने, कारीगरों के कार्य और तीनों तरह की भेरी-ध्वनियाँ —सभी बन्द हो गये। सबको निद्रा ने घेर लिया। २५३

इऱङ्गिन निऱङ्गॊळ्पवि येममुऱ वॅङ्गुम्
कऱङ्गिन मऱङ्गॊळॆयिल् कावलर् तुडिक्कण्
पिऱङ्गिन नऱुङ्गुळल रन्‌बर्पिरि यादोर्
उऱङ्गिनर् पिणङ्गियॆदि रूडिनरु ळलार् 254

निऱम् कोळ् परि–विविध रंगों के अश्व; इऱङ्कित–सिर लटकाकर सोये; मऱम् कोळ्–वीरता युक्त; अँयिल् कावलर्–प्राचीरों के रक्षकों के; तुटि कण्–डमरुओं की आँखों ने; एमम् उऱ–सुरक्षा प्रदान करते हुए; अँङ्कुम् कऱङ्कित–सर्वत्र शब्द किये; अँतिर् पिणङ्कि–सामने से झगड़ा करके; ऊटितर्कळ् अल्लार्–जो नहीं रूठीं वे; अऩ्पर् पिरियातोर्–प्रेमियों से जो अलग नहीं रहीं वे; पिऱङ्कित्त नरुङ्कुऴलर्–घने और सुवासित केश वालियाँ; उऱङ्कितर्–सोयीं। २५४

विविध रंगों के अश्व सिर लटकाकर सो गये। प्राचीरों के रक्षक, वीरता-भरे पहरेदारों के डमरू का नाद सबको रक्षा का आश्वासन दिलाते हुए सर्वत्र फैला। जो अपने पतियों से नहीं रूठी थीं और जो अपने प्रेमियों से अलग नहीं हुई थीं वे शोभायमान सुगन्धित केशिनियाँ सोयीं। २५४

वडन्दरु तडङ्गोळ्पुय मैन्दर्कल विप्पोर्
कडन्दऩ रिडैन्दऩर् कळित्तमयिल् पोलुम्
मडन्दैयर् तडन्दऩ मुहट्टिडै मयङ्गिक्
किडन्दऩर् नडन्ददु पुणर्च्चितरु केदम् 255

वटम् तरु–(हार की) लड़ियों से भूषित; तटम् कोळ–विशाल; पुय मैन्तर्–भुजाओं वाले तरुण; कलविप् पोर् कटन्तऩर्–सम्भोग-समर पूरा करके; इटैन्तऩर्–थकित हुए; कळित्त मयिल् पोलुम्–मत्त मयूरों के समान; मटन्तैयर्–जो मनोहर थीं, उन अपनी प्रियतमा स्त्रियों के; तटम् तऩ मुकट्टिटै–विशाल स्तनों की चोटी पर; मयङ्कि किटन्तऩर्–मोहित पड़े रहे; पुणर्च्चि तरु–संसर्गजनित; केतम्–थकावट; नटन्ततु–क्रियमाण रही। २५५

हारालंकृत विशाल भुजा वाले कुलीन राक्षस तरुण संभोग-समर पूरा कर थक चुके। वे मत्त मयूरों की-सी आभा वाली अपनी प्रेमिकाओं के विशाल स्तनशिखरों पर सिर रखे सोये। संसर्ग-आयास अपना राज्य चला रहा था। २५५

वामनऱै यिऩ्ऱुऱै नुहर्न्दवर् मऱन्दार्
कामनऱै यिऩ्ऱिऱम् नुहर्न्दवर् कळित्तार्
पूमनऱै वण्डुऱै यिलङ्गमळि पुक्कार्
तूमनऱै यिऩ्ऱुऱै ययिऩ्ऱिलर् तुयिऩ्ऱार् 256

वाम तुऱैयिऩ्–वाममार्ग की; नऱै नुकर्न्तवर्–सुरा जिन्होंने पी थी वे; मऱन्तार्–विस्मृति की दशा में थे; काम नऱैयिऩ् तिऱम्–काम-भोग की सुरा का पान; नुकर्न्तवर्–जिन्होंने किया था वे; कळित्तार्–मत्त होकर; पूम नऱै–अति सुगन्धित; वण् तुऱै–समृद्ध शय्यागृह में; इलङ्कु अमळि–मनोरम रहनेवाली शय्या में; पुक्कार्–लेटकर; तूम नऱैयिऩ् तुऱै–धुएँ के बास के सुख को; अयिऩ्ऱिलर्–न भोगते हुए; तुयिऩ्ऱार्–सोये। २५६

वाममार्गावलम्बी लोग उसके अंग के रूप में सुरापान करके अपने

को भूले सोते रहे। कामोत्तेजक के रूप में मद्य जो पी चुके वे अधिक सुवासपूर्ण शय्यागृह में सुन्दर लगनेवाली शय्या में लेटे, अगरुधूम आदि का भी सुख न भोगते हुए निद्रा में चूर हो गये। २५६

पण्णिमै यडैत्तपल कट्पॊरुनर् पाडल्
विण्णिमै यडैत्तन विळैन्ददिरुळ् वीणैत्
तण्णिमै यडैत्तन तळ्ङ्गिशै वळ्ङ्गुम्
कण्णिमै यडैत्तन वडैत्तन कबाडम् 257

पल कट् पॊरुनर्–अनेक सुरापायी नर्तकों के; पाटल् पण्–गाने के स्वर; इमै अटैत्त–(पलक बद्ध) बन्द हुए; विण् इमै अटैत्तन–आकाश ने पलकें गिरा दीं; इरुळ् विळैन्ततु–अँधेरा बढ़ा; तळ्ङ्कु इचै–स्वरित संगीत; वळ्ङ्कुम्–निकालनेवाली; वीणै–वीणा के; तण् इमै–श्रुति मधुर स्वरस्थान; अटैत्तन–बन्द हुए; कण्–लोगों की आँखों को; इमै अटैत्तन–पलकों ने बन्द कर दिया; कपाटम् अटैत्तन–किवाड़ भी बन्द हुए। २५७

अनेक मद्यप नर्तकों के गाने के स्वर थम गये। आकाश ने भी पलकें गिरा लीं (मन्द हो गया)। अन्धकार घना फैल आया। स्वरमय वीणा के श्रुतिमधुर स्वरस्थल बन्द हुए। लोगों की आँखें भी पलकों के अन्दर बन्द हो गयीं। घरों के कपाट भी बन्द हो गये। २५७

विरिन्दन नरन्दमुदल् मॆन्मलर् हळाहत्
तुरिञ्जिवरु तॆन्ऱलुणर् वुण्डय लुलावच्
चॊरिन्दन करुङ्गण्वरु तुळ्ळिदरु वॆळ्ळम्
ऎरिन्दन पिरिन्दवर्द मॆञ्जुतनि नॆञ्जम् 258

नरन्तम् मुतल्–'नरंद' आदि के; मॆन् मलर् कळ्–कोमल पुष्प; विरिन्तन–विकसित हुए; पिरिन्तवर् तम्–वियोगिनियों के; आकत्तु–शरीरों में; उरिञ्चि–लगकर; वरु–आनेवाला; तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन; उणर्वु उण्ट–उनकी सुध को हरकर; अयल् उलाव–बाहर चला तो; करुङ्कण्–उनके काले नेत्रों से; वरु–आनेवाली; तुळ्ळि तरु वॆळ्ळम्–(आँसू की) बूंदों का प्रवाह; चॊरिन्तन–बह निकला; ऎञ्चु तनि नॆञ्चम्–बचे रहे मन; ऎरिन्तन–विरह-ताप से जल रहे थे। २५८

'नरन्द' आदि कोमल (रात के फूलनेवाले) पुष्प फूले। मलयपवन वियोगिनियों के शरीर से लगकर उनकी सुध हर लेकर बहा। तब उनकी आँखों से निकली अश्रुबिंदुएँ धारा बनकर बहीं। उनके मन जो बचे थे विरहाग्नि में जल रहे थे। २५८

इळक्कमिळ् दॆञ्जविळ् मॆण्णरु विळक्कैत्
तुळक्कियदु तॆन्ऱल्पहै शोरवुयर् वोरित्

अळक्करी डळक्करिय वाशैयुऱ वीया
विळक्कॅन्न विळङ्गुमणि मॅय्युरु विळक्कम् 259

पकै चोर–शत्रुओं के शिथिल पड़ते समय; उयर्वोरित्–ऊँचा उठनेवालों के समान; इळक्कम् इळुतु–स्निग्ध तेल के; ॲञ्च–बाकी न रहने पर; विळुम्–बुझनेवाले; ॲण् अरुम् विळक्कै–असंख्यक दीपों को; तॅन्ऱल्–मलयपवन ने; तुळक्कियतु–पूर्णरूप से शान्त कर दिया; अळक्करॉटु–समुद्र-सदृश; अळक्करिय–अपार; आचै उऱ–प्रेम बढ़ाते हुए; मणि मॅय् उरु विळक्कम्–सुन्दर (स्त्रियों के) शरीरों की कान्ति; वीया विळक्कु ॲन्न–अमर दीप के समान; विळङ्कुम्–छिटकी। २५६

घृत पूरा हो गया और असंख्य दीप बुझ गये। तब मलयपवन ने उनको बुझा दिया। यह ऐसा था मानो शत्रु के शिथिल पड़ते समय कोई अपना सिर उठाए आरूढ़ हो रहा हो! तब भी सागर की समानता पार कर जो प्रेम बढ़ गया था उसको उत्तेजना देते हुए सुन्दरी प्रेमिकाओं के मनोरम शरीरों की कांति अक्षय दीप के समान उज्ज्वल बनी रही। २५९

नित्तनिय मत्तॊळिल राय्निऱैयु ञानत्
तुत्तमरु ऱङ्गिनर्हळ् योहियर् तुयिन्ऱार्
मत्तमद वॆङ्गळि ऱुऱङ्गिन मयङ्गिप्
पित्तरु मुऱङ्गिन रिनिप्पिऱरि दॆन्नाम् 260

नित्त नियमत् तॊळिलराय्–नित्य नियमित कर्म पूरा करते हुए; निऱैयुम्–पूर्ण बने; ञानत्तु उत्तमर्–ज्ञान श्रेष्ठ; उऱङ्कितर्कळ्–सोये; योकियर् तुयिन्ऱार्–योगी भी सुप्त रहे; मत्त मत वॆम् कळिऱु–मद मत्त भयंकर गज; मयङ्कि उऱङ्कित–मुग्ध हो सोये; पित्तरुम् उऱङ्कितर्–पागल लोग भी सोये; इति–इस स्थिति में; पिऱर् इतु–अन्यों की यह (निद्रित दशा); ॲन्न आम्–क्या होगी। २६०

ज्ञान में बढ़े हुए वे नित्य-नियम करनेवाले कर्मयोगी भी सो गये। योगियों को भी निद्रा ने अपनी चपेट में ले लिया। मदमत्त मातंग भी निद्रित हो गये। दीवाने भी सो गये। फिर दूसरों की निद्रा की स्थिति का क्या कहना है? । २६०

आयपॊळु दम्मदि लहत्तरशर् वैहुम्
तूयतॆरु वीन्ऱॊरु कोडितुरु विप्पोय्त्
तीयव निरुक्कैययल् शॆय्दवह ळिञ्जि
मेयदु कडन्दनन् विनैप्पहैयै वॆन्ऱान् 261

आय पॊळुतु–ऐसे उस समय; वितैप् पकैयै वॆन्ऱान्–कर्म रूपी शत्रु का विजेता; अम् मतिल् अकत्तु–(मध्य स्थित उस नगर के) प्राचीर के अन्दर; अरचर् वैकुम्–राजा लोग जहाँ रहते थे; तूय–उन साफ़; ईन्ऱॊटु ऑरु कोटि तॆरु–दो करोड़ वीथियाँ; तुरुवि पोय्–खोज लगाते पार कर; तीयवत्–खल (रावण) के; इरुक्कै

अयल् चॅयत–वासस्थान के निकट बनी; मेयतु अकऴ् इञ्चि–युक्त खाई और प्राचीर को; कटन्ततन्–पार कर गया। २६१

जब इस भाँति सारा नगर निद्रा के वश में रहता था, तब कर्म-शत्रु-विजेता हनुमान उस प्राचीर-वलय के मध्य में स्थित नगर की राजवीथियों में गया, जहाँ राजा लोगों का निवास था। वैसी दो करोड़ वीथियों में खोज लेने के बाद वह क्रूर रावण के महल की खाई और प्राचीर को पार कर अन्दर गया। २६१

पोरि यऱ्कै यिरावणन् पॉन्मनै, शीरि यऱ्कै निरम्बिय तिङ्गळाय्त्
तार हैक्कुऴु विऱ्ऱळैत् तोङ्गिय, नारि यऱ्क्कुऱै वामिड नण्णिनान् 262

पोर् इयऱ्कै–युद्ध करना जिसका स्वभाव था; इरावणन् पॉन् मनै–उस रावण का प्रासाद; चीर् इयऱ्कै निरम्पिय–श्रेष्ठताओं (कलाओं) से युक्त; तिङ्कळाय्–चन्द्र बना; तारकै कुऴुविल्–ताराओं के समूह के समान; तळैत्तु ओङ्किय–प्रकाशमय और उन्नत रहे; नारियर्क्कु उऱैवु आम् इटम्–उसकी स्त्रियों के वासस्थानों; नण्णितान्–के पास पहुँचा। २६२

रावण स्वभाव से युद्धप्रिय था। उसका स्वर्णमहल सभी कलाकृतियों व वैभवों से पूर्ण था। उसके चारों ओर उसकी प्रिय नारियों के निवासस्थान थे। रावण का महल कलापूर्ण चन्द्र के समान लगा और नारियों के भवन उज्ज्वल तारा-समूह के समान लगे। २६२

मुयऱ्क रुङ्गऱै नीङ्गिय मॉय्म्मदि, अयिर्क्कुम् वाण्मुहत् तारमु दन्नवर्
इयक्कर् मङ्गैयर् यावरु मिन्बुऱ, नयक्कुम् माळिहै वीदियै नण्णिनान् 263

मुयल्–शशक के; करुम् कऱै नीङ्किय–कलंक से रहित; मॉय् मति–प्रकाशमय पूर्णचन्द्र; अयिर्क्कुम्–जिसको देखकर मोहित हो जाए; वाळ् मुकत्तु–ऐसे सुन्दर मुख को; आर् अमुतु अन्नवर्–पूर्ण अमृत के समान; इयक्कर् मङ्कैयर् यावरुम्–यक्षकन्याएँ सब; इन्पुऱ नयक्कुम्–जिनको बहुत पसन्द करती थीं; माळिकै वीतियै–उन सौधों की वीथी को; नण्णितान्–पहुँचा। २६३

पहले वह यक्ष-रमणियों के प्रासादों की वीथी में गया। वे यक्षिणियाँ अति सुन्दर थीं। शशकलंकहीन चन्द्र भी उनके मुख को देखकर स्तब्ध रह जाता! कांतिमय आनन वाली वे समृद्ध अमृत-समान थीं। २६३

तऴैन्द पेरॉळि मॉय्मणित् ताडॉरुम्, इऴैन्द नूलिनु मिन्निळङ् गालिनुम्
नुऴैन्दु नॉय्दिनिन् मैयऱ नोक्किनान्, विऴैन्द तीविनै वेरऱ वीशिनान् 264

विऴैन्त तीविनै–राग के कारण उत्पन्न पाप को; वेर् अऱ वीचितान्–जिसने निर्मूल कर दिया था (उसने); पेर् ऑळि तऴैन्त–बहुत प्रकाशमय; मॉय् मणि ताळ् तॉऱुम्–घने रूप से रत्नों को जड़कर निर्मित ताले-ताले में; इऴैन्त नूलितुम्–

पतले कते सूत्र से भी; इन् इळम् कालितुम्—मन्द मधुर पवन से भी; नोय्तितिन्—महीन रूप से; नुळैन्तु—घुसकर; मै अऱ—विना चूक के; नोक्कितान्—देखा। २६४

हनुमान रागविमुक्त था और उसने राग से उत्पन्न होनेवाले सभी पापों को दूर कर दिया था। ऐसा वह सूत्र और पवन से भी महीन रूप में रत्नजटित तालों के द्वार में घुसकर अन्दर गया और विना नागा के सब जगह खोजने लगा। २६४

अत्ति रम्बुनै यानै यरक्कन्मेल्, वैत्त शिन्दैयर् वाङ्गु मुयिर्प्पिनर्
पत्ति रम्बुरै नाट्टम् बदैप्पड़च्, चित्ति रङ्ग ळॅनविरुन् दार्शिलर् 265

चिलर्—(उन यक्षनन्दिनियों में) कुछ; अत्तिरम् पुतै—कामास्त्र लगे; यातै अरक्कन् मेल्—गज-सम राक्षस पर; वैत्त चिन्तैयर्—मन ललचाकर; वाङ्कुम् उयिर्प्पितर्—निःश्वास छोड़ती हुई; पत्तिरम् पुरै नाट्टम्—अस्त्र-सम आँखें; पतैप्पड़—निश्चेष्ट रखते हुए; चित्तिरङ्कळ् ॲत—चित्रवत; इरुन्तार्—रहीं। २६५

(वे कैसी स्थिति में थीं ? —इसका वर्णन देखिए।) उनमें कुछ अपना मन मदनास्त्राहत गज के समान रहनेवाले रावण पर लगाए दीर्घ निःश्वास छोड़ रही थीं। उनकी आँखें टकटकी लगाये निस्पंद थीं। वे चित्रवत रहीं। २६५

अळ्ळल् वॅञ्जिलै मारनै यञ्जियो, मॅळ्ळ वित्गन विन्बयन् वेण्डियो
कळ्ळ मॅन्गॊ लरिन्दिलङ् गण्मुहिळ्त्, तुळ्ळ मिन्ऱि युऱङ्गुहिन् ऱार्शिलर् 266

चिलर्—और कुछ; कण् मुकिळ्त्तु—आँखें बन्द करके; उळ्ळमिन्ऱि—विना इच्छा के; उऱङ्कुकिन्ऱार्—सोने का बहाना करती हैं; अळ्ळल्—पंकीले खेत में उत्पन्न होनेवाली ईख का; वॅम् चिलै—भयानक धनु; मारतै अञ्चियो—रखनेवाले कामदेव से डरकर क्या; मॅळ्ळ—चुपके-चुपके; इन् कनविन्—(रावण सम्बन्धी) मधुर स्वप्न; पयन् वेण्टियो—का सुख चाहकर; कळ्ळम्—वंचना; ॲन् कॊल्—क्या है; अऱिन्तिलम्—नहीं जानते। २६६

और कुछ थीं, जो आँखें बन्द किये पड़ी थीं; पर सो नहीं रही थीं। सोने का बहाना कर रही थीं। वे क्यों ऐसा कर रही थीं ? पंकजनित इक्षुधनुधर काम से डरकर ? या कोई मधुर स्वप्न देख रही थीं जिसका सुख छोड़ना नहीं चाह रही थीं ? हम उनकी वञ्चना क्या जानें ? । २६६

पळुदिन् मन्मद नॆय्हणै पन्मुरै, उळुद कॊङ्गैय रूश लुयिर्प्पिनर्
अॅळुदु शॆय्वदॆ नाणै यरक्कनै, ॲॅळुद लाङ्गॊलॆन् ऱॆण्णुहिन् ऱार्शिलर् 267

चिलर्—और कुछ; मन्मतन् ऍय्—मन्मथप्रेषित; पळुतिल् कणै—अचूक शर; पल् मुऱै उळुत—जिनको अनेक बार जोत (विद्ध कर) चुके; कॊङ्कैयर्—उन स्तनों के साथ; ऊचल्—झूले की तरह आने-जानेवाले; उयिर्प्पितर्—श्वास छोड़ती हुई;

अऴुतु चॅय्वतु ॲन–रोकर करें क्या; आणै अरक्कतै—आज्ञाकारी रावण का चित्र; ॲऴुतलाम् कोल्–लिखें क्या; ॲन्ऱ–ऐसा; ॲण्णुकिन्ऱार्—सोच रही हैं। २६७

और कुछ स्त्रियों की हालत देखिए। उनके स्तन बार-बार मन्मथ-शर द्वारा विद्ध हो चुके। उनके प्राण झूले के समान झूल रहे थे। वे सोच रही थीं कि अब रोने से क्या होनेवाला है? आज्ञापति रावण का चित्र बना लें। २६७

आव दॉन्ऱरु ळायॅन दावियैक्, कूवु हिन्ऱिलै कूऱलै शॅन्ऱॅनाप्
पावै पेशुव पोऱ्कण् पनिप्पुरप्, पूवै योडुम् बुलम्बुहिन्ऱार्शिलर् 268

चिलर्–और कुछ; कण् पनिप्पु उऱ–आँखों से आँसू बहाते हुए; पूवैयोटुम्–सारिका के साथ; पावै पेचुव पोल्–चित्र भाषण करते हों जैसे; आवतु—होनेवाला कार्य; ऑन्ऱु अरुळाय्—एक करने की दया नहीं करते; ॲनतु आवियै–मेरे प्राण (-सम रावण) को; कूवुकिन्ऱिलै–नहीं पुकारते; चॅन्ऱु कूऱलै—जाकर नहीं कहते; ॲन्ना–ऐसा कहकर; पुलम्पुकिन्ऱार्–विलापती हैं। २६८

और कुछ यक्षांगनाएँ गीली आँखों से आँसू बहाते हुए अपनी सारिकाओं को बोलते चित्र के समान उलाहना दे रही थीं। तू मेरा कोई हित नहीं करती! मेरे प्राण, रावण को नहीं बुलाती। ऐसा कहते हुए वे विलाप रही थीं। २६८

ईरत् तॅन्ऱ लिऴुह मॅलिन्दुतम्, पारक् कॉङ्गैयैप् पार्त्तनदप् पादहन्
वीरत् तोळ्हळिन् वीक्कमॅण्णावुयिर्, शोरच् चोरत् तुळङ्गुहिन्ऱार्शिलर् 269

ईर–शीतल; तॅन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन; इऴुक–मन्द-मन्द बह रहा है; मॅलिन्तु–पतली होकर; तम् पार कॉङ्कैयैप् पार्त्तु–अपने भारी स्तनों को देखकर; अन्त पातकन्–उस पातक (रावण) के; वीर तोळ्कळिन्–वीर भुजाओं का; वीक्कम्–सूजन (मुटापा); ॲण्णा–सोचकर; उयिर् चोर चोर–प्राणों के शिथिल पड़ते; चिलर् तुळङ्कुकिन्ऱार्–कुछ यक्ष स्त्रियाँ छटपटाती हैं। २६९

शीतल मलयपवन मन्द-मन्द बह रहा था। उससे कुछ स्त्रियों के शरीर कृश हो गये। उन्होंने अपने भारी स्तनों को देखा और रावण के स्थूल कन्धों का स्मरण किया। प्राण सूखने-से लगे और वे तड़पने लगीं। २६९

नक्क शॅम्मणि नाऱिय नीणिऴल्, पक्कम् वीशुरु पळ्ळियिर् पल्पहल्
ऑक्क वाशै युलर्त्त वुलर्न्दवर्, शॅक्क वान्ऱरुन् दिङ्गळॆत् तार्शिलर् 270

चिलर्–कुछ; नक्क–उज्ज्वल; चॅम्मणि–लाल माणिक पत्थरों से; नाऱिय–प्रकट; नीळ् निऴल्–लम्बी कान्तियाँ; पक्कम् वीचुऱु–जिसके पार्श्व में पड़ती हैं उस; पळ्ळियिल्–शय्या में; पल् पकल्–अनेक दिनों से; ऑक्क आचै उलर्त्त–लगातार

उनकी कामना के सूख जाने (असफल रह जाने) से; उलर्न्तवर्-सूखकर; चॅक्क वान् तरुम्-लाल गगन में उदित; तिङ्कळ् ऑत्तार्-(अर्ध) चन्द्र के समान दिखीं। २७०

कुछ पलंग पर लेटी हुई थीं। पलंग के चारों ओर लाल पत्थर कांति दे रहे थे। वे स्त्रियाँ अनेक दिनों से वियोगाग्नि में तप चुकी थीं, सूखकर काँटे हो गयी थीं। उस स्थिति में वे अपनी शय्याओं पर लाल गगन में प्रकट अर्द्धचन्द्र के समान लगीं। २७०

वाळि ऩाऱ्ऱिय कऱ्पह वल्लियर्, तोळि ऩाऱ्ऱिय तूङ्गम ळित्तुयिल्
नाळि ऩाऱ्चॅवि यिऱ्पुहु नामयाळ्त्, तेळि ऩाऱ्ऱिहैप् पॅय्दुहिऩ् ऱार्शिलर् 271

वाळिऩ्-कान्ति के द्वारा; आऱ्ऱिय-प्रदत्त; कऱ्पक वल्लियर्-कल्पलताएँ-सी (यक्ष बालाएँ); तोळिऩ्-दोले के समान; नाऱ्ऱिय-लटकाये जाकर; तूङ्कु-लटकनेवाली (झूलनेवाली); अमळि तुयिल् नाळिऩाल्-शय्या पर सोते समय; चॅवियिल् पकु-कानों में घुसनेवाले; नाम याळ् तेळिऩाल्-भयावह 'याळ्' के स्वर रूपी बिच्छ से; चिलर्-कुछ; तिकैप्पु ॲय्तुकिऩ्ऱार्-भ्रान्त और बेसुध हो जाती हैं। २७१

कुछ प्रकाश की बनी कल्पवल्ली-सी यक्षस्त्रियाँ झूले की तरह की लटकनेवाली शय्या में पड़ी 'याळ्' नामक वीणा के मधुर स्वर से ऐसा कष्ट पाती हैं और बेसुध हो जाती हैं, मानो वह संगीत बिच्छू हो। २७१

कव्वु तीक्कणै मेरुवैक् काल्वळैत्, तॅव्वि ऩाऩ्मलै येऩ्दिय वेऩ्दऩ्ऱोळ्
वव्वु शाऩ्दुदम् मामुलै वौविय, शॅव्वि कण्डु कुलावुहिऩ् ऱार्शिलर् 272

चिलर्-कुछ; मेरुवै काल् वळैत्तु-मेरु को धनु के रूप में झुकाकर; कव्वु-उस पर चढ़ाये गये; ती कणै-अग्नि-सदृश (विष्णु रूपी) अस्त्र को; ॲव्वित्ताऩ्-जिन्होंने चलाया था; मलै-उन शिवजी के कैलास पर्वत को; एन्तिय-जिसने उखाड़कर उठाया; एन्तल्-उस राजा रावण के; तोळ्-कन्धों में; वव्वु चाऩ्तु-जो लग गया था वह चन्दन का लेप; तम् मा मुलै वौविय-अपने स्तनों ने जो अपनों पर मलवा लिया था (आलिंगन के समय); चॅव्वि कण्टु-उस सौष्ठव को देखकर; कुलावुकिऩ्ऱार्-मोद का अनुभव कर रही हैं। २७२

शिवजी ने मेरु को धनु के रूप में दोनों बाजुओं में झुकाया था और श्रीविष्णु को अग्निवर्षक अस्त्र बनाकर चलाया था। ऐसे शिवजी के कलास पर्वत को रावण ने उखाड़कर अपने हाथों पर उठा लिया। कुछ यक्षस्त्रियाँ अपने स्तनों पर उस रावण के सबल कन्धों पर लिप्त चन्दन को मला देखती हैं। यह तब मला था, जब रावण ने उन्हें आलिंगन किया था। अब ये यक्षस्त्रियाँ उस चन्दनापहरण की खूबी पर इठला रही हैं। २७२

कूडि नान्गुयर् वेलैयुङ् गोक्कनिन्, ऱाडि नान्पुह ऴङ्गै नरम्बिनाल्
नाडि नाऱ्पॅरुम् बण्णु नयप्पुऱप्, पाडि नान्बुहऴ् पाडुहिन् ऱाऱ्शिलर् 273

चिलर्–(और) कुछ (यक्ष ललनाएँ); नान्कु–चारों ओर के; उयर् वेलैयुम्–बड़े समुद्रों के; कूटि कोक्क–मिलकर प्रलय बनते समय; निन्ऱु आटितान्–जिन्होंने ताण्डव नृत्य किया; पुकऴ्–उस शिवजी के यश को; नाटि–स्मरण व अन्वेषण करके; अङ्कै नरम्पिनाल्–अपने सुन्दर हाथों की नसों को मीड़कर; नाल् पॅरुम् पण्णुम्–चारों श्रेष्ठ रागों को; नयप्पु उऱ पाटितान्–जिसने मनोहारी रूप से गाया था; पुकऴ्–उस रावण के यश का; पाटुकिन्ऱार्–गान करती हैं। २७३

कुछ यक्षांगनाएँ रावण के यशोगान में मन बहला रही हैं। रावण ने शिवजी के यश का गान किया था। शिवजी ऐसे थे, जिन्होंने प्रलय के समय में, जब चारों ओर के बड़े-बड़े समुद्र मिलकर एक हो गये थे, ताण्डव नृत्य किया था। २७३

इन्नैय तन्मै यियक्किय रीण्डिय, मनैयी रायिर मायिरम् वायिल्पोय्
अन्नैय वन्गुलत् तायवळै यारिडम्, निन्नैवि नॅय्दिन नीदियि नॅय्दिनान् 274

नीतियिन् अॅय्तिनान्–न्यायमार्गगामी; इन्नैय तन्मै इयक्कियर्–ऐसी स्थितियों में जो रहीं, उन यक्षिणियों की; ईण्टिय–भरी; ओर् आयिरम् आयिरम्–सहस्र-सहस्र; मनै वायिल् पोय्–ड्योढ़ियों में घुसकर; अन्नैयवन् कुलत्तु–(पश्चात) उसके कुल की; आय् वळैयारिटम्–चुने हुए कंकणों की धारिणी राक्षसियों के स्थान में; निनैविन्–सीतान्वेषणचित्त होकर; अॅय्तिनन्–पहुँचा। २७४

न्यायमार्गगामी हनुमान ऐसी स्थितियों में रहनेवाली सहस्र-सहस्र यक्षिणियों के घरों में जाकर देखा। पश्चात वह सीतान्वेषण में चित्त देकर रावण के ही कुल की (राक्षस-) नारियों के वासस्थान पर गया। २७४

ऑरिशुडर् मणियिन् शङ्गे ऴिळवॅयि लिडैवि डादु
विरियिरुळ् परुहि नाळुम् विळक्किन्ऱि विळङ्गु माडत्
तरिवैयर् कुऴुवु नीङ्ग वाशैयुन् दामु मेयाय्
ऑरुशिरै यिरुन्दु पोन वुळ्ळत्तो डूडु वारुम् 275

विळक्कु इन्ऱि–दीप के बिना ही; ऑरि चुटर्–रोशनी देनेवाले; मणियिन्–लाल पत्थरों की; चॅम् केऴ्–लाल और सुन्दर; इळ वॅयिल्–शीतल प्रभा; इटैविटातु विरि–निरन्तर जहाँ फैल रही थी; इरुळ् नाळुम् परुकि–अँधेरे को सदा चाटती; विळक्कुम् माटत्तु–रहती थी (जहाँ) उस प्रासाद के; ऑरु चिरै–एक ओर; अरिवैयर् कुऴुवु–चेरियों के समूहों के; नीङ्क–हट जाने पर; आचैयुम् तामुमेयाय्–कामना और स्वयं अकेले रहकर; पोन–उसके पास गये; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; ऊटुवारुम्–रुष्ट जो रहीं, वे। २७५

वे क्या कर रही थीं? एक महल था। उसमें दीप नहीं थे, पर

प्रकाश देनेवाले लाल पत्थर थे। उनसे लाल रंग की सुखद रोशनी छूट रही थी। उसमें एक नायिका अकेली खड़ी थी। उसने दासीवृन्दों को हटा दिया था। वह केवल अपने प्रेम को ही संगिनी बनाकर अकेली खड़ी अपने मन से रूठ रही थी। ऐसी कुछ राक्षसियों को हनुमान ने देखा। २७५

नहैयॅरिक् करुरै नॅरुरि नावितोयन् दनैय वोदि
पुहैयॅनत् तुम्बि शुरुरप् पुदुमलर् पॉङ्गु शेक्कै
पहैयॅन वेहि यान्र पळिङ्गुडैच् चीदप् पळ्ळि
मिहैयॊडुङ् गाद काम विम्मलित् वॅदुम्बु वारुम् 276

नकै ऑरि करुरै–ज्वलन्त अग्नि-लपट के; नॅरुरि–छोर में; नावि तोय्न्ततैय–कस्तूरी-मले से; ओति–केश को; पुकै ॲन–धुआँ समझकर; तुम्पि–भ्रमर; चुरुर–घूमकर भागते हैं; पुतु मलर् पॉङ्कु–ताजे सुमनों से भरी; चेक्कै–शय्या को; पकै ॲन–शत्रुवत; एकि–छोड़ दूर जाकर; आन्र पळिङ्कु उटै–चौड़े स्फटिक-पत्थरों से बनी; चीत पळ्ळि–शीतल शय्या पर; मिकै ऑटुङ्कात–बढ़ना कम जिसका नहीं हुआ; काम विम्मलित्–काम के वर्धन से; वॅतुम्पुवारुम्–जो तप रही थीं, वे और। २७६

राक्षसियों के केश कस्तूरी-लगी आग की लपटों के समान थे। उसे देखकर भ्रमर धुआँ समझते और डरकर उड़ जाते। उन राक्षसियों ने नवीन सुमनों की शय्या को भी शत्रुवत त्याग दिया। फिर वे स्फटिक के चबूतरे पर जाकर लेटीं, जो शीतल था। तो भी उनका ताप कम नहीं हुआ और वे झुलस रही थीं। २७६

शविपडु तहैशाल् वानम् तानॊरु मेनि याहक्
कुवियुमी नार माह मिन्कॊडि मरुङ्गु लाहक्
कविरॊळिच् चॆक्कर् करुरै योदिया मळैयॊण् कणणा
अविर्मदि नॆरुरि याह वन्दिया ळॊक्किन् ऱारुम् 277

चवि पटु–छविमान; तकै चाल् वानम् तानु–श्रेष्ठ आकाश ही; ऑरु–अद्वितीय; मेनि आक–शरीर बना और; कुवियुम् मीन्–भीड़ बने रहनेवाले तारे; आरमाक–हार बने; मिन् कॊटि–बिजली की लताएँ; मरुङ्कुल् आक–कमर बनीं; कविर् ऑळि–कटिदार पलाश के फूलों की-सी; चॅक्कर् करुरै–लाल गगन की ज्योति; ओति आ–केश बनी; मळै–मेघ; ऑण् कण् आ–प्रकाशमय आँखें बने; अविर् मति–न्यून कला चन्द्र; नॅरुरि आक–ललाट बना; अन्तियाळ्–ऐसी सन्ध्यादेवी को; ऑक्किन्ऱारुम्–समता करनेवाली राक्षसियाँ और। २७७

कुछ राक्षसियाँ स्वयं सायं सन्ध्यादेवी के समान लगीं, जो ज्वलंत आकाश का शरीर ले, तारागणों का हार पहने हुए, विद्युत् की कमर से

युक्त और काँटेदार पलाशफूलों के समान लाल गगन के केश से शोभित और मेघों के उज्ज्वल नेत्रों के साथ और अर्द्धचन्द्र के भाल से युक्त पायी जाती हों। २७७

पातलुण् कण्णुम् वण्णप् पडिमुऱै माऱप् पण्णैच्
चोतैपोत् ऱळिहळ् पम्बुम् जुरिहुळऴ् कऱ्ऱै शोर
मेनिवन् दॆळुन्द माड वॆण्णिला मुत्ऱि तण्णि
वातमीत् कैयित् वारि मणिक्कळङ् गाडु वारुम् 278

मेल् निवन्तु ऍळुन्त–ऊपर की ओर उन्नत उठे हुए; माट–प्रासादों की; वॆळ् निला मुत्तरिल्–चन्द्रशाला; नण्णि–जाकर; कैयित्–अपने हाथों से; वात मीत् वारि–आकाश के तारों को उठा लेकर; पातल् उण् वण्ण कण्णुम्–नीलोत्पलजयी रंग वाली आँखें; पटि मुऱै माऱ–ऊपर नीचे देखें ऐसा; पण्णै अळिकळ्–झुण्डों में अलि; चोतै पोत्ऱु–मेघ के समान; पम्पुम्–जिन पर मँड़राते हैं; चुरि कुळल् कऱ्ऱै–वे घुँघराले बाल की लटें; चोर–शिथिल पड़ें ऐसा; मणि कळङ्कु–उन नक्षत्रों के गेंद; आटुवारुम्–खेलनेवाली नारियाँ। २७८

कुछ राक्षसियाँ ताराओं को लेकर 'कळङ्गु' का खेल खेल रही थीं। (यह तीन या उससे भी अधिक काठ के रंगीन गोल गेंदों से खेला जाता है। कुछ विशिष्ट बीज भी ऐसे होते हैं। स्त्रियाँ अपने एक या दोनों हथेलियों से उन गेंदों को उछालती हैं और पकड़ती हैं। यह उनके उठने या गिरने का क्रम कुछ इतना तीव्र और विचित्र व मनोरम लगता है।) वे उन्नत सौधों की चन्द्रशालाओं में गयीं। वे जब ताराओं से 'कळङ्गु' खेलती हैं तब उनकी नीलोत्पल-सी आँखें ऊपर-नीचे जाती हैं। उनके केश, जिन पर झुंडों में भ्रमर मँड़राते हैं, खुलकर शिथिल पड़ जाते हैं। २७८

उळैयुळैप् परन्द वात याऱ्ऱुनित् ऱुम्बर् नाट्टुक्
कुळैमुहत् तवर्ह डन्द पुनल्कुळिर्प् पिलवॆंत् ऱूडि
इळैतॊडुत् तिलङ्गु माडत् तिडैतडु माऱ वेऱि
मळैपॊदुत् तॊळुहु नीरात् मज्जन माडु वारुम् 279

उळै उळै–सर्वत्र; परन्त–फैली; वात याऱ्ऱु–आकाशगंगा नदी से; उम्पर् नाट्टु–व्योम लोक की; कुळै मुकत्तवर्कळ्–स्निग्ध मुख वाली; तन्त–(देवांगनाओं ने) जो लाकर दिया; पुतल्–वह जल; कुळिर्प्पु इल–शीतल नहीं; ऍन्ऱु–कहकर; ऊटि–रुष्ट होकर; इळै तॊटुत्तु इलङ्कुम्–पंक्तियों में आभरणों से अलंकृत रहनेवाली; माटत्तु–अटारी पर; इटै तटुमाऱ–कमरों को दुःख देती हुई; एऱि–चढ़ जाकर; मळै पॊतुत्तु–मेघ को छेदकर; ऑळुकुम् नीराल्–गिरनेवाले जल से; मज्चतम् आटुवारुम्–स्नान करनेवाली नारियाँ। २७९

राक्षसियों के सौधों पर सर्वत्र आकाशगंगा फली बहती है। देवांगनाएँ मुखों पर खुश रहने का भाव दिखाती हुई उससे जल लाकर राक्षसियों

को दे रही हैं। पर वे 'पर्याप्त शीतल नहीं' कहकर रुष्ट हो जाती हैं और सीढ़ियों पर कमर को दुखाते हुए चढ़ती हैं और मेघों में छेद बनाकर गिरनेवाले जल में स्नान करती हैं। २७९

पन्नह वरशङ् चॅङ्गेळ्प् पणामणि वलियिऱ् पऱ्ऱि
इन्नुयिरक् कणव तीन्दा तीदॆन विरुत्ति विञ्जै
मन्नवर् मुडियुम् बूणु मारमुम् बणैय माहप्
पॊन्निनम् बलहैच् चूदु तुयिल्हिलर् पॊरुहिन् ऱारुम् 280

तुयिल्किलर्–नहीं सोतीं; इन् उयिर् कणवन्–बड़े मधुर प्राणप्यारे पति ने; पन्नक अरचन्–पन्नगराज के; पणा चॅम् केळ् मणि–फनों पर के लाल सुन्दर रत्नों को; वलियिल् पऱ्ऱि–बलात छीनकर; ईन्तान्–मुझे दिया; ईतु ॲन–यही कहकर; इरुत्ति–दाँव पर चढ़ाकर; विञ्चै मन्नवर्–विद्याधर राजाओं के; मुटियुम्–मुकुटों; पूणुम्–आभरणों और; आरमुम्–हारों को; पणैयमाक–दाँव के रूप में; पॊन्तिन् अम् पलकै–स्वर्ण के चौपट में; चूतु पॊरुकिन्ऱारुम्–जुआ खेलनेवाली राक्षसनारियाँ और। २८०

कुछ राक्षसियाँ थीं जो सो नहीं पायीं। वे द्यूत खेल रही हैं। बाज़ी क्या लगाती हैं? मेरे प्राणप्यारे रावण ने ये रत्न पन्नगराजा के फनों से छीनकर मुझे दिये थे। लो इसे दाँव पर चढ़ाती हूँ। या ये लो— विद्याधर-राजाओं के किरीट, हार और अन्य आभरण! ऐसी वस्तुएँ वे दाँव पर लगा रही हैं। उनकी बिसात स्वर्णनिर्मित हैं। ऐसी स्त्रियों को हनुमान ने देखा। २८०

तॆन्नवॆन् ऱमुदप् पाडल् शित्तिय रिशैप्पत् तीञ्जॊल्
पन्नह महळिर् वळ्वार्त् तणणुमैप् पाणि पेणप्
पॊन्नहर्त् तरळप् पन्दर्क् कऱ्पहप् पॊदुम्बर्प् पॊऱ्ऱोळ्
इन्नहै यरम्बै मारै याडल्हण् डिरुक्किन् ऱारुम् 281

कऱ्पक पॊतुम्पर्–कल्पोद्यान में; पॊन्नकर्–स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये; तरळ पन्तर्–मोतियों के वितान के नीचे; चित्तियर्–सिद्धजाति की स्त्रियाँ; तॆन्न ॲन्ऱु–'तेन्न' के संगीत संकेत के साथ; अमुत पाटल् इचैप्प–अमृत-सम मधुर गीत गा रही थीं; तीम् चॊल्–मधुर स्वर वाली; पन्नक मकळिर्–पन्नग-नारियाँ; वळ्–घने; वार्–फीतों से बँधे; तण्णुमै–मर्दल के; पाणि पेण–ताल देते; पॊन् तोळ्–मनोरम भुजा वाली; इन् नकै अरम्पै मारै–मनोहर दाँतों वाली अप्सराओं को; आटल् कण्टु–नर्तन करने की आज्ञा देकर उसे देखकर; इरुक्किन्ऱारुम्–आनन्द के साथ रहनेवालियों को। २८१

और कुछ स्त्रियाँ नाच-गान का आनन्द भोग रही थीं। कल्पवन में स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये मोतियों से निर्मित वितान के नीचे सिद्ध जाति की स्त्रियाँ 'तेन्न' नाम के संगीत-संकेत के अनुसार अमृत-सम

गान गा रही थीं। मधुर वाणी पन्नगकन्याएँ 'मर्दल' बजा रही थीं। और मनोरम कन्धों वाली और मनोहर दाँतों वाली अप्सराएँ नाच रही थीं। २८१

आणियिऱ् किडन्द काद लहञ्जुड वरुवि युण्गण्
शेणुय रुऱक्कन् दीर्न्द शिन्दैयर् शॅय्व दोरार्
वीणैयुम् कुऴलुन् दत्तम् मिडऱुम्वेऱ् ऱुमैयिऱ् ऱीर्न्द
पाणितऴ् ळाद पाड लमुदुहप् पाडु वारुम् 282

आणियिल्—कील के समान; किटन्त कातल्—गड़ा रहा जो प्रेम; अकम् चुट—हृदय को जलाता है; अरुवि उण् कण्—सरिता के समान आँसू बहाती आँखों में; चेण् उयर् उऱक्कम्—गहरी नींद; तीर्न्त—नहीं रही; चिन्तैयर्—चिन्तित रहने वालियाँ; चॅय्वतु ओरार्—क्या करना यह नहीं जानतीं; वीणैयुम् कुऴलुम्—वीणा और वंशी; तत्तम् मिटऱुम्—और उनके कण्ठ; वेऱ्ऱुमैयिल् तीर्न्त—परस्पर भिन्न न रहे; पाणि तऴ्ळात—ताल से अवद्ध जो नहीं; पाटल्—वैसे गाने; अमुतु उक—अमृत बरसाते हुए; पाटुवारुम्—जो गाती रहीं उनको। २८२

कुछ स्त्रियाँ वीणा और वंशी के साथ अपने कण्ठ को भी मिलाकर समाँ बँधाकर तालमेल के साथ गा रही थीं। उनके मन में कील के समान रावण-प्रेम गड़ा पड़ा था। विरह-वेदना उनके हृदय को जला रही थी। आँखों से सरिता के समान आँसू बह रहा था। मन दु:खी था। नहीं मालूम हुआ कि क्या किया जाय! तब वे गाने में समय बिताने लगीं। हनुमान ने उनको भी देखा। २८२

तण्डलै वाऴै यन्न कुऱङ्गिडै यल्हुऱ् ऱट्टिल्
कॉण्डपून् दुहिलुङ् गोवैक् कलन्गळुञ् जोरक् कूऱ्ङ्गऴ
उण्डल मन्द कण्णा रूशलिट् टुलावु हिन्ऱ
कुण्डलन् दिरुविल् वीशक् कुरवैयिऱ् कुऴऱु वारुम् 283

कूऱ्म् कऴ्—अति मादक ताड़ी; उण्टु—पीकर; अलमन्त कण्णार्—उससे चञ्चल बनी आँखों वाली कुछ राक्षसियाँ; तण्टलै वाऴै अन्न—बाग के केले के समान; कुऱङ्किटै—ऊरुओं पर; तट्टु अल्कुलिल्—रथ के समान भगों पर; कॉण्ट—पहने हुए; पूम् तुकिलुम्—महीन वस्त्र; कोवै कलन्कळुम्—मेखला आदि आभरण; चोर—शिथिल पड़ जाते; ऊचलिट्टु उलावुकिन्ऱ—झूलते हुए डोलनेवाले; कुण्टलम्—कुण्डल; तिरु विल् वीच—मनोहर आभा विखेरते; कुरवैयिल—"कुरवै" गीत गाते हुए नाचने में; कुऴऱुवारुम्—लड़खड़ाती जो हैं उनको भी। २८३

कुछ स्त्रियों ने खूब मादक ताड़ी पी ली। वे 'कुरवै' नाच गीतों के साथ नाच रही थीं। उनके बाग के केले के पेड़ के समान अपने ऊरुओं और रथ के समान जघन-प्रदेशों पर पहने हुए वस्त्र खिसक गये। मेखला आदि आभरण भी गिर गये। इस स्थिति में वे 'कुरवै' नाच नाचने

लगीं तो उनके कानों के कुण्डल ज़ोर से डोल रहे थे और वे स्वयं लड़खड़ा रही थीं। २८३

नच्चॅन्तक् कॉडिय कण्णार् कळ्ळॊडु कुरुदि नक्किप्
पिच्चरिऱ् पिदऱ्ऱि यल्हुऱ् पूनुदुहिऱ् कलाबम् बीऱ्ऱिक्
कुच्चरित् तिरत्ति नोशै कळङ्गॊळक् कुळ्क्कॊण् डीण्डिच्
चच्चरिप् पाणि कॊट्टि निऱैतडु माऱु वारुम् 284

नच्चु अॅत–विष के समान; कॊटिय कण्णार्–घातक आँखों वाली कुछ राक्षसियाँ; कळ्ळॊटु कुरुति नक्कि–ताड़ी के साथ रक्त चाटकर; पिच्चरिल्–पागल के समान; पितऱ्ऱि–बकती हुई; अल्कुल्–कटि प्रदेश के; पून् तुकिल्–महीन वस्त्रों और; कलापम् पीऱ्ऱि–मेखला को चीरकर; कुच्चरि तिऱत्तित्–'गुर्जर' राग में; ओचै–जो गाती हैं वह ध्वनि; कळम् कॊळ–उनके गलों में निकलता है; कुळ्क् कॊण्टु–समूह बनाकर; ईण्टि–जमा हो; चच्चरि पाणि कॊट्टि–चञ्चरी नामक वाद्य को बजाते हुए; निऱै तटुमाऱुवारुम्–मन में अस्त-व्यस्त रहनेवालियों को भी। २८४

कुछ विष-सी घातक (मादक) आँखों वाली राक्षसियों ने ताड़ी के साथ रक्त भी पी लिया। पागलों के समान बकते हुए उन्होंने अपनी कटि के वस्त्र को और मेखला आदि आभरणों को उतार फेंका। वे सब मिलकर 'गुर्जर' राग में 'चञ्चरी' के वाद्य को बजाते हुए चंचल मन के साथ लड़खड़ा रही थीं। २८४

तयिर्निऱक् कळ्ळुण् डुळळन् दळ्ळत्त मऱिवु तळ्ळप्
पयिरुरत् तॅय्व मॆन्मेऱ् पडिन्ददु पार्मि ॲन्ना
उयिरुयिर्त् तिरण्डु कैयु मुच्चिमे लुयर नीट्टि
मयिर्शिलिर्त् तुडलङ् गूशि वाय्विरित् तोडुङ्गु वारुम् 285

तयिर् निऱ–दही के रंग की; कळ् उण्टु–ताड़ी पीकर; उळ्ळम् तळ्ळ–मन के झूलते; तम् अऱिवु तळ्ळ–विवेक के भ्रमित होते; पयिर् उऱ–पुकार मचाते हुए; तॅय्वम् अॅन् मेल् पटिन्ततु–देव मुझ पर उतर आया है; पार्मिन्–देखो; ॲन्ना–कहकर; उयिर् उयिर्त्तु–लम्बी साँसें छोड़कर; उच्चि मेल्–सिर पर; इरण्टु कैयुम्–दोनों हाथों को; उयर–ऊँचा; नीट्टि–बढ़ाते हुए; मयिर् चिलिर्त्तु–पुलक से भरकर; उटलम् कूचि–शरीर के कम्पन के साथ; वाय् विरित्तु–मुख बाकर; ऑटुङ्कुवारुम्–फिर थकी हो जानेवालियाँ और। २८५

कुछ स्त्रियों ने दही के समान ताड़ी पी ली थी। उनका मन चक्रित हुआ और बुद्धि भ्रमित हो गयी। वे चिल्ला रही थीं— मुझ पर देवता का आवेश हुआ है! देखो। वे लम्बी श्वास छोड़ रही थीं। उनके हाथ सिर के ऊपर बढ़े हुए थे। उनके रोंगटे खड़े हुए थे। शरीर काँप रहा था और मुख खुला। कुछ देर के बाद वे थकी गिर गयीं। २८५

इत्तिरत् तरक्कि मार्ह ळीरिरु कोडि योट्टम्
पत्तियि नुरैयुम् बत्तिप् पडर्नेडुन् देरुवुम् बार्त्तान्
चित्तिय रुरैयुम् माडत् तॆरुवुम्बिन् ताहच् चॆन्ड्रान्
उत्तिशै विज्जै माद रुरैयुळै मुरैयि लुड्रान् 286

इत्तिरत्तु—इस प्रकार ऐसी स्थितियों में; ईरिरु कोटि ईट्टम्—(दो के दो) चार करोड़ की संख्या की; अरक्किमार्कळ्—राक्षसियाँ; पत्तियिन्—रावण के प्रति भक्ति के साथ; उरैयुम्—जिनमें रहती थीं; पत्ति पटर्—उन प्रासादों की पंक्तियों के साथ; नॆट्टुम्-चलनेवाली बड़ी; तॆरुवुम्-वीथी में भी; पार्त्तान्—(हनुमान ने खोजकर) देखा; चित्तियर् उरैयुम्—सिद्धस्त्रियाँ जहाँ रहती थीं; माट तॆरुवुम्—मंज़िल वाले मकानों की वीथी को भी; पिन्ताक—पीछे छोड़कर; चॆन्ड्रान्—(पार करके) गया; उत्तिचै—उस बीच; विज्चै मातर् उरैयुळै—विद्याधरस्त्रियों के वासस्थान को; मुरैयिल्—गमन से सिलसिले में; उड्रान्—जा पहुँचा। २८६

ऐसी स्थिति में रही चार करोड़ राक्षसनारियों के प्रासादों की लम्बी वीथी में हनुमान सीताजी को खोजता हुआ गया। फिर सिद्धस्त्रियों के घरों में ढूँढ़ते हुए उनकी वीथी पार कर आगे गया। उसी दिशा में वह विद्याधरस्त्रियों के प्रासादों में भी गया। २८६

वळर्न्द कादलिन् महळिर्हण् मणिमुडि यरक्कनै वरक्काणार्
तळर्न्द शिन्दैद मिडैयिनुम् नुडङ्गिड वुयिर्कॊडु तडुमारिक्
कळन्द वानॆडुङ् गरुवियिर् कैहळिर् चॆयिरियर् कळैकण्णा
अळन्द पाडल्वॆव् वरवुदञ् जॆविपुह वलम्वर वुयिर्क्किन्ड्रार् 287

मकळिर्कळ्—विद्याधरस्त्रियाँ; वळर्न्त कातलिल्—बढ़े हुए रावण-प्रेम से; मणि मुटि अरक्कनै—रत्नकिरीटधारी राक्षस को; वर काणार्—न आता देख; तळर्न्त चिन्तै—शिथिल हुए मन को; तम् इटैयिनुम् नुटङ्किट—अपनी कमर से भी अधिक काँपने देते हुए; उयिर् कॊटु तटुमारि—प्राण न छोड़कर तड़पतीं; चॆयिरियर्—गानेवालियों के; कळम् तवा—गले के स्वर से अभिन्न; नॆटुम् करुवियिल्—स्वर देनेवाले लम्बे वाद्य (याळ्) में; कळै कण्णा—सहारे के रूप में पकड़कर; कैकळिल् अळन्त पाटल्—उँगली चलाकर जो गीत गाया वह उचित काल-गणित संगीत; वॆव् अरवु—रूपी भयंकर नाग; तम् चॆवि पुक—अपने कानों में जब घुसा तब; अलम् वर—दुःख के होने से; उयिर्क्किन्ड्रार्—ठण्डी आहें भरती हैं। २८७

उधर विद्याधरस्त्रियों की भी हालत देखिए। उनके मन में प्रेम खूब वर्द्धित था। उन्होंने रावण को न आते देख बहुत वेदना का अनुभव किया। उनका मन उनकी कमर से भी अधिक क्षीण होकर काँपने लगा। प्राण तो नहीं गए पर वे अस्त-व्यस्त थीं। तब गानेवाली स्त्रियाँ वीणा का सहारा लेकर कण्ठस्वर के साथ मिलाकर गीत स्वरित कर रही थीं। वह स्वर इनके कानों में नाग के समान घुसा और दुःख पाकर ये ठण्डी आहें भरने लगीं। २८७

पुरियु नन्नॅरि मुनिवरुम् पुलवरुम् पुहलिलाप् पॉरैहूर
ॲरियुम् वॅञ्जिनत् तिहलडु कॉडुन्दिरत् तिरावणर् कॅञ्ञान्रुम्
परियु नॅञ्जिन रिवरॅन वयिर्त्तॊरु पहैयॊडु पनित्तिङ्गळ्
शॊरियुम् वॅङ्गदिर्प् पणैमुलैक् कुवैशुड वमळियिर् रुडिक्किन्रार् 288

पनि तिङ्कळ्–शीतल चन्द्र; इवर्–ये स्त्रियाँ; ॲरियुम् वॅम् चित्तत्तु–आग-से जलनेवाले क्रोध के साथ; इकल् अट्टु–शत्रु का संहार करनेवाले; कॉट्टुम् तिऱत्तु–भयंकर बलशाली; इरावणर्कु–रावण के प्रति; नन्नॅरि पुरियुम्–सत्कार्य ही करनेवाले; मुनिवरुम् पुलवरुम्–मुनि और देवता लोग; पुकल्किला–बिना खोलकर कहे; पॉरै कूर–सहते रहे; ॲञ्ञान्रुम्–सदा; पारियुम् नॅञ्चित्तर्–प्रेम करनेवाले मन की हैं; ॲन्न अयिर्त्तु–ऐसा सन्देह करके; ऑरु पकैयॊट्टुम्–एक शत्रुता के साथ; चॊरियुम् वॅम् कतिर्–जो छिटकाता है वह गरम किरणें; पणै मुलै कुवै–पीन स्तनों के समूहों को; चुट–जलाती हैं; अमळियिल्–शय्या में; तुटिक्किन्रार्–(उस गरमी से) तड़पती हैं। २८८

शीतल चन्द्र को यह गुस्सा था कि ये स्त्रियाँ अग्नि के समान दाहक और वड़े क्रोध के साथ शत्रु का संहार करनेवाले रावण पर सदा प्रेम रखती हैं। उसके द्वारा सत्कार्यरत ऋषि और देवगण अपार कष्ट पाते हैं, पर भय से मुख तक न खोलकर कष्ट सह रहे हैं। अतः वह एक शत्रुता के साथ उनके पीन स्तनों के समूह को अपनी क्रूर किरणों से जला रहा था। वे इससे आहत होकर अपनी-अपनी शय्या में पड़ी तड़प रही थीं। २८८

शिरुहु कालङ्ग ळूळिह ळाम्वहै तिरिन्दुशिन् दनॅशिन्द
मुरुहु कादलिन् वेदनै युळप्पवर् मुयङ्गिय मुलैमुत्रिल्
इरुहु शान्दमु मॅळुदिय कुरिहळु मिन्नुयिर्प् पॉरैयॊर
मरुहु वाट्कणगळ् शिवप्पुर नोक्कितर् मयङ्गिन रुयिर्क्किन्रार् 289

मुरुकु कातलिन्–परिपक्व प्रेम से; चिरुकु कालङ्कळ्–छोटी-छोटी अवधियाँ भी; ऊऴिकळ् आम् वकै–युग दिखें ऐसा; चिन्तनै–मन के; तिरिन्तु चिन्त–बदलकर टूटने पर; वेतनै उळप्पवर्–पीड़ित हो; मुयङ्किय–पहले रावण के साथ संश्लिष्ट जो रहे; मुलै मुत्रिल्–उन स्तनों के तटों में; इरुकु चान्तमुम्–जमा चन्दन; ॲऴुतिय कुरिकळुम्–और बने नखक्षत; इन् उयिर्प्पॉरै ईर–प्यारे प्राणों को चीरते हैं; मरुकु वाळ् कण्कळ्–चंचल और उज्ज्वल नेत्र; चिवप्पु उर–लाल करते; नोक्कितर्–देखतीं; मयङ्कितर्–मोहित होतीं और; उयिर्क्किन्रार्–आहें भरती हैं। २८९

कुछ विद्याधरियों को रावण-विरह में अल्पकाल भी युग के समान लग रहा था। उनका मन टूट गया। रावणालिंगनसुखमुक्त स्तन वेदनाविद्ध हो गये और उन पर का चन्दन-लेप और उन पर पड़े नखक्षत उनके शरीरों को चीर रहे थे। उनके दुःखविलोडित नेत्र लाल हो गये। वे उन आँखों से देखती हुई भ्रमित होकर लम्बी साँसें छोड़ रही थीं। २८९

आय विज्ञ्जैयर् मडन्दैय रुरैविड मारिरण् डमैकोडि
तूय माळिहै नॆंडुन्दॆरुत् तुरुविप्पोय्त् तॊलैविन्मून् रुलहिऱ्कुम्
नाय हऩ्बॆरुङ् गोयिलै नण्णुवान् कण्डऩ नळिर्तिङ्गळ्
माय नन्दिय वाण्मुहत् तॊरुदऩि मयऩ्महण् मणिमाडम् 290

आय–ऐसी; विज्ञ्चैयर् मटन्तैयर्–विद्याधर स्त्रियों का; उऱैविटम्–वासस्थान; आऱिरण्टु कोटि–बारह करोड़; तूय माळिकै अमै–पवित्र प्रासादों को; नॆंटुम् तॆरु–लम्बी सड़क में; तुरुवि पोय्–टटोलते जाकर; तॊलैवु इल्–जो कभी न हारता उस; मून्ऱु उलकिऱ्कुम्–तीनों लोकों के; नायकन्–नायक रावण के; पॆरुम् कोयिलै–बड़े महल को; नण्णुवान्–जा पहुँचा; नळिर् तिङ्कळ्–शीतल चाँद; माय–मरा सा हो जाय, ऐसा; नन्तिय–शोभाशाली; वाळ् मुकत्तु–आभामय मुख की; ऒरु तऩि–अनुपम; मयन् मकळ्–मयसुता के; मणि माटम्–रत्नमय प्रासाद को; कण्टऩन्–देखा (हनुमान ने)। २९०

ऐसी विद्याधरी स्त्रियों के प्रासाद बारह करोड़ थे। उन पवित्र मकानों की वीथी में हनुमान सीताजी को ढूँढ़ता हुआ गया। वह तीनों लोकों का अजेय नायक रावण के महल को जाना चाहता था। उसके पहले वह मयसुता मन्दोदरी के सुन्दर महल में आया। मन्दोदरी ऐसे शोभा-भरे मुख की थी कि शीतल चन्द्र भी उसके सामने लज्जा से मर जाय! । २९०

कण्डु कण्णोडुङ् गरुत्तॊडुङ् गडायिऩऩ् कारणङ् गडैनिऩ्ऱ
दुण्डु वेऱॊरु शिऱप्पॆंङ्ग णायहर् कुयिरिऩु मिऩियाळैक्
कॊण्डु पोऩ्दवऩ् वैत्तदो रुऱैयुळाङ् गुलमणि मऩैक्कॆल्लाम्
विण्डु विऩ्ऱिरु मार्बिऩिऩ् मणियॊत्त दिदुवॆऩ वियप्पुऱ्ऱाऩ् 291

कण्टु–उस महल को देखकर; कण्णोटुम्–आँखों से और; करुत्तॊटुम्–मन से; कटायिऩन्–मापा; वेऱॊरु चिऱप्पु–एक अनोखी विशेषता; उण्टु–(इस प्रासाद की) है; कुल मणि मऩैक्कॆल्लाम्–सभी श्रेष्ठ रत्नमय प्रासादों में; इतु–यह; विण्टुविन्–श्रीविष्णु के; तिरु मार्पिऩिऩ्–श्रीवक्ष की; मणि ऒत्ततु–(श्री कौस्तुभ) मणि के समान है; कारणम् कटै निऩ्ऱतु–उद्देश्य अपनी मंजिल पर आया है; ऎंङ्कळ् नायकर्कु–हमारे नायक की; उयिरिऩुम् इऩियाळै–प्राणों से प्यारी सीताजी को; अवन् कॊण्टु पोन्तु–उसने ले आकर; वैत्ततु–जहाँ रखा है; ओर् उऱैयुळ् आम्–वह स्थान यही है; ऎऩ–ऐसा सोचकर; वियप्पुऱ्ऱान्–विस्मित हुआ। २९१

हनुमान ने उस महल को अपनी आँखों से खूब देखा और मन से उस पर सोच-विचार करने लगा। उसे लगा कि इस महल की अनोखी विशेषता है। मणियों में जैसे श्रीविष्णुवक्ष की श्रीकौस्तुभमणि श्रेष्ठतम है, वैसे यह महल सर्वश्रेष्ठ है। मेरी यात्रा का उद्देश्य यहाँ पूर्ण हो गया। यह वही स्थान है, जहाँ रावण ने हमारे नायक श्रीराम की प्राणों से भी प्यारी सीताजी को लाकर रखा है। हनुमान विस्मयाभिभूत हो गया। २९१

अरम्बै मेन्नहै तिलोत्तमै युरुप्पशि यादिया यवर्कामन्
शरम्बॅय् तूणिपॉर् ट्रळिरडि करन्दॉडच् चामरै तडुमाट्रक्
करुम्बै यिन्शुवै कट्रपित्त शॉल्लियर् कामरङ् गन्निहिन्ट्र
नरम्बि निन्निशै शॅविपुह नाशियिर् कट्पह विरैनाट्र 292

अरम्पै–रम्भा; मेतकै–मेनका; तिलोत्तमै–तिलोत्तमा; उरुप्पचि–उर्वशी; आतियायवर्–आदि अप्सराएँ; कामन् चरम् पॅय् तूणि–कामशरों का पात्र, तूणीर-सी; कणैक्कालिल् विळङ्कुम्–पिंडलियों के नीचे रहनेवाले; पॉन् तळिरटि–सुन्दर पल्लव-चरणों को; करम् तॉट–अपने हाथों से सहला रही थीं; चामरै तट्माट्र–चँवर बारी-बारी से डुल रहे थे; करुम्पै इन् चुवै कट्रपित्त–ईख को जिसने मधुरता सिखा दी; चॉल्लियर्–ऐसी मधुर वाणी बोलनेवाली स्त्रियाँ; कामरम् कन्निकिन्ट्र–'कामर' नामक राग में गाये जानेवाले; नरम्पिन् इन् इचै–(याळ्) तन्त्री से उत्पन्न संगीत; चॅवि पुक–कानों में प्रवेश कर रहा था; नाचियिल्–नाकों में; कट्पक विरै नाट्र–कल्पसुमन की सुगन्धि घुस रही थी। २६२

रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी आदि अप्सराएँ उस स्त्री के कामदेव के तूणीर-सम पिंडलियों-सहित पल्लव-चरणों को सहला रही थीं। चँवर डुल रहे थे। इक्षुरस-सम मधुरवाणी स्त्रियाँ 'कामर' राग में वीणा पर गा रही थीं और उस स्वर को अपने कानों से सुनती हुई और कल्पसुमन की सुगन्धि को नाक से सूँघती हुई वह लेटी हुई थी। हनुमान ने उसको देखा। २९२

विळैवु नीङ्गिय मेन्मैयो रायिनुङ् गीळ्मैयोर् वॅहुळ्वुट्राल्
पिळैहॉ नन्मैहॉल् पॅरुवदॆन् रैयुरु पीळैवोर् पॅरुन्दॅन्ट्रल्
उळैयर् कूवप्पुक् केहॅनप् पॅयर्वदो रूशलि नुळदाहुम्
पळैयम् यामॅनप् पण्बिल शॅय्वरो परिणदर् पयमोर्वार् 293

विळैवु नीङ्किय–वैरागी; मेन्मैयोर् आयिनुम्–श्रेष्ठ लोग हों तो भी; कीळ्मैयोर् वॅकुळ्वुट्राल्–नीच लोग गुस्सा करें तब; पॅरुवतु–जो मिलेगा वह फल; पिळै कॉल् नन्मै कॉल्–बुरा होगा या अच्छा; ऍन्ड्रु–ऐसा; ऐयुरु पीळै पेरल्–संदेह करके दुःखी होते जैसे; पॅरुन् तॅन्ट्रल्–गौरवयुक्त मलयपवन; उळैयर् कव–मन्दोदरी की पास वाली दासियों के बुलाने पर; पुक्कु–प्रवेश करके; एकु ऍन्न–जाओ कहने पर; पॅयर्वतु–लौट जो जाता है वह; ओर् ऊचलिन् उळताकुम्–एक झूले का-सा काम था; परिणतर्–परिपक्व लोग; पयम् ओर्वार्–फल का विचार करके; याम् पळैयम् ऍन्न–हम चिर परिचित हैं, ऐसा समझकर; पण्पु इल–अनुचित काम; चॅय्वरो–करेंगे क्या। २६३

(और भी आश्चर्य की बात देखी।) गौरवमय मलयपवन उसकी दासियों के 'आओ' कहने पर आता, 'जाओ' कहने पर जाता और झूले की तरह पेंग भरता रहता। उसको देखकर उन वैरागी बड़ों का स्मरण हो आता जो नीच लोगों के क्रोध दिखाने पर इस पसोपेश में पड़ जाते

हैं कि इसका फल क्या होगा, अच्छा या बुरा ? परिपक्व लोग भय का नतीजा जानते हैं और परिचितों के साथ भी सतर्क व्यवहार करते हैं ! अनुचित काम नहीं करते । २९३

इऩ्ऩ तऩ्मैयि ऩॆरिमणि विळक्कङ्ग ळॊळिल्हॆडप् पॊलिहिऩ्ऱ
दऩ्ऩ दिऩ्ऩॊळि तळैप्पुऱत् तुयिलुरुन् दैयलैत् तहैविल्लाऩ्
अऩ्ऩ ळाहिय शानहि यिवळॆऩ वयिर्त्तहत् तॆळुवॆन्दी
तुऩ्ऩु तऩ्ऩुयि रुडलॊडु शुडुवदोर् तुयरुळन् दिवैशॊऩ्ऩाऩ् 294

तकैवु इल्लाऩ्–अनवरुद्ध; इऩ्ऩ तऩ्मैयिऩ्–इस तरह; ऎरि मणि विळक्कङ्कळ्–प्रकाश देनेवाले मणि-दीपों के; ऒळिल् कॆट–प्रकाश को मन्द करते हुए; पॊलिकिऩ्ऱतु अऩ्ऩतु–प्रकाश देता है, ऐसा कहने योग्य; इऩ् ऒळि–शरीर की ज्योति; तळैप्पु उऱ–बढ़ी रहती है, इस स्थिति में; तुयिलुरुम् तैयलै–निद्रित रमणी को; इवळ्–यह; अऩ्ऩळ् आकिय–वह; चाऩकि–जानकी है क्या; ऎऩ–ऐसा; अयिर्त्तु–संशय करके; अकत्तु ऎऴु–मन में उठनेवाली; वॆम् ती–भयंकर आग; तऩ् उटलॊटु–अपने शरीर के साथ; तुऩ्ऩु उयिर्–लगी जान को भी; चुटुवतु–जलाती हो ऐसा; ओर् तुयर्–एक वेदना में; उऴन्तु–पड़कर संकट उठाते हुए; इवै चॊऩ्ऩाऩ्–ये बातें कहने लगा । २९४

हनुमान को रोक सकनेवाला कोई नहीं था । वह इस तरह सोनेवाली को देखकर, जिसके शरीर की आभा मणि-दीपों के प्रकाश को निष्प्रभ बनाती हुई फूट रही थी, अनुमान करने लगा कि क्या यह स्त्री देवी सीता होगी ? इस संशय पर उसके मन में आग-सी लग गयी । उसे इतनी पीड़ा हुई कि 'मैं जल रहा हूँ' ऐसा लगा । उस विषम दुःख से पीड़ित होकर वह कहने लगा । २९४

ऎऩ्पु वाऩ्ऱॊडर् याक्कैयार् पॆरुम्बय निऴन्दॆऩ् ऩिदुनिऱ्क
अऩ्पु वाऩ्ऱळै यिऱ्पिऱप् पदऩॊडु मिहन्दुतऩ् ऩरुन्दॆय्वक्
कऱ्पु नीङ्गिय कऩङ्गुऴै यिवळॆऩिऱ् काहुत्तऩ् बुहऴोडुम्
पॊऱ्पुम् याऩुमिव् विलङ्गैयु मरक्करुम् पॊऩ्ऱुदु मिऩ्ऱॆऩ्ऱाऩ् 295

ऎऩ्पु तॊटर्–अस्थिसंकुल; वाऩ् याक्कैयाल्–इस श्रेष्ठ शरीर के लेने से; पॆरुम् पयऩ् इऴन्तॆऩ्–प्राप्य फल खो दिया; इतु निऱ्क–यह एक ओर रहे; इ कऩङ्कुऴै–यह भारी कुण्डलधारिणी; अऩ्पु वाऩ् तळै–प्रेम के पवित्र बन्धन को; अतऩॊटु इल् पिऱप्पुम्–और उसके साथ श्रेष्ठ कुल में जन्म को; इकन्तु–उपेक्षित करके; तऩ् अरुम् तॆय्व कऱ्पुम्–अपने उत्तम दिव्य पातिव्रत से भी; नीङ्कियवळ्–च्युत है; ऎऩिऩ्–तो; काकुत्तऩ् पुकऴोटुम्–काकुत्स्थ के यश के साथ; पॊऱ्पुम्–गौरव की उज्ज्वलता भी; याऩुम्–मैं; इव् इलङ्कैयुम् अरक्करुम्–यह लंका और राक्षस भी; इऩ्ऱु–अभी; पॊऩ्ऱुतुम्–मिट जायेंगे; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा । २९५

यह दृश्य देखकर मेरे अस्थिसंकुल यह शरीर लेने से प्राप्य सौभाग्य

मिट गया। वह एक ओर रहे ! भारी कर्णकुण्डलधारिणी ने श्रेष्ठ प्रेम-बन्धन को, उत्तम कुल में जन्म (के गौरव) को छोड़ दिया और दिव्य पातिव्रत धर्म को भी तिलाञ्जलि दे दी, ऐसा लगता है। अगर यह बात सच हुई तो सब गया— श्रीराम का यश और गौरव; मैं, यह लंका और उसके राक्षस सभी अभी मिट जायँगे। २९५

मानु यर्त्तिरु वडिविन ळवळिवण् मारुहॉण् डनळ्कूरिल्
तानि यक्कियो तानवर् तैयलो वैयुरुन् दहैयानाळ्
कानु यिर्त्तदा रिरामन्मे नोक्किय कादलोन् ड्रदुकाणेन्
मीनु यर्त्तवन् मरुङ्गुरा निरकुमे निनैन्ददु मिहैयॆन्ड्रान् 296

अवळ्-वे; मानुयर्-मानव-स्त्री; तिरु वटिवितळ्-के पवित्र रूप वाली हैं; इवळ्-यह तो; मारु कॊण्टतळ्-भिन्न रूपधारिणी है; कूरिल्-कहें तो; तान्-यह; इयक्कियो-यक्षिणी है; तानवर् तैयलो-दानव-स्त्री है; ऐयुरुम्-ऐसी संशय योग्य; तकैयाताळ्-स्त्री लगती है; कान् उयिर्त्त तार्-सुगन्धित मालाधारी; इरामन् मेल् नोक्किय—श्रीराम पर रखा हुआ; कातल् ऒन्रु अतु काणेन्-कोई प्रेम नहीं देखता; मीन् उयर्त्तवन्-मकरध्वज; मरुङ्कु उरा निरकुमे-पास आये विना रहेगा क्या; निनैन्तु मिकै-हमारा विचार सत्य का उल्लंघन कर गया है; ऎन्रान्-हनुमान ने ऐसा सोचा। २९६

(फिर भी बुद्धिमान उसने गहराई से विचारा और अपना अभिप्राय बदल लिया।) सीता तो मानवशरीरी हैं। यह भिन्न शरीर वाली है। विचारकर कहें तो इसके सम्बन्ध में यही संशय हो सकता है कि यह यक्षिणी है या दानवदयिता ? पुष्पमालाधारी श्रीराम पर प्रेम रहता हो या विरह का अनुभव कर रही हो, ऐसा कोई लक्षण नहीं दिखता ! मकरध्वज इतना निष्क्रिय होकर पास खड़ा रहेगा क्या ? नहीं, नहीं ! यह देवी जानकी नहीं है। मेरा विचार उद्दण्ड था, असत्य था। हनुमान को यही ठीक लगा। २९६

इलक्क णङ्गळुञ् जिलवुळ वॆन्नितु मॆल्लैशॆन् ड्रिरुक्किल्ला
अलक्क णॆय्दुव दणियदुण् डॆन्ड्रॆडुत् तरैहिन्ड्र दिवळ्याक्कै
मलर्क्क रुङ्गुळल् शोर्न्दुवाय् वॆरीइच्चिल मार्ड्रङ्गळ् परैहिन्ड्राळ्
उलक्कु मिङ्गिवळ् कणवनु मळिवुमिव् वियनहर्क् कुळदॆन्ड्रान् 297

चिल इलक्कणङ्कळुम् उळ-और भी कुछ लक्षण हैं; ऎन्नितुम्-तो भी; इवळ् याक्कै—इसका शरीर; ऎल्लै चॆन्रु-सीमा तक जाकर भी; इरुक्कु इल्ला—जिसका अन्त नहीं होगा ऐसे; अलक्कण् ऎय्तुवतु-दुःख की प्राप्ति; अणियतु उण्टु-पास ही है; ऎन्रु-ऐसा; ऎटुत्तु अरैकिन्रतु-साफ़ बताता है; इवळ् मलर् करुङ्कुळल्-इसका पुष्पालंकृत केश; चोर्न्तु—खुला है; वाय् वॆरीइ—जीभ लड़खड़ाती है; चिल मार्रङ्कळ्-कुछ शब्द; परैकिन्राळ्—बोलती है; इवळ् कणवनुम्-इसका

पति भी; इङ्कु उलक्कुम्—यहाँ मरेगा; इ वियन् नकर्क्कुम्—इस विशाल नगर का भी; अऴिवु उळतु—नाश होनेवाला है। २९७

हनुमान ने आगे भी सोचा। इसके पास उत्तम स्त्रीलक्षण कुछ पाये जाते हैं। फिर भी इसके शरीर को देखने पर ऐसा लगता है कि इसके असीम दुःख पाने का समय निकट ही है। इसके पुष्पालंकृत केश अस्त-व्यस्त हैं। जीभ लड़खड़ाती है और कुछ अपशब्द उच्चारण करती है। लगता है कि इसका पति भी शीघ्र यहाँ मर जायगा। इस विशाल नगर का नाश भी निश्चित है। हनुमान ने यह भविष्यवाणी कही। २९७

ऍन्ऱु णरन्दुनिन्ऱ् ऱेमुऱु निनैविन निऱ्कवित् तिऱनॆन्ऩाप्
पिन्ऱु शिन्दैयन् पॅयरन्दन ऩम्मनै पिऱ्पडप् पॅरुमेरुक्
कुन्ऱु यरन्ददऱ् कैयुऱ वोङ्गिय कॊऱ्ऱत्तु मणिक्कोयिल्
शॆन्ऱु पुक्कन ऩिरावणऱ् कॆडुप्परुङ् गिरियॆनत् तिरडोळान् 298

इरावणऱ्कु ऍंडुप्प अरुम्—रावण के लिए उखाड़ने में कठिन; किरि ऍंन—गिरि-सम; तिरळ् तोळान्—पुष्ट कन्धों वाला; ऍंन्ऱु—ऐसा; उणर्न्तु निन्ऱु—(भविष्यवाणी) समझकर खड़ा रहा; एम् उऱु निनैविनन्—सन्तोषयुक्त मन के साथ; इ तिऱन् निऱ्क ऍन्ऩा—यह बात रहे, कहकर; पिन्ऱु चिन्तैयन्—मन को लौटाकर; अ मनै पिऱ्पट—उस महल को पीछे छोड़कर; पॅयर्न्तनन्—आगे गया; पॅरु मेरु कुन्ऱु—बड़ा मेरुपर्वत; उयर्न्ततऱ्कु—(महल के रूप में) उन्नत हो गया क्या; ऐयुऱ—इस तरह संशय दिलाते हुए; ओङ्किय—जो ऊँचा बना था; कॊऱ्ऱत्तु—(रावण के) विजयी और; मणि कोयिल्—रत्नमय प्रासाद; चॆन्ऱु पुक्कनन्—जा पहुँचा। २९८

हनुमान के कन्धे ऐसे पर्वत थे, जिन्हें रावण भी हिला नहीं सके। जब उसे यह भविष्यवाणी सूझी तो उसे सुख हुआ। फिर उस विचार के सिलसिले को, रहे यह, कहकर छोड़ दिया। फिर वह मन्दोदरी का महल त्यागकर आगे गया। फिर रावण के महल में घुसा, जो मणिमण्डित था और इतना ऊँचा था कि भ्रम होता था कि मेरुपर्वत महल के रूप में बढ़ा खड़ा है!। २९८

निलन्दु डित्तन नॆडुवरै तुडित्तन निरुदर्दङ् गुलमादर्
पॊलन्दु डित्तनुण् मरुङ्गुल्पोऱ् कण्गळुम् बुरुवमुम् बॊऱ्ऱोळुम्
वलन्दु डित्तन मादिरन् दुडित्तन तडित्तिन्ऱि मदिवानम्
कलन्दि डित्तन वॆडित्तन पूरण मङ्गलक् कलशङ्गळ् 299

निलम् तुटित्तन—अनेक स्थल कंपित हुए; नॆटु वरै—बड़े पर्वत; तुटित्तन—काँपे; निरुतर् तम् कुलमातर्—राक्षसों की कुलीन स्त्रियों के; पॊलम् तुटित्त—सौन्दर्य-भरे (शरीरों में); नुण् मरुङ्कुल् पोल्—क्षीण कटि के समान; कण्कळुम् पुरुवमुम्—आँखें, भौंहें और; पॊऱ् तोळुम्—सुन्दर कन्धे; वलम् तुटित्तन—दायीं ओर फड़के; मातिरम् तुटित्तन—दिशाएँ काँपीं; मति वानम्—चन्द्र-सहित आकाश के मेघ;

कलन्तु–मिलकर; तटित्तु इन्ऱि–विद्युत् के बिना ही; इटित्तत्त–गरजे; मङ्कल पूरण कलचङ्कळ्–मंगलद्योतक पूर्णकुम्भ; वॅटित्तत्त—आप ही आप टूट गये। २९९

जब वह रावण के महल में प्रविष्ट हुआ तब भूमि के कुछ भागों में कम्पन हुआ। बड़े-बड़े पर्वत हिल उठे। राक्षसियों के बायें अंग, आँखें, भौंहें और मनोरम कन्धे— उनकी कमरों के समान फड़के। दिशाएँ काँप उठीं। चन्द्र-सहित आकाश के घटाटोप से, विना विद्युत् के ही गाजें गिरीं। मंगलकलश स्वतः फूटे। २९९

पुक्कु निन्ऱुदन् पुलन्गॉळ नोक्किनन् पॉरुवरुन् दिरुवुळ्ळम्
नॅक्कु नित्ऱन नीङ्गुमन् दोविन्द नॅडुनहर्त् तिरुवॅन्ना
ॲक्कु लङ्गळिल् यावरे यायिनु मिरुविनै यॅल्लार्क्कुम्
ऑक्कु मूळ्मुऱै यल्लदु वलियदोन् ऱिल्लॅन वुणर्वुऱ्ऱान् 300

पुक्कु निन्ऱु–प्रवेश करके स्थित होकर; तन् पुलन् कॉळ–अपनी बुद्धि को खूब लगाकर; नोक्किनन्–उसको (हनुमान ने) देखा; पॉरुवु अरुम्–अनुपम; तिरु उळ्ळम्–श्रेष्ठ मन; नॅक्कु नित्ऱनन्–पिघला, ऐसा खड़ा रहा; अन्तो–हन्त; इन्त नॅटु नकर्–इस वड़े नगर की; तिरु–श्री; नीङ्कुम्–मिट जायगी; ॲन्ना–ऐसा सोचकर; ॲक्कुलङ्कळिल् यावरे आयिनुम्–किसी भी कुल का कोई भी क्यों न हो; इरु विनै ॲल्लार्क्कुम् ऑक्कुम्–दोनों (पाप व पुण्य) कर्म सब पर समान रूप से लागू होगा; ऊळ् मुऱै अल्लतु–विधि के क्रम को छोड़; वलियतु ऑन्ऱु–बलवान अन्य कुछ; इल्–नहीं है; ॲन–ऐसा; उणर्वुऱ्ऱान्–सोचा। ३००

रावण के प्रासाद में प्रवेश करके हनुमान ने रावण पर खूब दृष्टि गड़ाकर देखा। उसका अनुपम मन पिघल उठा। उसे यह सोचते हुए दुःख हुआ कि हन्त! इस विशाल नगर की सारी श्री और सारे वैभव इसके कारण मिट जायँगे। उसे यह मसल सूझा कि चाहे जो हों, जिस किसी कुल के भी हों, पाप और पुण्य के दोनों कर्म सभी पर समान रूप से अपना प्रभाव डालेंगे ही। विधि के विधान से अधिक बलवान कोई वस्तु नहीं है। ३००

नूऱ्पॅ रुङ्गड नुणङ्गिय केळ्विया नोक्किनन् मऱङ्गूरुम्
वेऱ्पॅ रुम्बडै पुडैपरन् दीण्डिय वॅळ्ळिडै वियन्गोयिल्
पाऱ्पॅ रुङ्गडऱ् पन्मणिप् पः(ह्)ऱलैप् पाप्पिडैप् पडर्वेलै
माऱ्करुङ् गडल् वदिन्ददे यनैयदोर् वनप्पिनिऱ् ऱुयिल्वानै 301

पॅरुङ् कटल्–विशाल सागर-सम; नल्–शास्त्रों का; नुणङ्किय केळ्वियान्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान रखनेवाले ने; मऱम् कूरुम्–वीरता से पूर्ण; वेल् पॅरुम् पटै–भालाधारियों की बड़ी सेना; पुटै परन्तु ईण्टिय–जिसको पार्श्वों से घेरकर ठस खड़ी रही; वॅळ्ळिटै–ऐसे खुले मैदान के मध्य रहनेवाले; वियन् कोयिल्–बड़े राजमहल में; पॅरुम् पाल् कटल्–बड़े क्षीर-सागर मध्य; पल् मणि–अनेक रत्नों के साथ; पल्

तलै पाप्पु इट्टै–अनेक सिरों के पन्नगराज पर; पटर् वेलै–लम्बे किनारे वाले; माल् करुङ्कटल्—बड़ा काला समुद्र; वतिन्तते–पड़ा हो; अत्तैयतु ओर् वत्तप्पिनिल्–ऐसी सुन्दरता के साथ; तुयिल्वात्तै–जो सो रहा था, उसको; नोक्कितन्–देखा। ३०१

हनुमान ने देखा। रावण सो रहा था। हनुमान विशाल सागर-सम शास्त्रों का सूक्ष्म श्रौतज्ञानी था। रावण का बड़ा राजमहल विशाल मैदान के मध्य था। उस मैदान में वीरता में अत्यधिक बढ़े भालाधारी राक्षस महल को घेरे रहकर पहरा दे रहे थे। महल के अन्दर विशाल क्षीरसागर-मध्य अनेक रत्न-सहित फनों वाले नाग पर लम्बे किनारे वाला बड़ा काला सागर फैला पड़ा हो, ऐसे दर्शनीय आकर्षण के साथ रावण सो रहा था। ३०१

कुळवि ञायिऱु कुन्ऱिवर्न् दत्तैयत कुरुमणि नॅडुमोलि
इळैह ळोडुनिन् ऱिळवॅयि लॅरिन्दिड विरवॅन्नुम् बॊरुळवीय
मुळैहॊण् मेरुविन् मुहट्टिडैक् कत्तहत्तै मुरुक्किय मुरट्चीयम्
तळैहॊ डोळॊडुन् दलैपल परप्पिमुन् ऱुयिल्वदोर् तहैयानै 302

कुळवि ञायिऱु–बालसूर्य; कुन्ऱु इवर्न्ततैयत्त–उदयाचल पर चढ़ा हो ऐसे; कुरुमणि नॅट्टु मोलि–रंगीन रत्नों से युक्त बड़े किरीट; इळैकळोटु निन्ऱु–आभरणों के साथ रहकर; इळ वॅयिल्–सुखद प्रकाश; ऍरितुतिट–छिटक रहे थे; इरवु ऍन्नुम् पॊरुळ्–(उससे) रात्रि नामक वस्तु; वीय–मिटी; मुळै कॊळ् मेरुविन्–कन्दराओं से युक्त मेरु के; मुकट्टिटै–शिखर पर; कत्तकत्तै–हिरण्य को; मुरुक्किय मुरण् चीयम्–जिन्होंने मार दिया, वे सशक्त नृसिंह; मुन्–पहले; तळै कॊळ्–अनेक; तोळॊटुम्–कन्धों के साथ; पल तलै परप्पि–अनेक सिरों को रखते हुए; तुयिल्वतोर् तकैयात्तै–सो रहे हों, इस प्रकार सोते रहनेवाले को। ३०२

उदयगिरि पर उगे चन्द्रों के समान श्रेष्ठ रंगों के रत्न-जड़ित मुकुट अन्य आभरणों के साथ मिलकर बालातप-सा प्रकाश बिखेर रहे थे। रात नामक वस्तु 'नहीं' हो रही थी। कन्दरापूर्ण मेरुपर्वत की चोटी पर, कनककश्यप के संहारक नृसिंह-मूर्ति जैसे अनेक भुजाओं के साथ, अनेक हाथों को फैलाये रखकर जो सो रहा था उस रावण को (हनुमान ने देखा)। ३०२

कुळन्दै वॅण्मदिक् कुडुमिय नॅडुवरै कुलुक्किय कुलत्तोळैक्
कळिन्दु पुक्किडै करन्दत्त वत्तङ्गवेळ् कडुङ्गणै पलपाय
उळन्द वॅञ्जमत् तुयर्दिशै यात्तैयि नॊळिर्मरुप् पुऱ्ऱिऱ्ऱ
पळन्द ळम्बिनुक् किडैयिडै येशिल पशुम्बुण्ग ळशुम्बूऱ 303

कुळन्तै वॅण्मति–बालचन्द्र को; कुटुमियन्–सिर पर धारण करनेवाले शिवजी के; नॅट्टुवरै–बड़े पर्वत (कैलास) को; कुलुक्किय–जिन्होंने हिला दिया; कुलत्तोळै–

उन श्रेष्ठ भुजाओं को; कळिन्तु–पार करके; पुक्कु–प्रवेश करके; इटै करन्तत–शरीर में जो छिपे रहे; अनङ्क नेळ् कटुम् कणै–मारदेव के भयंकर शर; पाय–निफर गये; वॅम् चमत्तु उळन्त–भयंकर युद्ध में जो पीड़ित हुए; तिचै उयर् यानैयिन्–उन बड़े दिग्गजों के; ऑळिर् मरुप्पु उऱ्ऱु–उज्ज्वल दाँत गये; इऱ्ऱ–जहाँ टूटे; पळम् तळुम्पितुक्कु इटै इटैये–उन पुराने चिह्नों के बीच-बीच; चिल पचुम्पुण्कळ्–कुछ ताज़े घाव; अचुम्पु ऊऱ–रक्त बहा रहे थे, (इस भाँति सो रहा था रावण, उसे)। ३०३

बालचन्द्रशेखर शिवजी के कैलास को जिन्होंने हिला दिया, उन रावण की भुजाओं को पार कर क्रूर अनंगशर उसके शरीर के अन्दर घुस रहे थे। कठोर युद्ध में रावण ने कभी दिग्गजों को त्रस्त किया था। तब उनके उज्ज्वल दाँत इसके वक्ष में गड़ गये थे। उन दागों के मध्य अब ताज़े घाव लगे थे और उनसे होकर रक्त रिस रहा था। ३०३

आय पॊऱ्ऱलत् तायवळै यरम्बैय रायिर रणिनिन्ऱु
तूय पॊऱ्कव रित्तिर ळियक्किडच् चुळिपडु पचुङ्गाऱ्ऱिऩ्
वीय कऱ्पहत् तेन्ऱुळि विरायन वीऴ्तॊऱु नॆडमेनि
तीय नऱ्ऱॊडिच् चीदैयै निनैतॊरु मुयिर्त्तुयिर् तेय्वानै 304

पॊन् तलत्तु आय–स्वर्णनगरी अमरावती-वासिनी; आय् वळै–श्रेष्ठ कंकणधारिणी; अरम्पैयर् आयिरर्–सहस्र अप्सराएँ; अणि निन्ऱु–पास खड़ी होकर; तूय पॊऱ्कवरित्-तिरळ्–शुद्ध, स्वर्णमूठ वाले चँवर डोल रही हैं; चुळि पटु–उससे वर्तुल उठनेवाले; पचुम् काऱ्ऱिन्–मन्द पवन से; कऱ्पक वीय–कल्पसुमन के; तॆन् तुळि–शहद की बूंदें; विरायत वीळ् तॊऱुम्–जब-जब छितरकर गिरती हैं; नॆटु मेनि तीय–उसका बड़ा शरीर झुलसता है; नल् तॊटि–श्रेष्ठ कंकणधारिणी; चीतैयै निनैतॊऱुम्–सीता का ज्यों-ज्यों स्मरण करता है; उयिर्त्तु–त्यों-त्यों लम्बी साँसें छोड़ते हुए; उयिर् तेय्वानै–जिसके प्राण क्षीण हो रहे थे, उसको। ३०४

स्वर्णनगरी अमरावती की वासिनी और श्रेष्ठ चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराएँ उसके पास खड़े होकर स्वर्णमूठ के चँवर डुला रही थीं। उससे जो घूमकर पवन उठा उससे कल्पसुमन से शहद चूने लगा। ज्यों-ज्यों वे शहद-कण उसके शरीर पर गिरे, त्यों-त्यों उसका शरीर तप्त हो उठा। ज्यों-ज्यों वह सीताजी का स्मरण करता, त्यों-त्यों उसकी ठण्डी आहें निकलीं और उसके प्राण क्षीण होते जा रहे थे। (ऐसे रावण को हनुमान ने देखा)। ३०४

चान्द ळाविय कलवैमेऱ् ऱवळ्वुरु तण्डमिऴ्प् पशुन्दॆन्ऱल्
एन्दु कामवॆङ् गनलिनुक् कुमिळ्तट् टुरुत्तियि नुयिर्प्पेऱक्
कान्दण् मॆन्विरऱ् चन्दहिमेन् मनमुदऱ् करणङ्गळ् कडिदोडप्
पान्द णीङ्गिय मुळैयॆनक् कुळैवुरु नॆञ्जुपाळ् पट्टानै 305

कलवै अळाविय–अनेक गन्धद्रव्य-मिश्रित; चान्तु मेल्–चन्दन के लेप पर; तवळ्वुरु–मन्द-मन्द बहनेवाली; तण् तमिळ् पचुम् तॆन्रल्–शीतल मधुर मन्द दक्षिणी हवा (मलयपवन); एन्तु काम–सही हुई काम रूपी; वॆम् कन्लितुक्कु–गरम आग के लिए; उमिळ् अतळ तुरुत्तियित्–लगनेवाली चमड़े की भाथी की; उयिर्प्पु–हवा के समान; एर–लगने से; मनम् मुतल् करणङ्कळ्–मन आदि अंतःकरण; कान्तळ् मॆन् विरल् चनकि मेल्–'कांदळ' पुष्प-सदृश उँगली वाली देवी जानकी के प्रति; कटितु ओट–दौड़ते हैं, इसलिए; पान्तळ् नीङ्किय–सर्प जिससे बाहर चला गया हो उस; मुळै ऒत–बाँबी के समान; कुळैवुरु नॆञ्चु–दुर्बल हुए हृदय के साथ; पाळ्पट्टान्–छिन्नबल जो हो गया, उसको। ३०५

उसके शरीर पर विविध गन्ध-द्रव्य से मिश्रित चन्दन-लेप पड़ा था। उसके ऊपर से मधुर मलयपवन मन्द-मन्द वहा। वह रावण के अवलम्बित काम की अग्नि के लिए आँधी की हवा के समान लगा। तब उसके मन आदि अन्तःकरण 'कांदळ' के समान उँगली वाली जानकी के पास कूच कर गये। सर्पविहीन बाँबी के समान उसका हृदय सारहीन बन गया। उसका पिघला दिल दुर्बल हो गया। (ऐसा उसको)। ३०५

कॊण्डपे रूक्क मूळत् तिशैदॊरुङ् गुरित्तु मेनाळ्
मण्डिय शॆरुविन् मानत् तोळ्हळाल् वारि वारि
उण्डदु तॆविट्टिप् पेळ्वायक् कडैहडो रॊळुहिप् पायुम्
अण्डर्दम् बुहळ्रिर् रोन्रुम् वॆळ्ळॆयिर् रमैदि यान् 306

कॊण्ट–जो अपनाया; पेर् ऊक्कम्–बड़ा उत्साह; मूळ–और बढ़ा; मेल् नाळ्–प्राचीन दिन; तिचै तॊरुम्–दिशा-दिशा में; कुरित्तु–लक्ष्य बनाकर; मण्टिय चॆरुविन्–घने युद्ध में; मान तोळ्कळाल्–अपनी बड़ी भुजाओं से; वारि वारि उण्टतु–उठा-उठाकर जिसको खाया; पेळ् वाय् तॆविट्टि–बड़ा मुख अघा गया; कटैकळ् तोरुम्–मुख के कोनों से; ऒळुकि–रिसकर; पायुम्–जो बहा; अण्टर् तम् पुकळ्िल्–उस देवों के यश के समान; तोन्रुम्–जो लगे; वॆळ् ऎयिर्रु अमैतियान्–उन श्वेत (वक्र) दाँतों के साथ रहनेवाले को। ३०६

पहले बढ़ते उत्साह के साथ रावण ने दिग्विजय की और सभी दिशाओं में घमासान युद्ध किया। तब अपने बड़े हाथों से उसने उठा-उठाकर विजययश का अशन किया था। वह यश इतने अधिक परिमाण में अन्दर लिया गया कि उसका बहुत बड़ा मुख भी उसको समा नहीं सका और उसके दोनों कोरों से वह बहने लगा। उस यश के समान प्रकट रहे खड्ग दाँतों के साथ वह सो रहा था। (उसको)। ३०६

वॆळ्ळिवॆण् शेक्कै वॆन्दु पॊरियॆळ वॆदुम्बु मेनि
पुळ्ळिवॆण् मॊक्कु ऒन्नप् पॊडित्तुवेर् कॊदित्तुप् पॊङ्गक्

कळ्ळविऴ् मालै तुम्बि वण्डोडुङ् गरिन्दु शाम्ब
ऑळ्ळिय मालै तोय वुयिर्क्किन्ऱ वुयिर्प्पि ऩातै 307

वॅळ्ळि वॅण् चेक्कै–चाँदी के समान श्वेत शय्या; वॅन्तु–झुलसी; पॉऱि ॲळ–अंगारे छूटे; वॅतुम्पुम् मेति–तप्त शरीर में; वेर्–स्वेद; पुळ्ळि–बूँदों में; वॅण् मॉक्कुळ् ॲन्न–श्वेत फफोलों के समान; पॉटित्तु–छिटककर; कॉतित्तु पॉङ्क–उबलकर उभरी; कळ् अविऴ् मालै–मधु-चूती मालाएँ; तुम्पि वण्टॉटुम्–अलियों और भ्रमरों के साथ; करिन्तु चाम्प–जलकर मिटीं; ऑळ्ळिय मालै–उज्ज्वल (मुक्ता-) हार; तोय–झुलस गये; उयिर्क्किन्ऱ उयिर्प्पित्तातै–ऐसा साँस छोड़नेवाले को। ३०७

उसकी शय्या चाँदी के समान श्वेत थी। उसके शरीर के ताप से वह जली और उससे अंगारे छूटने लगे। उसके तप्त शरीर पर स्वेदकण फफोले के समान खिल गये। उनसे गरमी उठी जिससे शहदस्रावी मालाएँ सूखकर राख बनीं। उनके साथ भ्रमर और अलिकुल झुलसे। हार भी राख बन जायँ, ऐसा जो साँसें छोड़ रहा था उसको (देखा हनुमान ने)। ३०७

तेविय ऩेमि यात्तिऱ् चिन्दैमॅय्त् तिरुवि ऩेहप्
पूविय लमळि मेलाप् पॉय्युऱक् कुऱङ्गु वाऩैप्
कावियङ् गण्णि तन्बार् कण्णिय काद ऩीरिन्
आवियै युयिर्प्पॅन्ऩ ऱोदु मम्मियिट् टरैक्किन् ऱातै 308

ते इयल्–दिव्य; नेमियात्तिल्–चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; चिन्तै–मन; मॅय् तिरुविन् एक–सच्ची श्रीसीता की ओर गया; पू इयल् अमळि मेला–पुष्पमय शय्या पर; पॉय् उऱक्कु–झूठी नींद; उऱङ्कुवातै–सोनेवाले को; कावि अम् कण्णि तम् पाल्–नीलकमल-सम आँख वाली के प्रति; कण्णिय कातल् नीरिन्–रखे हुए प्रेम के जल से; आवियै–अपने प्राणों को; उयिर्प्पु ॲन्ऱु ओतुम्–साँस कहलानेवाले; अम्मि इट्टु–सिल पर रखकर; अरैक्किन्ऱातै–जो पीस रहा था, उसको। ३०८

दिव्य चक्रधारी श्रीविष्णु के मन के समान इसका चित्त सच्ची श्री सीताजी के पास चला गया था। वह पुष्पकलित शय्या पर झूठी नींद सो रहा था। नीले कमल के समान आँखों वाली सीता के प्रति प्रेम रूपी जल सींच-सींचकर वह अपने प्राणों को साँस रूपी सिल पर रखकर पीस रहा था। (उसको—)। ३०८

मिहुन्दहै निऩैप्पु मुऱ्ऱ वुरुवळिप् पट्ट वेलै
नहुन्दहै मुहत्तन् काद ऩडुक्कुरु मनत्तन् वाऩ्ऱेन्
उहुन्दहै मॉऴियाण् मुत्ति यॉरुवहै युळ्ळि ऩुळ्ळे
पुहुन्दन ळॆन्ऱो वॅन्ऱु मयिर्पुऱम् बोडिक्किन् ऱातै 309

निऩैप्पु मुऱ्ऱ मिकुम् तकै–(सीता का) स्मरण अधिक होता गया; उरु वऴि पट्ट वेलै–(सीता का) रूप आँखों में लगा तब; कातल्–प्रेम से; नकुम् तकै मुकत्तनु–

सहास मुख वाला; नटुक्कुरु मनत्तन्–कम्पित मन वाला; वाऩ् तेऩ् उकुम् तकै–उत्कृष्ट मधु बरसाती-सी; मॊऴियाळ्–बोली वाली; ऑरु वकै मुन्ऩि–एक तरह से सोचकर; उळ्ळिन् उळ्ळे पुकुन्तनळ् अन्ऱो–अपने मन में घुस गयी है न; ऎन्ऱु–ऐसा सोचकर; पुरम् मयिर् पॊटिक्किऩ्ऱाऩै–बाहर बालों को पुलकित पानेवाले को। ३०९

स्मरण की तीव्रता के बढ़ने से रावण की आँखों के पथ पर सीता का रूप आया। उसका मुख हास के साथ खिल उठा। और मन कम्पित हुआ। उसके रोंगटे खड़े हो गये शायद इस विचार से कि श्रेष्ठ मधुवर्षी बोली वाली वह देवी मेरे अन्दर घुस गयी। ३०९

मॆन्ऱॊऴिऱ् कलाब मञ्ञै वेट्कैमीक् कूर मेलुम्
कुन्ऱॊऴित् तॊरुमाक् कुन्ऱि नरिदिऱ्चेर् कॊळ्है पोल
वन्ऱॊऴिऱ् कॊऱ्ऱप् पॊऱ्ऱोळ् मणन्दिडु मडन्दै मार्हट्
कॊन्ऱॊऴित् तॊन्ऱि नेह वरियदो ळॊऴुक्कि नाऩै 310

मॆल् तॊऴिल्–सूक्ष्म कलात्मकता से पूर्ण; कलाप मञ्ञै–कलाप-सहित मयूर; वेट्कै मी कूर–इच्छा के बढ़ने से; कुन्ऱु ऑऴित्तु–गिरि से उतरकर; मेलुम् ऑरु मा कुन्ऱिन्–और एक बड़े पर्वत पर; अरितिल् चेर् कॊळ्कै पोल–प्रयास करके जाने में असफल रह जाता जैसे; वन् तॊऴिल्–कठिन कार्य करनेवाली; कॊऱ्ऱम्–विजयी; पॊन्तोळ् मणन्तिटुम्–सुन्दर भुजाओं पर आश्रित; मटन्तैमार्कट्कु–स्त्रियों के लिए; ऑन्ऱु ऑऴित्तु–एक को छोड़कर; ऑन्ऱिन् एक–दूसरी पर चढ़ने में; अरिय–दुर्लभ; तोळ् ऑऴुक्कित्ताऩै–भुजाओं की पंक्ति वाले को। ३१०

सूक्ष्म कलापूर्ण कलाप वाला मोर, जब इच्छा होती है तब एक गिरि से उतरकर दूसरे अधिक उच्च पर्वत पर जाने का श्रम करता है, पर असफल रह जाता है। उसी तरह उसकी विजयी और मनोरम भुजाओं की आश्रिता नारियाँ एक भुजा को छोड़कर दूसरी का अवलम्बन लेने में असमर्थ हैं। ऐसी भुजाओं की पंक्ति के स्वामी, उसको (हनुमान ने देखा)। ३१०

तऴुवा निन्ऱ करुङ्गडन्मी दुदय गिरियिऱ् चुडर्तयङ्ग
ऎऴुवा नॆन्न मिन्निमैक्कु मार्बत् तिहऴु मियल्बिऱ्ऱा
मुऴुवा नवरा युलहमॊरु मून्ऱुङ् गाक्कु मुदऱ्ऱेवर्
मऴुवा णेमि कुलिशत्तिन् वाय्मै तुडैत्त वलियाऩै 311

तऴुवा निन्ऱ–अपने (उदयाचल) से लगे रहे; करुम् कटल् मीतु–काले रंग के सागर-मध्य; उतय किरियिल्–उदयाचल पर; चुटर् तयङ्क–किरणों को प्रकाश फैलाने देते हुए; ऎऴुवान् ऎन्न–उगनेवाले सूर्य के समान; मिन् इमैक्कुम्–विद्युत् जैसा चमकनेवाला; मार्पम्–वक्ष; तिकऴुम् इयल्पिऱ्ऱु आ–शोभनेवाला बन; मुऴु वानवराय्–पूर्ण रूप से देवी बनकर; ऑरु मून्ऱु उलकुम्–तीनों लोकों की; काक्कुम्–रक्षा करनेवाले; मुतल् तेवर्–प्रथम त्रिदेवों के; मऴुवाळ्–परशु; नेमि–

सुदर्शन चक्र; कुलिचत्तितृ–कुलिश के; वाय्मै–बल को; तुटैत्त–जिसने मिटाया; वलियात्तै–उस बलिष्ठ रावण को। ३११

रावण का वक्ष आभरणों से भूषित था, जो उसको घेरे लगे रहे काले सागर के मध्य रहनेवाले उदयाचल पर उगे सूर्य के समान आभा बिखेर रहे थे। और उस वक्ष ने पूर्ण देवत्व का भागी तीनों देवों के परशु, चक्र और कुलिश की सच्ची शक्ति को निकम्मा बना दिया था। ऐसे बलवान रावण को हनुमान ने देखा। ३११

तोड्ळुद तार्वण्डुन् दिशैयात्तै मदनुदुदैन्द वण्डुञ् जुऱ्ऱि
माड्ळुद नरुङ्गलवै वयक्कळिऱ्ऱिन् शिन्दुरत्तै माऱु हॉळ्ळक्
कोड्ळुद मार्बात्तैक् कॉलैयुळुद वडिवेलिन् कॉऱ्ऱ मञ्जित्
ताडॉळुद पहैवेन्दर् मुडियुळुद तळुम्बिरुन्द शरणत्तात्तै 312

तार् तोटु–(रावण के वक्ष की) माला के फूलों को; उळुत वण्टुम्–जो कुरेद रहे थे, वे भ्रमर; तिचै यात्तै मतम्–दिग्गजों के मद पर; तुतैन्त वण्टुम्–जो अधिक मँड़रा रहे थे, वे भ्रमर; चुऱ्ऱि–मिलकर मँड़राते हुए; माटु उळुत–पार्श्वों में जिसकी कुरेद रहे थे; नरुम् कलवै–वह चन्दन का लेप; वय कळिऱ्ऱित्–सशक्त गजों के (मस्तक पर मले); चिन्तुरत्तै–सिन्दूर से; माऱुकॉळ्ळ–स्थान बदल ले ऐसा; कोटु उळुत मार्पात्तै–हाथी दाँतों से कुरेदे गये वक्ष वाले को; कॉलै उळुत–संहारक; वटि वेलित्–तीक्ष्ण भाले की; कॉऱ्ऱम् अञ्चि–विजयशीलता से डरकर; ताळ् तॉळुत–पैरों पर जिन्होंने विनय की; पकै वेन्तर्–उन शत्रु राजाओं के; मुटि उळुत–किरीटों के रगड़ने से; तळुम्पिरुन्त–बने चिह्न जिन पर रहे; चरणत्तात्तै–उन चरणों वाले को। ३१२

उसने कभी दिग्गजों से युद्ध किया था। तब उसकी माला के फूलों को जो कुरेद रहे थे वे भ्रमर और दिग्गजों के मदजल पर जो मँड़रा रहे थे वे भ्रमर आपस में स्थान बदलते हुए मँड़राने लगे। तब दिग्गजों के मस्तक के सिन्दूर में और रावण के वक्षःस्थल के चन्दन-लेप में स्थानांतरण हुआ था। ऐसे, दिग्गजों के दाँतों द्वारा जिसका वक्ष खुद गया था उस रावण को; और जिसके चरणों में उसके संहारक तीक्ष्ण भाले से डरकर (उसके चरणों में) पड़े राजाओं के किरीटों के रगड़ने के दाग लगे थे उसे (हनुमान ने देखा)। ३१२

कण्डतन् काण्ड लोडुङ् गरुत्तितुमुन् कालच् चॅन्दी
विण्डत्त कण्गळ् शिन्दि वॅडित्तन्न कोळु मेलुम्
कॉण्डदो रुरुव मायोन् कुऱळितुङ् गुऱुहि नित्ऱान्
तिण्डलै पत्तुन् दोळ्ह ळिरुबदुन् वॅरिय नोक्कि 313

मायोन् कॉण्टतु–मायावी विष्णु ने जो लिया था; ओर् उरुव–उस रूप; कुऱळितुम्–वामन से; कुऱुकि नित्ऱान्–जो छोटा बना रहा; तिण् तलै पत्तुम्–

सुदृढ़ दसों सिर; तोळ्कळ् इरुपतुम्–बीसों कन्धे; तॆरिय–प्रकट; नोक्कि–देखकर; कण्टनन्–समझा; काण्टल् ओटुम्–समझते ही; करुत्तिन् मुन्–उसके मन के पहले ही; कण्कळ्–उसकी आँखें; कीळुम् मेलुम्–नीचे और ऊपर; वॆटित्तन–विस्फारित हुईं; काल चॆम्ती–युगान्तकालीन अग्नि उगलकर; विण्टन–खुलीं। ३१३

हनुमान मायावी श्रीविष्णु के अपनाये वामन-रूप से भी छोटे रूप में था। उसने रावण को दस सिरों और बीस हाथों के साथ पड़ा हुआ देखा तो समझ लिया कि यही रावण है। यह ज्ञान पाते ही उसका मन क्रोध से फूटने लगा। उसके पहले ही उसकी आँखें ऊपर और नीचे विस्फारित हुईं। उनसे लाल आग निकली और वे और भी खुल गयीं। ३१३

तोळाऱ्ऱ लॆन्नाहु मेनिऱ्कुज् जॊल्लॆन्नाम्
वाळाऱ्ऱऱ् कण्णाळै वज्जित्तान् मणिमुडियॆन्
ताळाऱ्ऱ लालिडित्तुत् तलपत्तुन् दहर्त्तुरुट्टि
आळाऱ्ऱल् काट्टेने लडियेनाय् मुडियेने 314

वाळ् आऱ्ऱल्–तलवार की शक्ति का प्रदर्शन करनेवाली; कण्णाळै–आँखों वाली (सीताजी) को; वज्चित्तान्–जो छल से हर लाया; मणि मुटि–उसके रत्न-किरीटों को; ऎन् ताळ् आऱ्ऱलाल्–अपने पैरों के बल से; इटित्तु–छितराकर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; तकर्त्तु–तोड़ गिराकर; उरुट्टि–लुढ़काकर; आळ् आऱ्ऱल्–अपनी पुरुष-शक्ति; काट्टेनेल्–प्रदर्शित नहीं करूँ तो; अटियेनाय्–श्रीराम का दास; मुटियेने–नहीं बनूँगा; तोळ् आऱ्ऱल्–भुजबल; ऎन्न आकुम्–क्या होगा; मेल् निऱ्कुम् चॊल्–आगे का यश-वचन; ऎन् आम्–क्या होगा। ३१४

तैश में आकर हनुमान ने यों सोचा। तलवार की-सी शक्ति रखनेवाली आँखों की स्वामिनी सीतादेवी को छल से हर लानेवाले इसके मणिमय किरीटों को अपने पैरों के बल से ठुकराकर, दसों सिरों को गिराकर भूमि पर लुढ़का न दूँ और इस तरह अपने बल का प्रदर्शन न कराऊँ तो श्रीराम का दास कहाँ रहूँगा मैं! बना नहीं रहूँगा! और मेरा बाहुबल क्या होगा? मेरा भावी यश भी क्या होगा?। ३१४

नडित्तुवाळ् तहैमैयदो वडिमैता नन्नुदलैप्
पिडित्तवा ळरक्कनाऱ् यान्कण्डुम् बिळैप्पारो
ऒडित्तुवान् ऱोळनैत्तुन् दलैपत्तु मुदैत्तुरुट्टि
मुडित्तिव्वूऱ् मुडित्तान्मेन् मुडिन्दवा मुडिन्दॊळिह 315

अटिमै तान्–सेवकाई; नटित्तु वाळ्–बनावटी जीवन के; तकैमैयतो–स्वभाव की है क्या; नन्नुतलै–सुन्दर भाल वाली देवी को; पिटित्त–जो पकड़ लाया; वाळ् अरक्कनार्–क्रूर राक्षस; यान् कण्टुम्–मेरे दृष्टिगोचर होने के बाद भी; पिळैप्पारो–बचा रहे क्या; वान् तोळ् अनैत्तुम् ऒटित्तु–उसकी सभी बड़ी भुजाओं को तोड़कर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; उतैत्तु उरुट्टि–लात मारकर लुढ़काकर; इव्वर्

मुटित्तु–इस नगर का नाश करके; मुटित्ताल्–कार्य पूरा करूँ तो; मेल् मुटिन्तवा–आगे जो होगा; मुटिन्तु ऑऴिक–हो जाय। ३१५

सेवा क्या केवल अभिनय की वस्तु है ? यह क्रूर राक्षस, जिसने सुरम्य भाल वाली देवी को हर लिया, मेरी दृष्टि लगने के बाद भी जी जाए ? उसकी सारी बड़ी भुजाओं को तोड़ दूँगा; उसके सारे सिरों को लात मारकर लुढ़का दूँगा और इस नगर को ही मिटा दूँगा। आगे जो होगा वही हो ! । ३१५

ऍन्ऱूक्कि यॆयिऱुकडित् तिरुहरमुम् बिशैन्दॆऴुन्दु
निन्ऱूक्कि युणर्न्दुरैप्पा नेमिया नरुळन्ऱाल्
ऑन्ऱूक्कि यॊन्ऱिऴैत्त लुणर्वुडैयोर्क् कुरित्तन्ऱाल्
पिन्ऱूक्कि लिवैशालप् पिऴैपयक्कु मॆनप्पॆयर्न्दान् 316

ऍन्ऱु–ऐसा कहते हुए; ऊक्कि–(मन में) उमंग से भरकर; ऍयिऱु कटित्तु–दाँत पीसकर; इरु करमुम् पिचैन्तु–दोनों हाथों को मलकर; ऍऴुन्तु निन्ऱु–ऊँचा खड़ा होकर; ऊक्कि उणर्न्तु–फिर उद्‌बुद्ध हो विचारकर; उरैप्पान्–कहने लगा; ऑन्ऱु ऊक्कि–एक संकल्प करके; ऑन्ऱु इऴैत्तल्–दूसरा कार्य करना; उणर्वुटैयोर्क्कु–समझदारों के लिए; उरित्तन्ऱु–उचित नहीं होगा; नेमियान्–चक्रधारी श्रीराम की; अरुळ् अन्ऱु–आज्ञा भी नहीं; पिन्–फिर; तूक्किल्–तोलकर देखें तो; इवै–ये कार्य; चाल–बहुत; पिऴै–अपराधों को; पयक्कुम्–पैदा कर देंगे; ऍन–सोचकर; पॆयर्न्तान्–(शान्तचित्त हो) कोप छोड़ गया। ३१६

ऐसा कहते-कहते उसका मन उमंग से भर गया। उसने दाँत पीसे और हाथ मले। इस तरह उमड़ने के बाद वह थोड़ा शान्त हुआ। विचार कर कहने लगा कि एक कार्य करने को उत्साह से बढ़ना और मध्य में दूसरे कार्य में प्रवृत्त होना समझदार को नहीं सोहता। यह प्रभु श्रीराम की आज्ञा के अनुसार भी नहीं होगा। सोचकर देखा जाय तो ये कृत्य बहुत ही दुष्ट हैं; अपराध होंगे। तब वह कोप को लाँघ गया। ३१६

आलम्बार्त् तुण्डवन्बो लाऱ्ऱलमैन् दुळरॆनिनुम्
शीलम्बार्क् कुरियोर्ह ळॆण्णादु शॆय्बवो
मूलम्बार्क् कुऱितुलहै मुऱ्ऱुविक्कु मुऱैतॆरिनुम्
कालम्बार्त् तिऱैवेलै कडवादक् कडलीत्तान् 317

चीलम्–शील-चरित्र पर; पार्क्क उरियोर्कळ्–दृष्टि रखने अर्ह लोग; आलम् पार्त्तु उण्टवन् पोल्–हलाहल निकलता देख उसको जिन्होंने खाया, उन शिवजी के समान; आऱ्ऱल् अमैन्तुळर् ऍन्निनुम्–शक्तिमन्त हों तो भी; ऍण्णातु–विचारे विना; चॆय्पवो–कर्म करेंगे क्या; मूलम् पार्क्कुऱिन्–आधार देखना हो तो; उलकै मुऱ्ऱुविक्कुम् मुऱै–लोक-संहार का उपाय; तॆरिनुम्–जानने पर भी; कालम् पार्त्तु–

समय देखकर; वेलै–समुद्र; इऱै कटवातु–उल्लंघन नहीं करता; अ कटल् ऑत्तान्–(हनुमान भी) उसी समुद्र के समान था। ३१७

शील-चरित्र का आचरण करना चाहनेवाले, हलाहल को क्षीरसागर से निकलता देखकर जिन्होंने पी लिया, उसके समान वलयुक्त होने पर भी फल का विचार किये विना कार्य करेंगे क्या ? इस तथ्य का आधार (मिसाल) देखना हो तो समुद्र को देखो। सारे प्रपञ्च को लीलने का सामर्थ्य रखने पर भी सागर समय की प्रतीक्षा करता रहता है और ज़रा भी तीर को पार नहीं करता। हनुमान उस सागर के समान था। ३१७

इऱ्ऱैप्पोर्प् पॅरुञ्जीऱ्ऱ मॅन्नोडु मुडिन्दिडुह
कऱ्ऱैप्पूङ् गुऴलाळैच् चिऱैवैत्त कण्डहनै
मुऱ्ऱप्पोर् मुडित्तदेरु कुरङ्गॅन्ऱान् मुन्नैवीरन्
कॉऱ्ऱप्पोर्च् चिलैत्तॉऴिऱ्कुक् कुऱैयुण्डा मॅनक्कुऱैन्दान् 318

इऱ्ऱै–अब; पोर्–युद्ध का; पॅरुम् चीऱ्ऱम्–बड़ा क्रोध; ऍन्नोटु मुटिन्तिटुक–मुझमें ही दब जाय; पूङ् कऱ्ऱै कुऴलाळै–कोमल घने केश वाली (सीता) को; चिऱै वैत्त–जिसने कारा में बन्द किया; कण्टकनै–उस कंटक को; ऑरु कुरङ्कु–एक वानर ने; मुऱ्ऱ–मिटाते हुए; पोर् मुटित्ततु–युद्ध किया; ऍन्ऱाल्–तो; मुन्नै वीरन्–श्रेष्ठ वीर के; कॉऱ्ऱप् पोर्–विजयदायी युद्ध करनेवाले; चिलै तॉऴिऱ्कु–धनु के कर्म पर; कुऱै उण्टाम्–बट्टा लगेगा; ऍन–सोचकर; कुऱैन्तान्–कोप को शान्त कर लिया। ३१८

अब जो युद्ध करने का बड़ा कोप मुझमें उठा वह मुझी में दब जाए ! सौम्य और घने केश वाली सीताजी को जिसने कारागृह में बन्द कर रखा, उस कण्टक को एक छोटे वानर ने मिटाते हुए युद्ध किया तो योद्धा वीर श्रीराम के युद्ध विजयशील धनु पर बट्टा लग जायगा। इस विचार से उसका कोप शान्त हो गया। ३१८

अन्निलैयान् पॅयर्न्दुरैप्पा नाय्वळैक्कै यणियिऴैयार्
इन्निलैया नुडनुऱैयिल्वा रुळरल्ल रिवन्निलैयुम्
पुन्निलैय कामत्ताऱ् पुलर्हिन्ऱ निलैपूवै
नन्निलैयि नुळळॅन्नु नलनॅनक्कु नल्हुमाल् 319

अन् निलैयान्–वैसी स्थिति का; पॅयर्न्तु उरैप्पान्–फिर भी बोला; आय् वळैकै–चुने हुए कंकणधारी हस्तों की; अणि इऴैयार्–और सुन्दर आभरणभूषिता स्त्रियाँ; इन् निलैयान् उटन्–इस स्थिति वाले के पास; तुयिल्वार् उळर् अल्लर्–सोती नहीं रहतीं; इवन् निलैयुम्–इसकी स्थिति भी; पुल् निलैय कामत्ताल्–अल्प काम-वासना से; पुलर्किन्ऱ निलै–सूखने की दशा है; पूवै–चिड़िया-सी सीता; नल् निलैयिल् उळळ्–कुशल-स्थिति में है; ऍन्नुम् नलन्–यह संतोष-समाचार; ऍनक्कु नल्कुम्–मुझे दे रही है। ३१९

उस (शान्त) स्थिति में खड़ा रहा वह आगे यों बोला। चुने हुए कंकणों की धारिणी और आभरणभूषिता स्त्रियाँ इसके साथ सोती नहीं। इसकी स्थिति भी घृणायोग्य कामताप से तपनेवाली स्थिति है और यह बता रही है कि चिड़िया-सी सीता स्वस्थ दशा में हैं। ३१९

ऍऩ्ऱॅण्णि यीण्डिऩियोर् पयऩिल्लै यॅऩ्ऩिनैयाक्
कुऩ्ऱऩ्ऩ तोळवऩ्ऱऩ् कॉडुङ्गोयिऱ् पुऱङ्गॉण्डाऩ्
निऩ्ऱॅण्णि युऩ्ऩुवा ऩन्दोविऩ् नॅडुनहरिल्
पॊऩ्ऱुऩ्ऩु मणिप्पूणा ळिलळॅऩ्ऩप् पॊरुमुवाऩ् 320

ऍऩ्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; इति ईण्टु–अब यहाँ; ओर् पयऩ् इल्लै–कोई काम नहीं; ऍऩ नितैया–ऐसा सोचकर; कुऩ्ऱु अऩ्ऩ–पर्वत-सम; तोळवऩ् तऩ्–भुजाओं वाले रावण के; कॉटुङ् कोयिल्–गोलाकार महल को; पुऱम् कॉण्टाऩ्–छोड़ जाकर; निऩ्ऱु ऍण्णि–खड़ा होकर सोचने; उऩ्ऩुवाऩ्–विचारने लगा; अन्तो–हंत; इ नॅटु नकरिल्–बड़े नगर में; पॊऩ् तुऩ्ऩुम्—स्वर्ण में जड़ित; मणि पूणाळ्–रत्नमय आभरण-भूषिता; इलळ्–नहीं है; ऍऩ्ऩ–यह सोचकर; पॊरुमुवाऩ्–दुःख से भर गया। ३२०

इस तरह विचार करके उसने निश्चय किया कि अब यहाँ रहने से कोई लाभ नहीं। वह पर्वत-सम भुजा वाले रावण के गोलाकार महल को छोड़कर आगे गया। फिर चिन्ता उसे सताने लगी। हन्त! शायद इस विशाल नगर में स्वर्ण-रत्न आभरणधारिणी सीताजी नहीं हैं। उसके मन में दुःख उमड़ आया। ३२०

कॊऩ्ऱाऩो कऱ्पळियाक् कुलमहळैक् कॊडुन्दॊळिलाल्
तिऩ्ऱाऩो वप्पुऱत्तो शॅऱित्ताऩो शिऱैयऱियेऩ्
ऑऩ्ऱाऩु मुणरहिलेऩ् मीण्डिऩिप्पो यॅऩ्ऩुरैक्केऩ्
पॊऩ्ऱाद पॊळ्दॆऩक्किक् कॊडुन्दुयरम् बोहादाल् 321

कऱ्पु अळिया–अच्युतचरित्रा; कुल मकळै—श्रेष्ठ कुल-जाता सीता को; कॊटुम् तॊळिलाल्–क्रूर घातक कर्म करके; कॊऩ्ऱाऩो–मार दिया क्या; तिऩ्ऱाऩो–खा लिया क्या; अ पुऱत्ते–उधर दूर पर; चिऱै चॅऱित्ताऩो–जेल में डाल दिया क्या; अऱियेऩ्–जान नहीं पाता; ऑऩ्ऱातुम् उणरकिलेऩ्–किसी भी विध समझ नहीं सकता; इति–आगे; मीण्टु पोय्–लौट जाकर; ऍऩ् उरैक्केऩ्–क्या बताऊँ; इ कॊटुम् तुयरम्–यह कठोर दुःख; पॊऩ्ऱात पॊळ्तु–नहीं मरने पर; ऍऩक्कु पोकातु–मुझसे दूर नहीं होगा। ३२१

(हनुमान पसोपेश में पड़ गया। उसे सन्देह होने लगा।) क्या रावण ने अच्युतशीला श्रेष्ठकुलकन्या सीताजी की हत्या करके मिटा दिया? या उसे खा लिया? या उनको सुदूर कहीं बन्द कर रखा है? कुछ समझ में नहीं आता, जान नहीं पाता। जानने का कोई मार्ग भी

नहीं दीखता ! अब लौट जाकर मैं क्या कहूँगा ? यह असफलता का दुःख मेरे मरे विना मुझे नहीं छोड़ेगा । ३२१

कण्डुवरु मॆऩ्ऱिरुक्कुङ् गाहुत्तऩ् कविक्कुलक्कोऩ्
कॊण्डुवरु मॆऩ्ऱिरुक्कुम् याऩ्मुडित्त कोळिदुवाल्
पुण्डरिह नयऩत्ताऩ् बालिऩियाऩ् पोवेऩो
विण्डवरो डुडऩ्वीया दियाऩ्वाळा विळिवेऩो 322

काकुत्तऩ्–काकुत्स्थ श्रीराम; कण्टु वरुम्–देख आएगा; ॲऩ्ऱु इरुक्कुम्–ऐसा सोचते रहेंगे; कवि कुल कोऩ्–कपिकुलपति; कॊण्टु वरुम्–सीता को लिवा लायगा; ॲऩ्ऱु इरुक्कुम्–यह सोचते रहेंगे; याऩ् मुटित्त कोळ्–पर जो मैं कर चुका वह अनर्थ; इतु–यही है; पुण्टरिक नयऩत्ताऩ्–पुण्डरीकाक्ष; पाल्–के पास; याऩ् इऩि पोवेऩो–मैं अब जाऊँ क्या; विण्टवरोटु–जो मुझे कहकर इधर भेज चुके उनके साथ; याऩ्–मैं; उटऩ् वीयातु–समकाल में मरे विना; वाळा–वृथा; विळिवेऩो–मरूँ क्या । ३२२

काकुत्स्थ श्रीराम यही सोचते रहेंगे कि मैं सीताजी को देखकर समाचार लाऊँगा । वानरकुलपति सोचते होंगे कि मैं सीताजी को लिवा लाऊँगा । पर मेरा किया हुआ अनर्थ यही है ! पुण्डरीकाक्ष श्रीराम के पास जाऊँ ? जिन्होंने मुझे साहस के वचन कहकर यहाँ भेजा उन वानर यूथपों के साथ मैं नहीं मरा । अब अकेले व्यर्थ मर जाऊँगा क्या ? । ३२२

कण्णियनाळ् कळिऩ्दुळवाऱ् कण्डिलॆऩ्ऱाऱ् कऩङ्गुळैयै
विण्णडैदु मॆऩ्ऱारै याण्डिरुत्ति विरैन्दयाऩ्
ॲण्णियदु मुडिक्कहिलेऩ् याऩ्मुडिया दिरुप्पेऩो
पुण्णियमॆऩ् ऱॊरुपॊरुळॆऩ् ऩुळ्ळॆनिऩ्ऱुम् बोयदाल् 323

कण्णिय नाळ्–निर्धारित दिन; कळिन्तुळ–बीत गये; कऩङ्कुळैयै कण्टिलॆऩ्–भारी कुण्डलधारिणी को देख नहीं पाया; विण् अटैतुम् ॲऩ्ऱारै–जो वहाँ स्वर्ग जाना (मरना) चाहते थे उन्हें; याण्टु–वहाँ; इरुत्ति–ठहराकर; विरैन्त–जो यहाँ शीघ्र आया; याऩ्–वह मैं; ॲण्णियतु मुटिक्ककिलेऩ्–सोचा पूरा नहीं कर सका; याऩ् मुटियातु इरुप्पेऩो–मैं मरे विना रहूँ; पुण्णियम् ॲऩ्ऱु ऑरु पॊरुळ्–पुण्यभाग्य नाम की एक वस्तु; ॲऩ् उळ्ळै निऩ्ऱुम्–मेरे पास से; पोयतु–हट गयी । ३२३

सुग्रीव द्वारा निर्धारित दिन बीत गये । भारी कुण्डलधारिणी सीताजी के दर्शन नहीं हुए । महेन्द्र पर्वत पर वानर वीर मरने को उद्यत हुए । मैंने उनको वहीं रोका और मैं इधर शीघ्र आया । पर मैं अपने कार्य में असफल हो गया । मैं अपना अन्त किये विना रहूँगा क्या ? पुण्य-भाग्य नाम की वस्तु मेरे पास से दूर हो गयी । ३२३

एऴ्नू ऱोशऩैशूऴ्न् दॆयिल्हिडन्द विव्विलङ्गै
वाऴ्मा मऩ्ऩऩियर्याऩ् काणाद मऱ्ऱिल्लै

ऊऴियान् पॅरुन्देवि यॊरुत्तियुमे यान्गाणन्
आऴिता यिडराऴिक् किडॅयेवीऴ्न् दऴिवेनो 324

एऴु नूऱु ओचनै-सात सौ योजन; चूऴ्न्तु-घेराव के; ॲयिल्-प्राचीर के साथ; किटन्त-रहनेवाले; इ इलङ्कै-इस लंका नगर में; वाऴुम्-जीनेवाले; मा मन् उयिर्-श्रेष्ठ नित्य जीवन के प्राणियों में; यान् काणात इल्लै-जो मैंने नहीं देखा, वह कोई नहीं है; ऊऴियान्-युगान्त के बाद भी रहनेवाले देव की; पॅरुन् तेवि ऑरुत्तियुमे-आदरणीय देवी एक को; यान् काणेन्-मैंने नहीं देखा; आऴि ताय्-(जल का) समुद्र लाँघकर; इटर् आऴिक्कु इटॅये-दुःख के समुद्रमध्य; वीऴ्न्तु अऴिवेनो-गिरकर मर जाऊँगा क्या। ३२४

सात सौ योजन लम्बे प्राचीर के अन्दर रहनेवाली इस लंका नगरी के जीवों में कोई नहीं बचा, जिसको मैंने नहीं देखा हो ! पर युगान्त में अमर रहनेवाले श्रीराम की आदरणीया देवी, एक ही दृष्टि में नहीं आयीं। जल का समुद्र पार करके दुःख-सागर में गिरकर मर जाऊँगा क्या ?। ३२४

वल्लरक्कन् ऱनैप्पऱ्ऱि वाय्पत्तुङ् गुरुदिवरक्
कल्लरक्कुङ् गरदलत्ताऱ् काट्टॆन्ऱु काण्गेनो
ॲल्लरक्कु मयिलाऱ्वे लिरावणनु मिव्वूरुम्
मॆल्लरक्कि नुरुहिविऴ वॆन्दऴलिट् टेहेनो 325

वल् अरक्कन् तनै-क्रूर राक्षस को; कल् अरक्कुम्-चट्टान को चूर कर सकनेवाले; कर तलत्ताल्-करतल से; वाय् पत्तुम्-दसों मुखों से; कुरुति वर-रक्त बहता आए ऐसा; पऱ्ऱि-पकड़कर; काट्टु ऍन्ऱु-दिखाओ उन्हें, कहकर; काण्केनो-नहीं देखूँ क्या; ॲल्-सूर्य को; अरक्कुम्-त्रास देनेवाले; अयिल् आर्-तीक्ष्णता से युक्त; वेल् इरावणनुम्-भालाधारी रावण और; इ ऊरुम्-यह नगर; मॆल् अरक्किन्-कोमल लाख के समान; उरुकि विऴ-पिघलकर गिर जाएँ ऐसा; वॆम् तऴल् इट्टु-गरम आग लगाकर; एकेनो-नहीं जाऊँगा क्या। ३२५

कितना चाहता हूँ कि पर्वत-चूर्णकारी अपने हाथों से निर्मम राक्षस रावण को उसके मुखों से रक्त बहने देते हुए पकड़ूँ और कहूँ कि सीताजी को दिखाओ और उसके दिखाने पर देवी को देख लूँ ! सूर्य को भी अपनी चमक से कष्ट देनेवाले तीक्ष्ण भाले के धारक रावण को और इस नगर को क्या आग लगा देकर नहीं जाऊँगा, ताकि वे लाख के समान पिघलकर गिर जाएँ ?। ३२५

वानवरे मुदलोरै विनवुवॆनेल् वल्लरक्कन्
तानॊरुव नुळनाह वुरॆशॆय्युन् दरुक्किलराल्
एनैयव रॆङ्गुरैप्पा रॆव्वण्णन् दॆरिक्केनो
ऊनॊऴिय नीङ्गाद वुयिर्शुमन्द वुणर्विलियेन् 326

ऊन् ऑऴिय-यह शरीर छूट जाए ऐसा; नीङ्कात-जो नहीं जाता; उयिर्-

उस जान को; चुमत्त—जो ढो रहा हूँ; उणर्विलियेन्—वह भावहीन मैं; वात्तवरे मुतलोरै—देवों आदि से; वित्तवुवेंत्तेल्—पूछूँ तो; वल् अरक्कन् तान्—कठोर राक्षस; ओरुवन्—एक; उळन् आक—जब रहता है तब; उरै चेयुम् तरुक्कु इलर्—उनमें उत्तर देने का साहस नहीं; एत्तैयवर्—अन्य कोई; एंङ्कु उरैप्पार्—कहाँ बताएँगे; एव् वण्णम् तेरिक्केत्तो—कैसे जान पाऊँगा। ३२६

मेरा शरीर नहीं छूटता। प्राण नहीं निकलते और मैं उन्हें व्यर्थ ढो रहा हूँ। निर्लज्ज मैं देवों से पूछूँ तो उनमें क्रूर राक्षस की उपस्थिति में सच्ची बात बताने का साहस नहीं रहेगा। फिर और कोई कहाँ कहेंगे? फिर मैं कैसे जान लूँगा? । ३२६

एरुवैक्कु मुदलाय शम्बादि यिलङ्गैयिलत्
तिरुवैक्कण् डत्तेन्ऱा तवनुरैयुञ् जिदैन्ददाल्
करुवैक्कु नेंडुनहरैक्. कडलिडैये करैयादे
उरुवैक्कोण् डिन्नमुना नुळैन्ताहि युळल्वेन्तो 327

एरुवैक्कु मुतलाय—गीधों के अधिपति; चम्पाति—सम्पाति (ने); अ तिरुवै—उन श्री को; इलङ्कैयिल् कण्टत्तेन्—लंका में देखा; एन्ऱान्—कहा; अवन् उरैयुम् चितैन्ततु—उसका वचन वृथा हो गया; करु वैक्कुम् नेंटु नकरै—(ब्रह्मा द्वारा) जिसकी रत्न-गर्भ-नेमि-क्रिया की गयी उस बड़े नगर को; कटलिटैये करैयाते—समुद्र के बीच में गलाये विना; नान्—मैं; इन्नमुम्—अब भी; उरुवै कोण्टु उळन् आकि—अपना शरीर धारण करनेवाला बना; उळल्वेन्तो—कष्ट उठाता रहूँ क्या। ३२७

गीधों के नायक सम्पाती ने तो कहा था कि मैंने सीताजी को लंका में देखा है। उसका कहा भी झूठा हो गया है। ब्रह्मदेव ने नीवँ के "गर्भ" में रत्न आदि रखने का रस्म अदा करके इस नगर की सृष्टि करायी थी। इस नगर को समुद्र में गलाये विना मैं अपना शरीर ढोता हुआ दुःख करता फिरूँगा क्या? ("करु वैक्कु" के गर्भ रखकर; गर्भ में रख कर दोनों अर्थ हैं। "नीवँ" डालते समय रत्न, स्वर्ण आदि रखकर उसके ऊपर दीवार चुनना प्रचलित है। उसके आधार पर इस पद्य में हमने ब्रह्मा द्वारा "गर्भ" न्यास का अर्थ किया है। अपने गर्भ में यानी अपने अन्दर सुरक्षित स्थान में जो लंका नगर सीताजी को रखता था उस नगर को—यह अर्थ भी संगत है ही।) । ३२७

वडित्तारपूङ् गुऴलाळै वानरिय मणणरियप्
पिडित्तानिव् वडलरक्क नेन्नुमाऱ्ऱम् बिऴैयादाल्
अँडुत्ताऴि यिलङ्गैयिनै यिरुङ्गडलि निट्टिवनै
मुडित्ताले यान्मुडिदन् मुऱैमन्ऱ वेन्ऱुणर्वान् 328

वटित्तु आर्—सजाए-सँवारे; पूङ् कुऴलाळै—मनोरम केश वाली सीता को;

इ अटल् अरक्कन्–इस बलिष्ठ राक्षस ने; वान् अरिय–स्वर्ग के लोक के जानते; मण् अरिय–भूलोक के जाने; पिटित्तान्–ग्रस लिया; अँतुम् माऱ्ऱम्–यह प्रवाद; पिळैयातु–झूठा नहीं होगा; आऴि इलङ्कैयिनै–समुद्रवलयित लंका को; अँटुत्तु–उत्पाटित कर; इरुम् कटलिन् इट्टु–विशाल सागर में डालकर; इवनै मुटित्ताले–इसका अन्त करूँ, तभी; यान् मुटितल्–मेरा मरना; मन्ऱ मुऱै–उत्तम क्रम होगा; अँनुरु उणर्वान्–ऐसा विचार किया। ३२८

सँवारे-सँजोये सुन्दर केश वाली सीताजी को यह बलिष्ठ राक्षस देवों के और भूलोकवासियों के जाने, ग्रस लाया था। यह अपवाद दूर नहीं होगा। इसलिए समुद्रमध्य लंका को उखाड़ लेकर समुद्र में फेंक कर इसको भी मारकर मिटा दूँ तभी जाकर अपना अन्त कर लूँ, यही श्रेष्ठ मार्ग है। ३२८

अॅळ्ळुऱैयु मॊऴियामल् याण्डैयिनु मुळनाहि
उळ्ळुऱैयु मॊरुवनैप्पो लॅम्मरुङ्गु मुलाविनान्
पुळ्ळुऱैयु मानत्तै युऱनोक्किप् पुऱम्बेर्वान्
कळ्ळुऱैयु नऱुञ्जोलै ययलोन्ऱु कण्णुऱ्ऱान् 329

अॅळ् उऱैयुम्–तिल जहाँ रह सकता है, उस छोटे स्थान को भी; ऑऴियामल्–बिना छोड़े; याण्टैयितुम्–सर्वत्र; उळनाकि–विद्यमान होकर; उळ् उऱैयुम् ऑरुवनैप् पोल्–अन्तर्यामी की तरह; अॅ मरुङ्कुम् उलावित्तान्–सब स्थानों में घूमा; पुळ् उऱैयुम्–जहाँ पक्षी रहे; मानत्तै–एक चैत्य को; उऱ नोक्कि–ध्यान से देखकर; पुऱम् पेर्वान्–बाहर जो आया; कळ् उऱैयुम्–शहद जहाँ था; नऱुम् चोलै ऑन्ऱु–ऐसे सुगन्धपूर्ण एक उद्यान को; अयल्–पास में; कण् उऱ्ऱान्–(उसने) देखा। ३२६

वह अन्तर्यामी श्रीराम के समान तिल रखने का उतना स्थान भी नहीं छोड़कर सर्वत्र घूमकर आया। फिर एक चैत्य में गया जिसके गुम्बज में पक्षी रहते थे और उसे ध्यान से देखने के बाद बाहर गया। वहाँ उसके पास उसने एक उपवन को देखा, जो शहद और सुबास से भरा था। ३२९

3. काट्चिप् पडलम् (सीता-दर्शन पटल)

माड् निन्ऱवम् मणिमलर्च् चोलैयै मरुवित्
तेडि यिव्वळिक् काण्बॅनेल् ऱीरुमॅन् शिऱुमै
ऊडु कण्डिलॅ नॅन्ऱपि नुरियदोन् ड्रिल्लै
वीडு वॅन्मर्ऱिव् विलङ्गन्मे लिलङ्गैयै वीट्टि 330

माटु निन्ऱ–पार्श्व में स्थित; अ मणि मलर् चोलैयै–उस सुन्दर पुष्पोद्यान को; मरुवि–जाकर; इ वऴि तेटि–यहाँ खोजकर; काण्पॅनेल्–देखूँगा तो; ॲन् चिऱुमै–मेरा दुःख; तीरुम्–दूर होगा; ऊटु–उसके अन्दर; कण्टिलॅन् ॲन्ऱाल् पिन्–नहीं देख पाया तो फिर; इ विलङ्कल् मेल् इलङ्कैयै–इस पर्वत पर की लंका को; वीट्टि–

नाश करके; वीटुवॅन्-मैं भी मर जाऊँगा; मट्रु-और; उरियतु-करने योग्य; ऑन्ड्रु-कुछ; इल्लै-नहीं। ३३०

हनुमान (चैत्य के) पास रहे उस वन में गया। उसने सोचा कि मैं यहाँ खोजूँगा। अगर देवी मिल गयीं तो मेरा कष्ट दूर हो जायगा। नहीं तो त्रिकूट पर्वतस्थ इस लंका को मिटाकर मैं भी खुद अपना अन्त कर लूँगा। कोई मेरा दूसरा करने योग्य कार्य नहीं है। ३३०

ऍन्ड्रु शोलैपुक् कॅय्दिन निराहवन् ड्रूदन्
ऑन्ड्रि वानवर् पूमळै पॉळिन्दन रुवन्दार्
अन्ड्रु वाळरक् कन्शिऱै यव्वळि वैत्त
तुन्ड्र लोदितन् निलैयिनिच् चॉल्लुवान् ड्रुणिन्दाम् 331

ऍन्ड्रु-ऐसा निश्चय करके; इराकवन् तूतन्-श्रीराघव का दूत; चोलै पुक्कु-उद्यान में पहुँच; ऍय्तितन्-गया; वानवर्-देव; ऑन्ड्रि-जमा होकर; पू मळै-पुष्पवर्षा; पॉळिन्तनर्-करके; उवन्तार्-नन्दित हुए; वाळ् अरक्कन्-तलवार-धारी राक्षस रावण ने; अन्ड्रु-उस दिन; अ वळि-वहाँ; चिऱै वैत्त-जिनको बन्दी बनाकर रखा था; तुन्ड्रु अल् ओति तन्-घने काले केश वाली की; निलै-स्थिति; इनि-अब; चॉल्लुवान् तुणिन्ताम्-कहने को ठाना (हमने)। ३३१

प्रभु श्रीराघव का दूत हनुमान ऐसा सोचकर उस उद्यान में जा पहुँचा। सभी देवों ने मिलकर उस पर फूल बरसाये। और वे हर्षित हुए। हम (कवि) अब उन घने अन्धकार-सम केश वाली सीताजी का हाल बयान करने का साहस करते हैं, जिन्हें तलवारधारी रावण ने उस उपवन में बन्दी बना के रखा था। (साहस करना पड़ता है इसलिए कि देवी का दुःख असह्य है।)। ३३१

वन्म रुङ्गिल्वा ळरक्कियर् नॅरुक्कवङ् गिरुन्दाळ्
कन्म रुङ्गॅळुन् दॅन्ड्रुमोर् तुळिवरक् काणा
नन्म रुन्दुपो नलनऱ वुणङ्गिय नङ्गै
मॅन्म रुङ्गुल्पोल् वेऱुळ वङ्गमु मॅलिन्दाळ् 332

कल् मरुङ्कु-पत्थर में; ऍळुन्तु-उगकर; ऍन्ड्रुम्-कभी भी; ओर् तुळि-(जल की) एक बूँद भी; वर काणा-आती जो न देखती; नल् मरुन्तु पोल्-उस श्रेष्ठ ओषधि के समान; नलन् अऱ-सुभीते से रहित; उणङ्किय-जो मुरझायी रहीं; नङ्कै-देवी; मॅल् मरुङ्कुल् पोल्-क्षीण कमर के समान; वेऱु उळ अङ्कमुम्-अन्य अंगों में भी; मॅलिन्ताळ्-क्षीणता पाकर; मरुङ्किल्-पास में; वल्-कठोर; वाळ्-तलवारधारिणी; अरक्कियर् नॅरुक्क-राक्षसियों के त्रास देते; अङ्कु इरुन्ताळ्-वहाँ रहीं। ३३२

देवी उस श्रेष्ठ ओषधि के समान मुरझायी हुई थीं, जो पत्थर के

मध्य उगी थी और जिसे जल की एक बूँद भी देखने का भाग्य नहीं हुआ था। विगतसौन्दर्य उन देवी के सारे अंग उनकी ही कमर के समान क्षीण हो गये थे। उनके पास चारों ओर कठोर और तलवारधारिणी निशाचरियाँ रहकर उनको त्रास दे रही थीं। देवी उस स्थिति में पायी गयीं। ३३२

तुयिलॅ तक्कणग ळिमैत्तलु मुहिऴ्त्तलुन् दुऱन्दाळ्
वॅयिलि डैत्तन्द विळक्कॅन वॊळियिला मॅय्याळ्
मयिलि यऱ्कुयिऩ् मऴलैयाण् माऩिळम् बेडै
अयिलॅ यिऱ्ऱुवॅम् बुलिक्कुऴात् तहप्पट्ट दऩ्ऩाळ् 333

तुयिल् ऍऩ–नींद के नाम पर; कण्कळ् इमैत्तलुम्–पलक उठाना और; मुकिऴ्त्तलुम्–बन्द करना; तुऱन्ताळ्–जिन्होंने छोड़ दिया था; वॅयिल् इटै–धूप में; तन्त विळक्कु ऍऩ–रखे हुए दीप के समान; ऑळि इला मॅय्याळ्–निष्प्रभ शरीर वाली; मयिल् इयल्–मयूराभा; कुयिल् मऴलैयाळ्–कोकिल-मधुरभाषिणी; इळम् मान् पेटै–बाल-हरिणी; अयिल् ऍयिऱु–तीक्ष्ण दाँत वाले; वॅम् पुलि कुऴात्तु–भयंकर व्याघ्रों के झुण्ड में; अकप्पट्टतु अऩ्ऩाळ्–फँस गयी हो, ऐसी स्थिति में रहीं। ३३३

देवी ने नींद के नाम पर पलकें बन्द करना और खोलना छोड़ दिया था। वे आतप-मध्य दीप के समान निष्प्रभ-शरीर थीं। मयूर-सम सुन्दरी और कोकिल-सम मधुर-वाणी देवी उस बाल-हरिणी के समान लग रही थीं, जो तीक्ष्ण दाँत वाले क्रूर व्याघ्रों के झुण्ड के मध्य फँस गयी हो। ३३३

विऴुदल् विम्मुदल् मॅय्युऱ वॅदुम्बुदल् वॅरुवा
ऍऴुद लेङ्गुद लिरङ्गुद लिरामऩै यॅण्णित्
तॊऴुदल् शोरुद ऱुळङ्गुद ऱुयरुऴऩ् दुयिर्त्तल्
अऴुद लऩ्ऱिमऱ् ऱयलॊऩ्ऱुञ् जॅय्हुव दऱियाळ् 334

विऴुतल्–गिरना; विम्मुतल्–सिसकना; मॅय्–शरीर का; उऱ वॅतुम्पुतल्–बहुत तप्त होना; वॅरुवा–डरकर; ऍऴुतल्–उठना; एङ्कुतल्–तरसना; इरङ्कुतल्–रोना; इरामऩै ऍण्णि–श्रीराम का स्मरण करके; तॊऴुतल्–नमस्कार करना; चोरुतल्–शिथिल पड़ना; तुळङ्कुतल्–काँपना; तुयर् उऴऩ्तु–दुःखपीड़ित हो; उयिर्त्तल्–निःश्वास छोड़ना; अऴुतल्–मुख खोलकर रोना; अऩ्ऱि–अलावा; मऱ्ऱु अयल् ऑऩ्ऱुम्–अन्य कोई काम; चॅय्कुवतु अऱियाळ्–करना नहीं जानतीं। ३३४

नीचे गिरना, सिसक-सिसककर रोना, शरीर का तप्त होना, डरकर फिर उठना, तरसना, दुःखी होकर रोना, श्रीराम का स्मरण करके नमस्कार करना, शिथिल पड़ना, काँपना, वेदना-विदग्ध हो निःश्वास छोड़ना, फूट-फूटकर रोना —इनको छोड़कर वे और कोई काम ही नहीं जानती हों, ऐसा व्यवहार कर रही थीं। ३३४

तळैत्त पोन्मुलैत् तडङ्गडन् दरुविपोऱ् ऱाऴ्प्
पुळैत्त पोलनीर् निरन्दरम् बॉऴिहिन्ऱ पॉलिवाल्
इळैक्कु नुण्णिय मरुङ्गुला ळिणैनॆडुङ् गण्गळ्
मळैक्क णॆन्बदु कारणक् कुऱियिनाल् वहुत्ताळ् 335

इळैक्कुम् नुण्णिय–सूत्र से भी महीन; मरुङ्कुलाळ्–कमर वाली; नीर्–(अश्रु) जल; पुळैत्त पोल–छेदकर जाता हो जैसे; तळैत्त–पुष्ट; पोन् मुलै तटम्–स्वर्ण-स्तन-तट; कटन्तु–पार कर; अरुवि पोल्–सरिता के समान; ताऴ्–नीचे की ओर बहता है; निरन्तरम्–निरन्तर; पॊऴिकिन्ऱ–गिरता रहता है जो; पॉलिवाल्–उस दृश्य से; इणै नॆटुम् कण्कळ्–आयत अक्षद्वय को; मळैक्कण् ऍन्पतु–'बरसाती आँखें' की उपाधि के; कारणक् कुऱियिनाल्–हेतुबोधक नाम के अनुकूल; वकुत्ताळ्–(देवी ने) बना लिया था। ३३५

सूत्र से भी क्षीण कटि वाली देवी का अश्रुजल स्तन-तटों पर छेदते-से गिरकर सरिता के समान बहा। उस दृश्य से "बरसाती आँखें" का नाम उनकी आँखों के लिए सार्थक साबित हो रहा था। "बरसाती आँखें या मेघ-सदृश आँखें" इस अर्थ में कही जाती हैं— 'कृपा बरसानेवाली शीतल आँखें'। इधर बरसात के समान आँसू बहता था। अतः यह नाम सार्थक बन गया। ३३५

❀अरिय मञ्जिनो डञ्जन मिवैमुद लदिहम्
करिय काण्डलुङ् गण्णिनीर् कडल्पुहक् कलुऴ्वाळ्
उरिय कादल रॊरुवरो डॊरुवरै युलहिल्
पिरिवॆ नुन्दुय रुरुवुहॊण् डालन्न पिणियाळ् 336

अरिय मञ्चिनोटु–अपूर्व मेघों के साथ; अञ्चनम् मुतल्–अंजन आदि; इवै अतिकम् करिय–ऐसे अधिक काले पदार्थों को; काण्टलुम्–देखने पर; कण्णिन् नीर्–आँखों के अश्रु; कटल् पुक–सागर में प्रवेश कर जायँ ऐसा (इतना); कलुऴ्वाळ्–दुःख करती रोतीं; उलकिन्–इस संसार में; उरिय कातलर् ऑरुवरोटु ऑरुवरै–प्रणय-बद्ध प्रेमी एक-दूसरे से; पिरिवु ऍंतम् तुयर्–वियोगजन्य दुःख (ने); उरुवु कॊण्टाल् अन्न–मानो रूप धरा हो ऐसा; पिणियाळ्–रोगपीड़ित लगीं। ३३६

सीताजी काले मेघों, अंजन आदि को देखतीं तो उनको श्रीराम का स्मरण हो आता। तब उनकी आँखों से आँसू जो बहता वह समुद्र में जाकर मिले इतना अधिक होता। देवी परस्पर वशवर्ती सच्चे प्रेमी-युगलों के वियोग-दुःख के साकार रोग के समान लग रही थीं। ३३६

तुप्पि नाऱ्चॆय्द कैयॊडु काल्पॆऱ्ऱ तुळिमञ्
जॊप्पि नान्ऱनै निन्नैतॊऱुम् नॆडुङ्गण्ग ळुहुत्त
अप्पि नाननैन् दरुन्दुय रुयिर्प्पुडै याक्कै
वॆप्पि नाऱ्पुलर्न् दॊरुनिलै युऱादमॆन् ऱुहिलाळ् 337

तुप्पित्ताल् चॅय्त-प्रवाल के बने; कैयोटु काल् पॅट्र्-हाथों के साथ पैर पाये हुए; तुळि मञ्चु-जलकण बरसानेवाले मेघों के; ऑप्पितान् तनै-समान रहनेवाले श्रीराम को; निनै तोंरुम्-जब-जब स्मरण करतीं; नॅटुम् कण्कळ्-दीर्घ आँखों ने; उकुत्त-जो आँसू गिराये; अप्पित्ताल्-उस जल से; ननैन्तु-भीगकर; अरुम् तुयर्-कठोर दुःख के कारण; उयिर्प्पु उटै याक्कै-निःश्वास छोड़नेवाले शरीर के; वॅप्पित्ताल्-ताप से; पुलर्न्तु-सूखकर; ऑरु निलै उऱात-एक स्थिति में जो नहीं रहा; मॅन् तुकिलाळ्-वैसे महीन वस्त्रावृता। ३३७

जब कभी वे विद्रुमनिर्मित चरणों और हस्तों-सहित मेघ के समान शोभनेवाले श्रीराम का स्मरण करतीं तब उनकी आँखों से जल बहता। उस जल से उनका महीन वस्त्र भीग जाता। फिर गरम निःश्वास छोड़नेवाली उनके शरीर का ताप उस वस्त्र को सुखा देता। इस तरह वे ऐसे महीन वस्त्र से आवृत थीं, जो एक स्थिति में नहीं रह पाता था। ३३७

❀ अरिदु पोहवो विदिवलि कडत्तलॅन् ऱञ्जिप्
परिदि वानवन् कुलत्तैयुम् बळियैयुम् बाराच्
चुरुदि नायहन् वरुम्वरु मॅन्बदोर् तुणिवाल्
करुदि मादिर मनैत्तैयु मळक्किन्ऱ कण्णाळ् 338

वितिवलि कटत्तल्-विधि के बल को परास्त करना; पोकवो अरितु-अगम है; ऍन्ऱु-ऐसा; अञ्चि-डरकर; चुरुति नायकन्-वेदनायक; परिति वानवन् कुलत्तैयुम्-सूर्यकुल का और; पळियैयुम्-उस पर (अपने कारण) लगे कलंक का; पारा-विचार करके; वरुम् वरुम्-आयेंगे, आयेंगे; ऍन्पतोर् तुणिवाल्-ऐसे एक निश्चय से; करुति-सोचकर; मातिरम् अनैत्तैयुम्-सारी दिशाओं को; अळक्किन्ऱ कण्णाळ्-नाप रही आँखों वाली। ३३८

वे दिशा-दिशा में दृष्टि डालकर श्रीराम के आने की बाट जोह रही थीं। उनका विचार था कि वेदनायक श्रीराम अवार्य विधि-बल को मानकर अपने सूर्यकुल के अपयश को दूर करने हेतु अवश्य और शीघ्र आ जायँगे। ३३८

कमैयि नाडिरु मुहत्तयर् कदुप्पुऱ्क् कदुविच्
चुमैयु डेक्कऱ्ऱै निलत्तिडैक् किडन्दतू मदियै
अमैय वायिऱ्पॅय् दुमिळ्हिन्ऱ वयिलॅयिऱ् ऱरविल्
कुमैयु ऱत्तिरण् डॊरुशडै याहिय कुळलाळ् 339

कमैयित्ताळ्-क्षमाशालिनी के; तिरुमुकत्तु अयल्-श्रीमुख के दोनों ओर; कतुप्पु उऱ्-गालों पर लगे; कतुवि-पकड़कर; चुमै उटै-भारी; कऱ्ऱै-केश-लटों की राशि; निलत्तु इटै किटन्त-भूमि पर रहे; तू मतियै-पवित्र पूर्णचन्द्र को; अमैय-खब लगे; वायिल् पॅय्तु-मुख में निगलकर; उमिळ्किन्ऱ-जो उगलता है; अयिल्

अॅयिऱ्ऱु—उस तीक्ष्णदाँत; अरविल्–(राहु) सर्प के समान; कुमै उऱ–पुष्ट; तिरण्टु–मिलकर; ऑरु चटै आकिय–एक ही जटा जो बने थे; कुऴलाळ्–वैसे केश वाली। ३३९

क्षमाशीला श्री सीतादेवी के मुख के पार्श्व में भारी केशों की लटें मानो उनके गालों को ग्रसे हुए थीं। वे बटकर जटा की एक लड़ी बनी हुई थीं। उसे देखकर ऐसा लगा मानो तीक्ष्ण दाँत वाला राहु सर्प भूमि पर रहे अकलंक चन्द्र को निगलकर फिर उगल रहा हो ! । ३३९

आवि यन्दुहिल् पुतैवदॊन्ऱ् ऱन्ऱिवे ऱऱियाळ्
तूवि यन्नमॆन् पुनलिडैत् तोय्हिला मॆय्याळ्
तेवु तॆण्कड लमिऴ्दुहॊण् डनङ्गवेळ् शॆय्द
ओवि यम्बुहै युण्डदे यॊक्किन्ऱ वुरुवाळ् 340

आवि अम् तुकिल्–प्राण-सम श्रेष्ठ वस्त्र; पुतैवतु ऑन्ऱु अन्ऱि–जो पहना है उस एक को छोड़; वेऱु अऱियाळ्–दूसरा नहीं जानतीं; तूवि अन्न–परों के समान; मॆन् पुतलिटै–स्वच्छ जल में; तोय्किला–जो नहीं डूबा; मॆय्याळ्–वैसे शरीर वाली; तेवु तॆण् कटल्–दिव्य स्वच्छ क्षीरसागर से सम्भूत; अमिऴ्तु कॊण्टु–अमृत लेकर; अतङ्क वेळ् चॆय्त—अनंगदेव द्वारा निर्मित; ओवियम्–चित्र; पुकै उण्टते ऑक्किन्ऱ–धूमाच्छन्न हो गया हो जैसे; उरुवाळ्–आकार वाली। ३४०

सीताजी के पास एक ही वस्त्र था, जो पवित्र और शरीर के लिए प्राण-सम था। उनका शरीर (काग-) पर के समान स्वच्छ जल में स्नान किया हुआ नहीं था। उनका रूप-रंग ऐसा था मानो दिव्य स्वच्छ क्षीरसागर से उत्पन्न अमृत का मन्मथ द्वारा निर्मित चित्र धूमिल पड़ा हुआ हो। ३४०

❀कण्डि लन्गॊला मिळवलुङ् गनैहड नडुवण्
उण्डि लङ्गैयॆन् ऱुणर्न्दिल रुलहॆला मॊऱुप्पान्
कॊण्डि ऱन्दमै यऱिन्दिल रामॆनक् कुऴैयाप्
पुण्डि ऱन्ददि नॆरिनुऴैन् दालॆनप् पुहैवाळ् 341

इळवलुम्–लघुराज ने भी; कण्टिलन् कॊल्–(श्रीराम को) नहीं देखा है क्या शायद; कतैकटल् नटुवण्–गरजनेवाले सागर-मध्य; इलङ्कै उण्टु–लंका है; ऎन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तिलर् आम्–नहीं जाना है; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों को; ऑऱुप्पान्–त्रस्त करनेवाला रावण; कॊण्टु इऱन्तमै–लाया यह बात; अऱिन्तिलर् आम्–नहीं जानते; ऎन–यह सोचकर; कुऴैया–दुःख कर; पुण् तिऱन्ततिल्–खुले व्रण में; ऎरि नुऴैन्ताल् ऎन–आग घुसी हो जैसे; पुकैवाळ्–वेदनायुक्त हुईं। ३४१

सीताजी सोचने लगीं। शायद देवर लक्ष्मण ने मेरे नाथ को नहीं देखा क्या ? शायद दोनों गरजते सागर-मध्य रहनेवाली लंका की बात नहीं जानते। लोकनिकायत्रासक रावण के मुझे हर ले आने की बात शायद

नहीं जानते ! ऐसी बात सोचती हुई वह इस तरह वेदनाविद्ध हुई मानो खुले व्रण में आग घुस गयी हो। ३४१

※ माण्डु पोयिऩ् ऎरुवैयर्क् करशऩ्मऱ् ऱवरो
डाण्डै यॆऩ्ऩिलै युरैप्पव रिल्लैयिप् पिऱप्पिल्
काण्ड लोवरि दॆऩ्ऱुळम् विम्मुरुङ् गलङ्गुम्
मीण्डु मीण्डुपुक् कॆरिनुळैन् दालॆऩ मॆलिवाळ् 342

ऎरुवैयर्क्कु अरचऩ्–गीधों के राजा; माण्टु पोयितऩ्–मर गये शायद; अवरोटु–श्रीराम के पास; ऎऩ् निलै–मेरी स्थिति; आण्टै–वहाँ; उरैप्पवर् इल्लै–कहनेवाले नहीं रहे; इप्पिऱप्पिल्–इस जन्म में; काण्टलो अरितु–दर्शन दुर्लभ है; ऎऩ्ऱु–कहती हुई; उळम् विम्मुरुम्–चिन्ता से भर जातीं; कलङ्कुम्–व्याकुल बनतीं; मीण्टुम् मीण्टुम्–फिर-फिर; ऎरि पुक्कु नुऴैन्ताल् ऎऩ्ऩ–आग (व्रण में) घुस गयी हो जैसे; मॆलिवाळ्–दुर्बल पड़तीं। ३४२

गीधों के राजा जटायु भी मर गये शायद ! उनके सिवा उधर कोई नहीं हैं, जो मेरे पति से मेरा हाल कहे। इसलिए इस जन्म में फिर उनसे मिलना असम्भव हो गया। यह सोचकर वे पीड़ा से भर जातीं। उनका मन आकुलित हो जाता। फिर-फिर आग घुस रही हो, ऐसा वे दुर्बल पड़ती जातीं। ३४२

ऎऩ्ऩै नायह ऩिळवलै यॆण्णिला विऩैयेऩ्
शॊऩ्ऩ वार्त्तैकेट् टऱिविल ळॆऩत्तुऱन् दाऩो
मुऩ्ऩै यूऴ्विऩै मुडिन्ददो वॆऩ्ऱॆऩ्ऱु मुऱैयाल्
पऩ्ऩि वाय्पुलर्न् दुणर्वुतेय्न् दारुयिर् पदैप्पाळ् 343

ऎण् इला विऩैयेऩ्–अगणित पापकर्म जो कर चुकी उस मैंने; इळवलै चॊऩ्ऩ–लघु भाई के प्रति जो कहे; वार्त्तै केट्टु–वे वचन सुनकर; नायकऩ्–मेरे नाथ; ऎऩ्ऩै–मुझे; अऱिवु इलळ्–बुद्धिहीन; ऎऩ्ऩ–समझकर; तुऱन्ताऩो–छोड़ गये क्या; मुऩ्ऩै ऊऴ्विऩै–मेरे पूर्वकर्मों का; मुटिन्ततो–फल मिला है क्या; ऎऩ्ऱु ऎऩ्ऱु–ऐसा; मुऱैयाल्–क्रम से; पऩ्ऩि–कहकर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखा; उणर्वु तेय्न्तु–सुध क्षीण हुई; आरुयिर् पतैप्पाळ्–प्राण छटपटाने लगे ऐसा, तड़प रही थीं। ३४३

मैं बड़ी पापिनी हूँ, जिसने असंख्यक पाप किये हैं। मैंने देवर से कुवचन कहे। शायद मेरे पति ने वह बात सुनकर मुझे मूर्ख समझकर त्याग दिया है क्या ? मेरे पूर्वजन्म के पाप ने अब फल दे दिया क्या ? वे क्रम से ऐसे विचार प्रकट करती हुई सूखते मुख और क्षीण होती सुध लेकर विकलप्राण हो रही थीं। ३४३

अरुन्दुम् मॆल्लड हारिड वरुन्दुमॆऩ् ऱऴुङ्गुम्
विरुन्दु कण्डपो दॆऩ्ऩुऱु मोवॆऩ्ऱु विम्मुम्

मरुन्दु मुण्डुकोल् यान्कोण्ड नोय्क्कॅन्रु मयङ्गुम्
इरुन्द मानिलम् जॅल्लरित् तॅळवुमाण् डॅऴादाळ् 344

इरुन्त मानिलम्–जहाँ बैठी थीं उस स्थान को; चॅल् अरित्तु अॅळवुम्–दीमकों ने खोखला बनाकर बिल बना लिया; आण्टु अॅऴाताळ्–तो भी वे वहाँ से नहीं उठीं; अरुन्तुम् मॅल् अटकु–भोग्य नरम भोजन को; आर्–कौन; इट–(पत्तल पर) परोसे और; अरुन्तुम्–श्रीराम खाएँ; अॅन्रु अळुङ्कुम्–कहकर रोतीं; विरुन्तु कण्ट पोतु–अतिथि के आने पर; अॅन् उरुमो–क्या करेंगे; अॅन्रु–ऐसा सोचकर; विम्मुम्–दुःख से भर जातीं; यान् कॉण्ट नोय्क्कु–मेरे प्राप्त रोग का; मरुन्तुम् उण्टु कॉल्–औषध भी है क्या; अॅन्रु–यह सोचकर; मयङ्कुम्–बेहोश हो जातीं। ३४४

सीताजी जहाँ बैठी थीं, वहाँ दीमकों ने मिट्टी काटकर बाँबी बनायी थीं तो भी वे वहाँ से नहीं उठीं। वे इस प्रश्न को लेकर चिंतित थीं कि श्रीराम पत्तल पर किसके द्वारा परोसा भोजन खायँगे ? कोई अतिथि आया तो कितने दुःखी होंगे ? यह कहते हुए वे अकुलाहट से भर गयीं। 'मेरे दुःख-रोग की कोई दवा भी होगी क्या ?' —इस विचार पर वे सुध-बुध खो जातीं। ३४४

वन्गण् वञ्जनै यरक्करित् तुणैप्पहल् वैयार्
तिन्व रॅन्रिनिच् चॅयत्तक्क दॅन्रुदीरन् दानो
तन्गु लप्पोरै तन्बोरै यॅनत्तणिन् दानो
अॅन्गॉ लॅण्णुव दॅन्नुमङ् गिराप्पह लिल्लाळ् 345

अङ्कु–वहाँ; इरा पकल् इल्लाळ्–रात-दिन का भेद जो नहीं करती थीं; वन्कण्–क्रूर; वञ्चनै–वंचक; अरक्कर्–राक्षस; इत्तुणै पकल्–इतने दिन; वैयार्–जीवित नहीं छोड़ेंगे; तिन्पर्–खा लेंगे; अॅन् इनि चॅयत्तक्कतु–अब क्या करने को है; अॅन्रु तीरन्तानो–ऐसा सोचकर विरत हो गये हैं क्या; तन् कुलप्पोरै–अपने कुल की स्वाभाविक क्षमाशीलता को; तन् पोरै अॅन–अपनी क्षमाशीलता बनाकर; तणिन्तानो–कोप छोड़ शान्त हो गये क्या; अॅन् कॉल् अॅण्णुवतु–मैं क्या सोचूँ; अॅन्नुम्–ऐसा सोचकर दुःखी होतीं। ३४५

सीताजी दिन और रात में कोई भेद किये बिना सदा रोती रहीं। वे सोचतीं— क्रूर और ठग राक्षस लोग सीता को उतने दिन जीवित नहीं छोड़ेंगे। उसे मारकर खा लेंगे अवश्य। अब क्या करने को है मेरे पास —ऐसा सोचकर श्रीराम ने मुझे त्याग दिया क्या ? या अपने कुल के भूषण-रूप क्षमा को अपनाकर रोष को त्याग दिया है ? क्या सोचूँ ? वे ऐसा-ऐसा सोचती हुई दुःख-मग्न हो रही थीं। ३४५

पॅर्र तायरुन् दम्बियुम् बॅयर्त्तुम्वन् दॅय्दिक्
कोर्र मानहर्क् कॉण्डॅळुन् दार्हळो कुरित्तुच्

चोऱ्ऱ वाण्डॅला मुऱैन्दनुऱि यन्नहर्त् तुन्नान्
उऱ्ऱ दुण्डॅनाप् पडरुळन् दुऱादन वुरुवाळ् 346

पॅऱ्ऱ तायरुम्–जननी माताएँ; तम्पियुम्–छोटे भाई भरत; पॅयर्त्तुम् वन्तु अॅय्ति–फिरकर आ पहुँचकर; कॉऱ्ऱ मा नकर् कॉण्टु–विजयी नगर को लेकर; अॅळुन्तार्कळो–गये हैं क्या; कुऱित्तु चॉऱ्ऱ–निर्धारित कर कहे हुए; आण्टु अॅलाम्–पूरे वर्ष; उऱैन्तु अन्ऱि–(जंगल में) रहे विना; अ नकर् तुन्नान्–उस नगर को नहीं जायेंगे; उऱ्ऱतु उण्टु–(इसलिए) कुछ आफ़त होगी; अॅन्ना–ऐसा विचार करके; पटर् उळन्तु–दुःख में पड़कर; उऱातन–अभूतपूर्व; उरुवाळ्–कष्ट से पीड़ित हुईं। ३४६

उधेड़बुन में लगकर वे आगे सोचतीं कि क्या उनकी जननी माताएँ और अनुज भरत फिर से वहाँ आकर उन्हें विजयशील बड़े नगर अयोध्या लिवा ले गये हैं ? पर श्रीराम तो अवधि पूरा होते तक अयोध्या नहीं लौटेंगे। तब इसलिए लगता है कि कुछ (अनिष्ट) हो अवश्य गया है। इस विचार के आते ही वे बहुत उद्विग्न हो गयीं और उन्हें अभूतपूर्व दुःख सताने लगा। ३४६

मुरनॅ नत्तहु मॉय्म्बिनोर् मुन्बॉरु दवर्पोल्
वरनुम् मायमुम् वञ्जमुम् वरम्बिल वल्लार्
पॉरनि हळ्न्ददोर् पूशलुण् डामॅनप् पॉरुमाक्
करनॅ दिर्न्ददु कण्डन ळामॅनक् कवल्वाळ् 347

मुरन् अॅतत्तकुम्–मुर आदि; मॉय्म्पितोर्–सबल; मुन् पॉरुतवर् पोल्–पहले श्रीविष्णु से जो लड़े उनके समान; वरम्पु इल वरतुम्–असीम वर-प्राप्त; मायमुम् वञ्चमुम्–माया और वञ्चना में; वल्लार्–समर्थ; पॉर–लड़ने आए हों; निकळ्न्ततोर् पूचल् उण्टाम्–और युद्ध हुआ हो; अॅन–सोचकर; पॉरुमा–दुःखी होकर; करन् अॅतिर्न्ततु–खर ने जो सामना किया; कण्टनळ् आम् अॅन–उसको (फिर से) प्रत्यक्ष मानो देखतीं; कवल्वाळ्–वैसे पीड़ित होतीं। ३४७

'मुर' नामक राक्षस आदि अनेक बलवानों ने जैसे (श्रीविष्णु से) युद्ध किया था वैसे अगाध वर, माया और वंचना के धनी राक्षस आकर भिड़ गये हैं; इसलिए घमासान युद्ध हो गया है ! यह सन्देह मन में उठा तो वे ऐसे उद्विग्न हुईं, मानो अभी खर के साथ हुए युद्ध को फिर से देख रही हों। ३४७

❀ तॅम्म डङ्गिय शेणिलङ् गेहयर्, तम्म डन्दैनिन् ऱम्बिय दामॅन
मुम्म डङ्गु पॉलिन्द मुहत्तिनन्, वम्म डङ्गलै युन्नि वॅदुम्बुवाळ् 348

केकयर् तम् मटन्तै–केकयपुत्री ने; तॅम् मटङ्किय–शत्रु जिसको देखकर फिरकर भाग जाएँ वह; चेण् निलम्–श्रेष्ठ (कोसल) देश; निन् तम्पियतु आम्–तुम्हारे भाई का होगा; अॅन–कहा तो; मु मटङ्कु–तिगुना; पॉलिन्त मुकत्तितन्–शोभायमान

मुख जिनका बना उन; वॅम् मटङ्कलै–बहादुर सिंह (श्रीराम) को; उन्नि–स्मरण करके; वॅतुम्पुवाळ्–मुरझा जातीं। ३४८

केकयराजकुमारी (कैकेयी) ने जब कहा कि यह कोसल देश, जिससे शत्रु लोग डर से मुड़कर भाग जाते हैं, तुम्हारे भाई का होगा तब श्रीराम का श्रीमुख तिगुना शोभायमान हुआ। ऐसे सबल केसरी का स्मरण करके वे मुरझायीं। ३४८

❀ मॅय्त्ति रुप्पद मेवॅन्ऱ पोदिनुम्, इत्ति रुत्तुऱन् देहॅन्ऱ पोदिनुम्
शित्ति रत्तिन लरन्दशॅन् दामरै, ऑत्ति रुन्दमु हत्तिनै युन्नुवाळ् 349

मॅय् तिरुप्पतम्–अक्षय श्रीमन्त राजा के पद को; मेवु ॲन्ऱ पोतिनुम्–ले लो, कहने पर भी; इ तिरु–यह श्री; तुऱन्तु–छोड़कर; एकु–जाओ; ॲन्ऱ पोतिनुम्–यह कहते समय भी; चित्तिरत्तिन् अलर्न्त–चित्र में के खिले; चॅन्तामरै–लाल कमल की; ऑत्तिरुन्त–समानता करनेवाले; मुकत्तितै–मुख की सुन्दरता को; उन्नुवाळ्–बार-बार स्मरण करतीं। ३४९

जब उनसे कहा गया कि सच्ची राज्यश्री को तुम अपना लो; या यह कहा गया कि इस श्री को त्यागकर चले जाओ, दोनों हालतों में चित्रलिखित सुन्दर कमल के समान उनका श्रीमुख खिला ही था। उस श्रीमुख की सुन्दरता का स्मरण करके उनका मन कचोट उठा। ३४९

तेङ्गु कङ्गैत् तिरुमुडिच् चॅङ्गणान्, वाङ्गु कोल वडवरै वार्शिलै
एङ्गु मात्तिरत् तिऱ्ऱिरण् डाय्विऴ, वीङ्गु तोळै निनैत्तु मॅलिन्दुळाळ् 350

कङ्कै तेङ्कु–गंगा जिस पर ठहरी हैं; तिरुमुटि–ऐसी जटाधारी और; चॅङ्कणान्–अरुणाक्ष शिवजी के; वाङ्कु कोल–झुके हुए सुन्दर; वटवरै वार् चिलै–उत्तर के मेरुपर्वत के समान लम्बे धनुष को; एङ्कु मात्तिरत्तु–जब जनक आदि संशय करके दुःखी हो रहे थे तब; इऱ्ऱु इरण्टाय् विऴ–टूटकर दो टुकड़े बनकर गिरे तब; वीङ्कु तोळै–जो कन्धे वर्धित हुए उन कन्धों को; निनैन्तु–सोचकर; मॅलिन्तुळाळ्–दुबली-पतली हुई थीं। ३५०

गंगाधारी जटाजूट वाले और अरुणाक्ष शिवजी के झुके हुए उत्तर के मेरु-समान रहे धनु को क्या कोई उठा सकेगा? इस सन्देह में जब जनक आदि पड़कर चिन्तित रहे, तब जिन भुजाओं ने उसे दो टुकड़े बनाते हुए तोड़ दिया उन फूले कन्धों का स्मरण करके वे दुर्बल हो गयी थीं। ३५०

इन्न लम्बर वेन्दऱ् कियऱ्ऱिय
पन्न लम्बदि नालायि रम्बडै
कन्नन् मून्ऱिऱ् कळप्पडक् काल्वळै
विन्न लम्बुहळ्न् देङ्गि वॅदुम्बुवाळ् 351

अम्पर वेन्तऱ्कु–देवराज को; इन्नल् इयऱ्ऱिय–जिन्होंने त्रास दिया; पल्

नलम्–उन अनेक विशेषताओं से युक्त; पतितालायिरम् पटै–चौदह सहस्र सेनाओं को; कन्नल् मून्ऱिल्–तीन (घड़ियों) 'नाळियों' के अन्दर; कळप्पट–खेत रहे ऐसा; काल् वळै–पार्श्वों में झुके; विल् नलम्–धनु के युद्ध की कुशलता की; पुकळ्न्तु–प्रशंसा करते हुए; एङ्कि–तरसकर; वेतुम्पुवाळ्–मुरझायीं। ३५१

सीताजी ने श्रीराम के खर-दूषण आदि के साथ युद्ध का स्मरण किया। उनका धनुष— जिसने देवेन्द्र को भी त्रास देनेवाली और विशेष रूप से विविध गुणों से युक्त चौदह सहस्र सेनाओं का एक ही मुहूर्त में नाश किया। वे उसकी प्रशंसा करतीं और तरसतीं और मुरझा जातीं। ३५१

❀ आळ नीर्क्कङ्गै यम्बि कडाविय, एळै वेडनुक् कॅम्बिनित् ऱुम्बिनी
तोळन् मङ्गै कॊळुन्दि यॆनच्चॊन्न, वाळि नण्बिनै युन्नि मयङ्गुवाळ् 352

आळम् नीर् कङ्कै–गहरे जल की गंगा पर; अम्पि कटाविय–नावें चलानेवाले; एळै वेटनुक्कु–साधारण निषाद से; अॅम्पि–मेरा छोटा भाई; निन् तम्पि–तुम्हारा छोटा भाई है; नी तोळन्–तुम मेरे मित्र हो; मङ्कै–यह देवी; कॊळुन्ति–तुम्हारी भाभी है; अॅन चॊन्न–ऐसा जो कहा; नण्पितै–उस मित्रता को; उन्नि–सोचकर; मयङ्कुवाळ्–दुःख-विह्वल होतीं। ३५२

(सीताजी ने प्रभु की शक्ति का स्मरण किया। अब वे शील व सौलभ्य गुण का स्मरण करती हैं।) गहरी गंगा नदी पर नाव चलानेवाला था गरीब निषाद गुह। श्रीराम ने उससे कहा कि यह जो मेरा छोटा भाई लक्ष्मण है, वह तुम्हारा छोटा भाई है। तुम मेरे मित्र हो। यह देवी तुम्हारी भाभी है। उस मित्रता का स्मरण करके सीताजी व्याकुल हुईं। ३५२

मॅय्त्त तादै विरुप्पिन नीट्टिय, कैत्त लङ्गळैक् कैहळि नीक्किवे
ऱुय्त्त पोदु तरुप्पॅयि लॊण्पदम्, वैत्त वैदिहच् चॅय्है मनक्कॊळ्वाळ् 353

मॅय्त्त तातै–सत्यज्ञानी जनक के; विरुप्पितन्–चाह के साथ; नीट्टिय कै तलङ्कळै–बढ़ाये (सीता के) करतलों को; कैकळित् नीक्कि–उनके करों से अलग करके; वेऱु उय्त्त पोतु–दूसरे स्थान पर जब (उन्हें) रखा तब; तरुप्पॅयिल्–दर्भ पर; ऑळ् पतम् वैत्त–उज्ज्वल उनके चरण को जो पकड़कर रखा; वैतिक चॅय्कै–उस वैदिक-क्रिया को; मनक्कॊळ्वाळ्–मन में लातीं। ३५३

(अब वे अपने विवाह के समय हुए रस्मों का स्मरण करती हैं।) विवाह के अवसर पर सत्यज्ञ जनक ने बड़ी ही उत्कंठा तथा प्यार के साथ सीताजी के हाथों को अपने हाथों में ले उनको आगे किया। श्रीराम ने जनक के हाथों को दूर कर सीताजी के करतलों को ग्रहण कर लिया। फिर सीता के दक्षिण चरण को पकड़कर सिल पर रखे दर्भ पर रखवाया।

(यह रस्म सप्तपदी कहाता है।) उस वैदिक अनुष्ठान का अब सीताजी ने स्मरण किया। ३५३

❀ उरङ्गॊ डेमलर्च् चॆन्ऩि युरिमैशाल्
वरङ्गॊळ् पॊन्ऩ्मुडि तम्बि वनैन्दिलन्
तिरङ्गु शॆञ्जडै कट्टिय शॆय्विनैक्
किरङ्गि येङ्गिय दॆण्णि यिरङ्गुवाळ् 354

तम्पि–भाई भरत ने; उरिमै चाल्–अपने हक़ में आये; वरम् कॊळ्–वर द्वारा प्राप्त; उरम् कॊळ् पॊन् मुटि–सारयुक्त स्वर्णकिरीट को; ते मलर्–सुन्दर पुष्पों से अलंकृत; चॆन्ऩि–सिर पर; वनैन्तिलन्–धारण नहीं किया; तिरङ्कु–बटी हुई; चॆञ्चटै कट्टिय–श्रेष्ठ जटा जो बना ली; चॆय् विनैक्कु–उस कृत्य पर; इरङ्कि–दुःखी होकर; एङ्कियतु–श्रीराम जो व्याकुल हुए; ऎण्णि–वह सोचकर; इरङ्कुवाळ्–व्यग्र होतीं। ३५४

उनके भाई भरत ने वर द्वारा प्राप्त अधिकार होते हुए भी श्रेष्ठ स्वर्ण-निर्मित किरीट धारण नहीं किया; वरन् बटी हुई जटा धर ली। यह देखकर श्रीराम अत्यन्त दुःखी हो उठे। प्रभु का वह काम सोचकर देवी व्यग्र हुईं। ३५४

परित्त शॆल्व मॊऴियप् पडरुनाळ्
अरुत्ति वेदियर्क् कान्गुल मीन्दवन्
करुत्ति नाशै करैयिन्मै कण्डिऱै
शिरित्त शॆय्है निनैन्दऴि शिन्दैयाळ् 355

परित्त–जिसका भरण-भार उठा लिया गया; चॆल्वम्–उस राज्यश्री को; ऒऴिय–दूर कर; पटरुम् नाळ्–जब वन को गये उस दिन; अरुत्ति वेतियर्कु–याचक ब्राह्मण को; आन् कुलम् ईन्तु–गोवृन्द दान करके; अवन् करुत्तिन् आचै–उसके मन की इच्छा की; करै इन्मै–अपारता को; कण्ट–देखकर; इऱै चिरित्त चॆय्कै–प्रभु जो थोड़ा हँसे वह कार्य; निनैन्तु–सोचकर; अऴि चिन्तैयाळ्–मरनेवाले मन की बनीं। ३५५

श्रीराम अपने भरण में आये राज्य को त्यागकर जब वनगमन की तैयारी में थे, तब लालसा से भरे (त्रिजट नाम के) ब्राह्मण को गोदान किया। तव उस ब्राह्मण की बड़ी लालसा को देखकर प्रभु को हँसी आ गयी। तब वे किञ्चित हँसे। उस हँसी का स्मरण करके देवी खिन्नमना हुईं। (यह समाचार अयोध्याकाण्ड में नहीं कहा गया है। उसके लालच की कल्पित कहानी यों है— उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं अपनी छड़ी फेंकूँगा। वह जहाँ गिरती है वहाँ तक की गायों का समूह मुझे दान में दिये जायँ। श्रीराम ने उसकी आकृति देखकर सोचा कि यह आखिर कितनी दूर

तक फेंकेगा ? पर उस शरीर से दुर्बल ब्राह्मण के लालच का बल इतना था कि छड़ी अप्रतीक्षित दूरी पर जा गिरी। तब श्रीराम मुस्करा उठे।) । ३५५

मऴुवि तान्मुन् मन्नरै मूवॅऴु
पॉऴुदु नूऱिप् पुलवुरु पुण्णिन्नीर्
मुऴुहि नान्ऱवम् मॉय्म्बॉडु मूरिविल्
तऴुवु मेन्मै निनैन्दुयिर् शाम्बुवाऴ् 356

मऴुवितान्–परशुधर; मन्नरै–राजाओं को; मुन्–पहले; मू ॲऴु पॉऴुतु–तीन के सात (इक्कीस) बार; नूऱि–मारकर; पुलवु उरु–मांसगन्ध; पुण्णिन् नीर्–रक्त में; मुऴुकिनान्–जिसने स्नान किया; तवम्–उसके तप को; मॉय्म्पु ऑटु–उसके बल के साथ; मूरि विल्–सशक्त उसके धनुष को; तऴुवु–हस्तगत कर लेने का; मेन्मै निनैन्तु–श्रेष्ठ सामर्थ्य सोचकर; उयिर् चाम्पुवाऴ्–प्राण जिनके क्षीण हो रहे थे, वे । ३५६

सीताजी अपने नाथ की परशुराम-विजय की स्मृति करती हैं। परशुधर ने राजाओं को इक्कीस पीढ़ियों तक लगातार मारकर उनके मांसगन्धयुक्त रक्त में स्नान किया था। श्रीराम का उनके तप के साथ बल और धनु को भी हथिया लेना सोचकर वे क्षीणप्राण हुईं। ३५६

एह वाळियव् विन्दिरन् शॅम्मन्मेल्
पोह वेवि यदुकण् पॉडित्तनाळ्
काह मुऱ्ऱुमोर् कण्णिल वाक्किय
वेह वॅन्ऱियैत् तन्ऱलै मेऱ्कॉळ्वाळ् 357

एक वाळि–एक ही बाण; अ इन्तिरन् चॅम्मल् मेल्–उस इन्द्रकुमार (जयन्त) पर; पोक एवि–जा लगे ऐसा प्रेषित करके; अतु–वह बाण; कण् पॉटित्त नाळ्–जिस दिन उसकी आँख का नाश कर गया उस दिन; काकम् मुऱ्ऱुम्–सारे कागों को; ओर् कण् इल–एक आँख से हीन; आक्किय–जो बना दिया; वेक वॅन्ऱियै–उस शीघ्र की विजय को; तन् तलै मेल् कॉळ्वाळ्–अपने सिर चढ़ाकर गर्व का जो अनुभव करतीं। ३५७

श्रीराम ने इन्द्र के प्रिय पुत्र जयन्त पर एक बाण प्रेरित किया और उससे उसकी ही एक आँख नहीं गयी, बल्कि सारे कौए काने हो गये। अतिशीघ्र सम्पन्न उस विजय की बात का स्मरण करके सीताजी इतना हर्ष मानीं, मानो उस विजय के गौरव का भार उन्हीं के सिर पर लगा हो। ३५७

वॅव्वि रादनै मेवरुन् दीविनै
वव्वि माऱ्ऱरुञ् जाबमुम् माऱ्ऱिय

अव्वि रामनै युन्नित्तन् नारुयिर्
शॆव्वि रादुणर् वोय्न्दुड ऱेम्बुवाळ् 358

वॆम् विराततै–क्रूर विराध को; मेवु अरुम्तीविनै–उस पर लगे कठोर पाप को; वव्वि–पकड़कर दूर करके; माऱ्ऱु अरुम्–अवार्य; चापमुम् माऱ्ऱिय–शाप का भी निवारण जिन्होंने किया; अ इरामनै–उन श्रीराम का; उन्नि–स्मरण करके; तन् आरुयिर्–अपने प्राणों के; चॆव् इरातु–स्थिर न रहते; उणर्वु ओय्न्तु–सुध-बुध खोकर; उटल् तेम्पुवाळ्–शरीर को कँपाते हुए सिसकतीं। ३५८

विराध भयंकर राक्षस था। उस पर लगे कठोर पाप का और शाप का निराकरण किया श्रीराम ने। उन श्रीराम को बार-बार सोचकर अस्थिर-प्राण हुईं; बेसुध हुईं और शरीर कँपाती हुई रोयीं। ३५८

इरुन्दन डिरिशडै यॆन्नु मिन्शॊलाल्
तिरुन्दिना ळॊऴियमऱ् ऱिरुन्द तीविनै
अरुन्दिऱ लरक्किय रल्लु नळ्ळुऱप्
पॊरुन्दलुन् दुयिनऱैक् कळिपॊ रुन्दिनार् 359

इरुन्तनळ्–(सीताजी पर प्रेम रखती) रहनेवाली; तिरिचटै ॲन्नुम्–त्रिजटा नाम की; इन् चॊलाल्–मधुर भाषण से; तिरुन्तिनाळ्–श्रेष्ठ जो बनी थी; ऒऴिय–उसको छोड़कर; मऱ्ऱु इरुन्त–अन्य जो रहीं; ती विनै–क्रूर-कर्म; अरुम् तिऱल्–अधिक बल रखनेवाली; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; अल्लुम्–रात के; नळ् उऱ–मध्य में; पॊरुन्तलुम्–आते ही; तुयिल् नऱैक्कळि–निद्रा रूपी नशे में; पॊरुन्तिनार्–मग्न हो गयीं। ३५९

तब उनके साथ त्रिजटा नाम की राक्षसी थी, जो हितभाषिणी थी। उसे छोड़ जो अन्य क्रूर और नृशंसकारिणी राक्षसियाँ थीं वे सब, अर्द्धरात्रि के होने पर निद्रा के नशे में डूबी रहीं। ३५९

आयिडैत् तिरिशडै यॆन्नु मन्बिनाल्
तायिनु मिनियव डन्नै नोक्किनाळ्
तूयनी केट्टियॆन् ऱुणैवि यामॆना
मेयदोर् कट्टुरै विळम्बन् मेयिनाळ् 360

आयिटै–तब; तिरिचटै ॲन्नुम्–त्रिजटा नाम की; अन्पिनाल्–वात्सल्य में; तायिनुम् इनियवळ् तन्नै–माता से भी बढ़कर प्यारी को; नोक्किनाळ्–देखा (सीता ने); ॲन् तुणैवि आम्–मेरी सखी; तूय नी–पवित्र तुम; केट्टि–सुनो; ॲना–कहकर; मेयतु ओर् कट्टुरै–योग्य एक वचन; विळम्पल् मेयिनाळ्–कहने लगीं। ३६०

तब सीताजी ने माँ से भी प्यारी त्रिजटा को देखकर उससे कहा कि मेरी साथिन, पवित्र त्रिजटा! सुनो। फिर वे अर्थ-भरा संकल्प-वचन कहने लगीं। ३६०

नलनुदुडिक् किन्ऱदो नान्शॅय् तीविनै
शलनुदुडित् तिन्नमुन् दरुव दुण्मैयो
पॉलनुदुडि मरुङ्गुलाय् पुरुवङ् गण्णुदल्
वलनुदुडिक् किन्ऱिल वरुव दोर्हिलेन् 361

पॉलन् तुटि–स्वर्ण-डमरू-सम; मरुङ्कुलाय्–कमर वाली; पुरुवम् कण् नुतल्–भौंहें, आँखें और भाल; वलम् तुटिक्किन्ऱिल्–दायीं ओर नहीं फड़कते; नलम् तुटिक्किन्ऱतो–सौभाग्य आने को है क्या; नान् चॅय् तीविनै–मेरा कृत कुकर्म; तुटित्तु–उठकर; इन्नमुम् चलम् तरुवतु–और दुःख देने को है; उण्मैयो–वही होगा क्या; वरुवतु ओर्किलेन्–भविष्य नहीं जानती । ३६१

स्वर्ण के डमरू-सी कटि वाली त्रिजटा ! मेरी दाहिनी भौंह, आँखें और मेरा दाहिनी तरफ़ का भाल नहीं फड़कता । (यानी बायें अंग फड़कते हैं ।) क्या कोई हित आनेवाला है ? या मेरा पूर्वकृत पाप जल्दी आकर कष्ट देने को है ? क्या आनेवाला है, समझ नहीं पाती । ३६१

मुनियॊडु मिदिलैयिन् मुन्नैवन् मुन्दुनाळ्
तुनियरु पुरुवमुन् दोळु नाट्टमुम्
इनियन तुडित्तन वीण्डु माण्डॅन
ननितुडिक् किन्ऱन वायि नल्हुवाय् 362

मुन्नैवन्–मेरे नायक; मुनियॊटु–(विश्वामित्र) मुनि के साथ; मितिलैयिन् मुन्तु नाळ्–जब मिथिला में आये उस दिन; तुनि अऱु–अकलंक; पुरुवमुम् तोळुम् नाट्टमुम्–भौंहें, भुजाएँ और आँखें; इनियन तुटित्तन–सुखद रूप से फड़कीं; ईण्टुम्–अब भी; आण्टु अॅन–वहाँ के समान; नति तुटिक्किन्ऱन–खूब फड़कती हैं; वायिल् नल्कुवाय्–हेतु बताओ । ३६२

मेरे नाथ जब विश्वामित्र ऋषि के साथ मिथिला पधारे, उस दिन मेरी अनिन्द्य भौंह, भुजा और आँख (बायीं) हित का संकेत देती हुई फड़की थीं । अब भी मिथिला में जैसे बायें अंग अच्छे फड़कते हैं । इसका हेतु क्या है ? बताओ । ३६२

मऱन्दनॆ निदुवुमोर् माऱ्ऱङ् गेट्टियाल्
अऱन्दरु शिन्दैयॆन् नावि नायहन्
पिऱन्दपार् मुळुवदुन् दम्बि येपॆऱत्
तुऱन्दुहान् पुहुन्दनाळ् वलन्दु डित्तदे 363

मऱन्ततॆन्–भूल गयी; इतुवुम् ओर् माऱ्ऱम् केट्टि–यह भी एक बात सुनो; अऱम् तरु चिन्तै–धर्मचित्त; ॲन् आवि नायकन्–मेरे प्राणनाथ; पिऱन्त पार्–जन्म-सिद्ध अधिकार जिस पर था, उस भूमि को; मुळुवतुम्–पूर्ण; तम्पियॆ पॆऱ–कनिष्ठ भ्राता को लेने देते हुए; तुऱन्तु–त्यागकर; कान् पुकुन्त नाळ्–जिस दिन जंगल आये उस दिन; वलम् तुटित्ततु–मेरे दाहिने अंग फड़के । ३६३

मैं तुमसे एक बात कहना भूल गयी थी। वह बात भी सुन लो। धर्ममन मेरे प्राणनाथ जन्मसिद्ध-अधिकार से प्राप्त अपने राज्य को अपने भाई को लेने देकर जिस दिन वन में पधारे, उस दिन मेरे दाहिने अंग फड़के थे। ३६३

नञ्जनै	यान्वनत्	तिळैक्क	नण्णिय
वञ्जनै	नाळ्वलन्	दुडित्त	वाय्मैयाल्
ॲञ्जलिल्	नन्मैया	लिडन्दु	डिक्कुमाल्
अञ्जलॅन्	ऱिरङ्गुवा	यडुप्पदि	यादॅन्ऱाळ् 364

नञ्चु अनैयान्–विष-सदृश; वञ्चनै इळैक्क–वंचक कार्य करने; वनत्तु नण्णिय नाळ्–जिस दिन जंगल में आया उस दिन; वलम् तुडित्त वाय्मैयाल्–दाहिने अंग जो फड़के उस तथ्य से; ॲञ्चलिल् नन्मैयाल्–अक्षुण्ण हित के लिए; इटम् तुटिक्कुमाल्–बाएँ फड़कते हैं, इसलिए; अञ्चल्–मत डरो; ॲन्ऱु इरङ्कुवाय्–ऐसा तुम सहानुभूति करो तदर्थ; अटुप्पतु–जो आयगा; यातु–वह कौन होगा; ॲन्ऱाळ्–(सीताजी ने) पूछा। ३६४

जिस दिन विष-सा क्रूर रावण प्रवंचना करने वन में आया था तब मेरे दाहिने अंग फड़के थे। उस बात से, और आज बायें अंग फड़कते हैं इस बात से, तुम क्या समझती हो? मुझ पर तरस खाकर 'मत डरो' का आश्वासन देना साध्य बनाता हुआ आनेवाला हित क्या हो सकता है?। ३६४

ॲन्ऱलुन्	दिरिशडै	यियैन्द	शोबनम्
नन्ऱिदु	नन्ऱॅना	नयन्द	शिन्दैयाळ्
उन्ऱुणैक्	कणवनै	युरुव	दुण्मैयाल्
अन्ऱियुङ्	गेट्टियॅन्	ऱरैदत्	मेयिनाळ् 365

ॲन्ऱलुम्–ऐसा कहते ही; तिरिचटै–त्रिजटा; इयैन्त चोपनम्–आया शोभन; नन्ऱितु नन्ऱु–अच्छा होगा अच्छा; ॲना–कहकर; नयन्त चिन्तैयाळ्–(सीता के प्रति) स्निग्ध मन वाली; उन् तुणै–अपने साजन; कणवनै–नाथ को; उरुवतु–प्राप्त करो; उण्मै–यह अवश्य होगा; अन्ऱियुम्–और भी; केट्टि ॲन्ऱु–सुनो कहकर; अरैतल् मेयिनाळ्–कहने लगी। ३६५

देवी के यों कहते ही त्रिजटा ने उत्तर में कहा। यह सब तुम्हारे शोभन के लक्षण हैं! बहुत ही मंगलकारी लक्षण हैं। यह कहकर सीता के प्रति प्यार रखनेवाली वह बोली— तुम अपने संगी प्यारे नाथ को प्राप्त कर लोगी यह निश्चित है। और भी सुनो। वह आगे कहने लगी। ३६५

उन्निऱम् बशप्पऱ वुयिरु यिर्प्पुऱ
इन्निऱत् तॆन्निशै यिनिय नण्बिनाल्
मिन्निऱ मरुङ्गुलाय् शॆवियिन् मॆळ्ळवे
पॊन्निऱत् तुम्बिवन् दूदिप् पोयदाल् 366

मिन् निऱ–विद्युत्-से रंग वाली; मरुङ्कुलाय्–कमर वाली; उन् निऱम् पचप्पु–आपके रंग में हुई (विरह-जन्य) विवर्णता; अऱ–दूर हो; उयिर् उयिर्प्पु उऱ–प्राणवन्त रहें इसलिए; इन् निऱ–मधुर स्वभाव और; तॆन् इचै–मीठे स्वर का; पॊन् निऱ तुम्पि–स्वर्णवर्ण भ्रमर; वन्तु–आपके पास आकर; चॆवियिल्–आपके कान में; इनिय नण्पिनाल्–मधुर मित्रता से; मॆळ्ळ ऊति–धीमे-धीमे फूंककर; पोयतु–गया। ३६६

विद्युत्-सी (रंग में और आकार में) कटि वाली ! मैंने एक स्वर्णवर्ण भ्रमर को आपके कान के पास आकर फूंकते हुए (गुंजारते हुए) देखा। उसका आशय था कि आपके शरीर में विरहजन्य पाण्डुरता जो फैली है, वह दूर होगी और आपके प्राण नहीं जायँगे। वह भ्रमर मधुर और हितकर प्रेम के साथ धीरे-धीरे गुंजार कर गया। ३६६

आयदु तेरिनुन् नावि नायहन्, एयदु तूदुवन् दॆदिर्द लुण्मैयाल्
तीयदु तीयवर्क् कॆय्द ऱिण्णमॆन्, वायदु केळॆन्न मऱित्तुङ् गूऱुवाळ् 367

आयतु तेरिन्–उस पर सोचें तो; उन् आवि नायकन्–आपके प्राणनाथ द्वारा; एयतु–प्रेषित; तूतु वन्तु–दूत आकर; ऎतिर्तल–भेंट करेगा; उण्मै–वह ध्रुव है; तीयवर्क्कु–बुरों को; तीयतु ऎय्तल्–हानि मिलना; तिण्णम्–निश्चित है; ऎन् वायतु केळ्–मेरा समाचार भी सुनो; ऎन्न–कहकर; मऱित्तुम्–फिर भी; कूऱुवाळ्–कहने लगी। ३६७

उसके कृत्य पर विचार किया जाय तो यह निश्चित है कि आपके प्राणपति द्वारा प्रेषित एक दूत आयगा और आपसे भेंट करेगा। खलों का नाश निश्चित है। और भी मुझ पर बीते समाचार सुनिए। ३६७

तुयिलिलै यादलिऱ् कनवु तोन्ऱल
अयिल्विऴि यन्नैकण् णमैय नोक्किनेन्
पयिल्वन पऴुदिल पण्बि नाण्डन
वॆयिलिलु मॆय्यन विळम्बक् केट्टियाल् 368

अयिल् विऴि अन्नै–भाले-सी आँख वाली माते; तुयिल् इलै आतलिल्–अनिद्र हो, इसलिए; कनवु तोन्ऱल–स्वप्न नहीं आते; कण् अमैय–खूब आँखों में प्रकट; नोक्किनेन्–मैंने देखा; पयिल्वन–देखे सो; पऴुतु इल–व्यर्थ नहीं जायँगे; पण्पिन् आण्टन–श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण हैं; वॆयिलिलुम् मॆय्यन–सूर्य जैसे सत्य हैं; विळम्प केट्टि–कहूँगी, सुनो। ३६८

भाले-सी आँखों वाली माते ! आप कभी सोती नहीं। अतः स्वप्न होता नहीं। पर मैंने खूब दृष्टि लगाकर देखा। मेरे स्वप्न में हुए समाचार व्यर्थ नहीं जायँगे। और वे श्रेष्ठ गुणों से भरे हैं। सूर्य से भी सत्य हैं। कहती हूँ, सुनिए। ३६८

ऍण्णॅय्दन् मुडितॊरु मिळुहि येरिये
तिण्णॅडुङ् गळुदैपेय् पूण्ड तेरिऩ्मेल्
अण्णल्वे लिरावण ऩरत्त वाडैयऩ्
नण्णिऩऩ् ऱॆऩ्बुलम् नवैयिल् कऱ्पिऩाय् 369

नवै इल् कऱ्पिऩाय्–अनिंद्य पातिव्रत्यशीले; अण्णल् वेल्–सम्मान्य भाले का; इरावणऩ्–रावण; अरत्त आटैयऩ्–रक्तवस्त्र पहनकर; ऍण्णॅय्–तेल को; तऩ् मुटि तॊऱुम्–अपने सभी सिरों पर; इळुकि–ऐसा लगाये हुए कि वह झरता आये; कळुतै पेय् पूण्ट–खरों और भूतों के जुते; तिण् नॆटुम्–सबल और बड़े; तेरिऩ् मेल् एऱि–रथ पर चढ़कर; तॆऩ् पुलम्–दक्षिण दिशा में; नण्णिऩऩ्–जा पहुँचा। ३६९

निर्दोष पातिव्रत्यशीले ! सम्मान्य भालाधारी है रावण। वह रक्त-वर्ण वस्त्र धारण कर, अपने सिरों पर तेल कसरत से मले, खरों और पिशाचों के जुते सबल और बड़े रथ पर सवार हो दक्षिण दिशा में जा रहा था। (मैंने ऐसा स्वप्न देखा)। ३६९

मक्कळुञ् जुऱ्ऱमुम् मऱ्ऱु ळोर्हळुम्
पुक्कऩ रप्पुलम् बोऩ्द दिल्लैयाल्
चिक्कऱ नोक्किऩॆऩ् ऱीय विऩ्ऩमुम्
मिक्कऩ केट्टॆऩ विळम्बऩ् मेयिऩाळ् 370

मक्कळुम् चुऱ्ऱमुम्–उसके पुत्र और बन्धु; मऱ्ऱु ळोर्कळुम्–और अन्य परिवार; अ पुलम्–उसी दिशा को; पुक्कऩर्–चले गये; पोऩ्तत्तु इल्लै–लौटना नहीं हुआ; चिक्कु अऱ–अबाध रूप से; नोक्किऩॆऩ्–देखा; तीय–ये बुरे हैं; इऩ्ऩमुम् मिक्कऩ–और भी अधिक बुरे; केट्कु ऍऩ–सुनो कहकर; विळम्पल् मेयिऩाळ्–कहने लगी। ३७०

रावण के पुत्र, बन्धु-बान्धव और परिवार भी उसी दिशा में गये। वे लौट आये नहीं। अबाध रूप से मैंने देखा। ये अवश्य खलों के पक्ष में अहितकारी है। इससे भी अधिक बुरा समाचार भी है, सुनिए। ३७०

आण्डहै यिरावणऩ् वळर्क्कु मव्वऩल्
ईण्डिल पिऱन्दवा लिऩङ्गॊळ् शॆल्जिदल्
तूण्डरु मणिविळक् कळुलुन् दोऩ्मतै
कोण्डदाल् वाऩवे ऱॆरियक् कीळैनाळ् 371

आणटकै–पुरुषश्रेष्ठ; इरावणऩ् वळर्क्कुम्–रावणपालित; अ अऩल्–वह

अग्नि; ईण्टिल–वर्द्धित नहीं हुई; इतम् कॊळ्–झुण्डों में; चॆम् चितल्–लाल दीमकें; पिऱन्त–निकलीं; तूण्टु अऱ–जिनकी बत्तियों को तेज करने की आवश्यकता न हो ऐसे; मणि विळक्कु–मणिमय दीप; अळुलुम्–जिनमें जलते हैं; तॊल् मतै–प्राचीन प्रासाद; वात एऱु–आकाश के वज्र के; ऎऱिय–प्रहार से; कोळै नाळ्–उषाकाल में; कीण्टवु–टूट गये। ३७१

रावण पुरुषश्रेष्ठ है। वह अपने घर में अग्नि का पालन करता है। वह वैदिकी अनुष्ठान की अग्नि वर्धित नहीं हुई पर बुझ चली। उस स्थान में लाल दीमकों के झुण्ड पैदा हो आये। जिन दीपकों को उकसाने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती, वे मणिमय दीप प्रासादों में जलते रहते थे। वे प्रासाद आकाश के वज्र के उन पर गिरने से, सवेरे-सवेरे, टूट गिरे। ३७१

पिडिमदम् पिऱन्दन पिऱङ्गु पेरियुम्
इडियॆन मुळङ्गिन विरट्ट लिन्ऱिये
तडियुडै मुहिऱ्कुल मिन्ऱित् ताविल्वान्
वॆडिपड वदिरुमा लुदिरु मीनॆलाम् 372

पिटि मतम् पिऱन्तन–हथिनियाँ मत्त हुईं; पिऱङ्कु पेरियुम्–श्रेष्ठ भेरियाँ; इरट्टल् इन्ऱिये–विना पिटे ही; इटि ऎन–वज्र के समान; मुळङ्कित–नर्दित हुईं; तटि उटै–तडित्-सह; मुकिल् कुलम् इन्ऱि–मेघ समूह के विना ही; तावु इल् वान्–निराधार आकाश; वॆटि पट–दलक जाय ऐसा; अतिरुम्–थर्रा उठा; मीन् ऎलाम्–नक्षत्र, सभी; उतिरुम्–गिर गये। ३७२

(यह विपरीत बात देखने में आयी कि) हथिनियाँ मदमत्त हो गयीं। श्रेष्ठ भेरियाँ विना बजाये ही नर्दन कर उठीं। निराधार आकाश, तडित्-सहित मेघों के विना ही फट गया और थर्रा गया। नक्षत्र सब चू गये। ३७२

विऱ्पह लिन्ऱिये यिरवु विण्डऱ
ऎऱ्पह लॆरित्तुळ दॆन्नत् तोन्ऱुमाल्
मऱ्पह मलर्न्ददोण् मैन्दर् शूडिय
कऱ्पह मालैयुम् बुलवु कालुमाल् 373

विल् पकल्–प्रकाशमय अहस्; इन्ऱिये–नहीं हुआ तभी; इरवु–रात्रि; विण्टु अऱ–मिट जाए ऐसा; ऎल् पकल्–सूर्य दिन में; ऎरित्तुळतु–जल रहा है; ऎन्न–ऐसा; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; मल् पक मलर्न्त–सशक्त; तोळ्–कन्धों के; मैन्तर् चूटिय–राक्षस-युवकों की पहनी हुई; कऱ्पक मालैयुम्–कल्पसुमन-मालाएँ भी; पुलवु कालुम्–मांसगन्ध निकालती हैं। ३७३

राक्षस युवकों के कन्धे इतने प्रकाशमय हैं, मानो दिन के अभाव में भी रात को भगाते हुए सूर्य अहस् के अवसर पर प्रकाश दे रहा हो।

ऐसे सबल स्कन्धों के राक्षस-वीरों की पहनी हुई कल्पसुमन मालाएँ अपनी स्वाभाविक गन्ध छोड़कर मांस-दुर्गन्ध निसृत करने लगीं। ३७३

तिरियुमा	लिलङ्गैयुम्	मदिलुन्	दिक्कॅलाम्
अॅरियुमाऱ्	कन्दर्प्प	नहर	मॅङ्गणुम्
तॅरियुमान्	मङ्गल	कलशञ्	जिन्दिन
विरियुमाल्	विळक्किनै	विळुङ्गु	मालिरुळ् 374

इलङ्कैयुम्–लंका नगर और; मतिलुम्–प्राचीर; तिरियुम्–घूम जाते; तिक्कु अॅलाम्–सारी दिशाएँ; अॅरियुम्–जल उठीं; अॅङ्कणुम्–सर्वत्र; कन्तर्प्प नकरम्–गन्धर्वनगर; तॅरियुम्–दिखायी देते; मङ्कल कलचम्–मंगल-कलश; चिन्तित विरियुम्–जल बहाते हुए फूट जाते; विळक्किनै–दीपों को; इरुळ् विळुङ्कुम्–अन्धकार लील जाता (बुझ जाते)। ३७४

लंका नगर और प्राचीर घूम उठे। सारी दिशाएँ जल उठीं। सर्वत्र गन्धर्व-नगर दिखे। (यह बहुत ही बुरा स्वप्न समझा जाता है।) मंगल-कलश टूट पड़े और उनका पवित्र जल बह गया। दीपों को अँधेरे ने निगल लिया। दीप बुझ गये। ३७४

तोरण	मुऱियुमाऱ्	ऱुळङ्गिच्	चूळिमा
वारण	मुऱियुमाल्	वलत्त	वान्मरुप्
पारण	मन्दिरत्	तऱिञर्	नाट्टिय
पूरण	कुडत्तुनीर्	नऱविऱ्	पॊङ्गुमाल् 375

तोरणम् मुऱियुम्–तोरण-स्तम्भ टूट जाते; चूळि–मुखपट्टालंकृत; मा वारणम्–बड़े गजों के; वलत्त वान् मरुप्पु–सबल श्वेत दाँत; तुळक्कि–काँपकर; मुऱियुम्–टूटते; आरण मन्तिरत्तु–वेदमन्त्रविदग्ध; अऱिञर् नाट्टिय–ब्राह्मणों द्वारा स्थापित; पूरण कुटत्तु–पूर्णकुम्भ का; नीर्–पवित्र जल; नऱविल् पॊङ्कुम्–सुरा के समान उफनता। ३७५

मैंने देखा— तोरण खम्भे टूटते। मुखपट्टालंकृत बड़े-बड़े गजों के सबल श्वेत दाँत लचकते और टूटते। वेदमंत्रविदों द्वारा स्थापित पूर्णकुम्भों के पवित्र जल में ताड़ी के समान उफन पैदा होता। ३७५

विण्डॊडर्	मदियिनैप्	पिळन्दु	मीनॅळुम्
पुण्डॊडर्	कुरुदियिऱ्	पॊळियुम्	बोर्मळै
तण्डॊडु	तिहिरिवा	डनुवॅन्	ऱिन्नन
मण्डमर्	पुरियुमा	लाळि	माऱुर 376

मीन्–नक्षत्र; विण् तॊटर्–आकाश में चलायमान; मतियिनै पिळन्तु–चन्द्र को चीरते हुए; अॅळुम्–ऊपर जाते; पोर् मळै–आच्छादित रहनेवाले मेघ; पुण् तॊटर् कुरुतियिल्–व्रण के रक्त के समान; पॊळियुम्–(जल) बरसाते; तण्टु

ऒट्टु–दण्ड और; तिकिरि–चक्र; वाळ्–तलवार; तनु ऍन्ऱु–धनु आदि; इन्नत–ऐसे (हथियार); आऴि माऱु उऱ–समुद्र अस्थिर हो जाए ऐसा; मण्टु अमर् पुरियुम्–आपस में स्वतः भिड़ जाते। ३७६

नक्षत्र आकाशचारी चन्द्रमण्डल को भेदकर ऊपर जाते। आच्छादित-से रहनेवाले मेघों से व्रण से बहनेवाले रक्त के समान वारिश होती। दण्ड के साथ चक्र, तलवार, धनु आदि ऐसे हथियार आपस में युद्ध करते और सागर में उथल-पुथल मच जाता। ३७६

मङ्गैयर् मङ्गलत् तालि मऱ्ऱवर्
अङ्गैयिन् वाङ्गुवा रॆवरु मन्ऱिये
कॊङ्गैयिन् वीऴ्न्दन कुऱित्त वाऱ्ऱिनाल्
इङ्गिदि नऱ्पुद मिन्नुङ् गेट्टियाल् 377

मङ्कैयर्–राक्षस-दयिताओं का; मङ्कल तालि–मंगलमय अहिवात-सूत्र; मऱ्ऱवर् ऍवरुम्–दूसरे किसी के; अङ्कैयिन् वाङ्कुवार् अन्ऱि–अपने हाथ से छीने बिना ही; कॊङ्कैयिन्–(कटकर) स्तनों पर; वीऴ्न्तन–गिरे; कुऱित्त आऱ्ऱिनाल्–मेरे सूचित इन कार्यों से; इङ्कु–यहाँ; इतिन् अऱ्पुतम्–इन दुर्निमित्तों से भी (विपरीत और) विचित्र; इन्नुम् केट्टि–और भी सुनिए। ३७७

राक्षस-स्त्रियों के मंगलसूत्र स्वयं बिना किसी के छीने ही कट जाते और उनके स्तनों पर गिरते। मैं जो कह रही हूँ, उसी रीति से और भी क्या-क्या विस्मयकारी कुनिमित्त हुए, सुनिए। (त्रिजटा आगे भी अपने स्वप्नदृष्ट विषय बताने लगी।)। ३७७

मन्नवन् ऱेवियम् मयन्म डन्दैतन्
पिन्नवि ऴोदियुम् बिरङ्गि वीऴ्न्दन
तुन्नरुञ् जुडर्शुडच् चुरुक्कॊण् डॆऱिऱ्ऱाल्
इन्नलुण् डॆन्मिदऱ् केदु वॆन्बदे 378

मन्नवन् तेवि–राक्षसराज की देवी; अम् मयन् मटन्तै तन्–उस मयसुता (मन्दोदरी) के; पिन् अविऴ् ओतियुम्–बिखरे और पीछे लटकते केश भी; पिऱङ्कि वीऴ्न्तन–फैलकर गिरे; तुन् अरुम् चुटर्–अगम अग्नि के; चुट–जलाने से; चुरुक् कॊण्टु ऎऱिऱ्ऱु–दुर्गन्ध के साथ ऊपर उठे; इतऱ्कु एतु–इसका हेतु है; इन्नल् उण्टु–अवश्य कष्ट होगा; ऍन्नुम् ऍन्पते–यही बताना है। ३७८

राक्षसराज रावण की पत्नी मयसुता, मन्दोदरी के वेणी-बने केश खुले और बेतरह बिखरे। उनमें आग लगी और दुर्गन्ध निकालती हुई बढ़ी। इसका अर्थ 'अनर्थ होगा' यही है। ३७८

ऍन्ऱिवै यियम्बिवे ऱिन्नुङ् गेट्टियाल्
इन्ऱिव णिपपॊऴ् दॆदिर्न्द दोर्कना

वऩ्रुणैक् कोळरि यिरण्डु माऱिलाक्
कुऩ्ऱिडै युळुवैयाङ् गुळ्क्कोण् डीण्डिये 379

ऍऩ्ऱु इवै इयम्पि–ऐसा यों कहकर; इऩ्ऩुम् वेऱु केट्टि–और भी अन्य बातें सुनिए; इऩ्ऱु इवण् इप्पोऴुतु–आज, यहाँ, अब; ऍतिरऩ्ऩतु ओर् कऩा–एक स्वप्न हुआ; वऩ् तुणै कोळरि इरण्टु–सबल और जोड़ी के दो सिंह; माऱु इला–बेमिसाल; कुऩ्ऱु इटै–पर्वत पर; उळुवै आम् कुऴु कॊण्टु–बाघों को सहायता के लिए लेकर; ईण्टिये–सटे हुए। ३७९

त्रिजटा ने ये स्वप्न-समाचार वर्णित किये। आगे भी बोली कि और भी समाचार सुनिए। अब मेरे जागने से तुरन्त पूर्व जो स्वप्न हुआ उसका विषय बताऊँगी। दो परस्पर मित्र बलवान सिंह व्याघ्रवृन्दों को लेकर आये और एक अनुपम पर्वत को घेर गये। ३७९

उरम्बॊरु मदमलै युरैयु मव्वऩम्
निरम्बुऱ वळैन्दऩ नॆरुक्कि नेर्न्दऩ
वरम्बऱु पिणम्बडक् कॊऩ्ऱु वाळुन्दम्
पुरम्बुह मयिलैयुङ् गॊण्डु पोऩवाल् 380

उरम् पॊरु मतमलै–कठोर रूप से भिड़नेवाले मत्तगज; उरैयुम्–जिसमें रहते हैं; अ वऩम्–वह वन; निरम्पु उऱ–भर जाए ऐसा; वळैन्तऩ–घेर आये (सिंह तथा व्याघ्रों का समूह); नॆरुक्कि नेर्न्तऩ–आक्रमण करके लड़े; वरम्पु अऱु–असंख्यक; पिणम् पट–शव हो जायँ ऐसा; कॊऩ्ऱु–मारकर; वाळुम् तम् पुरम्–अपने वासस्थान को; पुक–चले गये; मयिलैयुम् कॊण्टु पोऩ–एक मयूर को भी साथ ले गये। ३८०

वह एक वन था, जिसमें ज़ोर के साथ लड़नेवाले मत्तगज रहते थे। उसमें आकर सिंहों और व्याघ्रवृन्दों ने आक्रमण किया। कठोर युद्ध किया और उनको अनगिनत संख्या में मारकर शवों को गिराया। फिर वे अपने वासस्थान को लौट गये। वे अपने साथ एक मयूर को भी ले गये। ३८०

आयिरन् दिरिविळक् कमैय माट्टिय
शेयॊळि विळक्कमॊऩ् ऱेन्दिच् चॆय्यवळ्
नायहऩ् ऱऩिमऩै निऩ्ऱु नण्णुदल्
मेयिऩळ् वीडणऩ् कोयिऩ् मॆऩ्शॊलाय् 381

मॆऩ् चॊलाय्–मधुरभाषिणी; आयिरम् तिरि विळक्कु–सहस्र वर्तिकाओं से युक्त दीपक; अमैय–सुन्दर रूप से; माट्टिय–जिसमें लगे थे; चेय् ऑळि विळक्कम्–लाल रोशनी की एक दीपावली; ऑऩ्ऱु एन्ति–एक लेते हुए; चॆय्यवळ्–लाल रंग की एक स्त्री; नायकऩ् तऩि मऩै निऩ्ऱु–राक्षसपति (रावण) के अद्वितीय महल से; वीटणऩ् कोयिल्–विभीषण के महल में; नण्णुतल् मेयिऩळ्–जाने लगी। ३८१

मधुरभाषिणी भामिनी सीते ! एक लाल रंग की स्त्री सहस्र बत्तियों की लाल रोशनी की एक दीपावली हाथ में लिये राक्षसनायक रावण के महल से निकली और विभीषण के प्रासाद में घुसी । ३८१

पॊऩ्मतै पुक्कवप् पॊरुविऱ् पोदिऩिल्
ऎऩ्ऩैनी युणर्त्तिऩै मुडिन्द दिल्लॆऩ
अऩ्ऩैये यदऩ्कुऱै काणॆऩ् ऱायिऴै
इऩ्ऩमुन् दुयिलॆऩ विरुहै कूप्पिऩाळ् 382

पॊऩ्मतै पुक्क–स्वर्ण-प्रासाद में जो प्रविष्ट हुई; अ पॊरुवु इल् पोतिऩिल्–उस अनुपम शुभ घड़ी में; ऎऩ्ऩै नी उणर्त्तिऩै–तुमने मुझे जगा दिया; मुटिन्ततु इल्–स्वप्न पूर्ण नहीं हुआ; ऎऩ–(त्रिजटा के) यों कहने पर; आयिऴै–चुने हुए आभरणों से अलंकृत देवी ने; अऩ्ऩैये–माते; अतऩ् कुऱै काण्–उसका बचा भाग देखो; ऎऩ्ऱु–कहकर; इऩ्ऩमुम् तुयिल् ऎऩ–और भी सोओ; ऎऩ्ऱु–प्रार्थना करके; इरु कै कूप्पिऩाळ्–अपने दोनों हाथ जोड़े । ३८२

विभीषण का महल स्वर्णमहल था । जब वह उस प्रासाद में घुसी तभी तुमने मुझे जगा दिया । मेरा देखा स्वप्न अधूरा रह गया । तब चुने हुए आभरणधारिणी सीताजी ने उससे हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि माते ! बाकी स्वप्न को भी देख लो । और तुम सोओ । ३८२

*इव्विडै यण्णलव् विराम ऩविय
वॆव्विडै यऩैयपोर् वीरऩ् ऱूदऩुम्
अव्विडै यॆय्दिऩ ऩरिदि ऩोक्कुवाऩ्
नीव्विडै मडन्दैदऩ् ऩिरुक्कै नोक्किऩाऩ् 383

इ इटै–इतने में; अण्णल् अ इरामऩ्–महिमावान उन श्रीराम का; एविय–प्रेषित; वॆम् विटै अऩैय–भयंकर ऋषभ-सम; पोर् वीर–युद्धवीर; तूतऩुम्–दूत हनुमान भी; अरितिऩ् नोक्कुवाऩ्–कष्ट के साथ सर्वत्र खोजते हुए; अ इटै ऎय्तिऩऩ्–वहाँ आ पहुँचा; नी इटै मटन्तै तऩ्–उस क्षीणकटि देवी के; इरुक्कै–रहने का स्थान; नोक्किऩाऩ्–देखा । ३८३

इसी समय महिमावान श्रीराम से प्रेषित, दर्शक के दिल में भय उत्पन्न कर सकनेवाले ऋषभ-सम दूत हनुमान भी सर्वत्र कष्ट के साथ खोज लेने के बाद वहाँ आ पहुँचा । उसने क्षीणकटि देवी सीता के रहने के स्थान को देख लिया । ३८३

अव्वयि ऩरक्किय रऱिवुऱ् ऱम्मवो
शॆव्वॆयि ऱुयिऩमैच् चॆय्द तोऴ्गॆऩ
ऎव्वयिऩ् मरुङ्गिनु मॆऴुन्दु वोऴ्गिऩार्
वॆव्वयिऩ् मऴ्वॆऴुच् चूल मेऩ्दिये 384

अ वयित्-तब; अरक्कियर्-राक्षस-स्त्रियाँ; अऱिवुऱ्ऱु-जाग्रत् होकर; अम्मवो-हाय, हाय; चॆव्वै इल् तुयिल्-जो अच्छी नहीं, उस नींद ने; नमै ईङ्कु चॆय्ततु-हमें अब यह (दुर्गत) करा दी; ऍऩ-कहती हुई; ऍऴुन्तु-उठकर; वॆम् अयिल्-भयंकर भाले; मऴु-परशु; ऍऴु-वक्रदण्ड; चूलम् ऍऩ्ऩि-शूल आदि उठाये हुए; ऍ वयित् मरुङ्किलुम्-सब ओर; वीङ्कितार्-भीड़ में खड़ी हो गयीं। ३८४

तभी राक्षसियाँ भी जाग उठीं। वे भयातुर हो गयीं। हाय! यह बुरी नींद है। उसने हमारी यह दुर्गत कर दी है। वे उठीं। हाथ में शूल, भाले, परशु, वक्रदण्ड आदि हथियार लेकर चारों ओर से आ जुट गयीं। ३८४

वयिऱ्ऱिडै वायिऩर् वळैन्द नऱ्ऱियिल्
कुयिऱ्ऱिय विऴियिऩर् कॊडिय नोक्किऩर्
ऍयिऱ्ऱिऩुक् किडैयिडै याऩै याऴिपेय्
तुयिर्कॊळ्वॆम् बिलनॆऩ्ऩत् तॊट्ट वायिऩार् 385

वयिऱ्ऱिटै वायितर्-पेट-मध्य मुखवालियाँ; वळैन्त नॆऱ्ऱियिल्-बाहर निकले भाले पर; कुयिऱ्ऱिय-जड़ित; विऴियितर्-आँखों वालियाँ; कॊटिय नोक्कितर्-क्रूर दृष्टि वालियाँ; ऍयिऱ्ऱिऩुक्कु इटै इटै-दाँत के मध्य; याऩै-गज; याऴि-शरभ; पेय्-भूत; तुयिल् कॊळ्-सोते रहे ऐसे; वॆय् पिलऩ् ऍऩ-भयंकर गुफा के समान; तॊट्ट वायिऩर्-बड़े मुखों वालियाँ। ३८५

(वे भी भयंकर तथा स्वभाव-विपरीत आकृति वालियाँ थीं।) कुछ के पेटों के मध्य मुख थे। कुछ के भाल बाहर निकले हुए थे और उनमें आँखें जड़ी हुई-सी लगती थीं। उनकी दृष्टि बड़ी क्रूर थी। उनके बड़े, भयंकर गुहा के समान मुखों के अन्दर दाँत-दाँत के मध्य गज, 'याऴि' (शरभ) नामक भयंकर जानवर, भूत आदि सोते थे। ३८५

ऑरुपदु कैयिऩ रॊऱ्ऱैच् चॆऩ्ऩियर्
इरुबदु तलैयिऩ रिरण्डु कैयिऩर्
वॆरुवरु तोऱ्ऱत्तर् विहड वेडत्तर्
परुवरै यॆऩमुलै पलवु नाऱ्ऱिऩार् 386

ऑरुपतु कैयितर्-दस हाथों वालियाँ; ऑऱ्ऱै चॆऩ्ऩियर्-(वे) एक ही सिर वालियाँ थीं; इरुपतु तलैयितर्-बीस हाथों वालियाँ; इरण्टु कैयितर्-पर दो हाथों वालियाँ; वॆरुवरु तोऱ्ऱत्तर्-भयावने आकार वालियाँ; विकट वेटत्तर्-विचित्र रूप वालियाँ; परुवरै ऍऩ-मोटे पर्वत के समान; मुलै पलवुम्-अनेक स्तनों को; नाऱ्ऱितर्-लटकाते रहनेवालियाँ। ३८६

किन्हीं के सिर तो एक-एक ही थे, पर हाथ दस-दस थे। किन्हीं के सिर बीस-बीस थे, पर हाथ तो दो-दो ही थे। भयभीत करनेवाले

आकार की थीं राक्षसियाँ। निपट विधि-विपरीत रूप वाली थीं। उनके स्तन बड़े-बड़े पर्वतों के समान थे और लटकते थे। ३८६

शूलम्वाळ् शक्करल् दोट्टि तोमरम्
कालवेल् कप्पणङ् गरुड़ कैयितार्
आलमे युरुवुहोंण् डनैय मेनियार्
पालमे तरित्तवन् वेंरुवुम् बान्मैयार् 387

चूलम्–शूल; वाळ्–तलवार; चक्करम्–चक्र; तोट्टि–अंकुश; तोमरम्–तोमर; काल;वेल्–यम-से भाले; कप्पणम्–'कप्पण' नामक हथियार; करुर–चलाने में अभ्यस्त; कैयितार्–हाथों वालियाँ; आलमे उरुवु कोंण्टनैय–हलाहल के ही साकार बने से; मेनियार्–शरीर वालियाँ; पालमे तरित्तवन्–कपालधारी (भैरव); वेंरुवुम्–डरे ऐसे; पान्मैयर्–स्वभाव वाली। ३८७

इन राक्षसियों के हाथ शूल, चक्र, अंकुश, तोमर, यम-से भाले, कप्पण नामक हथियार आदि चलाने के अभ्यस्त थे। हलाहल के ही मूर्तरूप-सम थीं। कपाली भैरवजी को भी भयातुर करनेवाले स्वभाव वालियाँ थीं। ३८७

करिपरि वेङ्गैमाक् करडि याळिपेय्
अरिनरि नायॅत्त वणिमु हत्तितर्
वॅरिनुरु मुहत्तितर् विळिहण् मून्रितर्
पुरितरु कॉडुमैयर् पुहैयुम् वायितार् 388

करि–गज; परि–अश्व; वेङ्कै–व्याघ्र; मा करटि–बड़े रीछ; याळि–'याळि' (नाम के जानवर); पेय्–भूत; अरि–सिंह; नरि–गीदड़; नाय ॲत–कुत्ते आदि; अणि मुकत्तितर्–पहने हुए मुखों वालियाँ; ... वॅरित् उरु–पीठ पर बने; मुकत्तित्तर्–मुख वालियाँ; विळिकळ् मून्रितर्–तीन आँखों वालियाँ; पुरि तरु कॉटुमैयर्–क्रूर काम करनेवालियाँ हैं; पुकैयुम् वायितार्–धुआँ निकालनेवाले मुखों वालियाँ। ३८८

गज, अश्व, बाघ, बड़ा रीछ, 'याळि', पिशाच, सिंह, शृगाल और कुत्ते आदियों के (-से) मुखों से वे युक्त थीं। उनकी पीठ के मध्य मुख भी थे। वे बड़े ही क्रूर काम करनेवालियाँ थीं। उनके मुखों से धुआँ निकलता था। ३८८

ॲण्णितुक् कळविड लरिय वीट्टितार्
कण्णितुक् कळविड लरिय काट्चियार्
पॅण्णॅनप् पॅयर्होंडु तिरियुम् बॅङ्रियार्
तुण्णॅनत् तुयिलुणर्न् दॅळुन्दु शुर्रितार् 389

ऍण्णितुक्कु अळवु इटल् अरिय-संख्या कहकर गिनने में असाध्य (अपार); ईट्टित्तार्-बलशालिनियाँ; कण्णितुक्कु-आँखों द्वारा; अळवु इटल् अरिय-मापा नहीं जा सके, ऐसे; कार्ट्चियार्-आकार वालियाँ; पॆण् ऍन्न पॆयर् कॊंटु-स्त्री नाम धारण करके; तिरियुम् पॆऱ्ऱियार्-घूम-फिरने का भाग्य-प्राप्त; तुण् ऍन-अकस्मात; तुयिल् उणर्न्तु-नींद से जागकर; ऍऴुन्तु-उठीं और; चुऱ्ऱित्तार्-सीता को घेर आयीं। ३८९

वे अपार शक्ति से समन्वित थीं। आँखें पूरा देख नहीं सकें —ऐसे डील-डौल वालियाँ थीं। विडम्बना यह थी कि स्त्री नामधारिणी होकर फिरती थीं। वे झट नींद से जागीं और उठकर सीताजी को घेर आयीं। ३८९

आयिडै युरैयविन् दळहन् रेवियुम्
तीयन्नै यवर्मुह नोक्कित् तेम्बिनाळ्
नायहन् ऱूदनुम् विरैवि नण्णितान्
ओय्विल नुयर्मरप् पणैयि नुम्बरान् 390

आयिटै-तब; अळकन् तेवियुम्-सुन्दर श्रीराम की देवी; उरै अविन्तु-अवाक् होकर; ती अन्नैयवर् मुकम् नोक्कि-अग्नि-सम उनके मुखों को देखकर; तेम्पिनाळ्-संकटग्रस्त हुईं; नायकन् तूततुम्-नायक श्रीराम का दूत भी; विरैविल् नण्णितान्-शीघ्र आया; ओय्वु इलन्-अविलम्ब; उयर् मर-ऊँचे वृक्ष की; पणैयिन् उम्परान्-शाखा पर का (स्थित) होकर। ३९०

तब सुन्दर पुरुष श्रीराम की देवी उनको देख स्तब्ध और अवाक् रह गयीं। उनके अग्नि-सम मुखों को देखकर संकटग्रस्त हुईं और सहमीं। नायक का दूत हनुमान भी शीघ्र आया और अविलम्ब एक अत्युन्नत तरु की शाखा पर चढ़ बैठा (और —)। ३९०

अरक्किय रयिन्मुद लेन्दु मङ्गैयर्
नॆरुक्किय कुऴुविनर् तुयिलु नीङ्गिनार्
इरुक्कुनर् मऱ्ऱिदऱ् केदु वॆन्नॆनप्
पॊरुक्कॆन ववरिडैप् पॊरुन्द नोक्किनान् 391

अरक्कियर्-(पहरा देती रही) राक्षसियाँ; अयिल् मुतल्-भाला आदि; एन्तुम् अङ्कैयर्-धारण करनेवाले हाथों की होकर; नॆरुक्किय कुऴुविनर्-भरी भीड़ की; तुयिलुम् नीङ्किनार्-निद्रा त्यागकर; इरुक्कुनर्-(सतर्क) रहती हैं; इतऱ्कु एतु ऍन्-इसका हेतु क्या है; ऍन-सोचकर; पॊरुक्कु ऍन-शीघ्र; अवर् इटै-उनके मध्य; पॊरुन्त नोक्किनान्-ध्यान के साथ देखा। ३९१

पहरे में रही राक्षसियाँ हाथों में भाले आदि लिये हुए, सटे समूह में मिले निद्रा त्यागकर सचेत रहीं। इसका हेतु क्या है? यह जानने के लिए हनुमान ने शीघ्र उन राक्षसियों के बीच में सावधानी से दृष्टि लगाकर देखा। ३९१

❀विरिमळैक् कुलङ्गिळित् तॊळिरु मिन्नॆनक्
करुनिऱत् तरक्कियर् कुऴुविऱ् कण्डनन्
कुरुनिऱत् तॊरुदनिक् कॊण्ड लामॆनत्
तिरुवुरप् पॊलियुमोर् शॆल्वत् ऱेवियै 392

कुरु निऱत्तु–गहरे रंग के साथ; ऒरु तनि कॊण्टल् आम् ऎन–एक अनुपम मेघ के समान; तिरु उऱ–अतिसौन्दर्य के साथ; पॊलियुम्–शोभनेवाले; ओर् चॆल्वत्–श्रियःपति की; तेवियै–देवी को; विरि मळै कुलम्–फैले हुए मेघसमूह को; किळित्तु–चीरकर; ऒळिरुम्–चमकनेवाली; मिन् ऎन–विद्युत् के समान; करु निऱत्तु अरक्कियर्–काले रंग की राक्षसियों के; कुऴुविल्–दल में; कण्टनन्–(हनुमान ने) देखा। ३९२

उसने गहरे नीले रंग के श्रेष्ठ मेघ-सम सौन्दर्ययुक्त श्रियःपति श्रीराम की देवी सीता को विशाल मेघसमूह को चीरकर प्रकाश छिटकानेवाली विद्युत् के समान राक्षसियों के समूह-मध्य देखा। ३९२

कडक्करु मरक्कियर् कावऱ् चुऱ्ऱुळाळ्
मडक्कॊडि शीदैया माद रेॊलाम्
कडऱ्ऱुणै नॆडियदन् कण्णि नीर्प्पॆरुन्
दडत्तिडै यिरुन्ददो रन्नत् तन्मैयाळ् 393

कटल् तुणै नॆटिय–सागर-सम विशाल; तन् कण्णिन्–अपनी आँखों के; नीर् पॆरुम् तटत्तिटै–अश्रुजल के बड़े जलाशय-मध्य; इरुन्तदु–जो रही; ओर् अन्न तन्मैयाळ्–एक हंसिनी-सी ये; कटक्करुम्–अलंघ्य; अरक्कियर् कावल् चुऱ्ऱु–राक्षसियों के पहरे के घेरे में; उळाळ्–रहती हैं; मटक्कॊटि–बाल-लता; चीतैयाम् मातरे आम्–सीतादेवी ही होंगी। ३९३

उनकी समुद्र-सम विशाल आँखों से जो अश्रुजल बहता रहा वह विशाल जलाशय के समान था, और उसके मध्य सीताजी हंसिनी के समान रहती हैं तथा राक्षसियों के अलंघ्य पहरे के अन्दर रहती हैं। इसलिए यह अवश्य वही बाल-लता सीताजी ही होंगी। हनुमान ने अनुमान किया। ३९३

❀ऎळ्ळरु मुरुवुळ विलक्क णङ्गळुम्
वळ्ळऱन् ऱुरैयॊडु माऱु कॊण्डिल
कळ्ळवा ळरक्कनक् कमलक् कण्णनार्
उळ्ळुरै युयिरितै यॊळित्तु वैत्तवा 394

ऎळ्ळरुम्–अनिंद्य; उरु उळ–अंगलक्षण हैं; इलक्कणङ्कळुम्–वे लक्षण भी; वळ्ळल् तन् उरैयॊटु–वदान्य श्रीराम के वर्णन से; माऱु कॊण्टिल–भिन्न नहीं हैं; अ कमल कण्णनार्–उन कळ्ळ वाळ् अरक्कन्–वंचक और तलवारधारी राक्षस ने;

पुण्डरीकाक्ष के; उळ् उऱै उयिरिऩै–हृदयस्थ प्राण (सीता) को; ऒळित्तु वैत्त आ–छिपा रखा है, क्या ही अन्याय है। ३९४

इनके अंग-लक्षण अनिंद्य हैं। और भी वे लक्षण वदान्य श्रीराम के वर्णन से भिन्न नहीं हैं। हा! तलवारधारी वंचक रावण ने उन पुण्डरीकाक्ष श्रीराम के हृदयस्थ प्राणों-सी इनको लाकर छिपा रखा है! क्या ही अन्याय है! । ३९४

मूवहै	युलहैयुम्	धुरैयि	ऩीक्किय
पाविय	रुयिर्हॊळ्वा	ऩिळैत्त	पण्बिदाल्
आवदे	यरवणैत्	तुयिलि	ऩीङ्गिय
तेवऩे	यवळिवळ्	कमलच्	चॆल्वियॆ 395

मू वकै उलकैयुम्–त्रिविध लोकों को; धुरैयिऩ् नीक्किय–सन्मार्ग से जिन्होंने हटा दिया; पावियर्—उन पापियों के; उयिर् कॊळ्वाऩ्–प्राण हरने हेतु; इऴैत्त पण्पु–किया गया काम; इतु आवते–यह है अवश्य; अवऩ्—वे; अरवणै तुयिलिऩ् नीङ्किय–शेषनागनिद्रात्यागी; तेवऩे–श्रीविष्णु भगवान ही हैं; इवळ् कमलच् चॆल्वियॆ–ये कमलासना लक्ष्मीदेवी ही हैं। ३९५

हा! यह कार्य त्रिलोकवासियों को अपने अच्छे मार्ग से हटानेवाले पापी राक्षसों के नाश का हेतु वन गया। श्रीराम शेषनागनिद्रात्यागी श्रीविष्णुदेव ही हैं। और ये देवी कमलासना श्री ही हैं। ३९५

वीडिऩ	ऱऱ्ऱऱऩ्	याऩुम्	वीहलेऩ्
तेडिऩेऩ्	कण्डऩॆऩ्	ऱेवि	येयॆऩा
आडिऩऩ्	पाडिऩ	ऩाण्डु	मीण्डुम्बाय्न्
दोडिऩ	ऩुलाविऩ	ऩुवहैत्	तेऩुण्डाऩ् 396

अऱऩ् वीटिऩ्तु अऩ्ऱु–धर्म मिटा नहीं; याऩुम् वीकलेऩ्–मैं भी नहीं मरूँगा; तेटिऩेऩ्–अन्वेषण किया; कण्टऩॆऩ्–देख लिया; तेवियॆ ॲऩा–देवी सीता ही हैं, कहकर; उवकै तेऩ्–मोदमधु; उण्टाऩ्–पीकर हनुमान; आटिऩऩ्–नाचा; पाटिऩऩ्–गाया; आण्टुम् ईण्टुम्—उधर और इधर; पाय्न्तु ओटिऩऩ्–छलाँग मारकर दौड़ा; उलाविऩऩ्–घूमा। ३९६

अच्छा, अब धर्म नष्ट नहीं होगा। मैं भी मरूँगा नहीं। जिनकी खोज लगाता रहा उनको मैंने देख लिया। ये अवश्य सीतादेवी ही हैं। हनुमान ने ऐसा दृढ़ विचार कर लिया तो मोदमधुपीत हो गया। नाचने-गाने लग गया। इधर से उधर दौड़ता हुआ घूमा। ३९६

माशुण्ड	मणियऩाळ्	वयङ्गु	वॆङ्गदिर्त्
तेशुण्ड	तिङ्गळ	मॆऩ्ऩत्	तेय्न्दुळाळ्

काशुण्ड कून्दलाळ् कर्पुङ् गावलुम्
एशुण्ड दिल्लैया लऱत्तुक् कोरुण्डो 397

माचु उण्ट–मैल-लगे; मणि अन्ताळ्–रत्न-सम; वयङ्कु वॅम् कतिर् तेचु उण्ट–पृथुल गरम (सूर्य-) किरणों में डूबे; तिङ्कळुम् अॅन्न–(नष्टप्रभ) चन्द्र के समान; तेय्न्तु उळाळ्–जो मलिन हुई थीं; काचु उण्ट कून्तलाळ्–धूलि-धूसरित केशिनी की; कऱ्पुम्–चरित्र-दृढ़ता और; कावलुम्–उसके पालन की रीति पर; एचु उण्टतु इल्लै–दोष नहीं लगा है; आल्–इसलिए; अऱत्तुक्कु ईऱु–धर्म का नाश; उण्टो–होगा क्या (नहीं)। ३९७

सीताजी मैल-लगे रत्न के समान और सूर्य की गरम किरणों से मन्दप्रद बने चन्द्र के समान लगीं। वे मलिन थीं और उनके केश पर धूल जमी थी। उनके चरित्र और चरित्र-पालन-दृढ़ता पर कोई आँच नहीं आयी थी। अतः धर्म नष्ट होगा क्या ? नष्ट नहीं होगा। ३९७

पुत्तैहळ् लिराहवन् पॉऱ्पु यत्तैयो
वनिदेयर् तिलहत्तिन् मनत्तिन् माण्बेयो
वत्तैहळ् लरशरिन् वण्मै मिक्किडुम्
जनहर्दङ् गुलत्तैयो यादु शाऱ्ऱुहेन् 398

कळल् पुनै–पायलधारी; इराकवन् पॉन् पुयत्तैयो–श्रीराघव की मनोरम भुजाओं को; वनितैयर् तिलकत्तिन्–स्त्री-तिलक सीता के; मनत्तिन् माण्पैयो–मन की दृढ़ता के गौरव को; वनैकळल् अरचरिन्–पायलधारी राजाओं से; वण्मै मिक्किटुम्–अधिक उदार; चनकर् तम् कुलत्तैयो–जनक के कुल को; यातु चाऱ्ऱुकेन्–किसको गाऊँ। ३९८

अब हनुमान विस्मय से अभिभूत हो गया। पायलधारी श्रीराम की भुजाओं की प्रशंसा की जाय, या स्त्रीतिलक सीताजी के मन की दृढ़ता की ? या पायलधारी राजाओं में सर्वश्रेष्ठ उदार दानी जनक के कुल के गौरव का यशोगान किया जाय ? किसका गान करूँगा ? हनुमान ने कहा। ३९८

तेवरुम् बिळैत्तिलर् तॅय्व वेदियर्
एवरुम् बिळैत्तिल रऱमु मीऱिन्ऱाल्
यावदिङ् गिनिच्चॅय लरिय दॅम्बिराऱ्
कावॅन् ऱडिमैयुम् बिळैप्पिन् ऱामरो 399

तेवरुम् पिळैत्तिलर्–देव भी अपराधी नहीं बने; तॅय्व वेतियर् ॲवरुम्–दिव्य ब्राह्मण कोई भी; पिळैत्तिलर्–दोषी नहीं बने; अऱमुम् ईऱु इन्ऱु–धर्म का भी अन्त नहीं हुआ; ॲम्पिराऱ्कु आव–मेरे आराध्य के प्रति; ॲन् अटिमैयुम्–मेरी दासता भी; पिळैप्पिन्ऱाम्–निर्दोष रही; इनि–अब; इङ्कु–यहाँ; चॅयल् अरियतु–कार्य असाध्य; यावतु–क्या है (कुछ भी नहीं)। ३९९

देव अपराधी नहीं रहे। दिव्य गुणी ब्राह्मण भी अपराधी नहीं रहे। धर्म का अन्त नहीं हुआ। मेरे आराध्य नायक की मेरी दासता भी निर्दोष हो रही। अब कौन सा कार्य है, जो दुस्साध्य होगा ? । ३९९

केऴिला	णिऱैयिऱै	कीण्ड	दामॅनिन्
आऴियान्	मुनिवॅन्नु	माऴि	मीक्कॉळ
ऊऴियि	निऱुदिवन्	दुरुमॅन्	रुन्निनेन्
वाऴिय	वुलहिनि	वरम्बि	नाळॅलाम् 400

केऴ् इलाळ्–अप्रतिम; निऱै–(सीताजी का) संयम; इऱै कीण्टतु आम् ऍनिन्–थोड़ा भी दरार खा गया तो; आऴियान्–चक्रधर श्रीराम का; मुनिवु ऍन्नुम् आऴि–कोपसागर; मी कॉळ–उमग उठेगा; ऊऴियिन् इऱुति–युगान्त; वन्तु उऱुम्–आ जायगा; ऍन्ऱु उन्निनेन्–ऐसा सोचा; इनि–अब; उलकु–संसार; वरम्पिल् नाळ् ऍलाम्–अनन्त काल तक; वाऴिय–जीते रहें। ४००

हनुमान ने विचार व्यक्त किया कि मैंने सोचा था कि अप्रतिम देवी के चरित्र में कियत् अंश में दरार पड़ गयी तो चक्रधर श्रीराम के कोपसागर के उमँग आने से सारे लोकों का अन्त करनेवाला प्रलय हो जायगा। अब ऐसा कुछ नहीं होगा। अब लोक अनन्त काल तक जिएँ ! । ४००

वॅङ्गनऩ्	मुऴुहियुम्	पुलन्गळ्	वीक्कियुम्
नुङ्गुव	वरुन्दुव	नीक्कि	नोऱ्ऱवर्
ऍङ्गुळर्	कुलत्तिल्वन्	दिल्लिन्	माण्बुडै
नङ्गैयर्	मनत्तव	नविलर्	पालदे 401

वॅम् कनल्–संतापक पंचाग्नि में; मुऴुकियुम्–रहकर (तपस्या करके); पुलन्कळ् वीक्कियुम्–इन्द्रिय-निग्रह करके और; नुङ्कुव अरुन्तुव—निगलने योग्य और पेय भोजन; नीक्कि–त्यागकर; नोऱ्ऱवर्–व्रतपालन करनेवाले; ऍङ्कुळर्–कहाँ हैं; कुलत्तिल् वन्तु–श्रेष्ठकुल में पैदा होकर; इल्लिन् माण्पु उटै–गृहस्थी योग्य श्रेष्ठता से युक्त; नङ्कैयर् मन तवम्–स्त्रियों का मनोतप; नविलल् पालते–वर्णन योग्य है क्या (वर्णनातीत है)। ४०१

कठोर पंचाग्नि-मध्य स्थित हो तपस्या करनेवाले इन्द्रियनिग्रही, निगलने योग्य या पेय भोजन-पदार्थों के त्यागी तपस्वी कहाँ मिलते हैं ? श्रेष्ठकुलजाता, गृहस्थधर्म-परिपालिका के मनोतप का वर्णन करना हमारे बस का है क्या ? । ४०१

※पॅणनोर्	ऱदुमनैप्	पिऱवि	पॅण्मैपोल्
नाणनोर्	ऱुयर्न्ददु	नङ्गै	तोन्ऱलाल्

माणनोऱ् ऱीण्डिव ळिरुन्द वाऱॆलाम्
काणनोऱ् ऱिलनवन् कमलक् कण्गळाल् 402

नङ्कै तोऩ्ऱलाल्–इस देवी के जन्म होने से; मत्तै पिऱवि–कुलजन्म; पेण–सबके द्वारा पालन-योग्य हो; नोऱ्ऱतु–इसका तप कर चुका; पॆण्मै पोल्–स्त्रीत्व के समान; नाणम्–लज्जा भी; नोऱ्ऱु उयर्न्ततु–तपस्या करके श्रेष्ठ हो गयी; ईण्टु–यहाँ; इवळ्–ये; माण नोऱ्ऱु–चरित्रतपस्या करती; इरुन्त–रहीं; आऱु ऎलाम्–वह प्रकार सब; अवऩ्–उन्होंने (श्रीराम ने); कमल कण्कळाल्–अपने कमल-नेत्रों से; काण–देखने का; नोऱ्ऱिलऩ्–व्रत (भाग्य) नहीं किया। ४०२

इन देवी के जन्म से उत्तम कुल में जन्म लेना तप कर गया, जिसके फलस्वरूप सब उसका पालन करेंगे। (सब उत्तम कुल में जन्म लेना चाहेंगे।) स्त्रीत्व के समान लज्जा भी भाग्यशालिनी बन गयी। ये देवी इधर जो तपस्या कर रहीं हैं, इसकी रीति अपनी आँखों से देखने का भाग्य पुण्डरीकाक्ष श्रीराम का नहीं रहा। ४०२

मुऩिवर्ह ळरुन्दवर् मुऱैयिन् निऩ्ऱुळार्
इऩियव डाऩला दियारु मिल्लैयाल्
तऩिमैयुम् पॆण्मैयुन् दवमु मिऩ्ऩदे
वऩिदैयर्क् काहनल् लऱत्तिन् माण्बॆलाम् 403

अवळ् ताऩ् अलातु–उनके सिवा; यारुम् इल्लैयाल्–कोई अन्य नहीं हैं ये, इसलिए; मुऩिवर्कळ् अरुन्तवर्–मुनि जो श्रेष्ठ तपस्वी हैं; इऩि मुऱैयिन् निऩ्ऱुळार्–अब व्रती जीवन के क्रम में स्थिर रहेंगे; तऩिमैयुम्–एकाकीपन; पॆण्मैयुम्–स्त्रीत्व; तवमुम्–पातिव्रत्य तप; इऩ्ऩते–यही हैं; नल्ल अऱत्तिन् माण्पु ऎलाम्–श्रेष्ठ धर्म का सारा गौरव; वऩितैयर्क्कु आक–स्त्रियों का हो। ४०३

अवश्य ये सीताजी हैं। अन्य कोई नहीं। इससे यह ध्रुव हो गया कि कठिन तपस्यारत मुनि लोग अपने आचरण में स्थिर रहेंगे। यही एकाकीपन, स्त्रीत्व और (पातिव्रत्य के) सद्धर्म का गौरव (इनका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण) हैं। अच्छे धर्म की सारी श्रेष्ठताएँ स्त्रियों को प्राप्त हो जायँ। ४०३

तरुममे कात्तदो जऩह ऩल्विऩैक्
करुममे कात्तदो कऱ्पिन् कावलो
अरुमैये यरुमैये यारि दाऱ्ऱुवार्
ऒरुमैये यॆम्मऩोर्क् कुरैक्कऱ् पालदो 404

तरुममे कात्ततो–धर्मदेवता ने (इनके शील को) बचाया; चऩकऩ् नल् विऩै करुममे–जनक के सत्कर्म ने; कात्ततो–बचाया; कऱ्पिऩ् कावलो–इनके पातिव्रत्य-पालन ने रक्षा की; अरुमैये अरुमैये–अपूर्व है, अपूर्व है; इतु आऱ्ऱुवार् यार्–यह करनेवाला कौन होगा; ऒरुमैये–अद्वितीय है; ऎम्मऩोर्क्कु–हम जैसों के लिए; उरैक्कल् पालतो–कथनशक्य है क्या। ४०४

इनकी इस तरह रक्षा कैसे हो सकी ? धर्म ने इसकी रक्षा की ? या जनक के कर्मों के पुण्य ने इसका पालन किया ? या इसके चरित्र की दृढ़ता इसकी रक्षक हुई ? ओह ! अपूर्व, कितना अपूर्व ? ऐसा कौन कर सकेगा? यह इनकी अद्वितीय विशेषता है। हम जैसों से अवर्ण्य है ! । ४०४

शॅल्वमो वद्रुववर् तीमै योविदु
अल्लुनन् पहलुनिऩ् ड्रमर राट्चॅय्वार्
ऑल्लुमो वॊरुवर्क्की दुरुहण् यादिनि
वॅल्लुमो तीविनै यरत्तै मॅय्म्मैयाल् 405

चॅल्वमो अतु–(राक्षसों का) वैभव वैसा है; अवर् तीमैयो इतु–उनका नृशंस कार्य है यह; अमरर्–देव; अल्लुन् नल् पकलुम्–अहोरात्रि; निन्ऱु आळ् चॅय्वार्–स्थित होकर गुलामी करते हैं; ईतु ऑल्लुमो ऑरुवर्क्कु–यह (चरित्र-पालन) किसी के लिए शक्य हो सकता है क्या; उऱुकण् इनि यातु–(इससे बढ़कर) संकट क्या हो सकेगा; मॅय्मैयाल्–असल में; ती विनै अरत्तै वॅल्लुमो–पाप धर्म को जीत सकेगा क्या। ४०५

वहाँ मैंने देखा— राक्षसों का वैभव वहाँ वैसा। उनका क्रूर-कार्य ऐसा। देवगण अहोरात्र रहकर उनकी गुलामी कर रहे हैं। इस स्थिति में ऐसा अपना पालन करा लेना किसी के लिए साध्य होगा क्या ? देवी ही यह असाध्य कार्य कर सकीं। इससे बढ़कर इन पर क्या कष्ट आ सकेगा ? सच है पाप पुण्य को जीत नहीं सकता। ४०५

ऍन्ऱिवै यिनैयन्न वॅण्णि वण्णवान्
पॊन्ऱिणि मुदुमरप् पॊदुम्बर्प् पुक्कवण्
निन्ऱन ऩव्वऴि निहऴ्न्ददि यावॅनिल्
तुन्ऱुपूम् जोलैवा यरक्कन् ऱोन्ऱिनान् 406

ऍन्ऱु–यों; इवै इनैयन–ये और ऐसी बातें; ऍण्णि–सोचकर; वण्ण वान्–सुन्दर और उन्नत; पॊन् तिणि–स्वर्णलसित; मुतु मर पॊतुम्पर्–प्राचीन तरु के कोटर में; पुक्कु–घुसकर; अवण् निन्ऱनन्–वहाँ रहा; अ वऴि–वहाँ (तब); निकऴ्न्ततु–घटा; यातु ऍनिल्–क्या है पूछो तो; तुन्ऱु पूम् चोलै वाय्–पुष्प-भरे उस अशोकवन में; अरक्कन् तोन्ऱिनान्–राक्षस (रावण) प्रकट हुआ। ४०६

हनुमान इस तरह की बातें सोचते हुए एक सुन्दर और ऊँचे सुनहले तरु के कोटर में जाकर ठहरा। तब हुआ क्या ? स्वयं राक्षसाधिपति रावण उस पुष्पकलित अशोक वन में आया। ४०६

शिहरवण् कुडुमि नॅडुवरै यॅवैयु मॊरुवऴित् तिरण्डन शिवण
महरिहै वयिर कुण्डल मलम्वु तिण्डिरल् तोळ्पुडै वयङ्गच्

शहरनीर् वेलै तळुविय कदिरि रलैदोरुन् दलैदोरुन् दयङ्गुम्
वहैयपन् महुड मिळवॅयि लॅरिप्पक् कङ्गुलुम् बहल्पड वन्दान् 407

चिकर वण् कुट्मि–शिखर रूपी समृद्ध चोटियों वाले; नॅटुवरै ऍवैयुम्–सभी पर्वत; ऑरु वळि तिरण्टत्त–एक स्थान पर इकट्ठे हुए; चिवण–जैसे; मकरिकै–मकराकार बाहुवलय; वयिर कुण्डलम्–हीरे के कुण्डल; अलम्पु–जिन पर हिलते थे; तिण् तिरळ् तोळ्–बहुत बलवान कन्धे; पुटै वयङ्क–पार्श्व में शोभे; चकर नीर् वेलै–सगरपुत्र-खनित जल-भरे सागर को; तळुविय कतिरिन्–आलिंगन करते हुए उठनेवाले सूर्य की तरह; तलै तोरुम् तलै तोरुम्–हर सिर पर; तयङ्कुम् वकैय–शोभायमान; पल् मकुटम्–अनेक किरीट; इळ वॅयिल् ऍरिप्प–बाल आतप-समान प्रभा छिटकाते रहे; कङ्कुलुम् पकल् पट–रात भी दिन बनी; वन्तान्–(ऐसा) आया। ४०७

उसके कन्धे, शिखर-सहित लम्बे पर्वत सभी एकत्र हुए हों, ऐसे शोभ रहे थे। उनको मकराकार बाहुवलय अलंकृत कर रहे थे और कानों के हीरे के कुण्डल उन पर लगे डोल रहे थे। ऐसी बीस भुजाएँ उसके दोनों बाजुओं में विद्यमान थीं। उसके सिरों पर मुकुट जो थे, वे सगरपुत्र-खनित सागर से उठनेवाले सूर्य के समान लगे और बालआतप-सी कान्ति बिखेर रहे थे; जिसके कारण रात भी दिन में बदली हुई लगी। इस ठाट के साथ रावण आया। ४०७

उरुप्पशि युडैवा ळेन्दिन डॉडर मेनहै वॅळ्ळडै युदवच्
चॅरुप्पिनैत् ताङ्गित् तिलोत्तमै शॅल्ल वरम्बैयर् कुळाम्बुडै शुऱ्ऱक्
करुप्पुरज् जान्दुङ् गलवैयु मलरुङ् गलन्दुमिळ् परिमळ गन्दम्
मरुप्पुडैप् पॉरुप्पेर् मादिरक् कळिऱ्ऱिन् वरिक्कैवाय् मूक्किडै मडुप्प 408

उरुप्पचि—उर्वशी के; उटैवाळ् एन्तितळ्–तलवार लिये हुए; तॊटर–पीछे आते; मेनकै--मेनका के; वॅळ्ळटै उतव–पान देते रहते; चॅरुप्पित्तै ताङ्कि–चप्पलें उठाए हुए; तिलोत्तमै चॅल्ल–तिलोत्तमा के साथ आते; अरम्पैयर् कुळाम्–अप्सराओं के समूह के; पुटै चुऱ्ऱ–चारों ओर घेरे आते; करुप्पुर चान्तुम् कलवैयुम्–कर्पूर-चन्दन-लेप; मलरुम्–और पुष्प; कलन्तु–मिलकर; उमिळ्–जो निकालते हैं; परिमळ कन्तम्–श्रेष्ठ गन्ध; मरुप्पु उटै–दाँतों से युक्त; पॊरुप्पु एर्–पर्वत-सम; मातिर कळिऱ्ऱिन्–दिग्गजों की; वरि कै–झुर्रियों से युक्त, सूँड़ों के; वाय् मूक्किटै–मुख और नाकों में; मटुप्प–भरकर ठहरी, ऐसा। ४०८

(और भी) उर्वशी तलवार लिये साथ आ रही थी। मेनका ताम्बूलवाहिनी के रूप में उसे पान देती आ रही थी। तिलोत्तमा चप्पल लिये जा रही थी। अन्य अप्सराओं के समूह उसके चारों ओर घेरे आ रहे थे। कर्पूरचन्दन-लेप और विविध फूलों से उठती महक दाँत-सहित पर्वतों के समान रहनेवाले दिग्गजों की झुर्रियों-सहित सूँड़ों के द्वारों और मुखों में जा भर रही थी। ४०८

नात्तनॅय् विळक्क नालिरु कोडि नङ्गैय रङ्गैया लॅडुप्प
मेनिमिर्न् दुयर्न्द मुडिहळिन् मणियिन् विरिहदि रिरुळॅलाम् विळुङ्ग
कान्मुद ऱॉडर्न्द नूबुरञ् जिलम्बक् किण्किणि कलैयॉडुङ् गलित्तप्
पानिरत् तन्नक् कुळाम्बडर्न् दॅन्नप् पऱ्पल मळलैयुम् बहर 409

नात्त नॅय् विळक्कम्–कस्तूरी आदि से मिश्रित घी के दीपक; नाल् इरु कोटि–आठ करोड़; नङ्कैयर्–सुन्दरी स्त्रियाँ; अम् कैयाल् ॲटुप्प–मनोरम हाथ में लेती आयीं; मेल् निमिर्न्तु–ऊपर उठे और; उयर्न्त–उन्नत; मुटिकळिन्–किरीटों के; मणियिन्–रत्नों से; विरि कतिर्–छूटी प्रभा; इरुळ् ॲलाम्–सारा अन्धकार; विळुङ्क–निगल लेती है; काल् मुतल्–पैर से; तॊटर्न्तु–लगातार (पहने); नपुरम् चिलम्प–नूपुर आदि के क्वणित होते; किण्किणि–घण्टियों के; कलैयॊटुम्–मेखलाओं के साथ; कलित्त–ध्वनित होते; पाल् निऱत्तु–दुग्धधवल; अन्नक् कुळाम्–हंससमूह; पटर्न्तन्न–फैले जैसे; पऱ्पल मळलैयुम् पकर–विविध तुतली मधुर बोलियाँ बोलते आते। ४०९

सुन्दर स्त्रियाँ अपने मनोरम हाथों पर कस्तूरीगन्धद्रव्य-मिश्रित घी के दीये लिये आ रही थीं। रावण के किरीटों में जटित रत्नों की फैलती कान्ति अन्धकार को निगल रही थी। स्त्रियों के पादादि केश आभरणों से अलंकृत थे। नूपुर बोल रहे थे और घंटियों के साथ मेखलाएँ क्वणन कर रही थीं। वे भी आपस में तुतली और मधुर बोलियों में बात करती आ रही थीं। उनका समूह दुग्ध-धवल हंसों के समूहों के समान लगा। ४०९

अन्दरम् बुहुन्द दुण्डॅन्न मुनिवुऱ् ऱरुन्दुयि नीङ्गिन्ना नन्ऱो
शन्दिर वदनत् तरुन्ददि यिरुन्द तण्णरुम् शोलैयिऱ् ऱान्ो
मन्दिरम् यादो यारॉडुम् बोमो वॅन्ऱुदम् मनमरु हुदलाल्
इन्दिरन् मुदलो रिमैप्पिला नाट्टत् तॅन्नैवरु मुयिर्प्पविन् दिरुप्प 410

अन्तरम् पुकुन्तनु उण्टु–(कोई) आफ़त आ गयी है; ॲन्न–ऐसा; मुनिवुऱ्ऱु–कोप करके; अरुन्तुयिल्–प्यारी नींद को; नीङ्कितान् अन्ऱो–छोड़कर इधर आया न (रावण); चन्तिर वतनत्तु–चन्द्रवदना; अरुन्तति इरुन्त–अरुन्धती-सम सीता जहाँ रहीं; तण् नऱुम्–शीतल सुगन्धित; चोलैयिल् तानो–उद्यान में क्या; मन्तिरम् यातो–रहस्य क्या; यारॊटुम् पोमो–किसके सिर पर उतरेगा; ॲन्ऱु–ऐसा; तम् मनम् मऱुकुतलाल्–मन के व्यग्र होकर संकट करने से; इन्तिरन् मुतलोर्–इन्द्र आदि; इमैप्पिला नाट्टत्तु ॲन्नैवरुम्–उन आँखों के जिनकी पलकें न गिरतीं, वे देव सब; उयिर्प्पु अविन्तु इरुप्प–श्वास रोके रहे। ४१०

रावण का अशोक वन में आना जानकर देवगण डर गये। कोई संकट आया है—ऐसा समझकर रावण कुपित हो गया और प्यारी नींद त्यागकर इधर आया है न? तब क्या उसका उद्देश्य इसी वन में आना था, जहाँ चन्द्रवदना अरुन्धती-समाना सीताजी हैं? तब इसका रहस्य क्या

है ? इसका क्रोध किस पर उतरने के बाद किसके अहित के बाद शान्त होगा ? ऐसा सोचकर देव व्यग्र हुए और अपलक वे श्वास को भी रोके रहे। ४१०

नीऩिऱक् कुऩ्ऱि ऩॅडिदुडऩ् ऱाऴ्ऩ्द नीत्तवॅळ् ळरुवियि ऩिमिर्ऩ्द
पाऩिऱप् पट्टु मालैयुत् तरियम् पशप्पुऱ पशुम्बॊऩा रत्तिऩ्
माऩिऱ मणिह ळिडैयुऱप् पडर्ऩ्दु वरुहदि रिळवॅयिल् पॊरुवच्
चूऩिऱक् कॊण्मूच् चुऴित्तिडै किऴिक्कु मिऩ्ऩॅऩ मार्बिऩ् ऱुळङ्ग 411

नील् निऱ कुऩ्ऱिऩ्–नीले पर्वत पर; नॅटितु उटऩ् ताऴ्ऩ्त–अधिक लम्बे आकार की; नीत्त वॅळ् अरुवियिऩ्–प्रवहमान श्वेत सरिता के समान; निमिर्ऩ्त–लम्बी; पाल् निऱ–दुग्धवर्ण; पट्टु–कौशेय; मालै उत्तरियम्–माला के समान उत्तरीय; पचप्पु उऱ–वर्ण बदलकर रहा; पचुम् पॊऩ् आरत्तिऩ्–चोखे स्वर्ण के हार के; माल् निऱ मणिकळ्–श्रेष्ठ रंग के रत्न; इटैयुऱ–बीच-बीच में; पटर्ऩ्तु–रहकर; वरु कतिर्–उदीयमान सूर्य की; इळवॅयिल् पॊरुव–बाल-किरणों के समान; चूल् निऱ–गर्भ-सहित और घने रंग के; कॊण्मू–मेघ को; चुऴित्तु–लपेटकर; इटै किऴिक्कुम्–बीच में चीरकर चमकनेवाली; मिऩ् ऎऩ–बिजली के समान; मार्पिऩ्–वक्ष में; नूल् तुळङ्क–यज्ञोपवीत हिल रहा था, इस रीति से। ४११

उसका श्वेत कौशेय उत्तरीय उसके वक्षःस्थल पर ऐसा लग रहा था, जैसे नीले रंग के पर्वत पर लम्बी सरिता गिर रही हो। उसके रंग को बदलते हुए चोखे स्वर्णहार में जटित श्रेष्ठ कान्तिमय रत्न बीच-बीच में रहकर उदय-सूर्य की किरणों के समान प्रकाश फैला रहे थे। उसके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभ रहा था, जो जलगर्भित मेघ को लपेटे रहकर उसको चीर कर चमकनेवाली बिजली के समान शोभायमान था। ४११

तोडॊऱुन् दॊडर्ऩ्द महरवाय् वयिरक् किम्बुरि वलयमाच् चुडर्हळ्
नाडॊऱुञ् जुडरुङ् गलिहॆऴु विशुम्बि ऩाऴॊडु कोळिऩै नक्कत्
ताडॊऱुन् दॊडर्ऩ्दु तऴङ्गुपॊऱ् कऴलिऩ् तहैयॊळि नॆडुनिलन् दडवक्
केडॊऱुन् दॊडर्ऩ्द मुऱुवल्वॆण् णिलविऩ् मुहमल रिरविऩुङ् गिऴर 412

तोळ् तॊऱुम् तॊटर्ऩ्त–हर भुजा में पहने हुए; मकरवाय्–मकरमुख के; वयिर किम्पुरि वलय–हीरे-जड़ित किंपुरी नामक वलयों के; मा चुटर्कळ्–पृथुल प्रकाश; नाळ् तॊऱुम् चुटरुम्–हर दिन प्रकाश देनेवाले; कलि कॆऴु विचुम्पिऩ्–खूब विशाल आकाश के; नाळॊटु कोळिऩै नक्क–नक्षत्रों को और ग्रहों को मानो चाट लेते हैं; ताळ् तॊऱुम् तॊटर्ऩ्तु–दोनों पैरों में लगाये जाकर; तऴङ्कु–जो स्वर निकालती हैं; पॊऱ्कऴलिऩ्–उन स्वर्ण-पायलों की; तकै ऒळि–श्रेष्ठ प्रभा; नॆटु निलम् तटव–लम्बी भूमि को सहलाती आती है; केळ् तॊऱुम् तॊटर्ऩ्त–(उसके साथ आनेवाले) परिवार के हर सदस्य के प्रति दिखाये गये; मुऱुवल् वॆळ् निलविऩ्–हास रूपी श्वेत चाँदनी से; मुक मलर्–मुख रूपी सुमन; इरविऩुम् किऴर–रात के समय में भी खिला रहता है, इस रीति से। ४१२

उसकी सभी भुजाओं में मकरमुख के आकार के किंपुरी नामक बाहुवलय थे। उनमें हीरे के रत्न जड़े थे। उनसे जो कान्ति छूटी वह घने आकाश में प्रतिदिन चमकनेवाले तारों और ग्रहों को चाट रही थी। उसके परों में क्वणनशील स्वर्ण-पायलें थीं। उनसे जो कान्ति छूट रही थी, वह भूमि को सहलाती-सी लग रही थी। वह अपने साथ आनेवाले परिवार के हर सदस्य को हासयुक्त वदन के साथ देख रहा था। उस हास रूपी श्वेत चाँदनी में उसके मुखसुमन रात में भी खिल रहे थे। ४१२

तन्निऱत् तोडु माऱुतन् दिमैक्कु नीवियिन् ऱऴैपड वुडुत्त
पॊन्निऱत् तूचु करुवरै मरुङ्गि ऱऴुविय विळवॆयिल् पॊरुव
मिन्निऱक् कदिरिऱ् चुऱ्ऱिय पशुम्बॊन् विरऱ्ऱलै वीऱॊळिक् काशिन्
कन्निऱक् कऱ्ऱै नॆडुनिऴल् पूत्त कऱ्पह मुऴुवनङ् गविन 413

तन् निऱत्तोटु–उसके रंग से; माऱु तन्तु–विपरीत बनकर; इमैक्कुम्–छवि देनेवाला; नीवियिन् तऴैपट–नीवि में बद्ध होकर अधिक घने सिलवटों से युक्त; उटुत्त–पहने हुए; पॊन् निऱ तूचु–सुनहले वस्त्र; करुवरै मरुङ्किल्–काले पर्वत-मध्य; तऴुविय–पड़े; इळ वॆयिल् पॊरुव–बाल आतप-से लगे; मिन् निऱ–बिजली के रंग की; कतिरिन्–प्रभा से; चुऱ्ऱिय–घिरी; पचुम् पॊन्–चोखे स्वर्ण की; विरल् तलै–उँगलियों पर की; वीऱु ऒळि काचिन्–(मुँदरियों की) चमकदार श्रेष्ठ रत्न रूपी; कल् निऱ कऱ्ऱै–पत्थरों की प्रभा की लटें; नॆटु निऴल्–दीर्घ प्रकाश-सहित; पूत्त–विकसित; कऱ्पक मुऴुवतम् कविन–बड़े कल्पवन के समान शोभीं। ४१३

उसकी धोती में नीवि के नीचे सिलवटें अधिक लगी थीं। वह सुनहला रेशमी वस्त्र था। वह काले पर्वत पर पड़नेवाली बालसूर्य की रोशनी के समान लग रहा था। बिजली के-से रंग वाले, चमकदार स्वर्ण की, उँगलियों पर पहनी हुई मुँदरियों के रत्नों से निकलनेवाली कान्ति की लटें दीर्घ प्रकाश से शोभायमान कल्पवन के समान लगीं। ४१३

शन्नवी रत्त कोवॆवॆण् डरळ मूऴियि निऱुदियिऱ् ऱऴवि
पॊन्नॆडु वरैयै तॊत्तिय कोऴु नाळुमॊत् तिडैयिडै पॊलिय
मिन्नॊळिर् मौलि युदयमाल् वरैयिन् मीप्पडर् वॆङ्गदिर्च् चॆल्वर्
पन्निरु वरिनु मिरुवरुन् दविर वुदित्तदॊर् पडियॊळि परप्प 414

चन्न वीरत्त–'शन्नवीर' नामक हार के; कोवै वॆळ् तरळम्–लड़ियों में रहे श्वेत मोती; ऊऴियिन् इऱुतियिल्–युगान्त में; पॊन् नॆटु वरैयै–स्वर्ण के बड़े (मेरु) पर्वत को; तऴुवि तॊत्तिय–लपेटकर जो लटक रहे हैं; कोळुम् नाळुम् ऒत्तु–तारे और ग्रहों की समानता पाकर; इटै इटै पॊलिय–मध्य-मध्य चमकते हैं; मिन् ऒळिर् मौलि–विद्युत् के समान चमकनेवाले किरीट; उतयमाल् वरैयिन् मी–उदयगिरि पर; पटर्–फैली रही; वॆम् कतिर्–गरम किरणों के; चॆल्वर्–देवता (द्वादश) रुद्रों

में; पन्निरुवरिनुम् इरुवरुम् तविर–दो को छोड़ अन्य; उतित्ततु ओर् पटि–उदित हों जैसे; ऑळि परप्प–प्रकाश फैला रहे थे, इस रीति से । ४१४

उसने 'शन्नवीर' नाम का हार पहन रखा था। उसमें मोती लड़ियों में लगे थे, वे युगान्त में स्वर्ण-मेरुपर्वत पर लगे लटकनेवाले नक्षत्रों और ग्रहों के समान उस हार में मध्य-मध्य लग रहे थे। बिजली के समान कान्ति बिखेरनेवाले किरीट बारह आदित्यों में दो कम करके बाकी दस आदित्यों के समान लगे, जो बड़ी उदयगिरि पर दिखायी देते हों। किरीट उनके समान प्रकाश विखेर रहे थे। ४१४

पयिलॅयिऱ् ऱिरट्टैप् पणॅमरुप् पोडियप् पडियिनिऱ् परिबवञ् जुमन्द
मयिलडित् तोऴुक्कि नत्रैयमा मदत्त मादिरक् कावत्माल् यानै
कयिलैयिऱ् ऱिरण्ड मुरण्डोडर् तडन्दोळ् कनहन् दुयर्वरङ् गडन्द
अयिलॅयिऱ् ऱरियिन् शुवडुतन् करत्ता लळैन्दमाक् करियिनिन् ऱञ्ज 415

पयिल् ऍयिऱ्ऱु इरट्टै–युक्त दो-दो; पणै मरुप्पु–बलवान दाँत; ऑटिय–टूटे; इसलिए; पटियिनिल्–भूमि पर; परिपवम् चुमन्त–अयश धारण करनेवाले; मयिल् अटित्तु–मोर के पैर के; ऑऴुक्किन् अत्रैय–प्रकार के समान तीन धाराओं में बहनेवाले; मा मतत्त–अधिक बहाव से मदयुक्त; मातिर कावल्–दिग्पालक; मा यानै–बड़े गज; कयिलैयिल् तिरण्ट–कैलास पर्वत के समान पुष्ट; मुरण् तोटर्–सबल; तटम् तोळ् कनकनतु–विशाल भुजा वाले कनककशिपु के; उयर् वरम् कटन्त–बहुत श्रेष्ठ वरों को जीतनेवाले; अयिल् ऍयिऱ्ऱु–तीक्ष्ण दाँतों से युक्त; अरियिन्–नृसिंह की; चुवटु–पदछाप को; तन् करत्ताल्–अपनी सूँड़ से; अळैन्त–टटोलनेवाले; मा करियिन्–बड़े गज; निन्ऱु अञ्च–खड़े होकर डर रहे हैं; इस रीति से रावण आया। ४१५

दिग्गजों के चार-चार दाँत (रावण के साथ युद्ध में) टूटे और उन्हें अपमान लगा। उनके गण्डस्थल में तीन धाराओं में मदनीर बह रहा था, जो मोर के पैरों के तीन नाखूनों का-सा दृश्य उपस्थित कर रहा था। वे दिग्गज रावण की पद-छाप को देखकर ऐसे डरे, मानो कैलासपर्वत के समान कठोर और बलवान कन्धों वाले हिरण्यकशिपु के बहुत श्रेष्ठ वरों को भी जो व्यर्थ कर चुके थे, उन नृसिंह की पद-छाप को अपनी सूँड़ों से टटोलते हुए डर रहे हों। ४१५

अङ्गयर् करुङ्ग णियक्कियर् तुयक्कि लरम्बैयर् विञ्जैयर्क् कमैन्द
नङ्गैयर् नाह मडन्दैयर् शित्त नारिय ररक्कियर् मुदलाम्
कुङ्गुमक् कॊम्मैक् कुविमुलैक् कन्निवायक् कोहिलन् दुयरुरुङ् गुदलै
मङ्गैय रीट्ट माल्वरै तळीइय मञ्जैयङ् गुळुवैन वयङ्ग 416

अम् कयल्–सुन्दर 'कयल' मछली-सी; करुम् कण् इयक्कियर्–काली आँखों की

यक्षस्त्रियाँ; तुयक्कु इल्–अथक; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; विञ्चैयर्क्कु अमैन्त नङ्कैयर्–विद्याधर कुल की दयिताएँ; नाक मटन्तैयर्–नागांगनाएँ; चित्त नारियर्–सिद्धस्त्रियाँ; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मुतलाम्–आदि; कुङ्कुम–कुंकुम-लिप्त; कॊम्मै–पीन; कुवि मुलै–सुडौल स्तन; कनिवाय्–बिम्बाधर; कोकिलम् तुयरुरुम्–कोकिल को दुःखी करनेवाली; कुतलै–मधुर वाणी; मङ्कैयर् ईट्टम्–इनसे युक्त स्त्रियों के समूह; माल् वरै तऴीइय–बड़े पर्वत पर रहे; मञ्ञै अम् कुऴु–मोरों के मनोरम वृन्दों; ऍन्न–के समान; वयङ्क–शोभायमान लगे। ४१६

रावण के साथ स्त्रियों का समूह आ रहा था। यक्षस्त्रियाँ, जिनकी काली आँखें मनोहर कयल मछली के समान थीं; अथक अप्सराएँ; विद्याधर जाति की स्त्रियाँ; नागकन्याएँ; सिद्धनारियाँ; राक्षसियाँ आदि उस समूह में थीं। सबकी सब सुन्दरियाँ थीं, कुंकुम-लिप्त पुष्टस्तनी, बिंबाधरा और कोकिलपीडक मधुरवाणी रमणियाँ। वे उन मोरनीयों के समान थीं, जो किसी पर्वत का आश्रय लेकर उसी पर रहती हैं। वे रावण के साथ मिली आ रही थीं। (रावण ऐसा आ रहा था।)। ४१६

तॊळैयुरु पुळैवेय् तूङ्गिशैक् कानम् तुयलुरा दॊरुनिलै तॊडर
इळैयवर् मिडरु मिन्निलै यियक्क किन्नर मुरैनिरुत् तॆडुत्त
किळैयुरु पाडल् चिल्लरिप् पाण्डि रळुविय मुळवॊडुङ् गॆळुमि
अळैयुरै अरवुममुदुवा युहुप्प वण्डमुम् वैयमु मळप्प 417

तॊळै उरु–रन्ध्र-सहित; पुळै वेय्–पोली बाँस की वंशी से उत्पन्न; तूङ्कु इचै कानम्–मृदु स्वर का गाना; तुयल् उरातु–विना बिगड़े; ऒरु निलै तॊटर–समान रीति से हो रहा था; इळैयवर्–छोटी उम्र की कन्याओं का; मिटरुम्–कण्ठस्वर भी; इन् निलै इयक्क–मनोहर रीति से गा रहा था; किन्नरम्–किन्नर नाम की वीणा का; मुरै निरुत्तु ऍटुत्त–उचित प्रकार से निकाला; किळै उरु पाटल्–स्वर-शुद्ध संगीत; चिल्लरि पाण्टिल् तऴुविय–छोटे कंकड़-भरे 'पांडिल' नामक वाद्य से मिलकर निकली; मुळवॊटुम्–मृदंग(-ध्वनि) के साथ; कॆऴुमि–लय होकर; अळै उरै अरवुम्–बाँबी में रहनेवाले नाग भी; अमुतु वाय् उकुप्प–अमृत अपने मुख से उगले ऐसा; अण्टमुम्–बाह्याण्डों और; वैयमुम्–इस भूमि को; अळप्प–मानो माप रहा हो (अण्डों और भूमि पर सर्वत्र वह संगीत व्याप्त हो रहा था)। ४१७

अनेक छिद्रों से युक्त बाँस की बनी वंशी का मृदु संगीत विना किसी दोष या रुकावट के, समरस हो सुनायी दे रहा था। कमसिन रमणियों का कण्ठस्वर-संगीत भी साथ-साथ हो रहा था। 'किन्नर' नामक वाद्य का संगीत, जो तंत्रियों के मीड़ने से होता है, छोटे कंकड़ों से भरे 'पांडिल' नामक तालवाद्य के तालस्वर के और मर्दल के नाद के साथ मिलकर ऐसा मधुर चल रहा था कि बाँबी के सर्प का मुख भी (विष के बदले) अमृत बहावे। यह संगीत-स्वर मानो बाह्यांडों और इस अण्ड को भी नाप रहा था (यानी सर्वत्र व्याप्त हो रहा था)। ४१७

अन्नपूम् जवुक्कम् जामरे युक्क मादियाय् वरिशैयि नमैन्द
उन्नरुम्· पॊन्निन् मणियिनिऱ् पुनैन्द वुळैक्कुलम् मळैक्कुल मनैय
मिन्निडैच् चॆव्वायक् कुविमुलैप् पणैत्तोळ् वीङ्गुदे रलहुलार् ताङ्गि
नन्निरक् कारिन् वरवुहण् डुवक्कुम् नाडह मयिलॆन नडप्प 418

अन्न–इस भाँति; मळैक्कुलम् अनैय–मेघवृन्दों के समान; मिन् इटै–बिजली-सी कमर; चॆव्वाय्–लाल अधर; कुवि मुलै–और सुडौल स्तन; पणै तोळ्–बाँस के समान कन्धे; वीङ्कु तेर्–बड़े रथ के समान; अल्कुलार्–भग, इनके साथ शोभित राक्षसियाँ; पूम् चवुक्कम्–पुष्प-चतुष्कोण वितान; चामरै–चँवर; उक्कम्–पंखे; आतियाय् वरिचैयिन् अमैन्त–आदि यथाक्रम जो थे वे; उन्नरुम्–अचिंत्य रूप से उत्कृष्ट; पॊन्निन्–स्वर्ण से; मणियिनिल्–और रत्नों से; पुनैन्त–रचित; उळै कुलम्–हरिणों को; ताङ्कि–धारण करके; नल् निऱ कारिन्–अच्छे रंग के मेघ का; वरवु कण्टु–प्रकट होना देखकर; उवक्कुम्–मुदित होनेवाले; नाटक मयिल् अॆन–नर्तक मयूर के समान; नटप्प–साथ चलती आतीं। ४१८

इस रीति से रावण जा रहा था। उसके साथ मेघसमूह के समान राक्षसियों का झुण्ड भी जा रहा था। वे राक्षसियाँ, विद्युत्कटि, अरुणाधरा, पीनस्तनी, वंशस्कन्धा, रथनितंबिनी स्त्रियाँ थीं। वे चौकोर पुष्पवितान, चामर, पंखे आदि राजोचित मर्यादा-चिह्न और अत्यन्त मनोहर स्वर्ण और रत्नों से निर्मित हरिणों को लेकर श्रेष्ठ काली घटा को देखकर मुदित होनेवाले नर्तनशील मोरों के समान जा रही थीं। ४१८

तन्दिरिक् कण्णिऱ् ऱाक्कुऱु करुवि तूक्किन रॆळुविय शदियिन्
मुन्दुऱु कुणिलो डियैवुऱु कुऱट्टिऱ् चिल्लरिप् पाण्डिलिन् मुऱैयिन्
मन्दर कीदत् तिशैप्पदन् दॊडर्न्द वहैयुऱु कट्टळै वळामल्
अन्दर वानत् तरम्बैयर् करुम्बिन् पाडला ररुहुवन् दाड 419

तन्तिरिक् कण्णिल्–तन्त्रियों पर; ताक्कुऱु करुवि–जो चोट खाती है (और स्वर निकालती है), उस वीणा आदि वाद्यों को; तूक्कितर्–बजानेवाले; ऍळुविय चतियिन्–जो 'यति' निर्धारित करते हैं, उनके अनुरूप; मुन्तुऱु–पहले शब्दित होनेवाले; कुणिलोटु इयैवु उऱु–चोब के प्रहार से स्वर निकालनेवाले; कुऱट्टिल्–'कुरडु' नाम के चमड़े के वाद्य के; चिल्लरि पाण्टिलिन्–छोटे कंकड़-भरे 'पाण्डिल' नामक वाद्य के; मुऱैयिन्–उचित क्रम से; मन्तर कीततु–मध्य स्वर के गीत के; इचै पतम् तॊटर्न्त–स्वरित शब्दों के अनुरूप; वकै उऱु कट्टळै–विधिक्रम का; वळामल्–उल्लंघन किये विना; अन्तर वानततु–अन्तरिक्ष की; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; करुम्पिन् पाटलार्–इक्षु-सदृश मधुर संगीत जाननेवालियाँ; अरुकिल् वन्तु–रावण के पास आकर; आट–नाचती आयीं। ४१९

व्योमलोक की अप्सराएँ, जो इक्षुरसमधुर गान में भी चतुर थीं, रावण के पास-पास नाचती हुई आ रही थीं। तब तंत्रीनाद-वीणावादक भी आ

रहे थे। उन अप्सराओं का नाच उनके वादन द्वारा निर्धारित 'यति' के अनुरूप हो रहा था। चोब से प्रताड़ित 'कुरडु' नामक चमड़ा-मढ़े वाद्य से निकला नाद, छोटे कंकड़ों से भरे 'पांडिल' नामक वाद्य से निकला नाद, शास्त्रनिर्धारित और मद्धिम स्वर में गाया कण्ठ-संगीत —इन सबका अच्छा समाँ बँधा था और नाच उससे ताल-मेल के साथ हो रहा था। ४१९

अन्दियि ननङ्ग नळल्पडत् तुरन्द वयिन्मुहप् पहळिवा यरुत्त
वॅन्दुरु पुण्णिन् वेल्नुळैन् दॅनन् वॅण्मदिप् पशुङ्गदिर् विरव
मन्दमा रुदम्बोय् मलर्तॊरुम् वारि वयङ्गुनीर् मारियिन् वरुतेन्
शिन्दुनुण् डुळियिन् शीहरत् तिवलै युरुक्किय शॅम्बॅनत् तॅरिप्प 420

अन्तियिन्–सायंकाल में; अनङ्कन्–मन्मथ द्वारा; अळल् पट–जलाने के लिए; तुरन्त–प्रेरित; अयिल् मुक–तीक्ष्णमुख; पकळि वाय्–शरों से; अरुत्त–काटकर बने; वॅन्तुरु पुण्णिन्–ताजे व्रणों में; वेल् नुळैन्त्तॅनन–भाला घुसा हो जैसे; वॅण् मति पचुम् कतिर्–श्वेत चन्द्र की शीतल किरणें; विरव–मिल गयीं; मन्त मारुतम्–मन्दमारुत; मलर् तॊरुम् पोय्–पुष्प-पुष्प पर जाकर; वारि वरु–जो ले आता है; वयङ्कु नीर् वारियिन्–अंगीभूत रहनेवाले जल की मेघ-वर्षा के समान; तेन्–शहद की; चिन्तु नुण् तुळियिन्–टपकनेवाली छोटी बूँदों के; चीकर तिवलै–छोटे कणों के; उरुक्किय चॅम्पु–पिघले ताम्र; ॲन–के समान; तॅरिप्प–छिटकते (रावण आया)। ४२०

श्वेत चाँद की शीतल चाँदनी छिटक रही थी, वह रावण को ऐसा लग रहा था, मानो सन्ध्या-वेला में मन्मथ द्वारा जलाने के लिए प्रेषित शरविद्ध व्रण में भाला घुसा हो। मन्द मलयमारुत के साथ पुष्प-पुष्प पर जा संगृहीत मधु-धारा के छोटे-छोटे कण आ रहे थे और वे रावण पर पिघले ताम्र के कणों के समान पड़कर ताप दे रहे थे। ४२०

इळैपुरै मरुङ्गु लिरुमिरु मॆनवु मिरुहिला वनमुलै यिरट्टै
उळैपुहु शॅप्पि नॊळिदर मरैत्त वुत्तरी यत्तिन नॊल्हिक्
कुळैपॊरुङ् गमलक् कोट्टिनर् नोक्कुङ् गुरुनहैक् कुमुदवाय् महळिर्
मळैपुरै यॊण्गण् शॆङ्गडै यीट्ट मार्बिनुन् दोळिनुम् वयङ्ग 421

इळैपुरै–सूत्रसम; मरुङ्कुल्–कमर; इरुम् इरुम् ॲनवुम्–टूटेगी, टूटेगी, ऐसा कहने योग्य; इरुकिला–तो भी नहीं टूटेंगे, ऐसा (कठिन); वन मुलै इरट्टै–मनोरम स्तनद्वय; उळै पुकु–अन्दर धँसे हुए; चॅप्पिन्–कटोरियों के समान; ऑळितर–शोभा देते हैं; मरैत्त–उनको आच्छादित करनेवाले; उत्तरीयत्तिनर्–उत्तरीयों से अलंकृत; ऑल्कि–नरम बनकर; कुळै पॊरुम्–कुण्डलों से टकरानेवाली; कमलम्–कमलनयनों वालियाँ (जो); कोट्टित्तर् नोक्कुम्–तिरछी रीति से रावण को देखती हैं; कुरुनकै–मन्दहास-सहित; कुमुत वाय् मकळिर्–कुमुदाधरा स्त्रियों के; मळै पुरै–मेघ-सम (काली); ऑण् कण्–प्रकाशमय आँखों की; चॅम् कटै ईट्टम्–लाल कोरों का

समूह; मार्पितुम् तोळितुम्–(रावण के) वक्ष और भुजाओं पर; वयङ्क–लगा रहता है, ऐसा। ४२१

सुन्दरी स्त्रियों की दृष्टि रावण पर लगी हुई थी। सूत्र-सम उनकी कमरें अभी टूटी, अभी टूटी की स्थिति में थीं। तो भी नहीं टूटीं। सुदृढ़ स्तनद्वय वक्षों में धँसे हुए कटोरों के समान शोभ रहे थे। उन स्तनों को उत्तरीय आच्छादित कर रहा था। उनकी आँखें कुण्डलों तक गयी थीं, मानो उनसे भिड़ने चली हों। मन्दहासवदना कुमुदाधरा स्त्रियाँ अपनी आँखें तिरछी करके मेघ-सम काली, उज्ज्वल उन आँखों की लाल बनी कोरों से रावण पर अपनी दृष्टियों को डाले जा रही थीं। ४२१

मालैयुञ् जान्दुङ् गलवैयुम् बूणुम् वयङ्गुनुण् डूशॉडु काशुम्
शोलैयिन् ड़ॉळ्दिक् कऱ्पहत् तरुवु निदिहळुङ् गॉण्डुपिन् ड़ॉडरप्
पालिन्वॆण् परवैत् तिरैकरुङ् गिरिमेऱ् परन्दॆत्तच् चामरै पदैप्प
वेलैनिन् ऱुयरु मुयलिल्वान् मदियिन् वॆण्गुडै मीदुऱ विळङ्ग 422

चोलैयिन् तॊळ्ति–वन के समान घने; कऱ्पक तरुवुम्–कल्पतरु; नितिकळुम्–(शंख, पद्म आदि नव) निधियाँ; मालैयुम्–मालाएँ; चान्तुम्–चन्दन; कलवैयुम्–मिश्रित लेप; पूणुम्–आभरण; वयङ्कु नुण् तुचॊटु–शोभायमान महीन वस्त्रों के साथ; काचुम्—और रत्न; कॊण्टु पिन् तॊटर–लेकर पीछे आते हैं; पालिन्–क्षीर; परवै वॆण् तिरै–सागर की श्वेत तरंगें; करुम् किरि मेल्–काले पर्वत पर; परन्तॆत–फैलीं जैसे; चामरै पतॆप्प–चामर डुलते हैं; वेलै निन्ऱु–समुद्र से; उयरुम्–उत्तरोत्तर ऊँचा चढ़नेवाले; मुयल् इल्–शशकहीन; वाल् मतियिन्–श्वेत चन्द्र के समान; वॆण् कुटै–श्वेत छत्र; मीतु उऱ विळङ्क–ऊपर सुन्दर रूप से शोभता है, इस तरह। ४२२

वन के समान अधिक संख्या में कल्पतरु और शंख, पद्म आदि नव-निधियाँ भी साथ आ रही थीं। वे मालाएँ, चन्दन, मिश्रगन्ध-लेप, आभरण, शोभायमान महीन वस्त्र, रत्न आदि लेकर उसका अनुगमन कर रही थीं। चामर डुल रहे थे, और वे क्षीरसागर की तरंगों के काले पर्वत पर फैलने का दृश्य पैदा कर रहे थे। श्वेत छत्र उसके ऊपर एक कलंकहीन चन्द्र के समान शोभित हो रहा था, जो समुद्र से उत्तरोत्तर ऊपर उठ रहा हो। ४२२

आर्हलि यहऴि यरुवरै यिलङ्गै यडिपॆयर्त् तिडुतॊऱु मळत्त
नेर्करुम् बरवैप् पिऱळ्दिरै तवळ्न्दु नॆडुन्दडन् दिशैतॊऱुम् निमिरच्
चार्वरुङ् गडुवि नॆयिऱुडैप् पहुवा यत्तन्दनुन् दलैतडु माऱ
मूरिनी राडै यिरुनिलप् पावै मुदुहुळुक् कुऱ्ऱत्त नॊळिय 423

आर् कलि अकऴि–समुद्र जिसकी परिखा हो; अरु वरै इलङ्कै–श्रेष्ठ (त्रिकूट) पर्वत पर बसी लंका; अटि पॆयर्त्तिटुम् तोऱुम्–जब पग धरता है; अऴुत्त–दबाने

से; नेर्-सामने के; करुम् परवै-काले सागर पर; पिरळ् तिरै-लहरानेवाली तरंगें; तवळ्न्तु-चलकर; नॆटुम् तटम्-उसकी लम्बी और चौड़ी; तिचै तोऱुम्-सारी दिशाओं में; निमिर-भर जाती हैं; चार्वु अरुम्-अगम; कटुविन् ऎयिऱुटै-विषैले दाँतों वाले; पकुवाय् अतन्ततुम्-फटे जैसे बड़े मुख वाले अनन्तनाग के भी; तलै तटुमाऱ-भार के कारण (अपने) सिर लड़खड़ाते हैं; मूरि नीर्-सबल जल; आटै-जिसका वसन है; इरु निल पावै-वह भूदेवी; मुतुकु उळुक्कुऱ्ऱतळ्-पीठ पर बल पड़ने से; नॆळिय-हिल उठी। ४२३

लंका नगरी बड़े त्रिकूट पर्वत पर स्थित थी और उसके चारों ओर शब्दायमान सागर घेरे हुए था। ज्यों-ज्यों रावण अपना एक चरण उठाकर दूसरा रखता, त्यों-त्यों लंका दब जाती। तब सामने के बड़े सागर पर उठनेवाली तरंगें चारों दिशाओं में फैलतीं और विकट तथा विषैले दाँतों के और फटे हुए-से दिखनेवाले बड़े मुखों के अनन्तनाग के सिर डगमगा जाते और भूदेवी की पीठ में वेदना के साथ बल पड़ जाता। ४२३

केडहत् तोडु मळ्वॆळुच् चूल मङ्गुशङ् गप्पणङ् गिडुहो
डाडहच् चुडर्वा ळयिल्शिलै कुलिश मुदलिय वायुद मत्तैत्तुम्
ताडहैक् किरट्टि यॆरुळ्वलि तळैत्त तहैमैयर् तडवरै पॊरुक्कुम्
चूडहत् तडक्कैच् चुडुशिनत् तडुपो ररक्कियर् तलैदॊरुञ् जुमप्प 424

ताटकैक्कु इरट्टि-ताड़का के दुगुने; ऎरुळ्वलि तळैत्त-अधिक बलसंयुक्त; तकैमैयर्-योग्य; तटवरै पॊरुक्कुम्-बड़े पर्वतों को धारण करनेवाले; चूटक तटकै-कंकणालंकृत बड़े हाथों से युक्त; चुटु चित्ततु-संतापक क्रोधी; अटु पोर् अरक्कियर्-संहारक युद्धकुशल राक्षसियाँ; केटकत्तोटु-ढालों के साथ; मळु-परशु; ऎळु-मूसल; चूलम्-और शूल; अङ्कुचम्-अंकुश; कप्पणम्-और 'कप्पण' नामक हथियार; किटुकु ओटु-'किटुकु' नामक हथियार के साथ; आटक चुटर् वाळ्-सुनहली उज्ज्वल तलवार; अयिल्-और भाला; चिलै-धनु; कुलिचम्-और कुलिश; मुतलिय-आदि; आयुतम् अत्तैत्तुम्-सारे हथियार; तलै तोऱुम्-अपने-अपने सिर पर; चुमप्प-धारण किये आ रही हैं। ४२४

उस रावण के साथ ताड़का से दुगने बल से संयुक्त, बड़े-बड़े पर्वतों को भी उठा सकनेवाले कंकणशोभित हाथों की और संतापक क्रोधशीला और युद्ध में त्रास मचानेवाली अनेक राक्षसियाँ ढाल, परशु, लोहे का मूसल, त्रिशूल, अंकुश और 'कप्पण' नामक काँटेदार गदा, काठ की बनी 'किडुहु' नामक ढाल और सुनहली उज्ज्वल तलवारें आदि सभी हथियार अपने-अपने सिर पर ढोते हुए जा रही थीं। ४२४

विरितळिर् मुहैपूक् कॊम्बडै मुदल्वे रिवैयॆला मणिपॊन्ताल् वेय्न्द
तरुवुयर् शोलै तिशैदॊरुङ् गरियत् तळ्लुमि ळयिर्प्पुमुऩ् ऱवळ्त्

तिरुमह ळिरुन्द दिशैयरिन् दिरुन्दुन् दिहैप्पुरु शिन्दैयाल् कॅडुत्त
दॉरुमणि नेडुम् प:(ह्)ऱलै यरवि नुळैदॉरु मुळैदॉरु मुलावि 425

विरि तळिर्–विकसित पल्लव; मुकै–कलियाँ; पू–और फूल; कॉम्पु–और टहनियाँ; अटै–पत्ते; मुतल्–तने; वेर्–जड़ें; इवै ॲलाम्–ये सब; मणि पॉन्नाल् वेय्न्त–रत्न और स्वर्ण-निर्मित जैसे (जिसमें थे); तरु उयर् चोलै–तरुलसित वन; तिचै तॉरुम्–(रावण जिस-जिस दिशा में देखता है) उस-उस दिशा में; करिय–झुलस जाता है, ऐसा; तळल् उमिळ्–आग उगलता हुआ; उयिर्प्पु–श्वास जो छोड़ता है; मुन् तवळ्–वह आगे-आगे जाता है; तिरु मकळ् इरुन्त–जहाँ श्रीलक्ष्मी रहीं वह; तिचै–दिशा; अऱिन्तिरुन्तुम्–जानता था तो भी; तिकैप्पु उरु चिन्तैयाल्–भ्रान्त मन का था, इसलिए; कॅट्टुत्ततु ओरु मणि–खोयी हुई श्रेष्ठ मणि को; नेटुम्—खोजनेवाले; प:.ऱलै अरविन्–अनेक सिरों के सर्प के समान; उळैतॉऱुम् उळैतॉऱुम्–स्थान-स्थान पर; उलावि–फिरता हुआ। ४२५

विकसित कल किसलय, कुडमल, सुमन, छोटी टहनियाँ, पत्ते, तने और जड़ें ये सब मानो स्वर्ण और रत्न के बने लगे। ऐसे तरुओं से परिपूर्ण वह वन, जिस दिशा में रावण की दृष्टि पड़ी, उस दिशा में जल, झुलस जाता था। ऐसा अग्निमय श्वास को आगे जाने देते हुए वह जा रहा था। उसे मालूम था कि देवी कहाँ थीं। तो भी उसका मन वश में नहीं रहा इसलिए भ्रमित होकर खोई हुई अपनी मणि की खोज में जानेवाले बहुसिर नागसर्प के समान स्थान-स्थान पर घूमता फिरता। ४२५

इन्नैयदोर् तन्मै यॅरुळ्वलि यरक्क रेन्दल्वन् दॅय्दुहिऩ् ऱान्नै
अन्नैयदोर् तन्मै यञ्जनैच् चिरुवन् कण्डऩ नमैवुऱ नोक्कि
विन्नैयमुञ् जॅयलुम् मेल्विळै पॉरुळु मिव्वळि विळङ्गुमॅन् ऱॅण्णि
वन्नैहळ लिरामन् पॅरुम्बॅय रोदि यिरुन्दनन् वन्दयन् मऱैन्दे 426

इन्नैयतु ओर् तन्मै–ऐसे अपूर्व स्वभाव का; ॲरुळ् वलि–अपार बल का; अरक्कर् एन्तल्–राक्षसों का राजा (रावण); वन्तु ॲय्तुकिन्ऱातै–वहाँ जो आ रहा था उसे; अन्नैयतु ओर् तन्मै–वैसे स्वभाव के; अञ्चनै चिऱुवन्–अंजनासुत ने; कण्टनन्–देखा; अमै उऱ नोक्कि–सावधानी से सोचकर; विन्नैयमुम् चॅयलुम्–उपाय, कार्य और; मेल् विळै पॉरुळुम्–आगे होनेवाला नतीजा; इ वळि विळङ्कुम्–अब विदित हो जायगा; · ॲन्ऱु ॲण्णि–यह सोचकर; वन्नै कळल् इरामन्–वीरपायलधारी श्रीराम के; पॅरुम् पॅयर् ओति–श्रेष्ठ पावन नाम का जप करके; अयल् वन्तु–पास आकर; मऱैन्तु इरुन्तनन्–छिपा बैठा रहा। ४२६

इस तरह के ठाट के साथ अपार बलवान राक्षसों का राजा रावण वहाँ आ रहा था और ऊपर वर्णित अञ्जनासुत ने उसे देखा। मन लगाकर सोचा। रावण क्या करेगा, क्या नीति अपनाएगा और उसका फल क्या होगा —आदि बातें अब ज्ञात हो जायँगी। ऐसा सोचकर हनुमान

वीर पायलधारी श्रीराम के पावन नाम का जप करता हुआ पास आकर एक स्थान पर छिपा रहा। ४२६

आयिडै यरक्क नरम्बैयर् कुऴुवु मल्लवुम् वेरुय लहल
मेयिनन् पॅण्णिन् विळक्कॅनुन् दहैया ळिरुन्दुऴि याण्डवळ् वॅरुविप्
पोयिन युयिर ळामॅन नडुङ्गिप् पॉरिवरि यॅरुऴ्वलिप् पुहैक्कण्
काय्शिन् वुऴुवै तिन्निय वन्द कलैयिळम् बिणैयॅनक् करैन्दाळ् 427

आ इट्ट–तब; अरक्कन्–राक्षस (रावण); अरम्पैयर् कुऴुवुम्–अप्सराओं के समूह; अल्लवुम्–और अन्य वृन्दों के; वेरु अयल् अकल–अलग दूर जाते; पॅण्णिन् विळक्कु–स्त्रियों में दीपक; ॲनुम् तकैयाळ्–कहने योग्य सीतादेवी; इरुन्तुऴि–जहाँ रहीं वहाँ; मेयितन्–गया; आण्टु–तब; अवळ्–देवी; वॅरुवि–डरकर; पोयित उयिरळ् आम् ॲत–विगतप्राणा-सी; नटुङ्कि–काँपकर; पॉरि वरि–बिंदियों और धारियों से युक्त; ॲरुऴ् वलि–अपार बलवान; पुकै कण्–धुआँ निकालनेवाली आँखों के; काय् चित–त्रासक क्रोध वाले; उऴुवै–व्याघ्र के; तिन्तिय वन्त–खाने के लिए (रूप में) आयी; कलै इळम् पिणै ॲत–बाल-मृगी के समान; करैन्ताळ्–दुर्बल पड़ गयीं। ४२७

तब अप्सरा स्त्रियों और अन्य स्त्रियों के दल रावण से अलग दूर हो गये। रावण वहाँ गया, जहाँ स्त्रीकुलदीपक-सी सीताजी रहीं। तब सीताजी डरकर विगतप्राणा हुई-सी काँप उठीं। वह उस मृगी के समान दुर्बल पड़ीं, जो बिंदियों और धारियों से युक्त, धुआँ निकालनेवाली आँखों और तापक क्रोध के अपार शक्तियुत व्याघ्र के सामने उसके खाने के रूप में आयी हो। ४२७

❀ कूशि यावि कुलैवुरु वाळैयुम्
आशै यालुयि राशरु वानैयुम्
काशिल् कण्णिणै शान्रॅनक् कण्डनन्
ऊश लाड लॊऴिन्द वुळ्ळत्तान् 428

ऊचल् आटल्–झूले की तरह चंचलता से; ऒऴिन्त उळ्ळत्तान्–रहित मन वाला; कूचि–सिमटकर; आवि कुलैवु उरुवाळैयुम्–प्राण जिनके डोल रहे हैं, उन सीता को और; आचैयाल्–कामना के कारण; उयिर् आचु–प्राणबन्धन; अरुवानैयुम्–जिसका नष्ट हो रहा था उस (रावण) को; काचु इल्–निर्दोष; कण् इणै–अक्षद्वय; चान्रु ॲत–साक्षी बनाकर; कण्टनन्–देखा। ४२८

अचंचल-मन हनुमान ने, सिमटकर प्राणविकम्पित रहनेवाली सीता को और कामेच्छा के कारण प्राणबन्धन-विमुक्त होनेवाले रावण को अपने निर्दोष नेत्रद्वय को साक्षी बनाकर (यानी निर्विकल्प रीति से) देखा। ४२८

❀ वाऴि शानहि वाऴियि राहवन्, वाऴि नान्मरै वाऴिय रन्दणर्
वाऴि नल्लर मॅन्रॅन्रु वाऴ्त्तिनान्, ऊऴि तोरु मुयर्वरुङ् गीर्त्तियान् 429

ऊऴि तोरुम्–प्रतियुग; उयरवु उरुम्–उत्तरोत्तर उन्नत होनेवाले; कीर्त्तियान्–यशस्वी; वाऴि चातकि–जानकी जिएँ; वाऴि इराकवन्–श्रीराघव जिएँ; वाऴि नान् मऱै–जिएँ चतुर्वेद; वाऴियर् अन्तणर्–ब्राह्मण जिएँ; वाऴि नल्लऱम्–जिए सद्धर्म; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा अनेक बार; वाऴ्त्तिनान्–जय बोला। ४२६

हनुमान एकदम भावोद्वेलित हो गया। प्रतियुगविवर्धितयश उसने जय-जयकार किया; जानकी जिएँ; श्रीराघव की जय हो। चतुर्वेद जिएँ; ब्राह्मण जिएँ ! सद्धर्म जीता रहे ! । ४२९

अव्वि डत्तरु हॅय्दिय रक्कन्रान्, ऍव्वि डत्तॅन्क् किन्नरु ळीवदु
नॊव्वि डैक्कुयि लेनुवल् हॅन्ऱनन्, वॅव्वि डत्तै यमुदॅन वेण्डुवान् 430

वॅम् विटत्तै–भयंकर गरल को; अमुतु ऍन–अमृत समझकर; वेण्टुवान्–चाहनेवाले; अरक्कन्–राक्षस ने; अ इटत्तु अरुकु–उस स्थान के पास; ऍय्ति–पहुँचकर; नॊ इटै कुयिले–क्षीणकटि कोकिला; ऍनक्कु–मुझे; इन् अरुळ् ईवतु–मधुर करुणा का दान करना; ऍ इटत्तु–कब; नुवल्क–बताओ; ऍन्ऱनन्–पूछा। ४३०

रावण भयंकर गरल को अमृत समझकर कामना करता था। वह श्रीसीताजी के पास आकर बोला— क्षीणकटि सीते ! मुझ पर दया करोगी कब ? कहो न। ४३०

❀ ईशऱ् कायिनु मीडऴि वुऱ्ऱिऱै, वाशिप् पाडऴि याद मनत्तिनान्
आशैप् पाडमॅय्न् नाणु मडर्त्तिडक्, कूशिक् कूशि यिवैयिवै कूऱिनान् 431

ईचऱ्कु आयिनुम्–शिवजी के सम्बन्ध में भी; ईटु अऴिवु उऱ्ऱु–बल खोकर; इऱै–थोड़ा भी; वाचिप्पाटु अऴियात–अहंभाव जिसने नहीं खोया वैसे; मनत्तिनान्–मन वाला रावण; आचैप्पाटुम्–कामना; मॅय् नाणुम्–और (असफलता पर) सच्ची शरम के; अटर्त्तिट–कष्ट देने से; कूचि कूचि–सकुचाकर-सकुचाकर; इवै इवै कूऱिनान्–यों, यों बोला। ४३१

शिवजी के सामने हारकर भी उसका मन अहंभाव नहीं छोड़ता था। अब उसे सीता-प्रेम और उसे प्राप्त करने में असफलता के कारण उठी शरम क्लेश दे रही थी। इसलिए वह सकुचाते हुए यों कहने लगा। ४३१

इन्ऱि ऱन्दन नाळैयि ऱन्दन, ऍन्ऱि ऱन्दरुन् दन्मैयि दालॅनैक्
कॊन्ऱि ऱन्दपिन् कूडुदि योकुऴै, शॅन्ऱि ऱङ्गि मऱन्दरु शॅङ्गणाय् 432

कुऴै चॅन्ऱु इऱङ्कि–कर्णकुण्डल तक जाकर; मऱम् तरु–(मुझे) कष्ट देनेवाली; चॅम् कणाय्–अरुण आँखों की देवी; इन्ऱु इऱन्तन–'आज' अनेक अदृश्य हो गये; नाळै इऱन्तन–अनेक 'कल' भी बीत चले; ऍन् तिऱम्–मेरे प्रति; तरुम् तन्मै–जो तुम क्या करती हो वह; इताल्–इस प्रकार है तो; ऍनै कॊन्ऱु–मुझे मारकर; इऱन्त पिन्–मेरे मरने के बाद; कूटतियो–मिलोगी क्या। ४२२

कर्णकुण्डल तक आयत और मेरे साथ क्रूरता बरतनेवाली आँखों की सीते ! आज कहके कितने ही दिन बीत गये ! वैसे ही कितने 'कल' भी बीत गये ! यही मेरे प्रति तुम्हारा रुख है तो क्या तुम्हारे मारने के कारण मेरे मरने के बाद ही मुझे प्राप्त होओगी ? । ४३२

उलह मॊन्ऱॊ डिरण्डु मोम्बुमॆन्, अलहिल् शॆल्वत् तरशिय लाणैयिल्
तिलह मेयुत् ऱिऱत्ततङ् गन्ऱरु, कलह मल्ल दॆळिमैयुङ् गाण्डियो 433

उलकम् ऒन्ऱॊटु इरण्टुम्–(एक और दो) तीनों लोकों का; ओम्पुम्–पालन करनेवाले; ऎन्–मेरे; अलकु इल् चॆल्वत्तु–अगणित सम्पत्ति के; अरचियल् आणैयिल्–राज्यशासन में; तिलकमे–स्त्रीतिलक; उन् तिऱत्तु–तुम्हारे लिए; अनङ्कन् तरु–मन्मथ-दत्त; कलकम् अल्लतु–कलह छोड़कर; ऎळिमैयुम्–अन्य लघुता; काण्टियो–देखती हो क्या । ४३३

मैं त्रिलोकाधिपति हूँ । मेरे अनन्त वैभवपूर्ण राज्य-शासन में, हे स्त्रीकुलतिलक ! अनंग-कलह को छोड़ कोई दूसरा मुझे लघुता दिलानेवाला कार्य होता हुआ देखती हो क्या ? । ४३३

पून्दण् वार्हुळऱ् पॊऱ्कॊऴुन् देपुहऴ्, एन्दु शॆल्व मिहऴ्न्दनै यिन्नुयिर्क्
कान्दन् माण्डिलन् काडुह डन्दुपोय्, वाय्न्दु वाऴ्वदु मानिड रोडन्ऱो 434

पूम् तण् वार्कुऴल्–पुष्पालंकृत शीतल लम्बे केश वाली; पॊन् कॊऴुन्ते–स्वर्ण-किसलय; पुकऴ् एन्तु–प्रकीर्तित; चॆल्वम् इकऴ्न्तनै–धन-वैभव की निन्दा करती हो; इन् उयिर् कान्तन्–मधुर प्राणनाथ; इरामन्–राम; माण्टिलन्–विना मरे; काटु कटन्तु पोय्–वनवास पूरा करके जाकर; वाय्न्तु वाऴ्वतु–सुख के साथ जीना भी; मानिटरोटु अन्ऱो–मनुज के साथ ही न । ४३४

पुष्पालंकृत लम्बे केश की स्वर्णकिसलय-समान सीते ! यशोधर मेरे वैभव की अवहेलना करती हो ! (पर सोचो) तुम्हारा प्यारा प्राणनाथ वनवास की अवधि पूरा करके अयोध्या जाएगा और तुम उसके साथ मिलकर रहोगी— समझो ! तो भी तुम्हारा जीवन एक मानव के साथ ही न होगा ? । ४३४

नोऱ्किन् ऱार्हळु नुण्बॊरु णुण्णिदिल्
पार्क्किन् ऱारुम् पॆऱुम्बयन् पार्त्तियेल्
वार्क्कुन् ऱामुलै यॆन्शॊन् मवुलियाल्
एऱ्किन् ऱारॊ डुडनुऱै यिन्बमाल् 435

वार् कुन्ऱा मुलै–अँगिया में न समानेवाले स्तनों की सीते; नोऱ्किन्ऱार्कळुम्–व्रतपालन करनेवाले और; नुण् पॊरुळ्–सूक्ष्म तत्त्वों के; नुण्णितिल् पार्क्किन्ऱारुम्–सूक्ष्मदर्शी भी; पॆऱुम् पयन्–जो प्राप्त करेंगे वह फल; पार्त्तियेल्–देखोगी तो;

अॅन् चॉल्–मेरी आज्ञा; मवुलियाल्–सिर पर; एऱ्किन्ऱारॉट्टु–धारण करनेवाले; उटऩ् उऱै–(देवों) के साथ रहने का; इऩ्पम्–सुख ही है। ४३५

अँगिया में न समानेवाले स्तनों से शोभित सीते ! सोचो ! व्रतधारी और सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी लोग आखिर क्या पद पाते हैं ? देवों का सहवास ही न ? वे देव आखिर मेरी आज्ञा को अपने सिर पर धारण करनेवाले ही हैं ? । ४३५

पॉरुळुम् याळुम् विळरियुम् बूवैयुम्, मरुळ नाळु मऴलै वऴङ्गुवाय्
तॅरुळु नाऩ्मुहऩ् शॅय्ददुऩ् शिन्दैयिल्, अरुळु मिऩ्मरुङ् गुम्मरि दाक्कियो 436

पॉरुळुम्–(तोतले) बच्चे और; याळुम्–वीणा; विळरियुम्–'धैवत' स्वर; पूवैयुम्–सारिका; मरुळ–भ्रमित रह जाएँ ऐसा; नाळुम्–हमेशा; मऴलै वऴङ्कुवाय्–मधुर वचन बोलनेवाली; तॅरुळुम्–सुलझी हुई बुद्धिवाले; नाऩ्मुकऩ्–ब्रह्मा ने; उऩ् चिन्तैयिल्–तुम्हारे मन में; अरुळुम्–कृपा; मिऩ् मरुङ्कुम्–और बिजली-सी कमर; अरितु आक्कियो–अभाव करके (तुम्हें) रचा है क्या। ४३६

ऐसी मधुरभाषिणी, जिसके सामने तोतले शिशु, वीणा, धैवत स्वर और सारिका आदि मधुर स्वरवाले भ्रमित होकर तरसें ! सुलझी हुई बुद्धि वाले ब्रह्मा ने तुम्हारे शरीर में विद्युत्-सी कमर के और मन में दया के विना ही तुम्हारी सृष्टि की क्या ? । ४३६

ईण्डु नाळु मिळमैयु मोण्डिल, माण्डु माण्डु पिऱिदुरु मालैय
वेण्डु नाळ्वॅऱि देविळिन् दालिऩि, याण्डु वाऴ्व दिडरुऴऩ् ऱाऴ्दियो 437

ईण्टु–इस संसार में; नाळुम्–जीवन के दिन; इळमैयुम्–और यौवन के दिन; मीण्टिल–लौट नहीं आते; माण्टु माण्टु–धीरे-धीरे बीतकर; पिऱितु उरु मालैय–बिगड़कर नष्ट होनेवाले स्वभाव के हैं; वेण्टु नाळ्–वांछनीय यौवन के दिन; वॅऱिते विळिन्ताल्–व्यर्थ बीत गये तो; इऩि–फिर; याण्टु वाऴ्वतु–कहाँ सुखी रहना; इटर् उऴऩ्ऱु–संकट में पड़कर; आऴ्तियो–मग्न रहना चाहती हो क्या। ४३७

इस संसार में आयु और यौवन अगर बीत गये तो फिर लौट नहीं आयँगे। उनकी प्रकृति भी धीरे-धीरे बिगड़कर नष्ट होने की है। वांछनीय यौवन व्यर्थ बीत गया तो तुम्हें सुखी जीवन कब मिलेगा और तुम संतुष्ट कैसे रहोगी ? संकटमग्न ही रहोगी क्या ? । ४३७

पॅण्मै युम्मऴ हुम्बिऱ ळामनत्, तिण्मै युम्मुदल् यावैयुञ् जॅय्यवाय्क्
कण्मै युम्बॉरुन् दिक्करु णैप्पडा, वण्मै यॅऩ्गॉल् शऩहऩ् मडन्दैये 438

चऩकऩ् मटन्तैये–जनकसुता; पॅण्मैयुम्–स्त्रीत्व; अऴकुम्–सौन्दर्य; पिऱऴा–अचंचल; मऩ तिण्मैयुम्–मन की दृढ़ता; मुतल् यावैयुम्–आदि सभी गुणों से; चॅय्यवाय्–खूब भरी होकर भी; कण्मैयुम् पॉरुन्ति–दाक्षिण्ययुक्त हो; करुणैप्पटा वण्मै–करुणा-सह न रहने का स्वभाव; ऍऩ् कॉल्–क्यों। ४३८

हे जनकराजदुहिते ! स्त्रीत्व, सौन्दर्य और अचंचल मन की स्थिरता आदि अच्छे गुण तुममें खूब भरे हैं। तो भी दाक्षिण्य और दया से रहित क्यों हो ? । ४३८

इळवॆ नक्कुयि रॆय्दिनु मॆय्दुह, कुळैमु हत्तुनिन् शिन्दनै कोडिनाल्
पळहि निऱ्पुरु पण्बियै कामत्तो, डळहि नुक्किनि यारुळ रावरो 439

कुळै मुकत्तु–मुरझाये मन की; निन्–तुम्हारा; चिन्तनै कोटिनाल्–मन भी विमुख हुआ तो; ॲनक्कु उयिर् इळवु ॲय्तितुम्–मुझे प्राणनाश मिला तो भी; ॲय्तुक–मिल जाए; पळकि निऱ्पु उरु–मेरे साथ हिल-मिलकर रहनेवाली; पण्पु इयै–सुसंस्कृत; कामत्तोटु अळकितुक्कु–प्यार और कमनीयता के लिए; इनि यार् उळर् आवर्–(मुझे छोड़) आगे कौन होगा । ४३९

मुरझाये मुख वाली तुम्हारे मन की विमुखता के कारण मेरी मृत्यु हो तो हो जाय ! पर तुम्हें कौन मिलेगा, जिसमें मेरे पास लगा रहनेवाला प्रेम और सौन्दर्य पाया जाय ? । ४३९

वीट्टुङ् गालत् तलऱिय मॆय्क्कुरल्
केट्टुङ् गाण्डऱ् किरुत्तिहॊल् किळ्ळैनी
नाट्टुङ् गानॆडु नल्लऱत् तिन्बयन्
ऊट्टुङ् गालत् तिहळ्व दुरुङ्गॊलो 440

किळ्ळै–शुक; वीट्टुम् कालत्तु–(जब राम ने मारीच को) मारा उस समय; अलऱिय–राम चिल्लाया; मॆय् कुरल्–उसका सच्चा स्वर; केट्टुम्–सुनकर भी; नी–तुम; काण्टऱ्कु–देखने की इच्छा लेकर; इरुत्ति कॊल्–रहती क्या; नाट्टुम् काल्–दृढ़ रूप से समझाऊँ तो; नॆटु नल् अऱत्तिन्–दीर्घ श्रेष्ठ धर्म के; पयन्–फल को; ऊट्टुम् कालत्तु–जब तुमको भुगताया जा रहा है तब; इकळ्वतु उरुम् कॊलो–अवहेलना करना, उचित काम करना (हुआ) क्या । ४४०

शुक-समाना ! मारीच के मरते समय तुमने श्रीराम की चिल्लाहट में राम का ही असली स्वर सुना था। तो भी क्या आशा करती हो कि उसे देख सकोगी ? सच्ची बात कहूँ तो दीर्घ और अच्छे धर्मों का फल तुम्हारे पास तुम्हारे भोगने के लिए आया है। तब उसकी उपेक्षा करना उचित काम होगा क्या ? । ४४०

तक्क वॆन्नुयिर् वीडुऱत् ताळ्हिलात्, तॊक्क शॆल्वन् दॊलैयु मॊरुत्तिनी
पुक्कु यरन्द वॆन्नुम्बुहळ् पोक्किवे, ऱुक्क वॆन्नु मुरुपळि कोडियो 441

तक्कतु ॲन् उयिर्–श्रेष्ठ मेरे प्राण; वीटु उऱ–छूट जाएँ; ताळ्किला–बिना कम हुए; तॊक्क चॆल्वम्–जुटी सम्पत्ति; तॊलैयुम्–नष्ट हो जाएगी; ऒरुत्ति नी–अनुपम तुम; पुक्कु–मेरे घर में आयीं; उयर्न्ततु–और मेरा कुल उन्नत हुआ;

अँत्तुम् पुकऴ् पोक्कि–ऐसी कीर्ति छोड़कर; वेरु उक्कतु–उसके विपरीत नष्ट हुआ; अँन्नुतुम्–ऐसा; उरु पऴि–बड़ा अपयश; कोटियो–लोगी क्या। ४४१

सब तरह से श्रेष्ठ मेरे प्राण छूट जायँगे तो मेरी अक्षय धनराशि भी नष्ट हो जायगी। तुम मेरे गृह में आयीं और मेरा कुल उन्नत हुआ, तो तुम्हें उसका यश मिलेगा। उसे त्यागकर, "उसका नाश हो गया"—यह बड़ा अपयश लेना चाहोगी क्या ? । ४४१

❀ तेवर् तेवियर् शेवडि कैतोऴुम्, ताविल् मूवुल हिन्ऱनि नायहम्
मेवु हिन्ऱदु नुनगण् विलक्कितै, एव रेऴैयर् निन्निन् निलङ्गिऴाय् 442

इलङ्किऴाय्–शोभनेवाले आभरणधारिणी; तेवर् तेवियर्–देवता और देवियाँ; चेवटि कै तोऴुम्–तुम्हारे मनोरम पैरों के आगे हाथ जोड़ें, ऐसा; तावु इल्–अक्षय; मू उलकित्–तीनों लोकों का; तनि नायकम्–अद्वितीय आधिपत्य; नुन् कण् मेवुकिन्ऱतु–तुम्हारे हाथ में आ रहा है; विलक्कितै–तुम उसे दूर हटा रही हो; निन्निन्–तुमसे बढ़कर; एवर्–कौन; एऴैयर्–अबोध है। ४४२

शोभायमान आभरणधारिणी ! निर्दोष त्रिलोकाधिपत्य तुम्हारे पास आ रहा है, जिससे देवी और देवता तुम्हारे लाल (मनोरम) चरणों में गिरकर नमस्कार करेंगे। पर तुम उसको छोड़ रही हो ! तुमसे बढ़कर बुद्धिहीन कौन होगा ? । ४४२

❀ कुडिमै मून्ऱुल गुञ्जॅयुङ् गोॅऱ्ऱत्तॅन्
अडिमै कोडि यरुळुदि यालॅन्ना
मुडियिन् मीदु मुहिऴ्त्तुयर् कैयिनन्
पडियिन् मेऱ्पडिन् दान्पऴि पार्क्कलान् 443

पऴि पार्क्कलान्–अपयश की परवाह न करनेवाला; मून्ऱु उलकुम्–तीनों लोक; कुटिमै चॅय्युम्–अपनी प्रजा बनाकर शासन करनेवाली; कोॅऱ्ऱत्तु–विजयशीलता का स्वामी; ॲन् अटिमै–मेरी दासता; कोटि–अपनाकर; अरुळुति–कृपा करो; ॲन्ना–कहकर; मुटियिन् मीतु–सिर पर; मुकिऴ्त्तु उयर्–जुड़कर बढ़े; कैयितन्–हाथों वाला बनकर; पटियिन् मेल्–धरती पर; पटिन्तान्–गिरा। ४४३

रावण अपने कार्य में कोई दोष या उससे मिलनेवाले अपयश को देख नहीं रहा था। तीनों लोकों को प्रजा बनाकर पालने की विजयशीलता के स्वामी, मुझे अपना दास बना लो और मुझ पर कृपा करो —कहकर वह सिर पर हाथ जोड़े भूमि पर गिरा। ४४३

❀ कायन्दन शलाहै यन्न वुरैवन्दु कवुवा मुन्नम्
तीन्दन शॅविह ळुळ्ळन् दिरिन्ददु शिवन्द शोरि

पाय्न्दत्त कणग ळॊन्ऱुम् बरिन्दिल ळुयिर्क्कुम् बॆण्मैक्
केय्न्दत्त वल्ल वॆय्य माऱ्ऱङ्ग ळिन्नैय शॊन्नाळ् 444

कायन्तत चलाकै अन्न–तप्त शलाकाओं के समान; उरै–वचन; वन्तु कतुवा मुन्नतम्–आकर लगें, इसके पूर्व ही; चॆविकळ् तीन्तत–(देवी के) कान जल उठे; उळ्ळम् तिरिन्ततु–मन व्यथित हुआ; चिवन्त चोरि–लाल रक्त; कण्कळ् पायन्तत–आँखों में बहा; उयिर्क्कुम्–अपनी जान का; ऑन्ऱुम् परिन्तिलळ्–कुछ भी विचार नहीं करतीं; पॆण्मैक्कु एयन्तत–स्त्रीत्व के लिए उचित; वल्ल–और समर्थ; वॆय्य–और कठोर; इन्नैय माऱ्ऱङ्कळ्–ऐसे वचन; चॊन्नाळ्–कहे (सीता ने)। ४४४

रावण के वचन के तप्त शलाकाओं के समान सीताजी के कानों में लगते ही उनके कान मानो जल गये। मन विकल हुआ। लाल रक्त आँखों में बह आया। उन्होंने अपनी जान की कोई चिन्ता नहीं की; पर स्त्री के लिए उचित, सराहनीय और कठोर ये (निम्न) शब्द कहे। ४४४

मल्लॊडु तिरडोण् मैन्दर् मनम्बिऱि दाहुम् वण्णम्
कल्लॊडुन् दॊडर्न्द नॆञ्जङ् गऱ्पिन्मेऱ् कण्ड दुण्डो
इल्लॊडुन् दॊडर्न्द मादर्क् केय्वन वल्ल वॆय्य
शॊल्लॊडुन् दॊडर्है केट्टुत् तुरुम्बिनै नोक्किच् चॊल्वाळ् 445

इल् ऑटुम् तॊटर्न्त–गृहस्थी में लगी; मातर्क्कु–स्त्रियों के लिए; एय्वन अल्ल–अयोग्य; वॆय्य–क्रूर; चॊल्लॊटुम् तॊटर्कै–शब्दों से युक्त वचन; केट्टु–सुनकर; तुरुम्पिनै नोक्कि–(सामने रखे) तृण को देखकर; चॊल्वाळ्–कहने लगीं; मल् ऑटुम्–बल के साथ; तिरळ् तोळ् मैन्तर्–पुष्ट कन्धों वाले वीरों का; मनम्–मन; पिऱिताकुम् वण्णम्–बदलकर सन्मार्ग पर जाए, ऐसा; कल्लॊटुम् तॊटर्न्त–पत्थर के समान अडिग; नॆञ्चम्–दिलेर; कऱ्पिन् मेल्–पातिव्रत्य से श्रेष्ठ कुछ; कण्टतु उण्टो–किसी ने देखा है क्या। ४४५

रावण के वचन गृहस्थी में लगी श्रेष्ठ कुलस्त्रियों के सामने कहने योग्य वचन नहीं थे। ऐसे वचनों को सुनकर सीताजी ने अपने सामने एक तृण डालकर उसे (और रावण को तृण बनाकर) सम्बोधित कर कहा। सबल पुष्ट कन्धों वाले वीरों के (कुमार्गगामी) मन को बदलने में समर्थ पत्थर-सम दृढ़ मन के पातिव्रत्य से अन्य किसी को किसी ने देखा है क्या ?। ४४५

❀ मेरुवै युरुव वेण्डिन् विण्पिळन् देह वेण्डिन्
ईरेळु पुवनम् यावुम् मुऱ्ऱुवित् तिडुदल् वेण्डिन्
आरियन् पहळि वल्ल दऱिन्दिरुन् दऱिवि लादाय्
शीरिय वल्ल शॊल्लित् तलैपत्तुम् जिन्दु वायो 446

अऱिवु इलाताय्–मतिहीन; आरियन् पकळि–आर्य (श्रीराम) का बाण; मेरुवै उरुव वेण्टिन्–मेरु को निफर जाना चाहे; विण् पिळन्तु–आकाश फाड़कर; एक

वेण्टिऩ्–जाना चाहे; ईर् एऴु–चौदह; पुवतम् यावुम्–भुवनों में सभी को; मुऱ्ऱु वितृतिटुतल्–नष्ट करना; वेण्टिऩ्–चाहे; वल्लतु–समर्थ है; अऱिन्तिरुन्तु–जानते हो तो भी; चीरिय अल्ल चॊल्लि–अशिष्ट कहकर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; चिन्तुवायो–गिरा लोगे क्या। ४४६

मूर्ख ! आर्य श्रीराम का शर मेरु को वेध चलना चाहे, या आकाश को चीर चलना चाहे, या सातों लोकों का अन्त करना चाहे तो करने में समर्थ है। यह तुम जानते हो। तो भी अशिष्ट (अनर्थकारी) वचन कहकर दसों सिरों को गिराना चाहते हो क्या ? । ४४६

अञ्जितै याद लाले याण्डहै यऱ्ऱ नोक्कि
वञ्जतै मानॊन् ऱेवि मायैयाल् मऱैत्तु वन्दाय्
उञ्जनै पोदि याहिल् विडुदियुन् कुलत्तुक् कॆल्लाम्
नञ्जितै यॆदिर्न्द पोदु नोक्कुमे नितदु नाट्टम् 447

अञ्चितै आतलाल्–डरे थे, इसलिए; वञ्चतै मान् ऒन्ऱु–मायामृग एक; एवि–भेजकर; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ की; अऱ्ऱम् नोक्कि–अनुपस्थिति जानकर; मायैयाल्–माया से; मऱैत्तु वन्ताय–छद्मवेश में आये; उञ्चतै–बचकर; पोति आकिल्–जाना चाहो तो; विटुति–(मुझे रामचन्द्रजी के पास ले जा) छोड़ो; उन् कुलत्तुक्कॆल्लाम्–तुम्हारे कुल के सारे लोगों के लिए; नञ्चितै–विष (-सदृश श्रीराम) का; ऎतिर्न्त पोतु–सामना करोगे तो; नोक्कुमे–देख सकेंगी क्या; निततु नाट्टम्–तुम्हारी आँखें उन्हें। ४४७

तुम भयभीत थे; तभी तो तुम वंचक मृग को प्रेरित करके श्रीराम की अनुपस्थिति कराके रूप छिपाकर आये ! तुम बचना चाहो तो मुझे छोड़ दो। तुम्हारे कुल के राक्षसों के लिए घातक विष (के समान) हैं श्रीराम। जब उनका सामना करोगे तब क्या तुममें इतनी हिम्मत होगी कि तुम अपनी आँखें उठाकर उन्हें देख सको ? । ४४७

❀ पत्तुळ तलैयुन् दोळुम् पलवळ पहऴि तूवि
वित्तह विल्लि नाऱ्कुत् तिरुविळै याडऱ् केऱ्ऱु
चित्तिर विलक्क माहु मल्लदु शॆरुवि लेऱ्कुम्
शत्तियै पोलु मेनाट् चडायुवाऱ् ऱरैयिन् वीऴ्न्दाय् 448

मेल् नाळ्–पहले (उस) दिन; चटायुवाल्–जटायु द्वारा; तरैयिल् वीऴ्न्ताय्–भूमि पर गिरे; पत्तु उळ तलैयुम्–दहाई के सिर; तोळुम्–और हाथ; पलवळ पकऴि–विविध शर; तूवि–छितराकर; वित्तक विल्लिताऱ्कु–अपूर्व कोदण्ड धनु के धारक के लिए; तिरु विळैयाटऱ्कु एऱ्ऱ–श्री केलि के लिए; चित्तिर–चित्र; इलक्कमाकुम्–लक्ष्य बनेंगे; अल्लतु–नहीं तो; चॆरुविल् एऱ्कुम्–युद्धयोग्य; चत्तियै पोलुम्–शक्तिमान हो क्या। ४४८

(मुझे जब ले आये) उस दिन जटायु द्वारा प्रहरित होकर तुम धरती

पर गिरे। तुम्हारे दहाई के सिर और हाथ धनुर्विद्या-विदग्ध श्रीराम के लिए विविध अस्त्र प्रेरित करके खेलने के योग्य खिलौने मात्र हैं! वे चित्रमय लक्ष्य बनेंगे। नहीं तो क्या तुम युद्ध करने की शक्ति भी रखते हो? । ४४८

❀ तोऱ्ऱतै परवैक् कन्ऱु तुळ्ळुनीर् वॆळ्ळम् शॆन्नि
एऱ्ऱवन् वाळाल् वॆन्ऱा यिन्ऱॆन्नि निऱत्ति यन्ऱे
नोऱ्ऱनोन् बुडैय वाणाळ् वरमिवै नुनित्त वॆल्लाम्
कूऱ्ऱित्तुक् कन्ऱे वीरन् शरत्तुक्कुङ् गूऱिऱ् ऱुण्डो 449

अन्ऱु–उस दिन; परवैक्कु तोऱ्ऱतै–एक पक्षी से हारे; तुळ्ळुनीर्–उछलते आनेवाले जल के; वॆळ्ळम्–प्रवाह (गंगा) को; चॆन्नि एऱ्ऱवन्–जिन्होंने सिर पर धारण किया उनकी; वाळाल् वॆन्ऱाय्–तलवार का प्रयोग करके जीते; इन्ऱु ॲन्नि–नहीं तो; इऱत्ति अन्ऱे–मर जाते न; नोऱ्ऱ नोन्पुटैय–तपोव्रतप्राप्त; वाणाळ् वरम्–आयु का वर; इवै नुनित्त ॲल्लाम्–आदि प्राप्त सभी; कूऱ्ऱित्तुक्कु अन्ऱे कूऱिऱ्ऱु–यम के सम्बन्ध में ही न कहे गये; वीरन् चरत्तुक्कुम्–वीर (श्रीराघव) के शर के सम्बन्ध में भी; कूऱिऱ्ऱु उण्टो–कहे गये क्या। ४४९

उस दिन तुम एक पक्षी से हारे! प्रवाहमय जल की गंगा को अपने सिर पर धारण करनेवाले शिवजी की दी गयी चन्द्रहास तलवार के बल से तुम जटायु पर जीत पा सके! नहीं तो मर जाते न? तपस्या के कारण जो वर और आयु आदि तुम्हें दिये गये हैं, वे यम की बनिस्बत दिये गये हैं। श्रीवीरराघव के शरों को उद्देश्य मानकर कहे गये थे क्या? । ४४९

पॆऱ्ऱुडै वरत्तुम् नाळुम् पिऱन्दुडै युरत्तुम् बिन्नुम्
मऱ्ऱुडै यॆवैयुन् दन्द मलरवन् मुदलोर् वार्त्तै
विऱ्ऱॊडै यिरामन् कोत्तु विडुदलुम् विलक्कुण् डॆल्लाम्
इऱ्ऱुडैन् दिऱुदन् मॆय्ये विळक्किन्मुन् निरुळुण् डामो 450

पॆऱ्ऱुटै वरत्तुम्–प्राप्त वर और; नाळुम्–आयु के दिन; पिऱन्तु उटै उरत्तुम्–जन्मप्राप्त बल; पिन्नुम् मऱ्ऱु उटै ॲवैयुम्–और अन्य सभी; तन्त–जिन्होंने दिया; मलरवन् मुतलोर् वार्त्तै–कमलासन आदि के वचन; इरामन्–श्रीराम (जब); विल् तॊटै कोत्तु–धनु में शर संधान कर; विटुतलुम्–छोड़ेंगे तब; ॲल्लाम् विलक्कु उण्टु–सभी निवारित होकर; इऱ्ऱु उटैन्तु–बन्धन टूटकर; इऱुतल् मॆय्ये–नष्ट होंगे, यह सत्य है; विळक्किन् मुन्–दीपक के सामने; इरुळ् उण्टामो–अन्धकार रहेगा क्या। ४५०

तुम्हारे प्राप्त वर, आयु के दिन, जन्मसिद्ध बल और अन्य सभी विषय जिनके वर से प्राप्त हुए वे चतुर्मुख आदि के वचनों द्वारा दिये गये हैं। वे सब श्रीराम के शर को धनु पर रखकर छोड़ते ही अपनी रक्षणशक्ति

खो देंगे और तुम्हारा नाश होगा। यह ध्रुव सत्य है। दीपक के सामने अन्धकार ठहर सकेगा क्या ? । ४५०

कुऩ्ऱुनी यॅडुत्त नाडऩ् शेवडिक् कॊऴुन्दा लुऩ्ऩै
वॆऩ्ऱवऩ् पुरङ्गळ् वेवत् तऩिच्चरऩ् दुरन्द मेरु
ॲऩ्ऱुणैक् कणव ऩाऱ्ऱऱ् कुरऩिला दिऱ्ऱु वीऴ्न्द
अऩ्ऱॆऴुन् दुयर्न्द वोशै केट्टिलै पोलु मम्मा 451

नी कुऩ्ऱु ॲट्टुत्त नाळ्–जब तुमने कैलासपर्वत को उठाया, उस दिन; तऩ् चेवटि कॊऴुन्ताल्–अपने दिव्य चरण की उँगली के छोर से; उऩ्ऩै वॆऩ्ऱवऩ्–जिन्होंने तुमको हराया, उन शिवजी ने; पुरङ्कळ् वेव–त्रिपुर जलाते हुए; तऩि चरम् तुरन्त–(जिस पर रखकर) अनुपम शर छोड़ा वह; मेरु–मेरु जैसे त्र्यंबक धनु; ॲऩ् तुणै कणवऩ्–मेरे संगी प्रिय नाथ के; आऱ्ऱऱ्कु–बल के सामने; उरऩ् इलातु–शक्ति के बिना; इऱ्ऱु वीऴ्न्त अऩ्ऱु–जिस दिन टूटकर गिरा उस दिन; ॲऴुन्तु उयर्न्त ओचै–जो उठा और बढ़ा वह नाद; केट्टिलै पोलुम्–तुमने सुना नहीं शायद क्या। ४५१

शिवजी के त्र्यंबक धनुष में मेरे प्रिय संगी पति श्रीराम की शक्ति के सामने ठहरने की शक्ति नहीं थी और वह टूट गया। वे शिव कौन थे ? जब तुमने कैलास को उठाया तब अपने श्रीचरण की उँगली के छोर से उन्होंने तुम्हारे ऊपर जीत पायी थी। वह धनु भी वही धनु था, जिस पर शर रखकर शिवजी ने छोड़े थे और त्रिपुर को जलाया था। उस धनु के टूटने के दिन जो उच्च नाद उठा और फैला उसे शायद तुमने सुना नहीं था क्या ? । ४५१

मलैयॅडुत् तॆण्डिशै काक्कु माक्कळै
निलैहॆडुत् तेऩ्ऩु माऱ्ऱ नेरुनी
शिलैयॅडुत् तिळैयव ऩिऱ्कच् चेर्न्दिलै
तलैयॅडुत् तिऩ्ऩमु महळिर्त् ताऴ्दियो 452

मलै ॲट्टुत्तु–पर्वत उठाकर; ॲण् तिचै काक्कुम्–आठ दिशाओं के पालक; माक्कळै–गजों की; निलै कॆट्टुत्तेऩ्–स्थिति मैंने बिगाड़ दी; ॲऩुम् माऱ्ऱम् नेरुम् नी–ऐसी डींग के वचन कहनेवाले तुम; इळैयवऩ्–(श्रीराम के) कनिष्ठ भ्राता; चिलै ॲट्टुत्तु निऱ्क–जब धनु लेकर खड़े थे; चेर्न्तिलै–नहीं आये; तलै ॲट्टुत्तु–सिरों को लेकर; इऩ्ऩमुम्–अब भी; मकळिर् ताऴ्तियो–स्त्रियों के सामने झुकाओगे क्या। ४५२

तुम डींग मारते हो कि मैंने कैलास को उठाया था और आठों दिशाओं के पालक, गजों की दुर्गति करा दी थी। ऐसे तुम तब नहीं आये जब मेरे देवर लक्ष्मण धनु लेकर मेरी रक्षा में खड़े थे। अब भी सिर

उठाए हुए रहोगे और स्त्रियों के सामने वह सिर झुकाओगे क्या ? (शरम नहीं होती ?) ।४५२

एऴैनी यॉळितुरै यित्ति डत्तॆन, वाऴियॆंङ् गोमह त्ररिय वन्दनाळ्
आऴियु मिलङ्गैयु मऴियत् ताऴुमो, ऊऴियुन् दिरियुनित् तुयिरो डोयुमो 453

एऴै–मूर्ख; नी–तुम; ऑळितु उरै–जहाँ छिपे रहते हो वह स्थान; इत् इटतुतु–कहाँ है; ॲन–यह बात; वाऴि–संसार को जीवन दिलानेवाले; ॲम् कोमकत्–हमारे चक्रवर्ती-सुत; अरिय वत्त नाळ्–जिस दिन समझेंगे उस दिन; आऴियुम्–समुद्र और; इलङ्कैयुम्–लंका; अऴिय–मिट जायगी, उसी तक; ताऴुमो–रुक जायगा क्या; नित् उयिरोटु–तुम्हारे प्राणों को लेकर; ओयुमो–समाप्त होगा; ऊऴियुम् तिरियुम्–युग का काल भी विगड़ जायगा। ४५३

मूर्ख ! जब मेरे चक्रवर्तीसुत जान लेंगे कि वह स्थान यहाँ है, जिसमें तुम छिपे-छिपे जीते हो तब क्या इस समुद्र और इस लंका के नष्ट होने तक से अनर्थ रुक जायगा ? तुम्हारी जान लेकर समाप्त होगा ? नहीं ! युग भी विगड़ जायगा ! । ४५३

वॆञ्जिन वरक्करै वीयत्तुम् वीयुमो, वञ्जनै नीशॆय वळ्ळल् शीऱ्ऱन्दान्
ॲञ्जलि लुलहॆला मॆञ्जु मॆञ्जुमॆन्, ऱञ्जुहिन् ऱेनिदऱ् करमुञ् जान्ऱरो 454

वञ्चतै नीचॆय–वंचना तुमने की, इससे; वळ्ळल् चीऱ्ऱम् तात्–उदार प्रभु का जो होगा वह कोप; वॆम् चित–भयंकर क्रोधी; अरक्करै–राक्षसों को; वीयत्तुम्–मारने तक से; वीयुमो–शान्त होगा क्या; ॲञ्चल् इल्–अक्षय; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों का; ॲञ्चुम् ॲञ्चुम्–क्षय हो जायगा, नष्ट हो जायगा; ॲन्ऱु–ऐसा; अञ्चुकिन्ऱेत्–डरती हूँ; इतऱ्कु–इसके; अऱमुम् चान्ऱु–धर्मग्रन्थ प्रमाण होंगे। ४५४

तुमने जो वंचक काम किया उससे प्रभु का कोप होगा। क्या वह कोप भयंकर क्रोधी राक्षससमूह को नष्ट कर शान्त हो जायगा ? अक्षय लोकों का क्षय हो जायगा, अवश्य क्षय हो जायगा। यह ध्रुव सत्य है। यही मेरा डर है। इसके धर्मग्रन्थ ही प्रमाण हैं। ४५४

अङ्गण्मा ञालमुम् विशुम्बु मञ्जवाऴ्
वॆङ्गणाय् पुन्ऱॊऴिल् विलक्क वुट्कॊळाय्
शॆङ्गण्मा नान्मुहन् शिवनॆन् ऱेहॊलो
एङ्गणा यहनैयु निनैन्द देऴैनी 455

अम् कण् मा ञालमुम्–विशाल स्थल का भूतल और; विचुम्पुम्–आकाश को; अञ्च–डरने को मजबूर करते हुए; वाऴ्–जीवन बितानेवाले; वॆङ्कणाय्–क्रूर; एऴै नी–मूर्ख तुमने; ॲङ्कळ् नायकतैयुम्–हमारे नाथ को भी; चॆम् कण् माल्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु; नात् मुकत्–चतुर्मुख और; चिवत्–शिव; ॲन्ऱे कॊल्–ही;

नित्तैन्ततु–समझ लिया गया; पुन् तॉऴिल् विलक्क–नीच कार्य छोड़ना; उळ् कॉळाय्–ठानो। ४५५

रे क्रूर ! जो विशाल स्थल के भूतल को और आकाश को भयभीत करते हुए जी रहे हो ! मूर्ख ! तुमने मेरे श्रीराम को भी अरुणाक्ष विष्णु समझ रखा है ? या चतुर्मुख, या शिव ? अपना नीच काम छोड़ने का विचार करो। ४५५

मानुय रिवरॅन् मनक्कॉण् डायॅनिन्
कानुयर् वरैनिहर् कार्त्त वीरियन्
तानॉरु मनिदनाल् तळर्न्दु ळार्नॅनिल्
तेनुयर् तॅरियलान् इन्मै तेर्दियाल् 456

इवर्–ये; मानुयर् ॲन्न–मनुष्य है, ऐसा; मनम्–मन में; कॉण्टाय् ॲनिन्–विचार रखोगे तो; कान्–जंगल में; उयर् वरै निकर्–उन्नत बाँस के पेड़ों के समान; कार्त्त वीरियन् तान्–(हाथों वाले) कार्तवीर्य स्वयं; ऑरु मनितनाल्–एक मानव से; तळर्न्तुळान्–नष्ट हुआ; ॲनिल्–तो; तेन् उयर्–अधिक शहद से युक्त; तॅरियलान्–मालाधारी श्रीराम के; तन्मै–महत्व को; तेर्ति–जान लो। ४५६

अगर तुम इनको मानव मानकर हेय समझोगे तो जंगली बाँसों के समान उन्नत हाथों वाला कार्तवीर्य स्वयं एक मानव (परशुराम) द्वारा पराजित हुआ, यह सोचो और शहद बरसानेवाली माला के धारक श्रीराम का (परशुराम को पराजित करनेवाला) बल-पराक्रम जान लो। ४५६

इरुवरॅन् रिहऴ्न्दनै यॅन्निन् याण्डिनुम्
ऑरुवनन् रेयुल हऴिक्कु मूऴियान्
शॅरुवरुङ् गालमॅन् मॅय्मै तेर्दियाल्
पॊरुवरुन् दिरुविऴन् दावि पोन्ऱुवाय् 457

पॊरुवु अरुम्–उपमाहीन; तिरु इऴन्तु–श्री खोकर; आवि पोन्ऱुवाय्–प्राण खोनेवाले; इरुवर्–दो ही हैं; ॲन्ऱु–ऐसा इकऴ्न्तनै–हेय मानोगे; ॲन्निन्–तो; याण्टिनुम्–सर्वत्र; उलकु अऴिक्कुम्–लोकनाशक; ऊऴियान्–प्रलयकारी रुद्र; ऑरुवन् अन्ऱे–अकेला है न; चॅरु वरुम् कालम्–युद्ध प्राप्ति के दिन; ॲन्न मॅय्मै–मेरे वचन का सत्य; तेर्ति–जान लोगे। ४५७

हे, अनुपम श्री को भी खोकर प्राण छोड़ने को उद्यत मूर्ख ! अगर तुम समझते हो कि वे केवल दो ही हैं और हेय हैं तो युगनाशक प्रलयंकर रुद्र सदा अकेले ही हैं न ? जब श्रीराम से युद्ध करने का समय आयगा, तब मेरी बात की सत्यता जान लोगे। ४५७

पॊर्कणान् रम्बियॅन् रिनैय पोर्त्तॊऴिल्
विर्कणाण् पॊरुददो ळवुणर् वेरुळार्

नऱ्कणार् नल्लऱन् दुऱन्द नाळिनुम्
इऱ्कणा रिऱन्दिल रिऱन्दु नीङ्गिनार् 458

पोन् कणान्-हिरण्याक्ष; तम्पि ॲन्ऱु-उसका भाई मानित; इन्नैय-ऐसे; पोर्त् तोळिल् विल्कण्-युद्ध योग्य धनु के; नाण्-डोरे से; पोरुत तोळ्-रगड़े हुए कन्धे जिनके थे; वेऱु उळार् अवुणर्-अन्य दानव; नल् कण् आर्-सन्मार्गरत; नल्लऱम् तुऱन्त नाळितुम्-जिस दिन धर्मच्युत हुए; इल् कणार्-परदारा से; इऱन्तिलर्-अभद्र व्यवहार किये विना रहने पर भी; इऱन्तु नीङ्किनार्-मर गये। ४५८

हिरण्याक्ष, उसका भाई आदि दानव, जिनके कन्धे युद्धयोग्य धनु के डोरे से रगड़े गये थे, सन्मार्ग का सद्धर्म छोड़ने पर परदारा-प्रेम का पाप न करने पर भी मर गये। ४५८

पूविलो नादि याहप् पुलन्गळ्पो नॆऱियिऱ् पोहात्
तेवरो ववुणर् तामो निलैनिन्ऱु विनैयिऱ् ऱीर्न्दार्
एवलॆव् वुलहुञ् जॆय्यच् चॆल्वनिऱ् किशैन्द दॆन्ऱाल्
पावमो मुन्नी शॆय्द तरुममो तॆरियप् पाराय् 459

पुलन्कळ् पोम्-इन्द्रियाँ जिस मार्ग में जाती हैं; नॆऱियिल् पोका-उसमें न जानेवाले; पूविलोन् आतियाक-कमलदेव आदि; तेवरो-देव हों या; अवुणर् तामो-(इन्द्रियाराम) दानव हों; निलै निन्ऱु-स्थायी रहकर; विनैयिल् तीर्न्तार्-(कौन) कर्ममुक्त हुए; ॲव् उलकुम्-सारे लोक; निऱ्कु एवल् चॆय्य-तुम्हारी आज्ञा मानते हैं; चॆल्वम इचैन्ततु-ऐसा वैभव से युक्त हो; ॲन्ऱाल्-तो; मुन् नी चॆय्त-पहले जो तुमने किया; तरुममो-वह धर्म है या; पावमो-पाप (के कारण) है; तॆरिय पाराय्-खूब समझकर देखो। ४५९

इन्द्रिय-निग्रही ब्रह्मा आदि देव हों चाहे दानव, कौन स्थायी रहकर कर्ममुक्त हुए? तुम्हें ऐसा धनवैभव मिला है कि सारे लोक तुम्हारे आज्ञाकारी बने हैं —तो यह तुम्हारे पूर्वकृत पुण्य का फल है या पाप का। खूब सोचो और समझो। ४५९

इप्पॆरुञ् जॆल्व निन्न णीन्दपे रीशन् याण्डुम्
अप्पॆरुञ् जॆल्वन् दुय्प्पा निन्ऱुमा दवत्ति नन्ऱे
ऒप्परुन् दिरुवु नीङ्गि युऱवॊडु मुलक्क वुन्नित्
तप्पुदि यऱत्तै येळाय् तरुमत्तैक् कामि यादे 460

पेर् ईचन्-महेश्वर ने; निन् कण ईन्त-जो तुम्हारे पास दिया है; इ पॆरुम् चॆल्वम्-यह विशाल धन; मातवत्तिन्-महान् तप में; याण्टुम् निन्ऱु-हमेशा स्थित रहकर; अ पॆरुम् चॆल्वम्-उस विशाल धन को; तुय्प्पात् अन्ऱे-भोगने के लिए न; एळाय्-मूर्ख; ऒप्पु अरुम्-अनुपम; तिरुवु नीङ्कि-श्री को त्यागकर; उऱवॊटुम् उलक्क उन्नि-बन्धुओं के साथ मरना सोचकर; तरुमत्तै कामियाते-धर्म पर आस्था छोड़कर; अऱत्तै तप्पुति-धर्म से हट जाते हो। ४६०

यह परमेश्वर की दी हुई विशाल धन-सम्पत्ति क्या इसीलिए नहीं कि तुम महान् तप के मार्ग में स्थित रहकर उस विपुल धन का भोग करो। मूर्ख ! अनुपम इस श्री से हाथ धोकर अपने बन्धुजनों के साथ मर-मिटने के लिए धर्म पर आस्था छोड़कर धर्म से हट रहे हो ! । ४६०

मऱन्दिऱम् बाद तोला वलियिऩ रॆऩ्ऩितु माण्डार्
अऱऩ्दिऱम् बिऩ्ऩरु मक्कट् करुडिऱम् बिऩ्ऩरु मऩ्ऱे
पिऱन्दिऱन् दुळ्ळुम् बाशप् पिणक्कुडॆप् पिणियिऱ् ऱीर्न्दार्
तुऱन्दरुम् बहैहळ् मूऩ्ऱुन् दुडॆत्तवर् पिऱर्यार् शॊल्लाय् 461

मऱम् तिऱम्पात–बल में निरन्तर स्थिर रहनेवाले; तोला–कभी न हारनेवाले; वलियितर् ॲतिनुम्–बलवान हों तो भी; अऱम् तिऱम्पितरुम्–धर्मच्युत और; मक्कट्कु–लोगों के प्रति; अरुळ् तिऱ्म्पितरुम्–दया न दिखानेवाले; माण्टार् अऩ्ऱे–मर गये न; तुऱन्तु–आसक्ति छोड़कर; अरुम् पकैकळ् मूऩ्ऱुम्–अन्तःशत्रु तीनों को; तुटॆत्तवर्–मिटा चुकनेवाले; पिऱन्तु इऱन्तु–मरकर जन्म लेकर; उळ्ळुम्–संकट उठाना जिसमें हो; पाच पिणक्कु उटॆ–पाशबन्ध रूपी; पिणियिल्–रोग से; तीर्न्तार्–मुक्त हुए; पिऱर् यार्–अन्य कौन; चॊल्लाय्–कहो। ४६१

जो बलवान अपने बल-पराक्रम में विना किसी परिवर्तन के रहते हैं और कभी नहीं हारते वे अगर धर्ममार्ग छोड़नेवाले, लोगों पर दया न दिखाने वाले हों तो वे मर ही गये न ? अनासक्त और तीनों शत्रुओं (काम, क्रोध, मोह) के जयी ही जन्म-मरण-कष्ट रूपी पाशबन्धन के रोग से विमुक्त हुए। फिर कौन है ? तुम ही कहो। ४६१

तॆऩ्ऱमि ऴुरैत्तोऩ् मुऩ्ऩात् तोदुतीर् मुऩिवर् यारुम्
पुऩ्ऱॊऴि लरक्कर्क् काऱ्ऱे नोऱ्किलम् बुहुन्द पोदे
कॊऩ्ऱरु ळुऩ्ऩा लऩ्ऩार् कुऱैवदु शरदङ् गोवे
ॲऩ्ऱऩर् याऩे केट्टे ऩीयदऱ् कियैव शॆय्दाय् 462

पुकुन्त पोते–जब (श्रीराम दण्डकवन में) प्रविष्ट हुए तभी; तॆऩ् तमिऴ् उरैत्तोऩ्–दक्षिणी (मधुर) तमिऴ् के व्याकरणकार (अगस्त्य) के; मुऩ्ऩा–नेतृत्व में; तीतु तीर्–निर्दोष; मुतिवर् यारुम्–सभी मुनि; पुऩ् तॊऴिल् अरक्कर्क्कु–नीचकर्मी राक्षसों (के दुष्कृत्यों) का; आऱ्ऱेम्–सहन नहीं कर सकते; नोऱ्किलम्–व्रतपालन नहीं करते; कॊऩ्ऱु अरुळ्–उनका नाश कर हम पर कृपा कीजिए; कोवे–राजा; उऩ्ऩाल्–तुमसे; अऩ्ऩार् कुऱैवतु–उनका मरना; चरतम्–निश्चित है; ॲऩ्ऱतर्–बोले; याऩे केट्टेऩ्–मैंने स्वयं सुना; नी–तुमने; अतऱ्कु इयैव–उसके ही अनुरूप; चॆय्ताय्–(कार्य) किया है। ४६२

जब श्रीराम दण्डकारण्य में घुसे तभी तमिऴ के (व्याकरण के) रचयिता अगस्त्य के नेतृत्व में निर्दोष मुनिगण आये और उन्होंने श्रीराम से निवेदन किया कि नीचकर्मी राक्षसों से हम बेचैन हैं। उनके दिये कष्ट सह नहीं

सकते हैं। व्रत आदि का पालन भी कर नहीं पाते। उनको मारो और हम पर दया करो, हे राजन! तुम्हारे हाथ वे मरेंगे। यह निश्चित है। यह मैंने अपने कानों से ही सुना था। तुमने भी वैसे ही, उनकी शिकायत को सत्य प्रमाणित करते हुए काम किये हैं। ४६२

उऩ्ऩैयुङ् गेट्टु मऱ्ऱुऩ् ऩूऱ्ऱमु मुडैय नाळुम्
पिऩ्ऩैयिव् वरक्कर् शेऩैप् पॅरुमैयु मुऩिवर् पेणिच्
चॊऩ्ऩबि ऩुङ्गै मूक्कु मुम्बियर् तोळुन् दाळुम्
चिऩ्ऩबिऩ् ऩङ्गळ् शॆय्द वदऩैनी शिऩ्दि यायो 463

मुऩिवर्–मुनियों के; पेणि–आतुर होकर; उऩ्ऩैयुम्–तुम्हारा चरित्र; उऩ् ऊऱ्ऱमुम्–तुम्हारा बल; उडैय नाळुम्–तुम्हारी आयु के दिन; इ अरक्कर् चेऩै पॅरुमैयुम्–इस राक्षस-सेना का गौरव; चॊऩ्ऩपिऩ्–कहने पर; केट्टु–(अन्य सूत्रों से भी) सुनकर; पिऩ्ऩै–उसके बाद; उङ्कै मूक्कुम्–तुम्हारी बहन की नाक को और; उम्पियर् तोळुम्–तुम्हारे भाइयों के कन्धों को; ताळुम्–पैरों को; चिऩ्ऩ पिऩ्ऩङ्कळ् चॆय्त–जो खण्ड-खण्ड किया; अतऩै–उस (श्रीराम और लक्ष्मण के) काम को; नी चिऩ्तियायो–तुम सोचोगे नहीं क्या। ४६३

उन मुनियों ने आतुरता के साथ तुम्हारा चरित्र, बल, तुम्हारी आयु की बात, इन राक्षसों की सेना का गौरव आदि कहा। श्रीराम ने अन्य सूत्रों से भी वे बातें सुनीं। इसके बाद ही उन्होंने तुम्हारी बहिन की नाक के और तुम्हारे भाइयों के कन्धों और पैरों के खण्ड-खण्ड किये थे। उस पराक्रम के कार्य को तुम सोचोगे नहीं क्या? । ४६३

आयिरन् दडक्कै यानिऩ् ऩैन्नाऩ्गु करमुम् बऱ्ऱि
वाय्वऴि कुरुदि शोरक् कुत्तिवाऩ् शिऱैयिल् वैत्त
तूयवऩ् वयिरत् तोळ्ह डुणित्तवऩ् ऱॊलैन्द माऱ्ऱम्
नीयऱिन् दिलैयो नीदि नॅऱियऱिन् दिलाद नीशा 464

नीति नॅऱि–धर्मन्याय; अऱिन्तिलात–न जाननेवाले; नीचा–नीच; निऩ्–तुम्हारे; ऐ नाऩ्कु करमुम्–बीसों हाथों को; पऱ्ऱि–पकड़कर; वाय् वऴि–मुख से; कुरुति चोर–खून बह निकले ऐसा; कुत्ति–घूंसा मारकर; वाऩ् चिऱैयिल् वैत्त–बड़ी कारा में जिसने बन्द किया; तूयवऩ्–उस श्रेष्ठ; आयिरम् तट कैयाऩ्–सहस्र बड़े हाथों वाले (कार्तवीर्य) के; वयिर तोळ्कळ्–वज्र (-कठोर) कन्धों को; तुणित्तवऩ्–जिन्होंने काट दिया; तॊलैन्त माऱ्ऱम्–उन परशुराम के हारने का समाचार; नी अऱिन्तिलैयो–तुमने जाना नहीं है क्या। ४६४

नीति-न्याय न जाननेवाले नीच! श्रेष्ठ और सहस्रहस्त कार्तवीर्य ने तुम्हारे बीसों हाथों को पकड़कर, तुम्हारे मुखों से रक्त बहाते हुए घूंसा मारा और तुम्हें बड़े कारागृह में बन्दी बनाकर रखा। उसके वज्र-कठोर

कन्धों को जिन्होंने काटा था वे परशुराम श्रीराम से हारकर भागे। क्या यह समाचार तुमने नहीं जाना ? । ४६४

ꕥ कडिक्कुम्वा ळरवुङ् गेट्कु मन्दिरङ् गळिक्किन् ऱोयै
अडुक्कुमी दडाद दीदॆन् ऱऱिविन्ना लेदुक् काट्टि
इडिक्कुन रिल्लै नीये यॆण्णिय दॆण्णि युन्नै
मुडिक्कुन रॆन्ऱ पोदु मुडिविन्ऱि मुडिव दुण्डो 465

कटिक्कुम् वाळ् अरवुम्–डसनेवाला क्रूर सर्प भी; मन्तिरम् केट्कुम्–मन्त्र सुनता है (मानकर चुप रहता है); कळिक्किन्ऱोयै–मदमत्त तुम्हें; अटुक्कुम् ईतु–यह कर्तव्य है; अटाततु ईतु–अकर्तव्य यह है; ऍन्ऱु–ऐसा; अऱिविनाल् एतु काट्टि–बुद्धि से हेतु समझाकर; इटिक्कुनर् इल्लै–टोकनेवाले नहीं हैं; नी–तुम; ऍण्णियते ऍण्णि–जैसा सोचते हो वैसा ही खुद सोचकर; उन्नै मुटिक्कुनर्–तुम्हें मिटानेवाले (मन्त्री) हैं; ऍन्ऱ पोतु–ऐसी स्थिति में; मुटिवु इन्ऱि–सर्वनाश के सिवा; मुटिवतु उण्टो–कोई (अन्य) अन्त होगा क्या। ४६५

काटनेवाला सर्प भी मन्त्र सुनकर दबा रहता है ! तुम मदमत्त हो। तुम्हें यह कर्तव्य है, यह अकर्तव्य —ऐसा कहकर टोकनेवाले नहीं हैं। जो तुम्हारे मन्त्री हैं वे तुम जैसा सोचते हो, वैसा ही सोचते हैं और तुम्हारा नाश कर रहे हैं। उस हालत में सर्वनाश के सिवा अन्त क्या (शुभ) होगा ? । ४६५

ꕥ ऍन्ऱ ऱत्तुरै केट्टलु मिरुबदु नयनम्
मिन्ऱि ऱप्पन वॊत्तन वॆयिल्विडु पहुवाय्
कुन्ऱि ऱत्तॆळित् दुरप्पिनन् कुऱिप्पदॆन् कामन्
तन्ऱि ऱत्तैयुङ् गडन्ददु शीऱ्ऱत्तिन् ऱहैमै 466

ऍन्ऱु–ऐसा; अऱत्तु उरै–धर्म-वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; इरुपतु नयनम्–बीसों आँखें; मिन् तिऱप्पन–बिजली प्रगटी; ऒत्तन–जैसे लगीं; वॆयिल् विटु–धूप-सा निकालनेवाले; पकुवाय्–फटे बड़े मुखों से; कुन्ऱु इऱ–पर्वतों को फोड़कर; तॆळित्तु उरप्पिनन्–(रावण ने) डाँट बतायी और गर्जन किया; कुऱिप्पतु ऍन्–क्या कहा जाय; चीऱ्ऱत्तिन् तकमै–कोप का प्रकार; कामन् तन् तिऱत्तैयुम्–मन्मथ की शक्ति को भी; कटन्ततु–पार कर गया। ४६६

सीताजी के ये धर्मोपदेश-वचन कहते ही रावण की बीसों आँखों से बिजली-सी छूटी। उसने अपने मुख खोलकर धूप-सा निकालते हुए गरज कर डाँट बतायी कि पर्वत भी टूट गये। तात्पर्य क्या बताया जाय ? कोप का वेग मन्मथ की शक्ति को भी लाँघ गया। ४६६

वळर्न्द ताळिनन् मादिर मत्तैयु मरैवित्
तळन्द तोळिन न्नलशीरि कण्णिन त्रिवळॆप्

पिळन्दु तिन्बॅन्ऩ् ऱुडन्ऱुनित् ऱन्ऩडि पॅयरान्
किळर्न्द शीऱ्ऱमुङ् गादलु मॅदिरॅदिर् किडैप्प 467

वळर्न्त ताळितऩ्–लम्बे पैरों वाला; मातिरम् अऩैत्तैयुम्–सभी दिशाओं को; मरैवित्तु अळन्त–समा लेकर नापनेवाले; तोळितऩ्–कन्धों का; अतल् चॊरि कण्णितऩ्–आग उगलनेवाली आँखों का; इवळै पिळन्तु तिऩ्पॆऩ्–इसको खण्ड बनाकर खाऊँगा; ऍऩ्ऱु–कहकर; किळर्न्त चीऱ्ऱमुम्–उमगते क्रोध; कातलुम्–और प्रेम के; ऍतिर् ऍतिर् किटैप्प–आमने-सामने हो टकराते; अटि पॅयरान्–आगे कदम न रखता हुआ; उटऩ्ऱु निऩ्ऱतऩ्–कोप कर खड़ा रहा। ४६७

कोप के कारण वह उछला तो उसके पैर अधिक लम्बे दिखे। भुजाएँ दिशाओं को छिपाते हुए दिशाओं को मानो नाप रही थीं। अंगारे निकालती आँखों के साथ उसने कहा कि मैं इसे तोड़कर खा लूँगा। पर उसके मन में वर्धनशील काम और क्रोध का संघर्ष हो गया। इसलिए वह आगे नहीं बढ़ा, पर कोप के साथ खड़ा रह गया। ४६७

अन्न कालैयि लनुमनु मरुन्ददिक् कर्पित्
ऍन्नै याळुडै नायहन् ऱेवियै यॅन्मुन्
शॊन्न नीशन्कै तॊडुवदन् मुन्रुहैत् तुळक्किप्
पिन्नै निन्ऱदु शॅयहुवॆ नॅन्बदु पिडित्तान् 468

अन्न कालैयिल्–तब; अनुमतुम्–हनुमान ने भी; अरुन्तति कर्पिन्–अरुन्धती के समान पतिव्रता; ऍन्नै आळुटै–मुझे अपना दास बनाये रखनेवाले; नायकन् तेवियै–नायक श्रीराम की देवी को; ऍन् मुन्–मेरे ही सामने; चॊन्न नीचन्–ऐसे वचन जिसने कहे, उस नीच के; कै तॊटुवतन् मुन्–हाथ से स्पर्श करने के पहले; तुकैत्तु उळक्कि–उसको रौंदकर मारकर; पिन्नै निन्ऱतु–बाद जो हो; चॆय्कुवॆन्–कर लूंगा; ऍन्पतु पिटित्तान्–ऐसा ठान लिया। ४६८

तब हनुमान ने सोचा कि मेरे ही सामने अनुचित वचन कहनेवाला यह नीच राक्षस अरुन्धती-सी सीताजी को, जो मुझे दास का गौरव देनेवाले मेरे स्वामी श्रीराम की देवी हैं, हाथ से स्पर्श करे, इसके पूर्व ही मैं उसे रौंदकर मार दूंगा और बाद जो करना है वह करूँगा। हनुमान ने मन में ठाना। ४६८

तऩिय निऩ्ऱनन् ऱलैपत्तुङ् गडिदुहत् ताक्किप्
पऩियिन् वेलयि लिलङ्गैयैक् कीऴुऱप् पाय्च्चिप्
पुऩिद मादवत् तणङ्गनैच् चुमन्दनन् पोवॅन्
इऩिदि नॅन्बदु निनैन्दुदन् करम्बिशैन् दिरुन्दान् 469

तनियन्–एकाकी मैं; निऩ्ऱतन्–सामने स्थित; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; कटितु उक–शीघ्र गिराते हुए; ताक्कि–प्रहरित कर; इलङ्कैयै–लंका को; पतियिन् वेलैयिल्–शीतल समुद्र के अन्दर; कीऴ् उऱ पाय्च्चि–धँसाते हुए भिजवाकर;

पुनित–पावन; मा तवत्तु–महती तपस्विनी; अणङ्कितै–देवी को; चुमन्ततन्–धारण करके; इतितिन् पोवॅन्–सुख से जाऊँगा; ऍन्नपतुम् नितैन्तु–यह भी सोचकर; तन् करम् पिचैन्तु–अपने हाथ मलते हुए; इरुन्तान्–(मौके की ताक में) रहा। ४६९

एकाकी मैं सामने स्थित रावण के दसों सिरों को गिराते हुए प्रहार करूँगा; लंका को शीतल सागर के अन्दर नीचे पहुँचा दूँगा और पवित्र महान् तपस्विनी देवी को धारण कर सुख से चला जाऊँगा। यह भी सोचकर हनुमान अपने हाथ मलते हुए मौके की ताक में बैठा रहा। ४६९

आण्ड वाळरक् कन्तहत् तण्डत्तै यळिप्पान्
मूण्ड कालवॅन् दीयॅन मुऱ्ऱिय शीऱ्ऱम्
नीण्ड कामनीर् नीत्तत्तिन् वीवुऱ नितैविन्
मीण्डु नितॄरोरु तन्मैया लितैयन विळम्बुम् 470

आणट्ु–तब; अ वाळ् अरक्कन्–उस निर्मम राक्षस के; अकत्तु–मन में जो उठा; अण्टत्तै अळिप्पान्–अण्डों का नाश करने; मूण्ट–उठी; काल वॅम् ती ऍत–युगान्त की भयंकर आग के समान; मुऱ्ऱिय चीऱ्ऱम्–सुवर्धित कोप; नीण्ट काम नीर् नीत्तत्तिन्–दीर्घ काम रूपी जलप्रवाह में; वीवु उऱ–बुझ गया; नितैवित् मीण्टु नितॄरु–अपनी सुध में फिर आकर; ऒरु तन्मैयाल्–एक प्रकार से; इत्तैयत विळम्पुम्–यों कहने लगा। ४७०

तब क्रूर रावण के मन में जो गम्भीर क्रोध अण्डनाशक युगान्त की भयंकर अग्नि के समान उठा था, वह दीर्घ प्रेम रूपी जल-प्रवाह में बुझ गया। फिर अपनी पुरानी स्मृति पाकर एक स्थिति में वह यों कहने लगा। ४७०

कॊल्वॅन्त् ऱुडन्ऱे नुन्तैक् कोऱलॅन् कुऱित्तुच् चॊन्त
शॊल्लुळ ववऱ्ऱुक् कॅल्लाङ् गारणन् दॅरियच् चॊल्लिन्
ऒल्वदी दॊल्ला दीदॅन् ऱॆन्तक्कुमॊन् ऱुलहत् तुण्डो
वॅल्वदुन् दोऱ्ऱ ऱातुम् विळैयाट्टिन् विळैन्द मेताळ् 471

उन्तै कॊल्वॅन् ऍन्ऱु–तुमको मारूँगा कहकर; उटन्ऱेन्–कुपित हो उठा; कोऱलॅन्–पर नहीं मारूँगा; कुऱित्तु चॊन्त–मुझे उद्देश्य करके जो तुमने कहा; अवऱ्ऱिक्कु ऍल्लाम्–उस सबका; कारणम् तॅरिय चॊल्लिन्–कारण समझाकर कहना चाहूँ तो; चॊल् उळ–मेरे पास कहने को विषय हैं; ऍतक्कु ऒल्वतु ईतु–मुझसे साध्य यह; ऒल्लातु ईतु–असाध्य यह; ऍन्ऱु–ऐसा; ऒन्ऱु–कुछ; उलकत्तु उणटो–दुनिया में है क्या; मेताळ्–पहले; वॅल्वतुम् तोऱ्ऱल् तातुम्–जीतना या हारना; विळैयाट्टिन् विळैन्त–खेल में हुए थे। ४७१

मैंने कोप के कारण तुम्हें मारने की बात कही। पर अब मैं तुम्हें नहीं मारूँगा। तुमने जो भी अपराध मुझ पर लगाये, उन सबका हेतु-सहित खण्डन करूँ, इसके लिए मेरे पास विषय (तर्क) हैं। इस संसार में

मेरे लिए साध्य-असाध्य ऐसा कुछ है क्या ? आगे जो जय या पराजय हुई, वे सब खेल-खेल में हुई बातें हैं। ४७१

ऑन्ऱुके ऴुरैक्क निऱ्को रुयिरॅन वुरियोन् ऱन्नैक्
कॉन्ऱुको ळिऴैत्ता नीनिन् नुयिर्विडिऱ् कुऱ्ऱङ् गूडुम्
ऍन्ऱना रुयिरु नीङ्गु मॅन्बदै यियैय वॅण्णि
अन्ऱुनान् वञ्जञ् जॅय्द दारॅनक् कमरि नेर्वार् 472

ऑन्ऱु उरैक्क केळ्–एक बात कहूँगा, सुनो; निऱ्कु ओर् उयिरॅन–तुम्हारे श्रेष्ठ प्राण-सम; उरियोन् तन्नै–तुम्हारे स्वामी को; कॉन्ऱु–मारकर; कोळ् इऴैत्ताल्–अपना बल दिखाऊँ तो; नी–तुम; निन् उयिर् विटिल्–अपने प्राण त्याग दोगी तो; कुऱ्ऱम् कूटुम्–अपराध होगा; ऍन्ऱन् आरुयिरुम्–मेरे प्रिय प्राण भी; नीङ्कुम्–छूट जायँगे; ऍन्पतै–इसको; इयैय ऍण्णि–खब सोचकर ही; अन्ऱु नान् वञ्चम् चॅय्ततु–उस दिन मैंने वञ्चक काम किया; आर्–कौन; ऍतक्कु–मुझसे; अमरिल् नेर्वार्–युद्ध में लड़ सकते हैं। ४७२

सुनो, एक बात कहता हूँ। अगर मैं तुम्हारे प्राण-सम प्यारे स्वामी को मारकर अपना बल दिखलाऊँ और तुम अपनी जान छोड़ दो तो मेरे कार्य में बाधा पड़ जायगी। और मेरे प्यारे प्राण भी छूट जायँगे। यह सब खूब सोचकर ही मैंने उस दिन प्रवंचना से काम लिया। नहीं तो कौन है जो मेरे विरुद्ध समर में लड़ सके ? । ४७२

मानॅन्ब दऱिन्दु पोन मानिड रावार् मीण्डि
यानॅन्ब दऱिन्दाल् वारा रेळैमै यॅण्णि नोक्कल्
तेनॅन्ब दऱिन्द शॊल्लाय् तेवर्दाम् याव रेयॅङ्
गोनॅन्ब दऱिन्द पिन्नैत् तिऱम्बुवार् कुऱैयि नल्लाल् 473

तेन् ऍन्पतु अऱिन्त–शहद मानने योग्य; चॊल्लाय्–मधुरभाषिणी; मान् ऍन्पतु–हरिण; अऱिन्तु पोन–समझकर जो गये; मानिटर् आवार्–मानव लोग; मीण्टु–लौट आकर; यान् ऍन्पतु–मैं था यह; अऱिन्ताल्–समझेंगे तो; वारार्–इधर नहीं आएँगे; एळैमै ऍण्णि नोक्कल्–कायरता मत समझो; ऍम् कोन्–हमारे शासक रावण (का) यह काम है; ऍन्पतु अऱिन्त पिन्नै–यह जानने के बाद; यावरे तेवर् ताम्–कौन देव ही सही; कुऱैयिन् अल्लाल्–मन्दवेग हुए बिना; तिऱम्पुवार्–विरोध में काम करेंगे। ४७३

शहद-सी बोली वाली सीते ! वे दोनों दुर्बल मनुष्य (मारीच को) सच्चा मृग समझकर गये थे। वे लौट आकर यह जान लेंगे कि यह कार्य मेरा है तो वे इधर नहीं आएँगे। तुम मुझे कायर मत समझो। देवों में ही सही कौन है जो यह जानने पर कि यह हमारे नाथ रावण का ही काम है वेग न खोकर मेरे विरोध में बर्ताव करेंगे ? । ४७३

वॅऩ्ऱोरु मिरुप्प यार्क्कु मेलवर् विळिवि लादोर्
ॲऩ्ऱोरु मिरुप्प वऩ्ऱे यिन्दिर ऩेवल् शॅय्य
ऑऩ्ऱाह वुलह मूऩ्ऱु माळ्हिऩ्ऱ वॊरुवऩ् याऩे
मॅऩ्ऱोळा यिदऱ्कु वेऱोर् कारणम् विरिप्प दुण्डो 474

मॅऩ् तोळाय्–मृदुल भुजाओं वाली; वॅऩ्ऱोरुम् इरुप्प–मेरे विजयी (वाली आदि) के रहते; यार्क्कुम् मेलवर्–सबके ऊपर रहनेवाले; विळिवु इलातोर ॲऩ्ऱोरुम् इरुप्प–अमर कहलानेवाले देवों के भी रहते; अऩ्ऱे–न; इन्तिरऩ् एवल् चॅय्य–इन्द्र मेरी भृत्यता करे ऐसा; याऩे–मैं; ऑऩ्ऱाक उलकम् मूऩ्ऱुम्–अकेले तीनों लोकों को; आळ्किऩ्ऱ ऑरुवऩ्–पालनेवाला एक बना रहता हूँ; इतऱ्कु–इसका; वेऱु ओर् कारणम्–(मेरे बल के सिवा) कोई अन्य कारण; विरिप्पतु उण्टो–विस्तार से कहना भी है क्या। ४७४

मृदु कन्धों वाली। तुम मेरे विजेताओं की बात कहती हो! जब वे हैं और ये सर्वोच्च अमर देख ही रहे हैं; तब भी न इन्द्र मेरी सेवा-टहल करता है और मैं अकेला त्रैलोकाधिपत्य का काम कर रहा हूँ। इसका कोई अन्य हेतु है, विना मेरे पराक्रम के, जिसका मुझे वर्णन करना पड़े? । ४७४

मूवरुन् देवर् तामु मुरणह मुऱ्ऱुङ् गॊऱ्ऱम्
पावैनिऩ् पॊरुट्टि ऩालोर् पळिपॅऱप् पयऩ्ऱीर् नोऩ्बिऩ्
आवियऩ् मऩिदर् तम्मै यडुहिलॅ ऩवरै यीण्डुक्
कूविनिऩ् ऱेवल् कॊळ्वॅऩ् काणुदि कुदलैच् चॊल्लाय् 475

कुतलै चॊल्लाय्–तोतली (मधुर) भाषिणी; मूवरुम्–त्रिमूर्ति; तेवर् तामुम्–देव; मुरण् उक–बल खो जायँ ऐसा; मुऱ्ऱुम् कॊऱ्ऱम्–जो पूर्ण हुई वह विजय; पावै–स्त्री; निऩ् पॊरुट्टिताल्–तुम्हारे कारण; ओर् पळि पॅऱ–एक अपवाद पा ले; पयऩ् तीर् तोऩ्पिऩ्–असफल व्रतधारी; आ इयल्–गाय के-से स्वभाव वाले; मऩितर् तम्मै–मनुष्यों को; अटुकिलॅऩ्–नहीं मारूँगा; अवरै–उनको; ईण्टु–यहाँ; कूवि–बुलाकर; निऩ्ऱु एवल् कॊळ्वॅऩ्–सामने खड़ा करके आज्ञा का पालन करवा लूँगा; काणुति–देखोगी। ४७५

तोतली (मधुर) बोली वाली! मैंने त्रिमूर्ति और अन्य इन्द्रादि देवों के बल का नाश करके विजय का गौरव पाया है। उस विजय पर कलंक लगाते हुए निरर्थक व्रतधारी, गऊ-सम मानवों को नहीं मारूँगा। उन्हें इधर लाऊँगा, और वे मेरे सामने खड़े होकर मेरी सेवा-टहल करें—ऐसा करूँगा। तुम देख लो। ४७५

चिऱ्ऱियर् चिऱुमै याऱ्ऱर् चिऱुतॊळिऩ् मऩिद रोडे
मुऱ्ऱिय दायिऩ् वीर मुऩिवॅऩ्गण् विळैया दॅऩुम्
इऱ्ऱैयिप् पहलि ऩॊय्दि ऩिरुवरै यॊरुहै याल्याऩ्
पऱ्ऱिनॅऩ् कॊणरुन् दऩ्मै काणुदि पळिप्पि लादाय् 476

पऴिप्पु इलाताय्–अनिंद्य (सुन्दरी); चिऱ्ऱियल्–अल्प-स्वभाव; चिऱुमै आऱ्ऱल्–अल्पशक्ति; चिऱु तॊऴिल्–क्षुद्रकर्म; मतितरोटु–मानवों के साथ; मुऱ्ऱियतु आयिऩ्–शत्रुता पूर्णरूप से बढ़ी तो; वीर मुऩिवु–वीरोचित कोप; ॲऩ् कण्–मुझमें; विळैयातेऩुम्–पैदा नहीं होगा तो भी; इऱ्ऱै इ पकलिल्–अभी, आज, इसी मुहूर्त में; नॊय्तिऩ्–सुगम रूप से; इरुवरै–दोनों को; ऒरु कैयाल्–एक हाथ से; याऩ्–मैं; पऱ्ऱिऩ् कॊणरुम्–पकड़ लाऊँगा वह; तऩ्मै–(बल का) प्रकार; काणुति–देखोगी। ४७६

अनिंद्य सुन्दरी! मानव क्षुद्र हैं, अल्पबल हैं और अल्पकर्म हैं। उनसे शत्रुता पक्की हो गयी तो, यद्यपि मुझमें वीरता योग्य कोप नहीं होगा तो भी तुम देखोगी कि अभी इसी घड़ी दोनों को एक ही हाथ से अनायास पकड़कर इधर लाऊँगा। ४७६

पदवियिऩ् मनिद रेऩुम् पैन्दॊडि निऩ्ऩैत् तन्द
उदवियै युणर नोक्कि ऩुयिर्क्कॊलैक् कुरिय रल्लर्
शिदैवुऱ् लवर्क्कु वेण्डिऱ् चॆय्दिनी यॆऩ्ऱु शॊप्पिल्
इदमुनक् कीदे याहि लियऱ्ऱुवॆऩ् काण्डि यिऩ्ऩुम् 477

पैन्तॊटि–मनोरम कंकणशोभिते; इऩ्ऩुम्–और भी; पतवि इल्–श्रेष्ठ पद में न रहनेवाले; मतितर् एऩुम्–मनुज हों तो भी; निऩ्ऩै तन्त–तुम्हें जो मुझे दिया; उतवियै–वह उपकार; उणर नोक्किऩ्–विचार कर देखें तो; उयिर् कॊलैक्कु उरियर् अल्लर्–जान से मारे जाने योग्य नहीं है; अवर्क्कु–उनका; चितैवु उऱल्–मरना; वेण्टिल्–तुम चाहोगी (कि वे मरें) तो; चॆय्ति नी–तुम करो; ॲऩ्ऱु चॆप्पिल्–ऐसा कहोगी तो; ईते उऩक्कु इतम् आकिल्–यही तुम्हारे हित में होगा तो; इयऱ्ऱुवेऩ्–करूँगा; काण्टि–देखो। ४७७

मनोरम कंकणधारिणी! वे उच्चपद मनुष्य नहीं हैं। तो भी तुमको उन्होंने मुझे दिलाया है। उस उपकार को लेकर सोचा जाय तो वे मारे जाने योग्य नहीं हैं। पर अगर तुम चाहो कि वे मर जायँ, इसी में तुम्हारा भला है तो मैं वही करूँगा। ४७७

पळ्ळनी रयोत्ति नण्णिप् परदऩे मुदलि ऩोराण्
डुळ्ळवर् तम्मै यॆल्ला मुयिर्कुडित् तूऴित् तीयिऩ्
वॆळ्ळनीर् मिदिलै योरै वेरुत् तॊऴिदि ऩॆय्दिक्
कॊळ्वॆऩिऩ् ऩुयिरु मॆऩ्ऩै यरिन्दिलै कुऱैन्द नाळोय् 478

कुऱैन्त नाळोय्–क्षीण हुई आयु वाली; पळ्ळ नीर्–गम्भीर जलसमृद्ध; अयोत्ति नण्णि–अयोध्या में जाकर; परतऩे मुतलिऩोर्–भरत आदि; आण्टु उळ्ळवर् तम्मै ॲल्लाम्–वहाँ रहनेवाले सबों को; उयिर् कुटित्तु–प्राण पीकर (मारकर); ऊऴि तीयिऩ्–युगान्त अग्नि के समान; वॆळ्ळ नीर् मितिलैयोरै–प्रवाह जलपूर्ण

मिथिलावासियों को; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल करके; ॲळितिन् ॲय्ति–आसानी से (लौट) आकर; निन् उयिरुम् कॊळ्वॅन्–तुम्हारी भी जान हर लूंगा; ॲन्नै अऱिन्तिलै–मुझे नहीं समझतीं। ४७८

हे क्षीण हुई आयु वाली! गहरे जल से समृद्ध अयोध्या जाकर भरत आदि वहाँ के सभी को मारकर फिर युगान्तकालीन अग्नि के समान जल-प्रवाह समृद्ध मिथिला जाऊँगा। वहाँ के सभी को मारूँगा। फिर अनायास इधर आकर तुम्हारे प्राण भी हर लूँगा। तुम मुझे नहीं समझीं! । ४७८

ईदुरैत् तळन्ऱु पॊङ्गि यॅरिहदिर् वाळै नोक्कित्
तोदुयिर्क् किळैक्कु नाळुन् दिङ्गळो रिरण्डिऱ् ऱेय्न्द
दादलिऱ् पिन्नर् नीये यऱिन्दवा ऱऱिदि यॅन्नाप्
पोदरिक् कण्णि ताळै यहत्तुवैत् तुरप्पिप् पोनान् 479

ईतु उरैत्तु–यह (सब) कहकर; अळन्ऱु पॊङ्कि–क्रोध में भभककर; ॲरि कतिर्–जलती-सी कान्ति वाली; वाळै नोक्कि–तलवार को देखकर; उयिर्क्कु तीतु इळैक्कुम् नाळुम्–तुम्हारे प्राणों की हानि करने का दिन भी; तिङ्कळ् ओर् इरण्टिल्–दो मासों में; तेय्न्तत्तु–(पूरा) हो जायगा; आतलिन्–इसलिए; पिन्नर्–बाद; नीये अऱिन्त आऱु अऱिति–तुम जो समझो वही समझो; ॲन्ना–कहकर; पोतु अरि कण्णिताळै–कमल-सम और लाल डोरों-सहित आँख वाली सीता को; अकत्तु वैत्तु–मन में रखते हुए; उरप्पि–डाँट बताकर; पोनान्–गया। ४७९

यह कहकर रावण ने भभकते क्रोध के साथ अग्नि के समान तेज उगलनेवाली अपनी तलवार को देखा। 'अब तुम्हारे मरने का दिन भी दो महीने में आ गया। इसलिए फिर तुम जैसा समझो वैसा समझो।' उसने कमल-सम और डोरों-सहित आँखों वाली सीताजी से कहा और उनके रूप को अपने मन में लिए हुए, उन्हें डाँट बताकर चला। ४७९

अञ्जुवित् तानु मॅन्मै यऱिवुऱत् तॆऱ्ऱि यानुम्
वञ्जियिऱ् चॅव्वि याळै वशित्तॅन्बाल् वरच्चॅय् यीरेल्
नञ्जुमक् कावॅ नॅन्ना नहैयिला मुहत्तुप् पेळ्वाय्
वॅञ्जिनत् तरक्कि मार्क्कु वेऱुवे ऱुणर्त्तिप् पोनान् 480

वञ्चियिल् चॅव्वियाळै–स्त्रियों में अति सुन्दर सीतादेवी को; अञ्चुवित्तानुम्–डरा-धमकाकर ही सही; मॅन्मै–नरमी से; अऱिवु उऱ–बात समझे ऐसा; तॆऱ्ऱियानुम्–समझाकर; वचित्तु–मेरे वशीभूत करके; ॲन पाल्–मेरे पास; वर चॅय्यीरेल्–आने को मजबूर न करोगी तो; उमक्कु नञ्चु आवॅन्–तुम लोगों के लिए विष बन जाऊँगा; ॲन्ना–ऐसा; नकैयिला मुकत्तु–हासहीन वदन की; पेळ्वाय्–बड़े मुखों की; वॅम् चिनत्तु–भयंकर क्रोधशीला; अरक्किमार्क्कु–राक्षसियों से; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; उणर्त्ति–सीख देकर; पोनान्–गया। ४८०

जाने से पहले, उसने वहाँ रही हासहीन-वदना और फटे-से मुखों वाली राक्षसियों को अलग-अलग समझाया कि स्त्रियों में श्रेष्ठ इस सीता को भय दिखाओ या कोमल शब्दों में समझाओ। उसे मेरी वशवर्तिनी बनाकर मेरे पास नहीं भेजोगी तो मैं तुम्हारे लिए विष बन जाऊँगा। ४८०

पोयिऩ् ऩरक्कऩ् पिऩ्ऩैप् पॊङ्गरा नुङ्गिक् कातुऱ
तूयवॆण् मदिय मॊत्त तोहैयैत् तॊडर्न्दु शुऱ्ऱित्
तीयवल् लरक्कि मार्ह डिरण्डॆळुन् दुरप्पिच् चिन्दै
मेयिऩ वण्ण मॆल्लाम् विळम्बुवात् ऱॊडङ्गि ऩाराल् 481

अरक्कऩ् पोयिऩऩ्–राक्षस (रावण) चला गया; **पिऩ्ऩै**–पश्चात्; **पॊङ्कु अरा**–फुफकार उठनेवाले (राहु) द्वारा; **नुङ्कि कातुऱ**–निगलकर उगले हुए; **तूय वॆण् मतियम् ऒत्त**–शुद्ध श्वेत चन्द्र के समान; **तोकैयै**–कलापी-सी सीताजी को; **तीय**–क्रूर; **वल्**–बलयुक्त; **अरक्किमार्कळ्**–राक्षसियाँ; **तॊटर्न्तु चुऱ्ऱि**–लगातार घेरकर; **तिरण्टु ऎळुन्तु**–एक साथ उठकर; **उरप्पि**–डाँटकर; **चिन्तै मेयिऩ वण्णम् ऎल्लाम्**–मनमाने प्रकार से; **विळम्पुवात् तॊटङ्किऩार्**–कहने लगीं। ४८१

निशाचर चला गया; बाद क्रूर और बलयुक्त राक्षसियाँ फुफकार उठे राहु सर्प द्वारा निगलकर उगले हुए शुद्ध श्वेत चन्द्र-सी और कलापी-सी मनोरम सीता को लगातार घेर गईं। डाँटने लगीं और मनमाना कहने लगीं। ४८१

मुऩ्मुऩ् निऩ्ऱार् कण्गऩल् शिन्द मुडुहुऱ्ऱार्
मिऩ्मिऩ् ऩॆऩ्ऩुञ् जूलमुम् वाळुम् मिशैयोच्चिक्
कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्ऱु कुऱैत्तुक् कुडरारत्
तिऩ्मिऩ् ऱिऩ्मिऩ् ऩॆऩ्ऱु तॆऴित्तार् शिलरॆल्लाम् 482

चिलर् ऎल्लाम्–कुछ लोग; **कण् कऩल् चिन्त**–आँखों के अंगारे उगलते; **मुऩ् मुऩ् निऩ्ऱार्**–एक के आगे एक खड़ी हुईं; **मुटुकुऱ्ऱार्**–फिर सतेज उनके पास गयीं; **मिऩ् मिऩ् ऎऩ्ऩुम्**–चमाचम; **चूलमुम् वाळुम्**–शूल और तलवार को; **मिचै ओच्चि**–ऊपर हिलाते हुए; **कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्मिऩ्**–मारो, मारो; **कॊऩ्ऱु कुऱैत्तु**–मारकर टुकड़े बनाकर; **कुटर् आर**–पेट भरके; **तिऩ्मिऩ् तिऩ्मिऩ्**–खाओ, खाओ; **ऎऩ्ऱु**–ऐसा; **तॆऴित्तार्**–डाँटीं। ४८२

कुछ राक्षसियाँ आँखों से अंगारे छितराते हुए एक के आगे एक उनके सम्मुख आयीं; और चमाचम अपने शूलों और तलवारों को ऊपर हिलाते हुए चिल्लायीं कि मारो, इसे मार दो। मारकर शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके पेट भर खा लो और उन्होंने डाँट बतायी। ४८२

वैयऩ् दऩ्द नाऩ्मुहऩ् मैन्दऩ् महऩ्मैन्दऩ्
ऐयऩ् वेद मायिरम् वल्लो ऩऱिवाळऩ्

मॅय्यन् बुन्बाल् वैत्तुळ दल्लाल् विनैवॅन्ड्रोन्
शॅय्युम् बुन्मै याडुहों लॅन्ड्रार् शिलरॅल्लाम् 483

चिलर् ॲल्लाम्–(अन्य) कुछ राक्षसियों ने; वैयम् तन्त–लोकोत्पादक; नान्मुकन् मैन्तन्–चतुर्मुख के पुत्र (पुलस्त्य) के; मकन् मैन्तन्–पुत्र विश्रवा के पुत्र; ऐयन्–(रावण) त्रिलोकाधिपति हैं; वेतम् आयिरम् वल्लोन्–सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता; अऱिवाळन्–बुद्धिमान; उन् पाल्–तेरे प्रति; मॅय् अन्पु–सच्चा प्रेम; वैत्तुळतु अल्लाल्–रखता है वही नहीं; विनै वॅन्ड्रोन्–इष्ट कार्य में सफलता पानेवाले; चॅय्युम् पुन्मै–(तो भी तेरी) यह मूर्खता; यातु कॉल्–क्यों; ॲन्ड्रार्–पूछा। ४८३

कुछ राक्षसियों ने समझाया कि लोकसर्जक चतुर्मुख के पुत्र पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा के पुत्र हैं हमारे अधिपति रावण। त्रिलोकाधिपति हैं, सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता। महा बुद्धिशाली। तुमसे प्रेम जो करते हैं, उस एक कार्य को छोड़कर उन्होंने सभी अभीष्ट कार्यों में सफलता ही पायी है। फिर क्यों तुम यह अज्ञता का काम कर रही हो ? । ४८३

मण्णिऱ् ऱेय्वोर् मानिडर् तत्तम् वऴियोडुम्
पॅण्णिऱ् ऱीयोय् निन्मुदन् माळुम् बिणिशॅय्दाय्
पुण्णिऱ् कोलिट् टालन शॊल्लल् पॊदुनोक्काय्
ॲण्णिऱ् काणाय् मॅय्म्मैयै यॅन्ड्रार् शिलरॅल्लाम् 484

चिलर् ॲल्लाम्–कुछ; मानिटर्–मनुष्य; मण्णिल्–भूमि पर; तेय्वोर्–क्षय होनेवाले हैं; पॅण्णिल् तीयोय्–स्त्रियों में क्रूरी; निन् मुतल्–तुझसे लेकर; तत्तम् वऴियोटुम्–अपनी परम्परा के साथ; माळुम् पिणि–वे मर जाएँ ऐसा रोग (बुरा-कार्य); चॅय्ताय्–तूने कर दिया; पुण्णिल् कोलिट्टाल् अन–व्रण में लकड़ी घुसी जैसे; चॊल्लल्–मत कहो; मॅय्म्मैयै–सत्य को; पॊतु नोक्काय्–निष्पक्ष रहकर देखती नहीं; ॲण्णिल् काणाय्–सोचकर भी नहीं देखती; ॲन्ड्रार्–बोलीं। ४८४

कुछ राक्षसियों ने बताया कि मानव मर्त्य हैं। तू स्त्रियों में क्रूर है। अपने से लेकर वे मानव अपने-अपने परिवारों के साथ मर जाएँ, तूने उनके लिए ऐसा रोग उत्पन्न किया है ! व्रण में लकड़ी घुसेड़ते-से वचन मत बोल। निष्पक्ष होकर सत्य नहीं देखती। सोचकर भी नहीं देखती। ४८४

पुक्क वऴिक्कुम् बोन्द वऴिक्कुम् बुहैवॅन्दी
ऒक्क विदैप्पा नुऱ्ऱनै यन्ड्रो वुणर्विल्लाय्
इक्कण मिऱ्ऱा युत्तिन मॅल्ला मुयिर्वाऴा
शिक्क वुरैत्तो मॅन्ड्रु कदित्तार् शिलरॅल्लाम् 485

चिलर्–कुछ; ॲल्लाम्–सभी; उणर्वु इल्लाय्–विवेकहीन; पुक्क वऴिक्कुम्–वध बनकर जिस कुल में आयी है, उस कुल में; पोन्त वऴिक्कुम्–और जहाँ जनमी

उस कुल में; पुकै वॅम् ती–धुआँ-सहित आग; ऑक्क वितैप्पान्–एक साथ लगाने के लिए; उऱ्ऱतै अन्ऱो–तत्पर है न; इ कणम् इऱ्ऱाय्–इसी क्षण नष्ट हो जाएगी; उन् इतम् ॲल्लाम्–तेरे वर्ग के सभी; उयिर् वाऴा–जीवित नहीं रहेंगे; चिक्क उरैत्तोम्–साफ़-साफ़ कह दिया हमने; ॲन्ऱु कतित्तार्–ऐसा कोप के साथ बोलीं। ४८५

कुछ लोगों ने गुस्सा दिखाया। विवेकहीन स्त्री ! जिस कुल में तू वधू बनके गयी, उस वंश में और जिसमें तू जनमी, उसमें तू धुएँ-सहित भयंकर आग को एक साथ बीज के समान बोने का काम कर चुकी। मरी तू अभी। तेरे वर्ग के सभी (कोई) जीवित नहीं रहेंगे। हमने साफ़-साफ़ बता दिया। ध्यान रखो। ४८५

कॉल्वा नुऱ्ऱोर् पॅऱ्ऱिमै यादुङ् गुऱैयादोन्
वॅल्वा नॅङ्गोन् ऱिन्ऩुमिन् वम्मि ऩिवण्मॅय्यै
वल्वाय् वॅय्यो ऩेवलि ऩॅन्ऩा मनम्वॅत्तार्
नल्वाय् नल्लाऴ् कण्गऴ् कलुऴ्न्दा णहुहिन्ऱाऴ् 486

कॉल्वान् उऱ्ऱोर्–मारने जो आयीं वे; ॲम् कोन्–हमारे राजा; पॅऱ्ऱिमै यातुम्–निश्चत कार्य में सफलता पाने में कोई भी; कुऱैयातोन्–कमी रखनेवाले नहीं हैं; वॅल्वान्–वे अवश्य सफल होंगे; वॅय्योन्–वे भयानक हैं; वल् वाय् एवलिन्–कठोर उनकी सुनायी गयी आज्ञा के अनुसार; वम्मिन्–आओ; इवळ् मॅय्यै–इसके शरीर को; तिन्ऩुमिन्–खाओ; ॲन्ऩा–कहकर; मनम् वॅत्तार्–मन लगाने लगीं; नल्वाय्–श्रेष्ठ वचन बोलनेवाली; नल्लाळ्–अच्छी देवी; कण्कळ् कलुऴ्न्ताळ्–आँखों से अश्रु बहाती हुई; नकुकिन्ऱाळ्–अपनी दशा पर हँसीं। ४८६

वे सीताजी को मारने उठ आयीं। हमारे राजा का गुण है कि वे अपने किसी निश्चित कार्य में असफल नहीं होते। वे हमेशा जीत जाते हैं। वे निर्मम हैं। उनकी कठोर आज्ञा का अभी हम पालन कर लेंगे। आओ सभी। इसके शरीर को खा लेंगे। कहते हुए वे ऐसा बढ़ीं, मानो उन्होंने दृढ़ संकल्प कर लिये हों। श्रेष्ठ वचन बोलनेवाली सीताजी की आँखों से आँसू बहने लगा। वे अपनी विचित्र स्थिति पर हँसीं। ४८६

इन्ऩो रन्ऩ वॅय्दिय कालत् तिडैनिन्ऱाऴ्
मुन्ऩे शॊन्ऩेन् कण्ड कऩाविन् मुडिवम्मा
पिन्ऩे वाऴा पेदुऱ वीरेऱ् पिऴैयॅन्ऱाऴ्
अन्ऩे नन्ऱॅन् ऱारव रॅल्ला मऱिवुऱ्ऱार् 487

इन्ऩोर् अन्ऩ–ऐसी (बुरी) स्थिति; ॲय्तिय कालत्तु–जब हो गयी तब; इटै निन्ऱाळ्–जो उनके मध्य खड़ी रही उस (त्रिजटा) ने; कण्ट कऩाविन्–अपने देखे स्वप्न का; मुटिवु–अन्त; मुन्ऩे चॊन्ऩेन्–पहले ही मैंने कहा; वाळा–व्यर्थ; पेतुऱ्वीरेल्–भ्रमित हो दुःख करोगी तो; पिन्ऩे–बाद; पिऴै–गलत होगा; ॲन्ऱाळ्–

कहा; अवर् ॲल्लाम्–सभी राक्षसियाँ; अऱिवुड्ऱार्–समझदार बनीं; अनुत्ते नन्ऱु–वही ठीक है; ॲन्ऱार्–कहा; (अम्मा–माँ)। ४८७

इस तरह की विकट स्थिति में उनके मध्य जो खड़ी थी, उस त्रिजटा नाम की राक्षसी ने उनसे कहा कि देखो। मैंने अपना देखा स्वप्न पहले ही बताया और उसका सम्भाव्य फल भी। व्यर्थ भ्रम में पड़कर संकट उठाओगी तो पीछे अपराध होगा। उसका समझाना सुनकर सभी राक्षसियाँ चेत गयीं। उन्होंने त्रिजटा से कहा कि तुम्हारा कहना सही है। ४८७

अऱिन्दा रत्त मुच्चडै यॅन्बा ळवळ्शॊल्लप्
पिऱिन्दार् शोऱ्ऱ मन्ननै यञ्जिप् पिऱिहिल्लार्
शॅऱिन्दा राय तीविनै यन्नार् तॅऱलॅण्णार्
नॅऱिन्दा रोदिप् पेदैयु मावि निलैनिन्ऱाळ् 488

मुच्चटै ॲन्पाळ् अवळ्–त्रिजटा नाम की उसके; अन्न चॊल्ल–वैसा कहने पर; चॅऱिन्तार् आय–(देवी को) ठस घेर आये; तीविनै अन्नार्–बुरे कर्म के समान वे; अऱिन्तार्–स्थिति समझकर; चीऱ्ऱम् पिऱिन्तार्–कोप छोड़ गयीं; मन्ननै अञ्चि–राजा से डरकर; पिऱिकिल्लार्–हटीं नहीं (तो भी); तॅऱल् ॲण्णार्–(देवी से) शत्रुता करना नहीं चाहतीं; नॅऱिन्तार् ओति पेतैयुम्–घुँघराले घने केश वाली देवी भी; आवि निलै निन्ऱाळ्–प्राण धारण किये रहीं। ४८८

त्रिजटा के वैसा कहने पर, जो सीता के घने बुरे कर्म के समान थीं, वे सब सत्य जानकर शान्तक्रोध हुईं। राजा से डर था; इसलिए वे दूर नहीं गयीं। फिर भी उन्होंने शत्रुता दिखाने की बात छोड़ दी। घने घुँघराले केश वाली सीताजी भी किसी तरह प्राणधारण किये रह गयीं। ४८८

4. उरुक्काट्टु पडलम् (रूप-प्रकटन पटल)

❀ काण्डऱ् कॊत्त कालमु मीदे तॅऱुकावल्
तूण्डऱ् कुऱ्ऱ तीयव रॅल्लान् दुयिल्वुऱ्ऱार्
ईण्डत् तुञ्जुम् विञ्जैहळ् शॅय्दा निहल्वीरन्
माण्डऱ् ऱारा मॅन्ऱिड वन्ना रयर्वुऱ्ऱार् 489

इकल् वीरन्–युद्धवीर हनुमान ने; तॅऱु कावल्–त्रासपूर्ण पहरे में; तूण्टऱ्कु उऱ्ऱ–अधिक सतर्कता दिखाने को उद्यत; तीयवर् ॲल्लाम्–क्रूर सभी राक्षसियाँ; तुयिल्वु उऱ्ऱार्–सोने लगी हैं; काण्टऱ्कु–देवी से भेंट करने; ऒत्त कालमुम् योग्य समय भी; ईते–यही है; ईण्टत् तुञ्चुम्–खूब सोने को प्रेरित करनेवाली; विञ्चैकळ् चॅय्तान्–विद्या का प्रयोग किया; माण्टु अऱ्ऱार् आम्–मर-मिट गयीं; ॲन्ऱिट–कहने योग्य रीति से; अन्नार्–वे; अयर्वुऱ्ऱार्–पड़ी रहीं। ४८९

युद्धवीर हनुमान ने सोचा कि अब त्रास देने के लिए पहरे को उत्तरोत्तर कड़ा करने पर तुली राक्षसियाँ सोने लगी हैं। यही सीताजी से भेंट करने के लिए उचित समय है। फिर उसने ऐसी विद्या का प्रयोग किया, जिससे वे खूब गहरी नींद सोएँ। वे भी मरी पड़ी-सी चूर हो पड़ी रहीं। (यह जादू की बात मूल में नहीं है)। ४८९

❀तुञ्जा दारुन् दुञ्जुदल् कण्डा डुयराट्राळ्
नॅञ्जा लॊन्ऱु मुय्वऴि काणा णॅहुहिन्ऱाळ्
अञ्जा निन्ऱाळ् पन्नॅडु नाळु मऴिवुट्राळ्
ॲञ्जा वन्बा लिन्नन हन्दाङ् गिडरुट्राळ् 490

तुञ्चातारुम्–जो (पहरे में) कभी नहीं सोयीं; तुञ्चुतल् कण्टाळ्–सोयीं यह देखा और; तुयर् आट्राळ्–दु:ख न सह सकीं; नॅञ्चाल्–मन में; ऑन्ऱुम् उयवऴि–एक भी बचने का उपाय; काणाळ्–जो न देख सकीं; नॅकुकिन्ऱाळ्–व्यग्रमना; अञ्चा निन्ऱाळ्–भयभीत; पल् नॅटु नाळुम्–अनेक लम्बे दिन; अऴिवुट्राळ्–त्रस्त जो रहीं; ॲञ्चा अन्पाल्–(श्रीराम के प्रति) अक्षय प्रेम से; आङ्कु–तव; इन्न पकर्न्तु–ऐसा कहती हुई; इटर् उट्राळ्–शोक में पड़ीं। ४९०

सीताजी ने देखा कि पहरे में जो कभी नहीं सोयीं, वे अव सो गयी हैं। उन्हें दु:ख असह्य लगा। मन में बचने का कोई उपाय नहीं सूझा। विदीर्णमना वे भयभीत हुईं। वहुत दिनों से दु:खी वे श्रीराम के प्रति अक्षय प्रेम से यों विलपती हुई शोकमग्न हुईं। ४९०

❀करुमे हनॅडुङ् गडल्हा वन्नैयान्, तरुमे तमियेन् ऱन्दा रुयिर्दान्
उरुमे ऱुमिऴ्वॅञ् जिलैना णॊलिदान्, वरुमे युरैयाय् वलियार् विदिये 491

वलि आर् वितिये–सबल विधि; करु मेक–काला मेघ; नॅटुम् कटल्–बड़ा सागर; का–उपवन; अन्नैयान्–जैसे श्रीराम; तमियेन् तन्तु–अकेली मेरे; आरुयिर् तान्–प्यारे प्राण; तरुमे–बचाएँगे क्या; उरुम् एऱु–अशनि-श्रेष्ठ-सम गर्जन; अमिऴ्–निकालनेवाले; वॅम् चिलै–भयंकर धनु का; नाण् ऑलि तान्–ज्यास्वन भी; वरुमे–आयगा क्या; उरैयाय्–कहो। ४९१

री, सबल विधि! काला मेघ, विशाल समुद्र और हरा उद्यान—इनके समान शोभायमान श्रीराम आकर एकाकिनी मेरे प्राण बचाएँगे क्या? बड़े वज्र के समान नर्दन करनेवाले उनके भयंकर धनु का ज्यास्वन भी सुनाई देगा क्या? । ४९१

कल्ला मदियें कदिर्वा णिलवे, शॅल्ला विरवे शिऱुहा विरुळे
ॲल्ला मॅन्नैये मुनिवीर् निन्नैया, विल्ला ळन्नैया दुम्विळित् तिलिरो 492

कल्ला मतिये–विद्याहीन चन्द्र; कतिर् वाळ् निलवे–अति प्रकाशमय चांदनी;

चॅल्ला इरवे–अचल रात; चिरुका इरुळे–अक्षय अन्धकार; ऑतैये मुत्तिवीर्–तुम सब मुझी पर रुष्ट हो; नित्तैया–जो मेरे स्मरण नहीं करते; विल्लाळतै–उन कोदण्डपाणी से; यातुम् विळित्तिलिरो–कुछ भी गुस्सा नहीं करोगे क्या। ४६२

हे अशिक्षित चन्द्र ! अत्युज्ज्वल चाँदनी ! अगतिशील रात ! अक्षय अन्धकार; तुम सब मुझी पर रुष्ट हो ! उन धनुर्धर से, जो मेरा स्मरण ही नहीं करते, कुछ गुस्सा नहीं करोगे क्या ? । ४९२

तळल्वी शियुला वरुवा डैवळीइ, अळल्वी रॅत्तदा वियरिन् दिलिरो
निळल्वी रैयना तुडत्ते नॅडुनाळ्, उळल्वीर् कॉडियी ररैया डिलिरो 493

कॉटियीर्–हे निर्मम; तळल् वीचि–आग बरसाकर; उला वरु–यात्रा करनेवाली; वाटै तळीइ–उदीची हवा को साथ ले; अळल्वीर्–मुझे सताते हो; ॲत्तु आवि अरिन्तिलिरो–मेरी जान (की स्थिति) नहीं जानते हो क्या; निळल् वीरै अत्तान्–छवि में सागर-सम श्रीराम; उटत्ते–के साथ; नॅटु नाळ् उळल्वीर्–बहुत दिनों से फिरते हो; उरै आटिलिरो–बात नहीं बताओगे क्या। ४६३

रे क्रूर (चन्द्र, चाँदनी, रात और अन्धकार) ! अंगार बिखेरते हुए विजययात्रा करती आनेवाली उदीची हवा के साथ मिलकर मुझे जला रहे हो ! मेरे प्राणों पर जो बन आयी है वह नहीं समझते क्या ? सागर-छवि श्रीराम से बहुत दिनों से मिले रहते हो। उनसे मेरी बात नहीं कहते क्या ? । ४९३

वारा दॉळिया ॅत्तुम्वत् मैयिन्नाल्, ओरा यिरको डियिडर्क् कुडवेत्
तीरा वॉरुनाळ् वलिशे वहत्ते, नारा यणत्ते तन्निना यहत्ते 494

वलि चेवकत्ते–सबल वीर; तत्ति नायकत्ते–अनुपम स्वामी; नारायणत्ते–नारायण; वारातु ऑळियान्–विना आये नहीं रहेंगे; ॲत्तुम् वत्तमैयिताल्–इस दृढ़ विचार से; ऑरुनाळ् तीरा–एक दिन के लिए भी जो नहीं छोड़ते; ओर् आयिर कोटि–एक सहस्र कोटि; इटर्क्कु उटवेत्–संकटों से पीड़ित हूँ। ४६४

सबल पराक्रमी ! अनुपम नायक, नारायण ! श्रीराम विना आये नहीं रहेंगे —इस दृढ़ विचार से मैं कितने ही सहस्र कोटि संकटों में पड़ी रहती हूँ जो एक दिन के लिए भी मुझे नहीं छोड़ते। ४९४

तरुवॉत् रियका नडैवाय् तविर्नी, वरुवॅत् शिलना ळिनिन्मा नहर्वाय्
इरुवॅत् ररतैयित् तरुडा तिदुवो, ऑरुवॅत् ररनिया वियैयुण् णुदियो 495

तरु ऑन्रिय–तरुसंकुल; कात् अटैवाय्–वन जाना चाहनेवाली; नी तविर्–(वह इच्छा) तुम त्याग दो; चिल नाळितित्–कुछ दिनों में; वरुवॅत्–आ जाऊँगा; मा नकर् वाय् इरु–बड़े (अयोध्या) नगर में रहो; ॲत्रुरत्ते–ऐसा समझाया; ऑरु–एकाकिनी; ॲत् तत्ति आवियै–मेरे प्राणों को; उण्णुतियो–त्रास देंगे क्या; इतु अरुळ् तात्–हितकारिणी कृपा भी; इतुवो–यही क्या। ४६५

"हे तरु-संकुल-कानन-गमन-कामिनी ! वह विचार छोड़ो। कुछ ही दिनों में लौट आऊँगा। तुम इस महानगर (अयोध्या) में ही रहो।" आपने मुझे ऐसा कहा। अकेली दुःख सहनेवाली मेरे प्राणों को आप खा लेंगे क्या ? यही आपकी कृपा का प्रकार है ? । ४९५

❀ पेणुम् मुणर्वे युयिरे पॆरुनाळ्, नाणिऩ् ऱुळ्ळ्वीर् तऩि नायहऩैक्
काणुन् दुणैयुङ् गळिवी रलिर्नाऩ्, पूणुम् बळियो डुपॊरुन् दुवदो 496

पेणुम् उणर्वे–परिपालित बुद्धि; उयिरे–मेरे प्राण; पॆरु नाळ्–अनेक दिनों से; नाण् इऩ्ऱु–बेशरम होकर; उळ्ळ्वीर्–(मेरे साथ रहकर) संकट उठा रहे हो; तऩि नायकऩै–अप्रतिम नायक को; काणुम् तुणैयुम्–देखते समय तक; कळिवीर् अलीर्–हटोगे नहीं; नाऩ् पूणुम् पळियोटु–मैं जो (अपयश) धारण करती हूँ, उस अपयश के साथ; पॊरुन्तुवतो–तुम भी लगे रहोगे क्या। ४९६

ऐ मेरी परिपालित सुध ! मेरे प्राण ! अनेक दिनों से तुम निर्लज्ज होकर मेरे साथ संकट उठा रहे हो। जब तक मैं अपने अनुपम प्राणनाथ से नहीं मिलूँ तब तक छोड़ोगे नहीं, शायद। मुझे जो अपयश लगेगा उसी से तुम भी लगे रहोगे क्या ? । ४९६

मुडिया मुडिमऩ् ऩऩ्मुडिन् दिडवुम्, पडिये ऴुनॆंडुन् दुयर्पा विडवुम्
पॊडियेय् नॆऱिवन् दुवऩम् बुहुदुम्, कॊडियाऩ् वरुमॆऩ् ऱुहुला वुवदो 497

मुटिया–दीर्घजीवी; मुटि मऩ्ऩऩ्–किरीटधारी चक्रवर्ती; मुटिन्तिटवुम्–मर जाएँ; पटि एऴुम्–सातों लोकों में; नॆटुम् तुयर्–अधिक दुःख; पाविटवुम्–फैल जाए; पॊटि एय्–धूलि-भरे; नॆऱि वन्तु–मार्ग में आकर; वऩम् पुकुतुम् कॊटियाऩ्–वन में आये निर्मम श्रीराम; वरुम् ऎऩ्ऱु–आएँगे समझकर; कुलावुवतो–विनोद में रहूँ। ४९७

दीर्घजीवी, किरीटधारी चक्रवर्ती मर गये; सातों लोकों को दुःख ने व्यापकर सताया —ऐसी स्थिति पैदा करते हुए धूलिमण्डित मार्ग से आकर वन में आये श्रीराम। वे निर्मम आयँगे —ऐसा मानकर विनोद करती रहूँ क्या ? । ४९७

❀ ॲऩ्ऱॆऩ् ऱुयिर्विम् मियिरुन् दयर्वाळ्
मिऩ्ऱुऩ् ऩुमरुङ् गुल्विळङ् गिळैयाळ्
ऒऩ्ऱॆऩ् ऩुयिरुण् डॆऩिऩुण् डिडर्याऩ्
पॊऩ्ऱुम् बॊऴुदे पुहऴ्पू णुमॆऩा 498

ॲऩ्ऱु ॲऩ्ऱु–ऐसा-ऐसा; उयिर् विम्मि–श्वास भरते हुए; इरुन्तु अयर्वाळ्–रहकर शिथिल हो रही थीं; मिऩ् तुऩ्ऩुम्–विद्युत् का आश्रय; मरुङ्कुल्–कमर; विळङ्कु इऴैयाळ्–और चमकते आभरणधारिणी; ॲऩ् उयिर् ऒऩ्ऱु उण्टु ॲऩिऩ्–

मेरे प्राण नामक कुछ हो तो; इटर् उण्टु–पीड़ा होगी; यातु पोन्रुम् पोळ्ुते–अपने मरते समय ही; पुकळ् पूणुम्–यशोधारिणी बनूँगी; अेंता–सोचकर। ४६८

ऐसी-ऐसी बातें कहती हुई सीताजी विकलप्राण होकर शिथिल पड़ रही थीं। क्षीण विद्युत्कटि और उज्ज्वल आभरणधारिणी सीता ने सोचा कि जब तब प्राण रहेंगे तब तक कष्ट साथ रहेगा। मरूँगी तभी यश होगा। ऐसा सोचकर—। ४९८

❀ पोरैयिरुन् दाऱ्ऱियॆन् नुयिरुम् बोऱ्ऱिनेन्
अरैयिरुङ् गऴलवऱ् काणु माशैयाल्
निरैयिरुम् बल्बह निरुदर् नीणहर्च्
चिरैयिरुन् देनैयुम् बुनिदन् ऱोण्डुमो 499

अरै–स्वरित; इरुम् कळल्–बड़ी पायलधारी; अवन्–उन (श्रीराम) को; काणुम् आचैयाल्–देखने की इच्छा से; इरुन्तु–यहाँ रहकर; पोरै आऱ्ऱि–सहनशील बनकर; अॆन् उयिरुम् पोऱ्ऱिनेन्–अपने प्राण पालित किये; निरै इरुम्–अक्षय बड़े; पल् पकल्–अनेक दिन; निरुतर् नीळ् नकर्–राक्षसों के विशाल नगर में; चिरै इरुन्तेनैयुम्–कारागृह में रही मुझे; पुनितन्–पावन मूर्ति श्रीराम; तोण्टुमो–अपनाएँगे क्या। ४६६

क्वणनशील बड़ी पायलधारी श्रीराम के दर्शन की आशा से मैंने यहाँ रहकर, कष्ट सहकर प्राण पाल लिये। अक्षय अनेक दिनों से राक्षस-नगर में बन्दिनी रहती हूँ। क्या वे पावन मूर्ति श्रीराम मुझे अपनायेंगे ?। ४९९

❀ उन्निन वुन्निन वुणर्न्दु शूळ्न्दवर्
शॊन्नन शॊन्नन शॆवियिऱ् ऱूङ्गवुम्
मन्नुयिर् कात्तिरुङ् गालम् वेहिनेन्
अॆन्निन्वे ऱरक्कियर् याण्डै यार्हॊलो 500

उन्नित उन्नित–रावण ने जो-जो मेरे प्रति सोचे; उणर्नतुम्–उनको जानने के बाद; चूळ्न्तवर्–जो मुझे घेरे रहीं उनके; चॊन्नत चॊन्नत–कहे गये; चॆवियिल् तूङ्कवुम्–मेरे कानों में ठहरे रहने पर भी; मन् उयिर् कात्तु–(शरीर से) लगे प्राणों की रक्षा करके; इरुम् कालम् वेकिनेन्–लम्बे काल तक रह गयी; अॆन्निन् वेऱु अरक्कियर्–मुझे छोड़ अन्य (क्रूर) राक्षसियाँ; याण्टै यार् कॊलो–कहाँ कौन रहेंगी। ५००

रावण जो-जो विचार मेरे प्रति रखता है, वह सब मैं जान रही हूँ। मुझे घेरे रहनेवाली राक्षसियों के बार-बार कहे जा रहे शब्दों से मेरे कान भरे रहते हैं। तो भी प्यारे प्राणों को पालती हुई मैं अनेक दिनों से रह रही हूँ। मुझसे निकृष्ट राक्षसी कहाँ होगी, कौन होगी ?। ५००

❀ शॊऱ्पिरि यापपऴि शुमन्दु तूङ्गुवेन्
नऱ्पिऱप् पुडैमैयु नाणु नन्ऱरो
कऱ्पुडै मडन्दैयर् कदैयु ळोर्हडाम्
इऱ्पिरिन् दुयन्दवर् यावर् यान्लाल् 501

पऴि पिरियाच् चॊल्–निन्दायुक्त वचन; चुमन्तु–धारण करते हुए; तूङ्कुवेन्–निश्चिन्त (निद्रामग्न) रहनेवाली मेरा; नल् पिऱप्पु उटैमैयुम्–उच्चकुल जन्म और; नाणुम्–लज्जा का गुण; नन्ऱु–खूब हैं; कतैयुळोर्कळ्–चरित्रचित्रित; कऱ्पुटै मटन्तैयर्–पतिव्रता स्त्रियाँ; इल् पिरिन्तु–घर-गृहस्थी छोड़कर; उयन्तवर्–जीती जो रहीं; यान् अलाल्–मेरे सिवा; यावर्—कौन हैं; (अरो, ताम्) । ५०१

कलंकयुक्त अपयशवचन ढोती हुई निश्चिन्त रह रही हूँ, मैं ! मेरे कुलजन्म और लज्जागुण भी कितने खूब हैं ! चरित्रवर्णित पतिव्रता स्त्रियों में घर से बाहर जीवित रहीं, मेरे सिवा अन्य कौन ? । ५०१

❀ पिऱर्मनै यॆय्दिय पॆण्णैप् पेणुदल्
तिऱनल दॆन्ऱुयिर्क् किऱैवन् ऱीर्न्दनन्
पुऱनलर् तूऱ्ऱवे पॊऴुदु पोक्कियान्
अऱनल दियऱ्ऱिवे ऱॆन्गॊण् डाऱ्ऱुहेन् 502

पिऱर् मनै–दूसरे के घर में; ऍय्तिय–जा गई रही; पॆण्णै पेणुतल्–उस स्त्री को बुलाकर पालना; तिऱन् अलतु–श्लाघ्य नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; उयिर्क्कु इऱैवन्–मेरे प्राणनाथ ने; तीर्न्तनन्–मुझे त्याग दिया है; पुऱत्तु अलर् तूऱ्ऱवे–दूसरे लोगों के निन्दा करते; पॊऴुतु पोक्कि–समय बिताकर; अऱन् अलतु–अधर्म; इयऱ्ऱि–करते हुए; वेऱु ऍन् कॊण्टु–और किस (लाभ) के लिए; यान् आऱ्ऱुकेन्–अपने प्राण रखूँगी । ५०२

मेरे प्राणनाथ ने मुझे यह समझकर त्याग दिया है कि यह पराये घर में रह चुकी है। पराये घर में रही स्त्री को फिर से अपना लेना श्लाघनीय कार्य नहीं है। लोकनिन्दा का पात्र बनकर जीवन बिताती हुई, मैं अधार्मिक काम कर रही हूँ। फिर क्योंकर जीने के अर्ह हूँगी ? । ५०२

❀ अॅप्पॊऴु दिप्पॆरुम् बऴियि नॆय्दिनेन्
अप्पॊऴु देयुयिर् तुऱक्कु माणैयेन्
ऒप्पुरुम् बॆरुमऱु वुलह मोदयान्
तुप्पऴिन् दुयवदु तुऱक्कन् दुन्नवो 503

अॅ पॊऴुतु–जब; इ पॆरुम् पऴियिन् ऍय्तिनेन्–इस अपयश का पात्र बनी; अ पॊऴुते–तभी; उयिर् तुऱक्कुम् आणैयेन्–प्राण त्यागने को बाध्य मैं; ऒप्पु अरुम्–अमान्य; पॆरु मऱु–बड़ा कलंक; उलकम् ओत–लोक के कहते; यान्–मैं; तुप्पु

अऴिन्तु–योग्यता खोकर; उय्वतु–जीवित रहूँ, यह; तुऱक्कम् तुऩ्तवो–स्वर्ग पहुँचूँ, यह विचार लेकर क्या। ५०३

जब इस बड़े अपयश का पात्र बनी तभी मर जाना ही मेरा कर्तव्य था। बड़े लोग जिसको (क्षम्य) मान ही नहीं सकते वैसा बड़ा कलंक मुझ पर लग गया है और लोग इसकी चर्चा करेंगे। अपमानित होकर जीवन रखना क्या स्वर्ग पाने के विचार से है ? । ५०३

❀ अऩ्बऴि शिन्दैय राय वाडवर्
वऩ्बऴि शुमक्किनुञ् जुमक्क मऱ्ऱियान्
तुऩ्बऴि पॅरुम्बुहऴ्क् कुलत्तुट् टोऩ्ऱिनेन्
ऎऩ्बऴि तुडैप्पव रॅऩ्निन् यावरे 504

अऩ्पु अऴि चिन्तैयर् आय–विगत प्रेम; आटवर्–वे दोनों पुरुष; वऩ् पऴि–कठोर अपयश; चुमक्कितुम् चुमक्क–धारण करें तो करें; याऩ्–मैं; तुऩ्पु अऴि–दुःखरहित; पॅरुम् पुकऴ्–बड़े यशस्वी; कुलत्तुळ् तोऩ्ऱितेन्–कुल में पैदा हुई; ऍऩ् पऴि तुटैप्पवर्–मेरा अपयश मिटानेवाले; ऍऩ्तिऩ् यावर्–मेरे सिवा कौन हैं। ५०४

श्रीराम और लक्ष्मण दोनों ने मेरे प्रति प्रेम और स्नेह त्याग दिया है! वे (मुझे न बचाकर) अपयश धारण करना चाहें तो करें। मैं दुःखरहित बड़े यशस्वी कुल में आयी हूँ। इसलिए मेरे अपयश को पोंछनेवाला मुझसे अन्य कौन रहेगा ? । ५०४

❀ वञ्जनै मानिऩ्बिन् मऩ्ऩैप् पोक्कियॅन्
मञ्जनै वैदुपिन् वऴिक्कॊळ् वायॅना
नञ्जनै यानहम् बुहुन्द नङ्गैयान्
उय्ञ्जनॅ निरुत्तलु मुलहङ् गॊळ्ळुमो 505

वञ्चनै मातिऩ् पिऩ्–वंचक मृग के पीछे; मऩ्ऩै पोक्कि–अपने पति को भेजकर; ऍऩ् मञ्चनै वैतु–अपने पुत्र-सम देवर को गाली देकर; पिऩ् वऴि कॊळ्वाय्–उनके पीछे राह पकड़ो; ऍऩा–ऐसा कहकर; नञ्चु अनैयाऩ् अकम्–विष सदृश-राक्षस के घर में; पुकुन्त नङ्कै याऩ्–जो आ गयी, वह मैं; उय्ञ्चऩॆऩ्–जीवित; इरुत्तलुम्–रहती जो यह; उलकम् कॊळ्ळुमो–लोक (श्रेष्ठ लोग) मानेंगे क्या। ५०५

मैंने वञ्चक मृग के पीछे अपने पति को भेजा। अपने पुत्र-सम देवर को गाली दी और कहा कि उनकी खोज में जाओ। फिर विष-सदृश राक्षस के (घर या) मन में (सूक्ष्म स्मरण के रूप में ही सही) घुस गयी। ऐसी स्त्री हूँ मैं। मेरा जीवित रहना क्या संसार ठीक मानेगा ? । ५०५

❀ वल्लियन् मऱवर्दम् वरुक्क माशऱ
वॅल्लिनुम् वॅल्हपोर् विऴिन्दु वीडुह

इल्लिय लऱत्तैया निऱन्दु वाऴ्न्दपिन्
शॊल्लिय वॆत्बऴि यवरॆच् चुऱ्ऱुमो 506

वल् इयन्-सबल; मऱवर्-वीर (श्रीराम और लक्ष्मण); तम् वरुक्कम् माचु अऱ्-अपने कुल का कलंक दूर करने हेतु; वॆल्लितुम् वॆल्लुक-जीतें तो जीतें; पोर् विऴिन्तु-या युद्ध में मरकर; वीट्टुक-मिट जाएँ; इल् इयन् अऱत्तै-गृहस्थ धर्म को; यान्-मेरे; इऱन्तु वाऴ्न्त पिन्-छोड़कर जीवित रहने के बाद; चॊल्लिय ॲन् पऴि-लोकोक्त मेरा अपयश; अवरै चुऱ्ऱुमो-उनको घेरेगा क्या (नहीं)। ५०६

पराक्रमी वीर, श्रीराम और लक्ष्मण अपने कुल पर लगा कलंक मिटाने हेतु चाहें तो युद्ध करें और जीतें, चाहे युद्ध में मर जाएँ। मैं तो गृहस्थ धर्म से बाहर आ गयी हूँ। लोग जो कलंक मुझ पर लगाएँगे, वह उनको घेर लेगा क्या ? । ५०६

❀ वरुन्दलिन् मानमा वनैय माट्चियार्
पॆरुन्दव मडन्दैयर् मुन्बु पेदैयेन्
करुन्दनि मुहिलिनैप् पिरिन्दु कळ्वनूर्
इरुन्दव ळिवळॆन वेश निऱ्पॆनो 507

मानम् वरुन्तलिल्-मान को धक्का लगने पर; मा अनैय माट्चियार्-मृग के-से स्वभाव की श्रेष्ठ; पॆरुम् तव मटन्तैयर् मुन्पु-उत्तम (पातिव्रत्य रूपी) तप वाली स्त्रियों के सामने; पेतैयेन्-जड़मति मैं; करुम् तनि मुकिलिनै-काले और अनुपम मेघ (-श्याम श्रीराम) से; पिरिन्तु-अलग होकर; कळ्वन् ऊर्-चोर के नगर में; इरुन्तवळ् इवळ्-रही यह; ॲन-ऐसा; एच निऱ्पॆनो-निन्दा सुनती रहूँगी क्या। ५०७

श्रेष्ठ पातिव्रत्य-तपस्विनी स्त्रियों के सामने, जो 'कवरी मृग' के समान अपमान लगने पर प्राण त्याग देती हैं, क्या यह निन्दा सुनते हुए जीवित रहूँगी कि यह अप्रतिम मेघश्याम से अलग होकर एक चोर के घर में रहती है ? । ५०७

❀ अऱ्पुद नरक्करदम् वरुक्क माशऱ
विऱ्पणि कॊण्डरुञ् जिऱैयिन् मीट्टनाळ्
इऱ्पुहत् तक्कलै यॆन्निन् यानुडैक्
कऱ्पिनै यॆप्परि शिळैत्तुक् काट्टुहेन् 508

अऱ्पुतन्-अत्यद्भुत गुणों वाले; अरक्कर् तम् वरुक्कम्-राक्षस वर्ग; आचु अऱ-निराधार निर्मूल कर; विल् पणि कॊण्टु-धनुकर्म द्वारा; अरुम् चिऱैयिन्-इस कठोर कारा से; मीट्ट नाळ्-मुक्त जिस दिन करेंगे, उस दिन; इल् पुक-मेरे घर में प्रवेश करने; तक्कलै ॲन्निन्-योग्य नहीं हो कहें तो; यानुटै कऱ्पिनै-अपने शील को ॲ परिचु इळैत्तु काट्टकेन्-किस तरीके से प्रमाणित कर दिखाऊँगी। ५०८

अद्भुत गुण वाले श्रीराम जिस दिन राक्षसवर्ग को अपने धनुकर्म से निराधार बनाकर निर्मूल कर देंगे और मुझे इस कठोर कारा से मुक्त कर देंगे, तब अगर मुझसे कहें कि तुम मेरे घर में प्रवेश करने योग्य नहीं रह गयी हो, तो मैं अपने पातिव्रत्य को कैसे प्रमाणित कर दिखा पाऊँगी ? । ५०८

❀ आदला लिऱत्तले यऱत्ति नाऱॆऩाच्
चादल्काप् पवरुमॆंन् ऱवत्तिऱ् चाम्बिनार्
ईदला दिडमुम्वे रिल्लै यॆऩ्ऱॊरु
पोदुला मादविप् पॊदुम्ब रॆय्दिऩाळ् 509

आतलाल्–इसलिए; इऱत्तले–मरना ही; अऱत्तिऩ् आरु–धर्ममार्ग होगा; ऎऩा–यह निश्चय करके; चातल् काप्पवरुम्–मुझे मरने से बचाये रहनेवाली राक्षसियाँ भी; ऎऩ् तवत्तिल्–मेरे तप (भाग्य) के कारण; चाम्पिऩार्–अचेत पड़ी हैं; ईतु अलातु–इसको छोड़कर; वेऱु इटमुम् इल्लै–दूसरा स्थान (सन्दर्भ) नहीं मिलेगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; पोतु उलाम्–पुष्प जिसमें हिलते थे; ओरु मातवि पॊतुम्पर्–उस एक माधवी-झाड़ के पास; ऎय्तिऩाळ्–पहुँचीं। ५०९

इसलिए मरना ही धर्ममार्ग है। मुझे मरने न देने का कर्तव्य लेकर जो मेरी रक्षा करती रहती हैं, वे राक्षसियाँ भी अब नींद में बेहोश पड़ी हैं। इस समय को जाने दूँ तो दूसरा अच्छा स्थान या समय नहीं मिलेगा। ऐसा निश्चय करके सीताजी एक पुष्पसहित माधवी के झाड़ के पास गयीं। ५०९

❀ कण्डऩ ननुमनुङ् गरुत्तु मॆंण्णिऩान्
कॊण्डनन् ऱुणुक्कमॆय् तीण्डक् कूशुवान्
अण्डर्ना यहऩरु डूदऩ् यानॆंऩात्
तॊण्डैवाय् मयिलिऩैत् तॊऴुदु तोऩ्ऱिऩान् 510

अनुमनुम् कण्टऩऩ्–हनुमान ने भी देखा; करुत्तुम् ऎण्णिऩाऩ्–अभिप्राय ताड़ लिया; तुणुक्कम् कॊण्टऩऩ्–दहल उठा; मॆय् तीण्ट–शरीर स्पर्श करने से; कूचुवाऩ्–संकोच करता; अण्टर् नायकऩ्–अण्डनायक श्रीराम की; अरुळ् तूतऩ्–आज्ञा का पालक दूत; याऩ्–मैं हूँ; ऎऩा–कहते हुए; तॊण्टै वाय्–बिम्बाधरा; मयिलिऩै–कलापी-सी देवी को; तॊऴुतु–नमस्कार करते हुए; तोऩ्ऱिऩाऩ्–प्रकट हुआ। ५१०

हनुमान ने यह देखा और ताड़ लिया कि सीताजी के मन में क्या भाव उठा है। उसे भय का अनुभव हुआ। वह उनका स्पर्श करने से सकुचाया। अतः वह यह कहते हुए बिम्बाधरा, कलापीनिभ सीताजी के सामने अंजलिबद्ध हो प्रकट हुआ कि मैं अण्डनायक श्रीराम का उनकी आज्ञा द्वारा प्रेषित दूत हूँ। ५१०

❀ अडैन्दनॆ तडियनॆ ऩिराम ऩाणैयाल्
कुडैन्दुल हनैत्तैयु नाडुङ् गोट्पिऩाल्
मिडैन्दव रुलप्पिलर् तवत्तै मेवलाल्
मडन्दैनिऩ् शेवडि वन्दु नोक्किनेन् 511

मटन्तै–देवी; इरामन् आणैयाल्–श्रीराम की आज्ञा से; अटियनेन्–मैं, दास; अटैन्ततेन्–आ पहुँचा; उलकु अनैत्तैयुम्–सारे लोकों में; कुटैन्तु नाटुम्–पैठकर ढूँढ़ने के; कोट्पिनाल्–संकल्प से; मिटैन्तवर्–मिलकर जानेवाले; उलप्पु इलर्–असंख्यक हैं; तवत्तै मेवलाल्–तपबल के प्राप्त होने से; निन् चेवटि–आपके लाल (दिव्य) चरण; वन्तु नोक्किनेन्–(मैंने) आकर दर्शन किये। ५११

देवी ! श्रीराम की आज्ञा से मैं इधर आ पहुँचा हूँ। यों तो सारे लोकों की खाक छानने के इरादे से जो मिलकर चले वे असंख्यक हैं। पर मेरा भाग्य रहा। सुकृत्य का फल मिला; तभी मैं आपके दिव्य चरणों के दर्शन कर पाया। ५११

❀ ईण्डुनी यिरुन्ददै यिडरिन् वैहुरुम्
आण्डहै यरिन्दिल ऩदऱ्कुक् कारणम्
वेण्डुमे यरक्कर्तम् वरुक्कम् वेरॊडु
माण्डिल वीदलाऩ् मऱ्ऱुम् वेण्टुमो 512

ईण्टु नी इरुन्ततै–आपका इधर रहना; इटरिन् वैकुरुम्–वियोग-दुःख में मग्न रहनेवाले; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अऱिन्तिलन्–नहीं जानते; अतऱ्कु कारणम्–उसका प्रमाण; वेण्टुमे–कहना हो तो; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षसों के वर्ग; वेरॊटु माण्टिल–निर्मूल नष्ट नहीं हुए; ईतु अलाल्–इसके सिवा; मऱ्ऱुम् वेण्टुमो–और कोई चाहिए क्या। ५१२

वियोगदुःखतप्त पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम आपका यहाँ रहना नहीं जानते। उसका प्रमाण चाहती हों तो यही प्रमाण है कि राक्षसों के वर्ग निर्मूल नष्ट नहीं हुए। और कोई प्रमाण चाहिए क्या ? । ५१२

❀ ऐयुऱ लुळदडै याळ मारियऩ्
मॆय्युऱ वुणर्त्तिय वुरैयुम् वेऱुळ
कैयुऱु नॆल्लियङ् गनियिऱ् काण्डियाल्
नॆय्युऱु विळक्कनाय् निऩैयल् वॆऩ्ऱाऩ् 513

नॆय् उऱु विळक्कु अनाय्–घृत-भरे दीप के समान देवी; ऐयुऱल्–सन्देह मत करें; अटैयाळम् उळतु–अभिज्ञान है; आरियन्–आदरणीय श्रीराम के; मॆय् उऱ–सत्य परिचायक; उणर्त्तिय उरैयुम्–समझाये गये वचन भी; वेऱु उळ–अलग हैं; कै उऱु नॆल्लि अम् कनियिल्–करतलामलकवत; काण्टि–देख लें; वेऱु निनैयल्–अन्यथा न समझें; ऎन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ५१३

घृतपूर्ण दीप-सी देवी ! आप कोई सन्देह न करें। मेरे पास अभिज्ञान हैं। और आदरणीय श्रीराम के कहे सत्यवचन के संदेश अलग हैं। आप करतलामलकवत समझ लेंगी। अन्यथा मत समझिए। हनुमान ने यों विनय के साथ कहा। ५१३

ऍत्रव निऱैंज्ज नोक्कि यिरक्कमु मुनिवु मॅय्दि
नित्रव निरुद नल्ल नॆऱिनित्रु पॊऱिह ळॅन्दुम्
वॆत्रव नल्ल नाहिल् विण्णव ऩाह वेण्डुम्
ननरुणर् वुरैयुन् दूय नवैयिलन् पोलु मॅन्ना 514

ऍन्ऱु अवन् इऱैञ्च–उसके ऐसा विनय करने पर; नोक्कि–देखकर; इरक्कमुम्–अनुताप और; मुनिवुम्–रंज; ऍय्ति निन्ऱवन्–पाकर जो रहता है; इवन्–वह यह; निरुतन् अल्लन्–नैर्ऋत नहीं हो सकता; नॆऱि नित्रु–सदाचारस्थित; पॊऱिकळ् ऐन्तुम्–पाँचों इन्द्रियों पर; वॆन्ऱवन्–विजय पा चुका; अल्लन् आकिल्–नहीं तो; विण्णवन् आक वेण्टुम्–कोई देव होगा; उणर्वु नन्ऱु–इसके भाव श्रेष्ठ हैं; उरैयुम् तूयन्–पवित्रवचन; नवै इलन् पोलुम्–निर्दोष-सा लगता है; ऍन्ना–सोचकर। ५१४

जब हनुमान ने यों विनय की तो सीताजी ने उसको ध्यान लगाकर देखा। हनुमान करुणा और दुःख से भरा है। यह राक्षस नहीं हो सकता। यह सन्मार्गावलम्बी इन्द्रियजयी मुनि होगा; नहीं तो कोई देव होगा। इसकी भावनाएँ श्रेष्ठ हैं। वचन पवित्र हैं। यह निर्दोष ही लगता है। ५१४

❀ अरक्कने याह वेऱो रमरने याह वन्ऱिक्
कुरक्किनत् तॊरुव नेदा ऩाहुह कॊडुमै याह
इरक्कमे याह वन्दिङ् गॆम्बिरा ऩामञ् जॊल्लि
उरुक्कियॆन् ऩुणर्वैत् तन्दा ऩुयिरिदि ऩुदवि युण्डो 515

अरक्कने आक–चाहे राक्षस हो; वेऱु ओर् अमरने आक–कोई दूसरा देव हो; अन्ऱि–चाहे वे न रहकर; कुरङ्कु इनत्तु ऑरुवने–वानर-वंश का एक; तान् आकुक–ही हो; कॊटुमै आक–(इसके द्वारा) हानि ही क्यों न मिले; इरक्कमे आक–सहानुभूति (का फल) ही मिले; इङ्कु वन्तु–यहाँ आकर; ऍम्पिरान् नामम् चॊल्लि–मेरे आराध्यदेव का नाम उच्चारण करके; ऍन् उणर्वै उरुक्कि–मेरे मन को द्रवीभूत करके; उयिर् तन्तान्–(इसने) मुझे प्राणदान किया; इतिन् उतवि उण्टो–इससे बढ़कर सहायता हो सकती है क्या। ५१५

फिर देवी ने सोचा। यह राक्षस ही हो तो क्या ? या कोई देव ही हो। नहीं तो वानर-कुल का ही कोई हो ! उसके हाथों मेरी हानि भी हो जाय ! या वह करुणा करके हित ही करे। इसने इधर आकर मेरे आराध्य पति का नाम कहकर मेरे मन को द्रवीभूत कर दिया और मुझे प्राणदान किया। इससे बढ़कर कोई हित है क्या ? । ५१५

ऍन्निनैत् तॅय्द नोक्कि यिरङ्गुमॅ नुळ्ळङ् गळ्ळ
मन्नहत् तुडैय राय वञ्जहर् मार्र् मल्लन्
निनैवुडैच् चॉर्कळ् कण्णीर् निलम्बुहप् पुलम्बा निन्ऱान्
विन्नवुदर् कुरिय नॆन्ना वीरनी याव नॆन्ऱाळ् 516

ऍन्न निनैन्नु–ऐसा सोचकर; ऍय्त नोक्कि–खूब देखकर; ऍन् उळ्ळम् इरङ्कुम् मेरा मन (सत्य समझकर) सहानुभूति करता है; कळ्ळम् मनन्–चोर स्वभाव के; अकनुतु उटैयराय–मन वाले; वञ्चकर्–वंचकों का; माऱ्ऱम् अल्लन्–वचन नहीं कहता; निनैवु उटै–सच्ची भावना के; चॉऱ्कळ्–वचनों को; कण्णीर्–आँसुओं को; निलम् पुक–भूमि पर गिराते हुए; पुलम्पा निन्ऱान्–कहकर प्रलाप करता है; विन्नवुतऱ्कु उरियन्–प्रश्न करने योग्य है; ऍन्ना–सोचकर; वीर–वीर; नी–तुम; यावन्–कौन; ऍन्ऱाळ्–कहा। ५१६

ऐसा सोचकर देवी ने हनुमान पर खूब दृष्टि डाली। इसको देखकर मेरा मन स्वयं पिघल जाता है। यह मन में चोरी रखनेवाले वंचक राक्षसों का-सा वचन कहनेवाला नहीं हो सकता। यह अपनी सद्भावना की बातें, आँखों से आँसू को भूमि पर गिराते हुए कह रहा है। अतः यह आगे प्रश्न करने (वार्तालाप करने) योग्य ही है। ऐसा निर्णय करके देवी ने उससे पूछा कि हे वीर, तुम कौन हो ? । ५१६

आयिडैत् तलैमेर् कॉण्ड वङ्गैय नन्नै निन्नैत्
तूयवन् पिरिन्द पिन्नैत् तेडिय तुणैवन् ऱॉल्लैक्
काय्हदिर्च् चॅल्वन् मैन्दन् कविक्कुल मदनुक् कॅल्लाम्
नायहन् शुक्कि रोव नॆन्ऱुळ नवैयिर् ऱीर्न्दान् 517

आयिटै–तब; तलै मेल् कॉण्ट–सिर पर धरे; अम् कैयन्–सुन्दर हाथों वाला (बोला); अन्नै–माताजी; तूयवन्–पवित्र श्रीराम के; निन्नै पिरिन्त पिन्नै–आपसे अलग होने के बाद; तेटिय–ढूँढ़कर प्राप्त; तुणैवन्–मित्र; तॉल्लै–अति प्राचीन काल से; काय् कतिर् चॅल्वन्–जलानेवाले उष्ण किरण सूर्यदेव का; मैन्तन्–पुत्र; कविक् कुलम् अतनुक्कु ऍल्लाम्–कपिकुलसर्व का; नायकन्–नायक; नवैयिल् तीर्न्तान्–निर्दोष; चुक्किरवीन् ऍन्ऱु–सुग्रीव नाम का एक; उळन्–है। ५१७

तब हनुमान ने अपने सुन्दर हाथ जोड़कर अपने सिर पर रखे और विनय-निवेदन किया। माते ! सुग्रीव नामक एक है, जिसे आपके वियोग के बाद पवित्र श्रीराम ने ढूँढ़ लेकर अपना मित्र बना लिया। वह अति पुरातन और तापक किरणमाली सूर्यदेव का पुत्र है और वानरकुलों का अधिपति है। वह निर्दोष (अच्छा) है। ५१७

मर्ऱवन् मुन्नो नन्ना ळिरावणन् वलिदन् वालिन्
इर्ऱक् कट्टि यॅट्टुत् तिशैयिनु मॅळुन्दु पाय्न्त

वॆऱ्ऱियन् ऱेवर् वेण्ड वेलैयै विलङ्गन् मत्तिल्
शुऱ्ऱिमा नाहन् देय वमुदॆऴक् कडैन्द तोळान् 518

अवन् मुन्तोन्–उसका बड़ा भाई; अ नाळ्—उस दिन; इरावणन् वलि इऱ्ऱु उऱ–रावण के बल को तोड़ते हुए; तन् वालिल् कट्टि–अपनी पूँछ में बाँधकर; ऍट्टु तिचैयितुम्–आठों दिशाओं में; ऍऴुन्तु पाय्न्त–फाँदता जो गया; वॆऱ्ऱियन्–वैसा विजयी है; तेवर् वेण्ट–देवों के प्रार्थना करने पर; वेलैयै–समुद्र को; विलङ्कल् मत्तिन्–(मन्दर-) पर्वत की मथानी से; मा नाकम् चुऱ्ऱि–बड़े (वासुकि) सर्प को लपेटकर; तेय–उसको रगड़ते हुए; अमुतु ऍऴ–अमृत उठ आए ऐसा; कटैन्त तोळान्–मथनेवाली भुजाओं का है। ५१८

उसका ज्येष्ठ भ्राता रावण के बल को तोड़कर उसे अपनी पूँछ में बाँध लेकर आठों दिशाओं में उछल चला। वह ऐसा विजयी वीर था। देवों ने उससे प्रार्थना की तो उसने मन्दरपर्वत की मथानी पर वासुकि नाग को लपेटकर क्षीरसागर को मथा और अमृत निकाला। वह ऐसा भुजबली था। ५१८

अन्नवन् ऱन्नै युङ्गो नम्बॊन्ऱा लावि वाङ्गिप्
पिन्नवऱ् करशु नल्हित् तुणैयॆनप् पिडित्ता नॆङ्गळ्
अन्नवन् ऱनक्कु नायेन् मन्दिरत् तुळ्ळेन् वानिन्
नन्नॆडुङ् गालिन् मैन्द नाममु मनुम नॆन्बेन् 519

अन्नवन् तन्नै–उस (बली) वाली को; उम् कोन्–आपके नाथ ने; अम्पु ऑन्ऱाल्–एक ही शर से; आवि वाङ्कि–प्राण हरकर; पिन्नवऱ्कु–उसके छोटे भाई को; अरचु नल्कि–राज्य देकर; तुणै ऍन पिटित्तान्–मित्र बना लिया; नायेन्–(कुत्ते-सा) दास मैं; ऍङ्कळ् मन्नवन् तनक्कु–हमारे राजा (सुग्रीव) के; मन्तिरत्तु उळ्ळेन्–मन्त्रीमण्डल का सदस्य हूँ; वानिन्–आकाशचारी; नल् नॆटुम् कालिन्–अति विपुल पवन का; मैन्तन्–पुत्र हूँ; नाममुम्–नाम का भी; अनुमन् ऍन्पेन्–हनुमान कहा जाता हूँ। ५१९

उस वाली को आपके नाथ ने एक ही शर से मार दिया और उसके कनिष्ठ सुग्रीव को राज्य दिलाया तथा सुग्रीव से मित्रता बना ली। कुत्ता-सम दास मैं अपने राजा सुग्रीव के मन्त्रीमण्डल का एक सदस्य हूँ। आकाशचारी अति महान् वायुदेव का पुत्र हूँ। मैं हनुमान नाम का हूँ। ५१९

ऍऴुबदु वॆळ्ळङ् गॊण्ड वॆण्णन वुलह मॆल्लाम्
तऴुविनिन् ऱॆडुप्प वेलै तनित्तनि कडक्कुन् दाळ
कुऴुविन वुङ्गोन् शॆय्यक् कुऱित्तदु कुऱिप्पि नुन्नि
वऴुविल शॆय्दऱ् कॊत्त वानरम् वानि नॊण्ड 520

वानरम्–वानर; ऍऴुपतु वॆळ्ळम् कॊण्ट ऍण्णन–सत्तर प्रवाह (वॆळ्ळम) संख्या के हैं; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोकों को; तऴुवि निन्ऱु ऍटुप्प–लपेटकर लेने

की शक्ति रखनेवाले हैं; वेलै-समुद्र को; तत्ति तत्ति कटक्कुम् ताळ-अलग-अलग फाँदने में समर्थ पैरों वाले हैं; कुऴुविऩ-समूहगत हैं; उम् कोऩ् चॅय्य कुऱित्ततु-आपके नाथ जो करना चाहेंगे; कुऱिप्पिऩ् उऩ्ऩि-इंगित से जानकर; वऴुविल-त्रुटिहीन रीति से; चॅय्तऱ्कु ऒत्त-करने योग्य हैं; वाऩिऩ् नीण्ट-आकाश की तरह सर्वत्र फैले हैं। ५२०

मेरे राजा के अधीन जो वानर वीर हैं, उनकी संख्या 'सत्तर वॅळ्ळम्' की है। वे ऐसे पराक्रमी हैं कि वे संसार को अपने हाथों से लपेटकर उठा लें; समुद्र को अकेले लाँघ सकें; आपके पति की इच्छा को इंगित से जानकर विना किसी दोष के पूरा कर दें। वे आकाश की तरह सर्वत्र व्याप्त हैं। ५२०

तुप्पुरु परव येऴुञ् जूऴ्न्दपा रेऴु माऴ्न्द
ऒप्पुरु नाहर् नाडु मुम्बर्निऩ् ऱिम्बर् काऱुम्
इप्पुरन् देडि निऩ्ऩै यॅदिर्न्दिल वॅऩ्ऩि नण्डत्
तप्पुरम् बोयुन् देड ववदियि ऩमैन्दु पोऩ 521

तुप्पु उरु-सशक्त; परवै एऴुम्-सातों समुद्र; चूऴ्न्त-उनसे घिरे; पार् एऴुम्-सातों लोक; आऴ्न्त-गहरे; ऒप्पु उरु-सुन्दर; नाकर् नाटुम्-नागलोक; उम्पर् निऩ्ऱु-आकाश से लेकर; इम्पर् काऱुम्-इस लोक तक; इ पुरम् तेटि-इन स्थानों में अन्वेषण कर; निऩ्ऩै ऍतिर्न्तिल-आपको नहीं देख सकें तो; अण्टत्तु-अण्ड के; अ पुरम्-उस तरफ़ भी; पोयुम् तेट-जाकर तलाश करने के लिए; अवतियिऩ्-एक अवधि से; अमैन्तु-बद्ध होकर; पोऩ-चले थे। ५२१

प्रबल सातों सागर, इनसे घिरी सात खण्डों में विभक्त भूमि, सुन्दर नागों का अधोलोक और भूमि के ऊपर आकाश के मध्य स्थित सभी लोक —इन सब स्थानों में खोजकर, अगर आपसे मिल नहीं पाएँ तो अण्ड के उस पार भी जाकर निश्चित अवधि के अन्दर खोजेंगे। यह संकल्प लेकर वे वानर गये हैं। ५२१

पुऩ्ऱॊऴि लरक्कन् कॊण्डु पोन्दनाट् पॊदिन्द तूशिल्
कुऩ्ऱिऩॆम् मरुङ्गि निट्ट वणिहलक् कुऱियि ऩाले
वॆऩ्ऱिया नडियेऩ् ऱऩ्ऩै वेऱुहॊण् डिरुन्दु कूऱित्
तॆऩ्ऱिशैच् चेऱि यॆऩ्ऱा ऩवनरुळ् शिदैव दामो 522

पुऩ् तॊऴिल् अरक्कन्-नीचकर्म राक्षस; कॊण्टु पोन्त नाळ्-जिस दिन आपको ले गया उस दिन; ऍम् कुऩ्ऱिऩ् मरुङ्किऩ्-हमारे पर्वत पर; इट्ट-आपने जो डाले; तूचिल् पॊतिन्त-वस्त्र में बद्ध; अणिकल कुऱियिऩाले-आभरणों के निशान से; वॆऩ्ऱियान्-विजयशील श्रीराम ने; अटियेऩ् तऩ्ऩै-मुझ दास को; वेऱु कॊण्टु इरुन्तु-अलग ले जा रहकर; कूऱि-(कुछ) कहकर; तॆऩ् तिचै-दक्षिण दिशा; चेऱि-जाओ; ऍऩ्ऱाऩ्-कहा; अवऩ् अरुळ्-उनकी कृपा; चितैवतु आमो-व्यर्थ होगी क्या। ५२२

जब नीच रावण आपको हर ले जा रहा था, तब आपने वस्त्र में बाँधकर कुछ आभरण हमारे पर्वत पर फेंके थे। उनको देखकर विजयी वीर श्रीराम ने कुछ सोचा और मुझे अलग ले जाकर आज्ञा दी कि तुम दक्षिण दिशा में जाओ। उनकी आज्ञा निरर्थक हो सकती है क्या ? । ५२२

कॊऱ्ऱवऱ् काण्डुक् काट्टिक् कॊडुत्तपो दडुत्त तन्मै
पॆऱ्ऱियि नुणर्दऱ् पाऱ्ऱो वुयिर्निलै पिऱिदु मुण्डो
इऱ्ऱैना ळळवु मन्ना यन्रुनी यिळित्तु नीत्त
मऱ्ऱैनल् लणिहळ् काणुन् मङ्गलङ् गात्त मन्नो 523

अन्नाय्–माते; कॊऱ्ऱवऱ्कु–श्रीविजयराघव को; आण्टु काट्टि–वहाँ (उन आभरणों को) दिखाकर; कॊटुत्त पोतु–जब उन्हें दिया गया; अटुत्त तन्मै–जो हुई वह स्थिति; पॆऱ्ऱियिन्–किसी प्रकार से; उणर्तल् पाऱ्ऱो–समझने योग्य है क्या; उयिर्निलै पिऱितुम् उण्टो–उनके प्राणों के हेतु और कुछ है क्या; नी इळित्तु नीत्त–आपने जो उतारकर फेंके; मऱ्ऱै नल् अणिकळ्–वे दूसरे आभरण ही; इऱ्ऱै नाळ् अळवुम्–आज तक; उन् मङ्कलम् कात्त–आपके मंगल-सूत्र (सुहाग) को बचाते आ रहे हैं। ५२३

माते ! जब हमने उन आभरणों को दिखाया तब श्रीराम की स्थिति क्या हुई —उसको अब वर्णन करूँ तो भी उस प्रकार से वह समझी जा सकेगी क्या ? उनके जीने का और कोई हेतु है क्या ? आपने जो आभरण उतारकर फेंके थे, उन्हींने आपके मंगल-सूत्र (अहिवात) को बचा दिया है ! । ५२३

आयवन् ऱन्मै निऱ्क वङ्गदन् वालि मैन्दन्
एयवन् ऱॆन्बाल् वॆळ्ळ मिरण्डिनो डॆळुन्द शेनै
मेयिनन् ऱॊडर्न्दु तोरा विनैयवन् विडुत्ता नॆन्नैप्
पाय्दिरै यिलङ्गै मूदूर्क् कॆन्ऱनन् पळियै वॆन्ऱान् 524

पळियै वॆन्ऱान्–निन्दापार (हनुमान); आयवन् तन्मै निऱ्क–उनकी स्थिति वैसी रही वह बात रहे; तॆन् पाल् एयवन्–दक्षिण की तरफ़ प्रेषित; ॲळुन्त चेनै–साथ आयी; वॆळ्ळम् इरण्टिनोटु–दो 'वॆळ्ळम्' सेना के साथ; मेयिनन्–जो आया; तॊटर्न्तु–लगातार; तोरा विनैयवन्–प्रयास करनेवाला; वालि मैन्तन्–वालीपुत्र; अङ्कतन्–अंगद ने; पाय् तिरै–लहराती तरंगों वाले समुद्र वलयित; इलङ्कै मूतूर्क्कु–प्राचीन लंका नगरी को; ऎन्नै विटुत्तान्–मुझे भेजा; ऎन्ऱनन्–कहा। ५२४

अपयशजयी हनुमान ने आगे कहा कि उनकी स्थिति एक ओर रहे। अंगद ने भी मुझे इस लहरायमान सागरवलयित प्राचीन लंका नगरी की तरफ़ भेजा। उसे सुग्रीव ने इधर भेजा था। उसके साथ दो "वॆळ्ळम्" की सेना आयी है। वह भी सततपरिश्रमी है और वाली का पुत्र है। ५२४

तेण्डिन्नेन् कण्डेन् वाळि तीदिले तॆङ्गो तेविप्
पूण्डमॆय् युयिरो पोहाप् पॊय्युयि रोडु निन्ऱान्
आण्डहै नॆञ्जि निन्ऱु महन्ऱिलै यळिवुण् डामो
ईण्डुनी यिरुक्क वाण्डङ् गॆव्वुयिर् विडुमि रामन् 525

ऍम् कोन् एवि–अपने राजा से प्रेषित हो; तेण्टिनेन्–जो खोजता आया, उस मैंने; कण्टेन्–आपको देख लिया; तीतु इलेन्–(असफलता के) कलंक से रहित हो गया; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; पोका–अछूट; पॊय् उयिरोटु–मिथ्या प्राणों के साथ; निन्ऱान्–रहते हैं; पूण्ट मॆय् उयिरो–उनके धृत सच्चे प्राण (आप); नॆञ्चिन् निन्ऱुम्–उनके मन से; अकन्ऱिलै–हटे नहीं; ईण्टु–यहाँ; नी इरुक्क–आपके रहते; आण्टु–वहाँ; इरामन्–श्रीराम; ऍ उयिर् विटुम्–किस जान को छोड़ेंगे; अळिवु उण्टामो–नाश होगा क्या। ५२५

मेरे राजा ने मुझे भेजा और मैंने सभी स्थानों में आपको ढूँढ़ा। आखिर आपके दर्शन मिल गये और मैं असफलता के अपयश से बच गया हूँ। पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के प्राण नहीं छूटे, सही। पर अब के उनके प्राण मिथ्या प्राण हैं। उनके सच्चे प्राण आप हैं; वह आप उनके हृदय से दूर नहीं हुई हैं। आप यहाँ हैं तो वे वहाँ कौन से प्राण खो सकते हैं? उनके प्राणों की हानि नहीं हो सकती। ५२५

इः(ह्)दव निशैत्त लोडु मॆळ्न्दपे रुवहै पॊङ्गि
वॆय्दुयिर्प् पॊडुङ्गि मेनि वान्उऱ विम्मि वीङ्ग
उय्दल्वन् दुऱ्ऱ दोवॆन् ऱरुविनी रॊळ्हुङ् गण्णाळ्
अय्यशोल् लवन्ऱन् मेनि यॆप्पडित् तऱिवै यॆन्ऱाळ् 526

इ.'.तु अवन्–यों उसके; इचैत्तलोटुम्–कहने पर; ऍळुन्त पेर् उवकै–उठा आनन्द; पॊङ्कि–उमगा; वॆय्तुयिर्प्पु–लम्बी साँस छोड़ना; ऑटुङ्कि–बन्द हुआ; मेनि–शरीर; वान् उऱ–आकाश तक; विम्मि वीङ्क–फूलकर बढ़ा; उय्तल् वन्तु उऱ्ऱतो–सुखी जीवन का सौभाग्य आ गया क्या; ऍन्ऱु–सोचकर; अरुवि नीर्–सरिता-से आँसू; ऑळुकुम्–बहानेवाली; कण्णाळ्–आँखों की होकर; अय्य–तात; अवन् तन् मेनि–उनका श्रीशरीर; ऍप्पटित्तु–कैसा है; अऱिवै–तुम जानते हो; चॊल् ऍन्ऱाळ्–कहो, कहा। ५२६

जब हनुमान ने यह कहा तब सीताजी के मन में आनन्द उठकर उमड़ा। दीर्घ श्वास स्वस्थ पड़ गये। शरीर आकाश तक बढ़ता हुआ फूल उठा। "ओफ़! मेरा भी भाग्य जाग गया क्या?" यह सोचा। उनकी आँखों से आँसू की नदी उमड़ आयी। उन्होंने हनुमान से पूछा कि तात! तुमने क्या जाना है कि श्रीराम का रूपलक्षण कैसा है? । ५२६

पडियुरैत् तॊडुत्तुक् काट्टुम् बडित्तन्ऱु पडिवम् बण्बिन्
मुडिवळ ववमैक् कॊल्ला मिलक्कण मुरैक्किन् मुन्दा

तुडियिडै यडैया ळत्तिन् ऱॊडर्वैये तॊडर्दि यॆन्ना
अडिमुदन् मुडियी ऱाह वऱिवुऱ वनुमन् शॊल्वान् 527

तुटि इटै–डमरू-सी कमर वाली; पटिवम्–दिव्यरूप; पटि उरैत्तु–उपमान कहकर; ऍट्टुत्तु काट्टुम् पटित्तु अन्ऱु–वर्णन-योग्य नहीं; उवमैक्कु ऍल्लाम्–सभी उपमाओं को; इलक्कणम् पण्पिन्–व्याकरणविधिसम्मत; मुटिवु उळ–सीमाएँ होती हैं; उरैक्किन्–उन उपमाओं को कहें तो; मुन्ना–श्रेष्ठ नहीं होंगी; अटैयाळत्तिन् तॊटर्वैये–लक्षण के आगे; तॊटर्ति–जाकर समझ लें; ऍन्ना–कहकर; अटि मुतल् मुटि ईऱु आक–पादादि केश तक; अऱिवु उऱ–समझाते हुए; अनुमन् चॊल्वान्–हनुमान कहने लगा। ५२७

हनुमान ने उत्तर दिया। डमरू-सी कमर वाली! श्रीराम का दिव्य रूप उपमा-उदाहरण कहकर वर्ण्य नहीं है; क्योंकि अलंकार-शास्त्रों में उपमाओं के अर्थों की सीमा निश्चित है। उनको कहें तो वे उपमाएँ समर्थ नहीं रहेंगी। मेरे वर्णन को संकेत मात्र मानिए और अपनी कल्पना से उसी दिशा में आगे जाकर समझ लीजिए। हनुमान श्रीराम का नख-शिख-वर्णन करने लगा। ५२७

शेयिदळ्त् तामरै यॆन्ऱु शेणुळोर्
एयिन दन्तुणै यॆळिय दिल्लैयाल्
नायहन् ऱिरुवडि कुऱित्तु नाट्टुहिल्
पाय्दिरैप् पवळमुङ् गुवळैप् पण्बिऱ्ऱाल् 528

नायकन् तिरुवटि–हमारे नायक के श्रीचरण; चेय् इतळ् तामरै ऍन्ऱु–लाल दलों का कमल ऐसा; चेण् उळोर्–प्राचीन विद्वानों ने; एयिन्–विधान किया हैं; कुऱित्तु नाट्टुकिल्–स्पष्ट निर्धारण करना चाहें तो; अतन् तुणै–उसके समान; ऍळियतु इल्लै–अल्प नहीं है; पाय तिरै–उछलती लहरों के समुद्र में उत्पन्न; पवळमुम्–प्रवाल भी; कुवळैप् पण्पिऱ्ऱु–कुवलय-पुष्प के समान हो जायगा (काला लगेगा)। ५२८

हमारे नायक के श्रीचरण प्राचीन विद्वानों की भाषा में लाल दलों के कमल कहें तो स्पष्ट सोचने पर वे चरण कमलों के समान अल्प नहीं हैं। उनके सामने उछलती लहरों वाले सागर में उत्पन्न प्रवाल भी कुवलय के समान काले लगेंगे। ५२८

तळङ्गिळर् कऱ्पह मुहिळ्न् दण्डुऱै
इळङ्गॊडिप् पवळमुङ् गिडक्क वॆन्नवै
तुळङ्गॊळि विरऱ्कॊदि रुदिक्कुञ् जूरियन्
इळङ्गदि रॊक्किनु मॊक्कु मेन्दिळाय् 529

एन्तिळाय्–धृत आभरण वाली; तळम् किळर्–दल-बहुल; कऱ्पक मुकिळुम्–कल्पकली भी; तण् तुऱै–शीतल घाटों वाले समुद्र में मिलनेवाली; इळम् कॊटि पवळमुम्–बाल-प्रवाल-लता भी; किटक्क–एक ओर रहें; अवै ऍन्न–उनको क्या

हस्ती है; तुळङ्कु ऑळि–प्रोज्ज्वल; विरऱ्कु ऍतिर्–उँगली के सामने; उतिक्कुम् चूरियऩ्–उदीयमान सूर्य की; इळम् कतिर्–बाल-किरणें; ऑक्कितुम् ऑक्कुम्–समता करें तो कर सकती हैं। ५२९

आभरणधारिणी देवी ! उनकी शोभायमान उँगलियों के बारे में क्या कहा जाय ? दलसंकुल कल्पकली और शीतल घाटों से युक्त सागर की बाल-प्रवाल-वल्लरी को एक ओर डाल दीजिए। उनकी क्या बिसात है ? उदीयमान सूर्य की बालकिरणें समता कर सकती हैं, तो एक प्रकार से कर सकती हैं। ५२९

शिऱियवुम् पॅरियवु माहित् तिङ्गळो
मऱुविल पत्तुळ वल्ल मऱ्ऱिऩि
ऍऱिशुडर् वयिरमो तिरट्चि यॅय्दिल
अऱिहिलॅऩ् नुहिर्क्किया नुवम मावऩ 530

तिङ्कळो–चन्द्र तो; चिऱियवुम् पॅरियवुम् आकि–छोटा और बड़ा बनकर; मऱु इल–कलंकहीन; पत्तु उळ अल्ल–दस नहीं हैं; मऱ्ऱु इऩि–उसके अलावा; ऍऱि चुटर्–ज्वलन्त; वयिरमो–हीरे कहें तो; तिरट्चि ऍय्तिल–पुष्ट नहीं है; उकिर्क्कु उवमम् आवऩ–चरणनखों की उपमाएँ जो बन सकेंगी; याऩ् अऱिकिलॅऩ्–मैं नहीं जानता। ५३०

उनके नखों को क्या चन्द्र कहें ? पर छोटे-बड़े और कलंकरहित दस चाँद कहाँ ? फिर हीरे कहें ? पर हीरे की कांति इतनी घनी कहाँ होती है ? इसलिए उँगलियों की उपमाएँ मुझे ढूँढ़े नहीं मिलतीं। ५३०

पॊरुन्दिऩ निलत्तॊडु पोन्दु काऩिडै
वरुन्दिऩ वॅऩ्ऩिऩदु नूलै माऱुहॊण
डिरुन्ददु निऩ्ऱदु पुवऩम् यावैयुम्
ऑरुङ्गुडऩ् पुणर्वऩ वुणर्त्तऱ् पालदो 531

निऩ्ऱतु पुवऩम् यावैयुम्–स्थिर सभी भुवनों में; ऑरुङ्कु उटऩ् पुणर्वऩ–एक साथ (जो) व्याप्त थे; निलत्तॊटु–(वे चरण) अब धरती पर; पॊरुन्तिऩ–लगे; पोन्तु–चलकर; काऩ् इटै–जंगल में; वरुन्तिऩ–दुःख पाते हैं; ऍऩ्ऩिऩ्–तो; अतु–वह; नूलै माऱु कॊण्टिरुन्ततु–तर्क आदि शास्त्र के विपरीत लगता है; उणर्त्तल् पालतो–वे वर्ण्य हैं क्या। ५३१

श्रीराम के चरण (त्रिविक्रमावतार के अवसर पर) सभी लोकों पर एक साथ लगे थे। ऐसे चरण अब वन में चलते हुए दुःख पा रहे हैं—ऐसा कहना तर्क-संगत नहीं लगता। ऐसे चरणों की महिमा क्या कही जाय ? । ५३१

ताङ्गणैप् पणिलमुम् वळैयुन् दाङ्गरा
वीङ्गणैप् पळ्ळियान् ऱॆन्तिनुम् वेऱिनिप्
पूङ्गणैक् काऱ्कॊरु परिशु तान्पॊरुम्
आङ्गणैक् कावमो वाव दन्नैये 532

अन्नैये–माताजी; अणै ताङ्कु पणिलमुम्–विषम तल वाला (झुर्रीदार) शंख; वळैयुम्–चक्र; ताङ्कुम्–धारण करनेवाले; वीङ्कु अरा–मोटे नाग रूपी; अणै पळ्ळियान्–शय्या-शायी; पूम् कणै काऱ्कु–(श्रीराम की) सुन्दर पिंडलियों की; तान् पॊरुम्–उनके द्वारा युद्ध में प्रयुक्त; कणैक्कु आम्–शरों के; आवमो–तूणीर; ऒरु परिचु ऎन्निनुम्–एक उपमा है तो; इनि वेऱु आवतु–और कोई तूणीर उपमान बन सकता है क्या। ५३२

सीढ़ीदार बाँधों के समान शिकनों के साथ रहनेवाले शंख और सुदर्शन चक्र के धारक, बहुत बड़ी शेषशय्याशायी विष्णु के अवतार श्रीराम की सुन्दर पिंडलियों की उपमा एक तरह से उनका ही युद्धशरों का तूणीर हो सकता हैं। और कोई तूणीर हो सकता है क्या ? । ५३२

अऱङ्गिळर् पऱवैयि नरशि नोङ्गिय
पिऱङ्गॊरुत् तनैयन वॆवरुम् बॆऱ्ऱुडै
मऱङ्गिळर् मदहरिक् करत्तै माऱ्ऱिन
कुऱङ्गिनुक् कुवमैयिव् वुलहिऱ् कूडुमो 533

अऱम् किळर्–(मूर्त-) धर्म-सम शोभायमान; पऱवैयिन् अरचिन्–पक्षीराज गरुड़ के; ओङ्किय पिऱङ्कु–उन्नत और पुष्ट; ऒरुत्तु अनैयन–गलों के समान हैं; ऎवरुम् पॆऱ्ऱुडै–सभी के लिए सुलभ; मऱम् किळर्–बलवान; मत करि करत्तै–मत्त गज की सूँड़ को; माऱ्ऱिन–निरर्थक कर गये; कुऱङ्कितुक्कु–ऐसे ऊरुओं की; उवमै–उपमा; इल्वुलकिल् कूटुमो–इस संसार में मिल सकती है क्या। ५३३

श्रीराम के ऊरु धर्मरूप पक्षीराज गरुड़ के उन्नत और स्थूल गले के समान रहते हैं। सभी आसानी से जिसकी उपमा देते हैं, उस सबल मत्तगज की सूँड़ को ठुकरा देनेवाले हैं। ऐसे जाँघों की उपमा इस संसार में कहीं मिल सकती है क्या ? । ५३३

वलञ्जुळित् तॊळुहुनीर् वळङ्गु गङ्गैयिन्
पॊलञ्जुळि यॆन्ऱलुम् बुन्मै पूवॊडु
निलञ्जुळित् तॆळुमणि युन्दि नेरिनि
इलञ्जियुम् बोलुम्वे ऱुवमै याण्डरो 534

पू ऒटु–कमल के फूल में; निलम्–लोकों को भी; चुळित्तु ऎळु–मिलाकर जिसने उत्पन्न किया; मणि उन्ति–वह सुन्दर नाभि; वलम् चुळित्तु–दाहिनी आवर्तन की भँवरों के साथ; ऒळुकु–बहनेवाली; नीर वळङ्कु–जल देनेवाली; कङ्कै–

गंगा नदी की; पॊलम् चुऴि–सुन्दर भँवर (उपमा) है; ऎन्ऱलुम्–कहना भी; पुन्मै–अल्प है; इत्ति नेर्–अब सम; इलञ्चियुम् पोलुम्–बकुल-सुमन होगा; वेऱु उवमै याण्टु–अन्य उपमान कहाँ है। ५३४

श्रीराम की नाभि ने कमल पर सारे लोकों को भी सृष्ट किया। ऐसी नाभि को दक्षिणावर्त भँवरों के साथ बहनेवाली गंगा नदी का सुन्दर भँवर (-सम) कहना भी क्षुद्र उपमान होगा। शायद बकुल का फूल हो सकता है! फिर और कोई उपमा कहाँ से मिले? । ५३४

पॊरुवरु मरहदप् पॊलङ्गॊण् माल्वरै
वॆरुवुऱ विरिन्दुयर् विलङ्ग लाहत्तैप्
पिरिवऱ नोऱ्ऱल ऴॆन्निऱ् पिन्नैयत्
तिरुविनिऱ् ऱिरुवुळार् यावर् तॆय्वमे 535

तॆय्वमे–भगवती; पॊरु अरु–उपमाहीन; पॊलम कॊळ्–सुन्दरतायुक्त; मरकत माल् वरै–बड़ा मरकतपर्वत; वॆरु उऱ–डर जाय ऐसा; विरिन्तु उयर्–विशाल और उन्नत; विलङ्कल् आकत्तै–पर्वत-सम वक्ष में; पिरिवु अऱ–विना अलग हुए रहने का; नोऱ्ऱतळ् ऎन्निल्–भाग्य किया (जिसने); अ तिरुविनिल्–उस श्री से बढ़कर; तिरु उळार्–श्रीसम्पन्न; पिन्नै यावर्–और कौन हैं। ५३५

भगवती! श्रीराम का वक्षःस्थल पर्वत-सम है। अनुपम सौन्दर्य से युक्त मरकत-पर्वत को भी लजानेवाली रीति से उन्नत और विशाल है। श्रीदेवी की तपस्या का फल है कि वह उसमें निरन्तर वास करती हैं। उनसे बढ़कर भाग्यशालिनी कौन हैं? । ५३५

नीडुऱु कीऴ्टिशै निन्ऱ यानैयिन्, कोडुऱु करमॆन्नच् चिऱिदु कूऱलाम्
तोडुऱु मलरॆन्नच् चुरुम्बु शुऱ्ऱरात्, ताडुऱु तडक्कैवे ऱुवमै शालुमो 536

तोटु उऱु–दलयुक्त; मलर् ऎन–कमल हैं ऐसा; चुरुम्पु चुऱ्ऱु अऱा–जिन पर भ्रमरों का मँड़राना कभी नहीं रुकता; ताळ् तुऱु तटक्कै–आजानुलम्बित विशाल हाथ; कीऴ्तिचै निन्ऱ यानैयिन्–पूर्व दिशा में स्थित (ऐरावत) गज के; कोटु उऱु–लकीरों के साथ रहनेवाली; नीटु उऱु करम् ऎन–लम्बी सूँड़ हैं, ऐसा; चिऱितु कूऱलाम्–थोड़ा कह सकते हैं; वेऱु उवमै चालुमो–कोई और उपमान मिल सकेगा क्या। ५३६

श्रीराम के आजानुलम्बे हाथों की, जिन पर भ्रमर दलसंकुल कमल-सुमन समझकर, घेरकर मँड़राना नहीं छोड़ते, उपमा पूर्व दिशा में स्थित ऐरावत गज की शिकनों (झुर्रियों) से भरी सूँड़ थोड़ा (संकोच से) कही जा सकती है। और कोई उपमा कही जा सकती है क्या? । ५३६

पच्चिलैत् तामरै पहल्कण् डालन्, कैच्चॆऱि मुहिऴ्हिर् कनह नॆन्बवन्
वच्चिर याक्कैयै वहिर्न्द वन्ऱोऴिल्, निच्चय मन्ऱॆनि नैय नीङ्गुमे 537

पचुमै इलै तामरै–चिकने पत्रों-सहित कमल का फूल; पकल् कण्टाल् अँत–सूर्य को देख चुका हो ऐसा; कै चॅरि–हाथों में लगे रहे; मुकिळ् उकिर्–कली के समान नख; कतकन् अँतूपवन्–हिरण्य के; वच्चिर याक्कैयै–वज्रकठोर शरीर को; वकिर्न्त वन् तॉळिल्–जिन्होंने चीर लिया था उनका काम; निच्चयम् अन्ऱु–संशय-रहित नहीं है; अँतिन्–ऐसा कहें तो; ऐयम्–वह संशय; नीङ्कुम्–(श्रीराम के नखों को देखने पर स्वयं) मिट जायगा। ५३७

श्रीराम के हाथों की उँगलियों के कलियाँ जैसे नख चिकने पत्रों-सहित रहनेवाले कमल के फूल सूर्य को देख गये —जैसे प्रकाशमान हैं। कनककशिपु के वज्र-सम शरीर को उन नखों ने चीरा था। क्या नख भी शरीर को चीर सकते हैं ? यह संशय जो उठ सकता है, उन नखों को देखने पर स्वतः दूर हो जायगा। ५३७

तिरण्डिल वॉळियिल तिरुवुञ् जेर्हिल
मुरण्डरु मेरुविन् शिलैयिन् मूरिनाण्
पुरण्डिल पुहळ्लि पॉरुप्पॉन् ड्रॊन्ऱुपोन्
ड्रिरण्डिल पुयङ्गळुक् कुवमै येऱ्कुमो 538

तिरण्टु इल–पुष्ट नहीं हैं; ऑळि इल–कान्तियुत नहीं; तिरुवुम् चेर्किल–श्री नहीं मिले हैं; मुरण् तरु–बलवान; मेरुविन्–मेरु के समान; चिलैयिन्–धनु को; मूरि नाण् पुरण्टु इल–बलवान डोरा उन पर लगा नहीं है; पुकळ् इल–यशस्वी नहीं; पॉरुप्पु–पर्वत; ऑन्ऱु ऑन्ऱु पोन्ऱु–एक के समान एक (परस्पर सम); इरण्टु इल–द्वय नहीं हैं; पुयङ्कळुक्कु–(इसलिए पर्वत) श्रीराम के कन्धों की; उवमै–उपमा का गौरव; एऱ्कुमो–धारण कर सकेंगे क्या। ५३८

श्रीराम के कन्धों को पर्वतों से उपमित करें क्या ? वे उतने पुष्ट और वर्तुल कहाँ ? कान्तियुत नहीं; श्रीयुत नहीं और उन पर बलवान मेरु के समान धनु की डोरी नहीं लोटी है। वे प्रशंसा के पात्र भी नहीं हैं। और परस्पर सम पर्वतद्वय कहाँ प्राप्य हैं ? इसलिए वे श्रीराम की भुजाओं की उपमा का गौरव धारण नहीं कर सकते। ५३८

कडऱ्पडु पणिलमुङ् गन्निप् पूहमुम्
मिडऱ्ऱिनुक् कुवमैयॅन् ऱुरैक्कुम् वॅळ्ळियोर्क्
कुडऱ्पड वॉण्णुमो वुरहप् पळ्ळियान्
इडत्तुऱै शङ्गमॉन् ड्रिरुक्क वॅङ्गळाल् 539

उरकप् पळ्ळियान्–शेषशायी; इटत्तु उऱै–के पास रहनेवाला; चङ्कम् ऑन्ऱु इरुक्क–शंख एक जब रहता है; कटल् पटु पणिलमुम्–सागर में उत्पन्न होनेवाला शंख; कन्निप् पूकमुम्–छोटी आयु का पूग-तरु; मिटऱ्ऱिनुक्कु उवमै–कण्ठ की उपमा है; अँन्ऱु–ऐसा; उरैक्कुम् वॅळ्ळियोर्क्कु–जो कहते हैं उन अल्पमतियों के साथ; ऎङ्कळाल् उटन् पट ऑण्णुमो–हम सहमत हो सकेंगे क्या। ५३९

शेषशायी श्रीराम के वायें हाथ में ही पाञ्चजन्य नामक शंख है। उस स्थिति में अन्य सागरोत्पन्न शंख या बाल-पूग-तरु को उनके कण्ठ से उपमित करनेवाले अल्पमतियों के साथ हम सहमत हो सकते हैं क्या? । ५३९

अण्णऱ्‌न् ऱिरुमुहङ् गमल मामॅनिल्
कण्णिनुक् कुवमैवे ऱियादु काट्टुहेन्
तण्मदि यामॅन वुरैक्कत् तक्कदो
विण्णुडल् पॉलिन्ददु मॅलिन्दु तेयुमाल् 540

अण्णल् तन् तिरुमुकम्–महिमावान श्रीराम का श्रीमुख; कमलम् आम् ऍनिल्–कमल कहा जाय तो; कण्णितुक्कु–फिर आँखों के लिए; उवमै–उपमा; वेऱु यातु काट्टुकेन्–और क्या दिखाऊँगा; अतु–वह; उटल् विण् पॉलिन्तु–शरीर आकाश में शोभित होकर; मॅलिन्तु तेयुमाल्–क्षीण होकर घटेगा इसलिए; तण् मति आम्–(इसलिए) शीतल चन्द्र होगा; ऍन उरैक्क तक्कतो–ऐसा कहना उचित होगा क्या। ५४०

महिमावान श्रीराम के मुख को कमल कह दूँ तो फिर आँखों की उपमा क्या बताऊँगा? फिर चन्द्र कहूँ? वह आकाश में एक बार पूर्णत्व के साथ प्रगट होने के बाद घटता जाता है! अतः शीतल चन्द्र को मुख का उपमान कहना उचित होगा क्या? । ५४०

आरमु महिलु नोवि यहन्ऱदो ळमलन् शॅव्वाय्
नारमुण् डलर्न्द शॅङ्गेळ् नळिनमॅन् ऱुरैक्क नाणिल्
ईरमुण् डमुद मूऱा विन्नुरै यियम्बा देनुम्
मूरल्वॅण् मुरुवर् पूवाप् पवळमो मॉळियप् पाऱ्‌ऱे 541

आरमुम् अकिलुम् नोवि–चन्दन और अगरु का लेप-मली; अकन्ऱ तोळ्–विशाल भुजाओं वाले; अमलन् चॅव्वाय्–विमल देव का लाल मुख; नारम् उण्टु अलर्न्त–जल पीकर जो खिला है; चॅम् केळ् नळिनम्–लाल रंग का कमल है; ऍन्ऱु उरैक्क नाणिल्–यह कहने से लाज (संकोच) करेंगे तो; ईरम् उण्टु–आर्द्रता के साथ; अमुतम् ऊऱा–अमृत जिससे (नहीं) रिसता है; इन् उरै इयम्पातेनुम्–मधुर वचन न कहने पर भी; मूरल् वॅण् मुरुवल्–(कम से कम) जो दाँतों द्वारा उज्ज्वल हँसी; पूवा–नहीं दिखा सकता है; पवळमो–वह प्रवाल क्या; मॉळियप् पाऱ्‌ऱु–कहे जाने अर्ह होगा। ५४१

चन्दन और अगरु के लेप से भूषित विशाल भुजाओं वाले पावनमूर्ति श्रीराम के लाल मुख से जल पीकर उगे हुए प्रफुल्ल लाल रंग के कमल को उपमित करने से हम लजाएँगे। तो आर्द्रता से रहित, अमृत न सरसाते हुए, मधुर वचन न कहें तो भी कम से कम सफ़ेद दन्तावली खोलकर जो हँस नहीं सकता, वह प्रवाल उपमा के रूप में बताया जा सकता है क्या? । ५४१

मुत्तङ् गॊल्लो मुळुनिलविन् मुरियिन् रिऱमो मॊळियमिर्दिन्
कॊत्तिन् रुळ्ळि वॆळ्ळियॆनत् तॊडुत्त कॊल्लो तुरैयऱत्तिन्
वित्तिन् मुळैत्त वङ्गुरङ्गॊल् वेऱे शिलकॊल् मॆय्म्मुहिळ्त्त
दॊत्तिन् ऱॊहैकॊल् यादॆन्ऱु पल्लुक् कुवमै शॊल्लुहेन् 542

पल्लुक्कु उवमै–दाँतों की उपमा; मुत्तम् कॊल्लो–मोती होंगे क्या; मुळु निलविन्–पूर्णचन्द्र के; मुरियिन् तिऱमो–टुकड़ों की पंक्ति हैं क्या; मॊळि–प्रशंसित; अमिर्तिन् कॊत्तिन्–अमृत-राशि की; तुळ्ळि–बूँदों को; वॆळ्ळि ऎन्न तॊदुत्त कॊल्लो–चाँदी कहने योग्य रीति से गूँथा गया है क्या; तुऱै अऱत्तिन्–(बत्तीस) अंशों में विभक्त धर्म के; वित्तिन् मुळैत्त–बीज से अंकुरित; अङ्कुरम् कॊल्–अंकुर हैं क्या; वेऱे चिल कॊल्–या अन्य कुछ हैं; मॆय् मुकिळ्त्त–सत्य (तरु) में पुष्पित; तॊत्तिन् तॊकै कॊल्–फूलों के गुच्छे हैं क्या; यातु ऎन्ऱु–क्या है ऐसा; चॊल्लुकेन्–कहूँगा। ५४२

श्रीराम के दाँतों की उपमा मोती बन सकते हैं? पूर्णचन्द्र के टुकड़ों की पंक्ति है? प्रशंसित अमृतराशि की बूँदों को चाँदी कहकर गूँथा गया है? बत्तीस अंशों के बने धर्म से अंकुरित अंकुर हैं? या और कुछ? या सत्यतरु पर पुष्पित फूलों का गुच्छा है। क्या कहूँ मैं? । ५४२

ऎळ्ळा नीरिन् दिरनीलत् तॆळुन्द कॊळुन्दु मरहदत्तिन्
विळ्ळा मुळुवा णिळऱ्पिळम्बुम् वेण्ड वेण्डु मेनियदे
तळ्ळा वोदि कोपत्तैक् कौव वन्दु शार्न्ददुवुम्
कॊळ्ळा वळ्ळ ऱिरुमूक्किऱ् कुवमै पिन्नुङ् गुऱिप्पामो 543

ऎळ्ळा नीर्–अनिंद्य पानी वाले; इन्तिर नीलत्तु–इन्द्रनील नग से; ऎळुन्त कॊळुन्तुम्–उठे किसलय और; मरकतत्तिन्–मरकत की; विळ्ळा–अखण्डित; वाळ् निळल् मुळु पिळम्पुम्–लम्बी कान्ति की सम्पूर्ण राशि और; वेण्ट वेण्टुम् मेनियतु–चाहकर तपस्या करें ऐसा दिव्य शरीर है उनका; तळ्ळ–संयुक्त; ओति–गिरगिट; कोपत्तै–इन्द्रगोप को; कौव–ग्रसने; वन्तु चार्न्ततु–आ पहुँचा है, यह कहना; कॊळ्ळा–मान्य नहीं है; वळ्ळल् तिरु मूक्किऱ्कु–उदार प्रभु की नासिका का; उवमै–उपमान; पिन्नुम् कुऱिप्पु आमो–और किसी वस्तु को बता सकते हैं क्या। ५४३

श्रीराम के दिव्य शरीर का रंग ऐसा है कि निर्दोष पानी वाले इन्द्रनील की किसलय-सी आभा और मरकत नग की दीर्घ और अक्षुण्ण आभा वैसा रंग पाने के लिए तपस्या करें। (उनकी नाक की उपमा क्या कहें?) गिरगिट इन्द्रगोप को ग्रसने के लिए आ पहुँचा है —ऐसा कहना भी मान्य नहीं हो सकता। तो फिर कौन सी उपमा कही जाय? (अधर का लाल रंग और नासिका का नीला रंग दोनों के आधार पर यह उपमा कही गयी है। जहाँ जयशंकर प्रसाद का "है हंस न शुक यह चुगने को मुक्ता ऐसे" —ये पंक्तियाँ स्मरण आती हैं। कम्बन् ऐसी चित्रमय कल्पना दस-बारह सौ वर्ष पहले कर सके।) । ५४३

पनिक्कर् चुरत्तुक् करन्मुदलोर् कवन्दप् पडैयुम् बल्पेयुम्
तनिक्कैच् चिलैयुम् वानवरु मुनिवर् कुळुवुन् दनियरमुम्
इनिक्कट् टळिन्द दरक्करकुल मॅन्नुज् जुरुदि यीयिरण्डुम्
कुनिक्कक् कुनित्त पुरुवत्तुक् कुवमै नीये कोडियाल् 544

पनि कल्–शीतल पर्वतों-सहित; चुरत्तु–वन में; करन् मुतलोर्–खर आदि राक्षसों की; कवन्त पटैयुम्–कबन्धों की सेना; पल् पेयुम्–अनेक पिशाच; तनि कै चिलैयुम्–अप्रतिम हस्त-धनु; वानवरुम्–और व्योमलोकवासी; मुनिवर् कुळुवुम्–मुनिवृन्द और; तनि अऱमुम्–अद्वितीय धर्म; इनि–अब; अरक्कर् कुलम्–राक्षसों का कुल; कट्टळिन्ततु–एक दम मिट गया; ऍन्नुम्–कहनेवाले; चुरुति ईर् इरण्टुम्–चारों वेदों के; कुनिक्क–नाच उठते; कुनित्त पुरुवत्तुक्कु–आकुंचित श्रीराम की भौंहों की; उवमै नीये कोटि–उपमा आप ही ढूँढ़ लें। ५४४

श्रीराम की भौंहें तनीं और कुंचित हुईं। तब क्या-क्या हुए? शीतल पर्वतों-सहित भयंकर जंगल में खर आदि राक्षसों की कबन्ध सेना, अनेक भूत-पिशाच, श्रीराम के अप्रमेय हस्त का धनुष, देव, मुनिगण, अनुपम धर्म और चारों वेद—ये सभी यह समझकर नाच उठे कि राक्षसकुल अब एकदम निर्मूल हो गया। ऐसी जो झुकीं, उन भौंहों की उपमा आप ही ढूँढ़ लें। ५४४

वरुनाट् टोन्ऱुन् दनिमऱुवुम् वळर्वुन् देय्वुम् वाळरवम्
ऑरुनाट् कव्वु मुऱुहोळु मिऱप्पुम् बिऱप्पु मॊळिवुऱ्ऱ
इरुनाऱ् पहलि निलङ्गुमदि यलङ्ग लिरुळि नॅळिनिळऱ्कोळ्प्
पॅरुना णिऱ्पि नवनॅऱ्ऱिप् पॆऱ्ऱित् ताहप् पॆऱुमन्नो 545

वरुनाळ्–जन्म के दिन से ही; तोन्ऱुम्–उत्पन्न; तनि मऱुवुम्–अनुपम कलंक; वळर्वुम् तेय्वुम्–और बढ़ना-घटना; वाळ् अरवम्–तलवार के समान सर्प (राहु) के; ऒरु नाळ् कव्वुम्–एक दिन ग्रहण कर लेने से; उऱु कोळुम्–मिलनेवाला दुःख; इऱप्पुम्–एक दिन पूर्ण रूप से अदृश्य होना और; पिऱप्पुम्–फिर एक दिन प्रकट होना; ऒळिवु उऱ्ऱ–इन दोषों से विमुक्त; इरु नाल् पकलिल्–अष्टमी के दिन; इलङ्कुम् मति–शोभायमान चन्द्र; अलङ्कल् इरुळिन्–भ्रामक अन्धकार में; ऍळिल् निळल् कोळ्–सबल अन्धकार के नीचे; पॆरु नाळ् निऱ्पिन्–अनेक दिन एक ही स्थिति में रह सकता हो तो; अवन् नॆऱ्ऱि–उनके भाल की; पॆऱ्ऱित्तु आकप् पॆऱुम्–स्थिति पायगा कहा जा सकता है। ५४५

(भाल की उपमा की अप्रस्तुत योजना देखिए।) अष्टमी का चन्द्र जन्म से ही प्राप्त कलंक से हीन होकर, वैसे ही घटना और बढ़ना छोड़कर, भयंकर सर्प राहु या केतु द्वारा निगले जाने के दुःख से विमुक्त हो, अमावास्या के दिन पूर्णरूप से मर (अदृश्य हो) जाना और दूसरे दिन प्रगट होना—इन बाधाओं से भी मुक्ति पाकर भ्रामक अन्धकार में नीली छाया के नीचे

अनेक दिन एक ही स्थिति में रह सकता हो तो वह श्रीराम के भाल से उपमित किया जा सकेगा ! । ५४५

नीण्डु कुळन्ऱु नॆय्त्तिरुण्डु नॆरिन्दु शॆरिन्दु नॆडुनीलम्
पूण्डु पुरिन्दु शरिन्दुकडै शुरुण्डु पुहैयु नऱुम्बूवुम्
वेण्डु मल्ल वॆनत्तॆय्व वॆरियै कमळु नऱुङ्गुञ्जि
ईण्डु शडैया यिनदॆन्ऱाल् मळैयॆन्ऱुरैत्त लिळिवन्ऱो 546

नीण्टु–लम्बे; कुळन्ऱु–घुँघुराले; नॆय्त्तु–चिकने; इरुण्टु–अन्धकार-सम काले; नॆरित्तु–परतों में दबे; चॆरिन्तु–घने; नॆटुनीलम् पूण्टु–पूरा-पूरा नीले रंग के; पुरिन्तु–बटे हुए; चरिन्तु–पीछे लटकते हुए; कटै चुरुण्टु–अन्त में कुंचित होकर; पुकैयुम्–धुआँ और; नऱुम्पूवुम्–सुगन्धित सुमन; वेण्टुम् अल्ल–नहीं चाहिए; ऎन–ऐसा; तॆय्व वॆरियै–दिव्य गन्ध ही; कमळुम्–देनेवाले; नऱुम् कुञ्चि–सुवासपूर्ण केश; ईण्टु–इधर; चटै आयितु–जटा बने; ऎन्ऱाल्–ऐसा कहा जाय तो; मळै ऎन्ऱु उरैत्तल्–मेघ (-सम) कहना; इळिवु अन्ऱो–गलत होगा न । ५४६

केश को क्या मेघ-धारा कहें ? लम्बे, घुँघराले, चिकने अन्धकार-सम काले, परतों में दबे, घने, नीला रंग लिये बटे हुए, पीछे की ओर अन्त में कुंचित होकर लटकनेवाले केश, जो विना अगरु-धुएँ के और पुष्पों के ही स्वतः सुवासित रहते हैं, आज जटा बने हैं। तो उनका उपमान मेघ है कहना क्षुद्र उपमा होगा न ? । ५४६

पुल्ल लेऱ्ऱ तिरुमहळुम् बूवुम् बॊरुन्दप् पुवियेळिन्
ॲल्लै येऱ्ऱ नॆडुञ्जॆल्व मॆदिर्न्द ञान्ऱु मः(ह्)दन्ऱि
अल्ल लेऱ्ऱ कान्हत्तु मळिया नडैय यिळिवान्
मल्ल लेऱ्ऱि नुळदॆन्ऱान् मत्त याने वरुन्दादो 547

पुल्लल् एऱ्ऱ–सदा आलिंगन में रहनेवाली; तिरुमकळुम्–श्रीदेवी और; पूवुम्–भूदेवी; पॊरुन्त–उनके पास जा लगें ऐसा; पुवि एळिन्–सप्तखण्डों की भूमि के; ॲल्लै एऱ्ऱ–समाहित; नॆटुम् चॆल्वम्–विशाल-धन-वैभव को; ऎतिर्न्त ञान्ऱुम्–प्राप्त करते समय भी; अ.:तु इन्ऱि–उसके नहीं होने से; अल्लल् एऱ्ऱ–संकट उठाते हुए; कान्कत्तुम्–जंगल (में आने) पर भी; अळिया–जिसका शान कम नहीं हुआ; नटैयै–उस गमन-गति को; इळिवान्–अल्प एक; मल्लल् एऱ्ऱिन्–पुष्ट बैल में; उळतु–है; ऎन्ऱाल्–कहें तो; मत्त यानै वरुन्तातो–मत्तगज दुःखी नहीं होगा क्या । ५४७

सदा आलिंगन में रहनेवाली श्रीदेवी और भूदेवी दोनों एक साथ उनकी बनीं, जब सप्तांश भूमि के वे पति हुए। उस समय भी, और राज्यश्री को छोड़कर कष्ट देनेवाले काननगमन के समय भी उनकी चाल समान रूप से सुन्दर रही। कुछ भी कमी नहीं हुई। ऐसी चाल को

क्षुद्र बैल की चाल में (के समान) रहनेवाला कहें तो मत्तगज दुःखी नहीं होगा क्या ? । ५४७

इन्न मॊऴिय वम्मॊऴिहेट् टॆरियि निट्ट मॆऴुहॆन्नत्
तन्नै यरिया दळिवाळैत् तरैयिन् वणङ्गि नायहनार्
शॊन्न कुरिहॊ ळडैयाळच् चॊल्लु मुळवा लवैतोहै
अन्न नडैयाय् केट्कवॆन्न वरिव नरैवा नायिनान् 548

इन्न मॊऴिय–ऐसा हनुमान के कहने पर; अम् मॊऴि केट्टु–वे वचन सुनकर; ऎरियिन् इट्ट–आग में पड़े; मॆऴुकु ऎन्न–मोम के समान; तन्नै अरियातु–सुध खोकर; अळिवाळै–शिथिल पड़नेवाली को; तरैयिल् वणङ्कि–भूमि पर दण्डवत करके; नायकनार् चॊन्न कुरि–श्रीराम-कथित निशान और; कॊळ् अटैयाळ चॊल्लुम्–आपसे ग्राह्य अभिज्ञान-वचन; उळ–हैं; अवै–उन्हें; तोकै अन्न–कलापी के समान; नटैयाय्–चाल वाली देवी; केट्क–सुनिए; ऎन्न–ऐसा; अरिवन्–बुद्धिमान; अरैवान् आयिनान्–कहने लगा । ५४८

हनुमान ने इस विध श्रीराम के रूप का वर्णन किया तो सीताजी उसके वचनों को सुनकर आग में पड़े मोम के समान अपनी सुध होकर छीजने लगीं। तो हनुमान ने भूमि पर गिरकर दण्डवत की और निवेदन किया कि देवी ! मेरे पास आपसे मान्य अभिज्ञान-वचन और संकेत हैं। कलापी-सी चाल की देवी ! उनको सुनें। वह आगे बोलने लगा। ५४८

*नडत्तलरि दाहुनॆरि नाळ्हळ्शिल तायर्क्
कडुत्तपणि शॆय्दिवणि रुत्तियॆन वच्चुर्
रुडुत्ततुहि लोडुमुयि रुक्कवुड लोडुम्
अॆडुत्तमुनि वोडुमय निन्रदुमि शैप्पाय् 549

नॆरि नटत्तल्–मार्ग चलना; अरितु आकुम्–कठिन होगा; नाळ्कळ् चिल–दिन कुछ ही हैं; तायर्क्कु–माताओं की; अटुत्त पणि चॆय्तु–योग्य सेवाएँ करती हुई; इवण् इरुत्ति–यहीं रहो; ऎन्न–ऐसा कहने पर; अच्चुर्रु- दहलकर; उटुत्त तुकिलोटुम्–पहने (अकेले) वस्त्र के साथ; उयिर् उक्क–प्राणरहित-से; उट लोटुम्–शरीर के साथ; ऎटुत्त मुनिवोटुम्–उठे क्रोध के साथ; अयल् निन्रतुम्–मेरे पास आकर जो खड़ी हुई; इचैप्पाय्–वह कहो। ५४९

श्रीराम ने आपको समझाया कि काननमार्गगमन कष्ट का आह्वान होगा। आखिर थोड़े ही दिन हैं! माताओं की आवश्यक सेवा करती हुई इधर ही रह जाओ। पर आप दहलकर पहने हुए अकेले वस्त्र ही के साथ, प्राणहीन-से शरीर के साथ और उठे क्रोध के साथ उनके पास जाकर खड़ी हो गयीं। श्रीराम ने मुझसे कहा कि यह बात तुम उनसे कहो। ५४९

*नीण्डमुडि वेन्दनरु ळेन्दिनिरै शॆल्वम्
पूण्डदनै नीङ्गिनॆरि पोदलुरु नाळिन्

आण्डनह रारैयोडु वायिलह लामुन्
याण्डैयदु कान्नॆनवि शैत्तदुमि शैप्पाय् 550

नीण्ट मुटि–बड़े किरीटधारी; वेन्तन्–चक्रवर्ती की; अरुळ् एन्ति–कृपापूर्ण आज्ञा धारण करके; निरै चॆल्वम् पूण्टु–विशाल धन अपनाकर; अतनै नीक्कि–फिर उसे छोड़कर; नॆरि पोतल् उरु–जंगल की राह जाने के; नाळिल्–दिन में; आण्टु–तब; अ नकर्–उस नगर के; आरै ऑटु वायिल्–प्राचीर के राजद्वार से; अकला मुन्–निकलने से पहले ही; कान् याण्टैयतु–जंगल कहाँ रहता है; ऎन–ऐसा; इचैत्ततुम्–देवी का पूछना भी; इचैप्पाय्–तुम उनसे कहो। ५५०

'दीर्घ किरीटधारी (किरीट बड़ा था और शासनकाल भी लम्बा —दोनों अर्थ हैं।) चक्रवर्ती की आज्ञा धारण करके पहले राज्य-धन को स्वीकृत किया; फिर उसे छोड़कर जंगल की राह ली मैंने। तब सीताजी प्राचीर के राजद्वार छोड़ने से पूर्व ही मुझसे पूछ बैठीं कि जंगल कहाँ है? (अभी दिखायी नहीं देता!) यह उन्हें स्मरण दिलाओ।' (तुलसी की कवितावली में भी यही बात आती है।) । ५५०

❀ ऍळ्ळरिय तेर्दरु शुमन्दिर निशैप्पाय्
वळ्ळन्मॊळि वाशह मॆनत्तुयर् मरन्दाळ्
किळ्ळैयॊडु पूवैहळ् किळर्त्तल्किळ वॆन्नुम्
पिळ्ळैयुरै यिन्रिर मुणर्त्तुदि पॆयर्त्तुम् 551

ऍळ्ळरिय–अनिंद्य; तेर् तरु–रथचालक; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र के; वळ्ळल् मॊळि–अर्थपूर्ण; वाचकम् इचैप्पाय्–सन्देश-वचन कहिए; ऎन–कहने पर; तुयर् मरन्ताळ्–अपना दुःख भूलकर; किळ्ळैयॊटु पूवैकळ्–शुकों के साथ सारिकाएँ; किळर्त्तल्–पालना; किळ–कहिए; ऎन्नुम्–ऐसा कहने में; पिळ्ळै उरैयिन् तिरम्–(जो) नादान शिशु-वचन का गुण है; पॆयर्त्तुम्–(वह) फिर से; उणर्त्तुति–स्मरण कराओ। ५५१

अनिंद्य रथ के सारथी सुमन्त्र ने सीता से कहा कि देवी! अर्थपूर्ण वाक्यों में अपना संदेश-वचन कहें। तब सीताजी ने अपना कष्ट भूलकर कहा कि शुक-सारिकाओं को ठीक तरह से पालना —यह सन्देश पहुँचा दीजिए। शिशु-सम कपटहीन उसके वचन का प्रकार उसे स्मरण कराओ। ५५१

❀ मीट्टुमुरै वेण्डुवन विल्लैयॆन मॆय्प्पेर्
तोट्टियदु तोट्टरिय शॆय्हैयदु शॆव्वे
नीट्टिदॆन नेर्न्दननॆ नानॆडिय कैयाल्
काट्टिननॊ राळियदु वाणुदलि कण्डाळ् 552

मीट्टुम्–फिर भी; उरै वेण्टुवन इल्लै–कहना कुछ नहीं चाहिए; ऎन–ऐसा

कहकर; मॆय्प्पेर् तीट्टियतु–मेरा सच्चा नाम अंकित है; तीट्टरिय चॆय्कैयतु–दुर्लभ रचना-कौशल से बना है; चॆव्वे नीट्टु–सामने बढ़ाओ; इतु–इसे; ऎऩ–कहकर; नेर्न्तनऩ्–(श्रीराम ने) मेरे पास दिया; ऎऩा–कहकर; ओर् आऴि–एक मणि-मुँदरी को; नॆटिय कैयाल्–अपने लम्बे हाथ में ले; काट्टिऩऩ्–दिखाया; अतु–उसको; वाळ् नुतलि–उज्ज्वल भाल वाली देवी ने; कण्टाळ्–देखा। ५५२

श्रीराम ने आगे कहा कि फिर कुछ कहना नहीं है। फिर उन्होंने एक दिव्य मुँदरी मुझे दी और कहा कि इसमें मेरा सत्यनाम अंकित है। दुर्लभ कारीगरी से युक्त है। इसे तुम सीताजी के पास दे दो। ऐसा कहकर हनुमान ने अपना लम्बा हाथ बढ़ाकर एक सुन्दर मुँदरी दिखायी। उज्ज्वल भाल वाली सीता ने उसे देखा। ५५२

❀ इऱन्दवर् पिऱन्दपय नॆय्दिऩर्कॊ लॆऩ्गो
मऱन्दव ररिन्दुणर्वु वन्दवर्कॊ लॆऩ्गो
तुऱन्दवुयिर् वन्दिडैतॊ डर्न्ददुकॊ लॆऩ्गो
तिऱन्दॆरिव दॆऩ्ऩैकॊलि नऩ्ऩुदलि शॆय्है 553

इ नल् नुतलि–इन सुन्दर भाल वाली देवी का; चॆय्कै–कृत्य; इऱन्तवर्–निरर्थक जीवन बितानेवाले ने; पिऱन्त पयऩ् ऎय्तिऩर्–सफल जन्म का फल पा लिया हो; चॆय्कै कॊल् ऎऩ्को–उसका-सा कृत्य है कहूँ; मऱन्तवर्–जो किसी को भूल गये; अऱिन्तु–उसने उसको जानकर; उणर्वु वन्तवर्–सुधि कर ली; चॆय्कै कॊल् ऎऩ्को–उसका-सा कृत्य कहूँ; तुऱन्तु–प्राण छूटकर; अ उयिर्–फिर वे प्राण; वन्तु–आकर; इटै तॊटर्न्ततु कॊल्–मध्य में लग गये; ऎऩ्को–कहूँ; तिऱम् तॆरिवतु–प्रकार जानना; ऎऩ्ऩै कॊल्–कैसा। ५५३

तब सुन्दर ललाटिनी सीताजी ने जो मोद-चेष्टाएँ प्रगट कीं उनको क्या कहा जाय? जिसने योग्य कर्म न करके अपना जीवन व्यर्थ किया उसे कृतार्थ-जन्म का फल मिल गया तो उसकी स्थिति जैसी होगी वैसी ही सीताजी की रही। —यह कहूँ? या— विस्मृति के बाद स्मृतिप्राप्त मनुष्य की-सी रही —कहूँ? या छूटे प्राण फिर बीच में ही आ गये —वैसी स्थिति उनकी हो रही —यह कहूँ? उनकी स्थिति का प्रकार कैसे जानूँ और वर्णन करूँ। ५५३

इऴन्दमणि पुऱ्ऱर वॆदिर्न्दॆऩ्ऩ लाताळ्
पऴन्दऩ मिऴन्दऩ पडैत्तवरै यॊत्ताळ्
कुऴन्दैयै युयिर्त्तमल डिक्कुवमै कॊण्डाळ्
ऒऴिन्दविऴि पॆऱ्ऱदॊ रुयिर्प्पॊरैयु मॊत्ताळ् 554

पुऱ्ऱु अरवु–बिल-वासी सर्प; इऴन्त मणि–अपने खोये नागरत्न को; ऎतिर्न्ततु–प्राप्त कर गया हो; ऎऩल् आताळ्–ऐसा बनीं; इऴन्तऩ–खोये गये; पऴम् तऩम्–प्राचीन धनों को; पटैत्तवरै–जिन्होंने पा लिया उनके; ऒत्ताळ्–समान बनीं;

मलटि–वंध्या; कुळन्तैयै उयिर्त्ततऱ्कु–पुत्र पा गयी हो उसकी; उवमै कॊण्टाळ्–उपमा बनीं; ऒळिन्त विऴि–खोयी दृष्टि; पॆऱ्ऱतीर् उयिर्प्पॊऱैयुम्–जिसने पा ली उस जीवधारी शरीर के; ऒत्ताळ्–समान भी बनीं। ५५४

वे उस सर्प के समान हो रहीं, जिसने अपना (नाग-) रत्न खोकर फिर से पा लिया हो। खोये प्राचीन धन को फिर से प्राप्त करनेवाले मनुष्य के समान भी हो गयीं। वंध्या ने पुत्र को जन्म दिया हो जैसी उनकी स्थिति हुई। और खोयी दृष्टि को जिसने पुनः प्राप्त कर लिया, उस जीव की जैसी भी हो गयीं। ५५४

वाङ्गिनण् मुलैक्कुवैयिल् वैत्तनळ् शिरत्ताल्
ताङ्गिनण् मलर्क्कण्मिशै यॊत्तिन डडन्दोळ्
वीङ्गिनण् मॆलिन्दनळ् कुळिर्न्दनळ् वॆदुप्पो
डेङ्गिन ळुयिर्त्तनळि दिन्नदॆन लामे 555

वाङ्कितळ्–(देवी ने) उसे लिया; मुलैक् कुवैयिल् वैत्तनळ्–स्तनाग्र पर रखा; [शि]रत्ताल् ताङ्कितळ्–सिर पर धारण किया; मलर् कण् मिचै–कमल-सी आँखों पर; [ऒ]त्तितळ्–(बार-बार रखा; तटम् तोळ्–विशाल भुजाएँ; वीङ्कितळ्–फूल गयीं [फू]सी हो गयीं; कुळिर्न्ततळ्–शीतल-(मुदित)-मना हुईं; मॆलिन्ततळ्–दुर्बल हुईं; [वॆ]तुप्पोटु–मुरझाकर; एङ्कितळ्–तरसीं; उयिर्त्ततळ्–दीर्घ निःश्वास छोड़े; इतु–[य]ह; इत्ततु ऎतल्–(क्यों) ऐसा है कहना; आमे–हो सकता है क्या। ५५५

सीतादेवी ने उस मणि-मुँदरी को हाथ में लिया। फिर कुचाग्र पर [र]खा। सिर पर धारण कर लिया। पंकज-नेत्रों पर रखा। उनकी [भ]ुजाएँ फूल उठीं। उनका मन शान्त-शीतल हुआ। श्रीराम का स्मरण [क]र क्षीण हुईं। मुरझायीं और तरसने लगीं। लम्बी साँसें छोड़ने [ल]गीं। यह स्थिति क्या है —यह कहा जा सकता है क्या ? । ५५५

❀ मोक्कुमुलै वैत्तुऱमु यङ्गुमिऴि नन्नीर्
नीक्किनिऱै कण्णिणैत तुम्बनॆडु नीळ
नोक्कुनुव लक्करुदु मोन्ऱुनुवल् हिल्लाळ्
मेक्कुनिमिर् विम्मलळ्वि ळङ्गलुऱ हित्ऱाळ् 556

मोक्कुम्–(सीताजी) सूँघतीं; मुलै वैत्तु–स्तनों पर रखकर; उऱ मुयङ्कुम्–[क]ड़ा आलिंगन करतीं; इऴि–नीचे की ओर बहनेवाले; निऱै नल् नीर्–अधिक [आ]नन्दाश्रुजल को; नीक्कि–पोंछकर; कण् इणै–दोनों आँखों में; ततुम्प–फिर से [आँस]ू के भरते; नॆटु नीळ नोक्कुम्–बहुत देर तक उसे देखतीं; नुवलक् करुतुम्–(उससे) बात करना चाहतीं; ऒन्ऱुम् नुवल् किल्लाळ्–कुछ कह नहीं पातीं; मेक्कु निमिर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; विम्मलळ्–तरस के साथ; विळुङ्कल् उऱुकिन्ऱाळ्–[उस]को दबाने का प्रयास करतीं। ५५६

और सीताजी ने उसे सूँघा। स्तनों पर रखकर कस लिया। जो

आँखों से आनन्दाश्रुजल वहा उसे पोंछा। फिर भी उनकी आँखों में आँसू भर आये। उसी स्थिति में उन्होंने उस पर दृष्टि जमा की। कुछ उससे कहना चाहा; पर कुछ नहीं कहा। उत्तरोत्तर बढ़नेवाली आतुरता से भर गयीं; पर उसे दबा लिया। ५५६

नीण्डविऴि नेरिऴैतऩ् मिऩ्तिनिऱ मॆल्लाम्
पूण्डदॊळिर् पॊऩ्ऩनैय पॊम्मनिऱ मॆय्ये
आण्डहैदऩ् मोदिरम डुत्तपॊरु ळॆल्लाम्
तीण्डळविल् वेदिहैशॆय् दॆय्वमणि कॊल्लो 557

नीण्ट विऴि नेरिऴै तऩ्–आयताक्षी (सीता) का; मिऩ्तिऩ् निऱम् ॲल्लाम्–बिजली-सम कान्तियुत रूप सब; ऑळिर् पॊऩ् अऩैय–ज्वलन्त स्वर्ण-सम; पॊम्मल् निऱम्–चमकदार रंग से; पूण्टतु–रंगीन हो गया; आण्टकै तऩ्–पुरुष-श्रेष्ठ की; मोतिरम् अटुत्त–दिव्य मणिमुँदरी से लगे; पॊरुळ् ॲल्लाम्–पदार्थ सारे; तीण्टु अळविल्–स्पर्श करते ही; वेतिकै चॆय्–बदलनेवाली; मॆय्ये–सचमुच ही; तॆय्व मणि कॊल्लो–दिव्य रसायन-मणि है क्या। ५५७

आयताक्षी सीताजी का चमकता सारा शरीर ज्वलन्त स्वर्णवर्ण का हो गया। पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम की मुँदरी के सम्पर्क में आये सभी पदार्थों ने स्पर्शमात्र से रंग बदल लिया। क्या वह सचमुच एक पारसमणि थी ?। ५५७

❀ इरुन्दुपशि यालिडरु ऴन्दवर्ह ळॆय्दुम्
अरुन्दुममु दाहियद ऱत्तवरै यण्डुम्
विरुन्दुमॆऩ लाहियदु वीयुमुयिर् मीळुम्
मरुन्दुमॆऩ लाहियदु वाऴिमणि याऴि 558

मणि आऴि–वह मणिमुँदरी; पचियाल्–भूख के साथ; इरुन्तु–रहकर; इटर् उऴन्तवर्कळ्–जो दुःखी रहे; ॲय्तुम्–उन्हें प्राप्त; अरुन्तुम् अमुतु–भोज्य अमृत; आकियतु–बनी; अऱत्तवरै–गृहस्थ-धर्म-रत लोगों के; अण्मुम्–पास आये; विरुन्तुम्–अतिथि; ॲऩल् आकियतु–के समान बनी; वीयुम् उयिर्–मरे प्राणों को; मीळुम् मरुन्तुम् ॲऩल्–लौटानेवाली औषध के समान भी; आकियतु–बनी; वाऴि–जिए वह। ५५८

वह मुँदरी भूख से पीड़ित लोगों को प्राप्त भोज्य अमृत-सा रहा। गृहस्थधर्मरत लोगों के पास आये अतिथि के समान रहा। गये प्राणों को लौटानेवाली औषध के समान भी रहा। जिए वह मणि-मुँदरी !। ५५८

❀ इत्तहैय ळाहियुयि रेमुऱवि ळङ्गुम्
मुत्तनहै याळ्विऴियि ऩालिमुलै मुऩ्ऱिल्

तत्तियुह मॆन्गुदलै तळ्ळवुयिर् तन्दाय्
उत्तमवॆ नाविनैय वाशहमु रैत्ताळ् 559

इत्तकैयळ् आकि–इस तरह की बनकर; उयिर–प्राणों के; एम् उऱ–लहलहाते; विळङ्कुम्–शोभायमान; मुत्त नकैयाळ्–मोतियों के समान दाँतों वाली; विळियिन् आलि–आँखों की बूँदों के; मुलै मुन्ऱिल् तत्लि–कुचाग्र पर गिरकर उछलकर; उक–नीचे गिरते; मॆन् कुतलै–कोमल तुतली बोली; तळ्ळ–लड़खड़ाये ऐसा; उत्तम–उत्तम; उयिर् तन्ताय्–प्राणदान किया; ॲन्ना–कहकर; इत्तैय वाचकम्–ये वाक्य; उरैत्ताळ्–(हनुमान से) बोलीं। ५५८

सीताजी इस स्थिति में आयीं। उनके प्राण लहलहा उठे। उज्ज्वल दाँतों से युक्त देवी के अश्रु उनके स्तनाग्र पर गिरे, उछले और नीचे जा रहे। उनकी मधुर बोली गद्‌गद हो गयी। उन्होंने उद्‌गार निकाली कि उत्तम, तुमने मुझे प्राणदान किया। वे आगे यों बोलीं। ५५९

❀ मुम्मैया मुलहन् दन्द मुदल्वऱ्कु मुदल्वन् ऱूदाय्च्
चॆम्मैया लुयिर्तन् दायक्कुच् चॆयलॆन्ना लॆळिय दुण्डे
अम्मैया यप्प नाय वत्तन्ने यरुळिन् वाळ्वे
इम्मैये मऱुमै दानु नल्हिनै यिशैयो डॆन्ऱाळ् 560

मुम्मैयाम्–त्रिविध (स्वर्ग, भूमि, पाताल) के; उलकम् तन्त–लोकों के सर्जक; मुतल्वऱ्कु–आदिदेव ब्रह्मा के भी; मुतल्वन्–धाता श्रीराम का; तूताय्–दूत बनकर; चॆम्मैयाल्–अपने कौशल से; उयिर् तन्तायक्कु–तुमने मुझे प्राणवान किया, ऐसे तुम्हारे प्रति; ॲन्नाल् चॆयल्–मेरा प्रत्युपकार; ॲळियतु उण्टे–सुलभ है क्या; अम्मैयाय् अप्पनाय–माता हो, पिता हो; अत्तने–दैव हो; अरुळिन् वाळ्वे–दया के जीवाधार; इम्मैये मऱुमै तानुम्–इह और पर (सुख) को; इचैयोटु–यश के साथ; नल्कितै–मुझे दिया; ॲन्ऱाळ्–कहा (सीताजी ने)। ५६०

त्रिविध लोकों के आदिनाथ ब्रह्मा के भी आदि हैं, विष्णु के अवतार श्रीराम। उनका दूत बनकर तुम आये और अपने सामर्थ्य से मुझे प्राणवान बनाया। ऐसे तुम्हें प्रत्युपकार में क्या दे सकूँगी? क्या प्रत्युपकार उतना सुगम है? माता हो तुम; पिता भी! दैव भी तुम्हीं हो। करुणा के जीवनाधार! तुमने इह-पर दोनों सुख दिलाया और वह भी यश-सहित! । ५६०

❀ पाळिय पणैत्तोळ् वीर तुणैयिलेन् परिवु तीर्त्त
वाळिय वळ्ळ लेयान् मऱुविला मनत्ते नॆन्निन्
ऊळियोर् पहला योदुम् याण्डॆला मुलह मेळुम्
एळुम्वी वुऱ्ऱ जान्ऱु मिन्ऱॆन विरुत्ति यॆन्ऱाळ् 561

पाळिय–सशक्त; पणै तोळ् वीर–स्थूल कन्धों वाले वीर; तुणैयिलेन्–असहाय रा; परिव तीर्त्त–दुःखनिवारक; वळ्ळले–उदार पुरुष; यान्–मैं; मऱु इला

मतत्तेन्–निष्कलंकमन हूँ; अॅन्तिल्–तो; ऊऴि ओर् पकलाय्–एक युग की एक दिन की गणना से; ओतुम् याण्टु ॲलाम्–गणित सारे वर्ष; उलकम् एऴुम् एऴुम्–चौदहों भुवन; वीवु उऱ्ऱ आन्ऱुम्–जब मिट जायँगे उस महाप्रलयकाल में भी; इन्ऱु ॲंत–आज के समान; वाऴिय इरुत्ति–जीते रहो; ॲन्ऱाळ्–ऐसा आशीर्वाद दिया। ५६१

सबल और स्थूल कन्धों वाले वीर ! मैं निःसहाय थी। मेरा दुःख दूर करनेवाले उदार पुरुष ! अगर मैं अकलंक पवित्रमना हूँ, तो एक युग को एक दिन बनाकर अनेक वर्षों तक जिओ; चौदहों लोकों के नाश होने के बाद भी तुम आज के जैसे जीवित रहोगे। ऐसा देवी ने हनुमान को आशिष दी। ५६१

मीण्डुरै विळम्ब लुऱ्ऱाळ् विऴुमिय कुणत्तोय् वीरन्
याण्डया त्तिळव लोडु मॅव्वऴि यॅय्दिऱ् ऱुन्नै
आण्डहै यडियेन् ऱन्नै यार्शॊल वऱिन्दा नॅन्ऱाळ्
तूण्डिरण् डनैय तोळा नुऱ्ऱदु शॊल्ल लुऱ्ऱान् 562

मीण्टु–फिर; उरै विळम्पल् उऱ्ऱाळ्–वचन कहने लगीं; विऴुमिय–श्रेष्ठ; कुणत्तोय्–गुणों वाले; वीरन्–श्रीरघुवीर; इळवलोटुम्–अपने लघु भाई के साथ; याण्टयान्–कहाँ हैं; ॲव्वऴि–कहाँ; ॲय्तिऱ्ऱु उन्नै–तुम्हें प्राप्त हुए; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; अटियेन् तन्नै–दासी मेरे बारे में; यार् चॊल–किसके कहने पर; अऱिन्तान्–जाना; ॲन्ऱाळ्–पूछा (देवी ने); तूण् तिरण्टनैय–स्थूल खम्भे-से; तोळान्–कन्धों वाले ने; उऱ्ऱतु–घटी कहानी; चॊल्लल् उऱ्ऱान्–कहना आरम्भ किया। ५६२

वे और भी बोलीं। श्रेष्ठ गुणों वाले ! अब श्रीरघुवीर और उनके लघुवीर कहाँ हैं ? वे तुमसे कहाँ मिले ? मेरे बारे में किसके कहने से उन्होंने जाना ? यह प्रश्न सुनकर स्थूल स्तम्भ-सम कन्धों वाले हनुमान ने उत्तर में यों कहना आरम्भ किया। ५६२

उऴैक्कुलत् तिशैयु माय वुरुवुकॊण् डुरुदल् शॅय्दान्
मऴैक्करु निऱत्तु माय वरक्कन्मा रीश नॅन्बान्
इऴैत्तड मार्बत् तण्ण लॅय्यप्पोय् वैयञ् जेर्वान्
अऴैत्तवल् लोशै युन्नै मयक्कुदऱ् कण्णल् शॊल्लाल् 563

मऴै करु निऱत्तु–मेघ-सम काले रंग का; मारीचन् ॲन्पान्–मारीच कथित; माय अरक्कन्–मायावी राक्षस; उऴै कुलत्तु इचैयुम्–हरिण की जाति से मिला हुआ; माय उरुवु कॊण्टु–माया-रूप धरकर; उरुतल् चॅय्तान्–आया; इऴै तट मार्पत्तु–आभरणालंकृत विशाल वक्ष वाले; अण्णल्–महिमामय श्रीराम के; ॲय्य–शर चलाने पर; पोय्–जाकर; वैयम् चेर्वान्–भूमि पर गिरा; अण्णल् चॊल्लाल्–महिमावान श्रीराम के-से स्वर में; अऴैत्त–जो टेर लगायी; वल् ओचै–वह उच्च नाद; उन्नै मयक्कुतऱ्कु–आपको भ्रम में डालने के लिए था। ५६३

मेघ-सम काले रंग का मायावी और मारीच नामक राक्षस मृग जाति का झूठा रूप धारण कर आया। आभरणालंकृत विशाल वक्षःस्थल वाले श्रीराम के शर चलाने पर वह भूमि पर गिरा। तब महिमावान श्रीराम के स्वर में उसने जो पुकारा, वह तुमुल नाद आपको भ्रम में डालने के लिए ही था। ५६३

इक्कुर लिळवल् केळा दॊळिहॆंन विऱैव लिट्टान्
मॆय्क्कुरऱ् चाबम् बिन्नै विळैन्ददु विदियिन् मॆय्म्मै
पॊय्क्कुर लिन्ऱु पॊल्लाप् पॊरुळ्पिन्नर् पयक्कु मॆन्बान्
कॆक्कुरल् वरिविल् लानु मिळैयवन् वरवु कण्डान् 564

इऱैवन्–भगवान श्रीराम; इक् कुरल्–यह ध्वनि; इळवल् केळातु–लघु भाई के सुनने में न आकर; ऒळिक–दब जाय; ऎन्न–ऐसा सोचकर; मॆय् कुरल्–सच्चे स्वर को; चापम् इट्टान्–अपने चाप से पैदा किया; पिन्नै विळैन्ततु–बाद जो घटा; वितियिन् मॆय्म्मै–विधि की सच्ची करतूत है; पॊय्क्कुरल्–मारीच का मिथ्यानाद; इन्ऱु–अभी; पिन्नर्–बाद; पॊल्ला पॊरुळ् पयक्कुम्–विपरीत हानि-कारक कार्य करा देगा; ऎन्पान्–ऐसा सोचकर; कै कुरल्–हाथ में रहे; वरि विल्लानुम्–सबन्ध धनु के धारक श्रीराम ने भी; इळैयवन् वरवु–छोटे भाई का आना; कण्टान्–देखा। ५६४

श्रीराम ने चाहा कि यह ध्वनि छोटा भाई न सुने। इसलिए उन्होंने अपने सत्य-धनु का स्वन निकाला। फिर जो घटनाएँ घटीं, वे असल में विधि की करतूत हैं। मारीच का मिथ्या स्वर अवश्य कुछ अनर्थ करनेवाला है—इस डर के साथ आनेवाले सबन्धधनुर्हस्त श्रीराम ने अपने भाई को आता देख लिया। ५६४

कण्डपि निळैय वीरन् मुहत्तिनाऱ् करुत्तै योर्न्द
पुण्डरि हक्क णानु मुऱ्ऱदु पुहलक् केट्टान्
वण्डुऱै शालै वन्दा निन्ऱिरु वडिवु काणान्
उण्डुयि रिरुन्दा निन्न लुळत्तऱ्के वेदु वन्ऱो 565

कण्ट पिन्–देखने के बाद; इळैय वीरन् मुकत्तिनाल्–छोटे वीर के मुखभाव से; करुत्तै–उनके मन का भाव; ओर्न्त–जो ताड़ गये; पुण्टरिकक् कणानुम्–उन पुण्डरीकाक्ष ने भी; उऱ्ऱतु–जो बीता; पुकल–उसको लक्ष्मण के कहने पर; केट्टान्–सुना; वण्टु उऱै–भ्रमर जहाँ रहते थे; चालै वन्तान्–उस पर्णशाला में आये; निन् तिरु वटिवु–आपका दिव्य रूप; काणान्–न देखा; उयिर् उण्टु इरुन्तान्–केवल प्राण ही रहे, ऐसी स्थिति में रहे; इन्नल् उळत्तऱ्के–कष्ट उठाने का; एतु अन्ऱो–हेतु नहीं था क्या। ५६५

श्रीराम ने लक्ष्मण को देखा, उनकी मुखमुद्रा से मन का भाव ताड़ लिया। पुण्डरीकाक्ष ने लक्ष्मण के मुख से बीता समाचार सुना। फिर

वे आश्रम में आये, जहाँ तरुओं के पुष्पों के कारण भ्रमर खूब मँड़रा रहे थे। वहाँ उन्होंने आपका श्रीरूप नहीं देखा। तब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी कि केवल प्राण ही रह गये, शरीर निस्पन्द-सा हो गया। क्या वह स्थिति दुःख का हेतु नहीं थी ? । ५६५

अन्निलै याय वण्ण लाण्डुनिन् ऱन्नै निन्नैत्
तुन्नरुङ् गानुम् याऱु मलैहळुन् दॊडर्न्दु नाडि
इन्नुयि रिन्ऱि येहु मॆन्दिरप् पडिव मॊप्पान्
तन्नुयिर् पुहळ्क्कु विऱ्ऱ शडायुवै वन्दु शार्न्दान् 566

अन्नै–माते; अन् निलै आय–उस स्थिति में जो पड़े; अण्णल्–महिमावान श्रीराम; इन् उयिर् इन्ऱि–प्यारे प्राणों से रहित; एकुम्–चलनेवाले; ऍन्तिर पटिवम् ऑप्पात्–यन्त्ररूप रहे; आण्टु निन्ऱु–वहाँ से; निन्नै–आपको; तुन् अरुम्–अगम; कानुम्–वनों; याऱुम् मलैकळुम्–नदियों और पर्वतों पर; तॊटर्न्तु नाटि–क्रम से खोजते हुए; तन् उयिर्–अपने प्राणों को; पुकळ्क्कु विऱ्ऱ–यश के बदले जिन्होंने दे दिये; चटायुवै वन्तु चार्न्तान्–जटायु के पास आ पहुँचे। ५६६

माते ! उस स्थिति में श्रीराम प्राणहीन चलने वाले यंत्रवत हो गये। वहाँ से चलकर वे अगम जंगलों, पर्वतों और नदियों पर खोजते हुए उस स्थान पर आये, जहाँ प्राण देकर यशस्वी हुआ जटायु पड़ा हुआ था। (प्राणों का दान देकर यश का खरीदार जो बना –यह सरस प्रयोग है।) । ५६६

वन्दवन् मेनि नोक्कि वानुयर् तुयरिन् वैहि
ऍन्दैनी युऱ्ऱ तन्मै यियम्बॆन विलङ्गै वेन्दन्
शुन्दरि निन्नैच् चॆय्द वञ्जनै शॊल्लच् चॊल्ल
वॆन्दन वुलह मॆन्न निमिर्न्ददु शीऱ्ऱ वॆन्दी 567

चुन्तरि–सुन्दरी देवी; वन्तु–आकर; अवन् मेनि नोक्कि–उसका शरीर देखकर; वान् उयर्–बहुत अधिक; तुयरिन् वैकि–दुःख में पड़कर; ऍन्तै–पितृतुल्य; नी–आप; उऱ्ऱतन्मै–इस स्थिति को प्राप्त होने का प्रकार; इयम्पु–कहिए; ऍन–पूछा; इलङ्कै वेन्तन्–लंकाधिपति ने; निन्नै चॆय्त–आपके प्रति जो किया; वञ्चनै चॊल्ल चॊल्ल–वह वंचक काम वर्णन करते-करते; चीऱ्ऱ वॆम् ती–श्रीराम की भयंकर क्रोधाग्नि; उलकम् वॆन्तन ऍन्न–सारे लोक जल गये, ऐसा भय पैदा करते हुए; निमिर्न्ततु–उठी। ५६७

सुन्दरी देवी ! श्रीराम ने उसके शरीर पर दृष्टि डाली। उन्हें अत्यधिक दुःख हुआ। उन्होंने उससे पूछा कि तात ! इस स्थिति को कैसे प्राप्त हुए ? वह प्रकार बताइए। जटायु ने रावण का आपके प्रति किया हुआ वंचक काम कहा। ज्यों-ज्यों वह कहता जाता था, त्यों-त्यों

श्रीराम की कोपाग्नि ऐसी उठ बढ़ी मानो सारे लोकों को जला डालेगी। ५६७

शीऱ्ऱियिव् वुलह मून्ऱुन् दीन्दुहच् चिन्वा यम्बाल्
नूरुवॆ ऩॆऩ्ऱु कैवि ऩोक्किय कालै नोक्कि
ऊरॊरु शिऱ्ऱियोन् शॆय्य मुनिदियो वुलहै युळ्ळम्
आऱुदि यॆऩ्ऱु तादै याऱ्ऱलिऱ् चीऱ्ऱ माऱ्ऱि 568

चीऱ्ऱि–कुपित होकर; इ उलकम् मून्ऱुम्–ये तीनों लोक; तीन्तु उक–जलकर भस्म हो जायँ ऐसा; चिनवाय् अम्पाल्–कोपमुख शरों से; नूरुवॆन् ऍऩ्ऱु–मिटा दूँगा कहकर; कै विल्–अपने हाथ के धनु को; नोक्किय कालै–जब श्रीराम ने देखा तब; तातै–तात जटायु ने; नोक्कि–देखकर; ऑरु चिऱ्ऱियोन्–एक अल्प (राक्षस) के; ऊऱु चॆय्य–दुःख देने पर; उलकै मुनितियो–लोकों पर गुस्सा करोगे क्या; उळ्ळम् आऱुति–मन शान्त करो; ऍऩ्ऱु–कहकर; आऱ्ऱलिन्–आश्वस्त करने पर; चीऱ्ऱम् आऱ्ऱि–कोप शान्त करके। ५६८

कुपित होकर श्रीराम ने यह कहते हुए अपने धनु को निहारा कि सारे लोकों को जलाकर भस्म करते हुए मिटा दूँगा। तब पिता-सम जटायु ने उनका गुस्सा देखकर कहा कि किसी क्षुद्र ने तुम्हें कष्ट दिया तो तुम प्रपञ्च पर गुस्सा उतारोगे क्या? मन को शान्त करो। उनके आश्वासन देने पर श्रीराम ने अपना कोप शान्त करके (पूछा)। ५६८

ऍव्वळि यॆय्दिऩ् ऱन्ऩान् याण्डैया ऩुऱैयुळ् यादु
शॆव्वियोय् कूऱु हॆन्ऩच् चॆप्पुवा ऩुऱ्ऱ कालै
वॆव्विय विदियिन् कॊट्पाल् वीडिनान् कळुहिन् वेन्दन्
ऍव्वियल् वरिविऱ् चॆङ्गै यिरुवरु मिडरिन् वीऴ्न्दार् 569

चॆव्वियोय्–श्रेष्ठ गुण वाले; अन्ऩान्–वह; ऍव् वऴि–किस मार्ग पर; ऍय्तिऱ्ऱु–गया; याण्टैयान्–कहाँ का है; उऱैयुळ् यातु–वासस्थान कौन सा; कूऱुक ऍऩ्ऩ–कहो, पूछने पर; कळुकिन् वेन्तन्–गीधों के राजा ने; चॆप्पुवान् उऱ्ऱ कालै–जब कहना आरम्भ किया तब; वॆव्विय वितियिन्–क्रूर विधि के; कॊट्पाल्–विधान से; वीटिनान्–जटायु मर गया; ऍव्वु इयल्–शरप्रेरक; वरिविल् चॆङ्कै–सबन्ध धनु वाले सुन्दर हाथों के; इरुवरुम्–दोनों; इटरिन् वीऴ्न्तार्–दुःख में गिर गये। ५६९

श्रेष्ठ गुण वाले! वह रावण किस मार्ग पर गया? वह कहाँ का है? उसका निवासस्थान कौन सा है? तब गीधों के राजा उत्तर देने ही लगे थे कि क्रूर विधि के विधान से वे मर गये। शरप्रेरक सबन्ध धनुर्धर लाल (सुन्दर) हाथों वाले वीर, श्रीराम और लक्ष्मण शोकमग्न हो गये। ५६९

अयर्त्तव रिरिदिऱ् ऱेऱि याण्डोऴिऱ् ऱादैक् काण्डुच्
चॅयत्तहु कडऩ्गळ् यावुम् देवरु मरुळच् चॅय्दार्
कयत्तॊऴि लरक्कन् ऱऩ्ऩै नाडिनाङ् गाण्डु मॅऩ्ऩाप्
पुयऱ्ऱोडु कुडुमिक् कऩ्ऱुङ् कानमुङ् गडिदु पोऩार् 570

अयर्त्तवर्–जो शिथिल हुए, उन्होंने; अरितिल् तेऱि–बहुत कष्ट के साथ सँभलकर; आण् तॊऴिल्–पुरुषोचित कार्य जो कर चुका; तातैक्कु–उस पिता के; आण्टु–तब; चॅयत्तकु–कर्तव्य; कटऩ्कळ् यावुम्–दाहकर्म सब; तेवरुम् मरुळ–देव भी चकित हों, ऐसा; चॅय्तार्–किये; कय तॊऴिल्–नीचकर्म; अरक्कन् तऩ्ऩै–राक्षस को; नाटि नाम् काण्टुम्–ढूँढ़कर हम देख लेंगे; ऍऩ्ऩा–सोचकर; पुयल् तोॅटु–मेघस्पर्शी; कुटुमि कुऩ्ऱुम्–शिखरों वाले पर्वतों पर और; कानमुम्–जंगल में; कटितु पोऩार्–तेज चले। ५७०

शिथिल पड़े वे कष्ट के साथ सँभले। फिर उन्होंने पुरुषोचित काम करके जो मरे थे, उन पिता-सम जटायु का कर्तव्य दाहकर्म आदि इतनी अच्छी तरह पूरा किया कि देवगण भी विस्मित और चकित रह गये। फिर वे यह संकल्प लेकर मेघस्पर्शी शिखरों वाले पर्वतों और वनों को पार करके जाने लगे कि हम उसको ढूँढ़कर देखेंगे। ५७०

अव्वऴि निऩ्ऩैक् काणा दयर्विऩा ऩरिदिऱ् ऱेऱिच्
चॅव्वऴि नयऩञ् जॅल्लु नॅडुवऴि शेऱु शॅय्य
वॅव्वऴ ऱऩ्ऩि लुऱ्ऱ मॅऴुहॆऩ वऴिय मेऩि
इव्वऴि यिऩैय पऩ्ऩि यऱिवऴिन् दिरङ्ग लुऱ्ऱाऩ् 571

अव्वऴि–उन स्थलों में; निऩ्ऩै काणातु–आपको न देखकर; अयर्वित्तान्–श्लथ होकर; अरितिल् तेऱि–बहुत कष्ट से धीरज धरकर; चॅल्लुम् नॅटु वऴि–जाने का लम्बा मार्ग; नयऩम्–उनकी आँखों के (अपने जल से); चॅव्वऴि–खूब; चेऱु चॅय्य–पंक बनाते; वॅव् अऴल् तऩ्ऩिल्–घोर आग में; उऱ्ऱ–पड़े; मॅऴुकु ऍऩ–मोम के समान; मेनि अऴिय–शरीर के गलते; इव्वऴि–इस स्थिति में; इऩैय पऩ्ऩि–ये वचन कहकर; अऱिवु अऴिन्तु–सुध-बुध खोकर; इरङ्कल् उऱ्ऱान्–दुःखी हुए। ५७१

श्रीराम आपको वहाँ कहीं भी न पाकर निर्जीव-से हो गये। फिर बहुत कष्ट के साथ सँभलकर आगे बढ़े। उनके गमन का सारा मार्ग उनकी आँखों से बहती हुई अश्रुधारा से कीच बन गया। घोर आग में पड़े मोम के समान उनका शरीर क्षीण हो गया। उस स्थिति में यों विलापते हुए भ्रान्त मन के साथ अधिक व्याकुल हुए। ५७१

कऩ्मत्तै आलत् तवर्याऱुळ रेह डन्दार्
पॊऩ्मॊय्त्त तोळाऩ् मयल्कॊण्डु पुलऩ्गळ् वेऱाय्

नन्मत्त नाहन् दलैशूडिय नम्ब नेपोल्
उन्मत्त नानान् उनैयोन्रु मुणर्न्दि लादान् 572

आलत्तवर् उळर्–संसार में रहनेवाले; यारे–कौन ही; कन्मत्तै कटन्तार्–कर्म के बाहर आ सके; पोन् मॉय्त्त तोळान्–श्रीनिलयस्कन्ध श्रीराम; मयल् कॉण्टु–भ्रान्त होकर; पुलन्कळ् वेराय्–इन्द्रिय-संवेदना से दूर; तनै ऑन्रुम् उणर्न्तिलातान्–अपना कुछ न स्मरण करके; नल् मत्तम्–अच्छा धतूरा; नाकम्–और सर्प को; तलै चूटिय–सिर पर धारण करनेवाले; नम्पनै पोल्–नायक शिवजी के समान; उन्मत्तन् आनान्–उन्मत्त बने। ५७२

कौन संसारी जीव कर्म को तार सका? श्रीराम मोहित मन वाले, इन्द्रियों के व्यवहारों से निर्लिप्त हो और अपनी सुध-बुध खोकर सर्प और धतूरे से अलंकृत सिर वाले श्रीशिवजी के समान उन्मत्त हो गये। ५७२

पोदायिन पोदुन तण्बुन लाडल् पॉय्यो
शीदापव ळक्कॉडि यन्नवट् टेडि यॅन्गण्
नीदातरु हिड्रिलै येनॅरुप् पादि यॅन्नाक्
कोदावरि यैच्चिनङ् गॉण्डनन् कॉण्ड लॉप्पान् 573

कॉण्टल् ऑप्पान्–मेघसदृश श्रीराम; कोतावरियै–गोदावरी से; पोतु आयित पोतु–जब सूर्योदय हुआ; पवळक्कॉटि अन्नवळ्–प्रवालवल्लरी-सी; चीता–सीता का; उन तण् पुनल्–तुम्हारे शीतल जल में; आटल् पॉय्यो–स्नान करना झूठ है क्या; अन्नवळ् तेटि–उसको खोजकर; ऍन् कण्–मेरे पास; नी ता–तुम दे दो; तरुकिड्रिलैयेल्–नहीं दोगी तो; नॅरुप्पु आति–आग बन जाओगी (आग लगा दूंगा); ऍन्ना–ऐसा; चिनम् कॉण्टनन्–कुपित हुए। ५७३

मेघ-सदृश श्रीराम ने गोदावरी को सम्बोधित कर कहा कि गोदावरी! सूर्योदय के समय जो प्रवालवल्लरी-सी मेरी सीता तुममें स्नान किया करती थी क्या वह असत्य है? तुम उसे जाकर ढूँढ़ो और मेरे पास लिवा ला दो। अगर नहीं दोगी तो तुम जल जाओगी! श्रीराम ने गोदावरी पर कोप दिखाया। ५७३

कुन्रेकडि दोडिनै कोमळक् कॉम्ब रन्न
ऍन्रेवियैक् काट्टुदि काट्टलै यॅन्नि निव्वम्
पॉन्रेयमै युम्मुन् डैक्कुल मुळ्ळ वॅल्लाम्
इन्रेपिळ वावॅरि याक्करि याक्क वॅन्रान् 574

कुन्रे–हे पर्वत; कटितु ओटिनै–तेज दौड़कर; कोमळ कॉम्पर् अन्न–कोमल पुष्पशाखा-सी; ऍन् तेवियै काट्टुति–मेरी देवी को दिखाओ; काट्टलै ऍन्तिल्–नहीं दिखाओगे तो; उन् उटै कुलम्–तुम्हारे कुल के; उळ्ळ–जो हैं; ऍल्लाम्–उन सभी को; इन्रे पिळवा–आज ही तोड़कर; ऍरिया–जलाकर; करियाक्क–भस्म कराने के लिए; इ अम्पु ऑन्रे–यह शर एक ही; अमैयुम्–पर्याप्त होगा; ऍन्रान्–कहा। ५७४

हे पर्वतो ! जल्दी भागो और कोमल पुष्पशाखा-सी मेरी सीता को मुझे दिखाओ। नहीं दिखाओगे तो तुम्हारे कुल के सारे पर्वतों को चूर-चूर कर दूंगा; जलाकर राख बना दूंगा। यह एक अस्त्र पर्याप्त है वह काम करने के लिए। श्रीराम ने कोप के साथ कहा। ५७४

पॊऩ्माऩुरु वाऱ्चिल मायै पुणर्क्क वऩ्ऱो
ऎऩ्माऩहल् वुऱ्ऱऩ ळिप्पॊळु तॆऩ्ग णॊऩ्ऩा
नऩ्माऩ्गळै नोक्किनुऩ् नाममु माय्प्पॆ निऩ्ऱे
विऩ्माऩ्गॊलै वाळियि ऩॆऩ्रु वॆहुण्डु निऩ्ऱाऩ् 575

पॊऩ् माऩ् उरुवाल्–स्वर्ण-हिरण के रूप में; चिल मायै–कुछ माया; पुणर्क्क अऩ्ऱो–करने से तो; ऎऩ् माऩ्–मेरी हरिणी; इप्पॊळुतु–अब; ऎऩ् कण्–मुझसे; अकल्वुऱ्ऱतळ्–अलग हो गयी; ऎऩ्ऩा–कहकर; नऩ् माऩ्कळै नोक्कि–असली मृगों को देखकर; विल् माऩ्–धनु में लगे श्रेष्ठ; कॊलै वाळियिऩ्–घातक शर से; इऩ्ऱे–अभी; नुम् नाममुम् माय्प्पॆऩ्–तुम्हारा नाम ही मिटा दूंगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; वॆकुण्टु निऩ्ऱाऩ्–कुपित हुए। ५७५

वंचना करनेवाले स्वर्णमृग के वेश में तो छल कर सके ! और मेरी हरिणी-सी सीता मुझसे अलग हो गयी ! हे मृगो ! मैं इन शरों से, जो मेरे धनु से लगने का भाग्य प्राप्त कर चुके हैं और घातक हैं, तुम्हारा नामोनिशान मिटा दूंगा। श्रीराम मृगों पर गुस्सा करके खड़े रहे। ५७५

वेऱुऱ्ऱ मऩत्तव ऩिऩ्ऩ विळम्बि नोव
आऱुऱ्ऱ नॆञ्जिऩ् ऩऩदारुयि रऩ्ऩ तम्बि
कूऱुऱ्ऱ शॊल्लॆऩ् ऩुळकोदरु नऩ्म रुन्दाल्
तेऱुऱ् ऱुयिर्पॆऱ् ऱियल्बुञ्जिल तेर लुऱ्ऱाऩ् 576

वेऱु उऱ्ऱ–बिगड़े हुए; मऩत्तवऩ्–मन वाले श्रीराम; इऩ्ऩ विळम्पि–यों कहकर; नोव–व्यग्र हुए तब; आऱुऱ्ऱ नॆञ्चिल्–शान्तमन; तऩतु आरुयिर् अऩ्ऩ–उनके प्यारे प्राण-सम; तम्पि–लघु भ्राता के; कूऱु उऱ्ऱ–कहे हुए; चॊल् ऎऩ्ऩुम् उळ–वचन रूपी; कोतु अऱु–दोषहीन; नल् मरुन्ताल्–अच्छे औषध से; तेऱुऱ्ऱु–धैर्य का अवलम्बन कर; उयिर् पॆऱ्ऱु–प्राणवान बनकर; इयल्पुम् चिल–कुछ उपायों को; तेरल् उऱ्ऱाऩ्–विचारने लगे। ५७६

श्रीराम का मन बिगड़ा हुआ था। वे ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए वेदना-विदग्ध हो रहे थे। उनके प्यारे छोटे भाई शान्तमन थे। उन्होंने औषध के समान कुछ शमनकारी वचन कहे। उस पर श्रीराम का धीरज बँधा। उनके प्राण स्वस्थ हुए और आपके प्राप्त्यर्थ उपाय सोचने लगे। ५७६

वन्दाऩिळै यातॊडु वाऩुयर् तेरिऩ् वॆहुम्
नन्दाविळक् किऩ्वरु मॆङ्गुल नादऩ् वाळुम्

शन्दार्तडङ् गुन्ऱिनिऱ् ऱन्नुयिर्क कात लोन्नुम्
शॆन्दामरैक् कण्णनु नट्टनर् तेव रुय्य 577

वान्–आकाश में; उयर् तेरिन् वैकुम्–श्रेष्ठ रथ पर रहनेवाले; नन्ता विळक्कित्–अमन्द दीप-से सूर्य के वंश में; वरुम्–आये; ऍम् कुल नातन्–मेरे कुल के नायक के; वाऴुम्–वासस्थान; चन्तु आर्–चन्दनतरु-लसे; तटम् कुन्ऱिनिल्–विशाल पर्वत पर; इळैयातोटु–छोटे भ्राता के साथ; वन्तान्–आये; चॆन्तामरैक् कण्णनुम्–अरुणपंकजाक्ष श्रीराम और; तन् उयिर् कातलोन्नुम्–उनका प्राणप्रिय (सुग्रीव); तेवर् उय्य–देवों को उबारने के लिए; नट्टनर्–मित्र बन गये। ५७७

आकाश में श्रेष्ठ रथ पर संचार करनेवाले और ऐसे दीप के समान सदा जलनेवाले, जिसको उकसाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, सूर्यदेव के वंश में आए हुए हैं हमारे कुल के नायक सुग्रीव। वे चन्दन-तरु-संकुल और विशाल ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे। श्रीराम अपने लघुभ्राता के साथ उस पर आये। अरुणपद्माक्ष श्रीराम और उनके प्राणप्यारे मित्र सुग्रीव दोनों ने आपस में सख्य कर लिया। ५७७

उण्डायदु मऱ्ऱदु मुऱ्ऱु मुणर्त्ति युळ्ळम्
पुण्डानॆन नोवुऱ विम्मुरु हित्ऱ पोदिल्
ऍण्डानुळन् दिट्टनुम् मेन्दिळै याङ्गळ् काट्टक्
कण्डानुयर् वेदमुम् बोदमुम् काण्गि लादान् 578

उयर् वेतमुम्–उत्कृष्ट वेदों; पोतमुम्–और ज्ञान से; काण्किलातात्–अलक्ष्य श्रीराम; उण्टायतुम्–जो दुःख हुआ वह; मऱ्ऱतुम्–बाद जो बीता वह; मुऱ्ऱुम् उणर्त्ति–पूरा बताकर; उळ्ळम् पुण् तान् ऍन–मन ही व्रण बन गया हो, ऐसा; नोवु उऱ–पीड़ित हो; विम्मुरुकिन्ऱ पोतिल्–सिसकते समय; ऍण् तान् उळ्नतु–चित्त में व्याकुल होकर; इट्ट–आपने जो डाला था; नुम् एन्तिळै–आपके आभरणों को; याङ्कळ् काट्ट–हमारे दिखाने पर; कण्टान्–श्रीराम ने देखा। ५७८

अवेदबोधगोचर श्रीराम आप-बीती बातें सारी सुग्रीव को बताकर जब व्रणमन हो वेदना के साथ दुःखी हो रहे थे, तब हमने आपके उन श्रेष्ठ आभरणों को दिखाया, जिन्हें आपने व्याकुलता में कुछ सोचकर नीचे डाला था। उन्होंने उन्हें देखा। ५७८

तणिहित्ऱनॆञ् जिऱ्ऱीडर् वॆम्मैयत् तन्मै तन्नै
तुणिहॊण्डिलङ् गुञ्जुडर् वेलवन् ऱूय नित्गण्
अणिहण्डुळि येयमु दन्दॊळित् तालु माऱाप्
पिणिहॊण्डदु पण्डदुण् डायिन्नुम् बेर्पप दन्ऱाल् 579

तुणि कॊण्टु इलङ्कुम्–(शत्रु-शरीर के) टुकड़े बनाकर शोभित रहनेवाले; चुटर् वेलवन्–ज्वलन्त भाले के धारक श्रीराम; तूय–पावन; नित् कण् अणि–आपसे पहने

गये आभरणों को; कण्टुऴियै–देखते ही; अतु पण्टु उण्टायितुम्–वह (दुःख) पहले ही रहा तो भी; तणिकिन्ऱ नॅञ्चिल्–जो शान्त हो रहा था उस मन में; तॉटर्–अब जो उठा; अ वॅम्मै तन्मै तन्नै–वह असह्य दुःख; अमुतम् तॅळित्तालुम्–अमृत छिड़काने पर भी; आऱा पिणि कॉण्टतु–दूर न हो, इस तरह से बँध गया; पेर्प्पतु अन्ऱु–हटाने योग्य नहीं था। ५७९

शत्रुशरीरभेदक उज्ज्वल भालाधारी श्रीराम ने ज्योंही उन आभरणों को देखा त्योंही उनका वियोग-दुःख जो पहले से ही था, पर जो थोड़ा थम रहा था फिर से पनप उठा और वह सन्ताप इतना था कि अमृत छिड़काने पर भी शान्त नहीं हो सके और वह इतना उनसे वँध गया कि अलग करना असम्भव हो रहा। ५७९

अयर्वुऱ्ऱरि दिऱ्ऱॅळिन् दम्मलैक् कप्पु ऱत्तोर्
उयर्पॉऱ्किरि यानुळन् वालियॅन् ऱोङ्ग लॉप्पान्
तुयर्वुऱ्ऱवि रावणन् वालिडैप् पण्डु तूङ्ग
मयर्वुऱ्ऱर्पॉ रुप्पॉडु माल्कड ऱाविवन्दान् 580

अयरवु उऱ्ऱु–थककर; अरितिल् तॅळिन्तु–बहुत कष्ट के साथ सँभलकर; अम् मलैक्कु अप्पुऱत्तु–उस (ऋष्यमूक) पर्वत के उस पार; ओर् उयर् पॉन् किरियान् उळन्–एक उन्नत स्वर्णमय गिरि का अधिपति; वालि ऍन्ऱु–वाली नाम का; ओङ्कल् ऑप्पान्–पर्वत-सम; तुयर्वु उऱ्ऱु–(उसकी पूँछ में बँधकर) दुःखी हो; अ इरावणन्–वह रावण; वालिटै–पूँछ से; पण्टु तूङ्कु–पहले कभी लटका, उसे लेकर; मयर्वु उऱ्ऱ–(वाली के वेग के कारण) चक्रित हुए; पॉरुप्पॉटु–पर्वतों और; माल् कटल्–बड़े समुद्रों को; तावि वन्तान्–लाँघकर पार कर जो आया। ५८०

श्रीराम शोक-शिथिल हुए; फिर ज्यों-त्यों करके सँभले। ऋष्यमूक पर्वत के उस पार एक उन्नत स्वर्ण-गिरि थी। उस पर वाली नाम का वानरराज रहता था। वह स्वयं पर्वत के समान था। वह एक बार रावण को अपनी पूँछ से बाँधकर दुःखी करके लटकाते हुए इतनी तेजी से पर्वतों और समुद्रों को लाँघकर आया था कि वे भी चक्रित हुए थे। श्रीराम ने —। ५८०

आयानैयॊ रम्बिनि लारुयिर् वाङ्गि यन्बिऱ्
ऱुयान्वयि नव्वर शीन्दवन् ऱुऱ्ऱु शेनै
मेयान्वरु वायॅन्न विट्टनन् मेवु कारुम्
एयानिरुन् दानिडै तिङ्ग ळिरण्डि रण्डुम् 581

आयानै–उस (वाली) को; ओर् अम्पितिल्–एक ही शर से; आरुयिर् वाङ्कि–जान से मारकर; अन्पिल् तूयान् वयिन्–स्नेह में शुद्ध सुग्रीव के पास; अ अरचु ईन्तु–वह राज्य देकर; अवन्–उस (सुग्रीव) को; चुऱ्ऱु चेनै मेयान्–घिरी सेना के साथ; वरुवाय्–आओ; ऍन्ऩ–ऐसा कहकर; विट्टनन्–बिदा दी; मेवु कारुम्–

उसके आते तक; तिङ्कळ् इरण्टु इरण्टुम्–चार महीने; इटै–उस (ऋष्यमूक पर्वत) पर; एयान् इरुन्तान्–ठहरे रहे। ५८१

ऐसे वाली को एक ही शर द्वारा प्राणहीन कर दिया। फिर अपने स्नेही पवित्रमन सुग्रीव को वानरराजपद दिलाया। दिलाकर उससे कहा कि अपनी सेना-सहित आ जाओ। फिर वे चार महीने उस (ऋष्यमूक) पर्वत पर ठहरे रहे। ५८१

पिऱ्कूडिय शेलैपॅ रुन्दिशै पिऩ्ऩ वाह
विऱ्कूडुनु दऱ्ऱिरु निऩ्ऩिडै मेव वेवित्
तॅऱ्कूडुरु वक्कडि देविनऩ् शेऱ्न्द दॅऩ्ऩ
मुऱ्कूडिऩ कूऱिनऩ् कालमोर् मूऩ्ऱुम् वल्लान् 582

विल् कूट्टु–धनु-सम; नुतल् तिरु–भाल वाली श्रीदेवी; पिन् कूटिय चेत्तै–पश्चात् एकत्रित सेना को; पॆरुम् तिचै–बड़ी दिशाओं को; पिऩ्ऩ आक–पीछे छोड़कर; निन् इटै–आपके पास; मेव–(ढूंढ़कर) आने के लिए; एवि–भेजकर; तॆऱ्कु ऊडु उरुव–दक्षिण दिशा में छानकर खोजने के लिए; कटितु एवितऩ्–(मुझे) शीघ्र भेजा; चेर्न्ततु–(यही मेरे इधर) आने का वृत्तान्त है; ॲऩ्ऩ–ऐसा; कालम् ओर् मूऩ्ऱुम् वल्लान्–त्रिकालज्ञ ने; मुऱ्कूटिऩ कूऱिनऩ्–पहले जो घटीं वह सारी बातें बतायीं। ५८२

उज्ज्वल धनु-सम ललाटिनी! पश्चात् जब वे वानर-सेनाएँ एकत्रित हो आयीं, तब सुग्रीव ने उन्हें सभी दिशाओं में इतनी दूर-दूर भेज दिया कि दिशाएँ स्वयं पीछे रह जायँ! फिर दक्षिण दिशा में खोजने के लिए मुझे शीघ्र प्रेषित किया। यही मेरे इधर आने का वृत्तान्त है। इस तरह त्रिकालज्ञ हनुमान ने घटित घटनाएँ बतायीं। ५८२

❀ अऩ्बिऩ नम्मॊऴि युरैक्क वारियन्
वऩ्बॊऱै नॆञ्जिनऩ् वरुत्त मुन्नुवाळ्
ॲऩ्बुऱ वुरुहिऩ ळिरङ्गि येङ्गिनाळ्
तुऩ्बमु मुवहैयुम् जुमन्द वुळ्ळत्ताळ् 583

अऩ्पितऩ्–भक्त के; अ मॊऴि उरैक्क–वह वचन कहने पर; वऩ् पॊऱै–अतिशय क्षमाशील; नॆञ्चितऩ् आरियऩ्–मन वाले पुरुषोत्तम का; वरुत्तम् उऩ्ऩुवाळ्–दुःख सोचती हुई; तुऩ्पमुम् उवकैयुम्–दुःख और आनन्द; चुमन्त उळ्ळत्ताळ्–धारक चित्त वाली; ॲऩ्पु उऱ–हड्डी तक (दुःख के) लगने के कारण; उरुकिऩळ्–द्रवीभूत हो गयीं; इरङ्कि एङ्किऩळ्–दुःखी हो तरसीं। ५८३

श्रीराम के भक्त हनुमान ने जब यह सब कहा, तब सीता ने बहुत क्षमाशील श्रीराम का दुःख सोचा। वे स्वयं अधिक दुःख और सुख दोनों से भर गयीं। उनकी हड्डी तक जलप्राय हो जाय, वे इतनी दुःखिनी हुईं और तरसने लगीं। ५८३

❀ नैयुरु शिन्दैय णयत्त वारियिन्
तॉय्यल्वॆंर् चुळियिडैच् चुरिक्कु मेनियळ्
ऐयनी यळप्परु मळक्कर् नीन्दिनै
ॲय्दिय दॆप्परि शियम्बु वायॆंन्राळ् 584

नै उरु चिन्तैयळ्–शिथिलमना; नयत्त वारियिन् तॉय्यल्–अश्रुजलधारा के; वॆंम् चुळियिटै–भयंकर आवर्तों में; चुरिक्कुम् मेतियळ्–घूमनेवाले शरीर की देवी ने; ऐय–तात; नी–तुम; अळप्परुम् अळक्कर्–अपार सागर; नीन्तिनै–तैरकर; ॲय्तियतु–यहाँ आये; ऎं परिचु–कैसे; इयम्पुवाय्–कहो; ऎंन्राळ्–पूछा देवी ने। ५८४

विगलित मन वाली, और नयनवर्षा की भँवरों में घूमनेवाली सीताजी ने हनुमान से कहा कि तात ! यह अपार सागर तुम कैसे तैर आये ? कहो। ५८४

❀ शुरुङ्गिडै युन्नोरु तुणैवन् रुयताळ्
ऑरुङ्गुडै युणर्वितो रोय्विन् मायैयिन्
पॆरुङ्गडल् कडन्दिडु मॆन्नुम् बॆर्रिपोल्
करुङ्गडल् कडन्दनॆन् कालि नालॆंन्रान् 585

चुरुङ्कु इटै–क्षीणकटि; उन् ऑरु तुणैवन्–आपके अनुपम नाथ के; तूय ताळ्–पवित्र चरणों पर; ऑरुङ्कु उटै–एकाग्रता से; उणर्वितोर्–ध्यान रखनेवाले; ओय्विन् मायैयिन्–अनन्त माया का; पॆरुङ् कटल्–बड़ा सागर; कटन्तिटुम्–पार कर देंगे; ऎन्नुम् पॆर्रि पोल्–ऐसी रीति से; कालिताल्–अपने पैरों से (या श्रीराम-चरण-महिमा से); करुम् कटल्–काला (या बड़ा) सागर; कटन्तनॆन्–पार कर आया; ऎंन्रान्–कहा (हनुमान ने)। ५८५

हनुमान ने कहा कि क्षीणकटि देवी ! आपके संगी नाथ श्रीराम का पावन चरण एकाग्रचित्त से स्मरण करनेवाले महान् लोग अक्षय माया-सागर तर लेते हैं। उसी प्रकार से मैं भी अपने पैरों (या श्रीराम की चरण-महिमा) से इस काले (या बड़े) समुद्र को लाँघ आया हूँ। ५८५

इत्तुणैच् चिरियदो वॆंण्णिल् याक्कैयै
तत्तिनै कडलदु तवत्ति नायदो
शित्तियि नियन्रदो शॆप्पु वायॆंन्राळ्
मुत्तिनु निलविनु मुरुवल् मुर्रिनाळ् 586

मुत्तितुम्–मोती से; निलवितुम्–और चन्द्रिका से बढ़कर; मुरुवल्–दाँतों की; मुर्रिताळ्–अधिक प्रभावती ने; इत्तुणै चिरियतु–इतना छोटा; ऎंण् इल्–कुछ भी न मान्य; ओर् याक्कैयै–एक शरीर के तुम; कटल् तत्तितै–समुद्र लाँघ आये; अतु–वह काम; तवत्तिन् आयतो–तप के फलस्वरूप हुआ; चित्तियिन् इयन्रतो–सिद्धि के बल से साध्य हुआ; चॆप्पुवाय्–कहो; ऎंन्राळ्–कहा। ५८६

सीताजी के दाँत मोतियों और चाँदनी से बढ़कर सुन्दर थे। (कवि उनकी याद करते हैं यह संकेत करने के लिए कि सीताजी किंचित हँसती हुई बोलीं। यह कवि की विदग्धता है, जो सर्वत्र पायी जाती है।) सीताजी ने पूछा कि इतने छोटे से शरीर के होकर तुमने समुद्र लाँघा; यह काम तपस्या का फल था या सिद्धि द्वारा साध्य हुआ? बताओ। ५८६

शुट्टित्त निन्ऱनन् ट्रॊळ्द कैयिनन्
विट्टुयर् तोळिन्नत् विशुम्बिन् मेक्कुयर्
ऎट्टरु नॆडुमुह डॆय्द नीळुमेल्
मुट्टुमॆन् ऩुरुवॊडु वळैन्द मूर्त्तियात् 587

तॊळुत कैयितन्–अंजलिबद्धहस्त; विट्टु–विशाल और; उयर् तोळितन्–उन्नत कन्धों वाला; विचुम्पिन् मेक्कु उयर्–आकाश के भी ऊपर; ऎय्त नीळुमेल्–पहुँच जाय इतना बढ़ेगा तो; ऎट्टु अरु–अगम; नॆटु मुकटु–विशाल चोटी; मुट्टुम्–टकरायगी; ऎन्ऩ–यह सोचकर; उरुवॊटु–उस बड़े शरीर के साथ; वळैन्त मूर्त्तियात्–कुछ झुके हुए रूप वाला; चुट्टितन्–अपना बड़ा रूप दिखाता हुआ; निन्ऱतन्–खड़ा रहा। ५८७

यह सुनकर हनुमान ने अपने हाथों को जोड़ लिया। अपने विशाल कन्धों को उन्नत करते हुए वह बढ़ने लगा। आकाश के भी ऊपर बढ़ेगा तो उसका सिर आकाश की चोटी से टकरा जाय और वह ढह जाय, ऐसी स्थिति हो गयी। इसलिए अपने विश्वरूप में थोड़ा झुका हुआ रहकर उसने अपना विराट् रूप देवी को दिखाया। ५८७

शॆव्वळिप् पॆरुमैयॆन् ऩुरैक्कुज् जॆम्मैदान्
वॆव्वळिप् पूदमो रॆन्दिन् मेलदो
अव्वळित् तन्ऱॆनि ऩनुमन् पालदो
ऎव्वळित् ताहुमॆन् ऩॆण्णु मीट्टदे 588

चॆव् वळि पॆरुमै ऎन्ऩ उरैक्कुम्–उत्कृष्ट मान्य; चॆम्मै तान्–श्रेष्ठता; वॆम् वळि–सबल; पूतम् ओर् ऐन्तिन् मेलतो–पाँच भूतों के पास है; अ वळित्तु अन्ऱु ऎनिल्–वहाँ नहीं हो तो; अनुमन् पालतो–हनुमान के वश में है; ऎ वळित्तु आकुम्–कहाँ होगी; ऎन्ऩ ऎण्णुम्–ऐसा सोचने को विवश करनेवाले; ईट्टतु–प्रकार का था हनुमान का विश्वरूप। ५८८

(उसके उस विश्वरूप की महिमा देखिए।) उत्कृष्ट, श्रेष्ठता सबल भूतों में है या इस हनुमान के पास है? कहाँ है? उसका रूप दर्शक के मन में यह संशय पैदा कर रहा था। ५८८

ऒत्तुयर् कतहवान् किरियि ऩोङ्गिय
मॆय्त्तुरु मरन्दोरु मिन्मि ऩिक्कुलम्

मॆय्त्तुळ वामॆन मुन्नुम् बिन्नरुम्
तॊत्तिन तारहै मयिरिन् शुऱ्ऱॆलाम् 589

कतक वान् किरियिन्–बड़े स्वर्ण (-मेरु) पर्वत पर; ओङ्किय मरम् तॊऱुम्–उन्नत उगे तरु-तरु में; मिन् मिनि कुलम्–खद्योतकुल; मॊय्त्तु उळवाम् ऎन–लसे बैठे हैं जैसे; ऒत्तु उयर्–(मेरु-) सम रूप से उन्नत; मॆय्–शरीर पर; तुऱु–घने; मयिरिन् चुऱ्ऱु ऎलाम्–रोम के पार्श्व प्रदेशों पर; मुन्नुम् पिन्नरुम्–आगे और पीछे; तारकै तॊत्तिन–तारागण पकड़े लटके रहे। ५८९

मेरु के समान बढ़े हुए उसके शरीर में बालों के बीच-बीच में तारागण लटके रहे। तब कनकगिरि मेरु का स्मरण होता था जिस पर के ऊँचे तरुओं में खद्योतकुल लसे रहे हों। ५८९

कण्डल मऱिवॊडु कडन्द काट्चियन्
विण्डल मिरुपुडै विळङ्गुम् मॆय्म्मैयक्
कुण्डल मिरण्डुमक् कोळिन् माच्चुडर्
मण्डल मिरण्डॊडु माऱु कॊण्डवे 590

कण् तलम् ओटु–आँखों के साथ; अऱिवु–बुद्धि के भी; कटन्त काट्चियन्–पार गये रूप वाले के; विण् तलम्–आकाश के; इरु पुटै–दोनों ओर; विळङ्कुम्–शोभायमान; मॆय्म्मै अ कुण्टलम् इरण्टुम्–वे दोनों कर्णकुण्डल; अ कोळिन्–उन नव-ग्रहों में; मा चुटर् मण्टलम् इरण्टु ऒटु–बहुत उज्ज्वल (सूर्य-चन्द्र के) दो मण्डलों के साथ; माऱु कॊण्ट–अलग दिखायी दिये। ५९०

उसका रूप आँखों को क्या बुद्धि को भी पार कर गया था। (न आँखों द्वारा देखा जा सका, न कल्पना द्वारा अनुमान भी किया जा सका।) आकाश में उसके दोनों पार्श्वों में जो उसके कर्णकुण्डल लटक रहे थे वे आकाश में रहनेवाले नवों ग्रहों में दो अत्यधिक उज्ज्वल ग्रह, सूर्य और चन्द्र के मण्डलों से भिन्न अत्युज्ज्वल दिखायी दिये। ५९०

एणिल दॊरुकुरङ् गॊदॆन् ऱॆण्णला, आणियै यनुमनै यमैय नोक्कुवान्
शेणुयर् पॆरुमैयोर् तिऱत्त दन्ऱॆना, नाणुऱु मुलहॆला मळन्द नायहन् 591

ईतु ऒरु कुरङ्कु–यह एक मरकट है; एण् इलतु–बलहीन है; ऎन्ऱु–ऐसा; ऎण्णला–जिसके सम्बन्ध में न सोचा जा सके; आणियै–उस धुर के समान; अनुमनै–हनुमान को; अमैय नोक्कुवान्–भलीभाँति देखनेवाले (त्रिविक्रम मूर्ति); उलकु ऎलाम् अळन्त–विश्वमापक; नायकन्–जगन्नाथ; चेण् उयर् पॆरुमै–अत्युत्कृष्ट गौरव; ओर् तिऱत्ततु अन्ऱु–एक ही स्थान में पाया जानेवाला नहीं; ऎना–ऐसा सोचकर नाण् उऱुम्–लज्जित होंगे। ५९१

सर्वलोकमापक त्रिविक्रम भी इस हनुमान को खूब देखेंगे, तो यह समझेंगे कि इसे एक बन्दर और वह भी निर्बल बन्दर नहीं समझना चाहिए।

यह तो लोकों की धुरी के समान है। लगता है कि बहुत उन्नत गौरव केवल एक (मेरे पास) ही नहीं है! यह सोचकर वे लज्जित होंगे। ५९१

ऍण्डिशै मरुङ्गितु मुलहम् याविनुम्, तण्डलि लुयिरॅलान् दन्नै नोक्किन
अण्डमॅन् ऱदितुऱै यमरर् यारैयुम्, कण्डनन् ऱानुन्दन् कमलक् कण्गळाल् 592

ऍण् तिचै–आठों दिशाओं के; मरुङ्कितुम्–स्थानों में; उलकम् यावितुम्–सभी लोकों में; तण्टल् इल्–अक्षुण्ण; उयिर् ऍलाम्–सभी जीवों ने; तन्नै नोक्कित–उसको देखा; तातुम्–उसने भी; तन् कमल कण्कळाल्–अपने कमलनेत्रों से; अण्टम् तुऱतिन् उऱै–आकाश के अण्ड के वासी; अमरर् यारैयुम्–सभी देवों को; कण्टनन्–समक्ष देखा। ५९२

आठों दिशाओं के स्थानों के और सभी लोकों के सभी जीवों ने हनुमान को देखा। हनुमान ने भी अपने कमलनेत्रों से व्योमलोकवासी देवों को देखा। ५९२

ऍळुन्दुयर् नडुन्दहै यिरण्डु पादमुम्
अळुन्दुऱ वळुत्तलि लिलङ्गै याळ्हडल्
विळुन्ददु निलमिशै विरिन्द वॆण्डिरै
तळैत्तन पुरण्डन मीनन् दामॅलाम् 593

ऍळुन्तु उयर्–इस तरह जो बढ़ा; नॆटुम् तकै–उस विश्वरूप हनुमान के; इरण्टु पातमुम्–दोनों पैर; अळुन्तुऱ–खूब दबाते हुए; अळुत्तलिल्–जमे रहे इसलिए; इलङ्कै–लंका; आळ् कटल्–गहरे समुद्र में; विळुन्ततु–मग्न हो गया; वॆण् तिरै–श्वेत तरंगें; निल मिचै विरिन्त–भूमि पर फैलीं; तळैन्तन–सब जगह भरीं; मीनम् तामॅलाम्–मछलियाँ; पुरण्टन–लोटती हुई इधर-उधर चलीं। ५९३

इस तरह जो बढ़ा था उसके दोनों पैरों ने ज़मीन को खूब दबाया। इसलिए लंका का द्वीप समुद्र में धँस गया। तब श्वेत ऊर्मियाँ भूमि पर फैल आयीं और व्याप गयीं। मछलियाँ उन तरंगों पर लोटती हुई चलने लगीं। ५९३

वञ्जियम् मरुङ्गुलम् मऱुविल् कऱ्पिताळ्
कञ्जमुम् बुरैवन कळ्लुङ् गण्डिलाळ्
तुञ्जिन रक्करॆन् ऱुवक्कुञ् जूळ्च्चियाळ्
अञ्जिनॆन् निव्वुरु वडक्कु वायॆन्ऱाळ् 594

वञ्चि अम् मरुङ्कुल्–'वञ्चि' नाम की वल्लरी के समान कटि वाली; अ मऱु इल् कऱ्पिताळ्–उस अनिंद्य पातिव्रत्यशीला; कञ्चमुम् पुरैवत–कंज-सदृश; कळ्लुम् कण्टिलाळ्–(हनुमान के) पैर नहीं देखे; अरक्कर् तुञ्चितर्–राक्षस मर गये; ऍन्ऱु उवक्कुम्–ऐसा सोचकर सुख; चूळ्च्चियाळ्–माननेवाली सीता ने; अञ्चितॆन्–भय लगती हूँ; इव् उरु–यह रूप; अटक्कुवाय्–छोटा बना लो; ऍन्ऱाळ्–कहा। ५९४

'वञ्जि' नाम की लता के समान पतली और सुन्दर कमर वाली और अनिंद्य पावन चरित्र वाली सीताजी हनुमान के कमल-चरणों को भी देख न सकीं। "बस ! अब राक्षस मर गये" —यह आनन्ददायक विचार उनके मन में आया। उन्होंने हनुमान से कहा कि हनुमान अपना रूप छोटा कर लो। मुझे डर लगता है। ५९४

❀ मुऴुवदु मिव्वुरुक् काण मुऱ्ऱिय
कुऴुविल दुलहिऩिक् कुरुहु वार्यॆऩ्ऱाळ्
ॲऴुविऩु मॆऴिलिलङ् गिरामऩ् ड्रोळ्हळैत्
तऴुविऩ ळामॆऩत् तळिर्क्कुम् जिन्दैयाळ् 595

ॲऴुविऩुम्–(स्थूल) खम्भे से बढ़कर; ॲऴिल् इलङ्कु–सुन्दरतायुक्त; इरामऩ् तोळ्कळै–श्रीराम की भुजाओं का; तऴुविऩळ् आम्–आलिंगन कर चुकी हो; ॲऩ–ऐसा; तळिर्क्कुम्–लहलहानेवाले; चिन्तैयाळ्–चित्त वाली (सीता) ने; उलकु–यह लोक; इव् वुरु मुऴुवतुम् काण–यह सम्पूर्ण रूप देखने का; मुऱ्ऱिय कुऴु इलतु–पक्व सामर्थ्य नहीं रखता; इऩि कुऱुकुवाय्–अब छोटे बन जाओ; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ५९५

देवी का मन ऐसा लहलहा उठा, मानो वह स्थूल खम्भों से भी सुन्दर श्रीराम की भुजाओं से लिपट गयी हों ! उन्होंने हनुमान की महिमा जताते हुए कहा कि इस लोक में तुम्हारे इस रूप को पूर्णरूप से देखने का सामर्थ्य नहीं है। अब इसको समेट लो और अपने यथार्थ रूप में रहो। ५९५

❀ आण्डहै यनुमनु मरुळ दामॆऩा
मीण्डनऩ् विशुम्बॆऩुम् बदत्तिऩ् मीच्चॆल्वाऩ्
काण्डलुक् कॆळियदो रुरुवङ् गाट्टिऩाऩ्
तूण्डरु विळक्कऩा ळिऩैय शॊल्लिऩाळ् 596

विचुम्पु ॲऩुम् पतत्तिऩ्–आकाश के तल से भी; मी चॆल्वाऩ्–ऊपर बढ़ता चलनेवाला; आण्टकै अनुमऩुम्–पुरुषश्रेष्ठ हनुमान भी; अरुळ् अताम् ॲऩा–आपकी आज्ञा, वही हो कहकर; मीण्टऩऩ्–लौटकर छोटा हो गया; काण्टलुक्कु ॲळियतु–देखने में सुलभ; ओर् उरुवम् काट्टिऩाऩ्–एक रूप धर लिया; तूण्टु अरु–जिसको उकसाने की आवश्यकता न रहे ऐसे; विळक्कु अऩाळ्–दीप-सी सीताजी; इऩैय चॊल्लिऩाळ्–यों बोलीं। ५९६

आकाश से भी ऊपर बढ़ता चलनेवाला हनुमान भी, 'जैसी आपकी आज्ञा' कहकर यथापूर्व हो गया। अब वह दर्शनसुलभ हो रहा। विना प्रयत्न के ही सदा प्रज्वलित रहनेवाले दीये के समान शोभापूर्ण सीताजी उससे यों बोलीं। ५९६

❀ इडन्दा युलहै मलैयोडु मिडित्ताय् विशुम्बै यिवैशुमक्कुम्
पडन्दा ळरवै यॊरुकरत्ताऱ् पऱित्ता यॆऩिनुम् बयऩिऩ्ऱाल्

नडन्दा यिडैये यॅन्ड्रालु नाणा निन्नक्कु नळिकडलैक्
कडन्दा यॅन्ड्रा लॅन्नाहुङ् गाऱ्ऱा मन्नैय कडुमैयाय् 597

काऱ्ऱु आम् अन्नैय–पवन ही सम; कटुमैयाय्–वेगवान; मलैयोटुम्–पर्वत-सहित; उलकै इटन्ताय्—भूतल को (तुमने) उखाड़ लिया; विचुम्पै इटित्ताय्–आकाश को ढहा लिया; इवै चुमक्कुम्–इनको धारण करनेवाले; पटम् ताळ् अरवै–फनों के साथ रहनेवाले साँप को; ऑरु करत्ताल् परित्ताय्—एक हाथ से छीन लिया; ऍनितुम्–ऐसा सुना जाय तो भी; पयन् इन्ऱु–वह तुम्हारे बल का सबूत नहीं हो सकता; इटैये नटन्ताय् ऍन्ऱालुम्–समुद्र-मध्य पैदल चलकर आये तो भी; निन्नक्कु नाण् आम्–(तुम्हारे बल की दृष्टि से) वह तुम्हारे लिए शरम की बात होगी; नळि कटलै–बड़े सागर को; कटन्ताय् ऍन्ऱाल्–पार किया कहना; ऍन् आकुम्–उससे तुम्हारा क्या गौरव बढ़ता। ५९७

पवन के ही समान वेगवान ! पर्वत-सहित भूमि को उखाड़ दिया; आकाश को ढहा दिया; या इनके धारक शेषनाग को एक हाथ से छीनकर दूर पटक दिया। तब भी कोई बड़ा काम नहीं हुआ ! समुद्र में पैदल चलकर आए होते तो भी वह काम तुम्हारे लिए (गौरवजनक नहीं) लज्जाजनक ही रहेगा ! इस स्थिति में तुमने समुद्र को लाँघ दिया —कहने से तुम्हारा क्या गौरव बढ़ेगा ? । ५९७

❀ आळि नॅडुङ्गै याण्डहैद नरुळुम् बुहळु मळिविन्ऱि
ऊळि पलवु निलैनिऱुत्तऱ् कॉरुव नीये युळैयानाय्
पाळि नॅडुन्दोळ् वीरानिन् पॅरुमैक् केऱ्पप् पहैयिलङ्गै
एळु कडऱ्कु मप्पुऱत्त दाहा दिरुन्द दिळिवन्ऱो 598

पाळि नॅटुम् तोळ्–स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले; वीरा—वीर; आळि–चक्रधर; नॅटुम् कै–दीर्घ भुजाओं वाले; आण्टकै तन्–पुरुषश्रेष्ठ की; अरुळुम् पुकळुम्–कृपा और यश के; अळिवु इन्ऱि–विना क्षय हुए ही; ऊळि पलवुम्–अनेक युग; निलै निऱुत्तऱ्कु–स्थापित करने के लिए; नी ऑरुवन्–तुम एक ही; उळै आनाय्–योग्य रहे; निन् पॅरुमैक्कु एऱ्प–तुम्हारे गौरव के अनुरूप; पकै इलङ्कै–शत्रुनगरी लंका; एळु कटऱ्कुम् अप्पुऱत्ततु–सातों समुद्रों के उस पार की; आकातु इरुन्ततु–बनी नहीं रही यह बात; इळिवु अन्ऱो–गौरव घटानेवाली हो गयी न। ५९८

स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले ! चक्रधर दीर्घ हाथों के श्रीराम की कृपा और यश को अनेक युगों तक अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अकेले तुम पर्याप्त बन गये हो ! यह शत्रु-नगरी लंका सातों समुद्रों के उस पार रहती तो वह तुम्हारे गौरव के अनुरूप होता। यह ऐसा नहीं रही (पर एक ही छोटे समुद्र के मध्य रही)। यह बात तुम्हारे लिए गौरववर्द्धक नहीं रही, महिमा पर कम करनेवाली रह गयी। ५९८

अऱिवु मीदे युरुवीदे याऱ्ऱ लीदे यैम्बुलत्तिऩ्
शॅऱिवु मीदे शॅयलीदे तेऱ्ऱ मीदे तेऱ्ऱत्तिऩ्
नॅऱियु मीदे निऩैवीदे नीदि यीदे निऩक्कॅऩ्ऱाल्
वॅऱिय रऩ्ऱे कुणङ्गळाल् विरिञ्जऩ् मुदला मेलाऩार् 599

निऩक्कु–तुम्हारी; अऱिवुम्–बुद्धि और; उरुवुम्–रूप और; आऱ्ऱल्–शक्ति; ऐम्पुलत्तिऩ् चॅऱिवुम्–पंचेन्द्रियों का संयम; चॅयलुम्–कृत्य; तेऱ्ऱम्–विवेक; तेऱ्ऱत्तिऩ् नॅऱियुम्–विवेक का फल; निऩैवुम्–विचार; नीति–नय; ईते–यही; ॲऩ्ऱाल्–कहा जाय तो; विरिञ्चऩ् मुतलाम्–विरंचि आदि; मेलाऩार्–उत्तम देव; कुणङ्कळाल्–अपने गुणों में; वॅऱियर् अऩ्ऱे–अभाव-ग्रस्त हैं न। ५९९

तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारा रूप, बल-विक्रम, तुम्हारा इन्द्रियसंयम, तुम्हारे कृत्य, तुम्हारा विवेक, विवेक का फल, तुम्हारे विचार, तुम्हारा नय —ओह ! ऐसा है तो विरंचि आदि देवों के पास गुणों का अभाव ही मानना चाहिए। ५९९

मिऩ्ऩे रॅयिऱ्ऱु वल्लरक्कर् वीक्क नोक्कि वीरऱ्कुप्
पिऩ्ऩे पिऱन्दा ऩल्लादोर् तुणैयि लाद पिऴैनोक्कि
उऩ्ऩा निऩ्ऱे तुडैहिऩ्ऱे ऩॊऴिन्दे ऩॆल्ला मुयिरुयिर्त्तेऩ्
ॲऩ्ऩे निरुद रॆऩ्ऩावार् नीये यॆङ्गोऩ् ऱुणैयाऩाल् 600

मिऩ् नेर्–विद्युत्-सदृश; ॲयिऱ्ऱु–दन्तोरे; वल् अरक्कर्–सबल राक्षसों की; वीक्कम् नोक्कि–बहुलता देखकर; वीरऱ्कु–वीर श्रीराम का; पिऩ्ऩे पिऱन्ताऩ् अल्लातु–अनुज को छोड़; ओर् तुणै इलात–एक सहायक न रहा; पिऴै नोक्कि–वह कमी देखकर; उऩ्ऩा निऩ्ऱेऩ्–सोच-सोचकर; उटैकिऩ्ऱेऩ्–जो भग्न हो रही थी वह मैं; ॲल्लाम् ओऴिन्तेऩ–सर्वसंशयविमुक्त हो गयी; उयिर् उयिर्त्तेऩ–राहत की साँस ली; नीये–तुम ही; ॲऩ् कोऩ्–मेरे राजा के; तुणै आऩाल्–साथी होगे तो; निरुतर् ॲऩ् आवार्–राक्षस क्या होंगे। ६००

मैंने बिजली-से दंतोरे राक्षसों की बड़ी संख्या देखकर सोचा कि श्रीवीरराघव का उनके छोटे भाई के अलावा कोई सहायक नहीं है। यह अभाव सोचकर मैं भग्नमन हो रही थी। अब वह संशय सब मिट गया। राहत की साँस ले रही हूँ। जब तुम्हीं मेरे पतिदेव के सहायक हो गये तो राक्षस क्या होंगे ? —मिट जायँगे। क्या ही आश्चर्य (हो गया) है ! । ६००

❀ माण्डे ऩॆऩ्ऩुम् बऴुदऩ्ऱे यिऩ्ऱे मायाच् चिऱैनिऩ्ऱु
मीण्डे ऩॆऩ्ऩे यॊरुत्तार्दङ् गुलङ्ग ळोडुम् वेरुत्तेऩ्
पूण्डे ऩॆङ्गोऩ् पॊलङ्गऴलुम् बुहऴे यऩ्ऱिप् पुऩ्बऴियुम्
तीण्डे ऩॆऩ्ऱु मऩमहिऴ्न्दा डिरुविऩ् कऴ़त्तुत् तिरुवऩ्ऩाळ् 601

तिरुविन्–श्रीलक्ष्मीदेवी के; कळुत्तु तिरु अन्ताळ्–कण्ठ के अहिवातसूत्र के समान देवी; माण्टेन् ऍन्तित्तुम्–मर जाऊँगी तो भी; पळुतु अन्ऱे–हानि नहीं; इन्ऱे–आज ही; माया चिऱै निन्ऱु–कभी न छूटनेवाली कारा से; मीण्टेन्–मुक्त हो गयी; ऍन्नै ओऱुत्तार्–मुझे सतानेवालों को; तम् कुलङ्कळोटुम्–उनके कुलों के साथ; वेर् अऱुत्तेन्–निर्मूल कर दिया; ऍन् कोन्–अपने पतिदेव के; पॊलम् कळलुम्–सुन्दर चरण; पूण्टेन्–धर लिये; पुकळे अन्ऱि–यश के सिवा; पुन् पळियुम्–नीच अपयश; तीण्टेन्–स्पर्श नहीं करूँगी; ऍन्ऱु–कहकर; मनम् मकिळ्न्ताळ्–आह्लादित हुईं। ६०१

स्वयं श्रीलक्ष्मीदेवी के कंठ के मंगलसूत्र (सुहाग-चिह्न) -सी देवी ने आनन्द के साथ कहा कि अब मैं मर जाऊँ तो भी कुछ नहीं बिगड़ेगा। क्योंकि मैं आज लम्बे कारागृहवास से छूट गयी। मुझे त्रास देनेवाले राक्षसों के कुल को मैंने जड़ से काट मिटा दिया। अपने पतिराज के सुन्दर चरणों को सिर पर धारण कर लिया है। यश ही यश मिल गया; अपयश से सम्पर्क नहीं रहा। ६०१

अण्णऱ् पॆरियो नडिवणङ्गि यऱिय वुरैप्पा नरुन्ददिये
वण्णक् कडलि निडैक्किडन्द मणलिऱ् पलराल् वानरत्तिन्
ऍण्णऱ् करिय पडैत्तलैव रिरामऱ् कडियार् यानवर्तम्
पण्णैक् कॊरुव नॆनप्पोन्दे नेवक् कडव पणिशॆय्वेन् 602

अण्णल् पॆरियोन्–बहुत महिमामय हनुमान; अटि वणङ्कि–चरण-वन्दना करके; अऱिय उरैप्पान्–समझाते हुए बोला; अरुन्ततिये–अरुन्धती (-समाना); इरामऱ्कु अटियार्–श्रीराम के दास; ऍण्णऱ्कु अरिय–अगणित; वानरत्तिन् पटै तलैवर्–वानरयूथपति; वण्णक् कटलिन् इटै–(काले) रंगीन समुद्र में; किटन्त–पड़े रहनेवाले; मणलिल् पलर्–बालुओं से भी अधिक अनेक हैं; यान् अवर् तम् पण्णैक्कु–मैं उनकी भीड़ में; ऒरुवन्–एक दास हूँ; ऍन्न पोन्तेन्–ऐसा भाग्य पाया हूँ; एव कटव–आज्ञापित; पणि चॆय्वेन्–सेवाएँ अदा करूँगा। ६०२

महिमा में बढ़े हुए हनुमान ने देवी से वानर-सेना की महत्ता यों कही। उसने सीताजी के चरणों पर नमस्कार करके कहा कि अरुन्धती-समाना देवी! श्रीराम के अधीन जो वानरयूथप हैं, उनकी संख्या समुद्र-तल में के बालुओं की संख्या से भी अधिक है। उनका मैं एक दास बना हूँ। उनकी आज्ञा मानकर उनकी सेवाएँ अदा करता रहता हूँ। ६०२

वॆळ्ळ मॆळ्ब वुळदन्ऱो वीरन् शेनै यिव्वॆल्लॆप्
पळ्ळ मीरुहैन् नीरळ्ळिक् कुडिक्कप् पोदुम् बात्मैयदो
कळ्ळ वरक्कर् कडियिलङ्गै काणा दॊळिन्द दालन्ऱो
उळ्ळ दुणॆयु मुळदाव दरिन्दु पिन्नु मुळदामो 603

वीरन् चेनै–श्रीराम की सेना; वॆळ्ळम् ऍळुपतु उळतु–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की है;

इ वेलै पळ्ळम् नीर्–इस समुद्र के गढ़े का जल; ऑरु कै अळ्ळि कुटिक्क–एक चुल्लू भर लेकर पीने के लिए; पोतुम् पात्मैयतो–काफ़ी होने की स्थिति में है क्या; कळ्ळ अरक्कर्–चोर राक्षसों की; ऊटि इलङ्कै–सुरक्षित लंका; काणातु ऑळिन्तताल् अन्ऱो–मरी (निगोड़ी) अलक्षित रह गयी, तभी न; उळ्ळ तुणैयुम्–अभी तक; उळतु आवतु–रही, हो गयी; अऱिन्तु–जान लेने; पिन्तुम्–के बाद; उळतु आमो–रह सकेगी क्या। ६०३

श्रीराम के साथ जो सेना है, उसकी संख्या सत्तर वॅळ्ळम् ('प्रवाह') है। यह समुद्र उनके सामने गढ़ा है। एक चुल्लू पीने के लिए भी इसका जल पर्याप्त न पड़ेगा। यह चोरों की लंका अदृश्य रह गयी। तभी न अब तक वह विद्यमान रही। उसका अस्तित्व जान लेने के बाद भी उसका अस्तित्व भी रहेगा क्या ? । ६०३

वालि यिळव लवन्मैन्दन् मयिन्दन् ऱुमिन्दन् वयक्कुमुदन्
नील निडबन् कुमुदाक्कन् पनशन् शाम्ब नॅडुञ्जाम्बन्
काल ननैय दुन्मरुडन् करम्बन् कवयन् कवयाक्कन्
ञाल मऱियु नळन्शङ्गन् विन्दन् ऱुविन्दन् मदनॅन्बोन् 604

वालि इळवल्–वाली का छोटा भाई; अवन् मैन्तन्–उस (वाली) का पुत्र; मयिन्तन्–मैन्द; तुमिन्तन्–दुर्मिद; वय कुमुतन्–बलिष्ठ कुमुद; नीलन्–नील; इटपन्–ऋषभ; कुमुताक्कन्–कुमुदाक्ष; पनचन्–पनश; चाम्पन्–जाम्ब; नॅटुम् चाम्पन्–वृद्ध जाम्बवान; कालन् अनैय–काल-सम; तुन्मरुटन्–दुर्मर्ष; करम्पन्–करम्ब; कवयन्–गवय; कवयाक्कन्–गवयाक्ष; ञालम् अऱियुम्–विश्वविख्यात; नळन्–नल; चङ्कन्–शंख; विन्तन्–विन्द; तुविन्तन्–दुविन्द; मतन् ऍन्पोन्–मदन। ६०४

वाली का भाई सुग्रीव, वाली का पुत्र अंगद, मैन्द, दुर्मिद, बली कुमुद, नील, ऋषभ, कुमुदाक्ष, पनश, जाम्ब, वृद्ध जाम्बवान, कालदेव-सम दुर्मर्ष, करंब, गवय, गवयाक्ष और विश्वविख्यात नल, शंख, विन्द द्विन्द, मदन; । ६०४

तम्बन् ऱूमत् तनिप्पॅरोन् ऱदियिन् वदनन् शदवलियॅन्
ऱिम्ब रुलहो डॅव्वुलहु मॅडुक्कु मिडुक्क रिरामन्गै
अम्बि नुदवुम् पडैत्तलैव रवरै नोक्कि निव्वरक्कर्
वम्बिन् मुलैया युरैयिडवुम् बोदार् कणक्कु वरम्बुण्डो 605

तम्पन्–थम्ब; तूम तनि पॅयरोन्–धूम्र नाम का वह; ततियिन् वतनन्–दधिमुख; चतवलि–शतवली; ऍन्ऱु–नाम के; इम्पर् उलकोटु–इस भूलोक के साथ; ऍव्वुलकुम्–सभी लोकों को; ऍटुक्कुम्–उठाने की; मिटुक्कर्–शक्ति रखनेवाले; इरामन् कै अम्पिन्–श्रीराम के हस्तशर के समान; उतवुम्–सहायता देनेवाले; पटै

तलैवर्–यूथप; वरम्पु उण्टो–(क्या) सीमा भी है; अवरै नोक्किन्–उनको लेकर विचार करें तो; वम्पिन् मुलैयाय्–अँगियाबद्ध स्तनों वाली देवी; इव् अरक्कर्–ये राक्षस; उरै इटवुम् पोतार्–अदद के रूप में भी काफ़ी नहीं होंगे। ६०५

थम्ब, धूम्र, दधिमुख, शतबली —ऐसे नामों के वे इस लोक के साथ सारे लोकों को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले हैं। श्रीराम के हाथ के शरों के समान सद्योपकारी हैं। उनकी शक्ति और संख्या की कोई भी सीमा है क्या ? (नहीं)। अँगियाबद्ध स्तनों वाली माते ! उनकी संख्या देखो तो ये राक्षस सांकेतिक अदद के लिए भी पर्याप्त नहीं होंगे। (तमिऴ में 'उरै' उसको कहते हैं जिसे अत्यधिक संख्या के पदार्थों को गिनते वक़्त प्रतिनिधि अदद के रूप में रखा जाता है। उदाहरणार्थ— किसी पदार्थ के एक हज़ार को गिनने पर उन पदार्थों में से एक लेकर अलग रखा जाता है। पूरा गिनने के बाद "उरै यों" की संख्या का हज़ार से गुना करके पूरी संख्या आँकी जाती है।)। ६०५

शॅन्ऱे नडिये नुनक्किन्तल् शिऱिदे युणर्त्तु मत्तुणैयुम्
अन्ऱे यरक्कर् वरुक्कमुड नडैव दल्ला दरियिन्गै
मन्ऱे कमऴुन् दॊडैयन्ऱे निरुदन् कुऴुवु मानहरुम्
ॲन्ऱे यिरैञ्जिप् पिन्नरुमॊन् ऱिशैप्पा नुणर्न्दा नीऱिल्लात् 606

अटियेन् चॅन्ऱेन्–मैं जाकर; उनक्कु इन्तल्—आपके दुःख को; चिऱिते–किंचित् भी; उणर्त्तुम्–ज्योंही बताऊँगा; अत्तुणैयुम्–त्योंही; अरक्कर् वरुक्कम्–राक्षसवर्ग; उटन् अटैवतु–एक साथ (वानरों के हाथ) पड़ जायँगे; अल्लातु–वही नहीं; निरुतन्– कुऴुवुम्–रावण का सारा परिवार; मा नकरुम्–और उसका बड़ा नगर; अरियिन् कै–वानरों के हाथ में; मन्ऱे कमऴुम्–सुगन्धि-निसारक; तॊटै अन्ऱे–पुष्पमाला बन जायँगे न; ऍन्ऱे–ऐसा, साफ़ कहकर; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; पिन्नरुम्–फिर भी; ईऱिल्लान्–अनन्तआयु ने; ऒन्ऱु इचैप्पान्—एक बात कहने की; उणर्न्तान्–सोची। ६०६

दास मैं जाऊँ और आपका संकट थोड़ा ही समझाऊँ, इतने में ही राक्षसों का वर्ग ही नहीं, पर रावण के सारे परिवार और लंका नगर वानरहस्तगत सुगन्धित पुष्पमाला (यानी छिन्न-भिन्न) बन जायगी। (तमिऴ में मसल मशहूर है— वानरहस्तगत पुष्पमाला-सा। —बन्दर उसका नाश कर देता है।) हनुमान ने देवी को वानरों की शक्ति का साफ़ परिचय दिया। फिर उसने उनके चरणों पर नमस्कार किया। अनन्तआयु (चिरंजीव) हनुमान ने और एक बात कहनी चाही। ६०६

5. चूडामणिप् पडलम् (चूडामणि पटल)

❀ उण्डुतुणै यॆऩ्ऩलॆळि दोवुलहि नम्मा
पुण्डरिहै पोलुमिव ळिऩ्ऩल्पुरि हिऩ्ऱाळ्
अण्डमुद नायहऩ दावियनै याळैक्
कॊण्डहलुव देहरुम मॆऩ्ऱुणर्वु कॊण्डाऩ् 607

पुण्टरिकै पोलुम् इवळ्–पुण्डरीकनिलया-सी ये; इऩ्ऩल् पुरिकिऩ्ऱाळ्–दुःख करती हैं; उलकिल्–संसार में; तुणै उण्टु–इसकी समानता है; ऎऩ्ऩल्–कहना; ऎळितो–सुलभ है क्या; अण्टम्–अण्डों के; मुतल् नायकऩतु–आदिनायक श्रीराम के; आवि अऩैयाळै–प्राण-समाना को; कॊण्टु अकल्वते–ले जाना ही; करुमम्–उचित कर्म है; ऎऩ्ऱु उणर्वु कॊण्टाऩ्–ऐसा विचार किया; अम्मा–माँ। ६०७

हनुमान ने यों सोचा— पुण्डरीकनिलया श्रीलक्ष्मीदेवी, ये बहुत कष्ट पा रही हैं। मैया ! इनके दुःख के समान दुःख कहीं पाना भी सुलभ है क्या ? इन आदि अण्डनायक श्रीराम की देवी को ले जाना ही श्लाघ्य होगा। ६०७

❀ केट्टियडि येनुरै मुनिन्दरुळल् केळाऩ्
वीट्टियिडु मेलवनै वेऱल्विनै यऩ्ऱाल्
ईट्टियिनि यॆऩ्बयऩि रामऩॆदिर् निऩ्ऩैक्
काट्टियडि ताळ्वॆऩिदु काण्डियिदु कालम् 608

अटियेऩ् उरै–मेरा वचन; केट्टि–सुनिए; मुनिन्तरुळल्–कोप मत करें; केळाऩ्–शत्रु रावण; वीट्टियिटुमेल्–मार देगा तो; अवऩै वेऱल्–(बाद) उसको मारना; विऩै अऩ्ऱु–(अर्थपूर्ण) काम नहीं होगा; ईट्टि–बातें बनाने से; इऩि ऎऩ् पयऩ्–अब क्या लाभ है; निऩ्ऩै–आपको; इरामऩ् ऎतिर् काट्टि–श्रीराम के (पास ले जाकर) समक्ष दिखाकर; अटि ताळ्वॆऩ्–चरणों पर नमस्कार करूँगा; इतु काण्टि–आप यह देख लें; इतु कालम्–यही योग्य काल है। ६०८

मेरी बात सुनिए। कोप मत कीजिए। रावण आपको मार देगा तो उसके बाद उसे मारना कोई सार्थक कार्य नहीं होगा। बातें करने से क्या लाभ ? आपको श्रीराम के सामने (ले जा) दिखाकर मैं उनके चरणों में नमस्कार करूँगा। आप देखें। यही समय है। ६०८

❀ पॊऩ्ऱिणि पॊलङ्गॊडियॆऩ् मॆऩ्मयिर् पॊरुन्दित्
तुऩ्ऱिय पुयत्तिऩि दिरुत्तिदुयर् विट्टाय्
इऩ्ऱियिल् विळैक्कवॊ रिमैप्पिऩिऱै वेहुम्
कुऩ्ऱिडै युनैक्कॊडु कुदिप्पॆऩिडै कॊळ्ळेऩ् 609

पॊऩ् तिणि–स्वर्णमय; पॊलम् कॊटि–सुन्दर लता-सी देवी; ऎऩ्–मेरे; मॆऩ्

मयिर् तुन्रि पोरुन्तिय–कोमल बालों से भरे; पुयत्तु–कन्धों पर; इनितु इरुत्ति–सुख से रहिए; तुयर् विट्टाय्–दुःख दूर कर लेंगी; इन् तुयिल् विळैक्क–सुखद निद्रा होगी और; ओर् इमैप्पिन्–पलक झपकते; इऱै वैकुम्–जहाँ भगवान श्रीराम रहते हैं; कुन्रिटै–उस पर्वत पर; उन्नै कोंटु–आपको लिये हुए; कुतिप्पॅन्–कूदूँगा; इटै कोळ्ळेन्–बीच में नहीं ठहरूँगा। ६०६

स्वर्णमय सुन्दर लता-समाना देवी ! आप मेरे कोमल बालों से युक्त कन्धों पर सुख से आसीन हो जाइए, दुःख से विमुक्त हो जाइए ! सुख से सो जाइए; एक पल में आपको ले उस पर्वत पर कूद पड़ूँगा जिसमें हमारे देव प्रभु श्रीराम ठहरे हुए हैं। ६०९

❀ अरिन्दिडै यरक्कर्तोडर् वार्हळुळ रामेल्
मुरिन्दुदिर नूरियॅन् मनच्चिन मुडिप्पॅन्
नॅरिन्दकुळ निन्निलैमै कण्डुनॅडि योन्बाल्
वॅरुङ्गैबॅय रेनॊरुव रानुम्विळि यादेन् 610

नॅरिन्त कुळल्–घुँघुराली केशिनी; अरक्कर् अरिन्तु–राक्षस जानकर; इटै तोटर्वार्कळ् उळर्–बीच में लड़ते; आमेल्–बनेंगे तो; ओरुवरानुम्–किसी से भी; विळियातेन्–मारा नहीं जाऊँगा; मुरिन्तु–छिन्न-भिन्न होकर; उतिर–गिर जायें ऐसा; नूरि–उन्हें मारकर; ॲन् मन चिनम्–अपने मन का क्रोध; मुटिप्पॅन्–उतारूँगा; निन् निलैमै–आपकी स्थिति; कण्टुम्–देखने के बाद भी; नॅटियोन् पाल्–ऊँचे क़द के श्रीराम के पास; वॅरुम् कै–खाली हाथ; पॅयरेन्–नहीं जाऊँगा। ६१०

घुँघराले केश वाली देवी ! अगर राक्षस लोग इसकी टोह पाकर बीच में रुकावट डालेंगे तो मैं मरूँगा नहीं। (मुझे अमरता का वर मिला है।) उनको चूर-चूर करके मार दूँगा और अपना कोप साध लूँगा। आपको इस स्थिति में देखने के बाद मैं विष्णु-रूप श्रीरामचन्द्र के पास खाली हाथ नहीं जाऊँगा। ६१०

इलङ्गैयोडु मेहुदिहॊ लॆन्निनु मिडन्वॅन्
वलङ्गोळोरु कैत्तलैयिन् वैत्तॅदिर् तडुप्पान्
विलङ्गिनरै नूरिवरि वॅञ्जिलैयि नोर्दम्
पोलङ्गोळ्कळ् ऱाळ्हुवॅनि दन्नैपोरु ळन्ऱाल् 611

अन्नै–माते; इलङ्कैयोटुम् एकुति–लंका के साथ ही ले जाओ; ॲन्नितुम्–कहेंगी तो भी; इटन्तु–उखाड़ लेकर; ॲन्–अपने; वलम् कोळ् ओरु कैत्तलैयिल् वैत्तु–दाहिने हाथ पर रखे; ॲतिर् तटुप्पान्–सामने रोकने आये; विलङ्कितरै–शत्रुओं को; नूरि–मारकर; वरि वॅम् चिलैयितोर् तम्–सबन्ध भयंकर धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण के; पोलम् कोळ् कळल्–सौन्दर्ययुक्त चरणों पर; ताळ्कुवॅन्–नमन करूँगा; इतु पोरुळ् अन्रु–यह कोई (बड़ी) बात नहीं है। ६११

माते ! अगर आप यह कहें कि लंका के साथ मुझे ले जाओ, तो उसे

उखाड़ लेकर अपने दाहिने हाथ में रख लूँगा और सामने रोकने आनेवालों को मारकर सबंध कठोर धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण के पास जाऊँगा और उनके सुन्दर पायलधारी चरणों पर नमस्कार करूँगा। यह कोई बड़ी चीज़ नहीं है। ६११

❀ अरुन्ददियु रैत्तियळ् हऱ्करुहु शॅन्ऱुन्
मरुन्दनैय देविनॅड्ड वञ्जर्शिऱै वॆप्पिल्
पॆरुन्दुयरि नोडुमीरु वीडुपॆऱु हिल्लाळ्
इरुन्दनळॆ न्ऩप्पहरि नॆन्ऩडिमै यॆन्ऩाम् 612

अरुन्तति–अरुन्धती-समाना; अळकर्कु अरुकु चॆन्ऱु–श्री सुन्दर राम के पास जाकर; उन् मरुन्तु अऩैय तेवि–आपकी अमृत-सम देवी; वञ्चर्–वंचकों की; नॆट्टु चिऱै वॆप्पिल्–बड़ी कारा में; पॆरुम् तुयरित्तोटुम्–बड़े दुःख के साथ; ऒरु वीटु पॆऱुकिल्लाळ्–मुक्ति पाये विना; इरुन्तऩळ्–रहीं; ऍऩ–यह; पकरिन्–कहूँगा तो; ऍन् अटिमै–मेरी दासता; ऍन् आम्–क्या (अर्थ रखती) होगी; उरैत्ति–बताइए। ६१२

अरुन्धती-सी देवी! अगर मैं सुन्दरमूर्ति श्रीराम के पास जाकर यह कहूँ कि 'आपकी अमृत-सम देवी वंचकों की दीर्घ बन्दिनी की स्थिति में हैं; किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं' तो मेरी सेवकाई क्या रही? आप ही सोचकर कहें। ६१२

❀ पुण्डॊडर्व हऱ्ऱियपु यत्तिऩॊडु पुक्केन्
विण्डवर्व लत्तैयुम् विरित्तुरै शॆय्हेऩो
कॊण्डुवरु हिऱ्ऱिलॆ नुयिर्क्कुऱुदि कॊण्डेन्
कण्डुवरु हिऱ्ऱिलॆन नक्कळऱु हेऩो 613

पुण् तॊटर्वु अकऱ्ऱिय–व्रण न लगी; पुयत्तिऩॊटु–भुजाओं के साथ; पुक्केन्–पहुँचूँ; विण्टवर् वलत्तैयुम्–शत्रुओं का बल और; विरित्तु–विस्तार के साथ; उरै चॆय्केऩो–बखानूँ; कॊण्टु वरुकिऱ्ऱिलेन्–नहीं ले आया; उयिर्क्कु उऱुति कॊण्टेन्–प्राणों का हित कर लिया; कण्टु वरुकिऱ्ऱिलेन्–देख न आ सका; ऍऩ–ऐसा; कळऱुकेऩो–कहूँ क्या। ६१३

मैं स्वयं व्रणविहीन भुजाएँ लेकर जाऊँ और शत्रु का बल बखानूँ? उनसे कहूँ कि सीताजी को नहीं ले आ सका! अपने प्राण ही बचा सका। सीताजी से मिला भी नहीं!। ६१३

इरुक्कुमदिल् शूऴ्हडियि लङ्गैयैयि मैप्पिन्
उरुक्कियॆरि यालिहल रक्करैयु मॊन्ऱा
मुरुक्किनिरु दक्कुलमु डित्तुविनै मुऱ्ऱिप्
पॊरुक्कवहल् हॆन्ऩिनुम दिन्ऱुपुरि हिन्ऱेन् 614

मतिल् चूऴ् इरुक्कुम्–प्राचीरों से घिरी; कटि इलङ्कैयै–सुरक्षित लंका को; इमैप्पितृ–पलक झपकते; ॲरियाल् उरुक्कि–आग में पिघला कर; इकल् अरक्करैयुम्–शत्रु राक्षसों को; ऒन्ऱा मुरुक्कि–एकत्र मारकर; निरुत कुलम् मुटित्तु–राक्षस कुल का नाश करके; वित्तै मुड्रि–कर्तव्य पूरा करके; पोरुक्क अकल्क–शीघ्र जाओ; ॲन्ऱितुम्–कहेंगी तो भी; अतु–वह; इन्ऱु–आज; पुरिकिन्ऱेन्–करूँगा। ६१४

प्राचीर-सहित लंका को पलक झपकते आग से पिघला डालो; युद्ध करने आनेवाले राक्षसों को एक साथ मारो। राक्षसकुल को ही मटियामेट कर दो। यह सब करके शीघ्र चलो। —अगर आपकी यही आज्ञा हो तो अभी वैसा कर दूँगा। ६१४

इन्दुनुद निन्नॊडव णॆय्दियिहल् वीरन्
शिन्दैयुरु वॆन्दुयरद विरन्दतॆळि वोडुम्
अन्दमिल रक्करहुल मड्रविय नूरि
नन्दलिल्पु विक्कणिडर् पिऱ्कळैद नन्ऱाल् 615

इन्तु नुतल्–चन्द्र-ललाटिनी; निन्नॊटु–आपके साथ; अवण् ॲय्ति–वहाँ जाकर; इकल् वीरन्–युद्धवीर श्रीराम का; चिन्तै उरु वॆम् तुयर्–मानसिक सन्ताप; तविर्न्त तॆळिवोटुम्–दूर होने से जो होगी उस निश्चिन्तता के साथ; अन्तम् इल्–निस्सीम; अरक्कर् कुलम्–राक्षसकुल को; अऱ्ऱु अविय–मार मिटाते हुए; नूरि–हत कर; नन्तल् इल्–अक्षय; पुविक्कण्—भूतल में; इटर्–दुःख को; पिन् कळैतल्–बाद दूर करना; नन्ऱु–अच्छा होगा। ६१५

चन्द्र-सम भाल वाली ! आपको उधर ले जाऊँगा। युद्धवीर श्रीराम का कठोर दुःख दूर हो जायगा। उससे उत्पन्न निश्चिन्तता के साथ, बाद, इधर आऊँ राक्षसों के वर्गों को निर्मूल करूँ और उनका नाश करके अक्षय भूमि का संकट दूर करूँ —यही श्लाघ्य लगता है। ६१५

❀ वेऱिनिवि ळम्बवुळ दन्ऱुविदि यालिप्
पेरुपॆऱ वॆन्गणरु डन्दरुळु पिन्बोय्
आऱुदुय रञ्जॊलिळ वञ्जियडि यन्ऱोळ्
एऱुहडि दॆन्ऱुतॊऴु दिन्नडिप णिन्दान् 616

अम् चॊल्–मधुरवाणी; इळ वञ्चि–बाललता-सी भगवती; वेऱु–अन्य; इत्ति विळम्प–अब कहने के लिए; उळतु अन्ऱु–है नहीं; वितियाल्–आज्ञा करें तो; इप्पेऱु पॆऱ–यह सौभाग्य पाने का; ॲन् कण्–मुझे; अरुळ् तन्तरुळ्–मौका देने की कृपा कीजिए; पिन् पोय्–बाद; तुयरम् आऱु–दुःख शान्त कर लीजिए; अटियन् तोळ्–मेरे कन्धों पर; कटितु एऱु–शीघ्र चढ़ जाएँ; ॲन्ऱु–ऐसा; तॊऴुतु–विनय करके; इन् अटि–सुखदायक चरणों पर; पणिन्तान्–नमस्कार किया। ६१६

मधुरभाषिणी 'वञ्जि' लता-सी भगवती ! आगे कहने को कुछ नहीं है। आप आज्ञा दें और मुझे यह सौभाग्य प्राप्त कराने की दया करें

आप भी उनके पास पहुँचकर दुःखविमुक्त हो सुखी रहें। चढ़िए मेरे कन्धे पर शीघ्र। हनुमान ने यह विनय करके उनके सुखद चरणों में नमस्कार किया। ६१६

एय नन्मॉऴि यॅय्द विळम्बिय, तायै मुन्निय कन्ऱनै यान्ऱनक्
काय दन्मै यरियदन् ऱामॅनत्, तूय मॅन्शॉऱ् लिनैयन शॊल्लिनाळ् 617

एय नल् मॉऴि–योग्य अच्छे वचन; ऍय्त विळम्पिय–उचित रीति से जिसने कहा; तायिन् मुन्निय–अपनी माता (गाय) के सामने स्थित; कन्ऱु अनैयान् तनक्कु–बछड़े-समान उससे; आय तन्मै–वह प्रकार; अरियतु अन्ऱाम्–(तुम्हारे लिए) कठिन नहीं; ऍन्न–कहकर; इनैयन–यों; तूय मॅन् चॉल्–पवित्र कोमल बातें; चॊल्लिनाळ्–सीताजी बोलीं। ६१७

हनुमान ने योग्य ही शब्द उचित प्रकार से कहा। गाय के समक्ष बछड़े के समान उससे देवी ने यों कहा। तुमने जो कहा, वह तुम्हारे लिए असाध्य नहीं। उन्होंने आगे पवित्र और कोमल ये वाक्य कहे। ६१७

अरिय दन्ऱुनिन् ऩाऱ्ऱलुक् केऱ्ऱदे, तॅरिय वॅण्णिनै शॅय्वदुञ् जॅय्दिये
उरिय दन्ऱॅन वोर्हिन्ऱ दुण्डदॅन्, पॅरिय पेदैमैच् चिन्मदिप् पॅण्मैयाल् 618

अरियतु अन्ऱु–कठिन नहीं; निन् आऱ्ऱलुक्कु–तुम्हारे बल-विक्रम के; एऱ्ऱते–योग्य ही; तॅरिय ऍण्णिनै–सोच-समझकर विचारा है; चॅय्वतुम् चॅय्तिये–कर भी दोगे; अतु–वह कार्य; ऍन्–अपने; पॅरिय पेतैमै–बड़ी मूर्खता; चिन्मति–कम बुद्धिमत्ता; पॅण्मैयाल्–के स्त्रीत्व के कारण; उरियतु अन्ऱु–उचित नहीं; ऍन्न–ऐसा; ओर्किन्ऱतु–सोचना; उण्टु–(पड़ता) है। ६१८

हाँ! वह काम असाध्य नहीं। अपनी शक्ति के अनुसार ही तुमने विचारा है। तुम करोगे भी। पर मेरी तुच्छ बुद्धि के स्त्रीत्व के कारण वह ठीक नहीं लगता। ६१८

वेलै यिन्निडै येवनदु वॅय्यवर्, कोलि वॅञ्जर निन्नॊडुङ् गोत्तपो
दाल मन्नवर्क् कल्लैयॅर् कल्लैयाल्, शाल वुन्ददु माऱुन् दनिमैयोय् 619

वॅय्यवर्–सन्तापक (राक्षस); वेलैयिन् इटैये वन्तु–समुद्र में (जाते समय) बीच में आकर; कोलि–तुम्हें घेरकर; निन्नॊटुम्–तुम पर; वॅम् चरम्–भयंकर शर; कोत्त पोतु–(धनु पर) लगाकर जब मारें तब; आलम् अन्नवर्क्कु–हलाहल-सम उनसे; अल्लै–न लड़ सको; ऍर्कु–और मुझे; अल्लै आल्–बचा न सको, बनोगे; तनिमैयोय्–एकाकी; चालवुम् तट्टुमाऱुम्–तब हमारा मन अस्त-व्यस्त हो जायगा। ६१९

मानो कि मुझे समुद्र के ऊपर ले जाते समय बीच में राक्षस आ जाते हैं और तुम पर भयंकर शर-वर्षा करते हैं। तब तुम न अपने (हितकारी) हो सकते हो, न मेरे। एकाकी हो तब मेरा मन भी अस्त-व्यस्त होगा और तुम्हारा मन भी। ६१९

अऩ्ऱि युम्बिऱि दुळ्ळदॊऩ् ऱारियऩ्, वॆऩ्ऱि वॆञ्जिलै माशुणुम् वेऱिऩि
नऩ्ऱि यॆऩ्बदम् वञ्जित्त नायह्ळिऩ्, निऩ्ऱ वञ्जऩै नीयु निऩैत्तियो 620

अऩ्ऱियुम्–और भी; पिऱितु ऑऩ्ऱु–अन्य एक (बात); उळ्ळतु–है; आरियऩ्–पूज्य श्रीराम के; वॆऩ्ऱि वॆम् चिलै–विजयी कठोर धनु; माचु उणुम्–कलंकित हो जायगा; इऩि वेऱु–और भी एक दूसरी बात है; नऩ्ऱि ऎऩ्पतम्–लोकक्षेमार्थ रचित यज्ञ की हवि को; वञ्चित्त–वंचना से ले जानेवाले; नायकळिऩ् निऩ्ऱ–कुत्तों के पास जो रहती है; वञ्चऩै–वह वंचक बुद्धि; नीयुम् निऩैत्तियो–तुमने भी सोची क्या। ६२०

और भी एक बात है। पूज्य श्रीराम के विजयी धनु पर कलंक लग जायगा। इसके अलावा और भी एक कारण है। तुम भी उन वंचक कुत्तों का-सा विचार अपने मन में लाये जो लोकरक्षक यज्ञ की हवि को वंचना से चुरा ले जाते हों! । ६२०

कॊण्ड पोरिलॆङ् गॊऱ्ऱवऩ् विऱ्ऱॊळिल्, अण्ड रेवरु नोक्कवॆऩ् ऩाक्कैयैक्
कण्ड पोररक् कऩ्विऴि काहङ्गळ्, उण्ड पोदऩ्ऱि यानुळॆ ऩावॆऩो 621

कॊण्ट पोरिऩ्–आगामी युद्ध में; ऎऩ् कॊऱ्ऱवऩ्–मेरे राजा के; विल् तॊऴिल्–धनुकर्म को; अण्टर् एवरुम् नोक्क–सभी देवों के देखते (विस्मय करते) रहते; ऎऩ् आक्कैयै–मेरे शरीर को; कण्ट–जिसने देखा; पोर् अरक्कऩ् विऴि–युद्धरत राक्षसों की आँखों को; काकङ्कळ्–कौए; उण्ट पोतु अऩ्ऱि–जब खाएँगे तब के सिवा; याऩ् उळॆऩ् आवॆऩो–मैं सचमुच जीऊँगी क्या। ६२१

देखो। आगामी युद्ध में देवों के मेरे श्रीराजाराम का धनुकार्य देखते रहते कौए राक्षस रावण की उन आँखों को खाएँगे, जिन्होंने मेरे पावन शरीर को कुदृष्टि से देखा था। तभी मैं कृतकृत्य होऊँगी। अन्यथा नहीं। ६२१

वॆऱ्ऱि नाणुडै विल्लियर् विऱ्ऱॊऴिल्, मुऱ्ऱ नाणिल रक्कियर् मूक्कॊडुम्
अऱ्ऱ नाणिऩ रायिऩ पोदऩ्ऱिप्, पॆऱ्ऱ नाणमुम् बॆऱ्ऱिय दाहुमो 622

वॆऱ्ऱि नाण् उटै–विजयी डोरे-सहित; विल्लियर्–धनुर्धर; विल् तॊऴिल् मुऱ्ऱ–अपने धनुओं का कार्य साध लें; नाण् इल् अरक्कियर्–निर्लज्ज राक्षसियाँ; अऱ्ऱ मूक्कॊटुम्–नासिकाहीन और; अऱ्ऱ नाणिऩर्–मंगल-सूत्र रहित (विधवाएँ बनकर); आयिऩ पोतऩ्ऱि–नहीं बनेंगी तब तक; पॆऱ्ऱ नाणमुम्–मेरी लज्जा (मेरा मान); पॆऱ्ऱियतु आकुमो–अर्थयुक्त रहेगी क्या। ६२२

विजयशील डोरों-सहित धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण धनु का कार्य साधेंगे और निर्लज्ज राक्षसियाँ नासिका (आभरणों) से और मंगलसूत्रों से हीन हो जायँगी। तभी न मेरी लाज रहेगी! नहीं तो रहेगी क्या? (इस पद में आये 'नाण्' शब्द के तीन अर्थ हैं— धनु का डोरा,

लज्जा या मान और मंगल-सूत्र जो दक्षिण में अहिवात के चिह्न के रूप में विवाह के अवसर पर वर द्वारा वधू को पहनाया जाता है। वह सूत्र हमेशा नूतन रखा जाता है। जर्जर होने पर तुरन्त बदल दिया जाता है।)। ६२२

पॊऱ्पि ऱङ्गलि लङ्गै पॊरुन्दलर्
ॲऱ्पु माल्वरै याहिल देयॆनिऩ्
इऱ्पि ऱप्पुमॊ ऴुक्कुमि ऴुक्कमिल्
कऱ्पुम् याऩ्बिऱर्क् कॆङ्ङऩङ् गाट्टुहेऩ् 623

पॊऩ् पिऱङ्कल्–स्वर्ण-पर्वत पर स्थित; इलङ्कै–लंका; पॊरुन्तलर्–अमित्रों की; ॲऱ्पु माल् वरै–हड्डियों का बड़ा पर्वत; आकिलते ॲऩिऩ्–नहीं बनेगी तो; इल् पिऱप्पुम्–उत्तम कुल मे जन्म; ऒऴुक्कुम्–और अपना सदाचरण; इऴुक्कम् इल् कऱ्पुम्–निर्दोष पातिव्रत्य; याऩ्–मैं; पिऱर्क्कु–दूसरों को; ॲङ्ङऩम्–कैसे; काट्टुकेऩ्–प्रमाणित करूँगी। ६२३

यह स्वर्णनगरी लंका हड्डियों की गिरि न बनी तो मैं अपने उत्तमकुल-जन्म, सदाचार और अनिंद्य पातिव्रत्य को कैसे प्रमाणित कर सकूँगी ?। ६२३

अल्लल् माक्क ळिलङ्गैय दाहुमो, ॲल्लै नीत्त वुलहङ्गळ् यावुमॆऩ्
शॊल्लि ऩाऱ्चुडु वेऩ्दु तूयवऩ्, विल्लि ऩाऱ्ऱर्कु माशॆऩ्ऱु वीशिऩेऩ् 624

अल्लल् माक्कळ्–परपीडक पशु के समान राक्षसों को; इलङ्कैयतु आकुमो–लंका तक सीमित रहेगी क्या; ॲल्लै नीत्त–निस्सीम; उलकङ्कळ् यावुम्–सारे लोकों को; ॲऩ् चॊल्लिताल्–अपने शाप से; चुटुवेऩ्–जला डालूँगा; अतु–वह; तूयवऩ्–पवित्र श्रीराम के; विल्लिऩ् आऱ्ऱर्कु–धनु की शक्ति के लिए; माचु–कलंक होगा; ॲऩ्ऱु–मानकर; वीचितेऩ्–फेंक दिया। ६२४

सुनो ! मैं शाप दे दूँ तो केवल लंका तक ही उसकी नाशकारी शक्ति सीमित रहेगी ? नहीं, निस्सीम सारे लोकों को जला डालूँगी। पर ऐसा करने से पावनमूर्ति श्रीराम के विजयकोदण्ड की शक्ति पर बट्टा लग जायगा। इसलिए मैंने उस विचार को एक दम त्याग दिया है !। ६२४

वेऱु मुण्डुरै केळदु मॆय्म्मैयोय्, एऱु शेवहऩ् मेनियल् लालिडै
आऱु मैम्बॊऱि निऩ्ऩैयु माणॆऩक्, कूऱु मिव्वुरुत् तीण्डुदल् कूडुमो 625

मॆय्म्मैयोय्–सत्यवती; उरै वेऱुम् उण्टु–बात और भी है; अतु केळ्–वह भी सुनो; एऱु चेवकऩ्–बढ़ते यश के वीर के; मेति अल्लाल्–शरीर के सिवा; इटै–मध्य; आऱुम् ऐम्पॊऱि–संयत पञ्चेन्द्रिय के; निऩ्ऩैयुम्–तुमको भी; इ उरु–यह आकार; आण् ॲऩ–पुरुष ही; कूऱुम्–(जिसको) लोग कहेंगे; तीण्टुतल्–स्पर्श करना; कूटुमो–(सही) हो सकेगा क्या। ६२५

सत्यानुगामी ! और भी एक कारण है ! दिने-दिने बढ़नेवाली वीरता के अपने नाथ श्रीराम के शरीर के सिवा इन्द्रिय-संयमी तुम्हारा भी स्पर्श कर सकूँगी क्या ? क्योंकि लोग तुम्हारे इस शरीर को पुरुष ही तो मानते हैं ! । ६२५

तीण्डि ऩार्ॆऩि ऩित्तनै शेण्बहल्, ईण्डु मोवुयिर् मॆय्यि ऩिमैप्पिऩ्मुऩ्
माण्डु तीर्वऩॆऩ् ऱॆनिलम् वऩ्कैयाल्, कीण्डु हॊण्डॆऴुऩ् देहिऩऩ् कीऴ्मैयाऩ् 626

कीऴ्मैयाऩ्–नीच-स्वभाव रावण; तीण्टिऩाऩ् ऎऩिऩ्–स्पर्श करता तो; इत्तनै चेण् पकल्–इतने लम्बे दिन; उयिर्–प्राण; मॆय्यिल्–शरीर में; ईण्टुमो–टिके रहते क्या; इमैप्पिऩ् मुऩ्–पलक मारने की देर के अन्दर ही; माण्टु तीर्वऩ् ऎऩ्ऱे–मर जाती, समझकर ही तो; निलम्–भूमि को ही (मेरे साथ); वऩ् कैयाल्–कठोर हाथों से; कीण्टु कॊण्टु–उखाड़ लेकर; ऎऴुन्तु एकिऩऩ्–ऊपर उठकर (आकाशमार्ग से) गया । ६२६

नीच-मन रावण ने मेरा स्पर्श किया होता तो क्या इतने दीर्घ दिन मेरे प्राण शरीर में टिके रहते ? रावण को मालूम था कि अगर वह मुझे छूता तो पलक झपते मैं मर जाती । इसीलिए वह अपने कठोर हाथों से पर्णशाला के साथ भूमि को भी खोद ले आकाश में उठ आया । ६२६

मेवु शिन्दॆयिऩ् मादरै मॆय्तॊडिल्, तेवु पॊऩ्ऱलै शिन्दुह नीयॆऩप्
पूविऩ् वन्द पुरादऩ ऩॆपुहल्, शाव मुण्डॆऩ दारुयिर् तन्ददाल् 627

मेवु चिन्तै इल्–मिलने की इच्छा न रखनेवाली; मातरै–स्त्रियों को; नी मॆय् तॊटिल्–तुम शरीर छुओगे तो; तेवु–दैवी वर प्राप्त; पॊऩ् तलै–स्वर्णकिरीटयुक्त सिर; चिन्तुक–कटकर गिर जायँ; ऎऩ–ऐसा; पूविऩ् वन्त–कमलपुष्प पर प्रकट; पुरातऩऩ् पुकल्–पुरातन पुरुष ब्रह्मा का ही कहा हुआ; चावम् उण्टु–शाप एक है; ऎऩ्ऱतु–(उसी ने); आरुयिर्–मेरे प्राण; तन्ततु–सुरक्षित रखे । ६२७

और एक शाप है जिसको कमलपुष्प पर प्रगट पुरातनदेव ब्रह्मा ने स्वयं उसे दिया था । जो तुमको नहीं चाहतीं उन स्त्रियों को बलात् स्पर्श करोगे तो तुम्हारे दिव्यवरसंयुक्त और स्वर्णकिरीटयुक्त सिर खण्डित होकर चू जायँगे । उसी शाप ने मुझे प्राणदान दिया है ! । ६२७

अऩ्ऩ शाब मुळदॆऩ वाणैयाल्, मिऩ्ऩु मौलियऩ् वीडणऩ् मॆय्म्मैयाऩ्
कऩ्ऩि यॆऩ्वयिऩ् वैत्त करुणैयाल्, शॊऩ्ऩ दुण्डु तुणुक्क महऱ्ऱुवाळ् 628

अऩ्ऩ चापम्–वह शाप; उळतु ऎऩ–है ऐसा; आणैयाल्–शपथ खाकर; मिऩ्ऩु मौलियऩ्–चमकदार किरीटधारी; मॆय्म्मैयाऩ्–सत्यसंध; वीटणऩ् कऩ्ऩि–विभीषण की कन्या (त्रिजटा) ने; तुणुक्कम् अकऱ्ऱुवाळ्–मेरा डर दूर करने हेतु; ऎऩ् वयिऩ्–मेरे प्रति; वैत्त करुणैयाल्–रखी दया के कारण; चॊऩ्ऩतु–जो कहा; उण्टु–वह समाचार है । ६२८

यह बात चमकदार किरीटी धर्मात्मा सत्यव्रती विभीषण की तनया त्रिजटा ने मुझसे क़सम खाकर कही थी। उसने मेरा भय निवारण करने के लिए दया करके मुझसे कही थी। ६२८

आय दुण्मैयि ऩालुम दऩ्ऱॆऩिऩ्, माय्वॆऩ् मऩ्ऱ वऱम्वऴु वादॆऩ्ऱुम्
नाय हऩ्वलि यॆण्णियु नाऩुडॆऩ्, तूय्मै काट्टवु मित्तुणै तूङ्गिऩॆऩ् 629

आयतु–वह; उण्मैयिऩालुम्–सत्य है, उससे; अऱम्–धर्म; मऩ्ऱ वऴुवातु–अवश्य बेकार नहीं होगा; ॲन्ऱुम्–यह मानकर और; नायकऩ्–नाथ श्रीराम का; वलि ॲण्णियुम्–बल सोचकर; नाऩुटॆ तूय्मै–और अपनी पवित्रता; काट्टवुम्–दिखाने; इ तुणै–इतना समय; तूङ्कितॆऩ्–ठहरे रही; अतु अऩ्ऱु ॲऩिल्–वह नहीं होता तो; माय्वॆऩ्–मर जाती। ६२६

मैं इतने दिन रही भी इसी विश्वास पर कि वह शाप है। धर्म अवश्य बेकार नहीं होगा और श्रीराम का बल अमोघ है; और मैं अपनी पतिव्रता को भी लोगों के सामने प्रमाणित करना चाहती थी। अगर वह शाप न होता तो मर ही गयी होती। ६२९

आण्डु निऩ्ऱु मरक्क ऩहऴ्न्दुहॊण्, डीण्डु वैत्त दिळव लियऱ्ऱिय
नीण्ड शालै यॊडुनिलै निऩ्ऱदु, काण्डि यैयनिऩ् मॆय्युणर् कण्गळाल् 630

आण्टु निऩ्ऱुम्–वहाँ से; अरक्कऩ् अकऴ्न्तु कॊण्टु–राक्षस जिस भूमि को खोद ले आकर; ईण्टु वैत्ततु–इधर रखा है, वह; इळवल् इयऱ्ऱिय–देवर द्वारा निर्मित; नीण्ट चालै ऒटुम्–बड़ी पर्णकुटीर के साथ; निलै निऩ्ऱतु–स्थिर रूप से इधर है; ऐय–तात; निऩ् मॆय् उणर्–तुम अपने सत्यदर्शी नेत्रों से; काण्टि–देखो। ६३०

यह भूमि का अंश तुम अपने सत्यपरक नेत्रों से देख लो। इसमें देवर द्वारा निर्मित बड़ी पर्णकुटीर भी देख लो। राक्षस इसी को पंचवटी प्रदेश से खोद लाया था। ६३०

तीर्वि लेऩि दॊरुपह लुऩ्जिलै, वीरऩ् मेऩियै माऩुमिव् वीङ्गुनीर्
नार नाण्मलर्प् पॊय्हैयै नण्णुवेऩ्, चोरु मारुयिर् काक्कुन् दुणिविऩाल् 631

ऒरु पकलुम्–एक दिन के लिए भी; इतु तीर्वु इलेऩ्–इससे अलग नहीं हुई; चोरुम् आरुयिर्–शिथिल शरीर से लगे प्राणों को; काक्कुम् तुणिविऩाल्–बचा लेने के संकल्प से; चिलै वीरऩ्–धनुर्धर श्रीराम के; मेऩियै माऩुम्–शरीर की तरह (रंग में) रहनेवाले; इ वीङ्कु नीर्–इस विशाल; नार नाण् मलर्–जलसमृद्ध और सद्यविकसित कमल-पुष्पों से भरे; पॊय्कैयै–तडाग के; नण्णुवेऩ्–पास आती। ६३१

इस पर्णशाला से मैं एक दिन भी अलग नहीं हुई। शिथिल शरीर से लगे प्राणों को बचाए रखने के निश्चय के कारण मैं कभी-कभी उस जल-समृद्ध और सद्यविकसित कमलपुष्प-भरे तडाग के पास जाती, क्योंकि वह जलाशय धनुर्धर श्रीवीरराघव के (रंग में) शरीर के समान है। ६३१

आद लाऩदु कारिय मऩ्ऱैय, वेद नायहऩ् बालिऩि मीण्डऩै
पोदल् कारिय मॆऩ्ऱऩळ् पूवैयक्, कोदि लाऩु मिऩैयऩ कूऱिऩाऩ् 632

ऐय–तात; आतलाल्–इसलिए; अतु–वह (तुम्हारा विचार); कारियम् अऩ्ऱु–करने योग्य कार्य नहीं; इऩि–आगे; वेतनायकऩ् पाल्–वेदनायक के पास; मीण्टऩै पोतल्–लौट जाना; कारियम्–कर्तव्य है; ऍऩ्ऱऩळ्–कहा; पूवै–देवी ने; अ कोतु इलाऩुम्–वह निर्दोष हनुमान ने भी; इऩैयऩ–ये बातें; कूऱिऩाऩ्–कहीं। ६३२

तात ! इन कारणों से तुम्हारा विचार कार्यान्वित करने योग्य नहीं है। अब तुम्हारा वेदनाथ श्रीराम के पास लौट जाना ही कर्तव्य है। —देवी ने यों कहा। उस अनिंद्य हनुमान ने भी निम्नोक्त बातें कहीं। ६३२

नऩ्ऱु नऩ्ऱिव् वुलहुडै नायहऩ्, तऩ्ऱु णैप्पॆरुन् देवि तवत्तॊऴिल्
ऍऩ्ऱु शिन्दै कळित्तुवन् देत्तिऩाऩ्, निऩ्ऱ शङ्गै यिडरॊडु नीङ्गिऩाऩ् 633

निऩ्ऱ इटरोटु–विद्यमान कष्टों के साथ; चङ्कै नीङ्किऩाऩ्–शंकाओं से छूटकर; उलकुटै नायकऩ् तऩ्–सर्वलोकनायक की; तुणै–संगिनी; इ पॆरुम् तेवि–इन महीयसी देवी का; तवत् तॊऴिल्–तपकर्म; नऩ्ऱु नऩ्ऱु–साधु है, साधु; ऍऩ्ऱु–ऐसा; चिन्तै कळित्तु–मन में मुदित होकर; उवन्तु–उत्साह के साथ; एत्तिऩाऩ्–उनकी संस्तुति की। ६३३

हनुमान के मन में जो कष्ट और शंकाएँ थीं, उन सभी से अब वह निवृत्त हो गया। उसने सोचा कि सर्वलोकपति श्रीराम की संगिनी इन महीयसी देवी का तपकर्म बहुत ही उत्कृष्ट है। उसे अपार हर्ष हुआ। उसने देवी को बड़े ही उत्साह के साथ संस्तुति की। ६३३

इरुळु ञाल मिरावणा ऩालिदु, तॆरुळु नीयिऩिच् चिल्पह ऱङ्गुरिऩ्
मरुळु मऩ्ऩवर् कियाऩ्शॊलुम् वाशहम्, अरुळु वायॆऩ् ऱडियि ऩिऱैञ्जिऩाऩ् 634

नी–आप; इऩि–अब; चिल् पकल्–कुछ दिन; तङ्कुऱिऩ्–ठहरेंगी तो; इरावणऩाल्–रावण के कारण; इरुळुम् ञालम् इतु–अन्धकारमग्न यह संसार; तॆरुळुम्–प्रकाशमय हो जायगा; मरुळुम् मऩ्ऩवऱ्कु–दुःखमोहित राजा को; याऩ् चॊल्लुम्–मुझसे कथनीय; वाचकम्–सन्देश; अरुळुवाय्–कहने की कृपा करें; ऍऩ्ऱु–कहकर; अटियिऩ् इऱैञ्चिऩाऩ्–उनके चरणों पर विनय की। ६३४

देवी ! आप और थोड़े दिन यहाँ ठहरेंगी तो रावण के कारण अन्धकार में मग्न यह संसार प्रकाशमय हो जायगा। अब मैं आपके वियोग के कारण दुःख-मोहित श्रीराम के पास क्या कहूँ ? वह सन्देश कहने की कृपा कीजिए। हनुमान ने उनके चरणों में नमस्कार करके विनय की। ६३४

❀इन्नु	मीण्डोरु	तिङ्ग	ळिरुप्पल्यान्
निन्नै	नोक्किप्	पहर्न्ददु	नीदियोय्
पिन्नै	यावि	पिडिक्किन्	ऱिलेनन्द
मन्न	नाणै	यिदनै	मनक्कोणी 635

नीतियोय्—नीतिश्रेष्ठ; यान्—मैं; इन्नुम्-और; ओरु तिङ्कळ्-एक महीना; ईण्टु इरुप्पल्-यहाँ रहूँगी; पिन्नै-बाद; आवि पिटिक्किन्ऱिलेन्-प्राण धारण नहीं करूँगी; अन्त मन्नन् आणै—उन राजाराम की क़सम; निन्नै नोक्कि—तुम्हारे समक्ष; पकर्न्ततु-जो मैंने कही; इततै—यह; नी-तुम; मनक्कोळ्—दृढ़ रूप से मन में धारण कर लो। ६३५

सीताजी ने उत्तर में कहा कि हे नीतिमान ! मैं यहाँ और एक महीने तक ही (जीवित) रहूँगी। उसके बाद प्राण धारण नहीं करूँगी। श्रीराजाराम की क़सम ! तुमसे जो यह कहती हूँ तुम उसे खूब मन में धारण कर लो। ६३५

❀आरन्	दाळ्दिरु	मार्बर्	कमैन्ददोर्
तारन्	दानल	ळेनुन्	दयावेनुम्
ईरन्	दानहत्	तिल्लैयेन्	ऱालुन्दन्
वीरङ्	गात्तलै	वेण्डन्रु	वेण्डुवाय् 636

आरम् ताळ्-हारालंकृत; तिरुमार्पर्कु—श्रीवक्ष वाले श्रीराम के; अमैन्ततु-योग्य; ओर् तारम् तान् अलळ्—एक पत्नी हूँ नहीं मैं; एनुम्—तो भी; तया ऐनुम्-दया नाम की; ईरम् तान्—आर्द्रता; अकत्तु इल्लै-मन में नहीं हो; ऐन्ऱालुम्-तो भी; तन् वीरम् कात्तलै-अपनी वीरता (का नाम) बचाना; वेण्टु—आपको चाहना है; ऐन्ऱु-ऐसा; वेण्टुवाय्—(तुम श्रीराम से) अर्ज़ कर लो। ६३६

हारालंकृत वक्ष वाले श्रीराम के योग्य पत्नी नहीं हूँ, सही। उनके मन में दयार्द्रता नहीं हो तो भी अपनी वीरता के यश को सुरक्षित कर लेना आवश्यक है—यह उनसे कहो। ६३६

❀एत्तुम्	वेन्ऱि	यिळैयवर्	कीदीरु
वार्त्तै	शॊल्लुदि	मन्नरु	ळालेन्नैक्
कात्ति	रुन्द	तनक्के	कडनिडै
कोत्त	वेञ्जिरै	वीडेन्रु	कूरुवाय् 637

कूरुवाय्-मेरा वृत्तान्त कहनेवाले तुम; एत्तुम्—स्तुत्य; वेन्ऱि इळैयवर्कु-विजयी देवर से; मन् अरुळाल्—राजाराम की आज्ञा के अनुसार; ऐन्नै कात्तु इरुन्त तनक्के—मेरी जो रक्षा करते रहे, उन्हें; इटै कोत्त—बीच में आये; वेम् चिरै—कठोर कारावास से; वीटु—छुड़ाना; कटन्—कर्तव्य है; ऐन्ऱु—ऐसा; ईतु—यह; ओरु वार्त्तै—एक सन्देश; चोल्लुति—कहो। ६३७

मेरा वृत्तांत वहाँ जाकर जब कहोगे तब प्रकीर्तित विजयशाली मेरे देवर से कहो कि श्रीराम की आज्ञा से जो मेरी रक्षा के कार्य में लगे रहे उनका अब मध्य में मुझे प्राप्त कारावास से छुड़ाना भी उन्हीं का कर्तव्य होगा। ६३७

❀ तिङ्ग ळॊत्ऱितॆऩ् शॆय्दवऩ् दीऱ्ऩ्ददाल्
इङ्गु वन्दिल नॆय्दिऩ् याणर्नीर्क्
कङ्गै याऱ्ऱङ् गरैयडि येऱ्कुन्दऩ्
शॆङ्गै याऱ्कडऩ् शॆय्हॆन्ऱु शॆप्पुवाय् 638

तिङ्कळ् ऑत्ऱित्—एक महीने में; ऍत् चॆय् तवम्—मेरी क्रियमाण तपस्या; तीर्न्तताल्—पूरी होगी, इसलिए; इङ्कु—यहाँ; वन्तिलत्त ऍतित्—नहीं आयँगे तो; याणर् नीर्—सुन्दर जल-प्रवाह की; कङ्कैयाऱ्ऱङ् करै—गंगा के किनारे; अटियेर्कुम्—दासी, मेरा भी; तत् चॆम् कैयाल्—अपने मनोरम हाथों से; कटत् चॆय्क—क्रियाकर्म कर दें; ऍत्ऱु—ऐसा; चॆप्पुवाय्—कहो। ६३८

एक महीना जीवित रहने का मेरा संकल्प है। एक महीने में वह तप पूरा हो जायगा। तब तक वे इधर न आएँगे तो वे वहीं सुन्दर प्रवाह की गंगानदी के जल से मेरा क्रिया-कर्म अपने सुन्दर हाथों से कर दें। ऐसा उनसे कह दो। ६३८

❀ शिऱक्कु मामियर् मूवर्क्कुम् जीदैयाण्
डिऱक्किऩ् ऱाडॊऴु दाळॆऩु मिऩ्ऩशॊल्
अऱत्ति ऩायहऩ् बालरु ळिऩ्मैयाल्
मऱक्कु मायिऩु नीमऱ वेलैया 639

ऐया—तात; चिऱक्कुम्—गौरवपूर्ण; मामियर् मूवर्क्कुम्—तीनों सासों से; आण्टु इऱक्किऩ्ऱाळ् चीतै—वहाँ मरती रही सीता; तॊऴुताळ्—उसने आपको नमस्कार किया; ऍऩुम्—ऐसा; इऩ्ऩ चॊल्—यह वचन; अऱत्तिऩ् नायकऩ्—धर्म के नायक; पाल्—के पास; अरुळ् इऩ्मैयाल्—दया नहीं होने के कारण; मऱक्कुमायिऩुम्—भूल जाएँगे तो भी; नी मऱवेल्—तुम मत भूलो। ६३९

तात! मेरी श्रेष्ठ सासों से कहो कि वहाँ मरती रही सीता ने आपको नमस्कार किया। यह धर्ममूर्ति श्रीराम दयाहीनता के कारण भूल जाएँगे तो भी तुम मत भूलो। ६३९

वन्दै नैक्करम् बऱ्ऱिय वैहल्वाय्
इन्द विप्पिऱ विक्किरु मादरैच्
चिन्दै यालुन्दी डॆन्ऩ्ऱ शॆव्वरम्
तन्द वाऱ्ऱै तिरुच्चॆवि शाऱ्ऱुवाय् 640

वन्तु—आकर; ॲतै—मुझे; करम् पऱ्ऱिय—जब पाणिग्रहण किया; वैकल्वाय्—उस दिन; इन्त इ पिऱविक्कु—इस मनुष्य-जन्म में; इरु मातरै—दो स्त्रियों का; चिन्तैयालुम् तॊटेन्—मन से भी स्पर्श नहीं करूँगा; ॲन्ऱ—ऐसा; चॆव्वरम् तन्त—दत्त श्रेष्ठ वर का; वार्त्तै—वचन; तिरुच्चॆवि चाऱ्ऱुवाय्—श्रीकर्णों में डाल दो। ६४०

हनुमान ! तुम उनके दिव्य कानों में यह एक रहस्य ही बात कहो। जब उन्होंने मेरा पाणिग्रहण किया तब उन्होंने अपना यह निश्चय सुनाया कि इस जन्म में मैं दो स्त्रियों को अपने मन से भी स्पर्श नहीं करूँगा। यह मेरे लिये वरदान-सा वाक्य था। उसे उन्हें कहो। ६४०

❀ ईण्डु नानिरुन् दिन्नुयिर् मायिनुम्
मीण्डु वन्दु पिऱन्दुतन् मेनियैत्
तीण्ड लावदोर् तीविनै तीर्वरम्
वेण्डि ताडॊळु दॆन्ऱु विळम्बुवाय् 641

ईण्टु नान् इरुन्तु—इधर मैं रहकर; इन् उयिर् मायिनुम्—प्यारे प्राण छोड़ भी दूँ; मीण्टु वन्तु—फिर आकर; पिऱन्तु—जन्म लेकर; तन् मेनियै—उनके शरीर को; तीण्टल् आवतु—स्पर्श करने का; ओर् तीविनै तीर् वरम्—एक निष्पाप वर; तॊळुतु—नमस्कार करके; वेण्टिताळ्—(सीता ने) माँगा; ॲन्ऱु विळम्पुवाय्—ऐसा कहो। ६४१

समझो कि मुझे इधर मरना ही पड़ा। तो भी मैं फिर जन्म लूँ और आपके ही शरीर का आलिंगन करने का भाग्य मुझे मिले। उनसे कहो कि मैंने यह वर उनसे नमस्कार करते हुए याचित किया। ६४१

❀ अरशु वीऱ्ऱिरुन् दाळवु मायमणिप्
पुरशै यानैयिन् वीदियिऱ् पोदवुम्
विरशु कोलङ्गळ् काण विदियिलेन्
उरैशॆय् दॆन्नैयॆन् नूळ्विनै युन्नुवेन् 642

वीऱ्ऱिरुन्तु—सिंहासन पर विराजमान होकर; अरचु आळवुम्—श्रीराम राज करेंगे; आय् मणि—घण्टियों-सहित; पुरचै यानैयिन्—गले की रस्सी (कलापक) वाले राजगज पर; वीतियिल् पोतवुम्—वीथियों में विजययात्रा करेंगे; विरचु कोलङ्कळ्—ये मनोरम् दृश्य; काण विति इलेन्—देखने के भाग्य से वंचित हूँ मैं; उरै चॆय्तु—कुछ कहूँ, इससे; ॲन्नै—क्या लाभ है; ॲन् ऊळ्विनै—अपना पूर्वकृत पाप; उन्नुवेन्—सोचती रहूँगी। ६४२

श्रीराम का सिंहासनस्थ होकर राज करना और कलापक-सहित घंटियों वाले राजगज पर विराजमान होकर वीथियों में भ्रमण करना देखने का मेरा भाग्य नहीं रहा। अब कुछ कहने से क्या लाभ है ? बैठकर अपना पूर्वकर्म सोचती रहूँगी। ६४२

※ तन्नै नोक्कि युलहन् दळर्दर्कुम्
अन्नै नोय्क्कुम् बरदनङ् गाऱ्ऱुम्
इन्न नोय्क्कुमङ् गेहुव दन्ऱिये
ऍन्नै नोक्कियिङ् गॅङ्ङन मॅय्दुमो 643

तन्नै नोक्कि–अपने वनगमन के कारण हुए; उलकम् तळर्तर्कुम्–संसार के कष्ट को; अन्नै नोय्क्कुम्–माता के दुःख को; परतन्–भरत के; अङ्कु–वहाँ रहकर; आऱ्ऱुम्–जो सहते रहते हैं; इन्नल् नोय्क्कुम्–उस संकट को; अङ्कु एकुवतु अन्ऱि–(दूर करने) उधर पधारने के सिवा; ऍन्नै नोक्कि–मेरी तरफ़; इङ्कु अङ्ङनम् ऍय्तुम्–इधर क्योंकर पधारेंगे। ६४३

अपने ही कारण लोकों, अपनी माता और भरत को दुःखपीडित हुए देखकर उनको अयोध्या ही जाना ठीक लगेगा। उसे छोड़कर मेरी सुध लेकर वे इधर क्योंकर पधारेंगे ? । ६४३

ऍन्दैयर् मुदलिनर् किळैजर् यार्क्कुमॅन्
वन्दनै विळम्बुदि कवियिन् मन्ननैच्
चुन्दरत् तोळनैत् तॉडर्न्दु कात्तुप्पोय्
अन्दमि ऱिरुनहर्क् करश नाक्कॅन्बाय् 644

ऍन्तैयर् मुतलिनर्–मेरे पिताजी आदि; किळैजर् यार्क्कुम्–सभी बन्धु-बान्धओं से; ऍन् वन्तनै–मेरा नमस्कार; विळम्पुति–कहो; कवियिन् मन्ननै–कपियों के राजा से; चुन्तरत् तोळनै–सुन्दरबाहु (श्रीराम) को; तॉटर्न्तु कात्तु–लगातार रक्षा करते हुए; पोय्–जाकर; अन्तम् इल्–अक्षय; तिरु नकर्क्कु–श्रीसमृद्ध नगर का; अरचन् आक्कु–राजा बनाओ; ऍन्पाय्–यह कहो। ६४४

मेरे पिता और अन्य बन्धु-बान्धवों से मेरी वन्दना सुना दो। कपीश सुग्रीव से मेरी ओर से प्रार्थना करो कि वे अयोध्या नगर को सुन्दरबाहु श्रीराम के पीछे जाएँ और उन्हें उसके राजा बना दें। ६४४

※ इत्तिऱ मनैयव ळियम्ब विन्नमुम्, तत्तुऱ वॊऴिन्दिलै तैय नीयॆन्ना
ऍत्तिऱत् तेदुवु मियैन्द विन्नुरै, ऒत्तन तॆरिवुऱ वुणर्त्ति नानरो 645

अनैयवळ्–उनके; इ तिऱम्–इस भाँति; इयम्प–कहने पर; तैयल्–देवी; नी इन्नमुम्–आपने अब भी; तत्तुऱवु–दुःख करना; ऒऴिन्तिलै–नहीं छोड़ा है; ऍन्ना–कहकर; ऍ तिऱत्तु एतुवुम्–सभी तरह के हेतुओं से; इयैन्त–युक्त; इन् उरै–मधुर (आश्वासन के) शब्दों से; ऒत्तन–युक्त; तॆरिवु उऱ–समक्ष में आएँ ऐसा; उणर्त्तिनान्–कहकर समझाया। ६४५

जब देवी ने इस रीति से बातें कहीं तो हनुमान को बिल्कुल बुरा लगा। उसने कहा कि देवी ! आपने अब भी दुःख करना छोड़ा नहीं

है। फिर सब तरह के हेतुओं से युक्त और सब तरह से समीचीन वचन समझाते हुए कहने लगा। ६४५

❀ वीवाय् नीयिवण् मॅय्यः(ह्)दे, ओय्वा निन्नुयि रुय्वाताम्
पोय्वा नन्नहर् पुक्कन्ऱो, वेय्वान् मौलियुम् मॅय्यन्ऱो 646

नी इवण् वीवाय्–आप इधर मरेंगी; मॅय् अ.:.ते–वह सत्य है; इन्नुयिर् ओय्वान्–जिनके प्यारे प्राण शिथिल हो रहे हैं; उय्वान् आम्–वे श्रीराम जीवित रहेंगे; पोय्–(जंगल से) जाकर; वान् अ नकर्–श्रेष्ठ उस (अयोध्या) नगर में; पुक्कु–प्रवेश करके; मौलियुम् वेय्वान् अन्ऱो–मुकुट पहनेंगे न; मॅय् अन्ऱो–सच है न। ६४६

हनुमान ने तीखे व्यंग्य के साथ कहा कि ऐसा ! आप इधर मर जायँगी ! सच ! फिर वियोगरुग्ण और म्रियमाणप्राण श्रीरामजी जिएँगे ! जंगल छोड़कर उत्कृष्ट अयोध्या नगर पहुँचेंगे और मुकुट धारण कर लेंगे। सचमुच यही होगा न ? (तमिऴ में शब्द के अन्त में 'आम्' लगाने से किसी की धारणा की निपट अस्वाभाविकता और असाध्यता को लेकर तीव्र व्यंग्य द्योतित हो जाता है।)। ६४६

❀ कैत्तो डुञ्जिरै करुपोयै, वैत्तो निन्नुयिर् वाऴ्वाताम्
पॉय्त्तोर् विल्लिहऴ् पोवाराम्, इत्तो डॉप्पदि यादुण्डे 647

करुपोयै–पतिव्रता आपको; कैत्तु ओटुम्–घृणा से जिससे दूर भागते हैं; चिरै वैत्तोन्–उस कारागृह में जिसने रखा; इन् उयिर् वाऴ्वान् आम्–वह (रावण) अपने प्राण लेकर जिएगा; ओर् विल्लिकऴ्–अनुपम धनुर्धर; पॉय्त्तु पोवाराम्–अपने कर्तव्य को झुठला देंगे; इत्तोटु ऑप्पतु–इनकी समानता करनेवाली बात; यातु उण्टु–दूसरी कौन सी है। ६४७

और पतिव्रता आपको घृणित कठोर क़ैदखाने में डालनेवाला रावण अपने प्राण लेकर जीता रहेगा ! रहेगा न ! अनुपम धनुर्वीर श्रीराम और लक्ष्मण झूठे बन जाएँगे ! आहा ! इसकी समता में और क्या बात होगी ? । ६४७

❀ नल्लोय् निन्नै नलिन्दोरैक्, कॉल्लो वॅम्मुयिर् कॉण्डङ्गे
ॲल्लो मुञ्जॅल वॅङ्गोनुम्, विल्लो डुञ्जॅल वेण्डावो 648

नल्लोय्–भली देवी; निन्नै–आपको; नलिन्तोरै–त्रस्त करनेवालों को; कॉल्बोम्–हम नहीं मारेंगे और; ॲम् उयिर् कॉण्टु–प्राण बचाकर; ॲल्लोमुम्–हम सभी; अङ्के चॅल–अयोध्या जाते; ॲम् कोनुम्–हमारे राजा श्रीराम को भी; विल्लोटुम्–धनु के साथ; चॅल वेण्टावो–नहीं जाना चाहिए क्या। ६४८

भली देवी ! आपको त्रस्त करनेवाले राक्षसों को हम नहीं मारेंगे ! अपने प्राणों की रक्षा करते हुए हम सब अयोध्या जाएँगे और हमारे राजा

श्रीराम भी धनु लेकर अयोध्या जाना चाहेंगे —यही न आप कहती हैं ? । ६४८

नीन्दा वित्तलि तीन्दामे तेय्न्दा ङाद पॅरुञ्जॅल्वम्
ईन्दा नुक्कुत्तै यीयादे, ओय्न्दा लॅम्मि नुयर्न्दार्यार् 649

नीन्ता इन्तलित्–अतरणयोग्य दुःख-सागर में; नीन्तामे–विना तैरते संकट उठाए हो; तेय्न्तु आऱात–अक्षय और अक्षुण्ण; पॅरुम् चॅल्वम्–बड़ा धन; ईन्तातुक्कु–जिन्होंने हमें दिया उन्हें; उत्तै ईयाते–आपको दिए विना; ओय्न्ताल्–हम विरत रहें तो; ऍम्मिल्–हमसे; उयर्न्तार् यार्—श्रेष्ठ कौन होंगे । ६४९

श्रीराम ने अतरण योग्य दुःखसागर में तैरते रहे हमें अक्षय और अक्षुण्ण धन दिलाया था । उन्हें आपको न देकर अगर हम निष्क्रिय रहेंगे तो हमसे बढ़कर भलेमानुस कौन होंगे ? । ६४९

नन्ऱाय् नल्वित्तै नल्लोरैत्, तिन्ऱार् तङ्गुडर् पेय्दिन्नक्
कॉन्ऱा लल्लदु कॉळ्ळेना, ऍन्ऱा नुक्किवै येलावो 650

नल् वित्तै–तपादि श्रेष्ठ कर्म; नन्ऱु आय्–खूब सोच-परखकर करनेवाले (मुनियों) को; तिन्ऱार् तम्–मारकर जो खाते हैं, उनकी; कुटर्–आँतों को; पेय् तिन्न–पिशाचों को खाने देते हुए; कॉन्ऱाल् अल्लतु–विना मारे; नाटु कॉळ्ळेन्–(कोसल) देश जाना न मानूँगा; ऍन्ऱानुक्कु–ऐसा जिन्होंने कहा उन्हें; इवै एलावो–ये बातें नहीं सुहाएँगी न । ६५०

तप, यागादि कर्म खूब सोच-परखकर जो करते रहते हैं, उन उत्तम लोगों को मारकर खानेवाले हैं राक्षस ! उनकी आँतों को पिशाचों को खाने देते हुए उनको मारे विना मैं अयोध्या लौटना नहीं सोचूँगा । यह क़सम जिन्होंने खायी उन श्रीराम के लिए ये सब योग्य कर्म नहीं रहेंगे क्या ? । ६५०

माट्टा दार्शिऱै वैत्तोयै, मीट्टा मॅन्गिल मीळ्वामे
नाट्टार् नल्लवर् नन्नूलुम्, केट्टा रिव्वुरै केट्पारो 651

माट्टातार्–शत्रुओं द्वारा; चिऱै वैत्तायै–कारा में रखी गयी आपको; मीट्टाम् ऍन्किलम्–छुड़ाया, यह यश कहे विना; मीळ्वामे–हम लौट जाएँगे क्या; नाट्टार्–देशवासी; नल्लवर्–भले लोग; नल् नूलुम्–उत्कृष्ट शास्त्र के; केट्टार्–श्रोता (ज्ञानी); इ उरै–यह बात; केट्पारो–सुनेंगे (और मानेंगे) क्या । ६५१

‘शत्रुओं द्वारा कारागार में बन्द रखी हुई आपको छुड़ा दिया हमने ।’ यह प्रशंसा का वचन न कहाते हुए हम लौट जाएँगे क्या ? देश के भले लोग और श्रेष्ठ शास्त्रज्ञ यह बात सुनेंगे और मानेंगे क्या ? । ६५१

पूण्डाळ् कऱ्पुडै याळ्पोय्याळ्, तीण्डा वञ्जहर् तीण्डामुन्
माण्डा ळॅन्ऱु मतन्देरि, मीण्डाल् वीरम् विळङ्गादो 652

पूण्टु–धारण करके; आऴ्–पालित; कऱ्पु उटैयाऴ्–पातिव्रत्य वाली; पोय्याऴ्–(सीतादेवी) अपने वचन को झूठा न बनाकर; तीण्टा वञ्चकर्–अछूत वंचकों के; तीण्टा मुन्–स्पर्श करने से पहले; माण्टाऴ्–मर गयीं; ॲन्ऱु–जानकर; मतम् तेऱि–मन में आश्वासन पाकर; मीण्टाल्–लौट जाएँगे तो; वीरम् विळङ्कातो–वीरता क्या चमक नहीं उठेगी। ६५२

पातिव्रत्य का धारण और पालन करनेवाली देवी अस्पृश्य वंचकों के स्पर्श करने से पहले ही मर गयीं। यह जानकर और इस बात का आश्वासन लेकर हम (और श्रीराम) लौट जायँगे तो हमारी वीरता की तूती बोलेगी न ? । ६५२

कॅट्टेन् नीयुयिर् केदत्ताल्, विट्टा यॅन्ऱिडिन् वॅव्वम्बाल्
ऑट्टा रोडुल होरेऴुम्, शुट्टा लुन्दोलै यादन्ऱो 653

कॅट्टेन्–मरा मैं; नी–आपने; केततुताल्–शोक के कारण; उयिर् विट्टाय्–प्राण त्याग दिये; ॲन्ऱिटिल्–तो; वॅम् अम्पाल्–भयंकर शर से; ऑट्टारोटु–शत्रुओं के साथ; ओर् उलकु एऴुम्–सातों लोकों को; चुट्टालुम्–जला देंगे तो भी; तोलैयातु अन्ऱो–अपयश मिटेगा न। ६५३

मरा मैं। (भगवान न करें) अगर आप शोक के कारण मर जायँगी तो फिर भयंकर शर से शत्रुओं के साथ सातों लोकों को जलाया गया तो भी निन्दा नहीं छूटेगी न ? । ६५३

मुन्ने कॉल्वान् मूवुलहुम्, पॉन्ने पॉङ्गिय पोर्विल्लान्
ॲन्ने नित्निलै यीदॅन्ऱाल्, पिन्ने शॅम्मै पिडिप्पानो 654

पॉन्ने–कांचने; मुन्ने–पहले ही; मूवुलकुम्–तीनों लोकों को; कॉल्वान् पॉङ्किय–मारने को जो उत्तेजित हो उठे; पोर् विल्लान्–वे युद्धधनुर्धर; निन् निलै–आपकी स्थिति; ईतु ॲन्ऱाल्–ऐसी है जानकर; पिन्ने–बाद भी; चॅम्मै पिटिप्पातो–क्षमा का गुण धारण करते रहेंगे क्या; ॲन्ने–कैसी बात। ६५४

कांचने ! (तमिऴ में स्वर्ण लक्ष्मी को भी कहते हैं। 'कांचना' नाम इधर बहुत प्रचलित है।) पहले ही श्रीराम तीनों लोकों को मिटाने का निश्चय करके युद्धधनु हाथ में ले चुके थे। अगर उनको विदित हो गया कि आपकी ऐसी स्थिति है तो क्या वे आगे भी क्षमा के गुण को धारण किये रहेंगे ? । ६५४

कोळा नारुयिर् कोळोडुम्, मूळा वॅञ्जित मुऱ्ऱाहा
मीळा वेलयल् वेरुण्डो, माळा दोपुवि वानोडुम् 655

मूळा–साधारण रूप से जो नहीं उठता; वॅम् चितम्–वह (श्रीराम का) भयंकर कोप; कोळ् आतार्–बुरे लोगों के; उयिर् कोळ् ओटुम्–प्राण-हरण के साथ; मुऱ्ऱु आका–अन्त नहीं होगा; मीळावेल्–(कोप) शान्त न होगा तो; पुवि–भूमि;

वातोटुम्–आकाश के साथ; माळातो–मिट नहीं जायगी क्या; अयल् वेरु–भिन्न कुछ; उण्टो–हो सकता है क्या। ६५५

साधारण रूप से श्रीराम का क्रोध प्रकट नहीं होता। पर अब क्रोध उठा तो वह केवल बुरे राक्षसों को मारकर वहाँ शान्त हो जायगा ? नहीं होगा। अगर क्रोध शान्त नहीं हुआ तो क्या यह भूतल व्योमलोक के साथ मिलकर नष्ट नहीं हो जायगा ? उससे भिन्न कोई काम हो सकता है क्या ? । ६५५

* ताऴित् तण्गड ऱम्मोडुम्, एऴुक् केऴुल हॅल्लामत्
ऱाऴिक् कैयव नम्बम्मा, ऊऴित्, तीयॅन वुण्णादो 656

अम्मा–माते; अन्ऱु–उस दिन; आऴि कै–चक्रहस्त; अवन् अम्पु–उनका शर; ताऴि–गहरे; तण् कटल् तम्मोटुम्–शीतल समुद्रों के साथ; एऴुक्कु एऴु उलकु ॲल्लाम्–सात और सात लोकों को; ऊऴि ती ॲन–प्रलयाग्नि के समान; उण्णातो–नहीं खायगा क्या। ६५६

माँ ! (जिस दिन मैं जाकर श्रीराम से आपकी बात कहूँगा) उस दिन चक्रहस्त श्रीराम का शर गहरे शीतल समुद्र को चौदहों लोकों के साथ युगान्तकाल की अग्नि की तरह सोख नहीं देगा ? । ६५६

पडुत्तान् वानवर् पऱ्ऱारैत्, तडुत्तान् ऱीविनै तक्कोरै
ॲडुत्तान् नल्विनै यॅन्नाळुम्, कॉडुत्ता नॅन्ऱिशै कॉळ्ळायो 657

वानवर् पऱ्ऱारै–देव-शत्रुओं को; पटुत्तान्–मिटा दिया; ती विनै तटुत्तान्–पाप को रोका; तक्कोरै ॲटुत्तान्–साधुओं को उद्धारा; नल् विनै–अच्छे कामों को; ॲन्नाळुम्–सदा; कॉटुत्तान्–बढ़ने दिया; ॲन्ऱु–ऐसा; इचै–यश; कॉळ्ळायो–आप प्राप्त नहीं करेंगी क्या। ६५७

श्रीराम ने देवारियों को मिटाया; पाप को रोक दिया; साधुओं को उद्धारा और सत्कर्मों को वर्धित होने दिया। यह यश आप भी नहीं लेंगी क्या ? । ६५७

शिन्ना णीयिडर् तीरादे, इन्ना वेहलि नॅल्लोरुम्
नन्नाळ् काणुद नन्ऱन्ऱो, उन्ना नल्लऱ मुण्डामाल् 658

नी–आप; चिल नाळ्–कुछ दिन; इटर् तीराते–संकट-रहित न होकर; इन्ना वैकलिन्–दुःख के साथ रहेंगी तो; ॲल्लोरुम्–सभी का; नल् नाळ् काणुतल्–अच्छा दिन देखना; नन्ऱु अन्ऱो–श्लाघनीय नहीं है क्या; उन्नाल्–आपके द्वारा; नल् अऱम्–भला धर्म; उण्टाम्–पनपेगा। ६५८

आपके इधर और थोड़े दिन संकटग्रस्त होकर रहने से संसार के सारे लोग अच्छा दिन देख पायँगे। क्या वह भला नहीं है ? आपकी दया से उत्कृष्ट धर्म बढ़ेंगे। ६५८

❀ पुऴिक्कुङ् गण्डहर् पुण्णीरुळ्, कुळिक्कुम् बेय्हुडै युन्दोऱुम्
ऑऴिक्कुन् देव रुवन्दुळ्ळम्, कळिक्कुन् नल्विनै काणायो 659

पुळिक्कुम्–सबको खट्टा लगनेवाले; कण्टकर्–कंटकों के; पुण् नीरुळ्–व्रण से बहनेवाले रक्तप्रवाह में; कुळिक्कुम्–स्नान करनेवाले; पेय्–भूतों के; कुटैयुम् तोऱुम्–गोता लगाते समय; ऑळिक्कुम् तेवर्–अब छिपे रहनेवाले देव; उळ्ळम् उवन्तु–मन आह्लादित होकर; कळिक्कुम्–आनन्द मनाएँगे जो; नल् विनै–वह अच्छा कार्य; काणायो–आप नहीं देखेंगी क्या। ६५८

देखिए, समय आयगा जब सबके घृणा के योग्य कंटक राक्षसों के व्रणों से रक्त प्रवहित होगा और उसकी बाढ़ बन जायगी। पिशाच आदि उसमें स्नान करेंगे। ज्यों-ज्यों वे गोते लगाएँगे त्यों-त्यों अब रावण से छिपे जो रहते हैं वे खुश होकर आनन्दानुभव करेंगे। क्या वह अच्छा काम आप देखना नहीं चाहेंगी ? । ६५९

ऊऴियि निरुदियि नुरुमॅ रिन्दॅनक्, केऴ्हिळर् शुडुकणै किऴित्त पुण्बॊऴि
ताऴिरुङ् गुरुदियिर् ऱरङ्ग वेलैहळ्, एऴुमॊन् ऱाहिनिन् ऱिरैप्पक् काण्डियाल् 660

ऊऴियिन् इऱुतियिन्–युगान्त में; उरुम् ऍरिन्तॅन–गाज गिरती जैसे; केळ् किळर्–ज्वलन्त; चुटु कणै–तापक शर; किऴित्त पुण्–खुले व्रणों से; पॊऴि–बहनेवाले; ताऴ् इरुम् कुरुतियिल्–गहरे, विशाल रक्ताशय में; तरङ्क वेलैकळ् एऴुम्–तरंगायमान सातों समुद्र; ऑन्ऱु आकि निन्ऱु–एक बनकर; इरैप्प–जो गरजेंगे वह; काण्टि–आप देखेंगी। ६६०

युगान्त में गिरनेवाले गाज जैसे श्रीराम के ज्वलन्त तथा दाहक शर राक्षसों के शरीर को चीर देंगे। उन व्रणों से रक्त बहेगा और गहरा रक्ताशय बन जायगा। उसमें सातों तरंगायमान समुद्र मिलकर एक हो जायँगे और गरजेंगे। यह आप देखेंगी। ६६०

शूलिरुम् बॅरुवयि ऱलैत्तुच् चोर्वुऱुम्
आलियङ् गण्णिय रऱुत्तु नीत्तत
वालियुङ् गडप्परुम् वलत्त वानुयर्
तालियम् बॅरुमलै तयङ्गक् काण्डियाल् 661

चूल् इरुम्–गर्भयुक्त-से; पॆरु वयिऱु–बड़े पेटों को; अलैत्तु–पीटते हुए; चोर्वु उऱुम्–बहनेवाले; आलि अम् कण्णियर्–अश्रुजल से भरी सुन्दर आँखों वाली राक्षसियों ने; अऱुत्तु नीत्तत–जिनको तोड़कर फेंक दिया है; वालियुम् कटप्प अरुम्–वाली द्वारा भी अलंघ्य; वान् उयर्–आकाश तक उन्नत; वलत्त तालि अम् पॆरु मलै–बलवान मंगलसूत्रों के पर्वत (के समान राशियाँ); तयङ्क–शोभते हुए; काण्टि–देखेंगी। ६६१

राक्षसियाँ अपने गर्भसहित-से बड़े पेट को पीटती हुई आँखों से

बहनेवाले अश्रुजल-सहित हो अपने मंगल-सूत्र तोड़कर नीचे डाल देंगी और वे कठिन सूत्र वाली द्वारा भी अलंघ्य बड़े पर्वत बन जायँगे। उनको आप देखेंगी। ६६१

विण्णित्नी ळियनॅड्डुङ् गळुदुम् वॅञ्जिऱै
ऍण्णित्नी ळियपॅरुम् बऱवै यीट्टमुम्
पुण्णित्नीर्प् पुणरियिऱ् पडिन्दु पूवैयर्
कण्णित्नी राऱ्ऱिनिऱ् कुळिप्पक् काण्डियाल् 662

विण्णित् नीळिय–आकाश तक बढ़े हुए; नॅट्टुम् कळुतुम्—लम्बे क़द के पिशाच और; ऍण्णित् नीळिय–संख्या में बढ़े; वॅम् चिऱै–भयंकर पंखों के; पॅरुम् पऱवै ईट्टमुम्–बड़े पक्षियों के झुण्ड; पुण्णित् नीर् पुणरियिल्–व्रणनिर्गत रक्त में; पटिन्तु–मग्न होकर; पूवैयर्–स्त्रियों के; कण्णित् नीर् आऱ्ऱिनिल्–अश्रुजल-सरिताओं में; कुळिप्प–(शरीर को साफ़ करने के लिए) स्नान करेंगे; काण्टि–आप देखेंगी। ६६२

आकाश तक बढ़े हुए बड़े-बड़े भूत, पिशाच आदि और असंख्यक भयंकर पंखों के बड़े-बड़े पक्षियों के वृन्द राक्षसों के व्रणों से बहनेवाले रक्त-प्रवाह में पहले स्नान करेंगे और बाद स्त्रियों के अश्रुजल-प्रवाह में स्नान (करके अपने शरीर पर लगे खून, मांस आदि दूर) करेंगे। देखेंगी आप। ६६२

करम्बयित् मुरशित्नङ् गऱङ्गक् कैतॊडर्
नरम्बुह ळिमिळिशै नविल नाडहम्
अरम्बैय राडिय वरङ्गि नाण्डॊळिल्
कुरङ्गुहण् मुऱैमुऱै कुत्तिप्पक् काण्डियाल् 663

करम् पयिल्–हाथ से पीटी जानेवाली; मुरचु इतम्–भेरियों के वर्गों के; कऱङ्क–शब्द करते; कै तॊटर्–उँगलियों से सहलाये जानेवाली; नरम्पुकळ् इमिळ्–(जिनकी) तन्त्रियाँ स्वर निकालती हैं, उन वीणा आदि वाद्यों के; इचै नविल–संगीत निकालते; अरम्पैयर्–(जिन पर) अप्सराएँ; नाटकम् आटिय–नृत्य करती हैं; अरङ्कित्–(उन) मंचों पर; आण् तॊळिल्–पुरुषोचित काम करनेवाले; कुरङ्कुकळ्–वानर; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; कुत्तिप्प–कूदेंगे, उसे; काण्टि–देखेंगे। ६६३

उन मंचों पर, जहाँ अप्सराएँ भेरियों के नाद और तन्त्री-सहित वीणा आदि वाद्यों के नाद के मेल में नाच रही थीं, अब पौरुषयुक्त वानर क्रम से नाचेंगे, कूदेंगे —आप वह भी देखिएगा। ६६३

पुऱैयुऱु पुन्ऱॊळि लरक्कर् पुण्बॊळि
तिऱैयुऱु कुरुदिया ऱीर्प्पच् चॅल्वत्त
वऱैयुऱु पिण्प्पॅरुम् बिऱक्क मण्डित्त
कऱैयुऱु नॅडुङ्गड ऱुर्प्पक् काण्डियाल् 664

पुरै उरु–अपराधी; पुन् तॊऴिल्–नीचकर्म; अरक्कर्–राक्षसों के; पुण् पॊऴि–व्रणों से बहनेवाली; तिरै उरु–तरंगसहित; कुरुति आरु–रक्त-नदी के; ईर्प्प–खींच लेने से; चॆल्वत–जो जाते हैं; वरै उरु–(वे) पर्वत-सम; पिण पॆरुम् पिरक्कम्–लाशों के बड़े-बड़े ढेर; मण्टित–एकत्र होकर; करै उरु–तीरों पर टकरानेवाली तरंगों से युक्त; नॆट्टुम् कटल्–विशाल सागर को; तूर्प्प–पाट देंगे; काण्टि–देखिए। ६६४

दुष्ट और नीच-कर्म राक्षसों के व्रणों के रक्त की नदी बह निकलेगी और वह पर्वत-सम बड़ी-बड़ी लाशों को खींच लेती हुई बहेगी। वे लाशें अधिक संख्या में जाकर तीर से टकरानेवाली तरंग-सहित विशाल समुद्र को पाट देंगी। देखते रहिए। ६६४

विनैयुडै	यरक्करा	मिरुन्दै	वॆन्दुहच्
चनहियॆन्	ऱोरुतऴ	नडुवट्	टङ्गलान्
अनहनॆ	यम्बॆनु	मळवि	लूदैयाल्
कनहनी	डिलङ्गैनिन्	ऱुरहक्	काण्डियाल् 665

चनकि ऎन्रु–जानकी के रूप में; ऒरु तऴल्–एक आग; नट्टुवण्–बीच में; तङ्कल् आल्–रहती है, इसलिए; अनकन्–अनघ श्रीराम के; कै अम्पु ऎन्म्–हाथ के शरों रूपी; अळवु इल्–अपार; ऊतैयाल्–तेज़ पवन से; वितै उटै–पापी; अरक्कर् आम् इरुन्तै–राक्षस रूपी कोयले; वॆन्तु उक–जलकर (राख के रूप में) चू पड़ेंगे; कनक नीटु इलङ्कै–बड़ी स्वर्णलंका; निन्रु उरुक–स्थित होकर पिघलेगी; काण्टि–आप देखेंगी। ६६५

जानकी के रूप में लंका के मध्य आग रहती है इस कारण; और अनघ श्रीराम के हाथ के शरों रूपी अपार पवन बहेगा, इस कारण पापी राक्षस रूपी कोयले जलेंगे और राख बनकर चू पड़ेंगे; और सोने की बड़ी लंका उनके मध्य रहकर पिघल जायगी। उसे आप देखें। ६६५

ताक्कलि	लिरावणन्	ऱलैयिर्	ऱायिन
पाक्किय	मनैयनिन्	पऴिप्पिन्	मेनियै
नोक्किय	कण्गळै	नुदिहॊण्	मूक्किनाल्
काक्कैहळ्	कवर्न्दुहॊण्	डुण्णक्	काण्डियाल् 666

काक्कैकळ्–कौए; ताक्कल् इल्–अप्रहरित; इरावणन् तलैयिल्–रावण के सिरों पर; तायित–कूदकर; पाक्कियम् अनैय–सौभाग्य ही सम; निन्–आपके; पऴिप्पु इल् मेनियै–अनिंद्य शरीर को; नोक्किय कण्कळै–जिन आँखों ने बुरे विचार के साथ देखा, उन आँखों को; नुति कॊळ् मूक्किताल्–तीक्ष्ण चोंचों से; कवर्न्तु कॊण्टु–छीन लेकर; उण्ण काण्टि–खायँगे, देखिए। ६६६

कौए अप्रतिहत रावण के सिर पर चढ़ बैठेंगे और उन आँखों को अपनी तीक्ष्ण चोंचों से नोचकर खाएँगे; जिन आँखों ने आपके सौभाग्य-सम

अप्राकृत दिव्य और अनिन्द्य मंगल-विग्रह को बुरी कामना के साथ देखा था। ६६६

मेलुऱ् विरावणऱ् कळिन्दु वॆंळ्हिय
नीलुरु तिशैक्करि तिरिन्दु निऱ्पन
आलुऱ् वत्तैयवन् ऱलैयै यव्ववै
कालुऱक् कणैतडिन् दिडुव काण्डियाल् 667

मेल्–पहले; इरावणऱ्कु–रावण से; उऱ् अळिन्तु–पूर्ण रूप से हारकर; वॆंळ्किय–लज्जित; नील् उरु–नील रंग की; तिचै करि–दिशाओं के दिग्गज; तिरिन्तु निऱ्पत्त–मन मारकर (जो) खड़े हैं; आल् उऱ्वु अत्तैयवन्–बरगद के वृक्ष के समान रावण के; तलैयै–सिरों को; अव्ववै–उन दिग्गजों के; काल् उऱ्–पैरों पर जा गिरें, ऐसा; कणै–श्रीराम के शर; तटिन्तु–काटकर; इटुव–डालेंगे; काण्टि–आप देखिए। ६६७

नीली दिशाओं के दिग्गज पहले रावण से लड़े, बुरी तरह हारे और शरमाते हुए पस्त खड़े हैं। अब श्रीराम के बाण बरगद के समान दिखने वाले रावण के सिरों को काटकर उन दिग्गजों के चरणों पर डाल देंगे। वह आप देखेंगी। ६६७

नीर्त्तॆंळु मुहिल्मळै वळङ्गु नीलवान्
वेर्त्तदॆंन् ऱिडैयिडै वीशुम् वेरऱ्
पोर्त्तॆंळु पॊलङ्गॊडि यिलङ्गॆप् पूळियो
डार्त्तॆंळु कळुहिरैत् ताडक् काण्डियाल् 668

नीर्त्तु ऍंळु–जल के साथ उठे; मुकिल् मळै–मेघों की वर्षा; वळङ्कु–करनेवाला; नील वान्–नीला आकाश; वेर्त्ततु ऍंन्ऱु–स्वेदयुक्त हुआ ऐसा मानकर; इटै इटै–रह-रहकर; वेर् अऱ्–पसीना पोंछने के लिए; वीचुम्–फहरते हुए (हवा करते हुए); पोर्त्तु ऍंळु–आच्छादित कर उठनेवाली; पॊलम् कॊटि–सुन्दर पताकाओं से शोभित; इलङ्कै–लंका में; पूळियोटु–धूल के साथ; आर्त्तु ऍंळु–जोर-शोर के साथ उठनेवाले; कळुकु इरैत्तु आट–गीध शब्द करते हुए घूमेंगे; काण्टि–देखिए। ६६८

लंका में ध्वजाएँ फहर रही हैं। जल-भरे मेघों द्वारा वर्षा करानेवाला आकाश स्वेदयुक्त हो गया —यह समझकर वे ध्वजाएँ हवा कर रही हों, ऐसा लगता है। अब उनकी जगह धूल के साथ शोर मचाते हुए गीध ऊपर उड़ेंगे। आप देखेंगी। ६६८

नोनिऱ् वरक्कर्दङ् गुरुदि नीत्तनीर्
वेलैमिक् काऱ्ऱॊडु मोळ वेलैशूळ्
ञालमुर् ऱुरुहडै युहत्तु नच्चराक्
कालनुम् वॆंरुत्तुयिर् कालक् काण्डियाल् 669

नील् निऱ–काले रंग के; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुरुति नीत्तम्–रक्त का प्रवाह; नीर् वेलै मिक्कु–जल-समुद्र में भरकर; आऱ्ऱोटु–उसी नदी द्वारा; मीळ–लौट आयगा; वेलै चूळ् ञालम्–समुद्र-मेखला पृथ्वी को; मुऱ्ऱु उरु–अन्त करनेवाले; कटै युकत्तु–युगान्त में; नच्चु अऱा कालतुम्–अतृप्त कालदेव भी; वॆऱुत्तु–अघाकर; उयिर् काल–जीवों को उगल देगा; काण्टि–देखिए। ६६९

काले रंग के राक्षसों का रक्तप्रवाह जल-भरे समुद्र में जाकर गिरेगा। और समुद्र से छलककर फिर लौट के उसी नदी में बहता आयगा। समुद्रमेखला भूमि का अन्त करानेवाले युगान्त में भी जो यम नहीं अघाता, वह अब अधिक हो जाने से घृणा करके जीवों को उगल देगा। आप वह भी देखेंगी। ६६९

अणङ्गिळ महळिरॊ डरक्क राडुरुम्
मणङ्गिळर् कऱ्पहच् चोलै वाविवाय्प्
पिणङ्गुरु वाऩ्मुऱै पिडित्त मालैय
कणङ्गॊडु कुरक्किऩङ् गुतिप्पक् काण्डियाल् 670

अणङ्कु इळ मकळिरॊटु–कमसिन अप्सराओं के साथ; अरक्कर् आटु उरुम्–जहाँ राक्षस स्नान करते हैं; मणम् किळर्–सुगन्धियुक्त; कऱ्पक चोलै–कल्पवन के; वावि वाय्–तडाग में; पिणङ्कु उरु–वक्र; वाल् मुऱै पिटित्त–क्रम से पूँछ पकड़कर; मालैय–पंक्तिबद्ध; कणम् कॊटु–झुण्डों में रहनेवाले; कुरङ्कु इऩम्–वानर-समूह; कुतिप्प–उछल-कूद मचाएँगे; काण्टि–देखेंगी। ६७०

युवावस्था की अप्सराओं के साथ राक्षस कल्पवनों के तडाग में स्नान करके आनन्द मना रहे हैं। अब उन कल्पवनों में बन्दर क्रम से एक-दूसरे की पूँछ पकड़े वृन्द में नाचेंगे-कूदेंगे। देखिए। ६७०

चॆप्पुऱ लॆऩ्बल तॆय्व वाळिकळ्
इप्पुऱत् तरक्करै मुरुक्कि येहिऩ
मुप्पुऱत् तुलहैयुम् मुडुक्कि मुट्टलाल्
अप्पुऱत् तरक्करु मवियक् काण्डियाल् 671

पल–विविध; चॆप्पुऱल्–(बातें) कहना; ऎऩ्–क्यों; तॆय्व वाळिकळ्–(श्रीराम के) दिव्य शर; इ पुऱत्तु–यहाँ के; अरक्करै–राक्षसों को; मुरुक्कि–मारकर; एकिऩ–जाकर; पुऱत्तु–उस पार; मु उलकैयुम्–तीनों लोकों को; मुटुक्कि–आक्रमण कर; मुट्टलाल्–प्रहरित करेंगे, इसलिए; अ पुऱत्तु–वहाँ के; अरक्करुम्–राक्षस भी; अविय–मिट जायेंगे; काण्टि–देखिए। ६७१

किं बहुना ? श्रीराम के दिव्यास्त्र इस अण्ड में रहनेवाले राक्षसों को मारेंगे, आगे जायँगे और त्रिविध लोकों को प्रहरित करके टकराएँगे। तब अण्ड-पार राक्षस भी मिटेंगे। यह आप देखेंगी। ६७१

❀ईण्डोरु तिङ्गणी यिडरित् वैहवुम्
वेण्डुव दन्ऱियान् विरैविन् वीरत्तै
काण्डले कुरैवुपिन् कालम् वेण्डुमो
आण्डहै यिन्ऱियोरु पॊऴुदु माऱ्ऱुमो 672

ईण्टु–यहाँ; नी–आपको; ऑरु तिङ्कळ्–एक महीना; इटरित् वैकवुम्–दुःख में रहना; वेण्टुवतु अन्ऱु–नहीं पड़ेगा; यान्–मैं; विरैविन्–तुरन्त; वीरत्तै काण्टले–वीर से मिलूँ; कुरैवु–उतना ही कसर है; पिन् कालम् वेण्टुमो–फिर देरी भी चाहिए क्या; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; इन्ऱि–अब; ऑरु पॊऴुतुम्–कभी; आऱ्ऱुमो–सहेंगे क्या। ६७२

आपको और एक महीना संकट में रहना नहीं पड़ेगा। मैं शीघ्र जाऊँ और वीर श्रीराम से मिलूँ, इतना ही कसर है, फिर विलम्ब काहे का ? क्या पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम एक पल (का विलम्ब) भी सहेंगे ? । ६७२

आवियुण् डॆन्नुमी दुण्डुन् नारुयिर्च्
चेवहन् ऱिरुवुरुत् तीण्डत् तीन्दिलाप्
पूविलै तळिरिलै पॊरिन्दु वॆन्दिलाक्
काविलै कॊडियिलै नॆडिय कानॆलाम् 673

आवि उण्टु–प्राण हैं; ॲन्नुतुम् ईतु उण्टु–यह कहने का स्थान है; नॆटिय कान् ॲलाम्–बड़े वन में सर्वत्र; उन् आरुयिर्–आपके प्राणप्यारे; चेवकन्–वीर श्रीराम के; तिरु उरु तीण्ट–श्रीशरीर के लगने से; तीन्तिला–जो नहीं जले; पू इलै तळिर् इलै–पुष्प नहीं, पत्ते नहीं; पॊरिन्तु वॆन्तिला–लाजा-सम जो नहीं भुने; का इलै–उपवन नहीं; कॊटि इलै–लताएँ नहीं हैं। ६७३

श्रीराम की स्थिति ऐसी है कि प्राण ज्यों-त्यों करके टिके रहते हैं —यही कहा जाय। आपके प्राणप्यारे वीर के श्रीशरीर के बड़े कानन में सर्वत्र स्पर्श से जो नहीं मुरझाए ऐसे फूल नहीं है, ऐसे पत्ते नहीं हैं। लाजे के समान जो नहीं भुने ऐसे वन नहीं हैं, ऐसी लताएँ भी नहीं। (श्रीराम की विरहाग्नि ऐसी है।) । ६७३

शोहम्वन् दुरुवदु तॆळिवु तोय्न्दन्ऱो
मेंहम्वन् दिडित्तुरु मेरु वीऴ्िनुम्
आहमुम् बुयङ्गळु मळुन्द वैन्दलै
नाहम्वन् दडर्प्पिनु मुणर्वु नारुमो 674

चोकम् वन्तु उरुवतु–शोक का आकर भरना; तॆळिवु तोय्न्तन्ऱो–वह मन निश्चिन्त रहे तभी न होगा; मेकम् वन्तु–मेघ आकर; उरुम् एरु–वज्र; इटित्तु वीऴ्तिनुम्–टूटकर गिरें, तब भी; आकमुम् पुयङ्कळुम्–वक्ष और भुजाओं में; अऴुन्त–दाँत गड़ाकर; ऐम् तलै नाकम् वन्तु–पंच-सिर नाग आकर; अटर्प्पितुम्–दुःख दे तो भी; उणर्वु नारुमो–सुध होगी क्या। ६७४

मन निश्चिन्तता से रहे तभी न शोक आकर अपना घर बसा लेगा ! मेघों से गाज गिरें या पाँच सिर का भयंकर नाग उनके वक्ष पर और भुजाओं पर दंशन करके दुःख दे तो भी श्रीराम को उसकी अनुभूति होगी क्या ? (उनका मन इतना विरह-मोहित है।) । ६७४

मत्तुरु तयिरॆन वन्दु शॆन्ऱिडै, तत्तुरु मुयिरॊडु पुलऩ्ग डळ्ळुरुम्
पित्तनिऩ् पिरिविऩिऱ् पिऱन्द वेदनै, ऎत्तनै युळववै यॆण्णु मीट्टवो 675

मत्तु उरु–मथानी-मथित; तयिर् ऎन–दही के समान; वन्तु चॆन्ऱु–आते-जाते; इटै तत्तुरुम्–बीच में लड़खड़ानेवाले; उयिर् ऒटुम्–प्राणों के साथ; पुलन्कळ् तळ्ळुरुम्–इन्द्रियों को अस्त-व्यस्त करनेवाले; पित्तम्–दीवानापन; ऎत्तनै उळ–कितनी ही तरह के हैं; अवै–वे; निन् पिरिवितिल्–आपके विरह में; पिऱन्त–जनित; वेतनै–वेदनाएँ हैं; ऎण्णुम् ईट्टवो–गिने जा सकते हैं क्या । ६७५

प्राण मथानी-मथित दही के समान मथे जाकर आते-जाते और बीच में लड़खड़ाते हैं। इन्द्रियों को बेकार करते हुए उनको अपने वश में रखता है पागलपन; उसके भी कितने ही प्रकार हैं ! वे सब आपके वियोग में जनित दुःख के प्रगटन हैं। वे गिने भी जा सकते हैं क्या ? । ६७५

इन्निलै युडैयवऩ् ऱरिक्कु मॆन्ऱॆणुम्
पॊय्न्निलै काण्डियाऩ् पुहऩ्ऱ यावुमुऩ्
कैन्निलै नॆल्लियङ् गऩियिऱ् काट्टुहेऩ्
मॆय्न्निलै युणर्न्दुनी विडैतऩ् दॆऩ्ऱाऩ् 676

इ निलै उटैयवन्–इस स्थिति के; तरिक्कुम्–श्रीराम प्राणधारण कर सकेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा; ऎणुम्–जो सोचती हैं; पॊय् निलै–उसकी असत्यता; काण्टि–आप देख लेंगी; मॆय् निलै–यही सच्ची स्थिति; नी उणर्न्तु–आप जानकर; विटै तन्तु ई–विदा देने की कृपा करें; यान् पुकन्ऱ यावुम्–अपना कहा सारा; उन् कै निलै नॆल्लि अम् कतियिल्–अपने करतल में रखे सुन्दर आमले के फल के समान; काट्टुकेन्–दिखा सकूँगा; ऎन्ऱान्–हनुमान ने कहा । ६७६

ऐसी स्थिति में रहनेवाले श्रीराम प्राणधारण करके जीवित रह सकेंगे —यह जो आप सोचती हैं वह कितना मिथ्यामूलक है यह आप स्वयं देख लेंगी, पीछे। इसलिए यह सच्ची स्थिति जानकर आप मुझे विदा दे दें। अपना कहा सारा मैं करतलामलकवत सच प्रमाणित कर दिखा सकता हूँ। हनुमान ने कहा । ६७६

तीर्त्तनुङ् गविक्कुलत् तिऱैयुन् दॆविनिऩ्
वार्त्तैहेट् टुवप्पदऩ् मुऩ्ऩ माक्कडल्
तूर्त्तन विलङ्गैयैच् चूळ्न्दु दिरुत्ति
गार्त्तन केट्टुवन् यऩ्ऩैनी 677

अन्नै–माते; तीर्त्तन्नुम्–तीर्थ श्रीराम और; कवि कुलत्तु इरैयुम्—कपिकुल-पति; तेवि–देवी; निन् वार्त्तै केट्टु–आपके सन्देश-वचन सुनकर; उवप्पतन् मुन्नम्–मुदित हों, इसके पहले ही; मा कटल् तूर्त्तत्त–बड़े समुद्र को जो पाट देंगे; इलङ्कैयै चूळ्न्तु–और लंका को घेरेंगे; मा कुरङ्कु–वे बड़े वानर; आर्त्तत्त–गरजेंगे; केट्टु–सुनकर; उवन्तु–हर्ष करके; नी इरुत्ति–आप रहिए। ६७७

(उसने आगे कहा।) माँ! तीर्थ श्रीराम और कपिकुलाधिपति आपकी बात सुनकर मुदित हों, इसके पूर्व ही बड़े सागर को पाटकर लंका को आ घेर लेंगे वानर और उनका गर्जन सुनकर आप आनन्द के साथ रहेंगी। ६७७

ॲण्णरुम्	बॅरुम्बडै	योण्डि	यिन्नहर्
नण्णिय	पॉळुददु	नडुव	णङ्गैनी
विण्णुरु	कलुळन्मेल्	विळङ्गुम्	विण्डुविन्
कण्णनै	यॆन्नॆडु	पुयत्तिऱ्	काण्डियाल् 678

नङ्कै–नायिका देवी; ॲण् अरुम्–अगणित; पॅरुम् पटै–बड़ी सेना; ईण्टि–एकत्र होकर; इ नकर्–इस नगर में; नण्णिय पॉळुतु–जब आएँगे तब; अतु नट्वण्–उस सेना के मध्य; विण् उरु–आकाशचारी; कलुळन् मेल्–गरुड़ पर; विळङ्कुम्—शोभित रहनेवाले; विण्टुविन्–श्रीविष्णु की तरह; कण्णनै–श्रीराम को; ॲन् नॅटु पुयत्तिल्–मेरे बड़े कन्धों पर; नी काण्टि–आप देखेंगी। ६७८

देवी! असंख्यक सेना एकत्र हो आएगी। तब उसके बीच आप देखेंगी नेत्राभिराम श्रीराम को मेरे बड़े कन्धों पर, आकाशचारी गरुड़ के कन्धों पर श्रीविष्णु के समान शोभायमान! । ६७८

अङ्गदन्	ऱोण्मिशै	यिळव	लम्मलैप्
पॉङ्गिळङ्	गदिरॆन्नप्	पॊलियप्	पोर्प्पडै
इङ्गुवन्	दिरुक्कुनी	यिडरि	नॆय्दुरुम्
शङ्गैयु	नीङ्गुदि	तनिमै	नीङ्गुवाय् 679

अङ्कतन् तोळ् मिचै—अंगद के कन्धों पर; इळवल्—लघुराज; अम् मलै—सुन्दर (उदय) गिरि पर; पॉङ्कु–उठनेवाले; इळम् कतिर् ॲन्न–बाल सूर्य के समान; पॊलिय–शोभेंगे और; पोर्प्पटै–समरोद्यत सेना; इङ्कु वन्तु इरुक्कुम्–यहाँ आकर डेरा डालेगी; नी–आप; इटरिन् ॲय्तुरुम्–संकट में रहेंगे, यह; चङ्कैयुम्–शंका भी; नीङ्कुति–दूर कर दीजिए; तनिमै–एकाकीपन; नीङ्कुवाय्–दूर कर लेंगी। ६७९

अंगद के कन्धे पर, सुन्दर उदयाचल पर उगनेवाले बाल-रवि के समान लघुराज लक्ष्मण रहेंगे। समरोद्यत वानर-सेना यहाँ आकर पड़ाव डालेगी। अब संकटग्रस्त रहने का संशय त्याग दीजिए। एकाकिनी रहने की स्थिति भी हट जायगी। ६७९

❀कुरावरुङ् गुऴलिनी कुरित्त नाळिनिल्
विरावरु नॆडुञ्जिरै मीट्क लानॆनिल्
परावरुम् बऴियॊडु पावम् मुऱ्ऱुदऱ्
किरावण नल्लनॆ यिराम नॆन्ऱनन् 680

कुरा अरुम् कुऴलि–'कुरा' नामक पुष्पों से अलंकृत सुन्दर केशिनी; नी कुरित्त नाळिनिल्–आपके निर्दिष्ट दिन में; विरावरु–घेरते रहनेवाले; नॆटञ्चिरै–दीर्घ कारावास से; मीट्कलान् ऎनिल्–न छुड़ा सकेंगे तो; परावरुम्–फैलाते आनेवाले; पऴियॊटु–अपयश के साथ; पावम् मुऱ्ऱुतऱ्कु–पाप भी पूर्ण रूप से लगे, इसके लिए; इरावणन् अल्लनॆ–रावण नहीं हैं; इरामन्–श्रीराम; ऎन्ऱनन्–कहा, हनुमान ने। ६८०

'कुरा' नामक पुष्पों से अलंकृत केशिनी ! आपसे निर्दिष्ट अवधि के अन्दर, घेरते रहनेवाले दीर्घ कारावास से श्रीराम आपको मुक्त नहीं करें तो वे क्या रावण हैं कि फैलते अपयश के साथ पाप का भी पूर्ण रूप से सम्पादन कर लें। वे श्रीराम हैं —यह स्मरण रहे। हनुमान ने इस भाँति धैर्य-वचन कहे। ६८०

आह विम्मॊऴि याशिल केट्टरि वुऱ्ऱाळ्
ओहै कॊण्डु कऴिक्कु मनत्त ळुयर्न्दाळ्
पोहै नन्ऱिव नॆन्बदु पुन्दियिन् वॆत्ताळ्
तोहै युञ्जिल वाशह मिन्नन शॊन्नाळ् 681

आक–इस भाँति; आचु इल–निर्दोष; इम्मॊऴि–ये वचन; केट्टु–सुनकर; अरिवु उऱ्ऱाळ्–स्वस्थचित्त हुईं; ओकै कॊण्टु कऴिक्कुम्—हर्ष की बात से मुदित होनेवाले; मनत्तळ्–मन की होकर; उयर्न्ताळ्–सँभल गयीं; इवन् पोकै–इसका जाना; नन्ऱु–भला है; ऎन्पतु–इसको; पुन्तियिन् वैत्ताळ्–मन में विचार कर; तोकैयुम्–मयूराभा देवी ने भी; इन्नन–यों; चिल वाचकम्–कुछ वचन; चॊन्नाळ्–कहे। ६८१

हनुमान के ये दोष-रहित वचन सुनकर सीताजी स्वस्थचित्त हुईं। उनके मन में आनन्द उमँग आया और वे उन्नत अवस्था में आ गयीं। उन्होंने सोचा कि अब इसका जाना ही अच्छा है। बुद्धि में यह सोचकर कलापी-सी छटा वाली देवी ने निम्नांकित वचन कहे। ६८१

शेऱि यॆय विरैन्दनै तीयवै यॆल्लाम्
वेऱि यानिनि यॊन्ऱुम् विळम्बलॆन् मेलोय्
कूऱु हिन्ऱन मुन्गुऱि युऱ्ऱन कोमाऱ्
केऱु मॆन्ऱवै शॊल्लॆन विन्नन विशैप्पाळ् 682

ऐय–तात; मेलोय्–श्रेष्ठ; विरैन्ततै चेऱि–त्वरित गति से जाओ; तीयवै ऎल्लाम्–सभी संकटों को; वेऱि–जीतो; इनि–अब; यान्–मैं; ऒन्ऱुम् विळम्पलॆन्–कोई बात नहीं कहूँगी; कूऱुकिन्ऱन–अब जो कहूँगी; मुन् कुऱि उऱ्ऱन–पहले है

घटित हो गयी हैं; कोमाऱ्कु एरुम्–हमारे अधिपति श्रीराम से स्वीकार्य हैं; ॲन्ऱु–कहकर; अवै चॊल्–उनको जाकर सुनाओ; ॲन–कहकर; इन्न इचैप्पाळ्–निम्नांकित बातें कहने लगीं। ६८२

बाबा! उत्तम! शीघ्र चलो। सभी बुराइयों को जीतो। आगे कुछ अधिक ऐसी बातें नहीं कहूँगी। पर अब जो कहूँगी वह पूर्वघटित बातें हैं और अभिज्ञान के रूप में श्रीराम से स्वीकार्य होंगी। उनसे वे बातें कहो। यह कहकर वे बताने लगीं। ६८२

नाह	मॊन्ऱिय	नल्वरै	यिन्ऱलै	मेनाळ्
आहम्	वन्दॆन्नै	वळ्ळुहिर्	वाळि	नळैन्द
काह	मॊन्ऱै	मुनिन्दयल्	कल्लॆळु	पुल्लाल्
वेह	वॆम्बडै	विट्टदु	मॆल्ल	विरिप्पाय् 683

मेल् नाळ्–पहले कभी एक दिन; नाकम् ऑन्ऱिय–आकाशस्पर्शी; नल् वरैयिन् तलै–सुन्दर (चित्रकूट) पर्वत पर; काकम् ऑन्ऱु–एक कौए का; वन्तु–आकर; ॲन्नै–मेरे; आकम्–वक्ष को; वळ् उकिर् वाळिन्–तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से; अळैन्ततै–नोचना; मुनिन्तु–(देखकर) कोप करके; अयल्–पास में; कल् ॲळु–पत्थर-मध्य उठी; पुल्लाल्–घास को; वेक–वेगवान; वॆम् पटै–भयंकर (ब्रह्म-) अस्त्र (बनाकर); विट्टतु–जो (श्रीराम ने) चलाया; मॆल्ल विरिप्पाय्–धीरे-धीरे बताओ। ६८३

पहले एक दिन जब हम गगनचुम्बी चित्रकूट पर्वत पर रहे, तब एक कौआ आया और अपने तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से मेरे वक्षःस्थल को नोचने लगा। उसे देखकर श्रीराम ने गुस्से में आकर पास पत्थरों के बीच उगी रही एक (दर्भ की) घास को ब्रह्मास्त्र के रूप में अभिमंत्रित किया और उस भयंकर अस्त्र को उस पर छोड़ा। यह बात तुम धीरे से उनसे कहो। ६८३

[आगे कुछ संस्करणों में पाँच पद पाये जाते हैं, जिनमें जयन्त का भागना और सभी देवताओं द्वारा अरक्षित होकर लौट आना और श्रीराम के चरणों पर गिरना आदि बातें विस्तार के साथ कही गयी हैं। श्रीराम ने उसको एक आँख से हीन कर उसे क्षमा कर दिया। यह कहानी है। उ० वे० स्वामीनाथय्यर का विचार है कि ये क्षेपक हैं।]

ॲन्नॊ	रिन्नुयिर्	मॆन्गिळिक्	कार्पॆय	रीहेन्
मन्न	वॆन्ऱलु	माशरु	केहयन्	मादॆन्
अन्नै	तन्बॆय	राहॆन	वन्बिनॊ	डन्नाळ्
शॊन्न	मॆय्म्मॊळि	शॊलुदि	मॆय्म्मै	तॊडर्न्दोय् 684

मन्न–राजा; ॲन्–मेरे; ऑर् इन् उयिर्–मधुर प्राण-सम; मॆन् किळिक्कु–

कोमल शुक को; आर् पॅयर्–किसके नाम से; ईकेन्–नामकरण करूँगा; ऍऩ्ऱलुम्–पूछते ही; माचु अऱ–अकलंक; केकयऩ् मातु–केकय-पुत्री; ऍऩ् अऩ्ऩै तऩ्–मेरी माता का; पॅयर् आक–नाम हो; ॲऩ–ऐसा; अऩ्पिऩोटु–प्रेम के साथ; अ नाळ् चॊऩ्ऩ–उस दिन जो कहा गया; मॅय् मॊऴि–वह सत्य वचन; मॅय्म्मै तॊटर्न्तोय्–सत्यनिष्ठ; चॊल्लुति–कहो। ६८४

मैं एक कोमल शुक को अपने ही प्राण-सम पाल रही थी। मैंने श्रीराम से पूछा कि राजा! इसको किसका नाम दूँ? तब प्रभु ने कहा, अकलंक मेरी माता केकयतनया का नाम रख लो। उन पर अपना अतिशय मातृप्रेम प्रकट करते हुए उन्होंने जो कहा था, वह सत्यवचन, सत्यनिष्ठ हनुमान! उनसे कहो। ६८४

ऍऩ्ऱु रैत्तिऩि दित्तऩै पेरडै याळम्
ऒऩ्ऱु णर्त्तुव दिल्लॅऩ वॅण्णि युणर्न्दाळ्
तऩ्ऱि रुत्तुहि लिऱ्पॊदि वुऱ्ऱदु ताऩै
वॅऩ्ऱ दच्चुडर् मेलॊडु कीऴुऱ मॅय्याल् 685

ऍऩ्ऱु–ऐसा; इत्तऩै पेर् अटैयाळम्–इतना मुख्य अभिज्ञान; इऩितु उरैत्तु–मधुर रीति से कहकर; ऒऩ्ऱु उणर्त्तुवतु इल्–आगे कहने के लिए कुछ नहीं है; ॲऩ–ऐसा; ऍण्णि उणर्न्ताळ्–सोचकर जाना; तऩ् तिरु तुकिलिल्–अपने श्रीवस्त्र में; पॊतिवु उऱ्ऱतु–जो बाँध रखा गया था; मॅय्याल्–सचमुच; मेलॊटु कीऴुऱ–आकाश और भूमि में समान रहनेवाले; अच् चुटर् ताऩै–उस तेजःपुञ्ज (सूर्य) को; वॅऩ्ऱतु–जिसने (अपनी ज्योति से) हरा दिया था। ६८५

इतने श्रेष्ठ संकेत के वचन कहने के बाद देवी ने सोचा कि आगे कहने के लिए कुछ नहीं है। तब उन्होंने अपने वस्त्र में बँधा रहा और आकाश तथा भूमि पर समान रूप से ज्योतिपुंजों में शीर्षस्थ सूर्य के समान शोभित—। ६८५

वाङ्गि ऩाडन् मलर्क्कैयि ऩऩ्ऩदु मुऩ्ऩा
एङ्गि ऩाऩव् वनुमनु मॅऩ्गॊलि दॅऩ्ऩा
वीङ्गि ऩाऩ्वियन् दाऩुल हेऴुम् विऴुङ्गित्
तूङ्गु कारिरुण् मुऱ्ऱु मिरिन्ददु शुऱ्ऱुम् 686

अऩ्ऩतु–उसको; मुऩ्ऩा–देना चाहकर; तऩ् मलर् कैयिऩ्–अपने कमलहस्त पर; वाङ्किऩाळ्–लिया; इतु ऍऩ् कॊल्–यह क्या है; ऍऩ्ऩा–ऐसा; अ अनुमऩुम्–उस हनुमान ने भी; एङ्किऩाऩ्–उत्सुक हुआ; वियन्ताऩ्–विस्मित हुआ; वीङ्किऩाऩ्–फूला न समाया; उलकु एऴुम्–सातों लोकों को; विऴुङ्कि–लीलकर; तूङ्कुम्–रहनेवाला; कार् इरुळ्–काला अन्धकार; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; मुऱ्ऱुम् इरिन्ततु–पूर्ण रूप से भाग गया। ६८६

चूडामणि अपने कमल-से हाथ में लिया। हनुमान विस्मित और आतुर

हुआ कि ओफ़ ! यह कौन सी वस्तु है ? उसका शरीर फूल गया। सातों लोकों को लीलकर जो फैला रहा वह अन्धकार भी सभी ओर से भाग गया। ६८६

मञ्ज	लङ्गौळि	योतुमिम्	मानहर्	वन्दाऩ्
अञ्ज	लत्तॆऩ	वॆङ्गण	ररक्क	रयिर्त्तार्
शञ्ज	लम्बुरि	चक्कर	वाहन्	दळिर्त्त
कञ्ज	मुम्मलर्	वुट्रऩ	कान्दिऩ	कान्दम् 687

मञ्चु अलङ्कु–मेघों को छितरानेवाली; ऑळियोतुम्–ज्योति का सूर्य भी; अञ्चलत्–निर्भय होकर; इ मानकर्–इस बड़े नगर; वन्ताऩ् ऎऩ–आया जैसे; वॆम् कण्–भयंकर आँख वाले; अरक्कर्–राक्षस; अयिर्त्तार्–शंकित हुए; चञ्चलम् पुरि–शंकित रहे; ··· चक्करवाकम्–चक्रवाक पक्षी; तळिर्त्त–लहलहा उठे; कञ्चमुम्–कंजपुष्प; मलर्वु उट्रऩ–विकसित हुए; कान्तम्–सूर्यकान्त पत्थर; कान्तिऩ–चमके। ६८७

मेघों को छितरा देनेवाली किरणों के स्वामी सूर्य को डर छोड़कर इस बड़े नगर में आया समझकर भयानक आँखों वाले राक्षस सशंक हो गये। भयचंचल चक्रवाक पक्षी लहलहा उठे। कञ्ज भी खिल उठे। सूर्यकान्त मणियाँ कान्ति बिखरने लगीं। ६८७

कून्दऩ्	मॆऩ्मळैक्	कॊणमुहिऩ्	मेलॆळु	कोळिऩ्
वेन्द	ऩऩ्ऩदु	मॆल्लिय	ऩ्ऩ्रिरु	मेऩि
शेन्द	दऩ्दमिल्	शेवहऩ्	शेवडि	यॆऩ्ऩक्
कान्दु	हिऩ्ऱदु	काट्टिऩण्	मारुदि	कण्डाऩ् 688

मळै कॊळ्–शीतल; मॆल् कून्तल्–कोमल केश रूपी; मुकिल् मेल्–मेघ पर; ऎळु कोळिऩ् वेन्तऩ्–सातों ग्रहों के राजा, सूर्य; अऩ्ऩतु–सरीखा; मॆल्लियल् तऩ्–कोमल स्वभाव वाली देवी के; तिरुमेऩि चेन्ततु–श्रीशरीर के समान अरुण; अन्तम् इल्–अनन्त; चेवकऩ्–वीरता से पूर्ण श्रीराम के; चेवटि–श्रीचरण; ऎऩ्ऩ–सदृश; कान्तुकिऩ्ऱतु–चमकनेवाला वह चूडामणि; काट्टिऩळ्–(सीता ने) दिखाया; मारुति कण्टाऩ्–मारुति ने देखा। ६८८

देवी के शीतल कोमल केश-मेघ पर सप्तग्रहों के राजा सूर्य के समान जो रहा करता था; सीताजी के श्रीशरीर के समान जो लाल था; अपार वीरता के साथ शोभायमान श्रीराम के चरणों के समान जो तेज निसृत करता था, उस चूडामणि को देवी ने दिखाया और हनुमान ने देखा। ६८८

❀ शूडै	यिम्मणि	कण्मणि	यॊप्पदु	तोऩ्ऩाळ्
आडै	यिऩ्गणि	रुन्ददु	पेरडै	याळम्
नाडि	वन्दॆऩ	दिऩ्ऩुयिर्	नल्हिऩै	नल्लोय्
कोडि	यॆऩ्रु	कॊडुत्तऩण्	मॆय्प्पुहऴ्	कॊण्डाळ् 689

मॅय् पुकऴ् कॉण्टाळ्–सच्ची यशस्विनी (सीताजी) ने; नाटि वन्तु–खोजते आकर; ऍन्तु इन् उयिर्–मेरे प्रिय प्राण; नल्कितै–(रक्षित किये) दिये; नल्लोय्–उत्तम; चूटै इ मणि–यह चूडामणि; कण् मणि ऑप्पतु–आँखों की पुतली के समान है; तोल् नाळ्–बहुत पहले से; आटैयिन् कण्–मेरे वस्त्र में (बँधा); इरुन्ततु–रहा; पेर् अटैयाळम्–बहुत बड़ा अभिज्ञान है; कोटि–लो; ऍन्ऱु–कहकर; कॊटुत्ततळ्–दिया। ६८९

सत्य यशस्विनी देवी ने कहा कि खोजते आकर तुमने मुझे प्राणदान किया। हे उत्तम ! यह चूडामणि मेरी आँख की पुतली (के समान) है। बहुत दिनों से वस्त्र में बाँधे रखा था। यह सर्वश्रेष्ठ अभिज्ञान है। लो इसे, यह कहकर देवी ने उसे हनुमान के पास दे दिया। ६८९

❀ तॊऴुदु वाङ्गिनन् शुऱ्ऱिय तूशिनिन् मुऱ्ऱप्
पऴुदु ऱावहै पन्दनै शॅय्दनन् पल्हाल्
अऴुदु मुम्मै वलङ्गॊ डिऱैञ्जिन नन्बो
डॆऴुदु पावैयु मेत्तिन ळेहिन निप्पाल् 690

तॊऴुतु वाङ्कितन्–नमस्कार करके हनुमान ने ग्रहण किया; मुऱ्ऱ–भलीभाँति; पऴुतु उऱा वकै–कोई हानि न हो इस रीति से; चुऱ्ऱिय तूचितिन्–पहने हुए वस्त्र में; पन्ततै चॅय्ततन्–बाँध लिया; पल् काल्–कई बार; अऴुतु–रोकर; मुम्मै वलम् कॊटु–तीन बार प्रदक्षिणा करके; इऱैञ्चितन्–फिर विनय दरसायी; ऍऴुतु पावैयुम्–लिखित चित्र-सी देवी ने भी; अन्पॊटु–वात्सल्य के साथ; एत्तितळ्–आशीर्वाद किया; इप्पाल्–इसके बाद। ६९०

हनुमान ने नमस्कार करके चूडामणि को हाथ में ग्रहण किया। उसकी कोई हानि नहीं हो, इस रीति से उसने उसे अपने वस्त्र में बाँध लिया। उसे रुलाई आ गयी और कई बार रोया। फिर उसने सीताजी की तीन बार परिक्रमा की और फिर से अपनी विनय जतायी। लिखित चित्र-सी देवी ने भी स्नेह के साथ उसे आशीर्वाद दिया। हनुमान वहाँ से चला। बाद (जो घटा वह वृत्तान्त आगे कहेंगे।)। ६९०

6. पॊऴिलिऱुत्त पडलम् (उद्यान-विध्वंस पटल)

नॅऱिक्कॊडु वडक्कुऱ निनैप्पिनि निमिर्न्दान्
पॊऱिक्कुल मॆऴप्पॊऴि लिडैक्कडिदु पोवान्
शिऱुत्तॊऴिन् मुडित्तहऱ ऱीदॆन ऱॆरिन्दान्
मऱित्तुमोर् शॆयऱ्कुरिय कारिय मदित्तान् 69

नॆऱि कॊटु–मार्ग पकड़कर; वटक्कु उऱ–उत्तर की ओर; निनैप्पितिल्–जा... के संकल्प के साथ; निमिर्न्तान्–आकार बढ़ा लिया; पॊऱि कुलम् ऍऴ–भ्रमरों ...

भय से उड़ने को विवश करते हुए; पोंळिल् इटै–उस अशोकवन-मध्य; कटितु पोवान्–शीघ्र जो गया; चिरु तोंळिल् मुटित्तु–यह छोटा सा काम करके; अकरल्–छोड़ना; तीतु–भला नहीं; ॲन्तल्–ऐसा; तॅरिन्तान्–(उसने) सोचा; मरित्तुम्–फिर भी; ओर् चॅयर्कु उरिय कारियम्–करने योग्य एक कार्य; मतित्तान्–सोचा। ६६१

हनुमान ने अपना मार्ग लेकर उत्तर दिशा में जाने की बात सोची। इसलिए वह अपना विराट् रूप लेकर अशोकवन-मध्य शीघ्र-शीघ्र जाने लगा तो भ्रमर आक्रान्त होकर ऊपर उड़ने लगे। तब उसने सोचा कि केवल यह छोटा सा काम करके लौट जाना कुछ अच्छा नहीं है। इसलिए करणीय किसी काम के बारे में सोचने लगा। ६९१

ईनमुरु पर्रलरै यॅर्रि यॅयिन्मूदूर्
मीननिल यत्तिनुह वीशि विळिमानै
मानवन् मलर्क्कळलिन् वैत्तुमिलॅ नॅन्राल्
आनपोळ्ु दॅप्परिशि नानडिय नावेन् 692

ईनम् उरु–नीचकर्म; पर्रलरै–शत्रुओं को; ॲर्रि–पीटकर, मारकर; ॲयिल् मूतूर्–प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को; मीन तिलयत्तिन्–मकरालय में; उरु वीचि–छितराते हुए फेंककर; विळि मानै–मृगनयनी सीता को; मानवन्–सम्मान्य श्रीराम के; मलर् कळलिल्–कमलचरणों पर; वैत्तुमिलॅन्–ले जाकर नहीं छोड़ा; ॲन्राल्–तो; आन पोळ्ुतु–तब; ॲ परिचिन् नान–किस रीति से मैं; अटियन् आवेन्–दास बना। ६६२

नीच-कर्म शत्रु राक्षसों को पीटकर, प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को मकरालय में खण्ड-खण्ड करके न फेंककर मृगनयनी सीताजी को श्रीराम के कमल-चरण पर अर्पित नहीं किया मैंने। तो मैं किस तरह का सेवक बना ? । ६९२

वञ्जनै यरक्कनै नॅरुक्किनॅडु वालाल्
अञ्जिनुड नञ्जुदलै तोळुर वशैत्ते
वॅञ्जिरैयिल् वैत्तुमिलॅन् वॅन्रुमिलॅ नॅन्राल्
तञ्जमॊरु वर्क्कॊरुव रॅन्ररह वामो 693

वञ्चनै अरक्कनै–चोर राक्षस को; नॅटु वालाल्–लम्बी पूंछ से; अञ्चिन् उटन्–पाँच जोड़; अञ्चु तलै–पाँच सिरों; तोळ् उर–कन्धों को लगाकर; नॅरुक्कि अचैत्तु–कसकर बाँधकर; वॅम् चिरैयिल्–भयानक जेल में; वैत्तुम् इलॅन्–न डाला भी; वॅन्रुम् इलॅन्–न हराया भी; ॲन्राल्–तो; ऑरुवर्क्कु ऑरुवर्–एक का दूसरा; तञ्चम् ॲन्रल्–आश्रयदाता है कहना; तकवु आमो–युक्त होगा क्या। ६६३

मैंने अपनी लम्बी पूँछ में चोर रावण के दसों सिरों और बीसों भुजाओं को मिलाकर कस के बाँधकर कठोर कारागार में भी नहीं डाला। न

उसे युद्ध करके हराया। तब एक के दूसरे (श्रीराम के सुग्रीव) आश्रय-दाता हैं —यह कथन उचित (अर्थपूर्ण) हो सकता है क्या ? । ६९३

कण्डनिरु दक्कडल् कलक्कियॆन् वलत्ताल्
तिण्डिऱ् लरक्कनु मिरुक्कवोर् तिऱत्तिन्
मण्डवुद रत्तवळ् वडिक्कुळल् पिडित्तुक्
कॊण्डुशिऱै वैत्तिडुद लिऱ्कुऱैयु मुण्डो 694

कण्ट–अपना देखा हुआ; निरुत कटल्–राक्षस-सागर; ऍन् वलत्ताल्–अपने बल से; कलक्कि–मथकर; तिण् तिऱल् अरक्कनुम्–अति बलवान राक्षस के भी; इरुक्क–देखते रहते; ओर् तिऱत्तिन्–अपनी अनुपम शक्ति से; मण्ट उतरत्तवळ्–मन्द उदर वाली (मन्दोदरी) का; वटि कुळल्–सँवारा केश; पिटित्तु–पकड़कर; चिऱै कॊण्टु वैत्तिटुतलिल्–जेल में ले जा डाल देना; कुऱैयुम् उण्टो–दोषयुक्त होगा क्या। ६९४

अपने देखे राक्षस-सागर को अपने बल से मथकर अति बलिष्ठ रावण के देखते-देखते अपने अप्रतिम बल से मंद उदर वाली मन्दोदरी का सँवारा केश पकड़ खींच ले जाकर जेल में डाल दूँ तो वह क्या अपराध बन सकता है ? । ६९४

मीट्टुमिति यॆण्णुम्वितै वेऱुमुळ दन्ऱाल्
ओट्टियिव् वरक्करुयि रुण्डुरिमै यॆल्लाम्
काट्टुमदु वेहरुम मऱ्ऱवर् कडुम्बोर्
मूट्टुम्वहै यावदुहॊ लॆन्ऱुमुयल् हिन्ऱान् 695

मीट्टुम्–फिरकर; इति–अब; ऍण्णुम् वितै–सोचने योग्य काम; वेऱुम् उळतु अन्ऱु–अन्य कुछ नहीं है; इ अरक्कर् उयिर्–इन राक्षसों के प्राण; ओट्टि–दूरकर; उण्टु–उनको मारकर; उरिमै ऍल्लाम्–श्रीराम के दास का कर्तव्य सब; काट्टुम् अतुवे–कर दिखाना ही; करुमम्–करणीय काम है; अवर्–वे; कटुम् पोर्–घोर युद्ध; मूट्टुम्–आरम्भ करें; वकै यावतु कॊल्–इसका उपाय कौन सा है; ऍन्ऱु–ऐसा; मुयल्किन्ऱान्–उपाय सोचने लगा। ६९५

आगे क्या कोई काम है जो किया जाना चाहिए। इन राक्षसों के प्राण हर लेना ही कर्तव्य कार्य है। तभी सेवक के नाते अपना अधिकार जताने का काम होगा। अब राक्षसों को घोर युद्ध करने आने को मजबूर करूँ, इसका उपाय क्या है ? हनुमान उपाय सोचने लगा। ६९५

इप्पॊऴि लिनैक्कडि दिरुक्कुवॆ निऱुत्ताल्
अप्पॊरिय पूशल्शॆवि शार्दलु मरक्कर्
वॆप्पुरु शिनत्तरॆदिर् मेल्वरुवर् वन्दाल्
तुप्पुऱ मुरुक्कियुयि रुण्बलिदु शूदाल् 696

इ पॊऴिलिनै–इस अशोक वन को; कटितु इरुक्कुवॆन्–शीघ्र तोड़कर नष्ट करूँगा; इऱुत्ताल्–मिटाऊँ तो; अ पॆरिय पूचल्–वह बड़ा शोर; चॆवि चार्तलुम्–कान में पड़ेगा तो तुरन्त; अरक्कर्–राक्षस; वॆप्पु उरु–गरम हो; चिन्तर्–कोप से भरे; ॲतिर् मेल् वरुवर्–मुझ पर आक्रमण करने आएँगे; वन्ताल्–आएँ तो; तुप्पु उऱ–बल लगाकर; मुरुक्कि–मारूँगा और; उयिर् उण्पल्–जान खा लूँगा; इतु चूतु–यही उपाय है। ६९६

अब मैं इस अशोक वन को शीघ्र मिटाऊँगा। उसका शोर उनके कानों में पड़ेगा तो वे भयंकर क्रोध के साथ मुझ पर धावा बोलने आएँगे; जब वे आएँगे तब उन्हें अपना बल दरसाकर उनके प्राण हर लूँगा। यही अच्छा उपाय है। ६९६

वन्दवर्हळ् वन्दवर्हण् मोळ्हिलर् मडिन्दाल्
वॆन्दिऱ लरक्कनुम् विलक्करु वलत्ताल्
मुन्दुमॆनि लन्नवन् मुडित्तलै मुडित्तॆन्
शिन्दैयुरु वॆन्दुयर् तविर्त्तिनिदु शॆल्वेन् 697

वन्तवर्कळ्–आनेवाले; वन्तवर्कळ्–और आनेवाले; मीळ्किलर्–न लौट कर; मटिन्ताल्–मर जाएँगे तो; वॆम् तिऱल् अरक्कनुम्–कठोर बलशाली राक्षस रावण भी; विलक्कु अरु वलत्ताल्–अवार्य बल के साथ; मुन्तुम् ॲतिल्–सामने आया तो; अन्नवन् मुटि तलै–उसके किरीटधारी सिरों को; मुटित्तु–तोड़कर उसको मारकर; ॲन् चिन्तै उरु–अपने मन में रहनेवाले; वॆम् तुयर्–कठोर दुःख को; तविर्त्तु–दूर करके; इतितु चॆल्वेन्–खुशी से लौट जाऊँगा। ६९७

जब चढ़ आनेवाले मरेंगे और लौट नहीं जाएँगे, तब कठोर बलिष्ठ रावण स्वयं अपार बल लेकर आयगा। तब उसके किरीटधारी सिरों को तोड़ दूँगा और उसे मार दूँगा। तब मेरे मन का बड़ा सन्तापक दुःख दूर हो जायगा और मैं ख़ुशी से लौट जाऊँगा। ६९७

ॲन्ऱुनिनै यावิรवि चन्दिर नियङ्गुम्
कुन्ऱमिरु तोळनैय तन्नुरुवु कॊण्डान्
अन्ऱुल हॆयिऱ्ऱिडैकॊ ळॆन्तमॆन लानान्
तुन्ऱुहडि काविनै यडिक्कॊडु तुहैत्तान् 698

ॲन्ऱु निनैया–ऐसा सोचकर; इरवि चन्तिरन्–रवि और शशि; इयङ्कुम्–जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्ऱम् अनैय–उस मेरु के समान; इरु तोळ्–दो कन्धों वाला; तन् उरुवु–अपना विराट् रूप; कॊण्टान्–धर लिया (हनुमान ने); अन्ऱु–उस (प्राचीन) दिन; उलकु–भूमि को; ॲयिऱ्ऱु इटै–दाँतों के मध्य; कॊळ् ॲतम् ॲत्तल् आनान्–जिन्होंने उठा लिया उन वराहावतार के समान बना; तुन्ऱु–तरुओं से खूब भरे; कटि काविनै–सुरक्षित अशोक वन को; अटि कॊटु–पैरों से; तुकैत्तान्–रौंदकर मिटाने लगा। ६९८

ऐसा सोचकर हनुमान ने अपना विश्वरूप ले लिया। उसके कन्धे दो मेरुओं के समान फूल उठे, जिसके चारों ओर रवि और शशि परिक्रमा करते घूमते हैं। वह उन वराहावतार के समान भी लगा, जिन्होंने प्राचीन समय में भूमि को अपने दाँतों के मध्य उठा लिया था। अब वह उस वन को अपने पैरों से तोड़ने-रौंदने लगा। ६९८

मुडिन्दन पिळन्दन मुरिन्दन नॅरिन्द
मडिन्दन पॉडिन्दन मऱिन्दन मुऱिन्द
इडिन्दन तहर्न्दन वॅरिन्दन करिन्द
ऑडिन्दन वॉशिन्दन वुदिर्न्दन पिदिर्न्द 699

मुटिन्तन–(अनेक) वृक्ष मिटे; पिळन्तन–टूटे; मुरिन्तन–झुके; नॅरिन्त–आपस में टकराकर टूटे; मटिन्तन–सिर कटकर गिरे; पॉटिन्तन–चूर-चूर हुए; मऱिन्तन–औंधे गिरे; मुऱिन्त–खण्ड-खण्ड हुए; इटिन्तन–प्रहरित होकर मिटे; तकर्न्तन–छिन्न-भिन्न हुए; ॲरिन्तन–जले; करिन्त–राख बने; ऑटिन्तन–फूटे; ऑचिन्तन–लचककर लटके; उतिर्न्तन–चू पड़े; पितिर्न्त–फटे। ६९९

उसके प्रहारों से अनेक वृक्ष मिटे। अनेक चिरे। अनेक झुके। अनेक आपस में टकराकर टूटे। अनेक सिर के बल औंधे गिरे। अनेक चूर्ण हुए। अनेक अस्त-व्यस्त हुए। अनेक टकराकर नष्ट हुए। अनेक खण्ड-खण्ड हुए। अनेक जल गये। अनेक राख बने। अनेक कटे। अनेक लचककर झुक गये। अनेक दुर्बल होकर टूटे। और अनेक फट गये। ६९९

वेरॉडु परिन्दशिल वॅन्दशिल विण्णिल्
कारॉडु शॅऱिन्दशिल कालित्तॉडु वेलैत्
तूरॉडु मऱिन्दशिल तुम्बियॉडु वात्तोर्
ऊरॉडु मलैन्दशिल वुक्कशिल नॅक्क 700

चिल–कुछ; वेरॉटु परिन्त–जड़ खोकर गिरे; चिल वॅन्त–कुछ झुलसे; चिल–कुछ; विण्णिल्–आकाश में; कारॉटु–मेघों के साथ; चॅऱिन्त–सट गये; चिल–कुछ; कालित्तॉटु–हवा से; वेलै–समुद्र के; तूरॉटु–पंक में; मऱिन्त–धँसकर मिटे; चिल–कुछ; तुम्पियॉटु–भ्रमरों के साथ; वात्तोर् ऊरॉटु–देवों के नगर पर; मलैन्त–टकराए; चिल–कुछ; उक्क–चूर्ण होकर गिरे; चिल नॅक्क–कुछ पिचक गये। ७००

कुछ तरु छिन्नमूल हुए। कुछ झुलसे। कुछ आकाश में जाकर मेघों के साथ सट गये। कुछ हवा के साथ उड़कर समुद्र में गिरे और पंक में धँसकर मिटे। कुछ भ्रमरों के साथ उठकर स्वर्ग से जाकर टकराए। कुछ चूर-चूर होकर चू पड़े। कुछ दबकर विकृत हो गये। ७००

शोत्तैमुदऩ् मऱ्ऱवै शुळऱ्ऱिय तिशैप्पोर्
आऩैनुह रक्कुळहु मातवडि पऱ्ऱा
मेल्निमिर विट्टऩ विशुम्बिऩ्वळि मीप्पोय्
वाऩवर्ह णन्दऩ वऩत्तैयु मडित्त 701

चोत्तै मुतल्–मेघ-सहित रहे; मऱ्ऱवै–अन्य कुछ पेड़; चुळऱ्ऱिय–घूमते हुए; तिचै पोर् यानै–युद्धोत्साही दिग्गजों के; नुकर–खाने के लिए; कुळकुम् आन–पत्तों के गोलक बने; अटि पऱ्ऱा–तना पकड़कर; मेल् निमिर विट्टऩ–जो ऊपर उछाले गये; विचुम्पिन् वळि–उन्होंने आकाश मार्ग से; मी पोय्–ऊपर जाकर; वाऩवर्कळ् नन्तऩ वऩत्तैयुम्–देवों के नन्दनवनों को भी; मटित्त–मिटा दिये। ७०१

मेघाच्छादित कुछ पेड़, जो हनुमान से फेंके गये, युद्धोत्साही दिग्गजों के खाने के 'गोलक' बने। हनुमान ने कुछ पेड़ों के निम्न भाग को पकड़कर ऊपर फेंका। उन्होंने आकाश में जाकर देवों के नन्दनवनों को मिटा दिया। ७०१

अलैन्दऩ कडऱ्ऱिरै यरक्करहऩ् माडम्
कुलैन्दुह विडिन्दऩ कुलक्किरिह ळोडु
मलैन्दुपॊडि युऱ्ऱऩ मयङ्गिनॆडु वाऩत्
तुलैन्दुविळु मीऩिनॊडु वॆण्मल रुदिर्न्द 702

कटल् तिरै–समुद्र की तरंगें; अलैन्तन–हिलोरे लेने लगीं; अरक्कर्–राक्षसों के; अकल् माटम्–बड़े-बड़े मकान; कुलैन्तु उक–ढहकर गिरते हुए; इटिन्तन–टूटे; कुल किरिकळोटु–आठ कुलगिरियों के साथ; मलैन्तु–वे तरु टकराकर; पॊटि उऱ्ऱन–चूर-चूर हो गये; नॆटु वानत्तु–लम्बे आकाश में; उलैन्तु विळु–अस्त-व्यस्त होकर; गिरनेवाले; मीनिनॊटु–नक्षत्रों के साथ; मयङ्कि–मिश्रित होकर; वॆण्मलर्–श्वेत पुष्प; उतिर्न्त–नीचे गिरे। ७०२

कुछ पेड़ समुद्र में जाकर गिरे और उसकी तरंगें उद्वेलित हुईं। ऐसे पेड़ों के गिरने से उस नगर के राक्षसों के विशाल प्रासाद टूट-फूट गये। कुछ तरु आठ कुलगिरियों (हिमालय, मन्दर, कैलास, विन्ध्य, निषाद, हेमकूट, नील, गन्धमादन) से जाकर टकराये और चूर-चूर हो गये। आकाश से नक्षत्र अस्त-व्यस्त होकर गिरे और इन पेड़ों के श्वेत रंग के पुष्प भी मिश्रित होकर नीचे गिरे। ७०२

मुडक्कुनॆडु वेरॊडु मुहन्दुलह मुऱ्ऱुम्
कडक्कुम्वहै वीशिऩ कळित्तदिशै याऩै
मडप्पिडियि ऩुक्कुदव मैयिनिमिर् कैवैत्
तिडुक्कियऩ वॊत्तऩ वॆयिऱ्ऱिनिडै नाल्व 703

मुटक्कु–कुंचित; नॆटु वेरॊट–लम्बी जड़ों के साथ; मुकन्तु–उठाकर; उलकम्

मुऱ्ऱुम् कटक्कुम् वर्क-भूमि भर को पार कर जाएँ, ऐसा; वीचित्त-हनुमान द्वारा फेंके गये वृक्ष; कळित्त तिचै यात्तै-मत्त दिग्गजों के; ऍयिऱ्ऱिन् इटै-दाँतों के मध्य; नाल्व-लटकते हैं; मट पिटियित्तुक्कु-बाल हथिनियों को; उतव-देने के लिए; मैयिन् निमिर्-मेघ के समान उठी हुई; कै वैत्तु-अपनी सूँड़ में लेकर; इटुक्कियत्त ऒत्तत-पकड़ लिये गये, जैसे लगे। ७०३

हनुमान ने कुछ पेड़ों को इस वेग के साथ फेंका कि वे कुञ्चित जड़ों के साथ संसार भर को पार करते हुए गये और दिग्गजों के दाँतों पर अटके लटके रहे। तब ऐसा लगा, मानो उन दिग्गजों ने अपनी सुन्दर बाल हथिनियों को खिलाने के लिए अपने दाँतों के बीच उन्हें पकड़ रखा हो। ७०३

विञ्जैयुल हत्तिनु मियक्कर्मलै मेलुम्
तुञ्जुदलिल् वानवर् तुऱक्कनह रत्तुम्
पञ्जियडि वञ्जियर्हण् मॊय्त्ततन्नर् पऱित्तार्
नञ्जमनै यातुडैय शोलैयि नऱुम्बू 704

नञ्चम् अनैयातुटैय-विष-सम रावण के; चोलैयिन् नऱुम् पू-उद्यान के सुवासित फूल; विञ्चै उलकत्तितुम्-विद्याधरलोक में और; इयक्कर् मलै मेलुम्-यक्षों के पर्वतों पर; तुञ्चुतल् इल्-अनिद्र; वानवर् तुऱक्क नकरत्तुम्-देवों के स्वर्गलोक में; पञ्चि अटि-लाक्षारसरंजित चरणों वाली; वञ्चियर्कळ्-अप्सराओं ने; मॊय्त्ततर्-भीड़ में आकर; पऱित्तार्-तोड़ लिये। ७०४

विष-समान राक्षस रावण के अशोक वन के पेड़ सब जगह आकर गिर गये। इसलिए उनके सुगन्धित फूलों को विद्याधरों के लोकों में, यक्षों के पर्वतों पर, और अनिद्र देवों के स्वर्गलोक में, सर्वत्र लाक्षारसरंजित चरण वाली सुन्दरियाँ भीड़ लगाए आकर चुनने लगीं। ७०४

पॊन्ऱिणि मणिप्परु मरन्दिशैहळ् पोव
मिन्ऱिरिव वॊत्तन वॆयिऱिरिव वॊत्त
ऒन्ऱिनॊडु मॊन्ऱिडै पुडैत्तुदिर्व वूऴि
तन्ऱिरळ्ह ळोडुविऴु तारहैयु मॊत्त 705

पॊन् तिणि-स्वर्ण में जड़ित मणियों के बने; परु मरम्-स्थूल तरु; तिचैकळ् पोव-नाना दिशाओं में जो गये; मिन् तिरिव-बिजलियाँ संचार करतीं; ऒत्तत-जैसे लगे; वॆयिल् तिरिव ऒत्त-(अनेक) सूर्य चलते जैसे लगे; ऒन्ऱिनॊटुम् ऒन्ऱु इटै पुटैत्तु-एक-दूसरे से बीच में टकराकर; उतिर्व-चूर-चूर होकर गिरे; ऊऴि-युगान्त में; तन् तिरळ्कळोटु विऴुम्-अपने समूहों के साथ गिरनेवाले; तारकैयुम् ऒत्त-ताराओं के समान भी लगे। ७०५

अनेक वृक्ष मणि-जटित स्वर्ण के थे। वे जब चारों दिशाओं में जा रहे थे, तब वे बिजली के समान लगे; अनेक सूर्य चलते हों, ऐसा भी

लगे। वे आपस में टकराकर जब चूर-चूर हो चू पड़े, तब युगान्त में गिरनेवाले तारासमूहों के समान लगे। ७०५

पुळ्ळिनॊडु वण्डुमिञ्जि रुङ्गडिहॊळ् पूवुम्
कळ्ळुमुहै युन्दळिर्ह ळोडितिय कायुम्
वॆळ्ळनॆडु वेलैयिडै मीनितम् विळुङ्गित्
तुळ्ळिन मरन्बड नॆरिन्दन तुडित्त 706

पुळ्ळितॊटु–खगों के साथ; वण्टुम् मिञ्जिरुम्–भ्रमर और ततैये; कटि कॊळ् पूवुम्–सुगन्धित फूल; कळ्ळुम्–शहद; मुकैयुम्–कलियाँ; तळिर्कळोटु इतिय कायुम्–पल्लवों के साथ मधुर अपक्व फल; वॆळ्ळ नॆटु वेलैयिटै–जल-भरे विशाल समुद्र-मध्य; मीन् इनम्–मछलियों का झुण्ड; विळुङ्कि–निगलकर; तुळ्ळित–उछले; मरन् पट–पेड़ों के लगने से; नॆरिन्तन तुटित्तत–दबकर तड़पे। ७०६

समुद्र की मछलियाँ पक्षियों, भ्रमरों, सुगन्धित पुष्पों, मधु, कलियों, पत्तों और फलों को खाकर उछल-कूद मचाने लगीं। पर पेड़ों के लगने से, बेचारी दबकर तड़पने लगीं। ७०६

तूविय मलर्त्तॊहै शुमन्दुतिशै तोरुम्
पूविन्मण नारुव पुलाल्कमळ्हि लाद
तेवियर्ह ळोडुमुयर् तेवरिनि दाडुम्
आवियॆन लायदिशै यार्हलिह ळम्मा 707

तूविय मलर् तॊकै–बिखरी पुष्प-राशियाँ; चुमन्तु–धारण करके; तिचै तोरुम्–दिशा-दिशा में; पूविन् मणम् नारुव–पुष्पगन्धगन्धित; पुलाल् कमळ्किलात–मांसगन्धरहित; तिचै आर्कलिकळ्–चारों दिशाओं में रहनेवाले सागर; तेवर्–देव; उयर् तेवियर्कळोटुम्–उत्तम देवियों के साथ; इनितु आटुम्–आराम से जिनमें स्नान करते हैं; आवि ऎतल्–वापियों के समान; आय–बने। ७०७

चारों दिशाओं में स्थित सागरों पर सुगन्धित फूल तैर रहे थे। इसलिए वे सर्वत्र पुष्पवास से बासित थे और उनमें मांसगन्ध नहीं पाया गया। इस कारण वे उन वापियों के समान लगे, जिनमें देवी और देवता लोग आराम और आनन्द के साथ स्नान करते हैं। ७०७

इडन्दमणि वेदियु मिरुत्तकडि कावुम्
तॊडर्न्दन तुरन्दन पडिन्दुनॆरि दूरक्
कडन्दुशॆल वॆन्बदु कडन्ददिरु कालाल्
नडन्दुशॆल लाहुमॆन लाहियदु नन्नीर् 708

इटन्त–हनुमान द्वारा फेंकी गयी; मणि वेतियुम्–मणिमय वेदियाँ; इरुत्त कटि कावुम्–और नष्ट हुआ सुरक्षित अशोक वन; तॊटर्न्तत–एक के पीछे एक

लगकर; तुरन्तत–जो तेज़ चले; पटिन्तु–(समुद्र में) जाकर गिरे और; नॅरि तूर–पाटकर मार्ग के समान बना दिया, इसलिए; नऩ्नीर्–अच्छे जल का वह सागर; कटन्तु चॅलवु ॲन्पतु–तैरकर या लाँघकर जाने योग्य; कटन्ततु–यह स्थिति छोड़कर; इरु कालाल्–दोनों पैरों से; नटन्तु–चलकर; चॅलल् आकुम्–चल सकते हैं; ॲन्नल् आकियतु–ऐसा बन गया। ७०८

हनुमान ने रत्न-वेदिकाओं को उखाड़कर फेंका; उनके पीछे पेड़ों को फेंका। वे एक के पीछे एक जाते रहे और समुद्र में गिरकर उसे पाट गये। अब समुद्र पर पक्का मार्ग हो गया और लाँघकर या तैरकर पार किया जाय ऐसी स्थिति में नहीं था। कोई उस पर पैदल चलकर ही उसे पार कर सकता था। ७०८

वेनिल्विळै याड्शुड रोनिन्नॉळि विम्मुम्
वानिनिडै वीशिय विरुम्बणै मरत्ताल्
तानवर्हण् माळिहै तहर्न्दुपॉडि यान
वानविडि यालिडियु माल्वरैहण् मान 709

वेनिल्–ग्रीष्म ऋतु में; विळैयाटु–अपनी पूरी उमंग में रहनेवाले; चुटरोनिन्–किरणमाली की तरह; ऒळि विम्मुम्–प्रकाश से भरे; वानिन् इटै–आकाश में; वीचिय–फेंके गये; इरुम् पणै मरत्ताल्–बड़े और स्थूल तरुओं से; वान इटियाल्–आकाश के वज्र से; इटियुम् माल् वरैकळ् मान–टूटनेवाले बड़े पर्वतों की भाँति; तानवर्कळ् माळिकै–दानवों के प्रासाद; तकर्न्तु पॊटि आन–ढहकर चूर्ण हुए। ७०९

आकाश ग्रीष्म-विलासी सूर्य के समान बहुत ही ज्वलन्त बन गया। तब हनुमान-प्रेरित तरुओं से आकाश-वज्राहत पर्वतों के समान दानवों के प्रासाद टूटे-फूटे और चूर हुए। ७०९

ऍण्णिरुरु कोडिह ळॅरिन्दन शॅरिन्दे
तण्णॅन्मळै पोलिडै तळैत्ततु शलत्ताल्
अण्णलनु मानड लिरावणन दन्नाळ्
विण्णिनुमोर् शोलैयुळ दामॅन विरित्तान् 710

चलत्ताल्–क्रोध के साथ; ॲरिन्तन–हनुमान से जो फेंके गये; ॲण् इल्–असंख्यक; तरु कोटिकळ्–वृक्षवृन्द; चॅरिन्तु–ठस भरकर; तण् ॲन् मळैपोल्–शीतल मेघों के समान; इटै तळैत्ततु–अन्तरिक्ष में घने रूप से लटके रहे; अण्णल् अनुमान्–महिमावान हनुमान ने; अ नाळ्–उस दिन; अटल् इरावणनतु–बलवान रावण का; विण्णिलुम् ओर् चोलै–आकाश में भी एक अशोक वन; उळतु आम् ॲन–हो जैसे; विरित्तान्–फैला दिया। ७१०

हनुमान के द्वारा अपार क्रोध के साथ फेंके गये असंख्य तरुओं के समूह अन्तरिक्ष में मेघों के समान दिखे। महिमामय हनुमान ने इस तरह

उन तरुओं को विखेर दिया, मानो वहाँ (अन्तरिक्ष में) वल्वान रावण का और एक उपवन बन गया हो। ७१०

तेऩुऱै तुळिप्पनिऱै पुट्पल शिलम्बप्
पूनिऱै मणित्तरु विशुम्बिऩिडै पोव
मीऩ्मुऱै नॅरुक्कवौळि वाळौडुविल् वीश
वाऩिडै नडक्कुनॅडु मानमॅन लान 711

तेन् उऱै—शहद की बूंदें; तुळिप्प—टपकीं; निऱैपुळ्—वहाँ मिले रहे पक्षी; पल चिलम्प—अनेक चहक उठे; पू निऱै—पुष्पकलित; मणि तरु—मणिमय तरु; विचुम्पिऩ् इटै—आकाश-मध्य; पोव—जाकर; मीन् मुऱै नॅरुक्क—नक्षत्रों को आक्रान्त करने लगे; औळि वाळ् औटु—प्रकाश तलवार के समान; विल् वीच—और धनु के समान छिटका; वाऩिटै नटक्कुम्—आकाशचारी; नॅटु मानम् अॅन्नल् आन—बड़े यानों के समान लगे। ७११

पुष्पों से भरे रत्नमय तरु आकाश में जा रहे थे और उनसे शहद की बूँदें टपक रही थीं; और उन पर से अनेक पक्षी चहक रहे थे। नक्षत्र उनसे मिल गये। तव प्रकाश तलवार और धनु के आकार में छूट रहा था। ये तरु इस साज में आकाश में चलनेवाले यान के समान दिखे। ७११

शाकनॅडु माप्पणै तळैत्तन तऩिप्पोर्, नाहमनै यानॅऱिय मेऩिमिर्व नाळुम्
माहनॅडु वाऩिडै यिऴिन्दुपुऩल् वारुम्, मेहमॅन लाननॅडु माहडलिन् वीऴ्व 712

तऩि—अप्रतिम; पोर् नाकम् अनैयान्—युद्धगज के समान (जो रहा) उस हनुमान के; अॅऱिय—फेंकने के कारण; नॅटु मा पणै चाकम्—लम्बी बहुत मोटी शाखाओं और; तळैत्तन—पत्रों से युक्त; मेल् निमिर्व—उद्गत; नॅटु मा कटलिन्—अति विशाल समुद्र में; वीऴ्व—गिरनेवाले तरु; नाळुम्—सदा; नॅटु माक वान्—अति विस्तृत आकाश; इटै इऴिन्तु—मध्य से उतरकर; पुऩल् वारुम् मेकम्—जल-ग्राही मेघों; अॅन्नल् आन—के समान भी बने। ७१२

अप्रतिम और युद्धगज के समान उस हनुमान के फेंकने के कारण, लम्बी और मोटी शाखाओं से युक्त, आकाश में उड़कर समुद्र में गिरनेवाले वृक्ष, अति विस्तृत नभ के मध्य से उतरकर आनेवाले जल-ग्राही मेघों के समान लगे। ७१२

ऊऩ मुऱ्ऱिड मण्णि ऩुदित्तवर्, ञाऩ मुऱ्ऱुबु नण्णिऩर् वीडॅऩत्
ताऩ कऱ्पहत् तण्डलै विण्डलम्, पोऩ पुक्कन मुऩ्ऩुऱै पॊऩ्ऩहर् 713

ऊऩम् उऱ्ऱिट—मल (अज्ञान) के होने से; मण्णिल् उतित्तवर्—जो भूमि में जन्म ले चुके वे; ञाऩम् मुऱ्ऱुपु—ज्ञान पूर्ण होने पर; वीटु नण्णिऩर् अॅन—स्वर्ग पहुँच जाते जैसे; तान कऱ्पक—दानशील कल्पतरुओं का; तण्टलै—वह अशोक वन; विण् तलम्

पोत–आकाश में जाकर; मुन्नु उऱै–पूर्व वास के; पोन्ऩकर् पुक्कत–स्वर्गलोक पहुँच गये। ७१३

कोई (अविद्याजन्य) अपकृत्य होने से स्वर्ग छोड़कर जो भूमि पर जन्म ले चुके हैं, वे जैसे ज्ञान की पूर्णता प्राप्त करने पर स्वर्ग पहुँच जाते हैं, वैसे ही कल्पतरु-लसित अशोक वन के तरु व्योम में जाकर अपने पूर्ववासस्थल स्वर्गलोक में पहुँच गये हों, ऐसे लगे। ७१३

मणिहॉळ् कुट्टिम मट्टित्तु मण्डबम्
तुणिब डुत्तयल् वाविह डूर्त्तॉळिर्
तिणिशु वर्त्तलञ् जिन्दिच् चॆयर्करुम्
पणिब डुत्तुयर् कुन्ऱम् बडुत्तरो 714

मणि कॉळ्–मणिमण्डित; कुट्टिमम्–चबूतरों को; मट्टित्तु–मटियामेट करके; मण्टपम् तुणि पटुत्तु–मण्डपों को छिन्न-भिन्न करके; अयल्–पास की; वाविकळ्–वापियों को; तूर्त्तु–पाटकर; ऑळिर् तिणि–शोभायमान और सुदृढ़; चुवर्–दीवारों को; तलम् चिन्ति–तोड़-फोड़कर भूमि पर बिखेरकर; चॆयर्कु अरुम्–दुष्कर; पणि पटुत्तु–कार्यों द्वारा बने पदार्थों का नाश करके; उयर् कुन्ऱम्–ऊँचे पर्वतों को; पटुत्तु–मिटाकर। ७१४

हनुमान ने मणिमय चबूतरों को तोड़ा-फोड़ा। मण्डपों को तहस-नहस किया। पास रहे जलाशयों को पाट दिया। और पास रही सबल दीवारों को ढहाकर छितरा दिया। बहुत परिश्रम के साथ जो बनाये गये थे, उन सब (मण्डप, मार्ग, उद्यान) का नाश करा दिया। ऊँची गिरियों (या ऊँचे टीलों) को भी मिटा दिया। ७१४

वेङ्गै शॅऱ्ऱु मरामरम् वेर्पऱित्
तोङ्गु कऱ्पहम् पूवॊ डॊडित्तुराय्प्
पाङ्गर्च् चण्बहप् पत्ति पऱित्तयल्
माङ्ग निप्पणै मट्टित्तु माऱ्ऱिये 715

वेङ्कै चॆऱ्ऱु–"वेंगै" तरुओं को तहस-नहस करके; मरामरम्–सालवृक्षों का; वेर् पऱित्तु–उन्मूलन करके; ओङ्कु कऱ्पकम्–ऊँचे कल्पतरुओं को; पू ऑटु ऑटित्तु–पुष्पों के साथ मिटाकर; पाङ्कर् उराय्–पार्श्व में रहे; चण्पक पत्ति–चम्पकतरु पंक्तियों को; पऱित्तु–उखाड़ फेंककर; अयल् मा कति पणै–पास में रहे आम के फलों से युक्त डालों को; मट्टित्तु माऱ्ऱि–तोड़कर बिगाड़कर (नष्ट-भ्रष्ट किया)। ७१५

हनुमान ने 'वेंगै' नाम के पेड़, सालवृक्ष, कल्पतरु, चंपक-तरु-पंक्ति सबको निर्मूल किया, पुष्पों के साथ मटियामेट कर दिया। आम के पेड़ थे। उन्हें भी फलों के साथ डालियाँ तोड़कर नष्ट कर दिया। ७१५

शन्द तङ्ग डहर्न्दऩ ताम्बडर्, इन्द ऩङ्गळित् वॅन्दॅरि शिन्दिऩ
मुन्द तङ्गन् वशन्दन् मुहङ्गॅड, नन्द ऩङ्गळ् कलङ्गि नडुङ्गवे 716

तकर्न्तत–उत्पाटित; चन्ततङ्कळ् ताम्—चन्दन-तरुओं ने; अनङ्कन् मुन्तु–मन्मथ के पहले आनेवाले; वचन्तन् मुकम् कॅट–वसंत का चेहरा (तेज) बिगाड़ते हुए; नन्ततङ्कळ्–आकाश के नन्दनवनों को; कलङ्कि नटुङ्क–व्याकुल और भयभीत करते हुए; इन्तनङ्कळित्–ईंधन की भाँति; वॅन्तु–जलकर; पटर् ॲरि–लगातार आग; चिन्तिऩ–बरसायी । ७१६

चन्दनतरु, जो छिन्न-भिन्न किये गये, ईंधनों के समान निरन्तर आग उगलते रहे, जिससे अनंगमित्र वसन्त का मुख निष्प्रभ हुआ और व्योम के नन्दनवन भयभीत हुए । ७१६

काम रङ्गति वण्डु कलङ्गिड, माम रङ्गण् मडिन्दऩ मण्णोंड
ताम रङ्ग वरङ्गु तहर्न्दुहप्, पूम रङ्ग ॲरिन्दु पॉरिन्दवे 717

कामरम् कत्ति–कामर राग सधे रूप से गानेवाले; वण्टु कलङ्किट–भ्रमर बेचैन हुए; मा मरङ्कळ्–बड़े-बड़े वृक्ष; मण्णोंटु मटिन्तत–भूमि पर मुड़कर गिरे; अरङ्कु ताम्–नाट्यमंच; अरङ्क–मिट गये; तकर्न्तु उक–टूटकर गिरे ऐसा; पू मरङ्कळ्–पुष्पतरु; ॲरिन्तु पॉरिन्त–जले-भुने । ७१७

'कामर' राग का गान सधे रूप से गानेवाले भ्रमरों को अस्त-व्यस्त करते हुए बड़े-बड़े वृक्ष मिट्टी में मिल गये । अनेक पुष्पतरु जल-भुन गये, जिससे नृत्यशालाएँ मिटीं और ढहकर खाक में मिल गयीं । ७१७

कुळैयुङ् गॉम्बुङ् गॉडियुङ् गुयिर्कुलम्
विळैयुन् दण्डळिर्च् चूळ्लु मॅन्मलर्प्
पुळैयुम् वाशप् पॉदुम्बुम् बॊलन्गॉडेन्
मळैयुम् वण्डु मयिलु मडिन्दवे 718

कुळैयुम्–पत्ते; कॊम्पुम्–और टहनियाँ; कॊटियुम्–लताएँ; कुयिल् कुलम् विळैयुम्–कोकिलकुल के प्यारे; तण् तळिर् चूळ्लुम्–शीतल लताकुंज; मॅन् मलर् पुळैयुम्–कोमल फूलों से भरे मार्ग; वाच पॊतुम्पुम्–सुगन्धपूर्ण झाड़ियाँ; पॊलन् कॊळ्–स्वर्णवर्ण में; तेन् मळैयुम्—गिरनेवाली शहद की धारें; वण्टुम्–भ्रमर; मयिलुम्–और मयूर; मटिन्त–मिट गये । ७१८

क्या-क्या मिटे ! पत्ते, टहनियाँ, लताएँ, कोकिलकुल, प्यारे शीतल लताकुंज, कोमल पुष्पावृत मार्ग, सुबासित झाड़, स्वर्ण के रंग की शहदवर्षा, भ्रमर और मयूर सब मटियामेट हो गये । ७१८

पवळ माक्कॉडि वोशिऩ पन्मळै
तुवळु मिन्नॅत्च् चुड्रिडच् चूळ्वरै

तिवळुम् पॉऱ्पणै मामरम् जेऱ्न्दन
कवळ यानैयि नोडैयिऱ् कान्दुव 719

वीचित्त—(हनुमान द्वारा) फेंकी गयी; पवळ मा कॉटि—प्रवाल-लाल-लताओं ने; पल् मळै तुवळुम्—मेघमध्य लचकनेवाली; मिन् अँत—बिजली के समान; चूळ् वरै—लंका को घेरे रहे पर्वतों को; चुऱ्ऱिट—लपेट लिया; चेर्न्तत—वहाँ जो पहुँचे; कवळ तिवळुम्—वे शोभायमान; पॊन् पणै—स्वर्ण-डालों के; मा मरम्—बड़े वृक्ष; कवळ यानैयिन्—कौर खानेवाले गजों के; ओटैयिल्—मुखपट्टों के समान; कान्तुव—तेजोमय रहे। ७१९

हनुमान द्वारा फेंकी हुई प्रवाल-वर्ण लताएँ मेघमध्य चमकनेवाली बिजली के समान पर्वतों पर लिपट गयीं। और स्वर्णमय डालियों-सहित बड़े-बड़े पेड़ बड़े-बड़े कौर खानेवाले गजों के मुखपट्ट के समान प्रकाशमय दिखे। ७१९

पऱवै यार्त्तॅळु मोशैयुम् बन्मरम्, इऱवॅ डुत्त विडिक्कुर लोशैयुम्
अऱव नार्त्तॅळु मोशैयु मण्डत्तिन्, पुऱनि लत्तैयुङ् गैम्मिहप् पोयदे 720

पऱवै आर्त्तु अॅळुम् ओचैयुम्—पक्षी रव कर उठे, वह शोर; पल् मरम् इऱ—अनेक वृक्ष टूटे; अॅटुत्त—तब निकला; इटि कुरल् ओचैयुम्—वज्र-सम नाद; अऱवन्—धर्मवान्; आर्त्तु अॅळुम्—(हनुमान) गरज उठा, वह; ओचैयुम्—शोर; अण्टत्तिन् पुऱ निलत्तैयुम्—अण्ड-पार तल को भी; कै मिक पोयतु—पार कर दूर गये। ७२०

पक्षी ध्वनि कर उठे, वह शोर; अनेक तरु टूटकर गिरे, तब उठा वज्र-सम शोर; धर्मरूप हनुमान गर्जन कर उठा, वह शोर —सब अण्ड-पार सर्वत्र पार कर सुनायी दिया। ७२०

पाड लम्बडर् कोङ्गॉडुम् बन्निशैप्, पाड लम्बवि वण्डॉडुम् बः(ह्)ऱिरैप्
पाड लम्बुरु वेलैयिऱ् पाय्न्दन, पाड लम्बॅऱप् पुळ्ळिनम् बाऱवे 721

पुळ्ळिनम्—पक्षीगण; पाटु अलम् पॅऱ—बहुत कष्ट पाकर; पाऱ—छितरकर भागे; पाटलम्—पाटलवृक्ष; पटर् कोङ्कॊटुम्—विशाल 'कोङ्गु' वृक्षों के साथ; पन् इचै—उत्कृष्ट राग के साथ; पाटल्—गानेवाले; अम् पति वण्टॊटम्—सुन्दर शीतल (मनोमुग्धकारी) भ्रमरों के साथ; पल् तिरै—अनेक तरंगों से; पाटु अलम्पु उऱु—जिसका तीर नहलाया जाता है; वेलैयिल्—उस समुद्र में; पाय्न्तत—जाकर गिरे। ७२१

पाटल और विशाल कोंगु के पेड़ रागयुक्त स्वर निकालनेवाले भ्रमरों के साथ समुद्र में जा गिरे, जिससे पक्षीगण संकट पाकर तितर-बितर हुए और समुद्र में लहरें उठकर तीर से टकराकर उसे नहलाने लगीं। (इसमें यमकालंकार है।)। ७२१

वण्ड लम्बुन लाऱ्ऱिन् मरामरम्, वण्ड लम्बुन लाऱ्ऱिन् मडिन्दन
विण्ड लम्बुह नीङ्गिय वॅण्बुनल्, विण्ड लम्बुह नीण्मरम् वीऴ्न्दन 722

वण्टु अलम्पु–भ्रमर जिन पर मँड़राते भन्ना रहे थे; नल् आऱ्ऱिऩ्–उद्यान के सुन्दर मार्गों में रहे; मरामरम्–(वे) सालवृक्ष; वण्टल्–तलौंछ (पंक) के साथ बहनेवाली; अम् पुऩल्–और मनोरम जल वाली; आऱ्ऱिऩ्–नदी में गिरकर; मटिन्तऩ–नष्ट हुए; विण् तलम् पुक–व्योमलोक में जा गिरे ऐसा; नीङ्किय नीळ् मरम्–फेंके गये लम्बे वृक्ष; विण्टु अलम्पु–श्रीविष्णु के चरण जिससे प्रक्षालित किये गये; कम्–जो आकाश में बहती थी; वॆण् पुऩल्–उस (आकाशगंगा) के श्वेत जल में; वीऴ्न्तऩ–गिरे। ७२२

उस अशोक वन के मध्य मार्गों पर सालवृक्ष थे और उन पर भ्रमर भन्नाते हुए मँड़रा रहे थे। वे तलौंछ के साथ बहनेवाली नदी में गिरकर पंक में मग्न होकर मिट गये। हनुमान द्वारा आकाश पहुँचाते हुए फेंके गये कुछ वृक्ष आकाशगंगा के श्वेत जल में गिरे; जिस नदी के दिव्य जल से श्रीविष्णु भगवान के श्रीचरणों का प्रक्षालन (ब्रह्मा द्वारा) किया गया था। ७२२

ताम रैत्तडम् बॊय्हैशॆञ् जन्दऩम्
ताम रैत्तऩ वॊत्तदु कॆत्तलिऩ्
काम रङ्गळि वण्डॊडुङ् गळ्ळॊडुम्
काम रङ्गमऴ् पूक्कडल् कण्डवे 723

उकॆत्तलिऩ्–फेंकने से; तामरै तटम् पॊय्कै–विशाल कमल-सर; चॆम् चन्तऩम् ताम्–लाल चन्दन की लकड़ियों को; अरैत्तऩ–पीसकर वह लेप उसमें घोल दिया गया हो; ऒत्ततु–वैसा हो गया; का मरम्–उस वन के वृक्षों ने; कामरम् कळि–कामर राग स्वरित करते हुए मत्त रहनेवाले; वण्टॊटुम्–भ्रमरों के साथ; कळ्ळॊटुम्–शहद के साथ और; कमऴ् पू कटल् कण्ट–सुगन्ध-भरा पुष्प-सागर (के दृश्य) प्रस्तुत किये। ७२३

हनुमान द्वारा फेंके गये पेड़ों की वजह से कमल-सर चन्दनजलपूर्ण जलाशय-से हो गये। और वे सर अशोक वन के उन पेड़ों, कामर-राग गानेवाले मत्त भ्रमरों और शहदों के कारण पुष्पसागर-से बन गये। ७२३

शिन्दु वारन् दिशैतॊऱुञ् जॆऩ्ऱऩ, शिन्दु वारम् बुरैतिरै चेर्न्दऩ
तन्दु वारम् बुहनॆडुन् दाऴ्वरै, तन्दु वारन् दुहळ्पडच् चाय्न्दवे 724

चिन्तुवारम्–काली निर्गुण्डी के पेड़; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; चॆऩ्ऱऩ–गये; चिन्तु–सिन्धु में; वार्–लम्बी; अम् पुरै तिरै–ऊँची सुन्दर तरंगें बनाते हुए; चेर्न्तऩ–गिरे; तम् तुवारम् पुक–गुफाओं में वे तरंगें घुसीं, इसलिए; नॆटुम् ताऴ् वरै–विशाल सानुओं से युक्त पर्वत; तम् तुवारम् तुकळ् पट–लंका के द्वारों को चूर करते हुए; चाय्न्त–लुढ़क गये। ७२४

(सिंदुवार) काली निर्गुण्डी के पेड़ चारों ओर गये और सिन्धु में उन्नत तरंगें उठाते हुए गिरे। वे तरंगें पर्वतों की गुफाओं में घुसीं और

उन पर्वतों ने लंका के प्रासादों के द्वारों को तोड़कर उन पर गिरे और उनको ढहा दिये । ७२४

नन्द वाऩत्तु नाण्मलर् नाऱिऩ, नन्द वाऩत्तु नाण्मलर् नाऱिऩ
शिन्द वाऩन् दिरिन्दुहच् चॅम्मणि, शिन्द वाऩन् दिरिन्द तिरॅक्कडल् 725

नन्त वाऩत्तु–अशोक वन नाम के उस नन्दनवन के; **नाऱिऩ नाऴ् मलर्**–सुबासपूर्ण ताजे फूल; **नन्त**–बहुत संख्या में; **वाऩत्तु**–आकाश में; **नाऴ् मलर्**–नक्षत्र खिले हों जैसे; **नाऱिऩ**–भर गये; **चिन्तु**–इमली के पेड़; **अ वाऩम् तिरिन्तु उक**–उस आकाश में जो फिरकर गिरे तो; **तिरै कटल्**–तरंग-सहित सागर; **वाल् नन्तु**–उज्ज्वल शंखों ने; **चॅम्मणि चिन्त**–लाल मोती छितराए; **तिरिन्त**–इधर-उधर फिरे । ७२५

अशोक वन नाम के उस नन्दन वन के फूल आकाश में बिखरे और नक्षत्रों के समान लगे । इमली के पेड़, जो फेंके गये थे, आकाश में ऊँचाई तक जाकर तरंग-भरे समुद्र में गिरे, तो चमकदार शंख लाल रत्न (मोती) बिखेरते हुए इधर-उधर फिरे । (७२२ से ७२५वें पद्य तक के सभी पद्यों में यमकालंकार है ।) । ७२५

पुल्लुम् बॉऱ्पणैप् पन्मणिप् पूमरम्, कॉल्लु मिप्पॉऴु देयॅनुङ् गॉळ्हैयाल्
ॲल्लिल् विट्टु विळङ्गिय विन्दिरन्, विल्लु मॊत्तन विण्णुऱ वीशिऩ 726

विण् उऱ वीचिऩ–आकाश में पहुँच जाएँ, ऐसा जो फेंके गये; **पॊन् पणै पुल्लुम्**–स्वर्णशाखा-युक्त; **पल् मणि पू मरम्**–विविध रत्न-पुष्प-तरु; **इप्पॊऴुते कॊल्लुम्**–अभी नाश कर देगा; **ऎनुम् कॊळ्कैयाल्**–इस संकेत के कारण; **ऎल्लिल्**–रात में; **विट्टु विळङ्किय**–खूब ज्वलन्त; **इन्तिरन् विल्लुम्**–इन्द्रधनुष के भी; **ऒत्तन**–समान लगे । ७२६

हनुमान द्वारा स्वर्णडालियों-सहित विविध मणिमय तरु आकाश की ओर फेंके गये । वे रात में उत्पात-संकेत देते हुए इन्द्रधनुष के समान लगे, जिससे यह भासित होता था कि अभी (बड़ा उत्पात होनेवाला है यानी) हनुमान लंका का नाश करा देगा । (रात में इन्द्रधनुष का दिखना उत्पात का द्योतक है ।) । ७२६

मयक्किल् पॉऩ्कुल वल्लिहळ् वारिनेर्, इयक्क ऱत्तिशै तोऱु मॅऱिन्दन
वॅयिऱ्क दिर्क्कऱ्ऱै यिऱ्ऱुवि ऴुन्दॅन, पुयऱ्क डऱ्ऱले पुक्कन पोवन 727

मयक्कु इल्–असंशय; **पॊन् कुल वल्लिकळ्**–स्वर्णलताएँ; **वारि**–उठाकर; **नेर् इयक्कु अऱ**–घुमाकर (हनुमान द्वारा); **तिचै तोऱुम् ऎऱिन्तन**–सभी दिशाओं में (जो) फेंकी गयीं; **वॆयिल् कतिर् कऱ्ऱै**–धूप की किरणों की लटें; **इऱ्ऱु**–कटकर; **विऴुन्त ऎन**–गिरीं जैसे; **पुयल् कटल् तलै**–मेघाच्छादित समुद्र में; **पुक्कन पोवन**–घुसती गयीं । ७२७

शुद्ध स्वर्णमय वल्लरियों को हनुमान ने उठाकर, घुमाकर चारों दिशाओं में दूर फेंका। वे मेघाच्छादित समुद्र में गिरीं जैसे धूप की किरणें कटकर गिरी हों। ७२७

आऩैत् ताऩमु माड लरङ्गमुम्, पाऩत् ताऩमुम् बाय्परिप् पन्दियुम्
एनैत् तारणि तेरोंड्ड मिऱ्ऱन, कानत् तार्दरु वण्णल् कडाववे 728

अण्णल्—महिमावान हनुमान के; कानत्तु आर् तरु—अशोक वन में रहे तरुओं को; कटाव—फेंकने पर; आनै ताऩमुम्—गजशालाएँ और; आटल् अरङ्कमुम्—नृत्य-शालाएँ; पान ताऩमुम्—मधुशालाएँ; पाय् परि—सरपट दौड़नेवाले अश्वों को; पन्तियुम्—शालाएँ; ऐनै—और; तार् अणि—हारालंकृत; तेरोंटुम्—रथों के साथ; इऱ्ऱन—मिटे। ७२८

महिमामय हनुमान ने अशोक वन के पेड़ों को उखाड़कर फेंका जिससे गजशालाएँ, नृत्यशालाएँ, मधुशालाएँ और अश्वशालाएँ हारालंकृत रथों के साथ तहस-नहस हो गयीं। ७२८

पॅरिय मामर तुम्बॅरुङ् गुन्ऱमुम्, विरिय वीशलिन् मिन्नॅडुम् बॊन्मदिल्
नॅरिय माड नॅरुप्पॅऴ नीऱॆऴ, इरियल् पोन विलङ्गैयु मॅङ्गणुम् 729

पॅरिय मा मरत्तुम्—बड़े-बड़े पेड़ों को; पॅरुम् कुन्ऱमुम्—और बड़े पर्वतों को; विरिय वीचलिन्—दूर-दूर तक फेंकने से; मिन्—चमकदार; नॅटुम् पॊन् मतिल्—दीर्घ स्वर्ण-प्राचीर; नॅरिय—दरार-लगे हो गये; माटम्—प्रासाद; नॅरुप्पु ऍऴ—जल उठे; नीऱु ऍऴ—राख उड़े; इलङ्कैयुम्—लंका नगरी के सभी; ऍङ्कणुम्—सब ओर; इरियल् पोन—भाग गये। ७२९

हनुमान बहुत बड़े-बड़े तरुओं और गिरियों को उखाड़कर फेंक रहा था, जिससे प्रभापूर्ण प्राचीर दरारें खा गये। प्रासाद आग हो उठे और राख निकली। लंकावासी सभी भयभीत हो सर्वत्र तितर-बितर भाग गये। ७२९

तॊण्डैयङ् गनिवाय्च् चीदै तुवक्किना लॆन्नैच् चुट्टाय्
विण्डवा नवर्हण् मुन्ने विरिपॊऴि लिऱुत्तु वीक्कक्
कण्डनै निन्ऱा यॆन्ऱु काणुमे लरक्कन् काय्दल्
उण्डॆन वॆरुवि नान्बो लॊळित्तन नुडुविन् कोमान् 730

तॊण्टै अम् कनि वाय्—सुन्दर बिम्बाधरा; चीतै तुवक्किनाल्—सीता के (स्नेह) बन्धन से; ऍन्नै चुट्टाय्—तुमने मुझे ताप दिया; विण्ट वानवर्कळ्—मुझसे डरकर पलायित देवों; मुन्नै—के सामने; विरि पॊऴिल्—विस्तृत उपवन को; इऱुत्तु वीक्क—(हनुमान द्वारा) नष्ट होते; कण्टनै—देखते (चुप); निन्ऱाय्—खड़े रहे; ऍन्ऱु—ऐसा सोचकर; काणुमेल्—देखेगा तो; अरक्कन् काय्तल् उण्टु ऍन—राक्षस रावण त्रास देगा, ऐसा सोचकर; वॆरुविनान् पोल्—डर गया हो जैसे; उटुविन् कोमान्—उडुपति; ऒळित्तनन्—छिप गया। ७३०

चन्द्र छिप गया। (कवि की उत्प्रेक्षा है कि) चन्द्र ने सोचा कि रावण मुझे देखेगा तो सताएगा, क्योंकि वह सोचता होगा कि मैंने बिम्बाधरा सीता के स्नेहबन्धन के कारण उसे जलाया। फिर किसी वानर ने अशोक वन के विशाल उद्यान को मिट्टी में मिलाया और मैं चुप देखते खड़ा रहा। उडुपति मानो इससे डरकर छिप गया। ७३०

काशरु मणियुम् बॉन्नुङ् कान्दमुङ् गजल्व वाय
माशरु मरङ्ग ळाहक् कुयिऱ्ऱिय मदनच् चोलै
आशैह डोरु मैयन् कैहळा लळ्ळि यळ्ळि
वीशिन विळक्क लाले विळङ्गिन वुलह मॅल्लाम् 731

काचु अरु–दोषहीन; मणियुम्–रत्न; पॉन्तुम्–और स्वर्ण; कान्तमुम्–सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त मणियाँ; कजल्व आय–जो मनोहारी रूप से विद्यमान हैं; माचु अरु–त्रुटिहीन; मरङ्कळाक कुयिऱ्ऱिय–पेड़ों के रूप में जटित; मतनच् चोलै–मदन-वास-योग्य वह अशोक वन; आचैकळ् तोरुम्–सभी दिशाओं में; ऐयन्–सम्मान्य हनुमान के; कैकळाल् अळ्ळि अळ्ळि वीचिन–हाथों से उठा-उठाकर फेंके गये; विळक्कलाले–बड़ा प्रकाश फैला रहे थे, इसलिए; उलकमॅल्लाम्–सारे लोक; विळङ्किन–(अन्धकार में भी) साफ़ रूप से दिखायी दिये। ७३१

वह मदनवास-योग्य अशोक वन निर्दोष रत्नों, स्वर्ण, सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त मणियों आदि से जटित प्रकाशमान पेड़ों से भरा था। हनुमान ने उनको अपने दोनों हाथों से उठा-उठाकर आकाश में फेंका तो सारे लोक अन्धकार में भी उज्ज्वल दिखे। ७३१

कदऱिन वॅरुवि युळ्ळङ् गलङ्गिन विलङ्गु कण्गळ्
कुदऱिन पऱवै वेलै कुळित्तन कुळित्ति लाद
पदऱिन पदैत्त वानिऱ् परन्दन मऱिन्दु पार्वीऴ्न्
दुदऱिन शिऱहै मीळ वॊडुक्किन वुलन्दु पोन 732

विलङ्कु कतऱिन–पशु चिल्ला उठे; वॅरुवि–डरकर; उळ्ळम् कलङ्किन–मन में भ्रमित हुए; कण्कळ् कुतऱिन–उनकी आँखें घाव बनकर रक्त से भर गयीं; पऱवै–पक्षीगण; वेलै कुळित्तन–समुद्र में डूब गये; कुळित्तु इलात–जो डूबे नहीं वे; पतऱिन पतैत्त–घबड़ा गये, बेचैन हुए; वानिल् परन्तन–आकाश में उड़े; मऱिन्तु–लौटकर; पार् वीऴ्न्तु–भूमि पर गिरकर; उतऱिन चिऱकै–पंख फड़फड़ाकर; मीळ ऑटुक्किन–फिर उन्हें समेटकर; उलन्तु पोन–सूख गये (मर गये)। ७३२

उस अशोक वन के पशु चिल्लाये। डरकर व्याकुलमन हुए। उनकी आँखें व्रण-सी हो गयीं और उनसे रक्त उमग आया। पक्षीगण समुद्र में गिरकर डूब गये। जो नहीं डूबे वे बेचैन हो छटपटाये। आकाश में उड़े, फिर नीचे गिरे। उन्होंने अपने पंख फड़फड़ाये फिर समेट लिया और प्राण त्याग दिये। ७३२

तोट्टोडुन् दुदैन्द तॆय्व मरन्दोरुम् तोडुत्त पुट्टङ्
गूट्टोडुन् दुऱक्कम् बुक्क कुन्ऱन्न कुववुत् तिण्डोळ्
शेट्टहन् परिदि मार्बन् शीऱियुन् दीण्ड ऱन्नाल्
मीट्टवन् करुणै शॆय्दाऱ् पॆरुम्बदम् विळम्ब लामो 733

कुन्ऱु अन्न–पर्वत-सम; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सबल कन्धों; चेट्टु अकल्–(और) सुन्दरता में विशाल; परिति मार्पन्–सूर्य-सम प्रकाशमय वक्ष का; चीऱियुम्–(हनुमान की) कोप के साथ भी; तीण्टल् तन्नाल्–स्पर्श-महिमा से; तॆय्व मरम् तोऱुम्–हर दिव्य तरु पर; पुळ्–पक्षी; तोट्टोटुम्–पत्रों के साथ; तुतैन्त तॊटुत्त–घने रूप से निर्मित; तम् कूट्टोटुम्–अपने घोंसलों-सहित; तुऱक्कम् पुक्क–स्वर्ग पहुँचे; मीट्टु–फिर; अवन् करुणै चॆय्ताल्–वह कृपा करे तो; पॆरुम् पतम्–(कृपापात्र) जो पद प्राप्त करेंगे; विळम्पल् आमो–उसको कह सकेंगे क्या। ७३३

हनुमान के कन्धे पुष्ट और सबल थे। उसका वक्ष अति सुन्दर रूप से विशाल था। वह क्रोध में ही पेड़ों का नाश करता था और खगकुल मरे। तो भी उसके स्पर्श की महिमा थी कि वे मृत पक्षी स्वर्ग पहुँचे। अगर वह इसके विपरीत कृपा दिखाता तो वे किस (अत्युन्नत) पद को प्राप्त होंगे? यह हम कह सकते हैं क्या? । ७३३

पॊय्म्मुरै यरक्कर् काक्कुम् बुळ्ळुऱै पुदुमॆन् शोलै
विम्मुरु मुळ्ळत् तन्न मिरुक्कुमव् विरुक्क मॊन्ऱुम्
मुम्मुरै युलह मॆल्ला मुऱ्ऱुर मुडिव दान
अम्मुरै यैयन् वैहु मालॆन्न निन्ऱ दन्ऱे 734

पॊय् मुरै–असत्य के मार्गगामी; अरक्कर् काक्कुम्–राक्षस-पालित; पुळ् उऱै–पक्षी के वास के; पुतु मॆन् चोलै–नवीन और कोमल उद्यान में; विम् उरुम्–दुःख-भरे; उळ्ळत्तु अन्नम्–मन की हंसिनी-सी देवी; इरुक्कुम् अ विरुक्कम् ऒन्ऱुम्–(जिसके नीचे) रहती थीं, केवल वह एक शिंशुपा वृक्ष; मु मुरै उलकम् ऎल्लाम्–त्रिविध (भू, पाताल, स्वर्ग के) सारे लोक; मुऱ्ऱु उऱ–सम्पूर्ण रूप से; मुटिवतु आन–नष्ट करने आनेवाले; अ मुरै–उस प्रलयकाल में; ऐयन् वैकुम्–प्रभु श्रीविष्णु जिस पर रहते हैं; आल् ऎन्–उस वटपत्र के समान; निन्ऱतु–स्थिर रहा। ७३४

असत्यमार्गगामी राक्षसपालित, खगावास उस अशोक वन में सिर्फ़ वह एक 'शिंशुपा' वृक्ष बचा, जिसके तले दुःख-विलोडित मन वाली हंसिनी-सी सीताजी बैठी थीं। वह वृक्ष उस वटपत्र के समान बचा रहा, जिस पर त्रिलोकनाशक प्रलयकाल में प्रभु श्रीविष्णु शयन करते रहते हैं। ७३४

उरुशुडर्च् चूडॆक् काशुक् करशितै युयिरॊप् पानुक्
करिहुरि याह विट्टा ळादलान् वरिय ळन्दो
शॆरिहुळऱ् चोदॆक् कन्ऱोर् शिहामणि तॊरिन्दु वाङ्गि
ऎरिहड लीव दॊन्न वॆळुन्दन तिरवि यॆन्बान् 735

उरु चुटर्–कान्तियुत; चूटै काचुक्कु अरचितै–चूडामणियों में राजा को; उयिर् ऑप्पानुक्कु–अपने प्राण-सम श्रीराम के पास; अऱि कुऱि आक–अभिज्ञान के रूप में; विट्टाळ्–(सीताजी ने) भेज दिया; आतलान्–इसलिए; अन्तो–हाय; वऱियळ्–अब किसी आभरण से हीन; चॆऱिकुऴल्–घने केश वाली; चीतैक्कु–सीता को; ऍऱि कटल्–तरंग फेंकनेवाला सागर; अन्ऱु–तब; ओर् चिकामणि–एक चूडामणि; तॆरिन्तु वाङ्कि–चुन लेकर; ईवतु ऍन्न–प्रदान करता हो जैसे; इरवि ऍन्पान्–रवि वह; ऍऴुन्ततन्–उग आया। ७३५

तब सूर्य उग आया। सूर्य दूसरे चूडामणि के समान लगा। देवी ने चूडामणियों में राजा अपने चूडामणि को अपने प्राण (-सम) नाथ श्रीराम के पास अभिज्ञान के रूप में भेज दिया। अब उनके पास कोई आभरण नहीं रह गया और वे गरीब हो गयीं। उन घने केश वाली सीताजी को तरंगायमान समुद्र ने दूसरा चूडामणि देना चाहा और चुन लेकर यह चूडामणि दिया हो —ऐसा लगा सूर्य। ७३५

ताऴिरुम् बॊऴिल्ह ळॆल्लाम् दुडैत्तॊरु तमिय निन्ऱान्
एऴितो डॆऴु नाडु भळन्दव नॆन्नलु मानान्
आऴियि नडुव णिन्ऱ वरुवरैक् करशु मॊत्तान्
ऊऴियि निरुदिक् कालत् तुरुत्तिर सूर्त्ति यॊत्तान् 736

ताऴ् इरुम्–हरे-भरे और विशाल; पॊऴिल्कळ् ऍल्लाम्–अशोक वन की सारी चीजों को; तुटैत्तु–मिटाकर; ऑरु तमियन् निन्ऱान्–एकाकी खड़ा रहा (हनुमान); एऴितोटु एऴु नाटुम्–सात और सात (चौदह) भुवनों को; अळन्तवन्नुम्–नापनेवाले (त्रिविक्रम मूर्ति); ऍन्नलुम् आनान्–के समान भी रहा; आऴियिन् नटुवण् निन्ऱ–समुद्र-मध्य स्थित; अरुवरैक्कु अरचुम्–श्रेष्ठ पर्वतराज (मेरु) के भी; ऑत्तान्–समान दिखा; ऊऴियिन् इऱुति कालत्तु–युगान्त के समय; उरुत्तिर मूर्त्ति ऑत्तान्–(प्रलयकालाग्नि-) रुद्र के समान भी दिखा। ७३६

खूब पनपे पल्लवफूल-सहित रहे अशोक वन में रही सभी वस्तुओं को मिट्टी में मिलाकर एकाकी जो खड़ा रहा वह हनुमान, सातों लोकों के मापक त्रिविक्रम श्रीविष्णुदेव के समान दिख रहा था; क्षीरसागर-मध्य स्थित पर्वतराज मेरु के समान भी लगा। वही नहीं; युगान्त के प्रलयकालाग्नि-रुद्र के समान भी शोभा। ७३६

इन्नन निहऴुम् वेलै यरक्किय रॆऴुन्दु पॊङ्गिप्
पॊन्मलै यॆन्न निन्ऱ पुनिदनैप् पुरिन्दु नोक्कि
अन्नैयो वॆन्न मेनि यार्हॊलॆन् ऱच्च मुऱ्ऱार्
नन्नुद ऱन्नै नोक्कि यऱिदियो नङ्गै यॆन्ऱार् 737

इन्नन–इस भाँति काम; निकऴुम् वेलै–जब होता रहा, तब; अरक्कियर्–

राक्षसियाँ; ऍळुन्तु–जाग उठीं और; पॉङ्कि–खौल उठीं; पॉन् मलै ऍन्न–स्वर्ण-गिरि-समान; निन्ऱ पुनितनै–स्थित पावन हनुमान को; पुरिन्तु नोक्कि–खूब देखकर; अन्नै–मैया; ईतु ऍन्न मेनि–यह कैसा रूप है; यार् कॉल्–कौन है; ऍन्ऱु–ऐसा; अच्चम् उऱ्ऱार्–भयभीत हुईं; नन्नुतल् तन्नै–मनोरम ललाटिनी को; नोक्कि–देखकर; नङ्कै–स्त्री; अऱितियो–जानती हो; ऍन्ऱार्–पूछा (उनसे)। ७३७

जब अशोक वन इस भाँति मिट रहा था तब राक्षसियाँ जाग उठीं। यह नाश देखा तो उनका मन उबल उठा। स्वर्णमेरु-सदृश खड़े रहे पावन हनुमान को उन्होंने खूब आँखें गड़ाकर देखा और उद्गार निकाला कि मैया! यह क्या रूप है? यह है कौन? उन्होंने भयभीत होकर मनोरम ललाटिनी सीताजी से पूछा कि देवी! तुम इसे जानती हो क्या? । ७३७

तीयवर् तीय शॅय्द ड़ीयवर् तॅरियि नल्लाल्
तूयवर् तुणिद लुण्डे नुम्मुडॆच् चूळ्‌ लॅल्लाम्
आयमा नॅय्द वम्मा निळैयव नरक्कर् शॅय्द
मायमॅन् ऱुरैक्क वेयु मॅय्यॅन मैयल् कॉण्डेन् 738

तीयवर्–बुरे लोग; तीय चॅय्तल्–बुरा काम करें, वह; तीयवर् तॅरियिन् अल्लाल्–बुरे लोग ही जानें, नहीं तो; तूयवर् तुणितल् उण्टे–अच्छे लोग जान सकेंगे क्या; ऍल्लाम्–सब; नुम्मुटै चूळल्–तुम लोगों का षड्यन्त्र है; आय मान्–मृग बना; ऍय्त–(मारीच) मेरे पास आया; अ मान्–वह हरिण; अरक्कर् चॅय्त मायम्–राक्षसों की की हुई माया है; ऍन्ऱु–ऐसा; इळैयवन् उरैक्कवेयुम्–देवर लक्ष्मण ने कहा तो भी; मॅय् ऍन–सच के; मैयल् कॉण्टेन्–भ्रम में पड़ी। ७३८

देवी ने कुछ विचित्र उत्तर दिया। बुरे मनुष्य ही बुरों की बात जानते हैं। नहीं तो अच्छे मनुष्य जान सकेंगे क्या? यह सब तुम लोगों का ही षड्यन्त्र होगा। जंगल में हरिण बनकर मारीच आया और मेरे देवर ने कहा कि यह माया-मृग है। पर मैं उसे सच्चा मृग मानकर मोहित हुई थी। ७३८

ऍन्ऱन ळरक्कि माऱ्हळ् वयिऱलैत् तिरियल् पोहिक्
कुन्ऱमु मुलहुम् वानुङ् गडलहळुङ् गुलैय वोड
निन्ऱदोर् शयित्तङ् गण्डा नीक्कुव लिदनै यॅन्नात्
तन्ऱडक् कैह णोट्टिप् पऱ्ऱिना ऱादै यॊप्पान् 739

ऍन्ऱतळ्–ऐसा कहा; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटती हुईं; इरियल् पोकि–तितर-बितर होकर; कुन्ऱमुम्–पर्वतों; उलकुम्–लोक; वानुम्–आकाश; कटल्कळुम्–समुद्रों के; कुलैय–अस्त-व्यस्त होकर; ओट–भागते; तादै ऑप्पान्–अपने पिता (वायु-) सम जो रहा उसने; निन्ऱतु–वहाँ स्थित; ओर् चयित्तम्–एक 'चैत्य' (यज्ञशाला) को; कण्टान्–देखा; इतनै नीक्कुवल्–इसको

उखाड़ दूँगा; ऍन्नृता–सोचकर; तन् तट कैकळ्–अपना विशाल हाथ; नीट्टि–बढ़ाकर; पट्रिनान्–उसको पकड़ लिया। ७३९

सीताजी ने यह उत्तर दिया। राक्षसियाँ पेट पीटकर तितर-बितर हो भागीं, जिससे पर्वत, भूतल, आकाश और सागर व्यथित हुए। तब अपने पिता, पवन-सदृश हनुमान ने वहाँ एक चैत्य (यज्ञमण्डप) को देख लिया। 'इसको हटाऊँगा' —यह विचार करके उसने अपने बड़े हाथ से उसे पकड़ लिया। ७३९

कण्गॊळ वरिदु मीदु कार्हॊळ वरिदु तिण्गाल्
ऍण्गॊळ वरिदु तीरा विरुळ्हॊळ वरिदु माह
विण्गॊळ निवन्द मेरु वॆळ्हुर वॆदुम्बि युळ्ळम्
पुण्गॊळ वुयर्न्द दिप्पार् पॊरैहॊळ वरिदु पोलाम् 740

कण् कॊळ अरितु–(वह चैत्य) पूर्णरूप से देखने में कठिन (इतना बड़ा) था; कार्–मेघ भी; मीतु कॊळ–उसके ऊपर जाएँ; अरितु–वह कठिन था; तिण् काल्–सबल पवन भी; ऍण् कॊळ–उसको उखाड़ने का विचार करे; अरितु–वह दुस्तर था; तीरा–अक्षय; इरुळ्–युगान्त के अन्धकार के लिए भी; कॊळ अरितु–ढक लेना दुस्साध्य था; माक विण्–बड़े आकाश को; कॊळ–अपना स्थान बना लेने के विचार से; निवन्त–ऊँचा बढ़ा हुआ; मेरु–मेरु पर्वत भी; वॆळ्कु उऱ–शरम करके; उळ्ळम् वॆतुम्पि–मन में ताप का अनुभव कर; पुण् कॊळ–दुःखव्रण पा जाए ऐसा; उयर्न्ततु–उन्नत बना था; इ पार्–यह भूमि; पॊऱै कॊळ–भार सहे; अरितु पोल्–यह कठिन हो जैसे; आम्–था। ७४०

वह चैत्य इतना बड़ा और चमकीला था कि कोई भी अपनी आँखों से उसे पूरा नहीं देख सके। मेघ भी उसके ऊपर न जा सके, उतना ऊँचा था। सबल पवन उसके पास नहीं जा सकता था। अक्षय प्रलयान्धकार भी उसे अपने अन्दर ले नहीं जा सकता था। आकाशव्यापी मेरु भी उससे शरमाकर चित्त में तपकर व्रणमन हो जाय, इतना उन्नत बढ़ा था वह चैत्य। यह धरती उसके भार को वहन नहीं कर सकेगी, ऐसा कहा जा सकता था। ७४०

पॊङ्गॊळि नॆडुना ळीट्टिप् पुदियपाल् पॊळिव दॊक्कुम्
तिङ्गळै नक्कु हिन्ऱ विरुळॆल्लाम् वारित् तिन्न
अङ्गैबत् तिरट्टि यान्ऱ नाणैया लळ्हु मानप्
पङ्गयत् तॊरुवन् ऱाने पशुम्बॊनाऱ् पडैत्त दम्मा 741

पुतिय पाल्–ताजा दूध; पॊळिवतु–बहाते; ऒक्कुम्–जैसे; तिङ्कळै–चन्द्र को; नक्कुकिन्ऱ–चाटनेवाले; इरुळ् ऍलाम्–सभी अन्धकार को; वारि तिन्न–उठाकर खाने के लिए; अम् कै पत्तु इरट्टियान्–सुन्दर बीस हाथों वाले; तन् आणैयाल्–(रावण) की आज्ञा से; पङ्कयत्तु ऒरुवन् ताने–कमलासन स्वयं; पॊङ्कु

ऑळि–वर्धनशील प्रकाश को; नॅटु नाळ्–अनेक दिनों से; ईट्टि–खोजकर एकत्रित कर; अळकु मात–सुन्दरता में बढ़े हुए; पचुम् पॊऩ्ऩाल्–चोखे स्वर्ण से; पटॆत्ततु–रचित किया शायद जो था वह था यह चैत्य; अम्मा–मैया। ७४१

दुग्ध-सम प्रकाश फैलानेवाले चन्द्र को भी जो अन्धकार चाट लेता है, उस अन्धकार को एक दम उठाकर खाने के लिए बीस हाथों वाले राक्षसराज रावण की आज्ञा के अनुसार स्वयं कमलासन ने अनेक-अनेक दिन प्रकाश को एकत्रित कर, उस पुञ्जीभूत प्रकाश से, सुन्दरता में बढ़े हुए उस चैत्य को निर्मित किया था —ऐसा लगता था वह चैत्य। ७४१

तूणॆलाञ् जुडरुङ् गाशु शुऱ्ऱॆला मुत्तञ् जॅम्बॊऩ्
पेणला मणियिऩ् पित्तिप् पिडरॆला मॊळिहळ् विम्मच्
चेणॆलाम् विरियुङ् गऱ्ऱैच् चेयॊळिच् चॅल्वऱ् केयुम्
पूणला मॅम्म ऩोराऱ् पुहललाम् बॊदुमैत् तऩ्ऱे 742

तूण् ऍलाम्–खम्भे सब; चुटरुम् काचु–चमकीले रत्नमय; चुऱ्ऱु ऍलाम्–घेरे सब; मुत्तम् चॅम्पॊऩ्–मोती और लाल स्वर्ण के; पेणल् आम् पित्ति पिटर् ऍलाम्–दर्शनीय दीवारों के ऊपर सर्वत्र; मणि–रत्नमय; ऑळिकळिऩ्—छटाओं की; चेण् ऍलाम् विम्म–आकाश भर को भरते हुए; विरियुम् कऱ्ऱै–व्यापनेवाली लटें; चेय् ऑळि चॅल्वर्कु एयुम्–लाल किरणों के धनी सूर्य के लिए भी; पूणल् आम्–अपनाने योग्य हैं; ऍम्मऩोराल्–हम जैसों से; पुकलल् आम्–वर्णन योग्य; पॊतुमैत्तु अऩ्ऱु–साधारण वस्तुएँ नहीं। ७४२

खम्भे चमकते रत्नों के; घेरे सब मोतियों और लाल स्वर्ण के; और मनोरम भित्तियों के ऊपरी भाग रत्नों के थे। इनके प्रकाश की व्योमव्यापी लटें ऐसी थीं कि लाल किरणों के धनी सूर्य भी उनकी चाह करे! फिर हम जैसों द्वारा उसका वर्णन कैसे किया जाय? वह वैसी कोई साधारण चीज़ें नहीं। ७४२

वॅळ्ळियङ् गिरियैप् पण्डु वॅऩ्दॊळि लरक्कऩ् वेरो
डळ्ळिऩा ऩॅऩ्ऩक् केट्टा ऩत्तॊळिऱ् कऴिवु तोऩ्ऱप्
पुळ्ळिमा मेरु वॅऩ्ऩुम् पॊऩ्मलै यॆडुप्पाऩ् पोल
वळ्ळुहिर्त् तडक्कै तऩ्ऩाऩ् मण्णिऩ्ऱुम् वाङ्गि यण्णल् 743

अण्णल्–उत्तम हनुमान; वॅम् तॊऴिल् अरक्कऩ्–क्रूरकर्म राक्षस रावण ने; पण्टु–पहले; वॅळ्ळि अम् किरियै–चाँदी की गिरि कैलास को; वेरोटु अळ्ळिऩाऩ्–जड़ के साथ उठा लिया; ऍऩ्ऩ केट्टाऩ्–ऐसा सुनकर; अ तॊऴिऱ्कु–उस काम को; अऴिवु तोऩ्ऱ–नीचा दिखाने के लिए; पुळ्ळि–बिंदियों के समान विविध रंगों से रंगीन; मा मेरु–बड़े मेरु के; पॊऩ् मलै ऍटुप्पाऩ् पोल–स्वर्णगिरि को उठाता हो जैसे; वळ् उकिर् तट कै तऩ्ऩाल्–तीक्ष्ण नखों के अपने विशाल हाथों से; मण् निऩ्ऱुम्–भूमि से; वाङ्कि–उस चैत्य को उठाकर। ७४३

हनुमान ने सुन रखा था कि पहले क्रूरकर्म रावण ने रजतगिरि कैलास को जड़ से उठाया था। मानो उस कार्य के गौरव को मिटाने के वास्ते हनुमान ने चित्तियों (विविध रंगों) सहित महामेरु पर्वत को उठाता जैसे अपने तेज़ नाखूनों वाले हाथ से उस चैत्य को उठा लिया। ७४३

विट्टत्त निलङ्गै तन्मेल् विण्णुऱ विरिन्द माडम्
पट्टत्त पॉडिह ळात परन्दन्न पाङ्गु निन्ऱ
शुट्टत्त पॉऱिहळ् वीळ्त् तुळङ्गिन ररक्कर् तामुम्
कॅट्टत्तर् वीर रम्मा पिळैप्परो केडु शूळ्न्दार् 744

इलङ्कै तन् मेल्–लंका पर; विट्टतन्–फेंका; विण् उऱ–आकाश में लगे; विरिन्त माटम्–विशाल बने रहे प्रासाद; पट्टन–टकराकर; पॉटिकळ् आन–चूर हुए; पाङ्कु परन्तन निन्ऱ–पास जो स्थित थे उन सबको; चुट्टत्त–उठी अग्नि से उन प्रासादों ने जला दिया; पॉऱिकळ् वीळ–अंगारे गिरने से; अरक्कर् तामुम्–राक्षस भी; तुळङ्कितर्–भयभीत हुए; वीरर् कॅट्टत्तर्–वीर मरे; केटु चूळ्न्तार्–बुराई करनेवाले; पिळैप्परो–बचेंगे क्या; अम्मा–मैया। ७४४

और उसको हनुमान ने लंका पर ज़ोर से फेंका। उसके टकराने से लंका के गगनचुम्बी प्रासाद चूर हुए। उससे आग उठी जिससे पास रहे पदार्थ जल उठे। अंगारे छितरे और राक्षस डरे। वीर मरे। पर-पीडक बचेंगे क्या? मैया! । ७४४

नीरिडु तुहिल रच्च नॅरुप्पिडु नॅञ्जर् नॅक्कुप्
पीरिडु मुरुवर् तॅऱ्ऱिप् पिणङ्गिडु ताळर् पेळ्वाय्
ऊरिडु पूश लार वुळैत्तन रोडि युऱ्ऱार्
पारिडु पळुवच् चोलै पालिक्कुम् बरुवत् तेवर् 745

पार् इटु–भूमि पर लाकर पालित; पळुव चोलै–तरुसंकुल (अशोक-) वन; पालिक्कुम् परुव तेवर्–(उसको) पालनेवाले ऋतुओं के देवता; नीर् इटु तुकिलर्–मूत्र से भीगे हुए कपड़ों वाले; अच्च नॅरुप्पु इटु–भय की अग्नि-सहित; नॅञ्चर–मन वाले; नॅक्कु पीर् इटुम्–चोट खाकर उछलनेवाले रक्तमय; उरुवर्–शरीर वाले; तॅऱ्ऱि पिणङ्किटु–आपस में मिलकर लड़खड़ाते हुए; ताळर्–पैरों वाले; पेळ्वाय्–विवरित अपने बड़े मुखों से; ऊर् इटु पूचल् आर–लंका नगर में बड़ा शोर मचाते हुए; उळैत्ततर्–रोते-चिल्लाते हुए; ओटि उऱ्ऱार्–भागे और रावण के पास गये। ७४५

रावण ने व्योमलोक से तरु लाकर अशोक वन उगाया था। उसका पालन करते रहे ऋतुदेवता। उनकी अब दुर्गति हो गयी। मूत्र-भीगे वस्त्र, भय की अग्नि-लगे मन, रक्त-निस्सारक शरीर और लड़खड़ाते पैरों वाले होकर वे अपने बड़े मुखों को खोलकर लंका भर में व्याप जाय, ऐसी ज़ोर की ध्वनि निकालते हुए चिल्लाकर रावण के पास दौड़ पड़े। ७४५

अरिपडु शीऱ्ऱत् ताऩ्ऱ ऩरुहुशॅऩ्ऱु ऱडियिऩ् वीऴ्न्दार्
करिपडु तिशैयि ऩीण्ड कावलाय् काव लाऱ्ऱोम्
किरिपडु कुववुत् तिण्डोट् कुरङ्गिडै किऴित्तु वीश
अॅरिपडु पञ्जि नॊय्दि ऩिऱ्ऱदु कडिहा वॆऩ्ऱार् 746

अरि पट—सिंह का-सा; चीऱ्ऱत्तात् तऩ्—क्रोध करनेवाले (रावण) के; अरुकु चॆऩ्ऱु—पास जाकर; अटियिऩ् वीऴ्न्तार्—पैरों पर गिरे; करि पटु—गजों से रक्षित; तिचैयिऩ् नीण्ट—दिगन्त तक फैले; कावलाय्—शासन वाले; कावल् आऱ्ऱोम्—रक्षण में असमर्थ हो गये; किरिपटु—गिरि को पछाड़नेवाले; कुववु तिण् तोळ्—पुष्ट सबल कन्धों के; कुरङ्कु—एक वानर के; इटै किऴित्तु वीच—मध्य में घुसकर नष्ट करने से; कटि का—रक्षण में रहा, वह अशोक वन; ऍरि पटु पञ्चिऩ्—आग में पड़ी रूई के समान; नॊय्तिऩ् इऱ्ऱतु—शीघ्र मिट गया; ऍऩ्ऱार्—कहा। ७४६

सिंह-सदृश क्रोधी रावण के पास जाकर वे उसके पैरों पर गिरे। गज-रक्षित दिगंतों तक व्याप्त शासनक्षेत्र के स्वामी! हम अब अशोक वन का रक्षण नहीं कर सके। गिरिनाशक पुष्ट कन्धों वाले एक वानर ने उसके मध्य घुसकर उसको मिटा दिया। वह सुरक्षित वन आग में पड़ी रूई के समान बहुत शीघ्र मटियामेट हो गया। ७४६

चॊल्लिड वॆळिय दऩ्ऱार् चोलैयैक् कालिऩ् कैयिल्
पुल्लॊडु तुहळु मिऩ्ऱिप् पॊडिपड नूऱिप् पॊऩ्ऩाल्
विल्लिडु वोमन् दऩ्ऩै वेरॊडुम् वाङ्गि वीशच्
चिल्लिड मॊऴियत् तॆय्व विलङ्गैयुञ् जिदैन्द दॆऩ्ऱार् 747

चॊल्लिट—कहना; ऍळियतु अऩ्ऱु—सुलभ नहीं; चोलैयै—उस अशोक वन को; कालिल् कैयिल्—पैरों और हाथों से; पुल् ऒटु तुकळुम् इऩ्ऱि—घास, धूल से रहित करके; पॊटि पट नूऱि—चूर करते हुए मिटाकर; पॊऩ्ऩाल्—स्वर्ण से; विल् इटु—धनु के समान प्रकाश देनेवाले; ओमम् तऩ्ऩै—चैत्य को; वेरॊटु वाङ्कि वीच—नींव-सहित उखाड़कर फेंकने से; चिल् इटम् ऒऴिय—बहुत थोड़े से स्थान को छोड़कर; तॆय्व इलङ्कैयुम्—दिव्य लंका नगरी भी; चितैन्ततु—मिट गयी; ऍऩ्ऱार्—कहा (ऋतुदेवताओं ने)। ७४७

ऋतुदेवताओं ने आगे कहा कि उस वानर के कृत्य हमसे कथ्य नहीं हैं। उसने अपने पैरों और हाथों से अशोक वन को मिटा दिया। उसमें न घास बची, न धूल ही। स्वर्णमय चमकदार चैत्य को भी उसने जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। कुछ ही स्थानों को छोड़कर सारी दिव्य लंका नगरी तहस-नहस हो गयी। ७४७

7. किङ्गरर् वदैप् पडलम् (किङ्कर-वध पटल)

आडहत् तरुविऩ् शोलै पॊडिपडुत् तरक्कर् काक्कुम्
तेडरु मोमम् वाङ्गि यिलङ्गैयुञ् जिदैत्त दम्मा

कोडर मौन्ऱे नन्ऱि दिराक्कदर् कोर्ऱम् जोर्ऱल्
मूडरु मोऴियार् रॅन्ऱ मन्नतु मुरुवल् शॅय्दान् 748

कोटरम् ऑन्ऱे–बन्दर एक ही ने; आटक तरुविन् चोलै–स्वर्ण-तरुओं के वन को; पोटि पट्टुत्तु–धूल बनाकर; अरक्कर् काक्कुम्–राक्षस-रक्षित; तेटु अरुम् ओमम् वाङ्कि–अपूर्व यज्ञमण्डप (चैत्य) उखाड़कर; इलङ्कैयुम् चितैत्ततु–लंका का भी नाश किया; इराक्कतर्–राक्षसों की; कोर्ऱम्–वीरता; नन्ऱितु–भली है; चोर्ऱल्–यह कथन; मूटरुम् मोऴियार्–मूर्ख भी नहीं करते; ऍन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; मन्नतुम्–राजा ने; मुरुवल् चॅय्तान्–मन्दहास दिखाया। ७४८

रावण ने यह बात सुनी तो उसे आश्चर्य हुआ। उसने कहा कि क्या एकाकी वानर ने स्वर्णमय तरुओं के भरे उस वन को चूर कर दिया? राक्षस-रक्षित अपूर्व चैत्य को उखाड़ दिया? लंका को भी छिन्न-भिन्न कर दिया? हा! राक्षसों की वीरता भी भली रही! यह बात मूर्ख लोग भी नहीं कहेंगे। रावण यह कहकर मुस्कुराया। ७४८

तेवर्हळ् मुन्नुम् बिन्नु मदनुरुच् चुमक्कुन् दिण्मैप्
पूवल यत्तै यन्ऱो पुहळ्वदु पुलवर् पोर्ऱुम्
मूवरि नोरुव नॅन्ऱे पुहलिनु मुडिवि लाद
एवम रलैक्कुम् शॅङ्गैक् कुरङ्गुहा णिन्नू मॅन्ऱार् 749

तेवर्कळ्–उन ऋतुदेवताओं ने; अतन् उरु–उसका रूप; मुन्नुम् पिन्नुम्–आगे-पीछे कभी; चुमक्कुम्–ढोते रहनेवाले; तिण्मै पूवलयत्तै अन्ऱो–सशक्त भूवलय को न; पुकऴ्वतु–प्रशंसित करना है; पुलवर् पोर्ऱुम्–देवशंसित; मूवरिन्–त्रिदेवों में; ऑरुवन् ऍन्ऱे–एक ही है; पुकलिनुम्–कहने पर भी; मुटिवु इलात–उसकी शक्ति अनन्त है; चॅङ्कै कुरङ्कु–अरुणहस्त वानर; इन्नुम् एवु अमर्–आगे भी जो छिड़ेगा वह युद्ध भी; अलैक्कुम्–लाचार कर देगा; काण्–आप देख लें; ऍन्ऱार्–कहा। ७४९

ऋतुदेवताओं ने उत्तर में कहा कि उस धरती की न सराहना करनी चाहिए, जो सदा से इस वानर के शरीर (के भार) को वहन करती रहती है? उसे देवशंसित त्रिदेवों में एक कह सकते हैं तो भी वह उसकी अपार शक्ति का द्योतक नहीं हो सकता। वह लाल (रक्तरंजित) हाथ वाला वानर आगे भी, अगर आपकी आज्ञा से युद्ध होगा तो बड़ा अनर्थ मचा देगा। आप ही देखें। ७४९

मण्डलङ् गिऴिय वायिन् मऱिहडन् मोळै मण्ड
ऑण्डिशै शुमन्द मावुन् देवरु मिरियल् पोहत्
तोण्डेवा यरक्कि मार्हळ् शूल्वयि ऱुडैन्दु शोर
अण्डमुम् बिळन्दु विण्ड दामॅन वनुम नार्त्तान् 750

अनुमन्–हनुमान ने; मण्टलम् किऴिय–भूमण्डल को (और व्योममण्डल को)

चीरते हुए; मऱि कटल्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र का जल; मोळै–भूमि के नीचे की नदी बनकर; वायिल् मण्ट–लंका-द्वार पर बहे ऐसा; अॅण् तिचै चुमन्त मावुम्–अष्ट दिग्गजों को; तेवरुम्–देवों को; इरियल् पोक–भगाते हुए; तॊण्टै वाय् अरक्किमार्कळ्–बिम्बाधरा राक्षसियों के; चूल् वयिरु–गर्भ सहित पेट; उटैन्तु चोर–टूटकर गिर जाएँ, ऐसा; अण्टमुम् पिळन्तु–अण्ड दरार खाकर; विण्टतु आम् अॅन–फूटा हो, ऐसा; आर्त्तान्–एक गर्जन किया। ७५०

ये यह कह ही रहे थे कि हनुमान ने गर्जन का ऐसा स्वर निकाला कि भू तथा व्योममण्डल दरार खाकर फूटे; प्रत्यावर्तनशील तरंगों का सागर भूमि के नीचे से नदी के रूप में बहकर लंका के द्वार के पास चला; दिग्गज और देवता लोग तितर-बितर हो भाग गये; और बिम्बाधरा राक्षसियों के गर्भ गिर गये। अण्ड ही फट गया हो ऐसा था वह शोर। ७५०

अरुवरै मुळैयित् मुट्टु मशनियि निडिप्पु माळि
वॅरुवरु मुळक्कु मीशन् विल्लिरु मॊलियु मॆन्नक्
कुरुमणि महुड कोडि मुडित्तलै कुलुङ्गुम् वण्णम्
इरुबदु शॆवियि नूडु नुळैन्ददव् वॆळुन्द वोशै 751

अरुवरै–बड़े पर्वतों की; मुळैयिन् मुट्टुम्–गुहाओं पर जा लगनेवाले; अचनियिन् इटिप्पुम्–वज्र का निनाद; आळि–(और) सागर का; वॅरुवरु मुळक्कुम्–भयावना गर्जन; ईचन् विल् इऱुम्–परमेश्वर के धनु के टूटने का; ऑलियुम्–शोर; अॅन्न–ऐसा; कुरुमणि–बड़े-बड़े रत्नों से अलंकृत; मकुट कोटि–किरीटपंक्ति से भूषित; मुटि तलै–केशयुक्त रावण के सिर; कुलुङ्कुम् वण्णम्–हिल जाएँ, ऐसा; अॅळुन्त–जो उठा; ओचै–वह शोर; इरुपतु चॆवियिन् ऊटु–बीसों कर्णों के द्वार से; नुळैन्ततु–घुस चला। ७५१

बड़े पर्वत की गुहा पर गिरनेवाले वज्र का नाद; प्रलयकालीन डरावना समुद्रगर्जन, परमेश्वर के धनु की टंकार का घोर नाद-जैसा उसका गर्जन मोटे रत्नों से युक्त किरीट-पंक्ति से अलंकृत रावण के सिरों को हिलाते हुए उसके बीसों कर्ण-विवरों में जा घुसा। ७५१

पुल्लिय मुरुव ऱोऩ्ऱप् पॊऱामैयुञ् जिऱिदु पॊङ्ग
एल्लैयि लाऱ्ऱन् माक्क ळॆण्णिऱन् दारै येवि
वल्लैयि नहला वण्णम् वानैयुम् वळियै माऱ्ऱिक्
कॊल्ललिर् कुरङ्गै नॊय्दिऱ् पऱ्ऱुदिर् कॊणर्मि नॆन्ऱान् 752

पुल्लिय मुऱुवल्–अल्पहास; तोऩ्ऱ–प्रकट करके; पॊऱामैयुम्–ईर्ष्या; चिऱितु पॊङ्क–किञ्चित उठी; अॅल्लै इल् आऱ्ऱल्–अपार बलशाली; माक्कळ् अॅण् इऱन्तारै–दासों, असंख्यकों को; एवि–प्रेरित करके; वानैयुम्–आकाश को भी; वळियै माऱ्ऱि–मार्गहीन बनाकर; कुरङ्कै–उस बन्दर को; अकला वण्णम्–बचने न देकर; वल्लैयिल्–शीघ्र; कॊल्ललिर्–विना मारे; नॊय्तिल्–सुगम रीति से; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो और; कॊणर्मिन्–लाओ; अॅन्ऱान्–कहा (आज्ञा सुनायी)। ७५२

रावण के अधरों में मन्दहास खेल गया। मन में किंचित ईर्ष्या उठी। उसने अपार बली असंख्यक दासों को बुलाया। आज्ञा सुनायी कि जाओ। आकाश-मार्ग को भी रोको। उस वानर को बचने न दो। उसे मारो भी मत। शीघ्र पकड़कर लाओ। ७५२

शूलम्वाण् मुशलङ् गूर्वे ऱोमरन् दण्डु पिण्डि
पालमे मुदला वुळ्ळ पडैक्कलम् बरित्त कैयर्
आलमे यनैय मॅय्य रहलिड मळिवु शॅय्युम्
कालमे लॅऴुन्द मूरिक् कडलॅनक् कडिदु शॅल्वार् 753

चूलम्–त्रिशूल; वाळ्–तलवार; मुचलम्–मूसल; कूर् वेल्–तीक्ष्ण भाले; तोमरम्–तोमर; तण्टु–दण्ड; पिण्टिपालम्–भिंडिपाल; मुतला उळ्ळ–आदि जो थे; पटैक्कलम्–हथियार; परित्त कैयर्–(उनको) हाथ में लिये हुए; आलमे अतैय–हलाहल ही सम; मॅय्यर्–आकार वाले; अकल् इटम्–विशाल भूमि को; अऴिवु चॅय्युम्–नष्ट करनेवाले; कालम्–प्रलयकाल में; मेल् ऍऴुन्त–उठे हुए; मूरि कटल् ॲन्न–प्रबल समुद्र के समान; कटितु चॅल्वार्–सवेग जाने लगे। ७५३

वे वीर त्रिशूल, तलवारें, मूसल, तीक्ष्ण भाले, तोमर, दण्डायुध, भिंडिपाल आदि हथियार हाथ में लिये हुए चले। हलाहल ही सम काले आकार के वे विशाल लोक के नाशक युगान्तकालीन मेघों के समान शीघ्र-शीघ्र कूच कर जाने लगे। ७५३

नाऩिल मदऩि ऩुण्डु पोरॅऩ्ऩ नविलि ऩच्चॊल्
तेऩिऩुङ् गळिप्पुच् चॅय्युञ् जिऩ्दैयर् तॅरित्तु मॅऩ्ऩिऩ्
काऩिऩुम् बॅरिय रोशै कडलिऩुम् बॅरियर् कीर्त्ति
वाऩिऩुम् बॅरियर् मेऩि मलैयिऩुम् बॅरियर् मादो 754

नाऩिलम् अतऩिल्–(चतुर्विधा) भूमि पर; पोर् उण्टु–युद्ध चलेगा; ॲऩ्ऩ नविलिऩ्–ऐसा जब कहा जाता है तब; अ चॊल्–वह वचन; तेऩिऩुम् कळिप्पु चॅय्युम्–शहद से भी मधुर लगे; चिऩ्तैयर्–ऐसे मन वाले; तॅरित्तुम् ॲऩ्ऩिऩ्–समझाना चाहें तो; काऩिऩुम् पॅरियर्–जंगल से भी अधिक (काले रंग वाले) हैं; ओचै–नाद करने में; कटलिऩुम् पॅरियर्–समुद्र से भी बड़े हैं; कीर्त्ति–कीर्ति में; वाऩिऩुम् पॅरियर्–आकाश से भी अधिक बड़े हैं; मेऩि–शरीर से; मलैयिऩुम्–पर्वत से भी; पॅरियर्–अधिक बड़े हैं। ७५४

वे कैसे वीर थे? कहीं इस चतुर्विधा भूमि पर युद्ध होनेवाला है—यह समाचार उन्हें शहद से भी अधिक मधुर लगता और उनके मन को मत्त कर देता। उनका स्वभाव आदि का वर्णन करना हो, तो सुनिए; वे घने जंगल से भी रंग में अधिक बड़े (काले) थे। गर्जन में समुद्र से बड़े थे। उनका यश आकाश से भी बड़ा था। उनका आकार पर्वत से भी बड़ा था। ७५४

तिरुहुरुञ् जिनत्तुत् तेवर् तानव रॅन्तुन् दॅव्वर्
इरुहुरुम् बॅरिन्दु नित्र विशैयिनाल् वशैयॅन् रॅण्णिप्
पॊरुहुरुम् बॅन्रु वॅत्रि पुणर्वदु पूवुण् वाळ्क्कै
ऒरुहुरुङ् गुरङ्गॅन् रुळ्ळि नॅडिदुना णुळक्कु नॅञ्जर् 755

तिरुकु उरुम्–ऐंठे हुए; चिनत्तु–क्रोधी; तेवर् तानवर् ॲन्तुम्–देव और दानव-कथित; तॅव्वर्–शत्रु; इरु कुरुम्पु–छोटे-छोटे अधीन राजाओं को; ॲरिन्तु निन्र–हराकर प्राप्त; इचैयिनाल्–यश से; पॊरु कुरुम्पु ॲन्रु–युद्धयोग्य शत्रु मानकर; वॅन्रि पुणर्वतु–लड़ाई में विजय पाना; वचै–निंद्य; ॲन्रु ॲण्णि–ऐसा समझकर; पू उण् वाळ्क्कै–फूल आदि पर जीवित रहनेवाला; ऒरु कुरुम् कुरङ्कु–एक छोटे आकार का शाखामृग; ॲन्रु उळ्ळि–ऐसा समझकर; नॅटितु–गम्भीर रूप से; नाण् उळक्कुम्–लज्जा से व्याकुल; नॅञ्चर्–मन वाले। ७५५

ऐंठे हुए क्रोध में उन्होंने देवों और दानवों पर जीत पायी थी। यद्यपि वह छोटे मातहत राजाओं पर प्राप्त जीत के समान ही थी, तो भी उनमें इतना घमण्ड हो गया था कि वे सोचने लगे कि आखिर इस सुमनाहारी और छोटे आकार वाले शाखामृग के साथ युद्ध करना निंद्य है। इसलिए उनके मन को गम्भीर लज्जा से उत्पन्न दुःख संकट दे रहा था। ७५५

कट्टिय वाळ रिट्ट कवशत्तर् कळ्ळर् तिक्कैत्
तट्टिय तोळर् मेहन् दडविय कैयर् वान्
ॲट्टिय मुडियर् ताळा लिडरिय पॊरुप्प रीट्टिक्
कॊट्टिय बेरि यॅन्न मळैयॅनक् कुमुरुञ् जॊल्लार् 756

कट्टिय वाळर्–कमर में बद्ध तलवार वाले; इट्ट कवचत्तर्–कवच से लैस; कळ्ळर्–पायलधारी; तिक्कै तट्टिय–दिगन्त को ढकेलनेवाले; तोळर्–कन्धों वाले; मेकम् तटविय–मेघ को सहलाए; कैयर्–ऐसे बढ़े हुए हाथों वाले; वान् ॲट्टिय–आकाश-स्पर्शी; मुटियर्–सिर वाले; ताळाल्–पैरों से; इटरिय–ठुकराये गये; पॊरुप्पर्–पर्वत वाले (पर्वतों को भी ठुकरा दे, ऐसे पैर वाले); ईट्टि कॊट्टिय–एक साथ बजी; पेरि ॲन्न–भेरियों के समान; मळै ॲन–मेघों के समान; कुमुरुम् चॊल्लार्–घहरते शब्द वाले। ७५६

उनकी कमरों में तलवारें बँधी थीं। वे कवच और पायलधारी थे। उनके कन्धे दिगन्तों से टकरा रहे थे। उनके हाथ मेघों को सहला रहे थे। सिर आकाश को ढकेलते थे। पर्वतों को अपने पैरों से ढकेलनेवाले थे। अनेक भेरियाँ एक साथ बज उठी हों या अनेक मेघ मिलकर गरजते हों, ऐसे नर्दनयुक्त थे उनके शब्द। ७५६

वानव रॅरिन्द वॅय्यवप् पडैयिडुम् वडुक्कण् मन्रैत्
तानवर् तुरन्द वेदित् तळुम्बॊडु तयङ्गु तोळर्

यातैयुम् विडियुम् वारि यिडुम्बिल वाय रीन्ऱ
कूनल्वॆण् पिऱैयिऱ् ऱोन्ऱु मॆयिऱ्ऱिनर् कॊदिक्कुङ् गण्णार् 757

वानवर् ॲऱिन्त–देवप्रेषित; तॆय्व पटै इटुम्–दिव्यास्त्रों द्वारा बने; वटुक्कळ्–दाग़; मऱ्ऱै–अन्य; तानवर् तुरन्त–दानव-प्रेषित; वेति तळुम्पॊटु–हथियारों के दाग़ों के साथ; तयङ्कु तोळर्–शोभायमान कन्धों वाले; यातैयुम् पिटियुम्–गज और गजनियों को; वारि इटुम्–उठाकर जिनके अन्दर डाला जाय, ऐसे; पिल वायर्–बिल-सदृश मुख वाले; ईन्ऱ–उत्पन्न; कूनल् वॆण्पिऱैयिल्–वक्र अर्धचन्द्र के समान; तोन्ऱुम् ऍयिऱ्ऱिनर्–दिखते दाँतों के हैं; कॊतिक्कुम् कण्णार्–खौलती आँखों के हैं। ७५७

उनके कन्धे देवप्रेषित दिव्य अस्त्रों द्वारा लगे व्रणों के दाग़ों और दानवों के हथियारों द्वारा प्रेषित अस्त्रों के बने व्रणों के दाग़ों के साथ शोभ रहे थे। उनके मुख बिल के समान इतने बड़े थे कि गज और गजनियों को एक साथ उठाकर उनमें डाला जा सकता था। उनके मुखों में वक्र कलाचन्द्र के समान दाँत ज्वलन्त दिखते थे। उनकी आँखें कोप से खौलती थीं। ७५७

चक्कर मुलक्कै तण्डु तारैवाळ् परिहङ् जङ्गु
मुऱ्कर मुशुण्डि पिण्डि पालम्वेल् शूल मुट्कोल्
पॊऱ्करक् कुलिशम् पाशम् बुहर्मळु वॆळ्होल् कुन्दम्
विऱ्करुङ् गणॆविट् टेरु कळुक्कडै यॆळुक्कण् मिन्न 758

चक्करम्–चक्रायुध; उलक्कै–मूसल; तण्टु–दण्डायुध; तारै वाळ्–धारदार तलवारें; परिकम्–परिघ; चङ्कु–शंख; मुऱ्करम्–मुद्गर; मुचुण्टि–मुशुण्डि (भुशंडी?) नाम के हथियार; पिण्टिपालम्–भिंडिपाल; वेल्–बर्छियाँ; चूलम्–त्रिशूल; मुट्कोल्–काँटेदार छड़ियाँ; पॊन् कर–सोने की मूठ के; कुलिचम्–कुलिश; पाचम्–पाश; पुकर् मळु–उज्ज्वल परशु; ऍळु–लोहे के गदे; कोल्–शर; कुन्तम्–कुन्त; विल्–धनु; करुम् कणै–दीर्घ शर; विट्टेरु–फेंके जानेवाले हथियार; कळुक्कटै–नोकदार; ऍळुक्कळ्–दण्ड; मिन्न–इनको चमकने देते हुए। ७५८

वे जब गये तब निम्नलिखित हथियार चमचमा रहे थे। चक्रायुध, मूसल, दण्ड, धारदार तलवारें, परिघ, शंखवाद्य, मुद्गर, 'मुशुण्डि' (भुशंडी?) भिंडिपाल, भाले, त्रिशूल, स्वर्णमूठ वाले कुलिश, पाश, उज्ज्वल परशु, लोहे के दण्ड, शर, कुन्त, धनु, दीर्घ शर, फेंके जानेवाले 'विट्टेरु' हथियार-विशेष और नोकदार लौहदण्ड। ७५८

पॊन्निन्ऱु कञलुन् दॆय्वप् पूणिनर् पॊरुप्पुत् तोळर्
मिन्निन्ऱ पडैयुङ् गण्णुम् वॆयिल्विरिक् किन्ऱ मॆय्यर्
ॲन्नॆन्ऱारक् कॆन्नॆन् नॆन्ऱा रॆय्दिय दरिन्दि लादार्
मुन्निन्ऱार् मुडुहु तीय्प् पिन्निन्ऱार् मुडुहु हिन्ऱार् 759

पॊन् निन्ऱु–स्वर्ण के साथ; कञलुम्–प्रकाशमय; तॆय्व पूणितर्–दिव्य आभरण

वाले; पॊरुप्पु तोळर्—पर्वत-सम कन्धों वाले; मिन् निन्ऱ पटैयुम्—बिजली-सम हथियार; कण्णुम्—और आँखें; वॆयिल् विरिक्किन्ऱ—जिसमें रहकर प्रकाश छिटका रही थीं, वैसे; मॆय्यर्—शरीर वाले; ॲन्—क्यों (रुके हो); ॲन्ऱार्क्कु—पूछनेवालों से; ॲय्तियतु अऱिन्तिलातार्—जो हुआ वह न जाननेवाले; पिन् निन्ऱार्—जो पीछे खड़े थे; मुन् निन्ऱार् मुतुकु तीय—सामने खड़े रहनेवालों की पीठ को (गरम साँस से) जलाते हुए; ॲन् ॲन् ॲन्ऱार्—क्या, क्या पूछते हुए; मुट्टुकिन्ऱार्—सवेग आगे बढ़ते हैं। ७५९

वे स्वर्ण की चमक लिये हुए दिव्य आभरणों से भूषित थे। पर्वत-सम कन्धों वाले, विद्युत् के समान हथियारों और आँखों की चमक से विशिष्ट शरीर वाले। जब वे जाते रहे तो भीड़ की वजह से सामने वाला रुक गया तो पीछे वाले "क्यों" कहकर ढकेलते। तब सामने वाले झुँझलाकर अपने सामने वाले की पीठ पर झुलसानेवाली गरम साँस छोड़ते हुए "क्या, क्या हुआ ?" पूछते और ढकेलते हुए बढ़ते जाते। ७५९

वॆय्दुरु पडैयिन् मिन्नर् विल्लिनर् वीशु कालर्
मैयुरु विशुम्बिऱ् ऱोन्ऱु मेनियर् मडिक्कुम् वायर्
कैपरन् दुलहु पॊङ्गिक् कडैयुह मुडियुङ् गालैप्
पॆय्यवॆन् ऱॆऴुन्द मारिक् कुवमैशाल् पॆरुमै पॆऱ्ऱार् 760

वॆय्तुरु—पीडक; पटैयिन्—हथियारों की; मिन्नर्—चमक वाले; विल्लिनर्—धनुर्धर; वीचु कालर्—अपनी गति से पवन को चालित करनेवाले; मै उरु विचुम्पिल्—मेघ-मण्डित आकाश के समान (काले); तोन्ऱुम् मेनियर्—दिखनेवाले शरीर वाले; मटिक्कुम् वायर्—चबाए हुए ओंठ वाले; कै परन्तु—पार्श्वों में फैलकर; उलकु पॊङ्कि—भूतल पर उमगकर; कटैयुकम्—युगान्त; मुटियुम् काले—जब पूरा होगा तब; पॆय्य ॲन्ऱु ॲऴुन्त—बरसने के लिए जो उठेंगे; मारिक्कु—उन प्रलय-मेघों की वर्षा की; उवमै चाल्—समानता करने का; पॆरुमै पॆऱ्ऱार्—गौरव प्राप्त। ७६०

बहुत ही हिंस्र हथियारों की चमक उनके साथ थी। धनुर्धर वे अपनी गति से पवन को चालित करते हुए गये। मेघाच्छन्न आकाश के समान रंग वाले वे अपना ओंठ चबाते हुए गये। तब, समुद्र फैलकर भूतल पर जब बहता है, उस युगान्तकाल में बरसने के लिए उठनेवाली प्रलयवर्षा की समानता करने का गौरव उन्हें प्राप्त हो रहा था। ७६०

पनियुरु शॆयलैच् चिन्दि योममुम् बऱित्त दम्मा
तनियॊरु कुरङ्गु पोला नन्ऱुनन् दरुक्कॆन् ऱिन्ऱार्
इनियॊरु पऴिमऱ् ऱुण्डो विदन्निन्ऱ् ऱिरैत्तुप् पॊङ्गि
मुनिवुरु मनत्तिऱ् ऱावि मुन्दुऱ मुडुहु हिन्ऱार् 761

पनि उरु—शीतल (मनोरम); चॆयलै चिन्ति—अशोक वन को नष्ट करके; ओममुम् पऱित्ततु—होम-मण्डप को भी उखाड़ा; तनि ऒरु कुरङ्कु पोल् आम्—एकाकी

एक वानर है तो; नन्ऱु–भला है; नम् तरुक्कु–हमारा बल; ॲन्ऱ्किन्ऱार्–कहते हुए; इततिन्–इससे; इति–अब; ओरु पळि–एक निन्दा; मऱ्ऱु उण्टो–अन्य हो सकती है क्या; ॲन्ऱु इरेंत्तु–कहते हुए शोर मचाकर; पोङ्कि–खौलकर; मुतिवु उऱ–रुष्ट; मनत्तिल्–मन के साथ; मुन्तु उऱ तावि–एक-दूसरे को पीछे छोड़ सामने उछलकर; मुट्टुकिन्ऱार्–दौड़ते हैं। ७६१

वे यों कहते हुए जा रहे थे कि एकाकी एक वानर ने शीतल अशोक वन को मिटा दिया और यज्ञमंडप को भी उखाड़कर फेंक दिया तो हमारा बल भी बहुत (प्रशंसनीय) भला रहा! इससे बढ़कर क्या अपयश होगा? इस विचार से उनके मन में अपार कोप भर आया। वे शोर मचाते हुए एक-एक आगे जानेवाले दूसरे को पीछे ढकेलते हुए उछलकर बढ़ रहे थे। ७६१

ॲऱ्ऱुरु मुरशुम् विन्ना णेऱविट् टॅडुत्त वार्प्पुम्
चुऱ्ऱुरु कळ्लुञ् जङ्गुन् दॅळ्दिॅळित् तुरप्पुञ् जॊल्लुम्
उऱ्ऱुडन् ऱॊन्ऱा योङ्गि यॊलित्तॆंळुन् दूळिप् पेर्विल्
नऱ्ऱिरैक् कडलृह ळोडु मळॆंहळे नाव डक्क 762

ॲऱ्ऱु उरु–पिटनेवाली; मुरचुम्–भेरियाँ और; विल्–धनु पर; नाण एऱ विट्टु–प्रत्यंचा चढ़ाकर; ॲट्टुत्त आर्प्पुम्–उठाया गया स्वन; चुऱ्ऱुरु–पैरों पर बँधी; कळ्लुम्–पायलों का नाद; चङ्कुम्–शंखनाद और; तॆळि तॆळित्तु–डाँट-डपट के साथ; उरप्पुम् चॊल्लुम्–कहे हुए कठोर शब्द; उटन् उऱ्ऱु–साथ मिलकर; ऑन्ऱाय् ओङ्कि–एक बन उठे; ऑलित्तु ॲळुन्तु–स्वरित हुए; ऊळि पेर्विल्–युगान्त में; नल् तिरै कटल्कळोटु–बड़ी तरंगों वाले समुद्र के शोर के साथ; मळॆंकळे–(उस प्रलयकालीन) मेघों की; ना अटक्क–जीभ (घोर ध्वनि) को दबाते। ७६२

उनकी भीड़ में से ये नाद उठे— पिटनेवाली भेरियों का नाद, धनु पर चढ़ी प्रत्यंचा की टंकार का नाद, पैरों की पायलों का क्वणन, शंखनाद और डाँट-डपट का शोर। इन सबों ने उठकर युगान्त के समुद्र के गर्जन और मेघों की जीभ को (ध्वनि को) चुप करा दिया। ७६२

तॆरुविड मिल्लॆन् ऱॆण्णि वानिडैच् चॆल्हिन् ऱारुम्
ऑरुवरि नॊरुवर् मुन्दि मुऱैमरुत् तुरैक्किन् ऱारुम्
पुरुवमुञ् जिलैयुङ् गोट्टिप् पुहैयुयिर्त् तुयिर्क्किन् ऱारुम्
विरिविल दिलङ्गै यॆन्ऱु वळिपॆऱा विळिक्किन् ऱारुम् 763

तॆरु इटम् इल्–सड़कों पर स्थान नहीं; ॲन्ऱु ॲण्णि–यह सोचकर; वान् इटै–नभ में; चॆल्किन्ऱारुम्–चलनेवाले और; मुऱै मरुत्तु–कूच का क्रम तोड़कर; ऑरुवरिन् ऑरुवर् मुन्ति–एक-दूसरे के आगे जाकर; उरैक्किन्ऱारुम्–बोलनेवाले; पुरुवमुम् चिलैयुम् कोट्टि–भौंहों और धनु को झुकाकर; पुकै उयिर्त्तु–धुआँधार श्वास; उयिर्क्किन्ऱारुम्–छोड़नेवाले; विरिवु इलतु–विस्तृत नहीं; इलङ्कै–लंका; ॲन्ऱु–इस

कारण से; वऴि पॆऱा–जाने का मार्ग न पाकर; विऴिक्किन्ऱारुम्–ताकने वाले। ७६३

उस भीड़ में, भूमि पर मार्ग न पाकर अन्तरिक्ष में उड़ते जानेवाले थे; कूच का क्रम भंगकर आगे जानेवाले थे; आपस में स्थान के लिए झगड़ने वाले थे; धनु और भौंहों को झुकाते हुए धुआँधार श्वास निकालनेवाले थे। लंका पर्याप्त विस्तृत न रहा देख मार्ग न पाने की वजह से आँखें फाड़कर देखते खड़े के खड़े रहनेवाले भी थे। ७६३

वाळित्तै विदिर्क्किन् ऱारुम् वायित्तै मडिक्किन् ऱारुम्
तोळुऱक् कॊट्टिक् कल्लैत् तुहळ्पडत् तुहैक्किन् ऱारुम्
ताळ्पॆयर्त् तिडम्बॆ ऱादु तरुक्कित्तर् नॆरुक्कु वारुम्
कोळ्वळै यॆयिऱु तिन्ऱु तीयॆन्तक् कॊदिक्किन् ऱारुम् 764

वाळित्तै वितिर्क्किन्ऱारुम्–तलवारों को हिलानेवाले; वायित्तै मटिक्किन्ऱारुम्–ओंठ काटनेवाले; तोळ्–कन्धों को; उऱ–खूब; कॊट्टि–ठोंककर; कल्लै–पत्थरों को; तुकळ् पट–धूल में परिवर्तित करते हुए; तुकैक्किन्ऱारुम्–रौंदनेवाले; ताळ् पॆयर्त्तु–डग बदलने; इटम् पॆऱातु–स्थान न पाकर; तरुक्कित्तर्–घमण्ड करके; नॆरुक्कुवारुम्–पिल पड़नेवाले; कोळ् वळै ऍयिऱु–कठोर वक्र दाँत; तिन्ऱु–पीसते हुए; ती ऍन्न–आग के समान; कॊतिक्किन्ऱारुम्–खौलनेवाले-बने। ७६४

तलवार घुमानेवाले, ओंठ चबानेवाले, कन्धे ठोंकनेवाले, पत्थर को चूर-चूरकर रौंदनेवाले, पैर उठाकर रखने का स्थान न पाने से खीझकर दूसरों को ढकेलनेवाले, अपने सुदृढ़ वक्र दाँतों को पीसनेवाले और आग-से खौलने वाले (होकर वे जा रहे थे।)। ७६४

अन्नैवरु मलैयॆन्न निन्ऱा रळवरु पडैहळ् पयिन्ऱार्
अन्नैवरु मरियि नुयर्न्दा रहलिड नॆळिय नडन्दार्
अन्नैवरुम् वरत्ति नमैन्दा रशनिमि न्नणिह ळणिन्दार्
अन्नैवरु ममरै वॆन्ऱा रशुररै युयिरै ययिन्ऱार् 765

अन्नैवरुम्–सब; मलै ऍन्न–पर्वत के समान; निन्ऱार्–खड़े रहे; अळवु अऱु–अगणित; पटैकळ् पयिन्ऱार्–अस्त्राभ्यस्त; अन्नैवरुम्–सभी; अरियिन् उयर्न्तार्–सिंह-सदृश (बल-विक्रम में) उन्नत; अकल् इटम्–विशाल भूमि को; नॆळिय–लचकाते हुए; नटन्तार्–चले; अन्नैवरुम्–सभी; वरत्तिल् अमैन्तार्–अनेक वरों को प्राप्त कर चुके थे; अचनि मिन्–वज्र के साथ कौंधनेवाली बिजली के समान; अणिकळ् अणिन्तार्–आभरण पहने हुए; अन्नैवरुम् अमररै वॆन्ऱार्–सब देवजयी हैं; अचुररै उयिरै–असुरों के प्राणों को; अयिन्ऱार्–खा (हर चुके) थे। ७६५

राक्षस पर्वतों के समान खड़े रहे। वे सब असंख्य-अस्त्राभ्यस्त थे। सब सिंह-सदृश बल में बढ़े हुए थे। जब वे चलते तब भूमि लचक जाती थी। सबको अनेक वर मिले थे। उनके आभरण अशनि के साथ

कौंधनेवाली बिजली की-सी चमक और नाद से युक्त थे। वे सब देव-विजयी थे। असुरों की भी जान के गाहक थे। ७६५

कुऱुहित्त कवशरु मित्बोर् कुरैहळ् लुरहरुम् वत्बोर्
मुऱुहित्त पॉळुदि तुडैन्दार् मुदुहिड मुरुवल् पयित्ऱार्
इऱुहित्त निदिहिळ् वत्बे रिशैहॆड वळहै यॆरिन्दार्
तॆऱुहुत्त रित्मैयित् वत्ऱो डिनवुऱ वुलहु तिरिन्दार् 766

कुऱुकित्त कवचरुम्–कसे लगे कवच वाले निवातकवच जाति के दैत्य; मित्पोल्–बिजली-सम और; कुरैकळ्ल्–क्वणनशील पायलधारी; उरकरुम्–नाग; वत् पोर्–कठोर युद्ध; मुऱुकित्त पॉळुतित्–जब उच्च स्थिति में आया; उटैन्तार्–हारकर; मुतुकु इट–पीठ दिखाते हुए भागे; मुरुवल् पयित्ऱार–(तब ये राक्षस) हँसे थे; इऱुकित्त निति किळवत्–अक्षय-धन कुबेर का; पेर् इचै कॆट–बड़ा यश नष्ट करते हुए; अळकै ऍरिन्तार्–अलकापुरी का ये नाश कर चुके; तॆऱुकुत्तर् इत्मैयित्–भिड़नेवाले नहीं मिले, इसलिए; वत् तोळ्–कठोर कन्धों में; तिनवु उऱ–खुजली (युद्ध की चाह) हुई; उलकु तिरिन्तार्–लोक भर में विजय-यात्रा कर आये थे। ७६६

जब उनके विरुद्ध निवातकवच जाति के असुरों और बिजली के समान चमकनेवाली और क्वणनशील पायलधारी नागों ने युद्ध ठाना था, तब वे ही हारकर पीठ दिखाते हुए भागे और ये राक्षस हँसी उड़ाते खड़े रहे। इन्होंने अक्षय निधि के देवता कुबेर की बड़ी कीर्ति को मिटाते हुए अलकापुरी को नष्ट कर दिया था। इनसे भिड़ने को कोई नहीं आ रहे थे, इसलिए वे अपने कन्धों पर की खुजली लेकर (युद्ध की भूख के कारण) संसार भर में विजययात्रा कर चुके थे। (वाल्मीकि के अनुसार निवातकवचों के और उरगों के साथ रावण का दिग्विजय के अवसर पर युद्ध छिड़ा था। ये राक्षस वीर भी तब उसके साथ थे।)। ७६६

वरैहळै यिडऱुमि तॆत्ऱाल् मरिहडल् परुहुमि तॆत्ऱाल्
इरवियै विळविडु मॆत्ऱा लॆळ्मळै पिळियुमि तॆत्ऱाल्
अरवित दरशितै यॊत्ऱो तरैयित्ती डरैयुमि तॆत्ऱाल्
तरैयितै यॆडुमॆडु मॆत्ऱा लॊरुवरः(ह्) दमैदल् शमैन्दार् 767

वरैकळै–पर्वतों को; इटऱुमित्–ठुकराओ; ऍत्ऱाल्–कहें तो; मरिकटल्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर को; परुकुमित् ऍत्ऱाल्–पी जाओ, कहा जाय तो; इरवियै–रवि को; विळ विटुमित्–गिराओ; ऍत्ऱाल्–कहा जाय तो; ऍळु मळै–उत्थित मेघों को; पिळियुमित्–निचोड़ो; ऍत्ऱाल्–कहा जाय तो; अरवित्तु अरचितै–सर्पराज; ऑत्ऱो–एक क्या; तरैयित्तोटु अरैयुमित्–सबको भूमि पर दे मारो; ऍत्ऱाल्–कहा जाय तो; तरैयितै ऍटुम् ऍटुम्–भूमि को उठा लो; ऍत्ऱाल्–कहा जाय; ऑरुवर्–एक-एक; अ:'.तु–वह; अमैतल्–करने; चमैन्तार्–योग्य बने रहे। ७६७

इन लोगों से (रावण द्वारा) कहा जाय कि पर्वतों को ठुकरा दो,

तरंगायमान सागर को पी लो, रवि को ढहा दो, उठते मेघों को निचोड़ दो या एक क्या अनेक सर्पराजों को भूमि पर ले पटक दो या भूमि को उठाओ, तो वे एक-एक वे सब कार्य करने का सामर्थ्य रखते थे। ७६७

तूळियि निमिर्पड लम्बो यिमैयवर् विळिदुऱ् वॅम्बोर्
आळियि नित्तमॅत्त वत्ऱा ळडुपुलि निरैयॅत्त विण्डोय्
मोळियि तणियॅत्त वत्ऱो ललैहडल् विडमॅत्त वॅञ्जार्
वाळियित् विशैहोंडु तिण्गार् वरैवरु वतवॅत्त वन्दार् 768

निमिर् तूळियित् पटलम्–उठी धूल के पटल ने; पोय्–ऊपर जाकर; इमैयवर् विळि–देवों की आँखों को; तुऱ–मीच दिया; वॅम् पोर्–कठोर युद्ध करनेवाले; आळियित् इत्तम् ॲंत–सिंह-समूहों के समान; वल् ताळ्–सुदृढ़ पैरों वाले; अटु पुलि–संहारक व्याघ्रों की; निरै ॲंत–पंक्ति के समान; विण् तोय्–गगनोन्नत; मोळियित् अणि ॲंत–भूतों के वृन्द के समान; ओल् अलै कटल्–शब्दायमान तरंगों के सागर के; अन्ऱु विटम् ॲंत–उस दिन उत्पन्न विष के समान; ॲञ्चार्–अथक; वाळियित् विचै कोंटु–शर-गति अपना लेकर; तिण् कार् वरै–प्रबल काले पर्वत; वरुवत ॲंत–चलते आते हों, जैसे; वन्तार्–(हनुमान पर चढ़) आये। ७६८

उनके कूच से धूलपटल उठा और उससे देवों की आँखें मुँद गयीं। वे घातक युद्ध-रत सिंहों के झुण्डों के समान, सबल पैरों वाले संहारक व्याघ्रवृन्द के समान और गगनोन्नत पिशाचों के समूहों के समान, पूर्वकाल में गर्जनशील सागर से उत्पन्न हलाहल के समान अथक रूप से अस्त्रगति-सी गति में बढ़ते जा रहे थे। वे काले पर्वतों के समान हनुमान को घेर आये। ७६८

पॉऱिदर विळियुयि रॉत्ऱो पुहैयुह वयिलॉळि मित्बोल्
शॅऱिदर वुरुमदिर् हित्ऱार् तिशैदॉरुम् विशैहोंडु शॅत्ऱार्
ॲऱिदरु कडैयुह वत्गा लिडरिड वुरुमि तित्म्बोय्
मऱिदर मळैयहल् विण्बोल् वडिवळि पॉळिलै वळैन्दार् 769

उयिर् ऑत्ऱो–केवल श्वास एक से नहीं; विळि–आँखें भी; पॉऱि तर–अंगारे निकालते रहे; पुकै उक–धुआँ उगलते; अयिल् ऑळि–शक्तियों का तेज; मित् पोल्–बिजली के समान; चॅऱि तर–घने रूप से चमका; उरुम् अतिर्कित्ऱार्–वज्रनाद करते; तिचै तॉऱु–दिशाओं से; विचै कोंटु–क्षिप्रगति से; चॅत्ऱार्–घेर आये; कटै युकम्–युगान्त में; ॲऱि तरु–बहनेवाले; वन् काल् इटऱिट–प्रचण्ड पवन से उत्पाटित; उरुम् इत्तम् पोय् मऱि तर–वज्रसमूह स्थानान्तर में गिरे हों जैसे; मळै अकल्–मेघरहित; विण् पोल्–आकाश के समान; वटिवु अऴि–(जिसमें थे और जो अपना) मनोरम रूप खो चुका था; पॉळिलै–अशोक वन को; वळैन्तार्–घेर गये। ७६९

उनके श्वास से ही नहीं, आँखों से भी अंगारे निकल रहे थे। धुआँ भी

उठता था। उनकी शक्तियों से बिजली का-सा तेज छूट रहा था। युगांत में आँधी सबको उखाड़ फेंकती है। वज्र इधर-उधर गिरकर तहस-नहस कर देते हैं। बाद आकाश निर्मल और साफ़ हो जाता है। वैसा रहा वह अशोक वन निपट रम्यतारहित दशा में। वे उस अशोक वन को घेर गये। ७६९

वयिरॊलि वळैयॊलि वऩ्गार् मऴैयॊलि मुरशॊलि मण्वाल्
उयिरुलै वुऱनिमि रुम्बो रुरुमॊऴि शॆवियि ऩुणर्ऩ्दाऩ्
वॆयिल्विरि कदिरव ऩुम्बोय् वॆरुविड वॆळियिडै विण्डोय्
कयिलयिऩ् मलैयॆऩ निऩ्ऱा ऩवैयवर् वरुतॊऴिल् कण्डाऩ् 770

वॆयिल् विरि–धूप-प्रसारक; कतिरवऩुम्–सूर्य भी; पोय् वॆरुविट–डर से हट गया; विण् तोय्–गगनचुंबी; कयिलैयिऩ् मलै ऎऩ–कैलास पर्वत के समान; वॆळि इटै–(पादप-नष्ट) खुले मैदान-मध्य; निऩ्ऱाऩ्–जो खड़ा रहा, उस (हनुमान) ने; वयिर् ऒलि–शृंगियों का नाद; वळै ऒलि–शंखनाद और; वऩ् कार् मऴै ऒलि–घने वर्षाऋतु के मेघों की-सी; मुरचु ऒलि–भेरियों की ध्वनि; मण् पाल्–पृथ्वी पर के; उयिर् उलैवु उऱ–जीवों को भयभीत करते हुए; निमिरुम्–उठनेवाला; पोर् उरुम् ऒलि–आगामी युद्ध का शोर; चॆवियिऩ् उणर्ऩ्ताऩ्–उसके कानों में पड़ा, ऐसा अनुभव किया; अवैयवर्–उनका; वरुम् तॊऴिल्–आने का कार्य भी; कण्टाऩ्–देखा। ७७०

हनुमान गगनचुम्बी कैलास पर्वत के समान खड़ा था। उसको देखकर सूर्य भी डरकर हट गया! मैदान-मध्य रहते हुए उसने सुना कि शृंग बज रहे हैं, शंख नाद कर रहे हैं, और वर्षाकालीन सबल मेघों के समान भेरियाँ ध्वनि उठा रही हैं। संसार के जीवों को भयभीत करते हुए आनेवाले युद्ध का शोर उसके कानों में पड़ा। उसने उन राक्षसों को आते देखा भी। ७७०

इदविय लिदुवॆऩ मुऩ्दे यियैवुऱ विऩिदु तॆरिऩ्दाऩ्
पदविय लऱिवु पयऩ्दा लदिऩ्ऩल पयऩुळ दुण्डो
शिदवियल् कडिपॊऴि लॊऩ्ऱे शिदऱिय शॆयऱरु तिण्बोर्
उदवियै यिऩिदि ऩुवऩ्दा ऩॆवरिऩु मदिह मुयर्ऩ्दाऩ् 771

ऎवरिऩुम् अतिकम् उयर्ऩ्ताऩ्–किसी से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ हनुमान ने; मुऩ्ते–पहले ही; इतु इत इयल् ऎऩ–यह ठीक कार्य है, ऐसा; इयैवु उऱ–युक्त रीति से; इऩितु तॆरिऩ्ताऩ्–सन्तोष के साथ समझ लिया; पत इयल् अऱिवु–पक्व ज्ञान; पयऩ्ताल्–हो जायगा तो; अतिऩ् न(ल्)ल पयऩ्–उससे भी बड़ा लाभ; उळतु उण्टो–होना होगा क्या; कटि पॊऴिल्–सुरक्षित अशोक वन के; चितैवु इयल् ऒऩ्ऱे–नाश का काम एक ही; चितऱिय चॆयल् तरु–राक्षस तितर-बितर जायँ, ऐसा कार्यकारी; तिण् पोर् उतवियै–घमासान युद्ध का उपकार (बना देख); इऩितिऩ् उवऩ्ताऩ्–सन्तुष्ट हो मुदित हुआ। ७७१

सर्वोत्तम हनुमान ने जान लिया कि यह अशोकवन-विध्वंस का

काम अच्छा ही हुआ है। हाँ, बुद्धिमत्ता से बढ़कर हितकारी चीज़ क्या है ? उसे सन्तोष हुआ कि उसी एक कार्य ने उसे युद्ध ला देने का उपकार किया है, जिसमें राक्षस तितर-बितर हो मिटेंगे। ७७१

इवनिव निवर्नन निन्ऱा ॲरियॅन मुदल्व ॲदिर्न्दार्
पवननिन् मुडुहि नडन्दार् पहलिर वुऱमिडै हिन्ऱार्
पुवनियु मलैयुम् विशुम्बुम् पॊरुवरु नहरु मुडन्बोर्त्
तुवनियि लदिर विडम्बोर् चुडर्विडु पडैह डुरन्दार् 772

इवन् इवन् इवन्–यही, यह, यह; ॲन–कहते हुए; निन्ऱार्–कुछ खड़े रहे; मुतल्वर्–मुखिए; ॲरि ॲन–आग के समान; ॲतिर्न्तार्–बढ़ आये; पवननिन्–वायु से अधिक; मुटुकि–तेज़ी से; नटन्तार्–आए; पकल् इरवु उऱ–दिन को रात में परिवर्तित करते हुए; मिटैकिन्ऱार्–सटकर भीड़ लगाते हैं; पुवनियुम् मलैयुम् विचुम्पुम्–भूमि, पर्वत और आकाश; पॊरुवु अरु नकरुम्–अनुपम वह नगर; उटन्–एक साथ; पोर् तुवनियिल् अतिर–युद्ध के शोर से थर्रा उठे; विटम् पोल्–विष के समान; चुटर् विटु–प्रकाश छोड़नेवाले; पटैकळ्–हथियार; तुरन्तार्–चलाए। ७७२

आगत राक्षसों में कुछ यह है, यह, यह कहते हुए खड़े रहे। कुछ मुखिए आग के समान लड़ने बढ़ आये। कुछ पवनगति में आगे बढ़े। काले राक्षस थे, इसलिए वे दिन को रात में बदलते हुए एक साथ जुटे। उन्होंने विष के समान और प्रकाशमय हथियार छोड़े जिससे उत्पन्न युद्ध-ध्वनि में भूमि, पर्वत, आकाश और अनुपम लंका नगर काँप उठे। ७७२

मळैहळु मऱिहड लुम्बोय् मदमऱ मुरश मऱैन्दार्
मुळैहळिन् वाय्ह डिऱन्दार् मुदुपुहै कदुव मुनिन्दार्
पिळैयिल पडवर विन्ऱोळ् पिडरिऱ वडियिडु हिन्ऱार्
कळैतॊडर् वनमॆरि युण्डा लॆनवॆरि पडैजर् कलन्दार् 773

मळैकळुम्–मेघों और; मऱि कटलुम्–मुड़-मुड़ जानेवाली तरंगों के सागर को; पोय् मतम् अऱ–गर्वहीन करते हुए; मुरचम् अऱैन्तार्–भेरियाँ बजायीं; मुळैकळिन्–गुफाओं के समान; वाय्कळ् तिऱन्तार्–अपने मुख खोले; मुतु पुकै कतुव–घना धुआँ घेर जाए ऐसा; मुनिन्तार्–कोप दिखाया; पिळै इल–दोषहीन; पट अरविन्–फनों वाले सर्प (शेषनाग) के; तोळ् पिटर् इऱ–कन्धों और कंठों को तोड़ते हुए; अटि इटुकिन्ऱार्–डग भरनेवाले; कळै तॊटर् वनम्–बाँस से पूर्ण वन; ॲरि उण्टाल् ॲ(न्)न–आग में जलता हो जैसे; ॲरि पटैजर्–हथियार चलानेवाले; कलन्तार्–मिले। ७७३

उन्होंने भेरियाँ बजायीं जिनकी ठनक ने मेघों और प्रत्यावर्तनशील लहरों वाले सागर के गर्व को चूर किया। पर्वत-कन्दराओं के समान खुले मुखों वाले, धुआँ-उगलते क्रोध वाले, निर्दोष फणी आदिशेष के कन्धों व कण्ठों

को तोड़ते हुए डग भरनेवाले और बाँस-वन जलता जैसे हथियार चलानेवाले —ऐसे राक्षस आ जुटे। ७७३

अऱवऩु मदत्तै यऱिन्दा ऩरुहिऩि ऩमैय वडैन्दाऩ्
इऱविऩि ऩुदवु नॆंडुन्दा रुयर्मर मॊरुहै यियैन्दाऩ्
उऱवरु तुणैयॆऩ वॊऩ्ऱे युदविय वदत्तै युहन्दाऩ्
निऱैहडल् कडैयु नॆंडुन्दाण् मलैयॆऩ नडुव णिमिर्न्दाऩ् 774

अऱवऩुम् अतत्तै अऱिन्दाऩ्—धर्मरूप हनुमान ने भी वह जाना; इऱविऩिऩ् उतवुम्—बेकार होने (टूटने) पर भी सहायता (प्रहार) करनेवाले; नॆंटुम् तार्—सीधे और; उयर् मरम्—ऊँचे एक पेड़ के; अरुकिऩिऩ्—पास; अमैय अटैन्ताऩ्—लगा गया; उऱ् वरु—सन्दर्भ आये तब आनेवाले; तुणै ऎऩ—सहायक के समान; ऒऩ्ऱे उतविय अतत्तै—अकेले बचे रहे सहायक उसे; उकन्ताऩ्—चाह से; ऒरु कै इयैन्ताऩ्—एक हाथ में लेकर; निऱै कटल् कटैयुम्—भरे समुद्र को मथनेवाले; नॆंटुम् ताळ्—बड़े निचले भाग के साथ; मलै ऎऩ—पर्वत के समान; नटुवण् निमिर्न्ताऩ्—(अशोक वन के मध्य) तना खड़ा रहा। ७७४

धर्मरूप हनुमान ने यह जाना। वह एक ऊँचे पेड़ के पास गया। वह मिटकर भी सहायता करनेवाला निकला। एकाकी आपत्काल-सहायक उसे उसने चाव के साथ एक हाथ में पकड़ लिया। फिर वह उस मैदान में सागरमथनकारी विशाल तलप्रदेश वाले पर्वत के समान तन कर खड़ा हुआ। ७७४

परुवरै पुरळ्वऩ वॊऩ्ऱो पडर्मऴै यरुवि नॆंडुङ्गाल्
शॊरिवऩ पलवॆऩ मण्डोय् तुऱैपॊरु कुरुदि शॊरिन्दार्
ऒरुवरै यॊरुवर् तॊडर्न्दा रुयर्तलै युडैय वुरुण्डार्
अरुवरै नॆरिय विळुम्बे रशऩियु मऱैय वऱैन्दाऩ् 775

अरुवरै—बड़े-बड़े पर्वतों को; नॆरिय विळुम्—चूर करते हुए गिरनेवाले; पेर् अचऩियुम्—बड़े वज्रों (के घोष) को भी; मऱैय—अपने में दबा लेते हुए; अऱैन्ताऩ्—(हनुमान ने उस तरु से) मारा; परुवरै बड़े पर्वत; पुरळ्वऩ ऒऩ्ऱो—लुढ़के-से लगे, क्या इतना ही; पटर् मऴै अरुवि—उन पर फैले रहे मेघों के जल की बनी नदियाँ रूपी; नॆंटुम् काल्—लम्बे नाले; पल चॊरिवऩ ऎऩ—अनेक बहते जैसे; मण् तोय्—भूमि पर रहे; तुऱै पॊरु—घाटों को ढकेलते हुए भरनेवाले; कुरुति चॊरिन्तार्—रक्त-प्रवाह बहाते हुए; ऒरुवरै ऒरुवर्—एक-दूसरे का; तॊटर्न्तार्—पीछा किया; उयर् तलै—बड़े सिर; उटैय—टूटे; उरुण्टार्—लुढ़के। ७७५

हनुमान ने उस तरु से उनको मारा, जिससे ऐसी ध्वनि निकली जिसके सामने पर्वतचूर्णकारी तुमुल वज्र भी मौन हो रहे! तब पर्वत लुढ़के-जैसे राक्षस लोट गये। वहीं तक बात नहीं रुकी। पर्वतों पर जैसे मेघ-वर्षा से उत्पन्न नदियाँ बहती हैं, वैसे ही उनके शरीर पर से रक्त-नदियाँ

वह निकलीं जिससे घाट भर गये। वे एक-दूसरे के अनुकरण में अपना उन्नत सिर तुड़वा लेकर मरे। ७७५

परैपुरै विऴिहळ् परिन्दार् पडियिडै नॅडिदु पडिन्दार्
पिरैपुरै यॅयिरु मिळन्दार् पिडरोडु तलैहळ् पिळन्दार्
कुरैयुयिर् शिदरि नॅरिन्दार् कुडरोडु कुरुदि शोरिन्दार्
मुरैमुरै पडैह डॅरिन्दार् मुडैयुडत् मरिय मुरिन्दार् 776

मुरै मुरै–अनेक बार; पटैकळ् तॅरिन्तार्–हथियार चुनकर फेंके; परै पुरै–ढोल के (गोल चमड़े के) समान; विऴिकळ् परिन्तार्–आँखें-उखड़े हो गये; पटि इटै–भूमि पर; नॅटितु पटिन्तार्–लम्बे तान गये; पिरै पुरै–कलाचन्द्र-समान; ऍयिरुम् इऴन्तार्–दाँत खो गये; पिटर् ओटु–गलाओं के साथ; तलैकळ् पिळन्तार्–फटे-सिर हो गये; कुरै उयिर्–विकल-प्राण होकर; चितरि नॅरिन्तार्–अस्त-व्यस्त गिरकर दब गये; कुटर् ओटु–आँतड़ों के साथ; कुरुति–रक्त; चोरिन्तार्–बाहर निकाला; मुटै उटल्–दुर्गन्धपूर्ण शरीर; मरिय–मिटाते हुए; मुरिन्तार्–टूटे और मरे, कुछ। ७७६

उन राक्षसों ने अनेक वार हनुमान पर चुन-चुनकर हथियार चलाए। पर क्या लाभ ? उनकी आँखें, जो ढोल के चमड़े के समान बड़ी और वर्तुल थीं, फूट गयीं। वे भूमि पर लम्बा तान गये। चन्द्रकला के समान दाँत खोये। उनके गले चिरे और सिर फूटे। कुछ के थोड़े से प्राण बचे थे। वे भी एक-दूसरे पर गिरकर दबकर मर गये। कुछ की अँतड़ियाँ और रक्त बाहर निकल गया। कुछ अपने दुर्गन्धपूर्ण शरीर को तोड़ते हुए गिरे और मरे। ७७६

पुडैयुडै विऴिहन् लिऩ्गाय् पॊरियिडै मयिर्हळ् पुहैन्दार्
तॊडैयॊडु मुदुहु तुणिन्दार् शुऴिपडु कुरुदि शोरिन्दार्
पडैयिडै यॊडिय नॅडुन्दोळ् परिदर वयिरु तिरन्दार्
इडैयिडै मलैयिन् विऴुन्दा रिहल्पॊर मुडुहि यॅऴुन्दार् 777

इकल् पॊर–युद्ध लड़ने के लिए; मुटुकि ऍऴुन्तार्–शीघ्र उठ आये; पुटै उटै–दोनों ओर रहनेवाली; विऴि कत्तलित्–आँखों से निकली आग के; काय् पॊरि इटै–जलते अंगारों के मध्य; मयिर्कळ्–रोम; पुकैन्तार्–धुआँ-बने हुए; तॊटै ओटु–जंघाओं के साथ; मुतुकु तुणिन्तार्–पीठ-कटे हुए; चुऴि पटु–आवर्तयुक्त; कुरुति चोरिन्तार्–रक्त-नदियाँ बहायीं; पटै–हथियारों के; इटै ओटिय–बीच में टूटने से; नॅटुम् तोळ्–लम्बी भुजाओं के; परि तर–छिन जाते; वयिरु तिरन्तार्–पेट फट गये; इटै इटै–इधर-उधर; मलैयिन् विऴुन्तार्–पर्वत के समान भूमि पर गिरे। ७७७

युद्ध में लड़ने के लिए राक्षस वेग के साथ आये। उनके नेत्रों से निकली आग के अंगारे में उनके केश जल उठे। उनकी जाँघें और पीठें कट गयीं। उन्होंने रक्त का इतना बड़ा प्रवाह उगला कि उसमें भँवरें

उठीं। उनके हथियार बीच में टूट गये, कन्धे शरीर से अलग हुए; पेट खुले और भागते-भागते पर्वतों के समान जगह-जगह पर गिरे पड़े रहे। ७७७

पुदैपड विरुळित् मिडैन्दार् पॉडियिडै नॅडिदु पुरण्डार्
विदैपडु मुयिरर् विळुन्दार् विळियॊडु विळियु मिळन्दार्
कदैहॊडु मुदिर मलैन्दार् कणैपॊरु शिलैयर् कलन्दार्
उदैपड वुरनु नॅरिन्दा रुयिरॊडु कुरुदि युमिळ्न्दार् 778

कतै कॉटु–गदा लेकर; मुतिर मलैन्तार्–घोर युद्ध करनेवाले; कणै पॊरु चिलैयर्–शर चलाकर युद्ध करनेवाले धनुर्धर; कलन्तार्–जो वहाँ आ मिले; उतै पट–हनुमान की लातें खाकर; उरनुम् नॅरिन्तार्–वक्ष के दबकर फटने से; उयिरॊटु–प्राणों के साथ; कुरुति–रक्त भी; उमिळ्न्तार्–उगले; इरुळित् मिटैन्तार्–अन्धकार के समान जो जुटे थे; पॉटि इटै–धूल के मध्य; पुतै पट–गड़कर; नॅटितु पुरण्टार्–बहुत दूर लोटे; वितै पटुम्–बोये बीज के समान गिरे; उयिरर्–जीव; विळुन्तार्–मरे गिरे; विळि ऑटु–आँखों के साथ; विळियुम्–वाक्-शक्ति भी; इळन्तार्–खोये बने। ७७८

राक्षस गदा लेकर लड़ने आये। कुछ लोग शर चलाने धनु के साथ आये। उन सबने लातें खायीं, जिससे उनके वक्ष हत हुए और रक्त-वमन के साथ प्राण भी निकल गये। अन्धकार के समान आ जुटे वे धूल में धँसकर दूर तक लोटे। कुछ तो बोये बीजों के समान यत्र-तत्र गिरकर विगत-प्राण हुए। उनकी आँखें भी गयीं और बोलने की शक्ति भी। ७७८

अयलयन् मलैहॊ डऱैन्दा रडुपहै यळवै यडैन्दार्
वियलिड मऱैय विरिन्दार् मिशैयुल हडैय मिडैन्दार्
पुयऱॊडु मलैयिन् विळुन्दार् पुडैपुडै तिशैतॊऱु शॅन्ऱार्
उयर्वुऱु विशैयि नॅदिर्न्दा रुडलॊडु मुलहु तुऱन्दार् 779

अयल् अयल्–पास इधर-उधर के; मलै कॉटु–पर्वतों को लाकर; अऱैन्तार्–फेंके (उन राक्षसों ने); अटु पकै–घातक शत्रुता के; अळवै अटैन्तार्–उच्चतम माप पर गये; वियल् इटम्–विशाल स्थल; मऱैय–आच्छादित करते हुए; विरिन्तार्–फैले खड़े रहे; मिचै उलकु–ऊपर के लोक; अटैय मिटैन्तार्–भर में जा भर गये; पुयल् तॊटु–मेघस्पर्शी; मलैयित्–पर्वतों के समान; विळुन्तार्–(हनुमान द्वारा हत होकर) गिरे; पुटै पुटै–पार्श्व-पार्श्व में; तिचै तॊऱु–सभी दिशाओं में; चॅन्ऱार्–गये; उयर्वु उऱु–नामवरी के लिए; विचैयित् ऍतिर्न्तार्–वेग के साथ जो भिड़े; उटल् ऒटुम्–(उन्होंने) शरीर के साथ; उलकु तुऱन्तार्–इहलोक भी छोड़ दिया। ७७९

राक्षसों ने पास के स्थानों से पर्वत उठाकर फेंके। वे शत्रुता की पराकाष्ठा तक पहुँच गये थे। विशाल भूमि पर फैले खड़े हुए। वे आकाश-

लोक को भरते हुए जा पहुँचे। मेघाच्छादित पर्वतों के समान वे हनुमान के प्रहारों से आहत होकर गिर गये। सब ओर सभी दिशाओं में भाग चले। कुछ लोग कीर्ति-लिप्सा लेकर हनुमान से भिड़े, तो बेचारे उनको शरीर के साथ इहलोक को भी छोड़ना पड़ा। ७७९

पऱ्ऱित् ताळोडु तोळ्पऱित् तॅऱिन्दनन् पारिन्
इऱ्ऱ वॅञ्जिऱै वॅऱ्पिन मामॅनक् किडन्दार्
कॉऱ्ऱ वालिडैक् कॉडुन्दॉऴि लरक्करै यडङ्गच्
चुऱ्ऱि वीशलिऱ पम्बर मामॅनच् चुऴन्ऱार् 780

पऱ्ऱि–(हनुमान ने) उनको पकड़कर; ताळ् ओटु तोळ् पऱित्तु–पैरों के साथ हाथों को अलग छीन लेकर; ऍऱिन्ततन्–फेंक दिया; वॅम् चिऱै इऱ्ऱ–कठोर पंख-कटे; वॅऱ्पु इनम् आम् ऍन–पर्वतकुल के समान; पारिन्–भूमि पर; किटन्तार्–पड़े रहे; कॉटुम् तॊऴिल् अरक्करै–नृशंसकारी राक्षसों को; कॉऱ्ऱ वाल् इटै–अपनी सबल पूँछ से; अटङ्क–दबा लेकर; चुऱ्ऱि वीचलिल्–घुमाकर फेंका (हनुमान ने) तो; पम्परम् आम् ऍन–लट्टू के समान; चुऴन्ऱार्–घूमे। ७८०

हनुमान ने उनको पकड़ा और पैरों तथा कन्धों को नोच लिया और दूर फेंक दिया। वे पंखहीन बड़े पर्वतों के समान भूमि पर पड़े रहे। हनुमान ने कुछ नृशंसकारी राक्षसों को अपनी पूँछ से लपेटकर घुमाया और झटका दिया और वे लट्टू के समान घूमे। ७८०

वाळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन वरिशिलै वयिरत्
तोळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन शुडर्मऴुच् चूलम्
नाळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन नहैयॅयिऱ् ऱीट्टम्
ताळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन पडैयुडैत् तडक्कै 781

वाळ्कळ् इऱ्ऱन–तलवारें खण्डित हुईं; वरि चिलै इऱ्ऱन–सबन्ध धनु टूटे; वयिर तोळ्कळ् इऱ्ऱन–वज्र-सम कन्धे कटे; चुटर् मऴु–तप्त लोहे के समान; चूलम् इऱ्ऱन–(तेजोमय) त्रिशूल टूटे; नाळ्कळ् इऱ्ऱु अन–नक्षत्र टूट गिरे जैसे; नकै ऍयिऱ्ऱु ईट्टम्–उज्ज्वल दाँतों के समूह; इऱ्ऱन–चू गये; ताळ्कळ् इऱ्ऱन–पैर कटे; पटै उटै–हथियारवाही; तटक्कै–विशाल हाथ; इऱ्ऱन–कटकर गिरे। ७८१

हनुमान के प्रहारों से राक्षसों की तलवारें टूटीं; सबन्ध धनु टूटे; वज्र-सम कन्धे टूटे; तप्त लोहे के समान उज्ज्वल त्रिशूल टूटे; और नक्षत्र टूटकर गिरे जैसे वक्र दन्तों के समूह टूटे। पैर टूटे और हथियारवाही विशाल हाथ भी टूटे। ७८१

तॅऱित्त वन्ऱलै तॅऱित्तन शॅऱिशुडर्क् कवशम्
तॅऱित्त पैङ्गऴल् तॅऱित्तन शिलम्बॊडु पॊलन्दार्

तॆऱ्ऱित्त पन्मणि तॆऱ्ऱित्तन पॆरुम्बॊऱ्ऱित् तिरङ्गळ्
तॆऱ्ऱित्त कुण्डलन् दॆऱित्तन कण्मणि शिदऱि 782

वन् तलै–सबल सिर; तॆऱ्ऱित्त–छितर गये; चुटर् चॆऱि–प्रकाशमय; कवचम् तॆऱ्ऱित्तन–कवच टूट गये; पैम् कळल्–चोखे स्वर्ण की बनी पायलें; तॆऱ्ऱित्त–टूटीं; चिलम्पॊटु–नूपुरों के साथ; पॊलम् तार्–स्वर्णहार; तॆऱ्ऱित्तन–कटकर गिरे; पल् मणि–अनेक रत्न; तॆऱ्ऱित्त–बिखर गये; पॆरुम् पॊऱि तिरङ्कळ्–बड़े-बड़े वीरपट्ट आदि तमग़े; तॆऱ्ऱित्तन–अलग-अलग हो गये; कुण्टलम् तॆऱ्ऱित्त–कुण्डल कटे; कण् मणि चितऱि तॆऱ्ऱित्तन–आँखों की पुतलियाँ छितरीं, बिखरीं। ७८२

उनके भारी सिर फूटे; तेजोमय कवच फूटे; चोखे स्वर्ण की बनी पायलें फूटीं; नूपुर फूटे और हार फूटे। मणियाँ फूटीं और गौरव के चिह्न वीरपट्ट और तमग़े फूटे। कुण्डल फूटे और आँखें फूटीं। ७८२

उक्क पऱ्कुवै युक्कन तुवक्कॆलुम् बुदिर्वुऱ्
ऱुक्क मुऱ्कर मुक्कन मुशुण्डिह ळुडैयुऱ्
ऱुक्क शक्कर मुक्कन वुडऱिऱन् दुयिर्हळ्
उक्क कप्पण मुक्कन वुयर्मणि महुडम् 783

पल् कुवै उक्क–दाँतों के समूह गिरे; तुवक्कु–खाल और; ऎलुम्पु–हड्डियाँ; उक्कन–चूर-चूर हो गिरीं; मुऱ्करम् उतिर्वु उऱ्ऱु उक्क–मुद्गर खण्ड-खण्ड होकर बिखरे; मुचुण्टिकळ् उटैवु उऱ्ऱु उक्कन–'भुशंण्डी' हथियार बिखरे; चक्करम् उक्क–चक्रायुध के टुकड़े बने और बिखरे; उटल् तिऱन्तु–शरीर चिरे और; उयिर्कळ् उक्कन–प्राण उड़े; कप्पणम्–'कप्पण' नाम के हथियार; उक्क–चूर हो बिखरे; उयर्मणि–श्रेष्ठ रत्नों के बने; मकुटम् उक्कन–मुकुट टूटे, गिरे। ७८३

दाँतों की पंक्तियाँ बिखरीं; चमड़े और हड्डियाँ बिखरीं; मुद्गर खण्ड-खण्ड होकर बिखरे। भुशण्डि नाम के हथियार बिखरे। चक्रायुध बिखरे। शरीर खुले और प्राण बिखरे। कप्पण नामक हथियार (जिनको अरिकण्ठ भी कहा जाता है) बिखरे। श्रेष्ठ रत्नमुकुट बिखरे। (७८१वें पद्य में "इऱ्ऱन," ७८२वें पद्य में "तॆऱ्ऱित्तन" और ७८३वें पद्य में "उक्कन" शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'इऱुतल्'— टूटकर बिखरना है; 'तॆऱ्ऱित्तल'— खण्ड-खण्ड होकर या फूटकर विखरना है और 'उकुतल्'— दरार खाकर चूर-चूर हो विखरना है। भेद बारीक है।)। ७८३

ताळ्ह ळाऱ्पलर् तडक्कैह ळाऱ्पलर् ताक्कुम्
तोळ्ह ळाऱ्पलर् शुडर्विऴि याऱ्पलर् तॊडरुम्
कोळ्ह ळाऱ्पलर् कुत्तुह ळाऱ्पलर् तत्तम्
वाळ्ह ळाऱ्पलर् मरङ्गळि नाऱ्पलर् मडिन्दार् 784

ताळ्कळाल्–(हनुमान के) पैरों (के प्रहार) से; पलर्–अनेक; तट कैकळाल्–

विशाल हाथों से; पलर्–अनेक; ताक्कुम्–टकरानेवाले; तोळ्कळाल्–कन्धों से; पलर्–अनेक; चुटर् विळियाल्–आँखों की आग से; पलर्–अनेक; तॉटरुम् कोळ्कळाल्–पकड़कर दबाने से अनेक; कुत्तुकळाल् पलर्–घूँसों से अनेक; तत्तम् वाळ्कळाल्–अपनी-अपनी तलवारों से; पलर्–अनेक; मरङ्कळित्ताल् पलर्–पेड़ों से अनेक (राक्षस); मटिन्तार्–हत हुए। ७८४

हनुमान के पैरों के प्रहार से अनेक राक्षस मरे। विशाल हाथों से अनेक, कन्धों से अनेक, ज्वलन्त दृष्टि की आग से अनेक, उसके पकड़ने से अनेक और घूँसों से अनेक मरे। अपनी-अपनी तलवार की वार से भी अनेक मरे। उसने पेड़ों से पीटकर अनेकों को निपात दिया। ७८४

ईर्क्कप् पट्टनर् शिलर्शिल रिडियुण्डु पट्टार्
पेर्क्कप् पट्टतर् शिलर्शिलर् पिडियुण्डु पट्टार्
आर्क्कप् पट्टनर् शिलर्शिल रडियुण्डु पट्टार्
पार्क्कप् पट्टनर् शिलर्शिलर् पयमुण्टु पट्टार् 785

चिलर्–कुछ; ईर्क्क–खींचने से; पट्टतर्–मरे; चिलर्–कुछ; इटि उण्टु–धक्के खाकर; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; पेर्क्क–फेंके जाकर; पट्टतर्–मरे; चिलर्–कुछ; पिटि उण्टु–मुट्ठी में पिसकर; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; आर्क्क–बँध जाकर; पट्टतर्–मरे; चिलर्–कुछ; अटि उण्टु–पिटकर; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; पार्क्क–हनुमान की दृष्टि पड़ने से ही; पट्टतर्–मरे; चिलर् पयम् उण्टु–कुछ भय खाकर; पट्टार्–मरे। ७८५

कुछ लोगों को हनुमान ने पकड़कर खींचा और वे मर गये। धक्का खाकर कुछ लोग, फेंके जाने से कुछ लोग, केवल गह लेने से अनेक और कुछ लोग बँध जाने से मरे। पिटकर कुछ मरे और कुछ राक्षसों पर हनुमान ने दृष्टि डाली और वे मर गये। कुछ भय खाकर प्राण त्याग गये। ७८५

ओडिक् कॉन्ऱनन् शिलवरै युडलुड ऱोरुम्
कूडिक् कॉन्ऱनन् शिलवरैक् कॉडिनॆडु मरत्ताल्
शाडिक् कॉन्ऱनन् शिलवरैप् पिणन्दॊरुन् दडवित्
तेडिक् कॉन्ऱनन् शिलवरैक् करङ्गॆनत् तिरिवान् 786

करङ्कु ॲन–चक्र के समान; तिरिवान्–घूमनेवाले (हनुमान) ने; चिलवरै–कुछ राक्षसों को; ओटि कॉन्ऱतत्–दौड़कर पकड़ा और निपाता; चिलवरै–कुछ राक्षसों को; उटल् उटल् तोऱुम्–शरीर से शरीर; कूटि–भिड़ाकर; कॉन्ऱतत्–मारा; चिलवरै–कुछ राक्षसों को; कॉटि नॆटु मरत्ताल्–लम्बे ध्वज-स्तम्भ से; चाटि–पीटकर; कॉन्ऱतत्–मारा; चिलवरै–कुछ लोगों को; पिणम् तोऱुम्–लाशों के बीच; तटवि तेटि–ढूँढ़ पाकर; कॉन्ऱतत्–मारा। ७८६

वातचक्र के समान हनुमान घूमता रहा। उसने दौड़कर कुछ

राक्षसों को निपाता। कुछ राक्षसों को एक-दूसरे के शरीर से भिड़ाकर मारा। कुछ राक्षसों को लम्बे ध्वजस्तम्भ से पीटकर मारा। लाशों के मध्य ढूँढ़ पाकर कुछ राक्षसों को मारा। ७८६

मुट्टि नार्पड मुट्टिनान् मुऱैमुऱै मुडुहिक्
किट्टि नार्पडक् किट्टिनान् किरियॅन नॅरुङ्गिक्
कट्टि नार्पडक् कट्टिनान् कैहळाल् मॅय्यिल्
तट्टि नार्पडत् तट्टिनान् मलैयॅनत् तहुवान् 787

मलै ॲन तकुवान्–पर्वत-सम मान्य हनुमान; मुट्टिनार्–अपने से भिड़नेवालों को; पट–निपातते हुए; मुट्टिनान्–उनसे भिड़ा; मुऱै मुऱै–पंक्तियों में; मुटुकि–शीघ्र आकर; किट्टिनार्–जो पास पहुँचे; पट–उनको मारने; किट्टिनान्–उनके पास पहुँचा; किरि ॲन–पर्वत के समान; नॅरुङ्कि–पास जाकर; कट्टिनार्–जिन्होंने उसे बाँधा; पट–उन्हें मारते हुए उसने; कट्टिनान्–पाशबद्ध कर दिया; कैकळाल्–अपने हाथों से; मॅय्यिल् तट्टिनार्–जिन्होंने उसके शरीर पर थप्पड़ मारा; पट–उन्हें हत करते हुए; तटटिनान्–उसने भी थप्पड़ मारा। ७८७

पर्वत-समान हनुमान ने भिड़नेवालों से भिड़कर उन्हें प्राणहीन किया। क्रम से जो उसके पास दौड़े आये उन्हें उनके पास स्वयं दौड़ जाकर मारा। पर्वत के समान आकर जिन्होंने उसे पाश में लेना चाहा उन्हें उसने बाँधकर निपाता। कुछ लोगों ने उस पर हाथ लगाए तो उन्हें हाथ से पीटकर उसने हत कर दिया। ७८७

उऱक्कि नुङ्गॉल्लु मुणरिनुङ् गॉल्लुमाल् विशुम्बिल्
पऱक्कि नुङ्गॉल्लुम् बडरिनुङ् गॉल्लुमिन् बडक्कुम्
निऱक्क रुङ्गळ लरक्करह् नॅऱिदॊऱुम् बॊऱिहळ्
पिऱक्क निन्ऱॅऱि पडैहळैक् कैहळाऱ् पिशयुम् 788

उऱक्किनुम्–(राक्षस) शिथिल रहे, तब भी; कॊल्लुम्–उन्हें मारता; उणरिनुम् कॊल्लुम्–होश में रहते तब भी मारता; विचुम्पिल्–आकाश में; पऱक्किनुम्–उड़ते तब भी; कॊल्लुम्–मारता; पटरिनुम् कॊल्लुम्–भूमि पर चलनेवालों को भी मारता; मिन् पटैक्कुम्–बिजली उत्पन्न करनेवाले; करुम् निऱ–काले मेघों के-से रंग वाले; कऴल् अरक्करक्कळ्–पायलधारी राक्षस; नॅऱि तॊऱुम्–मार्गों में; पॊऱिकळ् पिऱक्क–अंगारे छोड़ते हुए; निन्ऱु–खड़े होकर; ॲऱि पटैकळै–जो फेंकते थे, उन हथियारों को; कैकळाल् पिचैयुम्–(हनुमान) अपने हाथों से पीस लेता। ७८८

हनुमान उनको भी मारता, जो शिथिल या अपने को भूले रहते; उनको भी मारता, जो सतर्क रहते। आकाश में उड़नेवालों को भी मारता, पैदल चलनेवालों को भी, विद्युज्जनक मेघ-सम काले व पायलधारी राक्षस हथियार फेंकते और वे अपने मार्ग में अंगारे बिखेरते हुए आते। हनुमान उन हथियारों को पकड़कर पीस लेता। ७८८

शेरुम् वण्डलु मूळैयु निणमुमाय्च् चॆरिय
नीरु शेर्नॆडुन् दॆरुवॆला नीत्तमाय् निरम्ब
आरु पोल्वरुङ् गुरुदियव् वनुमना ललैप्पुण्
डीरिल् वाय्दॊरु मुमिळ्वदे यॊत्तदव् विलङ्गै 789

मूळैयुम्–भेजा; निणमुम्–और चर्वी; चेरुम् वण्टलुमाय्–पंक और तलौंछ बनकर; चॆरिय–घने रूप से मिली रहीं; नीरु चेर्–धूल-मिली; नॆटुम् तॆरु ऍलाम्–लम्बी सड़कों में; नीत्तमाय् निरम्प–प्रवाहमय हो जाएँ, ऐसा; आरु पोल् वरुम्–नदियों के समान आनेवाला; कुरुति–रक्त; अ अनुमनाल्–उस हनुमान द्वारा; अलैप्पुण्टु–हिलाया जाकर; अ इलङ्कै–वह लंका; ईरु इल्–अनन्त; वाय् तॊरुम्–मुखों से; उमिळ्वतु ऑत्ततु–कै करता हो जैसे लगा। ७८९

राक्षसों के भेजे और मज्जे के पंक और तलौंछ बने। उनका रक्त नदी बना। वह धूल-भरी लंका की सड़कों पर बह चली। वह रक्त-नदी हनुमान द्वारा हिल गयी और ऐसा लगा कि वह लंका नगर असंख्य मुखों से रक्त वमन कर रहा हो। ७८९

करुदि वालिनुङ् गैयिनुम् कडिहैयिर् कट्टिच्
चुरुदि येयन्न मारुदि मरत्तिडैत् तुरप्प
निरुद रॆन्दिरत् तिडुहरुम् बामॆन नॆरियक्
कुरुदि शारॆनप् पायन्ददु कुरैहडर् कूनै 790

चुरुतिये अन्न–वेद ही सम; मारुति–मारुति के; करुति–सोचकर; वालिनुम् कैयितुम्–पूँछ और हाथों से; कटिकैयिल्–ईख के टुकड़ों को जैसे; कट्टि–बाँधकर; मरत्तु इटै तुरप्प–पेड़ों के बीच में फेंकने पर; निरुतर्–राक्षस; ऍन्तिरत्तु इटु–यन्त्रों में डाले गये; करुम्पु आम् ऍन–ईखों के समान; नॆरिय–पिसे; कुरुति–(और) रक्त; चारु ऍन–इक्षुरस के समान; कुरै कटल्–गर्जनशील सागर रूपी; कूनै–कड़ाहे में; पाय्न्ततु–बहकर भरा। ७९०

वेद-समान (स्थिर, अमर, अक्षय और हितकारी) हनुमान ने खूब ध्यान लगाकर पूँछ और हाथों से उन्हें बाँध लेकर इक्षुखण्डों को जैसे पेड़ों के मध्य फेंका। वे राक्षस यन्त्र (कोल्हू) में ग्रस्त (इक्षुखण्ड-जैसे) पिर गये। रस के समान रक्त जो निकला, वह शब्दायमान समुद्र रूपी कड़ाहे के अन्दर बहा। ७९०

ऍडुत्त रक्करै यॆरिदॊरु मवरुड लॆड्रक्
कॊडित्तिण् माळिहै यिडिन्दन मण्डबङ् गुलैन्द
तडक्कै यानैहण् मडिन्दन गोबुरन् दहर्न्द
पिडिक्कु लङ्गळुम् बुरवियु मविन्दन पॆरिय 791

अरक्करै ऍटुत्तु–राक्षसों को उठाकर; ऍरि तॊरुम्–ज्यों-ज्यों फेंकता; अवर्

उटल् ॲऱ्ऱ–त्यों-त्यों उनके शरीरों के टकराने से; कॉटि–ध्वजा-सहित; तिण् माळिकै–प्रबल प्रासाद; इटिन्तन–टूट गये; मण्टपम्–मण्डप; कुलैन्त–ढह गये; तट कै यानैकळ्–लम्बी सूँड़ वाले गज; मटिन्तन–हत हुए; कोपुरम् तकर्न्त–मीनारें टूटीं; पॅरिय पिटि कुलङ्कळुम्–बड़ी-बड़ी गजनियों के वर्ग और; पुरवियुम्–अश्व; अविन्तन–मिटे। ७९१

ज्यों-ज्यों हनुमान ने राक्षसों को उठाकर फेंका, त्यों-त्यों उनके शरीरों के धक्के खाकर ध्वजा-सहित सुदृढ़ प्रासाद ढहकर गिरे। मण्डप मटियामेट हुए। बड़ी सूँड़ों के गज मरे। मीनारें टूटकर गिरीं। बड़ी-बड़ी हथिनियों के समूह और अश्व मर मिटे। ७९१

तत्त माडङ्ग डम्मुड लाऱ्चिलर् तहर्त्तार्
तत्त मादरैत् तङ्गऴ लाऱ्चिलर् चमैत्तार्
तत्त माक्कळैत् तम्बडै याऱ्चिलर् तडिन्दार्
ॲत्ति मारुदि तडक्कैह ळान्विशैत् तॅऱिय 792

मारुति–मारुति के; तट कैकळाल्–अपने विशाल हाथों से; ॲत्ति विचैत्तु ॲऱिय–जोर से फेंक देने से; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; तत्तम् माटङ्कळ्–अपने-अपने प्रासादों को; तम् उटलाल्–अपने ही शरीरों से; तकर्त्तार्–तोड़ दिये; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; तत्तम् मातरै–अपनी अपनी स्त्री को; तम् कऴलाल् चमैत्तार्–अपने पैरों से रौंद दिया; चिलर्–कुछ (राक्षसों) ने; तत्तम् माक्कळै–अपनी-अपनी सन्तानों को; तम् पटैयाल्–अपने हथियारों से; तटिन्तार्–आहत कर मार दिया। ७९२

मारुति के अपने बड़े हाथों से पीटकर तेज़ी से फेंकने से कुछ राक्षसों के शरीर उन-उनके घरों से जाकर टकराए और वे टूटकर गिरे। कुछ राक्षसों ने अपनी-अपनी पत्नी को अपने पैरों से रौंदा। कुछ राक्षसों की संतानें उनके ही हथियारों से आहत होकर मरीं। ७९२

आडन् माक्कळि ऱनैयव नरक्कियर्क् करुळि
वीडु नोक्किय शॅलुहॅन्ऱु शिलवरै विट्टान्
कूडि नाऱ्क्कव रुयिरॅनच् चिलवरैक् कॊडुत्तान्
ऊडि नाऱ्क्कवर् मनैदॊऱुम् जिलवरै युय्त्तान् 793

आटल्–शत्रु-संहारक; मा कळिऱु अनैयवन्–बड़े गज के समान हनुमान; अरक्कियर्क्कु अरुळि–राक्षसियों पर कृपा करके; चिलवरै–कुछ (राक्षसों) को; वीटु नोक्किय–घर की राह देखकर; चॅल्क ॲन्ऱु–जाओ, कहकर; विट्टान्–(जीवित) छोड़ दिया; कूटिनार्क्कु–तभी विवाहित स्त्रियों को; अवर् उयिर् ॲन–उनके प्राण-सम पति समझकर; चिलवरै कॊटुत्तान्–कुछ लोगों को (उनके पास जाने) दे दिया; ऊटिनार्क्कु–जो रूठी हुई थीं, उनके पास; अवर् मनै तॊऱुम्–उनके घर-घर में; चिलवरै उय्त्तान्–कुछ को भेज दिया। ७९३

शत्रुघातक बड़े गज-जैसे हनुमान ने राक्षसियों पर कृपा करके कुछ राक्षसों को, 'घर जाओ' कहकर उन-उनके घर को भेज दिया। कुछ राक्षस नवविवाहित थे। उनको उनकी वधुओं को प्रदान कर दिया। कुछ स्त्रियाँ रूठन की अवस्था में रहीं। उनके पति राक्षसों को उनके पास भेज दिया। ७९३

तरुवॆ लामुडऱ् ऱडमदि लॆलामुडऱ् चदुक्कत्
तुरुवॆ लामुड लुवरियॆ लामुड लुळ्ळूर्क्
करुवॆ लामुडऱ् कावुमॆ लामुड लरक्कर्
तॆरुवॆ लामुड ऱेशमॆ लामुडऱ् चिदऱि 794

चितऱि–बिखरकर; तरु ऍलाम् उटल्–तरु-तरु पर शरीर (लाश); तट मतिल् ऍलाम् उटल्–चौड़े प्राचीरों पर सर्वत्र लाशें; चतुक्कत्तु उरु ऍलाम् उटल्–चौराहों के स्थलों पर लाशें; उवरि ऍलाम् उटल्–समुद्र भर लाशें; उळ्ळूर् करु ऍलाम्–उस नगर के गर्भ-स्थानों में लाशें; कावुम् ऍलाम् उटल्–उद्यान-उद्यान में लाशें; अरक्कर् तॆरु ऍलाम्–राक्षसों की सभी वीथियों पर; उटल्–लाशें; तेचम् ऍलाम् उटल्–देश भर में शरीर (लाशें)। ७९४

हनुमान के उछालने से पेड़-पेड़ पर लाशें पायी गयीं। विशाल प्राचीरों पर, चौराहों पर, समुद्र में, लंका नगर के गर्भस्थानों में, उद्यानों में, राक्षसों की सड़कों पर, क्यों देश में सर्वत्र लाशें हो गयीं। ७९४

ऊऩॆ लामुयिर् कवर्वुरुङ् गालऩोय्न् दुलन्दाऩ्
ताऩॆ लारैयु मारुदि शाडुहै तविराऩ्
मीऩॆ लामुयिर् मेह मॆलामुयिर् मेऩ्मेल्
वाऩॆ लामुयिर् मऱ्ऱुमॆ लामुयिर् शुऱ्ऱि 795

ऊऩ् ऍलाम्–शरीरों से; उयिर् कवर्वु उरुम्–प्राणों को हर लेनेवाले; कालऩ्–यम; ओय्न्तु उलन्ताऩ्–मिचलाकर थक गया; मारुति–मारुति ने; ऍलारैयुम्–सबको; ताऩ्–तो; चाटुकै–आहत करना; तविराऩ्–नहीं छोड़ा; चुऱ्ऱि–(इसलिए) घूम-घूमकर; मीऩ् ऍलाम् उयिर्–नक्षत्र-मण्डलों में जानें; मेकम् ऍलाम् उयिर्–मेघों में उनके आत्मा; मेल् मेल् वाऩ् ऍलाम्–ऊपर आकाश के सारे लोकों में; उयिर्–आत्मा; मऱ्ऱुम् ऍलाम्–उनके पार भी सर्वत्र आत्मा ही आत्मा। ७९५

शरीरों से प्राण हरनेवाला यम भी मिचलाकर थक गया। मारुति तो मारने से विरत नहीं हुआ। इस कारण से उनके जीवात्मा नक्षत्र-मण्डलों, मेघमण्डलों और ऊपर के सभी लोकों, क्यों उनके परे अन्य लोकों में भी सर्वत्र पाये गये। ७९५

आह विच्चॆरु विळैवुरु ममैदियि लरक्कर्
मोह मुऱ्ऱिऩ रामॆऩ मुरैमुरै मुतिऩ्दार्

माह मुर्र्रवु मादिर मुर्र्रवुम् वळैन्दार्
मेह मॊत्तन्र् मारुदि वॆय्यव नॊत्तान् 796

आक–इस भाँति; इ चॆरु–यह युद्ध; विळैवु उरुम् अमैतियिल्–जब होता रहा, तव; अरक्कर्–राक्षस; मोकम् मुर्र्रिन्र् आम्–मोह में बढ़े हुए; ॲन–जैसे; मुरै मुरै मुनिन्दार्–उत्तरोत्तर क्रोधवन्त होकर; माकम् मुर्र्रवुम्–आकाश भर में; मातिरम् मुर्र्रवुम्–सभी दिशाओं में सर्वत्र; वळैन्तार्–घेरकर; मेकम् ऒत्तन्र्–मेघों के समान लगे; मारुति–मारुति; वॆय्यवन् ऒत्तान्–सूर्य के समान दिखा। ७९६

इस तरह जब युद्ध हो रहा था, तब राक्षस निपट मोहमग्न हुए-से उत्तरोत्तर बढ़नेवाले कोप के साथ आकाश और दिशाओं में घेरे काले मेघों के समान रहे। तो मारुति सूर्य के समान लगा। ७९६

अडल रक्करु मार्त्तलि नलैत्तलि नारप्
पुडैव ळैत्तुयर् पॆरुमैयिर् करुमैयिर् पॊलिविन्
मिडल यिर्पडै मीनॆन विलङ्गलिर् कलङ्गुम्
कडनि हर्त्तनर् मारुदि मन्दरङ् गडुत्तान् 797

अटल् अरक्करुम्–सशक्त वे राक्षस भी; आर्त्तलिन्–नर्दन करने से; अलैत्तलिन्–झकझोरने से; आर–पूर्ण रूप से; पुटै वळैत्तु–पार्श्व में घेरकर; उयर् पॆरुमैयिल्–उन्नतिशील गौरव से; करुमैयिल्–काले रंग से; पॊलिविल्–आकार से; मिटल्–सबल; अयिल् पटै–भालाओं के हथियारों के; मीन् ॲन–नक्षत्रों के समान; इलङ्कलिल्–शोभित रहने से; कलङ्कुम् कटल्–मथनशील समुद्र; निकर्त्तनर्–के समान रहे; मारुति–मारुति भी; मन्तरम् कटुत्तान्–मन्दरपर्वत-सम लगा। ७९७

वे राक्षस गर्जन के कारण, इधर-उधर जाकर हिलने से, सभी ओर घेरे बढ़ने से, काले रंग के कारण और सबल हथियारों के मकरों के समान शोभित रहने के कारण विलोडित समुद्र के समान रहे तो मारुति समुद्र-मध्य मन्दरपर्वत के समान दिखा। (इस पद में समुद्र और राक्षस-समूह में श्लेष है।)। ७९७

करद लततिनुङ् गालिनुम् वालिनुङ् गदुव
निरैम णित्तलै नॆरिन्दुहच् चाय्न्दुयिर् नीप्पार्
शुरर्न डुक्कुर वमुदुहॊण् डॆळुन्दना डॊडरुम्
उरह रॊत्तन रनुमनुङ् गलुळनै यॊत्तान् 798

करतलत्तिनुम्–करतलों से; कालिनुम्–पैरों से; वालिनुम्–पूँछ से; कतुव–कसे जाने से; निरै तलै–पंक्तियों में सिर; नॆरिन्तु–पिसे और; मणि उक–रत्न गिरे; चुरर् नटुक्कु उऱ–देव थर्राए; चाय्न्तु–ऐसा गिरकर; उयिर् नीप्पार्–प्राण त्यागते; अमुतु कॊण्टु–अमृत लेकर; ऎळुन्त नाळ्–जिस दिन गरुड़ उड़ आया; तॊटरुम् उरकर् ऒत्तनर्–उसके पीछे लगे आये नागों के समान लगे; अनुमनुम्–हनुमान भी; कलुळनै–गरुड़ के भी; ऒत्तान्–समान रहा। ७९८

हनुमान ने राक्षसों को अपनी पूँछ, हाथों और पैरों से जकड़कर दबाया तो उनके सिर पिसे और रत्न गिरकर छितरे। सुर काँपे। इस रीति से जो गिरकर मरे, वे राक्षस उन नागों की समता करते थे जो गरुड़ के अमृत ले आने के दिन उसका पीछा कर आये थे। तो हनुमान गरुड़ के समान रहा। ७९८

मात्त मुऱ्ऱदत् पहैयिऩाल् मुऩिवुऱ्ऱु वळैन्द
मीऩु डैक्कड लिडैयिऩि नुलहॅला मिडैन्द
ऊऩ ऱक्कॉऩ्ऱु तुहैक्कवु मॉऴिविला निरुदर्
आऩै यॉत्तऩ राळरि यॉत्तऩ ऩनुमऩ् 799

मातम् उऱ्ऱ–गर्वीले; तऩ् पकैयिऩाल्–अपने शत्रु राक्षसों पर; मुऩिवुऱ्ऱु–गुस्सा करके; वळैन्त–गोल; मीऩ् उटै–मकर-सहित; कटल् इटैयितिऩ्–समुद्र-मध्यस्थ; उलकु ऎलाम्–लंका भर में; मिटैन्त–अपने पास जुड़े आये; ऊऩ् अऱ–शत्रुओं के शरीरों को बिलकुल; कॊऩ्ऱु तुकैक्कवुम्–रौंदकर मारता रहा; ऒऴिवु इला–अक्षय रहे; निरुतर्–राक्षस; आऩै ऒत्तऩर्–गज-सम रहे; अनुमऩ्–हनुमान; आळ् अरि–वीर सिंह; ऒत्तऩऩ्–के समान रहा। ७९९

गर्वीले शत्रु राक्षसों से गुस्सा करके हनुमान ने गोलाकार मकरालय मध्यस्थ लंका में अपने से भिड़नेवाले राक्षसों को रौंदकर मार दिया। पर अक्षय बने रहे राक्षस गजों के समान दिखे और हनुमान वीरता में बढ़े हुए सिंह के समान लगा। ७९९

ऎय्द ऎऱ्ऱिऩ ऎऱिन्दऩ वीर्त्तऩ विहलिल्
पॆय्द कुत्तिऩ पॊदुत्तऩ तुळैत्तऩ पिळन्द
कॊय्द शुऱ्ऱिऩ पऱ्ऱिऩ कुडैन्दऩ पॊलिन्द
अय्यऩ् मऱ्पॆरुम् बुयत्तऩ पुण्णळप् परिय 800

इकलिल्–युद्ध में; ऎय्त–चलाये गये; ऎऱ्ऱिऩ–आघात करनेवाले; ऎऱिन्तऩ–फेंके गये; ईर्त्तऩ–छिने; पॆय्त–बरसाये गये; कुत्तिऩ–चुभाये गये; पॊतुत्तऩ–घुसाये गये; तुळैत्तऩ–भेदनेवाले; पिळन्त–चीरनेवाले; कॊय्त–चुने गये; चुऱ्ऱिऩ–लपेटे गये; पऱ्ऱिऩ–पकड़े गये; कुटैन्तऩ–कुरेदनेवाले; पॊलिन्त–(हथियारों के व्रणों के साथ) शोभित; ऐयऩ्–सम्मान्य हनुमान के; मल् पॆरुम् पुयत्तऩ–अति बलवान कन्धों पर के; पुण्–व्रण; अळप्पु अरिय–अनगिनत थे। ८००

उस युद्ध में विविध हथियारों ने हनुमान पर चोट की। कुछ हथियार चलाये जानेवाले थे। कुछों से प्रहार किया जा सकता था। कुछ उछाले जानेवाले थे। कुछ खींचे जानेवाले थे। कुछ चुभनेवाले, कुछ गड़नेवाले, कुछ भेदनेवाले, कुछ चीरनेवाले और कुछ कुरेदनेवाले हथियार थे। उनसे सम्मान्य हनुमान के कन्धों पर जो व्रण हुए वे अनगिनत थे। ८००

कार्क्क रुन्दडङ् गडल्हळुम् मळैमुहिर् कणनुम्
वेर्क्क वॅञ्जॅरु विळैत्तॅळुम् वॅळ्ळॅयिर् ऱरक्कर्
पोर्क्कु ळात्तॅळु पूशलि नैयत्तैप् पुहऴ्वुर्
ऱार्क्कुम् विण्णव रमलैये युयर्न्ददन् ऱमरिल् 801

कार्–काले; करुम्–बड़े; तटम्–विशाल; कटल्कळुम्–समुद्र; मळै मुकिल् कणनुम्–जल-भरे मेघों के समूह; वेर्क्क–पसीने से भर जाएँ, ऐसा; वॅम् चॅरु विळैत्तु–घमासान युद्ध करते; ऍळुम्–बढ़ आनेवाले; वॅळ् ऍयिऱ्ऱु अरक्कर्–सफ़ेद दाँतों के राक्षसों के; पोर् कुळात्तु–युद्धदलों में; ऍळु पूचलिन्–उठनेवाले शोर से अधिक; विण्णवर्–देवों के; ऐयनै पुकऴ्वु उऱ्ऱु–सम्मान्य हनुमान की प्रशंसा करते हुए; आर्क्कुम्–आरव करने का; अमलैये–शोर ही; अन्ऱु–उस दिन; अमरिल्–युद्ध में; उयर्न्ततु–ज़ोरदार रहा। ८०१

व्योमलोकवासियों ने महिमावान हनुमान की वाहवाही बड़े ज़ोर-शोर से की। वह आरव उन सफ़ेद दाँत वाले राक्षसों के युद्ध-कोलाहल से भी अधिक ज़ोरदार रहा, जो अपने घमासान युद्ध से काले और बड़े समुद्रों को और जलवर्षी मेघों को भी स्वेदयुक्त (भयभीत) कर रहे थे। ८०१

मेवुम् वॅञ्जिनत् तरक्करहण् मुऱैमुऱै विशैयाल्
एवुम् पल्पडै यॅत्तनै कोडिह ळॅन्निनुम्
तूवुन् देवरु मुनिवरु महळिरुम् जॊरिन्द
पूवुम् बुण्गळुन् दॆरिन्दिल मारुदि पुयत्तिल् 802

मेवुम्–आरूढ़; वॅम् चिनत्तु–भयंकर क्रोधी; अरक्कर्–राक्षस द्वारा; मुऱै मुऱै–अनेक बार; विचैयाल्–वेग के साथ; एवुम्–चलाये गये; पल् पटै–विविध हथियार; ऍत्तनै कोटिकळ् ऍन्निनुम्–कितने ही करोड़ थे तो भी; पुण्कळुम्–व्रणों में; तूवुम्–बरसानेवाले; तेवरुम् मुनिवरुम् मकळिरुम् चॊरिन्त–देवों, मुनियों और अन्यों द्वारा बरसाये गये; पूवुम्–फूलों में; मारुति पुयत्तिल्–मारुति के कन्धों पर; तॆरिन्तिल–भेद विदित नहीं हुआ। ८०२

उत्तरोत्तर बढ़ते हुए कोपिष्ठ राक्षसों ने अनेक वार विविध तरह के कितने ही करोड़ हथियार चलाये! तो भी हनुमान के कन्धों पर उनसे बने व्रणों और देवों, मुनियों और अन्यों के द्वारा बरसाये फूलों में कोई भेद नहीं रहा। हनुमान के लिए दोनों बराबर थे। ८०२

पॅयर्क्कुञ् जारिहै करुङ्गॅनत् तिशैदॊऱुम् बॅयर्विन्
उयर्क्कुम् विण्मिशै योङ्गलिन् मण्णिन्वन् दुऱलिन्
अयर्त्तु वीऴ्न्दन रऴिन्दन ररक्करा युळ्ळार्
वॅयर्त्ति लन्मिशै युयिर्त्तिल नल्लऱ वीरन् 803

नल् अऱ वीरन्–श्रेष्ठ धर्मवीर; करुङ्कु ऍन–वातचक्र के समान; चारिकै

पॅयर्क्कुम्–पैतरा बदलता; तिचै तॉरुम् पॅयर्वित्–आठों दिशाओं में घूमने से; विण् मिचै उयर्क्कुम्–आकाश में उछलता; ओङ्कलित्–पर्वत के समान; मण्णित् वन्तु–भूमि पर आकर; उऱलित्–लगने से; अरक्कराय् उळ्ळार्–राक्षस जो थे; अयर्त्तु–थकित हो; वीऴ्न्तनर्–गिरते; अऴिन्तनर्–मरते; वॅयर्त्तिलत्– (हनुमान थका नहीं) स्वेदयुक्त नहीं हुआ; मिचै उयिर्त्तिलत्–श्वास भी तेज़ न हुआ। ८०३

धर्मवीर हनुमान ने क्षिप्रगति से पैतरे बदले। इधर-उधर घूमा। दिशाओं में चलता, आकाश में उछलता। कभी पर्वत के समान भूमि पर आकर गिरता; तब राक्षस चोट खाकर शिथिल हो गिरते और मर जाते। तो भी न हनुमान के शरीर पर स्वेद बहा, न उसका श्वास तेज़ हुआ। ८०३

ॲञ्ज लिल्कणक् कऱिन्दिल मिरावण ऩेव
नञ्ज मुण्डव रामॅऩ वनुमऩमे ऩडन्दार्
तुञ्जि ऩारल्ल दियावरुममर्त्तॉऴिऱ् ऱॉलैवुऱ्
ऱञ्जि ऩारिल्लै यरक्करिल् वीरर्मऱ् ऱियारो 804

इरावणऩ् एव–रावण के प्रेरित करने से; अनुमऩ् मेल्–हनुमान पर; नटन्तार्–जो चढ़ आये; ॲञ्चल् इल् कणक्कु–(उनका) अक्षय हिसाब; अऱिन्तिलम्–हमने नहीं जाना; नञ्चम् उण्टवर् आम् ॲऩ–विष खाये हुओं के समान; तुञ्चिऩार्–मरे; अल्लतु–(मरना) छोड़कर; यावरुम्–कोई भी; अमर् तॉऴिल्–युद्ध का काम; तॉलैवु उऱ्ऱु–त्यागकर; अञ्चिऩार् इल्लै–डर से भागे नहीं; अरक्करिल् वीरर्–राक्षसों से बढ़कर वीर; यारे–कौन हैं। ८०४

रावण की आज्ञा से जो किंकर लड़ने आये, उनकी अक्षय संख्या का हिसाब हमने नहीं जाना। पर इतना जानते हैं कि वे, विष खानेवाले जैसे मरते, वैसे ही मरे। पर युद्ध छोड़कर डर से नहीं भागे। उन राक्षसों से अधिक वीर कौन होंगे? । ८०४.

वन्द किङ्गर रेयॅऩ् मात्तिरै मडिन्दार्
नन्द वाऩत्तु नायह रोडिऩर् नडुङ्गिप्
पिन्दु कालिऩर् कैयिऩर् पॅरुम्बयम् बिडरिल्
उन्द वायिरम् बिणक्कुवै मेल्विऴुन् दुळैवार् 805

वन्त किङ्करर्–(हनुमान के साथ लड़ने) आगत राक्षस; एय् ॲऩुम् मात्तिरै–'ऐ' कहने की मात्रा में; मटिन्तार्–मरे; नन्त वाऩत्तु नायकर्–नन्दन वन के रक्षक; ओटिऩर्–दौड़े; नटुङ्कि–डर से; पिन्तु कालिऩर् कैयिऩर्–पिछड़नेवाले पैरों और हाथों के; पॅरुम् पयम्–बड़े भय के; पिटरिल् उन्त–गले में बैठकर उकसाते; आयिरम् पिण कुवै मेल्–हजारों लाशों के ढेरों पर; विऴुन्तु–गिरकर; उळैवार्–व्याकुल हुए। ८०५

वे किंकर 'रे' कहने के समय के अन्दर मृतक हो गये। अशोक वन के रक्षक तुरन्त भागे। डर से उनके पैर नहीं उठ रहे थे और हाथ काँप रहे थे। पीछे पड़ते थे। पर डर ने उनके गले के पीछे से उनको ढकेला। वे सहस्र-सहस्र लाशों के ढेर पर ठोकर खाकर गिरे और दुःखी हुए। ८०५

विरैवि नुऱ्ऱनर् विम्मिनर् यादॊन्ऱुम् विळम्बार्
करद लत्तिनाऱ् पट्टदु कट्टुरैक् किन्ऱार्
तरैयि निऱ्किलर् तिशैदॊऱु नोक्किनर् शलिप्पार्
अरशन् मऱ्ऱव रलक्कणे युरैशॆय् वऱिन्दान् 806

विरैविन् उऱ्ऱतर्–शीघ्र जाकर; विम्मितर्–दुःख से भरकर; यातॊन्ऱुम्–कुछ भी; विळम्पार्–न कह सके; पट्टतु–जो घटा; करतलत्तिनाल्–हाथों के इशारे से; कट्टुरैक्किन्ऱार्–समझाते; तरैयिन् निऱ्किलर्–धरती पर खड़े नहीं रह पाते; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; नोक्कितर्–दृष्टि दौड़ाते; चलिप्पार्–चंचल होते; अरचन्–राजा ने; अवर् अलक्कण–उनके संकटपूर्ण स्थिति के; उरै चॆय्–कहने से ही (द्वारा ही); अऱिन्तान्–समझ लिया। ८०६

वे (जितना हो सके उतनी) जल्दी रावण के सम्मुख आये। दुःख से भरपूर वे कुछ बोल नहीं सके। अपने हाथों से इशारे करने लगे। उनके पैर लड़खड़ा रहे थे और वे स्थिर रूप से खड़े नहीं हो पाये। सभी दिशाओं पर दृष्टि दौड़ाते हुए चंचल रहे। उनके कष्ट से रावण ने जान लिया कि उनका अभिप्राय क्या है? । ८०६

इऱन्दु नीङ्गिन रोविन्ऱॆ नाणैयि निहन्दार्
तुऱन्दु नीङ्गिन रोवन्ऱि वॆञ्जमन् दॊलैन्दार्
मऱन्दु नीङ्गिन रोवॆन्नगॊल् वन्ददॆन् ऱुरैत्तान्
निऱञ्जॆ रुक्कुऱ वायॊदॊऱु नॆरुप्पुमिळ् हिन्ऱान् 807

निऱम् चॆरुक्कु उऱ–शरीर घमण्ड से सीधा हुआ; वाय् तॊऱुम्–सभी मुखों से; नॆरुप्पु–आग; उमिळ्किन्ऱान्–उगलता; इन्ऱु–आज; इऱन्तु नीङ्किनरो–मर मिटे क्या; ऎन् आणैयिन् इकन्तार्–मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके; तुऱन्तु–(युद्ध) त्यागकर; नीङ्किनरो–भाग गये; अन्ऱि–नहीं तो; वॆम् चमम् तॊलैन्तार्–घोर युद्ध हारकर; मऱन्तु–मुझे भूलकर; नीङ्किनरो–भाग गये क्या; ऎन् कॊल् वन्ततु–क्या ही हो गया; ऎन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा प्रश्न किया। ८०७

रावण का शरीर गर्व से तन उठा। अपने दसों मुखों से आग उगलते हुए रावण ने पूछा कि क्या वे आज मारे जाकर मिटे? या मेरी आज्ञा की अवज्ञा करके युद्ध से भाग गये? या युद्ध हारकर अपमान से मेरी उपेक्षा करके भाग गये? क्या ही हुआ है? बताओ। ८०७

चलन्दलैक् कॊण्डन राय तन्मैयार्
अलन्दिलर् शॆरुक्कळत् तञ्जि नारलर्

पुलन्दॅरि पॉय्क्करि पुहलुम् बुन्गणार्
कुलङ्गळि न्विन्दन्र् कुरङ्गि न्ालॅन्ड्रार् 808

चलम्–क्रोध; तलै कॉण्टन्राय–सिर पर चढ़ गया, ऐसी; तन्मैयार्–स्थिति में रहे वे; अलन्तिलर्–दुखी हो भागे नहीं; चॅरु कळत्तु–युद्धभूमि से; अञ्चिनार् अलर्–डरकर नहीं भागे; पुलम् तॅरि–मन के जाने; पॉय् करि–झूठी गवाही; पुकलुम्–कहनेवाले (देनेवाले); पुन्कणार् कुलङ्कळिन्–नीच लोगों के कुलों के समान; कुरङ्किन्ाल्–मर्कट द्वारा; अविन्तन्र्–मृतक हुए; ॲन्ड्रार्–कहा (रक्षकों ने)। ८०८

नन्दनवन-रक्षकों ने उत्तर दिया। क्रोध से भरे वे वीर किंकर कष्ट से दुखी हो नहीं भागे। न समरांगन से भय खाकर भागे। पर वे, जान-बूझकर झूठी गवाही देनेवाले नीच लोगों के कुल के समान मर्कट से मारे जाकर मिटे। रक्षकों ने कहा। ८०८

एवलि न्ॅय्दिन्र रिरुन्द वॅण्डिशैत्
तेवरै नोक्कित्ता न्ाणुञ् जिन्दैयान्
यावदॅन् ड्रिन्दिलिर् पोलु मालॅन्ड्रान्
मुवहै पुलहैयुम् विळुङ्ग मूळ्हिन्ड्रान् 809

मूवकै उलकैयुम्–त्रिविध लोकों को; विळुङ्क–निगलने को जैसे; मूळ्किन्ड्रान्–कोपाक्रान्त होकर; नाणुम् चिन्तैयान्–लज्जित-मन (रावण ने); एवलिन् ॲय्तिन्र् इरुन्त–सेवार्थ आकर स्थित; ॲण् तिचै–आठों दिशाओं के पालक; तेवरै–देवताओं को; नोक्किन्ान्–देखकर; यावतु ॲन्रु–क्या हुआ यह; अरिन्तिलिर् पोलुम्–नहीं जानते शायद; ॲन्ड्रान्–ऐसा डाँटकर प्रश्न किया। ८०६

यह सुनकर रावण का कोप इतना तीव्र उठ आया कि ऐसा लगा कि वह तीनों लोकों को निगल लेगा। उसे किंचित लाज भी आयी। रावण ने पास सेवार्थ आगत दिग्पालक देवताओं को देखकर उनसे डाँटकर प्रश्न किया कि तुम लोग नहीं जानते कि क्या हुआ ? । ८०९

मीट्टव रुरैत्तिलर् पयत्तिन् विम्मुवार्
तोट्टल रिणर्मलरत् तॉङ्गन् मोलियान्
वीट्टिय दरक्करै यॅन्नुम् वॅव्वुरै
केट्टदो कण्डदो किळत्तु वीरॅन्ड्रान् 810

अवर्–वे; पयत्तिन् विम्मुवार्–भय में पड़कर; मीट्टु उरैत्तिलर्–उत्तर नहीं दे रहे थे; तोटु अलर्–दल-विकच; इणर् मलर्–गुच्छों में रहे; तॉङ्कल्–पुष्पों की माला से अलंकृत; मोलियान्–किरीटधारी (रावण) ने; वीट्टियतु अरक्करै–निपाता राक्षसों को (एक वानर ने); ॲन्नुम्–ऐसा; वॅम् उरै–दिल जलानेवाला समाचार; केट्टतो–सुनी हुई बात है; कण्टतो–(आँख) देखी हुई; किळत्तुवीर्–साफ़ कहो; ॲन्ड्रान्–कहा। ८१०

नन्दनवन-पालकों ने भय से भरकर फिर कुछ उत्तर नहीं दिया। दलविकसित और गुच्छों में रहे फूलों की माला से अलंकृत किरीटधारी रावण ने उनसे पूछा कि तुमने जो कहा कि वानर ने राक्षसों को मिटा दिया, वह क्रूर समाचार तुम्हारा सुना हुआ समाचार है ? या तुमने अपनी आँखों से देखा था ? बताओ। ८१०

कण्डऩ ऑरुपुडै निऩ्ऱु कण्गळाल्
तॆण्डिरैक् कडलॆऩ वळैन्द शेऩैयै
मण्डलन् दिरिन्दॊरु मरत्तिऩ् ऩालुयिर्
उण्डदक् कुरङ्गिऩि यॊऴिव दऩ्ऱॆऩ्ऱार् 811

ऑरु पुटै निऩ्ऱु–एक ओर खड़े रहकर; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; कण्टऩम्–देखा; तॆळ् तिरै कटल्–स्वच्छ तरंगोंवाले सागर; ऎऩ–के समान; वळैन्त–जो घेर आयी; चेऩैयै–उस सेना को; मण्टलम् तिरिन्तु–मण्डलाकार घूमकर; ऑरु मरत्तिऩाल्–एक पेड़ से; उयिर् उण्टतु–उनकी जानें उसने खा लीं; अ कुरङ्कु–वह वानर; इऩि–अब; ऑऴिवतु अऩ्ऱु–छोड़ जाने का नहीं दिखता; ऎऩ्ऱार्–कहा (उन रक्षकों ने)। ८११

वनपालों ने उत्तर दिया कि हमने एक ओर स्थित होकर यह स्वयं देखा था। स्वच्छ लहरों वाले समुद्र के समान जो सेना घेर गयी थी, उसको उस वानर ने मण्डलाकार घूमकर एक बड़े वृक्ष से मारकर उनके प्राण हर लिये। और भी वह वानर छोड़ जानेवाला नहीं लगता। ८११

8. शम्बुमालि वदैप् पडलम् (जम्बुमाली-वध पटल)

ऎऩ्ऱलु मरक्कर् वेन्द ऩॆरिहदिर् वाळै नोक्किक्
कऩ्ऱिय पवळच् चॆव्वा यॆयिऱ्ऱुपुक् कळुन्दक् कव्वि
ऑऩ्ऱुरै याडऱ् किल्ला ऩुडलमुम् विऴियुम् चेप्प
निऩ्ऱवा ळरक्कर् तम्मै नॆडिदुऱ नोक्कुङ् गालै 812

ऎऩ्ऱलुम्–(उनके ऐसा) कहने पर; अरक्कर् वेन्तऩ्–राक्षसराज ने; ऎरि कतिर्–अग्नि-तेज; वाळै–तलवार को; नोक्कि–देखकर; कऩ्ऱिय–कोपप्रकाशक; पवळम् चॆव्वाय्–प्रवालाधर को; ऎयिऱु पुक्कु अऴुन्त–दाँत से, घुसकर दबाएँ; कव्वि–ऐसा काटकर; ऑऩ्ऱु–कुछ भी; उरै आटऱ्कु इल्लाऩ्–कहने के लिए न पाकर; उटलमुम्–शरीर और; विऴियुम्–आँखों के; चेप्प–लाल होते; निऩ्ऱ–पास स्थित; वाळ् अरक्कर् तम्मै–तलवारधारी राक्षसों को; नॆटितु उऱ–लम्बी देर तक खूब; नोक्कुम् काले–जब देखा, तब। ८१२

वनपालों ने ज्योंही यह कहा, त्योंही रावण ने अग्नि-जैसे प्रकाश निकालनेवाली अपनी चन्द्रहास नामक तलवार पर दृष्टि दौड़ायी। उसने प्रवाल-लाल अधर को खूब दाँत गड़ाकर काटा, जिससे उसके बढ़े

क्रोध का प्रकटन हो रहा था। उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं रह गया था। अपनी आँखों और शरीर को लाल बनाते हुए जब वह अपने पास खड़े रहे तलवारधारी राक्षसों को बहुत देर तक घूरता रहा—। ८१२

कूम्बिऩ कैयि निऩ्ऱ कुऩ्ऱिवर् कुववुत् तिण्डोळ्
पाम्बिवर् तरुहट् चम्बु मालियॅऩ् बाऩैप् पारा
वाम्बरित् ताऩै योडु वळैत्तदऩ् वलियै माऱ्ऱित्
ताम्बिनिऱ् पऱ्ऱित् तन्दॅऩ् मऩच्चिऩ्ऩ् दणित्ति यॅऩ्ऱाऩ् 813

कूम्पिऩ कैयिऩ्–हाथ जोड़कर; निऩ्ऱ–जो खड़ा रहा, उस; कुऩ्ऱु इवर्–पर्वत-सम; कुववु–पुष्ट; तिण् तोळ्–कठोर कन्धों वाले; पाम्पु इवर्–सर्प के समान; तरुकण्–निडर; चम्पुमालि ऍऩ्पाऩै पारा–जम्बुमाली को देखकर; वाम् परि ताऩैयोटु–सरपट दौड़नेवाले अश्वों की सेना के साथ जाकर; वळैत्तु–उसे घेरकर; अतऩ् वलियै माऱ्ऱि–उसके बल को व्यर्थ करके; ताम्पिनिल् पऱ्ऱि–रस्सी से बाँध; तन्तु–(लाकर) मुझे देकर; ऍऩ् मऩ चिऩम्–मेरे मन का क्रोध; तणित्ति–शान्त करो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ८१३

तब जम्बुमाली पर उसकी दृष्टि गयी। वह हाथ जोड़े खड़ा था। उसके कन्धे पर्वत-सम पुष्ट और कठोर थे। वह सर्प-जैसा निडर था। रावण ने उसे आज्ञा दी कि अश्व-सेना लेकर जाओ। उस वानर के बल को चूर कर पकड़ लाओ और मुझे सौंप दो; तभी मेरा कोप शान्त होगा। ८१३

आयवऩ् वणङ्गि यैय वळप्परु मरक्कर् मुऩ्ऩे
नीयिदु मुडित्ति यॅऩ्ऱु नेर्न्दऩै निऩैवि ऩॆण्णि
एयिऩै यॆऩ्ऩप् पॆऱ्ऱा लॆऩ्ऩिल्या रुयर्न्दा रॆऩ्ऩाप्
पोयिऩ ऩिलङ्गै वेन्दऩ् पोर्च्चिऩम् बोव दॊप्पाऩ् 814

आयवऩ्–उस जम्बुमाली ने; वणङ्कि–नमस्कार करके; ऐय–प्रभु; अळप्पु अरुम्–अनगिनत; अरक्कर्–राक्षसों के; मुऩ्ऩे–सामने; निऩैविऩ् ऍण्णि–स्मरण करके; नी इतु मुटित्ति–तुम इसे साध लो; ऍऩ्ऱु–ऐसा; नेर्न्तऩै एयिऩै–आज्ञा दी (आपने); ऍऩ्ऩप् पॆऱ्ऱाल्–यह भाग्य प्राप्त हुआ तो; ऍऩ्ऩिऩ् यार् उयर्न्तार्–मुझसे कौन बड़े हैं; ऍऩ्ऩा–कहकर; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंकाधिपति का; पोर् चिऩम्–युद्धरोष ही; पोवतु ऑप्पाऩ्–निकलकर जाता हो जैसे; पोयिऩऩ्–चला। ८१४

जम्बुमाली ने नमस्कार करके रावण से विनय के साथ निवेदन किया कि प्रभु! असंख्यक राक्षसों के रहते आपने मुझे खूब सोच-समझकर चुना और आज्ञा सुनायी कि यह काम साधो। मेरा ऐसा भाग्य रहा तो कौन मुझसे बड़ा हो सकेगा? कहकर वह ऐसा जाने लगा, मानो रावण का क्रोध ही साकार बन जा रहा हो। ८१४

तऩ्ऩुडैत् तातै योडुन् दयमुहऩ् ऱरुहॅऩ् ऱेय
मऩ्ऩुडैच् चेऩै योडुन् दादैवऩ् दीन्द वाळिऩ्
मिऩ्ऩुडैप् परवै योडुम् वेऱुळोर् शिऱप्पिऩ् विट्ट
पिऩ्ऩुडै यतिहत् तोडुम् बॅयर्न्दनऩ् पॅरुम्बोर् पॅऱ्ऱाऩ् 815

पॅरुम् पोर्–बड़ा युद्ध; पॅऱ्ऱाऩ्–(लड़ने का अवसर) जिसे मिल गया; तऩ्ऩुटै तातैयोटुम्–अपनी सेनाओं के साथ; तयमुकऩ्–दशग्रीव द्वारा; तरुकॅऩ्ऱु एय–'दो' कहने पर आयी; मऩ् उटै चेऩैयोटुम्–स्थायी बड़ी सेनाओं के साथ; तातै वन्तु ईन्त–पिता प्रहस्त द्वारा दी गयी; मिऩ् उटै वाळिऩ्–चमकदार तलवारधारी वीरों की; परवैयोटुम्–विशाल सेना के सागर के साथ; वेऱु उळोर्–अन्यों द्वारा; चिऱप्पिऩ् विट्ट–गौरव हेतु प्रेषित; पिऩ् उटै अतिकत्तोटुम्–पीछे आनेवाले अनीक के साथ; पॅयर्न्तनऩ्–गया। ८१५

उसे बड़ा युद्ध करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। वह गया तो उसके साथ उसकी निजी सेना, रावण द्वारा प्रेषित सेना और उसके पिता प्रहस्त की विद्युत्-सी चमकदार तलवारधारी वीरों की सागर-सी विपुल सेना गयीं। उसके पीछे-पीछे अन्यों द्वारा गौरव-लिप्सा के कारण प्रेषित सेना भी गयी। ८१५

उरुमोत्त मुऴक्किऩ् चॅङ्गण् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱोडै नॅऱ्ऱिप्
परुमित्त किरियिऩ् ऱोऩ्ऱुम् वेऴमुम् बदुमत् तण्णल्
निरुमित्त वेऴ्वि मुऱ्ऱि यॅऩ्ऩला निलैय नेमि
चॉरिमुत्त वॅण्गोट् टुच्चित् तुहिऱ्कॉडित् तडन्देर् शुऱ्ऱ 816

उरुम् ऒत्त–वज्र-सम; मुऴक्किऩ्–चिंघाड़ वाले; चॅम् कण्–लाल आँखें; वॅळ् ऎयिऱ्ऱु–(और) श्वेत दाँतों वाले; ओटै नॅऱ्ऱि–मुखपट्ट पहने भाल वाले; परुमित्त–सजे हुए; किरियिल्–गिरियों के समान; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाले; वेऴमुम्–गज; नेमि–पहियों के साथ; वॅण् कोट्टु उच्चि–श्वेत स्तम्भ के ऊपर; चॊरि मुत्त–मोती गिरानेवाली; तुकिल् कॊटि–वस्त्रध्वजाओं के साथ; पतुमत्तु अण्णल्–कमलासन ब्रह्मा द्वारा; निरुमित्त–निर्मित; वेऴ्वि–यज्ञ; मुऱ्ऱि–पूरा करके प्राप्त; ऎऩ्ऩल् आम् निलैय–ऐसी मान्य स्थिति में रहनेवाले; तटम् तेर्–बड़े-बड़े रथों के; चुऱ्ऱ–घेरे आते। ८१६

उस सेना-समूह में गज गये, जिनकी चिंघाड़ का स्वर अशनि के समान था; जो सफ़ेद दाँतों वाले और मुखपट्ट पहने, सजे हुए पर्वत के समान जा रहे थे। रथ घेरे आये; पहियेदार रथ, जिनके सफ़ेद और ऊँचे स्तम्भों पर मोती गिरानेवाली ध्वजाएँ फहर रही थीं और जो ब्रह्मदेव द्वारा यज्ञ करने के बाद निर्मित-से लग रहे थे। (यज्ञ करके श्रेष्ठ वस्तुओं को प्राप्त करने की बात यहाँ स्मरण की गयी है।)। ८१६

कार्ऱितै मरुङ्गिर् कट्टिक् काल्वहुत् तुयिरुङ् गूट्टिक्
कूऱ्ऱितै यियऱ्ऱि यनुत्त कुलप्परि कुळुवक् कुनुऱित्
तूऱ्ऱिति तॆळुप्पि याण्डुत् तॊहुत्तन शुळल्पैङ् गण्ण
वेऱ्ऱितप् पुलियै रॆनुत्त विरिन्ददु पदादि यीट्टम् 817

मरुङ्किल्–पास के; कार्ऱितै कट्टि–पवन को बाँधकर; काल् वकुत्तु–उसके चार पैर बनाकर; उयिरुम् कूट्टि–जीवन्त बनाकर; कूऱ्ऱितै इयऱ्ऱि अनुत्त–यम को सृष्ट किया गया हो, ऐसा; कुल परि–श्रेष्ठ जाति के अश्वों के; कुळुव–एकत्रित होकर आते; कुनुऱित्–पर्वतों से; तूऱ्ऱितिनु–व झाड़ियों से; ऍळुप्पि–उठाकर; आण्टु तॊकुत्तत–वहाँ (सेना में) मिला दिये गये जो; चुळल्–चंचल; पैम् कण्ण–रंगीन आँखों वाले; वेऱु इत–विविध जाति के; पुलि एऱु ऍत्त–नर व्याघ्र के समान; पताति ईट्टम्–पदाति वीरों के दल; विरिन्ततु–बहुत विस्तृत रहे। ८१७

श्रेष्ठ जाति के अश्व भी साथ गये। पास के पवन को एकत्र करके उसके चार पैर लगाकर और उसे जीवन्त बनाकर यम-सा बनाया गया हो, ऐसा था एक-एक अश्व! पदाति वीर गये। पर्वतों की गुफाओं में से और झाड़ियों से उठाकर लाये विविध, विवृत्तनयन व्याघ्र-समूह के समान थे वे वीर। ८१७

तोमर मुलक्कै कूर्वाळ् शुडर्मळु कुलिशन् दोट्टि
तामरन् दिनुऱ कूर्वेल् चक्कर मॆळुक्कळ् चापम्
कामरन् दण्डु पिण्डि कप्पणङ् गाल पाशम्
मामरम् वलयम् वॆङ्गोल् मुदलिय वयङ्ग मादो 818

तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; कूर् वाळ्–तेज़ तलवारें; चुटर् मळु–उज्ज्वल परशु; कुलिचम्–कुलिश; तोट्टि–अंकुश; ताम् अरम् तिनुऱ–रेती से पैनाये गये; कूर् वेल्–तीक्ष्ण भाले; चक्करम्–चक्रायुध; ऍळुक्कळ्–लौहदण्ड; चापम्–धनु; कामरम्–'कामर'; तण्ट—गदाएँ; पिण्टि–भिन्दिपाल; कप्पणम्–'कप्पण'; काल पाचम्–कालपाश; मा मरम्–बड़े पेड़; वलयम्–छल्ले; वॆम् कोल्–भयंकर बाण; मुतलिय–आदि; वयङ्क–रहे। ८१८

उनके पास तोमर, मूसल, तेज़ तलवारें, ज्वलन्त परशु, कुलिश, अंकुश, रेती से पैनाये गये भाले, चक्रायुध, लौहदण्ड, चाप, 'कामर' नामक हथियार, दण्ड, भिंदिपाल, 'कप्पण' नामक काँटेदार गदाएँ, कालपाश, बड़े-बड़े तरु, वलय और भयंकर शर आदि विविध हथियार विद्यमान रहे। ८१८

ऍत्तिय वयिल्वेल् कुन्द मॆळुमुद लित्तैय वेन्दिक्
कुत्तिय तिळैप्प मीदिर् कुळुवित्त मळैमाक् कॊण्डल्
पॊत्तुहळ् पॊरुवि तन्तोर् शॊरिवत्त पोव पोलच्
चित्तिरप् पदाहै योट्टन् दिशैतॊऱुञ् जॆऱिव चॆल्ल 819

अॅत्तिय–फेंके जानेवाले; अयिल् वेल्–तेज़ भाले और; कुन्तम्–कुन्त; ऑळु मुतल्–लौहदण्ड आदि; इत्तैय–ऐसे; एन्ति–हाथ में लेकर; कुत्तिय तिळैप्प–छेद लगाने पर; मीतिल् कुळुवित्त–आकाश में एकत्रित; मळै मा कॉण्टल्–वर्षा करनेवाले बड़े मेघ; पॉत्तु उकळ–जब विद्ध होकर गिराएँगे; पॉरुवु इल्–अनुपम; नल् नीर्–शुद्ध जल; चॉरिवन पोव पोल–जो गिराते जाते हैं, उनके समान; चित्तिर पताकै ईट्टम्–चित्रमयी पताकाओं की राशियाँ; तिचै तॉरुम्–सभी दिशाओं में; चॅरिव चॅल्ल–घने रूप से मिलकर गयीं। ८१९

वे चलने योग्य तीक्ष्ण भाले, कुन्त, लौहदण्ड आदि हाथों में लिये हुए चले। चारों दिशाओं में चित्रमय पताकाओं के घने वृन्द चले, जिनको देखकर ऐसा लगा मानो आकाशचारी मेघों में छेद लगे हों और मेघ उन छेदों द्वारा अनुपम शुद्ध जल बरसाते जा रहे हों। ८१९

पल्लियन् दुवैप्प नन्माप् पणिलङ्गण् मुरलप् पॉऱ्ऱेरच्
चिल्लिह ळिडिप्प वाशि शिरित्तिडच् चॅरिपॉऱ् ऱारुम्
विल्लुनिन् ऱिशैप्प यानै मुळक्कम्विट् टार्प्प विण्डोय्
ऑल्लॉलि वानिऱ् ऱेव रुरैदॅरि वॉळिक्क मन्नो 820

पल्लियम्–विविध वाद्यों के; तुवैप्प–बजते; नल् मा पणिलङ्कळ्–श्रेष्ठ और बड़े शंखों के; मुरल–बजते; पॉन् तेर् चिल्लिकळ्–स्वर्ण-रथों के पहियों के; इटिप्प–शब्द निकालते; वाचि चिरित्तिट–वाजियों के हिनहिनाते; चॅरि पॉन्–स्वर्णमय; तारुम्–हारों और; विल्लुम्–धनुओं के; निन्ऱु इचैप्प–स्थिर स्वन करते; यानै–गजों के; मुळक्कम् विट्टु आर्प्प–बड़े स्वर में चिंघाड़ते; विण् तोय्–आकाश को लगे; ऑल् ऑलि–बड़े शोर के; वानिन्–आकाश में; तेवर् उरै तॅरिवु–देवों की बोली को समझने में; ऑळिक्क–कठिन बनाते रहते। ८२०

विविध वाद्य बजते जा रहे थे। शंखनाद हो रहा था। स्वयं रथों के पहिये घरघराते जा रहे थे। वाजी हिनहिनाते जा रहे थे। स्वर्णमय हारों की घंटियाँ बज रही थीं और धनु की टंकार हो रही थी। हाथी चिंघाड़ते शोर मचा रहे थे। ऐसे बहुत से मिश्रित नाद आकाश में छाये और वह आकाश के देवों की बोली को अश्राव्य बना दिया। ८२०

मिन्नहु किरिहळ् यावु मेरुविन् विळङ्गित् तोन्ऱत्
तॉन्नहर् पिऱवु मॅल्लाम् बॉलिन्दन तुऱक्क मॅन्न
अन्नवन् शेनै शॅल्ल वार्हलि यिलङ्गै याय
पॉन्नहर् तहर्न्दु पॉङ्गि यार्त्तॅळु तूळि पोर्प्प 821

अन्नवन् चेनै–उसकी सेना के; चॅल्ल–चलने से; आर् कलि इलङ्कै आय–समुद्रवलयित लंका की; पॉन् नकर्–स्वर्ण-नगरी; तकर्न्तु–जर्जर होकर; आर्त्तु ऍळु–उससे शोर के साथ उठी; तूळि–धूल; पॉङ्कि–उठी और; पोर्प्प–छा गयी; मिन् नकु–प्रकाशमय; किरिकळ् यावुम्–सभी गिरियाँ; मेरुविन् विळङ्कि–मेरु-से (या मेरु से) प्रकाशमान; तोन्ऱ–दिखीं; तॉल् नकर्–प्राचीन नगर; पिऱवुम्

ॲल्लाम्–और अन्य सभी; तुरक्कम् ॲऩ्ऩ–स्वर्ण के समान (स्वर्णमय); पॊलिन्तत–चमके। ८२१

ऐसे उसकी सेना जब चली तब समुद्रावृत स्वर्णनगरी लंका पिसी और शब्द के साथ धूल जो उठी वह सब जगह छा गयी। इसलिए सारी प्रभामय गिरियाँ (स्वर्णमय) मेरु के समान लगीं और प्राचीन वह नगर और अन्य स्थल व पदार्थ स्वर्ग के समान बन गये। ८२१

आयिर मैन्दॊ डैन्दा माळियन् दडन्दे रत्तेर्क्
केयित्त विरट्टि यानै यानैयि ऩिरट्टि पाय्मा
पोयित्त पदादि शॊऩ्ऩ पुरवियि ऩिरट्टि पोलाम्
तीयवन् ऱडन्देर् शुऱ्ऱित् तॆऱ्ऱॆऩ्ऩच् चॆऩ्ऱ शेनै 822

तीयवन्–क्रूर (जम्बुमाली) के; तटम् तेर् चुऱ्ऱि–विशाल रथ को घेरकर; तॆऱ्ऱु ॲन्त–क्षिप्रगति से; चॆऩ्ऱ चेनै–जो गयी उस सेना में; ऐन्तोटु ऐन्तु आयिरम्–पाँच और पाँच (= दस) सहस्र; आळि अम् तटम तेर् आम्–पहियेदार सुन्दर बड़े रथ थे; अ तेर्क्कु–उन रथों के; इरट्टि एयित्त–दुगुने रहे; यानै–गज; यानैयिऩ् इरट्टि–गजों के दुगुने; पाय् मा–अश्व; पोयित्त पताति–जो पदाति वीर चले; चॊऩ्ऩ पुरवियिऩ्–उक्त अश्वों के; इरट्टि पोल् आम्–दुगुने हैं। ८२२

क्रूर जम्बुमाली के विशाल रथ को घेरे बड़ी सेना गयी। उसमें दस सहस्र पहियोंदार रथ, उनके दुगुने गज और उनके दुगुने अश्व थे। पदाति वीर उनके दुगुने थे। ८२२

विल्मरैक् किळवर् नाना विज्जैयर् वरत्तिन् मिक्कार्
वन्मरक् कण्ण राऱ्ऱल् वरम्बिला वयिरत् तोळार्
तॊन्मरक् कुलत्तर् तूणि तूक्किय पुऱत्तर् मार्बाम्
कन्मरैत् तॊळिरुञ् जॆम्बॊऩ् कवशत्तर् कडुन्दे राळर् 823

कटुम् तेराळर्–वेगवान रथी; विल् मरै किळवर्–धनुर्विद्या-विशारद; नाना विज्चैयर्–विविध कलाविद; वरत्तिऩ् मिक्कार्–बड़े-बड़े वरों के धनी; वन् मऱ कण्णर्–कठोर वीरता-प्रदर्शक नेत्रों वाले; वरम्पु इला–असीम; आऱ्ऱल्–शक्तिमान; वयिर तोळार्–वज्रस्कन्ध; तॊल् मऱ कुलत्तर्–प्राचीन वीरकुल में जनमे; तूणि तूक्किय–तूणीर-बँधी; पुऱत्तर्–पीठ वाले; मार्पु आम् कल्–वक्ष रूपी गिरि को; मऱैत्तु–छिपाते हुए; ऒळिरुम्–शोभायमान; चॆम् पॊऩ् कवचत्तर्–लाल स्वर्ण-कवचधारी। ८२३

रथी वीर तीव्र गति में रथ चला सकनेवाले थे। उन्हें धनुर्विद्या के अलावा अन्य नाना विद्याएँ भी आती थीं। उन्हें अनेक वर प्राप्त थे। उनकी आँखें वीरता-प्रदर्शक थीं और कन्धे वज्र-सम सुदृढ़। वे प्राचीन वीरों के कुल में जनमे थे। पीठ पर तूणीर बाँधकर और वक्ष पर लाल स्वर्ण-कवच पहने (जा रहे) थे। ८२३

पॉरुदिशै यानै यूरुम् पुनिदरैप् पॉरुवुम् पॉऱ्पर्
शुरिपडैत् तॉऴिलु मऱ्ऱै यङ्गुशत् तॉऴिलुन् दॉक्कार्
निरुदियिऱ् पिऱन्द वीरर् नॅरुप्पिडै पॉऴियुम् कण्णर्
परिदियिऱ् पॉलियु मॅय्यर् पडुमदक् कळिऱ्ऱिन् पाहर् 824

पटु मत कळिऱ्ऱिन्–स्रवणशील मद वाले गजों के; पाकर्–चलानेवाले वीर; पॉरु तिचै यानै–युद्धतत्पर दिग्गजों पर; ऊरुम्–सवारी करनेवाले; पुनितरै–पवित्र दिग्पालों की; पॉरुवुम्–समता करनेवाले; पॉऱ्पर्–शोभा वाले; चुरि पटै तॉऴिलुम्–तलवार की लड़ाई में; मऱ्ऱै–और; अङ्कुच तॉऴिलुम्–अंकुश-कर्म में (गज चलाने में); तॉक्कार्–निपुण; निरुतियिन्–(दक्षिण-पश्चिम दिशा की पालिका देवी) निऋृति के; पिऱन्त वीरर्–जनाए वीर; नॅरुप्पु इटै पॉऴियुम्–रह-रहकर आग बरसानेवाले; कण्णर्–नेत्रों के; परितियिल्–सूर्य के समान; पॉलियुम् मॅय्यर्–शोभित शरीर वाले। ८२४

स्रवणशील मदनीर के गजों के वीर युद्धोत्साही दिग्गजों के पालकों के समान सौन्दर्ययुक्त थे। तलवार लेकर युद्ध करने में और वैसे ही अंकुश लेकर (गज चलाते हुए) लड़ने में भी निपुण थे। दक्षिण-पश्चिम दिशा की (पालिका) निऋृति के वंशज थे। [इसी निऋृति का पुत्र था नैऋृति या जिसके वंशज तमिऴ में निरुदर्हळ और (संस्कृत) हिन्दी में नऋृत कहते हैं। नैऋृति को भी दिग्पालक कहा गया है, कहीं-कहीं।] उनकी आँखें आग बरसाती थीं और उनके शरीर सूर्य के समान तेजोवान थे। ८२४

एर्हॅळु तिशैयुञ् जारि पदिनॅट्टु मियल्बि नॅण्णिप्
पोर्हॅळु पडैयुङ् गऱ्ऱ वित्तहप् पुलवर् पोरिल्
तेर्हॅळु मऱवर् यानैच् चेवहर् तिऱत्तिऩ् चॅल्लुम्
तार्हॅळु पुरवि यॅन्नत् तम्मनन् दावप् पोनार् 825

एर् कॅऴु तिचैयुम्–गम्य दिशाओं और; चारि पतिनॅट्टुम्–अठारह तरह की अश्वचर्याएँ; इयल्पिल् ऍण्णि–यथाक्रम विचारकर; पोर् कॅऴु–युद्धप्रयुक्त; पटैयुम् कऱ्ऱ–हथियार चलाना जिन्होंने सीखा था; वित्तक पुलवर्–वे विद्यापारंगत; पोरिल्–युद्ध में; तेर् कॅऴु मऱवर्–रथ चलानेवाले वीरों और; यानै चेवकर्–गज चलानेवाले वीरों के; तिऱत्तिल्–समान प्रकार में; चॅल्लुम्–जानेवाले; तार् कॅऴु पुरवि ऍन्न–घंटियों-सहित हारों से अलंकृत अश्वों के ही समान; तम् मनम् ताव–अपने मनों के लपकते चलते; पोनार्–जा रहे थे। ८२५

अश्वसेना के वीर अपनी गम्य दिशाओं और अश्वों की अठारह विध गतियों का, और खूब सोच-समझकर युद्धायुधों को चलाने का अपार ज्ञान रखनेवाले विद्वान् थे। वे भी रथी वीरों और गजसेना के वीरों के समान प्रकार से अपने ही घंटियों-सहित हार से अलंकृत अश्वों के समान अपने मन के लपककर चलते आगे बढ़ते गये। ८२५

अन्नॅडुन् दातै शुर्र् वमररै यच्चञ् जुर्रप्
पॉन्नॅडुन् देरिर् पोत्तान् पॉरुप्पिडै नॅरुप्पिर् पॉङ्गित्
तन्नॅडुङ् गण्गळ् कान्दत् तमनियक् कवश मार्बिन्
मिन्निड वॅयिलुम् वीश विल्लिडु मॅयिर्रु वीरन् 826

विल् इटुम्–प्रकाश निकालनेवाले; ॲयिर्रु वीरन्–दंतोरा वीर; पॉरुप्पु इटै–पर्वतमध्य; नॅरुप्पिल् पॉङ्कि–आग के समान भभककर; तन् नॅटुम् कण्कळ्–अपनी दीर्घ आँखों को; कानृत–तेज से भरते हुए; तमनिय कवचम्–स्वर्ण-कवच के; मार्पिन् मिन्निट–वक्ष पर चमकते; वॅयिलुम् वीच–धूप के समान प्रकाश भी छिटकाते; अ नॅटुम् तानै चुर्र–(चतुर्विधा) सेना के घेरते आते; अमररै–देवों को; अच्चम् चुर्र–भय के घेरते; पॉन् नॅटुम् तेरिल्–स्वर्ण के बड़े रथ में; पोनान्–गया (जम्बुमाली)। ८२६

उज्ज्वल दाँत वाला जम्बुमाली पर्वत-मध्य उठती आग के समान अपनी आँखों से आग उगलते हुए बड़े रथ पर सवार हो गया। उसके वक्ष पर स्वर्ण-कवच चमक रहा था। वह कवच गर्मी भी उगल रहा था। उसके चारों ओर वह बड़ी सेना जा रही थी। इसका साज देखकर देवतागण दहशत खा रहे थे। ८२६

नन्दन वनत्तु णिन्र नायहन् तूदन् रानुम्
वन्दिल ररक्क रॅन्नु मनत्तिनन् वळियै नोक्किच्
चन्दिरन् मुदल वान मीनॅलान् दळुव निन्र
इन्दिर तनुविर् रोन्रुन् दोरण मिवर्न्दु निन्रान् 827

नन्तन वनत्तुळ् निन्र–नन्दन वन में जो खड़ा रहा; नायकन् तूतन् तानुम्–नायक श्रीराम का दूत वह हनुमान भी; वन्तिलर् अरक्कर्–नहीं आये राक्षस; ॲन्नुम् मनत्तिनन्–ऐसा सोचनेवाले मन का होकर; वळियै नोक्कि–रास्ता देखते हुए; चन्तिरन्–चन्द्र के; मुतलवान मीन् ॲलाम्–आदि सभी नक्षत्रों; तळुव निन्र–के साथ स्थित; इन्तिर तनुविल्–इन्द्रधनुष के समान; तोन्रुम्–दिखनेवाले; तोरणम्–तोरण पर; इवर्न्तु निन्रान्–चढ़कर खड़ा रहा। ८२७

उधर नन्दनवन में महावीर हनुमान बैठे हुए यह सोच रहा था कि अभी कोई वीर क्यों लड़ने नहीं आया? वह एक तोरण पर चढ़ा बैठा वह तोरण उस इन्द्रधनुष के समान था, जो चन्द्र और अन्य नक्षत्रों के मध्य; शोभ रहा हो। ८२७

केळिरु मणियुम् बॉन्नुम् विशुम्बिरुळ् किळित्तु नोक्कुम्
ऊळिरुङ् गदिर्ह ळोडुन् दोरणत् तुम्बर् मेलान्
शूळिरुङ् गदिर्ह ळॅल्लान् दॉक्किडच् चुडरुञ् जोदि
आळियि नडुवट् टोन्रु मरुक्कनै यन्नैय नानान् 828

केळ् इरु मणियुम्–रंगीन रत्न; पॉन्नुम्–और स्वर्ण; विचुम्पु इरुळ्–आकाश के

अँधेरे को; किऴिन्तु नीक्कुम्–विदीर्ण कर हटानेवाली; ऊऴ् इरुम् कतिर्कळोटु–पक्की और बड़ी किरणों के साथ रहे; तोरणत्तु उम्पर् मेलान्–तोरण पर जो रहा; चूऴ् इरुम् कतिर्कळ् ऍल्लाम्–उसको घेरे सभी ज्योतिपुञ्जों के; तोक्किट–मिले रहते; आऴियिन् नट्टुवण् तोन्ऱुम्–समुद्रमध्य दिखनेवाले; चुटरुम् चोति अरुक्कते–ज्योतिर्मय किरणमाली अर्क के ही; अतैयन् आनान्–समान बना। ८२८

वह तोरण चमकीले रंगीन रत्नों और स्वर्ण के साथ आकाश के अन्धकार को चीरकर हटानेवाले प्रकाश की पक्की किरणों से संयुक्त था। उस पर विद्यमान वह समुद्र-मध्य प्रकाशमान सूर्य के समान लगा, जिसके चारों ओर उसकी किरणें फैली हों। ८२८

शॅल्लॊडु मेहत्ऩ् जिन्दत् तिरैक्कडल् शिलैप्पुत् तीरक्
कल्लळै किडन्द नाह मुयिरॊडु विडमुङ् गालक्
कॊल्लिय लरक्कर् नॆञ्जिर् कुडिपुह वच्चम् वीरन्
विल्लॆन विडिक्क विण्णोर् नडुक्कुर वीर ऩार्त्तान् 829

चॆल् ऒटु–गाजों के साथ; मेकम् चिन्त–मेघ गिरकर छितरे; तिरै कटल्–तरंगमय सागर; चिलैप्पु तीर–गर्जन त्याग चुका; कल् अळै किटन्त नाकम्–चट्टानों के बिलों में पड़े रहे सर्पों ने; उयिर् ओटु विटमुम् काल–प्राणों के साथ विष को भी उगल दिया; कॊल्लियल्–परांतक; अरक्कर् नॆञ्चिल्–राक्षसों के दिलों में; अच्चम्–भय ने; कुटि पुक–अड्डा बना लिया; विण्णोर् नटुक्कु उऱ–देव काँप उठे; वीरन् विल् ऍन्न–(इन सबका हेतु बनाते हुए) वीर श्रीराम के धनु (कोदण्ड) के समान; इटिक्क–शोर मचाते हुए; वीरन् आर्त्तान्–महावीर (हनुमान) ने गर्जन किया। ८२९

तब वीर हनुमान ने ऐसा श्रीराम-धनु की टंकार के समान गर्जन किया कि मेघ वज्रों के साथ गिर पड़े; तरंगायमान समुद्र रवहीन बन गया। पर्वत की दरारों में रहे साँपों ने अपने प्राण रक्त के साथ वमन कर लिये! परसंहारक राक्षसों के मन में भय ने घर कर लिया। और देवगण भी दहशत खा गये। ८२९

निन्ऱन तिशैक्कण् वेऴ नॆडुङ्गळिच् चॆरुक्कु नीङ्गत्
तॆन्ऱिशै नमनु मुळ्ळन् दुणुक्कॆनच् चिन्द वानिल्
पॊन्ऱलिन् मीन्ग ळॆल्लाम् पूवॆन वुदिरप् पूवुम्
कुन्ऱमुम् बिळक्क वेलै तुळक्कुऱक् कॊट्टि ऩान्ऱोळ् 830

तिचै कण् निन्ऱन–दिशाओं में जो खड़े रहे; वेऴम्–उन गजों के; नॆट्टुम् कळि चॆरुक्कु–अधिक मदमत्तता से उत्पन्न गर्व को; नीङ्क–दूर करते हुए; तॆन् तिचै नमनुम्–दक्षिण दिशा के देवता यम के भी; तुणुक्कु ऍन–दहलकर; उळ्ळम् चिन्त–मन के विदीर्ण होते; वानिल्–आकाश में; पॊन्ऱल् इल्–अविनश्वर; मीन्कळ् ऍल्लाम्–सभी नक्षत्र; पू ऍन उतिर–फूलों के समान चू पड़े; पूवुम् कुन्ऱमुम् पिळक्क–भूमि और पर्वत दलक गये; वेलै तुळक्कु उऱ–समुद्र मथ गया; तोळ् कॊट्टिनान्–(इन सबको होने देते हुए) हनुमान ने कन्धे ठोंके। ८३०

हनुमान ने अपने कन्धे ठोंके, जिससे दिग्गजों के मदमत्तता से उत्पन्न गर्व चूर हो गये। दक्षिणी दिशा के पालक यम का भी मन दहल उठा। आकाश के अविनश्वर नक्षत्र सभी फूलों के समान गिर गये। भूमि और पर्वत दलक गये। समुद्र विलोडित हो गये। ८३०

अव्वऴि यरक्क रॅल्ला मलैनॅडुङ् गडलि नार्त्तार्
शॅव्वऴिच् चेऱ लाऱ्ऱार् पिणप्पॅरुङ् गुन्ऱन् दॅऱ्ऱि
वॅव्वऴिक् कुरुदि वॅळ्ळम् बुडैमिडैन् दुयर्न्दु वीङ्ग
ॲव्वऴिच् चेरु मॅन्ऱार् तमरुडम् बिडऱि वीऴ्वार् 831

अ वऴि–तब; अरक्कर् ॲल्लाम्–सभी राक्षसों ने; अलै नॅटुम् कटलित्–तरंगायमान विशाल सागर के समान; आर्त्तार्–नारे निकाले; चॅम् वऴि–सीधे मार्ग से; चेरल् आऱ्ऱार्–जा नहीं सके; पिण पॅरुम् कुन्ऱम्–बड़े शव-पर्वतों से; तॅऱ्ऱि–ठोकर खाकर; वॅम् वऴि–भयंकर मार्ग में; कुरुति वॅळ्ळम्–(आया) रक्तप्रवाह; पुटै मिटैन्तु–पार्श्व में अधिक हो; उयर्न्तु वीङ्क–बढ़ा और ऊँचा उठा; ॲ वऴि चेरुम्–किस मार्ग से जाएँ; ॲन्ऱार्–इसमें भ्रम करते हुए; तमर्–अपनों के; उटम्पु इटऱि–शवों से ठोकर खाकर; वीऴ्वार्–गिरे। ८३१

तब सभी राक्षसों ने मिलकर तरंगायमान विशाल समुद्र के समान नर्दन किया। वे सीधे मार्ग से जा नहीं सके, क्योंकि मार्ग में शवों के पर्वत-सम ढेर पड़े थे। उनसे ठोकर खा गये। पार्श्व में और सामने भयंकर मार्ग में रक्त बहा, बढ़ा और भयंकर बाढ़ बना। किस तरह समराजिर जायँगे? इस संशयजनित हड़बड़ाहट में वे अपने ही लोगों के शवों से ठोकर खाकर गिरते जा रहे थे। ८३१

आण्डुनिन् ऱरक्कन् वॅव्वे ऱणिवहुत् तन्िहन् दन्नै
मूण्डिरु पुडैयु मुन्नु मुरैमुरै मुडुह वेवित्
तूण्डिनन् ऱानुन् दिण्डेर् तोरणत् तिरुन्द शूरन्
वेण्डिय दॅदिर्न्द दॅन्न वीङ्गितन् विशयत् तिण्डोळ् 832

अरक्कन्–राक्षस जम्बुमाली ने; आण्टु निन्ऱु–वहाँ से; अनिकम् तन्नै–सेना को; वॅव्वेऱु अणि वकुत्तु–अलग-अलग पलटनों में विभाजित करके; इरु पुटैयुम्–दोनों पार्श्वों में; मुन्नुम्–और सामने; मूण्टु–कूच कर; मुरै मुरै मुटुक–दलों में जाने को; एवि–आज्ञा देकर; तानुम्–स्वयं; तिण् तेर् तूण्टिनन्–अपना प्रबल रथ चलाया; तोरणत्तु इरुन्त–तोरण पर जो रहा; चूरन्–उस शूर ने; वेण्टियतु ॲतिर्न्ततु–मन-वाञ्छित मिल गया; ॲन्न–समझकर; विचय तिण् तोळ्–विजयी सुदृढ़ कन्धों को; वीङ्कितन्–फुला दिया। ८३२

जम्बुमाली ने वहाँ अपनी सेना को पलटनों में बाँटकर व्यूह बना लिये। उसके दोनों पार्श्वों में आगे और पीछे सेना के भाग आने लगे। वह इनके मध्य अपना सबल रथ चलाता गया। तोरणद्वार पर जो बैठा

रहा, उस हनुमान ने यह देखा और हमारा मनचाहा युद्ध आ गया, इस विचार से उसके कन्धे फूल उठे। ८३२

ऐयनु मर्मैनुदु निन्ऱा ऩाऴियान् ऱळवि नाऱ्ऱल्
नॅय्शुडर् विळक्किऩ् ऱोऩ्ऱुम् नॅऱ्ऱियें नॅऱ्ऱि याह
मॅय्म्मयिर्च् चेनै पॊङ्ग मुरणमै युहिर्वाण् मॊय्त्त
कैहळे कैह ळाहक् कडैक्कुळै तिरुवा लाह 833

आऴियान्–चक्रधारी (श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम) का; अळवु इल् आऱ्ऱल्–अपार बलवान; ऐयनुम्–सम्मान्य (हनुमान) भी; नॅय् चुटर् विळक्किल्–घी डालकर जलाये गये दीप के; तोन्ऱुम्–समान दिखनेवाले; नॅऱ्ऱिये–भाल को ही; नॅऱ्ऱि आक–अग्रगामी सेना बनाकर; मॅय् मयिर्–शरीर के बालों के ही; चेनै पॊङ्क–सेना के वीरों के समान खड़े रहते; मुरण् अमै–सबल; उकिर् वाळ्–नख रूपी तलवारें; मॊय्त्त कैकळे–जिनमें लगी थीं, उन हाथों को; कैकळाक–पार्श्व की सेनाएँ बनाकर; तिरु वाल्–सुन्दर पूंछ को; कटै कुळै आक–पिछले भाग की सेना बनाकर; अमैनुतु निन्ऱान्–सम्पूर्ण व्यूह बना खड़ा रहा। ८३३

हनुमान की सेना के व्यूहों की विचित्रता देखिए। चक्रधारी (श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम) के उस अतिबली महावीर दूत का घृत की दीप की ज्वाला के समान ज्वलन्त भाल ही आगे की पलटन बना।) उसके शरीर के घने बाल ही सेना के वीर थे। सुदृढ़ नाखून रूपी तलवारों से युक्त उसके दोनों हाथ दोनों ओर की पलटनें बने। उसका मनोरम लांगूल ही पीछे आनेवाली सेना बनी। ८३३

वयिर्हळ्वाल् वळैहळ् विम्म वरिशिलै शिलैप्प मायाप्
पयिर्हळार्प् पॅडुप्प मूरिप् पल्लियङ् गुमुऱप् पऱ्ऱिच्
चॅयिर्हॊळ्वा ळरक्कर् शोऱ्ऱञ् जॅरुक्किऩर् पडैहळ् शिन्द
वॅयिल्हळ्पो लॊळिहळ् वीश वीरऩ्मेऱ् कडिदु विट्टार् 834

वयिर्कळ्–तुरहियाँ और; वाल् वळैकळ् विम्म–और सफ़ेद शंख बज उठे; वरि चिलै चिलैप्प–सबन्ध धनु के डोरे की टंकार उठी; माया पयिर्कळ्–पक्षियों का निरन्तर कलरव; आर्प्पु ऍटुप्प–उच्च स्वर में सुनायी दिया; मूरि पल्लियम्–जोरदार अनेक बाजे; कुमुऱ–नाद कर उठे; चॅयिर् कॊळ्–द्वेष-भरे; वाळ् अरक्कर्–तलवारधारी राक्षस; चीऱ्ऱम् चॅरुक्कितर्–क्रोधोन्मत्त होकर; वॅयिल्कळ् पोल्–धूप के समान; ऑळिकळ् वीच–प्रकाश निकालते हुए; पटैकळ् पऱ्ऱि–हथियार पकड़कर; चिन्त–फेंकते हुए; वीरन् मेल्–महावीर हनुमान पर; कटितु विट्टार्–तेजी से चलाये। ८३४

तब तुरहियाँ और श्वेत शंख बज उठे। धनु की टंकारें उठीं। पक्षियों का कलरव उच्च हुआ। विविध वाद्य घुमर उठे। द्वेषपूर्ण

राक्षसों ने कोपाक्रान्त होकर धूप के समान गरम प्रकाश छितराते हुए जानेवाले हथियार लेकर महावीर पर बरसा दिये। ८३४

करुङ्गऴ लरक्करतम् बडैक्कलङ् गरत्ताल्
पॅरुङ्गड लुऱप्पुडैत् तिऱुत्तुहप् पिशैन्दान्
विरिन्दन पॉऱिक्कुल नॅरुप्पॅन वॅहुण्डाण्
डिरुन्दवत् किडन्ददो रॅऴुत्तरिन् दॅडुत्तान् 835

आण्टु इरुन्तवन्–वहाँ जो रहा; करुम् कऴल्–बड़ी-बड़ी पायलधारी; अरक्कर् तम् पटॅक्कलम्–राक्षसों के हथियारों को; पॅरुम् कटल् उऱ–बड़े सागर में चले जायँ, ऐसा; करत्ताल्–अपने हाथों से; पुटॅत्तु–पीटकर; इऱुत्तु–तोड़कर; उक पिचॅन्तान्–(हनुमान ने) चूर करते हुए पीस दिया; विरिन्तन–जो फैलती है; पॉऱि कुल नॅरुप्पु ॲन–अंगारों की राशियों के साथ आग के समान; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; किटन्ततु ओर् ॲऴु–वहाँ जो पड़ा रहा, उस लौहदण्ड को; तॅरिन्तु–चुनकर; ॲटुत्तान्–लिया। ८३५

महावीर ने, जो वहाँ बैठा था, उन बड़ी वीरपायल-धारी राक्षसों के हथियारों को पकड़ा, तोड़ा, पीसा और समुद्र में जा गिरें, ऐसा उछाल दिया। तब अंगारे-मध्य आग के समान (या "पॉऱि" के भ्रमर और अंगारे दो अर्थ होने से—भ्रमरों को उड़ाते हुए) क्रुद्ध बने उसने वहाँ पड़े रहे एक लौहदण्ड को चुन लिया। ८३५

इरुन्दन ॲऴुन्दन इऴिन्दन उयर्न्दान्
तिरिन्दनन् पुरिन्दन नॅन्ननि तॅरियार्
विरिन्दवर् कुविन्दवर् विलङ्गिनर् कलन्दार्
पॉरुन्दिनर् नॅरुङ्गिनर् कळम्बडप् पुडैत्तान् 836

इरुन्ततन्–जो बैठा रहा; ॲऴुन्ततन्–उठा; इऴिन्ततन्–उतरा; उयर्न्तान्–तना; तिरिन्ततन्–घूमा; पुरिन्ततन्–युद्ध किया; ॲन्न–ऐसा; नन्नि तॅरियार्–ठीक जो जान नहीं सके; विरिन्तवर्–ऐसा फैले; कुविन्तवर्–एकत्र हुए; विलङ्किनर्–अलग हुए; कलन्तार्–मिले; पॉरुन्तिनर्–युद्ध में लगे रहे; नॅरुङ्किनर्–सटे खड़े रहे; कळम् पट–(उन सभी को) खेत रहने देकर; पुटैत्तान्–पीटकर मार दिया। ८३६

जो बैठा रहा वह उठा, नीचे उतरा और तनकर सीधा हुआ। वह कहाँ रहता, कहाँ घूमता और युद्ध करता है, यह न जानते हुए राक्षस सर्वत्र फैले, इकट्ठे हुए और हटे और सटे। युद्ध में लगे और पास आ जुटे। उन सबको हनुमान ने खूब आहत कर खेत रहने दिया। ८३६

ऍऱिन्दन वॅय्दन विडिक्कुमुरु मॅन्नच्
चॅऱिन्दन पडैक्कल मिडक्कॅयिऱ् चिदैत्तान्

मुऱिन्दन दॆरुङ्गरि मुडिन्दन तडन्देर्
मऱिन्दन परित्तिरळ् वलक्कैयिल् मलैक्क 837

ऍऱिन्तन-जो फेंके गये; ऍय्तन-जो चलाये गये; इटिक्कुम् उरुम् ऍऩ्ऩ-टूटनेवाली अशनि के समान; चॆऱिन्तन-सटे जो रहे; पटैक्कलम्-उन हथियारों को; इट कैयिन्-बायें हाथ से; चितैत्तान्-छिन्न-भिन्न कर दिया; वल कैयिन् मलैक्क-दायें हाथ से युद्ध करने पर; तॆरुम् करि-युद्धसमर्थ गज; मुऱिन्तन-टूटकर मरे; तटम् तेर्-विशाल रथ; मुटिन्तन-मिटे; परि तिरळ्-अश्ववृन्द; मऱिन्तन-गिरकर मरे। ८३७

राक्षसों ने जो हथियार फेंके, जिनको चलाया और जो अशनि के समान सामने आये, उन सब हथियारों को हनुमान ने अपने बायें हाथ से बेकार कर दिया। दाहिने हाथ से पीटकर शत्रुसंहारक गजों को मरोड़ दिया। बड़े-बड़े रथ भी मिट गये। अश्ववृन्द भी टूट गिरे और मरे। ८३७

नॆरिन्दन तडञ्जुवर् नॆरिन्दन पॆरुम्बार्
नॆरिन्दन नुहम्बुडै नॆरिन्दन वदन्गाल्
नॆरिन्दन कॊडिञ्जुह णॆरिन्दन वियन्ऱार्
नॆरिन्दन कडुम्बरि नॆरिन्दन नॆडुन्देर् 838

तटम् चुवर्-(रथों की) बड़ी भित्तियाँ; नॆरिन्तन-दलक गयीं; पॆरुम् पार्-बड़े पाट; नॆरिन्तन-चिर गये; नुकम् पुटै नॆरिन्तन-कूबर टूटे; अतन् काल्-उनके पहिये; नॆरिन्तन-दलक गये; कॊटिञ्चुकळ्-पीठ; नॆरिन्तन-टूटे; वियन् तार्-श्रेष्ठ हार; नॆरिन्तन-टूटे; कटुम् परि नॆरिन्तन-तीव्रगति अश्व पिस गये; नॆटुम् तेर् नॆरिन्तन-बड़े रथ दलक गये। ८३८

रथों की भित्तियाँ, पाट, और कूबर सब दलक गये। उनके पहिये टूटे। आसन टूटे। श्रेष्ठ घंटियोंदार दाम टूटे। तीव्रगामी अश्व टूट मरे। इस भाँति बड़े-बड़े रथ मिट गये। ८३८

इऴन्दन नॆडुङ्गॊडि यिऴन्दन विरुङ्गो
डिऴन्दन नॆडुङ्गर मिऴन्दन वियन्ऱाळ्
इऴन्दन मुऴङ्गॊलि यिऴन्दन मदम्बा
डिऴन्दन पॆरुङ्गद मिरुङ्गवु ळियानै 839

इरुम् कवुळ् यानै-बड़े गण्डस्थल वाले गज; नॆटुम् कॊटि-दीर्घ ध्वजाओं से; इऴन्तन-हीन हो गये; इरुम् कोटु-बड़े दाँत; इऴन्तन-खो गये; नॆटुम् करम्-लम्बी सूँड़ों से; इऴन्तन-हीन हो गये; वियन् ताळ्-श्रेष्ठ पैर; इऴन्तन-खो गये; मुऴङ्कु ऒलि-चिंघाड़ने का स्वर; इऴन्तन-खो गये; मतम् पाटु इऴन्तन-मदजल निकाल बहाना छोड़ गये; पॆरुम् कतम्-अपना बड़ा रोष; इऴन्तन-खो गये। ८३९

बड़े-बड़े गालों वाले गजों पर की ध्वजाएँ ध्वस्त हुईं और वे ध्वजाहीन हो गये। वे दाँतों, सूँड़ों और बड़े पैरों से भी विहीन हो गये। उनकी

चिंघाड़ने की शक्ति भी छूट गयी। मद का बहना भी रुक गया। उनका क्रोध भी उन्हें छोड़ गया। ८३९

ऑडिन्दत्त वुरुण्डत्त वुलन्दत्त पॉलत्तार्
इडिन्दत्त ॲरिन्दत्त नॅरिन्दत्त ॲळुन्दाळ्
मडिन्दत्त मरिन्दत्त मुरिन्दत्त वयप्पोर्
पडिन्दत्त मुडिन्दत्त किडन्दत्त परिमा 840

परिमा–अश्व; ऑटिन्तत्त–टूटे; उरुण्टत्त–लुढ़के; उलन्तत्त–मरे; पॉलन् तार्–उनके स्वर्ण-दाम (घंटियों वाले); इटिन्तत्त–खण्ड-खण्ड हुए; ॲरिन्तत्त–जले; नॅरिन्तत्त–पिसे; ॲळुम् ताळ्–उठने को उद्यत अश्वों के पैर; मटिन्तत्त–मुड़े; मुरिन्तत्त–विकृत हुए; मुरिन्तत्त–टूटे; वय पोर्–कठोर युद्ध में; पटिन्तत्त–भूमि पर गिरे; मुटिन्तत्त–मरे; किटन्तत्त–पड़े रहे। ८४०

अश्ववृन्द मरोड़ खाकर लोटे और मरे। उनके स्वर्णमय दाम टूटे, जले और छितर गये। कुछ अश्व उठने लगे तो उनके पैर मुड़ गये, विकृत हुए और टूट गये। घोर युद्ध में वे भूमि पर गिरे, मरे और पड़े रहे। ८४०

वॅहुण्डत्तर् वियन्दत्तर् विळुन्दत्त ॲळुन्दार्
मरुण्डत्तर् मयङ्गित्तर् मरिन्दत्त रिरन्दार्
उरुण्डत्त रुलैन्दत्त रुळैन्दत्तर् कुळैन्दार्
शुरुण्डत्तर् पुरण्डत्तर् तॉलैन्दत्तर् मलैन्दार् 841

मलैन्तार्–(हनुमान से) जो भिड़े थे; वॅरुण्टत्तर्–(उनमें कुछ) भयातुर हुए; वियन्तत्तर्–विस्मित हुए; विळुन्तत्तर्–भूमि पर लोट गये; ॲळुन्तार्–उनमें कुछ उठे; मरुण्टत्तर्–भ्रमित हुए; मयङ्कित्तर्–बेहोश हुए; मरिन्तत्तर्–औंधे गिरे; इरन्तार्–मरे; उरुण्टत्तर्–(और कुछ) लुढ़के; उलैन्तत्तर्–पीड़ा का अनुभव किया; उळैन्तत्तर्–मुरझाये; कुळैन्तार्–पिसकर मर गये; चुरुण्टत्तर्–(और कुछ) गोल हुए; पुरण्टत्तर्–लोटे; तॉलैन्तत्तर्–मरे। ८४१

हनुमान से जो भिड़े, वे भयातुर हुए, विस्मित हुए और धराशायी हुए। कुछ लोग उठे पर वे भ्रान्त हुए, बेहोश हुए और औंधे गिरे। कुछ लोग लोटे, मुरझाये और पिस गये। कितने ही लुढ़के, लोटे और मिट गये। ८४१

करिहॉडु करिहळैक् कळप्पडप् पुडैत्तान्
परिहॉडु परिहळैत् तलत्तिडैप् पडुत्तान्
वरिशिलै वयवरै वयवरित् मडित्तान्
निरैमणित् तेर्हळैत् तेर्हळि तॅरित्तान् 842

करि कॉटु–गजों से ही; करिकळै–गजों को; कळप्पट–खेत रहें, ऐसा;

पुटैत्ततान्–प्रहार किया; परि कॊट्टु–अश्वों से ही; परिकळै–अश्वों को; तलत्तु इटै–भूमि पर; पट्टुत्तान्–सुला दिया; वरि चिलै वयवरै–सबन्ध धनुर्धरों को; वयवरिन् मटित्तान्–वीरों से मारकर ही निपाता; निरै मणि तेर्कळै–पंक्तियों में मणियों से अलंकृत रथों को; तेर्कळिन् नॆरित्तान्–रथों से ही चूर कर दिया। ८४२

हनुमान ने गजों को गजों द्वारा पिटवाकर मार दिया। अश्वों को अश्वों से प्रहरित करके धराशायी बना दिया। सबन्ध धनुर्धरों को वीरों से पिटवाकर निपाता। पंक्तियों में मणियों से अलंकृत रथों को रथों से आहत करके तहस-नहस कर दिया। ८४२

मूळैयु मुदिरमु मुळङ्गिरुङ् गुळम्बाय्
मीळरुङ् गुळैपडक् करिविळुन् दळुन्दत्
ताळॊडुन् दलैयुहत् तडनॆडुङ् गिरिपोल्
तॊळॊडु निरुदरै वाळॊडुन् दुहैत्तान् 843

मूळैयुम्–भेजा; उतिरमुम्—और रक्त; मुळङ्कु–शब्दित; इरुम्–विपुल; कुळम्पाय्–मिश्रण बनकर; मीळ् अरुम्–जिससे बाहर आना असाध्य हो, ऐसा; कुळै पट–कर्दम बने; करि विळुन्तु अळुन्त–गज गिरकर मग्न हुए; ताळॊटुम्–पैरों के साथ; तलै उक–सिर बिखरे; तट नॆटुम् किरि पोल्–विशाल और ऊँचे पर्वतों के समान; निरुतरै राक्षसों को; तोळॊटुम्–कन्धों के साथ; वाळॊटुम्–और तलवारों के साथ; तुकैत्तान्–रौंद दिया। ८४३

भेजे और रुधिर मिश्रित हुए और ऐसा कर्दम बन गये कि उसमें गिरे लोग बाहर निकल नहीं सकें। उसमें गज गिरे और मरे। हनुमान ने पैरों और सिरों को तोड़कर बड़े और ऊँचे पर्वतों-जैसे राक्षसों को उनके कन्धों और तलवारों के साथ रौंद दिया। ८४३

मल्लॊडु मलैमलैत् तोळरै वळैवायप्
पल्लॊडु नॆडुङ्गरप् पहट्टॊडुम् बरुन्दाळ्
विल्लॊडु मयिलॊडुम् विऱलॊडुम् विळिक्कुम्
शॊल्लॊडु मुयिरॊडु निलत्तॊडुन् दुहैत्तान् 844

मल्लॊटु मलै–मल्लयुद्ध से लड़नेवाले; मलै तोळरै–पर्वत-से कन्धों के राक्षसों को; वळै वाय् पल्लॊटुम्–वक्र मुख के दाँतों के साथ; नॆटुम्–लम्बे; पकट्टु करम् ऒटुम्–कठोर हाथों से; परुम् ताळ्–मोटे बाजुओं के; विल्लॊटुम्–धनुओं के साथ; अयिलॊटुम्–शक्तियों के साथ; विऱलॊटुम्–वीरता के साथ; विळिक्कुम् चॊल्लॊटुम्–उच्चरित शब्दों के साथ; उयिरॊटुम्–प्राणों के साथ; निलत्तॊटुम्–भूमि के साथ; तुकैत्तान्–रौंद दिया। ८४४

हनुमान ने मल्लयुद्ध करके पर्वत-स्कन्ध राक्षसों को वक्र दाँतों, बड़े और सबल हाथों, मोटे कोरों के चापों, शक्तियों, वीरता, उच्च स्वर और उनके प्राणों के साथ भूमि पर पटककर रौंद दिया। ८४४

पुहैनॅडुम् बॉरिपुहुन् दिशैतॉरुम् बॉलिन्दान्
चिहैनॅडुज् जुडर्विडुन् देर्तॉरुज् जॅन्रान्
तहैनॅडुङ् गरिदॉरुम् बरितॉरुञ् जरित्तान्
नहैनॅडु पडैदॉरुन् दलैदॉरु नडन्दान् 845

पुकै–धुएँ के साथ; नॅटुम् पॉरि–बड़े-बड़े अंगारे; पुकुम् तिचै तॉरुम्–जहाँ घुसते चले उन सभी दिशाओं में; पॉलिन्तान्–शान के साथ दिखायी दिया; चिकै–सिरों पर से; नॅटुम् चुटर् विटुम्–दीर्घ द्युति निःसृत करनेवाले; तेर् तॉरुम्–रथ जहाँ-जहाँ थे; चॅन्रान्–वहाँ गया; तकै नॅटुम्–श्रेष्ठता में बढ़े हुए; करि तॉरुम् परि तॉरुम्–गज और अश्व जहाँ-जहाँ थे वहाँ; चरित्तान्–संचार किया; नकै–उसकी हँसी उड़ानेवाले; नॅटुम् पटै तॉरुम्–विशाल सेना के हर वीर के पास; तलै तॉरुम्–हर सिर पर; नटन्तान्–चला और ध्वस्त किया। ८४५

चारों दिशाओं में धुएँ-सहित अंगारे फैले और उनके साथ हनुमान भी दिखायी दिया। अपने सिरों से प्रकाश निकालनेवाले रथ-रथ पर, श्रेष्ठ गज-गज पर, अश्व-अश्व पर कूदा। उसकी हँसी जो उड़ा रहे थे, उन राक्षसों के सिरों पर चलकर उसने उनको निहत कर दिया। ८४५

वॅन्रिवॅम् बुरवियिन् वॅरिनितुम् विरवार्
मत्रलन् दारणि मार्बितु मणित्तेर्
ऑन्रिनित् रॉन्रितु मुयर्मद मळैताळ्
कुन्रिनुङ् गडैयुहत् तुरुमॅनक् कुदित्तान् 846

वॅन्रि–विजयशील; वॅम् पुरवियिन्–भयानक अश्वों की; वॅरिनितुम्–पीठों पर; विरवार्–शत्रुओं के; मत्रल् अम् तार्–सुगन्धपूर्ण माला से; अणि मार्पितुम्–अलंकृत सुन्दर वक्षों पर; मणि तेर्–मनोरम रथ; ऑन्रित् नित्रु–एक से; ऑन्रितुम्–दूसरे पर; उयर् मत मळै–अधिक मद-वर्षा; ताळ्–बहानेवाले; कुन्रितुम्–पर्वत-सम गजों पर; कटै युकत्तु–युगान्त में; उरुम् ॲन–गिरनेवाली अशनि के समान; कुतित्तान्–कूदा। ८४६

वह विजयशील अश्व की पीठों पर, सुगन्धित पुष्पमालालंकृत (राक्षसों के) वक्षों पर, सुन्दर रथों में एक से दूसरे पर और अधिक मदस्रावी गजों पर प्रलयकालीन अशनि के समान कूदा। ८४६

पिरिवरु मोरुपॅरुङ् गोलॅनप् पॅयरा
इरुविनै तुडैत्तव ररिवॆन वॅवर्क्कुम्
वरुमुलै विलैक्कॅन मदित्तनर् वळङ्गुम्
तॅरिवैयर् मतमॅनक करङ्गॅनत् तिरिन्दान् 847

पिरिवु अरुम्–निरन्तर वर्तमान; ओरु पॅरुम् कोल् ॲन–एक बड़े राजा के दण्ड (शासन) के समान; पॅयरा–अपृथक्; इरुविनै तुटैत्तवर्–कर्मद्वयमुक्त ज्ञानी के; अरिवु पोलवुम्–ज्ञान के समान; ॲवर्क्कुम्–किसी से भी; वरु मुलै–पुष्ट उरोज;

विलैक्कु अँन मतित्ततर्–पण्य बनाकर; वळङ्कुम्–भुगतने देनेवाली; तॅरिवैयर् मतम् अँन–वारांगनाओं के मन के समान; करङ्कु अँन–वातचक्र के समान; तिरिन्तान्–हनुमान घूम-घूमकर लड़ा। ८४७

वह कैसे घूमा? इसका विवरण देखिए— निरन्तर वर्तमान बड़े राजा के शासन-दण्ड के समान (सजग), कर्मद्वयविमुक्त ज्ञानियों के ज्ञान के समान (सूक्ष्म) और अपने मनोरम स्तनों को पण्य-पदार्थ माननेवाली वारवनिताओं के मन के समान और वातचक्र (या पतंग) के समान (एक स्थान पर न रहकर) घूमा। ८४७

अण्णलव् वरियिनुक् कडियव रवन्शोर्
नण्णुव रॅनुम्बॊरु णवैयरत् तॅरिप्पान्
मण्णिनुम् विशुम्बिनु मरुङ्गिनुम् वलित्तार्
कण्णिनु मनत्तिनुन् दनित्तनि कलन्दान् 848

अण्णल्–महावीर; अ अरियिनुक्कु अटियवर्–उन हरि के दास; अवन् चीर् नण्णुवर्–उन हरि के दिव्यगुणों को प्राप्त करेंगे; ॲनुम् पॊरुळ्–यह शास्त्रार्थ; नवै अऱ–निर्दोष रीति से; तॅरिप्पान्–बताते हुए; मण्णिनुम् विचुम्पितुम्–भूमि और आकाश में; मरुङ्कितुम्–पार्श्वों में; वलित्तार्–जोर से लड़नेवाले राक्षसों की; कण्णितुम् मतत्तितुम्–आँखों और मन में; तनि तनि–अलग-अलग; कलन्तान्–मिला रहा। ८४८

श्रीविष्णुभक्त श्रीविष्णु के गुणों को प्राप्त कर लेते हैं। यह शास्त्रोक्त विषय है। इसको हनुमान विश्वरूप बनकर अपने में प्रमाणित कर रहा था। क्योंकि वह आकाश, भूमि, पार्श्वों और सबल योद्धा राक्षसों की आँखों और मनों में अलग-अलग रहा। ८४८

कॊडित्तडन् देरॊडु गुरहदक् कुळ्वै
अडित्तॊरु तडक्कैयि निलत्तिनिट् टरैत्तान्
इडित्तुनिन् ऱदिर्हदत् तॅयिऱुवन् पॊरुप्पैप्
पिडित्तॊरु तडक्कैयि नुयिरुहप् पिळिन्दान् 849

कॊटि–ध्वजा-सहित; तटम् तेर् ऒटुम्–बड़े रथों के साथ; कुरकत कुळ्वै–तुरग-समूह को; ऒरु तट कैयिन्–एक बड़े हाथ से; अटित्तु–पीटकर; निलत्तिन् इट्टु–भूमि पर डालकर; अरैत्तान्–पीस डाला; इटित्तु निन्ऱु अतिर्–बिजली की कड़क के समान चिंघाड़नेवाले; कतत्तु–क्रुद्ध; ॲयिऱु–दाँतों वाले; वन् पॊरुप्पै–सबल पर्वतों (गजों) को; ऒरु तट कैयिन् पिटित्तु–दूसरे बड़े हाथ से पकड़कर; उयिर् उक–प्राणों को निकालते हुए; पिळिन्तान्–निचोड़ दिया। ८४९

हनुमान ने एक हाथ से पताका-भूषित रथों के साथ तुरगवृन्द को प्रहरित करके भूमि पर डालकर पीस दिया। अपने दूसरे हाथ से अशनि

के समान चिंघाड़ की ध्वनि निकालनेवाले, क्रुद्ध, बड़े दाँतों वाले और पर्वत-सम गजों को ऐसा निचोड़ा कि उनके प्राण निकल गये। ८४९

करुत्तॅऴु मत्तत्तिऩ ऍयिऱ्ऱिऩर् कयिऱ्ऱार्
शॅरुत्तॅरि विऴिप्पवर् शिहैक्कऴु वलत्तार्
वॅरुत्तॅऴु मऱलिह ळिवरॅऩ वॅदिर्न्दार्
ऑरुत्तुरुत् तिरऩॅऩत् तत्तित्तनि युदैत्ताऩ् 850

करुत्तु ॲऴु मतत्तितर्–क्रुद्धमन; ऍयिऱ्ऱिऩर्–दंतोरे; कयिऱ्ऱार्–पाशहस्त; चॅरुत्तु–शत्रुता करके; ॲरि विऴिप्पवर्–आग-जैसी दृष्टि फेंकनेवाले; चिकै–तीक्ष्ण; कऴु–शूल के; वलत्तार्–बलशाली; वॅरुत्तु ॲऴु–शत्रुता करके चढ़ आनेवाले; मऱलिकळ् इवरॅऩ–यम हैं ये, ऐसा; ॲतिर्न्तार्–चढ़ आये; ऑरुत्तु–उनको दण्डित करके; उरुत्तिरऩ् ॲऩ–रुद्र के समान; तनि तनि–अलग-अलग; उतैत्ताऩ्–लात मारी (हनुमान ने)। ८५०

क्रुद्धमन, भयंकर दाँतों वाले, पाशहस्त, वैर के साथ आग बरसाते हुए देखनेवाली आँखों के और तीक्ष्ण त्रिशूलधारी राक्षस द्वेष से उठ आनेवाले यम के समान लगे, तो हनुमान ने रुद्र के समान उन्हें दण्डित करके अलग-अलग लताड़ा। ८५०

शक्करन् दोमर मुलक्कॅदण् डयिल्वाळ्
मिक्कन तेर्परि कुडैहोडि विरवि
उक्कन कुरुदियम् बॅरुन्दिरै युरुट्टप्
पुक्कन कडलिडै नॅडुङ्गरप् पूट्कै 851

उक्कत कुरुति अम्–(राक्षसों के) बहाए रक्त-प्रवाह की; पॅरुम् तिरै–बड़ी-बड़ी लहरों के; उरुट्ट–लुढ़का ले जाने से; चक्करम्–चक्र; तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; तण्टु–गदाएँ; अयिल्–शक्तियाँ; वाळ्–तलवारें; मिक्कत–अधिक हुईं; तेर्–रथ; परि–अश्व; कुटै–छत्र; कोटि–पताकाएँ; विरवि–मिलकर; नॅटुम् कर–लम्बी सूँड़ों वाले; पूट्कै–गज; कटल् इटै–समुद्र में; पुक्कत–घुस गये। ८५१

राक्षसों के शरीरों से जो रक्त बहा उसका प्रवाह बना। उस प्रवाह की बड़ी-बड़ी लहरें चक्रायुध, तोमर, मूसल, दण्ड, शक्तियाँ और तलवारें बहा ले गयीं। वे बहुत संख्या में रहीं। उनके साथ रथ, अश्व, छत्र और ध्वजाएँ मिल गयीं। लम्बी सूँड़ वाले गज भी उनके साथ जाकर समुद्र में डूब गये। ८५१

ऍट्टिऩ विशुम्बिनै यॅरिपड वॅळुन्द
मुट्टिऩ मलैहळै मुयङ्गिऩ तिशैयै
ऑट्टिऩ वोऩ्ऱैयोऩ् ऱूडडित् तुडैन्दु
तट्टुमुट् टाडिऩ तलैयोड तलैहळ् 852

तलैकळ्–राक्षसों के सिर; ॲरिप्पट–फेंके जाकर; ॲऴुन्त–ऊपर उठे; तिचैयै विचुम्पिनै ॲट्टिन–आकाश में पहुँचे; मलैकळै मुट्टिन–पर्वतों से टकराये; तिचैयै मुयङ्किन–दिशाओं पर लग गये; ऑन्ऱै ऑन्ऱु–एक-दूसरे से; ऊट्टु अटित्तु–घुसकर गुथकर; उटैन्तु–टूटे और; ऑट्टिन–परस्पर चिपक गये; तलैयॊटु–अन्य सिरों के साथ; तट्टु मुट्टु–कूड़े-करकट; आटिन–बने यत्र-तत्र पड़े रहे। ८५२

राक्षसों के सिर हनुमान द्वारा उछाले जाकर उठे और आकाश में पहुँच गये। पर्वतों से टकराये। दिशाओं में जा लगे। बीच में एक-दूसरे से खूब दबाए जाकर चिपक गये। अन्य सिरों के साथ मिलकर कूड़े-करकटों के समान तितर-बितर पड़े रहे। ८५२

कानै कावल् वेऴक् कणङ्गळ् कदवा ळरिहॊल्ल
वानै यॆय्दत् तनियॆ निन्ऱ मदमाल् वरैयॊप्पान्
तेनै पुरैहण् कनले शॊरियच् चीऱ्ऱञ् जॆरुक्किन्ऱान्
तानै यानात् शम्बु मालि कालन् ऱनैयॊप्पान् 853

कानै कावल्–वन को ही अपनी सुरक्षा का स्थान माननेवाले; वेऴक्कणङ्कळ्–गजयूथों को; कत वाळ् अरि–क्रुद्ध और छविमान सिंह के; कॊल्ल–मारने पर; वानै ऍय्त–वे मरकर स्वर्ग गये; तनियै निन्ऱ–तब जो अकेले खड़ा रहा; मत माल् वरै–उस मत्त बड़े गज; ऑप्पान्–के समान रहा; कालन् तनै–यम की; ऑप्पान्–समता करनेवाला; चम्पुमालि–जम्बुमाली; तानै आनान्–अकेला हो गया; तेनै पुरै कण्–शहद-सम (लाल) आँखें; कनले चॊरिय–आग बरसातीं; चीऱ्ऱम् चॆरुक्किन्ऱान्–गुस्से में बढ़ता जाता। ८५३

वन को ही अपना सुरक्षित स्थान समझनेवाले गजों को एक सिंह ने मार दिया तो वे सब व्योमलोक चले गये। तब एक ही गज बचा और वह एकाकी खड़ा रहा। ऐसे एक गज की स्थिति में यम-सम जम्बुमाली, अकेला होकर बहुत क्रुद्ध हुआ और उसकी शहद के रंग की आँखों से आग ही बरस पड़ी। ८५३

काऱ्ऱिऱ् कडिय कलिनप् पुरवि निरुदर् कळत्तुक्काऱ्
आऱ्ऱुक् कुरुदि निणत्तो डडुत्त वळ्ळऱ् पॆरुङ्गॊळ्ळैच्
चेऱ्ऱिऱ् चॆल्लात् तेरि नाऴि याऴु निलैतेरा
वीऱ्ऱुच् चॆल्लुम् वॆऴियो विल्लै यऴियन् विरैहिन्ऱान् 854

काऱ्ऱिल् कटिय–वायु से भी अधिक तेज चलनेवाले; कलिन पुरवि–लगाम-लगे अश्वों (के); निरुतर्–राक्षस वीर; कळत्तु उक्कार्–समराजिर में निहत हुए; कुरुति आऱ्ऱु–रक्त-नदी में; निणत्तोटु अटुत्त–मांस-मज्जे के साथ मिले; अळ्ळल् पॆरुम् कॊळ्ळै–बहुत ही अधिक; चेऱ्ऱिल्–कर्दम में; चॆल्ला–जो चल नहीं सका; तेरिन्–उस रथ के; आऴि–पहिये; आऴुम् निलै तेरा–धँसते रहे, वह स्थिति जानकर; वीऱ्ऱु चॆल्लुम् वॆऴियो–अलग जाने का मार्ग भी; इल्लै–नहीं रहा, इसलिए;

अळियन्‌–दीन (जम्बुमाली); विरैकिन्‌ऱान्‌–सवेग जाता (जाने का प्रयास करता) है। ८५४

वायु से भी अधिक तीव्र गति से चलनेवाले लगाम-लगे अश्वों के वीर खेत रह गये। रक्त-नदी में मांस-मज्जे के बने गहरे कर्दम में रथ फँस जाता था। आगे नहीं जा सके। उसके पहिये धँसते जाते थे, उस बात को जम्बुमाली नहीं जान सका। दूसरा कोई मार्ग भी नहीं रहा। जम्बुमाली, जो दयनीय स्थिति में रहा, अपने रथ को उस स्थिति में तेज़ चलाए जा रहा था। ८५४

एदि यॊन्‌ऱार्‌ ऱेरु मः(ह्)दा लॆळियो रुयिर्‌हॊडल्‌
नीदि यन्‌ऱा लुडन्‌वन्‌ दोरैक्‌ काक्कुम्‌ निलैयिल्लाय्‌
शादि यन्‌ऱे पिऱिदॆन्‌ शॆय्‌दि यवर्‌पिन्‌ ऱनिनिन्‌ऱाय्‌
पोदि यॆन्‌ऱान्‌ पूत्त मरम्बोर्‌ पुण्णार्‌ पॊलिहिन्‌ऱान्‌ 855

पूत्त मरम्‌ पोल्‌–पुष्पित पेड़ के समान; पुण्णाल्‌ पॊलिकिन्‌ऱान्‌–व्रणों के साथ शोभायमान (हनुमान) ने; एति ऑन्‌ऱाल्‌–हथियार एक ही (तुम्हारे पास) है; तेरुम्‌ अ.·.तु आल्‌–रथ भी वही; उटन्‌ वन्‌तोरै–साथ आये लोगों की; काक्कुम्‌ निलै इल्लाय्‌–रक्षा करने की स्थिति में नहीं हो; अवर्‌ पिन्‌ तनि निन्‌ऱाय्‌–उनके (मरने के) बाद अकेले बचे हो; ऍळियोर्‌–दीनहीनों की; उयिर्‌ कोटल्‌–जान लेना; नीति अन्‌ऱाल्‌–न्याय-सम्मत नहीं है, इसलिए; चाति–(लड़ोगे तो) मरोगे; पिऱितु ऍन्‌ चॆय्‌ति–फिर क्या करो; पोति–चले जाओ; ऍन्‌ऱान्‌–कहा। ८५५

पुष्पित तरु-सदृश व्रणों से शोभित पवनसूनु ने जम्बुमाली को समझाया। तुम्हारे पास एक ही हथियार बचा है। साथ आये वीरों की रक्षा करने की स्थिति में नहीं रहे। वे चल बसे और तुम एकाकी खड़े रहते हो। दीन-हीनों को मारना न्यायसंगत नहीं होगा। तुम लड़ोगे तो अवश्य मरोगे। फिर क्या करोगे ? जाओ। ८५५

नन्‌ऱु नन्‌ऱुन्‌ करुणै यॆन्‌ना नॆरुप्पु नहनक्कान्‌
पॊन्‌ऱु वारि नॊरुव नॆन्‌ऱाय्‌ पोलु मॆन्नैयॆन्‌ना
वन्‌ऱिण्‌ शिलैयिन्‌ वयिरक्‌ कालाल्‌ वडित्तिण्‌ शुडर्वाळि
ऑन्‌ऱु पत्तु नूऱु नूऱा यिरमु मुदैप्पित्तान्‌ 856

उन्‌ करुणै–तुम्हारी दया; नन्‌ऱु नन्‌ऱु–भली रही, भली; ऍन्‌ना–कहकर; नॆरुप्पु नक–आग प्रकट करते हुए; नक्कान्‌–हँसा (जम्बुमाली); ऍन्नै–मुझे; पॊन्‌ऱुवारिन्‌ ऒरुवन्‌–मरनेवालों में एक; ऍन्‌ऱाय्‌ पोलुम्‌–एक कहते (गिनते) हो क्या; ऍन्‌ना–कहकर; वन्‌ तिण्‌–बड़े और कठोर; चिलैयिन्‌ वयिर कालाल्‌–धनु के वज्र-सम पैरों द्वारा; वटि तिण्‌ चुटर्‌ वाळि–तेज़, कठोर और ज्वलन्त शर; ऑन्‌ऱु–एक-एक; पत्तु–दहाई में; नूऱु–सैकड़ों और; नूऱायिरमुम्‌–लाखों में; उतैप्पित्तान्‌–ठुकवाया (तमिळ में धनुओं के "पैरों से ठुकवाना" मुहावरा है।)। ८५६

जम्बुमाली ने उत्तर में कहा कि तुम्हारी करुणा भी अच्छी है ! अच्छी ! वह आग निकालते हुए हँसा। उसने कहा कि क्या तुमने मुझे मरनेवालों में एक समझ रखा है ? यह कहकर उसने अपने सशक्त कठोर धनु से तेज और ज्वलन्त शरों को एक में, दशक में, शतक में, सहस्रों के दल में और लाखों के दलों में चलाया। (धनु के पैरों द्वारा ठुकवाया —यह तमिऴ का अनूठा चित्र है। इधर पैर धनु के दोनों बाजू हैं।) । ८५६

शॅय्दि शॅय्दि शिलैक्कै कॉण्डाल् वॅरुङ्गै तिरिवोरै
नॉय्दिन् वॅल्व दरिदो वॅन्ना मुरुव लुरुनक्कान्
अय्य नङ्गु मिङ्गुङ् गाला लळियु मळैयॅन्न
ॲय्द वॅय्द पहळि यॆल्ला मॅऴुवाल् वळुवित्तान् 857

अय्यन्–श्रेष्ठ हनुमान; चिलै कै कॉण्टाल्–धनु हाथ में लोगे तो; वॅरुम् कै तिरिवोरै–खाली हाथ फिरनेवालों को; नॉय्तिन् वॅल्वतु–आसानी से जीतना; अरितो–कठिन होगा क्या; चॅय्ति चॅय्ति–करो, करो; ॲन्ना–कहकर; मुरुवल् उर–दाँत प्रकट करते हुए; नक्कान्–हँसा; ॲय्त ॲय्त–प्रेषित होते-होते; पकळि ॲल्लाम्–सभी शरों को; कालाल्–पवन द्वारा; अळियुम् मळै ॲन्न–बिखेरे जानेवाले मेघों के समान; ॲऴुवाल्–लौहदण्ड से; अङ्कुम् इङ्कुम्–इधर-उधर; वळुवित्तान्–(निशाना) चूककर छितर जाने दिया। ८५७

महिमावान हनुमान ने व्यंग्य किया। धनु हाथ में लो और निरायुध फिरनेवाले पर जीत पाओ, सुगमता से ! क्या यह कोई कठिन काम है ? करो, करो ! फिर वह दाँत प्रकट करते हुए हँसा। जम्बुमाली ने जितने ही शर चलाए उन सबको उसने पवन से छितरायी जाकर बेकार होनेवाली वर्षा की धाराओं के समान अपने लौहदण्ड से तितर-बितर करके इधर-उधर डाल दिया। ८५७

मुर्र मुतिन्द निरुदन् मुनिया मुन्नुम् बिन्नुञ्जॅन्
रुर्र पहळि युरादु मुरिया वुदिर्हिन् ऱदैयुन्नाच्
चुर्रु नॅडुन्दे रोट्टित् तॊडर्न्दान् ऱॊडरुन् दुरैहाणान्
वॅर्रि यॅऴुवैप् पिरैवा यम्बा लरुत्तु वीऴ्त्तिनान् 858

मुर्र मुतिन्त–निपट क्रुद्ध; निरुतन्–राक्षस; मुनिया–और भी गुस्सा करके; मुन्नुम् पिन्नुम्–सामने और पीछे; चॅन्रु उर्र–जा जो लगे; पकळि–वे शर; उरातु–हनुमान पर न लगकर; मुरिया–टूटकर; उतिर्किन्रतै–चू जाते हैं, उसको; उन्ना–सोचकर; चुर्रु–हनुमान के चारों ओर घूमकर; नॅटुम् तेर् ओट्टि–बड़े रथ को चलाते हुए; तॊटर्न्तान्–पास गया; तॊटरुम् तुरै–(बिल्कुल) पास जाने का मार्ग; काणान्–न देखकर; वॅर्रि ॲऴुवै–विजय दिलाते रहे लौहदण्ड को; पिरैवाय् अम्पाल्–अर्द्धचन्द्र बाण से; अरुत्तु–काटकर; वीऴ्त्तिनान्–गिरा दिया। ८५८

जम्बुमाली पहले ही सम्पूर्ण रूप से क्रुद्ध था। अब वह और भी अधिक कोपाक्रान्त हुआ। उसने देखा कि वह जो शर हनुमान के चारों ओर, आगे, पीछे और पार्श्वों में भेज रहा है, वे सब हनुमान पर नहीं लगते वरन् टूटकर बिखर जाते हैं। अपने रथ को उसके पास पहुँचाना चाहा पर रास्ता नहीं मिला। उसने एक अर्द्धचन्द्र बाण से विजय दिलाते रहे उस लौहदण्ड को खण्ड-खण्ड बनाकर गिरा दिया। ८५८

शलित्ता नैयन् कैया लॅय्युञ् जरत्तै युहच्चाडि
ऑलित्ता नमरर् कण्डा रार्प्पत् तेरि नुट्पुक्कुक्
कलित्तान् शिलैयैक् कैयाल् वाङ्गिक् कळुत्ति निडैयिट्टु
वलित्तान् पहुवाय् मडित्तु मलैपोऱ् ऱलैमण् णिडैवीळ 859

ऐयन्–सम्मानित महावीर ने; ऍय्युम् चरत्तै–प्रेरित शरों को; कैयाल्–हाथों से; उक–गिराते हुए; चाटि–पीटकर; चलित्तान्–ऊबकर; अमरर् कण्टु आर्प्प–देवों के देखकर सन्तोष-रव करते; ऑलित्तान्–नारे लगाते हुए; कलित्तान्–गर्वीले; तेरितुळ् पुक्कु–(राक्षस के) रथ में घुसकर; चिलैयै–धनु को; कैयाल् वाङ्कि–अपने हाथ से छीन लेकर; पकुवाय् मटित्तु–बड़े अधर मोड़कर; मलै पोल् तलै–पर्वताकार सिर को; मण्णिन् इटै वीळ–भूमि पर गिराते हुए; कळुत्तिन् इटै यिट्टु–गले में डालकर; वलित्तान्–खींचा। ८५९

श्रेष्ठ हनुमान आनेवाले शरों को हाथों से रोककर उन्हें मारते-मारते ऊब उठा। इसलिए उसने एक ऐसा गम्भीर नारा लगाया, जिसको सुनकर अमरगण आनन्द ध्वनि कर उठे। वह गर्वीले जम्बुमाली के रथ में उछलकर घुसा। उसने उसके धनु को अपने हाथ से पकड़कर छीना और उसे उसके गले में डालकर खींचा कि उसका बड़ा खुला मुख बन्द हुआ और उसका पर्वत-सदृश मस्तक धरती पर लोट गया। ८५९

कुदित्तुत् तेरुङ् गोल्हों ळाळुम् बरियुङ् गुळम्बाह
मिदित्तुप् पॅयर्न्दु नॅडुन्दो रणत्तै वीरन् मेरुकॉण्डान्
कदित्तुप् पळिन्दु कळिन्दार् पॅरुमै कण्डु कळत्तञ्जि
उदित्तुप् पुलर्न्द तोल्वो लुरुवत् तमर रोडिन्राल् 860

वीरन्–महावीर; कुतित्तु–नीचे कूदकर; तेरुम्–रथ और; कोल् कॉळ् आळुम्–वेत्रधारी सारथी; परियुम्–और अश्वों को; कुळम्पाक–कर्दम बनाते हुए; मितित्तु–रौंदकर; पॅयर्न्तु–वहाँ से हटकर; नॅटुम् तोरणत्तै–ऊँचे तोरण; मेरु कॉण्टान्–पर चढ़ बैठा; अमरर्–(अशोकवन-पाल) ऋतुदेव; कति तुप्पु–चलने की शक्ति; अळिन्तु–खोकर; पॅरुमै कण्टु–हनुमान का प्रताप देखकर; कळत्तु–समराजिर से; अञ्चि कळिन्तार्–डरकर जो हटे; उतित्तुप् पुलर्न्त–मोटा बनकर जो सूख गया हो; तोल् पोल् उरुवत्तु–उस चमड़े के समान शरीर के होकर; ओटिनर्–भागे। ८६०

महावीर उस रथ से नीचे कूदा। उसने रथ को, वेत्रधारी सारथी को और अश्वों को रौंदकर कीच बना दी। फिर वहाँ से गया और तोरण-द्वार पर चढ़ बैठ गया। अशोकवनपालक ऋतुदेवता यह देखकर अपनी चलने की शक्ति ही खो गये। हनुमान का पराक्रम देखकर वे डरकर वहाँ से भाग निकले। फूलकर सूखी खाल के समान आकार के वे दौड़े। ८६०

पिरिन्दु पुलम्बु सहळिर् काणक् कणवर् पिणम्बऱ्ऱि
विरिन्द कुरुदिप् पेरा ऱीर्त्तु मनैहऴ् डॊरुम्वीश
इरिन्द दिलङ्गै यॆंळुन्द दळुहै यिन्ऱिङ् गिवत्ताले
चरिन्द दरक्कर् वलियॆन् ऱॆण्णि यऱमुन् दळिर्त्तदाल् 861

विरिन्त–फैले हुए; कुरुति–रक्त की; पेर् आऱु–बड़ी नदी ने; पिरिन्तु पुलम्पुम्–वियुक्त होकर विलपनेवाली; मकळिर् काण–(राक्षस-) स्त्रियाँ देख लें, ऐसा; कणवर् पिणम् पऱ्ऱि–उनके पतियों के शवों को पकड़; ईर्त्तु–खींचकर; मनैकळ् तॊऱुम्–घर-घर में; वीच–फेंक दिया तो; इलङ्कै–लंका नगर (वासी); इरिन्ततु–अस्त-व्यस्त (हुए); अऴुकै ऍंऴुन्ततु–रुदन-स्वर उठा; इन्ऱु–अब; इङ्कु–यहाँ; इवत्ताले–इससे; अरक्कर् वलि–राक्षसों का बल; चरिन्ततु–लट गया; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; अऱमुम् तळिर्त्ततु–धर्म भी लहलहा उठा। ८६१

फैला रक्त-प्रवाह बड़ी नदी के रूप में बहा। उसने विरह में विलाप करनेवाली राक्षसियों के प्रत्यक्ष देखने के लिए उनके पतियों के शवों को खींच लेकर घर-घर पहुँचा दिया। यह देखकर लंका अस्त-व्यस्त हो गयी। सर्वत्र रुदन का स्वर उठा। धर्म ने सोचा कि अब मारुति इस लंका में राक्षसों का बल ढहा दिया। वह लहलहा उठा। ८६१

पुक्का रमरर् पॊलन्दा ररक्कन् पॊरुविल् पॆरुङ्गोयिल्
विक्का निन्ऱार् विळम्ब लाऱ्ऱार् वॆरुवि विम्मुवार्
नक्का नरक्क नडुङ्ग लॆन्ऱा नैया नमरॆलाम्
उक्कार् शम्बु मालि युलन्दा नॊन्ऱे कुरङ्गॆन्ऱार् 862

पॊलन् तार् अरक्कन्–स्वर्णहारालंकृत राक्षस (रावण) के; पॊरुवु इल्–अनुपम; पॆरुम् कोयिल्–बड़े महल में; अमरर् पुक्कार्–देव पहुँचे; विक्का निन्ऱार्–सुबकते खड़े रहे; विळम्पल् आऱ्ऱार्–बोल नहीं सके; वॆरुवि–डरकर; विम्मुवार्–तरसे; अरक्कन्–राक्षस; नक्कान्–हँसा; नटुङ्कल् ऍन्ऱान्–मत डरो, कहा; ऐया–प्रभु; नमर् ऍलाम्–हमारे सभी; उक्कार्–मर गये; चम्पुमाली–जम्बुमाली; उलन्तान्–मिट गया; ऒन्ऱे कुरङ्कु–एक ही वानर है; ऍन्ऱार्–कहा (उन्होंने)। ८६२

वे ऋतुदेवता स्वर्णहारधारी राक्षस के अनुपम और बड़े महल में गये। वहाँ सुबकते खड़े रहे। बोलने की शक्ति भी जाती रही। डर से भरे रहे। राक्षस हँसा। मत डरो, कहकर उसने धैर्य बँधाया। त

उन्होंने कहा कि हमारे सब निहत हो गये। जम्बुमाली भी मर गया। आखिर वानर एक ही है! । ८६२

ऍन्नु मळवि ऍरिन्दु वीङ्गि ऍळुन्द वॅहुळियान्
उन्न वुन्न वुदिरक् कुमिळि विळियू डुमिळ्हिन्ऱान्
शॉन्न कुरङ्गै यानें पिडिप्पेन् कडिदु तॉडरन्दॅन्ऱान्
अन्न दुणरन्द शेनैत् तलैव रैवर् रऱिवित्तार् 863

ऍन्नुम् अळविल्–यह कहने मात्र से; ऍरिन्तु–जलकर; वीङ्कि ऍळुन्त–बढ़कर जो उठा; वॅकुळियान्–उस कोप के राक्षस ने; उन्न उन्न–ज्यों-ज्यों स्मरण करता; विळियूटु–दृष्टि के साथ; उतिर कुमुळि–रक्त के बुलबुले; उमिळ्किन्ऱान्–निकालता; चॊन्न कुरङ्कै–तुम्हारे उक्त मर्कट को; यान्–मैं ही; कटितु तॊटरन्तु–शीघ्र जाकर; पिटिप्पॅन्–पकड़ूँगा; ऍन्ऱान्–कहा; अन्नतु उणरन्त–उसे सुनकर; चेनै तलैवर् ऐवर्–पंच सेनापतियों ने; अऱिवित्तार्–समझाया। ८६३

ज्योंही उन्होंने यह बात सुनायी, त्योंही रावण कोपाक्रांत हुआ। कोप जलते हुए बढ़ उठा। ज्यों-ज्यों जम्बुमाली के मरण की बात सोचता, त्यों-त्यों उसकी आँखों से रक्त के बुलबुले छूटते। उसने कहा कि मैं ही शीघ्र जाऊँगा और तुम्हारे उक्त वानर को पकड़ूँगा। पंच सेनापतियों ने उसे सुना तो वे उसे समझाने लगे। ८६३

9. पञ्ज शेनापतिहळ् वदैप् पडलम् (पंच सेनापति-वध पटल)

शिलन्दि युणवहोर् कुरङ्गिन्मेऱ् चेऱियेऱ् ऱिऱलोय्
कलन्द पोरिनिन् कट्पुलक् कडुङ्गनल् कदुव
उलन्द माल्वरै यरुविया ऱॊळुक्कऱ्ऱ दॊक्कप्
पुलरन्द मामदम् बूक्कुमन् ऱॆदिशैप् पूट्कै 864

तिऱलोय्–शक्तिमन्त; चिलन्ति उणप्पलु–मकड़ी (पकड़कर) खानेवाले; ओर् कुरङ्किन् मेल्–एक वानर पर; चेऱियेल्–चढ़ने जाएँगे तो; कलन्त पोरिल्–आपसे हुए युद्ध में; निन् कण् पुलम्–आपकी आँख की इन्द्रिय से निकली; कटुम् कनल्–घोर आग के; कतुव–जलने से; उलन्त माल् वरै–जो सूख गया उस उन्नत बड़े पर्वत में; अरुवि आऱु–बहती नदी के; ऒळुक्कु अऱ्ऱतु ऒक्क–बहाव के सूख जाने के समान; तिचै पूट्कै–दिग्गजों का; पुलरन्त मा मतम्–सूखा बड़ा मद; पूक्कुम् अन्ऱे–फिर से ताजा हो जायगा न। ८६४

(उन सेनापतियों ने कहा—) शक्तिमंत! अगर आप मकड़ी खानेवाले एक वानर पर चढ़ जाएँगे, तो दिग्गजों का मद फिर से ताजा होकर बहने नहीं लगेगा? अभी यह गरमी में बड़े पर्वतों पर की नदी-जैसे सूखा हुआ है। वह तब सूखा था, जब आपके साथ हुए युद्ध में आपकी आँखों से निकली आग उन पर पड़ी थी। ८६४

इलङ्गु वॅऩ्जिनत् तऩ्जिऱै यॅरुळ्वलिक् कलुऴऩ्
उलङ्गिन् मेलॅळुन् दॅन्तनी कुरङ्गिन्मे लुरुक्किन्
अलङ्गल् मालैनिऩ् पुयनिनैन् दल्लुनऩ् बहलुम्
कुलुङ्गुम् वन्तुयर् नीङ्गुमाल् वॅळ्ळियङ् गुऩ्ऱम् 865

इलङ्कु–विद्यमान; वॅम् चिनत्तु–कठोर कोप वाला; अम् चिऱै–सुन्दर पंखों वाला; अॅरुळ् वलि कलुऴन्–अतिवलशाली गरुड़; उलङ्किन् मेल्–मच्छर पर; अॅळुन्तु अॅन्त–चढ़ आया जैसा; नी–आप; कुरङ्किन् मेल्–वानर पर; उरुक्कित्–शत्रुता करके जाएँगे तो; वॅळ्ळि अम् कुऩ्ऱम्–चाँदी का सुन्दर पर्वत (कैलास); अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली माला के; निन् पुयम् निनैन्तु–तुम्हारी भुजाओं का स्मरण करके; अल्लुम् नल् पकलुम्–रात और अच्छे दिन में भी; कुलुङ्कुम् वन् तुयर्–कँपानेवाले कठोर दुःख से; नीङ्कुम्–मुक्त हो जायगा न। ८६५

भयंकर कोप और मनोरम पंखों के साथ शोभनेवाला अति वली गरुड़ एक मच्छर पर चढ़ जाता जैसे आप एक वानर से युद्ध करने जायँ, तो चाँदी का मनोरम पर्वत (कैलास) कँपानेवाले भय के कष्ट से विमुक्त हो जायगा! अब वह आपके हिलनेवाली मालाओं से अलंकृत कन्धों के बल का स्मरण करके रात और दिन काँपता रहता है! । ८६५

उरुव दॅन्गॊलो वुरन्ऴि वॅन्बदॊन् ऱुडैयार्
पॅरुव दियादॊन्ऱुङ् गाण्गिलर् केट्किलर् पॅयर्न्दार्
शिऱुमै यीदॊप्प दियादुनी कुरङ्गिन्मेऱ् चॅल्लिन्
मुरुवल् पूक्कुमन् ऱॆनिन्ऱ मूवर्क्कु मुहङ्गळ् 866

नी–आप; कुरङ्किन् मेल्–वानर के विरुद्ध; चॅल्लिन्–लड़ने जाएँगे तो; उरुवतु अॅन् कॊलो–मिलनेवाला क्या है; चिऱुमै ईतु–लघुता के इस काम की; ऒप्पतु यातु–समानता करनेवाला क्या काम है; उरन् अऴिवु अॅन्पतु–बल मिट जायगा, यह; ऒन्ऱु उटैयार्–(निश्चय) रखनेवाले (त्रिमूर्ति); पॅरुवतु यातॊन्ऱुम् काण्किलर्–प्राप्त करना कुछ न देखकर; केट्किलर्–सुनकर; पॅयर्न्तार्–(विना युद्ध किये ही) हट गये; निन्ऱ मूवर्क्कुम्–वैसे हटकर खड़े हुए त्रिदेवों के; मुकङ्कळ्–मुख; मुरुवल् पूक्कुम् अन्ऱे–हास के साथ फूल उठेंगे न। ८६६

आपके, बन्दर के विरुद्ध लड़ने जाने में क्या गौरव होगा? (उसके विपरीत) इसके समान लघुता का काम क्या है? स्वयं त्रिदेवों ने आप से लड़ने में अपने बल की हानि के सिवा कुछ नहीं देखी, न सुनी; और वे समर से हट गये। अब क्या उनके मुख हास के साथ खिल नहीं जाएँगे? । ८६६

अन्ऱि युम्मुनक् काऴिन्मै तोन्ऱुमा लरश
वॅन्ऱि यिल्लवर् मॅल्लियोर् तमैच्चॅल विट्टाय्

नन्ऱि यिन्ऱॊन्ऱु काण्डियेल् ॲमैच्चॆल नयत्ति
ॲन्ऱु कैतॊऴु दिरैञ्जिन रक्कन् मिशैन्दान् 867

अरच–राजा; अन्ऱियुम्–इसके सिवा; उनक्कु–आपके; आळ् इन्मै–सेवकों का अभाव; तोन्ऱुम्–प्रकट होगा; वॆन्ऱि इल्लवर्–जो विजय नहीं पा सके उन्हें और; मॆल्लियोर् तमै–निर्बलों को; चॆल विट्टाय्–जाने दिया; इन्ऱु–आज; ऑन्ऱु नन्ऱि–एक अच्छा कार्य; काण्टियेल्–देखना चाहो तो; ॲमै चॆल–हमें भेजना; नयत्ति–चाहो; ॲन्ऱु–कहकर; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; इरैञ्चिनर्–विनय की; अरक्कनुम् इचैन्तान्–राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

राजन्! और भी एक बात है। आपके स्वयं चढ़ जाने से ऐसा प्रगट होगा कि आपके और कोई सेवक या कर्मचारी नहीं है। आपने अब तक उन्हीं लोगों को भेजा है, जो विजय पाने में असमर्थ थे या निर्बल थे। अगर आप एक अच्छा कार्य देखना चाहते हों तो हमें भेजने की चाह कीजिए। सेनापतियों ने यह कहकर हाथ जोड़े और विनय की। राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

उलह मून्ऱैयु मॊरुङ्गुपॆऱ् ऱारॆन वुवन्दार्
तिलह मण्णुऱ वणङ्गिनर् कोयिलैत् तोर्न्दार्
अलहि ऱेर्परि करियॊडु मिडैन्दपो ररक्कर्
तॊलैवि ऱानैयैक् कदुमॆन वरुहॆनच् चॊन्नार् 868

उलकम् मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों को; ऑरुङ्कु पॆऱ्ऱार्–एक साथ पा लिया हो; ॲन उवन्तार्–जैसा हर्षित हुए; तिलकम्–भाल का तिलक; मण् उऱ–भूमि पर पड़े, ऐसा; वणङ्कितर्–नमस्कार किया; कोयिलै तीर्न्तार्–महल छोड़ निकले; अलकु इल्–असंख्यक; तेर्–रथ; परि–अश्व; करि ऑटु–गजों के साथ; मिटैन्त पोर् अरक्कर्–इकट्ठ आये योद्धा वीर; तॊलैवु इल्–(इनकी) अक्षय; तानैयै–सेना को; कतुम् ॲन–'शीघ्र'; वरुक ॲन–आओ; चॊन्नार्–कहा। ८६८

उन्हें इतना अपार हर्ष हुआ, मानो तीनों लोकों को एक साथ पा गये हों। भाल का तिलक भूमि पर लगे, ऐसा दण्डवत करके वे महल से बाहर आये। उन्होंने आज्ञा निकाली कि असंख्यक रथों, अश्वों, गजों और पदाति वीरों की सेनाएँ शीघ्र आ जाएँ। ८६८

आनै मेन्मुर शऱैन्दनर् वळ्ळुव रऴैत्तार्
पेन वेलैयिऱ् पुडैपरन् ददुपॆरुञ् जेनै
शोन मामऴै मुहिलॆनप् पोर्प्पणै तुवैप्प
मीन वानिडै मिन्नॆनप् पडैक्कल मिडैन्द 869

वळ्ळुवर्–'वळ्ळुव' लोगों ने; आनै मेल्–गजों पर से; मुरचु अऱैन्तनर्–ढिंढोरा पीटकर; अऴैत्तार्–आमन्त्रित किया; पॆरुम् चेनै–बड़ी सेना; पेन वेलैयिल्–फेन-सहित सागर के समान; पुटै परन्ततु–सब ओर फैली; चोन मा मऴै–निरन्तर

वरसनेवाली वर्षा के; मुकिलॅन-मेघों के समान; पोर् पणै-युद्धभेरियाँ; तुवैप्प-ठनकीं; मीन वानिटै-नक्षत्र-भरे आकाश को; मिन् ॲन-बिजली के समान; पटैक्कलम्-हथियार; मिटैन्त-जुटे। ८६९

वळ्ळुवर (ढिंढोरा पीटनेवाली एक जाति) लोगों ने गज पर ढोल चढ़ाकर मुनादी पिटवा दी। बड़ी सेना फेन-सहित सागर के समान उठ आयी। चारों ओर फैली। निरन्तर बरसनेवाली वर्षा के मेघों के समान मारू ढोल बज उठे। नक्षत्र-भरे आकाश में बिजलियों के समान युद्धायुध जुट आये। ८६९

तानै माक्कोडि मऴैपोवुदु तुयर्न्तॅऴुन् दाळ
मान मारुदि मारुदि कुऴियना ळुलन्दु
पोन माऱ्ऱलर् पुकऴॅनक् कालपॅरप् पुरण्ड
वान याऱ्ऱुवॅण् डिरैयॅन वरम्बिल परन्द 870

मऴै पोऴ्वुतु-मेघों को छेदकर; उयर् ॲऴुम्-ऊपर चलनेवाले लम्बे; ताळ-पैर वाले; वान याऱ्ऱु-आकाशगंगा की; वॅळ् तिरै ॲन-श्वेत तरंगों के समान; वरम्पु इल-निस्सीम; परन्त-फैले रहे; तानै मा कोटि-उस सेना के बड़े-बड़े झण्डे; माऱ्ऱु अरु-अप्रतिहत; मान मारुति-आदरणीय मारुति; कुऴिय-कोप (करके युद्ध) करने पर; नाळ् उलन्तु पोन-जिनकी आयु सूख गयी; माऱ्ऱलर्-उन शत्रुओं के; पुकऴ् ॲन-यश के समान; काल् पॅर-हवा के हिलाने से; पुरण्ट-हिले। ८७०

अनेक श्वेत ध्वजाएँ, हवा में अप्रतिहत मारुति के कोप के सामने जिनकी आयु सूख गयी, उन शत्रुओं के यश के समान हिल रही थीं। उनके खंभे मेघ को छेदकर ऊपर गये थे। वे आकाशगंगा की लहरों की तरह श्वेतवर्ण थीं। ८७०

विरवु पॉऱ्कऴल् विचित्तनर् वॅरिनुर विळङ्गच्
चरमॊ टुक्किन पुट्टिलुञ् जात्तिनर् चमैयक्
करुवि पुक्कन रक्करमाप् पल्लणङ् गविन्नप्
पुरवि यिट्टतेर् पूट्टिन परुमित्त पूटकै 871

अरक्कर्-राक्षसों ने; विरवु पॉन् कऴल्-स्वर्णमय पायलें; विचित्तनर्-बाँध लीं; चरम् ऑटुक्कित-शरनिलय; पुट्टिलुम्-तूणीर भी; वॅरिन् उर-पीठ पर लगाये; विळङ्क-सुन्दर लगें, ऐसा; चात्तिनर्-धारण कर लिया; चमैय-खूब युक्त हो, ऐसा; करुवि पुक्कनर्-कवच पहन लिया; पुरवि-अश्व; मा पल्लणम्-बड़ी-बड़ी जीनें; कविन्न-फबती रीति से; इट्ट-पहनाये गये; तेर् पूट्टिन-रथ जुड़े गये; पूट्कै-गज; परुमित्त-अलंकृत किये गये। ८७१

राक्षसों ने स्वर्णमय पायलें बाँध लीं। शराश्रय तूणीरों को पीठ को शोभित करते हुए पहन लिया। खूब युक्त रीति से कवच धारण कर लिये। अश्वों पर जीनें कसीं। रथ जुते और गज अलंकृत हुए। ८७१

आरु शॆय्दन वातैयिऩ् मदङ्गळव् वाऱ्ऱैच्
चेरु शॆय्दन तेर्हळिऩ् शिल्लियच् चेऱ्ऱै
नीरु शॆय्दन पुरवियिऩ् कुरमऱ्ऱन् नीऱ्ऱै
वीरु शॆय्दन वप्परिक् कलिऩवाय् विलाळि 872

आतैयिऩ् मतङ्कळ्–गजमद ने; आरु चॆय्तन–नदियाँ बनायीं; अ आऱ्ऱै–उन नदियों को; तेर्कळिऩ् चिल्लि–रथों के पहियों ने; चेरु चॆय्तन–कर्दम बना दिया; अ चेऱ्ऱै–उस कीच को; पुरवियिऩ् कुरम्–अश्वों के खुरों ने; नीरु चॆय्तन–धूल बना दिया; अ नीऱ्ऱै–उस बुकनी को; अ परि–उन अश्वों के; कलिऩ वाय्–लगाम वाले मुख (निःसृत); विलाळि–लार ने; वीरु चॆय्तन–फिर फाड़ दिया। ८७२

गजमद नदी बना। उस नदी को रथों के चक्रों ने पंक बना दिया। उस पंक को अश्वों के खुरों ने धूल में परिवर्तित कर दिया। उस धूल को फिर से अश्वों के मुखों की लार और झाग ने सूखा पंक बना दिया, जिसमें दरारें पड़ी रहीं। ८७२

वळङ्गु तेर्हळि ऩिडिप्पॊड् वाशियि ऩार्प्पुम्
मुळङ्गु वॆङ्गळिऱ् ऱदिर्च्चियु मॊय्हळ लॊलियुम्
तळङ्गु पल्लियतत मलैयुङ् गडैयुहत् ताळि
मुळङ्गु मोदैयिऩ् मुम्मडङ् गॆळुन्ददु मुडुहि 873

वळङ्कु तेर्कळिऩ्–चलनेवाले रथों के; इटिप्पु ओटु–शब्द के साथ; वाचियिऩ् आर्प्पुम्–अश्वों का हिनहिनाना; मुळङ्कु–चिघाड़नेवाले; वॆम् कळिऱु–भयंकर गजों की; अतिर्च्चियुम्–ध्वनियाँ; मॊय् कऴल् ऒलियुम्–घनी पायलों की ध्वनियाँ और; तळङ्कु–बजनेवाले; पल् इयतत्तु–विविध वाद्यों का; अमलैयुम्–स्वर सब; कटै उकत्तु–युगान्त के; आऴि मुळङ्कुम्–सागर के गर्जन के; ओतैयिऩ्–नाद से; मुम् मटङ्कु–तिगुने; मुटुकि–ज़ोर से; ऍळुन्ततु–उठे। ८७३

रथों की घरघराहट, अश्वों का हिनहिनाना, भयंकर गजों की चिंघाड़, वीरों की पायलों का क्वणन और अनेक बाजों का नाद, सब मिलकर युगांत-सागर-गर्जन-ध्वनि के तिगुने ज़ोर से उठे। ८७३

आळित् तेर्त्तॊहै यैम्बदि ऩायिर मः(ह्)दे
शूळिप् पूट्कैक्कुन् दॊहैयवऱ् ऱिरट्टियिऩ् ऱॊहैय
ऊळिक् काऱ्ऱऩ्ऩ पुरविमऱ् ऱवऱ्ऱिऩुक् किरट्टि
पाळित् तोळ्ॆड्डुम् बडैक्कलप् पदादियिऩ् पहुदि 874

आळि तेर् तॊकै–पहियेदार रथों की संख्या; ऐम्पतिऩायिरम्–पचास सहस्र; चूळि पूट्कैक्कुम्–मुखपट्टालंकृत गजों की भी; तॊकै–संख्या; अ·.ते–वही; ऊळि काऱ्ऱु अऩ्ऩ–प्रलय-पवन के समान; पुरवि–अश्व; अवऱ्ऱिऩ् इरट्टि तॊकैय–उनकी दुगुनी संख्या के; पाळि तोळ्–सबल कन्धों और; नॆट्टुम् पटै कलम्–बड़े-बड़े हथियारों

वाले; पतातियिन् पकुति–पदाति वीरों की संख्या; अवऱ्ऱितुक्कु–उनकी; इरट्टि–दुगुनी। ८७४

चक्ररथों की संख्या पचास हज़ार थी। मुखपट्टालंकृत गजों की संख्या भी वही। प्रलयपवन-सरीखे अश्वों की संख्या उसकी दुगुनी थी। स्थूल-स्कन्ध और बड़े हथियारों से युक्त पदाति वीरों की संख्या उनकी सम्मिलित संख्या की दुगुनी थी। ८७४

कूय्त्त रुत्तोरुन् दरुन्दोरुन् दानैवॅङ् गुळ्विन्
नीत्तम् वन्दुवन् दियङ्गिडु मिडनित्ऱि नॅरुङ्गक्
काय्त्त मैन्दवॅङ् गदिर्प्पडै यॊन्ऱॊन्ऱु कदुवित्
तेय्त्तॆ ऴुन्दन पॊऱिक्कुल मळैक्कुलन् दीय्प्प 875

कूय् तरुम् तोऱुम् तरुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों टेर लगती, त्यों-त्यों; वॅम् तानै कुळुवित् नीत्तम्–(आ जुटनेवाली) भयंकर सेना के दलों की बढ़ती; वन्तु वन्तु–उत्तरोत्तर हुई; इयङ्कुम् इटन् इन्ऱि–संचार करने का स्थान नहीं पाकर; नॅरुङ्क–सटी खड़ी रही; काय्त्तु अमैन्त–भट्ठी में गरम कर बनाए गये; वॅम् कतिर् पटै–भयंकर ज्वालामयी हथियारों के ढेर; ऒन्ऱु ऒन्ऱु कतुवि–एक-दूसरे से रगड़कर; तेय्त्तु–घिसाकर; पॊऱि कुलम्–अग्निकणों की राशियाँ; मळै कुलम् तीय्प्प–मेघराशियों को जलाने (सोखने); ऍऴुन्तत–ऊपर उठ चले। ८७५

ज्यों-ज्यों टेर हुई (बुलावा हुआ), त्यों-त्यों सेना उत्तरोत्तर उठ आयी। बड़ी भीड़ लग गयी और संचार का स्थान ही नहीं रहा। भट्ठी पर तपाकर बनाए गये और भयंकर ज्वालाएँ निकालनेवाले हथियारों ने आपस में ऐसी रगड़ खायी कि अंगारे छूटे और मेघों को जला-सुखा देंगे जैसे ऊपर उठ गये। ८७५

पण्म णिक्कुल यानैयिन् पुडैदोऱुम् बरन्द
ऒण्म णिक्कुल मळैयिडै युरुमॅन वॊलिप्पक्
कण्म णिक्कुलङ् गनलॅनक् कान्दुव कदुप्पिन्
तण्म णिक्कुलम् मळैयॆऴुङ् गदिरॆनत् तळैप्प 876

पण्–सजाए हुए; कुल मणि यानैयिन्–श्रेष्ठ जाति के सुन्दर गजों के; पुटै तोऱुम्–पार्श्वों में; परन्त–फैले दिखे; ऒळ् मणि कुलम्–प्रभापूर्ण रत्नों की राशियाँ; मळै इटै–मेघ-मध्य; उरुम् ऍन–वज्र के समान; ऒलिप्प–शब्द करते रहे; कण् मणि कुलम्–आँखों की पुतलियों की राशियाँ; कनल् ऍन–आग के समान; कान्तुव–ज्वलन्त रहीं; कतुप्पिन्–गालों पर के; तण् मणि कुलम्–शीतल मोतियों की राशियाँ; मळै ऍऴुम्–मेघ-निर्गत; कतिर् ऍन–चन्द्र के समान; तळैप्प–भरे शोभे। ८७६

गज श्रेष्ठ जाति के थे और वे खूब सजाये गये थे। उनके बाजुओं में रत्नों ने मेघों की-सी ध्वनि निकाली। उनकी आँखों से आग के ही

समान प्रकाश छूट रहा था। गालों पर शीतल मोती थे और वे मेघनिर्गत चन्द्र की-सी रोशनी फैला रहे थे। ८७६

तॉक्क दाम्बडै शुरिकुऴन् मडन्दैयर् तॉडिक्कै
मक्क डायर्मऱ् ऱियावरुन् दडुत्तनर् मऱुहि
ऑक्क वेहुदु मॅन्ऱनर् कुरङ्गिन्मुन् नॊरुवर्
पुक्कु मीण्डिल रॅन्ऱऴ़ दिरङ्गिनर् पुलम्बि 877

तॉक्कतु आम् पटै–जुटी उस सेना के वीरों को; चुरि कुऴ़ल्–घुंघराले केश वाली; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; तॉटि कै मक्कळ्–'तॉडि' नाम के कंकण पहनी हुई बेटियाँ; तायर्–माताएँ; मऱ्ऱु–और अन्य; यावरुम्–सभी ने; मऱुकि–व्याकुल होकर; कुरङ्कित् मुन्–उस वानर के समक्ष; ऑरुवर् पुक्कु मीण्टिलर्–एक भी जाकर लौट नहीं आया; ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; पुलम्पि अऴ़ुतु–प्रलाप करती रोयीं; इरङ्कितर्–दुःखी होकर; ऑक्क एकुतुम्–साथ जायँगे; ऍन्ऱतर्–कहकर; तटुत्ततर्–रोका। ८७७

जो वीर इकट्ठे हुए उनको, उनकी घुँघराले केश वाली स्त्रियों, तॉडि नाम के कंकणधारिणी बेटियों, माताओं और अन्यों ने व्याकुलमना होकर यह कहते हुए रोका कि इस वानर के समक्ष गये वीरों में कोई भी जीवित लौट नहीं आया। हम भी साथ जायँगी। वे विलाप करती हुई दुःख से भरकर रोयीं। ८७७

कैप रन्दॅऴ़ शेतैयङ् गडलिडैक् कलन्दार्
शॅय्है ताम्वरुन् देरिडैक् कदिरॅतच् चॅल्वार्
मॅय्ह लन्दमा तिरैवरु मुवमैयै वॅन्ऱार्
ऐव रुम्बॅरुम् बूदमो रैन्दुमॊत् तमैन्दार् 878

ऐवरुम्–पाँचों; पॅरुम् पूतम्–बड़े भूतों; ओर् ऐन्तुम् ऑत्तु–पाँचों के समान; अमैन्तार्–बने थे; कै परन्तु ऍऴ़ु–बाजुओं में फैलकर उठी; चेतै अम् कटल् इटै–सेना के सागर के बीच; कलन्तार्–जा मिले; ताम्–उनके; चॅय्कै वरुम्–निरन्तर चलनेवाले; तेर् इटै–रथ पर के; कतिर् ऍत–सूर्य के समान; चॅल्वार्–जाते रहे; मॅय् कलन्त–शरीर-प्राप्त; माल् निरै–मेघपंक्तियाँ; वरुम् उवमैयै–आती हों, उस उपमा को; वॅन्ऱार्–जीत गये। ८७८

पाँचों सेनापति सम्मिलित पाँचों बड़े भूतों के समान सब ओर उठकर फैल आयी सेना के सागर के मध्य जाकर मिल गये। निरन्तर चलनेवाले एकचक्र-रथ के रथी सूर्य के समान वे चले। साकार आनेवाले मेघों की पंक्ति भी उनकी उपमा के योग्य नहीं रही। वे उस उपमा को हरा गये। ८७८

मुन्दि यम्बल कऱङ्गिड मुऱैमुऱै पॊऱिहळ्
शिन्दि यम्बुऱ कॊडुञ्जिलै युरुमॅतत् तॆऱिप्पार्

वन्दि यम्बुरु मुनिवर्क्कु मम्मरर्क्कुम् वलियार्
इन्दि यम्बहै यायव यैन्दुमॊत् तिशैन्दार् 879

मुन्तु–सामने; इयम् पल–अनेक वाद्य; करङ्किट–बजते जा रहे थे; मुरै मुरै–रह-रहकर; पॊऱिकळ् चिन्ति–अंगारे छुड़ाते हुए; अम्पु उरु–शर जिससे चलाये जाते हैं; कॊटुम् विले–उस भयंकर धनु का; उरुम् ॲत–अशनि के समान; तॆऱिप्पार–टंकार निकालते; इयम्पुरु–प्रशंसा योग्य; मुनिवर्क्कुम् अमरर्क्कुम्–मुनियों और देवों के; वलि आर्–बलसंयुत; पकै आयवै–शत्रु जो बनी थीं; इन्तियम् ऐन्तुम् ऒत्तु–पाँचों इन्द्रियों की समानता करते हुए; वन्तु इचैन्तार्–आकर (युद्ध मे) लगे। ८७९

उनके आगे अनेक वाद्य बजते जा रहे थे। उन्होंने अंगारे छितराते हुए जानेवाले शरों के प्रेषक, धनुओं की टंकार निकाली। प्रशंसा-योग्य मुनियों और देवों का सबल शत्रुगण जो है, उस इंद्रियपंचक के समान वे आकर युद्ध में लगे। ८७९

वाश वन्वयक् कुलिशमुम् वरुणन्वन् कयिरुम्
एशि रॆन्ऱिशैक् किळवन्र नयिल्मुनै यॆळुवुम्
ईशन् वन्रलिच् चूलमु मॆन्ऱिवै यॊन्ऱुम्
ऊशि पोल्वदोर् वडुच्चॆया नॆडुम्बुय मुडैयार् 880

वाचवन् वय कुलिचमुम्–वासव का सशक्त वज्रायुध; वरुणन् वन् कयिरुम्–वरुण का बलवान पाश और; एचु इल्–त्रुटिहीन; तॆन् तिचै किळवन् तन्–दक्षिणी दिशा के अधिपति (यम) का; अयिल् मुनै ॲळुवुम्–तीक्ष्णमुखी दण्डायुध और; ईचन्–परमेश्वर का; तनि वन्–अद्वितीय और कठोर; चूलमुम्–त्रिशूल; ॲन्ऱु इवै ऒन्ऱुम्–ऐसे इनमें कोई भी; ऊचि पोल्वतु–सूई चुभी हो, ऐसा भी; ओर् वटु चॆया–एक निशान नहीं बना सके; नॆटुम् पुयम् उटैयार्–ऐसी भुजाओं के स्वामी थे। ८८०

उनकी लम्बी भुजाएँ ऐसी कठोर बलसंयुत थी कि वासव का बलवान वज्र, वरुणदेव का सबल पाश, त्रुटिहीन दक्षिण दिशा के अधिपति यम का तीक्ष्ण नोक का दण्डायुध और परमेश्वर का अप्रतिम कठोर त्रिशूल —इनमें कोई भी उन पर सूई-चुभी-जैसा निशान भी नहीं बना सकता था। ८८०

शूर्द डिन्दवन् मयिलिडैप् पऱित्तवन् ऱोहै
पार्प यन्दव नन्नत्ति निऱहिडैप् पऱित्त
मूरि वॆञ्जिऱ हिडैयिट्टुत् तॊडुत्तन मुरुक्कि
वीर शूडिहै कयिऱिट्टु नॆऱियिन् विशित्तार् 881

चूर् तटिन्तवन्–शूरसंहारक; मयिल् इटै–(कार्तिकेय स्वामी के) मोर से; पऱित्त–छीने गये; वल् तोकै–सबल पंखों को; पार् पयन्तवन्–प्रपंचसर्जक ब्रह्मा के; अन्नत्तिन् इऱकु इटै–हंसों के पंखों से; पऱित्त–छीने हुए; मूरि वॆम् चिऱकु–सुदृढ़ और सुन्दर पंखों को; इटै इट्टु–बीच-बीच में; तॊटुत्तन मुरुक्कि–गूँथकर ऐंठकर;

वीर चूटिकै–(बनाया गया) "वीर चूडा"; नॅऱ्ऱियिऩ्–भाल पर; कयिऱु इट्टु–रस्सी से; विचित्तार्–बाँध रखा था। ८८१

उनके भालों पर 'वीर चूडिका' नाम के आभरण बँधे थे। वे शूर-संहारक कार्तिकेय के वाहन मोर के सबल पंखों और भूमि के सर्जक ब्रह्मा के वाहन हंस के पंखों को मध्य-मध्य गूँथकर और बटकर बनाये गये थे। ८८१

पॊऩ्ऱि णिऩ्दतो ळिरावणऩ् मार्बॊडुम् बॊरुद
अऩ्ऱि ऴऩ्दको डरिऩ्दिडु मऴहुरु कुऴैयर्
निऩ्ऱ वऩ्ऱिशै नॅडुङ्गळि याऩैयि नॅऱ्ऱि
मिऩ्ऱि णिऩ्दऩ वोडैयिऩ् वीरपट् टत्तर् 882

पॊऩ् तिणिऩ्त–स्वर्ण (आभरण) भूषित; तोळ्–कन्धों वाले; इरावणऩ्–रावण के; मार्पु ऒटुम्–वक्ष के साथ; पॊरुत अऩ्ऱु–जिस दिन (दिग्गज) भिड़े; इऴन्त कोटु–उनके टूटे दाँतों के; अरिन्तिटुम्–काटकर बने; अऴकु उरु–सौन्दर्ययुक्त; कुऴैयर्–कुण्डलधारी; निऩ्ऱ–(हारकर जो) रहे; वल्–बलवान; तिचै कळि नॅटुम् याऩैयिऩ्–मत्त दिग्गजों के; नॅऱ्ऱि–मस्तक में; मिऩ् तिरिन्तु अऩ–बिजली चलती हो ऐसे; ओटैयिऩ्–मुखपट्ट के बने; वीर पट्टत्तर्–वीरपट्टी वाले हैं। ८८२

उनके सुन्दर कर्ण-कुण्डल दिग्गजों के सबल रावण के स्वर्णाभरणभूषित कन्धों और वक्ष से भिड़ते समय टूटे हुए दाँतों के खण्डों से बने थे। उनके भालों पर की वीरपट्टिका उन मत्त दिग्गजों के बिजली की-सी चमक के मुखपट्ट से बनी थी। ८८२

इऩ्दिर ऩिशैयिऴऩ् देहु वाऩिहल्, तऩ्दिमुऩ् कडाविऩऩ् मुडुहत् तामदऩ्
मऩ्दर वालडि पिडित्तु वल्लैयेल्, उऩ्दुदि नीयॅऩ वलित्त वूऱ्ऱत्तार् 883

इचै इऴन्तु–नाम खोकर; एकुवाऩ्–जो लौटकर; इन्तिरऩ्–इन्द्र; इकल् तन्ति–सबल-दन्ती (ऐरावत) को; मुऩ् कटावितऩ्–तेजी से चलाते हुए; मुटुक–जब चला; ताम्–इन्होंने; अतऩ् मन्तर वाल्–उसकी कोमल दुम के; अटि पिटित्तु–मूल को पकड़कर; वल्लैयेल्–शक्त हो तो; उन्तुति नी–चलाओ तुम; ॲऩ–कहकर; वलित्त–खींचा, ऐसे; ऊऱ्ऱत्तार्–बलशाली। ८८३

रावण से लड़ाई में अपना यश गँवाकर इन्द्र जब पीठ दिखाकर भागने लगा, तब उसने अपने दन्ती ऐरावत को शीघ्र-शीघ्र चलाया। तब इन सेनापतियों ने ऐरावत की पूँछ का मूलभाग पकड़ लिया और कहा कि शक्त हो तो आगे चला लो। वे ऐसे बलशाली थे। ८८३

निदिनॅडुङ् गिळवऩै नॅरुक्कि नीणहर्प्
पदियॊडुम् बॅरुन्दिरुप् पऱित्त पण्डैनाळ्

विदियॊडु	मन्ऩवऩ्	विऴुन्दु	वॆन्निडप्
पॊदियॊडुम्	वारिय	पॊलन्गॊळ्	पूणिऩार् 884

नॆट्टुम् निति किऴवनै–बहुत बड़े धनी कुबेर को; नॆरुक्कि–युद्ध में हराकर; नीळ् नकर् पतियॊट्टुम्–विशाल नगर अलकापुरी के साथ; पॆरुम् तिरु–उसकी बड़ी सम्पत्ति को भी; परित्त पण्टै नाळ्–जिस दिन छीन लिया (इन्होंने), उस प्राचीन दिन में; अन्नवन्–वे (कुबेर); वितियॊटु विऴुन्तु–विधिवश हारकर; वॆन् इट–पीठ दिखाकर भागे; पॊति ऑट्टुम् वारिय–तब गट्ठरों में लिये गये; पॊलन् कॊळ् पूणिऩार्–स्वर्ण-निर्मित आभरणधारी हैं। ८८४

वे उन आभरणों के धारक हैं, जो कुबेर के नगर से लूट लाये थे। यह तब हुआ जब उन्होंने पहले कभी बड़े धन के स्वामी कुबेर को युद्ध में हराकर उसका नगर और उसकी सारी सम्पत्ति छीन ली थी और कुबेर विधिवश पीठ दिखाते हुए भागा था। ८८४

पालिरुत्	तन्दहन्	पणिय	ऩाहिनिन्
कोलिनैत्	तिलनॆन	वुलहङ्	गूऱलुम्
नीलिरत्	तिरावणन्	मुनिवु	नीक्कुवान्
कालनैक्	कालितिर्	कैयिर्	कट्टिऩार् 885

पाल् निरुत्तु–विधिसंस्थापक; अन्तकन्–यम; पणियन् आकि–सेवक बनकर; निन् कोल्–आपका शासन; निलैत्तिलन्–नहीं मानता; ऎन–ऐसा; उलकम् कूऱलुम्–लोकवासियों ने जब कहा तब; नील् निरत्तु इरावणन्–नीले वर्ण के रावण के; मुनिवु नीक्कुवान्–कोप को दूर करने के लिए; कालनै–उस यम के; कालितिल् कैयितिल्–पैरों और हाथों को; कट्टिऩार्–बाँध दिया, ऐसे हैं। ८८५

लोगों ने रावण से कहा कि विधिसंस्थापक यम आपका सेवक नहीं बना, न आपका शासन मानता है। रावण को अपार गुस्सा हो गया। तब इन पंच सेनापतियों ने रावण का कोप शान्त करने के लिए यम के पैरों और हाथों को बाँधा था। ८८५

मलैहळै	नहुन्दड	मार्बर्	माल्हडल्
अलैहळै	नहुनॆडुन्	दोळ	रन्दहन्
कॊलैहळै	नहुनॆडुङ्	गॊलैयर्	कॊल्लनू
दुलैहळै	नहुमऩ	लुमिऴुङ्	गण्णिऩार् 886

मलैकळै नकुम्–पर्वतों को परिहसित करनेवाले; तट मार्पर्–विशाल वक्षों के; माल् कटल् अलैकळै–बड़े सागर की तरंगों की; नकुम्–निन्दा करनेवाले; नॆट्टुम् तोळर्–बड़े कन्धों वाले; अन्तकन् कॊलैकळै–यम के संहारक कार्यों को; नकुम्–नीचा दिखानेवाले; नॆट्टुम् कॊलैयर्–बड़े ख़ूनी लोग हैं; कॊल्लन् ऊतु–लुहारों की फूँकी हुई; उलैकळै नकुम्–भट्ठियों की हँसी उड़ानेवाली; अऩल् उमिऴुम्–अग्निवर्षक; कण्णिऩार्–आँखों वाले। ८८६

वे पर्वतों की हँसी उड़ानेवाले वक्षःस्थल के हैं। समुद्र की उत्तुंग तरंगों का परिहास करनेवाले (ऊँचे) कन्धों के हैं (या लम्बी भुजाओं के हैं)। इनके खूनी कार्यों के सामने यम के मारक कार्यों की कोई गिनती ही नहीं थी। उनकी आँखें लुहार की फूँकी जानेवाली भट्ठी का परिहास करनेवाली थीं यानी वे लाल थीं और आग बरसानेवाली थीं। ८८६

तोल्हिळर् तिशैदोरु मुलहैच् चुर्रिय
शाल्हिळर् मुळङ्गॅरि तळङ्गि येर्रिनुम्
काल्हिळर्न्दु अडिप्पिनुङ् गालङ् गैयुर
माल्हडल् किळरिनुञ् जरिक्कुम् वन्मैयार् 887

कालम् कै उर–प्रलयकाल के समीप आने पर; तोल् किळर्–दिग्गज-शोभित; तिचै तोरुम्–आठों दिशाओं में; उलकै चर्रिय–सारे लोक को घेरकर; चाल् किळर्–खूब बढ़कर; मुळङ्कु ऍरि–शोर के साथ जलनेवाली (प्रलय-) अग्नि; तयङ्कि एर्रितुम्–और ज़ोर से उठे तब भी; काल्–पवन; किळर्न्तु–उठकर; अटिप्पितुम्–अत्यधिक ज़ोर से बहे तब भी; माल् कटल्–बड़े सागर; किळरितुम्–उमग आएँ तब भी; चरिक्कुम्–संचार करेंगे, ऐसे; वन्मैयार्–साहसी हैं। ८८७

युगान्त में जब दिग्गज-पालित दिशाओं में और अन्य सभी स्थानों में शब्द के साथ जलनेवाली आग उठे, और भयंकर आँधी बहे, और सारे सागर उमग आवें तो भी ये उनकी कुछ परवाह न करके घूमने का साहस रखनेवाले हैं। ८८७

इव्वहै यैवरु मॅळुन्द तानैयर्, मीय्हिळर् तोरण मदनै मुर्रितार्
कैयॊडु कैयुर वणियुङ् गट्टिनार्, ऐयनु मवर्निलै यमैय नोक्किनान् 888

इ वकै–ऐसे; ऐवरुम्–पाँचों सेनापतियों ने; ऍळुन्त तानैयर्–चढ़ जानेवाली सेना के; मीय् किळर्–प्रबल रूप से विद्यमान; तोरणम् अतनै–तोरण को; मुर्रितार्–घेरकर; कैयॊटु कैयुर–एक बाज़ू से दूसरा लगाकर; अणियुम् कट्टितार्–सेना के भाग खड़ा किये; ऐयनुम्–महिमावान (हनुमान) ने भी; अवर् निलै–उनकी स्थिति; अमैय–खूब; नोक्कितान्–देख ली। ८८८

ऐसे पाँचों सेनापति अपनी बढ़ी आयी सेना को लेकर शक्तियुत उस तोरण को घेर गये। उन्होंने सेना को दलों में विभाजित कर बाज़ुओं में मिल जाएँ, ऐसे व्यूहों में खड़ा कर दिया। महिमावान हनुमान ने उनकी स्थिति खूब निहारी। ८८८

अरक्कर्त् मार्रलु मळविल् शेनैयिन्, तरुक्कुमम् मारुदि तनिमैत् तन्मैयुम्
पॊरुक्कॅन नोक्किय पुरन्द रादियर्, इरक्कमु मवलमुन् दुळक्कु मॅय्दिनार् 889

अरक्कर् तम्–राक्षसों की; आर्रलुम्–शक्ति और; अळवु इल्–अमाप; चेनैयिन् तरुक्कुम्–सेना का गर्व; अ मारुति–उस हनुमान के; तनिमै तन्मैयुम्–और

एकाकीपन को; पॉरुक्कॅन नोक्किय-शीघ्र जिन्होंने देखा; पुरन्तरातियर्-उन पुरन्दरादि देवों ने; इरक्कमुम्-सहानुभूति और; अवलमुम्-दुःख और; तुळक्कुम्-कम्पन का; ॲय्तिनार्-अनुभव किया। ८८६

पुरन्दर आदि देवों ने राक्षसों का बल, उस अपार सेना की शान और हनुमान का एकाकीपन अकस्मात् देखा तो उनके मन में एक साथ सहानुभूति, दुःख और भयकंपन के भाव जगे। ८८९

इऱ्ऱन ररक्करिप् पहलु ळॅयॅन्नाक्, कऱ्ऱुणर् मारुदि कळिक्कुञ् जिन्दैयान्
मुऱ्ऱुऱच् चुलाविय मुडिवि ऱात्तैयैच्, चुऱ्ऱुऱ नोक्कित्तन् ऱोळै नोक्किनान् 890

इ पकल् उळे-इस अहस् के अन्दर ही; अरक्कर् इऱ्ऱनर्-राक्षस मर गये (जायँगे); ॲना-ऐसा; कऱ्ऱु उणर् मारुति-अध्ययन करके बुद्धिमान बने हनुमान ने; कळिक्कुम् चिन्तैयान्-मुदित-मन होकर; मुऱ्ऱु उऱ-पूर्ण रूप से चारों ओर; चुलाविय-घेरे आयी; मुटिवु इल्-निस्सीम; तात्तैयै-सेना को; चुऱ्ऱु उऱ-चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर; नोक्कि-देखकर; तन् तोळै-अपने कन्धों को; नोक्किनान्-देख लिया। ८९०

हनुमान शास्त्रों का अध्ययन कर चुका था। वह बड़ा बुद्धिमान था। उसने अनुमान कर लिया कि ये सभी राक्षस इस एक अहस् में मर जायँगे। हर्षित होकर उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी, अपने को घेरे रही सेना के वीरों को देखा फिर अपने कन्धों पर सगर्व दृष्टिपात किया। ८९०

पुन्ऱलैक् कुरङ्गिदु पोलु मालमर्
वॅन्ऱदु विण्णवर् पुहऴै वेरॊडुम्
तिन्ऱवल् लरक्करैत् तिरुहित् तिन्ऱदाल्
ॲन्ऱन रयिर्त्तनर् निरुद रॅण्णिलार् 891

ॲण् इलार्-असंख्यक; निरुतर्-राक्षस; पुल् तलै-छोटे सिर वाला; कुरङ्कु इतु पोलुम्-यही बन्दर क्या; माल् अमर् वॅन्ऱतु-बड़े युद्ध में जीता; विण्णवर् पुकऴै-देवों के यश को; वेर् ऑटुम् तिन्ऱ-जड़ के साथ (जिन्होंने) खाया; वल् अरक्करै-कठोर राक्षसों को; तिरुकि-तोड़-मरोड़कर; तिन्ऱतु-खाया (इसी ने); ॲन्ऱनर्-कहा; अयिर्त्तनर्-सन्देह किया। ८९१

असंख्यक राक्षसों ने हनुमान को देखा तो उन्हें सन्देह हुआ कि इसी छोटे सिर वाले बन्दर ने बड़ा युद्ध जीता? देवयश को मिटानेवाले राक्षसों को जड़ से मरोड़कर खाया (निर्मूल किया)?। ८९१

आयिडै यनुमनु ममरर् कोन्हर्
वायिनिन् ऱिव्वळिक् कॊणर्न्दु वैत्तमाच्
चेयॊळित् तोरणन् दुम्बर्च् चेर्न्दु
मीयुयर् विशुम्बैयुम् कडक्क वीङ्गिनान् 892

अ इडँ–तब; अनुमतुम्–हनुमान ने भी; अमरर् कोन्–देवराज; नकर् वायिल् निन्रु–के नगर के द्वार से; इ वळि–यहाँ; कोणरन्तु वैत्त–जो लाकर रखा गया था; मा चे–अधिक लाल रंग की; ऑळि–रोशनी से युक्त; तोरणत्तु–तोरण के; उम्पर्–ऊपर; चेण् नॅटु–बहुत दूर; मी उयर्–ऊपर तक गये; विचुम्पॅयुम् कटक्क–आकाश को भी पार करते हुए; वीङ्कित्तान्–(फूला) विराट् रूप लिया। ८६२

तब हनुमान ने उस तोरण पर खड़े होकर विराट् रूप धारण कर लिया। वह बड़ा तोरण देवेन्द्र के नगर के द्वार से लाकर इधर रखा गया था और लाल स्वर्ण का बना था। हनुमान इतना ऊँचा बढ़ा कि आकाश की चोटी को भी पार कर गया उसका सिर। ८९२

वीङ्गिय वीरनै वियन्तु नोक्किय
तीङ्गिय लरक्करुन् दिरुहि नार्शित्तम्
वाङ्गिय शिलैयिनर् वळङ्गि नार्पडै
एङ्गिय शङ्गिन मिडित्त पेरियै 893

वीङ्किय वीरनै–उस तरह बड़े बने वीर को; वियन्तु नोक्किय–विस्मित होकर देखनेवाले; तीङ्कु इयल्–परपीडन-स्वभाव के; अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; चित्तम् तिरुकित्तार्–कोप में बढ़कर; वाङ्किय चिलैयितर्–कुंचितधनु होकर; पडै वळङ्कित्तार्–अस्त्र बरसाये; चङ्कु इत्तम् एङ्किय–शंखों ने ध्वनि निकाली; पेरि इटित्त–भेरियों ने नाद किया। ८६३

नृशंसकारी राक्षसों ने उस वीर का ऐसा बढ़ा आकार विस्मय के साथ देखा, उनका कोप भी बढ़ा। उन्होंने धनुष उठाकर शरों को हनुमान पर चलाया। तब शंख वज उठे और भेरियाँ ठनकीं। ८९३

ऑऱिन्दन रॅय्दन रॅण्णि ऱन्दन
पॉऱिन्दॅळु पडैक्कल मरक्कर् पोक्कित्तार्
शॅऱिन्दन मयिर्प्पुऱन् दिन्तवु तीर्वुऱच्
चॉऱिन्दन वॅन्तविरुन् दैयन् रूङ्गितान् 894

अरक्कर्–उन राक्षस वीरों ने; पॉऱिन्तु ऍळु–अंगारे छोड़ते हुए उठ जानेवाले; ऍण् इऱन्तन पडै कलम्–असंख्यक हथियारों को; ऍऱिन्तनर् ऍय्तनर्–फेंके, चलाये; पोक्कित्तार्–हनुमान पर मारे; मयिर् पुऱम्–रोमों के मध्य; चॅऱिन्तन–जो लगे; तिन्तवु तीर्वु उऱ–खुजली मिटाते हुए; चॉऱिन्तन ऍन्त–खुजलाते जैसे रहे; इरुन्तु–उस स्थिति में रहकर; ऐयन् तूङ्कितान्–श्रेष्ठ हनुमान तन्द्रित रहा। ८६४

राक्षसों ने हथियार फेंके और चलाये। वे अंगारे छुड़ाते हुए बढ़ आये, आकर हनुमान की खुजली को मिटाते-से उसके शरीर के बालों के मध्य जाकर ठहर गये। उस स्थिति में हनुमान थोड़ा तन्द्रित बैठा रहा। ८९४

उऱ्ऱुड नरक्करु मुरुत्तु डऱ्ऱिनर्
चॅऱ्ऱुर नॅरुक्किनर् शॅरुक्कुम् जिन्दैयार्
मऱ्ऱैयर् वरुम्बरि शिवरै वल्विरैन्
दॅऱ्ऱुवॅ नॆनवॆळ् वनुव नेन्दिनान् 895

अरक्करुम्–राक्षस भी; चॅरुक्कुम् चिन्तैयार्–गर्वीले मन के; उटन् उऱ्ऱु–तभी मिलकर; उरुत्तु उटऱ्ऱितर्–क्रुद्ध हो लड़े; चॅऱ्ऱु उऱ–एकदम; नॅरुक्कितर्–टकराये; अनुमन्–हनुमान ने भी; मऱ्ऱैयर् वरुम् परिचु–अन्यों को भी आना पड़े, ऐसा; इवरै–इनको; वल् विरैन्तु–अति शीघ्र; ऍऱ्ऱुवॅन्–निपातूंगा; ऍन–कहकर; ऍळु–लौहदण्ड; एन्तिनान्–(हाथ में) धारण कर लिया। ८६५

गर्वीले राक्षसों ने सब मिलकर पास आकर हनुमान पर आक्रमण किया। हनुमान ने सोचा कि इनको मारूँगा; वही अन्यों को भी युद्ध में निमन्त्रण देने का उपाय है। ऐसा सोचकर उसने लौहदण्ड हाथ में उठा लिया। ८९५

ऊक्किय पडैहळु मुरुत्त वीररुम्
ताक्किय परिहळुन् दडुत्त तेर्हळुम्
मेक्कुयर् कॉडियुडै मेह मालैपोल्
नूक्किय करिहळुम् बुरळ नूऱिनान् 896

ऊक्किय–प्रेरित; पटैकळुम्–हथियार और; उरुत्त वीररुम्–क्रुद्ध वीर; ताक्किय परिकळुम्–चढ़ आये अश्व; तटुत्त तेर्कळुम्–और रोकनेवाले रथ; मेक्कु उयर्–ऊपर उठायी गयी; कॉटि उटै–ध्वजाओं के साथ रहे; मेक मालै पोल्–मेघ-श्रेणियों के समान; नूक्किय–चालित; करिकळुम्–गज; पुरळ–लोट जायँ, ऐसा; नूऱिनान्–(हनुमान ने) निहत कर दिया। ८६६

हनुमान ने प्रत्याघात किया, जिससे राक्षसप्रेरित हथियार, क्रुद्ध वीर, आकर टकरानेवाले अश्व, उसको रोकनेवाले रथ और ध्वजा उठाये आनेवाले मेघमाला-से गजवृन्द सब नीचे गिरे और लुढ़क गये। ८९६

वार्मदक् करिहळिन् कोडु वाङ्गिमात्
तेर्पडप् पुडैक्कुमत् तेरिन् शिल्लियाल्
वीररै युरुट्टुमव् वीरर् वाळिनाल्
तारुडैप् पुरवियैत् तुणियत् ताक्कुमाल् 897

वार् मत–मदस्रावी; करिकळिन्–गजों के; कोटु वाङ्कि–दाँतों को छीनकर; मा तेर्–बड़े रथों को; पट पुटैक्कुम्–मिटाते हुए उन पर पटकता; अ तेरिन् चिल्लियाल्–उन रथों के पहियों से; वीररै उरुट्टुम्–वीरों को मारता; अ वीरर् वाळिताल्–उन वीरों की तलवारों से; तार् उटै पुरवियै–दाम-सहित अश्वों को; तुणिय–खण्ड-खण्ड करते हुए; ताक्कुम्–काटता। ८६७

उसने मत्तगजों के लम्बे दाँतों को छीना और उनसे मारकर बड़े

रथों को तोड़ दिया। उन रथों के पहियों से मारकर वीरों के प्राण हर लिये। उनकी तलवारों से दामालंकृत अश्वों को काटकर मिटाया। ८९७

इरण्डुते रिरण्डुकैत् तलत्तु मेन्दिवे
ऱिरण्डुमाल् यानैपट् टुरुळ वॆऱ्ऱुमाल्
इरण्डुमाल् यानैहै यिरण्डि नेन्दिवे
ऱिरण्डुपा लिनुम्वरुम् बरियै यॆऱ्ऱुमाल् 898

इरण्टु तेर्–दो रथों को; इरण्टु कै तलत्तुम्–दोनों हाथों में; एन्ति–उठा लेकर; वेऱु इरण्टु–अन्य दो; माल् यानै–दो बड़े गजों को; पट्टु उरुळ–मरकर लोट जायँ, ऐसा; ऍऱ्ऱुम्–मारता; कै इरण्टिन्–अपने दो हाथों में; इरण्टु माल् यानै–दो बड़े गजों को; एन्ति–उठाकर; इरण्टु पालितुम्–दोनों ओर; वेऱु वरुम्–अलग आनेवाले; परियै ऍऱ्ऱुम्–अश्वों पर दे मारता। ८९८

हनुमान दोनों हाथों में दो रथ उठाता और उनको चलाकर दो बड़े गजों को मारता और गज लुढ़क जाते। फिर दो बड़े-बड़े हाथी उठाते और दोनों ओर आनेवाले अश्वों पर पटककर उन्हें निपात देता। ८९८

मायिर नॆंडुवरै वाङ्गि मण्णिलिट्
टायिरत् तेर्पड वरैक्कु मालळित्
तायिरङ् गळिऱ्ऱैयोर् मरत्ति नालडित्
तेयॆनु मात्तिरै यॆऱ्ऱि मुऱ्ऱुमाल् 899

मायिरम्–पास रहे; नॆंटु वरै–बड़े पर्वतों को; वाङ्कि–अनायास उखाड़कर; आयिरम् तेर्–सहस्र रथों को; पट–मिटाकर; मण्णिल् इट्टु–भूमि पर डालकर; अळित्तु अरैक्कुम्–बुकनी बनाते हुए पीसता; एय् ऍतुम् मात्तिरै–'ए' कहने मात्र के अन्दर; आयिरम् कळिऱ्ऱै–सहस्र गजों को; ओर् मरत्तिताल्–एक पेड़ से; अटित्तु ऍऱ्ऱि–मार-पीटकर; मुऱ्ऱुम्–हत करता। ८९९

हनुमान पास रहे एक बड़े पर्वत को आसानी से उखाड़कर उठा लेता और सहस्रों रथों को भूमि पर डालता और तोड़कर बुकनी बना लेता। 'ए' कहने के समय के अन्दर एक वृक्ष से सहस्रों गजों को पीटता और निपात देता। ८९९

विशैयिन्मान् ऱॆऱ्हळुङ् गळिऱुम् विट्टहल्
तिशैयुमा हायमुञ् जॆऱियच् चिन्दुमाल्
कुशैहॊळ्पाय् परियॊडुङ् गॊऱ्ऱ वेलॊडुम्
पिशैयुमा लरक्करैप् पॆरुङ्ग रङ्गळाल् 900

विचैयिन्–अति क्षिप्र गति से; मान् तेर्कळुम्–अश्वयुक्त रथों; कळिऱुम्–गजों को; विट्टु–उछालकर; अकल् तिचैयुम्–विशाल दिशाओं और; आकायमुम्–आकाश में; चॆऱिय–ठस भर जाएँ, ऐसा; चिन्तुम्–छितरा देता; अरक्करै–राक्षसों को; पॆरुम्

करङ्कळाल्–अपने बड़े हाथों से; कुचै कॊळ्–लगाम-लगे; पाय् परि–सरपट भागनेवाले अश्वों; ओटुम्–के साथ; कॊट्र वेल् ओटुम्–और विजयदायिनी शक्तियों के साथ; पिचैयुम्–पीसकर मार देता। ९००

और भी हनुमान तेज़ी के साथ अश्वयुक्त रथों और गजों को ले उछालता, जिससे आकाश और दिशाओं में वे भर जाते। उनको ले बिखेर देता। वह कभी राक्षसवीरों को अपने बड़े हाथों से उठाता और उनको लगाम लगे सरपट दौड़नेवाले अश्वों और विजयदायिनी शक्तियों के साथ मसलकर मार डालता। ९००

उदैक्कुम्वॆङ्	गरिहळै	युळक्कुन्	देर्हळै
मिदिक्कुम्वन्	बुरवियैत्	तेय्क्कुम्	वीररै
मदिक्कुम्वल्	लॆळुविन्ना	लरैक्कु	मण्णिडैक्
कुदिक्कुम्वन्	रलैयिडैक्	कडिक्कुङ्	गुत्तुमाल् 901

वॆम् करिकळै–क्रूर करियों के; उतैक्कुम्–लातें मारता; उळक्कुम् तेर्कळै–मथनेवाले रथों को; मितिक्कुम्–रौंद डालता; वन् पुरवियै–सशक्त अश्वों को; तेय्क्कुम्–पीसता; वीररै–वीरों को; वल् ऍळुवित्ताल्–सशक्त लौहदण्ड से; मण्णिटै–भूमि पर; मतिक्कुम्–मथ डालता; अरैक्कुम्–बेल देता; वन् तलै इटै–कठोर सिरों पर; कुतिक्कुम्–कूदता; कटिक्कुम्–काटता; कुत्तुम्–घूँसा देता। ९०१

और हनुमान क्रूर गजों के लात मारता। युद्धभूमि को मथते आनेवाले रथों को पैरों से कुचलता। अश्वों को रौंदता। वीरों को लौहदण्ड से बेलता। चटनी-सा बना देता। उनके कठोर सिरों पर कूदता। उनको दाँतों से काटता और घूँसे देता। ९०१

तीयुरु	पॊऱियुडैच्	चॆङ्गण्	वॆङ्गमा
मीयुरत्	तडक्कैयाल्	वीरन्	वीशुदो
ऱाय्पॆरुङ्	गॊडियन	कडलि	लाळ्वन
पायुडै	नॆडुङ्गलम्	पडुव	पोन्ऱवे 902

ती उरु–आग से उत्पन्न; पॊऱि इटै–अंगारों के समान; चॆम् कण्–लाल आँखों वाले; वॆम् कैमा–भयंकर (सूंड़ वाले) गजों को; वीरन्–(हनुमान) महावीर के; तट कैयाल्–बड़े हाथों से; मी उऱ–आकाश में पहुँचाते हुए; वीचु तोऱु–फेंकते हर समय; आय् पॆरुम्–चुनी हुई बड़ी; कॊटियत–ध्वजा वाले; पाय् उटै–पाल-सहित; नॆटुम् कलम्–बड़े पोत; कटलिल् आऴ्वत–समुद्र में मग्न होकर; पटुव–मिटते; पोन्ऱ–जैसे लगते। ९०२

अंगारे निकालनेवाली आग के समान लाल आँखों से युक्त क्रूर हाथियों को महावीर अपने विशाल हाथों से उठाकर फेंकता, तब वे बड़ी ध्वजाओं-सहित पाल वाले बड़े पोत समुद्र में डूबते-जैसे लगते। ९०२

तारोडु मुरुळोडुन् दडक्कै यारुऱ्ऩि
वीरन्विट् टॅरिन्दऩ कडलिऩ् वीळ्वऩ
वारियि ऩॅळुशुडर्क् कडवुळ् वाऩवऩ्
तेरिऩै निहर्त्तऩ पुरविऩ् तेर्हळे 903

तनि वीरन्–अद्वितीय वीर ने; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; विट्टु ऍरिन्तन–जिनको उठा फेंका; पुरवि तेर्कळ्–वे अश्व-सहित रथ; तार् ओटुम्–घंटियों की माला के साथ; उरुळ् ओटुम्–पहियों के साथ; कटलिल् वीळ्वन–समुद्र में जा गिरे, तब; वारियिन्–समुद्र से; ऍळु–उगनेवाले; चुटर् कटवुळ्–किरणमाली; वानवन्–सूर्य-देवता के; तेरिनै–रथ की; निकर्त्तन–समानता कर रहे थे। ९०३

अद्वितीय महावीर द्वारा फेंके गये अश्व-जुते रथ गुरियों से युक्त दामों के साथ और पहियों के साथ समुद्र में जा गिरते हैं। तब वे समुद्र से उग आनेवाले किरणमाली सूर्यदेव के रथ की समता करते। ९०३

मीयुऱ विण्णिडै मुट्टि वीळ्वऩ, आय्पॅरुन् दिरैक्कड लळ्वत् ताळ्वऩ
ओय्वऩ पुरविवा युदिरङ् गाल्वऩ, वायिडै यॅरियुडै वडवै पोऩ्ऱवे 904

मी विण् इटै–ऊपर आकाश में; उऱ–लगे ऐसा; मुट्टि–जाकर टकराकर; वीळ्वन आय्–गिरकर; पॅरुम् तिरै–उत्तुंग तरंगों के; कटल् अळुवत्तु–समुद्र की गहराई में; आळ्वन–डूबनेवाले; ओय्वन–शिथिल पड़े; पुरवि–अश्व; वाय् उतिरम् काल्वन–मुख से रक्त वमन करते; वाय् इटै–मुख में; ऍरि उटै–अग्नियुक्त; वटवै पोन्ऱ–बड़वाग्नि के समान लगे। ९०४

हनुमान के द्वारा ऊपर उछाले गये अश्व आकाश में जाकर टकराकर नीचे गिरते और उत्तुंग तरंगों वाले समुद्र की गहराई में डूब जाते और निष्क्रिय बन जाते। तब अपने मुखों से रक्त निकालते हुए वे अग्निमुखी बड़वाग्नि के समान लगते। ९०४

वरिन्दुऱ वल्लिदिऩ् चुऱ्ऱि वालिऩाल्
विरिन्दुऱ वीशलिऩ् कडलिऩ् वीळ्हुनर्
तिरिन्दऩर् शॅऱिकयिऱ् ऱरवि ऩाऱ्ऱिरि
अरुन्दिऱऩ् मन्दर मनैय रायिऩार् 905

वालिताल्–पूंछ से; वल्लितिन्–कसकर; उऱ चुऱ्ऱि वरिन्तु–खूब लपेट बाँधकर; विरिन्तु उऱ–बहुत दूर; वीचलिन्–फेंकने से; कटलिल् वीळ्कुनर्–समुद्र में जो गिरे वे; तिरिन्तनर्–घूमे; चॅऱि कयिऱ्ऱु अरविताल्–मोटी नेती, (वासुकी) सर्प से; तिरि–घूमनेवाले; अरुम् तिऱल्–बहुत बलवान; मन्तरम् अनैयर्–मन्दरपर्वत के समान; आयिनार्–बने। ९०५

हनुमान अपनी पूंछ लपेटकर कसकर बाँध लेता, बहुत दूर जा गिरें,

ऐसा वीरों को घुमाकर फेंक देता। वे समुद्र में जा गिरते और (लट्टू के समान) घूमते। वे तब वासुकी की मोटी नेती द्वारा घुमाये गये प्रबल व सुदृढ़ मन्दरपर्वत के समान लगते। ९०५

वीरऩ्वऩ् ऱडक्कैया लॅंडुत्तु वीशिय
वार्मदक् कळिऱ्ऱिनिऱ ऱेरिऩ् वाशियिऩ्
मूरिवॅङ् गडल्पुहक् कडिदु मुऩ्दिऩ
ऊरिऩ्वॅङ् गुरुदिया ऱीर्प्प वोडिऩ 906

वीरऩ्–महावीर द्वारा; वऩ् तट कैयाल्–सशक्त बड़े हाथों से; ॲंटुत्तु–उठाकर; वीचिय–फेंके गये; वार् मत–बहनेवाले मद के; कळिऱ्ऱिनिल्–गजों से भी; तेरिऩ्–रथों से भी; वाचियिऩ्–अश्वों से भी (अधिक तेज़ी से); ऊरिऩ्–लंका में बही; वॅम् कुरुति आऱु–भयंकर रक्त-नदी द्वारा; ईर्प्प–खिचकर; ओटिऩ–जो चले वे; मूरि वॅम् कटल्–बड़े और भयंकर समुद्र में; पुक–डूबने के लिए; कटितु मुऩ्तिऩ–आगे गये। ९०६

महावीर के द्वारा उसके सबल और विशाल हाथों से फेंके जाकर मदस्रावी गज और अश्व तेज़ी से समुद्र की ओर गये। पर उससे भी अधिक तेज़ी से जाते रहे समुद्र में डूबने के वास्ते वे शव, जिनको लंका में बहनेवाली रक्त की नदी तिराते खींच ले जा रही थी। ९०६

पिऱैक्कडै यॅयिऱ्ऱिऩ पिलत्तिऩ् वायिऩ
कऱैप्पुऩऱ् पॊऱिहळो डुमिऴुङ् गण्णिऩ
उऱैप्पुऱु पडैयिऩ वुदिर्न्द याक्कैहळ्
मऱैत्तऩ महरतो रणत्तै वाऩुऱ 907

उऱैप्पु उऱु–अपने पर खूब लगे (चुभे); पटैयिऩ–हथियारों के साथ रहनेवाले; पिऱै कटै ॲयिऱ्ऱिऩ–चन्द्रकला के समान नोकदार दाँत वाले; पिलत्तिऩ् वायिऩ–बिल-सरीखे मुखों वाले; कऱै पुऩल्–चिपकनेवाले रक्त-जल को; पॊऱिकळोटु–अंगारों के साथ; उमिऴुम् कण्णिऩ–उगलनेवाली आँखों के; उतिर्न्त याक्कैकळ्–नीचे गिरे पड़े (राक्षसों के) मृतक शरीर (ढेर); वाऩ् उऱ–आकाश तक जाकर; मकर तोरणत्तै–मकराकार तोरण को; मऱैत्तऩ–ढंक दिया (ढेर ने)। ९०७

गड़े हथियारों के साथ चन्द्रकला-सदृश वक्र दाँतों, बिल के समान मुखों और चिपचिपे रक्त के साथ आग उगलनेवाली आँखों से युक्त राक्षस-शवों का ढेर इतना ऊँचा था कि मकर-तोरण ही ढँक गया। ९०७

कुऩ्ऱुळ मरमुळ कुलङ्गॊळ् पेरॅऴु
ऒऩ्ऱुल पलवुळ वुयिरुण् बाऩुळऩ्
अऩ्ऱिनर् पलरुळ रॅयऩ् कैयिऩिल्
पॊऩ्ऱुव दल्लदु पुऱत्तुप् पोवरो 908

कुन्ऱु उळ–पर्वत हैं; मरम् उळ–पेड़ हैं; कुलम् कॉळ्–श्रेष्ठतायुक्त; पेर् ऍळु–बड़े लौहदण्ड; ऑन्ऱु अल–एक नहीं; पल उळ–अनेक हैं; उयिर् उण्पान्–जीव-खादक (यम); उळन्–है; अन्ऱिनर्–शत्रु; पलर् उळर्–अनेक हैं; ऐयन् कैयितिल्–उत्तम (महावीर) के हाथों; पोन्ऱुवतु अल्लतु–विना मरे; पुऱत्तु पोवरो–अलग जा सकेंगे क्या। ९०८

हनुमान उठाकर फेंके, उस काम में आने के लिए पर्वत थे, पेड़ थे और श्रेष्ठ तथा बड़े लौहदण्ड अनेक प्राप्य थे। और जीवभक्षक यम भी प्रस्तुत था। मरने के लिए राक्षस भी अनेक थे। फिर क्या था? विना मरे वे कहीं बचके अलग जायँगे क्या? । ९०८

मुळुमुदऱ् कण्णुदन् मुरुहन् ऱादैकैम्
मळुवॆनप् पॊलिन्दॊळिर् वयिर वान्ऱनि
ऍळुविनिऱ् पॊलङ्गळ लरक्क रीण्डिय
कुळुविनैक् करियॆनक् कॊन्ऱु नीक्किनान् 909

मुळु मुतल्–सर्वेश्वर; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी; मुरुकन् तातै–'मुरुगन' (कार्तिकेय) के पिता के; कै मळु ऍन–हाथ के परशु (या तप्त लौहखण्ड) के समान; पॊलिन्तु ऑळिर्–शोभते हुए प्रकाश छिटकानेवाले; वयिर–वज्रकठोर; वान्–श्रेष्ठ; तनि–अनुपम; ऍळुविनिल्–लौहदण्ड से; पॊलम् कळल्–स्वर्ण-पायलधारी; अरक्कर्–राक्षसों के; ईण्टिय कुळुविनै–एकत्रित झुण्ड को; करि ऍन–गज को जैसे; कॊन्ऱु नीक्किनान्–मारकर दूर किया (हनुमान ने)। ९०९

कार्तिकेय (तमिळ में मुरुगन, वेलन आदि नाम हैं उनके) के पिता, परमेश्वर और भालनेत्र शिवजी के हाथ के फरसे (या तप्त लोहे) के समान हनुमान का लौहदण्ड वज्र-सम कठोर, उज्ज्वल और अनुपम था। शिवजी ने अपने फरसे से जैसे गज को मारा था, वैसे ही हनुमान ने अपने लौहदण्ड से स्वर्णपायलधारी राक्षसों के इकट्ठे समूह को मारकर दूर किया। ९०९

उलन्ददु तानै युवन्दन रुम्बर्, अलन्दलै युऱ्ऱदव् वाळि यिलङ्गै
कलन्द दळुङ्गुरल् कण्डनर् निन्ऱ, वलन्दरु तोळव रैवरुम् वन्दार् 910

तानै उलन्ततु–सेनाएँ मिटीं; उम्पर् उवन्तनर्–देव हर्षित हुए; अ आळि इलङ्कै–वह समुद्रावृत लंका; अलम् तलै उऱ्ऱतु–दुःख से अभिभूत होकर; अळुम् कुरल्–रुदनस्वर से; कलन्ततु–भर गया; कण्टनर्–देखते; निन्ऱ वलम् तरु–जो खड़े रहे वे बलवान; तोळवर् ऐवरुम्–कन्धों वाले पाँचों; वन्तार्–आये। ९१०

सेनाएँ मिटीं। देव हर्षित हुए। उस समुद्रवलयित लंका में दुःख फैला और रुदनस्वर भर उठा। सबल भुजाओं वाले पाँचों सेनापतियों ने उसे देखा। वे हनुमान से युद्ध करने के लिए सामने आये। (उनके नाम वाल्मीकि के अनुसार, विरूपाक्ष, यूपाक्ष, दुर्धर, भासकर्ण और प्रघस थे।)। ९१०

ईर्त्तॆळु शॆम्बुन लॆक्क रिळुक्कत्, तेर्त्तुणै याळि यळुत्तितऩ् शॆऩ्ऱार्
आर्त्तऩ रायिर मायिर मम्बाल्, तूर्त्तऩ रञ्जऩैत् तोऩ्ऱलै येऩ्ऱार् 911

चॆम्पुऩल्–रक्तप्रवाह के; ईर्त्तु ऎळु–खींचते जाने से बने; ऎक्कर्–बालुओं के टीलों के; इळुक्क–खींचने से; तेर् तुणै आळि–रथों के चक्रद्वयों को; अळुत्तितर्–धँसाते हुए; चॆऩ्ऱार्–जो चले उन पाँचों ने; अञ्चऩै तोऩ्ऱलै–अञ्जनासुत का; एऩ्ऱार्–सामना किया; आर्त्तऩर्–नारे उठाये; आयिरम् आयिरम् अम्पाल्–सहस्र-सहस्र शरों से; तूर्त्तऩर्–उसके शरीर को ढक दिया। ९११

रक्तप्रवाह में इधर-उधर बालू के टीले बने थे। उनमें रथ धँस जाते। वैसे ही वे दोनों पहियों को धँसाते, उठाते रथ चलाते गये। उन्होंने अंजनासुत के सामने नारे निकाले और सहस्र-सहस्र शरों से उसके शरीर को ढक दिया। ९११

ऎय्द कडुङ्गणै यावैयु मॆय्दा, नॊय्दह लुम्बडि कैहळि ऩूऱाप्
पॊय्दह डॊऩ्ऱु पॊरुन्दि नॆडुन्देर्, शॆय्द कडुम्बॊऱि यॊऩ्ऱु शिदैत्ताऩ् 912

ऎय्त–प्रेरित; कटुम् कणै–घातक शरों को; यावैयुम् ऎय्ता–किसी को पास न आने देते हुए; नॊय्तु अकलुम्पटि–आसानी से हट जाएँ, ऐसा; कैकळिऩ् नूऱा–हाथों से प्रताडित कर मिटाकर; पॊय्तु–अन्दर काटकर; अकटु ऒऩ्ऱु पॊरुन्ति–बीच में लगाये गये; नॆटुम् तेर् चॆय्त–बड़े रथ में बने; कटुम् पॊऱि ऒऩ्ऱु–शीघ्रगामी यन्त्र, एक, को; चितैत्ताऩ्–मिटाया। ९१२

हनुमान ने उन शरों को अपने पास नहीं आने देकर दूर ही से अपने हाथों से पीटकर मिटा दिया। उस रथ के बीच में छेद बनाकर उसमें एक यन्त्र लगा हुआ था। तेज़ी से चलनेवाले उस यन्त्र को हनुमान ने तोड़ दिया। ९१२

उऱ्ऱुऱु तेर्शिदै यामु ऩुयर्न्दाऩ्, मुऱ्ऱिऩ वीरऩै वाऩिऩ् मुऩिन्दाऩ्
पॊऱ्ऱिर णीळॆळु वॊऩ्ऱु पॊऱुत्ताऩ्, ऎऱ्ऱिऩ ऩः(ह्)दवऩ् विल्लिऩि लेऱ्ऱाऩ् 913

उऱ्ऱु उऱु–यन्त्र जिसमें लगा था; तेर्–उस रथ के; चितैया मुऩ्–छिन्न-भिन्न हो जाने से पहले; उयर्न्ताऩ्–राक्षस ऊपर उठा; मुऱ्ऱिऩ वीरऩै–रोकते हुए जिसने उसे घेर लिया, उस महावीर से; वाऩिऩ्–आकाश में ही रहकर; मुऩिन्ताऩ्–लड़ा; पॊऩ् तिरळ–काले स्वर्ण के बने; नीळ् ऎळु ऒऩ्ऱु–लम्बे दण्ड को; पॊऱुत्ताऩ्–उठा लेकर; ऎऱ्ऱिऩऩ्–(हनुमान ने) मारा; अः.तु–उसको; अवऩ्–उस निशाचर ने; विल्लिऩिल्–अपने धनु पर; एऱ्ऱाऩ्–रोक झेल लिया। ९१३

यन्त्र-लगा रथ टूट जाय, इसके पहले ही राक्षस-सेनापति (पाँच में एक) ऊपर आकाश में उछल गया। वहाँ भी हनुमान ने उसे घेर लिया, तो वहीं से वह लड़ने लगा। काले स्वर्ण (लोहे) के बने एक दण्ड को लेकर हनुमान ने उस पर प्रहार किया। राक्षस ने उसे अपने धनु पर रोक लिया। ९१३

मुऱिन्दहु मूरिवि लम्मुऱि येहॊण्, डॆऱिन्द वरक्कनोर् वॆऱ्पै यॆडुत्तान्
अऱिन्द मनत्तव नन्दवॆ ळ्कॊण्, डॆऱिन्द वरक्कनै यिन्नुयि रुण्डान् 914

मूरि विल्–बलवान धनु; मुऱिन्ततु–टूटा; अ मुऱियै कॊण्टु–उसके खण्ड को ही लेकर; ॲऱिन्त अरक्कन्–जिसने फेंका उस राक्षस ने; ओर् वॆऱ्पै ॲटुत्तान्–पर्वत को उठाया; अऱिन्त मनत्तु अवन्–उसको ताड़नेवाले मन के हनुमान ने; अन्त ॲळु कॊण्टु–उस दण्ड को लेकर; ॲऱिन्त अरक्कनै–फेंकनेवाले राक्षस को; इन् उयिर् उण्टान्–प्यारे प्राणों से हीन बना दिया (मार दिया)। ९१४

धनु टूटा। उसके टोटे को हनुमान पर फेंकने के बाद राक्षस ने एक पर्वत को उठाया। हनुमान उसका अभिप्राय समझ गया। उसने उसी दण्ड से उस राक्षस के प्राण हर लिये, जिसने उस पर धनु का टोटा फेंका था। ९१४

ऒऴिन्दवर् नाल्वरु मूऴि युरुत्त, कॊऴुन्दुरु तीयॆन वॆञ्जिलै कोवाप्
पॊऴिन्दवर् वाळि पुहैन्दन कण्गळ्, विळुन्दन शोरियव् वीरन् मणित्तोळ् 915

ऒऴिन्तवर् नाल्वरुम्–बाक़ी रहे चारों ने; ऊऴि–युगान्त में; उरुत्त–क्रोध से (भभक) उठी; कॊऴुन्तु उरु–ज्वालामयी; ती ॲन–आग के समान; वॆम् चिलै–सन्तापक चापों में; कोवा–सन्धान करके; वाळि पॊऴिन्तनर्–शर बरसाये; कण्कळ् पुकैन्तन–आँखें गुंगुआयीं; अ वीरन्–उस महावीर के; मणि तोळ्–सुन्दर कन्धों से; चोरि विळुन्तन–रक्तकण चुए। ९१५

(एक सेनापति मर गया।) बाक़ी चारों ने युगान्त की ज्वालाओं-सहित क्रुद्ध हो उठनेवाली आग के समान भयंकर धनुओं की डोरी लगाकर शर-वर्षा की। उनकी आँखें गुँगुआयीं। उन शरों के लगने से महावीर की सुन्दर भुजाओं से रक्त-कण ढलक आये। ९१५

आयिडै वीरनु मुळ्ळ मळन्ऱान्, माय वरक्कर् वलत्तै युणर्न्दान्
मीयॆरि युय्प्पदोर् कऱ्चॆल विट्टान्, तीयव रच्चिलै यॆप्पॊडि शॆय्दार् 916

अ इटै–तब; वीरनुम्–महावीर ने; उळ्ळम् अऴन्ऱान्–तप्तमन होकर; माय अरक्कर्–वंचक राक्षसों के; वलत्तै–बल को; उणर्न्तान्–समझकर; मी–ऊपर; ॲरि उय्प्पतु–आग बरसानेवाले; ओर् कल्–एक पत्थर (पर्वत) को; चॆल विट्टान्–चलाया; तीयवर्–क्रूरों ने; अ चिलैयै–उस पर्वत को; पॊटि चॆय्तार्–चूर कर दिया। ९१६

तब हनुमान का मन भी उद्विग्न हो उठा। उसने मायावी राक्षसों के बल को जान लिया। उसने आग निकालते हुए जानेवाले एक पर्वत को उन पर चलाया। नृशंस राक्षसों ने उसे चूर कर दिया। ९१६

तॊडुत्त तॊडुत्त शरङ्ग ळुरन्दार्, अडुत्तहत् मार्बि नऴुन्द वळन्ऱान्
मिडऱ्ऱॊऴि लात्तविड तेरॊडु नॊय्दिन्, ॲडुत्तॊरु वन्ऱै विण्णि लॆऱिन्दान् 917

तोट्टुत्त तोटुत्त–बार-बार संधान कर; चरङ्कळ् तुरन्तार्–शर चलाये; अट्टुतु–लगकर; अकल् मार्पिल् अऴुन्त–(वे) उसके विशाल वक्ष में गड़े; अऴुतुरान्–तब हनुमान नाराज हुआ; मिटल् तोऴिलान्–साहसी योद्धा ने; विट्ट तेरोटु–चलायमान रथ के साथ; ऑरुवन् तनै ऍटुत्तु–एक को उठा लेकर; विण्णिन् ऍरिन्तान्–आकाश में फेंक दिया। ९१७

तब उन्होंने डोरी से लगा-लगाकर शर चलाये। वे उसके विशाल वक्षःस्थल में जाकर चुभे। क्रुद्ध हो, योद्धा हनुमान ने एक को उसके द्वारा चालित रथ के साथ लेकर आकाश में फेंक दिया। ९१७

एय्न्दॅऴु	तेरुमव्	विण्णितै	यॅल्लाम्
नीन्दिय	दोडि	निमिर्न्ददु	वेहम्
ओय्न्ददु	वीऴ्वदन्	मुन्नुयर्	पारिल्
पाय्न्दवन्	मेलुडन्	मारुदि	पाय्न्दान् 918

एय्न्तु–आकाश में लगा; ऍऴु तेरुम्–उठ जानेवाला वह रथ भी; अ विण्णितै ऍल्लाम्–उस आकाश भर में; नीन्तियतु–तैरा; ओटि निमिर्न्ततु–दौड़ मारी; वेकम् ओय्न्ततु–वेग कम हुआ; वीऴ्वतन् मुन्–गिरने से पहले; उयर् पारिल्–उन्नत भूमि पर; पाय्न्तवन् मेल्–जो कूदा उस पर; उटन्–झट; मारुति पाय्न्तान्–मारुति झपटा। ९१८

उछाला गया वह रथ आकाश को पार कर ऊपर चला। उसका वेग कम हो गया। और उसके नीचे गिरने से पहले राक्षस भूमि पर कूद पड़ा। उस पर हनुमान झपटा। ९१८

मदित्त	कळिऱ्ऱिनिन्	वाळरि	येऱु
कदित्तदु	पाय्वदु	पोऱ्कदि	कॉण्डु
कुदित्तवन्	माल्वरैत्	तोळ्हळ्	कुऴम्प
मिदित्तनन्	वॅञ्जिन	वीररुळ्	वीरन् 919

वॅम् चित–भयंकर क्रुद्ध; वीररुळ् वीरन्–वीरों में (सर्वश्रेष्ठ) वीर महावीर ने; मतित्त कळिऱ्ऱिनिन्–मत्त गजों पर; वाळ् अरि एऱु–प्रकाशमय पुरुष सिंह; कतित्ततु–क्रोध करके; पाय्वतु पोल्–झपटता जैसे; कति कॉण्टु–गति अपनाकर; कुतित्तु–कूदकर; अवन्–उसके; माल् वरै–बड़े पर्वत-सम; तोळ्कळ्–कन्धे; कुऴम्प–कर्दम-सा बन जाय, ऐसा; मितित्तनन्–कुचल डाला। ९१९

क्रुद्ध वीरों में (सर्वश्रेष्ठ) वीर (महावीर हनुमान) ने, मत्तगज पर तेजोवान पुरुष सिंह क्रुद्ध होकर झपटा जैसे वेग के साथ उस पर झपटा और उसके बड़े पर्वत-सम कन्धों को कर्दम बनाते हुए अपने पैरों से कुचल डाला और वह मर गया। ९१९

मूण्ड शिनत्तवर् मूवर् मुनिन्दार्, तूण्डिय तेरर् शरङ्ग ळुरन्दार्
वेण्डिय वॅञ्जमम् वेऱु विळैप्पार्, याण्डिनि येहुदि यॅन्ऱॅदिर् शॅन्ऱार् 920

मूवर्-(बाक़ी) तीनों ने; मूण्ट चित्तत्तवर्-उठे क्रोध से; मुतिन्तार्-हनुमान पर नाराज़ होकर; तूण्टिय तेरर्-उकसाये गये रथ वाले होकर; चरङ्कळ्-शर; तुरन्तार्-चलाये; वॅण्टिय-इच्छित; वॅम् चमम्-भयानक युद्ध; वेरु विळैप्पार्-और तरह के भी करते; याण्टु-कहाँ; इति-अब; एकुति-जाओगे; ॲन्रु-कहते हुए; ॲतिर् चॅन्रार्-(हनुमान के) सामने आये। ९२०

(दो चल बसे।) बाक़ी तीनों पहले ही क्रुद्ध थे। (अब उनके क्रोध का पारा और भी चढ़ गया।) अतिक्रुद्ध उन्होंने रथ को आगे चलाते हुए शर चलाये। वे अन्य प्रकारों के युद्ध करने को भी उद्यत हो गये। 'अब तू जायगा कहाँ?' कहते हुए वे हनुमान के सामने गये। ९२०

तिरण्डुयर् तोळिणै यञ्जनैच् चिङ्गम्, अरण्डरु विण्णुरै वार्हळु मञ्ज
मुरण्डरु तेरवै याण्डोरु मून्ऱिल्, इरण्डै यिरण्डु कैयिर्कॊ डॆळ्ळुन्दान् 921

तिरण्टु उयर्-पुष्ट और उन्नत; तोळ् इणै-भुजाद्वय का; अञ्चनै चिङ्कम्-अंजना का केसरी (-सम पुत्र); अरण् तरु-रक्षणदायक; विण्-आकाश में; उरै-वार्कळुम्-रहनेवालों के; अञ्च-डरते; आण्टु-वहाँ; मुरण् तरु-सारयुक्त; तेर् अवै ओरु मून्ऱिल्-तीन रथों में; इरण्टै-दो को; इरण्टु कैयिल् कॊटु-हाथों में उठा लेते हुए; ॲळुन्तान्-ऊपर उछला। ९२१

दो पुष्ट और उन्नत कन्धों वाला अंजना का सिंह (-सदृश) हनुमान सुरक्षित आकाश के वासी देवों को भी भयभीत करते हुए वहाँ रहे सुदृढ़ रथों में दो को अपने हाथों में उठा लेकर ऊपर उछला। ९२१

तूङ्गिय पाय्परि शूद रुलैन्दार्, वीङ्गिय तोळवर् विण्णिन् विशैत्तार्
आङ्गदु कण्डवर् पोयह लामुन्, ओङ्गिनन् मारुदि यॊल्लैयि नुर्ऱान् 922

तूङ्किय-लटकते हुए; पाय् परि-सरपट दौड़नेवाले अश्व; चूतर्-और सूत; उलैन्तार्-मर गये; वीङ्किय तोळ् अवर्-स्थूल कन्धों वाले वे दोनों; विण्णिल् विचैत्तार्-आकाश में तेज़ चले; आङ्कु अतु कण्टु-तब उसको देखकर; अवर् पोय् अकला मुन्-उनके दूर जाने से पहले; मारुति-मारुति; ओङ्कितन्-ऊपर उठा; ऑल्लैयिल् उर्ऱान्-शीघ्र पास गया। ९२२

तब जो अश्व और सूत लटके रहे, वे मिटे। स्थूल कन्धों वाले दोनों राक्षस आकाश में तेज़ी से जाने लगे। हनुमान ने वह देखा और उनके दूर जाने से पहले उछलकर उनके पास गया। ९२२

कान्निमिर् वॆञ्जिलै कैयि निरुत्तान्, आत्तवर् तूणियुम् वाळु महैत्तान्
एन्नैय वॆम्बडै यिल्लव रॆञ्जार्, वान्निडै निन्ऱुयर् मल्लिन् मलैन्दार् 923

काल् निमिर्-दो छोरों के साथ तने हुए; वॆम् चिलै-कठोर धनु को; कैयिल् इऱुत्तान्-हाथों से तोड़ा; आत्तवर्-उनके; तूणियुम् वाळुम्-तूणीरों और तलवारों

को; अरुत्तान्–तोड़कर मिटाया; एतैय वॅम्पटै–अन्य हथियारों से; इल्लवर्–हीन वे; अँज्चार्–पिछड़े नहीं; वान् इटै निन्ऱु–आकाश में स्थित होकर; उयर् मल्लिन्–उत्कृष्ट मल्लयुद्ध में; मलैन्तार्–भिड़े। ६२३

हनुमान ने दोनों छोरों के साथ उठे हुए उनके कठोर धनुओं को अपने दोनों हाथों से पकड़कर तोड़ दिया। उनके तूणीरों और उनकी तलवारों को भी तोड़कर मिटा दिया। उनके पास कोई और मारू हथियार नहीं थे। तो भी वे पिछड़े नहीं। ऊपर अन्तरिक्ष में ही रहकर मल्लयुद्ध करने लगे। ९२३

वॆळ्ळै यॆयिऱ्ऱर् करुत्तुयर् मॆय्यर्, पिळ्ळ विरित्त पॆरुम्बिल वायर्
कॊळ्ळ वुरुत्तॆळु कोळर वॊत्तार्, ऒळ्ळिय वीर ऩरुक्कनै यॊत्तान् 924

वॆळ्ळै ऎयिऱ्ऱर्–श्वेत दाँतों वाले; करुत्तु–काले; उयर् मॆय्यर्–ऊँचे शरीर वाले; पिळ्ळ–फूटे; विरित्त–खुले; पॆरुम्–बड़े; पिल वायर्–बिल के समान मुखों वाले; कॊळ्ळ–पकड़ने के लिए; उरुत्तु–क्रुद्ध होकर; ऎळु–उठनेवाले; कोळ् अरवु ऒत्तार्–ग्रह (राहु-केतु) सर्प के समान बने; ऒळ्ळिय वीरन्–तेजोमय महावीर; अरुक्कनै ऒत्तान्–सूर्य के समान लगा। ६२४

श्वेत दाँत वाले, काले और तगड़े शरीर वाले, फटे-से बिल के समान बड़े मुख वाले वे दोनों राहु और केतु नाम के बलवान सर्प-ग्रहों के समान लगे, जो (सूर्य को)पकड़कर निगलने के लिए उठ आते हों। तेजोमय हनुमान सूर्य के समान शोभा। ९२४

ताम्बॆन वालिन् वरिन्दुयर् ताळो, डॆम्ब लिलारिरु तोळ्ह ळिरुत्तान्
पाम्बॆन नीङ्गिनर् पट्टनर् वीऴ्न्दार्, आम्ब लॆडुम्बहै पोल्बव निन्ऱान् 925

एम्पल् इलार्–अथक उनके; इरु उयर् ताळ् ओटु–दो लम्बे पैरों के साथ; तोळ्कळ्–लम्बी भुजाओं को; वालिन्–अपनी पूँछ से; ताम्पु ऎन–दाम-से जैसे; वरिन्तु–बाँधकर; इरुत्तान्–तोड़ा; पाम्पु ऎन–सर्पों के समान; नीङ्कितर्–छूटकर; पट्टनर्–निहत होकर; वीऴ्न्तार्–गिरे; आम्पल्–कुमुद के; नॆटुम् पकै–दीर्घ शत्रु, सूर्य; पोल्पवन्–के समान जो रहा; निन्ऱान्–वह (हनुमान) विना आँच के खड़ा रहा। ६२५

हनुमान ने अथक उन दोनों के पैरों और कन्धों को अपनी पूँछ की रस्सी से कसकर उनको तोड़ दिया। वे राहु और केतु नाम के सर्पों के समान दूर हटे; फिर गिरे और मरे। कुमुद-शत्रु सूर्य के समान हनुमान (विना किसी आँच के) खड़ा रहा। ९२५

निन्ऱव नॆनैय निन्ऱदु कण्डान्, कुन्ऱिडै वावुऱु कोळरि पोल
मिन्ऱिरि वन्ऱलै मोदु कुदित्तान्, पॊन्ऱिय वन्बुवि तेरॊडु पुक्कान् 926

निन्ऱवन्–जो खड़ा रहा, वह; एतैयन्–बाक़ी रहे एक को; निन्ऱतु–खड़ा रहता;

कण्टान्–देखकर; कुन्ऱु इटै–पर्वत पर; वावु उऱु–लपकनेवाले; कोळरि पोल–सिंह के समान; मिन् तिरि–बिजली के समान रह-रहकर प्रकट होनेवाले; वन् तलै मीतु–कठोर सिर पर; कुतित्तान्–कूदा; अवन् पोन्ऱि–वह मरकर; तेर् ओटु–रथ के साथ; पुवि पुक्कान्–भूमि पर गिरा। ९२६

इस भाँति जो स्थित रहा, उस हनुमान ने उन पाँच सेनापतियों में एक को अपने सामने खड़ा हुआ देखा। उसका सिर उसकी माया-शक्ति के कारण बिजली के समान रह-रहकर प्रकट हो रहा था। उस कठोर सिर पर हनुमान, पर्वत पर झपटनेवाले केसरी के समान उछलकर कूदा। उस राक्षस ने अपने प्राण छोड़ दिये और वह रथ-सहित भूमि पर गिर गया। ९२६

वञ्जमुङ् गळवुम् वें:(ह्)हि वळियला वळिमे लोडि
नञ्जितुम् कॊडिय राहि नवैशॆयर् कुरिय नीरार्
वॆञ्जित्त वरक्क रैव रॊरुवने वॆल्लप् पट्टार्
अञ्जॆनुम् बुलन्ग ळॊत्ता रनुमनु मऱिवै यॊत्तान् 927

वञ्चमुम्–वंचना और; कळवुम्–चोरी; वॆ.'.कि–चाहकर; वळि अला–बुरे; वळि मेल् ओटि–मार्ग में दौड़-फिरकर; नञ्चितुम् कॊटियर् आकि–विष से भी नृशंस बनकर; नवै चॆयर्कु–परपीडन करने में; उरिय नीरार्–प्रवृत्त गुण वाले; वॆम् चित्त–भयंकर क्रोधी; अरक्कर् ऐवर्–पाँच राक्षस; ऒरुवने वॆल्लप्पट्टार्–अकेले हनुमान द्वारा ही जीते गये; अञ्चु ऎनुम् पुलन्कळ् ऒत्तार्–पंचेन्द्रिय के समान रहे; अनुमनुम्–हनुमान भी; अऱिवै ऒत्तान्–ज्ञान के समान रहा। ९२७

वे पाँचों वञ्चना और चोरी पर आसक्त, कुमार्गगामी, विष से भी अधिक क्रूर और नृशंसकार्यतत्पर स्वभाव वाले थे। वे पाँचों एकाकी हनुमान द्वारा मारे गये। वे पञ्चेन्द्रिय के समान रहे और हनुमान ज्ञान के समान था। ९२७

नॆय्दलै युऱ्ऱ वेऱ्कै निरुदरच् चॆरुवि नेर्न्दार्
उय्दलै युऱ्ऱु मीण्डा रॊरुवरु मिल्लै युळ्ळार्
कैदलैप् पूशल् पोङ्गक् कडुहिनर् काल नुट्कुम्
ऐवरु मुलन्द तन्मै यत्तवरु ममैयक् कण्डार् 928

अ चॆरुविल् नेर्न्तार्–उस युद्ध में जो लड़े; नॆय् तलै उऱ्ऱ–घृत-लगे सिर वाली; वेल् कै निरुतर्–शक्ति-हस्त राक्षस; उय्तलै उऱ्ऱु–बचकर; मीट्टार्–लौटे; ऒरुवरुम् इल्लै–कोई नहीं रहे; उळ्ळार् अतवरुम्–जो (बचे) थे वे सभी; कालन् उट्कुम्–यम भी जिनसे डरता था वे; ऐवरुम् उलन्त तन्मै–पाँचों जैसे मरे उस प्रकार को; अमैय कण्टार्–समक्ष देखकर; कै तलै–युद्धभूमि से; पूचल् पोङ्क–शोर मचाते हुए; कटुकिनर्–(रावण के पास) सवेग गये। ९२८

उस युद्ध में लगे रहे घृत-मले सिर वाले भालाओं के धारक राक्षसों

में कोई भी बचकर नहीं लौटा। जो विना लड़े छिपे रहे, उन्होंने यम को भी डरानेवाले उन पाँचों का मरना प्रत्यक्ष देखा। वे युद्धस्थल से शोर मचाते हुए रावण के पास बहुत जल्दी जा पहुँचे। ९२८

इरुक्कुरु मिन्ऩे नम्मैक् कुरङ्गॆंऩ विरङ्गि यॆङ्गि
मरुक्कुरु ह्निऩ्ऱ नॆञ्जिऩ् मादरै वैदु नोक्कि
उरुक्कुरु शॊल्ला लूऴित् तीयॆंऩ वुलह मेऴुम्
जुरुक्कॊळ नोक्कुवाऩ्ऱऩ् शॆवित्तॊळै तीयच् चॊऩ्ऩार् 929

कुरङ्कु—वानर; नम्मै—हमें; इऩ्ऩे—आज ही; इरुक्कुरुम्—मार देगा; ॲंऩ—ऐसा; एङ्कि—डरकर; इरङ्कि—दुःखी होकर; मरुक्कु उरुकिऩ्ऱ—व्यग्र; नॆञ्चिऩ्—मन वाली; मातरै—स्त्रियों को; वैतु नोक्कि—डाँटकर देखकर; उरुक्कु उरु—डपट के; चॊल्लाल्—शब्दों में; ऊऴि ती ॲंऩ—प्रलयाग्नि-सम; उलकम् एऴुम्—सातों लोकों को; चुरु कॊळ—जलाते-से; नोक्कुवाऩ् तऩ्—घूरनेवाले (रावण) के; चॆवि तॊळै—कर्ण-रन्ध्र; तीय—जल जाएँ, ऐसा; चॊऩ्ऩार्—बोले। ६२६

वहाँ स्त्रियाँ "यह वानर आज ही हमें मार देगा" —यह कहते हुए डर से दुःखी और उद्विग्न हो रही थीं और रावण उन्हें डाँट रहा था। डपट के शब्द कहते हुए उसने इनको युगान्तकालीन अग्नि के समान ऐसा घूरकर देखा, मानो सातों लोकों को जला दे। ऐसे उसके बीसों कर्ण-रन्ध्रों को झुलसाते-से उन्होंने कहा (निम्नांकित समाचार)। ९२९

तानैयु मुलन्द दैया तलैवरुञ् जमैन्दार् ताक्कप्
पोऩबिऩ् मीळ्वेम् यामे यदुवुम्बोर पुरिहि लामै
वानैयुम् वॆंऩ्ऱ ळोरै वल्लैयिऩ् मडिय नूऱि
एऩैय रिऩ्मै शोम्बि यिरुन्ददक् कुरङ्गु मॆंऩ्ऱार् 930

ऐया—प्रभु; तानैयुम् उलन्ततु—सेना भी मिट गयी; तलैवरुम् चमैन्तार्—नायक (पंच सेनापति) भी पक गये (मिट गये); ताक्क—युद्ध करने; पोऩ पिऩ्—जाने के पश्चात्; यामे मीळ्वेम्—हमीं बचे; अतुवुम्—वह भी; पोर् पुरिकिलामै—लड़ाई न करने से; अ कुरङ्कु—वह वानर; वानैयुम् वॆंऩ्ऱ उळोरै—जिन्होंने आकाश को भी जीता था, उन (पाँचों) को; वल्लैयिऩ्—शीघ्र; मटिय नूऱि—मार-मिटाकर; एऩैयर् इऩ्मै—औरों के न होने से; चोम्पि—आलस्य अवलम्बन कर; इरुन्ततु—रहा; ॲंऩ्ऱार्—(उन्होंने) कहा। ६३०

मालिक! सेनाएँ सूख (मिट) गयी हैं। नायक भी पक (मर) गये। युद्ध के बाद हम ही बचे। वह भी हमने लड़ाई में भाग नहीं लिया, इस वजह से। वह वानर अतिशीघ्र देवलोकविजयी पाँचों सेनापतियों को मारकर योद्धा न होने के कारण आलस्य का अवलम्बन करके चुप बैठा रहता है। ९३०

10. अक्ककुमारन् वदैप् पडलम् (अक्षकुमार-वध पटल)

केट्टलुम् वॅहुळि वॅन्दीक् किळर्न्दॅळु मुयिर्प्प नाहित्
तोट्टलर् तॅरियल् माल वण्डोडुञ् जुरुक्कोण् डेर
ऊट्टरक् कुण्ड पोलु नयनत्ता नॉरुप्पट् टानॅत्
ताट्टुणै तॉळुदु मैन्दन् इडुत्तिडै तरुदि यॅन्रान् 931

केट्टलुम्–सुनते ही; वॅकुळि वॅम् ती—क्रोध रूपी भयंकर अग्नि; किळर्न्तु ॲळुम्–भभक उठे ऐसा; उयिर्प्पन् आकि–लम्बी साँस छोड़नेवाला बनकर; तोट्टु अलर्–विकसित दलों के; तॅरियल् मालै–चुने हुए फूलों की माला; वण्टु ऑट्टुम्–भ्रमरों के साथ; चुरुक् कोण्टु एर–जल-झुलस जाय, ऐसा; ऊट्टु अरक्कु उण्ट पोलुम्–लाख जिनमें भरी हो, ऐसी; नयनत्तान्–आँखों के साथ; ऑरुप्पट्टानै–(लड़ने को) उद्यत उसको; ताळ् तुणै तॉळुतु–चरणद्वय पर नमस्कार करके; तटुत्तु–रोककर; मैन्तन्–पुत्र (अक्षकुमार) ने; इटै तरुति–मुझे अवकाश दीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। ९३१

सुनते ही रावण की साँसें क्रोधाग्नि के साथ लम्बी उठीं। उसकी आँखें लाख के समान लाल हुईं और उनसे निकलनेवाले उष्ण से विकसित दल वाले और श्रेष्ठ फूलों की माला भ्रमरों के साथ झुलस गयी। वह युद्धोद्यत हुआ। तब अक्षकुमार ने उसके दोनों पैरों पर नमस्कार करके उसे रोका और निवेदन किया कि मुझे मौक़ा दीजिए। (अक्षकुमार रावण का ही पुत्र था। मन्दोदरी के पेट से इन्द्रजित् के बाद जनमा।)। ९३१

मुक्कणा नूर्दि यन्ऱे मूवुल हडियिर् ऱायोन्
ऑक्कवूर् परवै यन्ऱे यवन्रुयि लुरह मन्ऱे
तिक्कय मलूल दैपुन् कुरङ्गिन्मेर् चेरि पोलाम्
इक्कड नडियेर् कीदि यिरुत्तियोण् डिनिदि नॅन्दाय् 932

ॲन्ताय्–पिताजी; मुक्कणान् ऊर्ति अन्ऱे–त्रिनेत्र शिवजी का वाहन (बैल) तो नहीं; मू उलकु–तीनों लोकों को; अटियिल्—पैरों से; तायोन्–जिसने लाँघकर नापा; ऑक्क ऊर्–(उस विष्णु के) युक्त रूप से सवारी बने; परवै अन्ऱे–पक्षी भी नहीं; अवन् तुयिल्–जिस पर वह सोता है, वह; उरकम् अन्ऱे—उरग नहीं; तिक्कयम् अल्लते–दिग्गज भी नहीं; पुन् कुरङ्किन् मेल्–अल्प मर्कट पर; चेरि पोलाम्–आक्रमण करो क्या; इ कटन्–यह कर्तव्य; अटियेर्कु ईति–दास मेरे पास दे दें; ईण्टु–इधर; इतितिन्–सुख से; इरुत्ति–आप रहें। ९३२

अक्षकुमार आगे बोला। पिताजी! क्या वह त्रिनेत्र का वाहन, बैल आ गया कि आप स्वयं जायँ लड़ने के लिए? या त्रिलोकमापक त्रिविक्रमदेव विष्णु का वाहन गरुड़ पक्षी है? वह उसकी शय्या उरग भी नहीं है न! दिग्गजों में कोई भी नहीं। अल्प वानर है, उस पर चढ़

चलेंगे ? यह कर्तव्य मुझे सौंप दीजिए । आप यहाँ निश्चिन्तता के साथ रहिए । ९३२

अण्डर्होन् ऱन्नैप् पऱ्ऱित् तरुहॅन वडियेन् निऱ्कक्
कॉण्डनै यॅम्मुन् ऱन्नैप् पणियॅन नॅञ्जङ् गॉण्ड
दुण्डदु तीरु मन्ऱे युरनिलाक् कुरङ्गेन् ऱेनुम्
ॲण्डिशै वॅन्ऱ नीये येवुदि यॅन्नै यॅन्ऱान् 933

अटियेन् निऱ्क–मेरे (दास के) रहते; ॲन् मुन् तन्नै–मेरे ज्येष्ठ (मेघनाद) से; अण्टर् कोन् तन्नै–देवराज को; पऱ्ऱि तरुक–पकड़ लाओ; ॲन–ऐसा; पणि कॉण्टनै–वह सेवा आपने करवा ली; ॲन–ऐसा; नॅञ्चम् कॉण्टतु–मेरे मन ने सोचा; उण्टु–था; उरन् इला–निर्बल; कुरङ्कु ॲन्ऱेनुम्–वानर भी हो तो; अतु–वह तरस; तीरुम् अन्ऱे–दूर होगी न; ॲण् तिचै वॅन्ऱ–आठों दिशाओं के विजयी; नीये–आप ही; ॲन्नै एवुति–मुझे भेजें; ॲन्ऱान्–कहा । ९३३

पहले भी, मेरे रहते आपने मेरे बड़े भाई मेघनाद को देवेन्द्र को पकड़ लाने का कार्य सौंपा और उनसे सेवा करवा ली । तभी मेरे मन में यह बात लगी थी । अब निर्बल वानर ही सही, एक मौक़ा दीजिए, तो वह हूक मिटेगी न ! आठों दिशाओं के विजेता, आप ही स्वयं मुझे उस कार्य पर जाने की आज्ञा दीजिए । ९३३

कॉय्दळिर् कोदुम् वाऴ्क्कैक् कोडरत् तुरुवु कॉण्डु
कैदवङ् गण्णि योण्डोर् शिऱुपिऴै यिऴैक्कुङ् गऱ्पाल्
ॲय्दिन् निमैया मुक्क णीशने यॅन्ऱ पोदुम्
नॉय्दिनिन् वॅन्ऱु पऱ्ऱित् तरुहुवॅ नॊडियि नुन्बाल् 934

इमैया–जो पलक नहीं मारते; मुक्कण् ईचने–त्रिनेत्र परमेश्वर स्वयं; कॉय् तळिर् कोतुम्–तोड़े हुए पल्लव खाने का; वाऴ्क्कै–जीवन बितानेवाले; कोटरत्तु उरुवु कॉण्टु–वानर का रूप धरकर; कैतवम् कण्णि–वंचना सोचकर; ईण्टु–यहाँ; ओर् चिऱु पिऴै–एक छोटा अपराध; इऴैक्कुम् कऱ्पाल्–करने की परिकल्पना लेकर; ॲय्तिनन् ॲन्ऱ पोतुम्–आया हो तो भी; नॉय्तितिल् वॅन्ऱु–शीघ्र जीतकर; नॊटियिन्–पल भर में; उन्पाल्–आपके पास; पऱ्ऱि–पकड़कर; तरुकुवॅन्–लाकर दे दूंगा । ९३४

अपलक त्रिनेत्र परमेश्वर स्वयं छिन्न पल्लवों को खाकर जीवन बितानेवाले बन्दर का रूप लेकर और वञ्चना के विचार से यहाँ छोटी हानि करने का संकल्प लेकर आया हो, तो भी मैं उसको आसानी से जीतूंगा और शीघ्र पकड़ लाकर आपको दे दूंगा । ९३४

तुण्डत्तू णदनिऱ् ऱोन्ऱुङ् गोळरिशुडर् वॅण् गोट्टु
मण्डीत्त निमिर्न्द पन्ऱि यायिनु मलैद लाऱ्ऱा

अण्डत्तैक् कडन्दु पोहि यप्पुरत् तहलि नॅन्बाल्
तण्डत्तै यिडुदि यन्ऱे निन्वयिऱ् ऱन्दि लेनेल् 935

तुण्ट तूण् अततिल्–टोटे खम्भे से; तोन्ऱम्–जो प्रकट हुआ वह; कोळरि–सिंह भी हो तो; चुटर् वॅण् कोट्टु–चमकदार श्वेत दाँतों में; मण् तोंतूत–भूमि लटकी रही; निमिर्न्त–(वैसा) जो बढ़ा; पन्ऱि आयितुम्–वराह हो तो भी; मलैतल् आऱ्ऱा–मुझसे लड़ नहीं सकेगा; अण्टत्तै कटन्तु पोकि–अण्ड के पार जाकर; अ पुऱत्तु–उस तरफ़ के; अकलिन्–(अण्ड में) चला जाय तो भी; नित् वयित्–आपके पास; तन्तु इलेन् ॲल्–नहीं दूँगा तो; तण्टत्तै इट्टुति–दण्ड दे दीजिए। ९३५

काष्ठांश एक खम्भे से जो बाहर आया, वह (नर)-सिंह भी क्यों न हो; या वह वराह क्यों न हो, जिसके दाँतों में भूमि उठा ली गयी थी और जो बहुत अधिक बढ़ा था —दोनों मेरे विरुद्ध लड़ने में समर्थ नहीं हैं। वह वानर अण्ड को पारकर बाह्याण्ड में चला जाए, तो भी उसे पकड़ लाकर आपके पास नहीं दूँ तो आप मनमानी सज़ा दिला दें। ९३५

ॲन्नविवै यियम्बि यीदि विडैयॅन्ऩ विऱैञ्जि निन्ऱ
वनैहळल् वयिरत् तिण्डोण् मैन्दनै महिळ्न्दु नोक्कित्
तुनैपरित् तेरि नेऱिच् चेऱियॅन्ऱ् ऱिनैय शॉन्नान्
पुनैमलर्त् तारि नानुम् पोरणि यणिन्दु पोनान् 936

ॲन–ऐसा; इवै इयम्पि–ये बातें कहकर; विटै ईति–आज्ञा दें; ॲन–कहकर; इऱैञ्चि निन्ऱ–सविनय खड़े रहे; वनै कळल्–बद्ध पायलधारी; वयिर तिण् तोळ्–वज्रस्कन्ध; मैन्तनै–अपने पुत्र को; मकिळ्न्तु नोक्कि–सहर्ष देखकर; तुनै–तीव्रगामी; परि–अश्व-जुते; तेरिन् एऱि–रथ पर चढ़कर; चेऱि–चलो; ॲन्ऱु–कहकर; इनैय चॊन्नान्–ऐसी बातें कहीं (रावण ने); मलर् पुनै–पुष्पकलित; तारिनानुम्–मालाधारी (अक्षकुमार) भी; पोर् अणि–युद्धसज्जा; अणिन्तु पोनान्–सजाकर गया। ९३६

ऐसी ये बातें कहकर बँधी हुई पायलधारी वज्रस्कन्ध अक्षकुमार यह विनय-निवेदन करके खड़ा रहा कि मुझे आज्ञा दें। रावण ने उसे सहर्ष देखा और कहा कि तीव्रगति अश्वों के जुते रथ पर सवार होकर जाओ। रावण ने और भी अन्य आवश्यक सलाहें दीं। पुष्पों की सुन्दर रीति से गुँथी मालाधारी अक्षकुमार भी युद्धोचित साज सजाकर गया। ९३६

ॲऱिन्ऩ नॅन्व मन्नो विन्दिर निहलिल् विट्ट
नूऱॊडु नूऱु पूण्ड नॊऱिल्वयप् पुरवि नोन्ऱेर्
कूऱिन ररक्क राशि कुमुऱिन मुरशक् कॊण्मू
ऊऱिन वुरवुत् तानै यूळिपेर् कडलै यॊप्प 937

इन्तिरन्–इन्द्र ने; इकलिल् विट्ट–जिनको युद्ध में त्याग दिया था; नॊऱिल्–

तीव्रगति; वय–विजयदायी; नूऱ्ऱॊटु नूऱु–दो सौ; पुरवि पूण्ट–अश्व जिसमें जुते थे; नोन् तेर्–सबल रथ पर; एऱिततन्–चढ़ा; अरक्कर्–राक्षसों ने; आचि कूऱिनर्–आशीर्वाद के वचन कहे; मुरच कॊण्मू–भेरियाँ रूपी मेघ; कुमुऱित्त–घहर उठे; उरवु तानै–सबल सेनाएँ; ऊऴि पेर् कटलै ऒप्प–युगान्त में उमग आनेवाले सागर के समान; ऊऱित्त–उत्तरोत्तर बढ़ती आयीं; ऎन्प–कहते हैं। ६३७

अक्षकुमार के रथ में दो सौ तीव्रगति और विजयदायी अश्व जुते थे और वे थे जिन्हें इन्द्र युद्ध में छोड़कर भागा था। वह उस पर सवार हुआ और राक्षसों ने आशिष दीं। भेरियाँ मेघ के समान घहर उठीं। सेनाएँ उमग आनेवाले प्रलय-सागर के समान उत्तरोत्तर बढ़ती आयीं। ९३७

पॊरुहडन् महर मॆण्णि लॆण्णलाम् वूट्कै पॊङ्गित्
तिरिवन मीन्ग ळॆण्णि लॆण्णलाञ् जॆम्बॊऱ् ऱिण्डेर्
उरुवुरु मणलै यॆण्णि नॆण्णला मुरवुत् तानै
वरुदिरै निरैयै यॆण्णि नॆण्णलाम् वावुम् वाशि 938

पॊरु कटल्–लहरें जिसमें टकराती हैं, उस सागर के; मकरम् ऎण्णिन्–मकरों को गिना जा सकता है तो; पूट्कै ऎण्णल् आम्–हाथियों को भी गिना जा सकता है; पॊङ्कि–ऊपर उठ आकर; तिरिवत्त–जो संचार करती हैं, उन; मीन्कळ्–मछलियों को; ऎण्णिन्–गिन सकें तो; चॆम् पॊन्–लाल स्वर्ण के; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथों का; ऎण्णल् आम्–गिनना हो सकता है; उरुवु अरु–तरंगों से लाये जाकर एकत्रित; मणलै ऎण्णिल्–बालुओं को गिन सकते हैं तो; उरवु तानै–बलवान सैनिकों को; ऎण्णलाम्–गिना जा सकता है; वरु तिरै निरैयै ऎण्णिन्–आनेवाली तरंग-राशियों को गिना जा सकता है, तो; वावुम् वाचि–सरपट दौड़नेवाले अश्वों को; ऎण्णलाम्–गिना जा सकता है। ६३८

(उसकी चतुरंगिनी सेना की गिनती देखो—) लहरप्रताडित समुद्र के मकरों को गिनकर बता सकते हैं? तो गजों को भी गिना जा सकता था। जल के सतह पर आकर संचार करनेवाली मछलियों को गिना जा सकता है? तो उस सेना में के लाल स्वर्ण के सबल रथों को गिना जा सकता था। लहरों द्वारा एकत्रित बालुओं की संख्या की गिनती पा सकते हैं? तो सेना के वीरों की संख्या भी गणित की जा सकती थी। एक के बाद एक आनेवाली लहरों की पंक्तियों को गिन सकते हैं? तो सरपट दौड़नेवाले अश्वों को भी गिना जा सकता था। ९३८

आऱिरण् डडुत्त वॆण्णि लायिरङ् गुमर रावि
वेऱिलात् तोऴर् वॆन्ऱि यरक्कर्तम् वेन्दर् मैन्दर्
एऱिय तेरर् शूऴ्न्दा रिऱुदियिन् यावु मुण्बान्
शीऱिय कालत् तीयिन् शॆऱिशुडर्च् चिहैह ळन्नार् 939

इऱुतियिल्–युगान्त में; यावुम् उण्पान्–सबको मिटाने; चीऱिय–उभर उठी;

काल तीयित्-प्रलयाग्नि की; चॅरि-घनी; चुटर्-ज्वलन्त; चिकैकळ् अन्ताऱ्-ज्वालाएँ जैसे; आवि वेरु इला-अनन्यप्राण; तोळर्-साथी; वॅन्ऱि अरक्कर् तम्-विजेता राक्षसों के; वेन्तर् मैन्तर्-राजाओं के पुत्र; ऍण्णिल्-गिनती में; आरु इरण्टु अटुत्त-बारह के; आयिरम् कुमरर्-सहस्र कुमार; एऱिय तेरर्-रथारूढ़; चूळ्न्ताऱ्-घेर आये। ६३६

युगान्त में सृष्टि भर को मिटाने हेतु भभक उठी प्रलयाग्नि की घनी और तेजोमय ज्वालाओं के समान रहनेवाले, अक्षकुमार के अनन्यप्राण मित्र, और विजयशील राक्षस राजाओं के सुत, बारह सहस्र कुँअर रथों पर आरूढ़ होकर उसके साथ उसको घेरते हुए गये। ९३९

मन्दिरक् किळवर् मैन्दर् मदिनिऱै यमैच्चर् मक्कळ्
तन्दिरत् तलैव रीन्ऱ तनयर्हळ् पिऱरुन् दादेक्
कन्दरत् तरम्बै मारिऱ् ऱोन्ऱिन ररक्क रानोर्
ऍन्दिरत् तेरर् शूळ्न्दा रीरिरण् डिलक्कम् वीरर् 940

मन्तिर किळवर्-मन्त्रणा के पदाधिकारी लोगों के; मैन्तर्-पुत्र; मति निऱै-बुद्धिमान; अमैच्चर् मक्कळ्-सचिवों के पुत्र; तन्तिर तलैवर्-सेनापतियों के; ईन्ऱ तनयर्कळ्-जनाये पुत्र; अन्तरत्तु अरम्पैमारिल्-आकाश की अप्सराओं के; तातैक्कु तोन्ऱितर्-पिता रावण द्वारा उत्पन्न; अरक्कर् आनोर्-राक्षस; पिऱरुम्-और अन्य; ईर् इरण्टु इलक्कम्-चार लाख के; वीरर्-वीर; ऍन्तिर तेरर्-यन्त्रचालित रथों के; चूळ्न्ताऱ्-घेर आये। ६४०

मन्त्रणा के अधिकारियों के पुत्र, बुद्धिमान सचिवों के पुत्र, सेनानायकों के पुत्र और अप्सराओं के गर्भ से जनमे अक्षकुमार के पिता रावण के पुत्र जो राक्षस थे वे और अन्य —सब मिलाकर चार लाख वीर यन्त्रयुक्त रथों पर आरूढ़ होकर उसके चारों ओर आकर इकट्ठे हुए। ९४०

तोमर मुलक्कै शूलज् जुडर्मळु कुलिशन् दोट्टि
एमरु वरिविल् वेल्हो लीट्टिवा ळॅळुविट् टेरु
मामरम् वीशु पाश मॅळुमुळै वयिरत् तण्डु
कामरु कणैयङ् गुन्दङ् गप्पणङ् गाल नेमि 941

तोमरम्—तोमर; उलक्कै-मूसल; चूलम्-त्रिशूल; चुटर् मळु-प्रकाशमय फरसे; कुलिचम्-कुलिश; तोट्टि-अंकुश; ए मरुम्-शरासन; वरि विल्-सबन्ध धनु; वेल्-शक्तियाँ; कोल्-शर; ईट्टि-भाले; वाळ्-तलवारें; ॲळु-लोहदण्ड; विट्टेरु-बरछे; मा मरम्—बड़े पेड़ों को भी; वीचु पाचम्-गिरा सकनेवाले पाश; ॲळु-शत्रु पर चलनेवाले; वयिर मुळै तण्टु-हीरे के दण्डायुध; कामरु-मनोहर; कणैयम्-वक्रदण्ड; कुन्तम्-कुन्त; कप्पणम्-'अरिकण्ठ' नामक हथियार; काल नेमि-कालचक्र। ६४१

(उस सेना के वीरों के साथ) तोमर, मूसल, त्रिशूल, तेजोमय फरसे,

कुलिश, अंकुश, सबन्ध शरासन, शक्तियाँ, शर, भाले, तलवारें, लौहदण्ड, बर्छियाँ, बड़े-बड़े पेड़ों को भी नीचे गिरानेवाले पाश, शत्रुघातक हीरे के दण्ड, दर्शनीय वक्रदण्ड, कुन्त और 'कप्पण' (अरिकण्ठ) नामक हथियार। ९४१

अॅन्ऩ्ऱिवै मुदल यावु मॅऴिऱ्ऱिहऴ् पडैह ळीण्डि
मिन्ऩ्ऱिरण् डन्नैय वाहि वॅयिलॊडु निलवु वीशत्
तुन्ऩ्ऱिरुन् दूळि पॊङ्गित् तुरुदला लिऱुदि शॊल्लाप्
पॊन्ऩ्ऱिणि युलहम् यावुम् पूदल मान मादो 942

अॅन्ऩ्ऱु–ऐसे; इवै मुतल–ये आदि; यावुम्–सभी; अॅऴिल् तिकऴ्–सुन्दरता-लसित; पटैकळ् ईण्टि–हथियार मिलकर; मिन्–बिजलियाँ; तिरण्टु अन्नैय–एकत्रित हुई जैसे; आकि–बनकर; वॅयिल् ऑटु–धूप के साथ; निलवु वीच–चाँदनी छिटकाते हुए; तुन्ऱु–घने रूप से; इरुम् तूळि–विपुल धूल-राशि; पॊङ्कि–उठी; तुरुतलाल्–आकाश में भर गयी, इसलिए; इऱुति चॊल्ला–अन्त जिसका कहा नहीं जा सकता; पॊन् तिणि उलकम् यावुम्–स्वर्णमय (स्वर्ग-) लोक सारा; पूतलम् आन–भूतल हो गया। ६४२

ऐसे और अन्य सभी सुन्दर हथियार एकत्रित होकर एकत्रित बिजलियों के समान बने और उनसे धूप-सा गरम प्रकाश और चाँदनी-सी शीतल किरणें छूट रही थीं। घने रूप से धूलपटल उठा और आकाश में छा गया। इससे अमर स्वर्गलोक भी भूलोक के समान (मिट्टी का) दिखने लगा। ९४२

काहमुङ् गऴुहुम् बेयुङ् गालनुङ् गणक्किल् कालम्
शेहुऱ विनैयिऱ् चॅय्द तीमैयुन् दॊडर्न्दु शॆल्लप्
पाहियल् किळविच् चॅव्वाय् पडैविऴि पणैत्त वेय्त्तोळ्
तोहैयर् मनमुङ् गण्णुन् दुम्बियुन् दॊडर्न्दु शुऱ्ऱ 943

काकमुम्–कौए; कऴुकुम्–और गीध; पेयुम्–पिशाच; कालनुम्–और यम; कणक्कु इल् कालम्–अगणित काल; चेकु उऱ–सुदृढ़ रूप से; विनैयिल् चॅय्त–(बुरे) कर्म जो किये उनका; तीमैयुम्–पाप; तॊटर्न्तु चॆल्ल–साथ-साथ गये; पाकु इयल्–चाशनी की-सी; किळवि–(मधुरतायुक्त) बोली वाली; चॅ वाय्–लाल अधरों; पटै विऴि–(तलवार, भाला, शर आदि) हथियारों के सदृश आँखों; पणैतुत–पुष्ट; वेय् तोळ्–बाँस-सम कन्धों वाली; तोकैयर्–कलापी-सी (उनकी पत्नी-) स्त्रियों के; मनमुम् कण्णुम्–मन और आँखों के; तुम्पियुम्–और भ्रमरों के; तॊटर्न्तु–पीछे लगे; चुऱ्ऱ–घेरते जाते। ६४३

(अक्षकुमार के साथ क्या-क्या गये ? देखिए कवि की विदग्धता !) कौए, गीध, भूत-पिशाच, यम, अनन्तकाल से राक्षसों के द्वारा सुदृढ़ रूप से किये गये दुष्कर्मों का पाप आदि पीछे लगे साथ गया। और चाशनी-सी

बोली और लाल अधरों वाली, तलवार आदि हथियारों-सी आँखों वाली, स्थूल बाँस-से कन्धों वाली राक्षसियों के मन और आँखें तथा भ्रमर भी उन पर मँड़राते चले। ९४३

उऴैक्कुल नोक्कि नार्ह ळुलन्दवर्क् कुरिय मादर्
अऴैत्तऴु कुरलिन् वेलै यमलैयि ऩरवच् चेनै
तऴैत्तॆऴु मॊलियि नानाप् पल्लियन् दुवैत्त लाल्विण्
मऴैக்குर லिडियिऱ् चॊन्न माऱ्ऱङ्ग ळॊऴिप्प मन्नो 944

उलन्तवर्क्कु–पहले जो मरे उनकी; उरिय मातर्–पत्नी-स्त्रियाँ; उऴै कुल नोक्किनार्कळ्–मृगनयनियाँ; अऴैत्तु ॲऴु कुरलिन्–(अपने पतियों का नाम ले-ले) जो रोती हैं, उस स्वर से; वेलै अमलैयिन्–समुद्र के गर्जन से; अरव चेनै–आरवयुक्त सेना से; तऴैत्तु ॲऴुम्–बढ़ उठनेवाले; ऑलियिन्–शोर से; नाना पल्लियम्–अनेक और विविध बाजे; तुवैत्तलाल्–बजे, इससे; विण्–आकाश में; मऴै कुरल् इटियिल्–मेघ-गर्जन रूपी गाजों से; चॊन्न माऱ्ऱङ्कळ्–उच्चरित वचन; ऑऴिप्प–दब जाते (ऐसा)। ६४४

वे जाते रहे। तब पहले हनुमान द्वारा मारे गये राक्षसों की मृगनयनी प्यारी स्त्रियाँ अपने पतियों का नाम ले-ले रो रही थीं। वह स्वर; समुद्र-गर्जन; शोर के साथ चढ़ जानेवाली सेना का निविड नाद; विविध वाद्यों की ध्वनि और आकाश के मेघों का वज्रगर्जन—इन सब मिश्रित स्वरों की तुमुलता के कारण एक-दूसरे की बोली परस्पर सुनायी नहीं दे रही थी। ९४४

मॆयिऱ्कर मणिहळ् वीशुम् विरिहदिर् विळङ्ग वॆय्य
अयिऱ्कर वणिहळ् नील वविरॊळि परुह व:(ह)वुम्
ऍयिऱ्ऱिळम् बिऱैह ळॊन्ऱ विलङ्गॊळि यॊदुङ्ग याणर्
उयिर्क्कुल मिरवु मन्ऱु पहलन्ऱॆन् ऱुणर्वु तोन्ऱ 945

मॆयिल् करम्–(राक्षसों के) शरीर पर के कान्तियुक्त; मणिकळ् वीचुम्–रत्न जो बिखेरते हैं; विरि कतिर्–वे विस्तृत किरणें; विळङ्क–मनोरम रूप से प्रकट होती हैं; वॆय्य–क्रूर; अयिल् कर–भालाधारी हाथों के; अणिकळ्–आभरण; नील अविर्–काले रंग में निकलनेवाली; ऑळि परुक–कान्ति को पी जाती हैं (छिपा लेती हैं); अ:तुम्–वह कान्ति भी; ऍयिऱ्ऱु इळम् पिऱैकळ्–दाँतों के बाल-चन्द्रों के; इलङ्कु ऑळि–छिटके हुए प्रकाश में; ऑतुङ्क–छिप जाता; उयिर्क्कुलम्–जीव-राशियों को; इरवुम् अन्ऱु–रात नहीं; पकल् अन्ऱु–दिन भी नहीं; ऎन्ऱु–ऐसा; याणर् उणर्वु तोन्ऱ–अनूठा अनुभव होता। ६४५

उन राक्षसों के शरीरों पर अलंकृतकारी रत्नों से छूटनेवाली किरणें प्रकाशमय रहीं। हिंस्र भालों के धारणकारी हाथों के आभूषण उनके शरीर के नील रंग को चाटकर मिटा रहे थे। उन आभरणों के प्रकाश दाँतों

रूपी बालचन्द्र-निःसृत प्रकाश में छिप जा रहा था। इससे जीवों को एक विचित्र अनुभव हो रहा था कि अब न दिन लगता, न रात ही। ९४५

ओङ्गिरुन् दडन्देर् पूण्ड वुळैवयप् पुरवि यौल्हित्
तूङ्गिन वीळत् तोळुङ् गण्गळु मिडत्त तुळ्ळ
वीङ्गिन मेह मॅङ्गुङ् गुरुदिनीर्त् तुळ्ळि वीळ्प्प
एङ्गिन काह मारप्प विरुळिल्विण् णिडिप्प मादो 946

ओङ्कु—उन्नत; इरुम्—बड़े; तटम् तेर—विशाल रथ में; पूण्ट—जुते; उळै—अयाल-सहित; वय—विजय-सहायक; पुरवि—अश्व; ऑल्कि—थकित होकर; तूङ्कित्त वीळ—सो जाते; इटत्त तोळुम्—बायें कन्धे और; कण्कळुम्—आँखें; तुळ्ळ—फड़कीं; वीङ्कित्त मेकम्—बड़े मेघ; ॲङ्कुम्—सर्वत्र; कुरुति नीर् तुळ्ळि—रक्त-जल की बूंदें; वीळ्प्प—गिराते; काकम्—कौए; एङ्कित्त—डरकर; आर्प्प—उच्च स्वर में बोलते; इरुळ् इल् विण्—निर्मल आकाश; इटिप्प—गरजता। ९४६

(क्या-क्या शकुन हुए?) उन्नत, विशाल और बड़े रथों से जुते अयाल वाले, विजय-साधन अश्व थकित हो ऊँघते जा रहे थे। वीरों के बायें कन्धे फड़के और बायीं आँखें फड़कीं। बड़े-बड़े मेघों ने रक्त की बूंदें गिरायीं। कौए भयार्त होकर उच्च स्वर में बोल उठे। निर्मल आकाश से वज्रघोष-सा सुनायी दिया। ९४६

वॅळ्ळवॅञ् जेनै शूळ विण्णुळोर् वॅरुवि विम्म
उळ्ळनीत् दनुङ्गु वॅय्य कूर्रमु मुरुव रुनृनत्
तुळ्ळिय शुळल्हट् पेय्ह डोळ्पुडैत् तार्प्पत् तोन्रुम्
कळ्ळवि ळलङ्ग लानैक् कार्रिन्शेय् वरवु कण्डान् 947

वॅळ्ळ—'वॅळ्ळम्' की बड़ी संख्या में रही; वॅम् चेनै—भयंकर सेना के; चूळ—घेरते आते; विण् उळोर्—व्योमलोकवासी; वॅरुवि विम्म—भयातुर हुए; उळ्ळम् नौन्तु—चिन्ताकुल हो; अनुङ्कु—उद्विग्न रहा; वॅय्य—भयंकर; कूर्रमुम्—यम भी; मुरुवल् तुनृन—मुस्कुरा उठा; तुळ्ळिय—उछलनेवाले; चुळल् कण—चंचलाक्ष; पेय्कळ्—भूतों के; तोळ् पुटैत्तु—कन्धे ठोंककर; आर्प्प—कोलाहलनाद मचाते; तोन्रुम्—शोभायमान; कळ् अविळ्—शहद चूनेवाली; अलङ्कलानै—मालाधारी को; कार्रिन् चेय्—मरुतसूनु ने; वरवु कण्टान्—आता हुआ देखा। ९४७

"वॅळ्ळम्" की (बहुत-बहुत बड़ी) संख्या में सेना गयी। देव डर से भरे। मन मारकर जो दुःखी रहा, वह क्रूर यम अब मुस्कुरा उठा। विवृत्तनयन भूतों ने कन्धे ठोंककर नारे लगाये। इस संभ्रम के साथ शहदस्रावी पुष्पमालाधारी अक्षकुमार को हनुमान ने आता हुआ देखा। ९४७

इन्दिर शित्तो मर्रव् विरावण नेयो वॅन्नाच्
चिन्दैयि नुवहै कौण्डु मुनिवुर्र कुरक्कुच् चीयम्

वन्दनन् मुडिन्द दन्ऱो मनक्करुत् तॆन्न वाळ्त्तिच्
चुन्दरत् तोळै नोक्कि यिरामनैत् तॊळुदु शॊन्नान् 948

मुतिवु उऱ्ऱ–क्रुद्ध; कुरङ्कु चीयम्–वानर-केसरी ने; इन्तिरचित्तो–इन्द्रजित् क्या; मऱ्ऱ–या दूसरा; अ–वह; इरावणतेयो–रावण ही; ॲन्ता–ऐसा; चिन्तॆयित् उवकै कॊण्टु–मन में हर्ष करके; चुन्तर तोळै–अपनी सुन्दर भुजाओं को; नोक्कि वाळ्त्ति–देखकर बधाई देकर; इरामनै तॊळुतु–श्रीराम को (मन ही मन) नमस्कार करके; वन्ततन्–(लक्षित राक्षस) आ गया; मत करुत्तु–मन की कामना; मुटिन्ततु अन्ऱो–पूरी हुई न; ॲन्त–ऐसा; चॊन्तान्–आप ही आप कहा। ९४८

देखते ही वानरकेसरी हनुमान का क्रोध जाग उठा। वह सोचने लगा कि क्या यह इन्द्रजित् है या रावण ही है (जिसको युद्ध में लाना चाहता था)? उसके मन में हर्ष उमड़ आया और उसने अपनी सुन्दर भुजाओं को सगर्व निहारा और उनको बधाइयाँ दीं। श्रीराम को नमस्कार किया। उसने आप ही आप कहा कि अच्छा, आ गया युद्ध का आधार! पूरी हो गयी न मेरी मनोकामना! । ९४८

ॲण्णिय विरुवर् तम्मु ळॊरुवतेल् यान्मुन् शॆय्द
पुण्णिय मुळदा लॆङ्गोन् ऱवत्तॊडुम् बॊरुन्दि नाने
नण्णिय यानु निन्ऱेन् कालनु नणुहि निन्ऱान्
कण्णिय करुम मिन्ऱे मुडिक्कुवॆन् कडिदि तॆन्ऱान् 949

ॲण्णिय–अनुमानित; इरुवर् तम्मुळ्–दो में; ऑरुवतेल्–एक रहा तो; यान्–मेरा; मुन् चॆय्त–पूर्वकृत; पुण्णियम् उळतु–पुण्य-भाग्य है; ॲन् कोन्–मेरे राजा को भी; तवत्तॊटुम्–अपने तप का शुभ फल; पॊरुन्तितात–मिल गया; नण्णिय यानुम्–पास आया मैं; निन्ऱेन्–हूँ; कालनुम्–यम भी; नणुकि–पास आकर; निन्ऱान्–खड़ा है; कण्णिय करुमम्–अपना सोचा काम; इन्ऱे–आज ही; कटितिन्–शीघ्र; मुटिक्कुवॆन्–पूरा करूँगा; ॲन्ऱान्–(आप ही आप हनुमान ने) कह लिया। ९४९

"अगर यह मेरे द्वारा अनुमानित दो में एक होगा तो मेरा पूर्वकृत पुण्य सफलीभूत हो गया। मेरे राजा को भी तप का सुफल मिल गया। अच्छा! मैं इसके सामने हूँ। यम भी समीप आकर है! अपना संकल्पित कार्य अभी शीघ्र ही पूरा कर लूँगा।" —हनुमान ने आप ही आप कहा। ९४९

पळियिल दुरुवॆन् ऱालुम् बः(ह्)ऱलै यरक्क तल्लन्
विळिहळा यिरमुङ् गॊण्ड वेन्दॆन् ऱानु मल्लन्
मॊळियिन्मऱ् ऱॆवर्क्कु मेलान् मुरट्टॊळिन् मुरुह तल्लन्
अळिविलॊण् कुमरन् यारो वज्जनक् कुन्ऱ मन्नान् 950

उरु–इसका आकार; पळि इलतु–अनिंद्य है; ॲन्ऱालुम्–तो भी; पल् तलै–अनेक

सिरों का; अरक्कन् अल्लन्–राक्षस (रावण) नहीं; विऴिकळ् आयिरमुम् कॊण्ट–सहस्र आँखों वाले; वेन्तै–देवराज के; वॆन्ऱालुम् अल्लन्–विजेता (इन्द्रजित्) भी नहीं; मुरण् तॊऴिल्–युद्धकर्मचतुर; मुरुकन् अल्लन्–'मुरुगन' (कार्तिकेय) नहीं है; मॊऴियिन्–सोचकर कहें तो; ॲवर्क्कुम् मेलान्–सबों के ऊपर का लगता है; अञ्चत्त कुन्ऱम् अन्नान्–काजल-गिरि-सम लगता है; अऴिवु इल्–अक्षय; वॆम्–पराक्रमी; कुमरन्–कुँअर; यारो–कौन है तो। ६५०

(हनुमान ने और भी स्वगत कहा—) इसका रूप अनिंद्य लगता है। तो भी अनेक सिरों वाला रावण नहीं लगता। सहस्राक्ष देवेन्द्र का विजेता इन्द्रजित् भी नहीं। युद्धकुशल 'मुरुगन' (कार्तिकेय) भी नहीं। सोचकर कहा जाय तो लगता है कि वह इन सबसे अधिक श्रेष्ठ है। काजल-गिरि के समान दृश्यमान है। यह अक्षय पराक्रमी कुँअर कौन होगा ?। ९५०

ॲन्ऱव नुवन्दु विण्डो यिन्दिर शाब मॆन्न
निन्ऱदो रणत्ति नुम्ब रिरुन्ददोर् नीदि यानै
वन्ऱॊऴि लरक्क नोक्कि वाळॆयि ऱिलङ्ग नक्कान्
कॊन्ऱदिक् कुरङ्गु पोला मरक्कर्दङ् गुळात्तै यॆन्ना 951

ॲन्ऱवन्–ऐसा संशय-वचन जिसने कहा, वह; उवन्तु–हर्षित होकर; विण् तोय्–आकाश में लगे दिखनेवाले; इन्तिर चापम् ॲन्न–इन्द्रधनुष के समान; निन्ऱ–जो खड़ा था; तोरणत्तिन् उम्पर्–तोरण के ऊपर; इरुन्ततु–जो रहा; ओर् नीतियानै–उस अनुपम न्यायी को; वल् तॊऴिल् अरक्कन्–नृशंसकारी राक्षस; नोक्कि–देखकर; इ कुरङ्कु–यही वानर है, जिसने; अरक्कर् तम् कुळात्तै–राक्षसों के दलों को; कॊन्ऱतु पोल् आम्–मार दिया था शायद; ॲन्ना–कहकर; वाळ् ॲयिऱु–उज्ज्वल दाँतों को; इलङ्क–प्रगट करते हुए; नक्कान्–हँसा। ६५१

इस तरह संशय करके उसके आधार पर हर्षित होकर जो हनुमान आकाशगत इन्द्रधनुष-से तोरण पर विराजमान था, उस न्यायी को नृशंस राक्षस ने देखा। वह यह कहते हुए उज्ज्वल दाँतों को प्रकट करके हँसा कि क्या यही वह मर्कट है, जिसने राक्षसदलों को मार डाला था ?। ९५१

अन्नदा नहुशॊर् केट्ट शारदि यैय केण्मो
इन्नदा मॆन्न लामो वुलहिय लिहळ लम्मा
मन्ननो डॆदिर्न्द वालि कुरङ्गॆन्ऱान् मऱ्ऱु मुण्डो
शॊन्नदु तुणिविर् कॊण्डु शेऱियॆन् ऱुणरच् चॊन्नान् 952

अन्नतु आम्–वैसा; नकु चॊल्–परिहास-वचन; केट्ट–के श्रोता; चारति–(अक्षकुमार के) सारथी ने; ऐय–नायक; केण्मो–सुनिए; उलकु इयल्–संसार की रीति; इन्नतु आम्–यही है; ॲन्नल्–ऐसा (निश्चित रूप से) कहना; आमो–सम्भव है क्या; इकळल्–तिरस्कार मत कीजिए; मन्ननोटु–हमारे राजा के साथ;

अँतिर्नृत वालि–जो लड़ा वह वाली; कुरङ्कु–वानर था; अँन्ऱाल्–तो; मऱ्ऱम् उण्टो–और कहने को कुछ होगा क्या; चोन्ऩतु–मेरा कहा; तुणिविल् कोण्टु–दृढ़ता के साथ धारण करके; चेऱ्‍ि–जाइए; अँन्ऱ–ऐसा; उणर–समझाकर; चोन्ऩतान्–कहा। ९५२

उसका व्यंग्य का वचन सुनकर उसके सारथी ने कहा कि नायक! मेरा कहना सुनो। संसार की रीति यही है —ऐसा निर्धारण भी सम्भव है क्या? उसका रूप देखकर उसका तिरस्कार मत कीजिए। (तुमको मालूम ही है कि) हमारे राजा से जो लड़ा वह वाली भी तो एक वानर था। फिर कहने को क्या है? मेरी बात दृढ़ रूप से मन में धारण करके युद्ध में जाओ। सारथी ने समझाया। ९५२

विडन्दिरण् डतैय मॅय्या ऩव्वुरै विळम्बक् केळा
इडम्बुहुन् दितैय शॅय्द विदऩोडु शोऱ्ऱ मॅञ्जत्
तॉडर्न्दुशॅन् ऱुलह मूऩ्ऱुन् दुरुविन्नॆ ऩोऴिवु ऱामल्
कडन्दुपिन् कुरङ्गॅन् ऱोदुङ् गरुवैयुङ् गळैवॆ ऩॆन्ऱान् 953

विटम् तिरण्टु अतैय–विष पुञ्जीभूत हुआ जैसे; मॅय्यान्–रूपवान ने; अ उरै–वह वचन; विळम्प–कहा गया; केळा–सुनकर; चीऱ्ऱम् अँञ्च–कोप के बढ़ते; इटम् पुकुन्तु–हमारे यहाँ प्रवेश करके; इतैय चॅय्त–ऐसा जिसने किया; इतऩ् ओटुम्–इसके साथ; तॊटर्न्तु चॆन्ऱु–इसको मारकर बाद लगा हुआ जाकर; उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों में; ऒऴिवु उऱामल्–कहीं भी न छोड़कर; तुरुविऩॆऩ्–खोजता; कटन्तु–जाकर; पिऩ्–बाद; कुरङ्कु अँन्ऱु ओतुम्–वानर-कथित; करुवैयुम्–गर्भशिशु को भी; कळैवॆऩ्–निरस्त कर दूंगा; अँन्ऱान्–कहा। ९५३

पुञ्जीभूत विष-से रूपधर अक्षकुमार ने उसका वचन सुनकर उत्तर में कहा कि देखो। कम न होकर बढ़ते जानेवाले क्रोध के साथ हमारे ही यहाँ आकर ऐसा कार्य किया है। उसको भी मारूँगा और उससे लगाकर तीनों लोकों में विना किसी स्थान को छोड़े सर्वत्र जाऊँगा और वानर के नाम पर गर्भस्थित वानर-शिशु को भी मारकर निरस्त कर दूंगा। ९५३

आर्त्तॅळुन् दरक्कर् शेऩै यञ्जऩैक् कुरिय कुऩ्ऱॆप्
पोर्त्तदु पॊऴिन्द दम्मा पॊरुबडॆप् परुव मारि
वेर्त्तनर् तिशैकाप् पाळर् चलित्तन विण्णु मण्णुम्
तार्त्तत्ति वीरन् ऱानुन् दतिमैयु मवर्मेऱ् चार्न्दान् 954

अरक्कर् चेऩै–राक्षस-सेनाओं ने; आर्त्तु ॲळुन्तु–नर्दन कर उठी; अञ्चऩैक्कु उरिय–अंजनादेवी के; कुऩ्ऱॆ–पुत्र, पर्वत-सम हनुमान पर; पॊरुपटै परुव मारि–मारू हथियारों की मौसमी बारिश; पॊऴिन्ततु–बरसाकर; पोर्त्ततु–ढँक दिया; तिचै काप्पु आळर्–दिक्पाल; वेर्त्तऩर्–पसीना-पसीना हो गये; विण्णुम्–आकाश

और; मण्णुम्–भूमि; चलित्तत–दोनों चंचल हो गये; तार् तनि वीरन्–हारयुक्त अनुपम महावीर; ततिमैयुम् तातुम्–तनहाई को ही सहायक बनाकर; अवर् मेल् चार्न्तान्–उन पर चढ़ गया। ९५४

तब राक्षस-सेना ने नारे लगाते हुए बढ़कर अंजना के पुत्र, पर्वत-सम हनुमान पर युद्ध-साधन अस्त्र रूपी मौसमी बरसात बरसाकर उसे ढँक दिया। दिक्पाल भी यह देखकर पसीना-पसीना हो गये। आकाश और भूमि दोनों चलित हुए। मालाधारी महावीर तनहाई को ही अपना साथी बनाकर उनसे लड़ने गया। ९५४

ऍऱिन्दन निरुदर् वॅय्दि नॅय्दन पडैहळ् यावुम्
मुऱिन्दन वीरन् मेनि मुट्टिन मूरि यानै
मऱिन्दन मडिन्द तेरुम् वावुमाक् कुळ्ळुवु मम्मा
नॅऱिन्दन वरम्बिल् याक्कै यिलङ्गैदन् नॅऱियिऱ् पेर 955

निरुतर्–राक्षसों द्वारा; वॅय्तिन् ऍऱिन्तत–तेजी से फेंके गये; ऍय्तन–और चलाये गये; पटैकळ् यावुम्–सभी हथियार; वीरन् मेनि–महावीर के शरीर से; मुट्टिन–टकराकर; मुऱिन्तत–टूटे; मूरि यानै–सबल हाथी; मऱिन्तत–मरे; तेरुम्–रथ और; वावु–सरपट चाल के; मा कुळ्ळुवुम्–अश्ववृन्द भी; मटिन्त–मरे (औंधे गिरे); इलङ्कै–लंका; तन् नॅऱियिल्–अपनी स्थिति में; पेर–बदल गयी; वरम्पु इल् याक्कै–असीम शरीर; नॅऱिन्तत–दबकर फटे। ९५५

राक्षसों ने जो अस्त्र चलाए और जो हथियार फेंके, वे सब महावीर के शरीर से टकराकर टूट गये। सबल गज सिर के बल गिरे और मरे। रथ और सरपट चाल के अश्वदल भी मर मिटे। लंका के रूप को ही बदलते हुए अपार संख्या में वीरों के शरीर फूटकर लाशें बने और सब जगह भर गये। ९५५

कायॅरि मुळिपुऱ् कानिऱ् कलन्दॅनक् काऱ्ऱिन् शॅम्मल्
एयॅनु मळविऱ् कॊल्लु निरुदर्क्को रॅल्लै यिल्लै
पोयव रुयिरुम् बोहित् तॅन्बुलम् बडर्दल् पॊय्या
दायिर कोडि तूद रुळर्हॊलो नमनुक् कम्मा 956

मुळि–सूखी; पुल् कानिल्–घास के वन में; काय् ऍरि–जलानेवाली आग; कलन्तु ऍत–मिल (लग) गयी जैसे; काऱ्ऱिन् चॅम्मल्–पवनकुमार; एय् ऍतुम् अळविन्–'ऐ' कहने की देर के अन्दर; कॊल्लुम् निरुतर्क्कु–जितनों को मार डालता, उन राक्षसों की; ओर् ऍल्लै इल्लै–कोई सीमा नहीं रही; पोय्–जो गये; अवर् उयिरुम्–उनकी जानें (जीवात्मा); तॅन् पुलम्–दक्षिण (यम) लोक; पोकि पटर्तल् पॊय्यातु–जाने से नहीं चूकीं; नमनुक्कु–यम के; आयिर कोटि तूतर्–सहस्र करोड़ दूत; उळर् कॊलो–हैं क्या। ९५६

सूखी घास के वन में आग लगने पर जो स्थिति होती है, वैसी स्थिति

राक्षसों की करते हुए पवननन्दन ने जिनको 'ऐ' शब्द के उच्चारण की देर के अन्दर मार डाला, उन राक्षसों की कोई सीमा नहीं रही। उनके प्राण भी (जीवात्मा भी) दक्षिणी (यम-)लोक में जा पहुँचे —यह भी अचूक था। फिर क्या यम के सहस्र कोटि दूत थे ? माँ ! । ९५६

वरवुऱ्ऱार् वारा निऩ्ऱार् वऩ्दवर् वरम्बिल् वॅम्बोर्
पॉरवुऱ्ऱ पॉऴुदुम् वीरऩ् मुम्मडङ् गाऱ्ऱल् पॉङ्गि
इरविप्पेर्क् कदिरो ऩॊ़ळि यिरुदियि ऩॆऩ्ऩ लाऩाऩ्
उरवुत्तो ळरक्क रॅल्ला मॆऩ्बिला वुयिर्ह ळॊत्तार् 957

वर उऱ्ऱार्–जो आनेवाले हैं; वारा निऩ्ऱार्–जो अब आये हैं; वऩ्तवर्–जो पहले आये थे, वे सभी; वरम्पिल्–अपार; वॅम् पोर्–भयंकर युद्ध; पॉर उऱ्ऱ पॉऴुतुम्–जब करने लगते; वीरऩ्–महावीर; आऱ्ऱल्—बल में; मुम् मटङ्कु—तिगुना; पॉङ्कि–बढ़कर; ऊऴि इऱुतियिऩ्–युगान्त में; इरवि–रवि; पेर्–नाम के; कतिरोऩ् ॲऩ्ऩल्–सूर्य के समान; आऩाऩ्–हो गया; उरवु तोळ् अरक्कर् ॲल्लाम्–सबल कन्धों वाले सभी राक्षस; ॲऩ्पु इला–अस्थिहीन; उयिर्कळ् ऑत्तार्–जीवों के समान रहे। ९५७

युद्ध में आने को जो थे वे, जो आ रहे थे वे और जो पहले ही आ गये वे असंख्यक थे और भयंकर युद्ध करनेवाले थे। तो भी जब वे लड़ाई में आये तब हनुमान का बल तिगुना बढ़ा। वह युगान्त के रवि नाम के किरणमाली सूर्य के समान बना। सबल कन्धों के राक्षस सब अस्थि-हीन जन्तुओं (कीड़ों) के समान बन गये। ९५७

पिळ्ळप् पट्टऩ नुदलो डॆक्करि पिऱऴ्पॊऩ् ऱेर्परि पिऴैयामल्
अळ्ळप् पट्टऴि कुरुदिप् पॊरुपुऩ लाऱा हप्पडि शेऱाह
वळ्ळप् पट्टऩ महरक् कडलॆऩ मदिल्शुऱ् ऱियपदि मऱलिक्कोर्
कॊळ्ळप् पट्टऩ वुयिरॆऩ् ऩुम्बडि कॊऩ्ऱा ऩैम्बुलऩ् वॆऩ्ऱाऩे 958

अळ्ळप् पट्टु अऴि—(हनुमान द्वारा) उठा लिये जाकर जो मिटे; पॊरु कुरुति पुऩल्–(उन राक्षसों का) लहरायमान रक्त-जल; आऱु आक–नदी बना; पटि चेऱु आक–भूमि पंक बनी; पिळ्ळ–हनुमान के फोड़ने से; पट्टऩ—जो मरे; नुतल् ओटै—वे भालपट्ट वाले; करि–गज और; पिऱऴ्–औंधे गिरे; पॊऩ् तेर् परि–स्वर्ण रथ और अश्व; पिऴैयामल्—अचूक (पहुँचे); मकर कटल्–मकरालय; वळ्ळप् पट्टऩ–समृद्ध हुए; ॲऩ–ऐसा कहने योग्य; मतिल् चुऱ्ऱिय पति–प्राचीर-वलयित नगरी के; उयिर्–जीव; मऱलिक्के–यम के ही; कॊळ्ळप् पट्टऩ–माने गये; ॲऩ्ऩुम् पटि—ऐसा कहने योग्य रीति से; ऐम्पुलऩ् वॆऩ्ऱाऩ्–पञ्चेन्द्रिय-जेता हनुमान ने; कॊऩ्ऱाऩ्—मार डाला। ९५८

हनुमान ने उठा-उठाकर राक्षसों को निपाता। उनसे रक्त जो बहा वह नदी बन गया और भूमि पंक बन गयी। पञ्चेन्द्रियजयी हनुमान

ने युद्धभूमि में इतने जीवों को मारा कि लोगों को कहना पड़ा कि उसके द्वारा फाड़े गये भालपट्टदार गजों, औंधे गिरे स्वर्ण-रथों और घोड़ों के अचूक रीति से समुद्र में जाने से मकरालय पुष्ट बन गया और प्राचीर-मध्य लंका के सारे जीव यम के ही हो गये। ९५८

तेरे पट्टन वॆऩ्ऱार् शिलर्शिलर् तॆरुहट् चॆम्मुह वयिरत्तोट्
पेरे पट्टन रॆऩ्ऱार् शिलर्शिलर् परिये पट्टन पॆरिदॆऩ्ऱार्
कारे पट्टन नुदलो डैक्कड करिये पट्टन कडिदॆऩ्ऱार्
नेरे पट्टनर् पडमा डेतऩि निल्ला वुयिरॊडु निऩ्ऱारे 959

नेरे पट्टनर्–सामने आकर मरे सो; पट–मरे ही; माटे–पार्श्वों में; निल्ला उयिरॊटु–चंचल प्राणों के साथ; तऩि निऩ्ऱार्–अलग जो खड़े रहे; चिलर्–कुछ ने; तेरे पट्टऩ–रथ ही मिटे; ऎऩ्ऱार्–कहा; चिलर्–और कुछ ने; तॆरु कण्–घूरती आँखों; चॆम् मुकम्–(गुस्से से) लाल मुख; वयिर तोळ्–वज्र-सम कन्धे; पेरे–(इनसे युक्त) पदातिक वीर ही; पट्टऩर्–मिटे; ऎऩ्ऱार्–कहा; चिलर्–और कुछ ने; परिये पॆरितु पट्टऩ–अश्व ही अधिक मरे; ऎऩ्ऱार्–कहा; चिलर्–अन्य कुछ ने; कारे पट्टऩ–मेघों के ही सम; नुतल् ओटै–भालपट्टधारी; कट करि ए–मत्त गज ही; कटितु पट्टऩ–शीघ्र मरे; ऎऩ्ऱार्–कहा। ९५९

समक्ष आकर जो मरे, वे मरे ही। पर जो इधर-उधर अस्थिर प्राण लेकर खड़े रहे उनमें कुछ ने कहा कि रथ ही (अधिक संख्या में) टूटे। कुछ ने कहा कि क्रोध-भरी आँखों, लाल मुखों और वज्र-सम कन्धों के पदातिक वीर ही (अधिक) मरे हैं। और कुछ राक्षसों ने कहा कि अश्व ही नाश हुए हैं। अन्य कुछ लोगों ने कहा कि मेघ-समान और भालपट्टधारी मत्तगज ही अत्यधिक संख्या में शीघ्र नाश हुए। ९५९

आऴिप् पॊरुपडै निरुदप् पॆरुवलि यडलो राय्मह ळडुपॆऴ्वाय्त्
ताऴिप् पडुदयि रॊत्तार् मारुदि तऩिमत् तॆऩ्बदोर् तहैयाताऩ्
एऴिप् पुवऩमु मिडैवा ऴुयिर्हळु मॆऱिवे लिळैयव रिऩमाह
ऊऴिप् पॆयर्वदोर् पुऩलॊत् तारऩ लॊत्ताऩ् मारुद मॊत्ताऩे 960

आऴि–समुद्र-सम; पॊरु पटै–युद्ध-सेना के; निरुत–राक्षस; पॆरु वलि–अतिबली; अटलोर्–वीर; आय् मकळ्–ग्वाल-बाला; अटु–(दूध) औटकर जामन लगाकर जो रख गयी है; पेऴ् वाय्–(उस) बड़े मुख की; ताऴि पटु–कड़ाही पर रहे; तयिर् ऒत्तार्–दही के समान लगे; मारुति–मारुति; तऩि मत्तु ऎऩ्पतु–अनुपम मथानी कहने; ओर् तकै आताऩ्–योग्य एक बना; ऎऱि वेल् इळैयवर्–फेंकी जा सकनेवाली बरछी के धारक जवान वीर; इ एऴु पुवऩमुम्–ये सातों भुवन और; इटै वाऴ् उयिर्कळुम्–उनमें रहनेवाले जीव; इऩम् आक–एक प्रवाह में; ऊऴि पॆयर्वतु–युगान्त में बहनेवाले; ओर् पुऩल्–प्रलय-प्रवाह के; ऒत्तार्–समान रहे; मारुतम् ऒत्ताऩ्–पवन-सम (बली); अऩल् ऒत्ताऩ्–अनल-सम लगा। ९६०

समुद्र के समान बढ़कर लड़नेवाली सेना के अतिबली राक्षस वीर ग्वालबाला के द्वारा बड़े मटके में जमाये हुए दही के समान बने; और हनुमान अनुपम मथानी-सा बन गया। भाले फेंकनेवाले नौजवान वीर सातों भुवनों और उनमें रहनेवाले जीवों के जमघट के समान रहते प्रलय-प्रवाह के समान रहे। पवन-सम मारुति (प्रलय-शोषक) बड़वाग्नि रहा। ९६०

कॊऩ्ऱा ऩुडऩ्वरु कुऴुवैच् चिलर्पलर् कुरैहिऩ् ऱारुडल् कुलैहिऩ्ऱार्
पिऩ्ऱा निऩ्ऱऩ रुदिरप् पॆरुनदि पॆरुहा निऩ्ऱऩ वरुकाह्
निऩ्ऱार् निऩ्ऱिलर् तऩिनिऩ् ऱाऩॊरु नेमित् तेरोडु मवऩ्ऩेरे
शॆऩ्ऱाऩ् वऩ्ऱिऱ लयिल्वा यम्बुह डॆरिहिऩ् ऱाऩ्विऴि यॆरिहिऩ्ऱाऩ् 961

उटऩ् वरु–साथ आनेवाले; कुऴुवै–राक्षसदलों को; कॊऩ्ऱाऩ्–हनुमान ने मार डाला; चिलर् कुरैकिऩ्ऱार्–कुछ मरे; पलर्–अनेक; उटल् कुलैकिऩ्ऱार्–शरीर काँपते हुए; पिऩ्ऱा निऩ्ऱऩर्–फिरकर जाने लगे; उतिर पॆरु नति–रुधिर की बड़ी नदियाँ; पॆरुका निऩ्ऱऩ–बह उठीं; अरुकु आक–पास; निऩ्ऱार्–जो खड़े रहे; निऩ्ऱिलर्–वे वहाँ खड़े नहीं रहे; तऩि निऩ्ऱाऩ्–अकेला जो रहा (अक्षकुमार); ऒरु नेमि–उपमाहीन पहियों वाले; तेर् ऒटुम्–रथ के साथ; अवऩ् नेरे–उस (हनुमान) के समक्ष; चॆऩ्ऱाऩ्–गया; विऴि ऎरिकिऩ्ऱाऩ्–आँखें जलती जैसे रखते हुए; वऩ् तिऱल्–अति कठोर; अयिल् वाय्–तीक्ष्णमुख; अम्पुकळ्–शरों को; तॆरिकिऩ्ऱाऩ्–चुनकर चलाता। ९६१

हनुमान ने अक्षकुमार के साथ आगत राक्षसदलों को मार डाला। कुछ मरे। अनेक कंपित शरीरों के होकर फिर गये। रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बह निकलीं। अक्षकुमार के पास जो रहे वे नहीं रह सके। अक्षकुमार अकेला रह गया। वह अनुपम पहियों वाले अपने रथ को चलाते हुए हनुमान के सामने आया और आँखों से आग-सी निकालते हुए चुन-चुनकर शर चलाने लगा। ९६१

उऱ्ऱा ऩिन्दिर शित्तुक् किळैयव ऩॊरुहा लेपल रुयिरुण्णक्
कऱ्ऱा ऩुम्मुह मॆदिर्वैत् ताऩदु कण्डार् विण्णवर् कशिवुऱ्ऱार्
ऎऩ्ऱा मारुदि निलैयॆऩ् बारिऩि यिमैया विऴियिऩै यिवैयॊऩ्ऱो
पॆऱ्ऱा मल्लदु पॆऱ्ऱा मॆऩ्ऱऩर् पिरिया दॆदिरॆदिर् शॆऱिहिऩ्ऱार् 962

इन्तिर चित्तुक्कु–इन्द्रजित् का; इळैयवऩ्–कनिष्ठ; उऱ्ऱाऩ्–आया; ऒरु काले–एक ही बार में; पल उयिर्–अनेक जीवों को; उण्ण कऱ्ऱाऩुम्–खाना जिसने सीखा था, उसने भी; मुकम् ऎतिर् वैत्ताऩ्–अपना मुख उसके सामने किया; अतु–वह; कण्टार्–देखनेवाले; विण्णवर्–देवगण; कचिवु उऱ्ऱार्–शिथिल पड़े; मारुति निलै–मारुति की स्थिति; ऎऩ् आम्–क्या होगी; ऎऩ्पार्–कहते; इमैया विऴियिऩै–अपलक आँखें; पॆऱ्ऱाम्–हमने पायी हैं; इवै ऒऩ्ऱो–अकेले ये ही क्या;

पॆऱ्ऱाम्–पायीं; अल्लतु–अहित (का अनुभव) भी; पॆऱ्ऱोम्–पाया है; ऎऩ्ऱऩर्–कहते; पिरियातु–बिना अलग हुए; ऎतिर् ऎतिर्–आमने-सामने; चॆऱिकिऩ्ऱार्–पिले रहते हैं। ९६२

इन्द्रजित् का छोटा भाई हनुमान के समक्ष आया और एक ही झड़प में अनेक को निहत करनेवाला हनुमान उसकी ओर मुख करके युद्धोद्यत हुआ। देवगण यह देखकर चिन्ताकुल हुए और आपस में कहने लगे कि हनुमान की स्थिति क्या होगी? हम अपलक नेत्र वाले हुए तो वह क्या अच्छा भाग्य ही रहा? अहितकारी बातों का देखना भी प्राप्त हो गया। वे अलग नहीं हुए और आमने-सामने ठस जमे खड़े रहे। ९६२

ऎय्दाऩ् वाळिह ळॆरिवा युमिळ्वऩ वीरे ळॊदिरवै पार्शोरप्
पॊय्दाऩ् मणियॆळ्ळु वॊऩ्ऱा लऩ्ऱदु पॊडिया युदिर्वुऱ वडिवाळि
वॆय्दा यितपल विट्टाऩ् वीरऩुम् वॆऱोर् पडैयिलऩ् माऱावॆङ्
गैदा ऩॆपोरु पडैया हत्तॊडर् कालार् तेरदऩ् मेलाऩाऩ् 963

ऎरि वाय् उमिळ्वऩ–आग वमन करनेवाले; ईर् एळ् वाळिकळ्–चौदह शर; ऎतिर् ऎय्ताऩ्–(अक्षकुमार ने) हनुमान पर चलाये; अवै–वे; पार् चोर–भूमि पर गिर जायँ, ऐसा; मणि ऎळु ऒऩ्ऱाल्–सुन्दर एक लौहदण्ड से; पॊय्ताऩ्–(हनुमान ने) उसे प्रताडित किया; अऩ्ऱु–तब; अतु–वह; पॊटियाय्–चूर होकर; उतिर्वु उऱ–चू जाय ऐसा; वॆय्तु आयित–संतापक; वटि वाळि–तीक्ष्ण शर; पल विट्टाऩ्–अनेक चलाए; वीरऩुम्–महावीर भी; वॆऱु ओर् पटै इलऩ्–निरायुध हो; माऱा–उनके विरोध में; वॆम् कै ताऩे–सबल हाथों को; पोरु पटै आक–युद्ध का हथियार बनाकर; तॊटर् काल आर्–चलनेवाले चक्रों से युक्त; तेर् अतऩ् मेल्–रथ पर; आऩाऩ्–चढ़ गया। ९६३

अक्षकुमार ने अग्निवर्षक चौदह बाण चलाये। उनको बेकार कर भूमि पर गिराते हुए हनुमान ने एक लौहदण्ड से उन पर प्रहार किया। अक्षकुमार ने उस दण्ड को चूर कर गिराते हुए सन्तापक और तीक्ष्ण अनेक बाण चलाये। अब महावीर निरायुध रह गया। वह उन बाणों के विरुद्ध अपने हाथों को ही हथियारों के रूप में प्रयुक्त करते हुए अपने सामने घूमते आते पहियों वाले रथ पर चढ़ गया। ९६३

तेरिऱ् चॆऩ्ऱॆदिर् कोल्हॊळ् वाऩुयिर् तिऩ्ऱाऩ् पॊरुवरु शॆऱिदिण्डेर्
पारिऱ् चॆऩ्ऱदु परिबट् टऩवबऩ् वरिविऱ् चिऩ्दिय पहळिक्कोल्
मार्बिऱ् चॆऩ्ऱऩ शिलपॊर् ऱोळिडै मऱैवुऱ् ऱऩशिल वऱवोऩुम्
नेरिऱ् चॆऩ्ऱवऩ् वयिरक् कुऩिशिलै पऱ्ऱिक् कॊण्डॆदि रुऱ्ऱऩिऩ्ऱाऩ् 964

तेरिल् चॆऩ्ऱु–रथ में जाकर; ऎतिर्–सामने; कोल् कॊळ्वाऩ्–वेत्र से अश्व चलानेवाले; उयिर् तिऩ्ऱाऩ्–(सारथी के) प्राण हरे; पॊरुवु अऱ–अनुपम; चॆऱि तिण् तेर्–अति कठोर रथ; पारिल् चॆऩ्ऱतु–भूमि पर गिरा; परि पट्टऩ–अश्व मर गये;

अवन् वरि विल्–उसके सबन्ध धनु से; चिन्तिय–निकले; पकळि कोल्–शरों में; चिल–कुछ; मार्पिल् चॅन्ऱ्र्रन–(हनुमान के) वक्ष में घुस गये; चिल–और कुछ; पॉन् तोळ् इटै–स्वर्णमय कन्धों में; मऱैवु उऱ्ऱन–घुसकर अदृश्य हो रहे; अऱवोनुम्–धर्मस्वरूप हनुमान भी; नेरिल् चॅन्ऱु–(उसके) सामने जाकर; अवन्–उसके; वयिर–वज्रकठोर; कुनि चिलै–झुके धनुष को; पऱ्ऱि कॉण्टु–छीन लेकर; ऍतिर् उऱ–सामने; निन्ऱान्–खड़ा रहा। ६६४

रथ पर पहुँचकर महावीर ने वेत्र लेकर अश्व चलानेवाले सारथी के प्राण हर लिये। वह अनुपम सबल रथ भी भूमि पर गिर गया और अश्व मर गये। अक्ष ने अपने सबन्ध धनु द्वारा अनेक शर जो चलाये, उनमें कुछ महावीर के वक्ष में घुसे। और कुछ स्वर्ण-सम मनोरम कन्धों में चुभकर अदृश्य हो रहे। धर्मस्वरूप महावीर उसके समक्ष गया और उसके वज्रकठोर और झुके धनु को छीनकर उसके सामने खड़ा रहा। ९६४

ऑरुहै यालवन् वयिरत् तिण्शिलै युऱ्ऱुप् पऱ्ऱलु मुरवोनुम्
इरुहै यालॅदिर् वलिया मुन्नम विऱ्ऱो डियदिवर् पॉऱ्ऱोळान्
शुरिहै वाळव नुरुविक् कुत्तलु मदन्नैच् चॉर्कॉडु वरुतूदन्
पॉरुहै यालिडै पिदिर्वित् तान्मुदिर् पॉऱियो डुम्बडि पऱियावे 965

उरवोनुम्–महावीर के; ऑरु कैयाल्–एक हाथ से; अवन्–उसका; वयिर–वज्र-सम; तिण् चिलै–कठोर धनु; उऱ्ऱु पऱ्ऱलुम्–ग्रसकर पकड़ते ही; इरु कैयाल्–(अक्षकुमार अपने) दोनों हाथों से; ऍतिर् वलिया–आगे खींचे; मुन्नम्–उसके पहले ही; अतु इऱ्ऱु ओटियतु–वह टूटकर गिर गया; अवन्–उसके; चुरिकै वाळ्–छुरा; उरुवि–निकालकर; कुत्तलुम्–घुसेड़ते ही; इवर् पॉन् तोळान्–उन्नत मनोहर कन्धों वाले; चॊऱ् कॊटु–(श्रीराम की) आज्ञा ले; वरु–आगत; तूतन्–दूत (हनुमान) ने; अतनै–उसको; पऱिया–छीन लेकर; मुतिर् पॉऱि–अधिक अंगारे; ओटुम् पटि–बिखेरते हुए; पॉरु कैयाल्–लड़नेवाले एक हाथ से; इटै पितिर्वित्तान्–बीच से तोड़ दिया। ६६५

महावीर हनुमान के एक हाथ से उस अतिबलसंयुक्त धनु को खूब पकड़ने पर, वह धनु अक्षकुमार के दोनों हाथों से छीन लेने से पूर्व ही टूटकर अलग हो गया। उसने अपना छुरा निकालकर हनुमान पर भोंका, तो मनोरम व उन्नत कन्धों वाले श्रीराम की आज्ञा से आये दूत, हनुमान ने उसको पकड़कर छीन लिया और बीच से तोड़कर पटक दिया जिससे बहुत अंगारे छूटकर निकले। ९६५

वाळा लेपॉर लुऱ्ऱा निऱ्ऱदु मण्शे रामुन्नम् वयिरत्तिण्
तोळा लेपॉर मुडुहिप् पुक्किडै तळुविक् कोडलु मुडन्मुऱ्ऱुम्
नीळा रयिलॅन मयिर्दैत् तिडमणि नॅडुवा लवन्नुड निमिर्वुऱ्ऱु
मीळा वहैपुडै शुऱ्ऱिक् कॉण्डदु पऱ्ऱिक् कॉणडनन् मेलानान् 966

वाळाले–तलवार ले; पॉरल् उऱ्ऱान्–लड़ना आरम्भ करके; अतु इऱ्ऱु–उसके टूटकर; मण् चेरा मुतम्–भूमि पर लगने के पूर्व ही; वयिर तिण् तोळाले–वज्रकठोर कन्धों से; पॉर–लड़ने के लिए; मुटुकि–शीघ्र आकर; इटै पुक्कु–वहाँ आकर; तऴुवि कोटलुम्–आलिंगन करते ही; नीळ् आर्–लम्बाई से युक्त; अयिल् अॅन्त–शक्तियों के समान; उटल् मुऱ्ऱुम्–(अक्ष के) शरीर भर में; मयिर् तैत्तिट–बाल चुभ गये; मणि नॅटु वाल्–मनोरम लम्बी पूँछ ने; अवन्–उसको; उटल् निमिर्वु उऱु–शरीर निकालकर; मीळा वकै–बचने नहीं देते हुए; पुटै चुऱ्ऱि कॉण्टतु–सब ओर से लपेट लिया; पऱ्ऱि कॉण्टतन्–इस तरह जिसने ग्रस लिया, वह महावीर; मेल् आतान्–(कुमार को नीचे गिराकर) उसके ऊपर बैठ गया। ९६६

खड्गयुद्ध करने को जो उद्यत हुआ था, वह खड्ग के टूटकर भूमि पर लगने से पूर्व अपने वज्र-सम सुदृढ़ कन्धों के सहारे भिड़ने का संकल्प लेकर शीघ्र आया। आकर हनुमान को बाहुपाश में ले लिया। तो लम्बे भालों-जैसे हनुमान के बाल अक्ष के शरीर में चुभे। हनुमान की मनोरम व लम्बी पूँछ ने उसको कसकर ऐसा लपेट लिया कि वह बचकर निकल नहीं पाया। उस तरह पकड़कर महावीर उसे गिराकर उस पर आरूढ़ हो गया। ९६६

पऱ्ऱिक् कॉण्डवन् वडिवा ळॆन्तवॊळिर् पल्लिऱ् ऱुहनिमिर् पडर्हैयाल्
अॆऱ्ऱिक् कॊण्डलि ऩिडैनिन् ऱुमिऴ्शुडर् मिन्ऩिन् ऩिनम्विऴु वन्वॆन्न
मुऱ्ऱिक् कुण्डल मुदला मणियुह मुऴैना लाविवर् कुडर्नालक्
कॊऱ्ऱत् तिण्शुवल् वयिरक् कैहॊडु कुत्तिप् पुडैयॊरु कुदिहॊण्डान् 967

पऱ्ऱिक् कॊण्टु–पकड़कर; अवन् वटि वाळ् अॅन्त–उसकी तेज तलवार के समान; ऑळिर्–चमकते; पल्–दाँतों को; इऱ्ऱु उक–तोड़ गिराते हुए; निमिर्–उन्नत; पटर् कैयाल्–विशाल हाथ से; अॅऱ्ऱि–चाँटा मारकर; कॊण्टलिन् इटै निन्ऱु–मेघ-मध्य से; उमिऴ्–निकलनेवाली; चुटर् मिन्तिन् इनम्–चमकती बिजलियों की राशि; विऴुवत अॅन्न–गिरी जैसे; कुण्टलम् मुतलाम्–कुण्डल आदि; मणि मुऱ्ऱि उक–रत्नों को मिटाकर बिखरने देकर; नाला इवर् कुटर्–जो विना लटके विद्यमान थीं, उन अँतड़ियों को; मुऴै नाल–गुहाद्वारों के समान छिद्रों के साथ लटकाकर; कॊऱ्ऱ तिण्–विजयशील कठोर; चुवल्–टीले के समान ऊँचा पड़े रहे उसको; वयिर कै कॊटु–वज्र-से कठोर हाथों से; कुत्ति–घूँसा मारकर; ऑरु पुटै–एक बाजू में; कुति कॉण्टान्–कूद पड़ा। ९६७

उसने उसे पकड़ में रखकर अपने उठे हुए विशाल हाथ से ऐसा चाँटा मारा कि उसके तीक्ष्ण तलवार-जैसे चमकीले दाँत टूटकर गिर गये। ऐसा घूँसा मारा कि मेघमध्य से निर्गत बिजलियों की राशि के समान कुण्डल आदि के रत्न छूट छितरे; और चुस्त रही उसकी अँतड़ियाँ गुहाओं के समान छिद्रों के साथ बाहर आकर लटकने लगीं। ऐसा अपने वज्र-तुल्य

हस्त से घूँसा मारकर विजयशाली महावीर, टीले के समान पड़े रहे उसके शरीर से एक बाजू में नीचे कूद गया। ९६७

नीत्ता योडित् वुदिरप् पॅरुनदि नीरा हच्चिलै पाराहप्
पोय्त्ताळ् शॅरिदशै यरिशिन् दित्पडि पोङ्गप् पॉरुमुयिर् पोहामल्
मीत्ता निमिर्शुडर् वयिरक् कैहोडु पिडिया विण्णोडु मण्गाणत्
तेय्त्ता तूळियि नुलहेळ् तेयिनु मॉरुतन् पुहळिरै तेयादान् 968

ऊळियिन्–युगान्त में; उलकु एळ्–सातों लोकों के; तेयिनुम्–मिटने के बाद भी; ऑरु–अनुपम; तन् पुकळ्–जिसका अपना यश; इरै–कुछ भी; तेयातान्–कम नहीं होगा वह; नीत्ताय् ओटित्त–प्रवहमान; उतिर पॅरु नति–रुधिर की बड़ी नदी को; नीराक–जल बनाकर; पार्–भूमि को; चिलै आक–सिल बनाकर; पोय्–(भूमि पर) जाकर; ताळ्–पड़े रहे; चॅरि तचै–घने मज्जों के; अरि चिन्तित्तपटि–चावल छितरे पड़े जैसे; पोङ्क–पड़े रहते; पॉरुम् उयिर् पोकामल्–लड़ते रहे प्राण नहीं गये; मीत्तु आ निमिर्–ऊपर उठे हुए; चुटर् वयिर–उज्ज्वल और कठोर; कै कोटु–हाथों से; पिटिया–(शरीर को) पकड़कर; विण् ओटु–व्योमलोक के साथ; मण् काण–भूलोक को भी देखने देते हुए; तेय्त्तान्–पीसा। ९६८

युगान्त में जब सातों लोक मिट जायँगे तब भी महावीर का यश नहीं मिटेगा। स्थायी रहेगा। ऐसे हनुमान ने प्रवाहमय रक्त-नदी से जल छिड़कते हुए, भूमि को ही सिल बनाकर उस राक्षस के नीचे छितरे मांस-मज्जों के टुकड़ों को धान के दाने बनाकर राक्षस के शरीर को, जिससे उसके प्राण बाहर निकलना न चाहकर लड़ रहे थे (छटपटा रहे थे), लोढ़े के रूप में अपने दोनों उज्ज्वल और वज्र-कठोर हाथों से पकड़कर पिसाई की और उसको व्योमलोक और भूलोक दोनों के वासी देख रहे थे। ९६८

पुण्डाळ् कुरुदियिन् वॅळ्ळत् तुयिर्होडु पुक्कार् शिलर्शिलर् पोदिपेयित्
पण्डा रत्तिडै यिट्टार् तम्मुडल् पट्टार् शिलर्शिलर् बयमुन्दत्
तिण्डा डित्तिशै यरिया मरुहित्तर् शॅत्तार् शिलर्शिलर् शॅलवऱ्ऱार्
कण्डार् कण्डदोर् तिशैये विशैहोडु काल्विट् टार्पडै कैविट्टार् 969

चिलर्–कुछ; पुण् ताळ्–मांस-मज्जे जिसके अन्दर थे उस; कुरुतियिन् वॅळ्ळत्तु–रक्तप्रवाह में; उयिर् कोंटु–प्राणों को बचा ले; पुक्कार्–प्रविष्ट हुए; चिलर्–कुछ ने; पेयिन्–पिशाचों से; पोति–संगृहीत; पण्टारत्तिटै–शव-भांडारों में; तम् उटल्–अपने शरीरों को; इट्टार्–रखवा लिया; चिलर्–अन्य कुछ; पयम् उन्त–भय के उकसाने से; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; तिण्टाटि–अस्त-व्यस्त होकर; तिचै अरिया–दिशा न जानते हुए; मरुकित्तर्–दुःखी होकर; चॅत्तार्–मरे; चिलर्–कुछ; चॅलवु अऱ्ऱार्–गति खो गये; चिलर्–कुछ ने; पटै–हथियारों को; कै विट्टार्–हाथ से त्याग दिया; कण्टार् कण्टतु ओर्–(और) जिस दिशा को देखा उसी; तिचैये–दिशा में ही; विचै कोंटु–सवेग; काल् विट्टार्–पैर बढ़ाये। ९६९

(अक्ष दिवंगत हो गया। फिर) कुछ रक्त-धारा में प्राण लेकर घुस गये; कुछ लोगों ने उन शवों के ढेरों में अपने शरीरों को छिपा लिया, जिनको भूत-पिशाचों ने इकट्ठा कर रखा था। कुछ भय के ही चंगुल में फँसकर मर गये। कुछ अस्त-व्यस्त होकर दिशा जान नहीं सके और संकटग्रस्त होकर विगत-प्राण हुए। कुछ में चलने की शक्ति ही नहीं रह गयी थी। और कुछ राक्षसों ने अपने हाथ के हथियार वहीं छोड़े और जो दिशा देखी उसी दिशा में भगदर मचा दी। ९६९

मीऩाय् वेलैयै युऱ्ऱार् शिलर्शिलर् पशुवाय् वऴिदोऱु मेय्वुऱ्ऱार्
ऊऩार् पऱवैयिऩ् वडिवा ऩार्शिलर् शिलर्नाऩ् मऱैयव रुरुवाऩार्
माऩार् कण्णिळ मडवा रायिऩर् मुऩ्ऩे तङ्गुऴल् वहिर्वुऱ्ऱार्
आऩार् शिलर्शिल रैया निऩ्शर णॆऩ्ऱार् निऩ्ऱव ररियॆऩ्ऱार् 970

चिलर्–कुछ; मीऩाय्–(माया से) मछली बनकर; वेलैयै उऱ्ऱार्–समुद्र पहुँच गये; चिलर्–कुछ; पचुवाय्–गायें बनकर; वऴि तोऱुम्–मार्ग-मार्ग में; मेय्वु उऱ्ऱार्–चरने लगे; चिलर्–कुछ; ऊऩ् आर्–मांसभक्षी; पऱवैयिऩ् वटिवु आऩार्–पक्षियों के रूपधारी बने; चिलर्–कुछ ने; नाल् मऱैयवर्–चतुर्वेदी (ब्राह्मण); उरुवु आऩार्–वेषधारी बने; चिलर्–कुछ; माऩ् आर् कण्–मृग की-सी आँखों वाली; इळ मटवार्–तरुण रमणियाँ; आयिऩर–बनकर; तम् कुऴल् मुऩ्ऩे–अपने केश में सामने; वकिर्वु उऱ्ऱार्–माँग बनाये; आऩार्–रहीं; चिलर्–कुछ; ऐया–प्रभु; निऩ् चरण्–आपकी शरण हैं; ऎऩ्ऱार्–कहकर शरणार्थी बने; निऩ्ऱवर्–बाक़ी जो रहे वे; अरि ऎऩ्ऱार्–हरि-नाम बोले। ९७०

कुछ राक्षस माया से मछलियाँ बनकर समुद्र में जा रहने लगे। कुछ गायें बने और मार्गों में यत्र-तत्र चरने लगे। कुछ मांसपक्षी (कौए, गीध आदि पक्षी) बने। कुछ लोगों ने चतुर्वेदी ब्राह्मणों का रूप ले लिया। कुछ मृगनयनी बालाएँ बने और अपने केश में माँग निकाले खड़े रहे। कुछ उसकी शरण में, "हम आपके शरणागत हैं" —कहते हुए आ गये। बाक़ी जो रहे वे हरि-नाम बोलते रहे। ९७०

तऩ्दा रमुमुऱु किळैयुऩ् दमैयॆदिर् तऴुवुऩ् दोऱुनुम् दमरल्लेम्
वऩ्देम् वाऩव रॆऩ्ऱे हिऩर्शिलर् शिलर्मा ऩुयरॆऩ वाय्विट्टार्
मऩ्दा रङ्गिळर् पॊऴिल्वाय् वण्डुह ळाऩार् शिलर्शिलर् मरुळ्हॊण्डार्
इऩ्दा रॆयिऱुह ळिऱुवित् तार्शिल रॆरिपोऱ् कुऩ्जियै यिरुळ्वित्तार् 971

चिलर्–कुछ; तम् तारमुम्–उनकी स्त्रियों और; उऱु किळैयुम्–निकट के रिश्तेदारों ने; तमै ऎतिर् तऴुवुम् तोऱुम्–उनका जब सामने आकर आलिंगन किया तब; नुम तमर् अल्लेम्–(हम) तुम लोगों के (नातेदार) नहीं; वाऩवर् वऩ्तेम्–देव आये; ऎऩ्ऱु–कहकर; एकिऩर्–दूर चले गये (हनुमान के डर से); माऩुयर्–मनुष्य (हैं हम, राक्षस नहीं); ऎऩ–ऐसा; वाय् विट्टार्–उच्च स्वर में कहा; चिलर्–और

कुछ; मन्तारम् किळर्–मन्दारतरुकलित; पॉळिल् वाय्–उपवन में; वण्टुकळ् आतार्–भौंरे बने; चिलर्–कुछ; मरुळ् कॉण्टार्–भ्रमित हुए; चिलर्–कुछ निशाचरों ने; इन्तु आर्–कलाचन्द्र-सम; ॲयिऱुकळ्–दाँतों को; इऴवित्तार्–तुड़वा लिया; ॲरि पोल्–आग-से; कुञ्चियै–केश को; इरुळ्वित्तार्–काला बना लिया। ९७१

कुछ राक्षसों ने, जब उनकी पत्नियों और रिश्तेदारों ने उनके स्वागत में आलिंगन किया, तब (हनुमान से डरकर) कहा कि हम तुम लोगों के बन्धु नहीं हैं। हम सब देव हैं इधर आये हुए। वे बचाकर भाग चले। कुछ राक्षसों ने उच्च स्वर में चिल्लाकर कहा कि हम मानव हैं। कुछ राक्षस मन्दारतरुकलित अशोक वन में भ्रमर बनकर रह गये। कुछ लोग भ्रमित होकर निष्क्रिय खड़े रह गये। कुछ राक्षसों ने बालचन्द्र-सम अपने दाँतों को तुड़वा लिया और आग-से लाल अपने केशों को काला बना लिया। ९७१

कुण्डलक् कुळैमुहक् कुङ्गुमक् कॉङ्गैयार्
वण्डलैत् तॅळ्हुळर् करुऱैहाल् वरुडवे
विण्डलत् तहविरैक् कुमुदवाय् विरिदलाल्
अण्डमुर् रुळदवू रळुदपे रमलैये 972

कुण्टल कुळै मुक–कुण्डल मण्डित मुखों और; कुङ्कुम कॉङ्कैयार्–कुंकुमचर्चित स्तनों वाली राक्षसियाँ; वण्टु अलैत्तु ॲळु–भ्रमरों को अस्त-व्यस्त उठने देते हुए; कुऴल् करुऱै–केश राशि के; काल् वरुट–चरणों को सहलाते; अलत्तक–लाल रूई लगे; विरै–सुवासित; कुमुत वाय्–कुमुदारुण मुख के; विण्टु विरितलाल्–खूब खुलने से; अ ऊर्–उस नगर के (वासियों के); अऴुत–रोने का; पेर् अमलै–बड़ा नाद; अण्टम् उऱ्ऱु उळतु–अण्ड भर में व्याप्त हुआ। ९७२

कुण्डलों से अलंकृत मुखों और कुंकुमचर्चित स्तनों वाली राक्षसियों ने अपने केश को खोल दिया, जिससे भ्रमर अस्त-व्यस्त हो उड़ने लगे। उनका केश उनके पैरों को सहला रहा था। वे अपने लाक्षारसरंजित अधरों वाले मुखों को खोलकर रोयीं, जिससे जो शोर निकला वह अण्ड भर में व्याप गया। ९७२

कदिरॅळुन् दनैयशॅन् दिरुमुहक् कणवन्मा
डॅदिरॅळुन् दडिविळुन् दळुवुशो रिळनलार्
अदिनलङ् गोदैशो रोदियो डत्तुरवूर्
उदिरमुन् दॅरिहिला दिडैपरन् दॉळुहिये 973

कतिर् ॲऴुन्तु अनैय–रवि उगा हो जैसे; चॅम् तिरु मुक्–लाल मुखों के; कणवन् माट्टु–पतियों के पास; ॲतिर् ॲऴुन्तु–सामने उठ जाकर; अटि विऴुन्तु–

चरणों पर गिरकर; अऴुतु चोर्–रोकर थकी होनेवाली; इळ नलार्–तरुण रमणियों के; अति नलम्–अति सुन्दर; कोतै चेर्–मालायुक्त; ओति ऑटु–केश के साथ; अन्रु–उस दिन; अ ऊर् उतिरमुम्–उस नगर में प्रवहमान रक्त भी; इटै परन्तु ऑऴुकि–अनेक स्थलों में फैलकर बहकर; तॅरिकिलातु–अपृथक् दृश्य रहा। ९७३

उदयसूर्य के समान लाल मुखों वाले अपने (मृतक) पतियों के सामने जाकर राक्षसियाँ पैरों पर गिरकर रोयीं। उन राक्षसियों के केश भी लाल थे। उस लंका में लाल रक्त भी बह रहा था। केश और रक्त में कोई भेद नहीं दिखायी देता था। (सर्वत्र लाल रक्त और लाल केश दिखायी दे रहे थे। राक्षसों के मुख भी लाल थे। फिर क्या, सब जगह लाली ही लाली है!)। ९७३

ताविल्वॅञ् जॅरुनिलत् तिडैयुलन् दवर्तमेल्
ओवियम् बुरैनलार् विऴुदोरुञ् जिलरुयिर्त्
तेवुहण् गळुमिमैत् तिलर्हळा मिवैयॅलाम्
आवियोन् रुडलिरण् डायदा लेहॉलाम् 974

वॅम् चॅरु निलत्तु–क्रूर युद्धस्थल में; तावु इल् इटै–पनाह से हीन स्थल में; उलन्तवर् तम् मेल्–मरे पड़े रहों पर; ओवियम् पुरै–चित्र (प्रतिमा-)सी; नलार्–रमणियाँ; विऴु तोरुम्–ज्यों-ज्यों गिरतीं; चिलर्–कुछ; उयिर्त्तु–लम्बी साँस छोड़कर; एवु कण्कळुम्–बाण-सी आँखें भी; इमैत्तिलर्कळ् आम्–विना पलक मारे (मूंदकर पड़ी) रहीं; इवै ऍलाम्–ये सारे; आवि ऑन्रु–प्राण एक; उटल् इरण्टु–शरीर दो; आयतु–रहे; आले कॉलाम्–इसी कारण से शायद। ९७४

उस भयंकर समरांगन में कोई छाँह ही नहीं थी। मृतकों के शवों के ऊपर चित्रप्रतिमा-सम राक्षसियाँ गिरीं। तब उनकी साँसें रुक गयीं और आँखें अपलक होकर मुंद गयीं और मरी-सी हो रहीं। क्योंकि राक्षस और राक्षसी दो शरीर पर एक प्राण थे। ९७४

ओडिन्ना रुयिर्हणा डुडल्हळ्पो लुदवियाय्
वीडिन्नार् वीडिन्नार् मिडैयुडर् कुवैहळ्वाय्
नाडिन्नार् मडनलार् नवैयिला नण्बरैक्
कूडिन्ना रूडिन्ना रुम्बर्वाळ् कॉम्बन्नार् 975

मट नलार्–अबोध स्त्रियाँ; उयिर्कळ् नाटु–प्राणों की (आत्मा की) खोज में जानेवाले; उटल्कळ् पोल्–शरीर के समान; ओटिन्नार्–भागों; वीटिन्नार् वीटिन्नार् मिटै–मरकर सटे पड़े रहे; उटल् कुवैकळ् वाय्–शव-राशियों में; नाटिन्नार्–खोज लगाकर; नवै इला नण्परै–निर्दोष संगियों को; उतवियाय्–उपकार करने के लिए; कूटिन्नार्–(मरकर) उनसे मिल गयीं; उम्पर् वाळ्–आकाशवासिनी; कॉम्पु अन्नार्–पुष्पशाखा-सरीखो (अप्सराएँ); ऊटिन्नार्–रूठीं। ९७५

अबोध राक्षसी स्त्रियाँ अपने प्राणों (आत्माओं) की खोज में जानेवाले

शरीरों के समान दौड़ीं। मरे पड़े राक्षसों के शवों के ढेरों के बीच में अपने-अपने पति को खोजा। आखिर ढूँढ़ लेकर वे अपने निर्दोष मित्र-से पतियों के साथ मिल गयीं तथा स्वर्ग गयीं। वहाँ व्योमलोकवासिनी पुष्पशाखा-सरीखी अप्सराएँ इनको देखकर रुष्ट हो गयीं। (जो मर जाते हैं, वे स्वर्ग जाकर देव बन जाते हैं। और अप्सराएँ उनको आनन्द प्रदान करती हैं। यह बात ग्रन्थों में कही गयी हैं। कम्बन ने भी उसकी अनेक स्थलों पर चर्चा की है।)। ९७५

तीट्टुवा	ळत्तैयकट्	टॅरिवैयोर्	तिरुवत्ताळ्
आट्टिनिऩ्	ऱयर्वदो	रऱुदलैक्	कुऱैयित्तैक्
कूट्टिनी	योरुयिर्त्	तुणैवत्तॆङ्	गोवित्तै
काट्टुवा	यादियॆत्	ऱळुदुकै	कूप्पित्ताळ् 976

तीट्टु—पैनायी गयी; वाळ् अत्तैय—तलवार-सी; कण्—आँखों वाली; तॆरिवै—रमणी; ओर् तिरु अत्ताळ्—एक, लक्ष्मी-सरीखी; आट्टिल् नित्ऱु—नृत्यरत रहकर; अयर्वतु ओर्—थके गये एक; अऱु तलै—सिर-कटे; कुऱैयित्तै—कबन्ध को; कूट्टि—उसके सिर से लगाकर; नी—तुम; ओर् उयिर् तुणैवत्—अनुपम मेरे प्राण-सम पति; ॲत् कोवित्तै—मेरे राजा को; काट्टुवाय् आति—दिखानेवाले बनो; ॲत्ऱु—ऐसा; अळुतु—रोती हुई; कै कूप्पित्ताळ्—हाथ जोड़े (उसने)। ९७६

पैनायी गयी तलवार-सी आँखों वाली लक्ष्मी-सरीखी एक रमणी समराजिर में आयी। वहाँ सिर कटकर जो मर गया था, उसका रुण्ड नाच रहा था। उसने उसको उसके मुण्ड के साथ मिलाया और उससे रोते हुए पूछा कि मेरे जीवन-संगी, मेरे राजा को दिखाओ। ९७६

एऩ्दित्ता	डलैयैयो	रॆळुदरुङ्	गॊम्बत्ताळ्
काऩ्दऩित्	ऱाडुवा	ऩुडऱ्कवन्	दत्तित्तै
वेऩ्दत्ती	यलशित्ताय्	विडुदिया	ऩडमॆत्ताप्
पूऩ्दळिर्क्	कैहळाऩ्	मॆय्युऱप्	पुल्लित्ताळ् 977

ॲळुत अरुम्—चित्र जिसका खींचना कठिन था; ओर् कॊम्पु अत्ताळ्—ऐसी एक पुष्पलता-सी एक राक्षसदयिता ने; तलैयै एन्तित्ताळ्—(पति के कटे) सिर को उठा लेकर; नित्ऱु आटुवात्—खड़े होकर नाचनेवाले; कान्तन्—पति के; उटल कवन्तत्तित्तै—शरीर के रुंड को (पकड़कर); वेन्तन्—राजा; नी—तुम; अलचित्ताय्—थक गये हो; नटम् विटुति—नाचना छोड़ो; ॲत्ता—कहकर; पूम् तळिर्—कोमल किसलय-से; कैकळाल्—हाथों से; मॆय् उऱ—शरीर से लगाकर; पुल्लित्ताळ्—आलिंगन कर लिया। ९७७

अचित्रार्पणशक्य एक राक्षसी रमणी ने अपने पति का कटा सिर हाथ में ले लिया। उसका कबन्ध नाच रहा था। अपने पति के नाचते उस

कबन्ध को पकड़कर उससे प्रार्थना की कि राजा ! तुम थक गये। नाचना रोक दो। उसने अपने पल्लव-करों से उसका प्रगाढ़ आलिंगन कर लिया। ९७७

अव्वहै कण्डव रमरर् यावरुम्, उय्वहै यरिदॅन वोडि मन्नवन्
शॆव्वडि यदन्मिशै वीऴ्न्दु शॆप्पिनार्, ऎव्वहैप् पॆरुम्बडै यावु मायन्ददे 978

अ वकै–वह सब कृत्य; कण्टवर्–जिन्होंने देखा; अमरर् यावरुम्–सभी ऋतु-देवों ने; उय् वकै अरितु–जीवित रहने का मार्ग कठिन है; ऎन–कहकर; ओटि–भागकर; मन्नवन् चॆ अटि अतन् मिचै–राजा के अरुण चरणों पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; ऎ वकै पॆरुम् पटै–किसी भी तरह की सेना; यावुम्–सभी का; मायन्ततु–मिटना; चॆप्पिनार्–बताया। ९७८

ऋतुदेवताओं ने इस भाँति सबका मरना देखा तो उन्हें डर लग गया कि अब जीवित बचना कठिन है। वे वहाँ से भागे और राक्षस-राजा के लाल चरणों पर गिरे। उन्होंने सभी सेनाओं को मरने का वृत्तान्त कह सुनाया। ९७८

कयन्महिऴ् कण्णिणै कलुऴि कान्ऱुहप्
पुयन्महिऴ् पुरिहुऴल् पॊडिय ळावुऱ
अयन्महन् महन्मह नडियिन् वीऴ्न्दनळ्
मयन्महळ् वयिऱलैत् तलऱि माऴ्हिनाळ् 979

मयन् मकळ्–मयतनया; कयल् मकिऴ्–'कयल' मछली के समान उन्मत्त; कण् इणै–आँखों के जोड़े से; कलुऴि कान्ऱु उक–जल निकालकर गिराते हुए; पुयल् मकिऴ्–मेघ-सम; पुरि कुऴल्–वेणी के केश को; पॊटि अळावु उऱ–धूल पर लोटने देते हुए; अयन् मकन्–ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के; मकन् मकन्–पुत्र (विश्रवा) के पुत्र (रावण) के; अटियिल् वीऴ्न्ततळ्–चरणों पर गिरी; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; अलऱि–चिल्लाकर; माऴ्किनाळ्–रोयी। ९७९

मयसुता मन्दोदरी ने यह सुना तो वह अपनी 'कयल' मछली-सी मत्त आँखों से अश्रुधारा बहाती हुई और अपने मेघ-सम केश की वेणी को खोलकर भूमि पर लोटने देती हुई ब्रह्मदेव के प्रपौत्र, पुलस्त्य के पौत्र, विश्रवा के पुत्र रावण के चरणों में गिरी और पेट पीटती हुई रोयी, कलपी और व्यग्र हुई। ९७९

तावरुन् दिरुनहर्त् तैय लार्मुदल्
एवरु मिडैविऴुन् दिरङ्गि येङ्गिनार्
कावलन् कान्मिशै विऴुन्दु कावन्मात्
तेवरु मऴुदनर् कळिक्कुज जिन्दैयार् 980

ता अरुम्–दोषहीन; तिरु नकर्–श्री नगरी की; तैयलार् मुतल्–स्त्रियों से

लेकर; एवरुम्-सभी; इटै विऴुन्तु-चरणों पर गिरकर; इरङ्कि-दुखी होकर; एङ्कितार्-भयोद्विग्न रहे; कावल् मा तेवरुम्-आदरणीय ऋतुदेवता भी; कऴिक्कुम् चिन्तैयार्-मन में आनन्द पाकर; कावलन्-परिपालक के; काल् मिचै-चरणों पर; विऴुन्तु-गिरकर; अऴुततर्-(दिखावे के लिए) रोये। ९८०

निर्दोष उस श्री नगर की दयिताओं से लेकर सारे लोग उसके पैरों पर गिरकर रोये। ऋतुदेव भी औपचारिकतावश उसके चरणों पर गिरकर रोये; पर उनके मन पुलकित हो रहे थे। ९८०

11. पाशप् पडलम् [पाश (-बन्धन) पटल]

अव्वऴि यव्वुरै केट्ट वाण्डहै
वॆव्विऴि यॆरियुह वॆहुऴि वीङ्गितान्
अॆव्वऴि युलहमुङ् गुलैय विन्दिरत्
तॆव्वऴि तरवुयर् विशयच् चीर्त्तियान् 981

अ वऴि-तब; अ उरै-वह वृत्तान्त; केट्ट-जिसने सुना; आण् टकै-पुरुषश्रेष्ठ मेघनाद; अॆ वऴि उलकमुम्-किसी भी लोक को (सभी लोकों को); कुलैय-कँपाते हुए; इन्तिर तॆव्वु-इन्द्र की शत्रुता को; अऴितर-मिटाकर; उयर् विचय-प्राप्त उत्कृष्ट विजय की; चीर्त्तियान्-कीर्तिमान; वॆम् विऴि-क्रूर आँखों से; अॆरि उक-आग बरसाते हुए; वॆकुऴि-वीङ्कितान्-कोप में बढ़ा। ९८१

यह समाचार इन्द्रजित् ने सुना। इन्द्रजित् पुरुषश्रेष्ठ था। उसने सब लोकों को अस्त-व्यस्त करते हुए शत्रु देवेन्द्र के बल को मिटाकर परास्त किया था, जिससे उसकी विजयकीर्ति बढ़ गयी थी। जब उसने अपने भाई की मृत्यु का समाचार सुना, तो उसका कोप बढ़ आया जिससे उसकी भयंकर बनी आँखों से आग-सी निकली। ९८१

अरञ्जुडर् वेऱ्ऱन दनुश तिऱ्ऱशोल्
उरञ्जुड वॆरियुयिर्त् तौरुव नोङ्गितान्
पुरञ्जुड वरिशिलैप् पॊरुप्पु वाङ्गिय
परञ्जुड रॊरुवनैप् पॊरुवुम् पान्मैयान् 982

अरम् चुटर् वेल्-रेती से रेतकर चमकनेवाले भाले के धारक; तनतु अनुचन्-उसके भाई का; इऱ्ऱ चॊल्-मरने के समाचार ने; उरम् चुट-उसके मन को तपाया; अॆरि उयिर्त्तु-अग्नि के समान श्वास निकालकर; पुरम् चुट-त्रिपुर को जलाने के लिए; वरि चिलै-सबन्ध धनु के रूप में; पॊरुप्पु वाङ्किय-मेरुपर्वत को जिन्होंने झुका लिया; परम् चुटर् ऒरुवनै-परम ज्योति परमेश्वर के; पॊरुवुम् पान्मैयान्-समान रहनेवाला; ऒरुवन्-अद्वितीय वीर; ओङ्कितान्-(मेघनाद) उठा। ९८२

रेती से पैनायी गयी शक्ति-धारी उसके भाई की मृत्यु के समाचार

ने उसके मन को जला-सा दिया। वह अप्रतिम मेघनाद आग के समान गरम निःश्वास छोड़ते हुए, त्रिपुर जलाने के लिए जिन्होंने मेरु को धनु के रूप में झुकाया था, उन ज्योतिर्मय परमेश्वर के समान युद्धोद्यत हो उठा। ९८२

एऱिऩऩ् विशुम्बिऩुक् कॅल्लै काट्टुव, आऱिरु नूऱुपेय् पूण्ड वाळित्तेर्
कूऱिऩ कूऱिऩ शोऱ्कळ् कोत्तलाल्, पीऱिऩ नॅडुन्दिशै पिळन्द दण्डमे 983

विचुम्पिऩुक्कु–आकाश को भी; **ऍल्लै काट्टुव**–ऊँचाई की सीमा दिखानेवाले; **आऱु इरु नूऱु पेय्**–बारह सौ भूत; **पूण्ट**–जिसमें जुते थे; **आळि तेर्**–सशक्त पहियों के रथ पर; **ऐऱिऩऩ्**–चढ़ा; **कूऱिऩ कूऱिऩ**–उसके द्वारा कहे गये; **चोऱ्कळ्**–(कठोर) वचन; **कोत्तलाल्**–गुँथे हुए आये, इसलिए; **नॅटुम् तिचै**–लम्बी दिशाएँ; **पीऱिऩ**–दरारें खा गयीं; **अण्टम् पिळन्ततु**–अण्ड फटा। ९८३

वह अपने सारयुक्त पहियेदार रथ पर चढ़ा जिसमें आकाश को भी ऊँचाई की सीमा दिखाते-से बढ़े रहे बारह सौ भूत जुते थे। तब उसने क्रोध में लगातार कुछ कठोर वचन कहे, जिनकी उग्र कठोरता के कारण लम्बी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और अण्ड भी फट गया। ९८३

आर्त्तऩ कऴलुन् दारुम् बेरियु मशऩि यॅऩ्ऩ
वेर्त्तुयिर् कुलैय मेऩि वॅदुम्बिऩ ऩमरर् वेन्दन्
शीर्त्तदु पोरु मॅऩ्ऩात् तेवर्क्कुन् देव राय
मूर्त्तिह डामुन् दन्दम् योहत्तिन् मुयऱ्चि विट्टार् 984

कऴलुम्–पायलें और; **तारुम्**–हार और; **पेरियुम्**–भेरियाँ; **अचऩि ऍऩ्ऩ**–अशनि के समान; **आर्त्तऩ**–नर्दन कर उठीं; **अमरर् वेन्तन्**–देवराज; **उयिर् कुलैय**–व्यग्रप्राण; **मेऩि वेर्त्तु**–स्वेदयुक्त शरीर वाला होकर; **वॅतुम्पिऩऩ्**–तप्त हुआ; **तेवर्क्कुम् तेवर् आय**–देवादिदेव; **मूर्त्तिकळ् तामुम्**–त्रिमूर्ति भी; **पोरुम् चीर्त्ततु**–युद्ध भी चरम सीमा पर आ गया; **ऍऩ्ऩा**–सोचकर; **तम् तम् योकत्तिऩ्**–अपने-अपने योग के; **मुयऱ्चि**–अभ्यास से; **विट्टार्**–विरत हुए। ९८४

जब वह जाने लगा तब उसकी पायलों, हारों और भेरियों ने अशनि का-सा नर्दन किया। देवराज काँप गया और उसका शरीर पसीना-पसीना हो गया। देवदेव त्रिदेवों ने भी युद्ध चरम सीमा पर आ गया—यह सोचकर अपना योगाभ्यास छोड़ दिया। ९८४

तम्बियै युन्ऩुन् दोऴन् दारैनीर् तदुम्बुङ् गण्णान्
वम्बियल् शिलैयै नोक्कि वाय्मडित् तुरुत्तु नक्कान्
कॊम्बियन् माय वाऴ्क्कैक् कुरङ्गिऩार् कुरङ्गा वाऱ्ऱल्
ॲम्बियो तेय्न्दा नॅन्दै पुहऴ्न्ऱो तेय्न्द दॆऩ्ऱान् 985

तम्पियै उत्तुम् तोरुम्—ज्यों-ज्यों अपने कनिष्ठ का स्मरण करता; तारै नीर्—त्यों-त्यों अश्रुधारा से; ततुम्पुम् कण्णान्—भरी आँखों का; वम्पु इयल्—बन्धनयुक्त; चिलैयै—धनु को; नोक्कि—देखकर; वाय् मटित्तु—अधर मोड़कर; उरुत्तु नक्कान्—कोप की हँसी हँसता; कॉम्पु इयल्—शाखाओं में जीने का; माय वाळ्क्कै—मर्त्य-जीवन जीनेवाले; कुरङ्किताल्—वानर से (क्या); कुरङ्का आऱ्ऱल्—अथक बली; ऍम्पियो तेय्न्तान्—मेरा छोटा भाई क्या मरा; ऍन्तै पुकळ् अन्ऱो—मेरे पिता की न; तेय्न्ततु—मिट गयी; ऍन्ऱान्—कहा। ९८५

इन्द्रजित् ज्यों-ज्यों अपने भाई की बात सोचता, त्यों-त्यों उसकी आँखें अश्रु से भर जातीं। उसने सबन्ध अपने धनु को देखा। फिर अधर दाँतों से काटते हुए कोप के साथ हँसा। उसने आहत अभिमान के स्वर में कहा कि शाखाजीवी मर्त्य बन्दर द्वारा क्या मेरा छोटा भाई ही नाश हुआ ? नहीं। मेरे पिताजी का यश न नाश हुआ ! । ९८५

वेऱ्ऱिरण् डत्तवुम् विल्लु मिडैन्दवुम् वॅऱ्पॅन् ऱालुम्
कूऱ्ऱिरण् डाक्कुम् वाट्कैक् कुळुवैयुङ् गुणिक्क लाऱ्ऱेम्
शेऱ्ऱिरण् डरुहु शॅय्युञ् जॅऱ्ऱिमदच् चिऱुहण् यानै
आऱ्ऱिरण् डञ्जु नूऱ्ऱि निरट्टितेर्त् तॉहैयु मः(ह्)दे 986

वॅऱ्पु ऍन्ऱालुम्—पर्वत ही क्यों न हों; कूऱु इरण्टु आक्कुम्—(भिड़े तो) उसके दो भाग करनेवाले; वेल् तिरण्टत्तवुम्—शक्तियों-सहित वीर जो एकत्रित हुए; विल्लु मिटैन्तवुम्—धनु (वीर) जितने भीड़ लगाकर मिले; वाळ् कै कुळुवैयुम्—खड्गहस्तों के दलों को; कुणिक्कल् आऱ्ऱेम्—गिनने की शक्ति हमारे पास नहीं है; इरण्टु अरुकु—दोनों बाजुओं (में भूमि) को; चेऱु चॅय्युम्—पंक बनानेवाले; चॅऱ्ऱि मत—मदमत्त; चिऱु कण्—छोटी आँखों के; यानै—गजों की संख्या; आऱु इरण्टु अञ्चु नूऱ्ऱित् इरट्टि—६×२×५×१००×२ (=१२) हजार है; तेर् तॉकैयुम्—रथों की संख्या भी; अ:ते—वही। ९८६

उसके साथ पर्वत को भी दो भागों में खण्डित करने की शक्ति रखनेवाले भाले (लिये हुए वीर) एकत्रित होकर गये। धनुर्धर वीर मिलकर गये और तलवारधारी वीर गये। पर उनकी संख्या जान लेना हमारी शक्ति के बाहर की बात है। पर दोनों ओर भूमि को पंक बनाते हुए चलनेवाले गजों की संख्या बारह हजार थी। रथों की संख्या भी वही। ९८६

आयमात् तानै तान्वन् दण्मिय दण्म वेनैत्
तीयवा णिरुदर् वेन्दर् शेर्न्दवर् शेरत् तेरित्
एयॅनु मळविन् वन्दा निरावण तिरुन्द याणर्
वायिऱोय् कोयिल् पुक्का नुरुविशोर् वयिरक् कण्णान् 987

आय—वैसी; मा तानै—बड़ी सेना; तान् वन्तु अण्मियतु—ही आकर जुड़ी; अण्म—एकत्रित होने पर; एतै—अन्य; तीय वाळ्—क्रूर तलवारधारी; निरुतर् वेन्तर्—राक्षसराज; चेर्न्तवर् चेर—जो आये वे भी आ मिले; एय् ॲतुम् अळविल्—'एय्' कहने के पहले ही; अरुवि चोर्—सरिता के समान (अश्रु) बहाते; वयिर कण्णान्—द्वेषपूर्ण आँखों वाला; तेरिल् वन्तान्—रथ पर आया; इरावणन् इरुन्त—जिसमें रावण रहा; याणर् वायिल् तोय्—सुन्दर द्वार से युक्त; कोयिल् पुक्कान्—मन्दिर (महल) में प्रविष्ट हुआ। ६८७

वैसी बड़ी सेना आकर उससे मिली। साथ अन्य क्रूर तलवारधारी राक्षस राजा भी आकर मिले। उनके साथ नदी-सी अश्रुधारा बहानेवाली और द्वेषपूर्ण आँखों का वह इन्द्रजित् 'एय्' कहने की देर के अन्दर अपने रथ पर आकर मनोरम द्वार के महल में प्रविष्ट हुआ, जिसमें रावण रहता था। ९८७

ताळिणै विळुन्दान् ऱम्बिक् किरङ्गिनान् ऱरुह णानुम्
तोळिणै पऱ्ऱि येन्दित् तळुविन ऩळुदु शोर्न्दान्
वाळिणै नॅडुङ्गण् मादर् वयिऱलैत् तलऱि माळ्ह
मीळिपोऩ् मॉय्म्बि ऩानुम् विलक्किनन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 988

ताळ् इणै विळुन्तान्—चरणद्वय पर गिरकर; तम्पिक्कु—छोटे भाई के लिए; इरङ्कितान्—दुःख (प्रकट) किया; तरुकणानुम्—निडर रावण भी; तोळ् इणै—(इन्द्रजित् के) बाहुद्वय को; पऱ्ऱि एन्ति—पकड़ उठाकर; तळुवितन्—आलिंगन करते हुए; अळुतु चोर्न्तान्—रोया और थका; इणै वाळ्—तलवार के जोड़े के समान; नॅटुम् कण् मातर्—आयत आँखों की स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु—पेट पीटती हुईं; अलऱि—चिल्लाकर; माळ्क—व्याकुल हुईं; मीळि पोल् मॉय्म्पितानुम्—यम-सदृश शक्तिशाली (इन्द्रजित्); विलक्कितन्—उनको हटाकर; विळम्पल् उऱ्ऱान्—बोलने लगा। ६८८

वह रावण के चरणद्वय पर गिरा और अपने भाई के मरण के दुःख में रोया। निडर रावण भी उसकी दोनों बाहुओं को पकड़कर उठाया और आलिंगन करते हुए रो-रोकर थक गया। तलवार के जोड़े के समान आँखों वाली राक्षसियाँ भी पेट पीटती हुई चिल्लायीं और शिथिल हुईं। यम-सम बलशाली इन्द्रजित् उन सबको दूर करके अपने पिता से यों बोलने लगा। ९८८

ऑन्ऱुनी युऱुदि योरा युऱ्ऱऱिन् दुळैय हिऱ्ऱि
वन्ऱिऱऱ् कुरङ्गि ऩाऱ्ऱन् मरबुनी युणर्न्दु मन्नो
शॅन्ऱुनीर् पोरुदि रॅन्ऱु तिऱत्तिऱज् जॅलुत्तित् तेयक्
कॊन्ऱतै नोये यन्ऱो निरुदर्दङ् गुळुवै यॅल्लाम् 989

नी—आप; उऱुति ऑन्ऱुम्—हित कुछ; ओराय्—नहीं सोचते; उऱ्ऱु अऱिन्तु—

जो हुआ वह सोचकर; उळैयकिऱ्ऱि–दुःख करते हैं; नी–आप; वन् तिऱल् कुरङ्किन्–अति चतुर वानर का; आऱ्ऱल् मरपु–बल-पराक्रम; उणर्न्तु–जानकर भी; चॆन्ऱु–जाकर; नीर् पोरुतिर् ऎन्ऱु–तुम जाकर लड़ो, कहकर; तिऱम् तिऱम् चॆलुत्ति–बारी-बारी से भेजकर; निरुतर् तम् कुळुवै ऎल्लाम्–राक्षसों के सारे दलों को; नीये–आपने स्वयं; तेय–क्षीण कराते हुए; कॊन्ऱनै अन्ऱो–मरवाया न। ९८९

पिताजी ! आप अपना हित कुछ नहीं सोचते। जो बीत गया उसको सोचकर दुःखी हो रहे हैं। आपको अति बलशाली वानर की शक्ति की स्थिति विदित हो गयी थी। तो भी आपने 'जाकर लड़ो' कहकर बारी-बारी से राक्षसदलों को भेजा और उनको क्षय करते हुए मरवा दिया। ९८९

किङ्गरर् शम्बु मालि केडिला वैव रॆन्ऱिप्
पैङ्गळ लरक्क रोडु मुडन्शॆन्ऱ पहुदिच् चेनै
इङ्गॊरु पेरु मीण्डा रिल्लैयेऱ् कुरङ्ग दॆन्दाय्
शङ्गर नयन्मा लॆन्बोर् तामॆनुन् दरत्त दामे 990

ऎन्ताय्–पिताजी; किङ्करर्–किंकरदल; चम्पुमालि–जम्बुमाली; केट्टु इला ऐवर्–अक्षयबल पंच सेनापति; ऎन्ऱु–ऐसे; इ पैम् कळल्–इन चमकदार पायलधारी; अरक्करोटुम्–राक्षसों के साथ; उटन् चॆन्ऱु–उनसे मिलकर जो गयी; पकुति चेनै–बड़े भाग की सेनाओं में; इङ्कु–यहाँ; ऒरु पेरुम्–नाम मात्र के लिए भी एक; मीण्टार् इल्लैयेल्–नहीं लौटा तो; कुरङ्कु अतु–वह वानर; चङ्करन् अयन् माल्–शिव, ब्रह्मा और विष्णु; ऎन्पोर् ताम् ऎनुम्–कहलानेवाले वे ही हैं; तरत्तु आम्–मानने योग्य ही है। ९९०

मेरे पिताजी ! किंकर, जम्बुमाली, अमिट पंच सेनापति —इन मनोरम चमकदार पायलधारी वीरों के साथ गयी बहुत बड़े अंशों की सेना का कोई भी लौट नहीं आया। तो वह बन्दर शिव, ब्रह्मा और विष्णु कथित त्रिदेव ही है —यही कहना पड़ेगा। ९९०

तिक्किनै वॆन्ऱु मेना डिरिबुरन् दीयच् चॆऱ्ऱ
मुक्कणात् वाळै वाङ्गि युलहॊरु मून्ऱुम् वॆन्ऱाय्
अक्कनैक् कॊन्ऱु निन्ऱ कुरङ्गिनै याऱ्ऱल् काट्टिप्
पुक्किनि वॆन्ऱु मॆन्ऱाऱ् पुलम्बन्ऱिप् पुलमैत् तामो 991

तिक्किनै वॆन्ऱु–दिशाओं को जीतकर; मेल् नाळ्–पहले; तिरिपुरम् तीय चॆऱ्ऱ–त्रिपुर को जलाकर जिन्होंने मिटाया; मुक्कणात्–उन त्रिनेत्र (शिवजी) द्वारा दत्त; वाळै–तलवार (चन्द्रहास); वाङ्कि–लेकर; उलकु ऒरु मून्ऱुम्–तीनों लोकों को; वॆन्ऱाय्–जीत लिया (आपने); अक्कनै कॊन्ऱु निन्ऱ–अक्ष को मारकर जो खड़ा है; कुरङ्किनै–उस वानर को; आऱ्ऱल् काट्टि–बल प्रयोग करके;

इऩ्ऩि–अब; पुक्कु—जाकर; वॆऩ्ऱुम् ऎऩ्ऱाल्–मारेंगे तो; पुलम्पु अऩ्ऱि–बकवास के अलावा; पुलमैत्तु आमो–बुद्धिमत्ता का काम होगा क्या। ६६१

आपने दिग्विजय की; त्रिपुरान्तक त्रिनेत्र शिवजी द्वारा दत्त चन्द्रहास पायी और तीनों लोकों को जीतकर अपने अधीन कर लिया। अब अक्षकुमार के मारक वानर को, अपना बलप्रयोग करके युद्ध में जाकर मार भी देंगे तो वह केवल बकवास होगा; नहीं तो बुद्धिमत्ता का काम होगा क्या ? । ९९१

आयिऩु मैय नॊय्दि ऩाण्डॊऴिऱ् कुरङ्गै याऩे
एयॆऩु मळविऱ् पऱ्ऱित् तरुहुवॆ ऩिडरॆऩ् ऱॊऩ्ऱुम्
नोयिऩि युळक्कऱ् पालै यल्लैयीण् डिरुत्ति यॆऩ्ऩाप्
पोयिऩ ऩमरर् कोवैप् पुहऴॊडु कॊण्डु पोऩ्दाऩ् 992

आयिऩुम्–तो भी; ऐय–प्रभु; नॊय्तिऩ्–आसानी से; आण् तॊऴिल्–वीरकर्मी; कुरङ्कै–उस वानर को; याऩे–मैं स्वयं; एय् ऎऩुम् अळविल्–'एय्' कहने के समय के अन्दर; पऱ्ऱि तरुकुवॆऩ्–पकड़कर ला दूँगा; नी–आप; इऩि–अब; इडर् ऎऩ्ऱु ऒऩ्ऱुम्–संकट कहकर कुछ भी; उळक्कल् पालै अल्लै–दुःख करते मत रहिए; ईण्टु इरुत्ति–यहीं (सुख) से रहिए; ऎऩ्ऩा–कहकर; अमरर् कोवै–देवराज को; पुकऴ् ओटु–यशसहित; कॊण्टु पोऩ्ताऩ्–जो पकड़ लाया था; पोयिऩऩ्–(वह इन्द्रजित्) गया। ६६२

तो भी मैं आसानी से उस वीरकर्म वानर को 'एय्' का उच्चारण करने की देरी के अन्दर पकड़ ला दूँगा। अब कुछ चिन्ता करने की आपको कोई आवश्यकता नहीं। यहीं निश्चिन्त रहिए। ऐसा कहकर, इन्द्र को उसके यश के साथ जो क़ैद करके लाया था, वह इन्द्रजित् उठ चला। ९९२

आऴियन् देरु मावु मरक्करु मुरुक्कुञ् जॆङ्गण्
शूऴिवॆङ् गोब मावुन् दुवऩ्ऱिय निरुदर् शेऩै
ऊऴिवॆङ् गडलिऱ् चुऱ्ऱ वीरुतऩि नडुव णिऩ्ऱ
पाऴिमा मेरु वॊत्ताऩ् वीरत्तिऩ् पऩ्मै तीर्त्ताऩ् 993

आऴि अम् तेरुम्–पहियों के साथ रथ; मावुम्–अश्व; अरक्करुम्–राक्षस; मुरुक्कुम्–शत्रुनाशक; चॆङ्कण्–लाल आँखों और; चूऴि–मुखपट्ट वाले; वॆम् कोप–भयंकर रीति से क्रुद्ध; मावुम्–गज और; तुवऩ्ऱिय–जिसमें भरे थे; निरुतर् चेऩै–वह राक्षस-सेना; ऊऴि वॆम् कटलिल्–प्रलय के भयानक सागर के समान; चुऱ्ऱ–उसे घेरकर गयी; वीरत्तिऩ् पऩ्मै तीर्त्ताऩ्–'वीर' के बहुवचन को जिसने मिटाया था; तऩि नटुवण् निऩ्ऱ–एकाकी मध्य में खड़े रहे; ओरु पाऴि–एक बहुत बलवान; मा मेरु ऒत्ताऩ्–बड़े पर्वत के समान लगा। ६६३

पहियेदार मनोरथ रथों, अश्वों, राक्षसों और शत्रुघाती, अरुणाक्ष

मुखपट्टालंकृत भयंकर और क्रुद्ध गजों से भरी राक्षस-सेना युगान्त के भयंकर सागर के समान उसको घेरकर गयी। वह वीरता के आश्रय का बहुवचन मिटानेवाला (यानी वीरता का वही एकमात्र आश्रय) इन्द्रजित् समुद्र-मध्य एकाकी स्थित अप्रतिम बड़े मेरु के समान लगा। ९९३

शॅऩ्ऱऩ ऩॅऩ्ब मऩ्ऩो तिशैहळो डुलह मॅल्लाम्
वॅऩ्ऱव ऩिवऩॅऩ् ऱालुम् वीरत्ते निऩ्ऱ वीरऩ्
अऩ्ऱदु कण्ड वाळि यनुमऩै यमरि ऩाऱ्ऱल्
नऩ्ऱॅऩ वुवहै कॊण्डाऩ् यावरु नडुक्क मुऱ्ऱार् 994

चॆऩ्ऱऩऩ्–जो गया; **इवऩ्**–यह; **तिचैकळोटु**–दिशाओं के साथ; **उलकम् ॲल्लाम् वॆऩ्ऱवऩ्**–सारे लोकों का जीतनेवाला था; **ॲऩ्ऱालुम्**–तो भी; **वीरत्ते निऩ्ऱ वीरऩ्**–वीरचरित्र-स्थित वीर था, (इसलिए); **अतु**–(हनुमान का साहस) वह; **अऩ्ऱु कण्ट**–जिसने उस दिन देखा; **वाळि अनुमऩै**–जययशस्वी हनुमान को (देखकर); **अमरिऩ् आऱ्ऱल् नऩ्ऱु**–युद्ध का विक्रम अच्छा है; **ॲऩ**–ऐसा; **उवकै कॊण्टाऩ्**–(कहकर) खुश हुआ; **यावरुम्**–सभी; **नटुक्कम् उऱ्ऱार्**–काँप उठे। ९९४

इस भाँति जो गया, वह इन्द्रजित् दिशाओं के साथ त्रिलोकविजयी था। तो भी वीरता का जीवन बितानेवाला था, इसलिए उसने हनुमान का साहस देखकर प्रशंसा की कि इसका युद्ध-पराक्रम बड़ा विशिष्ट है। वह बहुत मुदित हुआ। पर सभी लोग भय से काँप उठे। ९९४

इलैहुलाम् बूणि ऩाऩु मिरुम्बिणङ् गुरुदि येऱ्ऱ
अलहिल्वॅम् बडैह ळॅऱ्ऱि यळविडऱ् करिय दाहि
मलैहळुङ् गडलुम् याऱुङ् गाऩमुम् बॅऱ्ऱु मऱ्ऱोर्
उलहमे यॊत्त दम्मा पोर्प्पॅरुङ् गळमॅऩ् ऱुऩ्ऩा 995

इलै कुलाम्–पत्रचित्रित; **पुणितातुम्**–आभरणधारी (इन्द्रजित्) भी; **पॆरुम् पोर् कळम्**–वह अतिविशाल समरभूमि; **इरुम् पिणम्**–बड़े-बड़े शवों; **कुरुति**–रक्त (के तालाब और नदियाँ); **एऱ्ऱ**–के द्वारा लाये गये; **अलकु इल्**–अगणित; **वॆम् पटैकळ्**–भयंकर हथियार; **ऱॆऱ्ऱि**–ठोकर लगाते हैं; **अळवु इटऱ्कु**–मापने के लिए; **अरियतु आकि**–कठिन बनकर; **मलैकळुम्**–पर्वतों और; **कटलुम्**–सागरों; **याऱुम्**–और नदियों; **कातमुम् पॆऱ्ऱु**–और जंगलों से युक्त होकर; **मऱ्ऱु ओर् उलकमे ऒत्ततु**–अन्य दूसरे भूलोक के समान रही; **ॲऩ्ऱु उऩ्ऩा**–यह सोचकर। ९९५

इन्द्रजित् ऐसे आभरण पहने हुए था, जिनमें पत्र के आकार की चित्रकारी हुई थी। उसने युद्धभूमि में बड़-बड़े शव देखे; रक्त की नदी देखी। उनसे लाये गये भयंकर अनेक हथियार देखे। और सब बेशुमार थे। तब वह समरभूमि भूलोक के समान ही लगी, जिस पर पर्वत, समुद्र, नदियाँ और कानन भरे पड़े हैं। ९९५

वॆप्पडै हिल्ला नॆञ्जिऱ् चिऱियदोर् विम्मल् कॊण्डान्
अप्पडै वेलै यन्न पॆरुमैय राऱ्ऱ लोड्डुम्
ऒप्पडै हिल्ला रॆल्ला मुलन्दनर् कुरङ्गु मॊन्ऱे
ऎप्पडै कॊण्डु वॆल्व दिरामन्वन् दॆदिर्क्कि लॆन्ऱान् 996

अप्पु अटै वेलै अन्न–जलपूर्ण सागर-सम; पॆरुमैयर–यशस्वी; आऱ्ऱल् ओट्टुम्–अपने साहस की; ऒप्पु अटैकिल्लार्–उपमा न रखनेवाले; ऎल्लाम्–सभी राक्षस; उलन्ततर्–सूख गये (मरे); कुरङ्कुम् ऒन्ऱे–(मारनेवाला) वानर तो एक है; इरामन् वन्तु–अगर राम आकर; ऎतिर्क्किल्–लड़ेगा तो; ऎप्पटै कॊण्टु–कौन सी सेना लेकर; वॆल्वतु–जीतना है; ऎन्ऱान्–कहते हुए; वॆप्पु अटैकिल्ला–अब तक जिस हृदय में ताप नहीं हुआ था; नॆञ्चिल्–उस हृदय में; चिऱियतु–छोटी; ओर् विम्मल्–एक तरस को; कॊण्टान्–स्थान दे दिया (इन्द्रजित् ने)। ९९६

"जलपूर्ण सागर-सम यशस्वी, वीरता में अप्रमेय —ये सब वीर मर गये। मारनेवाला एकाकी वानर है! तब राम ही आकर लड़ेगा तो किस सेना के सहारे हम उसे जीत पायेंगे?" —यह कहा इन्द्रजित् ने। उसके मन में इसके पहले कभी कोई दुःख का अनुभव ही नहीं हुआ था। अब उसके मन में किंचित भय पैदा हुआ। ९९६

कण्णना रुयिरै यॊप्पार् कैप्पडैक् करुत्तिन् मिक्कार्
ऎण्णलान् दहैय रल्ल रिऱन्दॆदिर् किडन्दार् तम्मै
मण्णुळे नोक्कि नोक्कि वाय्मडित् तुयिर्त्तान् मायाप्
पुण्णुळे कोलिट् टन्न मानत्तार् पुऴुङ्गु हिन्ऱान् 997

कण् अनार्–आँखों के समान (प्यारे); उयिरै ऒप्पार्–प्राण-सम; कै पटै–हाथ में हथियार लेकर लड़ने में; करुत्तिन् मिक्कार्–अधिक ख़याल रखनेवाले; ऎण्णल् आम् तकैयर्–(वीर) गिनने योग्य रीति के; अल्लर्–नहीं थे; इऱन्तु–मरकर; ऎतिर् किटन्तार् तम्मै–सामने जो पड़े रहे उनको; मण् उळे–भूमि पर; नोक्कि नोक्कि–देख-देखकर (सर्वत्र देखकर); वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; उयिर्त्तान्–दीर्घ निःश्वास छोड़ते; माया पुण् उळे–ताजे घाव में; कोल् इट्टु अन्न–छड़ी घुसेड़ दी गयी हो जैसे; मानत्ताल्–अपमान से; पुऴुङ्कुकिन्ऱान्–शोक-दग्ध होता (है)। ९९७

जो मरे पड़े थे, वे आँखों और प्राणों के समान प्यारे थे और अपने हाथों के हथियारों के साथ युद्ध करने के बहुत उत्साही थे। ऐसे वे अपार संख्या में मरे पड़े थे। इन्द्रजित् ने उन्हें भूमि पर सर्वत्र देखा। उसका मन विचलित हुआ। अधर मोड़कर लम्बी साँसें छोड़ने लगा। न भरनेवाले व्रण में छड़ी घुस गयी हो जैसे वह अपमानाहत हो तप्त हुआ। ९९७

कान्तिडै यत्तैक् कुऱ्ऱ कुऱ्ऱमुङ् गरन्तार् पाडुम्
यान्उडै यॆम्बि वीन्द विडुक्कणुम् बिऱवु मॆल्लाम्
मान्तिड रिरुव रानुम् वानर मॊन्ऱि नानुम्
आन्तिडत् तुळवॆन् वीर मळहिऱ्ऱे यम्म वॆन्ऱान् 998

कान् इटै–(दण्डक-) अरण्य में; अत्तैक्कु उऱ्ऱ–मेरी बुआ का जो हुआ वह; कुऱ्ऱमुम्–हीनता; करन्तार् पाटुम्–और खर आदि का मरण; यान् उटै ॲम्पि–मेरे छोटे भाई के; वीन्त इटुक्कणुम्–मरने का दुःख; पिऱवुम् ॲल्लाम्–अन्य सभी; मान्टिर् इरुवरानुम्–दो मनुष्यों और; वानरम् ऑन्ऱिनालुम्–एक वानर द्वारा; आन इटत्तु–जब हुए तो; ॲन् उळ वीरम्–मेरी वीरता; अळकिऱ्ऱे अम्म–बड़ी सुन्दर है, मैया; ॲन्ऱान्–(आहत स्वर में) कहा (इन्द्रजित ने)। ९९८

दण्डक वन में मेरी बुआ के अंग कटे। खर आदि मरे। इधर मेरा छोटा भाई मरा। यह सारा अपमान का और दुःखदायी काम दो मनुष्यों और एक वानर के हाथ हुआ। तो, मैया! मेरी वीरता भी खूब प्रशंसनीय रही! । ९९८

नीर्प्पुण्ड वुदिर वारि नॆडुन्दिरैप् पुणरि तोन्ऱ
ईर्प्पुण्डऱ् करिय वाय पिणक्कुव डिडऱिच् चॆल्वान्
तेय्प्पुण्ड तम्बि याक्कै शिवप्पुण्ड कण्ग डीयिल्
काय्प्पुण्ड शॆम्बिऱ् ऱोन्ऱक् करुप्पुण्ड मनत्तन् कण्डान् 999

नीर्प्पु उण्ट–द्रवमान; उतिर वारि–रक्त जल; नॆटुम् तिरै–बड़ी-बड़ी तरंगों से युक्त; पुणरि तोन्ऱ–सागर के सामने दिखते; ईर्प्पु उण्टऱ्क्कु अरिय आय–छीनने के लिए कठिन; पिण कुवटु–शव-पर्वतों से; इटऱि चॆल्वान्–ठोकर खाते हुए जानेवाला; तेय्प्पु उण्ट–पिसे हुए; तम्पि आक्कै–छोटे भाई के शरीर को; चिवप्पु उण्ट कण्कळ्–लाली भरी आँखें; तीयिल्–आग में; काय्प्पु उण्ट–तपे हुए; चॆम्पिल् तोन्ऱ–ताँबे के समान दिखें, ऐसा; करुप्पु उण्ट–(और) कालिमायुक्त (क्रुद्ध); मनत्तन्–मन वाले ने; कण्टान्–देखा। ९९९

इन्द्रजित् के सामने बहनेवाले रक्त का, बड़ी-बड़ी लहरों वाला समुद्र दिखायी दिया। उसका रथ उस रक्त-नदी से तिराये न जा सकनेवाले शवों से टकराता हुआ आगे बढ़ रहा था। तब उसने अपने भाई के शव को देखा, जो खूब पिसकर कर्दम बन गया था। उसकी लाल आँखें तप्त ताँबे के समान दिखीं। उसका मन कोप से काला हो गया। ९९९

तारुहन् कुरुदि यन्न कुरुदियिऱ् ऱन्मिाच् चीयम्
कूरुहिर् किळैत्त कॊऱ्ऱक् कनहत्तॆयक् कुळम्बिऱ् ऱोन्ऱत्
तेरुहक् कैयित् वीरच् चिलैयुह वयिरच् चॆङ्गण्
नीरुहक् कुरुदि शिन्द नॆरुप्पुह वुयिर्त्तु निन्ऱान् 1000

तारुकऩ् कुरुति अऩ्ऩ–दारुकासुर के रक्त के समान; कुरुतियिल्–रक्तप्रवाह में; तऩि मा चीयम्–अद्वितीय बड़े (नर-) सिंह के; कूर् उकिर् किळैत्त–तेज़ नाखूनों से चीरकर निकाले गये; कॊऱ्ऱ कऩकऩ्–विजयी कनक (-कश्यप) के; मॆय् कुळम्पिल्–शरीर के कर्दम में ढेर के समान; तोऩ्ऱ–दिखा (अक्ष) तो; तेर् उक–रथ को डगमगाने देते हुए; कैयिऩ् वीर चिलै–हाथ के वीरधनु को; उक–गिराते हुए; वयिर चॆम् कण्–द्वेषपूर्ण लाल आँखों से; नीर् उक–जल बरसाते हुए; कुरुति चिन्त–रक्त बहाते हुए; नॆरुप्पु उक–आग उगलते हुए; उयिर्त्तु निऩ्ऱाऩ्–लम्बे श्वास निकालता हुआ खड़ा रहा। १०००

(कालिकादेवी द्वारा निहत) दारुक राक्षस के रक्त के समान रक्तप्रवाह में अक्षकुमार उस कनककश्यप के समान पड़ा हुआ था, जिसके शरीर को अद्वितीय नृसिंह के तेज़ नाखूनों ने नोच-चीरकर बिल्कुल कर्दम बना दिया था। यह देखकर इन्द्रजित् की स्थिति ऐसी हो गयी कि उसका रथ डगमगा गया। उसके हाथ से धनु छूट गया। द्वेषपूर्ण लाल आँखों से अश्रु के साथ रक्त और आग भी निकली। लम्बी साँसें छोड़ते हुए वह खड़ा रह गया। १०००

वॆव्विलै यथिल्वे लुन्दै वॆम्मैयैक् करुदि यावि
वव्वुदल् कूऱ्ऱु माऱ्ऱा माऱुमा ऱुलहिऩ् वाळ्वार्
अव्वुल हत्तु ळेरे लञ्जुव रॊळिक्क वैया
अॆव्वुल हत्तै युऱ्ऱा यॆम्मैनीत् तॊळिदि यॆऩ्दाय् 1001

ऎऩ्ताय्–तात; वॆम् इलै–भयंकर और पत्राकार सिर वाले; अयिल् वेल्–तीक्ष्ण भाले के; उन्तै–(धारण करनेवाले) तुम्हारे पिता के; वॆम्मैयै करुति–क्रोध को सोचकर; कूऱ्ऱुम्–मृत्यु भी; आवि वव्वुतल्–तुम्हारे प्राण हर; आऱ्ऱा–नहीं सकती; माऱु माऱु उलकिऩ्–विविध लोकों में; वाळ्वार्–रहनेवाले; अ उलकत्तु–उस यमलोक में; उळेर् एल्–रहें तो; ऒळिक्क–तुम्हें वहाँ छिपाये रखने से; अञ्चुवर्–डरेंगे; ऐया–बाबा; ऎम्मै–हमें; ऒळितिऩ् नीत्तु–आसानी से छोड़कर; ऎ उलकत्तै–किस लोक में; उऱ्ऱाय्–पहुँचे। १००१

मेरे तात ! अतिक्रूर और पत्राकार सिर वाले भालाधारी तुम्हारे पिता के कोप का विचार करके मृत्यु में भी तुम्हें ग्रस लेने की शक्ति नहीं। विविध लोकों के वासी भी अपने-अपने लोक में हों, तो वे तुम्हें वहाँ छिपाये रखने से डरेंगे। बाबा ! हमें आसानी से छोड़कर किस लोक में पहुँच गये ? । १००१

आऱ्ऱल ऩाहि यऩ्बा लऱिवळिऩ् दयरुम् वेलै
शोऱ्ऱमॆऩ् ऱॊऩ्ऱु ताऩे मॆऩिमिर् शॊलविर् ऱाहित्
तोऱ्ऱिय तुऩ्ब नोयै युळ्ळुरत् तुरन्द दम्मा
एऱ्ऱञ्जा लाणिक् काणि यॆदिर्शॊलक् कडाय दॆऩ्ऩ 1002

आऱ्ऱलन् आकि–(दुःख) न सह सककर; अऱिवु अऴिन्तु–बुद्धिनाश होकर; अन्पाल्–प्रेम से; अयरुम् वेलै–जब थकित हुआ तब; चीऱ्ऱम् ॲन्ऱु ऒन्ऱु–कोप नाम के उस भाव ने; ताऩे–स्वयं; मेल् निमिर्–उमग उठ; चॅलविऱ्ऱु आकि–गतिशील बनकर; एऱ्ऱम् चाल् आणिक्कु–खूब अन्दर घुसी कील को; ॲतिर् चॅल–पीछे चलाने; आणि कटायतु ॲन्ऩ–और एक कील मारी गयी जैसे; तोऱ्ऱिय तुन्प नोयै–(मन में) उठे दुःख-रोग को; उळ् उऱ–अन्दर से; तुरन्ततु–निकाला। १००२

इन्द्रजित् अपने भाई की मृत्यु-जनित दुःख सह नहीं सका। बुद्धि नष्ट हो गयी। प्रेम से अभिभूत होकर वह थकित हो रहा था। तब कोप उठा। उसने, ऊपर रखकर पीटने पर जैसे एक कील अन्दर रहनेवाली कील को बाहर निकाल देती है वैसे ही, दुःख के रोग को कोप द्वारा अन्दर से बाहर निकाल दिया। १००२

ईण्डिवै निहऴ्वुऴि यिरवि तेरॅन्ऩत्, तूण्डुरु तेरिन्मेर् ऱोन्ऱुन् दोऩ्ऱलै
मूण्डुमुप् पुरञ्जुड मुडुहु मीशनिन्, आण्डहै वन्ऩ्हऴ लनुम नोक्किनान् 1003

ईण्टु–यहाँ; इवै–यह सब; निकऴ्वु उऴि–जब होता रहा तब; इरवि तेर् ॲन्ऩ–रवि और उसके रथ के समान; तूण्टु उऱु–चलाये जा रहे; तेरिन् मेल्–रथ पर; तोन्ऱुम् तोऩ्ऱलै–विद्यमान राजकुमार को; मूण्टु–कोपाक्रान्त होकर; मु पुरम् चुट–त्रिपुर जलाने हेतु; मुटुकुम्–शीघ्र जानेवाले; ईचनिन्–ईश्वर के समान; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; वन् कऴल्–पहनी हुई पायल वाले; अनुमन्–हनुमान ने; नोक्किनान्–देखा। १००३

जब इन्द्रजित् की तरफ़ से यह हो रहा था, तब पायलधारी हनुमान ने, जो त्रिपुरान्त करने के लिए उठकर शीघ्र जानेवाले परमेश्वर के समान था, रवि और उसके रथ के समान, चलायमान रथ पर इन्द्रजित् को आता हुआ देखा। १००३

वॅन्ऱे निदन्मुन् शिलवीररै यॅन्ऩुम् मॅय्म्मै
अन्ऱे मुडुहिक् कडिदॅय्दि यऴैत्त दम्मा
ऒन्ऱे यिनिवॅल् लुदऱोऱ्ऱ लडुप्प दुळ्ळ
दिन्ऱे शमैयुम् मिवनिन्दिर शित्तु मॅन्बान् 1004

इतन् मुन्–इसके पहले; चिल वीररै–कुछ वीरों को; वॅन्ऱेन्–(जो) मैंने जीता; ॲन्ऩुम् मॅय्म्मै–वह सत्य; मुटुकि–जल्दी जाकर; कटितु ॲय्ति अऴैत्ततु–शीघ्र पहुँचने बुला लाया; अन्ऱे–न; इनि–अब; वॅल्लुतल्–जीतना; तोऱ्ऱल्–हारना; ऒन्ऱे–इनमें एक ही; अटुप्पतु उळ्ळतु–मिलनेवाला है; इन्ऱे चमैयुम्–वह आज ही होगा; इवन्–यही; इन्तिरचित्तुम् ॲन्पान्–इन्द्रजित् नाम का होना चाहिए; (अम्मा–मैया)। १००४

मैंने इसके पहले कुछ वीरों को जीता था। यह सत्य तुरन्त इनको

बहुत शीघ्र युद्ध में बुला लाया न ? अब सचमुच जीतना या हारना —इनमें एक ही बचा है। मैं समझता हूँ कि यह इन्द्रजित् ही है। १००४

कट्टे	रुनरुङ्गमळ्	कण्णियिक्	काळै	यॅऩ्ऩैप्
पट्टा	लदुवेयव्	विरावणऩ्	पाडु	माहुम्
कॅट्टे	मॅऩ्ऩवॅण्णियक्	केडरु	कऱ्पि	ऩाळै
विट्टे	हुवदऩ्ऱि	यरक्करुम्	वॅम्मै	तीर्वार् 1005

कट्टु एरु–सुगठित; कमळ् नरुम् कण्णि–विलसित सुगन्धयुक्त सिर की पुष्पमाला से अलंकृत; इ काळै–यह ऋषभ (इन्द्रजित्); ऍऩ् कै–मेरे हाथों; पट्टाल्–मरेगा तो; अतुवे–वही; अ इरावणऩ् पाटुम्–उस रावण की मृत्यु; आकुम्–होगी; अरक्करुम्–राक्षस भी; कॅट्टेम् ऍऩ–हम मर गये, यह; ऍण्णि–समझकर; अ केटु अरु–उस अनिंद्य; कऱ्पिऩाळै–पतिव्रता देवी को; विट्टु एकुवतु अऩ्ऱि–छोड़ जाने के अलावा; वॅम्मै तीर्वार्–शत्रुता भी त्याग देंगे। १००५

इसका शरीर सुगठित है। केश विलासशील सुगन्धि से युक्त पुष्पमाला से अलंकृत है। अगर यह ऋषभ मेरे हाथों मर जायगा तो वही रावण की मृत्यु (का वाइस) हो जायगा। राक्षस भी 'अब हम नाश हो गये' —समझकर अनिंद्य पतिव्रता देवी को श्रीराम के पास छोड़ देंगे। और शत्रुता भी त्याग देंगे। १००५

ऑऩ्ऱो	विदऩाल्वरु	मूदिय	मॉण्मै	याऩैक्
कॊऩ्ऱे	ऩॅतिऩिऩ्दिर	ऩुऩ्दुयरक्	कोळु	नीङ्गुम्
इऩ्ऱे	कुडिकॅट्ट	दरक्क	रिलङ्गै	याऩे
वॅऩ्ऱे	ऩविरावणऩ्	ऱऩ्ऩैयुम्	वेरॊ	डॆऩ्ऱाऩ् 1006

इतनाल् वरुम्–इससे प्राप्य; ऊतियम् ऑऩ्ऱो–लाभ एक ही है क्या; ऑण्मैयाऩै–यशस्वी इसको; कॊऩ्ऱेऩ् ऍतिऩ्–मारूँगा तो; इऩ्तिरऩुम्–इन्द्र भी; तुयर् कोळुम्–दुःख करना; नीङ्कुम्–छोड़ देगा; इऩ्ऱे–आज ही; इलङ्कै–लंका और; अरक्कर्–राक्षसों का; कुटि कॅट्टतु–जीवन नाश हो जायगा; याऩे–मैं; अ इरावणऩ् तऩ्ऩैयुम्–उस रावण को भी; वेरॊटु वॆऩ्ऱेऩ्–जड़ (पूर्ण रूप) से जीतनेवाला बन जाऊँगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १००६

इन्द्रजित् को मारने से होनेवाला लाभ केवल एक ही है क्या ? इस यशस्वी को मार दूँ, तो इन्द्र का भी दुःखग्रस्त रहना दूर होगा। आज ही लंका और राक्षसों का गृहनाश हो जायगा। रावण को भी जीतकर जड़ से काटनेवाला बन जाऊँगा मैं। १००६

अक्काले	यरक्करु	माऩैयुऩ्	देरु	मावुम्
मुक्का	लुलहम्मीरु	मूऩ्ऱैयुम्	वॅऩ्ऱु	मुऱ्ऱिप्

पुक्का तिन्मुन्बुक् कुयर्पूशल् पॆरुक्कुम् वेलै
मिक्कानुम् वॆहुण्डोर् मरामरङ् गॊण्डु मिक्कान् 1007

अ कालै–तब; मुक्काल्–तीन बार; उलकम् ऒरु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों को; वॆन्ऱु–जीतकर; मुऱ्ऱि–पूरा करके; पुक्कातिन् मुन्–लंका में प्रविष्ट जिसने किया था, उसके आगे; अरक्करुम्–राक्षसवीर; आनैयुम्–गज; तेरुम्–रथसेना; मावुम्–और अश्वसेना; पुक्कु–घुसकर; उयर् पूचल्–उच्च शोर; पॆरुक्कुम् वेलै–मचाने लगी तब; मिक्कानुम्–श्रेष्ठ हनुमान भी; वॆकुण्टु–कोप करके; ओर् मरामरम् कॊण्टु–एक सालवृक्ष लेकर; मिक्कान्–प्रवृद्ध हो गया। १००७

तब जो तीन बार तीनों लोकों को जीत चुककर लंका में प्रविष्ट हुआ था, उस इन्द्रजित् के सामने राक्षस वीरों, गजों, रथों और अश्वों की चतुरंगिनी सेना ने प्रवेश करके उच्च युद्धघोष किया। श्रेष्ठ हनुमान ने भी एक सालवृक्ष को उखाड़ लेकर अपना विराट् रूप धर लिया। १००७

उदैयुण् डनयानै युरुण्डन यानै यॊन्ऱो
मिदियुण् डनयानै विऴुन्दन यानै मेन्मेल्
पुदैयुण् डनयानै पुरण्डन यानै पोराल्
वदैयुण् डनयानै मरिन्दन यानै मण्मेल् 1008

यानै उतै उण्टन–गज लातें खा गये; यानै उरुण्टन–गज लुढ़क गये; ऒन्ऱो–केवल एक ही क्या; यानै मिति उण्टन–गज रौंद गये; यानै विऴुन्तन–गज गिरे; यानै–गज; मेल् मेल्–एक के ऊपर एक; पुतै उण्टन–धँस गये; यानै पुरण्टन–गज लोटे; यानै–गज; पोराल्–युद्ध में; वतै उण्टन–मारे गये; यानै–गज; मण्मेल् मरिन्तन–भूमि पर चित गिर गये। १००८

(सेना का हर अंग विध्वस्त हुआ, किस प्रकार? सो देखिए।) गज लात खाकर, लुढ़ककर मरे। वही? नहीं। गज पैरों से रौंदे जाकर, नीचे गिरकर, एक के ऊपर एक गिरकर दबाये जाने से, लोटते हुए, युद्ध में मारे जाकर और भूमि पर चित गिरकर, इस भाँति विविध प्रकार से मर गये। १००८

मुडिन्द तेर्क्कुल मुरिन्दन तेर्क्कुल मुरणिऱ्
ऱिडिन्द तेर्क्कुल मिऱ्ऱन तेर्क्कुल मच्चिऱ्
ऱॊडिन्द तेर्क्कुल मुक्कन तेर्क्कुल नॆक्कुप्
पडिन्द तेर्क्कुलम् बरिन्दन तेर्क्कुलम् बडियिल् 1009

तेर्क्कुलम् मुटिन्त–रथवृन्द मिटे; तेर्क्कुलम् मुरिन्तन–रथकुल टूटे; तेर्क्कुलम्–रथकुल; मुरण् इऱ्ऱु–बल खोकर; इटिन्त–ढकेले जाकर नष्ट हुए; तेर्क्कुलम्–रथवृन्द; इऱ्ऱन–खण्ड-खण्ड हुए; तेर्क्कुलम्–रथदल; अच्चु इऱ्ऱु–धुरी टूटने से; ऒटिन्त–टूटे; तेर्क्कुलम् उक्कन–रथवर्ग चूर होकर छितर गये;

तेर्क्कुलम्–रथदल; नॅक्कु–टकराकर; पटिन्त–झुक गये; तेर्क्कुलम्–रथवृन्द; पटियिल्–भूमि में; पदिन्तत–धँस गये। १००८

(रथ-सेना के) कुछ पूर्ण रूप से मिटे। कुछ खण्ड-खण्ड हुए। कुछ रथवृन्द कमज़ोर होकर ठोकर खाकर मिटे। कुछ छिन्न-भिन्न हुए; कुछ रथों की धुरियाँ टूट गयीं और वे नष्ट हुए। कुछ रथसमूह चूर होकर गिर गये। कुछ मिलकर टक्कर खाकर गिरे। कुछ रथवृन्द भूमि में धँस गये। १००९

शिरनॅ रिन्दवुङ् गणमणि शिदैन्दवुज् जॅदिताळ्
तरनॅ रिन्दवु मुदुहिरच् चायन्दवुन् दार्पूण्
उरनॅ रिन्दवु मुदिरङ्ग ळुमिळ्न्दवु मौळिर्पोऱ्
कुरनॅ रिन्दवुङ् गॊडुङ्गळुत् तॊडिन्दवुङ् गुदिरै 1010

कुतिरै–अश्व; चिरम् नॅरिन्तवुम्–जिनके सिर कुचल गये; कण्मणि चितैन्तवुम्–जिनकी आँखों की पुतलियाँ नाश हुईं और; चॅदि ताळ्–मिलकर पैर; तरम् नॅरिन्तवुम्–दल के दल पिस गये; मुतुकु इर–(जो) पीठ के टूटने से; चायन्तवुम्–गिर गये और; तार् पूण्–(जिनके) हारालंकृत; उरम् नॅरिन्तवुम्–वक्ष पिस गये; उतिरङ्कळ्–(और जो) रक्त; उमिळ्न्तवुम्–रक्त वमन करने लगे; ऑळिर् पॊऩ्–(और जिनके) प्रकाशमय स्वर्ण-भूषित; कुरम् नॅरिन्तवुम्–खुर टूटे; कॊटुम् कळुत्तु–(और जिनके) वक्र गले; ऑटिन्तवुम्–टूटे (ऐसे हो गये अश्व)। १०१०

(अश्वों की स्थिति—) कुछ अश्वों के सिर फूट गये। कुछ की आँखों की पुतलियाँ फूट गयीं। कुछ के सबल पैरों के वृन्द फूटे। कुछ की पीठें टूटीं और वे गिर गये। कुछ के गुरियोंदार हारालंकृत वक्ष कुचले। कुछ ने रक्त वमन किया। कुछ के स्वर्णालंकृत प्रकाशमय खुर पिस गये। कुछ के स्थूल गले टूट गये। १०१०

पिडियुण् डार्हळुम् पिळप्पुण् डार्हळुम् बॅरुन्दोळ्
ऑडियुण् डार्हळुन् दलैयुडैन् दार्हळु मुरुवक्
कडियुण् डार्हळुङ् गळुत्तिळन् दार्हळुम् मरत्ताल्
अडियुण् डार्हळु मच्चमुण् डार्हळु मरक्कर् 1011

अरक्कर्–राक्षस वीर; पिटि उण्टार्कळुम्–जो हनुमान से ग्रस्त हुए; पिळप्पु उण्टार्कळुम्–चिर गये; पॅरुम् तोळ्–बड़े कन्धे (जिनके); ऑटि उण्टार्कळुम्–तोड़े गये; तलै उटैन्तार्कळुम्–(जिनके) सिर फूट गये; उरुव–शरीर भर में; कटि उण्टार्कळुम्–जो काटे गये; कळुत्तु इळन्तार्कळुम्–जो कण्ठों से हीन हो गये; मरत्ताल्–सालवृक्ष से; अटि उण्टार्कळुम्–जो पिटे और; अच्चम् उण्टार्कळुम्–वे, जिन्होंने भय खाया (ऐसे बन गये)। १०११

(पदाति के राक्षस वीर कैसे मिटे?) कसकर ग्रस्त, फूटे शरीर,

टूटे कन्धे, फटे सिर, काट खाये गये, कण्ठहीन, सालवृक्ष से खूब पिटे, और भयभीत —इस भाँति वे राक्षस वीर मटियामेट हो गये। १०११

वट्ट वॆञ्जिलै योट्टिय वाळियुम् वयवर्
विट्ट वॆन्दिऱऱ् पडैहळुम् वीरन्मेल् विऴुन्द
शुट्ट मॆल्लिरुम् बडैहलैच् चुडुहला ददुपोल्
पट्ट पट्टन तिशैदॊरुम् बॊऱ्ऱियॊडुम् बरन्द 1012

वयवर्–वीरों के; वट्ट–गोलाकार झुके गये; वॆम् चिलै–भयंकर धनु से; ओट्टिय–चलाये गये; वाळियुम्–बाण और; विट्ट–फेंके गये; वॆम् तिऱल्–क्रूर शक्ति के; पटैकळुम्–हथियार; वीरन् मेल् विऴुन्त–महावीर पर गिरे; चुट्ट–तप्त; मॆल् इरुम्पु–निर्बल लोहा; अटै कलै–निहाई को; चुटुकलाततु पोल–जला नहीं पाता जैसे; पट्ट पट्टत–जो लगे वे सारे; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; पॊऱ्ऱि ऒटुम्–अंगारे छोड़ते हुए; परन्त–फैले। १०१२

राक्षसों के द्वारा धनु को खूब वर्तुल झुकाकर तीव्रगति से प्रेरित बाण और प्रेषित ग़जब की शक्ति के हथियार महावीर पर जाकर जो गिरे वे, स्थूणे को जैसे तप्त लोहा कुछ नहीं कर पाता वैसे ही, सब के सब, नाना दिशाओं में अंगारे बिखेरते हुए जाकर बिखर गये। १०१२

शिहैयॅ ऴुञ्जुडर् वाळिह ळिराक्कदर् शेनै
मिहैयॅ ऴुञ्जिनत् तनुमन्मेल् विट्टन वॅन्दु
पुहैयॅ ऴुन्दन वॅरिन्दन करिन्दन पोद
नहैयॅ ऴुन्दन कुळिर्न्दन वानुळोर् नाट्टम् 1013

इराक्कतर् चेतै–राक्षसों की सेना द्वारा; मिकै ॲऴुम्–बहुत उमड़नेवाले; चिनत्तु–क्रोध के साथ; अनुमन् मेल् विट्टत–हनुमान पर प्रेषित; चिकै ॲऴुम्–ज्वाला निकालनेवाले; चुटर् वाळिकळ्–तेजोमय बाण; वॆन्तु–(हनुमान के शरीर पर लगते ही) झुलसकर; पुकै ॲऴुन्तत–गुँगुआते हुए; ॲरिन्तत–जले और; करिन्तत पोत–राख बने; वान् उळोर् नाट्टम्–व्योमवासियों की दृष्टि; नकै ॲऴुन्तत–वर्धित आनन्द के साथ; कुळिर्न्तत–शीतल बनी। १०१३

राक्षसों ने बहुत क्रुद्ध होकर ज्वाला निकालते हुए चलनेवाले तेजोमय बाण छोड़े। वे हनुमान के शरीर पर लगकर उसकी गर्मी में झुलस गये। गुँगुआते हुए जले और राख बन गये। यह देखकर देवों की आँखें आनन्द-शीतल हो गयीं। १०१३

तेरुम् यानैयुम् बुरवियु मरक्करुञ् जिन्दिप्
पारिन् वीऴ्दलुन् दानॊरु तनिनिन्ऱ पणैत्तोळ्
वीर वीरनु मुरुवलुम् वॆहुळियुम् वीङ्ग
वारुम् वारमॆन् ऱॊऴैक्किनऱ वनुमन्मेल् वन्दान् 1014

तेरुम्–रथ और; यातैयुम् पुरवियुम्–गज और अश्व; अरक्करुम्–राक्षस; चिन्ति–अस्त-व्यस्त होकर; पारिन् वीळ्तलुम्–भूमि पर गिर गये तो; तान् ऑरु तत्ति निन्ऱ–आप जो अकेले खड़ा रहा; पणै तोळ्–स्थूल कन्धों वाला; वीर वीरतुम्–वीरों में (श्रेष्ठ) वीर इन्द्रजित्; मुरुवलुम्–मन्दहास और; वॅकुळियुम् वीङ्क–कोप के बढ़ते; वारुम् वारुम्–आओ-आओ; ऎन्ऱु–कहकर; अळैक्किन्ऱ–बुलानेवाले; अनुमन् मेल् वन्तान्–हनुमान पर आक्रमण करने आया। १०१४

रथों, गजों, अश्वों और पैदल वीरों की सेनाएँ तितर-बितर होकर भूमि पर गिर गयीं। अकेला खड़ा रहा स्थूल कन्धों वाला वीरों में (श्रेष्ठ) वीर इन्द्रजित्। उसे हँसी भी अधिक हुई और गुस्सा भी बढ़ा। उधर हनुमान 'आओ', 'आओ' कहकर उत्साह के साथ वीरों को लड़ने को आमन्त्रण दे रहा था। इन्द्रजित् उस हनुमान पर चढ़ आया। १०१४

पुरन्द रन्ऱलै पॉदिरॅऱिन् दिडपपुयल् वानिल्
परन्द पल्लुरु मेर्ऱितम् वॅऱित्तुयिर् पदैप्प
निरन्द रम्बुवि मुळुवदुज् जुमन्द नीडुरहन्
शिरन्दु ळङ्गिड वरक्कन्वॅज् जिलैयैना णॅऱिन्दान् 1015

पुरन्तरन् तलै–पुरन्दर के सिर के; पॉतिर् ऎऱिन्तिट–कम्पन के बढ़ते; वानिल् परन्त–आकाश में व्याप्त; पुयल्–मेघों में; पल् उरुम् एऱ्ऱु इतम्–अनेक अशनियों का वृन्द; वॅऱित्तु–भय से तनकर; उयिर् पतैप्प–प्राण लड़खड़ाये; निरन्तरम्–निरन्तर; पुवि मुळुवतुम् चुमन्त–सारी भूमि को ढोनेवाले; नीटु उरकन्–लम्बे आदिशेष के; चिरम् तुळङ्किट–सिर काँपे; अरक्कन्–राक्षस ने; वॅम् चिलैयै–कठोर धनु की; नाण् ऎऱिन्तान्–शिञ्जिनी को टंकृत किया। १०१५

उसने अपने भयंकर धनु की ताँत को टंकृत किया, जिसके घोर नाद से इन्द्र का सिर काँप गया; आकाश पर मेघों में रहे वज्र भय खाकर तन गये और उनके प्राण काँप उठे; और निरन्तर सारी भूमि को सिरों पर ढोते रहनेवाले आदिशेष के सहस्र सिर भी काँपे। १०१५

आण्ड नायहन् रूदनु मयनुडै यण्डम्
कीण्ड दामॅनक् किरियुह नॅडुनिलङ् गिळिय
नीण्ड मादिरम् वॅडिपड ववनॅडुज् जिलैयिल्
पूण्ड नाणिऱत् तन्नॅडुन् दोळ्पुडैत् तार्त्तान् 1016

आण्ट–लोकपालक; नायकन्–जगन्नाथ श्रीराम के; तूततुम्–दूत ने भी; अयनुटै अण्टम्–अज का अण्ड; कीण्टतु आम्–फट गया; ऎन–जैसे; किरि उक–गिरियाँ चूर हो बिखर जाएँ, ऐसा; नॅटु निलम्–विशाल भूमि; किळिय–चिर गयी; नीण्ट मातिरम्–लम्बी दिशाएँ; वॅटि पट–फूट जाएँ, ऐसा; अवन् नॅटुम् चिलैयिल्–उसके दीर्घ धनु की; पूण्ट–बँधी; नाण् इऱ–डोरी को काटते हुए; तन् नॅटुम् तोळ्–अपने बड़े कन्धों को; पुटैत्तु–ठोंककर; आर्त्तान्–ध्वनि निकाली। १०१६

लोकपालक जगन्नायक श्रीराम के दूत ने भी अपने कन्धे ठोंके और सिंहनाद किया, जिससे अजदेव का अण्ड भी फूटा; गिरियाँ चूर होकर छितरीं; भूमि पर और लम्बी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और स्वयं इन्द्रजित् के दीर्घ धनु में बँधी डोरी भी कट गयी। १०१६

नल्लै नल्लैयिऩ् ञालत्तु निऩ्ऩॊक्कु नल्लार्
इल्लै यिल्लैया लॆरुळ्वलिक् कियारॊडु मिहल
वल्लै वल्लैयिऩ् ऱाहुनी पडैत्तुळ वाणाट्
कॆल्लै यॆल्लैयॆऩ् ऱिऩ्दिर शित्तुवु मिशैत्ताऩ् 1017

नल्लै नल्लै–समर्थ हो समर्थ; इ ञालत्तु–इस भूमि में; निऩ् ऒक्कुम्–तुम्हारी समानता करनेवाला; नल्लार्–समर्थ; इल्लै–नहीं; इल्लै–नहीं; ऎरुळ् वलिक्कु–बड़ी शक्ति को (देखा जाय तो); यार् ओटुम्–किसी के साथ भी; इकल वल्लै–लड़ सकते हो; नी पटैत्तु उळ–तुमको मिली; वाळ् नाट्कु ऎल्लै–आयु की सीमा का; ऎल्लै–(ही) अन्त; इऩ्ऱु आकुम्–आज होगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; इन्तिरचित्तु उम् इचैत्ताऩ्–इन्द्रजित् ने भी कहा। १०१७

तब इन्द्रजित् ने व्यंग्य किया। तुम बड़े कुशल हो, कुशल। इस संसार में तुम्हारे टक्कर का कोई नहीं। तुम्हारे बहुत बल को देखा जाय तो तुम किसी से भी लड़ सकते हो। पर आज का दिन तुम्हारी आयु का अन्तिम दिन हो जायगा! । १०१७

नाळुक् कॆल्लैयु निरुदरा युलहत्तै नलियुम्
कोळुक् कॆल्लैयुङ् गॊडुन्दॊऴिऱ् कॆल्लैयुङ् गॊडियीर्
वाळुक् कॆल्लैयुम् वन्दऩ वहैकॊण्डु वन्देऩ्
तोळुक् कॆल्लैयॊऩ् ऱिल्लैयॆऩ् ऱनुमनुज् जॊऩ्ऩाऩ् 1018

कॊटियीर्–क्रूर (राक्षस); नाळुक्कु ऎल्लैयुम्–(तुम्हारी) आयु का अन्त और; निरुतर् आय्–राक्षस बनकर; उलकत्तै नलियुम्–संसार को त्रस्त करने के; कोळुक्कु ऎल्लैयुम्–तुम्हारे सिद्धान्तों का अन्त और; कॊटुम् तॊऴिऱ्कु ऎल्लैयुम्–क्रूर कर्मों का अन्त; वाळुक्कु ऎल्लैयुम्–तलवार का अन्त; वन्तत–सब आ गये; वकै कॊण्टु वन्तेऩ्–उपाय लाया हूँ; तोळुक्कु ऎल्लै–मेरे भुजबल की सीमा; ऒऩ्ऱु इल्लै–कुछ नहीं है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; अनुमतुम्–हनुमान ने भी; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। १०१८

हनुमान ने भी कहा कि क्रूर राक्षसो! तुम लोगों की आयु, राक्षसों के रूप में लोक को त्रस्त करने का तुम्हारा सिद्धान्त, क्रूर कार्यक्रम, तलवार आदि हथियार —इन सबका अन्त आ गया। उपाय लाया हूँ। मेरे भुजबल की कोई सीमा नहीं रहती। १०१८

इच्चि रत्तैयैत् तॊलैप्पॆऩ्ऩ ऱिऩ्दिरत् पहैञऩ्
वच्चि रत्तिऩम् वलियऩ वयिरवाऩ् कणैहळ

पच्चि रत्तम्वन् दॊऴुहिड वानवर् पदैप्प
अच्चि रत्तिनु मार्बिनु मऴुत्तलु मनुमन् 1019

इन्तिरत् पकैञन्–इन्द्रशत्रु; इ चिरत्तैयै–यह विश्वास ही; तॊलैप्पेन्–नाश करूँगा; वच्चिरत्तितुम्–वज्र से भी; वलियत–कठोर; वयिर–सशक्त; वान् कणैकळ्–श्रेष्ठ बाणों को; पचुमै इरत्तम्–ताज़ा खून; वन्तु ऒऴुकिट–आकर बहे ऐसा; वानवर् पतैप्प–देवगण त्रस्त हो जाएँ ऐसा; अ चिरत्तितुम्–उस सिर पर और; मार्पितुम्–वक्ष में; अऴुत्तलुम्–गड़ाने से; अनुमन्–हनुमान। १०१९

इन्द्रशत्रु ने कहा कि यह है तुम्हारा विश्वास ! इसको मिटा दूँगा। कहकर उसने वज्र से भी कठोर और बलवान श्रेष्ठ बाणों को प्रेरित किया; जिनके हनुमान के सिर और वक्ष पर लगने से ताज़ा खून बह निकला और व्योमवासी उद्विग्न हो गये। १०१९

कुऱिदु वानॆन्ऱु कुऱैन्दिलन् कॊडुञ्जिनङ् गॊण्डान्
मऱियुम् वॆण्डिर माहड लुलहॆलाम् वऴङ्गिच्
चिऱिय तायुरैत्तन तिरुमॊऴि चॆन्निियिऱ् चूडि
नॆऱियि निन्ऱदन् नायहन् पुहऴॆन निमिर्न्दान् 1020

कॊटुम् चितम् कॊण्टान्–भयानक कोप अपनाकर; वान् कुऱितु ऎन्ऱु–आकाश को छोटा कहने देता हुआ; कुऱैन्तिलन्–छोटा न रहकर (यानी विवृद्ध होकर); चिऱिय ताय्–छोटी माता के; चॊन्त–कहे गये; तिरुमॊऴि–श्रीवचन; चॆन्तियिल् चूटि–सिर पर धारण करके; मऱियुम्–आवर्तनशील; वॆण् तिरै–श्वेत तरंगों के; मा कटल्–बड़े सागर से वलयित; उलकु ऎलाम्–सारे लोक को; वऴङ्कि–प्रदान करके; नॆऱियिल् निन्ऱ–धर्ममार्ग पर स्थित; तन् नायकन्–अपने नायक की; पुकऴ् ऎत–कीर्ति के समान; निमिर्न्तान्–विराट् रूप में बढ़ गया। १०२०

हनुमान क्रुद्ध हुआ। आकाश को भी छोटा बनाते हुए विवृद्ध हुआ। वह इस प्रकार उन्नत हुआ, जिस प्रकार छोटी माता की आज्ञा के वचन को शिरोधार्य कर आवर्तनशील श्वेत लहरों के बड़े सागरों के मध्य स्थित सारी भूमि को अपने भाई भरत के पास देकर धर्मावलम्बी रहे श्रीराम का यश उन्नत (और विस्तृत) बना था। १०२०

पाह मल्लदु कण्डिल ननुमनैप् पार्त्तान्
माह वन्ऱिशै पत्तॊडुम् वरम्बिला वुलहिऱ्
केह नादनै यॆरुऴ्वलित् तोळ्पिणित् तीर्त्त
मेह नादनु मयङ्गिन नामॆन वियन्दान् 1021

माक वन् तिचै–बड़ा आकाश आदि; पत्तु–दसों दिशाओं; ऒटुम्–के साथ; वरम्पु इला–निस्सीम; उलकिऱ्कु–अनेक लोकों के; एक नातनै–एक नायक (इन्द्र) को; ऎऴुऴ् वलि–बहुत सबल; तोळ् पिणित्तु–कन्धे बाँधकर; ईर्त्त–जो खींच लाया; मेकनातनुम्–उस इन्द्रजित् ने; अनुमनै पार्त्तान्–हनुमान को देखा;

पाकम् अल्लतु–एक भाग को छोड़कर; कण्टिलन्–(पूरा नहीं) देखा; मयङ्कितत् आम् अँत–चकित सा; वियन्तान्–विस्मित हुआ। १०२१

इन्द्रजित् ने विश्वरूप हनुमान को देखा। इन्द्रजित्, बड़े आकाश को मिलाकर दसों दिशाओं और अनन्त लोकों के एक-नायक इन्द्र के बलवान कन्धों को बाँधकर खींच लाया था। वह इन्द्रजित् भी हनुमान का एक भाग ही अपनी दृष्टिपथ में ला सका। वह विस्मित-भ्रमित हुआ। १०२१

नीण्ड वीरनु नॆडुन्दडक् कैहळै नीट्टि
ईण्डु वॆञ्जर मॆय्दन वॆय्दिडा वण्णम्
मीण्डु पोय्विळ वीशियङ् गवन्विट्ट तडन्देर्
पूण्ड पेयोडु शारदि तरैप्पडप् पुडैत्तान् 1022

नीण्ट वीरतुम्–लम्बोतरे वीर (महावीर) ने भी; नॆट्टुम् तटम्–लम्बे और विशाल; कैकळै नीट्टि–अपने हाथों को बढ़ाकर; ॲय्तत्त–चलाये जाकर; ईण्टु–सवेग आनेवाले; वॆम् चरम्–संतापक शरों को; ॲय्तिटा वण्णम्–अपने पास न आने देते हुए; मीण्टु पोय्–लौट जाकर; विळ–गिराते हुए; वीचि–फेंककर; अङ्कु–वहाँ; अवन् विट्ट–उसके चलाये गये; तटम् तेर्–विशाल रथ को; पूण्ट पेय् ओटु–जुते भूतों के साथ; चारति–सारथी भी; तरै पट–भूमि पर गिरकर मर जाएँ, ऐसा; पुटैत्तान्–आघात किया। १०२२

लम्बोतरे महावीर ने भी अपने लम्बे विशाल हाथों को बढ़ाकर इन्द्रजित्-प्रेरित भयंकर शरों को पास न आने देकर लौटाते हुए झटकार दिया और उसके द्वारा चलाये गये विशाल रथ को उसके जुते भूतों के साथ लेकर भूमि पर ऐसा पटका कि वे भूमि पर गिरकर मिट गये। १०२२

ऊळिक् काऱ्ऱन्न वॊरुपरित् तेरव णुदवप्
पाळित् तोळव नत्तडन् देर्मिशैप् पाय्न्दान्
आळिप् पल्बडै यनैयन वळप्परुञ् जरत्ताल्
वाळिप् पोर्वलि मारुदि मेनियै मऱैत्तान् 1023

अवण्–उस स्थिति में; ऊळि काऱ्ऱु अन्न–प्रलयपवन के समान; ऒरु परि तेर्–एक अश्व-जुते रथ को; उतव–(सारथी के) ला देने पर; पाळि तोळ् अवन्–स्थूल कन्धों वाला वह; अ तटम् तेर् मिचै–उस विशाल रथ पर; पाय्न्तान्–लपका; पल्–(और उसने) अनेक; आळि पटै अनैयन–चक्रायुध-सम; अळप्पु अरुम् चरत्ताल्–अगणित शरों से; वाळि पोर् वलि–लम्बे काल तक जारी रहनेवाले युद्ध के योग्य बल से युक्त; मारुति मेनियै–मारुति के शरीर को; मऱैत्तान्–छिपा दिया। १०२३

उस स्थिति में सारथी ने प्रलयपवनगति अश्वों के जुते एक रथ को ला दिया। भुजबली इन्द्रजित् उस विशाल रथ पर लपका। फिर उसने चक्रायुध के समान अनेक विविध अगणित शरों से युद्धकुशल मारुति के शरीर को ढक दिया। जिसमें दीर्घयुद्धावश्यक बल था। १०२३

उऱ्ऱ वाळिह ळुरत्तडङ् गिऩ्वुह वुदराक्
कॊऱ्ऱ मारुदि यऩैयवऩ् ऱेर्मिशैक् कुदित्तुप्
पऱ्ऱि वऩ्गैयाऱ् पऱित्तॆळुन् दुलहॆलाम् बलहाल्
मुऱ्ऱ वॆऩ्ऱपोर् मूरिवॆञ् जिलैयिऩै मुऱित्ताऩ् 1024

कॊऱ्ऱ मारुति–विजयशील मारुति (ने); उरत्तु अटङ्किऩ्–वक्ष में छिपे; उऱ्ऱ वाळिकळ्–लगे रहे शरों को; उक–बिखेरते हुए; उतऱा–झटकाकर; अऩैयवऩ् तेर् मिचै–उसके रथ पर; कुतित्तु–कूदकर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; पल काल्–अनेक बार; मुऱ्ऱ वॆऩ्ऱ–पूर्णरूप से जिसने जीता था (उसके); पोर् मूरि–युद्धयोग्य बलवान; वॆम् चिलैयिऩै–भयानक धनु को; वऩ् कैयाल्–कठोर हाथों से; पऱ्ऱि–ग्रसकर; पऱित्तु–छीनकर; ॲळुन्तु–ऊपर उछलकर; मुऱित्ताऩ्–उसको तोड़ दिया। १०२४

विजयशील मारुति ने झटका देकर अपने वक्ष में धँसे रहे शरों को दूर बिखेर दिया। फिर वह उसके रथ पर कूद पड़ा। उसने, सारे लोकों को अनेक बार जिसने जीता था, उस इन्द्रजित् के भारी और मारू और भयंकर धनु को अपने बलिष्ठ हाथों से पकड़कर छीन लिया और ऊपर उछलकर उसे तोड़ दिया। १०२४

मुऱिन्त विल्लिऩ्वल् लोशैपोय् मुडिवदऩ् मुऩ्ऩम्
मऱिन्दु पोरिडै वळिक्कॊळा वयिरवाट् पडैयाल्
शॆऱिन्द वाऩ्बॆरुञ् जिऱैयऱ मलैहळैच् चॆयिरा
ॲऱिन्द विन्दिर ऩिट्टवाऩ् शिलैयिऩै यॆडुत्ताऩ् 1025

मुऱिन्त–टूटे; विल्लिऩ्–धनु के; वल ओचै–भयंकर स्वर के; पोय् मुटिवतऩ्–जाकर मौन होने के; मुऩ्ऩम्–पूर्व ही; मऱिन्तु–लौटकर; पोर् इटै–युद्ध का; वळि कॊळा–मार्ग अपनाकर; वयिर–वज्र की; वाळ् पटैयाल्–तलवार से; चॆऱिन्त–घने; वाऩ् पॆरुम् चिऱै–बहुत बड़े पंखों को; अऱ–काटकर; मलैकळै–पर्वतों से; चॆयिरा–गुस्सा करके; ॲऱिन्त–उनको जिसने निर्बल बनाया; इन्तिरऩ्–उस इन्द्र के; इट्ट–(समरांगन में परास्त होकर) छोड़े गये; वाऩ् चिलैयिऩै–बड़े धनु को; ॲटुत्ताऩ्–अपने हाथ में ले लिया। १०२५

टूटे धनु की भयंकर ध्वनि के मौन होने के पहले, फिर युद्ध में लगकर मेघनाद ने, वज्र रूपी तलवार से जिसने सुदृढ़ पंखों को काटकर पर्वतों को क्रोध के साथ प्रहरित किया था, उस इन्द्र के द्वारा हारकर छोड़े गये बड़े धनु को हाथ में लिया। १०२५

नूऱु नूऱुपोर् वाळियोर् तॊडैहॊण्डु नॊय्दिऩ्
माऱिल् वॆञ्जिनत् तिरावणऩ् महऩ्शिलै वळैत्ताऩ्
ऊऱु तऩ्ऩॆडु मेऩियिऱ् पलपड वॊल्हि
एऱु शेवहऩ् ऱूदऩुञ् जिऱिदुपो दिरुन्दाऩ् 1026

ओर् तॉटै–एक खेप में; नूरु नूरु पोर् वाळि कॉण्टु–शत-शत मारू बाण लेकर; नॉय्तिन्–शीघ्र; मारु इल्–प्रत्युत्तर रहित; वॅम् चित्ततु–भयानक क्रोधी; इरावणन् मकन्–रावण के पुत्र ने; चिलै वळैत्तान्–धनु झुकाया (शर चलाये); एरु चेवकन्–संवर्धनशील वीरता के श्रीराम का; तूतनुम्–दूत भी; तन् नॅटु मेतियिल्–अपने लम्बे शरीर में; ऊरु पल पट–अनेक घावों के होने के कारण; चिरितु पोतु–कुछ देर; ऑल्कि इरुन्तान्–थका रहा। १०२६

अप्रतिरुद्ध क्रोधी रावण के पुत्र ने धनु को झुकाकर एक खेप में सौ-सौ मारू बाणों के हिसाब से शर चलाये। उत्तरोत्तर विवृद्ध वीरता के नायक श्रीराम का दूत हनुमान भी अपने लम्बे शरीर पर अनेक व्रणों के बन जाने से कुछ देर थकित रहा। १०२६

आर्त्त वानव राहुलङ् गॊण्डरि वऴिन्दार्
पार्त्त मारुदि तारुवीत् ड्रङ्गैयार् पट्रात्
तूर्त्त वाळिहळ् तुणिबड मुरैमुरै शुट्रिप्
पोर्त्त पौन्नॆंडु मणिमुडित् तलैयिडैप् पुडैत्तान् 1027

आर्त्त वानवर्–(जिन्होंने पहले) आनन्दरव किया था, वे देव; आकुलम् कॉण्टु–व्याकुल होकर; अरिवु अऴिन्तार्–बुद्धिभ्रष्ट हुए; पार्त्त मारुति–उसको देखकर मारुति; तारु ऑन्रु–एक तरु को; अम् कैयाल् पट्रा–अपने सुन्दर हाथ से पकड़कर; तूर्त्त वाळिकळ्–अपने शरीर को छिपाने आये शरों को; तुणि पट–तोड़ते हुए; मुरै मुरै चुट्रि–अनेक बार उसे घुमाकर; पॊन् मणि–स्वर्णरत्नमय; नॅटु मुटि पोर्त्त–लम्बे किरीट से आवृत; तलैयिटै–(इन्द्रजित् के) सिर पर; पुटैत्तान्–(उस तरु से) प्रहार किया। १०२७

देवों ने पहले आनन्द-आरव किया था। अब यह स्थिति देखकर वे व्याकुल और बुद्धिभ्रष्ट हुए। मारुति ने उनकी यह स्थिति देखकर एक पेड़ को उखाड़कर उठा लिया और आवृत करते आनेवाले बाणों को बिखेर देते हुए उसको अनेक बार घुमाया। फिर स्वर्णरत्नमय किरीट से ढके हुए इन्द्रजित् के सिर पर उस पेड़ को दे मारा। १०२७

पार मामर मुडियुडैत् तलैयिडैप् पडलुम्
तारै यित्नॆंडुङ् गट्रैहळ् शोरिवन तयङ्ग
आर माल्वरै यरुवियि तऴिहॊऴुङ् गुरुदि
शोर निन्रुळन् दुळङ्गिन नमररैत् तॊलैत्तान् 1028

पार मामरम्–भारी बड़ा तरु; मुटियुटै–किरीट-सहित; तलै इटै–सिर पर; पटलुम्–ज्योंही लगा त्योंही; तारैयिन्–रक्तधारा की; नॅटुम् कट्रैकळ्–लम्बी लटें; चोरिवन तयङ्क–बहती रहीं; माल् वरै–बड़े पर्वत की; आर–माला-सी; अरुवियिन्–सरिता के समान; अऴि कॊऴुम् कुरुति–गिरनेवाला गाढ़ा रक्त; चोर–दोनों बाजुओं में गिरता रहा; अमररै तॊलैत्तान्–अमरों का (बल-) नाशक; निन्रु–थका खड़ा रहा और; उळम् तुळङ्किनन्–कम्पित-मन हुआ। १०२८

उस भारी बड़े पेड़ के किरीटधारी सिर पर लगते ही इन्द्रजित् के शरीर पर रक्तधारा की लम्बी लटें दोनों बाज़ुओं में पर्वतधृत मालाओं के समान शोभायमान दिखीं। जब वह गाढ़ा रक्त उस तरह गिरने लगा, तब देवों को हराकर जिसने भगाया था, उस इन्द्रजित् का मन काँप उठा। १०२८

नित्ऱु पोदम्वन् दुरुदलु निरैपिरै यॅयिऱु
तित्ऱु तेवरु मुऩिवरु मवुणरुन् दिहैप्पक्
कुत्ऱु पोॅण्डु मारुदि याहमुङ् गुलुङ्ग
ऑत्ऱु पोल्वत्र वायिरम् बहळिकोत् तुयत्तान् 1029

नित्ऱु–थका खड़ा रहकर; पोतम् वन्तु उरुतलुम्–सचेत होते ही; पिरै–चन्द्रकला के समान; निरै–भरे रहे; ऍयिऱु तित्ऱु–दाँत पीसते हुए; तेवरुम् मुऩिवरुम्–देवों और मुनियों; अवुणरुम्–और दानवों के; तिकैप्प–चक्रित रहते; कुत्ऱु पोल्–पर्वत-सम; नॅटु मारुति–लम्बोतरे हनुमान के; आकमुम्–शरीर के; कुलुङ्क–काँपते; ऑत्ऱु पोल्वत्र–एक ही सम; आयिरम् पकळि–सहस्र वाण; कोत्तु–धनु पर सन्धान करके; उयत्तान्–चलाये (इन्द्रजित् ने) १०२९

कुछ देर वह स्तब्ध खड़ा रहने के बाद थोड़ा स्वस्थ हुआ। जब उसे बोध हुआ, तब उसने चन्द्रकला-से दाँतों को पीसते हुए एक समान हज़ार बाण धनु पर संधानकर छोड़ा, जिससे कि मुनिगण और दानव चक्रित हुए और पर्वत-सम लम्बोतरे हनुमान का शरीर काँपा। १०२९

उयत्त वॅञ्जर मुरत्तितुङ् गरत्तिनु मॉळिप्पक्
कैत्त शिन्दैयत् मारुदि नत्तिदवक् कनन्ऱान्
वित्त हत्शिलै विडुकणै विशैयिनुङ् गडुहि
अत्त डम्बॅरुन् देरोडु मॅडुत्तॅरिन् दार्त्तान् 1030

उयत्त–चालित; वॅम् चरम्–भयंकर शर; उरत्तितुम्–वक्ष में और; करत्तितुम्–हाथों में; ऑळिप्प–घुसकर छिप गये, तब; कैत्त चिन्तैयत्–उचटे मन वाला; मारुति–पवनसुत; नत्ति तव–खूब अधिक; कतन्ऱान्–कुपित हुआ; वित्तकन्–विद्यारूप; चिलै विटु–(श्रीराम) धनु से जो छोड़ते हैं; कणै विचैयितुम्–उन बाणों के वेग से अधिक; कटुकि–वेग के साथ जाकर; अ तटम् पॅरुम् तेर् ओटुउम्–उस विशाल और बड़े रथ के साथ; ऍटुत्तु–(उसको भी) उठाकर; ऍरिन्तु–पटक दिया और; आर्त्तान्–नारे लगाये। १०३०

इन्द्रजित्-प्रेरित वे शर हनुमान के वक्ष और भुजाओं में छिप गये। हनुमान का दिल उचट गया। अत्यधिक क्रोध करके वह ज्ञानमूर्ति श्रीराम के प्रेरित बाण से भी अधिक तेज़ी से गया और उसने उस बड़े और चौड़े रथ के साथ उसको भी उठाकर दूर फेंक दिया और उच्च गर्जन किया। १०३०

कण्णिऩ् मीच्चॆऩ्ऱ विमैयिडैक् कलप्पदऩ् मुऩ्ऩम्
ॲण्णिऩ् मीच्चॆऩ्ऱ वॆरुळ्वलित् तिऱलुडै यिहलोऩ्
पुण्णिऩ् मीच्चॆऩ्ऱु पॊऴिबुऩल् पशुम्बुलाल् पॊडिप्प
विण्णिऩ् मीच्चॆऩ्ऱ तेरॊडुम् बार्मिशै विऴुन्दाऩ् 1031

कण्णिऩ् मी–आँखों के ऊपर; चॆऩ्ऱ इमै–जो उठी थी वह पलक; कलप्पतऩ् इटै–(नीचे आ) नीचे की पलक से मिलने की अवधि; मुऩ्ऩम्–के पहले; ॲण्णिऩ् मी चॆऩ्ऱ–गणना को पार कर गये; ॲरुळ् वलि–अधिक बली; तिऱलुडै इकलोऩ्–साहसी योद्धा (इन्द्रजित्); पुण्णिऩ् मी चॆऩ्ऱु–व्रणों के ऊपर से आकर; पॊऴि–गिरनेवाले; पुऩल् पचुम् पुलाल्–रक्त और ताजा मांस; पॊटिप्प—निकल आये और; विण्णिऩ् मी चॆऩ्ऱ–आकाश में जो जाता रहा; तेर् ओटुम्–उस रथ के साथ; पार् मिचै–भूमि पर; विऴुन्ताऩ्–गिरा। १०३१

आँखों के ऊपर उठी हुई पलकों के गिरकर नीचे की पलकों के साथ लगने में जितनी देर लगती है (यानी पलक मारने की), उतनी देर के अन्दर अपार बली और युद्धसमर्थ इन्द्रजित् आकाशगामी रथ के साथ भूमि पर गिरा और उसके शरीर के व्रणों से रक्त और ताज़ा मांस बाहर निकल पड़े। १०३१

विऴुन्दु पारडै यामुऩ मिऩ्ऩॆऩ्ऩु मॆयिऱ्ऱाऩ्
ॲऴुन्दु माविशुम् बॆय्दिऩ ऩिडैयवऩ् पडियिल्
शॊऴुन्दिण् मामणित् तेर्क्कुलम् यावैयुम् जिदैय
उऴुन्दु पेर्वदऩ् मुऩ्ऩॆडु मारुदि युदैत्ताऩ् 1032

मिऩ् ॲऩ्ऩुम्–बिजली के समान; ॲयिऱ्ऱाऩ्–दाँत वाले (इन्द्रजित्); विऴुन्तु–गिरकर; पार् अटैया मुऩ्ऩम्–भूमि पर लगने से पहले; ॲऴुन्तु–उठकर; मा विचुम्पु–विशाल आकाश; ॲय्तिऩऩ्–पहुँचा; इटै–इसके बीच में; नॆटु मारुति–लंबोतरे मारुति ने; उऴुन्तु पेर्वतऩ् मुऩ्–उड़द के लुढ़कने की देर में; अवऩ्–उसके; चॊऴुम्–आडम्बरपूर्ण; तिण्–सुदृढ़; मा मणि तेर् कुलम्–बड़े रत्नमय रथों; यावैयुम्–सभी को; पटियिल् चितैय–भूमि पर टूटकर गिरें, ऐसा; उतैत्ताऩ्–लात मारी। १०३२

बिजली के समान चमकते दाँत वाला इन्द्रजित् भूमि पर गिरने से पहले ही उठा और ऊपर आकाश में उछल गया। इसके बीच में लम्बोतरे हनुमान ने उड़द के लुढ़कते समय के अन्दर उसके पुष्ट, सुदृढ़ और बड़े रत्नमय सारे रथों के समूहों के लात मारी और वे सब भूमि पर गिरकर तहस-नहस हुए। १०३२

एऱु तेरिल ऩॆदिर्निऱ्कु मुरत्तिल ऩॆरियिल्
शीऱु वॆञ्जिऩत् दिरुहिऩ ऩन्दरन् दिरिवाऩ्

वेरु शॅय्वदोर् विनैपिरि दिन्मैयिन् विरिञ्जन्
मारि लाप्पॅरुम् बडैक्कलन् दॊडुप्पदे मदित्तान् 1033

एरु तेर् इलन्–सवार होने के लिए रथ न रहा; ऍतिर् निऱ्कुम्–सामने टिकने की; उरन् इलन्–शक्ति न रही; ऍरियिल् चीऱ–आग के समान बिफरकर; वॅम् चितम् तिरुकितन्–भयानक कोप में बढ़कर; अन्तरम् तिरिवान्–अन्तरिक्ष में घूमता हुआ; वेरु चॅय्वतु–दूसरा करने; ओर् वितै–कोई काम; पिरितु इन्मैयित्–फिर न रहा, इसलिए; विरिञ्चन्–विरंचि के; मारु इला–अप्रतीकार्य; पॅरुम् पटैक्कलम्–बड़ा अस्त्र; तॊटुप्पते–चलाना ही; मतित्तान्–सोचा। १०३३

अब इन्द्रजित् रथहीन हो गया। समक्ष टिकने की शक्ति भी उसकी नहीं रही। भभक उठनेवाली अग्नि के समान उसका क्रोध बढ़ गया। अन्तरिक्ष में चलते हुए इन्द्रजित् ने अनुभव किया, अब मेरे करने योग्य कोई कार्य नहीं। इसलिए उसने अप्रतिरुद्ध ब्रह्मास्त्र को चलाने की बात सोच ली। १०३३

पूवुम् बूनिऱ वयिर्रियुन् दीबमुम् बुहैयुम्
ताविल् पावनै याऱ्कॊडुत् तरुच्चनै शमैत्तान्
तेवि यावैयु मुलहमुन् दिरुत्तिय दॅय्वक्
कोवि नान्मुहन् पडैक्कलन् दडक्कैयिऱ् कॊण्डान् 1034

पूवुम्–सुमन और; पू निऱ–पुष्प-वर्ण (शुद्ध); अयित्तियुम्–चावल; तीपमुम्–दीपाराधन; पुकैयुम्–धूप; तावु इल्–निर्दोष; पावनैयाल्–(भक्ति) भावना के साथ; कॊटुत्तु–पूजा में चढ़ाकर; अरुच्चनै–अर्चना; चमैत्तान्–करके; तेवु उलकम् यावैयुम्–देवताओं और सारे लोकों को; तिरुत्तिय–जिन्होंने क्रम से बनाया उन; तॅय्वक् कोविन्–देवनायक; नान् मुकन्–चतुर्मुख ब्रह्माजी के; पटैक्कलम्–अस्त्र को; तटम् कैयिल्–अपने विशाल हाथ में; कॊण्टान्–ले लिया। १०३४

इन्द्रजित् ने उस अस्त्र की विधिवत पूजा की। पुष्प, शुद्ध चावल, दीप, सुगन्धित धूप आदि को निर्दोष भावना के साथ चढ़ाया। फिर यथोचित अर्चना की। देवों और चराचर सभी प्रपञ्च के सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के अस्त्र को उसने अपने विशाल हाथ में लिया। १०३४

कॊण्डु कॊऱ्ऱवॅञ् जिलैनॅडु नाणॊडु कूट्टिच्
चण्ड वेहत्त मारुदि तोळॊडुञ् जार्त्ति
मण्डु ळङ्गिड मादिरन् दुळङ्गिड मदितोय्
विण्डु ळङ्गिड मेरुवुन् दुळङ्गिड विट्टान् 1035

कॊण्टु–लेकर; कॊऱ्ऱम्–विजयदायक; वॅम् चिलै–भयंकर धनु की; नॅटु नाणॊटु कूट्टि–लम्बी डोरी से लगाकर; चण्ट वेकत्त–प्रचण्ड वेगवान; मारुति–मारुति के; तोळ् ऑटुम्–कन्धों को; चार्त्ति–निशाना बनाकर; मण् तुळङ्किट–

भूमि को कँपाते हुए; मातिरम् तुळङ्किट-दिशाओं को कँपाते हुए; मति तोय्-चन्द्राश्रय; विण् तुळङ्किट-आकाश काँप जाए, ऐसा; मेरुवुम् तुळङ्किट-मेरु भी काँप उठे, ऐसा; विट्टान्-प्रेरित किया (इन्द्रजित्) ने। १०३५

उसने उसे हाथ में लेकर विजयदायी और कठोर धनु की लम्बी डोरी पर रखकर संधान किया, प्रचण्डवेग मारुति के कन्धों का निशाना लगाया और प्रेरित किया, जिससे भूमि काँपी, दिशाएँ काँपीं और चन्द्राश्रय आकाश काँपा तथा मेरुपर्वत भी काँप उठा। १०३५

तणिप्प रुम्बॅरुम् बडैक्कलन् दळ्ळुमिळ् तरुहण्
पणिक्कु लङ्गळुक् करशिन् दुरुवित्तैप् पट्ट्रित्
तुणिक्क वुट्ट्रुयर् कलुळ्ळुन् दुणुक्कुरच् चुट्ट्रिप्
पिणित्त दप्पॅरु मारुदि तोळ्हळैप् पिरङ्ग 1036

तणिप्पु अरुम्-अवार्य; पॅरुम् पटैक्कलम्-बड़े अस्त्र ने; तळल् उमिळ्-अग्नि-वर्षक; तरुकण्-क्रूर; पणि कुलङ्कळुक्कु-सर्पकुल के; अरचित्तु-राजा का; उरुवित्तै पट्ट्रि-रूप लेकर; तुणिक्क उट्ट्रु-उसे खण्डित करने का विचार लेकर; उयर् कलुळ्ळतुम्-उठनेवाला गरुड़ भी; तुणुक्कु उर-भयभीत हो, ऐसा; अ पॅरु मारुति-उस विश्वरूप मारुति के; तोळ्कळै-कन्धों को; पिरङ्क चुट्ट्रि-खूब लपेट कर; पिणित्ततु-बाँध गया। १०३६

उस अवार्य और उत्कृष्ट ब्रह्मास्त्र ने अग्निवर्षक और हिंस्र सर्पराज का रूप लेकर, उसको भग्न करने के लिए उठ आये गरुड़ को भी भयभीत करते हुए आकर, उस विराट्रूप मारुति के कन्धों से लपेटकर उन्हें बाँध दिया। १०३६

तिण्णॅन् याक्कैयैत् तिशैमुहन् पडैशॅन्ड्रु तिरुह
अण्णन् मारुदि यन्ड्रुतन् पिन्शॅन्ड्र वरत्तिन्
कण्णि नीरॊडुङ् गनहतो रणत्तॊडुङ् गडैनाळ्
तण्णॅन् मामदि कोळॊडुञ् जायन्दॅनच् चायन्दान् 1037

तिचै मुकन् पटै-दिशामुख (ब्रह्मा) का अस्त्र; तिण् ॲन्-सुदृढ़; याक्कैयै-शरीर को; चॅन्ड्रु तिरुक-जाकर लपेटकर दुःख देने लगा तो; अण्णल्-मान्य महावीर; अन्ड्रु-उस दिन; तन् पिन् चॅन्ड्र-उसके पीछे गये; अऱत्तिन्-धर्म के; कण्णिन् नीरॊटुम्-नेत्र के अश्रुजल के साथ; कटै नाळ्-युगान्त के दिन; तण् ॲन्-शीतल; मा मति-श्रेष्ठ चन्द्र; कोळ् ऑटुम्-परिवेश के साथ; चायन्तु ॲन-गिरा जैसे; कनक तोरणत्तु ऑटुम्-कनकतोरण के साथ; चायन्तान्-गिर गया। १०३७

दिशामुख ब्रह्मा के अस्त्र ने हनुमान के बहुत सुदृढ़ शरीर को लपेट कर पीड़ा दी। वह युगान्त में परिवेश के साथ गिरनेवाले शीतल और बड़े चन्द्र के समान कनक-तोरण के साथ नीचे गिर गया; जिससे उसकी सहायता लेकर लंका में आये धर्म की आँखों से आँसू बह निकले। १०३७

वेरु शॅय्वदोर् वित्तैपिरि दिन्मैयिन् विरिञ्जन्
मारि लाप्पॅरुम् बडैक्कलन् दॊडुप्पदे मदित्तान् 1033

एरु तेर् इलन्—सवार होने के लिए रथ न रहा; ऍतिर् निऱ्कुम्—सामने टिकने की; उरन् इलन्—शक्ति न रही; ऍरियिल् चीऱ—आग के समान बिफरकर; वॅम् चितम् तिरुकितन्—भयानक कोप में बढ़कर; अन्तरम् तिरिवान्—अन्तरिक्ष में घूमता हुआ; वेरु चॅय्वतु—दूसरा करने; ओर् वित्तै—कोई काम; पिऱितु इन्मैयिन्—फिर न रहा, इसलिए; विरिञ्चन्—विरंचि के; मारु इला—अप्रतीकार्य; पॅरुम् पटैक्कलम्—बड़ा अस्त्र; तॊटुप्पते—चलाना ही; मतित्तान्—सोचा। १०३३

अब इन्द्रजित् रथहीन हो गया। समक्ष टिकने की शक्ति भी उसकी नहीं रही। भभक उठनेवाली अग्नि के समान उसका क्रोध बढ़ गया। अन्तरिक्ष में चलते हुए इन्द्रजित् ने अनुभव किया, अब मेरे करने योग्य कोई कार्य नहीं। इसलिए उसने अप्रतिरुद्ध ब्रह्मास्त्र को चलाने की बात सोच ली। १०३३

पूवुम् बूनिऱ वयिऱियुन् दीबमुम् बुहैयुम्
ताविल् पावनै याऱ्कॊडुत् तरुच्चनै शमैत्तान्
तेवि यावैयु मुलहमुन् दिरुत्तिय दॅय्वक्
कोवि नान्मुहन् पडैक्कलन् दडक्कैयिऱ् कॊण्डान् 1034

पूवुम्—सुमन और; पू निऱ—पुष्प-वर्ण (शुद्ध); अयितियुम्—चावल; तीपमुम्—दीपाराधन; पुकैयुम्—धूप; तावु इल्—निर्दोष; पावनैयाल्—(भक्ति) भावना के साथ; कॊटुत्तु—पूजा में चढ़ाकर; अरुच्चनै—अर्चना; चमैत्तान्—करके; तेवु उलकम् यावैयुम्—देवताओं और सारे लोकों को; तिरुत्तिय—जिन्होंने क्रम से बनाया उन; तॅय्वक् कोविन्—देवनायक; नान् मुकन्—चतुर्मुख ब्रह्माजी के; पटैक्कलम्—अस्त्र को; तटम् कैयिल्—अपने विशाल हाथ में; कॊण्टान्—ले लिया। १०३४

इन्द्रजित् ने उस अस्त्र की विधिवत पूजा की। पुष्प, शुद्ध चावल, दीप, सुगन्धित धूप आदि को निर्दोष भावना के साथ चढ़ाया। फिर यथोचित अर्चना की। देवों और चराचर सभी प्रपञ्च के सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के अस्त्र को उसने अपने विशाल हाथ में लिया। १०३४

कॊण्डु कॊऱ्ऱवॅञ् जिलैनॆडु नाणॊडु कूट्टिच्
चण्ड वेहत्त मारुदि तोळॊडुञ् जाऱ्त्ति
मण्डु ळङ्गिड मादिरन् दुळङ्गिड मदितोय्
विण्डु ळङ्गिड मेरुवुन् दुळङ्गिड विट्टान् 1035

कॊण्टु—लेकर; कॊऱ्ऱम्—विजयदायक; वॅम् चिलै—भयंकर धनु की; नॆटु नाणॊटु कूट्टि—लम्बी डोरी से लगाकर; चण्ट वेकत्त—प्रचण्ड वेगवान; मारुति—मारुति के; तोळ् ऒटुम्—कन्धों को; चाऱ्त्ति—निशाना बनाकर; मण् तुळङ्किट—

भूमि को कँपाते हुए; मातिरम् तुळङ्किट–दिशाओं को कँपाते हुए; मति तोय्–चन्द्राश्रय; विण् तुळङ्किट–आकाश काँप जाए, ऐसा; मेरुवुम् तुळङ्किट–मेरु भी काँप उठे, ऐसा; विट्टान्–प्रेरित किया (इन्द्रजित्) ने। १०३५

उसने उसे हाथ में लेकर विजयदायी और कठोर धनु की लम्बी डोरी पर रखकर संधान किया, प्रचण्डवेग मारुति के कन्धों का निशाना लगाया और प्रेरित किया, जिससे भूमि काँपी, दिशाएँ काँपीं और चन्द्राश्रय आकाश काँपा तथा मेरुपर्वत भी काँप उठा। १०३५

तणिप्प रुम्बॅरुम् बडैक्कलन् दळ्ळुमिळ् तरुहण्
पणिक्कु लङ्गळुक् करशित्त दुरुवित्तैप् पऱ्ऱित्
तुणिक्क वुऱ्ऱुयर् कलुळ्ळनुन् दुणुक्कुऱ्च् चुऱ्ऱिप्
पिणित्त दप्पॅरु मारुदि तोळ्हळेप् पिऱङ्ग 1036

तणिप्पु अरुम्–अवार्य; पॅरुम् पटैक्कलम्–बड़े अस्त्र ने; तळ्ळल् उमिळ्–अग्नि-वर्षक; तरुकण्–क्रूर; पणि कुलङ्कळुक्कु–सर्पकुल के; अरचित्तु–राजा का; उरुवित्तै पऱ्ऱि–रूप लेकर; तुणिक्क उऱ्ऱु–उसे खण्डित करने का विचार लेकर; उयर् कलुळ्ळनुम्–उठनेवाला गरुड़ भी; तुणुक्कु उऱ–भयभीत हो, ऐसा; अ पॅरु मारुति–उस विश्वरूप मारुति के; तोळ्कळै–कन्धों को; पिऱङ्क चुऱ्ऱि–खूब लपेट कर; पिणित्ततु–बाँध गया। १०३६

उस अवार्य और उत्कृष्ट ब्रह्मास्त्र ने अग्निवर्षक और हिंस्र सर्पराज का रूप लेकर, उसको भग्न करने के लिए उठ आये गरुड़ को भी भयभीत करते हुए आकर, उस विराट्रूप मारुति के कन्धों से लपेटकर उन्हें बाँध दिया। १०३६

तिण्णॅन् याक्कैयैत् तिशैमुहन् पडैशॅन्ऱु तिरुह
अण्णल् मारुदि यन्ऱुतन् पिन्शॅन्ऱ वऱत्तिन्
कण्णि नीरॊडुङ् गन्नहतो रणत्तॊडुङ् गडैनाळ्
तण्णॅन् मामदि कोळॊडुञ् जायुन्दॅनच् चायुन्दान् 1037

तिचै मुकन् पटै–दिशामुख (ब्रह्मा) का अस्त्र; तिण् ऍन्–सुदृढ़; याक्कैयै–शरीर को; चॅन्ऱु तिरुक–जाकर लपेटकर दुःख देने लगा तो; अण्णल्–मान्य महावीर; अन्ऱु–उस दिन; तन् पिन् चॅन्ऱ–उसके पीछे गये; अऱत्तिन्–धर्म के; कण्णिन् नीरॊटुम्–नेत्र के अश्रुजल के साथ; कटै नाळ्–युगान्त के दिन; तण् ऍन्–शीतल; मा मति–श्रेष्ठ चन्द्र; कोळ् ऒटुम्–परिवेश के साथ; चायन्तु ऍन–गिरा जैसे; कनक तोरणत्तु ऒटुम्–कनकतोरण के साथ; चायन्तान्–गिर गया। १०३७

दिशामुख ब्रह्मा के अस्त्र ने हनुमान के बहुत सुदृढ़ शरीर को लपेट कर पीड़ा दी। वह युगान्त में परिवेश के साथ गिरनेवाले शीतल और बड़े चन्द्र के समान कनक-तोरण के साथ नीचे गिर गया; जिससे उसकी सहायता लेकर लंका में आये धर्म की आँखों से आँसू बह निकले। १०३७

शायन्द मारुदि शदुमुहऩ् पडैयॆऩुम् दऩ्मै
आयन्दु मऱ्ऱिद ऩाणैयै यवमदित् तहऱ्ऱल्
एयन्द दऩ्ऱॆऩ वॆण्णिऩऩ् कण्मुहिऴ्त् तिरुन्दाऩ्
ओयन्द दामिवऩ् वलियॆऩ वरक्कऩ्वन् दुऱ्ऱाऩ् 1038

चायन्त मारुति–नीचे (जो) गिरा (वह) मारुति; चतुमुकऩ् पटै–चतुर्मुख का अस्त्र; ऎऩुम् तऩ्मै–यह तथ्य; आयन्तु–जानकर; इतऩ् आणैयै–इसके शासन से; अवमतित्तु–अवज्ञा करके; अकल्तल्–हटना; एयन्ततु अऩ्ऱु–उचित नहीं; ऎऩ ऎण्णिऩऩ्–ऐसा सोचा; कण् मुकिऴ्त्तु–और आँखें बन्द किये; इरुन्ताऩ्–रहा; अरक्कऩ्–राक्षस; इवऩ् वलि–इसका बल; ओयन्ततु आम्–समाप्त हो गया; ऎऩ–ऐसा सोचकर; वन्तु उऱ्ऱाऩ्–पास आ पहुँचा। १०३८

हनुमान गिरा तो उसने, चतुर्मुख का अस्त्र ही मेरे ऊपर लगा है —यह तथ्य जान लिया। उसने सोचा कि इसकी अवज्ञा करना उचित नहीं है। इसलिए वह आँखें बन्द किए चुप रहा। राक्षस इन्द्रजित् ने सोचा कि उसका बल समाप्त हो गया। वह उसके पास आया। १०३८

उऱ्ऱ कालैयि लुयिर्हॊडु तिशैदॊऱु मॊदुङ्गि
अऱ्ऱ नोक्किऩर् निऱ्किऩ्ऱ वाळॆयिऱ् ऱरक्कर्
शुऱ्ऱुम् वन्दुडल् शुऱ्ऱिय तॊळैयॆयिऱ् ऱरवैप्
पऱ्ऱि यीर्त्तऩ रार्त्तऩर् तॆऴित्तऩर् पलराल् 1039

उऱ्ऱ कालैयिल्–आ पहुँचने पर; उयिर् कॊटु–प्राण लेकर; तिचै तॊऱुम् ऒतुङ्कि–दिशा-दिशा में हटकर; अऱ्ऱम् नोक्किऩर्–मौक़ा देखते हुए; निऱ्किऩ्ऱ–जो खड़े रहे वे; वाळ् ऎयिऱु अरक्कर्–श्वेत दाँतों के राक्षस; पलर्–अनेक; चुऱ्ऱुम् वन्तु–चारों ओर आकर; उटल् चुऱ्ऱिय–(हनुमान के) शरीर को लपेटे रहे; तॊळै ऎयिऱु अरवै–रन्ध्र-सहित दाँत वाले सर्प को (सर्परूप ब्रह्मास्त्र को); पऱ्ऱि–पकड़कर; ईर्त्तऩर्–खींचते (हुए); आर्त्तऩर्–गरजे; तॆऴित्तऩर्–डाँटा। १०३९

जब इन्द्रजित् उसके पास आया, तब श्वेत दाँतों वाले अनेक राक्षस भी घेर आये, जो अपने प्राण बचा लेकर चारों दिशाओं में इधर-उधर जा छिपे थे और मौक़े की ताक में रहते थे। उन्होंने रन्ध्रसहित दाँतों वाले सर्प के रूप में हनुमान को, जो लपेटे रहा, उस ब्रह्मास्त्र को पकड़कर खींचा; गर्जन और तर्जन किया। १०३९

कुरक्कु नल्वलङ् गुलैन्दवॆऩ् ऱावलङ् गॊट्टि
इरक्कु माऩह रॆऱिकड लॊत्तदॆम् मरुङ्गुम्
तिरक्कु माशुणम् वाशुहि यॊत्तदु तेवर्
अरक्क रॊत्तऩर् मन्दर मॊत्तऩऩ् ऩुमऩ् 1040

कुरक्कु–बन्दर का; नल् वलम्–अच्छा बल; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हो गया; ॲन्ऱु–कहकर; आवलम् कॊट्टि–शोर मचाते हुए; इरैक्कुम् मा नकर्–कोलाहल-पूर्ण वह बड़ा नगर; ॲऱ्ऱि कटल् ऑत्ततु–तरंगायमान समुद्र के समान रहा; ॲ मरुङ्कुम्–सब ओर; तिरैक्कुम्–लपेटकर कसनेवाला; माचुणम्–सर्प; वाचुकि ऑत्ततु–वासुकी-सम रहा; अरक्कर् तेवर् ऑत्तनर्–राक्षस देवों के समान लगे; अनुमन्–हनुमान; मन्तरम् ऑत्तनन्–मन्दर पर्वत-सा रहा। १०४०

सारी लंका नगरी ने कोलाहल मचाया कि हरि का अच्छा बल मिट गया। तब वह तरंगायमान सागर के समान रही। चारों ओर से हनुमान को जो लपेटे रहा, वह अस्त्र वासुकी के समान रहा। राक्षस देवों के समान रहे और हनुमान मन्दरपर्वत के समान रहा। (सारा मिलकर क्षीरसागर-मथन का दृश्य उपस्थित कर रहा था।)। १०४०

करुत्त माशुणङ् गनहमा मेनियैक् कट्ट
अऱत्तुक् काङ्गॊरु तनित्तुणै यानिन्ऱ वनुमन्
मऱत्तु मारुदम् बॊरुदनाळ् वाळरा वरशु
पुऱत्तुच् चुऱ्ऱिय मेरुमाल् वरैयैयुम् बोन्ऱान् 1041

करुत्त माचुणम्–(क्रुद्ध) काले सर्प (अस्त्र) के; कनक मा मेनियै–स्वर्णसंनिभ देह को; कट्ट–कसने पर; अऱत्तुक्कु–धर्म के; आङ्कु–वहाँ के; ऑरु तनि तुणै आ–एक अनुपम सहायक के रूप में; निन्ऱ अनुमन्–जो रहा वह हनुमान; मऱत्तु–सबल; मारुतम् पॊरुत नाळ्–पवन के प्रहार के समय; वाळ् अरा अरचु–उज्ज्वल सर्पराज (आदिशेष); पुऱत्तु चुऱ्ऱिय–जिसको चारों ओर से लपेटे रहा; मेरु माल् वरैयैयुम्–उस महामेरु के; पोन्ऱान्–समान भी रहा। १०४१

क्रुद्ध और काले (अस्त्र-) सर्प ने हनुमान के कनकवर्ण शरीर को खूब कस लिया। तब धर्म का अद्वितीय सहायक हनुमान उस मेरु के समान लगा, जिसको सर्पराज आदिशेष ने पवन की होड़ में चारों ओर से लपेटकर बाँध लिया था। १०४१

वन्दि रैत्तनर् मैन्दरु महळिरु मळैपोल्
अन्द रत्तिनुम् विशुम्बिनुन् दिशैतोऱु मार्प्पार्
मुन्दि युऱ्ऱदो रुवहैक्कोर् करैयिलै मॊळियिन्
इन्दि रत्तिणिप् पुण्डना ळॊत्तदव् विलङ्गै 1042

मैन्तरुम्–पुरुषों और; मकळिरुम्–स्त्रियों ने; वन्तु–आकर; इरैत्तनर्–शोर मचाया; मळै पोल्–मेघ-जैसे; अन्तरत्तितुम्–रिक्त स्थानों में और; विचुम्पितुम्–आकाश में; तिचै तोऱुम्–चारों दिशाओं में; आर्प्पार्–(रहकर) नर्दन करते; मुन्ति–सबसे पहले; उऱ्ऱतु ओर् उवकैक्कु–उन्हें जो हुआ उस आनन्द का; ओर् करै इल्लै–(एक) ठिकाना नहीं रहा; मॊळियिन्–कहना चाहें तो; अ इलङ्कै–वह

लंका; इन्तिरन्–(जिस दिन) इन्द्र; पिणिप्पु उण्ट–पकड़ा गया; नाळ् ऑत्ततु–उस दिन के समान रहा। १०४२

राक्षस तरुणों और तरुणियों ने आकर शोर मचाया; मेघों के समान दिशाओं और आकाश में उद्घोष किया। सबसे पहले, उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। किसी तरह उसको बताना हो तो कहना पड़ेगा कि लंका की स्थिति उस दिन की-सी रही, जिस दिन इन्द्र मेघनाद द्वारा बाँध लाया गया था। १०४२

12. पिणिविडु पडलम् (बन्धन-मुक्ति पटल)

ऍय्युमि तीरुमि ऍरिमिन् पोळुमिन्
कॉय्युमिन् कुडरिनैक् कूरु कूरुहळ्
शॅय्युमि तुलहिडैत् तेय्मिन् तिन्तुमिन्
उय्युमे लिल्लैनम् मुयिरॅन् ट्रोडुवार् 1043

ऍय्युमिन्–बाण चलाओ (इस पर); ईरुमिन्–(तलवार से) काटो; ऍरिमिन्–(भाले आदि) घुसेड़ो; पोळुमिन्–फोड़ो; कुटरित्तै कॉय्युमिन्–अँतड़ियों को निकालो; कूरु कूरुकळ–खण्ड-खण्ड; चॅय्युमिन्–बना लो; उलकु इटै–भूमि पर; तेय्मिन्–(डालकर) पीसो; तिन्तुमिन्–खाओ; उय्युम् एल्–जीवित रहेगा तो; नम् उयिर् इल्लै–हमारे प्राण नहीं (बचेंगे); ॲन्रु–कहते हुए; ओटुवार्–(हनुमान के पास) दौड़ते। १०४३

राक्षस ऐसे-ऐसे कहते दौड़ आये— इस पर बाण चलाओ; तलवार से काट लो। भाले घुसेड़ो। कुदाल आदि से फोड़ो। अँतड़ियों को नोच लो। उसे छिन्न-भिन्न कर दो। भूमि पर डालकर कुचलो। खा लो। अगर यह बच जायगा तो हमारी जानें नहीं बच रहेंगी। १०४३

मैत्तडङ् गण्णियर् मैन्दर् यावरुम्
पैत्तलै यरवॅनक् कनन्ऱु पैतलै
इत्तनै पॊऴुदुहॊण् डिरुप्प दोवॅना
मॊय्त्तनर् कॊलैशॅय मुयल्हिन् ऱार्शिलर् 1044

मै–अंजनयुक्त; तटम् कण्णियर्–बड़ी आँखों वाली राक्षस-स्त्रियाँ और; मैन्तर्–राक्षस युवक; यावरुम्–सभी; पै तलै अरवु–फन-सहित साँप; ॲन–जैसे; कनन्ऱु–कोप करके; पैतलै–इस छोकरे को; इत्तनै पॊऴुतु–इतनी देर; कॊण्टु–(जीवित) रखकर; इरुप्पतो–रहना है क्या; ॲना–कहकर; मॊय्त्तनर्–उस पर टूट पड़े; चिलर्–कुछ; कॊलै चॅय–हत्या करने का; मुयल्किन्ऱार्–प्रयत्न करते हैं। १०४४

अञ्जन-लगी विशाल आँखों वाली राक्षसरमणियाँ और तरुण सभी

फन वाले सर्प के समान फुफकारते आये। 'इस छोकरे को इतनी देर जीवित रहने दिया जाय क्यों ?' यह प्रश्न करते हुए वे सब उसके चारों ओर मिल आये। कुछ उसको मारने का भी प्रयास करने लगे। १०४४

नच्चडै पडैहळा ऩलियु मीट्टदो
वच्चिर वुडऩ्मऱ्ि कडलिऩ् वाय्मडुत्
तुच्चियि ऩळुत्तुमि ऩुरुत्त दिऩ्ऱॆऩिल्
किच्चिडै यिडुमॆऩक् किळक्किऩ् ऱार्शिलर् 1045

चिलर्–कुछ; नच्चु अटै–विषैले; पटैकळाल्–हथियारों द्वारा; नलियुम् ईट्टतो–मिटनेवाला है क्या; वच्चिर उटल्– वज्र-से शरीर को; मऱ्ि कटलिऩ् वाय्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर में; मटुत्तु–डुबोकर; उच्चियिल् उरुत्तु–सिर को पकड़कर; अळुत्तुमिऩ्–दबाओ; अतु इऩ्ऱु ऎऩिऩ्–वह नहीं होगा तो; किच्चु इटै–अग्नि में; इटुम्–डालो; ऎऩ–ऐसा; किळक्किऩ्ऱार्–कहते। १०४५

कुछ राक्षसों ने संशय उठाया कि क्या यह विषैले अस्त्रों द्वारा मारा जा सकेगा ? इसलिए उनका सुझाव था कि इसके वज्र-सम कठोर शरीर को प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र में फेंककर सिर दबाकर डुबो दो। अगर ऐसा नहीं हो तो आग में डाल दो। १०४५

ऎऩ्दैयै यॆम्बियै यॆम्मु ऩोऩ्ऱ्हळैत्, तऩ्दऩै पोहॆऩत् तडुक्किऩ् ऱार्पलर्
अऩ्दरत् तमरर्त माणै यालिवऩ्, वऩ्दॆऩ् ऱुयिर्हॊळ मरुहि ऩार्पलर् 1046

पलर्–और अनेक; ऎऩ्तैयै–हमारे पिताओं को; ऎम्पियै–हमारे छोटे भाइयों को; ऎम् मुऩ्ऩोर्कळै–हमारे ज्येष्ठ भ्राताओं को; तऩ्ततै–दे दो, बाद; पोकु–जाओ; ऎऩ्ऩा–कहकर; तटुक्किऩ्ऱार्–रोकते हैं; पलर्–अनेक; अन्तरत्तु–आकाशलोक के; अमरर् तम्–अमरों की; आणैयाल्–आज्ञा से; इवऩ् वन्ततु–यह आया; ऎऩ्ऱु–कहकर; उयिर् कॊळ–उसके प्राण हरने; मरुकिऩार्–आतुर हुए। १०४६

अनेक राक्षसों ने उसे यह कहते हुए रोका कि हमारे पिता को लौटा दो, तभी जाओ; हमारे छोटे भाई को, हमारे बड़े भाई को लौटा दो, तभी जा सको। अनेक ने कहा कि यह व्योम के देवों की आज्ञा से आया है। वे उसके प्राण हरने को आतुर हुए। १०४६

ओङ्गलम् बॆरुवलि युयिरि ऩऩ्बरै, नीङ्गल मिऩ्ऱॊडु नीङ्गि ऩामिऩि
एङ्गल मिवऩ्शिरत् तिरुन्द लाऱ्ऱिरु, वाङ्गल मॆऩ्ऱळु माद रार्पलर् 1047

ओङ्कल्–पर्वत के सदृश; अम् पॆरु वलि–सुन्दर और अतिबलिष्ठ; उयिरिऩ् अऩ्परै–प्राण-सम प्यारों को; नीङ्कलम्–हम छोड़कर नहीं रहे थे; इऩ्ऱु ऒटु नीङ्किताम्–आज से वियुक्त हो गये; इनि एङ्कलम्–अब आर्त नहीं होंगे; इवऩ् चिरत्तु इरुन्तु अलाल्–इसके सिर पर रहकर ही, अन्यथा; तिरु वाङ्कलम्–अपने

मंगलसूत्रों (अहिवात के चिह्नों) को अलग नहीं करेंगे; ऎऩ्ऱु–ऐसा कहकर; अऴुम्–रोनेवाली; मातरार्–स्त्रियाँ; पलर्–अनेक रहीं। १०४७

अनेक राक्षस-स्त्रियाँ रोयीं। पर्वत-सदृश सुन्दर और अतिबली हमारे प्राणप्रिय पतियों से हम कभी अलग नहीं हुई थीं। आज से हम वियुक्त हो गयीं। अब हम आतुर नहीं होंगी। पर इसके सिर को ही पीठ बनाकर उस पर बैठेंगी और मंगलसूत्र निकालेंगी। अन्यथा नहीं। १०४७

कॊण्डऩ रॆदिर्शॆलुङ् गॊऱ्ऱ मानहर्, अण्डमुऱ् ऱदुनॆडि दार्क्कु मार्प्पदु
कण्डमुऱ् ऱुऴवरुङ् गणवर्क् केङ्गिय, कुण्डल मुहत्तियर्क् कुवहै कूरवे 1048

कॊण्टऩर्–(हनुमान को) ले जानेवालों के; ऎतिर् चॆलुम्–सामने से आनेवाले; कॊऱ्ऱ मा नकर्–विजयी बड़े नगर के (राक्षसों) ने; नॆटितु आर्क्कुम्–उच्च घोष जो निकाला; आर्प्पु अतु–वह शोर; कण्टम् उऱ्ऱु उऴ–(हनुमान द्वारा) छिन्न-भिन्न हुए; अरुम् कणवर्क्कु एङ्किय–अपने पतियों के लिए आर्त; कुण्टल मुकत्तियर्क्कु–कर्णकुण्डलालंकृत मुखों वालियों को; उवकै कूर–आनन्द दिलाते हुए; अण्टम् उऱ्ऱतु–अण्ड भर में व्यापा। १०४८

हनुमान को खींचते ले जा रहे थे लोग। तब उनके सामने से जो राक्षस तमाशबीन बनकर आये थे, उन्होंने घोर आनन्दरव उठाया। वह घोष सारे अण्ड में फैला और उसे सुनकर युद्ध में आहत पतियों के लिए तरसनेवाली कर्णकुण्डलालंकृत मुखों की राक्षसी स्त्रियाँ मुदित हुईं। १०४८

वडियुडैक् कऩऩ्पडै वयवर् माल्करि
कॊडियुडैत् तेर्परि कॊण्डु वीशलिऩ्
इडिपडच् चिदैन्दमाल् वरैयि ऩिल्लॆलाम्
पॊडिपडक् किडन्दऩ कण्डु पोयिऩाऩ् 1049

वटि उटै–तीक्ष्ण; कऩल् पटै–अनल-सम आयुधधारी; वयवर् वीरों; माल् करि–बड़े गजों; कॊटि उटै तेर्–ध्वजायुक्त रथों; परि–अश्वों को; कॊण्टु वीचलिऩ्–(हनुमान ने) उठाकर फेंका था, इसलिए; इटि पट चितैन्त–प्रहार पाकर जो टूटे थे; माल् वरैयिऩ्–बड़े पर्वतों-से; इल् ऎलाम्–सभी घर; पॊटि पट–चूर होकर; किटन्तऩ–जो पड़े रहे वह; कण्टु–देखते हुए; पोयिऩाऩ्–हनुमान जाता रहा। १०४९

हनुमान भी बन्धन में रहकर तमाशा देखता जा रहा था। उसने पहले तीक्ष्ण और अग्निवर्षक हिंस्र हथियारधारी वीरों, बड़े नागों, ध्वजा-सहित रथों और अश्वों को उठा ले फेंका था। वे सब जाकर बड़े पर्वतों के समान प्रासादों को चूर कर गये थे। उस चूर्ण को देखते हुए वह गया। १०४९

मुयिऱलैत् तॆऴुमुदु मरत्तिऩ् मॊय्म्बुतोळ्
कयिऱलैप् पुण्डदु कण्डुङ् गाण्गिला
तॆयिऱलैत् तॆऴुमिद ऴरक्क रेऴैयर्
वयिऱलैत् तिरियलिऩ् मयङ्गि ऩार्पलर् 1050

मुयिऱ्–माटे (लाल चींटे); अलैत्तु ऎऴु–संकट देते हुए जिस पर चढ़ते हैं; मुदु मरत्तिऩ्–उस वृद्ध तरु के समान; मॊय्म्पु तोळ–बलवान कन्धों को; कयिऱ् अलैप्पु उण्टतु कण्टुम्–रस्सी पीड़ा देती रहीं, वह देखकर भी; काण्किलावु–विना देखे (डर के कारण); ऎयिऱ् अलैत्तु ऎऴुम्–दाँत के किटकिटाने से बाहर निकले हुए; इतऴ्–ओठों वाली; अरक्कर् एऴैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; वयिऱ् अलैत्तु–पेट पीटकर; इरियलिऩ्–अस्त-व्यस्त भागीं, इसलिए; पलर् मयङ्किऩार्–अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

एक वृद्ध तरु को माटे (लाल चींटे) जैसे रस्सी हनुमान को बाँधकर संकट देती रही। राक्षसियाँ देखना चाहतीं पर देख नहीं सकीं। उनके दाँत किटकिटाते और ओंठ बाहर निकल आते। वे अपना पेट पीटती हुई तितर-बितर भाग गयीं। अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

आर्प्पुऱ वञ्जिन रडङ्गि ऩार्पलर्
पोर्प्पुऱच् चॆयलिऩैप् पुहल्हिऩ् ऱार्पलर्
पार्प्पुऱप् पार्प्पुऱप् पयत्ति ऩार्पदॆत्
तूर्प्पुऱत् तिरियलुऱ् ऱोडु वार्पलर् 1051

पलर्–अनेक; आर्प्पु उऱ–अधिक कोलाहल के शोर के उठने से; अञ्चिऩर्–डरकर; अटङ्किऩार्–चुप हो गये; पलर्–अनेक; पोर्–युद्ध में; पुऱ चॆयलिऩै–(हनुमान के) वीरता के कृत्यों को; पुकल्किऩ्ऱार्–बतलाते; पलर्–अन्य अनेक; पार्प्पु उऱ पार्प्पु उऱ–ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों; पयत्तिऩाल्–डर से; पतैत्तु–थर्राकर; ऊर् पुऱत्तु–नगर के बाहर की ओर; इरियल् उऱ्ऱु–अस्त-व्यस्त होकर; ओटुवार्–भागते। १०५१

लंका में जो तुमुल शोर मचा, उसे सुनकर अनेक जन स्तब्ध रहे। अनेक हनुमान के युद्ध में साहसिक कार्यों का बखान करते रहे। अनेक हनुमान को ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों भयाभिभूत होकर नगर के बाहर की ओर, अस्त-व्यस्त भागे। १०५१

काऩ्दुऱु कदऴॆयिऱ् ऱरविऩ् कट्टॊरु
पूऩ्दुणर् शेर्त्तॆऩप् पॊलियुम् वाण्मुहम्
तेऩ्दुऱु पॊरुळ्पॆऱ वॆण्णिच् चॆय्युमिऩ्
वेऩ्दुऱल् पऴुदॆऩ विळम्बु वार्शिलर् 1052

कान्तु उऱु–जलानेवाले; कतऴ् ऎयिऱु–हिंस्र दाँतों वाले; अरविऩ्–सर्प का; कट्टु–बन्धन; ऒरु पूम् तुणर्–एक पुष्पमाला; चेर्त्तु ऎऩ–द्वारा बाँधा

मंगलसूत्रों (अहिवात के चिह्नों) को अलग नहीं करेंगे; अॅन्ऱु–ऐसा कहकर; अऴुम्–रोनेवाली; मातरार्–स्त्रियाँ; पलर्–अनेक रहीं। १०४७

अनेक राक्षस-स्त्रियाँ रोयीं। पर्वत-सदृश सुन्दर और अतिबली हमारे प्राणप्रिय पतियों से हम कभी अलग नहीं हुई थीं। आज से हम वियुक्त हो गयीं। अब हम आतुर नहीं होंगी। पर इसके सिर को ही पीठ बनाकर उस पर बैठेंगी और मंगलसूत्र निकालेंगी। अन्यथा नहीं। १०४७

कॉण्डऩ रॅदिर्शॅलुङ् गॉऱ्ऱ मानहर्, अण्डमुऱ् ऱदुनॅडि दार्क्कु मार्प्पदु
कण्डमुऱ् ऱुऴवरुङ् गणवर्क् केङ्गिय, कुण्डल मुहत्तियर्क् कुवहै कूरवे 1048

कॉण्टऩर्–(हनुमान को) ले जानेवालों के; अॅतिर् चॅलुम्–सामने से आनेवाले; कॉऱ्ऱ मा नकर्–विजयी बड़े नगर के (राक्षसों) ने; नॅटितु आर्क्कुम्–उच्च घोष जो निकाला; आर्प्पु अतु–वह शोर; कण्टम् उऱ्ऱु उऴ–(हनुमान द्वारा) छिन्न-भिन्न हुए; अरुम् कणवर्क्कु एङ्किय–अपने पतियों के लिए आर्त; कुण्टल मुकत्तियर्क्कु–कर्णकुण्डलालंकृत मुखों वालियों को; उवकै कूर–आनन्द दिलाते हुए; अण्टम् उऱ्ऱतु–अण्ड भर में व्यापा। १०४८

हनुमान को खींचते ले जा रहे थे लोग। तब उनके सामने से जो राक्षस तमाशबीन बनकर आये थे, उन्होंने घोर आनन्दरव उठाया। वह घोष सारे अण्ड में फैला और उसे सुनकर युद्ध में आहत पतियों के लिए तरसनेवाली कर्णकुण्डलालंकृत मुखों की राक्षसी स्त्रियाँ मुदित हुईं। १०४८

वडियुडैक् कनऱ्पडै वयवर् माल्करि
कॉडियुडैत् तेर्परि कॉण्डु वीशलिऩ्
इडिपडच् चिदैन्दमाल् वरैयि ऩिल्लॅलाम्
पॉडिपडक् किडन्दऩ कण्डु पोयिऩाऩ् 1049

वटि उटै–तीक्ष्ण; कऩल् पटै–अनल-सम आयुधधारी; वयवर् वीरों; माल् करि–बड़े गजों; कॉटि उटै तेर्–ध्वजायुक्त रथों; परि–अश्वों को; कॉण्टु वीचलिऩ्–(हनुमान ने) उठाकर फेंका था, इसलिए; इटि पट चितैन्त–प्रहार पाकर जो टूटे थे; माल् वरैयिऩ्–बड़े पर्वतों-से; इल् ॲलाम्–सभी घर; पॉटि पट–चूर होकर; किटन्तऩ–जो पड़े रहे वह; कण्टु–देखते हुए; पोयिऩाऩ्–हनुमान जाता रहा। १०४९

हनुमान भी बन्धन में रहकर तमाशा देखता जा रहा था। उसने पहले तीक्ष्ण और अग्निवर्षक हिंस्र हथियारधारी वीरों, बड़े नागों, ध्वजा-सहित रथों और अश्वों को उठा ले फेंका था। वे सब जाकर बड़े पर्वतों के समान प्रासादों को चूर कर गये थे। उस चूर्ण को देखते हुए वह गया। १०४९

मुयिऱलैत् तॅऴुमुदु मरत्तिऩ् मॊय्म्बुतोळ्
कयिऱलैप् पुण्डदु कण्डुङ् गाण्गिला
तॅयिऱलैत् तॅऴुमिद ऴरक्क रेऴैयर्
वयिऱलैत् तिरियलिऩ् मयङ्गि ऩार्पलर् 1050

मुयिऱु–माटे (लाल चींटे); अलैत्तु ऍऴु–संकट देते हुए जिस पर चढ़ते हैं; मुतु मरत्तिऩ्–उस वृद्ध तरु के समान; मॊय्म्पु तोळ्–बलवान कन्धों को; कयिऱु अलैप्पु उण्टतु कण्टुम्–रस्सी पीड़ा देती रहीं, वह देखकर भी; काण्किलातु–विना देखे (डर के कारण); ऍयिऱु अलैत्तु ऍऴुम्–दाँत के किटकिटाने से बाहर निकले हुए; इतऴ्–ओठों वाली; अरक्कर् एऴैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; इरियलिऩ्–अस्त-व्यस्त भागीं, इसलिए; पलर् मयङ्किऩार्–अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

एक वृद्ध तरु को माटे (लाल चींटे) जैसे रस्सी हनुमान को बाँधकर संकट देती रही। राक्षसियाँ देखना चाहतीं पर देख नहीं सकीं। उनके दाँत किटकिटाते और ओंठ बाहर निकल आते। वे अपना पेट पीटती हुई तितर-बितर भाग गयीं। अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

आर्प्पुऱ वञ्जिऩ रडङ्गि ऩार्पलर्
पोर्प्पुऱच् चॅयलिऩैप् पुहऌहिऩ् ऱार्पलर्
पार्प्पुऱप् पार्प्पुऱप् पयत्ति ऩाऱ्पवैत्
तूर्प्पुऱत् तिरियलुऱ् ऱोडु वार्पलर् 1051

पलर्–अनेक; आर्प्पु उऱ–अधिक कोलाहल के शोर के उठने से; अञ्चिऩर्–डरकर; अटङ्किऩार्–चुप हो गये; पलर्–अनेक; पोर्–युद्ध में; पुऱ चॅयलिऩै–(हनुमान के) वीरता के कृत्यों को; पुकऌकिऩ्ऱार्–बतलाते; पलर्–अन्य अनेक; पार्प्पु उऱ पार्प्पु उऱ–ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों; पयत्तिऩाल्–डर से; पतैत्तु–थर्राकर; ऊर् पुऱत्तु–नगर के बाहर की ओर; इरियल् उऱ्ऱु–अस्त-व्यस्त होकर; ओटुवार्–भागते। १०५१

लंका में जो तुमुल शोर मचा, उसे सुनकर अनेक जन स्तब्ध रहे। अनेक हनुमान के युद्ध में साहसिक कार्यों का बखान करते रहे। अनेक हनुमान को ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों भयाभिभूत होकर नगर के बाहर की ओर, अस्त-व्यस्त भागे। १०५१

काऩ्ऱुऱु कदऴॆयिऱ् ऱरविऩ् कट्टॊरु
पूऩ्ऱुणर् शेर्त्तॆऩप् पॊलियुम् वाण्मुहम्
तेऩ्ऱुऱु पॊरुळ्पॆऱ वॆण्णिच् चॆय्युमिऩ्
वेऩ्ऱुऱल् पऴुदॆऩ विळम्बु वार्शिलर् 1052

काऩ्ऱु उऱु–जलानेवाले; कतऴ् ऍयिऱ्ऱु–हिंस्र दाँतों वाले; अरविऩ्–सर्प का; कट्टु–बन्धन; ऒरु पूम् तुणर्–एक पुष्पमाला; चेर्त्तु ऍऩ–द्वारा बाँधा

गया हो जैसे; वाण् मुकम्–उज्ज्वल-मुख (हनुमान को); पोलियुम्–शोभायमान है; उरु पोरुळ् पॅऱ–उचित हित-प्राप्त्यर्थ; तेर्न्तु ऍण्णि–अच्छी तरह सोचकर; चॅय्युमिन्–(कार्य) करो; वेन्तु उऱल्–(इस स्थिति में) राजा के पास जाना; पऴुतु–ग़लत है; ऍन्ऩ–ऐसा; विळम्पुवार्–कहते; चिलर्–कुछ राक्षस। १०५२

कुछ राक्षसों ने कहा कि यह जलाने के स्वभाव के दाँतों के सर्प का बन्धन है। तो भी इस बन्दर का प्रकाशमय मुख ऐसा भासमान है, मानो कोमल पुष्पदाम से बाँधा गया हो। सोचो खूब और अच्छा फलदायी काम करो। इसी स्थिति में इसको लेकर राजा के पास जाने का काम ग़लत होगा। १०५२

ऑळिवरु नाहत्तिऱ् कॊल्ह लुण्मैयन्
ऱॊळिवर लन्ऱिद ऩॆण्णम् वेऱॆन्ऩाक्
कळिवरु शिन्दैयाऱ् काण्डि नङ्गळैच्
चुळिहिलै यामॆन्ऩत् तॊऴुहिन् ऱार्शिलर् 1053

ऑळिवु अरु–जो छिपा नहीं है; नाकत्तिऱ्कु–उस नाग (ब्रह्मास्त्र) से; ऑल्कल्– दुःखी (सा) रहना; उण्मै अन्ऱु–सत्य नहीं (लगता); ऍळिवरल् अन्ऱु–इतना दुर्बल नहीं; इतन् ऍण्णम् वेऱु–इसका तात्पर्य और है; ऍन्ऩा–सोचकर; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; कळि वरु चिन्तैयाल्–प्रसन्नचित्त हो; काण्टि–हम पर दृष्टि रखो; नङ्कळै–हम पर; चुळिकिलै–कोपदृष्टि मत डालो; ऍन्ऩ–कहकर; तॊऴुकिन्ऱार्–नमस्कार किया। १०५३

यह ब्रह्मास्त्र का नाग परोक्ष रूप से नहीं प्रत्यक्ष रूप से उसको कस रहा है। तो भी इसका दुःखी-सा दिखना ढोंग ही है, सत्य नहीं है। इसको बाँधना उतना हल्का कार्य नहीं है। इसका छिपा तात्पर्य दूसरा कुछ होगा —यह कहकर कुछ राक्षसों ने सीधे हनुमान से विनय की कि हम पर प्रसन्नचित्त दृष्टि रखो। कोप की दृष्टि मत डालो। वे हनुमान को नमस्कार करते। १०५३

पॅङ्गऴ लनुमऩैप् पिणित्त पान्दळैक्
किङ्गर रॊरुपुडैक् किळर्न्दु पऱ्ऱिऩार्
ऐम्बदि ऩायिर रळवि लाऱ्ऱलर्
मॊय्म्बिऩि ऩॆऴुवलिक् करुळऩ् मुम्मैयार् 1054

पॅम् कऴल्–चमकदार (स्वर्ण) पायलधारी; अनुमऩै–हनुमान को; पिणित्त पान्तळै–जो बद्ध कर रहा था, उस सर्प को; मॊय्म्पिऩिऩ्–पराक्रम में; ऍऴु वलि करुळऩ्–अतिबली गरुड़ के; मुम्मैयार्–तिगुने बलशाली; अळवु इल् आऱ्ऱलर्–अपार साहसी; किङ्करर् ऐम्पतिऩायिरर्–पचास सहस्र किंकर; ऑरु पुटै–एक तरफ़; किळर्न्तु– मिलकर; पऱ्ऱिऩार्–पकड़ ले चले। १०५४

जब यह सब हो रहा था तब पचास सहस्र किंकर, जो बल में गरुड़ के तिगुने थे, चमकदार स्वर्णपायलधारी हनुमान को उसके नाग-बन्धन के साथ एक ओर मिलकर खींचते चले जा रहे थे। १०५४

तिण्डिऱ् लरक्करदञ् जॆरुक्कुच् चिन्दुवान्
तण्डलि ऌन्नुरुक् करन्द तन्मैयान्
मण्डमर् तॊडङ्गिय वान रत्तुरुक्
कॊण्डन तन्दहन् कॊल्लॆन् ऱार्पलर् 1055

तिण् तिऱल्–अतिबली; अरक्कर् तम्–राक्षसों का; चॆरुक्कु–घमंड; चिन्तुवान्–चूर करने के लिए; अन्तकन्–यम; तण्टल् इल्–अबाध; तन् उरु–अपना रूप; करन्त–छिपाने की; तन्मैयान्–स्थिति में; मण्टु अमर्–घमासान युद्ध; तॊटङ्किय–प्रारम्भ जिसने किया उस; वानरत्तु उरु–वानर का रूप; कॊण्टनन् कॊल्–ले गया है क्या; ॲन्ऱार् पलर्–कहा अनेक ने। १०५५

अनेक कहते कि अतिबली राक्षसों का गर्व चूर करने हेतु यमराज अपना अवारित रूप छिपा लेकर युद्धकर्ता हनुमान का रूप ले आया है, शायद ! । १०५५

अरमियत् तलन्दॊरु मम्बॊन् माळिहैत्
तरमुरु निलन्दॊरुञ् जाळ रन्दॊरुम्
मुरशॆरि कडैदॊरु मिरैत्तु मॊय्त्तनर्
निरैवळै महळिरु निरुदर् मैन्दरुम् 1056

निरै वळै–पंक्तियों में चूडाधारिणी; मकळिरुम्–राक्षस-रमणियाँ और; निरुतर् मैन्तरुम्–तरुण राक्षस लोग; अरमिय तलम् तॊऱुम्–हर्म्य-हर्म्य में; अम् पॊन् माळिकै–सुन्दर स्वर्ण-महलों के; तरम् उऱु–श्रेष्ठ; निलम् तॊऱुम्–स्थानों में; चाळरम् तॊऱुम्–गवाक्षों में; मुरचु ॲऱि–भेरियाँ जहाँ बजती हैं, उन; कटै तॊऱुम्–स्थानों में; इरैत्तु–शोर मचाते हुए; मॊय्त्तनर्–आकर भर गई। १०५६

राक्षस-रमणियाँ, जिनके हाथों को पंक्तियों में कंकण अलंकृत कर रहे थे और राक्षस तरुण हर्म्यों में, स्वर्ण प्रासादों के श्रेष्ठ स्थलों में और झरोखों में, गवाक्षों में, भेरियों के बजने के स्थानों में —सर्वत्र कोलाहल करते हुए आ जुटे। १०५६

कयिलैयि नॊरुदनिक् कणिच्चि वानवन्
मयिलियर् चीदैदन् कऱ्पिन् माट्चियाल्
ॲयिलुडैत् तिरुनहर् चिदैप्प वॆय्दिनन्
अयिलॆयिऱ् ऱॊरुकुरङ् गायॆन् ऱार्पलर् 1057

कयिलैयित्–कैलासपति; ऒरु तनि–अद्वितीय; कणिच्चि वानवन्–परशुधर ईश्वर; मयिल् इयल्–मयूराभा; चीतै तन्–सीतादेवी के; कऱ्पिन् माट्चियाल्–

पातिव्रत्य के गौरव से; अयिल् ऍयिर्रु–तीक्ष्ण दाँतों के; ओरु कुरङ्काय्–एक वानर बनकर; ऍयिल् उटै–प्राचीर-सह; तिरुनकर्–श्रीयुक्त नगर (लंका) को; चितैप्प–तहस-नहस करने; ऍय्तितन्–आये हैं; ऍन्पार् पलर्–कहते अनेक। १०५७

कुछ लोगों ने अनुमान लगाया। कैलासपति परशुधर परमेश्वर, सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा से, तेज़ दाँतों वाला हरि बनकर प्राचीर-वलयित श्रीयुक्त लंका नगर को मिटाने आये हैं। १०५७

अरम्बैयर् विज्जै नाट्टळह वल्लियर्
नरम्बिन् मिन्नियशौल् नाह नाडियर्
करुम्बिशैच् चित्तिय रियक्कर् कन्नियर्
वरम्बरु शुम्मैयर् तलैम यङ्गिनार् 1058

अरम्पैयर्–अप्सराएँ; विज्चै नाट्टु–विद्याधरलोक की; अळक वल्लियर्–सुकेशिनी, लता-सी स्त्रियाँ; नरम्पितुम्–तंत्री से भी; इन्निय चॊल्–मधुरभाषिणी; नाक नाटियर्–नागलोक-वासिनियाँ; करुम्पु इचै–इक्षुरस-सम मधुर गानेवाली; चित्तियर्–सिद्धस्त्रियाँ; इयक्कर् कन्नियर्–यक्षदयिताएँ; वरम्पु अरु–असीम; चुम्मैयर्–भीड़ बनी; तलै मयङ्कितार्–स्थान-स्थान में मिली रहीं। १०५८

अप्सराएँ, विद्याधरलोक की सुकेशिनी, लता-समाना नारियाँ, तन्त्री (वीणा) से भी मधुर बोली वाली नागकन्याएँ, इक्षुरस-तुल्य स्वर वाली सिद्धस्त्रियाँ, यक्षकुल-दयिताएँ —आदि सभी बड़ी भीड़ में आकर जुड़ी रहीं और मिश्रित खड़ी रहीं। १०५८

नीरिडैक् कण्डुयि नॆडिय नेमियुम्
तारुडैत् तन्मिल रुलहिन् ऱादैयुम्
ओरुडर् कॊण्डुदम् मुरुव माऱ्ऱिनर्
पारिडैप् पुहुन्दनर् पहैत्तॆन् बार्पलर् 1059

नीर् इटै–(प्रलय-)जलमध्य; कण् तुयिल्–(योग-)निद्रारत; नॆटिय नेमियुम्–बड़े चक्रधारी और; तन्नि मलर्–श्रेष्ठ पुष्पों की; तार् उटै–मालाधारी; उलकिन् तातैयुम्–लोकपिता ब्रह्मा और; ओर् उटल् कॊण्टु–एक शरीर बन; तम् उरुवम् माऱ्ऱिनर्–अपना रूप बदलकर; पारिटै पुकुन्ततर्–भूमि में (अवतरित हो) आये हैं; पकैत्तु–लड़ने से; ऍन्–क्या होगा; ऍन्पार्–कहते; पलर्–अनेक। १०५९

प्रलयप्रवाह-मध्य योगनिद्रारत विपुल चक्रधर श्रीविष्णु, और अनुपम कमलपुष्पदामधारी लोकपिता ब्रह्मा दोनों एक शरीर हो अपना रूप बदलकर भूमि पर इस वानर के रूप में अवतरित हो आये हैं। इससे लड़ने से क्या होगा? —ऐसा अनेक ने कहा। १०५९

अरक्करु मरक्कियर् कुळामु मल्लवर्
करक्किलर् नॆडुमळैक् कण्णि नीरदु

विरैक्कुळ्ऱ् चीदैदन् मॅलिवु नोक्कियो
इरक्कमो वऱत्तिन दॅण्मै येहोलो 1060

अरक्करुम्–राक्षस नरों; अरक्कियर् कुळामुम्–और नारियों के दलों के; अल्लवर्–जो नहीं रहे वे (देव आदि); नॅट्टु मळै–निरन्तर वर्षा के समान; कण्णित् नीर् अतु–आँखों के आँसुओं को; करक्किलर्–नहीं छिपाते (रोकते); विरै कुळल्–सुवासित केशिनी; चीतै तन्–सीता का; मॅलिवु नोक्कियो–दुःख देखकर; इरक्कमो–या (हनुमान के प्रति) सहानुभूति; अऱत्तिन्–धर्म-सम्बन्धी; ऍण्मैये कॉलो–विचार क्या। १०६०

राक्षस पुरुषों और स्त्रियों से अन्य (देवादि) लोगों ने अपनी आँखों से आँसू को बहने से नहीं रोका (न छिपाया)। वे क्यों दुःख कर रहे थे? सुगन्धित केशिनी सीता का कष्ट देखकर, या हनुमान की सहानुभूति में; या धर्म का विचार करके? । १०६०

आण्डॉळि लनुमनु मवरॉ डेहिनान्
मीण्डिलन् वेऱॊन्ऱुम् विरुम्ब लुऱ्ऱिलन्
ईण्डिदु वेतॊडरन् तिलङ्गै वेन्दनैक्
काण्डले नलनॆनक् करुत्ति नॆण्णिनान् 1061

आण् तॊळिल् अनुमनुम्–पुरुषयोग्य कार्य करनेवाले हनुमान ने भी; मीण्टिलन्–न लौटकर; वेऱु ऑन्ऱुम्–और कुछ; विरुम्पल् उऱ्ऱिलन्–नहीं चाहता हुआ; ईण्टु–यहाँ; इतुवे तॊटर्न्तु–इसी क्रम को अपनाकर; इलङ्कै वेन्तनै–लंका के राजा को; काण्टले–देखना ही; नलन् ऍन–भला है, ऐसा; करुत्तिन् ऍण्णितान्–मन में सोचा; अवरॊटु एकितान्–उनके साथ गया। १०६१

पुरुषोचित कार्यदक्ष महावीर ने न लौटना चाहा, न और ही कुछ। "हम इसी क्रम में जायँगे और लंका के राजा से मिलेंगे। यही अच्छा है।" —यह सोचकर वह उनके साथ चुपचाप गया। १०६१

ऍन्दैय दरुळिनु मिरामन् शेवडि, शिन्दैशॅय् नलत्तिनुन् देव रीन्दन
मुन्दुळ वरत्तिनुम् बाश मुऱ्ऱुऱच्, चिन्दुवॆ नयर्वुऱु शिन्दै शीरिदाल् 1062

ऍन्तै अतु अरुळिनुम्–मेरे पिता (वायुदेव) की कृपा से; इरामन् चे अटि–श्रीराम के श्रेष्ठ चरणों के; चिन्तै चॅय्–स्मरण करने से प्राप्त; नलत्तिनुम्–पुण्यप्रताप से; तेवर् ईन्तत–देव-दत्त; मुन्तु उळ–पूर्व के; वरत्तिनुम्–वरों के बल से; पाचम्–पाश को; मुऱ्ऱु उऱ–पूर्ण रूप से; चिन्तुवॆन्–छिन्न कर दूंगा; अयर्वु उऱु–(पर) थकित (सा) रहने का; चिन्तै–यह विचार; चीरितु–अच्छा है। १०६२

उसने यह भी सोचा कि अपने पिताजी की कृपा, श्रीराम के उत्तम चरण-स्मरण के प्रभाव और देव-प्रदत्त प्राचीन वरों के प्रताप से मैं इस पाश को छिन्न-भिन्न कर सकता हूँ। पर थकित-सा रहने का यह विचार ही ठीक है। १०६२

वळैयॆयिऱ् ऱरक्कनै युऱ्ऱु मन्दिरत्, तळवरु मुदियरु मरिय वाणैयाल्
विळैवन विळम्बिनान् मिदिलै नाडियै, इळहिन नॆन्वयि नीद लेयुमाल् 1063

वळै ऍयिऱ्ऱु—वक्र दाँतों वाले; अरक्कनै—राक्षस (राजा) के पास; उऱ्ऱु—जाकर; मन्तिरत्तु—मंत्रणा-सभा में; अळवु अऱु—अपार; मुतियरुम्—वृद्धों के; अरिय—जाने; आणैयाल्—(श्रीराम की) आज्ञा से; विळैवन—होनेवाली बातें; विळम्पिनाल्—कहें तो; इळकितन्—मन में पसीजकर; मितिलै नाटियै—मिथिलाकुमारी को; ऍन् वयिन्—मेरे पास; ईतल् एयुम्—शायद दे भी दे, यह सम्भव है। १०६३

वक्रदन्त रावण के पास जाऊँगा। वहाँ मंत्री-सभा में अगणित वृद्ध रहेंगे। उनके जाने अगर मैं श्रीराम की आज्ञा के संभाव्य नतीजों का वर्णन करूँ तो रावण का मन नरम हो जाय और शायद वह मिथिला-सुता को मेरे पास सौंप भी दे। १०६३

अल्लदुउ मवनुडैत् तुणैव रायिनारक्, कॅल्लैयुन् दॅरिवुरु मॅण्णुन् देऱ्लाम्
वल्लव निलैमैयु मनमुन् देऱ्लाम्, शॊल्लुह मुहमॆनुन् दूदु शॊल्लवे 1064

अल्लतूउम्—उसके अलावा; अवनुटै—उसके; तुणैवर्—सहायक; आयिनारक्कु—जो बने हैं, उनके; ऍल्लैयुम्—(प्रताप की) सीमा भी; तॆरिवुरुम्—जानी जा सकेगी; ऍण्णुम् तेऱ्लाम्—संख्या भी जान सकते; मुकम् ऍनम्—मुख जो कहा जाता है; तूतु चॊल्लवे—वह दूत मैं जाकर कहूँ तो; चॊल् उक—उसके वचन निकलेंगे तब; वल्लवन् निलैमैयुम्—प्रतापी उसकी स्थिति और; मनमुम्—मनोभाव; तेऱ्लाम्—समझ सकते हैं। १०६४

अलावा, उसके सहायकों की स्थिति और संख्या भी जान सकेंगे। दूत राजा का मुख कहा जाता है। वैसा मैं राजाराम का संदेश सुनाऊँ तो तब प्रतापी रावण के मुख से जो शब्द निकलेंगे, उनसे उसकी स्थिति और उसके मनोगत भाव भी समझे जा सकते हैं। १०६४

वालितन् निऱुदियुम् मरत्तिऱ् कुऱ्ऱदुम्
कूलवॆन् जेनैयिन् कुणिप्पि लामैयुम्
मेलवन् कादलन् वलियुम् मेन्मैयुम्
नीनिऱत् तिरावण नॆञ्जिऱ् रैक्कुमाल् 1065

वालि तन्—वाली का; इऱुतियुम्—अन्त और; मरत्तिऱ्कु—(सातों साल-) तरुओं का; उऱ्ऱतुम्—जो हाल हुआ, वह; वॆम्—कठोर; कूल चेनैयिन्—लंगूर-सेना की; कुणिप्पु इलामैयुम्—अगणितता और; मेलवन्—ऊपर स्थित सूर्य के; कातलन् वलियुम्—पुत्र का बल; मेन्मैयुम्—और गौरव; नील् निऱत्तु—काले रंग के; इरावणन् नॆञ्चिल्—रावण के मन में; तैक्कुम्—चुभेंगे (प्रभाव डालेंगे)। १०६५

वाली-वध, सालवृक्षों का बेधन, भयंकर लंगूर-सेना की अगणितता

और सूर्यसूनु का बल-विक्रम और गौरव —यह सारी बातें नील वर्ण रावण के मन में बिठायी जा सकती हैं। १०६५

आदला नरक्कनै यॅय्दि यार्‌रलुम्
नीदियु मतक्कॉळ निरुवि नित्‌रदिल्
पादियिन् मेर्‌चॅल नूरिप् पयप्पयप्
पोदले करुममॅन् रनुमन् बोयिनान् 1066

आतलाल्–इसलिए; अरक्कतै ॲय्ति–राक्षस के पास जाकर; आर्‌रलुम्–(श्रीराम का) पराक्रम और; नीतियुम्–न्याय; मतम् कॉळ–समझाते हुए; निरुवि स्थिर करके; नित्‌रतिल्–जो बची रही; पातियित् मेल् चॅल–उस सेना की आधी से अधिक को; नूरि–मारकर; पयप्पय–धीरे-धीरे; पोतले–जाना ही; करुमम्–करणीय है; ॲन्‌रु–ऐसा सोचकर; अनुमत्–हनुमान; पोयितात्–चुप जाता रहा। १०६६

इसलिए रावण के पास जाकर श्रीराम का पराक्रम और उनकी नय आदि उसके मन में घर कर ले, ऐसा समझाऊँगा। (अगर कुछ असर नहीं हो तो) जो सेना इस युद्ध के बाद बची है, उसमें से आधी से अधिक को मिटाकर धी रे-धीरे जाना ही मेरा करणीय कार्य है। —ऐसा सोचते हुए हनुमान गया। १०६६

कडवुळर्क् करशनैक् कडन्द तोन्‌रलुम्
पुडैवरुम् बॅरुम्बडैप् पुणरि पोर्‌त्तॅळ
विडैपिणिप् पुण्डदु पोलुम् वीरनैक्
कुडैहॅळु मन्‌ननिर् कॉण्डु पोयिनान् 1067

कटवुळर्क्कु अरचतै–देवराज को; कटन्त–जिसने हराया; तोन्‌रलुम्–वह राक्षसराजकुमार भी; पुटै वरुम्–पार्श्व में आनेवाली; पॅरुम् पटै पुणरि–बहुत बड़ी सेना-सागर के; पोर्‌त्तु ॲळ–घेरकर शोर के साथ आते; विटै–ऋषभ; पिणिप्पु उण्टतु–बन्धन में आ गया जैसे; पोलुम्–रहनेवाले; वीरतै–महावीर को; कुटै कॅळु–विजयचिह्नक छत्रशोभित; मन्‌नन् इल्–राजा के महल में; कॉण्टु पोयितात्–ले गया। १०६७

देवराजविजेता इन्द्रजित् सागर के समान सेना के मध्य रहकर बद्ध ऋषभ-जैसे महावीर को विजयछत्र रावण के महल में ले गया। १०६७

तूदुव रोडिनर् तॉळुदु तॉल्लैनाळ्
मादिरङ् गडन्दवर् कुरुहि मन्‌ननित्
कादलन् मरैमलर्क् कडवुळ् वालियाल्
एदिल्वा नरम्बिणिप् पुण्ड दामॅन्‌रार् 1068

तूतुवर्–(इन्द्रजित् के) दूत; ओटितर्–दौड़े; तॉल्लै नाळ्–प्राचीन दिन के;

मातिरम् कटन्तवन्–दिग्विजयी रावण के; कुरुकि–पास जाकर; तोऴुतु–नमस्कार करके; मन्न–राजा; निन् कातलन्–आपके पुत्र ने; मरै मलर्–कमलपुष्प के स्वामी; कटवुळ्–ब्रह्मा देवता के; वाळियाल्–अस्त्र द्वारा; एतिल् वानरम्–द्वेषपूर्ण वानर; पिणिप्पुण्टतु–बाँध लिया गया है; ॲन्ऱार्–बोले। १०६८

इन्द्रजित्-प्रेषित दूत दौड़े। दिग्विजयी रावण के पास जाकर नमस्कार किया। निवेदन किया कि राजा ! आपके सुपुत्र ने कमलासन ब्रह्मा के अस्त्र द्वारा द्वेषपूर्ण वानर को बाँध दिया है। १०६८

केट्टलुङ् गिळर्शुडर् कॅट्ट वानॆ
ईट्टिरुळ् विऴुङ्गिय मार्बिन् यानैयिन्
कोट्टॊडुम् पॊरुदपे रारङ् गॊण्डॆदिर्
नीट्टिन् तुवहैयि निमिर्न्द नॆञ्जिनान् 1069

केट्टलुम्–सुनते ही; उवकैयिल्–आनन्द से; निमिर्न्त–फूले हुए; नॆञ्चिनान्–दिल वाला होकर; किळर् चुटर्–विकासशील प्रभा से; कॅट्ट वान्–रहित आकाश को; ईट्टु इरुळ्–पुंजीभूत अंधकार ने; विऴुङ्किय ॲन–निगल लिया जैसे; मार्पिन्–अपने वक्ष में; यानैयिन् कोटु ऑटुम् पॊरुत–दिग्गजों के दाँतों के साथ भिड़ते रहे; पेर् आरम् कॊण्टु–बड़े हार को लेकर; ऍतिर् नीट्टिनन्–(उस दूत के) आगे बढ़ाया (रावण ने)। १०६९

यह सुनते ही रावण का वक्ष फूल उठा। मन आनन्द से भर गया। वर्धनशील तेजपुंज सूर्य और चन्द्ररहित आकाश को अन्धकार लील गया जैसे रहा उसका विशाल वक्ष। उसमें दिग्गजों के दाँत जड़े गये थे। उन पर एक बड़ी मुक्तामाला हिलकर उनको रगड़ रही थी। रावण ने उसको निकालकर उस दूत के सामने बढ़ाया। (दूत अनेक आये, ऐसा ही लगता है। पर शायद सन्देश एक ही ने सुनाया और उसे ही हार दिया गया।)। १०६९

ऍल्लैयि लुवहैया लिवर्न्द तोळिनन्
पुल्लुऴ मलर्न्दहट् कुमुदप् पूविनान्
ऑल्लैयि नोडिनी रुरैत्तॆन् नाणैयाल्
कॊल्ललै तरुहॆनक् कूऱु वीरॆन्ऱान् 1070

ऍल्लै इल्–निस्सीम; उवकैयाल्–आनन्द से; इवर्न्त–जो फूल उठे; ऐसे; तोळिनन्–कन्धों वाले; पुल्लुऴ मलर्न्त–लस कर खिले; कळ्–शहद-भरे; कुमुत पूविनान्–कुमुद-पुष्प हाथ में रखनेवाले (रावण) ने; ऑल्लैयिल्–अतिशीघ्र; नीर् ओटि–तुम दौड़ो; ॲन् आणैयाल्–मेरी आज्ञा द्वारा; उरैत्तु–कहकर; कॊल्ललै–मत मारो; तरुक–ला दो; ॲन–ऐसा; कूऱुवीर्–कहो; ॲन्ऱान्–कहा। १०७०

अपार आनन्द से उसके कन्धे फूल उठे। उसके हाथ में (जैसे रिवाज था) लस कर विकसित और शहद-भरा कुमुदपुष्प था। रावण

ने उनसे कहा कि भागो और मेरा आदेश (इन्द्रजित् को) सुनाओ। वानर को न मारकर इधर जीवित लाया जाय। १०७०

अव्वुर तूदरु माणै याल्वरुम्, तॅव्वुरै नीक्किना तॅरियच् चॅप्पिनार्
इव्वुरै निहळ्वुळि यिरुन्द शीदैयाम्, वॅव्वुरै नीङ्गिना णिलैॆय ळम्बुवाम् 1071

तूतरुम्–दूतों ने भी; आणैयाल्–(रावण की) आज्ञा के अनुसार; अ उरै–उस आदेश-वचन को; वरुम्–(अपने सामने हनुमान को ले) आते हुए; तॅव् उरै–'शत्रु' का नाम ही; नीक्किनान्–जिसने मिटा दिया, उस इन्द्रजित् से; अरिय चॅप्पिनार्–समझाते हुए कहा; इ उरै निकळ् उळि–जब यह बात चल रही थी; इरुन्त चीतैयाम्–(जो अशोक वन में) रहीं उन सीता; वॅव् उरै नीङ्किनाळ्–अनिन्द्य देवी की; निलै–स्थिति; विळम्पुवाम्–कहेंगे। १०७१

दूत रावण की आज्ञा ले गये। सामने इन्द्रजित् आ रहा था जिसने शत्रु का अभाव कर रखा था। उन्होंने इन्द्रजित् से रावण के आदेश-वचन कहे। यहाँ यह बातें हो रही थीं। तब अशोक वन में जो अनिंद्य सीताजी रहीं; उनकी स्थिति बताएँगे। १०७१

इऱुत्तनन् कडिपॉळि लॅण्णि लोर्पड
ऑऱुत्तन नॅन्ऱुकॊण् डुवक्कित् ऱाळुयिर्
वॅऱुत्तनळ् शोर्वुऱ वीरर् कुऱ्ऱवैक्
कऱुत्तलिल् शिन्दैयाळ् कवन्ऱु कूऱिनाळ् 1072

कटि पॉळिल् इऱुत्तनन्–सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया; ऍण् इलोर्–असंख्य राक्षसों को; पट–मिटाते हुए; ऑऱुत्तनन्–मार डाला; ऍन्ऱु कॊण्टु–ऐसा जान लेकर; उवक्कित्ऱाळ्–जो हर्षित रहीं उनसे; कऱुत्तल् इल् चिन्तैयाळ्–कोप या घृणा से काला जिसका मन कभी न हुआ (उस त्रिजटा ने); उयिर्–वॅऱुत्तनळ्–जीवित रहने से उचटकर; चोर्वु उऱ–लट जाएँ, ऐसा; वीरर्कु–महावीर को; उऱ्ऱतै–जो हुआ; कवन्ऱु–व्यग्रता के साथ; कूऱिनाळ्–कहा। १०७२

देवी ने जब जाना कि हनुमान ने सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया और असंख्यक राक्षसों को मार डाला, तब वह बहुत हर्षित हुईं। पर उनसे कोप या घृणा से जिसका मन काला नहीं हुआ था, उस त्रिजटा ने व्यग्रता के साथ महावीर हनुमान को जो हुआ, वह वृत्तान्त बताया। यह सुनकर देवी जीवन से ही उचट गयीं और बहुत लट गयीं। १०७२

ओवि यम्बुहै युण्डवु पोलवोर्
पूविन् मॅल्लियन् मेनि पॉडियुऱप्
पावि वेडन्ऱगैप् पार्प्पुऱ वैयवुऱुम्
तूवि यन्नमन् ऱाळिवै शॊल्लिनाळ् 1073

ओर् पूवित्–एक पुष्प-तुल्य; मॅल्लियल् मेत्ति–कोमल शरीर; ओवियम्–चित्र; पुकै उण्टतु–धुएँ से ढँक गया; पोल–जैसे; पॉटि उऱ्–स्वेदयुक्त हुआ; पावि वेटन् कै–पापी विराध के हाथ में; पार्प्पु उऱ्–अपने बच्चे के लगने से; वॅय्तु उऱुम्–व्याकुल रहनेवाली; तूवि अन्नम्–कोमल परों वाली हंसिनी के; अन्नाळ्–समान जो रहीं; इवै चॉल्लिनाळ्–(वे सीताजी) यों बोलीं। १०७३

उनके पुष्प-सम कोमल शरीर पर पसीना निकल आया और वे धुएँ में छिपे चित्र के समान निष्प्रभ हुईं। वह उस कोमल पैरों वाली हंसिनी की-सी स्थिति में, जिसका पोटा किसी पापी व्याध के हाथ लग गया हो। वे यों बोलीं। १०७३

उऱ्ऱुण् डाय विशुम्बै युरुवित्ताय्, मुऱ्ऱुण् डाय्हलै यावैयु मुऱ्ऱुरक्
कऱ्ऱुण् डायॉरु कळ्ळ वरक्कनाल्, पऱ्ऱुण् डायिदु वोवऱप् पान्मैये 1074

उऱ्ऱु–अन्य भूतों को अपने में लिये; उण्टाय–जो पहले उत्पन्न हुआ; विचुम्पै–उस आकाश को; उरुवित्ताय्–व्याप्त रहकर; मुऱ्ऱुण्टाय्–उसके ऊपर गये; कलै यावैयुम्–सभी (६४) कलाओं को; मुळुतुऱ्–पूर्ण रूप से; कऱ्ऱुण्टाय्–(सूर्य से) सीख लिया; ऑरु कळ्ळ अरक्कनाल्–एक चोर राक्षस द्वारा; पऱ्ऱुण्टाय्–बन्धन में डाल दिये गये; इतुवो–क्या यही; अऱ पान्मै–धर्म की व्यवस्था है। १०७४

आकाश अन्य भूतों को अपने में लेकर सबसे पहले प्रकट हुआ था। तुम उस आकाश को व्यापकर उसके ऊपर भी गये। चौसठों कलाओं को तुमने सूर्य के सामने उनकी ओर मुख किये पीछे विना मुड़े चलते हुए सूर्य से सीखीं। ऐसे तुम एक चोर राक्षस द्वारा बन्धन में डाल दिये गये। क्या यही धर्म की व्यवस्था है? । १०७४

कडल्ह डन्दु पुहुन्दनै कण्डहर्, उडल्ह डन्दुनिन् ऱूळि कडन्दिलै
अडल्ह डन्द तिरळ्पुयत् तण्णनी, इडर्ह डन्दिलै वन्दिड रेलुमो 1075

अटल् कटन्त–शत्रुबलपारंगत; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धों के; अण्णल्–महिमावान; कटल् कटन्तु–सागर पार करके; पुकुन्तनै–आये; कण्टकर्–कंटक लोगों के; उटल् कटन्तु निन्ऱु–शरीरों को नष्ट करके रहने पर भी; ऊळि कटन्तिलै–आयु के उस पार नहीं हुए; नी इटर् कटन्तिलै–तुम दुःख को तर नहीं गये; इटर् वन्तु–(क्या तुम पर भी) संकट आ; एलुमो–लग सकेगा। १०७५

तुम समुद्र तरकर इधर आये। कंटकों के शरीरों को विक्षत किया, पर अपनी आयु के उस पार नहीं गये (तुम जीवित रहे)। तो भी तुम कष्टों के उस पार जा नहीं पाये क्या? क्या तुम पर भी संकट आ सकता है? । १०७५

आऴि काट्टियॅन् ऩारुयिर् काट्टिऩाय्, ऊऴि काट्टुवॅ ऩॅऩ्ऱुरैत् तेऩदु
वाऴि काट्टुव दुण्डुन् वरैप्पुयप्, पाऴि काट्टिप् पऴियैयुङ् गाट्टिऩाय् 1076

आऴि काट्टि–(श्रीराम की) मुँदरी दिखाकर; ॲन् आर् उयिर् काट्टिऩाय्–मेरे प्यारे प्राण दिखाये (बचाये); ऊऴि काट्टुवॅन्–युग-युग दिखाऊँगी (जीवित रहने का वर दूँगी); ॲन्ऱु उरैत्तेन्–ऐसा कहा मैंने; अतु–वह (आशीर्वाद); वाऴि काट्टुवतु–चिरंजीवता दिखाएगा; उण्टु–अवश्य होगा; उन्–तुम्हारे; वरै पुय पाऴि–पर्वत-सम हाथों का बल; काट्टि–दिखाकर; पऴियैयुम्–अपयश भी; काट्टिऩाय्–पैदा कर लिया, तुमने। १०७६

तुमने श्रीराम की मुँदरी दिखायी और मेरे प्राणों को भी दिखाया (दिलाया)। मैंने तुमको आशीर्वाद दिया कि तुम्हें अनेक युग दिखाऊँगी (युगों तक जीवित रहोगे)। वह तुम्हें अनेक युगों को दिखायगा भी (युगों तक जीवित रखेगा)। तुम अपना महान् भुजबल दिखाने चले और निन्दा दिखवा ली। (इसमें काट्टु— दिखाना, जीवित रखना, दिलाना, प्राप्त करना आदि अनेक अर्थों को व्यंजना और लक्षणा के आधार पर देता है।)। १०७६

कण्डु पोयिऩै नीणॅऱि काट्टिड, मण्डु पोरि ऩरक्कऩै माय्त्तॅऩैक्
कॉण्डु मऩ्ऩवऩ् पोमॆऩुङ् गॉळ्हैयैत्, तण्डि ऩायॆऩक् कारुयिर् तऩ्दनी 1077

ॲऩक्कु–मुझे; आर् उयिर् तन्त–प्यारा प्राणदान करके; नी–तुम; कण्टु पोयिऩै–मुझसे मिलकर गये; मण्टु पोरिन्–घमासान युद्ध में; अरक्कऩै–राक्षस को; माय्त्तु–मारकर; नीळ् नॅऱि काट्टिट–लम्बा (यमराज्य का) मार्ग दिखाकर; ॲऩै–मुझे; मन्ऩवन्–राजा (राम); कॉण्टु पोम्–ले जाएँगे; ॲऩुम् कॉळ्कैयै–इस धारणा को; तण्टिऩाय्–तोड़ दिया तुमने। १०७७

तुम मुझे प्राण प्रदान करके मुझसे मिलकर गये। तब तुम कह गये कि घमासान युद्ध होगा; उसमें श्रीराम राक्षस को मारकर यमलोक का लम्बा मार्ग दिखा देंगे। फिर मुझे अपने साथ ले जायँगे। अब उस धारणा को तुमने तोड़ दिया। १०७७

एयप् पऩ्ऩिऩ ऩिऩ्ऩदऩ् ऩारुयिर्, तीयक् कऩ्ऱु पिडियुऱत् तोङ्गुरुम्
तायॆप् पोलत् तळर्न्दु मयङ्गिऩाळ्, तीयैच् चुट्टदोर् कऱ्पॆऩुन् दीयिऩाळ् 1078

तीयै–आग को; चुट्टतु–जलानेवाली; ओर् कऱ्पु ॲऩुम्–पातिव्रत्य नाम की; तीयिऩाळ्–अग्नि वाली; एय–योग्य रीति से; इऩ्ऩ पऩ्ऩिऩळ्–ऐसा कहती हुई; कऩ्ऱु पिटि उऱ–बछड़े के बँध जाने पर; तोङ्कुरुम्–दुःखनेवाली; तायॆ पोल–माता गाय के समान; तन् आर् उयिर्–अपने (शरीर से) युक्त प्राणों के; तीय–झुलसते; तळर्न्तु–लटकर; मयङ्किऩाळ्–बेसुध हुई। १०७८

अग्नि को भी जला सकनेवाली पातिव्रत्याग्नि से भूषित देवी सीता इस तरह कहती हुई, बछड़े के (हिंस्र पशु द्वारा) पकड़े जाने पर दुखनेवाली माता गाय के समान, उनके प्राणों के तप्त होकर क्षीण होते, लटकर बेसुध हुईं। १०७८

पॆरुन्द हैप्पॆरि योत्तैप्पि णित्तपोर्
मुरुन्दत् मऱ्ऱै युलहॊरु मून्ऱैयुम्
अरुन्द वप्पय ताालर शाळ्हित्ऱात्
इरुन्द वप्पॆरुङ् गोयिल्शॆन् ऱॆय्दिताात् 1079

पॆरुम् तकै–योग्यता में बड़े और; पॆरियोत्तै–(आकार में भी) बड़े हनुमान को; पिणित्त–जिसने बाँधा; पोर् मुरुन्तत्–वह युद्ध-कुशल इन्द्रजित्; मऱ्ऱै–(लंका के) अलावा; उलकु ऒरु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों पर; अरुम् तव पयत्ताल्–श्रेष्ठ तपस्या के फलस्वरूप; अरचु आळ्कित्ऱात्–जो राज्य (शासन) करता है; इरुन्त–उसका वासस्थान; अ पॆरुम् कोयिल्–उस बड़े मन्दिर में; चॆन्ऱु ऎय्तित्तात्–जा पहुँचा। १०७९

उधर गुण और आकार में बड़े महावीर को जिसने बाँध दिया था वह इन्द्रजित्, लंका के अलावा तीनों लोकों पर पूर्वपुण्यप्रताप से शासन करनेवाला रावण जहाँ रहा, उस बड़े मन्दिर में जा पहुँचा। १०७९

तलङ्गण् मून्ऱिऱ्कुम् बिऱिदॊरु मदितळैत् तॆन्न
अलङ्गल् वॆण्गुडै कण्गुडै यविरॊळि परप्प
वलङ्गॊ डोळित्ताात् मण्णित्ऱुम् वानुऱ वॆडुत्त
पॊलङ्गॊण् मामणि वॆळ्ळियङ् गुन्ऱॆतप् पॊलिय 1080

अलङ्कल्–हार जिससे लटकते थे; वॆण् कुटै–वह श्वेत छत्र; तलङ्कळ् मून्ऱिऱ्कुम्–तीनों लोकों के लिए; पिऱितु ऒरु मति–और एक चन्द्र; तळैत्तु ऎन्न–अतिशय रूप से प्रकाश देता रहा जैसे; कण् कुटै–आँखों में खुभता हुआ; अविर् ऒळि–फैलनेवाला प्रकाश; परप्प–छिटकाता रहा; वलम् कॊळ् तोळित्ताल्–सबल कन्धों से; मण् नित्ऱुम् वान् उऱ–भूमि से लेकर आकाश को छूते हुए; ऎटुत्त–जो उठाया गया; पॊलम् कॊळ्–सुन्दरतायुक्त; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नमय; वॆळ्ळि अम्–सुन्दर चाँदी के; कुन्ऱु ऎन–पर्वत-से; विळङ्क–शोभ रहे थे। १०८०

(आगे १०९७वें पद्य तक लगातार चलनेवाले वाक्य में रावण का वर्णन है। वाक्य १०९७वें पद्य में ही पूर्ण होता है।) श्वेत छत्र था, जिससे मोती आदि की लड़ियाँ लटक रही थीं। वह तीनों लोकों पर प्रकाश फैलाने के लिए बने एक दूसरे चन्द्र के समान प्रभा बिखेर रहा था, जो आँखों में खुभ रहा था। और वह उस सुन्दर रत्नमय और श्वेत कैलासगिरि

के समान भी शोभ रहा था, जिसे रावण ने अपने सबल हाथों से भूमि से आकाश तक उठाया था। १०८०

पुळ्ळु यर्त्तवन् ऱिहिरियुम् बुरन्दर नयिलुम्
तळ्ळिन् मुक्कणान् कणिच्चियुन् दाक्किय तळुम्बुम्
कळ्ळु यिर्क्कुमॆन् गुळ्लियर् मुहिळ्विरर् कदिर्वाळ्
वळ्ळु हिर्प्पॆरुङ् गुऱिहळुम् बुयङ्गळिन् वयङ्ग 1081

पुळ् उयर्त्तवन्–गरुड़ध्वज का; तिकिरियुम्–चक्रायुध; पुरन्तरन् अयिलुम्–और पुरन्दर का भाला (वज्र); मुक्कणान्–त्रिनेत्र शिवजी का; तळ् इल्–अप्रतिहत; कणिच्चियुम्–परशु; ताक्किय–इनके प्रहार से हुए; तळुम्पुम्–दाग़ और; कळ् उयिर्क्कुम्–(पुष्प के कारण) शहद-निहित; मॆन् कुळ्लियर्–कोमल केशिनी राक्षसियों की; मुकिळ्–कलियों-सी; विरल्–उँगलियों के; कतिर् वाळ्–उज्ज्वल तलवार-सम; वळ् उकिर्–तीक्ष्ण नाखूनों के बने; पॆरुम् कुऱिकळुम्–बड़े-बड़े (नख-क्षत) निशान; पुयङ्कळिल् विळङ्क–भुजाओं में शोभायमान थे। १०८१

गरुड़ध्वज श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र, पुरन्दर का वज्र और त्रिनेत्र शिवजी का अबाध फरसा —इनके लगने से बने व्रणों के दाग़ और शहद-लसे कोमल केश वाली प्यारी राक्षसियों की कलियों के समान बन्द उँगलियों के ज्वलन्त तलवार के समान नाखूनों के बने नखक्षत उनकी भुजाओं पर विद्यमान थे। १०८१

तुन्ऱु शॆम्मयिर्च् चुडर्नॆडुङ् गऱ्ऱैहळ् शुऱ्ऱु
निन्ऱु तिक्कुऱ निरैत्तन कदिर्क्कुळा निमिर
ऒन्ऱु शीऱ्ऱत्ति नुयिर्प्पॆनुम् बॆरुम्बुहै युयिर्प्पत्
तॆन्ऱि शैक्कुमोर् वडवन ऱिरुत्तिय दॆन्न 1082

तुन्ऱु चॆम् मयिर्–घने लाल केशों की; चुटर् नॆटुम्–प्रकाशमय लम्बी; कऱ्ऱैकळ्–लटें; चुऱ्ऱु निन्ऱु–सब ओर रहीं; तिक्कु उऱ–सभी दिशाओं में लगे ऐसा; निरैत्तन–पंक्तियों में; कतिर् कुळाम्–किरणों की राशियाँ; निमिर–बढ़ीं; ऒन्ऱु–युक्त; चीऱ्ऱत्तिन्–कोप का; उयिर्प्पु ऎनुम्–श्वास रूपी; पॆरुम् पुकै–बड़ा धुआँ; उयिर्प्प–प्रकट होकर; तॆन् तिचैक्कुम्–दक्षिण दिशा में भी; ओर्–वह; वट अनल्–एक बड़वाग्नि; तिरुत्तियतु ऎन्न–पैदा हुई जैसे रहा। १०८२

उसके मुख के चारों ओर घने लाल बालों की लटें थीं। उनसे सभी दिशाओं में लाल प्रकाश की किरणें छूट रही थीं। कोप के कारण साँसें धुएँ के रूप में निकल रही थीं। सब मिलकर बड़वाग्नि का दृश्य उपस्थित कर रहे थे और वह दक्षिण दिशा की बड़वाग्नि-सी लगी। १०८२

मरह दक्कॊळुङ् गदिरॊडु माणिक्क नॆडुवाळ्
नरह तेयत्तु णडुक्कुऱ विरुळैयु नक्कच्

चिरम तैत्तैयुन् दिशैतोरुन् दिशैतोरुञ् जॅलुत्ति
उरहर् कोत्तिति दरशुवीऱ् ऱिरुन्दत्त नॉप्प 1083

मरकतम्–मरकत की; कॉऴुम् कतिर् ऑट्टु–पुष्ट किरणों के साथ; माणिक्क नॅट्टुवाऴ्–माणिक्य की लम्बी किरणें; नरक तेयत्तुळ्–नरक देश में; नट्कक्कु उऱा–अचल; इरुळैयुम्–अन्धकार को भी; नक्क–चाटकर दूर करती रहीं; चिरम् अतैत्तैयुम्–सभी सिरों को; तिचै तोरुम् तिचैतोरुम्–दिशा-दिशा में; चॅलुत्ति–मोड़कर; उरकर् कोन्–नागराज; इनितु–सुख से; अरचु वीऱ्ऱिरुन्ततन्–राज-सिंहासन पर विराज रहा; ऑप्प–जैसे। १०८३

वह अपने सिरों को जब दिशा-दिशा में घुमाता, तब मरकत मणियों के पुष्ट प्रकाश और माणिक्य पत्थरों की ज्योति दोनों उठकर नरक प्रदेश के अचल अन्धकार को भी चाट लेते। वह तब, उरगराज सिंहासन पर विराजमान हो, जैसा लगा। १०८३

कुवित्त पन्मणिक् कुप्पहळ् कलैयॉडुङ् गॉऴिप्पच्
चविच्चु डर्क्कत्त लणिन्दपोऱ् ऱोळॊडु तयङ्गप्
पुवित्त डम्बडर् मेरुवैप् पॉन्मुडि यॅन्नक्
कवित्तु मालिरुङ् गरुङ्गड लिरुन्दद्दु कडुप्प 1084

कुवित्त–राशियों में रहे; पल् मणि कुप्पैकळ्–अनेक रत्नसमूह; कलै ऑट्टुम्–उत्तरीय के साथ; कॉऴिप्प–लगे फिरते; अणिन्त–पहने हुए; चवि चुटर्–छवि-मय; कलन्–आभरण; पॉन् तोळ् ऑट्टुम्–स्वर्णकवच-धारी कन्धों पर; तयङ्क–शोभते; माल् इरुम्–बहुत बड़ा; करुम् कटल्–नीला सागर; पुवि तटम्–भूतल में; पटर्–फैले रहे; मेरुवै पॉन् मुटि ऍन्न–मेरु को स्वर्ण-किरीट के स्थान में; कवित्तु–पहने हुए; इरुन्ततु–रहा; कट्टुप्प–जैसे। १०८४

उसके उत्तरीय में गुँथे रहे अनेक रत्नों की राशियाँ उत्तरीय वस्त्र के साथ हिलती-डोलती रहीं। उसने जो आभरण पहन रखे थे, वे उसके बीसों सुन्दर स्कन्धों के साथ तेजोमय रहे। वह तब काले और बड़े सागर के समान शोभ रहा था, जो अपने सिर पर भूतल में विशाल रूप से व्याप्त मेरु के किरीट को धारण किये रहता हो। १०८४

शिन्दु राहत्तिन् शॅऱितुहिल् कच्चॊडु शॅऱियप्
पन्दि वॅण्मुत्ति नणिहलन् मुऴुनिलाप् परप्प
इन्दु वॅण्गुडै नीऴलिऱ् ऱारहै यिनम्बूण्डु
अन्दि वानुडुत् तल्लुवीऱ् ऱिरुन्ददा मॅन्न 1085

चिन्तुराकत्तिन् चॅऱि तुकिल्–घने सिन्दूर-वर्ण के कपड़े; कच्चु ऑट्टुम्–कमरबन्द के साथ; चॅऱिय–खूब कसे रहे; पन्ति–पंक्ति में; वॅण् मुत्तिन् अणि कलन्–सफ़ेद मोतियों के आभरण; मुऴु निला–पूर्णचन्द्र की चाँदनी-सा प्रकाश; परप्प–फैलाते; इन्तु वॅण् कुटै–चन्द्र के समान श्वेत छत्र की; निऴलिल्–छाँह में;

अल्लु–रात; अन्तिवान्–उट्टुत्तु–सन्ध्या-गगन पहने हुए; तारकै इन्नम् पूण्ट्टु–तारागणों के आभरणों से अलंकृत हो; वीऱ्ऱिरुन्ततु आम्–विराजमान रही; ऍन्न–जैसे। १०८५

घना रक्त-वर्ण वस्त्र और उसके ऊपर कमरबन्द शोभायमान थे। पंक्तियों में मोतियों को रखकर बनाये गये आभरण राकाचन्द्र की चाँदनी-सी प्रभा बिखेर रहे थे। सब मिलकर रात्रि की देवी की-सी शोभा बन रही थी, जो इन्द्र-सम श्वेत छत्र कि छाँह में संध्यागगन-वस्त्र पहनकर तारागणाभरणों से अलंकृत होकर विराजमान हो। १०८५

वण्मैक् कुन्दिरु मऱैहट्कुम् वानिनुम् बॅरिय
तिण्मैक् कुन्दनि युऱैयुळान् मुळ्मुहन् दिशैयिल्
कण्वैक् कुन्दोरुङ् गळिऱ्ऱोडु मादिरङ् गाक्कुम्
ऍण्मरक् कुम्मऱ्ऱै यिरुवर्क्कुम् बॅरुम्बय मॅय्द 1086

वण्मैक्कुम्–दानशीलता और; तिरु मऱैकट्कुम्–दिव्य वेदों और; वानिलुम् पॅरिय–आकाश से भी बड़े; तिण्मैक्कुम्–साहस का; तनि उऱैयुळान्–अप्रतिम आश्रयस्थान रावण; मुळ्ळु मुकम्–सारे मुखों को; तिचैयिल्–एक साथ एक दिशा में; कण् वैक्कुम् तोऱुम्–रखकर ज्यों-ज्यों दृष्टि दौड़ाता, त्यों-त्यों; कळिऱ्ऱोटु–गजों के साथ; मातिरम् काक्कुम्–दिशाओं का पालन करनेवाले; ऍण्मरक्कुम्–आठों (दिक्पालों) को और; मऱ्ऱै इरुवर्क्कुम्–अन्य (आकाश और पाताल के ध्रुव और आदिशेष) दोनों को; पॅरुम् पयम् ऍय्त–बड़ा भय लगता। १०८६

रावण दानशीलता, दिव्य वेदज्ञान और आकाश से भी बड़ा साहस —इनका अनुपम आगार था। जब उसके दसों मुख एक ही समय दसों दिशाओं की ओर फिरते और आँखें उन दिशाओं पर पड़तीं, तब आठों दिग्गजों के साथ आठों दिक्पाल और आकाश का ध्रुव और पाताल का अनन्तनाग —सबको बड़ा भय ग्रहण कर लेता। १०८६

एक नायहन् ऱेवियै यॅदिर्न्ददन् पिन्बु
नाहर् वाळिड मुदलॅन नान्मुहन् वैहुम्
माह माल्विशुम् बीऱॅन नडुवळ वरैप्पिल्
तोहै मादर्हळ् मैन्दरिऱ् ऱोन्ऱिनर् शुऱ्ऱ 1087

एक नायकन्–एक नायक श्रीराम की; तेवियै–देवी को; ऍतिर्न्ततन् पिन्पु–देखने के बाद; नाकर् वाळ् इटम्–नागलोक; मुतल् ऍन–से लेकर; नान्मुकन् वैकुम्–चतुर्मुख जहाँ वास करते हैं उस; माक माल् विचुम्पु–बड़े आकाश में स्थित ब्रह्मा के लोक को; ईऱु ऍन–अन्त बनाकर; नटु उळ–मध्य में रहनेवाले; वरैप्पिल्–लोकों की रहनेवाली; तोकै मातर्कळ्–कलापी-सी रमणियाँ; मैन्तरिल्–तरुणों के समान (कामोत्तेजना में असमर्थ); चुऱ्ऱ तोन्ऱिनर्–चारों ओर लगी रहीं। १०८७

अद्वितीय (एक) नायक श्रीराम की देवी से साक्षात्कार होने के बाद कोई भी स्त्री रावण के मन में प्रवेश नहीं कर सकी। इसलिए नागलोक से लेकर आकाश के ब्रह्मा के लोक तक मध्य में रहनेवाले सभी लोकों की कलापी-सी कन्याएँ उसे जो घेरे रहीं, वे युवकों के समान घेरे रहीं। (उसके मन में उनके कारण कोई कामोद्वेग उठा नहीं।)। १०८७

वान̱ रङ्गळुम् वान̱व रिरुवरु मनि̱दर्
आन̱ पुन्̱ऱॊऴि लोरॆन̱ विहऴ्हिन्̱ऱ ववरुम्
एन̱ै निन्̱ऱव रिरुडियर् शिलरॊऴिन् दियारुम्
तून विन्̱ऱवे लरक्कर्दङ् गुऴुवॊडु शुऱ्ऱ 1088

वान̱रङ्कळुम्–वानर और; वान̱वर् इरुवरुम्–शिवजी और श्रीविष्णु, दोनों देवता; मनि̱तर् आन̱–मानव जो रहे; पुल् तॊऴिलोर्–तुच्छ कार्य करनेवाले; ऍन̱–ऐसा; इकऴ्किन्̱ऱ–निन्दा करनेवाले; अवरुम्–वे राक्षस; एन̱ै निन्̱ऱवर्–और जो रहे; इरुटियर् चिलर्–कुछ ऋषि; ऑऴिन्तु–इनको छोड़कर; यारुम्–अन्य सभी; तू नविन्̱ऱ–मांसलिप्त; वेल्–भालाधारी; अरक्कर् तम् कुऴु–राक्षसों के दलों; ऑटु–के साथ; चुऱ्ऱ–घेरे रहते। १०८८

उसकी सेवा में उसके चारों ओर सभी लोग मांसलिप्त भालाधारी राक्षसों के साथ खड़े रहे। उनमें केवल वानर, शिव और विष्णु —दो देव, राक्षसों द्वारा तुच्छ मानव कहकर निन्दित मनुष्य और कुछ ऋषि —ये ही नहीं थे। (बाक़ी सभी थे।)। १०८८

नरम्बु कण्णहत् तुळ्ळुऱै नऱैनिऱै पाण्डिल्
निरम्बु शिल्लरिप् पाणियुङ् गुऱडुनिन्̱ ऱिशैप्प
अरम्बै मङ्गैय रमिऴ्दुहुत् तालन्̱न पाडल्
वरम्बि लिन्̱निशै शॆविदॊऱुञ् जॆविदॊरुम् वऴङ्ग 1089

नरम्पु कण् अकत्तु–तंत्रियों में; उळ् उऱै नऱै–अन्तर्निहित स्वर रूपी शहद; निऱै पाण्टिल्–लक्षणशुद्ध खँजड़ी; निरम्पु चिल्लरि पाणियुम्–भरे रहे 'चिल्लरि' नाम के बाजे; कुऱटुम्–और 'कुऱडु' नाम के तालवाद्य; निन्̱ऱु इचैप्प–बज उठते; अरम्पै मङ्कैयर्–अप्सराएँ; अमिऴ्तु उकुत्ताल्–अमृत सरसातीं; ऍन्̱न–जैसे; पाटल्–जो गाती हैं उन गानों के; वरम्पु इल्–असीम; इन्̱ इचै–मधुर ध्वनि; चॆवि तॊऱुम् चॆवि तॊऱुम्–कर्ण-कर्ण में; वऴङ्क–लगती। १०८९

रावण अपने कानों से संगीत सुन रहा था। वीणा आदि तंत्रियों का स्वरमधु, खँजड़ी, चिल्लरी और 'कुऱडु' (नामक) तालवाद्य आदि के ताल-मेल में अप्सराएँ अमृतगान गा रही थीं। उसकी ध्वनिमधुरता अपार थी। रावण के हर कान में वह संगीत भर रहा था। १०८९

कूडु पाणियि निशैयोडु मुळवोडुङ् गूडत्
तोडु शीऱडि विऴिमनङ् गैयोडु तोडरुम्
आड नोक्कुरि़ नरुन्दव मुनिवर्क्कु ममैन्द
वीडु मीट्कुरु मेनहै मेनहै विळङ्ग 1090

पाणियित् कूटु–ताल से मेल खानेवाले; इचै ओटुम्–संगीत के साथ; मुळवु ओटुम्–और मर्दल के साथ; कूट–मेल लगाते हुए; तोटु चीरु अटि–कमलदल-से चरणों का रखना; विऴि मतम् कैयोटु तोटरुम्–दृष्टि, मन और हाथों की मुद्राएँ जिससे मेल रखती हैं, उस; आटल् नोक्कु उरित्–नाच को देखें तो; अरुम् तव मुनिवर्क्कुम्–कठोर तपस्वी मुनियों को भी; अमैन्त–उनके योग्य; वीटु–मोक्ष से; मीट्कुरुम्–लौटा दे, ऐसा नाचनेवाली; मेल् नकै–हास-वदना; मेतकै–मेनका; विळङ्क–शोभा के साथ रहती। १०६०

हासवदना मेनका नाच रही थी। करताल के मेल में गाना, मर्दल का स्वर आदि के साथ अपने कमलदल-सम सुन्दर चरणों को ठीक तरह से रखकर नाच रही थी। उसकी दृष्टि, हस्तमुद्राएँ और पदचाप —इनमें अतिशय मनमोहक मेल था। वह नृत्य मुनि भी देख ले तो कठोर तपस्या से प्राप्त मोक्ष-गमन से भी उसे लौटा लेता। ऐसा नाचती हुई मेनका उसके बग़ल में विद्यमान थी। १०९०

ऊडि नार्मुहत् तुरुनर वोरुमुह मुण्णक्
कूडि नार्मुहक् कळिनरै योरुमुहङ् गुडिप्पप्
पाडि नार्मुहत् तारमु दोरुमुहम् बरुह
आडि नार्मुहत् तारमु दोरुमुह मरुन्द 1091

ऊटितार्–जो रूठी रहीं; मुकत्तु उरु–उनके मुखों पर दिखनेवाले भावों के; नऱवु–मधुर शहद को; ओरु मुकम् उण्ण–एक मुख पान करता; कूटितार् मुकम्–उससे जो मिली थीं, उनके मुख पर के; कळि नऱै–मोद-मधु; ओरु मुकम् कुटिप्प–(और) एक मुख स्वादन करता; पाटितार् मुकत्तु–गानेवालियों के मुखों का; आर् अमुतु–मधुर अमृत-रस; ओरु मुकम् परुक–एक मुख पीता रहता; आटितार् मुकत्तु–नाचनेवालियों के भावों का; आर् अमुतु–मधुर अमृत; ओरु मुकम् अरुन्त–एक मुख पीता रहता। १०६१

उसके दस मुख थे। हर एक एक काम कर रहा था। एक मुख रूठी हुई स्त्रियों के मुखों का भावमधु पी रहा था। दूसरा उन स्त्रियों के मुदित मुखों के आनन्द का मधु-रस लूट रहा था, जो उससे मिल गयी थीं। तीसरा गानेवालियों के मुखभावों का मधु पी रहा था। चौथा नाचने वालियों के आनन्द रूपी अमृत का स्वादन कर रहा था। १०९१

तेव रोडिरुन् दरशिय लोरुमुहञ् जेलुत्त
मूव रोडुमा मन्दिर मोरुमुह मुयलप्

पाव हारिदन् पावह् मॊरुमुहम् बयिलप्
पूवै शान्हि युरुवॆळि यॊरुमुहम् बॊरुन्द 1092

ऒरु मुकम्–एक मुख; तेवरोटु इरुन्तु–देवों के साथ मिलकर; अरचु इयल्–राजतन्त्र; चॆलुत्त–बनाता; मूवरोटुम्–(पुरोहित, मन्त्री, सेनापति) तीनों के साथ; मा मन्तिरम्–श्रेष्ठ मन्त्रणा में; ऒरु मुकम् मुयल–एक मुख लगा रहता; पावकारितन्–पापकर्मा रावण के; पावकम्–भावों को; ऒरु मुकम् पयिल–एक मुख बनाता रहता; पूवै चानकी–देवी जानकी के; उरु वॆळि–अन्तरिक्ष में दिखनेवाले मिथ्या रूप में; ऒरु मुकम् पॊरुन्त–एक मुख लगा रहता। १०६२

पाँचवाँ मुख देवों के साथ राजनय की बातें कह रहा था। छठा पुरोहित, मन्त्री और सेनापति तीनों के साथ मन्त्रणा में लगा था। सातवाँ उस पापी के पाप कर्मों की कल्पना में लीन था। आठवाँ मुख देवी जानकी का मिथ्या रूप, जो अन्तरिक्ष में (उसकी कल्पना के कारण) दिखाई दे रहा था, उसे देखने में व्यस्त था। १०९२

कान्दण् मॆल्विरऱ् चन्हिदन् कऱ्पॆनुङ् गडलै
नीन्दि येरुव दॆङ्ङनॆन् ड्रॊरुमुह नितैयच्
चान्द ळाविय कॊङ्गॆनन् महळिर्तर् चूळ्न्दार्
एन्दु माडियि नॊरुमुह मॆळिलितै नोक्क 1093

कान्तळ्–'कांदळ' नाम के फूल जैसे; मॆल् विरल्–कोमल उँगलियों वाली; चनकि–जानकी के; कऱ्पु ऎनुम् कटलै–पातिव्रत्य रूपी सागर को; नीन्ति एऱुवतु–तैरकर तीर पर चढ़ना; ऎङ्ङनॆ–कैसा; ऎन्ऱु–ऐसा; ऒरु मुकम् नितैय–एक मुख सोचता; चान्तु अळाविय–चन्दन-चर्चित; कॊङ्कै–स्तनों वाली; तन् चूळ्न्तार्–उसको घेरे रहीं; नल् मकळिर्–सुन्दरी रमणियों द्वारा; एन्तुम् आटियिन्–धृत मुकुर में; ऎळिलितै–अपनी सुन्दरता को; ऒरु मुकम् नोक्क–एक मुख देखता रहता। १०६३

नवाँ मुख सोच रहा था कि 'कान्दळ' पुष्प के समान कोमल उँगलियों वाली जानकी के पातिव्रत्य-सागर को कैसे तरा जाय? दशवाँ मुख आईने में अपना सौंदर्य देख रहा था, जिसे चन्दनर्चचित स्तनों वाली उसकी पार्श्ववर्तिनियाँ उठाकर उसके मुख के सामने दिखा रही थीं। १०९३

पॊदुम्बर् वैहुतेन् पुक्करुन्दु वऱ्कहम् बुलरुम्
मदम्बॆय् वण्डॆनच् चनहिपान् मनञ्जॆल मरुहि
वॆदुम्बु वारहम् वॆन्दळि वाऱ्नहिल् विळिनीर्
तवुम्बु वार्विळित् तारवे ड्रोडॊरुन् दाक्क 1094

पॊतुम्पर्–झाड़ों में; वैकु तेन्–मिलनेवाले शहद को; पुक्कु अरुन्तुतऱ्कु–घुसकर पान करने; अकम् पुलरुम्–मन को संकट में डालनेवाले; मतम् पॆय् वण्टु ऎन–मदस्रावी भ्रमर जैसे; चनकि पाल्–जानकी की ओर; मनम् चॆल–मन के जाते;

मऴुकि वॆंतुम्पुवार्–दुःख-तप्त रहनेवाली; अकम् वॆंन्तु–चित्त झुलसकर; अऴिवार्–मिटनेवाली; नकिल्–स्तनों पर; विऴि नीर्–और आँखों के आँसू; ततुम्पुवार्–छलकानेवाली स्त्रियों के; विऴि तारै–नेत्रों की पंक्तियाँ रूपी; वेल्–भाले; तोळ् तोऱम्–सारे कन्धों पर; ताक्क–प्रहार करते। १०६४

उसका मन झाड़-मध्य रहे शहद को घुसकर पीने के लिए लालायित रहनेवाले भ्रमर के समान जानकी की ओर जा रहा था। उससे अनेक स्त्रियाँ दुःखतप्त हुईं। वे व्याकुलमना होकर झुलसीं और क्षीण हुईं। अपने स्तनों पर अपनी आँखों से आँसू बहाने लगीं। ऐसी रावण की प्यारियों की आँखों की पंक्तियों के भाले उसके कन्धों में जाकर चुभ रहे थे। १०९४

माऱ ळाविय महरन्द नऱवुण्डु महळिर्
वीऱ ळाविय मुहिण्मुलै मॆंळुहिय शान्दिऩ्
शेऱ ळाविय शिऱुनऱुञ् जीदळत् तॆंन्ऱल्
ऊऱ ळाविय कडुवॆंन्न वुडलिडै नुळैय 1095

माऱु अळाविय–(विरहियों के साथ) वैमनस्य रखनेवाला; मकरन्त नऱवु उण्टु–मकरन्द-भरा शहद पान कर; मकळिर् वीऱु अळाविय–स्त्रियों के गर्वोन्नत; मुकिऴ् मुलै–कुड्मल स्तनों पर; मॆंळुकिय चान्तिऩ्–लिप्त चन्दन के; चेऱु अळाविय–लेप पर लगा आनेवाला; चिऱु–मन्द; नऱुम्–सुगन्धित; चीतळ–शीतल; तॆंन्ऱल्–मलयपवन; ऊऱु अळाविय–दुःखमिश्रित; कटु ऍन्न–विष के समान; उटल् इटै–रावण के शरीर के अन्दर; नुळैय–प्रवेश करता। १०६५

विरही जनों का शत्रु है मलयपवन। वह मकरन्द और शहद पीकर (समेट लेकर) स्त्रियों के गर्वोन्नत, कलियों-से स्तनों पर लिप्त चन्दनलेप से लगकर बहा। वह मन्द सुगन्धित शीतल दक्षिणी पवन दुःखदायी विष के समान उसके शरीर में घुसकर उसे सता रहा था। १०९५

तिङ्गळ् वाणुदल् मडन्दैयर् शेयरि किडन्द
अङ्ग यत्तडन् दामरैक् कलरियो नाहि
वॆंङ्गण् वानवर् दानव रॆंन्ऱिवर् विरियाप्
पॊंङ्गु कैहळान् दामरैक् किन्दुवे पोन्ऱुम् 1096

तिङ्कळ् वाळ् नुतल्–(आठवें दिन के) चन्द्रमा-जैसे उज्ज्वल ललाट वालियों के; चेय् अरि किटन्त–लाल डोरों से युक्त; अम् कय–सुन्दर सरोवर के; तटम् तामरैक्कु–बड़े-बड़े कमलपुष्पों के लिए; अलरियोऩ् आकि–सूर्य बनकर; वॆंम् कण्–शत्रु; वाऩवर् ताऩवर् ऍन्ऱु–देव और दानव-कथित; इवर्–इन लोगों के; विरिया–अविकसित (बन्द); पॊंङ्कु–रहनेवाले; कैकळ् आम् तामरै–हाथ रूपी कमलों के लिए; इन्तुवे पोन्ऱुम्–चन्द्र के ही समान रहा। १०६६

रावण आठवें दिन के चन्द्रमा-तुल्य ललाट वाली स्त्रियों के, लाल डोरों से युक्त व सुन्दर सरोवर के कमल-तुल्य मुखों के लिए सूर्य था (उनके मुख मोदविकसित थे) और शत्रु देव-दानवों के बन्द (अंजलि-बद्ध) हाथों के कमलों के लिए इन्दु-सम था। (रावण के सामने उनके हाथ हमेशा अंजलि में जुड़े थे।)। १०९६

इरुन्द वॆण्डिशैक् किऴवनै मारुदि यॆदिर्न्दान्
करुन्दि णाहत्तै नोक्किय कलुऴनिऱ् कनन्ऱान्
तिरुन्दु तोळिडै वीक्किय पाशत्तैच् चिन्दि
उरुन्दु नञ्जुपोल् बवन्वयिऱ् पाय्वॆन्न् ऱुडन्ऱान् 1097

इरुन्त–इस भाँति विराजमान; ऍण्तिचै किऴवनै–आठों दिशाओं के राजा को; मारुति–मारुति ने; ऍतिर्न्तान्–सामने (लाया) जाकर देखा; करुम्–काले; तिण्–सबल; नाकत्तै नोक्किय–देखते हुए; कलुऴतिल्–गरुड़ के समान; कनन्ऱान्–नाराज हुआ; तिरुन्तु तोळ् इटै–सुघड़ कन्धों पर के; वीक्किय–कसे हुए; पाचत्तै चिन्ति–पाश को तोड़कर; उरुन्तु नञ्चु पोल्पवन्–संकटकारी विष-तुल्य; वयिन्–(रावण) पर; पाय्वॆन्–झपटूंगा; ऍन्ऱु–ऐसा; उटन्ऱान्–क्रुद्ध हुआ। १०९७

मारुति ने आठों दिशाओं के शासक, रावण को समक्ष देखा। काले और मोटे सर्प को देखकर गरुड़-जैसा वह कोप से भर गया। उसने आप ही आप कहा कि "अपने सुघर कन्धों से पाश-बन्धन को तोड़ दूंगा। दुःखदायी विष-सदृश रहनेवाले रावण पर झपट पड़ूंगा।" वह क्रुद्ध हुआ। १०९७

उऱङ्गु हिन्ऱपो दुयिरुण्डल् कुऱ्ऱमॆन् ऱॊऴिन्देन्
पिऱङ्गु पॊन्मणि याशनत् तिरुक्कवुम् बॆऱ्ऱेन्
तिऱङ्ग ळॆन्बल शिन्दिप्प दिवन्ऱलै शिदऱि
अऱङ्गॊळ् कॊम्बिनै मीट्टुड नहल्वॆन्न् ऱमैन्दान् 1098

उऱङ्कुकिन्ऱ पोतु–सोते समय; उयिर् उण्टल्–प्राण पी (हर) लेना; कुऱ्ऱम् ऍन्ऱु–दोष है, समझकर; ऒऴिन्तेन्–वह विचार त्याग दिया; पिऱङ्कु–शोभायमान; पॊन् मणि आचनत्तु–स्वर्ण-रत्नमय आसन पर; इरुक्कवुम् पॆऱ्ऱेन्–रहता हुआ देखता हूँ; तिऱङ्कळ् पल–अनेक रीतियों से; ऍन् चिन्तिप्पतु–क्या सोचना है; इवन् तलै चितऱि–इसके सिरों को गिराकर; अऱम् कॊळ् कॊम्पिनै–(पातिव्रत्य) धर्मावलम्बी पुष्पशाखा-सी देवी को; मीट्टु–छुड़ाकर; उटन् अकल्वॆन्–तुरन्त चला जाऊँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; अमैन्तान्–संकल्प किया। १०९८

जब रावण सो रहा था तब मैंने उसे मारने का विचार त्याग दिया था, क्योंकि निद्रारत आदमी को मारना दोषपूर्ण है। अब देखता हूँ कि वह स्वर्णरत्नमय आसन पर आसीन है। अब विविध रीतियों से क्या

सोचना है ? अभी इसके सिरों को गिरा दूँगा और पातिव्रत्यधर्मपालिनी पुष्पशाखा-तुल्य देवी को छुड़ाकर तुरन्त ले जाऊँगा। हनुमान ने यह संकल्प किया। १०९८

तेवर् दानवर् मुदलिनर् शेवहन् ट्रेवि
कावल् कण्डिव णिरुन्दवर् कट्पुलन् कदुवप्
पाव कारितन् मुडित्तलै परित्तिलॅ नॅन्राल्
एव दामिनि मेर्चॅयु माळ्विनै यॅन्रान् 1099

चेवकन् तेवि—श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को; कावल् कण्टु—बन्धन में देखकर भी; इवण् इरुन्तवर्—यहाँ रहनेवाले; तेवर् तानवर् मुतलिनर्—देव, दानव आदि; कण्पुलन् कतुव—अक्षेन्द्रियगोचर रीति से; पावकारि तन्—पापकर्मा के; मुटि तलै—मुकुटधारी सिरों को; परित्तु इलॅन् ॲन्राल्—न नोच लूँ तो; इनि मेल्—आगे; चॅय्युम् आळ् विनै—कर्तव्य पौरुषकर्म; एवतु आम्—कौन सा होगा; ॲन्रान्—कहा। १०९९

ये रहे देव और दानव, जो श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को बन्धन में देखकर भी यहाँ चुप रहते हैं। इनकी ही आँखों के सामने पापकर्मा इसके सिर नहीं नोच लूँगा, तो अन्य कौन सेवा-कार्य (पौरुषमय कार्य) है जो किया जाय ? । १०९९

माडि रुन्दमर् ट्रिवन्बुणर् मङ्गैयर् मरुहि
ऊडि रिन्दिड मुडित्तलै तिशैदोरु मुरुट्टि
आडल् कण्डुनिन् ड्रार्क्किन्र दहुकोडि दम्मा
तेडि वन्ददोर् कुरङ्गॅन्नुम् बॅरुम्बॊरुळ् तॅरिय 1100

तेटि वन्ततु—खोजता आया; ओर् कुरङ्कु—एक वानर; माट्टु इरुन्त—पास में रहीं; इवन् पुणर् मङ्कैयर्—इसकी समागमयोग्य स्त्रियों को; मरुकि—भ्रमित-दुःखित होकर; ऊटु इरिन्तिट—अन्दर तितर-बितर भागने को मजबूर करते हुए; मुटि तलै—मुकुट-सिर को; तिचै तॊरुम् उरुट्टि—दसों दिशाओं में लुढ़काकर; आटल् कण्टु—उनका तड़पना देखकर; निन्रु आर्क्किन्रतु—खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है; अतु कॊटितु—वह हिंस्र है; ॲन्नुम्—ऐसा; पॅरुम् पॊरुळ्—बड़ा यश; तॅरिय—प्रकट हो ऐसा। ११००

एक वानर जानकी को खोजता आया। उसने इसके पास जो रहीं, इसके समागमयोग्य उन स्त्रियों को भ्रमित-दुःखित हो अन्दर तितर-बितर भागने देते हुए इसके मुकुटसिरों को दसों दिशाओं में लुढ़का दिया; उन सिरों का छटपटाना देखता है और खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है। यह बड़ा ही क्रूर बन्दर है। —ऐसी बड़ी (कीर्ति की) बात प्रकट करते हुए— । ११००

नीण्ड वाळॅयिऱ् ऱरक्कनैक् कण्गळि नेरे
काण्डल् वेण्डियिव् वुयिर्शुमन् दॅदिर्शिल कळऱि
मीण्ड पोळ्दुण्डु वशैप्पॊरुळ् वॅन्ऱिले नॅन्निनुम्
माण्ड पोदिनुम् बुहऴन्ऱि मऱ्ऱुमॊन् ऱुण्डो 1101

नीण्ट वाळ्–लम्बी तलवार-तुल्य; ॲयिऱ्ऱु अरक्कनै–दन्तोरे (रावण-) राक्षस को; कण्कळिन्–आँखों के; नेरे काण्टल् वेण्टि–समक्ष देखना चाहकर; इ उयिर्–यह प्राण; चुमन्तु–धारण करता हुआ; ॲतिर्–उसके सामने; चिल कळऱि–कुछ कहकर; मीण्ट पोळ्तु–लौट जाने पर भी; वचै पॊरुळ् उण्टु–निंदावचन ही होगा; वॅन्ऱु इलेन्–मैं न जीतूँ; ॲनिनुम्–तो भी; माण्ट पोतितुम्–मरने पर भी; पुकळ् अन्ऱि–यश के सिवा; मऱ्ऱुम् ऑन्ऱु उण्टो–और दूसरा (अपयश) होगा क्या। ११०१

लम्बी तलवार के समान दाँतों वाले राक्षस (रावण) को समक्ष देखना चाहा। इसीलिए यह प्राण धारण करता रहा। अब इसके मुख पर कुछ कहकर लौट जाऊँ तो भी अपवाद ही होगा। पर लड़ूँ तो न जीतने पर भी, मारे जाने पर भी यश ही मिलेगा। उसे छोड़कर दूसरा (अपयश) मिलेगा क्या? (नहीं)। ११०१

ॲन्ऱु तोळिडै यिरुक्किय पाशमिर् ऱेहक्
कुन्ऱिन् मेलॅळुङ् गोळरि येऱॅनक् कुदियिल्
शॅन्ऱु कूडुव लॅन्बदु शिन्दनै शॅय्या
निन्ऱु कारिय मन्ऱॅन नीदियि निनैन्दान् 1102

ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; तोळ् इटै–कन्धों के मध्य; इरुक्किय पाचम्–कसे हुए पाश को; इऱ्ऱु एक–भग्न कर दूर के; कुन्ऱिन् मेल्–गिरि पर; ॲळुम्–उछलने के लिए उठे; कोळरि एऱु–पुरुष केसरी; ॲन–जैसे; कुतियिल् चॅन्ऱु–एक छलाँग में जाकर; कूटुवल् ॲन्पतु–पहुँच जाऊँगा, ऐसा; चिन्तनै चॅय्या–सोचकर; निन्ऱु–रुककर; कारियम् अन्ऱु–यह करणीय नहीं; ॲन–ऐसा; नीतियिन्–न्याय की रीति से; निनैन्तान्–विचारा (हनुमान ने)। ११०२

ऐसा सोचकर उसने विचार किया कि स्कन्धपाश को तोड़कर पर्वत पर उछलने को उठनेवाले पुरुष केसरी के समान छलाँग मारूँ और रावण के पास जाऊँ। पर यह विचार रोककर वह नीति की बात सोचने लगा कि यह करने योग्य कार्य नहीं। ११०२

कॊल्ललान् दरत्तनु मल्लन् कॊऱ्ऱमुम्
शॊल्ललान् दरत्तनु मल्लन् ऱॊल्लैनाळ्
अल्लॅलान् दिरण्डनन् निरत्त नाऱ्ऱलै
वॅल्लला मिरामनाऱ् पिऱरुम् वॅल्वरो 1103

कॊल्लल् आम्–मार सकूँ ऐसी; तरत्तनुम् अल्लन्–बनावट का भी नहीं;

कोर्र्रमुम्–इसका पराक्रम भी; चोल्लल् आम् तरत्ततुम्–वर्ण्य रीति का; अल्लन्–नहीं; तोल्लै नाळ्–बहुत प्राचीन काल से; अल् ॲलाम्–अन्धकार सब; तिरण्टु अन्त–इकट्ठा हुआ जैसे; निऱत्तन्–रंग वाले के; आर्रलै–बल को; इरामताल् वॅल्लल् आम्–श्रीराम ही परास्त कर सकेंगे; पिऱरुम् वॅल्वरो–दूसरे जीत सकेंगे क्या। ११०३

हनुमान ने सोचा कि यह रावण ऐसी बनावट का नहीं दिखता कि आसानी से मारा जाय! उसकी विजयशीलता भी वर्णनीय नहीं लगती। बहुत प्राचीन काल से लेकर अब तक का सारा अन्धकार इकट्ठा होकर आया हो —ऐसे रंग का है यह! इसके पराक्रम को एक श्रीराम ही परास्त कर सकते हैं। और कोई जीत सकेगा क्या? । ११०३

ॲन्नैयुम् वॅलऱ्करि दिवनुक् कीण्डिवन्
तन्नैयुम् वॅलर्करि वॅतक्कुन् दाक्किनाल्
अन्नवे कालङ्गळ् कळियु मादलाल्
तुन्नरुञ् जॅरुत्तोळि रॉडङ्ग रूयदो 1104

ॲन्नैयुम् वॅलऱ्कु–मुझे भी जीतना; इवनुक्कु अरितु–इसके लिए दुस्साध्य है; ईण्टु–यहाँ; इवन् तन्नैयुम्–इसको भी; ॲतक्कुम्–मेरा; वॅलर्कु अरितु–जीतना असाध्य होगा; ताक्किनाल्–इससे लड़ूँ तो; अन्नवे–वैसे ही; कालङ्कळ् कळियुम्–काल बीत जायगा; आतलाल्–इसलिए; तुन् अरुम्–अगम; चॅरु तोळिल्–युद्ध-कार्य; तॊटङ्कल्–प्रारम्भ करना; तूयतो–सही होगा क्या। ११०४

उसका मुझे जीतना भी असाध्य है। वैसे ही यहाँ उसे जीतना भी मेरे लिए दुस्साध्य है! अगर युद्ध में लग जाऊँ तो परस्पर अजेय होने से बहुत दिन बीत जायँगे। इसलिए अगम युद्ध का प्रारम्भ करना निर्दोष काम होगा क्या (कैसे)? । ११०४

एळुय रुलहङ्गळ् यावु मिनबुरप्
पाळिवन् बुयङ्गळो डरक्कन् पः(ह)ऱलेप्
पूळियिऱ् पुरट्टलॅन् बूणिप् पामॅन
ऊळियान् विळम्बिय वुरैयु मोन्ऱुण्डाल् 1105

एळु–सात; उयर् उलकङ्कळ्–ऊपर के लोक; यावुम् इन्पु उऱ–सब सुखी रहें ऐसा; अरक्कन्–राक्षस (रावण) के; पाळि–स्थूल; वन् पुयङ्कळ् ओटु–सबल हाथों के साथ; पल् तलै–अनेक (दस) सिरों को; पूमियिल् पुरट्टल्–भूमि पर लुढ़काना; ॲन् पूणिप्पु आम्–मेरा संकल्प है; ॲन–ऐसा; ऊळियान्–युगपति श्रीराम का; विळम्पिय–कहा; उरैयुम् ऑन्ऱु–वचन भी एक; उण्टु–है। ११०५

इसके अलावा श्रीराम की सौगन्ध भी एक है। उन्होंने कहा है कि भूमि के साथ ऊपर के सातों लोकों को सुखी बनाते हुए इस राक्षस

रावण की स्थूल और सशक्त भुजाओं के साथ इसके अनेक (दस) सिरों को भूमि पर लुढ़काने का मैंने संकल्प किया है। ११०५

इङ्गॊरु तिङ्गळे यिरुप्पल् यान्नॆ
अङ्गणा यहत्र्रत दाणै कूऱिय
मङ्गैयु मन्नुयिर् तुऱत्तल् वाय्मैयाल्
पॊङ्गुवॆञ् जॆरुविडैप् पॊऴुदु पोक्किनाल् 1106

पॊङ्कु–बहुत; वॆम् चॆरु इटै–भयंकर युद्ध में; पॊऴुतु पोक्किनाल्—समय व्यय करूँ तो; इङ्कु–यही; ऒरु तिङ्कळे–एक ही महीने; यान् इरुप्पल्–मैं जीवित रहूँगी; ऎन्न–ऐसा; अम् कण्–सुन्दर भूतल के; नायकन् तनतु आणै–नायक श्रीराम की सौगन्ध खाकर; कूऱिय–जिन्होंने कहा; मङ्कैयुम्–उन देवी का भी; मन् उयिर्–अपने से लगे प्राणों को; तुऱत्तल्–त्याग देना; वाय्मै आल्–सत्य हो जायगा। ११०६

और भी समयभक्षी घमासान समर में मैं समय व्यय करता रहूँ, तो अपने जगत्पति श्रीराम की सौगन्ध खाकर जिन देवी ने कहा कि मैं एक ही महीने जीवित रहूँगी, उनका मरना सत्य हो जायगा। ११०६

आदला नमर्त्तॊऴि लऴ्हिद् ऱन्ऱरुम्
तूदनान् दन्मैये तूय्दॆन् ऱुन्निनान्
वेदना यहन्ऱनित् तुणैवन् वॆन्ऱिशाल्
एदिल्वा ळरक्कन्न दिरुक्कै यॆय्दिनान् 1107

आतलाल्–इसलिए; अमर् तॊऴिल्–युद्ध का काम; अऴकिद् अन्ऱु–सुन्दर (अच्छा) काम नहीं; अरुम् तूतन्–श्लाघ्य दूत; आम् तन्मैये–बनने का गुण ही; तूय्तु–निर्दोष है; ऎन्ऱु उन्नितान्–ऐसा सोचता; वेत नायकन्–वेदनायक श्रीराम का; तनि तुणैवन्–अद्वितीय सहायक; वॆन्ऱि चाल्—विजयशील; एतिल्—शत्रु; वाळ् अरक्कनतु–तलवारधारी राक्षस (रावण) के; इरुक्कै–रहने के स्थान पर; ऎय्तितान्–पहुँचा। ११०७

इन कारणों से समरकार्य सुन्दर काम नहीं है ! श्रेष्ठ दूत का पात्र अदा करना ही निर्दोष है। यह सोचकर वेदनाथ श्रीराम का अप्रतिम सहायक हनुमान पराक्रमी शत्रु, तलवारधारी रावण के पास गया। ११०७

तीट्टिय वाळॆन्नत् तॆऱुहट् टेवियर्
ईट्टिय कुऴुविडै यिरुन्द वेन्दर्कुक्
काट्टिन्न नुमनैक् कडलि नारमु
दूट्टिय वुम्बरै युलैय वोट्टिनान् 1108

तीट्टिय वाळ् ऎन्न–तेज की हुई तलवार के समान; तॆऱु कण्–चुभती आँखों वाली; तेवियर्–अपनी स्त्रियों के; ईट्टिय कुऴु ईटै–एकत्रित समूह-मध्य; इरुन्त

एन्तर्कु–जो रहा उस राजा को; कटलित्–क्षीरसागर का; आर् अमुतु ऊट्टिय–अपूर्व अमृत जिन्होंने खाया था, उन; उम्परै–देवों को; उलैय–दुःखी करके; ओट्टितान्–जिसने भगाया उस (इन्द्रजित्) ने; अनुमनै–हनुमान को; काट्टिनन्–दिखाया। ११०८

तब क्षीरसागरामृतपायी देवों को दुःखी कर खदेड़नेवाले इन्द्रजित् ने हनुमान को उस रावण को दिखाया जो तेज़ की हुई तलवार के समान चुभकर वेदना देनेवाली आँखों से युक्त अपनी पत्नियों के जमघट के मध्य रहा। ११०८

पुवनमॆंत् तनैयवै यनैत्तुम् बोर्हडन्
दवनैयुर् ररियुरु वान वाण्डहै
शिवनॆंतच् चॆङ्गणा नॆंतच्चॆय् शेवहन्
इवनॆंतक् कूरिनिन् ररुहै कूप्पिनान् 1109

पुवतम् ऍंतुलनै–भुवन जितने हैं; अवै अनैत्तुम्–उन सबको; पोर् कटन्तवनै–युद्ध में जिसने जीता था, उसके; उर्रु–पास जाकर; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; अरि उरुवान इवन्–वानर-रूप में यह; चिवन् ऍंत–शिव के समान; चॆम् कणान् ऍंत–अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के समान; चॆय्–युद्ध किया; चेवकन्–श्रेष्ठ वीर है; ऍंत कूरि–यह कहकर; निन्रु–उसके सामने स्थित होकर; इरु कै कूप्पिनान्–दोनों हाथ जोड़े (इन्द्रजित् ने)। ११०९

जितने भुवन हैं उन सबके युद्धविजेता, रावण के पास जाकर इन्द्रजित् ने कहा कि पुरुषश्रेष्ठ! वानरशरीरधारी यह श्रेष्ठ वीर है, जिसने शिव के समान और अरुणाक्ष (पुण्डरीकाक्ष) विष्णु के समान युद्ध किया। ११०९

नोक्किय कण्गळा नॊरिर्क नर्पॊरि
तूक्किय वनुमन्मॆय् मयिर्शु रुक्कॊळत्
ताक्किय वुयिर्प्पॊडु तवळ्न्द वॆम्बुहै
वीक्किय ववनुडल् विशित्त पाम्बिनै 1110

नोक्किय कण्कळाल्–उसको देखनेवाली (रावण की) आँखों से; नॊरिल्–छूटकर जल्दी गये; कनल् पॊरि–अग्नि के कण; तूक्किय–खड़े रहे; अनुमन् मॆय् मयिर्–हनुमान के शरीर के बालों को; चुरु कॊळ–झुलसाते हुए; ताक्किय–वेग से लगे; उयिर्प्पु ओटुम्–श्वास के साथ; तवळ्न्त–जो मिलकर गया उस; वॆम् पुकै–गरम धुएँ ने; अवन् उटल् विचित्त–शरीर को बाँधे रहे; पाम्पिन्–सर्प (अस्त्र) के समान; वीक्किय–कसकर बाँध लिया। १११०

रावण ने हनुमान को सक्रोध घूरा। तब उसकी आँखों से जो अग्निकण निकलकर तेज़ चले, वे हनुमान के शरीर के उठे हुए बालों को झुलसाते हुए उस पर गिरे। उसकी साँसों के साथ जो धुआँ बढ़ चला, उसने उस सर्पपाश के समान उसके शरीर को कस लिया जो उसके शरीर को बाँधे हुए था। १११०

अऩ्ऩदोर् वॅहुळिय ऩमर रादियर्
तुऩ्ऩिय तुऩ्ऩलर् तुणुक्कञ् जुऱ्ऱुऱ
ऍऩ्ऩिवण् वरवुनी यारै यॅऩ्ऱवऩ्
तऩ्मैयै विऩविऩऩ् कूऱ्ऱिऩ् ऱऩ्मैयाऩ् 1111

कूऱ्ऱिऩ् तऩ्मैयाऩ्–यम के-से स्वभाव वाले ने; अऩ्ऩतु ओर्–ऐसे; वॅकुळियऩ्–क्रुद्ध बनकर; अमरर् आतियर्–देव आदि; तुऩ्ऩिय–जो घेरे रहे; तुऩ्ऩलर्–उन शत्रुओं को; तुणुक्कम्–डर; चुऱ्ऱु उऱ–अभिभूत करते हुए लगे, ऐसा; इवण् वरवु–यहाँ आना; ऍऩ्–क्यों; नी यारै–तुम कौन; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अवऩ् तऩ्मैयै–उसकी स्थिति; विऩविऩऩ्–पूछी। १११1

यम के-से स्वभाव के उस रावण ने ऐसा क्रुद्ध बनकर हनुमान से उसकी बातें जानने के विचार से पूछा कि तुम्हारा इधर आना क्योंकर हुआ ? तुम हो कौन ? उसका क्रोधी स्वर ऐसा था कि पास रहे देव आदि उसके शत्रु दहल उठे। ११११

नेमियो कुलिशियो नॅडुङ्ग णिच्चियो
तामरैक् किऴवऩो तऱुहट् पः(ह्)ऱलैप्
पूमिताङ् गौरुवऩो पॊरुदु मुऱ्ऱुवाऩ्
नाममु मुरुवमुङ् गरन्दु नण्णिऩाय् 1112

नेमियो–चक्रधारी (विष्णु) हो; कुलिचियो–कुलिशपाणी; नॅटुम् कणिच्चियो–दीर्घ त्रिशूल रखनेवाला शिव; तामरै किऴवऩो–कमलासन ब्रह्मा; तऱुकण्–निडर; पल् तलै–अनेक सिरों का; पूमि ताङ्कु–भूभारवाही; ऒरुवऩो–एक (आदिशेष) हो; पॊरुतु–लड़कर; मुऱ्ऱुवाऩ्–नाश करने; नाममुम् उरुवमुम्–नाम और रूप; करन्तु–छिपाकर; नण्णिऩाय्–इधर आये। १११२

रावण ने पूछा कि तुम क्या चक्रधारी विष्णु हो ? या कुलिशपाणी ? लम्बे त्रिशूल रखनेवाला शिव ? या कमलासन ब्रह्मा ? या निडर और अनेक सिर वाले भू-भृत एक आदिशेष ? इसमें कौन हो जो लंका में युद्ध करके उसका सत्यानाश करने हेतु नाम व रूप बदलकर आये हो ? । १११२

निऩ्ऱशैत् तुयिर्हवर् नीलक् कालऩो
कुऩ्ऱशैत् तयिलुऱ वॅऱिन्द कॊऱ्ऱऩो
तॅऩ्ऱिशैक् किऴवऩो तिशैनिऩ् ऱाट्चियर्
ऍऩ्ऱिशैक् किऩ्ऱव रिवरुऴ् यावऩो 1113

निऩ्ऱु–(समक्ष) स्थित होकर; अचैत्तु–बन्धन में कसकर; उयिर् कवर्–प्राण हरनेवाला; नील कालऩो–काला कालदेव यम; कुऩ्ऱु अचैत्तु–(क्रौंच) गिरि को हिलाकर; अयिल्–भाला; उऱ–अन्दर जाकर तोड़ दे, ऐसा; ऍऱिन्त–जिसने फेंका; कॊऱ्ऱऩो–वह विजयी कुमारदेव हो; तॅऩ् तिचै–दक्षिणी दिशा का;

किळवनो–पालक यम हो; तिचै नितृरु–दिशाओं में रहकर; आट्चियर् अँतृरु–पालन करनेवाले (दिग्पाल) ऐसा; इचैक्कुम्–कहलानेवाले; इवरुळ्–इनमें; नी यावन्–तुम कौन हो। १११३

रावण ने आगे पूछा कि क्या तुम काले रंग वाले कालदेव हो, जो जीवों के समक्ष खड़े होकर उनको पाशबद्ध करके उनके प्राण हर ले जाता है ? या वह विजयी (कार्तिकेय) कुमार हो, जिसने अपनी शक्ति चलाकर क्रौंच पर्वत को हिलाते हुए दो भागों में चीर दिया ? या दक्षिणी दिशा के स्वामी यमराज हो ? (यम और कालदेव अलग माने जाते हैं, और कालदेव यम का आज्ञाकारी दूत है जो जीवों के प्राण हर ले जाता है।) दिक्पाल में तुम कौन हो ? । १११३

अन्दणर् वेळ्वियि नाक्कि याणैयिन्
वन्दुर विडुत्तदोर् वयवॅम् बूदमो
मुन्दोरु मलरुळो निलङ्गै मुर्रुरच्
चिन्दॅनत् तिरुत्तिय तॅरुहट् टॅय्वमो 1114

अन्तणर्–मुनि द्वारा; वेळ्वियिन्–यज्ञ में; आक्कि–उत्पन्न करके; आणैयिन्–आज्ञा के अनुसार; वन्तु उर–मेरे पास आने के लिए; विट्टुत्तु–प्रेषित; ओर् वय–एक बलवान; वॅम्–भयंकर; पूतमो–भूत हो क्या; मुन्तु ओरु–सर्वप्रथम; मलर् उळोन्–कमलवासी (ब्रह्मा) द्वारा; इलङ्कै मुर्रु उर–लंका का अन्त करते; चिन्तु ॲन–तहस-नहस करो; ॲन–कहकर; तिरुत्तिय–रचित; तॅरु कण्–दाहक आँखों वाला; तॅय्वमो–देवता हो। १११४

या तुम एक बहुत ही बलिष्ठ और हिंस्र भूत हो, जिसे मुनियों ने यज्ञ से उद्भूत करके अपनी आज्ञा द्वारा मेरे पास आने के लिए प्रेषित किया ? या कोई द्वेष के साथ जलानेवाली आँखों का देवता हो, जिसको सर्वप्रथम सृष्ट ब्रह्मा ने, लंका नगर को पूर्णरूप से चूर कर दो, कहकर रचकर भेजा है ? । १११४

यारैनी यॅन्तैयिङ् गॅय्दु कारियम्
आरुनै विडुत्तव ररिय वाणैयाल्
शोर्विलै शॉल्लुदि यॅन्नच् चॉल्लिनान्
वेरॊडु ममरर्तम् बुहळ्वि ळुङ्गिनान् 1115

अमरर् तम् पुकळ्–देवों के यश को; वेर् ओटु–जड़ से; विळुङ्कितान्–जिसने खा लिया, उस (रावण) ने; नी यारै–तुम कौन हो; इङ्कु ऍय्तु–इधर आने का; कारियम् ॲन्तै–कार्य क्या है; आर् उनै विटुत्तवर्–कौन तुमको भेजनेवाला है; अऱिय–मुझे बताते हुए; आणैयाल्–मेरी आज्ञा से; चोर्वु इलै–बिना छिपाये; चॉल्लुति–कहो; ॲन्न–ऐसा; चॉल्लितान्–कहा। १११५

देवों के यश को जिसने जड़ से खाया (मिटाया) था, उस रावण ने और भी पूछा कि तुम कौन हो ? इधर आने का हेतु-कार्य कौन सा था ? किसने तुम्हें इधर भेजा ? मेरी आज्ञा है। बिना छिपाये सारी बातें बता दो। रावण ने अपनी बात समाप्त की। १११५

शॊल्लिय वन्नैवरु मल्लॆन् शॊन्नवप्
पुल्लिय वलियिन्नो रेवल् पूण्डिलॆन्
अल्लियङ् गमलमे यन्नैय शॆङ्गणोर्
विल्लिदन् रूदन्था निलङ्गै मेयिनेन् 1116

चॊल्लिय–(तुमसे) कथित; अन्नैवरुम् अल्लॆन्–सभी में (कोई) नहीं हूँ; यान्–मैंने; चॊन्न–कथित; अ–उन; पुल्लिय–अल्प; वलियिनोर्–बलवानों की; एवल्–सेवकाई; पूण्टिलॆन्–नहीं अपनायी है; अल्लि अम्–दलों के साथ सुन्दर; कमलमे अन्नैय–कमल ही सम; चॆम् कण्–अरुणाक्ष; ओर्–अद्वितीय; विल्लितन्–धनुर्वीर का; तूतन्–दूत हूँ; यान् इलङ्कै मेयिनेन्–मैं लंका आया। १११६

हनुमान ने उत्तर दिया कि मैं उन सभी में कोई नहीं हूँ, जिनके नाम तुमने लिये। उन अल्पबली लोगों की दासता मैंने ग्रहण नहीं की है। पंखुड़ियों-सहित कमलपुष्प ही सम जिनके अरुणाक्ष हैं, उन अनुपम धनुर्वीर का दूत बनकर मैं लंका में आया। १११६

अन्नैयवन् यारॆन्न वऱिदि याहियेल्
मुन्नैवरु ममररु मूवर् तेवरुम्
ऍन्नैयव रेन्नैयर् यावर् यावैयुम्
निन्नैवरुम् विन्नैयमु मुडिक्क निन्ऱुळान् 1117

अन्नैयवन्–वह धनुर्धर; यार्–कौन है; ऍन्न–ऐसा; अऱिति आकियेल्–जानना चाहो तो; मुन्नैवरुम्–मुनि; अमररुम्–देव; मूवर् तेवरुम्–त्रिदेव; ऍन्नैयवर् एन्नैयर्–ऐसे अन्य; यावर्–जो भी हों वे; यावैयुम्–अन्य सभी (निर्जीव पदार्थ); निन्नैवु अरुम्–जिसको सोच भी नहीं सकते; विन्नैयमुम्–वह कार्य भी; मुटिक्क–कर चुकने को; निन्ऱु उळान्–(संकल्प लेकर) रहते हैं। १११७

अगर तुम जानना चाहो कि वे वीर कौन हैं तो सुनो। मुनिगण, देवलोग, त्रिदेव और इनके जैसे जितने लोग हैं, और अन्य जो भी जड़ हैं, वे जिसकी कल्पना भी नहीं करते वैसे कठिन काम को भी करने का निश्चय लेकर रहनेवाले हैं वे। १११७

ईट्टिय वलियु मेना ळियऱ्ऱिय तवमुम् याणर्क्
कूट्टिय पडैयुन् देवर् कॊडुत्तनल् वरमुङ् गॊट्पुम्
तीट्टिय वाळ्वु मॆय्दत् तिरुत्तिय पिऱवु मॆल्लाम्
नीट्टिय पहऴि यॊन्ऱान् मुदलॊडु मुडिक्क निन्ऱान् 1118

ईट्टिय वलियुम्–तुम लोगों ने जो संग्रह किया है, वह वल और; मेल् नाळ्–प्राचीन दिनों में; इयर्ऱिय तवमुम्–(तुम लोगों द्वारा) की हुई तपस्या; याणर् कूट्टिय–नये रूप से एकत्रित; पटैयुम्–सेना भी; तेवर् कॉट्टुत्त–देवों द्वारा दत्त; नल् वरमुम्–अच्छे वर; कॉट्पुम्–अन्य साधन; तीट्टिय वाळ्वुम्–श्रेष्ठ जीवन; ऍय्त–बिताने के लिए; तिरुत्तिय पिऱवुम्–रचित सभी; नीट्टिय पकळि ऑन्ऱाल्–(मेरे स्वामी द्वारा) बढ़ाए हुए एक अस्त्र से; मुतल् ऑट्टु मुटिक्क–नाश करने (का संकल्प लेकर); निन्ऱान्–स्थित हैं। १११८

उनका संकल्प है कि तुम्हारा सम्पादित बल, पूर्वकृत तपस्या का फल, नवीन तौर से तुम्हारे द्वारा संगृहीत आयुध, देवताओं द्वारा दत्त वर, अन्य आपके सारे तन्त्र, तुम्हारा श्रेष्ठ जीवन और उसको वैसे बनानेवाली सारी सामग्रियाँ, इन सबको अपने द्वारा प्रेषित एक ही शर द्वारा समाप्त कर लूँ। १११८

तेवरुम् बिऱरु मल्लन् ऱिशैक्कळि ऱल्लन् ऱिक्किन्
कावल रल्ल नीशन् कयिलैयङ् गिरियु मल्लन्
मूवरु मल्लन् मऱ्ऱै मुनिवरु मल्ल नॅल्लैप्
पूवल यत्तै याण्ड पुरवलन् पुदल्वन् पोलाम् 1119

तेवरुम्–देवों में और; पिऱरुम् अल्लन्–अन्यों में एक नहीं; तिचै कळिऱु अल्लन्–दिग्गज नहीं; तिक्किन् कावलर् अल्लन्–दिग्पाल नहीं; ईचन्–ईश्वर की; कयिलै अम् किरियुम्–कैलास की सुन्दर गिरि भी; अल्लन्–नहीं; मूवरुम्–त्रिदेव भी; अल्लन्–नहीं; मऱ्ऱै–अन्य; मुनिवरुम् अल्लन्–मुनिगण नहीं; ऍल्लै पूवलयत्तै–समस्त भूवलय पर; आण्ट पुरवलन्–जिन्होंने शासन किया, उन राजा के; पुतल्वन् पोल् आम्–पुत्र ही हैं। १११९

वे (तुमसे हारकर जो भागे) उन देवों या अन्यों में एक नहीं। दिग्गज, दिग्पाल, ईश्वर की चाँदी की कैलासगिरि, त्रिदेव और अन्य मुनिगण इनमें कोई नहीं। पर वे समस्त भूमि के पालक एक राजा के ही पुत्र हैं। १११९

पोदमुम् बॉरुन्दु वेळ्विप् पुरैयऱु पयनुम् बॉय्दीर्
मादवञ् जुमन्दु तीरा वरङ्गळु मऱ्ऱुम् यावुम्
यादव निनैन्दा नन्न पयत्तन वेदु वेण्डिन्
वेदमु मऱमुञ् जॉल्लु मॅय्यऱ मूर्त्ति विल्लोन् 1120

पोतमुम्–(आत्म-) बोध; पॉरुन्तु वेळ्वि–योग्य यज्ञ के; पुरै अऱु–निर्दोष; पयनुम्–फल और; पॉय् तीर्–असत्य-रहित; मा तवम्–बड़े तप से; चुमन्तु–धारणकर; तीरा वरङ्कळुम्–अमिट वर और; मऱ्ऱुम् यावुम्–अन्य सभी; यातु अवन् निनैन्तान्–जो उन्होंने चाहा; अन्न पयत्तन–वह देनेवाले बने; एतु वेण्टिन्–

हेतु चाहो तो; विल्लोऩ्–वे धनुर्धर; वेतमुम्–वेदों द्वारा प्रतिपादित; अऱमुम् चॊल्लुम्–और धर्म द्वारा कथित; मॆय् अऱ मूर्त्ति–सत्यधर्ममूर्ति हैं। ११२०

ज्ञान, शास्त्रयुक्त यज्ञ के अमोघ फल, असत्यरहित तपस्या, अक्षय वर और अन्य गौरव —ये सब उनके मनमाने फलदायक बने हैं। हेतु क्या है ? वे धनुर्वीर वेदशास्त्र-प्रतिपादित सत्यधर्मस्वरूप हैं। ११२०

कारणङ् गेट्टि यायिऩ् कडैयिला मऱैयिऩ् कण्णुम्
आरणङ् गाट्ट माट्टा वऱिविऩुक् कऱिवाय् निऩ्ऱाऩ्
पोरणङ् गिडङ्गर् कव्वप् पॊदुनिऩ्ऱ मुदले यॆऩ्ऱ
वारणङ् गाक्क वन्दा ऩमररैक् काक्क वन्दाऩ् 1121

कारणम्–(अवतार का) कारण; केट्टि आयिऩ्–पूछोगे तो; कटै इला–अनन्त; मऱैयिऩ् कण्णुम्–वेदों में; आरणम् काट्ट माट्टा–उपनिषदों द्वारा भी बताये न जा सकनेवाले; अऱिविऩुक्कु अऱिवाय्–ज्ञान के भी ज्ञान (आधार-स्वरूप); निऩ्ऱाऩ्–जो हैं; पोर् अणङ्कु–युद्ध में पीड़ित करते हुए; इटङ्कर् कव्व–ग्राह के ग्रसने पर; पॊतु–सामान्य; मुतले ऎऩ्ऱ–आदिदेव पुकारने पर; वारणम् काक्क–गजेन्द्रसंरक्षणार्थ; वन्ताऩ्–जो आये; अमररै–(वे) देवों को; काक्क–रक्षित करने; वन्ताऩ्–आये हैं। ११२१

वह परात्पर ब्रह्म मनुष्य क्यों हुए ? कारण पूछो तो अनन्त वेदों द्वारा या उपनिषदों द्वारा अनिर्दिष्ट ज्ञान के ज्ञानमूल हैं वे। जब ग्राह ने त्रास देते हुए गजेन्द्र का पैर ग्रस लिया, तब गजेन्द्र ने 'सर्वसामान्य रूप से विद्यमान आदिवस्तु !' यही कहकर पुकारा। उसे बचाने पधारे थे वे। आज वे ही देवों के रक्षणार्थ अवतार ले पधारे हैं। ११२१

❀मूलमु नडुवु मीऱु मिल्लदोर् मुम्मैत् ताय
कालमुङ् गणक्कु नीत्त कारणऩ् कैवि लेऩ्दिच्
चूलमुन् दिहिरि शङ्गुङ् गरहमुन् दुऱन्दु तॊल्ले
आलमु मलरुम् वॆळ्ळिप् पॊरुप्पुम्विट् टयोत्ति वन्दाऩ् 1122

मूलमुम् नटुवुम्–आदि और मध्य; ईऱुम् इल्लतोर्–अन्त जिनका नहीं हैं, वह; कारणऩ्–कारणभूत; मुम्मैत्तु आय–तीन (भूत, वर्तमान और भविष्य); कालमुम्–कालों के; कणक्कुम्–तर्क के; नीत्त कारणऩ्–पार रहनेवाला कारण हैं; कै विल् एन्ति–हाथ में धनु लेकर; चूलमुम्–त्रिशूल; तिकिरि–चक्र; चङ्कुम्–शंख और; करकमुम्–कमण्डल को; तुऱन्तु–छोड़कर; तॊल्ले–प्राचीन; आलमुम्–वटपत्र को; मलरुम्–और कमलपुष्प; वॆळ्ळि पॊरुप्पुम्–और चाँदी के (कैलास) पर्वत को; विट्टु–त्यागकर; अयोत्ति वन्ताऩ्–अयोध्या आये। ११२२

आदि, मध्य और अन्तहीन हैं वे। सभी के कारणभूत हैं। त्रिकाल और तर्क के परे हैं। अशेष कारणों का कारण हैं। वे ही हाथ में धनु

धारण कर शंख-चक्र, त्रिशूल और कमण्डल (विष्णु, शिव, ब्रह्मा के हाथ की वस्तुओं) और वटपत्र, कैलासपर्वत और कमलपुष्प (उनके वासस्थानों) को छोड़कर अयोध्या में आये हैं। (कम्बन की धारणा है कि श्रीराम वे आदिमूर्ति हैं, जिनके विष्णु, ईश्वर और ब्रह्मा रूप हैं; जिनको वे तत्तत् कार्य के लिए अपना लेते हैं।)। ११२२

अऱन्दलै निऱुत्ति वेद मरुळ्शुरन् दऱैन्द नीदित्
तिऱन्देरिन् दुलहम् बूणच् चॅन्नॅऱि शॅलुत्तित् तीयोर्
इऱन्दुह नूऱित् तक्को रिडर्दुडैत् तेह वीण्डुप्
पिऱन्दनन् ऱन्बोर् पाद मेत्तुवार् पिऱप्प ऱुप्पान् 1123

तन् पॊन् पातम्–अपने (उनके) स्वर्णचरणों की; एत्तुवार्–वन्दना करनेवालों का; पिऱप्पु अऱुप्पान्–जन्म के काटनेवाले हैं; अऱम् तलै निऱुत्ति–धर्म की संस्थापना करके; वेतम् अरुळ् चुरन्तु–वेदों ने कृपा करके; अऱैन्त–जो घोषित किया; नीति तिऱम्–उन नीतिमार्गों को; उलकम् तॆरिन्तु–संसार जानकर; पूण–अपनावे, ऐसा; चॅम् नॅऱि चॅलुत्ति–धर्मशासन करके; तीयोर् इऱन्तु उक–दुष्टों को मार; नूऱि–मिटाकर; तक्कोर् इटर्–शिष्टों का दुःख; तुटैत्तु–(पोंछ) दूर करके; एक–(बाद अपने परमपद) जाने का संकल्प करके; ईण्टु पिऱन्तनन्–इधर (भूमि में) अवतरित हुए हैं। ११२३

वे अपने चरणों की वन्दना करनेवाले भक्तों का जन्म काटनेवाले प्रभु हैं। धर्मसंस्थापना करना, वेदों द्वारा करुणा के साथ विहित नीति-मार्ग को प्रशस्त बनाना, लोगों को उनका ज्ञान दिलाकर उन पर जाने को सिखाना, दुष्टों का निग्रह, शिष्टों का कष्ट-निवारण आदि करके फिर अपने स्थान में लौट जाने का संकल्प लेकर वे अयोध्या में अवतार ले आये हैं। ११२३

अन्नवऱ् कडिमै शॅय्वे नाममु मनुम नॅन्बेन्
नन्नुद ऱन्नैत् तेडि नाऱ्पॆरुन् दिशैयिऱ् पोन्द
मन्नरिऱ् ऱॅन्बाल् वन्द तात्तक्कु मन्नन् वालि
तन्महन् ऱवन्ऱन् ऱूदन् वन्दनॅन् ऱनिये नॅन्ऱान् 1124

अन्नवऱ्कु–ऐसे उनकी; अटिमै चॅय्वेन्–दासता करता हूँ; नाममुम्–नाम (का); अनुमन् ऍन्पेन्–हनुमान कहाता हूँ; नल् नुतल् तन्नै–(सुन्दर) भाल वाली (सीताजी) को; तेटि–खोजकर; नाल् पॆरुम् तिचैयिल्–चार लम्बी दिशाओं में; पोन्त–जो गये; मन्नरिल्–उन सेनानायकों में; तॆन् पाल् वन्त–दक्षिण की तरफ़ आगत; तानैक्कु मन्नन्–सेना का नायक; वालि तन् मकन्–वाली का पुत्र; अवन् तन् तूतन्–उसका दूत मैं; तनियेन्–एकाकी; वन्तनॆन्–आया हूँ; ऍन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ११२४

उनका दासकर्म करनेवाला हूँ, मैं। मेरा नाम हनुमान है।

सुन्दर भाल वाली सीताजी की खोज में चारों दिशाओं में अनेक वानर वीर गये। उनमें दक्षिण दिशा की ओर जो आयी उस सेना का नायक वाली का पुत्र अंगद है। उसका मैं दूत हूँ और मैं इधर एकाकी आया। ११२४

ऍन्ऱलु मिलङ्गै वेन्द ऩॆयिऱ्ऱिऩ मॆऴिलि नाप्पण्
मिऩ्ऱिरिन् दॆऩ्ऩ नक्कु वालिशेय् विडुत्त तूद
वऩ्ऱिऱ लाय वालि वलियऩ्गॊ लरशिऩ् वाऴ्क्कै
नऩ्ऱुहॊ लॆऩ्ऩ लोडुम् नायहऩ् ऱूद ऩक्काऩ् 1125

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; इलङ्कै वेन्तऩ्—लंका के राजा की; ऍयिऱ्ऱु इतम्—दन्तपंक्तियाँ; ऍऴिलि नाप्पण्–मेघमध्य; मिऩ् तिरिन्तु–बिजली चमकी; ऍऩ्ऩ–जैसे; नक्कु–हँसकर; वालि चेय्–वालीपुत्र के; विटुत्त तूत–प्रेषित दूत; वऩ् तिऱल् आय–बहुत बली; वालि–वाली; वलियऩ् कॊल्–स्वस्थ है क्या; अरचिऩ् वाऴ्क्कै–उसका राज्य-शासन; नऩ्ऱु कॊल्–अच्छा चलता है क्या; ऍऩ्ऩल् ओटुम्–पूछने पर; नायकऩ्—सर्वलोकनायक का; तूतऩ्—दूत; नक्काऩ्–हँसा। ११२५

हनुमान के यह कहने पर लंकाधिपति हँसा और उसकी दन्तपंक्तियाँ मेघमध्य बिजली के समान चमकीं। उसने प्रश्न किया कि वालीसुतप्रेषित दूत! क्या अतिबलिष्ठ वाली स्वस्थ है? उसका राज्य-शासन अच्छा चलता है क्या? जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब सर्वलोकनायक का दूत हँस उठा। (दोनों की हँसी में जो भेद है, वह स्वादनयोग्य है!)। ११२५

अञ्जलै यरक्क पार्विट् टन्दर मडैन्दा ऩऩ्ऱे
वॆञ्जिऩ वालि मीळाऩ् वालुम्बोय् विळिन्द दऩ्ऱे
अञ्जऩ मेऩि यान्ऱ ऩडुहणै यॊन्ऱाऩ् माळ्हित्
तुञ्जिऩ ऩॆङ्गळ् वेन्दऩ् शूरियऩ् ऱोन्ऱ लॆऩ्ऱाऩ् 1126

अरक्क–राक्षस; अञ्चलै–डरो मत; वॆम् चिऩ–भयानक क्रोधी; वालि–वाली; पार् विट्टु–भूतल छोड़कर; अन्तरम् अटैन्ताऩ्–अन्तरिक्ष (स्वर्ग) सिधार गये; मीळाऩ्–लौट नहीं आएँगे; अऩ्ऱे–उसी समय; वालुम्–उनकी पूँछ भी; पोय् विळिन्ततु–मिट गयी; अञ्चऩ मेऩियाऩ् तऩ्–अंजनवर्ण (श्रीराम) के; अटु कणै–घातक बाण; ऒन्ऱाल्–एक के द्वारा; माळ्कि–पीड़ित होकर; तुञ्चिऩऩ्–सो गया; ऍङ्कळ् वेन्तऩ्–हमारे राजा; चूरियऩ् तोऩ्ऱल्–सूर्यकुमार; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (हनुमान ने)। ११२६

हनुमान ने (आश्वासन के स्वर में) उत्तर दिया कि राक्षस रावण! डरो मत! वाली अब भूमि पर नहीं हैं! भयंकर क्रोधी वाली अन्तरिक्ष (स्वर्ग) में सिधार गये। वे लौट नहीं आयेंगे! उसी दिन उनकी पूँछ

भी चली गयी नाश होकर ! (रावण वाली की पूँछ से ही अधिक डरता था, क्योंकि उसी में वह बँधा फिरा !) अंजनवर्ण श्रीराम के एक ही घातक शर से आहत होकर पीड़ा के साथ (सदा के लिए) सो गया ! अब हमारे राजा सूर्यसूनु सुग्रीव हैं। ११२६

ऍन्नुडै यीट्टि तालव् वालियै यॅरुळ्वा यम्बाल्
इन्नुयि रुण्ड दिप्पो दियाण्डैया निराम नॅन्बान्
अन्नवन् दॆवि तन्नै यङ्गद नाड लुट्रु
तन्मैयै युरैशॅय् हॅन्नच् चमीरणन् ट्रनयन् शॊल्वान् 1127

ऍन् उटै ईट्टिताल्–किस अभिप्राय से; इरामन् ऍन्पान्–राम नाम के उसने; अ वालियै–उस वाली के; ऍरुळ् वाय्–बलिष्ठ; अम्पाल्–शर से; इन् उयिर् उण्टतु–प्यारे प्राणों को खा (हर) लिया; इप्पोतु–अब; याण्टैयान्–कहाँ रहता है; अन्नवन् तेवि तन्नै–उसकी पत्नी को; अङ्कतन् नाटल् उट्र–अंगद के ढूँढ़ने का; तन्मैयै–वृत्तान्त; उरै चॅय्क–बताओ; ऍन्न–कहने पर; चमीरणन् ततयन्–समीरणसूनु; चॊल्वान्–बोला। ११२७

रावण ने पूछा कि राम नामक व्यक्ति ने किस अभिप्राय से उस वाली के प्यारे प्राण सशक्त बाण चलाकर हर लिये ? वह राम अब कहाँ रहता है ? उसकी देवी को अंगद खोजता आया, उसका हेतु क्या है ? बताओ। तब समीरणसूनु ने उत्तर में यों कहा। ११२७

तेवियै नाडि वन्द शॅङ्गणाऱ् कॅङ्गळ् कोमान्
आवियोन् ऱाह नट्टा नरुन्दुयर् तुडैत्ति यॅन्न
ओवियर्क् कॅळ्ुद वॊण्णा वुरुवत्त नुरुमै योडुम्
कोवियऱ् चॅल्व मुन्ने कॊडुत्तुवा लियैयुङ् गॊन्ऱान् 1128

तेवियै नाटि वन्त–देवी को खोजते आये; चॅङ्कणाऱ्कु–अरुणाक्ष श्रीराम का; ऍङ्कळ् कोमान्–हमारे राजा; आवि ऑन्ऱु आक–प्राण एक बनाकर; नट्टान्–मित्र हुए; अरुम् तुयर् तुटैत्ति–मेरा कठोर दुःख मिटाओ; ऍन्न–कहने पर; ओवियर्क्कु–चितेरों के लिए; ऍळ्ुत ऑण्णा–जिनका चित्र खींचना असाध्य है; उरुवत्तन्–ऐसे रूप वाले (श्रीराम) ने; उरुमैयोटुम्–रुमा के साथ; को इयल् चॅल्वम्–राज्य की श्री को भी; मुन्ने कॊटुत्तु–पहले देकर; वालियैयुम् कॊन्ऱान्–वाली को भी मारा (श्रीराम ने)। ११२८

अपनी देवी सीताजी को खोजते हुए अरुणाक्ष श्रीराम आये। तब हमारे राजा ने दोनों के प्राण एक बनाकर उनसे मित्रता बना ली। और उनसे प्रार्थना की कि मेरा कठोर दुःख मिटाइए। तभी, समर्थ चितेरों के लिए भी जिनका चित्र बनाना असाध्य है, उन श्रीराम ने सुग्रीव को उनकी पत्नी रुमा के साथ राज्य भी दिलाने का वादा कर दिया। बाद वाली को भी मार डाला। ११२८

आयवऩ् उऩ्ऩो डाण्डत् तिङ्गळोर् नाऩ्गुम् वैहि
मेयवॅम् जेत्तै शूऴ वीऱ्ऱिरुत्ति दिरुन्द वीरऩ्
पोयित्ति नाडु मॅन्ऩप् पोन्दऩम् बुहुन्द तीदॅऩ्
ऱेयवऩ् ऱूदऩ् शॉन्ऩा ऩिरावण ऩिदऩैच् चॉन्ऩाऩ् 1129

आयवऩ् तऩ् ओट्टु–ऐसे सुग्रीव (की सम्मति) से; आण्टु–वहाँ; तिङ्कळ् ओर् नाऩ्कुम्–एक मासचतुष्टय; वैकि–ठहरकर; इऩितु वीऱ्ऱु इरुन्त वीरऩ्–जो सुख से रहे, उन श्रीवीरराघव के; मेय वॅम् चेऩै चूऴ–एकत्रित भयंकर (वानर) सेना के घेरकर आने पर; इति पोय् नाटुम्–अब जाकर खोजो; ऍऩ्ऩ–कहने पर; पोन्तऩम्–हम आये; पुकुन्ततु ईतु–हुआ यह; ऍऩ्ऱु–ऐसा; एयवऩ्–जिन्होंने भेजा था, उनके; तूतऩ्–दूत ने; चॉऩ्ऩाऩ्–कहा; इरावणऩ्–रावण ने; इतऩै–यह; चॉऩ्ऩाऩ्–कहा। ११२९

फिर ऐसे सुग्रीव की सम्मति से श्रीराम चार महीने वहीं, ऋष्यमूक पर्वत पर ससुख ठहरे रहे। अनुपम वीर के पास भयानक वानर-सेना आ मिली। तब उन्होंने आज्ञा दी कि अब जाकर सीताजी की खोज लगाओ। हम आये। आज्ञापक श्रीराम के दूत ने यों कहा। रावण यों बोला। ११२९

उङ्गुलत् तलैवऩ् ऱऩ्ऩो डॉप्पिला वुयर्च्चि योऩै
वॅङ्गॉलै यम्बिऩ् कॉऩ्ऱार् काट्टॉऴिऩ् मेऱ्कॉण् डीरेल्
ऍङ्गुलप् पुरुनुम् जीर्त्ति नुम्मॉडु मियैन्द दॅऩ्ऱाल्
मङ्गुलिऩ् पॉलिन्द ञाल मादुमै युडैत्तु मादो 1130

उम् कुल तलैवऩ् तऩ् ओट्टु–तुम्हारे (वानर) कुल के अधिपति थे, साथ-साथ; ऑप्पु इला–उपमा-रहित; उयर्च्चियोऩै–जो उत्तम थे, उनको; वॅम्–भयंकर; कॉलै अम्पिल्–मारक शर से; कॉऩ्ऱार्कु–जिसने मारा उसकी; आळ्तॉऴिल्–दासता का काम; मेल् कॉण्टीर् एल्–अपनाया है (तुम लोगों ने) तो; नुम् चीर्त्ति–तुम्हारा गौरव; ऍङ्कु उलप्पुरुम्–कहाँ जाकर मिटेगा; नुम् ओटुम्–तुम्हारे लिए; इयैन्ततु ऍऩ्ऱाल्–युक्त रहा तो; मङ्कुलिल् पॉलिन्त–मेघों के कारण पनपनेवाला; आलम्–यह लोक; मातुमै उटैत्तु मातो–सौन्दर्यमय होगा न। ११३०

वाली तुम्हारे कुल का अधिपति था; अलावा इसके वह अप्रमेय गौरवयुक्त था। उसको जिसने अपने भयंकर मारक अस्त्र द्वारा मारा, उसकी दासता का काम तुम लोगों ने अपना लिया है! तुम्हारी कीर्ति कहाँ मिटेगी? अगर यह काम तुम्हारे लिए योग्य हुआ तो मेघों के कारण पनपनेवाला यह भूलोक बड़ा सौंदर्यमय रहेगा न? (व्यंग्य का वचन है।)। ११३०

तम्मुऩैक् कॉलुवित् तऩ्ऩाऩ् कॉऩ्ऱवऩ् कऩ्बु शाऩ्ऱ
उम्मिऩत् तलैव ऩेव यादॅमक् कुरैक्क लुऱ्ऱ

दॆम्मुनैत् तूदु वन्दा यिहल्पुरि तन्मै यॆन्नै
नीम्मॆनक् कॊल्ला नॆञ्ज मञ्जलै नुवरि यॆन्ऱान् 1131

तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; कॊल्वित्तु–किसी के द्वारा मरवाकर; अन्नान् कॊन्ऱवर्कु–वैसा मारनेवाले के प्रति; अन्पु चान्ऱ–प्रेम रखनेवाले; उम् इन–तुम्हारे समूह के; तलैवन् एव–राजा के भेजने पर; यातु–क्या; ऎमक्कु–हमसे; उरैक्कल् उऱ्ऱतु–बताना पड़ा है; ऎम् मुनै–मेरे समक्ष; तूतु वन्ताय्–दूत के रूप में जो आये; इकल् पुरि–ऐसा तुम युद्ध करो; तन्मै ऎन्नै–इसका हेतु क्या है; नॊम् ऎन–सहसा; कॊल्लाम्–मारेंगे नहीं; नॆञ्चम् अञ्चलै–मन में मत डरो; नुवल्ति–कहो; ऎन्ऱान्–कहा। ११३१

अपने ज्येष्ठ भ्राता को किसी के द्वारा मरवाकर, और मारनेवाले पर ही प्रेम करनेवाले अपने समूह के नायक द्वारा प्रेषित तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो ? और मेरे पास दूत बनकर आगत तुमने युद्ध किया। उसका कारण क्या है ? हम तुमको सहसा मारेंगे नहीं। इसलिए बिना डरे बताओ। रावण ने हनुमान से कहा। ११३१

तुणर्त्त तारवन् शॊल्लिय शॊऱ्कळैप्
पुणर्त्तु नोक्किप् पॊदुनिन्ऱ नीर्मैयै
उणर्त्ति नाल दुरुमॆन वुन्नरुङ्
गुणत्ति नानु मिनैयन कूऱिनान् 1132

उन्न अरुम्–अचिंतनीय; कुणत्तितानुम्–उत्तम गुणी हनुमान ने; तुणर्त्त तार्–फूलों के गुच्छों की बनी मालाधारी; चॊल्लिय चॊऱ्कळै–(रावण द्वारा) कथित वचनों को; पुणर्त्तु नोक्कि–मिलाकर विचारा; पॊतु निन्ऱ–सर्वसाधारण; नीर्मैयै उणर्त्तिनाल्–श्रेष्ठ तत्त्वों को समझाऊँ; अतु उरुम्–तो वह फल देगा; ऎन–सोचकर; इनैयन कूऱिनान्–यों बोला। ११३२

हनुमान अचिन्तनीय श्रेष्ठ गुणी था। उसने फूलों के गुच्छों की बनी मालाधारी रावण के सब वचनों को मिलाकर सोचा। उसे लगा कि सर्वसामान्य तत्त्व समझाए जाएँ तो वह शायद अच्छा फल दे सकता है। इसलिए वह यों बोला। ११३२

तूदु वन्ददु शूरियन् कान्मुळै, एदु वॊन्ऱिय नीदि यियैन्वन
शादु वॆन्ऱुणर् हिऱ्ऱियेऱ् ऱक्कन, कोदि ऱन्दन नित्वयिऱ् कूऱुवाम् 1133

चूरियन्–सूर्य के; कान् मुळै–(पैर के अंकुर) पुत्र का; तूतु वन्ततु–दूत बनकर आना हुआ (आया); एतु ऒन्ऱिय–हेतुयुक्त; नीति इयैन्तन–नीतिसम्मत; तक्कन–तुम्हारे हितकारी; कोतु इऱन्तन–दोषरहित; आम्–होंगे (मेरे कथन); चातु ऎन्ऱु–साधु, ऐसा; उणर्किऱ्ऱियेल्–मानोगे तो; निन् वयिन्–तुमसे; कूऱुवाम्–कहेंगे। ११३३

मैं इधर सूर्यसूनु सुग्रीव का दूत बनकर आया हूँ। मैं अब जो भी बातें कहूँगा, वे हेतुयुक्त, नीतिसम्मत, हितकारिणी और निर्दोष हैं। अगर तुम साधु समझोगे तो बताऊँगा। ११३३

वरिदु वीऴ्त्तनै वाऴ्क्कैयै मन्नरम्, शिरिदु नोक्कलै तीमै तिरुत्तिनाय्
इऱुदि युट्रुळ दायिनु मिन्नुमोर्, उऱुदि केट्टि युयिर्नॅडि दोम्बुवाय् 1134

वाऴ्क्कैयै–जन्म को; वरितु–व्यर्थ; वीऴ्त्ततै–बिगाड़ दिया; मन्नु अरम्–राजधर्म पर; चिरितुम्–जरा भी; नोक्कलै–ध्यान नहीं दिया; तीमै तिरुत्तिनाय्–पाप को खूब किया; इऱुति–अन्तकाल; उट्रु उळतु–आ गया है; आयिनुम्–तो भी; इन्नुम्–अब भी; ओर् उऱुति–एक हितोपदेश; केट्टि–सुनो; उयिर्–प्राण; नॅटितु ओम्पुवाय्–बहुत काल तक पाल सकोगे। ११३४

तुमने अपने जन्म को व्यर्थ बिगाड़ दिया है। राजधर्म पर किंचित् भी ध्यान नहीं दिया। पापकार्य बहुत तत्परता के साथ कर रहे हो। तुम्हारा अन्तकाल आ ही गया तो भी एक हितोपदेश है! सुनो तो बहुत काल तक अपने प्राणों को सुरक्षित रख सकोगे। ११३४

पोयिऱ् ऱेनिन् पुलन्वॅन्ऱु पोट्रिय, वायिऱ् ऱीर्वरि दाहिय मादवम्
कायिऱ् ऱीर्वरुङ् गेडरुङ् गऱ्पिनाल्, तीयिऱ् ऱूयव ळैत्तुयर् शॅय्ददाल् 1135

कायिल्–क्रोध करे तो; तीर्वु अरुम्–अवार्य और; केटु अरुम्–अचल; कऱ्पिनाल्–पातिव्रत्य में; तीयिल् तूयवळै–अग्नि से भी पवित्र देवी को; तुयर् चॅय्ततात्–तुमने कष्ट दिया, इसलिए; नितु पुलन् वॅन्ऱु–अपनी इन्द्रियों का निग्रह करके; पोट्रिय–परिपालित; वायिल्–किसी भी मार्ग से; तीर्वु अरितु आकिय–अक्षुण्ण रहा; मा तवम्–(तुम्हारा) बड़ा तप; पोयिट्रे–फलहीन हो गया तो। ११३५

पातिव्रत्य धर्म ऐसा है कि पतिव्रता नारी गुस्सा करेगी तो वह अवार्य होगा। पातिव्रत्य अचल है। पातिव्रत्य धर्मपालन के कारण सीताजी अग्नि से भी पवित्र हैं। उनको तुमने कष्ट दिया है। इसलिए इन्द्रिय-निग्रह करके जिस महान् तप को तुम सभी विध अक्षय रूप से पालते आ रहे थे वह अब छूट जानेवाला है! ११३५

इन्ऱु वीन्ददु नाळैच् चिरिदिरै, निन्ऱु वीन्द दलालिरै निऱ्कुमो
ऑन्ऱु वीन्ददु नल्लुणर् वुम्बरै, वॅन्ऱु वीक्किय वीक्कम् विदियिनाल् 1136

इन्ऱु वीन्ततु–आज का दिन हो गया (चला गया); नाळै–'कल'; चिरितु इरै निन्ऱु–कुछ समय ठहरकर; वीन्ततु–मिटा; अलाल्–नहीं तो; इरै निऱ्कुमो–कुछ स्थायी रहेगा क्या; नल् उणर्वु–श्रेष्ठ बुद्धिमान; उम्परै–देवों को; वॅन्ऱु वीक्किय–जीतकर अर्जित; वीक्कम् ऑन्ऱु–एक गौरव; वितियिनाल्–विधि के कारण; वीन्ततु–नष्ट हो गया। ११३६

'आज' तो गया। 'कल' कुछ देर के बाद जायगा; नहीं तो वह कुछ (अमर) रहनेवाला है क्या ? तुमने श्रेष्ठ ज्ञानी, देवों को जीता और गौरव सम्पादन किया। अब वह, विधि के विधान से दूर हो गया, देखो। ११३६

तीमै नऩ्मैयैत् तीत्तलॊल् लादॆऩुम्, वाय्मै नीक्किऩै मादवत् ताल्वन्द
तूय्मै तूयव ळऩ्वयिऱ् ऱोऩ्ऱिय, नोय्मै याऱ्ऱुडैक् किऩ्ऱऩै नोक्कलाय् 1137

तीमै–पापकार्य; नऩ्मैयै–अच्छे धर्मों को; तीत्तल् ऑल्लातु–मिटा नहीं सकेगा; ऎऩुम्–इस; वाय्मै–सत्य को; नीक्किऩै–तुमने हटा दिया; मातवत्ताल् वन्त तूय्मै–बड़ी तपस्या से प्राप्त पवित्रता को; नोक्कलाय्–न देखकर; तूयवळ् तऩ्–पवित्र देवी के; वयिऩ् तोऩ्ऱिय–प्रति हुए; नोय्मैयाल्–(कामना-) रोग से; तुटैक्किऩ्ऱऩै–पोंछ रहे हो। ११३७

साधु कहा करते थे कि पाप पुण्य को मिटा नहीं सकता। पर तुमने उस कथन को झूठा बना दिया। महान् तप के सिल्सिले में तुमने पवित्रता पायी थी। उसकी तुमने चिन्ता नहीं की और पातिव्रत्य में पवित्र देवी सीता पर उदित कामरोग से उसे मिटा रहे हो। ११३७

तिऱन्दि ऱम्बिय कामच् चॆरुक्किऩाल्
मऱन्दु तत्त मदियिऩ् मयङ्गिऩार्
इऱन्दि ऱन्दिऴिऩ् देऱुव देयलाल्
अऱन्दि ऱम्बिऩ राऱुळ रायिऩार् 1138

तिऱम् तिऱम्पिय–अतिक्रमित; काम चॆरुक्किऩाल्–कामाहंकार से; मऱन्तु–सही मार्ग को भूलकर; तम् तम् मतियिऩ्–अपनी-अपनी बुद्धि में; मयङ्किऩार्–भ्रमित लोग; इऱन्तु इऱन्तु–मर-मरकर; इऴिन्तु एऱुवते अलाल्–नीचे गिरते ही जायँगे, नहीं तो; अऱम् तिऱम्पिऩर्–धर्म का उल्लंघन करनेवाले; आर् उळर् आयिऩार्–कौन श्रेष्ठ गति पर स्थिर रहे। ११३८

जिनमें अतिक्रमित काम है और अहंकार भी, वे अपने बुद्धिभ्रम से फिर-फिर मरते और अधोगति में उत्तरोत्तर बढ़ते जाते। इस स्थिति के सिवा कौन अधर्मी हुए हैं जो सकुशल रहे हैं। ११३८

नामत् ताऴ्कडल् ञालत् तविन्दवर्, ईमत् ताऩ्मऱैन् दारिळ मादर्पाल्
कामत् तालिऱन् दार्कळि वण्डुऱै, तामत् तारिऩ रॆण्णित्तुञ् जार्बरो 1139

नामत्तु–भयोत्पादक; आऴ् कटल्–गम्भीर समुद्र-मध्य; ञालत्तु–इस भूतल में; इळ मातर् पाल्–कम आयु की स्त्रियों के; कामत्ताल् इऱन्तार्–काम में सीमा लाँघकर; कळि वण्टु उऱै–मधु पीकर मत्त रहनेवाले भ्रमरों से भूषित; ताम तारिऩर्–पुष्पमालाधारी (पुरुष); अविन्तवर्–सब तरह से नष्ट होकर; ईमत्ताल्–चिता

पर; मरैन्तार्-जो जल मिटे; ऍण्णितुम्-(वे) गिनती में; चार्वरो-आयँगे क्या। ११३९

भयानक और गहरे सागरवलयित भूतल में कम आयु की स्त्रियों पर अत्यधिक कामासक्त होकर जो श्मशान की आग में मरे, उन मधुपायी भ्रमर-मण्डित मालाधारी पुष्प गिनती में आयँगे क्या ? । ११३९

पॊरुळुङ् गाममु मॆन्ऱिवै पोक्किवे, ऱिरुळुण् डामॆन वॆण्णल रीदलुम्
अरुळुङ् गादलिऱ् ऱीर्दलु मल्लदोर्, तॆरुळुण् डामॆन वॆण्णलर् शीरियोर् 1140

चीरियोर्-साधू लोग; पॊरुळुम् काममुम् ऍन्ऱु-अर्थ और काम कथित; इवै पोक्कि-इनके सिवा; वेऱु इरुळ् उण्टु आम्-अन्य अन्धकार है; ऍन ऍण्णलर्-ऐसा नहीं सोचते; ईतलुम्-भिक्षा (ग़रीबों को) देना; अरुळुम्-कृपा करना; कातलिल् तीर्तलुम्-काम (या कामना) से दूर रहना; अल्लतु ओर्-इनके अलावा कोई; तॆरुळ् उण्टाम्-स्पष्ट ज्ञान है; ऍन ऍण्णलर्-ऐसा नहीं माना है (उन्होंने)। ११४०

साधू लोगों ने अर्थासक्ति और कामासक्ति के सिवा और कहीं अन्धकार है —ऐसा नहीं माना था। (भिक्षा-) दान और दया और काम से बचना —इनके से अन्य ज्ञान का अस्तित्व भी नहीं माना था। ११४०

इच्चैत् तन्मैयि ऩिऱ्पिऱ रिल्लिनै, नच्चि नाळु नहैयुऱ नाणिलै
पच्चै मेनि पुलर्न्दु पऴिपडूउम्, कॊच्चै याण्मैयुञ् जीर्मैयिऱ् कूडुमो 1141

इच्चै तन्मैयिनिल्-काम अपने स्वभाव से; पिऱर् इल्लिनै-परदारा को; नच्चि-चाहकर; नाळुम् नकै उऱ-दिने-दिने हँसी का पात्र बनकर; नाण् इलै-बेशरम बनकर; पच्चै मेनि-चिकना शरीर; पुलर्न्तु-सूखकर; पऴि पटु उम्-अपयश के वश होकर; कॊच्चै आण्मैयुम्-नीच पुंसत्व के साथ रहता है, यह भी; चीर्मैयिल्-अच्छे गुणों में; कूटुमो-मिलेगा क्या। ११४१

काम की स्वाभाविक प्रेरणा से परदारा की इच्छा करना, सदा परिहास का पात्र बनना, निर्लज्ज होकर रूप के सौंदर्य की तरावट का सूख जाना और निन्दित होना —इन सबके साथ रहनेवाला नीच पौरुष भी श्रेष्ठ गुणों में लिया जायगा क्या ? । ११४१

ओद नीरुल हाण्डव रुन्ऩुणैप्, पोद नीदिय राऱुळर् पोयिनार्
वेद नीदि विदिवऴि मेल्वरुम्, काद ऩीयऱत् तॆल्लै कडत्तियो 1142

ओतम् नीर् उलकु-तरंगायमान जल (समुद्र) वलयित भूमि के; आण्टवर्-शासक; पोयिनार्-चल बसे; उन् तुणै-(उनमें) तुम-जैसे; पोतम् नीतियर्-बुद्धि और नीतिमान्; आर् उळर्-कौन है; वेत नीति-वेद और नीति (जिन्होंने संसार को सिखायी); विति-उन विधायक ब्रह्मा के; वऴि मेल् वरुम्-वंश में उत्पन्न; कातल् नी-पुत्र तुम; अऱत्तु ऍल्लै-धर्म की सीमा का; कटत्तियो-व्यतिक्रम करोगे क्या। ११४२

तरंगायमान जल के सागर से वलयित भूमि का पालन करके जो मरे, उनमें तुम्हारे जितने ज्ञानी और न्यायी कितने हैं ? तुम ब्रह्मा के वंशज हो और ब्रह्मा ने ही वेद-शास्त्र आदि का ज्ञान संसार को दिया। तुम धर्म की सीमा का उल्लंघन करोगे क्या ? । ११४२

वॆरुप्पुण् डाय वॊरुत्तियै वेणडिऩाल्
मरुप्पुण् डायपिऩ् वाऴ्हिऩ्ऱ वाऴ्विऩिल्
उरुप्पुण् डाय्मिह वोङ्गिय नाशियै
अरुप्पुण् डाल दऴॆहॆऩ्ऩ लाहुमे 1143

वॆरुप्पु उण्टु आय–जिसके मन में घृणा है; ऒरुत्तियै–ऐसी एक स्त्री को; वेण्टिऩाल्–चाहोगे तो; मरुप्पु उण्टाय पिऩ्–इनकार होने के बाद; वाऴ्किऩ्ऱ वाऴ्विऩिल्–जीनेवाले जीवन से; उरुप्पु उण्टु आय्–सुन्दर अंग जो बनी है; मिक ओङ्किय नाचियै–बहुत उन्नत नाक का; अरुप्पु उण्टाल्–कटना हो जाय; अतु–वह (नासिका-रहित मुख); अऴकु ऎऩ्ऩल् आकुमे–सुन्दर कहा जा सकता है न । ११४३

अप्रिय और घृणा करनेवाली स्त्री को चाहो; इनकार भी मिल जाय। फिर निर्लज्ज जीवन जीने से सुन्दर अंग जो उन्नत है, उस नाक का कट जाना अधिक सुन्दर कह सकेंगे न ? । ११४३

पारै नूरुव पऱ्पल पॊऱ्पुयम्, ईरै नूरु तलैयुळ वॆऩ्ऩिऩुम्
ऊरै नूरुङ् गडुङ्गऩ लुट्पॊदि, शीरै नूरवै शेमञ् जॆलुत्तुमो 1144

पारै नूरुव–भूमिनाशक; पल्पल पॊऩ् पुयम्–अनेक सुन्दर हाथ; ईर् ऐ–दस; नूरु तलै उळ–सौ सिर हैं; ऎऩ्ऩिऩुम्–तो भी; चेमम् चॆलुत्तुमो–भला कर सकते हैं क्या; अवै–वे; ऊरै नूरुम्–नगर-दाहक; कटुम् कऩल्–भयंकर अग्नि को; उळ् पॊति–अन्दर लिये रहनेवाले; नूरु चीरै–सौ वस्त्र हैं । ११४४

भूतलनाशक अनेक हाथ और दस सौ सिर हों तुम्हारे; तो भी भला मिल सकता है क्या उनसे ? उनको सौ (अनेक) साड़ियाँ समझो, जिनमें आग बँधी रहती है जो नगर को ही जला देगी । ११४४

पुरम्बि ऴैप्परुन् दीप्पुहप् पॊङ्गित्तोऩ्
नरम्बि ऴैत्तऩिऩ् पाडलि ऩल्हिय
वरम्बि ऴैक्कु मऱैपिऴै यादवऩ्
शरम्बि ऴैक्कुमॆऩ् ऱॆण्णुदल् शालुमो 1145

पुरम् पिऴैप्पु अरुम्–त्रिपुर न बचें; ती–ऐसी बड़ी अग्नि; पुक–घुसे इस भाँति; पॊङ्कित्तोऩ्–क्रुद्ध शिवजी; नरम्पु इऴैत्त–अपने हाथ की नसों को तन्त्री बनाकर जो तुमने स्वर निकाला; निऩ् पाटलिऩ्–ऐसे तुम्हारे सामगान से; नल्किय–तृप्त होकर दिये गये; वरम् पिऴैक्कुम्–वर चूक जायेंगे; मऱै पिऴैयातवऩ्–वेदमार्ग

का उल्लंघन जो नहीं करते; चरम्-(उनका) बाण; पिळैक्कुम् ॲन्ऱु-चूक जायगा, ऐसा; ॲण्णुतल्-सोचना; चालुमो-युक्त होगा क्या। ११४५

ईश्वर क्रुद्ध हुए और त्रिपुर में आग लग गयी और पुर नहीं बचे। ऐसे शिवजी ने तुम्हारे हाथों की नसों की तन्त्री से उत्पन्न सामगान से तृप्त होकर तुम्हें वर दिये थे। वे भी व्यर्थ हो सकते हैं, पर वेदमार्ग से जो नहीं हटते उन श्रीराम के शर चूक जायँगे —ऐसा समझना ठीक होगा क्या ? (नहीं होगा)। ११४५

ईऱि ताळुह वॆञ्जलि नऱ्ऱिरु
नूऱि नॊय्दितै याहि नुळैदियो
वेऱु मिऩ्ऩु नहैयाम् वितैत्तॊळिल्
तेऱि ऩार्पलर् कामिक्कुञ् जॆव्वियोय् 1146

तेऱिऩार् पलर्-अनेक परिष्कृत ज्ञानी द्वारा; कामिक्कुम्-काम्य; चॆव्वियोय्-गुणों वाले; ईऱु इल् नाळ् उक-अक्षुण्ण (साढ़े तीन करोड़ सालों की) आयु नष्ट करते हुए; ॲञ्चल् इल्-अक्षय; नल् तिरु-श्रेष्ठ सम्पत्ति को; नूऱि-मिटाते हुए; नॊय्तितै आकि-क्षुद्र बनकर; वेऱुम्-विपरीत; इऩ्ऩम् नकै आम्-और परिहासयोग्य; वितै तॊळिल्-कार्य करने में; नुळैतियो-प्रविष्ट होना चाहते हो क्या। ११४६

सुलझे हुए अनेक ज्ञानी जिन गुणों की कामना करते हैं, उन गुणों से भूषित (रावण) ! अक्षय तुम्हारी साढ़े तीन करोड़ सालों की आयु का क्षय करते हुए, अक्षुण्ण त्रैलोकाधिपत्य आदि श्रियों का नाश करते हुए, दीन बनकर, इस वैभवमय जीवन के विपरीत हँसी के योग्य काम में प्रवृत्त होना चाहते हो क्या ?। ११४६

पिऱन्दु ळार्पिऱ वाद पॆरुम्बदम्
शिऱन्दु ळार्पॆरुन् देवर्क्कुन् देवराय्
इऱन्दु ळार्पिऱर् यारु मिरामतै
मऱन्दु ळारुळ राहिलर् वाय्मैयाल् 1147

पिऱन्तुळार्-जनमे हुए; पिऱवात-और पुनर्जन्म न हो, ऐसे; पॆरुम् पतम्-परम-पद को प्राप्त कर; चिऱन्तुळार्-उत्कृष्ट जो हुए हैं; पॆरुम् तेवर्क्कुम्-बड़े देवों के भी; तेवराय् इऱन्तुळार्-देव जो बने हैं; पिऱर् यारुम्-अन्य वे भी; इरामतै मऱन्तुळार् आकिलर्-श्रीराम को भूलनेवाले नहीं होते; वाय्मै-यह सत्य है। ११४७

जन्म जो ले चुके हैं वे, फिर से जन्म जहाँ से नहीं होता उस परमपद-वासी वे, देवों के देव जो हैं त्रिदेव वे, और अन्य देवता —कोई भी श्रीराम को नहीं भूलते हैं। यह सत्य है। ११४७

आद लाऱ्ऱ ऩ्ऱुम्बॆऱ्ऱ चॆल्वमुम्
ओदु पल्हिळै युम्मुयि रुम्मुऱच्

चोदै यैत्तरु हॆंन्नॆंनच् चॆप्पितान्
शोदि यान्मह तिऱ्कॆंन्ऱु शॊल्लितान् 1148

आतलाल्–इसलिए; तन् पॆऱल् अरुम्–अपनी दुष्प्राप्य; चॆल्वमुम्–सम्पत्ति; ओतु पल् किळैयुम्–(बन्धु) कहलानेवाले अनेक बन्धु-बान्धव; उयिरुम्–प्राण; उऱ–लगे रहें, इस वास्ते; चीतैयै तरुक ॲंन्–सीताजी को लौटा दो, ऐसा कहो; ॲंन–ऐसा; चोतियान् मकन्–ज्योतिर्मय (सूर्य) के पुत्र ने; निऱ्कु ॲंन्ऱु–तुम्हारे लिए; चॊल्लितान्–कहला भेजा। ११४८

इसलिए अपने दुष्प्राप्य धन, अपने कहे जानेवाले बन्धु-बान्धव और अपने प्राण —इनको स्थायी रखना चाहो तो सीताजी को लाकर श्रीराम के पास अर्पित कर दो। सुग्रीव ने मुझसे कहा कि मैं यह सब तुमसे कहूँ। ११४८

ॲंन्ऱ लुम्मिवै शॊल्लिय दॆंऱ्कोरु, कुन्ऱिल् वाळुङ् गुरङ्गुहो लामिदु
नन्ऱु नन्ऱॆंन मानहै शॆय्दनन्, वॆंन्ऱि यॆंन्ऱॊन्ऱु तानन्ऱि वेऱिलान् 1149

ॲंन्ऱलुम्–कहते हो; वॆंन्ऱि ॲंन्ऱु—विजय नाम की स्थिति; ऑन्ऱु तान् अन्ऱि–एक के सिवा; वेऱु इलान्–और किसी को न जाननेवाले ने; इवै–ये बातें; ॲंऱ्कु चॊल्लियतु–मुझसे कहीं; कुन्ऱिल् वाळुम्–पर्वतवासी; ऑरु कुरङ्कु कोल् आम्–एक वानर ही न; इतु नन्ऱु–यह भी खूब; नन्ऱु ॲंन–अच्छा रहा; ॲंन–ऐसा; मा नकै–अट्टहास; चॆय्तनन्–किया। ११४६

हनुमान के ऐसा कहने पर विजयेतर स्थिति न जाननेवाले रावण ने कहा कि हा! यह उपदेश देनेवाला एक पर्वतवासी वानर ही है तो! यह भी खूब रहा! अच्छा! वह ठठाकर हँसा। ११४९

कुरक्कु वार्त्तैयु मानिडर् कॊऱ्ऱमुम्
निरक्कु नीदि हॊलाम्नॆंऱि नीङ्गियॆन्
पुरत्ति नुट्टरुन् दूदु पुहुन्दपिन्
अरक्क रैक्कॊन्ऱ व:(ह्)दुरै यायॆंन्ऱान् 1150

कुरक्कु वार्त्तैयुम्–बन्दर का उपदेश; मानिटर् कॊऱ्ऱमुम्–मनुष्यों का पराक्रम; निरक्कुम् नीति कॊल् आम्–बड़ी नेक नीति बन गये क्या; ॲंन् पुरत्तिन् उळ्–मेरे नगर के अन्दर; तरुम् तूतु–किसी के प्रेषित दूत के रूप में; पुकुन्त पिन्–प्रविष्ट होने के बाद; नॆंऱि नीङ्कि–मार्ग (सीमा) लाँघकर; अरक्करै कॊन्ऱ–राक्षसों को मारने का; अ:तु–वह; उरैयाय्–(क्यों,) कहो; ॲंन्ऱान्–कहा। ११५०

रावण ने हनुमान से कहा कि वानर का उपदेश देना और मानवों का जीत पाना सीधा न्याय बन गया शायद! (वह रहे।) मेरे नगर के अन्दर दूत के रूप में न आये! फिर अपने दौत्यधर्म का उल्लंघन

करके यहाँ के राक्षसों को मारा जो था वह क्यों? सीधा उत्तर दो। ११५०

काट्टु वारिऩ्मै यार्कडि काविऩै, वाट्टि ऩेऩ्ऩैक् कॊल्ल वन्दार्हळै
वीट्टि ऩेऩ्बिऩ्ऩै मॆऩ्मैयि ऩालुऩ्ऱऩ्, माट्टु वन्ददु काणु मदियिऩाल् 1151

काट्टुवार्–(तुम्हें) मुझे बतानेवाले; इऩ्मैयाल्–नहीं रहे, इसलिए; कटि काविऩै–सुगन्धपूर्ण उद्यान को; वाट्टिऩेऩ्–नष्ट किया; ऎऩ्ऩै कॊल्ल वन्तार्कळै–मुझे मार डालने जो आये; वीट्टिऩेऩ्–उन्हें मार डाला; पिऩ्ऩै–बाद; मॆऩ्मैयिऩाल्–नरम रहा तभी; उऩ् तऩ् माट्टु–तुम्हारे पास; वन्ततु–आना; काणुम् मतियिऩाल्–मिलने के मन से (हुआ)। ११५१

हनुमान ने उत्तर दिया कि रावण! कोई नहीं मिला जो मुझे तुमको दिखाये! इसलिए मैंने सुबासपूर्ण अशोक वन को मिटाया। उससे नाराज होकर जो मुझे मारने आये, उन राक्षसों को मैंने मार डाला। पश्चात् मैं अपना उग्र रूप त्यागकर सौम्य रूप में रहा; इसलिए तुम्हारे पास आया तुमसे मिलने (संदेश सुनाने) की इच्छा से। ११५१

ऎऩ्ऩु मात्तिरत् तीण्डॆरि नीण्डुह
मिऩ्ऩुम् वाळॆयिऱ् ऱऩ्शिऩम् वीङ्गिऩाऩ्
कॊऩ्मि ऩॆऩ्ऱऩऩ् कॊल्लियर् शेर्दलुम्
निऩ्मि ऩॆऩ्ऱऩऩ् वीडण ऩीदियाऩ् 1152

ऎऩ्ऩुम् मात्तिरत्तु–(हनुमान के) ऐसा कहने मात्र से; ईण्टु ऎरि–बढ़ी हुई अग्नि के; नीण्टु उक–बहुत दूर तक जाकर गिरे; मिऩ्ऩुम्–ऐसा चमकनेवाले; वाळ् ऎयिऱ्ऱऩ्–तलवार-से दन्तोरे रावण ने; चिऩम् वीङ्किऩाऩ्–बहुत क्रोध में आकर; कॊऩ्मिऩ् ऎऩ्ऱऩऩ्–मारो, कहा; कॊल्लियर् चेर्तलुम्–बधिकों के (हनुमान के) पास पहुँचते ही; नीतियाऩ्–नीतिमान्; वीटणऩ्–विभीषण ने; निऩ्मिऩ्–ठहरो; ऎऩ्ऱऩऩ्–कहा। ११५२

ज्योंही हनुमान ने यह कहा, त्योंही चमकदार तलवार-सम दन्तोरे, रावण का गुस्सा भभक उठा। जिससे आग निकलकर बहुत दूर तक फैली और अंगारे छितरे। उसने तुरन्त आज्ञा दी, मार डालो इसे। बधिक लोग पास आ ही गये कि नीतिमान् विभीषण ने रोकते हुए कहा कि रुको। ११५२

आण्डॆ ऴुन्दुनिऩ् ऱण्ण लरक्कऩै
नोण्ड कैयिऩ् वणङ्गिऩ ऩीदियाऩ्
मूण्ड कोब मुऱैयदऩ् ऱामॆऩ
वेण्डु मॆय्युरै पेय विळम्बिऩाऩ् 1153

नीतियान्–नीतिज्ञ ने; आण्टु–तब; ॲऴुन्तु निन्ऱु–उठ खड़े होकर; अण्णल्–महिमावान; अरक्कनै–राक्षस (रावण) को (देख); नीण्ट कैयिन्–अपने दीर्घ हाथों से; वणङ्कितन्–नमस्कार किया; मूण्ट कोपम्–बढ़ा यह कोप; मुऱैयतु अन्ऱु आम्–क्रमगत नहीं है; ॲन्ऩ–ऐसा; वेण्टुम् मॅय् उरै–सर्वमान्य वचन; पैय–धीरे-धीरे; विळम्पिनान्–कहा। ११५३

नीतिमान् विभीषण ने उठकर अपने महिमामय रावण को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर निवेदन किया कि आपका बढ़ा हुआ कोप न्याय-सम्मत नहीं है। फिर वह सर्वमान्य सत्य को बहुत ही सावधानी से कहने लगा। ११५३

अन्तण तुलह मूऩ्ऱु मादियि नऱत्ति नाऱ्ऱित्
तन्दवन् मरबिन् वन्दाय् तवनॆऱि युणर्न्दु तक्कोय्
इन्दिरन् करुम मार्ऱु मिऱैवनी यियम्बु तूदु
वन्दनॆ नॆन्ऱ पिन्नुङ् गोऱियो मऱैहळ् वल्लोय् 1154

तक्कोय्–सौम्य; मऱैकळ् वल्लोय्–वेदविदग्ध; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों को; आतियिन्–प्रथम; अऱत्तिन् आऱ्ऱि–धर्म के द्वारा ही; तन्तवन्–जिसने सृष्ट किया; अन्तणन्–उस ब्रह्मविद् (ब्रह्मा) के; मरपिन् वन्ताय्–वंशज हैं; तव नॆऱि उणर्न्तु–तप-मार्ग जानकर; इन्तिरन्–देवेन्द्र; करुमम् आऱ्ऱुम्–जिनकी सेवा करता है; इऱैवन् नी–वह प्रभु हैं आप; इयम्पु तूतु–(स्वामी का सन्देश) कहनेवाला दूत; वन्तनॆन्–आया (मैं); ॲन्ऱ पिन्नुम्–कहने के बाद भी; कोऱियो–मार डालेंगे क्या। ११५४

सुयोग्य! वेदविदग्ध! आप ब्रह्मविद् ब्रह्माजी के वंशज हैं, जिन्होंने इन तीनों लोकों को धर्म के मार्ग पर रहकर आदि में सृष्ट किया। आपकी तपस्या का गौरव समझकर इन्द्र भी आपका आज्ञाकारी रहता है। आप ऐसे स्वामी हैं। वैसे आप इसको यह कहने के बाद भी मारेंगे कि मैं सन्देश सुनाने आया हुआ दूत हूँ? । ११५४

पूदलप् परप्पि नण्डप् पॊहुट्टिनुट् पुऱत्तुट् पॊय्दीर्
वेदमुऱ् ऱियङ्गु वैप्पिन् वेऱुवे ऱिडत्तु वेन्दर्
मादरैक् कॊलैशॆय् दारह ळुळरॆन वरितुम् वन्द
तूदरैक् कॊन्ऱु ळारहळ् यावरे तॊल्लै नल्लोर् 1155

पू तल परप्पिन्–भूतल के विस्तार में; अण्ट पॊकुट्टिन् उळ्–अण्डगोल के अन्दर; पुऱत्तुळ्–बाहर; पॊय् तीर्–जो कभी असत्य नहीं बन सकते; वेतम् उऱ्ऱु इयङ्कुम्–वे वेद जहाँ चालू रहते हैं; वैप्पिन्–उन लोकों में; वेऱु वेऱु इटत्तु वेन्तर्–विविध स्थानों के राजाओं में; मातरै–माताओं को; कॊलै चॆय्तार्कळ्–मारनेवाले; उळर्–हैं; ॲन्ऩ–ऐसा; वरितुम्–हो सकता है तो भी; तॊल्लै नल्लोर्–प्राचीन साधु

लोग; वन्त तूतरै–आगत दूतों को; कॊन्ऱु उळार्कळ्–जिन्होंने मार डाला; यावर्–कौन हैं। ११५५

इस भूतल के स्थल में, अण्डगोल के अन्दर और अण्डगोल के बाहर भी जहाँ नित्यवेदमार्ग संस्थापित है, विविध स्थानों में आपको ऐसे राजा शायद मिल सकेंगे जिन्होंने स्त्रियों को मार डाला हो; पर प्राचीन और सुयोग्य राजा कौन है, जिन्होंने दूतों को मारा हो? । ११५५

पहैप्पुल तणुहि युय्त्तार् पहर्न्ददु पहर्न्दु पर्ऱार्
मिहैप्पुल तडक्कि मॆय्म्मै विळम्बुदल् विरदम् बूण्ड
तहैप्पुलक् करुमत् तोरैक् कॊऱलिऱ् ऱक्कार् यार्क्कुम्
नहैप्पुलन् पिऱिदुण् डामे नङ्गुल नवैयिन् ऱामे 1156

पकै पुलन् अणुकि–शत्रु के स्थान में आकर; उय्त्तार्–जिन्होंने भेजा; पकर्न्ततु–उन्होंने जो सन्देश भेजा; पकर्न्तु–वह सुनाकर; पर्ऱार्–शत्रु का; मिकै पुलन्–कोप के भाव को; अटक्कि–(अपने वचनों से) शमन करके; मॆय्म्मै विळम्पुतल्–सत्य कहने का; विरतम् पूण्ट–जिन्होंने व्रत रखा है; तकै पुल–श्रेष्ठ बुद्धिमान; करुमत्तोरै–दूतों को; कॊऱलिन्–मारने से बढ़कर; तक्कार् यार्क्कुम्–शिष्ट सभी लोगों के लिए; नकै पुलन्–हँसी योग्य काम; पिऱितु उण्टामे–दूसरा कोई हो सकता है क्या; नम् कुलम्–हमारा कुल; नवै इन्ऱु आमे–कलंक-हीन रहेगा क्या। ११५६

जो दूत शत्रु के स्थान में निडर होकर पहुँच जाते हैं, फिर अपने प्रेषक का सन्देश सुनाते हैं, फिर शत्रु के कोप आदि की भावनाओं को अपने चातुर्य-वचन द्वारा शमन करते हैं, ऐसे सत्यवादनव्रती कार्यकुशल दूतों को मारने से बढ़कर उत्तम लोगों द्वारा परिहसनीय विषय और कुछ हो सकता है क्या ? हमारा कुल निर्दोष हो सकेगा क्या ? ११५६

मुत्तलै यॆः(ह)हन् मऱ्ऱै मुरान्दहन् मुनिवन् मुन्ना
अत्तलै नम्मै नोना वमरर्क्कु नहैयिऱ् ऱामाल्
अॆत्तलै युलहङ् गाक्कुम् वेन्दनी वेऱ्ऱो रेव
इत्तलै यॆय्दि नानैक् कॊल्लुद लिळुक्क मिन्नुम् 1157

अॆत्तु अलै–उछलती आनेवाली तरंगों से भरे समुद्र-मध्य रहनेवाले; उलकम् काक्कुम्–लोकपालक; वेन्त नी–राजा आप; वेऱ्ऱोर् एव–शत्रु द्वारा भेजे जाने पर; इ तलै–यहाँ; अॆय्तित्तानै–जो आया इसे; कॊल्लुतल्–मारें, यह; इळुक्कम्–गौरव के विपरीत बात है; मु तलै अॆः.कत्–त्रिशूलधारी; मऱ्ऱै मुरान्तकन्–दूसरा, मुरारि; मुनिवन्–ब्राह्मण ब्रह्मा; मुन्ना–आदि; नम्मै नोना–हमसे ईर्ष्या करनेवाले; अ तलै–वहाँ (ऊपर) के; अमरर्क्कुम्–देवों के लिए; नकै इऱ्ऱु आम्–हँसने योग्य होगा; इन्नुम्–और भी। ११५७

उछलकर बढ़नेवाली तरंगों वाले सागर-मध्य स्थित भूमि के पालक राजा ! आपका, शत्रु द्वारा भेजा जाकर जो इधर आया है, उस दूत को मारना दोषपूर्ण होगा। और भी त्रिशूलधारी शिव, मुरारि विष्णु और ब्राह्मण-श्रेष्ठ ब्रह्मा आदि हमसे ईर्ष्या करनेवाले ऊपर के देवों को हमारी हँसी उड़ाने का मौका मिल जायगा। और भी। ११५७

इळैयव डन्नैक् कॉल्ला दिरुशॅवि मूक्कॉ डीर्न्दु
विळैवुरै यॅन्ऱु विट्टार् वीरराय् मॅय्म्मै योर्वार्
कळैदियॆ लावि नम्बा लिवन्वन्दु कण्णिर् कण्ड
अळवुरै यामट् चॅय्दि यादियॆंन् ऱमैयच् चॊन्नात् 1158

वीरर् आय्–वीर रहकर; मॅय्मै ओर्वार्–सत्य पर चलनेवाले; इळैयवळ् तन्नै–हमारी छोटी बहिन को; कॉल्लातु–विना मारे; मूक्कु ऑटु–नाक के साथ; इरु चॅवि–दोनों कानों को; ईर्न्तु–काटकर; विळैवु उरै–(जो) हुआ (वह जाकर) कहो; ऍन्ऱु विट्टार्–ऐसा कहकर भेज दिया; आवि कळैतियेल्–(इसके) प्राण निकाल देंगे; नम्पाल्–हमारे पास; इवन् वन्तु–इसने आकर; कण्णिल् कण्ट अळवु–अपनी आँखों से जितना देखा, उतना; उरैयामल् चॅय्ति आति–जाकर न कहेगा, ऐसा करनेवाले आप बन जायँगे; ऍन्ऱु–यह; अमैय–मन में बात लगे, ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ११५८

श्रीराम और लक्ष्मण वीर हैं और सत्यनिष्ठ हैं। उन्होंने हमारी छोटी बहिन को (उसके अनुचित काम करने पर भी) मारा नहीं। पर उसकी नाक के साथ दोनों कानों को काटा और यह कहकर भेज दिया कि जाकर जो हुआ उसे सुना दो। अगर आप इस दूत के प्राण हर लेंगे तो आप ही इसको वहाँ जाकर अपनी आँखों-देखी बातें कहने से रोकनेवाले बन जायँगे। विभीषण ने ऐसा अपने तर्क पेश किये कि वे रावण के मन में प्रभाव डाल सकें। ११५८

नल्ल दुरैत्ताय् नम्बियिव नवैशॅय् दान्ने यान्नालुम्
कॉल्लल् पळुदे पोयवरैक् कूऱिक् कॉणर्दि कडिदॆन्ऩात्
तॊल्लै वालै मूलमऱच् चुट्टु नहरैच् चूळ्पोक्कि
ऍल्लै कडक्क विडुमिन्ग ळॆन्ऱा निन्ऱा रिरैत्तॆळुन्दार् 1159

नम्पि–सौम्य; नल्लतु उरैत्ताय्–अच्छा कहा तुमने; इवन् नवै चॅय्तान्–इसने अपराध किया ही है; आनालुम्–तो भी; कॉल्लल्–मारना; पळुते–ग़लत ही होगा; पोय् कूऱि–जाकर कहो और; कॉणर्ति कटितु–लाओ शीघ्र; ऍन्ऩा–कहकर; तॊल्लै वालै–संकटकारी (इसकी) पूँछ को; मूलम् अऱ–समूल नष्ट करते हुए; चुट्टु–जलाकर; नकरै चूळ् पोक्कि–नगर में घुमा ले जाकर; ऍल्लै कटक्क–सीमा-पार; विटुमिन्कळ्–छोड़ो; ऍन्ऱान्–(रावण ने) आज्ञा सुनायी; निन्ऱार्–पास जो खड़े रहे; इरैत्तु ऍळुन्तार्–शोर मचाते हुए उठे। ११५९

विभीषण का कहा सुनकर रावण ने कहा कि श्रेष्ठ पुरुष ! तुमने अच्छी नीति बतायी। इसने अवश्य अपराध किया है तो भी इसको मारना ग़लत है। फिर हनुमान की ओर देखकर रावण ने कहा कि जाओ और शीघ्र लाओ उसे। फिर रावण ने राक्षसों को आज्ञा दी कि इसकी संकटकारी द्रुम को जलाकर मूल से नष्ट करा दो। फिर इसको लंका में चारों ओर घुमाओ और लंका की सीमा के बाहर कर दो। राक्षस लोग उत्साह-ध्वनि करते हुए उठे। ११५९

आय कालत् तयऩ्बडयो डिरुप्प वाहा दऩलिडुहै
तूय पाश मॅऩप्पलवुङ् गॊणर्ऩ्दु पिणिमिऩ् ऱोळॆऩ्ऩा
मेय तॅय्वप् पडैक्कलत्तै विदियिऩ् मीट्टाऩ् पोर्वॆऩ्ऱाऩ्
एयॆ ऩामुऩ् ऩिडैबुक्कुत् तॊडैवऩ् कयिऱ्ऱाऱ् पिणित्तीर्प्पार् 1160

आय कालत्तु–तब; पोर् वॆऩ्ऱाऩ्–युद्धविजेता (इन्द्रजित्) ने; अयऩ् पटैयोटु इरुप्प–ब्रह्मास्त्रबद्ध रहते समय; अऩल् इटुकै–आग लगाना; आकातु–ठीक नहीं हो सकता; तूय पाचम् ॲऩ पलवुम्–श्रेष्ठ अनेक रस्सियाँ; कॊणर्न्तु–लाकर; तोळ्–इसके कन्धों को; पिणिमिऩ्–बाँध लो; ॲऩ्ऩा–कहकर; मेय–उस पर लगे रहे; तॅय्व पटै कलत्तै–दिव्य अस्त्र को; वितियिऩ्–यथाविधि; मीट्टाऩ्–लौटा लिया; एय् ॲऩ्ऩा मुऩ्–'ए' कहने की देरी के अन्दर; इटै पुक्कु–पास जाकर; तॊटै–बटे हुए; वऩ् कयिऱ्ऱाल्–मोटे रस्से से; पिणित्तु–बाँधकर; ईर्प्पार्–(राक्षस) खींचने लगे। ११६०

उस समय युद्धविजेता इन्द्रजित् ने कहा कि ब्रह्मास्त्रबद्ध स्थिति में रहनेवाले इसके शरीर पर आग लगाना ठीक नहीं है। इसलिए मोटे रस्सों से इसकी भुजाओं को बाँध लो। यह कहकर इन्द्रजित् ने हनुमान पर लगे रहे ब्रह्मास्त्र को मन्त्रविधि के अनुसार लौटा लिया। 'ए' कहने की देरी के अन्दर राक्षस उसके पास पहुँच गये। मोटे और बटे हुए रस्सों से उसे खूब कसकर खींचने लगे। ११६०

नाट्टि ऩहरि ऩडुवुळ्ळ कयिऱु नविलुऩ् दहैमैयवो
वीट्टि ऩूश ऩॅडुम्बाश मऱ्ऱ तेरुम् विशितुऱन्द
माट्टुम् बुरवि यायमॅला मरुवि वाङ्गुऩ् दॊडैयऴिन्द
पूट्टु वल्लि मुदलाय पुरशै यिऴन्द पोर्यानै 1161

वीट्टिऩ्–(लंका के) घरों के; ऊचल्–झूलों के; नॅटुम् पाचम्–लम्बे रस्से; अऱ्ऱ–(बाक़ी) नहीं रहे; तेरुम्–रथ भी; विचि तुऱन्त–रस्सी से रहित हो गये; माट्टुम्–जहाँ (अश्व) बाँधे जाते हैं; पुरवि आयम् ॲलाम्–सभी अश्वशालाएँ; मरुवि वाङ्कुम्–बाँधकर जो खोली जाती हैं; तॊटै अऴिन्त–उन रस्सियों से हीन हो गयीं; पोर् यानै–युद्धगज; पूट्टुम् वल्लि–जो उनके पेट और पीठ पर लगाया जाता है, उस कलापक को; पुरचै–जो उसके गले में बाँधा जाता है, उस 'पुरशै' नामक रस्सी;

मुतलाय–आदि को; इऴन्त–खो गये; नाट्टिन् नकरित्–देश में और नगर में; नट्टु उळ्ळ–बीच में रहनेवाली; कयिरु–रस्सियों की बात; नविलुम् तकैमैयवो–कहने योग्य होंगी क्या। ११६१

(ये रस्से-रस्सियाँ कितनी आयीं, कहाँ से आयीं ?) लंका के घरों में जो झूले लगे थे, उन सबकी रस्सियाँ लायी गयीं और झूले रस्सियों से हीन रहे। रथों के रस्से, अश्वशालाओं में अश्व बाँधने-खोलनेवाले रस्से, गजों के कलापक और पेट के रस्से सभी लाये गये और अश्व, रथ, गज आदि रस्से से हीन रहे। उस स्थिति में नगर के और देश के मध्य रही रस्सियों की बातें कहना आवश्यक हैं क्या ? । ११६१

मण्णिऱ् कण्ड वाऩवरै वलियिऱ् कवर्न्द वरम्बॆऱ्ऱ
ऎॅण्णऱ् करिय वेऱैयरै यिहलिऱ् पऱित्त दमक्कियॆन्द
पॆॅण्णिऱ् कमैन्द मङ्गलत्तिऱ् पिणित्त कयिऱे यिडैपिळैत्त
कण्णिऱ् कण्ड वऩ्बाश मॆल्ला मिट्टुक् कट्टिऩार् 1162

मण्णिल् कण्ट–(दिग्विजय के सन्दर्भ में) भूमि (के विविध भागों) से हर लाये गये; वाऩवरै–देवों से; वलियिल् कवर्न्त–बलात्कारपूर्वक प्राप्त; वरम् पॆऱ्ऱ–वर द्वारा प्राप्त; ऎॅण्णऱ्कु अरिय–गिनने में असाध्य; एऱैयरै–अन्यों से; इकलिल् पऱित्त–युद्ध में बलात् लिये गये; कण्णिल् कण्ट–आँखों देखे गये; वऩ् पाचम् ऎल्लाम्–स्थूल पाश सभी लेकर; इट्टु कट्टिऩार्–उनका उपयोग करके बाँधा; तमक्कु इयैन्त–अपनी जो बनी थीं; पॆॅण्णिऱ्कु अमैन्त–पत्नी स्त्रियों के गले में लगे; मङ्कलत्तिल् पिणित्त–मंगल-सूत्र के रूप में बद्ध; कयिऱे–रस्सियाँ ही; इटै पिऴैत्त–बीच में बचीं। ११६२

भूलोक के अनेक स्थानों से दिग्विजय के अवसर पर रावण तथा राक्षसों द्वारा हर लाये गये रस्से; देवों से बलात्कारपूर्वक लाये गये रस्से; वरों द्वारा प्राप्त, अगणित अन्यों को युद्ध में हराकर लायी गयी रस्सियाँ —राक्षस लोगों ने ये दृष्टि में पड़ी सभी रस्सियाँ लाकर हनुमान को बाँध लिया। लंका में कोई रस्सी बची रही तो राक्षसों की पत्नियों के मंगलसूत्र के रूप में लगी मंगलसूत्र की रस्सियाँ थीं। ११६२

कडवुट् पडैयैक् कडन्दऱत्ति ऩाणै कडन्दे ऩाहामे
विडुवित् तळित्तार् तॆव्ववरे वॆऩ्ऱे तऩ्ऱो विवर् वॆऩ्ऱि
शुडुविक् किऩ्ऱ दिव्वूरैच् चुडुहॆऩ् ऱुरैत्त तुणिवॆऩ्ऱु
नडुवुऱ् ऱैय मऱनोक्कि मुऱ्ऱु मुवन्दा ऩवैयऱ्ऱाऩ् 1163

नवै अऱ्ऱाऩ्–निर्दोष हनुमान; कटवुळ् पटैयै–दिव्यास्त्र को; कटन्तु–लाँघकर; अऱत्तिऩ् आणै–धर्म के शासन का; कटन्तेऩ् आकामे–उल्लंघन करनेवाला न बनकर (मैं); तॆव् अवरे–उन शत्रुओं ने ही; विटुवित्तु अळित्तार्–छुड़ाकर उपकार किया;

इवर् वॆन्ऱि–इनकी जय पर; वॆन्ऱेन् अन्ऱो–मैंने जय पा ली है न; चुट्टुविक्किन्ऱतु–(पूँछ) जलाने का कार्य यह; इ ऊरै चुट्टुक–इस नगर को जला दो; ॲन्ऱु–ऐसा; उरैत्त तुणिवु–कहा हुआ स्पष्ट कथन है; ॲन्ऱु–ऐसा; नट्टु उऱ्ऱु–तटस्थ रहकर; ऐयम् अऱ नोक्कि–असन्दिग्ध रूप से देखकर; मुऱ्ऱुम् उवन्तान्–पूर्ण रूप से हर्षित हुआ। ११६३

अनिन्द्य हनुमान ने निम्न प्रकार विचार किया। अच्छा हुआ कि मुझे दिव्य ब्रह्मास्त्र का उल्लंघन और उसकी अवज्ञा न करनी पड़ी। शत्रुओं ने ही वह अपराध करने से छुड़ाकर बड़ा उपकार किया। अब इनकी विजय मेरी विजय हो गयी न? अब रावण की यह आज्ञा कि इसकी दुम जलाओ, स्पष्ट रूप से मुझे दिया गया संकेत है कि इस नगर को ही जला दो। हनुमान ने तटस्थता से सोचकर यह निर्णय किया और उसे अपार हर्ष हुआ। ११६३

नॊय्य पाशम् बुऱम्बिणिप्प नोन्मै यिलन्बो लुडनुणङ्गि
वॆय्य वरक्कर् पुऱत्तलैप्प वीडु मुणर्न्दे विरैविल्लान्
ऐयन् विज्जै तनैयरिन्दु मऱिया दान्बो लविज्जैयॆनुम्
पॊय्यै मॆय्ये नडिक्किन्ऱ योहि पोन्ऱान् पोहिन्ऱान् 1164

नॊय्य पाचम्–दुर्बल पाशों से; पुऱम् पिणिप्प–शरीर बँधा रहा (तो भी); नोन्मै इलन् पोल्–अशक्त हुए-से; उटल् तुणङ्कि–शरीर से मुरझाकर; वॆय्य अरक्कर्–नृशंस राक्षसों के; पुऱत्तु अलैप्प–इधर-उधर घुमाकर कष्ट देते; वीटुम् उणर्न्ते–छूटने का मार्ग जानते हुए भी; विरैवु इल्लान्–उसमें त्वरा न रहने से; ऐयन्–महिमावान; विज्चै तनै अऱिन्तुम्–(आत्म-) विद्या जानने पर भी; अऱियातान् पोल्–अविद्यावशी के समान; अविज्चै ॲनुम् पॊय्यै–अविद्या-मिथ्या को; मॆय्ये नटिक्किन्ऱ–सत्य मानता-सा जो अभिनय (व्यवहार) करता है; योकि पोन्ऱान्–उस योगी के समान; पोकिन्ऱान्–(उनसे खींचा जाकर) जाता है। ११६४

आखिर दुर्बल रस्सियों से ही बँधा रहा हनुमान। तो भी अशक्त के समान वह मुरझाया रहा। राक्षसों ने उसके पार्श्व में रहकर हनुमान को इधर से उधर और उधर से इधर घुमाया। हनुमान को उनसे अपने को छुड़ा लेने का मार्ग विदित था; तो भी उसने उस ओर त्वरा नहीं दिखायी। मानो आत्मविद्याज्ञानी योगी अविद्या की मिथ्या को सत्य मानते-से व्यवहार करते हैं। वैसे ही हनुमान खींचा जाकर उनके साथ जाता रहा। ११६४

वेन्दन् कोयिल् वायिरॊऴुम् विरैविऱ् कडन्दु वॆळ्ळिडैयिल्
पोन्दु पुऱनिन् ऱिरैक्किन्ऱ पॊरैतीर् मऱवर् पुऱञ्जुऱ्ऱ
एन्दु नॆडुवाल् किळिशुऱ्ऱि मुऱ्ऱुन् दोय्त्ता रिळुवॆण्णॆय्
कान्दु कडुन्दीक् कॊळुत्तिना रार्त्ता रण्डङ् गडिहलङ्ग 1165

वेन्तन् कोयिल्–राजा के मन्दिर के; वायिल् तोरुम्–सभी द्वारों को; विरैविल् कटन्तु–शीघ्र पार कर; वॆळिटैयिल् पोन्तु–खुले मैदान में आकर; पुरम् निन्ऱु–उसके चारों ओर खड़े होकर; इरैक्किन्ऱ–शोर मचानेवाले; पोॅरै तीर्–असहनशील; मऱवर्–वीर राक्षस; पुरम् चुऱ्ऱ–सभी ओर घेरे रहे; एन्तु नॆट्टु वाल्–उठी हुई लम्बी पूँछ में; किऴि–(फटे-पुराने) वस्त्र; चुऱ्ऱि–लपेटकर; इऴुतु ऍण्णॆय्–घृत और तेल में; मुऱ्ऱुम् तोय्त्तार्–पूरा भिगो दिया; कान्तुम्–जलती; कटुम् ती–उग्र आग; कॊळुत्तितार्–लगा दी; अण्टम्–अण्ड को; कटि कलङ्क–भयभीत करते हुए; आर्त्तार्–नर्दन किया। ११६५

राक्षस हनुमान को खींचते हुए राजमहल के सभी द्वारों को शीघ्र पार करके खुले मैदान में आये। फिर उन्होंने चारों ओर से घेरकर बड़े कोलाहल के साथ उसकी उठी हुई लम्बी पूँछ में फटे-पुराने कपड़े लपेटे और घी तथा तेल में उसे भिगोये। पश्चात् उन्होंने उसमें आग लगायी और ऐसा नर्दन किया कि अण्डगोल ही अस्त-व्यस्त हो गया। ११६५

ऑक्क वॊक्क वुडन्विशित्त वुलप्पि लाद वुडऱ्पाशम्
पक्कम् बक्क मिरुहूराय् नूऱा यिरवर् पऱ्ऱितार्
पुक्क पडैञर् पुडैहाप्पोर् पुणरिक् कणक्कर् पुऱञ्जॆल्वोर्
तिक्कि नळवा लयन्निऩ्ऱु काण्बोर्क् कॆल्लै तॆरिवरिदाल् 1166

ऑक्क ऑक्क–अनेक (रस्सियाँ) मिलाकर; उटन् विचित्त–एक साथ जो बँधा रहा; उलप्पु इलात–जो टूट नहीं सकता; उटल् पाचम्–वह शरीर-पाश; पक्कम् पक्कम्–दोनों बाजुओं में; इरु कूराय्–दो भागों में; नूऱु आयिरवर्–सौ सहस्र राक्षसों ने; पऱ्ऱितार्–पकड़ लिया; पुटै काप्पोर्–पार्श्वरक्षक; पुक्क पटैञर्–वहाँ आगत हथियारधारी वीर; पुणरि कणक्कर्–'समुद्र' की संख्या में रहे; पुऱम् चॆल्वोर्–उनकी बग़ल में जानेवाले; तिक्किन् अळवु–दिशाओं भर में व्याप्त रहे; आल्–इसलिए; अयल् निन्ऱु काण्पोर्क्कु–उनसे हटकर खड़े होकर देखनेवालों के लिए; ऍल्लै तॆरिवु–सीमा जानना; अरितु–कठिन था। ११६६

हनुमान के शरीर पर अनेक परतों में स्थूल रस्से बाँधे गये थे। और दोनों बाजुओं में लाख-लाख राक्षसों ने खड़े होकर पाश को पकड़ लिया। उनके बाद हथियारधारी राक्षस आकर खड़े हो गये। उनकी संख्या 'समुद्र' की हिसाब में थी। उनके बाद घेरे जानेवाले राक्षसों की बड़ी भीड़ लगी थी। वे दिगन्त तक फैले रहे। इसलिए परे रहकर उन राक्षसों की सीमा जानना दुस्साध्य था। ११६६

अन्द नहरुङ् गडिहावु मळिवित् तक्कन् मुदलायोर्
शिन्द नूऱ्रिच् चीवैयॊडुम् पेशि मन्निदर् तिरञ्जॆप्प
वन्द कुरङ्गिर् कुऱ्ऱवत्तै वम्मिन् काण वम्मॆन्ऱु
तन्दन् दॆरुवुम् वायिऱ्ऱोरुम् याऱु मऱैयच् चाऱ्ऱितार् 1167

अन्त नकरुम्–वह नगर; कटि कावुम्–सुरक्षित अशोक वन; अऴिवित्तु–मिटाकर; अक्कन् मुतलायोर्–अक्ष आदि को; चिन्त–छिन्न-भिन्न हो जाएँ, ऐसा; नूरि–मारकर; चीतै ओटुम् पेचि–सीता के साथ बोलकर; मत्तिर् तिरम्–मनुष्यों का पराक्रम; चॅप्प वन्त–कहने के लिए आये; कुरक्किऱ्कु–बन्दर पर; उऱ्ऱतै–जो बीत रहा है, उसको; वम्मिन्–आओ; काण वम्–देखने के लिए आओ; ऍन्ऱु–ऐसा; तम् तम् तॅरुवुम्–अपनी-अपनी वीथियों और; वायिल् तोऱुम्–द्वार-द्वार पर; यारुम् अऱिय–सभी को सुनाते हुए; चाऱ्ऱिनार्–कहा। ११६७

राक्षस लोग अपनी गली-गली और द्वार-द्वार पर सबको यह बताते हुए जा रहे थे कि इस नगर और अशोक वन का नाश करके अक्षकुमार आदि को मार डालकर, और सीता के साथ मिलकर बातें करके हमारे राजा से तुच्छ मानव लोगों की शक्ति की प्रशंसा करने जो आया था, उस वानर पर जो बीत रहा है उसे आकर देखो। आओ, आओ। ११६७

आर्त्ता रण्डत् तप्पुऱत्तु मऱिविप् पार्पो लङ्गोडिङ्
गीर्त्तार् मुरश मॅऱ्ऱिना रिडित्तार् तॅऴित्ता रॅम्मरुङ्गुम्
बार्त्ता रोडिच् चानहिक्कुम् बहर्न्दा रवळु मुयिर्पदैत्ताळ्
वेर्त्ता ळुलन्दाळ् विम्मिनाळ् विऴुन्दा ळऴुदाळ् वॅय्दुयिर्त्ताळ् 1168

अण्टत्तु अप्पुऱत्तुम्–अण्ड के उस पार भी; अऱिविप्पार् पोल–सुनाते जैसे; आर्त्तार्–बहुत उच्च स्वर में घोष किया (राक्षसों ने); अङ्कु ओटु इङ्कु–उधर से इधर; ईर्त्तार्–खींचा; मुरचम्–भेरियाँ; ऍऱ्ऱिनार्–ठनकायीं; इटित्तार्–(हनुमान को) ढकेला; तॅऴित्तार्–डाँटा-डपटा; ऍ मरुङ्कुम्–सब ओर; पार्त्तार्–घूमकर देखा; ओटि–दौड़कर; चानकिक्कुम्–जानकी से भी; पकर्न्तार्–कहा; अवळुम्–वे भी; उयिर् पतैत्ताळ्–प्राण-विह्वल हुई; वेर्त्ताळ्–पसीना-पसीना हो गयीं; उलन्ताळ्–खिन्नमना हुईं; विम्मिनाळ्–सिसकीं; विऴुन्ताळ्–नीचे गिरीं; अऴुताळ्–रोयीं; वॅय्तु उयिर्त्ताळ्–तप्त साँसें छोड़ीं। ११६८

वे ऐसा शोर मचाते गये, मानो वे अण्डगोल के बाहर भी यह समाचार पहुँचाना चाहते हों। कुछ राक्षसों ने हनुमान को इधर-उधर भटकाया। कुछ लोगों ने भेरियाँ बजायीं। कुछ राक्षसों ने हनुमान को ढकेला। कुछ लोगों ने उसे डाँटा। कुछ लोगों ने चारों ओर जाकर देखा। कुछ लोगों ने जानकी के पास जाकर समाचार दिया। जानकी जी यह सुनकर उद्विग्न हो गयीं। उनके प्राण छटपटाने लगे। पसीने-पसीने हो गयीं। लट गयीं। सिसकीं। भूमि पर गिरीं। रोयीं। तप्त साँसें छोड़ने लगीं। ११६८

ताये यनैय करुणैयान् ऱुणैये येदुन् दहविल्ला
नाये यनैय वल्लरक्कर् नलियक् कण्डा नल्हायो
नीये युलहुक् कॊरुशान्ऱु निऱ्के तॅरियुङ् गऱ्पदनिल्
तूये नॅन्निऱ् ऱॊऴिहिन्ऱे नॅरियॆ यवनैच् चुडलॆन्ऱाळ् 1169

ऍरिये–अग्निदेव; ताये अन्नैय–माता ही सम; करुणैयान्–करुणामय हनुमान का; तुणैये–सहायक; तकवु एतुम्–कोई भी अच्छा गुण; इल्ला–जिनमें नहीं है; नाये अनैय–कुत्तों के समान; वल् अरक्कर्–नृशंस राक्षस; नलिय–कष्ट दे रहे हैं; कण्टाल्–देखते जब हो; नल्कायो–सहायता नहीं दोगे क्या; नीये–तुम ही; उलकुक्कु ओरु चान्रु–संसार के लिए अनुपम साक्षी हो; निन्रके तॅरियुम्–तुम ही (सब) जानते हो; आतलाल्–इसलिए; कर्पु अततिल्–पातिव्रत्य में; तूयेन् ऍन्निल्–पवित्र हूँ तो; अवनै चुटल्–उसको मत जलाओ; तॉळुकिन्रेन्–नमन करती हूँ; ऍन्राळ्–कहा (देवी ने)। ११६९

सीताजी ने अग्नि का ध्यान करके कहा कि अग्निदेव! हनुमान माता के ही समान कृपालु है। उसके तुम ही अकेले सहायक हो। कुत्ते के समान बिल्कुल अयोग्य राक्षसों को हनुमान को सताते देखकर तुम उसे सहायता नहीं दोगे क्या? तुम सारे संसार के साक्षीरूप हो! इसलिए तुम सब जानते ही हो। अगर मैं पातिव्रत्य में पवित्र हूँ तो उसे तुम मत जलाओ। तुमसे प्रार्थना करती हूँ। ११६९

वॅळिर्त्तमॅन् नहैयवळ् विळम्बु मेल्वैयिल्
ऑळिर्त्तवॅङ् गन्नलव नुळ्ळ मुट्कितान्
तळिर्त्तन मयिर्प्पुरज् जिलिर्प्पत् तण्मैयाल्
कुळिर्त्तदक् कुरिशिल्वा लॅन्बु कूरवे 1170

वॅळिर्त्त–श्वेत; मॅन्–कोमल; नकै अवळ्–दाँतों वाली उनके; विळम्पुम् एल्वैयिल्–कहने मात्र से; ऑळिर्त्त–ज्वलन्त; वॅम् कनल् अवन्–सन्तापक अग्नि वह; उळ्ळम्–मन में; उट्कितान्–भीत हुआ; पुरम् मयिर्–शरीर पर के बाल; तण्मैयाल्–शीतलता से; चिलिर्प्प–पुलकित हुए; तळिर्त्तन–समृद्ध हुए; अ कुरिचिल् वाल्–उस श्रेष्ठ हनुमान की पूँछ; ऍन्पु कूर–हड्डियों तक; कुळिर्त्तदु–शीतल हुई। ११७०

श्वेत रंग की और मनोरम दन्तावली से भूषित देवी ने जब यह कहा, तब ज्वलन्त तथा दाहक अग्नि मन में भीत हुआ। फलस्वरूप हनुमान के शरीर पर के बाल शीतलता के कारण पुलकित हुए। उस उत्तम हनुमान की पूँछ हड्डी तक शीतल हो गयी। ११७०

मर्रिनिप् पलवॅन् वेलै वडवन्नल् पुविय ळाय
कर्रैवॅङ् गन्नलि मर्रैक् कायत्ती मुनिवर् काक्कुम्
मुर्रुरु मुम्मैच् चॅन्दी मुप्पुर मुरुङ्गच् चुट्ट
कॉर्रव नॅर्रिक् कण्णित् वन्नियुङ् गुळिर्न्द वन्रे 1171

वेलै–समुद्र में; वट अनल्–उत्तर में रहनेवाली अग्नि; पुवि अळाय–भूमि पर मिली रहनेवाली; कर्रै वॅम् कनलि–पुंजीभूत गरम आग; मर्रै–और; काय ती–आकाश की अग्नि; मुनिवर् काक्कुम्–मुनियों द्वारा पालित; मुर्रु उरु–पूर्ण

रहनेवाली; मुम्मै चॆम् ती–त्रिविध श्रेष्ठ अग्नि; मु पुरम्–त्रिपुर को; मुरुक्क चुट्ट–मिटाते हुए जिसने जलायी; कॊऱ्ऱवऩ्–विजयी; नॆऱ्ऱि–(श्रीशिवजी) के भाल की; कण्णिऩ् वऩ्तियुम्–आँख की अग्नि; कुळिर्न्त–ठण्डी पड़ गयी; मऱ्ऱु इत्ति–फिर और; पल ॲऩ्–बहुत कहने को क्या है ? । ११७१

(अग्नि के सारे अंश ठण्डे पड़ गये।) समुद्र में उत्तरी भाग में पायी जानेवाली बड़वाग्नि, भूमि पर मिश्रित रहनेवाली पुञ्जीभूत गरम आग, आकाश की अग्नि, मुनिपालित त्रिविध होमाग्नि (आह्वनीय, गार्हपत्य और दक्षिणा) विजयी शिवजी के भालनेत्र की त्रिपुरदाहक अग्नि —सब शीतल पड़ गयीं। और आगे अधिक विविध कहने को क्या है ? । ११७१

अणडमुङ् गडन्दा तङ्गै यत्तलियुङ् गुळिर्न्द दङ्गिक्
कुण्डमुङ् गुळिर्न्द मेहत् तुरुमॆलाङ् गुळिर्न्द कॊऱ्ऱच्
चण्डवॆङ् गदिर्ह ळाहित् तळुङ्गिरुळ् विळुङ्गुन् दाविल्
मण्डलङ् गुळिर्न्द मीळा नरहमुङ् गुळिर्न्द मादो 1172

अण्टमुम् कटन्तात्–अण्ड-गोल के पार रहनेवाले (सत्यलोक के ब्रह्मा) की; अम् कै अत्तलियुम्–हथेली-मध्य रहनेवाली अग्नि भी; कुळिर्न्ततु–ठण्डी हुई; अक्कि कुण्टमुम्–अग्निकुण्ड भी; कुळिर्न्त–शीतल बन गये; मेकत्तु उरुम् ऎलाम्–मेघ-मध्य सारी अशनियाँ; कुळिर्न्त–ठण्डी हो गयीं; कॊऱ्ऱ–प्रबल; चण्ट वॆम् कतिर्कळ् आकि–प्रचण्ड और उग्र किरणें बनकर; तळुक्कु इरुळ्–स्वर के साथ उठनेवाले अन्धकार को; विळुङ्कुम्–निगलनेवाले; ता इल् मण्टलम्–अक्षय सूर्यमण्डल; कुळिर्न्त–शीतल हो गये; मीळा नरकमुम्–निर्विकार नरक भी; कुळिर्न्त–तापहीन हो गया। ११७२

इस अण्ड के परे सत्यलोक में रहनेवाले ब्रह्माजी की हथेली की अग्नि, उनके यज्ञकुण्डों की अग्नि और मेघ की अशनियाँ भी ठण्डी हो गयीं। प्रचण्ड और उग्र किरणों के द्वारा शब्दायमान अन्धकार को भी लीलनेवाले अक्षय आदित्यमण्डल भी ठण्डे हो गये। अविकृत एक-रूप रहनेवाला नरक भी शीतल हो गया। ११७२

वॆऱ्पिना लियऩ्ऱ दन्न वालिनै विळुङ्गि वॆन्दी
निऱ्पितुञ् जुडादु निऩ्ऱ नीर्मैये निनैवि नोक्कि
अऱ्पिना ऱराद शिन्दै यनुमनुञ् जनहन् बावै
कऱ्पिना लियऩ्ऱ दॆन्बान् पॆरियदोर् कळिय नानान् 1173

अऩ्पिऩ् नार्–(श्रीराम-) भक्ति का तागा; अऱात चिन्तै–(जिसमें) न टूटा, ऐसे मन का; अनुमऩुम्–हनुमान भी; वॆम् ती–प्रचण्ड अग्नि; वॆऱ्पिताल् इयऩ्ऱतु अऩ्ऩ–पर्वत के बने-जैसे; वालिनै–दुम को; विळुङ्कि–निगलकर; निऱ्पितुम्–बनी रही तो भी; चुटातु निऩ्ऱ–विना जलाये रहने की; नीर्मैये–रीति को; निनैविऩ् नोक्कि–अपने मन में विचार कर; चऩकऩ् पावै–जनकसुता के; कऱ्पिताल्–

पातिव्रत्य से; इयन्ऱतु–बनी है यह; ऍऩ्पात्–निश्चय करके; पॆरियतु ओर् कळियऩ् आऩाऩ्–बहुत ही बड़े हर्ष के वश का हुआ। ११७३

हनुमान के मन में श्रीराम-भक्ति का ताँता कभी टूटता ही नहीं था। उसके पर्वत के बने-से द्रुम को भयंकर आग संवृत किये रही। तो भी उसे गर्मी नहीं लग रही थी। इस वैशिष्ट्य के सम्बन्ध में हनुमान ने सोचा। उसे सूझ गया कि यह जनकसुता के पातिव्रत्य का अद्भुत प्रभाव है। यह निर्धारण होते ही वह अतिहर्षित हुआ। ११७३

अऱ्ऱैयव् विरविऱ् ऱाऩ्ऱ ऩऱिविऩाऩ् मुळ्ळु मुऩ्ऩप्
पॆऱ्ऱिल ऩ्ऩिऩु माण्डौऩ् ऱुळ्ळदु पिळ्ळैयु ऱामे
मऱ्ऱुरु पौऱिमुऩ् ऩॆल्ल मऱैन्दुशॆल् लऱिवु माऩक्
कऱ्ऱिला वरक्कर् तामे काट्टलिऱ् ऱॆरियक् कण्डाऩ् 1174

अऱ्ऱै अ इरविल्–उस दिन की उस रात में; ताऩ्–स्वयं; तऩ् अऱिविऩाल्–अपनी बुद्धि से; मुळ्ळुतुम् उऩ्ऩ पॆऱ्ऱिलऩ्–पूर्ण रूप से जान नहीं पाया; ऍऩ्ऩिऩुम्–तो भी; आण्टु–तब (जब खींचा जाता रहा); ऒऩ्ऱु उळ्ळतु–किसी का रहना; पिळ्ळै उऱामे–न छूटा, ऐसा; कऱ्ऱु इला–अपढ़; अरक्कर्–राक्षस; तामे काट्टलिल्–स्वयं दिखाते गये, इसलिए; उऱु पौऱि–बाहर लगी हुई इन्द्रियों के; मुऩ् चॆल्ल–आगे जाते; मऱैन्तु चॆल्–उनके पीछे छिपे-छिपे जानेवाली; अऱिवु माऩ–बुद्धि के समान; तॆरिय कण्टाऩ्–(हनुमान ने) देखा और जाना। ११७४

उस दिन की रात में (जब वह नगर में सीताजी का अन्वेषण करता, घूमा) उसने अपनी बुद्धि के सहारे लंका नगर के सारे दृश्य नहीं देख पाये थे। पर अब राक्षसों ने खुद सारी वस्तुएँ दिखा दीं, कोई भी विषय या दृश्य छूट नहीं पाया था। जैसे शरीर से लगी बाह्येन्द्रियाँ आगे-आगे इंद्रिय-गोचर विषयों को दिखाती जाती हैं और उनके पीछे छिपे-छिपे जाकर मन सभी से अवगत होता है, वैसे ही हनुमान लंका में रहे सभी वस्तुओं को देखता चला। ११७४

मुळुवदुन् दॆरिय नोक्कि मुऱ्ऱुमूर् मुडियच् चॆऩ्ऱाऩ्
वळुवुऱु काल मीदॆऩ् ऱॆण्णिऩऩ् वलिदिऱ् पऱ्ऱित्
तळुविऩ रिरण्डु नूऱा यिरम्बुयत् तडक्कै ताम्बो
डॆळुवॆऩ नाल विण्मे लॆळुन्दऩऩ् विळुन्द वॆल्लाम् 1175

मुळुवतुम्–सारे (नगर) को; तॆरिय नोक्कि–खूब देखकर; ऊर् मुऱ्ऱुम्–नगर भर में; मुटिय चॆऩ्ऱाऩ्–सर्वत्र गया; वळुवु उऱु कालम्–बच निकलने का समय; ईतु ऍऩ्ऱु–यही है, ऐसा; ऍण्णिऩऩ्–सोचकर; वलितिल् पऱ्ऱि–मजबूती से पकड़कर; तळुविऩर्–जो लिपटे रहे उन राक्षसों के; इरण्टु नूऱायिरम्–दो लाख; पुयम् तट कै–कन्धों और विशाल हाथों को; ताम्पु ओटु–रस्सों के साथ; ऍळु ऍऩ–खम्भों के

समान; नाल–लटकने देते हुए; विण्मेल्–आकाश में; ॲळुन्ततन्–उछला; ॲल्लाम् विळुन्त–सब गिर गये। ११७५

हनुमान पूर्ण रूप से सारी वस्तुएँ देखते हुए नगर भर में गया। उसने उचित अवसर पर निर्णय किया कि यही बच निकलने का समय है। यह संकल्प करते ही वह सहसा आकाश में उछला। तब दो लाख (एक लाख राक्षसों के) बड़े और मोटे हाथ रस्सों-सहित खम्भों के समान लटके रहे। कुछ देर के बाद वे सब नीचे गिर गये। ११७५

इऱ्ऱवा ळरक्कर् नूऱा यिरवरु मिळन्द तोळार्
मुऱ्ऱिता रुलन्दा रैयन् मॊय्म्बिन्तो डुडलै मूळ्हच्
चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱि तोडुन् दोऩ्ऱुवा ऩरविन् शुऱ्ऱम्
बऱ्ऱिय कलुळ नॆन्नप् पॊलिन्दनन् विशुम्बिन् पालान् 1176

इऱ्ऱ वाळ्–टूटी तलवारों के; अरक्कर्–राक्षस; नूऱु आयिरवरुम्–लाखों; इळन्त तोळार्–भुजाहीन होकर; मुऱ्ऱितार् उलन्तार्–पूर्ण रूप से मिट गये; ऐयन्–महिमावान हनुमान; मॊय्म्पित्तोटु–कन्धों के साथ; उटलै मूळ्क चुऱ्ऱिय–शरीर को जो पूरा-पूरा कसे रहे; कयिऱ्ऱित्तोटुम्–उन रस्सों के साथ भी; विचुम्पिन् पालान्–आकाश में; तोऩ्ऱुवान्–जो प्रकट था, वह; अरविन् चुऱ्ऱम् पऱ्ऱिय–सर्पों के झुण्ड जिससे लगे रहते हैं वैसे; कलुळन् ॲन्न–गरुड़ के समान; पॊलिन्ततन्–शोभायमान रहा। ११७६

लाखों राक्षसों की तलवारें टूटीं। फिर वे भुजाहीन हुए। फिर पूर्ण रूप से प्राणहीन हो गये। हनुमान भुजाओं और शरीर पर लपेटे रहे पाश के साथ जब आकाश में दिखायी दे रहा था, तब वह सर्पवृन्द-घिरे गरुड़ के समान प्रकट हो रहा था। ११७६

तुन्नलर् पुरत्तै मुऱ्ऱुञ् जुडुतॊऴिऱ् ऱॊल्लै योरुम्
बन्निन पॊरुळु नाणप् पादह रिरुक्कै पऱ्ऱ
मन्ननै वाळ्त्ति वाळ्त्ति वयङ्गॆरि मडुप्पॆ नॆन्नाप्
पॊन्नहर् मीदे तन्बोर् वालिनैप् पोह विट्टान् 1177

तुन्नलर्–शत्रुओं के; पुरत्तै–नगर को; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; चुटु तॊऴिल्–जलाने के (युद्ध के अंग के रूप में) कार्य के सम्बन्ध में; तॊल्लैयोरुम्–प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा; पन्नित–वर्णित; पॊरुळुम्–बाह्य साहित्य परिपाटियों के विषयों को भी (भावार्थ में इसका भाव देख लें); नाण–लजाते हुए; पातकर् इरुक्कै–पातकों के वासस्थानों में; पऱ्ऱ–जलाते हुए; वयङ्कु ॲरि–फैलनेवाली आग; मटुप्पॆन्–लगा दूंगा; ॲन्ना–कहकर; मन्नतै–राजाराम को; वाळ्त्ति वाळ्त्ति–बार-बार संस्तुति करते हुए; पॊन् नकर् मीते–स्वर्ण-नगरी पर; तन्–अपनी; पोर् वालितै–युद्ध-पुच्छ को; पोक विट्टान्–सरकने दिया (हनुमान ने)। ११७७

हनुमान ने यह निर्णय करके कि पातक राक्षसों के वासस्थान सभी

प्रासादों में आग लगे, ऐसा आग लगाऊँगा। और राजाराम के श्रीचरणों की बार-बार वन्दना करके अपने युद्ध-पुच्छ को उस स्वर्णनगरी पर सरकने दिया, जिससे प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा निर्दिष्ट शत्रु-पुर-दहन-वर्णन की परिपाटियों के अनुसार वर्ण्य विषय भी लज्जित हुए। [यानी इस प्रकार दहन का काम चला की उसका वर्णन करें तो उसके आगे प्राचीन आचार्यों की बातें भी फीकी पड़ जायँ। अनुवादक की अवतरणिका में (बालकाण्ड की) पाठक देख सकते हैं कि तमिऴ-काव्य में प्रेम (अहम)और युद्ध(पुऱम) के दो प्रधान विषयों के काव्य-वर्णन में क्या-क्या रीतियाँ अपनायी जायँ; प्रसंगों का नामकरण कैसे हो? प्रसंगों के अन्तर्गत कैसा समय, कैसी ऋतु, कौन से पक्षी, पशु, लोग आदि की चर्चा होनी चाहिए —यह सब निश्चित है। इस शत्रुनगर-दहन का वर्णन 'पुऱ' तिणै के अन्तर्गत "उऴ पुल वञ्जि" तुऱै में आता है।]। ११७७

अप्पुऱऴ् वेलै काऱु मलङ्गुपे रिलङ्गै तन्नै
ॲप्पुऱत् तळवुन् दीय वीरुहणत् तॅरित्त कॊट्पाल्
तुप्पुऱऴ् मेनि यण्णन् मेरुविल् कुऴैयत् तोळाल्
मुप्पुरत् तॅय्द कोले यौत्तदम् मूरिप् पोर्वाल् 1178

उऱऴ् अप्पु–परस्पर टकरानेवाली लहरों के जल से भरे; वेलै काऱम्–समुद्र तक; अलङ्कु पेर् इलङ्कै तन्नै–विद्यमान बड़ी लंका को; ॲ पुऱत्तु अळवुम् तीय–सभी ओरों की सीमा तक जल जाय, ऐसा; ओरु कणत्तु–एक क्षण में; ॲरित्त–जलाने के; कॊट्पु आल्–प्रभाव से; अ मूरि–वह बलवान; पोर् वाल्–युद्ध-पुच्छ; तुप्पु उऱऴ्–प्रवाल-सम; मेनि अण्णल्–(लाल) शरीर के प्रभु शिवजी ने; मेरु विल्–मेरु-धनु को; कुऴैय–झुकाते हुए; तोळाल्–अपने हाथ से; मु पुरत्तु ॲय्त–त्रिपुर पर जो चलाया; कोले ऑत्ततु–उस बाण के ही समान था। ११७८

परस्पर टकराती हुई उठनेवाली तरंगों के जल से भरे समुद्र तक फैली लंका को उस पूँछ ने एक पल में सभी ओर से जलाकर ख़ाक बना दिया। उस सामर्थ्य को देखते हुए वह सबल और युद्धविक्रमी दुम, प्रवाललाल-शरीरी श्रीशिवजी द्वारा मेरुधनु को झुकाकर उनके हाथों से छोड़े गये शर के ही समान रही। ११७८

वॆळ्ळियिऱ् पॊन्नि नाह विळङ्गुपॊन् मणियिन् विम्मै
तॆळ्ळिय कडवुट् टच्चन् कैम्मुयन् ड्ऱिदिऱ् चॆय्द
तळ्ळरु मनैह डोऱु मुऱैमुऱै ताविच् चॆन्ऱान्
ऑळ्ळॆरि योडुङ् गुन्ऱत् तूऴिवी ऴुरुमो डॊप्पान् 1179

वॆळ्ळियिन्–चाँदी के; पॊन्तिन्–और स्वर्ण के; विळङ्कु पॊन् मणियिन्–और प्रभापूर्ण रत्नों के; आक–बने हों ऐसा; विम्मै तॆळ्ळिय–शिल्प-विद्या में निपुण;

कटवुळ् तच्चन्–दिव्य शिल्पी विश्वकर्मा द्वारा; कै मुयन्ऱु–अपना हस्तकौशल पूर्ण रूप से प्रयोग करके; अरितिल् चॅय्त–अपूर्व रूप से निर्मित; तळ् अरु–अमिट; मतैकळ् तोऱुम्–भवनों में; ऑळ् ऍरि ओटुम्–प्रज्वलित आग के साथ; कुन्ऱ्ततु–पर्वत पर; ऊऴि वीऴ्–युगान्त में गिरनेवाली; उरुम् ओट्टु ऑप्पान्–अशनि की तुलना करनेवाला हनुमान; मुऱै मुऱै–क्रम से; तावि चॅन्ऱान्–भवन से भवन उछलता जा रहा था। ११७९

लंका के प्रासाद शिल्पविद्याविदग्ध विश्वकर्मा द्वारा रजत, स्वर्ण, मनोरम प्रभापूर्ण रत्नों आदि का उपयोग करके अपना सारा हस्तकौशल लगाकर रचे गये थे। वे आसानी से मिटाये जा सकनेवाले नहीं थे। उन प्रासादों पर हनुमान अपने ज्वलंत दुम के साथ बारी-बारी से गिरा। जैसे युगान्त में अशनि पर्वतों पर गिरती है, वैसे ही वह आग लगाता हुआ एक से दूसरे पर उछलकर कूदता चलने लगा। ११७९

नीऌिऱ् निरुदर् याण्डुम् नॅय्पॊऴि वेळ्वि नीक्कप्
पाल्वरुम् बशिय तन्बान् मारुदि वालैप् पऱ्ऱि
आलमुण् डवनिन् ऱूट्ट वुलहॅला मवियि नुण्णुम्
कालमे यॅन्न मन्नो कन्लियुङ् गडिदि नुण्डान् 1180

नील् निऱ–नीलवर्ण; निरुतर्–राक्षसों के; याण्टुम्–सर्वत्र; नॅय् पॊऴि–घृत जिनमें पुष्कल रूप से अग्नि में डाला जाता है; वेळ्वि नीक्क–उन यज्ञों को रोकने से; पाल् वरुम्–अपने पास आगत; पचियन्–बुभुक्षु; कन्लियुम्–अग्निदेव भी; मारुति वालै–मारुति की पूंछ को; अन्पाल्–लगाव के साथ; पऱ्ऱि–पकड़कर; आलम् उण्टवन्–विषभोक्ता शिवजी के; निन्ऱु ऊट्ट–स्वयं खिलाने (संहार करने) पर; उलकु ऍलाम्–सारे लोकों को; अवियिन्–हवि के समान; उण्णुम् कालमे ऍन्न–खानेवाले काल ही के समान; कटितिन् उण्टान्–शीघ्र खा लिया (जला दिया)। ११८०

नीलवर्ण राक्षसों ने यज्ञों को रोका था, जिनमें अग्नि घी को होम के रूप में समृद्ध रीति से अर्पित किया जाता है। इसलिए वह अग्निदेव भूखा रह गया। अब वह हनुमान के पास गया और उसने हनुमान की पूंछ पकड़कर जाते हुए सारी लंका को ऐसा खा लिया (भस्म कर लिया), जैसे विषभोक्ता शिवजी के खिलाने पर युगान्त का कालदेवता सारे लोकों को हवि के समान खा लेता है। ११८०

13. इलङ्गै यॅरियूट्टु पडलम् (लंका-दहन पटल)

कॊडियैप् पऱ्ऱि विदानङ् गॊळुत्तित्ताळ्, नॅडिय तूणैत् तडवि नॅडुन्जुवर्
मुडियच् चुऱ्ऱि मुऴुदु मुरुक्किऱ्ऱाल्, कडिय मामनै दोऱुङ् गडुङ्गनल् 1181

कटुम् कनल्–प्रचण्ड अग्नि; कटिय–सुरक्षित; मा मनै तोऱुम्–सभी बड़े-बड़े भवनों में; कॊटियै पऱ्ऱि–ध्वजा को लगकर; वितानम् कॊळुत्ति–वितानों को

जलाकर; ताळ्-पीठों पर; नॆटिय तूणै-लम्बे खम्भों को; तटवि-लगकर; नॆटुम् चुवर्-ऊँची दीवारों को; मुटिय चुड्रि-पूर्ण रूप से घेरकर; मुळ्तुम्-(इस भाँति) पूरा-पूरा; मुरुक्किड्रु-(भवनों को) जला दिया। ११८१

प्रचण्ड अग्नि ने सुरक्षित रहे सारे घरों को, ध्वजा में लगकर, वितान जलाकर, पीठ-सहित लम्बे खंभों को भस्म करके और लम्बी दीवारों को चारों ओर से घेरकर पूर्ण रूप से जला डाला। ११८१

वाश लिट्ट वॆंरिमणि माळिहै, मूश मुट्टि मुळ्ढु मुरुक्कलाल्
ऊश लिट्टन्न वोडि युलैन्दुपोय्प्, पूश लिट्ट विरियर् पुरमॆलाम् 1182

वाचल् इट्ट-द्वार पर लगायी गयी; ऎंरि-आग के; मणि माळिकै-रत्नमय प्रासादों को; मूच मुट्टि-मण्डलाकार जोर से लगकर; मुळ्तुम् मुरुक्कलाल्-पूर्ण रूप से जला देने से; इरियल्-अस्त-व्यस्त; पुरम् ऎलाम्-नगरवासी सभी; ऊचल् इट्टु अन्न-झूलों के समान आगे-पीछे; ओटि-भागे; उलैन्तु पोय्-लटकर; पूचल् इट्ट-(उन्होंने) बड़ा शोर मचाया। ११८२

हनुमान ने द्वार पर ही आग लगायी। पर उसने सुन्दर प्रासादों को सभी ओर से ग्रसकर पूरा-पूरा जला डाला। इसलिए सभी पुरवासी अस्त-व्यस्त हो झूले-जैसे (पेंग मारते और आगे से पीछे और पीछे से आगे आते-जाते हैं वैसे) भागे, थके और बड़ा शोर मचाने लगे। ११८२

मणियि न्नाय वयङ्गॊळि माळिहै, पिणियिऩ् चॆंजुडर्क् कऱ्ऱै पॆरुक्कलाल्
तिणिहॊ डीयुऱ्ऱ दुऱ्ऱिल देर्हिलार्, अणिव ळैक्कैनल् लारल मन्दुळार् 1183

मणियिन् आय-रत्न-निर्मित; ऒळि वयङ्कु-प्रकाशमय; माळिकै-प्रासाद; पिणियिन्-(आग के) लगने से; चॆम् चुटर् कऱ्ऱै-लाल किरणों की लटों को; पॆरुक्कलाल्-(प्रतिबिम्बों के रूप में) संख्या में बढ़ाने से; तिणि कॊळ्-घनी; ती उऱ्ऱ-आग-लगे स्थान; तुऱ्ऱिल-जिन स्थानों में आग नहीं लगी थी, वे स्थान; तेर्किलार्-(उनमें भेद) जो नहीं जान सकीं; अणि वळै कै-(वे) कंकण वाले हाथों की; नल्लार्-स्त्रियाँ; अलमन्तु उळार्-गड़बड़ायी रहीं। ११८३

वे प्रासाद रत्नों के बने थे और चिकने और प्रभापूर्ण थे। इसलिए उनमें लगी आग की ज्वालाएँ प्रतिबिम्बित दिखीं और आग की लटें अत्यधिक संख्या में बढ़ी दिखायी दीं। इसलिए कंकणहस्ता स्त्रियाँ यह भेद नहीं कर सकीं कि कहाँ आग लगी है, कहाँ नहीं! इसलिए वे किंकर्तव्यमूढ बनी भ्रमित रहीं। ११८३

वान हत्तै नॆंडुम्बुहै माय्त्तलाल्, पोन तिक्करि यावु पुलम्बिन्नार्
तेन हत्त मलर्पल शिन्दिय, कान हत्तु मयिलन्न काट्चियार् 1184

तेन् अकत्त-शहद जिसके मध्य में है; पल मलर्-ऐसे विविध फूल; चिन्तिय-

जहाँ गिरे पड़े हैं; कातकत्तु—उस वन के; मयिल् अन्न—मोरों के समान; काट्चियार्—दिखनेवाली स्त्रियाँ; नॆट्टुम् पुकै—बहुत दूर तक व्याप्त धुआँ; वातकत्तै मायत्तल् आल्—आकाश को छिपाए रहा; पोत तिक्कु—(इसलिए) किस ओर गयीं, यह दिशा; अऱियातु—न जानकर; पुलम्पिऩार्—विलपीं। ११८४

विविध मधुगर्भसुमनाकीर्णवन्यमयूरनिभ स्त्रियाँ बहुत दूर तक फैले हुए धूम के आकाश को आच्छादित करने से यह न जान सकीं कि वे किस दिशा में गयी हैं और विलाप करती हुई रोयीं। ११८४

कूय्क्कॊ ळुम्बुऩल् कुञ्जियिऩ् कूऩ्दलिऩ्
मीच्चॊ रिऩ्दऩर् मादरुम् वीररुम्
एय्त्त तऩ्मैयि ऩालॆरि यिऩ्मैयुम्
तीक्कॊ ळुऩ्दिऩ वुऩ्दॆरि यामैयाल् 1185

वीररुम् मातरुम्—वीर पुरुष और स्त्रियाँ; एय्त्त तऩ्मैयिऩाल्—समानता की वजह से; ऎरि इऩ्मैयुम्—आग का न लगना; ती कॊळुन्तिऩवुम्—आग का जला रहना; तॆरियामैयाल्—न जानने से; कूय्—चिल्लाते हुए; कॊळुम् पुऩल्—बहुत परिमाण में जल को; कुञ्चियिल्—(पुरुषों के) केशों पर (स्त्रियों ने); कूऩ्तलिल्—और (स्त्रियों की) वेणी पर (पुरुषों ने); मी चॊरिन्तऩर्—ऊपर से डाले। ११८५

वीर राक्षस पुरुषों के केश और सुन्दर राक्षसी स्त्रियों की वेणी दोनों आग के ही समान अरुणवर्ण थी। इसलिए वे यह निर्णय नहीं कर सके कि सिर पर आग लगी है या नहीं लगी है। अतः रोते-चिल्लाते हुए पुरुषों ने स्त्रियों की वेणी पर समृद्ध रूप से जल उड़ेला और स्त्रियों ने पुरुषों के केश पर जल उड़ेला। ११८५

इल्लिऱ् ऱङ्गुम् वयङ्गॆरि यावैयुम्
शॊल्लिऱ् ऱीर्न्दऩ पोलरुन् दॊल्लुरुप्
पुल्लिक् कॊण्डऩ मायैप् पुणर्प्पऱक्
कल्लित् तम्मियल् पॆय्दुङ् गरुत्तर्पोल् 1186

मायै—माया को; पुणर्प्पु अऱ—लगाव हटाते हुए; कल्लि—उखाड़ फेंककर; तम् इयल्पु—स्वभाव में; ऎय्तुम्—आगत; करुत्तर् पोल्—विवेकी के समान; इल्लिल् तङ्कुम्—(राक्षसों के) घरों में रही; वयङ्कु ऎरि यावैयुम्—ज्वलन्त अग्नि सभी ने; चॊल्लिल् तीर्न्तऩ पोल्—(रावण की) आज्ञा से छूट गयी-जैसी; अरुम्—अपूर्व; तॊल् उरु—अपना पुराना (स्वाभाविक) रूप; पुल्लि कॊण्टऩ—अपना लिया। ११८६

राक्षसों के घरों में रहनेवाली अग्नि ने मानो रावण की आज्ञा से छूटकर अपना पुराना अपूर्व रूप और गुण अपना लिया। तब वह उस विवेकी के समान रही, जो माया को मूल से उखाड़ फेंककर स्वभावस्थ हो गये हों। ११८६

आय दङ्गोर् कुऱळुरु वायडित्, ताय ळन्दुल हङ्ग डरक्कोळ्वान्
मोयॅ ळुन्द करियवन् मेऩियिल्, पोयॅ ळुन्दु परन्ददु वॅम्बुहै 1187

ओर् कुऱळ् उरुवाय्–पहले एक वामन के आकार में; तर–(गये और दान) दिये जाने पर; उलकङ्कळ्–लोकों को; अटि ताय्–अपने चरणों से लाँघकर; अळन्तु कोळ्वान्–नाप लेने के लिए; मी ऍळुन्त–आकाश में ऊँचे बढ़े हुए; करियवऩ्–काले रंग के त्रिविक्रम श्रीविष्णु के; मेऩियिल्–शरीर की तरह; वॅम् पुकै–गरम धुआँ; अङ्कु ऍळुन्तु पोय्–वहाँ से उठकर गया और; परन्ततु आयतु–सर्वत्र व्याप्त हुआ। ११८७

गरम धुआँ घने रूप से उठा और लंका के ऊपर सारे आकाश में फैला। (कवि की कल्पना है कि) वह, पहले वामन के रूप में जाकर दान प्राप्त करने के बाद तीनों लोकों को अपने चरणों से नापकर अपना लेने के निमित्त जो त्रिविक्रम के रूप में संवर्द्धित हुए उन विष्णु के समान रहा। ११८७

नील निऩ्ऱ निऱत्तत कोळ्निलै, मालिऩ् वॅञ्जित यातैयै मातुव
मेल्वि ळुन्दॅरि मुऱ्ऱुम् विळुङ्गलाल्, तोलु रिन्दु कळन्ऱत तोलॅलाम् 1188

नीलम् निऩ्ऱ–काले; निऱत्तत–रंग वाले; तोल् ऍलाम्–गज सभी; मेल् विळुन्तु–ऊपर लगकर; ऍरि–आग के; मुऱ्ऱुम् विळुङ्कलाल्–पूरी तरह से आवृत कर लेने से; तोल् उरिन्तु–चमड़ा उघड़कर; कळन्ऱत–दूर हो गया, होकर; कोळ् निलै–पूरब की दिशा के; मालिऩ्–इन्द्र के; वॅम् चित यातैयै–(ऐरावत नाम के) भयंकर क्रोधी गज के; मातुव–समान हो गये। ११८८

लंका के गजों के चर्म आग में जलकर दूर हो गये। तब वे सफ़ेद होकर सब पूर्व दिशा के पालक इन्द्र के ऐरावत के समान लगे। ११८८

मीदि मङ्गलन् दालन्न वॅम्बुहै, शोदि मङ्गलत् तीयॊडुञ् जुऱ्ऱलाल्
वीदि मङ्गुलिन् वीळ्पुऩल् मीप्पडर्, ओदि मङ्गळिन् माद रोडुङ्गिऩार् 1189

मीतु–ऊपर; इमम् कलन्ताल् अऩ्ऩ–हिम-मिश्रित-सा जो रहा; वॅम्पुकै–उस धूम के; चोति मङ्कु अल्–ज्योति जिसकी मन्द नहीं हो रही थी (अमन्दप्रभ); अ तीयॊटु–उस अग्नि के साथ; चुऱ्ऱलाल्–मण्डल बनाता रहा, इसलिए; वीति–वीथियों में; मातर्–स्त्रियाँ; मङ्कुलिऩ् वीळ् पुऩल्–मेघ से गिरनेवाले जल को छोड़; मी पटर्–आकाश में उड़ते रहे; ओतिमङ्कळिऩ्–हंसों के समान; ऒतुङ्किऩार्–हटकर चलीं। ११८९

हिमावृत-सा वह धुआँ अभेदज्योति अग्नि के साथ मण्डलाकार फैल रहा था। तब राक्षसियाँ उससे बचकर दूर हट जाने लगीं। वे उन हंसों के समान थीं, जो मेघ से गिरे, भूमि पर जमे अशुद्ध जल को छोड़कर उपर उड़े जा रहे हों। ११८९

पॉडित्तॅ ऴुन्द पॅरुम्बॊरि पोवन
इडिक्कु लङ्गळिन् वीऴ्वन वॅङ्गणुम्
वॅडित्त वेलै वॅदुम्बिड मीन्गुलम्
तुडित्तु वॅन्दु पुलर्न्दुयिर् शोर्न्दवाल् 1190

पॉटित्तु ॲळुन्त–कणों के रूप में उठे; पॅरुम् पॉरि–बड़े-बड़े अग्निकण; पोवन–ऊपर जाते; वीऴ्वन–नीचे गिरते; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; इटि कुलङ्कळिन्–अशनिवृन्दों के समान; वॅटित्त–फटे; वेलै वॅतुम्पिट–(इसलिए) समुद्र खौला, इसलिए; मीन् कुलम्–मत्स्यकुल; तुटित्तु–तड़पे; वॅन्तु–जले; पुलर्न्तु–झुलसे; उयिर् चोर्न्त–प्राण से हाथ धोये (उन्होंने)। ११९०

बड़े बड़े अंगारे छूटे और फैले। वे ऊपर जाते और नीचे गिर जाते। और सर्वत्र अशनिकुल के समान घोर शब्द के साथ फटे। समुद्र खौल गया। झषककुल तड़पे, जले, झुलसे और प्राणहीन हो गये। ११९०

परुहु तीमडुत् तुळ्ळुरप् पर्रलाल्, अरुहु नीडिय वाडहत् तारैहळ्
उरुहि वेलैयि नूडुपुक् कुर्रन, तिरुहु पॊन्नॅडुन् दण्डिर् ऱिरण्डवाल् 1191

परुकु–सबको खाने का स्वभाव रखनेवाली; ती–आग; मटुत्तु–सर्वत्र व्याप्त होकर; उळ् उऱ–अन्दर पहुँचकर; पर्रल् आल्–जलती है, इसलिए; अरुकु–पास रही; नीटिय–लम्बी; आटक तारैकळ्–स्वर्णतारें; उरुकि–पिघलकर; वेलैयिन् ऊटु–समुद्र में; पुक्कु उऱ्ऱन–जा पहुँचीं; तिरुकु नॅटुम्–पेचदार लम्बे; पॊन् तण्टिल्–स्वर्णदण्डों के समान; तिरण्ट–पुष्ट और मोटे दिखायी दिये। ११९१

सबको भस्म करने के स्वभाव वाली अग्नि सर्वत्र व्यापकर बाहर क्या अंदर से भी जलाने लगी तो स्वर्ण पिघलकर धारों के रूप में बहने लगा। सभी धारें समुद्र में गयीं और पेचदार स्वर्णदण्डों में परिवर्तित हो गयीं। ११९१

उरैयिन् मुन्दुल हुण्णु मॅरियदाल्, वरैनि वन्दन पन्मणि माळिहै
निरैयि नीणॅडुञ् जोलैयि निऱ्कुमो, तरैयुम् वॅन्ददु पॊन्नॅनुन् दन्मैयाल् 1192

उरैयिन् मुन्तु–(साधु के शाप) वचन के समान शीघ्र; उलकु उण्णुम् ॲरि अतु–लोकदाहक वह आग; वरै–पर्वत के समान; निवन्तन–उन्नत; पन् मणि माळिकै–विविध रत्नमय प्रासादों की; निरैयिन्–पंक्तियों के साथ; नीळ् नॅटुम् चोलैयिन्–बहुत बड़े विशाल उद्यानों तक से; निऱ्कुमो–सीमित रह जायगी क्या; तरैयुम्–भूमि भी; पॊन् ॲनुम् तन्मैयाल्–स्वर्ण होने के कारण; वॅन्ततु–जल गयी। ११९२

साधुओं के शाप बहुत शीघ्र कार्यान्वित हो जाते हैं। उसी शीघ्रता की लोकदाहक आग भी क्या उन्नत विविध रत्नमय प्रासादों और बड़े-बड़े उद्यानों तक सीमित रहेगी ? लंका की भूमि भी सोने की थी। अतः भूमि भी जलकर भस्म बन गयी। ११९२

कल्लि नुम्वलि दाम्बुहैक् कऱ्ऱैयाल् ऑल्लि पॅऱ्ऱ दिमैयवर् नाट्टिडम्
वल्लि कोलि निवन्दन मामणिच्, चिल्लि योडुन् दिरण्डन तेरॅलाम् 1193

कल्लितुम् वलितु–पत्थर से भी घना; आम्–जो रहा; पुकै कऱ्ऱैयाल्–उस धुएँ की राशियों से; इमैयवर् नाट्टु इटम्–देवलोक का सारा स्थल; ऑल्लि पॅऱ्ऱतु–अन्धकार से भर गया; वल्लि कोलि–ध्वजाओं से अलंकृत करके; निवन्तन–ऊँचे बनाये गये; तेर् ऍलाम्–सारे रथ; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नों से सजे हुए; चिल्लियोटुम्–चक्रों के साथ; तिरण्टन–जलकर एक पिंड बन गये। ११९३

धुएँ की लटें पत्थर से भी कठोर थीं। उनके घने व्यापने से देवों के लोकों के सारे स्थल अंधकारमग्न हो गये। ध्वजाओं से अलंकृत बड़े-बड़े रथ जो थे, वे सब अपने श्रेष्ठ रत्नजडित पहियों के साथ पिघलकर पिण्डाकार बन गये। ११९३

पेय मन्ऱिनि लन्ऱु पिऱङ्गॅरि, माय रुण्ड नऱवै मडुत्तवाल्
तूय रॅन्ऱिलर् वैहिडन् दुन्निनाल्, तीय रन्ऱियुन् दीमैयुञ् जॅय्वराल् 1194

पेय मन्ऱिनिल्–मधुशालाओं में; अन्ऱु–उस दिन; पिऱङ्कु ऍरि–(जो) जली (वह) आग; मायर् उण्ट–मायाचतुर राक्षसों से पीत; नऱवै–सुरा को; मटुत्तताल्–स्वयं पीने (उसमें लगने) से; तूयर् अॅन्ऱु इलर्–अपवित्र; वैकु इटम्–(लोगों के) वासस्थान; तुन्नित्ताल्–जायँ तो; तीयर् अन्ऱियुम्–(ऐसे जो जाते हैं वे) बुरे नहीं होने पर भी; तीमैयुम् चॅय्वर्–बुरा काम करेंगे। ११९४

मधुशालाओं में जो आग लगी उसने वहाँ रही ताड़ी का अशन किया। ताड़ी वञ्चक राक्षसों का पान है। पवित्र आग का उसका अशन करना इस मसल का प्रमाण है कि अपवित्र लोगों के स्थान में जानेवाले स्वयं बुरे न होने पर भी बुरे काम कर देते हैं। ११९४

तऴुवि लङ्गै तऴङ्गॅरि दाय्च्चॅल, वऴुविल् वेलै युलैयिन् मऱुहिन
ऑऴुहो ऴुञ्जुडर्क् कऱ्ऱैशॅन् ऱॅय्दलाल्, कुऴुवु तण्बुनत् मेहङ् गॉदित्तवे 1195

इलङ्कै तऴुवु–लंका में लगकर; तऴङ्कु ऍरि–शब्द के साथ जलनेवाली आग; ताय् चॅल–उछल चली, इसलिए; वऴुवु इल् वेलै–अपृथक् रहनेवाला सागर; उलैयिनु–(अन्न पकाने के लिए) खौलते पानी के समान; मऱुकित–खौल गया; ऑऴु–ऊपर उठती; कोऴुम् चुटर् कऱ्ऱै–घनी आग की लटें; चॅन्ऱु ऍय्तल् आल्–ऊपर जा पहुँचीं, इसलिए; कुऴुवु–घुमड़े हुए; तण् पुनल् मेकम्–शीतल जल-भरे मेघ; कॉतित्त–गरम हो तपे। ११९५

लंका पर लगी आग सशब्द फैलती हुई चली। इसलिए अपृथक् रहनेवाले सागर का जल धान पकाने के लिए खौलाये गये जल के समान खौल गया। ऊपर उठनेवाली घनी लपटें आकाश तक गयीं, इस वजह से समूह में रहे शीतल जल-भरे मेघ गरम हो गये। ११९५

ऊन्ति लोडु मॅरियॉ डुयङ्गुवार्, कान्ति लोडु नॅडुम्बुनल् काणॅन्ता
वान्ति लोडु महळिर् मयङ्गिनार्, वेन्ति लोडरुन् देरिडै वीऴ्न्दनर् 1196

ऊन्तिल् ओटुम्–मज्जे के अन्दर लगती जलती; ऍरि ऑटु–आग से; उयङ्कुवार्–दुःखी; वात्तिल् ओटु–अन्तरिक्ष में भागनेवाली; मकळिर्–राक्षसियाँ; मयङ्कितार्–बेहोश हुईं; कान्तिल् ओटुम्–वन में बहता; नॅटुम् पुनल्–बड़े प्रवाह; काण् ऍता–देखो कहकर; वेतिल् ओटु–ग्रीष्म में बहता-सा दिखनेवाले; अरुम् तेर् इटै–अपूर्व मृगजल में; वीऴ्न्ततर्–गिरीं। ११९६

स्त्रियों के मज्जों के अन्दर भी आग पहुँचकर जलाने लगी। असह्य वेदना के साथ वे अन्तरिक्ष में भागीं, पर बेसुध हो गयीं। उनके सामने मृगजल (तमिळ में इसे 'भूतरथ' कहते हैं।) देखा। कहने लगीं कि देखो जंगल में बहनेवाला जलप्रवाह इधर है! वे पास गयीं और गिरीं। ११९६

तेन वाम्बॉळि ऱीप्पडच् चिन्दिय, शोतै मामलर्त् तुम्बि तॉडर्न्दयल्
पोन तीच्चुडर् पुण्डरि हत्तडम्, 'कान मामॅन वीऴ्न्दु करिन्दवे 1197

तेन्–शहद की मक्खियाँ; अवाम्–जहाँ चाव के साथ आती हैं; पॉळिल्–उन उद्यानों में; ती पट–आग लगी, इसलिए; चिन्तिय–तितर-बितर हुए; चोतै मा मलर्–घटा-सम बड़े फूलों पर; तुम्पि–(मँड़रानेवाले) भ्रमर; तॉटर्न्तु–उसमें लगातार लगकर; अयल् पोत–उससे दूर भी व्याप्त; ती चुटर्–अग्नि की ज्वालाओं को; पुण्टरिक तटम् कातम् आम्–विशाल पुण्डरीकवन है; ऍत–ऐसा सोचकर; वीऴ्न्तु–गिरकर; करिन्त–राख बने। ११९७

उद्यानों में भी आग लगी, जहाँ शहद की मक्खियाँ चाव के साथ आती हैं। आग उद्यानों के उस पार भी फैल गयी। घटा-सम जो पुष्पों पर मँड़रा रहे थे, वे आग से डरकर तितर-बितर हुए और दूर के स्थानों पर लगी आग के विस्तार को विशाल पुण्डरीक-वन समझकर उसमें जाकर गिरे और भस्म हो गये। ११९७

नऱ्क डम्मिदु नम्मुयिर् नायहर्, मऱ्क डन्दॆऱ माण्डनर् वाऴ्विलम्
इऱ्क डन्दिनि येहलम् यामॅन, विऱ्क डन्द नुदलियर् वीडिनार् 1198

विल् कटन्त–धनु से भी अधिक मनोरम; नुतलियर्–भाल वाली राक्षसियाँ; मम् उयिर् नायकर्–हमारे प्राणप्रिय पति; मऱ्कटम् तॆऱ–मर्कट के मारने से; माण्टतर्–मर गये; याम्–हम; वाऴ्वु इलम्–(सुहागिन के) जीवन से रहित हो गये; इल् कटन्तु–घर से बाहर; इनि–अब; एकलम्–नहीं जा सकतीं; ऍत–ऐसा सोचकर; इतु नल् कटम्–यह अच्छा कर्तव्य बना; ऍत–यह निश्चय करके; वीटितार्–प्राण त्याग गयीं। ११९८

धनु के रूप की सुन्दरता को हरानेवाले ललाटों से शोभित राक्षसियों ने सोचा कि हमारे प्राणनाथ मर्कट के मार डालने से मर गये। अब

(दक्षिण में प्रचलित प्रथा के अनुसार विधवाएँ) हम बाहर कहीं खुले में आ-जा भी नहीं सकतीं। यही अच्छा काम है— आग में गिरकर सती हो जाएँ। यह निर्णय करके वे आग में कूद पड़ीं। ११९८

पूक्क रिन्दु पॉरिप्पॉरि यायडै, नाक्क रिन्दु शितैनरुञ् जाम्बराय्
मेक्क रिन्दु नॅडुम्बणै वेरुडक्, काक्क रिन्दु करुङ्गरि यातवे 1199

पू–सारे फूल; करिन्तु–झुलसकर काले बनकर; पॊरि पॊरियाय्–राख के कण बने; अटै ना–पत्र रूपी जिह्वाएँ; करिन्तु–झुलसीं और राख बनीं; चितै नरुम् चाम्पराय्–डालियाँ अच्छी क्षार बनीं; मे करिन्तु–ऊपर के भाग जले; नॆटुम् पणै–बड़ी शाखाएँ और; वेर् उऱ–जड़ एक बनकर (समान रूप से); का करिन्तु–उपवन जलकर राख बना, इसलिए; करुम् करि आत–काली राख के ढेर बन गये। ११९९

उद्यानों में फूल जले; जिह्वा के स्थान रहे पत्र जले; और छोटी टहनियाँ जलीं। ऊपर के अंश जले। बड़ी-बड़ी डालों की जो गति हुई वही जड़ों की भी हुई। इस भाँति सारे के सारे उद्यान जलकर भस्म के ढेर बन गये। ११९९

कार्मु ळुक्क वॅळुङ्गतऱ् कऱ्ऱैबोय्, ऊर्मु ळुक्क वॅदुप्प वुरुहित्त
शोरों ळुक्क मऱामैयिऱ् ऱुन्ऱुबॊन्, वेर्वि डुप्पदु पोन्ऱत विण्णॅलाम् 1200

कार् मुळुक्क–मेघों को आवृत करते हुए; ऍऴुम्–उठी; कतल् कऱ्ऱै–अग्नि की ज्वालाएँ; पोय्–जाकर; ऊर् मुळुक्क–(व्योम-) लोक भर को; वॆतुप्प–जलाने लगीं तो; उरुकित्त चोर् ऒऴुक्कम्–पिघलकर गिरनेवाली अग्निमय धाराएँ; अऱामैयिल्–टूटती नहीं थीं, इसलिए; विण् ऍलाम्–सारे व्योमलोक; तुन्ऱु–घने रूप से; पॊन् वेर्–स्वर्ण की जड़ें; विटुप्पतु–निःसृत करते; पोन्ऱत–जैसे लगे। १२००

आग की लपटें उठीं और मेघों को आवृत कर गयीं। वह आकाश में फैली और व्योमलोकों को भी ताप देने लगी। तब वहाँ के स्वर्ण पिघले और तारें बनीं। उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो व्योमलोक घनी स्वर्णमयी जड़ें निकाल रहे हों। १२००

नॅरुक्कि मीमिशै योङ्गु नॅरुप्पळल्
शॅरुक्कुम् वॅण्गदिर्त् तिङ्गळैच् चॅन्ऱुर
उरुक्कि मॅय्यि नमुद मुहुत्तलाल्
अरक्क रुञ्जिल राविपॅऱ् ऱाररो 1201

नॅरुक्कि–बहुत घने रूप से; मी मिचै–आकाश पर; ओङ्कु–उठ रही; नॆरुप्पु अऴल्–आग की लपट; चॆरुक्कुम्–गर्वीले; वॆण् कतिर् तिङ्कळै–श्वेतकिरण चन्द्रमण्डल में; चॆन्ऱु उऱ–जा लगी, तो; उरुक्कि–उसको पिघलाकर; मॆय्यिल्–(राक्षसों के) शरीर पर; अमुतम् उकुत्तलाल्–अमृत बरसाने से; अरक्करुम् चिलर्–कुछ राक्षस भी; आवि पॆऱ्ऱार्–पुनः जीवित हो गये। १२०१

ऊपर की ओर उठती चलनेवाली घनी विवृद्ध अग्नि गर्वीले श्वेत किरणों के चन्द्रमण्डल में जा लगी। तब वह पिघला और अमृत गिरने लगा। वह अमृत कुछ मृतक राक्षसों के शवों पर गिरा और उन्हें पुनः प्राण मिल गये। १२०१

परुदि पऱ्ऱि निमिर्न्दॆऴु पॆङ्गनल्
करुहि मुऱ्ऱु मॆरिन्दॆऴु कार्मऴै
अरुहु शुऱ्ऱु मिरुन्दय दायहल्
उरुहु पॊऱ्ऱिर वॊत्तन ऱॊण्गदिर् 1202

परुति पऱ्ऱि–सूर्यमण्डल को पकड़कर; निमिर्न्तु ऍऴु–ऊपर उठनेवाली; पॆम् कतल्–इस नवीन आग से; करुकि–झुलसकर; मुऱ्ऱुम् ऍरिन्तु–पूर्ण रूप से जलकर; ऍऴु–उठे; कार् मऴै–काले मेघ; अरुकु चुऱ्ऱुम्–पास, चारों ओर; इरुन्तै अतु आय्–रहनेवाले कोयले के समान दिखे; ऑळ् कतिर्–उज्ज्वल किरणमाली; अकल् उरुकु–(मिट्टी के) दिये-मध्य पिघलनेवाले; पॊन् तिरळ्–स्वर्णपिंड; ऑत्तनन्–समान रहा। १२०२

सूर्यमण्डल को भी पकड़कर यह अनोखी आग ऊपर गयी। उससे पूर्ण रूप से मेघ झुलस गये और वे काले मेघ सूर्य के चारों ओर कोयलों के समान लगे। तब उज्ज्वल किरणमाली मिट्टी के कटोरे में पिघलनेवाले स्वर्ण के समान लगा। [इसमें सुनार की अँगीठी का दृश्य वर्णित है। मेघ अँगीठी के जलते कोयले हैं। सूर्यमण्डल मिट्टी के कटोरे के समान लगा जिसमें रखकर सुनार सोने को पिघलाता है और सूर्य उस स्वर्ण के समान दिखा। दूसरी दृष्टव्य वस्तु एक ही स्थान पर (१२०१, १२०२वें पद्यों में) चन्द्र और सूर्य दोनों का वर्णन है। मूल टीकाकार का अनुमान है कि पूर्णिमा की रात को हनुमान ने सीता का अन्वेषण किया और दूसरी रात के आखिरी पहर में उसने लंका में आग लगायी।]। १२०२

तळैक्कॊ ऴुन्दिय तावॆरि तामणि
मुळैक्कॊ ऴुन्दि मुहत्तिडै मॊय्त्तपेर्
उळैक्कॊ ऴुन्द वुलन्दुलै वुऱ्ऱन
वळैकु ळम्बिन् मणिनिऱ वाशियै 1203

तळै–(अश्व के) पैरों को बाँधने के पाश को; कॊळुन्तिय–जलाकर; ताव् ऍरि–ऊपर उछली आग; तामणि–गले के रस्सों के साथ; मुळै–खूंटे को भी; कॊळुन्ति–जलाकर; मुकत्तु इटै मॊय्त्त–मुख पर घने रूप से उगे रहे; पेर् उळै–लम्बे वालों को; कॊळुन्त–जलाकर; वळै कुळम्पिन्–कुंचित खुरों वाले; मणि निऱ–सुन्दर रंगीन; वाचि–वाजी; उलन्तु–मुरझाकर; उलैवु उऱ्ऱन–मर गये। १२०३

अश्वशालाओं में अग्नि ने अश्वों के पैरों के बन्धन-रस्सी जलायी;

फिर गले की रस्सियाँ जलायीं; खूँटे जलाये; फिर अश्वों के मुखों पर उगे लम्बे बाल जलाये। इस तरह कुञ्चित खुरों के और सुन्दर रंगीन अश्व तपे, संकटग्रस्त हुए और आखिर जल मरे। १२०३

अॅळुन्दु पॉऱ्ऱलत् तेऱ्ऱलि नीळ्पुहैक्
कॉळुन्दु शुऱ्ऱ वुयिर्प्पिलर् कोळुऱ
अळुन्दु पट्टुळ रोत्तयर्न् दारळल्
विळुन्दु मुऱ्ऱिनर् कूऱ्ऱै विळुङ्गुवार् 1204

कूऱ्ऱै विळुङ्कुवार्–यम को (यों ही) निगल सकनेवाले राक्षस; अॅळुन्तु–उठकर; पॉन् तलत्तु–स्वर्ण (स्वर्ग) लोक को; एऱ्ऱलिन्–जब चढ़ जाने लगे; नीळ्–लम्बे; पुकै–धुएँ के; कॉळुन्तु–किसलय (अग्र भाग) के; चुऱ्ऱ–घेर लेने से; उयिर्प्पु इलर्–श्वास न छोड़ सकें; कोळ् उऱ–इस रीति से आवृत होकर; अळुन्तु पट्टु उळर् ऒत्तु–फँसकर मरनेवालों के समान; अयर्न्तार्–बेहोश होकर; अळल् विळुन्तु–आग में गिरकर; मुऱ्ऱिनर्–चल बसे। १२०४

राक्षस ऐसे थे कि वे यम को यों ही निगल ले सकते थे। वे आग से बचने के लिए अन्तरिक्ष में उठकर स्वर्णलोक स्वर्ग में जाने लगे। तब धुएँ के अग्रभाग ने उन्हें घेर लिया। तब दम घुटकर धुएँ से आवृत होकर मृतक के समान बेसुध हो गये और अग्नि में गिरकर मर गये। १२०४

कोशि हत्तिनि लुऱ्ऱ कॉळुङ्गनल्, तूशि नुत्तरि हत्तोडुञ् जुऱ्ऱुऱा
वाश मैक्कुळल् पऱ्ऱ मयङ्गिनार्, पाशि ळैप्पर वेप्पड रल्हुलार् 1205

पचुमै इळै–चमकवार स्वर्णाभरणधारिणी; परवै पटर्–समुद्र-सम विशाल; अल्कुलार्–भगों से युक्त राक्षस-स्त्रियों के; कोचिकत्तितिल्–रेशमी वस्त्रों में; उऱ्ऱ–लगी; कॉळुम् कनल्–घनी आग; उत्तरिक तूचित् ओटुम्–उत्तरीय (वस्त्र) के साथ भी; चुऱ्ऱु उऱा–घेरकर लगी; वाचम् मै कुळल्–सुगन्धित काले केश में भी; पऱ्ऱ–लगी; मयङ्कितार्–तो चक्रित हो गयीं। १२०५

उज्ज्वल मनोरम आभरणधारिणी, समुद्र-विशाल भगों वाली राक्षस-स्त्रियों के कौशेय अधोवस्त्रों में पहले आग लगी। फिर उत्तरीय वस्त्रों में लगी। बाद सुगन्धपूर्ण काले केश भी आग के वश हो गये। बेचारियाँ क्या करतीं? भ्रमित और चक्रित हो गयीं। १२०५

निलवि ळक्किय तुहिलिन नॅरुप्पुण निरुदर्
इलवि नुञ्जिल मुत्तुळ वॅन्नहै यिळैयार्
पुलवि यित्तगै कण्डव रमुदुहप् पुणरुम्
कलवि यित्तगै कण्डिलर् मण्डिनर् कडन्मेल् 1206

पुलवियित्–संसर्ग की; करै कण्टवर्–विद्या के पारंगत (पूरा कर चुके थे); निरुतर्–वे राक्षस; इलवितुम्–लाल सेमर में; चिल मुत्तु उळ–कुछ मोती भी हैं;

अँतुम्–ऐसा माना जाय, इस प्रकार; नकै इळैयार्–दाँतों से शोभायमान तरुणियाँ; निल विळक्किय तुकिलितै–चाँदनी-से महीन वस्त्रों को; नॅरुप्पु उण–आग के जला देने से; अमुतु उक–अत्यन्त सुख का अमृत जिसमें छलक आता है; पुणरुम्–वैसा संगमित होनेवाले; कलवियिन् करै–संसर्ग की चरम सीमा को; कण्टिलर्–न पाकर; कटल् मेल् मण्टिनर्–समुद्र में जाकर गिर गये। १२०६

संसर्ग में लगे रहे राक्षस-दम्पती। लाल सेमर में कुछ मोती हों, ऐसे दाँतों वाली स्त्रियाँ और उनके पुरुष प्रणय-विद्या-पारंगत थे। उनके चाँदनी-सम वस्त्र आग में जल गये। इसलिए सुख अमृत के समान जिसमें निःसृत होता है, उस संसर्ग-कार्य के अन्त में आ नहीं पाये थे। उसी स्थिति में वे उठ भागे और समुद्र में जाकर मिलकर गिरे। १२०६

पञ्ज रत्तॊडु पशुनिऱक् किळिवॆन्दु पदैप्प
अञ्जनक् कण्णि नरुविनीर् मुलैमुन्ऱि ललैप्पक्
कुञ्ज रत्तन कॊऴुनरैत् तऴुवुरुङ् गॊदिप्पाल्
मञ्जि डैप्पुहु मिन्ऩॆनप् पुहैयिडै मऱैन्दार् 1207

पचुमै निऱ किळि–हरे रंग के शुक; पञ्चरत्तु ऒटु–पिंजरों के साथ; वॆन्तु–झुलसकर; पतैप्प–तड़पते हैं, तब; अञ्चन कण्णित्–अंजनयुक्त नेत्रों से; अरुवि नीर्–नदी के समान बहनेवाला अश्रुजल; मुलै मुन्ऱिल्–कुचाग्र पर; अलैप्प–गिरकर दुःख देते हैं और; कुञ्चरत्तु अन–कुंजर के समान; कॊऴुनरै–पतियों को; तऴुवु उऱुम्–आलिंगन करने की (स्वर्ग पहुँचकर); कॊतिप्पाल्–तपिश से; मञ्चु इटै–मेघमध्य; पुकु मिन् ऎँन–घुसती बिजली के समान; पुकै इटै–धुएँ के मध्य; मऱैन्तार्–अदृश्य हो (मर) गये। १२०७

राक्षसियों ने देखा कि उनके पले हरे रंग के शुक उनके पिंजरों के साथ जलते और तड़पते हैं। उनकी अंजनयुक्त आँखों से अश्रुजल सरिता के समान बहे और कुचाग्र पर गिरे। वे दुःखी हुईं और अपने मृत पतियों का, स्वर्ग में जाकर आलिंगन करने की अपार तापक इच्छा से मेघमध्य घुसनेवाली बिजलियों के समान धुएँ के अन्दर घुसीं और मरकर अदृश्य हो गयीं। १२०७

वरैयि नैप्पुरै माडङ्ग ळॅरिपुह महळिर्
पुरैयिल् पॊऩ्कलन् विल्लिड विशुम्बिडैप् पोवार्
करैयि नुट्पुहैप् पडलैयिर् करिन्दनर् कलङ्गित्
तिरैयि नुट्पॊलि शित्तिरप् पावैयिन् ऱॊयलार् 1208

वरैयितै–पर्वतों से; पुरै–तुल्य; माटङ्कळ्–प्रासादों में; ऎँरि पुक–आग लगी तो; मकळिर्–स्त्रियाँ; पुरै इल्–निर्दोष; पॊन् कलन्–स्वर्णाभरण; विल् इट–आभा निकालते; विचुम्पु इटै पोवार्–अन्तरिक्ष में जातीं; करै इल्–अपार; नुण् पुकै–सूक्ष्म धुएँ के; पटलैयिल्–पटल में; कलङ्कि–रंग बदलकर; तिरैयिन् उळ्

पॉलि–पर्दे के पीछे विद्यमान; चित्तिर पावैयिन्–चित्रप्रतिमा-जैसे; चॅयलार्–व्यवहार करनेवाली बनकर; करिन्ततर्–प्रभा खोकर झुलस गयीं। १२०८

पर्वत-जैसे ऊँचे और बड़े प्रासादों में आग लगी तो वहाँ की स्त्रियाँ अपने दोषहीन स्वर्णाभरणों की कांति बिखेरते हुए अन्तरिक्ष में जाने लगती हैं। अपार धुएँ का पटल महीन भी है। उसके पीछे वे मन्दप्रभ दिखती हैं, जैसे पर्दे के पीछे से दिखनेवाली चित्र-प्रतिमाएँ। वे आग में झुलसती हैं और मर जाती हैं। वह कार्य भी, वे ही प्रतिमाएँ वैसा हो रही हों, ऐसा दिखता है। १२०८

अहरु वुन्नरुञ् जान्दमु मुदलिय वनेहम्
बुहरि नन्मरत् तुरुवॅरि युलहॅलाम् बोर्प्पप्
पहरु मूळियिऱ् कालवॅङ् गडुङ्गनल् परुहुम्
महर वेलैयिन् वॅन्दन नन्दन वनङ्गळ् 1209

पकरुम्–(ग्रन्थों में) उक्त; ऊळियिल्–युगान्त में; काल वॅम् कटुम् कनल्–प्रचण्ड और उग्र कालाग्नि द्वारा; परुकुम्–सोखे हुए; मकर वेलैयिन्–मकरालयों के समान; नन्तन वनङ्कळ्–नन्दन वन; अकरु उम्–अगरु; नरुम् चान्तमुम्–और सुगन्धित चन्दनतरु; मुतलिय–आदि; अनेकम्–अनेक; पुकर् इल्–दोषहीन; नल् मरत्तु–श्रेष्ठ तरुओं का; उरु वॅरि–स्वाभाविक सुवास; उलकु ॲलाम्–सारे लोक में; पोर्प्प–व्याप जाय, ऐसा; वॅन्तन–जल गये। १२०९

ग्रन्थों में युगान्तकालीन भयानक कालाग्नि के मकरालयों को सोख लेने की बात कही गयी है। उन मकरालयों के समान नन्दन वन जले। अगरु, सुबासित चन्दन-तरु आदि जले। उनसे निकली सुगन्ध सारी दुनिया पर छा गयी। इस भाँति वे सब जल गये। १२०९

मिन्नल्प रॅन्दॅळु कॊळुञ्जुड रिलङ्गैयूर् विळुङ्गि
नितैव रुम्बॅरुन् दिशैयुऱ विरिहिन्ऱ निलैयाल्
शिनैप रन्दॅरि शेर्न्दिला निन्ऱवुञ् जिलवॅम्
कनल्प रन्दवुन् दॅरिन्दिल कऱ्पहक् कानम् 1210

मि(न्) नल् परन्तु–बिजली-सा प्रकाश फैलाकर; ॲळु–उठनेवाली; कॊळुम् चुटर्–घनी आग; इलङ्कै ऊर् विळुङ्कि–लंका नगरी को निगल (जला) कर; नितैवु अरुम्–अचिंत्य; पॅरुम् तिचै–लम्बी दिशाओं में; उऱ–फैली; विरिकिन्ऱ निलैयाल्–विस्तार के कारण; कऱ्पक कानम्–कल्पकानन; चिल–कुछ; चिनै परन्तु–डालियों में फैली; ॲरि–आग; चेर्न्तु इला निन्ऱवुम्–न जला पायी, ऐसे; वॅम् कनल् परन्तवुम्–भयंकर आग से जल गये ऐसे; तॅरिन्तु इल–इनमें भेद नहीं जाना जा सका। १२१०

विपुल आग की लपटें बिजली के समान उठीं। उन्होंने सारी लंका को भस्म कर डाला। फिर वे लम्बी दिशाओं में फैलीं। उनका विस्तार

ऐसा था कि कल्पकाननों में जली डालियों वाले तरुओं और विना जले रहनेवाली डालियों के तरुओं में भेद ही नहीं मालूम हो रहा था। (कल्पतरु स्वयं प्रकाशमान थे। इसलिए यह भ्रम हुआ।)। १२१०

मूळुम् वॆम्बुहै मुऱ्ऱुऱच् चुऱ्ऱिय मुळ्ळुनीर्
माळुम् वण्णमा मलैनॆडुन् दलैदॊऱुम् वळङ्गिप्
पूळै वीर्यनप् पोवन पुणरियिऱ् पुनलिन्
मीळ यावैयुन् दॆरिन्दिल मुहिऱ्कण मिशैये 1211

मुकिल् कणम्–मेघसमूह; मुळ्ळु नीर्–पूरा जल; माळुम् वण्णम्–रिक्त करते हुए; मा मलै–बड़े-बड़े पर्वतों के; नॆटुम् तलै तॊऱुम्–उच्च शिखरों पर; वळङ्कि–बरसाकर; पुणरियिल्–समुद्र के; पुनलिन् मीळ–जल में गये; पूळै वी अॆन–'पूळै' नामक फूल के समान श्वेत बने; पोवन–जो गये; मूळुम् वॆम् पुकै–लंका में व्याप्त भयंकर धुआँ; मुऱ्ऱु उऱ–सर्वत्र फैला रहा, इसलिए; यावैयुम् तॆरिन्तिल–(मार्ग या मार्ग में स्थित पदार्थ) कुछ भी न जान सके; मिचैये–आकाश में ही; चुऱ्ऱिय–घूमते-भटकते रहे। १२११

मेघसमूह अपना सारा जल पर्वतों के उच्च शिखरों पर बरसाकर रिक्त हो गये। वे समुद्र से फिर से जल ग्रहण करने के वास्ते 'पूळै' नामक फूल के-से श्वेत रंग में गये। पर सर्वत्र धुआँ घेरा रहा। इसलिए मेघसमूहों को विदित नहीं हुआ कि मार्ग कहाँ है और मार्ग में क्या-क्या पड़े हैं। इसलिए वे ऊपर ही ऊपर घूमते-भटकते रहे। १२११

मिक्क वॆम्बुहै विळुङ्गलिन् वॆळ्ळियङ् गिरियुम्
ऒक्क वॆऱ्पिनो डन्नमुङ् गाक्कैयि नुरुव
पक्क वेलैयिन् पडियदु पाऱ्कडन् मुडिविल्
तिक्क यङ्गळुङ् कयङ्गळुम् वेऱ्ऱुमै तॆरिया 1212

मिक्क–अत्यधिक; वॆम् पुकै–भयंकर धुएँ के; विळुङ्कलिन्–आवृत कर लेने से; वॆळ्ळि अम् किरियुम्–रजतगिरि जो रही, वह श्वेत कैलास गिरि भी; वॆऱ्पितॊटु ऒक्क–अन्य पर्वतों के समान (काली) बन गयी; अन्नमुम्–हंस पक्षी भी; काक्कैयिन् उरुव–कौओं के रंग के हुए; पाल् कटल्–(श्वेत) क्षीरसागर; पक्क वेलैयिन्–पास रहे (अन्य) समुद्र के; पटियतु–स्वभाव (रंग) का हो गया; मुटिविल्–दिगन्त के; तिक्कयङ्कळुम्–दिग्गज; कयङ्कळुम्–अन्य गजों से; वेऱ्ऱुमै तॆरिया–भिन्न नहीं दिखे। १२१२

विपुल धुएँ के घेरने के कारण कैलास, जो रजतगिरि के रूप में श्वेत रंग की गिरि थी, अब अन्य गिरियों के समान काली हो गयी। हँस कौए-से बन गये। श्वेत (क्षीर-) सागर पास के अन्य समुद्रों के समान रंग बदल गये। दिगंतों में रहनेवाले दिग्गज भी अब श्वेत नहीं रहे, पर अन्य साधारण गजों से भिन्न नहीं दिखे। १२१२

करिन्दु शिन्दिडक् कडुङ्गऩ् ऱॉडर्न्दुडल् कदुव
उरिन्द मॅय्यिऩ्ऩ रोडिऩ्ऩर् नीरिडै यॉळिप्पार्
विरिन्द कून्दलुङ् गुञ्जियु मिडैदलिऱ् ऱानुम्
ॲरिन्दु वेहिऩ्ऱ दॉत्तदव् वॅरिदिरैप् परवै 1213

करिन्तु–झुलसकर; चिन्तिट–गिराते हुए; कटुम् कतल्–प्रचण्ड आग; तौटर्न्तु–लगातार; उटल् कतुव–शरीरों पर लपेटे रहीं; उरिन्त मॅय्यिऩर्–(इनसे) चमड़ा-उधेड़े शरीर वाले हो; ओटिऩर्–भागे; नीर् इटै–जल में; ऑळिप्पार्–छिपने लगे; विरिन्त कून्तलुम्–खुली वेणियाँ (स्त्रियों की); कुञ्चियुम्–और केश (पुरुषों के) दोनों; मिटैतलिल्–अत्यधिक मिश्रित रहीं, इसलिए; अ–वह; ॲरि तिरै–लहरायमान समुद्र; ताऩुम् ॲरिन्तु–खुद जलकर; वेकिऩ्ऱतु–झुलसता; ऑत्ततु–जैसा लगा। १२१३

उग्र आग ने राक्षसों के शरीरों को निरन्तर जलाया और वे चमड़े झुलसकर राख बनकर गिर गये। वे भागकर समुद्र के जल के अन्दर छिपे। उन पुरुषों और स्त्रियों के केशों और वेणियों से समुद्र भर गया। तब वह सागर भी खुद जलता-तपता-सा दिखा। १२१३

मरुङ्गिऩ् मेलॉरु महवुहॉण् डॉरुतऩि महवै
अरुङ्गै यार्पऱ्ऱि मऱ्ऱॊरु महवुनिऩ् ऱरऱ्ऱ
नॅरुङ्गि नीणॅडु मॅरिहुऴल् शुरुक्कॉळ नीङ्गिक्
करुङ्ग डऱ्ऱलै वीऴ्न्दऩ ररक्कियर् कदऱि 1214

मरुङ्किऩ् मेल्–गोद में; ऑरु मकवु–एक बच्चा; कॉण्टु–लेकर; ऑरु तऩि मकवै–और एक बालक को; अरुम् कैयाल् पऱ्ऱि–अपने अन्य हाथ से पकड़कर; मऱ्ऱु ऑरु मकवु–तीसरा एक बच्चा; निऩ्ऱु अरऱ्ऱ–खड़ा होकर रोता आता; नॅरुङ्कि–घनी; नीऴ नॅटुम्–अतिदीर्घ; ॲरि कुऴल्–जलती वेणी; चुरु कॉऴ–झुलसती; अरक्कियर्–(इस स्थिति में) राक्षसियाँ; नीङ्कि–अपना-अपना स्थान छोड़कर; कतऱि–चिल्लाती हुई; करुम् कटल् तलै–काले समुद्र में; वीऴ्न्तऩर्–(जाकर) गिरीं। १२१४

कुछ स्त्रियाँ गोद में एक बच्चा लिये, हाथ से एक बालक को पकड़े निकलीं। तीसरा बालक खड़ा रो रहा था। उनकी घनी, लम्बी और अग्नि के-से रंग वाली वेणी जलकर झुलसने लगी। वे अपना घर छोड़कर विलाप करती हुई भागीं और काले सागर में कूद पड़ीं। १२१४

विल्लुम् वेलुम्वॅङ् गुन्दमु मुदलिय विऱहाय्
ॲल्लु डैच्चुड रॆन्ऩप्पुह लॅः(ह)हॅला मुरुहित्
तॊल्लै नऩ्ऩिलै तॊडर्न्दपे रुणर्विऩर् तॊऴिल्बोल्
शिल्लि युण्डैयिऱ् ऱिरण्डऩ पडैक्कलत् तिरऴ्हऴ् 1215

विल्लुम्–धनु और; वेलुम्–भाले और; कुन्तमुम्–कुन्त; विऱकाय्–ईंधन

बने; ऍल् उटै–सूर्य की; चुटर् ऍन्न–किरणें हैं, ऐसा; पुकल्–कहने योग्य; ऍ.'.कु ऍलाम्–फ़ौलाद सब; उरुकि–पिघलकर; पटैक्कल तिरळ्कळ्–हथियारों की राशियां; तॊल्लै–पूर्व की; नल् निलै–अच्छी स्थिति में; तॊटर्न्त–जो पहुँच गये; पेर् उणर्वितर्–बड़े आत्मज्ञानियों के; तॊळिल् पोल्–साधनाकार्य के समान; चिल्लि उण्टैयिल्–(अपनी मूलस्थिति) छोटे पिंड के रूप में; तिरण्टन–पिंडीभूत हो रहे। १२१५

धनु, भाले और कुन्त आदि सभी हथियार ईंधन बन गये। सूर्य की किरणों के समान चमकनेवाले उन हथियारों के फ़ौलादी भाग पिघल गये। वे हथियार उन तत्त्वज्ञों के समान, जो अपनी पूर्वस्थिति में पहुँच जाते हैं, अपनी पूर्वस्थिति में अर्थात् फ़ौलाद के छोटे-छोटे पिण्डों के रूप में परिवर्तित हो गये। १२१५

शॅय्दु डर्क्कन वल्लियुम् बुरशैयुञ् जिन्दि
नॊय्दि ऩिट्टवन् ऱरिपरित् तुडलॅरि नुळैय
मॊय्द डच्चॅवि निरुत्तिवाल् मुदुहिनिन् मुरुक्किक्
कैयॅ डुत्तळैत् तोडिन वोडॅवॅङ् गळिऱु 1216

ओटै वॅम् कळिऱु–मुखपट्टालंकृत भयानक गज; उटल्–शरीर में; ऍरि नुळैय–आग के लगने से; तुटर् चॅय्–शृंखलाबद्ध; कन्न वल्लियुम्–भारी बन्धन को; पुरचैयुम्–और कलापक को; चिन्ति–गिराकर; इट्ट–जिनसे बाँधे गये थे; वल् तऱि–उन सबल खूँटों को; नॊय्तिन्–आसानी से; परित्तु–उखाड़कर; मॊय् तट चॅवि–सशक्त अपने बड़े कानों को; निरुत्ति–खड़ा करके; वाल्–दुम को; मुतुकिनिल् मुरुक्कि–पीठ के ऊपर ऐंठ-मरोड़कर रखते हुए; कै ऍटुत्तु–सूँड़ उठाकर; अळैत्तु–दुहाई मचाते हुए; ओटिन–भागे। १२१६

मुखपट्टालंकृत गजों के शरीरों पर आग लगी और घुसकर जलाने लगी। तब साँकल का बन्धन जलकर गिर गया। कलापक भी गिर गया। गजों ने बन्धन के कठोर सबल खूँटों को उखाड़ फेंक दिया। फिर अपने सबल और बड़े कानों को ताने और अपनी पूँछ को घुमाकर पीठ पर डाले सूँड़ें उठाकर चिघाड़ते हुए भागे। १२१६

वॅरुळुम् वॅम्बुहैप् पडलैयिन् मेऱ्चॅल वॅरुवि
इरुळुम् वॅङ्गडल् विळुन्दन वॅळ्न्दिल परवै
मरुळिन् मीन्गणम् विळङ्गिड वुलन्दन मनत्तोर्
अरुळिल् वञ्जरैत् तञ्जमॅन् ऱडैन्दव रनैय 1217

मनत्तु–मन में; ओर् अरुळ् इल्–कुछ भी कृपा न रखनेवाले; वञ्चरै–वंचकों को; तञ्चम् ऍन्ऱु–शरण कहकर; अटैन्तवर् अनैय–उनके पास जो आये उनके समान; परवै–पक्षी; वॅरुळुम्–भयकारी; वॅम् पुकै पटलैयिन् मेल्–गरम धुएँ के पटल के ऊपर; चॅल वॅरुवि–जाने से डरकर; इरुळुम्–काले; वॅम् कटल्–संकटदायी

समुद्र में; विळुन्तन-गिरे; ॲळुन्तिल-ऊपर आ नहीं सके; मरुळिन् मीन्-मदमत्त मछलियों के; कणम्-समूहों के; विळुङ्किट-निगल लेने से; उलन्तन-मर गये। १२१७

निर्दयमन वञ्चकों की शरण में आये हुओं के समान पक्षीगण डरावने धूमपटल के ऊपर जाने से डरकर काले समुद्र में जाकर गिरे। तो क्या हुआ? उनको ऊपर उठने नहीं देते हुए मदमत्त मछलियों ने निगल लिया। १२१७

नीरै वऱ्ऱिडप् परुहिमा नॅडुनिलन् दडवित्
तारु वैच्चुटट्ु मलैहळैत् तळऱ्चॅय्दु तनिमा
मेरुवैप् पऱ्ऱि ॲरिहित्ऱ कालवॅङ् गनल्बोल्
ऊरै मुऱ्ऱुवित् तिरावणन् मनैपुक्क तुयर्दी 1218

उयर् ती-ऊँचे उठनेवाली वह आग; वऱ्ऱिट-(जलाशयों को) सोखते हुए; नीरै परुकि-जल को पीकर; मा नॅटु-अधिक विशाल; निलम्-भूतल में; तटवि-फैलकर; तारुवै चुट्टु-लकड़ियों को जलाकर; मलैकळै-पर्वतों को; तळल् चॅय्तु-तप्त बनाकर; तनि मा मेरुवै-अनुपम और बड़े मेरुपर्वत में; पऱ्ऱि ॲरिकित्ऱ-लगी जलनेवाली; काल वॅम् कनल् पोल्-भयंकर कालाग्नि के समान; ऊरै मुऱ्ऱुवित्तु-नगर को पूरी तरह से जलाकर; इरावणन् मनै-रावण के महल में; पुक्कतु-घुसी। १२१८

उठती हुई आग ने जलाशयों को सोखकर जल से खाली कर दिया। भूतल को तपा दिया। लकड़ियों को जलाया और पर्वतों को तप्त कर दिया। अनुपम मेरु को जलानेवाली कालाग्नि के समान वह सारी लंका का नाश करने के बाद रावण के महल में जा लगी। १२१८

वान मादरु मऱ्ऱुळ महळिरु मरुहिप्
पोन पोनदिक् कनैवरु मऱिहिलर् पोनार्
एनै निन्ऱव रॅङ्गणु मिरिन्दन रिलङ्गैक्
कोन वानवर् पदिहॉण्ड नाळॅनक् कुलैन्दार् 1219

वान मातरुम्-अप्सराएँ; मऱ्ऱु उळ-और रहनेवाली अन्य; मकळिरुम्-स्त्रियाँ; अनैवरुम्-सभी; मरुकि-दहलकर; पोन पोन तिक्कु-गमन की दिशा; अऱिकिलर् पोनार्-नहीं जानती गयीं; एनै-अन्य; निन्ऱवर्-जो खड़ी रह गयीं, वे; ॲङ्कणुम् इरिन्तनर्-सर्वत्र भटकीं; इलङ्कै कोन्-लंकाधिपति ने; अ वानवर् पति-(जिस दिन) उस देवलोक को; कॊण्ट नाळ् ॲन-ले लिया उस दिन के समान; कुलैन्तार्-हड़बड़ायीं। १२१६

रावण के महल में अप्सराएँ थीं और अन्य स्त्रियाँ भी। वे सब हड़बड़ाकर गमनदिशा से भी अज्ञात होकर तितर-बितर भागीं। जो नहीं भागीं वे इधर-उधर भटकीं और जिस दिन रावण ने देवेन्द्र की नगरी

अमरावती को जीत लिया था, उस दिन की-सी स्थिति में आकर हड़बड़ायीं। १२१९

नावि युन्नरुङ् गलवैयुङ् गऱ्पह नक्क
पूवु मारमु महिलुमॆन् ऱितैयत्त पुहैयत्
तेवु तण्मऴै शॆऱिपॆरुङ् गुलमॆन्नत् तिशैयिन्
पावै माऱ्नरुङ् गुऴल्हऴुम् बरिमळम् बरन्द 1220

नावियुम्–कस्तूरी और; नरुम् कलवैयुम्–गन्धलेप; कऱ्पकम् नक्क–कल्पतरु-विकसित; पूवुम्–सुमन; आरमुम्–और चन्दन; अकिलुम्–अगरु की लकड़ियाँ; ऍन्ऱु इतैयत्त–आदि ऐसे; पुकैय–धुएँ बने; तण्–शीतल; चॆऱि–घने; मऴै–मेघों के; पॆरुम् कुलम्–बड़े समूहों; ऍन्त–के समान; तिचैयिन्–सभी दिशाओं की; तेवु पावैमार्–दैवी स्त्रियों के; नरुम् कुऴल्कळुम्–सुबासित केश भी; परिमळम् परन्त–नये अच्छे सुबास से बासित हुए। १२२०

रावण के महल में कस्तूरी, गन्धलेप, कल्पतरु के विकसित फूल, चन्दन-काष्ठ और अगरु के काठ आदि थे। सब गुँगुआने लगे। तब शीतल घने मेघों के बड़े समूहों के समान जो दैवी स्त्रियों के केश थे और जो पहले ही सुगन्ध-भरे थे, अब वे और भी नवीन सुबास से सुबासित हो गये। १२२०

शूऴुम् वॆम्जुडर् तॊडर्न्दिड यावरुन् दॊडरा
आऴि वॆञ्जिनत् ताण्डॊऴि लिरावणन् मनैयिन्
ऊऴि वॆङ्गनल् लुण्डिड वुलहमॆन् ऱुयर्न्द
एऴुम् वॆन्दॆन्न वॆरिन्दन नॆडुनिलै येऴुम् 1221

चूऴुम् वॆम् चुटर्–चारों ओर घेरे रहनेवाली आग के; तॊटर्न्तिट–लगने से; यावरुम् तॊटरा–किसी के लिए भी अगम; आऴि वॆम् चिनत्तु–समुद्र-सम (गम्भीर) और त्रासक क्रोध का; आण् तॊऴिल्–वीरकृत्य; इरावणन्–रावण के; मनैयिन्–महल के; नॆटु निलै एऴुम्–सातों तल्ले; ऊऴि वॆम् कनल्–युगान्त की भयंकर आग द्वारा; उण्टिट–जलाये जाने से; उलकम् ऍन्ऱु उयर्न्त एऴुम्–ऊपर के सातों लोक; वॆन्तत्तु ऍन्न–जल गये जैसे; ऍरिन्तन–जल गये। १२२१

सर्वत्र घेरे रही आग सब जगह जा लगी। तो दुर्गम समुद्र-सम गम्भीर, क्रोधी और वीरकर्म रावण का महल भी जल गया। वह सात तल्लों का था। इसलिए युगान्त में ऊपर के सातों लोक जैसे जले वैसा उसका जलना रहा। १२२१

पॊन्ऱि रुत्तिय दादलि निरावणन् बुरैतीर्
कुन्ऱ मॊत्तुयर् तडनॆडु मानिलैक् कोयिल्
निन्ऱ दुऱ्ऱॆरि परुहिड नॆहिऴ्वुऱ वुरुहित्
तॆन्ऱि शैक्कुमोर् मेरुवण् डामॆनत् तॆरिन्द 1222

इरावणऩ्–रावण का; पुरै तीर्–अकलंक; कुऩ्ऱम् ऒत्तु उयर्–पर्वत-सम उन्नत; तट नॆट्टु–विशाल; मा निलै–अधिक (सात) तल्लों का; कोयिल्–महल को; पॊऩ् तिरुत्तियतु–स्वर्णनिर्मित था; आतलिऩ्—इसलिए; निऩ्ऱ–जो भी स्थित है, उसको; तुऱ्ऱु ऎरि–लगकर जलानेवाली आग के; परुकिट–अशन करने से; नॆकिऴ्वु उऱ–नरम बनकर; उरुकि–पिघलकर; तॆऩ् तिचैक्कुम्–दक्षिणी दिशा में भी; ओर् मेरु उण्टु–एक मेरु; आम् ऎऩ–है, ऐसा कहने योग्य रीति से; तॆरिन्त–दिखा। १२२२

रावण का महल निर्दोष था; पर्वत के समान था। सात तल्लों का बहुत बड़ा मकान था। वह स्वर्ण का था। उसको आग ने जलाया तो वह पिघलकर दक्षिण दिशा का मेरु बना-सा दिखने लगा। १२२२

अऩ्ऩैय कालैयि ऩरक्कऩु मरिवैयर् कुऴुवुम्
पुऩ्ऩैम णिप्पॊलि पुट्पह विमाऩत्तुप् पोऩार्
निऩ्ऩैयु मात्तिरै यावरु नीङ्गिऩर् निऩ्ऩैयुम्
विऩ्ऩैयि लामैयिऩ् वॆन्ददव् विलङ्गऩ्मे लिलङ्गै 1223

अऩ्ऩैय कालैयिऩ्–उस समय; अरक्कऩुम्—राक्षस (रावण) और; अरिवैयर् कुऴुवुम्–उसकी स्त्रियों का समूह; पुऩ्ऩै मणि पॊलि–सजे हुए रत्नों के साथ चमकनेवाले; पुट्पक विमाऩत्तु–पुष्पक यान पर; पोऩार्–गये; यावरुम्—(अन्य) सभी; निऩ्ऩैयुम् मात्तिरै–सोचने मात्र से; नीङ्किऩर्–चले गये; निऩ्ऩैयुम विऩ्ऩै–सोचा हुआ काम करने की क्षमता; इलामैयिऩ्–न रहने से; अ विलङ्कऩ् मेल् इलङ्कै–उस त्रिकूटपर्वतस्थ लंका नगर; वॆन्ततु–आग में भुन गया। १२२३

तब रावण और उसकी स्त्रियाँ पुष्पक यान पर बैठकर चले गये। अन्य राक्षस भी सोचने मात्र से वहाँ से चले गये। पर बेचारी त्रिकूटपर्वतस्थ लंका सोच नहीं सकी और सोचा हुआ करने का गुण भी उसमें नहीं था (वह जड थी)। अतः वह वहीं रहकर जल गयी। १२२३

आऴित् तेरव ऩरक्करै यऴलॆऴ् नोक्कि
एऴुक् केऴॆऩ वडुक्किय वुलहङ्ग ळॆरियुम्
ऊऴिक् कालम्वन् दुऱ्ऱदो पिऱ्ऱिदुवे ऱुण्डो
पाऴित् तीशुड वॆन्ददॆऩ् ऱहरॆऩप् पहर्न्दाऩ् 1224

आऴि तेर् अवऩ्–पहियेदार रथ के स्वामी उस (रावण) ने; अरक्करै–राक्षसों पर; अऴल् ऎऴ नोक्कि–आग्नेय दृष्टि डालकर; एऴुक्कु एऴु–नीचे के सात के मुक़ाबले में ऊपर सात; ऎऩ अटुक्किय–ऐसे एक के ऊपर एक रचे गये; उलकङ्कळ्–चौदहों लोक; ऎरियुम्–जिसमें जल जायेंगे, ऐसा; ऊऴि कालम्–युगान्त का काल; वन्तु उऱ्ऱतो–आ गया क्या; पिऱ्ऱितु– या) अन्य; वेऱु उण्टो–कुछ हो गया; नकर्–नगर; पाऴि ती चुट–बड़ी आग के जलाने से; वॆन्ततु ऎऩ्–जल गया क्यों; ऎऩ–ऐसा; पकर्न्ताऩ्–पूछा। १२२४

पहियों वाले रथ के स्वामी रावण ने तब आग्नेय नेत्रों से राक्षसों को देखकर उनसे प्रश्न किया कि क्या एक के ऊपर एक चुने हुए, नीचे और ऊपर के चौदहों भुवनों को जलानेवाला युगांत आ गया ? या और कुछ हो गया? नगर बड़ी आग में जला क्योंकर ? । १२२४

करङ्गळ् कूप्पितर् तङ्गिळै तिरुवोडुङ् गाणार्
इरङ्गु हिन्ऱवल् लरक्करी दियम्बिन रिऱैयोय्
तरङ्ग वेलैयि नॅडियदन् वालिट्ट तळ्लाल्
कुरङ्गु शुट्टदी दॅन्ऱलु मिरावणन् कॊदित्तान् 1225

तम् किळै–अपने परिवारों को; तिरु ओटुम्–सम्पत्ति के साथ; काणार्–जो देख नहीं रहे थे (खो चुके थे); इरङ्कुकिन्ऱ–दुःखी; वल् अरक्कर्–बलवान (उन) राक्षसों ने; करङ्कळ् कूप्पितर्–हाथ जोड़कर; ईतु इयम्पितर्–यह कहा; इऱैयोप्–स्वामी; तरङ्कम् वेलैयिन्–तरंगायमान समुद्र से भी; नॅटिय–विस्तृत रूप से; तन् वाल्–अपनी पूँछ में; इट्ट तळ्लाल्–लगायी गयी आग से; कुरङ्कु–वानर का; चुट्टतु ईतु–जलाने का काम है यह; ॲन्ऱलुम्–कहते ही; इरावणन् कॊतित्तान्–रावण खौल उठा । १२२५

पहले ही राक्षस अपने बन्धु-बान्धवों और परिवारों के साथ अपनी सारी सम्पत्ति खो चुके थे। वे दुःखी थे। उन्होंने हाथ जोड़कर यह उत्तर दिया— प्रभु ! वानर ने अपनी पूँछ पर लगायी गयी, तरंगायमान समुद्र-सम विपुल आग से जलाने का जो काम किया उसी का फल यह है ! यह सुनकर रावण उबल पड़ा। १२२५

इन्ऱु पुन्ऱॊऴिऱ् कुरङ्गुतन् वलियिना लिलङ्गै
निन्ऱु वॅन्दुमा नीऱॆऴु हिन्ऱदु नॅरुप्पु
तिन्ऱु तेक्किडु हिन्ऱदु तेवर्हळ् शिरिप्पार्
नन्ऱु नन्ऱुपो रिरावणन् वलियॅन नक्कान् 1226

इन्ऱु–आज; पुन् तॊऴिल्–क्षुद्रकर्म; कुरङ्कु–वानर; तन् वलियिताल्–अपने बल से; इलङ्कै निन्ऱु वॅन्तु–लंका खूब जलती है और; मा नीऱु ॲऴुकिन्ऱतु–बहुत राख निकलती है; नॅरुप्पु तिन्ऱु–आग अशन कर; तेक्कु इटुकिन्ऱतु–डकार लेती है; तेवर्कळ्–देवलोग; चिरिप्पार्–हँसेंगे; इरावणन् पोर् वलि–रावण का युद्धबल; नन्ऱु नन्ऱु–भला है, अच्छा है; ॲन–कहकर; नक्कान्–(क्रोध की हँसी) हँसा । १२२६

रावण ने कहा कि हूँ ! आज क्षुद्र-कर्म एक वानर के बल से लंका स्थिर रूप से जलती है और भस्म उठता है ! आग अशन करके डकार ले रही है ! देव लोग हँसेंगे ! रावण का युद्धपराक्रम बड़ा अच्छा रहा ! बड़ा भला बना ! वह यह कहकर ठठाकर (क्रुद्ध हँसी) हँसा । १२२६

उण्डनॅ रुप्पैक्, कण्डन्नर् पट्रिक्
कॉण्डणै हॅन्रान्, अण्डरै वॅन्रान् 1227

अण्टरै वॅन्ऱान्–देवों के विजेता ने; उण्ट नॅरुप्पै–(लंका का) अशन करनेवाले अग्निदेव को; कण्टतर्–देखनेवाले; पट्रिक् कॉण्टु–पकड़कर; अणैक–आओ; ऍन्ऱान्–आज्ञा दी। १२२७

देवों के विजेता रावण ने आज्ञा निकाली कि लंका के दाहक अग्निदेव को जो भी देखें वे उसे पकड़ ले आवें। १२२७

उट्रह लामुन्, शॅट्र कुरङ्गैप्
पट्रुमि नॅन्रान्, मुट्र मुनिन्दान् 1228

मुट्र मुनिन्तान्–अत्यधिक क्रुद्ध रावण ने; चॅट्र कुरङ्कै–हानिकारक बन्दर को; उट्रु अकला मुन्–वहाँ छोड़ जाने से पहले; पट्रुमिन्–पकड़ लो; ऍन्ऱान्–कहा। १२२८

अतिक्रुद्ध रावण ने आगे कहा कि हानिकारक मर्कट को उसके वहाँ जाकर बचने के पूर्व ही पकड़ लाओ। १२२८

शारय निन्रार्, वीरर् विरैन्दार्
नेरुदु मॅन्रार्, तेरिनर् शॅन्रार् 1229

चार् अयल् निन्ऱार्–लगे जो पास रहे; वीरर्–वे वीर; नेरुतुम् ऍन्ऱार्–सम्मत हैं, कहा; विरैन्तार्–शीघ्र; तेरिनर् चॅन्ऱार्–रथ पर सवार हो गये। १२२९

पास लगे जो खड़े रहे उन वीरों ने कहा कि जैसी आज्ञा ! वे शीघ्र रथों पर सवार होकर चले। १२२९

ऍल्लै यिहन्दार्, विल्लर् वॅहुण्डार्
पल्लदि हारत्, तॉल्लर् तॉडर्न्दार् 1230

ऍल्लै इकन्तार्–असीम; विल्लर्–धन्वी वीर; वॅकुण्टार्–क्रुद्ध हुए; पल् अतिकार–अनेक अधिकार के पदों पर; तॉल्लर्–बहुत काल से रहनेवाले; तॉटर्न्तार्–पीछे गये। १२३०

अपार धन्वी वीर रोष के साथ उठे। अनेक अधिक अनुभवी पदाधिकारी भी उनके पीछे गये। १२३०

नीर्हॅळु वेलै निमिर्न्दार्, तार्हॅळु तानै शमैन्दार्
पोर्हॅळु मालै पुनैन्दार्, ऒरॅळु वीर रुयर्न्दार् 1231

उयर्न्तार्–उनमें बड़े; ओर् ऍळु वीरर्–सात वीर; पोर्कॅळु मालै पुनैन्तार्–युद्धचिह्न श्रेष्ठ माला पहनकर; नीर्कॅळु–जल-भरे; वेलै–सागर के समान; निमिर्न्तार्–उमग उठे; तार् कॅळु तानै–अग्रसेना में; चमैन्तार्–मिलकर गये। १२३१

उनमें सबसे उच्च हैसियत के सात वीर "तुम्बै" फूलों की माला (यह युद्ध पर जाने का चिह्न है) पहने, जल-भरे सागर के समान उठे और अग्रसेना में जा, मिले। १२३१

विण्णिनै वेलै विऴिम्बार्, मण्णिनै योडि वळैन्दार्
अण्णलै नाडि यणैन्दार्, कण्णिनिऱ् वेऱयल् कण्डार् 1232

विण्णिनै–आकाश को और; वेलै विऴिम्पु आर्—समुद्र के तीर से लगी रही; मण्णिनै–भूमि को; ओटि वळैन्तार्–दौड़कर घेर लिया (राक्षसों ने); अण्णलै नाटि–गौरववान (हनुमान) को खोजकर; अणैन्तार्–पास गये; अयल्–पास ही; वेऱु–अकेले रहते (हनुमान को); कण्णितिल्–अपनी आँखों से; कण्टार्–देखा। १२३२

उन्होंने जाकर आकाश और समुद्र के तीर से लगी भूमि को घेर लिया। उन्होंने महिमावान हनुमान का अन्वेषण किया और उसे पास ही अकेले बैठे हुए पाया। १२३२

पऱ्ऱुदिर् पऱ्ऱुदि यॆन्बार्, ऍऱ्ऱुदि यॆऱ्ऱुदि यॆन्बार्
मुऱ्ऱिनर् मुऱ्ऱु मुनिन्दार्, कऱ्ऱुणर् मारुदि कण्डान् 1233

पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो; ऍन्पार्–कहनेवाले; ऍऱ्ऱुतिर् ऍऱ्ऱुतिर्–धक्का दो, धकेलो; ऍन्पार्–कहनेवाले; मुऱ्ऱितर्–घेर गये; मुऱ्ऱुम् मुनिन्तार्–अतिक्रुद्ध हो आक्रमण किया; कऱ्ऱु उणर्–ग्रंथाध्ययन करके ज्ञानी बने; मारुति–मारुति ने; कण्टान्—उनको देखा। १२३३

राक्षसों ने पकड़ो, पकड़ो, प्रहार करो, धकेलो के नारे लगाते हुए बहुत ही क्रुद्ध होकर उसे घेर लिया। शास्त्रज्ञ हनुमान ने उन्हें देख लिया। १२३३

एल्हॊडु वञ्ज यॆदिरन्दार्, काल्हॊडु कैहॊडु कार्पोल्
वेल्हॊडु कोलिनर् वॆन्दी, वाल्हॊडु तानुम् वळैत्तान् 1234

वञ्चर्–वंचक राक्षस; कार् पोल्–मेघों के समान; एल् कॊटु–सामने आकर; ऍतिरन्तार्–प्रकट हुए; काल् कॊटु–पैरों से; कै कॊटु–हाथों से; वेल् कॊटु–भालाओं से; कोलितर्–रोकते हुए घेर गये; वॆम् ती–भयंकर आग लगी रही; वाल् कॊटु–अपनी पूंछ की सहायता से; तातुम्–उस (हनुमान) ने भी; वळैत्तान्–आवृत कर लिया। १२३४

वंचक राक्षस काले मेघों के समान सामने आकर प्रकट हुए। फिर पैरों, हाथों और भालाओं के सहारे उसे घेर गये। हनुमान ने भी अपनी भयंकर आग लिये रहनेवाली पूंछ को बढ़ाकर उनको लपेट लिया। १२३४

पादव मीन्ऱु पऱित्तान्, मादिरम् वालिन् वळैत्तान्
मोदिनन् मोद मुनिन्वार्, एदियु नाळु मिळन्दार् 1235

मातिरम्–सभी दिशाओं से; वालिन्–अपनी पूंछ से; वळैत्तान्–(राक्षसों को) घेर लिया; पातवम् ऑन्ऱु–एक पादप; पऱित्तान्–उखाड़ लेकर; मोतित्तन्–उससे पीटा; मोत–पीटने से; मुत्तिन्तार्–क्रुद्ध शत्रुओं ने; एतियुम्–हथियारों और; नाळुम्–अपनी आयु के दिन; इऴन्तार्–खो दिया। १२३५

उसने सभी दिशाओं से उन्हें आवृत करके एक पादप उखाड़ लिया और उससे उनको पीटा। पिटाई से क्रुद्ध उन शत्रुओं ने अपने हथियारों से ही नहीं, बल्कि अपनी आयु से भी हाथ धो लिया। १२३५

नूऱिड मारुदि नॊन्दार्, ऊऱिड वन्नॊडु पुण्णीर्
शेऱिड वूरिडु शॆन्दी, आऱिड वोडिन दाराय् 1236

मारुति–मारुति के; नूऱिट–पीटने से; नॊन्तार्–दुःखी हुए राक्षस; ऊऱु इट–व्रणों के बनने से; ऊन् ओटु पुण्णीर्–मांस के साथ बहनेवाले व्रणनिर्गत रक्त; चेऱु इट–कर्दम बना दिया उससे; ऊर् इटु–नगर में लगी; चॆम् ती–लाल आग; आऱिट–बुझ जाय ऐसा; आऱाय् ओटित्तु–नदी के रूप में बहा। १२३६

मारुति का आघात पाकर राक्षस पीड़ित व दुःखी हुए। उनके शरीरों पर व्रण बने और मांस बहाते हुए व्रण-निर्गत रक्त नदियाँ बनकर लंका पर लगी आग को बुझाते हुए बहा। १२३६

तोऱ्ऱिनर् तुञ्जिन रल्लार्, एऱ्ऱिहल् वीर रॆदिर्न्दार्
काऱ्ऱिन् महन्गलै कऱ्ऱान्, कूऱ्ऱिनु मुम्मडि कॊन्ऱान् 1237

तुञ्चिनर् अल्लार्–बिना मृतक हुए; तोऱ्ऱिनर्–जो दिखायी दिये; एऱु–पुरुष सिंह के समान; इकल् वीरर्–योद्धा वीर; ऎतिर्न्तार्–हनुमान से टकराये; कलै कऱ्ऱान्–कलानिपुण (हनुमान); काऱ्ऱिन् मकन्–पवनसुत ने; कूऱ्ऱिनुम्–यम से; मु मटि–तिगुने (जोर से); कॊन्ऱान्–मार डाला। १२३७

जो नहीं मरे वे वीर उसके सामने आये। पुरुष सिंह के समान उन योद्धा वीरों ने हनुमान से युद्ध छेड़ा। सर्वविद्यापारंगत हनुमान ने यम से तिगुने जोर के साथ उनका हनन कर दिया। १२३७

मञ्जुऱऴ् मेनियर् वन्ऱोळ्, मॊय्म्बिनर् वीरर् मुडिन्दार्
ऐम्बदि नायिर रल्लार्, पॆम्बुनल् वेलै पडिन्दार् 1238

मञ्चु उऱऴ्–मेघ-सम; मेनियर्–काले रूप वाले; वन् तोळ्–सबल कन्धों के; मॊय्म्पिनर् वीरर्–साहसी वीर; ऐम्पतिन् आयिरर्–पचास सहस्र; मुटिन्तार्–मरे; अल्लार्–अन्य; पॆम् पुनल् वेलै–हरे जल के समुद्र में; पटिन्तार्–गिरे (डूबे)। १२३८

पचास सहस्र मेघवर्ण वीर्यस्कंध राक्षस उसके हाथों मरे। जो बचे, वे हरे जल के समुद्र में जा गिरे। १२३८

तोय्च्चनन् वालदि तोयाक्, काय्च्चिन वेलै कलन्दार्
पोय्च्चिलर् पॊन्ऱिनर् पोनार्, एच्चॆन मैन्द रॆदिर्न्दार् 1239

वालति–पूंछ को; तोय्च्चनन्–डुबोया; तोया–डुबोने पर; काय्च्चित–उबल पड़े; वेलै–समुद्र में; पोय् कलन्तार्–जो जाकर गिरे थे; चिलर्–वे कुछ (राक्षस); पॊन्ऱिनर् पोनार्–मर गये; मैन्तर्–कुछ (बाहर निकले) वीर; एच्चु ॲन–निन्दा होगी, समझकर; ॲतिर्न्तार्–चढ़ आये। १२३९

हनुमान ने पूंछ को समुद्र में डुबोया। डुबोते ही समुद्र उबला। तब जो गिरे थे उनमें कुछ मर गये। जो बाहर आये उन साहसी वीरों ने निंदा से डरकर हनुमान पर आक्रमण किया। १२३९

शुऱ्ऱिनर् तेरिनर् तोला, विऱ्ऱॊऴिल् वीरम् विळैत्तार्
ॲऱ्ऱिनन् मारुदि यॆऱ्ऱ, उऱ्ऱॆऴु वोरु मुलन्दार् 1240

चुऱ्ऱिनर्–घूमते हुए; तेरिनर्–रथी वीरों ने; तोला–अपराजित; विल् तॊऴिल्–धनुकर्म में; वीरम् विळैत्तार्–बड़ा साहस दिखाया; मारुति ॲऱ्ऱिनन्–मारुति ने आघात किया; ॲऱ्ऱ–मारने पर; उऱ्ऱु ॲऴुवोरुम्–फिर से जो आये वे भी; उलन्तार्–मिटे। १२४०

घूमनेवाले रथों पर सवार होकर कुछ वीरों ने अजेय धनु-कर्म दिखाया। मारुति ने उन्हें धकेल दिया। धक्का खाकर वे भी मरे जो उठकर लड़ने आये थे। १२४०

विट्टुयर् विञ्जैयर् वॆन्दी, वट्ट मुलैत्तिरु वैहुम्
पुट्टिरळ् शोलै पुऱत्तुम्, शुट्टिल दॆन्बदु शॊन्नार् 1241

विट्टु–उस स्थान को छोड़कर; उयर्–जो ऊपर गये; विञ्चैयर्–उन्होंने; वॆम् ती–नाशक आग ने; वट्ट मुलै तिरु–वर्तुलस्तना देवी श्री; वैकुम्–जहाँ रहीं; पुळ् तिरळ्–उस खग-भरे; चोलै पुऱत्तुम्–उद्यान के (अन्दर और) बाहर भी; चुट्टु इलतु–जलाया नहीं है; ॲन्पतु–यह समाचार; चॊन्नार्–आपस में कह लिया। १२४१

वहाँ से विद्याधर लोग दूर ऊपर गये हुए थे। उन्होंने आपस में एक समाचार कहा। हनुमान द्वारा लगायी गयी आग ने वर्तुलस्तनी सीतादेवी जहाँ रहीं, उस उद्यान के अन्दर और बाहर जलाया नहीं है। १२४१

वन्दवर् शॊल्ल महिऴ्न्दान्, वॆन्दिऱल् वीरन् वियन्दान्
उय्न्दॆन वॆन्न वुयर्न्दान्, पैन्दॊडि ताळ्हळ् पणिन्दान् 1242

वन्तवर्–ऐसे आगतों के; चॊल्ल–कहने पर; वॆम् तिऱल्–ग़जब की वीरता का; वीरन्–वीर (महावीर); मकिऴ्न्तान्–हर्षित हुआ; वियन्तान्–(सीताजी की महिमा पर) विस्मित हुआ; उय्न्ततन्–(निन्दा से) बच गया; ॲन्न–समझकर;

उयर्न्तान्–अन्तरिक्ष में उठा; पॆम् तॊटि–चमकदार आभरणभूषित (सीता) के; ताळ्कळ्–पैरों पर; पणिन्तान्–विनत हुआ। १२४२

आगत विद्याधरों के यों कहने पर बड़ा सामर्थ्यशाली वीर हनुमान हर्षित हुआ। सीताजी की महिमा से विस्मित हुआ। उसे राहत मिली कि मुझ पर दोष नहीं लगेगा। वह ऊपर उड़ा। उसने आकर चमकीले स्वर्णाभरणधारिणी सीताजी के श्रीचरणों पर नमन किया। १२४२

पार्त्तनळ् शानहि पाराक्, कूर्त्तॆरि मेनि कुळिर्न्दाळ्
वार्त्तैयॆन् वन्दनै यॆन्नाप्, पोर्त्तॊऴिल् मारुदि पोनान् 1243

पार्त्तनळ्–देखा; चानकि–जानकी ने; पारा–देखते ही; ऎरि मेनि–जलता रहा शरीर; कूर्त्तु कुळिर्न्ताळ्–खूब शीतल हुआ, ऐसी (हर्षित) हुई; वार्त्तै ऎन्–कहने को क्या है; वन्तनै ऎन्ना–वन्दना कहकर; पोर् तॊऴिल् मारुति–युद्धकर्म-कुशल मारुति; पोनान्–चला गया। १२४३

जानकी ने हनुमान पर अपनी दृष्टि फेरी। आश्वस्त हुई और उनका तपता शरीर शीतल हुआ; आगे वचन के लिए कहाँ स्थान है? हनुमान ने 'नमस्कार' कहा, और विदा ली। फिर युद्धचतुर मारुति लौट चला। १२४३

तॆळ्ळिय मारुदि शॆन्रान्, कळ्ळ वरक्कर्हळ् कण्डाल्
ऎळ्ळुवर् पऱ्ऱुव रॆन्ना, ऒळ्ळॆरि योनु मॊळित्तान् 1544

तॆळ्ळिय मारुति–सुलझी हुई बुद्धि वाले मारुति; चॆन्रान्–चला गया; कळ्ळ अरक्कर्कळ्–चोर राक्षस; कण्टाल्–देखेंगे तो; ऎळ्ळुवर्–निन्दा करेंगे; पऱ्ऱुवर्–पकड़ेंगे; ऎन्ना–ऐसा समझकर (डरकर); ऒळ् ऎरियोनुम्–ज्वलन्त अग्निदेव भी; ऒळित्तान्–छिप गया। १२४४

ज्वलन्त अग्निदेव भी यह सोचकर छिप गया कि सुलझा हुआ बुद्धिमान हनुमान भी (मुझे अकेले छोड़कर) चला गया। चोर राक्षस देखेंगे तो मुझे गाली देंगे और पकड़ (रावण के पास) ले जाएँगे। १२४४

14. तिरुवडि तॊऴुद पडलम् (श्रीचरण-वन्दना पटल)

नीङ्गुवॆन् विरैवि नॆन्न निनैविनन् मरुङ्गु निन्ऱ
आङ्गॊरु कुडुमिक् कुन्ऱै यरुक्कनि लणैन्द वैयन्
वीङ्गिन नुलहै यॆल्लाम् विळुङ्गिन नॆन्न वीरन्
पूङ्गऴ रॊऴुदु वाऴ्त्ति विशुम्बिडैक् कडिदु पोनान् 1245

विरैविन्–शीघ्र; नीङ्कुवॆन्–छोड़ जाऊँगा; ऎन्नुम् निनैविनन्–यह विचार करनेवाला; आङ्कु–वहाँ; मरुङ्कु निन्ऱ–पास रहनेवाले; ऒरु कुटुमि कुन्ऱै–

एक शिखर-सहित पर्वत पर; अरुक्कतिऩ्-सूर्य के समान; अणैन्त ऐयऩ्-जो पहुँचा वह महिमावान; उलकै ॲल्लाम्-सारे लोकों को; विऴुङ्कितऩ् ॲन्त्त-उदरस्थ जिन्होंने किया उन (श्रीविष्णु) के समान; वीङ्कितऩ्-विराट् रूप लेकर; वीरऩ्-वीर श्रीराम के; पूम् कऴल्-सुन्दर पायलधारी चरणों को; तॊऴुतु वाऴ्त्ति-पूजा और स्तुति करके; विचुम्पु इटै-अन्तरिक्ष में; कटितु पोताऩ्-शीघ्र गया। १२४५

सवेग जाने का निश्चयकारी हनुमान वहीं पास रहे एक पर्वत-शिखर पर उदयाचल पर सूर्य-जैसे चढ़ा। महिमावान हनुमान ने विश्वभुक् विष्णुदेव के समान विश्वरूप धरा। श्रीराम के सुन्दर पायलधारी चरणों की संस्तुति की। फिर वह शीघ्र गया। १२४५

मैऩ्नाह मॆऩ्ऩ निऩ्ऱ कुऩ्ऱैयु मरबि ऩॆय्दिक्
कैऩ्नाह मऩैयो ऩुऱ्ऱ दुणर्त्तिऩऩ् कणत्तिऩ् कालैप्
पैऩ्नाह निहर्क्कुम् वीरर् तऩ्ऩॆडु वरवु पार्क्कुम्
कॊय्न्नाह नऱुन्देऩ् शिन्दुङ् गुऩ्ऱिडैक् कुदियुङ् गॊण्डाऩ् 1246

कै नाकम् अऩैयोऩ्-सूँड़ वाले नाग (करि) के समान रहनेवाले मारुति ने; मैनाकम्-मैनाक; ॲऩ्ऩ निऩ्ऱ-नाम के साथ स्थित; कुऩ्ऱैयुम्-पर्वत को; मरपिऩ् ॲय्ति-क्रम से पहुँचकर; उऱ्ऱतु उणर्त्तिऩऩ्-लंका में जो घटा वह वृत्तान्त सुनाया; कणत्तिऩ् कालै-एक क्षण की देर में; तऩ् नॆटुम् वरवु पार्क्कुम्-बहुत देर से अपनी प्रतीक्षा करनेवाले; पै नाकम्-फैले फनों वाले सर्प; निकर्क्कुम् वीरर्-से तुल्य वीर (जहाँ रहे); कॊय् नाक-तोड़ने योग्य सुरपुन्नाग के फूल; नऱुम् तेऩ् चिन्तुम्-जिस पर शहद गिराते थे; कुऩ्ऱु इटै-उस (महेन्द्र) पर्वत पर; कुतियुम् कॊण्टाऩ्-कूद पड़ा। १२४६

सूँड़ वाले नाग-सा वह वीर यथाक्रम मैनाक पर्वत पर पहुँचा। उससे उसने लंका का वृत्तान्त पूरा बताया। फिर एक ही क्षण की देरी में वह महेन्द्र पर्वत पर आ कूदा। उस महेन्द्र पर्वत पर बहुत देर से अंगदादि वीर फन-उठाए सर्पों के समान सिर उठाकर उसके आने की राह देख रहे थे। वह पर्वत ऐसा था, जिस पर तोड़ने योग्य (विकसित) सुरपुन्नाग फूल शहद गिरा रहे थे। १२४६

पोय्वरुङ् गरुम मुऱ्ऱिर् ऱॆऩ्बदोर् पॊम्मल् पॊङ्ग
वाय्वॆरीइ निऩ्ऱ वॆऩ्ऱि वाऩर वीरर् मऩ्ऩो
पाय्वरु नीऴत् ताङ्ग णिरुन्दऩ पऱवैप् पार्प्पुत्
तायवरक् कण्ड दऩ्ऩ वुवहैयिऱ् ऱऴिर्त्ता रम्मा 1247

पाय् वरु-जिसमें अति क्षिप्र गति से आता है; नीऴत्तु आङ्कण्-उस नीड़ के अन्दर; इरुन्तऩ-रहे; पऱवै पार्प्पु-पक्षी के बच्चों ने; ताय् वर-माता को आते; कण्टतु अऩ्ऩ-देख लिया जैसे; वाय् वॆरीइ निऩ्ऱ-मुख खोलकर जो भय प्रकट कर रहे थे; वॆऩ्ऱि वाऩर वीरर्-विजयी वानर वीर; पोय् वरुम् करुमम्-हो आने का

कार्य; मुऱ्ऱिऱ्ऱु–सम्पूर्ण हुआ; ऍऩ्ऩपतु–ऐसा; ओर् पॊम्मल् पॊङ्क–अनुपम आनन्दजनित सौन्दर्य के बढ़ने से; उवकैयिल्–हर्षातिरेक से; तळिर्त्तार्–प्रफुल्लित हो उठे। १२४७

नीड़ में विहग-शिशु माता पक्षी की प्रतीक्षा में हैं। तब मादा पक्षी सरपट अन्दर घुस आता है। उसको देखकर खग-शिशुओं की जो हालत होती है, उसी स्थिति में आये वे विजयी वानर वीर, जो अपना मुख खोलकर मारुति सम्बन्धी भय को प्रकट बोल रहे थे। तब उन्हें यह देखकर आनन्द हुआ कि लंका-गमन का आशय सुसम्पन्न हो गया। आनन्द से उनकी देहकांति बढ़ी। हर्षातिरेक से उनके शरीर प्रफुल्लित हुए। १२४७

अळुदनर् शिलवर् मुऩ्ऩिऩ् ऱार्त्तनर् शिलव रणमित्
तॊळुदनर् शिलव राडित् तुळ्ळिनर् शिलव रळ्ळि
मुळ्ळुदुर् विळुङ्गु वार्पोऩ् मॊय्त्तनर् शिलवर् मुऱ्ऱुम्
तळुविनर् शिलवर् कॊण्डु शुमन्दनर् शिलवर् ताङ्गि 1248

चिलवर्–कुछ; अळुतऩर्–(आनन्द के कारण) रोये; चिलवर्–कुछ वानरों ने; मुऩ् निऩ्ऱु–उसके सामने खड़े होकर; आर्त्तऩर्–आनन्दगर्जन किया; चिलवर्–कुछ एक ने; अणमि–पास जाकर; तॊळुतऩर्–नमन किया; चिलवर्–कुछ; आटि–नाचे; तुळ्ळिनर्–उछले; चिलवर्–कुछ; अळ्ळि—उठाकर; मुळ्ळुतु उऱ–पूर्ण रूप से; विळुङ्कुवार् पोल्–निगल जायेंगे जैसे; मॊय्त्तऩर्–बहुत पास आये; चिलवर्–कुछ; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तळुविऩर्–लिपट गये; चिलवर्–कुछ वीरों ने; कॊण्टु ताङ्कि–उठा लेकर; चुमन्तनर्–धारण कर लिया। १२४८

हनुमान को देखकर कुछ वानर वीर रोये। कुछ एक ने उच्च आनन्दघोष किया। कुछ ने जाकर नमन किया। कुछ नाचे-उछले। कुछ इतने समीप गये, मानो उसे यों ही उठाकर निगल लें। कुछ उससे बिल्कुल लिपट गये। कुछ ने उसे उठाकर अपने सिर पर रख लिया। १२४८

तेऩॊडु किळङ्गुङ् गायु नऱियऩ वरिदिऱ् ऱेडि
मेऩ्मुऱै वैत्तो मण्ण नुहर्न्दनै मॆलिवु तीर्दि
माऩवाण् मुहमे यॆङ्गट् कुरैत्तदु माऱ्ऱ मॆऩ्ऩात्
ताऩुहर् शाह मॆल्ला मुऱैमुऱै शिलवर् तन्दार् 1249

चिलवर्–कुछ एक ने; अण्णल्–महिमामय; माऩ–महान्; वाळ्–उज्ज्वल; मुकमे–मुख ही ने; माऱ्ऱम्–(शुभ-) समाचार; ऍङ्कट्कु–हमें; उरैत्ततु–बता दिया; नऱियऩ–स्वादिष्ट; तेऩ् ऒटु–मधु के साथ; किळङ्कुम्–कन्द और; कायुम्–फल (तरकारी); अरितिल् तेटि–कष्ट के साथ खोजकर; मेल् मुऱै–अच्छे क्रम से; वैत्तोम्–(हमने) रखे हैं; नुकर्न्तनै–भुगतकर; मॆलिवु–थकावट; तीर्ति–दूर करो; ऍऩ्ऩा–कहकर; ताम् नुकर्–अपने भोज के लिए सुरक्षित;

चाकम् ॲल्लाम्–सभी शाकों को; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तन्ताऩ्–लाकर दिया। १२४६

कुछ वानरों ने कहा— महिमावान ! तुम्हारे रोबीले और सहास वदन ने सारा वृत्तान्त बता दिया है ! अब तुम स्वादिष्ट शहद, कन्द और तरकारी (कच्चे फल जो यों ही भोजन के रूप में खाये जाते हैं) भुगतो और विश्रान्त हो जाओ। हमने वह सब कष्ट के साथ ढूँढ़ लाकर रखा है। यह कहकर उन्होंने बारी-बारी से अपने भोजन के लिए सुरक्षित रखे हुए शाक आदि लाकर दिये। १२४९

ताळ्हळिऩ् मार्बिऱ् ऱोळिऱ् ऱलैयिऩिऱ् ऱडक्कै तम्मिल्
वाळ्हळिऩ् वेलिऩ् वाळि मऴैहळिऩ् वहिर्न्द पुण्गळ्
नाळ्हण्मे लुलहिऱ् चॆन्ऱ नम्बिदऩ् कण्ण वाह
ऊऴ्हॊळ नोक्कि नोक्कि युयिरुह वुयिर्त्तु नॊन्दार् 1250

ताळ्कळिऩ्–पैरों में; मार्पिल्–वक्ष में; तोळिल्–कन्धों पर; तलैयितिल्–सिर पर; तट के तम्मिल्–विशाल हाथों में; वाळ्कळिऩ्–तलवारों से; वेलिऩ्–भालाओं से; वाळि मऴैकळिऩ्–शर-वर्षाओं से; वकिर्न्त–चिरकर बने; पुण्कळ्–व्रणों को; उलकिल् चॆन्ऱ–संसार में बीत गये; नाळ्कळ् मेल्–दिनों के समान (अगणित); नम्पि तऩ्–नायक के; कण्ण आक–शरीर पर लगा; ऊऴ् कॊळ–पूर्ण रूप से; नोक्कि नोक्कि–देखकर; उयिर् उक–प्राण निकल जाएँ, ऐसा; उयिर्त्तु–साँसें छोड़ते हुए; नॊन्तार्–पीड़ित हुए। १२५०

वानरों ने उन व्रणों को देख लिया जो हनुमान के पैरों, वक्ष, कन्धों, सिर और विशाल हाथों में तलवारों, भालाओं और शर-वर्षा द्वारा लग गये थे। उसके शरीर के व्रणों को उन्होंने पूर्ण रूप से देखा तो उनकी साँसें ऐसी चलने लगीं, मानो वे प्राण निकालकर ले जायँ। उन्होंने बहुत पीड़ा का अनुभव किया। १२५०

वालिहा दलऩै मुन्दै वणङ्गिऩ ऩॆण्गिऩ् वेन्दैक्
कालुऱप् पणिन्दु पिऩ्ऩैक् कडऩ्मुऱै कडवोर्क् कॆल्लाम्
एलुऱ वियट्रि याङ्ग णिरुन्दिव णिरुन्दोर्क् कॆल्लाम्
ञालना यहऩ्ऱऩ् ऱेवि शॊल्लिऩ णऩ्मै यॆऩ्ऱाऩ् 1251

मुऩ्ऩै–पहले-पहल; वालि कातलऩै–वालीनन्दन को; वणङ्कितऩ्–नमस्कार करके; ॲण्कित् वेन्तै–रीछों के राजा (जाम्बवान) को; काल् उऱ–चरणों में लगकर; पणिन्तु–नमन करके; पिऩ्ऩै–बाद; कटवोर्क्कु ॲल्लाम्–जिनका करना चाहिए, उन सबका; कटऩ् मुऱै–यथाकर्तव्य आदर आदि; एल् उऱ–उचित रीति से; इयट्रि–करके; आङ्कण् इरुन्तु–वहाँ रहकर के; इवण् इरुन्तोर्क्कु ॲल्लाम्–यहाँ जो रहे उन (आप) सबको; ञाल नायकऩ् तऩ्–जगन्नाथ की; तेवि–देवी ने; नऩ्मै–हिताशीर्वाद; चॊल्लिऩळ्–कहे; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (हनुमान) ने। १२५१

हनुमान ने सबसे पहले वालीपुत्र को नमस्कार किया। फिर रीछों के राजा जाम्बवान के पायँलागन किया। फिर जिन-जिनका जैसा-जैसा आदर दिखाना चाहिए, वैसे उनकी अभ्यर्थना की। फिर वहाँ एक ओर आसीन होकर हनुमान ने उन लोगों से कहा कि जगन्नाथ की देवी ने यहाँ रहे तुम सबको अपनी शुभ कामना भेजी है। १२५१

ॲन्ऱलुङ् गरङ्गळ् कूप्पि यॅऴुन्दन रिऱैञ्जिप् पोऱ्ऱि
निन्ऱन रुवहै पॊङ्ग विम्मला निमिर्न्द नॆञ्जर्
शॆन्ऱदु मुदला वन्द दिऱुदियाय्च् चॆप्पर् पालै
वन्ऱिऱ लुरवो यॆन्नच् चॊल्लिनन् मरुत्तिन् मैन्दन् 1252

ॲन्ऱलुम्–कहते ही; ॲऴुन्ततर्–वे सब उठे; करङ्कळ् कूप्पि–हाथ जोड़कर; उवकै पॊङ्क–उमगते आनन्द के साथ; इऱैञ्चि–नमन करके; पोऱ्ऱि–स्तुति करके; विम्मलाल्–आनन्द-स्फीति से; निमिर्न्त नॆञ्चर्–उत्साहपूर्ण मन के साथ; वन्तिऱल्–बहुत अधिक; उरवोय्–बलवान; चॆन्ऱतु मुतल् आ–जबसे गये, तबसे लेकर; वन्ततु इऱुतियाय्–आने तक का (वृत्तान्त); चॆप्पल् पालै–कहिए; ॲन्नत–कहने पर; मरुत्तिन् मैन्तन्–मरुत् के पुत्र ने; चॊल्लिनन्–कहा। १२५२

हनुमान के ऐसा कहने पर सब उठ खड़े हुए। हाथ जोड़कर सीताजी की स्तुति की। उनके सीने आनन्द की स्फीति से फूल गये। उन्होंने हनुमान से याचना की कि अतिबली वीर! तुम्हारे यहाँ से जाने से लेकर यहाँ लौट आते तक जो हुआ वह सारा वृत्तान्त सुनाओ। पवन-सूनु ने सब बातें कहीं। १२५२

आण्डहै देवि युळ्ळत् तरुन्दव ममैयच् चॊल्लिप्
पूण्डपे रडैया ळङ्गैक् कॊण्डदुम् बुहन्ऱु पोरिल्
नीण्डवा ळरक्क रोडु निहऴ्न्ददुम् नॆरुप्पुच् चिन्दि
मीण्डदुम् विळम्बान् ऱान्ऱन् वॆन्ऱियै विळम्ब वॆळ्हि 1253

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; तेवि उळ्ळत्तु–देवी के मन के; अरुम् तवम्–अभूतपूर्व (पातिव्रत्य-संकल्प रूपी) तप को; अमैय चॊल्लि–साफ़ बताकर; पूण्ट–उनके पहने हुए; पेर् अटैयाळम्–प्रबल अभिज्ञान; कै कॊण्टतुम्–हाथ में लेना भी; पुकन्ऱु–बताकर; तन् वॆन्ऱियै–अपनी विजय को; तान् विळम्प–खुद कहने से; वॆळ्कि–लजाकर; पोरिल्–युद्ध में; नीण्ट वाळ्–लम्बी तलवारों वाले; अरक्करोटु–राक्षसों के साथ; निकऴ्न्ततुम्–जो हुआ वह; नॆरुप्पु–और आग; चिन्ति–लगाकर; मीण्टतुम्–लौटना; विळम्पान्–बोला नहीं। १२५३

पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने देवी के दृढ़ मन के पातिव्रत्य-तप की श्रेष्ठता को साफ़-साफ़ बताकर उनके पहने हुए आभरण को प्रमुख अभिज्ञान के रूप में प्राप्त कर आने का वृत्तान्त भी सुनाया। अपनी विजय-कहानी अपने

मुख से कहने से लजाकर उसने लंका में युद्ध में लम्बी तलवारधारी राक्षसों के साथ जो हुआ वह और लंका-दहन आदि समाचार नहीं कहे। १२५३

पॉरुदमै पुण्णे शॉल्ल वॅन्ऱमै पोन्द तन्मै
उरैशॅय ऊर्ती यिट्ट दोङ्गिरुम् बुहैये योदक्
करुदलर् पॅरुमै देवि मीण्डिलाच् चॅयले काट्टत्
तॅरिदर वुणर्न्देम् बिन्न रॅन्निनित् तेर्व दॅन्ऱार् 1254

पॉरुतमै–लड़ना; पुण्णे चॉल्ल–व्रण ही कहते हैं; वॅन्ऱमै–जीत पाना; पोन्त तन्मै–लौट आना ही; उरै चॅय–बताता है; ऊर् ती इट्टतु–नगर में आग लगाना; ओङ्कु–उठा; इरुम् पुकैये–विपुल धूम ही; ओत–वर्णित करता है; करुतलर्–शत्रुओं के; पॅरुमै–बड़प्पन को; तेवि–देवी का; मीण्टु इला–न लौट आने का; चॅयले–कार्य ही; काट्ट–दिखाता है; तॅरितर उणर्न्तेम्–साफ़ समझ गये; पिन्तर्–फिर; ऍन् इति तेर्वतु–क्या है समझने को; ऍन्ऱार्–कहा। १२५४

(तो भी वानर वीर अनुमान कर गये। उन्होंने कहा—) तुमने वहाँ युद्ध किया, यह तुम्हारे शरीर के व्रण ही बता रहे हैं। तुमने विजय पायी यह बात तुम्हारे लौट आने के प्रकार से ही साफ़ विदित हो गयी। तुमने लंका में आग लगायी —यह बात वहाँ जो घना धुआँ उठा, उससे हमने जान ली थी। देवी लौट नहीं आयीं —यह बात शत्रुओं के बलगौरव को साफ़ बता रही है। हम सब समझ गये। फिर क्या है, तुमसे पूछकर जान लेने को ? । १२५४

यावदु मिन्निवे रॅण्ण वेण्डुव दिरैयु मिल्लै
शेवहन् ऱेवि तन्नैक् कण्डदु विरैविर् चॅप्पि
आवदव् वण्ण लुळ्ळत् तरुन्दुय रहर्र लेयाम्
बोवदु पुलमै यॅन्नाप् पॉरुक्कॅन वॅळुन्दु पोनार् 1255

इनि–आगे; वेऱु ऍण्ण वेण्टुवतु–अन्य कुछ सोचने को; यावतुम् इऱैयुम् इल्लै–कुछ भी ज़रा भी नहीं है; आवतु–जो करना है, वह; चेवकन्–श्रीवीरराघव की; तेवि तन्नै–देवी को; कण्टतु–जो देखा है; विरैविल्–(वह) शीघ्र; चॅप्पि–कहकर; अण्णल् उळ्ळत्तु–महिमावान प्रभु के मन का; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख को; अकऱ्ऱल् ए आम्–दूर करना ही है; पोवतु–जाना; पुलमै–बुद्धिमत्ता का काम है; ऍन्ना–कहकर; पॉरुक्कु ऍन–सहसा; ऍळुन्तु पोनार्–उठ के चले। १२५५

(सब वीरों ने एक साथ विचारा।) अब सोचने के लिए कुछ भी नहीं, कोई भी विषय नहीं। अब करना यही है कि श्रीवीरराघव की पत्नी से भेंट करने की बात शीघ्र जाकर कहें और महिमावान श्रीराम के मन का कठोर दुःख दूर करें। इसलिए जाना ही बुद्धिमत्ता का काम होगा। वे शीघ्र उठकर चले। १२५५

[इसके आगे 'मधुवन' का वृत्तान्त है। पन्द्रह पद्य में वर्णित यह वृत्तान्त क्षेपक माना जाता है। अतः हम इनको छोड़ देते हैं।]

एदुना ऴिड्न्द शाल वरुन्दिन दिरुन्द शेन्नै
आदलाल् विरैविड् चॅल्ल लावदन् ड्ळिय मॅम्मै
शादड़ीर्त् तळित्त वीर तलैमहन् मॅलिवु तीरप्
पोदुनी मुन्न रॅन्ड्रार् नन्रॅन वनुमन् पोनान् 1256

अळियम् ॲम्मै–दीन हमें; चातल् तीर्त्तु–मरने से बचाने की; अळित्त वीर–कृपा करनेवाले वीर; एतु नाळ्–(अन्वेषण) हेतु (निश्चित) दिन; चाल इऱन्त–बहुत पहले ही पूरे हो गये; इरुन्त चेत्तै–यहाँ जो रही वह सेना; वरुन्तितु–दुःखी रही; विरैविल् चॅल्लल् आवतु–शीघ्र जाने में समर्थ; अन्ऱु–नहीं है; आतलाल्–इसलिए; तलैमकन्–हमारे नायक के; मॅलिवु तीर–दुःख को दूर करने; नी–आप; मुन्तर्–पहले; पोतु–जाएँ; ॲन्ऱार्–कहा; नन्ऱु ॲत–अच्छा कहकर; अनुमन्–हनुमान; पोतान्–गया। १२५६

वीरों ने हनुमान से कहा कि हे वीर! जिसने हम दीनों को मरने से बचाया! सीताजी के अन्वेषणार्थ निर्णीत अवधि के दिन कभी के बीत गये। यहाँ जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रही वह सेना अधिक संकटग्रस्त होकर निर्बल हो गयी। इसलिए वह शीघ्र जाने में असमर्थ है। इसलिए तुम पहले जाकर समाचार दो, ताकि नायक श्रीराम का दुःख दूर हो। हनुमान ने कहा कि ठीक है। वह चला। १२५६

मुत्तलै यॆः(ह्)हि नारकु मुडिप्परुङ् गरुम मुड्ड्रि
वित्तहत् तूदन् मीण्ड दिड्दियाय् विळैन्द तन्मै
अत्तलै यड्न्द वॅल्ला मरैत्तन माळि यान्माट्
टित्तलै निहळ्न्द वॅल्ला मियम्बुवा नॆडुत्तुक् कॊण्डाम् 1257

वित्तक–(श्रीराम का) समर्थ; तूतन्–दूत; मुत्तलै ॲ.्.कितार्कुम्–त्रिशिर शूलधारी के लिए भी; मुटिप्पु अरुम्–असाध्य; करुमम् मुऱ्ऱि–कार्य सम्पन्न करके; मीण्टतु–लौटा; इऱुतियाय्–वहाँ तक का; अ तलै–वहाँ; विळैन्त तन्मै–जो घटा वह वृत्तान्त; अऱिन्ततु ॲल्लाम्–हमारे जाने सभी; अरैन्तनम्–हमने कहे; इ तलै–यहाँ; आऴियान् माट्टु–चक्रधारी श्रीराम के प्रति; निकऴ्न्त–जो हुआ; ॲल्लाम्–वह सब; इयम्पुवान्–कहने को; ॲटुत्तुक् कॊण्टाम्–तत्पर हुए हैं। १२५७

(कवि—) सर्वसमर्थ दूत हनुमान त्रिशूलधारी शिवजी के लिए भी असाध्य कार्य सम्पन्न कर आया। वहाँ तक का उधर का सारा वृत्तान्त जो हम जानते थे, हमने बताया है। अब इधर चक्रधर विष्णु के अवतार (या चक्रवर्ती) श्रीराम पर क्या बीता वह कहने चलते हैं। १२५७

❀ शेऱ्ऱिळ मरैमलर्त् तिरुवैत् तेर्हॅन्क्
काऱ्ऱिऩ्मा मकऩ्मुतऱ् कवियिऩ् शेऩैयै
नाऱ्ऱिशै मरुङ्गिऩ् मेवि नायहऩ्
तेऱ्ऱिऩ तिरुन्दतऩ् कतिरिऩ् चॅम्मले 1257(अ)

चेऱ्ऱु–पंक में उत्पन्न; इळ मरैमलर्–नवीन कमल पर रहनेवाली; तिरुवै–श्री (सीता) को; तेर्क ऍऩ–खोजो कहकर; काऱ्ऱिऩ् मा मकऩ् मुतल्–वायु के महान् पुत्र आदि; कवियिऩ् चेऩैयै–कपियों की सेना को; नाऱ्ऱिचै मरुङ्किऩुम्–चारों दिशाओं की ओर; एवि–प्रेषित करके; नायकऩ्–नायक श्रीराम को; तेऱ्ऱिऩऩ् इरुन्ततऩ्–धीरज बँधाता रहा; कवियिऩ् चॅम्मल्–कपिकुलपति। १२५७ (अ)

कपिकुलाधिप सुग्रीव पंकजपुष्पासना श्रीलक्ष्मी को खोजने के लिए वायुपुत्र आदि की सेना को चारों दिशाओं में प्रेषित करके नायक श्रीराम को धीरज बँधाता रहा। (यह पद्य हमारे मूल टीकाकार की दृष्टि में क्षेपक है। उन्होंने नियमानुसार इसे अतिरिक्त पदों के अन्तर्गत दिया है। उसे संख्या नहीं दी है। हमने इसीलिए इसे दिया है कि टी०के० चिदम्बरनाथ मुदलियार क्षेपक नहीं मानते, वरन् प्रामाणिक मानते हैं। और भी कथा-प्रवाह में इसका स्थान उचित ही लगता है।)। १२५७(अ)

कार्वरै यिरुन्दवक् कदिरिन् कादलन्
शीरिय शॉऱ्कळाऱ् ट्रॅरुट्टच् चॅङ्गणाऩ्
आरुयि रायिर मुडैय ऩामॅनच्
चोर्दॊरुञ् जोर्दॊरु मुयिर्त्तुत् तोऩ्ऱिनान् 1258

चॅम् कणाऩ्–अरुणाक्ष; चोर् तॊरुम् चोर् तॊरुम्–जब-जब (अत्यधिक दुःख से) श्रान्त हो जाते; कार् वरै इरुन्त अ–(तब)काले (प्रश्रवण) पर्वत पर जो रहा, उस; कतिरिऩ् कातलऩ्–किरणमाली सूर्यनन्दन के; चीरिय चॊऱ्कळाल्–श्रेष्ठ शब्दों से; तॆरुट्ट–समझाने पर; आयिरम्–सहस्र; आर् उयिर् उटैयऩ् आम्–प्राणों को धारण करनेवाले; ऍऩ–जैसे; अयिर्त्तु तोऩ्ऱिताऩ्–बार-बार श्वास छोड़ते प्राणवान बने। १२५८

जब-जब अरुणाक्ष श्रीराम विरहपीड़ा से श्रान्त हो जाते, तब उस काले प्रश्रवण पर्वत पर साथ जो रहा, उस सूर्यसूनु ने श्रेष्ठ वचन कहकर ढाढ़स दिया। तब रामचन्द्रजी का श्वास जो रुका रहता फिर से चलने लगता। उन्हें देखकर ऐसा लगता कि क्या इनके सहस्र प्राण हैं ?। १२५८

तण्डलि नॆडुन्दिश मूऩ्ऱुन् दाविऩर्
कण्डिलर् मडन्दैयै यॆऩ्ऩुङ् गट्टुरै
उण्डुयि रहत्तॆन वीरुक्क वुम्मुळऩ्
तिण्डिऱ लनुमऩे निऩैयुञ् जिन्दैयान् 1259

तण्टल् इल्–अबाध गति से; नॅटुम् तिचै मूऩ्ऱुम्–तीन लम्बी दिशाओं में; ताविऩर्–लपक जो चले वे; मटन्तैयै–देवी को; कण्टिलर्–देख नहीं पाये; ॲऩ्ऩुम्–यह; कट्टुरै–वचन; अकत्तु उयिर् उण्टु–अन्दर प्राण हैं; ॲत–ऐसी स्थिति में; ऑऱुक्कवुम्–बड़ा कष्ट देता रहा; तिण् तिऱल्–अतिशय बलशाली; अनुमत्तै–हनुमान का; नित्तैयुम् चिन्तैयाऩ्–स्मरण करनेवाले मन के हो; उळऩ्–(जीवित) रहे (किसी विध)। १२५६

अबाध गति से जो तीन लम्बी दिशाओं में गये थे, वे लौट आ गये। वे देवी के दर्शन नहीं कर सके। यह कथन उन्हें, चूँकि प्राण थे, सता रहा था। वे अतिबलिष्ठ हनुमान का स्मरण करते रहे। इसलिए ज्यों-त्यों अपने प्राणों को रखते रहे। १२५९

❀ आरिय नरुन्दुयरक् कडलु ळाऴ्बवऩ्
शीरिय दऩ्ऱुनम् जॅय्है तीर्वरुम्
मूरिवॅम् बऴियॊडु मुडिन्द दामॆऩाच्
चूरियऩ् पुदल्वऩै नोक्किच् चॊल्लुवाऩ् 1260

आरियऩ्–आर्य श्रीराम; अरुम्–कठोर; तुयर् कटल् उळ्–दुःख-सागर में; आऴ्पवऩ्–मग्न; चूरियऩ् पुतल्वऩै नोक्कि–सूर्य-पुत्र को देखकर; नम् चॅय्कै–हमारा काम; चीरियतु अऩ्ऱु–श्रेष्ठ नहीं; तीर्वु अरुम्–अवार्य; मूरि वॅम् पऴि ऑटु–कठोर और भयंकर निन्दा के साथ; मुटिन्ततु आम्–समाप्त हो जायगा; ॲऩा–कहकर; चॊल्लुवाऩ्–आगे बोले। १२६०

कठोर दुःखसागरमग्न श्रीराम ने अर्कपुत्र से कहा कि हमारा कार्य श्रेष्ठ नहीं लगता। वह अवार्य और कठोर भयंकर अपमान में पूरा होगा। वे आगे यों बोले। १२६०

❀ कुऱित्तना ळिहन्दऩ कुऩ्ऱत् तॅऩ्ऱिशै
वॅऱिक्करुङ् गुऴलियै नाडऩ् मेयिऩार्
मऱित्तिवण् वन्दिलर् माण्डु ळार्हॊलो
पिऱित्तवर्क् कुऱ्ऱुळ वॅऩ्ऩ पॅऱ्ऱियो 1261

कुऱित्त नाळ्–निर्णीत दिन; इकन्तऩ–बीत गये; कुऩ्ऱ–बीतने पर; तॅऩ् तिचै–दक्षिण दिशा में; वॅऱि करुम्–सुगन्धित काले; कुऴलियै–केश वाली को; नाटल् मेयिऩार्–खोजने जो चले; मऱित्तु–(वे) लौटकर; इवण्–यहाँ; वन्तिलर्–आये नहीं; माण्टुळार् कॊल् ओ–मर गये क्या; पिऱित्तु–दूसरा; अवर्क्कु उऱ्ऱु उळतु–उन पर जो बीता; ॲऩ्ऩ पॅऱ्ऱि ओ–कैसा है तो। १२६१

अवधि के दिन बीत गये। तो भी दक्षिण दिशा में सुबासित काले केश की सीता की खोज में जो चले वे लौट के इधर नहीं आये। क्या वे मर गये होंगे? फिर उन्हें क्या हुआ होगा? कैसा हुआ होगा?। १२६१

❀ माण्डन ळवळिवण् माण्ड वार्त्तैयै
मीण्डवर्क् कुरैत्तलिन् विळिद नन्ऱॆनाप्
पूण्डदोर् तुयरोडु पोन्ऱि नार्हॊलो
तेण्डिन रिन्नमुन् दिरिहिन् ऱार्हॊलो 1262

अवळ् माण्टनळ्–वह मर गयीं; इवण्–यहाँ; मीण्टु–लौट आकर; माण्ट वार्त्तैयै–मरने का समाचार; अवर्क्कु उरैत्तलिन्–उनसे कहने से; विळितल्–(हमारा) मरना; नन्ऱु–अधिक अच्छा है; ऎन्ना–ऐसा सोचकर; पूण्टतु ओर् तुयर् ओटु–अपनाए गये एक दुःख के साथ; पोन्ऱिनार् कोल् ओ–मर गये क्या; इन्नमुम्–अब भी; तेण्टिनर्–खोजते हुए; तिरिकिन्ऱार् कोल् ओ–भटक रहे हैं क्या। १२६२

"सीता चल बसीं। लौट यहाँ आकर सीता की मृत्यु का समाचार देने से मर जाना बेहतर है।" —ऐसा निश्चय करके दुःखी होकर वे मर गये क्या ? या अब भी खोजते हुए इधर-उधर भटक रहे हैं ? । १२६२

कण्डन ररक्करैक् करुवु कैम्मिह
मण्डमर् तॊडङ्गिनार् वञ्जर् मायैयाल्
विण्डल मदनिन्मे यिनर्हॊल् वेऱिलात्
तण्डलि नॆडुञ्जिऱैत् तळैप्पट् टार्हॊलो 1263

अरक्करै–राक्षसों को; कण्टनर्–देखकर; करुवु–कोप के; कै मिक–बढ़ने से; मण्टु–घमासान; अमर् तॊटङ्कितार्–युद्ध प्रारम्भ करके; वञ्चर् मायैयाल्–वंचकों के मायाकृत्य से; विण् तलम् अततिन्–स्वर्गलोक में; मेयिनर् कोल्–पहुँच गये क्या; वेऱु इला–निरुपाय; तण्टल् इन्ऱु–अबाध; नॆटुम् चिऱै–दीर्घ कारा में; तळैप्पट्टार् कोल्–बँध गये क्या। १२६३

(या) राक्षसों को देख पाकर बढ़ते क्रोध के साथ उन्होंने युद्ध प्रारम्भ किया और वञ्चकों के मायाकृत्य से स्वर्ग पहुँच गये ? या निरुपाय दीर्घ कारा में वन्दी कर रखे गये हैं ? । १२६३

कूऱिन नाळव रिरुक्कै कूडलम्
एऱलञ् जुदुमॆन विन्ब दुन्बङ्गळ्
आऱिन ररुन्दवममैहिन् ऱार्हॊलो
वेऱवर्क् कुऱ्ऱदॆन् विळम्बु वायॆन्ऱान् 1264

कूऱिन नाळ्–निर्णीत दिन में; अवर् इरुक्कै–उनके (श्रीराम के) वासस्थान; कूटलम्–पहुँचे नहीं; एऱल् अञ्चुतुम्–जाने से भय लगता है; ऎन–ऐसा सोचकर; इन्प तुन्पङ्कळ् आऱिनर्–सुख-दुःख-श्रान्त होकर; अरुम् तवम्–कठोर तपस्या में; अमैकिन्ऱार् कोल्–विश्रान्त हैं; ओ–क्या; वेऱु ऎन्–और क्या; अवर्क्कु उऱ्ऱतु–उनका हुआ; विळम्पुवाय्–बोलो; ऎन्ऱान्–बोले। १२६४

"अवधि के दिन बीत गये। वहाँ पहुँचने में डर लगता है।" ऐसा सोचकर सुखदुःखनिवृत्त होकर वे कठोर तपस्या में विश्रान्त रहते हैं क्या ? फिर उनका क्या हुआ होगा। बोलो। श्रीराम ने सुग्रीव से पूछा। १२६४

❀ ऍऩ्बुऴि यनुमऩु मिरवि यॆऩ्बवऩ्
तॆऩ्बुलत् तुळॆऩ्ऩत् तॆरिव दायिऩाऩ्
पॊऩ्बॊऴि तडक्कयप् पॊरुविल् वीरऩुम्
अऩ्बुरु शिन्दैया ऩमैय नोक्किऩाऩ् 1265

ऍऩ्पुऴि–जब वे यह कह रहे थे; अनुमऩुम्–(तब) हनुमान और; इरवि ऍऩ्पवऩ्–रवि नाम का वह; तॆऩ् पुलत्तु उळऩ् ऍऩ–दक्षिण में उदित हुआ जैसे; तॆरिवतु आयिऩाऩ्–प्रकट हुआ; पॊऩ् पॊऴि–(याचक को) स्वर्ण-वर्षा के समान देनेवाले; तट कै–विशाल हाथों के; अ पॊरुवु इल् वीरऩुम्–उन अनुपम वीर (श्रीराम) ने भी; अऩ्पु उरु चिन्तैयाऩ्–प्रेममग्न हो; अमैय–खूब; नोक्किऩाऩ्–(हनुमान पर) दृष्टि गड़ाकर देखी। १२६५

श्रीराम यों कह ही रहे थे कि दक्षिण में रवि प्रकट हो गया-जैसे हनुमान दिखायी दिया। (याचक—) स्वर्णवर्षी हाथों के उन अनुपम वीर श्रीराम ने भी बड़े प्रेम के साथ हनुमान को ध्यान से देखा। १२६५

❀ ऍय्दिऩ ऩनुमऩु मॆय्दि येऩ्दऱल्
मॊय्हऴ् ऱॊऴुदिलऩ् मुळरि नीङ्गिय
तैयलै नोक्किय तलैयऩ् कैयिऩऩ्
वैयहऩ् दऴीइनॆडि दिऱैञ्जि वैहिऩाऩ् 1266

अनुमऩुम्–हनुमान भी; ऍय्तिऩऩ्–आ पहुँचा; ऍय्ति–पहुँचकर; एऩ्तल् तऩ्–प्रभु के; मॊय् कऴल्–सुदृढ़ पायलधारी चरणों को; तॊऴुतु इलऩ्–वन्दना न करके; मुळरि नीङ्किय–कमल छोड़कर (भूमि पर) अवतरित; तैयलै–देवी (की दिशा) को; नोक्किय–उद्दिश्य करके; तलैयऩ् कैयिऩऩ्–फिरे मुख वाला और जुड़े हाथों वाला बन; वैयकम् तऴीई–भूमि पर लगकर; नॆटितु इऱैञ्चि–बहुत देर दण्डवत करता हुआ; वैकिऩाऩ्–रहा। १२६६

हनुमान भी वहाँ आया। (उसने एक विचित्र काम किया।) वह सम्मानित प्रभु श्रीराम के सुदृढ़ पायलधारी चरणों पर नमस्कार न करके कमलवास छोड़, भूमि पर अवतरित हुई श्रीलक्ष्मी, सीताजी जिस दक्षिण दिशा में रहीं उस ओर मुख करके और उसी ओर हाथ जोड़कर भूमि पर दण्डवत् की मुद्रा में भूमि से लगकर गिरा और लम्बी देर तक पड़ा रहा। १२६६

❀ तिण्डिऱ लवऩ्ऱॊय ऱॆरिय नोक्किऩाऩ्
वण्डुऱै योदियुम् वलियण् मऱ्ऱिवऩ्

कण्डदु मुण्डवळ् कऱ्पु नऩ्ऱॆऩक्
कॊण्डतऩ् कुऱिप्पिऩा लुणरुङ् गॊळ्हैयाऩ् 1267

कुऱिप्पिऩाल्–इंगित से; उणरुम् कॊळ्कैयाऩ्–आशय समझने की (विवेक) शक्ति रखनेवाले श्रीराम ने; तिण् तिऱल्–बहुत ही कुशल; अवऩ् चॆयल्–उसका कार्य; तॆरिय नोक्कित्ताऩ्–भलीभाँति देखा और जाना; वण्टु उऱै–भ्रमराश्रय; ओतियुम्–केशिनी भी; वलियळ्–स्वस्थ हैं; इवऩ् कण्टतुम्–इसकी भेंट भी; उण्टु–हुई है; अवळ् कऱ्पुम्–उसका पातिव्रत्य भी; नऩ्ऱु–सुदृढ़ है; ॲऩ–ऐसा; कॊण्टऩऩ्–ताड़ लिया। १२६७

श्रीराम इंगितज्ञ थे। उन्होंने सामर्थ्यशाली उस हनुमान के तत्त्वार्थपूर्ण कार्य देखा और समझ गये कि भ्रमरावृत सुकेशिनी सीताजी स्वस्थ हैं; इसने उनसे भेंट की है और उनका पातिव्रत्य सुरक्षित है। १२६७

आङ्गवऩ् शॆय्हैये यळवै यामॆऩा
ओङ्गिय वुणर्वित्ताल् विळैन्द दुऩ्ऩित्ताऩ्
वीङ्गिऩ तोळ्पुऩऱ् कण्कळ् विम्मिऩ
नीङ्गिय दरुन्दुयर् काद ऩीण्डदे 1268

आङ्कु–वहाँ; अवऩ् चॆय्कैये–उसका काम ही; अळवै आम्–मापदण्ड है; ॲऩा–मानकर; ओङ्किय उणर्वित्ताल्–उत्कृष्ट अपने ज्ञान द्वारा; विळैन्ततु उऩ्ऩित्ताऩ्–जो घटा उसका अनुमान कर लिया. (श्रीराम ने); तोळ् वीङ्किऩ–(उनके) कन्धे फूल उठे; कण्कळ्–आँखें; पुऩल् विम्मिऩ–(अश्रु-) जल से भरीं; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख; नीङ्कियतु–दूर हुआ; कातल्–(सीता पर) प्रेम; नीण्टतु–वर्द्धित हुआ। १२६८

श्रीराम ने अपने उत्कृष्ट ज्ञान द्वारा, हनुमान के कृत्य को माप बनाकर बीते कार्यों का अनुमान लगा लिया। तब उनके कन्धे फूल उठे। आँखें अश्रुजल से खूब भर गयीं। कठोर दुःख दूर हो गया। सीताजी के प्रति प्रेम बढ़ गया। १२६८

❀ कण्डऩॆऩ् कऱ्पिऩुक् कणियैक् कण्गळाल्
तॆण्डिरै यलैहड लिलङ्गैत् तॆऩ्ऩहर्
अण्डर्ना यहविऩित् तविर्दि यैयमुम्
बण्डुळ तुयरॆऩ् ऱनुमऩ् पऩ्ऩिऩाऩ् 1269

अनुमऩ्–हनुमान ने; अण्टर् नायक–देवनायक; तॆळ् तिरै–साफ़ और उठ गिरनेवाली; अलै–तरंगाकुल; कटल्–समुद्र-मध्य; इलङ्कै–लंका (नाम) के; तॆऩ् नकर्–दक्षिण (में रहनेवाले) नगर में; कऱ्पिऩुक्कु अणियै–पातिव्रत्य के शृंगार को; कण्कळाल् कण्टऩॆऩ्–आँखों से देखा; इऩि–आगे; ऐयमुम्–सन्देह और; पण्टु उळ–पहले से रहा; तुयरम्–दुःख; तविर्ति–दूर करें; ॲऩ्ऱु–ऐसा; पऩ्ऩिऩाऩ्–(कहकर) विस्तार से कहा। १२६९

हनुमान ने श्रीराम से निवेदन किया, हे देवादिदेव! (अण्डनायक!) स्वच्छ और लहराती तरंगों के समुद्रमध्य, दक्षिण में स्थित लंका के नगर में मैंने पातिव्रत्य के शृंगार मान्य सीताजी को अपनी आँखों से देख लिया। अब आप सन्देह और बहुत दिनों का दुःख छोड़ दें। उसने आगे विस्तार से यों कहा। १२६९

❀ उन्बॅरुन् देवि यॅन्नु मुरिमैक्कु मुन्नैप् पॅर्र्
मन्बॅरु मरुहि यॅन्नुम् वाय्मैक्कु मिदिलै वेन्दन्
तन्बॅरुन् दनये यॅन्नुन् दन्मैक्कुन् दहैमै शान्र्
ॲन्बॅरुन् दॅय्व मैया विन्नमुङ् गेट्टि यॅन्बान् 1270

ऐया–प्रभु; उन् पॅरुम् तेवि–आपकी महीयसी देवी; ॲन्नुम् उरिमैक्कुम्–रहने का स्वत्व और; उन्नै पॅर्र्–आपके जनक; मन्–चक्रवर्ती की; पॅरुम् मरुकि–सम्मान्य बहू के; ॲन्नुम् वाय्मैक्कुम्–उस गौरव के लिए; मितिलै वेन्तन् तन्–मिथिला के राजा की; पॅरुम् तनयै–सुपुत्री; ॲन्नुम् तन्मैक्कुम्–होने के गौरवपूर्ण स्थान के लिए; तकैमै चान्र्–पूर्ण योग्य; ॲन् पॅरुम् तॅय्वम्–मेरी आराध्या देवी; इन्नमुम् केट्टि–और भी सुनिए; ॲन्ब्रान्–कहा। १२७०

प्रभु! आपकी उत्तम धर्मपत्नी का पद, आपके जनक चक्रवर्ती दशरथ की आदरणीय पतोहू बनने का गौरव, मिथिला के राजा की सम्मान्य पुत्री बनने का भाग्य —इनके बिल्कुल योग्य हैं मेरी आराध्या श्रेष्ठ देवी। और भी सुनिए। हनुमान ने जारी किया। १२७०

❀ पॊन्नल दिल्लैप् पॊन्नै यॊप्पॆन पॊरैयि निन्राळ्
तन्नल दिल्लैत् तन्नै यॊप्पॆनत् तनक्कु वन्द
निन्नल दिल्लै निन्नै यॊप्पॆन निनक्कु नेर्न्दाळ्
ॲन्नल दिल्लै यॆन्नै यॊप्पॆन वॆनक्कु मीन्दाळ् 1271

पॊन्नै ऑप्पु–स्वर्ण से तुल्य; पॊन् अलतु इल्लै–स्वर्ण छोड़ दूसरा नहीं; ॲन–इसी रीति से; पॊरैयिल्–क्षमा के गुण में; निन्राळ्–स्थित हैं; तन्नै ऑप्पु–अपनी-अपने समान; तन् अलतु–अपने को छोड़; इल्लै–दूसरा नहीं; ॲन–ऐसे ही; तनक्कु वन्त–अपने पति के रूप में प्राप्त; निन्नै ऑप्पु–आपसे तुल्य; निन् अलतु–आपके सिवा; इल्लै–नहीं; ॲन–ऐसा (गौरव); निनक्कु नेर्न्ताळ्–आपको दिलाया है (देवी ने); ॲन्नै ऑप्पु–मेरे समान; ॲन् अलतु–मुझे छोड़ दूसरा; इल्लै ॲन–नहीं है, यह; ॲनक्कुम्–(गौरव) मुझे भी; ईन्ताळ्–प्रदान किया। १२७१

स्वर्ण से तुल्य स्वर्ण से अन्य कोई वस्तु नहीं है। वैसे ही वे अनुपम क्षमाशीला हैं। अपनी सानी वे अपने से अलावा कोई नहीं रखतीं। उन्होंने आपको भी 'आपसे तुल्य आपके सिवा अन्य नहीं हैं' —यह कहाने का गौरव प्रदान किया है। मुझे भी यह पद दिला दिया है, जिससे अपने से तुल्य मैं ही हूँ। कोई दूसरा मेरे समान नहीं है। (स्वर्ण ताडन,

निघर्षण, तापन···किसी से भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। सीताजी की उपमा इसी से स्वर्ण से दी गयी है। सीताजी के कारण अब श्रीराम अनुपम सौभाग्यवान पति बन गये। 'कुरळ' का कहना है— सती पत्नी के अतिरिक्त पुरुष के लिए प्राप्य बड़ी वस्तु क्या है ? हनुमान का भी गौरव इतना बढ़ा कि सामान्य वानर असामान्य दूत बन गया। इस पद्य में नेर्न्दाळ्, ईन्दाळ् —दो क्रिया शब्द आये हैं। दोनों के अर्थों में यह भिन्नता है कि पहला शब्द समानता का द्योतक है और दूसरा यह इंगित करता है कि पानेवाला नीची हैसियत में है।)। १२७१

उऩ्गुल मुऩ्ऩ दाक्कि युयर्बुहऴ्क् कॊरुत्ति याय
तऩ्गुलऩ् दऩ्ऩ दाक्कित् तऩ्ऩैयित् तऩिमै शॆय्दाऩ्
वऩ्गुलङ् गूऱ्ऱुक् कीन्दु वाऩवर् कुलत्तै वाऴ्वित्
तॆऩ्गुल मॆऩक्कुत् तन्दा ळॆऩ्ऩिऩिच् चॆय्व दॆम्मोय् 1272

ॲम् ओय्–मेरी माता; उऩ् कुलम्–आपका कुल; उऩ्ऩतु आक्कि–आपका स्थापित करके; उयर् पुकऴ्क्कु–उन्नत सुयश के लिए; ऑरुत्ति आय–योग्य अकेली जो हैं; तऩ् कुलम्—वह अपना कुल; तऩ्ऩतु आक्कि–अपना स्थापित कर; तऩ्ऩै इ तऩिमै चॆय्ताऩ्–अपने को जिसने इस तरह पृथक् किया; वऩ् कुलम्–(उस रावण के) नृशंस कुल को; कूऱ्ऱुक्कु ईन्तु–मृत्यु के हाथ सौंपकर; वाऩवर् कुलत्तै–देवकुल को; वाऴ्वित्तु–निर्भय जीवन प्रदान करके; ॲऩ् कुलम्–मेरा कुल; ॲऩक्कु तन्ताऴ्–मुझे दिलाया; इऩि–आगे; ॲऩ् चॆय्वतु–करने को क्या है। १२७२

मेरी माता ने आपके कुल को आपका बना दिया (यानी आपके नाम पर आपका कुल स्मरण किया जायगा); उच्च यशस्विनी अपने कुल को अपना बना लिया (उनका कुल उनके नाम पर चलेगा); अपने को आपसे पृथक् करनेवाले रावण के कुल को मृत्यु का बना दिया; देवकुल को निर्भय जीवन का बनाया और मेरे कुल को मुझे दे दिया (यानी मामूली बन्दर भी हनुमान के कुल का बताया जायगा)। इससे बढ़कर कहने को क्या है ?। १२७२

❀ विऱ्पॆरुन् दडन्दोळ् वीर वीङ्गुनी रिलङ्गै वॆऱ्पिऩ्
नऱ्पॆरुन् दवत्त ळाय नङ्गैयैक् कण्डे नल्लेऩ्
इऱ्पिऱप् पॆऩ्ब दॊऩ्ऱु मिरुम्बॊऱै यॆऩ्ब दॊऩ्ऱुम्
कऱ्पॆऩुम् बॆयर दॊऩ्ऱुङ् गळिनडम् बुरियक् कण्डेऩ् 1273

विल्–(कोदण्ड) धनुर्धर; पॆरुम्–बड़े; तटम् तोळ्–विशाल कन्धों वाले; वीर–वीर; वीङ्कु नीर्–बहुत जल के समुद्र की घिरी; इलङ्कै वॆऱ्पिल्–लंका की गिरि पर; नल् पॆरुम् तवत्तळ् आय–अच्छे और बड़े तप में लगी; नङ्कैयै–देवी को; कण्टेऩ् अल्लेऩ्–नहीं देखा; इल् पिऱप्पु ॲऩ्पतु–कुल-जन्म, यह; ऑऩ्ऱुम्–एक; इरुम् पॊऱै ॲऩ्पतु–अति गम्भीर क्षमा नाम की; ऑऩ्ऱुम्–एक वस्तु और; कऱ्पु–

पातिव्रत्य; अँतुम् पॅयर् अतु—नाम की; ऑन्ऱुम्—एक चीज; कळि नटम् पुरिय—(इनको) मत्त नृत्य करते हुए; कण्टेन्—देखा। १२७३

कोदण्ड के धारक बड़े और विशाल भुजाओं वाले वीर! विपुल जलाश्रय समुद्र के मध्य त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका में मैंने केवल अतिश्रेष्ठ तपस्विनी स्त्री को नहीं देखा; वरन् श्रेष्ठ कुल में जन्म, गम्भीर क्षमा और सतीत्व —इन तीनों तत्त्वों को मिलकर मत्तता से आनन्दनृत्य करते हुए देखा। १२७३

कण्णिनु मुळैनी तैयल् करुत्तिनु मुळैनी वायिन्
अँण्णिनु मुळैनी कॉङ्गै यिणैक्कुवै तन्नि ऩोवा
दण्णल्वॅङ् गाम नॅय्द वलरम्बु तॉळैत्त वाऱाप्
पुण्णिनु मुळैनी निन्नैप् पिरिन्दमै पॊरुन्दिऱ् ऱामो 1274

नी—आप; तैयल् कण्णितुम्—देवी की आँखों में भी; उळै—हैं; करुत्तितुम्—मन में भी; नी उळै—आप विद्यमान हैं; वायिन् अँण्णितुम्—मुख के बोलों में भी; नी उळै—आप रहते हैं; कॉङ्कै इणै—स्तनद्वय के; कुवै तन्तिल्—अग्रभाग में; ओवातु—निरन्तर; अण्णल्—महिमावान; वॅम् कामन्—सन्तापक कामदेव द्वारा; अँय्त—प्रेषित; अलर् अम्पु—पुष्प-शर; तॉळैत्त—से विद्ध; आऱा—जो नहीं भरता, उस; पुण्णितुम्—घाव में भी; नी उळै—आप ही हैं; नित्तै पिरिन्तमै—आपसे वियुक्त होने की बात कहना; पॊरुन्तिऱ्ऱु आमो—युक्त होगा क्या। १२७४

प्रभु! आप देवी की आँखों पर सदा विद्यमान हैं; उनके मन में विराजमान हैं; मुख के शब्दों में घुले मिले हैं। महिमावान और सन्तापक कामदेव द्वारा निरन्तर प्रेषित सुमन-शरों से उनके स्तनद्वय के अग्र भाग में बने, सदा ताज़े व्रण में भी हैं। फिर आपसे वे अलग हो गयीं —यह कहना युक्त होगा क्या? । १२७४

वेलैयु ळिलङ्गै यॅन्नुम् विरिनह रॊरुशार् विण्डोय्
कालैयु मालै तानु मिल्लदोर् कनहक् कऱ्पच्
चोलैयङ् गदनि नुम्बि पुल्लिनाऱ् ऱॊडुत्त तूय
शालैयि निरुन्दा ळैय तवत्तॅय्द तवमान् वेयल् 1275

ऐय—प्रभु; तवम् चॅय्त तवम्—स्वयं तप ने तपस्या करके जिन्हें पाया; आम् तैयल्—वह देवी; वेलै उळ्—समुद्र-मध्य; इलङ्कै अॅन्नुम्—लंका नाम के; विरि नकर्—विशालनगर के; ऒरु चार्—एक तरफ़; विण् तोय्—गगनस्पर्शी; कालैयुम् मालै तानुम्—(और) सवेरा और शाम; इल्लतु—जहाँ (उनमें भेद) नहीं रहते; ओर्—उस एक; कनक कऱ्प चोलै—एक स्वर्णकल्पतरुओं का वन; अङ्कु—वहाँ; अतनिन्—उसमें; उम्पि—आपके कनिष्ठ द्वारा; पुल्लिताल् तॊटुत्त—घास से निर्मित; तूय चालैयिन्—पवित्र पर्णशाला में; इरुन्ताळ्—रहीं। १२७५

प्रभु! तप का तपस्या का फल हैं वे! समुद्रमध्यस्थित लंका नगर

के किसी कोने में अशोक वन है, जिसके कनककल्प तरु आकाश से बातें करते रहते हैं। वहाँ सवेरे और शाम का भेद दिखायी ही नहीं देता (क्योंकि कल्पतरु का प्रकाश एक-सा है)। उसमें आपके छोटे भाई द्वारा घास की निर्मित पर्णशाला में देवी रहती हैं। १२७५

मण्णोडुङ् गॉण्डु पोऩाऩ् वाऩुयर् कऱ्पि ऩाडऩ्
पुण्णिय मेऩि तीण्ड वञ्जुवा ऩुलहम् बूत्त
कण्णहऩ् कमलत् तण्णल् करुत्तिलाट् टॉडुदल् कण्णिऩ्
ॲण्णरुङ् गूऱाय् माय्दि यॅऩ्ऱदोर् मॉऴियै यॅण्णि 1276

उलकम् पूत्त–लोकसर्जक; कण् अकऩ्–विशाल; कमलत्तु अण्णल्–कमल पर विराजमान ब्रह्माजी ने; करुत्तु इलाळ्–तुम पर मन न लगानेवाली को; तॉट्टल्–स्पर्श करना; कण्णिऩ्–सोचोगे तो; ॲण् अरुम् कूऱाय्–असंख्य खण्डों में; माय्ति–(विभक्त होकर) मरोगे; ॲऩ्ऱतु–जो कहा था; ओर् मॉऴियै–उस कथन को; ॲण्णि–सोचकर; वाऩ् उयर्–बहुत उत्कृष्ट; कऱ्पिऩाळ् तऩ्–पातिव्रत्य-शीला के; पुण्णिय मेऩि–पवित्र शरीर को; तीण्ट अञ्चुवाऩ्–स्पर्श करने से डरता; मण् ऑट्टुम्–भूमि के साथ; कॉण्टु पोऩाऩ्–ले गया। १२७६

पञ्चसर्जक, कमलासन, सम्मान्य ब्रह्मा ने रावण को शाप दिया था कि अगर तुम पर मन न लगानेवाली किसी स्त्री का स्पर्श करोगे तो तुम असंख्यक टुकड़ों में फूटकर मर जाओगे। इस शाप के स्मरण से ही रावण अत्युत्तम सती सीताजी के पवित्र शरीर का स्पर्श करने से डरकर भूखण्ड के साथ ही उन्हें ले गया था। १२७६

तीण्डिल नॅऩ्ऩुम् वाय्मै तिशैमुहऩ् शॅय्द मुट्टै
कीण्डिल दऩन्द ऩुच्चि किऴिन्दिल वॅऴुन्दु वेलै
मीण्डिल शुडर्हळ् यावुम् विऴुन्दिल वेदञ् जॅय्है
माण्डिल वॅऩ्ऩुन् दऩ्मै वाय्मैया ऩुणर्दि मऩ्ऩो 1277

तीण्टिलऩ्–उसने स्पर्श नहीं किया; ॲऩ्ऩुम् वाय्मै–यह सत्य; तिचैमुकऩ् चॅय्त मुट्टै–चतुर्मुखसृष्ट अण्डगोल; कीण्टु इलतु–फटा नहीं; अऩन्तऩ् उच्चि–अनन्तनाग का सिर; किऴिन्तिलतु–चिरा नहीं; वेलै ॲऴुन्तु–समुद्र उमड़कर; मीण्टिल–भूतल को लीलकर नहीं लौटे; चुटर्कळ् यावुम्–सभी प्रकाशमण्डल; विऴुन्तिल–गिरे नहीं; वेतम् चॅय्कै–वेद और वेद-विधियाँ; माण्टिल–नष्ट नहीं हुईं; ॲऩ्ऩुम् तऩ्मै–ये स्थितियाँ; वाय्मैयाल्–अब भी विद्यमान हैं, इससे; उणर्ति–जान लें। १२७७

उसने उनका स्पर्श नहीं किया। यह सत्य इन अटल रहनेवाली बातों से प्रमाणित है। चतुर्मुखसृष्ट अण्डगोल नहीं फूटा। अनन्तनाग का सिर नहीं चिरा। समुद्र उमड़कर भूतल को लीलकर पुनः यथावत नहीं

हुए। सूर्य, चन्द्र आदि तेज के मण्डल चुए नहीं। वेद और वेदविधियाँ बेकार नहीं हुईं। १२७७

* शोहत्ता ळाय नङ्ग कऱ्पिताऱ् ऱॉळुदऱ् कौत्त
माहत्ताऱ् देवि मारुम् वान्शिऱप् पुऱ्ऱाऱ् मऱ्ऱेप्
पाहत्ता ळल्ल ळीशन् महुडत्ताळ् पदुमत् ताळुम्
आहत्ता ळल्लण् माय नायिर मोलि याळाल् 1278

चोकत्ताळ् आय–दुःखिनी बनी; नङ्कै–देवी के; कऱ्पिनाल्–पातिव्रत्य से; माकत्तार् तेविमारुम्–व्योमवासियों की पत्नियाँ भी; तॉळुतऱ्कु ऑत्त–पूजार्ह; वान् चिऱप्पु–बड़े गौरव को; उऱ्ऱार्–प्राप्त कर गयी हैं; मऱ्ऱै–और; ईचन् पाकत्ताळ्–परमेश्वर की अर्द्धांगिनी; अल्लळ्–न बनकर; मकुटत्ताळ्–सिर पर रहनेवाली बनीं; पतुमत्ताळुम्–पद्मा भी; मायन् आकत्ताळ् अल्लळ्–मायावी की वक्षनिवासिनी न बनकर; आयिरम् मोलियाळ्–उनके सहस्र सिरों पर शोभनेवाली बनीं। १२७८

शोकाकुल नायिका सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा से अन्य देवियाँ भी गौरवान्वित हो गयीं, पूजार्ह हो गयीं। और भी शिवपत्नी को अर्द्धांगिनी के पद में रहकर भी शिवजी के सिर पर रहने से प्राप्य गौरव मिल गया। श्रीपद्मा भी मायावी की वक्षःस्थलवासिनी से सहस्र सिरों पर रखकर पूज्य हो गयीं। १२७८

इलङ्गैयै मुळुदु नाडि यिरावण निरुक्कै यॆय्दिप्
पॊलङ्गुळै यवरै यॆल्लाम् पॊदुवुऱ नोक्किप् पोनेन्
अलङ्गुतण् शोलै पुक्के नव्वळि यणङ्ग नाळैक्
कलङ्गुवॆण् डिरैयिऱ् ऱाय कण्णिनीर्क् कडलिऱ् कण्डेन् 1279

इलङ्कैयै मुळुतुम् नाटि–लंका भर में खोजकर; इरावणन् इरुक्कै ऎय्ति–रावण का वासस्थान पहुँचकर; पॊलन् कुळै–सुन्दर कर्णकुण्डलालंकृता; अवरै ऎल्लाम्–(स्त्रियों) सभी को; पॊतु उऱ नोक्कि–सामान्य रूप से देखता हुआ; पोनेन्–गया; अलङ्कु–हिलनेवाले (पत्तों और डालों के); तण् चोलै–शीतल अशोक वन में; पुक्केन्–प्रविष्ट हुआ; अ वळि–वहाँ; अणङ्कु अनाळै–देवी स्त्री-सम इनको; कलङ्कु–विलोडित; वॆळ् तिरैयिऱ्ऱु आय–सफ़ेद तरंगों वाले; कण्णिन् नीर् कटलिल्–अश्रुजल-सागर में; कण्टेन्–(मैंने) देखा। १२७९

मैंने लंका भर में खोजा। रावण के महल में गया। वहाँ सुन्दर कुण्डलधारिणी सब स्त्रियों को सरसरी निगाह से देखकर आगे गया और अशोक वन में पहुँचा, जिसमें तरु के पल्लव और डालें हवा में हिलती रहीं। वहाँ देवी-सी सीता को मैंने विलोडित श्वेत तरंगों वाले अश्रुजल-सागर-मध्य देखा। १२७९

अरक्किय रळवर् ऱाऱ्ह ळलहैयित् कुळ्ळुवु मञ्ज
नॅरुक्कित्तर् काप्प नित्बा त्तेशमे यच्च नीक्क
इरक्कमॅत् ऱॊत्ऱु तात्तो रेन्दिळै वडिव मॅय्दित्
तरुक्कुयर् शिऱैयुऱ् ऱन्न तहैयळत् तमिय ळम्मा 1280

अळवु अऱ्ऱार्कळ्–असंख्यक; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; अलकैयित्–पिशाचों के; कुळ्ळुवुम् अञ्च–झुण्डों को भी भयभीत कर सकनेवाली; नॅरुक्कित्तर्–बिल्कुल पास से घेरकर; काप्प–रक्षित करती रहीं; अच्चम्–भय को; नित् पाल् नेचमे–आपके प्रति प्रेम के ही द्वारा; नीक्क–दूर करके; अ तमियळ्–वे एकाकिनी; इरक्कम् ऒत्ऱु–दीनता नाम का; ऒत्ऱुतात्–एक (तत्त्व) ही; ओर् एन्तिळै वटिवम्–एक आभरणधारिणी (अंगना) का रूप; ऎय्ति–लेकर; तरुक्कु उयर्–अतिकठोर; चिऱै उऱ्ऱु–कारा में बन्द रहा; अन्त–जैसी; तकैयळ्–स्थिति में रहनेवाली हैं। १२८०

बेशुमार निशाचरियाँ, जिनसे भूतव्रात भी भयभीत होते हैं, बिल्कुल पास से घेरकर उनकी रखवाली कर रही हैं। उससे जो भय देवी के मन में पैदा होता है, उससे आपके प्रति प्रेम ही रक्षा कर रहा है। वे एकाकिनी ऐसी दिख रही हैं, मानो दीनता ही (आभरणधारिणी) अंगना का रूप धरकर अति कठोर कारा में बन्दिनी बनी रहती हो। १२८०

तैयलै वणङ्गऱ् कॊत्त विडैपॅऱुन् दन्मै नोक्कि
ऐयना त्तिरुन्द कालै यलङ्गल्वे लिलङ्गै वेन्दन्
ऎय्दित्त त्तिरन्दु कूऱि यिऱैञ्जित्त त्तिरुन्द नङ्गै
वॅय्दुरै शॊल्लच् चीऱिक् कोऱन्मेऱ् कॊण्डु विट्टान् 1281

ऐय–आर्य; तैयलै–देवी को; वणङ्कऱ्कु ऒत्त–नमस्कार (भेंट) करने योग्य; इटै–अवकाश; पॅऱुम् तन्मै–प्राप्त करने के उपाय को; नोक्कि–सोचकर; नात्–(जब) मैं; इरुन्त कालै–रहा, उस समय; अलङ्कल् वेल्–मालाधारी, भाले वाला; इलङ्कै वेन्तन्–लंका का राजा; ऎय्तितन्–आया; इरन्तु कूऱि–विनय सुनाकर; इऱैञ्चितन्–नमस्कार किया; इरुन्त नङ्कै–(बन्दिनी) जो रहीं, उन देवी के; वॅय्तु उरै–कठोर वचन; चॊल्ल–कहने पर; चीऱि–कोप करके; कोऱल्–मारने पर; मेऱ्कॊण्टु विट्टान्–तुल गया। १२८१

देव ! देवी से भेंट करूँ, उस समय की प्रतीक्षा में मैं बैठा था। तब माला से अलंकृत भालाधारी लंका का राजा रावण आया। उसने दीनता के वचन कहकर देवी को नमस्कार किया। बन्दिनी रही देवी ने कुछ कटु वचन कहे। रावण को गुस्सा हुआ और वह देवी को मारने पर उतारू हो गया। १२८१

आयिडै यणङ्गित् कऱ्पु मैयनित् त्तरुळञ् जॅय्य
तूयनल् लऱत्तु मॅन्ऱिङ् गित्तैयत् तॊडरन्दु काप्पप्
पोयित्त त्तरक्कि मारैच् चॊल्लुमित् पोमि नॅन्ऱाङ्
गेयित्त ववरॅ लामॅत् मन्दिरत् तुऱङ्गि यिऱ्ऱार् 1282

ऐय–आर्य; आ इटै–तब; अणङ्कित् कऱ्पुम्–भगवती का सतीत्व; निन् अरुळुम्–आपकी कृपा; चॅय्य–श्रेष्ठ; तूय–पवित्र; नल् अऱनुम्–अच्छा धर्म; ऍन्ऱु इन्नैयन–आदि ऐसे तत्त्व; तॊटर्नतु काप्प–निरन्तर रक्षा करते रहे; अरक्किमारै–राक्षसियों को (देख) उनसे; पोमिन्–जाओ; चॊल्लुमिन्–समझाकर कहो; ऍन्ऱु–कहकर; पोयिनन्–गया; एयिन–आज्ञापित; अवर् ऍलाम्–वे सब; ऍन् मन्तिरत्तु–मेरे जादू से; उऱङ्कि–सोकर; इऱ्ऱार्–निष्क्रिय रहीं। १२८२

तब, हे प्रभु ! भगवती का सतीत्व, आपका अनुग्रह और श्रेष्ठ व पवित्र सद्धर्म —ऐसे तत्त्वों ने देवी की रक्षा की और निरन्तर वे उनकी रक्षा करते रहे तो रावण ने राक्षसियों को बुलाकर आज्ञा सुनायी कि चलो। उसे सलाह दो। फिर वह चला गया। उससे आज्ञापित वे सब मेरे मंत्रित जादू के कारण जडवत् सो गयीं। १२८२

अन्नदोर् पॊऴुदि नङ्गै यारुयिर् तुऱप्प दाह
उन्निनळ् कॊडियॊन् ऱॆन्दिक् कॊम्बॊडु मुऱैप्पच् चुऱ्ऱित्
तन्मणिक् कळुत्तिऱ् चार्त्तु मळवैयिऱ् ऱडुत्तु नायेन्
पॊन्नडि वणङ्गि निन्ऱु निन्पॆयर् पुहन्ऱ पॊऴ्दिल् 1283

अन्नतु ओर् पॊऴुतिन्–ऐसे एक समय में; नङ्कै–देवी के; आर् उयिर्–प्राणों को; तुऱप्पतु आक–त्यागने का; उन्नितळ्–निश्चय करके; कॊटि ऒन्ऱु–एक लता को; एन्ति–पकड़कर; कॊम्पु ऒटुम्–शाखा से; उऱैप्प चुऱ्ऱि–दृढ़ रूप से लपेटकर; तन् मणि कळुत्तिल्–अपने सुन्दर गले में; चार्त्तुम् अळवैयिल्–लपेटते समय; नायेन्–दास मैं; तटुत्तु–रोककर; पॊन् अटि–(स्वर्ण-) सुन्दर चरण; वणङ्कि निन्ऱु–नमन करके खड़ा होकर; निन् पॆयर्–आपका श्रीनाम; पुकन्ऱ पॊऴ्तिल्–जब दुहराने लगा, तब। १२८३

उस समय नायिका देवी ने प्राणहत्या कर लेने का संकल्प करके एक लता को पकड़ा, उसे एक शाखा से खूब कसकर बाँधा। ज्योंही वे उसे अपने गले में लपेटने लगीं, त्योंही दास मैंने रोक लिया। उनके चरणों पर नमस्कार करके आपके श्रीनाम को दुहराने लगा। तब। १२८३

वञ्जनै यरक्कर् चॅय्है यामॆन मनक्कॊण् डेयुम्
अञ्जन वण्णत् तान्ऱन् पॆयरुरैत् तळिय वॆन्बाल्
तुञ्जुऱु पॊऴुदिऱ् ऱन्दाय् तुऱक्कमॆन् ऱुवन्दु चॊन्नाळ्
मञ्जन वण्णक् कॊङ्गै वऴिहिन्ऱ मऴैक्क णोराळ् 1284

मञ्चु अन–मेघ-सम; वण्ण कॊङ्कै–सुन्दर स्तनों पर; वऴिकिन्ऱ–गिरकर बहनेवाले; मऴै कण् नीराळ्–वर्षा के समान अश्रुजल-सहित देवी ने; वञ्चनै–वंचक; अरक्कर् चॅय्कै आम्–राक्षसों का काम; ऍन–ऐसा; मनक् कॊण्टेयुम्–मन में विचार करने पर भी; तुञ्चु उऱु पॊऴुतिल्–मरते समय; अळिय–दीना; ऍन्पाल्–मेरे पास; अञ्चन वण्णत्तान् तन्–अंजनवर्ण (श्रीराम) का; पॆयर् उरैत्तु–नाम जपकर; तुऱक्कम् तन्ताय्–स्वर्ग दिलाया तुमने; ऍन्ऱु–ऐसा; उवन्तु–हर्षित होकर; चॊन्नाळ्–कहा। १२८४

मेघों की वर्षा के समान उनकी आँखों ने अश्रुवर्षा बरसायी, जो उनके मनोरम स्तनों पर से होकर बहने लगी। ऐसी आँखों की देवी ने यह सोचा कि मेरा प्रकट होना वञ्चक राक्षस का ही काम है। तो भी उन्होंने हर्षाक्त स्वर में मुझसे कहा कि मरते समय दीना मेरे सामने आये और तुमने अंजनवर्ण श्रीराम का नाम जपकर मुझे स्वर्ग दिला दिया! । १२८४

अऱिवुऱत् तेऱच् चॊऩ्ऩ पेरडै याळम् यावुम्
शॅऱिवुऱ नोक्कि नायेऩ् शिन्दैयिर् ऱिरुक्क मिऩ्मै
मुऱिवऱ वॆण्णि वण्ण मोदिरङ् गाट्टक् कॊण्डाळ्
इऱुदियि ऩुयिर्दन् दीयु मरुन्दॊत्त दन्नैय दॆऩ्दाय् 1285

ऑऩ्ताय्–धाता; अऱिवु उऱ–बुद्धि में लगे और; तेऱ–साफ़ समझ जाए, ऐसा; चॊऩ्ऩ–मेरे कहे हुए; पेर् अटैयाळम् यावुम्–सभी प्रमुख अभिज्ञानों को; चॅऱिवु उऱ–गम्भीर रूप से ध्यान लगाकर; नोक्कि–देखकर; नायेऩ् चिन्तैयिल्–दास मेरे मन में; तिरुक्कम् इऩ्मै–कलुष का न रहना; मुऱिवु अऱ–पीछे बदलना न पड़े, ऐसा; ऍण्णि–विचार करके; वण्ण मोतिरम्–सुन्दर मणिमुँदरी को; काट्ट–मेरे दिखाने पर; कॊण्टाळ्–ग्रहण किया; अतैयतु–वह; इऱुतियिऩ्–अन्त काल में; उयिर् तनुतु ईयुम्–प्राणस्थापन के लिए दी जानेवाली; मरुन्तु–(मृत संजीवनी नाम की) औषध; ऑत्ततु–के समान बना। १२८५

धातादेव! मैंने उन्हें समझाते हुए जो प्रबल अभिज्ञान-वचन कहे, उन सब पर देवी ने ध्यान देकर सोचा। मेरे मन में कलुष नहीं था —यह बात उन्हें असंदिग्ध रूप में लगी। फिर मैंने आपकी श्रीअंगुलीयक को अभिज्ञान के रूप में दिखाया तो उन्होंने उसे ले लिया। वही अन्त काल में प्राणों को रोक रखनेवाली मृतसंजीवनी नामक औषध के समान बनी। १२८५

ऑरुकणत् तिरण्डु कण्डे ऩॊळिमणि याऴि यूऩ्ऱत्
तिरुमुलैत् तडत्तु वैत्ताळ् वैत्तलुञ् जॅल्व निऩ्बाल्
विरहमॆऩ् बदऩिऩ् वन्द वॆङ्गॊळुन् दीयि ऩाल्वॆन्
दुरुहिय दुडत्ते याऱि वलित्तदु कुळिर्प्पुळ् ळूऱ 1286

चॅल्व–भाग्यवन्त; ऑरु कणत्तु–एक ही पल के अन्दर; इरण्टु कण्टेऩ्–दो (विषय) देखे; ऑळि मणि आऴि–तेजोमय मणिमुँदरी को; ऊऩ्ऱ–खूब गड़ाकर; तिरु मुलै तटत्तु–श्रीस्तनतल पर; वैत्ताळ्–रख लिया (देवी ने); वैत्तलुम्–रखते ही; निऩ् पाल्–आपके; विरकम् ऍऩ्पततिऩ्–विरह से; वन्त–उत्पन्न; वॆम् कॊळुम् तीयिऩाल्–भयंकर और विपुल आग (ताप) से; वॆन्तु–गरम होकर; उरुकियतु–पिघला; कुळिर्प्पु–आशा की (हर्षोत्पन्न) शीतलता; उळ् ऊऱ–अन्दर होने से; उटत्ते–तुरन्त; आऱि–ठण्डा पड़कर; वलित्ततु–(पूर्ववत्) दृढ़ बना। १२८६

भाग्यवंत! एक ही समय में मैंने दो विचित्रताएँ देखीं। देवी ने तेजोमय मणिमुँदरी को अपने श्रीस्तनों के ऊपर रखा। रखते ही आपके

विरहताप रूपी विपुल तथा भयानक आग से वह गरम होकर पिघल गयी। पर तुरन्त, विश्वासजनित आन्तरिक सन्तोष की शीतलता ने उसे ठण्डा कर दिया और वह पूर्ववत् सुदृढ़ बन गयी। १२८६

वाङ्गिय वाळि तन्नै वञ्जरूर् वन्द दामॆन्
ऱाङ्गुयर् मळैक्क णीरा लायिरङ् गलश माट्टि
एङ्गिन ळिरुन्द दल्ला लियम्बल ळॆय्त्त मेनि
वीङ्गिनळ् वियन्द दल्ला लिमैत्तिल ळुयिर्प्पु विट्टाळ् 1287

वाङ्किय आळि तन्नै–गृहीत मुँदरी को; वञ्चर् ऊर्–वंचकनगर; वन्तताम्–आया है (अतः अपवित्र हो गया); ऍन्ऱु–सोचकर; आङ्कु–तब; उयर् मळैकण् नीराल्–उत्कृष्ट वर्षा-सम अश्रुजल के; आयिरम् कलचम्–सहस्र कलशों से; आट्टि–अभिषिक्त कर; एङ्कितळ्—दुःखाभिभूत होकर; इरुन्ततु अल्लाल्–चुप रहना छोड़कर; इयम्पलळ्–कुछ नहीं बोलीं; ऍय्तुत मेनि–कृश बना शरीर; वीङ्कित्तळ्–फूल उठा; वियन्ततु अल्लाल्–विस्मित रहना छोड़कर: इमैत्तिलळ्–पलकें नहीं गिरायीं; उयिर्प्पु विट्टाळ्–साँसें रोक लीं। १२८७

देवी ने हाथ में आयी मुँदरी के सम्बन्ध में सोचा कि यह वंचक लोगों के नगर में आयी है, अतः अपवित्र हो गयी है। इसलिए भावनाओं के कारण उत्कृष्ट बने, वर्षा-जैसे अपने सहस्रकलश-परिमाण में निकले अश्रुजल से उसे अभिषिक्त करा दिया। और वे चुप रहीं, पर बोलीं नहीं। कृश बना रहा शरीर फूला और वे विस्मय करती रहीं पर पलकें नहीं गिरायीं। उसी दशा में वे साँसें भी रोके रह गयीं। (सहस्रकलशाभिषेक शास्त्रोक्त पवित्रकारी क्रिया है।)। १२८७

अन्नवट् कडिये नुन्निऱ् पिरिन्दपि नडुत्त वॆल्लाम्
शॊन्मुऱै यऱियच् चॊल्लित् तोहैनी यिरुन्द शूळल्
इन्नदॆन् ऱऱिहि लामै यित्तुणै ताळ्त्त दॆन्ऱेन्
मन्ननिन् वरुत्तप् पाडु मुणर्त्तिनॆन् नुयिर्प्पु वन्दाळ् 1288

मन्न–राजा; अटियेन्–दास मेरे; उन्निल् पिरिन्त पिन्–आपसे छूटने के बाद; अटुत्त ऍल्लाम्–जो घटा वह सब; अन्नवट्कु–उन्हें; अऱिय–समझाते हुए; चॊल् मुऱै–कथनोचित रीति से; चॊल्लि–कहकर; तोकै–कलापी-सी देवी; इ तुणै–इतनी देर; ताळ्त्ततु–विलम्ब करना; नी–आपके; इरुन्त चूळल्–रहने का स्थान; इन्नततु–अमुक है; ऍन्ऱु–ऐसा; अऱिकिलामै–न जानने का फल है; ऍन्ऱेन्–(मैंने) कहा; निन् वरुत्तप्पाटुम्–आपका दुःख भी; उणर्त्तिनॆन्–बताया; उयिर्प्पु वन्ताळ्–साँसें छोड़ने लगीं। १२८८

महाराज! मैंने उन्हें सारा वृत्तान्त ठीक प्रकार से कह सुनाया, जो मुझ दास के आपसे अलग हो जाने के बाद घटा था। फिर मैंने समझाया कि मयूरनिभ देवी! इतना विलम्ब हुआ आपके रहने का स्थान न जानने के

कारण ही। मैंने आपके दुःख का हाल भी बताया। यह सुनने के बाद ही वे साँसें छोड़ने लगीं। १२८८

इङ्गुळ तऩ्मै यॅल्ला मियल्बुळि यियम्बक् केट्टाळ्
अङ्गुळ तऩ्मै यॅल्ला मडियॅऩुक् करियच् चॊऩ्ऩाळ्
तिङ्गळॊऩ् ऱिरुप्पॅ ऩॅऩ्ऱा ळऩ्ऩदु तीर्न्द पिऩ्ऩै
मङ्गुव दुण्मै यॅऩ्ऱुऩ् मलरडि शॅऩ्ऩि वैत्ताळ् 1289

इङ्कु–यहाँ; उळ–जो हैं; तऩ्मै ऍल्लाम्–उन सभी विषयों को; इयल्पुळि–यथा हैं, वैसे ही; इयम्प–मेरे कहने पर; केट्टाळ्–सुन लिया; अङ्कु उळ–वहाँ के रहनेवाले; तऩ्मै ऍल्लाम्–सभी वृत्तान्त; अटियॅऩुक्कु–मुझसे; अऱिय–समझाते हुए; चॊऩ्ऩाळ्–(देवी ने) कहा; तिङ्कळ् ऑऩ्ऱु–एक मास; इरुप्पॅऩ्–(जीवित) रहूँगी; ऍऩ्ऱाळ्–कहा; अऩ्ऩतु–उस (एक मास) के; तीर्न्त पिऩ्ऩै–बीत जाने के बाद; मङ्कुवतु–बुझ जाना; उण्मै–निश्चित है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उऩ् मलर् अटि–आपके कमल-चरण; चॅऩ्ऩि वैत्ताळ्–सिर पर धर लिये। १२८९

यहाँ के सारे हाल मैंने जो सुनाये, उन्होंने सुने। फिर उन्होंने वहाँ के सारे हाल साफ़-साफ़ बताकर कहा कि एक ही महीने जीवित रहूँगी। बाद मेरा जीवन-दीप बुझ जायगा —यह ध्रुव है। यह कहकर उन्होंने आपके कमल-चरण अपने सिर पर धर लिये (आपको नमस्कार किया)। १२८९

वैत्तपिऩ् ऱुहिलिऩ् वैत्त मामणिक् करशै वाङ्गिक्
कैत्तलत् तिऩिदि ऩॅऩ्दा डामरैक् कण्ग ळार
वित्तह काण्डि यॅऩ्ऱु कॊडुत्तऩऩ् वेद नऩ्ऩूल्
उय्त्तऩ काल मॅल्लाम् बुहऴॊडु मोङ्गि निऱ्पाऩ् 1290

वेत नल् नल्–श्रेष्ठ वेद-शास्त्रों द्वारा; उय्त्तत–निर्णीत; कालम् ऍल्लाम्–काल भर; पुकऴ् ऑटुम्–यश के साथ; ओङ्कि–मान में बढ़ता हुआ; निऱ्पाऩ्–जो रहेगा, उस हनुमान ने; वैत्तपिऩ्–रखने के बाद (नमस्कार करने के बाद); तुकिलिऩ् वैत्त–अपने वस्त्र में निहित; मा मणिक्कु अरचै–श्रेष्ठ मणियों में राजा चूडामणि को; वाङ्कि–(बन्धन खोल) लेकर; कै तलत्तु–मेरे हाथ में; इत्तिऩ् ईन्ताळ्–प्रेम के साथ दिया; वित्तक–बुद्धिसमर्थ; तामरै कण्कळ् आर–कमलनेत्र भर; काण्टि–देख लीजिए; ऍऩ्ऱु–कहकर; कॊटुत्तत्तऩ्–दिया। १२९०

श्रेष्ठ वेदों के बताये काल तक बढ़ते यश के साथ जो रहनेवाला है, उस चिरंजीव हनुमान ने आगे कहा। आपको नमस्कार करके देवी ने अपने वस्त्र में बाँध रखा हुआ चूडामणि निकाला। उन्होंने उसे मेरे करतल में रखा। बुद्धिसमर्थ! अपने कमलनेत्र भरकर आप देख लें। हनुमान ने चूडामणि श्रीराम के हाथ में दिया। १२९०

पैप्पयप् पयन्द कामम् बरिणमित् तुयर्न्दु पोङ्गि
मॆय्युऱ् वॆंदुम्बि युळ्ळम् मॆलिवुरु निलैयै विट्टान्
ऐयनुक् कङ्गि मुऩ्ऩ रङ्गैयाऱ् पऱ्ऱुम् नङ्गै
कैयॆऩ लायिऱ् ऱॆऩ्ऱे कैपुक्क मणियिन् काट्चि 1291

कै पुक्क–हस्तप्रविष्ट; मणियित् काट्चि–मणि का दृश्य; ऐयतुक्कु–प्रभु के लिए; अङ्कि मुऩ्ऩर्–(विवाह के समय) अग्नि के सामने; अम् कैयाल्–अपने सुन्दर हाथ से; पऱ्ऱुम्–(जिनको) ग्रहण किया; नङ्कै कै–उन देवी के हस्त; ऍऩल्–ऐसा; आयिऱ्ऱु–लगा; पयन्त–उससे जनित; कामम्–प्रेम; पै पय–धीरे-धीरे; परिणमित्तु–बढ़कर; उयर्न्तु–उठकर; पोङ्कि–उमड़कर; मॆय् उऱ–शरीर खूब; वॆतुम्पि–गरम होकर; उळ्ळम्–मन; मॆलिवु उरुम्–दुर्बल बनने की; निलैयै–स्थिति को; विट्टान्–छोड़ दिया। १२९१

जब वह चूडामणि श्रीराम के हाथ में आया, तब वह उन्हें देवी सीता के हाथ के समान लगा, जिसको उन्होंने विवाह के अवसर पर अपनी हथेली (मुट्ठी) के अन्दर कर लिया था। इससे मन में प्रेम उद्भूत हुआ, उठा, बढ़ा और उमगा। इससे शरीर का गरम होना और मन का दुर्बल होना आदि कष्ट दूर हो गये। १२९१

पॊडित्तन वुरोम मेन्मेऱ् पॊऴिन्दन कण्णीर् पोङ्गित्
तुडित्तन मार्बुन् दोळुन् दोन्ऱिन वियर्वित् तुळ्ळि
मडित्तदु मणिवा यावि वरुवदु पोव दाहित्
तडित्तदु मेनि यॆन्ने यारुळर् तन्मैत् तेर्वार् 1292

उरोमम्–रोम; पॊटित्तन–पुलकित हुए; कण् नीर्–अश्रुजल; पोङ्कि–उमड़कर; मेन् मेल्–उत्तरोत्तर; पॊऴिन्तन–बहा; मार्पुम् तोळुम्–वक्ष और कन्धे; तुटित्तन–फड़के; वियर्वित् तुळ्ळि–पसीने की बूंदें; तोन्ऱिन–प्रकट हो आयीं; मणि वाय्–सुन्दर अधर; मटित्ततु–मुड़े; आवि–साँसें; पोवतु वरुवतु आकि–जातीं-आतीं बनीं; मेनि–शरीर; तटित्ततु–फूल उठा; ऍन्ने–क्या (ही आश्चर्य); तन्मै तेर्वार्–स्थिति जाननेवाले; यार् उळर्–कौन हैं। १२९२

श्रीराम के रोम पुलकित हुए। आँखें डबडबा आयीं और उत्तरोत्तर अश्रुजल उमड़कर वर्षा के समान बहने लगा। भुजाएँ और वक्ष फड़क उठा। स्वेदकण प्रकट हुए। सुन्दर अधर मुड़े। साँसें तीव्र गति से निकलने और अन्दर आने लगीं। शरीर फूल गया। कैसा आश्चर्य! तब की उनकी स्थिति का वर्णन कौन परख कर सकेगा? । १२९२

आण्डेय ऩरुक्कन् मैन्द ऩैयहे ळरिवै नम्बाल्
काण्डलुक् कॊळिय ळाऩा ळॆन्ऱपिन् कालन् दाळ्
ईण्डिनु मिरुत्ति पोला मॆऩ्ऱऩ ऩॆन्ऱ लोडुम्
तूण्डिरण् डऩैय तोळान् पॊरुक्कॆऩ वॆळुन्दु शॊन्ऩान् 1293

आण्टैयन्–पास जो रहा; अरुक्कन् मैन्तन्–उस सूर्यसूनु ने; ऐय–प्रभु; केळ्–सुनिए; अरिवै–देवी; नम्पाल्–हमारे पास; काण्टलुक्कु–देखने (लाने) के लिए; ॲळियळ् आताळ्–सुलभ हो गयीं; ॲन्ऱ् पिऩ्–ऐसा हो जाने के बाद; कालम् ताऴ–समय बीत जाय; ईण्टु–(ऐसा) यहाँ; इऩुम् इरुत्ति पोल् आम्–अब भी रह जायँगे लगता है; ॲन्ऱऩऩ्–कहा; ॲन्ऱल् ओटुम्–कहते ही; तूण् तिरण्टु अऩैय–खम्भे स्थूल बने दिखते जैसे; तोळान्–भुजा वाले श्रीराम ने; पॊरुक्कु ॲन–झट; ॲऴुन्तु–उठकर; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। १२६३

तब सूर्यसूनु ने, जो पास रहा, निवेदन किया कि स्वामी! सुनिए। अब देवी हमारे पास देखी जायँगी। वे सुलभ हो गयी हैं। फिर व्यर्थ आप यहाँ और रहेंगे भी क्या? उसके ऐसा कहते ही खंभे-जैसे पुष्ट कंधों वाले श्रीराम ससंभ्रम उठे और बोले। १२९३

ॲऴहवॅम् बडैह ळॅऩ्ऱा ऩेयॆऩु मळवि लॅङ्गुम्
मुऴ्मुर शॅऱ्ऱिक् कॊऱ्ऱ वऴ्ळुवर् मुडुक्क मुऩ्दिप्
पॊऴिदिरै वेलै येऴुम् बुडैपरन् दॅऩ्ऩप् पॊङ्गि
वऴ्वलिल् वॅऴ्ळत् ताऩै तॅऩ्ऱिशै वळर्न्द दऩ्ऱे 1294

ॲऴुक–उठें; वॅम् पटैकळ्–सबल सेनाएँ; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा; ए ॲऩुम् अळविल्–'ए' कहने के समय के अन्दर; कॊऱ्ऱ वऴ्ळुवर्–विजयी "वऴ्ळुव" लोगों ने; ॲङ्कुम्–सर्वत्र; मुऴ् मुरचु–बड़ी-बड़ी भेरियाँ; ॲऱ्ऱि मुटुक्क–बजाकर स्वरित किया; पॊऴि तिरै–तरंग उठानेवाले; वेलै एऴुम्–सातों समुद्र; पुटै परन्तु–बाहर उमड़े आये; ॲऩ्ऩ–जैसे; वऴुवल् इल्–अमोघ; वॅऴ्ळ–बड़ी संख्या की; ताऩै–सेना; मुऩ्ति पॊङ्कि–पहले उठकर; तॅऩ् तिचै–दक्षिण दिशा में; वळर्न्ततु–बढ़ चली। १२६४

सबल सेनाएँ उठ आएँ! श्रीराम ने कहा। 'ए' अक्षर का उच्चारण करने के इतने समय के अन्दर विजयी भेरियाँ बजानेवाले 'वऴ्ळुव' जाति के लोगों ने सर्वत्र भेरियाँ बजाकर स्वरित किया। अमोघ वानर-सेनाएँ उठ के क्या आयीं, मानो तरंगायमान सातों समुद्र उमगकर फैल आये हों! वे पहले ही कूच कर दक्षिण दिशा में बढ़ चलीं। १२९४

वीररुम् विरैविऱ् पोऩार् विलङ्गऩ्मे लिलङ्गै वॆय्योऩ्
पेर्विलाक् कावर् पाडुम् बॅरुमैयु मरणुङ् गॊऱ्ऱक्
कार्निऱत् तरक्क रॆऩ्बोर् कणिदमुम् बिऱवु मॆल्लाम्
वार्हऴ लनुमन् शॊल्ल वऴिनॆडि दॊळिदिऱ् पोऩार् 1295

वीररुम्–वीर भी; विरैविल् पोऩार्–तेज चले; वार् कऴल् अनुमऩ्–लम्बी पायलधारी हनुमान के; विलङ्कऩ् मेल्–त्रिकूट पर्वत पर की; इलङ्कै–लंका के; वॆय्योऩ्–उष्णरश्मि; पेर्वु इला–जहाँ नहीं जा सकता, ऐसा; कावल् पाटुम्–सुरक्षा का प्रबन्ध और; पॆरुमैयुम्–बड़प्पन; अरणुम्–सुरक्षा-प्रबन्ध (गढ़ निर्माण आदि);

कौऱ्ऱ-विजयी; कार् निऱत्तु-काले रंग के; अरक्कर् अँतुपोर्-राक्षस नामक लोगों की; कणितमुम्-संख्या; पिऱवुम्-और अन्य विषय; ऍल्लाम्-सब; चॊल्ल-कहते हुए जाते; वऴि नॅटितु-लम्बा मार्ग; ऍळितिल्-अनायास; पोतार्-तय करते गये। १२६५

वीर श्रीराम और लक्ष्मण भी जाने लगे। लम्बी पायलधारी हनुमान भी उनके साथ त्रिकूट पर स्थित लंका नगर का ऐसा सुरक्षा-प्रबन्ध, जिससे सूर्य भी उसमें न जा पाये, उसके अन्य बड़प्पन, गढ़ आदि प्रबन्ध, काले रंग के विजयी राक्षसों की संख्या और अन्य समाचार सुनाता हुआ चला। वे ये सब सुनते हुए चले जा रहे थे। १२९५

अन्नॅऱि यिरणडु नाळि लङ्गदन् मुदलि नोर्हळ्
पॊन्नडि वणङ्गि नारॅप् पुहऴ्न्दुडन् पॊरुन्दिप् पोवार्
इन्नॅडुम् बऴुवक् कुन्ऱि लिन्नुऴि यिरुत्तुप् पिन्नर्
पन्निरु पहलिर् चॅन्रु तॅन्ऱिशैप् परवै कण्डार् 1296

अ नॅऱ्ऱि-उस मार्ग में; इरण्टु नाळिल्-दो दिनों में; अङ्कतन् मुतलित्तोर्कळ्-अंगदादि वीर; पॊन् अटि वणङ्कितार्-जिन्होंने अपने सुन्दर चरणों पर नमस्कार किया (उनकी); पुकऴ्न्तु-प्रशंसा करके; उटन् पॊरुन्ति-उनके साथ लगकर; पोवार्-जानेवाले; इन्-सुहावने; नॅटुम् पऴुव-विशाल बागों से पूर्ण; कुन्ऱिल्-पर्वतों पर; इन् उऴि-सुखद स्थानों में; इरुत्तु-ठहरकर; पिन्नर्-बाद; पन्निरु पकलिल्-बारह दिनों में; चॅन्ऱु-जाकर; तॅन् तिचै परवै-दक्षिण सागर को; कण्टार्-देखा। १२९६

उस मार्ग में दो दिन चलने के बाद अंगदादि वीर भी (जिन्होंने हनुमान को पहले खबर देने भेज दिया था) आकर श्रीराम आदि के चरणों पर नत हुए। सबने उनकी प्रशंसा की। फिर सब आगे चले। मार्ग में पर्वतों पर सुहावने बागों में ठहरते हुए वे बढ़े और उन्होंने बारह दिन चलकर दक्षिणी सागर को सामने देखा (वे सागर-तीर पर आ पहुँचे)। १२९६

॥ सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥

तमिळ

म्ब रामायण

युद्धकांड (पूर्वार्ध)

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।

श्रीराम-पञ्चायतन

कम्बन-मणिमण्डपम्

तमिळनाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन द्वारा स्थापित

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमर भारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिऴ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

अचलाद्रि चलायमान

कम्ब रामायण के तृतीय खण्ड में अपनी प्रस्तावना की पुनरावृत्ति कर रहा हूँ। शेषाद्रि के उपक्रम से सचमुच हिमाद्रि चलायमान हो गये। अचलायतन में ही सीमित न रहकर हिमञ्चल अब अञ्चल-अञ्चल की सैर करने लगे। तमिऴ रूपाम्बरा ने नागरी पटम्बर भी धारण कर लिया। तमिऴ का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिऴ-जन तक सीमित नहीं है। लेखन और उच्चारण, दोनों पद्धतियों पर उसका नागरी लिप्यन्तरण, शब्दार्थ और राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरल भावानुवाद, इसका अधिकांश प्रकाशित होकर अब न केवल तमिऴ प्रदेश, वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र तथा हिन्दी-जगत की सम्पत्ति बन चुकी है।

पृष्ठभूमि

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया। और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी लगभग ५००० पृष्ठ का यह वृहत् संस्करण सम्पूर्णप्राय है। वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी वृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी। वर्ष ८१-८२ में २००० पृष्ठों से अधिक में प्रकाशित होनेवाले युद्धकाण्ड की प्रथम जिल्द, वह भी पृष्ठ १०१६ में सम्पूर्ण होकर आपके सामने प्रस्तुत है। युद्धकाण्ड की दूसरी जिल्द भी तीव्रगति में [illegible]

[ ]। कुछ ही महीनों में इस प्रकार कम्ब रामायण का महाकाव्य पाँच [ख]ण्डों में नागरी-जगत में सम्पूर्ण कलाओं-सहित अवतरित हो जायगा। [इ]स आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम पुनः और बारम्बार [न]मन करते हैं। तमिऴ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन [म]हाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् [अ]नुवादक का अथक परिश्रम और ट्रस्ट के विद्वानों एवं शिल्पी कलाकारों [क]ा श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित [म]नोवृत्ति —इस बल पर ही हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने [मे]ं सफल हो सके हैं। इसलिए यह कथन उत्तरोत्तर चरितार्थ हो रहा है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये।

[ब]ालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई० [से] अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; [त]ब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की [स]म्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; [न]ागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) [के] सिर्जन से राष्ट्रलिपि का शृंगार; विशेष रूप से तमिऴ लिपि की [ज]टिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य [ति]० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' [की] भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिऴ ही नहीं, विश्व की सभी [ल]िपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन मूलोद्गम के मत [की] ओर संकेत भी किया गया है।

[ब]ालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू [न]ायडू; कम्बन्‌चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिऴनाडु के चीफ़् जस्टिस् [श्र]ी एम्० एम्० स्माइल; जस्टिस् श्री महाराजन; स्व० श्री के० सन्थानम् [आ]दि के प्राक्कथन; और सर्वोपरि, आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी [म]हाराज का सोल्लास आशीर्वाद —यह सब बालकाण्ड में अक्षरशः मुद्रित हैं।

[ब]ालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है। आवाज़ए ख़ल्क़, [न]क़्क़ारए ख़ुदा ! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-[द]क्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान

विलुप्त हो रही हैं। विशेष रूप से तमिळनाडु में तो, ग्रन्थ और ग्रन्थकार एवं ट्रस्ट के आजीवन न्यासी आचार्य ति० शेषाद्रि का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ है। एक स्थल पर, उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिळनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन !

अयोध्या-अरण्यकाण्ड

श्री प्रभुदास बी० पटवारी, तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत् कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं यत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा ॥" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छबि को निखारा है। गांधीयुग से अद्यावधि निरन्तर राष्ट्रसेवी तमिळनाडु के जाने-माने महापुरुष श्री ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिळनाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अयोध्या-अरण्यकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। २२ मार्च, सन् १९८१ के दिन, कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय बनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने—का—के—की आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर ग़ौर करना चाहिए। डॉ॰ शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुंजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी हैं। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी-जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिऴ-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको और अधिक कठिनाई प्रतीत होगी। इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें सहिष्णुता और उदारता से काम लेना चाहिए।

उसी प्रकार तमिऴभाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है। तमिऴ में, वे एक ही अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप तमिऴभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है। इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिऴ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया। अन्यथा आज के युग में वह, राष्ट्र की भाषा-समस्या में, अत्यन्त सहायक सिद्ध होती।

युद्धकाण्ड (पूर्वार्ध) में अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति॰ शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिऴभाषा और तमिऴकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिऴ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। प्रथम तीन जिल्दों के तारतम्य में, प्रस्तुत खण्ड (युद्धकाण्ड-पूर्वार्ध) में भी विद्वान् अनुवादक ने कारक तथा काल के रूप दिये हैं। सामान्यतः क्रियाओं में वे रूप अपनाये जा सकते हैं। विशेष ज्ञान के लिए जिज्ञासु पाठकों को व्याकरण का विशेष अध्ययन करना श्रेयस्कर है।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०१६ पृष्ठों का चतुर्थ खण्ड (युद्धकाण्ड-पूर्वार्ध) प्रस्तुत है। शेष पञ्चम खण्ड लगभग १०४८ पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। युद्धकाण्ड-उत्तरार्ध पर ग्रन्थ की समाप्ति है।

'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन—सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ-रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने, और सभी भारतीय भाषाओं को सारे राष्ट्र में प्रसारित करने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन। आशा है सम्पूर्ण जगत् हमारे इस उपक्रम को "गिलहरी का सेतुबन्धन" मानकर सहकार और अनुग्रह प्रदान करेगा।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट, सबने अब भूतल-भ्रमण बिचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

(तमिऴ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८०की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही को ग्रहण किया गया।

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिऴ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप ॆ ा ; ॆ ा हैं। देखिए पृष्ठ २४-२६ पर।

तमिऴ-देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ, ऴ	ள ळ
ற ऱ, ऱ़	ன ऩ, ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

अनन्त भाषा — संगीत माध्यम

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ।।

प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक
संत की वाणी।
सम्पूर्ण विश्व में
घर-घर है पहुँचानो ।।

विश्व-वाङ्मय से निःसृत
अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी पट सबने
अब भूतल-भ्रमण विचारा ।।

सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण और भाषा-सेतु-संस्थान के बाद भुवन वाणी ट्रस्ट की यह तीसरी योजना है। योजना मौलिक रूप में नयी और अद्वितीय होने के कारण, कुछ स्पष्टीकरण एवं दृष्टान्त प्रस्तुत करना आवश्यक है :—

१ "राधेश्याम रामायण", आरम्भ में यद्यपि विद्वानों द्वारा उपहास्य समझी गयी— ठीक उसी प्रकार जैसे तुलसी का मानस किसी समय विद्वानों द्वारा उपहास्य समझा गया था —फिर भी संगीत के मंजुल प्रवाह से गली-गली में अंशतः उसकी पंक्तियाँ गाती, सुनी जाने लगीं। और कुछ ही समय बाद, वह गली-गली का उद्वेग-उन्माद तो शान्त हो गया, किन्तु पौराणिक आख्यानों की रचना और गायन के लिए, एक "राधेश्याम तर्ज" को ही स्थायी तौर पर जनता ने अपना लिया।

२ उसी भाँति "नौटंकी"। तथाकथित भद्र समाज उससे पृथक् रहने का कितना ही प्रदर्शन करता रहा हो, एक समय था कि गली-गली में उसके चौबोले दिन-रात जन-मानस को आकर्षित करते थे। और अन्ततः हुआ वही कि गली-गली की आवाज़दानी भले ही बन्द हो गई, किन्तु उसने हिन्दी-अहिन्दी सर्वत्र असंख्य पिछड़े वर्ग-समूह को राष्ट्रभाषा की शिक्षा में प्रविष्ट कर दिया। विना शिक्षक के साक्षरता स्वतः पैठ गई।

३ वही हाल चल-चित्रपटों का रहा। आरम्भ में, सारे देश में गलियों में सिने-गीतों की विचित्र स्वरलहरी ८-१० वर्ष के बच्चों से लेकर वयस्कों तक के मुख से सब ओर सुनायी देती थी। और आज वह अशोभन रूप तो नदारद है, किन्तु सिनेमा सहस्रगुना बढ़कर जनजीवन का अंग बन गया है।

अस्तु, निष्कर्ष :—

उपर्युक्त दृष्टान्तों से, उचित-अनुचित की आलोचना नहीं, केवल यह मन्तव्य है कि संगीत वह माध्यम है, जो सारे भेद-विभेद मिटाकर

पशु-पक्षी-मानव, सबको अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है और कालान्तर में जन-जीवन में पैठ जाता है। आज भी "क़व्वाली" हो अथवा "जवाबी कीर्तन", दोनों जमघटों पर, विना वर्ग और समुदाय के भेद के, जनसमूह उमड़ता नज़र आयेगा।

यह भी विचारणीय है कि 'भाषा', देश की जटिल तो नहीं, किन्तु एक नाज़ुक समस्या बनती जा रही है। हमारे समीपी देश के विखण्डित हो जाने का मूल कारण 'भाषा' है। हमको सजग सावधान होकर चलना है। हिन्दी के अतिपक्षधरों का उन्माद, अन्य भाषाई क्षेत्रों पर उसकी प्रतिक्रिया, और निहित स्वार्थ वालों का इन दोनों की भ्रान्ति पर पंखा झलना —इनके फलस्वरूप हमारे राष्ट्र की एक-सांस्कृतिकता को विभिन्नता में विरूपित किया जा रहा है। हमारा क्या कर्तव्य है ?

अब लोक-विदित है कि भुवन वाणी ट्रस्ट की सकल भाषाओं के सानुवाद लिप्यन्तरण की विधा ने एक अति सफल समतल भूमि की सृष्टि कर दी है। भारतीय भाषाओं तक ही सीमित नहीं, धरातल का सभी प्रमुख वाङ्मय हिन्दीअनुवाद-सहित नागरी लिपि में उपलब्ध हो रहा है। भेद-विभेद को मिटाकर वह सकल मानव-सम्पत्ति बन रहा है।

अब हम उसी भेद को मिटाने के लिए अमृत रूपी संगीत की शरण लेने जा रहे हैं। सभी, और प्रमुखतः देश की सभी भाषाओं के पवित्र सद्ग्रंथों, रामायणों, सन्तवाणियों और राष्ट्रीय पद्यों को संगीत के माध्यम से यथासाध्य विविध भाषाई स्थलों के निवासियों में प्रविष्ट कराने की योजना "अनन्त भाषा—संगीत माध्यम" में हमने परियोजित की है। उदाहरणार्थ, हिन्दी के तुलसी-सूर; तमिळ के कम्बन; बँगला के संत कृत्तिवास, चण्डीदास; असम के माधवकंदली; ओड़िआ का वैदेहीशबिळास; गुजरात के नरसी मेहता; मराठी के सन्त एकनाथ और रंगनाथ रामायण के प्रणेता; कन्नड का हज़ारों वर्षों का ज्ञानभण्डार; राजस्थानी के वीर 'मंगळ काव्य'; तेलुगु का अनुपम पोतन्न भागवत; गुरूग्रंथ साहिब की वाणी; इसी प्रकार कश्मीरी, नेपाली, मलयाळम आदि देशी-विदेशी अनन्त सदाचार ग्रन्थों और वाणियों को नागरी लिपि और संगीत की स्वरलहरी के संयोग से एक-क्षेत्रीय नहीं, वरन् अखिलराष्ट्रीय सम्पत्ति बनावें। जनसमूह सबको ही अपना समझकर आनन्दमग्न हो जाय। हमारे विभ्रम, और निहित स्वार्थ वालों का भ्रमोत्पादन —यह व्यर्थ हो जाय। निजी क्षेत्रों में अपनी लिपियों में फूलें-फलें। नाद ब्रह्म है। संगीत में ही एक सूत्र, एक लय, एक ताल, एक रूप, एक रूह की अनुभूति कराने की क्षमता है।

लोगों को पता है कि सभी उत्तरी भाषाएँ एक संस्कृतभाषा की ही उपज हैं। रही दक्षिणी भाषाएँ, वे उपज नहीं तो संस्कृत शब्दावली से इतना ओतप्रोत हैं कि लिपि और संगीत के माध्यम से सारे देश में पैठ

सकती हैं। समझे, अध-समझे और बे-समझे— जनता के सभी वर्ग अनन्तभाषा-संगीत से मुग्ध और आकृष्ट होकर कालान्तर में समझदारी की ओर उन्मुख और प्रवृत्त होने लगेंगे।

"भाषासेतु-संस्थान" के साथ अथवा पृथक् "अनन्त भाषा—संगीत माध्यम" केन्द्र की स्थापना कीजिए। उसमें नानाभाषाई मञ्जुल पद्यों, नये-नये आख्यानों को गायन द्वारा जन-मानस में पैठाइए। एकभाषाई अथवा बहुभाषाई विद्वानों, संगीतज्ञों और प्रवचनकर्ताओं का सहयोग प्राप्त कीजिए। नाना ग्रन्थों और वाद्य-यन्त्रों का संग्रह कीजिए। योजना के प्रसार-विस्तार का यही आधार है।

हम यह बड़ा बोल नहीं बोलते कि हमारी यह अद्‌भुत योजना सारे भारत पर यक-बयक छा जायगी। किन्तु हमारी अब तक की सफल सेवा और निष्ठा में प्रबल आशा के अंकुर हैं कि हम उपर्युक्त दृष्टान्तों के अनुरूप विश्व में व्याप्त ब्रह्म-रूपी नाद के सहारे "अनन्त भाषा—संगीत माध्यम" की योजना के द्वारा एक-संस्कृति का परिलक्षण, अथवा अधिक से अधिक सांस्कृतिक समन्वय की उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान की कृपा, सदाशय श्रीमानों की सहायता, जनता-जनार्दन की सहज-प्रवृत्ति एवं शक्ति, और ट्रस्ट की निष्ठा एवं सेवा —इन सबके योग से राष्ट्रहित की साधना होगी।

मानद अलङ्करण

१ भाषासेतु रत्न

२ भाषासेतु रत्नाकर

३ भाषासेतु चक्रवर्तिन्

तदर्थ, भुवन वाणी ट्रस्ट के आजीवन न्यासी श्री रामाधीन सक्सेना (अवकाश-प्राप्त, उपसचिव उत्तर प्रदेश शासन) की अध्यक्षता में दक्षिण और उत्तर के विद्वानों की एक समिति गठित एवं नियुक्त की गयी है। उस समिति के द्वारा नागरी लिपि के माध्यम से सभी क्षेत्रीय भाषाओं को धरातलव्यापी बनाने; विद्या, शिल्प, कला; धन-जन का प्रभाव; प्रवचन-गायन-पाठ-पारायण; किसी भी प्रकार "भाषाई सेतुबन्धन" के जनान्दोलन को प्रगति देनेवाले महानुभावों को उनके योगदान के अनुरूप उपर्युक्त "मानद अलङ्करणों" से समलङ्कृत कर भुवन वाणी ट्रस्ट अपने को गौरवान्वित समझेगा।

"भाषासेतु संस्थान" — स्थापन विधि

भागीरथी प्रवहमान है, एक घाट आप भी स्थापित कीजिये ।

"भाषासेतु संस्थान" की रूपरेखा भुवन वाणी ट्रस्ट के मुखपत्र 'वाणी सरोवर' के अक्तूबर, १९८१ के अंक में प्रकाशित "विश्वभाषा सेतु संस्थान" लेख में स्पष्ट है। अब स्थल-स्थल पर "भाषासेतु संस्थान" किस प्रकार संस्थापित हों, इसकी विधा इस प्रकार है :—

१ एक 'शिलापट्ट' का आरोपण :—

भाषासेतु संस्थान

[स्थल का नाम व पता]

सम्पर्क-स्रोत — भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

२ उक्त संस्थान पर किसी साधु-सन्त, अवकाश-प्राप्त निश्चिन्त सद्गृहस्थ, अथवा समाजसेवी विद्वान् को ग्राम-स्थविर की भाँति प्रतिष्ठित करना चाहिए। वे ग्राम-स्थविर यदि स्वावलम्बी नहीं हैं, तो उस बस्ती के निवासी अथवा कोई समर्थ सम्पन्न जन उनके जीवन-निर्वाह की सादर-ससम्मान व्यवस्था करें।

३ नागरी लिपि में अन्य भाषाओं का लिप्यन्तरित और राष्ट्रभाषा में अनूदित सत्साहित्य का यथासाध्य संग्रह करें।

४ ग्राम-स्थविर दैनिक अथवा सामयिक अवसरों पर विभिन्न भाषाई सदाचार ग्रन्थों के पाठ-पारायण द्वारा वहाँ के जन-समुदाय में ज्ञानवर्धन करें; क्षेत्रीय भेद-भाव को दूर करें। नाना ग्रन्थों में वर्णित नये-नये आख्यानों को सुनकर जनता का ज्ञानवर्धन के साथ-साथ पवित्र मनोरञ्जन होगा।

५ विभिन्न भाषाओं की मूल पदावलियों को उनके सही उच्चारण में नागरी लिपि के माध्यम से पाठ अथवा गायन सुननेवालों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि जितना भेद वे क्षेत्रीय भाषाओं में समझते हैं, केवल लिपि का परदा हटते ही वे भाषाएं एक-दूसरे के उतनी ही सन्निकट हैं।

६ ज्ञात रहे कि ये "भाषासेतु-संस्थान" स्वैच्छिक, स्वतन्त्र और स्वावलम्बी होंगे। भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ उनका केवल प्रेरणास्रोत मात्र है।

७ इस वाणीयज्ञ के पुण्यवान होताओं अथवा यजमानों को 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा "मानद अलंकरण" से समलङ्कृत किया जायगा।

प्रतिष्ठाता— भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

अनुवादक की अवतरणिका

हम पिछले भागों में नियम से तमिऴ-व्याकरण के कुछ आवश्यक तत्त्व देते आये हैं। यों तो व्याकरण कुछ रोचक नहीं होता। और वह उतना आवश्यक भी नहीं। पर इसलिए हमने वह दिया कि तमिऴ के मूल शब्दों की पहचान हो। उसी सिलसिले में हम नीचे संज्ञाओं और क्रियाओं के सारे सम्भाव्य रूपान्तर देते हैं, ताकि अगर अन्य व्याकरण-भाग कुछ कठिन लगें और छोड़ भी दिया गया हो, तो इन पर एक नजर डाली जाय जिससे तमिऴ-भाग के शब्दों के मूल रूप को पहचानने में सुविधा होगी। इस खण्ड में व्याकरण का अंश समाप्त कर रहे हैं। अगले खण्ड अर्थात् युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) में अब व्याकरण का कोई अंश न दिया जायगा।

शब्द-साधन

कारक-चिह्न जब जोड़ा जाता है, तब संज्ञाओं में विकार आता है। वह विकार सन्धि-विधि के आधार पर बनता है। नीचे कुछ संज्ञाओं का रूपांतर दिया जाता है। उन्हें याद करने पर किसी भी संज्ञा की विभक्तियाँ आसानी से बनायी जा सकती हैं।

विभक्ति चिह्न	अकारांत	आकारांत	इकारांत	ईकारांत
पहली	मक (संतान)	कडा (बकरा)	शॅडि (पौधा)	तेऩी (मधुमक्खी)
दूसरी ऐ	मकवै	कडावै	शॅडियै	तेऩीयै
तीसरी आल्	मकवाल्	कडावाल्	शॅडियाल्	तेऩीयाल्
चौथी कु	मकवुक्कु	कडावुक्कु	शॅडिक्कु	तेऩीक्कु
पाँचवीं इरुन्तु	मकविलिरुन्दु	कडाविलिरुन्दु	शॅडियिलिरुन्दु	तेऩीयिलिरुन्दु
छठी उटय	मकविऩुडैय	कडाविऩुडैय	शॅडियिऩुडैय	तेऩीयिऩुडैय
सातवीं इल्	मकविल्	कडाविल्	शॅडियिल्	तेऩीयिल्
आठवीं ए	मकवे	कडावे	शॅडिये	तेऩीये

विभक्ति चिह्न	उकारांत	उकारांत	उकारांत	उकारांत
पहली	शिशु (शिशु)	मादु (स्त्री)	माडु (पशु)	शोऱु (भात)
दूसरी ऐ	शिशुवै	मादै	माट्टै	शोऱ्ऱै
तीसरी आल्	शिशुवाल्	मादाल्	माट्टाल्	शोऱ्ऱाल्
चौथी कु	शिशुवुक्कु	मादुक्कु	माट्टुक्कु	शोऱ्ऱुक्कु

पाँचवीं	इरुन्तु	शिशुविलिरुन्दु	मादिलिरुन्दु	माट्टिलिरुन्दु	शोऱ्ऱिलिरुन्दु
छठी	उटैय	शिशुविनुडैय	मातिनुडैय	माट्टिनुडैय	शोऱ्ऱिनुडैय
सातवीं	इल्	शिशुविल्	मादिल्	माट्टिल्	शोऱ्ऱिल्
आठवीं	ए	शिशुवे	मादे	माटे	शोऱे

विभक्ति	चिह्न	ऊकारांत	एकारांत	ऐकारांत	ओकारांत
पहली		पू (फूल)	ते (देव)	यानै (हाथी)	को (राजा)
दूसरी	ऐ	पूवै	तेवै	यानैयै	कोवै
तीसरी	आल्	पूवाल्	तेवाल्	यानैयाल्	कोवाल्
चौथी	कु	पूवुक्कु	तेवुक्कु	यानैक्कु	कोवुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	पूविलिरुन्दु	तेविलिरुन्दु	यानैयिलिरुन्दु	कोविलिरुन्दु
छठी	उटैय	पूविनुडैय	तेविनुडैय	यानैयिनुडैय	कोविनुडैय
सातवीं	इल्	पूविल्	तेविल्	यानैयिल्	कोविल्
आठवीं	ए	पूवे	तेवे	यानैये	कोवे

विभक्ति	चिह्न	हलन्त ण् (ह्रस्व के बाद)	हलन्त ण् (दीर्घ के बाद)	हलन्त म् (ह्रस्व के बाद)	हलन्त म् (दीर्घ के बाद)
पहली		पॅण् (लड़की)	आण् (नर)	अम् (प्रत्यय)	तोम् (अपराध)
दूसरी	ऐ	पॅण्णै	आणै	अम्मै	तोमै
तीसरी	आल्	पॅण्णाल्	आणाल्	अम्माल्	तोमाल्
चौथी	कु	पॅण्णुक्कु	आणुक्कु	अम्मुक्कु	तोमुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	पॅण्णिलिरुन्दु	आणिलिरुन्दु	अम्मिलिरुन्दु	तोमिलिरुन्दु
छठी	उटैय	पॅण्णिनुडैय	आणिनुडैय	अम्मिनुडैय	तोमिनुडैय
सातवीं	इल्	पॅण्णिल्	आणिल्	अम्मिल्	तोमिल्
आठवीं	ए	पॅण्णे	आणे	अम्मे	तोमे

विभक्ति	चिह्न	हलन्त य् (ह्रस्व के बाद)	हलन्त य् (दीर्घ के बाद)	हलन्त ऱ्	हलन्त ल् (ह्रस्व के बाद)
पहली		शॅय् (खेत)	शेय् (शिशु)	मलर् (फूल)	पल् (दाँत)
दूसरी	ऐ	शॅय्यै	शेयै	मलरै	पल्लै
तीसरी	आल्	शॅय्याल्	शेयाल्	मलराल्	पल्लाल्
चौथी	कु	शॅय्क्कु	शेय्क्कु	मलरुक्कु	पल्लुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	शॅय्यिलिरुन्दु	शेयिलिरुन्दु	मलरिलिरुन्दु	पल्लिलिरुन्दु
छठी	उटैय	शॅय्यिनुडैय	शेयिनुडैय	मलरिनुडैय	पल्लिनुडैय
सातवीं	इल्	शॅय्यिल्	शेयिल्	मलरिल्	पल्लिल्
आठवीं	ए	शॅय्ये	शेये	मलरै	पल्ले

विभक्ति चिह्न		हलन्त ल् (दीर्घ के बाद)	हलन्त ळ् (दीर्घ के बाद)	हलन्त ळ् (ह्रस्व के बाद)	हलन्त ळ् (दीर्घ के बाद)
पहली		पाल् (दूध)	कूळ् (माँड़)	मुळ् (काँटा)	तेळ् (बिच्छू)
दूसरी	ऐ	पालै	कूळै	मुळ्ळै	तेळै
तीसरी	आल्	पालाल्	कूळाल्	मुळ्ळाल्	तेळाल्
चौथी	कु	पालुक्कु	कूळुक्कु	मुळ्ळुक्कु	तेळुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	पालिलिरुन्दु	कूळिलिरुन्दु	मुळ्ळिलिरुन्दु	तेळिलिरुन्दु
छठी	उडैय	पालितुडैय	कूळिनुडैय	मुळ्ळिनुडैय	तेळिनुडैय
सातवीं	इल्	पालिल्	कूळिल्	मुळ्ळिल्	तेळिल्
आठवीं	ए	पाले	कूळे	मुळ्ळे	तेळे

विभक्ति चिह्न		हलन्त ऩ् (ह्रस्व के बाद)	हलन्त ऩ् (दीर्घ के बाद)	हलन्त म् (पूर्ण शब्द)
पहली		पॊऩ् (स्वर्ण)	माऩ् (हरिण)	मरम् (वृक्ष)
दूसरी	ऐ	पॊऩ्ऩै	माऩै	मरत्तै
तीसरी	आल्	पॊऩ्ऩाल्	माऩाल्	मरत्ताल्
चौथी	कु	पॊऩ्ऩुक्कु	माऩुक्कु	मरत्तुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	पॊऩ्ऩिलिरुन्दु	माऩिलिरुन्दु	मरत्तिलिरुन्दु
छठी	उडैय	पॊऩ्ऩिऩुडैय	माऩिऩुडैय	मरत्तिनुडैय
सातवीं	इल्	पॊऩ्ऩिल्	माऩिल्	मरत्तिल्
आठवीं	ए	पॊऩ्ऩे	माऩे	मरमे

सर्वनामों के सम्बन्ध में आठवीं विभक्ति नहीं होती

विभक्ति चिह्न		सर्वनाम	सर्वनाम	सर्वनाम
पहली		पल (अनेक)	अवै (वे)	ऍल्लाम् (सब) अपर वर्ग
दूसरी	ऐ	पलवऱ्ऱै	अवऱ्ऱै	ऍल्लावऱ्ऱैयुम्
तीसरी	आल्	पलवऱ्ऱिल्	अवऱ्ऱाल्	ऍल्लावऱ्ऱालुम्
चौथी	कु	पलवऱ्ऱिऱ्कु	अवऱ्ऱिऱ्कु	ऍल्लावऱ्ऱिऱ्कुम्
पाँचवीं	इरुन्तु	पलवऱ्ऱिलिरुन्दु	अवऱ्ऱिलिरुन्दु	ऍल्लावऱ्ऱिलिरुन्दुम्
छठी	उडैय	पलवऱ्ऱिऩुडैय	अवऱ्ऱिऩुडैय	ऍल्लावऱ्ऱिऩुडैयवुम्
सातवीं	इल्	पलवऱ्ऱिल्	अवऱ्ऱिल्	ऍल्लावऱ्ऱिलुम्

विभक्ति	चिह्न	सर्वनाम	सर्वनाम	सर्वनाम	सर्वनाम
पहली		ऍल्लारुम् (सभी) उच्चवर्ग	नाऩ् [याऩ्] (मैं)	नाङ्गळ् (हम)	नाम् (हम)
दूसरी	ऐ	ऍल्लारैयुम्	ऍऩ्ऩै	ऍङ्गळै	ऍम्मै
तीसरी	आल्	ऍल्लारालुम्	ऍऩ्ऩाल्	ऍङ्गळाल्	ऍम्माल्
चौथी	कु	ऍल्लारुक्कुम्	ऍऩक्कु	ऍङ्गळुक्कु	ऍमक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	ऍल्लारिलिरुन्दुम्	ऍऩ्ऩिलिरुन्दु	ऍङ्गळिलिरुन्दु	ऍम्मिडमिरुन्दु
छठी	उटैय	ऍल्लारुडैयवुम्	ऍऩ्ऩुडैय	ऍङ्गळुडैय	ऍम्मुडैय
सातवीं	इल्	ऍल्लारिलुम्	ऍऩ्ऩिल्	ऍङ्गळिल्	ऍम्मिल्

विभक्ति	चिह्न	सर्वनाम	सर्वनाम	सर्वनाम
पहली		नी (तू)	नीर् (तुम)	नीङ्गळ् (आप)
दूसरी	ऐ	उऩ्ऩै	उम्मै	उङ्गळै
तीसरी	आल्	उऩ्ऩाल्	उम्माल्	उङ्गळाल्
चौथी	कु	उऩक्कु	उमक्कु	उङ्गळुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	उऩ्ऩिडमिरुन्दु	उम्मिडमिरुन्दु	उङ्गळिडमिरुन्दु
छठी	उटैय	उऩ्ऩुडैय	उम्मुडैय	उङ्गळुडैय
सातवीं	इल्	उऩ्ऩिल्	उम्मिल्	उङ्गळिल्

विभक्ति	चिह्न	सर्वनाम	सर्वनाम	सर्वनाम
पहली		ताङ्गळ् (आप)	अवऩ् (वह, पुं०)	अवळ् (वह, स्त्री०)
दूसरी	ऐ	तङ्गळै	अवऩै	अवळै
तीसरी	आल्	तङ्गळाल्	अवऩाल्	अवळाल्
चौथी	कु	तङ्गळुक्कु	अवऩुक्कु	अवळुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	तङ्गळिडमिरुन्दु	अवऩिडमिरुन्दु	अवळिडमिरुन्दु
छठी	उटैय	तङ्गळुडैय	अवऩुडैय	अवळुडैय
सातवीं	इल्	तङ्गळिल्	अवऩिल्	अवळिल्

विभक्ति	चिह्न	सर्वनाम	सर्वनाम	निजवाचक एकवचन स्वयं
पहली		अदु (वह, नपुं०)	अवर्कळ् (वे)	ताऩ्
दूसरी	ऐ	अदै (अदऩै)	अवर्कळै	तऩ्ऩै
तीसरी	आल्	अदाल् (अदऩाल्)	अवर्कळाल्	तऩ्ऩाल्
चौथी	कु	अदऱ्कु	अवर्कळुक्कु	तऩक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	अदऩिडमिरुन्दु	अवर्कळिडमिरुन्दु	तऩ्ऩिडमिरुन्दु
छठी	उटैय	अदऩुडैय	अवर्कळुडैय	तऩ्ऩुडैय

सातवीं इल्	अदिल् (अदनिल्)	अवर्कळिल्	तन्निल्

विभक्ति	चिह्न	निजवाचक बहुवचन स्वयं	निजवाचक बहुवचन स्वयं
पहली		ताम्	ताङ्गळ्
दूसरी	ऐ	तम्मै	तङ्गळै
तीसरी	आल्	तम्माल्	तङ्गळाल्
चौथी	कु	तमक्कु	तङ्गळुक्कु
पाँचवीं	इरुन्तु	तम्मिडमिरुन्दु	तङ्गळिडमिरुन्दु
छठी	उटैय	तम्मुडैय	तङ्गळुडैय
सातवीं	इल्	तम्मिल्	तङ्गळिल्

क्रिया के रूपान्तर

१ 'कड' (पार कर) क्रिया के तीनों कालों के नौ-नौ रूप दिये जाते हैं।

२ अन्य ३३ क्रियाओं की पहली पंक्तियाँ दी जाती हैं। अन्य रूप इसको देखकर बनाये जा सकते हैं।

क्रिया (सामान्य रूप)	भूतकाल	वर्तमानकाल	भविष्यकाल
1 नान् (मैं) कड (पार कर)	कडन्देन्	कडक्किरेन्	कडप्पेन्
नाङ्गळ् (हम)	कडन्दोम्	कडक्किरोम्	कडप्पोम्
नी (तू, तुम)	कडन्दाय्	कडक्किराय्	कडप्पाय्
नीङ्गळ् (आप)	कडन्दीर्हळ्	कडक्किरीर्हळ्	कडप्पीर्हळ्
अवन् (वह, पुं०)	कडन्दान्	कडक्किरान्	कडप्पान्
अवळ् (वह, स्त्री०)	कडन्दाळ्	कडक्किराळ्	कडप्पाळ्
अवर्हळ् (वे, उभय० उच्चवर्ग)	कडन्दार्हळ्	कडक्किरार्हळ्	कडप्पार्हळ्
अदु (वह, अपर वर्ग)	कडन्ददु	कडक्किरदु	कडक्कुम्
अवै (वे, अपर वर्ग उभयलिंग)	कडन्दन	कडक्किन्रन	कडक्कुम्
2 ता (दो)	तन्देन्	तरुहिरेन्	तरुवेन्
3 पडि (पढ़ो)	पडित्तेन्	पडिक्किरेन्	पडिप्पेन्
4 पडि (विनय करो)	पडिन्देन्	पडिहिरेन्	पडिवेन्
5 ई (दो)	ईन्देन्	ईहिरेन्	ईवेन्
6 कॅडु [सकर्मक] (बिगाड़े)	कॅडुत्तेन्	कॅडुक्किरेन्	कॅडुप्पेन्

7 कॅडु [अकर्मक] (बिगड़)	कॅट्टेन्	कडुहिऱेन्	कडुवेन्
8 आडु (खेल)	आडिनेन्	आडुहिऱेन्	आडुवेन्
9 ऍऴु (उठ)	ऍऴुन्देन्	ऍऴुहिऱेन्	ऍऴुवेन्
10 तॊऴु (पूजा कर)	तॊऴुदेन्	तॊऴुहिऱेन्	तॊऴुवेन्
11 पू (खिल)	पूत्तेन्	पूक्किऱेन्	पूप्पेन्
12 वे (पक)	वॅन्देन्	वेहिऱेन्	वेवेन्
13 वै (रख)	वैत्तेन्	वैक्किऱेन्	वैप्पेन्
14 वै (गाली दो)	वैदेन्	वैहिऱेन्	वैवेन्
15 वरै (चित्र खींच)	वरैन्देन्	वरैहिऱेन्	वरैवेन्
16 मो (सूँघ या पानी उठा)	मोन्देन्	मोक्किऱेन्	मोप्पेन्
17 कौ (मुख से ग्रस)	कौविनेन्	कौवुहिऱेन्	कौवुवेन्
18 उण् (खा)	उण्डेन्	उण्गिऱेन्	उण्बेन्
19 ऍण् (गिन)	ऍण्णिनेन्	ऍण्णुहिऱेन्	ऍण्णुवेन्
20 शॅय् (कर)	शॅय्देन्	शॅय्हिऱेन्	शॅय्वेन्
21 शाय् [सकर्मक] (गिरा)	शाय्त्तेन्	शाय्क्किऱेन्	शाय्प्पेन्
22 शाय् [अकर्मक] (पीठ लगाकर आराम करना)	शाय्न्देन्	शाय्हिऱेन्	शाय्वेन्
23 शेर् [सकर्मक] (मिला)	शेर्त्तेन्	शेर्क्किऱेन्	शेर्प्पेन्
24 शेर् [अकर्मक] (पहुँच)	शेर्न्देन्	शेर्हिऱेन्	शेर्वेन्
25 कॊल् (मार)	कॊन्ऱेन्	कॊल्हिऱेन्	कॊल्वेन्
26 कल् (सीख)	कऱ्ऱेन्	कऱ्किऱेन्	कऱ्पेन्
27 शॊल् (कह)	शॊन्नेन्	शॊल्हिऱेन्	शॊल्वेन्
28 पुल् (आलिंगन कर)	पुल्लिनेन्	पुल्लुहिऱेन्	पुल्लुवेन्
29 आऴ् (मग्न हो)	आऴ्न्देन्	आऴ्हिऱेन्	आऴ्वेन्
30 आळ् (शासन कर)	आण्डेन्	आळ्हिऱेन्	आळ्वेन्
31 केळ् (पूछ या सुन)	केट्टेन्	केट्किऱेन्	केट्पेन्
32 तळ् (ढकेल)	तळ्ळिनेन्	तळ्ळुहिऱेन्	तळ्ळुवेन्
33 तिन् (खा)	तिन्ऱेन्	तिन्गिऱेन्	तिन्बेन्
34 पिन् (गूँथ)	पिन्निनेन्	पिन्नुहिऱेन्	पिन्नुवेन्

तमिऴ-उच्चारण—कुछ तत्त्व

[तमिऴ के व्यञ्जनों में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिऴ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिऴ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२है।

लब्धलिपि ह्रस्व:—अ इ उ ऍ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)	—	1 मात्रा
दीर्घ:—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
"आय्दम" (उपस्वर)—∴	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि ह्रस्व—ऐ और औ	—	1 मात्रा
ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
ह्रस्व—'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोट:—आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ लें और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं सधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अतः बाद के पदों में ऐ कै⋯आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षर) मूल १८ हैं

लब्धलिपि वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
मॅल्लॅऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ऴ ळ

अलब्धलिपि : ह, ग, ज, ड, द, ब। ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से वह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाहती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट—तमिळ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डु, पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम्— शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता। उदाहरण : अच्चु, पोऱ्चटै, वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद—संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै।
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्— मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन् मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पोऱ्पु। अन्यत्र यह 'ब' के समान ध्वनित है।

विशेष : न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं; जैसे—अरङ्गन्, इरामन्, उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तव उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण: अरम्—रेती; अऱम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और ऩ के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तव यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे— निन्पॆरुञ् को निन्बॆरुञ् पढ़ना चाहिए, पर निन्पॆरुञ् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर ज़ोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही वना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अत: इसमें कोई बड़ी ग़लती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलाकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक़्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

विषय-सूची

युद्धकाण्ड पूर्वार्द्ध

से लड़ना; लक्ष्मण का युद्ध करने आना; लक्ष्मण और राक्षस वीरों में लड़ाई; रावण का कोप करना; रावण-लक्ष्मण की लड़ाई; हनुमान का मूर्च्छा से जाग कर रावण के सामने जाकर विश्व-रूप लेकर खड़ा होना; हनुमान का रावण के वक्ष पर मुष्टिप्रहार करना; देवों का आनंद मनाना; रावण का मूर्च्छा से जागकर हनुमान की प्रशंसा करना; रावण के मुष्टिप्रहार से हनुमान का लड़खड़ा जाना; वानरों का पर्वतों को उठाकर फेंकना; रावण का उन्हें चूर-चूर कर देना; रावण का शर-वर्षा करना; लक्ष्मण का रावण का सामना करना; रावण की शक्ति-प्रहार से लक्ष्मण का मूर्च्छित होना; रावण का उन्हें उठाने का प्रयास करना; उनके असफल रहने पर हनुमान का उन्हें उठा ले जाना; श्रीराम का रावण के समक्ष जाना; श्रीराम का हनुमान के कंधों पर आरोहण करके लड़ना; राम-रावण-युद्ध; रावण का निरस्त्र रह जाना और श्रीराम का दया से 'आज जाकर कल आओ' कहना।

15 कुम्भकर्ण-वध पटल 534-685

रावण का नगर वापस आना; दूतों को कंचुकी द्वारा बुलवा लाना; सभी दिशाओं के राक्षसों को आज्ञा भेजना; रावण का दुःख; माल्यवान का प्रश्न और रावण का उत्तर; महोदर का ढाढ़स बंधाना; कुंभकर्ण को जगाने चार राक्षसों को भेजना; किंकरों का कुंभकर्ण को जगाने का प्रयास; कुंभकर्ण का जागना; कुंभकर्ण का आकार-प्रकार; कुंभकर्ण का रावण के पास आना; कुंभकर्ण को युद्ध का साज कराकर युद्ध में जाने को कहना; कुंभकर्ण का रावण को उपदेश देना; रावण का स्वयं उठना, कुंभकर्ण का उसे रोककर विदा लेना; चतुरंगिनी सेना का कूच; श्रीराम का कुंभकर्ण को देखकर विभीषण से पहचान मांगना; विभीषण का कुंभकर्ण के बारे में कहना; सुग्रीव का कुंभकर्ण को मिला लेने का सुझाव देना; श्रीराम की आज्ञा लेकर विभीषण का जाना और भाई को इस पक्ष में बुलाना; कुंभकर्ण का विभीषण का श्रीराम के पास आने की सलाह और तर्क देना; कुंभकर्ण का कारण बताकर इन्कार करना और विभीषण को राम-सह-वास का हित बताना; विभीषण का खेद-सहित विदा लेना; कुंभकर्ण का रक्तांसू बहाना; विभीषण का उत्तर सुनकर श्रीराम का विधि की प्रबलता मान लेना; दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ; कुंभकर्ण के सामने वानरों का निर्बल पड़ जाना; नील की हार के बाद अंगद का आकर टकराना; दोनों का संभाषण; अंगद की हार पर हनुमान का आना; हनुमान कुंभकर्ण की ललकार का संभाषण; हनुमान का चला जाना; लक्ष्मण का युद्ध; राक्षसों का लड़खड़ा जाना; कुंभकर्ण-लक्ष्मण का युद्ध; लक्ष्मण हनुमान के कंधों पर; दोनों का आपस में वाद-विवाद; युद्ध और दोनों का भूमि पर रहकर लड़ना; कुंभकर्ण का सुग्रीव से लड़ना; सुग्रीव पर कुंभकर्ण का शूल चलाना; हनुमान का बीच में आकर उसे तोड़ देना; कुंभकर्ण की हनुमान को ललकार और उसका लड़ने से अस्वीकार करना; सुग्रीव का बेहोश हो जाना और कुंभकर्ण का उसे लेते हुए लंका की ओर जाना; श्रीराम का लंका के द्वार पर आना और अस्त्रों की दीवार खड़ी कर देना; कुंभकर्ण का आक्रोश; श्रीराम का अस्त्र का प्रहार करना; सुग्रीव का होश में आकर बेहोश कुंभकर्ण की नाक और कान को काट ले आना; होश में आकर कुंभकर्ण का युद्ध में आना; जाम्बवान का श्रीराम से सावधान रहने की सलाह देना; श्रीराम का कुंभकर्ण से युद्ध करना; कुंभकर्ण का अकेले रह जाना; श्रीराम का पूछना कि अभी लड़ोगे या जाओगे; कुंभकर्ण का उत्तर; फिर दोनों में घोर तथा विविध युद्ध; क्रमशः कवच, हाथों और पैरों का कट जाना; कुंभकर्ण की प्रार्थना कि मुझे मार दो

और सिर को काटकर समुद्र में फेंक दो; श्रीराम का वैसा ही करना और देवों का आनन्द मनाना और रावण के पास दूतों का समाचार देने जाना।

16 माया-जनक पटल 686-728

रावण का महोदर से सीता-प्राप्ति का उपाय पूछना; महोदर का माया-जनक का उपाय बतलाना और रावण का अशोक वन में जाना; रावण का सीता से याचना करना; सीता का कड़े शब्दों में उत्तर देना; रावण का धमकी देना कि मैंने अयोध्या को वीर भेजे हैं; माया-जनक का प्रगट होना; सीता का अपार दुःख करना; रावण का फिर याचना करना; सीता का अस्वीकार करना और रावण का मारने को उठना; महोदर का रोकना और जनक द्वारा सीताजी को सलाह दिलाना; सीता का कोप करना और पिता को झिड़कना; कहना कि तुम मेरे पिता हो ही नहीं; रावण का माया-जनक की हत्या करने का प्रयास पर सीता का दृढ़ता से कहना कि रावण श्रीराम के अस्त्र से मर जायगा; महोदर का रोकना; दूतों का आकर कुंभकर्ण की मृत्यु का समाचार देना; रावण का प्रलाप; सीता का संतोष और रावण का क्रोध करके चला जाना; त्रिजटा का सीताजी को माया की बात कहकर समझाना।

17 अतिकाय-वध पटल 729-836

रावण का मंत्रियों पर गुस्सा उतारना; अतिकाय का युद्ध करने जाने की अनुमति माँगना; अतिकाय का जाना; कुंभकर्ण का रुण्ड देखकर दुःख करना; अतिकाय का लक्ष्मण को युद्ध में बुला लाने के लिए दूत महिष को भेजना; महिष का वानरों के हाथ फँस जाना; श्रीराम का छुड़ाना और बात जानकर लक्ष्मण को विदा देना; अतिकाय के चरित्र का विभीषण का कहना; मधु-कैटभ का चरित्र कहकर बताना कि मधु कुंभकर्ण था और कैटभ यह अतिकाय है; लक्ष्मण का लड़ने जाना; लक्ष्मण के युद्ध का वर्णन; दारुक का लक्ष्मण से भिड़ना और मरना; काल आदि का मरना; लक्ष्मण का राक्षस-सेना का नाश करना; गज-सेना का नाश; देवांतक-हनुमान का युद्ध और देवांतक का मरना; अतिकाय को हनुमान की ललकार; हनुमान का त्रिशिरा को मारना; अतिकाय का लक्ष्मण पर आक्रमण करने आना; अंगद के कंधों पर बैठकर लक्ष्मण का अतिकाय का सामना करना; दोनों में वाग्युद्ध–फिर अस्त्र-युद्ध; वायुदेव का लक्ष्मण को सलाह देना; लक्ष्मण का ब्रह्मास्त्र चलाकर अतिकाय को मारना; नरांतक की मृत्यु; युद्धमत्त का मरना; अन्य राक्षस वीरों का मरना; सुग्रीव-कुंभ का युद्ध; कुंभ की मृत्यु; अंगद-निकुंभ की लड़ाई; निकुंभ की मृत्यु; सेना का अस्त-व्यस्त हो जाना; रावण के पास जाकर दूतों का समाचार देना; रावण का दुःख तथा विक्षिप्त के से कार्य; अतिकाय की माता धान्यमालिनी का विलाप; उर्वशी और मेनका का उसे धीरज बंधाकर ले जाना; लंका भर में दुःख का छा जाना।

18 नागपाश पटल 836-963

राक्षसियों का रोना सुनकर इंद्रजित् का रावण के पास जाकर पूछना; रावण से समाचार जानकर इंद्रजित् का दावा करना; रावण का इंद्रजित् को युद्ध में जाकर लक्ष्मण को नागपाश से बाँधने को कहना; इंद्रजित् का सेना के साथ युद्ध के लिए कूच; लक्ष्मण का विभीषण से इंद्रजित् की पहचान माँगना; हनुमान, सुग्रीव आदि का लक्ष्मण के पास आ जाना; दोनों सेनाओं का आपस में युद्ध; वानर वीरों का युद्ध-कार्य; राक्षस-सेना का संकट देखकर इंद्रजित् का अकेले युद्ध करना; इंद्रजित्-हनुमान का संभाषण;

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

युद्धकाण्डम् (पूर्वार्ध)

कटवुळ् वाळ्त्तु (ईश्वर-स्तुति)

❀ ऑन्ड्रे यॅन्निन् ऑन्ड्रेयाम् पलवॅन्ड्रुरैक्किन् पलवेयाम्
अन्ड्रे यॅन्निन् अन्ड्रेयाम् आमे यॅन्तिन् आमेयाम्
इन्ड्रे यॅन्निन् इन्ड्रेयाम् इलदॅन्ड्रुरैक्किन् इलदेयाम्
नन्ड्रे नम्बि कुटिवाळ्क्कै नमक्किङ् गॅन्नो पिळैप्पम्मा

ऑन्ड्रे ऍन्निन्–एक ही कहो तो; ऑन्ड्रे आम्–एक ही है; पल ऍन्ड्रु–अनेक ऐसा; उरैक्किन्–कहो तो; पलवे आम्–अनेक ही हैं; अन्ड्रे ऍन्निन्–नेति कहो तो; अन्ड्रे आम्–न इति हैं; आमे ऍन्निन्–यही हैं कहो तो; आमे आम्–यही हैं; इन्ड्रे–नहीं हैं; ऍन्निन्–तो; इन्ड्रे आम्–नहीं हैं; उळतु–हाँ हैं; ऍन्ड्रु उरैक्किन्–ऐसा कहो तो; उळते आम्–हैं, हैं; नम्पि–नायक का; कुटि वाळ्क्कै–अस्तित्व चरित्र; नन्ड्रु–बड़ा भला (अनोखा) है; नमक्कु–हमें; इङ्कु–यहाँ; पिळैप्पु ऍन्नो–सफल-जन्म होना कैसे; अम्मा–मैया री।

(ईश्वर की व्यवस्थिति व्याख्या भी कितनी जटिल है !) एक मानो तो एक; अनेक मानो तो अनेक। नेति कहो (यानी ऐसा नहीं, ऐसा नहीं कहो) तो वैसे ही। हैं ही नहीं—कहो तो वे रहते ही नहीं। हैं, अवश्य हैं —इस पर विश्वास करो तो वे हैं। —उसी शब्द के अन्दर विद्यमान ! अखिल भुवननायक का अस्तित्व भी कितना विचित्र है। इनका बोध पाना और उद्‌गति प्राप्त करना कैसा होगा ? माँ री ! ।

1. कडल् काण् पडलम् (समुद्र-संदर्शन पटल)

ऊऴि तिरियुङ् गालत्तु मुलैया निलैय वुयर्किरियुम्
वाऴि वड्रा मऱिकडलुम् मण्णुम् वडपाल् वान्ड्रोयप्
पाऴित् तॅड्कुळ् ळन्पॊरुप्पुम् निलत्तुन् दाऴप् परन्वॅळ्ळुन्द
एऴु पत्तिन् पॅरुवॅळ्ळम् मकर वॅळ्ळत् तिरुत्तदाल् 1

ऊऴि–युगान्त में; तिरियुम् कालत्तुम्–जब सब विकृत हो नाश हो जाते हैं, उस समय में भी; उलैया निलैय–अचल रहनेवाले; उयर् किरियुम्–उन्नत (हिमाचल

आदि पर्वत और; वऱ्ऱा–कभी न सूखनेवाले और; मऱि कटलुम्–तीर से टकराकर फिरनेवाली तरंगों के सागर और; मण्णुम्–भूमि; वट पाल्–उत्तर की ओर; वान् तोय–आकाश छू जाएँ, ऐसा और; पाऴि–सुदृढ़; तॆऱ्कु उळ्ळत–दक्षिण में स्थित; पॊरुप्पुम्–पर्वत और; निलत्तुम्–भूमि; ताऴ–धँस जाएँ, ऐसा; परन्तु ऍऴुन्त–विस्तृत रूप से जो उठी; एऴु पत्तिन् पॆरु वॆळ्ळम्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की विराट् सेना; मकर वॆळ्ळत्तु–मकरालय जल के पास; इरुत्तत्तु–आकर रुकी। १

सत्तर वॆळ्ळम् संख्या की सेना दक्षिण की ओर चली तो उत्तर के युगान्त में भी अचल रहनेवाले अत्युन्नत पर्वत, कभी न सूखनेवाले और तीर से टकराती लहरों वाले सागर और भूमि सब आकाश को पहुँच गये। और दक्षिण के पर्वत और भूमि नीचे धँस गयी। इस भाँति वह अति विशाल सेना मकरालय के जल के तीर पर आ पहुँची। १

पॊङ्गिप् परन्द पॆरुञ्जेनै पुऱत्तु महत्तुम् बुडैशुऱ्ऱच्
चङ्गिऱ् पॊलिन्द तहैयाळैप् पिरिन्द पिन्बु तमक्किनमाम्
कॊङ्गिऱ् पॊलिन्द तामरैयिन् कुऴुवुन् दुयिल्वुऱ् ऱिदऴ्कुविक्कुम्
कङ्गुऱ् पॊऴुदुन् दुयिलाद कण्णन् कडलैक् कण्णुऱ्ऱान् 2

पॊङ्कि परन्त–अति विशाल; पॆरु चेनै–बड़ी सेना के; पुऱत्तुम् अकत्तुम्–बाहर, अन्दर सभी ओर; पुटै चुऱ्ऱ–घेरे रहते; चङ्किल्–शंख से भी बढ़कर; पॊलिन्त–पवित्र (उज्ज्वल); तकैयाळै–उत्तम देवी से; पिरिन्त पिन्पु–बिछुड़ने के बाद; तमक्कु इनमाम्–उनकी जाति के; कॊङ्किल् पॊलिन्त–शहद के साथ शोभायमान; तामरैयिन्–कमलों के; कुऴुवुम्–समूह भी; तुयिल्वुऱ्ऱु–सोते-से; इतऴ् कुविक्कुम्–(जब) दलों को बन्द कर लेते हैं; कङ्कुल् पॊऴुतुम्–उस रात के समय में भी; तुयिलात कण्णन्–न सोनेवाले नेत्रधारी श्रीराम ने; कटलै कण्णुऱ्ऱान्–समुद्र को देखा। २

बहुत विस्तृत सेना श्रीराम के चारों ओर घेरे हुए थी। शंख से भी पवित्र और श्रेष्ठ गुणों वाली सीताजी से बिछुड़ने के बाद श्रीराम कभी रात में भी नहीं सोये, जिसमें उनकी (आँखों की) जाति के शहद-सहित कमल-समूह भी सोते-से अपने दलों को बन्द कर लेते थे। ऐसे अनिद्र नेत्रों वाले श्रीराम ने समुद्र को देखा। २

शेय कालम् बिरिन्दहलत् तिरिन्दान् मीण्डुम् शेक्कैयिन्बाल्
मायन् वन्दा निन्विऴर्वा नॆन्ऱु करुदि वरुन्दॆन्ऱल्
तूयमलर्पो नुरैत् तॊहैयु मुत्तुञ् जिन्दिप् पुडैशुरुट्टिप्
पाय लुदऱिप् पडुप्पदे यॊत्त तिरैयिन् परप्पम्मा 3

तिरैयिन् परप्पु–तरंगों का विस्तृत सागर; चेय कालम्–लम्बे काल तक; पिरिन्तु अकल–बिछुड़कर चला गया; तिरिन्तान्–अकेले जो घूमते रहे; मायन्–वे विष्णु, श्रीराघव; चेक्कै इन्पाल्–शयन की इच्छा से; मीण्टुम्–फिर भी; वन्तान्–

आ पहुँचे; इति–अब; वळर्वान्–सोयेंगे; ऍन्ऱु करुति–ऐसा सोचकर; वरुम् तॆन्ऱल्–बहते आनेवाले मलयपवन के द्वारा; तूय मलर् पोल्–पवित्र पुष्पों को जैसे; नुरै तॊकैयुम्–फेन की राशियों और; मुत्तुम् चिन्ति–मोतियों को बिखेरकर; पायल् पुटै चुरुट्टि–शय्या को लपेटकर; उतऱि–पटकाकर; पटुप्पते ऑत्त–बिछाता-जैसे लगा; अम्मा–री माँ। ३

श्रीराम समुद्र से बिछुड़कर बहुत समय दूर भटकते रहे। अब वे शय्या की इच्छा से समुद्र के पास आ गये हों! आगे यहीं निद्रा में लग जायेंगे। इस विचार से वह तरंग-बहुल सागर बहते मलयपवन की सहायता से पवित्र फूलों के समान फेन-राशियों और मोतियों को बिखेरते हुए विष्णुदेव की शय्या को लपेट लेता और फटकार कर बिछाता जैसे लगा। ३

वऴिक्कुङ् गण्णी रऴुवत्तु वञ्जि यऴुङ्ग वन्दडुत्त
पऴिक्कुङ् गामन् पूङ्गणैक्कुम् पट्ऱा निन्ड्रान् पॊट्ऱोण्मेल्
शुऴिक्कुङ् गॊल्ल तूदुलैयिर् ऱुळ्ळुम् बॊऱियिऱ् चुडुमॆन्नो
कॊऴिक्कुङ् गडलि नॆडुन्दिरैवायत् तॆन्ऱल् तूऱ्ऱुङ् गुरुन्दिवलै 4

वऴिक्कुम्–बार-बार पोंछना पड़े, ऐसा बहनेवाले; कण्णीर् अऴुवत्तु–अश्रुसागर में; वञ्चि–लता-सी सीता; अऴुङ्क–मग्न रहीं; वनतु–(अतः) आकर; अटुत्त–लगी; पऴिक्कुम्–निन्दा का; कामन् पू कणैक्कुम्–मन्मथ के पुष्प-शरों का; पट्ऱा निन्ड्रान्–निशान जो बने रहे, उन श्रीराम के; पॊन् तोळ् मेल्–सुन्दर कन्धों पर; कॊऴिक्कुम् कटलिन्–आलोडित समुद्र की; नॆटु तिरै वाय्–ऊँची लहरों से; तॆन्ऱल्–मलयपवन (लाकर); तूऱ्ऱुम्–जो छिड़काता है; कुरु तिवलै–वे छोटी बूँदें; चुऴिक्कुम्–भँवरों के रूप में जलनेवाली; कॊल्लन्–लुहार की; ऊतु उलैयिल्–फूँकी हुई भट्ठी में; तुळ्ळुम्–उछल उठनेवाले; पॊऱियिल्–अंगारों के समान; ऍन्नो चुटुम्–न जाने क्यों गरम लगती हैं। ४

सीताजी की आँखों से इतना अश्रुजल बहता था कि बार-बार पोंछ लेना पड़े। लता-सी देवी ऐसे अश्रुजल-सागर में (दुःख में) मग्न रहीं। इसलिए श्रीराम को निंदा का निशाना बनना पड़ा और मन्मथ के सुमन-शरों का लक्ष्य भी। ऐसे श्रीराम के सुन्दर कन्धों पर मलयपवन विलोडित समुद्र की ऊँची लहरों से छोटी-छोटी जल की बूँदें ले आकर छिड़का रहा था। पर वे बूँदें लुहार की फूँकी भट्ठी से जिसमें आग घूमती जलती है, निकलनेवाले अंगारों के समान न जाने क्यों उन्हें जला रही थीं। (श्रीराम सागर के दामाद लगते हैं। अतः यह सत्कार है। पर फल?)। ४

नॆन्नर् कण्ड तिरुमेनि यिन्ऱु पिरिदाय् निलैतळर्वान्
तन्नैक् कण्डुम् इरङ्गादु तनियै कदरुन् दडङ्गडल्वायप्
पिन्नर् रिरैमेर् ऱुवळ्हिन्ऱ पिळ्ळैत् तॆन्ऱल् कळ्ळुयिर्क्कुम्
पुन्नैक् कुरुम्बू नरुञ्जुण्णम् बूशा दॊरुहार् पोहादे 5

नॆऩ्ऩल् कण्ट–कल का देखा हुआ; तिरु मेऩि–श्रीशरीर; इऩ्ऱु पिऱिदाय्–आज दूसरा लगता है; निलै तळर्वाऩ्–अस्वस्थ; तऩ्ऩै कण्टुम्–उनको देखकर; इरङ्कातु–आर्द्र जो न होता; तऩियॆ कतऱुम्–और जो अपने अकेले स्वर में चिल्लाता है; तट कटल् वाय्–उस विशाल सागर में; पिऩ्ऩल्–परस्पर संलग्न हो उठनेवाली; तिरै मेल्–लहरों पर; तवऴ्किऩ्ऱ–जो रेंगता जाता है वह; पिळ्ळै तॆऩ्ऱल्–बाल मलयपवन; कळ् उयिर्क्कुम्–शहद सरसानेवाले; पुऩ्ऩै कुऱुम् पू–पुन्नै (कदम्ब) के छोटे फूलों के; नऱुम् चुण्णम्–सुगन्धित मकरन्द को; ओरु काल् पूचातु पोकातु–एक बार भी बिना मले नहीं जाता। ५

विरह-ताप मे श्रीराम ऐसे घुलते जाते कि कल का देखा शरीर आज बदला हुआ दिखता। इस भाँति अस्वस्थ रहे वे। उनकी स्थिति देखकर समुद्र ने कोई सहानुभूति नहीं दिखायी। वह अपने मौज में शोर मचा रहा था। उस विशाल सागर की परस्पर संलग्न उठनेवाली लहरों पर जो मलयपवन रेंगता आया, वह मधु सरसानेवाले पुन्नै (कदंब ?) के छोटे और सुवासित फूलों के मकरन्द को ले आकर लगाता जाता। एक बार भी बिना उन पर मले आगे नहीं बहता। ५

शिलैमेऱ् कॊण्ड तिरुनॆड्ऩ्दोट् कुवमै मलैयुञ् जिऱिदेय्प्प
निलैमेऱ् कॊण्डु मॆलिहिऩ्ऱ नॆडियोऩ् ऱऩ्मुऩ् पटियेऴम्
तलैमेऱ् कॊण्ड कऱ्पिऩाळ् मणिवा यॆऩ्ऩत् तऩित्तोऩ्ऱिक्
कॊलैमेऱ् कॊण्डा रुयिर्कुडिक्कुम् कूऱ्ऱम् कॊल्लो कॊडिप्पवळम् 6

कॊटि पवळम्–लता का प्रवाल; चिलै मेल् कॊण्ट–धनु धारण करनेवाले; तिरु नॆटु तोट्कु–बड़े श्रीस्कन्ध को; मलैयुम्–मेरु पर्वत; उवमै चिऱितु एय्प्प–किंचित् उपमायोग्य बनी ऐसी; निलै–स्थिति; मेल् कॊण्टु–अपनाकर; मॆलिकिऩ्ऱ–घुलनेवाले; नॆटियोऩ् तऩ् मुऩ्–सम्मान्य श्रीराम के सामने; एऴु पटियुम्–सातों लोकों के वासी; तलै मेल् कॊण्ट–जिनको शिरसा वंद्य मानते हैं; कऱ्पिऩाळ्–सती श्रीसीतादेवी के; मणि वाय् ऎऩ्ऩ–सुन्दर अधरों के समान; तऩि तोऩ्ऱि–अलग दिखकर; कॊलै मेल् कॊण्टु–हत्या पर उतारू होकर; आर् उयिर् कुटिक्कुम्–श्रीराम के प्यारे प्राणों को पीने (हरने) वाला; कूऱ्ऱम् कॊल्लो–यम ही है क्या। ६

(समुद्र तट पर प्रवाल-वल्लरी फैली है) लता का प्रवाल उन श्रीराम के सामने जो इतने दुःखी है कि उनके कन्धों की जो मेरु पहले उपमा नहीं बन सका, वह अब कन्धों के कृश होने से किंचित उपमा बनने योग्य हो गया है; सातों लोकों द्वारा शिरोधार्य सती सीता के सुन्दर अधरों के समान प्रकट हुआ। क्या वह अलग प्रकट होकर हत्या के काम पर उतारू हो श्रीराम के प्यारे प्राणों का घातक बन गया। ६

तूर मिल्लै मयिलिरुन्द शूऴल् ऎऩ्ऱु मऩम्शॆल्ल
वीर विल्लिऩ् नॆडुमाऩम् वॆल्ल नाळम् मॆलिवाऩै

ईर मिल्ला निरुदरो डॅन्न वुरुवुण् डुत्तक्केळ्ळै
मूरत् मुरुवर् कुरिकाट्टि मुत्ते युयिरै मुडिप्पायो 7

मुत्ते–मोतियो; मयिल् इरुन्त चूळल्–मयूरनिभ सीता का रहने का स्थान; तूरम् इल्लै–दूर नहीं है; ॲन्रु–ऐसा; मनम् चॅल्ल–मन वहाँ जाता है; वीरम् विल्लिन्–वीरतासूचक धनु का; नॅट्ु मानम्–बड़ा गर्व; वॅल्ल–जीत जाता है; नाळुम्–दिने-दिने; मॅलिवानै–घुलनेवाले श्रीराम को; एळै–सीताजी के; मूरल्–दाँतों के; मुरुवल् कुरि–मन्दहास का आभास; काट्टि–दिखाकर; उयिरै मुटिप्पायो–प्राणों का अन्त करोगे क्या; उत्तक्कु–तुम्हारा; ईरम् इल्ला–निर्दय; निरुतरोटु–राक्षसों के साथ; ॲन्न उरवु उण्टु–कौन-सा सम्बन्ध है। ७

मोतियो ! मयूरनिभ सीताजी का रहने का स्थान दूर नहीं है, इस विचार से मन वहाँ जाने लगता है। पर वीरधनु की लाज उस त्वरा को जीत लेती है और जाने से रोक लेती है। इस भाँति दिने-दिने श्रीराम घुलते रहते हैं। उनके सामने अबला सीताजी के दाँतों पर खेलनेवाले मन्दहास की-सी छटा दिखाकर उनके प्राण हर लोगे क्या ? ऐसा करने के लिए निर्दय राक्षसों से तुम्हारा नाता क्या रहा ? । ७

इन्दु वन्न नुदर्पेदै यिरुन्दाळ् नीङ्गा विडर्कॊडियेन्
तन्द पावै तवप्पावै तनिमै तहवो वॅन्नत्तळर्न्दु
शिन्दु हिन्र नरुन्दाळक् कण्णीर् तदुम्बित् तिरैत्तॆळुन्दु
वन्दु वळ्ळल् मलर्त्ताळिन् वीळ्व देय्क्कु मरिकडले 8

मरि कटल्–तीर से टकराकर लौटनेवाली तरंगों का सागर; कॊटियेन्–क्रूर मैंने; तन्त पावै–जिसको पाया वह प्रतिमा-सी सुन्दरी; तवम् पावै–तपःपूत देवी; इन्तु अन्न नुतल्–चन्द्र-सम भाल वाली; पेतै–अबोध सीता; नीङ्का–निरन्तर; इटर् इरुन्ताळ्–संकट में पड़ी रहीं; तनिमै तकवो–(पति से) अलग रहना युक्त है क्या; ॲन्न–ऐसा; तळर्न्तु–दुःखी होकर; चिन्तुकिन्र–जो गिराता है; नरु तरळम् कण्णोर्–श्रेष्ठ मोतियों के समान आँसू की बूँदें; ततुम्पि–बहुत मिलकर; तिरैत्तु ॲळुन्तु–लहरों के रूप में उठकर; वन्तु–आकर; वळ्ळल् मलर् ताळिल्–उदार प्रभु श्रीराम के कमल-चरणों पर; वीळ्वतु एय्क्कुम्–गिरता हो जैसा है। ८

समुद्र की तरंगें उठती हैं और तीर से जाकर टकराती हैं और मुड़ जाती हैं। वह समुद्र यह सोचकर कि पापी मेरी जनायी चित्रप्रतिमा-सी तपःपूत सीता, इन्दु-सम ललाटिनी, अबला अमिट संकट से ग्रस्त है और उसका यह विरह युक्त है क्या ? नन मारकर छितरनेवाले श्रेष्ठ मोतियों रूपी आँसू के कणों से भरकर लहरों के रूप में उठकर करुणानिधान के कमल-चरणों पर गिरता हो, ऐसा लगता है। ८

पळ्ळि यरविर् पेरुलहम् पशुङ्गल् लाहप् पनिक्करुरै
तुळ्ळि नरुमॅन् पुनलॆळिप्पत् तूनीरक् कुळवि मुरैशुळरि

वॅळ्ळि वण्ण नुरॅक्कलवै वॅदुम्बु मण्णल् तिरुमेनिक्
कळ्ळि यप्पत् तिरॅक्करत्ता लरॅप्प देय्क्कु मणियाऴि 9

अणि आऴि–सुन्दर समुद्र; पळ्ळि अरविल्–(विष्णु की) शय्या (आदिशेष) नाग के सिर पर का; पेर् उलकम्–बड़ा लोक; पचुम् कल् आक–काला सिल बना; पनि कट्रै–हिमराशि की; तुळ्ळि–बूँदें; नरु मॅल् पुनल्–श्रेष्ठ सुगन्धित जल को; तॅळिप्प–(हवा) छिड़काती है; तू नीर्–स्वच्छ जल को; कुळवि मुरॅ चुळट्रि–बेलन बनाकर घुमाता चलाकर; वॅळ्ळि वण्णम्–श्वेत वर्ण; नुरॅ कलवै–फेन रूपी चन्दन-लेप को; वॅतुम्पुम् अण्णल्–(विरह-) तप्त प्रभु के; तिरु मेनिक्कु–श्रीशरीर पर; अळ्ळि अप्प–लेकर मलने के लिए; तिरॅ करत्ताल्–लहरों के हाथों से; अरॅप्पतु–पीसता हो; एय्क्कुम्–जैसे लगता है। ६

(अणि आऴि =) मनोरम समुद्र (या मणि आऴि–रत्नाकर) श्रीराम के विरहतप्त शरीर पर चन्दन मलना चाहता है। विष्णु की श्रीशय्या जो सर्पराज है, उस पर वृत भूमि ही सिल है। हवा हिमराशि की सुवासित बूँदों को उस पर डालकर पीसने में मदद देती है। स्वच्छ जल ही बेलन है। समुद्र उसको घुमा-घुमाकर चलाता है और रजतवर्ण फेन ही चन्दन का लेप है। इस भाँति समुद्र श्रीराम के शरीर पर मलने के लिए चन्दन पीस रहा है! । ९

कॊङ्गॆक् कुयिलैत् तुयर्नीक्क विमैयोर्क् कुट्र कुरॆमुट्र
वॆङ्गॆच् चिलैयत् तूणियिनन् विडादु मुनिवन् मेट्चॆल्लुम्
गङ्गॆत् तिरुना डुडैयानॆक् कण्डु नॆञ्जङ् गळिकूर
अङ्गॆत् तिरळ्ह ळॊटुत्तोडि यार्प्प देय्क्कु मणियाऴि 10

अणि आऴि–सुन्दर सागर; कॊङ्कॆ कुयिलॆ–स्तनयुक्त कोयल (-सी) सीता का; तुयर् नीक्क–दुःख दूर करने; इमैयोर्क्कु उट्र–देवों को प्राप्त; कुरॆ मुट्र–हीनता को दूर करने; कॆ–हाथ में लिये गये; वॆम् चिलैयन्–कठोर धनु वाले; तूणियिनन्–तूणीरधारी; विटातु–अमिट; मुनिविन्–क्रोध के साथ; मेल् चॆल्लुम्–शत्रुओं पर चढ़ जानेवाले; कङ्कॆ तिरुनाटु–गंगाजलसिंचित देश के; उटैयानॆ कण्टु–स्वामी को देखकर; नॆञ्चम् कळि कूर–मन में हर्ष के बढ़ते; अम् कॆ तिरळ्कळ्–मनोहर लहरों रूपी हाथों को; ऎटुत्तु ओटि–उठाते हुए भागता आकर; आर्प्पतु एय्क्कुम्–उत्साह का शोर मचाता जैसे (लगता) है। १०

(या) रत्नाकर आनन्दातिरेक से हाथ उठाकर आनन्दनर्दन करता-सा भी लगा। स्तनयुक्त कोयल (-सी) सीता का दुःख और देवों की शिकायतें दूर करने के निमित्त, हाथ में कठोर कोदण्ड लेकर और तूणीर बाँधकर श्रीराम उत्तरोत्तर बढ़नेवाले कोप के साथ शत्रु पर चढ़ आये थे। उन गंगाजल-सिंचित श्रीयुक्त प्रदेश के स्वामी को देखकर उमगते आनन्द से पूरित मन के साथ मनोरम लहरों रूपी हाथों को ऊपर उठाकर भागते आते हुए शोर मचाता जैसा है रत्नाकर। १०

इऩ्ऩ दाय करुङ्गडलै येय्दि यिदऩुक् कॅळुमडङ्गु
तऩ्ऩ दाय नॅडुमाऩऩ् दुयरम् काद लिवॅतळॅप्प
अॅऩ्ऩ दाहु मेल्विळॅवॅऩ् ऱिरुन्दा तिराम ऩिहलिलङ्गैप्
पिऩ्ऩ दाय कारियमुम् निहऴ्न्द पॊरुळुम् बेशुवाम् 11

इरामऩ्-श्रीराम; इऩ्ऩतु आय-ऐसे; करु कटलै-काले सागर पर; ॲय्ति-पहुँचकर; इतऩुक्कु एऴु मटङ्कु-इसके सात गुना; तऩ्ऩतु आय-अपना जो रहा; नॅटु मातम्-अधिक मान; तुयरम्-दुःख और; कातल्-प्रेम; इवॅ तळॅप्प-इनके वर्धित होते; मेल् विळॅवु-आगे का होनेवाला कार्य; ॲऩ्ऩतु आकुम्-क्या होगा; ॲऩ्ऱु-ऐसा; इरुन्ताऩ्-विचार करते रहे; इकल्-शत्रुता से विपरीत बनी; इलङ्कै-लंका में; पिऩ्ऩतु आय-जो बाद को हुआ; कारियमुम्-वह कार्य और; निकऴ्न्त पॊरुळुम्-जो चला वह वृत्तान्त; पेचुवाम्-कहेंगे। ११

ऐसे काले (नील) समुद्र के तीर पर पधारे श्रीराम। इस समुद्र से सात गुना अधिक लाज का अनुभव, दुःख और प्रेम उनके अन्दर कोलाहल मचा रहे थे। वे यह सोचते हुए ठहरे रहे कि आगे क्या कार्य हो? तब शत्रुता के कारण विपरीत बनी लंका में पहले क्या हुआ, पीछे क्या बातें हुईं —यह सब हम अब बखानेंगे। ११

2. इरावणऩ् मन्दिरप् पडलम् (रावण-मन्त्रणा पटल)

❀पूवरु मयऩॊडुम् पुहुन्दु पॊऩ्ऩहर्, मूवहै युलहिनु मऴहु मुऱ्ऱुर
एवित्त वियऱ्ऱिऩऩ् कणत्ति नॅऩ्बराल्, तेवरु मरुळ्हॊळत् तॅय्वत् तच्चते 12

तॅय्व तच्चऩ्-देवशिल्पी मय ने; पू वरुम् अयऩॊटुम्-नाभिकमल से उत्पन्न अज के साथ; पॊऩ् नकर् पुकुन्तु-स्वर्ण नगरी लंका में प्रविष्ट होकर; मूवकै उलकितुम्-त्रिविध लोकों से अधिक; अऴकु मुऱ्ऱुर-सुन्दरता में बढ़े हुए; तेवरुम् मरुळ् कॊळ-देवों को भी चकित होने देते हुए; एवित्त-(रावण की) आज्ञानुसार; कणत्तिऩ् इयऱ्ऱिऩऩ्-एक क्षण में रच लिया; ॲऩ्पर्-(लोग) कहते हैं। १२

कहा जाता है कि देवशिल्पी मय श्रीविष्णु के नाभिकमल से उद्भूत ब्रह्माजी के साथ लंका में आया। उसने लंका का पुनर्निर्माण ऐसे मनोरम रीति से कर दिया कि वह सम्पूर्ण रूप से सुन्दर लगा, त्रिलोकों में कोई भी स्थान उसका सानी नहीं रख सकता था और देव भी उसे देखकर भ्रमित हो जाते थे। १२

❀पॊऩ्ऩिऩु मणियिऩुम् पुऩैन्द पॊऱ्पुडै
नऩ्ऩहर् नोक्किऩा ऩाहम् नोक्किऩाऩ्
मुऩ्ऩैयि ऩॊऴुहुडैत् तॅऩ्ऱु मॊय्हॊऴ्ल्
मऩ्ऩवऩ् मुवन्दुतऩ् मुऩिवु माऱ्ऱिऩाऩ् 13

मोय् कऴल्–सुदृढ़ पायलधारी; मन्ननुम्–राक्षस राजा ने भी; पॊन्निनुम् मणियिनुम्–स्वर्ण और रत्न से; पुनैन्त–निर्मित; पॊऱ्पुटै–शोभायमान; नल् नकर् नोक्किनान्–अच्छे नगर को देखा; नाकम् नोक्किनान्–स्वर्ण (देवपुरी) को भी देखा; मुन्नैयिन् अऴकुटैत्तु–पहले से सुन्दर है; ऎन्ऱु–सोचकर; उवन्तु–हर्षित होकर; तन् मुनिवु–अपना क्रोध; माऱिनान्–शान्त कर लिया। १३

वीरोचित पायलधारी राक्षस राजा ने स्वर्ण तथा रत्ननिर्मित उस नगर को देखा और स्वर्णनगर से उसकी तुलना की। लंका पहले से ही अधिक सुन्दर थी। यह देखकर रावण हर्षित हुआ और उसका कोप शान्त हुआ। १३

मुऴुप्पॆरुन् दिरुनहर् उलहिन् मुन्दैयोन्
ऎऴिऱ्कुऱि काट्टिनिन् ऱियऱ्ऱि यीन्दनन्
पऴिप्परु मुलहङ्ग ळॆवैयुम् बन्मुऱै
अऴित्तऴित् ताक्कुवाऱ् करिदुण् डाहुमो 14

उलकिन् मुन्तैयोन्–लोकों का पुरातन पुरुष; ऎऴिल् कुऱि काट्टि–सुन्दरता की सीमा दिखाते हुए; मुऴु–पूर्ण; पॆरु–बड़ा; तिरुनकर्–श्रीनगर; निन्ऱु इयऱ्ऱि–सावधानी से निर्मित करके; ईन्तनन्–(ब्रह्मा ने) दिया; पऴिप्पु अरुम्–निर्दोष; उलकङ्कळ् ऎवैयुम्–सारे लोकों को; पल् मुऱै–अनेक बार; अऴित्तु–मिटा-मिटाकर; आक्कुवाऱ्कु–सृष्ट करनेवाले को; अरितु–कठिन; उण्टाकुमो–कुछ होगा क्या। १४

लोकों के सबसे पुरातन पुरुष ब्रह्मा ने सुन्दरता की सीमा दिखायी और बहुत सावधानी से सम्पूर्ण सुन्दर वह श्रेष्ठ नगरी रची। वे तो निर्दोष लोकों को बार-बार मिटाकर नये सिरे से बनाने के अभ्यस्त थे। उन्हें कठिन क्या है? । १४

❀ तिरुनहर् मुऴुवदुन् दॆरिय नोक्किनान्
पॊरुहऴ लिरावण नयऱ्कुप् पूशनै
वरन्मुऱै यियऱ्ऱिनी वऴिक्कॊळ् वायॆन्ऱान्
अरियन तच्चऱ्कु मुदवि याणैयान् 15

पॊरु कऴल्–युद्धपायलधारी; इरावणन्–रावण ने; तिरु नकर् मुऴुवतुम्–श्रीनगर को पूर्ण रूप से; तॆरिय नोक्किनान्–ध्यान देकर आजमाया; आणैयाल्–आज्ञा देकर; तच्चऱ्कुम्–शिल्पी को; अरियन उतवि–बहुत मूल्यवान वस्तुएँ (भेंट) दिलाकर; अयऱ्कु–ब्रह्मा की; वरन् मुऱै–यथाक्रम; पूचनै इयऱ्ऱि–पूजा सम्पन्न करके; नी वऴि कॊळ्वाय्–मार्ग लें; ऎन्ऱान्–वह आज्ञा देकर विदा किया। १५

युद्धपायलधारी रावण ने मय-अज-निर्मित नगरी आजमायी। फिर आज्ञा सुनाकर देवशिल्पी को बहुमूल्य चीज़ें भेंट करायीं और ब्रह्माजी की यथोचित पूजा की और उन्हें विदा कराया। १५

❀ अव्वऴि यायिर मयि रम्मविर्, शॅव्वऴिच् चॅम्मणित् तूणञ् जेर्त्तिय
अव्वॅऴिल् मण्डबत् तरिह ळेन्दिय, वॅव्वऴि याशनत् तिनि्दु मेयिन्नात् 16

अव्वऴि–तब; आयिरम् आयिरम्–दस सहस्र; अविर् चॅव्वऴि–छिटकती सुन्दरता के; चॅम्मणि तूणम्–लाल रत्नमय खम्भे; चेरत्तिय–जहाँ खड़े थे; अ ॲऴिल् मण्टपत्तु–उस आकर्षक मण्डप में; अरिकळ् एन्तिय–सिंहों के धृत; वॅव्वऴि आचनत्तु–शानदार आसन पर; इनितु मेयिनान्–सुख से आसीन था। १६

तब रावण उस मण्डप के सिंहासन पर जाकर आराम से बैठा, जिसमें दस-दस सहस्र पद्मरागरत्नमय खंभे खड़े किये गये थे। १६

❀ वरम्बरु शुर्रमुम् मन्दि रत्तॊऴिल्
निरम्बिय मुदियरुञ् जेनै नीळ्कऴल्
तरम्बॅरुन् दलैवरुम् तऴुवत् तोन्ऱिनान्
अरम्बैयर् कवरियो डाडुन् दारिनान् 17

अरम्पैयर् कवरियोटु–अप्सराओं के (द्वारा डुलाये गये) चँवर के साथ; आटुम् तारिनान्–हिलनेवाली मालाधारी; वरम्पु अरु–सीमाहीन; चुर्रम्–बन्धु-बान्धव; मन्तिरम् तॊऴिल् निरम्पिय–मन्त्रणा-कार्य में विवृद्ध; मुतियरुम्–वृद्ध लोग; चेनै–सेना में; नीळ् कऴल्–बड़ी पायल पहने; तरम् पॅरुम्–उन्नत पद पर रहनेवाले; तलैवरुम्–मुखिए; तऴुव–घेरे रहे ऐसा; तोन्ऱिनान्–दृश्यमान रहा। १७

अप्सराएँ चँवर डुलाने लगीं और रावण की माला भी चँवर के अनुरूप हिली। उसके चारों तरफ़ असीम बन्धु-बान्धव, मन्त्रणा के अनुभवी लोग, बड़ी पायलधारी सेना के उच्च पदाधिकारी सभी घेरकर रहे। १७

❀ मुनैवरु ममररु मुर्रु मर्रुळोर्
अॅनैवरुन् दविर्क्कॅन वेय वाणैयान्
पुनैहुऴन् महऴिरो डिळैञर्प् पोक्किनान्
निनैवुरु कारिय निहऴ्त्तु नॅञ्जिनान् 18

निनैवुरु कारियम्–सोचा कार्य; निकऴ्त्तुम् नॅञ्चिनान्–पूरा करने का विचार लिये; मुनैवरुम् अमररुम्–मुनियों, देवों; मुर्रु मर्रुळोर् ॲनैवरुम्–घेरे रहे अन्य सभी को; तविर्क्कु–हटाओ; ॲन–ऐसा; एय आणैयान्–आज्ञा जिसने दी; पुनै कुऴल्–अलंकृत केश वाली; मकऴिरोटु–स्त्रियों के साथ; इळैञर्–अल्प वयस्कों को भी; पोक्किनान्–रावण ने दूर कर दिया। १८

अपने विचार को चरितार्थ करने की साध लिये रावण ने मुनियों, देवों और अन्यों को आज्ञा दी कि हट जाओ। फिर अलंकृत केश वाली अंगनाओं के साथ छोटी उम्र वाले पुरुषों को भी अलग भेज दिया। १८

❀ पण्डिदर् पऴयवर् किऴवर् पण्बिनर्
तण्डलिन् मन्दिरत् तलैवर् शार्हॅन

कॉण्डुड निरुन्दनन् कौऱ्ऱ वाणैयान्
वण्डोडु कालैयुम् वरवु माऱ्ऱितान् 19

कौऱ्ऱम् आणैयात्–राजाज्ञा पर; वण्टोटु–भ्रमरों के साथ; कालैयुम्–वायु को भी; वरवु माऱ्ऱितान्–आने से रोककर; पण्टितर्–पण्डित लोग; पऴैयवर्–अभ्यस्त; किऴवर्–वृद्ध; पण्पितर्–विशेषज्ञ; तण्टल् इल्–अन्तरंग; मन्तिरत् तलैवर्–मन्त्रणा देनेवाले नेताओं को; चार्क अॅन–आओ कहकर; कॉण्टु–लेकर; उटन् इरुन्ततन्–उनके साथ रहा। १६

रावण की राजाज्ञा ऐसी थी कि भ्रमर ही क्या पवन भी अन्दर नहीं आ पाया। फिर अन्तरंग मन्त्रियों से, जो विद्वान्, अनुभवी, वृद्ध और शिष्ट थे, 'आइए' कहकर अपने पास रख लिया। १९

आऩ्ऱमै केळ्विय रॅनिनु माण्डोऴिऱ्, केऩ्ऱवर् नण्बिन रॅनिनुम् यारैयुम्
वाऩ्ऱुणैच् चुऱ्ऱत्तु मक्क ळम्बियर्, पोऩ्ऱव रल्लरैप् पुरत्तुप् पोक्किनान् 20

आनृऱ अमै–गम्भीर बने; केऴ्वियर्–श्रवणज्ञान के रखनेवाले हों; अॅनितुम्–तो भी; आण् तॉऴिऱ्कु–वीरता के काम के लिए; एऩ्ऱवर्–योग्य; नण्पितर् अॅनितुम्–मित्र हों तो भी; वान् तुणै चुऱ्ऱत्तु–बहुत ही निकट के रिश्तेदारों में भी; मक्कळ् तम्पियर्–पुत्र, भाई; पोऩ्ऱवर्–जैसे; अल्लर्–जो नहीं थे; यारैयुम्–उन सबको; पुरत्तु पोक्कितान्–अलग भेज दिया। २०

उसने रिश्तेदारों में पुत्र और भ्राता के रिश्तेदारों को छोड़कर सभी को भेज दिया चाहे वे गम्भीर श्रवण ज्ञान रखते क्यों न हों, चाहे वे वीरता का काम करनेवाला साहस क्यों न रखते हों। या वे परममित्र ही क्यों न हों। २०

❀ तिशैतोऱु निऱुविन नुलहु शेरिनुम्
पिशैतोऴिन् मऱवरैप् पिऱ्ऱैन् पेशुव
विशैयुऱु पऱवैयुम् विलङ्गुम् वेऱ्ऱवुम्
अशैतोऴि लञ्जिन शित्ति रत्तिनै 21

उलकु चेरितुम्–सारे लोक मिलकर आयँ तो भी; पिचै तॉऴिल् मऱवरै–पीस जो डालेंगे उन वीरों को; तिचै तॉऱुम्–चारों दिशाओं में; निऱुवितन्—खड़ा किया; विचै उऱु–वेगशील; पऱवैयुम्–पक्षी भी; विलङ्कुम्–जानवर; वेऱ्ऱवुम्–और अन्य भी; चित्तिरत्तिन्–चित्रलिखित के समान; अचै तॉऴिल्–हिलने के काम में; अञ्चिन–डरे; पिऱ्ऱु–फिर; अॅन् पेचुव–क्या कहा जाय। २१

उसने मण्डप के बाहर उन वीरों का पहरा बैठाया, जो सारे लोक भी मिलकर आएँ तो उन्हें पीस सकते थे। इसलिए वेगवान् पक्षी, जानवर और अन्य कीड़े आदि भी चित्रवत् स्तम्भित रह गये, हिलने-डुलने से डरे। फिर उसकी आज्ञा के आतंक का क्या कहा जाय ? । २१

❀ ताट्चियिङ् गिदनिन्मेर् ऱुरुव देन्निनि
माट्चियोर् कुरङ्गिनाल् मऱुहि माण्डदाल्
आट्चियु मरशुमॅम् ममैवु नन्ऱॆनाच्
चूट्चियिन् किऴवरै नोक्किच् चॊल्लुवान् 22

माट्चि—मेरा गौरव; ओर् कुरङ्किताल्—एक बन्दर से; मऱुकि माण्टतु—चूर होकर मिट गया; इनि इङ्कु—अब यहाँ; इततिन् मेल्—इससे बढ़कर; ताट्चि तरुवतु—अवनति देगा; ऍन्—कौन; आट्चियुम्—शासन; अरचुम्—राज; ऍम् अमैवुम्—और मेरी सेना आदि का प्रबन्ध; नन्ऱु ऍना—बड़ा भला रहा, कहकर; चूट्चियिन् किऴवरै—मन्त्रणा के अधिकारियों को; नोक्कि—देखकर; चॊल्लुवान्—कहता। २२

(तब रावण बोला—) एक वानर के द्वारा मेरा सारा गौरव छिन्न-भिन्न हो मिट गया। इससे अधिक लाघव दिलानेवाली बस क्या हो सकती है? हा! हमारा शासन, हमारा राज और हमारा प्रबन्ध कितना अच्छा है! फिर उसने अपने वृद्ध मन्त्रियों से कहा। २२

❀ शुट्टदु कुरङ्गॅरि शूऱै याडिडक्
कॆट्टदु कडिनहर् किळैयु नण्बरुम्
पट्टनर् परिबवम् परन्द वॆङ्गणुम्
इट्टविव् वरियणै यिरुन्द देन्नुडल् 23

ऍरि—अग्नि; चूऱै आटिट—लूट ले ऐसा; कुरङ्कु—वानर ने; चुट्टतु—आग लगायी; कटि नकर्—सुरक्षित नगर; कॆट्टतु—नष्ट हुआ; किळैयुम् नण्परुम्—बन्धु और मित्र लोग; पट्टनर्—मर मिटे; परिपवम्—अपमानजनक बात; ऍङ्कणुम्—सर्वत्र; परन्ततु—फैली; ऍन् उटल्—मेरा शरीर; इट्ट—डाले गये; इ अरियणै—इस सिंहासन पर; इरुन्ततु—रहा। २३

एक वानर ने ऐसी आग लगायी कि अग्नि ने सारी लंका लूट ली। सुरक्षित नगरी तहस-नहस हो गयी। बन्धु व मित्र मिट गये। पराभव की बात सब जगह फैल गयी। मेरा शरीर यहाँ डाले रहे इसी सिंहासन पर विराजमान रहा!। २३

❀ ऊऱुहिन् ऱॆन्नहिण ऱुदिर मॊण्णहर्
आऱुहिन् ऱिलदऴल् अहिलुम् नावियुम्
एऱुमङ् गैयर्नऱुङ् गून्द लिन्शुऴ
नाऱुहिन् ऱदुनुहर्न् दिरुन्दु नामॆलाम् 24

किणऱु—कुएँ; उतिरम् ऊऱुकिन्ऱत—रक्त निकालते हैं; ऒळ् नकर्—उज्ज्वल नगर (में); अऴल् आऱुकिन्ऱिलतु—आग शान्त नहीं हो पाती; अकिलुम् नावियुम्—अगरु और कस्तूरी (की गन्ध); एऱुम्—जिन पर लगी रहती है; मङ्कैयर् नऱु कून्तलिन्—

सुन्दरियों के सुवासित केशों से; चुरु नारुकिन्रतु–आग की गन्ध छूटती है; नाम् ॲलाम्–हम सभी; नुकर्न्तु इरुन्तुम्–सूंघते रहे। २४

अब भी कुँओं में रक्त के ही स्रोत निकलते हैं। गौरव प्रकाशमय नगर में आग अभी पूरी तरह से बुझी नहीं है। स्त्रियों के केशों की लटों से पहले अगरु-धुआँ और कस्तूरी आदि की गन्ध निकलती थी। अब आग की तीखी गन्ध आती है। हम भी हैं उसी को सूँघते हुए। २४

❀ मऱ्ऱिल	दायित्तु	मलैन्द	वानरम्
इऱ्ऱिल्	दाहिय	ऍन्नुम्	वार्त्तैयुम्
पॅऱ्ऱिलम्	पिऱन्दिल	मॅन्नुम्	पेरलाल्
मुऱ्ऱुव	दॅन्निनिप्	पऴियिन्	मूऴ्हिनाम् 25

मऱ्रु इलतायितुम्–अन्य काम नहीं हुए तो भी; पिरन्तिलम् ॲन्तुम्–जन्म नहीं लिया ऐसा; पेरु अलाल्–गौरव छोड़; मलैन्त वानरम्–जो लड़ा, वह वानर; इऱ्ऱिलतु आकियतु–मरा बना; ॲन्तुम् वार्त्तैयुम्–यह यश-वचन; पॅऱ्ऱिलम्–प्राप्त किया नहीं; पऴियिन्–अपयश में; मूऴ्कितम्–मग्न हुए; इति ॲन्–आगे क्या है। २५

और कुछ कर नहीं पाये सही; तो भी हमें यही गौरव मिला कि हम जनमे नहीं। उसको छोड़कर हमसे लड़कर बन्दर मरा —यह यशोवचन भी सुनने को नहीं मिला! विपरीत जो मिला, वह अपयश ही मिला! अब करने को क्या बचा है?। २५

❀ ॲन्ऱव	नियम्बलु	मॅऴुन्दि	ऱैञ्जिनान्
कन्ऱिय	करुङ्गऴऱ्	चेनै	कावलन्
ऑन्ऱुळ	दुणर्त्तुव	दॊरुङ्गु	केळॅना
निन्ऱन	निहऴ्त्तिनन्	ॲरियु	नॅञ्जिनान् 26

ॲन्रु–ऐसा; अवन्–उसके; इयम्पलुम्–कहने पर; कन्ऱिय–क्रुद्ध; करुम् कऴल्–सुदृढ़ पायलधारी; चेनै कावलन्–सेनानायक; ॲऴुन्तु–उठकर; इऱैञ्चितान्–स्तुति करके; उणर्त्तुवतु–समझाने की; ऑन्रु उळतु–एक बात है; ऑरुङ्कु केळ्–एक साथ सुनिए; ॲन्रु–कहकर; ॲरियुम् नॅञ्चितान्–खौलते दिल के साथ; निकऴ्त्तितन् निन्रतन्–बोलता खड़ा रहा। २६

जब रावण ने ऐसा कहा तब अतिक्रुद्ध वीरकंकणधारी सेनानायक उठा और आपसे एक बात कहनी है। पूरा सुनिये— की पीठिका के साथ क्रोध से जलता मन लेकर वह खड़ा रहता हुआ बोला। २६

❀ वञ्जनै	मनिशरै	यियऱ्ऱि	वाणुदऱ्
पञ्जन	मॅल्लडि	मयिलैप्	पऱ्ऱुदल्

अञ्जिनर् तॊळिलॆन वरिवित् तेनदु
तञ्जमॆन् ऱुणर्न्दिलै युणरुन् दन्मैयोय् 27

उणरुम् तन्मैयोय्–समझ सकनेवाले; मनिचरै वञ्चतॆ इयऱ्ऱि–मनुष्यों को धोखा देकर; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाट वाली; पञ्चु अन्न–रूई के समान; मेल् अडि–कोमल चरणों वाली; मयिलै–मयूर (सीता) को; पऱ्ऱुतल्–ग्रहण कर लाना; अञ्चिनर् तॊळिल्–डरपोकों का काम है; ऎन्न–ऐसा; अऱिवित्तेन्–मैंने समझाया था; अतु तञ्चम्–वह ग्रहण-योग्य बात है; ऎन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तिलै–आप नहीं समझे। २७

आप समझदार हैं। केवल मनुष्य हैं वे। उनको धोखा देना और उज्ज्वल ललाटिनी, रूई-से कोमल चरणों वाली और मयूराभा सीता को ग्रहण कर लाना डरपोकों का काम है (वीरोचित काम नहीं)। यह मैंने कहा। पर आप उसे ग्रहण-योग्य विचार नहीं समझे। २७

❀ करन्मुदल् निरुदरैक् कॊन्ऱ कळ्वरै
विरिहुळ लुङ्गमूक् करिन्द वीररैप्
परिबवञ् जॆय्ञ्ञरैप् पडुक्क लादनी
अरशिय लळिन्ददॆन् ऱयर्दि पोलुमाल् 28

करन् मुतल्–खर आदि; निरुतरै–राक्षसों को; कॊन्ऱ–(जिन्होंने) मारा; कळ्वरै–उन तस्करों को; विरि कुळल्–बिखरे केश वाली; उङ्कै मूक्कु–आपकी छोटी बहिन की नाक को; अरिन्त वीररै–काटनेवाले वीरों को; परिपवम् चॆय्ञरै–पराभव करनेवालों को; पटुक्कलात नी–न मारकर आप; अरचियल् अळिन्ततु–राजरीति मिटी; ऎन्ऱु–ऐसा कहकर; अयर्ति पोलुम्–(अब) क्या म्लान होते हैं तो। २८

खर आदि राक्षसों के घातक चोर; बिखरे केश वाली आपकी छोटी बहिन की नाक काटनेवाले वीर (!) और अपमानित करने पर तुले हैं वे मानव! उनको बिना मारे आपने छोड़ रखा है और 'शासन निष्फल हो गया' कहकर क्लान्त हो रहे हैं क्यों? । २८

दण्डमॆन् ऱॊरुपॊरुट् कुरिय दऱ्करैक्
कण्डवर् पॊऱुप्परो वुलहङ् गावलर्
वण्डम रलङ्गलाय् वणङ्गि वाळ्वरो
विण्डव रुरुवलि यडक्कुम् वॆम्मैयोर् 29

वण्टु अमर्–भ्रमर जिस पर बैठते हैं; अलङ्कलाय्–उस माला के पहननेवाले; तण्टम् ऎन्ऱु–दण्ड नाम की; ऒरु–एक; पॊरुट्कु उरिय–विधान के योग्य; तऱ्करै–तस्करों को; कण्टवर्–जिन्होंने देख लिया है वे; उलकम् कावलर्–भूशासक; पॊऱुप्परो–क्षमा करेंगे क्या; विण्टवर्–पराये (शत्रुओं) का; उऱु वलि–अधिक

बल; अटक्कुम् वॅम्मैयोर्–मिटानेवाले विक्रमी; वणङ्कि–(शत्रु से) दबकर; वाळ्वरो–जीवन बिताएँगे क्या । २८

भ्रमराश्रय मालाधारी ! दण्ड नाम के विधान के ही योग्य तस्कर को देखने के बाद भू के शासक लोग उन्हें क्षमा भी करते हैं क्या ? शत्रुओं की शक्ति को तोड़ सकनेवाले वीर्यवान् नमकर जीवन बिताएँगे क्या ? । २९

❀ शॅऱ्ऱव रॅदिरॅळुन् देवर् तानवर्
कॉऱ्ऱमुम् वीरमुम् वलियुङ् गूट्टऱ
मुऱ्ऱमून् ऱुलहुनी मुदल्व नायदु
वॅऱ्ऱियो पॊऱ्ऱॆकॊलो विळम्बल् वेण्डुमाल् 30

मून्ऱु उलकु मुऱ्ऱ–तीनों लोकों भर में; नी–आपका; मुतल्वन् आयतु–नेता बनना; कॉऱ्ऱमुम्–विजयशीलता; वीरमुम्–वीरता और; वलियुम्–शक्ति; कूट्टु अऱ–सब मिलकर नष्ट हों ऐसा; चॅऱ्ऱवर्–शत्रु बनकर; ऍतिर् ऍळुम्–सामना करनेवाले; तेवर् तानवर्–देवों और दानवों पर; वॅऱ्ऱियो–जीत के कारण या; पॊऱ्ऱॆ कॊलो–क्षमा के कारण; विळम्पल् वेण्टुम्–बताना अभीष्ट है; (आल्–पूरक ध्वनि) । ३०

तीनों लोकों के आप अधिपति हैं। यह आप बने उस विजय के कारण, जिसमें आपने अपने विरुद्ध लड़ने चढ़ आये देवों और दानवों की विजयशीलता, वीरता और साहसिकता को मिटाया या क्षमा अपनाए रहे, इस कारण ? ज़रा बताना ! । ३०

विलङ्गिन ऱुयिर्ग्हॅड विलक्कि मीळ्हला
दिलङ्गॅयि निऩिदिरुन् दिऩ्बन् दुय्त्तुमेल्
कुलङ्गॊळु कावल कुरङ्गिऱ् ऱङ्गुमो
उलङ्गुनम् मेल्वरि नॊळिक्कऱ् पालदो 31

कुलम् कॊळु कावल–कुलप्रकाशक राजा; विलङ्किऩर्–उल्लंघन करनेवालों के; उयिर् कॅट–प्राणों को मिटाते हुए; विलक्कि मीळ्कलातु–(मार्ग से) हटाकर (मारकर) लौटना छोड़कर; इलङ्कॅयिऩ्–लंका में; इऩितु इरुन्तु–आराम से रहकर; इऩ्पम् तुय्त्तुमेल्–सुख भोग करते रहें: कुरङ्किल्–(तो) केवल वानर तक; तङ्कुमो–रह जायगा क्या; उलङ्कुम्–मच्छर भी; नम् मेल् वरिऩ्–हमारे ऊपर चढ़ आयें तो; ऑळिक्कल् पालतो–निवारण कर सकते हैं क्या । ३१

हे कुलदीपक राजा ! यही तो उचित है कि हम आपकी आज्ञा का उल्लंघन करनेवालों को प्राणहीन बनाकर मार्ग से हटायें और विजयी होकर लौट आयें। उसको छोड़कर लंका में आराम से रहकर ऐश मनाते रहें तो केवल वानर ही तक यह काम रुकेगा ? नहीं। एक मच्छर भी हम पर चढ़ आयगा। उसको रोक सकेंगे क्या ? । ३१

❀पोयिऩ	कुरङ्गिऩैत्	तॊडर्न्दु	पोयिवण्
एयिऩ	रुयिर्दुडित्	तॆव्वन्	दीर्हलम्
वायिनु	मनत्तिनुम्	वॆरुत्तु	वाळ्दुमेल्
ओयुनम्	वलियॆंऩ	वुणरक्	कूऱिनान् 32

पोयिऩ–जो गया; कुरङ्किनै–उस वानर का; तॊटर्न्तु पोय्–पीछा करके जाकर; इवण्–यहाँ; एयिनर्–(उसे) जिन्होंने भेजा उन्हें; उयिर् कुटित्तु–प्राणहीन बनाकर; ॲव्वम्–पछतावा; तीर्कलम्–दूर न करके; वायिनुम्–मुख से; मनत्तिनुम्–और मन से; वॆरुत्तु–घृणा करके; वाळ्तुमेल्–जीवित रहेंगे तो; नम् वलि–हमारा बल; ओयुम्–विराम कर लेगा; ॲऩ–ऐसा; उणर–समझाकर; कूऱिनान्–कहा। ३२

हमने लौट जानेवाले वानर का पीछा करके जाकर उसे यहाँ जिन्होंने भेजा था, उनके प्राण हरके अपने मन का काँटा दूर नहीं किया। अब मन से ही नहीं मुख से भी घृणा की बात कहते रहते हैं। इस भाँति जीवित रहें तो समझिए हमारा बल ही नहीं रहेगा! सेनानायक (प्रहस्त ?) ने यह अच्छी तरह समझाते हुए कहा। ३२

❀मऱ्ऱवन्	पिन्तुऱ	महोद	रप्पॆयर्क्
कऱ्ऱडन्	दोळिनान्	कनलिऩ्	कानुवान्
मुऱ्ऱुऱ	नोक्किनान्	मुडिवु	मन्नदाल्
कॊऱ्ऱव	केळॆंन	विन्नैय	कूऱिनान् 33

मऱ्ऱवन् पिन्तुऱ–फिर उसके पश्चात्; मकोतरन् पॆयर्–महोदर नाम का; कल्–प्रस्तर-से; तट तोळिनान्–विशाल कन्धों वाला; कनलिन् कानुवान्–आग के समान गरम हो; मुऱ्ऱुऱ नोक्किनान्–सर्वत्र दृष्टि दौड़ाकर; कॊऱ्ऱव–विजयी वीर; मुटिवुम् अन्नतु–निर्णय भी वही है; केळ् ॲन–सुनो कहकर; इनैय कूऱिनान्–यों बोला। ३३

फिर उसके पश्चात् महोदर नामक पर्वत-सदृश विशाल भुजा वाले राक्षस ने आग के समान गरम होकर चारों ओर दृष्टि दौड़ायी और रावण से कहा कि विजयी वीर! सेनापति का कहा ही निर्णय की बात है! सुनिए। वह आगे बोला। ३३

❀तेवरु	मडङ्गिन	रियक्कर्	शिन्दिनर्
तावरुन्	दानवर्	तरुक्कुत्	ताळ्न्दनर्
यावरु	मिऱैवरॆंन्	ऱिऱैञ्जु	मेन्मैयर्
मूवरु	मॊदुङ्गिन	रुनक्कु	मॊय्म्बिनोय् 34

मॊय्म्पिनोय्–बलवान; तेवरुम् अटङ्किनर्–देव दब गये; इयक्कर्–यक्ष; चिन्तिनर्–तितर-बितर भागे; तावरुम् तानवर्–सबल दानव भी; तरुक्कु ताळ्न्तनर्–भग्नगर्व हुए; यावरुम्–सभी; इऱैवर् ॲन्ऱु–जिनको प्रभु कहकर; इऱैञ्चुम्–पूजा

ते हैं वे; मेऩ्मैयर्–उत्तम; मूवरुम्–त्रिदेव; उनक्कु ऑतुङ्कित्तर्–आपके रास्ते हट गये। ३४

हे बलशाली ! आपके सामने देव दब गये। सिद्ध नम गये। यक्ष तर-बितर भाग गये। सबल दानवों का गर्व चूर हुआ। सर्वमान्य वाधिदेव त्रिदेव भी आपका मार्ग बचा जाते हैं। ३४

❀ एऱ्ऱमॆऩ् पिऱिदिनि यॆवर्क्कु मिऩ्ऩुयिर्
माऱ्ऱुऱु मुऱैमैशाल् वलियिऩ् माण्बमै
कूऱ्ऱुवऩ् ऱऩ्ऩुयिर् कॊळ्ळुङ् गूऱ्ऱॆऩत्
तोऱ्ऱुनिऩ् ऩेवऱऩ् ऱलैयिर् चूडुमाल् 35

ऍवर्क्कुम्–सभी के; इऩ् उयिर्–प्यारे प्राणों को; माऱ्ऱुऱु–शरीर से अलग रने का; मुऱैमै चाल्–क्रम (अचल) रखनेवाला; वलियिऩ् माण्पु–बल की कठोरता ; अमै कूऱ्ऱुवऩ्–युक्त यम भी; नी–आपको; तऩ् उयिर् कॊळ्ळुम्–अपने प्राण रनेवाले; कूऱ्ऱु–यम; ऍऩ–समझकर; तोऱ्ऱु–आपसे हारकर; निऩ् एवल्–पकी आज्ञा को; तऩ् तलैयिल् चूटुम्–अपने सिर पर धारण करता है; इनि–फिर; ऱ्ऱम्–इससे बढ़कर गौरव; पिऱितु ऍऩ्–दूसरा क्या है। ३५

सभी जीवों के प्राणों को शरीरों से अलग करने का क्रम रखनेवाला, बड़ा बली यम भी आपको अपना प्राणघातक यम समझता, आपसे हारकर आपकी आज्ञा को सिर आँखों पर मानता है। इससे बढ़कर महत्ता क्या हो सकती है ? । ३५

❀ वॆळ्ळियङ् गिरियिनै विडैयिऩ् वाहऩो
डळ्ळिविण् डॊडवॆडुत् तार्त्त वाऱ्ऱलाय्
शुळ्ळियि ऩिरुन्दुऱै कुरङ्गिऩ् ऱोळ्वलिक्
कॆळ्ळुदि पोलुनिऩ् पुयत्तै यॆम्मॊडुम् 36

वॆळ्ळि अम् किरियिनै–श्वेतवर्ण सुन्दर कैलास गिरि को; विटैयिऩ् पाकऩोटु–ऋषभचालक (श्रीशिव) के साथ; विण् तॊटु–आकाश को स्पर्श करते हुए; अळ्ळि ऍटुत्तु–उठा लेकर; आर्त्त–(सामगान) स्वरित करनेवाले; आऱ्ऱलाय्–बलवान; चुळ्ळियिल्–टहनी पर; इरुन्तु उऱै–रहकर जीवन वितानेवाले; कुरङ्किऩ् तोळ् वलिक्कु–वानर के भुजबल के सामने; निऩ् पुयत्तै–अपने भुजबल को; ऍम्मॊटुम्–हमारी भी शक्ति के साथ; ऍळ्ळुति पोलुम्–तुच्छ मानेंगे क्या शायद। ३६

श्वेतवर्ण कैलास गिरि को ऋषभवाहन शिवजी के साथ आकाश छूते हुए उठाकर (सामगान) स्वरित करनेवाले, हे पराक्रमी ! टहनी पर रहकर जीवन वितानेवाले वानर के बल के सामने अपने भुजबल को हमारे भी भुजबल के साथ मिलाकर तुच्छ मानने चले हैं क्या ? । ३६

मण्णिनुम् वानिनु मऱ्ऱै यौन्ऱिनुम्
कण्णिनि नीङ्गिनर् यावर् कण्डवर्
नण्णरुम् वलत्तिनर् ॲण्णिन् नायह
ॲण्णुव दिवर्दिऱत् तॆण्ण लेयुमो 37

नायक–नायक; मण्णितुम् वातितुम्–भूमि और आकाश में; मऱ्ऱै ऑन्ऱितुम्–अन्य (तीसरे) में; कण्णितिल् नीङ्कितर्–आपकी दृष्टि पड़े बग़ैर; नण् अरु–अगम; वलत्तितर्–बलवान; यावर्–कौन; कण्टवर्–देखे हुए हैं; ॲण्णित्–सोचकर देखें तो; ॲण्णुवतु–(बलवान) समझने की योग्यता; इवर् तिऱत्तु–इनमें; ॲण्णल्–(है) समझना; एयुमो–युक्त होगा क्या। ३७

सरदार! भूमि और आकाश में इनसे इतर (पाताल) में कौन अगम बलवान देखे जाते हैं, जो आपकी आँखों से बचे हों? विचारा जाय तो उन बातों को लेकर इनकी बनिस्बत सोचना चाहिए क्या जिन्हें लेकर बलवानोंके सम्बन्ध में सोचना है? यानी ये बलवानों की गिनती में ही नहीं आते। ३७

इडुक्किव णियम्बुव दॆन्नै यीण्डॆनै
विडुक्कुवै यामॆनिऱ् कुरङ्गै वेरऱुत्
तॊडुक्करु मनिशरै युयिरुण् डुन्बहै
मुडिक्कुवॆन् यानॆन मुडियक् कूऱिनान् 38

इवण्–यहाँ; इटुक्कु–संकट; इयम्पुवतु–कहना; ॲन्नै–क्या; ईण्टु–अब; ॲतै–मुझे; विटुक्कुवै–भेजेंगे तो; कुरङ्कै–वानर को; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल करके; ऑटुक्क अरु–अजेय (कथित); मतिचरै–मनुष्यों की; उयिर् उण्टु–जान खाकर; उन् पकै–आपके शत्रु को; मुटिक्कुवॆन् यान्–मिटा दूंगा मैं; ॲत–ऐसा; मुटिय कूऱितान्–(महोदर) कह चुका। ३८

इधर संकट की चर्चा क्यों? आप मुझे अभी भेजें तो वानर वर्ग को ही मूल से उखाड़ दूँगा, दुर्जेय मनुष्यों के प्राण भी हर लूँगा और आपके अरि को समाप्त कर दूंगा। महोदर ने ऐसा अपनी बात पूरी की। ३८

इच्चिरत् तवनुरैत् तिरुक्कु मेल्वॆयिल्
वच्चिरत् तॆयिऱ्ऱवन् वल्लै कूऱुवान्
अच्चिरत् तॆक्कोरु पौरुळन् ऱॆन्ऱनन्
पच्चिरत् तम्बॊऴि परिदिक् कण्णिनान् 39

इ चिरत्तवन्–इस शीर्षस्थ (नेता-महोदर) के; उरैत्तु इरुक्कुम्–कह चुकते; एल्वॆयिल्–समय पर; वच्चिरत्तु ॲयिऱ्ऱवन्–वज्रदन्त (वज्रदंष्ट्र); वल्लै–तुरन्त; कूऱुवान्–बोला; पच्चिरत्तम्–ताजा खून; पॊऴि–बहानेवाली; परिति–सूर्य-सम (उग्र); कण्णितान्–आँखों वाले ने; अ चिरत्तॆक्कु–उस श्रद्धा (प्रबंध) के लिए; ऑरु पॊरुळ् अन्ऱु–योग्य पात्र नहीं; ॲन्ऱतन्–कहा। ३६

प्रमुख वीरों में एक महोदर जब यह कह चुका तब वज्रदंष्ट्र तुरन्त बोल उठा। उसके नेत्रों से ताज़ा खून बहता-सा रहा और वे सूर्य के समान उग्र लगे। उसने कहा— इतनी श्रद्धा से कार्य करें, इसके योग्य नहीं है यह कार्य ! । ३९

❀ पोयिऩि	मऩिशरैक्	कुरङ्गैप्	पूमियिल्
तेयुमिऩ्	कैहळाऱ्	ऱिऩ्मि	ऩॆऩ्ऱॆमै
एयिऩै	यिरुक्कुव	दऩ्ऱि	यॆऩ्ऩिऩि
आयुमि	दॆम्वयि	ऩयिर्प्पुण्	डाङ्गॊलो 40

इऩि पोय्–अब जाकर; मऩिचरै–मानवों को; कुरङ्कै–वानरों को; कैकळाल्–अपने हाथों से; पूमियिल् तेयुमिऩ्–भूमि पर रखकर पीस दो; तिऩ्मिऩ्–खाओ; ऍऩ्ऱु–ऐसा; ऍमै एयिऩै–हमें आज्ञा देकर; इरुक्कुवतु अऩ्ऱि–रहे विना; इऩि आयुम्–अब विचार करो; इतु ऍऩ्–यह क्यों; ऍम् वयिऩ्–हम पर; अयिर्प्पु उण्टाम्–संशय है; कॊल्–क्या शायद । ४०

वह आगे बोला— आप सिर्फ़ इतना कहें कि चलो और उन मानवों और वानरों को भूमि पर डालकर पीस दो। आज्ञा देकर आप आराम से रहें। उसको छोड़कर इसमें सोचना क्या रखा है ? क्या ? हम पर संशय है शायद आपके मन में ? । ४०

❀ ऍव्वुल	हत्तुनिऩ्	ऩेवल्	केट्किलाऩ्
ऱॆव्विऩै	यरुत्तुतक्	कडिमै	शॆय्दयाऩ्
तव्विऩ	पणियुळ	दाहत्	ताऩ्गॊलो
इव्विऩै	यॆऩ्वयि	ऩीहला	दॆऩ्ऱाऩ् 41

ऍ उलकत्तुम्–किसी भी लोक में हों; निऩ् एवल्–आपकी आज्ञा; केट्किला–जो नहीं मानता; तॆव्विऩै–उस शत्रु को; अरुत्तु–मिटाकर; उत्तक्कु अटिमै चॆय्त–आपकी दासता जो करता रहा, उस; याऩ्–मैंने; तव्वित्त पणि–जो नहीं किया वह सेवा-कार्य; उळताक ताऩ् कॊलो–रहा ऐसा मानकर क्या; इव् विऩै–यह (शत्रुसंहार का) कार्य; ऍऩ् वयिऩ्–मेरे पास; ईकलातु–न सौंपना हुआ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । ४१

मैं किसी भी लोक में आपकी अवज्ञा करनेवाले शत्रु को मिटाकर आपकी दासता का मूल्य चुकाता आ रहा हूँ। फिर भी आपने यह (वानर-हनन का) काम मुझे नहीं सौंपा, क्या यह इसलिए कि आपके मन में मेरे प्रति यह संशय हो गया कि मैंने आपकी कोई आज्ञा टाल दी ? । ४१

❀ निऩ्मिऩॆऩ्	ऱवऩ्ऱऩै	विलक्कि	नीयिवण्
ऍऩ्मुऩु	मॆळियैपो	लिरुत्ति	योवॆऩा

मन्मुहम् नोक्कितन् वणङ्गि वन्मैयाल्
तुन्मुह नॆन्बव नित्तैय शॊल्लिनान् 42

नित्मिन्–ठहरो; ऍन्ऱु–कहकर; अवन् तनै–उसको; विलक्कि–रोककर; तुन्मुकन् ऍन्पवन्–दुर्मुख नाम के राक्षस ने; नी–आप; इवण्–यहाँ; ऍन् मुतुम्–मेरे सामने (रहते) भी; ऍळियै पोल्–दीन की तरह; इरुत्तियो–रहेंगे क्या; ऍन्ता–कहकर; मन् मुकम् नोक्कितन्–राजा का मुख देखकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; वन्मैयाल्–ज़ोर देकर; इत्तैय–ये बातें; चॊल्लितान्–कहीं। ४२

ऐसे बोलनेवाले उसको दुर्मुख नामक राक्षस ने 'रुको' कहकर रोका। फिर उसने रावण से पूछा कि आप क्या हमारे समक्ष दीन के समान रहेंगे? उसने राजा के मुख के सामने नमस्कार करके ज़ोर की आवाज़ में निम्न बातें कहीं। ४२

❀ तिक्कयम् वलियिल तेवर् मॆल्लियर्
मुक्कणान् कयिलैयु मुरणिन् ऱायदु
मक्कळुङ् गुरङ्गुमे वलिय रामॆनिन्
अक्कड विरावणर् कमैन्द वाऱ्ऱले 43

तिक्कयम् वलि इल–दिग्गज बलवान नहीं; तेवर् मॆल्लिवर्–देवगण निर्बल हैं; मुक्कणान्–त्रिनेत्र की; कयिलैयुम्–कैलास गिरि भी; मुरण् इन्ऱु आयतु–अशक्त बनी; मक्कळुम् कुरङ्कुमे–मानव और वानर ही; वलियराम्–बलवान हों; ऍनिन्–तो; इरावणर्कु–रावण के पास; अमैन्त आऱ्ऱल्–बना रहा बल; अक्कट–वैसा कहो (विस्मयबोधक)। ४३

आपकी शक्ति के सामने दिग्गज ठहर नहीं सके। देव निर्बल बने। त्रिनेत्र शिवजी का कैलास पर्वत हल्का हो गया। ऐसी स्थिति में केवल मनुष्य और वानर बलवान हो गये तो उधर कहो रावण के बल को! (अक्कड— कन्नड़ भाषा का विस्मयादिबोधक शब्द है; तॆलुगु में 'अक्कडा' का अर्थ 'उधर' या 'वहाँ' है। इधर भी यह शब्द विस्मयादिबोधक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। तमिळ में भी 'वैसा' कहो, 'तव' कहो या 'उधर' प्रशंसा करो —ऐसे प्रयोग होते हैं। अक्कड = "अडाडा" रे रे—टी०के०सी०)। ४३

पॊलिवदु पॊदुवुऱ वॆण्णुम् पुन्ऱॊऴिल्
मॆलियवर् कडनमक् किऱुदि वेण्डुवोर्
वलियिन्न रॆन्निलवर्क् कॊदुङ्गि वाऴ्दुमो
ऒलिहऴ लॊरुवनम् मुयिरुक् कन्बिनाल् 44

पॊतु उऱ–सामान्य रीति से; ऍण्णुम्–उपाय सोचने का; पुन् तॊऴिल्–अल्प काम; मॆलियवर् कटन्–निर्बलों का काम; पॊलिवतु–रहता है; नमक्कु–हमारा; इऱुति–अन्त; वेण्टुवोर्–चाहनेवाले शत्रु; वलियितर् ऍतिल्–विक्रमी हैं तो; ऒलि कऴल् ऒरुव–क्वणनशील पायलधारी अनुपम वीर; नम् उयिरुक्कु अन्पिताल्–

अपने प्राणों के प्यार से; अवर्क्कु–उनसे; ऒंतुङ्कि–दबकर; वाऴ्तुमो–जीवित रहेंगे क्या। ४४

सामान्य रूप से इस भाँति मंत्रणा करना निर्बलों का काम ही रहा है। हमारा अन्त चाहनेवाले हमारे शत्रु हमसे अधिक बलवान ही क्यों न हों, हे क्वणनशील पायलधारी वीर ! हम क्या अपने प्राणों के मोह में पड़कर उनसे दबकर जीवन बिताएँ ? । ४४

❀ कण्णिय मन्दिरङ् गरुमम् कावल
मण्णियन् मतिशरुङ् गुरङ्गु मर्ऱवुम्
उण्णिय वमैन्दन वुणवुक् कुट्कुमेल्
तिण्णिय वरक्करिऱ् ऱीरर् यावरो 45

कावल–रक्षक; मण् इयल्–भूतलवासी; मतिचरुम्–मनुष्य और; कुरङ्कुम्–वानर और; मर्ऱवुम्–अन्य (रीछ आदि); उण्णिय अमैन्तत–हमारे खाने के लिए बने हैं; उणवुक्कु उट्कुमेल्–भोजन से ही हम डरें; तिण्णिय अरक्करिल्–कठोर राक्षसों से बढ़कर; तीरर् यावर्–धीर कौन हैं; कण्णिय मन्तिरम्–(वही हालत रही तो) मन्त्रणा करना; करुमम्—करणीय काम ही है। ४५

हे राजा ! इस भूतल में मानव और वानर हमारे खाद्यपदार्थ के रूप में बने हैं। क्या हम अपने भोजन से ही डरें ? डरने लगें तो वीर और साहसी राक्षसों से बढ़कर धीर कौन होंगे ! (व्यंग्य।) हाँ, भयभीत हैं तो यह मंत्रणा का काम ठीक है। ४५

ऎरियुर् मडुप्पदु मॆदिर्न्दु ळोर्पडप्
पोरुदॊळिल् यावैयुम् बुरिन्दु पोवदुम्
वरुवदुङ् गुरङ्गुनम् वाऴ्क्कै यूर्हडन्
दरिदुहो लिराक्कदर्क् काऴि नीन्दुदल् 46

वरुवतुम्–(हमारे नगर में) आगमन और; ऎरि उर्–आग लगाकर; मटुप्पतुम्–जला देना; ऎतिर्न्तुळोर्–सामने आये हुओं को; पट–मारकर; पॊरुतॊऴिल् यावैयुम्–युद्धकर्म पूरा; पुरिन्तु पोवतुम्–करके लौट जाना; कुरङ्कु–एक वानर का काम था; इराक्कतर्क्कु–राक्षसों के लिए; नम् वाऴ्क्कै ऊर्–हमारे वासस्थान को; कटन्तु–छोड़कर; आऴि नीन्तुतल्–समुद्र तैरना; अरितु कोल्–असाध्य है क्या। ४६

आखिर एक वानर था। वह हमारे नगर के अन्दर घुस आया, नगर में आग लगायी, अपने से लड़नेवाले सभी को मौत के हवाले किया, और ऐसा युद्ध करके लौट चला। अगर एक वानर इतना कर सकता था तो क्या राक्षसों के लिए अपनी बस्ती को पारकर समुद्र तैरना भी असाध्य है शायद ! । ४६

वन्दुनम् मिरुक्कैयु मरणुम् वन्मैयुम्
वॅन्दोऴिऱ् ऱानैयिन् विरिवुम् वीरमुम्
शिन्दैयि नुणर्बवर् याव रेशिलर्
उय्न्दुदम् मुयिर्होडिव् वुलहत् तुळ्ळुळार् 47

वन्तु–आकर; नम् इरुक्कैयुम्–हमारा वासस्थान और; अरणुम्–सुरक्षा प्रबन्ध; वन्मैयुम्–हमारा बल (आदि का रहस्य); वॅम् तॊऴिल्–क्रूर कृत्य; तानैयिन्–सेना का; विरिवुम् वीरमुम्–विस्तार और पराक्रम; चिन्तैयिन् उणर्पवर्–मन में समझ लेनेवाले (लेकर); तम् उयिर् कॊटु–जीते जी; उयन्तु–बचकर जानेवाले; इ उलकत्तु उळ्–इस लोक में; उळार्–रहते हैं; यावरे चिलर्–कौन कुछ एक। ४७

(दुर्मुख अनजाने हनुमान की प्रशंसा कर लेता है।) हमारे नगर में आकर, हमारा वासस्थान, उसका सुरक्षा प्रबन्ध और उसका अलंघ्य बल, क्रूरकर्म सेना का विस्तार और उसकी वीरता —यह सब अच्छी तरह मन में ले करके जीते-जी बचकर जानेवाले इस लोक में कौन कुछ हैं? । ४७

❀ ऑल्वदु निनैयिनु मुरुदि योरिनुम्
वॅल्वदु विरुम्बिनुम् विळवु वेण्डिनुम्
शॅल्वदु मवरुळैच् चॅन्ऱु तीर्न्दऱक्
कॊल्वदुङ् गरुममॅन् ऱुणरक् कूरिनान् 48

ऑल्वतु निनैयिनुम्–शक्य कार्य सोचें या; उऱुति ओरिनुम्–आवश्यक कार्य सोचें; वॅल्वतु विरुम्पिनुम्–जीतना चाहें; विळैवु वेण्टिनुम्–सुफल चाहें; चॅल्वतुम्–(तो) वहाँ जाना और; अवर् उळै–उनके पास; चॅन्ऱु–जाकर; तीर्न्तु अऱ–मर-मिट जाएँ, ऐसा; कॊल्वतुम्–उनको मार डालना; करुमम्–हमारा कर्तव्य है; ऍन्ऱु–ऐसा; उणर–बात मन में लगे ऐसा; कूरिनान्–कहा। ४८

अब हम अपना साध्य काम विचारें; चाहे युक्त काम या अच्छे नतीजे की चाह करें तो यही करना है कि हम जाएँ, उनके पास पहुँचें और उनको मार डालें। ऐसा दुर्मुख ने रावण को बात लगे इस भाँति समझाया। ४८

❀ कावलन् कण्णॅदि रवनैक् कैहवित्
तियावदुण् डिनिनमक् कॅन्नच् चॊल्लिनान्
कोवमुम् वन्मैयुङ् गुरङ्गुक् कॅयॅना
मापॅरुम् बक्कनॅन् ऱोरुवन् वन्मैयान् 49

वन्मैयान्–बलवान; मा पॅरुम् पक्कन् ऍन्ऱु–महापार्श्व नाम के एक ने; कावलन् कण् ऍतिर्–राजा के समक्ष ही; कोवमुम् वन्मैयुम्–क्रोध और पराक्रम; कुरङ्कुक्के–वानर के ही (पास हैं); ऍना–ऐसा कहनेवाले; अवनै–उस दुर्मुख को; कै कवित्तु–हाथ औंधाकर (इशारा करके चुप कराकर); इनि नमक्कु–अब हमारी;

ावतु उण्टु–कौन सी (वीरता आदि की) बात रही; ॲन्ऩ–ऐसा; चॊल्लिऩाऩ्–
कहा। ४८

वहाँ महापार्श्व नाम का राक्षस बैठा था। उसने रावण का ध्यान खींचते हुए दुर्मुख को हाथ के इशारे से (हाथ की मुद्रा इस तरह बनाकर कि हथेली नीचे की ओर रहे) रोका; जो यह कह रहा था कि क्रोध और पराक्रम वानर के पास ही है। उसने कहा कि (अगर एक वानर से हम इतना आक्रान्त हो गये तो) आगे हमारी गति क्या होगी? वह आगे बोला। ४९

❀ मुन्दिऩर्	मुरणिलर्	शिलवर्	मॊय्यमर्
नन्दिऩर्	तम्मॊडु	नऩिन	डन्ददो
वन्दॊरु	कुरङ्गिडु	तीयिन्	वन्मैयाल्
वॆन्ददो	विलङ्गैयो	डरक्कर्	वॆम्मैयुम् 50

मुन्तिऩर्–(पहले) जो गये; मुरणिलर्–बलहीन; चिलवर्–कुछ; मॊय्
अमर्–छिड़े युद्ध में; नन्तिऩर्–मरे; तम्मॊटु–उनके साथ; नऩि नटन्ततो–बिल्कुल
नष्ट हो गयी (वीरता) क्या; ऒरु कुरङ्कु–एक वानर ने; वन्तु इट्ट तीयिऩ्–आ
जो लगायी, उस आग के; वऩ्मैयाल्–सबल कृत्य से; इलङ्कैयॊटु–लंका के साथ;
अरक्कर् वॆम्मैयुम्–राक्षसों का पराक्रम भी; वॆन्ततो–जल (मिट) गया क्या। ५०

पहले उस बन्दर से लड़ने कुछ निर्वीर्य राक्षस गये और वे डटकर हुए युद्ध में प्राण खो गये। क्या उन्हीं के साथ सारा राक्षस-पराक्रम एक दम नष्ट हो गया? एक वानर ने आग लगा दी। क्या उस आग में इतना दम था कि लंका के साथ राक्षसों का विक्रम भी जल गया! । ५०

❀ माऩिड	रेवुवार्	कुरङ्गु	वन्दिव्वूर्
तारॆरि	मडुप्पदु	तिरुनहर्	तानैये
आनव	रदुकुऱित्	तऴुङ्गु	वारॆनिन्
मेनिहऴ्	तक्कन	विळम्ब	वेण्डुमो 51

एवुवार्–भेजनेवाले; माऩिटर्–मनुष्य हैं; कुरङ्कु–वानर; इ ऊर् वन्तु–
इस नगर में आकर; ॲरि मट्टुप्पतु–आग लगाता है; अतु कुऱित्तु–उसको लेकर;
निरुतर् तानैये आनवर्–राक्षस जो वीर हैं; अऴुङ्कुवार्–मन मारते हैं; ॲनिऩ्–तो;
मेल्–आगे; निकऴ् तक्कऩ–जो हो सकता है; विळम्प वेण्टुमो–उसको कहना भी
चाहिए क्या। ५१

भेजनेवाले थे अल्प नर! आया एक तुच्छ वानर और उसने लगा दी आग। इस बात को लेकर योद्धा राक्षस व्यग्र हो रहे हैं। तो आगे क्या भी हो सकता है—कह सकते हैं क्या? । ५१

❀ निन्ऱुनिन्ऱ् इवैशिल विळम्ब नेर्हिलॆन्
नन्ऱिनि नररॊडु कुरङ्गै नामऱुक्
कॊन्ऱुदिन् ऱल्लदो रॆण्णङ् गूडुमो
ॲन्ऱ्रन् निहल्कुरित् तॆरियुङ् गण्णिनान् 52

निन्ऱु निन्ऱु–यहीं खड़ा होकर; इवै चिल–ये कुछ; विळम्प नेर्किलॆन्–कहते रहने से सम्मत नहीं हूँगा; इनि–अब; नररॊटु–नरों के साथ; कुरङ्के नाम् अऱ–वानर का नाम-निशान तक मिटाकर; कॊन्ऱु–मारकर; नन्ऱु तिन्ऱु–खूब खाने; अल्लतु–के सिवा; ओर् ॲण्णम्–और कोई विचार; कूटुमो–युक्त होगा क्या; ॲन्ऱतन्–कहा; इकल् कुऱितु–अनमेल विचार देखकर; ॲरियुम् कण्णितान्–कोपाग्नि उगलनेवाली आँखों वाले ने। ५२

खड़े-खड़े ऐसी कुछ बातें बनाते रहें —मैं इसको ठीक नहीं मानता। अब करना क्या है ? नरों के साथ वानरों का नाम-निशान तक मिटाते हुए उनको खा जाना चाहिए। इसके सिवा कोई अन्य विचार मन में लाने योग्य होगा ही नहीं। महापार्श्व ने यों कहा। उसकी आँखें उसके मन की विपरीत बातें सुनने से उठे हुए रोष की अग्नि से दीप्त थीं। ५२

❀ दिशादिशै पोदुना मरशन् शॆय्विनै
उशाविनन् नुट्किनन् नॊळिदुम् वाळ्वॆन्ऱान्
पिशाशनॆन् ऱॊरुपॆयर् पॆऱ्ऱ पॆय्हऴल्
निशाशर नुरुप्पुणर् नॆरुप्पि नीर्मैयान् 53

पिचाचन्–पिशाच; ॲन्ऱु ऒरु पॆयर् पॆऱ्ऱ–ऐसा एक नामधारी; पॆय्कऴल्–वीर कंकण पहने हुए; निचाचरन्–निशाचर ने; नॆरुप्पिन् उरुप्पुणर्–आग का रूप धरा जैसे; नीर्मैयान्–स्वभाव वाला बनकर; अरचन्–राजा; उट्कितन्–डर गये; चॆय् विनै–कर्तव्य कर्म; उचावितन्–पूछा; नाम्–हम; तिचा तिचै पोतुम्–(कालिख लगाकर) दिशा-दिशा में जाएँगे; वाळ्वु ऒऴितुम्–जीना त्याग देंगे; ॲन्ऱान्–कहा। ५३

पिशाच नाम का वीर कंकणधारी एक निशाचर था। वह मानो आग का प्रज्वलित रूप बना रहा। उसने कहा कि राजा रावण डर गये। और हमसे करणीय कृत्य के सम्बन्ध में पूछने चले। फिर क्या ? हम कालिख लगाकर दिशा-दिशा में भाग जाएँ! और अपना जीवन समाप्त कर लें। उसका मन अत्यन्त दुःखी था। ५३

❀ आरियन् ऱन्मैयी दायि नायुऱ
कारिय मॊदॆनिऱ् कण्ड वाऱिनाऱ्
चीरियर् मनिशरे शिऱियम् यामॆनाच्
चूरियन् पहैञनॆन् ऱॊरुवन् शॊल्लिनान् 54

चूरियन् पकैञन् ॲन्ऱु ऒरुवन्–सूर्य शत्रु (भानुकोप) नाम के एक ने; आरियन्

तन्मै–पुरुषश्रेष्ठ की स्थिति; ईतायिन्–यही है तो; आय्वुरु कारियम्–विचारणीय कार्य; ईतु ॲन्रिल्–यही है तो; कण्ट आऱ्ऱिनाल्–हमने जो विचार करके जाना उसके अनुसार; चीरियर् मनिचरे–श्रेष्ठ मनुष्य ही रहे; याम् चिऱियम्–हम छोटे हैं; ॲन्ना–ऐसा; चॊल्लिनान्–कहा। ५४

भानुकोप (सूर्यशत्रु) नाम का एक राक्षस था। उसने कहा कि पुरुषश्रेष्ठ रावण की गति यह है; और विचार जिस पर कर रहे हैं वह ऐसा है— तो निर्णय यही निकलता है कि नर ही बड़े हुए और हम छोटे!। ५४

❀ आळ्विनै निलैमैयु मरक्क राऱ्ऱलुम्
ताऴ्विनै यिदनिन्मेऱ् चाऱ्रत् तक्कदो
शूळ्विनै मनिशराऱ् ऱोन्ऱिऱ् ऱामॆना
वेळ्वियिन् पहैञनु मुरैत्तु वॆळ्हिनान् 55

वेळ्वियिन् पकैञनुम्–यज्ञहा भी; चूऴ्विनै–मन्त्रणा; मनिचराल् तोन्ऱिऱ्ऱु–मनुष्य के हेतु आवश्यक हुई; आम्–है; आळ् विनै निलैमैयुम्–प्रयत्नशीलता; अरक्कर् आऱ्ऱलुम्–और राक्षसों का बल; ताऴ्विनै–निकृष्ट करने का काम; इतनिन् मेल्–इससे बढ़कर; चाऱ्ऱ तक्कतो–कहने को कुछ हो सकता है क्या; ॲन्ना उरैत्तु–यह कहकर; वॆळ्किनान्–शरमाया। ५५

यज्ञहा नाम के राक्षस ने उठकर अपना विचार सुनाया। यह मंत्रणा ही नरों को उद्देश्य बनाकर हो रही है। हमारी प्रयत्नशीलता और राक्षसों के पराक्रम को तुच्छ बनानेवाला कोई काम इससे बढ़कर हो सकेगा क्या? उसने शरम का अनुभव किया। ५५

❀ तॊहैनिलैक् कुरङ्गुडै मनिशर्च् चॊल्लियॆन्
शिहैनिऱच् चूलितन् तिऱत्तिऱ् चॆल्लिनुम्
नहैयुडैत् ताममर् शॆय्द नन्ऱॆनाप्
पुहैनिऱक् कण्णनुम् पुहन्ऱु पॊङ्गिनान् 56

पुकै निऱ कण्णनुम्–धूम्राक्ष; चिकै निऱम्–अग्नि-ज्वाला-सम रंग वाले; चूलितन्–शूली के; तिऱत्तिल् चॆल्लिनुम्–प्रति (युद्ध करने) जाएँ तो भी; नकै उटैत्तु आम्–हँसी-योग्य रहेगा; तॊकै निलै–झुण्डों में स्थित; कुरङ्कु उटै–वानरों को लेकर आये; मनिचर् चॊल्लि–नरों का नाम लेकर; ॲन्–(लड़ने जाने के सम्बन्ध में) क्या (कहा जाय); अमर् चॆय्तल् नन्ऱु–लड़ना ही अच्छा होगा; ॲन्ना–ऐसा; पुकन्ऱु–कहकर; पॊङ्किनान्–खौल उठा। ५६

धूम्राक्ष नाम के राक्षस ने अपनी राय व्यक्त की। जलती ज्वाला के समान रंग वाले शूली के विरुद्ध युद्ध करने जाएँ तो वह भी परिहास योग्य होगा। उस स्थिति में मर्कटवृन्दों की सहायता के साथ आगत नरों पर जाने के सम्बन्ध में क्या कहा जाय? तो भी यही ठीक है कि हम युद्ध करें। ५६

❀ मऱ्ऱवन् पिन्तुऱ मऱ्ऱै योर्हळुम्
इऱ्ऱिदु वेनल मॅण्ण मऱ्ऱिलॅन्
ऱुऱ्ऱन वुऱ्ऱन वुरैप्प दायिनार्
पुऱ्ऱुऱै यरवॅनप् पुळुङ्गु नॅञ्जिनार् 57

मऱ्ऱु अवन् पिन्तुऱ–फिर उसके अनुसरण में; मऱ्ऱै योर्कळुम्–अन्य राक्षस भी; पुऱ्ऱुऱै अरवु ॲन–विलगत सर्पों के समान; पुळुङ्कुम् नॅञ्चितार्–तप्त मन वाले; इऱ्ऱु–अब (की हालत में); इतुवे नलम्–यही हितकारी है; मऱ्ऱु ॲण्णम्–अन्य रायें; इल्–नहीं हैं; ॲन्ऱु–कहकर; उऱ्ऱत उऱ्ऱत–अपने-अपने मन में जो-जो भाव उठे; उरैप्पतु आयितार्–बताने लगे। ५७

धूम्राक्ष के पश्चात् अन्य राक्षसों ने अपनी-अपनी रायें बतायीं। वे सब उस सर्प के समान घुलते रहे, जो बिल के अन्दर रहता है। उन्होंने कहा कि अब इसी में भला है, यानी युद्ध में। अन्य किसी विचार में नहीं। ५७

❀ वॅम्बिह लरक्करै विलक्किवित्तै तेरा
नम्बिय रिरुक्कवॅन्त नायहत्तै नण्णा
ॲम्बियॅन्त हिऱ्किलुरै शॅय्वलिद मॅन्ताक्
कुम्बकरु णप्पॅयरि तानिवै कुऱित्तान् 58

कुम्पकरुणन् पॅयरितान्–नाम के कुम्भकर्ण ने; वॅम्पु इकल्–चित्ततप्त; अरक्करै–राक्षसों को; विलक्कि–हटाकर; वित्तै तेरा–किंकर्तव्यविमूढ़; नम्पियर्–नायक लोग; इरुक्क–चुप रहें; ॲन्त–कहकर; नायकत्तै नण्णा–राजा के पास जाकर; ॲम्पि–यह मेरा छोटा भाई है; ॲनकिऱ्किल्–मानोगे तो; इतम्–हित; उरै चॅय्वल्–कथन करूँगा; ॲन्ता–बताकर; इवै कुऱित्तान्–ये बातें बतायीं। ५८

तब कुम्भकर्ण नाम के बड़े राक्षस ने रुष्ट सभी वीरों को रोका और सलाह दी कि किंकर्तव्यविमूढ नायक लोग सब चुप रह जाएँ। फिर उसने राजा रावण के पास जाकर कहना प्रारम्भ किया, अगर तुम मुझे अपना कनिष्ठ मानोगे तो मैं कुछ हित-कथन करूँगा। फिर उसने ये बातें कहीं। ५८

❀ नीययन् मुदऱ्कुल मिदऱ्कॊरुव निन्ऱाय्
आयिर मऱैप्पॊरु ळुणर्न्दऱि वमैन्दाय्
तीयिनै नयप्पुरुदल् शॅय्वितै तॅरिन्दाय्
एयिन वुरत्तहैय वित्तुणैय वेयो 59

नी–तुम; अयन् मुतल् कुलम् इतऱ्कु–ब्रह्मा से आरब्ध इस कुल के; ऑरुवन्–अप्रतिम एक; निन्ऱाय्–रहते हो; आयिरम् मऱै–सहस्रशाखा वेद का; पॊरुळ् उणर्न्तु–तात्पर्य जानकर; अऱिवु अमैन्ताय्–ज्ञानी बने हो; तीयितै–अग्नि से;

नयप्पुरुतल्–प्रेम करने की; चॆय्वितै–करणीय कर्म; तॆरिन्ताय्–समझ बैठे हो; एयित्त उऱ तकैय–सम्भाव्य; इ तुणैय वेयो–इतना ही होगा क्या। ५९

तुम ब्रह्मा के इस कुल के अनुपम वंशज हो ! सहस्रशाखा (साम) वेद का तात्पर्य जाननेवाले ज्ञानी बने हो ! तुम 'अग्नि को छूने से क्या होगा' यह जानते हुए भी आग से प्रेम करने चले हो ! उससे संभाव्य संकट इतने से समाप्त रहेंगे क्या ? । ५९

ओविय ममैन्दनहर् तीयुण वुळैन्दाय्
कोविय लळिन्ददॆन वेऱॊरु कुलत्तात्
तेवियै नयन्दुशिऱै वैत्तशॆय नन्ऱो
पाविय रुरुम्बळि यिदिऱ्पळियु मुण्डो 60

ओवियम् अमैन्त नकर्—चित्रमय नगर; ती उण–आग अशन कर गयी तब; को इयल्–राजकाज; अळिन्ततु—मिट गया; ऎन्न–कहकर; उळैन्ताय्—रोते हो; वेऱु ऒरु–अन्य किसी; कुलत्तान्–कुल के पुरुष की; तेवियै—पत्नी को; नयन्तु–चाहकर; चिऱै वैत्त चॆयल्–कारा में रखने का काम; नन्ऱो–अच्छा है क्या; पावियर् उऱुम् पळि–पापी को मिलनेवाली कोई निन्दा; इतिल्—इससे बढ़कर; पळियुम्–निंद्य; उण्टो–होगी क्या। ६०

लंका चित्रमय नगर है। उसको जलने देकर अब तुम दुःखी हो रहे हो कि राजनीति नष्ट हो गयी है। राम अन्य जाति का पुरुष है। उसकी गृहिणी की इच्छा करके उसे तुमने कारा में बन्द कर रखा है; क्या यह काम अच्छा है ? पापियों को जो निंदाएँ लग सकती हैं उनमें इससे बढ़कर कोई बुरी निन्दा हो सकती है ? । ६०

नन्नह रळिन्ददॆन्न नाणिनै नयत्ताल्
उन्नुयि रॆन्नत्तहैय देवियरह ळुन्मेल्
इन्नहै तरत्तर वॊरुत्तन्मनै यिऱ्ऱाऴ्
पॊन्नडि तॊऴुत्तॊऴ मऱुत्तल्पुहऴ् पोलाम् 61

नल् नकर्–श्रेष्ठ नगर; अळिन्ततु ऎन्न–नष्ट हो गया, इससे; नाणिनै–शरमाते हो; उन् उयिर् ऎन्न–तुम्हारी प्राण-सम; तकैय—मान्य; तेवियर्कळ्–पत्नियाँ; नयत्ताल्–प्यार के साथ; उन् मेल्–तुम पर; इन् नकै–सुखद हास; तर तर–अर्पित करती रहती हैं, तो भी; ऒरुत्तन्–(दूसरे) एक; मनै–के घर में; इल्–पत्नी के रूप में; ताऴ्–रहनेवाली; पॊन्–श्रीकांचनादेवी के; अटि तॊऴ तॊऴ–पैरों की पूजा करते रहते और; मऱुत्तल्–उनका ठुकराना; पुकऴ् पोलाम्–यश की बात है शायद, क्या। ६१

तुम अब शर्म का अनुभव कर रहे हो कि श्रेष्ठ नगर राख बन गया। तुम्हारी प्राणप्यारी स्त्रियाँ हैं, जो तुम्हें अपने सुन्दर आननों की खिली हँसी

द्वारा मनमुदित कर रही हैं; पर तुम तो दूसरे की कांचना (लक्ष्मी)-सी गृहिणी के श्रीचरणों पर बार-बार नमन करो और वह उपेक्षा दिखाए! —यह बड़े यश की बात है शायद, क्या? । ६१

ॲन्ऱॊरुव निल्लुऱै तवत्तियै यिरङ्गाय्
वन्ऱॊऴिलि नायमऱै तुऱन्दुशिऱै वैत्ताय्
अन्ऱॊऴिव वायिन वरक्कर्पुह ऴैय
पुन्ऱॊऴिलि नारिशै पॊरुत्तल्पुल मैत्तो 62

ॲन्ऱु–जिस दिन; ओरुवन् इल् उऱै–श्रेष्ठतम एक के घर में रहनेवाली; तवत्तियै–तपकन्या को; आय् मऱै–उत्तम वेदमार्ग; तुऱन्तु–त्यागकर; इरक्काय्–विना संकोच किये ही; वल् तॊऴिलिन्–अनीति से; चिऱै वैत्ताय्–कारा में रख दिया; अन्ऱे–उसी दिन; अरक्कर पुकऴ्–राक्षसों की कीर्ति; ओऴिव आयिन–मिटती बनी; ऐय–स्वामी; पुन् तॊऴिलिनार्–नीच कर्मकारी; इचै पॊरुत्तल्–और यश को मिलाओ; पुलमैत्तो–यह बुद्धिमान का कार्य है क्या । ६२

जिस दिन तुमने एक तपस्वी की घर वाली को, हितकारी वेद-मार्ग छोड़कर, अपने गौरव-निंदा का विचार किये विना बलात् लाकर कारा में रखा, उसी दिन राक्षसों की कीर्तियाँ नष्ट होने लग गयीं। स्वामी! क्षुद्रकर्म यशभाजन होंगे —ऐसा सोचना बुद्धिमत्ता का काम है क्या? । ६२

❀ आशिल्पर दारमवै यञ्जिऱै यडैप्पेम्
माशिल्पुहऴ् कादलुरु वेम्वळमै कूरप्
पेशुवदु मानमिडै पेणुवदु कामम्
कूशुवदु मानिडरै नन्ऱुनम कॊऱ्ऱम् 63

आचु इल्–अकलंक; पर तारम् अवै–परायी गृहिणी को; अम् चिऱै–मन की कारा में; अटैप्पेम्–बन्द करेंगे; माचु इल् पुकऴ्–अकलुष यश को; कातल् उरुवेम्–चाहेंगे; वळमै कूर–लम्बी-चौड़ी; पेचुवतु–हांकना; मानम्–गौरव की वार्ता; इटै पेणुवतु–अपने मन में पालना; कामम्–नीच काम; कूचुवतु–डरना; मानिटरै–मनुष्यों से; नम् कॊऱ्ऱम्–हमारा विजयविक्रम भी; नन्ऱु–बड़ा भला है। ६३

अकलंक परायी गृहिणी को हृदय-कारा में बन्द करें; और अकलुष कीर्ति का पात्र बनें? डींग मारना सम्मान की और पोषण करना काम का! डरना नरों से! हा! हा! हमारा विजयी प्रताप भी कैसा अच्छा है! । ६३

शिट्टर्शॆयल् शॆय्दिलै कुलच्चिऱुमै शॆय्दाय्
मट्टविऴ् मलर्क्कुऴलि नाळैयिनि मत्ता
विट्टिडुदु मेलॊऴिय मादुमवर् वॆल्लप्
पट्टिडुदु मेलदुव नन्ऱुपऴि यन्ऱाल् 64

चिट्टर् चॅयल्–शिष्टों का कार्य; चॅय्तिलै—न किया है तुमने; कुलम्–कुल को; चिऱुमै चॅय्ताय्–छोटा बना दिया; मट्टु अविऴ्—जिनकी पंखुड़ियाँ खिल रही हैं उन; मलर्—पुष्पों से अलंकृत; कुऴलिताळै–केशिनी को; इति–अब जाके; विट्टिट्टुम् एल्—छोड़ देंगे तो; मऩ्ऩा–राजा; अॅळियम् आतुम्–तुच्छ माने जाएँगे; अवर्–वे; वॅल्ल—जीत जाएँ और; पट्टिट्टुम् एल्–हम मर जायँगे तो; अतुवुम् नऩ्ऱु–वह भी भला है; पऴि अऩ्ऱु—अपवाद नहीं होगा। ६४

तुमने शिष्टजनोचित कृत्य नहीं किया। कुल को ही छोटा बना दिया है। पुष्पकेशिनी को अब छोड़ दो, तो भी हे राजन्! हम हल्के समझे जायँगे। हाँ, अगर वे जीत जायँ और हम मर जायँ तो वह भी श्लाघ्य होगा। उससे निंदा नहीं होगी। ६४

मरऩ्पडर् वनत्तॊरुव नॆशिलै वलत्ताल्
करऩ्पडै पडुत्तवनै वॆऩ्ऱुकळै कट्टाऩ्
निरम्बिडुव दऩ्ऱदुवुम् निऩ्ऱदिऩि नम्बाल्
उरम्बडुव देयिदऩिऩ् मेलुऱुदि युण्डो 65

मरऩ् पटर् वतत्तु–तरुसंकुल वन में; ऑरुवऩे—अकेले (श्रीराम) ने; चिलै वलत्ताल्–धनु की शक्ति से; करऩ् पटै–खर की सेना को; पटुत्तु–नष्ट करके; अवऩै वॆऩ्ऱु–उसको जीतकर; कळै कट्टाऩ्–शत्रु को दूर कर दिया; अतुवुम्–वह भी; निरम्पिट्टुवतु अऩ्ऱु–अन्तिम काम नहीं है; इति—अब; नम् पाल्–हमारे पास शेष; निऩ्ऱतु–जो रहता है; उरम् पटुवते—हमारी शक्ति का नाश होना है; इतऩिऩ् मेल्–तिस पर; उऱुति उण्टो–योग्य काम क्या बचा है। ६५

तरुकलित वन में एकाकी श्रीराम ने अपने कोदण्ड के प्रताप से खर की सेना को विध्वस्त किया और खर को भी जीतकर शत्रु को निरस्त किया। उसी से यह (शत्रु-निरसन) पूर्ण नहीं हुआ लगता। अब हमारी ओर यही दिखता है कि हमारा बल उनके हाथ मिट जायगा। इससे बढ़कर हमारे लिए अधिक योग्य काम कुछ नहीं है! । ६५

वॆऩ्ऱिडुवर् माऩिडव रेऩुमवर् तम्मेल्
निऩ्ऱिडै विडादुनॆऱि शॆऩ्ऱुऱ नॆरुक्किच्
चॆऩ्ऱिडुदल् शॆय्हिल मॆऩिऱ्चॆरुनर् रोडुम्
ऑऩ्ऱिडुवर् तेवरुल हेऴुमुड ऩॊऩ्ऱाम् 66

माऩिटवर्–मनुष्य; वॆऩ्ऱिटुवरेऩुम्—जीत जाएँगे तो भी; नॆऱि चॆऩ्ऱु–उनके स्थान में जाकर; अवर् तम् मेल्–उन पर; निऩ्ऱु–आक्रमण करके; इटै विटातु–लगातार; उऱ नॆरुक्कि–खूब सताते हुए; चॆऩ्ऱिटुतल्–युद्ध पर जाना; चॆय्किलम् ऎऩिल्–हम नहीं करेंगे तो; तेवर्–देवगण; चॆरुनरोटुम्–हमारे शत्रुओं के साथ; ऑऩ्ऱिटुवर्—मिल जाएँगे; उलकु एऴुम्–सातों लोक; उटऩ् ऑऩ्ऱाम्–एक साथ हो जाएँगे। ६६

वे नर जीत ही जाएँ; तो भी अगर हम उनके विरुद्ध जाकर उनसे लगातार भिड़कर युद्ध नहीं करेंगे तो देवता लोग उनसे मिल जायेंगे; क्यों, सातों लोक उनकी तरफ़ हो जायँगे। ६६

❀ ऊरुपडै	यूरुवदऩ्	मुऩ्ऩमोरु	नाळे
एरुहड	लेऱ्िनरर्	वानररै	यॅल्लाम्
वेरुपॅय	रादवहै	वेरोडु	मडङ्ग
नूरुवदु	वेकरुम	मॅऩ्बदु	नुवऩ्ऱाऩ् 67

ऊरु पटै–उत्तरोत्तर उठकर आनेवाली सेना; ऊरुवतऩ् मुऩ्ऩम्–पूर्ण रूप से एकत्र हो जाए इसके पहले; ओरु नाळे–एक दिन (निश्चित करके); एरु कटल्–लहरें जिसमें बढ़ती हैं, उस सागर के; एऱ्ि–उस तीर पर (चढ़) जाकर; नरर् वानररै अॅल्लाम्–नरों और वानरों तथा अन्यों, सभी को; वॅरु पॅयरात वकै–अन्यत्र न जाने देकर; वेरोटुम् अटङ्क–जड़ के साथ पूरा; नूरुवतुवे–मार डालना ही; करुमम्–कर्म है; ॲऩ्पतु–ऐसा; नुवऩ्ऱाऩ्–कहा। ६७

उनकी इकट्ठी हो रही सेना पूर्ण रूप से एकत्रित हो जाय, इसके पहले ही बढ़ती तरंगों वाले इस समुद्र के उस पार जाकर उन नरों और वानरों को और अन्यों को भी, कहीं बचकर न जाने देकर निर्मूल करते हुए हनन करना ही अब हमारा कार्य होना चाहिए। ऐसा कुम्भकर्ण ने कहा। ६७

❀ नऩ्ऱुरैशॅय्	दाय्कुमर	नाऩ्िदु	निऩैन्देऩ्
ऒऩ्ऱुमिनि	याय्दल्पळु	दॊऩ्ऩलरै	यॅल्लाम्
कॊऩ्ऱुपॅयर्	वाम्नमर्	कॊडिप्पडैयै	यॅल्लाम्
इऩ्ऱॅळुह	वॅऩ्ऱॅऩ	विरावण	निशॅऩ्ऩाऩ् 68

कुमर–कुमार; नऩ्ऱु–अच्छा; उरै चॅय्ताय्–कहा; नाऩ्–मैंने भी; इतु निऩैन्तेऩ्–यही सोचा; इऩि–आगे; ऒऩ्ऱुम् आय्तल्–कुछ भी सोचना; पऴुतु–निरर्थक है; ऒऩ्ऩलरै ॲल्लाम्–सभी विरोधियों को; कॊऩ्ऱु–मारकर; पॅयर्वाम्–लौट आएँगे; नमर्–हमारी; कॊटि–(वीणा-अंकित) ध्वजा वाली; पटैयै ॲल्लाम्–सारी सेना को; इऩ्ऱु–अब; ॲऴुक ॲऩ्क–कूच करो कहो; ॲऩ–ऐसा; इरावणऩ् इचैत्ताऩ्–रावण ने कहा। ६८

(रावण यह सुनकर खुश हुआ। उसने कहा—) कुमार! शाबाश! तुमने ठीक ही कहा। मैंने भी यही सोचा था। आगे कुछ तर्क-वितर्क करना निरर्थक काम होगा। सभी अमित्रों को मार दें। मारकर लौटें। हमारी ध्वजा-सहित सेनाओं को कूच करने को कहो। ६८

ॲऩ्ऱव	ऩियम्बियिडु	मॅल्लैयिनिल्	वल्ले
शॅऩ्ऱुपडै	योडुशिरु	मात्तिडर्	शिऩ्प्पोर्

वॆन्ऱुपॆयर् वायरश नीकोलॆम वीरम्
नन्ऱुपॆरि दॆन्ऱुमह नक्किवै नविन्ऱान् 69

ॲन्ऱु–ऐसा; अवन् इयम्पि इट्टम् ॲल्लैयितिल्–जब उस (रावण) ने कहा उसके अन्त में; मकन्–उसके पुत्र इन्द्रजित् ने; अरच–राजा; नी कोल्–क्या आप (स्वयं); वल्ले–तेज; पटैयोटु चॆन्ऱु–सेना के साथ जाकर; चिऱु मातिटर्–अल्प नरों के साथ; चितम् पोर्–सक्रोध युद्ध; वॆन्ऱु–जीतकर; पॆयर्वाय्–आएँगे; ॲम वीरम्–हमारी वीरता भी; पॆरितु नन्ऱु–बड़ी ही अच्छी रही; ॲन्ऱु–कहकर; नक्कु–हँसकर; इवै नविन्ऱान्–ये बातें कहीं। ६६

जब रावण ने ऐसा कहा तब उसके अन्त में इन्द्रजित् कहने लगा। राजन्! क्या आप ही स्वयं शीघ्र सेना लेकर जाने, अल्प नरों के साथ रोष के साथ लड़ने और विजय पाकर लौट आने की बात कह रहे हैं? तब तो हमारी वीरता बड़ी भली (प्रशंसनीय) रह गयी! यह कहकर वह आगे भी बोला। ६९

❀ईशनरुळ् शॆय्दनवु मेडविऴ् मलर्प्पे
राशन मुवन्दव नळित्तनव् मायप्
पाशमुदल् वॆम्बडै शुमन्दुपलर् निन्ऱार्
एशवुळल् वेनॊरुवन् यानुमुळे नन्ऱो 70

ईचन् अरुळ् चॆय्ततवुम्–परमेश्वर द्वारा करुणा से दत्त; एटु अविऴ्–विकसित दलों वाले; मलर् पेराचतम्–कमल के श्रेष्ठ आसन को; उवन्तवन्–जिन्होंने चाव के साथ अपना लिया, उन ब्रह्मा द्वारा; अळित्ततवुम्–प्यार के साथ दिये गये; माय पाच मुतल्–विस्मयकारी पाश आदि; वॆम् पटै–क्रूर हथियारों को; चुमन्तु–धारण करते हुए; पलर् निन्ऱार्–अनेक खड़े हैं; एच–(दूसरे) निन्दा करें (उसका पात्र बने); उऴल्वेन् ऑरुवन्–घूमता फिरनेवाला एक; यानुम् उळॆन् अन्ऱो–मैं भी हूँ न। ७०

हमारे पास कितने ही वीर खड़े हैं, जिनके पास परमेश्वरकृपादत्त और दल-खिले कमलासन प्रेमी ब्रह्मा द्वारा दिये गये विस्मयकारी पाश आदि नाशकारी कितने ही हथियार हैं? और मैं भी तो हूँ अपयश का भागी बनकर जीवित भटकनेवाला! ७०

❀मुऱ्ऱुमुळ दामुलह मून्ऱुमॆदिर् तोन्ऱिच्
चॆऱ्ऱमुद लारोडु शॆऱुत्तदोर् तिऱत्तुम्
वॆऱ्ऱियुन दाहविळै यादॊऴियि नॆन्नॆप्
पॆऱ्ऱिमिलै यान्ऱॆऱि पिऱन्दुमिल नॆन्ऱान् 71

उळताम्–दिखनेवाले; मून्ऱु उलकम् मुऱ्ऱुम्–तीनों लोकों भर में; चॆऱ्ऱ–वैर करनेवाले; मुतलारोटु–आदि (द्वि-) देवों के साथ; ऍतिर् तोन्ऱि–(जब वे) मेरे सामने प्रकट होकर; चॆऱुत्ततोर् तिऱत्तुम्–क्रोध दिखाएँ उस समय भी; वॆऱ्ऱि–जीत; उनताक–आपकी हो ऐसा; विळैयातु–विना (युद्ध) किये; ऑऴियिन्–चक

जाऊँ तो; अँन्नुतै पॅऱ्ऱुम् इलै–आपने मुझे जन्म नहीं दिया; यान्–मैं; नॅऱ्रि पिऱन्तुम्–सीधे जनमा; इलन्–(पुत्र) नहीं हूँ; अॅन्ऱान्–कहा। ७१

(देखिए ! मैं सौगन्ध खाता हूँ।) विद्यमान इन तीनों लोकों में चाहे त्रिदेव भी क्रुद्ध होकर युद्ध करने आएँ तो भी विजय आपकी बनाने में मैं चूक जाऊँ तो आपने मुझे जन्म नहीं दिया, न मैं आपका औरस पुत्र जनमा ! । ७१

कुरङ्गुपड मेदिनि कुऱैत्तलै नडम्बोर्
अरङ्गुपड मानिड रलन्दलै पडप्पार्
इरङ्गुपडर् शीदैपड विन्ऱिरुवर् निन्ऱार्
शिरङ्गुव डॅन्नकॅाणर्दल् काणुदि शिनत्तोय् 72

चिनत्तोय्–क्रुद्ध; कुरङ्कु पट–वानर मर जाएँ; मेतिनि–भूमि; कुऱै तलै–कबन्धों के; नटम्–नृत्य से युक्त; पोर् अरङ्कु पट–समरांगण बने; मानिटर्–नर; अलम् तलै पट–संकट मग्न हों; पार् इरङ्कु पटर्–सारे लोक की सहानुभूति योग्य रीति से; चीतै पट–सीता दुःखी हो; इन्ऱु–आज; निन्ऱार् इरुवर्–जो (युद्ध करने) खड़े हैं, उन दोनों के; चिरम्–सिरों को; कुवटु अॅन्न–पर्वत-शिखरों के समान; कॅाणर्तल्–(मैं लाऊँगा वह) लाना; काणुति–देखेंगे। ७२

क्रोधशील राजा ! मैं वानरों को मार डालूँगा। भूमि को युद्धरंग बना दूँगा, जिस पर रुण्ड नाचेंगे। उन नरों को कष्ट में डाल दूँगा। सीता को सब लोकों की सहानुभूति का पात्र बना दूँगा। ऐसा करके हमसे अब लड़ने आये दोनों के सिरों को पर्वतशिखरों को जैसे तोड़ लाऊँगा। देखिए। ७२

शॅाल्लिडै कऴिक्किलॅन् शुरुङ्गिय कुरङ्गॅान्
कल्लिडै किऴिक्कुमुरु मिऱ्कडुमै काणुम्
विल्लिडै किऴित्तमिडल् वाळिवॅरु वित्तम्
पल्लिडै किऴित्तिरिव कण्डुपय नुय्प्पाय् 73

चॅाल् इटै–बातों में अवकाश; कऴिक्किलॅन्–नहीं बिताऊँगा; चुरुङ्किय–वलीमुख (सिकुड़े हुए मुख वाले); कुरङ्कु–वानर; कल् इटै किऴिक्कुम्–पर्वतमध्य-भेदी; उरुमिन्–अशनि से; कटुमै काणुम्–अधिक नाशकारी; अॅन् विल् इटै–मेरे धनु से; किऴित्त–(मानो) चीरकर निकलनेवाले; मिटल् वाळि–कठोर शरों से; वॅरुवि–डरकर; तम् पल्–अपने दाँतों को; इटै किऴित्तु–निकालते हुए; इरिव कण्टु–भागेंगे देखकर; पयन् उय्प्पाय्–(विजय का) फल पाएँगे। ७३

अब बातों में समय बिताना नहीं चाहता। वलीमुख (वानर) पर्वत-भेदकारी अशनि से क्रूर धनु से निःसृत कठोर शरों से भयभीत होकर दाँत निकालते हुए इधर-उधर भाग निकलेंगे। तब आप विजयफल रस पाएँगे। ७३

यातैयिलर् तेर्पुरवि यादुमिल रेवुन्
दातैयिलर् नित्तरतव मौन्रुमिलर् तामो
कूत्तलमुदु हित्तशिरु कुरङ्गुकौडु वॅल्वार्
आनवरुम् मानिडर्न माण्मैयष़् हन्रो 74

यातै इलर्–गज (सेना) हीन; तेर् पुरवि–रथ, अश्व; यातुम् इलर्–कुछ भी नहीं उनके पास; एवुम् तातै इलर्–आज्ञाकारी पदाति सेना नहीं; नित्तर तवम्–स्थायी तपस्या; ऑन्रुम् इलर् तामो–कोई नहीं है जिनको क्या वे; कूत्तल् मुतुकिल्–कुब्ज पीठ वाले; चिरु कुरङ्कु कॉटु–अल्प वानरों की सहायता लेकर; वॅल्वार्–जीतेंगे; आनवरुम्–वे भी हैं; मानिटर्–(केवल) मानव; नम् आण्मै–(उनसे डरें तो) हमारा पौरुष भी; अष़कु अन्रो–सुन्दर है न। ७४

(इस पद में "किष़ि" शब्द के निकलना, निकालना आदि अर्थ लगाये गये हैं।) इन क्षुद्र नरों के पास गज नहीं हैं; न रथ, न अश्व, न पदाति वीर, जिनको वे युद्ध में भेज सकें। उनके पास स्थायी तप का भाग नहीं है। (भाग्यहीन हैं।) कुब्ज पीठों के मर्कटों की सहायता के सहारे वे विजयी होंगे क्या? आखिर वे तो नर ही हैं। उनसे हम डरने लगें तो हमारे पौरुष की भी बड़ी प्रशंसा होगी न! । ७४

नीरुम्निल त्तम्नॅडिय कालुम्निमिर् वानुम्
पेरुलहिल् यावुमौरु नाळ्पुडै पॅयर्त्ते
यारुमौष़ि यामैनरर् वानररै यॅल्लाम्
वेरुमौष़ि यादवहै वॅन्रलदु मीळेन् 75

नीरुम् निलत्तुम्–जल और थल; नॅटिय कालुम्–सर्वव्यापी अनिल; निमिर् वानुम्–ऊपर का आकाश; पेर् उलकिल्–इस बड़े लोक के; यावुम्–सभी को; ऑरु नाळ्–एक ही दिन में; पुटै पॅयर्त्तु–विपर्यस्त करके; नरर् वानररै ऍल्लाम्–नर-वानर सभी को; यारुम् ऑष़ियामै–बिना बाकी छोड़े; वेरुम् ऑष़ियात वकै–मूल को भी बचने न देकर; वॅन्रलतु–बिना जीते; मीळेन्–लौटूंगा नहीं। ७५

जल, पृथ्वी, सर्वव्यापी पवन, ऊपर का आकाश ऐसे लोक के सभी को एक ही दिन में विपर्यस्त करके, नरों और वानरों को बिना अपवाद के, मूल-सहित जीते बिना मैं लौटूंगा नहीं। ७५

※ ऍन्रडि यिरैञ्जिन नॅष़ुन्दुविडै यीमो
वन्दॉष़िलि नायॅन्नलुम् वाळॅयिरु वायिन्
तिन्रनन् मुनिन्दुनन्नि तीवितैयै यॅल्लाम्
वॅन्रवरु णन्रुणरुम् वीडणन् विळम्बुम् 76

ऍन्रु–ऐसा कहकर; अटि इरैञ्चितन्–पादाभिवन्दन करके; ऍष़ुन्तु–उठा और; वन् तॉष़िलिन्नाय्–भीमकर्म; विटै ईमो–विदा दें; ऍन्नलुम्–कहते ही;

नत्ति–खूब; तीविनैयै–पापों को; ॲल्लाम् वॅनृरुवरुळ्–पूर्ण रूप से जिन्होंने निरस्त किया था, उन (ज्ञानियों) में; नन्रु उणरुम्–सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी; वीटणन्–(सन्त) विभीषण; मुत्तिन्तु–कोप करके; वायिल्–मुख के; वाळ् ॲयिऱ्–उज्ज्वल दाँत; तिन्ऱतन्–खाते हुए (पीसते हुए); विळम्पुम्–बोला। ७६

ऐसा कहके इन्द्रजित् रावण के चरणों पर नमस्कार कर उठा। फिर आज्ञा माँगी कि हे भीमकर्म! विदा दीजिए। तब सुशांतपाप ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ संत विभीषण क्रोध से अपने उज्ज्वल दाँत पीसते हुए बोलने लगा। ७६

नूलिना नुणङ्गिय वऱिवु नोक्कित्तर्
पोलुमा लुरुपॉरुळ् पुहलुम् बूट्चियोय्
कालमेल् विळैपॉरु ळुणरुङ् गऱ्पिलाप्
पालनी यिन्नैयन पहरऱ् पालैयो 77

नूलिताल्–शास्त्रों में; नुणङ्किय–सूक्ष्म; अऱिवु नोक्कित्तर् पोलुम्–ज्ञान रखनेवालों के समान; उरु पॉरुळ्–समयानुकूल विषय; पुकलुम्–कहने में तत्पर; पूट्चियोय्–संकल्प वाले; कालम्–काल; मेल् विळै पॉरुळ्–आगे होनेवाला कार्य; उणरुम्–जानने की; कऱ्पु इला–विद्या से रहित; पालन् नी–बालक, तुम; इन्नैयन–ऐसी बातें; पकरल् पालैयो–कहने अर्ह हो क्या। ७७

हे सूक्ष्म शास्त्रार्थज्ञानी के समान समयानुसार सलाह देने की धारणा रखनेवाले बालक! काल (वर्तमान) और भावी को समझने की शिक्षा से हीन बाल हो तुम! ऐसी बातें कहने अर्ह हो क्या तुम? । ७७

करुत्तिलान् कण्णिला नॊरुत्तन् कॆक्कॊडु
तिरुत्तुवान् शित्तिर मन्नैय शॅप्पुवाय्
विरुत्तर्मे दहैयवर् विन्नैजर् मन्दिरत्
तिरुत्तियो विळमैयान् मुऱैमै यॆण्णिलाय् 78

इळमैयान्–बालपन के कारण; मुऱैमै ॲण्णिलाय्–शिष्टता का क्रम नहीं सोचा (तुमने); करुत्तु इलान्–विवेकहीन; कण् इलान्–नेत्रहीन; ऑरुत्तन्–कोई; कॆकॊटु–अपने हाथ से; तिरुत्तु–जिसको ठीक रचता है; वान् चित्तिरम् अन्नैय–उस चित्र के समान; चॅप्पुवाय्–विचार प्रकट करते हो; विरुत्तर्–वृद्ध; मेतकैयवर्–ज्ञानी; विन्नैजर्–कर्मण्य; मन्तिरत्तु–इनकी मन्त्रणा-सभा में; इरुत्तियो–रहने की योग्यता रखते हो क्या। ७८

बालपन के कारण तुम क्रमों से अनभिज्ञ हो! अविवेकी और अंधे किसी के किसी अच्छे चित्र में किये जानेवाले संशोधनों के समान तुम भी बातें बताते हो! वय, ज्ञान और कार्य में खूब बढ़े हुए लोगों की इस मंत्रणासभा में तुम रहने योग्य भी हो क्या? । ७८

तूयवर् मुऱैमैये तोंडङ्गुन् दीन्मैयर्, आयवर् निऱ्कमऱ् ऱवुण रादियान्
दीयवर् तवत्तिऩाऱ् ऱेव रायदु, मायमो वञ्जमो वऩ्मै येकोलो 79

तुयवर्–पवित्र; मुऱैमैये तोटङ्कुम्–न्यायक्रम के ही कर्म करनेवाले; तोऩ्मैयर् आयवर्–पुराण जो हैं, वे देव; निऱ्क–एक ओर रहें; मऱ्ऱु–अन्य; अवुणर् आतियाम् तीयवर्–दानव आदि क्रूर लोग; तवत्तिऩाल्–तपस्या से; तेवर् आयतु–देव जो बने वह; मायमो–माया है क्या; वञ्चमो–प्रवंचना से या; वऩ्मैये कोलो–बलात्कार से। ७९

देव पवित्र हैं और नीतिक्रम के अनुसार कार्य करनेवाले हैं। उनकी बात छोड़ दो। पर दानव आदि नृशंसकारी लोग भी तपस्या करके उसके फलस्वरूप देव (-तुल्य) बन जाते हैं। तो क्या वह माया है, प्रवंचना है या बलात्कार से प्राप्त रहता है? । ७९

अऱन्दुऱत् दमररै वॅऩ्ऱ वाण्डोऴिल्
तिऱन्दॅरिन् दिडिऩदु तानुञ् जॅय्दवम्
निऱन्दिऱम् बावहै यियऱ्ऱु नीर्मैयाल्
मऱन्दुऱन् दवर्तरुम् वरत्तिऩ् वऩ्मैयाल् 80

अऱम् तुऱन्तु–धर्म त्यागकर; अमररै वॅऩ्ऱ–देवों को जीतने का; आण् तोऴिल्–वीरता के; तिऱम् तॅरिन्तिटिऩ्–प्रकार का विचार करो तो; अतु तानुम्–वह भी; चॅय् तवम्–अपना कृत तप; निऱम् तिऱम्पा वकै–क्रम का उल्लंघन किये बिना; इयऱ्ऱुम् नीर्मैयाल्–जो सम्पन्न किया उस प्रक्रिया से; मऱम् तुऱन्तवर्–(और) क्रूर कृत्य जिन्होंने छोड़ दिये थे; तरुम् वरत्तिऩ्–उनके दिये वरों के; वऩ्मैयाल्–प्रताप से। ८०

अधर्म से भी तुमने देवों पर विजय पायी। वह पौरुष भी तुम्हें प्राप्त कैसे हुआ? खूब विश्लेषण करके देखो तो पाओगे कि वह तुम्हारे विधियों का उल्लघन किये विना (विधिविहित रीति से) तपस्या करने का फल था और अन्यायकार्यविरत देवों द्वारा दत्त वरों का प्रताप था। ८०

मूवरै वॅन्ऱुमूऩ् ऱुलहु मुऱ्ऱुऱक्, कावलि ऩिऩ्ऱुदङ् गळिप्पुक् कैम्मिह
वविदु मुडिवॆऩ वीन्द दल्लदु, तेवरै वॅऩ्ऱवर् यावर् तीमैयोर् 81

तीमैयोर्–दुर्जन; मूवरै वॅऩ्ऱु–त्रिदेवों को जीतकर; मूऩ्ऱु उलकुम्–तीनों लोकों को; मुऱ्ऱु उऱ–पूर्ण रूप से; कावलिऩ् निऩ्ऱु–पालने की स्थिति में रहकर; तम् कळिप्पु–अपना अभिमान; कै मिक–अधिक बढ़ाकर; वीवतु मुटिवु ॲऩ–मरना ही अन्त है, यह साबित करते हुए; वीन्ततु अल्लतु–मरना छोड़कर; तेवरै–देवों को; वॅऩ्ऱवर्–जीतनेवाले; यावर्–कौन हैं। ८१

दुर्जनों ने चाहा कि हम त्रिदेवों को जीतें, लोकपालन-कार्य में स्थायी रूप से लगे रहें और अकड़ते घूमते फिरें। पर उनमें कौन हैं, जो "उन

जैसों का अन्त मरण ही है" —यह साबित करते हुए मरे नहीं और देवों पर विजय पा सके। ८१

विनैहळै वॆन्ऱुमेल् वीडु कण्डवर्, ऎनैवरॆन्ऱियम्बुहे नवर्द मीहैयाल्
मुनैवरु ममररु मुन्नुम् बिन्नरुम्, अनैयवर् तिरत्तुळार् याव राऱ्ऱिनार् 82

मुन्नुम्–आगे; पिन्नरुम्–और पीछे; मुनैवरुम् अमररुम्–मुनि और देव; विनैकळै वॆन्ऱु–कर्म जीतकर; अवर् तम् ईकैयाल्–अपने दानी स्वभाव से; मेल् वीडु कण्टवर्–परमपद जो प्राप्त हुए; ऎनैवर् ऎन्ऱु–कितने हैं यह; इयम्पुकेन्–कहूँगा; अनैयवर् तिरत्तुळार्–उनकी श्रेणी में रहनेवाले; यावर् आऱ्ऱिनार्–किन्होंने (दुष्कृत्य) किये। ८२

पहले भी सही, पीछे भी सही, कर्मबंधन तोड़कर अपनी दानशीलता के कारण उत्कृष्ट मोक्षलोक को जो प्राप्त हुए वे कितने (असंख्यक) हैं। कैसे हैं —यह मैं क्या कहूँ। ऐसे लोगों में किसने दुष्कृत्य किया ? । ८२

❀ पिळ्ळैमै विळम्बिनै पेदै नीयॆना, ऒळ्ळिय पुदल्वनै युरप्पि यॆन्नुरै
ऎळ्ळलै यामॆनि नियम्ब लाऱ्ऱुवॆन्, तॆळ्ळिय पॊरुळॆन अरशऱ् चॆप्पिनान् 83

पेतै नी–अबोध तुमने; पिळ्ळैमै–बालपने की बात; विळम्पिनै–कही; ऎना–कहकर; ऒळ्ळिय पुतल्वनै–यशोज्ज्वल पुत्र को; उरप्पि–डाँटकर; ऎन् उरै–मेरे वचन को; ऎळ्ळलै याम्–तुच्छ नहीं मानो; ऎनिन्–तो; तॆळ्ळिय पॊरुळ्–स्वच्छ विचार; इयम्पल् आऱ्ऱुवॆन्–कहूँगा; ऎन–कहकर; अरचन्–राजा से; चॆप्पिनान्–कहा (विभीषण ने)। ८३

तुम अबोध बालक हो। बालपने की बात की! यह कहकर विभीषण ने यशोज्ज्वल पुत्र इन्द्रजित् को डाँटा। फिर राजा से कहा कि अगर आप मेरी बात की उपेक्षा नहीं करेंगे तो सुलझा हुआ अपना विचार व्यक्त करूँगा। ८३

❀ ऎन्दैनी यायुनी यॆम्मु नीतव, वन्दनैत् तॆय्वनी मऱ्ऱु मुऱ्ऱुनी
इन्दिरप् पॆरुम्बद मिळक्किन् ऱायॆन, नॊन्दन नादलिन् नुवल्व दायिनॆन् 84

ऎन्तै नी–मेरे पिता हैं आप; यायुम् नी–माता भी आप; ऎम् मुन् नी–मेरे बड़े भाई भी आप; तव वन्तनै–तपोवन्द्य; तॆय्व नी–देव आप; मऱ्ऱुम्–अन्य; मुऱ्ऱुम् नी–सभी आप; इन्तिर पॆरुम् पतम्–उत्तम इन्द्रपद; इळक्किन्ऱाय्–खो रहे हैं; ऎन–ऐसा; नॊन्तनन्–व्याकुल हूँ; आतलिन्–इसी कारण; नुवल्वतु आयिनेन्–कहने का जिम्मा ले रहा हूँ। ८४

आप ही मेरे पिता हैं। मेरी माँ, मेरे बड़े भाई, तप के रूप में वंद्य और अन्य सभी आप ही हैं। इन्द्रपद को खो रहे हैं। यह सोचकर मैं दुःखी हो रहा हूँ। इसीलिए यह कहने चला। ८४

करुरुरु मात्चियेन् कण्णिन् रायिनुम्
उरुरुरु पौरुळ्तेरिन् दुणर्द लोयिनुम्
शोरुरुरु शूळ्च्चियिन् तुणिवु शोरिनुम्
मुरुरुरुक् केट्टपिन् मुनिदि मौयम्बिनोय् 85

मौयम्पित्तोय्–पराक्रमी; करुरु उरु मात्चि–विद्यागौरव; ऍन् कण्–मेरे पास; इन्रायितुम्–नहीं है तो; उरुरु उरु पौरुळ्–अब जो हो गया वह विषय; तॅरिन्तु उणर्तल्–जानकर विचार करने की शक्ति; ओयितुम्–नहीं रही तो भी; चोरुरु उरु–चर्चित; चूळ्च्चियिन् तुणिवु–उपाय की हितकारिता के सम्बन्ध में निश्चय; चोरित्तुम्–दुर्बल रहे तो भी; मुरुरु उर–पूरा-पूरा; केट्ट पिन्–सुनने के बाद; मुतिति–क्रोध (करना हो तो) कीजिए। ८५

विक्रमी! चाहे मेरे पास विद्याप्राप्त गौरव न हो; चाहे घटी हुई बात की छानबीन करके तत्त्व समझने में असमर्थता हो; या उक्त मंत्रणा का सार समझने में चूक हुई हो, आप क्रोध करें तो पूरा सुनने के बाद करें। ८५

※ कोनहर् मुळुवदुम् निनदु कौरुरमुम्
शानहि यॅनुम्बॅय रुलहिन् रम्मतै
यानवळ् कर्पिनाल् वॅन्द दल्लदोर्
वानरम् शुट्टदॅन् रुणर्दल् माट्चियो 86

चानकि ऍनुम् पॅयर्–जानकी नाम की; उलकिन् तम्मतै आनवळ्–जगदम्बा के; कर्पिनाल्–सतीत्व (के प्रताप) से; निनतु कौरुरमुम्–आपका विजयगौरव; को नकर् मुळुवतुम्–राजधानी सारी; वॅन्ततु–जली; अल्लतु–उसके सिवा; ओर् वानरम् चुट्टतु–एक वानर ने जलाया; ऍन्रु–ऐसा; उणर्तल्–समझना; माट्चियो–गौरवपूर्ण बात है क्या। ८६

आपका विजयगौरव और आपकी सारी राजधानी जली, जानकी नाम की जगदंबा के सतीत्व के प्रताप से। यह न जानकर एक वानर ने जला दिया—यह मानना गौरवमय होगा क्या? । ८६

ऍण्बॊरुट् टौन्रिनिन् रॅवरु मॅण्णिनाल्
विण्बॊरुट टौन्रिय वुयर्वु वीळ्च्चियुम्
पॅण्बॊरुट् टन्रियुम् पिरिदुण् डामॅनिन्
मण्बॊरुट् टन्रियुम् वरवुम् वल्लदो 87

ऍण् पॊरुट्टु–सोचने के निमित्त; ऒन्रि निन्रु–एकाग्र होकर; ऍवरुम् ऍण्णिनाल्–कोई भी सोचे तो; विण् पॊरुट्टु ऒन्रिय–आकाशव्यापी; उयर्वु–उत्थान का; वीळ्च्चियुम्–अधःपतन भी; पॅण् पॊरुट्टु–स्त्री (पर मोह) के कारण ही; अन्रियुम्–उसके अतिरिक्त; पिरितु उण्टाम्–अन्य कोई होगा;

अॅन्ऱ्–तो; मण् पॉरुट्टु–भूमि के निमित्त; अन्ऱियुम्–इनके सिवा; **वरवुम् वल्लतो–(पतन) आ सकता है क्या।** ८७

यदि कोई भी एकाग्रता से ध्यान देकर सोचे तो जान लेगा कि गगनोन्नत उत्थान स्त्री-मोह के कारण से ही अधःपतन में परिणत हो जाता है। वह नहीं तो भूमि के निमित्त हो जाता है। इनके विना वह पतन आ सकता है क्या ? । ८७

मीनुडै नॅडुङ्गड लिलङ्गै वेन्दॅन्बान्, तानुडै नॅडुन्दवम् तळर्न्दु शाय्वदोर्
मानुड मडन्दैया लॅन्नुम् वाय्मॊऴि, तेनुडै यलङ्गला यिन्ऱु तोर्न्ददो 88

तेनुटै अलङ्कलाय्–मधुसिक्त मालाधारी; मीन् उटै नॅटु कटल्–बड़े मकरालय-मध्यस्थ; इलङ्कै–लंका के; वेन्तु ॲन्पान्–राजा जो रहे उनका; तानुटै नॅटुतवम्–स्वकृत बड़ी तपस्या के; तळर्न्तु चाय्वतु–सारहीन होते पतित हो जाना; ओर् मानुट मटन्तैयाल्–एक नर-स्त्री के निमित्त (हुआ); ॲन्नुम्–ऐसा; वाय्मॊऴि–कथन; इन्ऱु तोर्न्ततो–आज चरितार्थ होगा क्या। ८८

मधुमय मालाधारी ! मकरालयमध्यस्थित लंका के रावण संज्ञित राजा की विपुल तपस्या के बल का क्षीण होना एक मानव-भामिनी के निमित्त साध्य हुआ —यह कथन आज पूर्ण होने जा रहा है क्या ? (इधर वेदवती के शाप का संकेत है —यह माना जाता है। इसकी चर्चा पीछे भी आती है। इधर सीता पर मोह के कारण उसका सारा गौरव नष्ट हुआ, उसके प्राण भी गये। यही भाव यहाँ पर्याप्त लगता है। उत्तर-काण्ड में रंभा के शाप की भी चर्चा है। ब्रह्मा का शाप तो है ही।)। ८८

एरिय नॅडुन्दव मिळैत्त वॅल्लैनाळ्, आरिय पॅरुङ्गुणत् तऱिव नाणैयाल्
कूरिय मनिदर्पाऱ् कॊऱ्ऱङ् गॊळ्ळलै, वेऱिनि यवर्वयिन् वॅन्ऱि यावदो 89

एरिय–उत्कृष्ट; नॅटु तवम्–विपुल तपस्या; इऴैत्त ॲल्लै–(जब) आपने की; नाळ्–उस दिन; आरिय–शान्त; पॅरु कुणत्तु–श्रेष्ठ गुणों के; अऱिवन्–ज्ञानी ब्रह्मा की; आणैयाल्–कृपाज्ञा से; कूरिय–तथाकथित बलवान; मनितर् पाल्–मनुष्यों पर; कॊऱ्ऱम्–विजय पाने का वर; कॊळ्ळलै–(आपने) माँग नहीं लिया था; इनि–अब; अवर् वयिन्–उनसे; वेऱु–हार से विपरीत; वॅन्ऱि–विजय; यावतो–कहाँ मिलेगी। ८९

जब आपने घोर तप किया था और शांत और उत्तम गुणों के ब्रह्मा ने कृपा के साथ वर दिये, तब आपने मनुष्यों पर विजय का वर नहीं माँगा था। फिर उनके हाथों हार को छोड़ विजय कहाँ मिलेगी ? । ८९

एयदु पिऱ्ऱुणर्न् दॅण्ण वेण्डुमो, नोयॊरु तनियुल हेळ्ळुम् नीन्दिताय्
आयिरन् दोळवऱ् काऱ्ऱल् तोऱ्ऱनै, मेयिनै यामॅनिन् विळम्ब वेण्डुमो 90

नो-आव; ऑरु तनि-एकाकी ही; उलकु एळुम्-सातों लोकों को; नीन्तिन्नाय्-तेर (जीत) आये; आयिरम् तोळवर्कु-सहस्रबाहु के हाथ; आऱ्ऱल् तोऱ्ऱनै-बल खोकर हारे; मेयित्त आम्-वहाँ से चलते बने; ऍतिन्-तो; ऍण्ण एयतु-आनेवाले कष्ट के सम्बन्ध में; पिरितु उणरन्तु-और बूझकर; ऍण्ण वेण्टुमो-सोचना चाहिए क्या; विळम्प वेण्टुमो-या कहना भी चाहिए। ६०

आपने सातों लोकों को अकेले ही परास्त किया। एक छोर से दूसरे छोर तक विजययात्रा की। पर सहस्र भुजा वाले कार्तवीर्यार्जुन के हाथ हार खायी और लौट गये। फिर मनुष्य द्वारा भी संकट आ सकता है, इसको समझने के लिए बहुत सोचने की आवश्यकता पड़ेगी क्या? या उसको खोलकर बताना चाहिए? । ९०

मेलुयर् कयिलैयै वॅन्ऱ मेलैनाळ्
नालुतो णन्दिता नविन्ऱ शाबत्ताल्
कूलवान् कुरङ्गिनार् कुऱुहुङ् गोळदु
वालिपार् कण्डनम् वरम्बि लाऱ्ऱलाय् 91

वरम्पिल् आऱ्ऱलाय्-अमितविक्रम; मेल् उयर् कयिलैयै-आकाश में उन्नत कैलास को; वॅन्ऱ-जब आपने उठाकर विजय पायी; मेलै नाळ्-उस प्राचीन दिन; नालु तोळ्-चार कन्धों के; नन्ति तान्-नन्दिदेव ने; नविन्ऱ चापत्ताल्-जो दिया उस शाप के फल से; कूलम्-लांगूल वाले; वान् कुरङ्कित्ताल्-बड़े बन्दर द्वारा; कोळ् कुऱुकुम्-संकट आयगा; अतु-उसको; वालि पाल्-वाली के कार्य से; कण्टनम्-हमने (सत्य) जाना। ९१

अमितविक्रम! जिस दिन आपने उन्नत कैलास पर्वत को उठाने में जीत पायी थी, उस दिन चार भुजा वाले नन्दीश्वर ने शाप दिया था कि सपुच्छ वृहत् वानर द्वारा तुम्हारा अनिष्ट होगा। उसकी सत्यता को हमने वाली द्वारा कृत कार्य में जाना। ९१

तीयिडैक् कुळित्तवत् तॅय्वक् कऱ्पिन्नाळ्
वायिडै मॊळिन्दशॊल् मऱुक्क वल्लमो
नोयुनक् कियानॅन नुवन्ऱ ळाळवळ्
आयवळ् शीदैपण् डमुदिऱ् ऱॊन्ऱिन्नाळ् 92

ती इडै कुळित्त-अग्नि में मग्न; अ तॅय्व कऱ्पिन्नाळ्-उस देवी सती-साध्वी के; वाय् इडै-अपने मुख से; मॊळिन्त चॊल्-कहे हुए वचन को; मऱुक्क वल्लमो-रोक सकते हैं क्या; यान्-मैं; उनक्कु नोय्-तुम्हारा रोग हूँ; ऍन-ऐसा; अवळ् नुवन्ऱळाळ्-वह कह चुकी; आयवळ्-वही; चीतै-सीता है; पण्टु-पहले; अमुतिल् तोन्ऱिन्नाळ्-अमृत के साथ उत्पन्न (श्रीलक्ष्मी है)। ९२

अग्नि में कूदकर जो मरी, उस दिव्य सती-साध्वी, वेदवती का दिया

शाप टाला जा सकता है क्या ? उसने कहा था कि मैं तुम्हारा रोग बनूँगी। वही वेदवती सीता बन आयी है, जो पहले अमृत के साथ उत्पन्न श्रीलक्ष्मीदेवी हैं। [उत्तरकाण्ड में वेदवती का वृत्तान्त आता है। वेदवती कुशध्वज मुनि के वेदमन्त्रों की कन्या श्रीविष्णु की पत्नी बनने की साध लेकर यवन वन में तपस्या कर रही थी। रावण ने आकर छेड़ा तो उन्होंने अग्निप्रवेश किया और यह शाप दिया कि मैं तुम्हारे नाश का (कारण) रोग बनूँगी।]। ९२

शम्बरप् पॅयरुडैत् तानवर्क् किऱैवनैत् तनुव लत्ताल्
अम्बरत् तुम्बर्पुक् कमरिडैत् तलैतुमित् तमर रुय्य
उम्बरुक् किऱैवनुक् करशळित् तुदविना नॉरुव नेमि
इम्बरिऱ् पणिशॅयत् तशरदप् पॅयरिना निशैव ळर्त्तान् 93

तचरत पॅयरितान्–दशरथ नाम के; इचै वळर्त्तान्–कीर्तिमान; ऑरुवन्–अनुपम राजा ने; नेमि–(उसके आज्ञा-) चक्र के; इम्परिल्–इस भूलोक में; पणि चॅय–चालू रहते; चम्परत् पॅयर् उटै–शंबर नाम के; तानवर्क्कु इऱैवनै–दानवों के राजा को; तनु वलत्ताल्–धनु के प्रताप से; अम्परत्तु उम्पर् पुक्कु–आकाश के ऊपर जाकर; अमर् इटै–युद्ध में; तलै तुमित्तु–सिर काटकर; अमरर् उय्य–देवों के संरक्षणार्थ; उम्परुक्कु इऱैवनुक्कु–देवों के प्रभु (देवेन्द्र) को; अरचु अळित्तु–राज्य देकर; उतवितान्–सहायता की। ९३

दशरथ नाम का राजा अनुपम कीर्तिमान् था। उसका आज्ञाचक्र भूलोक भर में चलता था। और भी उसने आकाशलोक में भी जाकर अपना विक्रम दिखाया। शंबर का अपने धनु के बल से सिर काटा और देवों का कष्ट दूर करते हुए और उनको दुःखरहित जीवन बिताने का मार्ग सुलभ करते हुए, देवेन्द्र को उसका राज दिला दिया। (शंबर असुर था। उसने देवलोक को हथिया लेकर देवों को कष्ट दिया। दशरथ ने अपनी पत्नी कैकेयी को साथ लेकर आकाशलोक में शंबर से युद्ध किया और उसे मार डाला।)। ९३

मिडल्पडैत् तॉरुवना यमरर्कोन् विडैयदाय् वॅरिनित् मेलाय्
उडल्पडैत् तवुणरा यितरॅला मडियवा ळुरुवि नानुम्
अडल्पडैत् तवनियैप् पॅरुवळन् दरुहवॅन् ऱुरुळि नानुम्
कडल्पडैत् तवरॊडुङ् गङ्गॅदन् दवन्वळिक् कडवुण् मन्नन् 94

मिटल् पटैत्तु–वीर्यवान; ऑरुवनाय्–एकाकी; अमरर् कोन्–देवेन्द्र के; विटैयताय्–ऋषभ बनकर आने पर; वॅरिनित् मेलाय्–उसकी पीठ पर सवार होकर; उटल् पटैत्तु–सशरीर; अवुणर् आयितर् ॲलाम्–दानव जो रहे, उन सभी को; मटिय-संहार करने; वाळ् उरुवितानुम्–जिसने तलवार निकाली (वह ककुत्स्थ या पुरंजय) और; अटल् पटैत्तु–बल पाकर; अवनियै–भूमि को; पॅरु वळम् तरुक–

विपुल समृद्धि दो; अॅन्ऱु अरुळिनातुम्–ऐसी आज्ञा जिसने दी, वह पृथु; कटल् पटॆत्तवरॊटुम्–सागर बनानेवाले सगरपुत्रों के साथ; कङ्कै तन्तवन्–गंगा को जो भूमि पर लाया वह भगीरथ; वऴि–उनका वंशज; कटवुळ् मन्नन्–दैवी राजा है (दशरथ)। ६४

उस दशरथ का वंश ही वीरों का वंश है। देवेन्द्र को ऋषभ बनाकर उसके ऊपर सवार होकर पुरंजय या ककुत्स्थ ने सारे दानवों का नाश किया था। पृथु नाम के राजा ने भूदेवी को मजबूर किया कि वह लोगों को सारी वस्तुएँ समृद्ध रूप से पैदा कर दें। फिर सगरपुत्र थे, जिन्होंने भूमि खोदकर सागर बनाया था। गंगा का भूमि में अवतरण भगीरथ की तपस्या के फलस्वरूप हुआ। इन सब पराक्रमी राजाओं का वंशज था वह दैवी दशरथ। (इनकी चर्चा बालकाण्ड में भी आती है। शतानन्द ने जनक से दशरथ के कुल की परम्परा बतायी।)। ९४

पॊय्युरैत् तुलहिनिऱ् चिन्तविनार् कुलमऱप् पॊरुदु तन्वेल्
नॆय्युरैत् तुऱैयिलिट् टऱम्वळर्त् तॊरुवनाय् नॆऱियि निन्ऱान्
मैयुरैत् तुलवुहण् मनैविपाल् वरमळित् तवैम ऱादु
मॆय्युरैत् तुयिर्हॊडुत् तमररुम् पॆऱुहला वीडु पॆऱ्ऱान् 95

पॊय् उरैत्तु–असत्य कहते हुए; उलकिनिल्–लोक में; चिनविनार्–क्रोध के साथ घूमनेवालों के; कुलम् अऱ–कुल को मिटाते हुए; पॊरुतु–युद्ध करके; तन् वेल् नॆय् उरैत्तु–भाले पर तेल मलकर; उऱैयिल् इट्टु–कोश में डालकर; अऱम् वळर्त्तु–धर्मसंवर्धन कराके; ऒरुवनाय्–अनुपम रीति से; नॆऱियिल् निन्ऱान्–जो न्यायमार्ग पर स्थित रहा वह दशरथ; मै उरैत्तु–अंजन लगाकर; उलवु कण्–कर्ण तक आयत आँखों वाली; मनैवि पाल्–पत्नी को; वरम् अळित्तु–वर प्रदान करके; अवै मऱात्तु–उनको न फिराकर; मॆय् उरैत्तु–सत्य बोलकर; उयिर् कॊटुत्तु–प्राण त्यागकर; अमररुम् पॆऱुकला–देवों को भी दुर्लभ; वीटु पॆऱ्ऱान्–मोक्षलोक पाया (उस दशरथ ने)। ६५

इसी दशरथ ने भूतल में असत्य बोलते हुए क्रोधोन्मत्त होकर लड़ने आनेवालों के साथ युद्ध किया, उनको निहत किया और तभी अपने भाले को तेल मलकर कोश में डाला। वह धर्मसम्वर्धक न्यायमार्गगामी अद्वितीय वीर था। उसने अपनी अंजनरंजित नेत्रों वाली पत्नी कैकेयी को दो वर दिये। सत्यवादी अपने वचन से मुकरना नहीं चाहता था। सत्य बोलकर अपने प्राण दे दिये। देवों को भी दुर्लभ मोक्षलोक को प्राप्त हो गया। ९५

अनैयवन् शिऱुवरॆम् बॆरुमवुन् पहैञरा लवरै यम्मा
इनैयरॆन् ऱुणर्दियॆ लिऱुवरुम् ऒरुवरु मॆंदिरि लादार्

मुनैवरु ममररुम् मुळ्ळुदुणर्न् दवर्हळुम् मुर्रु मर्रुम्
निन्नैवरुन् दहैयर्नम् विनैयिनाल् मनिदरा यॅळिदु निन्र्रार् 96

ऍम्पॅरुम—मेरे प्रभु; अनैयवन् चिरुवर्—उनके छोटे हैं; उन् पकैवर्—तुम्हारे शत्रु; अवरै—उनको; इन्नैयर्—अमुक हैं; ऍन्रु—ऐसा; उणर्तियेल्—समझोगे तो; इरुवरुम्—दोनों; ओरुवरुम् ऍतिर् इलातार्—उनके टक्कर के और कोई न हों ऐसे हैं; मुनैवरुम्—मुनि; अमररुम्—और देव; मुळ्ळुतु उणर्न्तवर्कळुम्—सर्वज्ञ; मर्रुम् मुर्रुम्—और सभी अन्य; निनैवु अरु—नहीं समझ सकें ऐसी; तकैयर्—स्थिति के; नम् विनैयिनाल्—हमारे कर्मों के कारण; मनितराय्—मानव बनकर; ऍळितु निन्रार्—सुलभ रहते हैं। ९६

हमारे स्वामी ! आपके शत्रु उसके ही छोटे हैं। आप उनके सम्बन्ध में जानना चाहें तो सुनिए। वे दोनों अप्रतिम वीर हैं। उनके सम्बन्ध में देव, मुनि, सर्वज्ञ ज्ञानी और अन्य चराचर पदार्थ कोई भी जान नहीं सकते। उनके गुण ज्ञानातीत हैं। हमारे कर्म के कारण वे अब मानव बनकर सुलभ हुए हैं। ९६

कोशिहप् पॅयरुडैक् कुलमुनित् तलैवनक् कुळिर्म लर्प्पे
राशनत् तवनोडॅव् वुलहमुन् दरुवनॅन् रमैय लुर्रान्
ईशनिर् पॅरुपडैक् कलमिमैप् पळविलॅव् वुलहुम् यावुम्
नाशमुर् रिडनडप् पनकोडुत् तनपिडित् तुडैयर् नम्ब 97

नम्प—नायक; अ कुळिर् मलर्—उस शीतल कमल-पुष्प के; पेर् आचनत्तवनोटु—आसनस्थ ब्रह्मा के साथ; ऍ उलकमुम्—सभी लोकों को; तरुवन् ऍन्रु—(सृष्ट) कर दूंगा ऐसा; अमैयल् उर्रान्—जो कार्य में लगे; कोचिक पॅयरुटै—कौशिक नाम के; मुनिकुल तलैवन्—मुनिकुल श्रेष्ठ द्वारा; इमैप्पु अळविल्—पलक मारती देर में; ऍ उलकुम्—सभी लोकों को; यावुम् नाचम् उर्रिट—सभी को नाश करते हुए; नटप्पत—चलनेवाले; ईचनिल् पॅरु—परमेश्वर से प्राप्त; पटै कलम्—अस्त्र-शस्त्र; कोटुत्तत—दिये गये; पिटित्तुटैयर्—हाथ में रखनेवाले। ९७

हमारे नायक ! ऋषियों में श्रेष्ठ कौशिक ने, जिन्होंने कमलासन ब्रह्मा के साथ सारे लोकों को रचने का उपक्रम किया था, उन्हें शिवजी से प्राप्त अस्त्र-शस्त्र दिये हैं। वे हथियार पल भर में सभी लोकों के सभी जीवों और पदार्थों को नष्ट करने की शक्ति रखते हैं। दोनों उन हथियारों को अपने हाथ में लिये हुए हैं। ९७

ऍरुळ्वलिप् पॊरुविरो ळवुणरो डमरर्पण् डिहल्शॅय् कालत्
तुरुतिरर् कलुळनमे लॊरुवनिन् रमर्शॅय्दा नुडैय विल्लुम्
तॅरुशिनत् तवर्हळ्मुप् पुरम्नॅरुप् पुरवुरुत् तॅय्द वम्बुम्
कुरुमुनिप् पॅयरिना निरैदवर्क् किरैदरक् कॊण्डु निन्रार् 98

ॲरुळ् वलि–अतिबलिष्ठ; पॊरु इल् तोळ्–अनुपम भुजबली; अवुणरोटु–दानवों के विरुद्ध; अमरर्–देवों ने; पण्टु–पुराने काल में; इकल् चॆय् कालत्तु–जब युद्ध किया तब; उऱु तिऱल्–बलयुक्त; कलुळऩ् मेल्–गरुड़ पर; ऒरुवऩ् निऩ्ऱु–अकेले सवार होकर; अमर् चॆय्ताऩ्–जिन्होंने युद्ध किया; उटैय–उन श्रीविष्णु का; विल्लुम्–चाप; तॆऱु चिऩत्तवर्कळ्–नाशक और क्रोधी राक्षसों के; मुप्पुरम्–त्रिपुर को; नॆरुप्पु उऱ–आग लगाते हुए; उरुत्तु ॲय्त–गुस्सा करके प्रेरित; अम्पुम्–शर; कुऱु मुनि पॆयरित्ताऩ्–छोटे रूप के साथ, मुनि-कथित; निऱैतवर्क्कु–पूर्ण तपस्वियों के; इऱै–शीर्षस्थ (अगस्त्य) द्वारा; तर–दिये जाने पर; कॊण्टु निऩ्ऱार्–लेकर रहते हैं। ९८

और भी उनके हाथ में श्रीविष्णु का धनु है। कभी, जब दानवों के साथ, देवों ने युद्ध किया, तब अति बलिष्ठ गरुड़ पर सवार होकर इन्हीं विष्णु ने अकेले युद्ध किया था। शत्रुघातक क्रोधशील (तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली नाम के) तीनों राक्षसों के त्रिपुर को जलाने के लिए शिवजी ने गुस्सा करके जो बाण चलाया था, वह बाण भी अब उनके हाथ में है। ये दोनों नाटे ऋषि, उत्कृष्ट तपस्वियों में शीर्षस्थ अगस्त्य ने उन्हें दिये थे। ९८

नाविऩा लुलहैनक् किडुवदिक् कळविडऱ् कुरिय नाळुम्
मेवुती विडमुयिर्प् पऩॆयिऱ् पॊळियॆयिऱ् ऱऩव वीरर्
आवमा मरियपुऱ् ऱुऱैवमुऱ् ऱऱिवरुक् कळिवु शॆय्युम्
पावका रियरुयिर्प् पदमला लिरैपॆऱा पहळि नाहम् 99

पकळि नाकम्–(श्रीराम के) अस्त्र रूपी सर्प; नाविऩाल्–अपनी जिह्वा से; उलकै नक्किटुव–संसार को चाट लेंगे; तिक्कु अळविटऱ्कु उरिय–दिशाओं को नापने योग्य हैं; नाळुम्–रोज; मेवु ती विटम्–(दाँतों में) लगे रहे भयंकर विष को; उयिर्प्पऩ–निकालनेवाले; वॆयिल् पॊळि–धूप-सा गरम प्रकाश निःसृत करनेवाले; ऍयिऱ्ऱऩ–दाँतों के; अ वीरर्–उन वीरों के; आवम् आम्–तूणीर रूपी; अरिय पुऱ्ऱु उऱैव–अपूर्व बाँबियों में रहनेवाले; मुऱ्ऱु अऱिवरुक्कु–पूर्ण ज्ञानियों का; अळिवु चॆय्युम्–नाश करनेवाले; पावकारियर्–पापकारियों के; उयिर् पतम् अला–प्राणों के सिवा; इरै पॆऱा–और कोई भोजन नहीं लेते। ९९

श्रीराम के बाणों को सर्प समझिए। वे अपनी जिह्वा से सारे लोकों को चाट लेंगे (मिटा देंगे)। दिशाओं में व्याप सकनेवाले हैं। रोज़ अपने दाँतों से विष रिसानेवाले हैं। धूप जलती हो, ऐसे प्रकाशमय हैं। वे उन वीरों के तूणीर रूपी अपूर्व बाँबियों में वास करते हैं। वे उन पापकारियों के प्राणों के सिवा और कुछ नहीं खाएँगे, जो सर्वज्ञ ज्ञानियों की हानि करते हैं। ९९

पेरुमो वॊरुवरा लवर्हळा लल्लदिप् पॆरिय वेऩुम्
नारुमू रियुमऱा नम्मुडॆच् चिलैहळ्पो ऩलिव वामो

तारुवो वेणुवो ताणुवा युलहिनैत् तळुवि निऱ्कुम्
मेरुवो माल्वरैक् कुलमदो वल्लवो विल्लु मन्नो 100

विल्लुम्–उनके धनुओं को; अवर्कळाल् अल्लतु–उनके सिवा; ऑरुवराल्–और किसी के द्वारा; पेरुमो–हिलाया जा सकता है क्या; नम्मुटै चिलैकळ् पोल्–हमारे धनुओं की भाँति; नारुम् मूरियुम्–प्रत्यंचा और प्रताप से; अऱा–(कभी) रहित नहीं होंगे; इ पॅरियवेनुम्–(हमारे चाप) इतने बड़े हैं तो भी; नलिव आमो–उनको तोड़ सकेंगे क्या; तारुवो–(वे) कल्पतरु हैं; वेणुवो–या बाँस के; ताणुवाय्–स्थाणु (शिव की तरह) बनकर; उलकिनै तळुवि–भूतल पर लगे; निऱ्कुम्–स्थित रहनेवाला; मेरुवो–मेरुपर्वत है; माल् वरै कुलम्–बड़े पर्वतों के कुल ही; अतो अल्लवो–वे नहीं हैं क्या। १००

उनके हाथ के धनुओं को और कोई डिगा भी सकता है क्या? उनकी प्रत्यंचा कभी नहीं टूटती; न उनका बल ही कभी टूटता। क्या हमारे धनुष देखने में बड़े होने पर भी उनको कुछ हानि पहुँचा सकेंगे? आहा! वे धनु कल्पतरु हैं या बाँस के बने हैं? स्थाणु के समान भूमि को व्याप्त करते हुए स्थित मेरु पर्वत हैं? सभी बड़े पर्वतों का एकत्रित रूप हैं न वे!। १००

उरमॊरुङ् गियदुनीर् कडैयुम्वा लियदुमार् बुलहै मूडुम्
मरमॊरुङ् गियकरा दियर्विरा दनदुमाल् वरैकळ् मानुम्
शिरमॊरुङ् गियविन्निच् चॆरुवॊरुङ् गियदॆनिऱ् ऱॆव्व रॆन्बार्
परमॊरुङ् गुवदलार् पिऱिदॊरुङ् गाददोर् पहैयु मुण्डो 101

नीर् कटैयुम्–समुद्रमथनकारी; वालियतु–वाली का; मार्पु उरम्–वक्ष का प्रताप; ऑरुङ्कियतु–नष्ट हुआ; उलकै मूटुम् मरम्–संसार को आच्छादित कर जो रहे, वे (साल) वृक्ष; ऑरुङ्किय–चिर गये; कर आतियर्–खर आदि के और; विराततु–विराध के; माल् वरैकळ् मानुम्–बड़े पर्वत-जैसे; चिरम् ऑरुङ्किय–सिर टूटे; इनि–अब; चॆरु ऑरुङ्कियतु ॲनिन्–युद्ध आ गया तो; तॆव्वर् ॲन्पार्–शत्रुओं का; परम् ऑरुङ्कुवतु अलाल्–भार कम होना छोड़कर; पिऱितु–फिर; ऑरुङ्काततु–न दबनेवाला; ओर् पकैयुम् उण्टो–कोई शत्रु रहेगा क्या। १०१

उनके वाणों से समुद्रमथनकारी वाली के वक्ष का बल टूटा। लोक भर को आच्छादित कर जो रहे, वे सालवृक्ष छिन्न हो गये। खर आदि राक्षसों और विराध के पर्वतोपम सिर छितर गये। अब युद्ध होगा तो उनके प्रताप से शत्रुओं के भार के कम हो जाने के सिवा कोई शत्रु रह जायगा क्या जो उनके सामने दब न जाए? (ऑरुङ्कु शब्द के टूटना, दबना, नष्ट होना, बिखर जाना आदि अनेक अर्थ हैं।)। १०१

शोल्वरम् पॆरियमा मुनिवरॆन् बवर्हळ्तन् दुणैयि लादार्
ॲल्वरम् पॆरियतो ळिरुवरु ममररो डुलहम् यावुम्

वॆल्वरॆन् बदुतॆरित् दॆण्णिनार् निरुदर्वेर् मुदलुम् वीयक्
कॊल्वरॆन् रुणर्दला लवरैवन् दणैवदो रियैवु कॊण्डार् 102

चॊल्–प्रशंसा योग्य; वरम् पॆरिय–वरों के कारण बड़े बने; तम् तुणै इलातार्–अपनी सानी न रखनेवाले; मा मुतिवर् ॲन्पवर्कळ्–महामुनि जो हैं; ॲल् वरम्–प्रभामय; पॆरिय तोळ् इरुवरुम्–बड़े कन्धों वाले दोनों; अमररोट् उलकम् यावुम्–देवों के साथ सारे लोकों को; वॆल्वर्–जीतेंगे; ॲन्पतु–यह; तॆरिन्तु ॲण्णितार्–जान-बूझकर; निरुतर्–राक्षस; वेर् तलुम्–जड़ के साथ; वीय–मिट जाएँ, ऐसा; कॊल्वर्–उन्हें मार डालेंगे; ॲन्रु उणर्तलाल्–ऐसा सोचने से; अवरै–उनके पास; वन्तु अणैवतु ओर् इयैवु कॊण्टार्–आ जाने की तत्परता अपनायी (उन मुनियों ने)। १०२

प्रशंसायोग्य और वरविभूषित अप्रतिम ऋषियों ने जान लिया कि ये देवों के साथ सारे लोकों को जीत सकते हैं। उन्हें यह भी सूझ गया कि ये राक्षसों का भी मूलसहित नाश कर देंगे। इसलिए वे इनके पक्षपाती हो गये। १०२

तुञ्जुहिन् ऱलर्हळा लिरवुनन् पहलुम्निर् चॊल्ल वॊल्हि
नॆञ्जुनिन् ऱयरुमिन् निरुदर्पेर् शनहियाम् नॆडिय दाय
नञ्जुनिन् ऱुनर्हडाम् नण्णुवार् नरहमॆन् ऱॆण्णि नम्मै
अञ्जुहिन् ऱिलर्हणिन् नरुळलार् चरणिला वमर रम्मा 103

नॆञ्चु निन्रु–मन में सोचकर; अयरुम्–क्लान्त हुए; इ निरुतर्–ये राक्षस; निन् चॊल्ल ऒल्कि–आपसे कहने से हिचककर; इरवु नन् पकलुम्–रात और अच्छे दिन में भी; तुञ्चुकिन्ऱलर्कळ्–नहीं सोते; नम् अरुळ् अलाल्–हमारी करुणा के अलावा; चरण् इला–कोई आश्रय जिनका नहीं; अमरर्–वे देव; पेर् चनकियाम्–नाम की जानकी; नॆटियतु आय नञ्चु–बहुत क्रूर विष को; तिन्ऱनर्कळ् ताम्–जिन्होंने खाया है वे; नरकम् नण्णुवार्–नरक जायेंगे; ॲन्रु ॲण्णि–ऐसा सोचकर; नम्मै–हमसे; अञ्चुकिन्ऱलर्कळ्–नहीं डरते। १०३

हमारे राक्षसों को भी मन में संशय और डर है। वे व्याकुल हैं। तो भी वे आपसे कहने से संकोच करते हैं और दिन और रात अनिद्र रहते हैं। और बेचारे देवों को हमारी करुणा के सिवा अन्य आश्रय नहीं हैं। तो भी अब वे यह समझते हैं कि जानकी नाम के भयंकर विष का अशन करने के प्रयत्न के फलस्वरूप राक्षस नरक जाएँगे। इसलिए वे अब हमसे नहीं डरते। १०३

पुहल्मदित् तुणर्हिला मैयिनमक् कॊळिमैशाल् पॊरुमै कूर
नहल्मदिक् किलमरुप् पॊलियवा ळॊळियिळन् दुय्य नण्णुम्
पहल्मदिक् कुवमैया यिनवॊला मिरवुकाल् परुव नाळिन्
अहल्मदिक् कुवमैया यिनहॊलो वमरर्तम् वदन मम्मा 104

पुकल् मतित्तु–हमारी शरण आना चाहकर; उणर्किलामैयित्–न पाने के कारण; नमकुकु ॲळिमै चाल्–हमारे प्रति दीन बनकर; पोऱ्मै कूर–सब्र के साथ; नकल् मतिक्किल–हर्षित न होकर; मरु पोलिय–कलंक खूब दिखे, ऐसा; वाळ् ऑळि इळन्तु–निष्प्रभ रहकर; उय्य नण्णुम्–केवल जीवित रहनेवाला; पकल् मतिक्कु–दिन के चन्द्र की; उवमै आयित्त–उपमा जो बने रहे; अमरर् तम् वतनम् ॲलाम्–सभी देवों के वदन; परुव नाळित्–पूर्णिमा के दिन; इरवु काल्–रात में शोभनेवाले; अकल् मतिक्कु–विकसित पूर्णचन्द्र के; उवमै आयित्त–उपमान बन गये हैं; कोल् ओ–न क्या। १०४

देव हमारी शरण चाहते थे। वह उन्हें नहीं मिली। इसलिए वे दीन बनकर सब्र के साथ हर्ष छोड़कर दुःखी रहे। उनके मुख दिन के उस चन्द्र के समान म्लान थे, जिसका कलंक ही दिखता हो और जो किसी तरह दृश्यमान रहता हो! अब उनके वे वदन पूर्णिमा के पूर्णवर्धित चन्द्रमा के उपमान बने दिखते हैं। १०४

शिन्दुमुन् दुलहित्तुक् किरुदिपुक् कुरुवॊळित् तुलैदल् शॆय्वार्
इन्दुविन् तिरुमुहत् तिरैविनम् मुरैयुळा ळॆन्न लोडुम्
अन्दहन् मुदलिनो रमररुम् मुनिवरुम् पिररु मञ्जार्
वन्दुनम् नहरमुम् वाळ्वैयुम् कण्डुकण् डहल्वर् मन्नो 105

चिन्तु–सिन्धु; मुन्तु–पूर्वक; उलकित्तुक्कु–भूतल की; इऱुति पुक्कु–सीमा तक जाकर; उरु ऑळित्तु–रूप छिपाकर; उलैतल् चॆय्वार्–जो व्याकुल हैं; अन्तकन् मुतलिनोर् अमररुम्–वे यम आदि देवता; मुनिवरुम्–ऋषि; पिररुम्–और अन्य; इन्तुविन् तिरु मुकत्तु–इन्दु-सम श्रीमुख वाली; इऱैवि–भगवती; नम् उऱैयुळाळ्–हमारे नगर में हैं; ॲन्तलोटुम्–यह जानने पर; अञ्चार्–हमसे नहीं डरते; वन्तु–आकर; नम् नकरमुम् वाळ्वैयुम्–हमारे नगर और जीवन को; कण्टु कण्टु–देख-देखकर; अकल्वर्–लौट जाते हैं। १०५

यम आदि देवता सिन्धु के बाद सृष्ट भूमि की सीमा तक जाकर अपना रूप छिपाते रहे। ऋषियों और अन्यों की भी वही स्थिति रही। अब उन्हें मालूम हुआ कि इन्दु-सम श्रीमुख वाली भगवती हमारे वासस्थान में (कारा में) बन्द है तो वे भय से मुक्त हो गये। वे इधर बार-बार आकर हमारे नगर और हमारी स्थिति का हाल जान लेते हैं और आते-जाते रहते हैं। १०५

शॊलत्तहात् तुन्निमित् तङ्गळॆङ् गणुम्वरत् तोडर्व वॊन्नार्
वॆलत्तहा वमररु मवुणरुञ् जॆरुविल् विट्टन्न विडाद
कुलत्तहाल् वयनॆडुङ् गुदिरैयु मदिर्मदक् कुन्ऱ मिन्ऱु
वलत्तहाल् मुन्दुरत् तन्दुनम् मनैयिडैप् पुहुव मन्नो 106

चोल तका–अकथनीय; तुत् निमित्तङ्कळ्–बुरे शकुन; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र;

वर तोटरव–पीछा करके आते हैं; ऑन्नार्–अमित्र; वॅल तका–हमें जो जीतने योग्य नहीं; अमररुम् अवुणरुन्–देव और दानव; चॅरुविल् विट्टत–युद्ध में जो छोड़ गये; विटात कुलत्तुत–अभिन्न (श्रेष्ठ) कुल; काल् वय–टाँगों के बल वाले; नॅटु कुतिरॅयुम्–लम्बे अश्व; अतिर्–(और) चिंघाड़नेवाले; मत कुन्रुम्–मत्त पर्वत-सम गज; इन्रु–अब; वलत्त काल्–दाहिने पैरों को उठाकर; मुन्तु उर तन्तु–पहले उठा पग रखकर; नम् मनै इटै–हमारे घरों में; पुकुव–घुसते हैं। १०६

और भी अकथनीय बुरे शकुन सर्वत्र लगे आते हैं। हमारे शत्रु देव और दानवों ने, जो हमें जीत नहीं सके, युद्ध में गजों और अश्वों को छोड़ दिया था। वे उच्च कुल के और बलवान पैरों वाले अश्व और चिंघाड़नेवाले मत्त और पर्वत-से गज दाहिनी टाँगें पहले उठाकर पग धरते हैं और हमारे महलों में घुसते हैं। (दाहिना पैर रखकर घर के अन्दर आना अशुभ शकुन माना जाता है।)। १०६

वायितुम् पल्लितुम् पुनल्वरन् दुलरिनार् निरुदर् वॅहुम्
पेयितुम् पॅरियपेर् नरिहळुम् तिरिदरुम् पिरवु मॅण्णिन्
कोयिलुम् नहरमु मडनलार् कुळलुनङ् गुञ्जि योडुम्
तीयिन्वॅन् दनविनित् तुन्निमित् तम्बॅरुन् दिरनु मुण्डो 107

निरुतर्–राक्षस; वायितुम्–मुखों में; पल्लितुम्–और दाँतों में; पुनल् वरन्तु–जल सूखकर; उलरितार्–शुष्कमुख और शुष्कदन्त हुए; वॅकुम् पेयितुम्–रहनेवाले भूतों से भी; पेरिय पेर्–अधिक बड़े; नरिकळुम्–सियार भी; तिरितरुम्–घूमते हैं; पिरवुम् ऍण्णिल्–और अन्य विषय भी सोचें तो; कोयिलुम् नकरमुम्–महल और नगर के स्थान; मटनलार्–अबोध स्त्रियों के; कुळलुम्–केश भी; नम् कुञ्चियोटुम्–हमारे बालों के साथ; तीयिन् वॅन्तन–आग में जले; इनि–आगे; तुन् निमित्तम्–बुरे शकुन; पॅरुम् तिरत्तुम्–मिलें, ऐसे प्रकार भी; उण्टो–हैं क्या। १०७

राक्षसों के मुख और दाँत अकारण सूख जाते हैं। बड़े-बड़े सियार, जो भूतों से भी बड़े हैं, नगर में घूमते-फिरते देखे जाते हैं। और ऐसी बातों को देखा जाय तो महल, नगर के भाग, रमणी नारियों की वेणियाँ, हमारे केश अकारण आग में जले। इससे बढ़कर बुरे शकुन हो भी सकते हैं क्या ?। १०७

शिन्दमा नाहरॅच् चिरमुरुक् कियकरन् तिरिशि रत्तोन्
मुन्दमा नायिनान् वालिये मुदलितोर् मुडिवु कण्डाल्
अन्दमा निडवनो डाळिमा वलवनुम् पिररु मैया
इन्दमा निडवरा मिरुवरो डॅण्णला मौरुवर् यारे 108

ऐया–प्रभु; चिन्त–बल तोड़कर; मा नाकरॅ–गौरवमय देवों को; चिरम् मुरुक्किय–सिर काटनेवाले; करन् तिरिचिरत्तोन्–खर और त्रिशिरा; मुन्त–पहले; मान् आयितान्–जो हरिण बना वह (मारीच); वालिये मुतलितोर्–वाली आदि के;

मुटिवु कण्टाल्–अन्त देखें तो; अन्तम् मान्–सुन्दर हरिण अपने हाथ में रखनेवाले; इटवनोटु–ऋषभवाहन शिव के साथ; आऴि–चक्रधारी; मा वलवनुम्–बड़े पराक्रमी विष्णु; पिऱरुम्–अन्य (ब्रह्मा आदि); इन्त मातिटवर् आम्–(की श्रेणी में ही) ये मनुष्य भी हैं; इरुवरोटु–इन दोनों के साथ रखकर; ऍण्णल् आम्–गिना जाय, ऐसा; ऑरुवर् यारे–एक कौन है। १०८

स्वामी ! देवों का बल तोड़कर उन्हें शीर्षरहित कर दिया था, हमारे खर, त्रिशिरा आदि ने। वे, पहले जो हरिण बना था, वह मारीच और वाली —इन लोगों की गति देखने पर यही लगता है कि इन मनुष्यों को भी सुन्दर हरिण को बायें हाथ में धरनेवाले ऋषभवाहन शिवजी, (सुदर्शन) चक्रधारी त्रिविक्रम और (ब्रह्मा आदि) अन्य देवताओं की श्रेणी में ही गिनना चाहिए। इनके साथ रखकर गिनने के लिए कोई कौन हैं ? । १०८

इन्तमॊन्ऱु उरैशॆय्हे नितिदुके ळॆम्बिरा निरुव राय
अन्नवर् तम्मॊडुम् वानरत् तलैवरा यणुहि निन्ऱार्
मन्नुनम् पहैञराम् वानुळो रवरॊडुम् माऱु कोडल्
कन्नमन् ऱिदुनमक् कुऱुदियॆन् ऱुणर्दलुङ् गरुम मन्ऱाल् 109

ऍम्पिरान्–हमारे स्वामी; इन्नतम् ऑन्ऱु–और एक (बात); उरै चॆय्केन्–कहूँगा; इत्तु केळ्–हितार्थ सुनिए; इरुवर् आय–द्वय; अन्नवर् तम्मॊटुम्–उनके साथ; वानरम् तलैवराय्–वानर-यूथप बने; अणुकि–पास; निन्ऱार्–रहनेवाले; मन्नुम्–स्थायी; नम् पकैञर् आम्–हमारे शत्रु जो हैं; वानुळोर्–वे देव हैं; अवरॊटुम्–उनसे; माऱु कोटल्–विपरीतता बरतना; कन्नम् अन्ऱु–गण्य नहीं है; इतु–यह; नमक्कु उऱुति–हमारे हित में होगा; ऍन्ऱु उणर्तलुम्–ऐसा मानना भी; करुमम् अन्ऱु–(युक्त) कार्य नहीं। १०६

हमारे नाथ ! और एक बात कहूँगा। हितार्थ सुन लीजिए। उन दो के साथ जो वानरयूथप आये हैं, वे हमारे सदा के विरोधी देव हैं ! उनसे युद्ध ठानना गौरव की बात नहीं होगा। युद्ध में हमारा हित है, यह समझना भी उचित नहीं है ! । १०९

इशैयुञ् जॆल्वमु मुयर्हुलत् तियर्कैयु मॆञ्ज
वशैयुङ् गोळ्मैयु मीक्कोळक् किळैयॊडु मडिया
दशैविल् कऱ्पितव् वणङ्गैविट् टरुळुदि यदन्मेल्
विशैय मिल्लॆन्च चॊल्लिनन् अऱिञरिन् मिक्कोन् 110

अऱिञरिन् मिक्कोन्–ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ (विभीषण) ने; इचैयुम्–यश व; चॆल्वमुम्–संपत्ति; उयर् कुलत्तु–उत्तम कुल के; इयर्कैयुम्–स्वाभाविक गुण; ऍञ्च–घट जाएँ ऐसा; वचैयुम्–और निन्दा; कोळ्मैयुम्–नीचता; मी कोळ–बढ़ जाएँ ऐसा; किळैयॊटुम् मटियातु–परिवारों के साथ बिना मरे; अचैविल्–

अचल; करृपिन्–सतीत्व वाली; अ अणङ्कै–उस देवी (सीता) को; विट्टरुळुति–छोड़ देने की कृपा करें; अतनूमेल्–उससे बढ़कर; विचैयम् इल्–सफलता का काम नहीं; ॲंत–ऐसा; चॊल्लितन्–कहा। ११०

सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी विभीषण ने अन्तिम रूप से यह कहा कि अपने यश, सम्पत्ति और उच्च कुल के गुणों का नाश करते हुए, निन्दा और नीचता को ऊपर ढोकर अपने परिवारों के साथ मरना रोक लें। अचल सतीत्व वाली उस देवी को छोड़ दीजिए। उससे बढ़कर विजय की बात कुछ नहीं होगी। ११०

❀ केट्ट वाण्डहै करत्तोडु करदलङ् गिडैप्पप्
पूट्टि वाय्दोरुम् पिरैक्कुलम् वॆण्णिलाप् पॊऴिय
नाट्टन् दीयॆऴ नलन्दिह ऴारमु मार्बुम्
तोट्ट डङ्गळुङ् गुलुङ्गनक् किवैयिवै शॊन्नान् 111

केट्ट–जिसने यह सुना वह; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; करत्तोटु–हाथ से; करतलम् किटैप्प–करतल लगाकर; पूट्टि–मारकर; वाय् तॊरुम्–हर मुख में; पिरै कुलम्–बालचन्द्र-से दाँतों की पंक्तियों के; वॆळ् निला पॊऴिय–श्वेत चाँदनी बरसाते; नाट्टम्–आँखों में; ती ॲळ–अग्नि के निकलते; नलम् तिकऴ्–सुन्दरतायुक्त; आरमुम्–हार; मार्पुम्–वक्ष और; तोळ् तटङ्कळुम्–विशाल कन्धों के; कुलुङ्क–डोलते; नक्कु–हँसकर; इवै इवै–ये-ये बातें; चॊन्नान्–कहीं। १११

पुरुषश्रेष्ठ रावण ने यह सुना तो गुस्से में भरकर उसने अपना हाथ हाथ पर दे मारा। मुख-मुख में दाँतों से श्वेत चाँदनी-सा प्रकाश छूटा। आँखों से आग उठी। वह ठठाकर हँसा, जिसमें मुक्ताहार, वक्ष और विशाल कन्धे डोल उठे। १११

❀ इच्चै नल्लन वुरुदिह ळिशैक्कुवॆ नॆन्राय्
पिच्चर् शॊल्लुव शॊल्लितै यॆन्बॆरु विऱलैक्
कॊच्चै मानिडर् वॆल्हुव रॆन्ऱिदु कुऱित्तल्
दच्चमो ववर्क् कन्बिनो यावदो वैया 112

ऐया–भलेमानुस; इच्चै–प्रिय; नल्लन–अच्छे; उऱुतिकळ्–हित; इचैक्कुवॆन्–कहूँगा; ॲंन्ऱाय्–(ऐसा तुमने) कहा; पिच्चर् चॊल्लुव–पागलों की-सी बातें; चॊल्लितै–कहीं; ॲंन् पॆरु विऱलै–मेरी बड़ी शक्ति को; कॊच्चै मानिटर्–तुच्छ नर; वॆल्कुवर्–परास्त करेंगे; ॲंन्ऱ इतु–ऐसी यह; कुऱित्ततु–(बात) कहना; अच्चमो–क्या उनके डर के कारण; अवर्क्कु अन्पितो–या उनके पास प्यार के कारण; यावतु–कौन सा है ?। ११२

(उसने विभीषण को व्यंग्य के साथ सम्बोधित किया—) हे प्रभु ! तुमने प्यारे, अच्छे और हितकारी विषय कहने का वादा किया। पर

पागलों की-सी बातें कह गये ! मेरे बड़े बल को तुच्छ मानव परास्त करेंगे —यह जो कहते हो वह उनसे भय के कारण कहते हो ? या उनसे प्रेम हुआ है ? कौन सा कारण है ? । ११२

ईङ्गु मानिडप् पशुक्कळक् किलेवर मॅन्ट्राय्
तोङ्गु शॉल्लिनै दिशैहळै युलहॉडुञ जॅरुक्काल्
ताङ्गुम् यानैयैत् तळ्ळियत् तळल्निऱत् तवनै
ओङ्ग रन्नोडु मॅडुक्कमुन् वरङ्गीण्ड दुळदो 113

ईङ्कु–इसमें; मानिट पचुक्कळक्कु–नर और पशुओं के लिए; इलै वरम्–वर (में चर्चा) नहीं है; ॲन्ऱाय्–कहा तुमने; तीङ्कु चॉल्लितै–दोष कहा; उलकॉटुम्–लोकों के साथ; तिचैकळै–दिशाओं को; चॅरुक्काल् ताङ्कुम्–अभिमान के साथ ढोनेवाले; यानैयै तळ्ळि–गजों को जीतकर; अ तळल् निऱत्तवनै–उस अग्नि के समान रंग वाले (शिव) को; ओङ्कल् तन्नॉटुम्–पर्वत के साथ; ॲटुक्क–उखाड़ लेने के लिए; मुन्–पहले; वरम् कॊण्टतु–वर लिया गया; उळतो–है क्या । ११३

तुमने यह गलती बतायी कि जब मैंने वर माँगे थे, तब नरों और पशुओं से अमरण का वर नहीं माँगा था। मैंने लोकों और दिशाओं को ढोनेवाले दिग्गजों को जीता और पावकवर्ण शिवजी को उनके कैलास के साथ उठाया था। तदर्थ मैंने वर माँग लिया था क्या ? । ११३

मनक्कॉ डन्ऱियुम् वऱियन वळङ्गिनै वानोर्
शिनक्कॉ डुम्बडै शॅरुक्कळत् तॅन्नैयॅन् शॅय्द
ॲनक्कु निऱ्कमऱ् ऱॉरुवयिऱ् ऱॅन्नोडु मुदित्त
उनक्कु मानिडर् वलियरान् दहैमैयु मुळदो 114

मनक्कॉट्टु अन्ऱियुम्–मन में ग्रहण किये विना ही; वऱियत–अर्थहीन; वळङ्किनै–तुमने कहा; वानोर्–देवों के; चिनम्–क्रोध से प्रेषित; कॊटुम् पटै–क्रूर हथियार; चॅरु कळत्तु–युद्धभूमि में; ॲन्नै ॲन् चॅय्त–मेरा क्या बिगाड़ सके; ॲनक्कु निऱ्क–मुझे छोड़ो; मऱ्ऱु–और; ऑरु वयिऱ्ऱु–एक ही पेट में; ॲन्नॊटुम् उतित्त–मेरे साथ जनमे; उनक्कु–तुमसे; मानिटर्–नर; वलियराम् तकैमैयुम्–अधिक बली हों, इसकी सम्भावना; उळतो–है क्या। ११४

विना सोचे-समझे तुमने अर्थहीन बातें कह दीं। देवों ने युद्ध में अति क्रोध के साथ मुझ पर क्रूर हथियार फेंके थे। वे हथियार मेरा क्या बिगाड़ सके ? मुझे छोड़ो। तुम मेरे सहोदर हो। क्या वे तुमसे अधिक बलशाली हो सकते हैं ? है ताब उनमें ? । ११४

शॉल्लु माऱ्ऱङ्गळ् तॅरिन्दिलै पन्मुऱै तोऱ्ऱु
वॅल्लु माऱ्ऱलु मॊरुमुऱै पॅऱ्ऱविलै विण्णॅक्

कल्लु मार्ऱलॅन् किळैयैयु मन्नैयुङ् गळत्तिऱ्
कौल्लु मार्ऱल रुळरॅनक् कोडलुङ् गोळे 115

चौल्लुम् मार्ऱङ्कळ्-कहने योग्य बातें; तॅरिन्तिलै-नहीं जानीं; पल् मुऱै तोर्ऱु-अनेक बार हारने पर भी; वॅल्लुम् आऱ्ऱलुम्-जीतने की शक्ति; ओरु मुऱै एक बार भी; पॅऱ् इलै-(देवों को) नहीं मिली; विण्णै-आकाश को भी; कल्लुम्-उखाड़ने की; आर्ऱलॅन्-शक्ति रखनेवाला हूँ मैं; किळैयैयुम्-मेरी शाखाओं और; ऍन्नैयुम्-मुझे; कॉल्लुम् आर्ऱलर्-मारने की शक्ति रखनेवाले; उळर् ऍन्न-होंगे, ऐसी; कोटलुम्-धारणा बना लेना भी; कोळे-कोई उचित धारणा है क्या। ११५

क्या कहना (क्या नहीं कहना) —यह भी तुम नहीं जानते ! देव कितनी ही बार मुझसे हारे ! एक बार भी उनमें बल नहीं रहा कि वे मुझे जीतें। मैं आकाश को ही उत्पाटित कर सकता हूँ। फिर ऐसी धारणा बना लेना कि कोई मुझे और मेरी शाखाओं को मार सकेंगे, वह शक्ति रखनेवाले हैं, यह उचित निर्णय होगा क्या ? । ११५

देव रिऱ्पॅऱ्ऱ वरत्तिन दॅन्बॅरुञ् जॅरुक्केल्
मूव रिऱ्पॅऱ्ऱ मुडैयवन् ऱन्नॊडु मुळुदुम्
काव लिऱ्पॅऱ्ऱ तिहिरियोन् ऱन्नॊडुङ् गडन्द
देव रिऱ्पॅऱ्ऱ वरत्तिना लियम्बुदि यिळैयोय् 116

इळैयोय्-छोटे भाई; ऍन्-मेरा; पॅरुञ् चॅरुक्कु-बड़ा गर्व; तेवरिल् पॅऱ्ऱ-देवों से प्राप्त; वरत्तित्तु एल्-वर के कारण है तो; मूवरिल्-तीनों (त्रिदेवों) में; पॅऱ्ऱम् उटैयवन्-ऋषभ के स्वामी; तन्नॊटुम्-के साथ; मुळुतुम् कावलिऱ् पॅऱ्ऱ-सर्वलोकरक्षक के स्थान में रहनेवाले; तिकिरियोन् तन्नॊटुम्-चक्रधारी विष्णु के साथ; कटन्ततु-लड़ना और जीतना; एवरिल् पॅऱ्ऱ-किससे प्राप्त; वरत्तिनाल्-वर के कारण; इयम्पुति-कहो। ११६

कनिष्ठ ! मेरा बड़ा गर्व देवों के दिये वरों का फल मानते हो तो मैं पूछता हूँ कि जो मैंने त्रिदेवों में ऋषभवाहन और सर्वलोकरक्षक सुदर्शन चक्रधारी विष्णु को परास्त किया, वह किससे प्राप्त वर की महिमा था ? । ११६

नन्दि शाबत्ति नमैयडुङ् गुरङ्गॆनि नम्बाल्
वन्द शाबङ्ग ळॆन्नैप्पल ववॆशॆय्द वलियॆन्
इन्दि यादिह ळवित्तवर् तेवर्नम् मिऱ्ऱदि
शिन्दि यादवर् यारवर् नम्मैयेन् शॆय्दार् 117

नन्ति चापत्तिन्-नन्दी के शाप से; नमै-हमें; कुरङ्कु अटुम्-वानर मिटाएगा; ऍनिन्-(कहो) तो; नम् पाल्-हमारे प्रति; वन्त-आये; चापङ्कळ् ऍन्नै पल-शाप कितने ही अनेक हैं; अवै चॆय्त-उनके किये; वलि ऍन्-

कठोर काम क्या हैं; इनुतिय आतिकळ् अवित्तवर्–इन्द्रियादि के निग्रही; तेवर्–और देव; नम् इरुति–हमारा अन्त; चिन्तियातवर् यार्–चाहनेवाले कौन नहीं हैं; अवर् नम्मै–वह हमें; ऍन्न् चॅय्तार्–क्या कर चुके। ११७

नंदी देवता के शाप के फलस्वरूप वानर हमें मिटायगा तो मेरे प्रति कितने ही शाप (कितनों द्वारा) दिये गये हैं! उन शापों ने मेरा क्या बिगाड़ा है? ये इंद्रियादिनिग्रही ऋषि और देव कौन हैं, जो मेरे अन्त की चाह नहीं करते! वे मेरा क्या कर सके? । ११७

अरङ्गि ताडुवार्क् कन्बुपूण् डुडैवर मरियेन्
इरङ्गि यानिरुप वॅन्वलि यवन्वयि नॅय्द
वरङ्गॉळ् वालिपार् ऱोऱ्ऱनन् मऱ्ऱुम्वे ऱुळ्ळ
कुरङ्गॅ लामॅन्नै वॅल्लुमॅन् ऱॅङ्ङनम् कोडि 118

अरङ्किन् आट्टुवार्क्कु–स्वर्णसभा में नृत्य करते रहनेवाले नटराज पर; अन्पु पूण्टु–भक्ति करके; उटै वरम्–जो (वाली ने) प्राप्त किया, उस वर को; अऱियेन्–मैं नहीं जानता था; यान् इरङ्कि निरुप–जब मैं थकित रहा; ऍन् वलि–मेरा बल; अवन् वयिन् ऍय्त–उसके पास चला जाए, ऐसा; वरम् कॉळ्–वर जिसे प्राप्त था, उस; वालि पाल्–वाली के हाथ; तोऱ्ऱनन्–मैं हारा; मऱ्ऱुम्–और; वॅऱु उळ्ळ–अन्य जो हैं; कुरङ्कु ऍलाम्–वानर सब; ऍन्नै वॅल्लुम्–मुझे हरा देंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍङ्ङनम् कोटि–कैसे मानते हो। ११८

वाली की बात लो। वाली स्वर्णसभा में नृत्यलीन ईश्वर नटराज का भक्त था। उसे उनका वर प्राप्त था। उससे अनभिज्ञ मैं उसके सामने गया और वर के प्रभाव के कारण थकित रह गया। मेरा आधा बल उसे प्राप्त हो गया और उसने मुझे हरा दिया। इसके आधार पर यह धारणा कैसे कर लोगे कि कोई भी ऐरा-गैरा वानर मुझे जीत सकेगा। ११८

नील कण्डनुम् नेमियुम् नेर्निन्ऱु पॉरिनुम्
एलु मन्नव रुडैवलि यवन्वयि नॅय्दुम्
शाल वन्नदु निनैन्दव नॅदिर्शॅलल् तविर्न्दु
वालि तन्नैयम् मनिदनु मऱैन्दुनिन् ऱॅय्दान् 119

नीलकण्टनुम्–नीलकण्ठ व; नेमियुम्–चक्रधारी; नेर् निन्ऱु–समक्ष खड़े होकर; पॉरिनुम्–लड़ेंगे तो भी; एलुम्–सामने रहनेवाले; अन्नवर् उटै वलि–उनका बल; अवन् वयिन् ऍय्तुम्–उसके पास चला जायगा; अन्नतु–वह; चाल निनैन्तु–खब सोचकर; अवन् ऍतिर्–उसके सामने; चॅलल् तविर्न्तु–जाना छोड़कर; वालि तन्नै–वाली पर; अ मनितनुम्–उस नर ने भी; मऱैन्तु निन्ऱु–छिपा रहकर; ऍय्तान्–शर चलाया। ११९

वाली की महिमा यह है कि नीलकंठ शिव और चक्रहस्त विष्णु भी

उसके सामने आकर युद्ध करें तो उनका आधा बल उसका हो जाय। इसको खूब समझकर तो उस मानव (राम) ने उसके सामने जाने से बचकर छिपा रहकर उस पर शर चलाया। ११९

ऊऩ विल्लिऱुत् तोट्टैमा मरत्तुळम् बोट्टिक्
कूऩि शूऴ्च्चिया लरशिऴन् दुयर्वनङ् गुऱुहि
याऩि ऴैत्तिड विल्लिऴन् दिन्नुयर् शुमक्कुम्
माऩि डन्वलि नीयला लारुळर् मदिप्पार् 120

ऊऩ विल्–टूटे धनुष को; इऱुत्तु–तोड़कर; ओट्टै–छिद्र-भरे; मा मरत्तुळ्–सालवृक्षों में; अम्पु ओट्टि–बाण चलाकर; कूऩि–मन्थरा के; चूऴ्च्चियाल्–षड्यन्त्र से; अरचु इऴन्तु–राज्य खोकर; उयर्–ऊँचे (तरुओं से युक्त); वऩम् कुऱुकि–वन में जाकर; याऩ् इऴैत्तिट–मेरे कृत्य से; इल् इऴन्तु–पत्नी को गँवाकर; इऩ् उयिर्–प्यारे प्राणों को; चुमक्कुम्–जो ढोता रहता है, उस; माऩिटऩ् वलि–नर के बल को; नी अलाल्–तुम्हारे सिवा; मतिप्पार्–महत्त्व देनेवाले; आर् उळर्–कौन होंगे। १२०

(राम की महिमा क्या कहते हो?) जीर्ण धनुष को तोड़ा उसने। बड़े खोखले सालवृक्ष के अन्दर शर चलाया। मन्थरा के षड्यन्त्र से राज्य गँवाया। जंगल में गया तो मेरे कृत्य से पत्नी को गँवाया। ज्यों-त्यों करके प्राणधारण कर रहा है। उसकी महिमा का गान करनेवाला तुम्हारे सिवा कौन होगा? । १२०

ऍन्ऱु तानुरै मौऴिन्दुनी युणर्विलि यॆन्ऩा
नन्ऱु पोदुना मॆऴुहनु मरक्कनै नणुहि
ऒन्ऱु केळॆन वुरैत्तॆनु मुरुदियॆन् ऱॊऴियान्
तुन्ऱु तारवन् पिन्नरु मिन्नैयन चौन्नान् 121

ऍन्ऱु–ऐसा; उरै–वचन; ताऩ् मॊऴिन्तु–रावण ने कहकर; नी–तुम; उणर्वु इलि–समझदार नहीं हो; ऍऩ्ऩा–कहकर; नऩ्ऱु–अच्छा; नाम् पोतुम्–हम जाएँगे; ऍऴुक–उठो; ऍऩुम्–कहते हुए; अरक्कऩै–राक्षस (रावण) के; नणुकि–पास जाकर; इऩ्ऩम्–और; उऱुति ऒऩ्ऱु–हितकारी एक बात; केळ्–सुनिए; ऍऩ्ऱु–कहकर; अऩ्पिऩऩ् ऒऴियाऩ्–हितैषी उसने बिना अलग हुए; तुऩ्ऱु तारवऩ्–सघन मालाधारी; पिऩ्ऩरुम्–बाद भी; इऩ्ऩैयऩ–ये बातें; चॊऩ्ऩाऩ्–कहीं। १२१

रावण ने यों कहकर आगे यह भी कहा कि तुम नासमझ हो! फिर उसने सबको सम्बोधित करके कहा कि उठो सब। कूच करें। तब विभीषण उसके पास गया और यों बोला। और एक हितकारी बात है, सुनिए। विभीषण भाई के हित सोचने से विरत नहीं हो सका। सघन माला से अलंकृत विभीषण ने (निम्नोक्त) ये बातें कहीं। १२१

तन्निन् मुन्निय पॊरुळिला वॊरुतनित् तलैवन्
अन्न मानिड नाहिवन् दवदरित् तमैन्दान्
शॊन्न नम्बॊरुट् टुम्बरदञ् जूळ्च्चियिन् तुणिवाल्
इन्नम् नेर्हुदि पोलुमॆन् ऱडिदॊऴु दिरन्दान् 122

तन्निन् मुन्निय–उनसे परे; पॊरुळ् इला–कोई पदार्थ नहीं, ऐसे; ऒरु तनि तलैवन्–अद्वितीय नाथ; उम्पर् तम्–देवों के; चूळ्च्चियिन् तुणिवाल्–मन्त्रणा के फलस्वरूप; चॊन्न–निन्दित; नम् पॊरुट्टु–हम (लोगों) को मारने हेतु; अन्न मानिटन् आकि वन्तु–वह मानव बनकर; अवतरित्तु–अवतार लेकर; अमैन्तान्–पैदा हुए हैं; इन्नम्–अब भी; नेर्कुति पोलुम्–सामना करेंगे क्या आप; ऎन्ऱु–कहकर; अटि तॊऴुतु–चरणों पर नमस्कार करके; इरन्तान्–विनय की। १२२

(भाई रहस्य जानिए।) जिनसे परे या पूर्व कोई नहीं, वे परात्पर परमात्मा ही देवों की प्रार्थना पर उसके द्वारा निंदित हमारा खातमा करने के लिए मानव रूप में अवतरित हो आये हैं। अब भी आप उनका सामना करेंगे क्या? विभीषण ने रावण के पैरों पर गिरकर विनय की। १२२

अच्चॊर् केट्टव नाऴिया नॆन्ऱनै यायिन्
कॊच्चैत् तुन्मदि यॆत्तनै पोरिडैक् कुऱैन्दान्
इच्चैक् केर्ऱन यान्शॆय्द वित्तनै कालम्
मुच्चर् ऱान्गॊलम् मुऴुमुद लोनॆन मुनिन्दान् 123

अ चॊल्–वह वचन; केट्टु–सुनकर; अवन् आऴियान्–वह चक्रधर है; ऎन्ऱनै–कहा तुमने; आयिन्–(सच है) तो; कॊच्चै–कायर; तुन्मति–दुर्मति; ऎत्तनै पोरिटै–कितने युद्ध में; कुऱैन्तान्–(मुझसे) हारा; यान् इत्तनै कालम् चॆय्त–इतने समय जो मैंने किया, वह सब; इच्चैक्कु एर्ऱन–मेरी इच्छा के अनुकूल ही हुआ; मुऴुमुतलोन्–आदि परमात्मा; मुच्चर्ऱान् कॊल्–बेहोश रहा क्या; ऎन–ऐसा; मुनिन्तान्–खौल उठा। १२३

रावण ने यह वचन सुनकर उत्तर दिया कि भाई! तुम उसे चक्रहस्त कहते हो? तो वह नालायक दुर्बुद्धि कितनी बार मेरे हाथों हार खा चुका है? अब तक जो भी मैंने किया, वे सब मेरी इच्छा के ही कृत्य हैं। तब वह क्या बेसुध पड़ा रहा (कि आकर रोका नहीं)? । १२३

इन्दि रन्ऱनै यिरुञ्जिऱै यिट्टना ळिमैयात्
तन्दि कोडिऱत् तहर्त्तनाळ् तन्नैयान् मुन्नम्
वन्द पोर्तॊलैत् तुरन्दनाळ् वानव रुलहैच्
चिन्द वॆन्ऱनाळ् शिऱियन्कॊल् नीशॊन्न देवन् 124

इन्तिरन् तन्नै–इन्द्र को; इरुम् चिऱै–बड़ी कारा में; इट्ट नाळ्–जब मैंने बन्द किया उस दिन; इमैया तन्ति–अपलक दिग्गजों के; कोटु इऱ–दाँतों को तोड़कर; तकर्त्त नाळ्–फोड़ दिया उस दिन; तन्नै–उसको; यान्–मैं; मुन्नम् वन्त पोर्

तॊरुम्–पहले हुए सभी युद्धों में; तुरन्त नाळ्–जब मैंने खदेड़ा तब; वानवर् उलकै–देवलोक को; चिन्त–तहस-नहस करके; वेन्र् नाळ्–जब मैंने हराया उस दिन; नी चॊन्न तेवन्–तुम जिसके सम्बन्ध में कह रहे हो वह देव; चिरियन् कॊल्–लड़का रहा क्या। १२४

जिस दिन मैंने देवेन्द्र को बड़ी कारा में डाला; अपलक दिग्गजों के दाँत तोड़े-फोड़े; इसी विष्णु को हर युद्ध में मैदान से खदेड़ा; देवों के लोक को तहस-नहस करके उनको हराया तब वह क्या लड़का था ? । १२४

शिवनु नान्मुहत् तॊरुवनुन् दिरुनॆंडु मालाम्
अवनु मऱ्ऱुळ वमररु मुडनुऱैन् दडङ्गप्
पुवन मून्ऱुम्या नाण्डुळ दाण्डवप् पॊरुविल्
उवनि लामैयि नोवलि यॊदुङ्गियो वुरैयाय् 125

चिवनुम्–शिव और; नान् मुकत्तु ऒरुवनुम्–चतुर्मुख ब्रह्मा; तिरु नॆंटु मालाम्–श्रीयुक्त बड़े विष्णु जो हैं; अवनुम्–वह; मऱ्ऱुळ अमररुम्–और अन्य देवता; उटन् उऱैन्तु अटक्क–एक साथ दबे रहें ऐसा; पुवनम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों को; यान् आण्टु उळतु–मैं जो शासित करता रहता हूँ, वह; आण्ट–जगपालक; अ पॊरु इल्–वह अप्रतिम; उवन्–वह; इलामैयिनो–न रहा, इसलिए; वलि–(या) बल; ऒतुङ्कियो–खो गया, इसलिए; उरैयाय्–कहो। १२५

मैं त्रैलोकाधिपत्य कर रहा हूँ और शिव, चतुर्मुख, अति सुन्दर त्रिविक्रम विष्णु और अन्य देव —सभी एक साथ दबे पड़े हैं। क्या यह काम जब हो रहा है तब तुम्हारा अप्रतिम वह नहीं रहा ? या उसका बल दूर हुआ रहा ? । १२५

आयि रम्बॆरुन् दोळहळु मत्तुणैत् तलैयुम्
मायि रुम्बुवि युळ्ळडि यडक्कुरुम् वडिवम्
तीय शालवुञ् जिऱियॆन् निनैन्दुनाम् तिन्नुम्
ओयु मानिड वुरुवुकॊण् डनन्कॊला मुरवोन् 126

उरवोन्–विक्रमी उस विष्णु ने; आयिरम्–सहस्र; पॆरुम् तोळ्कळुम्–बड़ी भुजाएँ; अ तुणै तलैयुम्–उतने ही सिर; मा इरु पुवि–बहुत बड़ी इस पृथ्वी को; अटि उळ्–अपने चरण के अन्दर; अटक्कुरुम्–समा लेनेवाला; वटिवम्–आकार; तीय–(इन सबको) बुरे हैं; चालवुम् चिऱितु–बहुत छोटे हैं; ऎन निनैन्तु–ऐसा सोचकर; नाम् तिन्नुम्–हमारे खाद्य; ओयुम्–दुर्बल; मानिट उरुवु–मनुष्य का रूप; कॊण्टनन् कॊल्–ले लिया क्या। १२६

भीम पराक्रमी विष्णु के सहस्र बड़े हाथ हैं। उतने ही सिर हैं। उसका आकार इतना बड़ा है कि सारी पृथ्वी उसके एक चरण के अन्दर समा सकती है। इन सबको बुरा और छोटा समझकर उसने हमारे खाद्य निर्बल मानव का रूप धर लिया क्या ? । १२६

पित्त ताहिय वीशनु मरियुमॅन् पॅयर्केट्
टॅयत्त शिन्दॅय रेहुळि येहुळि यॅल्लाम्
कॅत्त वेर्रिनुम् कडविय पुळ्ळिनु मुदुहिल्
तॅत्त वाळिह ळिन्रुळ कुन्रिन्वीळ् तडित्तिन् 127

पित्तन् आकिय–उन्मत्त जो है वह; ईचनुम्–ईश्वर; अरियुम्–और विष्णु; ॲन् पॅयर् केट्टु–मेरा नाम सुनकर; ॲय्त्त–दुर्बल; चिन्तैयर्–मन वाले बनकर; एकुळि एकुळि ॲल्लाम्–जहाँ-जहाँ जाते; कॅत्त एर्रितुम्–सवारी बैल पर; कटविय पुळ्ळिनुम्–और संचालित पक्षी पर; मुतुकिल्–पीठ पर; तैत्त वाळिकळ्–चुभे बाण; कुन्रिन् वीळ्–पर्वत पर गिरी; तटित्तिन्–तडितों के समान; इन्रु उळ–आज भी (देखे जा सकते) हैं। १२७

उन्मत्त हर और हरि मेरा नाम सुनकर सत्त्वहीन मन वाले हो जहाँ-जहाँ भाग जाते, वहाँ उनके सवारी के बैल और गरुड़ पर मैंने बाण चलाए थे। उन दोनों की पीठों पर चुभे बाण अब भी पर्वत पर गिरी तडितों के समान देखे जा सकते हैं। १२७

❀ वॅञ्जि नन्दरु पोरिनॅम् मुडनॅळ वेण्डा
इञ्जि मानह रिडॅयुरैन् दीण्डिनि दिरुत्ति
अञ्ज लञ्जलॅन् रुयलिरुन् दवर्मुहम् नोक्कि
नञ्जिन् वॅय्यवन् कॅयॅरिन् दुरुमॅन नक्कान् 128

नञ्चिन् वॅय्यवन्–विष से भी अधिक क्रूर; वॅम् चिनम् तरु–उग्र कोप के कारण हुए; पोरिन्–युद्ध में; ॲम्मुटन्–हमारे साथ; ॲळ वेण्टा–आना नहीं चाहिए; इञ्चि मा नकर्–प्राचीर-रक्षित बड़े नगर; इटै–में; उरैन्तु–रहकर; ईण्टु–यहीं; इनितु इरुत्ति–आराम के साथ रहो; अञ्चल् अञ्चल्–डरो, मत डरो; ॲन्रु–कहकर; अयल् इरुन्तवर्–पास जो रहा, उसके; मुकम् नोक्कि–मुख की तरफ़ देखकर; कै ॲरिन्तु–ताली पीटकर; उरुम् ॲन–अशनि के समान; नक्कान्–हँसा। १२८

विष से भी क्रूर रावण ने आगे कहा कि भयंकर कोप के कारण होनेवाले युद्ध में तुमको हमारे साथ आने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हमारा नगर प्राचीररक्षित है। उसमें सुख से रह जाओ। डरो मत। मत डरो। यह कहकर पास रहे विभीषण का मुख निहारा, ताली पीट ली और अशनि के समान नाद उठाते हुए ठठाकर हँसा। १२८

❀ पित्नुम् वीडण नैयनिन् उरमलाप् पॅरियोर्
मुन्नै नाळिवन् मुनिन्दिडक् किळैयॊडु मुडिन्दार्
इन्न मुण्डिया नियम्बुव दिरणिय नॅन्बान्
तन्नै युळ्ळवा केट्टियॅन् ऱुरैशॅयच् चमैन्दान् 129

पिन्नुम्–फिर भी; वीटणन्–विभीषण; ऐय–स्वामी; नित् तर मला–आपकी श्रेणी के नहीं; पॅरियोर्–(आपसे) अधिक पराक्रमी; मुन्नै नाळ्–पहले; इवन् मुनिन्तिट–इसके कोप के सामने; किळैयोटु–अपनी शाखाओं के साथ; मुटिन्तार्–नष्ट हो गये; इन्नम् उण्टु–और भी है; यान् इयम्पुवतु–मेरे कहने को; इरणियन् ॲन्पान् तन्नै–हिरण्य नाम के एक के सम्बन्ध में; उळ्ळवा केट्टि–जैसे हुआ वैसा, सुनिए; ॲन्नुरु–कहकर; उरै चॅय–बोलने में, चमैन्तान्–प्रवृत्त हुआ । १२९

फिर भी विभीषण ने रावण से कहा कि स्वामी! आपसे भी अधिक बलवान बड़े लोग रहे हैं। इनके कोप से वे अपने बन्धु-बान्धवों, परिवारों और अपनी शाखाओं के साथ विनष्ट हुए। सुनिए। और भी एक बात आपसे कहनी है। हिरण्यकशिपु के सम्बन्ध में जैसे बीती वैसी बातें सुनाऊँगा। आप सुनें। १२९

3. इरणियन् वदैप् पडलम् (हिरण्य-वध पटल)

वेदङ् गण्णिय तवमॅलाम् विरिज्जने योन्दान्
पोदङ् गण्णिय वरमवन् ररक्कॉण्डु पोन्दान्
कादुङ् गण्णुदन् मालयन् कडैमुरै काणाप्
पूदङ् गण्णिय वलियॅला मौरुदनि पौरुत्तान् 130

वेतम् कण्णिय–वेदकल्पित; तवम् ॲलाम्–सारे प्रकारों की तपस्याओं को; विरिञ्चने ईन्तान्–ब्रह्मा ने स्वयं करवा लिया था; पोतम् कण्णिय–बुद्धि-कल्पित; वरम्–वर; अवन्–ब्रह्मा के; तर–प्रदान करने पर; कॉण्टु पोन्तान्–ग्रहण कर गया; कानुम्–संहारक; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी; माल् अयन्–विष्णु और ब्रह्मा; कटै मुरै काणा–उनके द्वारा भी जिसका अन्त नहीं पाया जा सका; पूतम् कण्णिय–भूतों में विद्यमान माना गया; वलि ॲलाम्–वह इतना सारा बल; ऑरु तनि पौरुत्तान्–अकेले ही धारण किये रहा। १३०

[भूमिका—यह वृत्तान्त वाल्मीकी में नहीं है। किंवदन्ती है कि जब कम्बन् ने श्रीरंगम के मंदिर के मंडप में यह काव्य-प्रमोचन किया तब तमिळनाडु में प्रचलित प्रथा के अनुसार, जिसमें शंका-समाधान पूर्णरूपेण होने के बाद ही काव्य को विद्वन्मण्डली द्वारा प्रकाशन योग्य प्रमाणित किया जाता है, लोगों ने आपत्ति उठायी कि यह मूल में नहीं है, अतः काव्य दोषयुक्त हो गया। तब वहाँ विराजमान नृसिंह के शिल्प ने अपना सिर हिलाकर और अपने गर्जन द्वारा उस अंश को मान्य प्रमाणित किया। फिर विद्वानों ने भी मान लिया। यह भी कहा जाता है कि कम्बन् भक्त प्रह्लाद की प्रशंसा में काव्य रचना चाहते थे और रचकर यहाँ उचित स्थान पर अंतर्निहित कर दिया।]

वह हिरण्य वेदकल्पित सारे यज्ञ ब्रह्मा के ही पथदर्शन में कर चुका।

उसने बुद्धिकल्पित जो वर माँगे, वे सारे वर ब्रह्मा ने दे दिये। वह इतना वलवान बना कि अकेले उसमें संहारक और भालनेत्र शिव, विष्णु और ब्रह्मा उसका अन्त जान नहीं सके। सारे भूतों का सारा वल उसमें था। १३०

ऍऱ्ऱै नाळितु मुळॅत्तु मिऱैवत्तु मयत्तुम्
कऱ्ऱै यज्जडैक् कडवुळङ् गात्तळित् तळिक्कुम्
ओर्ऱै यण्डत्ति तळवित्तो अदत्बुऱत् तुलवा
मऱ्ऱै यण्डमुन् दत्बॅय रेशॉल वाळ्न्दात् 131

ऍऱ्ऱै नाळितुम् उळत्–सभी दिन रहनेवाले हैं; ॲत्तुम् इऱैवत्तुम्–ऐसे भगवान विष्णु और; अयत्तुम्–ब्रह्मा और; कऱ्ऱै अम् चटै–सुन्दर जटाजूटधारी; कटवुळुम्–ईश्वर शिव; कात्तु अळित्तु अळिक्कुम्–(उनके द्वारा) क्रमशः पालित, सर्जित और संहरित; ओर्ऱै अण्टत्तिन् अळवित्तो–इस एक अण्ड तक ही क्या; अतन् पुऱत्तु–उसके बाहर भी; उलवा–विद्यमान; मऱ्ऱै अण्टमुम्–अन्य अण्ड भी; तन् पॅयरे चॉल–उसका ही नाम जपे, ऐसा; वाळ्न्तान्–रहता रहा। १३१

सदा रहनेवाले अनन्त अक्षर पुरुष विष्णु, ब्रह्मा और जटाधर शिव—ये जिसको क्रमशः पालते हैं, सृजन करते हैं और मिटा देते हैं, उस एक अण्ड में रहनेवाले ही क्या उसके बाहर रहनेवाले सारे अण्डों के वासी उसके नाम का जप करते थे। ऐसा वह अपना अधिकार चलाता था। १३१

पाळि वत्तडन् दिशैशुमन् दोङ्गिय पत्तैक्कॅप्
पूळै वत्गरि यिरण्डिरु कैहॉडु पॉरुत्तुम्
आळङ् गाणुदऱ् करियवा यहत्तऱपे राळि
एळुन् दत्तिरु ताळळ वॅत्तक्कडन् देऱुम् 132

पाळि–विस्तृत; वल्–वलवान; तट तिचै–बड़ी दिशाओं को; चुमन्तु ओङ्किय–धारण करते हुए जो ऊँचे हैं; पत्तै–ताड़ के समान; पूळै–नलीसहित; कै–सूँड़ों वाले; वल् करि–वलवान गज; इरण्टु–दो को; इरु कै कॉटु–दो हाथों में उठा लेकर; पॉरुत्तुम्–टकरा देता; आळम् काणुतऱ्कु–गहराई जानने में; अरियवाय्–कठिन; अकत्तऱ–बहुत विस्तृत; पेर् आळि–बड़े समुद्रों; एळुम्–सातों को; तन् इरु ताळ् अळवु ॲत्त–अपने दोनों पैरों का उतना बनाकर; कटत्तु–पार करके; एऱुम्–तीर पर चढ़कर चला जाता। ५३२

हिरण्य विशाल विस्तृत और बड़ी दिशाओं को धारण किये रहनेवाले, ताड़ के पेड़ के समान कठोर और नली-सहित सूँड़ों वाले दो दिग्गजों को दोनों हाथों से उठाकर उन्हें आपस में टकरा सकता था। अगाध सागर को पैदल ही चलकर पार करता और वह सागर उसके पैर का उतना ही गहरा रहता। १३२

वण्डऱ्　　ऱॆण्डिरै　　याऱ्ऱुनीर्　　शिलवॆऩ्ऱु　　मरुवान्
कॊण्डल्　　कॊण्डनीर्　　कुळिर्प्पिल　　वॆऩ्ऱवै　　कुरुहान्
पण्डैत्　　तॆण्डिरैप्　　परवैनी　　रुवरॆऩ्ऱु　　पडियान्
अण्डत्　　तैप्पोदुत्　　तप्पुरत्　　तप्पिना　　लाडुम् 133

वण्टल्–तल में तलौंछ और; तॆळ् तिरै–(सतह पर) स्वच्छ लहरें; याऱ्ऱु नीर्–(इनसे युक्त) नदी का जल; चिल ऎन्ऱु–थोड़ा (अपर्याप्त) है, समझकर; मरुवान्–उसके पास (स्नान करने) नहीं जाता; कॊण्टल् कॊण्ट नीर्–मेघपीत समुद्रजल; कुळिर्प्पु इल–शीतल नहीं; ऎन्ऱु–कहकर; अवै कुरुकान्–उनके पास नहीं जाता; पण्टै–प्राचीन; तॆळ् तिरै–स्वच्छ लहरों वाला; परवै नीर्–समुद्रजल; उवर्–नमकीन है; ऎन्ऱु–कहकर; पटियान्–उसमें स्नान नहीं करता; अण्टत्तै–अण्डगोल को; पोतुत्तु–छेदकर; अप्पुरत्तु अप्पिताल्–अण्ड के पार के जल से; आटुम्–स्नान करता। १३३

तल में तलौंछ और सतह पर स्वच्छ लहरों के साथ रहनेवाली नदी को स्नान करने के लिए छोटा मानता और वह उसके पास जाता ही नहीं। मेघपीत समुद्र-जल को पर्याप्त शीतल नहीं मानता, अतः वह मेघों के पास भी नहीं जाता। प्राचीन और स्वच्छ लहरों वाले समुद्र में उसके नमकीन होने के कारण, स्नान नहीं करता। फिर, वह अण्ड को छेदता और अंड के बाहर के जल में स्नान करता। १३३

मरबिन्　　मापॆरुम्　　बुऱक्कडन्　　मज्जनम्　　मरुवि
अरवि　　नाटटिडै　　महळिरो　　डिऩ्नमु　　दरुन्दिप्
परवु　　मिन्दिरन्　　पदियिडैप्　　पहऱ्पोऴु　　दहऱ्ऱि
इरवि　　नोलक्कम्　　नान्मुह　　नुलहत्तु　　ळिरुक्कुम् 134

मरपिन्–क्रम से; मा पॆरुम् पुऱ कटल्–बहुत बड़े बाह्य समुद्र में; मज्चनम् मरुवि–मज्जन करके; अरविन् नाटु इटै–नागलोक में; मकळिरोटु–भामिनियों के साथ; इन् अमुतु–सुखद भोजन; अरुन्ति–भोग करके; परवुम्–उसकी स्तुति करनेवाले; इन्तिरन् पति इटै–इन्द्र की (अमरावती) नगरी में; पकल् पॊऴुतु–दिन का समय; अकऱ्ऱि–काटकर; इरविल्–रात में; नान्मुकन्–चतुर्मुख के; उलकत्तुळ्–लोक में; ओलक्कम् इरुक्कुम्–दरबार लगाता। १३४

उसकी दिनचर्या देखिए। क्रम से वह अण्डवाह्य जल में मज्जन करता; फिर नागलोक में जाकर वहाँ की दयिताओं के संग में सुखद भोजन करता। वहाँ से उसकी स्तुति करनेवाले इन्द्र के नगर में जाता और दिन का समय वहीं काटता। शाम को ब्रह्मा के लोक में जाता और वहाँ दरबार लगाता। १३४

चारु　　मानत्तिऱ्　　चन्दिरन्　　ऱनिप्पदञ्　　जरिक्कुम्
तेरिन्　　मेलिनिन्　　ऱिरवितन्　　पॆरुम्बदञ्　　जॆलुत्तुम्

पेर्वि लॅण्डिशैक् कावलर् करुममुम् बिडिक्कुम्
मेरु माल्वरै युच्चिमे लरशुवीऱ् ड्रिरुक्कुम् 135

चारुम्–आकाशचारी; मात्तूतिल्–यान में; चन्तिरन् तऩि पतम्–चन्द्र के अपने पथ में; चरिक्कुम्–(और पद पर) संचार करता; तेरिऩ् मेलिऩ् निन्ऱु–रथ पर आरुढ़ होकर; इरवि तन् पॅरुम् पतम्–सूर्य का बड़ा पद; चॅलुत्तुम्–(अधिकार) चलाता; पेर्वु इल्–अचल; ऍण् तिचै कावलर्–आठों दिग्पालों का; करुममुम् पिटिक्कुम्–कार्य भी खुद करता; मेरु–मेरु के; माल् वरै–बड़े पर्वत की; उच्चि मेल्–चोटी पर; अरचु वीऱ्ऱिरुक्कुम्–राजा बनकर विराजमान रहता। १३५

और भी उसका प्रताप देखिए। आकाशचारी यान में जाकर वह चंद्र के पद पर आसीन होकर उसका काम स्वयं करता। सूर्य के रथ पर सवार होकर सूर्य के गौरवमय पद का उत्तरदायित्व अदा करता। अचल आठों दिग्पालों का कर्तव्य भी स्वयं चला लेता। कभी बहुत बड़े मेरु पर्वत की चोटी पर विराजमान होकर राजकाज चलाता। १३५

निलनुन् नीरुम्वॅङ् गऩलॊडु कालुमाय् निमिर्न्द
तलनु णीडिय ववर्रिऩत् तलैवरै माऱ्ऱि
उलवुङ् गाऱ्ऱॊडु कडवुळर् पिऱरुमा युलहिऩ्
वलियुञ् जॆय्हैयुम् वरुणऩ्ऱऩ् करुममु माऱ्ऱुम् 136

निलतुम्–पृथ्वी और; नीरुम्–जल; वॅम् कतलॊटु–गरम अनल के साथ; कालुमाय्–वायु बनकर; निमिर्न्त–उन्नत; तलत्तुळ् नीटिय–भूतल में बहुत काल से रहनेवाले; अवर्रिऩत् तलैवरै–उनके अधिदेवताओं को; माऱ्ऱि–बदलकर; उलवुम् काऱ्ऱॊटु–बहते पवन के साथ; कटवुळर् पिऱरुमाय्–अन्य देवता भी बनकर; उलकिन् वलियुम्–संसार का बल; चॅय्कैयुम्–और कृत्य; वरुणन् तन् करुममुम्–वरुण देवता का कार्य भी; आऱ्ऱुम्–(स्वयं) करता। १३६

पृथ्वी, जल, दाहक अग्नि और वायु आदि प्रबल भूतों और उनके प्राचीन अधिदेवताओं को वह पद से हटा देता और स्वयं निरन्तर बहनेवाला पवनदेवता, अन्य देवताओं और वरुण का काम भी करता। १३६

ताम रैत्तडङ् गण्णिऩाऩ् पेरवै तविर
नामन् दऩ्ऩदे युलहङ्गळ् यावैयुम् नविलत्
तूम वॅङ्गऩ लन्दणर् मुदलिऩर् शॊरिन्द
ओम वेळ्वियि ऩिमैयवर् पेऱॆला मुण्णुम् 137

तामरै तट कण्णिऩाऩ्–विशाल पुण्डरीकाक्ष; पेर् अवै–(उनके) नाम; तविर–(जप करना) न रहे; तऩ्ऩते नामम्–उसका ही नाम; उलकङ्कळ् यावैयुम्–सारे लोक; नविल–उच्चारण करें; तूमम्–धूम्रसहित; वॅम् कतल्–होमाग्नि में; अन्तणर् मुतलिऩर् चॊरिन्त–ब्राह्मणों आदि द्वारा डाला गया; ओम वेळ्वियिऩ्–होम-यज्ञ का; इमैयवर् पेऱु–देवों का अंश; ऍलाम्–सारा; उण्णुम्–स्वयं खा लेता। १३७

उसकी आज्ञा थी कि पद्मपत्रविशालाक्ष का नाम कहीं न कहा जाय। उसका ही नाम सारे लोक कहें। होमकुण्ड में डाला गया हविर्भाग देवों को न जाए। वह खुद उसको स्वयं भोग लेता। १३७

कावल् काट्टुदल् तुडैत्तलॅन् ऱित्तॊळिल् कडव
मूव रुम्मवॅ मुडिक्किलर् पिडिक्किलर् मुऱैमै
एवर् मऱ्ऱवर् योहिह ळुरुपद मिऴन्दार्
देव रुम्मवन् ताळला दरुच्चनै शॅय्यार् 138

कावल्–रक्षा; काट्टुतल्–प्रकटन; तुटैत्तल्–और संहार; ऍन्ऱु–ऐसे; इ तॊळिल् कटव–इन कृत्यों के अधिकारी; मूवरुम्–तीनों; अवॅ मुटिक्किलर्–वे काम कर नहीं सके; मुऱैमै पिटिक्किलर्–अधिकार छोड़ चुके; मऱ्ऱवर् एवर्–और कौन (अपना कर्तव्य कर सकेंगे); योकिकळ्–योगियों ने; उरु पतम्–योगप्राप्त पद; इऴन्तार्–गँवा दिया; तेवरुम्–देव भी; अवन् ताळ् अलातु–उसके चरणों के सिवा; अरुच्चनै चॅय्यार्–अर्चना नहीं करते। १३८

स्थिति, सृष्टि और संहार के कृत्यों के स्वामी तीनों देव अपना कर्तव्य अदा नहीं कर सके। उन्होंने अपना स्वत्व तथा कर्तव्य-क्रम त्याग दिया। (त्रिदेव की स्थिति यह रही तो) फिर कौन हों जो अपना काम कर सकें? योगियों को भी अपना योगफल त्यागना पड़ा। देव लोग भी उसके चरणों को छोड़ अन्य किसी की अभिवन्दना नहीं कर सके। १३८

पण्डु वानवर् तानवर् यावरुम् पऱ्ऱित्
तॆण्डि रैक्कडल् कडैदर वलियदु तेडिक्
कॊण्ड मत्तिनैक् कॊऱ्ऱत्तन् कुववुत्तोट्
कमैन्द तण्डॆ नक्कॊळ लुऱ्ऱदु नॊय्दॆनत् तविर्न्दान् 139

पण्टु–प्राचीन काल में; वानवर् तानवर्–देव और दानव; यावरुम् पऱ्ऱि–सभी पकड़कर; तॆळ् तिरै कटल्–स्वच्छ लहरों वाले समुद्र को; कटै तर–मथने के लिए; वलियतु–सुदृढ़ है समझकर; तेटि कॊण्ट–(उन्होंने) जिसको चुन लिया था; मत्तिनै–मथानी (मन्दर पर्वत) को; कॊऱ्ऱम्–विजयी; तन् कुववु तोट्कु–अपने स्थूल कन्धों के; अमैन्त–योग्य; तण्टु ऍन–गदायुध; कॊळल् उऱ्ऱु–मानना आरम्भ करके; अतु नॊय्तु–वह कमजोर है; ऍन–ऐसा; तविर्न्तान्–छोड़ दिया (उसे उस हिरण्य ने)। १३९

वह एक गदा चाहता था। पहले उस मन्दर पर्वत को आजमाया, जिसे पहले देवों और दानवों ने स्वच्छ तरंगों वाले क्षीरसागर के मथन के लिए मथानी के रूप में चुना था। पर उसे अपने पुष्ट कन्धों के लिए नालायक समझकर उसने त्याग दिया। उसका विचार था कि वह बहुत हीन है। १३९

मण्ड लन्दरु कदिरवन् वनुदुपोय् मरैयुम्
ॲण्ड लन्दॉडर् करियत्त तडवरं यिरण्डुम्
कण्ड लम्बशुम् बॊन्निरत् तवर्किरु कादिल्
कुण्ड लङ्गळ्मर् रॅन्निनिप् पॅरुवलि कूर्ल् 140

मण्टलम् तरु–मण्डलाकार; कतिरवन्–किरणमाली; वनुतु–उदित हो; पोय् मरैयुम्–जाकर जहाँ अस्त होता है; ॲण् तलम् तॉटर्कु–मन से ग्रहण करने में; अरियत्त–दुर्लभ; तट वरं इरण्टुम्–बड़े दोनों (उदयाचल और अस्ताचल) पर्वतों को; कण् तलभ् पचुम् पॊन् निरत्तवर्कु–(हिरण्याक्ष) जिसके नेत्र चोखे स्वर्ण के रंग के थे, उसके लिए; इरु कातिल्–दोनों कानों के; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डल हैं; इनि–आगे; पॅरु वलि कूर्ल्–महान् बल का कहना; मर्रु ॲन्–और क्या है। १४०

मंडलाकार सूर्य उदयाचल पर उगता है और अस्ताचल पर अस्त हो जाता है। वे दोनों पर्वत कल्पनातीत हैं। वे दोनों हिरण्याक्ष के दो कानों के कुंडल हैं तो उसके बल का कैसा वर्णन किया जाय? (हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु दो अलग-अलग हैं। वे जुड़वे भाई हैं। हिरण्याक्ष को विष्णु ने वाराहावतार लेकर मारा था। इधर ऐसा लगता है मानो वही यह हिरण्य यानी हिरण्यकशिपु है। अर्थ ऐसा बनाना होगा शायद कि हिरण्याक्ष की ऐसी स्थिति रही तो उसके भाई हिरण्यकशिपु के बल का क्या कहा जाय? एक पाठांतर है, जिसके अनुसार हिरण्याक्ष के बड़े भाई हिरण्यकशिपु के ये दोनों पर्वत कर्णकुंडल हैं। यह ठीक लगता है। पर प्रश्न रह जाता है कि हिरण्याक्ष बड़ा था या हिरण्यकशिपु! तब तीसरा पाठ बनाया जाता है, जिसके अनुसार 'हिरण्याक्ष के छोटे भाई के' अर्थ मिल जाता है!)। १४०

मरुक्कॊळ् तामरै नान्मुहन् मुदलिय मरैयोर्
कुरुक्क ळोडुहर् रोदुव दवन्पॅरुङ् गोर्रम्
शुरुक्किन् नान्मरै तॊन्रुतॊट् टुरैदॊरुन् दोन्रा
दिरुक्कुन् दॅय्वमु मिरणिय नॅनम वॅन्नुम् 141

मरु कॊळ्–सुगन्ध-भरे; तामरै–कमल पर; नान्मुकन्–आसीन चतुर्मुख; मुतलिय–आदि; मरैयोर्–ब्राह्मण; कुरुक्कळोटु–अपने-अपने आचार्यों के साथ रहकर; कर्रु ओतुवतु–जो पाठ करते हैं वह; अवन् पॅरुम् कॊर्रम्–उसका विजयवृत्तान्त है; चुरुक्किन्–संक्षेप में कहें तो; तॊन्रु तॊट्टु–प्राचीन काल से लेकर; उरै तॊरुम्–बार-बार पाठ करने पर भी; तोन्रातु इरुक्कुम्–जो बोधगम्य नहीं हैं, वे; नान् मरै–चतुर्वेद और; तॅय्वमुम्–उनके अधिदेवता भी; इरणियतॆ नम–हिरण्याय नमः; ॲन्नुम्–कहते। १४१

सुगंधपूर्ण कमल पर आसीन चतुर्मुख आदि वेदवित् अपने गुरुओं के साथ बैठकर जिसका चरित्र पाठ करते थे, वह उसका विजयवृत्तांत था! संक्षेप में

कहा जाय तो प्राचीन काल से निरंतर अध्ययन द्वारा भी अग्राह्य रहनेवाले चारों वेद और उनके अधिदेवता भी हिरण्याय नमः (हिरण्य को नमस्कार) ही कहते। १४१

मयरु	मन्ऩवऩ्	शेवडि	मण्णिडै	वैप्पिऩ्
अयरुम्	वाळॅयिऱ्	ऱायिरम्	बणन्दलै	यऩन्दऩ्
उयरु	मेलण्ड	मुहडुदऩ्	मुडियुऱ्	वुयरुम्
पॅयरु	मेऩ्ऩॅडुम्	बूदङ्ग	ळैन्दॊडुम्	बॅयरुम् 142

अऩ्ऩवऩ्–वह; चेवटि–अपने सुघड़ चरण; मण् इटै वैप्पिऩ्–भूमि पर जब रखता; वाळ् ऍयिऱु–उज्ज्वल दाँतों का; आयिरम् पणम् तलै–सहस्र फन-सिरों का; अऩन्तऩ्–अनन्तनाग; मयरुम्–बेहोश हो जाता; अयरुम्–थकित हो जाता; उयरुम् एल्–(वह हिरण्य) तनकर खड़ा हो जाता; अण्ट मुकटु–अण्ड की चोटी से; तऩ् मुटि उऱ्–अपना सिर लगाते हुए; उयरुम्–ऊँचा हो जाता; पॅयरुमेल्–जब चलता; नॅटु पूतङ्कळ्–महाभूत; ऐन्तॊटुम्–पाँचों के साथ; पॅयरुम्–चलता। १४२

जब वह हिरण्य अपना लाल पग भूमि पर धरे तब सहस्रफणी आदिशेष हड़बड़ा और बेसुध हो जाय। अगर वह तनकर सीधा खड़ा हो जाय तो अंड की चोटी को अपने सिर से स्पर्श करते हुए उतना ऊँचा रहे। जो वह चले तो पाँचों भूत उसके साथ जाएँ। १४२

पॅण्णिऱ्	पेरॅऴि	लाणिऩि	ललियिऩिऱ्	पिऱिदुम्
उण्णिऱ्	कुम्मुयि	रुळ्ळदि	लिल्लदि	लुलवाऩ्
कण्णिऱ्	काण्बऩ	करुदुव	याविऩुङ्	गळियाऩ्
मण्णिऱ्	चाहिलऩ्	वाऩिलुञ्	जाहिलऩ्	वरत्ताल् 143

वरत्ताल्–वर के प्रताप से; पॅण्णिल्–नारी द्वारा; पेर् ऍऴिल्–गौरवान्वित और सुन्दर; आणितिल्–पुरुषों द्वारा; अलियितिल्–नपुंसक द्वारा; पिऱितुम्–और भी; उळ् निऱ्कुम्–अन्तर्निहित; उयिर् उळ्ळतिल्–प्राणों के साथ रहनेवालों (जीवन्तों) से; इल्लतिल्–शवों द्वारा; उलवाऩ्–नहीं मरेगा; कण्णिल् काण्पत–आँखों से दृश्यमान; करुतुव–चित्य; यावितुम्–किसी से भी; कळियाऩ्–नहीं मिटता; मण्णिल् चाकिलऩ्–ज़मीन पर नहीं मरता; वाऩिलुम् चाकिलऩ्–आकाश (-लोक) में भी नहीं मरता। १४३

उसको प्राप्त वरों का प्रताप ऐसा था कि वह स्त्री के द्वारा मारा नहीं जा सके। सुन्दर पुरुष, या नपुंसक, या अन्य जीवधारी द्वारा मरनेवाला नहीं था। न शव ही उसे मार सकें। दृश्य, चित्य किसी भी पदार्थ से उसका नाश नहीं हो सकता था। न वह भूमि पर मरे, न आकाश में। १४३

देव रायिन् रेवरुम् जेणिडैत् तिरियुम्
याव रादिमऱ् ऱॅवरित्तु मॅरियळल् नुदऱ्कण्
कोवुम् मालयन् मात्तिडन् यावरुङ् गॉल्ल
आवि तीर्हिलन् आऱ्ऱलुन् दीर्हिल नन्नैयान् 144

तेवर् आयिनर् एवरुम्–देव जो भी हों; चेण् इटै तिरियुम्–आकाशचारी; यावर् आति–कोई भी हों उनसे लेकर; मऱ्ऱु ऍवरितुम्–अन्य किन्हीं से; ऍरि अळल्–जलती आग के समान; नुतल् कण्–भाल में जिसका नेत्र है वह; कोवुम्–ईश्वर और; माल्–विष्णु; अयन्–ब्रह्मा; मातिटन्–और नर; यावरुम्–किसी के; कॉल्ल–मारते; आवि तीर्किलन्–प्राण नहीं छोड़नेवाला; आऱ्ऱलुम् तीरकिलन्–बल भी नहीं खोनेवाला; अन्नैयान्–ऐसा (था वह)। १४४

देव हों चाहे आकाशचारी कोई अन्य जाति के लोग —उनसे लेकर अन्य किसी से; जलती आग के समान रहनेवाले भाल के नेत्र के शिवजी, विष्णु, अजदेव किसी के द्वारा भी वह मारा न जा सके ऐसा था। न उसके प्राण ही छूटें न उसका बल ही क्षय हो जाय! । १४४

नीरिऱ् चाहिल नॅरुप्पिनुम् जाहिल निमिर्न्द
मारु दत्तिनु मण्णिन्मे लॅवऱ्ऱिनु माळान्
ओरुन् देवरु मुनिवरुम् पिऱर्हळु मुरॅप्पच्
चारुम् जाबमु मन्नैयवन् ऱन्नैच्चॅन्ऱु शारा 145

नीरिल् चाकिलन्–जल में नहीं मरेगा; नॅरुप्पिलुम्–आग में भी; चाकिलन्–नहीं मरेगा; निमिर्न्त–ऊपर बहनेवाली; मारुतत्तितुम्–वायु द्वारा भी; मण्णित् मेल् ऍवऱ्ऱितुम्–भूमि पर के किसी से भी; माळान्–हत नहीं होगा; ओरुम्–विवेकशील; तेवरुम्–देव; मुनिवरुम्–मुनि; पिऱर्कळुम्–और अन्यों के; उरॅप्प–कहने से भी; चारुम् चापमुम्–उससे निकला शाप भी; अन्नैयवन् तन्नै–उसके पास; चॅन्ऱु–जाकर; चारा–उस पर प्रभाव नहीं डालता। १४५

उसकी मृत्यु न जल में हो सके न आग से। न ऊपर फैलकर बहनेवाली वायु उसका नाश कर सके, न भूमि पर के और कोई पदार्थ। विवेकज्ञ देवों और मुनियों के क्रोध के कारण कहे शापवचन भी उसके प्रति नहीं जाते और अनिष्ट करते। १४५

उळ्ळिऱ् चाहिलन् पुऱत्तिनु मुलक्किलन् नुलवाक्
कॉळ्ळैत् तॅय्ववान् पडैक्कलम् यावैयुङ् गॉल्ला
नळ्ळिऱ् चाहिलन् पकलिडैच् चाहिलन् नमनार्
कॉळ्ळच् चाहिल नारिनि यवनुयिर् कॉळ्वार् 146

उळ्ळिल्–(घर के) अन्दर; चाकिलन्–नहीं मरता; पुऱत्तिलुम्–बाहर भी; उलक्किलन्–नहीं मरता; उलवा–अमिट; कॉळ्ळै–अत्यधिक; तॅय्व–दिव्य; वान्–

श्रेष्ठ; पटैक्कलम् यावैयुम्–सारे हथियार; कोल्ला–उसे मिटा नहीं सके; नळ्ळिल्–निशि में; चाकिलन्–नहीं मरता; पकल् इटै–अहस् में भी; चाकिलन्–मरनेवाला नहीं; नमनार् कोळ्ळ–यम के द्वारा ग्रहण किया जाकर; चाकिलन्–नहीं मरेगा; इनि–फिर; यार्–कौन; अवन् उयिर्–उसके प्राण; कोळ्वार्–हर लेंगे। १४६

मकान के अन्दर, या मकान के बाहर उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। अपार बलसंयुक्त असंख्यक दैवी अस्त्र-शस्त्र भी उसको मार नहीं सकते। न वह रात में मरता न दिन मे। यम भी उसके प्राण नहीं हर सकता था तो कौन उसके प्राणों को अलग कर सकते ? । १४६

पूद मैन्दोडुम् बोरुन्दिय वुरुविनाऱ् पुरळान्
वेदम् नान्गिनुम् विळम्बिय पोरुळ्हळाल् विळियान्
तादै तन्दुदान् तनिक्कोलै शूळिनुञ् जाहान्
ईद वन्निलै येव्वुल हङ्गट्कु मिऱैवन् 147

पूतम् ऐन्तोटुम्–पांच भूतों से; पोरुन्तिय–बने; उरुविनाल्–किसी भी रूप से; पुरळान्–नहीं लुढ़कता; वेतम् नान्किनुम्–चारों वेदों में; विळम्पिय पोरुळ्कळाल्–कथित पदार्थों द्वारा; विळियान्—नहीं मरनेवाला; तातै तान्–पिता ही; तनि वन्तु–अकेले आकर; कोलै चूळिनुम्–मारने का उपाय करे तो भी; चाकान्–नहीं मरेगा; ईतु–यही; अवन् निलै–उसकी स्थिति रही; ऍ उलकङ्कट्कुम्–सारे लोकों का; इऱैवन्–प्रभु। १४७

पंचभूतों के बने किसी भी पदार्थ के हाथ वह मारा नहीं जा सकता था। चारों वेदों में कही हुई कोई भी वस्तु उसके प्राणों का अन्त नहीं कर सकी। स्वयं उसके पिता (या लोकधाता विधाता) भी आकर प्रयत्न करें तो वह न मरे! यही उसकी अतिविचित्र स्थिति थी। वह सारे लोकों का अधिपति था। १४७

आय वन्ऱनक् करुमह नऱिञरि नऱिञन्
तूय रॅन्बवर् यारिनु मऱैयिनुन् दूयन्
नाय हन्ऱनि ञानिनल् लऱत्तुक्कु नादन्
तायिन् मन्नुयिर्क् कन्बिन नुळनोरु तक्कोन् 148

आयवन् तनक्कु—उसका; अरु मकन्–प्यारा पुत्र; अऱिञरिन् अऱिञन्–ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी; तूयर् ऍन्पवर्–पवित्र कहलानेवाले; यारिनुम्–किसी से भी बढ़कर; तूयन्–पवित्र; मऱैयिनुम्–वेदों से भी अधिक; तूयन्–पवित्र; नायकन्–नेता; तनि ञानि–अद्वितीय ज्ञानी; नल् अऱत्तुक्कु–श्रेष्ठ धर्म का; नातन्–नाथ; मन् उयिर्क्कु–स्थायी जीवों का; तायिन् अन्पिनन्—माता से भी प्यारा; ओरु तक्कोन्–एक उत्तम पुरुष; उळन्–(पैदा हुआ) था। १४८

ऐसे उसके एक बहुत ही योग्य पुत्र पैदा हुआ। वह उसका प्यारा पुत्र था। ज्ञानियों में श्रेष्ठ ज्ञानी; पवित्रों से पवित्र; वेदों से भी पवित्र;

नायकत्व के लक्षणों से पूर्ण; अप्रतिम ज्ञानी; सद्धर्म का नाथ और जीवों का माता-सम प्यारा। (प्रह्लाद का उत्कृष्ट चित्र है। विभीषण का उसके प्रति इतना आदर था कि नाम नहीं लेता।)। १४८

वाऴि यानवन् रत्तैक्कण्डु मनमहिऴ्न् दुरुहि
आऴि यैयनी यऱिदियाल् मऱैयॆन वरुनृदान्
ऊऴि युङ्गडन् दुयर्हित्र आयुळा नुलहम्
एऴु मेऴुम्वन् दडिदॊऴ वरशुवीऱ् ऱिरुन्दान् 149

ऊऴियुम् कटन्तु—युग को भी पार करके; उयर्कित्र—बढ़नेवाली आयुळान्—आयु वाला; उलकम् एऴुम् एऴुम्—(सात और सात) चौदहों भुवन; वन्तु अटि तॊऴ—आकर चरणों पर नमन करें ऐसा; अरचु वीऱ्ऱिरुन्तान्—राजासन पर विराजमान रहा; वाऴि आतवन् तत्तै—होनहार उसको; कण्टु—देखकर; मतम् मकिऴ्न्तु—मन में मुदित हो; उरुकि—पिघलकर; आऴि ऐय—आज्ञाचक्र चलानेवाले मेरे तात; नी—तुम; मऱै—वेद; अऱिति—सीख लो; ऍत—ऐसा; अरैन्तात्—बोला। १४६

कल्प से भी अधिक लंबी आयु वाला हिरण्य ऐसा राज कर रहा था कि चौदहों लोक उसके पैरों की पूजा करें। उसने अपने चिरंजीव पुत्र को देखा। आह्लादित उसका मन भावातिरेक से द्रवीभूत हुआ। उसने अपने पुत्र से कहा— हे होनहार चक्रवर्ती! प्रभु! तात! जाओ और वेदाभ्यास करो। १४९

ऍन्ऱॊ रन्दण नॆल्लैयि लऱिञनै येवि
नन्ऱु नीयिवऱ् कुदवुदि मऱैयॆन नविन्ऱान्
शॆन्ऱु मऱ्ऱवन् ऱन्नॊडु मॊरुशिऱै शेर्न्दान्
अन्ऱु नान्मऱै मुदलिय वोदुवा नमैन्दान् 150

ऍन्ऱु—कहकर; ऍल्लैयिन्—निस्सीम; अऱिञन्—ज्ञान का स्वामी; ओर् अन्तणनै—एक ब्राह्मण को; एवि—आज्ञा देकर; नन्ऱु—उत्तम रीति से; नी—तुम; इवऱ्कु—इसे; मऱै उतवुति—वेद सिखाकर उपकार करो; ऍन—ऐसा; नविन्ऱान्—कहा; चॆन्ऱु—जाकर; अवन् तन्नॊटुम्—उसके साथ; ओर् चिऱै चेर्न्तान्—एक ओर गया (गुरु); अन्ऱु—उसी दिन से; नान्मऱै—चारों वेदों; मुतलिय—आदि को; ओतुवान्—सिखाने में; अमैन्तान्—लग गया। १५०

उसने यह कहकर एक अपार विद्वान् ब्राह्मण को बुलाया और आज्ञा दी कि इन्हें ले जाओ और वेदार्थ समझाओ। गुरु उस बालक को लेकर एक ओर गया। उसी दिन से वह उसे वेद सिखाने लग गया। (वेदाभ्यासी भी विष्णु के वैरी हो सकते हैं। धारणा है कि वेद ईश्वर की सीख नहीं देते पर प्रकृति की नियति की बात करते। पर ईश्वर-वादी भी वेदों का प्रमाण मान सकता है और वेद सहायक ही नहीं शास्ता भी रहते हैं।)। १५०

ओदप्	पुक्कव	नुन्वैपे	रुरैयेंन	लोडुम्
पोदत्	तन्शॅवित्	तॉळेयिरु	कैहळार्	पॉत्ति
मूदक्	कोयिदु	नऱ्ऱव	मनरॅन	मॉळिया
वेदत्	तुच्चियित्	मॅय्प्पॉरुट्	पॅयरितै	विरित्तान् 151

ओतप् पुक्कवन्–अध्यापन-कार्य में लगे उस ब्राह्मण के; उन्तै पेर् उरै–अपने पिता का नाम कहो; ऍतल् ओटुम्–कहने पर; तन् चॅवि तॉळै–अपने कर्णरंध्रों को; इरुकैकळाल्–दोनों हाथों से; पोत पॉत्ति–भलीभाँति ढककर; मू तक्कोय्–वृद्ध और सुयोग्य; इतु नल् तवम् अन्ऱु–यह अच्छा पवित्र कार्य नहीं है; ऍन्न मॉळिया–ऐसा कहकर; वेतत्तु उच्चियित्–वेदशीर्षस्थ; मॅय् पॉरुळ्–सत्य तत्त्व के; पॅयरितै–नाम को; विरित्तान्–स्पष्ट कहा (प्रह्लाद ने)। १५१

अध्यापक ने अध्यापन-कार्य आरम्भ करके प्रह्लाद से कहा कि अपने पिता का नाम कहो। तब प्रह्लाद ने अपने दोनों कानों को दोनों हाथों से ढक लिया। कहा कि वृद्ध और सुयोग्य गुरु! यह काम अच्छा, पवित्र काम नहीं है! फिर उसने वेदशीर्षस्थ सत्यतत्त्व का नाम उच्चारा। १५१

ओन	मोनरा	यणायवॅन्	रुरैत्तुळ	मुरुहित्
तान	मैन्दिरु	तडक्कैयुन्	दलैमिशैत्	ताङ्गिप्
पूनि	रुक्कणगळ	पुनलुह	मयिर्प्पुरम्	बॉडिप्प
ज्ञान	नायह	निरुन्दन	नन्दण	नडुङ्गि 152

ञान नायकन्–विद्वन्‌शिरोमणि; ओ नमो नरायणाय–ॐ नमो नारायणाय; ऍन्ऱु उरैत्तु–(अष्टाक्षरी) कहकर; उळम् उरुकि–मन विह्वल होकर; तान् अमैन्तु–शान्ति के साथ; इरु तट कैयुम्–दोनों विशाल हाथों को; तलै मिचै ताङ्कि–सिर पर धारण करके; पू निऱ कण्कळ्–(कमल) पुष्पवर्ण की आँखों से; पुनल् उक–(भक्ति का) आंसू बहाते हुए; मयिर् पुऱम् पॉटिप्प–शरीर के बालों के पुलकित होते; इरुन्ततन्–(ध्यानमग्न) चुप रह गया; अन्तणन् नटुङ्कि–ब्राह्मण (गुरु) डरकर। १५२

ज्ञाननाथ प्रह्लाद अष्टाक्षरी 'ॐ नमो नारायणाय' का मंत्र जपते हुए गद्‌गद हो गया। शान्त हो गया। दोनों विशाल हाथों को अपने सिर पर रखते हुए लाल कमल के समान आँखों से अश्रु बहाने लगा। शरीर पुलक से भर गया और वह ध्यानमग्न हो निस्पन्द रह गया। ब्राह्मण एकदम भयभीत हो गया। (होकर) । १५२

कॅडुतती	ळिन्दनै	यॅन्नैयु	मुन्नैयुड्	गॅडुवाय्
पडुततो	ळिन्दनै	पावियॅन्	तेवरुम्	बहर्दऱ्
कडुतत	दन्ऱियॆ	ययलोन्ऱु	पहरनिन्	नऱिविल्
ऍडुतत	दॆन्निदु	वॅन्शॅयद	वण्णमॆनी	यॅन्ऱान् 153

कॅट्टुवाय्–चौपट होनेवाले; पावि–पापी; ऍन्नैयुम्–मुझे भी; कॅटुत्तु ऑळिन्तनै–

बर्बाद किया; उन्तैयुम्–अपने को भी; पट्टुत्तु ऑळिन्तनै–विनष्ट कर दिया; ऑ तेवरुम्–किसी भी देव द्वारा; पकर्तर्कु–कहने के लिए; अट्टुत्ततु अन्रिये–योग्य जो नहीं है; अयल् ऑन्रु पकर–(वैसा) विपरीत कुछ कहने का; निन् अरिविल् तुम्हारी बुद्धि में; ऍट्टुत्ततु–उदित हुआ; इतु ऍन्–यह क्या है; नी चॅय्त वण्णम् ऍन्–तुम्हारे कृत्य का रंग कैसा; ऍन्रान्–कहा। १५३

(अध्यापक) बोला— रे पापी! चौपट होनेवाले तुमने मुझे भी बर्बाद किया और अपने प्रति भी नाश बुला लिया! कोई भी देवता जिस नाम को कहने योग्य नहीं मानता, जो सत्यविपरीत है, उस नाम के उच्चारण की बात तुम्हारी बुद्धि में कैसे उठी? यह कैसा काम किया तुमने? । १५३

ऍन्नै युय्वित्ते नॅन्दैयै युय्वित्ते निन्नैय
उन्नै युय्वित्तिव् वुलहैयु मुय्विप्पा नमैन्दु
मुन्नै मूलत्तिन् मुदर्पॅयर् मॉळिवदु मॉळिन्दॆन्
ऍन्नै कुर्रमना नियर्रिय दियम्बुदि यॆन्रान् 154

ऍन्नै उय्वित्तेन्–अपने को तार लिया; ऍन्तैयै उय्वित्तेन्–अपने पिता का उद्धार करा दिया; इन्नैय–ऐसे; उन्नै–आपका भी; उय्वित्तु–उद्धार कराकर; इ उलकैयुम्–इस लोक का भी; उय्विप्पान् अमैन्तु–उद्धार कराने योग्य; मुन्नै–प्राचीन; मूलत्तिन् मुतल् पॅयर्–आदि मूल बीज नाम; मॉळिवतु–कथित वह मन्त्र; मॉळिन्तेन्–उच्चारा; नान् इयर्रियतु कुर्रम्–मेरा किया गया अपराध; ऍन्नै–क्या है; इयम्पुति–कहें; ऍन्रान्–कहा (प्रह्लाद ने)। १५४

उनके वचन सुनकर प्रह्लाद ने उत्तर दिया कि मैंने अपने को तार लिया। अपने पिता का भी उद्धार कराया। मेरे अध्यापक बने आपको भी तारकर इस लोक का भी उद्धार कराने के विचार से अनादिकाल से साथ रहनेवाला अशेष सर्वकारण भूत वेद जिसको बताते हैं, उस श्रीमन्नारायण का नाम मैंने उच्चारा। इसमें मेरा अपराध क्या हुआ है? बताइए। १५४

मुन्दै वानवर् यावर्क्कु मुदल्वर्क्कु मुदलोन्
उन्दै मर्रवन् तिरुप्पॅय रुरैक्कुरि यान्
अन्द णाळनै नॅन्निनु मरिदियो वैया
ऍन्दै यिप्पॅय रुरैत्तॆनैक् कॅडुत्तिड लॆन्रान् 155

उन्तै–तुम्हारे पिता; मुन्तै–प्राचीन; वानवर् यावर्क्कुम्–सभी देवों के; मुतल्वर्क्कुम् मुतलोन्–आदि के आदि हैं; अवन् तिरुप्पॅयर्–उनका श्रीनाम; उरैक्कु उरिय–कहने का स्वत्व रखनेवाले; अन्तणाळनेन्–ब्राह्मण; ऍन्निनुम्–मुझसे भी अधिक; अरितियो–जानते हो क्या; ऐया–स्वामी; ऍन्तै–तात; इ पॅयर् उरैत्तु–यह नाम दुहराकर; ऍनै कॅडुत्तिडल्–मुझे नष्ट कराओ मत; ऍन्रान्–कहा (ब्राह्मण) ने। १५५

ब्राह्मण बोला, तुम्हारे पिता देवों के सरदार त्रिदेवों के भी शास्ता हैं। उनका श्रीनाम जपने का अधिकारी ब्राह्मण हूँ मैं। मुझसे तुम अधिक जानते हो क्या ? मेरे स्वामी ! मेरे धाता ! यह नाम जपकर मेरा सत्यानाश मत करा दो। १५५

वेद पारह नव्वुरै विळम्बलुम् विमलन्
आदि नायहन् पॅयरन्ऱि यान्पिऱि दऱियेन्
ओद वेण्डुव दिल्लैयॅन् नुणर्विनुक् कॊन्ऱुम्
पोदि याददु मिल्लैयॅन् ऱिवैयिवै पुहन्ऱान् 156

वेत पारकन्–वेदपारंगत के; अ उरै–वह वचन; विळम्पलुम्–कहने पर; विमलन्–विमल (प्रह्लाद) ने; आति नायकन् पॅयर् अन्ऱि–आदिनाथ का नाम छोड़कर; यान्–मैं; पिऱितु–और अन्य; अऱियेन्–नहीं जानता; ओत वेण्टुवतु इल्लै–सीखना भी नहीं है; ऍन् उणर्विनुक्कु–मेरी समझ में; ऒन्ऱुम् पोतियाततुम् इल्लै–जो सीखा नहीं गया वैसा कुछ नहीं; ऍन्ऱु–कहकर; इवै इवै–ये-ये बातें; पुकन्ऱान्–कहीं। १५६

वह वेदपारंगत ब्राह्मण था। उसका यह वचन सुनकर पवित्रमति प्रह्लाद बोला। मैं उन आदिनाथ का नाम छोड़ और कोई नाम नहीं जानता। जानना, सीखना और जपना भी नहीं चाहता। अपनी बुद्धि में जो नहीं आया हो ऐसा कुछ है भी नहीं। यह कहकर वह आगे यों बोला। १५६

तॊल्लै नान्मऱै वरन्मुऱैत् तुणिपॊरुट् कॆल्लाम्
ऍल्लै कण्डव नहम्बुहुन् दिडङ्गॊण्ड वॆन्नुळ्
इल्लै वेऱिनिप् पॆरुम्बदम् यानऱि याद
वल्लै येऍनिन् योदुवि नीदियिन् वळाद 157

तॊल्लै नान्मऱै–प्राचीन चार वेद; वरन् मुऱै–तर्कक्रम से; तुणि पॊरुट्कु ऍल्लाम्–जिनकी बात करते हैं, उन सब पदार्थों के; ऍल्लै कण्टवन्–जो अन्त समझे जाते हैं, वे परमात्मा; ऍन् अकम्–मेरे मन के; उळ् पुकुन्तु–अन्दर प्रवेश करके; इटम् कॊण्टतु–अपना घर कर चुके हैं; इनि–अब; यान् अऱियात–जो मैं नहीं जानता वैसा; वेऱु पॆरुम् पतम्–दूसरा उत्तम नाम (या पद) नहीं है; वल्लैये ऍनिन्–समर्थ हों तो; नीतियिन्–वेदमार्ग से; वळात–अपृथक् कुछ हो तो; ओतुवि–अध्ययन करा दें। १५७

श्रीमन्नारायण प्राचीन तर्कक्रम से चतुर्वेदनिर्दिष्ट सभी ज्ञान के विषयों के अन्त हैं। वे मेरे हृदय में आकर घर कर चुके हैं। फिर मेरे अनजाने और कोई उत्तम नाम नहीं रह गया। अगर समर्थ हों तो आप मुझे वेदसम्मत विषयों का अध्ययन करा दें। १५७

आरैच् चॉल्लुव दन्दण रुमरै यरिन्दोर
ओरच् चॉल्लुव दॅप्पोरु ळुवनिड दङ्गळ्
तीरच् चोर्पोरुळ् तेवरुम् मुनिवरुम् शंप्पुम्
पेरैच् चॉल्लुव दल्लदु पिरिदुमोन् रुळदो 158

अन्तणर्–ब्राह्मण; चॉल्लुवतु–कहते हैं; आरै–किनको; अरुमरै अरिन्तोर्–उत्तम वेदों के ज्ञाता; ओर चॉल्लुवतु–दूसरों को जो सोचने को कहते हैं; उपनिटतङ्कळ्–उपनिषद्; तीर चॉल् पॉरुळ्–निर्धारित रूप से जिसकी स्थापना करते हैं; तेवरुम् मुनिवरुम्–देव और ऋषि; चॅप्पुम्–जिसका जप करते हैं; पेरै–उस नाम को; चॉल्लुवतु अल्लतु–कहने के अतिरिक्त; पिरितुम् ऑन्रु–अन्य कुछ; उळतो–है क्या। १५८

(वेदपाठी) ब्राह्मण किसको कहते हैं ? वेदज्ञ ज्ञानी लोग जिसका मनन करने का उपदेश देते हैं, उपनिषद् जिसका निर्धारित रूप से निरूपण करते हैं और देव और मुनिवर जिसका जाप करते हैं, उस श्रेष्ठ नाम के अलावा और कोई नाम जपने योग्य है क्या ? । १५८

वेदत् तानुनल् वेळ्वियि नानुमॅय् युणर्न्द
पोदत् तानुमप् पुरत्तुळ वॅप्पोरु ळानुम्
शादिप् पार्पॅरुम् पॅरुम्बदम् तलैक्कोण्डु शमैन्देन्
ओदिक् केट्पदु परम्बॊरु ळिन्नमोन् रुळदो 159

वेतत्तालुम्–वेदों में (उक्त) और; नल् वेळ्वियिनालुम्–श्रेष्ठ यज्ञों द्वारा; मॅय् उणर्न्त–तत्त्वदर्शी; पोतत्तालुम्–बोध द्वारा; अ पुरत्तु उळ्ळ–और बाह्य; अॅ पॉरुळालुम्–अन्य साधनों द्वारा; चातिप्पार्–जो सिद्धि प्राप्त करते हैं; पॅरुम् पॅरुम् पदम्–उनकी साधना का जो बड़ा नाम है वह; तलै कॉण्टु–साधन बना लेकर; मॊळिन्तेन्–उच्चारण करता हूँ; इन्नम्–अलावा; ओति केट्पतु–दूसरों द्वारा कहा जाकर सुनने के लिए; परम्पॉरुळ् ऑन्रु–और एक परमतत्त्व भी; उळतो–है क्या। १५९

वेदाध्ययन, श्रेष्ठ यज्ञ, तत्त्वज्ञान का बोध और अन्य (तप, दान, पूजा आदि) साधनाओं के द्वारा जो सिद्धि पाना चाहते हैं, उनके लिए साधन के रूप में प्राप्त श्रेष्ठ नाम है यह नाम ! उसको मैंने मन लगाकर कहा। इससे बढ़कर क्या कोई श्रेष्ठ पदार्थ है, जो अध्यापित होने योग्य है ? । १५९

काडु पर्रियुङ् गनवरै पर्रियुङ् गलैत्तोल्
मूडु पर्रियुम् मुण्डित्तु नीट्टियु मुरैयाल्
वीडु पॅर्रवर् पॅर्रदिन् विळम्बिदेन् रुरैक्कुम्
माड पॅर्रनन् मर्रिलि यॅन्बॅर् वरुन्दि 160

काट्टु पऱ्ऱियुम्–वन को वासस्थान बनाकर और; कन वरै–बड़े पर्वतप्रदेशों को; पऱ्ऱियुम्–वासस्थान बनाकर; कलै तोल् मूट्टु–मृगचर्मवस्त्र; पऱ्ऱियुम्–पहनकर; मुण्टित्तुम्–मुण्डन कर लेकर; नीट्टियुम्–(जटा) बढ़ाकर; मुऱैयाल्–क्रम से; वीट्टु पॆऱ्ऱवर्–जो मुक्ति को प्राप्त हुए; पॆऱ्ऱतिन्–उनको जो प्राप्त हुआ, उससे; विऴुमितु–बहुत श्रेष्ठ है; ऎन्ऱु उरैक्कुम् माट्टु–ऐसा कहा जानेवाला धन (सौभाग्य); पॆऱ्ऱनन्–मैंने प्राप्त किया; मऱ्ऱुम्–और; इन्नि वरुन्ति–अन्य क्लेश से; ऎन् पॆऱ–क्या पाने को है। १६०

लोग जंगल में वास करते हैं, पर्वतों के पास रहते हैं, मृगचर्म पहनते, सिर मुड़ा लेते या केश बढ़ाते और (ऐसे तप के द्वारा) क्रममुक्ति को प्राप्त करते हैं। यह नाम-जप उन सबसे श्रेष्ठ कहा जाता है। वह नाम-धन मुझे मिल गया है। फिर क्या है क्लेश उठाकर पाने को ? । १६०

शॆविह ळाऱ्पल केट्किल रायिनुन् देवर्क्
कविहॊळ् नान्मऱै यहप्पॊरुळ् पुऱप्पॊरु ळऱिवार्
कविह ळाहुवर् काण्गुवर् मॆय्प्पॊरुळ् कालार्
पुविहॊ णायहर् कडियवर्क् कडिमैयिर् पुक्कार् 161

कालाल्–अपने चरणों से; पुवि कॊळ्–भूमि को नाप लेनेवाले; नायकर्कु–जगन्नाथ श्रीविष्णु के; अटियवर्क्कु–चरण-सेवकों की; अटिमैयिल् पुक्कार्–सेवा में जो रत हैं वे; चॆविकळाल्–अपने कानों द्वारा; पल केट्किलर आयिनुम्–अनेक सद्विषय श्रवण नहीं करें तो भी; तेवर्क्कु अवि कॊळ्–देवों को हवि देने के; नान् मऱै अकप्पॊरुळ्–चतुर्वेद मन्त्रों के अन्तरार्थ और; पुऱप्पॊरुळ्–वाह्यार्थ; अऱिवार्–(के) ज्ञाता होंगे; कविकळ्–कवि (पण्डित); आकुवर–वन जायेंगे; मॆय्प्पॊरुळ् काण्कुवर्–सत्यदर्शन भी कर लेंगे। १६१

भागवतों (भगवद्भक्त) की वड़ी महिमा कही जाती है। भगवान को भक्तपराधीन मानते हैं, वैष्णव लोग। अतः प्रह्लाद कहता है— अपने एक श्रीचरण से जिन्होंने इस भूतल को नापा, उन त्रिविक्रम विष्णु के चरण-सेवियों के दासों की जो दासता करने में रत रहते हैं, उनके लिए श्रवणज्ञान की भी आवश्यकता नहीं रहती। वे यों ही देवों की हविदान सम्वन्धी मन्त्रों को समाहित रखनेवाले वेदों के वाह्यार्थ व अंतरार्थ सभी को जान लेते हैं। वे कवि (पंडित) भी वन जाते हैं। तत्त्वदर्शन भी उन्हें सुलभ हो जाता है। १६१

ऎन्नक्कुम् नान्मुहत् तॊरुवर्क्कुम् यारिनु मुयर्न्द
तन्नक्कुम् तन्निलै यऱिवरु मॊरुतनित् तलैवन्
मनक्कु वन्दनन् वन्दन यावैयु मऱैयोय्
उनक्कु मिन्नदि नल्लदॊन् ऱिल्लॆन् वुरैत्तान् 162

मऱैयोय्–वेदविप्र; ऎन्नक्कुम्–मेरे; नान्मुकत्तु ऒरुवर्कुम्–चार मुखों के

अद्वितीय ब्रह्मा के और; यारित्तुम् उयर्न्त तक्कुम्–सर्वश्रेष्ठ उनके लिए भी; तन् निलै–(उनकी) अपनी स्थिति; अरिवरुम्–अज्ञेय; ओरु तनि तलैवन्–अप्रतिम एकाकी नाथ; मनक्कु वन्ततन्–मेरे मन में आकर वास करते हैं; यावैयुम् वन्तन–सभी विषय आ गये; उनक्कुम्–आपके लिए भी; इतनिन्–इन परमतत्त्व-ज्ञान से बढ़कर; नल्लतु–हितकारी; इल् अॅन्न–नहीं है ऐसा; उरैत्तान्–कहा (प्रह्लाद ने)। १६२

हे विप्र ! अद्वितीय व अनुपम जगन्नाथ की सच्ची स्थिति मैं नहीं जान सकता; चतुर्मुख सर्वोत्तम ब्रह्मा भी नहीं जानते। स्वयं सर्वश्रेष्ठ भगवान भी अपना पूर्णज्ञान नहीं रखते। ऐसे परमात्मा मेरे मन में आ गये हैं तो सभी आ गये। आपके लिए भी इससे बढ़कर हितकारी कुछ नहीं हो सकता। प्रह्लाद ने कह सुनाया। १६२

माऱ्ऱम् यादॊन्ऱु मुरैत्तिलन् मऱैयवन् मरुहि
एऱ्ऱ मॆन्नॆनक् किरुदिवन् दॆय्दिय दॆन्ना
ऊऱ्ऱ मिल्लव नोडिनन् कनहनै युऱ्ऱान्
तोऱ्ऱ वन्ददोर् कनवुकण् डनॆनच् चॊन्नान् 163

मऱैयवन्–ब्राह्मण ने; माऱ्ऱम्–उत्तर; यातॊन्ऱुम्–कुछ भी; उरैत्तिलन्–नहीं कहा; मरुकि–व्याकुल होकर; अॅन् एऱ्ऱम्–कौन सा गौरव; अॅनक्कु–मेरा रह गया; इऱुति वन्तु अॅय्तियतु–अन्त आ गया; अॅन्ना–सोचकर; ऊऱ्ऱम् इल्लवन्–साहसहीन वह; ओटिनन्–दौड़कर; कनकनै उऱ्ऱान्–कनक के पास गया; तोऱ्ऱ–प्रकट; वन्ततु ओर कनवु–हुआ एक स्वप्न; कण्टनन्–देखा; अॅन चॊन्नान्–ऐसा कहा। १६३

वेदविप्र यह सुनकर अवाक रह गया। कुछ उत्तर कहने की स्थिति में नहीं रहा। घबड़ा गया। व्यग्र हो गया। सोचने लगा कि अब मेरा गौरव क्या रह गया? मेरा अन्त आ गया! उसने साहस खो दिया। वह दौड़कर कनककशिपु के पास गया। कहा कि एक स्वप्न हुआ और मैंने उसको देख लिया। (ब्राह्मण कितना घबड़ाया हुआ है, यह उसके 'स्वप्न' कहने से ज्ञात होता है।)। १६३

अॅन्दै केॆळॆनक् किम्मैक्कु मरुमैक्कु मियम्बच्
चिन्दै यालिरै निनैत्तऱ्कु मडादन शॆप्पि
मुन्दै येनिनैन् दॆन्पॊरुळ् मुऱ्ऱुमॆन् ऱुरैत्तान्
मैन्द नोदिलन् वेदमॆन् ऱुरैत्तनन् वणङ्गि 164

अॅन्तै केळ्–मेरे धाता सुनिए; अॅनक्कु–मेरे (अपने); इम्मैक्कुम् मरुमैक्कुम्–इह-पर को सोचकर; इयम्प–कहने; इऱै–कुछ भी; चिन्तैयाल् निनैत्तऱ्कुम्–मनमें सोचने के लिए; अटातन चॆप्पि–असह्य और अयोग्य शब्द कहकर; मुन्तैये निनैन्तु–पहले ही सोचकर; अॅन् पॊरुळ् मुऱ्ऱुम्–मेरा विषय (कथन) ही; मुऱ्ऱुम् अॅन्ऱु–पूर्ण (रूप से ठीक) है; उरैत्तान्–ऐसा कहा (प्रह्लाद ने); मैन्तन्–

आपके सुपुत्र ने; **वेतम् ओतिलन्–वेद नहीं पढ़ा;** **ऎन्रु–ऐसा;** **वणङ्कि–नमस्कार करके;** **उरैत्तनन्–(ब्राह्मण ने) कहा।** १६४

मेरे तात ! सुनिए। आपके सुपुत्र ने कोई नाम कहा। वह ऐसा नाम है, जिसका मैं अपने इह-पर हित की बात सोचूँ तो उच्चारण ही नहीं कर सकता। वह निपट अचिंत्य है। मन में लाना भी अपराध है ! यह उसे स्वयं सूझा है, किसी ने नहीं सिखाया है। पूर्व ही से सोचकर उसने यह शब्द कहा और यह भी कहा कि मेरा कहना ही पूर्णरूप से युक्त है ! आपके सुपुत्र ने वेद नहीं पढ़ा। ब्राह्मण गुरु ने नमस्कार करके निवेदन किया। १६४

अन्न केट्टव तन्दण नन्दमक् कडाद
मुन्नर् यावरु मॊऴिदरु मुरैमैयिर् पडाद
दन्न दुळ्ळुरु मुणर्च्चियार् पुदुवदु तन्द
दॆन्न शॊल्लव नियम्बिय दियम्बुदि यॆन्ऱान् 165

अन्न–वह वचन; केट्टवन्–जिसने सुना उसने; अन्तण–ब्राह्मण; नम् तमक्कु–हमारे लिए; अटात–असह्य; मुन्नर्–पहले; यावरुम् मॊऴितरुम्–किसी के द्वारा कहने योग्य; मुरैमैयिल् पटात–क्रम में जो नहीं आता ऐसा; तन्नतु–अपने; उळ् उरुम्–अन्दर की; उणर्च्चियाल्–भावना द्वारा; पुतुवतु तन्ततु–नवीन रूप से सृष्ट; अवन् इयम्पियतु–उसका कहा; चॊल् ऎन्–शब्द क्या; इयम्पुति ऎन्ऱान्–कहो, कहा। १६५

हिरण्य ने उसके शब्द सुने। फिर उससे यों कहा। ब्राह्मण ! हमारे जैसों से अकथनीय, पूर्व के किसी के कहने के क्रम के उल्लंघन में अपनी ओर से कल्पना करके प्रह्लाद ने जो कहा, वह क्या शब्द है। बताओ ? । १६५

अरश नन्नवै युरैशॆय वन्दण नञ्जि
शिरद लङ्गरञ् जेर्न्दिडच् चॆविल्तॊळै शेर्न्द
उरह मन्नशॊल् यानुनक् कुरैशॆयि नुरवोय्
नरह मॆय्दुव नावुमॆन् दुहुमॆन नविन्ऱान् 166

अरचन्–राजा के; अन्नवै–वे बातें; उरै चॆय–कहने पर; अन्तणन्–विप्र; अञ्चि–डरकर; करम्–हाथों के; चिर तलम् चेर्न्तिट–सिर पर जाते; चॆवि तॊळै–कर्णरंध्र में; चेर्न्त उरकम् अन्न–घुसे उरग के समान; चॊल्–शब्द; यान्–मैं; उनक्कु उरै चॆयिन्–आपसे कथन करूँ तो; उरवोय्–शक्तिमान्; नरकम् ऎय्तुवन्–नरक चला जाऊँगा; नावुम्–जीभ भी; वॆन्तु–जलकर; उकुम्–चू जायगी; ऎन–ऐसा; नविन्ऱान्–कहा। १६६

राजा के यों कहने पर ब्राह्मण भय से आतंकित हुआ। उसने हाथ

जोड़कर सिर पर रख लिये। उसी स्थिति में उसने कहा कि शक्तिमान्! उस शब्द ने मेरे कानों में उरग के समान प्रवेश किया था। अगर मैं उसे आपके लिए दुहराऊँ तो मुझे नरक जाना पड़ेगा। मेरी जीभ भी जलकर चू जाएगी। १६६

कॊणर्हॆन् मैन्दनै वल्विरैन् दन्ऱनन् कॊडियोन्
उणर्विल् नॆञ्जिन नेवलर् कडिदिनि नोडिक्
कणनि नॆय्दिनर् पणियॆनत् तादैयैक् कण्डान्
तुणैयि लान्ऱनैत् तुणैयॆन वुडैयवत् तूयोन् 167

कॊटियोन्-क्रूर हिरण्य ने; ऍन् मैन्तनै-मेरे पुत्र को; वल् विरैन्तु-बहुत शीघ्र; कॊणर्क-लाओ; ऍन्ऱनन्-(आज्ञा) कही; उणर्वु इल्-विवेकहीन; नॆञ्चिनन्-मन वाले के; एवलाळर्-सेवक; कटितिनिन् ओटि-तेज़ दौड़कर; कणतिन् ऍय्तिनर्-एक क्षण में पहुँचे; पणि ऍन-'आज्ञा' कहने पर; तुणै इलान् तनै-असहाय विष्णु को; तुणै ऍन उटैय-सहायक माननेवाले; अत् तूयोन्-उस पवित्र प्रह्लाद ने; तातैयै कण्टान्-(आकर) पिता को देखा (पिता से मिला)। १६७

यह सुनकर क्रूर हिरण्य ने आज्ञा दी कि तुरन्त लाओ मेरे पुत्र को मेरे सामने। हिरण्य कलुषमन था। उसके सेवक दौड़कर एक पल में प्रह्लाद के पास पहुँचे। उससे बोले कि राजा की आज्ञा है, आओ। प्रह्लाद परमात्मा को ही, जो असहाय हैं यानी जिनकी और किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं, अपना सहायक माननेवाला था। वह तपाक से आकर पिता से मिला। १६७

तॊऴुद मैन्दनैच् चुडर्मणि मार्बिडैच् चुण्णम्
अऴुद वन्बिनि निऱुहुऱत् तऴुविमा डिरुत्ति
मुऴुदु नोक्किनी वेदियन् केट्किलन् मुनियप्
पऴुदु शॊन्नशॊल् ऍन्नशॊल् पहरुदि यॆन्ऱान् 168

तॊऴुत मैन्तनै-विनत पुत्र को; चुटर्-उज्ज्वल; मणि मार्पिटै-सुन्दर वक्षःस्थल का; चुण्णम्-चन्दन; अऴुत-(प्रह्लाद पर) लग जाए, ऐसा; अन्पिनिल्-प्रेम के साथ; इऱुकुऱ तऴुवि-खूब कसकर आलिंगन करके; माटु इरुत्ति-पास बिठा लेकर; मुऴुतुम् नोक्कि-शरीर भर पर दृष्टि दौड़ाकर; नी-तू; वेतियन्-ब्राह्मण; केट्किलन्-सुनना न चाहकर; मुनिय-क्रुद्ध हो जाए ऐसा; पऴुतु चॊन्न-अपराध का कहा; चॊल्-शब्द; ऍन्न चॊल्-कौन सा शब्द है; पकरुति-कहो; ऍन्ऱान्-पूछा (हिरण्य ने)। १६८

प्रह्लाद ने अपने पिता को नमस्कार किया। हिरण्य ने उसे बड़े ही प्यार के साथ ऐसा कसकर आलिंगित कर लिया कि उसके आकर्षक वक्ष का चन्दन प्रह्लाद पर लग गया। अपने पास पुत्र को बिठा लेकर हिरण्य ने उसके शरीर को खूब देखते हुए उससे पूछा कि तूने कोई शब्द (या नाम) कहा है,

जिसे तुम्हारा गुरु सुनना नहीं चाहता और जिसको सुनकर उसे क्रोध आ जाता है। वह अपराध का शब्द क्या है ? । १६८

शुरुदि यादिय तॊडङ्गुरु मॆल्लैयिड् चॊल्लुम्
ऒरुवन् यावर्क्कुम् नायहन् तिरुप्पॆय रुणरक्
करुदक् केट्टिडक् कट्टुरैत् तिडर्क्कडल् कडक्क
उरिय मर्रिदिन् नल्लदॊन् रिल्लॆन वुरैत्तान् 169

श्रुति आतिय–श्रुति आदि को; तॊटङ्कुरुम् ऍल्लैयिल्–प्रारम्भ करते समय; चॊल्लुम् ऒरुवत्–जिनको कहा जाता है, वे अनुपम देवता; यावर्क्कुम् नायकत्–सर्वनायक; तिरु पॆयर्–उनका श्रीनाम; उणर–समझने; करुत–चिन्तन करने; केट्टिट–श्रवण करने और; कट्टुरैत्तु–दृढ़ता से कहके; इटर् कटल्–संकट-सागर; कटक्क उरिय–जिसके सहारे पार किया जाय उस योग्य; मर्रु–और; इतित्–इससे अलग; नल्लतु ऒन्रु–हितकारी एक नाम; इल्लतु–नहीं; ऍन उरैत्तात्–ऐसा कहा (प्रह्लाद ने)। १६९

प्रह्लाद ने उत्तर में उस नाम की महिमा का वर्णन किया। वह शब्द है जिसे वेदादि का पाठ जब प्रारम्भ करते हैं तब लोग उन अप्रमेय भगवान का स्मरण करके कहते हैं। वे भगवान सर्वनायक हैं। उन्हीं के नाम का मैंने उच्चारण किया था। उसका स्मरण, मनन, चिंतन और कथन दुःखसागर के पार लगाता है। उसके लिए इससे अधिक हितकारी कोई नाम नहीं है। १६९

तेवर् शॆय्हैय तङ्ङन मुरैशॆयत् तीयोन्
ताविल् वेदियन् उक्कदे युरैशॆयत् तक्कान्
आव दाहुह वन्रॆन्नि नरिहुव मॆन्रॆ
याव दव्वुरै विळम्बुदि विरैविनि नॆन्रान् 170

तेवर् चॆय्कैयत्–देवों के योग्य व्यवहार करनेवाले प्रह्लाद के; अङ्ङतम् उरै चॆय–वैसा कहने पर; तीयोत्–दुष्ट हिरण्य ने; ता इल् वेतियत्–निर्दोष ब्राह्मण; तक्कते–उचित ही; उरै चॆय तक्कात्–कहनेवाला है; आवतु आकुक–जो होगा वह हो; अन्रु ऍन्नि[illegible]–युक्त नहीं हुआ तो; अरिकुवम्–जान लेंगे; ऍन्रु–सोचकर; यावतु अ उरै–कौन सा है वह शब्द; विरैविनिन्–तुरन्त; विळम्पुति–कहो; ऍन्रात्–कहा। १७०

(असुर-पुत्र होने पर भी) प्रह्लाद का संस्कार देवों का-सा हो गया था। जब उसने यह बात कही तो खल हिरण्य ने सोचा कि ब्राह्मण निर्दोष है। वह ठीक ही बोला होगा। इसलिए जो भी होगा वह हो। मैं इससे सारी बातें पूछ लूँगा और सच्ची बात मालूम कर लूँगा। उसने प्रह्लाद से पूछा कि वह शब्द (या नाम) क्या है ? जल्दी कहो। १७०

कामम् यावैयुन् दरुवदु मप्पदङ् गडन्दाल्
शेम वीडुरच् चॅय्वदुन् जॅन्दळल् मुहत्त
ओम वेळ्वियि नुरुपद मुय्प्पदु मौरुवन्
नाम मन्नदु केळ्नमो नाराय णाय 171

कामम् यावैयुम्–सभी कामनाएँ; तरुवतुम्–पूरा करनेवाला; अ पतम् कटन्ताल्–उस स्थिति को पार करने पर; चेमम्–क्षेमकारी; वीटु उऱ चॅय्वतुम्–मोक्ष-प्राप्ति दिलानेवाला; चॅम् तळल् मुकत्त–लाल अग्नि में; ओमम् वेळ्वियिन्–होम जिसमें दिया जाता है, उस यज्ञ के; उऱु पतम्–फलस्वरूप प्राप्य पद में; उय्प्पतुम्–पहुँचानेवाला; ऑरुवन् नामम्–अद्वितीय एक (श्रीविष्णु का) नाम है; केळ्–सुनिए; अन्नतु नमो नारायणाय–वही 'नमो नारायण' है। १७१

(प्रह्लाद अष्टाक्षर की महिमा कहता है।) जब मनुष्य कामनाएँ करने की स्थिति में रहता है तब वह उस मन्त्र का जप करता है और वह सारी कामनाओं को पूरा करता है। जब मनुष्य उस स्थिति के परे जाता है, तब वह उसे क्षेम देकर मोक्षपद में पहुँचाता है। वह वही नाम है, जिसे होमाग्नियुक्त यज्ञादि में दुहराया जाता है और जो यज्ञद्वारा गम्य स्वर्गादि लोक में पहुँचाता है, या उद्दिष्ट फल दिला देता है। वह अद्वितीय भगवान का नाम है। सुनिए, वह (प्रणव-सहित) 'नमो नारायणाय' है। (वैष्णव संप्रदाय में यह मंत्र कहने का सबको अधिकार नहीं है, विशेषकर प्रणव के साथ। इसी कारण १५२वें पद में भी 'ओ नमो नारायणाय' कहा गया हैं। 'ॐ' नहीं कहा गया।)। १७१

मण्णि नित्रुमेल् मलरय नुलहुर वाळुम्
ऑण्णिल् पूदङ्गळ् निऱ्पन तिरिवन विवऱ्ऱिन्
उण्णि ऩ्ऱुळ करणत्ति नूङ्गुळ वुणर्विन्
ऑण्णु हित्ऱदिव् वॅट्टॅळुत् तेपिऱि दिल्लै 172

मण्णिन् निन्ऱु–भूमि से; मेल्–ऊपर; मलर् अयन्–कमल-पुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा के; उलकु उऱ–लोक तक; वाळुम्–रहनेवाले; ऑण्णिल् पूतङ्कळ्–असंख्य पंचभूतों में; निऱ्पन–अचल और; तिरिवन–चर; इवऱ्ऱिन्–इनमें; उळ् निन्ऱुळ करणत्तिन् ऊङ्कु–अन्तःकरण के अन्दर; उळ्ळ–स्थित; उणर्विन्–भावना; ऑण्णुकिन्ऱतु–भावित करती है; इ ऍट्टु ऍळुत्ते–यही अष्टाक्षर है; पिऱितु इल्लै–और कोई नहीं। १७२

भूलोक से लेकर कमलासन के ब्रह्मलोक तक के सारे लोकों के सारे पंचभूतसंघ, चराचर जीवों के अंतःकरण की अन्तर्भूत प्रज्ञा जिसकी भावना करती है, वह यही अष्टाक्षर है। और कुछ नहीं। १७२

मुक्कट् टेवनुम् नान्मुहत् तौरुवनु मुदला
मक्कट् काऱुमिम् मन्दिर मऱन्दव रिऱन्दार्
पुक्कुक् काट्टुव दरिदिदु पौदुवुऱक् काण्बार्
ऑक्क नोक्किन रल्लव रिदनिलै युणरार् 173

मुक्कण् तेवनुम्–त्रिनेत्र देव शिव और; नान् मुकत्तु ऑरुवनुम्–चतुर्मुख ब्रह्मा; मुतला–आदि; मक्कळ् काऱुम्–मानवों तक; इम् मन्तिरम् मऱन्तवर्–यह मन्त्र जो भूल गये वे; इऱन्तार्–मर गये; पुक्कु काट्टुवतु–(तर्क में) घुसकर दिखाना; अरितु–कठिन है; इतु पौतु उऱ–इसे तटस्थ रीति से; काण्पार्–जाननेवाले ज्ञानी; ऑक्क नोक्कितर्–इसकी महिमा युक्त रीति से देख चुके हैं; अल्लवर्–जो अज्ञ हैं; इतन् निलै उणरार्–इसकी स्थिति नहीं जानते। १७३

त्रिनेत्र शिवजी, चतुर्मुख ब्रह्माजी से लेकर मानव तक जो भी यह मंत्र भूले वे मरे हैं समझिए। और भी सूक्ष्म रीति से विषय में प्रवेश करके समझाना कठिन है। इसकी सत्यता जाननेवाले समदर्शी ज्ञानियों ने समान रूप से इसकी महिमा को युक्त समझ लिया है। जो अज्ञ हैं, वे नहीं जान सकते। १७३

तोऱ्ऱ मॅन्नुमत् तौल्वितैत् तौडुहडर् चुऴिनिन्
ऱेऱ्ऱु नन्कल नरुङ्गलन् यावर्क्कु मिनिय
माऱ्ऱ मङ्गल मादवर् वेदत्तिन् वरम्बिल्
तेऱ्ऱ मॅय्प्पौरुळ् तॅरिन्दमऱ् ऱिदिनिलै शिऱन्द 174

तौऱ्ऱम् अॅन्नुम्–जन्म नाम के; अ तौटु कटल्–उस खनित सागर के; तौल् वितै चुऴि निन्ऱु–प्रारब्ध कर्म रूपी भँवर से; एऱ्ऱुम्–पार पहुँचानेवाली; नल् कलन् श्रेष्ठ नाव; यावर्क्कुम्–सभी के लिए; अरु कलन् श्रेष्ठ आभूषण; यावर्क्कुम्–सभी के लिए; इतिय मङ्कल माऱ्ऱम्–मधुर और मंगलमन्त्र है; तॅरिन्त–त्रिकालज्ञ; मा तवर्–महान् तपस्वी द्वारा; वेतत्तिन् वरम्पिल्–वेदांतों (उपनिषदों) में; तेऱ्ऱम् मॅय्प्पौरुळ्–पढकर प्राप्त सत्यसिद्धान्त; इतिन्–इससे; चिऱन्त–श्रेष्ठ; मऱ्ऱु इलै–अन्य कुछ नहीं है। १७४

जन्म-मरण का चक्करयुक्त बड़ा सागर है, यह प्रपंच। जीव को उस भँवर से छुड़ाकर पार लगानेवाली नाव है, यह मन्त्र। यह सबका श्रेष्ठ आभरण है। मधुर मंगल वचन है। त्रिकालज्ञ महान् तपस्वियों द्वारा वेदांत यानी उपनिषदों के सार-रूप में लेकर दिया गया सिद्धांत है। इससे बढ़कर कोई श्रेष्ठ सिद्धांत नहीं है। १७४

उन्नु यिर्क्कुमॅन् नुयिर्क्कुमिव् वुलहत्ति नुळ्ळ
मन्नु यिर्क्कुमो दुरुदियॅन् ऱुणर्वुऱ मदित्तुच्
चौन्न दिप्पॅय रॅन्ऱन नरिऒरिऱ् ऱूयोन्
मिन्नु यिर्क्कुवे लिरणियन् ऱळ्ळॅळ् विळित्तान् 175

अऱिञरिल्–ज्ञानियों में; तूयोन्–अकलुष बुद्धि वाले प्रह्लाद ने; उन् उयिर्क्कुम्–तुम्हारी आत्मा के लिए; ऍन् उयिर्क्कुम्–मेरी आत्मा के लिए; इ उलकत्तिल् उळ्ळ–इस संसार के रहनेवाले; मन् उयिर्क्कुम्–नित्य जीवों के लिए; ईतु उऱुति–यही पुरुषार्थ है; ऍन्ऱु–ऐसा; उणर्वु उऱ–बुद्धिपूर्वक; मतित्तु–खूब सोचकर; चॊन्नतु–कहा गया; इ पॅयर्–यह नाम; ऍन्ऱतन्–कहा; मिन् उयिर्क्कुम्–बिजली-सम प्रकाश छिटकानेवाले; वेल्–भाले के; इरणियन्–हिरण्य ने; तळल् ऍळ–अंगारे छुड़ाते हुए; विळित्तान्–घूरा। १७५

ज्ञानियों में सबसे पवित्र प्रह्लाद ने आगे कहा कि यही नाम आपकी आत्मा, मेरी आत्मा और संसार के सभी जीवों के लिए मंगलप्रद है। यही पुरुषार्थ है। इसे मैंने बुद्धि में दृढ़ रूप से धारण कर लिया है। उसी को मैं कह रहा हूँ। यह सुनना था कि विद्युत्प्रकाश भाले का स्वामी हिरण्य ऐसा घूरने लगा कि उसकी आँखों से अंगारे निकल आये। १७५

अऱ्ऱै नाण्मुतल् यानुळ नाळ्वरै यप्पेर्
शॊऱ्ऱ नावैयुङ् गरुदिय मनत्तैयुञ् जुडुमॆन्
ऱॊऱ्ऱै याणैमऱ् ऱियारुनक् किप्पॅय रुरैत्तार्
कऱ्ऱ दारॊडु शॊल्लुदि विरैन्दॆनक् कनन्ऱान् 176

अऱ्ऱै नाळ् मुतल्–उस प्राचीन दिन से लेकर; यान् उळ नाळ् वरै–मेरे रहते दिन तक; अप् पेर् चॊऱ्ऱ नावैयुम्–उस नाम का उच्चारण करनेवाली जीभ को और; करुतिय मनत्तैयुम्–मनन करनेवाले मन को; चुटुम्–जला डालेगा; ऍन् ऒऱ्ऱै आणै–मेरा चक्राधिपत्य; उनक्कु–तुमसे; यार्–किसने; इ पॅयर्–यह नाम; उरैत्तार्–कहा; आरॊटु–किसके साथ रहकर; कऱ्ऱतु–सीखना हुआ; विरैन्तु चॊल्लुति–बहुत शीघ्र कहो; ऍन–ऐसा; कनन्ऱान्–आग हो उठा। १७६

उसने आग बबूला होकर कहा कि उस प्राचीन काल से लेकर आज मेरे ज़माने तक मेरा एकचक्राधिपत्य ऐसा रहा है कि उस नाम का उच्चारण करनेवाली जिह्वा को और मनन करनेवाले मन को जला दे। किसने तुमको यह नाम बताया? किसके साथ रहकर तुमने यह नाम सीख लिया? कहो जल्दी। १७६

मुन्नैवर् वानवर् मुदलिनर् मून्ऱुल हत्तुम्
ऍन्नैव रुळ्ळवर् यावरु मॅन्निरु कळ्ळे
निन्नैव दोदुव दॅन्बॅयर् निनक्किदु नेर
अन्नैय रञ्जुवर् मैन्दनी यारिडै यऱिन्दाय् 177

मुन्नैवर्–सर्वेश्वर तीनों और; वानवर् मुतलिनर्–देव आदि; मून्ऱु उलकत्तुम्–तीनों लोकों में; ऍन्नैवर् उळ्ळवर्–जितने हैं; यावरुम्–वे सब; निनैवतु–स्मरण करते हैं; ऍन् इरु कळ्ळे–मेरे दो चरणों का ही; ओतुवतु–जपते हैं; ऍन् पॅयर्–मेरा नाम ही; अन्नैयर्–वे; निनक्कु–तुम्हें; इतु नेर–यह सिखाने से; अञ्चुवर्–डरेंगे; मैन्त–पुत्र; नी यारिटै अऱिन्ताय्–तुमने किससे सीखा। १७७

देवों के आदिदेव, त्रिदेव और अन्य देवों से लेकर तीनों लोकों में जितने लोग हैं, वे सब स्मरण करते हैं मेरे ही चरणों का। और जप करते हैं मेरे ही नाम का। वे तुमको यह सिखाने से डरेंगे। इसलिए पुत्र ! कहो कि तुमने इसे सीखा किससे ? । १७७

मऱङ्गॊळ् वॆञ्जॆरु मलैहुवान् पन्मुऱै वन्दान्
कऱङ्गु वॆञ्जिऱैक् कलुऴन्ऱन् कडुमैयिऱ् करन्दान्
पिऱङ्गु तॆण्डिरैप् पॆरुङ्गडल् पुक्किनम् पॆयरा
तुऱङ्गु वान्बॆय रुऱुदियॆन् ऱारुनक् कुरैत्तार् 178

मऱङ्कॊळ्–वीरता-प्रदर्शन के लिए होनेवाले; वॆम् चॆरु–भयंकर युद्ध में; मलैकुवान्–भिड़ने के लिए; पल् मुऱै वन्तान्–अनेक बार वह आया; कऱङ्कु–शब्दायमान; वॆम्–उग्र; चिऱै–पंखों के; कलुऴन् तन्–गरुड़ की; कटुमैयिऩ्–प्रचण्ड गति से; करन्तान्–जा छिप गया; पिऱङ्कु–दृश्यमान; तॆळ् तिरै–स्वच्छ लहरों वाले; पॆरुम् कटल्–बड़े समुद्र में; पुक्कु–प्रविष्ट करके; इनम्–अब भी; पॆयरातु–वहाँ से न हटकर; उऱङ्कुवान्–जो सोता रहता है उसके; पॆयर्–नाम को; उऱुति ऎन्ऱु–पुरुषार्थ कहकर; यार् उनक्कु उरैत्तार्–किसने तुम्हें बतलाया। १७८

वीरताप्रदर्शनार्थ किये जानेवाले युद्ध में यह नारायण मुझसे भिड़ने के लिए अनेक बार आया, पर शब्दायमान और प्रचंड वेग के पंखों के साथ उड़नेवाले गरुड़ की गति से बच के गया और क्षीरसागर में लुक गया। (इसका वृत्तांत हमें नहीं मिलता।) ध्यानापहारी स्वच्छ तरंगों वाले उस क्षीरसागर में जाकर सोया तो अब भी उठकर बाहर नहीं आया। ऐसे उसके नाम को किसने तुम्हें हितकारी बताया ? । १७८

परवै नुण्मण लॆण्णिनु मॆण्णरुम् बरप्पिऩ्
कुरवर् नङ्गुलत् तुळ्ळव रवन्गॊलक् कुलैन्दार्
अरवि नामत्तै यॆलियिरुन् दोदिना लदऱ्कु
विरवु नन्मैयॆन् तुन्मदि विळम्बॆन वॆहुण्डान् 179

परवै नुण् मणल्–समुद्रतल के छोटे बालुकाकणों को; ऎण्णिनुम्–गिना जा सके तो भी; ऎण्ण अरुम्–अनगिनत; परप्पिन्–संख्या विस्तार वाले; नम् कुलत्तु–हमारे कुल के; उळ्ळवर् कुरवर्–जो हैं वे गुरु (बुजुर्ग लोग); अवन् कॊल–उसके मारने से; कुलैन्तार्–मर गये; अरविन् नामत्तै–सर्प का नाम; ऎलि इरुन्तु ओतिताल्–चूहा बैठकर जपे तो; अतऱ्कु विरवु–उसे मिलनेवाला; नन्मै ऎन्–हित क्या है; तुन्मति–दुर्बुद्धि; विळम्पु–कहो; ऎन्न–ऐसा; वॆकुण्टान्–खौल उठा। १७९

उसके मारने से हमारे कितने ही लोग मर गये ? समुद्रतल के बालुओं को गिना जा सकता है; तो भी असंख्यक इनकी गिनती हो ही नहीं सकती। चूहा अपने शत्रु सर्प का नाम रटे, किस लाभ के लिए ? दुर्बुद्धि बता तो दो। हिरण्य अपार क्रुद्ध था। १७९

वयिऱ्ऱि नुळ्ळुल हेऴिनो डेऴैयुम् वैक्कुम्
अयिर्प्पि लाऱ्ऱलॅन् ननुशन येनमॊन् ऱाहि
ॲयिऱ्ऱि नालॅऱिन् दिनुयि रुण्डव नामम्
पयिऱ्ऱ वोनिन्नैप् पयन्ददु नानॅनप् पहर्न्दान् 180

उलकु–लोकों; एऴितोटु एऴैयुम्–सातों के साथ सातों को; वयिऱ्ऱितुळ–अपने उदर में; वैक्कुम्–रखनेवाले; अयिर्प्पिल्–अविकंपित; आऱ्ऱल्–शक्तिमान्; ॲन् अनुचनै–मेरे छोटे भाई को; एनम् ऑन्ऱु आकि–एक वाराह बनकर; ॲयिऱ्ऱिताल् ॲऱिन्तु–दाँतों से चीरकर; इन् उयिर् उण्टवन्–(जिसने) उसके प्यारे प्राण खा लिये; नामम्–उसके नाम को; पयिऱ्ऱवो–सिखाने हेतु क्या; नान्–मैंने; निन्नै–तुम्हें; पयन्ततु–जनाया; ॲन–ऐसा; पकर्न्तान्–कहा। १८०

मेरा अनुज था (हिरण्याक्ष— कम्बन इसे हिरण्यकशिपु का अनुज ही बताते हैं। हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु का अग्रज समझा जाता है।) वह चौदहों भुवनों को अपने उदर में समाये रख सकता था। इतना शक्तिशाली था। (वह भूमि को मोड़ लेकर पाताल में चला गया था।) नारायण ने ही वाराह का रूप धरकर अपने दाँतों से उसको चीरकर मार दिया। अपने भाई के प्यारे प्राणों का अन्त करनेवाले का नाम रटवाने के लिए मैंने तुम्हें जन्म दिया था क्या? । १८०

ऑरुवन् यावर्क्कु मॅवऱ्ऱिऱ्कु मुलहिऱ्कु मुदल्वन्
तरुदल् काक्कुदल् तविर्त्तलॅन् ऱिवैशॅयत् तक्कान्
करुमत् तालन्ऱिक् कारणत् तालुळ्ळ काट्चि
तिरुवि लोमऱ्ऱि दॅम्मरैप् पॊरुळॅनत् तॅरिन्दाय् 181

तिरुविली–श्रीहीन; यावर्कुम्–सभी सचेतन जीवों और; ॲवऱ्ऱिऱ्कुम्–सभी जड़पदार्थों; उलकिऱ्कुम्–और लोक के; मुतल्वन्–आदि; तरुतल्–सृष्टि; काक्कुतल्–पालन और; तविर्त्तल् ॲन्ऱु–संहार के; इवै चॅय तक्कान्–ये तीन कार्य करने की योग्यता रखनेवाला; ऑरुवन्–अकेला मैं ही हूँ; करुमत्ताल् अन्ऱि–प्रत्यक्ष कर्म के सिवा; कारणत्ताल् उळ्ळ–कारण द्वारा जाना गया; काट्चि–यह तत्त्वदर्शन; ॲ मऱै पॊरुळ्–किस वेद का विषय है; ॲन तॅरिन्ताय्–ऐसा तुमने जाना। १८१

हे श्रीहीन! मैं ही अकेला एक हूँ, जो चराचर जगत के सभी चेतन-अचेतन पदार्थों का नायक हूँ। सृष्टि, स्थिति और संहार के कार्य करने की क्षमता और योग्यता मुझ ही में है। प्रत्यक्ष कर्म से विषय का ज्ञान प्राप्त करना छोड़कर कारण (प्रमाण) के आधार पर अनुमान द्वारा प्राप्त यह ज्ञान किस वेद द्वारा प्रतिपादित धारणा मानते हो तुम? । १८१

आदि यन्दङ्ग ळिदनिन्मर् ऱिल्लैपे रुलहिन्
वेद मॅङ्ङन मङ्ङन मवैशॊन्न विदियाल्

कोदि नल्वितै शॅय्दव रुयर्हुवर् कुऱित्तुत्
तीदु शॅय्दवर् ताऴ्हुव रिदुमॅय्म्मै तॅरियिन् 182

वेतम् ॲङ्कतम्–वेद जैसे कहते हैं; अङ्कतम्–वैसे ही; अवै चॉन्न वितियाल्–उनकी कही हुई विधियों के अनुसार; कोतु इल्–निर्दोष; नल् वितै–सत्कर्म; चॅय्तवर्–करनेवाले; उयर्कुवर्–श्रेय पाते हैं; तीतु कुऱित्तु–बुराई को उद्देश्य बनाकर; चॅय्तवर्–काम करनेवाले; ताऴ्कुवर्–नीच बन जाते हैं; तॅरियिन्–सोच-समझने पर; इतु मॅय्म्मै–यह सत्य है; पेर् उलकिन्–विशाल भूतल में; इततिन्–इससे परे; आति अन्तङ्कळ्–आदि और अन्त; मऱ्ऱु इल्लै–अन्य कुछ नहीं है। १८२

देखो ! यही सत्य है कि वेदविहित अकलुष कर्म, वेदों की बतायी विधियों के अनुसार किये जायँ तो उनके करनेवाले उत्तम बनते हैं। जान-बूझकर बुराई करनेवाला नीच बन जाता है। सोचकर देखो तो इसकी सत्यता साफ़ प्रगट होगी। विशाल जगत में इसको छोड़कर (कर्म का फल होता है पर कर्मफलदाता की आवश्यकता नहीं।) आदि-अंत आदि कुछ अलग अस्तित्व नहीं रखते। १८२

शॅय्द मादव मुडैमैयिन् अरिययन् शिवनॆन्
ऱॅय्दि नार्पद मिळन्दनर् यान्ऱव मियऱ्ऱिप्
पॉय्यि नायहम् बूण्डलि निनियदु पुरिदल्
नॉय्य दाहुमॆन् ऱारुमॆन् कावलि नुऴैवार् 183

चॅय्त–पूर्वकृत; मा तवम्–महान् तप; उटैमैयिन्–हैं इसलिए; अरि–हरि; अयन्–ब्रह्मा और; चिवन्–शिव; ऍन्ऱु–ऐसे पदों पर; ऍय्तित्तार्–पहुँचे; यान्–मैंने; तवम् इयऱ्ऱि–तपस्या करके; पॉय् इल्–सच्चे; नायकम् पूण्टलिन्–नायकत्व ले लिया, इसलिए; पतम् इऴन्ततर्–वे पदच्युत हो गये; अतु पुरितल्–अपना-अपना (सृष्टि, स्थिति, संहार का) काम करना; नॉय्यतु आकुम्–लघुताद्योतक होगा; ऍन्ऱु–समझकर; आरुम्–सभी; ऍन् कावलिन् नुऴैवार्–मेरे संरक्षणक्षेत्र में घुस गये। १८३

हरि, हर और अज अपने पूर्वकृत महान् तप के फलस्वरूप अपने-अपने सृष्टि, पालन और संहार के काम में लगे रहते थे। मैंने तपस्या करके नायकत्व ले लिया। इसलिए वे पदच्युत हो गये। मेरे सामने पदच्युत उनको अपना-अपना काम करना अपमानजनक लगा। इसलिए वे मेरे संरक्षण में आकर मेरी आज्ञा के अधीन चुपचाप जीवन बिता रहे हैं। १८३

वेऴ्वि यादिय पुण्णियन् दवत्तॊडुम् विलक्किक्
केऴ्वि यावैयुन् दविर्त्तन निवैहिऴर् पहैयॆत्
ताऴ्वि यादन शॅय्युमॆन् ऱनैयवर् तम्बाल्
वाऴ्वि यादिनि यॆव्वलि युरङ्गॊण्डु वाऴ्वार् 184

इवै–ये (यागादि); किळर् पकैयै–उद्बुद्ध शत्रुता रखनेवाले शत्रुओं को;

ताळ्वियातत–(निकृष्ट जो नहीं) वह उत्कृष्टता; चेय्युम्–दिलायेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; वेळ्वि–यज्ञ; आतिय पुण्णियम्–आदि पुण्यकार्य; तवत्तोटुम् विलक्कि–तपस्या के साथ रोककर; केळ्वि यावैयुम्–श्रुति का पठन-पाठन सभी को; तविर्त्ततन्–वर्जित कर दिया; अतॅयवर् तम् पाल्–उन (त्रिमूर्तियों) को; वाळ्वियातु–अच्छा जीवन नहीं दिलायगा; इनि–आगे; ॲ वलि उरम् कॊण्टु–किस बल का सहारा लेकर; वाळ्वार्–जीनेवाले हैं। १८४

ये यागादि मुझसे वर्धनशील वैर रखनेवालों को प्रबलता दिला देंगे यही समझकर मैंने यागादि पुण्य-कार्य रोक दिये और श्रुति, शास्त्र आदि के अध्ययन-अध्यापन को भी वर्जित करा दिया। इसलिए अब यज्ञ आदि नहीं होंगे और त्रिदेवों को पुष्कल जीवन नहीं नसीब होगा। वे अब किस बल का आधार लेकर जीवित रहेंगे? । १८४

पेदैप् पिळ्ळैनी पिळैत्ततु पॊरुत्तनॅन् पॅयरत्तुम्
मेदै वार्त्तैह ळिनैयन विळम्बले मुनिवन्
यादु शॊल्लिन नवैयवै यिदमॅन वॆण्णि
ओदि पोदियॆन् ऱुरैत्तन नुलहॆला मुयर्न्दोन् 185

पेतै पिळ्ळै–अबोध बच्चे; नी पिळैत्ततु–तुमने जो अपराध किया; पॊरुत्तनॅन्–मैंने उसकी क्षमा की; पॅयर्त्तुम्–फिर; इनैयन–ऐसे; मेतै वार्त्तैकळ्–मेधावी के-से वचन; विळम्पलै–मत कहो; मुनिवन् यातु चॊल्लितन्–गुरु जो-जो कहेगा; अवै अवै–उस-उसको; इतम् ॲन–हित है ऐसा; ॲण्णि–मानकर; ओति–अध्ययन करो; पोति–चलो; ॲन्ऱु उरैत्ततन्–ऐसा कहा; उलकु ॲलाम्–सर्वलोक में; उयर्न्तोन्–श्रेष्ठ हिरण्य ने। १८५

अबोध बच्चे! तुमने अपराध किया है; पर तुम्हें क्षमा कर दूंगा। दुबारा इन मेधावी के-से वचन मत कहो। ब्राह्मण गुरु जो-जो सिखाएगा उस-उसको हितकारी मानकर सीख लो। चलो। —सर्वलोकसम्मानित हिरण्य ने यों कहा। १८५

उरैयुळ दुणर्त्तुव दुणर्न्दु कोडियेल्
विरैयुळ वलङ्गलाय् वेद वेलैयिन्
करैयुळ दियावरुङ् गर्कुङ् गल्वियिन्
पिरैयुळ दॆन्बदु मैन्दन् पेशिनान् 186

विरै उळ–सुवासयुक्त; अलङ्कलाय्–मालाधारी; उणर्त्तुवतु–समझाने को; उरै उळतु–बात है; उणर्न्तु कोटियेल्–समझ लेंगे तो; वेतम् वेलैयित्–वेदसागर की; करै उळतु–सीमा में रहनेवाली है; यावरुम् कर्कुम्–सभी की सीखी जानेवाली; कल्वियित्–(अपरा) विद्या के लिए; पिरै–जामन के समान; उळतु–है; ॲन्पतु–यह विषय; मैन्तन्–पुत्र ने; पेचितान्–बखाना। १८६

प्रह्लाद ने उत्तर में कहा कि हे सुवासपूर्ण माला से अलंकृत! आपको

समझाने की एक बात है। उसको समझ लें। वह वेदसागर की सीमा के रूप में स्थापित है। जो भी इस सच्चे तत्त्व के विपरीत तत्त्व मानते हैं, उन सभी के ज्ञान के दूध के लिए जामन के समान है। प्रह्लाद उस तत्त्व का विवरण कहने लगा। १८६

वित्तिन्ऱि	विळैवदीन्	ऱिल्लै	वेन्दनिन्
पित्तिन्ऱि	युणर्दिये	लळवैप्	पॅय्हुवन्
उय्त्तॊन्ऱु	मॊऴिविन्ऱि	युणर्दऱ्	पाऱ्ऱॆनाक्
कॆत्तुन्ऱु	नॆल्लियङ्	गनियिऱ्	काण्डियाल् 187

वेन्त–राजा; वित्तु इन्ऱि–बीज के बिना; विळैवतु ऒन्ऱु इल्लै–(पेड़ का) उगना नहीं होता; निन् पित्तु इन्ऱि–अपना मोह छोड़कर; उणर्तियेल्–समझेंगे तो; अळवै पॅय्कुवन्–प्रमाण बताऊँगा; ऒन्ऱुम् ऒऴिविन्ऱि–बिना एक बात छोड़े; उय्त्तु उणर्तल्–सोचकर समझना; पाऱ्ऱु–आवश्यक है; ॲना–ऐसा मानकर; कै तुन्ऱु नॆल्लियिन् कतियिल्–करतलामलकवत्; काण्टि–देख लो। १८७

राजा! बिना बीज के वृक्ष उगता नहीं। अगर आपका मोह बाधा न दे और आप सोचें तो मैं आपको प्रमाण कहूँगा। ध्यानपूर्वक बिना बीच में भूल-चूक किये विवेचना करने योग्य है यह तत्त्व। ऐसा करेंगे तो आप उसे करतलामलकवत् स्पष्ट देख सकेंगे। १८७

तन्नुळे	युलहङ्ग	ळॆवैयुन्	दन्दवै
तन्नुळ	निन्ऱुता	नवऱ्ऱुट्	टङ्गुवान्
पिन्निलन्	मुन्निलन्	ऒरुवन्	पेर्हिलन्
तॊन्निलै	यॊरुवराऱ्	ऱुणियऱ्	पालदो 188

ऒरुवन्–एक; तन्नुळे–अपने में से; उलकङ्कळ् ॲवैयुम्–सारे लोकों को; तन्तु–सृष्टि करके; अवै तन्नुळे–उनके भी अन्दर; निन्ऱु–धारण करके और; तान् अवऱ्ऱुळ् तङ्कुवान्–स्वयं उनके अन्दर अन्तर्यामी के रूप में लगे रहते हैं; पिन्तिलन्–उनके पश्चात् कोई नहीं; मुन्निलन्–पूर्व कोई नहीं; पेर्किलन्–(सर्वव्यापी है अतः) आते-जाते नहीं; तॊल् निलै–उसकी सनातन स्थिति; ऒरुवराल्–किसी के द्वारा; तुणियल् पालतो–निर्धारित किया जा सकता है क्या। १८८

एक परब्रह्म ही अपने अन्दर से सारे लोकों को सृष्ट करते हैं। उनके अन्दर अंतर्यामी के रूप में रहते हैं और अपने में भी उन्हें धारण कर लेते हैं। न उनके पूर्व का कोई है; न बाद का कोई। वे अखण्ड और सर्वव्यापी हैं, अतः उनका कहीं आना-जाना नहीं होता। ऐसे परमात्मा की सनातन स्थिति का निष्कर्ष किसी को साध्य है क्या? । १८८

शाङ्गियम्	योहमॆन्	ऱिरण्डु	तन्मैय
वीङ्गिय	पॊरुळॆलाम्	वेऱु	काण्बन

आङ्गवै युणर्न्दवर्क् कन्ऱि यन्ऩवन्
ओङ्गिय तनिनिलै युणरर् पालदो 189

वीङ्किय पॉरुळ् ॲलाम्–विभिन्न रूपों में फैले प्रपंच के पदार्थों को; वेऱु काण्पन–अलग-अलग देखनेवाले; चाङ्कियम् योकम् ॲन्ऱु–सांख्य और योग; इरण्टु तन्मैय–दो सिद्धान्त (उपाय) हैं; आङ्कु–वहाँ; अवै–उन्हें; उणर्न्तवर्क्कु–जो तात्विक रूप से जानते हैं, उन्हें; अन्ऱि–छोड़कर अन्यों को; अन्नवन्–उनकी; ओङ्किय–उत्कृष्ट; तनि निलै–उत्तम स्थिति; उणरल् पालतो–जानी जा सकती है क्या। १८९

प्रपंच में अनेकानेक नाम-रूपों में विस्तार के साथ फैले पड़े हैं पदार्थ। उनका विश्लेषण करने के दो मार्ग हैं— एक सांख्य कहलाता है, दूसरा योग। (सांख्य को ज्ञानमार्ग भी कहते हैं। 'द्विधा निष्ठा मया प्रोक्ता' —भगवान कृष्ण, गीता में) उनके अनुभूतिपरक ज्ञाता लोगों को छोड़कर अन्य साधारण मनुष्य उनकी उन्नत स्थिति को जान सकेंगे क्या ? । १८९

शित्तॆन वरुमरैच् चिरत्तिर् ऱेऱिय
तत्तुव मवनदु तम्मैत् तामुणर्
वित्तह ररिहुवर् वेऱु वेऱुणर्
पित्तरु मुळर्शिलर् वीडु पेऱिलार् 190

अवन्–वे परमात्मा; चित्तु ॲन–चित्स्वरूपी ऐसा; अरु मऱै चिरत्तिल्–उत्तम वेदान्त (उपनिषदों) में; तेऱिय–प्रतिपादित; तत्तुवम्–तत्त्व हैं; अतु–उन्हें; तम्मै ताम् उणर् वित्तकर्–आत्मज्ञानी विद्वान्; अऱिकुवर्–जानते हैं; वेऱु वेऱु उणर्–पृथक्-पृथक् जाननेवाले; पित्तरुम्–मोहमग्न लोग भी; उळर्–हैं; वीटु पेऱिलार्–मोक्ष-प्राप्त नहीं होंगे। १९०

वेदों का अन्त उपनिषद् उनको चित् तत्त्व निष्कर्ष करता है। उस तत्त्व को आत्मज्ञानी विद्वान् ही अनुभूति द्वारा जान सकते हैं। विपरीत ज्ञान के कारण भिन्न-भिन्न माननेवाले मूढ लोग भी कोई-कोई हैं। वे मोक्षवंचित हैं। १९०

अळवैया नळप्परि दऱिवि नप्पुरत्
तुळवैया युबनिड दङ्ग ळोदुरु
किळवियार् पॉरुळ्हळार् किळक्कु ऱादवन्
कळवैया ररिहुवार् मॅय्म्मै कण्डिलार् 191

अळवैयान्—प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से; अळप्परितु–प्रमाणित नहीं किया जा सकता; अऱिविन्–बुद्धि के; अप्पुऱत्तु—परे; उळ–रहनेवाला है वह तत्त्व; ऐया–पिताजी; उपनिटतङ्कळ्–उपनिषद्; ओतु उरु–जो बोलते हैं; किळवियार्–उन शब्दों और उनके; पॉरुळ्कळाल्–अर्थों से; किळक्कुऱातवन्–प्रतिपन्न जो नहीं हो सके उनकी; कळवै–छल-प्रपंच को; यार् अऱिकुवार्–कौन जान सकता है; मॅय्म्मै कण्टिलार्–उस सत्य को किसी ने नहीं जाना। १९१

वह परमात्मतत्त्व प्रत्यक्ष, अनुमान आदि प्रमाणों द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता। वह बुद्धि के परे है। पिताजी ! उपनिषद् के वाक्यों और उनसे निर्दिष्ट अर्थों से भी वह (अनुभवगम्य रीति से) नहीं जाना जा सकता। उसकी इस कपटस्थिति को कौन समझ सकेगा ? सत्य किसी ने नहीं जाना है ! । १९१

मूवहै युलहुमाय्क् कुणङ्गळ् मून्ऱुमाय्, यावैयु मॅवरुमा यॅण्णिल् वेऱुपट्
टोवलि लॉरुनिलै यॉरुवन् शॅय्विनै, तेवरु मुनिवरु मुणरत् तेयुमो 192

मू वकै उलकुमाय–(आकाश, मध्य, पाताल के) त्रिविध लोक बनकर; कुणङ्कळ् मून्ऱुमाय्–(सत्त्व, रज, तम) तीन गुण बनकर; यावैयुम् ॲवरुमाय्–सभी वस्तुएँ और सभी जीव बनकर; ॲण्णिल्–ऐसा सोचें तो; वेऱु पट्टु–पृथक्-पृथक् दिखाई देकर; ओवल् इल्–अखण्ड रूप से; ऑरु निलै–अनुपम स्थिति में रहनेवाले; ऑरुवन्–एक भगवान; चॅय्विनै–जो कर्म करते हैं वे; तेवरुम् मुनिवरुम्–देवों और मुनियों द्वारा; उणर–जानने के लिए; तेयुमो–लघु बन जायेंगे क्या। १९२

त्रिविध लोक (पाताललोक, भूलोक, व्योमलोक) वे ही हैं, (सत्त्व, रज, तम —) तीनों गुण वे ही हैं। सभी जीव, सभी पदार्थ उनके ही रूप हैं। सोचने-समझने पर विविध और अनेक जो हैं, वे सब अकेले वही परमतत्त्व हैं। अक्षय और अक्षर स्थिति के उनके कार्यों के रहस्य को देव या मुनि समझ सकेंगे क्या ? । १९२

करुममुङ् गरुमत्तिन् पयन् मप्पयन्, तरुमुदर् ऱलैवनुन् दानु मानवन्
अरुमैयुम् पॅरुमैयुम् अऱिव रेलवर्, इरुमैयॅन् ऱुरैशॅयुङ् गडनिन् ऱेऱुवार् 193

करुममुम्–(यागादि) क्रियाएँ और; करुमत्तिन् पयनुम्–कर्मों के फल; अ पयन् तरु मुतल् तलैवनुम्–उन कर्मफलों के दाता आदि परमदेव भी; तानुम्–(फलभोक्ता) जीवात्मा; आनवन्–स्वयं जो हैं, उन परमात्मा का; अरुमैयुम् पॅरुमैयुम्–अपूर्वता तथा महत्ता; अऱिवरेल्–जान लें कोई तो; अवर्–वे; इरुमै ॲन्ऱु–इह और पर दो; उरै चॅयुम्–कथित; कटल् निन्ऱु–(भव) सागर से; एऱुवार्–तर जायेंगे। १९३

वही परमात्मा याग है; याग का फल है; फल का दाता है और फलभोक्ता जीवात्मा भी वही है ! उसकी दुरूहता और उसकी महानता जो समझता है, वह पाप-पुण्य कर्मद्वय से होनेवाले भवसागर से तर जाता है ! । १९३

मन्दिर मादव मॅन्नु मालैय, तन्दुरु पयनिवै मुऱैयिऱ् चाऱ्ऱिय
नन्दलिल् दॅय्वमाय् नलहुम् नान्मऱै, अन्दमिल् वेळ्विमाट् टविशु मामवन् 194

मन्तिरम्–मन्त्र; मा तवम्–महान् तप; ॲन्नुम् मालैय–ऐसे प्रकारों का; तन्तुरु पयन्–और उनका फल; इवै–इनके सम्बन्ध में; मुऱैयिल् चाऱ्ऱिय–क्रम से कहे हुए; नन्तल् इल् तॅय्वमाय्–अक्षय देव बनकर; नान् मऱै–चारों वेदों में उक्त;

अनन्तम् इल्–अनन्त; वेळ्वि माट्टु–यागों में; नल्कुम्–(अग्नि में) डाला गया; अविच्चुम् आम्–हवि भी जो हैं; अवन्–वे ही। १६४

मन्त्र, महान् तप के प्रकार (और यज्ञ) आदि; उनके फलदाता विविध अव्यय देवता और चारों वेदों द्वारा निर्दिष्ट अक्षय यज्ञों में आहुति के रूप में दी जानेवाली हवि —इन सभी रूपों में वे ही परब्रह्म हैं। [इस पद्य में गीता के श्लोकों की झलक है।

'अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।
मंत्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्॥ ९-१६॥
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्॥ ४-११॥
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥ ७-२१॥
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥ ४-२४॥

इनका सार है— परब्रह्म ही सब कुछ हैं। सभी उनके ही विविध रूप हैं।] । १९४

मुऱ्पडप् पयन्ऱरु मुन्निल् निन्ऱवै, पिऱ्पडप् पयन्ऱरुम् पिन्बु पोदुव
तऱ्पयन् ऱान्ऱॆरि तरुम मिल्लैयः(ह्), दऱ्पुद मायैया लरिहिलार् पलर् 195

मुन्निल् निन्ऱवै–पूर्व स्थित (कर्मों का); मुऱ्पट पयन् तरुम्–पहले फल दिलाएँगे; पिन्पु पोतुव–पीछे जो होते हैं; पिन् पट पयन् तरुम्–पीछे फल दिलाएँगे; तन् पयन्–अपना फल; तान् तॆरि–स्वयं जाने (और दे); तरुमम् इल्लै–ऐसा कर्म कोई नहीं; अऱ्पुतम् अ.·.तु–यह अद्भुत बात; मायैयाल्–माया के कारण; पलर् अऱिकिलार्–अनेक लोग नहीं जानते। १६५

भगवान पहले किये कर्मों के फल पहले दे देते हैं; बाद के कर्मों को बाद। यानी फलदाता वे ही हैं और काल और प्रकार के अनुसार फल वे ही दे सकते हैं। कर्म में यह विवेक नहीं है या यह शक्ति भी नहीं कि वह स्वयं अपना फल दिला दे! यह अद्भुत तथ्य है और इसे लोग माया के कारण जान नहीं पाते। (कर्मवादियों के सिद्धांत का खण्डन है, इस पद में, जो ईश्वर की सत्ता की आवश्यकता नहीं मानते पर कहते हैं कि कर्म में ही फल निहित है!)। १९५

ऒरुविनै यॊरुपय निन्ऱि युय्क्कुमो, इरुविनै यॆन्बवै यियऱ्ऱि यिट्टवै
करुदिन करुदिन काट्टु हिन्ऱदु, तरुपर नरुळिनिच् चान्ऱु वेण्डुमो 196

इयऱ्ऱि इट्टवै–किये जो गये; इरु विनै–उन दो कर्मों में (पाप और पुण्य); ऒरु विनै–एक कर्म; ऒरु पयन् इन्ऱि–एक फल के सिवा; उय्क्कुमो–(विविध भिन्न फल) दिला सकता है क्या; तरु परन्–दाता परमदेव की; अरुळ्–कृपा तो;

करुतिन करुतिन–वांछित सभी फल; काट्टुकिन्ऱतु–दिलाता है; इति–और; चान्ऱु वेण्टुमो–प्रमाण चाहिए क्या। १९६

कर्म दो तरह के होते हैं। उनमें हर एक एक बार एक ही (योग्य) फल छोड़कर और कुछ दे सकता है क्या? पर सृष्टिमूल भगवान की कृपा इच्छानुसार फल देती है! फिर अन्य प्रमाण की आवश्यकता है क्या! । १९६

ऑरावुदि कडैमुऱै वेळ्वि योम्बुवोर्, अरावणै यमलनुक् कळिप्प रालदु
शराशर मनैत्तिनुज् जारु मॅन्बदु, परावरु मऱैप्पॉरुळ् पयनु मन्नदाल् 197

वेळ्वि ओम्पुवोर्–यज्ञकर्ता; कटै मुऱै–यज्ञान्त में; अरा अणै–शेषशायी; अमलनुक्कु–विमल श्रीविष्णु को उद्दिश्य करके; ओर्–एक; आवुति–आहुति; अळिप्पर–देते हैं; अतु–वह; चराचरम् अनैत्तितुम्–चर, अचर सभी को; चारुम्–मिल जायगी; ऍन्पतु–यह कथन; परावु अरु–जिनकी स्तुति करना दुर्लभ है; मऱै पॊरुळ्–वेदों में उक्त परमतत्त्व है वे; पयतुम् अन्नतु–फल भी वैसा ही है। १९७

यज्ञ करनेवाले अन्त में शेषशायी पावनकारी विष्णु भगवान को आहुति छोड़ते हैं। वह प्रपञ्च के चर और अचर सभी जीवों को प्राप्त होती है। यह उन वेदों का कथन है, जिनकी संस्तुति परम दुर्गम है (यानी जितनी भी स्तुति करो वह पूर्ण नहीं होगी)। और फल भी वैसे ही (सबको प्राप्त हो जाता है।)। १९७

पहुदियि तुट्पयन् पयन्द दन्नदिन्, विहुदियिन् मिहुदिह ळॅवैयु मेलवर्
वहुदियिन् वयत्तन वरवु पोक्कदु, पुहुदियिल् लादवर् पुलत्तिर् ऱाहुमो 198

पकुतियित्तुळ्–मूल प्रकृति से; पयन् पयन्ततु–(उस परमतत्त्व ने) कार्य (रूपी प्रपंच) दिलाया; मेलवर्–बड़ों ने; वकुतियिन् वयत्तिन ऍवैयुम्–वेद भागों में व्यक्त सभी; अन्नतिन्–उस (प्रकृति) से; (ऍळुन्त–निकले); विकुतियिन् मिकुतिकळ्–विकारों के संघात हैं; वरवु पोक्कु–उस परमतत्त्व का आना-जाना। (व्यक्त होना और अव्यक्त होना); पुकुति इल्लातवर्–पहुँच जिनकी नहीं है; पुलत्तिर्ऱु आकुमो–उनकी बुद्धि की पकड़ में आ सकता है क्या। १९८

उस परब्रह्म ने (कारणरूप) मूलप्रकृति से कार्यरूप यह प्रपञ्च सर्जित किया। श्रेष्ठ ज्ञानियों के वर्गीकरण के अन्तर्गत आनेवाले सभी पदार्थ (तत्त्व) उस मूलप्रकृतियों से निकली विकृतियों के ही संघात हैं। इनका कर्मवश में आना-जाना और परब्रह्म का अपनी इच्छा से रूप लेकर अवतरित होना आदि तत्त्वप्रेक्षण में असमर्थ अज्ञों के ज्ञान में आ सकेगा क्या? । १९८

ऍळुत्तियल् नाळत्ति ऩॅण्णि लावहै
मुळुत्तति नान्मुहन् मुदल मुऱ्ऱुयिर्

वळुत्तरुम् बोहुट्टदोर् पुरैयिन् वैहुमाल्
विळुत्तनिप् पल्लिदळ् विरैयि लामुहिळ् 199

ऍण् इला वर्क-असंख्य प्रकारों के; मुळु तनि-पूर्ण रूप और एक; नान्मुकन् मुतल-चतुर्मुख ब्रह्मा आदि; मुऱ्ऱुयिर्-जीव सभी; ऍळुत्तु इयल्-चित्र-सम; नाळत्तिन्-(सुन्दर) नाल पर; विळु तनि-अपूर्व व अनुपम; पल् इतळ्-अनेक दलों के; विरै इल् आम्-सुगन्धि का आगार; मुकिळ्-नाभि के; वळुत्त अरु-स्तुति-दुर्लभ; पोकुट्टत्तु-एक बीज के; ओर् पुरैयिल्-एक कोने में; वैकुम्-रहेंगे। १९९

पूर्णरूप अद्वितीय चतुर्मुख ब्रह्मा से लेकर बेशुमार जो जीव हैं, वे सभी भगवान श्रीविष्णु के नाभीकमल के स्तुत्य बीज के एक कोने में रहते हैं। वह कमल चित्रोपम नाल पर है; उसके अनुपम दल हैं और वह अतिशय सुगंध का आगार है। १९९

कण्णिनुङ् गरन्दुळन् कण्डु काट्टुवार्
उण्णिऱैन् दिडुमुणर् वाहि युण्मैयाल्
मण्णितुम् वानितु मऱ्ऱै मून्ऱितुम्
ऍण्णितुम् नॅडियव नॊरुव नॆण्णिलान् 200

ऍण्णितुम् नॅटियवन्-चिन्तन के परे हैं; ऒरुवन्-अद्वितीय, एक हैं; ऍण्णिलान्-अपरिमेय; कण्णितुम् करन्तुळन्-(देखनेवाली) आँखों में भी अदृश्य रहते हैं; उणर्वाकि उण्मैयाल्-बोधरूप सत्य हैं, इसलिए; कण्टु काट्टुवार्-अनुभव के रूप में देखकर जो दिखाते हैं; उळ् निऱैन्तिट्टुम्-उन (तत्त्वज्ञों के) मन में पूर्ण रूप से हैं; मण्णितुम् वानितुम्-पृथ्वी और आकाश और; मऱ्ऱै मून्ऱितुम्-अन्य तीनों भूतों में (विद्यमान हैं।)। २००

उनका ध्यान करनेवालों के मन से भी वे दूर हैं। वे अद्वितीय हैं; गुणातीत हैं। देखनेवालों की आँखों में ही अगोचर रहते हैं। ज्ञानरूप हैं; अत: जो उनके दर्शक हों उनको दूसरों को भी दरसाने की शक्ति रखते हैं, उनके मन में पूर्ण रूप से (अनुभूति के रूप में) विद्यमान हैं। भूमि, आकाश और अन्य तीनों (अग्नि, जल और अनल) में भी वे अव्यक्त रहते हैं। २००

शिन्दैयिऱ् चॅय्हैयिऱ् चॊल्लिऱ् चेर्न्दुळन्
इन्दियन् दोऱुमुळ नुऱ्ऱ दॆण्णिनाल्
मुन्दैयोर् ऍळुत्तॆन वन्दु मुम्मुरैच्
चन्दियुम् बदमुमाय्त् तळैत्त तन्मैयान् 201

उऱ्ऱतु-(जो सत्य) होता है; ऍण्णिताल्-वह विचार करें तो; चिन्तैयिल्-(जीवों के) चिन्तन में; चॅय्कैयिल्-कर्म में; चॊल्लिल्-वचन में; चेर्न्तु उळन्-मिले हुए हैं; इन्तियम् तोऱुम्-हर इन्द्रिय में; उळन्-विद्यमान हैं; मुन्तै-आरम्भ

में; ओर् ऍॕळुत्तॆत वन्तु–एक अक्षर (प्रणव) के रूप में प्रकट होकर; मुम्मुरै–तीन; पतमुम्–पद और; चन्तियुम् आय्–सन्धि बनकर ("ओं नमो नारायणाय" के मन्त्र-रूप में); तळैत्त–विवृद्ध होने के; तन्मैयान्–स्वभाव के हैं। २०१

परमात्मा की सत्यस्थिति कहाँ है? यह सोचें तो वह जीव के मन (चिंतन), वचन और कर्म में ही मिला रहता है! हर इन्द्रिय में है। चतुर्वेद का आदि अक्षर 'ओं' है। वहाँ से आरम्भ होकर 'ओं नमो नारायणाय' में बडा हो गया है। उस मंत्र में तीन पद हैं और दो संधियाँ हैं। इस रूप में वह बहुत ही गूढ़ और विस्तृत अर्थ से भरा है। (ओं+नमः+नारायणाय। रहस्य ग्रंथों के अनुसार ओं में अ+उ+म तीन ध्वनियाँ हैं। अकार वाच्य भगवान हैं और मकार वाच्य जीव। अकार से जीव का भगवान का शेष होना निर्दिष्ट है। फिर 'नमो नारायणाय' में अर्थ-विस्तार करने पर विदित होता है कि सारा जीवतत्त्व, ब्रह्मतत्त्व और सृष्टितत्त्व सभी अन्तर्निहित हैं।)। २०१

कामममुम् वॆहुळियु मुदल कण्णिय
तीमैयुम् वन्मैयुन् दीर्क्कुञ् जॆय्हैयान्
नाममु मवन्पिऱ नलिहो डानॆडुम्
शेममुम् पिऱर्हळार् चॆप्पऱ् पालवो 202

काममुम्–काम (या राग); वॆकुळियुम्–और क्रोध; मुतल कण्णिय–आदि गिने हुए; तीमैयुम्–बुरे गुणों और; वन्मैयुम्–उनके बल को; तीर्क्कुम् चॆय्कैयान्–(भक्तों के मन से) दूर करने का कार्य करनेवाले हैं; नाममुम्–(उनके) नामों की महिमा; अवन्–उनका; पिऱ् नलि कॊटा–दूसरों को दुःख नहीं देकर; नॆटु चॆममुम्–भक्तों का क्षेम करानेवाला (रक्षण-) गुण; पिऱर्कळाल्–अन्यों (अज्ञों) द्वारा; चॆप्पल् पालवो–वर्ण्य हैं क्या। २०२

परब्रह्म काम-क्रोधादि दुर्गुणों का और उनकी शक्ति का निरसन करनेवाले करुणामय हैं। उनके श्रीनामों की महिमा और अन्य जीवों को कष्ट न देते हुए अपने भक्तों का क्षेम करने की उनकी रक्षण-विधि आदि अन्य अज्ञ लोगों द्वारा बताये जा सकते हैं क्या? । २०२

कालमुङ् गरुवियु मिडनु मायक्कडॆप्
पालमै पयनुमायप् पयन्रुय्प् पानुमाय्च्
चीलमु मवॆदरुन् दिरुवु मायुळन्
आलमुम् वित्तुमीत् तडङ्गु माण्मैयान् 203

आलमुम्–वट वृक्ष और; वित्तुम् ऒत्तु–बीज के समान; अटङ्कुम्–सभी प्रपंच अन्दर अव्यक्त रूप में समा जाए; आण्मैयान्–वैसे दिव्य कर्म वाले हैं; कालमुम् करुवियुम्–(वे) काल और उपकरण; इटनुमाय्–और देश बनकर; कटै पाल्–

(कर्म के) अन्त में; अमै पयत्तुमाय्–प्राप्य फल भी बनकर; पयन् तुय्प्पात्तुमाय्–फल-भोक्ता भी बने; चीलमुम्–शील गुण और; अवै तरुम्–उन गुणों के कारण प्राप्त; तिरुवुमाय्–इह-पर सुख रूपी श्री भी बने; उळन्–हैं। २०३

बहुत ही विशाल अश्वत्थ (या बरगद) तरु और उसके बीज के समान हैं यह प्रपञ्च और वे ! उनका विभव ऐसा है कि यह सारा प्रपञ्च उनमें सूक्ष्म रूप से समाये रहता है। वे काल भी हैं, देश भी और साधन भी। आखिर फल भी वे ही हैं। फलभोक्ता जीव भी क्या अन्य है ? नहीं, वे ही वह भी हैं। वे शीलस्वभाव, उनके फलस्वरूप इह-पर में प्राप्य श्री —सभी हैं। २०३

उळ्ळुऱ वुणर्वित्ति दुणर्न्द वोशैयोर्
तॆळ्विळि याऴिडैत् तॆरियुज् जॆय्हैयान्
उळ्ळुळन् पुऱत्तुळ नॊन्ऱु नण्णलान्
तळ्ळरु मऱैहळु मरुळुन् दन्मैयान् 204

ओर्–एक; तॆळ्विळि–शुद्धस्वर; याऴिट–वीणा से उत्पन्न; उळ् उऱ–मनमें खूब रस भरकर; उणर्वित्तु–बुद्धि द्वारा; उणर्न्त–गृहीत; ओचै–ध्वनि के समान; तॆरियुम्–लगनेवाले; चॆय्कैयान्–कार्य करनेवाले हैं; उळ् उळन्–अन्दर रहते हैं; पुऱत्तु उळन्–बाहर रहते हैं; ऒन्ऱुम् नण्णलान्–तो भी किसी से अस्पृश्य हैं; तळ्ळ अरु–अनुपेक्षणीय; मऱैकळुम्–वेद भी; मरुळुम्–भ्रमित हो जाएँ ऐसे; तन्मैयान्–लक्षण वाले हैं। २०४

शुद्ध-स्वर वीणा से नाद निकलता है जो मन को मोह लेता है और बुद्धि को वश में कर लेता है। उस नाद के समधर्मी हैं परब्रह्म। वे अन्दर-बाहर सर्वत्र विद्यमान हैं। तो भी वे निर्लिप्त हैं। प्रमाण के रूप में अनुपेक्षणीय वेद भी उनके वर्णन में भ्रमित हो जाते हैं। ऐसी हस्ती के हैं वे। २०४

ओमॆन्नु मॊरॆऴुत् तदनि नुळ्ळुयिर्
आमव नऱिविनुक् कऱिवु मायिनान्
ताममू वुलहमुन् दऴुविच् चार्दलाल्
तूममुङ् गनलुम्बोर् ऱॊडर्न्द तोऱ्ऱत्तान् 205

ओम् ऎन्नुम्–ओंकार का; ओर् ऎऴुत्तु–एक अक्षर; अतनिन्–उसके; उळ् उयिर् आम् अवन्–अन्दर के प्राण हैं वे; अऱिविनुक्कु–बुद्धि को; अऱिवुम् आयिनान्–बुद्धि बने हैं; तामम्–प्रकाशमय; मूवुलकमुम्–तीनों लोकों में; तऴुवि–घुल-मिलकर; चार्तलाल्–लगे रहते हैं, इसलिए; तूममुम् कनलुम् पोल्–धुएँ और अग्नि के जैसे; तॊटर्न्त–एक साथ फैलनेवाले; तोऱ्ऱत्तान्–स्वभाव वाले हैं। २०५

ॐकार के प्राण हैं वे। (परम मुख्य ध्वनि अकार के लक्ष्य हैं।) वे बुद्धि की बुद्धि हैं। (बुद्धि उन्हीं से अनुप्रणित होकर अपना काम

करती है। नहीं तो बुद्धि, जैसे अन्य अंग, जड है।) प्रकाशमय तीनों लोकों में वे सर्वत्र व्याप्त हैं। इसलिए धुएँ और अग्नि के समान सर्वत्र सभी पदार्थों में पाये जा सकते हैं। २०५

कालैयि नरुमल रॉन्ऱक् कट्टिय
मालैयिन् मलर्पुरै शमय वादियर्
शूलैयिन् तिरुक्कलार् चॉल्लु वार्क्कॅलाम्
वेलैयुन् दिरैयुम्बोल् वेरु पाडिलान् 206

कालैयिल् नरुमलर्–तड़के के (खिले) सुगन्धित सुमनों को; **ऑन्ऱ कट्टिय**–मिलाकर गूँथी हुई; **मालैयिन्**–माला के; **मलर् पुरै**–पुष्पों के समान; **चमय वातियर्**–संप्रदायवादियों के; **चूलैयिन् तिरुक्कु अलाल्**–कुतर्क का वैविध्य है, नहीं तो; **चॉल्लुवार्क्कु ॲलाम्**–सभी तथ्यवादियों के लिए; **वेलैयुम् तिरैयुम् पोल्**–तरंगों और समुद्र के समान; **वेरुपाटु इलान्**–विविध और अनेक नहीं हैं। २०६

विभिन्न मतावलंबी लोग प्रातःकाल के पुष्पित पुष्पों की गूँथी माला के अलग-अलग पुष्पों के समान हैं। वे अपनी तर्कशक्ति और बुद्धि की सूक्ष्म पहुँच के आधार पर परब्रह्म में भेद कल्पित करते हैं। असल में समुद्र-जल और वीचियों के समान सब एक ही हैं। अनेक नहीं। (वीचियाँ अलग-अलग दिखती हैं, पर यथार्थ में सब समुद्र-जल ही हैं। वैसे ही अनेकता केवल दृष्टिभ्रम है। एकता ही सत्य है।)। २०६

इन्नदोर् तन्मैय निहळ्वुर् ऱॅय्दिय
नन्नॅडुञ् जॅल्वमु नाळु नामऱ
मन्नुयि रिळत्तियॅन् ड्रिरैञ्जि वाळ्त्तिनॅन्
शॊन्नव नाममॅन् ऱुणरच् चॊल्लिनान् 207

इन्ननतोर् तन्मैयन्–ऐसे अद्भुत आकार-प्रकार के (श्रीमन्नारायण की); **इकळ्वुऱ्ऱु**–निन्दा करके; **ऍय्तिय**–प्राप्त; **नल्**–अच्छे; **नॆटु**–बड़े; **चॆल्वमुम्**–धन-वैभव को; **नाळुम्**–और आयु को; **नाम् अऱ**–नामनिशान-हीन करके; **मन्नुयिर् इळत्ति**–शाश्वत प्राणों को भी खो जायँगे; **ऍन्ऱु**–कहकर; **चॊन्नवन् नामम्**–अपने द्वारा कथित उनके श्रीनाम को; **इऱैञ्चि**–विनय करके; **वाळ्त्तितॆन्**–आदरबुद्धि के साथ कहा; **ऍन्ऱु**–ऐसा; **उणर**–समझाकर; **चॊल्लितान्**–कहा। २०७

ऐसे वर्णन के श्रीमन्नारायण की निंदा करते हैं आप। फल यही होगा कि आप (कठोर तपस्या द्वारा प्राप्त) अपनी सारी श्रेष्ठ संपत्ति से वंचित हो जायँगे; आपकी आयु शून्य हो जायगी; और अपना नित्य जीवन खो देंगे! इस संभावना से दुःखी होकर मैंने उनका श्रीनाम विनय के साथ लेकर स्तुति की, जिनके सम्बन्ध में मैं अब वर्णन करता रहा। यह प्रह्लाद ने विस्तार के साथ समझाकर अपने पिता से कहा। २०७

अॅदिरिल् निन्ऱव निवॆयुरॆत् तिडुदलु मॆव्वुल हमुमञ्ज
मुदिरुम् वॆङ्गद मॊळिहॊडु मूण्डदु मुदुहडऱ् कडुवॆय्प्पक्
कदिरुम् वानमुञ् जुळन्ऱन नॆडुनिलङ् गम्बित्त कनहन्गण्
उदिरङ् गान्ऱन तोन्ऱिन पुहैक्कॊडि युमिळ्न्ददु कॊडुन्दीये 208

अॅतिरिल् निन्ऱवन्–सामने स्थित; इवॆ–(उसके) ये वचन; उरॆत्तिट्टलुम्–कहते ही; अॅ उलकमुम् अञ्च–सभी लोकों को डराते हुए; मुतिरुम् वॆम् कतम्–पूर्णविवृद्ध भयंकर कोप; मॊळि कॊट्टु–शब्दों के साथ; मुतु कटल् कटु–प्राचीन (क्षीर-) सागर के विष; एय्प्प–के समान; मूण्टतु–उठा; कतिरुम्–सूर्य आदि तेजपिंड और; वानमुम्–आकाश लोक; चुळन्ऱन–घूमे; नॆटु निलम्–लम्बी भूमि; कम्पित्त–काँपी; कनकन् कण्–हिरण्य की आँखों ने; उतिरम् कान्ऱन–रक्त बहाया; पुकै कॊटि–अग्नि की धुएँ रूपी पताकाएँ; तोन्ऱिन–प्रकट हुईं; कॊटुम् ती–भयंकर आग; उमिळ्न्ततु–उगली गयी। २०८

उसके सामने, (स्थिर रूप से) स्थित होकर प्रह्लाद हिरण्य से यह कह रहा था। यह सुनते ही हिरण्य के मन में वर्धनशील भयंकर क्रोध उसके ही योग्य शब्दों के साथ उठकर प्राचीन क्षीरसागर से निर्गत विष के समान उमड़ आया। सारे लोक काँप उठे। आदित्य आदि प्रकाश-मंडल और आकाशलोक घूम उठे। विशाल और लम्बी पृथ्वी काँपी। कनक के नेत्र रक्त बहाने लगे। अग्नि की ध्वजा रूपी धुआँ उठा। भयंकर आग निकल आयी। २०८

वेऱु मॆन्नॊडु तरुम्बहै पिऱिदिनि वेण्डलॆन् विनैयत्ताल्
ऊऱि यॆन्नुळे युदित्तदु कुऱिप्पिनि युणर्हुव दुळदन्ऱाल्
ईऱि लॆन्बॆरुम् बहैञनुक् कन्बुशाल् अडियन्या नॆन्गिन्ऱान्
कोऱि रॆन्ऱन नॆन्ऱलुम् बऱ्ऱिनर् कूऱ्ऱिनुङ् गॊलेवल्लार् 209

इऩि–अब; वेऱु–अन्य; अॅन्नॊटु तरुम् पकै–मेरे साथ शत्रुता; पिऱितु वेण्टलॆन्–अलग नहीं चाहता; विनैयत्ताल्–(विधि की) साजिश से; अॅन् उळे ऊऱि–मेरे ही अन्दर रहकर; उतित्ततु–(यह शत्रुता) बाहर निकली है; इऩि–आगे भी; कुऱिप्पु–उसका मन; उणर्कुवतु–जानने का; उळतु अन्ऱु–है नहीं; ईऱु इल्–अनन्त; अॅन्–मेरे; पॆरु पकैञनुक्कु–परमशत्रु का; अन्पु चाल्–प्यारा; अटियॆन् यान्–दास हूँ मैं; अॅन्किन्ऱान्–कहता है; कोऱिर्–मारो; अॅन्ऱनन्–कहा; अॅन्ऱलुम्–कहते ही; कूऱ्ऱिनुम्–यम से भी बढ़कर; कॊलॆ वल्लार्–वध करने में कुशल वधिकों ने; पऱ्ऱिनार्–उसे (प्रह्लाद को) पकड़ लिया। २०९

हिरण्य ने चिल्लाया। बस, बस। आगे कोई अन्य शत्रुता का सबूत नहीं चाहता। विधि के षड्यंत्र से मेरे ही अंदर यह शत्रु रहा है और प्रगट हो आया है! आगे इसका अभिप्राय जानने को कुछ नहीं है! जो मेरा परम वैरी है, जिसकी शत्रुता का अंत नहीं है, उसका अपने को

परम प्यारा दास बतला रहा है यह ! मारो इसे। उसके ऐसा कहते ही मारने के काम में यम से भी बढ़कर दक्ष वधिक आये और उन्होंने उसे कसकर पकड़ लिया। २०९

कुऩ्ऱु पोऩ्मणि वायिलिऩ् पॆरुम्बुऱत् तुय्त्तऩर् मऴुक्कूर्वाळ्
ऒऩ्ऱु पोल्वऩ वायिर मीदॆडुत् तोच्चिऩ रुयिरोडुऩ्
दिऩ्ऱु तीर्हुदु मॆऩ्गुऩ रुरुमॆऩत् तॆऴित्तऩर् शिऩवेऴक्
कऩ्ऱु पुल्लिय कोळरिक् कुऴुवॆऩक् कऩल्हिऩ्ऱ तऱुहण्णार् 210

कऩल्किऩ्ऱ–आग उगलती; तऱु कण्णार्–क्रूर आँखों वाले; वेऴम् कऩ्ऱु–गजशावक को; पुल्लिय–पकड़े रहे; कोळरि कुऴु ऍऩ–सिंहवृन्दों के समान; कुऩ्ऱु पोल्–पर्वत-सदृश (ऊँचे); मणि–और रत्नजड़ित; वायिलिऩ्–द्वार के; पॆरुम् पुऱत्तु–बाहर बड़े मैदान में; उय्त्तऩर्–ले आये; उयिरोडुम्–जीवित ही; तिऩ्ऱु तीर्तुम्–खा डालेंगे; ऍऩ्कुऩर्–कहते हुए; उरुम् ऍऩ–अशनि के समान; तॆऴित्तऩर्–(उच्च स्वर में) डाँटकर; ऒऩ्ऱु पोल्वऩ–एक ही सम; आयिरम् मऴु–सहस्र परशुओं और; कूर् वाळ्–तीक्ष्ण तलवारों को; मीतु ऍटुत्तु–ऊपर उठाकर; ओच्चिऩर्–उस पर चलाया। २१०

वधिकों की आँखों में मानो आग जल रही थी। क्रूर दृष्टि वाले वे गजशावक को पकड़े हुए सिंहवृन्द के समान उसे पकड़ लेकर पर्वतोन्नत और मणिमंडित राजद्वार के बाहर खुले मैदान में आये। 'इसे जीवित ही खा लेंगे' —ऐसा चिल्लाते हुए और अशनि के समान स्वर में डपटते हुए उन्होंने एकसम सहस्र परशुओं और तीक्ष्ण तलवारों को ऊपर उठाकर उस पर चलाया। २१०

तायिऩ् मऩ्ऩुयिर्क् कऩ्बिऩऩ् ऱऩ्ऩैयत् तवमॆऩ्ऩुम् दहविल्लोर्
एयॆ ऩ्ऩ्दुणै मात्तिरत् तॆय्दऩ ऍऱिन्दऩर् ऍऱितोऱुम्
तूय वऩ्ऱऩैत् तुणैयॆऩ वुडैयवऩ् ऒरुवऩैत् तुऩ्ऩादार्
वायिऩ् वैदऩ वॊत्तऩ वत्तऩै मऴुवॊडु कॊलैवाळुम् 211

तवम् ऍऩुम्–सत्प्रयत्न मान्य; तकवु इल्लोर्–तटस्थता-रहित वे असुर; ए ऍऩुम् तुणै मात्तिरत्तु–'ए' कहने के समय की मात्रा में; मऩ् उयिर्क्कु–शाश्वत प्राणों (जीवों) के; तायिऩ् अऩ्पिऩऩ्–माता से बढ़कर प्यारे; तऩ्ऩै–उस प्रह्लाद पर; ऍय्तऩ–प्रेरित; ऍऱिन्तऩ–(और) प्रेषित (भाले आदि); अत्तऩै मऴुवॊटु–उतने परशुओं के साथ; कॊलै वाळुम्–संहारक तलवारें; ऍऱि तोऱुम्–जब-जब चलायी गयीं; तूयवऩ् तऩै–पावनमूर्ति श्रीमन्नारायण को; तुणै ऍऩ–सहायक; उटैयवऩ् ऒरुवऩै–समझनेवाले उस अनुपम प्रह्लाद को; तुऩ्ऩातार्–शत्रुओं की; वायिऩ् वैतऩ–मुख से निकाली गालियों के; ऒत्तऩ–समान हो गये। २११

तटस्थता का वर्ताव ही तपस्या या सत्प्रयत्न कहा जा सकता है। ऐसा समभाव उन असुरों में नहीं था। 'ए' का उच्चारण करने मात्र के

समय के अन्दर उन्होंने उस माता-सम भूतदयावान् प्रह्लाद पर अनेक हथियार फेंके और अनेक हथियार चलाये। वे सब फरसे और भाले उस परमपवित्र परब्रह्म को ही अपना एकमात्र सहायक माननेवाले प्रह्लाद के प्रति शत्रुओं के शापवचन के समान बेकार हो गये। २११

ऍऱिन्द वॅय्दन वॅऱ्ऱिन कुत्तिन वीर्त्तन पडैयावुम्
मुऱिन्द नुण्बॊडि यायिन मुडिन्दन मुनिविलान् मुळ्मेनि
शॊऱिन्द तन्मैयुम् जॅय्दिल वायिन तूयवन् तुणिवॊन्ऱा
अऱिन्द नायहन् शेवडि मऱन्दिलन् अयर्त्तिलन् अवन्नामम् 212

ऍऱिन्त–फेंके गये; ऍय्तन–चलाये गये और; ऍऱ्ऱिन–उछाले गये; कुत्तिन–और भोंके गये; ईर्त्तन–चीरनेवाले; पटै यावुम्–सभी हथियार; मुऱिन्त–टूटे; नुण् पॊटि आयिन–सूक्ष्म चूर्ण बने; मुटिन्तन–नाश हुए; आयिनुम्–तो भी मुनिवु इलान्–क्रोध-रहित प्रह्लाद के; मुळु मेनि–सारे शरीर में; चॊऱिन्त तन्मैयुम्–खुजलाया-जैसा प्रभाव भी; चॅय्तिल आयिन–न कर सकनेवाले बने (वे हथियार); तूयवन्–पवित्रात्मा; तुणिवु ऑन्ऱा–शाश्वत एक हैं, ऐसा; अऱिन्त नायकन्–ज्ञात नायक के; चेवटि मऱन्तिलन्–श्रेष्ठ श्रीचरणों को भूला नहीं; अवन् नामम्–उनका तारक नाम भी; अयर्त्तिलन्–कहने में नहीं चूका। २१२

कुछ हथियार दूर से फेंके जानेवाले थे; कुछ पास से चलाये जानेवाले थे, और कुछ भोंके जानेवाले थे। कुछ तलवार के समान चीरनेवाले थे। पर वे सभी उस ज्ञानी बालक के शरीर से लगकर चूर-चूर हो बिल्कुल नष्ट हो गये। तब भी प्रह्लाद ने कोई कोप नहीं दिखाया। उसके शरीर पर खुजलाने का-सा प्रभाव भी उन हथियारों द्वारा नहीं पड़ा। वह पवित्रमन प्रह्लाद उन जगन्नाथ का श्रीचरण नही भूला, जिन्हें वह शाश्वत सत्य मानता था; न उनके श्रीनामोच्चारण में चूका। २१२

उळ्ळ वात्पॆरुम् बडैक्कलम् यावयुम् उक्कन वुरवोय्निन्
पिळ्ळै मेनिक्कोर् रानिवन् दिलदिनिच् चॆयलॆन्गोल् पिऱिदॆन्नक्
कळ्ळ वुळ्ळत्तन् कट्टिनन् करुविहळ् कदुमॆनक् कनल्पॊत्तित्
तळ्ळु मिन्ॲन वुरैत्तनन् वयवरुम् अत्तॊऴिर् ऱलैनिन्ऱार् 213

उरवोय्–शक्तिमान्; उळ्ळ–जो थे वे; वात्–श्रेष्ठ; पॆरु–बड़े; पटैक्कलम् यावॆयुम्–सभी हथियार; उक्कन–चूर हो गिर गये; निन् पिळ्ळै मेनिक्कु–आपके पुत्र के शरीर को; ओर् आत्ति वन्तिलतु–कोई हानि नहीं हुई है; इनि–आगे; चॆयल् ऍन् कॊल्–करना क्या है; पिऱितु–दूसरा काम; ऍन्न–पूछने पर; कळ्ळ उळ्ळत्तन्–मायाकारी मन वाला है; करुविकळ् कट्टिनन्–(जादू द्वारा) हथियारों को बेकार कर दिया है; कतुम् ऍन–झट से; कनल् पॊत्ति–आग बढ़ाकर; तळ्ळुमिन्–उसमें डाल दो; ऍन उरैत्तनन्–ऐसा कहा; वयवरुम्–वधिक वीर भी; अ तॊऴिल्–उस कर्म में; तलै निन्ऱार्–तत्पर रहे। २१३

(असुर वधिक वीर हिरण्य के पास जाकर बोले—) हे शक्तिमन्त ! हमारे पास जो रहे, वे सभी श्रेष्ठ और बड़े-बड़े हथियार चूर हो नष्ट हो गये। आपके सुपुत्र के शरीर की कोई हानि नहीं हुई। आगे दूसरा काम क्या है, जो किया जाय ? हिरण्य ने उत्तर में कहा कि लगता है कि प्रह्लाद मायावी है। चोर-दिल है। जादू जानता है और उसके बल पर हथियारों को 'बाँध' दिया है ! अब झट आग प्रज्वलित करो और उसे उसमें फेंक दो। वधिक उस काम में प्रवृत्त हुए। २१३

कुऴियि लिन्दन मडुक्किनर् कुन्ऱॆनक् कुडन्दोरुङ् गॊणर्न्दॆण्णॆय्
इऴुदु नॆय्शॊरिन् दिट्टनर् नॆरुप्पॆऴुन् दिट्टदु विशुम्बॆट्ट
अऴुदु निन्ऱन रयर्वुऱ वैयनैप् पॆय्दन ररियॆन्ऱु
तॊऴुदु निन्ऱनन् नायहन् ऱाळिणै कुळिर्न्ददु शुडुतीये 214

कुऴियिल्—एक गड्ढे में; इन्ततम्—ईंधन; कुन्ऱॆन—गिरि के समान; अट्टक्किनर्—चुन रखे; कुटम् तॊरुम्—घड़ों में; ऍण्णॆय्—तेल; इऴुतु—मक्खन; नॆय्—और घी; कॊणर्न्तु—लाकर; चॊरिन्तिट्टनर्—उड़ेला; नॆरुप्पु—आग; विचुम्पु ऍट्ट—आकाश को छूते हुए; ऍऴुन्तिट्टतु—उठी; अऴुतु निन्ऱनर्—रोते हुए जो खड़े रहे उनको; अयर्वु उऱ—अधीर करते हुए; ऐयनै—सुन्दर को; पॆय्तनर्—(आग में) डाल दिया; अरि ऍन्ऱु—हरि कहता हुआ; नायकन् ताळ् इणै—(सर्वलोक-)नायक का चरणद्वय; तॊऴुतु निन्ऱनन्—स्तुति करता रहा; चुडु ती—जलती आग; कुळिर्न्ततु—शीतल बन गयी। २१४

उन्होंने एक बड़े गड्ढे में ईंधनों को पर्वत के समान चुन रखा। फिर घड़ों में घी, मक्खन, तेल आदि भर लाये और उस पर उड़ेला। आग उठी और आकाश छूते हुए जलने लगी। पास जो खड़े रहे, उन (देवों आदि) लोगों को सहमने देते हुए उन्होंने उस सुंदर सुकुमार बालक को उस आग में डाल दिया। वह हरि का नाम उच्चारण करते हुए महाविष्णु की स्तुति करता रहा। तब अग्नि शीतल बन गयी। २१४

काल वॆङ्गनल् कडुविय कालैयिऱ् कऱ्पुडैयवळ् शॊऱ्ऱ
शील नल्लुरै शीदमिक् कडुत्तलिऱ् किऴियॊडु नॆय्तोय्त्तु
आल मन्नवर् करङ्गळाल् वयङ्गॊरि मडुत्तलि ननुमन्ऱन्
कूल मामॆन वॆन्बुरक् कुळिर्न्ददक् कुरुमणित् तिरुमेनि 21

आलम् अन्नवर्—हलाहल जैसे; करङ्कळाल्—(राक्षसों के) हाथों से किऴियॊटु नॆय् तोय्त्तु—कपड़ों को घी में सनाकर; वयङ्कु ऍरि—ज्वलन्त अग्नि मटुत्तलिन्—लगा देने पर; कालम् वॆम् कनल्—युगान्त की-सी घोर आग; कटुवि कालैयिल्—जब लिपटी रही तब; कऱ्पुटैयवळ्—पतिव्रता के; चॊऱ्ऱ—कहे हुए चीलम् नल् उरै—शील-भरे अच्छे वचन; चीतम् मिक्कु अटुत्तलिन्—शीतलता खूब अनुप्राणित थे, इसलिए; अनुमन् तन् कूलम्—हनुमान का लांगूल; आम् ऍन

जैसे बना वैसे; अ कुरुमणि–उस श्रेष्ठ बालकरत्न का; तिरु मेनि–श्रीशरीर; ऍन्पु उऱु–हड्डियों तक; कुळिर्न्ततु–शीतल बन गया। २१५

हलाहल-सम राक्षसों ने अपने हाथों से हनुमान की पूँछ पर कपड़ा लपेटकर घी में सनाकर आग लगायी थी। आग उस पूँछ को लपेटे हुए जल रही थी। तब पतिव्रता देवी सीता ने शीलगर्भित अच्छे अनुग्रह के वचन कहे। उन वचनों की अत्यधिक शीतलता (अनुग्रहकारी शक्ति) के कारण हनुमान का लांगूल शीतलता का अनुभव करने लग गया था। ठीक वैसे ही उस बालरत्न (सम शोभावान प्रह्लाद) का श्रीशरीर हड्डियों तक शीतल हो गया। २१५

शुट्ट दिल्लैनिन् ऱोन्ऱलैच् चुटर्क्कनल् शुळिपड रळुवत्तुळ्
इट्ट पोदिलु मॅन्निनिच् चॅयत्तक्क दॅन्ऱन रिहल्वॅय्योर्
कट्टित् तीयॅयुङ् गडुञ्जिऱै यिड्डुमिनक् कळ्वनैक् कवर्न्दुण्ण
ऍट्टुप् पाम्बैयुम् विडुमिन्ग ळॅन्ऱनन् ऍरियॅळु तरुहण्णान् 216

इकल्–विरोधी; वॅय्योर्–क्रूर असुरों ने; चुळि पटर्–(जिसमें) आग घूमती हुई फैल रही थी; अळुवत्तुळ्–उस बड़े गड्ढे में; इट्ट पोतिलुम्–डाला गया तो भी; चुटर् कनल्–ज्वालामयी आग; निन् तोन्ऱलै–आपके सुपुत्र को; चुट्टतिल्लै–नहीं जला सकी; इत्ति–आगे; ॲन् चॅय तक्कतु–क्या किया जाना है; ॲन्ऱनर्–पूछा; ॲरि ॲळु–आग जिनसे निकली; तरु कण्णान्–वैसी क्रूर आँखों वाले हिरण्य ने; तीयॅयुम् कट्टि–आग को भी बाँधकर; कटुम् चिऱै–कठोर कारा में; इटुमिन्–डाल दो; ॲट्टु पाम्पॅयुम्–अष्टनागों को; अ कळ्वनै–उस चोर को; कवर्न्तु उणण–पकड़कर खाने के लिए; विटुमिन्कळ्–उस पर छोड़ो; ॲन्ऱनन्–कहा। २१६

द्वेषी जल्लादों ने यह देखा तो वे हिरण्य के पास दौड़े। बोले कि गड्ढे में जो जलती आग से भरा था, हमने प्रह्लाद को डाला था। वह ज्वालामयी आग आपके सुपुत्र का स्पर्श भी नहीं कर सकी। आगे क्या किया जाना चाहिए? यह सुनकर हिरण्य की आँखों में आग-सी उठकर जलने लगी। उसने कहा कि आग को भी बाँधकर कठोर कारा में डाल दो। फिर आठों दिशाओं के अष्टनागों के सामने उस चोर को पकड़कर खाने के लिए डाल दो। २१६

अनन्द नैमुद लाहिय नाहङ्गळ् अरुळॅन्गो लॅनवन्नान्
निनैन्द मात्तिरत् तॅय्दिन नोय्दिनिल् नॅरुप्पुरु पहुवायाल्
वनैन्द दामनन मेनियि नाल्ऱन्मेल् वाळॅयि ऱूऱ वून्ऱिच्
चिनन्द मोक्कॊळक् कडित्तन तुडित्तिलन् तिरुप्पॅयर् मऱवादान् 217

अनन्तनै मुतल् आकिय–अनंत जिनके आदि में था वे; नाकङ्कळ्–नाग;

अऩ्ऩाऩ्–उमके; निऩैन्त मात्तिरत्तु–स्मरण मात्र से; अरुळ् ॲऩ्ऩ कोल्–कृपा की आज्ञा क्या है; ॲऩ–सोचकर; ॲय्तिऩ–आ पहुँचे; नॊय्तिऩिल्–शीघ्र; नॆरुप्पु उकु–अग्नि निकालनेवाले; पकु वायाल्–खुले मुख से; वत्तैन्त्तु आम् अऩ्ऩ–सुनिर्मित चित्र ही सम; मेऩियिऩाऩ् तऩ् मेल्–शरीरधारी प्रह्लाद पर; वाळ् ॲयिऱु–उज्ज्वल दाँतों को; उऱ ऊऩ्ऱि–खूब गड़ाकर; चिऩम् तम् मी कॊळ्–क्रोध उनका अतिक्रम कर जाए, ऐसा; कटित्तऩ–काट दिया; तिरु पॆयर्–भगवान का दिव्य नाम; मऱवाताऩ्–विस्मृत न करनेवाला प्रह्लाद; तुटित्तिलऩ्–काँपा ही नहीं। २१७

अनंत आदि अष्टनाग हिरण्य के स्मरण करते ही उसकी आज्ञा जानने आ पहुँचे। उसका आशय जानकर उन्होंने अपना-अपना मुख खोलकर सुनिर्मित चित्र-सम प्रह्लाद के शरीर पर खूब दाँत गड़ाकर काटा। उनका क्रोध भी उनके वश में नहीं रहा, इतने क्रोध के साथ काट खायी। तब भी भगवान का श्रीनाम न विस्मृत करनेवाला प्रह्लाद किंचित् भी नहीं काँपा। २१७

पक्क निऩ्ऱवै पयत्तिऩिऱ् पुयऱ्कऱैप् पशुम्बुऩल् पहुवायिऱ्
कक्क वॆऩ्जिऱैक् कलुळऩु नडुक्कुऱक् कव्विय कालत्तुट्
चॆक्कर् मेहत्तुच् चिऱुपिऱै नुळैन्दऩ शॆय्हैय वलिशिऩ्दि
उक्क पऱ्कुल मॊळ्हिऩ वॆयिऱ्ऱिरुम् बुरैतॊरु ममिळ्दूऱि 218

पक्कम् निऩ्ऱवै–पास रहे सभी ने; पयत्तिऩिल्–डर से; पकु वायिल्–फटे-से खुले मुख से; पुयल् कऱै–मेघ-जैसे रक्तरंजित; पचुम् पुऩल्–ताजा जल; कक्क–वमन किया तब; वॆम् चिऱै–प्रचण्ड पंखों वाला; कलुळऩुम्–गरुड़ भी; नटुक्कु उऱ–काँप उठे ऐसा; कव्विय कालत्तुळ्–जब (उन सर्पों ने) दंशन किया; चॆक्कर् मेकत्तु–लाल मेघों में; चिऱु पिऱै–छोटे-छोटे कलाचन्द्र; नुळैन्तऩ चॆय्कैय–घुसे हों जैसे करनेवाले; पल् कुलम्–दन्तराशियाँ; वलि चिन्ति–बल खोकर; उक्क–चू गयीं; ॲयिऱु–दाँतों के; इरुम् पुरै तॊऱुम्–सभी विशाल अन्तरालों से; अमिळ्तु–अमृत; ऊऱि–निकलकर; ऒळुकिऩ–बहा। २१८

इसको देखकर पास रहे जीव सहमे। उनके मुखों से मेघों के जैसे रक्तमिश्रित जल बहा! उन साँपों ने प्रचंड पक्षों वाले गरुड़ को भी भयभीत करते हुए दाँत गड़ाये। तब लाल मेघों के अंदर घुसनेवाले कलाचंद्रों के समान उनके दाँत जो धँसे, उन दाँतों की राशियाँ निर्बल हुईं और टूटकर छितर गयीं। दाँतों के अंतराल से अमृत निकलकर बहने लगा। २१८

शूळप् पऱ्ऱिऩ शुऱ्ऱुमॆ यिऱ्ऱिऱ्, पोळक् किऱ्किल वॆऩ्ऱुपु हऩ्ऱार्
वाळित् तिक्किऩ् मयक्किऩ् मदऩ्दाळ्, वेळत् तुक्किडु मिऩ्ऩॊऩ विट्टाऩ् 219

चुऱ्ऱुम् चूळ–चारों ओर लपेट; पऱ्ऱिऩ–जो पकड़े रहे (वे नाग); ॲयिऱ्ऱिल्–अपने दाँतों से; पोळक् किऱ्किल–(उसके शरीर को) चीर (काट) नहीं सके;

अँन्ड़-ऐसा; पुकन्ड़ार्-कहा (उन लोगों ने हिरण्य से); मतम् ताळ्-अधिक मद के कारण; मयक्किन्-उन्मत्त; तिक्किन् वेळ्तुक्कु-दिग्गजों के सामने; इट्टुमिन्-डाल दो; अॅन-कहकर; विट्टान्-(उनको) भेजा; वाळि-जिए वह। २१६

वधिक वीरों ने हिरण्य के पास जाकर बात कही। विवरण दिया कि साँपों ने खूब चारों ओर से लपेटकर प्रह्लाद को काटा। पर उनके दाँत प्रह्लाद के शरीर में धँस नहीं सके। हिरण्य ने उत्तर में आज्ञा दी कि अधिक मदनीर बहानेवाले मदमत्त दिग्गज के पैरों के नीचे डाल दो उसे। जिये वह! । २१९

पशैयिऱ् ड्रङ्गलिल् शिन्दैयर् पल्लोर्, तिशैयिऱ् चॅन्ड्रनर् शॅप्पिन नॅन्ड्रुम्
इशैयिऱ् ड्रन्दन निन्दिर नॅन्बान्, विशैयिऱ् ड्रिण्पणै वॅञ्जिन वेळम् 220

पचैयिल्-स्नेह में; तङ्कलिल्-जो कभी न ठहरा वैसे; चिन्तैयर्-मन वाले; पल्लोर्-अनेक असुर; तिचैयिल् चॅन्ड्रनर्-(पहले पूर्व) दिशा में गये; चॅप्पितन्-(हिरण्य ने) कहा; अॅन्ड्रुम् इचैयिल्-कहते तत्काल ही; इन्तिरन् अॅन्पान्-इन्द्र कहलानेवाले ने; तिण्-सशक्त; पणै-बड़े; वॅम् चिन-भयंकर रोषी; वेळम्-गज को; विचैयिल् तन्ततन्-झट दे दिया। २२०

अनेक असुर, जिनके मन में स्नेह की नमी किंचित् भी नहीं थी, पहले पूर्व दिशा में गये। ज्योंही इन्द्र से कहा गया कि हिरण्य ने ऐसी बात कही है, त्योंही पूर्वदिशाधिपति इन्द्र ने अपने सशक्त, बड़े और उग्र क्रोधी गज, ऐरावत को उनके साथ कर दिया। २२०

कैयिऱ् काल्हळिन् मार्बु कळुत्तिल्, दॅय्वप् पाश मुरप्पिणि शॅय्दार्
मैयऱ् काय्हरि मुन्नुऱ वैत्तार्, पॊय्यऱ् ड्रानु मिदॊन्ड्रु पुहन्ड्रान् 221

कैयिल्-हाथों; काल्कळिल्-पैरों और; मार्पु कळुत्तिल्-वक्ष और गले में; तॅय्व पाचम्-दैवी पाश से; उऱ-खूब कसकर; पिणि चॅय्तार्-बन्धन लगाया; मैयल्-मस्त; काय् करि मुन उऱ-गुस्सेवर हाथी के सामने; वैत्तार्-डाल दिया; पॊय् अऱ्ऱानुम्-असत्य से परे रहनेवाले प्रह्लाद ने भी; इतु ऑन्ड्रु-यह (बात) एक; पुकन्ड्रान्-कही। २२१

उन असुरों ने दैवी पाश से हाथों, पैरों, वक्ष और कंठ में बंधन लगाया। और मस्त तथा क्रुद्ध ऐरावत के सामने डाल दिया। असत्य-रहित प्रह्लाद ने उससे यह एक बात कही। २२१

अन्दाय् पण्डॊ रिडङ्गर् विळुङ्ग, मुन्दाय् निन्ऱु मुदऱ्पॊरु ळॅन्
ड्रुन्दाय् तन्दै यिनत्तव नोद, वन्दा नॅन्ड्रुन् मतत्तिन नॅन्ड्रान् 222

उम् ताय् तन्तै इनत्तवन्-तुम्हारी माँ, तुम्हारे पिता की जाति के एक, गजेन्द्र के; पण्टु-पहले; ओर् इटङ्कर्-एक नक्र के; विळुङ्क-निगलने (का प्रयास

करने) पर; ऍन्ताय्–पिताजी; मुन्ताय् निन्ऱ–आदि से रहनेवाले; मुतऱ् पॊरुळे–आदिकारण परब्रह्म; ऍन्ऱु–कहकर; ओत–दुहाई देने पर; वन्तान्–(जो) आये (वे विष्णु); ऍन् तन् मनत्तितन्–मेरे मन में विराजमान हैं; ऍन्ऱान्–कहा। २२२

हे ऐरावत ! तुम्हारे माता-पिता की जाति के गजेन्द्र ने पहले कभी नक्र के निगलने के प्रयास करने पर विष्णु की दुहाई की— मेरे पिता ! हे अनादिकाल से रहनेवाले आदि परमदेव ! तब वे आये थे। वे ही विष्णुदेव मेरे मन में विराजमान हैं। २२२

ऍन्ना मुन्न मिरुहङ्गळि ऱुन्दन्, पॊन्ना रोडै पॊरुन्द निलत्तिन्
अन्ना तैत्तॊऴु दञ्जि यहन्ऱ, तॊन्ना रत्तिऱ मॅय्दि युरैत्तार् 223

ऍन्ना मुन्नम्–कहने से पूर्व ही; इरुम् कळिऱुम्–बड़ा गज भी; तन् पॊन् आर् ओटै–अपने स्वर्णमय मुखपट्ट को; निलत्तिल् पॊरुन्त–भूमि पर रखते हुए; अन्नातै–उसको; तॊऴुतु–नमस्कार करके; अञ्चि–भय के साथ; अकन्ऱतु–हट गया; अ तिऱम्–वह रीति (हाल); ऒन्नार्–वैरियों ने; ऍय्ति–जाकर; उरैत्तार्–कही। २२३

प्रह्लाद के ऐसा कहते ही उस बड़े गज ने अपना मुखपट्ट भूमि पर टेककर उसको नमस्कार किया। फिर डर के मारे भाग गया। शत्रुओं ने यह वृत्तांत जाकर हिरण्य से कहा। २२३

वल्वी रॆत्तुयिल् वानै मदित्तॆन्, नल्वी रत्तै यऴित्तदु नण्णुऱ्
ऱॊल्वी रॊऱ्ऱै युरक्करि तन्नैक्, कॊल्वी रॆन्ऱन नॆञ्जु कॊतिप्पान् 224

नॆञ्चु कॊतिप्पान्–उबलते मन के साथ हिरण्य ने; वल् वीरै–बड़े समुद्र पर; तुयिल्वानै–सोनेवाले का; मतित्तु–आदर करके; ऍन्–मेरी; नल् वीरत्तै–श्रेष्ठ वीरता का; अऴित्ततु–नाश किया (ऐरावत ने); ऒल् वीर्–सर्वसमर्थ; नण्णुऱ्ऱु–जाकर; ऒऱ्ऱै–अनुपम; उरम् करि तन्नै–बलवान हाथी को; कॊल्वीर्–मार डालो; ऍन्ऱनन–कहा। २२४

हिरण्य का मन, यह सुनकर उबल पड़ा। उसने उनसे कहा कि यह गज बड़े क्षीरसागर में निद्रा करनेवाले का आदर करके मेरी श्रेष्ठ वीरता (के गौरव) को मिट्टी में मिला चुका है। हे सर्वसमर्थ ! जाओ। उस अपूर्व बलवान हाथी को मार डालो। २२४

तन्नैक् कॊल्लुनर् शारुद लोडुम्, पॊन्नैक् कॊल्लु मॊऴिप्पुहऴ् पॊय्या
मन्नैक् कॊल्लिय वन्ददु वानिन्, मिन्नैक् कॊल्लुम् वॆयिऱ्ऱॆयिऱ्ऱाल् 225

तन्नै कॊल्लुनर्–अपने घातकों के; चारुतल् ओटुम्–पास आते ही; वानिन् मिन्नै–आकाश की बिजली को; कॊल्लुम्–मारनेवाले (हरानेवाले); वॆयिऱ्ऱिन्–प्रकाश के; ऍयिऱ्ऱाल्–दाँतों से; पॊन्नै कॊल्लुम्–स्वर्ण को हरानेवाली; ऒळि–

छवि के; पुकऴ् पोय्या–जिसका यश अमिट है, उस; मत्तै–श्रेष्ठ व्यक्ति(प्रह्लाद) को; कोल्लिय–मारने; वन्ततु–आया। २२५

ऐरावत ने जाना कि वे उसे मारने का संकल्प ले आ रहे हैं। उनके पास आते ही वह आकाश-विद्युत् के (गर्व) भग्नकारी दाँतों से स्वर्ण-गर्व भग्नकारी छटा से युक्त अमंद यशस्वी प्रह्लाद को मारने आया। २२५

वीरत् तिण्डिऱऩ् मार्बिनिल् वॆण्गो, डारक् कुत्ति यऴुत्तिय यात्तै
वारत् तणगुलै वाऴै मडल्शूऴ्, ईरत् तण्डॆऩ विऱ्ऱऩ वॆल्लाम् 226

वीरम्–साहसी; तिण्–कठोर; तिऱल्–सारयुक्त; मार्पिनिल्–वक्ष में; आर–गम्भीर रूप से; कुत्ति–घुसेड़कर; अऴुत्तिय–गड़े हुए; यात्तै–गज के; वॆण् कोट्टु ऍल्लाम्–सफ़ेद दाँत, सभी (चारों); वारम्–प्रिय; तण् कुलै–शीतल गुच्छे-सहित; वाऴै मटल्–कदली के तने के परतों से; चूऴ–आवृत; ईरम् तण्टु–गीली सफ़ेद डाँड़ी के; ऍऩ–समान; इऱ्ऱऩ–टूट गये। २२६

ऐरावत ने प्रह्लाद के बलपौरुषयुक्त सुदृढ़ वक्ष में अपने दाँत गड़ाए। पर वे चारों श्वेत दाँत केले के अंदर तने के परतों से आवृत रहनेवाली कोमल गीली डाँड़ी के समान टूट गये। २२६

वॆण्गो डिऱ्ऱऩ मेवलर् शॆय्युम्, कण्गो डऱ्पोऴि यिऱ्कडि देहि
ऍण्गो डऱ्करि दॆऩ्ऩ वॆहुण्डान्, तिण्गो डेक्कदि रिऱ्ऱॆरु कण्णान् 227

मेवलर्–शत्रुओं ने; कण् कोटल् चॆय्युम्–आँखों के पलक मारते; पोऴियिल्–समय में; कटितु एकि–शीघ्र जाकर; वॆण् कोटु–सफ़ेद दाँत; इऱ्ऱऩ–टूट गये; ऍण्–(कुमार का) बल; कोटऱ्कु अरितु–(ऐसा है कि मारना) असाध्य है; ऍऩ्ऩ–कहने पर; तिण्–कड़े; कोटै कतिरिल्–ग्रीष्म के सूर्य से; तॆऱु कण्णान्–(बढ़कर) जलानेवाली आँखों का हो; वॆकुण्टान्–कुपित हुआ। २२७

द्वेषी असुर पलक मारती देर में हिरण्य के पास गये। उससे कहा कि आपके पुत्र की जान निकालना असाध्य है! यह सुनकर हिरण्य कुपित हुआ और उसकी आँखें ग्रीष्मकालीन सूर्य से भी बढ़कर तपानेवाली बन गयीं। २२७

तळ्ळत् तक्किल् पॆरुज्जयि लत्तो, डळ्ळक् कट्टि यडुक्कि विशित्तुक्
कळ्ळत् तिङ्गिव नैक्करै काणा, वॆळ्ळत् तुय्त्तिडु वीरॆऩ विट्टान् 228

कळ्ळत्तु इवनै–मायावी इसे; इक्कु–अभी; तळ्ळ तक्किल्–हिलाने को दुस्तर; पॆरुम् चयिलत्तोटु–बड़ी चट्टान के साथ; अळ्ळ कट्टि–लगाकर बाँधकर; अट्टुक्कि विचित्तु–अनेक बार रस्सी लपेटकर; करै काणा–दूसरा तट जिसका दिखायी नहीं देता; वॆळ्ळत्तु–उस समुद्र में; उय्त्तिट्टुवीर्–डाल दो; ऍऩ–कहकर; विट्टान्–भिजवा दिया। २२८

उसने आज्ञा सुनायी। इस मायावी को बहुत बड़े गिरि के साथ खूब कसकर बाँधो। रस्सी को अनेक बार लपेटकर कस लो। फिर दोनों को ले जाकर समुद्र में डाल दो, जिसका दूसरा किनारा अदृश्य है। २२८

ऑट्टिक् कौल्ल वुणर्न्दु वॅहुण्डान्, विट्टिट् टानल तॅन्रु विरैन्दार्
कट्टिक् कल्लॉडु काल्विशै यिऱ्पोय्, इट्टिट् टार्हड लिन्नडु वेदान् 229

विट्टिट्टान् अलन्–(हिरण्य) छोड़नेवाला नहीं; ऑट्टि–दृढ़संकल्प हो; कौल्ल उणर्न्तु–मारना ठानकर; वॅकुण्टान्–कुपित है; ऍन्रु–ऐसा जानकर; विरैन्तार्–शीघ्र; काल् विचैयिल्–पवनगति में; पोय्–जाकर; कल्लॊटु–चट्टान के साथ; कट्टि इट्टु–बाँधकर; कटलिन् नटुवे–समुद्र-मध्य; इट्टार्–छोड़ दिया। २२९

असुरों ने जान लिया कि इसने प्रह्लाद की जान लेने को ठाना है। वह इतना कुपित है। इसलिए वे अविलंब पवनगति में भागे। चट्टान से प्रह्लाद को बाँधकर समुद्र-मध्य डाल दिया। २२९

नडुवॊक् कुन्दनि नायह नामम्, विडुहिऱ् किन्ऱिल नाहलिन् वेलै
मडुवॊत् तङ्गदिन् वङ्गमु मन्ऱाय्, कुडुवॆत् तन्मैय दायदु कुन्ऱम् 230

नटु ऑक्कुम्–सम रूप से सबमें स्थित; तनि नायकन्–अद्वितीय नायक का; नामम्–दिव्य नाम; विटुकिऱ्किन्ऱिलन्–(उच्चारण करना) नहीं छोड़ता; आकलिन्–इसलिए; वेलै–समुद्र; मटु ऑत्तु–छोटे गड्ढे के समान बना; अङ्कु अतिन्–वहाँ उस (जल) में; कुन्ऱम्–चट्टान; वङ्कमुम् अन्ऱाय्–नाव नहीं बनी; कुटुवै तन्मैयतु–पोली लौकी के प्रकार की; आयतु–हो गयी। २३०

प्रह्लाद सब जीवों में समरूप में स्थित अद्वितीय जगन्नाथ का नाम-स्मरण सतत करनेवाला था। वह कभी उसमें चूका नहीं। इसलिए वह समुद्र मानो गड्ढा बन गया। चट्टान नाव भी नहीं बनी; वरन् सूखी पोली लौकी-सी (हल्की) बन गयी। २३०

मोदुऱ् ऱार्तिरै वेलैयिन् मूऴ्हान्, मीदुऱ् ऱार्शिलै मीदु किडन्दान्
आदिप् पण्णवन् आयिर नामम्, ओदुऱ् ऱान्मऱै यॊल्लै युणर्न्दान् 231

मऱै–वेदों को; ऑल्लै–शीघ्र; उणर्न्तान्–जो जान गया वह; मोतुऱ्ऱु आर्–परस्पर टकराती भरी रही; तिरै–तरंगों वाले; वेलैयिन्–समुद्र में; मूऴ्कान्–नहीं डूबा; मीतु उऱ्ऱु आर्–ऊपर तैरते हुए रहनेवाली; चिलै मीतु–चट्टान पर; किटन्तान्–पड़ा रहा; आति पण्णवन्–आदिदेव; आयिरम् नामम्–(विष्णु के) सहस्रनाम; ओतुऱ्ऱान्–पारायण करता रहा। २३१

वेदों के अध्ययन के विना ही सहज रूप से वेदज्ञ बना था प्रह्लाद! वह परस्पर टकरानेवाली तरंगों से युक्त सागर में नहीं डूबा। जल पर

तैरनेवाली चट्टान पर लेटा रहकर वह विष्णुसहस्रनाम का पारायण करने लगा। २३१

तलैयिऱ् कॉण्ड तडक्कैयि·नान्ऱन्, निलैयिऱ् ऱीर्विन् मनत्ति निनैन्दान्
शिलैयिऱ् ऱिण्बुन लिऱ्चिनै यालिन्, इलैयिऱ् पिळ्ळै यॅनप्पॉलि हिन्ऱान् 232

तिण् पुनलिल्–विशाल और गहरे क्षीरसागर पर; चिनै आलिन्–शाखायुक्त वट-वृक्ष के; इलैयिल्–पत्र पर; पिळ्ळै ॲन–शिशु के रूप में रहनेवाले विष्णु के समान; चिलैयिल्–चट्टान पर; पॉलिकिन्ऱान्–शोभा के साथ रहता है; तलैयिल् कॉण्ट–सिर पर रखे गये; तट कैयिनान्–विशाल हाथों वाला; तन्–अपनी; निलैयिल् तीर्विल्–दृढ़ स्थिति से न हटनेवाले; मनत्तिन्–मन में; निनैन्तान्–(विष्णु का) नामस्मरण करने लगा। २३२

तब वह उन शिशुरूप विष्णु के समान लगा, जो प्रलय के अवसर में विपुल जलराशि के ऊपर शाखायुक्त बरगद के पेड़ के पत्र पर शोभायमान हैं। वह अपने सिर पर अपने विशाल हाथ (जोड़े) रखकर अचल मन के साथ विष्णु का स्मरण करता रहा। २३२

अडिया रडिये नॅनुमार् वमलाल्, ऑडिया वलिया नुडैये नुळॅनो
कॉडियाय् कुऱियाय् गुणमे दुमिलाय्, नॅडिया यडिये निलैनेर् हुदियो 233

कॉटियाय्–विरोधियों के लिए क्रूर; कुऱियाय्–अवर्ण्य; कुणम् एतुम् इलाय्–गुणातीत (निर्गुण); नॅटियाय्–विराट्स्वरूप; अटियार् अटियेन्–आपके भक्तों का दास रहूँ; ॲनुम् आर्वम् अलाल्–इस आतुरता के सिवा; ऑटिया–तना हुआ; वलियान्–अहंकारबल; उटैयेन्–रखनेवाला; उळॅनो–हूँ क्या; अटियेन् निलै–दास मेरी स्थिति देखकर; नेर्कुतियो–कृपा करेंगे क्या। २३३

प्रह्लाद ने स्तुति की। हे परों के लिए क्रूर! अवर्ण्य! निर्गुण (गुणातीत)! विराट् पुरुष! 'भक्तों का दास रहूँ' —इस एक कामना के सिवा मैं कोई तना हुआ अहंकार रखता हूँ क्या? मेरी स्थिति देखकर आप कृपा (न) करेंगे क्या?। २३३

कळ्ळन् दिरिवा रवर्कै दवनी, उळ्ळन् दॅरिया दवुनक् कुळवो
तुळ्ळुम् पॉऱियिन् निलैशो दनैतान्, वॅळ्ळन् दरुमिन् नमुदे विदियो 234

कळ्ळम् तिरिवार् अवर्–वंचना करते घूमनेवाले लोगों के लिए; नी कैतवन्–आप छल करनेवाले हैं; उनक्कु–आपका; उळ्ळम् तॅरियात–मन जो नहीं जानता; उळवो–वे भी हैं क्या; वॅळ्ळम् तरुम्–क्षीरसागरदत्त; इन् अमुते–मधुर अमृत-सम; तुळ्ळुम् पॉऱियिन् निलै–चंचल इन्द्रियों की स्थिति की; चोतनै तान्–परीक्षा भी; वितियो–उचित है क्या। २३४

हे मायावी! आप वंचकों के वंचक हैं! आपका मन नहीं जाने

ऐसा कुछ भी है क्या ? क्षीरसागर-दत्त मधुर अमृत (-सम सबके प्यारे) ! चंचल इन्द्रियों को परीक्षा में डालना उचित क्रम के अन्दर आयगा क्या ? । २३४

वरुनात् मुहत्तैम् मुहत्त्वा तवर्कोन्, तिरुनान् मऱैयित् नॅऱियै तिरिवार्
पॅरुना ळॅरिहित् ऱिलर्पे दमैयेन्, ऑरुना ळुनैयॅङ् ङनमुळ् ळुवॅनो 235

वरुनात् मुकत्-नाभिकमलोत्पन्न चतुर्मुख ब्रह्मा; ऐ मुकत्-पंचमुख शिव; वानवर् कोन्-देवराज इन्द्र; तिरु-दिव्य; नात् मऱैयित्-चतुर्वेदनिर्दिष्ट; नॅऱियै तिरिवार-मार्ग में ही जाते हैं; पॅरु नाळ्-बहुत दिनों से; तॅरिकिन्ऱिलर्-आपकी सच्ची स्थिति नहीं जानते; पेतैमैयेन्-अज्ञ मैं; ऑरु नाळ्-एक दिन में; उत्तै-आपका तथ्य; ऍङ्ङनम् उळ्ळुवॅनो-कैसे सोच पाऊँगा । २३५

आप (विष्णु) के नाभिकमल से उत्पन्न चतुर्मुख ब्रह्मा, पंचमुख ईश्वर शिव, देवों का राजा देवेन्द्र सभी श्रीवेदमार्ग पर चलनेवाले हैं। तो भी वे चिरकाल से आपको तत्त्वतः समझ नहीं पाये हैं। ऐसी स्थिति में मैं अकिंचन एक ही दिन के अन्दर कैसे आपकी महिमा सोच सकूँगा ? । २३५

शॅय्या दनवो विलैती विनैताम्, पॉय्या दनवन् दुपुणर्न् दिडुमाल्
मॅय्ये युयिर्तीर् वदॉर्मेल् विनैनी, ऐया वॉरुना ळुमयर्त् तनैयो 236

शॅय्यातन-जो न किये गये हों; तीविनैयो-बुरे कर्म; इलै-नहीं; ताम्-वे; पॉय्यातन-बेकार नहीं होंगे; वन्तु पुणर्न्तिटुम्-आकर (बुरे फलों के रूप में) आ मिलेंगे; मॅय्ये-यह सच है; ऐया-प्रभु; उयिर् तीर्वतु-मेरा जीव उनसे बचे; ऑर् मेल्विनै-ऐसा एक (कृपा करने का) काम; नी-आप; ऑरु नाळुम्-एक दिन के लिए भी; अयर्त्ततैयो-भूल गये क्या । २३६

कौन से पाप हैं, जो मैंने नहीं किये हैं ? उनका अवश्यंभावी बुरे फल निश्चय ही आकर मुझ पर पड़ेगा ही, यह सत्य है। तो भी नाथ ! मेरा जीवात्मा उनसे अछूता रह जाय, ऐसी अपूर्व कृपा करने के काम में आप एक क्षण के लिए भी चूके रहे क्या ? (नहीं आप मुझे बराबर बचाए रहते हैं।) । २३६

आयप् पॅऱुनन् नॅऱिदम् मऱिवॅन्, ऱेयप् पॅऱुमी शर्हळॅण् णिलराल्
नीयप् पुऱनिर् कनितैक् किलर्निन्, मायप् पॉऱिपुक् कुमयङ् गुवराल् 237

आय् पॅऱु-सोच-समझकर प्राप्य; नल् नॅऱि-सन्मार्ग; तम् अऱिवु-हमारी बुद्धि; ऍन्ऱु-ऐसा; एय पॅऱुम् ईचर्कळ्-उसके द्वारा कल्पित देव; ऍण्णिलर्-असंख्य हैं; नी-आप; अ पुऱम् निऱ्क-उनके परे हैं; नितैक्किलर्-वे आपको नहीं सोचते; निन् माय पॉऱि-आपकी माया के यन्त्र में; पुक्कु-फँसकर; मयङ्कुवर्-भ्रमित हो रहते हैं। २३७

अपनी बुद्धि को ही सर्वसमर्थ तार्किक समझनेवाले लोग असंख्य हैं,

जो अपने-अपने देव को (या अपने को ही) परब्रह्म मानते हैं। आप तो (उस बुद्धि के) उन लोगों के या देवों के परे हैं। इसलिए वे लोग आपको जान नहीं पाते। आपकी माया के यंत्र में फँसकर गड़बड़ाते हैं। २३७

तामे तनिना यहरा यॅवैयुम्, पोमे पॉरुळॅन् ड्रपुरा दन्नर्दाम्
यामे परमॅन् ड्रन्नरॅन् ड्रववर्क्, कामे पिऱ्ऱ्निन् नलदा रुळरे 238

तामे तनि नायकर् आय्–स्वयं अकेले नायक बने; पॉरुळ् ऍवैयुम्–सभी विषय; पोम्–हम जानते हैं; ऍन्ऱ्–ऐसा कहनेवाले; पुरातन्नर् ताम्–प्राचीन देवों ने; यामे परम्–हम ही परमेश्वर हैं; ऍन्ऱन्र्–कहा; ऍन्ऱ् अवर्क्कु–ऐसा कहनेवाले उन्हें; आमे–परत्व मिलेगा क्या; निन् अलातु–आपको छोड़कर; पिऱ्ऱ् आर् उळर्–अन्य कौन परमेश्वर हो सकते हैं। २३८

स्वनियुक्त अनेक थे, जो कहते थे कि हम सर्वज्ञ हैं और हम ही आदिकारण सनातन भगवान हैं। उनके कहने से उन्हें परत्व सिद्ध हो जाएगा क्या? आपके सिवा कौन परतत्त्व हैं?। २३८

आदिप् परमा मॅतिलन् ड्रॅन्नलाम्, ओदप् पॅरुनूल् हळुलप् पिलवाल्
पेदिप् पन्नी यवंपेर् हिलैयाल्, वेदप् पॉरुळे विळैया डुदियो 239

आति परमाम् ऍतिल्–(किसी देव को कोई) आदि परमेश्वर कहें तो; अन्ऱु ऍन्नलाम्–(दूसरा) 'नहीं' कह सकता; ओत–यह कहना साध्य करनेवाले; पॅरु नूल्कळ्–बड़े-बड़े शास्त्रग्रन्थ; उलप्पिल–संख्याहीन हैं; अवै–वे; पेतिप्पन–परस्पर भिन्न हैं; नी पेर्किलै–आप निर्विवाद हैं; वेतप् पॉरुळे–वेदविषय; विळैयाट्टुतियो–लीला रचते हैं क्या। २३९

कोई कहता है कि (मैं या) यह देव परब्रह्म है, तो दूसरा उसका खण्डन कर देता है! यह साध्य करते हुए अनेक शास्त्र-ग्रन्थ विद्यमान हैं। वे परस्पर भेद रखते हैं। पर आप बदलते नहीं। हे वेदप्रतिपादित तत्त्व! आप क्या कपटलीला रच रहे हैं?। २३९

अम्बो रुहन्ना वरन्ना वरियार्, ॲम्बो लियरॅण् णिडिनॅन् पलवाक्
कॉम्बो डडॅपूक् कनिहा यॅन्निनुम्, वम्बो मरमॉन् ड्रॅनुम्वा शहमे 240

अऱियार्–अज्ञ; ऍम् पोलियर्–मुझ जैसे लोग; अम्पोरुकता–अम्बुरुहदेव ब्रह्मा; अरन्ना–शिव आदि; पलवा–अनेक विध; ऍण्णिटिन् ऍन्–सोचने से क्या होगा; कॉम्पॉटु–शाखा के साथ; अटै–पत्ते; पू–फूल; कति–फल; काय्–कच्चा फल; ऍन्तिनुम्–कहने पर भी; मरम् ऑन्ऱु–तरु एक है; ऍन्नुम् वाचकम्–यह कथन; वम्पो–विचित्र है क्या। २४०

हम जैसे लोग तथ्य से अनभिज्ञ हैं। हम कभी-कभी संशय करने लगते हैं कि अंबुरुहासन ब्रह्मा परमपुरुष हैं; कभी सोचते है कि शिव

परतत्त्व हैं। इस तरह विविध प्रकार से कहने पर वह कैसे ठीक हो सकता है ? डाल, पात, फूल, फल सब हैं, सही तो भी वे तरु के ही अंग हैं। अत: तरु को ही अद्वितीय मानना विचित्र बात है क्या ? [विशिष्टाद्वैत की विशेषता यही है कि श्रीमन्नारायण और प्रपंच (सभी देवों को मिलाकर) के सम्बन्ध में शरीरी और शरीर का या अंगी और अंगों का भाव है। श्रीमन्नारायण इसी अर्थ में अद्वैत हैं।]। २४०

निऩ्ऩिऱ् पिरिदाय् निलैयिऱ् ऱिरिया, तऩ्ऩिऱ् पिरिदा यिऩदा मॆऩिऩुम्
उऩ्ऩिऱ् पिरिदा यिऩवो वुलहम्, पॊऩ्ऩिऱ् पिरिदा हिलपॊऱ् कलऩे 241

उलकम्–लोक; निऩ्ऩिल् पिरिताय्–आपसे अलग; निलैयिल् तिरिया–अपनी स्थिति में परिवर्तित होकर; तऩ्ऩिल्–आपस में; पिरितायित ताम् ऎऩिऩुम्–भिन्न हुए तो भी; उऩ्ऩिल्–आपसे; पिरितु आयिऩवो–पृथक् हो सके क्या; पॊऩ् कलऩ्–स्वर्णाभूषण; पॊऩ्ऩिल्–स्वर्ण से; पिरितु आकिल–स्वर्ण से परे हो सकेंगे क्या। २४१

ये सारे लोक आप ही से उपजे, अलग हुए और आपस में भिन्न नानाविध में फैले। तो भी वे आपसे पृथक् रह सकेंगे क्या ? स्वर्णाभरण स्वर्ण से भिन्न कैसे हो सकता है ? । २४१

ताय्दऩ् दॆऩ्ऩुऩ् दहैवऩ् दऩैताऩ्, नीय्दऩ् दऩैनी युऱुनॆञ् जिऩऩाऩ्
नोय्दऩ् दवऩे नुवऱीर् वुमॆऩा, वाय्दऩ् दऩशॊल् लिवऴुत् तिऩऩाल् 242

ताय् तऩ्तै–माता-पिता; ऎऩुम् तकै वऩ्तऩै–के रूप में आये; ताऩ् नीय् तऩ्तऩै–मुझे आपने पैदा किया; नी उऱु–आप जिसमें हों; नॆञ्चिऩऩ्–ऐसा मन वाला; नाऩ्–मैं हूँ; नोय् तऩ्तवऩे–(भव) रोग देनेवाले आप ही; नुवल्–प्रकीर्तित; तीर्वुम्–परिहार भी हैं; ऎऩा–ऐसा; वाय् तऩ्तऩ–मुख से निकले; चॊल्लि–(स्तुति-वचन) कहकर; वऴुत्तिऩऩ्–स्तुति की। २४२

आप ही माता-पिता के रूप में आये; आप ही ने मुझे जन्म दिया। मेरा मन आपका वासस्थान है। इस भाँति मुझे भवरोग में डालनेवाले आप ही हुए। प्रकीर्तित परिहार भी आप ही हैं! प्रह्लाद ने इस भाँति भगवान की स्तुति की। २४२

अत्तऩ् मैयऱिऩ् दवरुऩ् दिऱलोऩ्, उय्त्तुयम् मिऩॆऩ्मुऩ् ऩॆऩवुय्त् तऩराल्
पित्तुण् डदुपेर् वुरुमा पॆऱुदुङ्, गैत्तुङ् गडुनञ् जिऩॆऩक् कऩल्वाऩ् 243

अत्तऩ्मै–उस (का बचने के) प्रकार को; अऱिन्त–जानकर; अरुम् तिऱलोऩ्–अतिशय शक्तिमान् हिरण्य के; ऎऩ् मुऩ्–मेरे सामने; उय्त्तुयम्मिऩ्–प्रस्तुत करो; ऎऩ–ऐसा कहने पर; उय्त्तऩर्–(उन्होंने प्रह्लाद को) ला छोड़ा; पित्तु उण्टतु–इसका जो पागलपन हो गया है; पेर्वुऱु–उसको दूर करने का;

मा–उपाय; पॆऱ्ऱुम्–कर पाएँगे; कटु नञ्चिऩ्–घोर विष द्वारा; कॊल्लुम्–मार देंगे; ॲऩ्ऩ–कहता हुआ; कतल्वाऩ्–आगबबूला हुआ (हिरण्य)। २४३

हिरण्य को प्रह्लाद की स्थिति विदित हुई तो उस अतिशय प्रतापी ने असुरों से कहा कि प्रह्लाद को मेरे समक्ष लाओ। वे उसे उसके पास लाये। तब उसने कहा कि इस पर पागलपन सवार है। उसे दूर करने का उपाय कर देंगे। भयंकर विष देकर इसे मार डालो। वह आग-बबूला हो रहा। २४३

इट्टार् कडुवल् विडमॆऩ्ऩ् नुडैयाऩ्, तॊट्टा ऩुहरा वॊरुशोर् विलऩाल्
कट्टार् कडुमत् तिहैकण् कॊडियोऩ्, विट्टा ऩवऩ्मे लुरवी शिऩराल् 244

कटु वल् विटम्–अति भयंकर विष; इट्टार्–पिलाया; ॲऩ् उटैयाऩ्–मेरे (कम्बन के) स्वामी ने; तॊट्टाऩ्–स्पर्श किया; नुकरा–पिया; ओर् चोर्वु इलऩ्–ज़रा भी निर्बल नहीं हुआ; कट्टु आर्–सुगठित; कटु मत्तिकै–कठोर हथौड़ों को; कण् कॊटियोऩ्–अतिक्रूर (हिरण्य) ने; विट्टाऩ्–प्रेरित किया; अवऩ् मेल् उरु–उसके शरीर पर; वीचिऩर्–ज़ोर से पीटा। २४४

उन्होंने प्रह्लाद को बहुत ही भयंकर विष पिला दिया। मेरे स्वामी ने (यहाँ प्रह्लाद है— स्वयं भगवान ने गीता में "प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां" कहा है। यहाँ कम्बन प्रह्लाद को अपने आराध्यदेव से भिन्न नहीं देखते हैं।) उसे लेकर पिया। पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। प्रह्लाद कुछ भी निर्बल नहीं हुआ। तब निर्दय हिरण्य ने आज्ञा दी कि बहुत ही कठोर हथौड़े लेकर उस पर प्रहार करो। उन लोगों ने हथौड़ों से उसे खूब पीटा। २४४

वॆय्यार् मुडिविल् लवर्वी शियपो, दुय्या ऩॆऩुम्वे लैयिऩुळ् ळुऱैवोऩ्
कैया यिरमल् लहणक् किलवॆऩ्, ऱॆय्या वुलहिया वैयुमॆण् णिऩऩाल् 245

मुटिवु इल्लवर्–अगणित; वॆय्यार्–उन निर्दयों के; वीचिय पोतु–पीटने पर; उय्याऩ्–अब नहीं बचेगा; ॲऩुम् वेलैयिऩ्–ऐसा (लोगों के) कहते समय; उळ् उऱैवोऩ्–अन्तर्यामी (भगवान) के; कै आयिरम् अल्ल–हस्त सहस्र नहीं; कणक्किल–अगणित हैं; ॲऩ्ऱु–ऐसा; उलकु यावैयुम्–अखिलविश्वरूप में; ॲय्या–निरंतर; ॲण्णिऩाऩ्–भगवान का ध्यान किया। २४५

वे असुर बेशुमार थे। जब उन्होंने प्रहार किया तो स्वभावतः लोगों ने सोचा और कहा भी कि अब प्रह्लाद नहीं बचेगा। तब प्रह्लाद ने विना प्रमाद के अपने भगवान को विश्वरूप में ध्यान किया; स्मरण किया कि मेरे अंतर्यामी परब्रह्म श्रीमन्नारायण के हस्त सहस्र नहीं वरन् असंख्यक हैं। (अर्थात् पीटनेवाले उन हाथों को भी भगवान के हाथों के रूप में देखा।)। २४५

ऊऩ्तो डुयिर्वे ऱुपडा वुरुवम्, ताऩे युडैयऩ् तऩिमा यैयिऩाऩ्
याऩे युयिरुण् वलॅऩक् कऩहऩ्, वाऩे ऴुनडुङ् गिडवन् दऩ्ऩाल् 246

ऊऩोटु–शरीर से; उयिर् वेऱुपटा–प्राण अलग नहीं हों; उरुवम्–ऐसा रूप; ताऩे उटैयऩ्–इसको है; तऩि मायैयिऩाऩ्–अपूर्व मायावी है; याऩे–मैं ही; उयिर् उण्पल्–प्राण खा जाऊँगा; ऍऩ–कहकर; कऩकऩ्–हिरण्य; वाऩ् एऴुम् नटुङ्किट–सातों मेघों को कँपाते हुए; वन्तऩऩ्–प्रह्लाद के पास आया। २४६

हिरण्य ने यह अद्‌भुत प्रसंग देखा। सोचा कि इसका जन्म ही ऐसा लगता है कि शरीर से प्राण वियुक्त नहीं हों। यह अनुपम मायावी है। मैं स्वयं उसके प्राण लेकर खा लूंगा —यह कहते हुए प्रह्लाद के पास आया, जिससे सप्तमेघ भी सिहर उठे। २४६

वन्दा ऩैवणङ् गियॅऩ्मऩ् ऩुयिर्ताऩ्, ऍन्दाय् कॉळवॅण् णिऩैये लिदुदाऩ्
उन्दा रियदऩ् ऱुलहिया वुमुडऩ्, तन्दार् कॉळनिऩ् ऱदुता ऩॅऩ्ऩलुम् 247

वन्ताऩै–पास आये उसको; वणङ्कि–प्रणाम करके; ऍन्ताय्–मेरे पिता; ऍऩ् मऩ् उयिर् ताऩ्–मेरे शाश्वत प्राणों को ही; कॉळ ऍण्णिऩैयेल्–हरना चाहते हों तो; इतु ताऩ्–यह काम तो; उऩ् तारियतु अऩ्ऱु–आपके बस का नहीं; उलकु यावुम्–सारे लोकों को; उटऩ् तन्तार्–एक साथ सृजन करनेवाले; कॉळ निऩ्ऱतु–(भगवान नारायण) के अधिकार के अन्तर्गत है; ऍऩ्ऩलुम्–(प्रह्लाद को) ऐसा कहते ही। २४७

उसको मारने का संकल्प लेकर आनेवाले अपने पिता को उस प्रह्लाद ने प्रणाम किया। उससे कहा कि मेरे पिताजी! आप मेरे शाश्वत जीवात्मा को मारने का विचार करते हैं। यह आपके बस का काम नहीं। समस्त लोकस्रष्टा श्रीमन्नारायण के ही यह अधीन है! ऐसा कहते ही— । २४७

एवरे युलहन् दन्दार् ऍऩ्ऩॅय रेत्ति वाऴुम्
मूवरे यल्ल राहिल् मुऩिवरे मुऴुदुन् दोऱ्ऱ
तेवरे पिऱरे यारे शॅप्पुदि तॅरिय वॅऩ्ऱाऩ्
कोवमूण् डॅऴुन्दुङ् गॉल्लाऩ् काट्टुमेऱ् काट्चि कॉळ्वाऩ् 248

उलकम् तन्तार्–लोकसर्जक; एवर्–कौन है; ऍऩ् पॅयर्–मेरे नाम की; एत्ति वाऴुम्–स्तुति करके जीनेवाले; मूवरे–त्रिदेव हैं; अल्लर् आकिल्–नहीं तो; मुऩिवरे–मुनि हैं; मुऴुतुम् तोऱ्ऱ–पूर्ण रूप से जो हार गये; तेवरे–वे देव हैं; पिऱरे यारे–अन्य कोई हैं तो; तॅरिय–खोलकर; चॅप्पुति–कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा (हिरण्य ने); काट्टुम् एल्–दिखाएगा तो; काट्चि कॉळ्वाऩ्–देखने को उत्सुक वह; कोवम्–कोप; मूण्टु ऍऴुन्तुम्–उमग उठा तो भी; कॉल्लाऩ्–मारने पर नहीं तुला। २४८

हिरण्य ने प्रश्न किया कि लोकस्रष्टा कौन है, रे? मेरे नाम की

संस्तुति करते हुए जो जीते हैं वे त्रिदेव हैं ? नहीं तो मेरे पूजक मुनि लोग हैं ? या वे देव हैं जो मेरे सामने सर्वस्व हार चुके हैं ? फिर कोई और हैं ? खूब खोलकर कहो ! हिरण्य के मन में सृष्टिकर्ता को देखने की इच्छा थी अगर प्रह्लाद दिखा सके तो। इसलिए वह अपने पुत्र को मारने पर उतारू नहीं हुआ। २४८

उलहुतन् दानुम् पल्वे ऱुयिर्हडन् दानु मुळ्ळुऱ्
ऱुलेविला वुयिर्ह डोऱु मङ्गङ्गे युऱैहिन् ऱानुम्
मलरिनिल् वॆऱियु मॆळ्ळि लॆण्णंयुम् बोल वॆङ्गुम्
अलहिल्पल् पॊरुळुम् बऱ्ऱि मुऱ्ऱिय वरिहा णत्ता 249

अत्ता–तात; उलकु तन्तानुम्–लोकसर्जक; पल् वेऱु उयिर्कळ्–विविध नाना जीवों के; तन्तानुम्–पैदा करनेवाले; उलैवु इला–अक्षय उन; उयिर्कळ् तोऱुम्–जीवों में; अङ्कु अङ्के–वहाँ-वहाँ; उळ् उऱ्ऱु–अन्तर्यामी बनकर; उऱैकिन्ऱानुम्–रहनेवाले; मलरितिल्–पुष्प में; वॆऱियुम्–सुगन्ध; ऍळ्ळिल्–और तिल में; ऍण्णॆयुम् पोल्–तेल की भाँति; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; अलकु इल्–असंख्य; पल् पॊरुळुम्–सभी विविध अनेक वस्तुओं में; पऱ्ऱि–लगे; मुऱ्ऱिय–और भरे रहनेवाले; अरि–हरि हैं; काण्–देख लीजिए। २४९

'हे मेरे तात!' प्रह्लाद समझाने लगा— सारे लोकों के सृष्टिकर्ता और सारे जीवों को पैदा करनेवाले और उन नित्यजीवों के अन्तर में रहनेवाले अंतर्यामी कौन हैं ? वे पुष्प में सुगन्ध के समान और तिल में तेल के समान सर्वत्र व्यापकर अव्यक्त रहनेवाले, असंख्यक नानाविध जीवों से अपृथक् रहनेवाले हरि ही हैं ! यह जान लें। २४९

ऍन्ऩ्गणा नोक्किक् काण्डऱ् कॆङ्गणु मुळऩ्गा णॆन्ऩ्वे
उऩ्गणा नन्बिऩ् चॊन्ऩाल् उऱुदियॆन् ऱॊन्ऩुङ् गॊळ्ळाय्
निऩ्गणा नोक्किक् काण्डऱ् कॆळियनो निनक्कुप् पिन्ऩोन्
पॊऩ्गणा नावि युण्ड पुण्डरी हक्क णॆम्मान् 250

ऍन्तै–मेरे धाता; ऍन् कणाल्–मेरी आँखों से; नोक्कि काण्टऱ्कु–स्पष्ट देखने के लिए; ऍङ्कणुम् उळऩ्–सर्वत्र हैं; उन् कण्–आपके पास; नान्–मैं; अऩ्पिल् चॊन्ऩाल्–प्यार से कह दूँ तो; उऱुति–सत्य है; ऍन्ऱु–मानकर; ऑन्ऱुम् कॊळ्ळाय्–कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे; नितक्कु पिन्ऩोन्–आपके अनुज; पॊन् कणान्–हिरण्याक्ष के; आवि उण्ट–प्राण हरनेवाले; पुण्टरीक कण् ऍम्मान्–पुण्डरीकाक्ष मेरे प्रभु; निन् कणाल्–(आपको) अपनी आँखों से; नोक्कि काण्टऱ्कु–देखने के लिए; ऍळियनो–सुलभ हैं क्या। २५०

मेरे धाता श्रीमन्नारायण मेरे लिए सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं। वह सत्य है। उस तथ्य को मैं आपसे प्रेम के कारण समझाता हूँ। पर

आप उसे हितदायी सत्य नहीं मानते। ऐसे आपके कनिष्ठ के संहारक पुण्डरीकाक्ष प्रभु देखने के लिए सुलभ हो सकते हैं क्या? । २५०

मून्ऱवन् गुणङ्गळ् शॅय्है मून्ऱव नुरुव मून्ऱु
मून्ऱुकण् शुडर्हळ् शोदि मून्ऱुतन् नुलह मून्ऱु
तोन्ऱलु मिडॆयु मीऱुन् तॊडङ्गिय पॊरुळ्हट् कॆल्लाम्
शान्ऱव निदुवे वेद मुडिविदु शरद मॆन्ऱान् 251

अवन् कुणङ्कळ् मून्ऱु–उनके गुण तीन हैं; चॆय्कै–कृत्य; मून्ऱु–तीन हैं; अवन् उरुवम्–उनके रूप; मून्ऱु–तीन हैं; चोति चुटर्कळ्–ज्योतिर्मय प्रकाशपुंज; मून्ऱु–तीन; कण्–नेत्र हैं; तन् उलकम्–उनके लोक; मून्ऱु–तीन हैं; तोन्ऱलुम्–आदि और; इटैयुम् ईऱुम्–मध्य और अन्त; तॊटङ्किय–जिन्होंने आरम्भ कर लिये हैं; पॊरुळ्कट्कॆल्लाम्–उन सभी वस्तुओं के; चान्ऱु अवन्–साक्षी वे ही हैं; इतु वेत मुटिवु–यह वेदों का निष्कर्ष है; इतु चरतम्–यह सत्य है; ऎन्ऱान्–कहा प्रह्लाद ने। २५१

उनके गुण सत्त्व, रज और तम तीन हैं। सृष्टि, पालन और संहार उनके तीन कृत्य हैं। उनके तीन रूप हैं— हरि, हर और अज (या अच्युत, अनंत और गोविन्द)। सूर्य, चन्द्र और अग्नि —ये तीनों ज्योतिपुंज उनके नेत्र हैं। सभी पदार्थों के, जिनके आदि, मध्य और अन्त प्राकृतिक हैं, साक्षीरूप हैं वे। यह वेदों का बताया हुआ निष्कर्ष है। यह सत्य है। प्रह्लाद ने कहा। २५१

ऎन्ऱलु मवुणर् वेन्द नॆयिऱ्ऱुरुम् बिलङ्ग नक्कान्
ऒन्ऱलिल् पॊरुळ्ह ळॆल्लाम् ऒरुवन्बुक् कुऱैव नॆन्ऱाय्
नन्ऱदु काण्डुम् बिन्नर् नल्लवा पुरिदु मन्ऱे
निन्ऱुळ नॆन्निऱ् कळ्व निरप्पुदि निलैमै ऎन्ऱान् 252

ऎन्ऱलुम्–कहने पर; अवुणर् वेन्तन्–असुरराजा; अरुम्पु ऎयिऱु–प्रकटित दाँतों को; इलङ्क–दिखाते हुए; नक्कान्–हँसा; ऒन्ऱल् इल् ऒरुवन्–अलिप्त रहनेवाला कोई; पॊरुळ्कळ् ऎल्लाम्–सभी वस्तुओं में; पुक्कु–प्रवेश करके; उऱैवन्–रहनेवाला है; ऎन्ऱाय्–कहा तुमने; अतु नन्ऱु काण्टुम्–उसको खूब देखेंगे; पिन्तर्–बाद; नल्लवा–भले कार्य; पुरितुम्–करेंगे; कळ्वन्–वह चोर; निन्ऱुळन्–सर्वत्र स्थित है; ऎन्निल्–तो; निलैमै–उस स्थिति को; निरप्पुति–प्रत्यक्ष दिखाओ; ऎन्ऱान्–कहा। २५२

प्रह्लाद के यह कह चुकते ही हिरण्य अपने कलियों-सम दाँतों को प्रकट करते हुए हँसा। तुमने कहा कि जो सबसे निर्लिप्त है, वही सबके अन्दर घुसकर रहनेवाला भी है। इसकी सच्चाई पीछे देखेंगे और उसके अनुसार उचित कृत्य करेंगे। पर अब अगर यह बात ठीक है कि वह चोर सब स्थानों पर है तो प्रत्यक्ष दिखाकर प्रमाणित करो। २५२

❀ शाणिन्‌ मुळतोर्‌ तण्मै यणुविनैच्‌ चदकू रिट्ट
कोणिन्‌ मुळन्मा मेरुक्‌ कुन्ड्रिनु मुळनिन्‌ निन्ड्र
तूणिनु मुळनी शोन्न शोल्लिनु मुळनित्‌ तन्मै
काणुदि विरैवि नॅन्ड्रा नन्ड्रॅनक्‌ कनहन्‌ शोन्नान्‌ 253

चाणितुम्‌ उळत्‌–बित्ते की दूर के स्थान में हैं; ओर्‌–एक; तण्मै–छोटे; अणुवितै–अणु को; चत कूरु इट्ट–सौ भागों में विभक्त करके; कोणितुम्‌–उनमें एक-एक अल्प भाग में भी; उळत्‌–हैं; मा मेरु कुन्ड्रितुम्‌–बहुत बड़े मेरु में भी; उळत्‌–हैं; इ नित्ड्र–इधर स्थित; तूणितुम्‌ उळत्‌–खम्भे में भी है; नी चोन्न–आपने जो व्यक्त किया: चोल्लितुम्‌–उस शब्द में भी; उळत्‌–हैं; इ तन्मै–इस विशेष रीति को; विरैविल्‌–जल्दी; काणुति–देखेंगे; ॲन्ड्रान्‌–कहा; कनकन्‌–हिरण्य ने; नन्ड्रु–अच्छा; ॲन–ऐसा कहकर; चोन्नान्‌–आगे कहा। २५३

प्रह्लाद ने उत्तर दिया। वे सर्वव्यापी विष्णु भगवान बित्ते-बित्ते के स्थान के अन्दर हैं। एक अल्प अणु के सौवें भाग में हैं; महा मेरुपर्वत में हैं ('अणोरणीयान महतो महीयान')। इधर यहाँ स्थित खम्भे में भी हैं। क्यों— आपने जो शब्द कहा, उस शब्द के अन्दर भी (नाद रूपी भगवान) हैं! इसे आप शीघ्र ही जान सकेंगे! कनककशिपु ने भी अच्छा, अच्छा कहकर आगे भी कहा। २५३

❀ उम्बर्क्कु मुनक्कु मोत्तिव्‌ वुलहॅङ्गुम्‌ परन्दु ळानैक्‌
कम्बत्तिन्‌ वळियॆ काणक्‌ काट्टुदि काट्टि डायेल्‌
कुम्बत्तिन्‌ करियैक्‌ कोण्माक्‌ कॊन्ड्रॅन निन्नैक्‌ कॊन्ड्रुन्‌
शॆम्बोत्त कुरुदि तेक्कि युडलैयुन्‌ दिन्बे नॅन्ड्रान्‌ 254

उम्पर्क्कुम्‌–देवों का और; उनक्कुम्‌ ओत्तु–तुम्हारा, समान रूप से मित्र रहकर; इ उलकु ॲङ्कुम्‌–इस विश्व भर में; परन्तुळानै–जो व्याप्त रहता है उसे; कम्पत्तिन्‌ वळियॆ–इस खम्भे के द्वारा; काण–मैं देखूँ ऐसा; काट्टुति–दिखाओ; काट्टिटायेल्‌–नहीं दिखाओगे तो; करियै–गज को; कुम्पत्तिन्‌ कोळ्‌ मा–कुम्भ को पीटकर मारनेवाला सिंह; कॊन्ड्रु ॲन–जैसा मारे; निन्नै कॊन्ड्रु–वैसा तुम्हें हत करके; उन्‌–तुम्हारा; चॆम्पु ओत्त–ताम्र-जैसा लाल; कुरुति तेक्कि–रक्त खूब पीकर; उटलैयुम्‌ तिन्पॆन्‌–शरीर को भी खा लूंगा; ॲन्ड्रान्‌–कहा। २५४

वह हरि तुम्हारा और देवों का मित्र लगता है। उसे इस खम्भे में दिखाओ, ताकि मैं देखूँ। अगर तुम नहीं दिखाओ तो मैं तुम्हें कुम्भ पर प्रहार करके गज का संहार करनेवाले शेर-जैसा मार डालूंगा। ताम्र-सम तुम्हारा अरुण रक्त खूब पीकर तुम्हारे शरीर को भी खा लूंगा। २५४

❀ ॲन्नुयिर्‌ निन्नार्‌ कोरड्‌ कॆळियदोन्‌ ड्रन्ड्रि यान्मुन्‌
शोन्नवन्‌ तोट्ट तोट्ट विडन्दोरुन्‌ दोन्ड्रा तायिन्‌

अँन्नुयिर् यान्ने मायप्पन् पिन्नुम्वाळ् वुहप्प लॅन्निन्
अन्नवर् कडियेन् नल्ले नॅन्ड्रनन् अरिविन् मिक्कान् 255

अरिविन् मिक्कान्–ज्ञानवृद्ध; अँन् उयिर्–मेरे प्राण; निन्ताल्–आपसे; कोर्ड्कु–निकालने को; अँळियतु ओन्ड्र अन्ड्र–सुलभ कुछ नहीं है; यान् मुन् चोन्नवन्–मैंने पहले जिनके बारे में कहा वे; तॉट्ट तॉट्ट इटम् तोरुम्–जहाँ-जहाँ मैं स्पर्श करता हूँ वहाँ; तोन्ड्रान् आयिन्–प्रकट नहीं होंगे तो; यान्–मैं खुद; अँन् उयिर्–अपने प्राण; मायप्पन्–मार लूंगा; पिन्नुम्–बाद भी; वाळ्वु उकप्पल् अँन्निन्–जीना चाहूँगा तो; अन्नवर्कु–उनका; अटियेन् अल्लेन्–दास नहीं; अँन्ड्रनन्–कहा। २५५

ज्ञानवृद्ध प्रह्लाद ने उत्तर में कहा कि मेरे प्राण आपके मारने के लिए कोई सुलभ वस्तु नहीं हैं ! मैंने जिनकी प्रशंसा कही है वे मेरे संकेतित हर स्थान में प्रकट नहीं होंगे तो मैं स्वयं अपने प्राण त्याग दूंगा। उसके बाद भी अगर जीना चाहूँ तो मैं उनका दास कैसे रह पाऊँगा ? नहीं रहूँगा। २५५

❀ नशैदिड्रन् दिलङ्गप् पॉङ्गि नन्ड्रुनन् ड्रॅन्न नक्कु
विशैदिड्रन् दुरुमु वीळ्न्द दॅन्नवोर् तूणिन् वॅन्ड्रि
इशैदिड्रन् दमरन्द कैया लॅड्रिन्न नॅड्रड्र लोडुम्
दिशैदिड्रन् दण्डङ् गीड्रच् चिरित्तदोर् शॅङ्गट् चीयम् 256

नचै–(परीक्षा की) कामना; तिड्रन्तु इलङ्क–खुलकर प्रगट हो; पॉङ्कि–ऐसा उबलकर; नन्ड्र नन्ड्र अँन्न–ठीक है, अच्छा है, कहकर; नक्कु–हँसते हुए; विचै तिड्रन्तु–वेग के साथ; उरुमु–अशनि; वीळ्न्ततु अँन्न–गिरी हो जैसे; ओर् तूणिन्–एक खम्भे पर; वॅन्ड्रि इचै–विजय और यश; तिड्रन्तु अमरन्त–जिसने प्रकट कराया था; कैयाल्–उस अपने हाथ से; अँड्रिन्नन्–प्रहार किया; अँड्रलोटुम्–प्रहार करते ही; ओर्–एक; चॅम् कण् चीयम्–अरुणाक्ष केसरी; तिचै तिड्रन्तु–दिशाओं को चीरते हुए; अणुटम् कीड्र–अण्ड को फाड़ते हुए; चिरित्ततु–हँस उठा। २५६

हिरण्य में परीक्षा की इच्छा भी थी, साथ-साथ उसे असम्भव समझकर ताना देने की प्रवृत्ति भी रही। वह मिश्रित भाव खूब उभर आए, ऐसा वह अच्छा, अच्छा कहते हुए हँसा। और अत्यधिक बल और वेग के साथ उसने, अशनि गिरी जैसे, अपने विजययशसाधक हाथ से एक खम्भे पर प्रहार किया। प्रहार करते ही एक अरुणाक्ष केसरी इस तरह ठठाकर हँसा कि दिशाएँ चिर गयीं और अण्ड फट गया। २५६

❀ नाडिनान् तरुवॅ नॅन्ड्र नल्लरि वाळ नाळुन्
देडिनान् मुहत्तुङ् गाणाच् चेयवन् शिरित्त लोडुम्
आडिना नळुदान् पाडि यरड्रिनान् शिरत्तिड् चॅङ्गै
शूडिनान् तॉळुदा नोडि युलहॅलान् दुहैत्तान् तुळ्ळि 257

नाळुम् तेटि–निरन्तर अन्वेषण करके भी; नान् मुकत्तुम्–चतुर्मुख द्वारा; काणा–अदृश्य; चेयवन्–बहुत दूर के रहनेवाले (भगवान) के; चिरित्तल् ओटुम्–हँसते ही; नान् नाटि तरुवॅन्–मैं पुकारकर दिखाऊँगा; ऍन्ऱ–ऐसा जिसने वादा किया था; नल्लरिवाळन्–वह श्रेष्ठ ज्ञानी प्रह्लाद; आटिनान्–नाचा; अळुतान्–रोया; पाटि अरऱिनान्–गान करके चिल्लाया; चिरत्तिल्–सिर पर; चॅम् कै–सुन्दर हाथ; चूटिनान्–जोड़कर रख लिये; तॉळुतान्–नीचे गिरकर प्रणाम किया; उलकु ऍलाम्–दुनिया भर; तुळ्ळि ओटि–उछल-कूद मचाकर दौड़ा और; तुकैत्तान्–भू को कुचला। २५७

प्रह्लाद ने दावा किया था। निरंतर खोज से भी जिनको चतुर्मुख भी देख न पा सके उनको बुलाकर दिखाऊँगा —यह वचन दिया था। अब उसका कथन सिद्ध हो गया तो वह श्रेष्ठ ज्ञानी आनंदातिरेक से नाच उठा। रोया, गाया और चिल्लाया। अपने दिव्य हाथ जोड़े सिर पर रखकर नीचे गिरा और प्रणाम किया। संसार में सर्वत्र उछल-कूद मचाते हुए दौड़ा और भूमि को कुचल दिया। २५७

आरडा शिरित्ताय् शॉन्न अरिकॉलो वज्जिप् पुक्क
नीरडा पोदा दॅन्ऱु नॅडुन्दरि नेडि नायो
पोरडा पॉरुदि यायिऱ् पुऱप्पडु पुऱप्प डॅन्ऱान्
पेरडा निन्ऱ ताळो डुलहॅलाम् बॅयरप् पेर्वान् 258

पेर् अटा निन्ऱ–नाम सर्वत्र फैला रहे ऐसा जो था; ताळॊटु–उस बल के साथ; उलकु ऍलाम्–सारे संसार को; पॅयर–विकंपित करते हुए; पॅयर्वान्–जो गमन करता था; चिरित्ताय्–हँसे; आरटा–कौन हो रे; चॊन्न–उक्त; अरि कॉलो–हरि हो क्या; अटा–रे; अञ्चि पुक्क–डर से जहाँ छिपे; नीर् पोतातु ऍन्ऱु–वह क्षीरसागर काफ़ी नहीं, समझकर; नॅटु तरि–इस लम्बे खम्भे को; नेटितायो–खोज निकाला क्या; अटा–रे; पोर् पॊरुति आयिल्–युद्ध करना चाहो तो; पुऱप्पटु–निकलो; पुऱप्पटु–निकलो; ऍन्ऱान्–कहा। २५८

तब हिरण्य, जो अपने नाम को प्रशस्त करनेवाले बल के साथ संसार को कँपाते हुए चलता था, बोल उठा। रे कौन है जो हँसा ? वही हरि है क्या, जिसके सम्बन्ध में इस छोकरे ने कहा ? रे ! डर से सागर में छिपे थे; अब उसे अपर्याप्त समझकर मेरे लम्बे खम्भे के अन्दर घुस बैठे हो क्या ? रे ! लड़ने की इच्छा है तो निकलो, जल्दी उठो, प्रस्तुत हो जाओ। २५८

पिळन्ददु तूणु माङ्गे पिऱन्ददु शीयम् बिन्नै
वळर्न्ददु तिशैह ळॅट्टुम् बहिरण्ड मुदल मऱ्ऱुम्
अळन्ददप् पुरत्तुच् चॅय्है यारऱिन् दरैय ऱिऱ्पार्
किळर्न्ददु कहन मुट्टै किळिन्ददु कीऴु मेलुम् 259

तूणुम् पिळन्ततु–खम्भा भी फूटा; आङ्के–वहाँ; चीयम्–नृसिंह; पिऱन्ततु–

उदित हुआ; पिन्नै-बाद; तिचैकळ् ॲट्टुम्-आठों दिशाओं में; वळरन्ततु-बढ़ा; पकिर् अण्टम् मुतल-बाह्यांड आदि; मर्रुम् अळन्ततु-अन्य अण्डों में भी फैला; अ पुरत्तु-उस पार; चॅय्कै-उनका कृत्य; यार्-कौन; अरिन्तु-जानकर; अरैय किऱ्पार्-बता सकेंगे; किळर्न्ततु-विकसित; ककन मुट्टै-गगनगोल; कीऴुम् मेलुम्-नीचे और ऊपर; किऴिन्ततु-चिर गया। २५९

तुरंत खम्भा फटा। वहाँ एक (नर-)सिंह उदित हुआ। फिर वह बढ़ने लगा तो आठों दिशाओं में भर गया। बाह्यांड आदि सारे अंडों में व्याप चला। उस पार की बात कौन जाने और बखान करे? वर्तमान गगनांड नीचे और ऊपर फट गया। २५९

मन्र्रलन् दुळब माले मानिड मडङ्गल् वानिल्
शॅन्र्रदु तॅरिदल् तेर्राम् शेवडि पडियिर् रीण्डि
निन्र्रदोर् पॉऴुदि नण्ड नॅडुमुहट् टिरुन्द मुन्नोन्
अन्र्रव नुन्दि वन्दा नामॅनत् तोन्रि नानाल् 260

मन्र्रल्-सुवासपूर्ण; अम्-सुन्दर; तुळप मालै-तुलसीमालाधारी; मानिट मटङ्कल्-नृसिंह; वानिल् चॅन्र्रतु-आकाश में बढ़े; तॅरितल् तेर्राम्-नहीं जान सकते; चेवटि-दिव्य श्रीचरण; पटियिल् तीण्टि-भूमि को स्पर्श करके; निन्र्रतु ओर् पॉऴुतिन्-जब रहे तब; अण्टम् नॅटु मुकटु-अण्ड की ऊँची चोटी पर; इरुन्त-जो रहे; मुन्तोन्-वह पुरातन पुरुष ब्रह्मा; अन्रु-तभी; अवन् उन्ति वन्तान् आम्-उनकी नाभि से निकला; ॲन-जैसा; तोन्रिनान्-शोभायमान रहा। २६०

सुगंधित सुन्दर तुलसीमालाधारी भगवान नरसिंह आकाश को भेदकर कैसे बढ़े? उसका प्रकार हम नहीं जानते। जब उनके दिव्य चरण भूमि से लगे स्थित रहे, तब अण्ड की चोटी पर जो ब्रह्मदेव हैं वे ऐसे शोभे मानो वे अभी उनके नाभिकमल से उदित हुए हों। (ब्रह्मलोक उनकी नाभि के पास था, वे इतने ऊँचे बढ़ गये थे।)। २६०

ॲत्तुणै युळदु कैयॅन् रियम्बिना लॅण्णर् केर्र्
वित्तह रुळरे यन्दत् तानवर् विरिन्द शेनै
पत्तुनू र्रमैन्द कोडि वॅळ्ळत्तार् पहुदि शॅय्द
अत्तनै कडलु माळत् तनित्तनि यळ्ळिक् कॉण्ड 261

कै-हाथ; ॲत्तनै उळतु-कितने हैं; ॲन्रु इयम्पिनाल्-ऐसा पूछें तो; ॲण्णर्कु एर्र्-गिन सकें ऐसे; वित्तकर्-विद्वान्; उळरे-हैं क्या; पत्तु नूरु अमैन्त कोटि-सहस्र करोड़; वॅळ्ळत्ताल्-'वॅळ्ळम्' की संख्याओं में; पकुति चॅय्त-विभक्त; अन्तत् तानवर्-उन दानवों की; विरिन्त चेनै-विशाल सेना रूपी; अत्तनै कटलुम्-उतने सागरों को; माळ-सुखाते (मारते) हुए; तनि तनि-अलग-अलग; अळ्ळि कॉण्ट-उठा लिया (उनके करों ने)। २६१

उनके कितने हाथ थे ? गिनकर जो बता सकें, ऐसे विद्वान् भी हैं क्या ? दानवों की सेना के एक-एक भाग के वीरों की संख्या सहस्र कोटि 'वॅळ्ळम्' थी। उन नरहरि के एक-एक हाथ ने एक-एक असुर का काम तमाम किया और उस भाँति सारे सेना-सागर सूख गये (यानी उनके उतने हाथ थे और सारी सेना मिट गयी)। २६१

आयिरङ् गोडि वॅळ्ळत् तयिलॅयिऱ् ऱवुणर्क् कङ्गङ्
गेयिऩ् वॊरुवर्क् कोरोर् तिरुमुह मिरट्टिप् पॊऱ्ऱोळ्
तीयॅऩक् कऩलुञ् जॅङ्गण् मुहऩ्दॊऱु मूऩ्ऱुऩ् दॅय्व
वायिऩिऱ् कडल्ह ळेळु मलैहळु मऱ्ऱु मुऱ्ऱुम् 262

आयिरम् कोटि–सहस्र कोटि; वॅळ्ळत्तु–'वॅळ्ळम्' संख्या के; अयिल् ऍयिऱ्–भाले के समान तीक्ष्ण दन्तोंरे; अवुणर्क्कु ओरुवर्क्कु–दानवों में एक-एक को; ओरोर् तिरुमुकम्–एक-एक श्रीमुख; इरट्टि–दुगुने; पॊऩ् तोळ्–सुन्दर कन्धे; मुकम् तॊऱुम्–एक-एक मुख में; ती ऍऩ–आग के समान; कऩलुम्–ज्वलन्त; चॅम् कण्–लाल आँखें; मूऩ्ऱुम्–तीन-तीन; अङ्कु अङ्कु–वहाँ-वहाँ; एयिऩ–दिखे; तॅय्व वायिऩिल्–दिव्य मुख में; एळु कटल्कळुम्–सातों समुद्र; मलैकळुम्–पर्वत; मऱ्ऱु मुऱ्ऱुम्–और अन्य (चराचर सभी) निहित हैं। २६२

सेना के वीर सहस्र कोटि 'वॅळ्ळम्' थे, तो नरसिंहदेव के मुख एक वीर के एक मुख के हिसाब से उतने थे; उनके दिव्य हाथ उनसे दुगुने थे। हर मुख में आग के समान ज्वलंत आँखें तीन-तीन थीं। उनके दिव्य मुख के अंदर सातों समुद्र और पर्वत समा सकते थे। २६२

मुडङ्गुवा रुळैय वण्ड मुळुवदु मुडिवि लुण्णुम्
कडङ्गॊळ् वॅङ्गालच् चॅन्दी यदऩैवऩ् दळिक्कुङ् गाल
मडङ्गलि ऩुयिर्प्पु मऱ्ऱक् काऱ्ऱिऩै माऱ्ऱु माताल्
अडङ्गलुम् बहुवा याक्कै यप्पुऱत् तहत्त दम्मा 263

मुटङ्कुम्–मुड़े हुए; वार्–लम्बे; उळै–अयाल के बाल; अ–उस; अण्टम्–मुळुवतुम्–अण्डगोल भर में; मुटिविल्–युग के अन्त में; उण्णुम्–लील लेने के; कटम् कॊळ्–कर्तव्यबद्ध; वॅम् कालम्–भयंकर उस (युगान्त) काल की; चॅम् ती अतऩै–लाल अग्नि को भी; वऩ्तु अळिक्कुम्–नाश कर देंगे; काल–यम-सम; मटङ्कलिऩ्–उस (नर-) सिंह के; उयिर्प्पुम्–श्वास भी; अ काऱ्ऱिऩै–उस (युगान्त के प्रचण्ड) मारुत को; माऱ्ऱुम्–दबा देगा; आताल्–तो भी; अटङ्कलुम्–वे सारे; पकुवाय् आक्कै–खुले मुख के उसके शरीर के; अ पुऱत्ततु–ऊपर; अकत्ततु–और अन्दर ही थे; अम्मा–री मैया। २६३

उनके लम्बे और मुड़े हुए अयाल के बाल युगांत की सारे अंडगोलों की नाशकारिणी कालाग्नि का भी नाश कर सकते थे। उनका श्वास युगांत

के चण्डमारुत का नाश कर सकता था। तो भी री माँ! वे सब उन्हीं के शरीर के ऊपर और अंदर ही सीमित रहे। २६३

कुयिऱ्ऱिय वण्डम् कुञ्जै यिट्टिला मुट्टै मुट्टप्
पयिऱ्ऱिय परुव मौत्त कालत्तु ळमुदु पलुहुम्
ऍयिऱ्ुवन् पहुवा युळ्पुक् कित्तरु ळिरुक्कै यॅय्दि
वयिऱ्ऱित्वन् दन्ना ळिन्नाळ् वाळुमन् नुयिर्हण् मन्नो 264

कुयिऱ्ऱिय–(ईश्वर-)रचित; अण्टम्–अण्डगोल; कुञ्चै इट्टिला–बच्चे जिनमें से बाहर नहीं आये हों; मुट्टै–अण्डों के समान रहे; मुट्ट पयिऱ्ऱिय–उनको सेने की; परुवम् ऑत्त–कालावधि के समान; कालत्तुळ्–युगसन्धि काल में; वयिऱ्ऱिन् वन्तु–उनके पेट में रहकर; अन्नाळ्–युगारम्भ के समय (बाहर आकर); इ नाळ्–अब भी; मन् उयिर्कळ्–नित्य रहे जीव; अमुतु पल्कुम्–अमृतस्रावी; ऍयिऱु–दाँतों के; वल् पकुवाय् उळ्–सुदृढ़ और खुले मुख के अन्दर; पुक्कु–प्रवेश करके; इन् अरुळ्–सुखद और कृपापूर्ण; इरुक्कै ऍय्ति–वासस्थान पाकर; वाळुम्–वास करते रहेंगे। २६४

वे अपने द्वारा रचित अंडों को जैसा पक्षी अंडों को सेते हैं, वैसा प्रलय-काल में अपने उदर में रखकर उनकी रक्षा करते हैं। प्रलयान्त में उनके उदर से जो बाहर आते हैं, वे नित्यजीव उनके अमृत बहानेवाले दाँतों से युक्त मुख के द्वारा अंदर जाकर सुखद वासस्थान में वास करते हैं। २६४

नन्मैयिर् ऱॊडर्न्दारक् कुण्डो केडुनान् मुहत्तो नादि
तॊन्मैयिर् ऱॊडर्न्द वाय्मै यऱत्तॊडुन् दॊडर्न्दि लोरै
अन्वयित् तोरुन् दीय ववुणरल् लारै यन्नाळ्
तन्वयिऱ् ऱहत्तु वैत्तुत् तन्ददच् चीयन् दायित् 265

नन्मैयिल्–अच्छे कार्यों में; तॊटर्न्तार्क्कु–लगे रहनेवालों का; उण्टो केटु–हो सकता है अमंगल क्या; नान्मुकत्तोन् आति–चतुर्मुख आदि; तॊन्मैयिल् तॊटर्न्त–प्राचीन काल से लगातार आनेवाले; वाय्मै–सत्य के; अऱत्तॊटुम्–तॊटर्न्तिलोरै–धर्म-मार्ग में न चलनेवालों (असुरों) को; अन्वयित्तोरुम्–अनुकारियों को भी; तीय–मिटाते हुए; अवुणर् अल्लारै–असुरों से अन्य लोगों को; अ नाळ्–उन दिनों; तन् वयिऱु अकत्तु–अपने उदर के अन्दर; अ चीयम्–उस सिंह ने; तायिन्–माता के समान; वैत्तु–रखकर; तन्ततु–पाला। २६५

सद्धर्मचारी लोगों की कोई हानि नहीं होगी। चतुर्मुख ब्रह्मा से लेकर प्राचीन काल से प्रचलित सत्य के धर्म से विमुख असुर लोग और उनके अनुकारियों को मिटाकर दानवेतर लोगों को उन्हीं नरसिंह ने अपने उदर में रखकर पालित किया और यथासमय बाहर भेजा। २६५

पेरुडै यवुणर् तम्मैप् पिऱैयॅयिर् ऱडक्कुम् बेराप्
पारिडैत् तेयक्कु मौळप पहिरणडत तडिककम बऱरि

मेरुविऱ् पुडैक्कु माळ विरल्हळिऱ् पिशैयुम् वेलै
नीरिडैक् कुमिळि यूट्टु नॅरुप्पिडैच् चुरिक्क नोट्टुम् 266

पेरुटै अवुणर् तम्मै–प्रख्यात असुरों को; पिऱै ऍयिऱ्ऱु–(वे नृसिंह) अर्धचन्द्रसम दाँतों में; अटक्कुम्–दबा लेते; पेरा–उठाकर; पार् इटै–भूमि पर (कर) डाल; तेय्क्कुम्–कुचल देते; मीळ–फिर; पकिर् अण्टत्तु अटिक्कुम्–बाह्याण्ड में पटक देते; पऱ्ऱि–पकड़कर; मेरुविऱ्–मेरु से; पुटैक्कुम्–टकरा देते; माळ–मारते हुए; विरल्कळिल्–अपनी उँगलियों से; पिचैयुम्–पीसते; वेलै नीरिटै–समुद्र-जल में; कुमिळि ऊट्टुम्–(डुबोकर) बुलबुले उठाते; नॅरुप्पिटै–आग में; चुरिक्क–जलकर मुड़ जाएँ, ऐसा; नोट्टुम्–बढ़ाते २६६

(उन नरसिंह ने असुरों का नाश किया। किस प्रकार ?) वे कुख्यात दानवों (में कुछ) को अपने अर्द्धचंद्र-सम दाँतों में दबा लेते। कुछ को उठाकर भूमि पर डालते और कुचल देते। फिर कुछ दानवों को बाह्याण्ड पर दे मारते। पकड़कर मेरु पर पटकते। कुछ को उँगलियों से मसलते। कुछ को समुद्रजल में डुबोते और बुलबुले उठ आते। कुछ दानवों को आग में खोंसते और वे जलकर टेढ़े हो जाते। २६६

वहिर्प्पडुत् तुरिक्कुम् बऱ्ऱि वाय्हळॅप् पिळक्कुम् वन्ऱोल्
तुहिर्प्पडुत् तुरिक्कुम् शॅन्दीक् कण्गळैच् चलुम् शुऱ्ऱिप्
पहिर्प्पडक् कुडरैक् कॉय्युम् बशैयऱप् पिशैयुम् बल्हाल्
उहिर्प्पुरै पुक्कोर् तम्मै युहिर्हळाल् उऱक्कु मून्ऱि 267

उरित्तु–चमड़ा उधेड़कर; वकिर् पटुत्तुम्–दो भागों में चीर देते; वाय्कळै पऱ्ऱि–मुखों को पकड़कर; पिळक्कुम्–फाड़ देते; वल् तोल्–तगड़े चमड़े को; तुकिर् पटुत्तु–कपड़े के समान; उरिक्कुम्–फाड़ देते; चॅम् ती कण्कळै–लाल अग्नि-सी आँखों को; चूलुम्–नोचकर निकालते; चुऱ्ऱि पकिर्पट–चारों ओर फट जाएँ, ऐसा; कुटरै कॉय्युम्–आँतों को निकालते; पचै अऱ–(रक्त का) गीलापन छूट जाए ऐसा; पिचैयुम्–पीसते; पल् काल्–अनेक बार; उकिर् पुरै–नाखूनों के अन्तराल में; पुक्कोर तम्मै–प्रविष्ट असुरों को; उकिर्कळाल्–नाखूनों को; ऊन्ऱि–गड़ाकर; उऱक्कुम्–चुटकते। २६७

वे नरहरि कुछ असुरों को दो भागों में फाड़कर उधेड़ देते। मुख के कोनों को पकड़कर चीरते। कठोर चमड़े को कपड़े के समान पकड़कर छील लेते। लाल आग के सदृश आँखों को नोच निकालते। चारों ओर फट जाएँ, ऐसे आँतों को तोड़ लेते। रक्त की नमी भी सूख जाए, ऐसा पीसते। अनेक बार नाखून-मध्य फँसे दानवों को नाखून गड़ाकर चुटकते। २६७

यानैयुन् देरु मावुम् यावैयु मुयिरि रामै
ऊन्ॉडुन् दिन्नुम् पिन्नै यॉलितिरैप् परवै येळुम्

मीनोडुङ् गुडिक्कु मेहत् तुरुमोडुम् विऴुङ्गुम् विण्णिल्
तानोडुङ् गादॆन् ड्रञ्जित् तरुममुञ् जलित्त दम्मा 268

यातैयुम्–गजों; तेरुम्–रथों; मावुम्–अश्वों; यावैयुम्–सभी को; उयिर् इरामै–प्राणहीन करते; ऊनोटुम् तिन्तुम्–शरीर के साथ चट कर जाते; पिन्नै–पश्चात्; ओलि तिरै–शब्दायमान तरंगों के; परवै एऴुम्–सातों समुद्रों को; मीनोटुम्–मछलियों के साथ; कुटिक्कुम्–पी जाते; विण्णिल्–आकाश के; मेकत्तु–मेघों को; उरुमोटुम्–वज्रों के साथ; विऴुङ्कुम्–निगल जाते; तरुममुम्–धर्मदेवता भी; तान् ओटुङ्कातु–ये शांत नहीं होंगे; ऎन्ड्रु–यह मानकर; अञ्चि–डरकर; चलित्ततु–(व्यग्र) चंचल हुआ। २६८

और भी वे गजों, रथों और अश्वों —सभी को प्राणहीन कराकर शरीर को खा डालते। (रथ पहले ही प्राणहीन थे।) फिर शब्दायमान तरंगों के सातों सागरों को मछलियों-सह पी लेते। आकाश के मेघों को वज्रों के साथ खा डालते। स्वयं धर्मदेवता को भी यह भय हो जाता कि ये अब शान्त होनेवाले नहीं हैं। वह व्यग्र और चंचल हो जाता। २६८

आऴिमाल् वरैयो डॆड्रुम् शिलवरै यण्ड गोळच्
चूऴिरुञ् जुवरिर् ड्रेय्क्कुञ् जिलवरैत् तुळक्किल् कुन्ड्रम्
एऴिनो डॆड्रिक् कॊल्लुञ् जिलवरै यॆट्टुत् तिक्कुन्
दाऴिरुट् पिऴम्बिर् ड्रेय्क्कुञ् जिलवरैत् तडक्कै ताक्कि 269

चिलवरै–(वे नरसिंह दानवों में) कुछ को; आऴिमाल् वरैयोटु–चक्रवालगिरि पर; ऎड्रुम्–दे मारते; चिलवरै–कुछ को; अण्ट कोळम् चूऴ्–अण्डगोल को घेरे रहनेवाली; इरु चुवरिल्–बड़ी दीवारों पर; तेय्क्कुम्–लगाकर पीसते; चिलवरै–कुछ को; तुळक्किल् कुन्ड्रम् एऴिनोटु–अचल सातों गिरियों पर; ऎड्रि–पटककर; कॊल्लुम्–मार डालते; चिलवरै–कुछ दानवों को; ऎट्टु तिक्कुम्–आठों दिशाओं में; ताऴ्–घने रूप में विद्यमान; इरुळ् पिऴम्पिल्–अन्धकार के पुंज में; तट कै–विशाल हाथों से; ताक्कि–उनको जोर से डालकर; तेय्क्कुम्–कुचलते। २६९

और उन नरसिंहदेव ने कुछ लोगों को चक्रवालगिरि पर पटका। कुछ लोगों को अंडगोलवलयी बड़ी भित्तियों पर दे मारा। कुछ दानवों को अचल सातों पर्वतों पर पटककर मार डाला। कुछ दानवों को दिशाओं में व्याप्त घने अंधकारपुंज से लगाकर अपने विशाल हाथों से रगड़कर मसल डाला। २६९

मलैहळिर् पुरण्डु वीऴ वळ्ळुहिर् नुदियाल् वाङ्गित्
तलैहळैक् किळ्ळु मळ्ळित् तळ्ळॆळ्ळप् पिशैयुम् तक्क
कॊलैहळिर् कॊल्लुम् वाङ्गि युयिर्हळैक् कुडिक्कुम् वान्
निलैहळिर् परक्क वेलै नीरिनिल् निरम्बत् तूर्क्कुम् 270

मलैकळिल्–पर्वतों के समान; पुरण्टु वीऴ–लोटें और गिरें, ऐसा; वळ उकिर् नुतियाल्–तीक्ष्ण नाखूनों के नोकों से; वाङ्कि–पकड़कर खींचकर; तलैकळै–सिरों को; किळ्ळुम्–नोचकर अलग कर लेते; अळ्ळि–उठाकर; तळल् अॅऴ–आग निकले ऐसा; पिचैयुम्–पीसते; तक्क कॉलैकळिल्–ऐन जिगरों पर मारकर; कॉल्लुम्–मार डालते; उयिर्कळै–प्राणों को; वाङ्कि–हर लेकर; कुटिक्कुम्–पी जाते; वेलै नीरितिल्–समुद्रजल में; परक्क–बाहर भी विस्तार से भर जाएं; निरम्प–अधिक परिमाण में; तूर्क्कुम्–डालकर पाट देते। २७०

नरसिंह ने कुछ दानवों को पर्वतों को जैसे लुढ़काते हुए खींचा और अपने तीक्ष्ण नखों से छीनकर सिर तोड़ दिए। उनको लेकर पीसते जिससे आग निकल आती। ऐन जिगर पर घूँसे मारकर कुछ दानवों का हनन किया। ('कॉलैहळिल्' शब्द का अर्थ यंत्रणाएँ या यातनाएँ भी हो सकता है। तब 'अनेक तरह की यातनाओं द्वारा प्राणहीन किया' अर्थ होगा।) उनके प्राणों का पान कर लेते। वे उनको समुद्रजल में छोड़ते। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि समुद्र पट जाता और ऊपर आकाश तक और चारों ओर बहुत दूर तक ढेर लग जाता। २७०

मुप्पुरत् तुलहत् तुळ्ळु मॊळिवर मुऱ्ऱुम् बऱ्ऱित्
तप्पुद लिन्ऱिक् कॊन्ऱु तैयलार् करुवुन् दळ्ळि
इप्पुरत् तण्डत् तियारु मवुणरिल् लामै यॅऱ्ऱि
अप्पुरत् तण्डन् दोरुन् दडविन. शिलरै यम्मा 271

मुप्पुरत्तु–त्रिविध; उलकत्तु उळ्ळुम्–लोकों में; ऑऴिवु अऱ–विना बाक़ी के; मुऱ्ऱुम् पऱ्ऱि–सारे दानवों को पकड़कर; तप्पुतल् इन्ऱि–अचूक रीति से; कॊन्ऱु–जान से मारकर; तैयलार्–स्त्रियों के; करुवुम् तळ्ळि–गर्भ भी नाश करके; इ पुरत्तु अण्टत्तु–अण्ड के इस तरफ़; यारुम्–कोई भी; अवुणर् इल्लामै–दानव नहीं रहा, इसलिए; अ पुरत्तु–उस तरफ़ के; अण्टम् तोऱुम्–सभी अण्डों को; ऍऱ्ऱि–पकड़कर; चिलरै तटवित–कुछ (दानवों) को टटोलने लगे। २७१

त्रिविध सभी लोकों में रहनेवाले सभी दानवों को नरसिंह ने विना अपवाद के, पकड़कर जान से मारा। दानव-स्त्रियों के गर्भों को भी विनष्ट किया। उस स्थिति में अंड के इस तरफ़ कोई दानव न रहा तो उनके हाथ अंड के उस तरफ़ भी कुछ असुरों के लिए टटोले। २७१

कनहनु मवनिल् वन्द वानवर् कळैह णात
अनहनु मॊळियप् पल्वे ऱवुणरा नवरै यॅल्लाम्
निनैवदन् मुन्नङ् गॊन्ऱु निन्ऱदन् नॅडुङ्गट् चीयम्
वनैहळ लवनु मऱ्ऱुम् मडङ्गलिन् वरवु नोक्कि 272

अ नॅटु कण् चीयम्–आयत और विशाल नेत्रों के वे नरसिंह; कनकनुम्–हिरण्य और; अवनिल् वन्त–उससे उत्पन्न; वानवर् कळैकण् आत–देवों के अवलम्ब

(मित्र); अन्रकत्तम् ऑऴ़िय–अनघ प्रह्लाद को छोड़कर; पल् वेरु–विविध अनेक; अवुणर् आन्रवरै ॲल्लाम्–सभी दानवों को; निनैवतन् मुन्नम्–सोचने के पहले ही; कोन्रु–जान से मारकर; निन्रुतु–चुप खड़े रहे; वन्नै कऴ़ल् अवन्नुम्–भूषणकारी पायलधारी (हिरण्य) भी; मऱ्ऱु–फिर; अ मटङ्कलिन्–उस सिंह का; वरवु नोक्कि–अपनी ओर आना देखा। २७२

केवल कनक बचा और देवों का अवलंब सहायक अनघ प्रह्लाद बचा। बाक़ी विविध जातियों के सभी दानवों को सोचने मात्र की देरी के अंदर समाप्त कर लेने के बाद नरसिंह चुप हुए। फिर पायलधारी हिरण्य ने देखा कि वह सिंह उसी की तरफ़ आ रहा है। २७२

वयिरवा　ळुऱैयिन्　वाङ्गि　वानह　मऱैक्कुम्　वट्टच्
चॅयिरऱु　किडुहुम्　बऱ्ऱि　वानव　रुळ्ळम्　तीय
अयिर्पडर्　वेलै　येऴुम्　मलैहळुम्　शिदऱ　वार्त्तङ्
गुयिरुडै　मेरु　वॅन्न　वाय्मडित्　तुरुत्तु　निन्ऱान् 273

वयिरम् वाळ्–वज्रायुध-संनिभ तलवार को; उऱैयिन् वाङ्कि–म्यान से खींचकर; वान् अकम् मऱैक्कुम्–सारे आकाश ढकनेवाले; वट्टम्–गोल; चॅयिर् अऱु–निर्दोष; किटुकुम् पऱ्ऱि–ढाल भी लेकर; वानवर् उळ्ळम्–देवों का मन; तीय–जलाते हुए; अयिर् पटर्–सूक्ष्म बालुकाकणों से युक्त; वेलै एऴुम्–सातों समुद्रों; मलैकळुम्–(आठ) गिरियों को; चितऱ–अस्त-व्यस्त करते हुए; आर्त्तु–गरजकर; अङ्कु–वहाँ; उयिर् उटै–प्राणवान; मेरु ॲन्न–मेरु के समान; वाय् मटित्तु–होठों को चबाता हुआ; उरुत्तु–सरोष; निन्ऱान्–खड़ा रहा। २७३

तब उसने वज्र-सम अपनी तलवार को म्यान में से निकाला। आकाश को भी ढकनेवाले अपने निर्दोष गोलाकार ढाल को उठा लिया। फिर उसने ऐसा भीमनाद किया कि देवों के हृदय झुलस गये और बालूकणों से युक्त सातों समुद्र और आठों कुलगिरियाँ अस्त-व्यस्त हुईं। फिर वहाँ वह ओंठ काटते हुए गुस्से के साथ जीवंत मेरु के समान खड़ा रहा। २७३

निन्ऱवन्　ऱन्नै　नोक्कि　निलैयिदु　कण्डु　नीयुम्
ऑन्ऱुमुन्　नुळ्ळत्　तियादु　मुणर्न्दिलै　पोलु　मन्ऱे
वन्ऱॉऴि　लाऴि　वेन्दै　वणङ्गुदि　वणङ्ग　वेयुन्
पुन्ऱॊऴिल्　पॊऱुक्कु　मॅन्ऱान्　उलहॆलाम्　बुहऴ　निन्ऱान् 274

उलकु ॲलाम्–सारे लोकों में; पुकऴ निन्ऱान्–प्रशंसित जो है, उस प्रह्लाद ने; निन्ऱवन् तन्नै–ऐसे स्थित उसको; नोक्कि–देखकर; इतु निलै कण्टुम्–इस अद्भुत दृश्य को देखकर भी; नी–आप; ऑन्ऱुम्–कुछ भी; उन् उळ्ळत्तु–अपने मन में; यातुम् उणर्न्तिलै पोलुम्–कोई भी अनुभव नहीं करते शायद; वन् तॊऴिल्–कठोरकर्म; आऴि वेन्तै–चक्रधारी प्रभु को; वणङ्कुति–प्रणाम करो; वणङ्कवे–नमस्कार करो तो; उन् पुन् तॊऴिल्–तुम्हारे नीच कृत्यों को; पॊऱुक्कुम्–क्षमा कर देंगे; ॲन्ऱान्–कहा। २७४

सर्वलोकशंसित असुरबालक प्रह्लाद ने ऐसे स्थित अपने पिता से कहा कि आप श्रीनरसिंह की यह अद्भुत स्थिति देखकर भी कुछ नहीं समझे ! पराक्रमी, चक्रधारी सर्वलोकाधिपति को प्रणाम कीजिए। प्रणाम करेंगे तो वे आपके क्षुद्र कामों को क्षमा कर देंगे। २७४

केळिदु नीयुङ् गाणक् किळर्न्दको ळरियिन् केळिल्
तोळॊडु ताळुम् नीक्कि निन्नैयुन् दुणित्तुप् पिन्नॆन्
वाळिनैत् तॊऴुव दल्लाल् वणङ्गुदल् मह्ळि रूडल्
नाळिनुम् उळदो वॆन्ना अण्डङ्गळ् नडुङ्ग नक्कान् 275

केळ् इतु–सुनो यह; नीयुम् काण–तुम्हारे भी देखते; किळर्न्त–बढ़ आए; कोळ् अरियिन्–इस नृसिंह के; केळ् इल्–उपमाहीन; तोळॊटु ताळुम्–कन्धों के साथ चरणों को; नीक्कि–अलग करके (काटकर); निन्नैयुम् तुणित्तु–तुमको भी छिन्न करके; पिन्–बाद; ऍन् वाळितै तॊऴुवतु–अपनी तलवार को प्रणाम करने; अल्लाल्–के सिवा; वणङ्कुतल्–सिर नवाना; मकळिर् ऊटल् नाळिनुम्–पत्नियों के रूठन के अवसरों में भी; उळतो–रहता है क्या; ऍन्ना–कहकर; अण्टङ्कळ् नटुङ्क–अण्डों को कँपाते हुए; नक्कान्–(हिरण्य) हँसा। २७५

हिरण्य ने उत्तर में कहा कि रे, सुनो यह ! तुम्हारे देखते मैं इस बढ़े हुए सिंह के अनुपम कन्धों और पैरों को काटकर अलग करूँ, फिर तुमको मारूँ और तब अपनी तलवार को प्रणाम करूँ। इसको छोड़कर नमन क्या अपनी रूठी हुई स्त्रियों के सामने उनकी रूठन के अवसरों पर भी हुआ है क्या ? यह कहकर वह अण्डों को कँपाते हुए हँसा। २७५

नहैशॆया वायुङ् गैयुम् वाळॊडु नडन्द ताळुम्
पुहैशॆया नॆंडुन्दीप् पॊङ्ग उरुत्तॆदिर् पॊरुन्दप् पुक्कान्
तॊहैशॆय्वार्क् करिय तोळाऱ् ऱाळ्हळाऱ् चुऱ्ऱिच् चूऴ्न्दान्
मिहैशॆय्वार् विनैहट् कॆल्लाम् मेऱ्चॆयुम् विनैयम् वल्लान् 276

नकै चॆया–हँसकर; वायुम्–मुख; कैयुम्–और हाथ; वाळॊटु–तलवार के साथ; नटन्त ताळुम्–और चलनेवाले हाथ; पुकै चॆया–इनके द्वारा धुआँ निकालते हुए; नॆटु ती–गम्भीर कोपाग्नि के; पॊङ्क–भभकते; उरुत्तु–क्रोध करके; ऍतिर् पॊरुन्त–सामने से भिड़ने के लिए; पुक्कान्–तैयार हुआ; मिकै चॆय्वार्–अत्याचारी दानवों के; वितैकट्कु ऍल्लाम्–सारे बुरे कृत्यों से बढ़कर; मेल् चॆयुम्–अधिक (विजयी) कृत्य करने की; वितैयम् वल्लान्–चालाकी में दक्ष प्रभु ने; तॊकै चॆय्वार्क्कु–गिनना चाहनेवालों के लिए; अरिय–असाध्य संख्या के; तोळाल् ताळ्कळाल्–भुजाओं और पैरों से; चुऱ्ऱि चूऴ्न्तान्–लपेटकर पकड़ लिया। २७६

वह हँसा। उसके मुख, हाथों और तलवार पर से धुआँ निकले ऐसी कोपाग्नि के भभकते वह श्रीनरसिंह से लड़ने में प्रवृत्त हुआ। तब

अत्याचारियों की चालाकी से अधिक चालाकी करनेवाले भगवान नरसिंह ने इतने हाथों और पैरों से उसे कस लिया कि गिनना चाहनेवाले हार जाते। २७६

इरुवरुम् पॊरुन्दप् पट्रि यॆव्वुल हुक्कुम् मेलाय्
ऑरुवरुङ् गाणा वण्ण मुयर्न्ददर् कुवमै कूरिन्
वॆरुवरुन् दोट्रत् तञ्जा वॆञ्जिन ववुणन् मेरु
अरुवरै यॊत्तान् अण्णल् अल्लवै यॆल्लाम् ऑत्तान् 277

इरुवरुम्–दोनों; पॊरुन्त पट्रि–कस पकड़कर; ॲ उलकुक्कुम् मेलाय्–सभी लोकों के ऊपर; ऑरुवरुम् काणा वण्णम्–कोई न देख सके, इस भाँति; उयर्न्त-तर्कु–जो ऊँचे रहे उसका; उवमै कूरिन्–उपमान कहें तो; वॆरुवरुम् तोट्रत्तु–डरावने रूप के; अञ्वा–निडर; वॆम् चितम् अवुणन्–भयंकर क्रुद्ध दानव; मेरु–मेरु के; अरु वरै–अपूर्ण पर्वत; ऑत्तान्–के समान रहा; अण्णल्–महिमावान नरसिंह; अल्लवै ऍल्लाम्–अन्य सभी (पर्वतों) के; ऑत्तान्–समान रहे। २७७

दोनों एक-दूसरे को बाँधकर ऊँचे बढ़े। उपमान कहना हो तो डरावने रूप का, निडर और भयंकर रीति से क्रुद्ध दानव मेरु के समान (दोनों स्वर्णवर्ण हैं) रहा। महिमावान नरसिंह अन्य सभी पर्वतों के समान लगे। २७७

आर्प्पॊलि मुळक्किन् वॆव्वाय् वळ्ळुहिर्प् पार मान्ऱ
एट्ररुङ् गरत्तिर् पल्वे ऱॆऱितिरैप् परप्पि नुट्र
पाऱ्कडल् परन्दु पॊङ्गिप् पङ्गयत् तॊरुवन् नाट्टिन्
मेऱ्चॆन्ऱ दॊत्तान् मायन् कनहनुम् मेरु वॊत्तान् 278

वॆव्वाय्–डरावने मुख के; आर्प्पु ऑलि मुळक्किन्–गर्जन के शब्द के जोर से; वळ् उकिर् पारम्–तीक्ष्ण नखराशियों से; आन्ऱ–युक्त; एऱ्ऱ अरु करत्तिल्–श्रेष्ठ व अपूर्व हाथों से; मायन्–मायावी (नरसिंह); पल् वेऱु–अनेक तरह की; ऍऱि तिरै–उठनेवाली तरंगों के; परप्पिन् उट्र–विस्तार से युक्त; पाऱ्कटल्–क्षीर-सागर; परन्तु पॊङ्कि–उमड़ उठकर; पङ्कयत्तु ऑरुवन्–कमलासन उत्तम ब्रह्मा के; नाट्टिन् मेल् चॆन्ऱतु–लोक में गया हो; ऑत्तान्–जैसे रहे; कनकनुम्–हिरण्य भी; मेरु ऑत्तान्–मेरु के समान रहा। २७८

नरसिंह अपने गर्जन और तीक्ष्ण नखराशियों से युक्त और श्रेष्ठ अद्‌भुत हाथों के कारण बहुतरंगाकीर्ण क्षीरसागर उमड़कर कमलासन ब्रह्मा के लोक में फैल गया हो, ऐसे लगे। कनककशिपु (उसके मध्य) मेरु के समान दिखा। २७८

वाळीडु तोळ्ङ् गैयुम् महुडमुम् मलरोन् वैत्त
नीळिरुङ् गगन मुट्टं नॆडुञ्जुवर् तेय्प्प नेमि

कोळॊडुन् दिरिव वॆन्नक् कुरुमणिक् कॊडुम्बूण् मिन्नत्
ताळिणै यिरण्डुम् बऱ्ऱिच् चुळऱ्ऱिनन् तडक्कै यॊन्ऱाल् 279

वाळॊटु–तलवार के साथ; तोळुम् कैयुम्–कन्धों और हाथों; मकुटमुम्–और मकुट के; मलरोन् वॆत्त–कमलासन-रचित; नीळ् इरु ककतम् मुट्टै–लम्बे और बड़े गगनांड की; नॆंटु चुवर् तेय्प्प–लम्बी दीवारों को रगड़ते; नेमि–राशिमण्डल; कोळॊटुम् तिरिवतु–ग्रहों के साथ घूमता; ऎन्न–जैसे; कुरु मणि–छवियुक्त मणियों के; कॊटुम् पूण्–गोल आभरणों के; मिन्न–चमकते; तट कै ऒन्ऱाल्–अपने विशाल एक हाथ से; ताळ् इणै इरण्टुम्–जोड़े के दोनों पैरों को; पऱ्ऱि–पकड़ (उठाकर); चुळऱ्ऱिनन्–(प्रभु ने हिरण्य को) घुमाया। २७९

नरसिंह ने अपने एक बड़े हाथ से हिरण्य के दोनों पैरों को पकड़कर उठाया और घुमाया। तब हिरण्य की तलवार, उसके हाथ और उसका किरीट बड़े ब्रह्माण्ड की दोनों भित्तियों से रगड़ा। राशिमण्डल घूमता हो ऐसा— उसके आभरणों के रत्न चमक उठे। २७९

चुळऱ्ऱिय कालत् तिऱ्ऱ तूङ्गुहुण् डलङ्गळ् नीङ्गिक्
किळक्कॊडु मेऱ्कु मोडि विळुन्दन किडन्द विन्ऱुम्
अळऱ्ऱरु कदिरोन् ऱोन्ऱु मुदयत्तो डत्त मान
निऱ्ऱरुङ् गालै मालै नॆंडुमणिच् चुडरि नीत्तम् 280

चुळऱ्ऱिय–जब घुमाया; कालत्तु–उस समय; इऱ्ऱ–जो गिरे; तूङ्कु कुण्टलङ्कळ्–लटकनेवाले कुण्डल; नीङ्कि–अलग होकर; किळक्कॊटु मेऱ्कुम्–पूरब और पश्चिम दिशा में; ओटि विळुन्तत–जा गिरे; किटन्त–पड़े रहे वे; इन्ऱुम्–आज भी; अळल् तरु–धूप दिलानेवाले; कतिरोन् तोन्ऱुम् उतयत्तोटु–सूर्य जिस पर उदित होता है, उस उदयाचल के साथ; अत्तम् आत–अस्ताचल बने; नॆंटु मणि चुटरिन् नीत्तम्–बड़े रत्नों की प्रभा का विस्तार ही; कालै मालै–सवेरे और शाम को; निळल् तरुम्–प्रकाश देता है। २८०

जब हिरण्य घूमा तब उसके कुण्डल कटकर पूरब और पश्चिम में गिरे। जो पड़े रहे वे ही उदयाचल, जिस पर धूपदायी किरणमाली उदित होता है, और अस्ताचल बने आज भी विद्यमान हैं! उन कुण्डलों के रत्नों की प्रभा का विस्तार ही आज भी सवेरे और शाम को प्रकाश देता रहता है। २८०

पोऩ्ऱन इत्तैय तन्मै पॊरुविय दित्तैय दॆन्ऱु
तान्ऱनि यॊरुवन् ऱन्नै युरैशॆयुन् दरत्त नानो
वान्ऱरु वळ्ळल् वॆळ्ळै वळ्ळुहिर् वयिर मार्बिन्
ऊन्ऱलुम् उदिर वॆळ्ळम् परन्दुळ दुलह मॆङ्गुम् 281

इत्तैय पोन्ऱन–ऐसे; तन्मै पॊरुवियतु–गतिविधि के प्रकार बने रहे, इसलिए; तान् तनि ऒरुवन् तन्नै–अद्वितीय अनुपम उनका; इत्तैयतु ऎन्ऱु–गुण या स्वभाव ऐसा है ऐसा; उरै चॆयुम् तरत्तत्–वर्णन करने अर्ह; नानो–हूँ मैं क्या; वान्

तरु–परमपददायी; वळ्ळल्–उदार करुणामूर्ति के; वॆळ्ळै–सफ़ेद; वळ् उकिर्–तीक्ष्ण नखों को; वयिरम् मार्पिऩ्–वज्रकठोर वक्ष में; ऊऩ्ऱलुम्–गड़ाते ही; उतिरम् वॆळ्ळम्–रुधिर का प्रवाह; परन्तु उळतु–बहा व फैला। २८१

ऐसी गतिविधि के ऐसे प्रकार के भगवान अद्वितीय हैं और अनुपम हैं। मैं उनके लक्षण, गुण और स्वभाव के वर्णन करने अर्ह हूँ क्या? परमपददायी उन करुणामूर्ति के अपने सफ़ेद और कड़े नखों को कनक के वज्रकठिन वक्ष में गड़ाते ही रुधिर का प्रवाह बह आया और सर्वत्र फैल गया। २८१

आयवऩ् ऱऩ्ऩै मायऩ् अऩ्दियिऩ् अवऩ्बॊऩ् कोयिल्
वायिलिऩ् मणिक्क वाऩ्मेल् वयिरवा ळुहिरिऩ् वायिऩ्
मीयॆळु कुरुदि पॊङ्ग वॆयिल्विरि वयिर मार्बु
तीयॆळप् पिळन्दु नीक्किऩ् तेवर्द मिडुक्कण् तीर्त्ताऩ् 282

मायऩ्–मायावी (नरसिंह) ने; अन्तियिऩ्–संध्या-वेला में; आयवऩ् तऩ्ऩै–उसको; अवऩ्–उसके; पॊऩ् कोयिल् वायिलिऩ्–स्वर्णमय महल की ड्योढ़ी पर; मणि कवाऩ् मेल्–अपनी सुन्दर जंघा पर; वयिरम् वाळ् उकिरिऩ्–कठोर तलवार-से नखों से; वायिऩ् मी ऍळु–मुख पर निकल आनेवाला; कुरुति पॊङ्क–रक्त उमड़ आये, ऐसा; वॆयिल् विरि–प्रकाशमय; वयिर–वज्र-सा कठोर; मार्पु–वक्ष; ती ऍळ–आग के निकलते; पिळन्तु–चीरकर; नीक्कि–मिटाकर; तेवर् तम् इटुक्कण्–देवों का संकट; तीर्त्ताऩ्–निवारा। २८२

मायावी भगवान उस हिरण्य को उसके स्वर्णमय महल के फ़ाटक पर ले आये। अपने सुन्दर ऊरु पर उसे रखकर अपने वज्र के समान कठोर और तलवार के समान तीक्ष्ण नखों से उसको चीर डाला। उसके मुख से जो रक्त निकलने लगा था, वह अब अत्यधिक ज़ोर से उमड़ आया। प्रकाशमय और सशक्त वक्षःस्थल से आग-सी उठी। हिरण्य मरा और देवताओं के दुर्दिन दूर हुए। (हिरण्य के वध में इन वरों का विचार रखा गया— वह मकान के अन्दर या बाहर; दिन में या रात में; भूमि पर या स्वर्ग में नहीं मारा जा सकता था। अतः सन्ध्या के समय, फ़ाटक पर और भगवान के ऊरु पर रखकर मारा गया।)। २८२

मुक्कणा नॆण्ग णाऩु मुळरिया यिरङ्ग णाऩुम्
तिक्कणाऩ् देव रोडु मुऩिवरुम् बिऱरुम् देडिप्
पुक्कना डऱिहु ऱामऱ् ऱिरिहिऩ्ऱार् पुहुन्दु सॊय्त्तार्
ऍक्कणार् काण्डु मॆन्दै युरुवमॆऩ् ऱिरङ्गि निऩ्ऱार् 283

पुक्क नाटु तेटि–जिस लोक में पहुँच गये, उसको ढूँढ़कर; अऱिकुऱामल्–जानना असाध्य हो ऐसा; तिरिकिऩ्ऱार्–जो घूमते हैं; मुक्कणाऩ्–त्रिनेत्र शिवजी; ऍण् कणाऩ् उम्–अष्टनेत्र ब्रह्मा; मुळरि आयिरम् कणाऩुम्–और सहस्रकमलनेत्र इन्द्र; तिक्कु अणाम्–दिग्पालक; तेवरोटु–देवों के साथ; मुऩिवरुम्–मुनि; पिऱरुम्–और

अन्य; पुकुन्तु मॉय्त्तार्–(हिरण्य के मरते ही) आकर पिल गये; ऍन्तै उरुवम्–धाता का रूप; ऍक् कणाल्–किन आँखों से; काण्टुम्–देखेंगे; ऍन्ऱु–कहते हुए; इरङ्कि निन्ऱार्–तरस के साथ खड़े रहे। २८३

त्रिनेत्र शिवजी, अष्टनेत्र ब्रह्माजी, सहस्रकमलनेत्र इन्द्र, दिग्पालक, मुनि सभी कहीं घूम रहे थे और किसी को भी पता नहीं था कि वे किस लोक में घूम रहे हैं। अब वे सब हिरण्य का मरना जानकर आकर पिल पड़े। पर भगवान का पूर्णरूप किन आँखों द्वारा देखा जाय? इस बात को लेकर तरस के साथ वे खड़े रह गये। २८३

नोक्किनार् नोक्कि नार्मुन् नोक्कुरु मुहमुङ् गैयुम्
आक्कैयुन् दाळु माहि यॅङ्गणुन् दान्ने याहि
वाक्किनाल् मनत्ति नान्मर् ऱरिविना लळक्क वारा
मेक्कुयर् शीयन् दन्नैक् कण्डनर् वॅरुवु हिन्ऱार् 284

नोक्किनार् नोक्किनार् मुन्–देखनेवाले एक-एक के सामने; नोक्कुरु–दिखायी देनेवाले; मुकमुम् कैयुम्–मुख और हाथ; आक्कैयुम्–शरीर और; ताळुम् आकि–पैरों के साथ; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; तान्ने आकि–स्वयं दर्शन देते हुए; वाक्किनाल्–वाक् से; मनत्तिनाल्–मन से और; मऱ्ऱु अऱिविनाल्–अन्य बुद्धि के लिए; अळक्क वारा–अगोचर; मेक्कु उयर्–ऊपर उठे हुए; चीयम् तन्नै–(नर) केसरी को; कण्टनर्–देखते और; वॅरुवुकिन्ऱार्–डरते। २८४

हर दर्शक के सामने भगवान के मुख, हाथ, शरीर और पैर लेकर अलग-अलग रूप दिखायी दिये। सर्वत्र वे ही व्याप्त थे। वे वाक्, मन और बुद्धि के लिए भी सीमा जानना असाध्य हो, इस भाँति उन्नत बढ़े थे। उन नरसिंह को देखकर देखनेवाले भयभीत हुए। २८४

पल्लॊडु पल्लुक् कॆल्लै यायिरक् कादप् पत्ति
शॊल्लिय वदनङ् गोडि कोडिमेल् विळङ्गित् तोन्ऱ
ऍल्लैयि लुरुविऱ् ऱाहि यिरुन्ददै यॅदिर्न्दु नोक्कि
अल्लियङ् गमलत् तण्णल् अवन्बुहऴ् विरिप्प दानान् 285

पल्लॊटु पल्लुक्कु ऍल्लै–एक दाँत और दूसरे दाँत की सीमाओं का; पत्ति–अंतराल; आयिरम् कातम्–सहस्र कोस; चॊल्लिय–कथित; वतनम् कोटि कोटि मेल्–आनन कोटि-कोटि से भी अधिक; विळङ्कि तोन्ऱ–शोभा के साथ रहे; ऍल्लै इल्–निस्सीम; उरुविऱ्ऱु आकि–आकार का बनकर; इरुन्ततै–जो रहे उनको; ऍतिर्न्तु नोक्कि–सामने से देखकर; अल्लि अम् कमलत्तु–पंखुड़ियों-सहित कमल के; अण्णल्–स्वामी ब्रह्मा; अवन् पुकऴ्–उनकी प्रशंसा; विरिप्पतु आनान्–विस्तार से कहने लगे। २८५

उनके कोटि-कोटि आनन थे, जिनमें एक-एक में दाँतों का अंतराल सहस्र कोस की दूरी का था। निस्सीम रूप लेकर स्थित उनको सामने से

दर्शन करके दलसंकुल कमल पर उत्पन्न ब्रह्माजी उनकी प्रशंसा में स्तुति करने लगे। २८५

❀ तन्नैप् पडैत्तदुवुन् दाने यॆन्नुन्दन्मै
पिन्नैप् पडैत्तदुवे काट्टुम् पॆरुम्बॆरुम
उन्नैप् पडैत्तायनी यॆन्ड्रा लुयिर्पडैप्पान्
ऎन्नैप् पडैत्तायनी यॆन्नुमिदु मेदामो 286

पॆरु पॆरुम–अति महा प्रभु; तन्नै पटैत्ततुवुम्–स्वयं अपने को सृष्ट किया भी; ताने–आपने ही; ऎनुम् तन्मै–यह तथ्य; पिन्नै–पीछे (अब); पटैत्ततुवे–सृष्ट कर लेना; काट्टुम्–(वही) दिखा देता है; उन्नै–अपने को; नी पटैत्ताय्–आपने सृष्ट किया; ऎन्ड्राल्–तो; नी–आपने; उयिर् पटैप्पान्–जीवसृष्टि के अर्थ; ऎन्नै पटैत्ताय्–मुझे सृष्ट किया; ऎनुम् इतुवुम्–ऐसी यह बात; एताम्–किस प्रकार की है। २८६

अतिमहान् प्रभु ! 'आत्मानं सृजाम्यहम्' का सत्य अब आपके नरसिंह के रूप में प्रकट होने से प्रमाणित हो गया है ! आपने अपने को स्वयं सृष्ट कर लिया तो जीवसृष्टि के निमित्त मुझे पैदा करने का कार्य क्यों-कर ? । २८६

❀ पल्ला यिरकोडि यण्डम् बनिक्कडलुण्
निल्लाद मॊक्कुळॆनत् तोन्रुमाल् निन्नुळ्ळॆये
ऎल्ला उरुवमुमाय् निन्ड्रक्का लिव्वुरुवम्
वल्ले पडैत्ताल् वरम्बिन्मै वारादो 287

पल् आयिरम् कोटि–अनेक सहस्र कोटि; अण्टम्–अण्डगोल; पनि कटलुळ्–शीतल समुद्र में उठनेवाले; निल्लात–अस्थायी; मॊक्कुळ् ऎन–बुलबुलों के समान; निन् उळ्ळॆये–आप में ही; तोन्रुम्–उठते हैं; ऎल्ला उरुवमुमाय्–सभी (चराचर जीवों) के रूप में आप ही; निन्ड्रक्काल्–स्थित हैं तो भी; इ उरुवम्–इस रूप को; वल्ले पटैत्ताल्–(कुछ को मिटाने) स्वयं सृष्ट कर लिया तो; वरम्पिन्मै–अमर्यादा का दोष; वारातो–नहीं लगेगा क्या। २८७

अनेक सहस्र कोटि अण्डगोल समुद्र में नश्वर बुलबुलों के समान आप में ही पैदा हो सकते हैं। अतः यह प्रपञ्च और इस प्रपञ्च के सभी आपके ही रूप हैं। फिर इस रूप को पृथक् रूप से सृष्ट कर लिया तो क्या अमर्यादा का दोष आप पर नहीं लगेगा ? । २८७

❀ पेरै यॊरुपॊरुट्के पलवहैयाऱ् पेर्त्तॆण्णुम्
तारै निलैयै तमियै पिड्ररिल्लै
यारैप् पडैक्किन्ऱ दियारै यळिक्किन्ऱ
दारै यळिक्किन्ऱ वैया वड्रियेमाल् 288

ऐया–प्रभु; ऑरु पॉरुट्के–एक ही वस्तु को; पल वकैयाल्–भाँति-भाँति के; पेरॅ–नामों से; पेरुत्तॅण्णुम्–स्मरण किया जाय ऐसी; तारॅ निलैयॅ–व्यवस्था की स्थिति में हैं; तमियै–अकेले हैं; पिऱर् इलॅ–नास्ति पर; पडैक्किन्ऱतु यारॅ–(फिर) सृष्ट करते हैं किसको; अळिक्किन्ऱतु–रक्षा करते हैं; यारॅ–किसको; अऴिक्किन्ऱतु आरॅ–संहार करते हैं किसका; अऱियेम्–नहीं जान पाते; (आल्–पूरक ध्वनि)। २८८

प्रभु ! आप ही एक हैं और उसी एक के अनेक नाम हैं । ऐसी व्यवस्था के हैं आप ! आप अद्वय हैं, अकेले हैं । आपसे परे कोई नहीं, कुछ नहीं । तब आप पैदा करते हैं किसे ? पालते हैं किसे ? और संहार करते हैं किसे ? हम समझते नहीं । २८८

❀ निन्नुळे ऍन्नै निरुमित्ताय् नित्तरुळाल्
ऍन्नुळे ऍप्पॉरुळुम् यावरैयुम् यानीन्ऱेन्
पिन्निलेन् मुन्निलेन् ऍन्दै पॅरुमाने
पॉन्नुळे तोन्ऱियदोर् पूणोक्कुम् बूट्चियाय् 289

ऍन्नै–मुझे; नित्तुळे निरुमित्ताय्–अपने से (आपने) प्रगट कराया; निन् अरुळाल्–आपकी कृपा से; ऍप्पॉरुळुम्–सभी पदार्थों; यावरैयुम्–और सभी जीवों को; ऍन्नुळे–अपने में से; यान् ईन्ऱेन्–मैंने सृष्ट कराया; ऍन्दै पॅरुमाने–मेरे धातादेव; मुन्नुतिलेन्–(आपके सिवा) न हेतु है मेरा; पिन्नितिलेन्–न पीछे कुछ है; पॉन् उळे–स्वर्ण में; तोन्ऱियतु ओर् पूण्–प्रकट एक आभरण; ओक्कुम्–के समान; पूट्चियाय्–रूपधर । २८९

आपने अपने में से मुझे प्रकट कराया । आपकी कृपा को पुरस्सर करके मैंने सभी जडों और चेतनों का सृजन किया । मेरे धाता नाथ ! स्वत: मैं न कारण हूँ, न कार्य (मेरा न पूर्व है, न अपर) । स्वर्ण में प्रकट आभरण के समान (सृजक तथा सृष्टि दोनों का) एकरूप हैं आप । २८९

ऍन्ऱाङ् गियम्बि यिमैयाद वॅण्गणनुम्
वन्ऱाण् मऴुवोनुम् यारुम् वणङ्गिनराय्
निन्ऱा रिरुमरुङ्गुम् नेमिप् पॅरुमानुम्
ऒन्ऱाद शोऱ्ऱत्तै युळ्ळे यॊडुक्कितान् 290

ऍन्ऱु–ऐसा; आङ्कु–वहाँ; इयम्पि–स्तुति करके; इमैयात–अपलक; ऍण् कणनुम्–अष्टनेत्र ब्रह्मा; वल् ताळ्–और कठोर मूठ के; मऴुवोनुम्–परशु के धारक शिव; यारुम्–अन्य सभी; वणङ्किनराय्–नमस्कार करके; इरुमरुङ्कुम्–दोनों पार्श्व में; निन्ऱार्–खड़े रहे; नेमि पॅरुमानुम्–चक्रधारी प्रभु ने भी; ऒन्ऱात चीऱ्ऱत्तै–दुर्दम्य क्रोध को; उळ्ळे–अन्दर; ऒडुक्कितान्–थाम लिया । २९०

वहाँ ऐसी स्तुति करके अपलक अष्टनेत्र ब्रह्मा, कड़ी मूठ के परशु के रखनेवाले शिव और अन्य देवता लोगों ने नमस्कार किया और वे दोनों

ओर पंक्तियों में स्थित हुए। चक्रधारी जगन्नायक भगवान ने भी दुर्दम्य क्रोध को अपने ही अन्दर थमा लिया। २९०

ॲञ्जु मुलहत्तैतु मिप्पोऴुदे यॅन्ऱॅन्ऱु
नॅञ्ज नडुङ्गु नॅडुन्दे वरॅनोक्कि
अञ्जन्मि नॅन्ना वरुळ्शुरन्द नोक्किनाल्
कञ्ज मलर्प्पळ्ळिक्कुङ् गैयबयङ् गाट्टिनान् 291

उलकत्तैत्तुम्–सारा संसार; इप्पोऴुते–अभी; ॲञ्चुम्–मिट जाएगा; ॲन्ऱु ॲन्ऱु–ऐसा लगातार सोचकर; नॅञ्चम् नटुङ्कुम्–मन में काँपनेवाले; नॅटु तेवरॅ–बड़े देवों को; नोक्कि–देखकर; अञ्चन्मिन्–मत डरो; ॲन्ना–कहकर; अरुळ् चुरन्त–करुणापूर्ण; नोक्किनाल्–दृष्टि डालकर; कञ्चम् मलर् पळ्ळिक्कुम्–कंजसुमनहासी; अपयम् कै काट्टिनान्–अभयहस्त दिखाया। २९१

बड़े-बड़े देवता लोग भी मन में कम्पन का अनुभव कर रहे थे। वे निरंतर सोच रहे थे कि अभी सारे लोक मिट जाएँगे। उनको नरसिंह-देव ने आश्वासन दिया कि 'डरो मत'। उन्होंने उन पर स्नेहार्द्र दृष्टि फेरी। फिर कमल-सुमन-हासी अपने हाथ की वरदमुद्रा से अभयदान किया। २९१

पूविन् तिरुवै यळकिन् पुत्तैकलत्तै
यावर्क्कुम् शॅल्वत्तै वीडॅन्नु मिन्बत्तै
आवित् तुणैयै अमुदिऱ् पिऱन्दाळै
तेवर्क्कुन् दम्मोयै येविनार्पाऱ् चॅल्ल 292

अळकिन् पुत्तैकलत्तै–सौंदर्य (का) आभरण (समाना); यावर्क्कुम् चॅल्वत्तै–सबकी श्री को; वीटु ॲन्नुम् इन्पत्तै–मोक्ष के सुख को; आवि तुणैयै–जीवों की सहायिका को; अमुतिल् पिऱन्ताळै–अमृत के साथ जनमी हुई को; तेवर्क्कुम् तम् ओयै–देवों की जननी को; पूविन् तिरुवै–श्रीकमला को; पाल् चॅल्ल–श्रीहरि के पास जाने को; एवित्तार्–प्रेरित किया (देवों ने)। २९२

(तब भी उनका भय दूर नहीं हुआ।) उन्होंने सौंदर्य का भूषण, सभी की श्री, मोक्ष का आनन्द, जीवों की सहायिका, अमृत की सहोदरा और देवताओं की माता श्रीकमलाजी को उनके पास जाने की प्रार्थना की। [वैष्णव-संप्रदाय में श्रीलक्ष्मीदेवी का 'पुरुषकार' (भगवान की कृपा दिलाने का दायित्व लेने का कार्य) अनिवार्य माना जाता है। लाक्षणिक रूप से उन्हीं को 'मोक्ष का आनन्द' कहा गया है।]। २९२

शॅन्दा मरैप्पोहुट्टिऱ् चॅम्मान्दु वीऱ्ऱिरुक्कुम्
नन्दा विळक्कै नरुन्दा ळिळङ्गॊळुन्दै
मुन्दा वुलहु मुयिरु मुरैमुरैये
तन्दाळै नोक्किनान् तन्नॊप्पोन् ऱिल्लादान् 293

तऩ् ऑप्पु ऑऩ्ऱु–अपना-सम कोई; इल्लातात्–जिसका नहीं उन देव ने; चॅन् तामरै पॉकुट्टिल्–लाल कमल के बीज में; चॅम्मान्तु वीऱ्ऱिराक्कुम्–शान के साथ विराजमान; नन्ता विळक्कै–अनुत्तेजनाभिलाषी दीप (-सी लक्ष्मी) को; नऱुम् ताळ्–सुवासपूर्ण; इळ कॉळुन्तै–बाल-किसलय को; उलकुम् उयिरुम्–लोक तथा जीवों को; मुऱै मुऱैये–क्रम से; मुन्ता तन्ताळै–आदि में जनन करनेवाली को; नोक्किनाऩ्–निहारा (कृपादृष्टि डाली)। २६३

तब अपनी सानी न रखनेवाले नरसिंह-मूर्ति ने कमल-बीज में शान के साथ विराजनेवाली, उत्तेजना की आवश्यकता न रखनेवाले दीप के समान आभायुक्त, सुवासित कलकिसलयसमाना और लोकों और लोकवासियों की, यथाक्रम अपनी बारी में सृष्टि करनेवाली आद्या देवी को देखा। २९३

तीदिला वाह् वुलहीऩ्ऱ दॅय्वत्तैक्
कादला नोक्किनाऩ् कण्ड मुऩिगणङ्गळ्
ओदिनार् शीर्त्ति युयर्न्द परञ्जुडरुम्
नोदलाङ् गिल्लाद वऩ्बनैये नोक्किनाऩ् 294

उयर्न्त परम् चुटरुम्–उत्तम परंज्योति भगवान श्रीहरि ने; तीतु इला आक–निर्विघ्न रीति से; उलकु ईऩ्ऱ–लोक को जनानेवाली; तॅय्वत्तै–देवी को; कातलाल् नोक्किनाऩ्–प्रेम के साथ देखा; कण्ट मुऩि कणङ्कळ्–उसको देखकर मुनिगण; चीर्त्ति ओतिनार्–कीर्तिगान करने लगे; आङ्कु–वहाँ; नोतल् इल्लात–(पिता के हत्यारे से) जो विमुखता नहीं दिखाता था, उस; अऩ्पऩैये–परमप्रेमी प्रह्लाद पर; नोक्किनाऩ्–दृष्टिपात किया। २६४

सर्वविलक्षण परमज्योतिस्वरूप नरसिंहदेव ने निर्विघ्न लोकों की सृष्टि करके उपकार करनेवाली भगवती देवी पर प्रेम की दृष्टि डाली। इसको देखकर मुनिगण भगवान का कीर्तिगान करने लगे। तब भगवान ने भक्त प्रह्लाद पर दृष्टिपात किया, जो पिता की मृत्यु से दुःखी नहीं हुआ था (न ही पितृहंता पर द्वेष करता था)। २९४

उन्दैयै युन्मुन्गॊन् ऱुडलैप् पिळन्दळैयच्
चिन्दै तळरा दऱम्बिळैयाच् चॅय्हैयाय्
अन्दमिला अन्बॅन्मेल् वैत्ता यळियत्ताय्
ऎन्दै यिनियिदऱ्कुक् कैम्मारि यादॆन्ऱान् 295

उन्तैयै–तुम्हारे पिता को; उऩ् मुऩ्–तुम्हारे ही सामने; कॊऩ्ऱु–मारकर; उटलै पिळन्तु–शरीर फाड़कर; अळैय–रक्त में हाथ टटोले तो भी; चिन्तै तळरातु–मन शिथिल न करके; अऱम् पिळैया–धर्मविमुख; चॅय्कैयाय्–कार्य करनेवाले; ऎऩ् मेल्–मुझसे; अन्तम् इला अऩ्पु–अंतहीन प्रेम; वैत्ताय्–किया है; अळियत्ताय्–दीन; ऎन्तै–मेरे तात; इऩि–अब; इतऱ्कु–इसका; कैम्माऱु यातु–प्रत्युपकार क्या है; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २६५

भगवान ने उससे यों कहा। हमने तुम्हारे पिता को तुम्हारे समक्ष ही मारा; उसके शरीर फाड़े और उसके रुधिर में हाथ डालकर टटोला। तब भी विना मन को शिथिल किए, हे अप्रमत्त धर्मचारी ! मुझ पर अगाध और अनन्त प्रेम रखा तुमने। हे दयनीय ! हे मेरे तात ! अब इस (प्रेम का) प्रतिकार क्या करूँ ? । २९५

अयिरा विमैप्पित्तैयो रायिरङ्गू ऱिट्ट
शॅयिरि नीरुपॉऴुदि नुन्दैयैयाऩ् जीऱि
उयिर्नेडु वेम्बो लुडलळैयक् कण्डुम्
शॅयिर्शेरा वुऴ्ळत्तायक् कॅन्ऩिनियाऩ् जॅय्हेम् 296

ओर् इमैप्पित्तै–पलक मारने की देरी को; अयिरा–बालुकाकण मानकर; ओर् आयिरम् कूऱिट्ट–उसको सहस्र भागों में विभक्त कर; ओरु पॉऴुतिल्–उनमें एक भाग के समय में; उन्तैयै–तुम्हारे पिता का; चॅयिरित्–अपराध से; याम्–हम; चीऱि–गुस्सा करके; उयिर् नेट्टुवेम् पोल्–प्राण खोजते-जैसे; उटल् अळैय–शरीर के अन्दर रक्त में टटोला; कण्टुम्–देखकर भी; चॅयिर् चेरा–दुःखी न हुआ; उऴ्ळत्तायक्कु–ऐसे चित्त वाले तुम्हारे प्रति; इनि–अब; याम्–हम; ऍन् चॅय्केम्–क्या करेंगे। २९६

एक पल के सहस्रांश की देरी में मैंने तुम्हारे पिता के अपराध पर कुपित होकर उसके शरीर में रक्त-मध्य ऐसा हाथ टटोले, मानो उसके प्राण को खोज रहा होऊँ। तब भी तुम अपने मन में कोई दुःख का भाव नहीं लाए। ऐसी भक्ति के बदले में मैं क्या करूँ ? । २९६

कॉल्ले निऩियुन् गुलत्तोरैक् कुऱ्ऱङ्गळ्
ॲल्लै यिलादन शॅय्दारे यॅन्ड्रालुम्
नल्ले मुमक्कॅम्मै नाणामल् नाऩ्शॅय्व
दॉल्लै युळदे यियम्बुदिया लॅन्ऱुरैत्ताऩ् 297

उन् कुलत्तोरै–तुम्हारे कुल के लोगों को; ॲल्लै इलातन–अमाप; कुऱ्ऱङ्कळ्–अपराध; चॅय्तारे–करेंगे; ऍन्ऱालुम्–तो भी; कॉल्लेन्–नहीं मारेंगे; उमक्कु–तुम्हारे; ऍम्मै–सभी जन्मों में; नल्लेम्–हितू ही रहेंगे; नान्–मैं; चॅय्वतु उळते–करूँ ऐसा कुछ हो तो; नाणामल्–विना संकोच किए; ऑल्लै–शीघ्र; इयम्पुति–बताओ; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्तान्–नरसिंहदेव ने कहा। २९७

(भगवान ने वर दिया।) आगे तुम्हारे कुल में जनित लोगों को, चाहे वे असीम अपराध ही क्यों न करें, नहीं मारूँगा। हम सदा के लिए तुम्हारे हितू ही रहेंगे। अगर मेरा किया जा सकनेवाला कोई उपकार है तो निस्संकोच बताओ। नरसिंहदेव ने कहा। २९७

※मुन्‌बु पॅऱप्पॅऱ्ऱ पेऱो मुडिविल्लै
पिन्‌बु पॅऱुम्बेऱु मुण्डो पॅऱुहुवन्नेल्
ॲन्‌बु पॅऱाद इऴिपिऱवि यॅय्दिनुनिन्
अन्‌बु पॅऱुहै यरुम्बे ऱॅन्नक्कॅन्ऱान् 298

मुन्‌पु पॅऱ्‌–पहले ही प्राप्य के; पॅऱ्ऱ–प्राप्त; पेऱो–सौभाग्य; मुटिवु इल्लै–अनन्त हैं; पिन्‌पु–और भी; पॅऱुम् पेऱुम्–प्राप्य सौभाग्य; उण्टो–रहते हैं क्या; पॅऱुकुवन्नेल्–पाना ही चाहूँ तो; ॲन्‌पु पॅऱात–अस्थिहीन; इऴि पिऱवि–नीच (कीड़े आदि का) जन्म; ॲय्तिनुम्–प्राप्त करूँ तो भी; निन् अन्‌पु पॅऱुकै–आपका प्रेम प्राप्त करना; अरुम् पेऱु–अलभ्य सौभाग्य है; ॲन्नक्कु–मुझे; ॲन्ऱान्–कहा। २६८

उसके उत्तर में प्रह्लाद ने कहा, इसके पूर्व मैंने जो पाये हैं वे सौभाग्य ही अनन्त हैं। फिर क्या सौभाग्य है जिसकी मैं पाने की चाह करूँ? अगर किसी की चाह करूँ तो यही कि मैं हड्डी-रहित कीड़े-जैसे नीच जन्म लूँ, तब भी आपकी भक्ति करूँ, आपकी कृपा का पात्र रहूँ। वही परम-सौभाग्य है; प्राप्य वर है। २९८

※अन्नातै नोक्कि यरुळ्शुरन्द नॅञ्जिननाय्
ॲन्नातै वल्ल नॅन्नमहिऴ्न्द पेरीशन्
मुन्नात बूदङ्गळ् यावुमुडि वुऱ्ऱिडिनुम्
उन्ना ळुलवायनी यॅन्बो लुळैयॅन्ऱान् 299

अन्नातै नोक्कि–उसको देखकर; अरुळ् चुरन्त–करुणाप्रवाहपूर्ण; नॅञ्चिनताय्–मन वाले हो; ॲन् आतै–मेरा अपना (भक्त); वल्लन्–(ज्ञान-) समर्थ है; ॲन्न मकिऴ्न्त–ऐसा जो सन्तुष्ट हुए; पेर् ईचन्–विष्णु भगवान; मुन् आत–आदिसृष्ट; पूतङ्कळ् यावुम्–भूत सभी; मुटिवु उऱ्ऱिटिनुम्–समाप्त हो जाएँ तो भी; उन् नाळ्–तुम्हारी आयु; नी उलवाय्–(समाप्त नहीं होगी और) तुम नहीं मरोगे; ॲन् पोल्–मेरे समान; उळै–(अमर) रहोगे; ॲन्ऱान्–वर वचन कहे। २६६

ऐसे वरवरणकर्ता को देखकर भगवान का मन करुणा से उमड़ आया। उन्होंने साधुवाद दिया कि मेरा भक्त कितना बुद्धिसमर्थ है! संतुष्ट परम-पुरुष ने वर वचन कहा कि सभी पूर्वजनित भूत चाहे मिट जाएँ, तो भी तुम्हारी आयु समाप्त नहीं होगी और तुम नहीं मरोगे। तुम मेरे ही समान नित्य रहोगे। २९९

मिन्नैत् तॉऴुवळैत्त वॅन्न मिऴिरॉऴियाय्
मुन्नैत् तॉऴुम्बुन्नक्के यामन्ऱो मूवुलहुम्
ॲन्नैत् तॉऴुदेत्ति यॅय्वुम् बयनॅय्दि
उन्नैत् तॉऴुदेत्ति युयुह वुयिरॅल्लाम् 300

मिऩ्ऩै–बिजली को; तॊऴु–रेवती नक्षत्र ने; वळैत्ततु–आवृत कर लिया; ऎऩ्ऩ–जैसे; मिळिर् ऒळियाय्–चमकते तेजोमय; मू उलकुम्–तीनों लोक; मुऩ्ऩे–पहले ही; उऩक्के तॊऴुम्पु आम्–तुम्हारे दास हैं; अऩ्ऱो–न; उयिर् ऎल्लाम्–सारे जीव; ऎऩ्ऩै–मुझे; तॊऴुतु–प्रणाम कर; एत्ति–स्तुति करके; ऎय्तुम् पयऩ्–जो प्राप्य फल है वे फल; ऎय्ति–प्राप्त करके; उऩ्ऩै तॊऴुतु एत्ति–तुम्हारी पूजा, स्तुति करके; उय्क–उद्धार पा जाएँ। ३००

भगवान ने आगे कहा— रेवती नक्षत्र की प्रभा से आवृत बिजली की प्रभा के समान चमकनेवाली द्युतिवाले ! पहले ही तीनों लोक तुम्हारे दास हो गये न ! अब सारे जीव मेरी भक्ति, मेरा नमस्कार, पूजा और स्तुति करके जो फल पाएँगे वे ही फल तुम्हारी स्तुति से उन्हें प्राप्त करें। ('तॊऴु'— खम्भा भी है, पर खम्भे से बद्ध विद्युत् का कोई शालीन अर्थ नहीं लगता। रेवती प्रकाशमान नक्षत्र है। उससे घिरी बिजली अधिक द्युतिमती होगी —यह कल्पना भली लगती है।)। ३००

एऩवर्क्कु वेण्डि ऎळिदॊऩ्ऱो वॆऱ्कऩ्बर्
आऩवर्क्क मॆल्ला निऩक्कऩ्ब रायिऩार्
दाऩवर्क्कु वेन्दऩी यॆऩ्ऩऩ् दरत्तायो
वाऩवर्क्कु नीये यिऱैतॊल् मऱैवल्लोय् 301

तॊल् मऱै वल्लोय्–प्राचीन वेदों के समर्थ ज्ञाता; ऎऱ्कु अऩ्पर्–मेरे भक्त; आऩ वर्क्कम् ऎल्लाम्–जो हैं वे सारे वर्ग; निऩक्कु अऩ्पर्–तुम्हारे भी प्रेमी; आयिऩार्–हो गये; नी–तुम; दाऩवर्क्कु वेन्दऩ्–केवल दानवों के राजा; ऎऩ्ऩुम् तरत्तायो–कहने योग्य हो क्या; नीये–तुम्हीं; वाऩवर्क्कुम् इऱै–देवों के भी राजा होगे; एऩवर्क्कु–अन्यों के लिए; वेण्टिऩ्–(यह गौरव) चाहें तो; ऎळितु ऒऩ्ऱो–कोई सुलभ है क्या। ३०१

प्राचीन वेदों के समर्थ ज्ञानी ! मेरे सभी तरह के भक्त तुम्हारे भी प्रेमी हो गये। अब तुम केवल दानवों के राजा बने रहने अर्ह नहीं रह गये हो। तुम देवों के भी राजा हो। ऐसा गौरव फिर किसे, चाहने पर भी, प्राप्त होगा ?। ३०१

नल्लऱमुम् मॆय्म्मैयुम् नाऩ्मऱैयुम् नल्लरुळुम्
ऎल्लैयिऩ् ञाऩमु मीऱिला वॆप्पॊरुळुम्
तॊल्लैशा लॆण्गुणऩुम् निऩ्ऱॊर् ऱॊऴिल्शॆय्ह
वल्लवुरु वॊळियाय् नाऩा वळर्हनी 302

वल्ल उरु ऒळियाय्–श्रेष्ठ शारीरिक तेजोमय; नल् अऱमुम्–सद्धर्माचरण; मॆय्म्मैयुम्–सत्यपालन; नाल् मऱैयुम्–चतुर्वेद; नल् अरुळुम्–हितकारिणी कृपा; ऎल्लैयिल् ञाऩमुम्–असीम ज्ञान; ईऱु इला ऎ पॊरुळुम्–अनन्त सभी विषय; तॊल्लै चाल्–प्राचीनता के गौरव वाले; ऎण् कुणऩुम्–आठों श्रेष्ठ गुण; निऩ्ऱु चॊल्–

तुम्हारी आज्ञा के अनुसार; तोळिल् चॅय्क-सेवा करें; नाता वळर्क-'मैं' ही बने पलो; नी-तुम । ३०२

प्रभावी तेजोमय शरीरवाले ! श्रेष्ठ धर्म, सत्य, चतुर्वेद, अच्छी कृपा, अनन्त ज्ञान, अनन्त सभी पुरुषार्थ और प्राचीन गुणाष्टक तुम्हारे आज्ञाकारी रहें। [गुणाष्टक— शैवसिद्धांत के अनुसार : स्ववशत्व, पवित्र शरीर, प्रकृतज्ञान, सर्वज्ञता, अपाशबद्धता, अनन्त कृपा, अनन्त शक्ति, अपार आनन्दमयता; वैष्णव : सौलभ्य, सौशील्य, वात्सल्य, स्वामीत्व, ज्ञान, शक्ति, प्राप्ति और पूर्ति। और एक धारणा है जिसके अनुसार जीव को विष्णुलोक (या विष्णुत्व-) प्राप्ति के पहले "गुणाष्टक प्रादुर्भाव" होता है जिसके अनुसार जीवात्मा अपहृतपाप्मा, विजरः, विमृत्युः, विशोकः, विजिघत्सः, अर्थात् भूख से रहित, अपिपासः, सत्यकामः और सत्यसंकल्पः हो जाता है।] । ३०२

ऍन्ऱु वरमरुळि यॅव्वुलहुम् कैहूप्प, मुन्ऱिल् मुरश मुळङ्ग मुडिशूट्ट
निन्ऱ वमर रनैवीरु नेर्न्दिवनुक्, कॊन्ऱु पॅरुमै युरिमै पुरिहॅन्ऱान् 303

ऍन्ऱु-ऐसा; वरम् अरुळि-वर प्रदान करके; ऍ उलकुम्-सारे लोकों के; कै कूप्प-हाथ जोड़ते; मुन्ऱिल्-राजद्वार पर; मुरचम् मुळक्क-त्रिविध भेरियों के बजते; मुटि चूट्ट-मुकुट पहना लूं; निन्ऱ अमरर्-यहाँ रहनेवाले देव; अनैवीरुम्-तुम सभी; नेर्न्तु-सहमति से; इवनुक्कु ऑन्ऱु-इसके योग्य; पॅरुमै उरिमै-गौरवदायी और स्वत्व के कार्य; पुरिक-करो; ऍन्ऱान्-(नरसिंहदेव ने) कहा । ३०३

भगवान ने प्रह्लाद को यह वर देकर वहाँ स्थित देवों से कहा कि हे, इधर स्थित देवो ! सारे लोक उसका प्रणाम करें; महल के राजद्वार में त्रिविध (विजयभेरी, वीरभेरी या विवाहभेरी और दानभेरी) भेरियाँ बजें। इस साज के साथ मैं प्रह्लाद को मुकुट पहनाना चाहता हूँ। तुम सब मिलकर चाव के साथ, जो इसके योग्य गौरव के परिचायक श्रेष्ठ कार्य हैं उन्हें साधो । ३०३

तेम नुरिमै पुरियत् तिशैमुहत्तोन्, ओम मियऱ्ऱ वुडैयान् मुडिशूट्टक्
कोमन् नवनाहि मूवुलहुङ् गैक्कॊण्डान्, नाम मऱैयोदा दोदि नतियुयर्न्दान् 304

तेमन्-(देवों) और देवराजा ने; उरिमै पुरिय-उचित सेवाएँ कीं; तिशै मुकत्तोन्-दिशामुख ब्रह्मा के; ओमम् इयऱ्ऱ-होमकर्म करते; उडैयान्-स्वामी के; मुटि चूट्ट-मुकुट पहनाते; को मन्नवनाकि-राजाधिराज बनकर; नामम् मऱै-प्रकीर्तित वेदों के; ओतातु ओति-अध्ययन किए विना ही ज्ञानी बना; नति उयर्न्तान्-जो सम्मान्य बन गया था; मू उलकुम् कै कॊण्टान्-(उसने) तीनों लोकों को अपने अधीन कर लिया । ३०४

उनकी आज्ञा के अनुसार देव और देवेन्द्र आवश्यक कार्य में जुट गये। दिशामुख ब्रह्मा होम आदि वैदिकी कर्म में लगे। स्वामी नरसिंहदेव ने

स्वयं मुकुट पहना दिया। इस भाँति प्रह्लाद ने, जो प्रकीर्तित वेदों के अध्ययन किये विना ही उन्हें जान गया और श्रेष्ठ ज्ञानी बन गया था, तीनों लोकों को अपने अधीन कर लिया। ३०४

❀ ईदाहु मुन्निहळ्न्द दॆम्बॆरुमा ऎन्मार्ऱम्
यादानु माह निनैया दिहळ्दियेल
तीदाय् विळैदल्नऩ्ऱि तिण्णमॆनच् चॆप्पिनान्
मेदावि हट्कॆल्लाम् मेलान मेन्मैयान् 305

मेताविकट्कु ऎल्लाम्–सभी मेधावियों से बढ़कर; मेलान मेन्मैयान्–उन्नत गौरववान विभीषण ने; ऎम् पॆरुमान्–हमारे प्रभु; मुन् निकळ्न्ततु–पहले जो हुआ; ईताकुम्–यही है; ऎन् मार्ऱम्–मेरा वार्तालाप; यातानुम् आक–कुछ (अर्थ रखता) है ऐसा; निनैयातु–न सोचकर; इकळ्तियेल्–उपेक्षा करेंगे तो; तीताय्–हानि हो; विळैतल्–रहेगी; नऩ्ऱि तिण्णम्–बहुत निश्चित है; ऎऩ–ऐसा; चॆप्पिनान्–कहा। ३०५

मेधावियों में सर्वोत्कृष्ट महापुरुष विभीषण ने रावण से कहा कि हमारे प्रभु! यही पहले हुआ वृत्तांत है। मेरा यह वार्तालाप भी कुछ अर्थ रखता है—ऐसा न मानकर मेरा कहा उपेक्षित व अनसुनी करेंगे तो नाश निश्चित है। ३०५

4. वीडण ऩडैक्कलप् पडलम् (विभीषण-शरणागति पटल)

❀ केट्टन निरुन्दुमक् केळ्वि दैवियिऱ्
कोट्टिय शिन्दैया लुऱ्ऱिद कॊण्डिलन्
मूट्टिय तीयॆन मुडुहिप् पॊङ्गिनान्
ऊट्टरक् कूट्टिय वनैय शॆङ्गणान् 306

केट्टनन्–सुनता; इरुन्तुम्–रहा तो भी; अ केळ्वि–उस सुनी बात से; तेवियिल् कोट्टिय–देवी सीता के कारण विकृत; चिन्तैयाल्–मन के कारण; उऱ्ऱति–हित की बात; कॊण्टिलन्–नहीं ली; ऊट्टु अरक्कु ऊट्टिय–रंजनयोग्य लाक्षारसभुक्त; अनैय चॆम् कणान्–जैसे लाल आँख वाला बनकर; मूट्टिय ती ऎन–प्रज्वलित आग के समान; मुटुकि पॊङ्किनान्–क्रुद्ध हो उबल पड़ा। ३०६

रावण विभीषण की बात ध्यान से सुनता रहा। फिर भी सीता के प्रति मोह के कारण बुद्धि विकृत हो गयी थी। इसलिए उसमें अपना हित नहीं देख सका। उसकी आँखें लाक्षारसरंजित-सी लाल हो गयीं। उसमें क्रोध उठा और वह उबल पड़ा। ३०६

❀ इरणिय ऩॆन्बव ऩॆम्मु ऩोरिनुम्, मुरणिय ऩवन्ऱनै मुरुक्कि मुऱ्ऱिनान्
अरणिय ऩॆन्ऱवऩ् कन्बु पूण्डनै, मरणमॆन् ऱॊरुपॊरुण मार्ऱुम् वन्मैयोय् 307

वन्मैयोय्–साहसपूर्ण; इरणियन् अॅन्पवन्–हिरण्य नाम का वह; अॅम् मुत्तोरित्तुम्–हमारे पूर्वजों से भी अधिक; मुरणियन्–ताक़तवर था; अरणियन्–सर्वलोकशरण्य (भगवान) ने; अवन् तत्तै–उसको; मुरुक्कि मुड्रित्तान्–मारकर मिटाया; अॅन्ड्रु–ऐसा सोचकर; अवर्कु अन्पु पूण्टत्तै–उससे प्रेम करते हो; मरणम् अॅन्नुम् ओरु पोरुळ्–मरण नाम की एक वस्तु; माड्रुम्–(धैर्य को) बदल देगी। ३०७

रावण ने विभीषण को 'समर्थ !' कहकर संबोधित किया और कहा— "हिरण्य हमारे पूर्वजों से बढ़कर बलवान था और उसका भी सर्वलोकशरण्य ने नाश कर दिया। यह सोचकर तुम उससे (श्रीराम से) भक्ति करने लग गये क्या ? मृत्यु किसी भी तरह के बल का अन्त कर सकती है !" (इस पद्य में मृत्यु को बदलनेवाले या मृत्यु से बचनेवाले सामर्थ्यवान ! का अर्थ बनाया जा सकता है और वह विभीषण का विशेषण होगा। 'अरण्य' शब्द शरण्य का अपभ्रंश रूप है। उसका 'अरण्यवासी' अर्थ भी लगाया जा सकता है। तमिळ परिपाटी में 'तिरुमाल' या विष्णु 'मुल्लै' प्रदेश के देवता हैं। 'मुल्लै' का अर्थ 'वन' भी है।)। ३०७

❀ आयवन् पयन्ददन् उडलै याहत्तै
मायवन् पिळन्दिड महिळ्न्द मैन्दनुम्
एयुम्नम् पहैञनुक् किनिय वन्बुशॅय्
नीयुमे निहर्पिड्र् निहर्क्क नेर्वरो 308

आयवन्–वैसे; पयन्त–जनक; तन् तातै आकत्तै–अपने पिता के शरीर को; मायवन् पिळन्तिट–मायावी (विष्णु) के फाड़ने पर; मकिळ्न्त–जो मुदित हुआ; मैन्तनुम्–वह उसका पुत्र प्रह्लाद और; एयुम् नम् पकैजनुक्कु–हो गये हमारे शत्रु के प्रति; इनिय अन्पु चॅय्–मधुर प्रेम करनेवाले; नीयुमे निकर्–तुम दोनों ही परस्पर समान हैं; पिड्र्–और कोई अन्य; निकर्क्क नेर्वरो–समान बनने अर्ह होंगे क्या। ३०८

ऐसे अपने ही जनक के शरीर को मायावी द्वारा चीरा गया देखकर हिरण्यपुत्र प्रह्लाद आनन्द कर रहा था। अपने वैरियों से तुम मधुर प्रेम का भाव रखते हो ! तुम दोनों परस्पर समान हो ! और कौन तुम्हारी समानता करने अर्ह होंगे ? । ३०८

❀ पाळिशा लिरणियन् पुदल्वन् पण्बॅनच्
चूळ्विनै मुड्रिया नवर्क्कुत् तोड्रपिन्
एळैनी यॅन्पॅरुज् जॅल्व मॅय्दिप्पिन्
वाळ्वो मदित्तनै वरवड् राहुमो 309

पाळिशाल्–बलशाली; इरणियन् पुतल्वन्–हिरण्य के पुत्र के; पण्पु अॅन्त–स्वभाव के समान; चूळ्वितै मुड्रि–तुम्हारा सोचा हुआ कार्य पूरा होने पर; यान्

अवर्क्कु–मेरे उससे; तोट्रपिन्–हार जाने के बाद; एळै–दीन; नी–तुमने; ॲन् पॆरुम् चॆल्वम्–मेरा अपार धन; ॲय्दि–प्राप्त करके; पिन्–तदनन्तर; वाऴ्वो–जीना; मतित्तनै–सोचा क्या; वरवट्रु आकुमो–हो सकनेवाला है क्या। ३०९

बलशाली हिरण्य के पुत्र की प्रकृति जैसी थी, वैसी ही तुम्हारी है। तुम्हारा गूढ़ अभिप्राय सफल होगा तो मैं राम-लक्ष्मण से हार जाऊँ और दीन तुम मेरी विपुल सम्पत्ति को हथिया लेकर सुख से जियो–यही सोच रहे हो न? क्या वह सम्भव भी हो सकेगा? । ३०९

❀ मुन्बुरु वनैयर्पा नण्बु मुट्रिनै, वन्बहै मनिदरिन् वैत्त वन्बिनै
ॲन्बुरु वुरुहुदि यिरङ्गि येत्तुदि, उन्बुह लवर्पिरि दुरैक्क वेण्डुमो 310

मुन्पु–पहले ही; उरवु अनैयर्–बन्धुओं के समान; पाल्–उनके (श्रीराम-लक्ष्मण के) प्रति; नण्पु मुट्रिनै–मित्रता बढ़ा ली तुमने; वल्पकै–क्रूर शत्रु; मतितरिन्–उन मनुष्यों के समान; वैत्त वन्पिनै–(हमारे प्रति) रखे हुए विरोध के (विरोधी) हो; ॲन्पुर उरुकुति–हड्डियाँ भी पिघल जाएँ, इतना द्रवीभूत होते हो; इरङ्कि एत्तुति–प्रस्तुति करते हो; ॲनवे–इसलिए; उन् पुकल्–तुम्हारे रक्षक होंगे; अवर्–वे; पिरितु–और कुछ; उरैक्क वेण्टुमो–कहना चाहिए क्या। ३१०

तुमने पहले ही से वन्धुवत् राम-लक्ष्मण पर प्रेम बढ़ा लिया है! और हमारे लोगों के प्रति उन्हीं मनुष्यों का-सा वैर रखते हो! उनकी बात सोचते हो तो तुम्हारी हड्डी तक पिघल जाती है और तुम्हारा मन पसीज उठता है! तुम उनकी संस्तुति करते हो! वे तुम्हारे शरण्य हैं। फिर क्या है कहने को? । ३१०

नण्णिन मनिदरै नण्बु पूण्डनै, ॲण्णिनै शॆय्विनै यॆन्नै वॆल्लुमा
ऱुण्णिनैन् दरशिन्मे लाशै यून्ऱिनै, तिण्णिदुन् शॆयल्पिरर्-शॆरुनर् वेण्डुमो 311

नण्णित मतितरै–जो (शत्रु बनकर) पास आये, उन नरों से; नण्पु पूण्टनै–मित्रता बना ली; चॆय् वितै–करने योग्य काम; ॲण्णितै–खूब सोच लिया; ॲन्नै वॆल्लुम् आऱु–मुझे जीतने का मार्ग; उळ् नितैन्तु–मन में सोचकर; अरचिन् मेल्–राज्य पर; आचै ऊन्ऱिनै–लिप्सा गम्भीर रूप से रख ली; उन् चॆयल्–तुम्हारा कार्य; तिण्णितु–सुदृढ़ (फलदायी) है; चॆरुनर् पिऱर् वेण्टुमो–और कोई शत्रु (मेरे विनाश के लिए) चाहिए क्या। ३११

जो मेरे शत्रु होकर हमारे पास आये हैं, उनके साथ तुमने मित्रता कर ली। अपने लाभ की बात तुमने खूब सोच ली है। मुझे जीतने का उपाय मन ही मन बनाकर तुमने राज्य पर आँख लगायी है। तुम्हारा काम सुदृढ़ है। फिर मेरी हानि के लिए और शत्रु चाहिए क्या? । ३११

अऩ्ऱु वानरम् मणिमलर्क् काविऩै यऴिक्कक्
कॊऩ्ऱु तिऩ्ऱिडु मिऩ्ऱॆऩत् तूदरैक् कोऱल्
वॆऩ्ऱि यऩ्ऱॆऩ विलक्किऩै मेल्विळै वॆण्णित्
तुऩ्ऱु तारवरत् तुणैयॆऩक् कोडले तुणिन्दाय् 312

अऩ्ऱु–उस दिन; वानरम्–वानर के; मणिमलर् काविऩै–सुन्दर पुष्पोद्यान को; अऴिक्क–नाश करने पर; कॊऩ्ऱु तिऩ्ऱिडुमिऩ्–मारकर खा लो; ऍऩ–जब मैंने कहा; तूतरै कोऱल्–दूतों को मारना; वॆऩ्ऱि अऩ्ऱु–विजय (का काम) नहीं; ऍऩ–कहकर; मेल् विळैवु–आगे का नतीजा; ऍण्णि–विचार कर; विलक्किऩै–तुमने रोका था; तुऩ्ऱु तारवर्–घनी पुष्पमालाधारी को; तुणै ऍऩ कोटले–सहायक बना लेने को; तुणिन्ताय्–ठाना है। ३१२

कुछ दिन पहले, उस दिन, एक वानर ने आकर हमारे मनोरम पुष्पोद्यान का नाश किया और मैंने आज्ञा दी कि उसे मारकर खा जाओ। पर तुमने यह कहा कि दूतों का हनन विजय का उपाय नहीं; और आगे के नतीजों को सोचकर मुझे रोक दिया। उसी सिलसिले में तुमने घनी पुष्पमालाधारी नरों को सहायक बना लेने को ठाना है!। ३१२

अञ्जिऩै यादलि ऩमर्क्कु माळलै, तञ्जॆऩ मऩिदर्पाल् वैत्त शार्बिऩै
वञ्जऩै मऩत्तिऩै पिऱप्पु माऱिऩै, नञ्जिऩै युडऩ्गॊंडु वाऴ्द नऩ्ऱरो 313

अञ्चिऩै–डरे हुए हो; आतलिऩ्–इसलिए; अमर्क्कुम् आळलै–युद्ध के लिए योग्य पुरुष नहीं हो; तञ्चु ऍऩ–शरण के रूप में; मऩितर्पाल् वैत्त–नरों के प्रति रखे हुए; चार्पिऩै–पक्षपात वाले हो; वञ्चऩै मऩत्तिऩै–कपटी मन वाले हो; पिऱप्पु माऱिऩै–जाती छोड़ चुके हो; नञ्चिऩै–विष को; उटऩ् कॊंटु–साथ रखकर; वाऴ्तल्–जीवन बिताना; नऩ्ऱु–बेहतर है; अरो–रे। ३१३

तुम तो भीरु हो, अतः युद्धयोग्य नहीं रह गये हो। मानवों को शरण्य बना चुके हो। कपटी मन के हो और कुलाचार से हट गये हो। इसलिए तुम्हारे सहवास की अपेक्षा विष के साथ जीवन बिताना अधिक अच्छा है (या विष के समान तुमसे सहवास करना अच्छा है क्या?)। ३१३

❀पऴियिऩै युणर्न्दियाऩ् पडुक्कि लेऩुऩै
ऑऴिहिलै पुहलुद लॊल्लै येहुदि
विऴियॆदिर् निऱ्ऱियेल् विळिदि यॆऩ्ऱरऩ्
अऴिविऩै यॆय्दुवा ऩ़रिवु नीङ्गिऩाऩ् 314

पऴियिऩै उणर्न्तु–निन्दा का विचार कर; याऩ्–मैं; उऩै–तुम्हें; पटुक्किलेऩ्–नहीं मारता; पुकलुतल्–बकवास; ऑऴिकिलै–नहीं छोड़ते; ऑल्लै एकुति–शीघ्र चले जाओ; विऴि ऍतिर्–दृष्टि के सामने; निऱ्ऱियेल्–खड़े रहोगे

तो; विळिति–मर जाओगे; ॲन्ऱत्तन्–कहा; अऴिवित्तै ॲय्तुवान्–जो नाश को प्राप्त होने निमित्त; अऱिवु नीक्कितान्–बुद्धि खो चुका था उसने। ३१४

तुम्हें मार दूँ तो निन्दा होगी। इसीलिए मैं तुम्हें नहीं मारता। बकवास करने से बाज़ नहीं आते। इसलिए तुरत हट जाओ। समक्ष खड़े रहोगे तो मर जाओगे। रावण ने सक्रोध यह वचन कहा। "विनाश-काले विपरीत बुद्धिः" उसकी हो गयी थी। ३१४

❀ ॲन्ऱलु मिळवलु मॅऴुन्दु वानिडैच्
चॆन्ऱनन् ऱुणवरुन् दानुज जिन्दिया
निन्ऱनन् पिन्नरु नीदि शान्ऱन
ऒन्ऱल पलप्पल वुरुदि योदिनान् 315

ॲन्ऱलुम्–कहते ही; इळवलुम्–छोटे भ्राता ने; चिन्तिया–विचार कर; तुणवरुम् तानुम् ॲऴुन्तु–साथी और स्वयं उठकर; वानिटै–आकाश में; चॆन्ऱनन् निन्ऱनन्–जाकर स्थित हो; पिन्नरुम्–फिर भी; नीति शान्ऱन–नीति-परक; ऒन्ऱु अल–एक नहीं; पल पल–अनेक-अनेक; उऱुति–हित-वचन; ओतिनान्–कहे। ३१५

रावण के ऐसा कहते ही उसका छोटा भाई विभीषण उठा। होनी का विचार कर अपने साथियों के साथ आकाश में जा खड़ा हुआ। और भी रावण को समझाने लगा। नीतिसम्मत एक नहीं, अनेक-अनेक हित की बातें कहीं। (उसने क्या कहा?)। ३१५

वाऴियाय् केट्टियाल् वाऴ्वु कैम्मिह
ऊऴिकाण् गुरुनिन्न दुयिरै योर्हिलाय्
कीऴ्मैयोर् शॊर्कॊडु कॅडुद नेर्दियो
वाऴ्मैदा नऱम्पिऴैत् तवर्क्कु वाय्क्कुमो 316

वाऴियाय्–जिजीविषु; केट्टि–सुनो; वाऴ्वु–(सुखमय) जीवन; कै मिक–बढ़े; ऊऴि काण्कुऱु–युग-युग तक रहने योग्य; निन्नतु उयिरै–अपने प्राणों की; ओर्किलाय्–चिन्ता नहीं करते; कीऴ्मैयोर्–क्षुद्रों का; चॊल् कॊटु–कहा मानकर; कॅटुतल्–हानि; नेर्तियो–करा लेंगे क्या; वाऴ्मै तान्–(सुखी) जीवन तो; अऱम् पिऴैत्तवर्क्कु–धर्मविमुखों को; वाय्क्कुमो–मिलेगा क्या। ३१६

हे जिजीविषु! सुनिए। सुखमय जीवन समृद्ध हो और आपके प्राण युग-युग तक अक्षुण्ण रहें—इसकी चिन्ता नहीं करते। क्षुद्र लोगों की बातों में आकर विनाश के वश में आएँगे? धर्मविमुखों को सुखी जीवन प्राप्त हो सकता है क्या?। ३१६

❀ पुत्तिरर् कुरुक्कळिन् पॊरुविल् कॆण्मैयर्
मित्तिर रडैन्दुळोर् मॅलियर् वन्मैयोर्

इत्तनै पेरैयु मिरामन् वॅञ्जरम्
चित्तिर वदैशॅयक् कण्डु तीर्दियो 317

पुत्तिरर्–आपके पुत्र; कुरुक्कळ्–गुरु लोग; पौरुविल् केण्मैयर्–अनुपम बन्धु-बान्धव; मित्तिरर्–मित्र; अदैन्तुळोर्–आपके आश्रय में आगत; मॅलियर्–निर्बल; वन्मैयोर्–सबल; इत्तनै पेरैयुम्–इतने लोगों को भी; इरामन् वॅम् चरम्–श्रीराम का दाहक शर; चित्तिर वतम्–बुरी तरह से वध; चॅय कण्ट तीर्तियो–करेगा, वह देखकर ही दम लेंगे क्या या वह देख अपने प्राण भी छोड़ देंगे क्या। ३१७

आपके पुत्र, गुरु लोग, अनुपम बन्धु-बान्धव, मित्र और आपके आश्रय में आगत लोग जिनमें दुर्बल भी हैं, सबल भी —इन सभी को श्रीराम का संतापक शर बुरी तरह से मार डालेगा। क्या उसको होते देखकर मरेंगे ? (चित्तिर वतै— अनेक तरह की यातनाएँ देकर, अनेक भयंकर और असह्य यातना देनेवाले उपायों द्वारा मारना)। ३१७

※ ऍत्तुणै वहैयिनु मुरुदि यॅय्दिन, ऑत्तन वुणर्त्तिनै नुणर हिर्रिलै
अत्तवॅन् बिळैपॊरुत् तरुळु वायॅना, उत्तम नन्नह रौळियप् पोयिनान् 318

ऍत्तुणै वकैयित्तुम्–कितने ही प्रकार के; उरुति ऍय्तिन–हितकारी; ऑत्तन–और नीतिसम्मत विषय; उणर्त्तिनेन्–समझाए; उणर किर्रिलै–समझते नहीं; अत्त–तात; ऍन् पिळै–मेरा अपराध; पॊरुत्तु–क्षमा कर; अरुळ्वाय्–कृपा कीजिए; ऍन्ना–ऐसा कहकर; उत्तमन्–उत्तम· विभीषण; अन्नकर् ऑळिय–उस नगर को छोड़कर; पोयिनान्–चला गया। ३१८

मैंने कितने ही प्रकार से हितकारी और नीतिसम्मत अच्छे विषय समझाए, पर आप समझते नहीं। मेरे तात ! मेरा अपराध क्षमा करने की कृपा करें। यह कहकर उत्तम गुणी विभीषण उस नगर को त्यागकर चला गया। ३१८

अनलनु मनिलनु मरन्शम् बादियुम्, विनैयवर् नाल्वरुम् विरैविन् वन्दनर्
कनैहळर् कालिनर् करुमच् चूळ्च्चियर्, इनैवरुम् वीडण नोडु मेयिनार् 319

कनैकळल् कालितर्–क्वणनशील पायल से अलंकृत पैर वाले; करुम चूळ्च्चियर्–कार्य-कुशल; वितैयवर्–सत्कार्यशील; अनलनुम् अनिलनुम्–अनल और अनिल; अरन् चम्पातियुम्–हर और सम्पाती; इनैवरुम्–दुःखी; वीटणनोटुम् एयिनार्–विभीषण के साथ मिले रहे। ३१९

दुःख के साथ जानेवाले उसके साथ क्वणनशील पायलधारी कार्य-कुशल और कार्यशील, अनल, अनिल, हर और संपाती नाम के चार अमात्य भी गये। ३१९

अरक्कत्तु माड्गणो रमैच्चर् नाल्वरुम्
कुरक्किनत् तवरीड्डु मनिदर् कॊळ्ळैनीर्क्
करैक्कणवन् दिरुत्तन रॆन्ऱ्र कालैयिल्
पॊरुक्कॆन वॆळ्ळुदुमॆन् ऱॆण्णिप् पोयिनार् 320

आङ्कण्–वहाँ; अरक्कतुम्–राक्षस विभीषण और; ओर् अमैच्चर् नाल्वरुम्–अमात्य चारों; कुरक्कु इनत्तवरोटु–वानरसमूह के साथ; मनितर्–मानुष (श्रीराम और लक्ष्मण); कॊळ्ळै नीर्–बड़े जलाशय (समुद्र) के; करैकण्–तीर पर; वन्तु इरुत्तनर्–आकर ठहरे हुए हैं; ऎन्ऱ कालैयिल्–ऐसे समय में; पॊरुक्कॆन ऎळ्ळुतुम्–झट पहुँच जाएँगे; ऎन्ऱु ऎण्णि–ऐसा सोचकर; पोयिनार्–गये। ३२०

तभी उन्होंने सुना कि वानर-वर्ग के साथ नर श्रीराम और लक्ष्मण विपुल जलाशय सागर के तीर पर आ ठहरे हैं। यह सुनकर विभीषण और उसके सर्वश्रेष्ठ चारों अमात्यों ने सोचा कि हम झट वहाँ जाएँ। वे जल्दी चले। ३२०

अळक्करैक् कडन्दुमे लऱिन्द नम्बियुम्
विळक्कॊळि परत्तलिऱ् पालिन् वॆण्गडल्
वळत्तडन् दामरै मलर्न्द दामॆनक्
कळप्पॆरुन् दानैयैक् कण्णि नोक्किनान् 321

मेल् अऱिन्त–दीर्घदर्शी; नम्पियुम्–राक्षसश्रेष्ठ ने; अळक्करै कटन्तु–समुद्र को पार करके; विळक्कु ऒळि–दीपकों का प्रकाश; परत्तलिल्–फैला रहा इसलिए; वॆण् पालिन् कटल्–श्वेत क्षीर के सागर ने; वळ तट–समृद्ध, विशाल; तामरै मलर्न्ततु आम्–कमल विकसित कराये हों; ऎन–जैसे; कळम्–युद्धभूमि में रहनेवाली; पॆरु तानैयै–बड़ी (वानर-) सेना को; कण्णिन् नोक्किनान्–अपनी आँखों से देखा। ३२१

विभीषण दीर्घदर्शी था। उसे भान हुआ कि आगे क्या होगा। वह सागर पार कर इस ओर आया। सेना के पड़ाव में दीप जल रहे थे। इसलिए सेना विकसित कमलपुष्पों-सहित क्षीरसागर का-सा दृश्य उपस्थित कर रही थी। उसने उस विपुल सेना को देखा। ३२१

ऊनुडै युडम्बिन वुयिर्हळ् यावैयुम्
एनैय ऒरुतलै निऱुत्ति यॆण्णिनाल्
वानरम् बॆरिदॆन मऱुविल् शिन्दैयान्
तूनिऱ्च् चुडुपडैत् तुणैवर्च् चॊल्लिनान् 322

ऊन् उटै उटम्पिन–मांस-शरीर वाले; उयिर्कळ् यावैयुम्–सभी जीवों को; एनैय–अन्य वानरों को; ऒरु तलै निऱुत्ति–एक (एक) ओर खड़ा रखकर; ऎण्णिनाल्–गिनें तो; वानरम् पॆरितु–वानरों की संख्या बड़ी है; ऎन–ऐसा;

मऱु इल् चिन्तैयान्–अकलुषमन विभीषण ने; तूनिऱम्–मांसयुक्त; चुट्टु पटै–दाहक अस्त्र रखनेवाले; तुणैवर्–अपने साथियों से; चॊल्लिनान्–कहा। ३२२

विभीषण अकलुष-मन था। उसने अपने मांसयुक्त उज्ज्वल घातक हथियारधारी अपने अमात्यों से कहा कि एक ओर मांसल शरीर वाले अन्य जीवों को और दूसरी ओर इन वानरों को खड़ा करके गिनो तो वानरों की संख्या ही अधिक होगी। ३२२

अऱन्दलै निन्ऱवर् कन्बु पूण्डनॆन्
मऱन्दुनन् पुहऴलाल् वाऴ्वु वेण्डलॆन्
पिऱन्दवॆन् नुऱुदिनी पिडिक्क लायॆनात्
तुऱन्दनॆ निनिच्चॆयल् शॊल्लु वीरॆन्ऱान् 323

अऱम् तलै निन्ऱवर्कु–धर्मपरायण श्रीराम से; अन्पु पूण्डनॆन्–प्रेम पाला है; नन् पुकऴलाल्–अच्छी कीर्ति (के जीवन) को छोड़; मऱन्तुम्–भूलकर भी; वाऴ्वु वेण्टलॆन्–(अपयश का) जीवन नहीं चाहूँगा; पिऱन्त नी–(मेरे सहोदर के रूप में) जनमे तुम; ऎन् उऱुति पिटिक्कलाय्–मेरा निर्णय नहीं मानते; ऎना–ऐसा (मेरे भाई रावण के) कहने से; तुऱन्तनॆन्–त्याग आया; इनि–आगे; चॆयल्–कार्य; चॊल्लुवीर्–बताओ; ऎन्ऱान्–विभीषण ने पूछा। ३२३

उसने आगे कहा कि मैं धर्मपरायण श्रीराम की भक्ति करता हूँ। सुयशपूर्ण जीवन को छोड़ कुकीर्तियुक्त जीवन भूलकर भी जीना नहीं चाहता। मेरे भाई मुझसे कहते हैं कि तुम मेरे सहोदर हो पर मेरा निर्णय मानते नहीं। उन्होंने मुझे हटा दिया। मैं भी उन्हें त्याग आ चुका हूँ। अब तुम कहो कि आगे क्या किया जाय? । ३२३

माट्चियि नमैन्ददु वेऱु मऱ्ऱिलै
ताट्चियिऱ् पॊरुडरुन् दरुम मूर्त्तियैक्
काट्चिये यिनिक्कड नॆन्ऱु कल्विशाल्
शूट्चियिन् किऴवर्हऴ् तुणिन्दु शॊल्लिनार् 324

ताट्चि इल्–किसी विध की क्षुद्रता से रहित; पॊरुळ्–अर्थों को; तरुम्–देनेवाले; तरुम मूर्त्तियै–धर्मरूप श्रीराम के; काट्चिये–दर्शन करना ही; इनि कटन्–अब कर्तव्य है; माट्चियिन् अमैन्ततु–गौरवमय भी होगा; मऱ्ऱु–अन्य; वेऱु इलै–दूसरा नहीं; ऎन्ऱु–ऐसा; कल्वि चाल्–विद्यासम्पन्न; चूट्चियिन् किऴवरुम्–मन्त्रणा के अधिकारी मन्त्रियों ने भी; तुणिन्तु–दृढ़ रूप से; चॊल्लिनार्–कहा। ३२४

अमात्यों ने कहा— अक्षुद्र पुरुषार्थ देनेवाले हैं श्रीराम। उनके दर्शन करना ही अब हमारा कर्तव्य है। वही महत्त्व का भी काम है और कोई काम नहीं। यह उन्होंने सुदृढ़ रूप से कहा। ३२४

नल्लदु शॊल्लिनीर् नामुम् वेरिनि, अल्लदु शॆय्दुमे लरक्क राहुदुम्
ऎल्लैयिल् पॆरुङ्गुणत् तिरामन् राळिणै, पुल्लुदुम् पुल्लिय पिऱवि पोहवे 325

नल्लतु चॊल्लितीर्–अच्छा कहा तुमने; नामुम्–हम भी; इति–अब; अल्लतु वेऱु–इससे अन्य दूसरा काम; चॆय्तु मेल्–करेंगे तो; अरक्कर् आकुतुम्–राक्षस हो जाएँगे; ऎल्लैयिल्–अनन्त; पॆरु कुणत्तु–उत्तम गुणों से पूर्ण; इरामन् ताळिणै–श्रीराम के श्रीचरणद्वय से; पुल्लिय पिऱवि पोक–मिला यह जन्म मिटाने; पुल्लुतुम्–लग जाएँगे। ३२५

विभीषण ने उत्साह के साथ कहा कि तुम लोगों ने अच्छी बात कही। अगर हम और कोई काम करें तो यह निश्चय ही राक्षसोचित काम ही रहेगा और हम सचमुच राक्षस माने जाएँगे। इसलिए अनंत और उत्तम कल्याण-गुण-गणपूर्ण श्रीराम के चरणों से लग जाएँगे और अपना जन्म-रोग दूर कर लेंगे। ३२५

मुन्बुऱक् कण्डिलेन् केळ्वि मुन्बिलेन्, अन्बुऱक् कारण मऱिय हिऱ्ऱिलेन्
ऎन्बुऱक् कुळिरुनॆञ् जुरुहु मेलवन्, पुन्बुलैप् पिऱवियिन् पहैञन् पोलुमाल् 326

मुन्पु उऱ–पहले; कण्टिलेन्–मैंने उन्हें नहीं देखा है; केळ्वि–सुना भी; मुन्पिलेन्–पहले नहीं है; अन्पु उऱ–प्रेम करने का; कारणम्–हेतु; अऱिय किऱ्ऱिलेन्–जान नहीं पाता; अन्पु उऱ–हड्डी तक; कुळिरुम्–शीतल बन जाती; नॆञ्चु उरुकुम् एल्–मन भी पिघलता है, अतः; अवन्–वे; पुन्–नीच; पुलै पिऱवियिन्–और पतित (चाण्डाल) जन्म के; पकैञन् पोलुम्–(उद्धारक) शत्रु ही हैं। ३२६

मैंने श्रीराम के पहले दर्शन नहीं किए हैं। उनके बारे में अच्छी तरह सुना भी नहीं है; फिर यह लगाव क्यों हुआ ? उसका हेतु भी जान नहीं सक रहा हूँ। उनका स्मरण करते ही मेरी हड्डी तक शीतल हो जाती है। मेरा मन पसीज जाता है। तो यही लगता है कि वे नीच और पतित (चांडाल) जन्म के विरोधी अर्थात् उद्धार करनेवाले भगवान हैं। ३२६

आदियम् बरमनुक् कन्बु नल्लऱम्, नीदियिन् वळामैयु मुयिर्क्कु नेयमुम्
वेदिय ररुळुम्नान् विरुम्बिप् पॆऱ्ऱनन्, पोदुऱु किळवनैत् तवमुन् पूण्डनाळ् 327

पोतु उऱु–कमलवासी; किळवनै–पुरातन पुरुष ब्रह्मा को; तवम्–उद्दिश्य करके, तप; मुन् पूण्ट नाळ्–जब मैंने किया उन दिनों; आति अम् परमनुक्कु–श्रेष्ठ आदिपुरुष की; अन्पुम्–भक्ति और; नल् अऱम्–सद्धर्मेच्छा; नीतियिन् वळामैयुम्–न्याय-मार्ग से न डिगने का गुण; उयिर्क्कु नेयमुम्–जीवों पर स्नेह; वेतियर् अरुळुम्–(और) ब्राह्मणों की कृपा; नान्–मैंने; विरुम्पि–माँगकर; पॆऱ्ऱनन्–प्राप्त की। ३२७

जब मैंने कमलवासी पुरातन ब्रह्मा को उद्दिश्य करके तपस्या की थी,

तब मैंने आदिपरमपुरुष पर भक्ति, सद्धर्मपरायणता, नीतिमार्ग से न हटने का धैर्य, सर्वभूतदया और ब्राह्मणों की कृपा माँगी और प्राप्त की। ३२७

आयदु पयप्पदो रवदि यायदु, तूयदु नितैन्ददु तॊल्लै यावर्क्कुम्
नायहऩ् मलर्क्कऴल् नणुहि नम्मऩत्, तेयदु मुडित्तुमॆऩ् ऱिऩिदु मेविऩाऩ् 328

आयतु–उस (वर) के; पयप्पतु–फलीभूत होने का; ओर्–मूल्यवान; अवति–समय; आयतु–अभी आया है; नितैन्ततु–तुम लोगों का सोचा हुआ; तूयतु–पवित्र (विचार) है; तॊल्लै–पुरातन; यावर्क्कुम् नायकऩ्–सर्वलोकनायक श्रीराम के; मलर् कऴल्–कमल-चरण पर; नणुकि–जाकर; नम् मऩत्तु एयतु–हमारे मन में उठे भावों को; मुटित्तुम्–पूर्ण करेंगे; ॲऩ्ऱु–कहकर; इऩितु मेविऩाऩ्–निश्चिन्त रहा। ३२८

उस वर की फलप्राप्ति का श्रेष्ठ समय आ गया। आपने जो सोचा वह पवित्र विचार है। पुरातन पुरुष, सर्वलोकनायक श्रीराम के चरणों पर जाकर अपने मन की अभिलाषा पूर्ण कर लेंगे। यह कहकर विभीषण निश्चिन्त रह गया। ३२८

इरुळुऱ वॆय्दुव दियल्बऩ् ऱामॆऩप्, पॊरुळुऱ वॆण्णिय पुलऩ्गॊळ् पुऩ्दियार्
मरुळुऱु शूऴलिऩ् मऱैन्दु वैहिऩार्, उरुळुऱु तेरव ऩुदय मॆय्दिऩाऩ् 329

इरुळ् उऱ–अँधेरा आ गया; ॲय्तुवतु–जाना; इयल्पु अऩ्ऱु आम्–स्वाभाविक नहीं होगा; ॲऩ–सोचकर; पॊरुळ् उऱ ॲण्णिय–अर्थपूर्ण विचार करनेवाले; पुलऩ् कॊळ् पुऩ्तियार्–बुद्धिचतुर विवेकशील वे; मरुळ् उऱु चूऴलिऩ्–भ्रांत उस वातावरण में; मऱैन्तु–छिपे; वैकिऩार्–रहे; उरुळुऱु तेरवऩ्–लुढ़कते चलनेवाले पहिये के रथ का स्वामी; उतयम् ॲय्तिऩाऩ्–उदयगिरि पर प्रगट हुआ। ३२९

अँधेरा हो गया। अब श्रीराम के पास जाना स्वाभाविक नहीं लगेगा। कर्तव्यविवेकी उन्होंने ऐसा सोचा। इसलिए वे रात भर भ्रमित करनेवाले वातावरण में छिपे रहे। घूमनेवाले एकचक्र से युक्त रथ का स्वामी सूर्य उदयाचल पर प्रकट हुआ। ३२९

अप्पुऱत् तिरामऩव् वलङ्गु वेलैयैक्
कुप्पुऱक् करुदुवाऩ् कुवळै नोक्किदऩ्
तुप्पुऱच् चिवन्दवाय् नितैन्दु शोर्हुवाऩ्
इप्पुऱत् तिरुङ्गरै मरुङ्गि ऩॆय्दिऩाऩ् 330

इरामऩ्–श्रीराम; अ अलङ्कु वेलैयै–उस तरंगाकुल समुद्र को; अ पुऱत्तु कुप्पुऱ–पार कर उस तीर पर जाने को; करुतुवाऩ्–सोचते हुए; कुवळै नोक्कि तऩ्–कुवलयाक्षी (सीता) के; तुप्पु उऱ–प्रवाल-सम; चिवन्त वाय्–लाल अधर; नितैन्तु–स्मरण करके; चोर्कुवाऩ्–श्लथ होनेवाले बनकर; इ पुऱत्तु–इस ओर के; इरुम् करै मरुङ्किऩ्–बड़े किनारे के पास; ॲय्तिऩाऩ्–आये। ३३०

उधर श्रीराम ने विचारा कि तरंगाकुल समुद्र को पारकर (लंका के पास के) तीर पर जाना है। वे कुवलयाक्षी सीतादेवी को प्रवाल-सम लाल अधर का स्मरण करके शिथिल हो रहे थे। वे इस पार के बड़े किनारे के पास आये। ३३०

कानलुङ् गऴिहळुम् मणलुङ् गण्डलुम्
पानलुङ् गुवळैयुम् परन्द पुन्नैयुम्
मेनिऱै यन्नमुम् अडम्बुम् वेट्कैकूर्
पूतिरच् चोलैयुम् पुरिन्दु नोक्कितान् 331

कानलुम्–समुद्रतट के वनों; कऴिकळुम्–समुद्र से भूभाग की ओर बहनेवाले नमकीन जल के नाले या पास के जलाशय; मणलुम्–बालू के मैदान; कण्टलुम्–केवड़े; पानलुम्–नीलोत्पल; कुवळैयुम्–कुवलय; परन्त पुन्नैयुम्–शाखा-बहुल 'पुन्नै' तरु; मेल्–उनके ऊपर; निऱै अन्नमुम्–रहनेवाले अधिक संख्या के हंस; अटम्पुम्–'अडम्बु' नाम के तरु; वेट्कै कूर्–आकर्षणमय; पू–पुष्पों के साथ; निऱ–शोभायमान; चोलैयुम्–उद्यानों को; पुरिन्तु–चाव के साथ; पार्त्तान्–(श्रीराम ने) देखा। ३३१

वहाँ समुद्रतटीय वन, बालू के मैदान, नमकीन पानी के नाले और जलाशय, केतकी वृक्ष, नीलोत्पल, कुवलय, घनी शाखादार 'पुन्नै' नाम के पेड़, उन पर हंस, 'अडम्बु' नाम के तरु और मनमोहक पुष्पोद्यान आदि थे और श्रीराम ने उनको कुतूहल के साथ देखा। ३३१

तरळमुम् बवळमुन् दरङ्ग मीट्टिय
तिरण्मणिक् कुप्पैयुङ् गनह तीरमुम्
मरुळुमेन् पॊदुम्बरु मणलिन् गुन्ऱमुम्
पुरळनॆडुन् दिरैहळुम् पुरिन्दु नोक्कितान् 332

तरळमुम्–मोती; पवळमुम्–प्रवाल; तरङ्कम् ईट्टिय–तरंगनीत; तिरळ् मणि कुप्पैयुम्–इकट्ठी मणिराशियाँ; कनक तीरमुम्–कनक-सम चित्ताह्लादकारी समुद्रतट; मरुळुम्–मनमोहक; मॆन् पॊतुम्परुम्–कोमल झाड़; मणलिन् कुन्ऱमुम्–बालू के टीले; पुरळ् नॆटु तिरैकळुम्–लोटनेवाली लम्बी लहरें (इनको); पुरिन्तु–चाव के साथ; नोक्कितान्–देखा। ३३२

और भी, मोती, प्रवाल, तरंगानीत रत्नों की राशियाँ, कनक-सम (आकर्षक)समुद्रतट, मनमोहक कोमल उद्यान, बालू-ढेर, लोटनेवाली लम्बी लहरें—इन सबको श्रीराम ने प्यार के साथ देखा। ३३२

मिन्नहु मणिविरइ ऱैय वीऴ्हणीर्
तुन्नरुम् बॆरुज्जुऴि यऴिप्पच् चोर्वितो

डिऩ्ऩहै नुळैच्चिय रिळैक्कु माळिशाल्
पुऩ्ऩैयम् बॉदुम्बरुम् पुक्कु नोक्किऩाऩ् 333

इऩ् नकै–मधुर मन्दहासवदना; नुळैच्चियर्–धीवरस्त्रियाँ; मिऩ् नकु–विद्युत् की हँसी उड़ानेवाली; मणि विरल् तेय–मनोरम उँगलियाँ घिस जाएँ ऐसा; कण् वीळ् नीर्–नेत्रनिर्गत नीर; तुऩ् अरु–अलभ्य; पॆरु चुळि–बड़े-बड़े लकीर के गोलों को; अळिप्प–मिटा दे ऐसा; चोर्वितोटु–शिथिलता के साथ; इळैक्कुम्–जो खींचती हैं; आळि चाल्–"मिलनवृत्त" से युक्त; पुऩ्ऩै अम् पॊतुम्पुरुम्–मनोरम 'पुऩ्ऩै' के उद्यानों में; पुक्कु नोक्किऩाऩ्–प्रवेश करके देखा। ३३३

वहाँ 'पुन्नै' (पुन्नाग, तुंग) का वन था। उसमें मधुरहासवदना धीवर-रमणियाँ, जो वियोगिनी बन गयी हैं, "भविष्यवाणी वृत्त" बना रही हैं। (इच्छा-सफलता का भविष्य जानने के लिए स्त्रियाँ आँख मूँदकर अपनी उँगली से बालू पर वृत्ताकार रेखा खींचती हैं; अगर रेखा के दोनों सिरे मिल जाते हैं और वृत्त पूर्ण बन जाता है तो विश्वास किया जाता है कि कार्य सफल हो जायगा। अधिकतर पति की प्रतीक्षा करनेवाली वियोगिनियाँ या विवाहेच्छुक कन्याएँ इसका आश्रय लेती हैं।) धीवर-स्त्रियों की विद्युत्-विजयिनी उँगलियाँ घिस जाएँ, और उनके आँसू उस वृत्त को ही मिटा दें, ऐसा वे वृत्त बना रही हैं। श्रीराम ने उस वन में भी अन्दर जाकर, जिसमें ऐसे वृत्त अनेक लगे थे, देखा। ३३३

कूदिर्नुण् कुरुम्बनित् तिवलैक् कोवैकाल्
मोदिवॆण् डिरैवर मुडवॆण् डाळैमेल्
पादियञ् जिऱैयिडैप् पॆडैयैप् पाडणैत्
तोदिमन् दुयिल्वहण् डुयिर्प्पु वीङ्गिऩाऩ् 334

वॆण् तिरै–श्वेत तरंगें; मोति वर–आपस में ढकेलती आती हैं; कूतिर्–शरदृतु की; नुण्–महीन; कुरुम् पत्ति तिवलै–छोटी हिम की बूंदों को; कोवै राशियों को; काल्–उगलनेवाले; मुटम्–टेढ़े; वॆण् ताळै मेल्–श्वेत केवड़े के पौधों पर रहकर; पॆटैयै–अपनी मादा पक्षियों को; अम् चिऱै–सुन्दर पंखों के; पाति इटै–आधे में; पाटु अणैत्तु–एक ओर आलिंगन करके; ओतिमम् तुयिल्व–हंस सोते हैं; कण्टु–देखकर; उयिर्प्पु वीङ्कितान्–लम्बी साँसें छोड़ीं (श्रीराम ने)। ३३४

श्रीराम ने हंसों को सोता देखा। वे टेढ़े और श्वेत केतकी पर सो रहे हैं। श्वेत तरंगें उठ रही हैं और उनसे हंसिनियों को बचाने के लिए वे हंस अपने पक्षों के अर्धभाग में उनको छिपाए रहते हैं। केतकी से शरद्कालीन हिम-सीकरें टपक रही हैं। यह दृश्य देखकर (विरहपीड़ित) श्रीराम ने लम्बी साँसें छोड़ीं। ३३४

अरुन्दुदऱ्	किनियमीन्	कॊणर	अन्बिताल्
पॆरुन्दडङ्	गॊम्बिडैप्	पिरिन्द	शेवलै
वरुन्दिशै	नोक्कियोर्	मऴलै	वॆण्गुरु
हिरुन्ददु	कण्डुनिन्	ऱिरक्क	मॆय्दिनान् 335

अरुन्तुतऱ्कु इनिय–भक्ष्यमधुर; मीन् कॊणर–मछली लाने; अन्पिताल्–प्यार से; पॆरुतट कॊम्पिटै–बड़ी और मोटी शाखा से; पिरिन्त–जो छोड़ के गया था; चेवलै–उस नर पक्षी का; वरुम् तिचै–आगमन की दिशा की ओर; नोक्कि–बाट जोहकर; ओर् मऴलै–एक बालस्वर वाली; वॆण् कुरुकु–श्वेत मादा सारस; इरुन्ततु–रही; कण्टु–देखकर; निन्ऱु–खड़े होकर; इरक्कम् ऎय्तिनान्–श्रीराम परदुःख-दुःखी हुए। ३३५

सारस पक्षी स्वादिष्ट मछली लाने के लिए प्रेमोत्साह के साथ सारसी को बड़े तरु की घनी शाखा पर छोड़ गया है। उसकी बालस्वर वाली श्वेत सारसी उसकी प्रतीक्षा में उसके आने की दिशा की ओर मुख किए राह देख रही है। श्रीराम ने उसको देखा तो उनके मन में सहानुभूति और दुःख भर गया। ३३५

ऒरुतनिप्	पेडैमे	लुळ्ळ	मोडलाल्
पॆरुवलि	वयक्कुरु	हिरण्डुम्	बेर्हिल
तिरुहुवॆंज्	जिनत्तन	तॆऱुहट्	टीयुह
पॊरुवन	कण्डुतन्	पुरुवङ्	गोट्टिनान् 336

ऒरु तनि पेटै मेल्–अनुपम श्रेष्ठ स्त्री पक्षी पर; उळ्ळम् ओटलाल्–मन के (अटक) जाने से; पॆरु वलि–अतिबली; वय कुरुकु–विजयी सारस; इरण्टुम्–दो; पेर्किल–नहीं पिछड़ते; तिरुकु–वैरी; वॆम् चिनत्तत–भयानक क्रोध वाले; तॆऱुकण्–उग्र आंखों से; ती उक–आग के निकलते; पॊरुवत–आपस में लड़ते हैं; कण्ट–देखकर; पुरुवम् कोट्टिनान्–(श्रीराम ने) भौंहें टेढ़ी कर लीं। ३३६

उन्होंने और एक दृश्य देखा। दो सारसों का मन एक अतिमनोरम सारसी पर लग गया। वे विजयी सारस परस्पर सम, अतिक्रूर कोप के साथ क्रुद्ध आँखों से अंगारे-से बरसाते हुए आपस में गुँथ रहे थे। श्रीराम ने अपनी भौंहें कुंचित कर लीं। (उन्हें सारसों का यह काम देखकर गुस्सा हुआ। वे भी तो उनमें एक सारस के स्थान पर थे। रावण दूसरा सारस था।)। ३३६

उण्णिऱै	यूडलिर्	ऱोऱ्ऱ	वोदिमम्
कण्णुऱु	कलवियिल्	वॆल्लक्	कण्डवन्
तण्णिऱप्	पवळवा	यिदऴैत्	तऱ्पॊदि
वॆण्णिऱ	मुत्तिना	लदुक्कि	विम्मिनान् 337

उळ् निऱै–अन्दर भरी; ऊटलिल्–रूठन में; तोऱ्ऱु–जो हार गयी; ओतिमम्–हंसिनी; कणणुऱ–(बाहर से भी) दिखायी देनेवाले; कलवियिल्–सम्भोग में; वॆल्ल–जीत गयी; कण्टवऩ्–इसको देखकर श्रीराम; तण् निऱम्–मोहक रंग वाले; पवळम् वाय् इतऴै–प्रवाल-सम मुख के अधर को; तऩ्–अपने; पॊति–छिपाए हुए; वॆण् निऱ–श्वेत वर्ण; मुत्तिऩाल्–मोतियों (दांतों) से; अतुक्कि–दबाकर; विम्मिताऩ्–सिसके। ३३७

एक हंसिनी अंदर की रूठन में तो हार गयी पर बाहर प्रकट दिखने वाले संभोग-समर में जीत गयी। (श्रीराम के मन में दुःख भर आया।) श्रीराम ने मनोरम रंग वाले अपने प्रवाल-सम होंठ को उसी के द्वारा ढके हुए मोती-से दाँतों से काटा। ३३७

इत्तिऱ मॆय्दिय कालै यॆय्दुऱुम्
वित्तहर् शॊऱ्कळाऩ् मॆलिवु नीङ्गिताऩ्
ऒत्तऩ ऩिरामऩु मुणर्वु तोऩ्ऱिय
पित्तरि ऩॊरुवहै पॆयर्न्तु पोयिऩाऩ् 338

इ तिऱम्–इस स्थिति को; ऎय्तिय कालै–जब श्रीराम प्राप्त हुए तब; इरामऩुम्–श्रीराम; ऎय्तुऱुम्–वहाँ आगत; वित्तकर्–बुद्धिमानों (हनुमान, सुग्रीव आदि) के; चॊऱ्कळाऩ्–वचनों से; ऒरु वकै–एक तरह से; मॆलिवु नीङ्किताऩ्–अक्लान्त; ऒत्तऩऩ्–के समान हुए; उणर्वु तोऩ्ऱिय–होश में आये; पित्तरिऩ्–पागल के समान; पॆयर्न्तु–वहाँ से अलग; पोयिऩाऩ्–चले गये। ३३८

श्रीराम इस भाँति दुःखी हो रहे थे। तब सुग्रीव आदि श्रेष्ठ बुद्धिमान लोग वहाँ आये। उनके धैर्य-वचनों से श्रीराम किसी तरह दुःखविमुक्त-से लगे। तब होश में आये पागल के समान वे वहाँ से चले। ३३८

उऱैविड मॆय्दिऩा ऩॊरुङ्गु कॆळ्वियिऩ्
तुऱैयऱि तुणैवरो डिरुन्द शूऴलिऩ्
मुऱैपडु तातैयिऩ् मरुङ्गु मुऱ्ऱिताऩ्
अऱैहऴल् वीडण ऩऱङ्गॊळ् शिन्दैयाऩ् 339

उऱैवु इटम् ऎय्तिऩाऩ्–अपने वासस्थान में जो गये; ऒरुङ्कु–एकत्रित; कॆळ्वियिऩ् तुऱै–श्रवण के लिए आवश्यक शास्त्रों का मार्ग; अऱि–जाननेवाले; तुणैवरोटु–साथियों के साथ; इरुन्त–वे जहाँ रहे; चूऴलिल्–उस सन्निवेश में; मुऱैपटु तातैयिऩ् मरुङ्कु–युद्धोचित क्रम के अनुसार चलनेवाली वानर-सेना के पास; अऱम् कॊळ् चिन्तैयाऩ्–धर्मात्मा; अऱै कऴल् वीटणऩ्–बजनेवाली पायल का विभीषण; मुऱ्ऱिताऩ्–गया। ३३९

श्रीराम अपने स्थान पर गये और अपने साथियों के संग बैठे जो आवश्यक सभी श्रवण-ज्ञान की रीतियाँ जानते थे। उस सन्निवेश में

क्वणनशील पायलधारी धर्मशीलमन विभीषण उस वानर-सेना के पास आया, जो अपनी गति-विधि जानकरउसी पर चलने की आदी थी। ३३९

❀ मुऱ्ऱिय	कुरिशिलै	मुळङ्गु	तानैयुळ्
उऱ्ऱनर्	निरुदर्वन्	दॅन्ऩ	वोन्ऱिऩार्
ॲऱ्ऱुदिर्	पऱ्ऱुदि	ॲऱिदि	ॲन्ऱिडै
शुऱ्ऱिन	रुरुमॅनत्	तॅऴिक्कुञ्	जॊल्लिऩार् 340

मुऱ्ऱिय कुरिचिलै–आगत गौरववान को; मुळङ्कु तानैयुळ्–कोलाहलमय सेना में; निरुतर् वन्तु उऱ्ऱऩर्–राक्षस आ गये; ॲन्ऩ ऒन्ऱिऩार्–यह जानकर एकत्रित हुए; ॲऱ्ऱुतिर्–मारो; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो; ॲऱितिर्–हथियार फेंको; ॲन्ऱु–कहते हुए; उरुम् ॲन–अशनि के समान; तॅऴिक्कुम् चॊल्लिऩार्–डाँट-डपट के शब्द कहते हुए; इटै चुऱ्ऱिऩर्–वहाँ उनको (वानर वीर) घेर गये। ३४०

मानार्ह विभीषण को आया देखकर वानरों ने सोचा कि कोलाहल-भरी सेना के मध्य राक्षस आ गये। वे एकत्र हुए और आपस में कहने लगे कि मारो-पीटो; पकड़ो और उन पर हथियार चलाओ। अशनि स्वर में ऐसा चिल्लाते हुए वे उसे घेर गये। ३४०

तन्दडु	तरुममे	कॊणर्न्दु	ताऩिवन्
वॅन्दॊऴिऱ्	ऱीविनै	युन्द	वॅम्मैयाल्
वन्दऩ	निलङ्गैयर्	मन्ऩ	ऩाहुनम्
शिन्दनै	मुडिन्दन	वॅन्ऩुञ्	जॅय्हैयार् 341

तरुममे–धर्मदेवता ने ही; कॊणर्न्तु तन्ततु–लाकर दिया है; इवन् ताऩ्–यह तो; वॅम् तॊऴिल्–क्रूर कर्म के; ती विनै वॅम्मैयाल्–पाप के जोर से; उन्त–भेजा जाकर; वन्तऩन्–आया है; इलङ्कैयर् मन्ऩऩाकुम्–लंका (वासियों) का राजा है; नम् चिन्तनै–हमारे मतलब; मुटिन्तन–पूरे हो गये; ॲन्ऩुम्–ऐसे विचार के अनुकूल; चॆय्कैयार्–काम करने पर तुले। ३४१

वानर-सेना के वीरों में कुछ ने कहा कि धर्मदेवता ने ही इसको इधर लाकर छोड़ा है। यह तो अपने ही क्रूर कर्म के पाप की दुर्दम प्रेरणा से हमारे पास आ गया है। यह लंका का राजा रावण ही है। हमारे उद्देश्य अब पूरे हो गये। वे ऐसे विचारों के अनुकूल कार्य में प्रवृत्त होने लगे। ३४१

❀ इरुवदु	करन्दलै	यीरैन्	दॅन्ऩुमत्
तिरुविलिक्	कन्ऩवै	शिदैन्द	वोवॅन्बार्
पॊरुदॊऴि	लॅम्मॊडुम्	पॊरुदिर्	पोरॅन्बार्
ऒरुवरि	नॊरुवर्शॆन्	ऱुऱुक्कि	यूऩ्ऱुवार् 342

इरुपतु करम्–बीस हाथ; तलै ईरैन्तु–सिर दस; ॲन्नुम्–कहलानेवाले; अ तिरु विलिक्कु–उस अभागे के; अन्नवै–वे हाथ और सिर; चितैन्तवो–मिट गये क्या; ॲन्पार्–कहनेवाले; पौरु तौऴिल्–युद्धकार्यकुशल; ॲम्मोटुम्–हमारे साथ; पौरुतिर् पोर्–युद्ध में लड़ो; ॲन्पार्–कहनेवाले बनकर; ऑरुवरिन् ऑरुवर् चॅन्रु–परस्पर स्पर्द्धा करते हुए जाकर; उरुक्कि–कोप करके; ऊन्रुवार्–डटे रहते। ३४२

कुछ लोग पूछते कि उस श्रीविहीन अभागे के जो बीस हाथ और दस सिर थे, क्या वे सब मिट गये ? कुछ लोग उसे ललकारते कि युद्धकार्यकुशल हमसे युद्ध करो। ऐसा कहते हुए वे होड़ लगाकर आगे जाते और क्रोध के साथ उसके सामने डटे रहते। ३४२

❀ पऱ्ऱिनम्	जिरैयिडै	वैत्तुप्	पारुडैक्
कॉऱ्ऱवर्क्	कुणर्त्तुडु	मॅन्रु	कूऱुवार्
ॲऱ्ऱुव	दन्ऱियै	यिवनैक्	कण्डिरै
निऱ्ऱलॅन्	पिऱ्ऱिदॅन	नॅरुक्कि	नेर्हुवार् 343

पऱ्ऱि–पकड़कर; नम् चिरै इटै–हमारी कारा में; वैत्तु–बन्द रखकर; पार् उटै–भूमि के स्वामी; कॉऱ्ऱवर्कु–राजा राम को; उणर्त्तुतुम्–बतलाएँगे; ॲन्रु कूऱुवार्–ऐसा कहनेवाले; इवनै–इसको; ॲऱ्ऱुवतु अन्ऱियै–विना प्रहार किये; कण्टु–देखते; इरै निऱ्ऱल्–थोड़ा भी ठहरना; पिऱ्ऱितु ॲन्–फिर क्यों; ॲन–कहते हुए; नॅरुक्कि नेर्कुवार्–पास जाकर डटे रहते। ३४३

कुछ वीरों ने कहा कि इसको पकड़कर बंदी बनाकर हमारे पास रख लें और भूमि के स्वामी राजा राम को खबर दें। कुछ लोग उतावले हो कहते कि इस पर प्रहार किये विना थोड़ा भी विलम्व करना किस अर्थ ? वे उसके पास जाकर भिड़ने का उपक्रम करते। ३४३

इमैप्पदन्	मुन्विशुम्	बॅऴुन्दु	पोयपिन्
अमैप्पदॅन्	पिऱ्ऱिदिव	ररक्क	रल्लरो
शमैप्पदु	कॉलैयलाल्	तक्क	दियावदो
कुमैप्पदु	नलनॅन	मुडुहिक्	कूऱिनार् 344

इमैप्पतन् मुन्–पलक मारने से पहले; विचुम्पु–आकाश में; ॲऴुन्तु–उठकर; पोय पिन्–जाने के बाद; पिऱ्ऱितु–अलग; अमैप्पतु–करने का काम; ॲन्–क्या रहता है; इवर् अरक्कर् अल्लरो–ये राक्षस नहीं क्या; चमैप्पतु–करना; कॉलै–हत्या ही; अलाल्–उसके सिवा; तक्कतु–करने योग्य (उचित काम); यावतो–क्या तो; कुमैप्पतु नलन्–ढेर बनाना ही भला है; ॲन–ऐसा; मुटुकि–झट से; कूऱिनार्–कहते। ३४४

कुछ वीरों ने झट कहा कि देखो। पलक मारने के पूर्व ही (पल भर में) यह आकाश में उठकर उड़ जाएगा। उसके बाद क्या

काम रहेगा करने को ? ये तो राक्षस हैं। इनको मारने के सिवा करने योग्य क्या काम है ? इसका ढेर बनाना ही भला है। ३४४

❀ इयैन्दन वियैन्दन वितैय कूऱलुम्
मयिन्दनुन् दुमिन्दनु मैन्नु माण्बिनार्
अयिन्दिरम् निऱैन्दव नाणै येवलाल्
नयन्दॆरि कावल रिरुवर् नण्णिनार् 345

इयैन्तन इयैन्तन–जो-जो मन में आये; इतैय–ऐसे; कूऱलुम्–कहते; नयम् तॆरि कावलर्–नयशील पहरेदार; मयिन्तनुम्–मैन्द और; तुमिन्तनुम्–दुमिन्द (द्विविद?); ऎन्नुम्–नाम के; माण्पिनार्–श्रेष्ठ; इरुवर्–दो वानर; अयिन्तिरम् निऱैन्तवन् आणै–ऐन्द्र (व्याकरण) ज्ञानी (हनुमान) की आज्ञा के; एवलाल्–प्रेरणा से; नण्णिनार्–वहाँ आये। ३४५

इस भाँति वे जो-जो मन में आए कहे जा रहे थे। तब नीतिनिपुण पहरेदार मैंद और दुमिंद (द्विविद) उसके पास आये। उनको ऐंद्र (इन्द्र-रचित) व्याकरण-शास्त्रज्ञ हनुमान ने भेजा था। ३४५

विलक्किनर् पडैञरै वेद नीदिनूल्
इलक्कण नोक्किय वियल्ब रॆय्दिनार्
शलक्कुऱि यिलरॆन वरुहु शार्न्दनर्
पुलक्कुऱि यऱनॆऱि पॊरुन्द नोक्किनार् 346

वेतम्–वेदों; नीति नूल्–नीति-शास्त्रों में उक्त; इलक्कणम्–लक्षणों के; नोक्किय इयल्पर्–अध्ययन से प्राप्त मति वाले; ऎय्तिनार्–आये और; पटैञरै–वीरों को; विलक्किनर्–हटाया; पुलक्कुऱि–विद्वान् योग्य लक्षण; अऱनॆऱि–धर्ममार्गानुगमन के लक्षण; पॊरुन्त–उसमें लगे रहे; नोक्किनार्–(उसे) देखा; चलक्कुऱि–छल का लक्षण; इलर्–नहीं रखते; ऎन–समझकर; अरुकु चार्न्तनर्–पास गये। ३४६

वे वेद, नीतिशास्त्र आदि ग्रन्थों में उक्त लक्षणों के अच्छे परखनेवाले थे। उन्होंने आकर वानरों को हटाया। और विभीषण में विचार और आचार के अच्छे लक्षण देखे। 'इनमें छल-कपट का कोई लक्षण नहीं दिखता' —यह सोचते हुए वे विभीषण के पास आये। ३४६

❀ यारिव णॆय्दिय करुमम् यावदु
पोरदु पुरिदिरे पुऱत्तो रॆण्णमो
शार्वुऱ निन्ऱनीर् शमैन्द वाऱॆलाम्
जोर्विलीर् मॆय्म्मुऱै शॊल्लु वीरॆनाऱ् 347

यार्–कौन; इवण् ऎय्तिय–यहाँ आने का; करुमम् यावतु–कार्य क्या

है; पोरतु पुरितिरो–युद्ध करोगे; पिरितॊरु ऍण्णमो–कोई अन्य (सन्धि करने का) विचार है; चार्वु उऱ्–हमारे स्थान में आकर; निन्ऱ नीर्–जो खड़े हो वह तुम; चमैन्त आऱु ऍलाम्–सारे अभिप्राय; चोर्विलीर्–विना हिचक के; मॅय्म् मुऱ्–सच-सच; चॊल्लुवीर्–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ३४७

उन्होंने उन लोगों से पूछा कि तुम लोग कौन हो? इधर किस हेतु आए हो? युद्ध करोगे या और कोई (सन्धि का) विचार है? हमारे स्थान में जो आ गये हो, तो साफ़-साफ़, विना हिचक के सत्य बात बतलाओ। ३४७

※पहलवन् वऴिमुदल् पारि नायहन्
पुहलवन् कऴलडैन् दुय्यप् पोन्दनन्
तहवुऱु शिन्दैयन् ऱुरुम नीदियन्
महन्महन् मैन्दनान् मुहऱ्कु वाय्मैयान् 348

तकवु उऱु चिन्तैयन्–तटस्थमन; तरुमम् नीतियन्–धर्मनयशील; वाय्मैयान्–सत्यसंध; नान्मुकऱ्कु मकन् मकन् मैन्तन्–चतुर्मुख का प्रपौत्र विभीषण; पकलवन् वऴि मुतल्–सूर्यवंशप्रमुख; पारिन् नायकन्–भूमि के स्वामी; पुकल्–शरणागत-रक्षक; अवन् उन (श्रीराम) के; कऴल् अटैन्तु–श्रीचरण में आकर; उय्य–तरने; पोन्ततन्–आये हैं। ३४८

(तब अनल ने उत्तर दिया—) यह विभीषण हैं। तटस्थ विचार के हैं। धर्मनयशील हैं। ब्रह्मा के प्रपौत्र हैं। ये सूर्यकुलदीप, भूमिनाथ श्रीराम की शरण में आकर तरने का विचार ले आये हैं। ३४८

अऱनिलै वऴामैयु मादि मूर्त्तिपाल्
निऱैपॆरु नेयमु निन्ऱ वाय्मैयुम्
मऱैयवर्क् कन्बुमॆन् ऱिनैय मामलर्
इऱैयवन् ऱरनॆडुन् दवत्ति नॆय्दिनान् 349

अऱम् निलै वऴामैयुम्–धर्म-मार्ग से च्युत न होना; आति मूर्त्ति पाल्–आदि भगवान श्रीविष्णु के प्रति; निऱै–पूर्ण; पॆरु–गम्भीर; नेयमुम्–भक्ति और; निन्ऱ वाय्मैयुम्–नित्यसत्य; मऱैयवर्क्कु–ब्राह्मणों से; अन्पुम्–प्रेम; ऍन्ऱु–ऐसा कथित; इनैय–इन (गुणों) को; नॆटु तवत्तिन्–लम्बी तपस्या के फलस्वरूप; मा मलर् इऱैयवन्–उत्तम कमल-सुमन के देव ब्रह्मा के; तर-प्रदान करने पर; ऍय्तिनान्–(विभीषण ने) प्राप्त किये। ३४९

इन्हें, कमलवासी ब्रह्मा की कृपा से सुदृढ़ धर्माचरण, आदि भगवान विष्णु पर पूर्ण और गंभीर भक्ति, स्थिर सत्यपरायणता, ब्राह्मणों के प्रति प्रेम आदि गुण दीर्घ तपस्या के फलस्वरूप मिले हैं। ३४९

शुडुदियैत् तुहिलिडैप् पोदियुन् दुन्मदि, इडुदिये शिऱैयिडै यिऱैवन् ऱेवियै
विडुदिये लुय्हुदि विडादु वेट्टियेल्, पडुदियॆन् ऱुरुदिहळ् पलवुम् बन्निऩान् 350

चुट्टियै–जलानेवाली आग को; तुकिलिटै–वस्त्रमध्य; पोतियुम्–बाँधनेवाले; तुन्मति–दुर्बुद्धि; चिऱै इटै–कारागृह में; इऱैवन् तेवियै–ईश्वर की देवी को; इट्टुतियॆ–बन्द रखते हो; विटुतियेल्–(मुक्त) छोड़ दो तो; उय्कुति–बचोगे; विटातु–न छोड़कर; वेट्टियेल्–उनको चाहोगे तो; पटुति–मरोगे; ऎन्ऱु–कहकर; उऱुतिकळ् पलवुम्–अनेक हित की बातें; पन्नितान्–(विभीषण ने) कहीं। ३५०

इन्होंने रावण से हित की अनेक बातें कहीं। 'हे दुर्मति ! जलती आग को वस्त्रमध्य बाँधते-जैसे तुम प्रभु श्रीराम की पत्नी को कारा में रखते हो ! उन्हें मुक्त छोड़ दो तभी बचोगे। नहीं छोड़ोगे और उन देवी पर आसक्ति रखोगे तो मरोगे।' ऐसा बहुत तरह से समझाया। ३५०

❀मऱन्दरु शिन्दैयन् मदियि नीङ्गिनान्
पिऱन्दनै पिन्बदिऱ् पिळैत्ति पेर्हुदि
इऱन्दनै निऱ्ऱिये लॆन्ऩ विन्नवन्
तुऱन्दन ऩॆनविरित् तनलन् शॊल्लिनान् 351

मऱम् तरु चिन्तैयन्–दुराचारमन; मतियिन् नीङ्कितान्–विवेकहीन रावण के; पिन्पु पिऱन्तनै–मेरे अवरज के रूप में पैदा हुए; अतिल् पिळैत्ति–इसी से बचे हो; पेर्कुति–यहाँ से चले जाओ; निऱ्ऱियेल्–रहोगे तो; इऱन्तनै–मरे; ऎन्न–कहने पर; इन्नवन् तुऱन्तनन्–इन्होंने छोड़ दिया; ऎन–ऐसा; अनलन्–अनल ने; विरित्तु चॊल्लिनान्–विस्तार से कहा। ३५१

'कुमारगी, दुर्मति रावण ने विभीषण की बातें सुनीं और कहा कि विभीषण ! तुम मेरे अनुज पैदा हुए ! इसलिए अब तक तुम बचे रह सके ! अभी यहाँ से हट जाओ। खड़े रहोगे तो मरना निश्चित है ! तभी विभीषण रावण को छोड़ इधर आ गया।' अनल ने यह वृत्तांत विस्तार के साथ कह सुनाया। ३५१

❀मयिन्दनु मव्वुरै मनत्तु वैत्तुनी
इयैन्ददु नायहऱ् कियम्बु वेन्नाप्
पॆयर्न्दनन् ऱम्बियुम् पॆयर्विल् शेनैयुम्
अयर्न्दिलिर् कामिनॆन् ऱमैव दाक्किये 352

मयिन्ततुम्–मैंद भी; अ उरै–वह वचन; मनत्तु वैत्तु–मन में करके; तम्पियुम्–मेरा छोटा भाई और; पॆयर्वु इल्–अडिग; चेनैयुम्–सेना; अयर्न्तिलिर्–विना चूके; कामिन्–रक्षा करते रहो; ऎन्ऱु–कहकर; अमैवतु आक्कि–बिठा देकर; नी इयैन्ततु–तुमने जो अपने मन से कहा; नायकऱ्कु–(उसे मैं) अपने स्वामी से; इयम्पुवेन्–कहूँगा; ऎन्ना–कहकर; पॆयर्न्तनन्–वहाँ से गया। ३५२

मैंद ने अनल के वचनों को सुनकर अपने छोटे भाई द्विविद से और अन्य वीरों से कहा कि द्विविद और सुदृढ़मन सेना के वीरो! तुम लोग विना चूक के इन लोगों पर निगरानी रखो। फिर उसने अनल से कहा कि तुमने जो अपनी इच्छा से कहा वह सब मैं अपने नायक श्रीराम से कहूँगा। फिर वह वहाँ से चला। ३५२

तरुममुम् आतमुम् तवमुम् वेलियाय्
मरुवरुम् पॆरुमैयुम् पॊऱैयुम् वायिलाय्क्
करुणैयङ् गोयिलि लिरुन्द कण्णनै
अरुणॆऱि यॆय्दिच्चॆन् ऱडिव णङ्गिनान् 353

तरुममुम्–धर्म और; आनमुम्–ज्ञान; तवमुम्–तपस्या; वेलियाय्–रक्षक दीवार हैं; मरुवु अरुम्–प्राप्त करने में कठिन; पॆरुमैयुम्–निरभिमानता और; पॊऱैयुम्–क्षमा; वायिलाय्–द्वार है; अरुळ् नॆऱि ऎय्ति–कृपा करने का मार्ग अपनाकर; करुणै अम् कोयिलिल्–करुणा-मन्दिर में; इरुन्त–जो रहे; कण्णनै–उन स्निग्ध आँखों के श्रीराम के पास; चॆन्ऱु–जाकर; अटि वणङ्कितान्–चरणों पर प्रणाम किया। ३५३

श्रीराम धर्म, ज्ञान और तपस्या के प्राचीरों, दुर्लभ निरभिमानता (सौलभ्य) और क्षमा के (अभिमुख और अधोमुख) द्वारों और कृपा-मार्ग से युक्त करुणा रूपी मनोरम मन्दिर में विराजमान थे। उन कृपादृष्टि वाले श्रीराम के पास जाकर मैंद ने उनके श्रीचरणों पर नमस्कार किया। ३५३

❀ उण्डुरै युणर्त्तुव दूऴि यायॆनप्
पुण्डरी हत्तडम् पुरैयुम् बूट्चियात्
मण्डिलच् चडैमुडि तुळक्कि वाय्मैयाय्
कण्डदुङ् गेट्टदुङ् गऴऱु वायॆन्ऱान् 354

ऊऴियाय्–युगपति; उणर्त्तुवतु–समझाने की; उरै उण्टु–एक बात है; ऎन–(मैंद के) कहने पर; पुण्टरीकम् तटम्–पुण्डरीकसर की; पुरैयुम्–समानता करनेवाले; पूट्चियान्–श्रीरूप के श्रीराम ने; मण्टिलम्–मण्डलाकार; चटै मुटि–जटाजूट; तुळक्कि–(सम्मति प्रदर्शित करते हुए) हिलाकर; वाय्मैयाय्–सत्यवादी; कण्टतुम्–देखा व; केट्टतुम्–सुना; कऴऱुवाय्–कहो; ऎन्ऱान्–कहा। ३५४

मैंद ने निवेदन किया कि युगपति! (आयुष्मान्) आपसे निवेदन करने की एक बात है। तब पुण्डरीक पुष्करिणी-सम दर्शनीय दाशरथी ने अपनी जटाजूट थोड़ी हिलायी और अपनी सम्मति का संकेत दिया और कहा कि हे सत्यवादी! तुमने क्या देखा? क्या सुना? बताओ। ३५४

❀ विळैविति यरिन्दिलम् वीड णप्पॆयर्
नळिर्मलर्क् कॆयित् ताल्व रोडुडन्
कळवियल् वञ्जनै यिलङ्गैक् कावलर्
किळवल्नञ् जेनैयि नडुव णय्दिनान् 355

इति–आगे का; विळैवु अऱिन्तिलम्–होनेवाला काम नहीं जानते; उटन् इयल् कळवु–सहजात चोर-स्वभाव; वञ्चनै–कपट, इनसे युक्त; इलङ्कै कावलर्कु–लंका के राजा (रावण) का; इळवल्–छोटा भाई; वीटण पॆयर्–विभीषण नाम का; नळिर् मलर् कॆयितन्–शोभायमान कमलपुष्प-हस्त; नाल्वरोटुटन्–चार मित्रों के साथ; नम् चेनैयिन्–नटुवण्–हमारी सेना के मध्य; ऍय्तिनान्–आया। ३५५

(मैंद ने सुनाया—) इसका नतीजा हम नहीं जानते। सहजात चोर-स्वभाव के और प्रवंचक लंकापति का छोटा भाई, विभीषण नाम का, जिसके हाथ कमलपुष्प के समान हैं, अपने चार मित्रों के साथ हमारी सेना के मध्य आया है। ३५५

❀ कॊल्लुमिन् पऱ्ऱुमि नॆन्नुङ् गॊळ्हैयाल्
पल्वॆरुन् दानैशॆन् ऱडर्क्कप् पार्त्तियान्
निल्लुमि नॆन्रुनीर् याविर् नुन्निलै
शॊल्लुमि नॆन्नवोर् तुणैवन् शॊल्लिनान् 356

कॊल्लुमिन्–मारो; पऱ्ऱुमिन्–पकड़ो; ऍन्नुम् कॊळ्कैयाल्–ऐसे विचार के साथ; पल् पॆरु तानै–अनेक वीरों की बड़ी (हमारी) सेना को; चॆन्ऱु–उसके सामने जाकर; अटर्क्क–सताता; यान् पार्त्तु–मैंने देखकर; निल्लुमिन् ऍन्ऱु–ठहरो कहकर; नीर् याविर्–तुम लोग कौन हो; नुम् निलै–अपना हाल; चॊल्लुमिन्–कहो; ऍन्न–पूछा तो; ओर् तुणैवन्–उसके एक साथी ने; चॊल्लिनान्–कहा। ३५६

हमारी बड़ी सेना, 'मारो, पकड़ो' आदि के विचार लेकर उसे दिक कर रही थी। मैंने उनसे कहा कि ठहरो। फिर मैंने विभीषण आदि से पूछा कि तुम कौन हो ? अपना हाल बताओ। तब विभीषण के एक मित्र ने यों कहा। ३५६

❀ मुरण्बुहु तीविनै मुडित्त मुन्नवन्
करण्बुहु शूळ्लै शूळ्क् काण्बदोर्
अरण्बिऱि दिल्लैन वरुळिन् वेलैयैच्
चरण्बुहुन् दानैन मुन्नञ् जाऱ्ऱिनान् 357

मुरण् पुकु–विपरीतगामी; ती विनै–पापकर्म को; मुटित्त मुन्नवन्–जो कर चुका वह अग्रज रावण; करण् पुकु–मनमाना करने के; चूळ्लै चूळ्–मार्ग में गया, इसलिए; काण्पतोर् अरण्–देखने योग्य कोई रक्षण-स्थान; इल्–नहीं; ऍन–

ऐसा जानकर; अरुळित्तु वेलैयै–करुणा-सागर श्रीराम को; चरण् पुकुन्तान्–शरण में आया; अँन–ऐसा; मुन्तम् चाऱ्ऱिनान्–(उसका) अभिप्राय बताया । ३५७

इसका बड़ा भाई बहुत ही विपरीतगामी बुरा पाप कर चुका। वह अपना मनमाना करने के बुरे मार्ग में जा रहा है। इसलिए इन्होंने सोचा कि वहाँ हमारी रक्षा नहीं होगी। फलस्वरूप ये करुणासागर (श्रीराम) की शरण में आये हैं। ३५७

❀ आयवन् ऱरुममु मादि मूर्त्तिपाल्
मेयदोर् शिन्दैयुम् मॆय्युम् वेदियर्
नायहन् ऱरनॆडुन् दवत्तु नण्णिनान्
तूयव नॆन्बदोर् पॊरुळुज् जॊल्लिनान् 358

तूयवन्–पवित्र; आयवन् तरुममुम्–उसकी धार्मिकता; आति मूर्त्तिपाल्–आदि भगवान श्रीनारायण के प्रति; मेयतु–लगा हुआ; ओर् चिन्तैयुम्–श्रेष्ठ मन; मॆय्युम्–सत्यपरायणता; नॆटु तवत्तु–दीर्घ तपस्या के फलस्वरूप; वेतियर् नायकन्–ब्राह्मणों के मुखिये, ब्रह्मा के; तर–प्रदान करने से; नण्णिनान्–प्राप्त किया; अँन्पतु–यह; ओरु पॊरुळुम्–एक समाचार भी; चॊल्लिनान्–कहा । ३५८

'उस पवित्रात्मा को कठिन और दीर्घ तपस्या करके ब्राह्मणों के शीर्षस्थ ब्रह्मा की कृपा-दान से धर्मपरायणता, आदि भगवान श्रीमन्नारायण पर लगा श्रेष्ठ चित्त, सत्य आदि गुण प्राप्त हैं।' यह विषय अनल ने कहा। ३५८

❀ कऱ्पुडैत् तेवियै विडादु कात्तियेल्
अॆऱ्पुडैक् कुन्ऱमा मिलङ्ग एळैनिन्
पॊऱ्पुडै मुडित्तलै पुरळुम् अॆन्ऱॊरु
नऱ्पॊरु ळुणर्त्तिन नॆन्ऱु नाट्टिनान् 359

कऱ्पुटै–पतिव्रता; तेवियै–देवी को; विटातु कात्तियेल्–विना मुक्त किये कारा में रक्षित रखोगे तो; इलङ्कै–लंका; अॆन्पु उटै–हड्डियों का भरा; कुन्ऱमाम्–पर्वत हो जायगा; एळै–बुद्धिकंकाल; निन् पॊऱ्पु उटै–तुम्हारे सुन्दर; मुटितलै–किरीटमण्डित सिर; पुरळुम्–नीचे गिरकर लोटेंगे; अॆन्ऱु–ऐसा; ओरु नल् पॊरुळ्–एक अच्छा विषय; उणर्त्तिनन्–समझाया (विभीषण ने रावण को); अॆन्ऱु नाट्टिनान्–यह भी कहा (अनल ने) । ३५९

"पतिव्रता देवी सीता को अगर तुम मुक्त नहीं करोगे और कारा में रखोगे तो यह लंका हड्डियों का पर्वत बन जायगा। बुद्धिकंकाल! तुम्हारे मनोरम मुकुटमंडित सिर भूमि पर गिरकर लुढ़केंगे।" विभीषण ने रावण को यह हितोपदेश दिया। अनल ने यह भी विषय मुझसे बताया। ३५९

❀ एन्दॆऴि	लिरावण	ऩिऩैय	शॊऩ्ऩनी
शान्दॊऴिऱ्	कुरियैयॆऩ्	शार्बु	निऱ्ऱियेल्
आन्दिऩैप्	पॊऴुदिऩि	लहऱ्ऱि	यालॆऩप्
पोन्दऩ	ऩॆऩ्ऱऩऩ्	पुहुन्द	दीदॆऩ्ऱाऩ् 360

एन्तु ऍऴिल्–श्रेष्ठ रूपवान; इरावणऩ्–रावण; इऩैय चॊऩ्ऩ नी–ऐसी बातें कहनेवाले तुम; ऍऩ् चार्पु–मेरे पक्ष में; निऱ्ऱियेल्–रहोगे तो; चाम् तॊऴिऱ्कु उरियै–मरने के कार्य के ही योग्य होगे (मार डालूंगा); आम् तिऩै पॊऴुतिऩिल्–लगे 'कोदों' के समय के अन्दर; अकल्तियाल्–हट जाओ; ऍऩ–कहने से; पोन्तऩऩ्–आया; ऍऩ्ऱऩऩ्–कहा (अनल ने); पुकुन्तनु ईतु–हाल जो हुआ वह यही है; ऍऩ्ऱाऩ्–(कहा) मैंद ने। ३६०

"श्रेष्ठ सौंदर्यवान रावण ने विभीषण से उत्तर में कहा कि ऐसी बातें कहनेवाले तुम मेरे पक्ष में खड़े रहोगे तो मरने योग्य रह जाओगे। झट से हट जाओ ! इस पर विभीषण इधर आ गये। यही हाल है जो घटा। अनल ने मुझसे यह सुनाया।" मैंद ने श्रीराम से निवेदन किया। (इस पद्य में तिऩै पॊऴुतु— कोदों जितना समय —अनूठा लाक्षणिक प्रयोग है।)। ३६०

❀ अप्पॊऴु	दिरामऩुम्	अरुहिल्	नण्बरै
इप्पॊरुळ्	केट्टनी	रियम्बु	वीरिवऩ्
कैप्पुहऱ्	पालऩो	कऴियऱ्	पालऩो
ऑप्पुऱ	नोक्किनुम्	मुणर्वि	ऩालॆऩ्ऱाऩ् 361

अप्पॊऴुतु–तब; इरामऩुम्–श्रीराम ने भी; अरुकिल् नण्परै–पास रहे मित्रों से; इ पॊरुळ्–यह विषय; केट्ट नीर्–सुननेवाले तुम लोग; कै पुकल् पालऩो–हमारे पहुँचने योग्य है क्या; कऴियल् पालऩो–हटने ही योग्य है; नुम् उणर्विऩाल्–अपनी बुद्धि से; ऑप्पुऱ नोक्कि–तटस्थता के साथ सोचकर; इयम्पुवीर्–कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६१

तब श्रीराम ने अपने पास रहे मित्रों से पूछा कि क्या यह हमारे मध्य लिये जाने योग्य है या त्यागने ? श्रीराम ने कहा— तुम लोगों ने मैंद की बात सुनी है। तटस्थता के साथ अपनी बुद्धि से सोचो और अपना-अपना विचार कहो। ३६१

तडमलर्क् कण्णऩॆऩ् तडक्कै कूप्पिनिऩ्, ऱिडनिदु कालमो दॆऩ्ऩ वॆण्णुवाऩ्
कडऩऱि कावलऩ् कऴऱि ऩाऩरो, शुडर्नॆडु मणिमुडिच् चुक्कि रीवऩे 362

तट मलर् कण्णऩै–सरोरुहाक्ष से; तट कै–विशाल हाथ; कूप्पि निऩ्ऱु–जोड़े खड़े होकर; कटऩ् अऱि–कर्तव्यज्ञ; कावलऩ्–राजा; चुटर्–उज्ज्वल; नॆटु–बड़े; मणि मुटि–रत्नकिरीटधारी; चुक्किरीवऩ्–सुग्रीव ने; इटऩ् इतु–देश

यह; कालम् ईतु–काल यह; ऍन्न् ऍण्णुवान्–ऐसा सोचते हुए; कळ्रित्तान्–कहा। ३६२

प्रकाशमय रत्नजटित मुकुटधारी सुग्रीव, जो अपने दायित्व और कर्तव्य का अच्छा ज्ञान रखता था, देश-काल-नय पर ध्यान देते हुए सरोरुहाक्ष श्रीराम के सामने हाथ जोड़े खड़ा हुआ और बोला। ३६२

नन्रिमुदल् वेदङ्ग णान्गुम् नामनूल्, मन्नुमुदल् यावैयुम् वरम्बु कण्डनी
इन्नैयन केट्कवो वॅम्म नोर्हळे, विन्विय कारणम् विदिक्कु मेलुळाय् 363

वितिक्कु मेल् उळाय्–विधाता के ऊपर रहनेवाले; मुतल्–प्रथमगण्य; वेतङ्कळ् नान्कुम्–चारों वेदों; नामम् नूल्–प्रसिद्ध ग्रन्थ; मनु मुतल्–मनुशास्त्र आदि; यावैयुम्–सभी का; वरम्पु–ठिकाना; नन्ति कण्ट–भलीभांति जाननेवाले आप; ऍम्मनोर्कळे–हम जैसे लोगों से; विनविय कारणम्–पूछ रहे हैं, इसका कारण; इन्नैयन केट्कवो–ऐसी बातें हमसे सुनकर जानना है क्या। ३६३

हे विधाता से भी बड़े देव! आप चारों वेदों और प्रसिद्ध मनुशास्त्र आदि शास्त्रों के पारंगत हैं। तो भी आप हमसे यह प्रश्न करते हैं! उसका कारण क्या यही है कि आप सचमुच हमीं से ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं? । ३६३

आयिनुम् विळम्बुव नरुळि नाळियाय्, एयिन दादलि नरिविर् केररन
तूयवॅन् रॅन्निनुन् दुणिवन् रॅन्निनुम्, मेयदु केट्टियाल् विळेवु नोक्कुवाय् 364

आयिनुम्–तो भी; अरुळिन् आळियाय्–कृपाचक्रपाणी; एयितनु आतलिन्–आज्ञा है, इसलिए; अरिविर्कु एर्रन–अपनी पहुँच के अनुसार; विळम्पुवन्–मैं कहूँगा; तूय–अच्छा है; ऍन्रु–ऐसा; ऍन्निनुम्–मानें; तुणिवु अन्रु–या ठीक नहीं; ऍन्निनुम्–मानें; मेयतु–मेरे मन में आयी; केट्टि–सुन लीजिए; विळेवु–उसका फल; नोक्कुवाय्–आप ही निर्णय कर लें। ३६४

(हम आपको समझाने की स्थिति में नहीं हैं। तो भी) कृपासागर! (या चक्रपाणी!) आज्ञा हो गयी है। अतः जो मेरी बुद्धि में स्फुरित होता है, वह बताऊँगा। आप उसे ठीक समझें, चाहे अनुपयुक्त! आप मेरा विचार सुनिए और उसके फल के बारे में आप ही सोचकर निर्णय कर लें। ३६४

वॅम्मुनै विळैदलि नन्रु वेरॊरु, शुम्मैया नुयिर्कॊळत् तुणिदला लन्रु
तम्मुनैत् तुरन्ददु दरुम नीदियो, शॅम्मैयि लरक्करिल् यावर् शीरियोर् 365

तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ को; तुरन्ततु–छोड़कर आना; वॅम् मुनै–भयंकर युद्ध; विळैतलिन् अन्रु–होने के कारण नहीं; वेरु ऑरु चुम्मैयाल्–अन्य किसी भार से; उयिर् कॊळ–आत्महत्या कर लेने के; तुणितलाल् अन्रु–निश्चय के कारण नहीं; तरुम नीतियो–धर्मपथ होगा क्या; चॅम्मै इल्–सीधे गुणों से हीन; अरक्करिल्–राक्षसों में; चीरियोर् यावर्–उत्तम लोग कौन हैं। ३६५

यह विभीषण अपने ज्येष्ठ भ्राता को छोड़कर आया, अपने भाई से घोर युद्ध होने के कारण नहीं; न किसी (अपमान के) भार से अपने प्राण त्यागने के विचार से। फिर इसका कार्य धर्मसंगत होगा क्या ? सभी राक्षस असज्जन हैं। उनमें श्रेष्ठ कौन होगा ? । ३६५

तहैयुरु तन्दैयैत् तायैत् तम्मुन्नै, मिहैयुरु कुरवरै युलहिन् वेन्दरैप्
पहैयुऱ वरुदलुन् दुऱन्द पण्बिदु, नहैयुऱ लन्ऱियॆ नयक्कऱ् पालदो 366

तकै उरु–सम्मान्य; तन्तैयै–पिता को; तायै–माता को; तम्मुन्नै–अपने बड़े भाई को; मिकै उरु–बड़प्पन से युक्त; कुरवरै–गुरु (जनों) को; उलकिन् वेन्तरै–लोकप को; पकै उऱ वरुतलुम्–शत्रुओं के लगे आने पर; तुऱन्त–छोड़ आने का; पण्पु–गुण; इतु–यह; नकै उऱल्–परिहसनीय है; अन्ऱियॆ–नहीं तो; नयक्कल् पालतो–अभिनन्दनीय है क्या। ३६६

युद्ध के अवसर पर अपने सुयोग्य पिता, माता, गुरु और भूपति—राजा को छोड़कर आने का यह (कायरता का) गुण परिहासयोग्य ही होगा ! अभिनंदनीय होगा क्या ? । ३६६

वेण्डुऴि यिन्नियन विळम्बि वॆम्मुन्नै, पूण्डुऴि यञ्जिवॆम् शॆरुविऱ् पुक्कुडन्
माण्डॊऴि वन्ऱिनम् मरुङ्गु वन्दवन्, आण्डॊऴि लुलहिनुक् कान्निया मन्ऱे 367

वेण्टुऴि–जब चाह है; इन्नियन विळम्पि–मीठी-मीठी बातें कहकर; वॆम् मुन्नै–भयंकर युद्ध में; पूण्टुऴि–हाथ लगाया है तब; चॆरुविल् पुक्कु–युद्ध में जाकर; उटन् माण्टु–साथ मर; ऒऴिवु अन्ऱि–मिटे बिना; अञ्चि–डरकर; नम् मरुङ्कु वन्तवन्–हमारे पास जो आया है, उसका; आण् तॊऴिल्–पौरुष; उलकिन्कु–लोकों में; आन्नियाम् अन्ऱे–निन्दा योग्य है न। ३६७

जब स्वार्थसिद्धि के लिए आवश्यक है, तब मीठी-मीठी बातें कहता रहा; और जब कठोर युद्ध में लगा है, तब भाई के साथ युद्धांगन में जाकर मरना छोड़कर हमारे पास जो आया है उसकी वीरता भी लोकनिंद्य है न ? । ३६७

मिहैप्पुलन् दरुममे वेट्ट पोदवर्, तहैप्पुलन् दुऱन्दुपोय्च् चाद लन्ऱियॆ
नहैप्पुलम् बॊदुवुऱ नडन्दु नायह, पहैप्पुलञ् जार्दलुम् बऴियि नीङ्गुमो 368

नायक–नायक; मिकै पुलम्–उत्कृष्ट बुद्धि; तरुममे–धर्म के ही; वेट्ट पोतु–पक्ष में जब रहती है; अवर्–उसको; तकै पुलम्–रोकनेवाले स्थान को; तुऱन्तु–छोड़कर; पोय्–जाकर; चातल् अन्ऱियॆ–मरना छोड़कर; पॊतु नकै पुलम् उऱ–सामान्य लोगों में हास्य का भाव उठे ऐसा; नटन्तु–चलकर; पकै पुलम् चार्तलुम्–शत्रुओं के स्थान में पहुँचना; पऴियिन्–निन्द्य होने से; नीङ्कुमो–हटा रहेगा क्या। ३६८

नायक ! जब बुद्धि धर्म ही का पक्ष लेती है और वर्तमान स्थिति धर्ममार्ग पर जाने से रोकती है, तब उस स्थल को छोड़कर जाना और

प्राण त्यागना ही उचित है। उसे छोड़कर अपनी हँसी कराते हुए शत्रुओं से जाकर मिलना अपयश-वर्जित होगा क्या ? । ३६८

वार्क्कुऱ् वनैहळऱ् ऱम्मुऩ् वाळ्न्दनाट्, चीर्क्कुऱ् वायिडैच् चॅऱुनर् शीऱिय
पोर्क्कुऱ् वऩ्ऱियै पुहुन्द पोदिवऩ्, आर्क्कुऱ् वाहुवऩ् अरुळि ऩाळियाय् 369

अरुळिऩ् आळियाय्–कृपासागर; वार्क्कुऱु–पिघली धातु की; वनै कळल्–बनी पायल से अलंकृत (पैरों वाले); तम् मुऩ्–अपने ज्येष्ठ भाई के; वाळ्न्त नाळ्–अच्छे दिनों में; चीर्क्कु उऱवाय्–वैभव का रिश्ता मानकर; इटै–बीच में; चॅऱुनर्–शत्रुओं के; चीऱिय–क्रोध के साथ छेड़े; पोर्क्कु–युद्ध में; उऱवु अऩ्ऱियै–रिश्तेदार न रहकर; पुकुन्त पोतु–शत्रु के पास जब आया है; इवऩ्–यह; आर्क्कु उऱवु आकुवऩ्–किसका बन्धु रहेगा। ३६९

करुणासागर ! जब पिघली धातु की बनी वीरपायल-धारी ज्येष्ठ भाई रावण वैभवयुक्त जीवन बिताता था, तब यह वैभव का नातेदार था। अब युद्ध हो गया है और शत्रु सिर पर हैं। इस स्थिति में साथ न देकर वह हमारे मध्य आता है। ऐसा मनुष्य किसका विश्वसनीय साथी या नातेदार रह सकेगा ? । ३६९

ऑट्टिय कऩहमा ऩुरुव माहिय, शिट्टऩऩ् मरुमह ऩिळैत्त तीविऩै
किट्टिय पोदिऩिऱ् ऱवमुङ् गेळ्वियुम्, विट्टदु कण्डुनाम् विडादु वेट्कुमो 370

ऑट्टिय–स्वीकृत; कऩकम् माऩ् उरुवम्–कनक-मृग के रूप में; आकिय–जो बन आया; चिट्टऩ्–वह शिष्ट मारीच; नऩ् मरुमकऩ् इळैत्त–अपने अच्छे भांजे (रावण) द्वारा आज्ञापित; ती विऩै–पापकर्म; किट्टिय पोतितिल्–जब करने के लिए समीप में आया; तवमुम् केळ्वियुम्–तप और श्रवण-ज्ञान को; विट्टतु–छोड़ गया; कण्टुम्–वह जानकर भी; नाम्–हम; विटातु–इसको दूर किये बिना; वेट्कुमो–साथ रखना चाहें क्या। ३७०

मारीच, जो स्वर्णमृग का रूप लेकर आया था, शिष्ट था। उसने, जब उसके भांजे ने बुरे कार्य में प्रवृत्त कराया, तब अपने तप, ज्ञान आदि को छोड़ दिया। यह जानते हुए भी हम क्या इसको भगाए बिना साथ कर लें? । ३७०

कूऱ्ऱुवऩ् ऱऩ्ऩॊडिव् वुलहङ् गूडिवऩ्, देऱ्ऱऩ वॆऩ्ऩिऩुम् वॆल्ल वेऱ्ऱुळेम्
माऱ्ऱवऩ् ऱम्बिनम् मरुङ्गु वन्दिवण्, तोऱ्ऱुमो वऩ्ऩवऩ् ऱुणैव ऩाहुमो 371

कूऱ्ऱुवऩ् तऩ्ऩॊटु–यम के साथ; इ उलकम्–यह लोक; कूटि वन्तु–मिल आकर; एऱ्ऱऩ–युद्ध करे; ऎऩ्ऩिऩुम्–तो भी; वॆल्ल–जीतने को; एऱ्ऱुळेम्–ठाना है; माऱ्ऱवऩ् तम्पि–वैरी का अवरज; इवण्–यहाँ; नम् मरुङ्कु वन्तु–हमारे पास आकर; तोऱ्ऱुमो–दिखायी दे; अऩ्ऩवऩ्–वह; तुणैवऩ् आकुमो–सहायक बन सकेगा। ३७१

हम यह प्रतिज्ञा लेकर आये हैं कि सारा लोक यम को सहायक के

रूप में लेकर क्यों न आये युद्ध करने, हम उन्हें परास्त कर देंगे। उस स्थिति में द्रोही का भाई हमारे पक्ष में दिखायी दे ? ऐसा आये तो भी वह हमारा सहायक साथी रह सकेगा क्या ? । ३७१

अरक्करै याशऱक् कॊन्ऱु नल्लऱम्
पुरक्कवन् दनमॆन्नुम् पॆरुमै पूण्डनाम्
इरक्कमि लवरैये तुणैक्कॊण् डेऱलाल्
शुरुक्कमुण् डवर्वलिक् कॆन्ऱु तोन्ऱुमाल् 372

अरक्करै–राक्षसों को; आचु अऱ–निश्शेष; कॊन्ऱु–मारकर; नल् अऱम्–उत्तम धर्म की; पुरक्क–रक्षा करने हेतु; वन्ततनम्–आये; ऎन्नुम्–ऐसा; पॆरुमै पूण्ट नाम्–यह गौरवधारी हम; इरक्कम् इल्–निर्दय; अवरैये तुणै कॊण्टु–उन्हीं को सहायक बनाकर; एऱलाल्–(युद्ध में) चढ़े तो; अवर् वलिक्कु–उन (श्रीराम-लक्ष्मण) के बल में; चुरुक्कम् उण्टु–कोई कमी थी; ऎन्ऱु तोन्ऱुम्–ऐसा दिखायी देगा। ३७२

हम यह अभिमान ले आये हैं कि हम सारे राक्षसों को निश्शेष मार डालकर सुधर्म का पालन करेंगे। फिर निर्दय उन्हीं को अपना सहायक बनाकर युद्ध में बढ़ेंगे तो लोगों को यही लगेगा कि हमारी शक्ति में कोई कमी थी। ३७२

विण्डुऴि यॊरुनिलै निऱ्पर् मय्म्मुहम्
कण्डुऴि यॊरुनिलै निऱ्पर् कैप्पॊरुळ्
कॊण्डुऴि यॊरुनिलै निऱ्पर् कूऴुडन्
उण्डुऴि यॊरुनिलै निऱ्पर् उऱ्ऱवर् 373

उऱ्ऱवर्–निकट के वन्धु लोग; विण्टु उऴि–वियुक्तावस्था में भी; ऒरु निलै–एक ही स्थिति में; निऱ्पर्–स्थिति रहते हैं; मॆय् मुकम् कण्टुऴि–साक्षात् सामने देखने पर भी; ऒरु निलै–एक स्थिति में; निऱ्पर्–रहते हैं; कै पॊरुळ्–हाथ का धन; कॊण्टुऴि–(किसी के हर) ले जाने पर भी; ऒरु निलै–एक ही स्थिति में; निऱ्पर्–रहते हैं; कूऴुटन् उण्टुऴि–साथ बैठे भोजन करते समय भी; ऒरु निलै निऱ्पर्–एक ही स्थिति में रहते हैं। ३७३

सच्चे वन्धु जो हैं वे पीठ पीछे हों या मुख के सामने, एक जैसे रहते हैं; मित्र के हाथ के धन के खो जाने पर हो या उसके सबके साथ रहकर भोजन करने की स्थिति में हो एक ही स्थिति में रहते हैं। ३७३

वञ्जनै यियऱ्ऱिड वन्द वाऱलाल्, तञ्जॆन नम्वयिऱ् चार्न्दु ळानलन्
नञ्जनैक् कॊडियनै नयन्दु कोडियो, अञ्जन वण्णवॆन् ऱरियक् कूऱिनान् 374

वञ्चनै–वञ्चना; इयऱ्ऱिट वन्त–करने हेतु आये (किये); आऱु अलाल्–प्रकार के सिवा; तञ्चु ऎन–शरण मानकर; नम् वयिन्–हमारे पक्ष में;

चार्ऩ्तुळात् अलऩ्–आया नहीं है; अञ्चऩ वण्ण–अंजनवर्ण; नञ्चु अॅऩ–विष-सम कॉटियऩै–क्रूर को; नयन्तु–चाहकर; कोटियो–मिला लेंगे क्या; अॅऩ्ऱु–ऐसा; अऱिय–अपना मन साफ़ विदित हो ऐसा; कूऱिऩाऩ्–कहा (सुग्रीव ने)। ३७४

इसका आना छल का ही उपाय लेकर हुआ है। न कि सचमुच हमारी शरण लेने को। हे अंजनवर्ण स्वामी! यह विष के समान क्रूर है। इसको चाह के साथ अपने पक्ष में कर लेंगे क्या? सुग्रीव ने साफ़-साफ़ अपने मन का भाव प्रगट किया। ३७४

अऩ्ऩवऩ् पिऩ्ऩुर् वलहिल् केळ्वियिल्, तऩ्ऩिहर् पिऱरिलात् तहैय शाम्बऩै
अॅऩ्ऩैयुऩ् करुत्तॅऩ विऱैवि ऩायिऩाऩ्, तॊऩ्मुऱै नॅऱिदॅरिऩ् दवनुञ् जॊल्लुवाऩ् 375

अऩ्ऩवऩ् पिऩ् उऱु–उसके पश्चात्; अलकु इल्–अपार; केळ्वियिल्–शास्त्र-श्रवण में; तऩ् निकर्–अपनी बराबरी का; पिऱर् इला–जिसका कोई नहीं; तकैय चाम्पऩै–शिष्ट जाम्बवान को; उऩ् करुत्तु अॅऩ्ऩॅ–तुम्हारा अभिप्राय क्या है; अॅऩ–ऐसा; इऱै विऩायिऩाऩ्–प्रभु ने पूछा; तॊल् नॅऱि मुऱै–प्राचीन शास्त्र की रीतियों के; तॅरिन्तवऩुम्–ज्ञाता ने भी; चॊल्लुवाऩ्–कहा। ३७५

उसके कह चुकने के बाद प्रभु श्रीराम ने जाम्बवान से, जो अपार शास्त्रश्रवणज्ञान में अनुपम था, पूछा कि इसमें तुम्हारी राय क्या है? प्राचीन नीतिमार्ग के परिचित जाम्बवान यों बोला। ३७५

अऱिञरे यायिऩुम् अरिय तॅव्वरैच्, चॅऱिञरे यावरेऱ् कॅडुद ऱिण्णमाम्
नॅऱिदऩै नोक्किऩु निरुदर् निऱ्पदोर्, कुऱिनऩि युळदॆऩ वुलहङ् गॊळ्ळुमो 376

अऱिञरे आयिऩुम्–बहुज्ञ भी क्यों न हो; अरिय तॅव्वरै–दुर्वार शत्रुओं के; चॅऱिञरे आवरेल्–समीपस्थ हो जाएँ तो; कॅटुतल् तिण्णम् आम्–नाश होना निश्चित है; नॅऱि तऩै–उनके मार्ग को; नोक्किऩुम्–देखने से भी; निरुतर् निऱ्पतु–राक्षसों में प्राप्य; ओर् नऩि कुऱि–उत्तम लक्षण; उळतु–प्राप्त हैं; अॅऩ–ऐसा मानकर; उलकम्–संसार; कॊळ्ळुमो–(इनको पक्ष में कर लेना) ठीक मान लेगा क्या। ३७६

ज्ञानी ही क्यों न हों, वे दुर्वार शत्रुओं को समीप रख लेंगे तो उनका नाश ध्रुव है। इन राक्षसों का अपनाया मार्ग देखें तो भी क्या लोक यह मान सकता है कि इनके पास स्थायी अच्छे लक्षण हैं? । ३७६

वॅऱ्ऱियुन् दरुहुवर् विऩैयम् वेण्डुवर्, मुऱ्ऱुव रुऱुहुऱै मुडिप्पर् मुऩ्बिऩाल्
उऱ्ऱुऱु नॅडुम्बहै युडैय रल्लदूउम्, शिऱ्ऱिऩत् तवरॊडुञ् जॆऱिदल् शीरिदो 377

उऱ्ऱुऱु नॅटुपकै उटैयर्–बनी रही दीर्घ शत्रुता रखनेवाले (शत्रु); विऩैयम् वेण्टुवर्–कार्य-सफलता चाहते हैं; वॅऱ्ऱियुम् तरुकुवर्–(पहले) विजय भी दिला देंगे; मुऩ्पिऩाल्–बल का प्रयोग कर; उऱु कुऱै–हमारी चाह; मुटिप्पर्–पूरा करेंगे; मुऱ्ऱुवर्–सदा घेरे (साथ) रहेंगे; अल्लतूउम्–अलावा भी;

चिऱ्ऱिऩत्तवरोटुम्–नीच समाज के लोगों के साथ; **चॅरितल्**–मिला रहना; **चीरितो**–भला होगा क्या। ३७७

जो बनी रही शत्रुता लम्बे अर्से से रखते हैं, वे अपना मतलब साधना चाहेंगे। हमारे पास आकर आरम्भ में हमारी सहायता करके विजय दिलाएँगे। बल लगाकर हमारी आवश्यकताएँ पूरी करेंगे, हमेशा हमारे साथ हमको घेरे रहेंगे। (उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता।) और भी नीच जाति के लोगों के साथ सहवास उत्तम होगा क्या? । ३७७

वेदमुम् वेळ्वियुम् विलक्कि वेदियर्क्, केदमु मिमैयवर्क् किडरु मीट्टिय
पादहर् नम्वयिर् पडर्व रामॅनिऩ्, तीदिल रायऩमक् कऩ्बु शॅय्वरो 378

वेतमुम्–वेदों और; **वेळ्वियुम् विलक्कि**–यागों को मना कर; **वेतियर्क्कु**–वेदपालक ब्राह्मणों को; **एतमुम्**–कष्ट; **इमैयवर्क्कु**–और देवों को; **इटरुम्**–दुःख; **ईट्टिय**–बलात् जो देते रहते हैं; **पातकर्**–वे पातक; **नम् वयिऩ्**–हमारे पक्ष में; **पटर्वराम्**–मिलने आएँगे; **ॲऩिऩ्**–तो; **तीतु इलराय्**–हानिकारक न रहकर; **नमक्कु**–हमारे साथ; **अऩ्पु चॅय्वरो**–स्नेह करेंगे क्या। ३७८

ये राक्षस पापी पातक हैं। वे वेद और यज्ञादि को वर्जित करते हैं; वेदज्ञ ब्राह्मणों को कष्ट देते हैं। देवों को संकट दिलाते हैं। ऐसे वे हमारे पास आकर हमारी हानि न चाहकर हमसे प्रेम करेंगे क्या। ३७८

कैप्पुहुन् दोरुशर णळित्तुक् कात्तुमेल्
पॉय्क्कॉडु वञ्जऩै पुणर्त्त पोदिऩुम्
मॅय्क्कॉळ विळियिऩुम् विड्डु मॅऩ्ऩिऩुम्
तिक्कुरु नॅडुम्बऴि यऱमुऩ् जीऱुमाल् 379

कै पुकुन्तु–हमारे हाथ में (शरण में) आने पर; **ओरु चरण् अळित्तु**–शरण देकर; **कात्तुमेल्**–उनकी रक्षा करेंगे तो; **पॉय् कॉटु**–असत्य के साथ; **वञ्चऩै पुणर्त्त पोतिऩुम्**–वंचना करने पर भी; **मॅय् कॉळ**–हमारा शरीर खोकर; **विळियिऩुम्**–हमारे मरने पर भी; **विटुतुम् ॲऩ्ऩिऩुम्**–उनको त्याग देंगे तो भी; **नॅटु पऴि**–बड़ा अपयश; **तिक्कु उऱुम्**–दिशा-दिशा में फैल जायगा; **अऱमुम् चीऱुम्**–धर्मदेवता भी गुस्सा करेंगे। ३७९

वे हमारे पास शरण चाहते हैं। हम उनको शरण देकर उनका भला करेंगे तो चाहे वे धोखा और फ़रेब करें, या हमको अपना शरीर खोकर मरना पड़े हमारा अपयश ही होगा। और वह आठों दिशाओं में फैल जायगा। स्वयं धर्मदेवता भी हम पर कुपित होगा। ३७९

मेलऩि विळैवदु विळम्ब वेण्डुमो, काऩहत् तिऱैवियो डुऱैयुङ् गालैयिऩ्
माऱॅऩ वन्दवऩ् वरवै माऩुमिव्, वेलैयऩ् वरवुमॅऩ् ऱिऩैय कूऱिऩाऩ् 380

मेल्–आगे; नत्ति विळैवतु–विपुल परिमाण में जो होगा; विळम्प वेण्टुमो–वह (कष्ट) कहना है क्या; कातकत्तु–वन में; इरैवियोटु–भगवती सीता के साथ; उरैयुम् कालैयिन्–जब आप रहते थे तब; मान् अॅन्न–हरिण के समान; वन्तवन्–जो आया; वरवै–उसके आगमन को; इव् एतैयवन् वरवुम्–इस अजनवी का आना; मानुम्–समानता करेगा; अॅन्ऱु–ऐसा; इत्तैय कूऱिनान्–ये बातें कहीं। ३८०

फिर आगे निश्चित रूप से जो होगा, उसको कहना है क्या? जब प्रभु आप देवी सीताजी के साथ जंगल में रहे, तब हरिण के रूप में मारीच आया था। इस अजनबी का अब इधर आना और वह मारीच का आना दोनों एक-से हैं। जाम्बवान ने ये अभिप्राय कहे। ३८०

पाल्वरु पनुवलिन् ऱुणिवु पऱ्ऱिय, शाल्पॅरुङ् गेळ्वियन् ऱानै नायहन्
नीलनै निन्गरुत् तियम्बु नीयॅन, मेलवन् विळम्बलुम् विळम्बन् मेयिनान् 381

पाल् वरु–अनेक काण्डों में रहनेवाले; पनुवलिन्–शास्त्र-ग्रन्थों का; तुणिवु–निष्कर्ष; पऱ्ऱिय–पकड़कर चलनेवाले; चाल् पॅरु–बहुत अधिक; केळ्वियन्–शास्त्रश्रवणज्ञानी; तानै नायकन्–सेनानायक; नीलनै–नील को देखकर; नी–तुम; निन् करुत्तु–अपना विचार; इयम्पु–कहो; अॅन–ऐसा; मेलवन्–महिमावान श्रीराम के; विळम्पलुम्–कहने पर; विळम्पल्–(उसने) कहना; मेयिनान्–आरम्भ किया। ३८१

बाद, अनेक काण्डों में विभक्त मनुशास्त्र आदि शास्त्रों के सार से खूब परिचित और गंभीर श्रवणज्ञान के रखनेवाले सेनानायक नील से संमान्य श्रीराम ने कहा कि तुम अपना विचार कहो। तब नील कहने लगा। ३८१

पहैवरैत् तुणैयॅनप् पऱ्ऱल् पालवाम्, वहैयुळ वन्नवै वरम्बिल् केळ्वियाय्
तॊहैयुरक् कूऱुवॅन् कुरङ्गिन् शॊल्लॅन्न, नहैयुऱ लिन्ऱिये नयन्दु केट्टियाल् 382

वरम्पिल् केळ्वियाय्–अपार श्रवणज्ञानी; पकैवरै–शत्रुओं को; तुणै अॅन्न–साथी के रूप में; पऱ्ऱल् पालवाम्–ग्रहण करने योग्य; वकै–रीतियाँ; उळ–(अनेक) हैं; अन्नवै–उनको; तॊकै उऱ–संग्रह कर; कूऱुवॅन्–कहूँगा; कुरङ्किन् चॊल्–वानर का वचन; अॅन्न–समझाकर; नकै उऱल् इन्ऱिये–हँसी किये विना; नयन्तु केट्टि–प्यार के साथ सुनें। ३८२

हे अपार श्रवणज्ञानी! शत्रुओं को अपने पास रखा जाए, इसके अनेक प्रकार हैं। अब मैं उनको संगृहीत करके कहूँगा। वानर का वचन मानकर परिहास न करें, बल्कि इच्छा के साथ सुनिएगा। ३८२

तङ्गुलक् किळैञरैत् तरुक्कुम् बोरिडैप्
पॊङ्गुनरक् कॊन्ऱवरक् कॅळियवर् पोन्दवर्

मङ्गैयर् तिऱत्तितिऩ् वयिर्त्त शिऩ्दैयर्
शिङ्गलिल् पॅरुम्बॊरु विळन्दु शीऱिऩॊर् 383

तम् कुल–अपने कुल के; किळैञरै–रिश्तेदारों को; तरुक्कुम्–गर्व के (साथ किये जानेवाले); पोर् इटै–युद्ध में; पॊङ्कुनर्–क्रोध में उबलकर; कॊऩ्ऱवर्क्कु–मारने में उद्यत लोगों से; अॅळियर्–निर्बल हो; पोन्तवर्–आगत; मङ्कैयर् तिऱत्तितिऩ्–स्त्रियों के कारण; वयिर्त्त चिन्तैयर्–वैर रखनेवाले मन के लोग; चिक्कल् इल्–अक्षय; पॅरुम्पॊरुळ्–विपुल धनराशि; इळन्तु–खोकर; चीऱिऩॊर्–कुपित लोग। ३८३

(इन लोगों को अपने पक्ष में मिला लिया जा सकता है—) जब शत्रु किसी के कुल के लोगों को मारने के लिए वैर के साथ युद्ध छेड़ता है, तब उससे त्रस्त और दीन बने उसको; स्त्री पर अत्याचार करने के कारण शत्रु के साथ (बदला लेने के विचार से) लड़नेवाले को; जो अपने अक्षय सारे धन को खो देकर धन को छीननेवाले पर क्रोध के साथ आक्रमण करना चाहता है उसको (अपने पक्ष में लिया जा सकता है।)। ३८३

पेरबि मानङ्ग ळुऱ्ऱ पॅऱ्ऱियोर्, पोरिडैप् पुऱङ्गॊडुत् तञ्जिप् पोन्दवर्
नेर्वरु तायत्तु निरप्पि ऩॊर्पिऱर्, शीरिय किळैञरै मडियच् चॅऱ्ऱुळोर् 384

पेर् अपिमातङ्कळ् उऱ्ऱ–बहुत देहाभिमान से; पॅऱ्ऱियोर्–युक्त स्वभाव वाले; पोर् इटै युद्ध में; पुऱम् कॊटुत्तु–पीठ दिखाकर; अञ्चि पोन्तवर्–डर से भाग जानेवाले; नेर् वरु–सीधे रिश्ते के; तायत्तु–दायाद के हाथ धन खोकर; निरप्पिऩॊर्–दरिद्र हुए लोग; पिऱर्–दूसरों के; चीरिय किळैञरै–श्रेष्ठ सम्बन्धियों को; मटिय चॅऱ्ऱुळोर्–मारने तक का वैर रखनेवाले। ३८४

(और) बहुत देहाभिमानी, युद्ध से डरकर पीठ दिखाते हुए भाग आनेवाला, दायाद की वंचना से धन खोकर दरिद्र बना मनुष्य, दूसरों के श्रेष्ठ बंधु-बांधवों को मारने की शत्रुता रखनेवाला—(इनको लिया जा सकता है।)। ३८४

अडुत्तनाट् टरशिय लुडैय वाणैयाऱ्
पडुत्तवर् नट्टवर् पहैञ रोडॊरु
मडक्कॊडि तिऱत्तिडै वैत्त शिन्दैयर्
उडऩ्कॊळत् तहैयर्नम् मुळ्वन् दॊऩ्ऱिऩाल् 385

अटुत्त नाट्टु–पड़ोसी राज्य के; अरचियल् उटैय–शासन (राजा) की; आणैयाल्–आज्ञा से; पटुत्तवर्–त्रस्त होकर; नट्टवर्–मित्रता चाहनेवाले; पकैञरोटु–शत्रुओं के दल की; ऒरु मट कॊटि–एक बाला लता-सी कन्या के; तिऱत्तिटै–सम्बन्ध में; वैत्त चिन्तैयर्–लगे मन वाले; नम् उळ् वन्तु–हमारे पास आकर; ऒऩ्ऱिऩाल्–मिलें तो; उटऩ् कॊळ–साथ रखने; तकैयर्–योग्य हैं। ३८५

पड़ोसी राज्य की आज्ञा के कारण पीड़ित हो मित्रता चाहनेवाले; विरोधियों के पक्ष की लता-सी बाला पर प्रेम करनेवाले —ये लोग हमारे पास आ मिलें तो वे लेने अर्ह हैं। ३८५

तामुऱ् वॅळिवरुन् दहैमै यारलर्, नामुऱ् वल्लवर् नम्मै नण्णिताल्
तोमुऱ् नीङ्गुद ऱुणिव रादलिऩ्, यामिवऩ् वरविवऱ् ऱॅऩ्ऩॆऩ् ऱुऩ्ऩुवाम् 386

ताम् उऱ्–स्वयं ही; ॲळिवरुम्–आकर शरण माँगें ऐसे दीन; तकैमैयार् अलर्–स्वभाव वाले जो नहीं हैं; नाम् उऱ्–(दूसरों के मन में) भय लगे ऐसे; वल्लवर्–प्रतापी; नम्मै नण्णिताल्–हमारे पास आएँ; तोम् उऱ्–अपराधी बनकर; नीङ्कुतल् तुणिवर्–छोड़ जाना ठानेंगे; आतलिऩ्–इसलिए; याम्–हम; इवऩ् वरवु–इसका आना; इवऱ्ऱु ॲऩ्–इन प्रकारों में किस प्रकार से; ॲऩ्ऱु–यह; उऩ्ऩुवाम्–सोचेंगे। ३८६

जो इतने दीन नहीं कि वे स्वयं हमारे पास शरण पाने आएँ, और जो बलवान हैं, वे हमारे पास आएँ तो ऐसे लोग बीच में हमें छोड़ जाने को निश्चित रूप से तैयार रहेंगे। अब हमें देखना यह है कि इसका आना किस श्रेणी में आता है। ३८६

कालमे नोक्किनुङ् गऱ्ऱ नूल्हळिऩ्, मूलमे नोक्किनु मुऩिऩ्दु पोऩ्दवऩ्
शीलमे नोक्कियान् दॅळिन्दु तेऱुदर्, केलुमे यॅऩ्ऱॅडुत् तिऩैय कूऱिनान् 387

कालमे नोक्किनुम्–काल के सम्बन्ध में सोचें तो; कऱ्ऱ नूल्कळिऩ् मूलमे–सीखे हुए शास्त्रों के आधार पर; नोक्किनुम्–सोचें तो भी; मुनिन्तु पोन्तवन्–अपने भाई से क्रोध करके जो आया है; चीलमे नोक्कि–उसका शील-स्वभाव देखकर; याम् तॅळिन्तु–हम असंशय होकर; तेऱतऱ्कु–विश्वास करें यह; एलुमे–उचित होगा क्या; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इत्तैय ॲटुत्तु कूऱितान्–ये बातें बतायीं (नील ने)। ३८७

इसके आने का समय देखते हैं या सीखे हुए शास्त्रों के आधार पर सोचते हैं तो यह प्रश्न उठेगा। जो अपने भाई से गुस्सा करके आया है उसके अब के शीलसहित व्यवहार के ही आधार पर उस पर विश्वास किया जा सकता है क्या ? नील ने ऐसा खोलकर कहा। ३८७

मऱ्ऱुळ मन्दिरक् किळवर् वाय्मैयाल्, कुऱ्ऱमिल् केळ्विय रऩ्बु कूऩ्दवर्
पऱ्ऱुदल् पळुदॆऩप् पळुदु ऱावॊरु, पॆऱ्ऱियि ऩुणर्विऩार् मुडियप् पेशिनार् 388

कुऱ्ऱम् इल्–निर्दोष; केळ्वियर्–श्रवणज्ञानी; अन्पु कूऩ्तवर्–श्रीराम से भक्ति रखनेवाले; मऱ्ऱुळ–और रहे; मन्तिर किळवर्–मन्त्रणा के अधिकारी मन्त्री लोगों ने; पळुतु उऱा–अमोघ; ओरु पॆऱ्ऱियिऩ् उणर्विनार्–एक ही भाव का अनुभव करनेवाले हो; वाय्मैयाल्–सत्य ही; पऱ्ऱुतल्–ग्रहण करना; पळुतु–दोषपूर्ण है; ॲन–ऐसा; मुटिय पेचिनार–असंदिग्ध रीति से कहा। ३८८

इस भाँति अन्य मंत्रियों ने एक-मत हो, ईमानदारी से और दृढ़तापूर्वक कहा कि विभीषण का ग्रहण गलत है। वे सभी त्रुटिहीन शास्त्र-श्रवण-प्राप्त ज्ञान के थे। श्रीराम पर भलीभाँति प्रेम रखनेवाले थे और सलाह देने की योग्यता भी खूब रखते थे। ३८८

उरुपॊरुळ् यावरु मॊन्ऱक् कूऱितार्
शॆऱिपॆरुङ् गेळ्वियाय् करुत्तॆन् शॆप्पॆन
नॆऱिदरु मारुदि यॆन्नु नेरिला
अऱिवनै नोक्किना नऱिविन् मेलुळान् 389

अऱिविन् मेल् उळान्–मतिश्रेष्ठ या बुद्धि से परे; नॆऱि तरुम्–सत्पथदर्शी; मारुति ऎन्नुम्–मारुति नाम के; नेर् इला अऱिवनै–अनुपम बुद्धिशाली से; चॆऱि पॆरुम्–गम्भीर और विपुल; केळ्वियाय्–श्रवणज्ञान रखनेवाले; उरु पॊरुळ्–कर्तव्य कार्य; यावरुम्–सभी ने; ऒन्ऱ् कूऱितार्–एक ही बताया; करुत्तु ऎन्–(तुम्हारी) राय क्या; चॆप्पु ऎन–कहो ऐसा; नोक्किनान्–देखा (पूछते हुए)। ३८९

बुद्धि के परे रहनेवाले श्रीराम ने सन्मार्गदर्शी, अनुपम विद्वान् हनुमान से कहा कि युक्त श्रवणज्ञानी! सभी ने करने योग्य एक ही कार्य की सलाह दी है! अब तुम कहो कि अपनी राय क्या है? (वाल्मीकी में "मतिश्रेष्ठ' शब्द है। उसका तमिऴ अनुवाद कवि ने ऐसा किया है कि "अबुद्धिगोचर" अर्थ भी हो।)। ३८९

इणङ्गिन रऱिविल रॆनिनु मॆण्णुङ्गाल्
कणङ्गॊळ्है नुम्मनोर् कडन्मै काणॆन
वणङ्गिय शॆन्तियन् मऱैत्त वायिनन्
नुणङ्गिय केळ्विया नुवल्व दायिनान् 390

इणङ्कितर्–मिलने आये; अऱिविलर्–बुद्धिहीन हैं; ऎनिनुम्–तो भी; ऎण्णुम् काल्–सोचने पर; कणम् कॊळ्कै–अपने समूह में लेना; नुम्मनोर्–आप जैसों का; कटन्मै काण्–कर्तव्य है, समझ लीजिए; ऎन–ऐसा कहकर; नुणङ्किय–सूक्ष्म; केळ्वियान्–श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान के अधिकारी ने; वणङ्किय चॆन्तियन्–नतमस्तक; मऱैत्त वायिनन्–उँगलियों के ओट किये मुख वाला बनकर; नुवल्वतु आयिनान्–कहना आरम्भ किया। ३९०

हनुमान का यह कहने का उद्देश्य था कि हमारे शरणागत चाहे बुद्धिहीन क्यों न हों उन्हें, विचारा जाय, तो अपने समाज में ग्रहण करना ही आप-जैसों का कर्तव्य है। हनुमान सूक्ष्मता से श्रवण करके ज्ञान प्राप्त कर चुका विद्वान् था। उसने शिष्टाचारवश अपना सिर झुकाते हुए और मुख के सामने अपनी अँगुलियाँ धरते हुए कहना आरम्भ किया।

(वाल्मीकी में "मित्रभावेन संप्राप्तं" है। कवि के अनुवाद की सुन्दरता है कि शरणागत अर्थ भी पाया जा सकता है।)। ३९०

ॲत्तनै युळर्तॅरिन् दॅण्ण वेय्न्दवर्, अत्तनै वरुमॊरु पॊरुळै यन्ऱॆन
उत्तम रदुदॅरिन् दुणर वोदिनार्, वित्तह विन्निच्चिल विळम्ब वेण्डुमो 391

तॅरिन्तु ऍण्ण एय्न्तवर्–समझदार चिंतक; ॲत्तनै उत्तमर् उळर्–जितने उत्तम लोग हैं; अत्तनैवरुम्–सभी ने; ऑरु पॊरुळै–एक विषय को; अतु अन्ऱु ॲन–वह (ग्राह्य) नहीं ऐसा; तॅरिन्तु उणर–जानें-बूझें, ऐसा; ओतिनार्–कहा है; वित्तक–विद्वान्; इन्नि–अब भी; चिल–कुछ और; विळम्प वेण्टुमो–कहना चाहिए क्या। ३६१

यहाँ जान-बूझकर सोच सकनेवाले जितने उत्तम व्यक्ति हैं, उन सब ने खूब विश्लेषण करके समझा कि वह काम करने योग्य नहीं और उसे इस रीति से समझाया कि सुननेवाले भलीभाँति समझें। हे विद्याविदग्ध! क्या मुझे भी और कुछ कहना चाहिए। ३९१

तूयवर् तुणिदिऱ नन्ऱु तोयदे
आयिनु मॊरुपॊरु ळुरैप्पॆ नाऴियाय्
तीयनॆन् ऱिवनैया नयिर्त्तल् शॅय्हिलेन्
मेयिन शिलपॊरुळ् विळम्ब वेण्डुमाल् 392

तूयवर्–परिशुद्धमन इनका; तुणि तिऱन्–निर्णीत विषय; तीयते अन्ऱु–बुरा नहीं; आयितुम्–तो भी; आऴियाय्–चक्रधारी; ऑरु पॊरुळ्–एक बात; उरैप्पॆन्–कहूँगा; यान्–मैं; इवनै–इसको; तीयन् ॲन्ऱु–बुरा कहकर; अयिर्त्तल् चॅय्किलेन्–संशय नहीं करूँगा; मेयिन–युक्त; चिल पॊरुळ्–कुछ विषय; विळम्प वेण्टुम्–कहना चाहिए। ३६२

ये सब शुद्धमन हैं। इनका निर्णय बुरा ही नहीं है। तो भी, चक्रधारी प्रभु! मैं एक विषय बताऊँगा। मैं विभीषण के तईं यह सन्देह नहीं करूँगा कि वह बुरा व्यक्ति है। इसकी पुष्टि में मुझे कुछ विषय निवेदन करना है। ३९२

वण्डुळा यलङ्गलाय् वञ्जर् वाण्मुहम्
कण्डदोर् पॊळुदिनिऱ् ऱॆरियुङ् गैदवम्
उण्डॅनि नः(ह्)दवर्क् कॊळिक्क वॊण्णुमो
विण्डवर् नम्बुहन् मरुवि वॊऴ्वरो 393

वण् तुळाय् अलङ्कलाय्–पुष्ट तुलसीदलों की बनी माला-धारी; वञ्चर्–छलियों का; वाण्मुकम्–प्रफुल्ल मुख; कण्टतोर् पॊऴुतिनिल्–देखते उसी समय में ही; तॅरियुम्–(स्वभाव) प्रगट हो जायगा; कैतवम्–कैतव; उण्टु–है; ॲनिन्–तो; अ॰॰तु–उसे; ऑळिक्क–छिपाना; अवर्क्कु ऑण्णुमो–उन्हें साध्य

है क्या; विण्टवर्–सचमुच हमसे जो पराये हैं; नम्पुकन् मरुवि–वे हमारी शरण लेकर; वीळ्वरो–ठहरे रहेंगे क्या। ३९३

हे हरी तुलसीमाला-धारी! वंचकों का प्रकाशमय वदन देखने भर से सच्ची बात विदित हो जायगी। अगर मन में वंचना है तो उसे छिपाना उन्हें साध्य होगा क्या? सच्चे विरोधी हमारी शरण पहुँचेंगे क्या? (वाल्मीकी भगवान का वचन है: आकारश्छाद्यमानोऽपि न शक्यो विनिगूहितम्। बलाद्धि विवृणोत्येव भावमन्तर्गतं नृणाम्।)। ३९३

उळ्ळत्ति नुळ्ळदै युरैयिन् मुन्दुर
मॅळ्ळत्तम् मुहङ्गळे विळम्बु मादलाल्
कळ्ळत्तिन् विळैवॅलाम् करुत्ति लामिरुट्
पळ्ळत्ति नन्ऱियॆ वॅळियिऱ् पल्हुमो 394

इरुळ्–अन्धकार; पळ्ळत्तिन् अन्ऱियॆ–गड्ढे में नहीं तो; वॅळियिल्–खुले मैदान में; पल्कुमो–अधिक घना दिखेगा क्या; कळ्ळत्तिन् विळैवु ॲलाम्–छल का नतीजा सब; करुत्तिल् आम्–मन में रहेगा; आतलाल्–इसलिए; उळ्ळत्तिन् उळ्ळतै–मन में जो है उसे; उरैयिन् मुन्तु उर–शब्दों के पहले; तम् मुकङ्कळे–(छलियों के) अपने मुख ही; मॅळ्ळ विळम्पुम्–धीरे-धीरे दिखा देंगे। ३९४

अंधकार गड्ढे में घना दिखता है। क्या वह खुले मैदान में उतना घना दिख सकता है? उसी भाँति वंचना का व्यापार मन में ही होता है। इसलिए उस चोर-भाव को शब्दों से पहले मुख के भाव प्रकट करा देंगे। ३९४

वालिविण् पॅऱवर शिळैय वन्पॅऱक्, कोलिय वरिशिलै वलियुङ् गोऱ्ऱमुम्
शीलमु मुणर्न्दुनिऱ् चेर्न्दु तॅळ्ळिदिन्, मेलर शॅय्दुवान् विरुम्बि मेयिनान् 395

वालि–वाली; विण् पॅऱ–स्वर्ग जाए; इळैयवन्–उसका अवरज; अरचु पॅऱ–राज्य पाए; कोलिय वीर चिलै–तदर्थ झुकाए आपके सबन्ध धनु के; वलियुम्–बल को; कोऱ्ऱमुम्–विजय को; चीलमुम्–उत्तम आचरण को; उणर्न्तु–जानकर; निन् चेर्न्तु–आपकी शरण में आकर; तॅळ्ळितिन्–साफ़ रूप से; मेल् अरचु–स्वर्गराज्य; ॲय्तुवान् विरुम्पि–पाना चाहकर; मेयितान्–आया है। ३९५

यह वाली की मोक्षप्राप्ति, सुग्रीव की राज्यप्राप्ति, आपके कोदण्ड का बल, आपकी विजयगाथा, आपका शील (सौलभ्य) आदि समझ चुका है। आपकी शरण में वह श्रेष्ठ (लंका का या मोक्ष का) राज्य पाने की इच्छा से आया है। ३९५

शॅऱिहळ् लरक्करत मरशु शीरियोर्, नॅऱियल दाहलि निलैक्क लामैयुम्
ॲऱिहड लुलहॆला मिळवर् कीन्ददोर्, दिऱिवरङ् गरुणैयु मॅय्युम् पेणिनान् 396

चॅरि कळल् अरक्कर् तम्–बंधी हुई पायलधारी राक्षसों का; अरचु–राज्य; चीरियोर् नॅरि अलतु–साधुओं के मार्ग पर नहीं चलता; आतलिन्–इसलिए; निलॅक्कलामैयुम्–उसका अस्थायित्व भी; ॲरि कटल् उलकु ॲलाम्–तरंग-भरे समुद्र-वसना सारी भूमि को; इळवर्कु–अपने छोटे भाई को; ईन्ततोर्–जो दे दिया उस आपकी; पिरिवरुम् करुणॅयुम्–अभूतपूर्व करुणा; मॅय्युम्–और आपकी सत्यता; पेणिनान्–(इसने) पसन्द की। ३६६

बद्धपायलचरण राक्षसों का आचरण शिष्ट लोगों का नहीं है। वह अस्थायी भी है। उसने इनको जाना। लहरकलित सागर-वलयित भूमि को श्रीराम ने अपने भाई को दे दिया था। उनकी उस अभूतपूर्व करुणा और सत्यवादिता का भी भान किया। अतः वह स्वयं इन बातों से आकृष्ट होकर आया है। ३९६

कालमन् रिवन्वरु काल मॅन्बरेल्, वालितन् नुरुपहै वलितॅी लैत्तलाल्
एलुमिङ् गिवर्किनि यिरुदि यॅन्रुनै, मूलमॅन् रुणर्दलार् पिरिवु मुर्रिनान् 397

इवन् वरु कालम्–इसका आने का समय; कालम् अन्रु–अकाल है; ॲन्परेल्–ये कहते हैं तो; वालि तन्–वाली का; उरु पकै वलि–लगी शत्रुता का बल; तॊलैत्तलाल्–आपने मिटाया इसलिए; इङ्कु–यही; इवर्कु–इस रावण का; इति–आगे; इरुति एलुम्–अन्त सम्भव हो गया; ॲन्रु–सोचकर; मूलम् ॲन्रु–आपको लोककारण ऐसा; उणर्तलाल्–समझने से; पिरिवु–उससे अलग होने का; मुर्रितान्–निश्चय कर लिया। ३६७

इसका आने का काल अकाल है—ऐसा कहा जाय तो वह कथन ठीक नहीं है। उसे लगा कि श्रीराम ने शत्रु वाली का बल मिटाया था, इसलिए रावण का भी अन्त कर सकेंगे। और भी वह यह भी जानता है कि श्रीराम सर्वाधार परमात्मा हैं। तभी उन्होंने अपने भाई से अलग होने को ठान लिया। ३९७

तीत्तॊळि लरक्करद मायच् चॅय्वित्तै, वाय्तुतळ रन्नवै युणरु माण्बिताल्
काय्त्तव रवर्हळे कयुर् रार्नमक्, केर्रदो रुदियु मॅळिदि नॅय्दुमाल् 398

ती तॊळिल्–बुरे कार्य; अरक्कर् तम्–(करनेवाले) राक्षसों की; मायम् चॅय्वित्तै–माया के कार्य में; वाय्त्तुळर्–मिले लगे हुए और; अन्नवै–उनको; उणरुम् माण्पिताल्–समझने की सूझ के काम में; काय्त्तवर्–खूब अनुभवी; अवर्कळे–वे ही; नमक्कु कै उर्रार्–हमारे जाल में आ फँसे हैं; एर्रतु–युक्त; ओर् उरुतियुम्–एक हित भी; ॲळितिन् ॲय्तुम्–सुगम रीति से प्राप्त हो जायगा। ३६८

ये कुकर्मी राक्षसों के कार्यों से परिचित हैं। उनको जान सकते हैं। ऐसे वे आप ही आप आकर हमारे वश में पहुँच गये हैं। इसलिए युक्त भलाई आसानी से प्राप्त हो जाएगी। ३९८

तॆळिवुऱ् ररिदिवर् मनत्तित्त् ढ्रीमैयाम्, विळिवदु शॆय्हुव रॆन्त्त वेण्डुदल्
ऑळियुऱ् वुयर्न्दव रोप्प वॆण्णलार्; ॲळियवर् तिऱत्तिवै यॆण्ण लेयुमो 399

याम्–हम; इवर् मनत्तित्–इनके मन में (छिपी); तीमै–बुराई; तॆळिवुरल्–जान लें यह; अरितु–कठिन है; विळिवु चॆय्कुवर्–मृत्यु को प्राप्त कराएँगे; ॲन्न वेण्टुतल्–ऐसा सोच सकते हैं; ऑळि उऱ्–यशोज्ज्वलता के साथ; उयर्न्तवर्–बड़े लोग; ॲण्णलार् ऑप्प–अविवेकी के समान; ॲळियवर् तिऱत्तु–दयनीय लोगों के सम्बन्ध में; इवै ॲण्णल्–ऐसा सोचना; एयुमो–उचित होगा क्या। ३९९

हमें इनके अन्तर्गत बुरे भावों के सम्बन्ध में जानना कठिन है। ये हमको मरवा देंगे —ऐसा कहा जा सकता है। पर गौरवोत्कृष्ट लोगों को अविवेकियों की भाँति दीनों के सम्बन्ध में ऐसा विचार मन में लाना युक्त होगा क्या ? । ३९९

कॊल्लुमि त्तिवनैयॆन् ऱरक्कन् कूऱिय
ॲल्लैयिऱ् ऱुदरै यॆऱिद लॆन्बदु
पुल्लिदु पळियॊडुम् पुणरुम् बोर्त्तॊळिल्
वॆल्ललम् पिन्नैयॆन् ऱिडैवि लक्किनान् 400

इवनै–इसको; कॊल्लुमिन्–मार डालो; ॲन्ऱु–ऐसा; अरक्कन् कूऱिय–जब राक्षस रावण ने कहा; ॲल्लैयिल्–उस समय; तूतरै ॲऱितल्–दूतों को मारना; ॲन्पतु–जो है वह; पुल्लितु–नीच काम है; पळियॊटुम्–अपयश के साथ; पुणरुम्–लग जायगा; पिन्नै–बाद; पोर् तॊळिल्–युद्ध-कार्य में; वॆल्ललम्–नहीं जीत सकेंगे; ॲन्ऱु–कहकर; इटै विलक्किनान्–बीच में (रावण को इसने मुझे मरवाने से) रोका था। ४००

राक्षस रावण ने जब कहा कि इसे (मुझे— हनुमान को) मारो, तब इसी ने बीच में पड़कर उसे यह कहकर रोका कि दूतों को मारना क्षुद्रों का काम है। वह अपयश की गणना में मिल जायगा। फिर युद्धकृत्य में जीत नहीं सकेंगे। ४००

मादरैक् कोऱलु मऱत्तु नीङ्गिय, आदरैक् कोऱलु मळिवु शॆय्यितुम्
तूदरैक् कोऱलुन् दूय्दन् ऱामॆन्ना, एदुविऱ् चिऱन्दन वॆडुत्तुक् काट्टिनान् 401

मातरै–स्त्रियों को; कोऱलुम्–मारना; मऱत्तु नीङ्किय–वीरता-विहीन; आतरै–क्षुद्र को; कोऱलुम्–मारना और; अळिवु चॆय्यितुम्–नाशकारी काम करें तो भी; तूतरै कोऱलुम्–दूतों की हत्या करना; तूय्तु अन्ऱु आम्–श्लाघ्य काम नहीं होगा; ॲन्ना–ऐसा; एतुविल् चिऱन्तन–हेतुओं में श्रेष्ठ; ॲटुत्तु–लेकर; काट्टिनान्–दिखाया। ४०१

स्त्रियों को मारना, वीरता-विहीन छोटों को मारना और नाशकारी

होने पर भी दूतों को मारना अच्छा काम नहीं है। उसने अनेक युक्त हेतु बताकर यह बात मन में बैठायी। ४०१

ऍल्लियिल् यानिव तिरण माळिहै, शॅल्लिय पोदितुन् दिरिन्द पोदिनुम्
नल्लन निमित्तङ्गळ् नन्नि यन्दुळ, अल्लदु मुण्डुना तरिन्द दाळियाय् 402

आळियाय्–चक्रधारी; ऍल्लियिल्–रात में; यान्–मैं; इवन्–इसके; इरणम् माळिकै–स्वर्ण-महल में; चॅल्लिय पोतितुम्–जब गया, तब भी; तिरिन्त पोतितुम्–बाद उस ओर घूमा तब भी; नल्लन निमित्तङ्कळ्–श्रेष्ठ शुभ शकुन; नन्नि नयन्तुळ–तृप्तिदायक रीति से पुष्कल हुए; अल्लतुम्–इसके अलावा; नान्–मैंने जो; अरिन्ततु–जाना (इसके सम्बन्ध में); उण्टु–वह भी है। ४०२

हे चक्रधारी श्रीराम ! मैं रात में इसके स्वर्ण-प्रासाद में गया था, तब भी; और उसके आसपास घूमा तब भी मैंने अनेक शुभ शकुन ही देखे जो मुझे प्रसन्नता दे रहे थे। इसके अलावा और एक बात है, जो मैं इसके सम्बन्ध में जानता हूँ। ४०२

निन्दनै नरवमु नॅरियि लूनुगळुम्, तन्दन कण्डिलॅन् ररुम दानमुम्
वन्दनै नीदियुम् पिरवु माण्बमैन्, दन्दण रिल्लॅनप् पॉलिन्द दामरो 403

निन्तनै–निन्दनीय; नरवमुम्–सुरा; नॅरियिल्–सदाचार-विरुद्ध; ऊनुकळुम्–मांसाहार; तन्तन–सेवन; कण्टिलॅन्–नहीं देखा; तरुमम् तानमुम्–धर्म और दान; वन्तनै–बड़ों की वन्दना; नीतियुम्–नीति; पिरवुम्–और अन्य ऐसी बातें; माण्पु अमैन्तु–श्रेष्ठ रीति से रहकर; अन्तणर् इल् ॲन–वेदविप्रों के घर के समान; पॉलिन्ततु आम्–शोभायमान रहा। ४०३

वहाँ निंद्य मद्यसेवन या अन्य मांससेवन मैंने नहीं देखा। इसके विपरीत धर्म, दान वड़ों की वन्दना आदि नीतिसम्मत व्यवहार और अन्य शिष्ट व्यवहारों से युक्त होकर उसका प्रासाद ब्राह्मणों के गृह के समान शोभ रहा था। ४०३

अन्नवन् ऱनिमह ळलरिन् मेलयन्, शॉन्नदोर् शाबमुण् डुन्नैत् तुन्मदि
नन्नुद ऱीण्डुमे नणुहुङ् गूऱ्ऱॅन, ॲन्नुडै यिऱैविक्कु मिन्दि कूऱिताळ् 404

अन्नवन्–उसकी; तनि मकळ्–सर्वयोग्य पुत्री ने; नल् नुतल्–मनोरम भाल वाली; अलरिन् मेल्–कमलपुष्प पर के; अयन्–ब्रह्मा का; चॉन्नतु–कहा (दिया) हुआ; ओर् चापम् उण्टु–एक शाप है; तुन् मति–दुर्बुद्धि; उन्नै तीण्टु मेल्–आपको छुएगा तो; कूऱ्ऱु नणुकुम्–यम आ जायगा; ॲन–ऐसा; ॲन्नुटै इऱैविक्कुम्–मेरी आराध्या भगवती से भी; कूऱिताळ्–कहा। ४०४

और सुनिए। इसके एक उत्तम पुत्री है (त्रिजटा नाम की)। उसने मेरी आराध्या देवी सीता से यह सांत्वना के वचन कहे कि सुभालभामिनी ! कमलासन ब्रह्मा का दिया एक शाप है। उसके अनुसार दुर्बुद्धि रावण

आपका स्पर्श करेगा तो यम उसे अपने लोक को ले जाने पहुँच जायगा ! । ४०४

※ पॆऱ्ऱुडैय पॆरुवरमुम् पिऱन्दुडैय वञ्जनैयुम् पिऱवु मुन्नै
विऱ्ऱॊडैयिन् विडुकणैयाल् वॆन्दॊऴियु मॆनक्करुदि विरैविन् वन्दान्
उऱ्ऱुडैय पॆरुवरमु मुहन्दुडैय तण्णळियु मुणर्वु नोक्किन्
मऱ्ऱुडैयर् तामुळरो वाळरक्क नन्ऱियॆ तवत्तिन् मिक्कार् 405

पॆऱ्ऱुटैय पॆरु वरमुम्–प्राप्त बड़े वर; पिऱन्तुटैय–सहजात; वञ्चनैयुम्–और वञ्चना; पिऱवुम्–और अन्य; उन् कै विल्–आपके हाथ के कोदण्ड के; तॊटैयिन् विटु कणैयाल्–डोरे से प्रेषित शर से; वॆन्तु ऒऴियुम्–जलकर नष्ट हो जायेंगे; ऎन–ऐसा; करुति–समझकर; विरैविन् वन्तान्–त्वरा के साथ आया है; नोक्किन्–देखें तो; तवत्तिन् मिक्कार्–तपश्रेष्ठ राक्षसों में; वाळ् अरक्कन् अन्ऱियॆ–क्रूर राक्षस-जन्म में पैदा हुए इसको छोड़; उऱ्ऱुटैय पॆरुवरमुम्–प्राप्त श्रेष्ठ वर; उकन्तु उटैय–इच्छा करके स्वीकृत; तण्णळियुम्–करुणा; उणर्वुम्–और तत्त्वज्ञान; मऱ्ऱुटैयर् तामुम्–रखनेवाले और कोई; उळरो–हैं क्या । ४०५

विभीषण को विदित हो गया कि उस रावण के प्राप्त वर और सहजात वंचना और अन्य उसके सभी आपके करकोदंड के डोरे से निकले शरों से जलकर भस्म हो जाएँगे। इसलिए वह त्वरा के साथ आ गया। यह तो क्रूर राक्षसवंश में पैदा हो गया है; पर तपस्या द्वारा प्राप्त उत्तम वर, प्रयत्न और प्रेम से अपनायी हुई करुणा के भाव और तत्त्वज्ञान आदि इसके सिवा किस राक्षस के पास हैं ? । ४०५

※ तेवर्क्कुन् दानवर्क्कुन् दिशैमुहन्न मुदलाय देव देवर्
मूवर्क्कु मुडिप्परिय कारियत्तै मुऱ्ऱुविप्पान् मूण्डु निन्ऱाय्
आवत्तिन् वन्दवय मॆन्ऱानै यय्यिर्त्तहल विडुदि यायिन्
कूवत्तिन् शिऱुपुनलैक् कडलयिर्त्त दॊव्वादो कॊऱ्ऱ वेन्दे 406

कॊऱ्ऱ वेन्ते–विजयी नराधिप; तेवर्क्कुम्–देवों के लिए; तानवर्क्कुम्–दानवों के लिए; तिचैमुकन्न मुतलाय–दिशामुख ब्रह्मा आदि; तेव तेवर्–देवाधिदेव; मूवर्क्कुम्–तीनों के लिए; मुटिप्परिय–दुस्साध्य; कारियत्तै–कृत्य को; मुऱ्ऱुविप्पान्–पूरा करने पर; मूण्टु निन्ऱाय्–तुले हैं; आवत्तिन्–आपत्काल में; वन्तु–आकर; अपयम् ऎन्ऱानै–अभय चाहनेवाले को; अयिर्त्तु–संशय करके; अकल विटुति–भेज दें; आयिन्–तो; कटल्–समुद्र ने; कूवत्तिन् चिऱु पुनलै–कुएँ के अल्प जल से; अयिर्त्ततु–संशय किया; ऒव्वातो–जैसा रहेगा न । ४०६

विजयी राजा ! आप ऐसे कार्य में तुले रहते हैं जिसे पूरा करना देवों, दानवों और चतुर्मुख आदि देवाधिदेव त्रिदेवों के लिए भी असाध्य है !

आपत्काल में यह अभयदान चाहता हुआ आया है। उस पर संशय करके लौटा देंगे, तो वह काम विशाल जलसागर के एक कुएँ के जल से डरने का-सा होगा न ? । ४०६

पहैप्पुलत्तोन् तुणैयल्लन् ॲन्ऱिवनैप् पऱ्ऱेमेल् अऱिञर् पार्क्किन्
नहैप्पुलत्त दामन्ऱे नऱ्ऱाय मुळदाय पऱ्ऱान् मिक्क
तहैप्पुलत्तोर् तन्दैयर्हळ् तम्बियर्हळ् तमैयरिवर् तामे यन्ऱो
मिहैप्पुलत्तु विळैहिन्ऱ वोरुपोरुळैक् कादलिक्किन् विळिञर् रावार् 407

नल् तायम्–श्रेष्ठ दाय भाग पर; उळतु आय–रहनेवाली; मिक्क पऱ्ऱान्–बड़ी आसक्ति से; तकै पुलत्तोर्–रोकने की बुद्धि लेकर; मिकै पुलत्तु–श्रेष्ठ भूमि में; विळैकिन्ऱतु–उगनेवाली; ओरु पोरुळै–एक फ़सल को; कातलिक्किन्–चाहने लगें तो; तन्तैयर्कळ्–पिता-माता; तम्पियर्कळ्–कनिष्ठ; तमैयर्–ज्येष्ठ; इवर् तामे अन्ऱो–ये ही तो न; विळिञर् आवार्–शत्रु होंगे; पकै पुलत्तोन्–शत्रुपक्ष का; तुणै अल्लन्–(यह) हमारा मित्र नहीं; ऍन्ऱु–संशय करके; इवनै पऱ्ऱेम् एल्–इसको नहीं ग्रहण करेंगे तो; अऱिञर् पार्क्किन्–बुद्धिमान जानेंगे तो; नकै पुलत्ततु आम्–हँसी योग्य होगा; अन्ऱे–न । ४०७

उत्तम दाय भाग में लालच के कारण दूसरों के स्वत्व को रोकने के विचार से उर्वर भूमि की फ़सल को हड़पने चलें तो ऐसा करनेवाले चाहे माता-पिता हों, चाहे अवरज या ज्येष्ठ सहोदर हों वे ही न शत्रु हुए ! ऐसी स्थिति में विरोधी दल के व्यक्ति को हमारा मित्र न मानकर अपने पक्ष में स्थान न देंगे तो वह विद्वान् लोगों की दृष्टि में हँसी योग्य बात होगी नहीं क्या ?। ४०७

आदला लिवन्वरवु नल्वरवे यॅन्वुणर्न्दे नडिय नेनुन्
वेदनू लॅन्नत्तहैय तिरुवुळत्तिन् कुऱिप्पऱिये नॅन्ऱु विट्टान्
कादनान् मुहत्तालुङ् गणिप्परिय कलैयनैत्तुङ् गदिरोन् मुन्शॅन्
ऱोदिना नोदनीर् कडन्दुपहै कडिन्दुलहै युय्यक् कॊण्डान् 408

आतलाल्–इसलिए; इवन् वरवु–इसका आना; नल्वरवे–शुभागमन ही है; ऍन्–ऐसा; अटियनेन्–दास मुझे; उणर्न्तेन्–लगा; वेतम् नूल् ऍन्न–वेद-शास्त्र ही; तकैय–सम; उन् तिरुवुळत्तिन्–आपके श्रीमन् का; कुऱिप्पु अऱियेन्–भाव नहीं जानता; ऍन्ऱु–ऐसा; कातल् नान्मुकन्तालुम्–जिज्ञासु चतुर्मुख के लिए भी; कणिप्पु अरिय–अननुमेय; कलै अनैत्तुम्–सारे शास्त्रों का; कतिरोन् मुन् चॅन्ऱु–किरणमाली के समक्ष जाकर; ओतिनान्–जिसने अध्ययन किया था; ओत नीर्–समुद्र-जल; कटन्तु–पार करके; पकै कटिन्तु–शत्रु का संहार करके; उलकै–पृथ्वी को; उय्य कॊण्टान्–जिसने तारा; विट्टान्–(उस) हनुमान ने (कहकर बोलना) छोड़ा । ४०८

इन कारणों से दास मुझे लगता है कि इसका आगमन स्वागतयोग्य

शुभ आगमन ही है। आप 'श्रुतवान' हैं (वेदरूप भगवान हैं)। आपके मन का भाव मैं नहीं जानता। हनुमान ने, जिसने जिज्ञासु ब्रह्मा के लिए भी अपरिमेय शास्त्रों को किरणमाली के समक्ष (सूर्य के सामने मुख करके उसके आगे, पीठ की दिशा में) चलकर सीखा था और जिसने वरुणालय पार कर शत्रु का संहार कर लोक को तारा था, यों कहकर अपना बोलना छोड़ दिया (समाप्त किया)। ४०८

❀ मारुदि विनय वार्त्तै शॅविमडुत् तमिळ्दिन् मान्दिप्
पेरऱि वाळ नन्ऱु नन्ऱॅनप् पिऱरै नोक्किच्
चीरिदु मेलिम् माऱ्ऱम् तॅळिवुऱत् तेर्मि ऎन्ना
आरिय नुरैप्प दाना ननैवरु मदनैक् केट्टार् 409

आरियन्–आर्य; मारुति–मारुति के; विनय वार्त्तै–विनय-सहित वचन को; चॅवि मडुत्तु–श्रवण करके; अमिळ्तिन् मान्ति–अमृत जैसे अशन (ग्रहण) करके; पेर् अऱिवाळ–महाबुद्धे; नन्ऱु नन्ऱु–साधु, साधु; ऍन–ऐसा कहकर; पिऱरै नोक्कि–दूसरों को देखकर; चीरितु–बड़ा श्लाघनीय है; मेल्–इसके ऊपर; इ माऱ्ऱम्–(मेरे) इस कथन को; तॅळिवु उऱ–साफ़ मन से; तेर्मिन्–विचार करो; ऍन्ना–कहकर; उरैप्पतु आनान्–बोलने लगे; अनैवरुम्–सबने; अतनै–उसको; केट्टार्–सुना। ४०९

आर्य श्रीराम ने मारुति के विनय-निवेदन श्रवण किए और उन्हें अमृतप्राप्य-सा आनन्द हुआ। कहा कि महामति! साधु, साधु! फिर उन्होंने दूसरों से कहा कि हनुमान का कहना बहुत श्रेष्ठ रहा। इस पर मेरा वचन भी ध्यान से सुनो और मन लगाकर विचारो। फिर वे कहने लगे और सबने सुना। ४०९

❀ करुत्तुऱ नोक्किप् पोन्द कालमु नन्ऱु कादल्
अरुत्तियु मरशिन् मेऱ्ऱे यऱिविनुक् कवदि यिल्लै
पॅरुत्तुयर् तवत्ति नानुम् पिऴैप्पिल नॅन्नुम् पॅऱ्ऱि
तिरुत्तिय दाहु मन्ऱे नम्वयिऱ् चेर्न्द शॅय्है 410

करुत्तुऱ नोक्कि–मन देकर सोचकर; पोन्त कालमुम्–इसका इधर आने का समय भी; नन्ऱु–भला है; कातल् अरुत्तियुम्–इसकी प्यारी इच्छा भी; अरचिन् मेऱ्ऱे–राज्य पर ही है; अऱिवितुक्कु–बुद्धि की; अवति इल्लै–सीमा नहीं; नम् वयिन्–हमारी शरण में; चेर्न्त चॅय्कै–पहुँचने का कार्य; पॅरुत्तु उयर्–दीर्घ और उन्नत; तवत्तितानुम्–तपस्वी यह; पिऴैप्पु इलन्–दोष-हीन है; ऍन्नुम् पॅऱ्ऱि–यह संकेत; तिरुत्तियतु आकुम् अन्ऱे–साफ़ रूप से देता है न। ४१०

विभीषण खूब सोचकर ही यहाँ आया है और वह काल भी अच्छा ही है। उसकी इच्छा भी राज्य पर ही लगी है। इसकी तर्कबुद्धि की

सीमा नहीं है। हमारे पास इसका आना भी यह द्योतित करता है कि बड़े तपस्वी इसमें कोई भी दोष नहीं है। ४१०

❀ मऱ्ऱिनि युरैप्प दॆन्नै मारुदि वडित्तुच् चॊन्न
पॆऱ्ऱियॆ पॆऱ्ऱि यन्न दन्ऱॆनिऱ् पिऱिदॊन् ऱानुम्
वॆऱ्ऱियॆ पॆऱुक तोऱ्क वीह वीयादु वाऴ्ह
पऱ्ऱुद लन्ऱि युण्डो पुहलॆमैप् पहर्हिन् ऱानै 411

मऱ्ऱु–दूसरा; इनि–आगे; उरैप्पतु ऎन्नै–कहना क्या है; मारुति–मारुति ने; वटित्तु–छानकर; चॊन्न–जो कहा; पॆऱ्ऱियॆ–वही प्रकार; पॆऱ्ऱि–(ग्राह्य) प्रकार है; अन्नतु अन्ऱु–वह नहीं; ऎनिल्–तो; पिऱितु ऒन्ऱानुम्–दूसरे किसी भी प्रकार से; वॆऱ्ऱियॆ पॆऱुक–विजय ही क्यों न पाएँ; तोऱ्क–हार ही पाएँ; वीक–मर जाएँ; वीयतु–बिना मरे; वाऴ्क–जीवित रहें; पुकल्–शरण; ऎमै–हमें; पकर्किन्ऱानै–जो कहता है उसे; पऱ्ऱुतल् अन्ऱि–ग्रहण करने के सिवा; उण्टो–दूसरा है क्या। ४११

और कहने को क्या है ? मारुति ने छान-बीनकर जो रास्ता बताया है वही एकमात्र कार्य-प्रकार है ! अगर तुम लोग वैसा नहीं मानते हो तो भी किसी भी विध मेरी शरण जो माँगता है उसे ग्रहण करने के सिवा दूसरा मार्ग है क्या ? चाहे हम जीते या हारें; चाहे हम मरें या विना मरे जीते रहें। ४११

❀ इन्ऱुवन् दानॆन् ऱुण्डो वॆन्दैयै यायै मुन्नैक्
कॊन्ऱुवन् दानॆन् ऱुण्डो पुहलदु कूऱि हिन्ऱान्
तुन्ऱिवन् दन्बु पेणुन् दुणैवनु मवने पिन्नैप्
पॊन्ऱुमॆन् ऱालु नम्बाऱ् पुहऴन्ऱिप् पिऱिदुण् डामो 412

पुकलतु–शरण; कूऱुकिन्ऱान्–जो कहता (माँगता) है; इन्ऱु वन्तान्–वह आज ही आया; ऎन्ऱु उण्टो–ऐसा कहा जाता है क्या; ऎन्तैयै–मेरे पिता को; यायै–माता को; मुन्नै–ज्येष्ठ भ्राता को; कॊन्ऱु वन्तान्–मारकर आया; ऎनऱु–ऐसा कहना; उण्टो–होता है क्या; तुन्ऱि वन्तु–समीप जाकर; अन्पु पेणुम्–प्रेम करने योग्य; तुणैवनुम्–साथी भी; अवने–वही (हो जाता है); पिन्नै–इसके बाद; पॊन्ऱुम् ऎन्ऱालुम्–मर जाएँ तो भी; नम् पाल्–हमारी तरफ़; पुकऴ् अन्ऱि–यश के सिवा; पिऱितु उण्टामो–और कुछ (अपयश) होगा क्या। ४१२

जब शरण आ गया तब यह प्रश्न कहाँ उठता कि वह आज ही आया; या मेरे पिता या मेरी माता को या मेरे ज्येष्ठ को मारकर आया है ! वह हमारा मित्र है जिसे आगे बढ़कर अपना बना लेना है ! फिर हमारी मृत्यु ही क्यों न हो जाय तो भी हमें यश ही मिलेगा ! फिर इसके विपरीत (अपयश) कुछ होगा क्या ? । ४१२

* पिऱन्दनाट् टॉडङ्गि यारुम् तुलैपुक्क पॅरियोऩ् पॅऱ्ऱि
मऱन्दना ळुण्डो वॅऩ्ऩैच् चरणॅऩ्ऱु वाऴ्हिऩ् ऱानैत्
तुऱन्दनाट् किऩ्ऱु वऩ्दु तुऩ्ऩिऩाऩ् शूऴ्च्चि याले
इऱन्दना ळऩ्ऱो वॅऩ्ऱु मिरुन्दना ळाव दॅऩ्ऱाऩ् 413

तुलै पुक्क–तुला पर चढ़े; पॅरियोऩ्–महात्मा (शिवि) का; पॅऱ्ऱि–गुण-गौरव; यारुम्–कोई भी; पिऱन्त नाळ् तॉटङ्कि–जन्म-दिवस से लेकर; मऱन्त नाळ्–भूल गये ऐसा दिन; उण्टो–है क्या; ऍऩ्ऩै–मुझे; चरण् ऍऩ्ऱु–शरण्य मानकर; वाऴ्कित्ऱाऩै–जीवित रहनेवालों को; तुऱन्त नाट्कु–जिस दिन लौटा दूंगा उस दिन से; इऩ्ऱु वन्तु तुऩ्ऩिऩाऩ्–आज जो समीप आ पहुँचा है उसके; चूऴ्च्चियाले–षड्‌यन्त्र से; इऱन्त नाळ् अऩ्ऱो–मरने का दिन ही न; ऍऩ्ऱुम् इरुन्त–सदा रहनेवाला; नाळ् आवतु–दिन होगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ४१३

राजा शिवि एक कबूतर को बाज़ से बचाने हेतु तुला पर (अपना शरीर देने के विचार से) चढ़े थे। उनके प्रकृत स्वभाव को कोई क्या अपने होश सँभालने के दिन से लेकर कभी भूले हैं? मेरी शरण आया है; उसको त्याग दूँगा तो इस दिन की तुलना में वह दिन मेरे चिरवास का दिन होगा जिस दिन शरण में आए इसकी साजिश के कारण मैं मर जाऊँ। ४१३

इडैन्दवर्क् कबयम् यामॅऩ् ऱिरन्दवर्क् कॅऱ्ऱिनीर् वेलै
कडैन्दवर्क् काहि यालम् मुण्डवऩ् कण्डि लीरो
उडैन्दवर्क् कुदवा नायि नुळ्ळदीऩ् ऱीया नायिऩ्
अडैन्दवर्क् करुळा नायि नऱमॅऩ्ऩा माण्मै यॅऩ्ऩाम् 414

इटैन्तवर्क्कु–(हलाहल को देखकर) जो कातर हुए; याम् अपयम्–हम अभयदान योग्य हैं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इरन्तवर्क्कु–याचना जिन्होंने की; ऍऱि नीर्–तरंगायमान जल के; वेलै–(क्षीर-) सागर को; कटैन्तवर्क्कु–जिन्होंने मथा उन देवों के; आकि–रक्षणार्थ; आलम् उण्टवऩ्–हलाहलपायी को; कण्टिलीरो–(आपने) देखा (सुना) नहीं क्या; उटैन्तवर्क्कु–निर्बल हुओं की; उतवाऩ् आयिऩ्–सहायता नहीं करेगा तो; उळ्ळतु ईन्ऱु–जो अपने पास है उसे; ईयाऩ् आयिऩ्–नहीं देगा तो; अटैन्तवर्क्कु–शरण आये हुए पर; अरुळाऩ् आयिऩ्–कृपा नहीं करेगा तो; अऱम् ऍऩ्ऩ आम्–उसका धर्म क्या होगा; आण्मै ऍऩ्ऩ आम्–पौरुष क्या होगा। ४१४

तरंग-संकुल क्षीरसागर-मथन के अवसर पर देवगण पिछड़ गये। उन्होंने अभय माँगा। तब उनके हितार्थ शिवजी ने हलाहल का अशन कर लिया। क्या तुम लोग नहीं जानते? जो भग्न-हृदय हैं, उनकी सहायता जो नहीं करता उसका; जो अपने पास रही वस्तु को याचक को नहीं देता उसका और जो अपनी शरण में आये हुए पर दया नहीं करता उसका धर्म क्या होगा? पौरुष किस अर्थ का?। ४१४

पेडैयैप् पिडित्तुत् तन्नैप् पिडिक्कवन् दडैन्द पेदै
वेडतुक् कुदवि शॅय्वान् विऱहिडै वॅन्दी मूट्टिप्
पाडुरु पशियै नोक्कित् तन्नुडल् कॉडुत्त पैम्बुळ्
वीडुपॅऱ् ऱुयर्न्द वार्त्तै वेदत्तिन् विळुमि दन्ऱो 415

पेटैयै–मादा पक्षी को; पिटित्तु–पकड़कर; तन्नै–उसको भी; पिटिक्क–पकड़ने के लिए; वन्तु अटैन्त–जो आ पहुँचा; पेतै वेटन्क्कु–उस मूर्ख व्याध को; उतवि चॅय्वान्–सहायता करने हेतु; विऱकिटै–लकड़ियों में; वॅम् ती मूट्टि–गरम आग लगाकर; पाट् उरु–सतानेवाली; पचियै नोक्कि–भूख देखकर; तन् उटल्–अपना शरीर; कॉटुत्त–जिसने दिया; पैम्पुळ्–वह तरुण पक्षी (कपोत); वीटु पॅऱ्ऱु–मोक्ष पाकर; उयर्न्त–जो तरा वह; वार्त्तै–वार्ता; वेतत्तिन्–वेदविषय के समान; विळुमितु अन्ऱो–श्रेष्ठ नहीं है क्या। ४१५

एक व्याध कपोती को पकड़ लेकर एक वृक्ष के पास आया, जिस पर उस कपोती का कपोत था। वह उसे भी पकड़ लेना चाहता था। तब उस कपोत ने उस मूर्ख व्याध के हितार्थ लकड़ियाँ जमा कीं और उनमें आग लगा दी। फिर उसकी भूख मिटाने के वास्ते उस कपोत ने आग में पककर अपना शरीर उसे सौंप दिया। वह हरा (तरुण) पक्षी मोक्ष गया। क्या इसका वृत्तांत वेदों से भी अधिक श्लाघ्य और फलदायी नहीं है? । ४१५

पोदह मॊन्ऱु कन्ऱि यिडङ्गर्माप् पॊरुद पोरिन्
आदियम् बरमे यानुन् नबयमॆन् ऱळैत्त वन्नाळ्
वेदमु मुडिवु काणा मॆय्प्पॊरुळ् वॆळिवन् दॆय्दि
मादुयर् तुडैत्त वार्त्तै मऱप्परो मऱप्पि लादार् 416

इटङ्कर् मा–मगर पशु ने; पॊरुत पोरिन्–जो किया था उस युद्ध में; पोतकम् ऒन्ऱु–एक गज ने; कन्ऱि–मन मारकर; आति अम् परमे–आदि परमात्मा; यान् उन् अपयम्–मैं आपकी शरण; ऎन्ऱु–ऐसा; अऴैत्त–(जिस दिन) टेर लगायी; अ नाळ्–उस दिन; वेतमुम्–वेदों ने भी; मुटिवु काणा–जिनका निर्धारण नहीं जाना; मॆय् पॊरुळ्–उस सत्य वस्तु ने; वॆळि वन्तु–प्रकट आ; ऎय्ति–पहुँचकर; मा तुयर् तुटैत्त–बड़ा दुःख दूर जो किया वह; वार्त्तै–शुभवार्ता; मऱप्पु इलातार्–स्मरणशक्ति से जो हीन नहीं हुए हैं; मऱप्परो–वे भूलेंगे क्या। ४१६

एक गजराज और मगर में छीना-झपटी हुई। गज थक गया। उसने आदिपरमात्मा की टेर लगायी। तब वेदांतों द्वारा भी अवर्ण्य नित्य और सत्य तत्त्व परमात्मा के प्रकट होकर उस पशु का दुःख दूर करने की वार्ता स्मरणशक्ति रखनेवाला कोई भूल सकेगा क्या? । ४१६

मन्नुयि रॆल्लान् दान्ने वरुवित्तु वळर्क्कु मायन्
तन्नन्न वुलह मॆल्लान् दरुममु मॆवैयुन् दान्ने

अन्तितु मडैन्दोर् तम्मै येमुऱ विनिदि नोम्बिप्
पिन्तुम्वी डळिक्कु मॆन्ऱार् पिऱिदॊरु शान्ऱु मुण्डो 417

मन् उयिर् ऍल्लाम्–नित्य रहनेवाले जीव सभी; तान् वरुवित्तु–स्वयं प्रकट कराके; वळर्क्कुम्–पालनेवाले; मायन्–मायावी; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; तन्तत–स्वयं आपके ही; तरुममुम्–धर्म (व्यवहार); ऍवैयुम्–(उनके फल) सभी; तान्–आप ही; ऍन्तितुम्–तो भी; अटैन्तोर् तम्मै–अपनी शरण में आये हुओं को; एमुर–सकुशल; इतितिन्–और सुख देकर; ओम्पि–पालन करके; पिन्तुम्–इस पर; वीटु अळिक्कुम्–मोक्ष दिलाएँगे; ऍन्ऱाल्–तव; पिरितु ऑरु–अन्य कोई; चान्ऱुम् उण्टो–प्रमाण चाहिए क्या। ४१७

शाश्वत सभी जीवों को अपने में से ही प्रगट कराकर पालनेवाले मायावी विष्णुदेव का ही यह सारा प्रपंच है। सभी धर्म, और उनके फल भी वे ही हैं। तो भी वे अपने आश्रयी भक्तों की रक्षा करके उन्हें मुक्ति प्रदान करते हैं। फिर क्या प्रमाण चाहिए ? । ४१७

नञ्जिनै मिडऱ्ऱु वैत्त नहैमऴु वाळ नाळुम्
तञ्जॆन मुन्नन् दाने तादैपाऱ् कॊडुत्तुच् चादल्
अञ्जिने नबय मॆन्ऱ वन्दणर्क् काहि यन्नाळ्
वॆञ्जिनक् कूऱ्ऱै माऱ्ऱु मेन्मैयिन् मेन्मै युण्डो 418

नञ्चिनै–विष को; मिटऱ्ऱु वैत्त–कण्ठ में रखनेवाले; नकै–उज्ज्वल; मऴुवाळन्–परशु वाले शिवजी; नाळुम् तञ्चु–आयु अल्प है; ऍन–कह; मुन्नम्–पहले; तातै पाल्–उसके पिता के पास; कॊटुत्तु–पुत्र देकर; चातल् अञ्चितेन्–मृत्यु से डरता हूँ; अपयम्–शरण; ऍन्ऱ–जिसने कहा; अन्तणर्क्कु आकि–उस ब्राह्मण (-पुत्र) के वास्ते; अनाळ्–उस दिन; तान–आप ही; वॆम् चित कूऱ्ऱै–कठोर भयंकर मृत्यु को; माऱ्ऱुम्–(लात मारकर) हटा जो दिया; मेन्मैयिन्–उस उत्कृष्टता से बढ़कर; मेन्मै उण्टो–श्रेष्ठता होगी क्या। ४१८

विषकण्ठ परशुधर शिवजी ने मुनि मृकण्डु को यहीं वर दिया था कि तुम्हारे पुत्र होगा पर उसकी आयु अल्प (यानी सोलह साल की) ही होगी। फिर भी जब पुत्र मार्कण्डेय को यम लेने आया और उस भक्त ने शिवजी का अभय माँगा तो शिवजी ने उस क्रुद्ध भयंकर यम को लात मारकर निकाल दिया। इससे बढ़कर कोई श्रेष्ठता हो सकती है क्या ? । ४१८

शरणॆनक् कियार्हो लॆन्ऱु शान्हि यळ्दु शाम्ब
अरणुनक् कावॆन् वञ्जि यञ्जलॆन् ऱुरुळि नॆय्दि
मुरणुडैक् कॊडियोन् कॊल्ल मॊय्यमर् मुडित्तुत् तॆय्व
मरणमॆन् ऱादै पॆऱ्ऱ दॆन्वयिन् वळक्कन् ऱामो 419

चातकि–जानकी; अँतक्कु–मेरे लिए; यार् कॉल्–कौन हैं; चरण्–शरण्य; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अऴुतु चाम्प–जब रोती लटती रहीं; ऍऩ् तातै–मेरे पितृ-तुल्य (जटायु); वञ्चि–'वंजी' लता-सी सीते; अञ्चल्–मत डरो; उऩक्कु–तुम्हारे लिए; अरण् आवेऩ्–रक्षक बनूँगा; ऍऩ्ऱु–कहकर; अरुळिऩ् ऍय्ति–दया के साथ आकर; मुरण् उटै–विरोधी; कॉटियोऩ्–क्रूर रावण के; कॉल्ल–मार डालते भी; मॉय् अमर् मुटित्तु–घोर युद्ध करके; तॅय्व मरणम्–दिव्य मृत्यु को; पॅऱ्ऱतु–जो प्राप्त हुए; ऍऩ् वयिऩ्–वह मेरे सामने; वऴक्कु–अनुकरणीय चरित्र; अऩ्ऱामो–नहीं होगा क्या। ४१६

(और एक उदाहरण लो। रावण के वश में हो) "मेरे शरण्य (रक्षक) कौन हैं?" यह कहते हुए जब जानकी रो-रोकर मलिन हो रही थी तब मेरे पितृ-तुल्य जटायु आये और उन्होंने धैर्य दिलाया कि डरो मत! लता-सी सीते! मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। धर्मविरोधी रावण ने उन्हें मार डाला। तब भी उन्होंने उसके साथ घोर युद्ध करके अपने प्राण छोड़े। उनका मरण देवयोग्य (स्तुत्य) मरण था। क्या उनका काम मेरे लिए अनुकरणीय नहीं? । ४१९

उय्यनिऱ् कवय मॅन्ऱा ऩुयिरैत्तऩ् ऩयिरि ऩोम्बाक्
कय्यनु मॊरुवन् शॅय्द वुदवियिऱ् करुत्ति लोऩुम्
मय्यऱ नॅऱियि ऩोक्कि मामऱै नॅऱियि ऩिऩ्ऱ
मॅय्यिऩैप् पॊय्यॅऩ् ऱाऩु मीळ्हिला नरहिऩ् वीऴ्वार् 420

उय्य–मरने से बचने के लिए; निऱ्कु अपयम्–आपकी शरण; ऍऩ्ऱाऩ्–जिसने कहा; उयिरै–उसके प्राणों को; तऩ् उयिरिऩ्–अपने प्राणों के समान; ओम्पा–जो सुरक्षित नहीं करता; कय्यऩुम्–वह वञ्चक और; ऑरुवऩ् चॅय्त उतवियिल्–किसी के द्वारा कृत उपकार का; करुत्तिलोऩुम्–जो स्मरण नहीं करता, वह; मै अऱ–निर्दोष रीति से; नॅऱियिऩ्–यथाक्रम; नोक्कि–सोचकर; मा मऱै नॅऱियिऩ्–महा वेद मार्ग द्वारा; निऩ्ऱ–प्राप्य; मॅय्यिऩै–तथ्य को; पॊय् ऍऩ्ऱाऩुम्–जो 'झूठ' कहता है वह; मीळ्किला–अप्रत्यावर्तनीय; नरकिऩ्–नरक में; वीऴ्वार्–गिर जाएँगे। ४२०

जो अपने जीवन को बचाने के लिए 'आपकी शरण' कहता है, उसके प्राणों की रक्षा जो नहीं करता, वह वंचक व्यक्ति; जो कृतघ्न है वह; और जो निर्दोष वेदमार्ग प्रतिष्ठापित परमतत्त्व को नकारता, वह —ये सब नरक में चले जाते हैं और उनका वहाँ से बचना कभी नहीं होता। ४२०

शीदैयैक् कुऱित्त देयो देवरैत् तीमै शॅय्द
पेदैयैक् कॊल्वे ऩॆऩ्ऱु पेणिय विरदप् पॅऱ्ऱि
वेदिय रबय मॅऩ्ऱारक् कऩ्ऱुनात् विरित्तुच् चॊऩ्ऩ
कादैयैक् कुऱित्तु निऩ्ऱ वव्वुरै कडक्क लामो 421

तेवरै–देवों की; तीमै चॅय्त–हानि करनेवाले; पेतैयै–जड़मति (रावण) को; कॉल्वेन्–मार डालूंगा; ॲन्ऱु–इसके; पेणिय विरत–पालित व्रत का; पॅट्रि–प्रकार; चीतैयै कुऱित्ततेयो–सीता को उद्दिश्य करके क्या; अपयम् ॲन्ऱार्–अभय कहनेवाले; वेतियर्क्कु–ब्राह्मणों के लिए; अन्ऱु–उस दिन; नान् विरित्तु चॊन्न–मैंने जो विस्तार के साथ कहा; कातैयै–उस वृत्तान्त का; कुऱित्तु निन्ऱ–संकेत करनेवाला; अ उरै–वह वचन; कटक्कलामो–उल्लंघित किया जा सकता है क्या। ४२१

मेरे "देवों को कष्ट देनेवाले मूर्ख को मार डालूँगा" यह व्रत लेने का उद्देश्य सीता को लेकर हुआ था क्या ? वेदमार्गी ऋषियों ने अभयदान माँगा था। तब मैंने विस्तार से जो कहा था उस वार्ता के सार-संकेत का (यानी शरणागत की रक्षा परम धर्म है) उल्लंघन किया जा सकता है क्या ? (मतलब यह है कि सीता के हरण के बाद भी रावण शरणागत के रूप में आएगा तो भी वह क्षम्य तथा रक्षा के योग्य हो जाएगा। उस स्थिति में देवपीडक मूर्ख रावण नहीं रहेगा।)। ४२१

कारिय माह वन्ऱे याहुह करुणै योर्क्कुच्
चीरिय तन्मै नोक्कि ऩिदनिऩ्मेऱ् चिऱन्द दुण्डो
पूरिय रेयुन् दम्मैप् पुहल्पुहुन् दोर्क्कुप् पॊन्ऱा
आरुयिर् कॊडुत्तुक् कात्तार् ॲण्णिला वरश रम्मा 422

कारियम् आक–संकल्पकार्य पूरा हो; अन्ऱे आकुक–न हो ऐसा भी हो; नोक्किन्–सोचकर देखें तो; करुणैयोर्क्कु–करुणापूरित मन वालों के लिए; चीरिय तन्मै–श्रेष्ठ गुण; इततिन् मेल्–इससे बढ़कर; चिऱन्ततु–श्रेष्ठ; उण्टो–है क्या; पूरियरेयुम्–नीच लोग ही सही; तम्मै पुकल् पुकुन्तोर्क्कु–अपनी शरण में आये हुओं को; पॊन्ऱा–अक्षय; आर् उयिर् कॊटुत्तु–श्रेष्ठ प्राणों को देकर (रक्षित करके); ॲण्णिला अरचर्–असंख्य राजा लोगों ने; कात्तार्–उनकी रक्षा की है। ४२२

हमारा संकल्प का कार्य सफल हो चाहे न हो; सोचकर देखो तो दया से भरे मन वाले के लिए इससे श्रेष्ठ गुण और कुछ हो सकता है क्या ? नीच ही क्यों न हो शरणागतों के अर्थ अनेक राजाओं ने अपने अचल और प्यारे प्राण दे दिये हैं। ४२२

❀ आदला नवय मॅन्ऱ पॊऴ्दत्ते यबय दानम्
ईदले कडप्पा डॅन्ब वियम्बिनी ऱॅन्बाल् वैत्त
कादला लिनिवे ऱॆण्णक् कडवदॆन् कदिरोन् मैन्द
कोदिला दवनै नीये यॆन्वयिऱ् कॊणर्दि यॆन्ऱान् 423

आतलात्–इसलिए; अपयम् ॲन्ऱ–अभय (चाहता हूँ) ऐसा, जब कहा; पॊऴुतत्ते–उसी समय; कटप्पाटु ॲन्पतु–कर्तव्य जो कहा जाता है वह; अपयतानम् ईतले–अभयदान प्रदान करना ही है; ॲन् पाल् वैत्त–मेरे प्रति किये गये; कातलाल्–

प्रेम के कारण; इयम्पित्तीर्–तुम लोग (जो बोले) बोले; इन्नि–आगे; वेरु ॲणण कटवतु–सोचने के लिए आवश्यक; ॲन्–क्या है; कतिरोन् मैन्त–सूर्यपुत्र; कोतिलातवन्–निर्दोष उसको; नीये–तुम्हीं; ॲन् वयिन्–मेरे पास; कोणर्ति–लिवा लाओ; ॲन्ड्रान्–कहा श्रीराम ने। ४२३

इसलिए "अभय चाहता हूँ" यह ज्योंही कहा गया, त्योंही हमारा कर्तव्य यही हो जाता है कि हम उन्हें अभय प्रदान कर दें। तुम लोगों का मुझ पर अगाध प्रेम है; इसलिए तुमने कहा कि उसे हमारे पक्ष में आने नहीं दें। आगे सोचने को क्या है? श्रीराम ने सुग्रीव से कहा कि हे सूर्यसुत! तुम ही जाओ। अनिंद्य विभीषण को मेरे पास लिवा लाओ। ४२३

❀ अय्युर् वॅल्लान् दीरु मळवॅया यमैन्द दन्रे
दॅय्वना यहन्न दुळ्ळन् देरिय वडेवे तेरिक्
कय्बुहर् कमैव दानान् कडिदिन्निर् कोणर्व लॅन्न्ना
मॅय्यित्तुक् कुरॅयु ळान्न वॉरुवन्बाल् विरैविन् चॅन्ड्रान् 424

तॅय्व नायकन् अतु उळ्ळम्–देवनायक का मन; तेरिय अटॅवे–जिस प्रकार साफ़ हुआ उसी प्रकार से; तेरि–स्वयं भी निर्णय करके; अय्युरव् ॲल्लाम्–सभी संशय; तीरुम् अळवॅयाय्–मिट जाने पर; अमैन्ततु–आ गये; कय् पुकर्कु–हमारे पक्ष में आने; अमैवतु आनान्–योग्य साबित हुआ; कटितिनिल्–शीघ्र; कोणर्वल्–ले आऊँगा; ॲन्न्ना–कहकर; मॅय्यितुक्कु उरॅयुळ् आत्त–सत्यागार; ऑरुवन् पाल्–अद्वय विभीषण की ओर; विरैविन्–त्वरित गति से; चॅन्ड्रान्–गया। ४२४

सुग्रीव ने कहा कि ठीक है। उसका मन देवनायक श्रीराम के निश्चय का तर्क जान गया। उसके मन ने भी मान लिया कि यह ठीक ही है। उसके सारे संशय दूर होने को हो गये थे। "वह हमारे ग्रहण के लिए अर्ह ही है! जाकर जल्दी लिवा लाऊँगा" यह कहते हुए वह सत्यालय सर्वश्रेष्ठ विभीषण के पास गया। ४२४

❀ वरुहिन्र् कवियिन् वेन्दै मयिन्दतुक् किळॅञन् वळ्ळल्
तरुहॅन्ड्रा नदना निन्नै यॅदिर्हॉळर् करुक्कन् रन्द
इरुकुन्र् मनैय तोळा नॅय्दिन नॅन्न लोडुम्
तिरिहिन्र् वुळ्ळत् तानु महमलड्रन् दवन्मुन् शॅन्ड्रान् 425

वरुकिन्र् कवियिन् वेन्तै–आनेवाले कपिराज को; मयिन्ततुक्कु इळॅञन्–मैंद के छोटे भाई ने; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम ने; तरुक ॲन्ड्रान्–ले आओ कहा है; अतनाल्–उससे; निन्नै ॲतिर् कॉळर्कु–आपकी अगवानी के लिए; अरुक्कन् तन्त–सूर्य-वत्स; इरु कुन्रम् अनैय–दो पर्वत-सम; तोळान्–कन्धों वाले (सुग्रीव); ॲय्तिनन्–आये; ॲन्नल् ओटुम्–कहा त्योंही; तिरिकिन्र्–घूमनेवाले (संशयग्रस्त);

ळ्ळत्तात्तुम्–मन का विभीषण भी; अकम् मलर्न्तु–प्रसन्नात्मा होकर; अवत् त्–उसके समक्ष; चॅन्ड्रात्–गया। ४२५

मैंद के भाई द्विविद ने सुग्रीव को आता हुआ देखा। उसने विभीषण को सुग्रीव को दिखाकर कहा कि वदान्य प्रभु श्रीराम ने आपको ले आने की आज्ञा दी है। इसलिए आपकी अगवानी के लिए स्वयं वानरराज, सूर्यपुत्र और पर्वतस्कंध सुग्रीव आ रहे हैं। यह सुनकर विभीषण का मन, जो संशयचंचल था, अब प्रसन्न हो गया। वह उसके आगे गया। ४२५

※ तॉल्लरुङ् गाल मॅल्लाम् पऴहिऩुन् दूय रल्लार्
पुल्लल रुळ्ळन् दूयार् पॉरुन्दुव रॅदिर्न्द ञान्ड्रे
ऑल्लैवन् दुणर्वु मॊन्ड्र विरुवरु मॊरुना ळुड्र
ॲल्लियुम् बहलुम् बोलत् तऴुविन रॅऴुविड् ड्रोळार् 426

तॉल्–सनातन; अरु–अमूल्य; कालम् ॲल्लाम्–समय में सदा; पऴकितुम्–मिले रहे तो भी; तूयर् अल्लार्–जो सज्जन नहीं; पुल्ललर्–वे परस्पर अपने नहीं होते; उळ्ळम् तूयार्–जिनका मन स्वच्छ है; ॲतिर्न्त ञान्ड्रे–प्रथम मिलन से ही; पॉरुन्तुवर्–आत्मीयता से मिल जाते हैं; ऑल्लै वन्तु–शीघ्र आकर; उणर्वुम् ऑन्ड्र–हृदयों को भी एक करते हुए; ॲऴुविन् तोळार्–लौहस्तम्भ-सम कन्धों वाले; इरुवरुम्–दोनों, सुग्रीव और विभीषण; ऑरु नाळ् उड्र–एक ही दिन में मिले; ॲल्लियुम्–रात और; पकलुम् पोल–दिन के समान; तऴुविऩर्–आलिंगनबद्ध हो गये। ४२६

अमूल्य बहुत लम्बे समय तक सहवास करते हों तो भी नीच वंचकमन लोग सच्चे मित्र नहीं होंगे। पर स्वच्छ मन वाले सामने देखते ही परस्पर अपने हो जाते हैं। दोनों के मन जल्दी मिल गये। लोहे के स्तम्भों के समान कंधों वाले दोनों, विभीषण और सुग्रीव, एक दिन में मिली रात और दिन के समान मिले और परस्पर गले मिले। ४२६

※ तऴुविनर् निन्ड्र कालैत् तामरैक् कण्णन् ड्रङ्गळ्
मुऴुमुदर् कुलत्तिर् केड्र मुड्रैमैया लुवहै मूळ
वऴुवलि लबय मुन्वाल् वऴङ्गिन नवन्पॊड् पादम्
तॊऴुदियाल् विरैवि नॅन्नाक् कदिरवन् शिरुवन् शॊन्नान् 427

तऴुवितर्–गले-मिले; निन्ड्र कालै–जब वे खड़े रहे तब; कतिरवन् चिरुवन्–सूर्य के पुत्र ने; तामरै कण्णन्–कमलाक्ष ने; तङ्कळ्–अपने; मुऴुमुतल्–पूर्ण रूप से प्रथम गण्य; कुलत्तिऱ्कु एड्र–कुल के लिए स्वाभाविक; मुड्रैमैयाल्–क्रम के अनुसार; उवकै मूळ–सन्तोष के बढ़ते; वऴुवल् इल्–अडिग; अपयम्–अभय; उन्पाल्–आपको; वऴङ्कितन्–प्रदान किया है; अवन् पॊन् पातम्–उनके मनोरम

चरणों पर; विरैविन् तॊऴुति–शीघ्र आकर नमस्कार करो; अऩ्ऩा–ऐसा; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ४२७

जब दोनों आलिंगनबद्ध रहे, तब किरणमाली के पुत्र ने विभीषण से कहा कि कमलाक्ष श्रीराम ने बिलकुल अपने सर्वसम्पन्न सूर्यकुल की रीति के अनुसार आपको अडिग अभयदान कर दिया। इसलिए आप शीघ्र आकर उनके स्वर्ण-चरण की वन्दना कर लें। ४२७

❀ शिङ्गवे ऱतैयाऩ् शॊऩ्ऩ वाशहम् जॆविपु हामुऩ्
कङ्गुलि निऱत्ति ताऩ्ऱऩ् कण्मऴैत् तारै काऩ्ऱ
अङ्गमु मऩम दॆऩ्ऩक् कुळिर्न्ददव् वहत्तै मिक्कुप्
पॊङ्गिय वुवहै यॆऩ्ऩप् पॊडित्तऩ वुरोमप् पुळ्ळि 428

चिङ्क एऱु अऩैयाऩ्–पुरुष सिंह के समान (सुग्रीव) के; चॊऩ्ऩ वाचकम्–कहे वचनों के; चॆविपुका मुऩ्–कानों में घुसने के पहले; कङ्कुलिऩ्–रात के; निऱत्तिऩाऩ् तऩ्–रंग वाले विभीषण के; कण्–नेत्र; मऴै तारै–(अश्रु-) वर्षाधार; काऩ्ऱ–बहाने लगे; अङ्कमुम्–अंग-अंग; मऩम्तु ऎऩ्ऩ–मन के समान; कुळिर्न्ततु–शीतल हो गया; अव्वकत्तै मिक्कु–उस मन से अधिक; पॊङ्किय उवकै–संतोष से भरे; ऎऩ्ऩ–जैसे; उरोम पुळ्ळि–रोमपुलक; पॊटित्तऩ–प्रकट हुए। ४२८

पुरुष सिंह-सम सुग्रीव के वचन के विभीषण के कानों में घुसने के पूर्व ही (घुसते ही) रात्रिरंग विभीषण की आँखों से अश्रुवर्षधारा निकल बहने लगी। उसके अंग-अंग मन के समान शीतल (आनन्दित) हो गये। सचमुच उसका आनन्द उसके मन में उठे आनन्द से अधिक था, ऐसा संकेत देते हुए रोंगटे खड़े हो गये। ४२८

❀ पञ्जॆऩ्ऩच् चिवक्कु मॆऩ्गाऱ् ऱेवियैप् पिरित्त पावि
वञ्जऩुक् किळैय वॆऩ्ऩै वरुहवॆऩ् ऱरुळ्शॆय् दाऩो
तञ्जॆऩ्ऩक् करुदि ताऩो ताऴ्शडैक् कडवु ळुण्ड
नञ्जॆऩ्ऩच् चिऱन्दे ऩऩ्ऱो नायह ऩरुळ नायेऩ् 429

पञ्चु ऎऩ्ऩ–लाल कपास के रस का नाम लेते ही; चिवक्कुम्–जो लाल हो जाते थे; मॆऩ् काल्–उन कोमल चरणों वाली; तेवियै–देवी सीता को; पिरित्त–जिसने (प्रभु से) अलग किया; पावि–पापी; वञ्चऩुक्कु–वंचक के; इळैय–छोटे भाई; ऎऩ्ऩै–मुझे; वरुक ऎऩ्ऱु–आये ऐसा; अरुळ् चॆय्ताऩो–कृपा की (श्रीराम ने) क्या; तञ्चु ऎऩ्ऩ–शरणागत; करुतिऩाऩो–मान लिया क्या; नायकऩ् अरुळ–प्रभु के कृपा करने से; नायेऩ्–श्वान-सम मैं भी; ताऴ् चटै कटवुळ्–लम्बी जटाधारी ईश्वर के; उण्ट–खाये; नञ्चु ऎऩ्ऩ–विष के समान; चिऱन्तेऩ् अऩ्ऱो–बड़ा बन गया न। ४२९

(विभीषण को अपने भाग्य पर विस्मय ही हो गया। उसने उद्गार निकाला—) लाल रूई-रस का नाम लेने मात्र से जिनके चरण लाल

हो जाते हैं, ऐसी देवी को प्रभु से अलग करके ले गया क्रूर रावण। उस वंचक का छोटा भाई हूँ मैं। यह जानकर भी क्या श्रीराम ने मुझे आने की आज्ञा देने की कृपा की ? मुझे भी शरण में लेने योग्य मान लिया ? ओह ! प्रभु, सर्वलोकशरण्य की कृपा का पात्र बनकर मैं, एक कुत्ता भी, जटाशिवभुक्त विष के समान श्रेष्ठ (सौभाग्यशाली) हो गया न ? । ४२९

मरुळुरु मनत्ति नाऩॆऩ् वाय्मॊऴि मरुत्ताऩ् वाऩत्
तुरुळुरु तेरि नाऩु मिलङ्गैमी दोडु मऩ्ऱे
तॆरुळुरु शिन्दै वन्द तेऱ्ऱमी दाहिऱ् चॆय्युम्
अरुळिदु वायिऱ् कॆट्टेऩ् पिऴैप्परो वरक्क रायोर् 430

तॆरुळ् उरु–स्वच्छ; चिन्तै वन्त–मन में उठा; तेऱ्ऱम्–निर्णय; ईताकिल्–यह हो तो; चॆय्युम् अरुळ्–किया जानेवाला कृपाकर्म; इतु आयिल्–यह हो तो; मरुळ् उरु मऩत्तिऩाऩ्–मोहितमन; ऎऩ्–(रावण ने) मेरे; वाय्मॊऴि–सच्चे वचन को; मरुत्ताऩ्–सुना नहीं; कॆट्टेऩ्–नाश हुआ मेरा; अरक्कर् आयोर्–राक्षस जो हैं वे; पिऴैप्परो–बचेंगे क्या; वाऩत्तु–आकाश में; उरुळुरु–जिसका चक्र घूमता रहता है उस; तेरिऩाऩुम्–रथ का स्वामी भी; इलङ्कै मीतु–लंका के ऊपर; ओटुम् अऩ्ऱे–चलेगा न। ४३०

परिशुद्धमन श्रीराम का यह निर्णय है; करुणा ऐसी है ! तो (रावण ने कितनी बड़ी भूल की कि) भ्रांतचित्त रावण ने मेरे उपदेश को नकार दिया ! बिगड़ा मैं ! (= भगवान बचावें तो अच्छा होगा !) जो राक्षस हैं वे अब बचेंगे क्या ? अब आकाशचारी रथी सूर्य भी लंका के ठीक ऊपर चलने लग जाएगा न ! (वह भयमुक्त हो जाएगा)। ४३०

तीर्वरु मिऩ्ऩ ऱम्मैच् चॆय्यिनुञ् जॆय्य शिन्दैप्
पेररु ळाळर् तत्तञ् जॆय्हैयिऱ् पिऴैप्प दुण्डो
कार्वरै निऱुवित् तन्नैक् कऩलॆऴक् कलक्कक् कण्डुम्
आर्हलि यमर रुय्य वमिऴ्दुपण् डळित्त दऩ्ऱे 431

कार् वरै–काले (कठोर) पर्वत (मन्दर) को; निऱुवि–मथानी के रूप में खड़ा करके; तऩ्ऩै–अपने को; कऩल् ऎऴ–अंगारे निकलें ऐसा; कलक्क–मथना; कण्टुम्–देखकर भी; आर् कलि–समुद्र (क्षीर-सागर) ने; अमरर् उय्य–देवों को तारने; पण्टु–पहले; अमिऴ्तु–अमृत; अळित्तु अऩ्ऱे–दिलाया न; तीर्वु अरु–दुर्निवार; इऩ्ऩल्–कष्ट; तम्मै–अपने को; चॆय्यिनुम्–देंगे तो भी; चॆय्य–आर्जवयुक्त; चिन्तै–मन में; पेररुळ्–बड़ी कृपा; आळर्–रखनेवाले; तम् तम् चॆय्कैयिल्–अपने स्वभाव के अनुकूल कार्य में; पिऴैप्पतु उण्टो–चूकेंगे क्या। ४३१

निर्लिप्तमन दयावान और गुणपूर्ण लोगों को दुर्निवार कष्ट दो तो भी

वे अपने परोपकारी गुण से डिगेंगे क्या ? क्या क्षीरसागर ने काले पर्वत को उसमें खड़ा कर आग निकालते हुए मथनेवाले देवों को अमृत नहीं दिया ? । ४३१

❀ तुऱविधि तुऱवु पूण्ड तूयवऱ् तुणैव नॅन्ऩै
उऱवुवन् दरुळि मीळा वडैक्कल मुदवि ऩाऩे
मऱविनै नीक्क लिल्ला मायमु माय वाऴ्क्कैप्
पिऱवियुम् बॅयर्त्तेन् पिन्ऩु नरहिऩिऱ् पिऴैप्प दाऩेन् 432

तुऱवियिऩ्–वैरागियों से; उऱवु पूण्ट–मित्रता रखनेवाले; तूयवऱ्–पवित्र; तुणैवऩ्–सहायक श्रीराम; ऍऩ्ऩै–मुझ पर; उऱ–खूब; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; अरुळि–कृपा करके; मीळा–अप्रत्यावर्तित; अटैक्कलम्–शरण; उतविऩाऩ्–दिलाकर कृपा की; मऱविनै–पापकर्म; नीक्कल् इल्ला–जो त्यागता नहीं; मायमुम्–माया और; माय वाऴ्क्कै पिऱवियुम्–मायामय जीवन का यह जन्म; पॅयर्त्तेऩ्–त्याग चुका; पिऩ्ऩुम्–और भी (इससे बढ़कर); नरकितिल्–नरक से; पिऴैप्पतु आऩेऩ्–बच गया । ४३२

वैरागी ऋषि-मुनियों के सहायक, पवित्रहृदय श्रीराम ने मुझे खूब प्रेम के साथ अटल शरण देकर परमोपकार किया है। मेरे अब पापकर्म से अवियुक्त माया और मायामय जीवन का यह जन्म छूट गया। उससे भी बढ़कर नरक से भी बच गया । ४३२

तिरुत्तिय वुणर्वु मिक्क शॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् शॅम्मल्
ऑरुत्तरै नलऩुन् दीङ्गुन् देरिऩु मुयिरि ऩोम्बुम्
करुत्तिऩ ऩऩ्ऱे तऩ्ऩैक् कऴलडैन् दोरैक् काणुम्
अरुत्तिय ऩमलन् ऱाऴा देहुदि यऱिञ वॅऩ्ऱाऩ् 433

तिरुत्तिय–परिष्कृत; उणर्वु मिक्क–भावों से खूब भरे; चॅम् कतिर् चॅल्वऩ्–लाल किरणमाली के पुत्र ने; अऱिञ–हे ज्ञानी; चॅम्मल्–महापुरुष श्रीराम; ऑरुत्तरै–किसी के; नलऩुम् तीङ्कुम्–अच्छे और बुरे गुणों को; तेरिऩुम्–जान सकते हैं तो भी; तऩ्ऩै कऴल् अटैन्तोरै–अपने चरणों में आये हुओं को; उयिरिऩ्–प्राणों से अधिक; ओम्पुम्–पालने की; करुत्तिऩऩ् अऩ्ऱे–प्रतिज्ञा रखनेवाले हैं न; अमलऩ्–विमल पुरुष वे; काणुम् अरुत्तियऩ्–आपको देखने को आतुर हैं; ताऴातु एकुति–अविलम्ब आएँ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । ४३३

परिष्कृत ज्ञान से भरे और श्रेष्ठ किरणों के स्वामी सूर्य के पुत्र सुग्रीव ने विभीषण से कहा कि सुधी ! परमोदार श्रीराम का सिद्धान्त शरणागत की अपने प्राणों से अधिक सावधानी के साथ रक्षा करना है न ? —यद्यपि वे उसके अच्छे और बुरे गुणों के परखनेवाले हैं। अमल प्रभु आपसे मिलने को आतुर हैं। अविलम्ब जाइए । ४३३

मॊय्तवऴ् किरिहण् मऱ्ऱुम् पलवुडऩ् मुडुहिच् चॆल्ल
मय्तवऴ् किरियुम् वॆळ्ळिक् कुऩ्ऱमुम् वरुव दॆऩ्तच्
चॆय्तवम् बयऩ्द वीरर् तिरण्मर मेऴुन् दीर
ऎय्दव निरुन्द शूऴ लिरुवरु मॆय्दच् चॆऩ्ऱार् 434

मॊय् तवऴ्–बलसंयुक्त; किरिकऴ्–गिरियाँ; मऱ्ऱुम् पलवुटऩ्–और अनेक (पर्वतों) के साथ; मुटुकि चॆल्ल–तेज़ चले; मय् तवऴ्–काले रंग का; किरियुम्–पर्वत और; वॆळ्ळि कुऩ्ऱमुम्–रजत-पर्वत (कैलास); वरुवतु ऎऩ्त–आते हों जैसे; चॆय्तवम्–पूर्वकृत तप; पयऩ्त–जिनका फलीभूत हुआ; वीरर् इरुवरुम्–दोनों वीर; तिरऴ्–एक स्थान पर रहे; मरम् एऴुम्–सातों सालवृक्षों को; तीर–मिटाते हुए; ऎय्तवन्–जिन्होंने वाण चलाया वे श्रीराम; इरुन्त–जहाँ रहे उस; चूऴल्–स्थान में; ऎय्त–जाने का विचार करके; चॆऩ्ऱार्–चले। ४३४

अन्य बलवान गिरियों (अनल, अनिल आदि) के साथ अंजनगिरि-सा विभीषण तेज़-तेज़ चला। उसके साथ श्वेत कैलास पर्वत के समान सुग्रीव भी गया। दोनों के पूर्वपुण्य अब फल देने लग गये थे। वे दोनों, एक ही स्थान में रहे सातों सालवृक्षों को एक ही अस्त्र से जिन्होंने भेदा था उन श्रीराम के ठहरने के स्थान में अविलम्ब आये। ४३४

मार्कडञ् जूऴ्न्द वैप्पिन् अङ्गदऩ् मरुङ्गु काप्प
नाऱ्कडल् उडुत्त पारिन् नायहऩ् पुदल्व नामप्
पाऱ्कडल् शुऱ्ऱ विऱ्कै वडवरै पाङ्गु निऱ्पक्
कार्क्कडल् कमलम् बूत्त दॆनप्पॊलि वानैक् कण्डान् 435

माऱ्कटम्–मर्कटों से; चूऴ्न्त–घिरे हुए; वैप्पिन्–स्थल में; अङ्कतन्–अंगद के; मरुङ्कु–पास रहकर; काप्प–रक्षा करते रहते; पाल् कटल् चुऱ्ऱ–चारों ओर क्षीर-सागर के रहते; विल् कै–धनुर्हस्त; वट वरै–उत्तरी पर्वत मेरु (के समान लक्ष्मण) के; पाङ्कु निऱ्प–पास खड़े रहते; नाल् कटल् उटुत्त–समुद्र-चतुष्टय-वसना; पारिन् नायकन्–भूमि के पति; पुतल्वन् आम्–(दशरथ के) पुत्र जो थे; अ कार्क्कटल्–वह काला सागर; कमलम् पूत्ततु–विकसित कमलों से भरा हो; ऎन–जैसे; पॊलिवानै–शोभायमान श्रीराम के; कण्टान्–दर्शन किये (विभीषण ने)। ४३५

(पाँच पदों में विभीषण-दृष्ट श्रीराम का वर्णन है।) मर्कटावृत स्थान में अंगद अंगरक्षक बना खड़ा था। क्षीरसागर के समान वानर-सेना से आवृत धनुर्हस्त लक्ष्मण उत्तर के मेरु पर्वत के समान पास ही खड़े थे। चार समुद्रों को वस्त्र के रूप में प्राप्त भूमि के पति चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र खिले कमलों से भरे काले सागर के समान शोभ रहे थे। (विभीषण ने उन श्रीराम के दर्शन किये।)। ४३५

अळ्ळिमी दुलहै वीशु मरिक्कुलच् चेनै नाप्पण्
तॅळ्ळुतण् डिरैयिर् राहिप् पिरिदौरु तिरनुज् जारा
वॅळ्ळिय कडलिन् मेनाळ् विण्णवर् तॉळुदु वेण्डप्
पळ्ळितीर्न् दिरुन्दा नॅन्नप् पॉलिदरुम् बण्बि नातै 436

उलकै—पृथ्वी को; अळ्ळि—उठा लेकर; मीतु वीचुम्—ऊपर उछाल सकनेवाले; अरिकुल चेनै—हरि-कुल की सेना के; नाप्पण्—मध्य; तॅळ्ळु—स्वच्छ और; तण् तिरैयिऱ्‌ आकि—शीतल लहरों वाला बने; पिरितु ऑरु तिऱनुम् चारा—दूसरे किसी भी वस्तु से अमिश्रित; वॅळ्ळिय कटलिन्—श्वेत (क्षीर-)सागर पर; मेल् नाळ्—पूर्व दिन में; विण्णवर्—देवों के; तॉळुतु वेण्ट—स्तुति तथा विनय करते; पळ्ळि तीर्न्तु—शेषशय्या में योगनिद्रा त्यागकर; इरुन्तान् ॲन्न—रहे जैसे; पॉलितरुम्—शोभा देनेवाले; पण्पितानै—सौंदर्य से युक्त (श्रीराम को)। ४३६

वानर वीर ऐसे बलवान थे कि वे भूमि को उठाकर आकाश में उछाल सकते थे। उन वीरों की सेना के मध्य वे ऐसे शोभे जैसे स्वच्छ शीतल तरंगों वाले, अमिश्रित श्वेत रंग के क्षीरसागर-मध्य देवों की इच्छा को पूरा करने के विचार से शेष-शय्या पर निद्राविमुक्त (जागे) दर्शन दे रहे थे। ४३६

कोणुदऱ् कमैन्द कोलप् पुरुवम् बोऱ् ऱिरैयुङ्गूडप्
पूणुदऱ् किनिय मुत्तिन् पॉलिमणल् परन्द वॅप्पिल्
काणुदऱ् किनिय नीळ वॅण्मैयिऱ् करुमै काट्टि
वाणुदऱ् चीदै कण्णिन् मणियॅन वयङ्गु वानै 437

कोणुतऱ्कु अमैन्त—कुंचित होने की प्रकृति वाली; कोल पुरुवम् पोल्—(सीताजी की) सुन्दर भौंहों के समान; तिरैयुम् कूट—लहरों से युक्त; पूणुतऱ्कु—पहनने के लिए; इनिय मुत्तिन्—मनोरम लगनेवाले मोतियों के समान; पॉलि—छविमय; मणल् परन्त—बालू का विस्तार जहाँ था; वॅप्पिल्—उस स्थान में; काणुतऱ्कु इनिय—देखने के लिए मनोमुग्धकारी; नीळ वॅण्मैयिल्—लम्बे श्वेत रंग में; करुमै काट्टि—कालिमा दिखाते हुए; वाळ् नुतल्—तेजोमय भाल वाली; चीतै कण्णिन्—सीता की आँखों की; मणि ॲन—पुतली के समान; वयङ्कुवानै—शोभनेवाले को। ४३७

वे तेजोमय ललाटिनी सीताजी की आँख की पुतली के समान भी लगे। उनकी कुंचित भ्रू के स्थान पर लहरें थीं। धारणीय मनोरम मोतियों के-से बालू का बड़ा तटीय मैदान डेले के स्थान पर था। और श्रीराम उस मनोहारी श्वेत विस्तार के बीच काले वर्ण के साथ पुतली के समान विराजमान थे। (ऐसे शोभायमान श्रीराम को विभीषण ने देखा।)। ४३७

❀ पडर्मळै शुमन्द कालेप् पहर्वरु ममरर् कोमान्
अडर्शिलै तुरन्द दॅन्न वारन्दोर् मार्बि तानैक्

कडऱ्कडै मत्तिऱ् पाम्बु शुळऱ्ऱिय दॆन्तक् काशिऩ्
शुडरॊळि वलयऩ् दीर्न्द शुन्दरत् तोळि ऩाऩै 438

पटर् मळै–(आकाश में) संचार करनेवाला मेघ; चुमन्त कालै–जब (समुद्र-जल) ढो रहा था तब; पकर्वु अरु–अवर्ण्य; अमरर् कोमाऩ्–देवराज का; अटर् विलै–घना धनुष; तुऱन्ततु अॆऩ्ऩ–छोड़ गया, जैसे; आरम् तीर्–नवरत्नहार से रहित; मार्पिऩाऩै–वक्ष वाले को; कटल् कटै–(क्षीर-) सागर मथनेवाली; मत्तिल्–मथानी (मेरु गिरि) से; पाम्पु–सर्प (वासुकी); चुळऱ्ऱियतु–जो लपेट दिया गया; अॆऩ्ऩ–जैसे; काचिऩ् चुटर् ऑळि–रत्नों का चमकता प्रकाश (जिसमें से छूटता था) उस; वलयम् तीर्न्त–बाहुवलय-मुक्त; चुन्तर तोळिऩाऩै–सुन्दर भुजाओं वाले को। ४३८

इन्द्रधनुष-रिक्त आकाशचारी जल-भरे काले बादल के समान उनका वक्ष नवरत्नहार से हीन था। क्षीरसागरमथनकारी मेरु पर्वत से सर्प (वासुकी) उतार दिया गया हो, ऐसा चमकदार नवरत्न के बने बाहुवलय-रिक्त भुजाएँ शोभ रही थीं। (ऐसे उनको विभीषण ने देखा।)। ४३८

❀ कऱ्ऱैवॆण् णिलवु नीक्किक् करुणैया लमिऴ्दङ् गालुम्
मुऱ्ऱुरु कलैयिऱ् ऱाय मुळुमदि मुहत्ति ऩाऩैप्
पॆऱ्ऱव ऩळित्त मोलि यिळैयवऩ् पॆऱत्ताऩ् पॆऱ्ऱ
शिऱ्ऱवै पणित्त मोलि पॊलिहिऩ्ऱ शॆऩ्ऩि याऩै 439

कऱ्ऱै वॆण्–श्वेत प्रकाश की लटों को; निलवु नीक्कि–चाँदनी छिटकाना छोड़कर; करुणैयाल्–दया के साथ; अमिऴ्तम् कालुम्–अमृत बरसानेवाले; मुऱ्ऱुऱु कलैयिऱ्ऱु आय–सारी कलाओं से युक्त; मुळुमति मुकत्तिऩाऩै–पूर्णचन्द्र के सदृश मुख वाले को; पॆऱ्ऱवऩ्–जनक (पिता) द्वारा; अळित्त–दत्त; मोलि–मुकुट को; इळैयवऩ् पॆऱ–छोटे भाई को देकर; ताऩ् पॆऱ्ऱ–उन्हें प्राप्त; चिऱ्ऱवै–छोटी माँ से; पणित्त मोलि–निर्दिष्ट जटामुकुट; पॊलिकिऩ्ऱ–जिस पर शोभ रहा था; चॆऩ्ऩियाऩै–ऐसे सिर वाले को। ४३९

उनका श्रीवदन उस सारी कलाओं से युक्त पूर्णचन्द्र के समान था, जो घने रूप से लटों में चाँदनी बिखेरना छोड़कर अमृत बरसा रहा हो। श्रीराम को उनके जनक दशरथ ने प्रेम के साथ मणिमय किरीट दिया था। पर श्रीराम ने उसे अपने छोटे भाई को दिला दिया और खुद अपनी सौतेली माँ जो थीं उसका दिया हुआ जटा-जूट रूपी किरीट धारण कर लिया था। ऐसे जटाजूट-सह शोभनेवाले श्रीराम के विभीषण ने दर्शन किये। ४३९

❀ वीरऩै नोक्कि यङ्ग मॆऩ्मयिर् शिलिर्प्पक् कण्णीर्
वारनॆञ् जुरुहिच् चॆङ्ग णञ्जऩ मलैयऩ् ऱाहिल्

कार्मुहिल् कमलम् बूत्त दन्ऱिवन् कण्णन् कॉल्लाम्
आररुळ् शुरक्कु नीदि यऱनिऱङ् गरिदो वॅन्ऱान् 440

वीरनै नोक्कि–वीर को देखकर; अङ्कम्–शरीर के; मॅन् मयिर् चिलिर्प्प–(कोमल) रोंगटे पुलकित हुए; कण्णीर् वार–आंसू बहा; नॅञ्चु उरुकि–कण्ठ गद्‌गद हुआ; चॅम् कण्–अरुणाक्ष; अञ्चन मलै–काजलगिरि; अन्ऱु आकिल्–नहीं तो; कमलम् पूत्तनु–कमलपुष्पित; कार्मुकिल्–काला मेघ; अन्ऱु–नहीं; इवन्–ये; कण्णन् आम् कॉल्–सर्वनेत्र विष्णु हैं शायद; आर् अरुळ्–पूर्ण कृपा; चुरक्कुम्–लगातार बरसानेवाले; नीति–धर्मदेवता के; अऱम्–धर्म का; निऱम्–रंग; करितो–काला है क्या; ॲन्ऱान्–(आप ही आप) बोला। ४४०

दर्शन करते ही विभीषण के कोमल बाल पुलकित हुए। आँखें डबडबा आयीं। हृदय पसीज गया। उसने आपसे आप पूछा कि क्या अरुणाक्ष अंजन नग है, नहीं तो कमल-पुष्पित काला बादल ? नहीं ! ये तो सर्वनेत्र श्रीविष्णु हैं ! उसके मन में सन्देह उठा कि क्या पुष्कल कृपावर्षक धर्मदेवता का रंग भी काला होता है ? । ४४०

मिन्मिनि यॉळियिन् मायुम् बिऱवियै वेरिन् वाङ्गच्
चॅम्मणि महुड नीक्कित् तिरुवडि पुनैन्द शॅल्वन्
तन्मुनार् कमलत् तण्ण ऱावैयार् शरणन् दाळ
ॲन्मुना रॅनक्कुच् चॅय्द वुदवियॆन् ऱेम्ब लुऱ्ऱान् 441

मिन् मिनि ऑळियिन्–खद्योत-प्रकाश के समान; मायुम्–ओझल होनेवाले; पिऱवियै–जन्म को; वेरिन् वाङ्क–मूल से नष्ट करने; चॅम्मणि–श्रेष्ठ रत्नखचित; मकुटम् नीक्कि–मुकुट को हटाकर; तिरुवटि–(श्रीराम के) श्रीचरणों को; पुनैन्त चॅल्वन्–जिनने धारण कर लिया उन श्रीमान (भरत) के; तन् मुनार्–ज्येष्ठ भ्राता; कमलत्तु अण्णल्–कमलवासी देव ब्रह्मा के; तातैयार्–पिता (श्रीराम के); चरणम् ताळ–चरणों पर नमस्कार करने (भेजकर); ॲन् मुनार्–मेरे ज्येष्ठ ने; ॲनक्कु चॅय्त–जो मेरे लिए किया; उतवि–उपकार; ॲन्ऱु–ऐसा; एम्पल् उऱ्ऱान्–बहुत आनन्दित हुआ। ४४१

विभीषण को अपार हर्ष हुआ। ये श्रीराम उन श्रीमान् के ज्येष्ठ हैं, जिन्होंने अपने खद्योतप्रकाश-सम नश्वर जन्मतरु को मूल से काटने के निमित्त रत्नकिरीट त्यागा और श्रीराम के चरणों (की पादुकाओं) को अपने सिर पर धारण किया था। ये श्रीराम कमलभव प्रभु ब्रह्मा के भी धाता हैं। इनके चरणों पर नमन करने का मेरा भाग्य मेरे ज्येष्ठ-कृत सहायता का ही फल है। उनका उपकार भी कितना बड़ा है ! यह सोचकर विभीषण मुदित हुआ। ४४१

पॅरुन्दव मियऱ्ऱि नोर्क्कुम् पेर्वरुम् बिऱवि नोय्क्कु
मरुन्दॆन निन्ऱान् ऱाने वडिक्कणै तॊडत्तुक् कॊल्वान्

इरुन्दन नित्र दॆन्ता मियम्बुव दिल्लै तीर्न्द
अरुन्दव मुडैय रम्मा वरक्करॆन् ऱहत्तुट् कॊण्डान् 442

पॆरु तवम्–बड़ा तप; इयऱ्ऱिनोर्क्कुम्–जो कर चुके हैं उनके लिए; पेर्वु अरु–दुर्निवार; पिऱवि नोय्क्कुम्–भव-रोग के लिए; मरुन्तु अॆन्न–औषध; निन्ऱान्–जो थे; तान्–वे स्वयं; वटि कणै तॊटुत्तु–तीक्ष्ण शरों को धनु में संधान कर; कॊल्वान् इरुन्तनन्–संहार करने को उद्यत थे; अरक्कर्–राक्षस; तीर्न्त–क्षयप्राप्त; अरु तवम्–उत्तम तपस्या के; उटैयर–स्वामी हो गये; निन्ऱतु अॆन्ताम्–बचा क्या है; इयम्पुवतु इल्लै–कहने के लिए कुछ नहीं है; अॆन्ऱु–ऐसा; अकत्तुळ् कॊण्टान्–मन में सोच लिया; (अम्मा–री मैया)। ४४२

ये श्रीराम महा तपस्वियों के लिए भी दुर्वार भवरोग के लिए अमोघ औषध हैं। वे स्वयं तीक्ष्ण बाण संधानकर राक्षसों को मारने का संकल्प कर चुके हैं। फिर राक्षसों का पूर्वकृत तप पूर्ण हो गया समझो। अब बचा क्या है? कहने के लिए भी क्या है? विभीषण के मन में विस्मय के साथ यह विचार उठा। ४४२

ॐ करङ्गण्मीच् चुमन्दु शॆल्लुङ् गदिर्मणि मुडियन् कल्लुम्
मरङ्गळु मुरुह नोक्कुङ् गादलन् करुणै वळ्ळल्
इरङ्गिन नोक्कुन् दोऱु मिरुविलत् तिऱैञ्जु हिन्ऱान्
वरङ्गळिन् वारि यन्न ताळिणै वन्दु वीऴ्न्दान् 443

करङ्कळ्–हाथों को; मी–(सिर के) ऊपर; चुमन्तु चॆल्लुम्–धारण करते हुए जानेवाला; कतिर् मणि मुटियन्–ज्वलन्त रत्नकिरीटी; कल्लुम् मरङ्कळुम्–पत्थर और पेड़; उरुक नोक्कुम्–जिसे स्नेहार्द्र होकर देखते हैं; कातलन्–वह प्यारा विभीषण; करुणै वळ्ळल्–करुणादानी; इरङ्किनन्–दया के साथ; नोक्कुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों देखते हैं, त्यों-त्यों; इरु निलत्तु–बड़ी भूमि पर; इऱैञ्चुकिन्ऱान्–गिरकर नमस्कार करता हुआ; वरङ्कळिन् वारि अन्न–वरों की वारिधि-से; ताळिणै वन्तु–श्रीचरणों पर आकर; वीऴ्न्तान्–गिरा। ४४३

(वैष्णवों में रीति है कि भगवान या भगवद्भक्त के सामने जाते समय पग-पग पर दण्डवत करते जाया जाय; और ज्यों-ज्यों उनकी दृष्टि पड़ती है, तब भी दण्डवत की जाय।) तेजोमय रत्नकिरीटधारी विभीषण, जिसको देखकर पेड़ और पत्थर भी स्नेहार्द्र हो जाते थे, अपने सिर पर दोनों हाथ जोड़े रखकर श्रीराम के समक्ष गया। करुणावान उदार प्रभु की दृष्टि उस पर पड़ते हर समय उसने बड़ी भूमि पर साष्टांग नमस्कार किया। इस भाँति वह वर-वारिधि श्रीराम-चरणों के पास आकर दण्डवत की मुद्रा में गिर गया। ४४३

अऴिन्ददु पिऱवि यॆन्ऱु महत्तियन् मुहत्तिर् काट्ट
वऴिन्दकण् णीरिन् मण्णिन् मार्बुऱ वणङ्गि नानैप्

पॊऴिन्ददोर् करुणै तन्नार् पुल्लिन्न ऎन्ऱु तोन्ऱ
ॲऴुन्दिनि दिरुत्ति यॆन्ना मलर्क्कैया लिरुक्कै यीन्दान् 444

पिऱवि–जन्म; अऴिन्ततु–मिटा; ऎन्ऱुम्–यह; अकत्तु इयल्–मनोभाव; मुकत्तिल् काट्ट–मुख पर प्रदर्शित कराते हुए; वऴिन्त कण् नीरिन्–बहनेवाले अश्रुजल के साथ; मण्णिन्–भूमि पर; मार्पु उऱ–वक्ष लगाकर; वणङ्किनानै–साष्टांग नमस्कार करनेवाले उसको; पॊऴिन्ततु–बहती; ओर् करुणै तन्नाल्–श्रेष्ठ करुणा के साथ; पुल्लिनन्–अपना लिया; ऎन्ऱु तोन्ऱ–ऐसा भाव प्रकट हो इस भाँति; इनितु–प्रसन्नता के साथ; ॲऴुन्तु–उठकर; इरुत्ति–आसीन हो जाओ; ऎन्ना–कहकर; मलर् कैयाल्–कमल-कर से; इरुक्कै ईन्तान्–आसन दिलाया (श्रीराम ने)। ४४४

"जन्मरोग मिट गया।" यह विभीषण का मनोभाव मुख पर भी झलक रहा था। बहते अश्रुजल को अपने वक्ष के साथ भूमि पर लगने देते हुए जो पड़ा था उसे श्रीराम ने अपार करुणा के साथ अपना लिया। इस भाव को प्रकट करते हुए प्रभु ने कहा कि सुख से उठो और प्रसन्नता से आसीन हो जाओ और अपने कमल-कर द्वारा आसन दिखाया। ४४४

आऴिया नवनै नोक्कि यरुळ्शुरन् दुवहै तूण्ड
एऴिनो डेळाय् निन्ऱ वुलहुमॆन् पॆयरु मॆन्नाळ्
वाऴुना ळन्ऱु काऱुम् वळैयॆयिऱ् ऱरक्कर् वैहुम्
ताऴ्हड लिलङ्गैच् चॆल्व निन्नदे तन्दे नॆन्ऱान् 445

आऴियान्–चक्रायुधधारी श्रीराम ने; अवनै नोक्कि–उसको देखकर; अरुळ् चुरन्तु–करुणा की उमंग के साथ; उवकै तूण्ट–आनन्द के प्रेरित करते; एऴिनोटु एऴाय् निन्ऱ–सात और सात मिले जो रहे; उलकुम्–वे चौदह भुवन; ऎन् पॆयरुम्–और मेरा नाम; ऎन्नाळ् वाऴुनाळ्–जितने दिन जीवित रहेंगे; अन्ऱु काऱुम्–उतने दिनों तक; वळै ऎयिऱु–वक्र दाँत वाले; अरक्कर् वैकुम्–राक्षस जहाँ रहते हैं; ताऴ् कटल्–वह गहरे समुद्र-मध्य रहनेवाली; इलङ्कै चॆल्वम्–लंका का धन; निन्नते–तुम्हारा; तन्तेन्–प्रदान कर दिया (मैंने, ऐसा); ऎन्ऱान्–कहा। ४४५

चक्रधारी श्रीराम ने कृपापूर्ण और मुदित हो विभीषण को देखकर उससे कहा कि चौदहों भुवन और मेरा नाम जब तक रहेंगे तब तक वक्रदंतोरे राक्षसों की यह गंभीर समुद्रावृत लंका का राजधन तुम्हारा होगा। मैंने तुम्हें दे दिया। ४४५

तीर्त्तन दरुळै नोक्किच् चॆय्ददो शिऱप्पुप् पॆऱ्ऱान्
कूर्त्तनल् लऱत्तै नोक्किक् कुऱित्तदो यादु कॊल्लो
वार्त्तैयः(ह्) दुरैत्त लोडुन् दनित्तनि वाऴ्न्दे मॆन्न
आर्त्तन वलहि लुळ्ळ शराशर मनैत्तु मम्मा 446

(तीर्त्तन्–तीर्थ श्रीराम के) वार्त्तै अ:तु उरैत्तल् ओटुम्–वह श्रीवचन कहते ही; उलकिलुळ्ळ–संसार भर के; चराचरम् अनैत्तुम्–चर और अचर सभी ने; वाळ्न्तेम् ॲन्ऩ–जो गये कहकर; तत्ति तत्ति–अलग-अलग; आर्त्तत्त–आनन्दनर्दन किया; तीर्त्तनतु अरुळै नोक्कि–तीर्थ की कृपा को देखकर; चॅय्तत्तो–(यह नाद) किया गया; चिऱप्पु पॅऱ्ऱान्–सौभाग्यवान विभीषण के; कूर्त्त–श्रेष्ठ; नल् अऱत्तै नोक्कि–सद्धर्म-व्यवहार को देख; कुऱित्तत्तो–प्रकट किया गया; यातु कॊल्लो–किससे। ४४६

जब श्रीराम ने यह बात कही तब संसार के चर और अचर सभी ने आनन्दनर्दन किया और कहा कि हम सब तर गये। यह नर्दन तीर्थ श्रीराम की करुणा देखकर किया गया? या श्रीमान् जो बना था, उस विभीषण के शील की वाहवाही में था? कौन सा कारण है? माँ! क्या आश्चर्य है?। ४४६

उञ्जनै नडिय नेन्ऩ् ऱुळ्मुऱै वणङ्गि निऩ्ऱ
अञ्जन मेति यानै यळहनु मरुळि नोक्कित्
तञ्जनऱ् ऱुणैव नान तवऱिलाप् पुहऴान् ऱन्नैत्
तुञ्जलि नयनत् तैय शूट्टुदि महुड मॅन्ऱान् 447

अऴकत्तुम्–सुन्दर (श्रीराम) ने भी; अटियनेन्–दास मैं; उय्ञ्चनेन्–तर गया; ॲन्ऱु–कहकर; ऊळ्मुऱै–निर्दिष्ट रीति से; वणङ्कि निन्ऱ–जो प्रणाम कर खड़ा रहा; अञ्चन मेनियानै–उस अंजनरूप विभीषण को; अरुळिन् नोक्कि–कृपा के साथ देखकर; तुञ्चल् इल्–निद्राहीन; नयनत्तु ऐय–नेत्रों वाले तात; तञ्चम्–शरणागत हो; नल् तुणैवन् आन–जो श्रेष्ठ मित्र बन गया; तवऱु इला–निर्दोष; पुकळान् तन्नै–यशस्वी इसका; मकुटम् चूट्टुति–मुकुट धारण करा दो; ॲन्ऱान्–कहा। ४४७

"दास मैं तर गया।" यह कहते हुए अंजनवर्ण विभीषण यथाक्रम प्रणमन करके खड़ा रहा। श्रीराम ने उस पर कृपादृष्टि डाली। फिर लक्ष्मण को आज्ञा दी कि हे अनिद्रनेत्र! हमारी शरण आया यह हमारा मित्र भी बन गया। इस अनिंद्य कीर्तिमान को मुकुट पहना दो। ४४७

विळैविनै यऱियुम् वॅन्ऱि वीडण नॅन्ऱुम् वीया
अळवरु पॅरुमैच् चॅल्व मळित्तनै यायि नैय
कळविय लरक्कन् पिन्ऩे तोन्ऱिय कडत्मै तीर
इळैयवऱ् कवित्त मोलि यॅन्नैयुङ् गवित्ति यॅन्ऱान् 448

विळैवितै–भावी फल को; अऱियुम्–जो जान सकता था; वॅन्ऱि वीटणन्–उस सफल विभीषण ने; ऐय–स्वामी; ॲन्ऱुम् वीया–अमर; अळवु अऱु–और अपार; पॅरुमै–गौरवपूर्ण; चॅल्वम्–धन को; अळित्तनै आयिन्–देने की कृपा कीजिए तो; कळवु इयल्–चोर-स्वभाव के; अरक्कन् पिन्नै–राक्षस के अनुज के

रूप में; तोन्ड्रिय-जन्म से प्राप्त; कटत्मै तीर-सम्बन्ध-विच्छेद करते हुए; इळैयवन्-अपने छोटे भाई के सिर पर; कवित्त मौलि-जो आपने रखी वह मौलि; ॲन्तैयुम्-मेरे सिर भी; कवित्ति-रखिए; ॲन्ड्रान्-निवेदन किया। ४४८

भावी के ज्ञाता विजयशील विभीषण ने नम्रता से निवेदन किया कि स्वामी ! अगर आप अमर और अपार गौरवमय धन देने की कृपा करना चाहते हैं, तो मुझे अपने भाई भरत के सिर पर जो मौलि (पादुका) धरी वह मौलि धरें ताकि चोरस्वभाव राक्षस रावण के अनुज का नाता टूट जाय। ४४८

❀ गुहनॊडु मैव राने मुन्बुपिन् कुन्रु शूळ्वान्
महनॊडु मरुव राने मॆम्मुळै यन्बिन् वन्द
अहतमर् काद लैय निन्नॊडु मॆळुव रानेम्
पुहलरुङ् गानन् दन्दु पुदल्वराऱ् पॊलिन्दा नुन्दै 449

ॲम् उळै-हमारे पास; अन्पिन् वन्त-प्रेम के साथ आगत; अकत् अमर्-आन्तरिक; कातल् ऐय-स्नेही भाई; मुन्पु-पहले; कुकनॊटुम्-गुह के साथ; ऐवर् आनेम्-हम पाँच (भाई) हुए; पिन्-बाद; कुन्रु चूळ्वान्-(मेरु) पर्वत की परिक्रमा करनेवाले सूर्य के; मकनॊटुम्-पुत्र सुग्रीव के साथ मिलकर; अरुवर् आनेम्-छः (भाई) बने; निन्नॊटुम्-तुमको मिला लेकर; ॲळुवर् आनेम्-सात बन गये; उन्तै-तुम्हारे पिता (दशरथ) ने; पुकल् अरु-अगम; कानम् तन्तु-वनवास देकर; पुतल्वराल्-(अनेक) पुत्रों से; पॊलिन्तान्-विशिष्ट और विख्यात हो गये। ४४९

तब श्रीराम ने ये वचन कहे। हमारे पास प्रेम के साथ आये हे अंतःकरणशुद्ध स्नेही प्रभु ! हम (जो चार थे) गुह से मिलकर पाँच भाई बने। फिर मेरु की परिक्रमा करनेवाले सूर्य का पुत्र मिला। हम छः बने। अब तुम्हारे साथ मिलकर सात बन गये। तुम्हारे पिता दशरथ ने हमें अगम कानन का वास क्या दिया— और पुत्रों को पाकर भाग्यवान बन गये। ४४९

नडुविनिप् पहर्व वन्ने नायह नायि नेनै
उडनुदित् तवर्ह ळोडु मौरुवनॆन् रुरैया निन्राय्
अडिमैयिऱ् चिरन्दे नॆन्ना वयिर्प्पॊडु मच्च नीङ्गित्
तॊडुहळऱ् चॆम्बॊन् मौलि शॆन्नियिऱ् चूट्टिक् कॊण्डान् 450

नायक-नाथ; नायितेनै-स्वान मुझे; उटन् उतित्तवर्कळोटुम्-सहजात भ्राताओं के साथ मिलाकर; ऒरुवन् ॲन्रु उरैया निन्राय्-(उनके समान एक) बताया; नटु-बीच में; इनि-अब; पकर्वतु ॲन्ने-कहना क्या है; अटिमैयिल्-दास बनकर; चिरन्तेन्-उत्कृष्ट बन गया; ॲन्ना-कहकर; वयिर्प्पॊटुम्-संशय और; अच्चम् नीङ्कि-भय से मुक्त होकर; तॊटु कळल्-अलंकृतकारी पायल

वाले श्रीचरण (पादुका-) रूपी; चॅम्पोन् मौलि–लाल स्वर्णरत्नमौलि को; चॅन्तियिल्–सिर पर; चूट्टि कॉण्टान्–रख (धारण कर) लिया। ४५०

विभीषण ने इसके उत्तर में कहा कि नायक ! मैं कुत्ते से भी गया-गुजरा हूँ। मुझे आपने अपने सहोदर भाइयों के साथ मिलाकर उनमें एक बना लिया ! फिर बीच में कहने को क्या है ? दास बना तो बड़ा गौरव मिल गया। धृतपायलधारी स्वर्ण-सम श्रीराम-चरणों (की पादुकाओं) को विभीषण ने अपने सिर पर धारण कर लिया। ४५०

तिरुवडि निलैयैच् चूडिच् चॅङ्गदि रुच्चि शेर्न्द
अरुवरै यॅन्न निन्ऱ वरक्कर्दम् मरशै नोक्कि
इरुवरु मुवहै कूर्न्दार् यावरु मिन्ब मुऱ्ऱार्
पॊरुवरु ममरर् वाऴ्त्तिप् पूमऴै पॊऴिव दानार् 451

तिरुवटि निलैयै–श्रीपादुकाओं को; चूटि–धारण करके; चॅम् कतिर्–लाल किरणमाली को; उच्चि चेर्न्त–सिर पर लेकर; अरु वरै ऎन्न–(स्थित) अनोखे पर्वत के समान; निन्ऱ–जो खड़ा रहा; अरक्कर् तम् अरचै–उस निशाचरराज को; नोक्कि–देखकर; इरुवरुम्–दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण); उवकै कूर्न्तार्–हर्षित हो गये; यावरुम्–सभी; इन्पम् उऱ्ऱार्–मुदित हुए; पॊरु अरुम्–अप्रतिम; अमरर्–देवों ने; वाऴ्त्ति–आशीर्वाद देकर; पू मऴै–पुष्प-वर्षा; पॊऴिवतु आनार्–बरसाना आरम्भ किया। ४५१

विभीषण श्रीपादुकाओं को सिर पर धारण करके ऐसा खड़ा था, मानो लाल किरणमाली को सिर पर धारण करके श्रेष्ठ पर्वत खड़ा हो। उस राक्षसराज को देखकर श्रीराम और लक्ष्मण दोनों हर्षित हुए। सभी को आनन्द हुआ। अप्रतिम देवों ने भी आशीर्वाद देकर फूल बरसाए। ४५१

आर्त्तन परवै येऴ् मार्त्तन मेह मार्त्त
वार्त्तॊऴिर् पुणरुन् दॆय्व मङ्गल मुरशुञ् जङ्गुम्
तूर्त्तन कनह मारि शॊरिन्दन नऱुमॆन् शुण्णम्
पोर्त्तदु वानत् तन्ऱङ् गॆऴुन्ददु तुऴनिप् पॊम्मल् 452

परवै एऴुम्–सातों समुद्र; आर्त्तन–गरजे; मेकम् आर्त्तन–मेघ गरजे; वार् तॊऴिल् पुणरुम्–फ़ीतों से बद्ध; तॆय्वम् मङ्कल मुरचुम्–दिव्य और मंगल-भेरियाँ; चङ्कुम्–और शंख; आर्त्त–बज उठे; कनक मारि–कनक-वर्षा; तूर्त्तन–भूमि को भर गयी; नऱु मॆन् चुण्णम्–सुवासित कोमल गन्धचूर्ण; चॊरिन्तन–बिखरे; अन्ऱु–उस समय; अङ्कु–वहाँ; ऎऴुन्ततु–जो उठा; तुऴनि पॊम्मल्–तुमुल शब्द; वानत्तु पोर्त्ततु–आकाश को ढक गया। ४५२

सातों समुद्र गरजे। मेघ गरजे। फ़ीतों से बद्ध त्रिविध दिव्य

भेरियाँ (युद्ध, दान और विजय की) नर्दन कर उठीं। शंख बजे। कनक-वर्षा हुई जिससे भूमि भर गयी। सुगंधित महीन चूर्ण गिरे। तब वहाँ जो तुमुल शोर उठा वह आकाश को आच्छादित कर गया। ४५२

मॉळिन्दशॉल् लमिळ्द मन्ना डिऱत्तिनिऩ् मुऱैमै नीङ्गि
इळिन्दवॆन् मरबु मिन्ऱे युयर्न्दवॆन् ऱिडरिऱ् ऱीर्न्दान्
शॆळुन्दनि मलरोन् पिन्नै यिरावणन् ऱीमैच् चॆल्वम्
अळिन्ददॆन् ऱऱनुन् दन्वा यावलङ् गॊट्टिऱ् ऱन्ऱे 453

चॆळु–सुपुष्ट; तनि–अनुपम; मलरोन्–(कमल) पुष्पवासी; मॉळिन्त चॊल् मुखरित वाणी में; अमिळ्तम् अन्नाळ्–अमृत-समान सीता; तिऱत्तिनिल्–के प्रति; मुऱैमै नीङ्कि–नीतिक्रम छोड़कर व्यवहार करने से; इळिन्त–जो गर्ह्य हो गया; ऍन् मरपुम्–मेरा वंश भी; इन्ऱे उयर्न्ततु–आज ही मान में उन्नत हुआ; ऍन्ऱु–ऐसा; इटरिल्–व्यथा से; तीर्न्तान्–मुक्त हुआ; पिन्नै–अब; इरावणन्–रावण का; तीमै चॆल्वम्–बुरा वैभव; अळिन्ततु–मिट गया; ऍन्ऱु–सोचकर; अऱनुम्–धर्मदेवता ने भी; तन् वाय्–अपना मुख खोलकर; आवलम् कॊट्टिऱ्ऱु–कोलाहल मचाया। ४५३

ब्रह्मा के मन में यह दुःख था कि रावण के काम से अमृतभाषिणी सीता देवी के प्रति अन्याय किया गया, अतः मेरे वंश पर धब्बा लग गया है। अब उसका दुःख दूर हो गया, क्योंकि उसका वंश विभीषण की श्रीराम-शरणागति के कारण श्रेष्ठ हो गया। धर्मदेवता ने मुख खोलकर आनन्द का कोलाहल मचाया, क्योंकि उसे निश्चय हो गया कि अब रावण का हानिकारक वैभव मिट गया। ४५३

इन्नदोर् शॆव्वित् ताह विरामनु मिलङ्गै वेन्दन्
तन्नॆडुञ् जॆल्वन् दाने पॆऱ्ऱमै पलरुङ् गेट्पप्
पन्नॆडुन् दानै शूळप् पहलवन् शेयु नीयुम्
मन्नॆडुङ् गुमर पाडि वीट्टिनै वलञ्जॆय् हॆन्ऱान् 454

इन्ततोर्–ऐसे एक; चॆव्वित्तु आक–सन्निवेश में; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; मन् नॆट कुमर–(लक्ष्मण से) महिमावान राजकुमार; इलङ्कै वेन्तन् तन्–लंकाधिपति के; नॆटु चॆल्वम्–बड़े धन को; ताने–यही; पॆऱ्ऱमै–पा गया यह बात; पलरुम् केट्प–सभी सुन लें, ऐसा; पल् नॆटुम् तानै–विविध अनेक सेनाएँ; चूळ–घेर आएँ; पकलवन् चेयुम्–दिनकरपुत्र और; नीयुम्–तुम; पाटि वीट्टिनै–पड़ाव की; वलम् चॆय्क–परिक्रमा करो; ऍन्ऱान्–कहा। ४५४

ऐसे सन्निवेश में श्रीराम ने लक्ष्मण को सम्बोधित किया— हे आदरयोग्य राजकुमार! और कहा कि यह विभीषण ही लंका के विशाल राजधन का अकेला अधिकारी है। इसको सभी जानें, इस वास्ते तुम और

दिनकरसूनु सुग्रीव दोनों विविध और अनेक सेनाओं के मध्य उसको लेकर सेनावास की परिक्रमा करो। ४५४

अन्दमिल् गुणत्ति ताऩै यडियिणै मुडियि ऩोडुम्
शन्दऩ विमाऩ मेऱ्ऱि वानरत् तलैवर् ताङ्ग
इन्दिरर्क् कुरिय शॅल्व मॅय्दिऩा ऩिवऩॆऩ् ऱेत्ति
मन्दरत् तडन्दोळ् वीरर् वलञ् जॅय्दार् ताऩैवेप्पे 455

मन्तरम् तट तोळ्–मन्दरपर्वतनिभ विशाल भुजा वाले; वीरर्–वीर; अन्तम् इल् कुणत्तिताऩै–अमितगुण (विभीषण) को; अटि इणै–पादुका रूपी; मुटियिऩोटुम्–मुकुट के साथ; चन्तऩम् विमाऩम् एऱ्ऱि–रथ-सदृश यान पर आसीन कराकर; वानर तलैवर्–वानरपतियों के; ताङ्क–उठाते; इन्तिरर्कु उरिय–इन्द्रयोग्य वैभव; चॅल्वम् इवऩ् ऎय्तिऩाऩ्–इन्होंने प्राप्त किया है; ऎऩ्ऱु एत्ति–ऐसी प्रशंसा करते हुए; ताऩै वेप्पे–सेनावास की; वलम् चॅय्तार्–परिक्रमा की। ४५५

मंदरपर्वत-सन्निभ कंधों वाले दोनों वीरों ने उस अपार सद्गुणों वाले विभीषण को श्रीपादुकाद्वय रूपी मुकुट के साथ स्यंदननिभ यान (पालकी) पर आसीन कराया। उसे वानरयूथपों ने अपने कंधों पर उठा लिया। जुलूस सेनावास में घूम आया और लोगों ने यह नारा लगाया कि इन्द्रयोग्य वैभव इसे प्राप्त हो गया है। ४५५

तेडुवार् तेड निऩ्ऱ शेवडि ताऩुन् देडि
नाडुवा ऩऩ्ऱु कण्ड नाऩ्मुहऩ् कऴीइय नऩ्ऩीर्
आडुवार् पाव मैऩ्दुम् नीङ्गिमे लमर रावार्
शूडुवा रॅय्दुन् दऩ्मै शॊल्लुवार् यावर् शॊल्लीर् 456

तेटुवार्–भगवान को खोजनेवाले (ज्ञानी) लोग; तेट निऩ्ऱ–जिनका अन्वेषण करते हैं; चेवटि–उन श्रीचरणों को; ताऩुम् तेटि–स्वयं खोजकर; नाटुवाऩ्–प्राप्त करने की इच्छा के साथ; अऩ्ऱु कण्ट–उस दिन दर्शित; नाऩ् मुकऩ्–चतुर्मुख ने; कऴी इय–जिस जल से प्रक्षालन कराया; नल् नीर्–उस पवित्र (गंगा-) जल में; आटुवार्–स्नान करनेवाले; पावम् ऐन्तुम्–पंचपाप; नीङ्कि–मुक्त होकर; मेल्–श्रेष्ठ; अमरर् आवार्–देव बन जाएँगे; चूटुवार्–(तब उन चरणों को ही) धारण करनेवाले; ऎय्तुम् तऩ्मै–जो पाएँगे वह सौभाग्य; चॊल्लुवार् यावर्–कहनेवाले कौन हैं; चॊल्लीर्–कहिए। ४५६

भगवान के चरणारविंद की खोज में लगे हैं ज्ञानी लोग। उनके समान चतुर्मुख ने भी खोजा और उनको पाकर उन्हें अपने कमण्डल के दिव्य जल से धुलाया। वही जल गंगाजल है। उसमें स्नान करनेवाले पंचमहापातक पाप से मुक्त होकर स्वर्ग पहुँच जाते हैं। तो उन्हीं श्रीचरणों को अपने शीर्ष पर धारण करनेवालों को क्या वैभव मिलेगा —इसको कौन कह सकेगा ? आप ही कहिए। (कवि पाठक से पूछते हैं!)। ४५६

इऱ्ऱैना ळळवुम् यारु मिरुडिह् ळिमैयोर् ञान
मुऱ्ऱिता रन्बु पूण्डार् वेळ्विहण् मुडित्तु निन्ऱार्
मऱ्ऱुमा दवरु मॅल्लाम् वाळॅयिऱ् ऱिलङ्गं वेन्दन्
पॅऱ्ऱदार् पॅऱ्ऱा रॅन्ऱु वियन्दतर् पॅरियो रॅल्लाम् 457

पॅरियोर् अॅल्लाम्–सभी बड़े लोग; इरुटिकळ्–ऋषि; इमैयोर्–देव; ञानम् मुऱ्ऱितार्–ज्ञानवृद्ध; अन्पु पूण्टार्–भक्तिमान; वेळ्विकळ् तित्तु निन्ऱार्–याग जो पूरा कर चुके वे; मऱ्ऱुम्–और; मातवरुम् यारुम् अॅल्लाम्–महातपस्वी सब कोई; वाळ् अॅयिऱु–उज्ज्वल दाँत वाले; इलङ्कै वेन्तन्–लंकाधिपति ने; पॅऱ्ऱतु–जो पाया; इऱ्ऱै नाळ् अळवुम्–(वह) आज तक; आर् पॅऱ्ऱार्–किसने प्राप्त किया; अॅन्ऱु–ऐसा; वियन्ततर्–विस्मित हुए। ४५७

महान् से महान् लोग, ऋषि, देव, ज्ञानवृद्ध, भक्त, याज्ञिक और बड़े तपस्वी —इनमें किसी को लीजिए। आज तक कौन ऐसे हुए हैं जिन्हें वह सौभाग्य मिला है जो वक्रदंतोरे, लंकाराज विभीषण को मिला है! ऐसा कहते हुए सभी विस्मयमुग्ध हुए। ४५७

वन्दडि वणङ्गिय निरुदर् मन्नवर्
कन्दमि लाददो रुऱैयु ळव्वळित्
तन्दनन् विडुत्तपिन् इरवि तन्कदिर्
शिन्दिन वॅय्यवॅन् ऱॅण्णित् तोर्न्ददन् 458

वन्तु–आकर; अटि वणङ्किय–चरणों पर झुके; निरुतर् मन्नवऱ्कु–राक्षसराज को; अन्तम् इलाततु–अनन्त; ओर् उऱैयुळ्–एक वासस्थान; अ वळि–वहाँ; तन्ततन्–देकर; विटुत्त पिन्–विदा देने के बाद; इरवि–सूर्य; चिन्तिन–छूटी; तन् कतिर्–अपनी किरणें; वॅय्य–गरम हैं; अॅन्ऱु–ऐसा; अॅण्णि–सोचकर; तोर्न्ततन्–अस्त हो गया। ४५८

इस भाँति (जुलूस में) घूमने के बाद वे आकर श्रीराम के चरणों पर विनत हुए। तब श्रीराम ने राक्षसराज को अनन्तवैभवपूर्ण एक आवास दिखाया और विदा दी। तब किरणमाली अस्त हो गया। शायद उसे ऐसा लगा कि उसकी किरणें अधिक गरम लग रही हैं। ४५८

5. इलङ्गै केळ्विप् पडलम् (लंका-श्रवण पटल)

शन्दिवन् दनैत्तॊळिन् मुडित्तुत् तन्नुडैप्
पुन्दिनॊन् दिरामनु मुयिर्प्पप् पूङ्गणै
शिन्दिवन् दुरुत्तनन् मदनन् ऱीनिरत्
तन्दिवन् दिरुत्तदु करुत्त दण्डमे 459

चन्ति–संध्या-समय की; वन्तनै तॊळिल्–वन्दना के अनुष्ठान को; मुटित्तु–

पूरा करके; इरामतुम्–श्रीराम भी; तन्नुटै–अपना; पुन्ति–मन; नोन्तु–मारकर; उयिर्प्प–लम्बी साँसें छोड़ें ऐसा; मतन्न्–मन्मथ ने; पू कणै–पुष्पशर; चिन्ति वन्तु–चलाते हुए आकर; उरुत्तन्न्–त्रस्त किया; ती निरत्तु अन्ति–अग्नि के रंग की संध्या; वन्तु इरुत्ततु–आकर जम गयी; अण्टम्–अण्ड; करुत्ततु–काला हो गया। ४५६

संध्या आ गयी देख श्रीराम ने संध्याकाल के वन्दना आदि अनुष्ठान पूरा किये। मन्मथ भी आ गया और श्रीराम के मन में अपार दुःख भरते हुए अपने सुमन-शर चलाने लग गया, जिससे श्रीराम लम्वी साँसें छोड़ने लगे। अग्नि के रंग का संध्याकाल भी आ गया। अण्ड भी (अँधेरे से) काला बन गया। ४५९

मात्तडन् दिशैतोरुम् वळैन्द वल्लिरुळ्
कोत्तदु करुङ्गडल् कॊळ्ळै कॊण्डॆन्न
नीत्तनीर्प् पॊय्हैयि निरैन्द नाळ्मलर्
पूत्तपोन् मीन्गळाऱ् पॊलिन्द दण्डमे 460

वळैन्त–आवृत; वल् इरुळ–घना अन्धकार; करु कटल्–काला समुद्र; कॊळ्ळै कॊण्टु ऎन्न–लूट लाया हो जैसा; मा–बड़ी; तट–विशाल; तिचै तोरुम्–सभी दिशाओं में; कोत्ततु–लगी रही; नीत्तम् नीर्–प्रवाहमय; पॊय्कैयिन्–सरोवरों में; निरैन्त नाळ् मलर्–भरे ताजे फूल; पूत्त पोल्–फूले हों जैसे; अण्टम्–आकाश; मीन्कळाल्–नक्षत्रों के साथ; पॊलिन्ततु–शोभायमान रहा। ४६०

सब ओर जो घेर आया वह अंधकार मानो काला सागर ही लूट लाया हो, ऐसा सर्वत्र घने रूप से भर गया। प्रवाहसहित सरोवर में कमल पुष्पित हों, ऐसा आकाश में नक्षत्र उगे और भर गये। ४६०

शिल्लियल् कोदैयै निन्नैन्दु तेम्बिय
विल्लियैत् तिरुमतम् वॆदुप्पुम् वेट्कैयाल्
ऎल्लियैक् काण्डलु मलर्न्द वीट्टिनाल्
मल्लिहैक् कानमुम् वान मॊत्तदे 461

चिल् इयल्–शीतल गुण; कोतैयै–केश वाली सीता का; निनैन्तु–स्मरण करके; तेम्पिय–घुलनेवाले; विल्लियै–कोद डपाणी के; तिरु मतम्–श्रीमन् को; वॆतुप्पुम्–सन्तप्त करने की; वेट्कैयाल्–कामना से; ऎल्लियै काण्टलुम्–रात को देखकर; मलर्न्त ईट्टिनाल्–विकसित होने के प्रकार से; मल्लिकै कानमुम्–मल्लिकावन भी; वानम् ऒत्ततु–आकाश-सा बन गया। ४६१

सजे-सँवारे (या शीतल लगनेवाले या वृत्ताकार आभरण से अलंकृत) केश वाली सीता के सम्बन्ध में सोचते हुए कोदण्डपाणी श्रीराम गम खा रहे थे। उनके मन को सन्तप्त करने के इरादे से रात के आगमन

के साथ मल्लिकावन अपने विकसित पुष्पों के साथ आकाश के समान लगा। ४६१

ऑन्ऱियुट् करुप्पिन्नो डॉळियिन् वाळुरीइत्
तन्ऱनि मुहत्तिना लॅन्नैत् ताळ्त्तर
वॅन्ऱवन् तुणैवनै यिन्ऱु वॅल्हुवॅन्
अॅन्ऱदु पोल्वन् दॅळुन्द दिन्दुवे 462

तन् तनि मुकत्तिताल्–अपने अपनी सुन्दरता में अकेले मुख से; ऍन्नै–मुझे; अऱ–निपट; ताळ्त्तु–नीचा दिखाकर; वॅन्ऱवळ्–जिससे हराया उस सीता के; तुणैवनै–पति को; इन्ऱु–आज; वॅल्कुवॅन्–जीतूंगा; ऍन्ऱतु पोल–सोचता-जैसे; इन्तु–इन्दु; उळ् करुप्पिन्नोटु–अंतर की कालिमा के साथ; ऑन्ऱि–लगकर; ऑळियिन् वाळ्–प्रकाश रूपी तलवार; उरीइ–निकालते हुए; वन्तु ऍळुन्ततु–आ उदित हुआ। ४६२

चन्द्र को सीताजी से गुस्सा था। सीताजी ने अपने अप्रतिम मुख से चन्द्र को नीचा दिखाया था और वह बिलकुल हार गया था। अब उसने सोचा कि मैं उनके पति को जीत लूंगा। उस कोप (-कलंक) को अन्दर रखते हुए वह चाँदनी रूपी तलवार निकाल लिये हुए प्रकट हुआ। ४६२

कण्णिनै यप्पुरम् करन्दु पोहिनुम्
पॅण्णिऱ मुण्डॅनिऱ् पिडिप्प लॊण्डॅना
उण्णिऱै नॅडुङ्गड लुलह मॅङ्गणुम्
वॅण्णिऱ निलवॅनुम् वलैयै वीशिनान् 463

कण्णितै–आँखों से; अ पुऱम् करन्तु–उस ओर ओझल; पोकिनुम्–रहने पर भी; पॅण् निऱम्–उस स्त्री का शरीर; उण्टु ऍनिल्–दिखायी देगा तो; ईण्टु–अभी; पिटिप्पल्–पकड़ लूंगा; ऍना–ऐसा सोच; उळ् निऱै–अन्दर से भरे; नॅटु कटल्–विशाल सागर द्वारा वलयित; उलकम् ऍङ्कणुम्–पृथ्वी भर में; वॅळ् निऱ निलवु–श्वेतवर्ण चांदनी; ऍतुम्–रूपी; वलैयै–जाल को; वीचितान्–(इन्दु ने) फैलाया। ४६३

'सीतादेवी अदृश्य रहें तो भी उन देवी का शरीर कहीं भी रहे, पकड़ लूंगा' —यह निश्चय करके चन्द्र ने गंभीर जलनिहित समुद्र से वलयित पृथ्वी भर पर श्वेतरंग चाँदनी का जाल फैला दिया। ४६३

पुडैक्कवन् ऱिरैयॅडुत् तार्क्कुम् बोर्क्कडल्
उडैक्करुन् दत्तिनिऱ मौळित्तुक् कॊण्डवन्
अडैक्कवन् दानॅनै यरियिन् ऱातैयार्
किडैक्कवन् दानॅनक् किळर्न्द दौत्तदे 464

पुटैक्क-(तीर से) टकराने; वल् तिरै-सशक्त लहरें; ॲट्टुत्तु-उठाकर; आर्क्कुम्-गरजनेवाला; पोर् कटल्-युद्धसन्नद्ध सागर; उटैक्क अरु-अभंग; तत्ति निऱम्-अपने में अद्वितीय रंग को; ऑळित्तु कॊण्टवन्-छिपाये रखनेवाले; ऎंतै-मुझे; अरियिन् तानैयाल्-वानर-सेना की सहायता से; अटैक्क वन्तान्-बाँधने आये; किटैक्क वन्तान्-मेरे हाथ में लभ्य हो आये; ऎन-सोचकर; किळर्न्तत्तु ऒत्ततु-उमड़ उठा जैसा लगा। ४६४

समुद्र युद्धप्रिय-सा सशक्त लहरों को तीर से टकराने के लिए ऊँचा उठा रहा था। "ये श्रीराम अभंग कालिमा को अपने में छिपाये रखते हैं! ये मुझे वानर-सेना की सहायता से बाँधने आये है। अच्छा है कि ये मेरे हाथ में फँसे हैं।" यह सोचकर वह प्रफुल्ल हो उछलता जैसा लगा। ४६४

मेलुहत् तॊहुदियान् मुदिर्न्द मॆय्यॆलाम्
तोलुहुत् तालॆन वरवत् तॊल्हडल्
वालुहत् तालिडॆप् परन्द वॆप्पॆलाम्
पालुहुत् तालॆन निलवु पाय्न्ददाल् 465

तॊल्-पुराना; अरवम् कटल्-शब्दायमान सागर; मेल्-आगे; उक तॊकुतियान्-(बीते) गुणों की राशि से; मुतिर्न्त-वृद्ध हुए; मॆय् ऎलाम्-शरीर भर में; तोल् उकुत्ताल् ऎन-खाल निकाल दी गयी हो ऐसा; वालु कत्ताल्-बालू के; इटै परन्त वॆप्पु-मध्य में फैला विस्तार; ऎलाम् पाल् उकुत्ताल्-दूध बहाया हो जैसे; ऎन निलवु पाय्न्ततु-चाँदनी प्रवहमान लगी; (आल्-पूरक ध्वनि)। ४६५

बहुत प्राचीन व शब्दायमान सागर के तीर पर के बालू का मैदान ऐसा लगा, मानो युग-युग का बूढ़ा सर्प अपनी केंचुली बार-बार उतारकर ढेर लगा गया हो। उस विस्तार पर चाँदनी दूध के समान फैली। (सर्प केंचुली उतारता है और सर्प को दूध पिलाने का रिवाज भारत देश का पुराना रिवाज है। दोनों बातों की ओर इस पद्य में संकेत है।)। ४६५

मन्ऱल्वाय् मल्लिहै यॆयिऱु वण्डिनङ्
गन्ऱिय निऱत्तदु नऱविन् कण्णदु
कुन्ऱिन्वाय् मुळैयिनिऱ् कुलाय कॊट्पदु
तॆन्ऱलॆन् ऱॊरुपुलि युयिर्त्तुच् चॆन्ऱदाल् 466

मन्ऱल् वाय्-सुवास मुख; मल्लिकै ऎयिऱु-मल्लिका-सुमन रूपी दाँत; वण्टु इनम्-भ्रमरकुल रूपी; कन्ऱिय निऱत्ततु-काले अँगरखा पहने; नऱविन् कण्णतु-सुरा (-से लाल) आँखों का; कुन्ऱिन् वाय्-पर्वत की; मुळैयितिल्-गुफा में; कुलाय-सैर करने का; कॊट्पतु-स्वभाव वाला; तॆन्ऱल् ऎन्ऱु-मलयपवन रूपी; ऒरु पुलि-एक व्याघ्र; उयिर्त्तु चॆन्ऱतु-फुफकारता हुआ आया। ४६६

मलयपवन बह रहा था। (उसको कवि व्याघ्र के रूप में वर्णित करते हैं।) सुगंधपूर्ण मल्लिका के फूल उसके विषैले (चुभनेवाले) दाँत हैं। भ्रमरों की काली खाल है। सुरा ही उसकी लाल आँखें हैं। वह भी पर्वतगुफाओं में घूमने फिरनेवाला है! वह फुंकारता हुआ आया। ४६६

※ करत्तोंडुम् बाळिमाक् कडल्ह डन्दुळान्
उरत्तोंडुङ् गरन्तोडु मुरुव वोङ्गिय
मरत्तोंडुन् दुळैत्तवन् मार्बिन् मन्मदन्
शरत्तोंडुम् बायन्ददु निलविन् ऱारैवाळ् 467

पाळि करत्तोटुम्–सशक्त हाथों से; मा कटल्–बड़े (क्षीर-) सागर को; कटैन्तुळान्–जिसने मथा था; उरत्तोटुम्–(उस वाली के) वक्ष के साथ; करत्तोटुम्–खर को; उरुव ओङ्किय–आकाशभेदी उन्नत; मरत्तोटुम्–सालवृक्षों को; तुळैत्तवन्–भेदनेवाले के; मार्पिन्–वक्ष में; मन्मतन् चरत्तोटुम्–मन्मथ शर के साथ; निलविन्–चाँदनी की; तारै वाळ्–तीक्ष्ण तलवार; पाय्न्ततु–घुसी। ४६७

श्रीराम ने समुद्रमथनकारी करों के स्वामी वाली के वक्ष को, खर को, और गगनभेदी सालवृक्षों को अपने शरों से भेदा था। ऐसे उनके वक्ष को मन्मथ-शर के साथ मिलकर चाँदनी की तीक्ष्ण तलवार भेद रही है!। ४६७

※ उडलिनै नोक्कुमिन् नुयिरै नोक्कुमाल्
इडरिनै नोक्कुमऱ् ऱियादु नोक्कलन्
कडलिनै नोक्कुमक् कळ्वन् वैहुऱुन्
दिडरिनै नोक्कुन्दन् शिलैयै नोक्कुमाल् 468

उटलिनै नोक्कुम्–(श्रीराम तब) अपने (दुःखविगलित) शरीर को देखते; इन् उयिरै नोक्कुम्–अपने प्यारे प्राणों को देखते (सीता का स्मरण करते); इटरिनै नोक्कुम्–(विरह-) कष्ट को देखते; यातु नोक्कलन्–(कभी) किसी और को न देखकर; कटलिनै नोक्कुम्–समुद्र को देखते; अ कळ्वन्–उस चोर रावण के; वैकुऱुम् तिटरिनै–वासस्थान द्वीप को; नोक्कुम्–देखते; तन् चिलैयै नोक्कुम्–अपने धनु पर दृष्टिपात करते (मऱ्ऱु आल्–पूरक ध्वनियाँ)। ४६८

श्रीराम अपने कृश बनते शरीर को देखते और अपनी प्राणप्यारी सीता का खयाल करते। अपने कष्ट को सोचते; फिर किसी पर दृष्टि न डालकर बाधा-रूप पड़े हुए समुद्र को देखते। वे उस चोर रावण के लंका द्वीप को देखते तब अपने धनु पर दृष्टि दौड़ाते। ४६८

※ पणिपळुत् तमैन्दपू णलत्तिऱ् पण्बिनाल्
पिणिपळुत् तमैन्ददोर् पित्ति नुळ्ळत्तान्

अणिपळुत् तमैन्दमुत् तरुम्बु शॆम्मणि
मणिपळुत् तमैन्दवाय् मऱक्क वल्लनो 469

पणि पळुत्तु–कारीगरी जिसकी बहुत बढ़िया हुई हो; अमैन्त–ऐसे बने; पूण् नलत्तिन्–आभरण की सुन्दरता के समान; पण्पिनाल्–गुण (स्मरण) के कारण; पिणि पळुत्तु–दुःख-बढ़ा; अमैन्ततोर्–बने; पित्तिन्–दीवाने; उळ्ळत्तान्–मन वाले; अणि पळुत्तु अमैन्त–बहुत सुन्दर बने; मुत्तु अरुम्पु–मोतियों में उगे; चॆम्मणि–रत्न के समान; मणि पळुत्तु अमैन्त–अत्यधिक सुन्दरता से युक्त; वाय्–मुख को; मऱक्क वल्लनो–भूल सकते हैं क्या। ४६९

श्रीराम अच्छी कारीगरी से युक्त आभरण के समान सुरम्य सीताजी के गुणों का स्मरण करते तो विरह-रोग बढ़ जाता और उनका मन पागल का-सा हो रहता। फिर वे क्या उस मुख को भूल सकते हैं, जो अति-मनोरम मोतीजड़ित रत्न के समान अतिसुन्दर है ? । ४६९

आयदोर् अळवैयि नरुक्कन् मैन्दनी, तेय्वदॆन् कारिय निरप्पुञ् जिन्दैयै
मेयवन् ऱन्नॊडु मॆण्णि मेलिनित्, तूयदु निनैहिलै यॆन्नच् चॊल्लिनान् 470

आयतु–उस; ओर् अळवैयिन्–एक स्थिति में; अरुक्कन् मैन्तन्–अर्कपुत्र ने; नी–आप; कारियम् निरप्पुम्–कार्य पूरा करने का; चिन्तैयै–विचार रखते हैं; तेय्वतु ऎन्–म्लान होते क्यों; मेयवन् तन्नॊटुम् ऎण्णि–आगन्तुक के साथ सलाह करके; इनि मेल्–आगे के; तूयतु–पवित्र कार्य; निनैकिलै–नहीं सोचते; ऎन्न–ऐसा; चॊल्लिनान्–कहा। ४७०

ऐसी विरह-व्यथित श्रीराम से अर्कपुत्र सुग्रीव ने ये वचन कहे— आप, जिनको आवश्यक कार्य करने की चिंता में रहना चाहिए, इस तरह क्यों मलिन हो रहे हैं ? आगंतुक विभीषण के साथ परामर्श करके आगे के पवित्र कर्तव्यों के बारे में क्यों नहीं सोचते ? । ४७०

अव्वऴि युणर्वुवन् दयर्वु नीङ्गिनन्
शॆव्वऴि यऱिञनैक् कॊणर्मिन् शॆन्ऱॆन
इव्वऴि वरुदियॆन् ऱियम्ब वॆय्दिनान्
वॆव्वऴि विलङ्गिनन् नॆऱियिन् मेविनान् 471

अ वऴि–तब; उणर्वु वन्तु–सचेत होकर; अयर्वु नीङ्कितन्–शिथिलता से मुक्त हुए; चॆन्ऱु–जाकर; चॆव्वऴि–नेक मार्गगामी; अऱिञनै–मतिमान विभीषण को; कॊणर्मिन्–ले आओ; ऎन–आज्ञा देने पर; इ वऴि–इस मार्ग में; वरुति—आएँ; ऎन्ऱु–ऐसा; इयम्प–कहने पर; वॆव्वऴि–कुमार्ग से; विलङ्कितन्–जो छूट गया था वह; नॆऱियिन् मेविनान्–सन्मार्गगामी; ऎय्तिनान्–आया। ४७१

तब श्रीराम होश में आये। शिथिलता दूर हुई। उन्होंने आज्ञा

दी कि जाओ उस धर्मात्मा विद्वान् को ले आओ। वे उसके पास गये और बोले— आइए इस मार्ग से। कुमार्ग छोड़कर जो सन्मार्ग पर आ चुका था वह विभीषण भी श्रीराम के पास गया। ४७१

आर्हलि यिलङ्गैयि ऩरणु मव्वळि
वार्हॅळु कऩ्ऩैहळ लरक्कर् वऩ्मैयुम्
तार्हॅळु ताऩैयि ऩळवुन् दऩ्मैयुम्
नीर्हॅळु तऩ्मैयाय् निहळ्त्तुवा यॅऩ्ऱाऩ् 472

नीर् कॅळु–पानी (शान) से युक्त; तऩ्मैयाय्–स्वभाव वाले; आर् कलि–शब्दित समुद्रावृत; इलङ्कैयिऩ् अरणुम्–लंका का सुरक्षा-प्रबन्ध और; अव्वळि–उस नगर के; वार् कॅळु–सुदृढ़; कऩ्ऩै कळल्–नादशील पायलधारी; अरक्कर् वऩ्मैयुम्–राक्षसों का बल; तार् कॅळु–और विजयमालाधारी; ताऩैयिऩ् अळवुम्–सेना का परिमाण; तऩ्मैयुम्–उसकी योग्यता; निकळ्त्तुवाय्–बताओ; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा (श्रीराम ने)। ४७२

श्रीराम ने विभीषण से कहा। हे पानीदार मित्र! लंका का रक्षण-प्रबन्ध, वहाँ के सुपुष्ट और नादयुक्त पायलधारी राक्षसों का शौर्य, जयमालाधारी सेना का परिमाण और उसकी योग्यता —इनके बारे में बताओ। ४७२

ऍळुवलु मिरुत्तियॅऩ् ऱिराम ऩेयिऩाऩ्
मुळुदुणर् पुलवऩै मुळरिक् कण्णिऩाऩ्
पळुदऱ विऩ्ऩविय पॊरुळैप् पण्बुऱत्
तॊळुदुयर् कैयिऩाऩ् ऱॆरियच् चॊल्लिऩाऩ् 473

ऍळुतलुम्–(उत्तर देने) ज्योंही विभीषण उठा, त्योंही; मुळरि कण्णिऩाऩ् इरामऩ्–पुण्डरीकाक्ष श्रीराम ने; मुळुतु उणर् पुलवऩै–सब जाननेवाले (दीर्घदर्शी) विभीषण से; इरुत्ति–आसीन हो जाओ; ऍऩ्ऱु एयिऩाऩ्–यह आज्ञा दी; तॊळुतु–वन्दना में; उयर्–ऊपर किये हुए; कैयिऩाऩ्–हाथों वाले ने; विऩ्विय पॊरुळै–प्रश्नगत विषय को; पण्पु उऱ–शिष्टता के साथ; पळुतु अऱ–दोषहीन; तॆरिय–और साफ़ रीति से; चॊल्लिऩाऩ्–बताया। ४७३

विभीषण उत्तर देने के लिए उठा। तो पुण्डरीकाक्ष ने सब जानने वाले (दीर्घदर्शी) विभीषण को आज्ञा दी कि आसीन होकर ही बात करो। तब विभीषण अंजलिबद्धहस्त होकर प्रश्नगत विषय के सम्बन्ध में शिष्ट व साफ़ शब्दों में बोला। ४७३

निलैयुडै वडवरै कुलैय नेर्न्ददऩ्
तलैयॅऩ विळङ्गिय दमऩि यप्पॊरु

मलैयिनै मुम्मुडि वाङ्गि योङ्गुनीर्
अलैहड लिट्टन् ननुमन् ऱादैये 474

अनुमन् तातै–हनुमान के पिता ने; निलै उटै–चिरस्थायी; वटवरै–उत्तर के मेरु को; कुलैय नेर्न्तु–उखाड़ लेने पर उद्यत हो; अतन् तलै अँत–उसके सिर के स्थान पर; विळङ्किय–विद्यमान; मुम्मुटि–शिखरत्रय; तमनियम् पॅरु मलैयिनै–स्वर्ण के बड़े पर्वत (अंश) को; वाङ्कि–उखाड़ लेकर; नीर् अलै–जल-तरंगें; ओङ्कुम्–जिसमें ऊँची उठती थीं; कटल्–उस समुद्र में; इट्टनन्–फेंक दिया। ४७४

एक बार हनुमान के पिता पवनदेव ने उत्तर के मेरु के साथ युद्ध ठाना। उसने उसको अस्त-व्यस्त करने का संकल्प किया। पर वह उसके तीन सिरों से युक्त स्वर्णमय एक पर्वतांश को ही तोड़कर अलग कर सका। उसने उसे उत्तुंग तरंग वाले समुद्र में फेंक दिया। ४७४

एऴ़्नू ऱियोशनै यहल मिट्टकीऴ़्, आऴ़्नू ऱियोशनै याऴि मालवरै
वाऴियि युलहिनै वळैन्द वण्णमे, शूऴ़्मा मदिलदु शुडर्क्कु मेलदाल् 475

वाऴियाय्–आयुष्मान्; एऴु नूरु योचनै–(उसका प्राचीर) सात सौ योजन; अकलम्–चौड़ा; कीऴ़् इट्ट–नीचे की; आऴम्–गहराई; नूरु योचनै–सौ योजन; उलकिनै–संसार को: आऴि माल् वरै–चक्रवाल पर्वत; वळैन्त वण्णमे–जैसे घेरा रहता है वैसा; मा मतिल् चूऴ़्म्–बड़ा प्राचीर घेरे रहता है; अतु–वह; चुटर्क्कुम् मेलतु–किरणमाली (के मार्ग) से भी ऊँचा है। ४७५

आयुष्मान! प्रकाशपुंजों (सूर्य, चन्द्र) के मार्ग से भी ऊपर उठा हुआ उस लंका का प्राचीर सात सौ योजन चौड़ा है। नीवँ की गहराई सौ योजन है। जैसे चक्रवाल गिरि पृथ्वी को घेरे रहती है, उसी प्रकार यह प्राचीर लंका को वलयित कर रहा है। ४७५

मरुङ्गुडै विनैयमुम् पॊऱियिन् माट्चियुम्
इरुङ्गडि यरणमुम् पिऱवु मॆण्णिनाल्
शुरुङ्गिडु मॆनैप्पल शॊल्लिच् चुऱ्ऱिय
करुङ्गड लहऴ़्दु नीरुङ् गाण्डिराल् 476

मरुङ्कु उटै–उस प्राचीर में रहनेवाले; विनैयमुम्–प्रबन्ध-कार्य; पॊऱियिन्–यन्त्र की; माट्चियुम्–विशेषता; इरु कटि अरणमुम्–बड़ी रक्षणसमर्थ क़िलाबन्दी; पिऱवुम्–और अन्य बातें; ऍण्णिनाल्–सोचें तो; चुरुङ्किटुम्–मन सँकरा बन जायगा; पल चॊल्लि ऍनै–बहुत कहने से क्या; चुऱ्ऱिय–आवरण का; करुङ्कटल्–काला समुद्र; अकऴ़्तु–उसकी परिखा है; नीरुम् काण्टिर्–आप ही देख सकते हैं। ४७६

उस प्राचीर की कारीगरी, यन्त्रसाधन, बहुत प्रबल परिखा आदि

दुर्ग-निर्माण —इनके सम्बन्ध में सोचने लगें तो मन छोटा रह जायगा! कि बहुना? उसके चारों ओर जो काला सागर है वही उसकी परिखा है। आप ही देख लेंगे। ४७६

वडदिशै वयङ्गॊळि वायिल् वैहुवोर्, इडैयिल रॆण्णिरु कोडि यॆन्बराल्
कडैयुह मुडिविनिर् काल नॆन्बदॆन्, विडैवरु पाहनॆप् पॊरुवु मॆन्मैयोर् 477

वयङ्कु ऑळि–मौजूद रोशनी के; वट तिचै वायिल्–उत्तर दिशा के फ़ाटक पर; वैकुवोर्–जो रहते हैं; इटै इलर्–जो कभी नहीं पिछड़ते; ऑण् इरु कोटि–(८×२) सोलह करोड़ (वीर) हैं; ऑन्पर्–कहते हैं; कटै युकम् मुटिविनिल्–युगान्त में; कालन् ऑन्पतु ऑन्–यम की बात क्या; विटैवरु पाकन् पॊरुवु–ऋषभ-वाहन की समानता करनेवाले; मेन्मैयोर्–महावीर हैं। ४७७

उसके उत्तरी द्वार पर सोलह करोड़ रक्षक वीर रहते हैं। वे कभी पीछे हटनेवाले नहीं हैं। युगांतकारी काल क्या, वे स्वयं ऋषभ-वाहन शिवजी की भी समानता करनेवाले श्रेष्ठ पराक्रमी हैं। ४७७

मेऱ्ऱिशै वायिलिन् वैहुम् वॆय्यवर्क्, केऱ्ऱमु मुळववर्क् किरण्डु कोडिमेल्
कूऱ्ऱैयुङ् गट्पॊऱि कुरुहक् काण्बरेल्, ऊऱ्ऱुरु कुरुदियो डुयिरु मुण्गुवार् 478

मेल् तिचै–पश्चिमी दिशा के; वायिलिन् वैकुम्–द्वार पर रहनेवाले; वॆय्यवर्क्कु–भयंकर वीरों को; अवर्क्कु–(उत्तरी द्वार वाले) उन वीरों से; ऑण् इरण्टु कोटि–और दो करोड़; मेल् एऱ्ऱमुम् उळ–अधिक हैं, यह गौरव प्राप्त है; कूऱ्ऱैयुम्–यम को भी; कण् पॊऱि–आँख की इन्द्रिय को; कुरुक काण्परेल्–पास से देखें तो; ऊऱु उरु–निरन्तर स्रवनेवाले; कुरुतियोटु–रक्त के साथ; उयिरुम् उण्कुवार्–प्राणों को भी पी लेंगे। ४७८

पश्चिमी दिशा के द्वार पर जो भयंकर वीर रहते हैं, उनकी संख्या इनसे दो कोटि अधिक है। यम भी उनकी दृष्टि में पास पड़ जाय, तो उसके रक्त के साथ उसके प्राणों को भी पी जाएंगे! । ४७८

तॆन्ऱिशै वायिलिन् वैहुन् दीयवर्, ऑन्ऱवर् ऑण्णिरु कोडि यॆन्बराल्
कुन्ऱुऱऴ् नॆडियवर् कॊडुमै कूऱियॆन्, वन्ऱिऱल् यमनैयु मरशु माऱ्ऱुवार् 479

तॆन् तिचै वायिलिन्–दक्षिणी दिशा के द्वार पर; वैकुम् तीयवर्–रहनेवाले खल; ऑन्ऱवर्–कहे जानेवाले; ऑण् इरु कोटि–सोलह करोड़; ऑन्पर्–कहते हैं; कुन्ऱु उऱऴ्–पर्वत की टक्कर के; नॆटियवर्–ऊँचे उनकी; कॊटुमै–क्रूरता; कूऱि ऑन्–कहने से क्या लाभ; वल् तिऱल्–बहुत बली; यमनैयुम्–यम के भी; अरचु माऱ्ऱुवार्–शासन को बदल देते। ४७९

दक्षिणी द्वार पर जो कुख्यात क्रूर लोग हैं, उनकी संख्या सोलह करोड़ कही जाती है। उनकी क्रूरता के वर्णन करने के प्रयास से क्या होगा? वे अतिवली यम के शासन को भी बदल सकते हैं। ४७९

कीट्टिशै	वायिलिऩ्	वैहुङ्	गीऴवर्
ईट्टमु	मॆण्णिरु	कोडि	यॆऩ्बराल्
कोट्टिरुन्	दिशैनिलैक्	कुम्बक्	कुऩ्ऱैयुम्
ताट्टुणै	पिडित्तहऩ्	ऱरैयि	ऩॆऱ्ऱुवार् 480

कीऴ् तिचै वायिलिऩ्–पूरब दिशा के द्वार पर; वैकुम्–रहनेवाले; कीऴवर्–नीच लोगों की; ईट्टमुम्–संख्या भी; ॲण् इरु कोटि ॲऩ्पर्–सोलह करोड़ कहते; इरु तिचै–बड़ी (पूर्वी) दिशा में; निलै–स्थायी रूप से रहनेवाले; कोटु कुम्प–(चार) दाँत और कुम्भ-सहित; कुऩ्ऱैयुम्–पर्वत (दिग्गज) को भी; ताऴ् तुणै पिटित्तु–दोनों पैरों को पकड़कर; अकऩ् तरैयिऩ्–विशाल भूमि पर; ॲऱ्ऱुवार्–पटक देते। ४८०

पूरब दिशा के द्वार पर रहनेवाले नीच लोगों की संख्या भी सोलह करोड़ कहते हैं। वे सशक्त पूरब दिशा में स्थित (चार) दाँतों और कुम्भ वाले दिग्गज को उसके दो पैरों को पकड़ उठाकर विशाल भूमि पर पटकने की शक्ति रखनेवाले हैं। ४८०

विण्णिडै	विऴित्तनर्	निऱ्कुम्	वॆय्यवर्
ॲण्णिरु	कोडियि	ऩिरट्टि	यॆऩ्बराल्
मण्णिडै	वाऩवर्	वरुव	रॆऩ्ऱवर्
कण्णिलर्	करैयिलर्	करन्दु	पोयिऩार् 481

विऴित्ततर्–जागरूक; विण्णिटै–अंतरिक्ष में ही; निऱ्कुम्–रहनेवाले; वॆय्यवर्–ये क्रूर राक्षस; ॲण् इरु कोटियिऩ्–सोलह करोड़ के; इरट्टि ॲऩ्पर्–दुगुने हैं, कहते हैं; वाऩवर्–व्योमलोकवासी; मण् इटै वरुवर्–भूमि पर आएंगे; ॲऩ्ऱवर्–सोचकर रक्षाकार्य में लीन; करै इलर्–अपार लोग; कण् इलर्–निर्दय; करन्तु पोयिऩार्–छिपे रहते हैं। ४८१

इनके अलावा जागरूक होकर अंतरिक्ष में रहनेवाले राक्षस बत्तीस करोड़ की संख्या के हैं। देव भूमि पर आएंगे। इस डर से असंख्यक निर्दय लोग छिपे-छिपे रहते हैं। ४८१

पिऱङ्गिय	नॆडुमदिऱ्	पिऩ्ऩु	मुऩ्ऩरुम्
उऱङ्गल	रुण्बद	मुलवै	यादलाऱ्
करङ्गॆऩत्	तिरिबवर्	कणक्कु	वेण्डुमेल्
अऱैन्दुळ	दैयिरु	नूऱु	कोडियाल् 482

पिऱङ्किय–मौजूद; नॆटुमतिल्–बड़े प्राचीर के; पिऩ्ऩुम्–पीछे और; मुऩ्ऩरुम्–आगे भी; उऱङ्कलर्–अनिद्र; उण्पतम्–खाद्य-पदार्थ; उलवै आतलाल्–हवा ही इसलिए; करङ्कु ॲऩ–पतंग के समान; तिरिपवर्–घूमनेवालों

का; कणक्कु वेण्ट्मेल्–हिसाब चाहते हों तो; ऐ इरु नूरु–दस सौ; कोटि–करोड़; अरैन्तु उळतु–कहा गया है। ४८२

इस बहुत बड़े प्राचीर के दोनों तरफ़ अनिद्र रहकर पहरा देनेवाले पवनाहारी हैं। वे पतंग के समान घूमते रहते हैं। उनकी संख्या भी जानना चाहेंगे ? वह दस सौ करोड़ है ! । ४८२

इप्पडि मदिलीरु मून्रु वेरिनि, ऑप्परुम् बॅरुमैयु मुरैक्क वॉण्णुमो
मॅय्प्पॅरुन् दिरुनहर् काक्कुम् वॅय्यवर्, मुप्पदु कोडियिन् मुम्मै मुर्रिनार् 483

इप्पटि–इस भाँति; मतिल् ओरु मून्रु–प्राचीरं तीन हैं; इनि वेरु–और दूसरा; ऑप्पु अरु–अनुपम; पॅरुमैयुम्–बड़प्पन; उरैक्क ऑण्णुमो–कह सकते हैं क्या; मॅय्–सचमुच; पॅरु–बड़ा; तिरु नकर्–श्रीसंपन्न नगर; काक्कुम् वॅय्यवर्–पालने वाले क्रूर लोग; मुप्पतु कोटियिन्–तीस करोड़ के; मुम्मै–तिगुने; मुर्रिनार्–हिसाब में आते हैं। ४८३

ऐसे प्राचीर तीन हैं। फिर उसकी क़िलाबन्दी की सुदृढ़ता क्या कही जाय ? सच्चे गौरव से युक्त इस सुन्दर नगर के रक्षण में लगे रहनेवाले वीर (तीन तीस यानी) नब्बे करोड़ के हैं। ४८३

शिरप्पवन् शॅय्दिडच् चॅल्व मॅय्दिनार्
अरप्पॅरुम् बहैञर्ह ळळवि लार्रलर्
उरत्तॅरुम् बहैवरि नुदवु मुण्मैयर्
इरप्पिल रॅण्णिरु नूरु कोडिये 484

अवन्–वह (रावण); चिरप्पु चॅय्तिट–सम्मान करे, फलस्वरूप; चॅल्वम् ऍय्तिनार्–बहुत वैभवभोगी; अरम्–धर्म के; पॅरु पकैञर्कळ्–बड़े विरोधी; अळविल् आर्रलर्–अपार बली; तॅरुम् पकै–नाशकारी शत्रु; उर वरिन्–चढ़ आएँ तो; उतवुम् उण्मैयर्–सहायता देनेवाले ईमानदार लोग; इरप्पिलर्–राजाज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले; ऍण् इरु–सोलह; नूरु कोटि–सौ करोड़ (के हैं)। ४८४

इनके अलावा रावण के द्वारा सम्मानित, वैभवशाली, धर्म के बड़े शत्रु और अपार बलसंयुक्त सोलह सौ करोड़ राक्षस हैं जो युद्ध करने आनेवालों के विरुद्ध रावण की सहायता करने के लिए तैयार हैं और जो कभी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेंगे। (ये मूल बल के वीर हैं।)। ४८४

विडमल विऴियॅनुम् वॅहुळिक् कण्णिनर्
कडनल विमैत्तलु मॅन्नुङ् गावलर्
वडमले पुरैवन कोयिल् वायिलिन्
इडम्वलम् वरुवव रॅण्णॅण् कोडियाल् 485

विटम् अल–विष नहीं; विऴि–आँखें ही; ऍनुम्–कहने योग्य; वॅकुळि कण्णिनर्–क्रोधभरी आँखों के; इमैत्तलुम्–पलक झपना भी; कटन् अल–कर्तव्य-

च्युत होना है; ऍन्नुम्–ऐसा विचार करनेवाले; कावलर्–पहरेदार; वट मलै पुरैवन–उत्तरी (मेरु) पर्वत-सम; कोयिल् वायिलिल्–राजमहल के द्वार पर; इटम् वलम् वरुपवर्–दाहिने और बायें चलते रहनेवाले; ऍण् ऍण् कोटि–चौंसठ करोड़। ४८५

(राजमहल के द्वारपालों की बात सुनिए।) उत्तर के मेरुपर्वत के समान ऊँचे राजद्वार पर चौंसठ करोड़ वीर दायें बायें चलते रहते हैं। उनकी क्रुद्ध आँखें विष के समान क्रूर हैं। उनका सिद्धान्त है पलक झपना भी कर्तव्यच्युत होना है! । ४८५

पेयनै तॅन्बल पिदट्रिप् पेर्त्तवन्, मायिरु ञालत्तु वैत्त माप्पडै
तेयिनुम् नाळॅलाम् तेय्क्क वेण्डुव, दायिर वॅळ्ळमॅन् ड्रिन्द दाऴियाय् 486

आऴियाय्–चक्रधारी; पेयनेन्–भूत-सा मैं; पेर्त्तु–बार-बार; पल पितट्रि–विविध बातें बकूँ; ऍन्–क्या (लाभ); अवन्–वह (रावण); मा इरु ञालत्तु–बहुत बड़ी पृथ्वी में; वैत्त–जो रखता है वह; मा पटै–बड़ी सेना; नाळ् ऍलाम् तेयितुम्–दिन ही अशेष हो जाएँ; तेय्क्क वेण्टुवतु–मिटाने के लिए जो हैं वे; आयिरम् वॅळ्ळम् ऍन्ऱु–सहस्र 'वॅळ्ळम' ऐसा; अऱिन्ततु–जाना गया है। ४८६

चक्रधर प्रभु! भूत के समान बहुत बकने से क्या लाभ होगा? रावण ने जितनी बड़ी सेना जमा कर रखी है, वह ऐसी है कि दुनिया के दिन क्षीण भी हो जाएँ पर नाश करने को जो बाक़ी रहेंगे, उनकी संख्या सहस्र 'वॅळ्ळम्' है —ऐसा जाना जाता है। ४८६

अन्ऱियु मवनहन् कोयि लाय्मणि, मुन्ऱिलिन् वैहुवार् मुरैमै कूऱिडिन्
ऑन्ऱिडि लुलहॅला मॅडुक्कु मूऱ्ऱत्तार्, कुन्ऱिनु नॅडियवर् कोडि कोडियाल् 487

अन्ऱियुम्–और भी; अवन्–उसके; अकन् कोयिल्–विशाल महल में; आय् मणि–चुने हुए रत्नों के बने; मुन्ऱिलिन्–द्वार के आँगन में; वैकुवार्–रहनेवाले वीरों की; मुरैमै कूऱिटिन्–गतिविधि कहना हो तो; ऑन्ऱिटिन्–मिलें तो; उलकॅलाम्–सारी पृथ्वी को; ऍटुक्कुम्–उठा लेने की; ऊऱ्ऱत्तार्–शक्ति रखने वाले; कुन्ऱितुम् नॅटियवर्–पर्वत से भी ऊँचे; कोटि कोटि–करोड़-करोड़ (करोड़ों) हैं। ४८७

राजद्वार के सामने आँगन में करोड़-करोड़ (करोड़ों) वीर हैं। राजमहल बहुत बड़ा है। उसका द्वार रत्नों से अलंकृत है। उसके आँगन में रहनेवाले वीरों की गतिविधि कहनी हो तो वे सब मिल जाएँ तो सारे भूलोक को एक दम उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले हैं। वे पर्वत से भी बड़े आकार के हैं। ४८७

तेर्पदि नायिरम् बदुमज् जॅम्मुहक्
कार्वरै यवऱ्ऱिनुक् किरट्टि काल्वयत्

तूर्परि यवट्रितुक् किरट्टि यॊट्टहन्
दार्वरु पुरविथि तिरट्टि शालुमे 488

तेर् पतित्तायिरम् पतुमम्–रथ दस सहस्र पद्म; चॅम् मुकम् कार् वरै–लाल मुख के काले पर्वत (गज); अवट्रितुक्कु इरट्टि–उनके दुगुने; काल् वयत्तु–सशक्त पैरों वाले; ऊर् परि–सवारी योग्य अश्व; अवट्रितुक्कु इरट्टि–उनके दुगुने; ऑट्टकम्–ऊँट; तार् वरु–दामालंकृत; पुरवियिन् इरट्टि चालुम्–अश्वों की दुगुनी संख्या में विद्यमान हैं। ४८८

रावण के पास दस सहस्र पद्म रथ हैं; लाल मुख के काले मेघ-सम गज उनके दुगुने हैं। तगड़े पैरों वाले सवारी योग्य अश्व उनके दुगुने हैं। ऊँट दाममंडित अश्वों के दुगुने हैं। ४८८

इलङ्गैयि न्नरणिदु पडैयि नॆण्णिदु
वलङ्गैयिल् वाळ्शिवन् कॊडुक्क वाङ्गिय
अलङ्गलन् दोळवन् ऱुणैव रन्दमिल्
वलङ्गळुम् वरङ्गळुम् तवत्तिन् वाय्न्दवर् 489

इलङ्कैयिन् अरण्–लंका की क़िलाबन्दी (सुरक्षा-प्रबन्ध); इतु–यह; पटैयिन् ऍण्–सेना की संख्या; इतु–यह; चिवन् कोटुक्क–शिव के देने पर; वाळ्–(चन्द्रहास) तलवार को; वलम् कैयिल् वाङ्किय–दाहिने हाथ में जिसने ग्रहण किया; अलङ्कल्–माला से अलंकृत; अम् तोळवन्–सुन्दर कन्धों के रावण के; तुणैवर्–सहायक; अन्तम् इल्–निस्सीम; वलङ्कळुम् वरङ्कळुम्–बल और वर; तवत्तिन् वाय्त्तवर्–तपस्या के फलस्वरूप प्राप्त कर चुके होते हैं। ४८९

लंका की क़िलाबन्दी (सुरक्षा-प्रबन्ध) ऐसी है। सेना की संख्या यह है। शिवजी-प्रदत्त चन्द्रहास तलवार को जिस रावण ने अपने दायें हाथ में ग्रहण किया और जिसके कन्धे विजयमाला से भूषित हैं, उसके जो सहायक हैं उन्हें तपस्या के फलस्वरूप अनन्त वर प्राप्त हैं; और अपार बल मिला है। ४८९

उहम्बल् कालमुन् दवञ्जॅय्दु पॆरुवर मुडैयान्
शुहम्बल् पोरलाल् वेऱिलन् पॊरुपडैत् तॊहैयान्
नहम्ब लॅन्ऱिवै यिल्लदोर् नरशिङ्ग मनैयान्
अहम्ब नॆन्ऱुळ नलैहडल् परुहवु ममैवान् 490

पल् उकम् कालमुम्–अनेक युग का समय; तवम् चॅय्तु–तपस्या करके; पॆरु वरम् उटैयान्–जिसने बड़े-बड़े वर प्राप्त किये हैं; पल् पोर् अलाल्–अनेक युद्धों के अलावा; चुकम् वेऱु इलन्–कोई मनोरंजन जिसका नहीं; पॊरु पटै तॊकैयान्–युद्धोपयोगी बड़ी सेनावाला; नकम् पल् ऍन्ऱु इवै इल्लतु–नखों और दाँतों के विना रहनेवाले; ओर् नरचिङ्कम् अनैयान्–अनुपम नरसिंह के समान; अलै कटल्–

लहरायमान समुद्र को; परुकवुम् अमैवान्–पीने में समर्थ; अकम्पन् ॲन्ऱु उळन्–अकंप नामक एक है। ४६०

एक अकंप है। उसने अनेक युगों तक तप करके बड़े-बड़े वर प्राप्त किये हैं। उसे विविध युद्धों के सिवा अन्य कोई मनोरंजन ही नहीं। उसके पास युद्धाभिलाषी बड़ी सेना है। वह नख-दाँत-हीन नरसिंह के समान है। वह तरंगाकीर्ण समुद्र को भी पी सकनेवाला है। ४९०

पॊरुप्पै मीदिडुम् पुरवियुम् पूट्कैयुम् तेरुम्
उरुप्प विर्पडै यॊन्बदु कोडियु मुडैयान्
शॆरुप्पॆय् वानिडैच् चित्तक्किडाय् कडाय्वन्दु शॆरुत्त
नॆरुप्पै वॆन्ऱवन् निहुम्बनॆन् ऱुळनॊरु नॆडियोन् 491

पॊरुप्पै–पर्वत को; मीतिटुम्–लाँघ जानेवाले; पुरवियुम्–अश्वों की सेना; पूट्कैयुम्–गजसेना; तेरुम्–रथ; उरुप्पु अविर्–तापदायी; पटै–पदाती; ऑन्पतु कोटियुम्–नौ करोड़; उटैयान्–का स्वामी; चॆरु पॆय्–युद्धरत; चित किटाय्–क्रुद्ध बकरे को; कटाय् वन्तु–चलाते हुए आकर; वानिटै चॆरुत्त–अंतरिक्ष में जो लड़ा; नॆरुप्पै–उस अग्निदेवता को; वॆन्ऱवन्–जीतनेवाला; निकुम्पन् ॲन्ऱु–निकुम्भ नाम का; ऑरु नॆटियोन्–एक प्रकीर्तित वीर; उळन्–है। ४६१

नौ करोड़ पर्वत लाँघनेवाले अश्वों, गजों, रथों और भयंकर पदाति वीरों का स्वामी गौरवयुक्त निकुम्भ नाम का राक्षस वीर है, जिसने युद्धोन्मत्त और क्रुद्ध बकरे पर सवार होकर लड़ने आये अग्निदेव को हराया था। ४९१

तुम्बि यीट्टमु मिरदमुम् पुरवियुन् दॊडर्न्द
अम्बॊन् वाट्पडै यैयिरु कोडिकॊण् डमैन्दान्
शॆम्बॊ नाट्टुळ शित्तरैच् चिऱैयिडै वैत्तान्
कुम्ब नॆन्ऱुळ नूऴिवॆङ् गदिरिनुङ् गॊडियान् 492

तुम्पि ईट्टमुम्–गजसमूह; इरतमुम्–और रथ; पुरवियुम्–अश्व; तॊटर्न्त–पीछा कर आएँ; अम् पॊन्–सुन्दर स्वर्णनिर्मित; वाळ् पटै–तलवारधारी वीरों की सेना; ऐयिरु कोटि कॊण्टु–दस करोड़ लेकर; अमैन्तान्–रहनेवाला; चॆम्पॊन् नाट्टु उळ–स्वर्णदेश के; चित्तरै–सिद्धों को; चिऱै इटै–कारा में; वैत्तान्–रखनेवाला; कुम्पन् ॲन्ऱु उळन्–कुम्भ नाम का एक है; ऊऴि वॆम् कतिरितुम्–युगान्त के अतिगरम सूर्य से भी; कॊटियान्–क्रूर है। ४६२

गज-रथ-तुरग सेनाओं के साथ दस करोड़ सुन्दर स्वर्ण तलवारधारी वीरों की सेना का स्वामी और स्वर्ग के सिद्धों को कारा में बन्द करनेवाला, कुम्भ नाम का एक राक्षस है, जो युगान्त के भयंकर सूर्य से भी क्रूर है। ४९२

पेयै याळियै यानैयैक् कळुदैयैप् पिणित्त
आय तेर्प्पडै यैयिरु कोडिकॊण् डमैन्दान्
तायै यायिनुन् दनिक्कॊलै शूळिनुन् दविरा
मायै यानुळन् महोदर नॆन्ऱॊरु मऱवोन् 493

पेयै–भूत को; याळियै–'याळी' को; यानैयै–गज को; कळुतैयै–गधे को; पिणित्त आय–जिनसे जोते गये रहते; तेर् पटै–ऐसे रथों की सेना; ऐयिरु कोटि कॊण्टु–दस करोड़ लेकर; अमैन्तान्–रहनेवाला; तायै आयितुम्–माँ भी हो; तनि कॊलै चूळितुम्–अकेले मारना चाहे तो; तविरा–उस विचार को न छोड़नेवाला; मायैयान्–मायावी; मकोतरन् ऎन्ऱु–महोदर नाम का; ओरु मऱवोन्–एक वीर; उळन्–है। ४९३

महोदर नाम का एक वीर है, जिसके पास भूतों, "याळि"यों और गधों से जुते दस करोड़ रथों की सेना है। वह मायावी है। माता को मारने से भी पीछे हटनेवाला नहीं। ४९३

कुन्ऱिल् वाळ्बवर् कोडिना लैन्दिनुक् किऱैवन्
इन्ऱु ळार्बिनै नाळैयि लारॆन वॆयिऱ्ऱाल्
तिन्ऱु ळानॆडुम् तेवरैप् पन्मुऱैच् चॆरुविन्
वॆन्ऱु ळानुळन् वेळ्वियिन् पहैञनॊर् वॆय्योन् 494

कुन्ऱिल् वाळ्पवर्–पर्वतवासी; नालैन्तिन् कोटिक्कु–बीस करोड़ लोगों का; इऱैवन्–अधिपति; इन्ऱुळार्–आज के रहनेवाले; पिनै–फिर; नाळै इलार् ऎन–कल नहीं रहेंगे ऐसे; ऎयिऱ्ऱाल्–अपने दाँतों से; तिन्ऱुळान्–जो खाता है; नॆटु तेवरै–मान्य देवों को; पन् मुऱै–अनेक बार; चॆरुविल्–युद्ध में; वॆन्ऱु उळान्–जीत चुका है; वेळ्वियिन् पकैञन्–(यज्ञशत्रु) यज्ञहा; ओर् वॆय्योन् उळन्–एक क्रूर है। ४९४

बीस करोड़ पर्वतवासी वीरों का नायक, आज के जीवितों को कल मृतकों में बदलते हुए अपने दाँतों से काटकर खानेवाला और अनेक बार देवों को युद्ध में जो हरा चुका वह यज्ञहा नाम का क्रूर राक्षस है। वह यज्ञ-शत्रु है। ४९४

मण्णु ळारैयुम् वानिलुळ् ळारैयुम् वहुत्ताल्
उण्णु नाळॊरु नाळिनॆन् ऱॊळिर्पडैत् तानै
ऎण्णि नालिरु कोडिय नॆरियञ्ज विळिक्कुम्
कण्णि नानुळन् शूरियन् पहैयॆन्ऱोर् कळलान् 495

मण् उळारैयुम्–भूलोकवासियों और; वानिल् उळ्ळारैयुम्–और आकाश में रहनेवालों को; वकुत्ताल्–श्रेणीबद्ध करें; उण्णुम् नाळ्–उनको खाने का दिन; ओरु नाळिन्–एक ही दिन में; ऎन्ऱु–ऐसा कहने योग्य रीति से; ओळिर्–यश के

साथ रहनेवाली; पटै तातै–हथियार-सहित सेना को; अॅण्णिताल्–गिना जाय तो; इरु कोटियन्–दो करोड़ है, उसका स्वामी; अॅरि अञ्च–आग को भी डराते हुए; विऴिक्कुम्–घूरनेवाली; कण्णितान्–आँखों वाला; चूरियन् पकै अॅन्ऱु–भानुकोप नाम का; कऴलान्–पायलधारी; उळन्–है। ४६५

भानुकोप नामक एक राक्षस है, जिसके पास सभी भूलोकवासियों और स्वर्गलोकवासियों को एक ही दिन में खा सकनेवाले भयंकर हथियारधारी और संख्या के दो करोड़ वीरों का पति है। वह वीरपायल-धारी तरेरता तो अग्निदेव भी दहल उठता। (तमिऴ में इसका नाम 'दिनकरशत्रु' कहा गया है। वाल्मीकी में भानुकोप है)। ४९५

तेवरुन् दक्क मुत्तिवरुन् दिशैमुहन् मुदला
मूवरुम् बक्क नोक्किये मॉऴिदर मुनिवान्
तावरुम् बक्क मॅण्णिरु कोडियिन् तलैवन्
मापॅरुम् बक्क नॅन्ऱुळन् वाळरि यनैयान् 496

तेवरुम्–देव और; तक्क मुत्तिवरुम्–सुयोग्य मुनिगण; तिचैमुकन् मुतलाम्–चतुर्मुख आदि; मूवरुम्–त्रिदेव भी; पक्कम् नोक्किये–बग़लें झाँकते हुए; मॉऴि तर–बोलें, ऐसा; मुनिवान्–क्रोध करनेवाला; तावरुम्–कमी-हीन; पक्कम् अॅण्णिरु कोटियिल् तलैवन्–सेना सोलह करोड़ का स्वामी; वाळ् अरि–क्रूर सिंह; अनैयान्–के समान; मा पॅरुम् पक्कन्–महापार्श्व; अॅन्ऱु उळन्–नाम का एक है। ४६६

महापार्श्व नाम का एक वीर है, जिसके क्रोध से डरकर देव, सुयोग्य मुनि, चतुर्मुख आदि त्रिदेव बग़लें झाँकते हुए बात करते। त्रुटिहीन सोलह करोड़ वीरों की सेना का नायक और भयंकर सिंह-सदृश है। ४९६

उच्चि रत्तॅरि कदिरॅन् वुरुत्तॅरि मुहत्तन्
नच्चि रप्पडै नालिरु कोडिक्कु नादन्
मुच्चि रत्तयिल् तलैवऱ्कुम् वॅलऱ्करु मॉय्म्बन्
वच्चि रत्तॅयिऱ् ऱुवनुळन् कूऱ्ऱुवन् माऱ्ऱान् 497

उच्चिरत्तु–सिर के ऊपर के (आकाश-मध्य); अॅरि कतिर्–जलाती किरणों का स्वामी (सूर्य); अॅन–जैसा; उरुत्तु अॅरि–गुस्सा करके प्रकाशमान रहनेवाले; मुकत्तन्–मुखवाला; न चिरम् पटै–अच्छी मूर्धन्य सेना; नाल् इरु कोटिक्कु–आठ करोड़ का; नातन्–नाथ; मु चिरत्तु अयिल्–त्रिशूलधारी; तलैवऱ्कुम्–शिव द्वारा भी; वॅलऱ्कु अरु–दुर्जेय; मॉय्म्पन्–बलवान; कूऱ्ऱुवन् माऱ्ऱान्–यमशत्रु; वच्चिरत्तु अॅयिऱ्ऱवन्–वज्रदंष्ट्र; उळन्–है। ४६७

आकाशमध्यस्थित सूर्य के समान क्रोध से तमतमानेवाले मुख का,

बहुत श्रेष्ठ आठ करोड़ सेना का नाथ, त्रिशूल शिव से भी दुर्जेय शक्तिमान् और यम का भी विरोधी वज्रदंष्ट्र नाम का एक राक्षस है। ४९७

अचञ्ज लप्पडै यॆयिरु कोडिय ऩमरिऩ्
वशञ्जॆ यादवऩ् ताऩऩ्ऱिप् पिऱ्रिला वलियाऩ्
इशैन्द वॆञ्जमत् तियक्कर वेरोडु मुऩ्ऩाट्
पिशैन्दु पोऩ्दवऩ् पिशाशऩॆऩ् ऱुळऩोरु पित्तऩ् 498

अ चञ्चल–अचंचल; पटै–सेना; ऐयिरु कोटियऩ्–दस करोड़ वाला; अमरिऩ्–युद्ध में; वचम् चॆयातवऩ्–किसी के वश में नहीं आनेवाला; ताऩ् अऩ्ऱि–आपको छोड़; पिऱर् इला–कोई नहीं है, ऐसा; वलियाऩ्–बलवान; इचॆऩ्त–छिड़े; वॆम् चमत्तु–घमासान युद्ध में; मुऩ्ऩाळ्–पहले; इयक्कर–यक्षों को; वेरोटुम् पिचॆऩ्तु–मूल के साथ मसल (कर); पोऩतवऩ्–जो गया; पिचाचऩ् ऎऩ्ऱु–पिशाच नाम का; ओरु पित्तऩ् उळऩ्–एक पागल है। ४९८

युद्ध में अटल रहनेवाले दस करोड़ (वीरों) की सेना का सरदार, युद्ध में किसी के भी वश में न आनेवाला, अपने आप को, छोड़ कोई और उसके टक्कर का नहीं, ऐसा बलवान; घोर युद्ध में जिसने यक्षों को मूल से कुचल डाला था —ऐसा एक है पिशाच नाम का जो रावण के सहायकों में है। ४९८

शिल्लि माप्पॆरुम् देरोडुङ् गरिपरि शिऱ्न्द
विल्लिऩ् माप्पडै येऴिरु कोडिक्कु वेन्दऩ्
कल्लि माप्पडि कलक्कुवाऩ् कऩलॆऩक् काऩ्दिच्
चॊल्लु माऱ्ऱत्तऩ् तुऩ्मुह ऩॆऩ्ऱ्ऱऩ् दुऱ्ऩ्दोऩ् 499

चिल्लि–पहियोंदार; मा पॆरु–बहुत बड़े; तेरोटुम्–रथों के साथ; करि परि–गज व अश्व; चिऱ्न्त–श्रेष्ठ; विल्लिऩ् मा पटै–धनुर्धरों की विशाल सेना; एऴिरु कोटिक्कु–चौदह करोड़ का; वेन्तऩ्–स्वामी; मा पटि–बड़ी भूमि को; कल्लि–खोद लेकर; कलक्कुवाऩ्–अस्त-व्यस्त कर सकता है; कऩल् ऎऩ–अनल के समान; काऩ्ति चॊल्लुम्–गुस्सा करके कहे; माऱ्ऱत्ताऩ्–वचनों वाला; तुऩ्मुकऩ् ऎऩ्ऱु–दुर्मुख नाम का; अऱम् तुऱन्तोऩ्–धर्मविमुक्त। ४९९

पहियेदार रथों, गजों और अश्वों और तलवार-वीरों की सात करोड़ की सेना का नायक, भूमि को खोदकर अस्त-व्यस्त कर सकनेवाला व अनल के समान क्रुद्धवचन एक है, जिसका नाम दुर्मुख है। ४९९

इलङ्गै नाट्टऩ्ऩ वॆऱिहडऱ् ऱोविडै युऱ्युम्
अलङ्गल् वेऱ्पडै यॆयिरु कोडिक्कु मरशऩ्
वलङ्गॊळ् वाट्टॊऴिल् विऱ्जॆयर् पॆरुम्बुहऴ् मऱ्त्ताऩ्
विलङ्गु नाट्टत्त ऩॆऩ्ऱुळऩ् वॆयिलुह विऴिप्पाऩ् 500

अत्त–वैसे; अँऱि कटल्–तरंगयुक्त समुद्रमध्य; तीवु–द्वीप; इलङ्कै नाट्टिटै–लंका के देश में; उऱैयुम्–रहनेवाले; अलङ्कल् वेल् पटै–मालाधारी भाले रखनेवाले वीरों की सेना; ऐयिरु–दस; कोटिक्कुम्–करोड़ का; अरचन्–राजा; वलम् कॉळ्–बलसंयुक्त; वाळ्तॊऴिल् विज्चैयर्–तलवार-युद्ध में समर्थ विद्याधरों के; पॅरु पुकऴ्–विपुल यश को; मऱैत्तान्–आच्छादित कर दिया; वॅयिल् उक–धूप-सा निकालते हुए; विऴिप्पान्–तरेरनेवाला; विलक्कु नाट्टत्तन्–विरूपाक्ष; अँन्ऱु उळन्–नाम का है। ५००

ऐसे उठती तरंगों के सागर-मध्य-स्थित लंका में विरूपाक्ष नाम का एक राक्षसपति है। उसके अधीन जयमाला से अलंकृत भाले वाले दस करोड़ की सेना है। वह विजयी करवाल योद्धा विद्याधरों के यश को मिटा चुका है। वह तरेरे तो धूप-सी छूटे। ५००

नाम नाट्टिय शवमॅला नाळॅन्ऱु मॊरुवर्
ईम नाट्टिडै यिडामल्तन् नॅयिऱ्ऱिडै यिडुवान्
ताम नाट्टिय कॊडिप्पडैप् पदुमत्तिन् तलैवन्
तूम नाट्टत्त नॅन्ऱुळन् तेवरैत् तुरन्दान् 501

नाळ् अॅन्ऱुम्–सभी दिनों में; चवम् नामम्–शव का नाम; नाट्टिय–जिन्हें दिया गया है; अॅलाम्–उन सबको; ऑरुवर्–कोई भी; ईमम् नाट्टिटै इटामल्–श्मशान में न डालकर; तन् अॅयिऱु इटै इटुवान्–अपने दाँतों के बीच में डालनेवाला (खानेवाला); तामम् नाट्टिय–मालाओं से अलंकृत; कॊटि–ध्वजा-सहित; पटै–(वीरों की) सेना; पतुमत्तिन् तलैवन्–पद्म का सरदार; तेवरै–देवों को; तुरन्तान्–जिसने भगाया; तूमम् नाट्टत्तन्–धूम्राक्ष; अॅन्ऱु उळन्–नाम का एक है। ५०१

धूम्राक्ष नामक एक है, जो शवों को भी श्मशान में जाने नहीं देता वरन् अपने दाँतों के हवाले कर देता है। उसके अधीन 'पद्म' की संख्या की सेना है, जो मालालंकृत पताका वाली है। ५०१

पोरिन् मत्तनुम् पॊरुवय मत्तनुम् बुलवर्
नीरिन् मत्तन्न पॅरुमैयर् नॅडुङ्गडर् पडैयार्
आरु मत्तनै वलियुडै यारिलै यमरिऱ्
पेरु मत्तनै यॅत्तनै युलहमुम् पॅरियोय् 502

पॅरियोय्–सम्मानार्ह; पोरिल् मत्तनुम्–रणमत्त; पॊरु वयम् मत्तनुम्–(नाम का) युद्धोन्मत्त वीर; पुलवर्–देवों की (स्थापित); नीरिन् मत्तन्न–जल-मथानी के समान; पॅरुमैयर्–गौरववान; नॅटु कटल्–विशाल सागर-सम; पटैयार्–सेनाओं के अधिपति; अमरिल्–युद्ध में; अत्तनै वलियुटैयार्–उतने बलवान अन्य; आरुम इल्लै–कोई नहीं हैं; अॅत्तनै (उण्टो)–जितने ही लोक हैं; अत्तनै उलकमुम्–वे सभी लोक; पेरुम्–(उनसे) अस्त-व्यस्त होंगे। ५०२

मानार्ह ! 'रणमत्त', 'युद्धोन्मत्त' आदि हैं। वे उस मन्दर पर्वत के समान भीमकाय हैं, जिसे उस दिन देवों ने क्षीरसागर में मथानी के रूप में स्थापित किया था। उनके अधीन सागर-विपुल सेनाएँ हैं। उनकी टक्कर के युद्ध समर्थ और कोई नहीं। जितने ही लोक हैं, उन सबका वे नाश कर देंगे। ५०२

इन्न तन्मैय रॅत्तनै यायिर रॅन्गेन्
अन्न वन्बॅरुन् दुणैवरा यमर्त्तोऴिर् कमैन्दार्
शॊन्न शॊन्नवा पडैत्तुणै यिरट्टियिन् तॊहैयान्
पिन्नै यॆण्णुवर् पिरहत्त नॆन्ऱॊरु पित्तन् 503

अन्नवन्–उस (रावण) के; पॆरु तुणैवराय्–बड़े सहायकों के रूप में; अमर् तॊऴिर्कु अमैन्तार्–युद्धकार्य के लिए जो बने हैं; इन्न तन्मैयर्–ऐसे स्वभाव, व्यवहार आदि के; ऍत्तनै आयिरर्–कितने सहस्र हैं; ऍन्केन्–कहूँ; पिन्नै–फिर; चॊन्न चॊन्नवा–उपरोक्त; पटैत्तुणै–सेना की संख्या की; इरट्टियिन् तॊकैयान्–दुगुनी संख्या के अधिपति; पिरकत्तन् ऍन्ऱु–प्रहस्त नाम के; ऑरु पित्तन्–एक पागल को; ऍण्णुवर्–लोग स्मरण करते हैं। ५०३

रावण के ऐसे बड़े सहायक सेनानायक कितने ही सहस्र हैं ! मैं क्या कहूँ ? इनके बाद प्रहस्त नामक एक युद्ध का पागल है, जिसके अधीन अब तक निर्दिष्ट सेनाओं की दुगुनी सेना है। ५०३

शेनै कावल निन्दिरन् शिन्दुरच् चॅन्नि
यानै काल्कुलैन् दाऴियो रेऴुम्विट् टहल
एनै वानवर् इरुक्कैविट् टिरियलुऱ् ऱेहच्
चोनै मारियिऱ् चुडुहणै पलमुऱै तुरन्दान् 504

चेनै कावलन्–सेनापति के; चिन्तुरम् चॅन्नि–सिंदूरार्पित मस्तक वाले; इन्तिरन् यानै–इन्द्र का गज; काल् कुलैन्तु–पैर डगमगाकर; आऴि ओर् एऴुम्–सप्तसमुद्र-युक्त इस भूमि को; विट्टु अकल–छोड़कर भागा; एनै वानवर्–अन्य देव; इरुक्कै विट्टु–वासस्थान छोड़कर; इरियल् उऱ्ऱु एक–अस्त-व्यस्त होकर भागे; चोनै मारियिल्–लगातार बारिश के समान; चुटु कणै–संतापक शर; पल मुऱै कई बार; तुरन्तान्–छोड़े। ५०४

इस सेनापति ने (एक बार) निरंतर वर्षा के समान संतापक शर अनेक बार चलाए, जिससे सिंदूरचर्चित-मस्तक इन्द्र का गज पैरों के डगमगाते इस सप्तसमुद्री भूमि को छोड़कर भागा और अन्य देव भी अपना स्थान छोड़कर अस्त-व्यस्त इधर-उधर भाग गये। ५०४

तम्बि मुऱ्पहर् चन्दिरर् नाल्वरिऱ् ऱियङ्गुम्
कुम्ब माक्किरिक् कोडिरु कैहळाऱ् कळऱ्ऱिच्

चॆम्बॊत् मालवरै मदम्बट्ट दामॆन्नत् तिरिवान्
कुम्ब कन्तॆन्न् रुळन्पण्डु तेवरैक् कुमैत्तान् 505

कुम्प मा किरि–कुम्भ-सहित बड़े पर्वत (ऐरावत) के; मुत् पकल्–शुक्ल पक्ष के; चन्तिरर् नालवरिल्–चार चाँद के समान; तयङ्कुम्–शोभायमान; कोट्टु–दाँतों को; इरु कैकळाल्–दो हाथों से; कळर्रि–उतारकर; चॆम् पॊन् माल् वरै–लाल स्वर्णपर्वत; मतम् पट्टताम् ॲन्न–मदमत्त हो गया हो ऐसा; तिरिवान्–घूमनेवाला; पण्टु–पहले; तेवरै–देवों को; कुमैत्तान्–(जिसने) ढेर बना दिया; कुम्पकन्नन्–कुम्भकर्ण; ॲन्रु–नाम का; तम्पि उळन्–छोटा भाई है। ५०५

रावण का एक भाई है, जिसका नाम कुम्भकर्ण है। और जो शुक्लपक्ष के चन्द्र के समान चार दाँतों वाले कुम्भी के दाँतों को अपने हाथों से उखाड़कर मदमत्त लाल पर्वत-जैसे घूमते हुए देवों को ढेर बना चुका। ५०५

कोळि रण्डैयुङ् गॊडुञ्जिरै वैत्तवक् कुमरन्
मूळुम् वॆञ्जिनत् तिन्दिर शित्तॆन्न मॊळिवर्
आळु मिन्दिरर् कन्नवन् पिणित्तदर् पिन्नैत्
ताळु मार्बिनुन् दोळिनु मुळविन्न् दळुम्बु 506

कोळ् इरण्टैयुम्–(सूर्य और चन्द्र) दोनों ग्रहों को; कॊटु चिरै वैत्त–कठोर कारा में जिसने बन्द रखा; अ कुमरन्–उस कुँअर को; मूळुम् वॆम् चिन्नत्तु–वर्धनशील भयंकर कोपी; इन्तिरचित्तु ॲन–इन्द्रजित् ऐसा; मॊळिवर्–कहते हैं; अन्नवन्–उसके; पिणित्तत्तन् पिन्नै–बाँध लेने के बाद; आळुम् इन्तिरर्कु–लोकपालक इन्द्र के; ताळुम्–पैरों; मार्पितुम्–वक्ष और; तोळितुम्–कन्धों में; तळुम्पु–दाग; इतम्–अब भी; उळ–हैं। ५०६

रावण का एक पुत्र है जिसने सूर्य और चन्द्र दोनों ग्रहों को बन्दी बनाया था। वह बड़ा क्रोधी है! उसको लोग इन्द्रजित् कहते हैं। उसने इन्द्र को बाँध लिया था। तब जो घाव लगे थे वे अब भी इन्द्र के कन्धों, पैरों और वक्ष में देखे जा सकते हैं। ५०६

तन्नै युन्दॆरुन् दरुममॆन् रिर्रॆमतन् दाळान्
मुन्न वन्दरप् पॆर्रदोर् मुळुवलिच् चिलैयान्
अन्न वन्रनक् किळैयवन् अप्पॆय रॊळित्तान्
पिन्नॊ रिन्दिर न्निलामैयिर् पेरदि कायन् 507

तरुमम् तन्नैयुम्–धर्म उसे भी; तॆरुम्–मिटा देगा; ॲन्रु–ऐसा; इर्रै–थोड़ा भी; मतम् ताळान्–मन में नहीं हिचकता; मुन्नवन्–पूर्वज (ब्रह्मा) द्वारा; तर–दिये जाने पर; पॆर्रतु ओर्–जो प्राप्त हुआ उस एक; मुळुवलि चिलैयान्–बलपूर्ण धनु वाला है; अन्नवन् तनक्कु–उसका; इळैयवन्–छोटा भाई; पिन्

ओर् इन्तिरन्–फिर दूसरा इन्द्र; इलामैयिन्–नहीं रहा इसलिए; अप्पेयर् ओळित्तान्–उस (इन्द्रजित्) नाम को नहीं अपनाया; पेर् अतिकायन्–उसका नाम अतिकाय है। ५०७

उस इन्द्रजित् का एक छोटा भाई अतिकाय नाम का है। "धर्मदेवता अतिक्रमण करने पर मुझे भी मार सकता है", इस विचार से वह कभी नहीं घबड़ाता! ब्रह्मा द्वारा वर के रूप में दत्त एक बलपूर्ण धनु है। दूसरा इन्द्र नहीं है, अतः वह इन्द्रजित् नहीं बना! (वह इन्द्र को भी हरा सकता है।)। ५०७

तेव रान्दह नरान्दहन् ट्रिरिशिरा वॅन्नुम्
मूव रान्दहै मुदल्वरान् दलैवरु मुनैयिल्
पोव रान्दहै यळिवरा मॅनत्तनिप् पॉरुवार्
आव रान्दहै यिरावणऱ् करुम्बॅऱऱ् पुदल्वर् 508

तेवर् अन्तकन्–देवान्तक; नर अन्तकन्–नरान्तक; तिरिचिरा–त्रिशिर; ऍन्नुम् मूवर्–नाम के तीन; आम्तकै–सुयोग्य; मुतल्वराम् तलैवरुम्–प्रमुख देव त्रिमूर्ति; मुनैयिल्–युद्धस्थल पर; पोवराम्–जाएँगे तो; तकै अळिवराम्–मान खो देंगे; ऍन–ऐसा; तनि पॉरुवार् आवर्–अलग-अलग लड़नेवाले हैं; तकै–प्रतापी; इरावणऱ्कु–रावण के; अरुम् पॅऱल्–दुर्लभ; पुतल्वर् आम्–पुत्र हैं। ५०८

देवांतक, नरांतक और त्रिशिरा नाम के तीन राक्षस हैं। वे एका-एक ऐसे बलवान हैं कि तीनों सुयोग्य भुवनपति त्रिदेव भी युद्ध में उनके सम्मुख आएँ तो उनको अपना मान खोना पड़े। वे सशक्त रावण के दुर्लभ पुत्र हैं। ५०८

इन्नैय तन्मैयर् वलियिः(ह्) दिरावण नॅन्नुम्
अन्नैय वन्ऱिऱम् यान्ऱि यळवॅला मऱैवॅन्
तन्नैय नान्मुहन् ऱहैमहन् शिऱुवऱ्कुत् तवत्ताल्
मुन्नेवर् कोन्वर मुक्कणान् वरत्तॊडु मुयर्न्दान् 509

इन्नैय तन्मैयर्–ऐसे प्रकार के; वलि इ.·तु–(रावण के मित्रों का) बल-विक्रम यह है; इरावणन् ऍन्नुम्–रावण-संज्ञित; अन्नैयवन् तिऱम्–उसका बल; यान् अऱि अळवु ऍलाम्–मेरे ज्ञान की मात्रा जितनी है उतनी सारी; अऱैवॅन्–कहूँगा; नान् मुकन्–चतुर्मुख के; तकै मकन्–सुयोग्य पुत्र (पुलस्त्य) के; चिऱुवऱ्कु–पुत्र (विश्रवस) का; तन्नैयन्–पुत्र है; तवत्ताल्–तपस्या के फलस्वरूप; मुन्नेवर् कोन् वरम्–पुरातन ब्रह्मा के वरों; मुक्कणान् वरत्तॊटुम्–और त्रिनेत्र (शिवजी) के वरों के साथ; उयर्न्तान्–बड़ा हो गया। ५०९

अब तक रावण के सहायक, मन्त्री, सेनापति आदि की बात कर रहा

था। अब विख्यात रावण का बल, जितना जानता हूँ उतना, कहूँगा। चतुर्मुख का पुत्र पुलस्त्य है। उसका पुत्र विश्रवस है। उसका पुत्र है यह रावण। रावण ने तपस्या करके पुरातन पुरुष ब्रह्मा के अलावा त्रिनेत्र शिवजी से भी अनेक वर प्राप्त करके अपनी स्थिति को ऊँचा बना लिया है। ५०९

ऍळ्ळि लैम्बॅरुम् बूदमुम् यावैयु मुडय
पुळ्ळि मानुरि याडैय नुमैयॊडुम् बॊरुनदुम्
वॅळ्ळि यम्बॅरुन् दडङ्गिरि वेरॊडुम् वाङ्गि
अळ्ळि विण्डोड वॅडुत्तन नुलहॅला मनुङ्ग 510

ऍळ्ळिल्–अनुपेक्षणीय; ऐ पॅरु पूतमुम्–पाँचों भूतों और; यावैयुम् उटैय–और अन्य सभी के स्वामी; पुळ्ळि मान् उरि–चित्तियों के साथ रहनेवाले हिरण के चर्म के; आटैयन्–अम्बरधारी; उमैयॊटुम् पॊरुनतुम्–देवी उमा के साथ जिस पर रहते हैं; वॅळ्ळि अ पॅरु तट किरि–उस विशाल रजतगिरि को; वेरॊटुम् वाङ्कि–जड़ के साथ उखाड़कर; अळ्ळि–हाथ में उठा लेकर; उलकु ऍलाम् अनुङ्क–सारे लोकों को कँपाते हुए; विण् तॊट–आकाश छूते हुए; ऍटुत्तनन्–ऊपर कर लिया। ५१०

उसने अनिंद्य पंचभूतादि सभी सृष्टि के स्वामी, चित्रमृगांबरधारी, शिवजी के विशाल कैलास पर्वत को शिवजी और उमादेवी-सहित उखाड़कर आकाश तक उठा लिया था। तब सारे लोक काँप गये। ५१०

आऱ्ऱ वॅण्डिशै युलहॅलाञ् जुमक्किन्ऱ यानै
ऊन्ऱु कोडिऱत् तिरळ्पुयत् तऴुत्तिय वॊण्मै
तोन्ऱु मॅन्नवे तुणुक्कमुऱ् ऱिरिवरत् तॊहुदि
मून्ऱु कोडियिन् मेलॊरु मुप्पत्तु मूवर् 511

आऱ्ऱ–विशाल; ऍण् तिचै–आठों दिशाओं में रहकर; उलकु ऍलाम्–सारी पृथ्वी को; चुमक्किन्ऱ यानै–ढोनेवाले (दिग्-) गजों के; ऊन्ऱु कोटु–गड़े हुए दाँतों को; इऱ–तोड़ते हुए; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धों में; अऴुत्तिय–धँसने देकर; ऒण्मै–प्रशस्त बल; तोन्ऱुम्–प्रकट होगा; ऍन्नवे–यह जब मालूम हुआ उसी क्षण; अ तॊकुति–उस समूहगत; मून्ऱु कोटियिन् मेल्–तीन करोड़ के; ऒरु मुप्पत्तु मूवर्–तीस देव; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–डरकर; इरिवर्–भाग गये। ५११

सारे देव उससे डरते हैं। ज्योंही उन्हें यह ज्ञात हुआ कि दीर्घ दिशाओं के ढोनेवाले दिग्गजों के दाँत टूटे और उसके विशाल कन्धों में धँस गये तो उसके द्वारा अनुमानित उसके बल का विचार कर वे तेंतीस करोड़ देव डर से इधर-उधर भाग गये। ५११

कुलङ्ग ळोडुन्दङ् गुलमणि मुडियॊडुङ् गुऱैय
अलङ्कल् वाळ्कॊडु कालके यरॅक्कॊन्ऱ दऱ्पिन्

इलङ्गै वेन्दर्नैन् इरैत्तलु मिडियुण्ड वरविर्
कलङ्गु मालिनन् दानवर् देवियर् करुप्पम् 512

कुलङ्कळोटुम्–अपने कुलों के साथ; तम् कुल मणि मुटियॊटुम्–और अपने उत्कृष्ट रत्नमय मुकुटों के साथ; कुरैय–नाश जब हुए; अलङ्कल् वाळ् कॊट्–माला से अलंकृत तलवार से; कालकेयरै कॊन्ऱतन् पिन्–'कालकेयों' को मारने के बाद; इलङ्कै वेन्तन् ॲन्ऱु–लंका का राजा; उरैत्तलुम्–कहा गया तब; इटि उण्ट अरविल्–वज्राहत नाग के समान; इतम्–आज भी; तानवर् तेवियर् करुप्पम्–दानवों की स्त्रियों के गर्भ; कलङ्कुम्–गिर जाते हैं। ५१२

रावण अपनी माला से अलंकृत तलवार लेकर लड़ा। उसने 'कालकेयों' को उनके कुलों और उनके रत्नजटित किरीटों से अलंकृत सिरों को काट मिटाया। तब वह लंकापति कहलाया। उसी क्षण वज्रनाद-श्रवणभीत सर्पों के समान दानवस्त्रियों के गर्भ गिर गये। ५१२

कुरण्ड माडुनी रळहैयि नॊळित्तुरै कुबेरन्
तिरण्ड माडुन्दन् ट्रिरुवॊडु निदियमु मिळन्दु
पुरण्डु मान्ट्रिरळ् पुलिहण्ड दामॆनप् पोनान्
इरण्डु मानमुम् इलङ्गैमा नहरमु मिळन्दु 513

इरण्टु मानमुम्–दो 'मान'-(स्वाभिमान और पुष्पकविमान); इलङ्कै मा नकरमुम्–और लंका का महानगर; इऴन्तु–खोकर; कुरण्टम् आटुम्–करंड पक्षी जहाँ गोते लगाते हैं; नीर्–उस जल-भरे; अळकैयिन्–अलकापुर में; ऑळित्तु उरै–छिपकर जो रहता है वह; कुपेरन्–कुबेर; मान् तिरळ्–मृगवृन्द ने; पुलि कण्टताम्–बाघ को देख लिया; ॲन्न–जैसे; पुरण्टु–हड़बड़ाकर; तिरण्ट माटुम्–विपुल सम्पत्ति; तन् तिरुवॊटु–अपनी श्रीसहित; नितियमुम्–नवनिधियों को भी; इऴन्तु–खोकर; पोनान्–गया। ५१३

इस रावण से डरकर कुबेर दोनों "मानों" को यानी अपने मान तथा 'पुष्पक विमान' (पुष्पक यान) को त्यागकर लंका से भी हाथ धोकर भागा और अलकापुरी में जाकर छिप गया, जहाँ के जलाशयों में करंड पक्षी गोते लगाते रहते हैं (वास करते हैं)। वह ऐसा भागा मानो व्याघ्र को देखकर मृगवृन्द भागते हैं। उसकी विपुल सम्पत्ति, श्री और नवनिधियाँ —सभी अलग रह गयीं। ५१३

पुण्णुज् जॆय्ददु मुदुहॆनप् पुऱङ्गॊडुत् तोडि
उण्णुज् जॆय्हैयत् तशमुहक् कूऱ्ऱुन्दन् तुयिर्मेल्
नण्णुज् जॆय्हैय दॆन्नक्कॊडु नाडॊऱुन् दन्नाळ्
ॲण्णुन् दन्मैय नन्दहन् ऱन्बद मिळन्दान् 514

अन्तकन्–यम को; उण्णुम् चॆय्कै–भी मारने में समर्थ; अ तचमुक कूऱ्ऱम्–

वह दशमुख यम भी; मुतुकु पुण्णुम् चॅय्ततु–पीठ पर घाव लगा; ॲत्त–ऐसा; पुरम् कॉट्टुत्तु–पीठ दिखाते हुए; ओटि–भागकर; तन् पतम् इऴन्तान्–अपना पद खोकर; तत् उयिर् मेल्–अपनी जान का भी ग्राहक बनकर; नण्णुम् चॅय्कै अतु–आने की सम्भावना है; ॲत्त कॉट्टु–ऐसा समझकर; नाळ् तोरुम्–प्रतिदिन; तत् नाळ्–अपने दिन; ऍण्णुम् तत्मैयत्–गिनने की स्थिति में है। ५१४

यम को भी खा (मार) सकनेवाला, यम का यम, है वह रावण। उसको देखकर यम ऐसा भागा मानो रावण ने उसकी पीठ पर घाव लगा दिया हो। पीठ दिखाते हुए वह भागा और उसका पद भी उससे छूट गया। वह इस डर से कि रावण रूपी उसका यम उसके प्राणों को पीने आनेवाला है, अपने दिन गिनता रहता है! । ५१४

इरुणन् गाशऱ वॅऴ्कदि रवनिऱ्क वॅन्ऱुम्
अरुणन् कण्गळुङ् गण्डिला विलङ्गैपण् डमरिऱ्
परुणन् ऱन्पॆरुम् पाशमुम् वरिप्पुण्डु बयत्ताल्
वरुण नुय्न्ददन् महरनीर् वॅळ्ळत्तु मऱैन्दु 515

इरुळ्–अँधेरे को; नत्कु आचु अऱ–खूब मिटाते हुए; ॲऴु कतिरवत्–उगनेवाला किरणमाली; निऱ्क-(एक ओर) रहे; ॲत्ऱुम्–कभी भी; अरुणत् कण्कळुम्–अरुण की आँखों से; कणटिला इलङ्कै–न देखी गयी लंका; पण्टु–पूर्वकाल में; अमरिल् परुणत्–युद्ध में खूब दक्ष; वरुणत्–वरुण; तत् पॆरु पाचमुम्–उसका लम्बा पाश; परिप्पुण्टु–छिन गया; पयत्ताल्–डर से; मकरनीर् वॅळ्ळत्तु–मकरालय-जल में; मऱैन्तु उय्न्ततत्–छिपकर बचा। ५१५

सर्वांधकारनाशक उदयसूर्य की बात छोड़ दीजिए। अरुण की आँखों ने भी लंका को नहीं देखा है। पूर्वकाल में युद्धविद्याविशारद (पश्चिम दिशा के) वरुण को भी इस रावण के साथ युद्ध में अपना पाश (आयुध) खोना पड़ा। और वह भी भय से भागा और उसने समुद्र के जल के अन्दर घुसकर अपनी जान बचा ली। ५१५

ॲन्ऱु लप्पुऱच् चॉल्लुहे निरावणन् मेरुक्
कुन्ऱु लप्पिनु मुलप्पिलात् तोळिनान् कॉऱ्ऱम्
इन्ऱु लप्पिनु नाळैये युलप्पिनुञ् जिलनाट्
चॅन्ऱु लप्पिनुम् निन्नक्कन्ऱिप् पिऱर्क्कॅन्ऱुन् दीरान् 516

मेरु कुन्ऱु–मेरुपर्वत चाहे; उलप्पिनुम्–मिट जाए; उलप्पु इला–जो नहीं मिट सकते; तोळितान्–ऐसे कन्धों के; इरावणत्–रावण के; कॉऱ्ऱम्–पराक्रम को; उलप्पु उऱ–पूर्ण हो ऐसा; ॲन्ऱु–किस दिन; चॉल्लुवेन्–बता सकूँगा; इन्ऱु उलप्पिनुम्–(वह) आज ही मर जाए तो भी; नाळैये उलप्पिनुम्–कल मर जाए तो भी; चिल नाळ् चॅन्ऱु–कुछ दिन बीतने पर; उलप्पिनुम्–मर जाए तो भी; निन्नक्कु अन्ऱि–आपको छोड़कर; ॲन्ऱुम्–कभी भी; पिऱर्क्कु–किसी के मारे; तीरान्–नहीं मरेगा। ५१६

रावण का भुजवल ऐसा है कि मेरु पर्वत भी मिट सकता है, पर वह क्षय न हो। उस रावण के पराक्रम को पूर्णरूप से मैं कब तक बता पाऊँ? वह रावण चाहे आज मरे या कल; या कुछ दिनों के पश्चात् —मरेगा तो आपके ही हाथों मरेगा! अन्यों द्वारा वह मरनेवाला नहीं। ५१६

ईडु पट्टव रॅण्णिलर् तोरणत् तॅळ्वाल्
पाडु पट्टवर् पडुकडन् मणलिनुम् बलराल्
शूडु पट्टदु तॊन्नह रडुपुलि तुरन्द
आडु पट्टदु पट्टन रनुमना लरक्कर् 517

अनुमत्ताल्–हनुमान द्वारा; तोरणत्तु अॅळ्वाल्–तोरण के लौहस्तम्भ से; ईटु पट्टवर्–बलमुक्त जो हुए; अॅण्णिलर्–वे असंख्यक हैं; पाटु पट्टवर्–पिटकर जो मरे; पटु कटल्–शब्दायमान सागर के; मणलिनुम्–बालुओं से; पलर्–बहुत अनेक हैं; अटु पुलि–घातक बाघ से; तुरन्त–भगायी गयी; आटु पट्टतु–बकरियों का जो हाल होता है; पट्टनर्–उस भाँति त्रस्त हुए; तोल् नकर्–पुरातन नगर; चूटु पट्टतु–जल गया। ५१७

(रावण की बात यह है। अब हनुमान की महिमा भी असामान्य है।) हनुमान ने तोरण के लौहस्तंभ को उखाड़ लेकर उससे बहुत लोगों को पीटा। उनमें कितने ही गतबल हो गये! उनकी संख्या की गिनती नहीं। वैसे ही पिटकर जो मरे, उनकी संख्या शब्दायमान समुद्र के बालुओं से अधिक है। कितने ही राक्षस व्याघ्रपीड़ित भेड़-बकरियों की भाँति मरे। पुरातन की लंका नगरी भी जली। ५१७

काय्त्त वक्कणत् तरक्करद मुडलुडु करैत्तोल्
नीत्त वॅक्करि निरैन्दुळ करुङ्गड नॅरुप्पिन्
वाय्त्त वक्कनै वरिशिलै मलैयोडुम् वाङ्गित्
तेय्त्त वक्कुळम् बुलर्न्दिल विलङ्गैयिन् रॅरुविल् 518

काय्त्त–हनुमान जब क्रुद्ध हुआ; अ कणत्तु–उसी क्षण में; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; उटल्–शरीरों के; उकु–गिरनेवाले; करै तोल्–(रक्त-) रंजित चर्म; नीत्त अॅक्करिन्–प्रवाहमध्य पुलिनों के समान; निरैन्तु उळ–अधिक हो गये; करु कटल्–काले समुद्र की; नॅरुप्पिन् वाय्त्त–वड़वाग्नि-सी प्रकृति वाले; अक्कनै–उस अक्षकुमार को; मलै वरि–पर्वत-सम सबन्ध; चिलैयोटुम्–धनु के साथ; वाङ्कि–उठाकर; तेय्त्त–जो हनुमान ने पीस डाला उससे बना; अ कुळम्पु–वह रुधिर-पंक; इलङ्कैयिन् तॅरुविल्–लंका की गलियों में; उलर्न्तिल–सूखा नहीं। ५१८

जब हनुमान का क्रोध चढ़ा, उसी क्षण राक्षसों के उघड़े व रक्तरंजित शरीर-चर्म सब जगह जलमध्य पुलिनों के समान भर गये। हनुमान ने काले सागर की वड़वाग्नि-सदृश अक्षकुमार को उसके पर्वतनिभ सबन्ध धनु

के साथ उठाकर नीचे डाला और कुचल दिया। तब जो रक्तकीच लंका की गलियों में फैली वह अब भी सूखी नहीं है। ५१८

शेनैक् कावल रोरैव रुळर्पण्डु तेवर्
वानैक् कावलु मानमु माऱ्ऱिय मऱवर्
तानैक् कार्क्करुङ् गडलोडुन् दमरोडुन् दामुम्
यानैक् काऱ्पट्ट शॅल्लॅन्न वॊल्लैयि नविन्दार् 519

पण्टु–पूर्वकाल में; तेवर् वानै–देवों के आकाशलोक को; कावलुम् मानमुम्–सुरक्षा और गौरव से; माऱ्ऱिय–हीन जिन्होंने कर दिया; मऱवर्–वे वीर; चेनै कावलर्–सेनाधिपति; ओर् ऐवर् उळर्–पाँच हैं; तानै कार् करु कटलोटुम्–सेना रूपी काले बड़े सागर के साथ; तमरोटुम्–अपनों के साथ; तामुम्–और खुद वे भी; यानै काल् पट्ट चॅल् ॲन्न–हाथी के पैरों के नीचे फँसी दीमकों के समान; ऑल्लैयिन्–शीघ्र; अविन्तार्–मर गये। ५१९

पंच सेनापति थे, जिन्होंने पहले देवलोक के क़िलों और उनके मान को मिटा दिया था। वे सब अपनी काले सागर-सी सेना और अपने परिवारों के साथ हस्तीचरणत्रस्त दीमकों के समान हत हो गये। ५१९

ॲङ्गु लत्तवर् रॅण्बदि नायिर रिरैवर्
किङ्ग रप्पॅयरक् किरियन्न तोऱ्ऱत्तर् किळर्न्दार्
वॅङ्ग रत्तिनुङ् गालिनुम् वालिनुम् वीक्किच्
चङ्ग रऱ्कऴि मुप्पुरत् तवरॅनच् चमैन्दार् 520

ॲम् कुलत्तवर्–हमारे कुल-जात; ॲण्पतिनायिरर् इऱैवर्–अस्सी हज़ार सरदार; किङ्करर् पॅयर्–किंकर नाम के; किरि अन्न–गिरि के समान; तोऱ्ऱत्तर्–आकार वाले; किळर्न्तार्–उत्साह के साथ उठे; वॅम् करत्तिनुम्–भयंकर हाथों और; कालिनुम् वालिनालुम्–पैरों और दुम से; वीक्कि–बँधकर; चङ्करर्क्कु अऴि–शंकर द्वारा मिटे; मुप्पुरत्तवर् ॲन–त्रिपुर वालों के समान; चमैन्तार्–नष्ट हुए। ५२०

हमारे वंश के अस्सी सहस्र किंकर नाम के पर्वतकाय वीर थे। वे उत्साह के साथ उठ चले। वे भी हनुमान के भीमकर्म हाथों, पैरों और दुम द्वारा बद्ध होकर शंकर-हत त्रिपुरवासियों के समान ढेर बन गये। ५२०

वॅम्बु माक्कडर् चेनैहॊण् डॅदिर्पॊर वॅहुण्डान्
अम्बु मारियुम् वन्बुयत् तरुवरै यऴुत्ति
युम्बर् वानहत् तोरुतनि नमन्च्चॅन् ऱुऱ्ऱान्
शम्बु मालियुम् विल्लिनाऱ् चुरुक्कुण्डु तलैव 521

तलैव–नाथ; चम्पु मालियुम्–जम्बुमाली भी; वॅम्पुम्–क्रोधतप्त; मा कटल् चेनै–वड़े सागर-सी सेना; कॊण्टु–ले जाकर; ॲतिर् पॊर–लड़ने को;

वेंकुण्टान्–क्रोधी हुआ; अम्पु मारियुम्–शरवर्षा भी; वन् पुयत्तु अरु वरै–बलवान भुजाओं रूपी पर्वत में; अळुत्तिति–गड़ाया; विल्लित्ताल्–धनु द्वारा; चुरुक्कुण्टु–गाँठ में फँसकर; ओरु तत्ति नमत्ते चेंन्रु–एकाकी जो है उस यम के पास जाकर; उम्पर् वान् अकत्तु–देवों के आकाशलोक (वीरस्वर्ग) में; उर्रान्–पहुँच गया। ५२१

नायक ! जंबुमाली क्रोधोत्तप्तमन, सागर-सम सेना लेकर खुद बड़े रोष के साथ लड़ने आया। उसने शरों की वर्षा-सी चलाकर हनुमान के पर्वतोपम श्रेष्ठ भुजाओं में शर गड़ाये। फिर हनुमान द्वारा अपने ही धनु की गाँठ में फँसकर मृत्यु को प्राप्त कर वीर स्वर्ग पहुँच गया। ५२१

शौन्न मामदि लिलङ्गैयिन् परप्पिनिल् तुहैत्तुच्
चिन्न मानवर् कणक्किलर् यावरे तेरिप्पार्
इन्न मारुळर् वीरर्मर् रिवन्शुड वेरिन्द
अन्न मानह रविन्ददक् कुरुदिया लन्रु 522

चौन्न–स्वर्णमय; मा मतिल्–बड़े प्राचीरों की; इलङ्कैयिन् परप्पिनिल्–लंका के विस्तार में; तुकैत्तु–कुचला जाकर; चितृतम् आतवर्–जो छिन्न-भिन्न हुए; कणक्किलर्–वे अनगिनत हैं; यावरे तेरिप्पार्–कौन बता सकते हैं; मर्रु–और; इवन् चुट–इस (हनुमान) के जलाने से; ऍरिन्त–जो जला; अन्न मा नकर्–वह महानगर; अन्रु–उस दिन; अ कुरुतियाल्–उस रक्त से; अविन्ततु–ठण्डा पड़ा; इन्नम्–अब; वीरर्–वीर; आर् उळर्–कौन हैं। ५२२

स्वर्णप्राचीर वाली लंका नगरी के मैदानों में हनुमान द्वारा कुचले जाकर छिन्न-भिन्न जो हुए वे असंख्यक हैं। उनकी संख्या कौन बता पाये ? हनुमान से जलायी गयी लंका की आग इन्हीं के रक्त से बुझी और लंका की गरमी शान्त हुई। इनसे बढ़कर वीर कहाँ ? । ५२२

विलङ्गल् वेन्दवा वेर्रिनि विळम्बुव दॆवन्नो
अलङ्गल् मालैयुज् जान्दमु मन्रुदा नणिन्द
कलङ्ग ळोडुमच् चात्तिय तुहिलोडुङ् गदिर्वाळ्
इलङ्गै वेन्दनु मेळुनाळ् विशुम्बिडै यिरुन्दान् 523

कतिर् वाळ्–तेजोमय तलवार-धारी; इलङ्कै वेन्तनुम्–लंकाधिपति भी; अन्रु–उसी दिन; तान् अणिन्त–अपनी धारण की हुई; अलङ्कल् मालैयुम्–हिलती माला और; चान्तमुम्–चन्दन और; कलङ्कळोटुम्–आभरणों के साथ और; अ चात्तिय–उन पहने हुए; तुकिलोटुम्–वस्त्रों के साथ; विचुम्पु इटै–आकाश में; एळु नाळ् इरुन्तान्–सात दिन रहा; विलङ्कल् वेन्त आ–(त्रिकोण-) पर्वत कैसे जला वह प्रकार; वेरु–किस विधि; इनि–अब; विळम्पुवतु ऍवन्–कहा क्यों कर जाय। ५२३

प्रकाशमय तलवारधारी रावण अपनी तभी धृत हिलती माला,

चन्दन, पहने हुए वस्त्र और आभरण —इनके साथ आकाश में सात दिन रहा। फिर त्रिकोण पर्वत (लंका का नगर) कैसे जला, इसका वर्णन क्यों ? । ५२३

नोंदुमऱ् ऱिण्डिऱ लरक्कन दिलङ्गैयै नुवन्ऱेन्
अदुमऱ् ऱव्वऴि यरणमुम् पॅरुमैयु मऱैन्देन्
इदुमऱ् ऱिव्वऴि यॅय्दिय दिरावण नेवप्
पदुमत् तण्णले पण्डुपो लन्नहर् पडैत्तान् 524

नोंतुमल् तिण् तिऱल्–बहुत ही सशक्त; अरक्कनतु–राक्षस रावण को; इलङ्कैयै–लंका के सम्बन्ध में; नुवन्ऱेन्–(मैंने) बताया; अतु मऱ्ऱु–उसके अलावा; अ वऴि–उसी प्रकार; अरणमुम्–(नादेय, पार्वत, वान्य और कृत्रिम) क़िलाबन्दी और; पॅरुमैयुम्–अन्य महिमाएँ; अऱैन्तेन्–साफ़-साफ़ कहीं; इतु–यह लंकादहन; इ वऴि–इस प्रकार; ॲय्तियतु–हुआ; इरावणन् एव–रावण के आज्ञा देने से; पतुमत्तु अण्णले–पद्मस्वामी ने ही; अ नकर्–उस नगर को; पण्टु पोल्–पहले की तरह; पटैत्तान्–बना दिया। ५२४

(विभीषण ने आगे कहा।) अतिबली रावण की स्थिति मैंने बतायी। और उसी प्रकार उस लंका की चार तरह की (नाद्य, पार्वत, वान्य और कृत्रिम) क़िलेबन्दी के गुरुत्व का विवरण दिया। लंका-दहन ऐसा हुआ। फिर रावण की आज्ञा मानकर पद्मप्रभु ब्रह्मा ने उस नगर को पूर्ववत् निर्मित कर दिया। ५२४

कात्तु मानैयिऱ् करन्मुदल् वीररुङ् गवियिन्
वेन्दु मन्ऱिवर् विऴिन्दवा केट्टन्ऱव् विलङ्गै
तीन्द वाकण्डु मरक्करैच् चॅरुविडै मुरुक्किप्
पोन्द वाकण्डुम् नानिङ्गुप् पुहुन्ददु पुहऴोय् 525

पुकऴोय्–यशस्वी; कान्तुम्–कुपित; आनैयिल्–हाथी-से; करन् मुतल् वीररुम्–खर आदि वीर और; कवियिन् वेन्तुम्–कविकुलपति वाली; अन्ऱु इवर्–ऐसे ये; विऴिन्तवा–जैसी रीति से मरे वह; केट्टु अन्ऱु–सुनकर नहीं; अ इलङ्कै–वह लंका नगर; तीन्त आ–किस प्रकार जला वह; कण्टुम्–देखकर और; अरक्करै–राक्षसों को; चॅरु इटै–युद्ध में; मुरुक्कि पोन्त आ–किस प्रकार मिटा गया वह; कण्टुम्–देखकर ही; नान्–मेरा; इङ्कु–यहाँ आ; पुकुन्ततु–पहुँचना हुआ। ५२५

कीर्तिमान् ! मैं आपके पास कुपित गज-सम खर आदि वीरों की अथवा कपिराज वाली की मृत्यु का प्रकार सुनकर आया होऊँ सो बात नहीं। पर लंका-दहन देखा, हनुमान का युद्ध में राक्षसों को मार जाना देखा। तभी मैं इधर आ पहुँचा। ५२५

केळ्हॊळ् मॆय्म्मैयान् किळत्तिय पॊरुळॆलाङ् गेट्टान्
वाळ्हॊ णोक्कियैप् पाक्कियम् बळुत्तनन्न मयिलै
नाळ्हळ् शालवु नीङ्गलिन् नलङ्गॊड मॆलिन्द
तोळ्हळ् वीङ्गतन् रूदनैप् पार्त्तिवै शॊन्नान् 526

केळ् कॊळ्–मैत्री के अर्थी; मॆय्म्मैयान्–सत्यसंध (विभीषण) के; किळत्तिय–बताये हुए; पॊरुळ् ऍलाम्–सभी विषय; केट्टान्–सुने; वाळ् कॊळ् नोक्कियै–तलवार-सी आँखों वाली; पाक्कियम् पळुत्तन्न–भाग्य फलीभूत हुआ हो ऐसी; मयिलै–मयूराभा सीता से; चालवुम् नाळ्कळ्–अनेक दिनों से; नीङ्कलिन्–वियुक्त रहने के कारण; नलम् कॆट–सौंदर्य खोते हुए; मॆलिन्त तोळ्कळ्–कृश बने कन्धे; वीङ्क–मोटे हो उठे ऐसा; तन् तूतनै पार्त्तु–अपने दूत को देखकर; इवै चॊन्नान्–ये वचन कहे। ५२६

(मित्रभावेन सम्प्राप्त) मैत्रीभाव ले जो आया था, उस विभीषण की बातें सुनकर श्रीराम अत्यंत हर्षित हुए। तलवार के समान तीक्ष्ण आँखों वाली और फल देने आये सुकृत के समान व मयूराभा सीताजी से विछुड़े उन्हें बहुत अधिक दिन हुए थे और उस लम्बे विरह से उनके कन्धे कृश हुए थे। अब हनुमान का पराक्रम सुनकर वे कन्धे फूल उठे। सम्मान बुद्धि के साथ श्रीराम ने अपने दूत, हनुमान से यों कहा। ५२६

कूट्टि नार्पडै पाहत्तिन् मेर्पडक् कॊन्राय्
ऊट्टि नायॆरि यूर्मुरु मिनियङ् गॊन्रुण्डो
केट्ट वार्रिनार् किळिमॊळिच् चीदैयैक् किडैत्तुम्
मीट्टि लाददॆन् विर्रॊळिर् काट्टक्कॊल् वीर 527

वीर–वीर; कूट्टितार् पटै–एकत्रित सेना के; पाकत्तिन् मेल्पट–(अर्ध) भाग से अधिक को; कॊन्राय्–मार डाला; ऊर् मुऱ्ऱुम्–नगर भर में; ऍरि मुट्टिनाय्–आग लगायी; इनि–अब; अङ्कु–वहाँ; ऒन्ऱु–कोई काम; उण्टो–है क्या; केट्ट आर्रिनाल्–(अब तक) जो सुना उससे; किळि मॊळि चीतैयै–शुकभाषिणी सीता को; किटैत्तुम्–प्राप्त करके भी; मीट्टिलाततु–छुड़ाकर न लाना; ऍन् विल् तॊळिल्–मेरा धनुकर्ममहत्व; काट्ट कॊल्–(संसार को) दिखाने के वास्ते, क्या। ५२७

हे वीर! तुमने लंकेश की सारी सेना के आधे से अधिक का वध किया है। लंका को जला दिया! फिर वहाँ कोई काम भी है क्या? यह सब सुनने के बाद लगता है कि शुकभाषिणी सीता मिल गयी थीं तो भी तुम उसे छुड़ा नहीं लाये। क्या वह मुझे धनुकर्म दिखाने के लिए मौक़ा देने के वास्ते था? । ५२७

निन्शॆय् तोळ्वलि निरम्बिय विलङ्गैयै नेर्न्दोम्
पिन्शॆय् दोज्जिल ववैयिनिप् पीडिन्रु पॆरुमो

पॉन्शॆय् तोळिनाय् पोर्प्पॆरुम् पडैहॊण्डु पुहुन्दोम्
ॲन्शॆय् दोमॆन्रु पॆरुम्बुह ळॆय्दुवा निरुन्दोम् 528

पोन् चॆय्–मनोरम; तोळिताय्–भुजा वाले; पोर्–युद्धसन्नद्ध; पॆरुम् पटै कॊण्टु–बड़ी सेना लेकर; पुकुन्तोम्–आये हैं; निन् चॆय् तोळ् वलि–तुम्हारे किये गये भुजपराक्रम से; निरन्पिय–भरी; इलङ्कैयै–लंका में; नेरन्तोम्–सामना करके; पिन् चिल चॆय्तोम्–पीछे भी कुछ (पराक्रम के) काम किये (तो भी); अवै–वे; इनि–उसके बाद; इन्रु–अब; पीटु पॆरुमो–गौरव प्राप्त कर सकते हैं क्या; ॲन् चॆय्तोम् ॲन्रु–क्या किया करके; पॆरु पुकळ् ॲय्तुवान्–बड़ा यश प्राप्त करने के लिए; इरुन्तोम्–हम रहे। ५२८

सुन्दर-बाहु ! हम युद्धोद्यत बड़ी सेना लाये हैं। तुम्हारे भुजबल के कृत्यों से भरी लंका में जाकर कुछ करेंगे भी तो क्या उन कृत्यों का कोई महत्त्व होगा ? क्या करके बड़ी कीर्ति प्राप्त करने की अभिलाषा लेकर हम हैं ? । ५२८

ॲन्न दाक्किय वलियॊडव् विरावणन् वलियुम्
उन्न दाक्किनै पाक्किय मुरुक्कॊण्ड दॊप्पाय्
मुन्न दाक्किय मूवुल हाक्किय मुदलोन्
पिन्न दाक्किय पदनिनक् काक्किनन् पॆऱ्राय् 529

पाक्कियम् उरु कॊण्टतु ऑप्पाय्–सौभाग्य ने आकार धर लिया हो ऐसे हनुमान; ॲन्ततु आक्किय वलियॊटु–मेरे बल के साथ; अ इरावणन् वलियुम्–उस रावण का बल भी; उन्ततु आक्कित्तै–तुमने अपना बना लिया; मुन्ततु आक्किय–पूर्ववत् सर्जित; मू उलकु–त्रिलोक; आक्किय–सृष्ट करनेवाले; मुतलोन्–पूर्वपुरुष (ब्रह्मा) के; पिन्नतु आक्किय–बाद का बना; पतम्–ब्रह्मा-पद को; निन्नक्कु आक्कितॆन्–तुम्हारा बना दिया; पॆऱ्राय्–पा लिया तुमने (अवश्य वह तुम्हारा होगा)। ५२९

हे मूर्तिमान् सौभाग्य ! मेरा बल और रावण का बल —दोनों को तुमने अपना बना लिया ! पूर्ववत् त्रिलोकसर्जक का जो ब्रह्मा का पद है, वह इस ब्रह्मा के बाद तुम्हारा होगा। मैंने ऐसा विधान किया है। तुम अवश्य प्राप्त करोगे। ५२९

ॲन्रु कूऱ्लु मॆळुन्दिरु निलनुऱ विऱैञ्जि
ऑन्ऱुम् पेशल नाणिनन् वणङ्गिय वुरवोन्
निन्ऱ वानरत् तलैवरु मरशुमन् नॆडियोन्
वॆन्ऱि केट्टनर् वीडुपॆऱ् ऱारॆन वियन्दार् 530

ॲन्रु कूऱ्लुम्–ऐसा कहते ही; वणङ्किय–विनत हुए; उरवोन्–बलशाली हनुमान; ॲळुन्तु–उठकर; इरु निलन् उऱ–बड़ी भूमि पर लगते हुए; इऱैञ्चि–प्रणमन करके; ऑन्ऱुम् पेचलन्–कुछ नहीं बोला; नाणितन्–शरमाए रहा;

निन्ऱ-वहाँ जो खड़े थे वे; वानर तलैवरुम्-वानरयूथपों और; अरचुम्-राजा ने; अ नॅटियोन् वॅन्ऱि-उस महापुरुष की विजयकहानी; केट्टत्तर्-सुनी; वीटु पॅट्ऱार्-मोक्ष पा लिया हो, ऐसा; वियन्तार्-विस्मयविमुग्ध हुए। ५३०

श्रीराम के ऐसा कहते ही वलिष्ठ हनुमान विनय के साथ उठ खड़ा हुआ और भूमि पर गिरकर साष्टांग दण्डवत की। वह लजाकर चुप खड़ा रह गया। तब वानरों के सरदार और राजा सुग्रीव, जिन्होंने हनुमान की विजय-कहानी सुनी, ऐसे विस्मय-विमुग्ध हुए मानो स्वर्ग ही उन्हें प्राप्त हो गया हो! । ५३०

तॊडक्कि निन्ऱविव् वुलहॊरु मून्ऱैयुन् दोळाल्
अडक्कुम् वण्णमु मळित्तलु मॊरुपॊरु ळन्ऱार्
किडक्कुम् वण्णवॆङ् गडलिनैक् किळर्पॆरुञ् जेनै
कडक्कुम् वण्णमु मॆण्णुदि यॆण्णुनूल् कऱ्ऱाय् 531

ऍण्णुम् नूल् कऱ्ऱाय्-श्रेष्ठमान्य शास्त्र के अध्येता; तॊटक्कि निन्ऱ-रचित और स्थित; इ उलकु ऒरु मून्ऱैयुम्-इन त्रिलोकों को; तोळाल् अटक्कुम्-अपने भुजबल से वश में लाने का; वण्णमुम्-प्रकार और; अळित्तलुम्-शत्रुसंहार; ऒरु पॊरुळ् अन्ऱु-कोई (बड़ी) बात नहीं है; किटक्कुम्-सामने पड़े; वण्णम्-रहनेवाले; वॆम् कटलिनै-भयानक सागर को; किळर् पॆरु चेनै-उमंग से भरी यह बड़ी सेना; कटक्कुम् वण्णमुम्-कैसे पार करे, यह उपाय भी; ऍण्णुति-सोचो। ५३१

श्रीराम विभीषण से बोले। हे अन्य शास्त्रों के अध्येता! सृष्ट और स्थित इन तीन लोकों का पालन या संहार कोई बड़ी बात नहीं है। पर वाधा-रूप जो सामने पड़ा है, इस विशाल सागर को यह उत्साहपूर्ण सेना पार कर जाए, इसका मार्ग सोचो। ५३१

करन्दु निन्ऱनिन् ऱन्मैयै यदुशॆलक् करुदुम्
परन्दु निन्ऱिरुक् कुलमुदऱ् ऱलैवराऱ् पारिल्
वरन्द रुम्मिन्द माक्कडल् पडैशॆल वळिवे
ऱिरन्दु वेण्डुदि यॆऱिदिरैप् परवैयै यॆन्ऱान् 532

अतु-वह समुद्र; करन्तु निन्ऱ-छिपे रहे; निन् तन्मैयै-तुम्हारे सच्चे स्वभाव को; चॆल करुतुम्-पूर्ण रूप से जानता है; निन्-तुम्हारे; तिरु कुल-श्रीकुल के; मुतल् तलैवराल्-पूर्वपुरुषों द्वारा; परन्ततु-खोदकर फैला; इन्त मा कटल्-यह महासागर; वरम् तरुम्-वर देगा; ऍऱि तिरै-तरंगों को उछालनेवाले; परवैयै-सागर को; पटै चॆल-सेना पार करे; वेऱु इरन्तु-अलग रूप से प्रार्थना करके; वळि वेण्टुति-मार्ग की प्रार्थना करें। ५३२

विभीषण ने उत्तर में निवेदन किया कि यह सागर आपके मन के गूढ़ भावों को भी खूब जानता है। यह आपके श्रीकुल के पूर्वजों (सगरपुत्रों) द्वारा ही इस तरह हस्ती में आया। इसलिए यह आपको

वर देगा। आप इससे सेना के पार करने के उपाय की याचना करें। ५३२

नन्ऱि लङ्गैयर् नायहन् मॊऴियॆन नयन्दान्
ऒन्ऱु तन्बॆरुन् दुणैवरुम् वुडॆशॆल वुरवोन्
शॆन्ऱु वेलैयैच् चेर्दलुम् विशुम्बिडैच् चिवन्द
कुन्ऱिन् मेनिन्ऱु कुदित्तन पहलवन् कुदिरै 533

उरवोन–ज्ञानवीर ने; इलङ्कैयर् नायकन्–लंका के राजा का; मॊऴि नन्ऱु–कथन अच्छा है; ऎन–ऐसा; नयन्तान्–स्वीकार किया; ऒन्ऱु–सहवासी; तन् पॆरु तुणैवरुम्–उनके सम्मानित सहायकों के; पुडै चॆल–पार्श्व में जाते; वेलैयै चॆन्ऱु चेर्तलुम्–समुद्र के पास जा पहुँचते ही; पकलवन् कुतिरै–दिनकर के अश्व; चिवन्त कुन्ऱिन् मेल् निन्ऱु–लाल उदय-पर्वत के ऊपर से; कुतित्तन–आकाश में कूदे। ५३३

ज्ञानोत्तम श्रीराम ने 'अच्छा' कहकर लंकेश के वचन को तृप्ति के साथ स्वीकार लिया। फिर वह समुद्रतट पर गये और उनके साथ उनके मान्य मित्र और सहायक वीर भी चले। दिनकर के अश्व लाल उदयाचल से नीचे कूदे (यानी उदय हुआ)। ५३३

6. वरुणन् अडैक्कलप् पडलम् (वरुण-शरणागति पटल)

कॊऴुङ्ग दिर्पहैक् कोळिरु णीङ्गिय कॊळ्है
शॆऴुञ्जु डर्प्पनिक् कलैयॆला निरम्बिय तिङ्गळ्
पुऴुङ्गु वॆञ्जिनत् तञ्जनप् पॊऱिवरि यरवम्
विऴुङ्गि नीङ्गिय दॊत्ततु वेलैशूऴ् ञालम् 534

वेलै चूऴ् ञालम्–समुद्र-वलयित यह भूमि; कॊऴु कतिर्–किरणसमृद्ध सूर्य से; पकै कोळ्–शत्रुता के पात्र; इरुळ् नीङ्किय–अन्धकार से मुक्त; कॊळकै–होने के कारण; चॆऴु चुटर्–पुष्कल प्रकाश से युक्त; पनि कलै ऎलाम् निरम्पिय–शीतल सोलहों कलाओं से पूर्ण; तिङ्कळ्–चन्द्र; पुऴुङ्कु वॆम् चिनत्तु–दाहक भयानक क्रोधपूर्ण; अञ्चनम्–अंजन-सम काले रंग से युक्त; पॊऱि वरि अरवम्–(फन में) चित्तियों और (शरीर पर) धारियोंदार (राहु) नामक सर्प द्वारा; विऴुङ्कि नीङ्कियतु–निगला जाकर उगल दिया गया; ऒत्ततु–जैसे लगी। ५३४

तब समुद्रमेखला-भूमि उस अंधकारशत्रुमुक्त पुष्कलकिरण पूर्णचन्द्र के समान लगा, जो काले और चित्ति-धारीदार सर्प (राहु) द्वारा निगला जाकर बाहर आ गया हो! । ५३४

तरुण मङ्गैयै मीट्पदोर् नॆऱिदरु हॆन्नुम्
पॊरुळ्न यन्दुनन् नूनॆऱि यडुक्किय पुल्लिऱ्

करुणै यङ्गडल् किडन्ददु करुङ्गड नोक्कि
वरुण मन्दिर मॅण्णितन् विदिमुरै वणङ्गि 535

तरुणम् मङ्कैयै–तरुणी देवी (सीता को); मीट्पतु ओर् नॅरि–छुड़ाने का एक मार्ग; तरुक ॲन्नुम्–दिलाओ यह; पॉरुळ् नयन्तु–बात चाहकर; अम् करुणै कटल्–सुन्दर कृपासागर श्रीराम; नल् नूल्–श्रेष्ठ शास्त्रग्रन्थोक्त; नॅरि अट्क्किय–रीति से डसाये गये; पुल्लिल्–कुश की घास पर; विति मुरै–यथाविधि; वणङ्कि–नमस्कार करके; करु कटल् नोक्कि–काले सागर की ओर मुख करके; वरुणन् मन्तिरम् ॲण्णिनन्–वरुणमन्त्र का स्मरण करते हुए; करुणै अम् कटल्–करुणा के सागर के समान श्रीराम; किटन्ततु–शयनमुद्रा में रहे। ५३५

करुणासागर श्रीराम ने शास्त्रोक्त रीति से दर्भ डसाये। फिर समुद्र को नमस्कार करके, उसके अभिमुख होकर वरुणमंत्र जपते हुए करुणामूर्ति सागरोपम श्रीराम दर्भशायी हुए। यह दर्भशयन समुद्र से तरुणी सीता के मोचन के हेतु सागरतरण की मार्ग-याचना के अर्थ था। ५३५

पूळि शॅन्रुदन् ट्रिरुवुरुप् पॉरुन्दवुम् बॉरैतीर्
वाळि वॅङ्गदिर् मदिमुहम् वरुडवुम् वळर्न्दान्
ऊळि शॅन्रन वॉप्पॅन वॊरुपह लवैयोर्
एळु शॅन्रन वन्दिल नॅरिकडर् किरैवन् 536

पूळि चॅन्रु–धूल उठी और; तन् तिरु उरु–उनके श्रीशरीर पर; पॉरुन्तवुम्–लगी; पॉरै तीर्–असहनशील; वॅम् कतिर्–गरम धूप ने; मति मुकम्–चन्द्रानन को; वरुटवुम्–सहलाया; वळर्न्तान्–आँखें बन्द किये रहे; ऒरु पकल्–एक-एक दिन; ऊळि चॅन्रन–युग बीता; ऒप्पॅन–ऐसा लगा; अवै–वे; ओर् एळु चॅन्रन–सात एक बीते; ॲरि कटर्कु–तरंगोत्तेजक समुद्र का; इरैवन्–देवता; वन्तिलन्–नहीं आया। ५३६

श्रीराम वरुणजप करते रहे। उनकी आँखें मुँदी थीं। उनके श्री-शरीर पर धूल जमी थी। असहनशील गरम धूप उनके चंद्रानन को सहला रही थी। एक दिन एक युग के समान बीता। ऐसे सात दिन बीत गये! तब भी तरंगोद्वेलित सागर का देवता नहीं आया। ५३६

ऊट्र मीक्कॊण्ड वेलैया नुण्डिलै यॅन्नुम्
माट्र मीक्कवुम् बॅट्रिलम् यामॅनु मनत्ताल्
एट्र मीक्कॊण्ड पुन्नलिडै यॅरिमुळैत् तॅन्नच्
चोट्र मीक्कॊण्ड् शिवन्दन तामरैच् चॅङ्गण् 537

ऊट्रम् मी कॊण्ट–बहुत साहसी; वेलैयान्–समुद्रराज का; उण्टु इलै–हाँ या नहीं; ॲन्नुम् माट्रम्–का उत्तर; ईक्कवुम्–देना भी; पॅट्रिलम् याम्–हमें नहीं मिला; ॲनुम् मनत्ताल्–इस चिन्ता से; एट्रम् मी कॊण्ट–उथल-पुथल जिसमें

अधिक थी; पुत्तलिटै–उस जल-विस्तार पर; ऎरि मुळैत्तु–आग उगी; ऎन्न–जैसे; चीऱ्ऱम् मी कॊण्टु–(मन में) क्रोध अधिक करके; तामरै चॆम् कण्–कमल-सी लाल आँखें; चिवन्तत–(अधिक) लाल हुईं। ५३७

श्रीराम का मन इस विचार से उद्वेलित हुआ कि यह समुद्रराज बड़ा साहसी है! उससे कोई उत्तर ही नहीं मिला— हाँ या नहीं का! उद्वेलित जल-मध्य आग उठी हो जैसे श्रीराम के उद्विग्न मन में कोप उठ आया और उनकी कमल-सी आँखें अधिक लाल हुईं। ५३७

माण्ड विल्लिऴन् दयरुनान् वऴिदरु हॆन्न
वेण्ड विल्लॆयॆन् ऱॊऴित्तदा मॆन्मनम् वॆदुम्बि
नीण्ड विल्लुडै नॆडुङ्गन लुयिर्प्पॊडु नॆडुनाण्
पूण्ड विल्लॆनक् कुनिन्दन कॊऴुङ्गडैप् पुरुवम् 538

माण्ट इल्–सम्मान्य गृहिणी को; इऴन्तु–खोकर; अयरुम्–दुःखी हुआ मैं; वऴि तरुक–मार्ग दो; ऎन्न वेण्ट–माँगता हूँ; इल्लै ऎन्ऱु–'नहीं' के भाव से; ऒऴित्तताम्–छिप गया; ऎन–ऐसा; मनम् वॆतुम्पि–मन में उत्तप्त होकर; नीण्ट विल् उटै–ज्वलन्त; नॆट्टुकनल् उयिर्प्पॊटु–लम्बी आग-सी साँसों के साथ; नॆटु नाण्–लम्बे डोरे से; पूण्ट विल्–युक्त धनु; ऎन–के समान; कॊऴु पुरुवम्–पुष्ट भौंहें; कटै–छोरों में; कुनिन्तन–टेढ़ी हुईं। ५३८

सम्मानित गृहिणी से वियुक्त होकर मैं दुःख उठा रहा हूँ। ऐसे मैंने मार्ग की याचना की। तो भी यह छिपा रहता है जिसका छिपा अर्थ है 'नहीं'। श्रीराम का मन उत्तप्त हुआ। लम्बी अनल-सी गरम साँसें छूटने लगीं। लम्बे डोरे से युक्त कोदण्ड के समान उनकी भौंहें छोरों पर कुंचित हुईं। ५३८

ऒन्ऱुम् वेण्डल रायिनु मॊरुवर्पा लॊरुवर्
शॆन्ऱु वेण्डुव रेलवर् शिऱुमैयिऱ् ऱीरार्
इन्ऱु वेण्डिय दॆरिहड नॆऱिदनै मऱुत्तान्
नन्ऱु नन्ऱॆन नहैयॊडुम् बुहैयुह नक्कान् 539

ऒरुवर्–कोई; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; वेण्टलर् आयिनुम्–नहीं चाहे तो भी; ऒरुवर् पाल् ऒरुवर्–कोई किसी के पास; चॆन्ऱु वेण्टुवर् एल्–जाकर माँगे तो; अवर्–वह; चिऱुमैयिल् तीरार्–अपने अल्पता के स्वभाव को नहीं छोड़ता; इन्ऱु वेण्टियतु–आज याचना की; नॆऱि–मार्ग की; अतनै–उसे; ऎरिकटल्–तरंगोत्तेजक समुद्र ने; मऱुत्तान्–इनकार कर दिया; नन्ऱु नन्ऱु–अच्छा, अच्छा; ऎन–कहकर; नकैयॊटुम्–हँसी के साथ; पुकै उक–धुआँ निकल आये, ऐसा; नक्कान्–हँसे। ५३९

कोई किसी से कुछ चाहने की स्थिति में न हो तो भी किसी से जाकर कुछ माँगे तो वह अल्प हो जाता है। वरुण ने मुझे क्षुद्र समझ

लिया और मेरी मार्ग की याचना को ऊर्मिमाली ने ठुकरा दिया। अच्छा है अच्छा! कहकर श्रीराम क्रोध के साथ हँसे। उस हँसी के साथ धुआँ भी उठ आया। ५३९

पार नीङ्गिय शिलैयिऩ् ऩिरावणऩ् पऱिप्पत्
तार नीङ्गिय तऩ्मैय ऩादलिऱ् ऱहैशाल्
वीर नीङ्गिय मऩिदॆऩ्ऩ् ऱिहळ्च्चिमेल् विळैय
ईर नीङ्गिय दॆऩ्ऱिहड लामॆऩ विशैत्ताऩ् 540

इरावणन् पऱिप्प–रावण के हर लेने से; तारम् नीङ्किय–पत्नी से विलग हुई; तन्मैयन् आतलिन्–स्थित में रहे, इसलिए; ॲरि कटल्–तरंगोद्वेलित समुद्र; तकै चाल् वीरम् नीङ्किय–योग्य वीरता से वियुक्त; मतितन्–मानव है; पारम् नीङ्किय–गौरव-वियुक्त; चिलैयितन्–धनु का धारक; ॲन्ऱु–सोचकर; इकळ्च्चि–अपमान; मेल् विळैय–मुझे लगे ऐसा; ईरम् नीङ्कियतु–आर्द्रतावियुक्त; आम्–हुआ; ॲन्न–ऐसा; इचैत्तान्–श्रीराम बोले। ५४०

रावण के छीनने से मैं पत्नी-वियुक्त हुआ न! इसलिए यह ऊर्मिमाली मुझे योग्य वीरता से खाली समझ गया। हल्के धनु का ढोनेवाला समझकर मुझे निंद्य ठहराते हुए वह स्नेहशुष्क हो गया। ५४०

पुरन्दु कोडलुम् पुहऴोडु कोडलुम् पोराल्
तुरन्दु कोडलु मॆऩ्ऱिवै तॊऩ्मैयिऱ् ऱॊडर्न्द
इरन्दु कोडलिऩ् इयऱ्कैयुम् दरुममु मॆञ्जक्
करन्दु कोडले नऩ्ऱिनि निऩ्ऱदॆऩ् कळऱि 541

पुरन्तु–रक्षा करके; कोटलुम्–बदले में कुछ पाना; पुकऴोटु–यश के साथ; कोटलुम्–कुछ पाना; पोराल्–युद्ध में; तुरन्तु–हरा, भगाकर; कोटलुम्–कुछ ग्रहण कर लेना; ॲन्ऱ इवै–ऐसे ये; तॊन्मैयिल् तॊटर्न्त–प्राचीन काल से प्रचलित हैं; इरन्तु कोटलिन्–याचना करके ग्रहण करना चाहता हूँ तब; इयऱ्कैयुम् तरुममुम्–स्वभाव और धर्म को; ॲञ्च–क्षीण करते हुए; करन्तु कोटल्–(समुद्र का) अपने को छिपा लेना; नन्ऱु–अच्छा रहा; इनि–अब; कळऱि निन्ऱतु–डाँट के शब्द कहने से; ॲन्–(होनेवाला) क्या है। ५४१

किसी का रक्षण करके उस सहायता के बदले में कुछ ग्रहण करना; यश के साथ कुछ पाना और शत्रुओं को हरा भगाकर उनकी वस्तुओं को वश में कर लेना —ऐसे ग्रहण प्राचीन काल से प्रचलित हैं। मैंने याचना की; इसलिए इस समुद्रराज ने अपने को छिपा लिया, जिससे उसके मन का स्वभाव और धार्मिकता का ह्रास प्रकट होता है! यह उसका छिपना भी खूब रहा। अब उसे डाँटने से भी क्या होगा? । ५४१

कात्ति डैप्पुहुन् दिरुङ्गनि कायोडु नुहर्न्द
ऊन्तु डैप्पोरै युडम्बिन नॆन्रुकोण् डुणर्न्द
मीन्तु डैक्कडर् पॆरुमैयुम् विल्लोडु निन्रर
मात्तु डच्चिरु तन्मैयुम् काण्बराल् वानोर् 542

कान् इटै पुकुन्तु—वन में घुसकर; इरु कनि–श्रेष्ठ फलों को; कायोटु नुकर्न्त–खाद्य कच्चे फलों के साथ जिसने खाया; ऊन् उटै–(वह) मांसयुक्त; पोरै उटम्पितन्—मोटे शरीर वाला है; ऎन्रु कोण्टु–ऐसा सोच; उणर्न्त–समझनेवाला; मीन् उटै–मकरों-सहित; कटल् पॆरुमैयुम्—समुद्र का मान; विल्लोटु–(और) धनु लेकर; निन्रर–रहनेवाले; चिरु मानुट तन्मैयुम्–छोटे मनुष्य की स्थिति; वानोर् काण्पर् आल्–अब देव देखें। ५४२

मुझे वन में आकर उत्तम फल-तरकारियों को खानेवाला, केवल मांस का स्थूल शरीर वाला समझ रहा है यह मकरालय। इसका बड़प्पन और धनुर्धर छोटे मनुष्य मेरी शक्ति दोनों को अब देवता लोग देख लेंगे। ५४२

एद मञ्जिना निरन्ददे यॆळिदॆन विहळ्न्द
ओद मञ्जिनो डिरण्डुम्वॆन् दॊरुपोडि याहप्
पूद मञ्जुम्वन् दञ्जलित् तुयिर्होण्डु पोरुमप्
पाद मञ्जलर् शॆञ्जवे पडर्वरॆन् पडैञर् 543

एतम् अञ्चि–अन्याय से डरकर; नान् इरन्तते–(विना शर मारे) मैंने याचना की वही; ऎळितु ऎन–लघुता समझकर; इकळ्न्त–अपमानित करनेवाले; ओतम्–समुद्र; अञ्चितोटु इरण्टुम्–पाँचों के साथ दोनों (सातों); वॆन्तु ऒरु पोटियाक–जलकर भस्म हो जाएँ ऐसा; पूतम् अञ्चुम् वन्तु–पाँचों भूत आकर; अञ्चलित्तु–अंजलि करके; उयिर् कॊण्टु विम्म–निःश्वास छोड़ते हुए दुःख से भरें ऐसा; अञ्चलर्–निडर; ऎन् पटैञर्–मेरी सेना के वीर; पातम्—पैदल; चॆञ्चवे–सीधे; पटर्वर्–चलेंगे। ५४३

समुद्र को सुखाना अपराध होगा —यही समझकर मैंने याचना का उपाय अपनाया। उसने मुझे लघु समझ लिया। अब देखो। सातों समुद्र जलकर भस्म हो जाएँगे और मेरे सेना के निडर वीर सीधे पैदल चलकर समुद्र पार करेंगे और यह देखकर पाँचों भूत अंजलिवद्ध आकर लम्बी साँसें छोड़ेंगे। ५४३

मरुमै कण्डमॆय्ञ् ञानियर् ञालत्तु वरिनुम्
वॆरुमै कण्डपिन् यावरुम् यारॆन विरुम्बार्
कुरुमै कण्डवर् कॊळ्ळुङ्गन लॆन्निनुङ् गुशार्
शिरुमै कण्डवर् पॆरुमैकण् डल्लदु तेरार् 544

मरुमै कण्ट–मोक्ष-प्राप्त; मॅय् आत्तियर्–तत्त्वज्ञ; ञालत्तु वरित्तुम्–फिर से इस भूमि पर आएँ तो भी; यावरुम्–(भूलोकवासी) सभी; वॅरुमै–रिक्तता; कण्ट पिन्–देखने के बाद; यार् ॲंत–कौन हैं यह जानना भी; विरुम्पार्–नहीं चाहेंगे; कॉळु कनल्–घनी आग; ॲंनृनितुम्–हो तो भी; कुरुमै कण्टवर्–छुटपन देखने पर; कूचार्–उससे नहीं हिचकेंगे; चिरुमै कण्टवर्–लघुता जो देखते हैं वे; पॅरुमै कण्टल्लतु–बड़प्पन देखें, वह समय छोड़कर कभी; तेड़ार्–सत्य नहीं पहचानते। ५४४

जन्ममुक्त ज्ञानी भी मोक्ष छोड़कर भूलोक में आ जाएँ तो लोग उनको खाली देखकर यह जानना भी नहीं चाहेंगे कि वे कौन हैं ? घनी आग भी क्यों न हो उसका आकार छोटा हो तो देखनेवाले उससे नहीं डरते। किसी की लघुता से परिचित लोग उसका गौरव देखे विना सच्चाई नहीं पहचान पाते। ५४४

तिरुति यॅन्नुबदीन् ऱिळिदर वूळियिऱ् चिनवुम्
परुदि मण्डिल मॅन्नप्पॉलि मुहत्तिनन् पलहाल्
तरुदि विल्लॅनु मळवॅयिल् तम्बियुम् वॅम्बिक्
कुरुदि वॅङ्गन लुमिळ्हिन्ऱ कण्णिनन् कॉडुत्तान् 545

तिरुति ॲंनुपतु–धृति नाम का; ओन्ऱु–एक गुण; इळि तर–कम हो; ऊळियिल् चित्तवुम्–युगान्त में क्रुद्ध हो उठनेवाले; परुति मण्टिलम् ॲंत–सूर्यमण्डल के समान; पॉलि मुकत्तितन्–विलसित मुख वाले (श्रीराम) के; पल काल्–अनेक बार; विल् तरुति–धनु को दो; ॲंतुम् अळवॅयिल्–कहने पर; कुरुति वॅम् कतल्–रक्त और गरम आग; उमिळ्किन्ऱ–उगलनेवाली; कण्णितन् तम्पियुम्–आँखों वाले श्रीराम के भाई ने भी; वॅम्पि–खौलकर; कॉटुत्तान्–दिया। ५४५

श्रीराम की धृति छूट गयी। युगांत के उग्र सूर्यमंडल के समान उनका श्रीमुख तमतमा उठा। उन्होंने एक नहीं अनेक बार कहा— दो मेरे धनु को ! तब रक्त और अनल निकालनेवाली आँखों के (श्रीराम के) भाई लक्ष्मण ने उत्तप्तमन होकर धनु को दिया। ५४५

वाङ्गि वार्शिलै वाळियिन् मऱ्ऱॉरु वेलै
वीङ्गु तोळ्वलम् वीक्किनन् कोदैयै विरलाल्
ताङ्गि नाणितैत् ताक्किनन् ताक्किय तमरम्
ओङ्गल् मुक्कणान् देवियैत् तीर्त्तुळ वूडल् 546

वार् चिलै–सुगठित धनु को; वाळियिन् वाङ्कि–शरों के साथ लेकर; मऱ्ऱु–और; ऑरु वेलै–एक तूणीर को; वीङ्कु–पुष्ट; वलम् तोळ्–सबल कन्धे से; वीक्कितन्–बाँध लिया; कोतैयै–अंगुलित्राण को; विरलाल् ताङ्कि–अँगुलियों पर पहन लिया; नाणितै–प्रत्यंचा को; ताक्कितन्–खींचा; ताक्किय तमरम्–टंकार से उत्पन्न नाद; ओङ्कल्–(कैलास) पर्वत के; मुक्कणान् देवियै–त्रिनेत्र शिव की पत्नी की रूठन को; तीर्त्ततु–दूर कर दिया। ५४६

श्रीराम ने सुगठित धनु को शरों के साथ ग्रहण किया। फिर एक तूणीर लेकर सवल पुष्ट कन्धे से बाँध लिया। अंगुलित्राण पहनकर उन्होंने डोरे को खींचा। तब टंकार जो उठी उसने कैलास पर्वत पर रहनेवाली उमादेवी की रूठन को दूर कर दिया। (वे इस टंकार से डरकर अपने पति से, स्वयं रूठन त्यागकर, मिल गयीं।)। ५४६

मारि यिन्पॅरुन् दुळियिनुम् वरम्बिल वडित्त
शीरि दॅन्ऱवै यॅवऱ्ऱिनुम् शीरिय तॅरिन्दु
पारि यङ्गिरुम् बुनलॅला मुडिविनिऱ् परुहुञ्
जूरि यन्गदि रनैयन शुडुशरञ् जॊरिन्दान् 547

मारियिन्–वर्षाकाल की; पॅरु तुळियितुम्–मोटी बूंदों से; वरम्पु इल–असीम (अधिक); वटित्त–(लुहार से) तीक्ष्ण किए हुए; चीरितु–श्रेष्ठ; ऍन्ऱवै ऍवऱ्ऱितुम्–मान्य सभी पदार्थों से; चीरिय–अधिक श्रेष्ठ; पार् इयङ्कु–भूमि पर लहरानेवाले; इरुम् पुनल् ऍलाम्–सभी जलाशयों को; मुटिविनिल् परुकुम्–युगान्त में सोख लेनेवाले; चूरियन्–सूर्य की; कतिर् अनैयन–किरणों के समान; चुटु चरम्–शत्रुदाहक शरों को; तॆरिन्तु–चुन लेकर; तुरन्तान्–छोड़ा। ५४७

श्रीराम ने युगांत में पृथ्वी के सारे जल के शोषक सूर्य की किरणों-सम दाहक शर चुन-चुनकर चलाये। उनकी संख्या वर्षाकालीन वर्षा की बूंदों की संख्या से कहीं अधिक थी। वे लुहार द्वारा तीक्ष्ण बनाये गये थे। श्रेष्ठतम (वस्तुओं या) अस्त्रों से भी अधिक श्रेष्ठ थे। ५४७

पॅरिय नालिरु वरैयितुम् पॅरुवलि पॅऱ्ऱ
वरिहॊळ् वॅञ्जिलै वळर्पिऱै यामॅन वाङ्गित्
तिरिव निऱ्पन यावैयु मुडिविनिल् तीय्क्कुम्
ऍरियिन् मुम्मडि कॉडियन शुडुशर मॅय्दान् 548

पॅरिय–उन्नत; नालिरु–आठ; वरैयितुम्–कुलगिरियों से; पॅरुवलि पॅऱ्ऱ–अधिक बलयुक्त; वरि कॊळ्–सबन्ध; वॅम् चिलै–संतापक धनु; वळर् पिऱैयाम्–शुक्ल पक्ष के चाँद को; ऍन–जैसे; वाङ्कि–लेकर; तिरिव–चर; निऱ्पन–और अचर; यावैयुम्–सभी को; मुटिविनिल् तीय्क्कुम्–युगान्त में भस्म करनेवाली; ऍरियिन्–आग से; मुम्मटि–तिगुना; कॊटियन–क्रूर; चुटु चरम्–दाहक शर; ऍय्तान्–चलाये (श्रीराम ने)। ५४८

श्रीराम ने आठ कुलपर्वतों से भी कठोर और भयानक धनु को शुक्ल पक्ष के अर्धचन्द्र के समान झुकाया और ऐसे शर चलाये, जो युगान्त की चराचर सभी को जलानेवाली आग से तिगुने दाहक थे। ५४८

मीनुम् नाहमुम् विण्डॊडु मलैहळुम् विऱ्हाय्
एनै निऱ्पन यावैयु मेलॅरि यॅय्दप्

पेत़ नीरनॅडु नॅय्यॅऩप् पॅय्हणै नॅरुप्पार्
कूनै यङ्गियिन् कुण्डमोत् तदुहडऱ् कुट्टम् 549

मीतुम्–मछलियाँ और; नाकमुम्–साँप; विण् तोटम्–गगनस्पर्शी; मलैकळुम्–पर्वत; विऱकाय्–ईंधन बने; एत़ै–अन्य; निऱ्पत यावैयुम्–अन्य जो हैं वे सब; मेल् अँरि अँय्त–जलकर आकाश में उठे; पेतम् नीर्–फेन-सहित जल; नॅट्ट नॅय् अँत–समृद्ध घृत बना; पॅय् कणै–प्रेषित शर की; नॅरुप्पाल्–आग से; कटल् कुट्टम्–समुद्र का गड्ढा; कूनै–चारों ओर से बन्द; अङ्कियिन् कुण्टम्–अग्निकुण्ड; ओत्ततु–के सदृश लगा। ५४९

तब वह समुद्र का गड्ढा चारों तरफ़ से बन्द अग्निकुण्ड के समान लगा; जिसमें मछलियाँ, सर्प और गगनस्पर्शी पर्वत ईंधन बने। अन्य सभी जले और आग की लपटें ऊपर उठीं। फेन-सहित सागरजल ने घृत का स्थान ले लिया। श्रीरामप्रेषित शरों की आग से यह स्थिति हुई। ५४९

पाळि वऩ्ऩॅडुङ् गोडुञ्जिलै वळङ्गिय पहळि
येळु वेलैयु मॅरियॊडु पुहैमडुत् तेहि
ऊळि वॅङ्गनऱ् कोळुऩ्दुह ळुरुत्तॅळुन् दोडि
आळि मालवरेक् कप्पुऱत् तिरुळैयु मवित्त 550

पाळि वल्–बहुत सबल; नॅट्ट–लम्बे; कोट्ट चिलै–क्रूर धनु से; वळङ्किय पकळि–प्रेषित शर; एळु वेलैयुम्–सातों समुद्रों में; अँरियोट्ट–आग के साथ; पुकै मट्टुत्तु–धुआँ भरकर; एकि–गये; ऊळि–युगान्त की; वॅम् कतल् कोळुतुकळ्–भयंकर अग्निज्वालाओं के समान; उरुत्तु अँळुन्तु–क्रोध करके (उग्र हो) उठकर; ओटि–तीव्र गति से चलकर; आळिमाल् वरैक्कु–चक्रवालगिरि के; अप्पुऱत्तु इरुळैयुम्–उस पार के अन्धकार को भी; अवित्त–मिटा दिया (शरों ने)। ५५०

श्रीराम के सबल लम्बे और कठोर क्रूर धनु से जो शर निकले वे सातों समुद्रों में आग और धुआँ भरकर, युगान्त की आग की ज्वालाओं के समान क्रोध करके (उग्र बनकर) जाकर फैले। उनसे चक्रवाल गिरि के उस पार का अन्धकार भी मिट गया। ५५०

मरुम तारैयि नॅरियुण्ड महरङ्गण् मयङ्गिच्
चॅरुम वाऩिडैक् कऱ्पह मरङ्गळुन् दीय
निरुमि याविट्ट नॅडुङ्गणै पायदलि नॅरुप्पो
डुरुमु वीऴ्न्दॅऩच् चॅऩ्ऱ़न कडऱ्ऱुळि यम्बर् 551

निरुमिया–(मन में) संकल्प करके; विट्ट–छोड़े गये; नॅट्ट कणै–लम्बे शर; पाय्तलिन्–भेद चले तो; नॅरुप्पोट्ट–आग के साथ; उरुमु–गाज; वीऴ्न्तु अँत–गिरी जैसे; मरुम तारैयिन्–मर्म अंगों पर; अँरि उण्ट–आग लेकर; मकरङ्कळ्–मकर; मयङ्कि चॅरुम–बेहोश होकर जमा हुए; वान् इटै–आकाश में; कऱ्पकम्

मरक्कळुम्–कल्पतरु भी; तीय–झुलसे; कटल् तुळि–सागर की बूंदें; उम्पर् चॅन्ऱन–आकाश में गयीं। ५५१

श्रीराम ने संकल्प-नियत करके शर छोड़े। वे लम्बे शर भेद चले। उनसे आग के साथ गाज के गिरने से जैसे मकरों के मर्म स्थान जल गये। वे बेसुध होकर एक ओर सटे मिले रहे। कल्पतरु भी जलकर काले हो गये। और सागरजलकण उठकर आकाश की ओर गये। ५५१

कूडुम् वॆम्बॊरिक् कॊडुङ्गनल् तॊडर्न्दन कॊळुत्त
ओडु मेहङ्गळ् पॊरिन्दिडै युदिर्न्दन वुम्बर्
आडु मङ्गैयर् करुङ्गुळल् विळर्त्तन अळक्करक्
कोडु तीन्दॆळक् कॊळुम्बुहैप् पिळम्बुमीक् कॊळ्ळ 552

अळक्कर् कोटु–समुद्रसीमा-रेखा; तीन्तु ॲळ–नष्ट हो ऐसा; कॊळु पुकै पिळम्पु–घना धूम्रपुंज; मी कॊळ्ळ–आकाश में उठे ऐसा; कूटुम्–एकत्रित; वॆम् पॊरि–गरम अंगारों के साथ; कॊटु कतल्–क्रूर अग्नि; तॊटर्न्तन कॊळुत्त–लगातार जल उठी इसलिए; ओटुम् मेकङ्कळ्–संचरणशील मेघ; पॊरिन्तु–भुनकर; इटै उतिर्न्तन–भूमि पर गिर गये; उम्पर्–आकाश में; आटुम् मङ्कैयर्–नृत्य करनेवाली (अप्सरा) स्त्रियों के; करु कुळल्–काले केश; विळर्त्तन–सफ़ेद हो गये। ५५२

समुद्र की सीमा की रेखा अदृश्य हो गयी। घना धूम्रपुंज उठकर आकाश में छा गया। एकत्रित गरम अंगारों के साथ क्रूर अग्निज्वालाएँ निरंतर जलीं। अतः आकाशचारी मेघ भुनकर नीचे गिरे। आकाश की नर्तकी स्त्रियों के केश सफ़ेद हो गये। ५५२

निमिर्न्द शॆञ्जरम् निऱन्दॊऱुम् वडुदलुम् नॆय्त्तोर्
उमिळ्न्दु लन्दन महरङ्ग ळुलप्पिल वुरुवत्
तुमिन्द तुण्डमुम् वलपडत् तुरन्दन तॊडर्न्दु
तिमिङ्गि लङ्गळुम् तिमिङ्गिल गिलङ्गळुञ् जिदऱि 553

निमिर्न्त–ऊपर की ओर उठे; चॆम् चरम्–(रक्त के कारण) लाल (बने) शर; निऱम् तॊऱुम्–वक्ष-वक्ष में; पटुतलिन्–लगे इसलिए; नॆय्त्तोर् उमिळ्न्तु–रक्त वमन कर; उलन्तन मकरङ्कळ्–जो मरे वे मकर; उलप्पिल–असंख्यक थे; तॊटर्न्तु तुरन्त–निरन्तर जो छोड़े गये; उरुव–वे शर भेद चले, इसलिए; तिमिङ्किलङ्कळुम्–तिमिंगिल; तिमिङ्किल किलङ्कळुम्–और (उनके भक्षक) तिमिंगिलगिल; चितऱि–अस्त-व्यस्त होकर; तुण्टमुम् पल पट–टुकड़े कई हों, ऐसे; तुमिन्त–कट गये। ५५३

ऊपर की ओर जानेवाले शरों ने हर मकर के वक्षःस्थल को भेद दिया। वे रक्त वमन करते हुए मरे। उनकी संख्या गिनती में नहीं आयी। निरन्तर शर भेदते चले और तिमिंगिल और तिमिंगिल के भक्षक

तिमिंगिलगिल अस्त-व्यस्त हुए और ऐसे कट गये कि उनके खण्ड-खण्ड हो रहे। ५५३

नीरु मीच्चॅल नॅरुप्पॅळप् पॉरुप्पॅला मॅरिय
नूरु मायिर कोडियुङ् गडुङ्गणै नुळैय
आरु कीळ्प्पड वळरुपट् टळुन्दिय वळक्कर्
शेरु तीयन्दॅळक् कान्दिन शेडन्रन् शिरङ्गळ् 554

नीरु मी चॅल–भस्म ऊपर जाए, ऐसा; नॅरुप्पु अॅळ–आग जल उठी, इसलिए; पॉरुप्पु अॅलाम्–सारे पर्वत; अॅरिय–जले; नूरुम्–सैकड़ों; आयिरम् कोटियुम्–सहस्रों और; कोटियुम्–कोटि-कोटि; कटु कणै–कटोर अस्त्र; नुळैय–भेद चले, इसलिए; आरु कीळ् पट–नदियाँ अल्प हो जाएँ, ऐसा; अळरु पट्टु–पंक से भरकर; अळुन्तिय–धँस जो गया वह; अळक्कर्–सागर; चेरु तीय्न्तु अॅळु–उस पंक के भी जलकर भस्म हो उठने से; चेटन् तन् चिरङ्कळ्–आदिशेष के सिर; कान्तिन–प्रकाशित हुए। ५५४

भस्म को उछालते हुए आग जल उठी। पर्वत सब जले। सैकड़ों, हज़ारों और करोड़ों अस्त्र समुद्र में घुसे; इसलिए नदियो के पंक के साथ समुद्र भी पंकिल हुआ और पाताल में धँसने की उसकी स्थिति हो गयी। बाद पंक भी जलकर धूल बना और आदिशेष नाग के सिर प्रकाशमय दिखे। ५५४

मॉय्त्त मीन्गुलम् मुदलर् मुरुङ्गिन मॉळियिर्
पॉय्त्त शान्रवन् कुलमॅनप् पॉरुहणै यॅरिय
उय्त्त कूम्बुडै नॅडुङ्गल मोडुव कडुप्पत्
तैत्त वम्बॊडुन् दिरिन्दन तालमीन् शालम् 555

पॉरु कणै–युद्ध के शर; अॅरिय–जल उठे; मॉळियिल् पॉय्त्त–वचनभंजक के; चान्रवन् कुलम् अॅन–सज्जन के कुल के समान; मॉय्त्त मीन् कुलम्–पिल रहे मछलीकुल; मुतल् अर–जड़-सहित; मुरुङ्किन–मिटे; उय्त्त–चालित; कूम्पु उटै–मस्तूल वाले; नॅटु कलम्–बड़े पोत; ओटुव कटुप्प–चले जैसे; ताल मीन् चालम्–तालमीनजाल; तैत्त अम्पॊटुम्–चुभे रहे शरों के साथ; तिरिन्तन–इधर-उधर घूमे। ५५५

रणरत शर जला उठे। इसलिए सत्यभ्रष्ट सज्जन के कुल के समान झषराशियाँ निर्मूल हुईं। 'तालमीनजाल' मस्तूल-सहित चलने वाले पोतों के समान शरीर पर चुभे अस्त्रों के साथ इधर-उधर भागे। (तालमीन— मछलियों की एक जाति जो भीमकाय होती है)। ५५५

शिन्दि योडिय कुरुदिवॅङ् गन्लोडु शॅरिय
अन्दि वान्हङ् गडत्तदव् वळपपरु मळक्कर्

पन्दि पन्दिह ळाय्नॆडुङ् गडुङ्गणै पडर
वॆन्दु तीन्दत्त करिन्दत्त पॊरिन्दत्त शिलमीन् 556

पन्ति पन्तिकळाय्–पंक्ति-पंक्ति में; नॆटु—लम्बे; कटु कणै–कठोर शर; पटर–फैले; चिल मीन्–कुछ मछलियाँ; वॆन्तु–पककर; तीन्तत–जले; करिन्तत–झुलसे; पॊरिन्तत–भुने; चिन्ति ओटिय–निकल बहा जो; कुरुति–वह रक्त; वॆम् कतलॊटु–भयंकर आग के साथ; चॆरिय–मिला, इसलिए; अळप्परुम्–अपार; अ अळक्कर्–वह सागर; अन्ति वानकम्–संध्यागगन; कट्टततु–के समान लगा। ५५६

लम्बे कठोर शर पाँति-पाँति में भेदते हुए चले। कुछ मछलियाँ, जलीं, झुलसीं, काली-कड़ी बनीं और भुन गयीं। उनसे जो रक्त निकलकर बहा वह भयंकर आग से मिश्रित हुआ तो अपार वह सागर संध्यागगन के समान लगा। ५५६

वैय नायहन् वडिक्कणै कुडित्तिड वऱ्ऱि
ऐय नीरुडैत् ताय्मरुङ् गरुङ्गतल् मणडक्
कैह लन्दॆरि करुङ्गडल् कारहल् कडुप्प
वॆय्य नॆय्यिडै वेवन वॊत्तन शिलमीन् 557

वैयम् नायकन्–भुवननायक के; वटि कणै–तीक्ष्ण शरों के; कुटित्तिट–पीने (सोखने) से; वऱ्ऱि–सूखकर; नीर्–जल; ऐयम् उटैत्ताय्–है या नहीं, इस शंका का पात्र बनकर; मरुङ्कु–उसमें; अरु कतल्–असह्य आग; मण्ट–घनी बनी, इसलिए; कै कलन्तु–सर्वत्र मिलकर; ऎरि–जलनेवाला; करु कटल्–काला सागर; कार् अकल्–काले दिये के; कटुप्प–समान रहा; चिल मीन्–और कुछ मछलियां; वॆय्य नॆय्यिटै–उबलते घी में; वेवन ऒत्तन–पकनेवाली जैसी लगीं। ५५७

पृथ्वीपति के तीक्ष्ण शरों ने जल को (पी) सोख लिया। अतः समुद्र में जल का रहना संशय का विषय हो गया। उस पर असह्य आग की लपटें भर गयीं। तब वह बड़ा काला सागर मिट्टी के दिये के समान लगा और कुछ मछलियाँ गरम घृत में पकती-सी लग रही थीं। ५५७

कुणिप् परुङ्गीडुम् बहळिहळ् कुरुदिवाय् मडुप्पक्
कणिप् परुम्बुनल् कडैयुरक् कुडित्तलिऱ् कान्दु
मणिप् परुन्दडङ् गुप्पैहण् मऱिप्पॆहडल् वॆन्दु
तणिप् परुन्दळल् शॊरिन्दन पोन्ऱन तयङ्गि 558

कुणिप्पु अरु–अनगिनत; कॊटुम् पकळिकळ्–भयंकर शर; कुरुति वाय्–रक्त-भरे मुखों से; मटुप्प–अंदर भेजते हुए; कणिप्पु अरु–अपार; पुनल्–जल को; कटैयुर कुटित्तलिन्–पूर्ण रूप से पी लेने से; कान्तुम्–चमकीले; परु मणि–रत्नों के; तट कुप्पैकळ्–बड़े-बड़े ढेर; तयङ्कि–रहकर; मऱि कटल्–तीर से टकराकर मुड़नेवाली तरंगों का सागर; वॆन्तु–उबलकर; तणिप्पु अरु–दुर्दम; तळल्–आग; चॊरिन्तत पोन्ऱत–गिराते जैसे लगे। ५५८

अनगिनत शरों ने अपने रक्त-भरे मुख से चूसकर अपार जल को पूर्ण रूप से पी (सोख) लिया। तब चमकीले रत्नों के ढेर शोभा के साथ दिखायी दिये। तब तीर से टकराकर मुड़नेवाली तरंगों का सागर जलकर दुर्दम रीति से अंगारे छोड़ता-सा लगा। ५५८

ऍङ्गुम् वॅळ्ळिडै मडुत्तलि निळ्दुडै यिऩमीऩ्
शङ्ग मुङ्गऱि किळङ्गॅऩ विडैयिडै तळुवि
अङ्गम् वॅन्दुपे रळऱ्ऱिडै यडुक्किय किडन्द
पॊङ्गु नऩ्ऩॅडुम् बूतलऱ्प् पॊरित्तऩ पोऩ्ऱ 559

ऍङ्कुम्–सर्वत्र; वॅळ्ळिटै–खाली भूमि बनाते हुए; मटुत्तलिऩ्–जल को (राम-बाण के) पीने (सोख लेने) के कारण; इळुतु उटै–चर्बी से युक्त; इऩ मीऩ्–मीनराशियाँ; चङ्कमुम्–और शंख; कऱि किळङ्कु ऍऩ–तरकारी और कन्द के समान; इटै इटै तळुवि–बीच-बीच में लगे रहे; अङ्कम् वॅन्तु–अंग जलकर; पेर् अळऱ्ऱिटै–विस्तृत समुद्रपंक में; अटुक्किय किटन्त–परतें बने पड़े रहे; पॊङ्कुम्–उमगनेवाले; नल् नॅटु–अच्छे और विपुल; पुतल् अऱ–जल को सुखाने; पॊरित्तऩ पोऩ्ऱ–व्यंजन जैसे लगे। ५५९

सर्वत्र खाली मैदान बनाते हुए श्रीराम-शरों ने जल को सोख लिया। तब चर्बी-सहित मछलियाँ और शंख (व्यंजन के) साग और कन्द के समान लगे जो खूब पककर पंक के मध्य इधर-उधर पड़े रहे। उबलते जल को खूब उबालकर उसके अदृश्य हो जाने पर जैसे उबाला साग लगता है वैसा वह समुद्र (मछलियों आदि के साथ) दिखायी दे रहा था। ५५९

अदिरुम् वॅङ्गणै यॊन्ऱॊडॊन्ऱ् ऱडर्न्दॅरि युय्प्प
वॅदिरिऩ् वऩ्ऩॅडुङ् गाऩॅऩ वॅन्दऩ मीऩम्
पॊदुविऩ् मऩ्ऩुयिर्क् कुलङ्गळुम् तुणिन्दऩ पॊळिन्द
उदिर मुङ्गडल् तिरैहळुम् मॊरुवऩ वॊरुपाल् 560

अतिरुम्–शब्द करनेवाले; वॅम् कणै–भयंकर अस्त्र; ऒऩ्ऱॊटु ऒऩ्ऱु अटर्न्तु–एक-दूसरे से टकराकर; वल् वॅतिरिऩ्–सबल बाँस के; नॅटु काऩ् ऍऩ–विस्तृत जंगल के समान; ऍरि उय्प्प–आग प्रज्वलित करते हैं, इसलिए; ऒरु पाल्–एक ओर; मीऩम् वॅन्तऩ–मछलियाँ पकीं; पॊतुविऩ्–साधारण रूप से; मऩ् उयिर् कुलङ्कळुम्–जीवराशियाँ; तुणिन्तऩ–कटकर; पॊळिन्त–जो निकला; उतिरमुम्–वह रक्त; कटल् तिरैकळुम्–और सागर-तरंगें; मॊरुवऩ–टकराकर मिश्रित हुईं। ५६०

श्रीराम के रणित शर निरंतर आपस में टकराते हुए चले और बाँस के कानन की आग के समान आग फैल गयी। एक ओर मछलियाँ पकीं। तो दूसरी ओर सारे अन्य जीव भी छिन्न-भिन्न हुए और उनसे रक्त जो बहा वह सागर-लहरों के साथ टकराया और उनके साथ मिश्रित हो गया। ५६०

अण्णल् वॆङ्गणै यरुत्तिडत् तॆऱित्तॊऴुन् दळक्कर्प्
पण्णै वॆम्बुनऱ् पडप्पड नॆरुप्पॊडुम् बऱॆि
मण्णिल् वेरुऱप् पऱ्ऱिय नॆडुमरम् मऱ्ऱुम्
ऍण्णॆय् तोय्न्दॆन वॆरिन्दन विरुहरै मरुङ्गु 561

इरु करै मरुङ्कु–दोनों किनारों के पास; मण्णिल्–मिट्टी में; वेर् उऱ–जड़ खूब; पऱ्ऱिय–जमाए; नॆट्टु मरम्–(जो खड़े रहे) वे ऊँचे पेड़; अण्णल्–प्रभु के; वॆम् कणै–कठोर शरों के; अऱुत्तिट–काटने से; तॆऱित्तु ऍऴुन्तु–टुकड़े होकर छितरे; नॆरुप्पॊटुम् पऱ्ऱि–आग से दग्ध हुए; पण्णै अळक्कर्–छोटे जलाशय में बदले समुद्र का; वॆम् पुनल्–गरम जल; पटप् पट–ज्यों-ज्यों उन पर लगता; मऱ्ऱुम्–और भी; ऍण्णॆय् तोय्न्तु–तेल में सने हों, ऐसा; ऍरिन्तत–जले। ५६१

प्रभु श्रीराम के भयंकर बाणों ने दोनों किनारों के बद्धमूल ऊँचे तरुओं को काट दिया। वे टुकड़े-टुकड़े हुए और बिखरे। उनमें आग लगी। समुद्र छोटे पोखर के समान हो गया था। ज्यों-ज्यों उसका जल उन तरुखण्डों पर पड़ा, त्यों-त्यों वे तेल में सने-से जलने लगे। ५६१

तॆय्व नायहन् तॆरिहणै तिशैमुहत् तॊरुवन्
वॆवि दामॆनप् पिऴैप्पिल मनत्तितुङ् गडुह
वॆय्य वन्नॆरुप् पिडैयिडै पॊऱित्तॆऴ वॆऱिनीर्प्
पॊय्है तामरै पूत्तॆनप् पॊलिन्ददु पुणरि 562

तॆय्व नायकन्–देवाधिदेव श्रीराम (प्रेषित); तॆरि कणै–चुने हुए शर; तिचै मुकत्तु ऒरुवन्–चतुर्मुख ब्रह्मा का; वॆवु इतु आम्–शाप यह है; ऍन्न–जैसे; पिऴैप्पिल–अचूक; मनत्तितुम् कटुक–मन से भी तेज चले; वॆय्य–क्रूर; वल्–बड़ी; नॆरुप्पु–आग; इटै इटै–बीच-बीच में; पॊऱित्तु–अंगारे छोड़ते हुए; ऍऴ–उठी तो; पुणरि–समुद्र; वॆऱि नीर्–सुगन्धित जल-भरे; पॊय्कै–पोखर में; तामरै पूत्तु ऍन–कमल खिले हों ऐसा; पॊलिन्तत–शोभा। ५६२

देवाधिदेव श्रीराम से प्रेरित चुने हुए अस्त्र ब्रह्मा-शाप के समान अमोघ थे और मन से भी तेज और अचूक चले। तब भयंकर और विपुल आग छा गयी। वह अंगारे छोड़ते हुए ऊपर को उठी। तब समुद्र कमलपुष्पों-सह सरोवर के समान लगा। ५६२

शॆप्पिन् मेलवर् शीऱिनु मदुशिऱप् पादल्
तप्पु मेयदु कण्डनम् उवरियिल् तणिया
उप्पु वेलैयॆन् ऱुलहुरु पॆरुम्बऴि नीङ्गि
अप्पु वेलैवाय् निरैन्ददु कुरैन्ददो वळक्कर् 563

चॆप्पिन्–कहना हो तो; मेलवर् चीऱितुम्–साधु लोग गुस्सा करें तो भी; अतु चिऱप्पु आतल्–वह श्रेष्ठ बन जाता है; तप्पुमे–वह नहीं चूकता; अतु–उसे;

उवरियिल् कण्टतम्–समुद्र में देखा हमने; वेलै–समुद्र; तणिया उप्पु–अक्षय नमक है; ॲन्ऱु–ऐसी; उलकु उरु–लोक में हुई; पॅरु पळि–बड़ी निन्दा से; नीङ्कि–छूटकर; अप्पु–(शरों या) शुद्ध जल का; वेलै वाय्–समुद्र बन; निऱैन्ततु–भरपूर दिखा; अळक्कर्–समुद्र; कुऱैन्ततो–(परिमाण में) कम हो गया क्या। ५६३

सच कहा जाय तो बड़ों का कोप भी श्रेष्ठ (फलदायी) हो जाता है, यह मसल कभी झूठा होगा क्या ? इसको हम समुद्र के विषय में चरितार्थ होते देखते हैं। समुद्र अक्षय नमक का है ? यह निंदा उसे लगी थी। अब वह शुद्धजल-सागर बन गया। क्या समुद्र छोटा हो गया ? (अप्पुक्कडल् के अर्थ जलसागर और शर-समुद्र हैं।) । ५६३

तारै युण्डपे रणडङ्ग ळडङ्गलुम् ताऩे
वारि युण्डरुळ् शॅय्दवर् किदुवोरु वलियो
पारै युण्बदु पडर्पुऩ लप्पॅरुम् बरवै
नीरै युण्बदु नॅरुप्पॅनु मप्पोरु णिऱुत्ताऩ् 564

पारै–भूमि को; उण्पतु–खाने (गलाने) वाला है; पटर् पुऩल्–युगान्त में फैलता (प्रलय-) जल; अ पॅरु परवै नीरै–उस विशाल समुद्र के जल को; उण्पतु नॅरुप्पु–खाती है आग; ॲऩुम्–ऐसा; अ पॊरुळ्–(वेदोक्त) उस विषय को; निऱुत्ताऩ्–(श्रीराम ने) सुस्थापित कर दिया; तारै उण्ट–परतों पर परत के रूप में रहे; पेर् अण्टङ्कळ्–बड़े अण्डों; अटङ्कलुम्–सभी को; ताऩे वारि उण्ट–अकेले जिन्होंने उठाकर खाया और; अरुळ् चॆय्तवर्कु–उपकार किया उन्हें; इतु ओरु वलियो–यह कोई पराक्रमद्योतक कार्य है क्या। ५६४

युगान्त में भूमि को लील लेता है विस्तृत सागर-जल। उसको अनल सोख देता है। यह वेदोक्त तथ्य है। इस बात को श्रीराम ने उस दिन प्रमाणित कर दिया। क्यों नहीं करेंगे ? एक के ऊपर एक के क्रम से रहनेवाले सारे अण्डों को अपने उदरस्थ करके कृपा करनेवाले हैं वे ! उसके सामने यह काम भी कोई बलप्रदर्शक काम है क्या ? । ५६४

मङ्गलम् बॊरुन्दिय तवत्तु मादवर्
कङ्गुलुम् बहलुमक् कडलुळ् वैहुवार्
अङ्गमॅन् दिलरव ऱडिह ळॅण्णलार्
पॊङ्गुवॅङ् गऩलॅऩुम् बुऩलिर् पोयिऩार् 565

कङ्कुलुम्–रात और; पकलुम्–दिन; अ कटलुळ्–उस समुद्र में; वैकुवार्–रहनेवाले; मङ्कलम् पॊरुन्तिय–मंगलकारी; तवत्तु मातवर्–तपोवृद्ध; अवर् अटिकळ्–उनके श्रीचरणों का; ॲण्णलाल्–स्मरण करते हैं, इसलिए; अङ्कम् वॆन्तिलर्–दग्धांग न बने; पॊङ्कु–भभकनेवाले; वॆम् कऩल् ॲऩुम्–गरम पावक रूपी; पुऩलिल् पोयिऩार्–जल में चले। ५६५

उस समुद्र के अन्दर मंगलकारी तपस्या में लीन अनेक महातपस्वी

रात और दिन रहा करते थे। वे श्रीराम के चरणों का सदा स्मरण करते थे, इसलिए उनके अंग नहीं जले। वे उस भभकती आग में ऐसे बढ़ चले मानो ठण्डे जल में जा रहे हों! । ५६५

तॆऩ्ऱिशै कुडदिशै मुदल तिक्कॆलाऩ्, दुऩ्ऱिय पॆरुम्बुहैप् पडलञ् जुऱ्ऱलाऱ्
कऩ्ऱिय निऱत्तत कदिर वऩ्परि, निऩ्ऱत शॆऩ्ऱिल नॆऱियि ऩीङ्गित 566

तॆऩ् तिचै–दक्षिण दिशा; कुट तिचै–पश्चिमी दिशा; मुतल–आदि; तिक्कु ऎलाम्–सभी दिशाओं में; तुऩ्ऱिय–घना; पॆरुम् पुकै पटलम्–विपुल धूम्रपटल; चुऱ्ऱल् आल्–घेर गया, इसलिए; कतिरवऩ् परि–किरणमाली के (रथ के) अश्व; कऩ्ऱिय निऱत्तत–काले रंग के बने; नॆऱियिऩ् नीङ्कित–मार्ग से हट गये; चॆऩ्ऱिल–नहीं बढ़े; निऩ्ऱत–खड़े रह गये। ५६६

दक्षिण, पश्चिम आदि सभी दिशाओं में आग व्याप गयी। घना और विशाल धुआँ घेर गया। इस कारण सूर्य के रथ के अश्व काले पड़ गये। मार्ग से हट गये और एक दम रुककर खड़े हो गये। ५६६

पिरिन्दवर्क् कुरुतुय रॆऩ्ऩुम् बॆऱ्ऱियै
अऱिन्दिरुन् दऱिन्दिल रऩैय रामॆऩच्
चॆरिन्दतम् बॆडैहळैत् तेडित् तीक्कॊळ
मरिन्दऩ करिन्दऩ वाऩप् पुळ्ळॆलाम् 567

वाऩम् पुळ् ऎलाम्–आकाशचारी पक्षी सभी; चॆऱिन्त–अपने से लगे; तम् पॆटैकळै–मादा पक्षियों को; तेटि–ढूँढ़ते हुए; ती कॊळ–आग लगने से; पिरिन्तवर्क्कु–विरही; उऱु तुयर्–होनेवाला दुःख; ऎऩ्ऩुम् पॆऱ्ऱियै–जो है उसे; अऱिन्तिरुन्तु–(श्रीराम) जानते हैं तो भी; अऱिन्तिलर् अऩैयर्–नहीं जानते-से; आम्–हैं; ऎऩ–कहते हुए; मरिन्तऩ–आग में फँसे; करिन्तऩ–झुलसे। ५६७

आकाशचारी पक्षी सब अपने-अपने मादा पक्षी की खोज में उड़ते हुए यह कह रहे थे कि विरह-दुःख जानते हैं ये श्रीराम। तो भी अजान-से रहते हैं। बेचारे वे पक्षी आग से बच नहीं सके। उसमें गिरकर जल गये। ५६७

कमैयरु करुङ्गडर् कऩलि कॆपरऩ्
दमैवऩ मॊत्तपो दऱैय वॆण्डुमो
शुमैयुरु पॆरुम्बुहैप् पडलञ् जुऱ्ऱलाल्
इमैयव रिमैत्तऩर् वियर्प्पु मॆय्दिऩार् 568

कमै अऱु (श्रीराम की) सहनशीलता को जो तोड़ चुका वह; करु कटल्–काला सागर; कऩलिकॆ परऩ्तु–आग से व्याप्त होकर; अमै वऩम्–बाँस के वन; ऒत्तु पोतु–के समान जब बना; अऱैय वॆण्टुमो–(तब की विकट स्थिति) कहना है क्या;

चुमै उरु–भारी; पॅरु पुकै पटलम्–विपुल धूम्रपटल; चुऱ्ऱलाल्–घेर आया, इसलिए; इमैयवर्–अपलक देवों ने भी; इमैत्तनर्–आँखें झपकायीं; वियर्प्पुम् ऍय्तिनार्–पसीने-पसीने भी हो गये। ५६८

समुद्र ने श्रीराम को असहनशील बना दिया। उस पर आग फैल गयी और जलते बाँस के वन के समान हो रहा। फिर कहने को क्या है ? भारी और विपुल धूम्रपुंज घेर गया तो अपलक देव पलक झप गये और (अप्राकृतिक रूप से) स्वेदयुक्त भी हो गये। ५६८

पूच्चॅला दवणडै पोल्हि लामैयाल्, एच्चॅला मॅय्दिय ऑहिनम् यावैयुम्
तीच्चॅला नॅऱिपिऱि दिन्मै याऱ्ऱिशै, मीच्चॅला पुनलवन्पुहऴिन् वीन्दवाल् 569

पू चॅला–पुष्पों पर भी न जा सकनेवाली; अवळ् नडै–उस (सीताजी) की चाल; पोल् किलामैयाल्–के समान न हो सके, इसलिए; एच्चु ऍलाम् ऍय्तिय–निन्दा के वचनभाजन जो हुए; ऑकिनम् यावैयुम्–वे सभी हंसवृन्द; ती चॅला नॅऱि–अग्नि जहाँ नहीं गयी वह मार्ग; पिऱितु–अन्य; इन्मैयाल्–नहीं रहा, इसलिए; तिचै मी चॅला–दिशाओं में आगे बढ़ न पाकर; पुनलवन् पुकऴिन्–वरुणदेवता के यश के समान; वीन्त–मिट गये। ५६९

सीतादेवी के चरण पुष्प पर चलने से भी हिचकते थे। ऐसे चरणों वाली सीता की चाल की समानता नहीं कर सकने के कारण हंस निंदा के पात्र बने थे। उन बेचारों को अग्नि-रहित कोई मार्ग नहीं मिला। इसलिए उस आग में फँसकर वरुणदेव के यश के समान मिट गये। ५६९

पम्बुरु नॅडुङ्गडर् परवै यावैयुम्, उम्बरिऱ् चॅल्ललुर् ऱुरुहि वीऴ्न्दन
अम्बर मम्बरत् तेह लाऱ्ऱल, इम्बरि लुदिर्न्दन वॅरियु मॅय्यन 570

पम्पुरु–फैले पड़े रहे; नॅटु कटल्–विशाल समुद्र के; परवै यावैयुम्–सभी पक्षी; उम्परिल् चॅल्लल् उऱ्ऱु–आकाश में जाने लगे और; उरुकि वीऴ्न्तन–(आग में) पिघलकर गिरे; अम्परम्–मेघ; ऍरियुम् मॅय्यन–जलते शरीर के होकर; अम्परत्तु एक–आकाश में जाने में; आऱ्ऱल–असमर्थ हुए; इम्परिल् उतिर्न्तन–भूमि पर बिखर गये। ५७०

उस विशाल सागर के वासी पक्षीगण आकाश की ओर उड़ जाने लगे तो आग ने उन्हें झुलसा दिया। वे नीचे गिर गये। मेघ भी जलते शरीर वाले होकर आकाश में उठने में असमर्थ हुए और भूमि पर गिर गये। ५७०

पट्टन	पडपपडप्	पडाद	पुट्कुलम्
शुट्टुवन्	वॅरिक्कुलप्	पडलञ्	जुऱ्ऱलाल्
इट्टुऴि	यऱिहिल	विरियल्	पोवन
मुट्टॅयॅन्	ऱॅडुत्तन	वॅऴुत्त	मुत्तॅलाम् 571

चुट्टु–जलाते हुए; वन्तु–आकर; ऎरि कुलम् पटलम्–अग्निपुंज; चुऱ्ऱलाल्–आ घेरा, इसलिए; पट्टन–मरे (पक्षी); पट पट—ज्यों-ज्यों मरे; पटात पुळ् कुलम्–जो नहीं मरे वे पक्षी-समूह; इरियल् पोवन–भागते गये; इट्टुऴि–(अण्डे जहाँ रखे गये) वह स्थान; अऱिकिल–न जान पाए; वॆळुत्त मुत्तु–श्वेत रहे मोतियों; ऎलाम्–सभी को; मुट्टै ऎन्ऱु–अण्डे मानकर; ऎटुत्तन–उठा लिये। ५७१

आग जलाती हुई फैल रही थी। दग्ध पक्षी गिरते जाते थे। जो अब तक नहीं जले थे, वे यह भूल गये कि अण्डे कहाँ दिये हैं। उन्होंने श्वेत मोतियों को अण्डे समझकर उठा लिया। ५७१

वळ्ळलैप् पाविदान् मनिद नॆन्ऱुडन्
ऎळ्ळलुऱ् ऱॆदिर्न्दिल नॆऴु नाळॆना
वॆळ्ळिवॆण् पऱ्कळैक् किऴित्तु विण्णुऱत्
तुळ्ळलुऱ् ऱिरिन्दन कुरङ्गिन् शूऴले 572

कुरङ्किन् चूऴल्–वानरवृन्द; पावि तान्–पापी (वरुण); वळ्ळलै–प्रभु को; मनितन् ऎन्ऱु–नर समझकर; उटन्–साथ-साथ; ऎळ्ळल् उऱ्ऱु–उपेक्षा करके; एऴु नाळ्–सात दिन तक; ऎतिर्न्तिलन्–सामने नहीं आया; ऎना–कहकर; वॆळ्ळि–रजत-सम; वॆण् पऱ्कळै–श्वेत दाँतों को; किऴित्तु–निकोसकर; विण् उऱ–आकाश तक; तुळ्ळल् उऱ्ऱु–उछलकर; इरिन्तन–अस्तव्यस्त हुए। ५७२

वानरों को वरुण पर खीझ हो गयी। उदार प्रभु श्रीराम को साधारण नर समझ लिया इस पापी वरुण ने। उसके मन में उपेक्षा का भाव हो गया। इसलिए सात दिनों से विलम्ब कर रहा है! वे अपने धवल दाँतों को निकोसकर आकाश पर उछले और अस्त-व्यस्त हो इधर-उधर भागे। ५७२

तानॆडुन् दीमैह ळुडैय तन्मैयर्, मानॆडुङ् गडलिडै मऱैन्दु वैहुवार्
तूनॆडुङ् गुरुदिवेल् अवुणर् तुञ्जिनार्, मीनॆडुङ् गुलमॆन मिदन्दु वीङ्गिनार् 573

नॆटु तीमैकळ्–अधिक बुराइयाँ; ताम् उटैय तन्मैयर्–स्वयं करने के स्वभाव वाले; मा नॆटु–अधिक विशाल; कटल् इटै–समुद्र में; मऱैन्तु वैकुवार्–छिपकर रहनेवाले; तू नॆटु कुरुति–मांस-लिप्त रक्तमय; वेल् अवुणर्–मालाधारी दानव; तुञ्चिनार्–मरे; मीन् नॆटु कुलम् ऎन–मछलियों के विशाल समूहों के समान; मितन्तु–उतराते हुए; वीङ्किनार्–सूजकर मोटे बने। ५७३

उस बड़े समुद्र के अन्दर दानव भी थे, जो पापकारी स्वभाव के थे। मांस-रक्तलिप्त भालाधारी वे मरे और मछलियों के झुंडों के समान तिरे और उनके शरीर सूजे थे। ५७३

तशुम्बिडै विरिन्दन वॆन्नुन् दारैय
पशुम्बॊनिन् मानङ्गळ् उरुहिप् पायन्दन

अशुम्बरु वरन्दत्त वान वारॅलाम्
विशुम्बिडै विळङ्गिय मीनुम् वॅन्दवे 574

पचुम् पॉत्तिन् मानङ्कळ्–चोखे स्वर्ण के यान; तचुम्पु–घड़े; इटै विरिन्तत–बीच से टूटे; ॲन्तुम् तारॅय–जैसी स्थिति में आकर; उरुकि–बाद पिघलकर; पायन्तत–बहे; वात आरु ॲलाम्–आकाशगंगा-जल सारा; अचुम्पु अरु–बिलकुल आर्द्रता खोकर; वरन्तत–सूख गया; विचुम्पु इटै–आकाश में; विळङ्किय मीतुम्–जो रहे वे नक्षत्र भी; वॅन्तवे–पक गये। ५७४

वहाँ के यान स्वर्ण-निर्मित थे। पहले फूटे घड़ों के समान वे बीच से चिरे। फिर पिघले और पिघला स्वर्ण बहने लगा तो आकाश-गंगा का जल सूख गया। आकाश के नक्षत्र भी पक गये। ५७४

शॅरिवुरु शॅम्मैय तीयै योम्बुव
नॅरियुरु शॅलविन तवत्ति नीण्डन
उरुशिन मुरप्पल वुरुवु कॉण्डन
कुरुमुनि यॅनक्कडल् कुडित्त कूर्ङ्गणै 575

कूर् कणै–तीक्ष्ण शरों ने; कुरु मुनि–नाटे (अगस्त्य) मुनि; ॲन–जैसे; चॅरिवुरु चॅम्मैय–संयुक्त तटस्थता के साथ; तीयै ओम्पुव–अग्निपालक; नॅरि उरु चॅलविन–धर्मपथगामी; तवत्तिन् नीण्टत–तपस्या के कारण उत्तम; उरु चितम् उर–अधिक कोप होने पर; पल उरुवु कॉण्टत–अनेक रूप लेनेवाले बनकर; कटल् कुटित्त–समुद्र को पी (सोख) लिया। ५७५

श्रीराम के शरों और नाटे मुनि अगस्त्य में समानता हो गयी। (श्लेष के आधार पर) दोनों तटस्थ थे, अग्निपालक थे रुजु मार्गगामी थे; तपस्या से उत्कृष्ट बने थे; गम्भीर क्रोध के कारण अनेक रूप अपना सकनेवाले थे। आखिर समुद्र को पीने (सोखने) में भी वे एक-सम निकले। ५७५

मोदलङ् गनैहडन् मुरुक्कुम् तीयिनाऱ्, पूदलङ् गावॉडु मॅरिन्द पॉन्मदिल्
वेदलु मिलङ्गैयुम् मीळप् पोयिन, तूदन्वन् दानॅनत् तुणुक्कम् कॉण्डदाल् 576

मोतल्–टकरानेवाले; अम्–सुन्दर; कनै कटल्–गरजते सागर में; मुरुक्कुम् तीयिताल्–सर्वभक्षक आग से; पॉन् मतिल्–स्वर्ण का प्राचीर; वेतलुम्–जलने लगा तो; पूतलम् कावॉटुम् ॲरिन्त–(जिस लंका की) भूमि अशोकवन के साथ जली थी; इलङ्कैयुम्–लंका (के सारे वासी) भी; पोयित तूतन्–निर्गत दूत (हनुमान); मीळ वन्तान् ॲन–फिर से लौट आया, समझ; तुणुक्कम् कॉण्टतु–दहल उठे। ५७६

तीर से टकरानेवाली लहरोंदार समुद्र में सर्वदाहक आग लगी तो उससे स्वर्ण-प्राचीर जल उठा। भूमि अशोक वन के साथ जल गयी।

तब लंकावासी यह सोचकर भयभीत हो गये कि क्या श्रीराम का दूत जो चला गया था फिर से लौट आया है ? । ५७६

अरुक्कत्ति लॉळिविड्ड माड हक्किरि
युरुक्कॅन्न वुरुहित्त वुदिरन् दोय्न्दन
मुरुक्कॅन्नच् चिवन्दन मुरिय वॅन्दन
करिक्कुवै निहर्त्तन पवळक् काडॅलाम् 577

अरुक्कत्तिल्–सूर्य के समान; ऑळि विट्टम्–प्रकाश छिटकानेवाली; आटकम् किरि–हाटकगिरि की चट्टानें; उरुक्कु ॲन्न–पिघलते स्वर्ण के समान; उरुकित्त–पिघलीं; उतिरम् तोय्न्तत–रक्त-जमी हो गयीं; मुरुक्कु ॲन्न–काँटेदार पलाश के फूलों के समान; चिवन्तन–लाल हुईं; पवळम् काटु–प्रवालवन; ॲलाम्–सभी; मुरिय–रंग बदलकर; वॅन्तन–जले; करि कुवै–कोयलों के ढेर; निकर्त्तन–के समान रहे। ५७७

त्रिकूट की हाटक-गिरि, जो सूर्य के समान चमक रही थी, पिघल गयी और रक्तरंजित-सी लगी। कँटीले पलाश के फूलों के समान लाल बन गयी। प्रवाल वन सभी बिलकुल झुलस गये और कोयलों के-से ढेर बन गये। ५७७

पेरुडैक् किरियॅन्नप् पॅरुत्त मीन्गळुम्
ओरिडत् तुयिर्दरित् तॉदुङ्ग हिर्ड्रिल
नीरिडैप् पुहुन्जिल नॅरुप्पु नन्रॅन्नाप्
पारिडैक् कुदित्तन पदैक्कु मॅय्यन 578

पेर् उटै–गौरवयुक्त; किरि ॲन्न–गिरियों के समान; पॅरुत्त मीन्कळुम्–मोटी मछलियाँ भी; ओर् इटत्तु–एक स्थान पर; उयिर् तरित्तु–जीवधारण करके; ऑतुङ्क किऱ्ऱिल–हटकर खड़े नहीं रह सके; नीर् इटै–जल के अन्दर; पुकुम् चिल–कुछ घुसीं; नॅरुप्पुम्–आग ही; नन्ऱु–ठीक होगी; ॲन्ना–कहकर; पतैक्कुम्–तड़पते; मॅय्यन–शरीर वाले बने; पार् इटै–भूमि पर; कुतित्तन–कूदीं। ५७८

प्रसिद्ध गिरियों के समान मोटी मछलियाँ कहीं भी एक ओर जीवधारण करके ठहर नहीं सकी और जल में डूबीं। पर उन्हें लगा कि आग ही इससे अच्छी है। इसलिए तड़पते हुए वे भूमि पर उछल पड़ीं। ५७८

शुरुळहडर् ड्रिरैहळैत् तॉलैय वुण्डनल्
परुहिडप् पुनलिल पहळि पारिडम्
मरुळ्हॉळप् पडर्वन नाहर् वैप्पॅयुम्
इरुळ्हॅडच् चॅन्रन विरवि पोल्वन 579

पकऴि–(श्रीराम के) बाणों के; चुरुळ् कटल्–लुढ़कती तरंगों के समुद्र की; तिरंकळै–लहरों को; तोलैय उण्ट्–निपट पी लेने से; अऩल् परुकिट–आग के पीने के लिए; पुऩल् इल–जल नहीं रहा तो; पारिटम्–भूलोकवासियों को; मरुळ् कोळ–मोहित होने देते हुए; पटर्वऩ–आगे चले; नाकर् वैप्पैयुम्–नागों के लोक को; इरवि पोल्वऩ–सूर्य के समान; इरुळ् कॅट–अँधेरा मिटाते हुए; चॅऩ्ऱऩ–चले। ५७८

श्रीराम के बाणों ने घूर्णनशील समुद्र-तरंगों को बिलकुल सोख लिया। फिर सोखने को पानी नहीं रहा। इसलिए वे बाण भूलोकवासियों को भ्रमित होने देते हुए आगे बढ़े और सूर्य के समान अँधेरा मिटाते हुए नागलोक में पहुँचे। ५७९

करुम्बुऱक् कडल्हळो डुलहङ् गाय्च्चिय
इरुम्बुऱच् चॅल्वऩ विऴुव कीऴुऱ
अरुम्बुऱत् तण्डत्तै युरुवि यप्पुऱम्
पॅरुम्बुऱक् कडलैयुम् तॊडर्न्दु पिऩ्शॅल्व 580

करु पुऱ–काले बाह्य के; कटल्कळोट्–समुद्र के साथ; उलकम् काय्च्चिय–लोक को जलाते हुए; इरुम्पु उऱ–लोहे के समान; चॅल्वऩ–जानेवाले; कीऴ् उऱ–नीचे की ओर; विऴुव–गिरनेवाले; अरु पुऱत्तु–अभेद्य बाह्य वाले; अण्टत्तै–इस अण्ड को; उरुवि–भेदकर; अप्पुऱम्–पश्चात्; पॅरुम् पुऱ कटलैयुम्–बड़े बाह्य सागरों पर भी; तॊटर्न्तु पिऩ् चॅल्व–लगकर पीछा करते चले। ५८०

श्रीराम के बाण सतह के काले समुद्रों और भूतल को जलाते हुए लोहे की तरह नीचे की ओर गये। इस अण्ड को भेदकर चले और विशाल बाह्य सागर का भी पीछा किया। ५८०

तिडल्दिऱन् दुहुमणित् तिरळ्हळ् शेणिलम्
उडल्दिऱन् दुदिरम्वन् दुहुव पोऩ्ऱऩ
कडल्दिऱन् देङ्ङणुम् वऱ्ऱ वक्कडल्
कुडल्दिऱन् दऩ्ऩवॆऩक् किडन्द कोळरा 581

तिटल् तिऱन्तु–बालू के पुलिन खुल आये; उकु मणि तिरळ्कळ्–छितरे पड़े रत्नों की राशियाँ; चेण् निलम्–ऊँची भूमि; उटल् तिऱन्तु–विद्धशरीर हो; उतिरम् वन्तु–रक्त आकर; उकुव–निकलता; पोऩ्ऱऩ–जैसे दिखीं; कटल्–समुद्र; तिऱन्तु–किनारा तोड़कर; ऍङ्ङणुम्–सर्वत्र; वऱ्ऱ–जल सूख जाने से; कोळ् अरा–प्राणघातक सर्प; अ कटल्–उस समुद्र की; कुटल् तिऱन्तऩ ॲऩ–आँतें खुली पड़ी हों जैसे; किटन्त–पड़े रहे। ५८१

जल के सूखने से समुद्र-मध्य इधर-उधर पुलिन खुल आये। वहाँ रत्नों की राशियाँ छितरी पड़ी थीं। उनको देखकर ऐसा लगा मानो श्रेष्ठ भूमि का शरीर चिर गया हो और रक्त बह रहा हो। समुद्र-तल

भी खुल आया था और घातक साँप, जो वहाँ पड़े रहते थे, भूमि की उघड़ी आँतों के समान दिखे। ५८१

आऴियिऱ् पुनलऱ मणिह ळट्टिय, पेऴैयिऱ् पॊलिन्दन परवै पेरुऱप्
पूऴैयिऱ् पॊरुहणे युरुवप् पुक्कन, मूऴैयिऱ् पॊलिन्दन मुरलुम् वॆळ्वळै 582

आऴियिल्–समुद्र में; पुनल् अऱ–जल के सूखने से; परवै–समुद्र; पेरु उऱ–भाग्यवान; मणिकळ् अट्टिय–रत्नों से भरे; पेऴैयिल्–सन्दूकों के समान; पॊलिन्तन–शोभे; पूऴैयिल्–द्वारों में; पॊरु कणै–भिड़नेवाले शर; उरुव पुक्कन–निफरकर घुसे; मुरलुम् वॆळ् वळै–रणनशील श्वेत शंख; मूऴैयिल्–कलछी के समान; पॊलिन्तन–दिखायी दिये। ५८२

समुद्र में जल सूख गया, इसलिए रत्नाकर वैभवसूचक नवरत्न-भरे संदूकों के समान लगे। सफ़ेद शंखों में बाण घुसे थे। उन बाणों के साथ वे शंख कलछियों के समान दिखे। ५८२

निन्ऱुनू ऱायिरम् पहऴि नीट्टलाल्, कुन्ऱुनू ऱायिरङ् गोडि यायिन
शॆन्ऱुतेय् वुऱुवरो पुलवर् शीऱिनुम्, ऒन्ऱुनू ऱायिन वुवरि मुत्तॆलाम् 583

निन्ऱु–(जोश के साथ) खड़े होकर; नूऱायिरम् पकऴि–लाख शरों को; नीट्टलाल्–चलाने से; कुन्ऱु–पर्वत; नूऱायिरम् कोटि आयिन–सौ सहस्र कोटि (लाखों) बने; उवरि मुत्तु ऎलाम्–समुद्र में रहे मोती सभी; ऒन्ऱु नूऱायिन–एक-एक अनेक हुए; पुलवर्–विद्वान्; चीऱिनुम्–कोप करे तो; चॆन्ऱु–जाकर; तेय्वु उऱुवरो–क्षीणता को प्राप्त होंगे (कोपभाजन बने जो, वे) क्या। ५८३

श्रीराम ने जोश के साथ खड़े होकर एक लाख शर चलाये। उनके लगने से पर्वत सहस्र-सहस्र हो गये। समुद्र के मोती एक-एक अनेक हो गये। साधु के कोप के पात्र क्या कभी परिमाण में कम होंगे? (पर्वत आदि खण्ड-खण्ड हुए। विद्वान् साधू लोग कोप भी करते हैं तो उनके कोप के कारण किसी का क्षय नहीं होता, कोई कमी नहीं होती! ये दोनों बातें इस पद्य में चातुर्य के साथ बतायी गयी हैं।)। ५८३

शूडुपॆऱ् ऱैयने तॊलैक्कु मन्नुयिर्, वीडुपॆऱ् ऱनविडै मिडैन्द वेणुविन्
काडुपऱ् ऱियपॆरुङ् गनलि कैपरन्, दोडियुऱ् ऱदुनॆरुप् पुवरि नीरॆलाम् 584

ऐयन् ए–नायक (श्रीराम के) शर से; चूटु पॆऱ्ऱु–तपकर; तॊलैक्कुम् मन् उयिर्–मिटनेवाले शाश्वत जीव; वीटु पॆऱ्ऱन–मोक्ष को प्राप्त हो गये; इटै–समुद्र-मध्य; मिटैन्त–घने; वेणुविन् काटु–बाँसों के वन में; पऱ्ऱिय पॆरु कनलि–लगी बड़ी आग; कै परन्तु–पार्श्वों में फैली; नॆरुप्पु–आग; उवरि नीर् ऎलाम्–समुद्र के सारे जल में; ओटि उऱ्ऱतु–फैलकर लगी। ५८४

प्रभु-शरों से जलकर मिटनेवाले जीव मोक्ष पहुँच गये। समुद्र में घने वेणुवन में लगी आग सब जगह और समुद्र के जल पर जा फैली। ५८४

कालवान् कडुङ्गणै शुऱ्ऱुङ् गव्वलाल्
नीलवान् तुहिलिनै नीक्किप् पूनिऱक्
कोलवान् कऴिनॆडुङ् गूऱै शुऱ्ऱिऩाळ्
पोलमा निलमहळ् पॊलिन्दु तोऩ्ऱिऩाळ् 585

कालम्–कालदेव-से; वाऩ्–श्रेष्ठ; कटु कणै–क्रूर शर; चुऱ्ऱम्–चारों ओर से; कव्वलाल्–लग गयी, इसलिए; मा निलमकळ्–भूमिदेवी ने; नील–नीले; वाऩ् तुकिलिनै–आकाश रूपी वस्त्र को; नीक्कि–हटाकर; पू निऱम् कोलम्–पुष्पवर्ण सुन्दर; वाऩ् कऴि नॆटु–श्रेष्ठ व बहुत लम्बे; कूऱै चुऱ्ऱिऩाळ् पोल–साड़ी लपेट ली जैसे; पॊलिन्तु तोऩ्ऱिऩाळ्–शोभायमान दिखी। ५८५

कालदेवता (यम) के समान क्रूर शर सर्वत्र जा लगे तो भूमिदेवी ऐसा शोभी, मानो उसने अपने नीले आकाश रूपी वस्त्र को हटाकर पुष्पवर्ण, चित्रमय व बहुत लम्बी साड़ी पहन ली हो। ५८५

कऱ्ऱवर् कऱ्ऱव रुणर्वु काण्गिलर्
कॊऱ्ऱवऩ् पडैक्कलङ् गुडित्त वेलैविट्
टुऱ्ऱुयिर् पडैत्तॆऴुन् दोड लुऱ्ऱदाल्
मऱ्ऱॊरु कडऱ्पुह वडवैत् तीयरो 586

कऱ्ऱवर्–विद्वान्; कऱ्ऱवर् उणर्वु–अन्य विद्वानों की समझदारी को; काण् किलर्–नहीं देखते (सहवास नहीं करते); वटवै ती–बड़वाग्नि: कॊऱ्ऱवऩ् पटै कलम्–श्रीराजाराम के अस्त्रों से; कुटित्त वेलै विट्ट–पीत समुद्र को छोड़कर; उऱ्ऱु उयिर् पटैत्तु–साहस तैयार करके; मऱ्ऱु ऒरु कटल्–अन्य एक सागर में; पुक–घुसने; ऎऴुन्तु–उठकर; ओटल् उऱ्ऱतु–भागने लगी। ५८६

विद्वान् अन्य विद्वान् की विद्वत्ता को नहीं सहते। उसी भाँति बड़वाग्नि (ईर्ष्या करके) श्रीरामशरपीत समुद्र को छोड़ जोर से उठकर दूसरे समुद्र में जाने के विचार से भागने लगी। ५८६

वाऴिय रुलहिनै वळैत्तु वानुऱच्
चूऴिरुम् पॆरुञ्जुडर्प् पिऴम्बु तोऩ्ऱलाल्
ऊऴियि नुलहॆला मुण्ण वोङ्गिय
आऴियिऱ् पॊलिन्ददव् वाऴि यत्तनाळ् 587

उलकिनै वळैत्तु–भूमि को घेरकर; वाऩ् उऱ–आकाश में भी लगकर; चूऴ्–घेरनेवाली; इरु पॆरु चुटर् पिऴम्पु–बहुत बड़ी आग का पुंज; तोऩ्ऱलाल्–प्रकट हुआ तो; अ आऴि–वह सागर; ऊऴियिऩ्–युगान्त में; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों को; उण्ण–समा लेने; ओङ्किय–जो बढ़ आता है उस; आऴियिल्–समुद्र के समान; अत्त नाळ्–उस दिन; पॊलिन्ततु–शोभा। ५८७

भूमि और आकाश —दोनों में पूर्ण रूप से आग फैल गयी। तब वह समुद्र युगान्तकालीन सर्वग्रासी प्रलय-प्रवाह के समान दिखा। ५८७

एनैय रंऩ्ऩवे रुलहि ऩीण्डिऩार्, आऩवर् शॅय्दऩ वरैय वेण्डुमो
मेऩिमिर्न् दॅऴुहऩल् वॅदुप्प मीदुपोय्, वाऩवर् मलरय ऩुलहिऩ् वैहिऩार् 588

वाऩवर्–देव; मेल् निमिर्न्तु–ऊपर की ओर सीधे; ॲऴु कऩल्–उठनेवाली आग के; वॅतुप्प–झुलसाने से; मीतु पोय्–और ऊपर जाकर; मलर् अयऩ् उलकिऩ्–कमलासन उसके लोक में; वैकिऩार्–ठहरे; एऩैयर् ॲऩ्ऩ–अन्य; वेऱु उलकिऩ् ईण्टिऩार् आऩवर्–दूसरे लोकों में एकत्रित लोग जो थे वे; चॅय्तऩ–क्या करते रहे; अऱैय वेण्टुमो–कहना चाहिए क्या। ५८८

स्वयं देवगण आग से झुलसकर और ऊपर जाकर ब्रह्मा के लोक में रहे। फिर अन्य लोकों के वासियों की क्या हालत थी, वह भी कहना होगा क्या ?। ५८८

इडुक्किऩै यॅण्णुव दॅऩ्ऩै यीण्डिऩि, मुडुक्कुवऩ् वरुणऩै यॅऩ्ऩ मूण्डॅऴु
तडुक्करु वॅहुळियाऩ् शदुमु हऩ्बडै, तॊडुत्तऩ ऩमररुन् दुणुक्क मॅय्दिऩार् 589

ईण्टु–यहाँ; इटुक्किऩै ॲण्णुवतु–संकट के सम्बन्ध में सोचना; ॲऩ्ऩै–क्यों; इऩि–अब; वरुणऩै मुटुक्कुवऩ् ॲऩ्ऩ–वरुण को इधर झट आने को मजबूर करूँगा, ऐसा; मूण्टु ॲऴु–उमंग जो उठा; तटुक्क अरु–दुर्दम; वॅकुळियाऩ्–रोष से भरे श्रीराम ने; चतुमुकऩ् पटै–ब्रह्मास्त्र; तॊटुत्तऩऩ्–संधाना; अमररुम्–देव भी; तुणुक्कम् ॲय्तिऩार्–भयभीत हुए। ५८९

अब संकट की बात क्या सोचें ? श्रीराम ने यह कहते हुए कि "वरुण को इधर आने को मजबूर करूँगा", चतुर्मुख ब्रह्मा का अस्त्र अपने धनु में संधान लिया। श्रीराम का गुस्सा दुर्दम रीति से उमड़ आया देखकर देव दहल उठे। ५८९

मऴैक्कुलङ् गदऱिऩ वरुणऩ् वायुलर्न्, दऴैत्तऩ ऩुलहिऩि लडैन्द वाऱॅलाम्
इऴैत्तऩ नॅडुन्दिशै यादुम् यावरुम्, पिऴैप्पिल रॅऩ्बदोर् पॆरुम्ब यत्तिऩाल् 590

मऴैक्कुलम्–मेघराशियाँ; कतऱिऩ–शोर मचा उठे; वरुणऩ्–वरुण ने; वाय् उलर्न्तु–मुख सूखकर; अऴैत्तऩऩ्–टेर लगायी; उलकिऩिल्–लोक भर में; आऱु ॲलाम्–सारी नदियाँ; तूर्न्तऩ–पट गयीं; नॅटु तिचै–लम्बी दिशाओं में; यातुम् यावरुम्–सभी जीव और सभी मनुष्य; पिऴैप्पिलर्–बचनेवाले नहीं; ॲऩ्पतु ओर्–ऐसे एक; पॆरुम् पयत्तिऩाल्–बड़े भय से; इऴैत्तऩ–सोच में पड़ गये। ५९०

तब मेघकुल चिल्ला उठे। वरुण का मुख सूख गया और उसने दुहाई दी। भूमि की सारी नदियाँ पट गयीं। सभी दिशाओं के सभी

जीव और मानव भय के साथ सोचने लगे कि हमें अभी वचना असम्भव है। ५९०

अण्डमू लत्तुक् कप्पाल् आळियुङ् गॉदित्त देळु
तॅण्डिरैक् कडलिन् शॅय्है शॅप्पियॅन् त्रेवन् शॅन्निप्
पण्डैना ळिरुन्द गङ्गै नङ्गैयुम् पदैत्ताळ् पार्प्पान्
कुण्डिहै यिरुन्द नीरुङ् गुळुगुळु कॉदित्त दन्रे 591

अण्ट मूलत्तुक्कु अप्पाल्–अण्डमूल के पार भी; आळियुम् कॉतित्तत्तु–समुद्र खौल उठा; एळु–सात; तॅळ् तिरै कटलिन्–स्वच्छ लहरों वाले समुद्रों के; चॅय्कै–हाल का; चॅप्पि ॲन्–कहना क्यों; तेवन्–शिवदेव के; चॅन्नित्–सिर पर; पण्टै नाळ्–प्राचीन काल से; इरुन्त–जो रहती है वह; कङ्कै नङ्कैयुम्–गंगादेवी भी; पतैत्ताळ्–छटपटायीं; पार्प्पान्–ब्राह्मण (ब्रह्मा) के; कुण्टिकै–कमण्डल में; इरुन्त नीरुम्–जो जल रहा वह भी; कुळु कुळु–'गुळु-गुळु' शब्द करते हुए; कॉतित्तत्तु–खौला। ५९१

इस अण्डगोल के मूल के नीचे फैला रहनेवाला आवरण —समुद्र भी उबला। फिर स्वच्छ लहरों वाले सात समुद्रों की हालत क्या कहें? शिवदेव के शीर्षस्था पुरातन गंगादेवी भी सहम गयीं। ब्राह्मणोत्तम ब्रह्मा के कमण्डल का जल भी 'गुळु-गुळु' शब्द के साथ खौल उठा। ५९१

इरक्कम्वन् दॅदिर्न्द कालत् तुलहॅला मीन्रु मीळक्
करक्कुना यहनैत् तानु मुणर्न्दिलन् शीर्रङ् गण्डुम्
वरक्करु दादु ताळ्त्त वरुणनिन् मारु कॉण्डार्
अरक्करे नल्ल रॅन्ना वरिज्ञरु मलक्क णुर्रार् 592

इरक्कम् वन्तु–करुणा आकर; ॲतिर्न्त कालत्तु–जब प्रकट होती है तब; उलकु ॲलाम् ईन्रु–सारे लोकों को जन्म देकर; मीळ–फिर; करक्कुम्–तिरोहित करनेवाले; नायकनै–नायक श्रीराम को; तानुम् उणर्न्तिलन्–(वरुण) स्वयं नहीं पहचानता; चीर्रम् कण्टुम्–उनका क्रोध देखकर भी; वर करुतातु–आने की बात नहीं सोचकर; ताळ्त्त–विलम्ब जो करता है उस; वरुणनिन्–वरुण से; मारु कॉण्टार्–विरोधी; अरक्करे–राक्षस; नल्लर्–अच्छे हैं; ॲन्ना–ऐसा; अरिज्ञरुम्–ज्ञानी लोग भी; अलक्कण् उर्रार्–दुःखी हुए। ५९२

"(जीवों के प्रति) करुणाभाव के उदित होते ही लोकों को प्रकट कराके फिर तिरोहित करनेवाले श्री जगन्नाथ रामचन्द्रजी को वरुण खुद पहचान नहीं सका। उनका क्रोध देखकर भी वह आने का विचार न करके विलम्ब कर रहा है। इस वरुण से विरोधी राक्षस ही भले हैं।" ज्ञानी लोग ऐसा विचार करके दुःखी हो रहे थे। ५९२

उऱ्ऱॊरु तऩियेतातॆ तऩ्गणे युलह मॆल्लाम्
पॆऱ्ऱवऩ् मुऩियप् पुक्काऩ् नडुविऩिप् पिळैप्प दॆङ्ङऩ्
कुऱ्ऱमॊऩ् ऱिलादोर् मेलुङ् गोळ्वरक् कुरुहु मॆऩ्ऩा
मऱ्ऱैय पूद मॆल्लाम् वरुणऩै वॆद मादो 593

ऑरु तऩियेे–अकेले ही; ताऩे उऱ्ऱु–स्वयं सोचकर; तऩ् कणे–अपने में ही; उलकम् ऍलाम् पॆऱ्ऱवऩ्–जिन्होंने सारे लोकों को स्थिति दी; मुऩिय पुक्काऩ्–(वे परात्पर श्रीराम) गुस्सा हुए; इऩि–इसके; नटु–मध्य में; पिळैप्पतु ऍङ्ङऩ्–बचना कैसा; कुऱ्ऱम् ऑऩ्ऱु इलातोर्–निरपराध; मेलुम्–(लोगों) पर भी; कोळ् वर कुरुकुम्–संकट आ पड़ेगा; ऍऩ्ऩा–कहकर; मऱ्ऱैय पूतम् ऍलाम्–अन्य सभी भूतों ने; वरुणऩै वॆत–वरुण को कोसा। ५९३

"आप अकेले इच्छा करके अपने में ही यह प्रपंच प्रकट कराते हैं ये परात्पर श्रीराम। ये कुपित हो रहे हैं। अब बचना कैसा? निरपराधों पर भी न बन आयगी!" ऐसा विचार कर अन्य भूतों ने वरुण को कोसा। ५९३

ऍळुशुडर्प् पडलै योडुम् इरुम्बुहै यॆळुम्बि यॆङ्गुम्
वळिदॆरि वरिवि लाद नोक्किऩऩ् वरुण ऩॆऩ्बाऩ्
अळुदळि कण्ण ऩऩ्बा लुरुहिय नॆञ्ज ऩञ्जित्
तॊळुदॆळु कैय ऩॊय्दिऱ् ऱोऩ्ऱिऩऩ् वळुत्तुञ् जॊल्लाऩ् 594

ऍळु–ऊपर उठनेवाली; चुटर् पटलै योटुम्–आग की लपटों के साथ; इरु पुकै ऍळुम्पि–काला धुआँ भी उठा; वऴि तॆरिवु–मार्गज्ञान; अऱिविलात–न रखनेवाली; नोक्किऩऩ्–दृष्टि वाला; वरुणऩ् ऍऩ्पाऩ्–वरुण जो था; अऴुतु अऴि–रोने से सौंदर्यरिक्त; कण्णऩ्–नेत्रों वाला; अऩ्पाल् उरुकिय–स्नेहार्द्र; नॆञ्चिऩऩ्–मन वाला; अञ्चि–डरकर; तॊऴुतु ऍऴु–नमस्कार करके उठनेवाले; कैयऩ्–हाथों वाला; वऴुत्तुम् चॊल्लाऩ्–स्तुति करनेवाला; नॊय्तिऩ्–झट; तोऩ्ऱिऩऩ्–प्रकट हुआ। ५९४

आग की भयंकर ज्वालाओं के साथ काले धुएँ के पटल भी उठे। इसलिए वरुण की आँखें देख न पायीं। वह रो रहा था। अतः नेत्र सौंदर्यहीन हो रहे थे। उसका मन प्रेमार्द्र था। भय से वह नमस्कार करके अपने हाथ उठाए, स्तुति के शब्द उच्चारण करते हुए श्रीराम के सामने झट प्रगट हो गया। ५९४

नीयॆऩै निऩैन्द तऩ्मै नॆडुङ्गडऩ् मुडिवि ऩिऩ्ऱेऩ्
आयिऩे नऱिन्दि लेऩॆऩ् ऱण्णलुक् कयिर्प्पु नीङ्गक्
कायॆरिप् पडलै शूळ्न्द करुङ्गडऱ् ऱरङ्गत् तूडे
तीयिडै नडप्पाऩ् बोलच् चॆऱिपुऩऱ् किऱैवऩ् शॆऩ्ऱाऩ् 595

नॅट्टु कटल् मुटिविन्–विशाल सागर के एक छोर पर; निन्ऱेन् आयिनेन्–खड़ा रहा मैं; नी–आपने; ॲत्ते निनैन्त–मेरा स्मरण किया; तन्मै–वह बात; अऱिन्तिलेन्–नहीं जानी; ॲन्ऱु–कहता हुआ; चॅऱि पुनऱ्कु–गहरे सागर का; इऱैवन्–देवता; अण्णलुक्कु अयिर्प्पु नीक्क–प्रभु का संशय दूर करते हुए; ती इटै नटप्पान् पोल–अग्निमध्य चलता जैसे; काय् ॲरि पटलै–खौलती आग की ज्वालाओं से; चूऴ्न्त–घिरे हुए; तरङ्क करु कटल् ऊटे–काले ऊर्मिमाली पर तिरछे मार्ग से; चॅन्ऱान्–आया। ५९५

"विस्तृत सागर के उस छोर में खड़ा रहता था। इसलिए आपका मेरा स्मरण करना मुझे विदित नहीं हुआ।" ऐसा कहकर सागरपति श्रीराम का संशय दूर करते हुए जलती आग से पूर्ण समुद्र पर तिरछे मार्ग से ऐसा आया मानो आग ही पर चल रहा हो। ५९५

वन्दन ॅन्ब मन्नो मऱिहडऱ् किरैवन् वायिऱ्
चिन्दिय मॊऴियन् ऱीन्द शॅन्नियन् ऱिहैत्त नॅञ्जन्
वॅन्दळिन् दुरुहु मॅय्यन् विळ्प्पुहैप् पडलम् विम्म
अन्दरि नलमन् दञ्जित् तुयरुळन् दलक्क णुऱ्ऱान् 596

मऱि कटऱ्कु इऱैवन्–तीर से टकरानेवाली तरंगों के सागर का देवता; वायिल् चिन्तिय–मुख से निकले; मॊऴियन्–वचनों वाला; तीन्त–झुलसे; चॅन्नियन्–सिर वाला; तिकैत्त नॅञ्चन्–भ्रमित चित्त वाला; वॅन्तु अऴिन्तु–जल-भुनकर; उरुकुम् मॅय्यन्–क्षीण हुए शरीर वाला; विळ् पुकै पटलम्–अधिक धूम्रपटल; विम्म–भरे रहे इससे; अन्तरिन्–अन्धों के समान; अलमन्तु–भ्रमित हो; अञ्चि–डरकर; तुयर् उऴन्तु–दुःखपीड़ित हो; अलक्कण् उऱ्ऱान्–संकटग्रस्त हुआ; वन्तनन्–आया; ॲन्प–कहते हैं। ५९६

तीर से टकराकर मुड़नेवाली लहरों के समुद्र का देवता वरुण मुख से क्षमायाचना का शब्द कह रहा था। उसका सिर झुलसा हुआ था। मन में भय भरा था। जलकर उसका शरीर विकृत हो रहा था। अधिक धुएँ के कारण उसे अन्धे के समान डर और दुःख के साथ चलना पड़ रहा था। इस रीति से वह आया। ५९६

नवैयऱु मुलहिऱ् कॅल्लाम् नायह नोये शीऱिऱ्
कवैयम्निन् शरण मल्लाऱ् पिऱिदोन्ऱु कण्ड दुण्डो
इवैयुनक् करिय वोदा नॅनक्कॅन वलिवे ऱुण्डो
अवयम्नित् नवय मॅन्ना वडुत्तडुत् तरऱ्ऱु हिन्ऱान् 597

उलकिऱ्कु ॲल्लाम्–सारे लोकों के; नायक–नायक; नवै अऱुम्–निर्दोष; नीये–आप ही; चीऱिल्–गुस्सा करें तो; निन् चरणम् अल्लाल्–आपके चरणों को छोड़कर; कवयम् उण्टो–कोई रक्षककवच भी है क्या; इवै–ये (रक्षण-कार्य); उनक्कु–आपके लिए; अरियवो तान्–कष्टसाध्य हैं क्या; ॲनक्कु ॲन–अपना

कहूँ ऐसा; वेऱु वलि–अलग बल; उण्टो–है क्या; अवयम्–अभय; निन् अवयम्–आपका अभय (चाहता); ऎऩ्ऩा–कहकर; अट्टुत्तु अट्टुत्तु–बार-बार दुहराता हुआ; अरऱ्ऱुकिन्ऱान्–चिल्लाता है। ५६७

वरुण चिल्लाया— हे सर्वलोकनायक ! अनिंद्य आप स्वयं क्रोध करें तो आपकी शरण छोड़कर कोई दूसरा रक्षणकवच है क्या ? जीवों को बचाना आपके लिए असाध्य कार्य है क्या ? आपके दिये हुए बल के अलावा मेरा अपना कहने योग्य बल भी है क्या ? अभय, अभयदान कीजिए। वह बार-बार दुहराया। ५९७

आऴिनी यऩलु नीये यल्लवै यॆल्ला नीये
ऊऴिनी युलहु नीये यवऱ्ऱुऱै युयिरुम् नीये
वाऴिया यडियेऩ् निऩ्ऩै मऱप्पनो वयङ्गु शॆन्दीच्
चूऴुऱ वुलैन्दु पोऩेऩ् कात्तरुळ् शुरुदि मूर्त्ति 598

चुरुति मूर्त्ति–श्रुतिदेव; आऴिनी–समुद्र आप हैं; अऩलुम् नीये–अग्नि भी आप; अल्लवै ऎल्लाम्–अलावा सभी (अन्य भूत भी); नीये–आप ही हैं; ऊऴि नी–युगान्त भी आप; उलकुम् नीये–लोक भी आप; अवऱ्ऱु उऱै–उनमें रहनेवाले; उयिरुम् नीये–जीव भी आप; वाऴियाय्–अमर; निऩ्ऩै–आपको; अटियेऩ् मऱप्पनो–मैं भूल जाऊँगा क्या; वयङ्कु–जलनेवाली; चॆन् ती–लाल आग के; चूऴुऱ–आवृत करने से; उलैन्तु पोऩेऩ्–उद्विग्न हो गया; कात्तरुळ्–बचा लीजिए। ५६८

वरुण ने श्रीराम से विनय की— हे श्रुतिमान् ! समुद्र आप हैं, अनल भी आप ही हैं। अन्य भूत भी आप; युगान्तकाल आप ही हैं। प्रपञ्च आप हैं और प्रपञ्चवासी जीव भी आप ही हैं। हे अमर देव ! क्या मैं आपको भूल जाऊँगा ? यह तेजोमय आग चारों ओर से घेरे हुए है। मन घबड़ाता है ! बचा लीजिए। ५९८

काट्टुवा युलहङ् गाट्टिक् कात्तवै कडैयिऱ् चॆन्दी
ऊट्टुवा युण्बाय् नीये युनक्कुमॊण् णाद दुण्डो
तीट्टुवाऩ् पहऴि यॊऩ्ऱा लुलहङ्ग ळॆवैयुन् दीय
वीट्टुवाय् निऩैयि ऩायेऱ् कित्तनै वेणु मोताऩ् 599

काट्टुवाय्–लोकप्रदर्शक (सर्जक); उलकम् काट्टि–लोकों को प्रकट कराके; कात्तु–उनकी रक्षा करके; अवै–उन्हें; कटैयिल्–युगान्त में; चॆन् ती–लाल आग; ऊट्टुवाय्–लगा देंगे; उण्पाय् नीये–उदरस्थ करनेवाले भी आप ही; उऩक्कुम् ऒण्णातु–आपके लिए भी असाध्य; उण्टो–कुछ है क्या; तीट्टुवाऩ् पकऴि ऒऩ्ऱाल्–पैनाए गये श्रेष्ठ शर एक से; उलकङ्कळ् ऎवैयुम् तीय–सारे लोकों को जलने देते हुए; वीट्टु वाय्–नाश करने में समर्थ; निऩैयिऩ्–सोचने पर; नायेऱ्कु–श्वान-सम मुझ दास के निमित्त; इत्तऩै–इतना कष्ट; वेणुमो–चाहिए क्या। ५६६

हे लोक-प्रदर्शक (सर्जक)! लोक प्रकट कराके, उसका पालन करके फिर आप ही लाल आग लगाते हैं उसमें। आप ही इसे उदरस्थ कर लेनेवाले हैं। आपके लिए असाध्य कोई काम है क्या? खूब तीक्ष्ण किये हुए एक ही शर से आप सभी लोकों को जलाकर मिटा सकनेवाले हैं। खूब विचार करें तो श्वान-सम मुझ दास के निमित्त में इतना (कोप, कार्य) आवश्यक है क्या? । ५९९

शण्डवान् किरणम् वाळाऱ् ऱयङ्गिरुट् काडु शाय्क्कुम्
मण्डलत् तुऱैयुञ् जोदि वळ्ळले मऱैयिन् वाऴ्वे
पण्डैनान् मुहने यादि शराशरत् तुळ्ळ पळ्ळप्
पुण्डरी हत्तु वैहुम् पुरादना पोऱ्ऱि पोऱ्ऱि 600

चण्टम्–प्रचण्ड; वान् किरणम्–अधिक उज्ज्वल; वाळाल्–तलवार से; तयक्कु इरुळ् काटु–भ्रामक अन्धकार-वन को; चाय्क्कुम्–गिराने (मिटाने) वाले; मण्टलत्तु उऱैयुम्–(सूर्य-)मण्डलमध्यस्थित; चोति वळ्ळले–ज्योतिर्मान् प्रभु; मऱैयिन् वाऴ्वे–वेदाश्रय; पण्टै नान् मुकने–पुरातन चतुर्मुख; आति–आदि; चर अचरत्तु उळ्ळ–चराचर जीवों से युक्त; पळ्ळ–गहरे; पुण्टरीकत्तु वैकुम्–कमल के साथ विद्यमान; पुरातना–पुरातन पुरुष; पोऱ्ऱि पोऱ्ऱि–नमस्कार है, नमः । ६००

प्रचण्ड ज्वलन्त किरण रूपी तलवार से भ्रामक घने अन्धकारवन को काट मिटानेवाले सूर्यमण्डलमध्यवासी ज्योतिष्मान् करुणामय प्रभु! (सवितृमण्डलमध्यवर्ती हे नारायण!) हे वेदाश्रय! पुरातन चतुर्मुख आदि सभी चराचरमय संसार के आधार, बड़े और गहरे कमलपुष्प के साथ शोभायमान पुरुषपुरातन! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यम् । ६००

कळ्ळमा युलहङ् गॊळ्ळुङ् गरुणैयाय् मऱैयिऱ् कूऱुम्
ऍळ्ळला हाद मूलत् तियादुक्कु मुदला यीऱिल्
वळ्ळले कात्ति यॆन्ऱ माहरि वरुत्तन् दीरप्
पुळ्ळिन्मेल् वन्दु तोन्ऱुम् पुरादना पोऱ्ऱि पोऱ्ऱि 601

कळ्ळमाय्–दूसरों की आँख बचाए; उलकम् कॊळ्ळुम्–लोकों को छिपा लेनेवाले; करुणैयाय्–करुणामूर्ति; मऱैयिल् कूऱुम्–वेदों में चर्चित; ऍळ्ळल् आकात–अनिंद्य; मूलत्तु यातुक्कुम्–सभी मूलों के; मुतलाय्–मूल; ईऱिल् वळ्ळले–अनंत प्रभु; कात्ति–बचाओ; ऍन्ऱ–जिसने कहा; मा करि–उस बड़े गजेन्द्र का; वरुत्तम् तीर–दुःख दूर करते हुए; पुळ्ळिन् मेल्–(गरुड़) पक्षी पर; वन्तु तोन्ऱुम्–आकर जो प्रकट हुए; पुरातना पोऱ्ऱि पोऱ्ऱि–वह पुरातन पुरुष, नमस्कार है । ६०१

अलक्षित तिरोधायक करुणामूर्ति! "वेदोक्त अनिंद्य अनादि और अनन्त प्रभु! बचाइए" ऐसा जो चिल्लाया उस गजेन्द्र के कष्ट को दूर

करने गरुड़ पर सवार होकर जो आये वे पुरातन पुरुष ! नमोऽस्तु ते नमोऽस्तु ते । ६०१

अऩ्ऩैनी यत्त नीये यल्लवै यॆल्ला नीये
पिऩ्ऩुनी मुऩ्ऩुम् नीये पेरुनी यिऴवु नीये
ऎऩ्ऩैनी यिहऴ्न्द दॆऩ्ऱ दॆङ्ङऩे यीश नाय
उऩ्ऩैनी युणराय् नाये ऩॆङ्ङऩ मुणर्वे ऩॆऩ्ऩे 602

अऩ्ऩै नी–माता आप हैं; अत्तऩ् नीये–पिता आप हैं; अल्लवै ऎल्लाम्–अन्य सभी; नीये–आप ही; पिऩ्ऩुम् नी–अपर भी आप; मुऩ्ऩुम् नीये–पूर्व भी आप ही; पेऱुम् नी–भाग्य लाभ भी आप; इऴवुम् नीये–नष्ट भी आप ही; ऎऩ्ऩै नी–मुझसे आपने; इकऴ्न्तत्तु–'उपेक्षा' की; ऎऩ्ऱतु–कहें; ऎङ्ङऩे–सो कैसा; ईचऩाय उऩ्ऩै–भगवान अपने को; नी–आप; उणराय्–नहीं पहचानते; नायेऩ्–(श्वान-सम) दास मैं; ऎङ्ङऩम्–कैसे; उऩ्ऩै उणर्वेऩ्–आपको पहचान पाता । ६०२

मेरे माँ आप हैं, आप पिता भी हैं। अन्य सभी (बन्धु-बान्धव) आप ही हैं। पूर्वापर (या आदि-अन्त) सभी कुछ आप ही हैं। मेरा सौभाग्य भी आप हैं; मेरा खोना भी आप ही को होगा। यह कैसी बात है कि आप मुझे आपकी उपेक्षा करनेवाला कहें ? अगर भगवान आप अपने को पहचान न सके तो मैं, जो श्वान-जैसा दास हूँ, आपको पहचान पाऊँगा ? । ६०२

पायिरुळ् शीय्क्कुन् दॆय्वप् परुदियैप् पऴिक्कु मालै
मायिरुङ् गरत्ताऩ् मण्मे लडियुऱ् याह वैत्तुत्
तीयऩ शिऱियोर् शॆय्दाऱ् पॊऱुप्पदे पॆरियोर् शॆय्है
आयिर नामत् तैया शरणमॆऩ् ऱडियिल् वीऴ्न्दाऩ् 603

पाय् इरुळ्–फैलते अन्धकार को; चीय्क्कुम् तॆय्वम्–मिटा सकनेवाले देवता; परुतियै–सूर्य को भी; पऴिक्कुम्–उपहास करनेवाले; मालै–हार को; मा इरु करत्ताल्–अपने बहुत बड़े हाथों में (ले आकर); मण् मेल्–भूमि पर; अटि उऱै आक–चरणों में भेंट के रूप में; वैत्तु–समर्पित करके; चिऱियोर्–छोटे लोग; तीयऩ–बुरा; चॆय्ताल्–करें तो; पॊऱुप्पते–क्षमा करना ही; पॆरियोर् चॆय्कै–बड़ों का काम है; आयिरम् नामत्तु–सहस्रनामी; ऐया–प्रभु; चरणम्–शरण हैं; ऎऩ्ऱु–कहते हुए; अटियिल् वीऴ्न्ताऩ्–चरणों पर गिरा । ६०३

वरुण अपने हाथों में अंधकारनाशक सूर्य से भी प्रकाशमय एक रत्नहार ले आया। उसे श्रीराम के श्रीचरणों पर अर्पित किया और विनय की कि छोटों का अपराध क्षमा करना बड़ों का ही कार्य है। हे सहस्रनामी ! —कहकर वरुण उनके चरणों पर गिर पड़ा। ६०३

परुप्पदम् वेव दॆऩ्ऩप् पडरॊळि पडरा निऩ्ऱ
उरुप्पॆरुक् काट्टि निऩ्ऱि याऩऩक् कवय मॆऩ्ऩ

अरुप्पुऱप् पिऱन्द कोब मारिना ताऱा वाऱ्ऱल्
नॆरुप्पुऱप् पॊङ्गुम् वॆम्बाल् नीरुऱ्ऱ दन्न नीरान् 604

परुप्पतम् वेवतु ॲन्न–पर्वत जल रहा हो, ऐसे; पटर् ऑळि–फैलती आग का-सा; पटरा निन्ऱ–प्रकाशमय; उरु पॆऱ–अपना रूप खूब; काट्टि निन्ऱ–प्रदर्शित करते हुए खड़े रहकर; यान् उतक्कु अपयम्–मैं आपका अभय (-पात्र) हूँ; ॲन्न–कहने पर; आऱा आऱ्ऱल्–अदम्य शक्ति की; नॆरुप्पु उऱ–आग के लगने से; पॊङ्कुम् वॆम् पाल्–उफनते गरम दूध में; नीर् उऱ्ऱतु–पानी (का कण) पड़ गया; अन्न–जैसी; नीरात्–स्थिति में आकर; अरुम्पु अऱ–फिर से न खिले ऐसा; पिऱन्त कोपम्–उठे क्रोध को; मारित्तान्–शान्त कर लिया। ६०४

जलते पर्वत के समान फैलती आग से आवृत अपना रूप दिखाते हुए जब वरुण ने यह कहा कि मैं आपके 'अभय' (शरण) में आया हूँ तो श्रीराम की स्थिति उस अदम्य अग्निदग्ध दूध की-सी हो गयी, जिस पर पानी की बूँदें पड़ गयी हों। श्रीराम का कोप ऐसा दूर हो गया कि फिर से वह उग ही नहीं सकता था। ६०४

आरिना मञ्ज लुन्बाल् अळित्तन मबय मन्बाल्
ईऱिला वणक्कञ् जॆय्दिया मिरन्दिड वॆय्दि डादे
शीऱ्मा कण्डु वन्द तिऱत्तिनत् तॆरियुम् वण्णम्
कूऱुनी यऱिय वॆन्ऱान् वरुणनुन् दॊळुदु कूऱुम् 605

आरित्ताम्–शान्त हो गये; अञ्चल्–मत डरो; अपयम्–अभय; उन् पाल् अळित्ततम्–तुम्हें हमने दिया; ईऱिला अन्पाल्–अपार प्रेम से; वणक्कम् चॆय्तु–नमस्कार करके; याम् इरन्तिट–हमारी याचना करने पर; ॲय्तिटाते–न आकर; चीऱ्ऱ मा कण्टु–कोप की गति देखकर; वन्त–आये; तिऱत्तिनै–उसका कारण; अऱिय–सब जानें; नी–तुम; तॆरियुम् वण्णम्–प्रकट रूप से; कूऱु–कहो; ॲन्ऱान्–कहा; वरुणनुम्–वरुण भी; तॊळुतु–नमस्कार करके; कूऱुम्–बोला। ६०५

श्रीराम ने सांत्वना दी। हम शान्त हो गये। डरो मत। अभयदान कर दिया। पर यह बात साफ़-साफ़ कहो कि जब मैंने अत्यन्त भक्ति के साथ याचना की तब नही आये; पर क्रोध का हाल देखकर तुम आये। इसका हेतु क्या है? वरुण ने नमस्कार करके उत्तर दिया। ६०५

पार्त्तनिऱ् पॊऱैयिन् मिक्क पत्तिनिक् कुऱ्ऱ पण्बु
वार्त्तैयि नऱिन्द दल्लाऱ् ऱेवर्पाल् वन्दि लेनान्
तीर्त्तनिन् नाणै येळाञ् जॆऱिदिरैक् कडलिन् मीनिन्
पोर्त्तॊळिल् विलक्कप् पोनेन् अऱिन्दिलेन् पुहुन्द दॊन्ऱुम् 606

पार् तनिल्–भूमि से; पॊऱैयिल् मिक्क–क्षमाशीलता में अधिक; पत्तितिक्कु–आपकी पत्नी का; उऱ्ऱ पण्पु–जो हुआ वह हाल; वार्त्तैयित्–(आपके) शब्दों द्वारा; अऱिन्ततु अल्लाल्–जाना, नहीं तो; नान्–मैं; तेवर् पाल्–देवों द्वारा;

वन्तिलेन् इल्लै–सुन नहीं पाया; तीर्त्त–तीर्थपुरुष; एऴाम्–सातवें; चॅँरि तिरै कटलिन्–घनी लहरों के समुद्र में; मीतिन् पोर् तॉऴिल्–मछलियों के युद्ध को; विलक्क पोतेन्–रोकने गया था; निन् आणै–आपकी आज्ञा और; पुकुन्ततु–जो घटा; ऑन्ऱुम्–एक भी; अऱिन्तिलेन्–नहीं जाना। ६०६

भूमि से भी सहनशील आपकी देवी का हाल मुझे आपसे सुनने से पहले विदित ही नहीं था। मैंने देवों से भी जान नहीं पाया। हे तीर्थ ! लहरसंकुल सातवें सागर में मच्छो के बीच युद्ध हो गया था। उसको रोकने के लिए मैं उधर चला गया था। इसलिए मुझे न आपकी आज्ञा मालूम हुई न यहाँ जो घटा वह वृत्तान्त मालूम हुआ। ६०६

ऍन्ऱलु मिरङ्गि यॅय नित्तिऱ निऱ्क विन्दप्
पॉन्ऱलिल् पहऴिक् कप्पा लिलक्कमॅन् पुहऱि यॅन्न
नन्ऱॅन वरुणन् यानु मुलहमु नलिवु तीर्न्दाम्
कुन्ऱॅन वुयर्न्द तोळाय् कूऱुव लॅन्ऱु कूऱुम् 607

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; ऐयन्–प्रभु के; इरङ्कि–दया करके; इ तिऱम् निऱ्क–यह हाल रहे; इन्त–इस; पॉन्ऱल् इल्–अचूक; पकऴिक्कु–बाण का; अप्पाल्–आगे; इलक्कम् ऍन्–निशान क्या हो; पुकऱि–कहो; ऍन्न–कहने पर; वरुणन्–वरुण ने; नन्ऱु–अच्छा; ऍन–कहकर; कुन्ऱु ऍन–पर्वत-से; उयर्न्त तोळाय्–उन्नत कन्धों वाले; यानुम् उलकमुम्–मैं और संसार; नलिवु–कष्ट से; तीर्न्ताम्–मुक्त हो गये; कूऱुवल्–(लक्ष्य) बनाऊँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; कूऱुम्–कहा। ६०७

वरुण की बात सुनकर श्रीराम दयार्द्र हो गये। उन्होंने पूछा कि यह रहे। अब मेरे अमोघ शर का कोई निशान बताओ। वरुण ने कहा अच्छा। पर्वतोन्नत कन्धों वाले ! अब यह निश्चित हो गया कि मैं और यह संसार बच गया। लक्ष्य बताऊँगा। ६०७

मन्नव मरुहान् दार मॅन्बदोर् तीविन् वाऴ्वार्
अन्नवर् शदहो डिक्कु मेलुळा रवुण रायोर्
तिन्नवे युलह मॅल्लान् देय्न्दन वॅनक्कुत् तीयार्
मिन्नुमिऴ् कणैयै वॅय्योर् मेऱ्चॅल विडुदि यॅन्ऱान् 608

मन्नव–राजा; मरुकान्तारम् ऍन्पतु–मरुकांतार (व्रणकूप) नाम के; ओर् तीविन् वाऴ्वार्–एक द्वीप में रहनेवाले; अवुणर् आयोर्–दानव जो हैं; अन्नवर्–वे; चत कोटिक्कु मेल् उळार्–सौ करोड़ से अधिक हैं; तिन्नवे–उनके खा लेने से; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक (वासी); तेय्न्तन–क्षीण हो गये; ऍनक्कुम् तीयार्–मेरे भी हानिकारक हैं; मिन् उमिऴ्–चमकदार; कणैयै–अस्त्र को; वॅय्योर् मेल्–उन क्रूरों पर; चॅल–जाने के लिए; विटुति–छोड़ दीजिए; ऍन्ऱान्–कहा। ६०८

राजा ! मरुकान्तार नामक द्वीप है। उसमें रहनेवाले दानव जो हैं

वे सौ करोड़ से अधिक हैं। उनके खाने से लोकवासियों का क्षय होता रहता है। वे मेरे भी हानिकारक हैं। अपने विद्युत्संकास शर को उन पर चलाओ। ६०८

नेडिनूल् तॅरिन्दु ळोर्क्कु मुणर्विऱ्कु निमिर निऩ्ऱाऩ्
कोडिनू ऱाय तीय ववुणरैक् कुलङ्ग ळोडुम्
ओडिनू ऱॆऩ्ऱु विट्टा नोरिमै यॊडुङ्गा मुऩ्ऩम्
पाडि नूऱाह नूऱि मीण्डदप् पहळित् तॅय्वम् 609

नेटि–अन्वेषण करके; नूल् तॅरिन्तुळोर्क्कुम्–शास्त्र के ज्ञाता बने हुओं के; उणर्विऱ्कुम्–ज्ञान के भी; निमिर निऩ्ऱाऩ्–परे जो हैं; नूऱु कोटि आय–सौ करोड़ जो थे; तीय–उन बुरे; अवुणरै–दानवों को; ओटि–दौड़कर; कुलङ्कळोटुम् नूऱु–कुलों के साथ मार डालो; ऎऩ्ऱु–कहकर; विट्टाऩ्–(श्रीराम ने) छोड़ा; अ पकळि तॅय्वम्–वह दिव्य शर; ओर् इमै ऒटुङ्का मुऩ्ऩम्–एक पलक के झपने से पहले; पाटि–(मरुकांतार) नगर; नूऱाक–धूल हो जाए ऐसा; नूऱि–तहस-नहस करके; मीण्टतु–लौट आया। ६०९

अन्वेषक शास्त्रज्ञों के भी ज्ञान के परे रहनेवाले श्रीराम ने अपने शर को यह आज्ञा देकर छुड़ाया कि उन सौ करोड़ दानवों को उनके कुलों-सह नाश कर दो। वह दिव्य अस्त्र भी पलक झपने की देरी के अन्दर उस नगर को तहस-नहस करके धूल बनाकर लौट आया। ६०९

आय्विऩै युडैय राहि यऱम्बिळै यादार्क् कॅल्लाम्
एय्वऩ नलऩे यऩ्ऱि यिऱुदिवन् दडैव दुण्डो
माय्विऩै यियऱ्ऱि मुऱ्ऱुम् वरुणऩ्मेल् वन्द शीऱ्ऱम्
तीविऩै युडैयार् माट्टे तीङ्गिऩैच् चॅय्द दऩ्ऱे 610

आय् विऩै उटैयर् आकि–अन्वेषणकारी बनकर; अऱम् पिळैयातार्क्कु ऎल्लाम्–धर्ममार्ग जो नहीं छोड़ते, उन सभी को; एय्वऩ–जो मिलते हैं वे; नलऩे अऩ्ऱि–भले (ही हैं, उन) के सिवा; इऱुति वन्तु–मृत्यु आकर; अटैवतु उण्टो–उपलब्ध होता है क्या; माय् विऩै–संहार; मुऱ्ऱुम् इयऱ्ऱि–पूर्ण रूप से कर सकनेवाले; वरुणऩ् मेल् वन्त–वरुण पर उठे; चीऱ्ऱम्–(श्रीराम के) कोप ने; तीविऩै उटैयार् माट्टे–बुरे काम करनेवालों को ही; तीङ्किऩै चॅय्ततु–हानि पहुँचायी। ६१०

विवेकी धर्मात्मा के मंगल ही मंगल होते हैं। अन्त नहीं होता। वरुण पर आया था श्रीराम का कोप सब तरह से संहारक रूप लेकर। पर उसने बुरे लोगों का ही अहित किया। ६१०

पावमे यियऱ्ऱि ऩारैप् पऩ्ऩॅडुङ् गाद मोडित्
तूबमे पॅरुहुम् वण्ण मॅरियॆळच् चुट्ट दऩ्ऱे

तीबमे यनैय ञानत् तिरुमरै मुनिवन् शॅप्पुम्
शाबमे यॉत्त दम्बु तरुममे वलिय दम्मा 611

पल् नॅदु–अनेक लम्बी दूर; कातम् ओटि–कोस चलकर; तूपमे–धुआँ; पॅरुकुम् वण्णम्–अधिक हो ऐसा; पापमे इयऱ्ऱितारै–पापकारियों को; ऎरि अॅळ–आग उठाते हुए; चुट्टतु अन्ऱे–(अस्त्र ने) जलाया न; अम्पु–वह बाण; तीपमे अनैय–दीप ही जैसे; ञान तिरु मऱै मुनिवन्–ज्ञानी और दिव्य वेदज्ञ मुनि के; चॅप्पुम् चापमे ऒत्तल–कहे शाप (-वचन) ही के समान रहा; तरुममे–धर्म ही; वलियतु–बलवान है; अम्मा–आश्चर्य। ६११

वह अस्त्र अनेक कोस दूर गया और पाप ही करनेवाले उन लोगों को जला दिया; जिससे धुआँ उठा, वह दीपवत् ज्ञानवान् वेदज्ञ मुनि (या ब्रह्मा) के शाप के समान (अमोघ) रहा। आखिर धर्म ही बलवान है। ६११

मौऴियुतक् कबय मॅन्ऱा यादलाल् मुनिवु तीर्न्देन्
पऴियॅनक् काहु मॅन्ऱु पादहर् परवै यॅन्नुम्
कुऴियिनैक् करुदिच् चॅय्द कुमण्डैयैक् कुऱित्तु नीङ्ग
वऴियिनैत् तरुदि यॅन्ऱान् वरुणनै नोक्कि वळ्ळल् 612

वळ्ळल्–प्रभु ने; वरुणनै नोक्कि–वरुण को देखकर; मौऴि–अपने वचन से; उतक्कु अपयम्–आपका अभय (चाहता हूँ); ऎन्ऱाय्–कहा (तुमने); आतलाल्–इसलिए; मुनिवु तीर्न्तेन्–कोप शान्त किया; पऴि–अपयश; ऎनक्कु आकुम्–मुझे मिलेगा; ऎन्ऱु–ऐसा सोचकर; पातकर्–पातक राक्षस; परवै ऎन्नुम् कुऴियिनै–समुद्र रूपी गड्ढे को; करुति–बड़ा मानकर; चॅय्त कुमण्टैयै–जो आनन्द हुआ उसे; नीक्क कुऱित्तु–दूर करने का संकल्प करके; वऴियिनै तरुति–मार्ग दिलाओ; ऎन्ऱान्–कहा। ६१२

उदार प्रभु श्रीराम ने वरुण से कहा कि तुमने 'अभय' माँगा। इसलिए मैं शान्त हो गया। देखो। (इन राक्षसों को न मारूँ तो) मुझ पर कलंक लगेगा। इसका खयाल करो और इस छोटे गड्ढे, समुद्र को अपना रक्षक क़िला समझकर जो घमण्ड करते रहते हैं, उनका इतराना दूर करना है, तदर्थ मार्ग दो। ६१२

आऴमु महलन् दानु मळप्परि दॅनक्कु मैय
एऴॅन वडुक्कि निन्ऱ वुलहुक्कु मॅल्लै यिल्लै
वाऴियाय् वऱ्ऱि नीङ्गिल् वरम्बिल कालम् मॅल्लाम्
ताऴ्म्निन् ऱेनै युळ्ळम् तळर्वुऱुन् दवत्तिन् मिक्कोय् 613

तवत्तिन् मिक्कोय्–तपश्रेष्ठ; एऴ् ऎन–सात की; अटुक्कि निन्ऱ–परतों में स्थित; उलकुक्कुम् ऎल्लै इल्लै–लोकों की सीमा नहीं है और; आऴमुम् अकलम् तानुम्–गहराई और चौड़ाई; ऎनक्कुम्–मेरी भी; अळप्पु अरितु–नापना कठिन है; ऐय–प्रभु; वाऴियाय्–आयुष्मान्; वऱ्ऱि नीङ्किल्–सूखकर नहीं रह जाए तो;

वरम्पु इल–असीम; कालम् ॲल्लाम्–सारा काल; ताळुम्–बीत जायगा; निन् चेनै–आपकी सेना; उळ्ळम्–मन में; तळर्वुरुम्–ऊब जायगी। ६१३

वरुण ने श्रीराम से कहा। तपश्रेष्ठ; एक पर एक जो रहते हैं, ये लोक भी असीम हैं; वैसे ही मेरी भी गहराई-लम्बाई की सीमा भी अमाप है। आयुष्मान् ! अगर सोखना चाहें तो अपार समय लगेगा और सेना ऊब जाएगी। ६१३

कल्लॅन वलित्तु निऱ्पिऱ् कणक्किला वुयिर्ह ळॅल्लाम्
ऑल्लयि नुलन्दु वीयु मिट्टदीन् ऱॉळ्हा वण्णम्
ॲल्लैयिल् काल मॅल्लाम् एन्दुव निनिदि नॅन्दाय्
शॅल्लुदि शेदु वॅन्ऱॉन् ऱियऱ्ऱियॅन् शिरत्तिन् मेलाय् 614

ॲन्ताय्–मेरे धाता; कल् ॲंन–पत्थर के समान; वलित्तु निऱ्पिन्–कठोर बन खड़ा रहूँ तो; कणक्कु इला–बेशुमार; उयिर्कळ् ॲल्लाम्–जीव सभी; ऑल्लैयिन्–शीघ्र; उलन्तु वीयुम्–मर मिटेंगे; इट्टतु ऑन्ऱु–रखी चीज़; ऑळ्का वण्णम्–न हिले ऐसा; ॲल्लैयिल्–असीम; कालम् ॲल्लाम्–काल तक; इनितिन्–सुख से; एन्तुवन्–उठाए रहूँगा; चेतु ॲन्ऱु ऑन्ऱु–सेतु नाम का एक; ॲन् चिरत्तिन् मेलाय्–मेरे सिर पर; इयऱ्ऱि–निर्मित करके; चॅल्लुति–उस पर से चले जाइएगा। ६१४

धाता ! अगर मैं प्रस्तर के समान कठोर बना रहूँ तो असंख्यक जलचर मर मिट जाएँगे। इसलिए जो भी मुझ पर रखा जायगा, उसे विना हिलने देते हुए सदा के लिए स्थिर पकड़े रहूँगा। आप एक सेतु का निर्माण करा लें और उस पर से चले जायँ। ६१४

नन्ऱिदु पुरिदु मन्ऱे नळिर्हडऱ् पॅरुमै नम्माल्
इन्ऱिदु तीरु मॅन्नि लॅळिवरुम् बूद मॅल्लाम्
कुन्ऱुहोण् डडुक्किच् चेदु कुयिऱ्ऱुदि रॅन्ऱु कूऱिच्
चॅन्ऱन निरुक्कै नोक्कि वरुणनु मरुळिऱ् चॅन्ऱान् 615

नन्ऱु इतु–अच्छा, यह; पुरितुम्–करेंगे; नळिर् कटल् पॅरुमै–शीतल समुद्र का गौरव; इन्ऱु इतु–आज यह; नम्माल् तीरुम् ॲन्निल्–हमारे कारण दूर हो जाएगा तो; पूतम् ॲल्लाम्–सभी भूत; ॲळिवरुम्–गौरव खो देंगे; कुन्ऱु कॊण्टु अटुक्कि–पर्वत चुनकर; चेतु कुयिऱ्ऱुतिर्–सेतु का बन्धन करो; ॲन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; इरुक्कै नोक्कि–अपने वासस्थान की ओर; चॅन्ऱतन्–श्रीराम गये; वरुणतुम्–वरुण भी; अरुळिऱ्–आज्ञा लेकर; चॅन्ऱान्–विदा हुआ। ६१५

श्रीराम ने कहा कि ठीक है। यही भला है। अगर शीतल सागर का गौरव मुझसे मिटाया जायगा तो अन्य भूतों का भी गौरव नष्ट हो जायगा। इसलिए तुम लोग पर्वतों को चुनकर सेतु-बन्धन करा दो। यह कहकर प्रभु अपने वासस्थान की ओर चले गये। वरुण भी उनकी आज्ञा लेकर चला गया। ६१५

7. शेतुबन्दनप् पडलम् (सेतु-बन्धन पटल)

❀अळवरु मऱिञरो डरक्कर् कोमहऱ्
किळवलु मिनिदुड निरुक्क वॆण्णिनान्
विळैवन विदिमुऱै मुडिक्क वेण्डुवान्
नळन्वरु हॆन्ऱनन् कविक्कु नायहन् 616

कविक्कु नायकन्–कपिनायक (सुग्रीव) ने; अळवु अऱ्म्–अनगिनत; अऱिञरोडु–दक्ष लोगों के साथ; अरक्कर् कोमकऱ्कु–राक्षसाधिपति रावण के; इळवलुम्–छोटे भाई को; उटन् इरुक्क–साथ रखकर; इनितु ऍण्णिनान्–प्रसन्न होकर सोचा; विळैवन–आगे-के कार्य को; विति मुऱै मुटिक्क–विधिवत पूरा करना; वेण्टुवान्–चाहकर; नळन् वरुक–नल आये; ऍन्ऱनन्–कहा। ६१६

कपिराज सुग्रीव ने असंख्य निपुण लोगों के साथ सलाह-मशविरा किया। तब राक्षसराज का छोटा भाई भी साथ रहा। अच्छी तरह आगे का कार्य सोचने के बाद विधिवत् कार्य संपन्न कराने के विचार से उसने आज्ञा सुनायी कि नल आ जाये। ६१६

वन्दनन् वानरत् तच्चन् मन्ननित्, शिन्दनै यॆन्नॆनच् चॆऱिदि रॆक्कडल्
पन्दनै शॆय्हुदल् पणिन मक्कॆन, निन्दनै यिलादवन् शॆय्य नेर्न्दनन् 617

वानर तच्चन्–वानर-शिल्पी; वन्तनन्–आया; मन्न–राजा; निन् चिन्तनै ऍन्–आपकी राय क्या है; ऍन–पूछा; तिरै चॆऱि कटल्–ऊर्मिमाली को; पन्तनै चॆय्कुतल्–बाँध लेना; पणि नमक्कु–हमारा काम है; ऍन–कहा; निन्तनै इलातवन्–अनिंद्य; चॆय्य–करने में; नेर्न्तनन्–लग गया। ६१७

वानर शिल्पी नल आया। उसने राजा से पूछा कि आपकी राय क्या है? सुग्रीव ने कहा कि ऊर्मिमाली पर सेतु-बन्धन करना हमारा उद्देश्य है। अनिंद्य नल उस कार्य में लग गया। ६१७

❀कारियङ् गडलिनै यडैत्तुक् काट्टले, शूरियन् कादले शॊल्लि यॆन्बल
मेरुवु मणुवुमोर् वेऱु ऱावहै, एरुऱ वियऱ्ऱुवॆन् कॊणरच् चॆप्पॆन्ऱान् 618

चूरियन् कातले–सूर्यनन्दन; कटलिनै अटैत्तु–समुद्र में बाँध निर्मित कर; काट्टले–दिखाना; कारियम्–मेरा कार्य है; पल चॊल्लि ऍन्–कि बहुना; मेरुवुम् अणुवुम्–मेरु और अणु; ओर् वेऱु उऱा वकै–कोई विषम न दिखें (सम दिखें) ऐसा; एर् उऱ–सुन्दर; इयऱ्ऱुवॆन्–निर्मित कर दूँगा; कॊणर–लाने को; चॆप्पु ऍन्ऱान्–कहिए, कहा। ६१८

नल ने राजा से कहा कि सूर्यनन्दन! समुद्र पर सेतु-निर्माण करना मेरा कर्तव्य है। ऐसा बाँध बना दूँगा तो मेरु और अणु में फ़र्क़ न दिखायी दे (यानी सम दिखे)। बड़ा सुन्दर बाँध बना दूँगा। उसके लिए आवश्यक सामान लाने को कह दीजिए। ६१८

इळवलु मिऱैवनु यिलङ्गै वेन्दनु, अळवरु नङ्गुलत् तरशु मल्लवर्
वळैवरुङ् गरुङ्गड लडैक्क वम्मॆनत्, तळमलि शेतैयैच् चाम्बन् शाऱ्ऱिनान् 619

इळवलुम्–लघुराज (लक्ष्मण) और; इऱैवनुम्–प्रभु; इलङ्कै वेन्तनुम्–और लंकेश; अळवु अरु–असंख्यक; नम् कुलत्तु अरचुम्–हमारे (वानर) कुल का राजा; अल्लवर्–(इनसे) इतर; वळै वरुम्–वर्तुल; करु कटल्–काले सागर को; अटैक्क–बाँधने; वम् ऍन–आओ, ऐसा; तळम् मलि चेतैयै–दलबहुल सेना को; चाम्पन्–जाम्बवान ने; चाऱ्ऱिनान्–कह सुनाया। ६१९

तब जाम्बवान ने मुनादी पिटवाकर आज्ञा फैलायी कि लघुराज लक्ष्मण, लंकाधिपति विभीषण, और असंख्यक हम वानर आदियों के राजा सुग्रीव —इनको छोड़ अन्य सभी चक्राकार रहनेवाले इस सागर को बाँधने के हेतु आ जाओ। ६१९

❀ करुवरै कादङ्गळ् कणक्कि लादन, इरुहैयिऱ् ऱोळ्हळिऱ् चॆन्नि येन्दिन
ऑरुहड लडैक्कमऱ् ऱॊळिन्द वेलैहळ्, वरुवन वामॆन वन्द वानरम् 620

कातङ्कळ् कणक्कु इलातन–असंख्यक 'कादों' (कोसों) चौड़े; करु वरै–बड़े पर्वतों को; इरु कैयिल्–दोनों हाथों और; तोळ्कळिल्–कन्धों पर और; चॆन्नि–सिर पर; एन्तिन–ढोकर; ऑरु कटल् अटैक्क–एक समुद्र पर बाँध निर्मित करने; मऱ्ऱु ऑळिन्त–अन्य फ़ालतू; वेलैकळ्–सागर; वरुवन आम् ऍन–आते हों ऐसे; वानरम्–वानर; वन्त–आये। ६२०

वानर आये। योजनों बड़े पर्वतों को अपने-अपने दोनों हाथों, कन्धों और सिर पर ढोते हुए एक सागर को बाँधने दूसरे सागर आ रहे हों —ऐसे आये। ६२०

पेर्त्तन मलैशिल पेर्क्कप् पेर्क्कनिन्
ऱीर्त्तन शिलशिल शॆन्नि येन्दिन
तूर्त्तन शिलशिल तूर्क्कत् तूर्क्कनिन्
ऱार्त्तन शिलशिल वाडिप् पाडिन 621

चिल–कुछ ने; मलै पेर्त्तन–पर्वत उत्पाटित किये; चिल–कुछ ने; पेर्क्क पेर्क्क–खोदते-खोदते; निन्ऱु ईर्त्तन–खड़े होकर छीने; चिल–कुछ ने; चॆन्नि एन्तिन–सिर पर उठा लिये; चिल–कुछ ने; तूर्त्तन–समुद्र में डालकर पाटा; चिल–कुछ ने; तूर्क्क तूर्क्क–पटते-पटते; निन्ऱु–खड़े होकर; आर्त्तन–आनन्द-नर्दन किया; चिल चिल–कुछ-कुछ वानर; आटि पाटिन्–नाचे-गाये। ६२१

कुछ वानरों ने पर्वतों को उखाड़ा। कुछ वानरों ने उनको लगे हाथ खींच लिया। कुछ ने अपने सिरों पर उनको उठा लिया। कुछ वानरों ने उन्हें लाकर समुद्र में डाल दिया। कुछ समुद्र को पटते देखकर आनन्द-नर्दन किया। कुछ नाचे, गाये। ६२१

※ कालिडै	यॊरुमलै	युरुट्टिक्	कैहळिन्
मेलुडै	यिरुमलै	वाङ्गि	विण्डॊडुम्
शूलिडै	मळैमुहिल्	शूऴ्न्दु	शुऱ्ऱिय
वालिडैच्	चिलमलै	यीर्त्तु	वन्दवाल् 622

कालिटै–पैरों से; ऑरु मलै उरुट्टि–एक पर्वत को लुढ़काते हुए; कैकळिन् मेल् उटै–दूसरे वानर के हाथ में रहे; इरु मलै–दो पर्वतों को; वाङ्कि–ढोते हुए; विण् तॊटुम्–गगनस्पर्शी; चूल् इटै–जलगर्भित; मळै मुकिल्–बरसते मेघों से; चूऴ्न्तु चुऱ्ऱिय–चारों ओर से आवृत; चिल मलै–कुछ पर्वतों को; वालिटै–पूँछ से; ईर्त्तु वन्त–खींचते आये। ६२२

कुछ वानर अपने पैरों से एक पर्वत को लुढ़काए, दूसरे वानर के हाथों पर से दो पर्वत छीनकर उठाए; और कुछ बरसाते मेघों से आवृत पर्वतों को पूँछों से छीनते हुए ला रहे थे। ६२२

मुडुक्कितन्	ऱुरुहॆन	मून्ऱु	कोडियर्
अॆडुक्कितु	मम्मलै	यॊरुहै	येन्दियिट्
टडुक्किलन्	ऱन्वलि	काट्टि	याऴिय
नडुक्किन	नळॆन्नु	नवैयि	नीङ्गिनान् 623

नवैयिन् नीङ्कितान्–निर्दोष; अॆन्नुम् नळन्–जो है उस नल ने; मून्ऱु कोटियर्–तीन करोड़ लोग; अॆट्क्कितुम्–उठा लाएँ तो भी; तरुक अॆन–दे दो कहकर; मुटुक्कितन्–उनको त्वरित किया; अ मलै–उन पर्वतों को; ऑरुकै एन्ति–एक हाथ में; इट्टु–धरकर; अटुक्कितन्–उनको चुना; तन् वलि काट्टि–अपना सामर्थ्य प्रदर्शन करके; आऴियै–समुद्र को; नटुक्कितन्–कँपा दिया। ६२३

निर्दोष माने गये नल ने तीन करोड़ वानरों के पर्वतों को जल्दी-जल्दी लाने पर भी, "लाओ" कहते हुए त्वरित किया; लाये गये पर्वतों को चुनकर रखा। उसके सामर्थ्य के फलस्वरूप समुद्र में उथल-पुथल ही मच गयी। ६२३

※ मञ्जिनिर्	ऱिहऴ्दरु	मलैयै	माक्कुरङ्
गॆञ्जरक्	कडिदॆडुत्	तॆऱियवे	नळन्
विञ्जैयिर्	ऱाङ्गिनन्	शडैयन्	वॆण्णॆयिल्
तञ्जमॆन्	ऱोर्हळैत्	ताङ्गुन्	दन्मैपोल् 624

मञ्चिनिल्–मेघों के साथ; तिकऴ् तरुम्–शोभनेवाले; मलैयै–पर्वतों को; मा कुरङ्कु–बड़े वानर; अॆञ्चर–बिना बाक़ी छोड़े; कटितु–जल्दी-जल्दी; अॆटुत्तु–उठाकर; अॆऱियवे–जब फेंकते; वॆण्णॆयिल्–तिरुवॆण्णॆय नल्लूर में; चटैयन्–प्रभु शडैयप्प वळ्ळल्; तञ्चम् अॆन्ऱोर्कळै–शरण माँगनेवालों को; ताङ्कुम् तन्मै पोल्–जिस प्रकार भरण करते हैं उसी प्रकार; नळन्–नल; विञ्चैयिल्–अपनी विद्या के बल से; ताङ्कितन्–पकड़ (सँभाल) लेता था। ६२४

मेघलसित पर्वतों को वानर अशेष रूप से उखाड़कर जल्दी-जल्दी फेंकते जा रहे थे और नल, शरणागतों को सम्हाल लेनेवाले तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर के शडैयप्पन (कम्बन के अभिभावक) के समान, उन्हें पकड़ सम्हालता जा रहा था। ६२४

शयक्कविप् पॅरुम्बडैत् तलैवर् ताळ्हळाल्
मुयर्करै मदितवळ् मुन्ऱिर् कुन्ऱुहळ्
अयक्कलिन् मुहिऱ्कुल मलऱि योडिन
इयक्करु मह्ळिरु मिरियल् पोयिनार् 625

चयम् कवि–विजयी कपियों के; पॅरु पटै तलैवर्–बड़े-बड़े सेनानी; ताळ्कळाल्–पैरों से; मुयल् करै–शशांक; मति तवळ्–चन्द्र जहाँ रेंगता है; मुन्ऱिल् कुन्ऱुकळ्–ऐसे मुहाने के पर्वतों को; अयक्कलिन्–हिलाते, तब; मुकिल् कुलम्–मेघवृन्द; अलऱि ओटिन–चिल्लाते भागे; इयक्करुम्–यक्ष और; मकळिरुम्–यक्षस्त्रियाँ; इरियल् पोतार्–अस्त-व्यस्त हो भागीं। ६२५

विजयशील वानरयूथपों ने अपने सशक्त पैरों से शशंकविलसित पर्वतों को जब उखाड़ा, तब उन पर्वतों को आवृत रहनेवाले मेघ चिल्लाते हुए भाग गये। यक्ष भी यक्षिणियों-सहित तितर-बितर होकर भाग गये। ६२५

वेरॊडु नॆडुङ्गिरि तलैवर् वीशिन, ओरिडत् तॊन्ऱिन्मे लॊन्ऱु शॆन्ऱुर
नीरिड निमिर्पॊऱि पिऱक्क नीण्डवी, दारुडै नॆरुप्पॆन वरुण नञ्जिनान् 626

तलैवर्–सेनानायकों ने; वेरॊटु–जड़ के साथ; वीचिन–(जिनको) फेंका था; नॆटु किरि–वे बड़े पर्वत; ओरिटत्तु–एक स्थान में; ऒन्ऱिन् मेल् ऒन्ऱु–एक-दूसरे पर; चॆन्ऱु उऱ–जाकर गिरे, इसलिए; नीरिटै–जल में; निमिर् पॊऱि–उठनेवाले अंगारे; पिऱक्क–प्रकट हुए तो; वरुणन्–वरुण ने; नीण्ट ईतु–दीर्घ यह (आग); आरुटै नॆरुप्पु–किसकी (जलायी) आग है; ऎन–सोचकर; अञ्चिनान्–डरा। ६२६

वानर-सेनापतियों ने जड़ से उखाड़कर पर्वतों को फेंका। वे एक ही स्थान पर जाकर एक से एक टकराए तो अंगारे छूटे और जल के ऊपर प्रकट हुए। वरुण डर गया और सोचने लगा कि यह किसकी लगायी हुई आग है जो लगातार जल रही है? । ६२६

आनिऱक् कण्णनॆन् ऱॊरुव नङ्गैयाल्
कानिऱ मलैहॊणर्न् दॆऱियक् कार्क्कडल्
तूनिऱ मुत्तिनन् दुवलै योडुम्बोय्
वानिऱै मीनॊडु माऱु कॊण्डवे 627

आन् निऱ–गाय के-से रंग के; कण्णन् ऎन्ऱु ऒरुवन्–नेत्रवाला जो था वह (गवाक्ष); अम् कैयाल्–अपने सुन्दर हाथों से; कान् इऱ–जंगल तोड़ते हुए; मलै

कोणर्न्तु–पर्वत लाकर; ऍऱिय–फेंकने लगा तो; कार् कटल्–काले सागर के; तू निऱम्–स्वच्छ रंग वाले; मुत्तिऩम्–मोतियों की राशियाँ; तुवलैयोटुम् पोय्–जलकणों के साथ ऊपर जाकर; वाऩ् निऱै मीतोटुम् माऱु कॊण्ट–नक्षत्रों में मिश्रित हो गये। ६२७

गवाक्ष नाम के सेनापति ने अपने सुन्दर हाथों से एक पर्वत को जंगल का नाश करते हुए लाकर समुद्र में फेंका। उसके वेग से काले समुद्र के सफ़ेद मोती जलकणों के साथ ऊपर उठे और आकाश में भरपूर रहे नक्षत्रों से मिश्रित हो गये (उन्हें अलग पहचानना असम्भव हो गया)। ६२७

शिऩ्दुरत् तडवरै यॆऱियच् चेणिडै
मुऩ्दुरत् तॆऱित्तॆऴु मुत्तु मौय्त्तलाल्
अऩ्दरत् तॆऴुमुहि लाडै यावहऩ्
पऩ्दरीत् तदुनॆडुम् बरिदि वाऩमे 628

चिऩ्तुरम् तट वरै–हाथियों के विशाल पर्वतों को; ऍऱिय–फेंकते समय; मुऩ्तुऱ–निकलकर; तॆऱित्तु ऍऴु–छितर उठे; मुत्तुम्–मोतियों के; चेण् इटै मॊय्त्तलाल्–आकाश में ठस भरने से; अऩ्तरत्तु ऍऴुम्–आकाश में प्रकट हुए; मुकिल्–मेघ; आटैया–वस्त्र बने (दिखे); नॆटु परिति वाऩम्–सूर्य का पथ लम्बा आकाश; अकऩ् पन्तर् ऒत्ततु–विशाल (वस्त्रसज्जित) पंडाल-सा लगा। ६२८

अनेक पर्वतों में हाथी बहुतायत से थे। जब वे समुद्र में फेंके गये, तब उनके मोती उठे और आकाश को भर गये। तब आकाश पंडाल के समान दिखा और मेघ पंडाल के ऊपर के छाजन के वस्त्र के समान रहे। ६२८

वेणुवि ऩॆडुवरै वीश मीमिशैच्
चेणुऱु तिवलैया ऩऩैन्द शॆन्दुहिल्
पूणुऱु मलुहुलिऱ् पॊरुन्दिप् पोदलाल्
नाणिऩर् वाऩवर् नाट्टु नङ्गैमार् 629

वेणुविऩ् नॆटु वरै–वेणुओं-सहित बड़े पर्वतों को; वीच–फेंकने से; मी मिचै चेण्–दूर आकाश में; उऱु तिवलैयाल्–लगनेवाले जलकणों से; नऩैन्त चॆम् तुकिल्–भीगे लाल वस्त्र; पूण् उऱुम् अल्कुलिल्–मेखलालंकृत भग-प्रदेश पर; पॊरुन्ति पोतलाल्–लगे चिपक जाने से; वाऩवर् नाट्टु नङ्कैमार्–स्वर्गवासिनी स्त्रियाँ; नाणिऩर्–शर्मिंदा हुईं। ६२९

अनेक पर्वत वेणु-वन भूयिष्ठ थे। उनको फेंकने से जलकण ऊपर उठे और उनसे स्वर्गवासिनी अप्सराओं के लाल वस्त्र भीग गये और जघन-प्रदेश के ऊपर रहनेवाला वस्त्र का भाग उससे चिपक गया तो वे स्त्रियाँ शर्मिंदा हुईं। ६२९

तेऩिमिर् तडवरैत् तिरैक्क रुङ्गडल्
ताऩिमिर् तरविडै कुवियत् तळ्ळुनीर्

मेऩिमिर् तिवलैमीच् चॆऩ्ऱु मीडलाल्
वाऩवर् नाट्टिऩु मऴैपॊ ऴिऩ्दवाल् 630

तिरै कऱु कटल्–लहरसंकुल काला सागर; ताऩ् निमिर् तर–ऊपर उठे ऐसा; तेऩ् निमिर्–शहदबहुल; तट वरै–बड़े पर्वत; इटै कुवियि–ढेरों में पड़ गये तो; तळ्ळु–उछाले जाकर; मेल् निमिर्–ऊपर उठनेवाले; नीर् तिवलै–जलकण; मी चॆऩ्ऱु–ऊपर जाकर; मीटल् आल्–लौट गिरे इसलिए; वाऩवर् नाट्टिऩुम्–देवलोक में भी; मऴै पॊऴिऩ्त–बारिश गिरी। ६३०

काला ऊर्मिमाली स्वयं ऊपर उठ जाए ऐसा शहद से पूर्ण बड़े-बड़े पर्वत उसमें गिरे और जलकण उछलकर आकाश में जा लौटे। तब देवलोक में भी बारिश हुई। ६३०

मय्युऱु मलैह ळोडु मऱिहडल् वऩ्दु वीऴ्ऩ्द
वॆय्यवाय् महरम् बऱ्ऱ वॆरुविऩ विळिप्प मेऩाळ्
पॊय्हैयि ऩिडङ्गर् कव्वप् पुरादऩा पोऱ्ऱि यॆऩ्ऱु
कय्यॆडुत् तऴैत्त याऩै पोऩ्ऱऩ कळिनल् याऩै 631

कळि नल् याऩै–मत्त और श्रेष्ठ गज; मैयुऱु–मेघाच्छादित; मलैकळोटु–पर्वतों के साथ; मऱि कटल्–तीर से टकराकर मुड़नेवाले सागर में; वन्तु वीऴ्ऩ्त–आकर गिरे; वॆय्य वाय्–क्रूर मुखों के; मकरम् पऱ्ऱ–नक्रों के ग्रसने से; वॆरुवित–डरे; विळिप्प–चिल्लाने लगे तो; मेऩाळ्–पहले; पॊय्कैयित्–कमलाकर में; इटङ्कर्–नक्र के; कव्व–ग्रसने पर; पुरातता–पुरातन पुरुष; पोऱ्ऱि–प्रणाम है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; कै ऎटुत्तु–हाथ (सूंड़) उठाकर; अऴैत्त–जिसने दुहाई दी; याऩै पोऩ्ऱऩ–उस गजेन्द्र के समान (एक-एक) लगे। ६३१

मत्त और श्रेष्ठ गज मेघाच्छादित पर्वतों के साथ तीर से टकरानेवाले समुद्र में जाकर गिरे। तब उन गजों को मगरों ने ग्रस लिया और वे गज भय से चिंघाड़ने लगे। तब वे एक-एक उस गजेन्द्र के समान लगे, जिसने पहले कभी मगर के ग्रसने पर 'हे पुरुष पुरातन' कहकर श्रीविष्णु को दुहाई दी थी। ६३१

अशुम्बुपाय् तेऩुम् बूवु मारमु महिलु मऱ्ऱुम्
विशुम्बॆला मुलवुन् दॆय्व वेरियिऩ् मिडैन्दु विम्मत्
तशुम्बॆलाम् वाश मूट्टिच् चाऱ्ऱिय तण्णीर् ऱॆऩ्ऩप्
पशुम्बुला ऩाऱुम् वेलै परिमळङ् गमऴ्ऩ्द दऩ्ऱे 632

अचुम्पु–स्रोत के समान; पाय्–बहनेवाला; तेऩुम्–शहद और; पूवुम्–पुष्प और; आरमुम्–चन्दन और; अकिलुम्–अगरु; मऱ्ऱुम्–और अन्य (सुगन्धित) तॆय्व वेरियित्–दिव्य गन्ध वस्तुएँ; विचुम्पु ऎलाम्–आकाश भर में; उलवुम्–फैले; पचुम् पुलाल्–ताजा से; मिटैन्तु–खूब मिश्रित होकर; विम्म–अधिक हुए; मांसगन्ध; नाऱुम्–देनेवाला; वेलै–सागर; तचुम्पु–घड़े में; ऎलाम्–भरपूर; वाचम्

मूट्टि चार्त्तिय–सुगन्ध-द्रव्य डालकर रखे गये; तण्णीर् ऑन्न–जल के समान; परिमळम् कमऴ्न्ततु–परिमल निकालने लगा। ६३२

अब समुद्र में शहद स्रोत के समान बहता था। उसमें फूल, चन्दन अगरु और अन्य गन्ध-द्रव्य आदि मिले हुए थे। और आकाश भर में फैलनेवाली दिव्य सुगन्धि भी मिल गयी थी। इसलिए वह समुद्र, जिससे ताज़ा मांसगन्ध निकला करता था, अब गन्धद्रव्य-भरे घड़े के जल के समान परिमल छिटका रहा था। ६३२

तेमुदऱ् कऩियुङ् गायुन् देऩित्तो डूऩुन् दॅय्वप्
पूमुद लाय वॅल्ला मीऩ्गॉळप् पॉलिऩ्द वऩ्ऱे
मामुदऱ् ऱरुवो डोङ्गुम् वाऩुयर् माऩक् कुऩ्ऱम्
तामुद लोडुङ् गॆट्टा लॊऴिवरो वण्मै तक्कोर् 633

तक्कोर्–सुयोग्य उत्तम लोग; ताम् मुतलोटुम् कॅट्टाल्–आप जड़ से बिगड़ जायेंगे (तो भी); वण्मै–उदारता (दानशीलता); ऑऴिवरो–छोड़ देंगे क्या; मा मुतल् तरुवोटु–आम आदि तरुओं के साथ; ओङ्कुम्–युक्त; वाऩ् उयर्–गगनोन्नत; माऩम् कुऩ्ऱम्–गण्य पर्वत; तेम् मुतल् कऩियुम् कायुम्–मधुर फल और शाक; तेऩिऩोटु ऊऩुम्–और शहद के साथ मांस; तॅय्व पू मुतल्–दिव्य फूल आदि; आय ऑल्लाम्–जो हैं सभी; मीऩ् कॉळ–मछलियाँ खाएँ ऐसा; पॉलिऩ्त–शोभे; (रे अऩ्ऱे–निश्चय ही)। ६३३

सम्मान्य महान् लोग स्वयं मूल से बिगड़ जाने पर भी अपनी दानशीलता छोड़ेंगे क्या ? वैसे ही; आम्र आदि बड़े तरुओं से युक्त गगनोन्नत बड़े-बड़े पर्वत स्वयं डूबते हुए भी इस स्थिति में रहे कि तब मछलियों को उनसे मीठे फल, शाक, मधु, दिव्य फूल आदि खाने को मिल रहे थे। ६३३

मण्णिऱै शेऱ्ऱुट् पुक्कुच् चुरिहिऩ्ऱ माऩक् कुऩ्ऱम्
कण्णिऱै पोदुङ् गायुङ् गऩिहळुम् बिऱवुङ् गववि
ऍण्णिऱै मीऩ्ग ळॆल्लाम् वऱियव रॆऩ्ऩ मेऩ्मेल्
उण्णिऱै शॆल्व नल्हा दॊऴिक्किऩ्ऱ वुलोव रॊत्त 634

कण् निऱै–आँखों में भले लगनेवाले; पोतुम्–फूलों; कायुम्–शाकों; कऩिकळुम्–और फलों को; पिऱवुम्–और अन्य भोजन-पदार्थों को; कववि–स्वयं रख लेकर; ऍण् निऱै मीऩ्कळ् ऍल्लाम्–अधिक संख्या की सभी मछलियों के; वऱियवर् ऍऩ्ऩ–दरिद्र याचकों के समान रहते; मण् निऱै–मिट्टी-भरे; चेऱ्ऱुळ् पुक्कु–कर्दम में घुसकर; चुरिकिऩ्ऱ–छिपनेवाले; माऩ कुऩ्ऱम्–बड़े पर्वत; उळ् निऱै–अपने पास विपुल रीति से रहनेवाले; चॅल्वम्–धन को; मेऩ् मेल्–उत्तरोत्तर; नल्कातु–बिना दान में दिये; ऑऴिक्किऩ्ऱ–छिपा देनेवाले; उलोपर् ऑत्त–लोभियों के समान रहे। ६३४

पर्वतों पर आँखों में खुबनेवाली रीति से शाक, फल, फूल और अन्य

(मछलियों के) खाद्य पदार्थ थे। असंख्य मछलियाँ उनको खाने के लिए आतुर थीं। पर वे पर्वत उनको दरिद्र याचकों के समान तरसता छोड़कर मिट्टी से भरे पंक के अन्दर धँसकर छिप गये। तब वे उन लोभी धनिकों के समान लगे जो अपने विपुल धन को बराबर देते नहीं पर छिपाते हों। ६३४

करङ्गॅन्नत् तिरियुम् वेहक् कविक्कुलम् कडिदिन् वाङ्गिप्
पिरङ्गिरुङ् गडलिऱ् पॅय्द पोऴ्दत्तुम् पॅरिय पान्दळ्
मरङ्गिळर् मान यानै वयिऱ्ऱिन वाह वाय्शोऱ्न्
दुरङ्गिन्न केडुऱ् ऱालु मुणर्वरो वुणर्वि लादार् 635

करङ्कु ॲन्त–वातचक्र (या पतंग) के समान; तिरियुम्–घूमनेवाले; वेकम् कवि कुलम्–गतिमान कपिकुल; कटितिन् वाङ्कि–जल्दी उखाड़कर; पिऱङ्कु–शानदार; इरु कटलिल्–बड़े सागर में; पॅय्त पोऴ्ततत्तुम्–जब डालते रहे तब भी; पॅरिय पान्तळ्–बड़े-बड़े साँप (अजगर); मऱम् किळर्–वीरता में बढ़े; मातम् यानै–मान्य गज; वयिऱ्ऱित्त आक–उनके उदरस्थ रहे तब; वाय् चोर्न्तु–मुख खोले; उऱङ्कित्त–सोये; उणर्वु इलातार्–बेसुध लोग; केटु उऱ्ऱालुम्–हानि होने पर भी; उणर्वरो–महसूस करेंगे क्या। ६३५

कपिकुल वातचक्र (या पतंग) की-सी गति के साथ पर्वतों को उखाड़ लाकर आकर्षक बड़े सागर में डाल रहे थे। तब भी उन पर रहनेवाले अजगर अपने उदर में रहनेवाले बड़े-बड़े वीर गजों के साथ मुख खोले सोये रहे। भ्रमित रहनेवाले लोग आपन्न विपदा को भी समझेंगे क्या? (नहीं समझते)। ६३५

इऴैयॅन्नत् तहैय मिन्निन् नॅयिऱ्ऱिन मुऴक्क मॅय्दप्
पुऴैयुडैत् तडक्कै यॉन्ऱो डॉन्ऱिडै पॉरुन्दच् चुऱ्ऱिक्
कऴैयुडैक् कुन्ऱिन् मुन्ऱि लुरुमोडु कलन्द काल
मऴैयॅन्नप् पॉरुद वेलै महरमु मत्त मावुम् 636

पुऴै उटै–रंध्रसहित; तट कै–बड़े हाथ (बड़ी सूँड़); ऑन्ऱोटु ऑन्ऱु–एक-दूसरे के साथ; इटै पॉरुन्त–मिले रहें ऐसा; चुऱ्ऱि–लपेटकर; इऴै ॲन्न तकैय–आभरण ही सम; मिन्तिन् ॲयिऱ्ऱित्त–बिजली-से दाँतों वाले; मत्त मावुम–मत्त गज और; वेलै मकरमुम्–समुद्र के मगर; कऴै उटै–बाँसों-सहित; कुन्ऱिन् मुन्ऱिल्–पर्वत के आँगनों में; उरुमोटु कलन्त–वज्रघोषयुक्त; काल मऴै ॲन्त–मौसमी मेघों के समान; मुऴक्कम् ॲय्त–बड़े शोर के उठते; पॉरुत–आपस में भिड़े। ६३६

आभरण-सम, बिजली-सी चमकदार अपनी सूँड़ों को परस्पर लपेटकर मत्त गज और समुद्र के मगर वंशवृक्षसंकुल पर्वत के आँगनों पर युगान्त के (या मौसमी) मेघों के समान उच्च गर्जन-नाद निकालते हुए भिड़ रहे थे। ६३६

पॊन्ऱिऩ शिऱिय वाय पुण्णियम् पुरिन्दोर् पोलक्
कुन्ऱुहळ् कुरक्कु वीरर् कुवित्तऩ नॆरुप्पुक् कॊप्प
ऒन्ऱिन्मे लॊन्ऱु वीऴ वुहैत्तॆऴुन् दुम्बर् नाडु
शॆन्ऱुमे लिडम्बॆ ऱादु तिरिन्दऩ शिहरच् चिल्लि 637

कुरक्कु वीरर्–वानर वीरों द्वारा; कुवित्तत–ढेर लगाये गये; कुन्ऱुकळ्–पर्वत; नॆरुप्पु कॊप्प–आग लगती जले ऐसा; ऒन्ऱिन् मेल् ऒन्ऱु–एक-दूसरे पर; वीऴ–गिरें ऐसा; उकैत्तु ऎऴुन्तु–प्रेरणा से उठे; चिकरम् चिल्लि–शिखरों के टुकड़े; पॊन्ऱित–छिन्न; चिऱिय आय–लघु; पुण्णियम् पुरिन्तोर् पोल–पुण्य जिन्होंने किया हो उनके समान; उम्पर् नाटु चॆन्ऱु–देवलोक जाकर; मेल् इटम् पॆऱातु–वहाँ स्थान न पाकर; तिरिन्तऩ–लौट आये। ६३७

वानर वीरों ने जिन पर्वतों को लाकर ढेर लगाये, उनके आपस में टकराने से आग निकलने लगी और लगातार जलने लगी। तब शिखर के टुकड़े बने और ऊपर उठे। वे वहाँ स्थान न पाकर उन अल्पपुण्यात्मा के समान नीचे गिर गये जिनका वह पुण्य भी क्षीण हो गया हो। ६३७

कूरुडै यॆयिऱ्ऱुक् कोण्माच् चुऱविऩ मॆऱिन्दु कॊल्लप्
पोरुडै यरियुम् वॆय्य पुलिहळुम् याळिप् पोत्तुम्
नीरिडैत् तोऱ्ऱ वन्ऱे तन्निलै नीङ्गिऱ् ऱॆन्ऱाल्
आरिडैत् तोलार् मेलो रऱिविडै नोक्कि नम्मा 638

कूर् उटै ऎयिऱु–तीक्ष्णतायुक्त दाँतों वाले; कोण् मा–जलपशु; चुऱवु इऩम्–'शुरा' (मछली) समूह (के); ऎऱिन्तु कॊल्ल–प्रहार कर मारने से; पोर् उटै अरियुम्–युद्धप्रिय सिंह और; वॆय्य पुलिकळुम्–भयंकर व्याघ्र और; याळि पोत्तुम्–पुरुष शरभ; नीर् इटै–जल में; तोऱ्ऱ–हारे; अम्मा–मैया (आश्चर्य); अऱिविटै–बुद्धि से; नोक्किऩ्–देखने पर; तम् निलै–अपने स्थान से; नीङ्किऩ्ऱु ऎऩ्ऱाल्–डिग जाएँ तो; मेलोर्–बल में श्रेष्ठ; आर् इटै–किससे; तोलार्–नहीं हारेंगे; अऩ्ऱे–(जोर देने के लिए प्रयुक्त अव्यय) नहीं क्या। ६३८

तीक्ष्ण दाँतों वाले 'शुरा' मीनों के मारने से युद्धप्रिय सिंह, भयंकर व्याघ्र और याळि (शरभ) जल में हार गये। मैया क्या ही आश्चर्य है! पर हाँ सोचकर देखें तो अपने स्थान से हटने पर बलश्रेष्ठ किसके हाथ नहीं हारेंगे? (किसी से भी हार जाएँगे।)। ६३८

ऒळ्ळिय वुणर्वु कूड वुदवल रॆनिनु मॊन्ऱो
वळ्ळिय रायोर् शॆल्व मन्नुयिर्क् कुदवु मन्ऱे
तुळ्ळिऩ कुदित्त वानत् तुयर्वरैक् कुवट्टिऱ् ऱूङ्गुम्
कळ्ळिनै निऱैय मान्दिक् कवियॆनक् कळित्त मीऩ्गळ् 639

ऒळ्ळिय उणर्वु–प्रकाशयुक्त बुद्धि; कूट–युक्त हो; उतवलर् ऎऩिनुम्–सहायता न करें तो भी; वळ्ळियर् आयोर्–दाता जो है उनका; चॆल्वम्–धन; ऒन्ऱो–वही

तक सीमित रहेगा क्या; मन् उयिर्क्कु–शाश्वत जीवों को; उतवुम् अन्ऱे–सहायता देगा न; मीन्कळ्–मछलियाँ; तुळ्ळिन–उछलीं; वानत्तु कुतित्त–आकाश में कूदीं; उयर् वरै–उन्नत पर्वत के; कुवट्टिल्–शिखरों में; तूङ्कुम्–लटकनेवाले; कळ्ळिनै–(छतों से) मधु को; निऱैय मान्ति–अधिक पीकर; कवि ॲन्न–कपियों के समान; कळित्त–मत्त हुईं। ६३९

दानी स्वभाव के लोग बुद्धि के प्रकाश में सोचकर सहायता न करें तो भी उनका धन सीमित नहीं रहता पर शाश्वत जीवों की मदद में आ ही जाता। वैसे ही पर्वत का शहद आकाश में उछलकर कूदनेवाली मछलियों का भोग बना और वे उसे खूब पीकर वानरों के समान मत्त हुई रहीं। ६३९

मूय्शरि पिऱक्क मीक्कॊण् डिऱक्किय मुडुक्कन् दन्नाल्
कोय्शॊरि नऱवमॆन्नत् तण्बुन लुहुक्कुङ् गुन्ऱिन्
वेय्शॊरि मुत्तुक् कम्मा विरुन्दुशॆय् दिरुन्द विण्ड
वाय्शॊरि यिप्पि योडुम् वलम्बुरि युमिळ्न्द मुत्तम् 640

मूय्चु ॲरि–घनी आग; पिऱक्क–जल उठे ऐसा; मी कॊण्टु इऱक्किय–ऊपर से नीचे आने के; मुटुक्कम् तन्नाल्–वेग के कारण; कोय् चॊरि–मधुपात्र से गिरने वाली; नऱवम् ॲन्न–ताड़ी के समान; तण् पुनल्–शीतल जल को; उकुक्कुम्–बहानेवाले; कुन्ऱिन्–पर्वत पर के; वेय्–बाँसों से; चॊरि–गिरनेवाले; मुत्तुक्कु–मोतियों का; इप्पि विण्ट–सीपियों के खिले; वाय् चॊरि मुत्तमोटुम्–मुख से निकले मोतियों के साथ; वलम् पुरि उमिळ्न्त–दक्षिणावर्त शंख द्वारा निकले; मुत्तम्–मोती; विरुन्तु चॆय्तु इरुन्त–आतिथ्य करके रहे। ६४०

घनी आग पैदा करते हुए पर्वत ऊपर से नीचे अति वेग के साथ गिरे। तब मधुपात्र से ढलनेवाली ताड़ी के समान शीतलजलवर्षी पर्वतों से मोती गिरे। उनका आतिथ्य सीपियों के और दक्षिणावर्त शंखों के जनाए मोतियों ने किया। (वे इनके पास जा गिरे)। ६४०

विण्ड लन्दोडु माल्वरै वेरोडुम्
कॊण्ड लङ्गॊळ वीरर् कुवित्तलाल्
तिण्ड लङ्गड लान्दु नीर्शॆल
मण्ड लङ्गड लाहि मऱैन्ददे 641

वीरर्–वानर वीरों के; विण् तलम् तोटु–आकाशतलस्पर्शी; माल् वरै–बड़े-बड़े पर्वतों को; वेरॊटुम् कॊण्टु–जड़ के साथ ले आकर; अलम् कॊळ–संकट देते हुए; कुवित्तलाल्–ढेर लगाने से; कटल्–समुद्र; नीर् चॆल–जल के दूर हो जाने से; तिण् तलम् आनतु–कठोर थल बन गया; नीर् चॆल–जल के आ जाने से; मण् तलम्–भूमि का स्थल; कटलाकि–समुद्र बनकर; मऱैन्ततु–अदृश्य हो रहा। ६४१

वानर वीरों के गगनस्पर्शी बड़े-बड़े पर्वतों को जड़ के साथ लाकर

समुद्र को कष्ट देते हुए ढेर में डालने से समुद्र का जल हट गया और वहाँ कठोर भूमि निकल आयी। फिर भूमि पर जल बहकर ठहरा और वहाँ भूमि छिप गयी। ६४१

अय्यन् वेण्डि नदुविदु वामत्रे
वॆय्य शीयमुम् यािळयुम् वेङ्गैयुम्
मॊय्हॊळ् कुन्रिन् मुदलिन मॊय्त्तलाल्
नॆय्दल् वेलि कुरिञ्जि निहर्त्तदाल् 642

मॊय् कॊळ्-कठोर; कुन्रिन्-पर्वत के; वॆय्य चीयमुम्-भयंकर सिंह और; यािळयुम्-शरभ और; वेङ्कैयुम्-व्याघ्र; मुतलिन-आदि; मॊय्त्तलाल्-अधिक संख्या में आकर रह जाने से; नॆय्तल् वेलि-'नॆय्दल' प्रदेश; कुरिञ्चि निकर्त्ततु-'कुरिञ्जि' (पार्वत्य) प्रदेशों के समान हो गये; अय्यन् वेण्टिन्-ईश्वर ने चाहा तो; अतु इतु आम् अन्रे-वह (एक) यह (दूसरा) बन जायगा न। ६४२

बड़े और कठोर पर्वतों पर भयंकर सिंह, शरभ और व्याघ्र आदि बड़ी संख्या में थे। अब वे पर्वत समुद्र में पड़े हैं। इस कारण 'नॆय्दल' (समुद्रतटीय) प्रदेश 'कुरिञ्जि' (पार्वत्य) प्रदेश-से बन गये। (यानी समुद्रतटीय प्रदेश में पार्वत्य प्रदेश के जानवर दिखायी दिये।) सबके स्वामी ईश्वर चाहें तो 'वह' 'यह' बन सकता है न? (कुछ भी अन्य कुछ में बदल सकता है।)। ६४२

यानु णादन विङ्गिवै यॆन्नवे, तीनु णादन वॆन्निदु शॆय्युमे
मानु णाद तिरैक्कडल् वाऴ्दरु, मीनु णादन विल्लै विलङ्गरो 643

यात् उणातन-जो मैंने नहीं खाये; इङ्कु इवै-वे यहाँ ये हैं; ऎन्नवे-कहकर; तीन् उणातन-(पर्वतीय पशुओं ने) खाद्य नहीं खाया; मात् उणात-पशुओं द्वारा जो नहीं खाये गये; तिरै कटल्-(वे) लहरसागर में; वाऴ् तरु मीन्-रहनेवाली मछलियों ने; इतु ऎन् चॆय्युमे-यह क्या करेगा; उणातन-जिनको नहीं खाया; विलङ्कु इल्लै-वे जानवर नहीं हैं। ६४३

पर्वतों के साथ जंगली जानवर आये। उन्होंने देखा कि वहाँ खाने को कुछ नहीं मिलता था। मछली आदि जीव थे पर वे उनके खाने योग्य नहीं थे। इसलिए उन्होंने कुछ नहीं खाया। पर मछलियों ने यह सोचकर उन्हें खा लिया कि आखिर ये जानवर हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं? ऐसा कोई जानवर नहीं बचा जिसे मछलियों ने नहीं खाया हो। ६४३

वौवि लङ्गु वळर्त्तवर् माट्टरुळ्, शॆव्वि लङ्गलिल् शिन्वॆयिर् ऱीरुमो
इव्वि लङ्गल् विडॆमिनि यॆन्बपोल्, ऎव्वि लङ्गुम्वन् दॆय्दिन वेलैये 644

वौ विलङ्कु-मुख से पकड़ लेनेवाले जानवर में भी; वळर्त्तवर् माट्टु-पालने

वालों के प्रति; चॅम् विलङ्कल् इल्–सीधेपन से न हटनेवाले; चिन्तैयिल्–मन से; अरुळ् तीरुमो–स्नेह दूर होगा क्या; इ विलङ्कल्–यह पर्वत; इति विटेम्–अब नहीं छोड़ेंगे; ॲन्नुप पोल्–ऐसा कहते-से; ॲ विलङ्कुम्–सभी जानवर; वेलै वन्तु ॲय्तिन–समुद्र में आ पहुँचे। ६४४

दूसरे जीवों को मुख से पकड़कर खानेवाले पशुओं के मन में पालनेवालों के प्रति जो प्रेम है वह क्या उनके सीधे-सादे मन से दूर होगा? (नहीं।) पर्वतों के साथ उन पर रहनेवाले जानवर भी समुद्र में आ गये और उससे लगता है कि उनका विचार था कि हम इन पर्वतों को नहीं छोड़ेंगे। ६४४

कन्दि रुन्नॅडुङ् गाय्दरु नाडॊरुम्, इतिद रुन्दव नॊय्दि नियऱ्ऱलाल्
पनिद रुङ्गिरि नम्मनम् पऱ्ऱरु, मुनिव रुम्मुनि यार्मुडि वुन्नुवार् 645

इतितु–सुखद; अरु–और कठिन; तवम्–तपस्या; नॊय्तिन्... कष्ट के; इयऱ्ऱलाल्–करने का स्थान होने से; नाळ् तॊरुम्–प्रतिदिन; कनि तरुम्–फल देनेवाले और; नॅटु काय् तरुम्–बड़े कच्चे फलों को देनेवाले; पनि तरुम्–शीतलता-युक्त; किरि–पर्वत को; तम् मनम्–अपने मन के; पऱ्ऱु अऱु–राग जो काट चुके; मुनिवरुम्–वे मुनि भी; मुटिवु उन्नुवार्–अपना अन्त जानकर भी; मुनियार्–कुपित नहीं हुए। ६४५

मुनियों के लिए वे पर्वत ऐसे स्थान थे जहाँ वे कष्टसाध्य पर सुखान्त तपस्या विना किसी असुविधा के कर सकें। वे उन्हें प्रतिदिन फल, शाक आदि देते थे। उन पर्वतों के साथ रहने के कारण उन्हें अभी मरना पड़ जाएगा। तो भी वे निर्लिप्त मुनि (वानरों से) कुपित नहीं हुए। ६४५

पुलैयिन् वाऴ्क्कै यरक्कर् पॊरुप्पुळार्
तलैयिन् मेल्वैत्त कैयिनर् शाऱ्ऱुवार्
मलैयि लेमऱ्ऱु माऱिनि वाऴ्वदोर्
निलैयि लेमॅन् ऱिलङ्गै नॅरुङ्गिनार् 646

पुलैयिन् वाऴ्क्कै–मांसाहारी जीवन बितानेवाले; पॊरुप्पुळार् अरक्कर्–पर्वतवासी राक्षस; तलैयिन् मेल् वैत्त–सिर पर रखे; कैयितर्–हाथों वाले हो; मलैयिले मऱ्ऱुम्–पर्वत छोड़कर; माऱु–अलग; इति वाऴ्वतु–अब रहने का; ओर् निलैयिलेम्–एक स्थान नहीं है हमें; ॲन्ऱु चाऱ्ऱुवार्–ऐसा कहते हुए; इलङ्कै नॅरुङ्कितार्–लंकापुरी के समीप गये। ६४६

उन पर्वतों पर मांसाहारी राक्षस रहते थे। अब यह स्थिति हो गयी कि उन्हें रहने का और कोई स्थान न रह गया। यह सोचकर वे अपने सिरों पर हाथ रखे लंका की ओर गये। ६४६

मुऴुक्क नीरिऱ् पुहामुऴु हिच्चॅलाक्, कुऴुक्क ळोडणै कोळरि याळिहळ्
इऴुक्किल् पेरणै यिन्निरु पक्कमुम्, ऑऴुक्किन् मालै वहुत्तन वॉत्तवे 647

नीरिल् मुऴुक्क–जल में डुबोने पर भी; पुका–जो नहीं डूबे; मुऴुकि चॅला–जो स्वयं मग्न नहीं हुए; कुऴुक्कळोटु अणै–झुंडों के साथ रहे; कोळरि याळिकळ्–सिंह और शरभ; इऴुक्किल्–निर्दोष; पेर् अणैयिन्–बड़े सेतु के; इरु पक्कमुम्–दोनों ओर; ऑऴुक्किन्–सुन्दर पंक्ति में; माल वकुत्तन–हार बनाये गये; ऑत्तवे–जैसे रहे। ६४७

झुण्ड के झुण्ड सिंह, शरभ आदि डुबोने पर भी जल में नहीं डूबे, और न बह गये। सेतु के दोनों ओर लगातार पंक्ति में रहे वे माला के समान दिखे। ६४७

पळिक्कु माल्वरै मुन्दु पडुत्तन, ऑळिक्कु माऴि किडन्दन वोर्हिलर्
वॅळिक्कु ओररर वेण्डु मॅनक्कॊणर्न्, दळिक्कुम् वानर वीर रनेहराल् 648

ऑळिक्कुम् आऴि–अदृश्य समुद्र में; मुन्तु पटुत्तन–पहले ही डाले गये; पळिङ्कु माल्वरै–स्फटिक के बड़े पर्वत; किटन्तन–जो पड़े रहे उनको; ओर्किलर्–न देखकर; वॅळिक्कु–उस रिक्त स्थान को; मा वरै वेण्टुम्–(ढँकने के वास्ते) बड़े पर्वत चाहिए; ऍन–ऐसा सोचकर; कॊणर्न्तु–लाकर; अळिक्कुम्–देनेवाले; वानर वीरर्–वानर वीर; अनेकर–अनेक थे (आल्-पूरक ध्वनि।)। ६४८

सेतु में बीच-बीच में स्फटिक पर्वत पड़े थे। वहाँ समुद्र छिप नहीं सका। वानरों ने सोच लिया कि वहाँ स्थान खाली है। 'उनको ढँकने के लिए बड़े पर्वत चाहिए' —यह सोचकर पर्वत उखाड़ लेनेवाले वानर अनेक पाये गये। ६४८

पारि ताळमुदु हुन्नॅडुम् वाळ्पड, मूरि वानरम् वाङ्गिय मॊय्म्मलै
वेरि नामॅन वॅम्मुऴै यिन्नुऴै, शोरु नाह निलनुऱत् तूङ्गुमाल् 649

पारिताळ्–भूदेवी की; नॅटुम् मुतुकुम्–लम्बी पीठ भी; पाऴ् पट–रिक्त हुई ऐसे; मूरि वानरम्–बलवान वानरों ने; वाङ्किय–जो उखाड़े; मॊय्मलै–वे बड़े पर्वत; वेरिन् आम्–जड़सहित हैं; ऍन–ऐसा दिखाते हुए; वॅम् मुऴैयिन् उऴै–क्रूर गुफाओं से; चोरुम्– गिरनेवाले; नाकम्–नाग; निलन् उऱ–भूमि पर लगते हुए; तूङ्कुम्–लटके। ६४९

भूमिदेवी की पीठ को गड्ढे बनाते हुए वानरों ने जिन पर्वतों को उखाड़ा, उनकी गुहाओं से साँप भूमि को छूते हुए लटक रहे थे और वे साँप पर्वतों के जड़-सहित रहने का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। ६४९

अरुणच् चॅम्मणिक् कुन्ऱय लेशिल, इरुणर् कुन्ऱ मडुक्किन वेय्न्दन
करुणक् कॊण्डल् वरियन् कऴुत्तॅन, वरुणर् कीन्द वरुण शरत्तये 650

अरुणम्–लाल; चॅ–सुन्दर; मणि कुन्ऱु अयले–रत्नमय पर्वतों के पास; इरुळ् नल् कुन्ऱम्–अँधेरे के रंग के श्रेष्ठ पर्वत; चिल अट्टुक्किन्–कुछ एक के ऊपर एक रखे जो थे वे; करुणै कॉण्टल् करुणावर्षी मेघ-सम श्रीराम ने; वरियन् कळुत्तु ऑन्–रिक्तकण्ठ है (वरुण) ऐसा सोचकर; वरुणऱ्कु ईन्त–वरुण को जो दिया; वरुण चरत्तैयै–रंग-विरंगे हार के ही; एय्न्तन–समान थे। ६५०

सेतु में लाल और श्रेष्ठ रत्नमय पर्वतों के पास अँधेरे के-से रंग के काले पर्वत भी चुन रखे गये थे। उनको देखकर एक रंग-बिरंगे हार का विचार आता था जिसे करुणावर्षक मेघ-सम श्रीराम ने वरुण को यह सोचकर दिया हो कि वरुण का कण्ठ (अपने हार को मेरे पास दे देने से) रिक्त है। ६५०

एय्न्द तम्मुडम् बिट्ट वुयिर्क्किडम्, आय्न्दु कॉळ्ळु मऱिञरि ताऴ्हडऱ्
पाय्न्द पण्डुऱै युम्मलैप् पान्दळ्हळ्, पोन्द मामलै यिन्मुळै पुक्कवे 651

एय्न्त–(दूसरे शरीर से) युक्त; उयिर्क्कु इट्ट इटम्–जीव का योग्य आगार; तम् उटम्पु–अपना शरीर; आय्न्तु कॉळ्ळुम्–परखकर अपनानेवाले; अऱिञरित्–(परकायप्रवेश की सिद्धि-प्राप्त) ज्ञानी के समान; आऴ् कटल् पाय्न्त–गहरे समुद्र में जो लपके वे; मलै पान्तळ्कळ्–पहाड़ी साँप; पण्टु उऱैयुम्–पहले जहाँ थे; पोन्त–(और जो अब समुद्र में) आ गये; मा मलैयिन् मुळै–बड़े पर्वतों की गुफाओं में; पुक्क–घुसे। ६५१

परकायप्रवेशसिद्ध ज्ञानी लोग अपने जीव से युक्त दूसरी देह में रहते हुए भी अपने पूर्व शरीर का ध्यान रखते हैं और उसमें आकर प्रवेश करते हैं। ठीक उसी प्रकार गहरे समुद्र में गिरे हुए पर्वतों में पहले जो रहे वे अजगर अब उनकी अपनी पुरानी गुहाओं में आकर घुस गये। ६५१

शेदु विन्पॅरु मैक्किणै शॅप्पवोर्, एदु वेण्डुमॅन् ऱॅण्णुव दॅन्गॉलो
तूद निट्ट मलैयिन् तुवलैयाल्, मीदु विट्टुल हुऱ्ऱन मीन्गळुम् 652

चेतु विन् पॅरुमैक्कु–सेतु की महिमा को; इणै चॅप्प–तुलना कहने को; ओर् एतु वेण्टुम्–एक कारण चाहिए; ॲन्ऱु ॲण्णुवतु–ऐसा सोचना; ॲन् कॉल् ओ–काहे को; तूतन् इट्ट–(श्रीराम के) दूत द्वारा डाले गये; मलैयित् तुवलैयाल्–पर्वत (के गिरने) से उठे जलकणों के साथ; मीन्कळुम्–मछलियाँ; विट्टु–समुद्र छोड़कर; मीतु उलकु उऱ्ऱन–ऊपर के लोक में पहुँच गये। ६५२

सेतु (जो वन रहा था उस) की महिमा की उपमा देकर वर्णन करने के लिए एक हेतु ढूँढ़ने की क्या आवश्यकता है ? (एक-एक वानर वीर के कृत्य का वर्णन ही काफ़ी होगा।) श्रीराम के दूत (हनुमान) ने पर्वत जो डाला उससे उठी बूँदों के साथ मछलियाँ भी समुद्र को छोड़कर ऊपर उठीं और आकाश में पहुँच गयीं। ६५२

नील तिट्ट नॆडुवरै नीणिलम्, मूल मुट्टलिऩ् मॊय्पुऩल् कैम्मिहक्
कूल मिट्टिय वार्हलि कोत्तलाल्, ओल मिट्टऩ वोडि युलहॆलाम् 653

नीलऩ्–नील (द्वारा); इट्ट–(समुद्र में) डाला गया; नॆटु वरै–बड़ा पर्वत; नीळ् निलम्–लम्बी भूमि के; मूलम्–मूल तक; मुट्टलिऩ्–जाकर टकराया इसलिए; मॊय् पुऩल्–घना जल; कै मिक–फैले, इस भाँति; कूलम् इट्टिय–तीर से सीमित; आर् कलि–शब्दायमान सागर; कोत्तलाल्–(भूमि को) ढाँप गया इसलिए; उलकु ऍलाम्–सारे लोकवासी; ओटि–भागकर; ओलम् इट्टऩ–चिल्लाये। ६५३

नील ने जो पर्वत समुद्र में डाला वह लम्बी भूमि के निचले तल से जा टकराया। उससे घना जल फैल जाए, ऐसा समुद्र तीर पारकर गया और भूमि को ढँक गया। तो भूतल के सारे जीव भागे और चिल्ला उठे। ६५३

मयिन्द तिट्ट नॆडुवरै वानुऱ, उयर्न्दु मुट्टि विऴॆव्ॴन् दोदनीर्
तियन्द मुट्टत् तिशैनिलै यानैयुम्, पॆयर्न्दु विट्टवै यावुम् पिळिऱुव 654

मयिन्तऩ् इट्ट–मैंद द्वारा फेंके गये; नॆटु वरै–बड़े पर्वत से; ओतम् नीर्–समुद्र; वाऩ् उऱ्–आकाश से लगते हुए; उयर्न्तु ऍऴुन्तु–उठ चढ़ा; मुट्टि–टकराया; विऴ–गिरा; ति अन्तम् मुट्ट–दिगंत से टकराया; तिचै निलै यानैयुम्–दिग्गज भी; पॆयर्न्तु विट्टवै–अपना-अपना स्थान छोड़ गये; यावुम् पिळिऱुव–सभी चिंघाड़ उठे। ६५४

मैंद के द्वारा डाले गये पर्वत से समुद्रजल आकाश को छूते हुए उठा; उससे टकराया और नीचे आया। तब वह दिगन्तों से भी टकराया तो दिग्गज अपना-अपना स्थान छोड़कर चिंघाड़ उठे। ६५४

इलक्कु	**वऩ्शर**	**मायिऩु**	**मिऩ्ऱॆदिर्**
विलक्कि	**ऩाल्विलङ्**	**गाद**	**विलङ्गलाल्**
अलक्क	**णॆय्दि**	**यमिर्दॆऴ**	**वाऴियैक्**
कलक्कि	**ऩाऩ्महऩ्**	**मीळक्**	**कलक्किऩाऩ् 655**

आऴियै–समुद्र को; अलक्कण ऍय्ति–संकट पाकर; अमिर्तु ऍऴ–अमृत निकले ऐसा; कलक्किऩाऩ्–जिसने मथा, उस (वाली) के; मकऩ्–पुत्र (अंगद) ने; इलक्कुवऩ् चरम् आयिऩुम्–लक्ष्मण का (अचूक) शर ही क्यों न हो; इऩ्ऱु ऍतिर् विलक्किऩाल्–आज सामने आकर हटा दे तो भी; विलङ्कात–जो नहीं हटेगा; विलङ्कलाल्–पर्वत द्वारा; मीळ–फिर एक बार; कलक्किऩाऩ्–मथ डाला। ६५५

वाली ने समुद्र को क्षुब्ध करते हुए और अमृत निकालते हुए मथा था। आज उसके पुत्र ने लक्ष्मण-शर से भी अप्रतिहत रीति से पर्वत फेंककर समुद्र को फिर से मथ दिया। ६५५

मरुत्तिऩ्	**मैन्दऩ्**	**मणिनॆडुन्**	**दोळॆऩप्**
पॆरुत्त	**कुऩ्ऱङ्**	**गरडिप्**	**पॆरुम्बडै**

विरुत्त नि़ट्ट विशैयिनि़न् वीशिय
तिरुत्तम् वाऩवर् शॅऩ्नियिऱ् चॅऩ्ऱवाल् 656

मरुत्तिन् मैन्तन्–वायु के पुत्र; मणि नॅंटु तोळ् ॲन्न–सुन्दर बड़े कन्धों के समान; पॅरुत्त–स्थूल; कुऩ्ऱम्–पर्वत; करटि पॅरु पटै–रीछों की बड़ी सेना के; विरुत्तन्–वृद्ध जाम्बवान के; इट्ट विचैयिनिल्–डालने की तेज़ी से; वीचिय तिरुत्तम्–छितरे जलकण; वाऩवर् चॅऩ्नियिल्–देवों के सिरों पर; चॅन्ऱु–जा गिरे। ६५६

पवनसूनु के उन्नत सुन्दर कन्धों से तुल्य स्थूल एक पर्वत को रीछों के वृद्ध राजा जाम्बवान ने उठाकर फेंका तो उसकी गति से जो जलकण उठकर छितरे वे देवों के सिरों पर जा गिरे। ६५६

❀ कुमुद नि़ट्ट कुलवरै कूत्तनि़ल्, तिमिद मिट्टुत् तिरियुन् दिरैक्कडल्
तुमिद मूऱ्बुह वानवर् तुळ्ळिनार्, अमुद मिन्ऩ मॅळ्ळुमॅनु माशैयाल् 657

कुमुतन् इट्ट–कुमुद द्वारा डाले गये; कुल वरै–कुल पर्वत के; कूत्तनिल्–नटों के समान; तिमितम् इट्टु–'धिमधिम' शब्द करके; तिरियुम्–घूमने से; तिरै कटल्–ऊर्मिमाली (सागर) के; तुमि–जलकण; तम् ऊर् पुक–अपने लोक में घुसे इसलिए; इऩ्ऩम् अमुतम् ॲॅळुम्–और अमृत निकल आएगा; ॲॅन्नुम् आचैयाल्–इस आशा से; वानवर् तुळ्ळिनार्–देव नाच उठे। ६५७

कुमुद ने एक कुलगिरि को ही डाला। वह गड़े बाँस पर चढ़कर खेल-तमाशा दिखानेवाले नट के समान 'स्तिमित' रहकर समुद्र को क्षुब्ध करने लगा। तब लहरें अतिचंचल हुईं। समुद्र से बूँदें उठीं और देव-लोक में घुस गयीं। तब उन्हें देखकर देव यह अनुमान करके उछल पड़े कि अब और अमृत निकलेगा। ६५७

कऩशि ऩत्तुरु मिऱ्कडुङ् गार्वरै, पऩश नि़ट्टऩ यावुम् बरिक्किलन्
मऩशि ऩत्त वऩन्दऩव् वाळ्विहन्, दऩश ऩत्तॊळिन् मेऱ्कॊळ्व दायिनान् 658

मन चिनत्त–क्रोधी स्वभाव का; अनन्तन्–अनन्तनाग; पनचन् इट्टन–पनश द्वारा डाले गये; कन चिनत्तु–गम्भीर क्रोध (तेज़ी) के; उरुमिन्–वज्र से प्रहरित हो; कटु कार्वरै–तेज़ी से गिरनेवाले बड़े पर्वतों को; यावुम् परिक्किलन्–सभी को न ढो सककर; अ वाळ्वु इकन्तु–उस जीवन से बाज आकर; अनचन तॊळिल्–अनशन का कार्य; मेऱ्कॊळ्वतु आयिनान्–अपनाने चला। ६५८

क्रोधी स्वभाव के अनन्तनाग से पनश द्वारा डाली गयी बहुत प्रखर वज्र-प्रहरित गिरियाँ न ढोयी जा सकीं, इसलिए उस जीवन को त्याग देने के विचार से वह अनशन करने लग गया। ६५८

ॲॅण्णि लॅण्गिऩ मिट्ट किरिक्कुलम्
उणण वणणचचॅऩ ऱॊन्ऱिऱॊ डॊन्ऱुरच्

चुण्ण नुण्बॊडि याहित् तॊलैन्दन
पुण्णि यम्बॊरुन् दाद मुयऱ्चिपोल् 659

ऑण्णिल्–असंख्यक; ऑण्कु इनम्–रीछ के समूहों द्वारा; इट्ट–डाले गये; किरि कुलम्–गिरियों के समूह; उण्ण उण्ण–मानो खाते हों ऐसा; चॆन्ऱु–जाकर; ऑन्ऱिरॊट् ऑन्ऱु उऱ–एक-दूसरे से टकराये; पुण्णियम् पॊरुन्तात–पुण्य-भाग न मिला हो जिससे; मुयऱ्चि पोल्–उस प्रयत्न (कार्य) के समान; नुण् चुण्ण पॊटि आकि–महीन चूर्ण बनकर; तॊलैन्तत–मिटे। ६५८

रीछों के समूहों ने अनगिनत पर्वतसमूह डाल दिये। वे एक के पीछे एक ऐसे गये मानो वे एक-दूसरे को खा लें। वे आपस में टकराए और पुण्य भाग से युक्त न होने कारण जैसे प्रयत्न विफल हो जाते हैं वैसे ही वे सूक्ष्म कण बनकर मिट गये। ६५९

आर वायिर योशनै याऴमुम्. तीर नीण्डु परन्द तिमिङ्गिलम्
पार माल्वरै येऱप् पदैत्तुडल्, पेर वेकुन्ऱुम् वेलैयुम् बेर्न्दवाल् 660

आयिरम् योचनै आऴमुम्–हजार योजन की गहराई; आर–भर में; तीर नीण्टु–पूर्ण लम्बा; परन्त–चौड़ा; तिमिङ्किलम्–तिमिंगिल; पारम् माल् वरै–भारी और बड़े पर्वत के; एऱ–उस पर पड़ने से; उटल् पतैत्तु–कम्पित-शरीर हो; पेरवे–अलग हट गया, तो; कुन्ऱम् वेलैयुम्–पर्वत और समुद्र; पेर्न्त–अस्त-व्यस्त हुए। ६६०

सहस्र योजन की गहराई को पाटते हुए तिमिंगिल पड़े थे। उन पर ये बड़े भारी पर्वत गिरे तो वे छटपटाकर हटने लगे। तब पर्वत और समुद्र अस्त-व्यस्त हो गये। ६६०

कुलैहॊ ळक्कुऱि नोक्किय कॊऴ्हैयान्
शिलैह ळॊक्क मुऱित्तुच् चॆऱित्तुनेर्
मलैह ळॊक्क वडुक्कि मणऱ्पडत्
तलैह ळॊक्कत् तडवुन् दडक्कैयाल् 661

कुलै–सेतु; कुऱि कॊळ–उद्देश्य के अनुसार बने, ऐसे; नोक्किय कॊळ्कैयान्–निश्चित संकल्प वाला (नल); चिलैकळ् ऑक्क–पत्थर-सम रहें ऐसा; मुऱित्तु–तोड़कर; नेर् चॆऱित्तु–सीधे लगाकर; मलैकळ्–पर्वतों को; ऑक्क अटुक्कि–सीधे चुन रखकर; मणल् पट–रेत डालकर; तलैकळ् ऑक्क–शिखरों को सम बनाकर; तट कैयाल्–अपने विशाल हाथ; तटवुम्–उन पर फेरता। ६६१

नल ने मन में सेतु का नक्शा बना रखा था। उसी के अनुरूप बनाने में चित्त देकर उसने पत्थरों को सम रूप से काटा-छाँटा। फिर सम रीति से चुन रखा। वैसे ही गिरियों को ठीक तरह से सजाया,

बालू फैलाया और अपने हाथों से दबा-सहलाकर उनके सिरों को सम किया। ६६१

तळुवि यायिर कोडियर् ताङ्गिय, कुळुविन् वानरर् तन्द किरिक्कुलम्
ॲळुवि नीळ्हरत् तेऱ्ऱिड विऱ्ऱिडै, वळुवि वीळ्वन कालहळिल् वाङ्गुवान् 662

आयिरम् कोटियर्–सहस्र कोटि के; कुळुविन् वानरर्–समूह के वानर; तळुवि–शरीर से लगाकर; ताङ्किय–उठाकर; तन्त–जो लाये; किरि कुलम्–उन गिरिकुल को; ॲळुविन् नीळ् करत्तु–लौहस्तम्भ-सम अपने लम्बे हाथों में; एऱ्ऱिट–धारण करते समय; इऱ्ऱु–टूटकर; इटै वळुवि–बीच में फिसलकर; वीळ्वत–जो गिरे उनको; काल्कळिल् वाङ्कुवान्–अपने पैरों पर धारण कर लेता। ६६२

(नल ने और भी करामात दिखायी!) सहस्र कोटि वानर छाती से लगा लेकर पर्वत लाते रहे और फेंकते रहे। उन असंख्यक पत्थरों को नल ने अपने लौहस्तंभों-सम हाथों में पकड़ा। तब जो पर्वत बचकर नीचे गिरे उन्हें उसने अपने पैरों से रोककर पैरों पर रख लिया। ६६२

मलै शुमन्द वरुवन वानरम्, निलैयि निन्ऱन शॅल्ल निलम्बॅऱा
अलनॅ दुङ्गड लन्ऱियु माण्डुत्तन्, दलैयिन् मेलॊरु शेदुवुन् दरुवपोन्म् 663

मलै चुमन्तु–पर्वत ढोते हुए; वरुवत वानरम्–आनेवाले वानर; चॅल्ल–आगे जाने के लिए; निलम् पॅऱा–स्थल न पाकर; निलैयिन् निन्ऱन–स्थिर खड़े रहे; अलै–तरंगों वाले; नॅटु कटल्–विशाल सागर के; अन्ऱियुम्–अलावा भी; आण्टु–तब; तम् तलैयिन् मेल्–अपने सिर पर; ऑरु चेतुवुम्–एक सेतु भी; तरुव पोन्म्–देनेवाले-से लगे। ६६३

पर्वतधारी वानर आये और स्थल न पाने से रुककर खड़े हो गये। तब ऐसा लगा मानो समुद्र पर जो सेतु था उसके अलावा वानरों ने अपने सिरों पर भी एक सेतु बना दिया हो। ६६३

परुत्त मालवरै येन्दिय पल्बडै
निरैत्त लिऱ्चिल शॅल्ल निलम्बॅऱाक्
करत्ति नेन्दिय कारवरै वानरम्
शिरत्तिन् मेऱ्कॊण्डु नीन्दिन शॅन्ऱवाल् 664

परुत्त माल् वरै–भीमकाय बड़े पर्वतों को; एन्तिय–उठानेवाली; पल् पटै–विविध सेनाएँ; निरैत्तलिल्–पंक्तिबद्ध खड़ी रहीं इसलिए; चिल वानरम्–कुछ वानर; चॅल्ल निलम् पॅऱा–जाने के लिए स्थल नहीं पाते; करत्तिन् एन्तिय–हाथ में लिये गये; कार् वरै–बड़े पर्वतों को; चिरत्तिन् मेल् कॊण्टु–सिरों पर रखे; नीन्तिन चॅन्ऱन–तैरते हुए गये। ६६४

बड़े भारी व स्थूल पर्वतों को ढोते हुए अनेक वानर वीरों की सेना-

सी खड़ी थी। तब कुछ वानरों को आगे जाने के लिए रास्ता नहीं मिल रहा था। इसलिए वे पर्वतों को सिर पर धारण किये हुए तैरकर गये। ६६४

आय्न्दु काद मरिदु शुमन्दन, ओय्न्द काल पशियि नुलर्न्दन
एन्दु माल्वरै वेल्तवर् रीण्डुतेन्, मान्दि मान्दि मऱन्दु मयङ्गुमाल् 665

आय्न्तु–अन्वेषण करके; कातम्–अनेक कोस; अरितु–प्रयास; चुमन्तन–जो ढोते आये; ओय्न्त काल–जिनके पैर थक गये; पचियिन् उलर्न्तन–जो भूख से सूख गये वे; एन्तु–जिनको उठा लाये; माल् वरै–उन बड़े पर्वतों को; वीत्तु–नीचे डालकर; अवर्रु ईण्टु तेन्–उन पर जमे रहे शहद को; मान्ति मान्ति–पी-पीकर; मऱन्तु–अपने को भूलकर; मयङ्कुम्–बेसुध हो जाते। ६६५

(बेचारे) वानर खोज-खोजकर अनेक कोस चले थे; पर्वत ढोकर आये थे। उनके पैर निर्बल हो गये। भूख से वे सूख गये। (इसलिए) उन्होंने उन भारी पर्वतों को नीचे डाल दिया और वे उन पर बहुतायत से मिलनेवाले शहद को पीकर नशीले हो गये। ६६५

पोदल् शॅय्हु नरुम्बुहु वार्हळुम्, मादिरन् दॉरुम् वानर वीरर्हळ्
शेदु वॅत्तुणे शॅन्ऱदॆन् बार्शिलर्, पादि शॅन्ऱ दॆनप्पहर् वार्शिलर् 666

मातिरम् तोॅरुम्–सभी दिशाओं में रहे; वानर वीरर्कळ्–वानर वीर; पोतल् चॅय्कुनरुम्–(वहाँ से) जानेवाले; पुकुवार्कळुम्–(वहाँ) पहुँचनेवाले; चिलर्–कुछ; चेतु ॲत्तुणै चॅन्ऱतु–सेतु कहाँ तक पहुँचा; ॲन्पार्–पूछते; चिलर्–कुछ; पाति चॅन्ऱतु–आधा गया है; ॲन्न पकर्वार्–ऐसा कहते। ६६६

सभी दिशाओं में वानर आते-जाते दिखायी देते हैं। कुछ पूछते हैं कि सेतु कहाँ तक बढ़ा है ? कुछ वानर उत्तर देते हैं कि आधा बन गया है। ६६६

कुरैविल् कुङ्गुम मुङ्गुहैत् तेन्गळुम्, निरैम लर्क्कुल मुन्निरैन् दॆङ्गणुम्
तुरैतॊ रुङ्गिरि तूक्किन तोय्दलाल्, नरै नॆडुङ्गड लॊत्तन नामनीर् 667

तूक्कित किरि–उठायी हुई गिरियों में; कुरैवु इल्–अक्षय (रीति से); कुङ्कुमम्–'कुंकुम' और; कुकै तेन्कळुम्–गुहाओं के शहद (के छत्ते); निरै मलर् कुलमुम्–पुष्कल सुमनराशियाँ; तुरै तोॅरुम्–घाट-घाट पर; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; निरैन्तु तोय्तलाल्–भरपूर पड़ी रहीं इसलिए; नामम् नीर्–भयोत्पादक (वह) समुद्र; नॅटु नरै कटल्–लम्बे मधु-समुद्र; ऑत्तन–के समान लगे। ६६७

वानरों द्वारा उठा लाये गये पर्वतों में कुंकुम, गुफाओं में रहनेवाला मधु, पुष्कल रूप से फूल आदि थे, जो समुद्र के घाट-घाट में जल से घुल-मिल गये थे। इसलिए वह भयावह (नमकीन) सागर लम्बे मधु-सागर के समान बन गया। ६६७

नॅडुम्बल् मालवरै तूर्त्तु नॅरुक्कवुन्, दुडुम्बल् वेलै तुळङ्गिय दिल्लैयाल्
इडुम्बै यॅत्तनै युम्बडुत् तॅय्दिनुम्, कुडुम्बन् दाङ्गुम् कुडिप्पिऱन् दारिनै 668

इटुम्पै ॲत्तनैयुम्–कितने ही संकट; पटुत्तु ॲय्तिनुम्–दुःख देते हुए आयें तो भी; कुटुम्पम् ताङ्कुम्–कुटुम्बभरणकर्ता; कुटि पिऱन्तारिन्–कुलीन (पुरुष) के समान; नॅटुम् पल् माल् वरै–लम्बे, अनेक बड़े पर्वतों के; तूर्त्तु नॅरुक्कवुम्–पाटकर दबाने पर भी; तुटुम्पल् वेलै–विलोडित समुद्र; तुळङ्कियतु इल्लै–क्षुब्ध नहीं हुआ। ६६८

संकट कितना ही क्यों न हो। कुलीन कुटुंबनायक अपने कुटुंब का भरण करने में अचल रहते हैं। उसी भाँति अनेक स्थूल और बड़े पर्वतों ने मिलकर समुद्र को तंग किया। तो भी वह हिलता सागर अकंपित ही रहा। ६६८

कॉळुन्दु	डॅप्पव	ळक्कॉडि	यिन्गुलम्
अळुन्द	वुय्त्त	वडुक्क	ऌहऱ्न्दयल्
विळुन्द	पन्मणि	यिन्नॊळि	मीमिशै
ॲळुन्द	वॅङ्गणु	मिन्दिर	विल्लॅन 669

कॊळुन्तु उटै पवळम् कॊटियिन्–कल्लों के साथ फैलनेवाली प्रवाल-लताओं के; कुलम्–वन; अळुन्त–(जल के अन्दर) दब जायें, ऐसा; उय्त्त–डाले गये; अटुक्कल्–पर्वतों के; तकर्न्तु–टूटकर; अयल् विळुन्त–पास गिरे; पल् मणियिन् ऑळि–अनेक रत्नों की कान्ति; मी मिचै–आकाश में (प्रगट); इन्तिर विल् ॲन–इन्द्र-धनुष के समान; ॲङ्कणुम् ॲळुन्त–सर्वत्र फैल उठी। ६६९

पल्लवों के साथ बढ़नेवाली प्रवाललताओं को दबाते हुए पर्वत आकर गिरे। उनसे अलग होकर रत्न छितरे। उनकी कांतियाँ आकाश में इन्द्रधनुष के समान सर्वत्र फैलीं। ६६९

❀ पळुम रम्बरिक् कप्पऱ वैक्कुलम्, तळुवि निन्ऱॊरु वन्ऱनि ताङ्गुवान्
विळुद लुन्बुहल् वेरिड मिन्मैयाल्, अळुद रऱ्ऱुङ् गिळैयॅन वानवाल् 670

पळु मरम्–बरगद के पेड़ों को; परिक्क–उखाड़ लिये जाते समय; पऱवै कुलम्–खगकुल; तळुवि निन्ऱु–(उन्हीं पर) गले लगाकर स्थित (आश्रय देनेवाले); ताङ्कुवान्–आश्रयदाता; तनि ऑरुवन्–अपूर्व एक कुटुम्बनायक के; विळुतलुम्–गिरने (मरने) पर; पुकल्–आश्रय; वेऱु इटम्–अन्य स्थान; इन्मैयाल्–नहीं होने से; अळुतु अरऱ्ऱुम्–रोने-चिल्लानेवाले; किळै ॲन–परिवार (के सदस्यों) के समान; आन–बन गये। ६७०

वानर बरगद के पेड़ों को उखाड़ ले चले। तब उन पेड़ों पर रहे खगकुल किसी कुटुंबी के मरने पर उसके परिवार के सदस्य-जैसे हो गये जो, आश्रय-हीन होकर रोते-चिल्लाते हैं। ६७०

※ताव लोवल मॅन्ऱ्ऱदु ताङ्गिय, मावॅ लाङ्गडल् वीऴ्दलुम् वण्डॅलाङ्
गाव लाळर् विऴक्कळै कण्णिला, एव लाळरि तॅङ्गुन् दिरिन्दवाल् 671

तावल्–वासस्थान; ओवलम्–नहीं छोड़ेंगे; ॲन्ऱ्ऱु–कहनेवाले (भ्रमरकुल) को; ताङ्किय–जो धरते रहे; मा ॲलाम्–उन सभी आम्रतरुओं के; कटल्–समुद्र में, वीऴ्तलुम्–गिरने पर; वण्टु ॲलाम्–सभी भ्रमर; कावल् आळर् विऴ–रक्षक (मालिक) के मरने पर; कळैकण् इला–आश्रयहीन; एवलाळरिन्–नौकरों के समान; ॲङ्कुम् तिरिन्त–सर्वत्र भटकते फिरे। ६७१

आम्रतरुओं पर भ्रमरकुल ऐसे स्थिर रूप से रह रहे थे, मानो उनका यह संकल्प हो कि हम अपना वासस्थान नहीं छोड़ेंगे। अब वे सभी तरु समुद्र में गिर गये, तो वे भ्रमर मालिक के मरने पर दूसरे आश्रयदाता के न मिलने से भटकनेवाले भृत्यों के समान घूमने-फिरने लगे। ६७१

तॊक्क डङ्गल वोडुन् दुवलैहळ्, मिक्क डङ्गलुम् पोवन मीन्गुलम्
अक्क रुङ्गड लूर वयर्कडर्, पुक्क डङ्गिडप् पोवन पोन्ऱवे 672

तॊक्कु अटङ्कल–राशि में बद्ध न रहकर; ओटुम् तुवलैकळ्–छितरनेवाले जलकण; मिक्कु अटङ्कलुम्–अधिक परिमाण में सर्वत्र; पोवन–जो गये; अ करुकटल् तूर–उस काले सागर के पट जाने से; मीन् कुलम्–झषकुल; अयल् कटल् पुक्कु–अन्य समुद्रों में जाकर; अटङ्किट–समा जाने; पोवन पोन्ऱ–जाते-से लगे। ६७२

(जब पर्वत फेंके गये तब) जलकण पुंजीभूत और स्ववश नहीं रहकर सर्वत्र अधिकता से छितर चले। वे मछलियों के समान लगे जो इस समुद्र के पट जाने से दूसरे समुद्र में जाकर रहने के लिए जा रही हों। ६७२

मूशु वण्डिन मुम्मद यानैयिन्, आशै कॊण्डन पोर्ऱॊडरन् दाडिन
ओशै यॊण्गडर् कुन्ऱॊ डवैपुह, वेशै मङ्गैय रामॅन मीण्डवे 673

मुम्मत यानैयिन्–(कर्ण कपोल कोश-) त्रिविध मदजलयुक्त गजों को; आचै कॊण्टन पोल्–चाहनेवालों के समान; तॊटर्न्तु आटिन–उनके साथ लगे आनेवाले; मूचुम् वण्टु इनम्–मँड़राते हुए भ्रमर; ओचै–शब्दायमान; ऑण् कटल्–प्रकाशमय समुद्र में; कुन्ऱॊटु–पर्वतों के साथ; अवै पुक–उन गजों के घुस जाने पर; वेचै मङ्कैयर् आम्–वेश्या स्त्रियाँ हों; ॲन–ऐसे; मीण्ट–लौट गये। ६७३

मँड़रानेवाले भ्रमरकुल (गज के त्रिविध) मदनीर की चाह करते जैसे गजों के पीछे जाने लगे। वे गज पर्वतों के साथ शब्दायमान और प्रकाशमय सागर में डूब गये; तो भ्रमर वेश्या स्त्रियों के समान लौट चले। (पुरुष के धन को ही चाहती हैं वेश्याएँ। इसलिए यहाँ मदनीर की बात उठायी गयी है।)। ६७३

निलम रङ्गिय वेरॊडु नेर्पऱित्, तलम रुन्दुय रॆय्दिय वायिनुम्
वलम रङ्गळै विट्टिल माशिलाक्, कुलम डन्दैय रॆन्नक् कॊडिहळे 674

निलम् अरङ्किय–भूमि में धँसे; वेरॊटु नेर् पऱित्तु–जड़ के साथ सीधे उखाड़े जाकर; अलमरुम्–क्षुब्ध करनेवाले; तुयर् ऎय्तिय–दुःख को प्राप्त हुए; आयिनुम्–तो भी; वल मरङ्कळै–सबल तरुओं को; माचु इला–निर्दोष; कुलम् मटन्तैयर् ऎन्न–कुलीन स्त्रियों के समान; कॊटिकळ्–लताओं में; विट्टिल–नहीं छोड़ा। ६७४

धरती में गड़ी जड़ों के साथ लताएँ तरुओं के साथ उखाड़ी गयीं। सबल पेड़ों को फेंकने से लताएँ आश्रयहीन हो गयीं। इतना होने पर भी निर्दोष अनिंद्य कुलवधुओं के समान वे लताएँ तरुओं को न छोड़कर उनसे लिपटी रहीं। (इस पद्य और पहले पद्य में दो तरह की स्त्रियों की वात कही गयी है, जिससे सौंदर्य वढ़ गया है।)। ६७४

तुप्पु रुक्कड रूय तुवलैयाल्, अप्पु रुक्कड लुञ्जुवै यऱ्ऱन
ऎप्पु ऱत्तुरु मेरुङ् गुळिर्न्दन, उप्पु ऱैत्तन मेह मुहुत्त नीर् 675

तुप्पु उरु–ज़ोर के साथ; कटल्–समुद्र के; तूय तुवलैयाल्–उछाले जलकणों से; अ पुऱ कटलुम्–वह बाह्यसागर भी; चुवै अऱ्ऱन–सुस्वादहीन हो गये; ऎ पुऱत्तु–सव ओर के; उरुम् एऱुम्–अशनिराज थी; कुळिर्न्तन–ठण्डे पड़ गये; मेकम् उकुत्त–मेघों से गिरे; नीर्–जल(में); उप्पु–नमक; उऱैत्तन–लगे रहे। ६७५

समुद्र ने ज़ोर से जलकण उछाले। उन कणों के कारण अण्डबाह्य सागरों का जल भी अपना स्वाद छोड़कर नमकीन हो गये। सब जगह अशनिराज भी ठण्डे पड़ गये। मेघों से जो जल गिरा उसमें नमक का स्वाद भरा रहा। ६७५

मुदिर् नॆडुङ्गिरि वीळमु ळङ्गुनीर्, ऎदिरॆ ळुन्दुदि रन्दर मॆय्दलाल्
मदिय वन्गदि रिऱ्कुळिर् वाय्न्दन, कदिर वन्गनल् वॆङ्गदिर्क् कऱ्ऱैये 676

मुतिर्–वृद्ध; नॆटुम् किरि–बड़े पर्वतों के; वीळ–गिरने से; मुळङ्कुम् नीर्–आरव उठानेवाला समुद्र; ऎतिर् ऎळुन्तु–ऊपर उठकर; निरन्तरम्–निरन्तर; ऎय्तलाल्–लगा, इसलिए; कतिरवन्–सूर्य की; कनल्–अग्नि-सम; वॆम् कतिर् कऱ्ऱै–गरम किरणों की लटें; मतियवन् कतिरिल्–चन्द्र की किरणों के समान; कुळिर् वाय्न्तन–शीतलता पा गयीं। ६७६

वृद्ध पर्वत गिरे और समुद्र गरजते हुए ऊपर उठा। यह निरंतर होता रहा। इसलिए किरणमाली की गरम किरण-लटें चन्द्र की किरणों के समान शीतल वन गयीं। ६७६

नन्गॊ डित्तु नरुङ्गिरि शिन्दिय, पॊन्गॊ डित्तुव लैप्पॊदित् तॊडुव
वन्गॊ डिप्पव ळङ्गळ् वयङ्गलाल्, मिन्बॊ डित्तदु पोन्ऱन विण्णॆलाम् 677

नरुम् किरि–सुवासयुक्त गिरियों के द्वारा; नन्कु ओटित्तु–खूब तोड़कर; चिन्तिय–छितरे; पोन् कोटि तुवलै–स्वर्णधार के समान लगातार चलनेवाले; तुवलै–जलकणों से; पोतिन्तु ओटुव–आच्छादित हो जो चलीं; वल् कोटि पवळक्कळ्–(वे) तगड़ी लताओं के प्रवाल; वयङ्कलाल्–शोभते रहे, इसलिए; विण् अलाम्–आकाश भर में; मिन् पोटित्तत्तु–बिजली कौंधी जैसी; पोन्रत–लगीं। ६७७

सुवासयुक्त गिरियों द्वारा तोड़ी जाकर जो प्रवाललताएँ स्वर्णधार के समान जलबिंदुओं से आच्छादित होकर ऊपर गयीं, वे बहुत शोभायुक्त रहीं। इसलिए आकाश भर में बिजलियाँ कौंध रही हों —ऐसा लगा। ६७७

ओडु मोट्टरि नोन्ऱिनमु नोन्ऱुपोयक्, काडु नाडु मरङ्गळङ् गऱ्कळुम्
नाड नाड नळिर्हडल् नाट्टिलोर्, पूडु माडुद लिल्लैयिप् पूमियिल् 678

ओटुम् ओट्टरिन्–दौड़ की स्पर्द्धा में भाग लेकर दौड़नेवालों के समान; ओन्ऱिन् मुन् ओन्ऱु–एक के पहले एक; पोय्–जाकर; काटु नाटु–वन प्रदेश में रहे; मरङ्कळुम् कऱ्कळुम्–पेड़ों और पत्थरों को; नळिर् कटल् नाट्टिल्–शीतल समुद्र प्रदेश में; नाट नाट–ज्यों-ज्यों ढूँढ़ लाकर पहुँचाते; इ पूमियिल्–इस भूतल में; ओर् पूटुम्–एक पौधा भी; आटुतल् इल्लै–रहकर हिला नहीं (रहा नहीं)। ६७८

स्पर्द्धा में भाग लेकर दौड़नेवाले खिलाड़ियों के समान वानर एक से एक होड़ लगाकर आगे गये और वनप्रदेश के तरुओं और पत्थरों को ढूँढ़-ढूँढ़कर ले आये। इसलिए इस भूमि पर एक पौधा भी हिलता (जीवित रहता) नहीं दिखायी दिया। ६७८

उऱ्ऱ दालणै योङ्ग लिलङ्गैय, मुऱ्ऱि मूनऱु पहलिडै मुऱ्ऱवुम्
पॆऱ्ऱ वार्प्पु विशुम्बु पिळन्ददाल्, मऱ्ऱिव् वानम् पिऱिदोरु वान्गोलो 679

मून्ऱु पकल् इटै–तीन दिन (अह्न) का अन्तर; मुऱ्ऱि मुऱ्ऱवुम्–पूरा होते ही; ओङ्कल् इलङ्कैयै–पर्वतस्थ लंका नगर को; अणै उऱ्ऱतु–सेतु पहुँच गया; पॆऱ्ऱ आर्प्पु–तब उत्पन्न नाद ने; विचुम्पु पिळन्ततु–आकाश को फाड़ दिया; मऱ्ऱु–फिर; इ वानम्–(अब रहता) यह आकाश; पिऱितु ओरु–दूसरा एक; वान् कोलो–आकाश है क्या। ६७९

तीन दिन पूरा हुए और सेतु का छोर त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका को स्पर्श कर गया। तब जो कोलाहल, हर्षनाद उठा, उससे आकाश ही फट गया। तो अब का यह आकाश किसी और अण्ड का आकाश है क्या ? । ६७९

नाडु हिन्ऱदन् वेरोन्ऱु नायहन्, तोडु शेर्हुळ लाडुयर् नीक्कुवान्
ओडु मॆन्मुदु हिट्टॆन वोङ्गिय, शेड नॆन्नप् पोलिन्ददु शेदुवे 680

वेऱॊन्ऱु नाट्टुकिन्ऱतु–दूसरा एक (उपाय) जो ढूँढ़ते हो यह; ऎन्–क्या; नायकन्–स्वामी (श्रीराम) के; तोट्टु चेर् कुळलाळ्–सुमनदलों से अलंकृत केश वाली के कारण हुए; तुयर् नीक्कुवान्–दुःख को दूर करने के लिए; ऎन् मुतुकु–मेरी पीठ पर; इट्टु–(चरण) रखकर; ओटुम् ऎन–दौड़ो, ऐसा; ओङ्किय–(कहकर) (पीठ को) ऊपर बढ़ाकर दिखानेवाले; चेटन् ऎन्न–शेषनाग के समान; चेतु पॊलिन्ततु–सेतु विलसा। ६८०

वह सेतु आदिशेषनाग की पीठ के समान शोभायुक्त लगा, जिसे आदिशेष ने यह कहकर ऊपर किया हो कि दूसरा उपाय क्या ढूँढ़ो? नायक श्रीराम के पुष्पालंकृत केश वाली देवी सीता (के विरह) के निमित्त हुए दुःख को दूर करने मेरी पीठ पर से होकर दौड़ते जाओ। ६८०

मॆय्यि नीट्टत् तिलङ्गैया मॆन्महळ्, पॊय्य नीट्टिय तीमै पॊरुक्कला
तैय नीट्टिय शेनैहण् डन्बिनार्, कैयै नीट्टिय तन्मैयुङ् गाट्टुमाल् 681

मॆय्यिन् नीट्टत्तु–सत्य में बढ़ी; इलङ्कैयाम् मॆल् मकळ्–लंका की कोमल स्त्री; पॊय्यन्–वंचक (रावण द्वारा); नीट्टिय–कृत; तीमै–बुराइयों को; पॊरुक्कलातु–न सह सककर; ऐयन्–प्रभु की; ईट्टिय–एकत्रित; चेनै कण्टु–सेना को देखकर; अन्पिताल्–प्रेम के साथ; कैयै नीट्टिय–हाथ बढ़ाने का; तन्मैयुम्–प्रकार; काट्टुम्–दिखाती हैं। ६८१

वह सेतु लंका रूपी सत्यप्रिय कोमल स्त्री के हाथ के समान भी था, जिसे उसने वंचक रावण की बुराइयों को न सह सकने से प्रभु की एकत्रित सेना को देखकर प्रेमोत्साह से (निमंत्रण के संकेत में) बढ़ा रखा हो। ६८१

कान याऱु परन्द करुङ्गडल्, ञान नायहन् शेनै नडत्तलाल्
एनै यािऱिनि यानल दारॆन, वान यािऱम्बर् वन्ददु मानुमाल् 682

वान याऱु–आकाशगंगा; कान याऱु–वन्य नदियाँ; परन्त–जिसमें विस्तृत रूप से मिली रहीं; करु कडल्–उस काले समुद्र में; ञान नायकन्–ज्ञाननायक श्रीराम की; चेनै–सेना के; नटत्तलाल्–चलने के लिए; इनि–आगे; यान् अलतु–मेरे सिवा; एनै याऱु यार्–दूसरी नदी कौन (सी); ऎन–कहती हुई; इम्पर् वन्ततु–इस लोक में आयी; मानुम्–जैसे थी। ६८२

वह सेतु आकाशगंगा के भी समान था, जो यह समझकर इस भूतल में आयी हो कि वन्य नदियों से युक्त समुद्र पर ज्ञाननायक श्रीराम की सेना को जाना है और उसमें सहायता पहुँचाने को मेरे सिवा और कौन है? । ६८२

कऱ्कि डन्दॊळिर् काशिनङ् गान्दलाल्, मऱ्क डङ्गळ् वहुत्त वयङ्गणै
अॆऱ्क डन्द विरुळिडै यिन्दिरन्, विऱ्कि डन्दन वॆन्न विळङ्गुमाल् 683

कल् किटन्तु–(सेतु में रहे) पर्वतों में रहकर; ऒळिर्–कान्ति छिटकानेवाले;

काचु इन्नम्–विविध रत्नों के; कान्तलाल्–कान्ति बिखेरने से; मऱ्‌कटङ्कळ् वकुत्त–मर्कटों द्वारा निर्मित; वयङ्कु अणै–सुन्दर सेतु; ॲल् कटन्त–सूर्यास्त के बाद के; इरुळिटै–अन्धकार में; इन्तिरन् विल्–इन्द्रधनुष; किटन्तत ॲन्न–पड़ा रहता जैसे; विळङ्कुम्–मनोरम दिखा। ६८३

पर्वतों से विविध अनेक रत्नों की छिटकती कांति के कारण मर्कट-निर्मित वह सेतु सूर्यास्त के बाद इन्द्रधनुष समुद्र पर पड़ा हो —ऐसा विलसा। ६८३

आन पेरणै यन्बि नमैन्दपिन्, कान वाऴ्क्कैक् कविक्कुल नादनुम्
मान वेऱ्‌क यिलङ्गैयर् मन्ननुम्, एनै योरु मिरामनै यॅय्दिनार् 684

आन–निर्मित; पेर् अणै–बड़े सेतु के; अन्पिन् अमैन्त पिन्–(अनेक के) प्रेम (की उमंग) के कारण निर्माण के बाद; कानम् वाऴ्क्कै–वन में जीवन के; कवि कुल नाननुम्–कपिकुल का नायक भी; मानम् वेल् कै–विख्यात शक्तिहस्त; इलङ्कैयर् मन्ननुम्–लंकावासियों का राजा (विभीषण) और; एनैयोरुम्–अन्य; इरामनै ॲय्तिनार्–श्रीराम के पास आये। ६८४

प्रेमोत्साह के साथ सेतु बनाने के बाद वनजीवी वानरों का नायक, गण्य भाले का धारक लंकेश विभीषण और अन्य लोग श्रीराम के पास आये। ६८४

ऍय्दि योशनै योण्डोरु नूरुडन्, ऐयि रण्डि नहल ममैन्दिडच्
चॅय्द दालणै यॅन्ऱदु शॅप्पिनार्, वैय नादन् शरणम् वणङ्गिये 685

ऍय्ति–आकर; ईण्टु–यहाँ; अणै–सेतु; ऑरु नूऱु योचनैयुटन्–एक सौ योजन (लम्बाई) के साथ; ऐयिरण्टिन् अकलम्–पाँच के दो (दस) (योजन) चौड़ाई में; अमैन्तिट–बने ऐसा; चॅय्ततु–निर्मित हुआ; ॲन्ऱ अतु–जो था वह (समाचार); वैयम् नातन् चरणम्–जगन्नाथ के चरणों को; वणङ्कि–नमस्कार करके; चॅप्पिनार्–बोले। ६८५

जगन्नाथ श्रीराम के पास पहुँचकर उन्होने उनके चरणों पर नमस्कार किया और निवेदन किया कि सौ योजन लम्बा और दस योजन चौड़ा यह सेतु बन गया है। ६८५

8. ऑऱ्‌ऱुक् केळ्विप् पडलम् (चर-श्रवण पटल)

आण्डहैयु मन्बिनॊडु कादलदु कूर
नोण्डकैयि नालवरै नॆञ्जिनॊडु पुल्लि
ईण्डवॆळ्ळु हॆन्ऱन निळैत्तपरि शॆल्लास्
काण्डलदन् मॆनॊडिय कादन्मुदिर् हिन्ऱान् 686

आण् तकैयुम्–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम (ने) भी; कातल् अतु–प्रेम के; कूर–बढ़ते; अवरै–उन्हें; नॅञ्चितॊटु–गले के साथ; नीण्ट कैयित्ताल्–दीर्घ हाथों से; अन्पितॊटु–प्रेम से; पुल्लि–लगाकर; इळैत्त–(जो काम) किया; परिचु ॲल्लाम्–वह हाल सब; काण्टल् अतन् मेल्–देखने को; नॅटिय कातल्–बड़ी इच्छा; मुतिर्किन्ऱान्–अधिक करते हुए; ईण्ट–जल्दी; ॲळुक–उठो (चलो); ॲन्ऱनन्–कहा। ६८६

पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का मन, यह समाचार सुनकर, प्रेम से भर गया। उन्होंने अपने दीर्घ हाथों से उन्हें गले से लगा लिया। उन्हें सेतु को देखने की उत्कण्ठा हुई और बढ़ी। उन्होंने कहा कि झट उठो जाएँ! । ६८६

पण्डैयुऱै युट्कॅदिर् पडैक्कडलिन् वैहुम्
कॊण्डलॅन वन्दवणै यॆक्कुऱुहि निन्ऱान्
अण्डर्मुदल् वन्नॊरुद नावियनै याळेक्
कण्डन ॲनप्पॅरिय कादन्मुदिर् हिन्ऱान् 687

अण्टर् मुतल्वन्–देवों के भी आदि-देव श्रीराम; पण्टै उऱैयुट्कु–अपने प्राचीन वासस्थान (समुद्र); ॲतिर्–के सामने; पटै कटलिन्–सेना-सागर में; वैकुम्–रहनेवाले; कॊण्टल् ॲन–मेघ के समान; वन्तु–आकर; अ अणैयै कुऱुकि–उस सेतु को नियराकर; निन्ऱान्–खड़े रहे; ऒरु–अद्वितीय; तन् आवि अनैयाळै–अपने प्राण-सम (देवी को); कण्टनन् ॲन्न–देख लिया जैसे; पॅरिय कातल्–गहरे प्रेम में; मुतिर्किन्ऱान्–बढ़ते हैं। ६८७

देवों के आदिदेव, अपने प्राचीन वासस्थान समुद्र के सामने सेतु के पास सेना-सागर पर पड़े हुए मेघ के समान आ पहुँचे। वे अपनी प्राणप्यारी सीताजी को समक्ष देखते-से आनंदपूरित हुए। ६८७

निन्ऱुनॅडि दुन्निन नॅडुङ्गड निरम्बक्
कुन्ऱुकॊ डडैत्तणै कुयिऱ्ऱियदॊर् कॊळ्है
अन्ऱुलहु तन्दमुद लन्दण नमैत्तान्
ॲन्ऱपॊळु दिन्गणुमि दॅन्ऱियलु मॆन्ऱान् 688

नॅटितु निन्ऱु–लम्बी देर तक खड़े होकर; उन्निनन्–सोचते; नॅटु कटल्–लम्बे समुद्र को; निरम्प–भर दें ऐसा; कुन्ऱु कॊटु–पर्वतों को (ले) रखकर; अटैत्तु–ढँककर; अणै कुयिऱ्ऱियतु–बाँध जो बनाया; ऒर् कॊळ्कै–वह एक कार्य; अन्ऱु–उस दिन; उलकु तन्त–प्रपंच की सृष्टि जिसने की; मुतल् अन्तणन्–उस आदि ब्राह्मण ने ही; अमैत्तान्–निर्मित किया हो; ॲन्ऱ पॊळुतिन् कणुम्–ऐसा हुआ तब भी; इतु–यह; ॲन्ऱु इयलुम्–कब सम्भव होगा; ॲन्ऱान्–बोले श्रीराम। ६८८

वे लम्बी देर तक खड़े होकर सोचने के बाद साश्चर्य बोले कि इतने लम्बे समुद्र पर पर्वतों को रखकर बाँध बनाने का यह काम, अगर प्रपंच के विधाता ब्राह्मणोत्तम ब्रह्मा भी करें तो कब हो सकेगा? । ६८८

ऊऴिमुद नायहन् वियप्पिन्ॉ डुवन्दान्
आऴमुरै शॅय्युमळ वेयितिय ऑन्ऱो
आऴियि लिलङ्गनॅडि दत्तिशैयि नामेल्
एऴुहड लुड्गडि दडैप्पनिव नॅन्ऱान् 689

ऊऴि मुतल् नायकन्–युगादिपुरुष श्रीराम; वियम्पिन्ॉटु–विस्मय के साथ; उवन्तान्–मुदित हुए; आऴम्–गहराई; उरै चॅय्युम् अळवे–कथन करने की रीति; इतियतु ऑन्ऱो–कोई मधुर है क्या; आऴियिन् इलङ्कै–समुद्र (की घिरी) लंका; नॅटितु–बहुत दूर; अ तिचैयिन् आ मेल्–उस दिशा में (रहे तो भी); इवन्–यह; एऴु कटलुम्–सातों समुद्रों को; कटितु अटैप्पन्–जल्दी (सेतु द्वारा) बाँध देगा; ऍन्ऱान्–बोले। ६८९

युगपति जगन्नायक श्रीराम ने साश्चर्य मुदित होकर सराहना की। हाय ! इसकी गहराई का कथन भी सुलभ है क्या ? (तो भी बाँध बना दिया नल ने !) इस समुद्र से वलयित लंका (सात समुद्र के) उस पार दूर रहे तो भी यह नल सातों समुद्रों को सेतु से वाँध सकता है ! । ६८९

नॅऱ्ऱियि नरक्कर्पदि शॅल्लनिऱै नन्नूल्
कऱ्ऱुणरु मारुदि कडैक्कुऴै वरत्तन्
पॅऱ्ऱियुणर् तम्बियॊरु पिन्बुशॅल वीरप्
पॊऱ्ऱिरळ् पुयक्करु निऱक्कळिऱु पोनान् 690

नॅऱ्ऱियिन्–माथे पर (आगे); अरक्कर् पति–राक्षसराज (विभीषण) के; चॅल्ल–जाते; निऱै नल् नूल्–श्रेष्ठ सच्छास्त्र; कऱ्ऱु उणरुम्–सीखकर जिसने समझ लिये हैं, उस; मारुति–मारुति के; कडै कुऴै वर–आखिर में आते; तन् पॅऱ्ऱि–उन (श्रीराम) के गौरव; उणर्–जाननेवाले; ऑरु तम्पि–श्रेष्ठ कनिष्ठ सहोदर के; पिन्पु चॅल–पीछे आते; वीरम्–वीरतायुक्त; पॊन्–सुन्दर; तिरळ् पुयम्–पुष्ट भुजाओं वाले; करु निऱ–काले वर्ण के; कळिऱु–गज (सम श्रीराम); पोनान्–चले। ६९०

सेना के माथे के (अग्र) भाग में राक्षसराज विभीषण गया; अर्थपूर्ण श्रेष्ठ शास्त्रों के अध्येता-ज्ञाता मारुति पिछले भाग में गया। श्रीराम की महिमा जाननेवाले अनुपम छोटे भाई लक्ष्मण उनके साथ गया। वीरतायुक्त पुष्ट भुजाओं वाले, काले गज-से श्रीराम सेना के साथ गये। ६९०

इरुङ्गविहॊळ् शेनैमणि यारमिड ऱत्तन्
मरुङ्गुवळर् तण्डलै वयङ्गुदिरै मान
ऑरुङ्गुनन्ि पोयिन वुयर्न्दहरै यूडे
करुङ्गडल् पुहप्पॅरुहु काविरि कडुप्प 691

इरु–बड़े समूहों के; कवि कॊळ्–वानरों की; चेनै–सेनाएँ; मणि आरम्–

रत्नहार और चन्दन को; इटऱ–ठुकराते चलें ऐसा; तन्–अपने; मरुङ्कु वळर्–पार्श्व में उगे हुए; तण्टलै–वागों को; वयङ्कु तिरै मान्–विलसनेवाली तरंगों के समान; करु कटल्–काले समुद्र में; पुक पॅरुकु–प्रवेश करने के लिए बढ़ती चलने वाली; काविरि कट्टुप्प–कावेरी नदी की समानता करते हुए; उयर्न्त करै ऊटे–ऊँचे सेतु के ऊपर से; नत्ति ऑरुङ्कु पोयिन–सुन्दर रीति से एकत्रित होकर चलीं। ६९१

बड़ी भीड़ के वानरों की सेना कावेरी नदी के समान रत्न, चन्दन आदि को ढकेलते हुए लंका के समुद्र में मिलने जा रही थी। दोनों ओर की उठती हुई उत्तुंग तरंगें कावेरी के दोनों कूलों पर रहनेवाले वागों के समान थीं। ६९१

ओदिय कुऱिञ्जिमुद लायनिल नुळ्ळ
कोदिल अरुन्दुवन कॊळ्ळैयिन् मुहन्दुऱ्ऱु
यादुमॊळि यावहै शुमन्दुकड लॅय्दप्
पोदलिनु मन्नपडै पॊन्नियॅन लान 692

ओतिय–(तमिळ व्याकरण ग्रन्थों में) कथित; कुऱिञ्चि मुतल् आय–कुऱिञ्जि (पर्वत-प्रदेश) आदि; निलन् उळ्ळ–भू-भागों में प्राप्य; कोतु इल–निर्दोष; अरुन्तुवन–खाद्य पदार्थों को; कॊळ्ळैयिन्–अत्यधिक परिमाण में; मुकन्तु उऱ्ऱु–उठा लेकर; यातुम् ऑळिया वकै–कोई न बचे ऐसा; चुमन्तु–ढोते हुए; कटल् अॅय्त–समुद्र में मिलने; पोतलिनुम्–जाने से भी; अन्न पटै–वे सेनाएँ; पॊन्नि अॅनल् आन–(कावेरी) कहने योग्य बनीं। ६९२

उस वाहिनी को और एक कारण से भी कावेरी कहा जा सकता है। व्याकरण में उक्त 'कुऱिञ्जि' आदि प्राकृतिक भूभागों से प्राप्य खाद्य पदार्थों को लेकर, विना किसी को छोड़े समुद्र की तरफ़ जा रही थी। ६९२

आयदु नॅरुङ्गवडि यिट्टडि यिडामल्
तेयुनॅरि माडुतिरै यूडुविशै शॅल्लप्
पोयशिल पॊङ्गुदॊऱु पॊङ्गुदॊऱु पूशऱ्
पाय्पुरवि विण्पडर्व पोलितिदु पाय्व 693

पोय चिल–अलग जो गये वे कुछ (वानर); आयतु–उन सेनाओं के; नॅरुङ्क अटि इट्टु–बहुत ही पास-पास पग धरकर जाने से; तेयुम् नॅऱिमाटु–भूमि के घिसने से बने मार्ग पर; अटि इटामल्–पग न धर सक कर; माटु–(सेतु के) पार्श्व में; तिरै ऊटु–लहरों के मध्य; विचै चॅल्ल–सवेग आते रहे तो; पॊङ्कु तॊऱु पॊङ्कु तॊऱु–ज्यों-ज्यों लहरें उमग उठीं, त्यों-त्यों; पूचल् पाय्–युद्ध में सरपट चलनेवाले; पुरवि–अश्वों पर; विण् पटर्व पोल्–आकाश में फैलकर जाते हों; इतितु–(ऐसा) सोत्साह; पाय्व–लपक चले। ६९३

कुछ वानरों को सेना के गमन से बने मार्ग में चलने को स्थान नहीं

मिल रहा था। इसलिए सेतु के दोनों तरफ़ जल में तरंगों के मध्य पग धरकर जा रहे थे। जब-जब तरंगें जोर से उठतीं तब वे युद्ध में जानेवाले (तरंगों के) अश्वों पर आकाश में जाते-से लगे। ६९३

मॅय्यिडै नॅरुङ्गविशै युऱ्ऱवयल् वीऴुम्
पॉय्यिडमि लादपुन लिऱ्पुह लिलाद
उय्यिड मळिक्कुमरु ळाळर्मुऱै युय्त्तार्
कैयिनिडै शॅन्ऱुकरै कण्डहरै यिल्लै 694

मॅय् इटै नॅरुक्क–शरीर खूब सटे रहे, इसलिए; **विचै उऱ्ऱ**–तेजी से; **अयल् वीऴुम्**–पार्श्व में पिलनेवाले; **पॉय् इटम् इलात**–जिन्हें खाली स्थान नहीं मिला वे; **पुतलिल्**–जल में भी; **पुकल् इलात**–स्थान न पा सकनेवालों (वानरों) को; **उय्विटम्**–बचने का स्थान; **अळिक्कुम्**–दिलानेवाले; **अरुळाळर्**–दयापूर्ण वानर; **कैयिनिटै**–अपने हाथों पर; **मुऱै उय्त्तार्**–चलने का क्रम दिया; **चॅन्ऱु**–इस भाँति चलकर; **करै कण्ट**–तीर पर गये (वानरों को); **करै इल्लै**–सीमा नहीं है। ६९४

जानेवाले वानरों के शरीर खूब सटे हुए थे। कुछ वानर जल्दी जाना चाहते थे। उन्हें खाली स्थान नहीं मिल रहा था। वे जल में भी घुसकर नहीं जा सकते थे। इसलिए दयावान अन्य वानरों ने अपने हाथों पर क्रम से चलने देकर पार कराया। ऐसा पार करनेवाले वानरों की संख्या का ठिकाना नहीं था। ('करै' का अर्थ तीर या पार भी है, ठिकाना या सीमा भी।)। ६९४

इऴैत्तनैय वॅङ्गदिरिन् वॅञ्जुड रिरामन्
मऴैत्तमुहि लन्नमणि मेनिवरु डामल्
तऴैत्तनिऴ लुऱ्ऱकुळिर् शन्दन मुयर्न्द
वऴैत्तरु वॅडुत्तरुहु वन्दन रनेहर् 695

इऴैत्तनैय–(रत्न) जड़ित हो ऐसा; **वॅम् कतिरिन्**–गरम किरणमाली की; **वॅम् चुटर्**–गरम किरणें (धूप); **इरामन्**–श्रीराम के; **मऴैत्त मुकिल् अन्न**–वर्षा-मेघ के समान; **मणि मेनि**–सुन्दर देह को; **वरुटामल्**–न स्पर्श करे, ऐसा; **तऴैत्त**–खूब पनपे; **निऴल् उऱ्ऱ**–(और) छायादार; **कुळिर् चन्तनम्**–शीतल चन्दन-तरुओं और; **उयर्न्त**–ऊँचे; **वऴै तरु**–सुरपुन्नाग तरुओं को; **ऍटुत्तु**–लेकर; **अरुकु वन्तनर्**–पास-पास आये; **अनेकर्**–अनेक वानर। ६९५

वे वानर अनेक थे, जो खूब पनपे रहे छायादार चन्दन-तरुओं और सुरपुन्नाग-तरुओं को लेकर साथ जा रहे थे ताकि गरम किरणमाली की रत्नकान्ति-सम धूप नवनीरदाभ श्रीराम की सुन्दर देह को स्पर्श न कर सके। ६९५

ओमनॅरि वाणर्मरै वाय्मैयोरु तामे
आमरशन् मैन्दर्तिरु मेनियल शामे
पूमर त्तिरुत्तवै पौरुन्दुव पौरुत्तिच्
चामरैयित् वीशितर् पडैत्तलैवर् तामे 696

ओमम्–याग के; नॅरि वाणर्–मार्ग के अवलंबी ब्राह्मणों के; मरै वाय्मै–वेदों का सत्य तत्त्व; ओरु तामे आम्–अद्वितीय आप ही जो हैं; अरचन् मैन्तर्–चक्रवर्ती-पुत्रों के; तिरुमेति अलचामे–श्रीशरीर दुखे नहीं ऐसे; पटै तलैवर् तामे–सेनापतियों ने स्वयं; पूमरन् इऱुत्तु–पुष्पित तरुओं को तोड़कर; अवै पोरुन्तुव–उनमें समरूप से लगनेवालों को; पौरुत्ति–जोड़कर; चामरैयित्–चामर के समान; वीचितर्–डुलाया। ६६६

वानर सेनापति स्वयं पुष्पित तरुओं को उखाड़कर उनमें सम रहने वालों को चामर के रूप में बाँध लेकर डुलाते जा रहे थे, ताकि याजी ब्राह्मणों के वेदसार, चक्रवर्तीसुत श्रीराम और लक्ष्मण के श्रीशरीर न दुखें। ६९६

मरुङ्गड वळर्न्दमुलै मङ्गैमत्त मुत्त्ना
वरुङ्गडह मङ्गैयित्तिल् वळ्ळलित्तै हित्ऱान्
ऑरुङ्गड लुयर्न्दपडर् तात्तैयोडु मोदत्तु
इरुङ्गडल् कडन्दुकरै येऱित्त त्तिरामत् 697

अङ्कैयिनिल्–सुन्दर हाथों में; कटकम् वरुम्–कड़े जो पहनते थे; वळ्ळल् इरामन्–वे उदार प्रभु श्रीराम; मरुङ्कु अट–कमर तोड़ते हुए; वळर्न्त मुलै–वर्धित स्तनों वाली; मङ्कै–देवी का; मतम् उन्ऩा–मन सोचकर; इत्तैकिन्ऱान्–दुखते हैं; ऑरुङ्कु–एकत्रित होकर; अटल् उयर्न्त–बल में बढ़ी; पटर् तानै ओटुम्–और साथ आनेवाली सेना के साथ; ओतत्तु–जल-भरे; इरु कटल्–बड़े समुद्र को; कटन्तु–पार कर; करै एऱिनन्–तीर पर चढ़े। ६६७

कटकहस्त श्रीराम कमरभंजक प्रवृद्ध स्तनों वाली सीतादेवी का मन सोचकर दुःखी होते हुए एकत्रित वलवान सेना के साथ विशाल पयोधि को पार कर लंका के तीर पर आ गये। ६९७

पॅरुन्दव मुयत्ऱमरर् पॅट्रिडु वरत्ताल्
मरुन्दत्तैय तम्बियोडुम् वत्ऱुणैव रोडुम्
अरुन्ददियुम् वन्दत्तैशॅ यज्जॉलिळ वञ्जि
इरुन्दनह रित्बुरत्तोर् कुन्ऱिडै यिरुत्तात् 698

अमरर्–देवों के; पॅरु तवम् मुयन्ऱु–बड़ी तपस्या करके; पॅट्रिटु वरत्ताल्–प्राप्त वर से; मरुन्तु अनैय–अमृत-सम; तम्पियोटुम्–छोटे भाई के साथ; वन् तुणैवरोटुम्–और बलवान मित्रों के साथ; अरुन्ततियुम् वन्तनै शॅय्–अरुंधती द्वारा भी पूज्य; अम् चॉल्–सुन्दरभाषिणी; इळ वञ्चि–बाललता (-सी) सीतादेवी;

इरुन्त–जहाँ बन्द रहीं; नकरित् पुरत्तु–नगर के पास; ओर् कुन्ऱु इटै–एक पर्वत (सुवेल या प्रवाल पर्वत पर); इरुत्तात्–आ ठहरे। ६९८

देवों ने कठोर तपस्या करके जो वर प्राप्त किया था, उसका फल था कि श्रीराम अमृत के समान लघुभ्राता और बलवान मित्रों के साथ उस लंका के नगर के पास एक (सुवेल या प्रवाल) पर्वत पर आ ठहरे; जिस नगर में अरुन्धती-वंद्या मनोरमभाषिणी और बाललता-सी सीतादेवी बन्दिनी के रूप में रह रही थीं। ६९८

नीलनै नॅडिदु नोक्कि नेमियोऩ् विरैय नीनम्
बाल्वरु शेनैक् कॅल्लाम् पाडिवी डमैत्ति यॆऩ्नाक्
काल्मिशै वणङ्गिप् पोनाऩ् कल्लिनाऱ् कडलैक् कट्टि
नूलुरै वऴिशॅय् दाऩुक् कन्निलै नॊय्दिऱ् चॊऩ्ऩाऩ् 699

नेमियोऩ्–चक्रधारी के; नीलनै–नील को; नॅटितु नोक्कि–लम्बी देर तक निहारकर; नी–तुम; नम् पाल् वरु–हमारे साथ आयी हुई; चेनैक्कु ॲल्लाम्–सारी सेनाओं के लिए; विरैय–शीघ्र; पाटि वीटु–सेनावास; अमैत्ति–निर्माण करो; ॲऩ्ऩा–कहने पर; अवऩ्–वह; काल् मिचै–चरणों पर; वणङ्कि–दण्डवत करके; पोनाऩ्–गया और; कल्लिऩाल्–पर्वतों से; कटलै कट्टि–समुद्र पर (सेतु) बाँधकर; नूल् उरैवऴि–शिल्पशास्त्र के अनुसार; चॅय्ताऩुक्कु–(जिसने सेतु-निर्माण) किया उसके पास; अ निलै–वह समाचार; नॊय्तिल्–जल्दी; चॊऩ्ऩाऩ्–बतलाया। ६९९

चक्रधारी श्रीराम ने (सेनापति) नील पर दीर्घ दृष्टि डाली और कहा कि तुम हमारे साथ आयी हुई सेना का सेनावास निर्मित करो। नील दण्डवत करके नल के पास गया, जिसने शिल्पशास्त्र के अनुसार पर्वतों से बाँध बनाया था, और वह आज्ञा सुनायी। ६९९

पॊऩ्निनु मणियि ऩाऩु नाऩ्मुहऩ् पुनैन्द पॊऱ्पिऩ्
नऩ्नल माह वाङ्गि नाऩ्मुहच् चदुर नाट्टि
इऩ्नरॆऩ् ऩाद वण्ण मिऱैवर्क्कुम् पिऱर्क्कु मॆल्लाम्
नऩ्नहर् नॊय्दिऱ् चॆय्दाऩ् तादैयुम् नाणुट् कॊण्डाऩ् 700

नल् नलमाक–शुभमंगलकारी; वाङ्कि–स्थल लेकर; नाल् मुकम् चतुरम् नाट्टि–चतुष्कोण बनाकर; इऩ्नर् ॲऩ्ऩात वण्णम्–कौन रहें, ऐसा सोचने की आवश्यकता न पड़े ऐसा; इऱैवर्क्कुम्–राजाओं के लिए; पिऱर्क्कुम्–अन्यों के लिए; ॲल्लाम्–सभी के लिए; नाऩ्मुकऩ् पुनैन्त पॊऱ्पिऩ्–चतुर्मुख की सृष्टि के समान; पॊऩ्निनुम् मणियिनालुम्–स्वर्ण और रत्नों से; नल् नकर्–अच्छा नगर (सेनावास); नॊय्तिल्–अतिशीघ्र; चॆय्ताऩ्–निर्माण किया (नल ने); तातैयुम्–(नल के) पिता ने भी; नाण् उट् कॊण्टाऩ्–शरम का अनुभव किया। ७००

नल ने अच्छा स्थल चुना। चतुष्कोण में आवास बनाया। कौन

किसमें रहे, यह सन्देह न उठे, इस प्रकार उसने नायकों और अन्यों के लिए स्वर्ण और रत्न से शिविर इस भाँति बनाये, जैसे चतुर्मुख ब्रह्मा ने बनाया हो। असल में नल के पिता विश्वकर्मा स्वयं उसे देखकर (अपनी हीनता पर) शरम खा गया। ७००

विल्लिनाऱ् किरुक्कै शॅय्युम् विरुप्पिनाऱ् पॊरुप्पिन् वीङ्गुम्
कल्लिनाऱ् कल्लै यॊक्कक् कडाविनान् कऴैह ळान
नॅल्लिना ललक्कुङ् गालु निरप्पिनान् तरुप्पै यॆन्नुम्
पुल्लिनाल् तॊडुत्तु वाशप् पूविनान् वेय्न्दु पोनान् 701

विल्लिनाऱ्कु–(कोदण्ड) धनुर्धर (श्रीराम) के लिए; इरुक्कै–वासस्थान; चॅय्युम् विरुप्पिनाल्–निर्माण करने की इच्छा से; पॊरुप्पिन्–पर्वतों के; वीङ्कुम् कल्लिनाल्–स्थूल पत्थरों से; कल्लै–पत्थरों को; ऒक्क–सम बनाते हुए; कटाविनान्–डाला; आन–योग्य; कऴैकळ् नॅल्लिनाल्–बाँसों और 'वाहै' नामक पेड़ों के; अलक्कुम् कालुम्–बँड़ेरिया आदि और खम्भे; निरप्पिनान्–लगाए; तरुप्पै ऎन्नुम् पुल्लिनाल्–दर्भ की घासों से; तॊटुत्तु–ठाट बनाया और; वाचम् पूविनाल्–सुगन्धित पुष्पों से; वेय्न्तु पोनान्–छप्पर छा गया। ७०१

नल ने कोदण्डपाणी श्रीराम के लिए वासस्थान बनाने की इच्छा से पर्वतों से स्थूल चट्टानों को लेकर दीवाल चुनी। बाँस और 'वाहै' नाम के तरुओं से खम्भे गाड़े और बँड़ेरियाँ बाँधीं। फिर दर्भ की घास की ठाट बनायी और सुगन्धित पुष्पों से छाजन भरा, इस भाँति नल श्रीराम का आश्रम बना गया। ७०१

वायिनु मनत्ति नालुम् वाऴ्त्तिमन् नुयिर्हट् कॆल्लाम्
तायिनु मन्बि नानैत् ताळुऱ वणङ्गित् तत्तम्
एयिन विरुक्कै नोक्कि यॆण्डिशै मरुङ्गुम् यारुम्
पोयिनर् पन्न शालै यिरामनुम् इनिदु पुक्कान् 702

मन् उयिर्कट्कु ऎल्लाम्–शाश्वत जीवों पर; तायिनुम् अन्पिनानै–माता से भी बढ़कर प्रेम रखनेवाले श्रीराम की; यारुम्–सभी; वायिनुम् मनत्तिनालुम्–वाणी और मन से; वाऴ्त्ति–स्तुति करके; ताळ् उऱ–चरणों पर; वणङ्कि–नमस्कार करके; ऎण् तिचै मरुङ्कुम्–आठों दिशाओं में सब ओर; तत्तम् एयिन इरुक्कै नोक्कि–अपने योग्य निर्धारित वासस्थानों की ओर; पोयिनर्–गये; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; पन्नशालै–पर्णशाला में; इनितु पुक्कान्–सुख से प्रवेश किया। ७०२

सभी जीवों से माता-सम प्यार करनेवाले श्रीराम की सबने मन और वाणी से स्तुति की। फिर वे उनके श्रीचरणों पर दण्डवत करके आठों दिशाओं में अपने-अपने वासस्थान को चले। श्रीराम भी अपनी पर्णशाला में सुख के साथ प्रविष्ट हुए। ७०२

पप्पुनी राय वीरर् परुवरै कडलिऱ् पाय्च्चत्
तुप्पुनी राय तूय शुडर्हळुङ् गरुक्क वन्दिट्
टुप्पुनी रहत्तुट् टोय्न्द वॊळिनिऱम् विळङ्ग वप्पाल्
अप्पुनी राडु वान्बो लरुक्कनु मत्तञ् जेर्न्दान् 703

पप्पु नीर् आय–फैलने के स्वभाव वाले (चंचल); वीरर्–(वानर) वीरों के; परुवरै कटलिल् पाय्च्च–स्थूल पर्वतों को समुद्र में फेंकने से; तुप्पु नीर् आय–प्रवाल-सम; तूय–(लाल) पवित्र; चुटर्कळुम्–किरणें भी; करुक्क–काला करके; वन्तिट्टु–आकर; उप्पु नीर् अकत्तुळ्–नमकीन जल में; तोय्न्त–जो डूबा (और मन्दप्रभ हुआ); ऒळि निऱम्–(उस) प्रकाशमय रंग में; विळङ्क–शोभे, इसलिए; अप्पाल् अप्पु नीर् आटुवान् पोल्–अंबु के पवित्र जल में स्नान करनेवाले के समान; अरुक्कनुम्–सूर्य भी; अत्तम् चेर्न्तान्–अस्त (गिरि) पहुँचा। ७०३

चंचल स्वभाव के वानरों के पर्वतों को समुद्र में डालते समय जो नमकीन जल की बूंदें उछलकर ऊपर गयीं उनसे प्रवाललाल किरणों के स्वामी सूर्य का भी रंग मन्द पड़ गया! सूर्य, अपना असली प्रकाश फिर से पाने के लिए पश्चिमी समुद्र में मग्न हुआ। उसका अस्ताचल पर जाना ऐसा लगा। [इधर प्रथा है (नमकीन) समुद्र में स्नान करने के बाद लोग शुद्धजल (के जलाशय) में स्नान कर लेते हैं।]। ७०३

मालुरु कुडह वानिन् वयङ्गिय वन्दु तोन्ऱुम्
पालुरु पशुवॆण् डिङ्गळ् पङ्गय नयनत् तण्णल्
मेलुरु पहऴि वाङ्गि वॆहुण्डनन् विरैविन् वन्द
कालुर वळैत्त कामन् विल्लॆनक् काट्टिऱ् ऱन्ऱे 704

माल् उरु–गौरवान्वित; कुटकम् वानिन्–पश्चिमी आकाश में; वयङ्किय–शोभा के साथ; वन्तु तोन्ऱुम्–आ जो प्रकट होता है; पाल् उरु–खंडित; पचु वॆण् तिङ्कळ्–शुद्ध श्वेत चन्द्र; पङ्कयम् नयनत्तु–पंकजाक्ष; अण्णल् मेल्–प्रभु पर; उरु–लगनेवाले; पकऴि वाङ्कि–शर संधानकर; वॆकुण्टनन्–क्रोध के साथ; विरैविन् वन्त कामन्–शीघ्र जो आया उस मन्मथ के; काल् उऱ–दोनों छोरों को मिलाते हुए; वळैत्त विल् ऎन–झुकाए धनुष के समान; काट्टिऱ्ऱु–दिखा। ७०४

गौरवमय पश्चिमी दिशा में कलाचन्द्र उदित हुआ। वह दुग्धोज्वल बालचन्द्र कामदेव के धनुष के समान था, जिसको मन्मथ ने पंकजाक्ष प्रभु पर क्रुद्ध होकर शर चलाने हेतु जल्दी आकर ऐसा झुकाया हो कि दोनों छोर मिल जाएँ। ७०४

नूऱ्ऱिदळ्क् कमलन् दन्द नुण्णरुञ् जुण्ण मुण्णत्
तोऱ्ऱिमॆन् पन्निनीर् तोय्न्द शीहरत् तॆन्ऱ लॆन्नुम्
काऱ्ऱिनुम् मालै यात्त कन्नलिनुङ् गाम वाळिक्
कूऱ्ऱिनुम् वॆम्मै काट्टिक् कॊदित्तदक् कुळिर्वॆण् डिङ्गळ् 705

नूरु इतळ् कमलम्–शतदल-कमल; तन्त–दत्त; नण् उरु–सूक्ष्म; चुण्णम् उण्ण–(मकरन्द) चर्ण को भरपूर; तीऱ्ऱि–लगा लेकर; मॆन्–महीन; पनि नीर् तोय्न्त–ओस-जल के; चीकरम्–कणों के साथ; तॆन्ऱल् ऍन्ऩुम् काऱ्ऱिनुम्–मलय-पवन से और; मालै आन–संध्या रूपी; कनलिनुम्–अग्नि से; कामन् वाळि कूऱ्ऱिनुम्–मन्मथ-शर रूपी यम से; अ कुळिर् वॆण् तिङ्कळ्–वह शीतल श्वेत चाँद; वॆम्मै काट्टि–गरमी देकर; कॊतित्ततु–खौलता दिखा। ७०५

शतदल कमल के पराग के शुद्ध सुगन्धचूर्ण को अपने ऊपर मल लेकर शीतल ओस के जल से सना मलयपवन बह रहा था। संध्या अनल के समान थी। मन्मथ-शर यम-सम था। इन सबके कारण शीतल श्वेत वालचन्द्र भी गरमी फैलाते हुए खौलता सा लगा। ७०५

शॆयिर्प्पिनु मळहु शॆय्युन् दिरुमुहत् तणङ्गैत् तीर्न्दु
तुयिर्चुवै तुऱन्दान् तोण्मेर् ऱूनिलात् तवळ्न् दोऱ्ऱम्
मयिर्कुलम् बिरिन्द वॆन्न मरहद मलैमेन् वन्नि
उयिर्प्पुडै वॆळ्ळैप् पिळ्ळै वाळरा वूर्व दॊत्त 706

चॆयिर्प्पिनुम्–क्रोध करते समय भी; अळकु चॆय्युम्–सुन्दर दिखनेवाले; तिरुमुकत्तु–श्रीमुख की; अणङ्कै तीर्न्तु–देवी से वियुक्त होकर; तुयिल् चुवै–निद्रारस; तुऱन्तान्–जिन्होंने छोड़ दिया उनके; तोळ् मेल्–कन्धों पर; तू निला–स्वच्छ चाँदनी; तवळुम् तोऱ्ऱम्–जो रेंगती रही, वह दृश्य; कुलम् मयिल्–उत्तम जाति के मोर; पिरिन्ततु ऍन्न–छोड़ गये इस कारण; मरकतम् मलै मेल्–मरकत पर्वत पर; वन्नि उयिर्प्पुटै–अग्नि के समान साँस छोड़नेवाले; वाळ् अरा–श्वेत रंग के साँप का; पिळ्ळै–बच्चा; ऊर्वतु–रेंगता; ऒत्ततु–जैसा लगा। ७०६

क्रोध के अवसर में भी सुन्दर दिखनेवाले श्रीमुख की देवी सीता से वियुक्त होकर जिन श्रीराम ने निद्रा में रस ही छोड़ दिया था, उनके कन्धों पर स्वच्छ चाँदनी लग रही थी। वह ऐसा लगा मानो उच्च जाति के मयूरों से विमुक्त मरकत पर्वत पर अनलनिभ श्वेत वालसर्प (भय छोड़कर) रेंग रहा हो। ७०६

मन्नॆडु नहर माडे वरुदलाल् वयिरच् चॆङ्गैप्
पॊन्नॆडुन् दिरडो ळैयन् मॆय्युरप् पुळुङ्गि नॆन्दान्
पन्नॆडुङ् गादत् तेयुज् जुडवल्ल पवळच् चॆव्वाय्
अन्नॆडुङ् गरुङ्गट् टोयै यणुहित्ता लाव दुण्डो 707

मन् नॆटु–महिमामय और बड़े; नकरम्–नगर के; माटे वरुतलाल्–पास आने से; वयिरम् चॆम् कै–शक्तियुत लाल हाथों के और; पॊन् नॆटु–सुंदर और विशाल; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों के स्वामी; ऐयन्–श्रीराम; मॆय् उऱ पुळुङ्कि–शरीर पसीना-पसीना होकर; नॆन्तान्–दुखे; पल् नॆट कातत्तु–अनेक लम्बे कोसों तक; एयुम् चुट वल्ल–जाकर जलानेवाले; पवळम् चॆव्वाय्–प्रवाल-सम लाल अधर और; अम् नॆटु

करु कण्–सुन्दर और दीर्घ काली आँखों से शोभित; तीयै–अग्नि के; अणुकिताल्–समीप जाने से; आवतु उण्टो–कोई लाभ होगा क्या। ७०७

गण्यमान्य लंका के पास आने से सशक्त लाल हाथों और सुन्दर दीर्घ और पुष्ट बाहुओं के स्वामी श्रीराम का शरीर पसीना-पसीना हो गया और वे बहुत उद्विग्न रहे। सब ओर अनेक कोस चलकर जला सकनेवाली प्रवाललालमुखी मनोरम विशालाक्षी (सीता रूपी) आग के नियराने से (फिर) क्या लाभ हो सकता है ? । ७०७

इऱ्ऱदु काल माह विलङ्गैयर् वेन्द ऩेव
ऑऱ्ऱर्वन् दळवु नोक्किक् कुरङ्गॆन वुळल्हिन् ऱारैप्
पऱ्ऱिऩ ऩॆन्ब मत्ऩो पण्डुदाऩ् पलनाट् चॆय्द
नऱ्ऱवप् पयऩ्दन् दुय्प्प मुन्दुऱ् पोन्द नम्बि 708

पण्टु–पहले; ताऩ्–स्वयं; पल नाळ्–अनेक दिन; चॆय्त–कृत; नल् तवम्–श्रेष्ठ तप के; पयन् तन्तु–फल देकर; उय्प्प–चलाने से; मुन्तु उऱ–पहले ही; पोन्त–जो आया; नम्पि–उस नायक (विभीषण) ने; इलङ्कैयर् वेन्तन्–लंका के (असली) राजा (रावण) का; कालम् इऱ्ऱतु आक–अन्त आ गया, इस कारण; एव–उसने भिजवाया, उस पर; ऑऱ्ऱर् वन्तु–चर आकर; अळवु नोक्कि–सेना का परिमाण देखते हुए; कुरङ्कु ॲन्न–वानरों की तरह; उळल्किन्ऱारै–जो घूम रहे थे, उनको; पऱ्ऱिऩन्–पकड़ लिया। ७०८

तब विभीषण ने, जो पूर्वकृत अनेक दिनों की तपस्या के फल की प्रेरणा से श्रीराम के पास आकर मिला था, उन चरों को देखकर पकड़ लिया जिन्हें आयु के अन्त होने को आने के कारण दुर्बुद्धि रावण ने भिजवाया था और जो वानरवेश में घूम रहे थे। ७०८

पेर्वुरु कविथिऩ् शेऩैप् पॆरुङ्गडल् वॆळ्ळन् दऩ्ऩुळ्
ओर्वुरु मऩत्त ऩाहि यॊऱ्ऱरै युणर्न्दु कॊण्डाऩ्
शेर्वुरु पालिऩ् वेलैच चिऱुतुळि तॆऱित्त वेनुम्
नीरिऩै वेऱु शॆय्यु मऩ्ऩत्तिऩ् नीर ऩाऩाऩ् 709

पेर्वु उरु–चलते रहनेवाले; कवियिऩ् चेऩै–वानरों की सेना रूपी; पॆरु कटल् वॆळ्ळम् तऩ्ऩुळ्–बड़े सागर की विपुल जलराशि में; ओर्वु उरु–अन्वेषण करनेवाले; मऩत्तऩ् आकि–विचारवाला होकर (जो आया था उस); ऑऱ्ऱरै उणर्न्तु कॊण्टाऩ्–चर को पहचान लिया; चेर्वु उरु–मिला लेनेवाले; पालिऩ् वेलै–क्षीरसागर में; चिऱु तुळि तॆऱित्त वेऩुम्–छोटी बूँद पड़ जाय तो भी; नीरिऩै वेऱु चॆय्युम्–जल को अलग करनेवाले; अऩ्ऩत्तिऩ् नीरऩ् आऩाऩ्–हंस का-सा गुणवाला बना। ७०९

चंचल स्वभाव वाले वानरों की सेना-सागर के मध्य विभीषण निगरानी के विचार से घूम रहा था। उसने चरों को पहचान लिया।

वह तब उस हंस के समान था, जो जल को अपना-सा बनाकर मिला लेनेवाले क्षीरसागर में पड़नेवाली, जल की एक बूंद को भी अलग कर सकता है। ७०९

पॆरुमैयुन् जिरुमै तानुम् मुऱ्ऱुऱ पॆऱ्ऱि याऱ्ऱ
अरुमैयि नहन्ऱु नोण्ड विञ्जैयु ळडङ्गित् तामुम्
उरुवमुन् दॆरिया वण्ण मॊळित्तन ऱुऱ्ऱैयु मायत्
तिरुवरै यॊरुङ्गु काणुम् योहियु मॆन्न लानान् 710

पॆरुमैयुम्–महिमा; चिऱुमै तानुम्–अणिमा आदि (सिद्धि); मुऱ्ऱुऱ पॆऱ्ऱि–पूर्ण रूप से प्राप्त करके; आऱ्ऱ–आगे करने को; अरुमैयिन्–कठिन; अकन्ऱु नोण्ट–विशाल और गहरी; विञ्चैयुळ् अटङ्कि–विधा के वश में होकर; तामुम्–खुद भी; उरुवमुम् तॆरिया वण्णम्–रूप भी न दिखे ऐसा; ऑळित्तनर्–छिपे; उऱैयुम् मायत्तु–रहने की माया के; इरुवरै–(जीव-ब्रह्म) दोनों को; ऑरुङ्कु–एक साथ; काणम् योकियुम् ॲन्नल्–देख सकनेवाले योगी के समान भी; आनान्–बना। ७१०

(अणिमा) महिमा, लघिमा आदि सिद्धि की बहुत ही दुस्तर विद्या में वे चर दक्ष थे। वे अपने असली रूप को छिपाकर घूम रहे थे। तो भी विभीषण ने उस योगी के समान उन्हें देख लिया, जो शरीर के अन्दर रहनेवाले मायावी दोनों (जीव, ईश्वर) को प्रत्यक्ष देख लेता है। ७१०

कूट्टिय विरऱ्ऱिण् कैयाऱ् कुरङ्गुह ळिरङ्गक् कुत्ति
मीट्टॊरु वित्तैशॆय् यामल् माणैयिन् कॊडियाल् वीक्किप्
पूट्टिय कैयर् वायाऱ् कुरुदियै पॊळिहिन् ऱारैक्
काट्टिनन् कळ्व रॆन्नाक् करुणैयङ् गडलुङ् गण्डान् 711

विरल् कूट्टिय–उँगलियों को मिलाकर बनी; तिण् कैयाल्–कठोर हाथ (मुष्टि) से; इरङ्क–वेदना का अनुभव करें ऐसा; कुरङ्कुकळ्–वानर; कुत्ति–घूँसा मारकर; मीट्टु–फिर; ऑरु वित्ते चॆय्यामल्–कोई कार्य न कर सके ऐसा; माणैयिन् कॊटियाल्–'माणै' नामक लता से; वीक्कि–बाँधकर; पूट्टिय कैयर्–बँधे हाथों वाले; वायाल्–मुख से; कुरुतियै पॊळिकिन्ऱारै–रक्त वमन करनेवाले उनको; कळ्वर् ॲन्ना–चोर कहकर; काट्टिनन्–(विभीषण ने श्रीराम को) दिखाया; करुणै अम् कटलुम्–करुणा के सुन्दर सागर ने भी; कण्टान्–देखा। ७११

वानरों ने मुष्टि बाँधकर उन्हें त्रस्त करते हुए घूँसे मारे। फिर 'माणै' नामक लता से बाँधकर निष्क्रिय बनाया। बँधे हुए हाथों और रक्त वमन करनेवाले मुखों के उनको विभीषण ने श्रीराम को दिखाया और कहा कि ये (कपटी) चोर हैं। और दयासागर ने उन्हें निहारा। ७११

पाम्बिळैप् पळळि वळळल् पहैञरॆन् ऱुणरान् पल्लोर्
नोम्बिळै शॆय्द कॊल्लो कुरङ्गॆन विरङ्गि नोक्कित्

ताम्बिळै शॅय्दा रेतुन् दञ्जमॅन् ड्रडैन्दोर् तम्मै
नाम्बिळै शॅय्य लामो नलियलीर् विडुमि नॅन्ड्रान् 712

पाम्पु इळै–नाग की बनी; पळ्ळि–शय्या (शायी); वळ्ळल्–प्रभु (ने); पकैञर् ॲन्ड्रु–शत्रु ऐसा; उणरान्–नहीं समझे; पल्लोर्–अनेक; नोम्–दुःखी हों ऐसा; पिळै–अपराध; कुरङ्कु शॅय्त कोल्लो–इन वानरों ने किया क्या; ॲन्–सोचकर; इरङ्कि–दया करके; नोक्कि–देखकर; ताम्–वे (स्वयं); पिळै चॅय्तार् एतुम्–अपराध करते होते तो भी; तञ्चम् ॲन्ड्रु–शरण माँगकर; अटैन्तोर् तम्मै–आये हुओं के प्रति; नाम्–हम; पिळै चॅय्यलामो–अपराध कर सकेंगे क्या; नलियलीर्–त्रस्त मत करो; विटुमिन्–मुक्त करा दो; ॲन्ड्रान्–कहा। ७१२

शेषशय्याशायी श्रीराम उन्हें शत्रु नहीं जान सके। इसलिए उन्होंने पूछा कि इन वानरों ने भी कोई ऐसा अपराध किया, जिससे अनेक लोग उन्हें कष्ट दें ? फिर करुणा की दृष्टि दौड़ाकर उन्होंने कहा कि अपराधी भी हों अभयदान माँगनेवालों के प्रति हम अपराध कर सकते हैं क्या ? इन्हें कष्ट मत दो। वन्धन खोल दो। ७१२

अहत्तुरप् पॉलिन्द वळ्ळल् करुणैया लळुद कण्णन्
नहनिऱै कान्नि वैहु नम्मिनत् तवरु मल्लर्
नहैनिऱै विल्ला वुळ्ळत् तिरावणन् तन्द वॉऱ्ऱर्
शुहनिव नवनुञ् जार नॅन्बदुन् दॅरियच् चॉन्नान् 713

अकन् उर्–मन से युक्त (सच्ची); पॉलिन्त–विद्यमान; वळ्ळल् करुणैयाल्–प्रभु की करुणा से; अळुत कण्णन्–रोती आँख वाले ने; नकम् निऱै–नग-भरे; कान्निन् वैकुम्–वनवासी; नम् इनत्तवरुम्–हमारे वर्ग के; अल्लर्–नहीं हैं (ये); नकै निऱैवु इल्ला–मधुर-स्वभाव जिसमें भरा नहीं है, ऐसे; उळ्ळत्तु–मन के; इरावणन्–रावण द्वारा; तन्त–प्रेरित; ऑऱ्ऱर्–चर हैं; इवन् चुकन्–यह शुक है; अवनुम् चारन्–वह भी सारण है; ॲन्पतुम्–यह भी; तॅरिय–समझाते हुए; चॉन्नान्–कहा। ७१३

श्रीराम की करुणा अन्तश्शुद्ध थी। उसको देखकर गद्गद्वाणी विभीषण ने कहा कि नगों (पर्वतों या पेड़ों) से भरे कानन के वासी हमारे (वानर के) वर्ग के नहीं हैं ये। ये सुखद गुणों से हीन मन वाले रावण द्वारा प्रेषित चर हैं। यह शुक है और वह सारण। विभीषण ने समझाते हुए कहा। ७१३

कल्विक्कण् मिक्कोन् शॉल्लक् करुनिऱ निरुदक् कळवर्
वल्विऱ्कं वीर मऱ्ऱिव् वानरर् वलियै नोक्कि
वॅल्विक्कं यरिदॅन् ड्रॅण्णि विनैयत्ता लॅम्मै यॅल्लाम्
कॉल्विक्क वन्दान् मॅय्म्मै कुरङ्गुनाङ् गॉळ्ह वॅन्ड्रार् 714

कल्वि कण्–विद्या में; मिक्कोन्–विदग्ध (विभीषण) के; चॊल्ल–कहने पर; करु निऱ–काले रंग के; निरुत कळ्वर्–राक्षस चोरों ने; वल् विल् कं वीर–कठोर धनुर्हस्त; इ वानरर्–इन वानरों की; वलियै नोक्कि–शक्ति को देखकर; वॆल्विक्कै अरितु–(रावण को) जय दिलवाना कठिन है; ऎन्ऱु ऎण्णि–ऐसा सोचकर; वितॆयत्ताल्–षड्यन्त्र द्वारा; ऎम्मै ऎल्लाम्–हम सभी को; कॊल्विक्क–मरवाने; वन्तान्–आया था (यह विभीषण); मॆय्म्मै–यह सत्य है; नाम् कुरङ्कु–हम वानर ही हैं; कॊळ्क–(मन में) धारण कर लें; ऎन्ऱार्–कहा। ७१४

विभीषण विद्याविदग्ध था। उसके ऐसा कहने पर काले रंग के राक्षस चोरों ने कहा कि हे धनुर्हस्त वीर! यही कपटी है। वानरों का वल देखकर उसने समझ लिया कि रावण को जिताना दुश्वार है। इसलिए साजिश करके हमें मारने के लिए यह इधर आया था। यही सत्य है। हम वानर ही हैं! आप निश्चय जान लें। ७१४

कळ्ळरे काण्डि यॆन्ऩा मन्दिरङ् गरुत्तुट् कॊण्डान्
तॆळ्ळिय तॆरिक्कुन् दॆव्वर् तीर्विनै शेर्द लोडुम्
तुळ्ळियि ऩिरदन् दोय्न्दु तॊन्निऱङ् गरन्दु वेऱाय्
वॆळ्ळिपोन् ऱिरुन्द शॆम्बु मामॆन वेऱु पट्टार् 715

कळ्ळरे–(कपटवेशधारी) चोर ही हैं; काण्टि–देखिए; ऎन्ऩा–कहकर; मन्तिरम्–मन्त्र; करुत्तुळ्–मन में; कॊण्टान्–स्मरण किया; तॆळ्ळिय–साफ़ रूप से; तॆरिक्कुम्–दरसानेवाला; तॆव्वर् तीर्वित्त–शत्रुओं का (कपट) कार्य निरसन करने का कार्य; चेर्तल् ओटुम्–हुआ तो तुरन्त; तुळ्ळियिन्–बूँद के परिमाण में; इर तम्–पारा; तोय्न्तु–लगा तो; तॊल् निऱम्–पुराना रंग; करन्तु–छिपाकर; वेऱाय्–भिन्न होकर; वॆळ्ळि पोन्ऱु–रजत के समान; इरुन्त–जो रहा वह; चॆम्पुम् आम् ऎन–ताम्र ही हो ऐसा; वेऱु पट्टार्–वदल गये। ७१५

विभीषण ने कहा कि ये चोर ही हैं। देख लें। फिर आवश्यक मंत्र का मानसिक जप किया। तव उनकी क़लई खुल गयी। पारा के लगने से रजत-सा रहा ताम्र जैसे अपना पुराना स्वभाव पा लेता है, वैसे ही मन्त्र का फल लगते ही वे वानर अपने असली रूप में आ गये। ७१५

मिऩ्गुला मॆयिऱ्ऱ राहि वॆरुवन्दु वॆऱ्पि ऩिन्ऱ
वऩ्गणार् तम्मै नोक्कि मणिनहै मुरुवल् तोऩ्ऱप्
पुऩ्गणार् पुऩ्ग णोक्कुम् पुरवलन् पोन्द तऩ्मै
अॆन्गॊलान् वॆरिय वॆल्ला मियम्बुदि रज्ज लॆन्ऱान् 716

मिन् कुलाम्–विद्युत्-प्रकाश-भरे; ऎयिऱ्ऱर् आकि–दाँत वाले बनकर; वॆरुवन्तु–भयातुर; वॆऱ्पिन् निन्ऱ–पर्वत-से खड़े रहे; वन् कणार् तम्मै नोक्कि–क्रूर उनको देखकर; पुन्कणार्–दुखियों के; पुन्कण्–दुःख को; नीक्कुम्–दूर करनेवाले; पुरवलन्–प्रभु श्रीराम ने; मणि मुरुवल्–मनोरम दंतावली में; नकै तोन्ऱ–मुस्कुराहट

के प्रगट होते; अञ्चल्–मत डरो; पोन्त तन्मै–आने की रीति; अन् कोल् आम्–क्या है सो; ॲल्लाम् तॆरिय–सब विदित हों ऐसा; इयम्पुतिर्–कहो; ॲन्ऱान्–कहा। ७१६

विद्युत्-से चमकते दाँतों के साथ भयातुर हो पर्वत के समान (अचल) खड़े रहे उन क्रूर चरों को देखकर दुःखी के दुःखहर प्रभु श्रीराम ने सफ़ेद दंतावली पर मुस्कुराहट को प्रकट करते हुए कहा कि मत डरो। यहाँ आये क्यों? हेतु क्या है? सब साफ़-साफ़ बता दो। ७१६

तायॆॅरिन् दुलहु कात्त तवत्तियत् तन्नैक् कॊल्लुम्
नोयॆॅरिन् दुणरान् तेडिक् कॊण्डन नुवल याङ्गळ्
वायॆॅरिन् दुणरा वण्णङ् गुळऱुवार् वणङ्गि माय
वेयॆॅरिन् दुरैक्क वन्देम् वितैयिनाल् वीर वॆन्ऱार् 717

वणङ्कि–नमन करके; कुळऱुवार्–अस्पष्ट शब्द कहते हुए; वीर–वीर; ताय् तॆरिन्तु–जगन्माता के रूप में प्रगट हो; उलकु कात्त–लोकपालन करनेवाली; तवत्तियै–तपस्विनी को; तन्नै कॊल्लुम्–अपनी मारक; नोय्–व्याधि; तॆरिन्तु–जानकर; उणरान्–जो नहीं बूझता; तेटि कॊण्टतन्–(जिसने आफ़त को) ढूँढ़कर अपनाया है उस रावण ने; वाय्–सत्य; तॆरिन्तु उणरा वण्णम्–जाना-समझा नहीं जाए इस प्रकार (जान आओ); नुवल–ऐसा कहा, इससे; माय वेय्–कपट रूप से ज्ञेय समाचार; तॆरिन्तु उरैक्क–जानकर कहने के लिए; याङ्कळ्–हम; वितैयिताल्–कर्मचोदित होकर; वन्तेम्–आये; ॲन्ऱार्–कहा। ७१७

वह सुनकर उन्होंने विनय की। ठीक तरह से शब्दों का उच्चारण भी नहीं कर सके। "हे वीर! जगन्माता लोकपालिका तपस्विनी सीता देवी को प्राणनाशक व्याधि जो नहीं समझ सका और जिसने अनर्थ को खोज लेकर अपना लिया है, उस रावण ने हमें आज्ञा दी कि जाकर अज्ञात रीति से समाचार जान आओ। उसकी ही आज्ञा से हम गुप्त समाचार बटोरने आये! हमारे प्रारब्ध की प्रेरणा है, क्या कहें!"। ७१७

ॲल्लैयि लिलङ्गैच् चॆल्व मिळैयवर् कीन्द तन्मै
शॊल्लुदिर् महर वेलै कविक्कुल वीरर् तूर्त्तुक्
कल्लिनिऱ् कडन्द वाऱुङ् गळऱुदिर् कालन् दाळ्त्त
विल्लिनर् वन्दा ऱॆन्ऱुम् विळम्बुदिर् विळम्ब वल्लीर् 718

विळम्प वल्लीर्–कहने की दक्षता रखनेवाले; ॲल्लै इल्–निस्सीम; इलङ्कै चॆल्वम्–लंका का धन; इळैयवर्कु–(उसके) छोटे भाई को; ईन्त तन्मै–जो दिया है (मैंने) वह हाल; चॊल्लुतिर्–कहो; मकरम् वेलै–मकरालय समुद्र को; कवि कुल वीरर्–वानरकुल के वीरों के; कल्लितिल्–पत्थरों (के सेतु) से; तूर्त्तु–पाटकर; कटन्त आऱुम्–पार आने का हाल भी; कळऱुतिर्–कहो; कालम्

ताळ्त्तु-विलम्ब (सकारण) करने के बाद; विल्लित्तर्-धनुर्धर; वन्तार् ॲन्ड्रम्-आये हैं यह भी; विळम्पुतिर्-कहो। ७१८

उनकी बातें सुनने के बाद श्रीराम ने उनसे यों कहा। हे वाक्चतुर चरो! हमने अपार लंका-धन को रावण के छोटे भाई को दान किया है। यह उससे कहो। मकरालय पर पत्थरों से सेतु बनाकर वानर इधर पहुँच गये हैं —यह बात भी सुना दो। विलम्ब से ही सही धनुर्धर आ गये हैं —यह बात भी सुना दो। ७१८

कॊत्तुरु तलैयान् वैहुङ् गुरुम्बुडै यिलङ्गैक् कुन्ड्रम्
तत्तुरु तडनीर् वेलै तन्निनॊरु शिरैयिर् ऱादल्
ऒत्तुर वुणरन्दि लामै युयिरॊडु मुरवि नोडुम्
इत्तुणै यिरुन्द दॆन्नुन् दन्मैयु मियम्बु वीराल् 719

कॊत्तुरु-गुच्छे के रूप में; तलैयान्-सिरों का स्वामी; वैकुम्-जहाँ रहता है; कुरुम्पु उटै-छोटे ग्रामों से भरी; इलङ्कै कुन्ड्रम्-लंका का त्रिकूट पर्वत; तत्तुरु-तरंगें जिस पर रेंगती हैं उस; तट नीर् वेलै तन्निन्-विशाल जलाशय समुद्र में; ऒरु चिरै इरुरु आतल्-एक ओर (कोने में) रहता है यह बात; ऒत्तुरु-विचार में; उणरन्तिलामै-हम न समझे इसीलिए; इत्तुणै-इतना समय; उयिरोटुम्-जीवंत तथा; उरवित्तोटुम्-बंधु-बांधवों के साथ; इरुन्ततु-वह रह सका; ॲन्नुम् तन्मैयुम्-ऐसा हाल भी; इयम्पुवीर्-कहो। ७१९

गुच्छशीर्ष रावण का वासस्थान, जो छोटे-छोटे गाँवों-सहित रहनेवाला यह लंकायुक्त त्रिकूट पर्वत है, रेंगती लहरों से भरे समुद्र में एक कोने में है। इसलिए यह समाचार मन में नहीं आया था। इसी कारण वह अब तक अपने प्राणों और परिवारों के साथ बचा रह सका। यह तथ्य भी उसे समझा दो। ७१९

शण्डङ्गॊळ् वेह माहत् तनिविडै युवणन् दाङ्गुम्
तुण्डङ्गॊळ् पिरैयान् मौलित् तुळविता नोडुन् दॊल्लै
अण्डङ्ग ळॅवैयुन् दाक्किक् काप्पिनु मरमि लादान्
कण्डङ्गळ् पलवुङ् गाणब नॆन्बदुङ् गळ्रु वीराल् 720

माकम्-आकाश में; चण्टम् कॊळ् वेकम् आक-प्रचण्ड गति के; तनि विटै-अपूर्व ऋषभ और; उवणम्-गरुड़; ताङ्कुम्-जिनको धारण करते हैं; तुण्टम् कॊळ् पिरैयान्-खण्ड-चन्द्रधर; मौलि तुळवितातोटुम्-किरीट पर तुलसी रखनेवाले (विष्णु) के साथ; तॊल्लै अण्टङ्कळ् ॲवैयुम्-सारे प्राचीन अण्डों को; ताक्कि-उनके शत्रुओं पर आक्रमण करके; काप्पिनुम्-पालें तो भी; अरम् इलातान्-अधर्मी रावण को; कण्टङ्कळ् पलवुम् काण्पन्-खण्ड-खण्ड करके देखूँगा; ॲन्पतुम्-यह भी; कळ्रुवीर्-कहो। ७२०

आकाश में प्रचण्ड वेग के साथ जानेवाले ऋषभ और गरुड़ जिनके

वाहन हैं, उन अर्द्धचन्द्रधर शिव और तुलसीशोभित किरीटधारी विष्णु के साथ प्राचीन सारे अण्डों के वासी सभी मिलें और शत्रु पर प्रहार करते हुए रावण की रक्षा करने का प्रयास करें तो भी मैं यह देख लूंगा कि उस अधर्मी के खण्ड-खण्ड कर दूं। यह मेरा वचन भी सुना दो। ७२०

तोट्टुरु मऴुवाळ् वीरन् तादैयैच् चॅऱ्ऱात् शुऱ्ऱम्
माट्टिय वण्ण मॅन्न वरुक्कमु मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱुम्
वीट्टियॅन् तादैक् काह मॅय्प्पलि विशुम्बु ळोरुक्
कूट्टुवॅ नुयिर्हॉण् डॅन्नुम् वार्त्तैयु मुणर्त्तु वीराल् 721

तोट्टुरु–पैनाए हुए; मऴु–परशु के; वाळ् वीरन्–आयुधधारी वीर परशुराम ने; तातैयैच् चॅऱ्ऱान्–(उनके) पिता से शत्रुता करनेवाले (कार्तवीर्यार्जुन) को; चुऱ्ऱम्–परिवारों के साथ; माट्टिय वण्णम्–जिस तरह मिटाया, उस रीति; ऑन्न–के समान; वरुक्कमुम्–वर्ग को; मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱुम्–अन्य सभी को पूर्णरूप से; वीट्टि–हराकर; उयिर् कॉण्टु–प्राण हरकर; ऍन् तातैक्काक–मेरे पिता (तुल्य) जटायु के निमित्त; मॅय् पलि–(उसके) शरीर की बलि; विचुम्पु उळोर्क्कु–आकाश-वासियों (देवों) को; ऊट्टुवॅन्–(हवि के रूप में) खिलाऊँगा; ऍन्नुम् वार्त्तैयुम्–यह वार्त्ता भी; उणर्त्तुवीर्–समझाओ। ७२१

जैसे तीक्ष्ण परशु के धारक परशुराम ने उनके पिता के हत्यारे (कार्तवीर्यार्जुन) को सबन्धुबांधव मार दिया था, वैसे ही मैं भी अपने पिता (तुल्य) जटायु की हत्या के बदले में लंकेश के प्राण हर लूंगा और उसके शरीर को देवों को बलि देकर उनको खिला दूंगा। यह मेरा कहना भी उसे बता दो। ७२१

ताऴ्विलात् तवत्तोर् तैयल् तनियोरु शिरैयिल् तङ्गच्
चूऴ्विला वञ्जञ् जूऴ्न्द तन्नैत्तन् शुऱ्ऱत् तोडुम्
वाऴ्वॅलान् दम्बि कॉळ्ळ वयङ्गॉरि नरह मॅन्नुम्
मीळ्विलाच् चिरैयिन् वैप्पे नॅन्बदुम् विळम्बु वीराल् 722

ताऴ्वु इला–अनिंद्य; तवत्तु–तपस्विनी; ऑरु तैयल्–अनुपम देवी के; तनि ऑरु–निर्जन एक; चिरैयिल् तङ्क–बंदीगृह में रहते; चूऴ्वु इला–विकट; वञ्चम् चूऴ्न्त–वंचना करनेवाले; तन्नै–उस रावण को; वाऴ्वु ऍलाम्–जीवन (वैभव) सभी को; तम्पि कॉळ्ळ–छोटे भाई के लेते; तन् चुऱ्ऱत्तोटुम्–उसके परिवारों के साथ; वयङ्कु ऍरि–जलती आग-सहित रहनेवाले; नरकम् ऍन्नुम्–नरक रूपी; मीळ्वु इला–अमुक्तिसाध्य; चिरैयिन्–कारा में; वैप्पेन्–रख दूंगा; ऍन्पतुम्–यह बात भी; विळम्पुवीर्–बतला दो। ७२२

अनिंद्य व्रतधारिणी अनुपम देवी, एक अबला कारागृह में रहती रहे, ऐसा विकट वंचक रावण ने किया है। उसका सारा वैभव विभीषण का

होगा। उसे उसके बन्धु-परिवारों के साथ जलती आग के साथ रहनेवाले नरक रूपी कारा में रख लूंगा और वह कभी उससे मुक्त नहीं हो सकेगा। यह समाचार भी बता देना। ७२२

नोक्किऩ्ऩीर् तातै यॅङ्गुम् नुळैन्दुनी रिऩिवे ऱॊऩ्ऱुम्
आक्कुव दिल्लै यायि ऩञ्जलॅऩ् ऱ:(ह्)दुण् डऩ्ऱे
वाक्किऩिऩ् मऩत्तिऩ् कैयिऩ् मऱ्ऱिऩि नलिया वण्णम्
पोक्कुमिऩ् विरैवि ऩॅऩ्ऱा ऩुय्न्दऩ मॅऩ्ऱु पोऩार् 723

नीर्-तुमने; तातै अॅङ्कुम्-सेना (वास) में सर्वत्र; नुळैन्तु-घुसकर; नोक्कित्तीर्-देखा; इऩि-अब; वेऱु ऑऩ्ऱुम्-और कुछ; आक्कुवतु-करना; इल्लै आयिऩ्-नहीं हो तो; अञ्चल्-मत डरो; ऍऩ्ऱु-ऐसा जो मैंने (अभय) कहा; अ:तु उण्टु अऩ्ऱे-वह है न; वाक्कितिल्-वाचा; मऩत्तिल्-मन से; कैयिल्-हाथ से; मऱ्ऱु-और भी; इऩि-अब; नलिया वण्णम्-त्रस्त न करे; विरैविऩ् पोक्कुमिऩ्-अविलम्ब चलो; ऍऩ्ऱाऩ्-कहा (श्रीराम ने); उय्न्तऩम् ऍऩ्ऱु-बच गये कहते हुए; पोऩार्-गये। ७२३

तुमने सेनावास में घुसकर सब देख लिया है। आगे कुछ करने को नहीं हो तो, तुमने मेरा अभयदान भी देख लिया है, तो अविलम्ब चले जाओ ताकि और दुर्गति न हो और कोई मन, वाक् या हाथ से त्रस्त न करे। श्रीराम ने यह कहा, तो वे 'बचे, बच गये!' कहकर भागे। ७२३

अरवु माक्कड लञ्जिय वच्चमुम्, उरवु नल्लणै योट्टिय वूऱ्ऱमुम्
वरवुम् नोक्कि यिलङ्गैयर् मऩ्ऩवऩ्, इरवि ऩॅण्णिड वेऱिरुऩ् दाऩरो 724

इलङ्कैयर् मऩ्तवऩ्-लंकावासियों का राजा; अरवम्-शब्दायमान; मा कटल्-बड़ा समुद्र; अञ्चिय-जो डरा वह; अच्चमुम्-डर; उरवु-सबल; नल् अणै-श्रेष्ठ सेतु; ओट्टिय-लम्बा बनाने का; ऊऱ्ऱमुम्-साहस और; वरवुम्-(श्रीराम आदि का) आना; नोक्कि-जानकर; इरविऩ्-रात में; ऍण्णिट-मंत्रणा करने के लिए; वेऱु इरुन्ताऩ्-अलग रहा। ७२४

उधर लंकेश एकाकी अलग रहा क्योंकि उसे शब्दायमान सागरपति (वरुण) का भय, बड़े सेतु के बन्धन का साहस और श्रीराम आदि का आना —यह सब मालूम हो गया और वह मंत्रणा करना चाहता था। ७२४

वार्हु लामुलै मादरुम् मैन्दरुम्, आरुम् नोङ्ग अऱिञरॊ डेहिऩाऩ्
शेर्ह वॅऩ्ऩिऩल् लालऩ्ऱु तॅऩ्ऱलुम्, शार्हि लानॅडु मन्दिरच् चालैये 725

चेर्क-आओ; ऍऩ्ऩिऩ् अल्लाल्-नहीं कहने पर; अऩ्ऱु-तब; तॅऩ्ऱलुम्-मलयपवन भी; चार्किला-जहाँ नहीं आ सके; नॆटु मन्तिरचालै-बड़े मंत्रणागृह में; वार् कुलाम्-अँगियाबद्ध; मुलै मातरुम्-स्तनों वाली स्त्रियाँ और; मैन्तरुम्-

पुरुष; आरुम् नीङ्क-सभी के वहाँ से हटते; अऱिञरोटु-बुद्धिमानों के साथ; एकिताऩ्-गया। ७२५

वह एक विशाल मन्त्रणागृह में गया। उसमें आज्ञा न मिलने पर मलयपवन भी नहीं घुस सकता था। उस मण्डप से अँगियाबद्ध स्तनों वाली स्त्रियाँ और पुरुष सभी हट गये। रावण बुद्धिमान मन्त्रियों के साथ उसमें गया। ७२५

उणर्वि नॆञ्जिऩ रूम रुरैप्पॊरुळ्, पुणरुङ् गेळ्विय रल्लर् पॊऱियिलर्
कॊणरुङ् गूऩर् कुऱळर् कॊऴुञ्जुडर्, तुणरु नल्विळक् केन्दिऩर् शुऱ्ऱिऩार् 726

पॊऱि इलर्-अंगहीन; उणर्विल्-अचेतन; नॆञ्चिऩर्-मन वाले; ऊमर्-गूँगे; उरै पॊरुळ्-कही हुई बात को; पुणरुम्-समझनेवाले; केळ्वियर्-श्रवण-शक्ति रखनेवाले; अल्लर्-नहीं; कॊणरुम्-कहने पर (वस्तु) लानेवाले; कूऩर्-कुऱळर्-कुबड़े और नाटे; कॊऴु-धनी; तुणरुम्-बहुमुखी; चुडर्-ज्वालाओं के; नल् विळक्कु-अच्छे दीप; एन्दिऩर्-धारण करते; चुऱ्ऱिऩर्-घेरे रहे। ७२६

तब अंगहीन, मन्दबुद्धि, गूँगे, बहरे और आज्ञाकारी कुबड़े और बौने लोग बहुमुखी दीप लिये हुए घेरे रहे। ७२६

नणियर् वन्दु मऩिदर् नमक्किऩित्
तुणियुम् शॆय्विऩै यादॆऩच् चॊल्लिऩाऩ्
पणियुन् दाऩव रादियर् पऩ्मुडि
मणियि ऩाल्विळङ् गुम्मलर्त् ताळिऩाऩ् 727

पणियुम्-प्रणमन करनेवाले; ताऩवर् आतियर्-दानव आदियों के; पऩ् मुटि-विविध मुकुटों पर की; मणियिऩाल्-मणियों के प्रकाश से; विळङ्कुम्-शोभित; मलर् ताळिऩाऩ्-कमल-चरण (रावण); मऩितर् वन्तु-मनुष्य आकर; नणियर्-पास वाले हो गये; नमक्कु-हमारा; इऩि-अब; तुणियुम् चॆय्विऩै-निश्चय के साथ किया जानेवाला काम; यातु-कौन सा है; ऎऩ-ऐसा; चॊल्लिऩाऩ्-कहा (पूछा)। ७२७

रावण ने, जिसके चरणकमलों में विनत दानवों आदि लोगों के विविध किरीटों की मणियों का प्रकाश लगा हुआ था, अपने मन्त्रियों से पूछा कि (हमारे शत्रु) नर आकर निकटस्थ हो गये हैं। अब हमारे सामने कौन से कार्य हैं, जिन्हें हम निश्चय के साथ करें ?। ७२७

काल वॆङ्गऩल् पोलुङ् गणैहळाल्
वेलै वॆन्दु नडुङ्गि वॆयिल्पुरै
मालै कॊण्डु वणङ्गिऩ वाऱ्ऱलाम्
शूल मॆऩ्ऩवॆऩ् नॆञ्जैत् तुळैक्कुमाल् 728

काल वॅम् कतल–युगान्त के प्रखर अनल; पोलुम्–के समान; कणैकळाल्–शरों से; वेलै–समुद्र; वॅन्तु–जलकर; नटुङ्कि–काँपते हुए; वॅयिल् पुरै–धूप के समान प्रकाशमय; मालै कॊण्टु–माला लेकर; वणङ्कित आरु अॅलाम्–जो नत हुआ, वह हाल सब; चूलम् अॅन्न–शूल के समान; अॅन् नॅञ्चै–मेरे हृदय को; तुळैक्कुम्–सालता है। ७२८

तब माल्यवान बोला। युगांत की आग के समान जो राम के बाण थे, उनसे समुद्र जला, डरा और धूप-सी प्रकाशमय माला भेंट में देकर श्रीराम के चरणों में नत हुआ। यह हाल मेरे हृदय को शूल की तरह सालता है ! । ७२८

किऴिप डक्कडल् कीण्डदु माण्डदु
मॊऴिप डॆत्त वलियॆन्न मूण्डदोर्
पऴिप डॆत्त पॆरुम्बुयत् तन्नवन्
वऴिहॊ डुत्तदॆन् नुळ्ळम् वरुत्तुमाल् 729

कटल् किऴिपट–समुद्र चिर जाए, ऐसा; कीण्टतुम्–उसे चीरना; माण्टतुम्–(जलचरों का) मरना और; मॊऴि पटॆत्त–(शाप-) वचनों को प्राप्त; वलि अॅन्न–शक्ति के समान; मूण्टतोर्–जो उठा, वह; प(क)ऴि पटॆत्त–शर जिस पर लगा; पॆरुम् पुयत्तु–बड़ी भुजाओं के; अन्नवन्–उस वरुण का; वऴि कॊटुत्ततु–मार्ग दिलाना; अॅन् उळ्ळम्–मेरे मन को; वरुत्तुम्–पीड़ा देता है। ७२९

समुद्र को दो भागों में चीरना, उसके सभी जलचर जीवों का मरना, (साधुओं के) वचन के समान शक्तियुक्त राम का शर जिस पर लगा था उस पुष्टभुज वरुण का मार्ग देना —ये सब मेरे दिल को ग़म पहुँचाते हैं। ७२९

पडैत्त माल्वरै यावुम् बऱित्तुवेर्
तुडैत्त वानर वीरर्तन् दोळ्हळैप्
पुडैत्त वारुम् पुणरियैप् पोक्कऱ
अडैत्त वारुमॆन् नुळ्ळत् तडैत्तवाल् 730

पटैत्त–(ब्रह्मा द्वारा) सृष्ट; माल्वरै यावुम्–सभी बड़े पर्वतों को; वेर् पऱित्तु–जड़ से उखाड़कर; तुटैत्त–पर्वतों का क्षय जिन्होंने कर दिया; वानर वीरर्–उन वानर वीरों का; पुणरियै–समुद्र को; पोक्कु अऱ–हिलने से; अटैत्त आऱुम्–रोकने का हाल और; तम् तोळ्कळै–अपने कन्धों को; पुटैत्त आऱुम्–ठोंकने का हाल; अॅन् उळ्ळत्तु–मेरे मन में; अटैत्त–गड़ गये। ७३०

वानर वीरों ने ब्रह्मा की सृष्टि में रहे सभी पर्वतों को जड़ से उखाड़ कर सृष्टि को ही पर्वत-रहित कर दिया। समुद्र को भी सेतु से बद्ध और

अचल कर दिया, यह हाल; और अपने कन्धे ठोंककर उन वानरों ने अपने आनन्द का जो प्रदर्शन किया वह —ये सब मेरे मन में गड़ गये। ७३०

कान्दु वॆंञ्जिन वीरर् कणक्किलार्
तान्द मार्रलुक् केर्र तरत्तर
वेन्द वॆर्पै यॊरुवन् विरल्हळाल्
एन्दि यिट्टदॆन् नुळ्ळत्ति निट्टदाल् 731

वेन्त–राजा; कान्तु–तपते; वॆंम् चितम्–भयंकर क्रोध के; कणक्किलार्–और असंख्यक; वीरर्–वीरों के; ताम् तम् आर्रलुक्कु एर्र–अपनी-अपनी शक्ति के अनुरूप; तर तर–(पर्वत उठा लाकर) देते-देते; वॆर्पै–उन पर्वतों को; ऒरुवन्–अकेले नल का; विरल्कळाल्–अपनी उँगलियों पर; एन्ति–लेकर; इट्टतु–समुद्र में डालना जो था वह; ऎन् उळ्ळत्तिल्–मेरे मन में; इट्टतु–डाला गया। ७३१

राजा! जलते-से क्रोध वाले असंख्यक वानर वीर अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार लाकर पर्वत देते रहे। उनको अकेले नल ने अपनी उँगलियों से पकड़कर समुद्र में डालकर जो बाँध बनाया, उसने मेरे दिल में चोट कर दी! । ७३१

शुट्ट वाहण्डुन् दॊन्नहर् वेलैयैत्
तट्ट वाहण्डुन् दानवर् तानैयैक्
कट्ट वाहण्डुङ् गण्णॆदि रेवन्दु
विट्ट वाहण्डु मेलॆण्ण वेण्डुमो 732

चुट्ट वा–(समुद्र को) जलाने का प्रकार; कण्टुम्–देखकर और; तॊल् नकर् वेलैयै–पुराने नगर (चारों ओर) के समुद्र को; तट्टवा कण्टुम्–(सेतु डालकर) बाँधना देखकर; तानवर् तानैयै–दानवों की सेना को; कट्टवा कण्टुम्–(हनुमान ने) जो नाश कराया था उसको देखकर और; कण् ऎतिरे–समक्ष; वन्तु विट्टवा–आ जो गये वह प्रकार; कण्टुम्–देखकर; मेल् ऎण्ण वेण्टुमो–आगे भी सोचना चाहिए क्या। ७३२

समुद्र को जलाने का वृत्तांत देखा; प्राचीन नगर को वलयित रहनेवाले समुद्र का सेतु में वन्धन देखा। हनुमान का राक्षस-सेना का नाश करना देखा। वे ही समक्ष आ गये —यह भी देख लिया। आगे मंत्रणा भी करनी चाहिए क्या? । ७३२

ऎन्रु तायैप् पयन्दो नियम्वलुम्
तिन्रु वायै विळिवळित् तीयुह
नन्रु नन्रुनम् मन्दिरम् नन्रॆना
ऎन्रुम् वाळ्दि यिळवलो डेहॆन्रान् 733

ॲन्ड्र-ऐसा; तायै पयन्तोन्-माता के जनक (रावण के नाना) के; इयम्पलुम्-कहने पर; वायै तिन्ड्र-ओंठ चबाते हुए; विऴि वऴि-आँखों मे; ती उक-आग के निकलते; नन्ड्र नन्ड्र-अच्छा, अच्छा; नम् मन्तिरम्-हमारी मन्त्रणा; नन्ड्र-अच्छी रही; ॲना-कहकर; इळवलोटु-(मेरे) छोटे भाई के साथ; एकु-चले जाओ; ॲन्ड्रुम् वाऴ्ति-हमेशा जियो; ॲन्ड्रान्-(रावण ने) कहा। ७३३

ऐसा रावण की माता के जनक माल्यवान ने कहा। रावण ने गुस्से से ओंठ चबाये और आँखों से अंगारे उगलते हुए कहा कि तुम्हारी मन्त्रणा अच्छी रही! चलो तुम भी मेरे छोटे भाई के साथ और चिरकाल तक जीते रहो! । ७३३

ईन मेहों लिदमॅन वॅण्णुड्रा, मोन माहि यिरुन्दनन् मुड्रिनान्
आन काले यडियि निड्रॅञ्जिय, शेनै नाद निनैयन शॅप्पिनान् 734

इतम्-हितवचन; ईतमे-लघुता लानेवाला है; ॲन-ऐसा; ॲण् उन्ना-सोचकर; मुड्रिनान्-वृद्ध (माल्यवान); मोनम् आकि-मौनी वनकर; इरुन्ततन्-रहा; आन काले-तब; अटियिन्-चरणों पर; इड्रॅञ्चिय-जिसने दण्डवत की उस; चेनै नातन्-सेनापति ने; इनैयन-ये बातें; चॅप्पिनान्-कहीं। ७३४

माल्यवान यह सोचकर चुप हो रहा कि हितवचन कहने से कोई लघु (अपमानित) हो जाता है! तब सेनापति ने चरण-वन्दना करके निम्नोक्त बातें कहीं। ७३४

कण्मै यिन्नहर् वेलै कडन्दवत्, तिण्मै यॉन्ड्र मलाल्तिशैक् कावलर्
ॲण्म रुम्मिवर् केवल्शॅय् हिन्ड्रवव्, वुण्मै यॉन्ड्र मुणर्न्दिले योवैया 735

ऐया-बाबा; कण्मै-आँखों के सामने; इन् नकर्-इस नगर के; वेलै कटन्त-समुद्र को पार करके आने का; अ तिण्मै ऑन्ड्रुम् अलाल्-उस बल एक के सिवा; तिचै कावलर् ॲण्मरुम्-आठों दिग्पालकों का; इवर्कु एवल् चॅय्किन्ड्र-इनकी आज्ञा के अनुसार चलने का; अ उण्मै-वह सत्य; ऑन्ड्रुम् उणर्न्तिलैयो-कुछ नहीं जानते हैं क्या। ७३५

बाबा! आँख के सामने उन्होंने समुद्र पार किया, सही। लेकिन उस एक साहस की बात कहते हो! पर आठों दिग्पालक इनकी सेवा करते हैं। यह सत्य तुम नहीं जानते क्या? । ७३५

कूशुम् वानरर् कुन्ड्रुकों डिक्कडल्, वीशि नारॅनुम् वीरम् विळम्बिनै
ऊशि वेरॉडु मोङ्गलै योङ्गिय, ईश नोडु मॅडुत्तदु मिल्लैयो 736

कूचुम्-संकोचशील; वानरर्-वानरों ने; कुन्ड्रु कॊटु-पर्वतों को लेकर; इ कटल्-इस समुद्र में; वीचिनार्-डाला; ॲनुम्-यह; वीरम्-वीरता; विळम्पिनै-बखानी; ओङ्किय ओङ्कलै-बहुत ऊँचे (कैलास) पर्वत को; ऊचि वेरॊटुम्-पतली-

पतली जड़ों के भी साथ; ईचतोट्टुम्–ईश्वर-सह; ॲंटुत्ततुम् इल्लैयो–उठाया नहीं था क्या। ७३६

संकोचशील वानरों ने पर्वतों को समुद्र में फेंका —यह वीरता की बात कही आपने ! अत्युन्नत कैलास पर्वत को हमारे राजा ने क्या जड़ से और शिव के साथ नहीं उठाया ? । ७३६

अदुहों डॅत्शिल वारमर् मेलिनि, मदिहॅ डुन्दहै योर्वन्दु नामुरॆ
पदिपु हुन्दनर् तम्मैप् पडुप्पदोर्, विदिहों डुन्द विळॅन्ददु तानॅन्ऱान् 737

इति–अब; अतु कोंट्टु ॲंन्–उसको लेकर क्या करें; चिल–कुछ; मति कॅट्टुम् तर्कयोर्–बुद्धिहीन स्वभाव वाले; तम्मै पट्टुप्पतु–उनकी नाशक; ओर् विति–एक विधि के; कोंट्टु उन्त–पकड़कर ढकेलने से; आर् अमर् मेल्–युद्ध पर आरूढ़; वन्तु–आकर; नाम् उऱे पति–हमारे वासस्थान में; पुकुन्तनर्–घुस गये; विळॅन्ततु–हो तो यही गया; ॲंन्ऱान्–कहा। ७३७

अब उन बातों की चर्चा से क्या होगा ? कुछ मतिभ्रष्ट लोग, अपनी नाशक विधि से प्रेरित होकर युद्ध का उद्देश्य लेकर हमारे वासस्थान में प्रविष्ट हुए हैं। यही बात है, जो हुई है । ७३७

मुऱ्ऱु मूडिय कञ्जुहन् मूट्टिय, वॅऱ्ऱ तऱ्पोळि कण्णिनन् वेत्तिरम्
पऱ्ऱु मङ्गैयि नन्पडि हारनिन्, ऱोऱ्ऱर् वन्दन रॅन्न वुणर्त्तिनान् 738

मुऱ्ऱु मूटिय–पूर्ण रूप से आच्छादित; कञ्चुकन्–कंचुक पहने हुए; मूट्टिय–जलानेवाले; वॅऱु अतल्–केवल अंगारे; पोळि–उगलनेवाली; कण्णिनन्–आँख वाला; वेत्तिरम् पऱ्ऱुम्–वेत्र रखनेवाली; अङ्कैयिनन्–हथेली वाला; पटिकारन्–द्वाररक्षक ने; इन्ऱु–अब; ओऱ्ऱर् वन्तनर्–गुप्तचर आये हैं; ॲंन्न–ऐसा; उणर्त्तिनान्–समाचार दिया। ७३८

तब कंचुक से पूर्णरूप से आच्छादित, जलानेवाले अंगारे ही उगलने वाली आँखों का और वेत्रहस्त द्वाररक्षक अन्दर आया और समाचार दिया कि अब गुप्तचर आये हैं। ७३८

वायिल् कावलन् कूऱि वणङ्गलुम्, एय वॅङ्गण् विऱल्हों ळिराक्कदर्
नाय हन्बुहुत् तीङ्गॅन नन्ऱॅनप्, पोय वन्बुह लप्पुहुन् दाररो 739

वायिल् कावलन्–द्वाररक्षक के; कूऱि–कहकर; वणङ्कलुम्–नमन करने पर; वॅम्कण् एय–कठोर दृष्टि से युक्त; विऱल् कोळ्–बलवान; इराक्कतर् नायकन्–राक्षस नायक के; ईङ्कु पुकुत्तु–यहाँ प्रवेश करा दो; ॲंन–कहने पर; अवन्–वह; नन्ऱु ॲंन–अच्छा कहकर; पोय् पुकल–जाकर बोला तो; पुकुन्तार्–(वे) घुस आये। ७३९

द्वाररक्षक के यह कहते हुए विनय करने पर कठोर दृष्टि वाले

वलवान राक्षसनायक रावण ने कहा कि उन्हें प्रविष्ट करा दो। द्वारपालक ने अच्छा कहा और वाहर जाकर उनसे कहा तो वे प्रविष्ट हुए। ७३९

मतॆक्कण् वन्दवन् पादम् वणङ्गिनार्
पतॆक्कै वऩ्गुरङ् गिऩ्पडर् शेतॆयै
निऩैक्कुन् दोरुन् दिडुक्किडु नॆञ्जिनार्
कनैक्कुन् दोरु मुदिरङ्गळ् कक्कुवार् 740

पतॆ कै–तालवृक्ष के समान हाथों वाले; वल् कुरङ्किन् पटर् चेतैयै–सबल वानरों की वड़ी सेना को; निनैक्कुम् तोरुम्–स्मरण करते हर समय; तिट्किट्टम्–काँपते; नॆञ्चिनार्–मन वाले; कनैक्कुम् तोरुम्–खखारते हर समय; उतिरङ्कळ् कक्कुवार्–रक्त वमन करनेवाले (चर); मतॆकण् वन्तु–भवन में आकर; अवन् पातम्–उसके चरणों में; वणङ्कितार्–झुके। ७४०

तालवृक्ष के समान हाथों के वानरों की सेना की बात ज्यों-ज्यों स्मरण हो आती, त्यों-त्यों उनका शरीर सिहर उठता था। जव रावण (या वे) खखारते तब रक्त वमन होता। ऐसी स्थिति में वे उस मन्त्रणागृह में आये और रावण के चरणों में विनत हुए। ७४०

वॆळ्ळ वारि विरिवॊडुम् वीडणत्, तळ्ळ वारि निलैमैयुन् दाबदर्
उळ्ळ वारु मुरॆमिनॆन् ऱानुयिर्, कॊळ्ळ वाय्वॆरु वुङ्गॊडुङ् गूऱ्ऱनान् 741

उयिर् कॊळ्ळ–प्राण हरने; वाय् वॆरुवुम्–मुख से शब्द करनेवाले; कॊटु कूऱ्ऱनान्–क्रूर यम के समान (रावण) ने; वॆळ्ळम् वारि–विपुल जलसागर के समान; विरिवॊटुम्–(सेना के) विस्तार के साथ; वीटणन्–विभीषण की; तळ्ळ वारि निलैमैयुम्–सुस्ती की स्थिति और; तापतर्–तपस्वी (वेशधारी) राम-लक्ष्मण का; उळ्ळ आरुम्–रहने का प्रकार; उरैमिन्–वताओ; ऎन्ऱान्–(आज्ञा का वचन) कहा। ७४१

प्राणहरण के वास्ते मुख से अस्पष्ट उच्चारण करनेवाले क्रूर यम के समान रावण ने उनसे कहा कि सागर-सम सेना का विस्तार, विभीषण का आलस्य और तपस्वी नरों का हाल —सभी कहो। ७४१

अडिय मन्नॆडञ् जेनॆयै याशैयाल्, मुडिय नोक्कलुर् ऱॆमुदु वेलैयिन्
पडियै नोक्कियॆप् पालुम् बडर्हुरुम्, कडिय वेहक् कलुळ्निर् कण्डिलम् 742

अटियम्–दास, हम; अ नॆटु चेतैयै–उस विशाल सेना को; आचैयाल्–उत्सुकता के साथ; मुटिय–पूर्ण रूप से; नोक्कल् उऱ्ऱेम्–देखने लगे; मुतु वेलैयिन्–पुराने सागर के; पटियै नोक्कि–विस्तार जानने के लिए; ऎ पालुम्–सब ओर; पटर्कुरुम्–उड़नेवाले; कटिय वेकम्–अति वेगवान; कलुळतिल्–गरुड़ के समान; कण्टिलम्–देख नहीं पाये। ७४२

उन्होंने उत्तर में निवेदन किया। हम दासों ने उत्कण्ठा से उस

विशाल वानर-सेना को पूर्णरूप से देखने लगे। पर समुद्र के विस्तार को देख चुकने के प्रयास में अति वेगवान गरुड़ भी जैसे असफल होता है वैसे हम असफल हुए और देख न पाये। ७४२

नुवल याम्वर वेण्डिय नोक्कदो, कवलै वेलै यॅनुङ्गरै कण्डिला
अवल मॅय्द वडैत्तुऴि यार्त्तॅऴुम्, तुवलै येवन्दु शॉल्लिय दिल्लैयो 743

वेलै ॲनुम्–वेला कहलानेवाले; करै–तीर को; कण्टु इला–न देख सके यह; कवलै–दुःख ही; अवलम् ॲय्त–दुःखी हो (दूर हो) ऐसा; अटैत्तुऴि–जब (सेतु) बन्धन किया (वानरों ने); आर्त्तु ॲऴुम्–शब्द के साथ उठे; तुवलैये–जलकणों ने ही; वन्तु चॉल्लियतु–आकर बतलाया; इल्लैयो–नहीं क्या; नुवल–कहने के लिए; याम्–हमें; वरवेण्टिय–आना पड़े; नोक्कतो–ऐसा उद्देश्य रखता है क्या। ७४३

समुद्र का दूसरा किनारा नहीं देख सकेंगे—यह चिन्ता ही स्वयं चिंतित हो (यानी चिंता मिट जाए) ऐसा वानरों ने जब सेतु बाँधा, तब जो जलकण ऊपर उठे क्या उन्होंने आपको उस सेना का विस्तार नहीं बताया? फिर हमारे आने (आकर बताने) का अपेक्षी है क्या वह समाचार? । ७४३

ॲल्लै नोक्कवु मॅय्दिल दामॅनुम्, शॉल्लै नोक्किय मानिडन् तोळॅनुम्
कल्लै नोक्किक् कणैहळै नोक्कित्तन्, विल्लै नोक्कवुम् वॅन्ददु वेलैये 744

ॲल्लै नोक्कवुम्–विस्तार देखते रहते; ॲय्तिलतु आम्–न आया (वरुण); ॲनुम्–यह; चॉल्लै नोक्किय–(निन्दा की) बात समझनेवाले; मानिटन् तोळ् ॲनुम्–मानव के कन्धे रूपी; कल्लै नोक्कि–पर्वत को देखकर; कणैकळै नोक्कि–शरों को देखकर; तन् विल्लै नोक्कवुम्–अपना धनुष देखा तो; वेलै वॅन्ततु–समुद्र जल उठा। ७४४

समुद्र-विस्तार को देखते हुए राम वरुण की प्रतीक्षा में रहा। वरुण ने विलम्ब किया। तब उसको अपमान की बात समझकर राम ने अपने कन्धे रूपी पर्वत पर दृष्टि दौड़ायी; शरों को निहारा और अपने धनुष को देखा। बस! इतने से ही समुद्र जल गया। ७४४

तारु लामणि मार्बनिन् रम्बिये, तेरु लावु कदिरुन् दिरुन्दुतन्
पेरु लावु मळविनुम् वॅऱ्ऱनन्, नीरु लावु मिलङ्गै नॅडुन्दिरु 745

तार् उलाम्–माला जिस पर डोलती रहती है; मणि मार्प–ऐसे सुन्दर वक्ष वाले; निन् तम्पिये–आपके छोटे भाई (ने) ही; तेर् उलावु–रथचारी; कतिरुम्–सूर्य और; तिरुन्तु–श्रेष्ठ; तन् पेर्–उनका नाम; उलावु अळविनुम्–जब तक रहेंगे उस काल तक; नीर् उलावुम्–जलसमृद्ध; इलङ्कै नॅटु तिरु–लंका का विपुल वैभव; पॅऱ्ऱनन्–प्राप्त कर लिया। ७४५

हे सुन्दर वक्ष के, जिस पर विजयमाला डोलती है, स्वामी! आपके

भाई विभीषण ने ही लंका का सारा वैभव तब तक के लिए पा लिया, जब तक रथचारी सूर्य रहेगा और उत्तम श्रीराम का नाम लोक में स्मृत रहेगा। ७४५

शेदु बन्दतन् जॅय्दत नॆन्ऱदिप्, पोदु वन्द पुदुवलि योवॊरु
तूदु वन्दवन् तोळ्वलि शॊल्लिय, एदु वन्दमि लाद विरुक्कवे 746

ऑरु–एक; तूतु वन्तवन्–दौत्य में आये का; तोळ्वलि–भुजबल; चॊल्लिय–जो कहा गया; अन्तम् इलात–वह अनन्त; एतु इरुक्कवे–कारण जब है; चेतु पन्ततम् चॅय्ततन्–सेतुबन्धन किया; ॲन्ऱतु–कहना; इ पोतु–अब; वन्त पुतु वलियो–आया नया पराक्रम है क्या। ७४६

पहले एक दूत जो आया, उस (हनुमान) के कृत्य ही श्रीराम के भुजबल का पुष्कल साक्षी रहते हैं। तब यह सेतुबन्धन का काम नये सिरे से प्राप्त बल (बतलाता) है क्या ? । ७४६

मरुन्दु देव रुन्दिय वेहल्वाय्
इरुन्द तानवर् तम्मै यिरविमुन्
पॅरुन्दिण् मायर् कुणर्त्तिय पॆऱ्ऱियिन्
तॆरिन्दु काट्टिन नुम्बि शिनत्तिनान् 747

तेवर्–देवों ने; मरुन्तु–अमृत; अरुन्तिय–जब अशन किया; वेकल् वाय्–उस समय; इरुन्त–(उनमें छिपे) रहे; तानवर् तम्मै–दानवों को; तॆरिन्तु–पहचानकर; मुन्–पहले; पॅरु तिण्–बड़े बलवान जो रहे उन; मायर्कु–मायावी (विष्णु) से; इरवि उणर्त्तिय–जैसा सूर्य ने बता दिया; पॆऱ्ऱियिन्–उस प्रकार; उम्पि तॆरिन्तु–आपके छोटे भाई ने पहचानकर; चिनत्तिनान्–क्रोधयुक्त होकर; काट्टिनन्–दिखा दिया। ७४७

जब देवों ने अमृतपान किया, तब सूर्य ने जैसे उनमें छिपे दानवों को महाबली मायावी श्रीविष्णु को दिखा दिया था ठीक उसी प्रकार आपके भाई ने हमें पहचान लिया और क्रोध करके श्रीराम से बतला दिया। ७४७

पऱ्ऱि वानर वीरर् पनैक्कैयाल्
ॲऱ्ऱि यॆङ्गळै येण्डुन् दोळिरच्
चुऱ्ऱि यीर्त्तलैत् तुच्चुडर्पो लॊळिर्
वॆऱ्ऱि वीरर्क्कुक् काट्टि विळम्बिनान् 748

वानर वीरर्–वानर वीरों द्वारा; पनै कैयाल्–तालतरु के (समान) हाथों से; ॲङ्कळै–हमें; पऱ्ऱि–पकड़कर; एण् नॆटु तोळ्–गरिमामय बड़े कन्धों को; ॲऱ्ऱि इऱ–प्रहार कर तोड़ते हुए; ईर्त्तु–पकड़कर; चुऱ्ऱि अलैत्तु–घुमाकर पीड़ित कर; चुटर्पोल् ऑळिर्–सूर्य की तरह प्रकाशमान; वॆऱ्ऱि वीरर्कु काट्टि–विजयी वीर (श्रीराम) को दिखाकर; विळम्पिनान्–पहचनवाया। ७४८

वानरों की सहायता के साथ अपने तालतरु-सम हाथों से पकड़कर हमारे बड़े ऊँचे कन्धों पर प्रहार करके, तोड़कर, पकड़कर, घुमाकर, एकदम हैरान करके सूर्य-सम तेजस्वी विजयी राजा राम को हमें दिखा दिया। ७४८

शरङ्ग ळिङ्गिवऱ् ऱिऱ्पण्डु तानुडै
वरङ्गळ् शिन्दुव नॆन्ऱनन् मऱ्ऱॆमैक्
कुरङ्ग लामै तॆरिन्दुमक् कॊऱ्ऱवन्
इरङ्ग वुय्न्दन मीदॆङ्ग ळॊऱ्ऱॆन्ऱार् 749

अ कॊऱ्ऱवन्–उन विजयी वीर ने; इङ्कु–यहाँ जो हैं; चरङ्कळ् इवऱ्ऱिल्–इन शरों से; तान्–मैं; पण्टु उटै–पूर्व ही प्राप्त; वरङ्कळ्–आपके वरों को; चिन्तुवन्–मिटा दूँगा; ऍन्ऱनन्–कहा; मऱ्ऱु–और भी; ऍमै–हमें; कुरङ्कु अलामै–वानर न होना; तॆरिन्तुम्–जानकर भी; इरङ्क–दया दिखायी तो; उय्न्तनम्–बचे; ईतु–यह; ऍङ्कळ्–हमारा; ऒऱ्ऱु–गुप्त समाचार है; ऍन्ऱार्–कहा (चरों ने)। ७४९

उन श्रीराम ने हमसे कहा कि मेरे इन शरों से मैं तुम्हारे राजा के पहले प्राप्त सारे वरों को मटियामेट कर दूँगा। फिर उन्होंने हम पर अ-वानर जानते हुए भी दया दिखायी, तभी हम बचकर आये। यही हमारा गुप्त समाचार है। (शुक और सारण ने यों कह सुनाया।)। ७४९

मऱ्ऱुम् यावैयुम् वाय्मैय मानवन्
शॊऱ्ऱ यावैयुञ् जोर्विन्ऱिच् चॊल्लिनार्
कुऱ्ऱम् यावैयुङ् गोळॊडु नीङ्गुह
इऱ्ऱै नाण्मुद लायुवुण् डाहॆन्ऱार् 750

मऱ्ऱुम्–और; यावैयुम्–सभी; वाय्मैय–सत्यसंध; मानवन्–मान्य श्रीराम ने; चॊऱ्ऱ–जो कहा; यावैयुम्–सबको; चोर्विन्ऱि–अचक रूप से; चॊल्लिनार्–कहकर; इऱ्ऱै नाळ् मुतल्–आज दिन से; कोळॊटु–बुराई के साथ; कुऱ्ऱम् यावैयुम्–दोष सभी; नीङ्कुक–दूर हो; आयु उण्टाक–दीर्घायु हों; ऍन्ऱार्–कहा (चरों ने)। ७५०

और अन्य बातें जो हुई और सत्यसंध और माननीय श्रीराम ने जो भी कहा था वह सब विना अन्तर के कह सुनाया। फिर जय बोले कि आज से बुराई और अपराध सब दूर हों और आपकी लम्बी आयु हो। ७५०

वैदॆनक् कॊल्लुम् विऱ्कै मानिडर् महर नीरै
नॊय्दिनि नडॆत्तुत् तानै योडुम्वन् देऱि नम्मूर्
ऍय्दिन रॆन्ऱ पोदिन् नॆरिनि येण्ण वॆण्डुम्
शॆय्दिऱ तुण्डो वॆन्नच् चॆनैहा वाळन् शॆप्पुम् 751

वैतु ऍन–(ऋषि-) शाप के समान; कॊल्लुम्–(अचूक रीति से) मारनेवाले;

विल कै–धनुर्हस्त; मानिटर्–नर; मकरम् नीरै–मकरालय के जल को; नौयतितिनु–आसानी से; अटैत्तु–रोककर; तानैयोटुम्–सेना के साथ; वनुतु एट्रि–आकर किनारे पर चढ़कर; नम् ऊर्–हमारे नगर में; अॅयतितर्–पहुँचे; अॅन्ऱु पोतित्–जब यह कहा गया तब; वेरु–अन्य; इति–आगे; ॲण्ण वेण्टुम्–सोचने योग्य; चॅय् तिऱत्तु–कर्तव्य दक्षता का कार्य; उण्टो–है क्या; अॅन्ऩत–(रावण के ऐसा) कहने पर; चेनै कावाळन् चॅप्पुम्–सेना के पालक ने कहा। ७५१

तब रावण ने सभा से प्रश्न किया। ऋषिशाप के समान प्राणघातक धनुर्धर नर मकरालय जल को आसानी से रोककर (पारकर) अपनी सेना के साथ हमारे नगर में आ गये हैं। अब भी सोचने को और सोचकर करने का निश्चय करने को कुछ है क्या ? इसके उत्तर में सेनानायक (प्रहस्त) बोला। ७५१

विट्टनै मादै यॅन्ऱु पोदिनुम् वॅरुवि वेन्दन्
पट्टदॅन् ऱिहळ्वर् विण्णोर् पऱ्ऱियिप् पहैयैत् तीर
ऑट्टलाम् बोरि नॉन्ऩा रॉट्टिनु मुम्बि यॉट्टान्
किट्टिय पोदु शॅय्व दॅन्निनिक् किळत्तल् वेण्डुम् 752

मातै–देवी को; विट्टनै–छोड़ दें; अॅन्ऱु पोतितुम्–उस पर भी; वेन्तन्–लंका का राजा; वॅरुवि–डरकर; पट्टतु–हार मान गया; अॅन्ऱु–ऐसा; विण्णोर् इकळ्वर्–व्योमलोकवासी निन्दा करेंगे; पऱ्ऱि–पकड़कर; इ पकैयै–इस शत्रु को; तीर–नष्ट करने के विचार से; पोरिन्–युद्ध करके; ऑट्टलाम्–(फिर सन्धि करके) मिल सकते हैं; ऑन्ऩार्–शत्रु; ऑट्टितुम्–सन्धि कर लें तो भी; उम्पि–आपका भाई; ऑट्टान्–नहीं मिलेगा; किट्टिय पोतु–(युद्ध के) निकट आने के बाद; इति–अब; चॅय्वतु अॅन्–करना क्या; किळत्तल् वेण्टुम्–कहना चाहिए। ७५२

आप सीतादेवी को छोड़ दें तो भी देव यही कहेंगे कि लंका का राजा भय खाकर हार मान गया। युद्ध करके विजय के बाद आप उनको मिला लेने की बात सोचें तो शत्रु चाहे सन्धि कर लें, आपका भाई नहीं मानेगा। इस विकट परिस्थिति में जब लड़ाई आ ही गयी है, अब क्या कहा जाय कि क्या करना है ? । ७५२

आण्डुच्चॅन् ऱरिह ळोडु मनिदरै यमरिऱ् कॉन्ऱु
मीण्डुनम् मिरुक्कै शेर्दु मॅन्बदु मेऱ्कॉण् डेमे
ईण्डुवन् दिरुत्ता रॅन्नु मीदला दुरुदि युण्डो
वेण्डिय दॅय्दप् पॅऱ्राल् वॅऱ्रियिन् विळुमि दन्ऱो 753

आण्टु चॅन्ऱु–वहाँ जाकर; अरिकळोटु–वानरों के साथ; मनितरै–नरों को; अमरिल्–युद्ध में; कॉन्ऱु–मारकर; मीण्टु–लौटकर; नम् इरुक्कै चेर्तुम्–अपने वासस्थान आ जायेंगे; अॅन्पतु–यह; मेऱ् कॉण्टेमे–निर्णय हमने कर लिया क्या; ईण्टु वन्तु इरुत्तार्–यहाँ आकर ठहर गये; अॅन्ऩुम्–ऐसा; ईतु अलातु–यह छोड़

कर; उऴ्ति उण्टो–और लाभ है क्या; वेण्टियतु–जो चाहते हैं वह; ॲय्त पॅऱ्ऱाल्–मिल गया तो; वॅऱ्ऱियन्–विजय से भी अधिक; विऴुमितु अन्ऱो–श्लाघ्य नहीं है क्या। ७५३

हम वहीं जाकर नरों को हरियों के साथ मारकर अपने यहाँ लौट आएँ, यह कार्य तो हमने किया क्या ? (नहीं)। अब वे यहाँ आ गये हैं। यह साफ़ बात है। (यह अच्छा ही हुआ और हमें यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं कि हम उनके विरुद्ध नहीं गये।) यही हमें चाहिए था। यही विजय से अधिक श्रेष्ठ हो गया। ७५३

आयिरम् वॅळ्ळ मान् अरक्कर्दन् दानै ऐय
तेयिनु मूऴि नूरु वेण्डुमाल् शिऱुमै यॅन्नो
नायिनम् शीयङ् गण्ड दामॅन नडप्प दल्लाल्
नीयुरुत् तॅदिर्न्द पोदु कुरङ्गॅदिर् निऱ्प दुण्डो 754

ऐय–प्रभु; आयिरम् वॅळ्ळम् आन–सहस्र 'वॅळ्ळम्' की संख्या वाले; अरक्कर् तम् तानै–राक्षसों की सेना को; तेयितुम्–क्षीण होना हो तो; नूरु ऊऴि वेण्टुम्–सौ युग चाहिए; चिऱुमै ॲन्तो–दीनता क्या; नी उरुत्तु–आप (जब) क्रोध करके; ॲतिर्न्त पोतु–जब युद्ध करेंगे तब; नाय् इतम्–कुत्तों के झुण्ड ने; चीयम् कण्टतु आम्–सिंह को देख लिया; ॲत–ऐसा; नटप्पतु अल्लाल्–व्यवहार करना छोड़कर; कुरङ्कु–हरिगण का; ॲतिर् निऱ्पतु–सामने रहना; उण्टो–(सम्भव) होगा क्या। ७५४

प्रभु ! हमारे पास सहस्र 'वॅळ्ळम्' की संख्या में राक्षस वीरों की सेना है। उनको क्षीण होना हो तो सौ युग लगेंगे। फिर दैन्य क्योंकर ? और जब आप क्रोध करके युद्ध करेंगे तो सिंह के सामने कुत्तों के झुण्डों के समान व्यवहार करने के सिवा वानर डटे रहेंगे क्या ? । ७५४

वन्दवर् तानै योडु मऱिन्दुमाक् कडलिल् वीऴ्न्दु
शिन्दिन रिरिन्दु पोहच् चेनैयुम् यानुज् जॅन्ऱु
वॅन्दॊऴिल् पुरियु माऱु काणुदि विडैयी हॅन्ना
इन्दिरन् मुदुहु कण्ड विरावणऱ् केयच् चॊन्नान् 655

वन्तवर्–आगत (शत्रु); तानैयोटु–सेना के साथ; मऱिन्तु–लौटकर; मा कटलिल्–बड़े समुद्र में; वीऴ्न्तु–गिरकर; चिन्तितर्–तितर-बितर हो; इरिन्तु पोक–भाग जाएँ, ऐसा; चेनैयुम् यातुम्–सेनाएँ और मैं; चॆन्ऱु–जाकर; वॅम् तॊऴिल्–भयंकर कार्य; पुरियुम् आऱु–जो करूँगा वह प्रकार; काणुति–देखिए; विटै ईक–आज्ञा दें; ॲन्ता–कहकर; इन्तिरन् मुतुकु कण्ट–इन्द्र की पीठ जिसने देखी थी (युद्ध में हराया था); इरावणऱ्कु–उस रावण से; एय–पसन्द आये ऐसा; चॊन्तान्–(सेनानायक ने) कहा। ७५५

अभी आप मुझे अनुमति दीजिए और देखिए। आगत शत्रु अपनी सेनाओं-सहित अस्त-व्यस्त होकर भाग जाएँगे। मैं और मेरी सेना ऐसा युद्ध करेगी। सेनानायक ने यह उस रावण से कहा, जिसने इन्द्र की युद्ध में पीठ देखी थी। (भाग जाने को मजबूर किया था)। ७५५

मदिनॆऱि यरिवु शाऩ्ऱ मालिय वाऩल् वाय्मै
पॊदुनॆऱि निलैय दाहप् पुणर्त्तुदल् पुलमै यॆऩ्ऩा
विदिनॆऱि निलैय दाह विळम्बुहिऩ् ऱोरु मीण्डु
शॆदुनॆऱि निलैयि ऩारे यॆऩ्बदुन् दॆरियच् चॊल्लुम् 756

मति–आदर योग्य; नॆऱि–नय; अऱिवु–और बुद्धि; चाऩ्ऱ–से युक्त; मालियवान्–माल्यवान ने; नल् वाय्मै–श्रेष्ठ वचन; पॊतु नॆऱि–सामान्य रीति में; निलैयतु आक–स्थित हो (तो भी); पुणर्त्तुतल्–उचित रीति से युक्त करना ही; पुलमै–बुद्धिमानी; ऎऩ्ऩा–कहकर; विति नॆऱि निलैयतु–विधि पर आधारित; आक–ऐसा; विळम्पुकिऩ्ऱोरुम्–बतलानेवाले (व्रहस्त) आदि; ईण्टु–यहाँ; चॆतु नॆऱि–बुरे मार्ग पर; निलैयिऩारे–रहनेवाले ही हैं; ऎऩ्पतुम्–यह भी; तॆरिय चॊल्लुम्–समझाते हुए कहा। ७५६

तब आदरपात्र और मतिश्रेष्ठ नयशील माल्यवान ने यों सोचा। श्रेष्ठ (सत्य) वचन सामान्य रीति से प्रचलित है। तो भी उसे अपने व्यवहार में लाना ही बुद्धिमत्ता है। जो यह कहते हैं कि विधि उनको यहाँ लायी है, वे व्रहस्त आदि भी बुरे मार्ग पर जानेवाले ही हैं। यह सब विचार वह खोलकर बताने लगा। ७५६

पूशऱ्कु मुयऩ्ऱु नम्बाल् पॊरुदिरैप् पुणरि वेलित्
तेशत्तुक् किऱैव ऩाऩ तशरदऩ् शिऱुव ऩाह
माशऱ्ऱ शोदि वॆळ्ळत् तुच्चियिऩ् वरम्बिल् तोऩ्ऱुम्
ईशऱ्कु मीशऩ् वन्दा ऩॆऩ्बदोर् वार्त्तै यिट्टार् 757

माचु अऱ्ऱ–अकलंक; चोति वॆळ्ळत्तु–ज्योतिपुञ्ज; उच्चियिऩ् वरम्पिल्–आकाश की उच्च सीमा पर; तोऩ्ऱुम्–दृश्यमान; ईचऱ्कुम् ईचऩ्–देवों के देव; पॊरु तिरै–तीर से टकराती लहरों के; पुणरि वेलि–समुद्र से वलयित; तेचत्तुक्कु–भूतल के; इऱैवऩ् आऩ–जो राजा हैं; तचरतऩ्–उन दशरथ का; चिऱुवऩ् आक–छोटे के रूप में; नम् पाल्–हमसे; पूचऱ्कु–लड़ने को; मुयऩ्ऱु–प्रयत्न करके; वन्ताऩ्–आये हैं; ऎऩ्पतु ओर् वार्त्तै–ऐसी एक वदन्ती; इट्टार्–(लोग) कहते हैं। ७५७

"देवादिदेव श्रीविष्णु ही, जो अकलंक ज्योतिपुंज हैं और स्वर्ग में सर्वोच्च सीमा की रेखा पर हैं, तीर से टकरानेवाली लहरों के सागर से वलयित देश के राजा दशरथ के पुत्र बनकर हमसे लड़ने आये हैं।" यह एक वदन्ती लोगों में चली है। ७५७

अऩ्ऩवर् किळवल् तऩ्ऩै यरुमऱै परमॅऩ् ऱोदुम्
नऩ्ऩिलै निऩ्ऱु तीरा नवैयिला वुयिर्ह डोरुम्
तॊऩ्ऩिलै पिरिन्दा ऩॆऩ्ऩप् पलवहै निऩ्ऱ तूयोऩ्
इऩ्ऩणै यॆऩ्ऩ यारु मियम्बुव रेदि यादो 758

अऩ्ऩवर्कु–उनके; इळवल् तऩ्ऩै–छोटे भाई को; अरुमऱै–अपूर्व वेद; परम् ऍऩ्ऱु ओतुम्–परम कहलानेवाले; नल् निलै निऩ्ऱु–श्रेष्ठ पद से; तीरा–न हटकर; नवै इला—अनिंद्य; तॊल् निलै–प्राचीन स्थिति से; पिरिन्तान्–अलग हुए; ऍऩ्ऩ–ऐसी उक्त रीति से; उयिर्कळ् तोरुम्–जीव, जीव में; पल वकै–विविध रूपों के साथ; निऩ्ऱ–विद्यमान; तूयोऩ्–पवित्र पुरुष (श्रीविष्णु) की; इऩ् अणै ऍऩ्ऩ–प्यारी शय्या है, ऐसा; यारुम् इयम्पुवर्–सभी कहते हैं; एतु यातो–हेतु क्या ही है। ७५८

लोग यह भी कहते हैं कि उनके छोटे भाई उन अमल मूर्ति की शय्या-शेषनाग हैं, जो वेदों द्वारा चर्चित परमपद से अलग न होते हुए सभी जीवों के अन्दर विविध रूप से विद्यमान है, मानो वे वहाँ से अलग आ गये हों। (जो सर्वान्तर्यामी, सर्वत्र एक सम रहनेवाले परमपुरुष हैं।) हेतु कौन सा है? कौन जाने? । ७५८

अव्वमरक् कमैन्द विल्लुम् कुलवरै यवऱ्ऱि ऩाऩ्ऱ
वॆव्वलि वेऱु वाङ्गि विरिञ्जऩे विदित्त मेऩाळ्
शॆव्वळि नाणुञ् जेडऩ् ऱॆरिहणै याहच् चेर्त्तिक्
कव्वैयिल् काल नेमिक् कणक्कैयुङ् गडन्द दॆऩ्बार् 759

अ अमर्क्कु–उनके युद्ध के लिए; अमैन्त–नियत; विल्लुम्–धनु भी; कुलवरै अवऱ्ऱिऩ्–कुलगिरियों में; आऩ्ऱ–स्थित; वॆव्वलि–विकट बल को; वेऱु वाङ्कि–अलग छाँटकर; मेऩाळ्–प्राचीन समय में; विरिञ्चऩे वितित्त–ब्रह्मा द्वारा रचित है; चॆ वळि–उत्कृष्ट रीति से बना; नाणुम्–डोरा भी; चेटऩ्–आदि-शेष है; तॆरि कणै आक–श्रेष्ठ शरों के रूप में; चेर्त्ति–मिलाकर; कव् अयिल्–ग्रसनेवाली तीक्ष्णता और; कालम् नेमि–कालचक्र की; कणक्कैयुम्–गणना-शक्ति को भी; कटन्तत–पार कर गया; ऍऩ्पार्–कहते हैं। ७५९

लोग यह भी कहते हैं कि उनके हाथ में जो धनुष है, उसे ब्रह्मा ने सभी कुलगिरियों के सार-रूप बल को अलग लेकर उससे निर्मित किया था। उस धनुष का डोरा भी शेषनाग ही है! जो चुने हुए उत्कृष्ट शरों के रूप में मिला दिये गये हैं, वे इतने तीक्ष्ण हैं कि वे शत्रु को एकदम पकड़ ग्रस लें और उनकी गति कालचक्र की गणनाशक्ति को भी मात दे सकती है। ७५९

वालिमा महऩ्ऩवन् दाऩै वाऩवर्क् किरैव ऩॆऩ्ऱार्
नीलऩै युलह मुणणम् नॆरुप्पिनुक् करश ऩॆऩ्ऱार्

कालत्तै योक्कुन् दूदन् कालुङ्गण् णुदलु मॆन्ऱार्
मेलुमोन् ऱुरैत्ता रन्नान् विरिञ्जना मिन्निमे लॆन्ऱार् 760

मा वालि मकन्-महान् वाली के पुत्र के रूप में; वन्तानै-जो (पैदा हो) आया है उस (अंगद) को; वानवर्क्कु इऱैवन्-देवराज; ऎन्ऱार्-कहा; नीलनै-नील को; उलकम् उण्णुम्-लोकभक्षक; नॆरुप्पितुक्कु-अग्नि का; अरचन्-अधिदेवता; ऎन्ऱार्-कहा लोगों ने; कालनै ऒक्कुम्-यम के समान; तूतन्-दूत (हनुमान); कालुम्-वायु और; कण्णुतलुम्-भालनेत्र शिव हैं; ऎन्ऱार्-कहा; मेलुम्-और भी; ऒन्ऱु उरैत्तार्-एक बात कही; अन्नान्-वह; इति मेल्-आगे के कल्पों में; विरिञ्चन् आम्-ब्रह्मा रहेगा; ऎन्ऱार्-कहा (उन्होंने)। ७६०

और भी लोगों की मान्यता है— वाली का महिमावान पुत्र देवराज है। नील लोकभक्षक आग का राजा है। यम-सम हनुमान वायु और भालनेत्र दोनों (का अंश) है। उसके सम्बन्ध में और एक बात भी कहते हैं। वही आगे के युगों का विरंचि होगा। ७६०

अप्पद मवनुक् कीन्दा नरक्कर्वे रऱुप्प दाह
इप्पदि यॆय्दि नानव् विरामनॆन् ऱॆवरुञ् जॊन्नार्
ऒप्पिन्ना लुरैक्किन् ऱारो वुण्मैये वुणर्त्ति नारो
शॆप्पियॆन् कुरङ्गाय् वन्दार् तनित्तनित् तेव रॆन्ऱार् 761

अ पतम्-उस पद को; अवनुक्कु ईन्तान्-उसे जिसने दिया; अ इरामन्-वह राम; अरक्कर् वेर्-राक्षसों की जड़ को; अऱुप्पताक-काटने के लिए; इ पति ऎय्तितान्-इस नगर में आया; ऎन्ऱु-ऐसा; ऎवरुम्-सबों ने; चॊन्नार्-कहा; कुरङ्काय्-वानर बन; वन्तार्-जो आये वे सभी; तनि तनि तेवर्-अलग-अलग देव हैं; ऎन्ऱार्-कहा; ऒप्पिनाल्-आपस में मिलकर (कपट-रूप से); उरैक्किन्ऱारो-कहते हैं क्या; उण्मैये-सच ही; उणर्त्तिनारो-कहते हैं; चॆप्पि ऎन्-कहने से क्या (लाभ)। ७६१

श्रीराम, जिन्होंने वह पद उसे दिया, राक्षसों की जड़ काटने के लिए आये हैं —यह सब लोगों का कहना है। वानरों के रूप में देव अलग-अलग आये हैं। यह सब लोग आपस में तय करके झूठ बोल रहे हैं? या सच ही बता रहे हैं? क्या कहने से लाभ क्या होगा? । ७६१

आयदु तॆरिन्दो तङ्ग ळच्चमो अऱिवो यार्क्कुम्
शेयव ळॆळिय ळॆन्नाच् चीदैयै यिहऴ लम्मा
तूयव ळमिर्दि नोडुन् दोन्ऱिना ळॆन्ऱुम् तोन्ऱात्
तायव ळुलहुक् कॆल्ला मॆन्नबदुज् जाऱ्ऱु हिन्ऱार् 762

आयतु-वह सत्य; तॆरिन्तो-जानकर या; तङ्कळ् अच्चमो-अपना भय है; अऱिवो-या अपनी अनुभूति है; तूयवळ्-अमला सीता; अमिर्तिनोटुम्-अमृत के

साथ; तोऩ्ऱिताळ्–जो प्रकट हुई; उलकुक्कु ॲल्लाम्–सारे लोकों के लिए; ॲऩ्ऱुम् तोऩ्ऱा–सदा पूर्ण रूप से अज्ञेय; तायवळ्–माता ही हैं; ॲऩ्पतुम् चाऱ्ऱुकिऩ्ऱार्–यह भी बताते हैं; यार्क्कुम् चेयवळ्–सभी के लिए दूर रहनेवाली; ॲळियळ्–दीना; ॲऩ्ऩा–समझकर; चीतैयै इकऴल्–सीता का अनादर मत करो। ७६२

लोग, जो ऐसा कहते है, होनी समझकर कहते हैं या अपने भय के कारण ? या अपनी अनुभूति के आधार पर बताते हैं ? जो हो अमला सीता अमृत के साथ पैदा हुई श्रीलक्ष्मी ही हैं; सारे लोकों के लिए अज्ञेय जगन्माता ही हैं। यही सारे लोग बताते हैं। इसलिए जो सभी के लिए अप्राप्य दूरी में हैं, उन्हें दीना समझकर अनादर करो मत। ७६२

कानिडै वन्द वारुम् वाऩवर् हडाव वेयाम्
मीऩुडै यहऴि वेलै विलङ्गऩ्मे लिलङ्गै वेन्दऩ्
ताऩुडै वरत्तै यॆण्णित् तरुमत्तिऩ् तलैवर् तामे
माऩुड वडिवङ् गॊण्डा रॆऩ्बदोर् वार्त्तै यिट्टार् 763

काऩ् इटै–जंगल में; वन्त आरुम्–आने का हाल भी; वाऩवर्–देवों के; कटाववे आम्–प्रेरित करने से ही हुआ; मीऩ् उटै वेलै–मकरालय को; अकऴि–खाई के रूप में जिसने पाया है उस; विलङ्कल् मेल्–(त्रिकूट) पर्वत पर; इलङ्कै वेन्तऩ्–(रहनेवाली) लंका का राजा; ताऩ् उटै वरत्तै–अपने प्राप्त वरों को; ॲण्णि–सोचकर; तरुमत्तिऩ् तलैवर् तामे–धर्म के नायक स्वयं श्रीविष्णु ने; माऩुट वटिवम् कॊण्टार्–मानव-रूप धरा; ॲऩ्पतु–ऐसा; ओर्–एक; वार्त्तै–वार्ता भी; इट्टार्–(लोगों ने) कही है। ७६३

श्रीराम वन में आये यह भी देवों की प्रेरणा ही के कारण। धर्म के नायक श्रीविष्णु ही मकरालयपरिखा त्रिकूटस्थ लंका के राजा रावण के वरों का विचार करके मानवरूप धर आये हैं। यह एक वार्ता भी सुनाते हैं लोग। ७६३

आयिर मुऱ्पा दङ्ग ळीङ्गुळ वडुत्त वॆऩ्ऱार्
तायिऩु मुयिर्क्कु नल्ला ळिरुन्दुऴि यऱियत् तक्कोऩ्
एयिऩ तूद ऩॆऱ्ऱप् पऱ्ऱुविट् टिलङ्गैत् तॆय्वम्
पोयिऩ दॆऩ्ऱुञ् जॊऩ्ऩार् पुहुन्ददु पोरु मॆऩ्ऱार् 764

ईङ्कु उळ–यहाँ जो हुए; आयिरम् उऱ्पातङ्कळ्–सहस्र उत्पात (अपशकुन); अटुत्त–निरन्तर हुए रहे; ॲऩ्ऱार्–कहा; तायिऩुम्–माता से भी अधिक; उयिर्क्कु–जीवों को; नल्लाळ्–हितकारिणी; इरुन्त उऴि–जहाँ रहीं उस स्थान को; अऱिय–जानने के वास्ते; तक्कोऩ्–सुयोग्य श्रीराम ने; एयिऩ–जिसे भेजा उस; तूतऩ्–दूत के; ॲऱ्ऱ–प्रहार से; इलङ्कै तॆय्वम्–लंका की देवी; पऱ्ऱु विट्टु–लगाव छोड़कर; पोयिऩतु–चली गयी; ॲऩ्ऱुम्–यह भी; चॊऩ्ऩार्–कहा; पोरुम्–युद्ध भी; पुकुन्ततु–आ गया; ॲऩ्ऱार्–कहा। ७६४

लोग कहते हैं कि यहाँ सहस्रों (उत्पात) दुश्शकुन लगातार हो रहे हैं। सीताजी जीवों के लिए माता से भी अधिक हितकारिणी हैं। उनका स्थान खोज देखने के निमित्त जिसको श्रीराम ने भेजा था, उस दूत के प्रहार के ही फलस्वरूप लंका की देवी लंका का छोह छोड़कर चली गयी; और लड़ाई भी आ गयी। यह भी लोगों का ही कहना है। ७६४

अम्बित्तुक् किलक्कम् आवा ररशौडु मरक्क रॅन्न
नम्बरत् तडङ्गु मॅय्य नाविनिऱ् पॉय्यि लादान्
उम्बर्मन् दिरिक्कु मेला वॊरुमुळ् मुयर्न्द जानत्
तम्बियॆ शाऱ्रिप् पोना रॅन्नवदुम् जमैयच् चॊन्नार् 765

नम् परत्तु–हमारे पक्ष में; अटङ्कुम्–रहनेवाला; मॅय्यन्–सत्यसंध; नाविनिल्–जिह्वा से; पॉय् इलातान्–असत्योच्चारण न करनेवाला; उम्पर् मन्तिरिक्कु–देवमंत्री (बृहस्पति) से; मेला–अधिक; ऑरु मुळम्–एक हाथ; उयर्न्त ञातम्–बढ़ा ज्ञान रखनेवाला; तम्पियॆ–छोटा भाई ही; अम्पित्तुक्कु–शर के; इलक्कम् आवार्–निशान बनेंगे; अरचॊटुम्–राजा सह; अरक्कर्–राक्षस; ऍन्नत्–जानकर; चाऱ्रि–कहकर; पोनार्–गया; ऍन्पतुम्–यह भी; चमैय–निश्चित रूप से; चॊन्नार्–कहा। ७६५

हमारे ही पक्ष का रहा विभीषण। वह सत्यसंध है। उसकी जीभ से कभी असत्य नहीं निकलता। देव (मन्त्री) गुरु से भी एक हाथ (कहीं) अधिक ज्ञान रखनेवाला वह यह कहके चला गया कि श्रीराम-बाण के निशान बनेंगे राक्षसराज और राक्षस। यह भी लोगों ने निश्चित रूप से कहा है। (तमिळ में 'एक हाथ अधिक' मुहावरा है)। ७६५

ईदॆला मुणर्न्दे नायु मॅन्गुल मिऱुदि युऱ्ऱ
दादियि निवन्ना लॅन्ऱुम् मुन्ऱन्मे लन्बि नालुम्
वेदनै नॅञ्जि नॅय्द वॅम्बियान् विळैव शॊन्नेन्
शीदैयै विडुदि यायिन् तीरुमिच् चिऱुमै यॆन्ऱान् 766

ईतु ऍलाम्–यह सब; उणर्न्तेन् आयुम्–जानता था तो भी; ऍन् कुलम्–मेरा कुल; आतियिल्–पहले; इऱुति उऱ्ऱतु–नष्ट हुआ; इवनाल्–इसी (श्रीविष्णु) से; ऍन्ऱुम्–इस कारण और; उन् तन्मेल्–तुम पर; अन्पिनालुम्–प्रेम से; नॅञ्चिन् वेतनै ऍय्त–हृदय में वेदना ले; वॅम्पि–व्यग्र होकर; विळैव–जो होंगे, वे; यान्–मैंने; चॊन्नेन्–कहे; चीतैयै–सीता को; विटुति आयिन्–सीता को छोड़ दो तो; इ चिऱुमै–यह दुःख; तीरुम्–हट जायगा; ऍन्ऱान्–(माल्यवान ने) कह सुनाया। ७६६

मुझे यह सब मालूम था तो भी 'मेरा वंश इन्हीं विष्णु के द्वारा नाश हुआ' और 'तुम पर मेरा प्रेम है' इन दो कारणों से हृदय में वेदना के साथ मैंने यह होनेवाली बातें बतायीं। सीता को मुक्त कर छोड़ दो

तो संकट दूर होगा ! मालयवान ने यह कहकर अपना कथन पूरा किया । ७६६

मऱ्ऱॅला निऱ्क वन्द मन्दिऱ्वा तरङ्गळ् वानिन्
इऱ्ऱैना ळळवु निन्ऱ विमैयव रॅन्नुन् दन्मै
शॊऱ्ऱवा इन्ऱि येयुन् दोऱ्ऱिनी यॅन्ऱुञ् जॊन्नाय्
कऱ्ऱवा नन्ऱु पोवॅन् ऱितैयन्न कळऱ लुऱ्ऱान् 767

मऱ्ऱु ॲलाम् निऱ्क–अन्य बातें रहें (एक ओर); **वन्त**–आगत; **मन्तिर्**–नर और; **वानरङ्कळ्**–वानर; **वानिन्**–आकाशलोक में; **इऱ्ऱै नाळ् अळवुम्**–आज दिन तक; **निन्ऱ**–चुप रहे; **इमैयवर्**–देव हैं; **ॲन्नुम् तन्मै**–वह जो है यह हाल; **चॊऱ्ऱ आऱु अन्ऱि एयुम्**–कहा उसके अलावा भी; **नी तोऱ्ऱि**–तुम हार जाओगे; **ॲन्ऱुम् चॊन्नाय्**–यह भी कहा; **कऱ्ऱ आ**–शिक्षा का रूप भी; **नन्ऱु**–अच्छा रहा; **पो**–चलो; **ॲन्ऱु**–कहकर; **इतैयन**–ये बातें; **कळऱल् उऱ्ऱान्**–कहने लगा (रावण मालयवान से) । ७६७

रावण ने यह सुना तो उत्तर में कहा कि आपकी बातों में इनसे अन्य बातें रहें एक ओर । आपने यह कहा कि ये नर और वानर वे देव हैं जो अब तक निष्क्रिय रहे ! और यह भी भविष्यवाणी कही कि तुम हार जाओगे । आपकी शिक्षा भी भली रही । जाइए ! उसने आगे जारी किया । ७६७

पेदैमा निडव रोडु कुरङ्गल पिऱवे याह
पूदल वरंप्पि नाहर् पुरत्तिनप् पुऱत्त दाह
कादुवॆञ् जॆरुवेट् टॆन्नॆक् कान्दिनर् कलन्द पोदुञ्
जीदैदन् तिऱत्तिन् आयि नमर्त्तोऴिल् तिऱम्बु वेनो 768

पेतै–जडमति; **मानिटवरोटु**–मनुष्यों के साथ; **कुरङ्कु अल**–बंदर ही नहीं; **पिऱवे आक**–अन्य (जानवर भी) मिलें; **पूतल वरंप्पिन्**–भूतल की सीमा के अन्दर; **नाकर् पुरत्तिन्**–नागलोक में; **अ पुऱत्ततु आक**–उस तरफ़ भी हो; **कातु**–जलकर; **वॆम् चॆरु**–भयंकर युद्ध; **वेट्टु**–चाहकर; **कान्तिनर्**–खौलकर; **ॲन्नै कलन्त पोतुम्**–मेरे विरुद्ध पास आने पर भी; **आयिन्**–विश्लेषण करके देखें तो; **चीतै तन् तिऱत्तिन्**–सीता की बात में; **अमर् तॊऴिल्**–युद्ध-कर्म से; **तिऱम्पुवेनो**–विमुख होऊँगा क्या । ७६८

इन अबोध मानवों के साथ वन्दर क्या, अन्य जानवर भी मिल आएँ ! भूतल, नागलोक और उनसे परे अन्य लोकों में भी सही ! जलते हुए भयंकर युद्ध की चाह करके खौलते मन के साथ मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध क्यों न आएँ तो विश्लेषण करके सोचते समय सीता को लेकर युद्ध हुआ तो मैं पीछे हटूँगा क्या ? । ७६८

ऑत्ऱल पहऴि यॆन्ऩकैक् कुरियन उलह मॆल्लाम्
वॆन्ऱन ऑरुवन् शॆय्द विऩैयिनुम् वलिय वॆम्बोर्
मुन्ऱु हॆन्ऱ तेवर् मुदुहुपुक् कमरिन् मुन्ऩम्
शॆन्ऱन इन्ऱु वन्द कुरङ्गिन्मेऱ् चॆल्ह लावो 769

ऍन् कैक्कु–मेरे हाथ में रहने; उरियत–योग्य और; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोकों को; वॆन्ऱत–जीतनेवाले; ऑरुवन्–किसी के; चॆय्त–किये गये; विऩैयिनुम्–बुरे कर्मों से भी; वलिय–प्रबल; मुन्–पहले; वॆम् पोर् तरुक–प्रचण्ड युद्ध दो; ऍन्ऱु तेवर्–कहते जो आये उन देवों की; मुतुकु पुक्कु–पीठ में घुसकर; अमरिन्–युद्ध में; मुन्ऩम् चॆन्ऱत–आगे जो गये; ऑन्ऱु अल–एक नहीं अनेक; पकऴि–शर; इन्ऱु वन्त–आज आगत; कुरङ्किन् मेल्–वानरों पर; चॆल्लावो–नहीं जाएँगे क्या। ७६९

मेरे हाथ में जो हैं वे शर विश्वविजयी हैं। पूर्वकर्म से भी बलवान और प्रभावपूर्ण हैं। पहले प्रचण्ड युद्ध की माँग लेकर जो आये उन देवों की पीठ में घुसकर आगे गये थे। वे एक नहीं अनेक हैं। क्या वे वानरों पर नहीं जा सकेंगे ? । ७६९

शूलमेय् तडक्कै यण्णल् तानुमोर् कुरङ्गाय्त् तोन्ऱिन्
एलुमे लिडैव दल्ला लॆन्शॆय्व नॆन्ऩैक् काल
वेलैनीर् कडैन्द मेऩा ऴुलहॆलाम् वॆरुव वन्द
आलमो विऴुङ्ग वॆन्कै ययिन्मुहप् पहऴि यम्मा 770

चूलम् एय्–त्रिशूलधारी; तट कै–विशाल हाथों वाले; अण्णल्–महिमावान् शिवजी; तानुम्–स्वयं भी; ओर् कुरङ्काय्–एक वानर के रूप में; तोन्ऱिन्–प्रगट हों तो; एलुम् एल्–कुछ हुआ तो; इटैवतु अल्लाल्–पीछे हट जाने के सिवा; ऍन्ऩै–मुझे; ऍन् चॆय्वन्–क्या करेगा; ऍन् कै–मेरे हाथ के; अयिल् मुक–तीक्ष्ण-मुखी; पकऴि–शर को; विऴुङ्क–निगलने के लिए; काल वेलै नीर्–युगांतकारी समुद्र-जल को; कटैन्त–मथते; मेल् नाऴ्–पुराने दिन में; उलकु ऍलाम्–सारे लोकों को; वॆरुव–भयभीत होने देते हुए; वन्त–प्रगट हुआ; आलमो–हलाहल है क्या। ७७०

त्रिशूल-विशाल-हस्त शिवजी वानर बन के आये तो क्या हुआ ? कुछ होगा तो वे हारकर भाग जाएँगे। इसके सिवा वे मुझे क्या कर सकेंगे ? मेरे हाथ से निकलनेवाले तीक्ष्णमुखी बाण प्रलयकारी समुद्र से सबको भयभीत करते हुए उत्पन्न हलाहल है क्या कि वे उन्हें निगल लें ? । ७७०

अऴिहिलै पोलु मैय वमरॆनक् कञ्जिप् पोन
ऍऴिशुडर् नेमि यान्वन् दॆदिर्प्पिनु मॆन्ऩै वाऴि

पॉरिपडच् चुडर्हळ् तीयप् पोवऩ पोक्कि लाद
मऱिकडल् कडैय वन्द मणिहोलाम् पूण मार्बिल् 771

ऐय–तात; अमर्–युद्ध में; अँऩक्कु अञ्चि–मुझसे डरकर; पोऩ–जो गया; अँरि चुटर्–बिखरती किरणों वाले; नेमियान्–चक्रधारी (विष्णु) के; वन्तु–आकर; अँतिर्प्पिऩुम्–सामना करने पर भी; पॉरिपट–अंगारे उठें ऐसा; चुटर्कळ्–तेजपुंज (सूर्य और चन्द्र); तीय–झुलस (कर काले हो) जाएँ ऐसा; पोवऩ–जो जाएँगे; पोक्कु इलात–(वे अचूक; अँऩ्–मेरे; कै वाळि–हाथ के शर; मार्पिल् पूण–वक्ष में पहनने; मऱि कटल् कटैय–मुड़नेवाली लहरों के समुद्र को मथने पर; वन्त–जो आया; मणि कोलाम्–(कौस्तुभ-) मणि है क्या; ऐय–तात; नी अऱिकिलै पोलुम्–आप नहीं जानते शायद। ७७१

तात! युद्ध में मुझसे डरकर जो भागा था वह तेजोवान चक्रधारी भी आए, दोनों तेजपुंजों (सूर्य-चन्द्र) को झुलसाते हुए मेरे हाथ से निकलकर जानेवाले अमोघ बाण क्या ऊर्मिमाली को मथते समय निकला कौस्तुभमणि है कि वह उन्हें अपने वक्ष में धारण कर ले? आप ये बातें नहीं समझते? । ७७१

कोऱ्ऱवा ळिमैयोर् कोमान् कुरक्किऩ दुरुक्कोण् डाऩेल्
अऱ्ऱैना ळवऩ्ऱान् विट्ट वयिऱ्ऱपडै यऱुत्तु माऱ्ऱ
इऱ्ऱवान् शिऱैय वाहि विऴुन्दुपो यॆऴुन्दु वीङ्गाप्
पॊऱ्ऱैमाल् वरैह ळॊवॆऩ् पुयनॆडुम् वॊरुप्पु मम्मा 772

कोऱ्ऱ वाळ्–विजयखड्ग; इमैयोर् कोमान्–(धारण करनेवाले) देवेन्द्र ने; कुरक्किऩतु उरु–वानर का रूप; कोण्टाऩेल्–धरा हो तो; अऱ्ऱै नाळ्–उस दिन; अवन् विट्ट–उससे प्रेषित; अयिल् पटै–तीक्ष्ण (वज्र-) आयुध को; अऱुत्तु माऱ्ऱ–काटकर लौटाने पर; इऱ्ऱ–टूटे; वान् चिऱैय–बड़े पंखों वाला; आकि–हो; विऴुन्त पोय्–गिर जाकर; अॆऴुन्तु–फिर उठकर; वीङ्का–जो बढ़े नहीं; पॊऱ्ऱैमाल् वरैकळो–और ऊँचे टीले बने रहते हैं वे गिरियाँ हैं क्या; अॆऩ्–मेरी; पुयम् नॆटु पॊरुप्पुम्–भुजा रूपी बड़े पर्वत; (अम्मा–विस्मयादिबोधक अव्यय; तान्–पूरक ध्वनि।) । ७७२

विजयखड्ग देवेन्द्र वानर बनकर आया (अंगद के रूप में), तो क्या मेरे कन्धे वे पर्वत हैं जो उस दिन उसके तीक्ष्ण वज्र से पंख कटकर गिर गये थे और पीछे न बढ़कर ऊँचे टीले बनकर पर्वत कहे जाते हैं? । ७७२

उळ्ळमे तूदु शॆल्ल वुयिरना रुऱैयुळ् नाडुम्
कळ्ळमार् महळिर् शोर नेमिप्पुळ् कवर्चि नीङ्गक्
कॊळ्ळैपूण् डमरर् वैहुङ् गुन्ऱैयुङ् गोट्टिर् कॊण्ड
वॆळ्ळनीर् वडिन्द दॆऩ्न वीङ्गिरुळ् विडिन्द दऩ्ऱे 773

उळ्ळमे–मन ही; तूतु चॆल्ल–दूत बनकर जाकर; उयिर् अनार्–प्राण-सम; उऱैयुळ् नाटुम्–(चोर नायक के) रहने के स्थान जानेवाली; कळ्ळम् आर् मकळिर्–

(चोर) नायिकाओं को; चोर–दुःखी करते हुए; नेमि पुळ्–चक्रवाक पक्षियों के; कवर्रुचि–दुःख; नीङ्क–दूर करते हुए; कौळ्ळे पूण्टु–बहुत बड़ी संख्या में; अमरर् वैकुम्–जहाँ देव रहते हैं; कुन्र्युम्–उस (मेरु) पर्वत को भी; कोट्टिल् कौण्ट–शिखर तक जो ढकता रहा; वेळ्ळम् नीर्–वह प्रलयजल; वटिन्ततु अन्न–हट गया हो जैसा; वीङ्कु इरुळ्–बढ़ा रहा अंधकार; विटिन्ततु–दूर हुआ; (अन्रु, ए–पूरक ध्वनियाँ।) । ७७३

(तब अँधेरा मिटा और प्रातःकाल हो गया। कवि की सालंकार उक्ति देखिए :) मन को दूत के रूप में भेजकर जो अपने प्राणप्यारे चोर नायक के यहाँ जाती हैं उन चोर नायिकाओं के मन को निराश करते हुए और चक्रवाकपक्षियों के मन के विरह-दुःख को दूर करते हुए घना अन्धकार मिटा, जैसे अधिक संख्या में रहनेवाले देवों के वासस्थान मेरुपर्वत के शिखर तक ढकता हुआ रहा प्रलय-जल हट गया। ७७३

9. इलङ्गै काण् पडलम् (लंका-संदर्शन पटल)

इन्नदोर् तन्मैत् तामॆन् ऱॆट्टियुम् बार्क्क वञ्जिप्
पॊन्मदिर् पुऱत्तु नाळुम् पोहिन्ऱान् पोर्मेर् कॊण्डु
मन्नवर्क् करशन् वन्दान् वलियमा लॆन्ऱु तानुम्
तॊन्नहर् काण्बान् बोलक् कदिरवन् तोऱ्ऱञ् जॆय्दान् 774

इन्नतु ओर्–ऐसे एक; तन्मैत्तु–स्वभाव का; आम् अन्रु–है ऐसा; ॲट्टि पार्क्कवुम्–झाँककर देखने से भी; अञ्चि–डरकर; पॊन् मतिल् पुरत्तु–स्वर्ण-प्राचीर के पार्श्व में ही; नाळुम्–प्रतिदिन; पोकिन्रान्–जो जाता है; कतिरवन्–वह सूर्य; पोर् मेल् कॊण्टु–युद्ध का कार्य अपनाकर; मन्नवर्क्कु अरचन्–राजाधिराज; वन्तान्–आये; वलियम्–हम बलशाली हो गये; अन्रु–ऐसा; तानुम्–स्वयं; तॊल् नकर्–प्राचीन नगर; काण्पान् पोल–देखता जैसा; तोऱ्रम् चॆय्तान्–प्रकट हुआ। ७७४

सूर्य, अन्दर क्या है, कैसा है ? यह जानने के लिए झाँककर देखने से भी डरकर लंका के प्राचीरों के पार्श्व से ही जाया करता था। आज वह ऐसा प्रकट हुआ मानो उसे यह आश्वासन हो गया हो कि युद्धारूढ़ हो चक्रवर्ती आये हैं, इसलिए हमारा बल बढ़ गया और यह इच्छा हुई हो कि मैं भी प्राचीन नगर का वैभव देख लूँ। ७७४

अरुन्ददि यनैय नङ्गै यव्वळि यिरुन्दा ळॆन्ऱु
पॊरुन्दिय कादल् तूण्डप् पॊन्नहर् काण्बान् पोलप्
पॆरुन्दुणै वीरर् पऱ्ऱत् तम्बियुम् बिन्बु शॆल्ल
इरुन्दमाल् वरैयि नुच्चि येऱिन निराम निप्पाल् 775

अरुन्तति अनैय–अरुन्धती-समान; नङ्कै–देवी; अ वळि इरुन्ताळ्–वहाँ

रहीं; अँत्ऱु–समझकर; पॊरुन्तिय–युक्त; कातल् तूण्ट–प्रेम के प्रोत्साहन से; पॊन् नकर्–स्वर्णनगरी; काण्पान् पोल–देखते जैसे; पॆरु तुणै वीरर्–बड़े सहायक वीरों के; पऱ्ऱ–साथ हाथ पकड़ते आते; तम्पियुम्–लघु भ्राता के; पिन्पु चॆल्ल–पीछे आते; इरुन्त–जिस पर रहे; माल् वरै–उस बड़े (सुबेल) पर्वत के; उच्चियिन्–शिखर पर; इरामन् एऱितन्–श्रीराम चढ़े; इप्पाल्–इधर आगे। ७७५

श्रीराम सुबेल पर्वत के शिखर पर चढ़े इस इच्छा से कि अरुंधती-सदृश सीता इस नगर के अन्दर है और मैं यह नगर देख लूँ। उनके साथ बड़े सहायक वीर विभीषण और सुग्रीव उनके हाथों को सहारा देते हुए साथ गये। उनके लघुभ्राता भी पीछे गये। ७७५

शॆरुवलि वीर रॆल्लाञ् जेर्न्दनर् मरुङ्गु शॆल्ल
इरुतिऱल् वेन्दर् ताङ्गु मिणैनॆडुङ् गमलक् कैयान्
पॊरुवलि वयवॆञ् जीयम् यानैयुम् पुलियुञ् जुऱ्ऱ
अरुवरै यिवर्व ताङ्गो ररियर शनैय नानान् 776

चॆरु वलि–सबल योद्धा; वीरर् ऍल्लाम्–सभी वीर; चेर्न्ततर्–मिलकर; मरुङ्कु चॆल्ल–पार्श्व में गये; इरु–दो; तिऱल् वेन्तर्–बलवान राजा (सुग्रीव और विभीषण); ताङ्कुम्–हाथ का सहारा देते हुए गये; इणै–जोड़े के; नॆट्टु–दीर्घ; कमल कैयान्–कमल-सम हाथों के श्रीराम; पॊरु वलि–युद्धकुशल; वय वॆम् चीयम्–बलिष्ठ भयंकर सिंह और; यानैयुम्–गज और; पुलियुम्–व्याघ्र; चुऱ्ऱ–घेर आये इस भाँति; अरु वरै इवर्वतु–दुर्गम पर्वत पर चढ़नेवाले; ओर्–अप्रतिम; अरि अरचु–सिंहराज के; अनैयन् आनान्–समान रहे। ७७६

युद्धसमर्थ सभी वीर एकत्रित होकर उनके साथ-साथ पास में जा रहे थे। दोनों पराक्रमी राजा (विभीषण और सुग्रीव) श्रीराम के हाथ को सहारा देते हुए जा रहे थे। तब दीर्घकमलहस्तद्वय श्रीराम उस अपूर्व केसरीराज के समान लग रहे थे जो युद्धप्रिय बलशाली और भयानक सिंहों, गजों और व्याघ्रों से घिरा हुआ एक अगम पर्वत पर चढ़ रहा हो। ७७६

कदमिहुन् दिरैत्तुप् पॊङ्गुङ् गनैहड लुलह मॆल्लाम्
पुदैवुशॆय् यिरुळिऱ् पॊङ्गु मरक्करतम् बुरमुम् बॊऱ्पुम्
शिदैवुशॆय् कुऱियैक् काट्टि वडदिशैच् चिहरि यॊन्ऱिन्
उदयम दॊळियत् तोन्ऱु मॊरुहरु ञायि ऱॊत्तान् 777

कतम् मिकुत्तु–क्रोध अधिक करके; इरैत्तु–लहराकर; पॊङ्कुम्–उमँगने वाले; कनै–गरजते; कटल् उलकम् ऍल्लाम्–समुद्र से घिरे इस सारे संसार को; पुतैवु चॆय्–गड़ानेवाले; इरुळिल्–अंधकार में; पॊङ्कुम्–उबलनेवाले; अरक्कर् तम् पुरमुम्–राक्षसों का नगर और; पॊऱ्पुम्–उसका सौंदर्य; चितैवु चॆय्–नष्ट होंगे इसका; कुऱियै काट्टि–आसरा दिखाकर; उतयम् अतु–उदयगिरि; ऒळिय–छोड़कर; वट तिचै–उत्तर दिशा के; चिकरि ऒन्ऱिल्–एक शिखर पर;

तोन्ऱुम्–प्रगट; ओंरु–अनुपम; करु ञायिरु–काले सूर्य; ऑत्तान्–के समान रहे। ७७७

क्रुद्ध-जैसे लहरें मारते हुए गरजकर उमड़नेवाले समुद्र से वलयित सारी पृथ्वी को जो अन्धकार अपने अन्दर छिपाए है, उसमें क्रोधी राक्षसों का नगर और उसका सौंदर्य भी नष्ट हो जायगा। इसका मानो पूर्व-संकेत कर रहा हो, ऐसा उदयगिरि को त्यागकर उत्तर के एक पर्वत-शिखर पर उदीयमान एक अपूर्व काले सूर्य के समान श्रीराम लगे। (सूर्य का उदयस्थान और रंग बदलना दुश्शकुन है।)। ७७७

तुमिलत्तिण् शॅरुविन् वाळिप् पॅरुमळै शॊरियत् तोन्ऱुम्
विमलत्तिण् शिलैय ऩाण्डोर् वॅऱ्पित्ते मेय वीरन्
अमलत्तिण् करमुङ् गालुम् वदऩमुङ् गण्णु माऩ
कमलत्तिण् काडु पूत्त काळमा मेह मॊत्तान् 778

तुमिलम्–तुमुलपूर्ण; तिण्–कठोर; चॅरुविन्–युद्ध में; वाळि पॅरु मळै–शरों की बड़ी वर्षा; चॊरिय तोन्ऱुम्–करते हुए प्रगट होनेवाले; विमलम्–पवित्र; तिण् चिलैयन्–कठोर धनुर्धर; आण्टु–वहाँ; ओर् वॅऱ्पित्तै–एक पर्वत पर; मेय वीरन्–जो चढ़े थे वे वीर; अमलम्–पवित्र; तिण् करमुम्–सुदृढ़ हाथ; कालुम्–चरण; वतनमुम्–और वदन और; कण्णुम् आऩ–आँखें रूपी; तिण् कमलम्–प्रवृद्ध कमलों का; काटु पूत्त–वन जिसमें फूला हो ऐसे; कालम् मा मेकम्–काले बड़े मेघ; ऑत्तान्–के समान रहे। ७७८

तुमुल घोर संग्राम में शर-वर्षा करनेवाले पवित्र व कठोर धनु के धारक श्रीराम, जो उस अगम पर्वत पर चढ़े थे, अभूतपूर्व काले बड़े मेघ के समान भी थे जिसमें पवित्र और सशक्त हाथों, पैरों, वदन और आँखों रूपी कमल खिले हों। ७७८

मऱ्कुव डन्नैय तिण्डोळ् माऩवन् वाऩत् तोङ्गुम्
कऱ्कुव डडुक्कि वारिक् कडलित्तैक् कडन्द काट्चि
नऱ्कुव डन्नैय वीर रीट्टत्ति नडुव णिन्ऱान्
पॊऱ्कुवट् टिडैये तोन्ऱुम् मरगदक् कुन्ऱम् बोन्ऱान् 779

वाऩत्तु ओङ्कुम्–आकाश तक बढ़े ऐसा; कल् कुवटु–प्रस्तर-पर्वत; अटुक्कि–चुनकर; वारि कटलित्तै–जलसागर को; कटन्त–जिन्होंने पार किया; नल् कुवटु–मनोरम पर्वत; अन्नैय–के समान; काट्चि वीरर्–दर्शनीय वीरों के; ईट्टत्तिन्–समूह के; नटुवण्–मध्य; निन्ऱान्–(जो) खड़े रहे; मल् कुवटु अन्नैय–पर्वतशिखर-सम; तिण् तोळ्–सशक्त कंधों वाले; माऩवन्–मनुकुलपुत्र; पॊन् कुवटु इटैये–स्वर्णपर्वतों के मध्य; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; मरकत कुन्ऱम् पोन्ऱान्–मरकतपर्वत के समान रहे। ७७९

सबल पर्वतशिखर-स्कंध, मनुकुलनायक श्रीराम गगन को छूते-से

पर्वतों को जोड़कर समुद्र को जिन्होंने पार किया उन मनोरम पर्वत-सम वानर वीरों के मध्य स्वर्णपर्वतों के मध्य दिखनेवाले मरकत पर्वत के समान दिखायी दिये। ७७९

अणैनॅडुङ् गडलिऱ् ऱोत्ऱ वाऱिय शीऱ्ऱत् तैयऩ्
पिणैनॅडुङ् गण्णि यॅऩ्ऩु मिऩ्ऩुयिर् पिरिन्द पिऩ्ऩैत्
तुणैपिरिन् दयरु मऩ्ऱिऱ् चेवलिल् तुळङ्गु हिऩ्ऱाऩ्
इणैनॅडुङ् गमलक् कण्णा लिलङ्गैयै यॅय्दक् कण्डाऩ् 780

पिणै–मृगी की-सी; नॅटु कण्णि–आयत आँखों वाली; ऍन्नुम्–रूपी; इन् उयिर्–प्यारे प्राणों से; पिरिन्त पिन्नै–अलग होने के बाद; तुणै पिरिन्तु–जोड़े से वियुक्त हो; अयरुम्–दुःख करनेवाले; अन्ऱिल् चेवलिल्–नर-क्रौंच के समान; तुळङ्कुकिन्ऱान्–बेचैन हैं; नॅटु कटलिल्–लम्बे सागर में; अणै तोन्ऱ–सेतु प्रगट होने पर; आऱिय चीऱ्ऱत्तु–शान्त-क्रोध; ऐयन्–प्रभु ने; नॅटु इणै कमलम् कण्णाल्–लम्बी जोड़ी की कमल-सम आँखों से; इलङ्कैयै–लंका को; ऍय्त–पूर्ण रूप से; कण्टान्–देखा। ७८०

मृगी की-सी आँखों के जोड़ेवाली श्री सीताजी से वियुक्त होने के बाद अपनी प्यारी पक्षी से वियुक्त क्रौंच के समान अशांत जो रहे और लम्बे समुद्र में सेतु को देखकर जिनका कोप कुछ शान्त हुआ था, उन श्रीराम ने अपने अक्षकमलद्वय से लंका को खूब देखा। ७८०

नन्दिरु नहरे यादि वेऱुळ नहर्हट् कॅल्लाम्
वन्दपे रुवमै कूऱि वळुत्तुवा ऩमैन्द कालै
इन्दिर निरुक्कै यॅऩ्बा रिलङ्गैयै यॅडुत्तुक् काट्टार्
अन्दर मुणर्दल् तेऱ्ऱा ररुङ्गविप् पुलव रम्मा 781

अरु कवि पुलवर्–श्रेष्ठ विद्वान् कवि; नम् तिरु नकरे आति–हमारा श्रीनगर आदि; वेऱुळ नकर्कट्कु ऍल्लाम्–अन्य सभी नगरों की; वन्त–मनमानी; पेर् उवमै कूऱि–बड़ी उपमाएँ कहकर; वळुत्तुवान् अमैन्त कालै–जब बड़ाई करने लगें तब; इन्तिरन् इरुक्कै–इन्द्रनगर (अमरावती); ऍन्पार्–कहेंगे; इलङ्कैयै–लंका को; ऍटुत्तु काट्टार्–लंका नहीं बतावेंगे; अन्तरम्–अन्तर; उणर्तल् तेऱ्ऱार्–जानते नहीं; (अम्मा–विस्मयबोधक अव्यय)। ७८१

उन्होंने अपने भाई से कहा कि भाई! विद्वान् कवि लोग हमारे श्रीनगर आदि सभी नगरों का उपमान अपने मन में कल्पना करके बताना चाहें तो देवेन्द्रनगर (अमरावती) का नाम लेंगे। लंका की उपमा नहीं देंगे। वे शायद अमरावती और लंका का अन्तर नहीं जानते। ओफ़! । ७८१

पळुदऱ विळङ्गुज् जॅम्बॊन् तलत्तिडॆप् परिदि नाण
मुळ्दॆरि मणियिऱ् चॅय्दु मुडिन्दऩ मुत्तैव रालुम्

ऍळुदरु वहैय वाय माळिहै यियैयच् चॅय्द
तॉळिल्तॅरि हिलवाल् तङ्गण् शुडर्मणिक् कर्रै शुर्रि 782

पळुतु अर्-निर्दोष; विळङ्कुम्-शोभायमान; चॅम् पॊन् तलत्तिटै-लाल स्वर्णतल में; परिति नाण-सूर्य को शरमाते हुए; मुळुतु-सम्पूर्ण रूप से; ऍरि मणियिल्-प्रकाशमय रत्नों से; चॅय्तु मुटिन्तत-निर्मित जो हैं; मुतॅवरालुम्-ब्रह्मा से भी; ऍळुत अरु वकॅय आय-रचने में दुर्लभ बने; माळिकॅ-प्रासादों में; इयॅय-कारीगरी से युक्त; चॅय्त तॊळिल्-किये गये रचना-कार्य; तम् कण्-उनमें; चुटर् मणि कर्रै-कांतियुक्त मणियों की राशियों से; चुर्रि-घिरे होकर; तॅरिकिल-दिखायी नहीं देते। ७८२

दोषरहित लाल स्वर्णतल में प्रासाद बने हैं, जिनमें सूर्य को भी लजाने वाली कांतिमय मणियाँ पूर्ण रूप से जड़ित हैं। वे ब्रह्मा के द्वारा भी बनाये नहीं जा सकें ऐसी रीति से बने हैं। उनमें अच्छी कारीगरी है। अपनी कांति के घिरे होने के क़ारण उनको देखना भी कठिन हो रहा है। ७८२

विरिहिन्र कदिर वाहि मिळिर्हिन्र मणिहळ् वीशच्
चॉरिहिन्र शुडरिन् शुम्मै विशुम्बुरत् तॊडरुन् दोर्रम्
अरिवॅन्र वॅर्रि यार्रल् मारुदि यमैत्त तीयाल्
ऍरिहिन्र दाये काणिक् कॊडिनह रिरुन्द दिन्नुम् 783

विरिकिन्र कतिर-विस्तरित किरणों वाले; आकि-बनकर; मिळिर्किन्र-शोभनेवाले; मणिकळ्-रत्न; वीच-कांति बिखेरते हैं; चॊरिकिन्र-बरसती-सी; चुटरिन् चुम्मै-किरणों के समूह; विचुम्पु उर-आकाश को छूते हुए; तॊटरुम्-जाते हैं जो; तोर्रम्-वह दृश्य; अरि वॅन्र-शत्रुविजयी; वॅर्रि-विजयशीलता और; आर्रल्-पराक्रम के; मारुति-मारुति द्वारा; अमैत्त तीयाल्-लगायी गयी आग से; इ कॊटि नकर्-यह ध्वजाशोभित नगर; ऍरिकिन्रताये-जलता-सा ही; इन्नुम् इरुन्ततु-अब भी रहता है; काण्-तुम देखो। ७८३

नवरत्नों की कांति घनी है। वह गगनव्यापी है। वह दृश्य यह भ्रम पैदा करता है कि यह ध्वजाओं से अलंकृत नगर अब भी शत्रुविजयी हनुमान द्वारा लगायी गयी आग में जल रहा है। ७८३

माशडै परन्द मान मरहदत् तलत्तु वॅत्त
काशडै शमैन्द माडङ् गदिर्त्तळै कर्रै शुर्र
आशरक् कुयिन्र वॅळ्ळि यहन्मनै यन्न माहप्
पाशडैप् पॊय्है पूत्त पङ्गयम् निहर्प्प पाराय् 784

माचु अटै-मेघसहित; परन्त-विशाल; मान-उन्नत; मरकततलत्तु-मरकततल में; वॅत्त-निर्मित; काचु अटै-रत्न पास-पास रखकर; चमैन्त माटम्-बनाये गये प्रासाद; तळॅकतिर्-घनी किरणों की; कर्रै चुर्र-राशियों

से घिरे; आचु अऱ्-त्रुटिहीन रीति से; कुयिन्ऱ-जड़ित; वॆळ्ळि-रजत-सम; अकन् मतॆ-बड़े प्रासाद; अन्नम् आक-हंस बने; पाचु अटॆ-हरे पत्तों से युक्त; पॊय्कै-सरोवर के; पूत्त-खिले हुए; पङ्कयम्-कमलों; निकर्प्प-के समान हैं; पाराय्-देखो। ७८४

मेघाश्रय मरकत तल में रत्नमय प्रासाद बने हैं जिनकी कांति उन्हें घेरे रहती है। उनके मध्य विशाल रजत-भवन बने हैं। वे हंस के समान हैं। मरकततल, उन पर बने रत्नमय प्रासाद, उनके रजत-भवन सब मिलकर हरे पत्तों और पुष्पित कमलों के साथ रहनेवाले सरोवर के समान दृश्य उपस्थित करते हैं। देखो। ७८४

तीच्चिहै शिवणुज् जोदिच् चॆम्मणिच् चॆऱ्ऱिच् चॆय्य
तूच्चुडर् माड मीण्डित् तुरुदलाल् करुमै तोन्ऱा
मीच्चॆलु मेह मॆल्लाम् विरिशुडर् विऴुङ्ग वेवक्
काय्च्चिय इरुम्बु मानच् चेन्दवै यॊळिर्व काणाय् 785

ती चिकै-अग्निशिखा; चिवणुम्-के समान दिखनेवाली; चोति-ज्योतियुक्त; चॆ मणि-लाल मणियों को; चॆऱ्ऱि-लगाने से; चॆय्य-लाल बने; तू चुटर् माटम्-शुद्ध प्रकाशमय प्रासाद; ईण्टि-मिलकर; तुरुतलाल्-कांति छिटकाते हैं, इसलिए; करुमै तोन्ऱा-काला रंग न दिखे, ऐसा; मी चॆलुम्-आकाश में जानेवाले; मेकम् ॲल्लाम्-सभी मेघ; विरि चुटर्-उन विस्तृत किरणों से; विऴुङ्क-निगले जाकर; वेव काय्च्चिय-जल जाएँ ऐसा तप्त; इरुम्पु मान-लोहे के समान; चेन्तवै-लाल बने; ऒळिर्व-छवियुक्त हैं; काणाय्-देखो। ७८५

अग्निशिखा के समान लाल रत्नों के कारण शुद्ध कांतिमय प्रासाद सटे रहकर छवि बिखेर रहे हैं। इसलिए आकाशचारी मेघ काले नहीं दीखते और उस प्रकाश से ढँके जाकर तप्त लोहे के समान लाल बने दिखते हैं। देखो। ७८५

विऱ्पडि तिरळ्तोळ् वीर नोक्कुदि वॆङ्गण् यानै
अऱ्पडि निऱत्त वेनु माडहत् तलत्तै याळक्
कऱ्पडि वयिरत् तिण्गात् तिरङ्गळिऱ् कल्लिक् कैयाल्
पॊऱ्पॊडि मॆय्यिऱ् पूशिप् पॊन्मलै यॆन्नप् पोव 786

विल् पटि-धनुशोभित; तिरळ् तोळ्-पुष्ट कंधों वाले; वीर-वीर; वॆम् कण् यानै-भयावह आँखों के गज; अल् पटि-अंधकार-लगे; निऱत्त वेनुम्-रंग के हैं तो भी; आटकम् तलत्तै-स्वर्ण के तल को; कल् पटि-पत्थर-सम (कठोर); वयिरम्-वज्र-सम; तिण् कात्तिरङ्कळिल्-सशक्त पुरवर्ती पैरों से; आळ कल्लि-गहरा खोदकर; पॊन् पॊटि-स्वर्णकणों को; कैयाल्-सूँड़ से (लेकर); मॆय्यिऱ् पूचि-शरीर पर मलकर; पॊन् मलै ॲन्न-स्वर्णनगों के समान; पोव-जाते हैं; नोक्कुति-देखो। ७८६

धनु (का निशान) युक्त कन्धों वाले वीर! भयोत्पादक आँखों वाले हाथी काले ही हैं तो भी लंका नगर की स्वर्ण-भूमि को अपने पत्थर-सम कठोर पुरवर्ती पैरों से खूब गहरा खोदकर स्वर्ण-धूल निकालते हैं। उसे अपनी सूँड़ों से लेकर अपने शरीर पर लगा लेने से वे स्वर्ण-पर्वतों के समान वने जा रहे हैं। देखो। ७८६

पूशल्विऱ् कुमर नोक्काय् पुहरऱ विळङ्गुम् बॊऱ्पिऩ्
काशुडैक् कदिरिऩ् कऱ्ऱैक् काल्हळाऱ् कदुवु हिऩ्ऱ
वीशुपॊऱ् कॊडिह ळॆल्लाम् विशुम्बिऩैक् कवित्त मेहम्
माशऱत् तुडैत्तल् वाऩम् विळक्कुव पोलु मादो 787

पूचल्–युद्धकारी; विल्–धनुर्वीर; कुमर–कुँअर; पुकर् अऱ–दोषहीन; विळङ्कुम्–शोभनेवाली; पॊऱ्पिऩ्–सुन्दरता के; काचु उटै–रत्नों की बनी; कतिरिऩ् कऱ्ऱै–किरणों की लटों वाले; काल्कळाल्–पवन (के झोंकों) से; कतुवुकिऩ्ऱ–ग्रस्त; वीचु–चालित; पॊऩ् कॊटिकळ् ॲल्लाम्–सुन्दर ध्वजाएँ सभी; विचुम्पिऩै–आकाश को; कवित्त मेकम्–आच्छादित रहनेवाले मेघ रूपी; माचु अऱ–कलुष दूर करते हुए; तुटैत्तु–दूर करके; अ वाऩम्–उस आकाश को; विळक्कुव पोलुम्–साफ़ करते-से हैं; नोक्काय्–देखो। ७८७

युद्धोपयोगी धनु के धारक कुँअर! अकलंक, सुन्दर ध्वजाएँ, भवनों के रत्नों की कांति लेकर हवा में जो फहरती हैं वे आकाशस्थित मेघ रूपी गर्द को झाड़कर आकाश को साफ़ करती-सी लगती हैं। देखो। ७८७

नूल्पडत् तॊडर्न्द पैम्बॊऱ् चित्तिर नुऩित्त पत्तिक्
कोल्पडु मऩैह ळाय कुलमणि यॆवैयुङ् गूट्टिच्
चाल्पडुत् तरक्कऩ् माडत् तऩिमणि नडुवद् चार्त्ति
माल्हडऱ् किऱैवऩ् पूण्ड मालैपोऩ् ऱुळदिम् मूदूर् 788

इ मूतूर्–यह प्राचीन नगर; नूल् पट तॊटर्न्त–सूत्र की रेखा में (या शिल्प-शास्त्र के अनुसार) सम पंक्ति में निर्मित; पैम् पॊऩ्–हरे स्वर्ण के; चित्तिरम् नुऩित्त पत्ति–चित्र सूक्ष्म रूप से बनाकर पंक्ति में सजे; कोल् पटु–सुन्दर; मऩैकळ् आय–प्रासाद रूपी; कुलमणि–श्रेष्ठ रत्न; ॲवैयुम् कूट्टि–सब मिलाकर; चाल्पु अटुत्तु–शानदार; अरक्कऩ् माटम्–राक्षस (रावण) का महल रूपी; तऩि मणि–अपूर्व शीर्षस्थ मणि; नटुवण् चार्त्ति–मध्य में रखकर; माल् कटऱ्कु इऱैवऩ्–महान् सागर के राजा के; पूण्ट मालै पोऩ्ऱु–धारण किये हुए हार के समान; उळतु–है। ७८८

इस प्राचीन नगर में दोनों ओर सुन्दर प्रासाद हैं और मध्य में रावण का महल है। ये प्रासाद पंक्तिबद्ध हैं, स्वर्ण-निर्मित हैं, चित्रों से सुसज्जित हैं और मनोरम श्रेष्ठ जाति के रत्नों के साथ हैं। राक्षस (रावण) का महल (हार के मध्य) रहनेवाला मणिनायक है। सब मिलाकर यह

गौरवान्वित समुद्रराज (वरुण) के पहने हुए रत्नहार के समान दिखता है। देखो। ७८८

नन्नॅरि यरिञ नोक्काय् नळिनॅडुन् दॅरुवि नाप्पण्
पन्मणि माडप् पत्ति निळल्पडप् पडर्व पण्बाल्
तन्निरन् दॅरिहि लाद वौरुनिरञ् जार्हि लाद
इन्नदोर् निरत्त वॅन्रु पुलप्पडा विवुळि यॅल्लाम् 789

नल् नॅरि अरिञ–श्रेष्ठ नयज्ञ ज्ञानी; नळि नॅटु–गौरवयुक्त; तॅरुविन् नाप्पण्–वीथी के मध्य; पल् मणि–अनेक रत्नों से युक्त; माट पत्ति–माढ़ों की पंक्तियों की; निळल् पट–छाया के लगे जैसा; पटर्व–जो चलते हैं; इवुळि ॲल्लाम्–उन सभी अश्वों का; पण्पाल्–नैसर्गिक; तम् निरम्–अपना रंग; तॅरिकिलात–न जाना जाए; ऒरु निरम्–कोई एक रंग; चार्किलात–न दिखे ऐसा; इन्नतोर् निरत्त–किस एक रंग का है; ॲन्रु पुलप्पटा–न जाना जाय ऐसे होते हैं; नोक्काय्–देख लो। ७८६

अच्छे नयज्ञ, ज्ञानी ! लंबी व महिमामय वीथियों के मध्य जो अश्व जाते हैं, उन पर विविध रत्नजटित और पंक्तिबद्ध प्रासादों की छाया पड़ती है। इसलिए उनका स्वाभाविक रंग मालूम नहीं होता। निश्चित रूप से किसी एक रंग के भी नहीं लगते। न यही निश्चय किया जा सकता है कौन सा रंग इनका है। यह अनोखा दृश्य देखो। ७८९

वीरनी पाराय् मॅल्लॅन् पळिङ्गिनाल् विळङ्गु हिन्र
मारनु मरुळच् चॅय्द माळिहै मर्रोर् शोदि
शेर्दलुन् दॅरिव अन्रेल् तॅरिहिल तॅरिन्द काट्चि
नीरिना लियन्र वॅन्न निळलॅळु हिन्र नीर्मै 790

वीर–वीर; मॅल् ॲन् पळिङ्किनाल्–चिकने स्फटिक से; विळङ्कुकिन्र–बने शोभनेवाले; मारनुम् मरुळ चॅयत–मन्मथ को भी भ्रमित करनेवाले; माळिकै–सौध; मर्र ओर् चोति–अन्य एक ज्योति के; चेर्तलुम्–लगने पर; तॅरिव–प्रगट होने वाले; अन्रेल्–नहीं तो; तॅरिकिल–न दिखते; तॅरिन्त काट्चि–ऐसा दिखनेवाला दृश्य; नीरिनाल् इयन्र ॲन्न–जल से बने हों ये, ऐसा; निळल् ॲळुकिन्र–इनकी दीप्ति उठती है; नीर्मै–वह रीति; नी पाराय्–तुम देखो। ७६०

वीर ! मारदेव के मन को भी भ्रमित कर देनेवाले उन चिकने स्फटिक से निर्मित सौधों को देखो। कभी कोई प्रकाश उन पर पड़ता है तो देखने में आते हैं। नहीं तो उनका रहना ही मालूम नहीं होता, इसलिए वे जल बने-से लगते हैं। तुम देखो यह विचित्र दृश्य। ७९०

कोन्निरक् कुन्निविर् चॅङ्गैक् कुमरन्ने कॊळ्वॅण् डिङ्गट्
कान्निरक् कदिरिन् कर्रैच् चुर्रिय वनैय काट्चि

वाऩ्िऱत् तरळप् पन्दर् मरहद नडुवण् वैत्त
पाऩ्िऱप् परवै वैहुम् परमतै निहर्प्प पाराय् 791

कोल्–शरों और; निऱम्–तेजोमय; कुति विल्–झुके धनु के; चें कै–लाल (सुन्दर) हाथों के; कुमरत्ते–कुंअर; कोळ्–पुष्ट; वेळ् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र की; काल् निऱ–प्रकाश देनेवाली; कतिरिऩ् कट्रै–किरणों की राशि को; चुट्रिय अत्तय–घेरे हो ऐसे दृश्यमान; काट्चि–दृश्य वाले; वाल् निऱम्–सफ़ेद रंग के; तरळम् पन्तर्–मोती के मंडप में; नटुवण् वैत्त–मध्य-जड़ित; मरकतम्–मरकत; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; परवै वैकुम्–समुद्र में रहनेवाले; परमतै–परमपुरुष (श्रीविष्णु) के; निकर्प्प–समान हैं; पाराय्–देखो। ७६१

स-शर सुन्दर वर्ण और विनत-धनुर्धर! कुमार! श्वेतचन्द्र की उज्ज्वल किरणों को घेर रहा हो, ऐसे निर्मित मुक्तामंडप-मध्य मरकतमणि जो रखी गयी है वह दुग्धवर्ण सागर-मध्यस्थ श्रीविष्णु के समान लग रही है, देखो! । ७९१

कोळवा वरियेऱुऩ्ऩ कुरिशिले कोळ्ळ नोक्काय्
नाळवा मीऩ्दोय् माडत् तुम्बरोर् नाहर् पावै
काळवा रुऱैयिऩ् वाङ्गुङ् गण्णडि विशुम्बिऱ् कव्वि
वाळरा विळुङ्गिक् कालुम् मदियिऩै निहर्त्त वण्णम् 792

कोळ् अवा–मारना चाहनेवाले; अरि एऱु अऩ्ऩ–पुरुष सिंह के समान; कुरिचिले–राजकुमार; नाळवाम्–दिन-गणित; मीऩ् तोय्–नक्षत्र-मंडित; उम्पर् माटत्तु–छत के भवन में; ओर् नाकर् पावै–एक नागकन्या; काळम्–काली; वार्–लम्बी; उऱैयिऩ्–खोल से; वाङ्कुम्–बाहर जिसे निकाल रही है; कण्णटि–आईना; वाळ् अरा–क्रूर (राहु-केतु) सर्प; विचुम्पिल्–आकाश में; कव्वि विळुङ्कि–ग्रस, निगलकर; कालुम्–(बाद) जिसको उगल देते हैं; मतियिऩै–उस चन्द्र को; निकर्त्त वण्णम्–समानता जो करता है, वह रीति; कोळ्ळ नोक्काय्–अच्छी तरह देखो। ७६२

प्राणसंहारोत्साही केसरीराज-सम राजा! उस प्रासाद के ऊपर देखो, जिसमें दिनों के नक्षत्र आश्रय लेते हैं। एक नागकन्या खोल से आईना निकाल रही है। वह आईना भयानक राहु-केतु सर्प के मुख से निकलते हुए चन्द्र के समान लगता है, जिसको सर्प पहले निगलकर अब उगल रहा हो। देखो। ७९२

कोट्रवाऩ् शिलैक्कै वीर कोडिमिडै माडक् कुऩ्ऱै
उट्रवाऩ् कळुत्त वाऩ वोट्टहम् वैत्त वुम्बऱ्च्
चॆट्रिय मणिह ळीऩ्ऱ शुडरिऩैच् चॆक्का रत्तिऩ्
कट्रैयऩ् दळिर्ह ळॆऩ्ऩक् कव्विय निमिर्व काणाय् 793

कॊऱ्ऱम्–विजयी; वान्–बड़े; चिलै–धनु का; कै–(धारण करनेवाले) हाथों के; वीर–वीर; कॊटि मिटै–ध्वजासंकुल; माट कुन्ऱ उऱ्ऱ–प्रासाद-पर्वत से लगी; वान् कऴुत्त आन–ऊँची गर्दन वाले; ऒट्टकम्–ऊँट; वैत्त–जड़ित; उम्पर् चॆऱ्ऱिय–हर्म्यों में लगी; मणिकळ्–रत्नों से; ईन्ऱ–निकली; चुटरिनै–कांति को; चॆक्कारत्तिन्–सहकार (आम) के पेड़ों के; कऱ्ऱै अम् तळिर्कळ्–राशि में रहे सुन्दर पत्र; ऎन्न–समझकर; कव्विय–ग्रसने के लिए; निमिर्व–सिर उठाते हैं; काणाय्–देखो। ७६३

विजयी तथा बड़े धनु के धारक हाथों के वीर! उन ऊँटों को देखो, जिनकी गर्दन ध्वजासंकुल हर्म्यों तक पहुँचती है। उन प्रासादों के ऊपरी भाग में जटित रत्नों की कांति को वे सहकार वृक्ष के पल्लव समझकर उन्हें ग्रसने के लिए अपनी गर्दन ऊँची कर रहे हैं। देखो! । ७९३

वाहैवॆञ् जिलैक्कै वीर मलर्क्कुऴल् वडिक्कु मालैत्
तोहैय रिट्ट तूमत् तहिर्पुहै मुऴुदुञ् जुऱ्ऱ
वेहवॆङ् गळिऱ्ऱिन् वन्ऱोल् मॆय्युऱप् पोर्त्त तैयल्
पाहनिऱ् पॊलिन्दु तोन्ऱुम् पवळमा ळिहैयैप् पाराय् 794

वाकै–(विजय-चिह्न) 'वाहै' नामक फूलों के हार से अलंकृत; वॆम् चिलै–कठोर धनु के; कै वीर–धारक हाथों वाले वीर; मालै–संध्यासमय में; वटिक्कुम्–सँवारे हुए; मलर् कुऴल्–पुष्पालंकृत केश (सुखाने); तोकैयर् इट्ट–कलापी-सी स्त्रियों द्वारा लगायी; तूमत्तु अकिल् पुकै–धूप का अगरु-धुआँ; मुऴुतुम् चुऱ्ऱ–पूर्ण रूप से घूमता रहा इसलिए; वेकम्–वेगवान; वॆम् कळिऱ्ऱिन्–भयंकर गज के; वल् तोल्–मोटे चमड़े को; मॆय् उऱ–अपने शरीर पर खूब लगाकर; पोर्त्त–जिन्होंने ओढ़ा है और; तैयल् पाकनिल्–स्त्री (पार्वतीदेवी) के अर्द्धांगी जो हैं उनके समान; पॊलिन्तु–छविमान; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; पवळ माळिकैयै–प्रवाल-प्रासादों को; पाराय्–देखो। ७६४

विजयमालालंकृत धनुर्धर! उन प्रवाल-प्रासादों को देखो। संध्या समय में सुसज्जित पुष्पालंकृत केशों को सुखाने के लिए कलापी-सी स्त्रियों ने जो धूप लगायी थी उसके धुएँ से पूर्णरूप से वासित हैं। उनको देखने पर वेगगामी गज के मोटे चर्म से वासित, उमा को अपने आधे भाग में स्थान देनेवाले शिवजी के समान दृश्य उपस्थित हो रहा है। देखो। ७९४

कावलन् पयन्द वीरक् कार्मुहक् कळिऱै शुऱ्ऱ
देवर्दन् दच्च नीलक् कल्लिनार् ऱिरुन्दच् चॆय्द
दीवदु तॆरिया वुळ्ळत् तिराक्कद रीट्टि वैत्त
पावपण् डार मन्न शॆय्हुन्ऱम् बलवुम् पाराय् 795

कावलन् पयन्त–चक्रवर्ती-जनित; वीर कार्मुक–वीरोल्लासमयी कार्मुकधारी; कळिऱै–गज (सम लक्ष्मण); कऱ्ऱ–शिल्प-विद्वान्; तेवर् तम् तच्चन्–देवों के

शिल्पी (विश्वकर्मा) द्वारा; नीलम् कल्लिवाल्–इन्द्रनील मणियों से; तिरुन्त चॅय्ततु–सुनिर्मित; ईवतु तॅरिया–दानकर्म से अज्ञात; उळ्ळत्तु–मन वाले; इराक्कतर्–राक्षसों से; ईट्टि वैत्त–जमा कर रखे हुए; पाव पण्टारम् अन्न–पापों के भण्डारों के समान; चॅय् कुन्ऱम्–कृत्रिम-पर्वत; पलवुम्–अनेक हैं; पाराय्–देखो। ७९५

चक्रवर्तीसुत ! वीर कार्मुकधारी गज (-से लक्ष्मण) ! शिल्पशास्त्र-विदग्ध देवशिल्पी विश्वकर्मा द्वारा सुनिर्मित नीलमणियों के अनेक कृत्रिम पर्वतों को देखो, जो अदानकर्माभ्यस्त राक्षसों के जमा किये हुए पाप-भंडारों के समान लग रहे हैं। ७९५

पिणैमदर्त् तनैय नोक्कम् पाऴ्बडप् पिडियुण् डन्बिल्
तुणैवन्नैप् पिरिन्दु पोन्दु मरुङ्गॅनत् तुवळु मुळ्ळम्
पणमयिर्प् पॅय्दु मल्हुर् पावैयर् वरुव नोक्कुम्
कणमयिड़् कुऴुविन् नम्मैक् काण्गिन्ड़ार् तम्मैक् काणाय् 796

पिणै–हरिणी की; मतर्त्तु अनैय–मत्त-सी; नोक्कम्–दृष्टि का सौंदर्य; पाऴ् पट–नष्ट करते हुए; पिटि उण्टु–ग्रस्त होकर; अन्पिल् तुणैवन्नै–प्यारे साजन को; पिरिन्तु पोन्तु–छोड़ जाकर; मरुङ्कु अॅन–अपनी ही कमर के समान; तुवळुम्–म्लान होकर लचकनेवाली; उळ्ळम्–मन की; पणम् अयिर्प्पु अॅय्तुम्–सर्पफन का संशय पैदा करनेवाले; अल्कुल्–वरांग की; पावैयर्–देवांगनाएँ; परुवम् नोक्कुम्–वर्षाकाल में वर्षाभिलाषी; कणम् मयिल् कुऴुविन्–एकत्रित मयूर-वृन्दों के समान; नम्मै काण्किन्ड़ार् तम्मै–हमें देखती हैं, उन्हें; काणाय्–देखो। ७९६

उन देवकन्याओं को देखो, जो बंदिनी रहती हैं, जिससे उनकी हरिणी की-सी आँख का सौंदर्य विनष्ट हो गया है। वे अपने प्यारे साजनों से वियुक्त होकर अपनी ही कमर के समान म्लान हो ढीली रही हैं। उनके मन और सर्पफन-सम वरांग भी उदास हो रहे हैं। वे वर्षाऋतु में मेघों की ओर प्रतीक्षा में दृष्टि लगाये रहनेवाले एकत्रित मयूरवृंदों के समान हमारी ओर देख रही हैं। देखो। ७९६

नाळ्मलर्त् तॅरियल् मार्ब नम्बडै काण वानत्तु
याऴ्मॉऴित् तॅरिवै मारुम् मैन्दरु मेरु हिन्ड़ार्
वाऴ्विनिच् चमैन्द दन्ड़े यॅन्ऱुमा नहरै यॅल्लाम्
पाऴ्पडुत् तिरियल् पोवा रॊक्कित्तर परिशु पाराय् 797

नाळ् मलर्–तद्दिनविकसित पुष्पों की; तॅरियल् मार्प–माला से अलंकृत वक्ष वाले; नम् पटै काण–हमारी सेना को देखने के लिए; याऴ् मॊऴि–वीणावाणी; तरिवै मारुम्–स्त्रियाँ और; मैन्तरुम्–पुरुष; वानत्तु एऱुकिन्ड़ार्–जो आकाश में उद्गमन कर रहे हैं; इति–अब; वाऴ्वु–जीवन; चमैन्तत्तु अन्ड़े–पूरा हो गया

न; अॅन्ऱु-कहकर; मा नकरै अॅल्लाम्-सारे लंका नगर को; पाळ् पट्तु-नष्ट करके; इरियल् पोवार्-भागनेवालों के; ऑक्किन्ऱ-समान रहने की; परिचु पाराय्-रीति निहारो। ७६७

तद्दिनविकसित सुमनों की मालाधारी वक्षवाले! हमारी सेना को देखने के लिए वीणामधुरभाषिणी देवांगनाएँ और देवपुरुष आकाश में उद्गमन कर रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो वे 'राक्षसों का वैभव मिट गया न' —यह कहते हुए बड़े नगर भर को विनष्ट होने देते हुए भाग रहे हैं। उस हाल को देखो। ७९७

इन्नवा रिलङ्गै तन्नै यिळैयवऱ् किरामन् काट्टिच्
चॉन्नवा शॉल्ला वण्ण मदिशयन् दोन्ऱुङ् गालै
अन्नमा नहरिन् वेन्दन् अरिक्कुलप् पॅरुमै काण्बान्
शॅन्निवान् तडवुञ् जॅम्बॉऱ् कोबुरत् तुम्बर्च् चेर्न्दान् 798

इन्नवाऱु-इस भाँति; इलङ्कै तन्नै-लंका को; इरामन्-श्रीराम; इळैयवऱ्कु-छोटे भाई को; काट्टि-दिखाकर; चॉन्नवा चॉल्ला वण्णम्-कही हुई बात को पुनः न कहा जाय इस रीति से; अतिचयम्-विस्मय; तोन्ऱुम् काले-जब बन रहा था तब; अन्न-उस; मा नकरिन् वेन्तन्-महानगर का राजा; अरिकुल-हरि-कुल की; पॅरुमै-गुरुता; काण्पान्-देखने के लिए; चॅन्नि वान् तटवुम्-जिसकी चोटी आकाश को सहला रही थी; चॅम् पॉन् कोपुरत्तु-लाल स्वर्ण से निर्मित गोपुर (मीनार) के; उम्पर्-ऊपरी भाग में; चेर्न्तान्-गया। ७६८

श्रीराम ने इस भाँति अपने कनिष्ठ को यह सब दिखाया। उनके कथन में पुनरुक्ति की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि नये-नये विस्मयकारी दृश्यों की कमी नहीं थी। ठीक उसी समय उस बड़े नगर का राजा रावण वानर-सेना की विपुलता देखने के अभिप्राय से एक लाल स्वर्ण के गोपुर के ऊपर गया, जिसकी चोटी आकाश को सहला रही थी। ७९८

10. इरावणन् वानरत्तानै काण् पडलम् (रावण द्वारा वानरसेना-संदर्शन पटल)

कवडु ऱप्पॉरुद कायृहळि ऱन्नान्, अवडु यक्किन्मल रम्बुऱ वॅम्बुम्
शुवडु डॅप्पॉरुवि ऱोळ्कॉडे डनेहम्, कुवडु त्तनियॉर् कुन्ऱॅन निन्ऱान् 799

कवट्टु उऱ-कपट-सहित; पॉरुत-लड़नेवाले; काय्-क्रोधोन्मत्त; कळिऱु अन्नान्-गज-सदृश रावण; अवळ् तुयक्किन्-उन (सीताजी) के कारण उत्पन्न व्यग्रता के साथ; मलर् अम्पु-पुष्पशर; उऱ-लगने से; वॅम्पुम्-झुलसनेवाले; चुवट्टु उटै-निशानों (दागों) से भरे; पॉरु इल्-अनुपम; तोळ्कॉटु-कंधों के साथ; अनेकम् कुवट्टु उटै-अनेक शिखरों से युक्त रहनेवाले; तनि ऑर् कुन्ऱु-अपूर्व एक पर्वत; अॅन-के रूप में; निन्ऱान्-खड़ा रहा। ७६६

कपट योद्धा क्रोधी गज-सा रावण सीताजी के असफल प्रेम के कारण थकितमन था। मन्मथ के पुष्प-शरों के प्रहारों से दुःखी वह उनके निशानयुक्त अनुपम कन्धों के साथ बहुशिखर अप्रतिम एक पर्वत के समान खड़ा था। ७९९

पॉलिन्द दाङ्गुमिहु पोरॅन्न लोडुम्, नलिन्द नङ्गैयॅळि लाल्वलि नाळुम्
मॅलिन्द तोळ्हळ्वड मेरुविन् मेलुम्, वलिन्दु शॅल्लमिशै शॅल्लु मन्नत्तान् 800

आङ्कु–वहाँ; मिकु पोर्–महायुद्ध; पॉलिन्तत्तु–प्रगट हो गया; ॲॅतलोट्टुम्–कहते ही; नलिन्त–जो कृश हुई; नङ्कै ॲॅळिलाल्–उन (सीता) देवी के सौंदर्य (को अपना लेने) से; नाळुम्–दिनेदिने; वलि मॅलिन्त–बल में क्षीण होनेवाले; तोळ्कळ्–कंधे; वट मेरुविन् मेलुम्–उत्तर के मेरुपर्वत से भी अधिक; वलिन्तु चॅल्ल–उन्नत हो चले; मिचै चॅल्लुम्–ऐसा उत्तरोत्तर उमँगनेवाले; मनत्तान्–मन वाला बना। ८००

उसके कन्धे पति-वियोग से कृश होनेवाली सीताजी के सौंदर्य से प्रभावित होने के कारण स्वयं क्षीण हो रहे थे। अब यह सुनते ही कि बड़ा युद्ध अपनी सज-धज के साथ आ गया, वे कन्धे उत्तर के मेरु से भी बढ़ जाएँ, इस रीति से उसका मन युद्ध के विचार में लगकर हुलस गया। ८००

शॅम्बॉन् मौलिच् चिहरङ्गळ् तयङ्गुम्, अम्बॉन् मेरुवरै कोपुर माह
वॅम्बु कालिनै विळुङ्गिड मेनाळ्, उम्बर् मीदिनिमिर् वाशुहि यॉत्तान् 801

चॅम् पॉन् मौलि–लाल स्वर्ण-कलशों वाले; चिकरङ्कळ् तयङ्कुम्–शिखर जिस पर विलस रहे थे; कोपुरम्–वह गोपुर; अम् पॉन् मेरुवरै आक–सुन्दर-स्वर्ण-मेरु-पर्वत बना; वॅम्पु कालिनै–जलते पवन को; विळुङ्किट–निगलने; मेल् नाळ्–पुराने दिनों; उम्पर् मीतिल्–आकाश में; निमिर्–उठे; वाचुकि ऑत्तान्–वासुकि के समान लगा। ८०१

लाल स्वर्ण-कलशों से युक्त उस गोपुर को उत्तर का स्वर्ण-मेरुपर्वत मानें तो वायुदेव को निगल लेने के लिए उस पर अपना सिर उठाये रहने वाले वासुकी के समान रावण लगा। [यह वायु-वासुकी की होड़ की कहानी का अरण्यकाण्ड (पद्य ११५०) और सुन्दरकाण्ड (२४,२८) में जिक्र आया है। वहाँ वासुकी को शेषनाग ही कहा गया है। आदिशेष और वायु में बल-परीक्षा हुई, वायु मेरु के शिखरों को तोड़ दे और शेषनाग मेरु को अपने सिर से दबाकर पकड़े और वायु के प्रयत्न को विफल कर दे, यही शर्त थी। आखिर वायु तीन शिखरों को अलग कर फेंक सकी। वही तीन शिखर समुद्र में गिरकर त्रिकूट बने, जिस पर लंका बसायी गयी। यह वृत्तांत है।]। ८०१

तॊक्क पूदमवै यॆन्दॊडु तुन्ऩिट्, टॊक्क निन्ऱतिशै यॊन्बदॊ डॊन्ऱुम्
पक्क मुन्निऴल् परप्पि वियप्पाल्, मिक्कु निन्ऱकुडै मीदु विळङ्ग 802

तॊक्क–समूह में रहे; पूतम् अवै ऐन्तॊट्टु–पंचभूतों से; तुन्तिट्टु–मिलकर; ऑक्क निन्ऱ–लगी रही; तिचै ऑन्पतॊट्टु ऑन्ऱुम्–नौ+एक (दसों) दिशाओं में; पक्कमुम्–चारों ओर; निऴल् परप्पि–छाया फैलाकर; वियप्पाल्–विस्मयकारी प्रकार से; मिक्कु निन्ऱ कुटै–आरूढ़ जो रहा वह छत्र; मीतु विळङ्क–ऊपर शोभित रहा ऐसा। ८०२

(आगे रावण के वैभव का वर्णन है। ८१६वें पद्य तक वाक्य लगातार चलता है। त्रिकालिक, कृदंत को क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त करके ऐसा लिखने की शैली तमिऴ की विशिष्ट शैली है। हिन्दी में छत्र के शोभते, रावण खड़ा रहा, ऐसा कह सकते हैं। पर वह हिन्दी की शैली नहीं है।) श्वेत छत्र उसके ऊपर रहकर समस्त पंचभूतों (यानी पंचभूत रचित जीवों) के साथ दसों दिशाओं पर भी अपनी छाया फैलाते हुए विस्मयकारी रूप से शोभायमान था। ८०२

कैत्त रुङ्गवरि वीशिय कालाल्, नॆय्त्ति रुण्डुयरु नीळ्वरै मीदिल्
तत्ति वीऴरुवि यिन्ऱिरळ् शाल, उत्त रीहनॆडु मार्बि नुलाव 803

कै तरुम्–हाथ में धृत; कवरि वीचिय–चामर डोलने से उठी; कालाल्–हवा से; नॆय्त्तु–घृतसिक्त-से; इरुण्टु उयरुम्–काले और ऊँचे; नीळ् वरै मीतिल्–और लम्बे पर्वत पर; तत्ति वीऴ्–उछलती-कूदती गिरनेवाली; अरुवियिन् तिरळ्–सरिताओं के समूह का-सा दृश्य; चाल–पुष्कल रीति से दिखे, ऐसा; नॆटु मार्पिन्–विशाल वक्ष में; उत्तरीकम् उलाव–उत्तरीय के हिलते। ८०३

चामर डुलानेवाले अपने हाथों में चामर लेकर डुला रहे थे। उससे निकली हवा से उसका उत्तरीय हिल रहा था। तब ऐसा लगा मानो घृतसिक्त-से लगनेवाले काले पर्वत पर सरिता का समूह उछल-कूद मचाता हुआ नीचे गिर रहा हो। उसका सारा वैभव इस उत्तरीय के हिलने में भी देखने को मिल रहा था। ८०३

वान हत्तुरु मुरुप्पशि वाशत्, तेन हत्तरु तिलोत्तमै शॆव्वाय्
मेन हैक्कुल वरम्बैयर् मेलाम्, शान हिक्कऴहु तन्दयल् शार 804

वाचम् तेन् अकम्–सुवासमधुगर्भ; तरु–कल्पवृक्षागार; वान् अकत्तु–व्योमलोक में; उऱुम्–रहनेवाली; उरुप्पचि तिलोत्तमै–उर्वशी और तिलोत्तमा; चॆव्वाय् मेनकै–अरुणाधरा मेनका; कुल अरम्पैयर्–आदि श्रेष्ठ अप्सराएँ; मेलाम्–अतिश्रेष्ठ; चानकिक्कु–जानकी को; अऴकु तन्तु–सुन्दरता देते हुए; अयल् चार–पास में खड़ी रहीं, इस भाँति। ८०४

सुवासित और शहदयुक्त कल्पतरुसंकुल देवलोक की उर्वशी,

तिलोत्तमा और अरुणाधरा मेनका आदि श्रेष्ठ अप्सराएँ जानकी की सुन्दरता को समझने के लिए एक आधार बनी उसके पास खड़ी थीं। (जानकी इनसे भी सुन्दर थीं। तो उनकी सुन्दरता का अनुमान इनके सौंदर्य को देखकर हो सकता था। इसी अर्थ में कवि कहता है कि ये जानकीजी को सुन्दरता प्रदान करती रहीं।) । ८०४

वीऴि यिऩ्गऩि यिदऴ्प्पणै मॆऩ्ऱोळ्, आऴि वऩ्दवर मङ्गैय रैञ्ञूऱ्
ऱेऴि रण्डिऩि ऩिरट्टि पयिऩ्ऱोर्, शूऴि रण्डुपुडै युम्मुऱै शुऱ्ऱ 805

वीऴियिऩ्–'वीऴि' नामक पौधे (या लता) के; कऩि–फल के समान; इतऴ्–अधरों; पणै–बाँस-सम; मॆल् तोळ्–कोमल कंधों वाली; आऴि वऩ्त–श्रीक्षीरसागरोत्पन्न; अरमङ्कैयर्–देवांगनाएँ; ऐञ्ञूऱ्ऱु–पाँच सौ के; एऴिरण्टु इतिऩ्–सात के; इरट्टि–दुगुने (चौदह हज़ार); पयिऩ्ऱोर्–(संगीत और नाच में) अभ्यस्त; इरण्टु पुटैयुम्–दोनों पार्श्वों में; चूऴ् मुऱै–रहने के क्रम में; चुऱ्ऱ–घेरे खड़ी रहीं ऐसा । ८०५

नाचगान में दक्ष और 'वीऴि' के फलों के समान लाल अधरों और बाँस के समान कन्धों के साथ शोभनेवाली क्षीरसागरोत्पन्न चौदह हज़ार अप्सराएँ क्रम से अपने-अपने निर्दिष्ट स्थानों पर उसे घेरे खड़ी थीं। ८०५

मुऴैप डिऩ्दपिऱै मुऴ्ऴॆयि ऱॊळ्वाळ्, इऴैप डिऩ्दविळ वॆण्णिल वीऩ्क्
कुऴैप डिऩ्ददॊरु कुऩ्ऱिऩ् मुऴङ्गा, मऴैप डिऩ्दऩैय तॊङ्गल् वयङ्ग 806

मुऴै–गुफा में; पटिऩ्त पिऱै–पड़े हुए अर्धचन्द्र के समान; मुऴ् ऎयिऱु–तीक्ष्ण (खड्ग) दन्त; ऒळ् वाळ्–श्वेतमय प्रकाश को; इऴै पटिऩ्त–आभरणों पर पड़ी रही; इळ वॆण् निलवु–श्वेत हलकी चाँदनी; ईऩ–छिटकाते; कुऴै पटिऩ्ततु–कुण्डलधारी; ऒरु कुऩ्ऱिऩ्–अपूर्व एक पर्वत पर; मुऴङ्का मऴै–गर्जन-रहित मेघ; पटिऩ्तु अऩैय–पड़े रहते हों, ऐसा; तॊङ्कल्–हार; वयङ्क–शोभायमान रहे, ऐसा । ८०६

उसके वक्रदन्त गुफा में पड़े अंशचन्द्र के समान थे। वे आभरणों पर अपनी हलकी श्वेत चाँदनी-सी छवि बिखेर रहे थे। कुण्डलधारी पर्वत पर गर्जनहीन मेघ पड़ा हो —ऐसा कुवलयमाला उसको अलंकृत कर रही थी। ८०६

ओद नूल्हळ्शॆवि यिऩ्वऴि युळ्ळम्, शीदै शीदैयॆऩ वारुयिर् तेय
नाद वीणैयिशै नारदर् पाड, वेद गीदवमिऴ् दळ्ळि विऴुङ्ग 807

नूल् कळ् ओत–(शास्त्री लोग) ग्रन्थ सुना रहे थे; उळ्ळम्–(उसका) मन; चीतै चीतै ऎऩ–सीता, सीता का रट लगाते हुए था; आर् उयिर् तेय–प्यारा प्राण छीज रहा था; वेतम् कीत अमिऴ्तु–वेदगीतामृत; चॆवियिऩ् वऴि–श्रवणों द्वारा; अळ्ळि विऴुङ्क–उठाकर भोगे ऐसा; नातम्–सुनादिनी; वीणै–वीणा पर; इचै–संगीत; नारतर् पाट–नारद गान कर रहे थे, इस परिवेश में । ८०७

शास्त्री लोग ग्रन्थों का सार उसे सुना रहे थे। उसका मन 'सीता-सीता' की रट लगा रहा था। उसके प्राण क्षीण हो रहे थे। नारद वीणा के सुन्दर नाद के साथ सामवेदगानामृत बरसा रहे थे, ताकि यह अपने कानों द्वारा उसका स्वादन कर सके। ८०७

वॆङ्ग रत्तरयिल् वाळित्तर् विल्लोर्
शङ्ग रर्कुम्वलि शाय्विल् वलत्तोर्
अङ्ग रक्करशद कोडि यमैन्दोर्
पॊङ्ग रक्कुविऴि योर्पुडै शूऴ 808

वॆम् करत्तर्–क्रूरहस्त; अयिल्–तीक्ष्ण; वाळित्तर्–तलवारधारी; विल्लोर्–धनुर्धर; चङ्करर्कुम्–शंकर से भी; वलि चाय्वु इल्–बल में कम नहीं; वलत्तोर्–ऐसे बलशाली; चत कोटि अमैन्तोर्–सौ करोड़ (की संख्या) में रहे; पॊङ्कु अरक्कु–पिघलती लाख के समान; विऴियोर्–दृष्टिवाले; अरक्कर्–राक्षस; अङ्करक्कर्–अंगरक्षक; पुटै चूऴ–चारों ओर पास रहे, इस विध। ८०८

सौ करोड़ राक्षस वीर अंगरक्षकों के रूप में खड़े थे। उनके हाथ क्रूर थे और उनके पास तीक्ष्ण तलवारें और धनु थे। वे शंकरजी से भी वीरता में किसी विध कम नहीं थे। उनकी आँखें पिघली लाख के समान लाल और क्रोधदर्शी थीं। ८०८

कल्लि लङ्गैयुल हङ्गवर् हिर्पोर्, नल्लि लङ्गैमुद लोर्नवै यिल्लोर्
शॊल्लि लङ्गर्शद कोडिदॊ डर्न्दोर्, विल्लि लङ्गुपडै योर्पुडै विम्म 809

अङ्कै–सुन्दर हाथों से; कल्लिल्–खोदकर; उलकम्–सारे लोकों को; कवर्किर्पोर्–छीन लेनेवाले; नल् इलङ्कै–श्रेष्ठ लंका के; मुतलोर्–आदिकाल से विख्यात रहनेवाले; नवै इल्लोर्–अनिद्य; चॊल्लिल्–(संख्या) कहनी हो तो; चत कोटि अङ्कर् तॊटर्न्तोर्–शत करोड़ सदस्यों में रहे; विल् इलङ्कु पटैयोर्–धनु रखनेवाले सेना वीर; पुटै विम्म–पास भरे रहे, इस साज में। ८०९

और उसके पास धनुर्धर वीर सौ करोड़ खड़े थे। वे अपने हाथों से ही खोदकर लोकों को ले लेने की शक्ति रखते थे। लंका के आदिम लोगों में थे और अनिद्य थे। ८०९

पारि यङ्गुनर् विशुम्बु परन्दोर्, वारि यङ्गुमऴै यिन्गुरन् मानुम्
पेरि यङ्गळ् मुरुडाहुळि पॆट्कुम्, तूरि यङ्गडलि निन्रु तुवैप्प 810

पार् इयङ्कुनर्–भूमि-संचारी; विचुम्पु परन्तोर्–आकाश में फैले रहे; वार् इयक्कु–जलगर्भ हो; इयङ्कु मऴैयिन्–चलनेवाले मेघों के; कुरल् मानुम्–गर्जन की समानता करनेवाले; पेर् इयङ्कळ्–बड़े बाजे; मुरुटु आकुळि पॆट्कुम् तूरियम्–मुरडु, आकुलि, प्यारी तुरही आदि बाजे; कटलिन्–समुद्र के समान; निन्रु–स्थिर रूप से; तुवैप्प–बजे, इस भाँति। ८१०

अनेक भूतल पर चलते हुए और आकाश पर संचार करते हुए जल-गर्भित मेघ-सदृश ठनक उठनेवाले बड़े-बड़े बाजों—मुरुडु, आकुळि, प्यारी तुरहियों आदि—को बजा रहे थे जिनसे समुद्र-गर्जन के समान नाद निकल रहा था। ८१०

नञ्जु मञ्जुविऴि नाकियर् नाण, वञ्जि यञ्जुमिडै मङ्गैयर् वाऩत्
तञ्जॉल् लिऩ्शुवै यरम्बैय राडिप्, पञ्ज मञ्जिवणु मिऩ्ऩिशै पाड 811

नञ्चुम्–विष भी; अञ्चुम्–(जिनको देखकर) डरे ऐसी; विऴि–आँखों वाली; नाकियर्–नागांगनाएँ; नाण–शरमा जाएँ; वञ्चि–(ऐसी) 'वंजि' नामक लता; अञ्चुम्–भी डरे ऐसी; इटै–कमर वाली; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ और; वाऩत्तु–देवलोक की; अम् चॉल्–सुन्दर शब्दों की; इऩ् चुवै–मधुर स्वाद बिलानेवाली; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; आटि–नाचकर; पञ्चमम् चिवणुम्–पंचमस्वर-सम; इऩ्ऩिचै पाट–मधुर संगीत गान करतीं तब। ८११

विष-भीकर आँखों वाली नागिनियाँ, नागांगनाओं को भी शरम में डालने-वाली, 'वंजि' लता को भी भय से भरनेवाली कमरों की (भूतल की) रमणियाँ और मधुरभाषिणी अप्सराएँ नाचती और पंचम स्वर में गाती रहीं। ८११

नञ्जु कक्कियॅरि कण्णिऩर् नामक्, कञ्जु हत्तर्कदै पऱ्ऱिय कैयर्
मञ्जु हक्कुमुरु शॊल्लिऩर् वल्वाय्क्, किञ्जु हर्किरि यॊत्तऩर् शुऱ्ऱ 812

नञ्चु कक्कि–विष वमन कर; ऍरि–दीप्त; कण्णिऩर्–आँखों वाले; कतै पऱ्ऱिय कैयर्–गदापाणी; मञ्चु उक–मेघों को चूने देते हुए; कुमुऱुम्–गुंजाते; चॊल्लिऩर्–वचन वाले; वल्वाय्–बड़े मुखों रूपी; किञ्चुकर्–किंशुक वाले; किरि ऑत्तऩर्–पर्वत-सम; नामम्–डरावने; कञ्चुकत्तर्–कंचुकी लोग; चुऱ्ऱ–घेरते रहते, इस सन्निवेश में। ८१२

विषवमन के साथ जलती-सी आँखों वाले, गदा हस्त मेघगर्जन-सम गूँजते वचन वाले, किंशुक के समान लाल मुख वाले और गिरि-सम भयंकर कंचुकी लोग उसे घेरे रहे। ८१२

कूयु रप्पकुल माल्वरै येऩुम्, शायु रैप्परिय वाय तडन्दोळ्
वायु रैत्तकल वैक्कळि वाशम्, वेयु रैप्पवॅऩ वन्दु विळम्ब 813

कूय्–उच्च स्वर में (ज़ोर के साथ); उरैप्प–(उपमान) कहने योग्य; कुलम् माल् वरै–आठों कुलगिरियाँ हों; एऩुम्–तो भी; चाय् उरैप्प अरिय–इनका उपमान कह सकना कठिन है ऐसा; आय–जो रहे; तट तोळ् वाय्–उन विशाल कंधों पर; उरैत्त–मला हुआ; कलवै कळि–मिश्रित लेप की; वाचम्–सुगन्धि; वेय् उरैप्पतु ऍऩ–मानो चर आकर बतलाता हो, ऐसा; वन्तु विळम्प–आकर बतला रही थी, ऐसा। ८१३

विश्वासजनित ज़ोर के साथ उपमान बताने योग्य आठों गिरियाँ भी

रावण के जिन कन्धों के साथ उपमित नहीं की जा सकीं उन कन्धों पर चन्दनलेप मला हुआ था। उसकी सुगन्धि ही समाचार लानेवाले गुप्तचर के समान रावण के आगमन की खबर दे रही थी। ८१३

वेत्ति रत्तरॅरि वीशि विऴिक्कुम्
नेत्ति रत्तरिऱै नित्ऱुऴि निल्लाक्
कात्ति रत्तर्मतै कावल् विरुम्बुम्
शूत्ति रत्तर्पदि ऩायिरर् शुऱ्ऱर् 814

वेत्तिरत्तर्–वेत्रहस्त; ॲरि वीचि–आग उगलते हुए; विऴिक्कुम्–घूरने वाली; नेत्तिरत्तर्–आँखों वाले; नित्ऱुऴि–जहाँ खड़े रहे; इऱै निल्ला–वहाँ एक क्षण भी जो नहीं खड़े रहते वैसे; कात्तिरत्तर्–पैरों वाले; मतै कावल्–भवन-रक्षण; विरुम्पुम्–चाहकर; चूत्तिरत्तर्–(आवश्यक) उपाय जाननेवाले; पतित्तायिरर्–दस सहस्र लोग; चुऱ्ऱर्–घेरे घूमते रहे (ऐसे खड़ा रहा रावण)। ८१४

वेत्रहस्त, अनलाक्ष, सदा संचरणशीलचरण और भवनरक्षक उपायज्ञ दस हज़ार लोग उसे घेरे खड़े रहे। ८१४

तोर णत्तमणि वायित् मिशैच्चूल्
नीर णैत्तमुहि लामॅत्त नित्ऱान्
आर णत्तमुदै यम्मऱै तेडुम्
कार णत्तैनिमिर् कण्गॉडु कण्डान् 815

तोरणत्त–तोरण के; मणि वायित् मिचै–रत्नमय द्वार के ऊपर; चूल् नीर् अणैत्त–जल जिसके गर्भ में हो वैसे; मुकिलाम् ॲत्त–मेघ के समान; नित्ऱान्–(जो) खड़ा रहा (उस) रावण ने; आरणत्तु अमुतै–वेदामृत को; अ मऱै तेटुम्–उन वेदों से अन्वेषित; कारणत्तै–कारण को; निमिर् कण् कॉटु–उठी हुई आँखों से; कण्टान्–देखा। ८१५

इस परिवेश में और साज के साथ तोरण के मणिमय द्वार के ऊपर जलगर्भ मेघ के समान जो रावण खड़ा रहा उसने वेदसारामृत, और उन अपूर्व वेदों द्वारा अन्वेषित तत्त्व श्रीराम को अपनी उठी हुई आँखों से खूब निहारा। ८१५

मडित्त वायित्तन् वयङ्गॅरि वन्दु
पॉडित्ति ऴिन्दविऴि यित्तदु पोऴ्दिन्
इडित्त वन्ऱिशै यॅरिन्ददु नॅञ्जम्
तुडित्त कण्णित्ती डिडत्तिरळ् तोळ्हळ् 816

मटित्त वायित्तन्–जिसने ओंठ को मोड़कर दाँतों से दबा लिया, उस रावण की; विऴियित्–आँखों से; वयङ्कु ॲरि–ज्वलन्त आग; वन्तु–प्रगट हुई; पॉटित्तु–कण बनकर; इऴिन्त–गिरी; अतु पोऴ्तित्–तब; वल् तिचै–सभी दिशाओं में;

इटित्त–वज्रघोष उठा; नॆञ्चम्–उसका हृदय; ऍरिन्ततु–जल उठा; इट कण्णितॊटु–वायीं आँखों के साथ; इट–बायें; तिरळ्–पुष्ट; तोळ्कळ्–कंधे; तुटित्त–फड़क उठे। ८१६

श्रीराम को देखकर रावण ने होंठ काटा। उसकी आँखों से जलती आग प्रकट होकर अंगारे छितराने लगी। तब दिशाओं में वज्रनाद उठा। उसका हृदय जल उठा। दुश्शकुन जताते हुए उसकी वायीं आँखें और बायें हाथ फड़क उठे। ८१६

आह राहवनै यव्वळिक् कण्डान्, माह राहनिऱै वाळॊळि योनै
एह राशियिनि नॆय्द वॆदिर्क्कुम्, वेह राहुवॆन वॆम्बि वॆहुण्डान् 817

आक–ऐसा जव हुआ; इराकवनै–श्रीराघव को; अ वळि–तव; कण्टान्–जिसने देखा; माकम्–आकाश में; राकम् निऱै–लाली से पूर्ण; वाळ् ऑळियोनै–अधिक प्रकाशमय (सूर्य) से; एकराचियिनिल्–अमावस्या के दिन; ऍय्त ऍतिर्क्कुम्–जाकर टकरानेवाले; वेकम् राकु ऍन–प्रचण्ड राहु-जैसे; वॆम्पि–क्रुद्ध होकर; वॆकुण्टान्–भभक उठा। ८१७

इस स्थिति में उसने श्रीराम को देखा। तब वह उस वेगवान राहु के समान क्रुद्ध हो भभक उठा, जो अमावस्या के दिन आकाशचारी लाल किरणों वाले प्रकाशपुंज सूर्य का सामना करने जा रहा हो। ८१७

एनै योनिव निराम नॆनत्तन्, मेनि येयुरैक् किन्ऱदु वॆन्ऱिच्
चेनै योरै यडैयत्तॆरि यॆन्ऱु, तान्वि नाववॆदिर् शारन् विळम्बुम् 818

एनैयोन् इवन्–विचित्र यह; इरामन् ऍन–राम है, ऐसा; तन् मेनिये–उसका शरीर ही; उरैक्किन्ऱतु–बतलाता है; वॆन्ऱि चेनैयोरै–विजयेच्छुक (अन्य) सेना के वीरों को; अटैय तॆरि–पहचनवाओ; ऍन्ऱु–ऐसा; तान्–उसके; विनाव–पूछने पर; चारन् ऍतिर् विळम्पुम्–सारण ने उत्तर में कहा। ८१८

उसने सारण से कहा कि यह राम है। अलग उसका रूप ही उसे पहचनवा रहा है। अब तुम विजयाकांक्षी सेना के अन्य सारे वीरों का परिचय दो। सारण उत्तर में बोलने लगा। ८१८

इङ्गि वन्पडै यिलङ्गैयर् मन्नन्
तङ्गै यॆन्ऱलुम् मुदिर्न्द शलत्ताल्
अङ्गै वाळ्हॊड वळाहम् विळङ्गुम्
कॊङ्गै नाशिशॆवि कॊय्दु कुरैत्तान् 819

इङ्कु–यहाँ (जो दिखता); इवन्–यह; पटै इलङ्कैयर् मन्नन्–सेनावलयुक्त लंकावासियों के राजा की; तङ्कै–छोटी वहिन; ऍन्ऱलुम्–कहते हो; मुतिर्न्त चलत्ताल्–प्रवृद्ध क्रोध से; अम् कै वाळ् कॊट्टु–सुन्दर हाथ के खड्ग से; अवळ

आकम्–उसके शरीर में; विळङ्कुम्–विद्यमान; कॊङ्कै–स्तनों; नाचि चॆवि–नाक और कान को; कॊय्तु–काटकर; कुऱैत्तान्–जिसने (अंग-) हीन कर दिया वह (लक्ष्मण) है। ८१९

वह लक्ष्मण है जिसने सेनाविशिष्ट लंकेश की वहिन का समाचार जानते ही प्रवृद्ध कोप के साथ अपने हाथ की तलवार से शूर्पणखा के शरीर की सुन्दरता को वढ़ाते रहे स्तनों, नाक और कानों को काटकर उसे अंग-हीन कर दिया था। ८१९

अऱक्क	णल्लदॊरु	कण्णिल	नाहि
निऱक्क	रुङ्गडलुळ्	नेमियि	निऩ्ऱु
तुऱक्क	मॆय्दियव	रुन्दुऱ	वाद
उऱक्क	मॆऩ्बदऩै	योड	मुऩिन्दान् 820

अऱक्कण् अल्लतु–धर्म-दृष्टि के सिवा; ऒरु कण्णिलऩ्–पर-दृष्टि न रखनेवाला; आकि–बनकर; करु निऱ–काले रंग के; कटलुळ्–समुद्र-मध्य; नेमियिऩ् निऩ्ऱु–भूमि पर स्थित होकर; तुऱक्कम् ऎय्तियवरुम्–जो स्वर्ग गये वे; तुऱवात–जिसको छोड़ नहीं सकते; उऱक्कम् ऎऩ्पतऩै–निद्रा जो है उसको; ओट–वह भाग जाए ऐसा; मुऩिन्ताऩ्–उस पर क्रोध किया है इसने। ८२०

धर्म ही पर उसकी आँखें लगी हुई हैं। वह और किसी वस्तु की परवाह ही नहीं करता। सकृष्णसागरा पृथ्वी से जो स्वर्ग जाते हैं उनसे भी अत्याज्य निद्रा को उस पर घृणा दिखाकर उसने भगा दिया है। ८२०

कैय	वऩ्ऱॊड	वमैन्द	करत्ताऩ्
ऐय	वालियॊडिव्	वण्ड	नडुङ्गच्
चॆय्द	वऩ्शॆरुवि	निऱ्ऱिहऴ्	हिऩ्ऱाऩ्
वॆय्य	वऩ्बुदल्वऩ्	यारिऩुम्	वॆय्याऩ् 821

ऐय–प्रभु; अवऩ्–उस राम के; कै तॊट अमैन्त–(मित्रता का) हस्त-स्पर्श पानेवाले; करत्ताऩ्–हाथों का; वालियॊटु–वाली के साथ; इ अण्टम्–यह अण्ड; नटुङ्क–डर जाए ऐसे; चॆय्त–कृत; वल् चॆरुवितिल्–कठोर युद्ध में; तिकऴ्किऩ्ऱाऩ्–जो यश-प्राप्त है वह; वॆय्यवऩ्–किरणमाली का; पुतल्वऩ्–पुत्र है; यारिऩुम्–किसी से भी अधिक; वॆय्याऩ्–क्रूर है। ८२१

उधर वह उष्णकिरण सूर्य का पुत्र सुग्रीव है, जिसके भाग्यशाली हाथ राम के हाथों से मित्रता के नाते मिल गये हैं। उसे वाली के साथ इस अण्ड को भयभीत करते हुए घोर युद्ध करने का यश प्राप्त है। वह वड़ा क्रूर है। ८२१

तऩ्दै	मऱ्ऱवऩ्	शार्विल्	वलत्तोऩ्
अऩ्द	रत्तरमु	दार्हलि	काण

मन्द रत्तित्तॊडुम् वाशुहि योडुम्
शुन्द रप्पॅरिय तोळ्हळ् तिरित्तान् 822

मऱ्ऱु–और; अवन्–जो है उसका; तन्तै–पिता (वाली); चार्विल् वलत्तोन्–बेजोड़ बली; अन्तरत्तर्–देवों को; अमुतु–अमृत; आर् कलि काण–समुद्र से मिले ऐसा; मन्तरत्तित्तॊटुम्–मन्दर पर्वत के साथ; वाचुकियोटुम्–वासुकि को बाँधकर; चुन्तर–सुन्दर; पॅरिय तोळ्कळ्–बड़े हाथों से; तिरित्तान्–मथा। ८२२

उसके पास जो है (अंगद) उसका पिता बे-जोड़ (या असहायापेक्षी) बलवान है। देवों को अमृत पिलाने के लिए उसने क्षीरसागर में मन्दर-पर्वत को वासुकि के साथ अपने बड़े कन्धों के बल से घुमाया था। ८२२

नडन्दु निन्ऱव ऩहुङ्गदिर् मुन्बु
तॊडर्न्द वन्ुलहु शुऱ्ऱि यॅयिर्ऱिन्
इडन्दॆ ळुन्दवनै यॊत्तवन् वेलै
कडन्द वन्शरिदै कण्डनै यन्ऱे 823

नटन्तु निन्ऱवन्–जो चलता रहता है वह; नकुम् कतिर् मुन्पु–छविमय सूर्य के सामने; तॊटर्न्तवन्–साथ-साथ चला; उलकु चुऱ्ऱि–भूमि को लपेटकर; ॲयिर्ऱिन्–दाँतों से; इटन्तु ॲळुन्तवनै–उखाड़ जिसने उठाया उसके; ऒत्तवन्–सदृश है; वेलै कटन्तवन्–समुद्र को जिसने पार किया; चरितै कण्टनै–उसका वृत्तान्त आपने तो देखा ही है। ८२३

वह जो चलता रहता है हनुमान है, जो छविमय सूर्य के सामने (विद्यार्जन के लिए) साथ-साथ चला था; जो अपने दाँतों से भूमि को उठा जो लाये उन विष्णु के समबल है और जो समुद्र को अपने पैरों से पार कर आया था। आप स्वयं उसके साहसिक कार्य देख चुके हैं। ८२३

नीलन् निन्ऱव नॆरुप्पिन् महन्दिण्
शूल मुङ्गयिऱु मिन्मै तुणिन्दुम्
आल मॆन्ननिऱ मिन्मै यऱिन्दुम्
काल नॆन्बरिव नैक्करु दादार् 824

निन्ऱ अवन्–उधर जो खड़ा है वह; नॆरुप्पिन् मकन्–अग्नि का पुत्र; नीलन्–नील है; तिण् चूलमुम्–सुदृढ़ शूल और; कयिऱुम्–पाश भी; इन्मै–न रहना; तुणिन्तुम्–निश्चित रूप से जानने पर भी; आलम् ॲन्तुम्–हलाहल जो है; निऱम्–उसका रंग; इन्मै–न रहना; अऱिन्तुम्–जानकर भी; करुतातार्–शत्रु लोग; इवनै–इसको; कालन् ॲन्पर्–यम ही मानेंगे। ८२४

वह अग्नि का पुत्र नील है। उसके पास न सशक्त त्रिशूल है, न पाश है। न उनका रंग ही हलाहल के समान काला है। तो भी उसके शत्रु लोग उसे यम ही मानते हैं। ८२४

वेऱाह निऩ्ऱाऩ् नळऩॆऩ्ऩुम् विलङ्ग लऩ्ऩाऩ्
एऱा वरुणऩ् वऴितऩ्दिल ऩॆऩ्ऱि रामऩ्
शीऱाद वुळ्ळत् तॆऴुशीऱ्ऱ मुहुत्त शॆन्दी
आऱाद मुऩ्ऩम् महऩ्वेलैयै याऱु शॆय्दाऩ् 825

वेऱाक निऩ्ऱाऩ्–अलग जो खड़ा रहता है वह; नळऩ् ऍऩ्ऩुम्–नल नाम का; विलङ्कल् अऩ्ऩाऩ्–पर्वत-सम है; एऱा–अहंकार में बढ़कर; वरुणऩ् वऴि तऩ्तिलऩ्–वरुण ने मार्ग नहीं दिया; ऍऩ्ऱु–जानकर; इरामऩ्–श्रीराम के; चीऱात उळ्ळत्तु–अक्रोधी मन में; ऍऴु चीऱ्ऱम्–जो कोप उठा; उकुत्त–उससे निकली; चॅन् ती–लाल आग; आऱात मुऩ्ऩम्–शांत हो जाय इसके पूर्व ही; अकऩ् वेलैयै–विशाल सागर में; आऱु चॅय्ताऩ्–मार्ग बना दिया। ८२५

उधर अलग जो खड़ा है वह नल है। पर्वत-सम है। 'अहंभाव के बढ़ने से वरुण ने मार्ग नहीं दिलाया' —यह सोचकर श्रीराम के शान्त मन में भी क्रोध उठा था। उससे उत्पन्न आग के शान्त होने से पूर्व ही इस नल ने विशाल सागर में मार्ग (सेतु) बना दिया। ८२५

मुक्का लमुमॊय्म् मदियाऩ् मुऱैयिऩ् ऩुणर्वाऩ्
पुक्का लमॆऴप् पुणरिप् पुलवोर् कलक्कुम्
अक्का लमुळ्ळाऩ् करडिक् करशाहि निऩ्ऱाऩ्
इक्काल निऩ्ऱु मुलहेऴु मॆडुक्क वल्लाऩ् 826

मुक्कालमुम्–(भूत, वर्तमान व भविष्य) तीनों कालों को; मॊय् मतियाऩ्–अपनी पुष्कल बुद्धि से; मुऱैयिऩ् उणर्वाऩ्–क्रम से जाननेवाला; पुक्कु–प्रविष्ट होकर; आलम् ऍऴ–हलाहल निकले ऐसा; पुलवोर्–देवों ने; पुणरि कलक्कुम्–समुद्र-मथन जब किया; अ कालम् उळ्ळाऩ्–तभी जो रहा; करटिक्कु अरचाकि–रीछों का राजा बनकर; निऩ्ऱाऩ्–जो रहा (वह जाम्बवान); इ कालम् निऩ्ऱुम्–अब तक (बूढ़ा हो) रहते हुए भी; उलकु एऴुम्–सातों लोकों को; ऍटुक्क वल्लाऩ्–उठा सकनेवाला है। ८२६

वह है जो तीनों (भूत, वर्तमान व भविष्य) कालों की बातों को यथारीति अपनी श्रेष्ठ मति से जानने की शक्ति रखता है; जो उस समय से है, जब देवों ने घुसकर समुद्र को इस तरह विलोडित किया कि हलाहल निकल आया; और जो रीछों का राजा बना है। (वह जाम्बवान है।) वह इतनी उमर के होने पर भी सातों लोकों को उठा ले सकता है। ८२६

शेऩा पदिदऩ् ऩयले यिरुळ्शॆय्द कुऩ्ऱिऩ्
आऩा वॊऴियि ऩिरण्डाडहक् कुऩ्ऱि ऩिऩ्ऱार्
एऩोरि लिराम ऩिलक्कुव ऩॆऩ्ऩु मोट्टार्
वाऩोर्त मरुत्तुवर् मैन्दर् वलिक्कण् मिक्कार् 827

इरुळ् चॅय्त कुन्ऱिन्–अंधकार के पर्वत से; आत्ता–न हटनेवाले; ऑळियिन्–प्रकाश के; इरण्टु आटकम् कुन्ऱिन्–दो स्वर्ण-गिरियों के समान; चेत्तापति तन् अयले–सेनापति नील के पास ही; निन्ऱार्–जो खड़े हैं; एत्तोरिल्–अन्यों में; इरामन् इलक्कुवन् ऍन्नुम् ईट्टार्–राम-लक्ष्मण के समान बल वाले; वात्तोर् तम् मरुत्तुवर्–देववैद्यों (अश्विनी देवों) के; मैन्तर्–पुत्र (मैन्द और द्विविद) हैं; वलिक्कण् मिक्कार्–बल में बढ़े-चढ़े हैं। ८२७

उधर अन्धकार-वर्ण पर्वत के पास मानो दो हाटक-पर्वत खड़े हों —ऐसे सेनापति नील के पास स्थित देववैद्य अश्विनीदेव के पुत्रों (मैंद और द्विविद) को देखिए। वे अन्यों से बढ़कर रामलक्ष्मण-सम हैं। स्वयं बल में बढ़े-चढ़े हैं। ८२७

उवन्काण् कुमुदन् कुमुदाक्कनु मूङ्ग वन्गाण्
इवन्काण् कवयन् कवयाक्कनु मीङ्गि वन्काण्
शिवन्का णयन्का णॅनुन्दूदत्तेप् पॅऱ्ऱ शॅल्वन्
अवन्का णॅडुङ्गेशरि यॅन्बव नाऱ्ऱन् मिक्कान् 828

उवन् काण्–उधर वह देखें; कुमुतन्–कुमुद है; ऊङ्कु–उधर; अवन् काण्–उसे देखें; कुमुताक्कतुम्–कुमुदाक्ष भी; इवन् काण्–यह है देखें; गवयन्–गवय है; ईङ्कु–यहाँ; इवन् काण्–इसको देखें; कदयाक्कन्–गवयाक्ष; चिवन् काण्–शिव समझो; अयन् काण्–ब्रह्मा समझो; ऍतुम्–ऐसा शंसित; तूतत्ते–दूत का; पॅऱ्ऱ–जनक; चॅल्वन्–भाग्यशाली; अवन्–वह; नॅटु केचरि–सुविख्यात केसरी; ऍन्पवन्–कहलानेवाला है; आऱ्ऱल् मिक्कान्–महा बलवान है। ८२८

उधर देखिए, कुमुद है। उधर कुमुदाक्ष। यह देखिए, गवय है। इधर यह गवयाक्ष है। "शिव जानो, ब्रह्मा जानो" —ऐसा जिसको लोग कहते हैं उस दूत का सौभाग्यशाली पिता प्रख्यात केसरी है वह; बड़ा बलशाली है। ८२८

मुरबन् नहुतोळवन् मूरि मडङ्ग लॅन्नक्
करबन् नहमन्नवै मिन्नुहक् कान्दु हिन्ऱान्
वरबन् नहन्दन्नैयुम् वेरोडु वेण्डिन् वाङ्गुज्
जरबन् नवन्निवन् शदवलि याय तक्कोन् 829

मूरि मटङ्कल् ऍन्न–वलिष्ठ केसरी के समान; करम् नकम्–हाथ के नाखून; पल्–दाँत; अन्नवै–जो हैं वे; मिन् उक–दीप्ति बिखेरते हैं और; कान्तुकिन्ऱान्–उबलता है; नकु तोळवन्–उल्लासकारी कंधों वाला; मुरपन्–मुरभ है; अवन्–वह; वरम् पन्नकम् तन्नैयुम्–पर्वत-वरों को; वेण्टिन्–चाहे तो; वेरोटु वाङ्कुम्–जड़ के साथ उखाड़ लेगा; चरपन्–शरभ है; इवन्–यह; चतवलि आय–शतबली नाम का; तक्कोन्–सुयोग्य वीर है। ८२९

उधर मुरभ देखिए। सशक्त सिंह-सदृश खड़ा है। उसके दाँत

और नाखून तेज बिखेर रहे हैं। रोष के साथ खड़े उसके कन्धे शोभायमान हैं। उधर वह शरभ है, जो अनेक गिरिवरों को जड़ से उखाड़ ले सकता है। पास शतवली है, जो सुयोग्य वीर है। ८२९

मून्ऱु कण्णिल तायिनु मून्ऱॅयि लॅरित्तोन्
पोन्ऱु निन्ऱवन् पनशनिप् पोर्क्कॅलान् दाने
एन्ऱु निन्ऱव निडबन्मऱ् ऱिवन्ऱनक् कॅदिरे
तोन्ऱु हिन्ऱवन् शुशेडणन् तीयॊडुन् दॊडर्न्दोन् 830

मून्ऱु कण् इलन्–त्रिनेत्र नहीं है; आयिनुम्–तो भी; मून्ऱु ऍयिल्–त्रिपुर; ऍरित्तोन् पोन्ऱु–जलानेवाले शिव के समान; निन्ऱवन्–जो खड़ा है; पनचन्–पनश है; इ पोर्क्कु ऍलाम्–इस सारे युद्ध का; ताने एन्ऱु–स्वयं भार लेकर; निन्ऱवन्–जो खड़ा है; इटपन्–ऋषभ है; मऱ्ऱु–और; इवन् तनक्कु ऍतिरे–इसके सामने; तोन्ऱुकिन्ऱवन्–जो दिखायी देता है; तीयॊटुन् तॊटर्न्तोन्–अग्नि के साथ लगा रहनेवाला; चुचेटणन्–सुषेण है। ८३०

पनश देखिए, जो त्रिनेत्र न होने पर भी त्रिपुरान्तक के समान दिखता है। इस युद्ध का सारा भार अपनाकर जो वहाँ रहता है, वह ऋषभ है! इसके सामने जो है वह सुषेण है जो अग्निदेव से लगा हुआ है। ८३०

वॅदर्हॊळ् कुन्ऱॅलाम् वेरॊडुम् वाङ्गिमे दिनियै
मुदुहु नॊय्दॆन्नच् चॅय्दवन् कनलैयु मुनिवोन्
कदिर वन्महऱ् किडमरुङ् गेनिन्ऱ काळै
तदिमु हन्नवन् शङ्गनॆन् ऱुरैक्किन्ऱ शिङ्गम् 831

कतिरवन् मकऱ्कु–सूर्य-पुत्र के; इटमरुङ्के निन्ऱ–बायीं ओर स्थित; काळै–ऋषभ (सम वीर); वॅतिर् कॊळ्–बाँसों-सहित; कुन्ऱु ऍलाम्–सभी पर्वतों को; वेरॊटुम् वाङ्कि–जड़ के साथ उखाड़कर; मेतिनियै–भूमि की; मुतुकु–पीठ को; नॊय्तु ऍन–हलका; चॅय्तवन्–बनानेवाला; कनलैयुम् मुनिवोन्–अग्नि से भी जो क्रोध दिखा सकता है; ततिमुकन्–दधिमुख है; अवन्–(उधर) वह; चङ्कन् ऍन्ऱु–शंख ऐसा; उरैक्किन्ऱ–कहलानेवाला; चिङ्कम्–सिंह है। ८३१

किरणमाली के पुत्र के बायीं ओर जो खड़ा है वह ऋषभ (-सम वीर) दधिमुख है, जो वंशतरुसंकुल सारे पर्वतों को उखाड़ दे, भूमि की पीठ को भार-हीन कर दे और आग पर भी रोष प्रगट कर सके। उधर शंख नामक सिंह है। ८३१

अण्णल् केळिवर्क् कुवमैयु मळवुमोन् ऱुळदो
विण्णिन् मीनिनैक् कुणिप्पिनुम् वेलैयुण् मीनै
ऍण्णि नोक्किनु मिक्कडन् मणलिनै यॆल्लाङ्
गण्णि नोक्किनुङ् गणक्किलै यॆन्ऱनन् काट्टि 832

अण्णल्–महिमावान्; केळ्–सुनिए; काट्टि–वानर-सेना को दिखाकर; इवर्क्कु–इन वीरों की; उवमैयुम्–उपमा और; अळवुम्–माप; ऑन्ऱु उळतो–कुछ है क्या; विण्णिन् मीनिन्–आकाश के नक्षत्रों को; कुणिप्पितुम्–गुनना भी हो; वेलै उळ मीनै–समुद्र के अन्दर की मछलियों को; ऍण्णि नोक्कितुम्–गिनकर भी देखें; इक्कटल् मणलिनै ऍल्लाम्–इस समुद्र के बालुओं को भी; कण्णि नोक्कितुम्–विचारकर देखें तो भी; कणक्कु इलै–(इन वानरों का कोई) हिसाब नहीं है; ऍन्ऱनन्–ऐसा कह सुनाया सारण ने। ८३२

महिमामय ! देखिए —कहकर सारण ने सेना दिखायी। कहा कि इन वानर वीरों की उपमा या उनकी गिनती है क्या ? नहीं। आकाश के नक्षत्र गिने जा सकें या समुद्र की मछलियाँकूती जा सकें। यह भी संभव है कि समुद्र के बालुओं को गिना जा सके। पर इन वानरों का हिसाब नहीं लगाया जा सकेगा। ८३२

शिनङ्गॊळ् तिण्डिऱ लरक्कनुम् शिऱुनहै शॆय्दान्
पुनङ्गॊळ् पुन्ऱलैक् कुरङ्गिनैप् पुहळ्दि पोलाम्
वनङ्ग ळुम्बडर् वरैतोऱुन् दिरिदरु मानिन्
इनङ्ग ळुम्बल वॆन्शॆयु मरियिनै यॆन्ऱान् 833

चिनम् कॊळ्–क्रोध-भरे; तिण् तिऱल्–प्रचण्ड बलशाली; अरक्कनुम्–राक्षस (रावण) ने भी; चिऱु नकै–मन्दहास; चॆय्तात्–किया; पुनम् कॊळ्–पिछवाड़े (बागों) में घूमनेवाले; पुन् तलै–छोटे सिरों के; कुरङ्किनै–वानर की; पुकळ्ति पोलाम्–प्रशंसा करने चले क्या; वनङ्कळुम्–वनों और; पटर् वरै तोऱुम्–फैले हुए पर्वतों में; तिरितरुम्–घूमनेवाले; मानिन् पल इनङ्कळुम्–हरिणों के विविध झुंड; अरियिनै–सिंह का; ऍन् चॆयुम्–क्या करेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। ८३३

विकट बलशाली रावण को यह सुनकर बड़ा क्रोध आया। हलकी हँसी के साथ उसने पूछा— पिछवाड़े के बागों में घूमने-फिरनेवाले छोटे सिरों के वानरों की भी प्रशंसा करोगे क्या ? वनों में और पर्वतों पर घूमनेवाले अनेक हरिणसमूह भी एक सिंह का क्या कर सकेंगे ? । ८३३

11. महुडबङ्गप् पडलम् (मुकुट-भंग पटल)

ऍन्नुम् वेलैयि निरावणऩ् किळवलै यिरामन्
कन्नि मामदिल् नहर्निन्ऱु नम्वलि काण्बान्
मुन्नि वानिनु मूडिनिन् ऱार्हळै मुऱैयाल्
इन्न नामत्त रिन्नैयरॆन् ऱियम्बुदि यॆन्ऱान् 834

ऍन्नुम् वेलैयिन्–उधर जब वह यह कह रहा था तब; इरामन्–श्रीराम ने; इरावणऩ्कु इळवलै–रावण के छोटे भाई से; नम् वलि–हमारा बल; काण्पान्–देखने

हेतु; मुऩ्ति–सोचकर; कत्ति मा मतिल्–अभेद्य बड़े प्राचीरों से वलयित; नकर् निऩ्ऱु–लंका नगर में रहकर; वातितुम्–आकाश को भी; मूटि निऩ्ऱार्कळै–आच्छादित करते हुए जो खड़े हैं उनके सम्बन्ध में; मुऱैयाल्–यथाक्रम; इऩ्ऩ नामत्तर्–किन नामों के; इऩ्ऩैयर्–कैसे; इयम्बुति–कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–ऐसा पूछा। ८३४

इधर रावण यह कह रहा था, तो उधर श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि हमारी सेना के बल को देखने के लिए जो आकाश पर छाते हुए अभेद्य बड़े प्राचीरों से वलयित लंका नगर में खड़े हैं वे कौन हैं ? उनके नाम क्या हैं ? और वे कैसे हैं ? यह सब बताओ ? । ८३४

नाऱु तऩ्ऩ्गुलक् किळैयॆला नरहत्तु नडुवाऩ्
शेऱु शॅय्दुवत् तानुम्बर् तिलोत्तमै मुदलाक्
कूऱु मङ्गैयर् कुळात्तिडैक् कोबुरक् कुऩ्ऱत्तु
एऱि निऩ्ऱवऩ् पुऩ्ऱॊऴि लिरावण ऩॅऩ्ऱाऩ् 835

कोपुरम् कुऩ्ऱत्तु–गोपुर रूपी पर्वत पर; एऱि–चढ़कर; उम्पर्–देवलोक की; तिलोत्तमै मुतला–तिलोत्तमा आदि; कूऱुम्–प्रकीर्तित; मङ्कैयर्–अप्सराओं के; कुळात्तिटै–समूह के पास; निऩ्ऱवऩ्–जो खड़ा है उसी ने; तऩ् कुलकिळै–अपने कुल की शाखाओं रूपी; नाऱु ऍलाम्–छोटे अंकुरों को; नरकत्तु नटुवात्–नरक में रोपने हेतु; चेऱु चॅय्तु वैत्तात्–मिट्टी नरम और गीली रखी है वही; पुऩ् तॊऴिल्–नीचकर्म; इरावणऩ्–रावण है; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (विभीषण ने)। ८३५

विभीषण ने उत्तर में कहा कि उधर पर्वत-सम गोपुर में देवलोक की तिलोत्तमा आदि प्रथित अप्सराओं के समूह-मध्य जो खड़ा है, वही नीचकर्म रावण है, जिसने अपने कुल के सारे अंकुरों को नरक में रोपने के लिए नरक की मिट्टी को नरम और सजल पंक में परिवर्तित कर रखा है ! । ८३५

करुदि मऱ्ऱॊऩ्ऱु कऴऱुदऩ् मुऩ्ऩम्विऴिक् कऩल्हळ्
पॊरुदु पुक्कऩ मुऩ्दुऱच् चूरियऩ् पुदल्वऩ्
शुरुदि यऩ्ऩवऩ् शिवन्दनऱ् कऩियॆऩ्ऱु शॊल्लप्
परुदि मेऱ्पण्डु पाय्न्दव ऩामॆऩप् पाय्न्दाऩ् 836

करुति–विचारकर; मऱ्ऱॊऩ्ऱु–दूसरा वाक्य; कऴऱुतल् मुऩम्–कहने से पूर्व; चूरियऩ् पुतल्वऩ्–सूर्य का पुत्र; विऴि कऩल्कळ्–आँखों के अंगारे; पॊरुतु–होड़ लगाकर; मुऩ्तुऱ–पहले; पुक्कऩ–गये; चिवन्त–लाल (पक्व); नल् कऩि–श्रेष्ठ फल; ऍऩ्ऱु चॊल्ल–ऐसा कहते हुए; पण्टु–पहले; परुति मेल् पाय्न्तवऩ्–जो सूर्य पर झपटा था; चुरुति अऩ्ऩवऩ् आम्–जो वेद-सम है उस हनुमान; ऍऩ–के समान; पाय्न्ताऩ्–(रावण पर) झपटा। ८३६

(यह सुग्रीव भी सुन रहा था।) विभीषण विचारकर दूसरा शब्द

बोले, इसके पहले ही सूर्य-पुत्र, जिनकी आँखों से कोपाग्नि के कण होड़ लगाते हुए निकलने लगे, ऊपर उस हनुमान के समान झपटा जो लाल (पक्का) और श्रेष्ठ फल समझकर पहले कभी सूर्य पर झपटा था। ८३६

शुदैयत् तोङ्गिय शुवेलत्ति नुच्चियैत् तुऱन्द
शिदैयत् तिण्डिऱ् लिरावणक् कुन्ऱिडैच् चॅत्ऱान्
तदैयच् चॅङ्गरम् परप्पिय तन्बॅरुन् दादै
उदयक् कुन्ऱिनिन् ऱोरुहुन्ऱिऱ् पाय्न्दव नॊत्तान् 837

चुतैयत्तु–नक्षत्रमण्डल तक; ओङ्किय–उन्नत; चुवेलत्तिन्–सुवेल पर्वत की; उच्चियै तुऱन्तु–चोटी को छोड़कर; इरावण कुन्ऱिटै–रावण रूपी पर्वत पर; तिण् तिऱल्–विकट बल; चितैय–मिट जाए ऐसा; चॅन्ऱान्–जो गया; चॅम् करम्–लाल किरणों को; ततैय–घने रूप से; परप्पिय–फैलानेवाले; तन् पॅरु तातै–उसके महान् पिता; उतय कुन्ऱिन् निन्ऱु–उदयाचल पर से; ओरु कुन्ऱिल्–दूसरे पर्वत पर; पाय्न्तवन्–झपटता; ऑत्तान्–जैसा लगा। ८३७

नक्षत्रमण्डल तक उन्नत सुवेल पर्वत से रावण रूपी दूसरे पर्वत पर जो रावण के बल को मिटाने के लिए झपटा वह सुग्रीव घनी लाल किरणें फैलानेवाला उसका पिता (सूर्य) एक (उदय) गिरि से दूसरी गिरि पर जाता-जैसे लगा। ८३७

पळ्ळम् बोय्प्पुहुम् किरियॆनप् पडियिडैप् पडिन्दु
तळ्ळुम् पॊऱ्किरि शलिप्पुऱक् कोबुरञ् जाऱ्न्दान्
वॆळ्ळम्बोऱ् कण्णि यऴुदलु मिरावणन् मेऱ्ऱन्
उळ्ळम् बोऱ्चॆलुङ् गऴुहिनुक् करशनु मॊत्तान् 838

पळ्ळम् पोय्–गहराई में जाकर; पुकुम् किरि–धँसनेवाली गिरि; ॲन–के समान: पटि इटै पटिन्तु–भूमि पर धंस जाए ऐसा; तळ्ळुम्–जो ढकेला गया वह; पॊन् किरि–स्वर्णमय (त्रिकूट) पर्वत; चलिप्पु उऱ–चंचल बने ऐसा; कोपुरम्–गोपुर पर; चार्न्तान्–आकर स्थित; इरावणन् मेल्–रावण पर; वॆळ्ळम् पोल् कण्णि–प्रवाह (बहाती)-सी आँखों वाली सीता के; अऴुतलुम्–रोने पर; तन् उळ्ळम् पोल्–अपने मन के समान; चॆलुम्–चलनेवाले; कऴुकिनुक्कु अरचनुम्–गीधों के राजा के; ऑत्तान्–समान भी लगा। ८३८

(समुद्र की) गहराई में घुसते (मैनाक) पर्वत के समान भूमि में धँसे हुए त्रिकूट पर्वत को चंचल बनाते हुए गोपुर पर जो चढ़ा था उस रावण पर सुग्रीव गीधों के राजा जटायु के समान जा रहा था, जो सीता को वाढ़ के समान अश्रुजल प्रवहित करता जानकर तुरन्त झपटे थे। ८३८

करिय कॊण्डलैक् करुणैयङ् गडलिनैक् काणप्
पॆरिय कण्गळ्पॆऱ् ऱुवक्कितुऱ् अरम्बैयर् पिऱरुम्

उरिय कुन्ऱिडै युरुमिडि वीऴ्दलु मुलैवुऱ्ऱु
इरियल् पोयिन मयिऱ्कुल मामॅन इरिन्दार् 839

करिय कॊण्डलै–मेघश्याम को; अम् करुणै कटलिनै–सुन्दर करुणासागर को; काण–देखने हेतु; वॅरिय कण्कळ् पॅऱ्ऱु–बड़ी आँखें पाकर; उवक्कित्ऱ–तुष्ट; अरम्पैयर् पिऱरुम्–अप्सराएँ और अन्य; उरिय कुन्ऱिटै–अपने पर्वत पर; उरुम् इटि–भयंकर वज्र का; वीऴ्तलुम्–पात होने पर; उलैवुऱ्ऱु–अस्त-व्यस्त होकर; इरियल् पोयिन–जो भाग चले; मयिल् कुलम् आम् ॲन–उन मयूरकुलों के समान; इरिन्तार्–भाग चलीं। ८३६

मेघश्याम, करुणासागर श्रीराम को देखने के लिए अपने बड़ी आँखों के सौभाग्य पर इतराती हुई जो खड़ी थीं, वे अप्सराएँ और अन्य रमणियाँ ऐसे भाग गयीं, जैसे अपने पर्वत पर डरावनी गाज के गिरते ही अस्त-व्यस्त होकर मयूरवृन्द भाग जाते हैं। ८३९

कालविरुळ् शिन्दुकदि रोन्मदलै कण्णुऱ्ऱु
एलवॅदिर् शॅन्ऱड लिरावणनै यॅय्दि
नीलमलै मुन्कयिलै निन्ऱदॅन निन्ऱान्
आलविड मन्ऱिवर निन्ऱशिव नन्नान् 840

कालम् इरुळ्–(रात के) काल के अंधकार को; चिन्तु–मिटानेवाले; कतिरोन् मतलै–किरणमाली का पुत्र; कण् उऱ्ऱु–(रावण को) देखकर; अटल् इरावणनै–ताक़तवर रावण के; ॲय्ति–पास जाकर; एल ॲतिर् चॆन्ऱु–ठीक सामने पहुँचकर; आल विटम्–हलाहल का विष; अन्ऱिवर–उग्रता के साथ निकला तब; निन्ऱ चिवन् अन्नान्–जो उसके सामने अटल रहे उन शिव के समान; नील मलै मुन्–नीलगिरि के सामने; कयिलै निन्ऱतु ॲन–(श्वेत) कैलास पर्वत खड़ा हो जैसे; निन्ऱान्–खड़ा हो गया। ८४०

रात के काल के अन्धकार के नाशक किरणमाली का पुत्र सुग्रीव रावण को देखकर, बलवान उसके ठीक सामने जाकर क्षीरसागर-मथन के अवसर पर सक्रोध निकल आये हलाहल विष के सामने स्थित शिवजी के समान खड़ा रहा तो वह नीलगिरि के सामने स्थित श्वेत (कैलास) पर्वत के समान लगा। ८४०

इत्तिशयिन् वन्दपॊरु ळॆन्नॆन वियम्बान्
तत्तियॅदिर् शॅन्ऱुतिशै वॅन्ऱुयर् तडन्दोळ्
पत्तिनॊडु पत्तुडैय वन्नुडल् पदैप्पक्
कुत्तिन नुरत्तिनिमिर् कैत्तुणै कुळिप्प 841

इ तिचैयिन्–इस दिशा में (इस ओर); वन्त पॊरुळ्–जो आये उसका अर्थ; ॲन्–क्या है; ॲन–ऐसा पूछने पर; इयम्पान्–(उत्तर) न कहते हुए; तत्ति–उछलकर; ॲतिर् चॆन्ऱु–सामने जाकर; तिचै वॆन्ऱु–दिग्विजयी; उयर्–उन्नत;

तट तोळ्-विशाल कंधे; पत्तिन्नोट्टु पत्तु उटैयवत्-(जिसके) दस के दस (बीस) थे उसके; उटल् पतैप्प-शरीर को कँपाते हुए; निमिर्-उठे हुए; कै तुणै-हाथों का जोड़ा; कुळिप्प-खूब धँस जाए ऐसा; उरत्तिन्-छाती में; कुत्तितत्-घूँसा मारा (सुग्रीव ने)। ८४१

रावण ने उससे पूछा कि इस ओर आने का अर्थ क्या है ? सुग्रीव ने कोई उत्तर नहीं दिया पर उछलकर समक्ष गया और बीस दिग्विजयी उन्नत विशाल कन्धों वाले उस रावण के वक्ष पर अपने उठे हुए हाथों से ऐसा घूँसा मारा कि रावण का शरीर काँप गया और उसके हाथ उसमें धँस गये। ८४१

तिरुहिय शिनत्तोडु शॅरुत्तॅरि विळित्तान्
ऑरुपदु दिशॅक्कणु मॉलित्तवॊलि यॊप्पत्
तरुवन्न मॅन्नप्पुडै तळैत्तुयर् तडक्कै
इरुपदु मॅडुत्तुरु मिडित्तॅन्न वडित्तान् 842

तिरुकिय-ऐंठे; चित्तत्तोटु-क्रोध के साथ; चॅरुत्तु-कोप करके; ऍरि विळित्तान्-आग निकालते हुए घूरा; तरुवतम् ऍत्त-तरुमय वन के समान; पुटै तळैत्तु-पार्श्व में पुष्ट रूप से उगे; उयर्-उन्नत; तट कै-विशाल हाथ; इरुपतुम् ऍटुत्तु-बीसों को उठाकर; ऑरुपतु तिचैक्कणुम्-दसों दिशाओं में; ऑलित्त ऑलि-प्रतिध्वनित ध्वनि; ऑप्प-समान रहे ऐसा; उरुम् इटित्तॅत-वज्र-पात हुआ जैसा; अटित्तान्-पीटा (रावण ने)। ८४२

रावण क्रोधोन्मत्त हो गया। आग्नेय दृष्टि डालते हुए तरुवन के समान पार्श्व में पुष्कल रीति से रहे अपने बीसों हाथों से उसने ऐसा वज्र-पात-सम प्रहार किया, जिसकी गूँज दसों दिशाओं में सम-रूप से प्रतिध्वनित हो रही। ८४२

अडित्तविरल् पट्टवुड लत्तुळि यिरत्तम्
पॊडित्तॅळ वुरुक्कियॅदिर् पुक्कुडल् पॊरुत्तिक्
कडुत्तविशै यिर्कडि दॅळुन्दुकदिर् वेलान्
मुडित्तलैहळ् पत्तिनु मुहत्तिनु मुदैत्तान् 843

अटित्त-पीटती हुई; विरल् पट्ट-उँगलियाँ जहाँ लगीं; उटलत्तु उळि-उस शरीर से; इरत्तम्-रक्त; पॊटित्तु ऍळ-बूँद-बूँद करके निकला; उरुक्कि-क्रोध करके; ऍतिर् पुक्कु-सामने जाकर; उटल् पॊरुत्ति-शरीर से शरीर लगाकर; कटुत्त विचैयिल्-बड़ी तेजी से; कटितु ऍळुन्तु-जल्दी उठकर; कतिर् वेलान्-तेजोमय भाले वाले के; मुटि तलैकळ् पत्तितुम्-मुकुटमंडित दसों सिरों और; मुकत्तितम्-मुख पर; उतैत्तात्-लात मारी (सुग्रीव ने)। ८४३

जहाँ प्रहार से उंगलियाँ लगी थीं, वहाँ सुग्रीव के शरीर से रक्त

बूंद-बूंद करके वह निकला। वह गुस्सा करके उनके समक्ष गया और शरीर से शरीर टकराकर ऊपर उठा और अपने पैरों से उज्ज्वल माला-धारी रावण के मुकुटमण्डित सिरों और मुखों पर लात मारी। ८४३

उदैत्तव नडित्तुणै पिडित्तोरु करत्तिल्
पदैत्तुलै वुरप्पल तिऱत्तिहल् परप्पि
मदक्करियै युऱ्ऱरि नॆरित्तॆन्न मयक्किच्
चुदैत्तल निडैक्कडि दडिक्कॊडु तुहैत्तान् 844

उतैत्तवन्–लात मारनेवाले के; अटि तुणै–चरणद्वय को; ऒरु करत्तिल् पिटित्तु–एक हाथ से पकड़कर; पतैत्तु उलैवु उऱ–छटपटाकर दुःखी हो जाए ऐसा; पल तिऱत्तु–विविध प्रकार के; इकल् परप्पि–सामर्थ्य को दिखाते हुए; अरि–सिंह; मत करियै–मत्त गज को; उऱ्ऱु नॆरित्तु अॅन–पकड़कर दबोचता हो ऐसा; मयक्कि–मूर्च्छित करके; अटि कॊंटु–पैरों से; कटितु–तीव्र गति से; चुतै तलत्तिटै–चूने से पटे हुए तल पर; तुकैत्तान्–डालकर रौंदा। ८४४

रावण ने लात मारते हुए सुग्रीव को अपने एक हाथ से कसकर पकड़ा और सिंह मत्तगज को मारता हो, ऐसा अपने विविध प्रकार के मल्लयुद्ध-सामर्थ्य का प्रयोग करके चूना-लगी फ़र्श पर डालकर उसने जल्दी-जल्दी सुग्रीव को मूर्च्छित करते हुए पैरों से रौंद डाला कि सुग्रीव छटपटाया और वेदना से व्यग्र हुआ। ८४४

तुहैत्तव नुडऱ्पॊऱै शुरुक्कॊळ विरुक्कित्
तहैप्पॆरु वलत्तॊडु तलत्तिडै यमुक्कि
वहैप्पिऱै निऱत्तॆयि ऱुडैप्पॊऱि वळक्किक्
कुहैप्पॊऴि पुदुक्कुरुदि कैक्कॊडु कुडित्तान् 845

तकै–योग्य; पॆरु वलत्तॊटु–बड़े ज़ोर के साथ; तलत्तु इटै–फ़र्श पर; अमुक्कि–दबोचकर; वकै पिऱै निऱत्तु–विविध चन्द्रकला-सम; ॲयिऱु उटै–दाँतों को काटकर; पॊऱि वळक्कि–अंगारे छुड़ाते हुए; तुकैत्तवन्–जिसने रौंदा उसका; उटल् पॊऱै–शरीर-भार; चुरु कॊळ–जल जाए ऐसा; इऱुक्कि–कसकर पकड़कर; कुकै पॊऴि–(रावण के मुख रूपी) गुहा से निकलनेवाले; पुतु–ताज़े; कुरुति–रक्त को; कै कॊटु–हाथ में ले; कुटित्तान्–पिया। ८४५

बहुत उग्रगण्य ज़ोर के साथ अपने विविध वक्र दाँतों को पीसकर अंगारे निकालते हुए जो रावण सुग्रीव को भूमि पर दबोचकर रौंद रहा था, उसको सुग्रीव ने ऐसा धर दबोचा कि उसका शरीर-भार ही झुलस गया और रावण की मुखगुफा से ताज़ा खून बहने लग गया। सुग्रीव ने उस खून को अपने हाथों से उठाकर पिया। ८४५

कैक्कोंडु कुडित्तव नुडऱ्कनह वॅऱ्पैप्
पॅक्कोंडु विडत्तर वॅनप्पलहै पऱ्ऱि
मैक्कोंडु निऱत्तवन् मऱत्तोंडु पुऱत्तिल्
तिक्कोंडु पॉरुप्पुऱ नॅरुप्पोंडु तिरित्तान् 846

कोंटु–क्रूर; मै निऱत्तवन्–अंजन-वर्ण; कै कोंटु–हाथों से (ले); कुटित्तवन्–पीनेवाले सुग्रीव को; उटल्–शरीर रूपी; कतक वॅऱ्पै–कनकगिरि को; पै–फनों और; कोंटु विटम्–भयंकर विष-सहित; अरवु अॅन–सर्प के समान; पल कै पऱ्ऱि–अनेक हाथों से पकड़कर; मऱत्तोंटु–वीरता के साथ; पुऱत्तिल्–पार्श्वों में; तिक्कोंटु–दिशाओं और; पॉरुप्पु उऱ–पर्वतों से टकराए ऐसा; नॅरुप्पोंटु–आग निकालते हुए; तिरित्तान्–घुमाया। ८४६

अंजनवर्ण और क्रूर रावण ने, उसके खून को पीते रहे सुग्रीव के कनकगिरि-से शरीर को फनों और विषसहित सर्प के समान अपने अनेक हाथों से पकड़ा और ऐसा ज़ोर लगाकर घुमाया कि वह दिशाओं और पर्वतों से टकराते हुए घूमा और अंगारे उठकर छितरे। ८४६

तिरित्तव नुरत्तिनुहिर् चॅऱ्ऱुम्वहै कुत्तिप्
पॅरुत्तुयर् तडक्कैहॊ डडुत्तिडै पिडित्तुक्
करुत्तऴि वुऱत्तिरि तिऱत्तॅयिल् कणत्तनऱ्
ऍरित्तवनै यॊत्तव नॅडुत्तहऴि यिट्टान् 847

अनऱु–उस दिन; ऍयिल्–त्रिपुर को; कणत्तु–एक ही क्षण में; ऍरित्तवनै–जिन्होंने जलाया उनके; ऒत्तवन्–सदृश जो रहा उस सुग्रीव ने; तिरित्तवन् उरत्तिल्–घुमानेवाले के वक्ष में; उकिर् चॅऱ्ऱुम् वकै–नख धँस जाएँ इस प्रकार; कुत्ति–घूँसा लगाकर; पॅरुत्तु उयर्–स्थूल, उन्नत; तट कै कोंटु–विशाल हाथों से; अटुत्तु–कसकर; इटै पिटित्तु–कमर पकड़कर; तिरि तिऱत्तु–घूमता रहा उस सामर्थ्य से; करुत्तु अऴिवुऱ–मूर्च्छित करके; ऍटुत्तु–उठाकर; अकऴि इट्टान्–परिखा में डाल दिया। ८४७

त्रिपुरांतक शिव-सदृश सुग्रीव ने घूमते हुए ही उसे घुमानेवाले की छाती पर अपने लम्बे और विशाल हाथों से ऐसा घूँसा मारा कि उसके नाखून उसमें गड़ गये। फिर अपने दीर्घ और विशाल हाथों से उसकी कमर पकड़ लेकर इस दक्षता से आप घूमा कि रावण बेहोश हो गया और सुग्रीव ने उसे खाई में डाल दिया। ८४७

इट्टवनै यिट्टवह ऴिऱ्कडिदि निट्टान्
तट्टवुय रत्तिनि लुरुन्दश मुहत्तान्
ऒट्टवुड नॆयवनुम् वन्दवनै युऱ्ऱान्
विट्टिलर् पुरण्डिरुव रोरहऴिन् वीऴ्न्दार् 848

तट्ट–विशाल; उयरत्तितिल्–ऊँचे तल से; उरुम्–जो तीर पर आया; तचमुकत्तात्–उस दशमुख ने; अकऴिल् कटितित् इट्टवर्त–(जिसने) खाईं में तेजी से डाल दिया उसे; इट्ट–जिसमें डाला था; अकऴिल्–उसी खाईं में; कटितित् इट्टात्–तेजी से फेंक दिया; ओट्ट–शर्त लगाने पर; उटर्त–तुरन्त; अवनुम्–वह भी; वन्तु–आकर; अवर्त उर्रात्–उसके पास पहुँचा; इरुवर्–दोनों; विट्टिलर्–एक-दूसरे को न छोड़ते हुए; पुरण्टु–लोटकर; ओर् अकऴित्–एक खाईं में; वीऴ्न्तार्–गिरे। ८४८

रावण एक ऊँचे तल पर चढ़कर तीर पर चढ़ आया। दशमुख ने (रावण को) खाईं में डालनेवाले सुग्रीव को भी त्वरित गति से खाईं में पटक दिया और ललकारा कि ऊपर आ जाओ तब देखें! वह भी ऊपर आ गया और रावण के समीप पहुँचा। दोनों आपस में गुँथ गये और बद्ध होकर ज़मीन पर लोटते-लोटते खाईं के एक भाग में गिर गये। ८४८

विऴ्न्दतर् शुऴ्त्र्त्तर् वॆहुण्डत्तर् तिरिन्दार्
अऴ्न्दित्त रऴ्न्दिल रहत्रिल रहन्ऱार्
ऍऴ्न्दत्त रॆऴ्न्दिल रॆदिर्न्दत्तर् मुदिर्न्दार्
ऒऴिन्दत्त रॊऴिन्दिल रुणर्न्दिलर्ह ळॊत्ऱुम् 849

विऴ्न्तवर्–गिरे वे; वॆकुण्टत्तर्–कोप करके; चुऴत्रत्तर् तिरिन्तार्–चक्कर काटते फिरे; अऴुन्तित्तर्–धँसे; अऴुन्तिलर्–न धँसे; अकत्रिलर्–हटे नहीं; अकत्ऱार्–हटे; ऍऴुन्तत्तर्–उठे; ऍऴुन्दिलर्–विना उठे ही; ऍतिर्त्तु नित्ऱुम्–भिड़ते रहे; ऒऴिन्तत्तर्–विरत हुए; ऒऴिन्तिलर्–विरत नहीं हुए; ऒत्ऱुम् उणर्न्तिलर्कळ्–किसी की सुधि न करते; मुतिर्न्तार्–(लड़ने में) भूले रहे। ८४९

खाईं में गिरकर रोष के साथ दोनों घूमे। कभी डूबते; फिर विना डूबे ऊपर आ जाते। कभी हट जाते; कभी परस्पर गुँथ जाते। कभी ऊपर उठते, कभी नीचे ही रहते। कभी युद्धविरत रहते, कभी युद्धरत रहते। इस भाँति वे बेसुध होकर युद्ध में भूले रहे। (८४२वें पद से लेकर ८४९वें तक के पद 'अंतादि छन्द' के हैं। यानी पहले पद्य का अन्तिम शब्द बाद के पद्य का आदि बनता हैं।)। ८४९

अन्दर वरुक्कन्महऩ् ताऴियह ळाहच्
चुन्दर मुडॆक्करम् वलिप्पवॊर् शुऴिप्पट्टु
ऍन्दिर मॆऩत्तिरि यिरक्कमि लरक्कऩ्
मन्दर मॆऩक्कडॆयुम् वालियॆयु मॊत्तात् 850

अन्तर अरुक्कत्–आकाशचारी सूर्य का; मकत्–पुत्र; अकऴ्–खाईं; आऴि आक–समुद्र जो रही; चुन्तरम् उटॆ–सौंदर्यपूर्ण; करम् वलिप्प–हाथों से मथकर; चुऴि पट्टु–एक भँवर में फँसकर; ऍन्तिरम् ऍन–यंत्र के समान; तिरि–घूमनेवाले; इरक्कमिल् अरक्कत्–निर्दय राक्षस; मन्तरम् ऍन–मन्दर बना; कटॆयुम् वालियैयुम्–मथनेवाले वाली के; ऒत्तात्–समान लगा। ८५०

आकाशचारी सूर्य का सूनु सुग्रीव उस स्थिति में वाली के समान लगा, जब खाईं ही समुद्र बनी; और सुग्रीव के सबल हाथों से घुमाने के कारण भँवर में घूमनेवाला निर्दय राक्षस मन्दर पर्वत बना लगा। ८५०

ऊरुपडु शॆम्बुत्त लुडऱ्क णिळिहिऩ्ऱ
आऱुपडर् हिऩ्ऱऩ वॆन्नप्पडर वत्ताऱ्
पारुपॊरु हिऩ्ऱऩ परुन्दिवै यॆन्नप्पोय्
एऱिऩर् विशुम्बिडै यिरिन्द वुलहॆल्लाम् 851

ऊरु पटु–घाव-लगे; उटल् कण्–शरीर से; इळिकिऩ्ऱ–निकलनेवाला; चॆम् पुत्तल्–लाल रक्त; आऱु पटर्किऩ्ऱऩ–नदियाँ बहतीं; ॲन्न–जैसे; पटर–बहा; अत्ताऱ्–वे; पारु परुन्तु–गीध और बाज; इवै पॊरुकिऩ्ऱऩ–ये आपस में लड़ते हैं; ॲन्न–ऐसा; पोय्–जाकर; विचुम्पु इटै–आकाश में; एऱिऩर्–चढ़े; उलकु ॲल्लाम्–सारा लोक; इरिन्त–(अस्त-व्यस्त हो) भागा। ८५१

दोनों के शरीर पर घाव लग गये और उनसे रक्त प्रवहित हो रहा था। वे बाज़ों और गीधों के समान आपस में टकराये। वे आकाश में चढ़ गये। लोकवासियों ने यह देखा तो डर के मारे वे अस्त-व्यस्त होकर भाग खड़े हुए। ८५१

तूरनॆडु वाऩिऩ्मलै युज्जुड रवऩ्शेय्
कारिनॊडु मेरुनिहर् कायशिऩ वरक्कऩ्
तारुडैय तोळ्हळ्पल वुन्दळुव निऩ्ऱाऩ्
ऊरिनॊडु कोळ्कदुवु तादैयैयु मॊत्ताऩ् 852

तूरम् नॆटु वाऩिऩ्–दूर लम्बे आकाश में; मलैयुम्–लड़नेवाला; चुटरवऩ् चेय्–किरणमाली का पुत्र; कारिनॊटु मेरु निकर्–मेघ (वर्ण) और मेरु-सम रूपवान; काय् चिऩ–उग्र क्रोधी; अरक्कऩ्–राक्षस के; तारुटैय तोळ्कळ्–माला-सहित भुजाओं से; पलवुम् तळुव निऩ्ऱाऩ्–पकड़ा हुआ रहा; ऊरिनॊटु–परिवेश के साथ; कोळ् कतुवु–ग्रहग्रस्त; तातैयैयुम् ऒत्ताऩ्–अपने पिता के समान रहा। ८५२

दूर आकाश में लड़नेवाला किरणमाली का पुत्र रंग में मेघ-सम और आकार में मेरु-सदृश रहे उग्र क्रोधी रावण के मालाधारी हाथों के क्रोड में फँसा रहा। तब वह परिवेश तथा (राहु-) ग्रह की पकड़ में रहनेवाले उसके ही पिता के समान लगा। ८५२

पॊङ्गमर् विशुम्बिडै युडऩ्ऱुपॊरु पोळ्दिल्
शॆङ्गदि रवऩ्शिरु वऩैत्तिरळ् पुयत्ताल्
मङ्गलिल् वयङ्गॊळि मऱैत्तव लरक्कऩ्
वॆङ्गदिर् करन्ददॊरु मेहमॆऩ लाऩाऩ् 853

विचुम्पु इटै–आकाश में; उटत्रु–विरोध करके; पोङ्कु अमर्–आवेश के युद्ध में; पोरु पोळुतिल्–लड़ते समय; चॅम् कतिरवन्–लाल किरणों वाले सूर्य के; चिरुवनै–लड़के को; तिरळ् पुयत्ताल्–पुष्ट कंधों से; मङ्कल् इल्–अभेद; वयङ्कु ऑळि–व छविमय प्रकाश को; मरैत्त–छिपानेवाला; वल् अरक्कन्–बलवान राक्षस; वॅम् कतिर्–तापक किरणों के सूर्य को; करन्ततु–छिपानेवाले; ओर् मेकम्–एक मेघ; ॲन्नल्–के समान; आनान्–बना (लगा)। ८५३

जब वे आकाश में वैर दिखाते हुए खौलते मन के साथ लड़ रहे थे, तब लाल किरणों के स्वामी सूर्य के ढोटे, उस अमंद तेजोवान को रावण ने अपने कन्धों से ढँक लिया था। तब वह उस मेघ के समान लगा, जिसने प्रचण्ड किरणमाली को आच्छादित कर लिया हो। ८५३

नूपुर मडन्दैयर् किडन्दलऱ नोनार्, मापुर मडङ्गलु मिरिन्दयर वन्ऱाळ्
मेपुर मडङ्गलॅन्न वॅङ्गदिर वन्शेय्, कोपुर मडङ्ग विडियत्तनि कुदित्तान् 854

नूपुरम् मटन्तैयर्–नूपुरधारिणी; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; किटन्तु–गिरकर; अलऱ–चिल्लायीं; नोनार्–शत्रुओं का; मा पुरम् अटङ्कलुम्–बड़ा नगर सारा; इरिन्तु अयर–अस्त-व्यस्त हो शिथिल पड़ा; वल् ताळ्–सशक्त पैरों और; मे पुरम्–ऊपरी भाग के; मटङ्कल् ॲन्न–सिंह के रूप में जो रहे उन (विष्णु) के समान; वॅम् कतिरवन् चेय्–उष्णकिरण का पुत्र; कोपुरम् अटङ्क–सारा गोपुर; इटिय–टूट जाए, ऐसा; तनि कुतित्तान्–अलग कूद गया। ८५४

नूपुरधारिणी स्त्रियाँ भूमि पर गिरकर चिल्ला उठीं। शत्रु का सारा बड़ा नगर अस्त-व्यस्त हो गया। तब नीचे के भाग में पैरों, बीच में मानव शरीर और सिर के भाग में सिंह का रूप लिये उदित हुए नरसिंह के समान गोपुर को चूर करते हुए सुग्रीव नीचे कूदा। ८५४

ऑन्ऱुऱ विळुन्दवुरु मैत्तॉडर वोडा
मिन्ऱॅरि यॅयिऱ्ऱिनॉरु मेहम्विळु मॅन्नत्
तिन्ऱिडुवॅ नॅन्ऱॅळु शिनत्तिह लरक्कन्
पिन्ऱॉडर वन्दिरु करत्तुणै पिडित्तान् 855

ऑन्ऱुऱ–एक साथ; विळुन्त–जो गिरा; उरुमै तॉटर–गाज का पीछा करके; ओटा–दौड़कर; मिन् ॲयिऱ्ऱिन् तॅरि–बिजली के समान दाँतों के साथ दिखनेवाला एक मेघ; विळुम्ॲन्न–गिरा जैसे; तिन्ऱिटुवॅन्–खा लूँगा; ॲन्ऱु–कहकर; ॲळु चिनत्तु–उठे क्रोध के; इकल् अरक्कन्–वैरी राक्षस ने; पिन् तॉटर वन्तु–पीछा करते आकर; इरु करम् तुणै–बड़े हाथों के जोड़े को; पिटित्तान्–पकड़ लिया। ८५५

उसके साथ रावण भी कूदा। तब ऐसा लगा कि वज्र और मेघ एक साथ गिरे हों। ऐसे गिरकर वज्र का पीछा करते मेघ जाता हो जैसा विद्युत्-से दाँतों वाले मेघ-सम और वर्धनशील क्रोधोत्तप्त रावण ने 'खाऊँगा' कहते हुए उसका पीछा किया और उसके दोनों हाथों को पकड़ लिया। ८५५

वन्दवनै निन्रवन् वलिन्दॅदिर् मलैन्दान्
अन्दहत्तु मज्जिड निलत्तिडै यरैन्दान्
ऍन्दिर मॆत्तक्कडि दॆडुत्तव नॆरिन्दान्
कन्दुह मॆत्तक्कडि दॆळुन्दॅदिर् कलन्दान् 856

नित्रवन्–जो खड़ा रहा सुग्रीव; वन्तवनै–आये हुए से; वलिन्तु–जोर से; ऍतिर् मलैन्तान्–आगे आकर लड़ा; अन्तकत्तुम्–यम; अञ्चिट–दहल जाए ऐसा; निलत्तिटै–भूमि पर; अरैन्तान्–पटक दिया; अवन्–उस (रावण) ने; ऍन्तिरम् ऍत्त–यंत्रचालित मूर्ति के समान; कटितु–शीघ्र; ऍटुत्तु ऍरिन्तान्–ले फेंक दिया; कन्तुकम् ऍत्त–कन्दुक के समान; कटितु ऍळुन्तु–शीघ्र उछलकर; ऍतिर् कलन्तान्–सामने आकर भिड़ा। ८५६

सुग्रीव ने खड़ा होकर आगत रावण से युद्ध किया। पकड़कर ऐसा भूमि पर पटका कि यम भी दहल उठा। रावण ने भी यन्त्रचालित प्रतिमा के समान उसको उठा फेंका। वह सुग्रीव कन्दुक के समान उछला और आकर गुँथ गया। ८५६

पडिन्दत मरन्दरै पहिर्न्दत परप्पुम्
कॊडुञ्जिन मुदिर्न्दतर् उरत्तिन् मिशैकुत्त
नॆडुञ्जुवर् पिळन्दत नॆरिन्दनिमिर् कुन्रम्
इडिन्दत तहर्न्दत विलङ्गैमदि लॆङ्गुम् 857

कॊट्टु चितम्–उग्र कोप में; मुतिर्न्ततर्–बढ़े; उरत्तित् मिचै कुत्त–परस्पर वक्ष में घूँसा मारते; मरम् तरै पटिन्तत–तो तरु भूमि पर गिरे; तरै परप्पुम्–भूमि के मैदान; पकिर्न्तत–दरार खा गये; निमिर् कुन्रम्–उन्नत पर्वत; नॆरिन्त–टूट गये; इलङ्कै मतिल् ऍङ्कुम्–लंका के प्राचीर में सर्वत्र; नॆट्टु चुवर्–लम्बी दीवारें; पिळन्तत–चिरीं; इटिन्तत–टूटीं और; तकर्न्तत–ढह गयीं। ८५७

दोनों प्रवृद्ध क्रोधशील थे। दोनों ने एक-दूसरे के वक्ष में घूंसे मारे। तरुकुल नीचे भूमि पर गिरे। मैदान फटे। उन्नत गिरियाँ चिर गयीं। लंका के प्राचीर में सब जगह दीवारें फटीं, टूटीं और ढह गयीं। ८५७

शॆरिन्दुयर् करङ्गतैयर् मेतिनिलै तेरार्
पिरिन्दतर् पॊरुन्दित रॆत्तत्तॆरिदल् पेणार्
ऍरिन्दतरह ळॆय्दितरह ळित्तरॆत मुन्तित्
ररिन्दिल ररक्कर ममर्त्तॊळि लयर्न्दार् 858

चॆरिन्तु उयर्–ठस और ऊँचे; करङ्कु अतैयर्–वातचक्र के समान (उनके); मेति निलै तेरार्–शरीर की स्थिति नहीं जानते; पिरिन्ततर्–अलग हुए हैं; पॊरुन्तितर्–गुंथे हैं; ऍत्त–ऐसा; तॆरितल् पेणार्–जान नहीं पाते; इत्ततर्–किसने;

ऎऱिन्ततर्कळ्–उठा फेंका; इन्नतर् ऎय्तिततर्कळ्–कौन पास आये हैं; मुन् निन्ऱु अऱिन्तिलर्–सामने रहकर न जान पाते; अरक्करुम्–राक्षस भी; अमर् तॊऴिल्–उस युद्धकार्य को देखकर; अयर्न्तार्–शिथिल हो गये। ८५८

राक्षस भी उस युद्ध को देखकर यह नहीं समझ सके कि घने और ऊँचे वातचक्र के समान रहे उन दो वीरों में यह किसका शरीर है ? वे कब अलग हुए और कब मिले ? वे सामने स्थित होकर यह नहीं देख सके कि किसने किसको पकड़कर फेंक दिया ? कौन किसके पास गया है ? ऐसे युद्ध को देखकर राक्षस भी चक्रित और शिथिल हो गये। ८५८

इन्नदोर् तन्मै यॆय्दु मळवैयि नॆऴिलि वण्णन्
मन्नुयि रनैय कादल् तुणैवनै वरवु काणान्
उन्निय करुम मॆल्ला मुन्नॊडु मुलन्द दॆन्नात्
तन्नुणर् वऴिन्दु शिन्दै यलम्वन्दु तळर्न्दु शाय्न्दान् 859

इन्नतु ओर्–ऐसा एक; तन्मै ऎय्तुम् अळवैयिन्–हाल जब हो रहा था तब; ऎऴिलि वण्णन्–मेघवर्ण; मन् उयिर् अनैय–शाश्वत प्राण-सम; कातल् तुणैवनै–प्यारे मित्र को; वरवु काणान्–न आता देखकर; उन्निय करुमम् ऎल्लाम्–सोचे हुए सभी कार्य; उन्नॊटुम् उलन्ततु–तुम्हारे साथ मिट गये; ऎन्ना–कहकर; तन् चिन्तै–अपना मन; अलम् वन्तु–चिन्तामग्न करके; उणर्वु अऴिन्तु–बुद्धि क्षीण करके; तळर्न्तु–लटकर; चाय्न्तान्–शिथिल पड़ गये। ८५९

इधर यह हो रहा था। उधर मेघश्याम ने शाश्वत प्राण-सम प्यारे मित्र को आता नहीं देखा। यह कहते हुए कि मेरा सोचा हुआ सारा कार्य तुम्हारे साथ मिट गया, वे चिताग्रस्त हुए, सुध खोकर शिथिल हो गये। ८५९

ऒन्ऱिय वुणर्वे याय वोरुयिर्त् तुणैव वुन्नै
इन्ऱिया नुळनाय् निन्ऱॊन् ऱियऱ्ऱुव दियैव दन्ऱाल्
अन्ऱियुन् दुयरत् तिट्टा यमररै यरक्करक् कॆल्लाम्
वॆन्ऱियुङ् गॊडुत्ता यन्दो कॆडुत्तदुन् वॆहुळि यॆन्ऱान् 860

ऒन्ऱिय उणर्वे आय–समचेतन; ओर् उयिर् तुणैव–एक प्राणमित्र; उन्नै इन्ऱि–तुम्हारे विना; यान्–मैं; उळनाय् निन्ऱु–जीवित रहकर; ऒन्ऱु इयऱ्ऱुवतु–कोई काम करना; इयैवतु अन्ऱु–साध्य नहीं; अन्ऱियुम्–और भी; अमररै–देवों को; तुयरत्तु इट्टाय्–दुःख में डाल दिया तुमने; अरक्कर्क्कु ऎल्लाम्–सभी राक्षसों को; वॆन्ऱियुम् कॊटुत्ताय्–विजय दिलायी; अन्तो–हाय; उन् वॆकुळि–तुम्हारे क्रोध ने; कॆटुत्ततु–बिगाड़ दिया; ऎन्ऱान्–कहा। ८६०

श्रीराम दुःखी होकर बोले। समचिंतक प्राणमित्र ! तुम्हारे विना अकेला रहकर मेरा कोई काम करना साध्य नहीं होगा। और भी तुमने

देवों को कष्ट में डाल दिया। राक्षसों को जिता दिया। हाय! तुम्हारे क्रोध ने सब बिगाड़ दिया है। ८६०

दॅय्ववॅम् वडॅयुन् दीरा मायमुम् वल्ल तीयोन्
कॅयिडॅप् पुक्काय् नीवे ॲव्वणङ् गडत्ति कावल्
वॅयमो रेळुम् पॅट्राल् वाळ्वने वारा याहिल्
उय्वने तमिय नेनुक् कुयिर्तन्द वुदवि योने 861

तमियत्तेनुक्कु–अकेले रहे मुझे; उयिर् तन्त–प्राण दिलानेवाले; उतवियोने–सहायक; नी–तुम; तॅय्वम् वॅम् पटॅयुम्–दिव्य और क्रूर अस्त्र और; तीरा मायमुम्–अक्षय माया में; वल्ल–समर्थ; तीयोन्–खल के; कॅयिटॅ–हाथ में; पुक्काय्–फँस गये; वेरु ॲव्वणम्–अन्य किस उपाय से; कावल् कटत्ति–पहरे से बचोगे; वारायाकिल्–अगर नहीं आओगे तो; वॅयम् ओर् एळुम् पॅट्राल्–सातों लोकों को पा जाऊँ (तो भी); वाळ्वने–जीवित; उय्वने–बचा रहूँगा क्या। ८६१

एकाकी मेरे प्राणदाता सहायक! दिव्य अस्त्रों और माया में दक्ष वंचक क्रूर रावण के चंगुल में फँस गये तुम! अन्य किस उपाय से तुम उसके पहरे से बच आओगे? अगर तुम नहीं आओ तो सातों लोक भी मेरे हो जायँ तब भी मैं जीवित रहूँगा क्या? । ८६१

ऑन्ट्राह नितैय वॅान्ट्राय् विळैन्ददॅन् करुम् मन्दो
ॲन्ट्रानुम् यानो वाळे नोयिलै यॅनवुङ् गेळेन्
इन्ट्राय पळियु निऱ्क नॅडुज्जॅरुक् कळत्ति नॅन्नैक्
कॉन्ट्रायु नीये उन्नैक् कॉल्लुमेऱ् कुणङ्गळ् तीयोन् 862

कुणङ्कळ्–(अव-) गुणों का; तीयोन्–बुरा रावण; उन्नै कॉल्लुमेल्–तुम्हें मार देगा तो; ॲन् करुमम्–मेरा हाल; ऑन्ट्राक नितैय–एक सोचा; ऑन्ट्राय् विळैन्ततु–दूसरा एक बना; अन्तो–हाय; यानो–मैं तो; ॲन्ट्रानुम् वाळेन्–किसी विध नहीं जीऊँगा; नी इलै ॲतवुम्–तुम नहीं हो यह; केळेन्–सुन नहीं सकता; इन्ट्र आय–जो आज हुई है; पळियुम् निऱ्क–वह निन्दा स्थायी करके; ॲन्नै–मुझे; नॅटु–बड़े; चॅरुकळत्तिल्–युद्धांगन में; कॉन्ट्रायुम्–मारनेवाले भी; नीये–तुम्हीं हो। ८६२

दुर्गुणी रावण तुम्हारा वध कर देगा तो मेरा कार्य 'एक सोचा, दूसरा हुआ' हो जायगा। मैं भी किसी भी विध जीवित नहीं रहूँगा। तुम नहीं हो, यह सुनने का धैर्य भी नहीं मुझमें। अपमान तो हो गया; और भी तुमने बड़े समरांगण में जाने से मार भी दिया है। ८६२

इऱन्ददने यॅन्ऱ पोदु मिरुन्दिया नरक्क रॅन्बार्
तिऱन्ददने युलहि नोक्किप् पिन्नुयिर् तीर्वॅ नॅन्ट्राल्

पुऱन्दरु नण्बि नोऱ्हळ् वुयिरॊडुम् बॊरुन्दि नात्तै
मऱन्दनन् वलिय नॆन्बा रादला लदुवुम् माट्टेन् 863

इऱन्ततै ऎन्ऱ पोतुम्–मर गये तब भी; यान् इरुन्तु–मैं जीवित रहकर; अरक्कर् ऎन्पार्–राक्षस जो हैं; तिऱम् तत्तै–उनके समूहों को; उलकिन् नीक्कि–संसार से दूर करके; पिन्–बाद; उयिर् तीर्वेन्–प्राण त्याग दूं; ऎन्ऱाल्–तो; पुऱन्-तरु–सहायक स्वभाव के; नण्पित्तोर्कळ्–मित्र; उयिरॊटुम् पॊरुन्तित्तात्तै–प्राणसंयुक्त (मित्र) को; मऱन्ततन्–भूल गया; वलियन्–कठोर (दिल का) है; ऎन्पार्–कहते; आतलाल्–इसलिए; अतुवुम्–ऐसा भी; माट्टेन्–नहीं करूँगा। ८६३

तुम मर गये तो मैं जीवित रहकर राक्षसों के समूहों को निर्मूल करके तव मरूँ तो भी सहायक मित्र यही कहेंगे कि राम कठोर मन वाला है। प्राण-सम मित्र को (कुछ देर ही सही) भूला रहा। इसलिए वह भी नहीं करूँगा। ८६३

अऴिवदु शॆय्दा यॆय अन्बिन्ना लऴियत् तेनुक्
कॊऴिवरु मुदवि शॆय्द वुन्नैया नॊऴिय वाऴेन्
ऎऴुबदु वॆळ्ळन् दन्नि नॊण्डोर्पे रॆञ्जा देहिच्
चॆऴुनह रडैन्द पोऴ्दु मित्तुयर् तीर्व दुण्डो 864

ऐय–तात; अऴियत्तेनुक्कु–दयनीय मुझसे; अन्पिताल्–प्रेम के कारण; अऴिवतु चॆय्ताय्–मरने का कार्य कर दिया; ऒऴिवु अरुम्–अमिट; उतवि चॆय्त–सहायता करनेवाले; उन्नै ऒऴिय–तुमको त्यागकर; यान् वाऴेन्–मैं नहीं जीऊँगा; ऎऴुपतु वॆळ्ळम् तन्निन्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की सेना में; ईण्टु–यहाँ; ओर् पेर्–एक व्यक्ति भी; ऎञ्चातु–कम हुए विना; एकि–जाकर; चॆऴु नकर्–समृद्ध नगर में; अटैन्त पोऴ्तुम्–सव जव पहुँचेंगे तो भी; इ तुयर्–यह टीस; तीर्वतु–छूटेगी; उण्टो–(यह हो सकता है) क्या। ८६४

तात! मैं दयनीय हो गया हूँ। मुझसे प्रेम करके तुमने प्राणघातक काम कर लिया! अमिट सहायता करनेवाले तुमसे विछुड़कर मैं जीवित नहीं रहूँगा। सत्तर 'वॆळ्ळम्' संख्या की सेना के सभी को, विना किसी एक की भी कमी के, लेकर समृद्ध नगर को लौट जाऊँ तो भी यह दुःख दूर हो सकेगा क्या? । ८६४

ऎन्ऱव तिऱङ्गुङ् गालत् तिरुवरु मॊरुवर् तम्मिन्
वॆन्ऱिलर् तोऱ्ऱि लाराय् वॆञ्जमम् विळैक्कुम् वेलै
वन्ऱिऱ लरक्कन् मौलि मणिहळै वलियाल् वाङ्गिप्
पॊन्ऱित नाहिल् नन्ऱॆन् ऱवन्वॆळ्ह विवनुम् बोन्दान् 865

ऎन्ऱु–ऐसा; अवन्–वे; इरङ्कुम् कालत्तु–जब दुःखी हो रहे थे, उस समय; इरुवरुम्–दोनों (रावण, सुग्रीव); तम्मिन् ऒरुवरुम्–परस्पर कोई एक; वॆन्ऱिलर्–

न जीता; तोऱ्ऱिलाराय्–न हारा, ऐसा; वॅम् चमम्–घोर युद्ध; विळैक्कुम् वेलै–जब कर रहे थे तब; अवऩ्–(रावण) वह; पोऩ्ऱित्त् आकिल्–मरूँगा तो; नऩ्ऱु ऍऩ्ऱु–अच्छा होगा ऐसा; वॅळ्क–शरम के साथ सोचें इस प्रकार; वल् तिऱल्–कठोर बली; अरक्कऩ् मौलि मणिकळै–राक्षस के किरीटों के रत्नों को; वलियाल् वाङ्कि–बलात् छीनकर; इवऩुम्–यह (सुग्रीव) भी; पोऩ्ताऩ्–आ गया। ८६५

श्रीराम इस भाँति बिलख रहे थे। उधर दोनों में एक भी न हारा, न जीता। दोनों भयंकर युद्ध में लगे हुए थे। तब सुग्रीव रावण को 'इससे अधिक अच्छा होगा मेरा मरना' ऐसा कहकर शर्मिन्दा होने देते हुए कठोर उस बली के किरीटों में जड़ित रत्नों को छीन लेकर श्रीराम के पास आ पहुँचा। ८६५

कॉऴुमणि मुडिह डोरुङ् गॉण्डत्त मणियिऩ् कूट्टम्
अऴुदय रुहिऩ् ऱाऩ्ऱ नडित्तल मदऩिऱ् चूट्टित्
तॉऴुदय ऩाणि निऩ्ऱाऩ् तूयव रिरुव रोडुम्
ऍऴुबदु वॅळ्ळम् याक्कैक् कोरुयि रॅय्दिऱ् ऱऩ्ऱे 866

कॉऴु मणि–अतिश्रेष्ठ रत्न-जटित; मुटिकळ् तोऱुम्–मुकुटों से; कॉण्टत्त–छीन लिये गये; मणियिऩ् कूट्टम्–रत्न-राशियों को; अऴुतु–रोते हुए; अयर् उऱुकिऩ्ऱाऩ्–जो शिथिल हो रहे थे; तऩ्–उन (श्रीराम) के; अटि तलम् अतऩिल्–चरणतल में; चूट्टि–समर्पित कर; तॉऴुतु–नमस्कार करके; नाणि–शरमाकर; अयल् निऩ्ऱाऩ्–पास खड़ा हुआ (सुग्रीव); तूयवर् इरुवरोटुम्–पवित्र मन दोनों (राम-लक्ष्मण) के साथ; ऍऴुपतु वॅळ्ळम् याक्कैक्कु–सत्तर 'वॅळ्ळम्' शरीरों में; ओर् उयिर् ऍय्तिऱ्ऱु–एक जान आ गयी। ८६६

रावण के अमूल्य रत्नजटित मुकुटों से गृहीत मणियों को सुग्रीव ने बिलखते हुए शिथिल रहे श्रीराम के चरणों पर रखा। फिर लज्जा के साथ पार्श्व में खड़ा हो गया। तभी उन पवित्रजीव श्रीराम और लक्ष्मण के साथ सत्तर 'वॅळ्ळम्' सेना वीरों की जान में जान आयी। ८६६

ऍऩ्बुऱक् किऴिऩ्द पुण्णि ऩिऴिदरुङ् गुरुदि योडुम्
पुऩ्बुलत् तरक्कऩ् ऱऩ्ऩैत् तीण्डिय पुऩ्मै पोह
अऩ्बऩै यमरप् पुल्लि मञ्जऩ माट्टि विट्टाऩ्
तऩ्ऩॅरु नयऩ मॅऩ्ऩुन् दामरैत् तडततु नीराल् 867

अऩ्पऩै–प्यारे मित्र को; अमर–खूब; पुल्लि–आलिंगित करके; ऍऩ्पुऱ–हड्डी तक; किऴिऩ्त–खुले; पुण्णिऩ्–व्रणों से; इऴितरुम्–बहनेवाले; कुरुति योटुम्–रक्त के साथ; पुल् पुलत्तु–अल्पबुद्धि; अरक्कऩ् तऩ्ऩै–राक्षस को; तीण्टिय–जो स्पर्श किया था; पुऩ्मै पोक–उस नीच कलंक को दूर करते हुए; तऩ् पॅरु नयऩम्–अपने विशाल नेत्र; ऍऩ्ऩुम्–रूपी; तामरै तटत्तु–कमलसर के; नीराल्–जल से; मञ्चऩम् आट्टि विट्टाऩ्–मज्जन करा दिया (श्रीराम ने)। ८६७

श्रीराम ने प्रिय मित्र को कसकर आलिंगन कर लिया। श्रीराम ने अपने विशाल नयन रूपी कमल-सर के अश्रु रूपी जल से नहलाकर हड्डी तक बने व्रणों से निकलनेवाले रक्त के साथ अल्पबुद्धि रावण के स्पर्श से हुए कलुष को भी सुग्रीव के शरीर से धुला दिया। ८६७

ईर्हिऩ्ऱ दऩ्ऱे यॆऩ्ऱ ऩुळ्ळत्तै यिङ्गु मङ्गुम्
पेर्हिऩ्ऱ दावि याक्कै पॆयर्हिऩ्ऱ दिल्लप् पिऩ्ऩैत्
तेर्हिऩ्ऱ शिऩ्दै यऩ्ऱो तिहैत्तऩै यॆऩ्ऱु तॆण्णीर्
शोर्हिऩ्ऱ वरुविक् कण्णाऩ् ऱुणैवऩै नोक्किच् चॊल्लुम् 868

तॆण्णीर्–स्वच्छ अश्रुजल को; अरुवि–सरिता के समान; चोर्किऩ्ऱ–बहानेवाली; कण्णाऩ्–आँखों वाले; तुणैवऩै नोक्कि–साथी को देखकर; ऍऩ् तऩ् उळ्ळत्तै–मेरे हृदय को; ईर्किऩ्ऱतु अऩ्ऱे–चीरता है न (तुम्हारा उधर जाना); आवि–मेरे प्राण; इङ्कुम् अङ्कुम्–इधर-उधर; पेर्किऩ्ऱतु–आते-जाते हैं; याक्कै–शरीर; पॆयर्किऩ्ऱतु इल्लै–स्पन्दनहीन है; पिऩ्ऩै–बाद; तेर्किऩ्ऱ चिऩ्तै–विवेकी मन के होने पर भी; तिकैत्तऩै अऩ्ऱो–भ्रम में पड़ गये न; ऍऩ्ऱु–कहकर; चॊल्लुम्–कहने लगे (श्रीराम)। ८६८

स्वच्छ नदी के समान अश्रुजल बहाते हुए श्रीराम ने अपने सहायक मित्र से यों कहा। तुम्हारा काम मेरे हृदय को चीर रहा है न? मेरे प्राण इधर-उधर डगमगा रहे हैं। शरीर निस्पंद हो रहा। ऐसा विवेकी मन के तुम भी भ्रम में पड़ गये न? वे आगे भी बोले। ८६८

कल्लिऩुम् वलिय तोळाय् निऩ्ऩैयक् करुणै यिल्लोऩ्
कॊल्लुदल् शॅय्दा ऩाहिऱ् कॊडुमैयाऱ् कुऱ्ऱम् पेणिप्
पल्पॆरुम् वहळि मारि वेरॊडुम् बऱिय नूऱि
वॆल्लिऩुऩ् दोऱ्ऱेऩ् याऩे यल्लऩो विळिऩ्दि लादेऩ् 869

कल्लिऩुम्–पर्वत से भी; वलिय–कठोर; तोळाय्–कंधों वाले; निऩ्ऩै–तुम्हें; अ करुणै इल्लोऩ्–वह निर्दयी; कॊल्लुतल् चॅय्ताऩ् आकिल्–मार देगा तो; विळिऩ्तिलातेऩ्–बिना मरे रहकर; कुऱ्ऱम् पेणि–(उसका) अपराध मन में पालकर; कॊडुमैयाल्–कठोरता से; पल्पेरु पकळि मारि–विविध और अधिक शरवर्षा से; वेरॊडुम् पऱिय–जड़ के साथ; नूऱि–मिटाकर; वॆल्लिऩुम्–जीत पाऊँ तो भी; याऩे तोऱ्ऱेऩ् अल्लऩो–मैं क्या हारनेवाला ही नहीं बनता। ८६९

पर्वत से भी कठोर कन्धोंवाले! अगर वह निर्दय रावण तुम्हें मार डाले तो मैं नहीं मरकर उसका अपराध मन में पालूँ और निर्ममता के साथ बड़ी शरवर्षा करके उसे निर्मूल कर जीत पा जाऊँ तो भी (तुम्हारी रक्षा न होने के कारण) मेरी हार ही हुई (समझी जायगी) न?। ८६९

पॅरुमैयुम् वण्मै तानुम् पेरॅळि लाण्मै तानुम्
ऑरुमैयि नुणर नोक्किऱ् पॊऱैयिन तूऱ्ऱ मन्ऱे
अरुमैयु मडर्न्दु निन्ऱ पळियॅयु मयर्न्दाय् पोलुम्
इरुमैयुङ् गॅडुत्ता यन्ऱे यॅन्निनैन् दॅन्शॅय् दायनी 870

ऑरुमैयिन्–एकाग्रता से; उणर–समझकर; नोक्किन्–देखें तो; पॅरुमैयुम्–गौरव और; वण्मै तानुम्–उदारता; पेर् ऍळिल्–अति सुन्दर; आण्मै तानुम्–पौरुष भी; पॊऱैयिनतु–क्षमा के; ऊऱ्ऱम् अन्ऱे–बलवर्द्धक (तत्त्व) नहीं हैं क्या; अरुमैयुम्–अपनी अमूल्यता और; अटर्न्तु निन्ऱ–निश्चित रूप से आनेवाली; पळियॅयुम्–निन्दा को; अयर्न्ताय् पोलुम्–भूल गये शायद; इरुमैयुम्–(इह, पर) दोनों को; कॅटुत्ताय् अन्ऱे–बिगाड़ दिया (तुमने) न; नी–तुमने; ऍन् निनैन्दु–क्या सोचकर; ऍन् चॅय्ताय्–क्या कर दिया। ८७०

मन को एकाग्र करके सोचो तो गौरव, उदारता, बड़ा मनोहर पौरुष ये सब क्षमता के ही बलवर्द्धक हैं न ? तुमने अपनी अनिवार्यता और आनेवाली निंदा को भुला दिया शायद ? अपने (अविवेकपूर्ण काम से) इह और पर दोनों को बिगाड़ दिया न ? क्या सोचा और क्या कर दिया तुमने ? । ८७०

इन्निलै विरैवि नॅय्दा दित्तुणै ताऴ्त्ति यायिन्
नन्नुदऱ् चीदै यालॅन् ञालत्तार् पयनॅन् नम्बि
उन्नैयान् तॊडर्व लॅन्नैत् तॊडरुमिव् वुलह मॅन्ऱाल्
पिन्नैयॅन् निदनैक् कॊण्डु विळैयाडिप् पिऴैप्प शॅय्दाय् 871

इ निलै–इस स्थिति में; विरैविन्–जल्दी; ऍय्तातु–बिना आये; इ तुणै–इतनी देर; ताऴ्त्ति आयिन्–विलम्ब करते; नम्पि–हे वानरश्रेष्ठ; नल् नुतल् चीतैयाल्–सुन्दर भाल वाली सीता से; ऍन्–क्या (लाभ); ञालत्ताल्–इस भूमि से; ऍन् पयन्–क्या लाभ है; यान् उन्नै तॊटर्वल्–मैं तुम्हारा पीछा करता; इ उलकम्–यह संसार भी; ऍन्नै तॊटरुम्–मेरा पीछा करता (मिट जाता); ऍन्ऱाल्–तो; इतनै कॊण्टु–यह (कार्य) अपनाकर; पिन्नै ऍन्–फिर क्या है; विळैयाटि–खेल में; पिऴैप्प चॅय्ताय्–ग़लत काम कर दिया तुमने। ८७१

इस स्थिति में अगर तुम इधर आने में और थोड़ा विलंब करते तो, सुन्दर भाल वाली सीता से या भूमि (राज्य) से क्या लाभ होता ? और मैं तुम्हारा अनुसरण करके मृत्यु को वर लेता। मेरे पीछे यह संसार भी मिट जाता। उस स्थिति में तुम्हारे इस कार्य को अपनाने से क्या होने को होता ? खेल-खेल में तुमने बड़ा ग़लत काम कर दिया ! । ८७१

काट्टिले कळ्ळुहिन् वेन्दन् शॅय्ददु काट्ट माट्टेन्
नाट्टिले गुहनार् शॅय्द नन्मैयै नयक्क माट्टेन्

केट्टिले नल्ले तित्तु कण्डुमक् किळियत् ताळै
मीट्टिलेत् तलेहळ् पत्तुङ् गॉणर्न्दिलेत् वॅरुङ्गै मीण्डेत् 872

काट्टिले-जंगल में; कळुकित् वेन्तत्-गीधों के राजा ने; चॅय्ततु-जो (साहस) किया; काट्ट माट्टेत्-मैं नहीं कर सका; नाट्टिले-देश में; कुकतार् चॅय्त-गुह द्वारा किया गया; नत्मैयै-भला काम; नयक्क माट्टेत्-इच्छा के साथ कर नहीं पाया; केट्टिलेत् अल्लेत्-सुना नहीं है, ऐसा नहीं हूँ (मैंने सुना है); इन्नु-आज; अ किळि अत्ताळै-उस शुक-सी देवी को; कण्टुम्-खोज लेकर भी; मीट्टिलेत्-छुड़ा नहीं पाया; तलेकळ् पत्तुम्-दसों सिरों को; कॉणर्न्तिलेत्-नहीं लाया; वॅरुङ्कै मीण्टेत्-खाली हाथ लौटा हूँ। ८७२

यह सुनकर सुग्रीव ने आहत स्वर में उत्तर दिया। मैंने न तो जंगल के गीधों के राजा का जैसा काम किया, न ही मैं देश के गुह का-सा काम कर पाया। मैंने उनके कृत्य सुने हैं। शुक-सी सीताजी को देखकर उन्हें छुड़ा नहीं लाया। रावण के सिरों को भी न ला पाया। खाली हाथ लौट आया हूँ। ८७२

वन्बहै निऱ्क वॅङ्गळ् वानरत् तॉऴिलुक् केऱ्ऱ
पुन्बहै काट्टुम् यानोर् पुहऴ्प्पहैक् कॉरुवन् पोलाम्
ऍन्बहै तीर्त्तॅन् नावि यरशोडु मॅनक्कुत् तन्द
उन्बहै युनक्कुत् तन्दे नुयिर्शुमन् दुऴला निन्ऱेन् 873

ऍन्पकै-मेरे शत्रु को; तीर्त्तु-मिटाकर; ऍन् आवि-मेरे प्राणों को; अरचॊटुम्-राज्य के साथ; ऍनक्कु तन्त-मुझे (जिन्होंने) दिया; उन्पकै-वैसे आपके शत्रु को; उनक्कु तन्तेत्-आपके ही पास दे दिया; उयिर् चुमन्तु-प्राण ढोता हुआ; उऴला निन्ऱेन्-फिर रहा हूँ; वन् पकै-सबल शत्रु के; निऱ्क-स्थिर रहते; ऍङ्कळ् वानर तॊऴिलुक्कु-हमारे वानर-कृत्य के लिए; एऱ्ऱ-युक्त; पुन् पकै काट्टुम्-अल्प (विफल) शत्रुता दिखानेवाला; यान्-मैं; ओर् पुकऴ् पकैक्कु-यश का शत्रु बनने; ऑरुवन् पोल् आम्-योग्य-सा एक हूँ। ८७३

आपने मेरे शत्रु को मार मिटाया और मुझे मेरे प्राणों-सहित राज्य भी दिलाया। वैसे आपके शत्रु को मैंने आप ही को (निपटने के लिए) दे दिया (रख छोड़ा)। प्राण ढोता फिर रहा हूँ! सबल शत्रु यथावत् रहता है और मैंने वानरोचित अल्प (विफल) शत्रुता दिखायी है! मैं आपके अपार यश का दुश्मन-सा हूँ। ८७३

शॅम्बुक्कुज् जिवन्द शॅङ्गट् टिशैनिलैक् कळिर्ऱित् शीऱ्ऱक्
कॊम्बुक्कुङ् गुऱैन्द दुण्डे यॅन्तुडैक् कुरक्कुप् पुन्ऱोळ्
अम्बुक्कु मुन्नज् जॅन्ऱु नरुम्बहै मुडिप्प लॅन्ऱु
वॅम्बुऱ्ऱ मनमुम् यानुन् तोदिन्ऱि मीळ वन्देन् 874

चॅम्पुक्कुम् चिवन्त–ताम्र से भी लाल; चॅङ्कण्–अरुणाक्ष; तिचै निलै–दिशाओं में रहनेवाले; कळिऱ्ऱित्–(दिग्) गजों के; चीऱ्ऱम् कॊम्पुक्कुम्–क्रोध के (साथ चलाये गये) दाँतों से भी; ॲन्नुटै–मेरे; पुन् कुरक्कु–अल्प वानर के; तोळ्–कंधे; कुऱैन्तनु उण्टे–घट गये न; अम्पुक्कु मुन्नम्–शरों के पहले; चॅन्ऱु–जाकर; उन् अरुम्पकै–आपके गड़े शत्रु को; मुटिप्पल्–मिटा दूंगा; ॲन्ऱु–ऐसा; वॅम्पुऱ्ऱ–तप्त; मनमुम् यानुम्–मन और मैं; तीतु इन्ऱि–विना हानि के; मीळ वन्तेन्–लौट आया। ८७४

ताम्र से भी लाल रही आँखों के दिग्गजों के क्रोध के साथ चलाये गये दाँतों से भी मेरे अल्पवानरस्कन्ध तुच्छ हो गये हैं। 'आपके अस्त्र के पहले जाकर आपके विकट शत्रु को मार दूँ' यही विचार लेकर मैं गया। पर विफलता से तप्त मन लेकर मैं निरापद लौट आया हूँ। ८७४

नूल्वलि काट्टुञ् जिन्दै नुम्बॆरुन् दूदन् वॆम्बोर्
वेल्वलि काटटि नार्क्कुम् विल्वलि काट्टि नार्क्कुम्
वाल्वलि काट्टिप् पोन्द वळनहर् पुक्कु मऱ्ऱॆन्
काल्वलि काट्टिप् पोन्देन् कैवलिक् कवदि युण्डो 875

नूल् वलि–(ऐन्द्र व्याकरण) शास्त्रदक्षता; काट्टुम्–दिखानेवाला; चिन्तै–अन्वेषक-मन; नुम् पॆरु तूतन्–आपका बड़ा दूत (हनुमान); वॆम् पोर्–घमासान युद्ध में; वेल्वलि काट्टिनार्क्कुम्–जिन्होंने भालों की वीरता दिखायी उन्हें और; विल्वलि–धनुसामर्थ्य; काट्टिनार्क्कुम्–जिन्होंने दिखाया उन्हें; वाल् वलि काट्टि–अपनी पूँछ का बल दिखाकर; पोन्त–(जहाँ से) आया उस; वळम् नकर्–समृद्ध नगर में; पुक्कु–प्रवेश करके; ॲन् काल् वलि काट्टि–अपने पैरों का (भागने का) बल दिखाकर; पोन्तेन्–आया; कै वलिक्कु–हाथ की शक्ति की; अवति उण्टो–सीमा भी है क्या। ८७५

ऐंद्र व्याकरण आदि शास्त्रों में निपुण आपका महिमावान दूत हनुमान लंका में गया; भयंकर युद्ध में भाले की शक्ति और धनु का बल दिखाते हुए युद्ध करनेवालों को अपनी पूँछ का बल दिखा आया। उसी समृद्ध नगर में मैं गया अपने पैरों का बल दिखा (भाग) आया! हा! मेरे भुजबल की भी कोई सीमा है क्या ?। ८७५

इन्नन पलवुम् बन्नि यिऱैञ्जिय मुडिय नाहि
मन्नवर् मन्नन् मुन्नर् वानर मन्नन् निऱ्प
अन्नवन् ऱन्नै नोक्कि याळिया नऱिव दाह
मिन्नॆन विळङ्गुम् वॆम्बूण् वीडणन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 876

इन्नन–ऐसी; पलवुम्–अनेक बातें; पन्नि–कहकर; इऱैञ्चिय मुटियन्–विनतशीर्ष; आकि–बना; मन्नवर् मन्नन् मुन्नर्–चक्रवर्ती के सामने; वानर

मन्नऩ्–वानर-राजा के; निऱ्प–खड़े होते; अन्नवन् तन्नै नोक्कि–उसको देखकर; आऴियान् अऱिवताक–चक्रवर्ती श्रीराम को भी अवगत करते हुए; मिन् अँन विळङ्कुम्–बिजली के समान शोभनेवाले; पॆम्पूण्–आभरणधारी; वीटणऩ्–विभीषण; विळम्पल् उऱ्ऱान्–बोलने लगा। ८७६

वानरराज ऐसी बातें कहते हुए सिर झुकाकर राजराज श्रीराम के सामने खड़ा रहा। तब विद्युत्प्रकाशमय आभरणधारी विभीषण चक्रवर्ती श्रीराम के सुनते यों बोलने लगा। ८७६

वाङ्गिय मणिह ळन्नान् तलैमिशै मौलि मेले
ओङ्गिय वल्ल वोमऱ् ऱिन्नियप्पा लुयर्न्द दुण्डो
तीङ्गवन् शिरत्तिन् मेलु मुयिरिनुञ् जीरि दम्मा
वीङ्गिय पुहऴ् यॆल्लाम् वेरॊडुम् वाङ्गि विट्टाय् 877

वाङ्किय मणिकळ्–तुम जो छीन लाये वे रत्न; अन्नान्–उसके; तलै मिचै–सिरों पर के; मौलि मेले–मुकुटों पर; ओङ्किय अल्लवो–रहकर शोभा जो दे रहे थे वे हैं न; इऩि–आगे; अप्पाल् उयर्न्त–उसके ऊपर बढ़े हुए; मऱ्ऱु उण्टो–और वस्तु हो सकती है क्या; तीङ्कवन्–अत्याचारी; चिरत्तिन् मेलुम्–उसके सिरों से बढ़कर; उयिरिनुम्–उसके प्राणों से बढ़कर; चीरितु–मूल्यवान हैं; वीङ्किय–उसके बढ़े हुए; पुकऴ् ऍल्लाम्–सारे यश को; वेरॊटुम्–जड़ के साथ; वाङ्कि विट्टाय्–उखाड़ दिया है तुमने। ८७७

सुग्रीव ! जो मणियाँ तुम छीन लाये हो, वे रावण के सिरों पर रहने वाले किरीटों में जड़ित मणियाँ हैं न ? उनसे भी बढ़कर यशदायी पदार्थ हैं जो तुम हर लाते ? वे अत्याचारी रावण के सिरों और प्राणों से भी मूल्यवान हैं। तुमने उनको छीनकर उसके विपुल यश को जड़ से उखाड़ दिया है। ८७७

पारहञ् जुमन्द पाम्बिन् पणामणि पऱिक्क वेण्डिन्
वार्हऴऱ् कालि नाले वव्ववल् लवनै मुन्नात्
तार्हॆऴु मौलि पत्तिन् ऱनिमणि वलिदिल् तन्द
वीरिदै विडैव लोऱ्कुम् मुडियुमो वेऱु मुण्डो 878

पारकम् चुमन्त–भूमि को ढोनेवाले; पाम्पिन्–आदिशेषनाग के; पणामणि–फणिमुक्ताओं को; पऱिक्क वेण्टिन्–छीनना चाहे तो; वार्कऴल्–लम्बी पायल-धारी; कालिनाले वव्व वल्लवनै–अपने पैरों से ही छीन सकनेवाले उस (की शक्ति) को; मुन्ना–सोचते समय; तार् कॆऴु–मालालंकृत; मौलि पत्तिन्–दसों किरीटों से; तनि मणि–अद्वितीय मणियों को; वलितिन् तन्त–जो अपार साहस के साथ लाये; वीरतै–वह वीरता; विटै वलोऱ्कुम्–ऋषभ-वाहन शिव की भी; मुटियुमो–हो सकती है क्या; वेऱुम् उण्टो–(इससे बढ़कर कुछ) अन्य वस्तु हो सकती है क्या। ८७८

रावण ऐसा है जो भूभारवाही शेषनाग की फणिमुक्ताओं को भी,

चाहे तो, अपनी लम्बी पायलधारी चरणों से ही छीन सकता है ! सोचो तो उसके हारालंकृत दसों किरीटों से अपूर्व मणियों को छीन लाने में जो वीरता है, वह ऋषभवाहन शिवजी के पास भी हो सकती है क्या ? इससे बढ़कर यशदायी काम क्या हो सकता है ? । ८७८

करुमणि कण्डत् तान्ऱन् शॅन्निॖियिऱ् करैवॆण् डिङ्गळ्
परुमणि वण्णन् मार्बिऱ् चॆम्मणि परित्तिट् टालुम्
तरुमणि यिमैक्कुन् दोळाय् दशमुहन् मुडियिल् तॆत्त
तिरुमणि परित्तुत् तन्द वॆन्ऱियॆ शीरि दन्ऱो 879

तरुमणि–लायी गयी मणियों से; इमैक्कुम् तोळाय्–वीरशोभित कंधों वाले; करु मणि–नीली मणि के समान; कण्टत्तान् तन्–कंठ वाले के; चॆन्निॖयिल्–सिर पर; करै वॆण् तिङ्कळ्–कलंक-सहित श्वेत चन्द्र; परु मणि–स्थूल मणि-सम; वण्णन् मार्पिल्–रंगवाले (श्रीविष्णु के) वक्ष पर से; चॆम्मणि–लाल कौस्तुभ मणि को; परित्तिट्टालुम्–छीना जाय तो भी; तचमुकन् मुटियिल्–दशमुख के किरीटों पर; तॆत्त–जटित; तिरु मणि–श्रेष्ठ मणियों को; परित्तु तन्त–छीन लाने से; वॆन्ऱियॆ–हुई विजय; चीरितु अन्ऱो–अधिक श्लाघ्य नहीं है क्या । ८७९

गृहीत मणियों के प्रकाश (यश) से शोभित कन्धोंवाले ! नीलकंठ शिवजी के सिर पर से सकलंक श्वेत चन्द्र को छीनो; या स्थूलमणिवर्ण श्रीविष्णु की छाती से लाल कौस्तुभमणि को छीनो ! पर दशमुख के किरीटों में जड़ित श्रेष्ठ मणियों को छीनने में जो विजय मिली वह उनसे श्लाघ्य नहीं है क्या ? । ८७९

तॊडिमणि यिमैक्कुन् दोळाय् शॊल्लिदिन् वेऱु मुण्डो
वडिमणि वयिरत् तॊळ्वाळ् शिवन्वयिन् वाङ्गिक् कॊण्डान्
मुडिमणि परित्तिट् टायो अवन्निॖ मुडिक्कुम् वॆन्ऱिक्
कडिमणि यिट्टा यन्ऱे यरिक्कुलत् तरश वॆन्ऱान् 880

अरि कुलत्तु अरच–हरिकुलपति; तॊटि मणि–बाहुवलयों की मणियों से; इमैक्कुम् तोळाय्–प्रकाशित कंधों वाले; वटि मणि–चुनी हुई मणियों से सज्जित; वयिरत्तु ऑळ् वाळ्–हीरे की प्रकाशमय (चन्द्रहास) तलवार को; चिवन् वयिन्–शिवजी से; वाङ्कि कॊण्टान्–जिसने प्राप्त कर लिया उसके; मुटिमणि–मुकुटों के रत्नों को; परित्तिट्टायो–छीन लाये क्या; अवन्–उन (श्रीराम) की; मुटिक्कुम् वॆन्ऱिक्कु–सम्पन्न होनेवाली विजय की; अटि मणि–नींवें में मणियाँ; इट्टाय् अन्ऱे–रखी हैं न; चॊल् इतिन् वेऱुम्–(यश-) वचन इससे दूसरा; उण्टो–है भी क्या; ऍन्ऱान्–कहा । ८८०

हरिकुलपति ! बाहुवलय की मणियों से शोभायमान कन्धोंवाले ! मणियों और हीरों (की मूठ) की चन्द्रहास तलवार को जिसने शिवजी से प्राप्त किया था, उसकी मुकुट-मणियों को क्या छीन लाये हो ! श्रीराम की

विजय की नीवँ की मणि न रख ली है (शिलान्यास किया है)! (यश का) वचन इससे बढ़कर क्या हो सकता है? । ८८०

वॆन्ऱियन्ऱॆन्ऱुम् वॆन्ऱि वीरर्क्कु विळम्बत् तक्क
नन्ऱियन्ऱॆन्ऱु मन्ऱु नानिल मॆयिऱ्ऱिऱ् कॊण्ड
पन्ऱियन्ऱाहि नीदा रियर्ऱुवार् परिविन् ऍन्ना
इन्ऱिदु वॆन्ऱि यॆन्ऱॆन् ऱिरामनु मिरङ्गिच् चॊन्नान् 881

वॆन्ऱि अन्ऱु–विजय नहीं; ऍन्ऱुम्–ऐसा और; वॆन्ऱि वीरर्क्कु–विजयी वीरों के लिए; विळम्प तक्क–कहने योग्य; नन्ऱि अन्ऱु–भला काम नहीं; ऍन्ऱुम्–ऐसा (कह सकते हैं); अन्ऱु–उस दिन; नानिलम्–चतुर्विधा भूमि को; ऍयिऱ्ऱिल् कॊण्ट–अपने दाँतों पर जो उठा लाये; पन्ऱि अन्ऱु आकिन्–वराह (देव) नहीं तो (उनको छोड़); ईतु आर्–यह कौन; परिविन् इयर्ऱुवार्–उत्साह के साथ करे; ऍन्ना–कहकर; इन्ऱु–आज; इतु वॆन्ऱि–यह विजय ही है; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा कहते हुए; इरामनुम्–श्रीराम भी; इरङ्कि–आर्द्र होकर; चॊन्नान्–बोले। ८८१

श्रीराम ने आश्वासन करके उसकी प्रशंसा में कहा कि विजयी लोगों को कभी अपनी विजय से तृप्ति नहीं होती। वे यह कहते हैं कि यह कोई विजय नहीं है। या यह कहते हैं कि विजयाभिलाषी वीरों के लिए यह कोई उल्लेखनीय भला कार्य नहीं है। भूमि को अपने वक्र दन्तों पर उठा लेनेवाले वाराह को छोड़ अन्य कौन ऐसा कार्य कर सकता है? यही विजय है! । ८८१

तन्ऱनिप् पुदल्वन् वॆन्ऱित् तशमुहन् मुडियिल् तॆत्त
मिन्ऱळिर्त् तनैय पन्मा मणियिनै वॆळियिऱ् कण्डान्
ऒन्ऱॊऴित् तॊन्ऱा मॆन्ऱव् वरक्कनुक् कॊळिप्पान् पोल
वन्ऱनिक् कुन्ऱुक् कप्पा लिरवियु मऱैयप् पोनान् 882

तन् तनि पुतल्वन्–मेरे अनुपम पुत्र ने; वॆन्ऱि–विजयी; तचमुकन् मुटियिल्–दशमुख के किरीट पर; तॆत्त–जटित; मिन् तळिर्त्तनैय–बिजली चमकती जैसे; पल् मा मणियिनै–अनेक श्रेष्ठ रत्नों को; वॆळियिल् कण्टान्–निकाल दिखाया; ऒन्ऱु ऒऴित्तु–एक नहीं तो; ऒन्ऱु–दूसरा (अनर्थ); आम्–होगा; ऍन्ऱु–ऐसा डरकर; अव् अरक्कनुक्कु–उस राक्षस से; ऒळिप्पात् पोल–छिप जाता हो ऐसा; वल् तनि कुन्ऱुक्कु–कठोर अनुपम (अस्त-) अचल के; अप्पाल्–उस तरफ़; इरवियुम्–सूर्य भी; मऱैय पोनान्–छिप गया। ८८२

तब सूर्य भी अद्वितीय और सबल अस्ताचल के पीछे छिपने गया मानो इस डर से कि मेरे अप्रतिम पुत्र ने दशमुख के किरीटों में जटित अनेक मणियों को निकाल डाला है। अब कोई न कोई अनर्थ होकर ही रहेगा। ८८२

कङ्गुल्वन् दिरुत्त कालैक् कैविळक् कंडुप्प दॆन्न
वॆङ्गळ लरक्कन् मौलि मिशैमणि विळक्कञ् जॆय्यच्
चॆङ्गदिर्च् चॆल्वन् शॆय्द वॆन्ड्रियै निरैयत् तेक्किप्
पॊङ्गिय तोळि न्नानु मिळिन्दुपो यिरुक्कै पुक्कान् 883

कङ्कुल् वन्तु–रात आकर; इरुत्त कालै–जब स्थिर हुई तब; कै विळक्कु–हाथ का दीप; ऍंटुप्पतु ऍन्न–ले आया जाता हो ऐसा; वॆम् कळल्–कठोर पायल-धारी; अरक्कन–राक्षस के; मौलि मिचै मणि–किरीटों पर के रत्नों के; विळक्कम् चॆय्य–प्रकाश करते; चॆम् कतिर्–लाल किरणमाली के; चॆल्वन् चॆय्त–पुत्रकृत; वॆन्ड्रियै–विजयी कार्य को; निरैय तेक्कि–खूब सोचकर; पॊङ्किय तोळिनान्म्–प्रफुल्ल कंधों वाले (श्रीराम) भी; इळिन्तु पोय्–उतर जाकर; इरुक्कै पुक्कान्–अपने वासस्थान पहुँचे। ८८३

रात आ गयी। हाथ के दीप के समान वीर पायलधारी राक्षस की मुकुटमणियाँ प्रकाश दे रही थीं। लाल किरणमाली के पुत्र सुग्रीव के किये गये विजयकार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा को मन में भरकर फूले हुए कन्धों के साथ श्रीराम वहाँ से उतरे और अपने डेरे में चले। ८८३

ॲन्ड्रानु मिन्नैय तन्मै यॆय्दाद विलङ्गै वेन्दन्
निन्ड्रार्हळ् तेवर् कण्डा रॆन्बदोर् नाणम् नीळ
अन्ड्राय महळिर् नोक्क माडवर् नोक्क माहप्
पॊन्ड्रादु पॊन्ड्रि नान्ड्रन् पुहळ्ॆन विळिन्दु पोनान् 884

ॲन्ड्रातुम्–किसी भी दिन; इन्नैय तन्मै–ऐसी स्थिति में; ॲय्तात–जो नहीं पहुँचा था; इलङ्कै वेन्तन्–लंका का राजा (रावण); निन्ड्रार्कळ्–खड़े जो रहे; तेवर् कण्टार्–उन देवों ने (यह मेरा पराभव) देख लिया है; ॲन्पतु ओर्–यह एक; नाणम् नीळ–शरम के बढ़ते; अन्ड्रु–तब; आयम् मकळिर्–सखियों के साथ रही नायिका की; नोक्कम्–प्रेमदृष्टि के; आटवर् नोक्कम् आक–पुरुषों की दृष्टि के समान (अप्रेमोत्तेजक) बन जाते; पॊन्ड्रातु पॊन्ड्रितान्–बिना मरे ही मृतक-सा; तन्–जो हो उसके; पुकळ् ॲन–यश के समान; इळिन्तु–उतरकर; पोनान्–गया। ८८४

रावण का ऐसा अपमान कभी नहीं हुआ था। उसे इस बात से बड़ी गहरी शरम हो रही थी कि देवगण उसका पराभव देखते खड़े रहे। तब सखियों से घिरी हुई नायिकाओं की प्रेमदृष्टि भी उस पर कोई असर नहीं कर सकी। (उनकी दृष्टि पुरुषों की दृष्टि के समान उसके मन में कोई प्रेम की भावना पैदा नहीं कर सकी।) जीवित रहते भी मृतक बना वह अपने यश के ही समान नीचे उतरकर चला। ८८४

12. अणिवहुप्पुप् पडलम् (व्यूह-रचना पटल)

मानत्ता नून्रप् पट्ट मरुमत्तान् वदन् मॅल्लाम्
कूनर्रा मरैयिल् तोन्र वान्रौडुङ् गोयिल् पुक्कान्
पानत्ता नल्लन् दॅय्वप् पाडला नल्लन् आडल्
तानत्ता नल्लन् मॅल्लॅन् शयनत्ता नुरैयुन् दारान् 885

मानत्तात्–मान-भावना से; ऊन्रप्पट्ट–आहत; मरुमत्तान्–मर्म वाला; वतनम् ॲल्लाम्–सभी मुखों के; कूतल् तामरैयिल्–म्लान कमलों के समान; तोन्र–दिखायी देते; वान् तोँटुम्–आकाशस्पर्शी; कोयिल् पुक्कान्–महल में पहुँचा; पानत्तान् अल्लन्–पान में नहीं लगा; तॅय्व पाटलान्–दिव्य गीतों में; अल्लन्–मन लगानेवाला न रहा; आटल् तानत्तान्–नृत्य स्थानों का गामी; अल्लन्–नहीं बना; उरैयुम् तारान्–बात नहीं करता; मॅल्लॅन्–कोमल; चयनत्तान्–शय्या-शायी बना। ८८५

अपमान की भावना से मर्माहत रावण के सभी मुख म्लान कमल के फूलों के समान हो गये। वह आकाशस्पर्शी अपने महल में गया। उधर जाकर वह न पान में लगा, न दिव्य गान सुनने में; न वह नृत्यशाला में ही गया। किसी से कुछ न बोला और सीधे जाकर कोमल शय्या पर लेट गया। ८८५

वैयॅयिर् रालुम् नेरा मणियिऴन् दिरङ्ग लालुम्
पैयुयिर्त् तयरुम् पेऴ्वाय्प् पः(ह्)रलैप् परप्पि नालुम्
मॅय्यनैत् तिरैयिन् वेलै मॅन्मलर्प् पळ्ळि यान
ऐयनैप् पिरिन्दु वैहु मनन्दने यरक्कर् वेन्दन् 886

अरक्कर् वेन्तन्–राक्षसराजा; वै ॲयिर्रालुम्–तीक्ष्ण दाँतों (के होने) के कारण और; नेरा–अनुपम; मणि इऴन्तु–नागरत्न खोकर; इरङ्कलालुम्–दुःख उठाने के कारण; पै उयिर्त्तु–ठण्डी आहें भरकर; अयरुम्–शिथिल पड़े; पेऴ् वाय्–खुले मुख के; पल् तलै परप्पिनालुम्–अनेक सिरों के विस्तार के कारण; मॅय्यनै–नित्यपुरुष; ऐयनै–जगन्नाथ श्रीविष्णु को; पिरिन्तु वैकुम्–बिछुड़कर रहने वाले; तिरैयिन् वेलै–ऊर्मिमाली पर; मॅन्मलर् पळ्ळि आन–कोमल पुष्प-शय्या ही जो बना था; अनन्तने–वह अनन्तनाग ही-सा था। ८८६

राक्षसराज अपने तेज़ दाँतों और अप्रतिम मणियों को खोकर दुःखी रहने के कारण लम्बी साँस छोड़ते रहनेवाला, खुले मुखों का और अनेक सिरों वाला शेषनाग ही हो गया, जो ऊर्मिमाली क्षीरसागर पर जिनकी कोमल पुष्पशय्या रही उन सत्यतत्त्व जगन्नाथ श्रीविष्णु से वियुक्त हो गया हो। ८८६

तायिनुम् बळहि नार्क्कुन् दन्निलै तॅरिक्क लाहा
मायवल् लुरुवत् तान्मुन् वरुदलुम् वायिल् काप्पान्
शेयवर् शेनै नण्णिच् चॅय्दिऱन् दॅरित्ति नीयॅन्
ऱेयव नॅय्दि नानॅन् ऱरशनै यिऱैञ्जिच् चॊन्नान् 887

तायिनुम्–माता से भी अधिक; पळकितार्क्कुम्–घनिष्ठों के लिए भी; तन्निलै–जिसकी स्थिति; तॅरिक्कल् आका–न जानी जा सके ऐसा; मायम् वल् उरुवत्तान्–माया में दक्ष रूपवाला (शार्दूल); मुन् वरुतलुम्–(द्वार के) सामने आया; वायिल् काप्पान्–द्वारपाल ने (रावण से जाकर); चेयवर्–शत्रुओं की; चेनै नण्णि–सेना में जाकर; चॅय् तिऱम्–उनके कार्यों का प्रकार; नी तॅरित्ति–तुम (जान) आकर बतलाओ; ॲन्ऱु–कहकर; एयवन्–जो भेजा गया था वह; ॲय्तिनान्–आया है; ॲन्ऱु–ऐसा; अरचनै इऱैञ्चि–राजा को नमस्कार करके; चॊन्नान्–कहा। ८८७

तब शार्दूल उस तरफ़ आया। वह माता से भी बढ़कर घनिष्ठ लोगों के लिए भी अज्ञात माया रूपी था। द्वारपाल उसको देखकर अन्दर आया और रावण को नमस्कार करके निवेदन किया कि शत्रुसेना-ज्ञानार्थ आपसे प्रेषित चर शार्दूल आया है। ८८७

अळैयॅन वॅय्दिप् पादम् वणङ्गिय वऱिजन् ऱन्नैप्
पिळैयऱ वऱिन्द वॅल्ला मुरैत्तियॅन् ऱरक्कन् पेश
मुळैयुऱु शीय मन्नान् मुहत्तिना लहत्तै नोक्किक्
कुळैयुऱु नॅञ्जन् पैय वरन्मुऱ कूऱ लुऱ्ऱान् 888

अळै ॲन–बुलाओ कहने पर; ॲय्ति–अन्दर आकर; पातम् वणङ्किय–जिसने चरणों पर नमस्कार किया उस; अऱिजन् तन्नै–बुद्धिमान शार्दूल से; अऱिन्त ॲल्लाम्–ज्ञात सभी (बातें); पिळै अऱ–बिना भूल-चूक के; उरैत्ति–कहो; ॲन्ऱु–ऐसा; अरक्कन् पेच–राक्षस के कहने पर; मुळै उऱु–गुहा में पड़े हुए; चीयम् अन्नान्–सिंह-सम रावण के; मुकत्तिनाल्–मुखभाव से; अकत्तै नोक्कि–मन (की स्थिति) को समझकर; कुळै उऱु–मुकुलित; नॅञ्चन्–मन वाला हो; पैय–धीरे-धीरे; वरन् मुऱै–यथाक्रम; कूऱल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ८८८

रावण ने कहा बुलाओ। सूक्ष्ममति शार्दूल आकर उसके चरणों पर विनत हुआ। रावण ने कहा कि तुमने जो भी जाना-समझा है, वह बिना भूल-चूक के बतलाओ। गुहा में पड़े हुए सिंह के समान रहनेवाले रावण का चेहरा देखकर शार्दूल ने उसका मन समझ लिया। अतः सावधानी से वह क्रमवार समाचार देने लगा। ८८८

वीरिय विदियि नय्दिप् पदिनॅळु वॅळ्ळत् तोडुम्
मारुदि मेलै वायि लुळिञ्जैमेल् वरुव दानान्

आरिय तमैन्द वॆळ्ळ मत्तनै योडुम् वॆऱ्ऱिच्
चूरियन् मैन्दन् ऱन्नैप् पिरियल निऱ्कच् चॊन्नान् 889

वीरिय–वीर्यवान्; मारुति–मारुति; पतिनॆऴु वॆळ्ळत्तोडुम्–सत्रह 'वॆळ्ळम्' के साथ; वितियिन् ऎय्ति–ठीक प्रकार से जाकर; मेलै वायिल्–पश्चिमी द्वार के पास; उळ्ळिञै मेल्–गढ़ पर; वरुवतु आतात्–(आक्रमण करने) आया है; आरियन्–आर्य श्रीराम; वॆऱ्ऱि–विजयी; चूरियन् मैन्तन् तन्नै–सूर्यपुत्र से; अमैन्त अत्तनै वॆळ्ळमोटु–युक्त उतनी (संख्या के) 'वॆळ्ळम्' के साथ; तन्नै पिरियलन्–उनसे अलग न जाकर; निऱ्क चॊन्नात्–खड़े होने को कहा है। ८८९

वीर्यवान् ! मारुति सत्रह 'वॆळ्ळम्' की सेना के साथ पश्चिमी द्वार पर प्राचीर पर आक्रमण करने के लिए यथाप्रकार तत्पर आया है। आर्य श्रीराम ने सुग्रीव को आज्ञा दी है कि वह सत्रह 'वॆळ्ळम्' की सेना के साथ उनसे अलग न होकर उनके साथ लगा रहे। ८८९

अन्ऱियुम् पदिनेऴ् वॆळ्ळत् तरियॊडु मरशन् मैन्दन्
तॆन्ऱिशै वायिल् शॆय्युञ् जॆरुवॆलाञ् जॆय्व दानान्
ऒन्ऱुपत् ताऱु वॆळ्ळत् तरियॊडुन् दुणव रोडुम्
निन्ऱन नील नॆन्बान् कुणदिशै वायि नॆऱ्ऱि 890

अन्ऱियुम्–अलावा इसके; अरचन् मैन्तन्–राजकुमार (अंगद); पतिनॆऴ् वॆळ्ळत्तु–सत्रह 'वॆळ्ळम्' के; अरियॊटुम्–वानर के साथ; तॆन् तिचै वायिल्–दक्षिणी दिशा के द्वार पर; चॆय्युम् चॆरु ऎलाम् चॆय्वतु–करणीय युद्धकर्म सभी करने; आनान्–तुला (खड़ा) है; नीलन् ऎन्पान्–नील जो है वह; ऒन्ऱु पत्तु आऱु–एक+दस+छः (=सत्रह); वॆळ्ळत्तु अरियॊटुम्–'वॆळ्ळम्' के वानरों के साथ; तुणवरोटुम्–साथियों के साथ; कुण तिचै वायिल् नॆऱ्ऱि–पूर्व दिशा के द्वार के माथे पर; निन्ऱनन्–खड़ा हो गया है। ८९०

और राजकुमार अंगद सत्रह 'वॆळ्ळम्' वानरों को लेकर दक्षिणी द्वार पर आवश्यक युद्धकार्य करने आ डटा है। नील भी सत्रह 'वॆळ्ळम्' वीरों और साथियों को लेकर पूरबी द्वार पर खड़ा है। ८९०

इम्बरि नियैन्द कायुङ् गनियुङ्गॊण् डिरण्डु वॆळ्ळम्
वॆम्बुवॆञ् जेनैक् कॆल्ला मुणवुतन् दुऴल विट्टान्
उम्बियै वायिल् तोऱुम् निलैदॆरिन् दुणर्त्तच् चॊन्नान्
तम्बियुन् दानुम् निऱ्प तायिनात् शमैवी दॆन्ऱान् 891

इरण्टु वॆळ्ळम्–दो 'वॆळ्ळम्' सेना को; इम्परिन् इयैन्त–इस लोक में उगे हुए; कायुम् कनियुम् कॊण्टु–कच्चे और पके फलों को लाकर; वॆम्पु वॆम् चेनैक्कु ऎल्लाम्–क्रुद्ध प्रचण्ड सेना सभी को; उणवु–भोजन के रूप में; तन्तु–देकर; उऴल विट्टात्–घूमने को छोड़ दिया है; उम्पियै–आपके छोटे भाई को; वायिल्

तोऱम्–द्वार-द्वार के; निलै तॅरिन्तु–हाल जानकर; उणर्त्त चॊन्तान्–बताने को कहा है; तम्पियुम् तानुम्–उनके छोटे भाई और (वे) स्वयं; निऱ्पतु आयितान्–(उत्तर द्वार पर) खड़े रहते हैं; चमैवु ईतु–प्रबन्ध यही है; ॲन्ऱान्–कहा। ८९१

श्रीराम ने दो 'वॅळ्ळम्' वानर वीरों को भूतल में प्राप्य कच्चे और पक्के खाद्य फलों को लाकर देते रहने के काम में नियत किया है और आपके भाई विभीषण को सभी द्वारों पर के हाल का समाचार लाकर सुनाने के काम में। वे स्वयं अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ उत्तरी द्वार पर रहते हैं। ८९१

शार्त्तूल निदतॅच् चॊल्लत् तळल्तॅरि तरुह णानुम्
पार्त्तुळि वाडै पॊङ्गप् पडुवदु पडुमा पार्त्ति
पोर्त्तूळि तुडॅप्पॅ नाळै यवरुडऱ् पॊऱैयि निन्ऱुम्
कोत्तूरुङ् गुरुदि तन्ना लॅन्ऱन नॅयिऱु तिन्ना 892

चार्त्तूलत्–शार्दूल के; इततॅ चॊल्ल–यह कहने पर; तळल् तॅरि–अग्निवर्षक; तरुकणानुम्–क्रूर आँखों के (रावण ने); ॲयिऱु तिन्ना–दाँत पीसकर; पार्त्तु–देखकर; अवर्–उनके; उटल् पॊऱैयिन् निन्ऱुम्–शरीर-भार से; कोत्तु ऊऱुम्–लगातार निकलनेवाले; कुरुति तन्नाल्–रक्त से; पोर् तूळि–युद्ध में लगनेवाली धूल को; नाळै–कल; तुटॅप्पॅन्–पोंछ लूँगा; ऊळि वाटै पॊङ्क–युगान्त-पवन का उग्ररूप से; पटुमा–बहने का हाल; पार्त्ति–तुम देखोगे; ॲन्ऱनत्–कहा। ८९२

शार्दूल ने जब यह समाचार कहा, तब रावण की आँखों से अंगारे निकले। दाँत पीसते हुए उसने उसे घूरकर कहा कि मैं कल ही उन शत्रुओं के शरीरों से लगातार निकलकर बहनेवाले रक्त से युद्ध में उठने वाली धूल को धुला दूँगा। युगान्त का प्रचण्ड पवन बहता जैसा हाल बना दूँगा, देखो। ८९२

मावणै नीलक् कुन्ऱत् तिळवॅयिल् वळर्न्द दॅन्नत्
तूवणैक् कुरुदिच् चॅक्कर्च् चुवडुरप् पॊलिन्द तोळान्
एवणै वरिविऱ् कामन् कणैपड ॲरिया निन्ऱ
पूवणै माऱ्ऱि वेऱोर् पुनैमणि यिरुक्कै पुक्कान् 893

मा अणै–तरुबहुल; नील कुन्ऱत्तु–काले पर्वत पर; इळ वॅयिल्–बालातप; वळर्न्ततु–उग आया हो; ॲन्न–जैसे; तू अणै कुरुति–मांस-सहित रक्त के; चॅक्कर् चुवटु उऱ–लाल निशान लगे रहे; पॊलिन्त तोळान्–ऐसा शोभित कंधों वाला; एवु अणै–प्रेषणशील; वरि विल् कामन्–सबन्ध धनुर्धर मन्मथ के; कणै पट–शरों के लगने से; ॲरिया निन्ऱ–जलानेवाली; पू अणै माऱ्ऱि–पुष्प-शय्या को बदलकर; वेऱु ओर्–अन्य एक; पुनैमणि इरुक्कै–रत्नसज्जित स्थान में; पुक्कान्–गया। ८९३

तरुसंकुल काले पर्वत पर फैलती मन्द धूप के समान उसके कन्धे

मांसमिश्रित रक्त के लाल निशानों के साथ शोभ रहे थे। लगातार शर चलाते रहनेवाले मन्मथ के शरों के कारण पुष्पशय्या के फूल जलने लगे। रावण उसे छोड़कर रत्नसज्जित दूसरे स्थान पर गया। ८९३

शॅय्वऩ मुऱैयि ऩॆण्णित् तिऱऩ्दिऱ मुऱैयिल् तेरुम्
मैयऱु मरबिऩ् वऩ्द वमैच्चरै वरुह वॆऩ्ऱाऩ्
पॊय्यॆऩप् पळिङ्गि ऩाय विरुक्कैयिऩ् पुऱत्तैच् चुऱ्ऱि
ऐयिरण् डाय कोडिप् पेय्क्कणङ् गाप्प वाक्कि 894

पॊय् ऎऩ-अभाव है ऐसा; पळिङ्किऩ् आय-स्फटिकनिर्मित; इरुक्कैयिऩ्-स्थान के; पुऱत्तै चुऱ्ऱि-(चारों) ओर घेरकर; ऐयिरण्टु आय-पाँच के दो=दस; कोटि पेय् कणम्-करोड़ भूतगण को; काप्प आक्कि-पहरे में नियत कर; चॆय्वऩ-कर्तव्य कार्य; मुऱैयिऩ् ऎण्णि-(उचित) रीति से सोचकर; तिऱम् तिऱम्-भाग-भाग; मुऱैयिल् तेरुम्-क्रम से गण्य; मैयऱु-निर्दोष; मरपिऩ् वऩ्त-श्रेष्ठ कुल में आये; अमैच्चरै-मंत्रियों को; वरुक-आओ; ऎऩ्ऱाऩ्-कहकर बुलाया। ८९४

रहता ही नहीं हो, ऐसा लगनेवाले स्फटिक के मण्डप में जाकर उसने चारों ओर दस करोड़ भूतगणों को पहरे पर बिठाया। फिर कर्तव्य कर्म के अंश-अंश को सोच सकनेवाले, कुलीन मंत्रियों को आमंत्रित किया। ८९४

अळऩ्दऱि वरिय राय वमैच्चरै यडङ्ग नोक्कि
वळैऩ्ददु कुरङ्गिऩ् शेऩै वायिल्ह डोरुम् वऩ्दु
विळैऩ्ददु पॆरुम्बो रॆऩ्ऩ विट्टदु विडादु नम्मै
उळैऩ्ददऩम् ऎऩ्ऩ वॆण्णि यॆऩ्शॆयऱ् कुरिय वॆऩ्ऱाऩ् 895

अळऩ्तु अऱिवु-गिनकर जानने में; अरियर् आय-दुर्लभ; अमैच्चरै-मंत्रियों को; अटङ्क नोक्कि-पूर्ण रूप से देखकर; वायिल्कळ् तोऱुम्-सभी द्वारों पर; वऩ्तु-आकर; कुरङ्किऩ् चेऩै-वानर-सेना ने; वळैऩ्ततु-घेराव डाल दिया; पॆरुम् पोर्-बड़ा ही युद्ध; ऎऩ्ऩ-कहो; विळैऩ्ततु-हो गया; ऎऩ्ऩ विट्टतु-ऐसा हाल बना दिया; नम्मै विटातु-हमें छोड़ेगी नहीं; उळैऩ्ततम्-बेचैन हैं; ऎऩ्ऩ ऎण्णि-क्या सोचकर; ऎऩ् चॆयऱ्कु उरिय-क्या करने योग्य; ऎऩ्ऱाऩ्-ऐसा पूछा (रावण ने)। ८९५

वे अनगिनत मन्त्री आये। रावण ने उन सबको पूर्ण रूप से देखकर कहा कि मंत्रियो! सभी द्वारों पर वानरगण आ डटे हैं। युद्ध को अनिवार्य बना दिया है। अब युद्ध टाले नहीं टलेगा। हम चिन्ताकुल हैं। कैसे सोचकर क्या किया जाय? बताओ। ८९५

ऎऴुपदु वॆळ्ळत् तुऱ्ऱ कुरक्किऩ मॆयिलै मुऱ्ऱुम्
तऴुविऩ वॆऩ्ऱु शॆय्यत् तक्कदु शमैदि पोलाम्

अळुवनीर् वेलै यन्न वायिर वॅळ्ळ मन्ऱे
उळिजैयैत् तुडैक्क नोच्चि युच्चियिऱ् कॊण्ड दुन्नूर् 896

ऍळुपतु वॅळ्ळत्तु उऱ्ऱ-सत्तर 'वॅळ्ळम्' के बने; कुरक्कितम्-वानर-समूह; ऍयिलै-प्राचीरों को; मुऱ्ऱुम्-पूर्ण रूप से; तळुविन-घेरे (खड़े) हैं; ऍन्ऱु-सोचकर; चॅय्य तक्कतु-करने योग्य कार्य के बारे में; चमैति पोलाम्-कुंठित रह जाएँगे क्या; उळिजैयै-'उळिजै' (नामक) फूलों को (जिन्हें प्राचीर-घेराव के अवसर पर शत्रु पहनते हैं यानी शत्रुओं को); तुटैक्क-मिटाने के लिए; अळुवम् नीर् वेलै अन्न-विस्तृत जलाशय सागर के समान; उन् ऊर्-आपके नगर (सेना के वीरों) ने; उच्चियिल्-अपने सिरों पर; नोच्चि-सिंदुवारपुष्प; कॊण्टतु-धारण कर लिये हैं; आयिरम् वॅळ्ळम् अन्ऱे-हजार 'वॅळ्ळम्' नहीं क्या। ८६६

निकुंब ने उत्तर दिया। सत्तर 'वॅळ्ळम्' वानर-सेना प्राचीरों को घेर गयी है। इसको देखकर आप सन्न हो गये हैं क्या? प्राचीर-घेराव की निशानी में शत्रु द्वारा पहने हुए 'उळिजै' फूलों को (यानी शत्रुओं को) तितर-बितर करने के लिए हमारे नगर के जिन राक्षस वीरों ने सिंदुवार-पुष्प अपने सिरों पर धारण किये हैं वे सहस्र 'वॅळ्ळम्' नहीं हैं क्या? । ८९६

ऍळुमळु तण्डु वेल्वा ळिलैनॆडुञ् जूल मादि
मुळुमुदऱ् पडैह ळेन्दि यिराक्कदर् मुनैन्द पोदु
तॊळुदुतम् पडैहळ् कैविट् टोडुवार् शुरर्ह ळॆन्निन्
विळुमिदु कुरङ्गु वन्दु वॅऱुङ्गैयार् कॊळ्ळुम् वॅन्ऱि 897

ऍळु-लोहे का स्तम्भ; मळु-परशु; तण्टु-दण्ड; वेल्-भाले; वाळ्-तलवारें; इलै-पत्र (के आकार के फल) सहित; नॆटुम् चूलम्-लम्बे त्रिशूल; आति-आदि; मुळु-श्रेष्ठ; मुतल् पटैकळ्-शीर्षस्थ हथियार; एन्ति-धारण करके; इराक्कतर्-राक्षस; मुनैन्त पोतु-जब उतारू हो जाएँगे तब; चुरर्कळ्-देव ही; तम् पटैकळ् कै विट्टु-अपने हथियारों को हाथों से डालकर; तॊळुतु-नमस्कार करते हुए; ओटुवार्-भाग जाएँगे; ऍन्निन्-तो; कुरङ्कु वन्तु-बन्दर आकर; वॅऱुम् कैयाल्-रिक्त हाथों से; कॊळ्ळुम् वॅन्ऱि-जो जीत पाएँगे वह; विळुमितु-अधिक श्लाघ्य होगी। ८६७

जब ये लोहे के खम्भे, परशु, दण्ड, भाले, तलवारें, पत्रसिर लम्बे शूल आदि उत्तम तथा प्रथम श्रेणी के हथियारों के साथ युद्ध पर आमादा होंगे, तब स्वयं देव भी अपने हथियारों को हाथ से नीचे डाल नमन करके भाग जाएँगे तो ये बन्दर आकर रिक्त हाथों से जो जीत पा जायँगे वह भी संभव होगी न! । ८९७

ईदिव णिहळ्च्चि यॆन्ना वॆरिविळित् तिडियि नक्कुप्
पूदलत् तडित्त कैयन् निहुम्बनॆन् ऱोरुवन् पोङ्ग

वेदनैक् काम मन्दो वेरीडुङ् गॅडुत्त वॅन्ऩा
मादुलत् तलैवन् पिन्ऩु मऩ्बिऩोर् माऱ्ऱज् जॊन्ऩान् 898

इवण्–यहाँ; निकऴ्च्चि ईतु–करना यही (युद्ध) है; अॅन्ऩा–कहकर; अॅरि विऴित्तु–आग्नेय दृष्टि करके; इटियिन् नक्कु–वज्र के समान ठठाकर; पू तलत्तु–भूतल पर; अटित्त कैयन्–हाथ से पीटकर; निकुम्पन् अॅन्ऱु ऒरुवन्–निकुम्ब नाम के एक के; पॊङ्क–उफनते समय; मातुल तलैवन्–मातुल और नायक माली ने; वेतनै कामम्–वेदनादायी काम ने; वेरॊटुम्–जड़ के साथ; कॅटुत्तत्तु–विगाड़ दिया; अन्तो–हाय; अॅन्ऩा–कहकर; अऩ्पिन्–वात्सल्य से; पिन्ऩुम् ओर् माऱ्ऱम्–और एक वचन; चॊन्ऩान्–कहा। ८९८

अब करना यही युद्ध है ! यह कहते हुए निकुंब ने आग्नेय दृष्टि से घूरा, ठठाकर हँसा और भूमि पर अपने हाथ से पीटा। उसका खौलता क्रोध देखकर रावण के मातुल, नायक माली ने कहा कि हाय ! वेदनादायी कामेच्छा ने सारा काम विगाड़ दिया है। फिर वात्सल्यवश उसने एक वार्त्ता कही। ८९८

पुक्कॅरि मडुत्तिव् वूरॆप् पॊडिशॆय्दु पोयि ऩाऱ्कुच्
चक्कर मुण्डो कैयिल् तऩुवुण्डो वाळि युण्डो
इक्किरि पत्तिन् मौलि यिऩमणि यडङ्गक् कॊण्ड
शुक्किरी वऱ्कु मुण्डो शूलमुम् वाळुम् वेलुम् 899

पुक्कु–(इस नगर में) प्रवेश करके; अॅरि मटुत्तु–आग लगाकर; इ ऊरै–इस नगर को; पॊटि चॆय्तु–चूर-चूर करके; पोयिऩाऱ्कु–जो गया था उसके; कैयिल् चक्करम् उण्टो–हाथ में चक्र रहता है क्या; तऩु उण्टो–धनु है; वाळि उण्टो–शर है; इक्किरि पत्तिन्–इन गिरियों, दसों के; मौलि–किरीटों के; इऩम् मणि–रत्नों की राशियों को; अटङ्क कॊण्ट–पूरे-पूरे जो छीन ले गया; चुक्किरीवऱ्कुम्–सुग्रीव के पास भी; चूलमुम् वाळुम् वेलुम्–शूल, तलवार और भाला; उण्टो–है क्या। ८९९

इस नगर में घुसकर जिसने आग लगायी और जो नगर को तहस-नहस कर गया, उस हनुमान के हाथ में चक्र था क्या ? या धनु और बाण थे ? गिरियों-सदृश इन दसों सिरों के किरीटों से सारे रत्नों को जो छीन ले गया उस सुग्रीव के पास शूल, तलवार, भाला आदि थे क्या ? । ८९९

तॊडेक्कलन् दिरामन् वाळि तोन्ऱुदन् मुन्ऩर्त् तोन्ऱा
इटैक्कलम् वरुदल् शॆय्यु मुलैयिऩाळ् तन्ऩै यीन्दु
पडैक्कल मुडैय नामप् पडैयिलाप् पडैये यॊण्ड
अडैक्कलम् बुहुव दल्लाल् इऩिप्पुहु मरणु मुण्डो 900

इरामन् वाळि–श्रीराम का शर; तॊटै कलऩ्तु–संधाना जाकर; तोन्ऱुतल् मुन्ऩर्–दिखायी दे इससे पहले; तोन्ऱा–अदृश्य; इटैक्कु–कमर को; अलम् वरुतल्

चॅय्युम्–पीड़ा देने का काम करनेवाले; मुलैयिताळ् तन्नै–स्तनों वाली सीता को; ईन्तु–उनके पास दे देकर; पटै कलम् उटैय–हथियारधारी; नाम्–हमारे; पटै इला–हथियार-हीन; अ पटैयै–उस (वानर-) सेना को; ईण्टु–अविलम्ब; अटैक्कलम् पुकुवतु अल्लाल्–शरण लिये विना; इति–अब; पुकुम् अरणुम्–लें, ऐसा कोई आश्रय भी; उण्टो–है क्या। ९००

(मैं कहता हूँ—) श्रीराम के धनु से संधाना जाकर शर निकल आये इससे पूर्व ही अदृश्य कमर के पीड़क स्तनों वाली सीता को उनके पास दे दो और उन अस्त्रशस्त्र-हीन सेना की शरण में चले जाओ। उसको छोड़कर अन्य रक्षणस्थल कोई है क्या जहाँ तुम लोग आश्रय पा सको ? । ९००

ॲन्बुळि मालि तन्नै यॅरियॅळ नोक्कि यॅन्बाल्
वन्बळि तरुदि पोलाम् वरन्मुरै यऱ्रिया वार्त्तै
अन्बळि शिन्दै तन्ना लडादन वरैय लॅन्ऱान्
पिन्बळि यॅय्द निन्ऱा नवन् बिन्नैप् पेच्चुविट्टान् 901

ॲन्पु उळि–ऐसा कहने पर; मालि तन्नै–माली को; पिन्–बाद; पळि ॲय्त–निंद्य होने को; निन्ऱान्–जो था उस रावण ने; ॲरि ॲळ–आग निकालते हुए; नोक्कि–देखकर; ॲन् पाल्–मुझ पर; वन् पळि–कठोर अपमान; तरुति पोलाम्–लगवा दोगे क्या; अन्पु अळि–(श्रीराम पर) प्रेम के कारण विकृत; चिन्तै तन्ताल्–मन के कारण; वरन् मुरै अऱ्रिया–मर्यादा न जानकर; अटातत वार्त्तै–अनुचित शब्द; अरैयल्–मत कहो; ॲन्ऱान्–कहा; अवन्–माली ने भी; पिन्नै–बाद; पेच्चु विट्टान्–बोलना त्याग दिया। ९०१

ज्योंही माल्यवान ने यह कहा, त्योंही अपयशोन्मुख रावण ने आग्नेय दृष्टि से देखकर कहा कि तुमने मुझे अपयश दिलाने को ठाना है ! राम पर तुम्हारा प्रेम है और उस कारण अनुचित और नियमहीन शब्द मत कहो। माल्यवान भी उसके वाद चुप रह गया। ९०१

काट्टिय काल केयर् कॉळुनिणक् कऱ्रै कालत्
तीट्टिय पडैक्कै वीरच् चेनैयिन् ऱलैव तॅळ्ळि
ईट्टिय वरक्कर् तानै यिरुनूरु वॅळ्ळङ् गॉण्डु
कीट्टिशै वायि निऱ्रि निन्बॅरुङ् गिळेह ळोडुम् 902

काट्टिय–युद्ध में जो अपने को दिखाते हैं (आये हैं); कालकेयर्–कालकेयों के; कॉळु निण कऱ्रै–पुष्ट मांसपुंजों को; काल–निकालने; तीट्टिय–पैनाए; पटै कै–हथियारों को हाथ में धरनेवाले; वीर चेनैयिन्–वीरतापूर्ण सेना के; तलैव–नायक (प्रहस्त); तॅळ्ळि–चुन-चुनकर; ईट्टिय–एकत्रित; अरक्कर् तानै–राक्षस-सेना; इरु नूरु वॅळ्ळम् कॉण्टु–दो सौ 'वॅळ्ळम्' लेकर; निन् पॅरु किळैकळोटुम्–अपने बड़े परिवारों के साथ; कीळ् तिचै–पूर्वी दिशा के; वायिल् निऱ्रि–द्वार पर खड़े रहो। ९०२

रावण ने प्रहस्त से कहा कि युद्ध में आये कालकेयों के पुष्ट मांस-खण्डों को बाहर निकालने के लिए जिस सेना के वीरों ने अपने हथियार पैनाये थे, ऐसी सेना के वीरों के नायक, प्रहस्त ! चुने हुए दो सौ 'वॅळ्ळम्' वीरों को और अपने परिवारों की साथ लेकर पूर्व दिशा के द्वार पर जाओ। ९०२

कालन्ऱन् कऴिप्पुत् तीर्त्त महोदरक् काळैये पोय्
मालौन्ऱु मनत्तु वीर माबॅरुम् बक्क तोडुम्
कूलङ्गोळ् कुरङ्गै यॅल्लाङ् गॊल्लुदि वॅळ्ळ मान
नालैम्ब दोडुञ् जॅन्ऱु नमन्ऱिशै वायिल् नण्णि 903

कालन् तन् कऴिप्पु–यम के संतोष को; तीर्त्त–मिटानेवाले; मकोतर काळैये–महोदर ऋषभ-सम वीर; माल् ऒन्ऱुम्–(युद्ध के) अगाध प्रेम में डूबे; मनत्तु—मन वाले; वीर–वीर; मा पॅरुम् पक्कत्तोटुम् पोय्–महापार्श्व के साथ जाकर; वॅळ्ळम् आन नालु ऐम्पतोटुम्–बीस 'वॅळ्ळम्' के साथ; नमन् तिचै–यमदिशा के; वायिल् चॅन्ऱु नण्णि–द्वार पर जा पहुँचकर; कूलम् कॊळ् कुरङ्कै ऍल्लाम्–लांगूल वाले सभी वानरों को; कॊल्लुति–मार दो। ९०३

हे महोदर, जिसने यम की मस्ती को मिटाया था ! ऋषभ (-सम वीर) ! युद्धोन्मत्त महापार्श्व को साथ लो। दो सौ 'वॅळ्ळम्' सेना के साथ यम की (दक्षिण) दिशा के द्वार पर जाओ और लांगूलियों को मार मिटाओ। ९०३

एऱ्ऱमॆन् शॊल्लि नॆन्बा लिन्दिरन् पहैञ वन्नाळ्
काऱ्ऱिनुक् करशन् मैन्दन् कडुमैनी कण्ड दन्ऱो
नूऱ्ऱिरण् डाय वॅळ्ळम् नुन्बॆरुम् बडैञर् शुऱ्ऱ
मेऱ्ऱिशै वायिल् शेर्दि विडिवदन् मुन्नम् वीर 904

इन्तिरन् पकैञ–इंद्रशत्रु (इन्द्रजित्); ऍन् पाल्–मेरे पास; एऱ्ऱम्–बड़ाई; चॊल्लिन्—कहने से; ऍन्–क्या होगा; अ नाळ्–उस दिन; काऱ्ऱितुक्कु अरचन्–पवनदेव के; मैन्तन्–पुत्र की; कटुमै–प्रचंडता; नी कण्टतु अन्ऱो–तुमने देखी थी न; वीर–वीर; नूऱ्ऱिरण्टु आय–सौ के दो; वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्' और; नुन् पॅरु पटैञर्–तुम्हारे बड़े वीर; चुऱ्ऱ–तुमसे मिले आएँ ऐसा; विटिवतन् मुन्नम्–सवेरा होने से पहले; मेल् तिचै वायिल्–पश्चिमी दिशा के द्वार पर; चेर्ति–पहुँच जाओ। ९०४

(रावण ने इन्द्रजित् से कहा—) हे इन्द्रशत्रु ! मेरे पास अपनी बड़ाई बघारने से क्या लाभ रहा ? तुम पवनराज के पुत्र की उग्रता देख ही चुके हो। दो सौ 'वॅळ्ळम्' सेना और अपने साथी वीरों को लेकर सवेरा होने से पहले पश्चिमी द्वार पर पहुँच जाओ। ९०४

इन्नॆडुङ् गाल मॆल्ला मिमैयवर्क् किडुक्कण् शॆय्वाय्
पुन्नॆडुङ् गुरङ्गिर् चेरुल् पुल्लिदु पुहळ्ळु मन्राल्
अन्नॆडु मूलत् ताते यदन्नोडु ममैच्च रोडुन्
तॊन्नॆडु नहरि काक्क विरुपाक्क वॆन्नच् चॊन्नान् 905

विरुपाक्क–विरूपाक्ष; इ नॆट्टु कालम् ऎल्लाम्–इन सभी लम्बे दिनों में; इमैयवर्क्कु–देवों की; इट्टुक्कण् चॆय्ताय्–हानि की; पुल् नॆट्टु कुरङ्किन्–अल्प वानरसमूहों पर; चेरुल्–चढ़ाई करना; पुल्लितु–छोटा काम है; पुकळुम् अन्रु–यशदायी भी नहीं; अ नॆट्टु मूलम् ताने–वह बड़ा मूल बल जो है; अतन्नोटुम्–उसके साथ; अमैच्चरोटुम्–और मंत्रियों के साथ; तॊल् नॆट्टु नकरि–पुरानी बड़ी नगरी की; काक्क–रक्षा करो; ऎन्न चॊन्नान्–ऐसी आज्ञा सुनायी। ६०५

(उसने विरूपाक्ष को आज्ञा सुनायी।) हे विरूपाक्ष! अब तक बहुत लम्बे अरसे से देवों को त्रास दे रहे थे। अब अल्प वानर बड़ी संख्या में आये हैं। उन पर चढ़ाई करना छोटा काम है और यशदायी भी नहीं है। इसलिए अपनी सेना और अमात्यों-सहित इस प्राचीन विशाल नगर की रक्षा करते रहो। ९०५

कडहरि पुरवि आळ्तेर् कमलत्तो नुलहुक् किप्पाऱ्
पुडैयुळ पॊरुदु कॊण्डु पोर्पॊरप् पॊङ्गु हिन्ऱ
इडैयिडै मिडैन्द शेनै यिरुनूऱु वॆळ्ळङ् गॊण्डु
वडदिशै वायिल् काप्पेन् यानॆन वहुत्तु विट्टान् 906

कमलत्तोन् उलकुक्कु इप्पाल्–कमलदेव के लोक के इस ओर; उळ पुटै–रहनेवाले स्थानों में; पॊरुतु–युद्ध करके; पोर् पोर–युद्ध करने; पॊङ्कुकिन्ऱ–उमँग उठनेवाले; कटकरि–मत्त गज; पुरवि–अश्व; आळ्–पदाति; तेर्–रथ; इटै इटै–(इनको) यत्र-तत्र; मिटैन्त–मिली; चेनै–सेना; इरु नूऱु वॆळ्ळम्–दो सौ 'वॆळ्ळम्'; यान् कॊण्टु–मैं लेकर; वट तिचै वायिल्–उत्तरी दिशा के द्वार का; काप्पेन्–पालन करूँगा; ऎन–इस भाँति; वकुत्तु विट्टान्–(सेना को) विभाजित किया (रावण ने)। ६०६

मैं ब्रह्मलोक के इस ओर रहनेवाले स्थानों में युद्ध करने के लिए रथ, गज, तुरग, पदाति की सेना दो सौ 'वॆळ्ळम्' लेकर उत्तरी द्वार की रक्षा करूँगा। इस भाँति रावण ने सेना का विभाजन कर दिया। ९०६

कलङ्गिय कङ्गु लाहि नीङ्गिय कऱ्पङ् गाणुम्
नलङ्गिळर् देवर्क् केयो नान्मऱै मुनिवर्क् केयो
पॊलङ्गॊळु शीवर्क् केयो पॊरुवलि यिरामर्क् केयो
इलङ्गैयर् वेन्दर्क् केयो ऎल्लार्क्कुञ् जॆय्द दिन्बम् 907

कलङ्किय–मलिन; कङ्कुल् आकि–रात जो बना था; नीङ्किय–और जो चला

गया; कऱ्पम्–उस कल्प (रात के अंत) ने; काणुम्–युद्धदर्शक; नलम् किळर्–हितप्रबुद्ध; तेवर्क्केयो–देवों को ही क्या; नान् मऱै–चतुर्वेदज्ञ; मुनिवर्क्केयो–ब्राह्मणों को ही क्या; पोलम् कॊळ्ळु–सुन्दरतापूर्ण; चीतैक्केयो–सीता को क्या; पोरु वलि–युद्धबलसंयुक्त; इरामर्क्केयो–श्रीराम को ही क्या; इलङ्कैयर् वेन्तर्क्केयो–लंका के राजा विभीषण को ही क्या; ऎल्लार्क्कुम्–सभी को; इन्पम् चॆय्ततु–सुख दिलाया। ६०७

मन को व्याकुल करनेवाली रात का अन्त क्या हुआ कोई कल्प, नया कल्प ही हो आया। उसने क्या केवल युद्धदर्शनाभिलाषी सौभाग्यवान देवों को आनंद दिया? चतुर्वेदज्ञ ब्राह्मणों को, सुन्दर सीतादेवी को या युद्ध का अपार बल रखनेवाले श्रीराम को आनंद दिया? नहीं, बल्कि सभी को आनंद दिलाया। ९०७

अळित्तह विल्ला वाऱ्ऱ लमैन्दवन् कॊडुमै यञ्जि
वॆळिप्पड लरिदॆन् ऱुळ्ळम् वेदनै युळक्कुम् वेलै
कळित्तवन् कळिप्पु नीक्किक् काप्पवर् तम्मैक् कण्णुऱ्
ऱॊळित्तवर् वॆळिप्पट् टॆन्नक् कदिरव नुदयञ् जॆय्दान् 908

अळितकवु–करुणा रूपी योग्यता; इल्ला–जिसमें नहीं रही; आऱ्ऱल् अमैन्तवन्–पर जो बलसंयुक्त था उसकी; कॊटुमै–क्रूरता से; अञ्चि–डरकर; वॆळिप् पटल् अरितु–प्रकट होना कठिन है; ऎन्ऱु–सोचकर; उळ्ळम्–मन में; वेतनै उळक्कुम् वेलै–वेदना से व्यग्र होते समय; कळित्तवन्–मत्त रहनेवाले उस अत्याचारी का; कळिप्पु नीक्कि–मद हटाकर; काप्पवर्–रक्षक; तम्मै–जो है उस (चक्रवर्ती) को; कण्णुऱ्ऱु–देखकर; ऒळित्तवर्–जो छिपे रहे; वॆळिप्पट्टु ऎन्न–वे प्रगट हुए हों जैसे; कतिरवन्–सूर्य; उतयम् चॆय्तान्–उदित हुआ। ६०८

तब सूर्य प्रगट हो आया। वह उस मातहत राजा के समान छिपा था, जो निर्मम और अयोग्य अत्याचारी राजा से पीड़ित रहा और उसकी रक्षा में आये चक्रवर्ती को देखकर बाहर आता हो। (सूर्य मानो निर्मम रावण से डरकर उसके सामने प्रगट होना कठिन मानता था!)। ९०८

उळैप्पुरु मोद वेलै ओङ्गलै यॊडुङ्गत् तूऱ्ऱप
अळप्परुन् दूळिच् चुण्ण माशैह ळलैक्कुम् बूशल्
इळैप्परुन् दलैवर् मुन्नम् एवलि नॆयिलै मुऱ्ऱुम्
वळैत्तनर् विडियत् तत्तम् वायिल्हळ् तोऱुम् वन्दु 909

विटिय–सवेरा होने पर; अळप्परुम् तूळि चुण्णम्–अपार धूलकण; आचैकळ्–अलैक्कुम्–जो दिशाओं को हिला रहे थे उन्होंने; उळैप्पुरुम्–गर्जनशील; ओत वेलै–जलसमुद्र की; ओङ्कु अलै–उत्तुंग तरंगों के शोर को; ऒटुङ्क–दबाते हुए; तूऱ्ऱप–रोका; पूचल्–शोर के साथ; इळैप्पु अरु तलैवर्–अथक वानर वीर; मुन्नम्–पहले; एवलिन्–दी हुई आज्ञा के अनुसार; तम् तम् वायिल्कळ् तोऱुम्–

अपने-अपने द्वार पर; वन्तु–आकर; अँयिलै–प्राचीरों को; मुऱ्ऱुम् वळैत्तनर्–पूर्ण रूप से घेर गये। ९०९

उदय होते ही सेनाओं के कूच के कारण जो धूलकण उठे, उन्होंने दिशाओं को ही हिला दिया और गर्जनशील समुद्र की लहरों के शोर को ढक दिया। सभी अथक वानर वीर श्रीराम की पूर्वकथित आज्ञा के अनुसार अपने-अपने द्वारों पर आ गये। ९०९

तन्दिर मिलङ्गै मूदूर् मदिलित्तैत् तळुवित् तावि
अन्दरक् कुलमीन् शिन्द वण्डमुङ् गिळिय वार्प्पच्
चॅन्दतिच् चुडरोन् शेयुन् दम्बियु मुन्बु शॅल्ल
इन्दिरन् तॊळुदु वाळ्त्त विरामनु मॅळुन्दु शॅन्ऱान् 910

तन्तिरम्–वानर-सेना; इलङ्कै मूतूर्–पुरातन लंका नगर के; मतिलित्तै तळुवि–प्राचीर से लगकर; तावि–उछलकर; अन्तर–आकाश के; कुल मीन् चिन्त–नक्षत्रसमूहों को गिराते हुए; अण्टमुम् किळिय–अंड को भी फाड़ते हुए; आर्प्प–जब गरज उठी तो; तत्ति–अप्रतिम; चॅं चुटरोन्–लाल किरणमाली का; चेयुम्–पुत्र और; तम्पियुम्–लघु भाई लक्ष्मण; मुन्पु चॅल्ल–आगे गये; इन्तिरन्–इन्द्र ने; तॊळुतु–नमस्कार करके; वाळ्त्त–स्तुति की, इस स्थिति में; इरामनुम्–श्रीराम भी; ॲळुन्तु–उठकर; चॅन्ऱान्–गये। ९१०

वानर-सेना पुरातन लंका नगर के प्राचीरों से लगकर ऊपर उछली। उसने ऐसे ज़ोर का गर्जन किया कि आकाश के नक्षत्रवृन्द चू गये और अण्ड फट गया। तब लाल किरणमाली सूर्य के पुत्र सुग्रीव को और अपने लघु भ्राता लक्ष्मण को पुरस्सर करते हुए श्रीराम उठकर चले, जब इन्द्र ने उनकी स्तुति की। ९१०

नूऱ्कडऱ् पुलव रालु नुतिप्परुम् वलत्त दाय
वेऱ्कडऱ् ऱाऩै यान विरिहडल् विळुङ्गिऱ् ऱेनुम्
काऱ्क्कडल् पुरत्तल दाहक् कविक्कडल् वळैन्द काट्चि
पाऱ्कड लळुवन् दुळ्ळ दोत्तदप् पदहन् मूदूर् 911

अ पतकन्–उस पातक का; मूतूर्–प्राचीन नगर; कटल् नूल्–सागर-सम विशाल ग्रन्थों के; पुलवरालुम्–(ज्ञाता) पंडितों से भी; नुतिप्पु अरु–अनुमान करने में असाध्य; वलत्ततु आय–शक्तिसम्पन्न; वेल् कटल्–भालों के (विपुल) सागर के धारक; तानै आन–सेना जो थी; विरिकटल्–उस विशाल सागर से; विळुङ्किऱ्ऱेनुम्–निगला (पूर्ण रूप से वलयित) रहा तो भी; कार्क्कटल्–काले समुद्र के; पुरत्ततु आक–पार्श्व में रहते; कवि कटल्–कपियों का सागर; वळैन्त काट्चि–जो घेरता रहा वह दृश्य; पाल् कटल् अळुवत्तु–क्षीरसागर के विस्तार के मध्य; उळ्ळतु–रहा; ऒत्ततु–जैसा लगा। ९११

उस पातक रावण का प्राचीन नगर शास्त्रसागर के पारंगत विद्वानों

द्वारा भी अगण्य भालों वाले वीरों की सेना के विस्तृत सागर से अंतर्गत किया हुआ था। तो भी काले सागर के पार्श्व में वानर-सेना ने आकर उस नगर को घेर लिया तब वह नगर क्षीरसागर-मध्य रहता-सा दिखायी दिया। ९११

अलहिला वरक्कन् शेनै यहप्पड वरियिन् ऱानै
वलैहॊला मॆन्नच् चुऱ्ऱि वळैत्तदऱ् कुवमै कूऱिन्
कलैहुलाम् परवै येऴुङ् गाल्हिळर्न् दॆऴुन्द कालत्
तुलहॆला मॊरुङ्गु कूडि यॊदुङ्गित वेयु मॊक्कुम् 912

अलकु इला–असंख्य; अरक्कन् चेनै–राक्षस-सेना को; अकप्पट–अन्तर्गत करते हुए; अरियिन् तानै–कपि-सेना; वलै कॊलाम् ॲन्न–शायद जाल हो ऐसा; चुऱ्ऱि–चारों ओर; वळैत्ततऱ्कु–जो घेरे रही उसकी; उवमै कूऱिन्–उपमा कहनी हो; कलै कुलाम्–वस्त्र-से प्रकीर्तित; परवै एऴुम्–सातों समुद्र; काल्–युगान्त की हवा से; किळर्न्तु ॲऴुन्त–जब उमंग उठे; कालत्तु–उस समय में; उलकु ॲलाम्–सारे लोक; ऒरुङ्कु कूटि–एकत्रित होकर; ऒतुङ्कितवेयुम्–एक ओर रहे; ऒक्कुम्–जैसे भी रही। ९१२

वानर-सेना जाल के समान सारी राक्षस-सेना को घेर गयी। उस घेरे की उपमा कहनी हो तो कहना पड़ेगा कि युगान्त-पवन से लोकों के वस्त्र के रूप में शंसित सातों समुद्रों के उमग उठने पर सारे लोक एकत्र हो रहें, ऐसा लगता था। ९१२

13. अङ्गदन् तूदुप् पडलम् (अंगद-दौत्य पटल)

वळ्ळलुम् विरैवि नॆय्दि वडदिशै वायिन् मुऱ्ऱि
वॆळ्ळमो रेऴु पत्तिऱ् कणित्त वॆञ्जेनै योडुम्
कळ्ळनै वरवु नोक्कि निन्ऱनन् वरवु काणान्
ऒळ्ळिय दुणर्न्दे नॆन्न वीडणऱ् कुरैप्प दानान् 913

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु भी; वॆळ्ळम् ओर् ॲऴु पत्तिल् कणित्त–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की गिनी हुई; वॆम् चेनैयोटुम्–उग्र सेना के साथ; विरैविन् ॲय्ति–सवेग जाकर; मुऱ्ऱि–घेरा डालकर; कळ्ळनै–चोर के; वरवु नोक्कि–आने के ताक में; वट तिचै वायिल्–उत्तरी दिशा के द्वार पर; निन्ऱनन्–खड़े रहे; वरवु काणान्–उसको न आता देख; वीटणऱ्कु–विभीषण से; ऒळ्ळियतु–श्लाघनीय एक बात; उणर्न्तेन्–सोच ली; ॲन्न–कहकर; उरैप्पतु आनान्–बताने लगे। ९१३

वदान्य प्रभु श्रीराम भी सत्तर 'वॆळ्ळम्' की सेना के साथ क्षिप्र गति से गये और लंका को घेरकर चोर रावण के आगमन की प्रतीक्षा में उत्तरी दिशा के द्वार पर खड़े रहे। पर रावण को नहीं आता देख श्रीराम ने

विभीषण से कहा कि विभीषण ! एक सुन्दर बात सूझ गयी। फिर वे उसका विवरण देने लगे। ९१३

तूदुव नॉरुवन् तन्नै इव्वळि विरॅविल् तूण्डि
मादिनै विडुदि योवॅन् ऱुणर्त्तुवोम् मरुक्कु माहिल्
कादुदल् कडन्नॅन् ऱुळ्ळड् गरुदिय दऱ्ऱ्न् मः(ह्)दे
नीदियु मः(ह्)दे यॅन्ऱान् करुणैयि निलय मन्नान् 914

करुणैयिन् निलैयम्–करुणा के आगार-सवृश रहनेवाले; अन्नान्–उन्होंने; इ वळि–इस ओर से; तूतुवन् ऑरुवन् तन्नै–एक दूत को; विरॅविल् तूण्टि–शीघ्र भेजकर; मातिनै विटुतियो–देवी को छोड़ दो क्या; ऍन्ऱु उणर्त्तुवोम्–ऐसा समझा देंगे; मरुक्कुम् आकिल्–इंकार करेगा तो; कातुतल्–मारना; कटन्–कर्तव्य होगा; ऍन्ऱु–ऐसा; उळ्ळम् करुतियतु–मेरा मन सोचता है; अऱ्ऱुम् अ.·ते–धर्म भी वही है; नीतियुम् अ.·.ते–(राज-) नीति भी वही है; ऍन्ऱान्–कहा। ६१४

करुणागार ने कहा कि इस ओर से हम एक दूत को भेजेंगे। और रावण को समझाएँगे कि वह अब भी देवी को छोड़ दे। अगर वह इंकार कर दे तब उसे मारना कर्तव्य होगा। ऐसा मेरा मन कहता है। धर्म और राजनीति भी वही होगी। ९१४

अरक्कर्को नदनैक् केट्टा नळ्हिऱ्ऱे याहु मॅन्ऱान्
कुरक्किनत् तिऱैवन् केट्टुक् कॉऱ्ऱवर्क् कुऱ्ऱ वॅन्ऱान्
इरक्कम दिळुक्क मॅन्ऱा निळैयव निन्निना मम्बु
तुरक्कुव दल्लाल् वेऱोर् शॉल्लुण्डो वॅन्नच् चॊन्नान् 915

अरक्कर्कोन्–राक्षसों के राजा ने; अतनै केट्टान्–उसको सुना; अळकिऱ्ऱे आकुम्–सुन्दर ही होगा; ऍन्ऱान्–कहा; कुरक्कु इनत्तु–वानरकुल के; इऱैवन्–राजा ने; केट्टु–सुनकर; कॉऱ्ऱवर्क्कु–राजाओं के लिए; उऱ्ऱतु–युक्त है; ऍन्ऱान्–कहा; इळैयवन्–कनिष्ठ भ्राता ने; इरक्कम् अतु–दया, सो; इळुक्कम्–ग़लत है; ऍन्ऱान्–कहकर; इनि–अब; नाम्–हमारे; अम्पु–शर; तुरक्कुवतु अल्लाल्–छोड़ने के सिवा; वेऱु ओर् चॊल्–अन्य कोई वार्त्ता; उण्टो–होगी क्या; ऍन्न–ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ६१५

राक्षसराज विभीषण ने सुना तो कहा कि सुन्दर बात है! कपीश सुग्रीव ने भी कहा कि यह राजोचित कार्य है। पर श्रीराम के कनिष्ठ ने कहा कि रावण के प्रति यह दया ग़लत है। हमारी बात तो शरों से करनी है! अन्य कोई बात होगी क्या ? । ९१५

तेशियॅच् चिऱैयिल् वैत्तान् तेवरै यिडुक्कण् शॅय्दान्
पूशुरर्क् कलक्क णीन्दान् मन्नयिर् पुडैत्तुत् तिन्ऱान्

आशैयि नळवु मॆल्ला वुलहमुन् दाने याळ्वान्
वाशवन् तिरुवुङ् गॊण्डान् वळियला वळिमेऱ् चॆल्वान् 916

तेचियै–तेजस्विनी को; चिऱैयिल्–कारागृह में; वैत्तान्–रखा; तेवरै–देवों को; इटुक्कण् चॆय्तान्–हानि की; पूचुरर्क्कु–भूसुरों को; अलक्कण्–दुःख; ईन्तान्–दिया; मन् उयिर्–शाश्वत जीवों को; पुटैत्तु तिन्ऱान्–मारकर खाया; आचैयिन् अळवुम्–दिगंतों तक के; ऍल्ला उलकमुम्–सारे लोकों के; ताने–खुद; आळ्वान्–आधिपत्य के लिए; वाचवन्–इन्द्र के; तिरुवुम्–वैभव को भी; कॊण्टान्–हर लिया; वळि अला–(जो न्याय) मार्ग नहीं; वळि मेल्–उस मार्ग पर; चॆलवान्–जाता है (रावण)। ६१६

आप ही सोचें। रावण ने तेजस्विनी देवी को कारा में बन्द किया; देवों की हानि की; भूसुरों को कष्ट दिया। यही नहीं शाश्वत जीवों को मारकर खाया। दिगन्तों तक सारे लोक का आधिपत्य करने के निमित्त उसने वासव के वैभव को हथिया लिया। वह सन्मार्गेतर कुमार्गगामी है! । ९१६

वाळियाय् निन्नै यन्ऱु वरम्बरु तुयरिन् वैहच्
चूळ्विला वञ्जञ् जॆय्दुन् तुणैवियैप् पिरिवु शॆय्दान्
एळैया ळिडुक्कण् णोक्कि यॊरुतनि यिहन्मेऱ् चॆन्ऱ
ऊळिकाण् गिऱ्कुम् वाणा ळुन्दैयै उयिर्वण् डुण्डान् 917

वाळियाय्–आयुष्मन्; अन्ऱु–उस दिन; निन्नै–आपको; वरम्पु अऱु–असीम; तुयरिन् वैक–दुःख में डुबोते हुए; चूळ्वु इला–अचिंत्य; वञ्चम् चॆय्तु–वंचना करके; उन् तुणैवियै–आपकी संगिनी को; पिरिवु चॆय्तान्–अलग किया; एळैयाळ् इटुक्कण्–वराकी का दुःख; नोक्कि–देखकर; पण्टु–पहले; ऒरु तनि–अकेले; इकल् मेल् चॆन्ऱ–युद्ध में जो गये; ऊळि काण् किऱ्कुम्–युगदर्शी; वाळ्नाळ् उन्तैयै–आयु के आपके पिता (-तुल्य जटायु) के; उयिर् उण्टान्–प्राणों को खा लिया (इस रावण ने)। ६१७

आयुष्मन्! उस दिन उसने आपकी जीवनसंगिनी को अचिंत्य छल करके आपसे अलग करके आपको अपार दुःख में डाला। उन वेचारी का दुःख देखकर जटायु चुप नहीं रह सके। आपके पितृतुल्य वे अकेले ही उससे लड़ने गये। युग-युग तक जीने के आयुष्मान् उनके उसने प्राण खा लिये। ९१७

अन्नवन् तन्नक्कु मादै विडिलुयि रुळु वायेल्
ऍन्नुडै नाम निऱ्कुम् नाळॆला मिलङ्गै मूदूर्
मन्नवन् नीये यॆन्ऱु वन्दडैन् दवर्कु वायाल्
शॊन्नशॊ लॆन्नाम् मुन्नज् जूळुऱु वॆन्नान् दोन्ऱाल् 918

तोत्ऱाल्–नरश्रेष्ठ; मातै विटिल्–देवी को छोड़ देगा तो; अन्ऩवन् ततक्कु–उस रावण की; उयिर् अरुळुवायेल्–जान बख्श देंगे तो; ॲन्ऩुटै नामम् निऱ्कुम्–जब तक मेरा नाम रहेगा; नाळ् ॲलाम्–तब तक; इलङ्कै मूतूर्–लंका के प्राचीन राज्य का; मत्तवन्–राजा; नीये–तुम ही हो; ॲन्ऱु–ऐसा; वन्तु अटैन्तवऱ्कु–शरणागत को; वायाल्–अपने श्रीमुख से; चॊन्ऩ चॊल्–जो कहा वह वचन; ॲन्ऩ आम्–क्या होगा; मुन्ऩम्–पहले; चूळुरवु–वादे के वचन का; ॲन्ताम्–क्या होगा। ९१८

पुरुषश्रेष्ठ ! अगर वह देवी को छोड़ दे और आप उसकी जान बख्श दें तो आपने शरणागत विभीषण को जो राज्य दिया और कहा कि मेरे नाम के रहते समय तक यह तुम्हारा होगा, उसका क्या होगा ? फिर आपने उस दिन दण्डकारण्यवासियों को जो वादा किया था उसका क्या होगा ? । ९१८

अऱन्दरु तवत्तै यायु मऱिविना लवऱ्ऱै मुऱ्ऱुम्
मऱन्दतै यॆन्निनुम् मऱ्ऱिव् विलङ्गैयिन् वळमै नोक्कि
इऱन्दिदु पोदल् तीदॆन् ऱिरङ्गिनै यॆनिनुम् ॲण्णिऱ्
चिऱन्ददु पोरे यॆन्ऱान् शेवहन् मुऱुवल् शॆय्दान् 919

अऱम् तरु–धर्मस्थापक; तवत्तै–(क्षमा के) तप को; आयुम् अऱिविताल्–पालनेवाली बुद्धि से; अवऱ्ऱै–उन वचनों को; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; मऱन्ततै ॲतिनुम्–भूल जाएँगे तो भी; मऱ्ऱु–और; इव् इलङ्कैयिन् वळमै–इस लंका की समृद्धि को; नोक्कि–देखकर; इतु इऱन्तु पोतल्–इसका मिटना; तीतु–बुरा है; ॲन्ऱु–ऐसा; इरङ्किनै ॲनितुम्–दया करें तो भी; ॲण्णिल्–सोचने पर; चिऱन्ततु–श्रेष्ठ काम; पोरे–युद्ध ही है; ॲन्ऱान्–कहा (लक्ष्मण ने); चेवकन्–श्रीवीरराघव; मुऱुवल् चॆय्तान्–मुस्कुराये। ९१९

आप धर्मस्थापक क्षमा रूपी तप पर आस्था रखनेवाले हैं। उससे आप उन वचनों को भूल जाएँ और इस लंका नगर की समृद्धि देखकर इसके नाश को अनुचित मानकर दया दिखाने लगें ! पर खूब सोचा जाय तो लड़ना ही श्लाघ्य है। लक्ष्मण ने यों कहा। तब श्रीवीरराघव मुस्कुरा दिये। ९१९

अयर्त्तिलन् मुडिवु मः(ह्)दे आयिन् मऱिज रायन्द
नयत्तुऱै नूलि नीदि नान्दुऱन् दमैदल् नन्ऱो
पुयत्तुऱै वलिय रेनुम् पॊऱैयॊडुम् पॊरुन्दि वाळ्दल्
शयत्तुऱै अऱनु मः(ह्)दे यॆन्ऱिवै शमैयच् चॊन्ऩान् 920

अयर्त्तिलन्–भूला नहीं हूँ; मुटिवुम् अ..ते–निर्णय भी वही है; आयिनुम्–तो भी; अऱिजर् आयन्त–विद्वानों के तर्कसम्मत; नयम् तुऱै–न्यायमार्ग के; नूलिन् नीति–ग्रंथोक्त नीति को; नाम् तुऱन्तु–हम उल्लंघन करके; अमैतल्–रहें यह;

नन्ड्रो–अच्छा होगा क्या; पुयम् तुरै–भुजबल के मार्ग में; वलियर् एनुम्–समर्थ हों तो भी; पॊऱैयॊडुम् पॊरुन्दि–क्षमा के साथ लगे; वाऴ्तल्–जीवन बिताना; चयत्तुरै–विजयमार्ग होगा; अऱतुम्–धर्म भी; अ..ते–वही है; ऎन्ड्रु–ऐसा; इवै–ये वचन; चमैय–समझाकर; चॊन्नान्–कहे (श्रीराम ने)। ९२०

श्रीराम ने अपना निश्चय सुनाया। लक्ष्मण! मैं उन वादों को भूला नहीं हूँ। अन्त में होगा भी वही! तो भी (बृहस्पति, शुक्र आदि) विद्वानों ने जो राजनीति के शास्त्रों में कहा है उसकी हम ही उपेक्षा कर दें यह अच्छा होगा क्या? युद्ध में, जिसमें भुजबल का बड़ा महत्त्व रहता है, हम बड़े सामर्थ्यवान हों तो भी क्षमा के गुण के साथ जीवन बिताना ही विजय का उपाय होगा। राजधर्म भी वही है। श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाकर ये वचन कहे। ९२०

❀ मारुदि पिन्नुम् जॆल्लिन् मड्रिव नन्ड्रि वन्दु
शारुनर् वलियो रिल्लै यॆन्बदु शारु मन्ड्रे
यारिनि येहत् तक्का रङ्गद नमैयु मॊन्नार्
वीरमे विळैप्प रेनुन् तीदिन्ड्रि मीळ वल्लान् 921

मारुति–हनुमान; पिन्नुम् चॆल्लिन्–फिर से जाएगा तो; मड्रु–फिर; इवन् अन्ड्रि–इसके सिवा; वन्तु चारुनर्–आ सकनेवाले; वलियोर् इल्लै–समर्थ नहीं हैं; ऎन्पतु–ऐसा विचार; चारुम् अन्ड्रे–(उनके मन में) उठेगा न; इनि–अब; एक तक्कार्–जाने योग्य; यार्–कौन है; अङ्कतन् अमैयुम्–अंगद योग्य होगा; ऒन्नार्–शत्रु; वीरमे विळैप्पर् एनुम्–वीरता का काम करेंगे तो भी; तीतु इन्ड्रु–विना हानि के; मीळ वल्लान्–लौट सकेगा (सुग्रीव ने कहा।)। ९२१

श्रीराम ने कहा कि अगर मारुति अब भी जाएगा, तो लोगों के मन में यह विचार उठेगा कि हमारे पास हनुमान को छोड़ कोई दूसरा जाने की शक्ति रखनेवाला नहीं है। उन्होंने पूछा कि जाने योग्य कौन है? (सुग्रीव ने कहा—) अंगद ही योग्य है। अगर शत्रु कोई वीरता का प्रदर्शन भी करेंगे तो अंगद विना आँच के लौट आएगा। ९२१

❀ नन्ड्रॆन ववनैक् कूवि नम्बिनी नण्ण लार्पाल्
शॆन्ड्रुळ दुणर वॊन्ड्रु शॆप्पिनै तिरिदि यॆन्ड्रान्
अन्ड्रव नरुळप् पॆट्र वाण्डहै यलङ्गर् पॊट्रोळ्
कुन्ड्रिनु मुयर्न्द वॆन्ड्राल् मननिलै कूऱ लामो 922

नन्ड्रु ऎन–अच्छा कहकर; अवनै कूवि–(श्रीराम ने) उसे बुलाकर; नम्पि–श्रेष्ठ गुणी; नी–तुम; नण्णलार्पाल्–विरोधियों के पास; चॆन्ड्रु–जाकर; उणर–कहो ऐसी; ऒन्ड्रु उळतु–एक बात है; चॆप्पिनै–कहकर; तिरिति–लौट आओ; ऎन्ड्रान्–कहा; अन्ड्रु–तब; अवन्–उनके द्वारा; अरुळ पॆट्र–कृपा से आज्ञापित;

आण् टकै–पुरुषश्रेष्ठ के; अलङ्कल्–मालाधारी; पोन्–मनोरम; तोळ्–कन्धे; कुन्ऱिऩुम् उयर्न्त–पर्वत से भी बढ़ गये; ऍन्ऱाल्–तो; मतम् निलै–उसके मन की स्थिति; कूऱलामो–बतायी जाएगी क्या। ६२२

'ठीक है' कहकर श्रीराम ने अंगद को बुलाया और कहा कि शत्रुओं के पास जाकर कहो ऐसी एक बात है। जाओ सुना आओ। यह श्रीराम का कृपा-वचन सुनकर पौरुषपूर्ण अंगद के मालालंकृत मनोरम कन्धे पर्वत से भी उन्नत हो रहे तो उसके मन की आनंदस्थिति क्या वर्ण्य होगी ? । ९२२

❀ ॲन्ऩवर् कुरैप्प दॆन्ऩ एन्दिळै याळै विट्टुत्
तन्ऩुयिर् पॆऱुदल् नन्ऱो वन्ऱॆनिऱ् ऱलैहळ् पत्तुम्
शिन्ऩपिन् ऩङ्गळ् शॆय्यच् चॆरुक्कळत् जेर्दल् नन्ऱो
शॊन्ऩवै यिरण्डिन् ऑन्ऱे तुणिहॆन्च् चॊल्लि ऍन्ऱान् 923

अवर्कु–उससे; उरैप्पतु ऍन्–कहना क्या है; ऍन्ऩ–पूछने पर; एन्तिळैयाळै–उत्कृष्ट आभूषणधारिणी को; विट्टु–छोड़कर; तन् उयिर् पॆऱुतल्–अपने प्राणों की रक्षा कर लेना; नन्ऱो–अच्छा है; अन्ऱु ऍनिल्–नहीं तो; तलैकळ् पत्तुम्–दसों सिरों को; चिन्ऩ पिन्ऩङ्कळ् चॆय्य–छिन्न-भिन्न करवाने के लिए; चॆरुकळम् चेर्तल्–युद्धभूमि में आना; नन्ऱो–अच्छा है; चॊन्ऩवै–उक्त; इरण्टिन् ऑन्ऱे–दो में एक ही; तुणिक–निश्चय कर लो; ऍन–ऐसा; चॊल्लिटु–कह दो; ऍन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ६२३

अंगद ने पूछा कि उसे क्या सुनाना है ? श्रीराम ने कहा कि उत्तम आभूषणभूषिता को छुड़ाकर अपनी जान बचाना अच्छा है या, नहीं तो अपने दसों सिरों को छिन्न-भिन्न कराते हुए युद्धभूमि में जाना अच्छा है ? उक्त दोनों में से रावण एक मार्ग चुन ले। यह तुम उससे कहो। ९२३

अऱत्तुऱै यन्ऱु वीरर्क् कळहुमन् ऱाण्मै यन्ऱु
मऱत्तुऱै यन्ऱु शेम मऱैन्दुऱैन् दॊदुङ्गि वाळ्दल्
निऱत्तुऱ वाळि कोत्तु नेर्वन्दु निऱ्कु माहिल्
पुऱत्तुऱ वॆदिरे वन्दु पोर्दरप् पुहऱि यॆन्ऱान् 924

चेमम्–सुरक्षित रीति से; मऱैन्तु–छिपकर; ऑतुङ्कि उऱैन्तु–(कोने में) हटकर रहकर; वाळ्तल्–जीना; अऱत्तुऱै अन्ऱु–(राज-) धर्मसम्मत मार्ग नहीं; वीरर्क्कु–वीर के लिए; अळकुम् अन्ऱु–शोभादायी भी नहीं; आण्मै अन्ऱु–पौरुष (का काम) भी नहीं; मऱत्तुऱै अन्ऱु–वीरों का मार्ग भी नहीं; निऱत्तु उऱ–वक्ष में लगे ऐसा; वाळि कोत्तु–शर संधान कर; नेर् वन्तु–सामने आकर; निऱ्कुम् आकिल्–खड़ा होगा तो; पुऱत्तु उऱ–नगर के बाहर में; ऍतिरे वन्तु–सामने आकर; पोर् तर–युद्ध दे (करे); पुकऱि–यह कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ६२४

अब भी सुरक्षित रीति से छिपकर कोने में दुबककर जीना राज-धर्मोचित वात नहीं है; न ही वह वीरों को शोभा देनेवाली वात है! वह पुरुषोचित काम नहीं है। वह किसी विधि वीरता से युक्त नहीं हो सकता। वक्ष पर शर लगें ऐसा शरों को धनु से लगाकर सामने आ सके और लड़ना चाहे तो नगर के बाहर आकर युद्ध करे। यह तुम उससे कहो। ९२४

❀ पार्मिशै वणङ्गिच् चीयम् विण्मिशैप् पडर्व देपोल्
वीरऩ्वॅञ् जिलैयिऱ् कोत्त वम्बॅऩ विशैयिऱ् पोऩाऩ्
मारुदि यल्ल ऩाहिल् नीयॅऩुम् माऱ्ऱम् बॅऱ्ऱेऩ्
यारिऩि यॅऩ्ऩो डॊप्पा रॅऩ्बदो रिऩ्ब मुऱ्ऱाऩ् 925

मारुति अल्लन् आकिल्–मारुति नहीं तो; नी–तुम; ॲनुम्–ऐसे; माऱ्ऱम् पॅऱ्ऱेन्–वचन को पा गया; इनि–अब; ॲन्नोटु ऑप्पार्–मेरी समानता करनेवाले; यार्–कौन हैं; ॲन्पतु ओर्–ऐसे एक; इन्पम्–सन्तोष को; उऱ्ऱान्–पा गया; पार् मिचै वणङ्कि–जमीन पर दण्डवत करके; चीयम्–सिंह; विण् मिचै–आकाश में; पटर्वते पोल्–उड़ता जैसे; वीरन्–श्रीराम के; वॅम् चिलैयिल्–कठोर धनुष पर; कोत्त–लगाकर प्रेरित; अम्पु ॲन–बाण के समान; विचैयिल् पोनान्–अति वेग के साथ गया। ९२५

अंगद को इस बात को लेकर अपार आनन्द हुआ कि मारुति नहीं तो मैं मारुति के स्थान पर जा सकता हूँ —यह खिताब मिल गया। अब मेरे समान है कौन? वह श्रीराम के चरणों पर भूमि पर गिरकर दण्डवत करके कोई सिंह आकाश पर उड़ता जाए ऐसा और श्रीवीरराघव के कोदण्ड-प्रेरित शर के समान सवेग गया। ९२५

❀ अयिल्कडन् दॅरिय नोक्कु मरक्करैक् कडक्क वाऴित्
तुयिल्कडन् दयोत्ति वन्दाऩ् शॊऱ्कड वाद तूदऩ्
वॅयिल्कडन् दिलाद कावल् मेरुविऩ् मेलुम् नीण्ड
ऍयिल्कडन् दिलङ्गै यॅय्दि यरक्कर्दम् दिरुक्कै पुक्काऩ् 926

अयिल् कटन्तु–भाले को भी मात करके; ॲरिय नोक्कुम्–जलानेवाले रूप से घूरनेवाले; अरक्करै कटक्क–राक्षसों को मिटाने ही हेतु; आऴि तुयिल्–(क्षीर-) सागर की निद्रा; कटन्तु–छोड़कर; अयोत्ति वन्तान्–(जो) अयोध्या में आये उन (श्रीराम) का; चॊल् कटवात–वचन का उल्लंघन न करनेवाला; तूतन्–दूत; वॅयिल् कटन्तिलात–सूर्य भी जिसको लाँघ नहीं सका उस; कावल्–सुरक्षित; मेरुविन् मेलुम् नीण्ट–मेरु से भी बढ़कर उन्नत; ऍयिल् कटन्तु–प्राचीर पार करके; इलङ्कै ऍय्ति–लंका में आकर; अरक्कर्तम् इरुक्कै–राक्षस के रहने के स्थान में; पुक्कान्–पहुँचा। ९२६

शत्रु की बर्छियों को भी अपनी दृष्टि के अंगारों से जला सकनेवाले राक्षसों को मारने ही हेतु क्षीरसागर की निद्रा छोड़कर जो अयोध्या में

(अवतरित हो) आये थे, उन श्रीराम का आज्ञाकारी अंगद सूर्य को भी उल्लंघन करके न जाने देनेवाले प्रबंध से सुरक्षित और मेरु से भी ऊँचे लंका के प्राचीर को पार कर राक्षस के निवास में पहुँच गया। ९२६

अऴुहिन्ऱ कण्ण राहि यनुमन्गो लॅन्न वञ्जित्
तॉऴुहिन्ऱ शुऱ्ऱञ् जुऱ्ऱच् चॉल्लिय तुऱैह डोरुम्
मॉऴिहिन्ऱ वीरर् वार्त्तै मुहन्दोरुञ् जॅवियिन् मूऴह
अॅऴुहिन्ऱ शेनै नोक्कि यियॅन्दिरुन् दानैक् कण्डान् 927

अनुमन् कॉल्–हनुमान ही क्या; अॅन्न अञ्चि–ऐसा सोचकर डरकर; अऴुकिन्ऱ कण्णर् आकि–रोती आँखों वाले होकर; तॉऴुकिन्ऱ–(रक्षार्थ) विनय करनेवाले; चुऱ्ऱम् चुऱ्ऱ–परिवारों के मध्य; चॉल्लिय–शास्त्रोक्त; तुऱैकळ् तोरुम्–सभी विभागों के; मॉऴिकिन्ऱ–तथाकथित; वीरर्–सेवक वीरों के; वार्त्तै–निवेदन-वचन; मुकन्तोरुम्–हर मुख के; चॅवियिन् मूऴ्क–कानों में पड़ रहे थे; अॅऴुकिन्ऱ–उठनेवाली; चेनै नोक्कि–सेना को देखते हुए; इयॅन्तिरुन्तानै–जो विराजमान था; कण्टान्–(उस रावण को) देखा। ९२७

क्या यह हनुमान ही है जो आया है? ऐसे विचार से डरकर रोनेवाले रावण के परिवार उसे घेरकर विनय करने लगे। शासन-शास्त्रोक्त विविध विभागों के कर्मचारी वीरों के कथन उसके हर मुख के कानों में पड़ रहे थे। युद्ध पर कूच कर जानेवाली सेना को वह देख रहा था। इस स्थिति में रहे रावण को अंगद ने देखा। ९२७

*कल्लुण्डु मरमुण् डॆऴैक् कडलोन्ऱुङ् गडन्दे मॆन्नुम्
शॊल्लुण्डे यिवनै वॆल्लत् तोऱ्ऱत्तोर् कूऱ्ऱ मुण्डो
ऒॆल्लुण्ड पडैहैक् कॊण्डा नॆदिरुण्डे यिरामन् कैयिल्
विल्लुण्डे लुण्डॆन् ऱॆण्णि याऱ्ऱलै वियनन्दु निन्ऱान् 928

कल् उण्टु–(सेतु बनाने के लिए) पत्थर हैं; मरम् उण्टु–पेड़ हैं; एऴै कटल् ऒन्ऱुम्–अल्प इस एक समुद्र को; कटन्तेम्–पार कर लिया; अॅन्नुम् चॊल्–यह कथन भी; उण्टु–है; इवनै–इसको; वॆल्ल–जीतने; तोऱ्ऱुतु–जनित; ओर् कूऱ्ऱम् उण्टो–एक यम है क्या; ऒॆल् उण्ट–प्रकाशमय; पटै–हथियार; कै कॊण्टान्–जिसने हाथ में लिये हैं इस रावण का; ऎतिर् उण्टो–जवाब भी है क्या; इरामन् कैयिल् विल्–श्रीराम के हाथ का धनुष; उण्टेल्–हो सके तो; उण्टु–हो सकता है; ऎन्ऱु ऎण्णि–यह सोचकर; आऱ्ऱलै–रावण के बल से; वियनन्तु निन्ऱान्–विस्मित हो खड़ा रहा। ९२८

रावण को देखकर अंगद का मन यों सोचने लगा। पत्थर थे, तरु थे। हमने इस छोटे सागर को पार कर लिया —यह वार्ता भी प्रचलित हो गयी। पर इस रावण को जीतनेवाला कोई यम भी पैदा हुआ है

क्या ? तेजोमय हथियारधारी इसका कोई जवाब भी है क्या ? श्रीराम का धनुष हो तो हो सकता है ! अंगद रावण के बल को देखकर विस्मय-विमूढ़ हो रह गया। ९२८

इऩ्ऱिवऩ् तऩ्मै यॆय्द नोक्किऩा लॆदिर्न्द पोरिल्
वॆऩ्ऱवॆऩ् तादै मार्बिऩ् विल्लिऩ्मेर् कणैयॊऩ् ऱेविक्
कॊऩ्ऱवऩ् ताने वन्दा ऩॆऩ्ऱुताऩ् कुऱिप्पि ऩल्लाल्
ऒऩ्ऱिवऩ् ऱऩ्ऩैच् चॆय्य वल्लरो उयिर्क्कु नल्लार् 929

इऩ्ऱु–अब; इवऩ् तऩ्मै–इसकी स्थिति; ऎय्त नोक्किताल्–खूब विचार करें तो; ऎतिर्न्त पोरिल्–आये युद्ध में; वॆऩ्ऱ–इसको जिन्होंने जीता था, उन; ऎऩ् तातै मार्पिऩ्–मेरे पिता के वक्ष में; विल्लिऩ्मेल्–धनु पर; कणै ऒऩ्ऱु एवि–एक शर (संधानकर) चलाकर; कॊऩ्ऱवऩ् ताते–जिन्होंने मारा था वे ही; वन्ताऩ्–(इसको मारने की शक्ति ले) आये; ऎऩ्ऱु–ऐसा; ताऩ् कुऱिप्पिऩ् अल्लाल्–कहें तो कह सकते हैं नहीं तो; उयिर्क्कु नल्लार्–अपने प्राणों के हितकारी; इवऩ् तऩ्ऩै–इसका; ऒऩ्ऱु चॆय्य वल्लरो–कुछ कर (बिगाड़) सकते हैं क्या। ९२९

अंगद ने सोचा— आज की इसकी स्थिति पर ग़ौर करें तो आगत युद्ध में इसके भी विजेता मेरे पिता के वक्ष में जिन्होंने शर चलाया और उनका वध किया वे ही इसे मारने आये हैं, उनकी बात कही जा सके तो कही जा सकती है। नहीं तो कोई अपने प्राणों का मोह रखनेवाला इसकी क्या हानि कर सकेगा ? । ९२९

अणिपऱित् तळहु शॆय्यु मणङ्गिऩ्मेल् वैत्त वाशैप्
पिणिपऱित् तिवऩै यावर् मुडिप्पवर् पडिक्कट् पेळ्वाय्प्
पणिपऱित् तॆळुन्द मानक् कलुळऩि ऩिवऩैप् पऱ्ऱि
मणिपऱित् तॆळुन्द वॆन्दै यारिऩुम् वलिय ऩॆऩ्ऱाऩ् 930

अणि पऱित्तु–आभरण छीनकर (न होने पर भी); अळकु चॆय्युम्–सुन्दर रहनेवाली; अणङ्किऩ् मेल्–देवी पर; वैत्त आचै–किया प्रेम; पिणि पऱित्तु–जो रोग (सा) है उसे दूर करके; इवऩै मुटिप्पवर्–इसका अन्त करनेवाले; यावर्–कौन हैं; पटिक्कण्–इस भूमि पर; पेळ्वाय्–दुहरी जीभ वाले; पणि–साँप को; पऱित्तु ऎळुन्त–छीनकर उड़नेवाले; मान कलुळऩिऩ्–मान्य गरुड़ के समान; इवऩै पऱ्ऱि–इसको पकड़कर; मणि पऱित्तु ऎळुन्त–मणियाँ छीनकर जो उछले; ऎन्तै–वे मेरे पिता (चाचा); यारिऩुम् वलियऩ्–सबसे बली हैं; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (सोचा अंगद ने)। ९३०

आभरणरहित अवस्था में भी सौंदर्यवती रहनेवाली सीतादेवी पर इसने जो मोह रखा है, इस काम-रोग का नाश करेगा कौन ? इस भूमि पर द्विजिह्वा सर्पों को उठाये उड़नेवाले मान्य गरुड़ के समान मेरे पिता

(चाचा सुग्रीव) इसको पकड़कर इसकी मुकुटमणियों को छीन ले उठे। अवश्य वे सभी (किसी) से भी बलवान हैं। ९३०

नॆड्डुन्दहै विड्डुत्त तूद तिन्नैयत्त निरम्ब वॆण्णिक्
कड्डुङ्गतल् विडमुङ् गूरुङ् गलन्दुकाल् करमुङ् गाट्टि
विडुञ्जुडर् महुड मिन्न विरिहड लिरुन्द दॆन्नक्
कॊडुन्दॊळिल् मडङ्ग लन्ना नॆदिर्शॆन्रु कुरुहि निन्रान् 931

नॆट्टु तर्क—बहुत ही सद्गुणी श्रीराम से; विट्टुत्त तूतन्—प्रेषित दूत; इत्तैयत्त—ऐसी बातें; निरम्प ऎण्णि—भरपूर सोचकर; विरि कटल्—विशाल सागर; कट्टु कत्तल्—भयंकर अग्नि; विटमुम्—और विष; कूऱ्ऱुम्—और यम को; कलन्तु—मिश्रित करके; काल् करमुम्—पैरों और हाथों से; काट्टि—युक्त करके; चुटर् विटुम्—प्रकाश छिटकानेवाले; मकुटम् मिन्न इरुन्ततु—विद्युत्-समान मुकुट (के साथ) शोभित रहा; ऎन्न—जैसे; कॊटु तॊऴिल्—क्रूरकर्म; मटङ्कल् अन्नान्—सिंह-सदृश रावण के; ऎतिर् चॆन्ऱु—सामने जाकर; कुऱुकि निन्ऱान्—समीप खड़ा रहा। ९३१

अत्युत्कृष्ट गुणवान श्रीराम से प्रेषित अंगद ने ऐसा पुष्कल रूप से सोचते हुए क्रूरकर्म सिंह-सदृश रहनेवाले रावण के सामने उसके समीप जा खड़ा हुआ। वह रावण विशाल समुद्र के समान भी रहा, जिसमें भयंकर आग, विष और यम मिश्रित हों; जिसके हाथ-पैर लगे हों और जिसके प्रकाश बिखेरनेवाले मुकुट लगे हों। ९३१

❀ निन्रवन् ऱन्नै यन्ना नॆरुप्पॊळ् निमिरप्पार्त् तिङ्
गिन्रिवण् वन्द नीया रॆय्दिय करुम मॆन्नै
कॊन्रिवर् तिन्ना मुन्नङ् गूरुदि तॆरिय वॆन्रान्
वन्रिरल् वालि शेयुम् वाळॆयि रिलङ्ग नक्कान् 932

निन्रवन् तन्नै—स्थित उसको; अन्नान्—(पूर्वोक्त) उस रावण ने; नॆरुप्पु ऒऴ—अंगारे छुड़ाते हुए; निमिर पार्त्तु—आँखें उठाकर देखा और; इन्ऱु इवण्—आज यहाँ; वन्त नी—आये तुम; यार्—कौन; ऎय्तिय—(जिसको सोचकर) आये वह; करुमम् ऎन्नै—कार्य क्या है; इवर्—ये (मेरे भृत्य); कॊन्ऱु तिन्ना मुन्नम्—मारकर खाएँ इसके पहले; तॆरिय—बताते हुए; कूऱुति—कहो; ऎन्ऱान्—कहा; वल् तिऱल्—कठोर बलवान; वालि चेयुम्—वाली का पुत्र भी; वाळ् ऎयिऱु—छविमय दाँतों को; इलङ्क—प्रकट करते हुए; नक्कान्—हँसा। ९३२

अपने पास सामने आकर स्थित अंगद को रावण ने अग्निवर्षक नेत्रों से घूरकर प्रश्न किया कि अब इधर आये तुम कौन हो? आये किस कार्य को सोचकर? ये मेरे भृत्य तुम्हें मारकर खा जाएँ इसके पहले तुम सच्ची बात साफ़ बतला दो। यह सुनकर अतिबलिष्ठ वाली का पुत्र अपने छविमय दाँतों को प्रगट करते हुए हँस उठा। ९३२

❀पूदना यहनीर् शूऴ्न्द पुविक्कुना यहन्निप् पूमेल्
शीदैना यहन्वे ऱुळ्ळ देय्वना यहन्नी शॅप्पुम्
वेदना यहन्मे लिन्ऱ विदिक्कुना यहन्ऱान् विट्ट
तूदन्यान् पणित्त माट्रञ् जॉल्लिय वन्दे नॅन्ऱान् 933

पूतम् नायकन्–भूतों के नायक; नीर् चूऴ्न्त–जलवलयित; पुविक्कु नायकन्–भुवि के स्वामी; इ पू मेल्–इस भूमि पर (अवतरित); चीतै नायकन्–सीता के पति; वेऱु उळ्ळ–अलग-अलग रहनेवाले; तॅय्वम् नायकन्–देवों के देव; नी चॅप्पुम्–तुम जिसका पारायण करते हो; वेतम् नायकन्–उस वेद के नायक; मेल् निन्ऱ–सबके ऊपर स्थित; वितिक्कु नायकन्–विधि के नायक; तान्–उन (श्रीराम) के द्वारा; विट्ट–प्रेषित; तूतन् यान्–दूत हूँ मैं; पणित्त माट्रम्–उनकी आज्ञा के वचन; चॉल्लिय–कहने के लिए; वन्तेन्–आया; ऍन्ऱान्–कहा। ६३३

उसने उत्तर में कहा कि मैं भूतनायक, समुद्रवसना भूमि के पति, भू पर अवतरित सीता के नाथ, देवों के नायक, तुम्हारे पठित वेदों के नायक और सर्वोपरि विधि के नायक जो हैं उन श्रीराम का भेजा हुआ दूत हूँ। उन्होंने जो समाचार कहने को कहा है, वह सुनाने आया हूँ। ९३३

❀अरन्गॊला मरिहो लामऱ् ऱयन्गॊला मॅन्बा रन्ऱिक्
कुरङ्गॅलाङ् गूट्टि वेलैक् कुट्टत्तैच् चेतु कट्टि
इरङ्गुवा नाहि लिन्न मऱिदियॅन् ऱुन्नै येवुम्
नरन्गॊला मुलह नाद नॅन्ऱुकॊण् डरक्क नक्कान् 934

अरन् कॊल् आम्–शिव ही है क्या; अन्ऱि–या; अरि कॊल् आम्–हरि ही है; मऱ्ऱु–या; अयन् कॊल् आम्–अज ही है; ऍन्पार् अन्ऱि–ऐसे उक्त उन मुख्य देवों के सिवा; कुरङ्कु ऍलाम् कूट्टि–सभी वानरों को मिलाकर; वेलै कुट्टत्तै–समुद्र के गड्ढे को; चेतु कट्टि–सेतु से बाँधकर; इन्नम् इरङ्कुवान् आकिल्–अब भी नरम हो जायगा तो; अऱिति–जान आओ; ऍन्ऱु–कहकर; उन्नै एवुम्–तुमको जिसने भेजा; नरन् कॊलाम्–वह नर ही क्या; उलक नातन्–जगन्नाथ है; ऍन्ऱु कॊण्टु–यह कहते हुए; अरक्कन् नक्कान्–राक्षस हँस उठा। ६३४

रावण ने यह सुनकर हँसी की। रे! वह हर है क्या? या हरि है? या इन दोनों से परे ब्रह्मा है? नहीं हैं। कोई सभी वानरों को इकट्ठा करके मामूली गड्ढे से समुद्र को सेतु से बाँधकर आ गया है और यह खबर भेजने की धृष्टता करता है कि अब भी अगर रावण नरम हो गया है तो जान आओ! ऐसा तुम्हें भेजनेवाला वही नर जगन्नाथ है?। ९३४

❀गङ्गैयुम् बिऱैयुञ् जूडङ् गण्णुदल् करत्तु नेमि
शङ्गमुन् दरित्त माल्मऱ् ऱिन्नहर् तन्नैच् चारार्

अङ्गवर् निलैमै निऱ्क मनिशनुक् काह अञ्जा
दिङ्गुवन् दिदनैच् चॊन्न तूदनी याव नॆन्ऱान् 935

कङ्कैयुम्–गंगा और; पिऱैयुम् चूटुम्–चन्द्र धारण करनेवाले; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी; करत्तु–हाथ में; नेमि चङ्कमुम्–चक्र और शंख; तरित्त–धारण करनेवाले; माल्–विष्णु; इ(न्) नकर् तन्तै–इस नगर में; चारार्–नहीं आएँगे; अङ्कु अवर् निलैमै–उधर उनकी यह स्थिति; निऱ्क–एक ओर रहे; मतिचनुक्काक–एक नर के लिए; अञ्चातु–विना डरे; इङ्कु वन्तु इततै चॊन्न–यहाँ आकर इसे कहनेवाले; तूतन्–दूत; नी–तुम; यावन्–कौन; ऎन्ऱान्–पूछा (रावण ने)। ९३५

गंगा-चन्द्र-शेखर भालनेत्र शिव और शंख-चक्र-हस्त विष्णु भी इस नगर में नहीं आएँगे। उनकी बात वहीं तक रहे। आखिर एक मानव के लिए विना किसी डर के, इधर आकर यह जो बता रहे हो, हे दूत! तुम हो कौन? रावण ने यह प्रश्न किया। ९३५

❀इन्दिरन् शॆम्मल् पण्डो रिरावण नॆन्बान् ऱन्नै
शुन्दरत् तोळ्ह ळोडुम् वालिडैत् तूङ्गच् चुऱ्ऱिच्
चिन्दुरक् किरिह डावित् तिरिन्दनन् तेव रुण्ण
मन्दरप् पॊरुप्पाल् वेलै कलक्किनान् मैन्द नॆन्ऱान् 936

पण्टु–पहले; ओर् इरावणन् ऎन्पान्–रावण नाम के एक; तन्नै–को; वालिटै तूङ्क–पूँछ से लटकाकर; चुन्तर् तोळ्कळोटुम्–मनोहर भुजाओं से; चुऱ्ऱि–लपेटकर; चिन्तुर किरिकळ्–गजाकीर्ण पर्वतों में; तावि–उछल जाकर; तिरिन्तनन्–जो घूमे; तेवर् उण्ण–देवों के खाने के लिए; मन्तरम् पॊरुप्पाल्–मन्दर पर्वत से; वेलै कलक्कितान्–जिन्होंने समुद्र को मथ दिया; इन्तिरन् चॆम्मल्–इन्द्र के पुत्र; मैन्तन्–उनका पुत्र हूँ; ऎन्ऱान्–कहा। ९३६

मैं उस देवेन्द्रपुत्र वाली का पुत्र हूँ, जो पहले कभी रावण नाम के किसी को अपनी पूँछ से उसकी भुजाओं के साथ बाँधकर लटकाते हुए हाथियों से भरे पर्वतों पर ले घूमे थे। और जिन्होंने देवों के खाने के निमित्त मंदर पर्वत से क्षीरसागर को मथा था। ९३६

❀उन्दैयॆन् तुणैव नन्ऱे ओङ्गऱच् चान्ऱु मुण्डाल्
निन्दनै यिदन्मे लुण्डो नीयवन् तूद नादल्
तन्दनन् निनक्कु याने वानरत् तलैमै ताळा
वन्दनै नन्ऱु शॆय्दा यॆन्नुडै मैन्द वॆन्ऱान् 937

उन् तन्तै–तुम्हारा पिता; ऎन् तुणैवन् अन्ऱे–मेरा मित्र है न; ओङ्कु अऱम्–उत्कृष्ट धर्म-सम्मत; चान्ऱुम् उण्टु–साक्षी भी है; नी–तुम; अवन् तूतन्–तुम्हारा उस (नर) का दूत; आतल्–बनना; इतन् मेल्–इससे बढ़कर; निन्तनै उण्टो–निंद्य काम होगा क्या; ऎन्नुटै मैन्त–मेरे प्रिय पुत्र; निनक्कु–तुम्हें; याने–

मैंने अभी; वानरम् तलैमै–वानरों के नायकत्व को; तन्तनन्–प्रदान किया; ताऴा वन्ततै–अविलम्ब (ऐन वक्त पर) आये; नन्ऱु चॅय्ताय्–ठीक किया; ॲन्ऱान्–कहा। ९३७

यह सुनकर रावण ने कहा कि ऐ! तुम्हारा पिता मेरा मित्र था न! इसके लिए धर्म-साक्षी भी है। (उत्तरकाण्ड में वालि के रावण को मित्र बना लेने का वृत्तान्त पाया जाता है।) तुम उस नर का दूत बनो —इससे बढ़कर अपयश कुछ होगा क्या? (अब भी उसे छोड़ दो) मेरे पुत्र! मैंने वानराधिपत्य तुम्हें दे दिया। तुमने विलंब नहीं किया। ऐन समय पर आ गये, ठीक किया। ९३७

※ तादैयक् कॉन्ऱान् पिन्ने तलैशुमन् दिरुहै नाऱ्ऱिप्
पेदैय ॲन्न वाऴ्न्दा ॲन्बदोर् पिऴैयुन् दीर्न्दाय्
शीदैयैप् पॅऱ्ऱे तुन्नैच् चिऱुवनु माहप् पॅऱ्ऱेन्
एदॅनक् करिय दॅन्ऱा निरुदि नूऱ्कॅल्ले कण्डान् 938

इऱुति नूऱ्कु–जीवनसूत्र के; ॲल्लै कण्टान्–जिसने अन्त देख लिया; तातैयै–पिता के; कॉन्ऱान् पिन्नै–मारनेवाले के पीछे; इरु कै–दोनों हाथों को; तलै चुमन्तु–सिर पर धारण करके; नाऱ्ऱि–(सिर को) झुकाए; पेतैयन् ॲन्न–बुद्धिहीन ऐसा; वाऴ्न्तान्–जीवित रहा; ॲन्पतु ओर्–ऐसी एक; पिऴैयुम्–बुरी स्थिति से भी; तीर्न्ताय्–बच गये; चीतैयै–सीता को; पॅऱ्ऱेन् यान्–मैं पा गया (होऊँगा); उन्नै–तुम्हें; चिऱुवनुमाक–पुत्र के रूप में; पॅऱ्ऱेन्–पा गया; ॲनक्कु–मेरे लिए; अरियतु–असाध्य; एतु–कौन सा काम है; ॲन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ९३८

जीवनसूत्र के अंत को आ गया था रावण। उसने आगे कहा कि "पितृहंता के पीछे दोनों हाथों को सिर पर रखकर सिर झुकाते हुए मतिभ्रष्ट के समान रहा अंगद" —ऐसे अपवाद से बच गये। मुझे भी सीता मिल गयी। पुत्र के रूप में तुम भी मिल गये। अब मेरे लिए असाध्य क्या रह गया? । ९३८

※ अन्नर रिन्ऱु नाळै यऴिवदऱ् कैय मिल्लै
उन्नर शुनक्कुत् तन्दे नाळुदि यूऴिक् कालम्
पॊन्नरि शुमन्द पीडत् तिमैयवर् पोऱ्ऱि शॅय्य
मन्नव नादि याने शूट्टुवॅन् महुड मॅन्ऱान् 939

अ नरर्–वे नर; इन्ऱु नाळै–आज (नहीं तो) कल; अऴिवतऱ्कु–मरेंगे उसमें; ऐयम् इल्लै–संशय नहीं है; उन् अरचु–तुम्हारा राज्य; उनक्कु–तुम्हें; तन्तेन्–दे दिया; ऊऴिकालम्–युग-युग तक; आळुति–शासन करो; अरि चुमन्त–सिंहधृत; पॊन् पीटत्तु–स्वर्ण के आसन पर; इमैयवर् पोऱ्ऱि चॅय्य–देवों के स्तुति करते; मन्नवन् आति–(वानरों के) राजा बनो; याने–मैं ही; मकुटम् चूट्टुवॅन्–मुकुट पहनाऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ९३९

वे नर आज या कल मर जाएँगे। इसमें कोई संशय नहीं रह गया। तुम्हारा ही राज्य तुम्हें मैंने दे दिया। युग-युग तक शासन करो। स्वर्णसिंहासन पर वानरराज बनकर विराजो और देव तुम्हारी स्तुति करें। मैं ही इस भाँति मुकुट पहना दूंगा। ९३९

❀ अङ्गद नदनैक् केळा अङ्गैयो डङ्गै ताक्कित्
तुङ्गवन् तोळुम् मार्बु मिलङ्गैयुन् दुळङ्ग नक्कान्
इङ्गुनित् ड्रार्हट् कॅल्ला मिरुदिये यॅन्ब दुन्नि
उङ्गळ्पा निन्रु मॅम्बार् पोन्दत तुम्बि यॅन्ड्रान् 940

अङ्कतत्–अंगद (ने); अतनै केळा–उसको सुनकर; अम् कैयोटु–हथेली पर; अम् कै ताक्कि–हथेली पीटकर; तुङ्कम्–उन्नत; वल्–कठोर; तोळुम्–भुजाओं; मार्पुम्–वक्ष और; इलङ्कैयुम्–लंका को; तुळङ्क–हिलाते हुए; नक्कान्–हँसकर; इङ्कु निन्ड्रार्कट्कु ॲल्लाम्–यहाँ रहनेवाले सभी का; इऱुतिये–अन्त ही (आ गया); ॲन्पतु उन्नि–यह बात सोचकर; उङ्कळ् पाल् निन्ऱुम्–तुम्हारी ओर से; उम्पि–तुम्हारा भाई; ॲम् पाल्–हमारे पक्ष में; पोन्ततन्–आ गया; ॲन्ड्रान्–कहा। ९४०

अंगद वह सुना तो हथेली पर हथेली से पीटते हुए ऐसा हँस उठा कि उसके उन्नत कंधे, वक्ष और लंका नगर सभी हिल उठे। "तुम्हारे छोटे भाई को यह निश्चित रूप से मालूम हो गया कि लंकावासी सभी लोगों का अंत आ गया है। तभी तो तुम्हारा भाई स्वयं तुम्हारे पक्ष को छोड़कर हमारे पास आ गया है!" अंगद ने ऐसा कहा। ९४०

❀ वाय्दरत् तक्क शॉल्लि यॅन्नैयुन् वशञ्जॅय् वायेल्
आय्दरत् तक्क दन्ड्रो तूदुवन् दरश दाळ्है
नीतरक् कॉळ्वेन् यान्ने यिदर्किनि निहर्वे ऱॅण्णिल्
नाय्दरक् कॉळ्ळुञ् जीयम् नल्लर शॅन्रु नक्कान् 941

वाय् तर तक्क–मुख में जो आये; चॉल्लि–कहकर; ॲन्नै–मुझे; उन् वचम् चॅय्वायेल्–तुम्हारे (अपने) वश में करोगे; तूतु वन्तु–दूत बन आकर; अरचतु आळ्कै–राज्य का पालन करना; आय् तर तक्कतु अन्ड्रो–विमर्शनीय है न; नी तर–तुम दो और; यान् कॉळ्वेन्–मैं ग्रहण करूँ; इतर्कु–इसकी; इनि–अब; वेऱु निकर् ॲण्णिल्–दूसरी तुलना सोचें; नाय् तर–कुत्ता दे; नल् अरचु–श्रेष्ठ राज्य; चीयम् कॉळ्ळुम्–सिंह ले; ॲन्ऱु नक्कान्–कहकर हँस उठा। ९४१

(अंगद ने आगे कहा—) मुँहमीठी बातें करके तुम मुझे अपने वश में करना चाहो तो दूत के रूप में आकर शासक बनने का काम विद्वानों द्वारा विमर्शनीय होगा न! तुम (शासन का अधिकार) दो और मैं ग्रहण करूँ! इसकी तुलना में कुछ कहना हो तो कुत्ता दे और सिंह श्रेष्ठ राज्य स्वीकार करे —यही उपमा होगी! यह कहकर अंगद हँस उठा। ९४१

अडुवत्ते यॆन्ऩप् पॊङ्गि योङ्गिय वरक्क ऩन्दो
तॊडुवत्ते कुरङ्गैच् चीऱिच् चुडर्प्पडै यॆन्ऩुरु तोन्ऱा
नडुवऩ् सॆय्यत् तक्क नाळुलन् दार्क्कुत् तूद
पडुवदे तुणिन्दा याहिल् वन्ददु पहर्दि यॆन्ऱान् 942

अट्टुवत्ते–मारूँगा; ऍन्ऩ–कहकर; पॊङ्कि–खौलकर; ओङ्किय–जो उठा; अरक्कन्–उस रावण ने; अन्तो–हाय; कुरङ्कै चीऱि–(अल्प) वानर पर गुस्सा करके; चुटर् पटै–तेजोमय हथियार; तॊट्टुवत्ते–स्पर्श करूँ क्या; ऍन्ऩुरु–सोचकर; तोन्ऱा–अदृश्य; नट्टुवऩ्–मध्यस्थ यम; चॆय्य तक्क–जो करने योग्य है; नाळ् उलन्तार्क्कु–आयु का अन्त जिनका हो आया है, उनके; तूत–दूत; पट्टुवते तुणिन्ताय् आकिल्–मरने का निश्चय कर चुके तो; वन्ततु–आये क्यों यह; पकर्ति–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ९४२

रावण 'मार दूँगा' कहते हुए उठा। पर उसे लगा कि अल्प वानर को मारने के लिए प्रकाशमय हथियार का स्पर्श क्या करूँ? उसने अंगद से पूछा कि निष्पक्ष यम द्वारा ही जिनका अन्त निश्चित किया गया है, ऐसे नरों के दूत! मरने का ही निश्चय किया है तो आने का कार्य बता दो। ९४२

❀ कूवियिऩ् ऱॆन्ऩै नीपोय्त् तऩ्गुल मुऴुदुङ् गॊल्लुम्
पावियै यमरुक् कञ्जियरण् पुक्कुप् पदुङ्गि ऩाऩैत्
तेवियै विडुह वन्ऱेल् सॆरुक्कळत् तॆदिर्न्दु तऩ्गण्
आवियै विडुह वॆन्ऱा ऩरुळिऩम् विडुहि लादाऩ् 943

इऩम्–अब भी; अरुळ् विट्किलाताऩ्–दया नहीं छोड़ी है (जिन्होंने) उन श्रीराम ने; इऩ्ऱु–आज; ऍन्ऩै कूवि–मुझे बुलाकर; नी पोय्–तुम जाकर; तऩ् कुलम् मुऴुतुम्–अपने सारे कुल को; कॊल्लुम्–मरवाने पर तुले; पावियै–पापी; अमरुक्कु अञ्चि–युद्ध से डरकर; अरण् पुक्कु–सुरक्षित स्थान में घुसकर; पतुङ्किऩाऩै–छिपे रहनेवाले से; तेवियै विट्टुक–देवी को छुड़ा दे; अन्ऱेल्–नहीं तो; चॆरु कळत्तु ऍतिर्न्तु–युद्धभूमि में सामना करके; तऩ् कण्–मेरी आँखों के आगे; आवियै विट्टुक–प्राण छोड़ दे; ऍन्ऱाऩ्–यह कहा (कहला भेजा)। ९४३

तब अंगद ने रावण से कहा। इतना होने पर भी श्रीराम ने तुम पर करुणा नहीं त्यागी है। उन्होंने आज मुझे बुलाया और कहा कि तुम जाओ और स्वकुलांतक पापी, युद्धभीरु, सुरक्षण-प्रविष्ट रावण से जाकर कहो। वह देवी को छोड़ दे; नहीं तो युद्धभूमि में लड़े और मेरी आँख के सामने अपने प्राण छोड़ दे। ९४३

❀ परुन्दुणप् पाट्टि याक्कै पडुत्तनाळ् पडैञ रोडुम्
मरुन्दिनु मिऩिय मामऩ् मडिन्दनाळ् वनत्तुळ् वैहि

इरुन्दुळि वन्द तङ्गै मूक्कुम्वॅम् मुलैयु मॅम्बि
अरिन्दनाळ् वन्दि लादान् इनिच्चॅय्यु माण्मै युण्डो 944

पाट्टि याक्कै–दादी का शरीर; परुन्तु उण–बाज़ खाएँ ऐसा; पट्टुत नाळ्–जिस दिन वह मारी गयी उस दिन; मरुन्तितुम् इतिय–अमृत से भी मधुर; मामन्–मामा (सुबाहु); पटैञरोटुम् मटिन्त नाळ्–सेना के वीरों के साथ जिस दिन मरा उस दिन; वत्तत्तुळ्–वन में; वैकि इरुन्तुळि–जाकर जब रहे; वन्त–तब जो आयी; तङ्कै–बहिन की; मूक्कुम्–नाक को और; वॅम्मुलैयुम्–प्यारे स्तनों को; ऍम्पि–हमारे छोटे भाई ने; अरिन्त नाळ्–जिस दिन काटा था उस दिन; वन्तिलातान्–जो नहीं आया; इत्ति चॅय्युम्–वह अब कर दिखाए ऐसा; आण्मै उण्टो–पौरुष का काम भी है क्या। ९४४

"जिस दिन उसकी दादी (ताड़का) मरी और चीलों ने उसकी लाश खायी तब भी; जिस दिन अमृत से भी बढ़कर प्यारा उसका मातुल (सुबाहु) अपने परिवारों और वीरों के साथ मरा उस दिन भी; और जिस दिन वन में रहते समय मेरे (श्रीराम के) छोटे भाई ने उसकी बहिन की नाक को और आकर्षक स्तनों को काट दिया—उस दिन भी जो लड़ने नहीं आया उसमें अब दिखाने योग्य पौरुष है क्या ?"। ९४४

किळैयॊडुम् पडैञ रोडुङ् गेडिला वुयिर्हट् कॅल्लाम्
कळैयॅनत् तम्बि मारै वेरॊडुङ् गळैयक् कण्डुम्
इळैयवत् पिरिय माय मियट्रिया यिळैयै वौवुम्
वळैयॅयिर् ररक्कन् वॅम्बोर्क् किन्ऱॅदिर् वरुव दुण्डो 945

केटु इला–अक्षय; उयिर्कट्कु ऍल्लाम्–जीवों के लिए; कळै ऍत्त–खेत की घासादि के समान; तम्पिमारै–छोटे भाइयों को; किळैयॊटुम्–परिवारों के साथ और; पटैञरोटुम्–वीरों के साथ; वेरॊटुम्–जड़ से; कळैय कण्टुम्–निराते देखकर भी; इळैयवन् पिरिय–अनुज अलग हो ऐसी; मायम् इयट्रि–माया का कार्य करके; आयिळैयै–अनुपम आभरणधारिणी (सीता) को; वौवुम्–हर लेनेवाला; वळै ऍयिरु–वक्रदंतुला; अरक्कन्–राक्षस; वॅम् पोर्क्कु–भयंकर युद्ध करने; इत्ति–अब; ऍतिर्–सामने; वरुवतु उण्टो–आएगा क्या। ९४५

"मैंने उसके भ्रातृसमूह को अक्षय जीवों के खेत में घासादि निराने योग्य पौधे समझकर उनके बंधु-बांधवों और वीरों के साथ जड़ से काट मिटाया था। वह रावण उसे जानता था, तो भी सामने नहीं आया पर वंचना से मेरे कनिष्ठ को मुझसे अलग करके वराभरणा सीता को हर ले गया। वह वक्रदंतुला भयंकर युद्ध में आने का साहस करेगा क्या ?"। ९४५

ऎन्दिळै तन्नैक् कण्णुऱ् ऱॆदिर्न्दबर् तम्मै यॆट्रिच्
चान्दॆनप् पुदल्वन् तन्नैत् तरैयिडैत् तेय्त्तुत् तन्नूर्

कान्देरि मडुत्तुत् तानुङ् गाणवे कडलैत् ताविप्
पोन्दपिन् वन्दि लादा तितिप्पोरुम् बोरु मुण्डो 946

एन्तिऴै तन्नै–वराभरणा को; कण्णुर्रु–देखकर; अॅतिर्न्तवर् तम्मै–सामना करनेवालों को; अॅर्रि–मारकर; पुतल्वन् तन्नै–पुत्र (अक्षकुमार) को; चान्तु अॅन्न–चन्दन के समान; तरै इटै तेय्त्तु–भूमि पर पीसकर; तातुम् काणवे–उसके देखते; तन् ऊर्–उसके नगर को; कान्तु अॅरि मट्टुत्तु–जलती आग के हवाले करके; कटलै तावि–समुद्र लाँघकर; पोन्त पिन्–(हनुमान के) जाने के बाद; वन्तिलातान्–जो नहीं आया; पोरुम् पोरुम्–(उसका) किया जानेवाला युद्ध भी; इनि उण्टो–अब होगा क्या। ९४६

"हनुमान लंका में गया था। सीता को देखा, फिर लड़ने आये वीरों की हत्या करके उसके पुत्र अक्षकुमार को भूमि पर चंदन के समान पीस डाला। उसके ही सामने उसने लंका को जलती आग के हवाले कर दिया। इतना करने के वाद वह समुद्र को लाँघकर चला गया। उसके बाद भी जो युद्ध करने नहीं आया, क्या उस रावण द्वारा होनेवाला युद्ध भी है क्या?"। ९४६

उडॅक्कुलत् तोऱ्ऱर् तम्बा लुयिर्कोडुत्तु उळ्ळक् कळ्ळम्
तुडॅत्तुऴि वरुणन् वन्दु तोऴुदुऴित् तोऴाद कोऱ्ऱक्
कुडॅत्तोऴि लुम्बि कोळ्ळक् कोडुत्तुऴि वेलै कोलि
यडॅत्तुऴि वन्दि लादान् इनिवर वैय मुण्डो 947

तोऴात उम्पि–जिसको दूसरों को नमस्कार न करना है पर जो है दूसरों से वंद्य तुम्हारा भाई; कोऱ्ऱ कुटै तोऴिल्–विजयछत्रकार्य (यानी शासन); कोळ्ळ कोटुत्तु उऴि–ले ले ऐसा जब दिया गया तब; वरुणन् वन्तु–वरुण ने आकर; तोऴुतुऴि–विनय की तब; वेलै कोलि–समुद्र को लगाकर; अटैत्तुऴि–बाँधा गया तब; कुलत्तु उटै–राक्षसकुल के; ओऱ्ऱर् तम् पाल्–चरों को; उयिर् कोटुत्तु–प्राणदान करके; उळ्ळम् कळ्ळम्–उनके मन की वंचना को; तुटैत्तुऴि–दूर जब किया गया तब; वन्तिलातान्–जो नहीं आया; इनि वर–आगे आएगा; ऐयम् उण्टो–इसमें संशय भी है क्या। ९४७

"जिसकी सब वन्दना करेंगे और जिसे किसी के आगे नवना नहीं होगा —ऐसा विजयछत्रकार्यशासक बन गया विभीषण। उसे जब वह पद दिया गया तब; वरुण ने आकर जब स्तुति की तब; सेतुबंधन हुआ तब; और राक्षसकुल के चरों को जीवन का दान करके जब उनके मन के वंचक भाव दूर किये गये तब-कभी जो नहीं आया था वह अब आयगा —ऐसा किंचित भी संशय किया जा सकता है क्या?"। ९४७

मऱिप्पुण्ड तेवर् काण मणिवरैत् तोळिन् वेहुम्
नॅरिप्पुण्ड रीह मन्न मुहत्तियर् मुन्ने नॅन्तल्

पॊरिप्पुण्ड रोहम् बोलु मॊरुवनाऱ् पुत्तॆन्द मौलि
परिप्पुण्डुम् वन्दि लादान् इनिप्पोरुम् बान्मै युण्डो 948

मऱिप्पु उण्ट–रोक रखे गये; तेवर्–देवों के; काण–देखते रहते; मणिवरै–सुन्दर पर्वततुल्य; तोळिन् वॆंकुम्–भुजाओं से लगी रहनेवाली; नॆऱि–धर्मिष्ठ; पुण्टरीकम् अन्न मुकत्तियर्–कमलानना (देव-) स्त्रियों के; मुन्ने–सामने ही; नॆन्नल्–कल; पॊरि–चित्तियों-सहित; पुण्टरीकम् पोलुम्–पुण्डरीक (बाघ) के समान; ऒरुवनाल्–एक (सुग्रीव) द्वारा; पुत्तॆन्त मौलि–(उसने) जो पहन रखा था वे किरीट; परिप्पुण्टुम्–छीन लिये गये और; वन्तिलातान्–तब भी जो नहीं आया; इनि पोरुम् पान्मै–अब लड़ेगा इसकी सम्भावना; उण्टो–है क्या। ६४८

"अवरुद्ध देव देखते रहे। उसके सुन्दर भुजाओं की आश्रिता कमलानना देवस्त्रियों की आँखों के सामने ही चित्तियोंदार पुण्डरकी (बाघ) तुल्य एक (सुग्रीव) द्वारा उसके पहने रहे किरीट छीन लिये गये। तब भी जो नहीं आया वह अब आकर लड़ेगा इसकी सम्भावना भी है क्या?"। ९४८

ऎन्ऱिवै यियम्बि वावॆन् ऱेवित्त नॆन्नै यॆण्णि
ऒन्ऱुनक् कुऱुव दुन्नित् तुणिन्दुरै उऱुदि पार्क्किन्
तुन्ऱिरुङ् गुळले विट्टुत् तॊळुदुवाळ् शुऱ्ऱत् तोडुम्
पॊन्ऱुदि याहि लॆन्बिन् वायिलिऱ् पुऱप्प डॆन्ऱान् 949

ऎन्ऱु–ऐसी; इवै–ये बातें; इयम्पि वा–कह आओ; ऎन्ऱु–ऐसा; ऎन्नै एवित्तन्–मुझे भेजा; ऎण्णि–सोचकर; उनक्कु उऱुवतु–तुम्हें जो जँचे; ऒन्ऱु उन्ति–वह एक बात विचारकर; तुणिन्तु उरै–निर्णय के साथ कह दो; उऱुति पार्क्किन्–अपना हित देखो तो; तुन्ऱु इरु कुळलै–घने काले केश वाली को; विट्टु–छुड़ाकर; तॊळुतु वाळ्–(श्रीराम को) नमस्कार करके जीओ; चुऱ्ऱत्तोटुम्–परिवारों के साथ; पॊन्ऱुतियाकिल्–मरना चाहो तो; ऎन् पिन्–मेरे पीछे ही; वायिलिल् पुऱप्पटु–द्वार से होकर निकल आओ; ऎन्ऱान्–कहा। ६४६

(अंगद ने कहा—) "श्रीराम ने यह सब तुम्हें सुना आने के लिए मुझे भेजा है। अब तुम खूब विचार करो। जो तुम्हें उचित जँचे वह निर्णय करके बतला दो। अगर अपना हित चाहो तो घने और काले केश वाली सीता को छोड़ दो और श्रीराम की वन्दना करके जी जाओ। अगर अपने रिश्तों के साथ मरने का ही निश्चय है तो चलो, निकलो, मेरे पीछे आओ द्वार के बाहर।"। ९४९

नीरिले पट्ट शूळ्न्द नॆरुप्पिले पट्ट नीण्ड
पारिले पट्ट वातप् परप्पिले पट्ट वॆल्लाम्

पोरिले पट्टु वीळप् पॊरुदनी यॊळित्तुप् पुक्कुन्
ऊरिले पट्टा यॆन्ऱाल् पळियॆन उळैयच् चॊन्नान् 950

नीरिले पट्ट–जल में उत्पन्न; चूळ्न्त नॆरुप्पिले–वलयित करनेवाली आग में; पट्ट–उत्पन्न; नीण्ट–विशाल; पारिले पट्ट–भूमि पर उत्पन्न; वान परप्पिले–आकाश के विस्तार में; पट्ट–उत्पन्न; ऍल्लाम्–जीव सभी; पोरिले पट्टु वीळ–युद्ध में मरकर गिरें ऐसा; पॊरुत–तुमने लड़ाई की थी; नी उन् ऊरिले–वैसे तुम अपने नगर में; पुक्कु ऑळित्तु–घुसकर छिपकर; पट्टाय् ऍन्ऱाल्–पड़े रहो तो; पळि–अपमान होगा; ऍन–ऐसा; उळैय–मन दुःखी हो इस रीति से; चॊन्नान्–कहा (अंगद ने)। ९५०

"जल-जीव, अनल-जीव, थल-जीव और आकाश-जीव इन सबका नाश करते हुए तुम युद्ध करते रहे। ऐसे तुम अपने नगर में घुसकर छिपे रहो तो बड़ा अपयश हो जायगा।" अंगद ने यह सब रावण के मन में पीड़ा पहुँचाते हुए कहा। ९५०

❀ शॊऱ्ऱ वार्त्तैयैक् केट्टलुन् दॊल्लुयिर्
मुऱ्ऱु मुण्बदु पोलुम् मुनिविनान्
पऱ्ऱु मिन्गडि दिन्नॆडुम् बार्मिशै
ऍऱ्ऱु मिन्नॆन नाल्वरै येविनान् 951

चॊऱ्ऱ वार्त्तै–कही हुई बातों को; केट्टलुम्–सुनते ही; तॊल् उयिर्–सनातन जीवों; मुऱ्ऱुम्–सभी को; उण्पतु पोलुम्–खा जाएगा जैसे; मुनिविनान्–क्रोधी बनकर; कटितिन् पऱ्ऱुमिन्–जल्दी पकड़ो; नॆटु पार्मिचै–लम्बी भूमि पर; ऍऱ्ऱुमिन्–दे मारो; ऍन–कहकर; नाल्वरै–चार को; एविनान्–हुक्म दिया (रावण ने)। ९५१

अंगद के ये वचन सुनकर रावण इतना क्रुद्ध हुआ कि ऐसा लगे मानो वह सारे शाश्वत जीवों को खा लेगा। उसने चार लोगों को आज्ञा सुनायी कि तत्काल पकड़ो इसे। पटक दो भूमि पर। ९५१

❀ एवि नान्बिडित् तारै यॆडुत्तॆळत्
तावि नानवर् तन्दलै पोयऱक्
कूवि नानवन् कोबुर वायिलिल्
तूवि नान्तुहैत् तानिवै शॊल्लिनान् 952

एविनान्–आज्ञा पाकर; पिटित्तारै–पकड़नेवालों को; ऍट्टुत्तु–उठाते हुए; ऍळ ताविनान्–उठा और उछला; अवर् तम् तलै–उनके सिरों को; पोय् अऱ–काट मिटाते हुए; कूविनान्–गरजा; अवन् कोपुर वायिलिल्–उस (रावण) के गोद्वार पर; तूविनान्–छितराया; तुकैत्तान्–कुचला; इवै चॊल्लिनान्–ये बातें कहीं। ९५२

अंगद उन रावण प्रेरित चारों को उठाते हुए ऊपर गया। उनके सिरों को अलग करके एक गर्जन के साथ उसने उन्हें रावण के गोद्वार के सामने फेंक दिया और ये बातें कहीं। ९५२

❀एमञ् जार वॅळियवर् याविरुम्, तूमङ् गाल्वन वीरन् शुडुशरम्
वेमिन् पोल्वन वीळ्वदन् मुन्नमे, पोमिन् पोमिन् पुऱत्तॅन्ऱु पोयिनान् 953

तूमम् काल्वन–धुआँ निकालनेवाले; वेमिन् पोल्वन–जलाती बिजली के समान; वीरन्–श्रीवीरराघव के; चुट्टुचरम्–संतापक शरों के; वीळ्वतन् मुन्नमे–आ लगने से पहले; ऑळियवर् याविरुम्–सभी निर्बल; एमम् चार–सुरक्षित स्थलों में पहुँचने; पुऱत्तु पोमिन्–दूर चले जाओ; पोमिन्–जाओ; ऍन्ऱु–कहते हुए; पोयिनान्–(अंगद) चला। ९५३

"श्रीवीरराघव के शर जलाती बिजली के समान धुआँ निकालते हुए आ लगें, इसके पहले निर्बल लोग सब सुरक्षित स्थानों में पहुँच जाओ। चलो, चलो।" ऐसा चेतावनी का वचन कहते हुए अंगद श्रीराम के पास गया। ९५३

❀अन्द रत्तिडै यार्त्तॅळुन् दानवन्, शिन्दु रत्तन् दुवैन्दॅळुञ् जॅच्चैयान्
इन्दु विण्णिन् ड्रिळिन्दुळ दामॅन, वन्दु वीर नडियिल् वणङ्गिनान् 954

चिन्तु रत्तम्–बाहर निकलकर बहे रक्त से; तुतैन्तु ऍळुम्–घने रूप से लगे दिखनेवाली; चॅच्चैयान्–(लाल) चंदन की-सी चर्चा के साथ; अन्तरत्तु इटै–आकाश में; आर्त्तु ऍळुन्तान्–नर्दन करके उठा; विण्णिन्ऱु–आकाश से; इन्तु इळिन्तुळतु आम्–इंदु उतरा हो; ऍन–जैसे; अवन्–वह; वीरन् अटियिल्–श्रीवीरराघव के चरण पर; वणङ्कितान्–विनत हुआ। ९५४

वह अन्तरिक्ष में नर्दन के साथ उठा। उसके शरीर पर बहते रक्त के कारण वह लाल-चन्दन-लिप्त-सा लग रहा था। फिर वह आकाश से उतरे इन्दु के समान नीचे आकर वीर श्रीराम के चरणों पर विनत हुआ। ९५४

❀उऱ्ऱ पोदव नुळ्ळक् करुत्तॅलाम्, कॊऱ्ऱ वीर नुणर्त्तॅन्ऱु कूऱलुम्
मुऱ्ऱ ऑदियॅन् मूर्क्कन् मुडित्तलै, अऱ्ऱ पोदन्ऱि याशै यरानॅन्ऱान् 955

उऱ्ऱ पोतु–उसके आने पर; कॊऱ्ऱम् वीरन्–विजयी वीर के; अवन् उळ्ळ करुत्तु ऍलाम्–उस (रावण) के मन के भाव सब; उणर्त्तु–कहो; ऍन्ऱु कूऱलुम्–पूछने पर; मुऱ्ऱ ओति ऍन–पूरा बताने से क्या (लाभ); मूर्क्कन्–मूर्ख; मुटि तलै अऱ्ऱपोतु अन्ऱि–किरीटमंडित सिर कटे तब छोड़कर; आचै अरान्–काम-मुक्त न होगा; ऍन्ऱान्–(अंगद ने) कहा। ९५५

अंगद के आने पर विजयी वीर श्रीराम ने पूछा कि रावण के मन के

सारे अभिप्राय बतलाओ। अंगद ने उत्तर में कहा कि सारी बातें बताने से क्या काम होगा? वह मूर्ख है और अपने मुकुटमण्डित सिर कटाए बिना अपनी कामवासना को नहीं त्यागेगा। ९५५

14. मुदऱ् पोर्प् पडलम् (प्रथम युद्ध पटल)

पूश लेपिऱि दिल्लैयॆं नप्पुऱत्, ताशै दोऱु मुरश मऱैयुमिऩ्
पाश ऱैप्पडै यित्तिडम् बऱ्ऱिय, वाशल् तोऱु मुऱैयिऩ् वहुत्तिराल् 956

पूचले–युद्ध ही; पिऱितु इल्लै–दूसरा नहीं; अॆंन–कहकर; पुऱत्तु–बाहर; आचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; मुरचम् अऱैयुमिऩ्–ढिंढोरा पिटवा दो; पाचऱै–डेरों के; पटैयिऩ् इटम्–सेना वीरों के पास; पऱ्ऱिय वाचल् तोऱुम्–लगे हुए सभी द्वारों पर; मुऱैयिऩ् वकुत्तिर्–यथाक्रम व्यूह बनाकर रहो। ९५६

नील ने आज्ञा दी कि सभी दिशाओं में ढिंढोरा पिटवाकर घोषणा कर दो कि युद्ध ही होगा और कुछ नहीं। तब श्रीराम ने हुक्म दिया कि सभी वानर अपने-अपने निर्दिष्ट द्वार पर कूच कर जाएँ और व्यूह-बद्ध रहें। ९५६

मऱ्ऱुम् निऩ्ऱ मलैयुम् मरङ्गळुम्, पऱ्ऱि वीरर् परवैयिऩ् मुम्मुऱै
कऱ्ऱ कैहळि नाऱ्कडि मानहर्, शुऱ्ऱुम् निऩ्ऱ वहऴियैत् तूर्त्तिराल् 957

मऱ्ऱुम्–और भी; कऱ्ऱ कैकळिनाल्–शिक्षित (अभ्यस्त) हाथों से; वीरर्–वीर; निऩ्ऱ मलैयुम्–स्थित रहनेवाले पर्वतों और; मरङ्कळुम्–तरुओं को; पऱ्ऱि ग्रहण कर; परवैयिऩ्–समुद्र से; मुम्मुऱै–तीन गुना अधिक (डालकर); कटि मा नकर्–सुरक्षित बड़े नगर को; चुऱ्ऱुम् निऩ्ऱ–वलयित कर रहनेवाली; अकऴियै–खाई को; तूर्त्तिर्–पाट दो। ९५७

यह भी आज्ञा सुनायी गयी कि वानर अपने (पर्वत, तरु आदि को उखाड़ लाने में) अभ्यस्त हाथों से सेतुबन्धन के अवसर पर लाये गये पर्वतों और तरुओं के तिगुने पर्वत और तरु लाकर सुरक्षित बड़े नगर लंका को वलयित रहनेवाली खाई को पाट दें। ९५७

इडुमिऩ् पऩ्मर मॆंङ्गु मियक्कऱत्
तडुमिऩ् पोर्क्कु वरुहॆंऩच् चाऱ्ऱुमिऩ्
कडुमि ऩिप्पॊऴु देहदिर् मीच्चॆलाक्
कॊडु मदिऱ्कुडु मित्तलै कॊऴहॆंऩ्ऱाऩ् 958

पऩ्मरम् इटुमिऩ्–विविध अनेक तरुओं को डाल दो (सड़कों पर); अॆंङ्कुम्–सर्वत्र; इयक्कु अऱ–संचार बन्द करके; तटुमिऩ्–रोक दो; पोर्क्कु वरुक–लड़ने आओ; अॆंन चाऱ्ऱुमिऩ्–ऐसा घोषित कर दो; कटुमिऩ्–जल्दी करो;

इप्पोऴुते–अभी; कतिर् मी चॅला–सूर्य भी जिस पर से नहीं जाता; कॉट्ट मतिल्–उस वर्तुल प्राचीर के; कुडुमि–शिखरों को; तलै कॉळ्क–वश में कर लो; ॲन्ऱान्–आज्ञा दी (श्रीराम ने)। ६५८

श्रीराम ने यह हुक्म भी दिया कि अनेक वृक्षों को मार्गों में डाल दो और आना-जाना रोक दो। ललकारो कि युद्ध में आ जाओ। जल्दी चलो और उन वर्तुल प्राचीरों के शिखरों पर क़ब्ज़ा कर लो जिन पर से सूर्य भी नहीं जाता। ९५८

तडङ्गॉळ् कुन्ऱु मरङ्गळुन् दाङ्गिय
मडङ्ग लन्नवन् वानर माप्पडै
इडङ्गर् माविरि यप्पुन लॆऱिडत्
तॊडङ्गि वेलै यहऴियैत् तूर्त्तदाल् 959

तटम् कॉळ् कुन्ऱम्–बड़प्पन से युक्त पर्वतों और; मरङ्कळुम्–तरुओं को; ताङ्किय–उठा ले जानेवाले; मटङ्कल् अन्न–सिंह-सम; अ वानर मा पटै–उन वानर वीरों की बड़ी सेना ने; इटङ्कर् मा–ग्राह पशु; इरिय–भाग जाएँ ऐसा; पुनल् एऱिट–जल बह निकले; तॊटङ्कि–ऐसा आरम्भ करके; वेलै अकऴियै–समुद्र-सदृश खाईं को; तूर्त्त–पाट दिया। ६५६

सिंह-सदृश उन वानरों ने अपने बड़े हाथों पर पर्वतों और तरुओं को ले आकर खाईं में डाला तो ग्राह आदि अस्त-व्यस्त हुए और जल ऊपर चढ़ आया। ९५९

एय वॆळ्ळ मॆऴुपदु मॆण्गडल्, आय वॆळ्ळत् तहऴियैत् तूर्त्तलुम्
तूय वॆळ्ळन् दुणैशॅय्व दामॆन, वायि लूडुपुक् कूरै वळैन्ददे 960

ॲण् कटल् एय–आठवां समुद्र बनी; वॆळ्ळम् ॲऴुपतुम्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की सेना; वॆळ्ळत्तु आय–बड़ी बाढ़-सी; अकऴियै–खाईं को; तूर्त्तलुम्–जब पाटने लगी तब; तूय वॆळ्ळम्–स्वच्छ जल; तुणै चॅय्वतु आम् ॲन–सहायता करता जैसा; वायिल् ऊटु पुक्कु–द्वारों से घुसकर; ऊरै वळैन्ततु–नगर को घेर गया। ६६०

आठवें सागर-जैसी सत्तर 'वॆळ्ळम्' की वह सेना इस काम में लगी तो बहुत ही विपुल जलराशि का स्वच्छ जल लंका के (प्राचीर-) द्वार से होकर अन्दर बहा और नगर को घेर गया मानो वह भी श्रीराम की सहायता करता हो। ९६०

विळैयुम् वॆन्ऱि यिरावणन् मॆय्प्पुहऴ्
मुळैयि नोडुङ् गळैन्दु मुडिप्पपोल्
तळैय विळ्न्द कॊऴुन्दडन् दामरै
वळैयम् वत्कैयिल् वाङ्गिन वानरम् 961

विळैयुम् वॅऩ्ऱि–बराबर मिली रही विजय के; इरावणऩ्–रावण के; मॅय् पुकऴ्–सच्चे यश को; मुळैयितोटुम् फळैन्तु–अंकुर के साथ निरा; मुटिप्प पोल्–चुकता जैसे; तळै अविऴ्न्त–सुलझी हुई; कोऴु तट–प्रवृद्ध और बड़े; तामरै–कमल की लताओं के; वळैयम्–बड़े कन्दों को; वानरम्–वानरों ने; वऩ्कैयिल्–सबल हाथों से; वाङ्किऩ–खोद निकाल लिया। ९६१

वानरों ने कमल-नालों को, जो आपस में जड़ के पास बटे-से रहते थे, तोड़कर कन्दों को अपने बड़े हाथों से उखाड़ दिया। यह ऐसा लगा कि निरन्तर विजयी रहनेवाले रावण की सच्ची कीर्ति रूपी लता जड़ से काटी जा रही हो। ९६१

इहऴुऩ् दऩ्मैय ऩाय विरावणऩ्
पुहऴु मिऩ्ऱॊडु पोयिऩ दामॆऩ
निहऴुङ् गणॊडु नील मुहुत्तलाल्
अहऴि ताऩु मऴुवदु पोऩ्ऱदे 962

निकऴुम् कण्–चलती आँखों के समान; नॆटु नीलम्–बड़े नीले कमलों के; उकुत्तलाल्–(शहद) गिराने से; इकऴुम् तऩ्मैयऩ् आय–निंद्य गुणवाला जो था; इरावणऩ्–उस रावण का; पुकऴुम्–यश भी; इऩ्ऱॊटु–आज से; पोयिततम् अॅत–चला गया मानो यह सोचकर; अकऴि तानुम्–खाई भी; अऴुवतु पोऩ्ऱतु–रोती-सी लगी। ९६२

ताकती रही आँखों के समान जो नीले कमल के पुष्प थे उनसे मधु झरता था। उसको देखकर ऐसा लगा मानो वह खाईं इस बात पर दुःखी हो आँसू गिरा रही हो कि रावण का यश भी आज मिट गया। ९६२

तण्डि रुऩ्दपैऩ् दामरै ताळऱप्
पण्डि रिऩ्दु शिदैयप् पडर्शिऱै
वण्डि रिऩ्दऩ वाय्तॊऱुम् मुट्टैयैक्
कॊण्डि रिऩ्दऩ वऩ्ऩक् कुळामॆलाम् 963

तण्टु इरुन्त–नाल के रूप में रही; पैन्तामरै–हरी कमल-लताएँ; ताळ् अऱ–मूल के अलग होने से; पटर् चिऱै वण्टु–खुले पंखों की भ्रमरें; पण् तिरिन्तु चितैय–गीतनाद को विगाड़ते हुए; इरिन्तत–अस्त-व्यस्त भागीं; अऩ्ऩम् कुळाम् ॲलाम्–हंस-समूह सभी; वाय् तॊऱुम्–मुखों में; मुट्टैयै कॊण्टु–अण्डों को लेते हुए; इरिन्तत–तितर-बितर भागे। ९६३

नाल-सहित कमललता का मूल उखड़ गया। खुले पंख वाले भ्रमर गुंजार का स्वर बदलते हुए अस्त-व्यस्त हो उठे। हंस के समूह अपने मुखों में अण्डों को पकड़े हुए भटकने लगे। ९६३

ईऴि तार मियम्बिय वण्डुहळ्, पाळै तादुह नीर्नॆडुम् बण्णय
ताळ तामरै यऩ्ऩङ्गळ ताविड, वाळै ताविऩ वाऩरऩ् दावबे 964

ईळि तारम्–'ईळि, तारम' की तानें; इयम्पिय वण्टुकळ्–निकालनेवाले भ्रमरों के साथ; पाळै तातु उकु–(नारियल, क्रमुक आदि तरुओं की) डंठलों से गिरे मकरन्दों से युक्त; नीर्–जल के; नॅटु पण्णॅय–विशाल खेतों में जो रहे; ताळ तामरै अन्नङ्कळ्–नाल-सहित कमलों पर के हंस; ताविट–लाँघने लगे; वानरम् ताव–वानर लांघे और; वाळै ताविन–'वाळै' नामक मछलियाँ भी उछलीं। ९६४

ईळि, तारम आदि तानों में गूंजते हुए उड़नेवाले भ्रमर और उन खेतों के कमलवासी हंस, जिनके जल में नारियल और पूग के तरुओं से गिरे मकरन्द मिले थे, उड़ने लगे तो वानर उनके पीछे उछले; तब 'वाळै' नामक मछलियाँ भी उछल पड़ीं। ९६४

तूऱु मामरम् कुन्ऱिनॊ डुन्दोडर्
नीऱु नीर्मिशैच् चॆन्ऱु नॆरुक्कलान्
एऱु पेरहळ् निन्ऱु मॆन्नैप्पल
आऱु शॆन्ऱन वार्हलि मीदरो 965

तूऱु मामरम्–झाड़ बने बड़े-बड़े तरु और; कुन्ऱिनॊटुम्–पर्वतों के साथ; तॊटर् नीऱुम्–उठी धूलें; नीर् मिचै चॆन्ऱु–जल में जाकर; नॆरुक्कलान्–ठस भरे, इसलिए; एऱु–जल जिसका ऊपर चढ़ा; पेर् अकळ् निन्ऱुम्–उस बड़ी खाई से; ऎन्नै पल–कितनी ही अनेक; आऱु–नदियाँ; आर् कलि मीतु–समुद्र में; चॆन्ऱन–बहीं। ९६५

कुञ्जघने बड़े तरुसमूह, पर्वत और उनके साथ लगी उठी धूल —सभी खाई में जाकर ठस गिरी। तब जल का ऊपरी तल उठ आया और उस खाई से कितनी ही नदियाँ बनकर वहीं और समुद्र में जा मिलीं। ९६५

इळहु माक्क लिडुन्दो रिडुन्दोऱुम्
शुळिहळ् तोऱुञ् जुरित्तिडै तोन्ऱुतेन्
ऒळुहु तामरै योत्तन वोङ्गुनीर्
मुळुहि मोदॆळु मादर् मुहत्तैये 966

इळुकुम्–विस्तार में फैले रहे; मा कल्–बड़े पर्वतों को; इटुम् तोऱुम् इटुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों (खाई में) डालते; चुळिकळ् तोऱुम्–त्यों-त्यों भँवर-भँवर में; चुरित्तु–डूबकर; इटै तोन्ऱु–फिर दिखनेवाले; तेन् ऒळुकु–मधु स्रवनेवाले; तामरै–कमल के फूल; ओङ्कु नीर्–(तरंगें) जिस पर उठती हैं उस जल में; मुळुकि–डुबकी लगाकर; मीतु ऎळु–ऊपर उठनेवाली; मातर् मुकत्तै ऒत्तन–नारियों के मुख से तुल्य थे। ९६६

ज्यों-ज्यों वानर बहुत बड़े-बड़े, विशाल पर्वतों को खाई में डालते, त्यों-त्यों भँवरों के मध्य में मधुस्रावी कमल जल के अन्दर डूबते और बाहर

आते थे। वे स्त्रियों के मुखों के समान लगे जो तरंगप्रभावित जल में नहा उठती हों। ९६६

तऩ्मैक् कुत्तलै याय दशमुहऩ्
तॊऩ्मैप् पेरहऴ् वानरऩ् दूर्त्तदाल्
इऩ्मैक् कुम्मॊऩ् ऱुडैमैक्कुम् यावर्क्कुम्
वऩ्मैक् कुम्मॊर् वरम्बुमुण् डाङ्गॊलो 967

तऩ्मैक्कु–अहंकारियों में; तलै आय–शीर्षस्थ; तचमुकऩ्–दशमुख की; तॊऩ्मै–प्राचीन; पेर् अकऴ्–बड़ी परिखा को; वाऩरम् तूर्त्ततु–वानरों ने पाट दिया; आल्–इसलिए; यावर्क्कुम्–किसी के भी; ऑऩ्ऱु इऩ्मैक्कुम्–किसी अभाव की और; उटैमैक्कुम्–किसी संप्राप्ति की; वऩ्मैक्कुम्–वीरता की; ओर् वरम्पुम् उण्टाम् कॊल्–सीमा भी हो सकती है क्या। ९६७

मूर्धन्य अहंकारी रावण की प्राचीन और बड़ी खाई को भी वानरों ने पाट दिया। इससे यह प्रश्न सामने आ जाता है कि क्या किसी बात की कोई अलंघ्य सीमा भी हो सकती है— अभाव की, सम्पत्ति की या शक्ति की ?। ९६७

तूर्त्त वानरऩ् दुङ्ग वरैहळाल्, शीर्त्त पेरणै तऩ्ऩैयुञ् जिऩ्दिऩ
वार्त्त दऩ्ऩ मदिलिऩ् वरम्बुहॊण्, डार्त्त वार्हलि कारॊडु मञ्जवे 968

तुङ्कम् वरैकळाल्–ऊँचे पर्वतों से; तूर्त्त वाऩरम्–(खाई को) पाट देनेवाले वानरों ने; चीर्त्त–सुगठित; पेर् अणै तऩ्ऩैयुम्–बड़े (बाधक) कूलों को भी; चिऩ्तित्त–तोड़-फोड़ देकर; वार्त्ततु अऩ्ऩ–ढाला गया जैसे रहनेवाले; मतिलिऩ्–प्राचीरों के; वरम्पु कॊण्टु–कगारे को पकड़कर; आर्कलि–समुद्र; कारॊटुम् अञ्च–मेघों के साथ डरें, ऐसा; आर्त्त–नर्दन किया। ९६८

बड़े ही ऊँचे पर्वतों से वानरों ने खाई को पाट दिया। फिर ऊँचे कूलों को भी ढह दिया। फिर ढले स्वर्ण-से लगनेवाले प्राचीरों के मुँड़ेरों को पकड़कर वानरों ने ऐसा नर्दन किया कि समुद्र और मेघ भी डर से थर्रा उठे। ९६८

वट्ट मेरु विदुवॆऩ्ऩ वाऩ्मुह, डॆट्ट नीण्ड मदिऩ्मिशै येऱिविण्
तॊट्ट वानरऩ् दोऩ्ऱिऩ मीत्तॊह, विट्ट वॆण्गॊडि वीङ्गिऩ वॆऩ्ऩवे 969

वट्टम् मेरु इतु–वर्तुल मेरु है यह; ऍऩ–ऐसा मान्य; वाऩ् मुकटु–आकाश की चोटी को; ऍट्ट–छूते हुए; नीण्ट मतिल् मिचै–लम्बे प्राचीर पर; एऱि–चढ़कर; विण् तॊट्ट–जिन्होंने आकाश को छू लिया वे वानर; मी तॊक विट्ट–आकाश में समूह में लटकायी गयी; वॆण् कॊटि ऍऩ्ऩ–सफ़ेद ध्वजाओं के समान; वीङ्किऩ–विपुल दिखे। ९६९

वे प्राचीरों पर चढ़ गये जो वर्तुलाकार मेरु के समान आकाश छूते हुए ऊँचे रहे। आकाश में पहुँचे वे वानर ऊपर से लटकायी गयी श्वेत पताकाओं के समान बड़ी ही संख्या में दिखायी दिये। ९६९

इऱुक्क वेण्डुव दिल्लॅयॆण् डीर्मणि
वॆरुक्कॅ योङ्गिय मेरु विळुक्कलात्
निऱुक्क नेर्वरुम् वीरर् नॆरुक्कलाल्
पॊऱुक्क लादु मदिळ्तरै पुक्कदाल् 970

ॲण् तीर्–संख्या को विफल करनेवाले (असंख्यक); मणि वॆरुक्कॅ ओङ्किय–रत्न आदि सम्पत्ति में समृद्ध; मेरु–मेरु से; विळु कलाल्–(तोलने के) श्रेष्ठ बाट से; निऱुक्क–तोलने पर; नेर् वरुम्–सम रहनेवाले; वीरर्–(वानर) वीरों के; नॆरुक्कलाल्–दबाने से; पॊऱुक्कलातु–न सह सककर; मतिळ्–प्राचीर; तरै पुक्कतु–ज़मीन के अन्दर धँस गया; आल्–इसलिए; इऱुक्क वेण्टुवतु–ढहाने की आवश्यकता; इल्लै–नहीं (रही)। ९७०

उन वानरों के, जो तोलने पर रत्नसहित मेरु के बाट के समभार रहेंगे, दबाने से, प्राचीर उनका भार न सह सककर नीचे दब गया। अब ढहने के लिए कोई प्राचीर बाक़ी नहीं रह गया। ९७०

अऱैन्द मामुर शात्तॆप् पदाहैयाल्
मऱैन्द वान्नॆडु वात्तह मादिरम्
कुऱैन्द तूळि कुळुमिविण् णूडुपुक्
कुऱैन्द दाङ्गवर् पोर्क्कॆळु मोदैये 971

अऱैन्त–पिटते; मा मुरचु–बड़े ढोलों को ढोये ले जानेवाले; आत्तै–हाथियों पर की; पताकैयाल्–पताकाओं से; नॆट्टु–विस्तृत; वान् अकम्–आकाश के तल; मऱैन्त–ढक गये; तूळि–धूल; कुळुमि–एकत्रित हुई, इससे; मातिरम्–दिशाएँ; कुऱैन्त–छोटी हो गयीं; आङ्कु–वहाँ; अवर्–उन राक्षसों का; पोर्क्कु ॲळुम्–युद्ध के लिए निकलने के; ओतै–शोर; विण् ऊटु पुक्कु–आकाश में घुसकर; उऱैन्ततु–जम गया। ९७१

उधर बड़े गजों पर ढोल रखकर मुनादी पिटवा दी गयी। उन गजों पर जो झंडे थे उनसे आकाश ढँक गया। धूलराशि से दिशाएँ रुँध गयीं। और राक्षसों का युद्ध में निकलने का शोर आकाश में पहुँचा और वहीं जम गया-सा लगा। ९७१

कोड लम्बिन कोदै यलम्बिन, आड लम्बरित् तारु मलम्बिन
माड लम्बिन मामणित् तेर्मणि, पाड लम्बिन पाय्मद मावॆलाम् 972

कोटु–शंख; अलम्पित–बजे; कोतै अलम्पित–हार झंकृत हुए; आटल्–सबल; अम् परि–सुन्दर अश्वों के; तारुम्–दाम भी; अलम्पित–क्वणित हुए;

मा मणि तेर्–बड़े व मनोरम रथों की; मणि–घण्टियाँ; माटु–पार्श्वों में; अलम्पित्–बजीं; पाय् मतम्–मदनीरस्रावयुक्त; मा अॅलाम्–गज सभी; पाटु अलम्पित्–युद्ध जब पड़ा तब चिंघाड़ उठे। ६७२

शंख बजे। राक्षसों के हार क्वणित हुए। सशक्त अश्वों के दाम भी स्वरित हुए। बड़े सुन्दर रथों की घंटियाँ पार्श्वों में क्वणित हुईं। मदस्रावी गज युद्ध के अवसर पर चिंघाड़ उठे। ९७२

अरक्कर् तॉल्हुल माशऱ वल्लवर्
वरुक्कम् यावॅयुम् वाऴ्वुऱ वन्ददोर्
करुक्कोॅऴ् कालम् विदिकॉडु काट्टिडत्
तरुक्कि युऱ्ऱॅदिर् ताक्किन तानॅये 973

अरक्कर् तॉल् कुलम्–राक्षसों का प्राचीन कुल; आचु अऱ–निशान-हीन हो जाए; अल्लवर्–इतरों के; वरुक्कम्–वर्ग; यावॅयुम्–सभी; वाऴ्वु उऱ–अच्छा जीवन पा जाएँ; वन्ततु–तदर्थ आया; ओर् करु कोॅऴ्–एक अर्थगर्भित; कालम्–काल; विति कॉटु–विधि द्वारा; काट्टिट–दरसाने के लिए; तानॅ–वानर-सेना; तरुक्कि उऱ्ऱु–बड़े गर्व के साथ; ॲतिर् ताक्किन–सामने जाकर लड़ी। ६७३

वानरों की सेना ने भी घमण्ड के साथ डटकर सामना किया। तब लगा कोई अर्थगर्भित काल विधि द्वारा दरसाया गया है, जिसमें राक्षसों का पुराना वंश निर्मूल हो जायगा, और इतरों के वर्ग सुखी जीवन पायँगे। ९७३

पऱ्कॉ डुन्नॅडुम् पादवम् पऱ्ऱियुम्
कऱ्कॉ डुच्चॅन्ऱ दक्कवि यिन्गडल्
विऱ्कॉ डुन्नॅडु वेल्कॉडुम् वेऱुळ
ॲऱ्कॉ डुम्बडै युड्गॉण्ड दिक्कडल् 974

अ कवियिन् कटल्–वह वानर (सेना-) सागर; पल् कॉटुम्–दाँतों से और; नॅटु पातवम्–बड़े पादपों को; पऱ्ऱियुम्–लेकर और; कल् कॉटुम्–पत्थरों से; चॅन्ऱतु–आक्रमण करने गयी; इ कटल्–यह (राक्षससेना-) सागर तो; विल् कॉटुम्–धनु लेकर और; नॅटु वेल् कॉटुम्–लम्बे साँग लिये; वेऱु उळ–अन्य जो हैं उन; ॲल्–उज्ज्वल; कॉटुम् पटॅयुम्–क्रूर हथियार; कॉण्टतु–लिये रहनेवाला था। ६७४

वह वानर-सागर अपने दाँतों, लम्बे तरुओं और पहाड़ों से लड़ने चला। पर इधर राक्षसों की सेना के पास धनु थे; लम्बी शक्तियाँ थीं और अन्य प्रकाशमय हथियार थे। ९७४

अम्बु कऱ्कळै यऴ्ळित्त वम्बॅलाम्, कॉम्बु डैप्पण कूऱुऱ नूऱित्त
वम्बु डैत्तड मामर माण्डन, शॅम्बु हच्चुडर् वेऱ्कणञ् जॅल्लवे 975

अम्पु–(राक्षसों के) बाणों ने; कड़्कळै अळ्ळित–पत्थरों को चूर कर दिया; अम्पु ऍलाम्–उन सभी शरों को; कॉम्पु उटै–डालों-सहित; पणै–तरुओं ने; कूऱु उऱ–छिन्न-भिन्न करके; नूऱित–मिटा दिया; चॅम्पु उक–(शत्रु-रक्त की) लाली लगे; चुटर्–तेजोमय; वेल् कणम्–शक्तियों का समूह; चॅल्ल–घुस गया इसलिए; वम्पु उटै–सुवासित; तट–मोटे; मा मरम्–बड़े वृक्ष; माण्टत–मिट गये। ९७५

राक्षसों के बाणों ने वानर-प्रेरित पर्वतों को चूर्ण कर दिया। उन शरों को वानरों द्वारा प्रयुक्त डालोंदार पेड़ों ने टुकड़े करके मिटाया। फिर उन तरुओं को लाल रंग की रोशनी से चमकनेवाली शक्तियों ने भेद दिया और वे तरु नष्ट हो गये। ९७५

माक्कै वाऩर वीरर् मलैन्दकल्, ताक्कि वञ्जर् तलैहळ् तहर्त्तलाल्
नाक्कि ऩूडुञ् जॅविदोरुम् नाहम्वाळ्, मूक्कि ऩूडुञ् जॊरिन्दऩ मूळैये 976

मा कै–बड़े हाथों वाले; वानर वीरर्–वानर वीरों से; मलैन्त–युद्ध में फेंके गये; कल्–पत्थरों के; ताक्कि–टकराकर; वञ्चर् तलैकळ्–वंचकों के सिरों को; तकर्त्तल् आल्–तोड़ देने से; नाक्किऩ् ऊटुम्–जीभ से; चॅवि तोऱुम्–और कानों से होकर; नाकम् वाळ्–सर्पावास बाँबियों के समान; मूक्किऩ् ऊटुम्–नाक से; मूळै–भेजा; चॊरिन्तऩ–बाहर निकल आये। ९७६

वानरों ने अपने बड़े हाथों से उठाकर जो पत्थर फेंके, उनसे टकराकर वंचकों के सिर फूटे। तब उनके भेजे (मस्तिष्क) उनकी जिह्वाओं, कानों और सर्प-बिल-सम नाकों से होकर बाहर निकल आये। ९७६

अऱ्क ळोडु निऱत्त वरक्करतम्, विऱ्क ळोडु शरम्बड वॅम्बुणीर्
पऱ्क ळोडुञ् जॊरिदरप् पऱ्ऱिय, कऱ्क ळोडु मुरुण्ड कविहळे 977

अऱ्कळ् ओटुम्–अन्धकारखण्ड भी भाग जाएँ ऐसे; निऱत्त–रंगवाले; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; विऱ्कळ् ओटु–धनुओं से छूट आये; चरम् पट–शरों के लगने से; वॅम् पुण् नीर्–गरम व्रणों का रक्त; पऱ्कळोटुम् चॊरितर–दाँतों के साथ गिरा; पऱ्ऱिय–हाथ में पकड़े रहे; कऱ्कळोटुम्–पर्वतों के साथ; कविकळ् उरुण्ट–वानर लोट गये। ९७७

अन्धकारखण्ड भी भाग जाएँ, ऐसे रंग वाले राक्षसों के धनुओं से छूटे वेगवान शरों के लगने से वानरों के शरीरों पर व्रण हुए और उनसे रक्त बहा। उनके दाँत रक्त के साथ गिर गये। अपने हाथों के पत्थरों को पकड़े हुए वानर लुढ़क गये। ९७७

निऩ्ऱु मेरु नॅडुमदिळ् नॅऱ्ऱियिऩ्, वॅऩ्ऱि वानर वीरर् विशैत्तकल्
शॆऩ्ऱु तीयव रारुयिर् शिन्दिऩ, कुऩ्ऱिऩ् वीऴु मुरुमिऩ् कुऴुविऩे 978

मेरु–मेरु-से; नॅटु मतिळ्–लम्बे प्राचीर के; नॅऱ्ऱियिऩ्–माथे पर; निऩ्ऱु–

खड़े होकर; वॅन्ऱि वानर वीरर्–विजयी वानर वीर; विचैत्त कल्–(द्वारा) प्रेषि पत्थरों ने; कुन्ऱिन् वीऴुम्–पर्वत पर गिरनेवाले; उरुमिन् कुऴुविन्–अशनि-समूहों के समान; चॅन्ऱु–जाकर; तीयवर् आर् उयिर्–खलों के प्यारे प्राणों को; चिन्तिन–निकाल बाहर कर दिया। ६७८

मेरुसदृश प्राचीर पर खड़े होकर विजयी वानरों ने जो पत्थर फेंके, उन तेज़ चलनेवाले पत्थरों ने पर्वत पर गिरनेवाले वज्र-समूहों के समान जाकर खलों के प्राणों को मिटाया। ९७८

ॲदिर्त्त वानर माक्कैयो डिऱ्ऱन
मदिऱ्पु ऱङ्गणडु मण्णिन् मऱैन्दन
कदिर्क्कों डुङ्ग णरक्कर् करङ्गळाल्
विदिर्त्तॅ ऱिन्द विळङ्गिलै वेलिन 979

कतिर्–सूर्य के समान; कॉटु–उग्र; कण् अरक्कर्–आँखों वाले राक्षसों के; करक्कळाल्–हाथों से; वितिर्त्तु ॲऱिन्त–झटकाकर फेंके गये; विळङ्कु–प्रकाशमान; इलै वेलिन्–पत्राकार सिरों के भालों द्वारा; ॲतिर्त्त–सामना करनेवाले; वानरम्–वानर; आक्कैयॉटु–अपने शरीरों के साथ; इऱ्ऱ–मिटकर; मतिल् पुऱम् कण्टु–चहारदीवारी के बाहर गिरकर; मण्णिल् मऱैन्तन–धरती में अदृश्य हो (गए) गये। ६७६

उधर सूर्य के समान प्रखर आँखों वाले राक्षसों ने हाथ हिलाकर शक्तियाँ फेंकीं। उन पत्राकार फलों की शक्तियों ने लड़नेवाले वानरों के शरीरों और प्राणों को मिटा दिया और वे वानर प्राचीर के बाहर गिरकर भूमि में अदृश्य हो गये। ९७९

कडित्त कुत्तिन कैयिर् कळुत्तऱप्
पिडित्त वळ्ळुहि राऱ्पिळ वाक्किन
इडित्त वॅऱ्ऱिन वॅण्णि लरक्करै
मुडित्त वानरम् वॅञ्जिनम् मुऱ्ऱिन 980

वानरम्–बन्दरों ने; वॅम् चिनम्–कठोर कोप में; मुऱ्ऱिन–प्रवृद्ध; कटित्त–काटा (दाँतों से); कैयिल्–हाथों से; कुत्तिन–घूँसा मारा; कळुत्तु अऱ–गला तोड़ते हुए; पिटित्त–पकड़ा; वळ् उकिराल्–तेज नखों से; पिळवाक्किन–दो भागों में चीर दिया; इटित्त–मुष्टि प्रहार किया; ॲऱ्ऱिन–लात मारी; ॲण्णिल् अरक्करै–असंख्य राक्षसों का; मुटित्त–अन्त करा दिया। ६८०

वानरों ने अत्यन्त क्रोध से राक्षसों को दाँतों से काटा। हाथ से प्रहार किया। पकड़कर गला तोड़ दिया। अपने तेज़ नखों से उनको दो भागों में चीरा। मुष्टियों से घूँसा मारा। पैरों से लात मारी। ऐसा करके असंख्य राक्षसों का अन्त कर दिया। ९८०

ऍऱिन्दु मॆय्दु मॆळ्मुळैत् तण्डुकॊण्
डऱैन्दुम् वॆव्वयि लाहत् तळुत्तियुम्
निऱैन्द वॆङ्ग णरक्कर् नॆरुक्कलाल्
कुऱैन्द वाऩर वीरर् कुळुक्कळे 981

निऱैन्त वॆम् कण्–भरपूर क्रूरता की आँखों वाले; अरक्कर्–राक्षसों के; ऍऱिन्तुम्–फेंककर और; ऍय्तुम्–चलाकर; ऍळु–लोहे के खम्भे के समान; मुळै तण्टु कॊण्टु–बाँस के दण्डों को लेकर; अऱैन्तुम्–पीटकर; वॆं अयिल्–वेदनादायी भाले को; आकत्तु अळुत्तियुम्–छाती में गड़ाकर और; नॆरुक्कलाल्–तंग करने से; वानर वीरर् कुळुक्कळ्–वानर-वीर-समूह; कुऱैन्त–घटे। ९८१

अतिक्रूर आँखों वाले राक्षसों ने हथियार फेंककर, शर चलाकर, लोहे के खम्भों के समान बाँस के दण्डों से पीटकर और कठोर भाले को छातियों में भोंककर वानरों को तंग किया। इसलिए वानर वीरों की संख्या घट गयी। ९८१

शॆप्पिऱ् चॆम्बुनल् तोय्न्दशॆम् बॊन्मदिल्
तुप्पिऱ् चॆय्ददु पोऩ्ऱदु शूळ्वरै
कुप्पुऱ् ऱीर्पिणक् कुऩ्ऱु शुमन्दुहॊण्
डुप्पिऱ् चॆऩ्ऱ दुदिरत् तॊळुक्कमे 982

चॆप्पिल्–ताम्रवर्ण; चॆम्पुनल् तोय्न्त–लाल-रक्त-रंजित; चॆम्पॊन्–लाल स्वर्ण का; मतिल्–प्राचीर; चूळ् वरै–घेरकर खड़ा रहा एक पर्वत; तुप्पिल् चॆय्ततु–प्रवाल का बना हो; पोऩ्ऱतु–जैसा रहा; उतिरत्तु ऒळुक्कम्–रक्त का बहाव; कुपुपुऱ्ऱु–औंधे गिरकर; ईर्–खींची जानेवाली; पिण कुऩ्ऱु–लाशों के पर्वतों को; चुमन्तु कॊण्टु–ढो लेता हुआ; उप्पिल् चॆऩ्ऱतु–नमकीन सागर में बह चला। ९८२

ताम्रवर्ण रक्तरंजित प्राचीर प्रवालगिरि घेरे रहती हो, ऐसा लगा। उस पर से निकला रक्त-प्रवाह औंधे गिरी लाशों को खींचता हुआ समुद्र में जाकर मिला। ९८२

वन्दि रेत्त परवै मयङ्गिऩ, अन्द रत्ति नॆरुङ्गलि ऩङ्गॊरु
पन्दर् पॆऱ्ऱदु पोऩ्ऱदु पऱ्ऱुदल्, इन्दि रऱ्कु मरिय विलङ्गैये 983

इन्तिरऱ्कुम् पऱ्ऱुतल् अरिय–इन्द्र से भी अग्राह्य; इलङ्कैये–लंका; वन्तु इरैत्त–आकर चहचहानेवाले; परवै मयङ्किऩ–जो पक्षी एकत्र हुए; अन्तरत्तिऩ्–(उनके) अन्तरिक्ष में; नॆरुङ्कलिऩ्–ठस भरने से; अङ्कु–वहाँ; ऒरु पन्तर्–एक 'पंडाल' (बाँसों के खम्भे गाड़कर उनके ऊपर नारियल के पत्तों को छाकर जो मण्डप बनाया जाता है); पॆऱ्ऱतु–पा गया; पोऩ्ऱतु–जैसा लगा। ९८३

इन्द्र के लिए भी अजेय उस लंका के ऊपर चहचहाते हुए विविध

खगकुल आकर मिश्रित हो रहे। तब ऐसा लगा कि लंका के ऊपर पंडाल छाया गया हो। ९८३

तङ्गु वॆङ्गन्न लोंत्तुत् तयङ्गिय, पॊङ्गु वङ्गुरु दिप्पुनऱ् चॆक्कर्पूङ्
कङ्गु लन्न कवन्दमुङ् गैयॆडुत्, तङ्गु मिङ्गुनिन् ऱाडिन्न वामरो 984

तङ्कु–स्थिर; वॆम् कनल्–सन्तापक आग के; ओत्तु तयङ्किय–सदृश रहने वाला; पॊङ्कु–उमगता; वॆम् कुरुति पुनल्–गरम रक्त जो था उस प्रवाह रूपी; चॆक्कर् (संध्या-) लाल गगन में; पू–सुन्दर; कङ्कुल् अन्न–रात्रि के समान; कवन्तमुम्–कबन्ध भी; कै ऎंटुत्तु–हाथ उठाते हुए; अङ्कुम् इङ्कुम्–उधर और इधर; निन्ऱु आटिन्न आम्–खड़े होकर नाचे। ९८४

उमगता हुआ गरम रक्त-प्रवाह स्थिर और जलती अति गरम आग के समान तेजोमय था। उस प्रवाह रूपी लाल गगन में सुन्दर रात के समान रंग वाले कबंध अपने हाथों को उठाकर नाचे। ९८४

कॊन्नि	ऱक्कुरु	दिक्कुडै	पुट्कळिन्
तॊन्नि	ऱच्चिऱै	यिऱ्ऱुळि	तूवलाल्
पन्नि	ऱत्त	पदाहैप्	परप्पॆलाम्
शॆन्नि	ऱत्तन	वाय्निऱन्	दीर्न्दवे 985

कॊन्–भयानक; निऱ–(लाल) रंग के; कुरुति–रक्त में; कुटै पुट्कळिन्–गोते लगानेवाले पक्षियों के; तॊल् निऱ–प्राचीन, रंगीन; चिऱैयिल्–पंखों में से; तुळि तूवलाल्–रक्त की बूंदें गिरती हैं तब; पल् निऱत्त–विविध रंगों के; पताकै परप्पु ऎलाम्–झण्डों के सभी विस्तृत समूह; चॆम् निऱत्तनवाय्–लाल रंग के बने; निऱम् तीर्न्त–अपना रंग छोड़ गये। ९८५

उस भयानक लाल रक्त में पक्षी गोते लगाकर उठे। उनके सुन्दर पंखों से रक्त की बूंदें छिटकीं और उनसे विविध रंगों की पताकाएँ एक दम लाल हो गयीं। ९८५

पॊऴिन्द	शोरिप्	पुदुप्पुनल्	पॊङ्गिमी
वऴिन्द	मामदिल्	कैविट्टु	वानरम्
ऒऴिन्द	मेरुवि	नुम्बर्विट्	टिम्बरिन्
इऴिन्द	माक्कड	लॊन्न	विऴिन्दवे 986

वानरम्–वानर; ऒऴिन्त–निर्बल हुए; पॊऴिन्त–और (उनसे) जो निकला; चोरि पुतु पुनल्–वह रक्त रूपी ताजा जल; पॊङ्कि–उफनकर; मी वऴिन्त–जिसके ऊपर से बहा उस; मा मतिल् कै विट्टु–बड़े प्राचीर को छोड़कर; मेरुविन् उम्पर् विट्टु–मेरु के ऊपर से; इम्परिन् इऴिन्त–नीचे आनेवाले; मा कटल् अन्न–बड़े समुद्र के समान; इऴिन्त–गिरा। ९८६

वानर बलहीन हो रहे। उनके शरीरों से निकला रक्तप्रवाह ताज़ी बाढ़ के समान प्राचीर के ऊपर से नीचे गिरा। तब वह एक महासमुद्र के समान लगा, जो मेरु के ऊपर से नीचे भूमि पर उतर रहा हो। ९८६

पदन्न मुम्मदि लुम्बडै नाञ्जिलुम्
कदन्न वायिलुम् कट्टुमट् टालैयुम्
मुदल यावैयुम् पुक्कुऱ्ऱु मुऱ्ऱिन्न
विदन्न वॅङ्ग णिराक्कदर् वॅळ्ळमे 987

वितन्नम्–दुःखकारी; वॅम् कण्–क्रूर आँखों वाले; इराक्कतर् वॅळ्ळम्–राक्षसों की बड़ी भीड़ें; पतन्नमुम्–प्राचीरों पर बने समतल स्थलों; मतिलुम्–प्राचीर; पटै नाञ्चिलुम्–पत्थर के बने "नांजिलों" (प्राचीर के विशिष्ट अंगों); कतन्नम् वायिलुम्–भयविह्वल करनेवाले गढ़-द्वारों; कट्टुम् अट्टालैयुम्–सुघटित अटारियों; मुतल यावैयुम्–आदि सभी स्थानों पर; पुक्कुऱ्ऱु–प्रवेश करके; मुऱ्ऱिन्न–भर गयीं। ९८७

त्रासक और क्रूर आँखों के राक्षसों के झुंड के झुंड प्राचीरों के मध्य और ऊपर रहनेवाले सपाट स्थलों, प्राचीरों, प्राचीरों के 'नांजिल' नाम के अंगों और मन को आक्रांत करनेवाले द्वारों और ऊपर बनी अटारियों में, सर्वत्र भर गये। ९८७

पाय्न्द शोरिप् परवैयिऱ् पऱ्पल
नीन्दि येहुम् नॅरुक्किडच् चॅल्वन्न
शाय्न्दु शाय्न्दु शरम्बडत् दळ्ळलुऱ्
ऱोय्न्दु वीऴ्न्द शिलशिल वोडिन्न 988

नॅरुक्किट–उनके भर जाने से; चॅल्वन्न–जानेवाले; पऱ् पल–विविध वानर; पाय्न्त–बहते हुए; चोरि परवैयिल्–रक्त के सागर में; नीन्ति एकुम्–तैरकर जाते; चिल चिल–कुछ-कुछ; चाय्न्तु चाय्न्तु–कमज़ोर पड़कर; चरम् पट–शरों के लगने से; तळ्ळल् उऱ्ऱु–लड़खड़ाये हुए; ओय्न्तु–शिथिल होकर; वीऴ्न्त–गिरे; चिल चिल–कुछ-कुछ; ओटिन्न–भाग खड़े हुए। ९८८

राक्षसों के आकर ढकेलने से अनेक वानर बहते रक्त-सागर में तैरकर गये। कुछ-कुछ कमज़ोर पड़कर शरों के लगने से लड़खड़ाते हुए श्लथ होकर गिर गये। कुछ-कुछ जान लेकर भाग गये। ९८८

तळ्िय वानर माक्कडल् शाय्दलुम्
पॉळ्यिुम् वॅम्बडैप् पोर्क्कड लार्त्तवाल्
ऑळ्यिुङ् गालत् तुलहीरु मून्ऱुमोत्
तळ्यिु माक्कड लार्प्पॅडुत् तॅन्नवे 989

ऑळ्यिुम् कालत्तु–प्रलय के (युगान्त) काल में; ओरु मून्ऱु उलकुम् ओत्तु–

तीनों लोक एक होकर; अऴियुम्–मिट जो जाएँ उसका कारण; मा कटल्–बड़ा सागर; आऱ्प्पु ॲट्टुतु ॲत्त–गरज उठा जैसे; तऴिय–प्राचीर पर लगे रहे; मा कटल् वानरम्–बड़े सागर के समान वानर-समूह; चाय्तलुम्–टूट पड़े तो; पोऴियुम् वॅम् पटै–बरसनेवाले भयंकर हथियारों वाली; पोर् कटल्–युद्धरत राक्षस-सेना के सागर ने; आर्त्त–नर्दन किया। ९८९

जब प्राचीरों पर लगे रहे सागर-सम वानर-समूह का बल क्षीण हुआ, तब हथियार बरसनेवाले युद्धरत राक्षसों का सेना-सागर इस प्रकार नर्दन कर उठा, जैसे प्रलय के युगांत में तीनों लोकों को मिटानेवाला बड़ा सागर गरज उठा हो। ९८९

मुरशु मामुरु डुम्मुरल् शङ्गमुम्
उरैशॆय् काळमु माहुळि योशैयुम्
विरैशुम् वल्लियम् विल्लर वत्तोडुम्
तिरैशॆय् वेलैक्कौ राहुलञ् जॆय्दवे 990

मुरचुम्–ढोल और; मा मुरुटुम्–बड़े 'मुरुडु' वाद्य; मुरल् चङ्कमुम्–गुंजायमान शंख; उरै चॆय् काळमुम्–प्रशंसित काहल; आकुळि–'आकुलि' नाम के; ओचैयुम्–छोटे ढोल (आदि के); विरैचुम्–मिश्रित; पल् इयम्–विविध नादों ने; विल् अरवत्तोटुम्–धनु के शब्दों के साथ; तिरै चॆय् वेलैक्कु–ऊर्मिमाली को; ओर् आकुलम् चॆय्त–विलोडित कर दिया। ९९०

ढोल, बड़े-बड़े 'मुरुडु' नामक वाद्य, गुंजायमान शंख, प्रशंसा योग्य 'काहल' नामक वाद्य, 'आहुळि' नामक छोटे ढोल और अन्य विविध वाद्यों के तुमुल शोर ने धनु-रव से मिलकर ऊर्मिमाली को भी आकुलित कर दिया। ९९०

आय कालै यनैत्तुल हुन्दरुम्, नाय हन्मुह नालु नडन्दॆन
मेय शेनै विरिहडल् विण्गुलाम्, वायिल् लूडु पुऱप्पट्टु वन्ददे 991

आय कालै–उस समय; उलकु अनैत्तुम् तरुम्–सर्वलोकसर्जक; नायकन्–ब्रह्मा के; नालु मुकम् नटन्तु ॲन्न–चारों मुखों से निकल आयी जैसी; मेय चेनै–युक्त (चतुरंगिनी) सेनाओं रूपी; विरि कटल्–विशाल सागर; विण् कुलाम् वायिल् ऊटु–आकाश तक उन्नत द्वार से; पुऱप्पट्टु वन्ततु–निकल आया। ९९१

तब सर्वलोकसृष्टिनायक ब्रह्मा के चारों मुखों से निकल आती हों, वैसे मिली हुई सेनाएँ गगनचुम्बी द्वारों से बाहर आयीं। ९९१

नॆडिय कावद मॆट्टु निरम्बिय
पडिय वायिर् परुप्पदम् बायन्वॆन्क्

कौडियों डुङ्गोडि शुऱ्ऱत् तौडुत्ततण्डु
ऑडिय वूऩ्ऱिऩ मुम्मद वोङ्गले 992

नॅटिय कावतम् ॲट्टु—लम्बे आठ कोसों तक; निरम्पिय पटिय—भरे फैले रहे; मुम्मत ओङ्कल्—त्रिमदगज; वायिल्—द्वार से; परुप्पतम् पायन्तॅत—पर्वत सरपट आये जैसे; कौटियॊटुम्—पताकाओं के साथ; कौटि चुऱ्ऱ—पताकाएँ लिपट जाएँ, ऐसे; तॊटुत्त—(ध्वजाओं से) युक्त; तण्टु—दंड; ऑटिय—टूट जाएँ, ऐसे; ऊऩ्ऱिऩ—टेकते हुए बाहर आये। ९९२

त्रिमदगज आठ कोस तक फैले रहे। वे पर्वत के समान द्वार के बाहर आए। उनके ऊपर की पताकाएँ एक-दूसरे से लिपट गयीं। उनके दण्ड भी टूट गये। उनको भूमि पर टेकते हुए वे गज बाहर आ लगे। ९९२

शूऴि यानै मदम्बडु तॊय्यलिऩ्, ऊऴि नाणॅडुङ् गालॅन वोडुव
पाऴि याऴ्वयि रप्पडि पऩ्मुऱै, पूऴि याक्किऩ पॊऩ्ऩॅडुन् देर्हळे 993

पॊऩ् नॅटु तेर्कळ्—स्वर्णनिर्मित ऊँचे रथों ने; चूऴि यानै—मुखपट से अलंकृत गजों के; मतम् पटु—मदनीर से बने; तॊय्यलिऩ्—पंक में; ऊऴि नाळ्—युगांत में; नॅटु काल् ॲऩ—बड़ी हवा-जैसे; ओटव—दौड़ते; पाऴि आऴ्—सबलतायुक्त; वयिरम् पटि—कठोर भूमि को; पऩ् मुऱै—अनेक तरह से; पूऴि आक्किऩ—धूल में परिवर्तित कर दिया। ९९३

ऊँचे स्वर्णरथ युगांत पवन के समान मुखपटयुक्त गजों के मदनीर से बने पंक से होकर दौड़ते हुए आये और उन्होंने सबल कठोर भूमि को अनेक प्रकार से धूल में बदल दिया। ९९३

पिडित्त वानरम् पेरॅऴिऱ् ऱोळ्हळाल्
इडित्त मामदि लाडै यिलङ्गैयाळ्
मडुत्त माक्कडल् वावुन् दिरैयॅलाम्
कुडित्तुक् काल्वऩ पोऩ्ऱ कुदिरैये 994

पिटित्त वानरम्—घेरे के अन्दर (लंका को) रखते हुए वानरों ने; पेर् ॲऴिल्—बहुत (सुंदर) उन्नत; तोळ्कळाल्—कन्धों से; इटित्त मा मतिल्—जिस प्राचीर को ढह दिया वह बड़ा प्राचीर; आटै इलङ्कैयाळ्—जिसका वस्त्र था उस लंका नगरी ने; कुटित्तु मटुत्त—जिसको पीकर उदरस्थ कर दिया था; मा कटल्—उस विशाल सागर में; वावुम् तिरै ॲलाम्—लपकती आती तरंगें; काल्वऩ—जो आती हैं; कुतिरै पोऩ्ऱ—उनके समान अश्व थे। ९९४

वानरों ने प्राचीरों को अपने वश में करके अब उसे ढहा दिया था। वह प्राचीरवसना लंका बड़े समुद्र को पहले पीकर अब वमन कर रही हो, ऐसा लगा। उसकी तरंगों के समान अश्व बाहर निकल आये। ९९४

केऴिल् ञालङ् गिळत्तिय तॉल्मुरै
नाळुम् नाळुम् नडन्दन नळ्ळिरा
नीळ मॅय्दि यॉरुशिरै निन्ऱन
मीळु मालैयुम् पोन्ऱनर् वीररे 995

केऴ् इल्–अनुपम; ञालम्–भूमि पर; तॉल् मुरै किळत्तिय–पुरातन कथित; नाळुम् नाळुम्–प्रतिदिन; नटन्तन–जो बीतीं; नळ् इरा–'नळ्' शब्दयुक्त रातें; नीळम् ॲय्ति–लम्बी बनीं और; ऑरु चिरै–एक ओर; निन्ऱन–स्थगित रह गयीं; मीळुम् मालैयुम्–वे अब संध्या के रूप में लौट रही हों; पोन्ऱनर्–ऐसे लगे; वीरर्–राक्षस वीर। ९९५

अप्रतिम भूमि पर पहले रातें आती थीं और चली जाती थीं। यह रोज का क्रम था। अब वे एक ओर रुकी रह गयी थीं। अब मानो वे संध्याओं के रूप में चली आ रही हों उस रीति से (काले रंग वाले) राक्षस झुण्डों में आ रहे थे। ९९५

पत्ति वन्ऱलैप् पाम्बिन् परङ्गॅाड
मुत्ति नाट्टिन् मुहट्टिनै मुऱ्ऱुऱप्
पित्ति पिन्पड वन्ऱिशै पेर्वुऱत्
तॉत्ति मीण्डिल वानॅडुन् दूळिये 996

नॅट्टु तूळि–बहुत अधिक धूल; पत्ति–पंक्तियों में रहे; वल् तलै पाम्पिन्–सबल फनों के साँप (अनंत) के; परम् कॅाट–भार को दूर करते हुए; मुत्ति नाट्टिन्–स्वर्ग-राज्य की; मुकट्टिनै–चोटी को; मुऱ्ऱुऱ–घिर जाए और; पित्ति–अण्ड-भित्तियाँ; पिन् पट–पिछड़ जायँ; वल् तिचै–सबल दिशाएँ; पेर्वुऱ–अस्थिर हों, ऐसा; तॉत्ति–जमी और; मीण्टिल–लौटी नहीं। ९९६

बड़ी धूल उठी। वह मानो पंक्ति में फणों-सहित रहनेवाले अनन्तनाग का भार हलका करने के विचार से उठकर स्वर्ग को घेर गयी। अण्ड-भित्तियाँ भी पिछड़ गयीं। सबल दिशाएँ अस्त-व्यस्त हो गयीं। इस रीति से जो धूल ऊपर उठी वह वहीं जम गयी; फिर नहीं लौटी। ९९६

नॅरुक्कि वन्दु निरुदर् नॅरुङ्गलाल्
कुरक्कि नप्पॅरुन् दानै कुलैन्दुपोय्
अरुक्कन् मामह नारम राशैयाल्
शॅरुक्कि निन्ऱव निन्ऱुळिच् चॅन्ऱवाल् 997

नॅरुक्कि वन्तु–ढकेलते हुए; निरुतर् नॅरुङ्कलाल्–राक्षसों के (वानरों के पास) आने से; कुरक्कितम् पॅरु तानै–वानरकुलों की बड़ी सेनाएँ; कुलैन्तु पोय्–अस्त-व्यस्त होकर; आर् अमर् आचैयाल्–युद्ध की गहरी इच्छा से; चॅरुक्कि निन्ऱवन्–

घमण्ड के साथ जो खड़ा रहा; अरुक्कन् मा मकन्–सूर्य का श्रेष्ठ पुत्र; निन्ऱुळि–जहाँ खड़ा रहा उस स्थान की ओर; चॅन्ऱ–गयीं। ९९७

राक्षसों के सटे आकर दबाने से वानरयूथों की बड़ी सेनाएँ अस्त-व्यस्त होकर युद्धोत्साही सूर्य का सुपुत्र सुग्रीव जहाँ खड़ा रहा उस ओर गयीं। ९९७

शाय्न्द तानैत् तळर्वुम् जलत्तॅदिर्
पाय्न्द तानैप् पॅरुमैयुम् पार्त्तुरुक्
काय्न्द नॅञ्जन् कनल्शॉरि कण्णिनन्
एय्न्द दङ्गॉर् मरामर मेन्दिनान् 998

चाय्न्त तानै–कमजोर हुई सेना की; तळर्वुम्–थकावट; चलत्तु–क्रोध से; ऍतिर् पाय्न्त–सामना करने लपकते आनेवाली; तानै–(राक्षस) सेना की; पॅरुमैयुम्–विपुलता; पार्त्तु–देखकर; उरु कायन्त–खूब क्रुद्ध; नॅञ्चन्–मन वाला; कनल् चॉरि–अग्निवर्षी; कण्णिनन्–आँखों वाला; अङ्कु–वहाँ; एय्न्तत्तु–उगा रहा; ओर् मरामरम्–एक सालवृक्ष; एन्तिनान्–(सुग्रीव ने) उठा लिया। ९९८

कमजोर हुई अपनी सेना की थकावट, और क्रोध के साथ चढ़ आने वाले राक्षस-सेना की विपुलता को देखकर सुग्रीव का मन क्रुद्ध हुआ। उसकी आँखों से आग निकल आयी। तब उसने वहाँ उगे रहे एक साल-वृक्ष को उखाड़कर अपने हाथ में उठा लिया। ९९८

वार णत्तॅदिर् वाशियि नेर्वयत्
तेर्मु हत्तिनिर् चेवहर् मेर्चॅरुत्तु
ओरॉ रुत्तरक् कौरुवरि नुर्उयर्
तोर णत्तोरु वन्नॅनत् तोन्ड्रिनात् 999

वारणत्तु–हाथियों पर; वाचियित्–वाजियों पर; वयम्–विजयी; तेर् मुकत्तिनिल्–रथों पर; चेवकर् मेल्–(राक्षस-) वीरों पर; चॅरुत्तु–गुस्सा करके; ओर् ऑरुत्तरक्कु ऑरुवरिन्–हर एक के सामने एक के रूप में; उरु–आ लगा हो (ऐसा भ्रम पैदा करते हुए); उयर् तोरणत्तु–ऊँचे तोरण पर; ऍतिर् नेर् ऑरुवन्–सामने लड़नेवाले अप्रतिम (वीर हनुमान); ऍन–के जैसा; तोन्ड्रिनात्–प्रगट हुआ। ९९९

सुग्रीव गजों, अश्वों, विजयी रथों और पदाति वीर —सभी पर क्रोध के साथ अकेले ही सम रूप से सबके सामने रहता हो जैसे दिखायी दिया। वह तब उस हनुमान के समान लगा, जो उस दिन तोरण-द्वार पर अकेले खड़ा युद्ध करता रहा। ९९९

कळिरु मावुम् निरुदरुङ् गालर
ऑळिरु मामणित् तेरु मुरुट्टिवॅङ्

गुळिरु शोरि यॊऴुहक् कॊदित्तिडै
वॆळिरि लामर मेकॊण्डु वीशिनान् 1000

कळिरुम्–हाथियों; मावुम्–और अश्वों; निरुतरुम्–और राक्षसों के; काल् अऱ–पैर टूट जाएँ ऐसा; ऒळिरुम्–दृश्यमान; मा मणि तेरुम्–बड़े सुन्दर रथों को; उरुट्टि–लुढ़काकर; वॆम् कुळिरु–भयंकर रूप से शब्दायमान; चोरि ऒऴुक–रक्त बह निकले ऐसा; कॊतित्तु–(मन में) क्रोध करके; इटै–मध्य में; वॆळिरु इला–गूदा-सहित (पूर्ण हीरे के); मरमे कॊण्टु–उस पेड़ को; वीचिनान्–चलाया। १०००

क्रुद्ध उसने पूर्ण रूप से हीरयुक्त रहे उस तरु को इस भाँति चलाया कि गजों, अश्वों और राक्षसों के पैर कट गये; शोभायमान रत्नमय रथ लुढ़क गये और दर्शक के मन को भयभीत करते हुए रक्त-नदियाँ बह उठीं। १०००

अन्न कालै यरिक्कुल वीररुम्
मन्नन् मुन्बुह वन्ग णरक्करुम्
मुन्नु ळन्द मुळङ्गु पॆरुज्जॆरुत्
तन्निल् वन्दु तलैमयक् कुऱ्ऱनर् 1001

अन्न कालै–उस समय; अरिकुल वीररुम्–वानरकुल के वीरों और; मन्नन्–राजा (सुग्रीव) के; मुन् पुक–आगे जाते; वन् कण्–नृशंस; अरक्करुम्–राक्षस भी; मुन् उळन्त–पहले जिसमें संकट उठा चुके थे उस; मुळङ्कु–आरवपूर्ण; पॆरु चॆरु तन्निल्–बड़े युद्ध में; वन्तु–आकर; तलै मयक्कु उऱ्ऱनर्–गुँथ गये। १००१

तब हरिकुलों के वीर और उनका राजा सुग्रीव आगे बढ़े चले और क्रूर राक्षस भी उस बड़े युद्ध में आ भिड़े, जिसमें उन्हें पहले कष्ट हुआ था। १००१

कऱ्ऱु रन्द कळम्बड वञ्जहर्, इऱ्ऱु लन्दु मुडिन्दव रॆण्णिलर्
विऱ्ऱु रन्दत वॆङ्गणै यालुडल्, अऱ्ऱु लन्द कुरङ्गु मनन्दमे 1002

कळम्–युद्धाजिर में; तुरन्त कल् पट–फेंके गये पत्थरों के गिरने से; वञ्चकर्–वंचकों (राक्षसों) में; इऱ्ऱु–प्राण त्यागकर; उलन्तु–सूखकर; मुटिन्तवर्–जो मिटे; ऎण्णिलर्–वे असंख्यक थे; विल् तुरन्तत–धनु से छूटे; वॆम् कणैयाल्–भयंकर शरों से; उटल् अऱ्ऱु–शरीर त्यागकर; उलन्त–मरे; कुरङ्कुम्–वानर भी; अनन्तमे–अनन्त थे। १००२

उस युद्ध में वानरों द्वारा प्रेषित पत्थरों से जो वंचक राक्षस मरे और क्षीण-आयु हुए वे असंख्यक थे। वैसे ही राक्षसधनुप्रेरित शरों से शरीर त्यागकर मरे वानर भी असंख्यक थे। १००२

कऱ्‌क डन्दु निमिर्न्द कडुञ्जॅरु, मऱ्‌क डङ्गळ् वलिन्दु मलैन्दिडत्
तऱ्‌क डङ्गि युलन्दवर् तम्मुयिर्, तॅऱ्‌क डङ्ग निऱैन्दु शॅऱिन्दवाल् 1003

निमिर्न्त–बहुत ही; कट्टुम् चॅरु–घमासान युद्ध में; मऱ्‌कटङ्कळ्–मर्कट; वलिन्तु–बल-प्रदर्शन करके; कऱ्‌कळ् तन्तु–पत्थर फेंककर; मलैन्तिट–लड़े तब; तऱ्‌कु अटङ्कि–अहंकार मिटकर; उलन्तवर्तम्–जो मरे उनके; उयिर्–जीव; तॅऱ्‌कु अटङ्क–दक्षिण दिशा भर में; निऱैन्तु चॅरिन्त–ठस भर गये। १००३

बढ़नेवाली उस प्रचण्ड लड़ाई में वानरों ने अपना बलप्रदर्शन करते हुए पत्थर फेंककर लड़ाई की। उससे अहंकार खोकर जो राक्षस मरे उनके जीवों से सारी दक्षिण दिशा (यमलोक) ठस भर गयी। १००३

पाडु हिऩ्ऱऩ पेय्क्कणम् पल्विदत्, ताडु हिऩ्ऱ वरुहुऱै याळ्हडऱ्
कोडु हिऩ्ऱ वुदिरम् बुहुन्दुडल्, नाडु हिऩ्ऱऩर् कऱ्पुडै नङ्गैमार् 1004

पेय्क् कणम् पाटुकिऩ्ऱऩ–पिशाचगण गाते हैं; अऱु कुऱै–कवन्ध; पल् विततु आटुकिऩ्ऱ–अनेक तरह के नाच नाचते हैं; उतिरम्–रक्त; आऴ् कटऱ्‌कु–गम्भीर सागर की ओर; ओटुकिऩ्ऱ–बहता है; कऱ्पुटै नङ्कै मार्–पतिव्रता स्त्रियाँ; पुकुन्तु–युद्धभूमि में प्रवेश करके; उटल् नाटुकिऩ्ऱऩर्–(अपने-अपने पतियों के) शरीरों को खोजती हैं। १००४

पिशाच गाते हैं! कबन्ध विविध नाच नाचते हैं। रक्त बहा और समुद्र में जा मिला। पतिव्रता राक्षसी नारियाँ युद्धाजिर में पहुँचकर अपने-अपने पति के शरीर को ढूँढ़ने लगीं। १००४

याऩै पट्ट वऴिपुनल् याऱॅलाम्, पाऩल् पट्ट पलकणै मारियिऩ्
शोऩै पट्टदु शॊल्लरुम् वानरच्, चेऩै पट्टदु पट्टदु शॅम्बुणीर् 1005

पट्ट याऩै–हत गजों से; अऴि पुनल्–निकलनेवाले रक्त-जल की; याऱु ॲलाम्–सभी नदियाँ; पाऩल् पट्ट–समुद्र में जाकर मिलीं; पलकणै–विविध शरों की; मारियिऩ् शोऩै–निरंतर वर्षा; पट्टतु–हुई; चॊल् अरुम्–वर्णनातीत; वानर चेऩै–वानर-सेना; पट्टतु–मिटी; चॅम् पुण् नीर्–लाल रक्त-द्रव; पट्टतु–दिखायी दिया। १००५

वानरहत गजों से बहनेवाली रक्त-नदियाँ समुद्र में जाकर मिलीं। शरों की बड़ी वर्षा हुई। अनगिनत वानर मरे। रक्तद्रव दिखायी दिया। (इस पद्य में 'पट्ट' शब्द के चार अर्थ हैं। वही विशेषता है। भाव कुछ नया नहीं।)। १००५

काय्न्द वानर वीरर् करत्तिऩाल्, तेय्न्द वायुळ रातवर् शॅम्बुणीर्
पाय्न्द ताऩैप् पडुहळम् पाऴ्पडच्, चाय्न्द दाल्निरु दक्कडल् ताऩैये 1006

काय्न्त–कुपित; वानर वीरर्–वानर वीरों के; करत्तिऩाल्–करों से;

तेय्न्त आयुळर् आतवर्–आयुहीन जो हुए उन (राक्षसों) का; चॅम्पुण् नीर्–लाल रक्त-द्रव; पायन्ततु–बह निकला; आनै–हाथी; पट्ट कळम्–जहाँ मरे वह समरांगण; पाळ् पट–बेकार करते हुए; निरुतर् कटल् तानै–राक्षसों की सागरोपम सेना; चाय्न्ततु–कहीं की न रही। १००६

क्रुद्ध क्रूर वानर वीरों के हाथ क्षीण-आयु हुए राक्षसों का रक्त बह उठा। हाथी अजिर में मरे। उस युद्धभूमि को बेकार करते हुए राक्षसों की सागरोपम सेना निर्बल हुई। १००६

तङ्गण् मापपडै शाय्दलुम् तीयॅंळ, वॅङ्गण् वाळरक् कन्विरै तेरितैक्
कङ्ग शालन् दोडरक् कडर्चॅलूउम्, वङ्ग मामॅन वन्देदिर् तोन्ऱिनान् 1007

तङ्कळ् मा पटै चाय्तलुम्–बड़ी सेना के निर्बल होने पर; वॅम् कण्–क्रूर आँखों में; ती ऍळ–आग निकालते हुए; वाळ् अरक्कन्–क्रूर (वज्रमुष्टि नामक) राक्षस; विरै तेरितै–तीव्रगामी रथ को; कङ्कम् चालम् तॉटर–कंकों के वृन्दों के साथ आते; कटल् चॅलूउम्–समुद्र में जानेवाले; वङ्कम् आम् ऍन–जहाज के समान; वन्तु–(चलाता) आकर; ऍतिर् तोन्ऱितान्–सामने प्रकट हुआ। १००७

वज्रमुष्टि ने जब देखा कि उसकी सेना निर्बल हो गयी तो वह अपने रथ को समुद्र में पोत को जैसे तेजी से चलाता आया और कंकवृन्द उसका पीछा करते आये। १००७

वन्दु ताक्कि वडिक्कणै मामळै, शिन्दि वानरच् चेनै शिदैत्तलुम्
इन्दि रादिय रुन्दिहैत् तेङ्गितार्, नॉन्दु शूरियन् कान्मुळै नोक्कितान् 1008

वन्तु–आकर; वटि कणै मा मळै–तीक्ष्ण शरों की बड़ी वर्षा; चिन्ति–गिराकर; ताक्कि–लड़कर; वानर चेनै चितैत्तलुम्–वानर-सेना को मिटाते समय; इन्तिराति-यरुम्–इन्द्र आदि भी; तिकैत्तु–ठिठककर; एङ्कितार्–बेचैन हुए; चूरियन् कान् मुळै–सूर्यसूनु ने; नॉन्तु नोक्कितान्–पीड़ित होकर देखा। १००८

उसने आकर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा-सी करा दी और वानर-सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया। तो इन्द्रादि भी ठिठक गये और बेचैन हुए। सूर्य के पुत्र सुग्रीव ने दुःख करते हुए उस स्थिति को देखा। १००८

नोक्कि वञ्ज नॉऱिल्वय माप्परि
वीक्कु तेरितिन् मीदॅळप् पायन्दुतोळ्
तूक्कु तूणियुम् विल्लुन् दुणित्तवन्
याक्कै युञ्जिदैत् तिट्टॅळुन् देहितान् 1009

नोक्कि–देखकर; वञ्चन्–वंचक (राक्षस) के; नॉऱिल्–वेगवान; वयम्–सशक्त; मा–बड़े; परि–अश्व; वीक्कु–जिससे जुते थे उस; तेरितिन् मीतु–रथ पर; ऍळ पाय्न्तु–उतर जाए ऐसा उछलकर; तोळ् तूक्कु–कन्धों पर धृत;

तूणियुम् विल्लुम्–तूणीर और धनु को; तुणित्तु–तोड़कर; अवन् याक्कैयुम्–उसके शरीर को भी; चितैत्तिट्टु–मिटाकर; ॲऴुन्तु–वहाँ से उठकर; एकित्तान्–चला। १००९

देखकर सुग्रीव उस रथ पर उछला, जिससे तीव्रगामी, सशक्त और बड़े-बड़े अश्व जुते हुए थे। उसने राक्षस के तूणीर और धनु को तोड़कर उसके शरीर को भी खण्ड-खण्ड कर छितरा दिया। फिर वह वहाँ से चला। १००९

मलैकु लैन्दॅन वच्चिर मुट्टितन्
निलैकु लैन्दु विऴुदलि निन्ऱुऴार्
कुलैकु लैन्दु कॊडिनहर् नोक्कितार्
अलैकि ळर्न्दॅन वानर मार्त्तवे 1010

मलै कुलैन्तु ॲन–पर्वत ढह गया जैसे; वच्चिर मुट्टि–वज्रमुष्टि; तन् निलै कुलैन्तु–अपनी स्थिति खोकर; विऴुतलिन्–गिर गया, इसलिए; निन्ऱुऴार्–(वहाँ जो) खड़े रहे वे (राक्षस); कुलै कुलैन्तु–भयभीत होकर; कॊटि नकर्–ध्वजा-भूषित नगर की ओर; नोक्कितार्–देखते चले; अलै किळर्न्तु ॲन–लहरें उठीं जैसे; वानरम् आर्त्तन–वानरों ने नर्दन किया। १०१०

वज्रमुष्टि अस्थिर हुए पर्वत के समान अस्त-व्यस्त हो गिर गया। जो राक्षस वहाँ रहे वे भय खा गये और ध्वजाभूषित नगर की ओर भाग गये। तब समुद्र की लहरों के शोर के समान वानरों ने नर्दन पैदा किया। १०१०

वीऴि वॆङ्ग णिराक्कदर् वॆम्बडै
ऊऴि याऴि किळर्न्दॅन वोङ्गिन
कोऴै वायिलिऱ् किट्टलु मुट्टिनर्
शूऴुम् वानर वीरर् तुवन्ऱिये 1011

वीऴि वॆम् कण्–'वीऴि' के फल के समान लाल और भयंकर आँखों वाले; इराक्कतर् वॆम् पटै–राक्षसों की क्रूर सेना; ऊऴि आऴि–युगान्त का सागर; किळर्न्तु ॲन–उमग उठा जैसे; ओङ्कित–बढ़ती आयी; कीऴै वायिलिल्–पूर्वी द्वार; किट्टलुम्–के पास आते ही; चूऴुम् वानर वीरर्–घेरते हुए वानर वीर; तुवन्ऱि–पास जाकर; मुट्टिनर्–भिड़े। १०११

'वीऴि' के फलों के समान लाल और क्रूर आँखों वाले राक्षसों की सेनाएँ युगांत के सागर के समान उमगते हुए आयीं। जब वे पूर्वी द्वार पर आयीं तब वानर वीर घेर आये और भिड़ गये। १०११

शूलम् वाळ्मळत् तोमरम् शक्करम्
वालम् वाळि मऴैयिन् वऴङ्गिये

आल मत्त वरक्क रडर्त्तलुम्
कालुम् वालुन् दुमिन्द कविक्कुलम् 1012

आलम् अन्न अरक्कर्–हलाहल के समान राक्षसों ने; चूलम्–त्रिशूल; वाळ्–असि; मळु–फरसे; तोमरम्–तोमर; चक्करम्–चक्र; वालम्–भिंदिपाल; वाळि–शर; मळैयिन् वळङ्ङ्कि–वर्षा के समान चलाकर; अटर्त्तलुम्–जब आक्रमण किया तब; कवि कुलम्–कपिवृन्द; कालुन् वालुम् तुमिन्त–पैर और पूँछों के कटे हो गये। १०१२

हलाहल-सदृश राक्षसों ने त्रिशूल, तलवारें, परशु, तोमर, चक्र, भिंदिपाल, वाण आदि हथियारों को वर्षा के समान चलाकर युद्ध किया और उससे बन्दरों की पूँछें कट गयीं और पैर कट गये। १०१२

वॆन्ऱि वानर वीरर् विशैत्तॆऱि
कुन्ऱु मामर मुङ्गॊडुङ् गालनिर्
चॆन्ऱु वीळ निरुदर्हळ् शिन्दिनार्
पॊन्ऱि वीळ्न्द पुरवियुम् पूट्कैयुम् 1013

वॆन्ऱि वानर वीरर्–विजयी वानर वीरों ने; विचैत्तु ऍऱि–जोर लगाकर जिनको चलाया वे; कुन्ऱुम् मा मरमुम्–पर्वत और बड़े-बड़े तरु; कॊटुम् कालतिल्–क्रूर यम के समान; चॆन्ऱु–जाकर; वीळ–गिरे तव; निरुतर्कळ् चिन्तिनार्–राक्षस छिन्न-भिन्न हुए; पुरवियुम्–अश्व और; पूट्कैयुम्–हाथी; पॊन्ऱि वीळ्न्त–मरकर गिरे। १०१३

विजयी वानर वीरों ने पर्वत और वड़े-बड़े तरु जोर देकर फेंके। वे क्रूर यम के समान गये और राक्षसों पर गिरे; तो राक्षस छिन्न-भिन्न हो गये। अश्व और हाथी भी मरकर गिर गये। १०१३

तण्डु वाळयिल् शक्करज् जायहम्
कॊण्डु शीऱ्ऱ निरुदर् कॊदित्तॆळप्
पुण्दि ऱन्दु कुरुदि पॊळिन्दुह
मण्डि योडिनर् वानर वीररे 1014

चीऱ्ऱम् निरुतर्–कुपित राक्षस; तण्टु–दण्ड; वाळ्–तलवार; अयिल्–शक्ति; चक्करम्–चक्र; चायकम्–सायक; तण्टु–दण्ड; कॊण्टु–लेकर; कॊतित्तु ऍळ–उबल उठे तो; वानर वीरर्–वानर वीर; पुण् तिऱन्तु–व्रणों के खुलते; कुरुति पॊळिन्तु उक–और रक्त के बहते; मण्टि ओटिनर्–सटे हुए भाग खड़े हुए। १०१४

क्रुद्ध राक्षस दण्ड, तलवारें, शक्तियाँ, चक्र, सायक आदि हथियार लेकर खौल उठे। वानर वीरों के शरीरों में व्रण खुले और उनसे रक्त वहने लगे। वानर मिलकर भीड़ में भाग खड़े हुए। १०१४

ॲरियिऩ् मैन्द ऩिरुनिलङ् गीऴुऱ्
विरिय निऩ्ऱ मरामरम् वेरॊडुम्
तिरिय वाङ्गि निरुदर्वॅञ् जेऩैपोय्
नॅरिय वूऴि नॅरुप्पॅऩ वीशिऩाऩ् 1015

ॲरियिऩ् मैन्तऩ्–अग्नि के पुत्र (नील) ने; इरु निलम्–बड़ी भूमि में; कीऴ् उऱ्–बहुत नीचे तक जड़ के साथ; विरिय निऩ्ऱ–विस्तृत रूप से खड़े रहे; मरामरम्–सालवृक्ष को; वेरॊटुम्–जड़ के साथ; तिरिय–ऐंठकर; वाङ्कि–उखाड़ लिया; निरुतर् वॅम् चेऩै–राक्षसों की प्रचण्ड सेना; पोय् नॅरिय–तहस-नहस हो जाए ऐसा; ऊऴि नॅरुप्पु ॲऩ–युगान्त की अग्नि के समान; वीचिऩाऩ्–फेंका। १०१५

तब अग्निपुत्र नील ने एक सालवृक्ष को ऐंठकर उखाड़ लिया, जिसकी जड़ बहुत दूर भूमि में गयी थी और जिसका डालों का घेरा विस्तृत था। उसने उसे युगांत की अग्नि के समान फेंका जिससे राक्षसों की विकट सेना तहस-नहस हो गयी। १०१५

तेरुम् वाहरुम् वाशियुञ् जॅम्मुहक्
कारुम् याळियुञ् जीयमुङ् गाण्डहु
पारिऩ् वीऴप् पुडॅप्पप् पशुम्बुणिऩ्
नीरुम् वारि यदऩै निऱैत्तदे 1016

तेरुम्–रथ और; पाकरुम्–सारथी; वाचियुम्–और अश्व; चॅ मुकम् कारुम्–अरुणमुख मेघ (गज); याळियुम्–याळि (शरभ); चीयमुम्–और सिंह; काण्तकु–दर्शनीय; पारिऩ्–भूमि पर; वीऴ–गिरे ऐसा; पुटैप्प–प्रहार करने से; पचुम् पुणिऩ् नीरुम्–ताजे व्रणों के द्रव (रक्त) ने भी; वारि अतऩै–समुद्र को; निऱैत्ततु–भर दिया। १०१६

रथ, सारथी, वाजि, अरुणमुख मेघ (सम) हाथी और सिंह—सभी को दर्शनीय भूमि पर गिराते हुए उस पेड़ का प्रहार पड़ा। तो व्रणों से निकले रक्त ने भी सागर को भर दिया। १०१६

अरक्कर् शेऩै यडुहळम् बाऴ्बड
वॅरुक्कॊण् डोडिड वॅम्बडैक् कावलऩ्
नॅरुक्क नेर्न्दु कुम्बाऩु नॅडुञ्जरम्
तुरक्क वाऩरच् चेऩै तुणिन्ददे 1017

अटुकळम् पाऴ् पट–समरांगण को शून्य करते हुए; अरक्कर् चेऩै–राक्षस-सेना; वॅरु कॊण्टु–डरकर; ओटिट–भाग गयी तो; वॅम्–क्रूर; पटै कावलऩ्–सेनापति; कुम्पाऩु–कुंभानु के; नॅरुक्क नेर्न्तु–त्रस्त करना चाहकर; नॅटु चरम्–दूरगामी शरों को; तुरक्क–छोड़ने पर; वाऩर चेऩै–वानर-सेना; तुणिन्ततु–खण्डित हुई। १०१७

राक्षस सेना डर के मारे युद्धभूमि को शून्य करके भाग गयी। क्रूर राक्षस सेनापति कुंभानु ने वानरों को तंग करते हुए दूरगामी शर चलाये। फलस्वरूप वानर-सेना खंडित हो गयी। १०१७

कण्डु	निऩ्ऱ	करडियिऩ्	कावलऩ्
ऍण्दि	शामुह	मॆण्ण्	मिडुम्बऩ्तोर्
शण्ड	मारुद	मॆऩ्ऩत्	तडवरै
कॊण्डु	शीऱि	यवऩ्ऍदिर्	कुप्पुऱा 1018

कण्टु निऩ्ऱ–देखता जो खड़ा रहा; करटियिऩ् कावलऩ्–भालुओं का नायक; ऍण् तिचा मुकम् ऍण्णुम्–आठों दिशाओं से मान्य; इटुम्पऩ्–हिंडिब; तट वरै कॊण्टु–बड़े पर्वत को लेकर; ओर् चण्टम् मारुतम् ऍऩ्ऩ–चण्डमारुत के समान; चीऱि–क्रोध करके; अवऩ् ऍतिर्–उसके सामने; कुप्पुऱा–कूदकर। १०१८

यह देख रहा था हिंडिब नाम का रीछों का राजा, जिसकी कीर्ति आठों दिशाओं में फैली थी। वह एक बड़े पर्वत को हाथ में उठा लेकर चंडमारुत के समान क्रोध के साथ उसके सामने जा कूदा। १०१८

तॊडुत्त	वाळिहळ्	वीऴुमुऩ्	शूऴ्न्दॆदिर्
ऍडुत्त	कुऩ्ऱै	यिडुम्ब	ऩॆऱिदलुम्
ऑडित्तु	विल्लु	मिरदमु	मॊल्लॆऩप्
पडुत्त	वाशियुम्	बाहऩुम्	बाऴ्पड 1019

तॊट्टत्त वाळिकळ्–(डोरे से) लगाकर प्रेषित बाण; चूऴ्न्तु–घेरकर; वीऴुम् मुऩ्–गिरें, उसके पूर्व ही; ऍतिर् ऍटुत्त–सीधे ऊपर उठाये गये; कुऩ्ऱै–पर्वत को; इटुम्पऩ् ऍऱितलुम्–हिंडिब के फेंकते ही; विल्लुम् ऑटित्तु–धनु को तोड़कर; इरतमुम् वाचियुम्–रथ और अश्वों को; पाकतऩ्–और सारथी को; ऑल् ऍऩ–जल्दी; पाऴ् पट पटुत्त–विनष्ट किया (पर्वत ने)। १०१९

कूदकर कुंभानु के शरों के आ घेरकर उस पर गिरने से पहले हिंडिब ने अपने हाथ के पर्वत को उस पर फेंका। उस पर्वत ने कुंभानु के धनु को तोड़ा और रथ, अश्वों और सारथी को शीघ्र मिटा दिया। १०१९

तेर	ऴिन्दु	शिलैयु	मऴिन्दुहक्
कारि	ऴिन्द	वुरुमॆऩक्	कायऩ्वॆदिर्
पार्कि	ऴिन्दुहप्	पायन्दऩऩ्	वाऩवर्
पोर्कि	ऴिन्दु	पुऱन्दरप्	पोर्शॆय्दाऩ् 1020

तेर् अऴिन्तु–रथ मिटा और; चिलैयुम् अऴिन्तु–धनु भी नष्ट होकर; उक–गिरा तो; वाऩवर्–देव; पोर् किऴिन्तु–युद्ध में हारकर; पुऱन्तर–पीठ दिखावें; पोर् चॆय्ताऩ्–ऐसा जिसने पहले युद्ध किया था वह; कार् इऴिन्त–मेघविगलित;

उरुम् अँत–वज्र के समान; कायन्तु–क्रुद्ध होकर; पार् किऴिन्तु उक–भूमि टूटकर बिखर जाए ऐसा; अँतिर्–सामने; पाय्न्ततन्–लपक आया। १०२०

जब रथ और धनु मिटकर गिर गये तब वह, जिसने देवों के साथ उनको पीठ दिखाकर भागने को मजबूर करते हुए युद्ध किया था, मेघनिर्गत अशनि के समान आगबबूला होकर उसके सामने ऐसा झपटा कि भूमि फटकर बिखर जाए। १०२०

तत्ति मार्बिन् वयिरत् तडक्कैयार्
कुत्ति निन्ऱ कुम्बानुवैत् तान्ॅदिर्
मॉत्ति निन्ऱु मुडित्तलै कोऴुरप्
पत्ति वन्ऱडन् दोळुरप् पऱ्ऱुवान् 1021

तत्ति–लपककर; मार्पिन्–(हिडिंब के) वक्ष पर; वयिरम् तट कैयाल्–वज्र-कठोर विशाल हाथ से; कुत्ति निन्ऱ–जो घूंसा मारते खड़ा रहा उस; कुम्पानुवै–कुंभानु को; तान् अँतिर् मॉत्ति निन्ऱु–स्वयं बदले में घूंसा मारकर; मुटितलै कोळ् उऱ–मुकुट-सिर को औंधा कर; पत्ति–सम; वल् तट तोळ्–सबल, विशाल कन्धों को; उऱ–खूब; पऱ्ऱुवान्–ग्रस लिया (हिडिंब ने)। १०२१

उस भाँति कूदकर हिडिंब की छाती पर अपने वज्र-सम हाथों से घूंसा मारने लगा। तब हिडिंब ने स्वयं घूंसा मारकर उसके मुकुटमंडित सिर को औंधा करते हुए उसके समवर्धित कन्धों को खूब पकड़ लिया। १०२१

कडित्त लत्तिरु कालुरक् कैह्ळाल्
पिडित्तुत् तोळैप् पिरङ्गलिन् कोडुनेर्
मुडित्त लत्तिनि लॅऱ्ऱिड मूळैह्ळ्
वॅडित्ति ळिन्दिड वीन्दनन् नामरो 1022

कटि तलत्तु–कमर के प्रदेश को; इरु काल् उऱ–दोनों पैरों के मध्य रखकर; कैकळाल्–हाथों से; तोळै पिटित्तु–कन्धों को पकड़कर; पिऱङ्कलिन्–पर्वत के; कोटु नेर्–शिखर-सम; मुटि तलत्तितिल्–सिर पर; अँऱ्ऱिट–प्रहार करते समय (हिडिंब के); मूळैकळ्–भेजा; वॅटित्तु–टूटकर; इळिन्तिट–गिर गये और; वीन्तनन्–(कुंभानु) मर गया। १०२२

उसकी कमर को अपने दोनों पैरों के मध्य दबाते हुए हिडिंब ने कन्धों को पकड़कर पर्वतशिखर-सम कुंभानु के सिर पर प्रहार किया। तब मस्तक और भेजा अलग हो छितर गये और वह प्राणहीन हो गया। १०२२

तन्ब डैत्तलै वन्पडत् तन्तॅविर्
तुन्ब डैत्त मनत्तत् शुमालिशेय्

मुन्ब डैत्त मुहिलन्न काट्चियन्
वन्ब डैत्त वरिशिलै वाङ्गिनान् 1023

तन् पटै तलैवन्–अपनी सेना के नायक को; तन् ऍतिर्–अपने सामने; पट–मरते; तुन्पु अटैत्त–दुःख-भरे; मतत्तन्–मनवाला हो; चुमालि चेय्–सुमाली का पुत्र प्रहस्त; मुन् पटैत्त–सामने आये; मुकिल् अन्न–मेघ-सम; काट्चियन्–दिखनेवाले ने; वन्पु अटैत्त–बलसंयुक्त; वरि चिलै–सबन्ध धनु को; वाङ्कितान्–झुकाया। १०२३

सुमाली का पुत्र प्रहस्त देख रहा था कि मेरा (मातहत) सेनापति मेरी ही आँख के सामने मर रहा है। उसका मन बेचैन हुआ। आगे आकर मेघ-जैसा दिखनेवाले उसने सशक्त अपने सबन्ध धनु को ले झुकाया। १०२३

वाङ्गि वार्शिलै वानर माप्पडै, एङ्ग नाणॅरिन् दिट्टिडै योडिन्ड्रित्
तूङ्गु मारि यॅन्नच्चोरि वाळिहळ्, वीङ्गु तोळिनन् विट्टन नामरो 1024

वीङ्कु तोळितन्–फूले कन्धों वाले ने; वार् चिलै–लम्बे धनु को; वाङ्कि–झुकाकर; वानर मा पटै–वानरों की बड़ी सेना को; एङ्क–अधीर करते हुए; नाण् ऍरिन्तु इट्टु–डोरा टंकृत करके; तूङ्कु मारि ऍन्न–बरसनेवाली धारा के समान; चोरि वाळिकळ्–बरसनेवाले शरों को; इटै योटु इन्ऱि–निरन्तर; विट्टनन् आम्–छोड़ा तो। १०२४

कन्धे फुलाते हुए उसने लम्बे धनुष को झुकाकर डोरा टंकृत किया, जिससे वानर-सेना उद्विग्न हुई और वर्षा के समान निरंतर शर चलाये। १०२४

नूऱु मायिर मुङ्गणै नॉय्दिनिन्, वेऱु वेऱु पडुदलिन् वॅम्बिये
ईड्रिल् वानर माप्पडै यॅङ्गणुम्, पाऱ नीलन् वॅहुण्डॅदिर् पार्प्पुरा 1025

नॉय्तितिन्–शीघ्र; कणै–शर; नूऱुम् आयिरमुम्–सौ-सौ और सहस्र-सहस्र; वेऱु वेऱु–विविध रूप से; पट्तलिन्–लगे तो; ईऱु इल्–अनन्त; वानरम् मा पटै–वानरों की बड़ी सेना; वॅम्पि–तपकर; ऍङ्कणुम् पाऱ–सब ओर बिखर गये; नीलन् पार्प्पुरा–नील ने देखकर; ऍतिर् वॅकुण्टु–विरोध में गुस्सा करके। १०२५

उसने सौ-सौ, सहस्र-सहस्र विविध शर जल्दी-जल्दी चलाये और वे जाकर वानरों पर लगे। अपार वानर-सेना मन तपकर सब ओर भाग चली। नील ने उसको देखा तो गुस्सा करके; । १०२५

कुन्ऱ निन्ऱ दॅडुत्तॅदिर् कूऱ्ऱॅनच्
चॅन्ऱॅ ऱिन्दवन् शेनै शिदैत्तलुम्

वॆन्ऱि विल्लिन् विडुहणै मारियाल्
ऑन्ऱु नूऱुदि रुऱ्ऱदक् कुन्ऱमे 1026

निन्ऱ कुन्ऱ अतु–पास रहे पर्वत को; ऍडुत्तु–उठाकर; ऍतिर् कूऱ्ऱ ऍंत–आक्रमण करनेवाले यम (गज) के समान; चॆन्ऱ–जाकर; ऍऱिन्तु–फेंककर; अवत् चेतै–उसकी सेना को; चितैत्तलुम्–मिटा दिया तो; वॆन्ऱि विल्लिन्–विजयी धनु से; विट्टु कणै–प्रेषित शरों की; मारियाल्–वर्षा से; अ कुन्ऱम्–वह पर्वत; ऑन्ऱु नूऱु उतिर् उऱ्ऱतु–एक सौ-सौ के टुकड़ों में टूट गया। १०२६

पास जो रहा उस पर्वत को उठाया। फिर लड़ने जानेवाले यम (गज) के समान जाकर उसकी सेना पर फेंककर उसको मिटा दिया। तब उसने अपने विजयदायी धनु से शर-वर्षा करायी तो वह पर्वत सौ-सौ खण्ड होकर बिखर गया। १०२६

मीट्टु मङ्गॊर् मरामरम् वेरॊडुम्
ईट्टि वानत् तिडियॆन वॆऱ्ऱलुम्
कोट्टुम् विल्लुङ् गॊडियुम् वयप्परि
पूट्टुन् देरुम् पॊडित्तुह ळायवे 1027

मीट्टुम्–फिर; अङ्कु–वहाँ; ओर् मरामरम्–एक सालवृक्ष को; वेरॊटुम् ईट्टि–जड़ के साथ ढूँढ़ लेकर; वानत्तु इटि ऍंत–आकाश की अशनि के समान; ऍऱ्ऱलुम्–प्रहार करते ही; कोट्टुम् विल्लुम्–झुका धनुष और; कॊटियुम्–ध्वजा; वयप्परि–सशक्त अश्वों का; पूट्टुम्–जुता; तेरुम्–रथ; तुकळ् पॊटि आयवे–चूर-चूर हुए। १०२७

नील ने फिर एक सालवृक्ष को ढूँढ़ पाकर जड़ से उखाड़ उठा लिया। आकाश से अशनि गिरती जैसे उसने उस पेड़ को फेंका। तो प्रहस्त का झुका धनुष, ध्वजा, विजयवाही अश्वों का जुता रथ सब चूर-चूर हो गये। १०२७

तेरि ऴन्दु शिलैयु मिऴन्दिडक्
कारि ऴिन्द वुरुमॆनक् कान्दुवात्
पारि ऴिन्दु परुवलित् तण्डॊडुम्
ऊरि ऴन्द कदिरॆन वोडिनान् 1028

तेर् इऴन्तु–रथ खोकर; चिलैयुम् इऴन्तिट–धनु को भी खो लेने पर; कार् इऴिन्त उरुम् ऍंत–मेघनिर्गत अशनि के समान; कान्तु वात्–आगबबूला हो; पार् इऴिन्तु–भूमि पर उतर आकर; परु–मोटे; वलि–सबल; तण्टॊटुम्–दण्ड से; ऊर् इऴन्त–परिवेश से हीन; कतिर् ऍंत–सूर्य के समान; ओटितान्–दौड़ा। १०२८

रथ और धनु के नष्ट होने से प्रहस्त खौल उठा और मेघ से गिरती

अशनि के समान भूमि पर उतर आया। एक स्थूल और सशक्त दण्डायुध लेकर परिवेशहीन रश्मिमाली के समान शत्रु की ओर लपका। १०२८

वायम डित्तळल् कण्डीरुम् वन्दुहप्
पोय डुत्तलुम् नीलन् पुहैन्देदिर्
ताय डुत्तवन् रन्कैयिऱ् रण्डोडुम्
मीयॅ डुत्तु विशुम्बुऱ वीशिनान् 1029

वाय् मटित्तु–ओंठ काटकर; अळल्–आग; कण् तोऱुम्–हर आँख से; वन्तु उक–आ निकले ऐसा; पोय् अटुत्तलुम्–जाकर (नील के) पास पहुँचते ही; नीलन्–नील ने; पुकैन्तु–क्रुद्ध होकर; ऍतिर् ताय्–सामने लपककर; तन् अटुत्तवन्–अपने पास आये उसको; कैयिल् तण्टोटुन्–हाथ के दण्ड के साथ; मी ऍटुत्तु–ऊपर उठाकर; विचुम्पु उऱ–आकाश पर जा लगे ऐसा; वीचितान्–फेंका। १०२६

ओंठ काटते हुए और आँखों से जलती आग निकालकर अंगारे छोड़ते हुए वह नील के समीप पहुँचा। तब नील ने क्रोध करके अपने निकट आये प्रहस्त को उसके दण्ड के साथ पकड़कर ऊपर उठाया और ऐसा उछाल दिया कि वह जाकर आकाश से लगे। १०२९

अम्ब रत्तॅरिन् दार्प्प वरक्कनुम्
इम्ब रुऱ्ऱॅरि यिन्रिरु मैन्दन्मेल्
शॅम्बु नऱ्पोळि यक्कदै शेर्त्तिनान्
उम्बर् तत्तम दुळ्ळ नडुङ्गवे 1030

अम्परत्तु–आकाश में; ऍऱिन्तु–उछालकर; आर्प्प–(जब नील ने) नर्दन किया तब; अरक्कनुम्–वह राक्षस भी; इम्पर् उऱ्ऱु–इस भूमि पर आकर; उम्पर्–देव; तम् तमतु उळ्ळम्–अपने-अपने मन में; नटुङ्क–काँप उठें ऐसा; ऍरियिन्–अग्नि के; तिरु मैन्तन् मेल्–श्रीयुत पुत्र पर; चॅम्पुनल् पोळिय–लाल रक्त बह निकले ऐसा; कतै चेर्त्तिनान्–गदे का प्रहार किया। १०३०

उसको ऊपर फेंककर नील ने जब आनन्दनर्दन किया तब राक्षस भूमि पर आया और उसने दण्ड से नील पर ऐसा प्रहार किया कि देव अपने मन में काँप उठे और नील के शरीर से लाल रक्त निकल बहा। १०३०

अडित्त लोडु मदर्किळै यादवन्
ऍडुत्त तण्डम् वऱित्तॅऱि यायिहल्
मुडित्तु मॅन्ऱीरु कॅक्कोडु मोदिनान्
कुडित्तु मिळ्न्देनक् कक्कक् कुरुदियॆ 1031

अटित्तलोटुम्–प्रहार करने पर; अतऱ्कु इळैयातु–उससे न थककर; अवन् ऍटुत्त–उसके लिये हुए; तण्टम्–दण्डायुध को; पऱित्तु ऍऱिया–छीनकर फेंककर;

इकल् मुट्टित्तुम्–शत्रु का अन्त कर दूंगा; ॲन्ऱु–यह सोचकर; कुट्टित्तु–पीकर; उमिऴ्न्तु ॲन्न–निकाल रहा जैसे; कुरुति कक्क–रक्त वमन करे; ओरु कै कोंडु–(ऐसा) एक हाथ से; मोतिऩाऩ्–(नील ने) पीटा। १०३१

जब प्रहस्त ने दण्डायुध से नील को मारा तब नील विचलित नहीं हुआ पर उसने उस दण्ड को छीनकर दूर फेंक दिया। फिर उसकी शत्रुता का अन्त करने का विचार करके नील ने एक हाथ से ऐसा प्रहार किया कि वह रक्त का वमन करने लगा। तब ऐसा लगता था मानो वह पहले रक्त पीकर फिर उसे वमन कर रहा हो। १०३१

कुरुदि वाय्निऩ्ऱु ऒऴुहवुङ् गूशलऩ्
निरुदऩ् नील नॆडुवरै मार्बिऩिऱ्
करुद लादमुऩ् कुत्तलुम् कैत्तवर्
पॊरुद पूशल् पुहलवॊण् णादवे 1032

वाय् निऩ्ऱु–मुख से; कुरुति ऒऴुकवुम्–रक्त निकलता रहा; कूचलऩ्–(तो भी) न डरकर; निरुतऩ्–उस राक्षस के; नीलऩ्–नील के; नॆट्टु–लम्बे; वरै–पर्वत-जैसे; मार्पिऩिल्–वक्ष में; करुतलात मुऩ्–प्रतीक्षा करने से पहले; कुत्तलुम्–घूंसा मारने पर; अवर्–वे दोनों; कैत्तु–क्रोध के साथ; पॊरुत पूचल्–जो लड़े वह लड़ाई; पुकल ऒण्णाततु–कहना कठिन है। १०३२

रक्त मुख से निकल रहा था तब भी प्रहस्त कुछ डरा नहीं। नील कुछ ध्यान लायें उसके पूर्व ही प्रहस्त ने लम्बे पर्वत के समान नील के वक्ष में घूंसा मार दिया। तब दोनों (क्रोध के साथ) मानो जीवन से घृणा ही करते हों, ऐसा जो लड़े उस लड़ाई का वर्णन अशक्य है। १०३२

मऱ्ऱु नील ऩरक्कऩै माट्टुऱच्
चुऱ्ऱि वाल्होडु तोळिऩु मार्बिऩुम्
नॆऱ्ऱि मेलुम् नॆडुङ्गरत् तॆऱ्ऱलुम्
इऱ्ऱ माल्वरै यॆऩ्ऩ विऴुन्दऩऩ् 1033

मऱ्ऱुम्–और; नीलऩ् अरक्कऩै–नील ने राक्षस (प्रहस्त) को; वाल् कोंडु–अपनी पूंछ से; माट्टु उऱ–दोनों ओर खूब; चुऱ्ऱि–लपेटकर; तोळिऩुम् मार्पिऩुम्–कन्धों और वक्ष पर और; नॆऱ्ऱि मेलुम्–माथे पर; नॆट्टु करत्तु–लम्बे हाथ से; ॲऱ्ऱलुम्–प्रहार किया तो; इऱ्ऱ–मूल-उखड़े; माल् वरै ॲऩ्ऩ–बड़े पर्वत के समान; विऴुन्तऩऩ्–गिर गया। १०३३

फिर नील ने प्रहस्त को अपनी पूंछ से लपेट लेकर अपने हाथ से उसके कन्धों, वक्ष और माथे पर बलपूर्वक प्रहार किया तो जड़-उखड़े पर्वत के समान प्रहस्त गिर गया। १०३३

इऱन्दु वीऴ्न्दन नेपिर हत्तनॅन्ऱु
अऱिन्दु वानव रावलङ् गॉट्टिनार्
वॅरिन्द शॅम्मयिर् वॅळ्ळॅयिर् ऱाडवर्
मुऱिन्दु तत्त मुदुनहर् नोक्किनार् 1034

पिरकत्तन्–प्रहस्त; इऱन्तु वीऴ्न्तनन्–मरकर गिरा; ऍन्ऱु–ऐसा; अऱिन्तु–जानकर; वानवर्–आकाशवासी (देवों ने); आवलम् कॉट्टिनार्–आनन्दनाद मचाया; वॅरिन्त चॅम्मयिर्–घने लाल केश और; वॅळ् ऍयिऱु–सफ़ेद दाँतों वाले; आटवर्–(राक्षस) पुरुष; मुऱिन्तु–हार टूटकर; तम् तम्–अपने-अपने; मुतु नकर्–पुरातन नगर; नोक्किनार्–देखकर (की ओर) गये। १०३४

प्रहस्त मर ही गया —यह जानकर देवों ने आनन्दनर्दन किया। घने और अरुण केशी और श्वेत दंतुले राक्षस हार से हड़बड़ाकर अपने प्राचीन नगर की ओर भाग गये। १०३४

तॅऱ्कु वायिलिऱ् चॅन्ऱ निशाशरर्
मऱ्कु लावु वयप्पुयत् तङ्गदन्
निऱ्क वेॅदिर् निन्ऱिल रोडिनार्
पॊऱ्कु लावु शुपारिशन् पॊन्ऱवे 1035

तॅऱ्कु वायिलिल्–दक्षिण द्वार पर; चॅन्ऱ निचाचरर्–जो गये वे निशाचर; मल् कुलावु–सबल; वयम् पुयत्तु–विजयी भुजाओं के; अङ्कतन्–अंगद के; पॊरुतु निऱ्कवे–लड़ते रहते समय; पॊन् कुलावु–सुन्दरतायुक्त; चुपारिचन्–सुपार्श्व के; पॊन्ऱ–मरने पर; ऍतिर् निन्ऱिलर्–सामने डट नहीं सके; ओटिनार्–भागे। १०३५

उधर दक्षिणी द्वार पर विजयदायी और बलसंयुक्त अंगद लड़ता रहा। सौन्दर्यपूर्ण सुपार्श्व मरा तो वहाँ जो राक्षस गये थे वे सब सामने खड़े नहीं रह सके और भाग गये। १०३५

नूऱ्ऱि रण्डॅन्नुम् वॅळ्ळमुम् नोन्गऴल्
आऱ्ऱल् शाल्तुन् मुहन्नुमङ् गार्त्तॅऴ
मेऱ्ऱिण् वायिलिन् मेविनर् वीडिनार्
काऱ्ऱिन् मामहन् कैयॅन्नुङ् गालनाल् 1036

मेल् तिण् वायिलिन्–पश्चिम के सुरक्षित द्वार पर; नूऱ्ऱिरण्टु ऍन्नुम् वॅळ्ळमुम्–दो सौ 'वॅळ्ळम्' सेना और; नोन् कऴल्–मजबूत पायलधारी; आऱ्ऱल् चाल्–शक्ति-संयुक्त; तुन्मुकन्नुम्–दुर्मुख; आर्त्तु ऍऴ–नर्दन कर उठे तब; मेविनर्–युद्ध में लगे रहे (राक्षस); काऱ्ऱिन् मा मकन्–पवनदेव के सुपुत्र (हनुमान) के; कैयॅन्नुम्–हाथ रूपी; कालनाल्–यम से; वीटिनार्–निहत हुए। १०३६

पश्चिमी द्वार पर दो सौ 'वॅळ्ळम्' की सेना के वीर और सुदृढ़ पायलधारी

दुर्मुख ज़ोर लगाकर बढ़े। पर वायु के सुपुत्र हनुमान के हस्त रूपी यम से हत हो गये। १०३६

अऩ्ऩ कालै ययिऩ्दिर वायुमुदल्
तुऩ्ऩु पोर्हण्ड तूदुव रोडिऩार्
मऩ्ऩ केळॆऩ वऩ्दु वणङ्गिऩार्
शॆऩ्ऩि ताऴ्क्कच् चॆवियिडैच् चॆप्पिऩार् 1037

अऩ्ऩ कालै–तव; अयिऩ्तिर वाय् मुतल्–इन्द्र (पूर्व) दिशा के द्वार से लेकर (सभी द्वारों पर); तुऩ्ऩु पोर्–घमासान युद्ध को; कण्ट–जिन्होंने देखा; तूतुवर्–उन दूतों ने; ओटिऩार् वऩ्तु–दौड़े आकर; चॆऩ्ऩि ताऴ्क्क–सिर नवाकर; वणङ्किऩार्–नमस्कार किया; मऩ्ऩ–राजा; केळ्–सुनो; ऎऩ–ऐसा; चॆवि इटै–कानों में; चॆप्पिऩार्–सुनाया। १०३७

तब इन्द्रदिशा के द्वार से लेकर सभी द्वारों पर चली लड़ाई को जो देख रहे थे वे दूत रावण के पास दौड़े आये। उसको सिर झुकाकर नमस्कार किया। फिर कहा कि राजा सुनिए। उन्होंने उसके कानों में खबर दी। १०३७

कीऴै वायिऱ् किळर्निरु दप्पडै
ऊऴि नाळिऩुम् वॆऩ्ऱिकॊण् डुऱ्ऱनिऩ्
आऴि यऩ्ऩ वऩीहत् तलैमहऩ्
पूऴि यातुयिर् पुक्कदु विण्णॆऩ्ऱार् 1038

कीऴै वायिल्–पूर्व द्वार पर; ऊऴि नाळिऩुम्–प्रलयकाल में भी; वॆऩ्ऱि कॊण्टु उऱ्ऱ–विजय जो पा चुके; निऩ् आऴि अऩ्ऩ–आपकी (आज्ञाचक्र या) सागर-सम; अऩीकम्–सेना का; तलै मकऩ्–नायक; किळर्–उत्साहपूर्ण; निरुत पटै–राक्षस-सेना के साथ; पूऴियाऩ्–धूल में मिल गया; उयिर्–जीव; विण्–स्वर्ग में; पुक्कतु–पहुँच गया; ऎऩ्ऱार्–बतलाया। १०३८

पूर्वी द्वार पर प्रहस्त, जिसने प्रलयकाल में भी जीत ही पायी थी, जो आपकी आज्ञाचक्र के समान सेना का नायक था, उत्साही सेना को साथ लेकर लड़ा था पर धूल में मिल गया। उसका जीव स्वर्ग चला गया। दूतों ने यह समाचार कहा। १०३८

वॆऩ्ऱि वेऱ्कै निरुदर् वॆहुण्डॆऴात्
तॆऩ्ऱि शॆप्पॆरु वायिलिऱ् चेर्न्दुऴिप्
पॊऩ्ऱि नाऩ्च् चुबारिशऩ् पोयुळर्
इऩ्ऱु पोऩ् विडमऱ्ऱि योमॆऩ्ऱार् 1039

वॆऩ्ऱि–विजयवायी; वेल् कै–भाले के रखनेवाले हाथों के; निरुतर्–राक्षस;

वॅकुण्ड्डु ॲऴ़ा–क्रोध करके निकलकर; तॅन् तिचै–दक्षिणी दिशा के; पॅरुवायिलिल्–बड़े द्वार पर; चॅन्नतु उऴि–जब गये तब; अ चुपारिचन्–वह सुपार्श्व; पोॅत्ति़तान्–मर गया; पोयुळर्–उसके साथ जो गये; इन्ऱु–आज; पोन इटम्–कहाँ गये, वह स्थान; अऱियोम्–नहीं जानते; ॲन्ऱार्–बोले। १०३९

विजयी भाले लेकर राक्षस क्रोध के साथ जब बड़े दक्षिणी द्वार पर पहुँचे, तब तक वहाँ सुपार्श्व मर गया। उसके साथ जो गये वे फिर कहाँ गये ? वह स्थान हम नहीं जानते। दूतों ने यह खबर भी दी। १०३९

वडक्कु वाय्दलिल् वच्चिर मुट्टियुम्
कुडक्कु वाय्दलिऱ् ऱुन्मुहक् कुन्ऱमुम्
अडक्क रुम्वलत् तॅम्बडु वॅळ्ळमुम्
पडक्कु रैन्दतर् नम्बडै यॅन्ऱतर् 1040

वटक्कु वाय्तलिल्–उत्तरी द्वार पर; वच्चिर मुट्टियुम्–वज्रमुष्टि और; कुटक्कु वाय्तलिल्–पश्चिमी द्वार पर; तुन्मुक कुन्ऱमुम्–दुर्मुख पर्वत और; अटक्करुम्–दुर्दम; वलत्तु–बल की; नम् पटै–हमारी सेना; ऐम्पतु वॅळ्ळमुम्–पचास 'वॅळ्ळम्'; पट–मर गये; कुरैन्ततर्–मिट गये; ॲन्ऱतर्–कहा (उन्होंने)। १०४०

उत्तरी द्वार पर वज्रमुष्टि और पश्चिमी द्वार पर पर्वताकार दुर्मुख और दुर्दम बली हमारी पचास 'वॅळ्ळम्' की सेना के वीर सभी मर गये। हमारे सभी मिट गये। १०४०

ॲन्ऱ वार्त्तै यॅरिपुहु नॅय्यॅनच्
चॅन्ऱु शिन्दै पुहुदलुञ् जीऱ्ऱत्ती
कन्ऱु कण्णिन् वऴिच्चुडर् कान्ऱिड
निन्ऱु निन्ऱु नॅडिदुयिर्त् तानरो 1041

ॲन्ऱ वार्त्तै–ऐसे वचन; ॲरि पुकु–आग में पहुँचते; नॅय् ॲन–घी के समान; चिन्तै चॅन्ऱु–उसके मन में जा; पुकुतलुम्–पहुँचे तब; चीऱ्ऱम् ती–कोपाग्नि ने; कन्ऱु–तप्त; कण्णिन् वऴि–आँखों के रास्ते; चुटर् कान्ऱिट–अंगारे निकाले; निन्ऱु निन्ऱु–रह-रहकर; नॅटितु उयिर्त्तान्–लम्बी आहें भरीं। १०४१

यह समाचार आग में गिरते घी के समान रावण के हृदय में गया। कोपाग्नि उसके तप्त नेत्रों के द्वारा अंगारों के रूप में प्रगट हुई। रह-रहकर उसने लम्बी आहें भरीं। १०४१

मऱित्तु मऱ्ऱव नारुयिर् वव्विनान्
इऱुत्तुक् कूऱॅन् ऱानिशै यॅङ्गणुम्
निऱुत्तु नील नॅडुम्बॅरुञ् जेनैयै
ऑऱुत्तु मऱ्ऱव नोॅडुम्वन् दुऱ्ऱनन् 1042

मर्रितुम्–फिर से; मर्रवत्–और उस (प्रहस्त) के; आरुयिर्–प्यारे प्राण; ववृवितान्–हरनेवाले (के सम्बन्ध में); इरुत्तु–बात करते हुए; कूरम्–बतलाओ; ऍन्रान्–(रावण ने) कहा; ऍङ्कणुम्–सब जगह; इचै निरुत्तुम्–यश स्थापित (जिसने) किया; नीलन्–नील; नॅटु पॅरु चेनॅयै–लम्बी-चौड़ी सेना को; ऑरुत्तु–मिटाकर; मर्रवनोटुम्–उस अन्य (प्रहस्त) से भी; वन्तु उर्रनन्–आ भिड़ा। १०४२

फिर रावण ने दूतों से पूछा कि उस प्रहस्त के प्राण हरनेवाले के सम्बन्ध में विवरण देते हुए कहो। दूतों ने उत्तर दिया कि सर्वत्र प्रकीर्तित नील लम्बी-चौड़ी सेना का नाश करके प्रहस्त से लड़ने आया। १०४२

उर्र	पोदि	तिरुवरु	मॉन्रल
कर्र	पोर्ह	ळॅलाञ्जॅय्द	कालैयिल्
नॅर्रि	मेन्मर्र	नील	नॅडुङ्गैयाल्
ऍर्र	वीन्दन	नॅन्न	वियम्बिनार् 1043

उर्र पोतिन्–जब भिड़ा तब; इरुवरुम्–दोनों ने; ऑन्रु अल–एक नहीं; कर्र पोर्कळ् ऍलाम्–सीखी हुई सभी रीतियों से युद्ध; चॅय्त कालैयिल्–जब किया तब; अ नीलन्–उस नील के; नॅर्रि मेल्–मस्तक पर; नॅटुकैयाल्–दीर्घ हाथ से; ऍर्र–पीटने पर; वीन्तनन्–(प्रहस्त) निहत हुआ; ऍन्न इयम्पिनार्–ऐसा कहा (दूतों ने)। १०४३

दोनों जब लड़े तब एक नहीं अनेक प्रकार से युद्ध किये। नील के, प्रहस्त के मस्तक पर, अपने लम्बे हाथ से घूंसा मारने पर वह मौत के घाट उतर गया। दूतों ने कहा। १०४३

अन्न	वन्नॉडुम्	पोन	वरक्करिल्
नन्न	हर्क्कुवन्	दोमैय	नाङ्गळे
ऍन्न	वॅन्न	वॅयिर्रहल्	वाय्हळैत्
तिन्नत्	तिन्न	वॅरिन्दन	तिक्कॅलाम् 1044

ऐय–प्रभु; अन्नवन् ऑटुम्–उसके साथ; पोत अरक्करिल्–जो गये उन राक्षसों में; नल् नकर्क्कु–अच्छे नगर को; वन्ताम् नाङ्कळे–लौटे हमीं; ऍन्न ऍन्न–ऐसा कहा, कहा तो; अकल् वाय्कळै–चौड़े मुखों (अधरों) को; ऍयिर्रु–दाँतों से; तिन्न तिन्न–काटते-काटते; तिक्कु ऍलाम्–सारी दिशाएँ; ऍरिन्तन–जल उठीं। १०४४

दूतों ने आगे कहा कि प्रभु! उसके साथ जितने लोग गये उनमें हमारे अच्छे नगर को लौट आये हैं हमीं! ऐसा दूतों के बार-बार कहने पर रावण ने अपने दाँत पीसे और उसकी कोपाग्नि से सारी दिशाएँ जल उठीं। १०४४

माडु निन्ऱ निरुदरै वन्गणात्
ओड नोक्कि युयर्पडै यान्मर्ऱक्
कोडु कॊण्डु पॊरुदक् कुरङ्गिनाल्
वीडि नान्ऩ्ऱु मीट्टुम् विळम्बिनान् 1045

माट् निन्ऱ्–पास स्थित; निरुतरै–राक्षसों को; वन् कणान्–क्रूर आँखों से; ओट नोक्कि–लम्बी देर तक देखकर; उयर् पटैयान्–श्रेष्ठ हथियारों वाला; अ कोट् कॊण्टु–उस डाल को लेकर; पॊरुत–लड़नेवाले; कुरङ्कितात्–वानर द्वारा; वीटितान्–मरा; ॲन्ऱु–ऐसा; मीट्टुम्–फिर एक बार; विळम्पितान्–कहा। १०४५

रावण ने अपनी क्रूर आँखों से पास स्थित राक्षसों पर लम्बी दृष्टि दौड़ाई। फिर से कहा कि श्रेष्ठ हथियारों के साथ रहा प्रहस्त! वह डाल को पकड़ लेकर युद्ध करनेवाले एक वन्दर के हाथ मर गया! आह!। १०४५

कट्ट दिन्दिरन् वाऴ्वैक् कडैमुऱै
पट्ट दिङ्गोर् कुरङ्गु पडुक्कवॆन्ऱु
इट्ट वॆञ्जॊ लॆरियिनि लॆन्शॆवि
शुट्ट दॆन्नुडै नॆञ्जैयुञ् जुट्टदाल् 1046

कट्टतु–(प्रहस्त ने) नाश किया; इन्तिरन् वाऴ्वै–इन्द्र के जीवन को; कटै मुऱै–आखिर; इङ्कु पट्टतु–यहाँ मरा तो; ओर् कुरङ्कु–एक वानर के; पटुक्क–मारने से; ॲन्ऱु–ऐसा; इट्ट–कहे गये; वॆम् चॊल्–दाहक वचन ने; ॲरियितिल्–आग के समान; ॲन् चॆवि–मेरे कानों को; चुट्टतु–जला दिया; ॲन्नुटै–मेरे; नॆञ्चैयुम्–हृदय को भी; चुट्टतु–जला दिया। १०४६

जीत पायी थी इन्द्र पर उसने। अब मौत पायी एक वानर के मारने से! दूतों के इस संतापक समाचार ने मेरे कानों को जला दिया; मेरे हृदय को भी जला दिया। १०४६

करुप्पै पोर्कुरङ् गॆऱ्ऱक् कदिर्चुऴल्
पॊरुप्पै यॊप्पवन् ताननिन्ऱु पॊन्ऱिनान्
अरुप्प मॆन्ऱु पहैयैयु मारऴल्
नॆरुप्पै युमिहऴन् दालदु नीदियो 1047

करुप्पै पोल्–चूहे के समान; कुरङ्कु ॲऱ्ऱ–वानर के प्रहार करने से; कतिर् चुऴल्–सूर्य-परिक्रमा के; पॊरुप्पै–(मेरु) पर्वत को; ओप्पवन्–समता करनेवाला; तान्–खुद; इन्ऱु पॊन्ऱितान्–आज मरा; पकैयैयुम्–शत्रु को और; आर् अऴल्–खूब प्रज्वलित; नॆरुप्पैयुम्–आग को; अरुप्पम् ॲन्ऱु–अल्प कहकर; इकऴन्ताल्–उपेक्षित करें; अतु नीतियो–वह ठीक रास्ता होगा क्या। १०४७

आखिर चूहा-सा वन्दर! उसके प्रहार से सूर्य-परिक्रमा-पात्र मेरु के

समान प्रहस्त मरा आज ! हा ! शत्रु और प्रज्वलित आग को अल्प समझकर उसकी उपेक्षा करना सही रास्ता होगा क्या ? । १०४७

निरुक वन्नदु नीर्निरै कण्णताय्
वरुक मायिन मापपडै योडुमॅन्न
डॅरकम् वनुदुद वाम लुरुहॅन
विर्कोळ् वॅम्बडै वीररै येवियॆ 1048

नीर् निरै-अश्रु-भरी; कण्णताय्-आँखों वाले; अन्नतु निरुक-वह रहे; वरुकम् आयिन-(बड़े समूहों में) वर्गित; मा पटैयोटुम्-विशाल सेनाओं के साथ; चॅन्रु-जाकर; ऑरुकम् वनृतु-पिछड़ना आकर; उतवामल्-न मिल जाये ऐसा; उरुक-भिड़ो; ॲन-कहकर; विल् कॊळ्-धनु रखनेवाले; वॅम् पटै वीररै-क्रूर वीरों को; एवितान्-भेजा (रावण ने)। १०४८

अश्रु-भरी आँखों के साथ रावण ने आज्ञा दी कि छोड़ो उसे। वह रहे एक ओर ! वर्ग-वद्ध बड़ी सेनाओं को लेकर जाओ। पीछे हटने की नौवत मत आने दो। जाओ और लड़ो। कहकर उसने धनुर्धर भयंकर सेनावीरों को भेज दिया। १०४८

मण्डु हिन्र शॅरुविन् वळक्कॅलाम्
कण्डु निन्रु कयिलै यिडन्दवन्
पुण्डि रुन्दन कण्णिनन् पोङ्गिनान्
तिण्डि रन्नॅडुन् देर्दॅरिन् देरिनान् 1049

कयिलै इटन्तवन्-जिसने कैलास को उठा लिया था (रावण) वह; मण्टुकिन्र-उत्तरोत्तर बढ़ते चलनेवाले; चॅरुविन्-युद्ध में; वळक्कु ॲलाम्-सभी घटनाक्रम; कण्टु निन्रु-देखता रहकर; पुण् तिरन्तन-खुले व्रण के समान; कण्णिनन्-आँखों वाला बना; पॊङ्किनान्-खौल उठा; तिण् तिरल्-सुदृढ़ और सशक्त; नॅटु तेर्-बड़े रथ को; तॅरिन्तु-चुन लेकर; एरिनान्-उस पर चढ़ा। १०४९

कैलासोत्पाटक रावण ने वढ़ती रही लड़ाई के घटनाक्रमों पर विचार किया। फिर खुले व्रणों के समान लाल आँख करते हुए (क्रोध के साथ) वह बहुत ही सशक्त एक रथ को चुन लेकर उस पर सवार हुआ। १०४९

आयि रम्बरि पूण्ड ददिर्हुरल्
मायि रुङ्गडल् पोन्रदु वानवर्
तेय मॆङ्गुन् दिरिन्ददु तिण्डिरल्
शाय विन्दिर नेपण्डु तन्ददु 1050

आयिरम् परि पूण्टतु-सहस्र अश्व जिसमें जुते थे; अतिर् कुरल्-गर्जनशील स्वर के; मा इरु कटल्-बहुत बड़े समुद्र के; पोन्रतु-समान था; वानवर् तेयम्-

देवों के देश; अँकुम्—भर में; तिरिन्ततु–घूम आया था; तिण् तिऱल वाय—बहुत बड़ा बल मिटा तब; इन्तिरते–स्वयं इन्द्र ने; पण्टु–पहले; तन्ततु–दिया था। १०५०

रावण के रथ में हज़ार घोड़े जुते थे। वह गर्जनशील बहुत बड़े सागर के समान था। वह देवों के सभी लोकों में घूम आया था। इन्द्र के निर्बल होने पर उसी का दिया हुआ था वह रथ। १०५०

ॲऱ्ऱि यॆण्णि यिरैञ्जि यिडक्कैयाल्
आऱ्ऱि तान्ऱ नड्शिलै यन्नदिन्
माऱ्ऱ मॆन्नॆडु नाणोलि वैत्तलुम्
कूऱ्ऱि तार्तम् करुवुयिर् कॊण्डदे 1051

एऱ्ऱि–स्तुति करके; ॲण्णि–स्मरण करके; इरैञ्चि–विनय करके; तन् अट् चिलै–अपने संहारक धनु को; इट कॆयाल्–अपने बायें हाथ से; आऱ्ऱितान्–पकड़ा; अन्ततिन् माऱ्ऱम् ॲन्–उसकी बोली कहने योग्य; नॆटु नाण् ओलि–लम्बे डोरे के शब्द को; वैत्तलुम्–निकालने पर; कूऱ्ऱितार् तम् करु–यम (की पत्नी) के गर्भ के; उयिर् कॊण्टतु–प्राणों को हर लिया (उस शब्द ने)। १०५१

रावण ने शिवजी की स्तुति की, मन में स्मरण किया और प्रार्थना की। फिर शत्रुसंहारक धनु को अपने बायें हाथ में लेकर डोरे को झटकाया। उसकी बोली यानी टंकार का शब्द जो निकला उसने यम (की पत्नी) के गर्भ के शिशु की जान को भी हर लिया। १०५१

मऱ्ऱम् वान्बडै वानवर् मार्बिडै
यिऱ्ऱि लादन वॆण्णुमि लादन
पऱ्ऱि तान्कव शम्बडर् मार्विडैच्
चुऱ्ऱिना नॆडुन् दुम्बैयुञ् जूडिनान् 1052

मऱ्ऱम्–और; वानवर् मार्पिटै–देवों के वक्ष पर (लगकर) भी; इऱ्ऱि लातन–जो नहीं टूटे थे; ॲण्णुम् इलातन–जो असंख्यक थे; वान् पटै–ऐसे दिव्य अस्त्रों को; पऱ्ऱितान्–पकड़ा; पटर् मार्पिटै–विशाल वक्ष पर; कवचम् चुऱ्ऱितान्–कवच लपेटा; नॆटु तुम्पैयुम्–श्रेष्ठ 'तुंबै' पुष्प की माला को (जो युद्ध का निशान है); चूटिनान्–पहन लिया। १०५२

फिर उसने उन अस्त्रों को लिया जो देवों के वक्ष पर लगने के बाद भी नहीं टूटे थे। अपने विशाल वक्ष पर कवच पहन लिया। फिर उसने युद्ध का निशान, 'तुंबै' का हार भी धारण कर लिया। १०५२

पेरुङ् गऱ्ऱैक् कवरिप् पॆरुङ्गडल्
नीरुम् नीर्नुरै युम्मॆन निन्ऱवन्

ऊरुम् वॅण्मै युवामदिक् कीऴुयर्
कारु मीत्ततन् मुत्तिन् कविहैयात् 1053

पेरुम्–डुलनेवाली; करुरै कवरि–राशियों के चामरों से; पॅरु कटल् नीरुम्–बड़े समुद्र के जल और; नीर् नुरॅयुम् अॅन्न–जल के ऊपर के फेन के समान; नित्तवन्–जो खड़ा रहा; मुत्तिन् कविकॅयात्–मुक्ताछत्र के नीचे; वॅण्मै ऊरुम्–श्वेतता मिले; उवामति कीऴ्–पूर्णचन्द्र के नीचे; उयर् कारुम्–(शोभा में) बढ़े मेघ; ऑत्ततन्–के समान भी लगा। १०५३

दोनों ओर चामरराशियाँ डुल रही थीं, जिससे वह वीचियों और फेन-सहित समुद्र के समान लग रहा था। उसके ऊपर मुक्ताछत्र था, जिससे वह पूर्णचन्द्र के नीचे मेघ के समान लगा। १०५३

पोर्त्त शङ्गप् पडहम् बुडैत्तिडच्
चीर्त्त शङ्गक् कडलुहत् तेवर्हळ्
वेर्त्त शङ्गिड अण्डम् वॅडिपड
आर्त्त शङ्ग मरॅन्द मुरशमे 1054

पोर्त्त–(चमड़े से) आच्छादित; चङ्कम्–समूह में; पटकम् पुटॅत्तिट–पटह पीटे गये; चीर्त्त–श्रेष्ठ; चङ्कम् कटल्–शंखयुक्त सागर-सम (शत्रु) सेना; उक–भय से भाग जाए ऐसा; तेवर्कळ्–देवगण; वेर्त्तु–पसीना-पसीना हो; अचङ्किट–काँप जाएँ ऐसा; अण्टम् वॅटि पट–अण्ड फटे; चङ्कम्–शंख; आर्त्त–बज उठे; मुरचम् अरॅन्त–ढोल पीटे गये। १०५४

चमड़े-मढ़े पटह (नामक) ढोल बजाये गये। शंख और भेरियाँ बज उठीं जिनके नाद से श्रेष्ठ शंखयुत समुद्र-सम वानर-सेना दहल उठी, देव पसीना-पसीना होकर डरे और अण्ड भी फट गया। १०५४

तेरु मावुम् बडॅजरुन् दॅऱ्ऱिड
मूरि वत्तॅडुन् दानॅयै मुऱ्ऱिनान्
नीरॅ रेऴु मुडिवि नॅरुक्कुनाळ्
मेरु माल्वरॅ यॅन्न विळङ्गिनान् 1055

तेरुम्–रथों और; मावुम्–अश्वों; पटॅञरुम्–वीरों के; तॅऱ्ऱिट–मिल आने पर; मूरि–बहुत; वल्–बलवान; नॅटु–विपुल; तानॅयै–सेना से; मुऱ्ऱिनान्–फिर कर; ओर् एऴु नीर्–(एक) सात समुद्रों के; मुटिविन्–युगान्त में; नॅरुक्कु नाळ्–आक्रमण करने के दिन में; मेरु माल्वरॅ अॅन्न–मेरु के बड़े पर्वत के समान; विळङ्किनान्–शोभायमान रहा। १०५५

रथों, अश्वों और वीरों की घनी, सबल और विपुल सेना से घिरकर वह युगांत के सातों सागरों से आवृत मेरु के बड़े पर्वत के समान शोभा। १०५५

※ एऴिशैक् करुविवीऱ् ऱिरुन्द वॅन्ऩिनुम्
शूऴिरुन् दिशैहळैत् तॊडरुन् दॊल्हॊडि
वाऴिय वुलहॅल्लाम् वळैत्तु वायिडुम्
ऊऴियि नन्दह नावि ऩोङ्गवे 1056

एऴ् इचै–सातों स्वरों वाली; करुवि–वीणा का वाद्य; वीऱ्ऱिरुन्ततु–अंकित रहा; ॲन्ऩितुम्–तो भी; चूऴ् इरु तिचैकळै–चारों ओर की लम्बी दिशाओं का; तॊटरुम्–पीछा करती आनेवाली; तॊल् कॊटि–प्राचीन पताकाएँ; वाऴिय उलकु ॲलाम्–जीवित रहनेवाले सभी लोकों को; वळैत्तु–फँसा लेकर; वाय् इटुम्–अपने मुख में डाल लेनेवाली; ऊऴियित्–युगान्तकालीन; अन्तकन् नावित्–यम की जीभ के समान; ओङ्क–छवि में बढ़ी रहीं, इस साज के साथ। १०५६

सातों स्वरों की जननी वीणा से अंकित थी उसकी ध्वजा। तो भी आवृत रहनेवाली बड़ी दिशाओं में जो पताकाएँ उसके साथ आ रही थीं, वे प्राचीन ध्वजाएँ युगांत के उस यम की लपलपाती जीभ के समान लगीं जो जीवित सभी लोकों को उठाकर अपने मुख में डाल लेता हो। १०५६

वेणुवित् नॅडुवरै यरक्कर् वेलैक्कोर्
तोणिपॅऱ् ऱनमॅनक् करुदुन् दॊल्शॅरुक्
काणिय वन्दवर् कलक्कङ् गैम्मिहच्
चेणुयर् विशुम्बिडै यमरर् शिन्दवे 1057

वेणुवित्–वेणुतरुसंकुल; नॅटु वरै–बड़े पर्वत-सम; अरक्कर्–राक्षस रूपी; वेलैक्कु–सागर (तरण) के लिए; ओर् तोणि–एक नाव; पॅऱ्ऱनम्–पा गये; ॲन–ऐसा; करुतुम्–सोचते हुए; चॅरु काणिय–लड़ाई देखने; वन्तवर्–जो आये; तॊल् अमरर्–पुरातन देव; कलक्कम्–उद्वेग के; कैमिक–अधिक होने से; चेण् उयर्–बहुत ऊँचे; विचुम्पु इटै–आकाश में; चिन्त–बिखर गये (ऐसा) आतंक पैदा करते हुए। १०५७

'वेणुतरुसंकुल राक्षस-सागर-तरणार्थ हमें एक नाव मिल गयी।' ऐसा सोचकर पुरातन देव युद्ध का तमाशा देखने आये। पर वे रावण को देखकर हड़बड़ा गये और बहुत ऊपर आकाश में तितर-बितर हो गये। १०५७

कण्णुऱु कडुम्बुहै कदुवक् कार्निऱत्
तण्णल्वा ळरक्करत् सरत्तप् पङ्गिहऴ्
वॅण्णिऱङ् गोडलि नुरुविन् वेऱुमै
नण्णिनर् नोक्कवु मयिर्प्पु नल्हवे 1058

कण् उऱु–आँखों में उठे; कटुम् पुकै–(कोपाग्नि का) भयंकर धुआँ; कतुव–

लगा, इसलिए; कार् निऱत्तु–काले रंग के; अण्णल्–प्रथित; वाळ्–क्रूर; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; अरत्त पङ्किकळ्–लाल केश; वॆळ् निऱम्–श्वेत रंग; कोटलित्–अपना गये तो; उरुविन् वेऱ्रुमै–रूप में भेद; नण्णिनर्–पा गये; नण्णित्तर्–निकटस्थों (रिश्तेदारों) को भी; अयिर्प्पु नल्क–भ्रम देते रहे। १०५८

उसकी आँखों से कोपाग्नि का धुआँ जो घने रूप से निकला, उसके जमने से काले रंग के गुरु राक्षसों के लाल केश श्वेत रंग के हो गये। और उनका रूप ही बदल गया। बहुत ही निकटस्थ भी देखते तो उनके मन में भ्रम पैदा होता। १०५८

कान्ॆडुन् देरुयर् कदलि युङ्गरत्
तेन्ॆय रेन्दिय पदाहै यीट्टमुम्
आन्ॆयिन् कॊडिहळ् मळवित् तोय्दलाल्
वान्वा ऱॊडुमळै यॊऱ्ऱि वऱ्ऱवे 1059

काल्–पहियेदार; नॆट्टु–उन्नत; तेर्–रथों पर; उयर्–ऊँचे बाँधी गयी; कतलियुम्–पताकाएँ और; एतॆयर्–अन्यों के; करत्तु एन्तिय–हाथों में धृत; पताकै ईट्टमुम्–पताकाओं के समूह; आन्ॆयिन् कॊटिकळुम्–हाथियों पर रही ध्वजाएँ; अळवि–मिलकर; तोय्तलाल्–लगीं इसलिए; वान आऱॊटु–आकाशगंगा के साथ; मळै–मेघ भी; ऑऱ्ऱि वऱ्ऱ–सोखे गये। १०५९

पहियेदार रथों के ऊपर लगी ध्वजाएँ, अन्यों के हाथ में धारण की हुई पताकाएँ और हाथियों पर लगे झंडे—सबने मिलकर आकाशगंगा के साथ मेघों में भी लगकर उन्हें सुखा दिया। १०५९

आयिरङ् गोडिप्पे यङ्गै यायुदम्
तूयन शुमन्दुपिन् ऱॊडरच् चुऱ्ऱॊळिर्
शेयिरु मणिनॆडुञ् जेमत् तेर्दॆरिन्दु
एयिन वायिरत् तिरट्टि यॆय्दवे 1060

आयिरम् कोटि–सहस्र करोड़; पेय्–पिशाच; अङ्कै–अपने सुन्दर हाथों में; तूयन आयुतम्–पवित्र हथियार; चुमन्तु–उठाते हुए; पिन् तॊटर–अनुगमन करते आये; चुऱ्ऱु ऑळिर्–चारों ओर प्रकाश देते रहनेवाले; चे इरु मणि–बहुत बड़े रत्नों से निर्मित; तॆरिन्तु–चुनकर; ऐयित्त–(साथ आने को) आज्ञापित; नॆटु–बड़े; चेमम् तेर्–रक्षक रथ; आयिरत्तु इरट्टि–दो सहस्र; ऍय्तवे–आये तो। १०६०

सहस्र करोड़ भूत अपनी हथेलियों में (या सुन्दर हाथों में) पवित्र हथियार ले आ रहे थे। बहुत ही कांतिमय रत्नों से निर्मित और चुने हुए रक्षक-रथों के आने की रावण ने आज्ञा दे रखी थी और उसके अनुसार दो हजार रथ उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। १०६०

❀ ऊऩ्ऱिय पॆरुम्बडै युलैय वुऱ्ऱुडऩ्
आऩ्ऱपो ररक्कर्ह ऩॊरुङ्गि यार्त्तॆऴत्
तोऩ्ऱिऩ तुलहॆलाऩ् दॊडर्ऩ्दु निऩ्ऱऩ
मूऩ्ऱैयुङ् गडन्दॊरु वॆऱ्ऱि मुऱ्ऱिऩाऩ् 1061

ऊऩ्ऱिय–डटी रही; पेरु पटै–बड़ी (वानर-) सेना; उलैय–क्षुब्ध हुई; उटऩ् उऱ्ऱु–साथ लगे; आऩ्र–बड़े; पोर् अरक्कर्कळ्–युद्धसमर्थ राक्षस; नॆरुङ्कि आर्त्तु ऍऴ–मिलकर आनन्दघोष कर उठे; तॊटर्न्तु निऩ्ऱऩ–साथ-साथ लगे रहे; मूऩ्ऱैयुम् कटन्तु–तीनों को पारकर; उलकु ऍलाम्–सारे लोकों पर; ऑरु वॆऱ्ऱि मुऱ्ऱिऩाऩ्–अनुपम जीत जिसने पायी थी, वह रावण; तोऩ्ऱिऩऩ्–(समराजिर में) प्रकट हुआ। १०६१

बरावर लगे रहे तीनों लोकों का विजेता रावण समरांगण में प्रगट हुआ तो सामने उठी रही वानर-सेना व्यग्र हो गयी; और उसके साथ आये युद्धदक्ष राक्षस उत्साह के साथ शोर मचा उठे। १०६१

❀ ओदुरु करुङ्गडऱ् कॊत्त तानैयाऩ्
तीदुरु शिऱुतॊऴि लरक्कऩ् शीऱ्ऱत्ताल्
पोदुरु पॆरुङ्गळम् पुहुन्दु ळाऩॆऩत्
तूदुवर् नायहऱ् करियच् चॊल्लिऩार् 1062

तीतु उऱु–बुराई मिले; चिऱु तॊऴिल्–नीचकर्म; अरक्कऩ्–राक्षस रावण; ओतुरु–प्रकीर्तित; करु कटऱ्कु ऑत्त–काले समुद्र के समान; तानैयाऩ्–सेना का अधिपति; चीऱ्ऱत्ताल्–क्रोध से; पोतुरु–प्रवेशयोग्य; पॆरु कळम्–बड़े समरांगण में; पुकुन्तुळाऩ्–प्रविष्ट हुआ है; ऍऩ–ऐसा; तूतुवर्–दूतों ने; नायकऱ्कु–नायक (श्रीराम) से; अऱिय चॊल्लिऩार्–समझाते हुए कहा। १०६२

"दुर्गुणपूर्ण और नीचकर्म रावण प्रकीर्तित काले समुद्र से तुल्य सेना के साथ प्रवेशयोग्य युद्धभूमि में सक्रोध प्रविष्ट हुआ है।" यह समाचार दूतों ने नायक श्रीराम को सुनाया। १०६२

❀ आङ्गव नमर्त्तॊऴिऱ् कणुहि ऩाऩॆऩ
वाङ्गिऩऩ् शीदैयै यॆऩ्ऩुम् वऩ्मैयाल्
तीङ्गुऱु पिरिविऩाऱ् ऱेय्न्द तेय्वऱ
वीङ्गिऩ वारियऩ् वीरत् तोऴ्हळे 1063

आङ्कु–तब; अवऩ्–वह (रावण); अमर् तॊऴिऱ्कु–युद्ध करने; अणुकिऩाऩ्–आ गया; ऍऩ–कहने पर; चीतैयै वाङ्किऩऩ्–सीता को छुड़ा लिया; ऍऩ्ऩुम् वऩ्मैयाल्–इस दृढ़ निश्चय से; तीङ्कुऱु–दुःखदायी; पिरिविऩाल्–बिछोह से; तेय्न्त तेय्वु–जो क्षीणता हुई उस क्षीणता को; अऱ–दूर करते हुए; आरियऩ्–आर्य के; वीर तोऴ्कळ्–वीरतापूर्ण कन्धे; वीङ्किऩ–फूल उठे। १०६३

ज्योंही श्रीराम ने सुना कि 'रावण युद्धकार्य के लिए आ गया', त्योंही श्रीराम ने यह निश्चय समझ लिया कि अब सीता को मैंने प्राप्त कर लिया। दुःखदायी बिछोह से उनके कंधों में जो क्षीणता आ गयी थी, वह अब दूर हो गयी। उनके कंधे फूल उठे। १०६३

❀ तॉडैयुरु वऱ्कलै याडै शुऱ्ऱिमेऱ्
पुडैयुरु वयिरवाळ् पॉलिय वीक्कितात्
इडैयुरु करुमत्ति तॅल्लै कण्डवर्
कडैयुरु नोक्कितिऱ् काणुङ् गाट्चियात् 1064

इडै उरु—(जन्म और मोक्ष के) मध्य के काल में; करुमत्तिन् ऍल्लै—कर्म की सीमा; कण्टवर्—जिन्होंने देखी थी, उन ज्ञानियों की; कटै उरु नोक्किनिल्—अन्त तक देख सकनेवाली ज्ञानदृष्टि से; काणुम्—देखे जानेवाले; काट्चियात्—दृश्य (श्रीराम); तॉटै उरु—ऊरु प्रदेशों को ढकनेवाले; वऱ्कलै आटै—वल्कल वसन; चुऱ्ऱि—कमर में लपेट (पहन) कर; मेल्—उसके ऊपर; पुटै उरु—पार्श्व में लगाये जानेवाले; वयिरवाळ्—हीरे के खड्ग को; पॉलिय—शोभायमान रूप से; वीक्कितान्—बाँध लिया। १०६४

श्रीराम ने, जो जन्म-मुक्ति के मध्यकाल में ही कर्म का अन्त कर सकने वाले ज्ञानियों की अंतिम तत्त्वदर्शी दृष्टि के ही गोचर रहनेवाले हैं, कमर में (ऊरुओं को ढँकते हुए) चुस्त ढंग से वल्कल लपेट लिया। उसके ऊपर कमर से हीरे के खड्ग को खोंस लिया। १०६४

ऑत्तिरु शिऱुकुऱळ् पाद मुय्त्तनाळ्
वित्तह ररुमऱै युलहै मिक्कुमेल्
पत्तुडै विरल्पुडै परन्द पण्बॅनच्
चित्तिरच् चेवडिक् कळ्ळुञ् जेर्त्तितात् 1065

चिऱुकुऱळ्—छोटे वामन (रूपी भगवान विष्णु) ने; ऑत्त इरु पातम्—परस्पर सम दोनों चरणों को; उलकै मिक्कु—लोक को पारकर; मेल् उय्त्त—जिस दिन ऊपर रखा; नाळ्—उस दिन; अरु मऱै वित्तकर्—उत्कृष्ट वेदविदों की; पत्तु उटै विरल्—भक्ति के साथ लगी उँगलियाँ; पुटै परन्त पण्पु—ऊपर जिस रीति से फैली दिखीं, उस रीति से; चित्तिर—सुन्दर; चे अटि कळ्ळुम्—लाल चरणों में पायलें भी; चेर्त्तितान्—धारण कर लीं। १०६५

श्रीराम ने सौंदर्यपूर्ण वीर वलय अपने चरणों में धारण किया। वह इस प्रकार शोभा, जैसे वेदविदों की भक्तियुक्त उँगलियाँ उनके चरणों पर लगी थीं जब उन्होंने वामनावतार के अवसर पर अपने समचरणद्वय को लोक लाँघकर चौदहों भुवनों में व्याप्त किया था। १०६५

पूवुयर् मीनॅलाम् पूत्त वानिहर्
मेवरुङ् गवशमिट् टिरुक्कि वीक्कितन्
देवियेत् तिरुमरु मार्बिऱ् ऱीर्न्दनन्
नोविल ळॅन्नुबदु नोक्कि नान्गॉलो 1066

मीन् ॲलाम्–सारे नक्षत्र; पूत्त–(जिसमें) फूले थे; वान् निकर्–उस आकाश के समान; पू उयर्–पुष्पों के अलंकार से भरे; मेवु–युक्त; अरुम्–अतिशय (सुन्दर); कवचम् इट्टु–कवच रखकर; इरुक्कि–कसकर; वीक्कितन्–बाँध लिया; तिरुमरु–श्रीवत्सांकित; मार्विल् तेवियै तीर्न्ततनन्–लक्ष्मी-रहित वक्ष के थे; नोविलळ्–(देवी) दुखेंगी नहीं; ॲन्नुपतु–ऐसा; नोक्कितान् कॉल्–सोचा शायद। १०६६

पुष्पों के अलंकार से नक्षत्रयुक्त आकाश-सा जो कवच लग रहा था, उसे उन्होंने खूब कसकर पहन लिया। शायद इसलिए उन्होंने उसे ऐसा मजबूत रीति से कसा कि श्रीवत्सांकित वक्ष में अब देवी वास नहीं करतीं अतः उन्हें कष्ट नहीं होगा। १०६६

नऱ्पुदुक् कोदैतन् नळिनच् चॅङ्गैयिन्
निऱ्पुरच् चुऱ्ऱिय काट्चि नेमियान्
कऱ्पहक् कॊम्बिनैक् करिय माशुणम्
पॊऱ्पुरत् तळुविय तन्मै पोन्ऱदाल् 1067

नेमियान्–चक्रधर (श्रीराम); नल् पुतु–अच्छे और नये; कोतै–हस्तत्राण को; तन् नळितम्–अपने कमल-सम; चॅम् कैयिन्–लाल हाथ में; निऱ्पुर–खूब टिकाते हुए; चुऱ्ऱिय काट्चि–जो लपेटा वह दृश्य; कऱ्पकम् कॊम्पितै–कल्पशाखा से; करिय माचुणम्–काला आशीविष; पॊऱ्पुर–सौन्दर्य के साथ; तळुविय तन्मै पोन्ऱतु–जो लिपटा रहे उस प्रकार-सा था। १०६७

चक्रधारी श्रीराम ने अपने लाल हाथों में चमड़े का हस्तत्राण इस शोभा के साथ लपेट लिया कि लगा कि कल्पशाखा पर काला साँप लिपटा हो। १०६७

पुदैयिरुट् पॊऴुदिनु मलरुम् बॊङ्गॊळि
शिदैवरु नाळ्विरै शिवन्द तामरै
इदऴ्तॊऱुम् वण्डुवीऱ् ऱिरुन्द दामॅनत्
तदैवुरु निरैविरऱ् पुट्टि ऱाङ्गिनान् 1068

पुतै–ढकनेवाले; इरुळ् पॊऴुतिनुम्–अन्धकार के समय में भी; मलरुम्–खिलने वाले; पॊङ्कु ऑळि–अधिक तेजोमय सूर्य द्वारा; चितैवरु–जब हटाया जाता है उस; नाळ्–दिवा के समय भी; चिवन्त–लाल; विरै–सुगन्धित; तामरै–कमल की; इतऴ् तॊऱुम्–हर पंखुड़ी में; वण्टु वीऱ्ऱिरुन्ततु आम्–भ्रमर बैठा हो; ॲन–जैसे; ततैवु उरु–सटी रही; निरै विरल्–पंक्तिबद्ध उँगलियों में; पुट्टिल् ताङ्कितान्–अँगुलित्राण धारण कर लिया। १०६८

दृश्यनिरोधक अंधकार में भी खिले रहनेवाले और अतिशय प्रकाशमय किरणमाली के अंधकार-निरसन के दिवा में खिले सुगन्धित लाल कमल की हर पंखुड़ी में भ्रमर बैठा हो —ऐसा उन्होंने हर मनोरम अँगुली पर चुस्त अंगुलित्राण पहन लिया। १०६८

पल्लिय लुलहुरु पाडै पाडमैन्
ऍल्लैयि नूऱ्कड लेऱु नोक्किय
नल्लिय नवैयरु कविञर् नावरुञ्
जॊल्लॅनत् तॊलैविलात् तूणि तूक्किनान् 1069

उलकुरु–लोक में प्रचलित; पल्लियल् पाटै–विविध प्रकार की भाषाओं में; पाटु अमैन्तु–अच्छा ज्ञान पाकर; ऍल्लै इल्–अपार; नूल् कटल्–ग्रन्थ-सागर के; एऱु नोक्किय–पारंगत; नवै अऱु–निर्दोष; नल् इयल् कविञर्–अच्छी प्रतिभा के कवियों की; ना वरुम्–जिह्वा से निकलनेवाले; चॊल् ॲंत–शब्दों के समान; तॊलैवु इला–अक्षय (शरों से युक्त); तूणि–तूणीर; तूक्कितान्–लटका लिया। १०६९

उन्होंने अक्षय तूणीर लटका लिया जो संसार की विविध भाषाओं के ग्रन्थों के पारंगत, निर्दोष व श्रेष्ठ कवियों की जिह्वा से निकलनेवाले शब्दों के समान अक्षय (अस्त्र दे सकता) था। १०६९

किळर्मळैक् कुळुविडैक् किळर्न्द मिन्नॅन
अळवरु शॆञ्जुडर्प् पट्ट मार्त्तनन्
इळवरिक् कवट्टिलै यारॊ डॆर्वॆरत्
तुळवॊडु तुम्बैयुञ् जुळियच् चूडिनान् 1070

किळर्–उठनेवाले; मळै कुळुविटै–मेघसमूह-मध्य; किळर्न्त–चमकती; मिन् ॲंत–बिजली के समान; अळवु अऱु–अपार; चॆम् चुटर्–लाल प्रकाश का; पट्टम्–पट; आर्त्ततन्–बाँध लिया; इळवरि–बाल नसों से युक्त; कवटु इलै–टहनियों के पत्रों-सहित; आरॊटु–अगस्त्य की माला के-से; एर् पॆरु–सौन्दर्यमय; तुळवॊटु–तुलसी के साथ; तुम्पैयुम्–"तुंबै" की माला को भी; चुळिय–गोल रूप में; चूटितात्–धारण कर लिया। १०७०

उठे हुए मेघमध्य बिजली के समान अपार कांतियुत पट माथे पर बाँधकर श्रीराम ने ताज़ी नसों से युक्त और टहनियों और किसलयों के साथ बनी "अगस्त्य" फूलमाला पहन ली। फिर मनोरम रीति से तुलसी और "तुंबै" की माला को चक्राकार पहन लिया। (अगस्त्य 'अहत्ति' का फूल चोळवंश राजाओं का निशान है। कम्बन ने चोळवंश को सूर्यवंश माना है। तुलसी श्रीविष्णु की प्रिय माला है। "तुंबै" युद्ध का निशान है। रावण ने भी पहन लिया— यह १०५२वें पद्य में देखा जा सकता है।) । १०७०

ओङ्गिय वुलहमु मुयिरु मुट्पुरन्
दाङ्गिय पॊरुळ्हळुन् दानुन् दानॆन
नीङ्गिय दियावदु निनैक्कि लोमवन्
वाङ्गिय वरिशिलै मर्रॊन्ऱे कॊलाम् 1071

ओङ्किय-एक के ऊपर एक ऐसा बने; उलकमुम्-लोक; उयिरुम्-उनके जीव; उट् पुरम् ताङ्किय पॊरुळ्कळुम्-उनके अन्दर रहनेवाले सभी पदार्थ; तानुम् तान् ऍन-आप ही आप हैं ऐसा; नीङ्कियतु-और पृथक् भी; यावतु-कैसा; नितैक्किलोम्-हम नहीं समझते; अवन्-उन्होंने; वाङ्किय वरिचिलै-(जिसको हाथ में) लिया वह सबन्ध धनु; मऱ्ऱॊन्ऱे कॊल् आम्-दूसरा एक है क्या। १०७१

परमात्मा ही स्वयं ये एक के ऊपर एक रहनेवाले लोकों और लोकों के वासी जीव और सभी पदार्थ हैं। तो भी पृथक् हो अब आये हैं —यह बात कैसी ? तो शायद उनका भी धनु उनसे अलग एक है क्या ? । १०७१

नार्कड लुलहमुम् विशुम्बु नाण्मलर्
तूर्क्कवॆञ् जेनैयुन् दानुन् दोन्ऱिनान्
मार्कडल् वण्णन्ऱान् वळरु मालिरुम्
पार्कड लोडुमुवन् दॆदिरुम् बान्मैपोल् 1072

माल् कटल् वण्णन्-विशाल सागर के रंग के श्रीविष्णु; तान् वळरुम्-जिस पर आप सोते हैं; माल् इरु पाल् कटलोटुम्-विशाल क्षीरसागर के साथ; वन्तु ऍतिरुम्-आ प्रकट हुए; पान्मै पोल्-जैसे प्रकार से; नाल् कटल् उलकमुम्-चारों ओर समुद्र से वलयित भूलोकवासी; विचुम्पुम्-और स्वर्गवासी; नाण् मलर् तूर्क्क-तद्दिनविकसित पुष्प बिखेरते; वॆम् चेनैयुम् तानुम्-भीषण (वानर) सेना और स्वयं; तोन्ऱिनान्-प्रकट हुए। १०७२

श्रीराम अपनी भयंकर सेना के साथ आ प्रकट हुए। तब चारों ओर समुद्र से वलयित भूलोकवासियों ने और स्वर्गलोकवासियों ने तद्दिनविकसित पुष्प बरसाये। तब ऐसा लगा मानो समुद्रवर्ण श्रीविष्णु अपने उस क्षीरसागर के साथ आ गये हों जिस पर वे सो रहे हैं। १०७२

ऊऴियि नुरुत्तिर नुरुवु कॊण्डुतान्
एऴुय रुलहमु मॆरिक्किन् ऱानॆन
वाऴिय वरिशिलैत् तम्बि माप्पडैक्
कूऴैयि नॆर्ऱिनिन् ऱानैक् कूडिनान् 1073

ऊऴियिल्-युगान्त में; तान्-वे श्रीराम; उरुत्तिरन् उरुवु कॊण्टु-रुद्र का रूप लेकर; एऴ् उयर्-सात में उठे; उलकमुम्-लोकों को; ऍरिक्किन्ऱान् ऍन-जलाते हों जैसे; मा पटै कूऴैयिन्-बहुत बड़ी वानर-सेना के पीछे खड़े भाग में; नॆऱ्ऱि निन्ऱान्-आगे जो खड़े थे; वाऴिय-चिरंजीव; वरिचिलै तम्पियै-सबन्ध धनुर्धर भाई के; कूटिनान्-पास आ मिले। १०७३

युगान्त के सप्तलोकजलनकारी रुद्र के ही समान श्रीराम अब बड़ी वानर-सेना के पिछले भाग के आगे जो खड़े रहे, उन चिरंजीव, सबन्ध धनुर्धर छोटे भाई लक्ष्मण के पास जा मिले। १०७३

अॅन्बुळि निरुदरा मेळु वेलैयुम्
मिन्बॉळि यॅयिरुडैक् कविथिन् वॅळ्ळमुम्
तॅन्बुलक् किळवनुञ् जॅयहै कॊळ्प्पडप्
पुन्बुलक् कळत्तिडेप् पॊरुद पोलुमाल् 1074

अॅन्पु उळि–जब यह हुआ तब; तॅन् पुलम् किळवनुम्–दक्षिण दिशा के अधिपति (यम) के; चॅय्कै कोळ् पट–कर्म को भी अल्प बनाते हुए; निरुतराम् एळु वेलैयुम्–राक्षस रूपी सातों समुद्र और; मिन् पॊळि–प्रकाशवर्षी; अॅयिरु उटै–दाँतों वाले; कविथिन् वॅळ्ळमुम्–वानरों की बड़ी सेना; पुन् पुलम्–तुच्छ स्थल; कळत्तु इटै–युद्धस्थल पर; पॊरुत पोलुम्–लड़े-जैसे था। १०७४

तब दक्षिण दिग्पाल यम के कार्य को भी अपेक्षाकृत अल्प बनाते हुए राक्षसों की सेना रूपी सातों सागर और प्रकाश छिटकानेवाले दाँतों के वानर-सेना के प्रवाह दोनों गर्ह्य युद्धस्थल में आपस में लड़ते-से लगे शायद ! । १०७४

तॅऱ्किदु वडक्किदु वॅन्नत् तेर्हिलार्
पऱ्कुवै परन्दन कुरक्कुप पल्पिणम्
पॊऱ्कुवै निहर्त्तन निरुदर् पोर्च्चवङ्
कऱ्कुवै निहर्त्तन मळैयुङ् गाट्टिन 1075

इतु तॅऱ्कु–यह दक्षिण है; इतु वटक्कु–यह उत्तर; अॅन्न तेर्किलार्–यह निश्चय नहीं करें ऐसा; पल् कुवै–बहुत ढेर (लाशों के); परन्तन–फैले पड़े रहे; कुरक्कु पल् पिणम्–वानरों की अनेक लाशें; पॊन् कुवै निकर्त्तन–(सफ़ेद) स्वर्ण (रजत) पर्वत के समान रहीं; पोर् निरुतर् चवम्–लड़ाकू राक्षसों की लाशें; कल् कुवै–पत्थरों के ढेरों; निकर्त्तन–के समान थीं; मळैयुम्–मेघों के; काट्टिन–दृश्य भी दिखाये। १०७५

उत्तर या दक्षिण (या अन्य) दिशा का भेद मिटाते हुए लाशों के ढेर सर्वत्र पड़े थे। वानरों की लाशों के ढेर स्वर्ण (रजत) पर्वतों के समान लगे तो युद्धभूमि में जो मरे, उन राक्षसों की लाशों के ढेर प्रस्तरराशियों के समान दिखायी दिये; और मेघसमूहों का भ्रम भी दिलाया। १०७५

तुमिन्दन तलैकुडर् शॊरिन्द तेर्क्कुलम्
अविन्दन पुरवियु माळ् मऱ्ऱन
कुविन्दन पिणक्कुवै शुमन्दु कोणिलम्
निमिर्न्दवु परन्दवु कुरुदि नीत्तमे 1076

तलै तुमिन्तन–सिर कटे; कुटर् चोरिन्त–आँतें छिन्न हो गिरीं; तेर्कुलम् अविन्तन–रथों के समूह मिटे; पुरवियुम् आळुम्–अश्व और वीर; अऱ्ऱन–खण्ड हुए; कुविन्तन पिणम्–ढेर बने लाशों के; कुवै चुमन्तु–ढेर ढोकर; कोळ् निलम्–सबल भूमि; निमिर्न्तनु–उभर गयी; कुरुति नीत्तम्–रक्त-प्रवाह; परन्ततु–फैला। १०७६

(वीरों के) सिर कटे; आँतें लटक गयीं। रथवृन्द मिटे। अश्व और वीर हत हुए। लाशें ढेर बनीं। उनको ढोकर भूमि उभर गयी। रक्तप्रवाह फैला। १०७६

कडुङ्गुरङ् गिरुहैया लॅऱ्ऱक् कालवयक्
कॉडुङ्गुरन् दुणिन्दन पुरवि कुत्तिनाल्
ऑडुङ्गुरन् दुणिन्दनर् निरुद रोडिन
नॅडुङ्गुरम् बॅन्ननिऱै कुरुदि नीत्तमे 1077

कटुम् कुरङ्कु–भीषण वानरों के; इरु कैयाल्–दोनों हाथों से; ऍऱ्ऱ–मारने से; काल् वयम्–पैरों में बली; कोट्टु कुरम्–वक्र खुरों वाले; पुरवि–अश्व; तुणिन्तन–खण्ड-खण्ड हुए; कुत्तिनाल्–मुष्टि-प्रहार से; उरम् ऑट्टुङ्क–बल खोकर; निरुतर्–राक्षस; तुणिन्तनर्–कट गये; नॅट्टु कुरम्पु ॲन्न–लम्बे बाँध से जैसे; निऱै–अधिक; कुरुति नीत्तम्–रक्त का प्रवाह; ओटिन–बह चला। १०७७

क्रूर वानरों ने अपने दोनों हाथों से प्रहार किया तो बलवान पैरों और गोल खुरों वाले अश्व छिन्न-भिन्न हो गये। उनके मुष्टिप्रहार से राक्षस निर्बल बने और कटकर गिरे। बड़े बाँध के टूटने से प्रवाह बहता हो, ऐसा रक्तप्रवाह बह चला। १०७७

अव्वळि यिरावण नमर रञ्जतन्
वॅव्विळि नॅरुप्पुह विल्लि नाणिनैच्
चॅव्वळिक् कोदैयिऱ् ऱॅऱिक्कच् चिन्दिन
ॲव्वळि मरुङ्गिनु मिरिन्द वानरम् 1078

अ वळि–उस समय; इरावणन्–रावण के; अमरर् अञ्च–देवगण भयभीत हों ऐसा; तन् वॅ विळि–अपनी डरावनी आँखों से; नॅरुप्पु उक–आग निकलने देते हुए; विल्लिन् नाणिनै–धनु की प्रत्यंचा को; चॅ वळि कोतैयिल्–अच्छे प्रकार पहने हुए हस्तत्राण से; तॅऱिक्क–टंकारने पर; इरिन्त वानरम्–(जो) भागे (वे) वानर; ॲ वळि मरुङ्कितुम्–सभी ओर के मार्गों में; चिन्तिन–बिखर गये। १०७८

तब रावण ने अपने धनुष के डोरे को चमड़े के हस्तत्राण-सह हाथ से टंकारित किया। तब उसकी आँखों से आग प्रकट हो रही थी। देवगण भयभीत हो गये। और वानर हटकर तितर-बितर हो भाग खड़े हुए। १०७८

उरुमिडित् तुळियुलैन् दौळिक्कुम् नाहमौत्
तिरियलुऱ् ऱनशिल विऱन्द वाऱ्चिल
वॆरुवलुऱ् ऱनशिल विम्म लुऱ्ऱन
पॊरुहळत् तुयिरॊडुम् बुरण्डु पोऩ्जिल 1079

उरुम् इटित्तु उळि–वज्रनाद होते समय; उलैन्तु–जर्जर होकर; ऑळिक्कुम्–छिपनेवाले; नाकम् ऑत्तु–नाग के समान; चिल–कुछ (वानर); इरियल् उऱ्ऱन–अस्त-व्यस्त हो भागे; चिल इऱन्त–कुछ मरे; चिल–कुछ; वॆरुवल् उऱ्ऱन–कुछ भयातुर हुए; चिल–कुछ; विम्मल् उऱ्ऱन–सिसके; चिल–कुछ; पॊरुकळत्तु–युद्धभूमि में; उयिरॊटुम्–जान लेकर; पुरण्टु पोम्–लोटते हुए भागे। १०७९

वज्रघोष से डरकर छिपनेवाले नाग के समान कुछ वानर अस्त-व्यस्त हो भागे। कुछ मर ही गये। कुछ भयातुर हुए। कुछ ने सिसकियाँ भरीं। कुछ युद्धभूमि में जान लेकर लुढ़क चले। १०७९

पॊरक्करु निऱनॆडु विशुम्बु पुण्बड
इरक्कमि लिरावण नॆऱिन्द नाणिनाल्
कुरक्किन मुऱ्ऱदॆन् कूऱिऱ् ऱन्कुलत्
तरक्करु मनैयदो रच्च मॆय्दिनार् 1080

पॊर–लड़ने के लिए; इरक्कम् इल्–अकरुण; इरावणन्–रावण; करु निऱम्–काले रंग के; नॆटु विचुम्पु–लम्बे आकाश में भी; पुण् पट–व्रण करते हुए; ऎऱिन्त नाणिनाल्–टंकारित डोरे के शोर से; कूऱिल्–कहने पर; तन् कुलत्तु अरक्करुम्–उसके कुल के राक्षस भी; अनैयतु ओर्–उतना एक; अच्चम् ऎय्तिनार्–भय पा गये; कुरक्किनम् उऱ्ऱतु–वानर-समूहों को भय हुआ तो; ऎन्–(विचित्र) क्या है। १०८०

जब रावण ने युद्ध के उपक्रम में काले रंग के आकाश में व्रण कराते हुए प्रत्यंचा टंकोरी, तब उस ध्वनि से, सच कहना हो तो, उसके ही कुल के राक्षस भी ऐसे भयभीत हुए जिसका वर्णन ही कठिन है। फिर वानरों का क्या हाल रहा? यह कैसा प्रश्न है? । १०८०

वीडण नॊरुवनु मिळैय वीरनुम्
कोडणै कुरङ्गिनुक् करशुङ् गोळ्हैयान्
नाडिनर् निन्ऱनर् नालु तिक्किनुम्
ओडिन रल्लव रॊळित्त दुम्बरे 1081

ऑरुवन्–अद्वितीय; वीटणनुम्–विभीषण और; इळैय वीरनुम्–छोटे वीर और; कोटु अणै–तरुशाखाओं पर रहनेवाले; कुरङ्किनुक्कु–वानरों का; अरचुम्–राजा; कॊळ्कैयान् नाटिनर्–विचार-विनिमय करते हुए; निन्ऱनर्–खड़े रहे;

अल्लवर्–इतर लोग; नालु तिक्कित्तुम्–चारों दिशाओं में; ओटिनर्–भागे; उम्पर्–आकाशलोक (वासी) भी; ऑळित्ततु–छिप गये। १०८१

तब अद्वितीय विभीषण, छोटे वीर लक्ष्मण और शाखामृग वानरों का राजा कर्तव्य कार्यपद्धति पर विचार करते खड़े रहे। अन्य सभी चारों दिशाओं में भाग गये। आकाशवासी भी छिप गये। १०८१

ऍडुक्किऩ्ऩा निलत्तै येऩ्दु मिरावण नॅऱिन्द नाणाल्
नडुक्किऩ्ऩा लुलहै वॅळ्ळि नाहत्तै यॅडुक्कप् पॅऱ्ऱ
मिडुक्किऩाऩ् मिक्क वाऩोर् मेक्कुयर् वॅळ्ळ मेनाळ्
कॅडुक्कुना ळुरुमि ऩार्प्पुक् केट्टऩ रॆऩ्ऩक् केट्टार् 1082

ॲट्क्किन्–उखाड़ना हो तो; नानिलत्तै–चतुर्विधा भूमि को; एन्तुम्–उठानेवाले; वॅळ्ळि नाकत्तै–रजतगिरि को; ॲट्क्कप्पॅऱ्ऱ–उठा चुका; मिट्क्कितान्–ऐसे बली; इरावणन् ॲऱिन्त–रावण ने टंकोरित; नाणाल्–प्रत्यंचा की ध्वनि से; उलकै–संसार को; नटुक्कितान्–कँपा दिया; मिटुक्कितान्–बल में; मिक्क वाऩोर्–बढ़े हुए देवों ने; मेक्कु उयर् वॅळ्ळम्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाला प्रलय-प्रवाह; मेल् नाळ्–जब आयगा उस भविष्य के दिन के; कॅटुक्कुम् नाळ्–नाशकारी दिन के; उरुमिन् आर्प्पु—वज्र का शोर; केट्टनर् ॲन्न—सुना जैसे; केट्टार्—(आज वह टंकार) सुनी। १०८२

चाहे तो रावण भूमि को उत्पाटित कर ले सकता था। असल में उसने रजतगिरि कैलास को उठाया भी था। उसने अपने धनुष के डोरे की टंकार-ध्वनि से संसार को कँपा दिया। बल में बढ़े हुए देवों ने उस शब्द को ऐसा सुना, मानो वे भविष्य में आनेवाले युगान्त के प्रलयकाल में जो वज्रध्वनि होगी उसको सुन रहे हों। १०८२

ऎऩ्दिय शिहर मॊऩ्ऱङ् गिन्दिरऩ् गुलिश मॆऩ्ऩक्
काऩ्दिय वुरुमिऩ् विट्टाऩ् कविक्कुलत् तरश ऩक्कल्
नीऩ्दरु नॆरुप्पुच् चिन्दि निमिर्दलुम् निरुदर्क् कॆल्लाम्
वेऩ्दनुम् बहळि यॊऩ्ऱाल् वॆण्डुह ळाक्कि वीळ्त्ताऩ् 1083

कविकुलत्तु अरचऩ्–कपिकुलराजा ने; अक्कु–वहाँ; काऩ्तिय उरुमिऩ्–उग्र अशनि-सम; एऩ्तिय चिकरम् ऑऩ्ऱु–ऊँचे शिखर एक को; इन्तिरऩ् कुलिचम् ॲऩ्ऩ–इन्द्र के वज्रायुध की तरह; विट्टाऩ्–फेंका; अ कल्–वह पत्थर; नीन्त अरु–अगम; नॆरुप्पु चिन्ति–आग गिराते हुए; निमिर्तलुम्–उठा तो; निरुतर्क्कु ऍल्लाम्–सभी राक्षसों के; वेन्तनुम्–राजा ने भी; पकळि ऑऩ्ऱाल्–एक बाण से; वॆळ् तुकळ् आक्कि–श्वेत चूर्ण बनाकर; वीळ्त्ताऩ्–उड़ा दिया। १०८३

तब कपिकुलाधिपति सुग्रीव ने वज्र-सम एक पर्वत-शिखर उठाया और इन्द्र के कुलिश के समान उसे रावण पर फेंक दिया। वह अगम रूप

से अंगारे छितराते हुए उठ बढ़ा तो सारे राक्षसों के राजा, रावण ने एक अस्त्र चलाकर उसको श्वेत चूर्ण में बदलकर छितरा दिया। १०८३

अण्णल्वा ळरक्कन् विट्ट वम्बिना लळिन्दु शिन्दित्
तिण्णॅडुज् जिहर नीऽरायत् तिशैतिशैच् चिन्द लोडुम्
कण्णॅडुङ् गडुन्दीक् कालक् कविकुकुलत् तरशन् कैयाल्
मण्महळ् वयिरु कीऽ मरमौन्ऱु वाङ्गिक् कॉण्डान् 1084

अण्णल्–महिमायुक्त; वाळ् अरक्कन्–क्रूर राक्षस (रावण); विट्ट अम्पिनाल्–प्रेरित बाण से; तिण्–कठोर; नॅंटु चिकरम्–बड़ा शिखर; अळिन्तु–मिटा और; चिन्ति–गिर गया; नीऽराय्–चूर होकर; तिचै तिचै–सभी दिशाओं में; चिन्तलोटुम्–बिखर गया तो; कविकुलत्तु अरचन्–कपिकुलपति ने; कण्–आँखों से; नॅटु–अधिक; कटुम्–उग्र; ती काल–आग निकालते हुए; कैयाल्–हाथ से; मण् मकळ् वयिऱु–भूदेवी का पेट चिर जाए ऐसा; मरम् ऑन्ऱु–एक वृक्ष को; वाङ्कि कॉण्टान्–उखाड़ लिया। १०८४

महिमावान क्रूर राक्षस के प्रेरित अस्त्र से कठोर और बड़ा पर्वत-शिखर टूटा, गिरा, चूर-चूर हुआ और सारी दिशाओं में बिखर गया; तो कपिकुलराज की आँखों से अंगारे छूटे और उसने अपने हाथ से भूदेवी का पेट चीरते-से एक पेड़ को उखाड़ लिया। १०८४

कॉण्डमा मरत्तै यम्बिन् कूट्टत्तार् काट्टत् तक्क
कण्डमा यिरत्तिन् मेलु मुळवॆंनक् कण्डङ् गण्डान्
विण्डवा ळरक्कन् मीदु विशुम्बॅरि पऱक्क विट्टान्
पण्डैमाल् वरैयित् मिक्क वौरुहिरि परिदि मैन्दन् 1085

कॉण्ट मा मरत्तै–उठाये हुए बड़े वृक्ष को; अम्पिन् कूट्टत्ताल्–शरों की राशियों से; काट्टत् तक्क–दिखाने योग्य; कण्टम् आयिरत्तिन् मेलुम्–सहस्र खण्डों से भी अधिक; उळ–हैं; ॲन–ऐसी कहने योग्य रीति से; कण्टम् कण्टान्–(रावण ने) खण्ड-खण्ड बना दिया; परिति मैन्तन्–सूर्यपुत्र; विण्ट–जिसने तोड़ा उस; वाळ् अरक्कन् मीतु–क्रूर राक्षस पर; ॲरि–आग; विचुम्पु पऱक्क–आकाश में उड़े ऐसा; पण्टै–पहले के; माल् वरैयिन् मिक्कतु–बड़े पत्थर से भी बड़ा; ऑरु किरि–एक पर्वत; विट्टान्–फेंका। १०८५

रावण ने उसके इतने खण्ड बना दिये जो सहस्रों अस्त्रों द्वारा बनने वाले खण्डों से भी कहीं अधिक रहे। तब सूर्यसूनु ने एक गिरि को फेंका जो पहले के पत्थर से बड़ी थी। और आकाश में अंगारे उड़ने लगे। १०८५

अक्किरि यित्तैयु माङ्गो रम्बिना लऱुत्तु माऱ्ऱित्
तिक्किरि दरप्पोर् वॆंन्ऱ शिलैयित्तै वळैय वाङ्गिच्
चुक्किरी वत्ऱत् मार्बिऱ् पुङ्गमुन् दोत्ऱा वण्णम्
उक्किर वयिर वाळि यौत्ऱुपुक् कॊळिक्क वॆय्दान् 1086

आङ्कु–तब; अ किरियिनैयुम्–उस गिरि को भी; ओर् अम्पिनाल्–एक अस्त्र से; अऱुत्तु–काटकर; माऱ्ऱि–बेकार करके; तिक्कु इरि तर–दिशाओं में छितर जाए ऐसा; पोर् वॆन्ऱ–युद्धविजयी; चिलैयिनै–धनु को; वळैय वाङ्कि–झुकाकर; उक्किर–उग्र; वयिरम् वाळि–सुदृढ़ बाण; ऒन्ऱ–एक को; चुक्किरीवन् तन् मार्पिल्–सुग्रीव के वक्ष में; पुङ्कमुम् तोन्ऱा वण्णम्–पुंख भी बाहर न दिखें, ऐसा; पुक्कु ऒळिक्क–गड़कर छिपने देते हुए; ऎय्तान्–चलाया। १०८६

रावण ने अपने युद्धविजयी धनुष को झुकाकर एक बाण चलाया, जिससे वह गिरि कटकर बेकार हो गयी और उसके टुकड़े दिशाओं में सवेग चले। फिर उसने एक उग्र बाण सुग्रीव पर चलाया जो सुग्रीव के वक्ष में ऐसा धँस गया कि उसका पुंख भी बाहर नहीं दिखायी दिया। १०८६

शुडुहणै पडुद लोडुन् दुळङ्गिनान् तुळङ्गा मुन्नम्
कुडदिशै वायि निन्ऱ मारुदि पुहुन्द कोळ्है
उडनुरैन् दरिन्दा नॆन्न वोरिमै यॊडुङ्गा मुन्नर्
वडदिशै वायिल् वन्दु मन्नवन् मुन्न रानान् 1087

चुटु कणै–दाहक बाण के; पटुतलोटुम्–लगते ही; तुळङ्किनान्–शिथिल पड़ गया (सुग्रीव); तुळङ्का मुन्नम्–मूर्च्छित होने से पहले; पुकुन्त कोळ्कै–घटित घटना को; उटन् उऱैन्तु–साथ रहकर; अऱिन्तान् ऎन्न–जान लिया-जैसे; कुट तिचै वायिल्–पश्चिम दिशा के द्वार पर; निन्ऱ मारुति–(जो) रहा (वह) मारुति; ओर् इमै ऒटुङ्का मुन्नर्–पलक के एक बार झपने के अन्दर; वट तिचै वायिल् वन्तु–उत्तरी दिशा के द्वार पर आकर; मन्नवन्–राजा के; मुन्नर् आनान्–सामने वाला बन गया। १०८७

जलनेवाला वह शर जब सुग्रीव पर लगा तब वह शिथिल पड़ गया। उसके मूर्च्छित होने से पहले हनुमान उत्तरी द्वार पर से पलक झपती देर में सुग्रीव के सामने आ गया मानो वह उसके साथ ही रहकर उसका हाल जान गया हो। १०८७

परिदिशेय् तेऱा मुन्नम् परुवलि यरक्क पल्पोर्
पुरिदियो वॆन्नो ऎन्नाप् पुहैयॆऴ विऴित्तुप् पॊङ्गि
वरुदियो वावॆन् बान्मेन् मलैयॊन्ऱु निलैयिन् वाङ्गिच्
चुरुदियै यनैय तोळाल् वीशिनान् कालिन् तोन्ऱल् 1088

परु वलि अरक्क–बहुत बलवान राक्षस; परिति चेय्–सूर्य के पुत्र के; तेऱा मुन्नम्–होश प्राप्त करने से पहले; ऎन्नोटु–मेरे साथ; पल् पोर्–विविध युद्ध; पुरितियो–करोगे क्या; ऎन्ना–ऐसा कहने पर; पुकै ऎऴ–धुआँ निकालते हुए; विऴित्तु–घूरकर; पॊङ्कि–उबलकर; वरुतियो–आओगे; वा–आओ; ऎन्पान् मेल्–कहनेवाले (रावण) पर; कालिन् तोन्ऱल्–वायुपुत्र; मलै ऒन्ऱु–एक पर्वत को; निलैयिल् वाङ्कि–जड़ से उखाड़ लेकर; चुरुतियै अनैय–श्रुति ही सम; तोळाल्–हाथों से; वीचिनान्–फेंका। १०८८

हनुमान ने रावण को ललकारा। सूर्यपुत्र के मूर्च्छा से जागने के पूर्व मेरे साथ विविध प्रकार से लड़ोगे क्या? रावण ने यह सुनकर, आँखों से अंगारे छोड़ते हुए घूरकर कहा कि युद्ध करने आये हो क्या? आओ। तब हनुमान ने एक पर्वत को मूल से उखाड़कर अपने श्रुति-सम (अक्षय शक्ति वाले) हाथों से फेंक दिया। १०८८

मीयॅ़ळु मेह मॅल्लाम् वॅन्दुवॅङ् गरियिऱ् चिन्दित्
तीयॅ़ळ विशुम्बि नूडु शॅल्हिन्ऱ शॅयले नोक्कि
कायहणै यैन्दु मैन्दुङ् गडुप्पुरत् तॊहुत्तुक् कण्डित्
तायिरङ् गूऱु शॅय्दा नमररै यलक्कण् शॅय्दान् 1089

अमररै अलक्कण् चॅय्तान्–देवकष्टकारी; मी ऍ़ळु मेकम् ऍल्लाम्–आकाश-चारी सभी मेघों को; वॅन्तु–जलाकर; वॅम् करियिल्–गरम कोयले के रूप में; चिन्ति–गिराकर; ती ऍ़ळ–अंगारे बिखेरते हुए; विचुम्पिन् ऊटु–आकाश-मार्ग पर; चॅल्किन्ऱ–जो जा रहा था; चॅयलै नोक्कि–उस प्रक्रिया को देखकर; काय् कणै–जलते अस्त्र; ऐन्तुम् ऐन्तुम्–पाँच और पाँच, दस को; कटुप्पु उऱ–सवेग; तॊकुत्तु–चलाकर; कण्टित्तु–खण्ड-खण्ड करके; आयिरम् कूऱु चॅय्तान्–सहस्र खण्ड बना दिये। १०८९

देवत्रासक रावण ने उस गिरि का आकाश में ऊपर उठनेवाले सभी मेघों को जलाकर गरम अंगारों के रूप में बिखेरते हुए आना देखा। फिर जलानेवाले दस शर चलाकर उसे सहस्र टुकड़ों में खण्डित कर दिया। १०८९

मीट्टॊरु शिहरम् वाङ्गि वीङ्गुतोळ् विशैयिन् वीशि
ओट्टिना नोट्ट वानत् तुरुमिनुङ् गडुह वोडिक्
कोट्टुवॅञ् जिलैयिन् वाळि मुन्शॅन्ऱु कॊऱ्ऱप् पॊऱ्ऱोळ्
पूट्टिय वलयत् तोडुम् पूळियाय्प् पोयिऱ् ऱन्ऱे 1090

मीट्टु–फिर भी; ऒरु चिकरम् वाङ्कि–एक (शिखर) पर्वत को लेकर; वीङ्कु तोळ्–पुष्ट भुजाओं के बल का; विचैयिन्–जोर लगाकर; वीचि–उछालकर; ओट्टिनान्–फेंका; ओट्ट–फेंकने पर; वानत्तु उरुमिनुम्–आकाश की अशनि से भी; कटुक ओटि–शीघ्र जाकर; कोट्टु–झुके हुए; वॅम् चिलैयिन्–दारुण धनु के; वाळि मुन् चॅन्ऱु–बाण के सामने जाकर; कॊऱ्ऱम्–विजयी; पॊन् तोळ्–सुन्दर भुजा पर; पूट्टिय–धृत; वलयत्तोटुम्–वलय के साथ; पूळियाय् पोयिऱ्ऱु–धूल बन गया। १०९०

हनुमान ने और एक पर्वत उठाया और पुष्ट कन्धों का बल लगाकर उसे फेंका। तब वह आकाश की अशनि से भी तीव्र गति से चला और झुके हुए धनुष के बाण के आगे जाकर रावण के विजयदायक सुन्दर हाथों के भूषण वलय के साथ धूल में परिणत हो गया। १०९०

मॆय्यरिन् दळत्तुरु पॊङ्गि वॆङ्गणान् विम्मि मीट्टोर्
मैवरै वाङ्गु वानै वरिशिलै वळैय वाङ्गिक्
कैयिनुम् दोळिन् मेलु मार्बिनुङ् गरक्क वाळि
एयिरण् डळुन्द वॆय्दा नवननै यार्रि निन्रान् 1091

वॆम् कणान्–कठोर दृष्टि वाले ने; विम्मि–खिन्न होकर; मीट्टु–फिर; ओर् मै वरै–एक काले पर्वत को; वाङ्कुवानै–उठानेवाले (हनुमान) को देख; मॆय् ऎरिन्तु–शरीर के जलते; अळत्तु पॊङ्कि–खौल उठकर; वरि चिलै–सबन्ध धनु को; वळैय वाङ्कि–झुकाकर; कैयितुम्–हाथों; तोळित् मेलुम्–कन्धों पर और; मार्पितुम्–वक्ष में; करक्क–छिप जाएँ ऐसा; ऐयिरण्टु वाळि–दस शर; अळुन्त ऎय्तान्–सवेग चलाये; अवन्–वह; अवै–उनको; आर्रि नित्रान्–झेलकर (बेधड़क) खड़ा रहा। १०९१

कठोर दृष्टि वाले रावण का मन खौल उठा। उधर हनुमान दूसरी एक काली गिरि को उठा रहा था। आग-सी लगी देह वाले रावण ने गुस्से के साथ सबन्ध धनु को झुकाकर दस शर चलाए जो हनुमान के हाथों, कन्धों और वक्ष में घुसकर छिप गये। पर हनुमान बेधड़क उन्हें सहता रह गया। १०९१

यारिदु शॆय्य हिऱ्पा रॆन्रुहॊण् डिमैयो रेत्त
मारुदि पिन्नु माङ्गोर् मरामरङ् गैयिन् वाङ्गि
वेरॊडुम् जुळऱ्ऱि विट्टान् विडुदलु मिलङ्गै वेन्दन्
शारदि तलैयैत् तळ्ळिच् चॆन्ऱदु निरुदर् शाय 1092

यार्–कौन; इतु–यह; चॆय्यकिऱ्पार्–कर सकेगा; ऎन्ऱु कॊण्टु–ऐसा कहते हुए; इमैयोर् एत्त–देवों के बधाई देते; मारुति–हनुमान ने; पिन्नुम्–फिर से; आङ्कु–वहाँ; ओर् मरामरम्–एक सालवृक्ष; वेरॊटुम्–जड़ के साथ; कैयिन् वाङ्कि–हाथ में लेकर; चुळऱ्ऱि विट्टान्–घुमाकर फेंका; विटुतलुम्–फेंकते ही; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा के; चारति तलैयै–सारथी के सिर को; तळ्ळि–गिराकर; निरुतर् चाय–राक्षसों को मारते हुए; चॆन्ऱतु–चला। १०९२

देवों ने यह देखकर हनुमान को सराहा कि ऐसा और कौन कर सकेगा? मारुति ने समूल एक सालवृक्ष को उठाकर घुमाया और फेंका। उसने लंकापति के सारथी के सिर को गिराकर राक्षसों को मरवा दिया। १०९२

माऱ्ऱियोर् पाह नेर मऱितिरैप् परवै पिन्नुम्
शीऱ्ऱिय दनैय नाङ्गोर् शॆऱ्ऱिहळ् लरक्कर् तेवन्
नूऱुकोल् नॊय्दि नॆय्दा नवैयुड नुळैद लोडुम्
आऱुपोर् कुरुदि शोर वनुमत्तु मलक्क णुऱ्ऱान् 1093

मारि–बदले में; ओर् पाकन् एर्–एक सारथी सवार हुआ तो; मद्रि तिरै परवै–तीर पर टकराकर मुड़नेवाली तरंगों से पूर्ण समुद्र; पित्तुम् चीऱियतु–कुपित हुआ; अनैयन्–जैसा जो रहा; कळल् चॆऱि–पायलधारी; ओर् अरक्कर् तेवन्–राक्षसों का अद्वितीय नायक जो था उसने; आङ्कु–वहाँ; नूऱु कोल्–सौ अस्त्र; नीय्तिन्–शीघ्र; ॲय्तान्–चलाये; अवै–उनके; उटल्–शरीर में; नुळैतल् ओटम्–घुसते ही; कुरुति–रक्त; आऱु पोल्–नदी के समान; चोर–बहा और; अनुमतुम्–हनुमान भी; अलक्कण् उऱ्ऱान्–दुःखी हुआ। १०९३

दूसरा एक सारथी बदले में सवार हुआ। तीर से टकराकर मुड़ने वाली तरंगों से पूर्ण समुद्र गुस्सा करता हो, ऐसा रावण कुपित हुआ। वीरपायलधारी राक्षसों के प्रभु ने तब एक सौ शर चलाये। वे हनुमान के शरीर पर घुसे; त्योंही रक्त नदी के रूप में बहने लगा और हनुमान क्षुब्ध हुआ। १०९३

कऱ्कॊण्डुम् मरङ्गळ् कॊण्डुङ् गैक्कॊण्डुङ् गळितु तुम्वाय्च्
चॊऱ्कॊण्डु मयिरित् पुन्ऱोल् तोळ्हॊण्डुन् दुळ्ळि वॆळ्ळिप्
पऱ्कॊण्डु मलैहिन् ऱारिऱ् पळिहॊण्डु पयन्दवि यान्ओर्
विऱ्कॊण्डु निन्ऱ पोदु विऱल्कॊण्डु मीडिर् पोलाम् 1094

तुम् वाय् चॊल् कॊण्टु–तुम मुख में जो आये वह कहते हुए; कल् कॊण्टुम्–पत्थर लेकर और; मरङ्कळ् कॊण्टुम्–तरुओं से; कै कॊण्टुम्–हाथों से; मयिरित्–रोमपूर्ण; पुन् तोल्–क्षुद्र चमड़े के; तोळ् कॊण्टुम्–कन्धों के साथ; वॆळ्ळि पल् कॊण्टुम्–रजत (-सम) दाँतों से और; तुळ्ळि कळित्तु–उछल-कूद मचाकर आनन्द मनाते हुए; मलैकिन्ऱारिल्–लड़ते जो हो ऐसे तुमसे; पयन्ततु–लड़ने से मेरा डरना (संकोच करना); पळिकॊण्टु–अपयश से (डरकर); यान्–मैं; ओर् विल् कॊण्टु–एक हाथ लेकर; निन्ऱ पोतु–जब खड़ा हो जाऊँ तब; विऱल् कॊण्टु–अपने बल के बल से; मीटिर् पोल् आम्–(जीवित) लौट सकोगे क्या। १०९४

रावण ने डींग मारी। तुम लोग जो मुख में आये वही बकते आते हो। पत्थर व पेड़ लाकर, अपने हाथों, रोमावृत क्षुद्र चमड़े-भरे कन्धों और रजत (-श्वेत) दाँतों से उछल-कूद मचाते हुए उत्साहपूर्वक लड़ते हो! मैं संकोच करता हूँ कि अल्प वानरों को मारना लंकाधिपति के लिए अपयश का कारण बन जाय! नहीं तो मैं धनु लेकर खड़ा हो जाऊँ तो तुम लोग अपने बल के बल से लौट भी जा सकोगे क्या? । १०९४

ॲन्ऱुरैत् तॆयिऱ्ऱुप् पेळ्वा यॆरियुह नहैशॆय् दियाणर्प्
पॊन्ऱॊडर् वडिम्बित् वाळि कडॆयुहत् तुरुमुप् पोल
ऑन्ऱिनोन् ऱिदिह माह वायिर कोडि युय्त्तान्
शॆन्ऱदु कुरङ्गुच् चेनै कालॆरि कडलिर् चिन्ऱि 1095

ॲन्ऱु उरैत्तु–यह कहकर; ॲयिऱु–वक्र दाँतों वाले; पेळ् वाय्–फटे-से मुख

से; ऑरि उक–आग निकले ऐसा; नकै चॅय्तु–हँसकर; कटै उकत्तु–युगांत की; उरुमु पोल्–अशनि के समान; याणर्–सुन्दर; पौन् तौटर्–स्वर्ण के बने; वटिम्पिन्–फलों के; आयिरम् कोटि वाळि–सहस्र करोड़ शर; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱु अतिकमाक–एक से बढ़कर एक बढ़े ऐसा; उय्त्तान्–चलाये; काल् ऑरि कटलिल्–पवनोद्वेलित समुद्र के समान; कुरङ्कु चेनै–वानर-सेना; चिन्ति चॅन्ऱतु–तितर-बितर हो गयी। १०६५

ऐसा कहकर उसने अपने दंतुले बड़े मुख को फाड़ता हुआ-सा खोला और उसके द्वारा अंगारे निकालते हुए हँसा। फिर उसने युगान्त-कालीन अशनि के समान स्वर्णफलों के सहस्र करोड़ अस्त्र, जो एक से बढ़कर एक अधिक बलवान थे, चलाये। तब पवनताडित समुद्र के समान वानर-सेना बिखर गयी। १०९५

कलक्किय वरक्कन् विल्लिन् कल्वियिन् कविह ळुऱ्ऱ
अलक्कणुन् दलैवर् शॅय्द तन्मैयु मप्पैयक् कण्डान्
इलक्कुव नॅन्ऱगै वाळिक् किलक्किव निवनै यिन्ऱु
विलक्कुव नॅन्ऩ वन्दान् विल्लुडै मेरु वॅन्न 1096

कलक्किय–(सेना को) क्षुब्ध करनेवाले; अरक्कन्–राक्षस (रावण) की; विल्लिन् कल्वियिन्–धनुर्विद्या के फलस्वरूप; कविकळ् उऱ्ऱ–कपियों का प्राप्त; अलक्कणुम्–दुःख और; तलैवर् चॅय्त–वानरयूथपों का कृत; तन्मैयुम्–कार्य; अमैय कण्टान्–(जिन्होंने) खूब देखा; इलक्कुवन्–वे लक्ष्मण; ऍन् कै वाळिक्कु–मेरे हाथ के अस्त्र का; इलक्कु इवन्–लक्ष्य है यह; इवनै–इसको; इन्ऱु–आज; विलक्कुवन्–रोक दूंगा; ऍन्न–कहते हुए; विल् उटै मेरु ऍन्न–धनु-सहित मेरु के समान; वन्तान्–आये। १०६६

लक्ष्मण ने वानर-सेना को क्षुब्ध करनेवाले रावण की धनुर्विद्या के फलस्वरूप वानरों का कष्ट पाना और वानरयूथपों की वीरता देखी। यह कहते हुए कि मेरे हाथ के बाण का निशाना यही है; आज इसको रोक दूंगा, वे स-धनु मेरु के समान सामने आये। १०९६

तेयत्तिन् तलैवन् मैन्दन् शिलैयैना णॅऱिन्दान् तीय
मायत्तिन् वित्तै वल्लार् निलैयॅन्नै मुडिविन् मारि
आयत्ति निडियि दॅन्ऱे यञ्जिन वुलहम् यानै
शीयत्तिन् मुळक्कङ् गेट्टल् पोन्ऱनर् शॅरुन रॅल्लाम् 1097

तेयत्तिन्–देश के; तलैवन् मैन्तन्–राजा के पुत्र; चिलैयै–धनु के; नाण् ऍऱिन्तान्–डोरे को टंकोर दिया; तीय–नृशंस; मायत्तिन् वित्तै वल्लार्–माया-कार्य में समर्थ; निलै ऍन्नै–(राक्षसों का) हाल क्या हुआ; मुटिविल्–युगांत में; मारि आयत्तिन्–बरसनेवाले मेघ की; इटियै इतु–अशनि यही; ऍन्ऱु–सोचकर;

अञ्चित उलकम्–डरे सभी लोक; चॅरुनर् ऍल्लाम्–लड़नेवाले सभी; यानै–गज ने; चीयत्तित् मुळक्कम्–सिंहगर्जन; केट्टल्–सुन लिया; पोत्रतर्–जैसे बने। १०६७

सारी पृथ्वी के राजा दशरथ के पुत्र ने अपने धनु के डोरे को टंकोरा। तब नृशंस मायाकारी राक्षसों का कैसा हाल हुआ, क्या कहा जाय? सारे लोक यह सोचकर डर गये कि यह युगान्त के मेघ की अशनि की भीमध्वनि ही है! योद्धाओं ने सिंह-गर्जन को गज सुनते हों-जैसे उस ध्वनि को सुना। १०९७

आऱ्ऱल्शा लरक्कत् ऱातु मयनिऩ्ऱ वयवर् नॅञ्जम्
वीऱ्ऱुवीऱ् ऱाहि युऱ्ऱ तन्मैयुम् वीरन् तम्बि
कूऱ्ऱिनुवॅम् बुरुव मऩ्न शिलैनॅडुङ् गुरलुङ् गेळा
एऱ्ऱिनत् महुडम् ऍन्ने यिवनॉरु मनिश नॅन्ता 1098

आऱ्ऱल् चाल्–बलवान; अरक्कत् तातुम्–राक्षस ने भी; अयल् निऩ्ऱ–पास स्थित; वयवर् नॅञ्चम्–वीरों का मन; वीऱ्ऱु वीऱ्ऱु आकि–विविध तरह का हो; उऱ्ऱ तन्मैयुम्–जो बना वह हाल (देखकर); वीरत् तम्पि–वीर राघव के कनिष्ठ भ्राता के; कूऱ्ऱिन्–यम की; वॅम् पुरुवम् अन्न–कठोर भौंहों के समान; चिलै–धनु के; नॅट्टुम् कुरलुम्–गम्भीर नाद को; केळा–सुनकर; ऍन्ने–क्या; इवत् ऒरु मनिचन्–यह भी एक नर है; ऍन्ता–ऐसा; मकुटम् एऱ्ऱितन्–मुकुट को ऊपर कर लिया। १०६८

बलवान राक्षस रावण ने पास स्थित वीरों के मन की विचित्र हालत देखी; श्रीवीरराघव के कनिष्ठ भ्राता के यम की कठोर भौंह-सम धनु की गंभीर हृदयविदारक ध्वनि सुनी। ओफ़! यह क्या है? यह भी नर है! ऐसा विस्मय करते हुए उसने अपने मुकुट को ऊपर कर लिया (शायद ध्वनि के कानों में पड़ने के फलस्वरूप मुकुट नीचे सरक आया था!)। १०९८

कट्टमै तेरिन् मेलुङ् गळिनॅडुङ् गळिऱ्ऱिन् मेलुम्
विट्टॅळु पुरवि मेलुम् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरक्कर् मेलुम्
मुट्टिय मळैयिन् ऱुळ्ळि मुऱैयिन्ऱि मॊय्क्कु मापोल्
पट्टन पहळि यॅङ्गुम् परन्ददु कुरुदिप् पव्वम् 1099

मुट्टिय–टकराती; मळैयिन् तुळ्ळि–धार की बूंदें; मुऱैयित्ऱि–क्रम तोड़कर सर्वत्र; मॊय्क्कुम् आ पोल्–बिखर पड़ीं जैसे; कट्टु अमै–सुगठित; तेरिन् मेलुम्–रथ पर और; कळि–मत्त; नॅटु कळिऱ्ऱित् मेलुम्–गजों पर और; विट्टु ऍळु–थल छोड़ उछलनेवाले; पुरवि मेलुम्–अश्वों पर; वॅळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों वाले; अरक्कर् मेलुम्–राक्षसों पर; पकळि–शर; पट्टत–लगे; कुरुति पव्वम्–रक्त-समुद्र; ऍङ्कुम् परन्ततु–सर्वत्र व्याप्त हुआ। १०६६

परस्पर टकराती वर्षा-धाराओं की बूँदों के समान, जो यत्र-तत्र गिरती हैं, लक्ष्मण के शर सुगठित रथों पर गिरे; मदमत्त बड़े गजों पर, उछल उठनेवाले अश्वों पर और श्वेतदन्त राक्षसों पर लगे। रक्त-समुद्र सब जगह व्याप्त हुआ। १०९९

नहङ्गळिऱ् पॅरिय वेऴ् नऱैमद वरुवि कालुम्
मुहङ्गळिऱ् पुक्क वाळि यपरत्तै मुऱ्ऱि मॉय्म्बर्
अहङ्गळैक् किऴित्तुत् तेरि नच्चित्तै युरुवि यप्पाल्
उहङ्गळिऱ् कडैशॅन् ऱालु मुलप्पिल वोड लुऱ्ऱ 1100

नकङ्कळिल्-पर्वतों से भी; पॅरिय वेऴम्-बड़े हाथियों के; नऱै मतम् अरुवि-सुगन्धित मदधारा; कालुम्-बहानेवाले; मुकङ्कळिल्-मुखों में; पुक्क वाळि-घुसे शर; अपरत्तै मुऱ्ऱि-उनके पृष्ठभागों में भरकर; मॉय्म्पर्-बलवानों (राक्षसों) के; अकङ्कळै किऴित्तु-वक्षों को चीरकर; तेरिन् अच्चित्तै-रथों की धुरियों को; उरुवि-निफरकर; अप्पाल्-बाद; उकङ्कळिन् कडै चॅन्ऱालुम्-युगान्त तक चलें तो भी; उलप्पु इल-रुके विना (चलेंगे ऐसा); ओटल् उऱ्ऱ चलने लगे। ११००

वे शर पर्वतों से भी बड़े हाथियों के मदनीरस्रावी मुखों पर लगे। शरीरों को भेदकर पिछले भागों में भरे। फिर वीरों के वक्षों को भेदकर, रथों की धुरियों से निफरकर बाद चलते रहे, मानो युगान्त में भी जाते रहेंगे। ११००

नूक्किय कळिऱुन् देरुम् पुरवियु नूऴिल् शॅय्य
आक्किय वरक्कर् तानै यॅयिरु कोडि कॅयॉत्
तूक्किय पडैहळ् वीशि युडऱ्ऱिय वुलहम् शॅय्द
पाक्किय मनैय वीरन् तम्बियैच् चुऱ्ऱुम् बऱ्ऱि 1101

नूक्किय-चलाये गये; कळिऱुम्-हाथियों; तेरुम् पुरवियुम्-रथों और अश्वों को; नूऴिल् चॅय्य-(लक्ष्मण के शरों ने) मिटा दिया तो; कॅयॉत्तु आक्किय-व्यूहगत; अरक्कर्-राक्षसों की; ऐयिरु कोटि तानै-दस करोड़ सेना; ऊक्किय पटैकळ्-युद्ध-योग्य हथियार; उलकम् चॅय्त-जगकृत; पाक्कियम् अनैय-भाग्य-सम; वीरन्-वीर श्रीराम के; तम्पियै-छोटे भाई को; चुऱ्ऱुम् पऱ्ऱि-चारों ओर से घेरकर; वीचि उटऱ्ऱिय-चलाकर लड़ी। ११०१

लक्ष्मण के शरों ने उनके विरुद्ध चलाये गये हाथियों, अश्वों और रथों को मिटा दिया। तब व्यूहवर्गित दस करोड़ वीरों की सेना विश्वभाग्य श्रीराम के भ्राता लक्ष्मण के चारों ओर युद्धयोग्य अस्त्र-शस्त्रों को भेजकर लड़ी। ११०१

उरुपहै मनिद नित्तॅम् मिऱैवनै युरुहिर् पानेल्
वॅरुविदु नन्वम् वीर मॅन्ऱॉरु मेऱ्कोळ् तोन्ऱ

ऍऱिपडै यरक्क रेऱ्ऱा रेऱ्ऱकैम् माऱ्ऱा तॅन्ता
वऱियव रौरुवन् वण्मै पूण्डवन् मेऱ्चॅन् ऱॅन्न 1102

ऍरिपटै–हथियार फेंकनेवाले; अरक्कर्–राक्षस; उरु पकै मनितन्–बड़ा शत्रु मनुष्य; इन्ऱु–आज; ऍम् इऱैवर्तै–हमारे राजा के; उऱकिऱ्पान् एल्–के पास जायगा तो; नम् तम् वीरम्–हमारी वीरता; वॅरुवितु–व्यर्थ हो जाएगी; ऍन्ऱु–यह सोचने से; ओरु मेऱ्कोळ्–एक नवीन उत्साह; तोन्ऱु–उभर आया तो; एऱ्ऱु कै माऱ्ऱान्–याचक हाथ को जो रिक्त नहीं छोड़ता; ऍन्ता–उस भाँति; वण्मै पूण्टवन्–दातापन जिसने अपनाया था; ओरुवन् मेल्–ऐसे एक के पास; वऱियवर्–दरिद्र लोग; चॅन्ऱु ऍन्न–जाते हैं जैसे; एऱ्ऱार्–सामने खड़े रहे। ११०२

हथियार चलानेवाले राक्षसों में यह सोचकर नया उत्साह आया कि अगर यह शत्रु मानव हमारे प्रभु के पास पहुँच जायगा, तो हमारी वीरता व्यर्थ हो जायगी। तो वे इस तरह उन पर पिल पड़े, जिस तरह दानव्रती दाता के पास दरिद्र याचक जुट जाते हैं। ११०२

अऱुत्तन ऩरक्क रॅय्द वॅऱिन्दन वऱुत्त ऱाद
पॉऱुत्तनन् पहळि मारि पॉळिन्दन ऩुयिरिन् बोहम्
वॅऱुत्तन ऩमऩुम् वेलै युदिरत्तिन् वॅळ्ळ मोळ
मऱित्तन मऱिन्द वॅङ्गुम् पिणङ्गळम् मलैहळ् माऩ 1103

पकळि मारि–शर-वर्षा; पॉळिन्तनन्–लक्ष्मण ने करायी; अरक्कर ऍय्त–राक्षसों द्वारा चलाये और; ऍऱिन्तन–फेंके गये (हथियार); अऱुत्ततन्–खण्ड-खण्ड किये; अऱुत्तु अऱात–जो काटे नहीं कटे; पॉऱुत्ततन्–उनको सह लिया; ममऩुम्–यम ने भी; उयिरिन् पोकम्–जीवन के भोग से; वॅऱुत्ततन्–घृणा की; अम्मलैकळ् मात–सुन्दर पर्वतों के समान; पिणङ्कळ्–लाशें; ऍङ्कुम् मऱिन्त–सर्वत्र मुड़ी पड़ी रहीं; उतिरत्तिन् वॅळ्ळम्–रक्त के प्रवाह को; वेलै मोळ–समुद्र में जाने से; मऱित्तत–रोका। ११०३

लक्ष्मण ने शर-वर्षा कराकर राक्षसों द्वारा चलाये गये और फेंके गये सभी हथियारों को खण्डित कर दिया। जो काटे नहीं कटे, उन हथियारों को अपने शरीर पर झेल लिया। यम भी जीवों के भोज से उकता गया। सब जगह लाशें मुड़ी हुई गिरी रहीं और उन्होंने रक्त-प्रवाह को समुद्र में बहने से रोक दिया। और वह उलट बहा। ११०३

तलैयॅला मऱ्ऱ मुऱ्ऱुन् दाळॅला मऱ्ऱ तोळाम्
मलैयॅला मऱ्ऱ पॉऱ्ऱार् मार्बॅला मऱ्ऱ शूलत्
तिलैयॅला मऱ्ऱ वीर रॅयिऱॅला मऱ्ऱ कॉऱ्ऱच्
चिलैयॅला मऱ्ऱ कऱ्ऱ शॅरुवॅला मऱ्ऱ शिन्दि 1104

वीरर् तलै ऍलाम्–वीरों के सारे सिर; अऱ्ऱ–कटे; ताळ् ऍलाम्–सभी पैर; मुऱ्ऱुम् अऱ्ऱ–पूर्ण रूप से कटे; तोळाम् मलै ऍलाम् अऱ्ऱ–कन्धे रूपी सारे पर्वत कटे;

पोन् तार् मार्पु ॲलाम्–सुन्दर हारालंकृत वक्ष सभी; अऱ्ऱ–कटे; ॲयिऱु ॲलाम्–दांत सब; अऱ्ऱ–टटे; चूलत्तु इलै ॲलाम्–शक्तियों के फल सब; अऱ्ऱ–टूटे; कोऱ्ऱम् चिलै ॲलाम्–विजयदायी धनु सभी; अऱ्ऱ–खण्ड हुए; चिन्ति–तितर-बितर होने से; कऱ्ऱ वॅरु ॲलाम्–सीखे हुए युद्धतन्त्र सब; अऱ्ऱ–बेकार हुए। ११०४

सारे वीरों के सिर कटे; पैर, कन्धे रूपी पर्वत, स्वर्णहारालंकृत वक्ष और दाँत सभी टूटे। शूलों के फल और विजयदायी चाप सभी कट गये। राक्षस भागे इसलिए उनके युद्धतंत्र सारे बेकार गये। ११०४

तेरॅलान् दुमिन्द मावित् तिऱमॅलान् दुमिन्द शॅङ्गट्
कारॅलान् दुमिन्द वीरर् कऴलॅलान् दुमिन्द कण्डत्
तारॅलान् दुमिन्द निन्ऱ तनुवॅलान् दुमिन्द दत्तम्
पोरॅलान् दुमिन्द कोण्ड पुहऴॅलान् दुमिन्दु पोय 1105

तेर् ॲलाम्–सभी रथ; तुमिन्त–छिन्न हुए; मावित् तिऱम् ॲलाम्–अश्वों का बल सारा; तुमिन्त–नष्ट हुआ; चॅम् कट् कार् ॲलाम्–लाल (पीली) आँखों वाले सभी हाथी; तुमिन्त–खण्ड-खण्ड हुए; वीरर् कऴल् ॲलाम् तुमिन्त–सभी वीरों के कड़े टूटे; कण्टम् तार् ॲलाम्–कण्ठहार सभी; तुमिन्त–टूटे; निन्ऱ तनु ॲलाम्–(सीधे पकड़े गये) उठे हुए सभी धनु; तुमिन्त–टूटे; तम् तम् पोर् ॲलाम्–एक-एक का युद्ध (सामर्थ्य); तुमिन्त–बेकार हो गया; कोण्ट पुकऴ् ॲलाम्–अर्जित सभी यश; तुमिन्तु पोय–मिट चला। ११०५

सभी रथ, अश्वों का बल, लाल आँखों वाले मेघ-सम गज और वीरों की पायलें और कण्ठहार सभी टूट गये। सीधे उठाये गये चाप टूटे। सभी की वीरता व्यर्थ गयी और अर्जित यश भी मिट्टी में मिल गया। ११०५

अरवियल् तरुहण् वन्ऱा ळाळ्वीऴ आण्मेल् वीऴप्
परविमेर् पूट्कै वीऴप् पूट्कैमेर् पॊलन्ऱेर् वीऴ
निरविय तेरिन् ऱन्मेल् नॅडुन्दलै किडन्द नॅय्त्तोर्
विरविय कळत्तु ॲङ्गुम् वॅळ्ळिडै यरिदु वीऴ 110[illegible]

अरवु इयल्–सर्पस्वभाव; तरुकण्–निडर; वल् ताळ्–सबल पैरों वाले; आळ् वीऴ–पदाति वीर गिरे; आळ् मेल्–वीरों पर; पुरवि वीऴ–अश्व गिरे; मेल्–उन पर; पूट्कै वीऴ–हाथी गिरे; पूट्कै मेल्–गजों पर; पॊलम् तेर्–स्वर्णरथ; वीऴ–गिरे; निरविय–पंक्तियों में गिरे; तेरिन् तन् मेल्–रथों पर; नॅटु तलै–बड़े लम्बे सिर; किटन्त–पड़े रहे; नॅय्त्तोर्–रक्त; विरविय–मिश्रित; कळत्तुळ्–मैदान में; ॲङ्कुम्–सर्वत्र; वीऴ–गिरने के लिए; वॅळ्ळिडै–रिक्त स्थान; अरितु–दुर्लभ था। ११०६

सर्प के समान फुफकारते हुए, निडर और बलवान पैरों (प्रयत्न) के वीर गिर गये। उन पर अश्व गिरे। अश्वों पर गज गिरे। गजों पर

स्वर्णरथ गिरे। उन पर लम्बे सिर पड़े रहे। रक्त-भरे उस युद्धस्थल में रिक्त स्थान पाना दुर्लभ हो गया। ११०६

कडुप्पिन्ग णमर रेयुङ् गार्मुहत् तम्बु कैयाल्
तॊडुक्किन्ड़ान् तुरक्किन् ड़ानॆन् ङ्णर्न्दिलर् तुरन्द वाळि
इडुक्कॊन्ड़ुङ् गाणार् काण्ब दॆय्दको नॊय्दि नॆय्दिप्
पडुक्किन्ड़ पिणत्तिन् पम्मड़् कुप्पॆयिन् परप्पे पल्हाल् 1107

कटुप्पिन् कण्–तेजी के समय; अमररेयुम्–सुर भी; कार् मुकत्तु–धनु पर; अम्पु–शरों को; कैयाल् तॊटुक्किन्ड़ान्–हाथ से लगाता है; तुरक्किन्ड़ान्–छोड़ता है; ऎन्ड़ु–ऐसा; उणर्न्तिलर्–समझ नहीं पाते; तुरन्त वाळि–प्रेषित शर का; इटुक्कु ऒन्ड़ुम्–लगना कुछ; काणार्–नहीं देखते; काण्पतु–जो देखते हैं वह है; ऎय्त कोल्–प्रेषित शर; पल् काल्–अनेक बार; नॊय्तिन् ऎय्ति–सवेग जाकर; पटुक्किन्ड़–जो गिराते हैं उन; पिणत्तिन्–लाशों के; पम्मल् कुप्पॆयिन्–ढेरों के समूहों का; परप्पे–विस्तार ही। ११०७

लक्ष्मण की फुर्ती ऐसी थी की देव भी नहीं देख सके कि कब वे शर धनु से लगाते हैं और चलाते हैं। प्रेषित शर जाकर कहाँ लगते हैं—यह भी नहीं जान पाते। पर वे जो देख सकते हैं वह अनेक बार प्रेषित शरों द्वारा हत होकर गिरी हुई लाशों के ढेरों का विशाल विस्तार ही है। ११०७

कॊऱ्ऱवाळ् कॊलैवेल् शूलम् कॊडुञ्जिलै मुदल वाय
वॆऱ्ऱिवॆम् बडैहळ् यावुम् वॆन्दॊऴि लरक्कर् मेऱ्कॊण्
डुऱ्ऱन कूऱ्ऱु मञ्ज वॊळिर्वन वॊन्ड़ु नूऱाय्
अऱ्ऱन वन्ड़ि यॊन्ड़ुम् अऱादन विल्लै यन्ड़े 1108

वॆम् तॊऴिल् अरक्कर्–क्रूर कर्मा राक्षसों के; मेल् कॊण्टु उऱ्ऱन–हाथ में ले प्रयुक्त; कूऱ्ऱुम् अञ्च–यम भी भयभीत हो ऐसा; ऒळिर्वन–चमकनेवाले; कॊऱ्ऱम् वाळ्–विजयी खड्ग; कॊलै वेल्–घातक भाले; चूलम्–त्रिशूल; कॊटु शिलै–झुके हुए धनु; मुतल आय–आदि; वॆऱ्ऱि–विजयदायी; वॆम् पटैकळ् यावुम्–भयंकर आयुध सभी; ऒन्ड़ु नूऱाय्–एक-एक सौ-सौ में; अऱ्ऱन अन्ड़ि–कटे, इसके सिवा; अऱातत–जो नहीं कटा; ऒन्ड़ुम् इल्लै–वह एक भी नहीं था। ११०८

क्रूरकर्मी राक्षसों ने जो हथियार अपने हाथों में लेकर प्रयुक्त किये, वे सब यम को भी भयभीत करनेवाले तेज के थे। विजयदायी तलवारें, संहारक भाले, त्रिशूल, झुके हुए धनु आदि विजयी हथियार एक-एक सौ-सौ टुकड़े हुए। अनकटा एक भी हथियार नहीं रहा। ११०८

कुन्ड़न यानै मानक् कुरहदक् कॊडित्तेर् कोब
वत्तिरर् ...ळि शीयम् मऱ्ऱैय पिऱवम् मुऱ्ऱुम्

शॅऩ्ऱऩ वॆल्लै यिल्लै तिरिन्दऩ शिऱिदु पोदुम्
नित्ऱऩ विल्लै यॆल्लाङ् गिडन्दऩ नॆळिन्द पार्मेल् 1109

ॲल्लै इल्लै–असीम; चॆऩ्ऱऩ–जो गये; कुऩ्ऱु अऩ यातै–पर्वत-सम हाथी; मातम्–मस्ती-भरे; कुरकतम्–तुरंग; कॊटि तेर्–ध्वजायुक्त रथ; कोपम्–क्रुद्ध; वल् तिऱल्–कठोर बलवान; आळि–'याळि'; चीयम्–सिंह; मऱ्ऱैय–और अन्य; पिऱवुम्–जानवर; मुऱ्ऱुम्–सभी; चिऱितु पोतुम्–कुछ देर के लिए भी; तिरिन्तऩ–घूमे; नित्ऱऩ–खड़े रहे; इल्लै–नहीं; ॲल्लाम्–सभी; पार् मेल्–भूमि पर; किटन्तऩ–पड़े-पड़े; नॆळिन्त–छटपटाये। ११०९

पर्वत-सम गज असीम गये थे। शानदार अश्व और ध्वजा-शोभित रथ, क्रुद्ध, कठोर, बलवान 'याळि' और सिंह और अन्य जानवर भी थे। सब थोड़ी देर के लिए भी न घूमे न खड़े रहे। वे सब भूमि पर गिरकर तड़फड़ाये। ११०९

शायन्ददु निरुदर् तातै तमर्तलै यिडऱित् तळ्ळुऱ्
ऱोयन्दऩ वॊळिन्द वोडि युलन्दऩ वाह वऩ्ऱे
वेयन्ददु वाहै वीरऱ् किळैयवऩ् वरिविल् वॆम्बिक्
कायन्ददव् विलङ्गै वेन्दऩ् मऩमॆनुङ् गालच् चॆन्दी 1110

तमर् तलै–अपने लोगों के सिर; इटऱि–ढकेले जाकर; तळ्ळुऱ्ऱु–फेंके जाकर; ओय्न्तऩ–मरे; ऑळिन्त–बचे; ओटि उलन्तऩ आक–दौड़कर मरे बने; अऩ्ऱे–(इस रीति से) तभी; निरुतर् तातै–राक्षसों की सेना; चाय्न्ततु–हार गयी; वीरऱ्कु–वीर (श्रीराम) के; इळैयवऩ्–छोटे भाई के; वरिविल्–सबंध धनु ने; वाकै वेय्न्ततु–(वाहै फूल की) विजयमाला पहन ली (विजय पा ली); अ इलङ्कै वेन्तऩ्–उस लंका के राजा का; मऩम् ॲऩुम्–मन रूपी; कालम् चॆन्ती–(युगान्त) काल की लाल आग; वॆम्पि–तप्त होकर; काय्न्ततु–धधकी। १११०

राक्षसों के सिर काट गिराये गये और वे राक्षस मरे। जो नहीं मरे वे भागे और मरे। इस भाँति सारी राक्षस-सेना अस्तित्वहीन हो गयी। वीर श्रीराम के भाई, लक्ष्मण के सबन्ध धनु को विजय प्राप्त हो गयी। उस लंकाधिपति का मन रूपी युगान्त का लाल अनल तपकर धधका। १११०

काऱ्ऱुऱऴ् कलिऩ मान्देर् कडिदिनिऱ् कडाविक् कण्णुऱ्
ऱेऱ्ऱऩ निलङ्गै वेन्दऩ् ॲरिविळित् तिरामऩ् तम्बि
कूऱ्ऱुमाल् कॊण्ड दॆऩ्ऩक् कॊल्हिऩ्ऱाऩ् कुरुहच् चॆऩ्ऱाऩ्
शोऱ्ऱमुन् दानुम् निऩ्ऱाऩ् पॆयर्न्दिलऩ् शिऱिदुम् बादम् 1111

काऱ्ऱु उऱऴ्–(गति में) पवन-सम; कलितम्–रास-सहित; माऩ् तेर्–अश्वों के रथ को; कटितिऩिल्–तेज़ी के साथ; कटावि–चलाते हुए; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंका के राजा ने; कण्णुऱ्ऱु–(लक्ष्मण को) देखकर; ॲरि विळित्तु–आग्नेय वृष्टि डालकर; एऱ्ऱऩऩ्–(उनका) सामना किया; कूऱ्ऱु–यम; माल कॊण्टत ॲऩ्ऩ–

पागल हो गया हो ऐसा; कॉल्किन्ऱात्–जो वध करते रहे; इरामन् तम्पि–वे श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता; कुऱुक चॅन्ऱात्–उसके समक्ष गये; चीऱ्ऱमुम् तानुम् आक–क्रोध और वे बने; निन्ऱात्–खड़े रहे; पातम्–चरणों को; चिऱितुम्–कुछ भी; पॅयर्न्तिलन्–पीछे नहीं हटाया। १११९

लंकाराज गति में पवन-सम और रासयुक्त अश्वों से जुते रथ को सवेग चलाता हुआ आया और लक्ष्मण को आग्नेय दृष्टि से तरेरा। लक्ष्मण, जो पागल बने यम के समान धड़ाधड़ वीरों को मार गिरा रहे थे, रावण के समक्ष आये। वे तब सक्रोध खड़े रहे और उन्होंने चरणों को कुछ भी पीछे नहीं हटाया। ११११

काक्किन्ऱवॅन् नॅडुङ्गावलिन् वलिनीङ्गिय कळ्वा
पोक्किन्ऱुनक् करिदालॅनप् पुहन्ऱान्पुहै युयिर्प्पान्
कोक्किन्ऱन तॊडुक्किन्ऱन कॊलैयम्बुहळ् तलैयो
डीर्क्किन्ऱन कनलॊप्पन वॅय्दानिहल् शॅय्दान् 1112

काक्किन्ऱ–रक्षण करते रहे; ऍन् नॅट्टु कावलिन्–मेरे बड़े पहरे की; वलि–कठोरता से; नीङ्किय कळ्वा–बच निकले चोर; उनक्कु–तुम्हारा; इन्ऱु–आज; पोक्कु–(बच) जाना; अरितु–असाध्य है; ऍन–ऐसा; पुकन्ऱात्–कहकर; पुकै उयिर्प्पान्–धुएँ की साँस छोड़ते हुए; कोक्किन्ऱन–लगाये जानेवाले; तॊटुक्किन्ऱन–चलाये जानेवाले; तलैयोटु ईर्क्किन्ऱन–सिरों को खींच ले जानेवाले; कनल् ऑप्पन–अग्नि से तुल्य; कॊलै अम्पुकळ्–घातक बाण; ऍय्तात्–चलाकर; इकल् चॅय्तान्–युद्ध किया (लक्ष्मण ने)। १११२

लक्ष्मण ने रावण को संबोधित किया ! हे चोर जो रक्षणकार्य में लगे रहे मेरे पहरे की कठोरता से बच निकले थे ! आज तुम्हारा बच जाना असाध्य है ! साँसों के साथ धुआँ उठाते हुए लक्ष्मण ने सिरों को काट ले चलनेवाले, अनल-सम और घातक शरों को धनु पर लगाकर चलाते हुए युद्ध किया। १११२

ऍय्दान्शर मॅय्दावहै यिऱ्ऱीहॅन विडॅये
वॅदालॅन वॅदावित्न वडिवाळियि नऱुत्तान्
ऐदादलि नऱुत्तायिनि यऱुप्पायॅन वळिहार्
पॅय्दालॅतच् चरमारिहळ् शॊरिन्दान्तुयिल् पिरिन्दान् 1113

ऍय्तान् चरम्–(शर-) प्रेषक के शर; ऍय्ता वकै–पास न आये ऐसा; इटैये–बीच में ही; इऱ्ऱु ईकु ऍन–टूटकर नष्ट हो यह; ऍन वॅताल्–शाप दिया गया; ऍन–जैसे; वॅता–तीक्ष्ण; इत्त–सम प्रकारों में; वटि–बने; वाळियिन्–शरों से; अऱुत्तान्–काट लिये; तुयिल् पिरिन्तान्–निद्रात्यागी (ने); ऐतु आतलिन्–अल्प हैं, इसलिए; अऱुत्ताय्–काट दिया; इति–आगे; अऱुप्पाय्–काटो (तो देखें); ऍन–कहकर; अऴि कार्–लोकनाशक मेघ; पॅय्तात् ऍन–बरसते हों जैसे; चर मारिकळ्–शर-वर्षाएँ; चॊरिन्तान्–बरसा दीं (लक्ष्मण ने)। १११३

रावण ने उन शरों को आगे न आने देते हुए एक ही प्रकार के बने तीक्ष्ण शरों से ऐसा काट दिया, मानो शाप दिया गया हो कि बीच में ही कटकर नष्ट हो जाओ। तब नींद जो त्याग चुके (जबसे जंगल में आये तबसे) उन लक्ष्मण ने कहा कि वे बाण निर्बल थे। इसलिए काट दिया उन्हें। अब इन शरों को नष्ट करो तो देखें। फिर उन्होंने प्रलयकाल के लोकनाशक मेघों के समान शरवर्षा करायी। १११३

आङ्गुञ्जर मन्नैयान्विडुम् अयिल्वाळिह ळवैदाम्
वीङ्गुञ्जरम् परुवत्तिऴि मऴैपोल्वन विलक्कात्
तूङ्गुञ्जर नॅडुम्बुट्टिलिऱ् चुडर्वेलवऱ् किळैयान्
वाङ्गुञ्जरम् वाङ्गावहै यऱुत्तानऱ मऱुत्तान् 1114

अऱम् अऱुत्तान्–धर्मछेदक ने; आम् कुञ्चरम् अन्नैयान्–बलवान गज-सम (लक्ष्मण) द्वारा; विडुम्–चलाये गये; वीङ्कुम्–प्रवृद्ध; चरम् परुवत्तु–शरत्-काल की; इऴि मऴै–गिरनेवाली वर्षा; पोल्वन–के समान; अयिल् वाळिकळ् अवै ताम्–उन तीक्ष्ण शरों को; विलक्का–रोककर; चुटर् वेलवऱ्कु–तेजोमय भाले के धारक श्रीराम के; इळैयान्–छोटे भाई; तूङ्कुम्–लटकनेवाले; चरम् नॅटु पुट्टिलिल्–शर-भरे बड़े तूणीर में से; वाङ्कुम् चरम्–जो शर लेते रहे; वाङ्का वकै–उन्हें न लें इस भांति; अऱुत्तान्–(तूणीर को) काट दिया। १११४

धर्मछेदक रावण ने सबल गज-सम लक्ष्मण के शरत्कालीन वर्षा के समान आनेवाले तीक्ष्ण बाणों को रोका और तेजोमय भालाधारी श्रीराम के भाई के पीठ पर लटकने वाले तूणीर को काट गिराया ताकि वे उससे शर न निकाल सकें। १११४

अप्पोदैयि नयर्वाऱिय वनुमा नऴल्विऴियाप्
पॉय्प्पोर्शिल पुरियेलिनि यॅन्नवन्दिडैप् पुहुन्दान्
कैप्पोदह मॅन्नमुन्दवन् कडुन्देरॅदिर् नडन्दान्
इप्पोरॊऴि पिऩ्पोरुळ विवैहेळॅन्न विशैत्तान् 1115

अ पोतैयिन्–उस समय में; अयर्वु आऱिय–विश्रांत; अनुमान्–हनुमान; अऴल् विऴिया–आग्नेय दृष्टि करके; इनि–आगे; पॉय् पोर् चिल–कुछ झूठी लड़ाई; पुरियेल्–मत करो; ऍन्न–कहकर; इटै वन्तु पुकुन्तान्–बीच में आ प्रविष्ट हुआ; कै पोतकम् ऍन्न–सूंड़ वाले गज के समान; मुन्तु–तेजी से; अवन् कटु तेर् ऍतिर्–उसके तेज रथ के सामने; नटन्तान्–चला; इ पोर् ऒऴि–यह युद्ध छोड़ो; पिन्–पीछे; पोर् उळ–युद्ध हैं; इवै केळ्–ये (बातें) सुनो; ऍन्न–ऐसा; इचैत्तान्–बोला। १११५

तभी हनुमान मूर्च्छा से जागा। अग्नि के समान आँखें करते हुए और कुछ नकली लड़ाई मत करो —यह कहते हुए वह बीच में आ गया।

और सूंड़-सहित करि के समान बढ़कर रावण के तीव्रगामी रथ के समक्ष चला और बोला कि यह युद्ध छोड़ो। आगे बहुत युद्ध होंगे। अब ये बातें सुनो। १११५

वॆन्ऱायुल मूवुलहुम् मॆलियानॆडु वलियाल्
तिन्ऱाय्शॆरि कऴलिन्दिर निशैयैत्तिशै तिरिन्दाय्
ऎन्ऱालुमिन् ऱुऴिवुन्वयि नॆय्दुम्मॆन विशैया
निन्ऱानव नॆदिरेयुल हळन्दानॆन निमिर्न्दान् 1116

मॆलिया–अथक; नॆट्टु वलियाल्–अधिक बल से; उलकु ऒरु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों को; वॆन्ऱाय्–(तुमने) जीता; तिचै तिरिन्ताय्–(दिग्विजय करके) दिशाओं में घूमे; चॆरि कऴल्–सुन्दर पायलधारी; इन्तिरन् इचैयै–इन्द्र के यश को; तिन्ऱाय्–खा लिया; ऎन्ऱालुम्–तो भी; इन्ऱु–आज; उन् वयिन्–तुम्हारे पास; अऴिवु ऎय्तुम्–मृत्यु आयेगी; ऎन–ऐसा; इचैया निन्ऱान्–कहते हुए; अवन् ऎतिरे–उसके सामने; उलकु अळन्तान् ऎन–लोकमापक (त्रिविक्रम) के समान; निमिर्न्तान्–ऊँचा खड़ा हुआ। १११६

तुमने कभी शिथिल न पड़नेवाली अपनी बड़ी शक्ति से तीनों लोकों को जीता। दिग्विजयार्थ सारी दिशाओं में घूम आये। मनोरम पायल-धारी इन्द्र के यश को कवलित कर लिया। तो भी अब मृत्यु तुम्हारे पास आ गयी है। ऐसा कहते हुए हनुमान लोकमापक श्रीत्रिविक्रमदेव के समान बढ़कर ऊँचा खड़ा हो गया। १११६

ऎडुत्तान्वलत् तडक्कैयिनै यदुपोयुल हॆल्लाम्
अडुत्ताङ्गुऱ वळर्न्दान्तिरु वडियिन्पडि याये
मडुत्ताङ्गुऱ वळर्न्दानॆन वळर्हिन्ऱव नुरुवम्
कडुत्तानॆनक् कॊडियाऱ्कॆदिर् काण्बायॆनक् काट्टा 1117

वळर्न्तान्–जो बढ़ा; तिरुवटियिन् पटियाये–'श्रीलघुचरण' के नाम के अनुकूल; मट्टुत्तु–भरकर; आङ्कु उऱ वळर्न्तान्–वहाँ युक्त रीति से वर्धित हुआ; ऎन–ऐसा; 'उरुवम् वळर्किन्ऱवन्–आकार में बढ़नेवाले (हनुमान) ने; तट वलम् कैयिनै–अपने विशाल बलवान हाथ को; ऎटुत्तान्–उठाया; अतु–वह; उलकु ऎल्लाम्–सारे लोकों में; पोय् अटुत्तु–जा व्याप्त हो; आङ्कु उऱ–वहाँ रहा; कटु तान् ऎन–विष ही सम; कॊटियाऱ्कु–क्रूर (रावण) के; ऎतिर्–सामने; काण्पाय्–देखो; ऎन काट्टा–कहकर दिखाकर। १११७

(हनुमान को तमिऴ देश के वैष्णव सन्त "शिऱिय तिरुवडि" लघु श्रीचरण कहते हैं और गरुड़ को गुरु श्रीचरण कहकर स्तुति करते हैं।) अब जो वर्धित हुआ वह अपने 'लघु श्रीचरण' के नाम के अनुकूल उन श्रीचरणों के समान बढ़ा। उसने अपने विशाल बलवान हाथों को उठाया।

वह सारे लोकों को अपने में समाये रहा। उसने विष ही तुल्य रावण के समक्ष वह करिश्मा दिखाया और कहा कि देखो। १११७

विल्लायुद मुदलाहिय विऱल्वॆम्बडै मिडलो
डॆल्लामिडै पयिन्ऱाय्पुय नालैन्दिनॊ डियैन्दाय्
वल्लाय्शॆरु वलियाय्तिऱन् मऱवोयिह लॆन्दिरे
निल्लायॆन निहळ्त्तानॆडु नॆरुप्पामॆन वुयिर्प्पान् 1118

विल् आयुतम् मुतल् आकिय–धनु, हथियार आदि; विऱल्–विजय के लिए आवश्यक; वॆम् पटै ऍल्लाम्–घातक सभी अस्त्रों के प्रयोग को; मिटलोटु–दृढ़ता के साथ; इटै–इस संसार में; पयिन्ऱाय्–अभ्यास द्वारा सीख चुके हो; पुयम् नालैन्दिनॊटु–(चार के पाँच) बीस भुजाओं से; इयैन्ताय्–युक्त हो; चॆरुवलि वल्लाय्–युद्ध में समर्थ हो; आय् तिऱल्–विमर्शनीय बल से युक्त; मऱवोय्–वीर; इकल्–लड़ने; ऍतिरे निल्लाय्–समक्ष खड़े रहो; ऍन्न निकळ्त्ता–ऐसा कहकर; नॆटु नॆरुप्पु आम् ऍन्न–बड़ी आग ही के समान; उयिर्प्पान्–साँस छोड़ी। १११८

तुमने धनु आदि कठोर हथियारों का कठोरता के साथ अभ्यास किया है। बीस भुजाओं से युक्त हो। युद्ध में प्रवीण हो। सबके द्वारा विमर्शनीय बल के साथ रहते हो! हे वीर! अब युद्ध करने आकर खड़े हो। जाओ तो! यह कहकर उसने अग्नि के समान साँसें छोड़ीं। १११८

नीळाण्मैयि नुडनॆदिर् निन्ऱायिः(ह्) दॊन्ऱो
वाळाण्मैयु मुलहेळिनॊ डुडनेयुडै वलियुम्
ताळाण्मैयु निहरारुमिल् तनियाण्मैयु मिनिनिन्
तोळाण्मैयु मिशैयोडुडन् ऱुडैप्पेनॊरु पुडैप्पाल् 1119

नीळ् आण्मैयिन् उटने–बहुत पौरुष के साथ; ऍतिर् निन्ऱाय्–समक्ष खड़े हो; इ..तु ऒन्ऱो–यह कोई बात है; वाळ् आण्मैयुम्–तलवार चलाने की वीरता; उलकु एळिनॊटु–सातों लोकों को; उटने उटै–तत्काल नाश करने की; वलियुम्–क्षमता; ताळाण्मैयुम्–प्रयत्न; आरुम् निकर् इल्–कोई सानी नहीं ऐसा; तनि आण्मैयुम्–अनुपम पौरुष; निन् तोळ् आण्मैयुम्–और तुम्हारा भुजबल; इचैयोटु–यश के साथ; उटन् ऒरु पुटैप्पाल्–लगे एक ही प्रहार से; इनि–अब; तुटैप्पेन्–मिटा दूंगा। १११९

(हनुमान ने आगे कहा—) बहुत गंभीर पौरुष के साथ तुम आ खड़े हो। वही एक क्या? तलवार चलाने का सामर्थ्य, सातों लोकों को एक साथ मिटाने की शक्ति, यत्नशीलता, बेजोड़ साहस और तुम्हारा भुजबल —इन सबको तुम्हारे यश के साथ अभी एक ही प्रहार से मिटा दूंगा। १११९

परक्कप्पल वुरैत्तॆन्वडर् कयिलैप्पॆरु वरैक्कुम्
अरक्कुर्ऱॆरि पॊऱिक्कटशैक् करिक्कुञ्जिऱि दनङ्गा

उरक्कुप्पैयि नुयर्तोळ्पल वुडैयायुर नुडैयाय्
कुरक्कुत्तनिक् करत्तिर्रोडप् पोरैयाऱ्रुवै कोल्लाम् 1120

पल–अनेक; परक्क–विस्तार से; उरैत्तु ॲन्–कहकर क्या होगा; पटर् कयिलै–बड़े कैलास के; पॅरु वरैक्कुम्–बड़े पर्वत के सामने और; अरक्कु उरुत्तु–लाख (का रंग) पाकर; ॲरि–जलनेवाली; पोरि कण्–अंगारों से युक्त आँखों वाले; तिचै करिक्कुम्–दिग्गजों से; चिरितु अलङ्का–कुछ भी जो नहीं पिछड़े; उरम् कुप्पैयिन्–बल की राशि के साथ; उयर् तोळ् पल–उन्नत कंधे अनेक; उटैयाय्–रखनेवाले; उरन् उटैयाय्–बलवान; कुरक्कु तनि करत्तिल्–वानर के अप्रतिम करों से; तॊट–स्पर्श होने पर; पोरै–वह भार; आऱ्रुवै कोल् आम्–झेल सकोगे क्या। ११२०

अनेक बातें बहुत विस्तार के साथ कहने से क्या लाभ ? हे ऐसे बलराशियों के उन्नत कन्धोंवाले ! जो कन्धे विशाल ऊँचे कैलास पर्वत के सामने और लाख के समान लाल रहनेवाली आँखों के दिग्गजों के सामने से भी पीछे नहीं हटे थे ! पराक्रमी ! अब इस वानर के स्पर्श के भार को झेल सकोगे क्या ? । ११२०

ॲन्ऱोळ्वलि यदनालॅडुत् तियानॆऱ्ऱवु मिऱ्वा
निन्ऱायॆनि नीपिन्नॆनै निन्कैत्तल निरैयाल्
कुन्ऱेपुरै तोळाय्मिडल् कोडुकुत्तुदि कुत्तप्
पोन्ऱेनॆनि निन्नोडॆदिर् पोरुहिन्ऱिलॆ नॆन्ऱान् 1121

कुन्ऱे पुरै–पर्वत ही सम; तोळाय्–कंधों वाले; ॲन्–मेरा; तोळ् वलि अतनाल्–भुजबल (जो है) उससे; ॲटुत्तु–उठाकर; यान् ॲऱ्ऱवुम्–मेरे प्रहार करने पर; इऱवा निन्ऱाय् ॲनिन्–विना मरे रहोगे तो; नी–तुम; पिन्–बाद; ॲनै–मुझ पर; निन् कैत्तलम् निरैयाल्–अपनी हथेलियों की श्रेणी से; मिटल् कॊटु–बल लगाकर; कुत्तुति–घूँसा मारो; कुत्त–घूंसा मारने पर; पोन्ऱेन् ॲनिन्–मैं नहीं मरा तो; निन्नोटु ॲतिर्–तुम्हारे विरुद्ध; पोरुकिन्ऱिलॆन्–नहीं लड़ूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ११२१

पर्वतस्कन्ध रावण ! मैं अपना हाथ उठाकर अपने भुजबल का जोर लगाकर घूँसा मारूँगा। अगर तब तुम विना मरे रहोगे तो तुम जोर लगाकर अपनी हथेलियों की श्रेणी से प्रहार करो। अगर मैं नहीं मरा तो मैं (तुम्हारी बड़ाई मानकर) तुमसे आगे नहीं लड़ूँगा। ११२१

कारिऱ्करि यवन्मारुदि कळऱ्क्कडि दुहवा
वीरर्कुरि यदुशीऱ्ऱनै विऱलोयोरु तत्तियेन्
नेर्निऱ्पव रुळरोपिऱर् नोयल्लव रिन्निन्
पेरुक्कुल हळवेयिनि युळवोपिऱ वॆन्ऱान् 1122

कारिल् करियवन्–मेघ से बढ़कर काला; मारुति कळऱ–मारुति के कहने पर;

कटितु उकवा–शीघ्र सन्तोष प्रकट करके; विऱलोय्–ताक़तवर; वीरऱ्कु उरियतु–वीरोचित; चॊऱ्ऱनै–कहा; ऒरु तनियेन्–अकेले एक मेरे; इनि–अब; नेर् निऱ्पवर्–समक्ष टक्कर लेनेवाला; नी अल्लवर्–तुम्हें छोड़कर दूसरा; पिऱर् उळरो–अन्य है क्या; निन् पेरुक्कु–तुम्हारे नाम (यश) के लिए; उलकु अळवे–लोक ही माप है; इनि–फिर; पिऱ उळवो–दूसरा है क्या; ऎन्ऱान्–कहा। ११२२

मारुति के यों कहने पर मेघ से भी अधिक काले रावण ने तुरन्त साधुवाद दिया। वली ! वीरोचित बात कही तुमने। मैं अद्वितीय वीर हूँ। मेरा सामना करनेवाले तुमको छोड़कर और कौन होंगे ? अब तुम्हारा नाम (यश) लोक का जितना (लोकव्यापी) हो जायगा। फिर उसका क्या माप हो सकता है ? । ११२२

ऒन्ऱायुद मुडैयायलै यॊरुनीयॆन् ऱुऱवुङ्
गॊन्ऱायुयर् तेर्मेनिमिर् कॊडुवॆञ्जिलै कोलि
वन्ऱानैयि नुडन्वन्दवॆ नॆदिर्वन्दुनिन् वलियाल्
निन्ऱायॊडु निहरारिनि युळरोवुरै नॆडियोय् 1123

नॆटियोय्–महान्; ऒरु नी–अकेले तुम; आयुतम्–हथियार; ऒन्ऱु उटैयाय् अलै–एक भी रखनेवाले नहीं हो; ऎनतु उऱवुम्–मेरे परिवारों को भी; कॊन्ऱाय्–हत कर दिया; निमिर्–उठे हुए; कॊटु वॆम् चिलै–अति भयंकर धनु; कोलि–झुकाकर; वन् तानैयिनुटन्–सशक्त सेना के साथ; उयर् तेर् मेल्–ऊँचे रथ पर; वन्त–जो आया; ऎन् ऎतिर् वन्तु–ऐसे मेरे सामने आकर; निन् वलियाल्–अपने बल के आधार पर; निन्ऱायॊटु–जो खड़े हो ऐसे तुम्हारी; निकर् आर्–तुलना का कौन है; उरै–कहो। ११२३

महिमावान ! तुम अकेले हो, हथियार नहीं रखते। तुमने मेरे रिश्तेदारों को मार डाला। बड़े और भयंकर धनु को झुकाकर लेता हुआ और ताक़तवर सेना के साथ, बड़े ही उन्नत रथ पर सवार आये मेरे सामने आकर अपना बल दिखाते हुए खड़े हो गये ! तुम-सम बली कौन है ? । ११२३

मुत्तेवर्हळ् मुदलायिनर् मुळुमून्ऱुल हिडैये
ऎत्तेवर्ह ळॆत्तानव रॆदिर्वारिह लॆन्नेर्
पित्तेरिन रल्लालिडै पेरादॆदिर् मार्बिऱ्
कुत्तेयॆन निन्ऱायिदु कूऱन्दर मन्ऱाल् 1124

मुळु–पूरे; मून्ऱु उलकिटैये–तीनों लोकों के; मुत्तेवर्कळ् मुतल् आयिनर्–त्रिदेव आदि में; पित्तु एऱिनर् अल्लाल्–पागलों को छोड़; ऎ तेवर्कळ्–कौन देव; ऎ तानवर्–कौन दानव; ऎन् नेर्–मेरे विरुद्ध; इकल् ऎतिर्वार्–युद्ध में सामने आएँगे; इटै पेरातु–स्थान न बदलकर; मार्पिल् कुत्ते–वक्ष पर घूंसा मारो;

अँन्–कहकर; अँतिर् निन्ऱाय्–सामने खड़े हुए; इतु–यह; कूऱम् तरम् अन्ऱु–कहने योग्य नहीं है । ११२४

तीनों लोकों भर में त्रिदेव आदि सभी को लो। उनमें पागलपन में वढ़े लोगों के सिवा कौन देव या दानव मेरे साथ युद्ध करने मेरे सामने आएँगे ? तो भी तुम अडिग खड़े रहकर मुझसे कहते हो कि मेरे वक्ष में प्रहार करो। ऐसा साहस ! क्या कहूँ ? । ११२४

पोरुहैत्तल मिरुपत्तुळ पुहऴुम्बॅरि दुळदाल्
वरुहैत्तल मदवॅङ्गरि वलिहॅट्टॅन्न वरुवाय्
इरुहैत्तल मुडैयायॅदि रिवैशॊऱ्ऱने यिनिमेल्
तरुहैक्कुरि यदोर्कॊऱ्ऱमॅ न्नमर्दक्कदु मन्ऱाल् 1125

पोरु–लड़ने के लिए; कै तलम्–हाथ; इरु पत्तु उळ–बीस हैं; पुकऴम्–यश भी; पॅरितु उळतु–वड़ा है; वरु कै तलम्–युक्त सूँड़ों के; मतम्–मत्त; वॅम् करि–क्रूर हाथी भी; वलि कॅट्टु अॅन–बल खो जाएँ ऐसा; वरुवाय्–आनेवाले; इरु कैतलम् उटैयाय्–दो ही हाथों के हो; अॅतिर्–मेरे समक्ष; इवै चॊऱ्ऱनै–ये वचन कहे (तुमने); इनि मेल्–आगे; तरुकैक्कु उरियतु–दिखाने योग्य; ओर् कॊऱ्ऱम् अॅन्–कोई विजय-कार्य क्या है; अमर् तक्कतुम् अन्ऱु–युद्ध भी उचित नहीं होगा। ११२५

मेरे वीस हाथ हैं, जो लड़ सकते हैं। विपुल यश है। हे समीचीन सूँड़ों से युक्त मत्त व भयंकर हाथियों को हत-शक्ति करते आनेवाले वीर ! केवल दो हाथों के होकर तुमने ये वचन कहे ! फिर मैं अपनी विजय बढ़ा लूँ, ऐसा कौन कार्य वचा है ? युद्ध भी तो उचित नहीं होगा। ११२५

तिशैयत्तनै येयुम्वॅन्ऱदु शिदैयप्पुहऴ् तॅऴमव्
वशैमऱ्ऱिनि युळदेयॅन्न दुयिर्पोल्वरु महनै
अशैयत्तरै यरैवित्तनै यऴिशॆम्बुनल् लदुवो
पशैयऱ्ऱिल दोरुनीयॅन्न दॅदिर्निन्ऱिवै पहर्वाय् 1126

अत्तनै तिचैयैयुम् वॅन्ऱतु–सारी दिशाओं को जीतने का वह गौरव; चितैय–मिटाते हुए; पुकऴ् तॅऴम्–यशनाशक; अ वचै–उस निन्दा से बढ़कर; इनि मऱ्ऱु उळते–अब कोई दूसरी है क्या; अॅन्ऩतु उयिर् पोल्–मेरे ही प्राण-सम; वरुम् मकनै–(युद्ध में) आये अक्षकुमार को; अचैय–प्राणहीन करते हुए; तरै अरैवित्तनै–भूमि पर पीस डाला (तुमने); अऴि चॆम्पुनल्–निकला जो रक्त था; अतुवो–वह तो; पचै अऱ्ऱिलतु–अभी सूखा नहीं है; ओरु नी–अनुपम तुम; अॅन्नतु अॅतिर् निन्ऱु–मेरे समक्ष खड़े होकर; इवै पकर्वाय्–ये वचन कहते हो। ११२६

सारी दिशाओं को जीतने का वह मेरा गौरव इस अपयश से मिट गया। इससे वढ़कर निंदा क्या हो सकती है ? तुमने लड़ने आये मेरे प्राण-सम पुत्र अक्षकुमार को भूमि पर पीसकर प्राणहीन किया। तब जो

रक्त बहा वह अब भी ताज़ा है, सूखा नहीं है। तुम अप्रतिम हो ! मेरे समक्ष खड़े होकर ये बातें कह रहे हो ! । ११२६

पूणित्तिवै गुरैशॅय्दत्तै यदत्तालुरै पॊदुवे
पाणित्तदु पिऱ्ऱिदॆन्शिल पहर्हिन्ऱदु पळियाल्
नाणित्तलै यिडुहिन्ऱिल ननिवन्दुल हॅवैयुम्
काणक्कडि दॆदिर्कुत्तुदि यॆन्ऱान्वित्तै कडियान् 1127

वित्तै कटियात्–क्रूरकर्मा; अतताल्–उससे; पूणित्तु–ललकारते हुए; इवै उरै चॅय्ततै–ये वचन कहे; उरै पॊतुवे–यह कथन सामान्य है; पाणित्ततु–विलंब हुआ; पिऱ्ऱितु चिल–और कुछ; पकर्किन्ऱतु–कहना; ऎन्–क्या; पळियाल् नाणि–अपयश से लजाकर; तलैयिट्किन्ऱिलन्–आड़े नहीं आया; वन्तु–आगे बढ़कर; उलकु ऎवैयुम्–सारे लोकों को; नन्ि काण–खूब देखने देते हुए; कटितु–शीघ्र; ऎतिर् कुत्तुति–समक्ष रहकर घूंसा मारो; ऎन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ११२७

क्रूरकर्मा रावण ने मन मारकर आगे कहा। तुमने अपने वचनों से मुझे ललकारा है ! ऐसा कहना लोकसामान्य बात ही है ! बस ! विलम्ब हो रहा है। अब और कुछ क्या कहा जाय ? अपयश से लजाकर अब तक मैंने दखल नहीं दिया था। आओ ! शीघ्र मुझ पर मुष्टि प्रहार करो ताकि सारे लोक खूब देखें। ११२७

वीरत्तिऱ मिदुनन्ऱॆन वियवामिह विळियात्
तेरिऱ्कडि दिवरामुळु विळियिऱ्पॊऱि शिदऱा
आरत्तॊडु कवशत्तुडल् पॊडिपट्टुह ववन्मा
मार्विऱ्कडि दॆदिर्कुत्तिनन् वयिरक्कर मदत्ताल् 1128

इतु वीरम् तिऱम्–यह वीरता; नन्ऱु–बड़ी अच्छी है; ऎन–ऐसा; वियवा–विस्मय करके; मिक विळिया–अधिक शोर मचाकर; तेरिल्–रथ पर; कटितु इवरा–जल्दी चढ़कर; मुळु विळियिल्–पूर्ण रूप से खुली आँखों से; पॊऱि चितऱा–अंगारे छितरने देते हुए; अवन् मा मार्पिल्–उसके अति विशाल वक्ष पर; वयिरम् करम् अतताल्–वज्रहस्त से; आरत्तॊटु–हारों सह; कवचत्तु–कवच के साथ; उटल् पॊटि पट्टु उक–शरीर चूर हो गिरे, ऐसा; कटितु–शीघ्र; ऎतिर् कुत्तिनन्–सामने से मुष्टिप्रहार किया। ११२८

हनुमान ने विस्मय किया कि यह वीरता भी अद्भुत है ! गर्जन किया, शीघ्र रथ पर उछलकर गया, आँखों से अंगारे छोड़ते हुए उसके विशाल वक्ष पर उसने वज्रहस्त से शीघ्र ऐसा एक घूँसा लगाया कि रावण के हार, कवच और शरीर भी चूर-चूर हो गये। ११२८

अयिरुक्कन नॆडुमाल्वरै यनलुक्कन विळिहळ्
तयिरुक्कन मुळुमूळैहळ् तलैयुक्कन तरिया

उयिरुक्कन्न निरुदक्कुल मुयर्वानर मॅवैयुम्
मयिरुक्कन्न वॅयिरुक्कन्न मळैयुक्कन्न वानम् 1129

नॅट्टु माल् वरै–बहुत बड़े पर्वत; अयिर् उक्कन्न–रेत बनकर बिखरे; विळिकळ्–आँखों ने; अन्नल् उक्कन्न–अंगारे छितराये; मुळ मूळैकळ्–बड़े मस्तकों ने; तयिर् उक्कन्न–दही-से गिराये; तलै–सिर; तरिया उक्कन्न–अस्थिर हो हिले; निरुन्न कुलम्–राक्षसकुल ने; उयिर् उक्कन्न–प्राण छोड़ दिये; उयर् वानरम् ॲवैयुम्–सभी वानरों के; मयिर् उक्कन्न–रोम गिरे; ॲयिरु उक्कन्न–दाँत चू पड़े; वानम्–आकाश से; मळै उक्कन्न–मेघ गिर पड़े। ११२९

उस घूँसे के जोर से बड़े-बड़े पर्वत के खण्ड-खण्ड हो गये और बाल बनकर चू गये। आँखों ने अंगारे उगले। सिरों के अन्दर से भेजे दही के समान बाहर निकल आये। सिर अस्थिर होकर डोलायमान हुए। राक्षस-वर्ग की जानें बिथर गयीं। ऊँचे सभी वानरों के बाल गिर गये और उनके दाँत भी चू गये। आकाश से मेघ भी बिथर गये। ११२९

विऱ्चिन्दिन्न नॅडुनाणिमिर् तिरैशिन्दिन्न विरिनीर्
कऱ्चिन्दिन्न कुलमाल्वरै कदिर्शिन्दिन्न शुडरुम्
पऱ्चिन्दिन्न मदयानैहळ् पडैशिन्दिन्न रॅवरुम्
ॲऱ्चिन्दिय वॅरिशिन्दिन्न विहलोन्मणि यहलम् 1130

विल्–धनुओं से; चिन्तिन्न–कटकर गिरे; नॅट्टु नाण्–लंबे डोरे; निमिर् तिरै–उठती तरंगें; विरि नीर्–विशाल सागर के तीरों को; चिन्तिन्न–लाँघ गयीं; कुलम् माल् वरै–श्रेष्ठ बड़े पर्वतों से; कल् चिन्तिन्न–प्रस्तरखण्ड गिरे; चुटरुम् कतिर्–तेजपुंज सूर्य और चन्द्र से; चुटर् चिन्तिन्न–किरणें चू पड़ीं; मतम् यानैकळ्–मत्तगज; पल् चिन्तिन्न–दाँत-टूटे हो गये; ॲवरुम्–सबने; पटै चिन्तिन्नर्–हथियार डाल दिये; इकलोन्–शत्रु (रावण) के; मणि अकलम्–सुन्दर वक्ष भर में; ॲल् चिन्तिय–प्रकाश छिटकानेवाले; ॲरि–अग्निकण; चिन्तिन्न–बिखरे। ११३०

वीरों के चापों से डोरे कटकर अलग हो गये। ऊँची उठती तरंगों ने समुद्र तीर को लाँघ लिया। श्रेष्ठ बड़े पर्वतों से प्रस्तरखण्ड टूटकर गिरे। सूर्य और चन्द्र के तेजपिंडों ने किरणों को बिखेरा। मत्त गजों के दाँत टूटे। सभी ने अपने-अपने हथियार डाल दिये। प्रबल शत्रु रावण के सुन्दर वक्ष से प्रकाशमय अंगारे सर्वत्र बिखरे। ११३०

कैक्कुत्तदु पडलुङ्गळ् निरुदर्क्किऱै कऱैनीर्
मैक्कुप्पॅयि नॅळिल्कॊण्डॊळिर् वयिरत्तड मार्बिल्
तिक्किऱ्चिन्न मदयानैहळ् वयवॅम्बणै शॅरुविल्
पुक्किऱ्रन्न पोहादन्न पुऱमुक्कन्न पुहळिन्न 1131

कै कुत्तु अतु–मुष्टिप्रहार, उसके; पटलुम्–लगते ही; कळल् निरुतर्क्कु–पायलधारी राक्षसों के; इऱै–राजा का; कऱै नीर्–विष की-सी प्रकृति के साथ;

मै कुप्पॅयित्–अंजनराशियों को; अऴिल् कॉण्टु–सुन्दरता के साथ; ऑळिर्–शोभायमान; वयिरम् तट मार्विल्–कठोर व विशाल वक्ष पर; तिक्किल्–आठों दिशाओं के; चित्तम् मतयानैकळ्–क्रुद्ध व मत्त गजों के; वयम् वॅम् पणै–विजयी कठोर दाँत; चॅरुविल् पुक्कु–(जो पहले) युद्ध में घुसकर; इऱ्ऱत–टूटे थे; पोकातत–(और जो) अलग नहीं हुए थे; पुकऴिन्–(वे अब उसके) यश के समान; पुऱम् उक्कत–पीठ से बाहर निकलकर बिखर गये । ११३१

जब हनुमान का घूँसा रावण के वक्ष पर लगा, तब वीर पायलधारी उसके बहुत ही चमकदार विष-सम अंजनवर्ण छाती से, मत्त और क्रुद्ध अष्ट दिग्गजों के दृढ़ दाँत, जो छाती में घुसकर टूटे रह गये थे, पीठ की ओर से निकलकर उसके यश के साथ अलग हो गये । ११३१

अळ्ळाडिय कवशत्तविर् मणियऱ्ऱन तिशैपोय्
विळ्ळानॅडु मुऴुमीॅन्न विऴिवॅम्बॊरि यॅळनिन्
रुळ्ळाडिय नॅडुङ्गाल्पॊर वॊडुङ्गानिलै कुलैयत्
तळ्ळाडिय वडमेरुविऱ् चलिन्दानऱम् वलित्तान् 1132

अळ्ळु आटिय–संधिबन्ध कटे; कवचत्तु–कवच से; अविर्मणि–दीप्तियुत रत्न; विळ्ळा–अलग हो; नॅटु मुऴु मीन् अॅन्न–बड़े और पूर्ण नक्षत्र के समान; तिचै पोय्–दिशाओं में जाकर; अऱ्ऱत–बिखरे; अऱम् वलित्तान्–धर्मनाशक; विऴि–आँखों में; वॅम् पॊरि अॅळ–गरम अंगारे भरते हुए; निन्ऱु–खड़ा रहकर; उळ्–अन्दर; आटिय–चलायमान; नॅटु काल्–दीर्घ प्राणवायु; पॊर ऑटुङ्का–चलने से रुकी; उलकु उलैय–लोकवासियों के क्षुब्ध होते; तळ्ळाटिय वट मेरुविल्–लड़खड़ानेवाले मेरु के समान; चलित्तान्–चलित हुआ । ११३२

कवच की संधियाँ खुल गयीं । प्रकाशमय रत्न अलग हो दिशाओं में जाकर बड़े सम्पूर्ण नक्षत्रों के समान बिखर गये । धर्मत्रासक रावण की आँखों से अंगारे छूटने लगे । प्राणद्योतक साँसें चलना रोककर अन्दर ही रुक गयीं । वह डोलायमान मेरु के समान चलित हुआ, जिसको देखकर सारे लोक हड़बड़ा गये । ११३२

आर्त्तार्विशुम् बुऱैवोर्नॅडि दनुमान्मिशै यदिहन्
दूर्त्तार्नऱु मुऴमॅन्मल रिशैयाशिहळ् शॊन्नार्
वेर्त्तार्निरु दर्हळ्वानरर् वियन्दारिवन् विशयम्
तोर्त्तानॅन वुवन्दाडिनर् तिहऴ्मॅय्म्ममयिर् शिलिर्त्तार् 1133

विचुम्पु उऱैवोर्–आकाशवासी; आर्त्तार्–(देवों ने) कोलाहल मचाया; अनुमान् मिचै–हनुमान पर; नऱु–सुगन्धित; मुऴु–पूर्णविकसित; मॅल्–कोमल; मलर्–फूल; अतिकम्–बहुत; नॅटितु–लम्बी देर तक; तूर्त्तार्–बरसाये; इचै आचिकळ्–(उसके) योग्य आशीर्वचन; चॊन्नार्–कहे; निरुतर्कळ्–राक्षस; वेर्त्तार्–पसीने से युक्त हो गये; वानरर्–वानर; वियन्तार्–विस्मित हुए;

इवन्-इसकी; विचयम्-विजय को; तीर्त्तान्-(हनुमान ने) मिटा दिया; अॅत-यह कहते हुए; उवन्तु-आनन्दित होकर; आटिनर्-नाचे; तिकळ्-मनोहर दिखनेवाले; मॅय्-शरीर में; मयिर् चिलिर्त्तार्-रोम पुलकित हुए। ११३३

आकाशवासियों ने आनन्द से कोलाहल मचाया और हनुमान पर पूर्ण विकसित, सुगन्धपूर्ण और कोमल फूलों को लम्बी देर तक बरसाते हुए युक्त आशीर्वचन कहे। राक्षस के शरीर पसीने से भर गये। वानरों ने विस्मय करते हुए हनुमान को बधाई दी कि इसने रावण की विजयश्री को मिटा दिया है! वे नाचे और पुलकाकुल हुए। ११३३

कऱ्ऱङ्गियि तॅडुवायुवि तिलैकण्डवर् कदियाल्
मऱ्ऱङ्गोरु वडिवुऱ्ऱदु माऱाडुरु कालॅप्
पऱ्ऱङ्गोरु मैयिलन्नदु पयिल्हिन्ऱदीर् शॅयलाल्
उऱ्ऱङ्गदु पुऱम्बोयुडल् पुहुन्दालॅन वुणर्न्दान् 1134

अङ्कियिन् निलै-अग्नि की स्थिति और; नॅटु-बड़ो; वायुविन् निलै-प्राणवायु की स्थिति; कण्टवर्-अनुभव द्वारा जिन्होंने जान ली है, वे योगी; कतियाल्-(परकाय-प्रवेश की) सिद्धि द्वारा; मऱ्ऱु-और; अङ्कु-वहाँ; ओरु वटिवु उऱ्ऱु-एक शरीर पाकर; अतु-उससे; माऱाटु उऱु कालै-भिन्न लगने पर; अङ्कु-वहाँ; ओरुमैयिल्-जुड़े रहने से; पऱ्ऱु-(उस शरीर की) आसक्ति के कारण; अन्नतु पयिल्किन्ऱतु-उसके साथ अभ्यस्त होने के; ओर् चॅयलाल्-कार्य से; अङ्कु अतु-तब वे प्राण; पुऱम् पोय् उऱ्ऱु-बाहर जाकर रहने के बाद; उटल् पुकुन्ताल् ॲन-फिर शरीर में आ गये हों, ऐसा; उणर्न्तान्-महसूस किया (रावण ने)। ११३४

रावण कुछ देर मूर्च्छित रहकर फिर होश में आया। तब उन सिद्धों का-सा उसे अनुभव हुआ, जो अग्नि, प्राण आदियों की स्थिति जानते हैं और जिन्हें परकायप्रवेश की सिद्धि प्राप्त है। जब वे दूसरे शरीर में प्रवेश करते हैं, वे उस शरीर के योग्य व्यवहार करते हैं और भावों से प्रभावित होते हैं। फिर वे आकर अपने पुराने शरीर में प्रवेश कर लेते हैं। वैसे ही रावण कुछ देर मानो किसी दूसरे शरीर में प्रविष्ट हो, विचित्र अनुभव प्राप्त करके फिर अपने पुराने शरीर के अन्दर आसक्ति के कारण लौट आया हो—ऐसा (उसने) महसूस किया। ११३४

उणरानॅडि दुयिरावुरै युदवावॅरि युमिळा
इणैयारुमि लवनेर्वर वय्दावलि शॅय्दाय्
अणैयायिनि यॅनदूळॅन वडरावॅदिर् पडराप्
पणैयार्पुय मुडैयानिडै शिलविम्मॊळि पहर्वान् 1135

उणरा-होश पाकर; नॅटितु उयिरा-लम्बी साँस छोड़ते हुए; उरै उतवा-न बोलकर; ॲरि उमिळा-अंगारे निकालकर; इणै यारुमिलवन्-समताहीन (हनुमान) के; नेर्-समक्ष; वरवु ॲय्ता-आकर; वलि चॅय्ताय्-ज़ोर दिखानेवाले;

इति–आगे; अंत्तु ऊळ्–मेरे नियम को; अणैयाय्–मान लो; अंत्–कहकर; अटरा–आतंकित करते हुए; ॲतिर् पटरा–सामने जाकर; पणै आर्–बाँस के समान; पुयम् उटैयात्–भुजा वाले हनुमान; इटै–के पास; चिल–कुछ; इ मोऴि–ये वचन; पकर्वात्–कहने लगा। ११३५

होश में आकर रावण ने निःश्वास छोड़ा। उसकी वाग्शक्ति सहयोग नहीं कर रही थी। आँखों से आग निकली। वह आँखें खोलकर बेजोड़ वीर हनुमान के समक्ष आया और बोला। हे सबल योद्धा! अब तुम मेरे नियम के वश में आ जाओ। ऐसा कहते हुए आतंक जमाकर सामने गया और बाँस-सम कन्धों वाले हनुमान के पास यों कुछ बोला। ११३५

वलियॅऩ्बदु मुळदेयदु निऩ्बालदु मऱवोय्
अलियॅऩ्बवर् पुऱनिऩ्ऱव रुलहेऴैयु मडर्त्ताय्
शलियॅऩ्ऱॆदिर् मलरोऩुरै तऩ्दालिऱै शलियेऩ्
मॆलिवॅऩ्बदु मुणर्न्देऩ्ऩै वॆऩ्ऱायिऩि विऱलोय् 1136

मऱवोय्–वलिष्ठ; वलि ॲऩ्पतुम्–बल जो है वह; उळते–है और; अतु–वह; निऩ् पाल् अतु–तुम्हारे पास है; पुऱम् निऩ्ऱवर्–इधर-उधर जो खड़े हैं; अलि ॲऩ्पवर्–वे षंड हैं; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; अटर्त्ताय्–त्रस्त किया; मलरोऩ्–कमलासन; चलि ॲऩ्ऱु ॲतिर् उरै तऩ्ताल्–स्वयं कहें कि विचलित हो जाओ; इऱै चलियेऩ्–किंचित भी विचलित नहीं होऊँगा; मॆलिवु ॲऩ्पतुम्–शिथिलाई (क्या) है वह भी; उणर्न्तेऩ्–जान गया; विऱलोय्–ताक़तवर; इति ॲऩ्ऩै–अब तुमने मुझे; वॆऩ्ऱाय्–जीत लिया। ११३६

बलिष्ठ! शक्ति नामक चीज जो है, वह तुम्हारे पास है। इधर-उधर रहनेवाले नपुंसक हैं! तुमने सातों लोकों को जीत लिया, क्योंकि ब्रह्मदेव के प्रयत्न करने पर भी जिसे विचलित नहीं किया जा सकता, ऐसा मैं आज तुम्हारे हाथों श्रांति जान सका! अब तुम मुझे जीतनेवाले हो गये। ११३६

ऑऩ्ऱुण्डिऩि युरैनेर्हुव दुऩ्मार्बिऩ् ऩीरुहैक्
कुऩ्ऱिऩ्मिशै कडैनाळ्विऴु मुरुमेऱॆऩक् कुत्ता
निऩ्ऱिऩ्निलै तरुवायॆऩि ऩीयल्लव रुळरो
इऩ्ऱुम्मुळे यॆऩ्ऱुम्मुळे यिलैयोर्पहै यॆऩ्ऱाऩ् 1137

इति–अब; उरै नेर्कुवतु–वचन कहना; ऑऩ्ऱु उण्टु–एक है; उऩ् मार्पिऩ्–तुम्हारे वक्ष पर; कुऩ्ऱिऩ् मिचै–पर्वत पर; कटै नाळ् विऴुम्–युगान्त के दिन गिरनेवाले; उरुम् एऱु ॲऩ–अशनिराज के समान; ॲऩ् ऑरु कै–मेरा एक हाथ; कुत्ता–घूंसा मारे; नी–तुम; निऩ्ऱु–डटकर; इ निलै तरुवाय्–ऐसा जीवित खड़े रहो तो; नी अल्लवर्–तुमको छोड़ कोई; उळरो–रहनेवाला होगा क्या;

इन्ऱुम् उळै–आज भी हो; ऍन्ऱुम् उळै–सदा जीवित रहोगे; ओर् पकै इलै–कोई शत्रु भी न होगा; ऍन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ११३७

अब एक बात कहनी है। तुम्हारे वक्ष पर युगान्त की पर्वत पर गिरनेवाली सबलतम अशनि के समान अपने हाथ से मैं एक घूंसा लगाऊँ और तुम टिककर जीवित रह जाओ तो तुम्हें छोड़ इस संसार में और कोई बलवान नहीं होगा! फिर तुम चिरजीव रह जाओगे। तुम्हारा कोई शत्रु भी नहीं होगा। ११३७

ऍन्ऱानॆदिर् शॆन्ऱानिह लडुमारुदि यॆन्नैनी
वॆन्ऱायलै योवुन्ऩुयिर् वीडादुरै शॆय्दाय्
नन्ऱाहनिन् निलैनन्ऱॆन नल्हावॆदिर् नडवाक्
कुन्ऱाहिय तिरडोळवन् कडन्गोळ्हॆन्नक् कॊडुत्तान् 1138

इकल् अट्टुम् मारुति–शत्रुसंहारक मारुति; ऍन्ऱान्–कहनेवाले; ऍतिर् चॆन्ऱान्–के समक्ष गया; उन् उयिर् वीटातु–अपना प्राण न त्यागकर; उरै चॆय्ताय्–बोलते हो, तब; ऍतै नी वॆन्ऱाय्–तुमने मुझे जीत लिया; अलैयो–क्या नहीं; नन्ऱाक–खूब; निन् निलै–तुम्हारी स्थिति; नन्ऱु–भली है; ऍन–ऐसा; नल्का–कहकर; ऍतिर् नटवा–सामने जाकर; कुन्ऱु आकिय–पर्वत सम; तिरळ् तोळवन्–पुष्ट कन्धों वाले हनुमान ने; कटन् कॊळ्क–तुम्हारा क़र्ज़ा लो; ऍन्–कहकर; कॊटुत्तान्–(सीना आगे) दिया। ११३८

यह सुनकर परंतप मारुति उसके समक्ष जाकर खड़ा हुआ। मेरा घूंसा पाकर तुम मरे नहीं। जीवित रहकर ऐसी बात करते हो। तब अवश्य तुम मेरे विजेता हो गये। तुम्हारी स्थिति ठीक ही है! यह प्रशंसा-वचन कहकर पर्वत-पुष्ट-स्कन्ध हनुमान ने सीना बढ़ाकर कहा कि अपना ऋण चुका लो। ११३८

उरुक्कित्तनि यॆदिर्निन्ऱव नुरत्तिऱ्ऱन दॊळिर्पल्
इरुक्किप्पल नॆडुवाय्मडित् तॆरिहण्डोरु मिळिय
मुरुक्किप्पॊदि निमिर्पल्विरल् नॆरियत्तिशै मुरियक्
कुरुक्किक्करम् नॆडुन्दोळुरु निरैहैक्कॊडु कुत्त 1139

तन्तु–अपने; पल–अनेक; नॆटु वाय्–बड़े मुखों (अधरों) को; मटित्तु–मोड़कर; ऑळिर् पल्–उज्ज्वल दाँतों से; इरुक्कि–दबाकर; ऍरि–आग को; कण् तॊऱुम्–सभी आँखों में; इळिय–निकालते हुए; उरुक्कि–क्रोध करके; पॊति–मोटी; निमिर्–उठी हुई; पल् विरल्–अनेक उँगलियों को; नॆरिय मुरुक्कि–सटाकर, ऐंठकर; तिचै मुरिय–दिशाएँ विचलित हों, ऐसा; करम्–हाथों को; नॆटु तोळ् उरु–लम्बे कन्धों से लगाते हुए; कुरुक्कि–मोड़ लेकर; तति–अकेले; ऍतिर् निन्ऱवन्–समक्ष जो खड़ा रहा; उरत्तिल्–उसके वक्ष पर; निरै कै कॊटु–पंक्ति में रहे हाथों से; कुत्त–(रावण के) घूंसा मारने पर। ११३९

रावण ने अपने अनेक मुखों के अधर मोड़कर उन्हें दाँतों से दबा लिया। आँखों से अंगारे छूट निकले। क्रोध के साथ हाथों की उँगलियों को सटाकर मुष्टियाँ बना लीं। हाथों को कन्धों से लगाकर ज़ोर लगाया। फिर अकेले सामने खड़े रहे हनुमान के वक्ष पर उसने अपनी श्रेणीवद्ध मुष्टियों से घूँसा मारा तो हनुमान विचलित (मूर्च्छित) हो गया। ११३९

पळ्ळक्कडल् कॊळ्ळप्पडर् पडिपेरिनुम् बदैया
वळ्ळल्पॆरु वॆळ्ळत्तॆरुळ् वलियारिनुम् वलियान्
कळ्ळक्करु युळ्ळत्तदिर् रूऴल्वॆय्यवन् करत्ताल्
तळ्ळत्तळर् वॆळ्ळिप्पॆरुङ् गिरियामॆन्नच् चलित्तान् 1140

पळ्ळक् फटल्–गहरे समुद्र को; कॊळ्ळ पटर्–समा ले, ऐसा विस्तृत; पटि–भूमि; पेरितुम्–अस्त-व्यस्त हो तव भी; पतैया–जो विचलित नहीं होगा; वळ्ळल्–वह उदार और; पॆरु वॆळ्ळत्तु–वड़े प्रवाह के समान; ऍरुळ् वलियारितुम्–बलवानों से भी; वलियान्–वलवान; कळ्ळम् करु–वंचना कलंकित; उळ्ळत्तु–मन वाले; अतिर् कऴल्–शोर करनेवाली पायलधारी; वॆय्यवन्–क्रूर (रावण) के; करत्ताल् तळ्ळ–हाथ से मारने पर; तळर्–चंचल होनेवाले; वॆळ्ळि पॆरु किरियाम् ऍन्–वड़े रजत-पर्वत (कैलास) के समान; चलित्तान्–विचलित हुआ। ११४०

हनुमान गंभीर समुद्र को समा लेनेवाली भूमि के विचलित होते समय भी विचलित होनेवाला नहीं था। उदार वह अतिवली बलवानों से बलवान था। ऐसा वह वंचनाकलंकितमन वीर पायलधारी रावण के अपने हाथ से घूंसा मारने पर श्रेष्ठ रजतगिरि कैलास लड़खड़ाता हो —ऐसा लड़खड़ा गया। ११४०

शलित्त कालैयि निमैयव रुलहॆलाञ् जलित्त
शलित्त दालरञ् जलित्तदु मॆय्म्मॊऴि तहवुञ्
जलित्त दन्ऱियुन् दवमॊडु शुरुदियुञ् जलित्त
शलित्त नीदियुञ् जलित्तदु करुणैयुन् दवमुम् 1141

चलित्त कालैयिल्–श्रान्त जब हुआ; इमैयवर् उलकु ऍलाम्–देवलोक सभी; चलित्त–विचलित हुए; अऱम् चलित्ततु–धर्मदेवता क्लान्त हुए; मॆय् मॊऴि चलित्ततु–सत्य वचन डिगा; तकवुम् चलित्ततु–योग्यता चलित हुई; अन्ऱियुम्–अलावा इनके; तवम् ऒटु–यश के साथ; चुरुतियुम्–श्रुति भी; चलित्त–विचलित हुई; नीति उम् चलित्ततु–नीति भी चलित हुई; करुणैयुम् तवमुम् चलित्त–करुणा और तपस्या श्रान्त हुई। ११४१

जब हनुमान श्रांत हुआ, तव देवलोक थके। धर्म, सत्य वाणी, सद्गुण आदि भी श्रांत हुए। इनके अलावा यश और वेद, करुणा और तप भी विचलित हुए। ११४१

अत्तैय कालैयि तरिक्कुलत् तलैवरव् वऴियोर्
ऍत्तैय रत्तवर् यावरु मिरुङ्गुव डेन्दि
नित्तैवित् मुन्तॅडु विशुम्बॊरु वॆळियिन्ऱि नॆरुङ्ग
वित्तैयम् नत्ऱिदॆत् ऱिरावणत् मेऱ्चॆल विट्टार् 1142

अत्तैय कालैयित्–उस समय; अ वऴियोर्–वहाँ जो रहे उन्होंने; अरि कुल तलैवर्–वानरगणों के नायक; ऍत्तैयर्–जितने थे; अत्तवर् यावरुम्–उन सभी ने; नॆरुक्क–समय के अभाव में; इतु वित्तैयम् नत्ऱु–यही कार्य अच्छा है; ऍन्ऱु–सोचकर; इरु कुवट्टु एन्ति–बड़ा पर्वत उठाकर; नित्तैवित् मुन्–सोचने के पहले ही; नॆट्टुविचुम्पु–विशाल आकाश में; ऒरु वॆळि इन्ऱि–बिना खाली स्थान छोड़े; इरावणत् मेल् चॆल–रावण पर चलाते हुए; विट्टार्–फेंका। ११४२

तब वहाँ जो वानर थे जितने थे, उन सभी ने व्यग्रता व उतावली में झट सोच लिया कि यही काम ठीक है ! उन्होंने बड़े-बड़े पर्वत उठा लाकर रावण पर फेंके, जिससे आकाश निरन्तर भर गया। ११४२

ऒत्त कैयित रूऴियि तिरुदियि तुलहै
मॆत्त मीदॆऴु मेहत्तित् विशुम्बॆला मिडैयप्
पत्तु नूऱुहो डिक्कुमेऱ् पतिपडु शिहरम्
ऍत्ति मेऱ्चॆल वॆऱिन्दतर् पिरिन्दत रिमैयोर् 1143

ऒत्त कैयितर्–समान भुजबल वाले; ऊऴियित् इऱुतियित्–युगान्त में; उलकै मॆत्त–लोकों को लांघकर; मीतु ऍऴु–उपर उठनेवाले; मेकत्तित्–मेघ के समान; विचुम्पु ऍलाम्–आकाश भर में; मिटैय–व्यापकर; पत्तु नूऱु कोटिक्कु मेल्–दस, सौ, करोड़ के ऊपर; पति पटु चिकरम्–हिमाच्छादित शिखर; ऍत्ति–टकराकर; मेल् चॆल–आगे जाएँ, ऐसा; ऍऱिन्ततर्–फेंका; इमैयोर्–देव; पिरिन्ततर्–अलग हुए। ११४३

समान भुजबल वाले वानरों ने युगान्त में भूमि के ऊपर अत्यधिक परिमाण में उठनेवाले मेघों के समान हिमाच्छादित शिखरों वाले पर्वतों को दस, सौ, करोड़ों की संख्या में आकाश को एक दम ढकते हुए रावण पर फेंका। देव डर से हट गये। ११४३

तरुक्कि वीशिड विशुम्बिड मिन्मैयिऱ् ऱम्मित्
नॆरुक्कु हित्ऱत नित्ऱत शॆत्ऱिल निऱैन्द
अरुक्क तुम्मऱैन् दातिरुळ् विळुङ्गिय दण्डम्
वरुक्क मऱ्ऱत ररक्करॆत् ऱिमैयवर् महिऴ्न्दार् 1144

तरुक्कि–घमंड के साथ; वीचिट–फेंकने पर; विचुम्पु–आकाश में; इटम् इन्मैयित्–स्थान न रहने से; तम्मित्–आपस में; नॆरुक्कुकित्ऱत–रगड़ते हुए; नित्ऱत–खड़े रह गये; चॆत्ऱिल–आगे न जा सके; निऱैन्त–भर गये; अरुक्कतुम्–सूर्य भी; मऱैन्तात्–अस्त हो गया; अण्टम्–अंड को; इरुळ् विळुङ्किपतु–अन्धकार

ने निगल लिया; अरक्कर् वरुक्कम्–राक्षसवर्ग; अऱ्ऱतर्–मिट गये; ॲन्ऱु–सोचकर; इमैयवर् मकिऴ्न्तार्–देव खुश हुए। ११४४

अभिमान के साथ वानरों ने इतने पर्वत फेंके कि वे आकाश में आगे जाने का स्थान नहीं पाकर आपस में रगड़ते हुए रह गये। तब सूर्य भी छिप गया। अण्ड को अन्धकार ने निगल लिया। देवों ने यह सोचकर आनन्द मनाया कि राक्षसों के वर्ग मटियामेट हो गये। ११४४

ऑन्ऱि ऑन्ऱुपट् टुडैवन विडित्तुरु मदिरच्
चॅन्ऱ वन्बॊऱि मिन्बल शॅऱिन्दिडत् तॅय्व
वॅन्ऱि विल्लॅन विरुनिलम् वीऴ्न्दिड मेन्मेर्
कन्ऱि योडिडक् कनमऴै निहर्त्तन कर्कळ् 1145

ऑन्ऱिन् ऑन्ऱु पट्टु–एक-दूसरे से टकराकर; उटैवत–टूटे (जो); वन् पॊऱि–कठोर अंगारों से; मिन् पल चॅऱिन्तिट–अनेक बिजलियों का-सा प्रकाश घना हुआ; अतिर–(ऐसा) थर्राते हुए; चॅन्ऱ कर्कळ्–जानेवाले पर्वत; उरुम् इटित्तु–अशनि-समान शोर हुआ; तॅय्वम्–दिव्य; वॅन्ऱि विल् ॲन–विजयकोदण्ड द्वारा श्रीरामप्रेरित शरों के समान; मेन् मेल्–उत्तरोत्तर; कन्ऱि–क्रुद्ध हो; ओटिट–चले इसलिए; इरु निलम्–बड़ी भूमि पर; वीऴ्न्तिट–गिरते समय; कन मऴै–बड़े मेघों के; निकर्त्तन–समान लगे। ११४५

पर्वत आपस में टकराकर टूटे। तब बिजली के समान आग की ज्वालाएँ बड़े परिमाण में उठीं। अशनिनाद के समान शोर के साथ पर्वत के टुकड़े जो गये, वे श्रीराम के दिव्य कोदण्ड-प्रेरित शरों के समान उत्तरोत्तर प्रचण्डता पाकर गये और भूमि पर गिरे। तब वे भीषण मेघ के समान लगे। ११४५

इरिन्दु नीङ्गिय दिराक्कदप् पॅरुम्बड यॅङ्गुम्
विरिन्दु शिन्दिन वानत्तु मीनॊडु विमानज्
जॊरिन्द वॅम्बॊऱि पडक्कडल् शुवऱिन तोऱ्ऱम्
करिन्द कण्डहर् कण्मणि यॅनप्पल कऴॊऱिल् 1146

इराक्कत–राक्षसों की; पॅरुम्पटै–बड़ी सेना; इरिन्तु–अस्त-व्यस्त हो; नीङ्कियतु–भाग गयी; वानत्तु मीनॊटु–आकाश के नक्षत्रों-सहित; विमानम्–देवयान; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; विरिन्तु–व्याप्त होकर; चिन्तिन–अलग-अलग हुए; चॊरिन्त–बरसनेवाले; वॅम् पॊऱि–गरम अंगारों के; पट–लगने से; कटल् चुवऱित–समुद्र सूख गये; तोऱ्ऱम्–दृश्य; कऴॊऱिल्–कहना हो तो; कण्टकर्–लोककंटकों (राक्षसों) की; पल–अनेक; कण् मणि ॲन–आँखों की पुतलियों के समान; करिन्त–झुलस गये। ११४६

(पत्थर-वर्षा से) राक्षस-सेना अस्त-व्यस्त हो भाग गयी। आकाश के नक्षत्र और देवयान तितर-बितर हुए। बरसनेवाले अंगारों के

गिरने से समुद्र सूख गये। वहाँ का दृश्य कहना हो तो लोककण्टकों की झुलसी आँख की पुतलियों के समान (सूखे समुद्रतल पर) सब जले-भुने दिखायी दिये। ११४६

इऱुत्त	दिऩ्ऩल	हॅन्बदोर्	तुमुलम्	वन्वॅय्दक्
करुत्त	शिन्दॅय	ऩिरावण	ऩतॅयदु	कण्डाऩ्
ऑरुत्तु	वाऩवर्	पुहळ्ण्ड	पारविल्	लुळॅय
अरुत्तु	नीक्किऩ	ऩायिर	कोडिमे	लम्बाल् 1147

इन्ऱु–आज; उलकम् इऱुत्ततु–संसार मिट गया; अॅन्पतु ओर्–ऐसी एक; तुमुलम् वन्तु अॅय्त–तुमुल-ध्वनि (धूम) मच गयी तो; करुत्त चिन्तॅयन्–क्रुद्धमन; इरावणन्–(रावण) ने; अतॅयतु कण्टान्–उसको देखकर; ऑरुत्तु–आतंकित करके; वानवर् पुकळ् उण्ट–देवों के यश को जिसने खा लिया (मिटाया) था; पारम् विल्–उस भारी चाप को; उळॅय–झुकाकर; आयिरम् कोटि मेल्–सहस्र करोड़ के ऊपर; अम्पाल्–शरों से; अरुत्तु–काटकर; नीक्कितन्–दूर कर दिया। ११४७

सर्वत्र धूम मच गयी कि आज संसार अस्तित्व खो गया है। क्रुद्ध रावण ने वह सुना तो अपने देवयशभक्षक भारी धनु को झुकाकर उसने करोड़ों शर चलाये और पर्वतों को काट दिया। ११४७

काम्बॅ	लाङ्गडुन्	दुहळ्पडक्	कळिऱॅलान्	दुणियप्
पाम्बॅ	लाम्बड	याळियु	मुळ्वॅयुम्	बारक्
कूम्बर्	मामर	मॅरिन्दुहक्	कुरुन्दुहळ्	नुरुङ्गच्
चाम्ब	रायिऩ	तडवरॅ	शुडुहणॅ	तडिय 1148

चुटु कणॅ–जलाते हुए शरों के; तटिय–काटने से; कूम्पर् तटवरॅ–गावदुम आकार के विशाल पर्वत; काम्पु अॅलाम्–सभी बाँसों के; कटु तुकळ् पट–बुकनी बन जाते; कळिऱु अॅलाम्–सभी गजों के; तुणिय–छिन्न हो जाते; पाम्पु अॅलाम्–सभी सर्पों के; पट–मिटते; याळियुम् उळुवॅयुम्–याळि और व्याघ्र; पारु–मर गये; मा मरम् अॅरिन्तु–बड़े-बड़े तरु जलकर; उक–गिर गये और; कुरु तुकळ्–छोटे कणों को; नुरुङ्क–और बुकनी बन जाए, ऐसा; चाम्पर् आयित–राख बन गये। ११४८

शरों के लगने से उन गावदुम आकार वाले पर्वतों पर के बाँस कई खण्डों में कट गये। गज छिन्न हुए। सर्प मरे। 'याळि' और व्याघ्र हत हुए। बड़े-बड़े तरु जले, छोटे बने फिर राख बन गये। ११४८

उरुर	वाऱॅन्ऱु	मॉन्ऱुरू	ऩायिर	मुरुवा
इरुर	वाऱॅन्ऱु	मिडिप्पुण्डु	पॉडिप्	पॉडियाहि
अरुर	वाऱॅन्ऱु	मरक्कऩ्ऩ	यडुशिलॅ	कॉडियोऩ्
करुर	वाऱॅन्ऱुम्	वाऩवर्	कॅत्तलम्	कुलॅन्दार् 1149

उऱ्ऱ आऱु ऎन्ऱुम्–टकराने का प्रकार यह ऐसा; ऒन्ऱु–एक के; नूऱायिरम् उरुवा–सौ हज़ार छोटे रूप हो; इऱ्ऱ आऱु ऎन्ऱुम्–मिटे ऐसा यह; इटिप्पुण्टु–आपस में टकराकर; पॊटि पॊटि आकि–चूर-चूर होकर; अऱ्ऱ आऱु ऎन्ऱुम्–अस्तित्व खो गया ऐसा, यह; अरक्कर्तं–राक्षस के सम्बन्ध में; कॊटियोऩ्–इस क्रूर ने; अट्टु चिलै–संहारक धनु (विद्या); कऱ्ऱवाऱु–कैसी सीखी है; ऎन्ऱुम्–यह भी कहकर; वाऩवर्–देव; कै तलम् कुलैन्ताऱ्–कंपायमान हाथों के हो गये। ११४९

देवों ने आपस में विस्मय और डर से कहा कि शर लगते भी कैसे हैं ? एक पर्वत कैसा अनेक सहस्र टुकड़ों में कट जाता है ! वे आपस में टकराकर कैसे चूर हो जाते हैं और आखिर अपना अस्तित्व ही कैसे खो जाते हैं ! यह क्रूर रावण ने यह घातक धनुर्विद्या भी कैसी सीखी है ! उनके हाथ काँप उठे। ११४९

अडऱु डैत्तुमॆऩ् ऱरिक्कुल वीररॆऩ् ऱॆऱिन्द
तिडऱु डैत्तऩ तशमुहऩ् शरमवै तिशैशूऴ्
कडल्तु डैत्तऩ कळत्तिऩिऩ् ऱुयर्दरुम् बूऴि
उडऱु डैत्तऩ वुदिरमुऩ् दुडैत्तदॊण् पुडवि 1150

अटल्–शक्ति; तुटैत्तुम्–मिटा देंगे; ऎन्ऱु–कहकर; अरिकुल वीरर्–हरिकुल के वीरों ने; अन्ऱु–उस दिन; ऎऱिन्त तिटल्–जो पर्वत फेंके उन्हें; तचमुकऩ्–दशमुख के; चरम्–जो शर थे; अवै–उन्होंने; तुटैत्तऩ–मिटा दिया; तिचै चूऴ्–दिशाओं में घेरे रहनेवाले; कटल् तुटैत्तऩ–समुद्रों को अस्तित्वहीन कर दिया (पर्वतों के टुकड़ों ने); कळत्तिल् निऩ्ऱु–युद्धभूमि से; उयर् तरुम् पूऴि–ऊपर उठनेवाली धूल; उटल् तुटैत्तऩ–(वीरों के) शरीरों पर जम गयी; उतिरमुम्–रक्त ने भी; ऒण् पुटवि–उज्ज्वल भूमि को; तुटैत्ततु–लीप दिया। ११५०

वानरों ने "रावण का बल मिटा देंगे" ऐसा कहते हुए जो पर्वत फेंके, उन्हें दशमुखों के शरों ने मिटा दिया। उन पर्वतों के टुकड़ों ने चारों दिशाओं के समुद्र को पाट दिया। युद्धभूमि से जो धूल उठी वह वीरों के शरीरों पर जाकर जम गयी। रक्त जो वहा, उसने भूमि को लिप्त कर दिया। (इस पद में 'तुटैत्तल्' पोंछना, लीपना, मिटाना, जमना आदि अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।)। ११५०

कॊल्वॆ निक्कण मेमऱ्ऱिव् वानरक् कुऴुवै
वॆल्वॆऩ् मानिड रिरुवरै यॆऩच्चॆचित्तम् वीङ्ग
वल्वऩ् वार्शिलै पत्तुड ऩिडक्कैयिऩ् वाङ्गिऩ्
तॊल्वऩ् मारियिऱ् ऱॊडर्वऩ शुडुशरन् दुरन्दाऩ् 1151

इ–इस; वानर कुऴुवै–वानरवृन्द को; इ कणमे–इसी क्षण; कॊल्वॆऩ्–मारूँगा; मऱ्ऱुम्–और; मानिटर् इरुवरै–दोनों मानवों को; वॆल्वॆऩ्–जीतूँगा;

अँत–यह सोचकर; चित्तम् वीङ्क–कोप के बढ़ते; वल् वन्–बहुत कठोर; वार् चिलै–लम्बे धनु; पत्तुटन्–दस को; इट कैयिन् वाङ्कि–बायें हाथ में लेकर; तौल् वल् मारियिल्–बहुत दिनों की बड़ी वर्षा के समान; तौटर्वन–लगातार आनेवाले; चुट्टचरम्–गरम शर; तुरन्तान्–छोड़े। ११५१

रावण ने यह कहते हुए कि 'मैं इस वानरवृन्द को अभी मौत के घाट उतार दूंगा और उन दोनों नरों पर जीत पाऊँगा' बढ़ते क्रोध के साथ दस कठोर धनुओं को बायें हाथों में लेकर बहुत दिनों की विपुल वर्षा के समान सन्तापक बाण छोड़े। ११५१

ऐयि रण्डुकार् मुहत्तिनु मायिरम् बहळि
कैह ळीरैन्दि नालुम्वॆङ् गडुप्पितिर् रॊडुत्तुर्
रॆय्य वॆञ्जिन वानमु मिरुनिल वरैप्पुम्
मॊय्हॊळ् वेलैयुन् दिशैहळुञ् जरङ्गळाय् मुडिन्द 1152

ऐयिरणटु–पाँच के दो (दस); कार् मुकत्तितुम्–कार्मुकों से; आयिरम् पकळि–हजार बाणों को; कैकळ् ईरैन्तिनालुम्–दसों हाथों से; वॆम् कटुप्पितिल्–ग़जब की तेजी से; तॊटुत्तुरुऊ अॆय्य–लगातार चलाने से; अॆञ्चित वानमुम्–पार रहा आकाश और; इरु निलम् वरैप्पुम्–बड़ा भूमि का विस्तार; मॊय् कॊळ्–बलयुक्त; वेलैयुम्–समुद्र भी; तिचैकळुम्–और दिशाएँ; चरङ्कळाय्–शर; मुटिन्त–बन चुकीं। ११५२

दसों कार्मुकों से, दसों हाथों से सहस्र-सहस्र शरों को लगाकर छोड़ देने पर भूतों के पार रहा आकाश, विशाल भूमि का सारा विस्तार और सबल सागर —सभी शरों के रूप में बदल गये (सब शरों से ढँक गये।)। ११५२

अन्दि वानह मौत्तदव् वमर्क्कळ मुदिरञ्
जिन्द वेलैयुन् दिशैहळु निरैन्दन शिनत्तार्
पन्दि पन्दियाय् मडिन्ददु वानरप् पहुदि
वन्दु मेहङ्गळ् पडिन्दन पिणप्पॆरु मलैमेल् 1153

उतिरम् चिन्त–रक्त के गिरने से; अ अमर् कळम्–वह समराजिर; अन्ति वानकम् औत्ततु—संध्यागगन के समान हुआ; (उतिरम् चिन्त–रक्त के गिरने से) वेलैयुम्–समुद्र और; तिचैकळुम्–दिशाएँ; निरैन्तन–भर गयीं; चिनत्ताल्–(रावण के) कोप से; वानर पकुति–वानर-सेना; पन्ति पन्तियाय्–पंक्तियों में; मटिन्ततु–मर गयी; पिणम् पॆरुमलै मेल्–लाशों के पर्वतों पर; मेकङ्कळ् वन्तु पटिन्तन–मेघ आकर जम गये। (उतिरम् चिन्त–"देहली-दीपक" है)। ११५३

रक्त बहा, इसलिए समरांगण संध्यागगन-सम दिखा। रक्त बहा और उससे समुद्र और दिशाएँ भर गयीं। रावण के क्रोध के (युद्ध के)

फलस्वरूप वानर-सेना पंक्ति-पंक्ति में मरकर गिरी। उनके लाशों के पर्वत बन गये, जिन पर मेघ आकर ठहरे। ११५३

नील नम्बोडु शॅन्ऱिल निम्ऱिल ननिलन्
काल नार्वयत् तडैन्दिल नेवुण्ड कवयन्
आल मन्नदोर् शरत्तोडु मङ्गद नयर्न्दान्
शूल मन्नदोर् वाळियार् चोम्बिनन् शाम्बन् 1154

नीलन्–नील; अम्पोटु–शर के साथ; चॅन्ऱिलन्–नहीं चल सका; अनिलन्–अनिल; निन्ऱिलन्–खड़ा नहीं रह सका; ए उण्ट–शराहत; कवयन्–गवय; कालतार् वयत्तु–यम के वश में तो; अटैन्तिलन्–नहीं पहुँचा (इतना ही कसर था); अङ्कतन्–अंगद; आलम् अन्नतु ओर्–हलाहल-सम एक; शरत्तोटुम् अयर्न्तान्–शर के साथ थकित हुआ; चाम्पन्–जाम्बवान; चूलम् अन्नतोर्–शूल के समान एक; वाळियाल्–शर से; चोम्पितान्–श्लथ हो गया। ११५४

नील पर शर लगा और वह चल नहीं सका। अनिल खड़ा नहीं रह सका। शर-प्रहार पाकर गवय यम के समीप नहीं पहुँचा; उतना ही कसर रह गया। अंगद हलाहल-सम एक वाण का शिकार बना और शिथिल पड़ गया। जाम्बवान शूलसदृश एक वाण से निस्पन्द हो गया। ११५४

मऱ्ऱुम् वीरर्तम् मरुमत्ति नयिलम्बु मडुप्पक्
कॉऱ्ऱ वीरमु माण्डॉळिऱ् चॅय्हैयुङ् गुऱैन्दार्
शुऱ्ऱुम् वानरप् पॅरुङ्गड ऱॉलैन्दडु तोलैया
दुऱ्ऱु निन्ऱव रोडिन रिलक्कुव नुरुत्तान् 1155

मऱ्ऱुम्–और अन्य; वीरर्–वीर; तम् मरुमत्तिन्–अपने-अपने मर्मस्थान पर; अयिल् अम्पु–तीक्ष्ण शरों के; मटुप्प–लगने से; कॉऱ्ऱम् वीरमुम्–विजयी वीरता; आण् तॊऴिल् चॅय्कैयुम्–वीर-कार्य के कृत्यों से; कुऱैन्तार्–हीन हुए; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; वानरर् पॅरु कटल्–वानरों का बड़ा सागर; तॊलैन्ततु–मिट चला; तॊलैयातु–विना मरे; उऱ्ऱु निन्ऱवर्–जीवित खड़े रहे; ओटितर्–भागे; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; उरुत्तान्–क्रुद्ध हुआ। ११५५

अन्य वीर, अपने-अपने मर्मस्थलों में शरों के लगने से अपनी वीरता, पौरुषयुक्त व्यवहारशक्ति सबसे हीन हो गये। चारों ओर की वानर-सेना का सागर नहीं रह गया। जो मरे विना रहे, वे भाग खड़े हुए। लक्ष्मण यह देखकर क्रुद्ध हुआ। ११५५

नूऱु कोडिय नूऱून् ऱायिर कोडि
वेऱु वेऱॅय्द शरमॅलाञ् जरङ्गळाल् विलक्कि

एऱु शेवहऩ् ऱम्बियव् विरावण ऩॆडुत्त
आऱु नालुवॆञ् जिलैयैयुङ् गणैहळा लऱुत्ताऩ् 1156

नूऱु कोटिय–सौ करोड़ के; नूऱु नूऱायिर कोटि–सौ लाख करोड़ के; वेऱु वेऱु ऎय्त–अलग-अलग चलाये गये; चरम् ऎलाम्–बाण सभी; एऱु चेवकऩ् तम्पि–वर्धनशील वीरता से युक्त श्रीराम के भाई ने; चरक्कळाल् विलक्कि–अपने बाणों से काटकर; अव् इरावणऩ्–उस रावण के; ऎंदुत्त–(अपने हाथों में) रहे; आऱु नालु–(छः और चार) दसों; वॆम् चिलैयैयुम्–कठोर चापों को; कणैकळाल्–सायकों से; अऱुत्ताऩ्–काट दिया। ११५६

सौ करोड़, सौ-सौ हज़ार करोड़ के अलग-अलग चलाये सभी शरों को, वर्धनशील वीरता के श्रीराम के छोटे भाई ने अपने शरों से रोक लिया और रावण के दस हाथों में उठाये रहे दसों चापों को काट दूर किया। ११५६

आर्त्तु वाऩव रावलङ् गॊट्टित्त ररक्कर्
वेर्त्तु नॆञ्जमुम् वॆंदुम्बिऩर् विऩैयऱु मुऩिवर्
तूर्त्तु नाण्मलर् शॊरिन्दऩ रिरावणऩ् ऱोळैप्
पार्त्तु वन्दऩऩ् कुऩित्तऩ नल्लऱम् बाडि 1157

वाऩवर्–देवों ने; आर्त्तु–हल्ला मचाकर; आवलम् कॊट्टिऩर्–आनन्दघोष किया; विऩै अऱु मुऩिवर्–कर्ममुक्त मुनियों ने; नाण् मलर्–तद्दिनविकसित फूल; चॊरिन्तु तूर्त्तऩर्–बरसाकर भर दिया; नल् अऱम्–श्रेष्ठ धर्म (देवता); पाटि कुऩित्तऩ–गाया-नाचा; अरक्कर्–राक्षस; वेर्त्तु–स्वेदयुक्त हो; नॆञ्चमुम्–मन में; वॆतुम्पिऩर्–तप्त हुए; इरावणऩ्–रावण; तोळ् पार्त्तु–(लक्ष्मण के) कन्धों को देख; उवन्तऩऩ्–खुश हुआ। ११५७

देवों ने आनन्द से शोर मचाया। कर्मबन्धनमुक्त मुनिगणों ने तद्दिनविकसित पुष्प बरसाये और समरभूमि को भर दिया। अच्छे धर्मदेवता गाये और नाचे। तब राक्षसों के शरीर स्वेद से भर गये। रावण ने लक्ष्मण का भुजबल देखा और मोद का अनुभव किया। ११५७

नऩ्ऱु पोर्वलि नऩ्ऱुपो राळ्वलि वीरम्
नऩ्ऱु नोक्कमु नऩ्ऱुहैक् कडुमैयु नऩ्ऱु
नऩ्ऱु कल्वियु नऩ्ऱुनिऩ् ऱिण्मैयु नलऩुम्
ऎऩ्ऱु कॆम्ममरिऩ् तिरावण ऩॊरुवऩो यॆऩ्ऱाऩ् 1158

पोर् वलि–युद्ध का बल; नऩ्ऱु–अच्छा है; पोर् आळ्वलि–युद्ध शासित करने की; वीरम् नऩ्ऱु–वीरता श्रेष्ठ है; नोक्कमुम् नऩ्ऱु–दृष्टि श्लाघनीय है; कै कटुमैयुम्–हस्तवेग; नऩ्ऱु–बहुत अच्छा है; कल्वियुम् नऩ्ऱु–और अस्त्रविद्या भी अच्छी है; निऩ् तिण्मैयुम्–तुम्हारा साहस; नलऩम्–युक्तता; नऩ्ऱु–अच्छी है;

ऍऩ्ऱु–ऐसा कहकर; इरावणऩ्–रावण ने; कै मऱित्तु–हाथ मोड़कर; नी ऑरुवऩ्–तुम अकेले (ऐसे वीर) हो; ऍऩ्ऱाऩ्–(प्रशंसा में) कहा। ११५८

रावण ने प्रशंसा की। वाह तुम्हारा साहस प्रशंसनीय है! युद्ध-शासन की दक्षता और वीरता भली है! तुम्हारी दृष्टि श्लाघनीय है! हस्त की तीव्र गति भली है! हथियार चलाने की विद्या भी खूब है! तुम्हारा मनोवल, तुम्हारा युद्ध-युक्ति-सौंदर्य वड़ा अच्छा है। वाह! रावण ने अपना हाथ मोड़कर कहा कि तुम अकेले वीर हो (जिसका जोड़ दूसरा नहीं)। ११५८

**कानि ऩऩ्ऱिहऱ् करऩ्बडै पडुत्तवक् करियोऩ्
ताऩु मिऩ्दिरऩ् ऱऩ्ऩैयोर् तऩुवलऩ् दऩ्ऩाल्
वाऩिल् वॆऩ्ऱवॆऩ् मदलैयुम् वरिशिलै पिडित्त
याऩु मल्लवर् यारुऩक् कॆदिरॆऩ्ऱु मिशैत्ताऩ् 1159**

काऩिऩ्–वन में; अऩ्ऱु–उन दिनों; इकल्–विरोध करके आयी; करऩ् पटै–खर की सेना को; पटुत्त–जिन्होंने मिटाया; अ करियोऩ् ताऩुम्–वे श्यामल (श्रीराम) और; इऩ्तिरऩ् तऩ्ऩै–इन्द्र को; ओर् तऩु वलम् तऩ्ऩाल्–एक धनु के वल से; वाऩिल् वॆऩ्ऱ–(जिसने) स्वर्ग में जीत लिया; ऍऩ् मतलैयुम्–वह मेरा पुत्र; वरि चिलै–सवन्ध धनु; पिटित्त–जिसने लिया है; याऩुम्–वह मैं; अल्लवर्यार्–(इनको) छोड़ कौन; उऩक्कु ऍतिर्–तुम्हारा सामना कर सकेगा। ११५९

दण्डक वन में उस दिन खर आदि को जिन्होंने मारा वे श्यामल श्रीराम, एक ही धनु से जिसने इन्द्र को जीता वह मेरा पुत्र और कार्मुकहस्त मैं —इन तीनों के अलावा कौन है जो तुम्हारी समानता कर सके? ११५९

**विल्लि ऩालिवऩ् वॆलप्पडा वॆऩ्ऩच्चिऩम् वीङ्गक्
कॊल्लु नाळुमिऩ् ऱिदुवॆऩच् चिऩ्दैयिऱ् कॊण्डाऩ्
पल्लि ऩालिद ऴदुक्किऩऩ् परुवलिक् करत्ताल्
ऍल्लि नाऩ्मुहऩ् कॊडुत्तदोर् वेलॆडुत् तॆऱिऩ्दाऩ् 1160**

इवऩ्–यह; विल्लिऩाल्–धनु से; वॆलप्पटाऩ्–न जीता जा सकेगा; ऍऩ्–सोचने पर; चिऩम् वीङ्क–क्रोध के वढ़ते; कॊल्लुम् नाळुम्–मारने का दिन भी; इऩ्ऱु–आज है; इतु ऍऩ–यही कार्य है, ऐसा; चिऩ्तैयिल् कॊण्टाऩ्–मन में निर्णय करके; पल्लिऩाल्–दाँतों से; इतऴ् अतुक्किऩऩ्–ओंठ दवा दी; परु वलि–वहुत वलपूर्ण; करत्ताल्–हाथ से; ऍल्लिऩ्–तेजोमय; नाऩ्मुकऩ्–चतुर्मुख (द्वारा); कॊटुत्त्तु ओर्–दत्त एक; वेल् ऍटुत्तु–शक्ति लेकर; ऍऱिऩ्ताऩ्–फेंक दी। ११६०

रावण ने विचार किया कि यह धनु द्वारा जीता जा नहीं सकेगा। वढ़ते क्रोध के साथ उसने निश्चय किया कि आज ही उसे मारने का दिन है (मारना चाहिए)। होंठ काटते हुए उसने अपने अतिवलवान हाथ से उज्ज्वल ब्रह्मा-दत्त शक्ति को उठाकर उन पर फेंक दिया। ११६०

ऍऱिन्द कालवे लॅय्दवम् बियावैयु मॅरित्तुप्
पॊऱिन्दु पोयुहत् तीयुह विशैयितिऱ् पॊङ्गिच्
चॅऱिन्द तारवन् मार्बिडैच् चॅन्ऱदु शिन्दै
अऱिन्द मैन्दनु ममर्नॅडुङ् गळत्तिडै ययर्न्दान् 1161

ऍऱिन्त–फेंकी गयी; काल वेल्–यम-सी शक्ति; ऍय्त अम्पु यावैयुम्–चलाये गये सभी शरों को; ऍरित्तु–जलाकर; पॊऱिन्तु पोय् उक–अंगारे बनकर जा बिखरने देकर; ती उक–आग बरसाते हुए; विचैयितिल्–तेजी से; पॊङ्कि–बढ़कर; चॅऱिन्त तारवन्–पुष्पबहुल मालाधारी (लक्ष्मण) के; मार्पु इटै–वक्ष में; चॅन्ऱतु–घुसी; चिन्तै अऱिन्त–मन से जानकर; मैन्तनुम्–वीर कुमार (लक्ष्मण) भी; नॅटु–विशाल; अमर् कळत्तिटै–युद्धभूमि में; अयर्न्तान्–मूर्च्छित हो गिर पड़े। ११६१

रावण-प्रयुक्त यम-सी शक्ति ने सभी शरों को जलाया, और अंगारे बनाकर छितरा दिया। आग बरसाते हुए वह बढ़ चली। घनी पुष्पमाला से अलंकृत वक्ष वाले लक्ष्मण के वक्ष में जा लगी। लक्ष्मण ने मन में जान लिया कि यह ब्रह्मा की शक्ति है। वे समरभूमि में मूर्च्छित होकर पड़े रह गये। ११६१

इरिय लुऱ्ऱदु वानरप् पॅरुम्बडै यिमैयोर्
परिय लुऱ्ऱन रुलैन्दनर् मुनिवरुम् बदैत्तार्
विरिदि रैक्कडऱ् किरट्टिकॊण् डार्त्तनर् विरवार्
तिरिहै यॊत्तदु मण्डलङ् गदिरॊळि तिरिन्द 1162

वानरम् पॅरु पटै–वानरों की बड़ी सेना; इरियल् उऱ्ऱतु–अस्त-व्यस्त हुई; इमैयोर्–स्वर्गवासी देव; परियल् उऱ्ऱनर्–अनुताप करने लगे; मुनिवरुम्–मुनिवर भी; उलैन्तनर् पतैत्तार्–क्षुब्ध और बेचैन हुए; विरवार्–विरोधी राक्षसों ने; विरि तिरै कटऱ्कु–ऊर्मिमाली के; इरट्टि कॊण्टु–दुगुने; आर्त्तनर्–शोर मचाया; मण्टलम्–भूमण्डल; तिरिकै ऒत्ततु–चक्की (या चक्र) सम हुआ; कतिर् ऒळि–सूर्यरश्मि; तिरिन्त–(स्वभाव में) भिन्न बन गयी। ११६२

बड़ी वानर-सेना तितर-बितर भागी। देवगण अनुताप करने लगे। मुनिलोग क्षुब्ध हुए, बेचैन हुए। विरोधी राक्षस ऊर्मिमाली के दुगुने जोर से नर्दन कर उठे। भूमंडल भी चक्र के समान घूमने लगा। ११६२

अञ्जि नानल नयत्तन्द वेलिनु मावि
तुञ्जि नानलन् ऱुळङ्गिना नॅन्बदु तुणिया
ऍञ्जि लियाक्कैये यॆडुत्तुक्कॊण् डहल्वनॅन् ऱॆण्णि
नञ्जि नार्चॆय्द नॅञ्जिनान् पार्मिशै नडन्दान् 1163

अयन् तन्त–चतुर्मुख-दत्त; वेलित्तुक्कु–शक्ति से; अञ्चित्तान् अलन्–डरा नहीं; आवि तुञ्चित्तान् अलन्–प्राण त्यागे नहीं; तुळङ्कित्तान्–श्रान्त हुआ है; ॲन्पतु–यह बात; तुणिया–निश्चित रूप से जानकर; ॲञ्चु इल् इ–अथक इस; याक्कैये–शरीर को; ॲट्टुत्तु कॊण्टु–ले लेकर; अकल्वन्–चला जाऊँगा; ॲन्ऱु–ॲण्णि–सोचकर; नञ्चित्ताल् चॆय्त–विषनिर्मित; नॆञ्चित्ताल्–मनवाला; पारिन् ॳ्–भूमि पर; नटन्तान्–पैदल चला। ११६३

लक्ष्मण ब्रह्मा की दी हुई शक्ति से डरे नहीं; न वह मरे ही! पर वे त बने रहे। यह रावण ने निश्चित रूप से जान लिया। 'इस अथक र को ले जाऊँगा' यह सोचकर विषाक्तमन रावण भूमि पर पैदल चलता लक्ष्मण के समीप आया। ११६३

उळ्ळि वॆम्बिणत् तुदिरनीर् वॆळ्ळत्ति नोडि
अळ्ळि यङ्गैह ळिरुपदुम् बऱ्ऱिप्पण् डरन्मा
वॆळ्ळि यङ्गिरि यॆडुत्तदु वॆळ्हिना नॆन्न
ॲळ्ळिल् पॊन्मलै यॆडुक्कलुऱ् ऱानॆन वॆडुत्तान् 1164

उळ्ळि–सोचकर; वॆम् पिणत्तु–डरावने, लाशों के; उतिरम् नीर् वॆळ्ळत्तिन्–रुधिर-द्रव के प्रवाह से होकर; ओटि–दौड़कर; अम् कैकळ् इरुपतुम्–बीसों सुन्दर हाथों से; अळ्ळि पऱ्ऱि–मिलाकर पकड़कर; पण्टु–पहले; अरन्–हरि के; मा वॆळ्ळि अम् किरि–बड़े रजत के (ही) सुन्दर (कैलास) पर्वत को; ॲटुत्ततन्–उठाया था; वॆळ्किनान् ॲन्त–(यह सोचकर) शरमाता-जैसे; ॲळ्ळिल्–अनिंद्य; पॊन् मलै–स्वर्ण-पर्वत को; ॲटुक्कल् उऱ्ऱान्–उठाने लगा; ॲन ॲटुत्तान्–जैसे उठाया। ११६४

इस संकल्प के साथ वह लाशों से वहनेवाले रक्त के प्रवाहों से होकर बढ़ा। उसने अपने बीसों हाथों से इतनी आतुरता से स्वर्णगिरि-सम उन्हें उठाने का उपक्रम किया, मानो पहले रजतगिरि को उठाने से लजाकर अब स्वर्णगिरि उठा रहा हो! । ११६४

अडुत्त नल्लुणर् वॊळिन्दिल नम्बरञ् जॆम्बॊन्
उडुत्त नायहन् ऱानॆन वुणर्दलि नॊरुङ्गे
तॊडुत्त वॆण्वहै मूर्त्तियैत् तुळक्कियॆण् पॊरुप्पो
डॆडुत्त तोळ्हळुक् कॆळ्ळिन्दिल निरामनुक् किळैयान् 1165

इरामनुक्कु इळैयान्–श्रीराम के लघुभ्राता; चॆम् पॊन् अम्परम्–लाल स्वर्णांबर; उटुत्त नायकन्–पहननेवाला देव; तान् ॲन–मैं हूँ, ऐसा; ऒरुङ्के–एकाग्रता से; उणर्तलिन्–समझकर इसलिए; अटुत्त–लगी; नल् उणर्वु–अच्छी सुधि; ऒळिन्तिलन्–नहीं छोड़ी; तॊटुत्त ॲण् वकै मूर्त्तियै–सम्मिलित अष्टमूर्ति (शिव) को; तुळक्कि–हिलाकर; वॆण् पॊरुप्पॊटु–रजतगिरि के साथ; ॲटुत्त–जिन्होंने उठाया; तोळ्कळुक्कु–उन कन्धों के लिए; ॲळ्ळिन्तिलन्–उठाने के लिए सुलभ नहीं रहे। ११६५

श्रीराम के भाई के एकाग्र मन में यह भान हो गया कि मैं पीताम्बर-धारी विष्णु का अंश हूँ। इसलिए वे उस सुधि से विमुक्त नहीं हुए थे। अतः (पंचमहाभूत, सूर्य, चन्द्र और यज्ञकर्ता आदि) अष्टशरीरी शिवजी को हिलाते हुए उनके साथ रजतगिरि कैलास को जिन हाथों ने उठाया था उन रावण के हाथों से उठनेवाले नहीं बने। ११६५

तलैहळ् पत्तोंडुन् दळुविय तशमुहत् तलैवन्
निलैहोळ् माक्कड लोत्तनन् करम्बुडै निमिरुम्
अलैहळ् ओत्तन वदिलॅळु मामदि योत्तान्
इलैहोळ् तण्डुळा यिलङ्गुतो ळिरामनुक् किळैयान् 1166

तलैकळ् पत्तोटुम्–दस सिरों के साथ; तळुविय–जो रहा वह; तचमुकन् तलैवन्–रावण राजा; निलै कोळ्–स्थिर रहे; मा कटल् ओत्तनन्–बड़े सागर के समान रहा; पुटै–पार्श्वों में; निमिरुम् करम्–उठे हुए हाथ; अलैकळ् ओत्तन–लहरों के समान रहे; अतिल् ॲळुम्–उस (हस्तवृन्द) के ऊपर शोभित; इलै कोळ्–पत्रसहित; तण् तुळाय्–शीतल तुलसीमाला; इलङ्कु–जिन पर शोभ रही थी; तोळ्–उन कन्धों के; इरामनुक्कु–श्रीराम के; इळैयान्–छोटे भाई; अतिल् ॲळुम्–उस समुद्र पर उदित; मा मति ओत्तान्–श्रेष्ठ चन्द्र के समान दिखे। ११६६

तब दसों सिरों के साथ रावण स्थिर एक समुद्र के समान दिखा और उसके पार्श्व में उठे रहे हाथ लहरों के समान। उस हस्तसमूहमध्य शीतल सुगन्धित तुलसीपत्रमालाधारी श्रीराम के भाई समुद्र पर उदित श्रेष्ठ चन्द्र के समान शोभे। ११६६

ॲडुक्क लुऱ्ऱवन् मेनियै येन्दुदऱ् केऱ्ऱ
मिडुक्कि लामैयि ऩिरावणन् वॆय्दुयिर्प् पुऱ्ऱान्
इडुक्किल् निऩ्ऱ वम्मारुदि पुहुन्दॆडुत् तेन्दित्
तडुक्क लाददोर् विशैयिनि ऩॆळ्नदयल् शाऱ्न्दान् 1167

ॲटुक्कल् उऱ्ऱु–लेने में प्रवृत्त होकर; अवन् मेतियै–उनके शरीर को; एन्तुतऱ्कु एऱ्ऱ–उठाने के लिए आवश्यक; मिटुक्कु इलामैयिऩ्–बल न रहने के कारण; वॆय्तु उयिर्प्पु–गरम साँसें छोड़ती स्थिति में; उऱ्ऱान्–आ गया; इटुक्किऩ्–(कहीं किसी) कोने में; निऩ्ऱ–खड़ा रहा; अ मारुति–वह मारुति; पुकुन्तु–प्रवेश करके; एन्ति ॲटुत्तु–धारण कर लेकर; तटुक्कलातत–दुर्वार; ओर् विचैयिऩिऩ्–एक तेजी के साथ; अयल् चार्न्तान्–अलग चला गया। ११६७

रावण ने उठाने का प्रयास किया। पर उसके योग्य शक्ति नहीं थी। उसका शरीर स्वेद से भर गया। दम फूलने लगा और साँसें गरम हो गयीं। तब कहीं कोने में खड़ा रहा हनुमान आया, लक्ष्मण को उठा लेकर अवरुद्धगति से अलग हो गया। ११६७

तॊक्कवॊरुङ्गिय ञानमॊन्‌ ऍवरिनुन्‌ दूयान्‌
तहवु कॊण्डदोर्‌ नण्बॆनुन्‌ दनित्तुणै यदनाल्‌
अहवु कादला लाण्डहै यायिनु मनुमन्‌
महवु कॊण्डुपोय्‌ मरम्बुहु मन्दियै निहर्त्तान्‌ 1168

तॊक ऑरुङ्किय–एकत्र राशिभूत; ञानम्‌ ऑन्ऱु–ज्ञानविशिष्ट; ऍवरिनुम्–किसी से भी; तूयान्‌–पवित्र (हनुमान); आण्‌ टकै आयिनुम्‌–(लक्ष्मण) पुरुषोत्तम थे तो भी; तकवु कॊण्टतु ओर्‌–योग्यता-प्राप्त एक; नण्पु–सख्य; ऍनुम्–रूप की; तनि तुणै–अद्वितीय जो सहायता थी; अतनाल्‌–उससे; अकवु कातलाल्–पक्व भक्ति से; मकवु कॊण्टु पोय्‌–बच्चे को ले जाकर; मरम्‌ पुकुम्‌–वृक्ष पर पहुँचनेवाले; मन्तियै निकर्त्तान्‌–वानरी के समान रहा। ११६८

एकीभूत ज्ञानराशि से भूषित सभी ज्ञानियों में पवित्र हनुमान पुरुषोत्तम का अंश होते हुए भी लक्ष्मण को इसलिए उठा सका कि सख्य की सहायता थी और भक्ति प्रगाढ़ थी। उन्हें उठाकर चलते वक़्त वह बच्चे को उठाते हुए वृक्ष पर जानेवाली वानरी के समान शोभा। ११६८

मैयल्‌ कूर्मनत्‌ तिरावणन्‌ पडैयिनाल्‌ मयङ्गुम्‌
जॆय्य वाळरि येर्नान्‌ शिरिदिनिर्‌ ऱेरक्‌
कैयुङ्‌ गाल्हळु नयनमुङ्‌ गमलमे यनैय
पॊय्यि लादव निन्ऱिडत्‌ तनुमनुम्‌ बोनान्‌ 1169

मैयल्‌ कूर्–भ्रम-भरे; मनत्तु–मन के; इरावणन्‌ पटैयिनाल्–रावण के हथियार से; मयङ्कुम्–मूर्च्छित; चॆय्य–श्रेष्ठ; वाळ्–क्रूर; अरि एऱु–नर सिंह; अनान्‌–सदृश लक्ष्मण; चिरितिनिल्–थोड़ी देर में; तेऱ–होश में आ गये तो; कैयुम्‌ कालकळुम्‌ नयनमुम्‌–हाथ, पैर और नेत्र; कमलमे अनैय–(जिनके) कमल ही सम थे उन; पॊय्यिलातवन्–असत्यहीन; निन्ऱ इटत्तु–(श्रीराम) जहाँ खड़े रहे उस स्थान को; अनुमनुम्‌ पोनान्‌–हनुमान भी गया। ११६९

मोह में पड़े मन के रावण द्वारा फेंकी गयी शक्ति के लगने से जो श्रेष्ठ, क्रूर व केसरीराज-सम लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े थे, वे अब थोड़ी देर में स्वस्थ हो गये। तब हनुमान कमलहस्त, कमलचरण, कमलनेत्र और सत्यसंध श्रीराम के पास चला। ११६९

पोन कालैयिऱ्‌ पुक्कनन्‌ पुङ्गवन्‌ पोर्वॆट
टानै मेर्चॆलुङ्‌ गोळरि येरिव नॆन्न
वानु ळोर्कण मार्त्तनर्‌ तूर्त्तनर्‌ मलर्मेल्‌
तून विन्रवे लरक्कनुन्‌ देरिनैत्‌ तुरन्दान्‌ 1170

पोन कालैयिल्–जब वह गया तब; पुङ्कवन्–नरपुंगव श्रीराम; आनै मेल्‌ चॆलुम्–गज पर आक्रमण करनेवाले; कोळ्‌ अरि एऱु–बलवान सिंहराज; इवन्‌ ऍन्न–ये हैं ऐसा;

पोर् वेट्टु–युद्ध चाहकर; पुक्कतन्–जा पहुँचे; वानुळोर–स्वर्गवासी; कणम्–वृन्द; आर्त्ततर्–कोलाहल मचा उठे; मलर्–पुष्प; मेल् तूर्त्ततर्–अधिक बरसाये; तू नविन्ऱ–मांसलिप्त; वेल् अरक्कतुम्–भालाधारी राक्षस ने भी; तेरितै–रथ को; तुरन्तान्–श्रीराम की ओर चलाया। ११७०

जब वह गया तब श्रीराम गज पर झपटते केसरीराज के समान, युद्ध करने की चाह लेकर रावण पर गये। आकाशवासियों ने हो-हल्ला मचाया। पुष्प बरसाये। मांसलिप्त भालाधारी रावण ने भी रथ को आगे बढ़ाया। ११७०

तेरिऱ् पोररक् कन्शॅलच् चेवहन् तनियॆ
पारिऱ् चॅल्हिन्ऱ वऱुमैयैप् पार्त्ततनन् परिन्दान्
शीरिऱ् चॅल्हिन्ऱ दिल्लैयिच् चॅरुवॆनुन् दिऱत्ताल्
वारिऱ् पॅय्हऴल् मारुदि कदुमॆन वन्दान् 1171

पोर् अरक्कन्–योद्धा राक्षस के; तेरिल् चॆल–रथ पर जाते; चेवकन्–श्रीराम को; तनियॆ–अकेले; पारिऱ् चॅल्किन्ऱ–भूमि पर जाने की; वऱुमैयै–दीनता को; पार्त्ततनन्–देखा; परिन्तान्–अनुताप किया; वारिल् पॅय्कऴल्–फ़ीते में कसी पायलधारी; मारुति–हनुमान; इ चॅरु–यह लड़ाई; चीरिल् चॅल्किन्ऱतु इल्लै–ठीक प्रकार से चलती नहीं; ऍन्नुम् तिऱत्ताल्–इस विचार से; कतुम् ऍन–तेजी से; वन्तान्–आया। ११७१

फ़ीते में बँधी पायल-धारी हनुमान ने रावण को रथ पर सवार देखा और श्रीराम की भूमि पर पैदल चलने की दीनता देखी। सोचा कि यह द्वन्द्व ठीक नहीं। वह जल्दी श्रीराम के पास आया। ११७१

नूऱु पत्तुडै नॊऱिल्परित् तेरिन्मे नुन्मुन्
मारिल् पोररक् कन्बोर निलत्तुनी मलैदल्
वेऱु काट्टुमोर् वॆऱुमैयै मॆल्लिय वॆन्नुम्
एऱु नीयॆय वॆन्नुडैत् तोळिन्मे लॆन्ऱान् 1172

मारिल्–बेजोड़; पोर् अरक्कन्–योद्धा राक्षस; नॊऱिल्–तीव्रगामी; नूऱु पत्तु उटै–सहस्र; परि–अश्वों के; तेरिन् मेल्–रथ पर; नुन् मुन् पोर–आपका सामना करके जब लड़ेगा तब; निलत्तु–भूमि पर रहकर; नी मलैतल्–आपका लड़ना; ओर् वॆऱुमैयै–एक दीनता को ही; वेऱु काट्टुम्–अलग (स्पष्ट) रूप से प्रकट कर देगा; ऐय–प्रभु; मॆल्लिय ऍन्तिनुम्–कोमल (निर्बल) हैं तो भी; ऍन्नुटै तोळिन् मेल्–मेरे कन्धों पर; नी–आप; एऱु–चढ़ लें; ऍन्ऱान्–कहा (मारुति ने)। ११७२

हनुमान ने श्रीराम से प्रार्थना की कि अनन्य योद्धा रावण सहस्र-अश्व-युक्त रथ पर बैठकर आपसे युद्ध करे और आप भूमि पर खड़े होकर करें। यह आपके अतिशय दैन्य को विशेष रीति से रौशन करा देगा। इसलिए हे प्रभु, मेरे कंधों पर, यद्यपि वे कोमल हैं, चढ़ जाइए। ११७२

नऩ्ऱु नऩ्ऱॆऩ्ऩा नायह ऩेऱिऩ नामक्
कुऩ्ऱिऩ् मेलिवर् कोळरि येऱॆऩक् कूऱि
अऩ्ऱु वाऩव राशिह ळियम्बिऩ रीऩ्ऱ
कऩ्ऱु ताङ्गिय तायॆऩ मारुदि कळित्ताऩ् 1173

नायकऩ्–नायक श्रीराम; नऩ्ऱु नऩ्ऱु–अच्छा, अच्छा; ऎऩ्ऩा–कहकर; एऱिऩऩ्–चढ़ बैठे; नामम् कुऩ्ऱिऩ् मेल्–प्रकीर्तित किसी पर्वत पर; इवर्–चढ़े हुए; कोळरि एऱु–केसरीराज; ऎऩ्ऩ कूऱि–ऐसा कहकर; अऩ्ऱु–तव; वाऩवर्–देवों ने; आचिकळ् इयम्पिऩर्–आशीर्वचन कहे; ईऩ्ऱ कऩ्ऱु–अभी जनमे बछड़े को; ताङ्किय ताय्–धारण करनेवाली माता गाय; ऎऩ्ऩ–जैसे; मारुति कळित्ताऩ्–मारुति मुदित हुआ। ११७३

नायक श्रीराम ने अच्छा, अच्छा कहा और हनुमान के कंधों पर चढ़कर बैठ गये। तब देवों ने कहा कि प्रकीर्तित किसी पर्वत पर चढ़े संहारक नरकेशरी के समान हैं और आशीर्वाद दिया। मारुति अपने तभी जनमे वछड़े को ढोनेवाली माता गाय के समान मुदित हुआ। ११७३

माणि यायुल हळन्दना ळवनुडै वडिवै
आणि यायुणर् मारुदि यदिशय मुऱ्ऱाऩ्
काणि याहप्पण् डुडैयना मॊरुदनिक् कलुळऩ्
नाणि नाऩ्मऱ्ऱै यननृदनुन् दलैनडुक् कुऱ्ऱाऩ् 1174

माणियाय्–ब्रह्मचारी (वामन) बनकर; उलकु अळन्त नाळ्–जिस दिन लोकों को नापा उस दिन; अवऩुटै–उन (भगवान) के; वटिवै–रूप को; आणियाय्–बहुत ही स्थिर रूप से; उणर् मारुति–जाननेवाला मारुति; अतिचयम् उऱ्ऱाऩ्–विस्मित हो गया; काणियाक–अपने स्वत्व के रूप में; पण्टु उटैयताम्–प्राचीन काल से जो मानता आया; ऒरु तनि कलुळऩ्–वह अप्रतिम गरुड़; नाणिताऩ्–लजा गया; मऱ्ऱै–दूसरा (स्वत्व माननेवाला); अनन्ततनुम्–अनंत भी; तलै नटुक्कुऱ्ऱाऩ्–सिरों में कम्पन का अनुभव करने लगा। ११७४

मारुति ने (श्रीविष्णु के) लोक मापने के उस दिन ब्रह्मचारी वामन बनकर जो आये थे, उन प्रभु के रूप को सुदृढ़ रूप से जाना था। अब वह अतिशय विस्मयाभिभूत हुआ। गरुड़ का श्रीविष्णु का वाहन बनना मानो जन्मसिद्ध अधिकार था। अव वह अपने स्वत्व पर दूसरे का अधिकार पाकर शर्मिंदा हुआ। दूसरे अधिकारी अनन्तनाग के सिर भी कम्पित हो गये। ११७४

ओद मॊत्तनऩ् मारुदि यदनहत् तुऱैयुम्
नाद नॊत्तन नॆन्निलो तुयिल्हिल नम्बन्
वेद मॊत्तनऩ् मारुदि वेदत्तिन् शिरत्तिन्
पोद मॊत्तन निरामन्वे ऱिदनिल्लै पॊरुवे 1175

मारुति–हनुमान; ओतम् ऑत्ततन्–समुद्रोपम हो गया; अतन् अकत्तु–उसमें; उऱैयुम्–विराजमान; नातन्–जगन्नाथ; ऑत्ततत् ऍन्तिल्–के समान (श्रीराम) रहे, कहें तो; नम्पतो–प्रभु; तुयिल्किलन्–नहीं सोते; मारुति–वायुपुत्र; वेतम् ऑत्ततन्–वेद के समान रहा; इरामन्–श्रीराम; वेतत्तिन् चिरत्तिन्–वेदशीर्ष (उपनिषदों) के; पोतम् ऑत्ततन्–ज्ञान के विषय के समान रहे; इतन् वेऱु–इससे अन्य; पॉरुवे इल्लै–उपमा नहीं है। ११७५

मारुति क्षीरसागरतुल्य लगा। क्या हम नाथ श्रीराम को क्षीरसागरशायी के तुल्य मानें? ऐसा कहें तो श्रीराम कहाँ सोते हैं? (फिर क्या उपमा दी जाय?) मारुति वेदतुल्य है और श्रीराम वेदान्त के विषय! इससे बढ़कर युक्त उपमा क्या हो? । ११७५

तहुदियाय् निन्ऱ वॆन्ऱि मारुदि तनिमै शार्न्द
मिहुदियै वेऱु नोक्कि ऍव्वणणम् विळम्बुन् दन्मै
पुहुदिकूर्न् दुळ्ळार् वेदम् पॊदुवुरुप् पुलत्तु नोक्कुम्
पहुदियै यॊत्तान् वीरन् मेलैत्तन् पदमे यॊत्तान् 1176

तकुतियाय्–योग्य (वाहन) बने; निन्ऱ–जो रहा; वॆन्ऱि मारुति–विजयी मारुति; तनिमै चार्न्त मिकुतियै–अद्वितीय रही श्रेष्ठता को; वेऱु नोक्किन्–अलग विमर्श कर देखें तो; विळम्पुम् तन्मै–कहने का प्रकार; ऍ वण्णम्–कैसा; पुकुति कूर्न्तु उळ्ळार्–पहुँच जिनकी सूक्ष्म है; वेतम्–(उनके) वेद; पॊतु उरु–सामान्य रूप से; पुलत्तु नोक्कुम्–बुद्धि से गम्य; पकुतियै–प्रकृति के; ऑत्तान्–(हनुमान) समान रहा; वीरन्–श्रीवीरराघव; मेलै तन् पतमे–ऊपर स्थित अपने परमपद ही; ऑत्तान्–के समान रहे। ११७६

श्रीराम का वाहन बनकर विजयी मारुति विशिष्ट बन गया है। उसकी श्रेष्ठता अद्वितीय और पृथक् हो रही। विचार करने पर उसकी महिमा इतनी बढ़ गयी है कि वर्णन करना कठिन हो जाता है। हनुमान सूक्ष्मबुद्धि मुनियों के वेदों में चर्चित सामान्य ज्ञान-गोचर मूलप्रकृति से तुल्य रहा और उस पर आरूढ़ वीर श्रीराम ऊपर के अपने परमपद के ही समान लगे। ११७६

मेरुविन् शिहरम् बोन्ऱ वॆन्निनुम् वॆळिऱुण् डामाल्
मूरिनी रण्ड मॆल्लाम् वयिऱ्ऱिडै मुन्नङ् गॊण्ड
आरियर्क् कनेह मार्क्कत् तालिडम् वलम् दाहच्
चारिहै तिरिय लान्न मारुदि तामप् पॊऱ्ऱोळ् 1177

मूरि नीर्–शक्तियुत जल में के; अण्टम् ऍल्लाम्–सारे अण्डों को; मुन्नम्–पहले; वयिऱ्ऱिटै कॊण्ट–पेट में जिन्होंने समा लिया था; आरियर्कु–उन पुरुषोत्तम के लिए; अनेक मार्क्कत्ताल्–अनेक मार्गों से; इटम् वलमतु आक–बायें-दायें; चारिकै–चक्कर; तिरियल् आन्न–काटनेवाले; मारुति–मारुति के; तामम् पॊन्

तोळ्-हारसहित सुन्दर कन्धे; मेरुविन् चिकरम् पोन्ऱतु-मेरुशिखर-सम हैं; ॲन्ऩित्तुम्-कहें तो भी; वॅळिरु उण्टाम्-अज्ञता होगी। ११७७

प्रबल जलप्रभूत सारे अण्डों को उदरस्थ जिन्होंने कर लिया था, उनको लेकर दायें और बायें चक्राकार घूमनेवाले हनुमान के हारभूषित कन्धे मेरुशिखर-सम थे कहें तो वह अज्ञता ही होगा। ११७७

आशि शॊल्लिऩ रुन्दव ररमॆन्ऩुन् दॆय्वम्
काशिल् नऩ्ऩॆडुङ् गरमॆडुत् ताडिडक् कयिलै
ईश नान्मुह नॆन्ऱिवर् मुदलिय विमैयोर्
पूशल् काणिय वन्दऩ रन्दरम् बुकुन्दार् 1178

अरुम् तवर्-अत्युत्तम तपस्वी लोगों ने; आचि चॊल्लिऩर्-आशीर्वाद के वचन कहे; अऱम् ॲऩ्ऩुम् तॆय्वम्-धर्मदेवता; काचु इल्-अनिंद्य; नल् नॆटु करम्-श्रेष्ठ लम्बे हाथ; ॲटुत्तु-उठाकर; आटिट-नाचे; कयिलै ईचऩ्-कैलास के परमेश्वर; नान्मुकऩ्-चतुर्मुख; ॲऩ्ऱ इवर् मुतलिय-आदि ये; इमैयोर्-देव; पूचल् काणिय-(राम-रावण-) युद्ध देखने; वन्तऩर्-आकर; अन्तरम् पुकुन्तार्-अंतरिक्ष में पहुँच गये। ११७८

महान् तपस्वी लोगों ने आशीर्वचन कहे। धर्मदेवता अपने अनिंद्य श्रेष्ठ व लम्बे हाथों को उठाकर नाचा। कैलासाधिपति और कमलासन और अन्य देवता राम-रावण-युद्ध को देखने के लिए अन्तरिक्ष में आ पहुँचे। ११७८

अण्ण लञ्जऩ वण्णऩुममर्कुऱित् तमैन्दान्
ॲण्ण रुम्बॆरुन् दऩिवलिच् चिलैयैना णॆऱिन्दान्
मण्णुम् वाऩमु मऱ्ऱैय पिऱवुन्दऩ् वाय्प्पॆय्
दुण्णुङ् गालत्तव् वुरुत्तिर ऩार्प्पॊत्त दोदै 1179

अण्णल्-प्रभु; अञ्चऩ वण्णऩुम्-अंजनवर्ण भी; अमर् कुऱित्तु-युद्धरत; अमैन्ताऩ्-हो गये; ॲण् अरु-अचिंत्य; पॆरु-बड़े; तनि वलि-अप्रतिम बल के; चिलैयै-(कोदण्ड-) धनु के; नाण् ॲऱिन्ताऩ्-डोरे को टंकोरित किया; ओतै-ध्वनि; मण्णुम्-पृथ्वी; वाऩमुम्-आकाश और; मऱ्ऱैय पिऱवुम्-और अन्यों को; तऩ् वाय् पॆय्तु-अपने मुख में डालकर; उण्णुम्-खानेवाले; अ उरुत्तिरऩ्-उन रुद्र के; आर्प्पु ऒत्ततु-घोष के समान रही। ११७९

प्रभु अंजनवर्ण श्रीराम भी युद्धोन्मुख हुए। उन्होंने अचिंत्य, सर्वश्रेष्ठ अप्रतिम सारयुक्त कोदण्ड (धनु) के डोरे को टंकोरा। तब जो ध्वनि उठी वह पृथ्वी, आकाश और सभी अन्य पदार्थों को अपने मुख में डाल लेकर खा लेनेवाले रुद्र के गर्जन के समान सुनायी दी। ११७९

आवि शॆत्ऱिलर् नित्ऱिल ररक्करो डियक्कर्
नावु लरन्दतर् कलङ्गितर् विलङ्गितर् नडुङ्गिक्
कोवॆ नित्ऱपे रण्डमुङ् गुलॆन्दत कुलॆयात्
तेव देवतुम् विरिञ्जतुञ् जिरदलङ् गुलन्दार् 1180

अरक्करोटु इयक्कर्–राक्षसों के साथ यक्ष; आवि चॆन्ऱिलर्–मरे नहीं तो भी; नित्ऱिलर्–खड़े नहीं रह सके; ना उलर्न्ततर्–सूखी जीभ के हो गये; विलङ्कितर्–चले; नटुङ्कि–काँपकर; कलङ्कितर्–हड़बड़ाये; कोवॆ नित्ऱ–लगातार रहे; पेर् अण्टमुम्–बड़े अण्ड भी; कुलॆन्तत–हिल गये; कुलॆया–अचल रहनेवाले; तेव तेवतुम्–देवदेव (शिव) और; विरिञ्चतुम्–विरंचि; चिर तलम् कुलॆन्तार्–सिरों में कंपन का अनुभव करने लगे। ११८०

राक्षसों और यक्षों के प्राण नहीं छूटे, सही। तो भी वे स्थिर खड़े नहीं रह सके। उनकी जीभ सूख गयी। वे इधर-उधर चले, काँपे और हड़बड़ाये। एक से एक लगे रहनेवाले बड़े अण्ड भी चंचल हुए। अचल रहनेवाले देवदेव शिवजी और ब्रह्मा के भी सिर काँप उठे। ११८०

ऊऴि वॆङ्गत लोप्पत दुप्पत वुरुव
आऴि नीरॆयुङ् गुडिप्पत तिशॆहळॆ यळप्प
वीऴित् मीच्चॆलित् मण्णॆयुम् विण्णॆयुन् दॊळॆप्प
एऴु वॆञ्जर मुडत्ऱॊडुत् तिरावण नॆय्दात् 1181

ऊऴि वॆम् कतल्–युगान्त की भयंकर अग्नि; ऒप्पत–सदृश रहनेवाले; तुप्पत उरुव–प्रवालरूप; आऴि नीरॆयुम्–समुद्र-जल को भी; कुटिप्पत–पीनेवाले (सोखनेवाले); तिचॆकळॆ अळप्प–दिशाओं को नापनेवाले (दिगंत तक चल सकनेवाले); वीऴित्–नीचे जाएँ तो; मण्णॆयुम्–पाताल को और; मी चॆलित्–ऊपर जाएँ तो; विण्णॆयुम्–आकाश को; तॊळॆप्प–भेदनेवाले; वॆम् चरम् एऴुम्–संतापक सात बाण; उटत् तॊटुत्तु–एक साथ लगाकर; इरावणत् ऎय्तात्–रावण ने चलाये। ११८१

तब रावण ने सात शर संधान कर चलाये। वे कालाग्नि-सम थे; प्रवालवर्ण, समुद्रजलशोषक, दिशाओं को माप सकनेवाले, नीचे पाताल को और ऊपर चले तो आकाश को भेद सकनेवाले भीषण शर थे। ११८१

ऎय्द वाळियॆ येऴित्ता लेऴित्तो डेऴु
शॆय्दु वॆञ्जर मैन्दॊरु तॊडॆयितिऱ् चेर्त्ति
वॆय्दु कालवॆङ् गतल्हळुम् वॆळ्हुऱप् पॊऱिहळ्
पॆय्दु पोम्वहै यिराहवत् शिलॆनित्ऱु पॆय्दात् 1182

ऎय्त वाळियॆ–प्रेरित शरों को; एऴिताल्–(अपने) सात शरों से; एऴित्तोटु एऴु चॆय्तु–सात के सात=उनचास करके; ओरु तॊटॆयितिल्–एक खेप में; वॆम् चरम्–भयंकर; ऐन्तु चेर्त्ति–पाँच मिलाकर; वॆय्तु–तापक; काल वॆम् कतल्कळुम्–युगान्त की गरम आग को भी; वॆळ्कुऱ–लजाते हुए; पॊऱिकळ् पॆय्तु–अंगारे बरसाते

हुए; पोम् वर्क–चलें ऐसा; इराकवऩ्–श्रीराम ने; चिलै निऩ्ऱु–धनु से; पॅय्ताऩ्–चलाये। ११८२

श्रीराम ने अपने सात शर चलाकर उन्हें उनचास खण्डों में खण्डित कर दिया। फिर लगातार पाँच शर चलाये। उनके सामने भीषण कालाग्नि भी शरम खा गयी ! वे अंगारे बिखेरते हुए चले। ११८२

वाळि यैन्दैयु मैन्दिऩाल् विशुम्बिडै माऱ्ऱि
आळि मॊय्म्बिऩव् वरक्कऩु मैयिरण् डम्बु
तोळि ऩाणुऱ वाङ्गिऩऩ् तुरन्दऩऩ् शुरुदि
आळु नायहऩ् ऩवऱ्ऱैयु मवऱ्ऱिऩा लऱुत्ताऩ् 1183

आळि मॊय्म्पिऩ्–'याळि' सम वीर; अ अरक्कऩुम्–उस राक्षस ने भी; वाळि ऐन्तैयुम्–पाँचों सायकों को; ऐन्तिऩाल्–पाँच शरों से; विचुम्पु इटै–आकाश में; माऱ्ऱि–रोककर; ऐयिरण्टु अम्पु–पाँच के दो (दस) शरों को; तोळिल् नाण् उऱ–कन्धों से डोरा लगे ऐसा; वाङ्किऩऩ्–खींचकर; तुरन्तऩऩ्–चलाये; चुरुति आळुम् नायकऩ्–वेदशास्ता नायक श्रीराम ने; अवऱ्ऱैयुम्–उनको भी; अवऱ्ऱिऩाल्–उतने ही (दस) बाणों से; अऱुत्ताऩ्–काट लिया। ११८३

'याळि' (शरभ ?) का-सा बल रखनेवाले वीर रावण ने भी पाँच शर चलाकर उन पाँचों को आकाश में ही बेकार कर दिया। फिर दस शर लिये, प्रत्यंचा पर चढ़ाये, उसे कन्धे तक खींचा और शर छोड़े। वेदपति श्रीराम ने भी दस अस्त्र छोड़कर उनको काट दिया। ११८३

अऱुत्तु मऱ्ऱव ऩयलिऩ्ऱ वळक्करु मरक्कर्
शॅऱुत्तु विट्टऩ पडैयॆलाङ् गणैहळाऱ् चिन्दि
इऱुत्तु वीशिय किरिहळै यॆरियुह नूऱ्ऱि
ऒऱुत्तु मऱ्ऱवर् तलैहळाऱ् चिलमलै युयर्त्दाऩ् 1184

अऱुत्तु–काटकर; मऱ्ऱु–फिर; अवऩ् अयल् निऩ्ऱ–उसके पास स्थित; अळक्करुम् अरक्कर–अनगिनत राक्षसों ने; चॅऱुत्तु–क्रोध करके; विट्टऩ पटै ऎलाम्–जो चलाये, उन सभी हथियारों को; कणैकळाल् चिन्ति-अस्त्रों से गिराकर; इऱुत्तु वीचिय–तोड़कर फेंके गये; किरिकळै-पर्वतों को; ऎरि उक–आग छुड़ाते हुए; नूऱ्ऱि–चूर-चूर कर; ऒऱुत्तु-मिटाकर; अवर् तलैकळाल्-उनके सिरों से; चिल मलै–कुछ पर्वत; उयर्त्ताऩ्–ऊँचे बनाये। ११८४

उनको काटने के बाद श्रीराम ने रावण के पास स्थित असंख्यक राक्षसों द्वारा प्रेषित सभी हथियारों को अपने शरों से काट गिराया। उन राक्षसों ने जो तोड़कर पर्वत फेंके, उनको भी अंगारे छितराते हुए टूट जाएँ, ऐसा फोड़ दिया। फिर उनके सिरों को काटकर (उनके) कुछ ऊँचे पर्वत बना दिये। ११८४

मीन्	डॆक्करुङ्	गडल्पुरॆ	यिराक्कदर्	विट्ट
ऊन्	डॆप्पडॆ	यिरावण	नम्बॊडु	मोडि
वान	रक्कडल्	पडावहै	वाळियान्	माड्रित्
तान्	डॆच्चरत्	तालवर्	तलैमलै	तडिन्दान् 1185

मीन् उटॆ-मछलियों-सहित; करु कटल् पुरॆ—नील सागर के समान; इराक्कतर्—राक्षसों द्वारा; विट्ट—प्रेषित; ऊन् उटॆ पटॆ—मांस-सहित हथियार; इरावणन् अम्पॊटुम्—रावण के शरों के साथ; ओटि—चलकर; वानरर् कटल्—वानर-सागर में; पटा वकै—न गिरें ऐसा; वाळियान्—अस्त्रों से; माट्रि—रोककर; तान् उटॆ—अपने; चरत्ताल्—शरों से; अवर्—उनके; तलै मलै—सिर रूपी गिरियों को; तटिन्तान्—काट गिराया। ११८५

राक्षस काले रंग के समुद्र के समान विशाल समूहों में थे। उन्होंने जो मांसलिप्त हथियार फेंके वे रावण के शरों से मिलकर चलें और वानर-सेना-सागर-मध्य न लगें, ऐसा श्रीराम ने उन सबको निवार दिया और अपने शरों से राक्षसों के पर्वत-सम सिर काट गिराये। ११८५

इम्ब	रानॆनिल्	विशुम्बिन	नाहुमो	रिमैप्पिल्
तुम्बॆ	शूडिय	विरावणन्	मुहन्दॊरुम्	तोन्रुम्
वॆम्बु	वञ्जहर्	विळिदॊरुन्	दिरियुमे	नित्ताल्
अम्बिन्	मुन्शॆलु	मनत्तिर्कु	मुन्शॆलु	मनुमन् 1186

मेल् नित्तान्—अपने ऊपर जो रहे, उन श्रीराम को; अम्पिन् मुन् चॆलुम्—शर से भी तेज चलनेवाला; मनत्तिर्कुम्—मन से भी; मुन् चॆलुम्—तेज चलनेवाला; अनुमन्—हनुमान; ओर् इमैप्पिल्—एक पल में; इम्परान् ॲनित्—इस भूमि पर रहता समझें तो; विचुम्पितन् आकुम्—आकाश का हो जाता; तुम्पै चूटिय—'तुंबै' फूलधारी; इरावणन् मुकम् तॊरुम्—रावण के मुख-मुख के सामने; तोन्रुम्—दिखता; वॆम्पु—खौलते हुए; वञ्चकर्—वंचक राक्षसों की; विळितॊरुम्—आँख-आँख के सामने; तिरियुम्—घूमता। ११८६

हनुमान अपने ऊपर आरूढ़ श्रीराम के बाणों से भी अधिक तेज़ी से, मन की गति से भी तीव्रगति से घूमता था। अब सोचते हैं कि वह भूमि पर है। पर नहीं! वह आकाश में है। वह रावण के हर मुख के सामने और क्रुद्ध वंचक राक्षसों की हर दृष्टि में विद्यमान हो घूमता था! । ११८६

आडु	हिन्रन	कवन्दमु	मवर्रॊडु	माडिप्
पाडु	हिन्रन	वलहैयु	नीङ्गिय	पणॆक्कॆण्
कोडु	तुन्रिय	करिहळुम्	बरिहळुन्	दलॆक्कॊण्
डोडु	हिन्रन	वलप्पिल	वुदिरवा	रुवरि 1187

कवन्तमुम्–कबन्ध; आट्टुकिन्ऱत–नाचते और; अलकैयुम्–भूत; अवट्रोटुम् आटि–उनके साथ नाचकर; पाटुकित्ऱत–गाते हैं; उलप्पिल–अक्षय; उतिरम् आऱु–रक्त-नदियाँ; पणै कै–स्थूल सूँड़ों के साथ; तुन्ऱिय–सटे रहे; कोट्टु–दाँतों से; नीङ्किय–वियुक्त; करिकळुम्–हाथियों और; परिकळुम्–अश्वों को; तलै कोण्टु–अपने में लेकर; उवरि ओटुकित्ऱत–समुद्र की तरफ़ बहती हैं। ११८७

कबन्ध नाचते और भूत भी उनके साथ गाते नाचते। रक्त की नदियाँ स्थूल सूँड़ों और दाँतों से वियुक्त करियों और मरे अश्वों को बड़ी संख्या में वहा लेते हुए समुद्र की ओर बहतीं। ११८७

अऱ्ऱ वाळिय वरुप्पुण्ड वच्चित्त वम्बो
डिऱ्ऱ कॊय्युळैप् पुरविय तेर्क्कुल मॆल्लाम्
ऒऱ्ऱै वाळियो डुरुण्डत्त करुङ्गळिऱ् ऱोङ्गल्
शुऱ्ऱुम् वाशियुन् दुमिन्दत्त वमर्क्कळन् दुवन्ऱि 1188

तेर् कुलम् ऍल्लाम्–रथों की सभी राशियाँ; अम्पोट्टु–शरों से; अऱ्ऱ–हटे; आळिय–चक्रों के; अरुप्पु उण्ट–कटे; अच्चित्त–धुरी वाले; इऱ्ऱ–वियुक्त; कॊय् उळै पुरविय–काटकर सँवारे जानेवाले अयाल वाले; करु कळिऱु ओङ्कल्–काले हाथी रूपी पर्वत; ऒऱ्ऱै वाळियोटु–एक ही शर से; उरुण्टत्त–लुढ़क गये; अमर् कळम्–युद्धभूमि में; तुवन्ऱि–सटे हुए; चुऱ्ऱुम्–घूमनेवाले; वाचियुम्–वाजी भी; तुमिन्तत–कटे। ११८८

वाणों से रथों के चक्र अलग हुए; धुरियाँ टूट गयीं। उनके अश्वों के सँवारे हुए अयाल कट गये। एक ही शर से काले हाथी लोट गये। समरांगण भर में घूमनेवाले अश्व मरे पड़े थे। ११८८

तेरि ऴन्दुवॆञ् जिलैहळु मिऴन्दुशॆन् दरुहट्
कारि ऴन्दुवॆङ् गलिन्नमाक् काल्हळु मिऴन्दु
शूरि ऴन्दुवन् कवशमु मिऴन्दुतुप् पिऴन्दु
तारि ऴन्दुपिन् तिऴन्दनर् निरुदर्दन् दलैहळ् 1189

निरुतर्–राक्षस; तेर् इऴन्तु–रथ खोकर; वॆम् चिलैकळुम्–कठोर धनुओं को; इऴन्तु–गँवाकर; चॆ–लाल; तरुकण्–निडर; कार् इऴन्तु–मेघ (गज) खोकर; वॆम्–क्रूर; कलिन्नमा–रासयुक्त अश्वों के; काल्कळुम्–पैरों से भी (बल से); इऴन्तु–वियुक्त होकर; चूर् इऴन्तु–शूरता खोकर; वन्–सशक्त; कवचमुम् इऴन्तु–कवच खोकर और; तुप्पु इऴन्तु–कौशल गँवाकर; तार् इऴन्तु–मालाएँ छोड़कर; पिन्–आखिर; तम् तलैकळ्–अपने सिरों को भी; इऴन्तनर्–खो चुके। ११८९

राक्षसों ने रथ खोये; धनु खोये। लाल रंग के और निडर गज गँवाये; भीषण रासयुक्त अश्वों के पैरों से (वल और सवारी से) हीन हुए; वीरता

खोयी; कठोर कवच गँवाये; साहस खोया; हार गँवाये और आखिर अपने सिरों से भी वियुक्त हो गये। ११८९

अरव नुण्णिडै यरक्कियर् कणवर्द मर्र्
शिरमु मन्नवै यादलिन् वेर्रुमै तॅरियार्
पुरवि यिन्तलै पूट्कैयिन् तलैयिवै पॉरुत्तिक्
करवि लिन्नुयिर् तुरन्दनर् कववुर्त् तळुवि 1190

अरवम्-सर्प-सम; नुण् इडै-पतली कमर वाली; अरक्कियर्-राक्षसियों ने; अर्र्-मरे; तम् कणवर्-अपने पतियों के; चिरमुम्-सिर भी; अन्नवै आतलिन्-(अश्व, गज आदि के) वे ही हैं, इसलिए; वेर्रुमै तॅरियार्-भेद नहीं जानते; पुरवियिन् तलै-अश्वों के सिर; पूट्कैयिन् तलै-हाथियों के सिर; इवै-इनको; पॉरुत्ति-रुंडों से लगाकर; कवव उर्-कसकर; तळुवि-आलिंगन में लेकर; करविल्-अछूट; इन् उयिर्-प्यारे प्राण; तुरन्ततर्-छोड़ दिये। ११९०

सर्प-सम पतली कमर वाली राक्षसियाँ आयीं। उनके पतियों के सिर भी अश्वों और हाथियों के जैसे रहे। इसलिए वे उनमें और उन जानवरों में भेद नहीं कर सकीं। उन्होंने उन जानवरों के सिरों को अपने पतियों के रुण्डों के साथ लगा लिया। कसकर आलिंगन में लिया और अपने प्राणों का होम कर दिया। ११९०

आर्प्प डङ्गिन वायॅलाम् अळर्कॉळुन् दॉळुहप्
पार्प्प डङ्गिन कण्णॅलाम् बलवहैप् पडैहळ्
तूर्प्प डङ्गिन कैयॅलाम् तूळियिन् पडलप्
पोर्प्प डङ्गिन वुलहॅलाम् मुरशॅलाम् बोल 1191

मुरचु ॲलाम् पोल-सभी ढोलों के जैसे; वायॅलाम्-मुखों का; आर्प्पु-शोर; अटङ्किन-रुक गया; कण् ॲलाम्-सभी आँखों से; अळल् कॉळुन्तु-आग की लपटें; ऑळुक-निकलीं; पार्प्पु अटङ्किन-(और उनका) देखना बन्द हो गया; कै ॲलाम्-सभी हाथों का; पल वकै पटैकळ्-विविध हथियारों को; तूर्प्पु-अधिक और तेजी से चलाना; अटङ्किन-बन्द हो गया; तूळियिन् पटलै-धूलपटलों का; उलकु ॲलाम्-सारे लोकों को; पोर्प्पु-आच्छादित करना; अटङ्किन-रुक गया। ११९१

ढोलों का नाद बन्द हुआ वैसे ही (राक्षसों के) मुखों की बोलियाँ बन्द हो गयीं। आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलीं और उनका देखना बन्द हो गया। हाथों का अनेक हथियारों को फेंकना रुक गया। धूलपटल का लोक को आच्छादित करना बन्द हो गया। ११९१

ऑन्रु नूर्रिनो डायिरङ् गोडुन्दलै युरुट्टिच्
चॅन्रु तीर्विल वॅन्नैपल कोडियुञ् जिन्दि

निऩ्ऱ तेरॊडु मिरावण ऩॊरुवऩु निऱ्कक्
कॊऩ्ऱु वीऴ्त्तिऩ दिराहवऩ् शरमॆऩुङ् गूऱ्ऱम् 1192

इराकवऩ् चरम्–श्रीराघवशर; ॲऩुम् कूऱ्ऱम्–रूपी यम; ऒऩ्ऱु नूऱ्ऱितॊट्टु आयिरम्–एक, सौ, हजार (लाख); कॊट्टु तलै उरुट्टि–क्रूर सिरों को लुढ़काकर; चॆऩ्ऱु तीर्विल–नहीं रुके; ॲतै पल कोटियुम्–कितने ही अनेक करोड़ों को; चिन्ति–मारकर; निऩ्ऱ तेरॊटुम्–स्थित रथ के साथ; इरावणऩ् ऒरुवऩुम्–केवल रावण एक को; निऱ्क–रहने देकर; कॊऩ्ऱु वीऴ्त्तिततु–सबको मार गिराया (राघव-प्रेरित शरों ने)। ११९२

श्रीराघवशरों ने लाख-लाख क्रूर सिरों को काट दिया; अनेक करोड़ वीरों को मारा और केवल रथ-सहित रावण एक को छोड़ बाक़ी सभी का नाश कर दिया। ११९२

तेरुम् याऩैयुम् बुरवियु मरक्करुन् दॆऱ्ऱिप्
पेरु मोरिड मिऩ्ऱॆऩत् तिशैतॊऱुम् बिऱङ्गिक्
कारुम् वाऩमुन् दॊडुवऩ पिणक्कुवै कण्डाऩ्
मूरि वॆञ्जिलै यिरावणऩ् अरावॆऩ मुऩिन्दाऩ् 1193

मूरि–सशक्त; वॆम्–भीषण; चिलै–धनुर्धर; इरावणऩ्–रावण; तेरुम्–रथ और; याऩैयुम्–गज और; पुरवियुम्–अश्व और; अरक्करुम्–राक्षस; तॆऱ्ऱि–भिड़कर; पेरुम् ओर् इटम्–हटने के लिए कोई स्थान; इऩ्ऱु ॲऩ–नहीं ऐसा; तिचै तॊऱुम्–सारी दिशाओं में; पिऱङ्कि–विद्यमान रहकर; कारुम्–मेघ और; वाऩमुम् तॊटुवऩ–आकाश को स्पर्श करनेवाले; पिणम् कुवै–लाशों के ढेरों को; कण्टाऩ्–देखकर; अरा ॲऩ–सर्प के समान; मुऩिन्ताऩ्–कुपित हुआ। ११९३

कठोर और भीषण धनुर्धर रावण ने देखा कि उसके रथ, गज, अश्व और वीर युद्ध करके मर गये हैं और सभी दिशाओं में लाशें ही लाशें पड़ी हैं और उनके ढेर मेघों और आकाश को छू रहे हैं। तब भयंकर साँप के समान वह क्रुद्ध हुआ। ११९३

मुरणॊ हुञ्जिलै यिमैप्पिऩिल् मुऱैयुऱ वाङ्गिप्
पुरण्डु तोळुऱप् पॊलऩ्गॊळ्नाण् वलम्बडप् पोक्कित्
तिरण्ड वाळिहळ् शेवहऩ् मरहदच् चिहरत्
तिरण्डु तोळिऩु मिरण्डपुक् कऴुन्दिड वॆय्दाऩ् 1194

पॊलऩ् कॊळ् नाण्–सुन्दरतायुक्त प्रत्यंचा; पुरण्टु–खिंचकर; तोळुऱ–कंधे तक आये ऐसा; मुरण् तॊकुम् चिलै–सारयुक्त धनु को; इमैप्पिऩिल्–पल भर में; मुऱै उऱ वाङ्कि–क्रम से झुकाकर; तिरण्ट वाळिकळ्–मोटे अस्त्र; इरण्टु–दो को; वलम् पट–जोर लगाकर; पोक्कि–छोड़कर; चेवकऩ्–वीर श्रीराम के; मरकत चिकरत्तु–मरकत-शिखर-सम; इरण्टु तोळिऩुम्–दोनों कन्धों पर; पुक्कु अऴुन्तिट–घुसकर धँस जाएँ, ऐसा; ॲय्ताऩ्–चलाये। ११९४

तब रावण ने सुन्दर प्रत्यंचा को कन्धे तक खींचा और सारयुक्त धनु को झुकाया और दो मोटे शर लगाकर चलाये। वे जाकर श्रीवीरराघव के मरकतशिखर-सम कन्धों पर लगे और धँस गये। ११९४

मुरुव लॅय्दिय मुहत्तिनऩ् मुळरियङ् गण्णऩ्
मरुवि लाददोर् वडिक्कणै तॊडुत्तुउ वाङ्गि
इरुदि यॅय्दुनाट् काल्पॊर मन्दर मिडैयिट्
टरुव दामॆऩ विरावणऩ् शिलैयितै यरुत्ताऩ् 1195

मुरुवल् अॅय्तिय–मुस्कुराहट जिस पर आयी; मुकत्तिनऩ्–ऐसे मुख वाले; मुळरि अम् कण्णऩ्–सुपद्माक्ष (श्रीराम); मरु इलाततु–निर्दोष; ओर् वटि कणै–एक तीक्ष्ण बाण; तॊटुत्तु–लगाकर; उरु वाङ्कि–खूब खींचकर; इरुति अॅय्तु नाळ्–युगान्त के दिन; काल् पोर–प्रलयपवन के बहते समय; मन्तरम्–मन्दर पर्वत; इटै इट्टु–मध्य में; अरुवतु आम् अॆत–टूट चलता जैसे; इरावणऩ् चिलैयितै–रावण के धनु को; अरुत्ताऩ्–काट दिया। ११९५

सुन्दर कमलाक्ष श्रीराम ने मुस्कुराहट के साथ निर्दोष एक तीक्ष्ण अस्त्र लिया, धनु पर संधानकर डोरा खींचा और चलाकर रावण के धनु को काट दिया, तो वह युगान्तकालपवनप्रताड़ित मन्दर पर्वत के समान बीच से टूट गया। ११९५

माऱ्ऱु वॆञ्जिलै वाङ्गिनऩ् वडिम्बुडै नॆडुनाण्
एऱ्ऱु ऱामुऩम् इडैयऱुक् कणैहळा लॅय्दाऩ्
काऱ्ऱिऩ् ऱुङ्गडि दावऩ कदिर्मणि नॆडुन्देर्
आऱ्ऱु कॊय्युळैप् पुरवियिऩ् शिरङ्गळु मरुत्ताऩ् 1196

माऱ्ऱु वॆम् चिलै–बदले में भीषण धनु; वाङ्कितऩ्–झुकाकर; वटिम्पु उटै–(बार-बार लगने से) रगड़ का निशान बनानेवाले; नॆटु नाण्–लम्बे डोरे को; एऱ्ऱुऱा मुऩम्–चढ़ाने से पहले ही; इटै अऱ–बीच में तोड़ते हुए; कणैकळाल् अॅय्ताऩ्–बाण चलाये (श्रीराम ने); काऱ्ऱिऩुम् कटितावऩ–पवन से भी तेज; कतिर् मणि नॆटुम् तेर्–उज्ज्वल रत्न-जटित बड़े रथ को; आऱ्ऱु–खींचनेवाले; कॊय् उळै–सॅवारे अयाल वाले; पुरवियिऩ्–अश्वों के; चिरङ्कळुम्–सिरों को भी; अरुत्ताऩ्–काट दिया। ११९६

बदले में रावण दूसरा धनु ले और शर चढ़ाकर कन्धे पर निशान लगाते हुए प्रत्यंचा खींचे, इसके पूर्व ही श्रीराम ने अस्त्र चलाकर उसे काट दिया और पवन से भी तेज़ गति वाले, प्रकाशमय रत्नों से अलंकृत रथ को खींचनेवाले और सुन्दर सँवारे हुए अयाल वाले अश्वों के सिरों को भी काटकर गिरा दिया। ११९६

मर्रुम् वॅम्बडै वाङ्गिनन् वळ्ळ्ङ्गुरा मुन्नम्
इर्र् विन्दुह वॅरिहणै यिडैयर् वॅय्दान्
कॉर्र् वॅण्गुडै कॉडियॉडुन् दुणिपडक् कुरैत्तान्
कर्रै यन्जुडर्क् कवशमुङ् गट्टर्क् कळित्तान् 1197

मर्रुम्–और; वॅम् पटै वाङ्कितन्–भयंकर हथियार लेकर; वळ्ळ्कुरा मुन्नम्–फेंके, इसके पूर्व; इर्रु–कटकर; इटै अर्–मध्य में टूटकर; अविन्तु उक–मिटकर गिर जाए, ऐसा; ॲरि कणै–आग्नेयास्त्र; ॲय्तान्–चलाया; कॉर्रम् वॅण् कुटै–विजयसूचक श्वेत छत्र; कॉटियॉटुम्–ध्वजा के साथ; तुणि पट–कट जाए ऐसा; कुरैत्तान्–काट दिया; कर्रै अम् चटर्–राशिकृत कान्तिपूर्ण; कवचमुम्–कवच को भी; कट्टु अर्–बन्ध टूट जाएँ ऐसा; कळित्तान्–तोड़ गिराया। ११६७

फिर रावण के अन्य हथियार लेकर फेंकने के पहले श्रीराम ने उनको तोड़कर बीच में ही बेकार करके गिराते हुए अस्त्र चलाये। फिर अनेक अस्त्र चलाकर विजयसूचक श्वेत छत्र और ध्वजा ध्वस्त कर दी। पुंजीभूत छविमय कवच को भी सन्धिबन्ध काटकर गिरा दिया। ११९७

मार्रुत् तेरवण् वन्दन वन्दन वारा
वीर्रु वीर्रुह वॅयिलुमिळ् कडुङ्गणै विट्टान्
शेर्रुच् चॅम्बुनर् पडुहळप् परप्पिडैच् चॅङ्गट्
कूर्रुङ् गैयॅडुत् ताडिड विरावणन् कॉदित्तान् 1198

अवण्–वहाँ; मार्रु तेर्–बदले में रथ; वारा–आये; वन्तन वन्तन–आते-आते; वीर्रु वीर्रु उक–खण्ड-खण्ड हो जाएँ, ऐसा; वॅयिल् उमिळ्–प्रकाश देनेवाले; कटु कणै–तेज बाणों को; विट्टान्–चलाया; चेरु चॅम् पुनल्–पंक बने रक्त-जल के; पटु कळम् परप्पिटै–युद्धस्थल के विस्तार में; चॅम् कण्–लाल आँखों का; कूर्रम्–यम भी; कै ॲटुत्तु आटिट–हाथ उठाकर नाचे, ऐसा; इरावणन्–रावण; कॉतित्तान्–उबल पड़ा। ११६८

रावण के पास बदले में अनेक रथ आये, पर आते-आते उन्हें छिन्न-भिन्न करके धूप निकालनेवाले शर चलाये श्रीराम ने। रावण को इतना क्रोध हुआ कि रक्तपंकिल समरभूमि के मैदान में लाल आँख वाला यम भी अपने हाथ उठाकर (विपुल आहार-प्राप्ति की आशा से) नाचने लगा। ११९८

मिन्नुम् पन्मणि मवुलिमे लॉरुहणै विट्टान्
अन्न कायकदि रिरविमेर् पायन्दपो रनुमन्
ॲन्न लायदोर् विशैयिनिर् चॅन्रवन् तलैयिर्
पॉन्निन् मामणि महुडत्तैप् पुणरियिल् वीळ्त्त 1199

मिन्नुम्–चमकनेवाले; पन् मणि–अनेक रत्नों के; मवुलि मेल्–किरीट पर; ऑरु कणै विट्टान्–एक शर चलाया; अन्न–उस शर ने; काय् कतिर्–जलानेवाली किरणों के; इरवि मेल् पायन्त–सूर्य पर झपटे; पोर् अनुमन्–योद्धा हनुमान;

ऍन्तलायतु–के समान मान्य हो; ओर्–बेजोड़; विचैयितिल्–तेज़ी से; चॅन्रु–जाकर; अवन् तलैयिल्–उसके सिर पर के; पॊन्तिन् मा मणि मकुटत्तै–स्वर्ण के और बड़े रत्नों से युक्त मुकुट को; पुणरियिल्–समुद्र में; वीऴ्त्त–गिरा दिया। ११९९

श्रीराम ने अनेक चमकदार रत्नों से भूषित रावण के मुकुट पर, एक अस्त्र चलाया। वह गरम किरणमाली पर झपट चले योद्धा हनुमान की-सी गति में गया और उसके सिर के स्वर्ण-रत्नमय किरीट को समुद्र में डुबो दिया। ११९९

शॅऱिन्द पन्मणि पॆरुवत्तन् दिशैपरन् दॅरियप्
पॊऱिन्द वाय्वयक् कडुञ्जुडर्क् कणैपट्ट पॊऴुदिन्
ऍऱिन्द कालॊर मेरुविन् कॊडुमुडि यिडिन्दु
मऱिन्दु वीऴ्न्ददु मॊत्तदव् वरक्कन्ऱन् महुडम् 1200

वयम्–विजयी; कटु–तेज़; चुटर्–उज्ज्वल; कणै–अस्त्र के; पट्ट पॊऴुतिन्–लगने पर; चॅऱिन्त पल् मणि–जड़ित अनेक रत्न; पॆरु वत्तम्–अधिक जल से पूर्ण समुद्र के साथ; तिचै परन्तु–दिशाएँ भी विस्तार के साथ; ऍरिय–जल उठें, ऐसा; पॊऱिन्त वाय्–अंगारों के रूप में; अ अरक्कन् तन् मकुटम्–उस राक्षस का किरीट; ऍऱिन्त–प्रचंड गति से चलनेवाली; काल् पॊर–वायु के झोंके से; मेरुविन्–मेरु का; कॊटु मुटि–ऊँचा शिखर; इटिन्तु–टूटकर; मऱिन्तु–औंधा; वीऴ्न्ततुम्–गिरा; ऒत्ततु–जैसा भी लगा। १२००

जब विजयी और तेजपुंज शर लगे तो मुकुट के अनेक रत्न समुद्र और दिशाओं को प्रकाशित करते हुए अंगारों के समान बिखर गये और राक्षस का किरीट बहुत तेज़ चलनेवाले पवन के झोंके में मेरु का शिखर टूटकर औंधा गिरा जैसा लगा। १२००

अण्डर् नायह नडुशिलै युदैत्तपे रम्बु
कॊण्डु पोहप्पोय्क् कुरैहडऱ् कुळित्तवक् कॊळ्है
मण्ड लन्दॊडर् वयङ्गुवॆङ् गदिरवन् तन्नै
उण्ड कॊळॊडु मॊलिहडल् वीऴ्न्ददु मॊक्कुम् 1201

अण्टर् नायकन्–अण्डनायक श्रीराम के; अटु चिलै–नाशकारी धनु ने; उतैत्त–(जिसको) लात मार भेजा; पेर् अम्पु–वह बड़ा शर; कॊण्टु पोक–उसके ले जाने से; पोय्–जाकर; कुरै कटल् कुळित्त–शब्दपूर्ण सागर में जो गोता लगाया; कॊळ्कै–वह हाल; मण्टलम् तॊटर्–गोल मार्ग में भूमि को घूमनेवाला; वयङ्कु–शोभायमान; वॆम् कतिरवन्–गरम किरणमाली; तन्नै उण्ट–अपने को जिसने निगल लिया; कोळॊटुम्–ग्रह (केतु) के साथ; ऒलि कटल्–शब्दायमान सागर में; वीऴ्न्ततुम्–गिरा हो; ऒक्कुम्–ऐसा भी लगा। १२०१

अण्डनायक श्रीराम के संहारक धनु से छूटा शर ले चला और किरीट चलकर शब्दायमान समुद्र में गिरा। उसका हाल ऐसा लगा मानो

मण्डलाकार घूमनेवाला गरम किरणमाली अपने भक्षक केतु सर्पग्रह के साथ जाकर गर्जनयुक्त समुद्र में गिरा हो। १२०१

❀ शॊल्लु मत्तत्तै यळवैयित् मणिमुडि तुऱन्दात्
अॆल्लि मैत्तॊळ् मदियमुम् ञायिऱु मिळन्द
अल्लु मॊत्ततन् पहलुमॊत् तन्नमर् पॊरुमेल्
वॆल्लु मत्तनै यल्लदु तोऱ्ऱिला विऱलोन् 1202

अमर् पॊरुमेल्–युद्ध लड़े तो; वॆल्लुम् अत्तनै अल्लतु–जीतेगा, वही छोड़; तोऱ्ऱिला–कभी नहीं हारे ऐसा; विऱलोन्–बलवान रावण; चॊल्लुम् अत्तनै अळवैयित्–बात कहे उतनी ही देर में; मणि मुटि–रत्न किरीट से; तुऱन्तान्–वियुक्त हुआ; अॆल् इमैत्तु–प्रकाश फैलाते हुए; अॆळुम् मतियमुम्–उगनेवाले चन्द्र और; ञायिऱुम्–सूर्य से; इळन्त–वियुक्त; अल्लुम् ऒत्ततन्–रात के समान रहा; पकलुम् ऒत्ततन्–और दिवा के समान भी रहा। १२०२

युद्ध में विजय के सिवा हार से उसका साबका कभी नहीं पड़ा था। वैसा रावण बात कहने के उतने ही समय में किरीट खोकर क्रमशः प्रकाशमय चन्द्र और सूर्य से हीन रात और दिन के समान लगा। १२०२

माऱ्ऱ रुन्दड मणिमुडि यिळन्दवा ळरक्कन्
एऱ्ऱ मॆव्वुल हत्तिनु मुयर्न्दुळ नॆन्नितुम्
आऱ्ऱल् नल्नॆडुङ् गविञनो रङ्गद मुरैप्पप्
पोऱ्ऱ रुम्बुह ळिळन्दपो रॊरुवनुम् बोन्ऱान् 1203

माऱु अऱु–लाजवाब; तट मणि मुटि–बड़े रत्न किरीट को; इळन्त–जिसने खो दिया वह; वाळ् अरक्कन्–क्रूर राक्षस (रावण); एऱ्ऱम्–बड़प्पन में; ऎ उलकत्तिनुम्–सभी लोकों में; उयर्न्तु उळन् ऎन्तिनुम्–ऊँचा रहा तो भी; आऱ्ऱल् नल् नॆटु कविञन्–वाग्शक्ति पूर्ण श्रेष्ठ और प्रकीर्तित कवि के; ओर् अङ्कतम् उरैप्प–एक 'शाप कविता' सुनाने पर; पोऱ्ऱरुम्–जिसकी प्रशंसा करना कठिन है, ऐसी; पोर् पुकऴ्–युद्धकीर्ति को; इळन्त–जिसने गँवाया हो ऐसे; ऒरुवनुम् पोन्ऱान्–एक के समान भी लगा। १२०३

अनुपम और बड़े रत्नों से भूषित मुकुट को खोकर वह क्रूर रावण, यद्यपि वह सर्वलोकसम्मानित बड़ा व्यक्ति था, अब विशेष शक्तिसम्पन्न श्रेष्ठ और कीर्तिमान कवि के शाप गीत का पात्र बने व्यक्ति के समान (कंगाल) बन गया। ('अंगद' उस कविता को कहते हैं जो समर्थ कवि द्वारा किसी के विरोध में गायी जाती है, जिसके फलस्वरूप वह व्यक्ति सब तरह से चौपट हो जाता है, मर भी जाता है। स्वयं कम्बन के चरित्र में कम्बन की ऐसी शक्ति रही —यह बात पायी जाती है।)। १२०३

❀अऱङ्ग इऩ्दवर् शॅयलिवॅऩ् ऱुलहॆला माऱ्प्प
निऱङ्ग रिऩ्दिड निलम्विरल् किळॆत्तिड निऩ्ऱाऩ्
इऱङ्गु कण्णिऩ तॆल्लऴि मुहत्तिऩऩ् ऱलैयऩ्
वॆऱुङ्गै नाऱ्ऱिऩऩ् विऴुदुडै यालऩ्ऩ मॆय्यऩ् 1204

इऱङ्कु–नीचे की ओर की गयी; कण्णिनत्–आँखों वाला; तलैयत्–झुके सिर वाला; ऎल् अऴि–निष्प्रभ; मुकत्तितन्–मुख वाला; वॆऱु कै–रिक्त हाथों को; नाऱ्ऱितत्–लटकाये रहनेवाला; विऴुतु उटै–लटकती जड़ों के साथ; आलन्नत–बरगद के पेड़ के समान; मॆय्यत्–शरीर वाला; अऱम् कटन्तवर्–धर्म का उल्लंघन करनेवाले का; चॆयल्–कार्य; इतु–यही (अन्त को प्राप्त होगा); ऎन्ऱु–कहकर; उलकु ऎलाम्–सारे लोक(लोग);. आर्प्प–उच्च स्वर में कहें, ऐसा; निऱम् करिन्तिट–शरीर काला (यशकलंकित) हो जाए ऐसा; निलम्–भूमि को; विरल् किळॆत्तिट–पैर की उँगलियाँ कुरेदती रहें ऐसा; निन्ऱात्–खड़ा रहा। १२०४

रावण की आँखें और सिर नीचे की ओर झुक गया। वह निष्प्रभमुख हो गया। उसके (आयुध-) रिक्त हाथ लटके रहे। तब वह जटाओं (लटकनेवाली जड़ों) सहित रहनेवाले बरगद के पेड़-सा शरीर वाला दिखा। लोकवासी ज़ोर के साथ बोल उठें कि यही अधर्म-चरितों का हाल है ! रावण का रंग मानो और काला हो गया। वह अपने पैरों की उँगलियों से भूमि को कुरेदता हुआ खड़ा रहा। १२०४

❀निऩ्ऱ वऩ्निलै नोक्किय नॆडुन्दहै यिवऩैक्
कॊऩ्ऱ लुऩ्ऩिलऩ् वॆऱुङ्गैनिऩ् ऱाऩॆऩक् कॊळ्ळा
इऩ्ऱ विऩ्ददु पोलुमुऩ् तीमैयॆऩ् ऱिचैयो
डॊऩ्ऱ वऩ्दऩ वाशह मिऩैयऩ वुरैत्ताऩ् 1205

निन्ऱवन्–ऐसे स्थित उसकी; निलै नोक्किय–स्थिति देखकर; नॆटु तकै–सुशील श्रीराम; वॆऱुम् कै निन्ऱात्–खाली हाथ (निरायुधपाणी) खड़ा है; ऎत–यह; कॊळ्ळा–विचारकर; इवतै कॊन्ऱल्–इसको मारना; उन्निलन्–न सोचकर; इन्ऱु–आज; उन् तीमै–तुम्हारी बुराई; अविन्ततु पोलुम्–बुझ गयी शायद; ऎन्ऱु–ऐसा; इचैयोटु ऒन्ऱ वन्तत–यश के साथ मिले आये; वाचकम् इत्तैयत–ये वचन; उरैत्तात्–बोले। १२०५

ऐसे स्थित उसकी स्थिति देखकर श्रेष्ठगुणसम्पन्न प्रभु श्रीराम ने उसे मारने का विचार नहीं किया। उन्होंने विचार किया कि यह निरायुधपाणी है। उन्होंने कहा कि आज से तुम्हारी बुराई मिट गयी क्या ? आगे उन्होंने कुछ ये वचन कहे जो यश से मिले थे। १२०५

अऱत्ति ऩालऩ्ऱि यमरर्क्कुम् अरुञ्जमम् कडत्तल्
मऱत्ति ऩालरि दॆऩ्बदु मऩत्तिडै वलित्ति

परत्ति नित्तॆंडुम् बदिपुहक् किळैयॊडुम् बावि
इरत्ति यानदु नितैक्किलेन् रनिमैकण् डिरङ्गि 1206

अरत्तिताल् अन्ऱि–धर्म के सिवा; मरत्तिताल्–केवल बलात्कार के मार्ग द्वारा; अरु चमम्–कठोर युद्ध को; कटत्तल्–जीतकर पार पाना; अमरर्क्कुम्–देवों के लिए भी; अरितु–कठिन है; ऍन्पतु–जो है उस बात को; मनत्तिटै वलित्ति–मन में धारण कर लो; पावि–पापी; किळैयॊटुम्–अपने परिवारों के साथ; निन् नॆटु पति पुक–अपने बड़े नगर में पहुँचने के लिए; परत्ति–उड़ जाओ (भागो); इरत्ति–मर जाते; ततिमै कण्टु इरङ्कि–एकाकीपन देखकर सहानुभूति करके; अतु–वह (तुम्हें मारना); यान्–मैंने; नितैक्किलेन्–नहीं सोचा। १२०६

तुम निश्चित रूप से मन में यह बात घर कर लो कि धर्ममार्ग छोड़कर केवल बल का मार्ग अपनाकर कठोर युद्ध जीतना देवों के लिए भी असम्भव है! पापी! जल्दी चलो अगर अपने परिवारों के साथ अपने बड़े नगर में पहुँचना चाहो तो। तुम मर ही जाते (मेरे हाथों); पर मैंने तुम्हारा असहाय एकाकीपन देखा, तरस खायी और मारने का विचार मेरे मन में नहीं उठा। १२०६

उडॆप्पॆ रुङ्गुलत् तिनरॊडु मुऱवॊडु मुदवुम्
पडैक्क लङ्गळु मऱ्ऱुनी तेडिय पलवुम्
अडैत्तु वैत्तन तिऱन्दुकॊण् डाऱ्ऱुदि यायिऱ्
किडैत्ति यल्लैये लॊळित्तियाऱ् चिऱुतॊऴिऱ् कीऴोय् 1207

चिऱु तॊऴिल्–घृणित काम के; कीऴोय्–नीच; उटै–अपने; पॆरु–विशाल; कुलत्तिनरॊटुम्–वर्ग के साथ; उऱवॊटुम्–बन्धु-बान्धवों के साथ; उतवुम्–काम आनेवाले; पटै कलङ्कळुम्–हथियारों को; मऱ्ऱुम्–और भी; नी तेटिय–तुम्हारी एकत्रित; पलवुम्–अनेक सेनाओं को; अटैत्तु वैत्तन–जिनको सुरक्षित रखा है उनको; तिऱन्तु कॊण्टु–खोल ले आकर; आऱ्ऱुति आयिन्–युद्ध चला सको तो; किटैत्ति–हमसे मिलो; अल्लैयेल्–नहीं तो; ऒळित्ति–छिपे रह जाओ। १२०७

घृणित कार्य करनेवाले नीच! अपने विशाल वर्ग और रिश्ते के साथ एकत्रित सेनाओं और काम आनेवाले हथियारों को, जिन्हें सुरक्षित रखा है, साथ लेकर आ सको और लड़ सको तो आओ और हमसे मिलो। नहीं तो छिपे ही रह जाओ। १२०७

❀ शिऱैयिल् वैत्तव उन्नैविट् टुलहिनिऱ् ऱेवर्
मुऱैयिल् वैत्तुनिन् ऱम्बियै यिराक्कदर् मुदऱ्पेर्
इऱैयिल् वैत्तवऱ् केवल्शॆय् दिरुत्तियेल् इन्नुन्
दऱैयिल् वैक्किलेन् निन्ऱलै वाळियिऱ् राडन्दु 1208

इन्नुम्–अब भी; चिऱैयिल् वैत्तवळ् तन्नै–कारागृह में जिसको रखा है, उसको; विट्टु–छुड़ाकर; निन् तम्पियै–अपने अनुज को; उलकिनिल्–लोक में; तेवर्

मुरैयिल् वैत्तु–देवता के समान मानकर; इराक्कतर् मुतल्–सभी राक्षसों के; पेर् इऱैयिल्–बड़े राजा के स्थान में; वैत्तवऱ्कु–जिसे मैंने रखा है उसको; एवल् चैय्तु–परिचर्या करते हुए; इरुत्तियेल्–रहोगे तो; निन् तलै–तुम्हारे सिर को; वाळियिल् तटिन्तु–शर से काटकर; तरैयिल् वैक्किलेन्–भूमि पर नहीं रखूंगा। १२०८

अब भी अगर तुम कारागृह में बन्द सीता को छोड़ दो; अपने अनुज को देवता-तुल्य मानो, और मेरे द्वारा राक्षसाधिपत्यप्राप्त उसकी परिचर्या करते रहो तो मैं तुम्हारा सिर काटकर धरती पर नहीं रखूंगा (गिराऊँगा)। १२०८

अल्लै यामॅन्नि नारम रेऱुनिन्ऱु ऱाऱ्ऱ
वल्लै यामॅन्निन् उन्क्कुळ वलियॅलाङ् गॊण्डु
निल्लै यावॅन नेर्निन्ऱु पॊन्ऱुदि यॅन्निनुम्
नल्लै याहुदि पिळैप्पिन्नि युण्डॅन नयवेल् 1209

अल्लै आम् ॲन्निन्–नहीं तो; आर् अमर्–कठोर युद्ध; एऱ्ऱु निन्ऱु–अपनाकर; आऱ्ऱ वल्लै आम् ॲन्निन्–लड़ सको तो; उन्क्कु उळ–तुम्हारे पास रहनेवाला; वलि ॲलाम्–सारा बल; कॊण्टु–लेकर; निल्–स्थित हो; ऐया–राजा; ॲन्न–कहकर; नेर् निन्ऱु–मेरे समक्ष लड़कर; पॊन्ऱुति–मर जाओ; ॲन्निनुम्–तो भी; नल्लै आकुति–अच्छे बनोगे; इन्नि–अब; पिळैप्पु उण्टु–बचना सम्भव है; ॲन्न–सोचकर; नयवेल्–तृप्त न रहो। १२०९

मेरी यह बात मानना न चाहो और युद्ध ही करना चाहो तो करो राजा, मज़े से करो। हाँ! मेरे समक्ष लड़कर मरो तो भी तुम अच्छे माने जाओगे। पर 'मैं बच जाऊँगा' यह विचार छोड़ दो और उस विश्वास पर मन का लड्डू मत खाओ। १२०९

❀ आळै याउन्क् कमैन्दन मारुद मऱैन्द
पूळै यायिन कण्डनै इन्ऱुपॊय्प् पोर्क्कु
नाळै वावॅन नल्हिनन् नाहिळङ् गमुहिन्
वाळै तावुरु कोशल नाडुडै वळ्ळल् 1210

आळ् ऐया–शासक प्रभु; अमैन्तन–सहायक रही सेनाएं; मारुतम् अऱैन्त–पवनविताडित; पूळै आयिन–'पूळै' (नामक) फूल हो गईं; कण्टनै–देखा तुमने; इन्ऱु पोय्–आज जाकर; नाळै–कल; पोर्क्कु वा–लड़ने आओ; ॲन्न–ऐसा; नल्कितन्–उदारता के साथ कहा; विट्टुत्तान्–उसको छोड़ दिया; नाकु इळङ् कमुकिन्–बहुत ही बाल क्रमुक पेड़ पर; वाळै तावुऱु–जिस देश में 'वाळै' मछलियाँ उछलती हैं, उस; कोचल नाटु उटै–कोसल देश के स्वामी; वळ्ळल्–वदान्य प्रभु श्रीराम ने। १२१०

राक्षस-शासक राजा! तुम्हारी साथ लगी सेनाएँ पवनप्रताड़ित

'पूळै' के फूल के समान अस्तित्वहीन हो गयीं। तुमने यह बात अपनी आँखों से देख ली। जाओ लौट आज ! (अगर लड़ना ही चाहो तो) कल आओ युद्ध करने। (यह कहा किसने ?) अति बाल पूगतरु पर जिस देश में (इतनी समृद्धि है कि) वाळै (नाम की) मछलियाँ उछलती हैं उस कोसल देश के स्वामी, वदान्य प्रभु श्रीराम ने। (संकेत है कि अगर आवश्यकता पड़े तो विभीषण को अपना राज्य देकर अपना वचन पाल लेंगे।)। १२१०

15. कुम्बकरुणन् वदैप् पडलम् (कुम्भकर्ण-वध पटल)

❀ वारणम् पॊरुद मार्बुम् वरैयिनै यॆडुत्त तोळुम्
आरण मुनिवर्क् केऱ्प वरुमऱै पयिन्ऱ नावुम्
तारणि मवुलि पत्तुञ् जङ्गरन् गॊडुत्त वाळुम्
वीरमुङ् गळत्ते विट्टु वॆऱुङ्गैये मीण्डु पोनान् 1211

वारणम्–(दिग्-) गजों से; पॊरुत मार्पुम्–जिससे युद्ध किया, वह वक्ष; वरैयिनै–पर्वत को; ऍटुत्त तोळुम्–जिन्होंने उठाया वे कन्धे; आरण मुनिवर्कु–वेद-ऋषियों को; एऱ्प–तृप्ति देते हुए; अरुमऱै–अमूल्य वेदों से; पयिन्ऱ नावुम्–अभ्यस्त जीभ; तारणि–हारालंकृत; मवुलि पत्तुम्–दस किरीट; चङ्करन् कॊटुत्त वाळुम्–शंकरजी की दी हुई तलवार; वीरमुम्–और अपनी वीरता; कळत्ते विट्टु–(जंग के) मैदान में ही छोड़कर; वॆऱुम् कैये–रिक्त-हाथ; मीण्टु पोनान्–लौट चला। १२११

वह वक्ष जो दिग्गजों से लड़ा था; वे कन्धे जिन्होंने कैलास को उठाया था; वह जिह्वा जो वेदविदग्ध मुनियों से भी मान्य रीति से उत्तम वेदों से अभ्यस्त हुई थी; हारों से अलंकृत दस मुकुट; शंकरजी की दी हुई चन्द्रहास तलवार और अपनी वीरता —इन सभी को समरभूमि में छोड़कर रावण हाथों को खाली लेकर नगर में गया। (यानी सारा गौरव चूर हो मिट गया)। १२११

किडन्दपोर् वलियार् माट्टे कॆडदावानवरै यॆल्लाम्
कडन्दुपो युलह मून्ऱुङ् गाक्किन्ऱ कावलाळन्
तॊडर्न्दुपोम् वळियि नोडुन् दूङ्गिय करङ्ग ळोडुम्
नडन्दुपोय् नहरम् बुक्कान् अरुक्कनुम् नाहम् शेर्न्दान् 1212

किटन्त–(लड़ने) मिले; पोर् वलियार् माट्टे–युद्धसमर्थ लोगों से; कॆटात–जो नहीं हारे; वानवरै ऍल्लाम्–उन सभी देवों को; कटन्तु पोय्–हराकर; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों का; काक्किन्ऱ–पालनेवाला; कावलाळन्–पालक रावण; तॊटर्न्तु पोम्–साथ लगे आनेवाले; पळियिनोटुम्–अपयश के साथ; तूङ्किय–और लटकनेवाले; करङ्कळ् ओटुम्–हाथों के साथ; नटन्तु पोय्–पैदल चलकर;

नकरम् पुक्कान्–नगर में प्रविष्ट हुआ; अरुक्कतुम्–अर्क भी; नाकम्–(अस्त) अचल; चेर्न्तान्–गया। १२१२

देव युद्धवीर थे। उनके साथ हुए युद्ध में रावण उन्हें हरा चुका था। वह त्रिभुवनपति रावण अपना पीछा करते आनेवाले अपयश के साथ, और लटकते हाथों के साथ पैदल चला और नगर में पहुँचा। तब अर्कदेव भी अस्ताचल पहुँच गया। १२१२

❀ मादिर मॅवैयुम् नोक्कान् वळनहर् नोक्कान् वन्द
कादलर् तम्मै नोक्कान् कडर्पॅरुञ् जेनै नोक्कान्
तादविऴ् कून्दन् मादर् तनित्तनि नोक्कत् तानोर्
पूदल मॅन्नुम् नङ्गै तन्नैये नोक्किप् पुक्कान् 1213

मातिरम् ॲवैयुम्–किसी भी दिशा को; नोक्कान्–नहीं देखता; वळम् नकर्–समृद्ध नगर पर; नोक्कान्–दृष्टि नहीं देता; वन्त कातलर् तम्मै–आये अपने प्रेमी पुत्रों को; नोक्कान्–नहीं देखता; कटल् पॅरु चेतै–समुद्र-सम बड़ी सेना को; नोक्कान्–नहीं देखता; तातु अविऴ्–मकरंद जिनमें से भरकर गिरते हैं; कून्तल् मातर्–उन केशों वाली स्त्रियाँ; तनि तनि नोक्क–अलग-अलग खड़ी होकर देखतीं; तान्–अकेले वह; ओर् पूतलम् ॲन्नुम्–एक भूतल की; नङ्कै तन्नैये–स्त्री को ही; नोक्कि–देखता; पुक्कान्–पहुँचा। १२१३

रावण ने किसी भी दिशा में दृष्टि नहीं लगायी; न उसने अपने समृद्ध नगर की ओर देखा। सामने आये अपने प्यारे पुत्रों पर ध्यान नहीं दिया। विशाल सागर-सी सेना पर भी उसकी दृष्टि नहीं पड़ी। अलंकार के पुष्पों से मकरन्द गिराते हुए केशों वाली स्त्रियों को भी उसने नहीं देखा। वे अलग-अलग खड़ी-खड़ी उसे देख रही थीं। वह अकेला केवल पृथ्वीदेवी पर दृष्टि दिये नगर में गया। १२१३

नाळॊत्त नळिन मन्न मुहत्तियर् नयन मॅल्लाम्
वाळॊत्त मैन्दर् वार्त्तै यिरागवन् वाळि यॊत्त
कोळॊत्त शिरैवैत् ताण्ड कॊर्रवर् कर्रै नाडन्
तोळॊत्त तुणैमॅन् कॊङ्गै नोक्कङ्गुत् तॊडर् हिलामै 1214

अऱ्ऱै नाळ्–उस दिन; ऑत्त–एक सम (खिले); नाळ् नळिनम्–ताजे कमल-; अन्न मुकत्तियर्–सम मुख वाली स्त्रियों को; नयनम् ॲल्लाम्–सभी नेत्र; वाळ् ऑत्त–तलवार-सम लगे; मैन्तर् वार्त्तै–पुत्रों के वचन; इराकवन्–राघव के; वाळि ऑत्त–शर-सम लगे; कोळ्–ग्रहों को; ऑत्त चिऱै वैत्तु–एक साथ कारा में रखकर; आण्ट–दास बनाकर शासन करनेवाले; कॊऱ्ऱवर्क्कु–विजयी राजा को; तुणै मॅन् कॊङ्कै–कोमल स्तनद्वय; तन् नोक्कु तॊटर्किलामै–उसकी आँखों को आकृष्ट नहीं कर सके; तोळ् ऑत्त–कन्धों के समान (उपेक्षणीय) लगे। १२१४

उस दिन एक साथ खिले ताज़े कमल के फूलों के समान मुखों वाली स्त्रियों के नेत्र (जो साधारण रूप से उसे आनन्द व उमंग से भरनेवाले थे) तलवारों के समान कष्ट दे रहे थे। पुत्रों के शब्द श्रीरामबाण के समान साल रहे थे। नवग्रहों को एक साथ कारागृह में बन्द रखकर जिसने उन पर आधिपत्य जमाया था, उस विजयी वीर रावण की आँखें स्तनद्वय पर नहीं गयीं। वे स्तन कन्धों की भाँति उपेक्षणीय लगे। १२१४

❀ मन्दिरच् चुऱ्ऱत् तारुम् वाणुदऱ् चुऱ्ऱत् तारुम्
तन्दिरच् चुऱ्ऱत् तारुम् तन्गिळैच् चुऱ्ऱत् तारुम्
ऑन्दिरप् पॉऱियिऩ् निऱ्प यावरु मिऩ्ऱित् तानोर्
शिन्दुरक् कळिऱु कूडम् बुक्कॅनक् कोयिल् शेर्न्दान् 1215

मन्तिरम् चुऱ्ऱत्तारुम्–मंत्रणा के नाते के लोग; वाळ् नुतल् चुऱ्ऱत्तारुम्–उज्ज्वल ललाटिनी स्त्रियों के वृन्द; तन्तिरम् चुऱ्ऱत्तारुम्–सेना के वीरों के परिवार; तन् किळै चुऱ्ऱत्तारुम्–और अपने रिश्ते के परिवार; ऍन्तिरम् पॉऱियिन्–यन्त्रप्रतिमा के समान; निऱ्प–खड़े रहे तब; तान्–अकेला वह; यावरुम् इन्ऱि–बिना किसी के साथ दिये; ओर्–एक; चिन्तुरम् कळिऱु–सिंदूर-चर्चित गज; कूटम् पुक्कु ऍन–अपनी शाला में पहुँचता हो जैसे; कोयिल् चेर्न्तान्–महल में पहुँचा। १२१५

मन्त्रीवृन्द, उज्ज्वल भालों वाली पत्नियों का समूह, सेनानायकों का जमघट, रिश्तेदारों की जमात—सब यन्त्रचालित प्रतिमा के समान खड़े रहे। वह अकेला बिना किसी के साथ के, एक सिंदूर-मला गज अपनी शाला में जाता हो जैसे अपने महल में गया। १२१५

आण्डीरु शॆम्बॊऱ् पीडत् तिरुन्दुतन् वरुत्त माऱि
नीण्डुयर् नितॆप्प नाहिक् कञ्जुहि ययनिन् ऱानै
ईण्डुनन् दूदर् तम्मै यिव्वळित् तरुदि यॆन्ऱान्
पूण्डदोर् पणियित् वल्लै नाल्वरेक् कॊण्डु पुक्कान् 1216

आण्टु–वहाँ; ऑरु चॆम् पॊन् पीटत्तु–एक लाल स्वर्ण की पीठ पर; इरुन्तु–रहकर; तन् वरुत्तम् आऱि–अपना दुःख भूलकर; नीण्टु उयर्–बहुत गम्भीर; नितॆप्पन् आकि–चिंतक बनकर; अयल् निन्ऱान्–पास खड़े रहे; कञ्चुकियै–कंचुकी से; ईण्टु–अब; नम् तूतर् तम्मै–हमारे दूतों को; इ वऴि–इधर; तरुति–बुला दो; ऍन्ऱान्–बोला; पूण्टतु ओर पणियिन्–शिरोधृत आज्ञा से; वल्लै–शीघ्र; नाल्वरै–चार को; कॊण्टु पुक्कान्–ले आया। १२१६

वह वहाँ एक स्वर्णपीठ पर बैठा और थोड़ा अपना दुःख शान्त करके गम्भीर रूप से सोचने लगा। फिर उसने पास रहे कंचुकी को आज्ञा दी कि अभी हमारे दूतों को यहाँ बुला लाओ। कंचुकी आज्ञा शिरोधार्य करके चार दूतों को जल्दी बुला लाया। १२१६

मनकदि वायु वेहन् मरुत्तन्मा मेह नॅन्ड्रिव्
विनैयरि तॉक्लिलर् मुन्ना वायिरर् विरवि नारै
नितैवदन् मुन्न नीर्पोय् नॅडुन्दिशै यॅट्टु नीन्दिक्
कनैहळ लरक्कर् तानै कॉणरुदिर् कडिदि नॅन्ड्रान् 1217

मनकति–मनगति; वायुवेकन्–पवनवेग; मरुत्तन्–मरुत; मामेकन्–महामेघ; ॲन्रु–कथित; इव्–इन; वितै अरि–कार्य-समर्थ; तॉळिलर् मुन्ना–कर्मचारी आदि; विरवितार आयिररै–आये सहस्र से; नीर् नितैवतत् मुन्नम्–तुम्हारे सोचने की देर के अन्दर; पोय्–जाकर; नॅटु तिचै ॲट्टुम्–लम्बी आठों दिशाओं को; नीन्ति–पार कर; कनै कळल्–ध्वनियुक्त पायलधारी; अरक्कर् तानै–राक्षस-सेना को; कटितिन्–जल्दी; कॉणरुतिर्–लाओ; ॲन्ड्रान्–कहा (रावण ने)। १२१७

मनोगति, पवनवेग, मरुत और महामेघ आदि कार्यचतुर सहस्रों दूत आये। रावण ने उन्हें आज्ञा सुना दी कि बात सोचने की उतनी देर के अन्दर आठों दिशाओं के पार जाओ और क्वणनशील पायलधारी राक्षसों की सेनाओं को बहुत जल्दी ले आओ। १२१७

एळ्पॅरुङ् गडलुज् जूळ्न्द वेळ्पॅरुन् दीवुम् ॲण्णिल्
पाळियम् बॊरुप्पुङ् गीळ्पा लडुत्तपा दाळत् तुळ्ळुम्
आळियङ् गिरियिन् मेलु मरक्करा नवरै यॅल्लाम्
ताळ्विलिर् कॊणर्दि रॅन्ड्रा नवरदु तलैमेर् कॊण्डार् 1218

एळ् पॅरु कटलुम्–सातों बड़े समुद्रों से; चूळ्न्त–वलयित; एळ् पॅरु तीवुम्–सातों बड़े द्वीपों में; ॲण्णिल्–असंख्यक; पाळि अम्–सबल और सुन्दर; पॊरुप्पुम्–पर्वतों में; कीळ् पाल्–नीचे की ओर; अटुत्त–पड़ोस के; पाताळत्तु उळ्ळुम्–पाताल में; आळि अम् किरियिन् मेलुम्–सुन्दर चक्रवाल गिरि पर; अरक्कर् आनवरै ॲल्लाम्–जो राक्षस होते हैं, उन सभी को; ताळ्विलिर्–विना विलम्ब के; कॊणर्तिर्–लाओ; ॲन्ड्रान्–कहा; अवर्–उन्होंने; अतु–वह (आज्ञा); तलै मेल् कॊण्टार्–सिर पर धारण कर ली। १२१८

सप्तसमुद्रावृत सातों द्वीपों में, असंख्यक कठोर पर्वतों पर; नीचे की ओर पाताल में और चक्रवाल गिरि के ऊपर— सर्वत्र जो भी राक्षस हैं उन सबको बिलकुल अविलम्ब लाओ। चलो। उन दूतों ने भी आज्ञा सिर पर धारण कर ली। १२१८

मूवहै युलहु ळोरु मुरैयिनिन् ड्रेवल् शॅय्वार्
पावह मिन्न दॅन्रु तॅरिहिलर् पदैत्तु विम्मत्
तूवह लाद वैवा यॅ:(ह्)कुरत् तॊळैक्क याने
शेवहज् जेर्न्द दॅन्नच् चॅड्रिमल रमळि शेर्न्दान् 1219

मुरैयिल् निन्रु–यथाक्रम रहकर; एवल् चॅय्वार्–परिचर्या करनेवाले; मू वकै

उलकु उळोरम्–त्रिविध लोकवासी; पावकम् इत्ततु–उसका भाव क्या है; अँतृ तॅरिकिलर्–यह नहीं जानते; पतैत्तु–व्यग्र होकर; विम्म–अस्थिर हुए; तू अकलात–जिससे मांस दूर नहीं हुआ हो और; वै वाय्–तीक्ष्णमुखी; अँ.·.कु उरु–फ़ौलाद (भाले) के खूब; तॊळैक्क–छेदने से; यात्तै–गज; चेवकम्–सोने के स्थान में; चेर्न्ततु अँन्त–पहुँचा हो जैसे; मलर् चॅरि–पुष्पाकीर्ण; अमळि–शय्या में; चेर्न्तात्–आ गया। १२१६

त्रिलोकवासी, जो अपने-अपने क्रम से उसकी परिचर्या कर रहे थे, यह नहीं जान सके कि उसका भाव क्या है? वे व्यग्र हो छटपटाए। रावण भी उस गज के समान एक पुष्पाकीर्ण शय्या पर गया, जो मांस से अवियुक्त भाले के बेधने से तड़पकर अपनी निद्रा के स्थान में गया हो। १२१९

पण्णिरै पवळच् चॅव्वायप् पैन्दॊडिच् चीदै यॅन्नुम्
पॅण्णिरै कॊण्ड नॅञ्जिल् नाणिरै कॊण्ड पिन्नरक्
कण्णिरै कोडल् शॅय्यान् कैयरु कवलै शुर्र्
उण्णिरै मानन् दन्नै युमिळ्न्दॅरि युयिर्प्प दानान् 1220

पण् निरै–संगीत-सम; पवळम्–प्रवाल-से; चॅ वाय्–अरुणाधरा; पैन् तॊटि–ताज़े कंकणों से अलंकृत; चीतै अॅन्नुम् पॅण्–सीता नाम की रमणी; इरै कॊण्ट–जहाँ रहती थी उस; नॅञ्चिल्–मन में; नाण् निरै कॊण्ट पिन्नर्–शरम के आ भर जाने के बाद; कै अरु–निष्क्रिय बनानेवाला; कवलै चुर्र्–दुःख चारों ओर से घेर गया, इसलिए; कण्–आँखों को; इरै–ज़रा भी; कोटल् चॅय्यान्–झपे बिना; उळ् निरै–अन्दर भरे; मातम् तन्नै–अपमान की भावना को; उमिळ्न्तु–प्रगट करते हुए; अॅरि–आग के समान गरम; उयिर्प्पतु आनान्–साँसें छोड़ने लगा। १२२०

रावण के मन में पहले संगीत-सम मनोहारी स्वभाव की, श्रेष्ठ स्वर्ण के कंकण पहननेवाली और प्रवाल-सम अधरों वाली सीताजी थीं। अब वहाँ शरम आ भर गयी और निष्क्रिय बनानेवाली चिन्ता घेर गयी तो वह आँखें झप ही नहीं सका। वह आग के समान गरम साँसें निकालता था, मानो वह अपने अन्दर भरे रहे अपमान को उगल रहा हो! । १२२०

❀ वान्हु मण्णु मॅल्ला नहुम्नॅडु वयिरत् तोळान्
बान्हु पहैज रॅल्ला नहुवरॅन् ऱुदऱ्कु नाणान्
वेन्हु नॅडुङ्गट् चॅव्वाय् मॅल्लियन् मिदिलै वन्द
शान्हि नहुव ळॅन्ऱे नाणत्ताऱ् चाम्बु हिन्ऱान् 1221

वान्–आकाशवासी; नकुम्–हँसी करेंगे; मण् अॅल्लाम्–सारे भूवासी; नकुम्–हँसी उड़ाएँगे; तान् नकु–अपने परिहास के पात्र; पकैञर् अॅल्लाम्–सभी शत्रु; नकुवर–हँसेंगे; अॅन्रु–यह सोचकर; अतऱ्कु–उससे; नाणान्–शरम का अनुभव नहीं किया; नॅटु वयिरम् तोळान्–उन्नत वज्रस्कंध; वेल् नकु–भाले की हँसी

करनेवाले; नॆट्टु कण्–लम्बे नेत्रों और; चॆव्वाय्–लाल अधरों वाली; मॆल् इयल्–कोमल स्वभाव वाली; मितिलै वन्त–मिथिला से आयी; चानकि नकुवळ्–जानकी हँसेंगी; ऎन्ऱे–यही सोचकर; नाणत्ताल्–शरम से; चाम्पुकिन्ऱान्–म्लान होता है। १२२१

उसकी स्थिति देखकर स्वर्गवासी, भूलोकवासी उसके परिहास के पात्र सभी शत्रु लोग उसकी हँसी उड़ाएँगे। —उनकी बात को लेकर वह शरम का अनुभव नहीं कर रहा था। पर उन्नत वज्रस्कन्ध रावण यह सोचकर शर्मिन्दा हो रहा था कि भाले से भी तीक्ष्ण नेत्रों और लाल मुख (अधरों) वाली तन्वी, मैथिली जानकी उसकी हँसी करेंगी। १२२१

आङ्गवन् ऱन्मू दादै याहिय मूप्पिन् याक्कै
वाङ्गिय वरिवि लन्न मालिय वानॆ्न ऱोदुम्
पूङ्गळ लरक्कन् वन्दु पॊलङ्गळ लिलङ्गै वेन्दन्
ताङ्गिय वमळि माट्टोर् तविशुडैप् पीडञ् जार्न्दान् 1222

आङ्कु–तब (वहाँ); अवन् तन्–उसका; मूतातै–बड़ा दादा; आकिय–जो था; मूप्पिन्–वार्द्धक्य के कारण; वाङ्किय याक्कै–झुका शरीर; वरि विल् अन्न–(जिसका) सबन्ध धनु-सम था; मालियवान् ऎन्ऱु ओतुम्–माल्यवान-संज्ञित; पू कळल्–सुन्दर पायलधारी; अरक्कन्–राक्षस; वन्तु–आकर; पॊलम् कळल्–स्वर्णपायलधारी; इलङ्कै वेन्तै–लंका के राजा को; ताङ्किय अमळि माट्–ढोनेवाली शय्या के पास; ओर् तविचु उटै–एक आसन से युक्त; पीटम् चार्न्तान्–पीठ (पलंग) पर पहुँचा। १२२२

तब वहाँ माल्यवान नाम का बूढ़ा, धनु के समान झुके शरीर का और सुन्दर पायलधारी राक्षस, जो रावण का बड़ा दादा था, आया। और स्वर्णपायलधारी रावण की शय्या के पास एक पीठ पर रहे आसन पर बैठ गया। १२२२

इरुन्दव निलङ्गै वेन्द नियऱ्कैयै यॆय्द नोक्किप्
पॊरुन्दवन् दुऱ्ऱ पोरिल् तोऱ्ऱनै पोलु मॆन्ना
वरुन्दिनै मनमुन् दोळुम् वाडिनै नाळुम् वाडाप्
पॆरुन्दव मुडैय वैया वॆन्नुऱ्ऱ पॆऱ्ऱि यॆन्ऱान् 1223

इरुन्तवन्–जो बैठा वह; इलङ्कै वेन्तन् इयऱ्कैयै–लंका के राजा की स्थिति को; ऎय्त नोक्कि–खूब देखकर; वाटा–अमंद; पॆरु तवम्–श्रेष्ठ तप के फल के; उटैय ऐया–स्वामी प्रभु; पॊरुन्त वन्तु–पास आकर; उऱ्ऱ पोरिल्–जो हुआ उस युद्ध में; तोऱ्ऱनै पोलुम्–हार गये शायद; ऎन्ना–ऐसा सोचा जाय, इस रीति से; वरुन्तिनै–दुःखी होकर; मनमुम् तोळुम्–मन और कन्धों के; वाटिनै–मुरझाये हुए हो; उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–मिली उपलब्धि; ऎन्–क्या है; ऎन्ऱान्–पूछा। १२२३

बैठकर माल्यवान ने रावण की स्थिति को खूब देखा। फिर

पूछा कि अमंद प्रभावशाली तपस्या के स्वामी ! तात ! जो युद्ध आया था पास उसमें हार गये हो क्या ? ऐसा ही लगता है तुमको देखने पर। क्योंकि दुःखी हो; मन उदास है और कन्धे कृश हैं। जो तुम्हें प्राप्त हुआ वह क्या है ? । १२२३

कवैयुरु नॆञ्जन् कान्दिक् कनल्हिन्र कण्णन् पत्तुच्
चिवैयिन्वा यॆन्नच् चॆन्दी युयिर्प्पुरत् तिरन्द मूक्कन्
नवैयुरु पाहे यन्रि यमुदिन्नै नक्कि नालुञ्
जुवैयरप् पुलर्न्द नावन् इन्नैयन शॊल्ल लुर्रान् 1224

कवै उरु–विदीर्ण; नॆञ्चन्–मन वाला; कान्ति कनल्किन्र–धधककर जलनेवाली; कण्णन्–नेत्रों वाला; चिवैयिन् वाय् ऎन्न–धौंकनी के मुख के समान; चॆम् ती–लाल आग; उयिर्प्पु उर–प्रज्वलित दिखे ऐसा निःश्वास छोड़नेवाली; तिरन्त पत्तु मूक्कन्–खुली दस नासिकाओं वाला; नवै अरु–निर्दोष; पाकै अन्रि–चासनी के अलावा; अमुतिनै नक्किनालुम्–अमृत को चाटने पर भी; चुवै अर–स्वाद न लगे ऐसी; पुलर्न्त नावन्–सूखी जीभ वाला; इन्नैयन–यह; चॊल्लल् उर्रान्–कहने लगा। १२२४

विदीर्णमन, जलती आँखों वाला, धौंकनी के मुख के समान गरम आग-सी साँसें निकालनेवाली दस नासिकाओं का, और निर्दोष चासनी की कौन कहे अमृत चाटने पर भी स्वाद जान नहीं सके, ऐसी सूखी जीभ वाला रावण यों बोलने लगा। १२२४

शङ्गम्वन् दुर्र कॊर्रत् तावदर् तम्मो डॆम्मो
डङ्गम्वन् दुर्र दाह अमरर्वन् दुर्रा रन्रे
कङ्गम्वन् दुर्र शॆय्य कळत्तुनङ् गुलत्तुक् कॊव्वाप्
पङ्गम्वन् दुर्र दॊन्रो पळियुम्वन् दुर्र दॆन्रान् 1225

चङ्कम् वन्तु–'शंख' (की संख्या लाख करोड़) की संख्या में; उर्र–प्राप्त; कॊर्रम्–विजय (सन्दर्भ); तापतर् तम्मोटु–तपस्वियों के; ऎम्मोटु–और मेरे; अङ्कम् वन्तु उर्रतु–(मध्य) चतुरंग की लड़ाई आ गयी; आक–जो; अमरर् वन्तु उर्रार् अन्रे–देव भी (तमाशा देखने) आ गये न; कङ्कम् वन्तु उर्र–जिसमें बाज आ गये; चॆय्य कळत्तु–उस (रक्त से) लाल समरस्थल में; नम् कुलत्तुक्कु–हमारे कुल के लिए; ऒव्वा–अनुपयुक्त; पङ्कम् वन्तु–हार आकर; उर्रतु–लग गयी; ऒन्रो–वह एक है क्या; पळियुम्–अपयश भी; वन्तु–आ; उर्रतु–लग गया; ऎन्रान्–कहा। १२२५

अत्यधिक 'शंखों' की संख्या के संदर्भों में विजयी जो रहे, उन तपस्वियों का और मेरा युद्ध जो हुआ उसका तमाशा देखने देव भी आ गये थे न ? उस रक्त से लाल बने और बाजों से भरे युद्ध के मैदान में

मुझे मेरे कुल के लिए बिलकुल अनुचित हार मिली ! वही एक है क्या ? अपयश भी मिल गया । १२२५

मुळैयमै तिङ्गळ् शूडुम् मुक्कणात् मुदलूव राहक्
किळैयमै पुवन मून्रुम् वन्दुडन् किडैत्त वेनुम्
वळैयमै वरिविल् वाळि मॆय्युर वळङ्गु मायिन्
इळैयवन् ट्रनक्कु माट्रा दॆन्बॆरुञ् जेनै नम्ब 1226

नम्प–नायक; मुळै अमै–नवोदित; तिङ्कळ् चूटुम्–चन्द्र को धारण करनेवाले; मुक्कणात् मुतलवर् आक–त्रिनेत्र शिव आदि; किळै अमै–वर्धनशील; पुवतम् मून्रम्–तीनों भुवन; वन्तु–आकर; उटन् किटैत्त एनुम्–पक्ष-रक्षक रहें तो भी; ऎन् पॆरु चेनै–मेरी बड़ी सेना; वळै अमै–वक्र; वरि विल्–बंधनयुक्त धनु के; वाळि–शरों को; मॆय् उऱ–शरीर पर लगें, ऐसा; वळङ्कुम् आयिन्–चलायेगा तो; इळैयवन् तनक्कुम्–छोटे के सामने भी; आट्रातु–टिक नहीं सकेगी । १२२६

(रावण ने आगे कहा—) नायक ! चन्द्रशेखर शिव आदि वर्धनशील तीनों भुवनों के वासी भी क्यों न मेरी सेना के पक्ष में उसकी रक्षा करें तो भी लगा कि वह लक्ष्मण धनु झुकाकर शर चलाये तो वह सह नहीं सकेगी ! । १२२६

ऍऱित्तपो ररक्क रावि यॆण्णिला वॆळ्ळ मॆञ्जप्
पऱित्तपो वॆन्नै यिन्दप् परिबवप् पडुत्तुम् बाणम्
पॊऱित्तपो दन्ना नन्दक् कूनिहून् पोह वुण्डै
तॆऱित्तपो दॊत्त दन्ऱिच् चिन्नमुण्मै तॆरिन्द दिल्लै 1227

ऍऱित्त पोर्–जिसमें हथियार फेंके जाते हैं, उस युद्ध में; ऍण् इला वॆळ्ळम्–असंख्य 'वॆळ्ळम्' के; अरक्कर् आवि–राक्षसों के प्राण; ऍञ्च–मिट जाएँ, ऐसा; पऱित्त पोतु–जब हरे गये तब; ऍन्नै–(और) मुझे; इन्त परिपवम् पट्टुत्तुम्–इस अपमान में डालनेवाला; पाणम्–बाण; पॊऱित्त पोतु–जब उसने चलाया तब; अन्नान्–उस (राम) में; अन्त कूनि कून् पोक–कुब्जा के कूबड़ को सीधा करते हुए; उण्टै तॆऱित्त पोतु–गुलेले जब चलाये थे तब; ऒत्ततु अन्ऱि–के समान रहने के सिवा; चितम् उण्मै–कोप का अस्तित्व; तॆरिन्ततु इल्लै–विदित नहीं हुआ । १२२७

राम का गुण देखो । भीषण विकट रूप से हथियार चलाकर जो युद्ध किया गया है, उसमें राम ने असंख्य 'वॆळ्ळम्' के राक्षसों की जानें हर लीं । तब भी; राम ने मुझ पर बाण चलाकर इस अपमान का पात्र बनाया । तब भी उसकी मुद्रा ठीक वैसी थी जैसी उसकी कुब्जा के कूबड़ को निकालते हुए गुलेले चलाते समय थी । इसके सिवा उसमें कोप भी हुआ, इसका आसरा ही नहीं मिला । १२२७

मलैयुऱप् पॆरिय राय वाळॆयिऱ् ऱरक्कर् ताऩै
निलैयुऱच् चॆऱिन्द वॆळ्ळ नूऱ्ऱिरण् डॆऩिऩुम् नेरे
कुलैयुऱक् कुळित्त वाळि कुदिरैयैक् कळिऱ्ऱै आळैत्
तलैयुऱप् पट्ट दल्ला लुडल्हळिऱ् ऱङ्गिऱ् ऱुण्डो 1228

मलै उऱ–पर्वत-सम; पॆरियर् आय–बड़े आकार के रहे; वाळ् ऎयिऱ–प्रकाशमय दांतों वाले; अरक्कर् तानै–राक्षसों की सेना; निलै उऱ चॆऱिन्त–अचल रूप से सटी रही; वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम्'; नूऱ्ऱिरणटु–एक सौ दो की; ऎनिनुम्–रही तो भी; नेरे–सीधे; कुलै उऱ–जिगर पर लगे; कुळित्त वाळि–ऐसे जाकर गड़े बाण; कुतिरैयै–अश्वों को; कळिऱ्ऱै–गजों को; आळै–वीरों को; तलै उऱ–सिर कट गिर जाएँ; पट्टतु अल्लाल्–ऐसे लगने के सिवा; उटल्कळिल्–शरीरों में; तङ्किऱ्ऱु उण्टो–रह गये क्या। १२२८

पर्वताकार राक्षसों की सेना ठीक-ठीक एक सौ दो 'वॆळ्ळम्' की थी और वह ठस भरी थी। तो राम ने सीधे सबके जिगर (मर्मस्थान) पर जाकर लगें ऐसा बाण चलाये। वे बाण भी अश्वों, गजों और वीरों के सिरों को काट गिराने के सिवा कहीं शरीरों में जाकर रह गये क्या ? (नहीं)। १२२८

पोयपि ऩवऩ्गै वाळि युलहॆलाम् बुहुव दल्लाल्
ओयुमॆऩ् ऱुरैक्क लामो ऊऴिशॆऩ् ऱालु मूऴित्
तीयैयुन् दीय्क्कुम् शॆल्लुन् दिशैयैयुन् दीय्क्कुम् शॆप्पुम्
वायैयुन् दीय्क्कुम् मुऩ्ऩिऩ् मऩत्तैयुम् तीय्क्कुम् मऩ्ऩो 1229

पोय पिन्–निफर जाने के बाद; अवन् कै वाळि–उसके हाथ का शर; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों को; पुकुवतु अल्लाल्–भेदने के सिवा; ऊऴि चॆन्ऱालुम्–युग भी बीत चलें तो भी; ओयुम्–रुक जायगा; ऎन्ऱु–ऐसा; उरैक्कल् आमो–कहा जा सकता है क्या; ऊऴि तीयैयुम्–कालाग्नि को भी; तीय्क्कुम्–जला देगा (राम का शर); चॆल्लुम् तिचैयैयुम्–जानेवाली दिशाओं को भी; तीय्क्कुम्–जला देगा; चॆप्पुम् वायैयुम्–(उसके सम्बन्ध में) बोलनेवाले मुख को भी; तीय्क्कुम्–जला देगा; मुन्निन्–सोचें तो; मनत्तैयुम्–मन को भी; तीय्क्कुम्–जला देगा। १२२९

राम का शर देखा। मेरी छाती में निफर गया। फिर सारे लोकों को भेद चला। युग-युग बीत चलें तो भी क्या यह कहा जा सकेगा कि वह रुकेगा ? वह युगान्त की कालाग्नि, अपने मार्ग की दिशाओं और उसके सम्बन्ध में बोलनेवाले मुखों और सोचनेवाले मनों को भी जला सकनेवाला है। १२२९

मेरुवैप् पिळक्क वेण्डिल् विण्गडन् देह वेण्डिल्
पारिऩै युरुव वेण्डिल् कडल्हळैप् परुह वेण्डिल्

आरुमे यवर्ड़्रि ताऱ्ऱल् आऱ्ऱुमे लतन्द कोडि
मेरुवुम् विण्णु मण्णुङ् गडलहळुम् वेण्डु मन्ऱे 1230

मेरुवै–मेरु को; पिळक्क–तोड़ना; वेण्टिल्–चाहो; विण् कटन्तु–आकाश पार कर; एक वेण्टिल्–जाना चाहो; पारितै–भूमि को; उरुव वेण्टिल्–भेदना चाहो; कटल्कळै–समुद्रों को; परुक वेण्टिल्–पीना चाहो; अवर्ड़्रित्–उनका; आऱ्ऱल्–सामर्थ्य; आरुम्–योग्य रहेगा; आऱ्ऱुमेल्–उनको झेलना हो तो; अतन्त कोटि–अनन्त करोड़ों के; मेरुवुम्–मेरु और; विण्णुम्–स्वर्ग और; मण्णुम्–भूतल और; कटल् कळुम्–समुद्र; वेण्टुम्–आवश्यक होंगे। १२३०

राम के शर मेरु को तोड़ना चाहें, आकाश भेदकर चलना चाहें, भूमि को भेदना चाहें या समुद्र को पीना (सोखना) चाहें —सभी कर सकते हैं। उनको झेलना हो तो अनन्त कोटि मेरु, भूतल, स्वर्ग और समुद्र आवश्यक होंगे। १२३०

वरिशिलै नाणिर् कोत्तु वाङ्गुदल् विडुद लॊन्ऱुन्
दॆरिहिल रमर रेयुम् आरवत् शॆय्है तेर्वार्
पॊरुशिनत् तरक्क रावि पोक्किय पोह वॆन्ऱु
करुदवे युलह मॆङ्गुञ् जरङ्गळायक् काट्टु मन्ऱे 1231

वरिचिलै–सबन्ध धनु के; नाणिल् कोत्तु–डोरे में (बाण) लगाकर; वाङ्कुतल्–(धनु को) झुकाना (डोरा खींचना); विटुतल्–(बाण) चलाना; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; अमररेयुम्–देव भी; तॆरिकिलर्–नहीं जानते; आर्–कौन; अवन् चॆय्कै–उसका कार्य; तेर्वार्–समझ पाते; पॊर चितत्तु–योद्धा और क्रुद्ध; अरक्कर् आवि–राक्षसों के प्राण; पोक्किय–निकालने; पोक–जाएँ; ऎन्ऱु–ऐसा; करुतवे–मन में भाव लाते ही; उलकम् ऎङ्कुम्–लोक भर में; चरङ्कळाय् काट्टुम्–शर ही शर दिखायी देते। १२३१

देवों को भी यह विदित नहीं होता कि श्रीराम कब प्रत्यंचा चढ़ाता, तीर लगाकर खींचता और कब छोड़ता। उसका कार्य कौन समझ सकता है ? जब राम "क्रुद्ध और योद्धा राक्षसों को मारने को चलो" का संकल्प करता है, तब सारे लोक उसके ही शर बने हों ऐसे दिखते हैं। १२३१

नल्लियर् कविञर् नाविर् पॊरुळ्कुऱित् तमर्न्द नामच्
चॊल्लॆनच् चॆय्युळ् कॊण्ड तॊडैयॆनत् तॊडैयै नीक्कि
ऎल्लैयिल् शॆलवन् दीरा विशैयॆनप् पळुदि लाद
पल्ललङ् गारप् पण्बे काहुत्तन् पहळि मादो 1232

काकुत्तन्–काकुत्स्थ (श्रीराम) के; पकळि–शर; नल् इयल्–उत्तम स्वभाव के; कविञर् नाविल्–कवियों की जिह्वा में; पॊरुळ् कुऱित्तु–अर्थयुक्त; अमर्न्त–

रहनेवाले; नामम् चॊल् ऒत्त–यशस्वी शब्दों के समान; चॆय्युळ् कॊण्ट–पद्यबद्ध; तॊटै ऒत्त–काव्य के समान; तॊटैयं नीक्कि–काव्यगुण छोड़कर; ऎल्लै इल्–अपार; चॆल्वम् तीरा–श्रेष्ठताओं से न हटनेवाला; इचै ऒत्त–संगीतमयता के समान; पऴुतु इलात–निर्दोष; पल् अलङ्कारम्–विविध अलंकारों की; पण्पे–विशिष्टता ही थे। १२३२

काकुत्स्थ के शर उत्तम कवियों की जिह्वा के अर्थ-भरे यशस्वी शब्दों के समान, उनके पद्यबद्ध काव्यों के समान और उन काव्यों की शैली के समान और उनकी गेय योग्य संगीतमयता के समान अनेक निर्दोष अलंकारों से पूर्ण हैं। (सब तरह से प्रशंसनीय हैं।)। १२३२

इन्दिरन् कुलिश वेलु मीशन्गै यिलैमून् ऱॆन्नुम्
मन्दिर वयिलु मायोन् वळैयॆ:(ह्)किन् वरवुङ् गण्डेन्
अन्दरम् नीळि दम्मा तावद नम्बुक् काट्रा
नॊन्दनन् याने यॆन्ऱा लारवै नोक्क हिऱ्पार् 1233

इन्तिरन् कुलिच वेलुम्–इन्द्र का कुलिश हथियार और; ईचन् कै–शिवजी के हाथ का; मून्ऱु इलै ऒन्नुम्–तीन पत्तों के आकार का; मन्तिर अयिलुम्–जादू का त्रिशूल; मायोन्–मायावी विष्णु का; वळै ऎ·किन्–वक्र लोहे के चक्र का; वरवुम्–आना भी; कण्टेन्–देखा है; अन्तरम्–भेद; नीळितु–बहुत अधिक है; तापतन् अम्पुक्कु–तपस्वी के शर के सामने; आट्रा–टिक नहीं सकते; यान्–मैं स्वयं; नॊन्तनन् ऎन्ऱाल्–आहत हुआ तो; आर्–कौन; अवै–उनको; नोक्क किऱ्पार्–देख भी सकेंगे; अम्मा–मैया री। १२३३

मैंने इन्द्र के कुलिशायुध को, शिवजी के हाथ के त्रिशूल को और मायावी विष्णु के गोल लोहे, चक्र को आते देखा है। पर उनमें और राम के बाण में अगध भेद है। तपस्वी उसके अस्त्रों के सामने स्वयं मैं दु:खी हो गया तो समझ लो, उनकी ओर आँख उठाकर भी देख सके कौन ?। १२३३

पेयिरुङ् गणङ्ग ळोडु शुडुहळत् तुऱैयुम् बॆऱ्ऱि
एयवन् ऱोळ्ह ळॆट्टुम् इन्दिर निरण्डु तोळुम्
मायिरु ञाल मुऱ्ऱुम् वयिऱ्ऱिडै वैत्त मायन्
आयिरन् दोळुम् अन्नान् विरलॊन्ऱि नाऱ्ऱ लाऱ्ऱा 1234

पेय् इरु कणङ्कळोटु–भूतों के बड़े झुंडों के साथ; चुटु कळत्तु–श्मशान में; उऱैयुम् पॆऱ्ऱि एयवन्–रहने के स्वभाव वाले के; ऎट्टु तोळ्कळुम्–आठ कन्धे और; इन्तिरन् इरण्टु तोळुम्–इन्द्र की दो भुजाएँ; मा इरु ञालम् मुऱ्ऱुम्–बहुत बड़े लोक भर को; वयिऱु इटै–अपने उदर में; वैत्त मायन्–रखनेवाले मायावी के; आयिरम् तोळुम्–हजार हाथ; अन्नान्–उसकी; विरल् ऒन्ऱिन्–एक उँगली के; आऱ्ऱल्–बल को; आऱ्ऱा–झेल नहीं सकते। १२३४

भूतगणों के साथ श्मशान में वास करनेवाले शिव के आठ हाथ, इन्द्र के दो, बड़े भूलोक को उदर में रखनेवाले विष्णु के सहस्र हाथ —ये सब मिलकर उसकी एक उँगली के बल की टक्कर नहीं खा सकेंगे। १२३४

शीर्त्तवी रियरा युळ्ळार् शॅङ्गण्मा लॅनिनु मियानक्
कार्त्तवी रियनै नेर्वा रुळरॅनक् करुद लाऱ्ऱेन्
पार्त्तपो दवन् मऱ्ऱत् तावदन् तम्बि पादत्
तार्त्तदोर् तुहळुक् कॉव्वा नारवऱ् काऱ्ऱ ऱिऱ्पार् 1235

चीर्त्त–गौरवयुक्त; वीरियराय् उळ्ळार्–वीर्यवान जो हैं; चॅम् कण् माल् ॲनिनुम्–लाल आँख का विष्णु भी हो; यान्–मैं; अ कार्त्तवीरियनै–उस कार्तवीर्य के; नेर्वार् उळर्–सामना करनेवाले हैं; ॲन–ऐसा; करुतल् आऱ्ऱेन्–नहीं मानूँगा; पार्त्त पोतु–देखते समय; अवनुम्–वह भी; अ तापतन्–उस तपस्वी के; तम्पि पातत्तु–कनिष्ठ के चरण में; आर्त्ततु–लगी; ओर् तुकळुक्कु–एक धूल की; ऒव्वान्–समानता नहीं करेगा; आर्–कौन; अवऱ्कु–उसके सामने; आऱ्ऱकिऱ्पार्–ठहर सकेगा। १२३५

बहुत ही सम्मानित वीर्यवान क्यों न हों, क्यों अरुणाक्ष श्रीविष्णु ही हों, उसे भी कार्तवीर्यार्जुन का सबल समबली नहीं मानूँगा। सोचने पर वह कार्तवीर्य भी उस तपस्वी के भाई के चरण की धूल की भी समानता नहीं कर सकेगा। तब राम का सामना करेगा कौन? । १२३५

मुप्पुर मुरुङ्गच् चॅऱ्ऱ मूरिवॅञ् जिलैयुम् वीरन्
अऱ्पुद विल्लुक् कैय वम्बॅनक् कॊळ्ळु माहा
ऒप्पुवे ऱुरैक्क लाव दॊरुपॊरु ळिल्लै वेदन्
दप्पिन पोदु मन्नान् ऱुनुवुमिळ् शरङ्ग डप्पा 1236

ऐय–तात; मु पुरम्–त्रिपुर को; मुरुङ्क चॅऱ्ऱ–जलाते हुए मिटानेवाला; मूरि–सशक्त; वॅम् चिलैयुम्–भयंकर धनु भी; वीरन्–वीर (श्रीराम) के; अऱ्पुत विल्लुक्कु–अद्भुत धनुष के; वम्पु–समान है; ॲन–ऐसा; कॊळ्ळुम् आका–मानना ठीक नहीं होगा; ऒप्पु उरैक्कल् आवतु–समान कहने के लिए; वेऱु ओर् पॊरुळ् इल्लै–अन्य कोई वस्तु नहीं है; वेतम् तप्पिन पोतुम्–वेद ही चूक जायें तो भी; अन्नान्–उसके; तनु उमिळ् चरङ्कळ्–धनु से निकले शर; तप्पा–नहीं चूकेंगे। १२३६

तात! त्रिपुरदाहक के सशक्त भयंकर चाप को भी वीर (राघव) के धनु के समकक्ष मानना असंगत होगा। उसकी तुलना में कहने के लिए और कोई वस्तु नहीं है। वेद भी भले ही चूक जाएँ, राम के धनुर्निर्गत शर कभी नहीं चूकेंगे। १२३६

उऱ्पत्ति ययत्ते यॊक्कुम् ओडुम्बो दरिये यॊक्कुम्
कऱ्पत्ति नरत्ते यॊक्कुम् पहैञरॆक् कलन्द कालॆच्
चिऱ्पत्तिन् नम्माऱ् पेशच् चिऱियवो ऎन्ऩैत् तीरात्
तऱ्पत्तैत् तुडॆत्त वॆन्ऱाऱ् पिऱिदोरु शात्रु मुण्डो 1237

उऱ्पत्ति–(उनका) निकलना; अयत्ते ऒक्कुम्–अज के ही समान है; ओटुम् पोतु–जाते वक़्त; अरिये ऒक्कुम्–हरि के ही समान रहेंगे; पकैञरॆ–शत्रुओं पर; कलन्त कालॆ–लगते समय; कऱ्पत्तिन्–युगान्त के; अरत्ते ऒक्कुम्–हर के ही समान होंगे; चिऱ्पत्तिल्–कार्यदक्षता में; नम्माल् पेच–हम कहें ऐसा; चिऱियवो–अल्प हैं क्या; ऎन्ऩै–मुझे भी; तीरा तऱ्पत्तै–अपने अपार अहंकार से; तुटॆत्त ऎन्ऱाल्–बिलकुल रहित कर दिया तो; पिऱितु–अन्य; ओरु चात्ऱुम् उण्टो–एक प्रमाण चाहिए क्या। १२३७

जब उसका शर धनु से निकलता है तब (चतुर्मुख) ब्रह्मा के समान रहता है। जब जाता है तब (सहस्रमुख) विष्णु के समान हो जाता है। फिर जब शत्रुओं पर लड़ता है तब अनंतमुख प्रलयरुद्र के समान बन जाता है। उन शरों का कार्य-कलाप क्या इतना छोटा है कि हम उनका वर्णन कर सकें? उसके शरों ने मेरे अहंकार को ही मिटा दिया तो कहो कि क्या और किसी प्रमाण की आवश्यकता है? । १२३७

कुडक्कदो कुणक्क देयो कोणत्तिन् पाल देयो
तडत्तपे रुलहत् तेयो विशुम्बदो ऎङ्गुन् दान्ो
वडक्कदो तॆऱ्क दोवॆन् ऱुणर्न्दिलॆन् मन्दिदन् वल्विल्
इडत्तदो वलत्त दोवॆन् ऱुणर्न्दिले नियानु मिन्नुम् 1238

मनितन् वल् विल्–(उस) मनुज का सबल धनु; कुटक्कतो–पश्चिम का; कुणक्कतेयो–या पूर्व का ही; कोणत्तिन् पालतेयो–या कोने में है; तटत्त–विशाल; पेर् उलकत्ततेयो–बड़े भूलोक में है; विचुम्पतो–या आकाश का है; ऎङ्कुम् तानो–या सर्वत्र है ही; वटक्कतो—उत्तर का; तॆऱ्कतो–या दक्षिण की तरफ़ है; ऎन्ऱु–यह; उणर्न्तिलॆन्–समझ नहीं पाया; वलत्ततो–दायीं ओर है; इटत्ततो–या बायीं का; ऎन्ऱु–ऐसा; यानुम्–मैं भी; इन्ऩुम्–अब भी; उणर्न्तिलॆन्–समझ नहीं पाया। १२३८

राम का धनु कहाँ था? पूरब में या पश्चिम में? या किसी कोने में? विशाल भूमि पर था या आकाश में? या मैंने उसे सर्वत्र देखा शायद क्या? उत्तर में देखा या दक्षिण में? और भी वह उसकी दायीं ओर था या बायीं ओर? यह अब भी मैं समझ नहीं पाता (सभी ओर से बाण आ रहे थे)। १२३८

एऱ्ऱमीन् ऱिल्लै यॆन्ब देऴैमैप् पाल दन्ऱे
आऱ्ऱलशाल् कलुऴ नेदा नाऱ्ऱुमे यमरि नाऱ्ऱल्

कार्र्रैये मेर्कोण् डातो कत्तलेये कडावि नातो
कूर्र्रैये यूर्हिन् रातो कुरङ्गिन्मेर् कोण्ड् नित्रान् 1239

कार्र्रैये मेल् कोण्टातो–पवन ही को सवारी बनाया; कत्तलैये कटाविनातो–अनल को ही वाहन बनाकर चलाया; कूर्र्रैये–यम को ही; ऊर्किन्रातो–वाहन बना लिया है; ,कुरङ्किन् मेल्–वानर पर; कोण्टु नित्रान्–आरूढ़ रहा; अमरित् आर्रल्–(वानर के) युद्ध का ऐसा सामर्थ्य; आर्रल् चाल्–बलसंयुक्त; कलुळत्ते तान्–गरुड़ भी स्वयं; आर्रुमे–दिखा सकेगा क्या; एर्रम् ऑन्रु इलर्ले–इसमें बड़ी बात कुछ नहीं; ऍन्पतु–कहना; एळमै पालतु अन्रे–अज्ञता की तरफ़ होगा न। १२३९

वह क्या वायु पर आरूढ़ था या अनल पर चढ़कर उसे चलाता था ? वह यमवाहन था ? नहीं ! वह वानर पर ही सवार था। उस वानर के युद्धकौशल का सशक्त गरुड़ भी मुक़ाबला नहीं कर सका। ऐसे उसको कुछ बड़ा न मानना मूर्खता की बात होगी न ? । १२३९

पोयिनित् तॅरिव दॅन्ने पॉर्रैयिना लुलहम् बोर्रुम्
वेयॅन्त् तहैय तोळि यिराहवन् मेनि नोक्कित्
तीयॅन्क् कॉडिय वीरच् चेवहच् चॅय्है कण्डाल्
नायॅन्त् तहुदु मन्रे कामनु नामु मॅल्लाम् 1240

इत्ति–अब; पोय्–(समरभूमि में) जाकर; तॅरिवतु–समझने को; ऍन्ते–क्या है; पॉर्रैयिताल्–क्षमा के गुण से; उलकम् पॉर्रुम्–लोकशंसित; वेय् ऍन्त–बांस-सम; तकैय तोळि-मान्य कन्धों वाली; इराकवन् मेनि–राघव का शरीर; नोक्कि–देखकर; ती ऍन्त–अग्नि के समान; कॉटिय–क्रूर; वीर चेवकम् चॅय्कै–पौरुषयुक्त वीरता का कार्य; कण्टाल्–देखें तो; कामनुम् नामुम् ऍल्लाम्–मन्मथ और हम सभी; नाय् ऍन्त–कुत्ते कहने; तकुतुम् अन्रे–योग्य होंगे न। १२४०

अब युद्धभूमि में जाकर सीखूं, ऐसी कौन सी बात है ? लोकप्रशंसनीय क्षमाशीला, वंशतरुसम कंधों वाली सीता राघव का रूप-सौंदर्य देखे और आग के समान भयावह वीरता और साहस के कृत्य देखे तो फिर मन्मथ और हम उसकी आँखों में कुत्ते बन जाएँगे न ? (राम के मुक़ाबले में रावण और मन्मथ को सीता कुत्ते मानें, इसमें आश्चर्य क्या है ?) । १२४०

वाशवन् मायन् मर्रै मलरुळोन् मळुवा ळङ्गै
ईशनॅन् रिनैय तन्मै यिळिवरु मिवरा लन्रि
नाशम्वन् दुर्र पोदु नल्लदोर् पहैयॅप् पॅर्रेन्
पूशल्वण् डुरैयुन् दारा यिदुविङ्गुप् पुहुन्द वॅन्रान् 1241

पूचल् वण्टु–गुंजारनेवाले भ्रमर; उरैयुम् ताराय्–जिसमें रहते हैं, ऐसी मालाधारी; नाचम् वन्तु उर्र पोतु–मेरे नाश के आये समय पर; वाचवन्–वासव; मायन्–मायावी; मर्रै–और; मलर् उळोन्–कमलवासी; मळु वाळ्–परशु के

हथियार के; अम् कै-(धरनेवाले) हाथ का; ईचन्-शिव; ॲन्ऱ्-आदि; इत्तैय-ऐसे; इळिवरुम् तन्मै-क्षुद्र बल के; इवराल् अन्ऱि-इनको छोड़; नल्लतु ओर्-श्रेष्ठ एक; पकैयै-शत्रु को; पॅऱ्ऱेन्-पाया है (मैंने); इतु-यह; इङ्कु पुकुन्ततु-यहाँ घटित हुआ; ॲन्ऱान्-कहा। १२४१

भ्रमरगुंजरित मालाधारी! मेरा विनाशकाल आ गया। तब अच्छा हुआ कि वासव, विष्णु, कमलासन और और परशुधर शिव —ये क्षुद्रबली मेरे शत्रु नहीं रहे पर यह एक उत्कृष्ट शत्रु पाने का सौभाग्य मिला। यही हुआ है अब। माल्यवान से रावण ने कहा। १२४१

मुन्नुरैत् तेनै वाळा मुनिन्दनै मुनिया वुम्बि
इन्नुरैप् पॊरुळुङ् गेळा येदुवुण् डॅनिनु मोराय्
निन्नुरैक् कुरैवे ऱुण्डो नॅरुप्पुरैत् तालु नीण्ड
मिन्नुरैत् तालु मोव्वा विळङ्गॊळि यलङ्गल् वेलोय् 1242

नॅरुप्पु उरैत्तालुम्-आग से उपमित करो; नीण्ट-लम्बी; मिन्-बिजली को; उरैत्तालुम्-(तुल्य) कहो; ऑव्वा-सही नहीं लगे, ऐसा; विळङ्कु ओळि-छिटकनेवाले प्रकाश के; अलङ्कल्-और माला से अलंकृत; वेलोय्-भाले वाले; मुन् उरैत्तेनै-पहले कहनेवाले मुझ पर; वाळा मुनिन्तनै-व्यर्थ कोप किया; मुनिया उम्पि-कभी न क्रोध करनेवाले अनुज को; इन् उरै-मधुर वचन का; पॊरुळुम् केळाय्-आशय नहीं सुना; एतु उण्टु-हेतु थे; ॲनिनुम्-तो भी; ओराय्-समझे नहीं; निन् उरैक्कु-तुम्हारे वचन का; उरै वेऱु-अन्य उत्तर-वचन; उण्टो-है क्या। १२४२

(माल्यवान ने उत्तर में कहा।) मैंने पहले ही कहा था, हे अनल-विद्युत्हासकारी विजयमाला के भालेवाले! पर तुमने अकारण मुझ पर रोष दिखाया। तुम्हारा छोटा भाई है जो (हमेशा शान्त है और) कभी गुस्सा नहीं करता। उसने हितकारी उपदेश दिये। तुमने उनके आशय को भी हृदयंगम नहीं किया। हमारे कथनों के हेतु हैं तो भी तुम्हारे शब्दों के सामने और कौन सा कथन टिक सकता है ?। १२४२

उळैवन वॅनिनु मॅय्म्मै युऱ्ऱवर् मुऱ्ऱु मोर्न्दार्
विळैवन शॊन्न पोदुङ् गॊळ्हिलाय् विडुदल् कण्डाय्
किळैनरु शुऱ्ऱम् वॅऱ्ऱि केडिलाक् कल्वि शॅल्वम्
कळैवरु तानै योडुङ् गळिवदु काण्डि यॅन्ऱान् 1243

उळैवत ॲनिनुम्-पीड़ादायी हों तो भी; मॅय्म्मै उऱ्ऱवर्-सच्चे रिश्तेदार; मुऱ्ऱुम् ओर्न्तार्-सब जान-बूझकर; विळैवत-होनी; चॊन्न पोतुम्-कहते तब भी; कॊळ्किलाय्-नहीं सुना; विटुतल् कण्टाय्-निश्चित रूप से छोड़ दिया; किळै तरु चुऱ्ऱम्-परिवारों के साथ रिश्ते; वॅऱ्ऱि-विजय; केट इला-अक्षय; कल्वि-

विद्या; चॅल्वम्–सम्पत्ति; कळॅवरु–थकनेवाली; तानैयोटुम्–सेना के साथ; कळिवतु–मिट जायगी; काण्टि–देखोगे; ॲन्ऱान्–कहा (माल्यवान ने)। १२४३

सच्चे आप्तों के वचन दुःखदायी हों तो भी जब वे खूब सोच-विचार कर संभाव्य बातों को कहते हैं, तब तुम उन पर ध्यान नहीं देते और ठुकरा देते हो ! अब तुम्हारे बन्धुवर्ग, तुम्हारी विजय, अक्षय विद्या और सम्पत्ति सभी तुम्हारी शिथिल सेना के साथ मिट जायँगे। तुम देखोगे। १२४३

आयव नुरैत्त लोडु मप्पुरत् तिरुन्द वान्ऱ
मायॅहळ् पलवुम् वल्ल महोदरन् कडिदित् वन्दु
तीयॅळ नोक्कि यॅन्निच् चिऱुमैनी शॅप्पिऱ् ऱॅन्ऩ
ओय्वुऱ शिन्दै यान्क् कुऱ्ऱादपे रुऱुति शॊन्ऩान् 1244

आयवन्–उसके; उरैत्तल् ओटुम्–कहने पर; अ पुऱत्तु इरुन्त–उस तरफ़ जो रहा; आन्ऱ–श्रेष्ठ; मायॅकळ् पलवुम् वल्ल–अनेक मायाकृत्यों में चतुर; मकोतरन्–महोदर ने; कटितिन् वन्तु–जल्दी आकर; ती ऍळ–आग निकालते हुए; नोक्कि–देखकर; इ चिऱुमै–यह लघुता की बात; नी चॅप्पिऱ्ऱु ॲन्–तुमने कहा क्यों; ॲन्ऩ–कहकर; ओय्वुऱु चिन्तैयान्तक्कु–शिथिल मन वाले रावण से; उऱ्ऱात–निपट ग़लत; पेर् उऱुति–बड़े हितवचन; चॊन्ऩान्–कहे। १२४४

माल्यवान के यों कह चुकते ही पास जो बैठा रहा उस उत्कृष्ट मायाकार्यविदग्ध महोदर दौड़ा आया और आँखों से आग निकालते हुए माल्यवान से बोला। यह क्या गौरव घटानेवाली क्षुद्र बात कहते हो ? फिर उसने थके मन के रावण से निपट बेमेल उपदेश दिये। १२४४

नन्ऱियी दॅन्ऱु कॊण्डाल् नयत्तिनै नयन्दु वेऱु
वॅन्ऱिये याह मऱ्ऱुत् तोऱ्ऱुयिर् विडुव लाह
ऒन्ऱिले निऱ्ऱल् पोला मुत्तमर्क् कुरिय तॊल्हिप्
पिन्ऱुमे लवन्क् कन्ऱो पळियॊडु नरहम् बिन्नै 1245

नयत्तिनै नयन्तु–हित चाहकर; ईतु नन्ऱु–यह ठीक है; ॲन्ऱु–मानकर; कॊण्टाल्–अपना लेने पर; वेऱु वॅन्ऱिये आक–अलग जीत ही मिले; मऱ्ऱु–इतर; तोऱ्ऱु–हारकर; उयिर् विटुतल् आक–मर ही जाना पड़े; ऒन्ऱिले–एक ही पर; निऱ्ऱल् पोल् आम्–स्थिर रहना ही; उत्तमर्क्कु–उत्तम लोगों के लिए; उरियतु–उचित है; ऒल्कि–मन हारकर; पिन्ऱुमेल्–पीछे हटेगा तो; अवन्क्कु पिन्पु–उसको; पळियुम्–अपयश और; नरकमुम् अन्ऱो–नरक ही न (प्राप्त होंगे)। १२४५

हित चाहकर जब किसी बात को ठीक मानें और उसे अपना लें तो फिर जीत मिले चाहे हार ही; और मृत्यु भी हो जाय, एक ही बात पर अटल रहना ही उत्तम लोगों का योग्य काम है। मन हारकर पीछे हटेगा कोई तो, उसे बाद अपयश और नरक ही न प्राप्त होंगे ? । १२४५

तिरिपुर मॅरिय वाङ्गोर् शॅऩ्जरन् दुरन्द शॅल्वऩ्
ऑरुवऩिप् पुवऩ मूऩ्ऱु मोरडि योडुक्किक् कॉण्डोऩ्
पॉरुदुऩक् कुडैन्दु पोऩार् माऩिडर् पॉरुद पोर्क्कु
वॅरुवुदि पोलुम् मऩ्ऩ कयिलैयै वॅरुवल् कण्डाय् 1246

तिरिपुरम् ऍरिय–त्रिपुर जलाने के लिए; आङ्कु–वहाँ; ओर्–अनुपम; चॅम् चरम्–श्रेष्ठ वाण को; तुरन्त–जिन्होंने छोड़ा वे; चॅल्वऩ्–शिवजी; ऑरुवऩ्–अकेले; इ पुवतम् मूऩ्ऱुम्–इन तीनों भुवनों को; ओर् अटि–एक ही पैर के; ऑटुक्कि कॉण्टोऩ्–(जिन्होंने) अन्तर्गत कर लिया वे; पॉरुतु–आपसे लड़कर; उतक्कु उटैन्तु पोऩार्–हारे; मऩ्ऩ–राजा; कयिलैयै–कैलास को; वॅरुवल् कण्टाय्–कँपा दिया था; माऩुटर् पॉरुत—मनुष्यों के किये हुए; पोर्क्कु–युद्ध से; वॅरुवुति पोलुम्–डरेंगे क्या। १२४६

त्रिपुरांतक-बाण-प्रेषक शिव और त्रिलोकसमाहित चरणों वाले श्रीविष्णु आपसे लड़े और हारे। हे राजा! कैलास पर्वत को कँपा देनेवाले आप मानवकृत युद्ध से डरेंगे क्या? । १२४६

वॅऩ्ऱवर् तोऱ्पर् तोऱ्ऱोर् वॅल्हुवर् ॲवर्क्कुम् मेलाय्
निऩ्ऱवर् ताऴ्वर् ताऴ्न्दो रुयर्हुवर् नॅऱियु मः(ह्)दे
ॲऩ्ऱव रऱिञ रऩ्ऱे आऱ्ऱलुक् कॅल्लै युण्डो
पुऩ्ऱव रिरुवर् पोरैप् पुहऴ्दियो पुहऴ्क्कु मेलोय् 1247

वॅऩ्ऱवर् तोऱ्पर्–विजेता हार जाएँगे; तोऱ्ऱोर् वॅल्कुवर्–जो हारे वे जीत जाएँगे; ॲवर्क्कुम् मेलाय्–सबके ऊपर; निऩ्ऱवर्–जो खड़े थे; ताऴ्वर्–वे नीचे आ जाएँगे; ताऴ्न्तोर्–नीचे रहे लोग; उयर्कुवर्–ऊपर चले जाते हैं; नॅऱियुम् अ.ते–लोकरीति वही है; ॲऩ्ऱवर्–ऐसा कहा जिन्होंने; अऱिञर् अऩ्ऱे–वे बुद्धिमान हैं न; आऱ्ऱलुक्कु ॲल्लै उण्टो–बल की भी कोई सीमा है क्या; पुकऴ्क्कु मेलोय्–यश से भी उन्नत; पुल् तवर्–अल्प तपस्वी; इरुवर् पोरै–दो के युद्ध की; पुकऴ्तियो–प्रशंसा करोगे क्या। १२४७

संसार की रीति है कि विजयी हारते हैं और हारे हुए जीत पाते हैं। ऊपर वाले नीचे आते हैं और नीचे रहे लोग ऊपर आ जाते हैं। बुद्धिमान ही ऐसा कहते हैं। बल की भी कोई सीमा है क्या? यश के भी परे रहने वाले (अतियशस्वी)! अल्प तपस्वी उन दोनों के युद्ध की प्रशंसा करेंगे क्यों? । १२४७

तेवियै विडुदि यायिऩ् तिऱलदु तीरु मऩ्ऱे
आवियै विडुद लऩ्ऱि यल्लदोऩ् ऱाव दुण्डो
तावरुम् वॅरुमै यम्मा नोयिनित् ताऴ्त्त दॅऩ्ऩे
कावल विडुदि यिऩ्ऱिक् कैयऱु कवलै नोय्दिऩ् 1248

तेवियै–(सीता) देवी को; विटुति आयिन्–छोड़ दें तो; तिऱल्–बलवान होने की; अतु–वह बात; तीरुम् अन्ऱे–दूर हो जायगी न; आवियै विटुतल् अन्ऱि–प्राणों को छोड़ने के सिवा; अल्लतु ऑन्ऱु–अन्य कुछ; आवतु उण्टो–होगा क्या; ता अरुम् पॅरुमै–अमिट गौरव को; नी–आपने; इति–अब; ताऴ्त्तु ऍन्ते–गिरा दिया क्यों; कावल–पालक; इ कै अऱु कवलै–इस निष्क्रिय बनानेवाली चिंता को; इन्ऱु–अब; नॊय्तिन् विटुति–तुरन्त छोड़ दें। १२४८

सीता को छोड़ दो तो आपके बल (-चर्चा) का अन्त हो जायगा न ? आखिर प्राणों का अन्त ही तो हो जाएगा ! फिर क्या होगा ? अब तक के अपने अक्षय यश की अब अवहेलना करें क्यों ? राजा ! यह चिन्ता निष्क्रिय करनेवाली है उसे तुरन्त छोड़ दीजिए। १२४८

इऩियिरै ताऴ्त्तिति यायि तिलङ्गैयु यामु मॅल्लाम्
कऩियुडै मरङ्ग ळाहक् कविक्कुलङ् गडक्कुङ् गाण्डि
पऩियुडै वेलैच् चिऩ्ऩीर् परुहिऩऩ् परिदि यॅऩ्ऩत्
तुऩियुऴऩ् दयर्व दॆऩ्ऩो तुऱत्तियार् ऱुऩ्ब मऩ्ऩो 1249

इनि–अब; इऱै–थोड़ा भी; ताऴ्त्ति आयिन्–विलम्ब कीजिए तो; इलङ्कैयुम् यामुम्–लंका और हम; ऍल्लाम्–सभी; कनि उटै–फल-सहित; मरङ्कळाक–पेड़ों के समान; कविकुलम्–कपिसमूह; कटक्कुम्–मिटा देंगी; काण्टि–देखिए; पनि उटै–शीतलता-सहित; वेलै–समुद्र के; चिन्नीर्–कम जल को; परुति परुकिनन् ऍन्न–सूर्य ने सोख लिया, कहकर; तुनि उऴन्तु–चिन्ता में घुलकर; अयर्वतु–शिथिल पड़ना; ऍन्नो–कैसा; तुन्पम् तुऱत्ति–दुःख छोड़ दो। १२४९

अब आप थोड़ा भी विलम्ब कीजिए तो हमें, लंका को और सारे लोगों को ये कपिकुल फलोंदार पेड़ों को जैसे नष्ट कर देंगे। देखिए। सूर्य ने कम जल के शीतल समुद्र को सोख दिया तो उसको लेकर विरक्ति-जनित दुःख क्यों करें ? दुःख दूर कर दीजिए। १२४९

मुऩ्ऩुतक् किऱैव राऩ मूवरुन् दोऱ्ऱार् तेवर्
पिऩ्ऩुतक् केवल् शॅय्य वुलहोरु मूऩ्ऱुम् बॅऱ्ऱाय्
पुऩ्ऩुऩैप् पऩिनी रऩ्ऩ मऩिशरैप् पॊरुळॆऩ् ऱॆऩ्ऩि
ऍऩ्ऩुतक् किळैय कुम्ब करुणऩै यिहऴ्न्द दॆऩ्वाय् 1250

इऱैवर् आन–ईश्वर बने; तेवर् मूवरुम्–तीनों देव; मुन्–पहले; उनक्कु तोऱ्ऱार्–आपसे हारे; पिन्–फिर; उनक्कु एवल् चॅय्य–आपकी परिचर्या करने के लिए; उलकु ऑरु मून्ऱुम्–तीनों एक लोकों को; पॅऱ्ऱाय्–(भृत्य के रूप में) पा लिया; ऍन्ताय्–पिता; पुल् नुनै–घास की नोक को; पनि नीर् अन्न–ओस-जल के समान; मनिचरै–मनुष्य को; पॊरुळ् ऍन्ऱु उन्नि–कोई चीज मानकर; उनक्कु इळैय–आपके छोटे; कुम्पकरुणनै–कुंभकर्ण को; इकऴ्न्ततु–उपेक्षा करना; ऍन्–क्यों। १२५०

त्रिदेव आपसे पहले ही हार गये। तीनों लोकों को आपने अपना दास बना लिया है! पिता (तुल्य)! इन घास की नोक की ओस-तुल्य मानवों को कोई वस्तु मानकर आपने अपने छोटे भाई कुम्भकर्ण की उपेक्षा क्यों की ?। १२५०

आङ्गवऩ् तऩ्ऩैक् कूवि येवुदि यॆऩ्ऩि ऩैय
ओङ्गले पोल्वाऩ् मेऩि काणवे यॊळिप्प रॊऩ्ऩार्
ताङ्गुवर् शॆरुमु ऩॆऩ्ऩिल् तावद रुयिरॆत् ताऩे
वाङ्गुमॆऩ् ऱिऩैय शॊऩ्ऩा ऩवऩदु मऩत्तुट् कॊण्डाऩ् 1251

ऐय–प्रभु; आङ्कु–अब; अवऩ् तऩ्ऩै–उसको; कूवि–बुलाकर; एवुति ॲऩ्ऩिऩ्–आज्ञा दीजिएगा तो; ओङ्कले पोल्वाऩ्–पर्वत ही सम (उसके); मेऩि काणवे–आकार को देखते ही; ऒऩ्ऩार् ऒळिप्पर्–शत्रु छिप जाएँगे; मुऩ् चॆरु ताङ्कुवर्–आगे आकर लड़ाई ठानेंगे; ॲऩ्ऩिल्–तो; तापतर् उयिरै–तपस्वियों के प्राणों को; ताऩे वाङ्कुम्–अकेले ही निकाल देगा; ॲऩ्ऱु–इस भांति; इऩैय चॊऩ्ऩाऩ्–ये वचन कहे (महोदर ने); अवऩ्–उसने; अतु–उसे; मऩत्तुळ् कॊण्टाऩ्–मन में रख लिया। १२५१

प्रभु! उसे बुलाइए। लड़ने को भेजिए। तो पर्वताकार उसे देखते ही शत्रु भागकर छिप जाएँगे। अगर प्रगट सामने आकर लड़ें तो भी वह स्वयं उन तपस्वियों की जान हर लेगा। महोदर ने ये वातें कहीं। रावण ने भी ये वातें ग्रहण कर लीं। १२५१

पॆऱुदिये यॆवॆयुञ् जॆल्वम् पेरऱि वाळ शीरिऱ
ऱऱिदिये यॆऩ्बाल् वॆत्त वऩ्बिऩुक् कवदि युण्डो
उऱुदिये शॊऩ्ऩा यॆऩ्ऩा वुळ्ळमुम् वेऱु पट्टाऩ्
इऱुदिये यियैव दाऩा लिडैयॊऩ्ऱाऱ् ऱडैयुण् डामो 1252

पेर् अऱिवाळ–बड़े बुद्धिमान; चॆल्वम् ॲवॆयुम् पॆऱुतिये–वैभव सभी पाओगे; चीरिऱ्ऱु–उत्कृष्ट वातें; अऱितिये–जानते हो; ॲऩ् पाल्–मुझ पर; वॆत्त अऩ्पिऩुक्कु–रखे प्रेम की; अवति उण्टो–सीमा है क्या; उऱुतिये चॊऩ्ऩाय्–हितवचन ही कहा; ॲऩ्ऩा–कहकर; उळ्ळमुम्–मन में; वेऱु पट्टाऩ्–(चिन्ता को) बदल लिया; इऱुतिये–अंत ही; इयॆवतु आऩाल्–आ लग गया तो; इटै–मध्य में; ऒऩ्ऱाल्–किसी से; तटै उण्टामो–वाधा होगी क्या। १२५२

(रावण ने महोदर को सम्वोधित किया।) हे महाबुद्धिमान्! तुम सभी वैभवों के 'हक़दार बनोगे? तुमने उत्कृष्ट काम जाना है। तुम्हारे मेरे प्रति प्रेम का कोई ठिकाना है क्या? तुमने हितवचन कहा है! रावण का मन बदलकर उत्साह से भर गया। हाँ! विनाशकाल जब आ जाता है, तब कोई बात मध्य में वाधा डाल सकेगी क्या?। १२५२

नन्ऱिदु करुम मॆन्ना नम्बियै नणुह वोडिच्
चॆन्ऱिवट् टरुदि रॆन्ऱान् ऎन्ऱलुम् नाल्वर् शॆन्ऱार्
तॆन्ऱिशैक् किळवन् तूदर् तेडिनर् तिरिव रॆन्नक्
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तोळान् कॊऱ्ऱमाक् कोयिल् पुक्कार् 1253

इतु करुमम्–यह कार्य; नन्ऱु–अच्छा है; ऎन्ना–सोचकर; ओटि–दौड़ो; नम्पियै–नायक के (कुंभकर्ण); नणुक–पास; चॆन्ऱु–जाकर; इवण् तरुति–यहाँ ले आओ; ऎन्ऱान्–कहा (रावण ने दूतों से); ऎन्ऱलुम्–कहते ही; तॆन् तिचै किळवन्–दक्षिण दिशा के अधिपति (यम) के; तूतर्–दूत; तेटिनर्–ढूँढ़ते हुए; चॆल्वार् ऎन्न–जाते जैसे; नाल्वर् चॆन्ऱार्–चार (दूत) गये; कुन्ऱिनुम् उयर्न्त–पर्वत से भी बड़े; तोळान्–कन्धों वाले; कॊऱ्ऱम्–(के) विजयी; मा कोयिल्–बड़े प्रासाद में; पुक्कार्–पहुँचे। १२५३

रावण ने सोचा कि यह बहुत ही उचित कार्य है! उसने दूतों से कहा कि जल्दी नायक के पास जाओ और उसे यहाँ ले आओ। उसके यों कहते ही जीवों को खोजते हुए जानेवाले दक्षिण दिग्पाल यम के दूतों के समान चार दूत चले और पर्वत से भी उन्नत कन्धों वाले कुम्भकर्ण के विजयी व बड़े प्रासाद में पहुँचे। १२५३

तिण्डिऱल् वीरन् वायिल् तिऱत्तलुञ् जुवाद वादम्
मण्डुऱ वीर रॆल्लाम् वरुवदु पोव दाहक्
कॊण्डुऱु तडक्कै पऱ्ऱिक् कुलमुडै वलियि नाले
कण्डुयि लॆळुप्प वॆण्णिक् कडिदोरु वायिल् पुक्कार् 1254

कण् तुयिल्–निद्रा से; ऎळुप्प ऎण्णि–जगाना चाहकर; तिण् तिऱल्–बहुत बलवान; वीरन्–वीर के; वायिल् तिऱत्तलुम्–द्वार को खोलते ही; चुवात वातम्–श्वास-पवन; मण्टु उऱ–अधिक बहा, इसलिए; वीरर् ऎल्लाम्–सभी वीर; वरुवतु पोवतु आक–आते-जाते बने; कॊण्टु उऱु–बल के साथ बने; तट कै पऱ्ऱि–विशाल हाथों को (परस्पर) पकड़कर; कुलम् उटै–संकुलित; वलियिताले–बल से; कटितु–शीघ्र; ओरु वायिल्–अद्वितीय द्वार में; पुक्कार्–घुसे। १२५४

[इधर कुछ संस्करणों में २७ पद्य पाये जाते हैं, जो सरसरी निगाह में ही क्षेपक जाने जा सकते हैं। उदाहरण के लिए: पहला पद्य कहता है कि चार किंकरों ने कुम्भकर्ण को जगाते हुए कहा कि हे निद्रामग्न कुम्भकर्ण! तुम सबका मायाजन्म उतर रहा है! उठो, देखो, देखो······ अब यमदूतों के हाथ में जाकर सोओ, सोओ!······आदि। अतः इन पद्यों को छोड़ दिया जाता है।]

दूतों ने ज्योंही कुम्भकर्ण को जगाने के विचार से उसके प्रासाद का द्वार खोला, त्योंही उसके श्वास का पवन जोर से बहा तो वे वीर आते-जाते हो गये। फिर उन्होंने परस्पर एक-दूसरे के हाथ पकड़ लिये।

उस संकुलित बल के आधार पर वे शीघ्र उस अद्वितीय द्वार के अन्दर घुसे। १२५४

इङ्गिवन् तन्नै यामिन् ऍऴुप्पलाम् वहैये दॆन्ऱु
तुङ्गवॆव् वायु मूक्कुङ् गण्डुमॆय् तुणुक्क मुऱ्ऱार्
अङ्गैहळ् तीण्ड वञ्जि याळ्शॆवि यदनि नूडु
शङ्गोडु तारै शिन्नञ् जमैवुऱच् चाऱ्ऱ लुऱ्ऱार् 1255

इङ्कु–यहाँ; इन्ऱु–अव; इवन् तन्नै–इसको; याम्–हमारे; ऍऴुप्पलाम् वकै–जगाने का उपाय; एतु–क्या है; ऍन्ऱु–विचारकर; तुङ्कम्–ऊँचे; वॆ वायुम्–भयंकर मुख को ओर; मूक्कुम्–नाक को; कण्टु–देखकर; मॆय् तुणुक्कम्–शरीर में कंपन; उऱ्ऱार्–पाया; अम् कैकळ्–मनोहर हाथों को; तीण्ट अञ्चि–स्पर्श करने से डरकर; आऴ् चॆवि अततिन् ऊटु–गम्भीर कानों में; चङ्कोटु तारै चिन्नम्–शंख के साथ 'तारै', 'चिन्नम्' आदि बाजे; चमैवु उऱ–खूब; चाऱ्ऱल् उऱ्ऱार्–वजाने लगे। १२५५

वे विचार करने लगे कि अव इसको जगाने का कारगर उपाय क्या होगा? कुम्भकर्ण के बड़े और विस्फारित मुख और नाक को देखकर वे डर गये। उसके आकर्षक हाथों को छूने से भी उन्हें भय लगा। इसलिए उन्होंने उसके कान में शंख, तारै (तुरही?) 'चिन्नम' आदि बाजों को ज़ोर से वजाया। १२५५

कोडिहल् तण्डु कूडङ् गुन्दम्वल् लोर्हळ् कूडित्
ताडैहळ् शन्दु मार्बु तलैयॆनु मिवऱ्ऱिऱ् ऱाक्कि
वाडिय कैय राहि मन्नवऱ् कुरैप्पप् पिन्नुम्
नीडिय परिह ळॆल्लाम् निरप्पिडुम् विरैवि ऩॆन्ऱान् 1256

कोटु इकल्–पर्वतशिखर-सम; तण्टु–दण्डायुध; कूटम्–हथौड़े; कुन्तम्–कुंत; वल्लोर्कळ्–इनमें समर्थ; कूटि–मिलकर; ताटैकळ्–गालों; चन्तु–संधियों; मार्पु–वक्ष और; तलै–सिर; ऍनुम् इवऱ्ऱिल्–आदि इन पर; ताक्कि–पीटकर; वाटिय कैयर् आकि–थकित हाथों के होकर; मन्नवऱ्कु उरैप्प–राजा के पास कहने पर; पिन्नुम्–फिर भी; नीटिय परिकळ् ऍल्लाम्–बड़े सभी अश्वों को; विरैविल्–शीघ्र; निरप्पिटुम्–उस पर चलाओ; ऍन्ऱान्–कहा। १२५६

पर्वत-शिखर-सम दण्ड, हथौड़े, कुंत आदि हथियारों के प्रयोग में समर्थ वीरों ने मिलकर उसके गालों, जोड़ों, वक्ष और सिर पर प्रहार किया। कुछ लाभ नहीं हुआ। उनके हाथ थक गये। उन्होंने जाकर रावण से कहा तो उसने कहा कि बड़े-बड़े अश्वों को बड़ी संख्या में उसके ऊपर चलाओ, जाओ। १२५६

कट्टुरु कवत्त मावो रायिरङ् गडिदिन् वनुदु
मट्टरु वुरङ्गु वान्तत् मार्बिडै माले मान
विट्टुरु नडत्ति योट्टि विरैवुळ शारि वन्दार्
तट्टुरु कुरङ्गु पोलत् तडन्दुयिल् कौळ्व दानाम् 1257

मट्टु अरु–अनियमित; उरक्कुवान् तन्–(रूप से) सोनेवाले (उस) के; मार्पु इटै–वक्ष में; माले मान–माला के समान; कट्टु उरु–रासयुक्त; कवत्तम्–तीव्रगामी; मा–अश्व; ओर् आयिरम्–एक सहस्र; कटितिन् वनुवु–शीघ्र ले आकर; विट्टु–चढ़ाकर; उरु–लगाते हुए; नटत्ति ओट्टि–चलाकर दौड़ाकर; विरैवु उळ–त्वरित; चारि वन्तार्–गोल-गोल घुमाया; तट्टु उरु कुरक्कु पोल–जाँघों पर थपथपी लगी हो, ऐसा; तट तुयिल्–गंभीर निद्रा में; कौळ्वतु आनान्–मग्न हुआ। १२५७

अनियमित निद्राशील उस कुम्भकर्ण के वक्ष पर माला के रूप में उन्होंने लगाम-लगे, तेज़ चलनेवाले हज़ार अश्वों को चढ़ाया और हाँककर तेज़ी से घुमाया। कुम्भकर्ण तो मानो ऊरुप्रदेश पर थपकियाँ हुई हों, ऐसा गहरी नींद सोने लगा। १२५७

कौय्म्मलर्त् तौङ्ग लान्रत् कुरैहळल् वणङ्गि यैय
उय्यलाम् वहैह ळैन्रङ् गॆळुप्पलाम् वहैये शॆय्दुम्
कय्यॆलाम् वलियु मोय्न्द कवन्मा कालु मोय्न्द
शॆय्यलाम् वहैवे रुण्डो शॊप्पुदि तॆरिय वॆन्रार् 1258

कौय् मलर्–'तुडे' पुष्पों की; तौङ्कलान् तन्–मालाधारी (रावण) के; कुरंकळल्–क्वणनशील पायल (चरण) पर; वणङ्कि–नमन करके; ऐय–प्रभु; उय्यलाम् वकैकळ्–(यही) उन्नति पाने का उपाय; ॲन्ऱु–सोचकर; ॲळुप्पल् आम्–जगाने का; वकैये चॆय्तुम्–उपाय करने पर भी; कै ॲलाम्–सभी हाथ; वलियुम् ओय्न्त–निर्बल हो गये; कवत्तम् मा–तेज़ चलनेवाले अश्वों के; कालुम् ओय्न्त–पैर भी निर्बल हो गये; चॆय्यलाम् वकै–करने योग्य उपाय; वेऱु उण्टो–दूसरे हैं क्या; तॆरिय–समझाकर; चॊप्पुति–कहिए; ॲन्ऱार्–कहा (वीरों ने)। १२५८

फिर भृत्य पुष्पमालाधारी रावण के पास आये। शब्दायमान पायलों (-चरणों) पर विनत हुए और निवेदन किया कि 'प्रभु! उनको जगा देने में ही हमारा हित है' यह खूब समझकर हमने जगाने के अनेक प्रयत्न किये। हमारे हाथ और अश्वों के पैर निर्बल हो गये। और कोई उपाय हों तो समझा देने की कृपा करें। १२५८

इडैपेरा विळैयानै इणैयाळि मणिनॆडुन्देर्
पडैपेरा वरुम्बोदुम् पदैयाद वडम्बानै
मडैपेराच् चूलत्तान् मळुवाट्कौण् डॆरिन्दानुम्
तौडैपेरात् तुयिलानैत् तुयिलॆळुप्पिक् कौणर्हॆन्रान् 1259

इणै आऴि–सुगठित पहियोंदार; मणि नॅंटु तेर्–सुन्दर बड़े रथों; पटै–और अन्य सेनाओं के; पेरा वरुम् पोतुम्–चढ़ आने पर भी; पतैयात उटम्पातै–अविकंपित शरीरों को; तॉटं पेरा–निरन्तर; तुयिलातै–सोनेवाले को; इटै पेरा–मुझे छोड़ न जानेवाले; इळैयातै–मेरे छोटे भाई को; मटै पेरा–स्कन्ध जिसके न शिथिल हुए हों (सुदृढ़); चूलत्तुतान्–त्रिशूलों से; मऴुवाळ् कॉण्टु–परशु लेकर; ऍऱिन्तातुम्–फेंककर ही सही; तुयिल् ऍऴुप्पि–निद्रा से जगाकर; कॉणर्क–लाओ; ऍन्ऱान्–कहा। १२५६

रावण ने आज्ञा सुनायी कि सुनिर्मित पहियोंदार सुन्दर और उन्नत रथों और अन्य सेनाओं के चढ़ आने पर भी कुम्भकर्ण का शरीर नहीं काँपता। लगातार निद्रामग्न रहता है वह मेरा भाई। उसको सुदृढ़ त्रिशूल से या परशु चलाकर ही सही किसी विध जगाकर ले आओ। १२५९

ऍन्ऱलुमे यडिवणङ्गि यीरैञ्ञूऱ् ऱिराक्कदर्हळ्
वन्ऱॊऴिलाल् तुयिल्हिन्ऱ मन्नवन्ऱन् माडणुहि
निन्ऱिरण्डु कदुप्पुमुऱ नॅडुमुशलङ् गॊण्डडिप्पप्
पॊन्ऱिनव नॆऴुन्दाऱ्पोर् पुडैपॅयर्न्दङ् गॆऴुन्दिरुन्दान् 1260

ऍन्ऱलुमे–कहते ही; ईर् ऐन्ञूऱु–दो पाँच सौ (हजार); इराक्कतर्कळ्–राक्षस; अटि वणङ्कि–चरणों पर झुककर; तुयिल्किन्ऱ–सोनेवाले; मन्नवन्तन्–राजा के; माट अणकि–पास जाकर; वल् तॊऴिलाल्–बलप्रयोग से; निन्ऱु–खड़े रहकर; इरण्टु कतुप्पुम् उऱ–दोनों गालों में खूब; नॅटु मुचलम् कॊण्टु–बड़े मूसल लेकर; अटिप्प–पीटने पर; पॊन्ऱितवन्–मृतक; ऍऴुन्तार् पोल्–जाग उठा जैसे; पुटै पॅयर्न्तु–करवट वदलकर; अङ्कु–तब; ऍऴुन्तिरुन्तान्–उठा। १२६०

उसके यों कहते ही सहस्र राक्षस निद्रित राजा कुम्भकर्ण के पास गये। पास खड़े होकर उन्होंने ज़ोर से दोनों गालों पर बड़े मूसलों से मारा तो मरा हुआ जागा हो, ऐसा वह करवट वदलकर जाग उठा। १२६०

मूवहै युलहु मुट्क मुरण्तिशैप् पणैक्कै यानै
तावरुन् दिशैयि निन्ऱु शलित्तिडक् कदिरु मुट्कप्
पूवुळान् पुणरि मेलान् पॊरुप्पिन्नान् मुदल्व राय
एवरुन् दुणुक्कुऱ् ऱेङ्ग वॆळिदिनि नॆऴुन्दान् वीरन् 1261

मूवकै उलकुम्–त्रिविध लोक; उट्क–डरें ऐसा; मुरण्–सशक्त; पणै–मोटी; कै–सूँड़ों के; तिचै यानै–दिग्गज; ताव् अरु–जिनसे अलग नहीं होते उन; तिचैयित् निन्ऱु–दिशाओं से; चलित्तिट–विचलित हों, ऐसा; कतिरुम् उट्क–सूर्य भी भयभीत हो; पू उळान्–कमलवासी; पुणरि मेलान्–जल पर रहनेवाले; पॊरुप्पितान्–पर्वतवासी; मुतल्वर् आय–आदि; एवरुम्–सभी; तुणुक्कु उऱ्ऱु–दहलकर; एङ्क–पछताएँ ऐसा; वीरन्–वीर; ऍळितिनिल्–आसानी से; ऍऴुन्तान्–उठ गया। १२६१

कुम्भकर्ण अनायास जाग उठा तो तीनों लोक काँप उठे। सशक्त और मोटी सूँड़ों वाले दिग्गज अपनी-अपनी दिशा से अलग हुए। सूर्य डरा। कमलासन (ब्रह्मा), पर्वत (कैलास) वासी (शिव) आदि दहल उठे और व्यग्र हुए। १२६१

विण्णित्तै यिडरुम् मोलि विशुम्बित्तै निरैक्कुम् मेनि
कण्णेंतु मवैयि रण्डुङ् गडल्हळिऱ् पॆरिय वाहुम्
ऍण्णिनुम् वॆरिय नात्त विलङ्गैयर् वेन्दन् पिन्तोन्
मण्णित्तै यळन्दु निन्ऱ मालॆत वळर्न्दु निन्ऱान् 1262

इलङ्कैयर् वेन्तन्–लंका के राजा का; पिन्तोन्–अनुज; ऍण्णितुम्–मंत्रणा में; पॆरियन् आत–बड़ा जो रहा वह (कुंभकर्ण); मण्णित्तै अळन्तु निन्ऱ–भूतल को नापते खड़े जो रहे उन; माल् ऍत–श्रीविष्णु के समान; वळर्न्तु निन्ऱान्–बढ़ा रहा; मोलि–(उसका) सिर; विण्णित्तै इटरुम्–आकाश को ठुकराता; मेनि–शरीर; विचुम्पित्तै–अन्तरिक्ष को; निरैक्कुम्–छिपा लेता; कण् ऍतुम् अवै–नेत्र वे; इरण्टुम्–दोनों; कटल्कळिल् पॆरिय आकुम्–समुद्रों से बड़े थे। १२६२

लंकाधिपति (रावण) का अनुज मंत्रणाचतुर था। जब वह भूमापक विष्णु के समान ऊँचा खड़ा रहता तब उसका सिर आकाश से टकराता; शरीर अन्तरिक्ष को छिपा लेता। और उसके नेत्र सागरों से भी बड़े थे। १२६२

उऱक्क मव्वळि नीङ्गि युणत्तहुम्
वऱैक्क मैन्दन वूनॊडु वाक्किय
नऱैक्कु डङ्गळ् पॆऱान्गडै नक्कुवान्
इऱक्क निन्ऱ मुहत्तिनै यॆय्दुवान् 1263

अ वळि–तब; उऱक्कम् नीङ्कि–नींद त्यागकर; उण तकुम्–खाने योग्य; वऱैक्कु अमैन्तन–बघारने योग्य; ऊनॊटु–मांस के साथ; नऱै वाक्किय–ताड़ी डाले गये; कुटङ्कळ् पॆऱान्–घड़े न पाकर; कटै नक्कुवान्–मुख के कोनों पर जीभ फेरता हुआ; इऱक्क निन्ऱ–मरणोन्मुख (के सम); मुकत्तितै–मुख को; ऍय्तुवान्–प्राप्त हुआ। १२६३

जब उसने आँखें खोलीं तब उसे बघारे मांस के साथ ताड़ी के घड़े नहीं मिले तो उसका चेहरा उतर गया। ओठों पर जीभ फेरता हुआ वह मरणोन्मुख के समान रहा। १२६३

आऱु नूऱु शहडत् तडिशिलुम्, नूऱु नूऱु कुडङ्गळु नुङ्गितान्
एऱु हिन्ऱ पशियै यॆळुप्पितान्, शीऱु हिन्ऱ मुहत्तिरु शॆङ्गणान् 1264

चीऱुकिन्ऱ–गुस्सेवर; मुकत्तु–मुख पर; इरु चॆम् कणान्–दो लाल आँखों के साथ रहा वह; आऱु नूऱु–छः सौ; चकटत्तु अटिचिलुम्–छकड़ों पर चावल और;

नूरु नूरु कुटङ्कळम्–सौ, सौ घड़े (ताड़ी); तुऴ्कितान्–चट कर गया; एऴकिऩ्ऱ पचियै–वर्धनशील भूख को; अॅऴुप्पितान्–जगा दिया। १२६४

मुख तमतमा उठा और आँखें लाल हो गयीं। तब उसने छः सौ गाड़ियों में आये चावल को खाकर सैकड़ों घड़े ताड़ी पिये। उसकी भूख शान्त होने के बजाय और तीव्र हो गयी, मानो इन भोजनों ने उसकी भूख को जाग्रत् किया हो। १२६४

ॲरुमै येऱ्ऱैयो रीरऴ नूऱ्ऱैयुम्, अरुमै यिऩ्ऱियें तिऩ्ऱिरै यारितान्
पॅरुमै पॅऱ्ऱदु कोडुमॅन् ऱॅपिऱङ्, गुरुमै येऱ्ऱॅप् पिशैन्दॅरि यूदुवान् 1265

पिऱङ्कु–दृश्यमान; उरुम् एऱ्ऱै–नर-अशनि को भी; पिचैन्तु–मसलकर; ॲरि ऊतुवान्–अंगारे बनाते हुए फूँक सकनेवाला; पॅरुमै पॅऱ्ऱतु–गण्यता-प्राप्त भोजन; कोटुम् ॲन्ऱे–पीछे लेंगे कहकर; ओर् ईर् अऴ नूऱ्ऱै ॲरुमै एऱ्ऱैयुम्–एक, दो सौ (नर) भैंसों को; अरुमै इऩ्ऱियें–अनायास; तिऩ्ऱु–खाकर; इरै आरितान्–थोड़ा (भूख को) शान्त कर लिया। १२६५

अशनि को भी मसलकर अंगारों में फूँक उड़ा देनेवाले कुम्भकर्ण ने विचारा कि खैर ! पूर्ण तृप्ति भर अच्छा भोजन बाद में खाया जायगा और तात्कालिक तृप्ति के लिए एक हज़ार दो सौ बड़े (नर) भैंसों को बिना किसी श्रम के खा लिया और अपनी भूख को किंचित शान्त कर लिया। १२६५

इरुन्द पोदु मिरावण निऩ्ऱॅऩत्, तॅरिन्द मेऩियन् तिण्कड लिऩ्ऱिरै
नॅरिन्द दऩ्ऩ पुरुवत्तु नॅऱ्ऱियान्, शॊरिन्द शोरितन् वाय्वरत् तूङ्गुवान् 1266

तिण् कटलिऩ्–सशक्त समुद्र की; तिरै–लहरें; नॅरिन्तनु अऩ्ऩ–जैसे कुंचित हों वैसी; पुरुवत्तु नॅऱ्ऱियान्–भौंहों के भाल वाला; चॊरिन्त चोरि–(खाये गये जानवरों के शरीर से) बहनेवाला रक्त; तन् वाय् वर–उसके मुख से निकल बहे, ऐसा; तूङ्कुवान्–सोनेवाला; इरुन्त पोतुम्–जब बैठा रहे तब भी; इरावणन् निऩ्ऱु–रावण खड़ा; ॲन–जैसा हो; तॅरिन्त मेतियन्–ऐसा दिखनेवाले शरीर का। १२६६

सशक्त समुद्र की कुंचित लहरों-सदृश भौंहों वाला कुम्भकर्ण जब सोता तब उसके मुख से उसके खाये पशुओं का रुधिर निकलकर बहता। जब वह बैठा रहता तब वह खड़े हुए रावण से भी ऊँचा लगता। १२६६

उदिर वारियॊडूऩॊ डॅलुम्बु तोल्, उदिर वारि नुहर्वदॊ रूणिऩात्
कदिर वाळ्वयि रप्पणॅक् कैयिऩान्, कदिर वाळ्वयि रक्कळऱ् कालिऩान् 1267

उतिर वारियॊटु–रुधिर-प्रवाह के साथ; ऊऩॊटु ॲलुम्पु तोल्–मांस के साथ हड्डियाँ और चमड़ा; उतिर–बिखेरते हुए; वारि–उठाकर; नुकर्वतु–खाने के;

ओर् ऊणित्तान्–एक भोजन-कृत्य वाला; कतिर वाळ्–धान की बालियों के आकार के करवाल लिये हुए; वयिरम्–वज्रवद्; पर्ण–मोटे; कैयित्ताम्–हाथों का; कतिर वाळ्–चाँदनी के समान प्रकाश-निकासक; वयिरम्–हीरे की बनी; कळल्–पायल के; कालित्ताम्–चरणों वाला (इससे लेकर १२७१वें पद तक यमकालंकार है।)। १२६७

अधिक रक्त के साथ मांस, हड्डियों और चमड़े का अनूठा भोजन करनेवाला था। धान की बालियों के समान तलवार रखनेवाले सशक्त और स्थूल हाथों का था वह। चाँदनी-सी रोशनी देनेवाले हीरों की बनी पायलधारी था। १२६७

इरुम्ब शिक्कु मरुन्दॅन वॅ:(ह्)किन्नॊ
डिरुम्ब शिक्कु मरुन्दु मॅयिड्रिनान्
वरुड्ग ळिड्रिनैत् तिन्ड्रतन् मालरा
अरुड्ग ळिड्रिरि हिन्ड्रदॊ राशैयान् 1268

इरु पचिक्कु–बड़ी भूख का; मरुन्तु अँत–इलाज समझकर; अॅ:.किवोट् इरुम्पु–फ़ौलाद और लोहे के हथियारों को; अरुन्तुम्–खाकर; अचिक्कुम्–हँसनेवाले; ॲयिड्रिनान्–दाँतों का; वरु कळिड्रिनै–आनेवाले गजों को; तिन्ड्रतन्–खाकर; माल् अऱ्रा–भूख न मिट जाने से; अरु कळिल्–अपूर्व ताड़ी पर; तिरिकिन्ड्रतु–विचरित; ओर् आचैयान्–एक बड़ी इच्छा रखनेवाला। १२६८

बड़ी भूख मिटाने के लिए वह कभी फ़ौलाद और लोहे के हथियारों को खा लेता। पर कोई लाभ न पाकर, दाँत दिखाकर हँस उठता। अपने पास आनेवाले गजों को भी खा लेता पर अशान्त-भूख ही रहता। उसका मन अपार ताड़ी पीने में ही लगा रहता। १२६८

शूल मेहन् दिरुत्तिय तोळिन्नान्
शूल मेहन् दिरुत्तिय तोड्रत्तान्
कालन् मेनिमिर् मत्तन् कळ्ड्पोरु
कालन् मेनिमिर् शॅम्मयिर्क् कड्रैयान् 1269

चूलम् एकम्–शूल एक को; तिरुत्तिय–रखनेवाले; तोळितान्–कन्धे वाला; चूल मेकम्–जल-गर्भ मेघ की; तिरुत्तिय–समानता करनेवाले; तोड्रत्तान्–आकार का; कालन् मेल् निमिर्–यम पर भी चढ़ जानेवाली; मत्तन्–मत्तता से युक्त; कळल् पोरु–वीरघंटे टकराकर शब्द करें; कालन्–ऐसे चरणों का; मेल् निमिर्–ऊपर की ओर उठे हुए; चॅ मयिर् कड्रैयान्–लाल केशों की लटों वाला। १२६९

केवल त्रिशूल को ही कन्धे पर रखता था। जलगर्भ मेघ-सम रूप का था। यम पर भी चढ़ जाने की मस्ती रखनेवाला था। रणित पायलधारी चरणों का था। और ऊपर की ओर उगे लाल केशों की लटों वाला था। १२६९

ऍयिऱ् लॆत्त करदलत् तिन्दिरन्
ऍयिऱ् लॆत्त करदलत् तॆऱ्ऱित्तान्
अयिऱ् लॆत्तोड रङ्गैयन् शिङ्गवून्
अयिऱ् लॆत्तोड रङ्गहल् वायित्तान् 1270

ऍयिऱु अलैत्त–दाँत पीसकर युद्ध पर आये; करम् तलत्तु–बड़े हाथों के; इन्तिरन्–इंद्र को; ऍयिल् तलै–अण्ड के (बाहरी) प्राचीरों से; तकर–टकराये; तलत्तु ऍऱ्ऱित्तान्–ऐसा भूमि पर पटका; अयिल्–भाला; तलै तोंटर्–और पाश रखनेवाले; अम् कैयन्–सुन्दर हाथों का; ऊन्–मांस; चिङ्क–कम हो तो; अयिल् तलै–खाने के स्थान पर; तोंटर्–जारी करते हुए; अङ्कु–वहाँ; अकल् वायित्तान्–मुख खोले रहनेवाला। १२७०

उसने दाँत पीसते हुए लड़ने आये इन्द्र को अण्डभित्तियों से टकराकर भूमि पर पटक दिया था। भाला और पाश रखनेवाले सुन्दर हाथों का था। मांस का खाना कम होता तो वहीं मुँह वाये बैठा रहता। १२७०

उडर्हि डन्दुळि युम्बर्क्कु मुऱ्ऱुयिर्क्
कुडर्कि डन्दडङ् गानॆडुङ् गोळित्तान्
कडर्हि डन्ददु निन्ऱदन् मेऱ्कदळ्
पडर्ह डुङ्गनल् पोन्मयिर्प् पङ्गियान् 1271

उटर् किटन्तुळि–शरीर पड़ा रहे तब भी; उम्पर्क्कुम्–देवों के लिए भी; उयिर्–प्राण; कुटर् उऱ्ऱु–आँतों के अन्दर; किटन्तु अटङ्का–बँधे न रह सकें, ऐसा; नॆटु कोळित्तान्–(करनेवाले) बहुत बल का; किटन्ततु–पड़ा रहा; कटल्–समुद्र; निन्ऱतन् मेल्–जो खड़ा हो और जिस पर; कतळ् पटर्–तेज चलनेवाली; कटु कनल् पोल्–क्रूर (बड़वा) अग्नि-सम; मयिर् पङ्कियान्–केशों की लटों का। १२७१

कुम्भकर्ण ऐसा भयंकर व्यक्ति था कि अगर उसकी लाश ही पड़ी रहे तो भी देवों के प्राण उनकी आँतों के अन्दर समाये रहते। सीधे खड़े रहे समुद्र पर तेज चलनेवाली वड़वाग्नि रहती हो, ऐसे उसके शरीर और केशों का दृश्य था। १२७१

तिक्क डङ्गलुम् वॆन्ऱवन् शीऱ्ऱिड
मिक्क डङ्गिय वॆङ्गदि रङ्गिहळ्
पुक्क डङ्गिय मेरुप् पुळैयॆन्न
तोक्क डङ्गित् तुयिऱ्ऱु कण्णित्तान् 1272

तिक्कु अटङ्कलुम्–सारी दिशाओं का; वॆन्ऱवन्–विजेता (रावण); चीऱ्ऱिट–जब गुस्सा करता; मिक्कु अटङ्किय–जो बहुत दबे रहे रहते हैं; वॆम् कतिर्–गरम किरणमाली सूर्य और; अङ्किकळ्–अग्नि; पुक्कु अटङ्किय–जिसके अन्दर

घुसकर समा गयो; मेरु पुळै अॅत–उस मेरु-कन्दरा के समान; तोंकुकु–पलकें झप कर; अटङ्कि–सँकरे होकर; तुयिल् तरु–उनींदी; कण्णितान्–आँखों का। १२७२

दिग्विजयी रावण के गुस्से को देखकर जो डर से बहुत दबे पड़े रहे वे किरणमाली और अग्निदेव भी जाकर घुस जाएँ, ऐसी मेरुकन्दरा के समान दृश्यमान झुकी पलकों की सँकरी दृष्टि वाली उनींदी आँखों का था वह। १२७२

काम्बु	उड्गुङ्	गनवरैक्	कैम्मलै
तूम्बु	उड्गु	मुहत्तिन	दुय्त्तुडल्
ओम्बु	उम्मुळै	यॅन्नुयर्	मूक्किनन्
पाम्बु	उड्गुम्	वडर्शॅविप्	पाळियान् 1273

तूम्पु उड्ङ्कुम्–नलीदार; मुकत्तिन्–मुखों वाले; कैम्मलै–हाथी; तुय्त्तु–(जिसे) खाकर; उटल् ओम्पुरुम्–अपना शरीर पालते हैं; काम्पु उड्ङ्कुम्–ऐसे बाँसों से भरे; कतम् वरै–भारी पर्वत की; मुळै ॲन्नु–कन्दरा कहो ऐसी; उयर् मूक्कितन्–ऊँची नाक का है; पाम्पु उड्ङ्कुम्–साँप सोएँ उतना; पटर् चॅवि–विशाल कानों का; पाळियान्–बलवान। १२७३

उसकी नाक उस पर्वत की कन्दरा के समान बड़ी थी, जिस पर नली-सहित सूँड़ों के गजों का शरीरवर्धक भोजन, बाँसों की भरमार है। उसका कर्णरंध्र इतना बड़ा था कि साँप भी उनमें पड़े सोते रहते। १२७३

कूयि	नन्नुमु	नॅन्रवर्	कूरलुम्
पोयि	नन्नहर्	पॉम्मॅन्	ड्रिरत्तॅळ
वायिल्	वल्लै	नुळैन्दु	मदित्तोडुम्
कोयि	लॅय्दिनन्	कुन्ऱन्न	तोळिनान् 1274

अवर्–उन (दूतों) के; नुम् मुन्–आपके अग्रज ने; कूयितन्–बुलाया; ॲन्ऱु कूरलुम्–ऐसा कहने पर; कुन्ऱु अन्न तोळितान्–पर्वतस्कन्ध; नकर्–नगर; पोम् ॲन्ऱु–'भों' शब्द के साथ; इरत्तु ॲळ–शोर कर उठे ऐसा; पोयितन्–चला; वायिल्–द्वार पर; वल्लै–शीघ्र; नुळैन्तु–घुसकर; मति तोटुम्–चन्द्रस्पर्शी; कोयिल्–(रावण के) महल में; ॲय्तितन्–आया। १२७४

रावण के दूतों ने कुंभकर्ण से कहा कि आपके अग्रज ने आपको बुलाया है। पर्वतस्कन्ध कुंभकर्ण उठ चला तो सारा नगर 'भों' के शोर से भर गया। वह जल्दी-जल्दी द्वार में घुसकर रावण के चन्द्रस्पर्शी महल में गया। १२७४

❀ निलैहि	डन्द	नॅडुमदिट्	कोबुरत्
तलैहि	डन्द	विलङ्गॅ	यरण्णलैक्

कौलैहि इनदवेर् कुम्बक रुणनोर्
मलैहि इन्दवु पोलव णङ्गिनान् 1275

नॆट्टु मतिळ्–लम्बे प्राचीर और; निलै किटन्त कोपुरत्तु–कई तल्लों के गोपुरों के (मीनारों) के; अलै किटन्त–तरंगों (समुद्र) से वलयित; इलङ्कैयर्–लंका नगर के; अण्णलै–प्रभु को; कॊलै किटन्त–घातक; वेल्–भालाधारी; कुम्पकरुणन्–कुंभकर्ण ने; ओर् मलै किटन्ततु पोल–एक पर्वत पड़ा हो ऐसा; वणङ्कितान्–गिर कर दण्डवत की। १२७५

बड़े प्राचीर के अन्दर अनेक तल्लों के गोपुरों से पूर्ण रहनेवाली लंका के राजा के चरणों पर संहारक भालाधारी कुंभकर्ण ने एक पर्वत पड़ा हो, ऐसा गिरकर दण्डवत की। १२७५

※ वन्रु णैप्पॆरुन् दम्बि वणङ्गलुम्
तन्ड्रि रण्डदो ळारत् तळ्विनन्
निन्र कुन्रॊन्रु नीण्डुङ् गालोडुम्
शॆन्र कुन्रॆत् तळीइयन्न शॆय्हैयान् 1276

वल् तुणै–बलवान, साथी; पॆरुम् तम्पि–उत्तम कनिष्ठ भ्राता के; वणङ्कलुम्–नमन करने पर; निन्र कुन्रु ऑन्रु–खड़ा रहा एक पर्वत; नीळ् नॆट कालोटुम्–बहुत लम्बे पैरों के साथ; चॆन्र कुन्रै–चलकर आये पर्वत को; तळी इ अन्न–गले लगाता जैसे; चॆय्कैयान्–करनेवाला बनकर; तन् तिरणट तोळ् आर–अपने पुष्ट कंधों से खूब; तळुविनन्–आलिंगन कर लिया (रावण ने)। १२७६

जब सबल साथी और श्रेष्ठ भाई ने नमस्कार किया तब रावण ने उसे उठाकर अपने पुष्ट गले से खूब लगा लिया। वह दृश्य ऐसा लगा मानो खड़ा रहा एक पर्वत लम्बे पैरों केसाथ आये पर्वत को आलिंगन में ले रहा हो। १२७६

उडनि रुत्ति युदिरत्तो डौळ्नरैक्
कुडनि रैत्तवै यूट्टित् तशैक्कोळीइक्
कडलनु रैत्तुहिल् शुट्रिक् कदिर्क्कुळाम्
पुडैनि रैत्तोळिर् पल्कलन् पूट्टिनान् 1277

उटन् इरुत्ति–पास बैठाकर; उतिरत्तोटु–रक्त-मिश्रित; ऑळ् नरै–श्रेष्ठ ताड़ी को; कुटम् निरैत्तवै–(उससे भरे) घड़ों को पंक्ति में लेकर; ऊट्टि–पिलाकर; तचै कॊळीइ–मांस खिलाकर; कटल् नुरै–समुद्रफेन-सम; तुकिल्–(कौशेय) वस्त्र; चुट्रि–पहनाकर; कतिर् कुळाम्–रश्मिराशियाँ; पुटै निरैत्तु–सब ओर भरकर; ऑळिर्–छविमय रहे; पल् कलन्–अनेक आभरणों को; पूट्टिनान्–रावण ने पहनाया। १२७७

रावण ने उसे अपने पास बिठाया, रक्तमिश्रित ताड़ी पंक्तियों

में घड़ों में भरकर पिलायी। समुद्रफेन की तरह महीन कौशेय वस्त्र पहनाया। और अनेक आभरण पहना दिये, जिनसे सब ओर प्रकाश छूटता था। १२७७

पेर विट्ट पॅरुवलि यिन्दिरन्, ऊर विट्ट कळिऱ्ऱॊडु मोडुनाट्
चोर विट्ट शुडर्मणि योडॅयॅ, वीर पट्ट मॅन्ननुदल् वीक्किनान् 1278

पॅरुवलि–बड़ा बल; पेर विट्ट–जिसका बेकार किया गया; इन्तिरन्–वह इंद्र; ऊर विट्ट कळिऱ्ऱॊडुम्–अपने वाहन (ऐरावत) गज के साथ; ओटुम् नाळ्–(जब पीठ दिखाकर) भागा उस दिन; चोर विट्ट–जिसको गिरा दिया; चुटर् मणि ओटॅयॅ–उस प्रकाशमय रत्नों के मुखपट्ट को; वीर पट्टम् ॲन्न–वीर पट के रूप में; नुतल् वीक्कितान्–माथे पर बाँधा। १२७८

उसने उसे वीरपट के रूप में उस प्रकाशमय रत्नों के मुखपट को पहनाया; जिसे इन्द्र के ऐरावत ने तब गिरा दिया था, जब इन्द्र अपना बड़ा बल खोकर पीठ दिखाते हुए हाथी को ले भागा था। १२७८

मॅय्यॅ लामिळिर् मिन्वॅयिल् वीशिडत्
तॉय्यिल् वाशत् तुवर्दुदॅन् दाडिय
कॅयि नाह मॅन्नक्कडन् मेत्तियिल्
तॅय्व नाऱुशॅज् जान्दमुज् जेर्त्तिनान् 1279

मॅय् ॲलाम् मिळिर्–शरीर भर में चमकनेवाले; मिन् वॅयिल्–बिजली का (सा) प्रकाश; वीचिट–छोड़ते हुए; वाचम् तॉय्यिल्–सुगन्धित चंदन-लेप से; तुवर् तुतॅन्तु आटिय–लाल रंग से खूब रंगित; कॅयिन् नाकम् ॲन्न–सूंड़ वाले हाथी के समान; कटल् मेत्तियिल्–सागरोपम शरीर पर; तॅय्वम् नाऱ–दिव्य गंध वाले; चॅम् चान्तमुम्–लाल चन्दन; चेर्त्तिनान्–लीप दिया। १२७९

उसने उसके शरीर पर लाल चन्दन लीप दिया और तब वह कुम्भकर्ण उस सूंड़ वाले गज के समान दिखा, जिसके चमकदार शरीर पर सुगन्धित चन्दन लीप दिया गया हो और जो गहरे लाल रंग का दिखता हो। १२७९

विडमॅ ळुन्वदु पोनॅडु विण्णिनॅत्
तॉडवु यर्न्दवन् मार्बिडॅच् चुऱ्ऱिनान्
इडब मुन्दु मॅळ्ळिलिरु नान्गुतोळ्
कडवु ळीन्द कवशमुङ् गट्टिनान् 1280

विटम् ॲळुन्तु पोल्–विष फूल उठा जैसे; नॅटु विण्णितॅ तॉट–लम्बे आकाश को छूते हुए; उयर्न्तवन्–ऊँचा जो रहा उस कुंभकर्ण के; मार्पु इटॅ–वक्ष में; इटपम् उन्तुम्–ऋषभ चलानेवाले; ॲळ्ळिल्–मनोरम; इरु नान्कु तोळ्–आठ कन्धों

के; कटवुळ्–भगवान शिव का; ईन्त कवचमुम्–दिया गया कवच; चुऱ्ऱितान् कट्टितान्–लपेटकर बाँध दिया। १२८०

फिर फूल उठनेवाले विष के समान आकाश को छूते हुए उठे कुम्भ-कर्ण के वक्ष में रावण ने ऋषभवाहन, अष्टभुज श्री शिवजी द्वारा दिये गये कवच को लपेटकर बाँध दिया। १२८०

अन्न कालैयि नायत्तम् मियावैयुम्
ऍन्न कारणत् तालॅन् ऱियम्बितान्
मिन्नि नन्न पुरुवमुम् विण्णिनैत्
तुन्नु तोळ् मिडन्दुडि यानिन्ऱान् 1281

मिन्निन् अन्न–बिजली के समान; पुरुवमुम्–भौंहें और; विण्णिनै–आकाश में; तुन्नु–व्यापनेवाले; तोळम्–कंधे और; इटम् तुटिया निन्ऱान्–बायें अंगों के फड़कते जो खड़ा रहा; अन्न कालैयिल्–तब; आयत्तम् यावैयुम्–यत्न सब; ऍन्न कारणत्ताल्–किस कारण से; ऍन्ऱु इयम्पितान्–ऐसा पूछा (कुंभकर्ण ने)। १२८१

कुम्भकर्ण की विद्युत्-सम बायीं भौंह और आकाशव्यापी बायाँ कन्धा फड़क रहा था। उस स्थिति में उसने पूछा कि यह सारा (युद्ध-) यत्न किस हेतु हो रहे हैं? । १२८१

वान रप्पॅरुन् दानैयर् मानिडर्, कोन हर्प्पुरज् जुऱ्ऱिनर् कोऱ्ऱमुम्
एनै युऱ्ऱनर् नीयव रिन्नुयिर्, पोन हत्तॊळिन् मुऱ्ऱुदि पोयॆन्ऱान् 1282

मानिटर्–नर; वानरम् पॅरु तानैयर्–बड़ी वानर-सेना वाले; को नकर–श्रेष्ठ हमारे नगर के; पुरम् चुऱ्ऱिनर्–चारों ओर घेर गये; एनै–और; कोऱ्ऱमुम्–विजय भी; उऱ्ऱनर्–पा ली; नी–तुम; अवर् इन् उयिर्–उनके प्राणों के; पोनकम् तॊळिल्–भोजन करने का काम; मुऱ्ऱुति–पूरा करो; ऍन्ऱान्–कहा। १२८२

रावण ने उत्तर दिया— दो नर बड़ी वानर-सेना के साथ हमारे प्रधान नगर को घेरे खड़े हैं। और उन्हें जीत भी मिली है। तुम जाओ और उनके प्राणों का भोजन करो। १२८२

❀आनदो वॅञ्जमम् अलहिल् कऱ्पुडैच्
चानहि तुयरिनन् दविर्न्द दिल्लैयो
वानमुम् वैयमुम् वळर्न्द वान्पुहळ्
पोनदो पुहुन्ददो पौन्ऱुङ् गालमे 1283

वॅम् चमम् आननो–क्रूर युद्ध आ गया क्या; अलकु इल्–अपार; कऱ्पुटै–पातिव्रत्यशीला; चानकि तुयर् इनम्–जानकी का दुःखवर्ग (या अब भी); तविर्न्तनु इल्लैयो–दूर नहीं हुआ क्या; वानमुम् वैयमुम्–आकाश और भूमि में;

वळर्न्त–वर्धित रहा; वान् पुकळ्–बड़ा (तुम्हारा) यश; पोत्ततो–मिट गया क्या; पॉन्नुरु कालम्–(राक्षसों का) विनाशकाल; पुकुन्ततो–आ गया क्या। १२८३

(यह सुनकर कुम्भकर्ण ने विस्मय और दुःख के साथ कहा—) भीषण युद्ध हो गया क्या ? अगाध पातिव्रत्यशीला जानकी का संकट का तांता अब भी दूर नहीं हुआ ? तुम्हारा भू व आकाशव्यापी यश मिट गया ? हमारा विनाशकाल आ गया क्या ? । १२८३

किट्टिय दोशॅरु किळर्पॉन् चीदैयैच्
चुट्टिय दोमुतञ् जॊन्न शॊऱ्कळाल्
तिट्टियिन् विडमत्त कऱ्पिन् शॅल्वियै
विट्टिलै योविदु विदियिन् वन्मैये 1284

चॅरु किट्टियतो–युद्ध निकट आ गया क्या; किळर् पॉन्–तेजोमय स्वर्ण-सम; चीतैयै–सीता को; चुट्टियतो–लेकर हुआ क्या; मुतम्–पहले; चॊन्न चॊऱ्कळाल्–कहे हुए वचन मानकर; तिट्टियिन् विटम् अन्त–दृष्टि के लिए विष-सम; कऱ्पिन् चॅल्वियै–पातिव्रत्य की वेषी को; विट्टिलैयो–नहीं छोड़ा क्या; इतु–यह; वितियिन् वन्मैये–विधि का बल है। १२८४

युद्ध समीप आ ही गया क्या ? कान्तियुक्त स्वर्ण-सम सीतादेवी को लेकर ही यह युद्ध हो रहा है क्या ? तुमने मेरी पहले ही कही बातों को सुनकर दृष्टि के लिए विष-सम और पातिव्रत्यधना सीता को छोड़ा नहीं क्या ? यह अवश्य विधि की प्रबलता है ! १२८४

कल्लला मुलहिनै वरम्बु कट्टवुम्
शॊल्ललाम् तॊलैविला विरामन् तोळ्हळै
वॅल्लला मॅन्बदु शीदै मेनियैप्
पुल्लला मॅन्बदु पोलु मालैया 1285

ऐया–तात; उलकितै कल्ललाम्–पृथ्वी को खोद सकते हैं; (उलकितै–लोक को;) वरम्पु कट्टवुम्–सीमा बाँधने को भी; चॊल्ललाम्–कह सकते हैं; तॊलैवु इला–अजेय; इरामन् तोळ्कळै–राम की भुजाओं को; वॅल्ललाम् ऍन्पतु–जीता जा सकता है यह; चीतै मेनियै–सीता के शरीर को; पुल्ललाम्–गले लगाया जा सकता है; ऍन्पतु पोलुम्–कहना जैसा है। १२८५

तात ! भूमि को खोदा जा सकता है। उसे सीमित किया जा सकता है। पर राम के कन्धे अजेय हैं। उनको जीतना सीता के शरीर को आलिंगन में लेने के समान है। (दोनों बिलकुल असाध्य हैं।) । १२८५

पुलत्तियन् वळिमुदल् वन्द पॊय्यरु
कुलत्तियल् बळिन्ददु कॊऱ्ऱम् मुऱ्ऱुमो

वलत्तिय लळिवदऱ् केडु मैयऱु
निलत्तियल् नीरिय लॆन्नु नीरवाल् 1286

कॊऱ्ऱम् मुऱ्ऱमो–जय मिलेगी क्या; वलत्तियल्–विजय-मार्ग; अळिवतऱ्कु–नाश होने का; एतु–हेतु है; मै अऱ निलत्तु इयल्–निर्दोष भूमि का स्वभाव; नीर् इयल्–जल की प्रकृति (के अनुसार) है; ऎन्नुम् नीरवु–इस विधि के अनुसार रहता है; पुलत्तियन् वळि मुतल्–पुलस्त्य से लेकर; वन्त–आनेवाला; पॊय् अऱ–मिथ्या-रहित; कुलत्तु इयलपु–कुल की रीति; अळिन्ततु–मिट गयी। १२८६

क्या तुम्हें भी विजय मिलेगी ? नहीं ! यह तो विजयशीलता को मिट्टी में मिलाने का साधन है ! कहा जाता है भूमि की प्रकृति जल की प्रकृति के अनुकूल ही रहेगी ! (कार्य जैसा होगा फल भी वैसा ही।) पुलस्त्यकुल का गौरव तुम्हारे हाथों नष्ट हो गया। १२८६

कॊडुत्तनै यिन्दिरऱ् करशुङ् गॊऱ्ऱमुम्
कॆडुत्तनै निन्बॆरुङ् गिळैयुम् नित्तैयुम्
पडुत्तनै पलवहै यमरर् तङ्गळै
विडुत्तनै वेऱिनि वीडु मिल्लैयाल् 1287

इन्तिरऱ्कु–इंद्र को; अरचुम् कॊऱ्ऱमुम्–राज्य और जय; कॊडुत्तनै–(तुमने) दिला दी; निन् पॆरु किळैयुम्–अपने बड़े कुल को; कॆडुत्तनै–हानि पहुँचा दी; निन्नैयुम् पडुत्तनै–अपने को भी नष्ट करा लिया; पल वकै–विविध; अमरर् तङ्कळै–देवों को; विडुत्तनै–छुड़ा दिया; इनि–अब; वेऱु–दूसरा; वीडुम् इल्लै–छुटकारा नहीं। १२८७

अपने इस कार्य से इन्द्र को राज और विजय के देनेवाले हो गये। अपने कुल का ही नाश कर दिया। अपना भी विनाश कर लिया। विविध देवों को छुटकारा दिला दिया ! अब तुम्हें इस मार्ग से छुटकारा नहीं है ! । १२८७

अऱमुनक् कञ्जियिन् ऱॊळित्त दालदन्
तिऱमुन मुळत्तलिन् वलियुञ् जॆल्वमुम्
निऱमुनक् कळित्तवङ् गदनै नीक्किनी
इऱलिनङ् गियारुनै यॆडुत्तु नाट्टुवार् 1288

इन्ऱु–आज; उनक्कु अञ्चि–तुमसे डरकर; अऱम् ऒळित्ततु–धर्म छिप गया; अतन् तिऱम्–उसके अंश को; मुतम्–पहले; उळत्तलिन्–परिश्रम से पाला, इसलिए; वलियुम् चॆल्वमुम्–प्रताप और वैभव ने; उनक्कु–तुम्हें; निऱम् अळित्ततु–श्रेष्ठता बिलायी थी; अङ्कु अतनै नीक्कि–अब उसे दूर करके; नी इऱलिन्–तुम मरोगे तो; अङ्कु–तब (वहाँ); उनै–तुमको; ऎडुत्तु–उठाकर; यार् नाट्टुवार्–कौन उभारेगा। १२८८

अब धर्म तुमसे डरकर छिप गया। तुमने उसका पालन किया था और तुम्हें प्रताप और वैभवों ने श्रेष्ठता दिलायी थी। अब धर्म का नाश करके तुम भी नष्ट होगे तो तुम्हें उभारेगा कौन ? । १२८८

तञ्जमुन् वरुममुन् दहवु मेयवर्, नॆञ्जमुङ् गरुममु मुरैयुमे नॆडु
वञ्जमुम् बावमुम् बॊय्युम् वल्लनाम्, उञ्जुमो वदर्कोरु कुरैयुण् डाहुमो 1289

अवर्–उनके; उरैयुम्–वचन; करुममुम्–कर्म और; नॆञ्चमुम्–मन; तञ्चमुम्–(क्रमशः) सौलभ्य; तरममुम्–धर्म; तकवुमे–और शील हैं; नॆडु–बड़ी; वञ्चमुम्–वंचना; पावमुम्–पाप; पॊय्युम्–और असत्य में; वल्ल नाम्–चतुर हम; उञ्चुमो–बचेंगे क्या; अतर्कु–उनके धर्म का; ओरु कुरैवु उण्टाकुमो–कोई क्षय हो सकेगा क्या। १२८६

उन नरों के वाक्, कार्य और मन ही सौलभ्य, धर्म और शील हैं। हम तो वंचना और पाप और असत्य में दक्ष हैं। फिर हम बचेंगे क्या ? उनके धर्म का क्षय भी होगा क्या ? । १२८९

कालिनिर् करुङ्गडल् कडन्द काऱ्ऱवु, पोलवत् कुरङ्गुळ शीदै पोहिलळ्
वालियै युरङ्गिळित् तेह वल्लत, कोलुळ यामुळेङ् गुऱैयुण् डाहुमो 1290

कालिनिल्–पैरों से; करु कटल् कटन्त–काले समुद्र को जिसने पार किया; काऱ्ऱु पोल–वायु के समान वह; वल् कुरक्कु–बलवान वानर; उळ–है; सीतै पोकिलळ्–सीता नहीं गयी; वालियै–वाली को; उरम् किळित्तु–छाती चीरकर; एक वल्लत–जा सकनेवाले; कोल्–शर; उळ–हैं; याम् उळेम्–(उनके प्रयोग के पात्र) हम भी हैं; कुऱै–कोई कमी; उण्टाकुमो–होगी क्या। १२९०

उधर समुद्र को अपने पैरों से पार करनेवाला पवन-समान बलवान वानर है। सीता भी अब तक छूटी नहीं है। वाली के वक्ष को चीरने वाले शर भी हैं उनके पास ! और हम हैं अपने कुकर्मों के साथ ! फिर कमी क्या है ! । १२९०

ऎन्ऱुकॊण् डिनैयन वियम्बि यात्तक्
कॊन्ऱुळ दुणर्त्तुव दुणर्न्दु कोडियेल्
नन्ऱडु नायह नयक्कि लायॆनिर्
पॊन्ऱिनै याहवे कोडि पोक्किलाय् 1291

ऎन्ऱु–ऐसा; इनैयन–ये बातें; कॊण्टु इयम्पि–ले कहकर; यान्–मैं; उनक्कु उणर्त्तुवतु–तुम्हें समझाऊँ सो; ऒन्ऱु उळतु–एक बात है; नायक–नायक; अतु–वह; उणर्न्तु कोटियेल्–समझकर मानोगे तो; नन्ऱु–भला होगा; नयक्किलाय् ऎनिल्–पसन्द न करोगे तो; पोक्किलाय्–अशरण; पॊन्ऱिनै याकवे–मरे ही; कोटि–समझ लो। १२९१

कुंभकर्ण ने इतना कहकर आगे भी कहा। नायक! और एक बात समझानी है। उसको समझकर उसके अनुसार करो। अच्छा होगा। हे निराश्रय! अगर पसन्द नहीं करोगे तो समझ लो कि मर ही गये। १२९१

❀ तैयलै विट्टवऩ् शरणन् दाऴ्न्दुनिऩ्
ऐयरु तम्बियो डळव ळावुदल्
उय्दिरम् अऩ्ऱेलि नुळदु वेरुमोर्
शॅय्तिर मऩ्नदु तॅरियक् केट्टियाल् 1292

तैयलै–देवी को; विट्टु–छुड़ाकर; अवऩ् चरणम् ताऴ्न्तु–उसके चरणों में नमस्कार करके; निऩ्–अपने; ऐयरु–अनिद्य; तम्पियोटु–कनिष्ठ भ्राता के साथ; अळवळावुतल्–मित्रता निबाहना; उय्तिरम्–उद्धार का मार्ग है; अऩ्ऱु ॲतिल्–नहीं तो; वेरुम्–और विपरीत; ओर्–एक; चॅय् तिरम्–करने योग्य उपाय; उळतु–है; अऩ्ततु–वह; तॅरिय–समझते हुए; केट्टि–सुन लो। १२९२

सीतादेवी को छुड़ा लो। राम के चरणों में नमन करो। और अपने छोटे भाई से मित्रता का व्यवहार करो। यही उद्धार का मार्ग है, नहीं तो इसके विपरीत एक दूसरा उपाय है जो कर सको! उसको साफ़ सुनो। १२९२

पन्दियिऱ् पन्दियिऱ् पडैयै विट्टवै
चिन्दुदल् कण्डुनी यिरुन्दु तेम्बुदल्
मन्दिर मऩ्ऱुनम् वलियॅ लामुडन्
उन्दुदल् करुममॅन् ऱुणरक् कूऱिऩान् 1293

पन्तियिल् पन्तियिल्–पंक्ति-पंक्ति से; पटैयै विट्टु–सेनाएँ भेजकर; अवै–उनका; चिन्तुतल्–मिटना; कण्टु–देखकर; नी इरुन्तु–तुम्हारा यहाँ रहकर; तेम्पुतल्–घुलना; मन्तिरम् अऩ्ऱु–मन्त्रणा नहीं है; नम् वलि ॲलाम्–हमारा सारा बल; उटऩ्–एक साथ; उन्तुतल्–भेजना; करुमम्–करने योग्य काम है; ॲऩ्ऱु–ऐसा; उणर–बुद्धिगत हो ऐसा; कूऱिऩान्–कहा। १२९३

बारी-बारी से अंशों में सेनाएँ भेजो और इधर रहकर चिंता में घुलो —यह कोई अच्छी मंत्रणा नहीं है! हमारा सारा बल एक साथ प्रेषित कर दो। यही करणीय काम है! कुंभकर्ण ने समझाते हुए कहा। १२९३

❀ उऴुवदु तॅरियवऩ् ऱुऩ्ऩैक् कूयवु
शिऴुत्तॊऴिऩ् मऩिदरैक् कोऱि शॅऩ्ऱॆऩर्
कऱिवुडै यमैच्चऩी यल्लै यञ्जिऩै
वॅऱुविदुऩ् वीरमॆऩ् ऱिवैवि ळम्बिऩान् 1294

उऩ्ऩै कूयतु–तुम्हें बुलाना; उऴवतु–होनी के सम्बन्ध में; तॆरिय अऩ्ऱु–तुमसे जानने के लिए नहीं; चॆऩ्ऱु–जाकर; चिऱु तॊऴिल् मतितरै–अल्प-कर्म नरों को; कॊऩ्ऱि–मारो; ऎऩ्ऱऱ्कु–मुझे (यह सलाह देने); नी–तुम; अऱिवु उडै–बुद्धिमान; अमैच्चऩ् अल्लै–अमात्य नहीं हो; अञ्चिऩै–डर गये; उऩ् वीरम्–तुम्हारी वीरता; वॆऱुवितु–व्यर्थ है; ऎऩ्ऱु–कहकर; इवै–ये; विळम्पिऩाऩ्–कहे। १२६४

रावण ने अतृप्ति जताते हुए कहा कि तुमको बुलाया होनी की बात सुनने के लिए नहीं ! अल्प मनुष्य को मैं जाकर मारूँ, यह सलाह देने के लिए तुम बुद्धिमान अमात्य नहीं ! तुम डर गये ! तुम्हारी वीरता वृथा है ! यह कहकर रावण ने आगे यों कहा। १२९४

❀ मऱङ्गिळर् शॆरुविऩुक् कुरिमै माण्डऩै
पिऱङ्गिय तशैयॊडु नऱवुम् मॆऱ्ऱऩै
इऱङ्गिय कण्मुहिऴ्त् तिरवु मॆल्लियुम्
उऱङ्गुदि पोयॆऩ वुळैयक् कूऱिऩाऩ् 1295

मऱम् किळर्–उभरी वीरता के; चॆरुविऩुक्कु–युद्ध के; उरिमै माण्टऩै–योग्य श्रेष्ठता रखते हो; पिऱङ्किय तचैयॊटु–अधिक रहे मांस के साथ; नऱवुम् पॆऱ्ऱऩै–ताड़ी भी पी ली; इऱङ्किय कण्–उतरी आँखों को; मुकिऴ्त्तु–बन्द करके; इरवुम् ऎल्लियुम्–रात और दिन; पोय् उऱङ्कुति–जाकर सोओ; ऎऩ–ऐसा; उळैय कूऱिऩाऩ्–दुःख देते हुए कहा। १२६५

वीरता जिसमें खिल उठे, उस युद्ध में जाने के लिए उचित सम्मान तुमने प्राप्त कर लिया। मांस और ताड़ी पी गये। फिर क्या चाहिए। उनींदी आँखें बन्द करो और जाकर रात-दिन सोते रहो। रावण ने अपने भाई के मन को दुखाते हुए यह बात कही। १२९५

❀ मातिड रिरुवरै वणङ्गि मऱ्ऱमक्
कूऩुडैक् कुरङ्गयुङ् गुम्बिट् टुय्तॊऴिल्
ऊऩुडै युम्बिक्कु मुऩक्कु मेकडऩ्
याऩदु पुरिहिले ऩॆऴुह पोहॆऩ्ऱाऩ् 1296

माऩिटर् इरुवरै–दो नरों को; वणङ्कि–नमस्कार करके; मऱ्ऱुम्–और; अ–उस; कूऩ् उडै–कूब्ज; कुरङ्कयुम्–वानर के आगे; कुम्पिट्टु–हाथ जोड़कर; उय् तॊऴिल्–जीवित रहने का काम; ऊऩ् उडै–देहाभिमानी; उम्पिक्कुम्–तुम्हारे भाई का और; उऩक्कुमे–तुम्हारा ही; कटऩ्–कर्तव्य है; याऩ्–मैं; अतु–वह; पुरिकिलेऩ्–नहीं करूँगा; ऎऴुक पोक–उठो, जाओ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १२६६

दोनों नरों को नमस्कार करके और झुकी पीठ वाले उस वानर के सामने अंजली करते हुए जीवन बिताने का काम देहाभिमान रखनेवाले तुम्हारे भाई का और तुम्हारा कर्तव्य होगा। मैं वह काम नहीं कर सकूँगा। उठो और चलो। १२९६

❀ तरुहवॅन्	तेर्पडै	शार्ऱुङ्	गूऱ्ऱमुम्
वरुहमुन्	वानमु	मण्णु	मऱ्ऱवुम्
इरुहैवन्	शिऱुवरो	डॊन्ऱि	यॅन्नॊडुम्
पॊरुहवॅम्	बोरॆनप्	पोदन्	मेयिनान् 1297

ऍन् तेर् पटै तरुक–मेरे रथ की सेना लाओ; चाऱ्ऱुम्–प्रकीर्तित; कूऱ्ऱमुम्–यम भी; वरुक–(सामना करने) आये; वानमुम्–आकाश (वासी); मण्णुम्–भूलोक (वासी); मऱ्ऱवुम्–और और लोग; इरु कै–दो हाथों के; वल् चिऱुवरोटु ऒन्ऱि–बलवान छोकरों के साथ मिलकर; ऍन्नॊटुम्–मेरे साथ; वॆम् पोर्–भीषण युद्ध; पॊरुक–लड़ें; ऍन–कहकर; पोतल् मेयिनान्–जाने का उपक्रम किया। १२९७

यह कहकर रावण ने आज्ञा सुनायी कि मेरी रथ-सेना को प्रस्तुत कर दो। प्रकीर्तित यम ही सामना करने आये। धनुर्धर बलवान उन नर-बालकों के साथ मिलकर आकाशलोक, भूलोक और अन्य लोकों के वासी भी आकर मेरे साथ भीषण युद्ध करें। रावण जाने को उद्यत हो गया। १२९७

❀ अन्नदु	कण्डवन्	तम्बि	यानवन्
पॊन्नडि	वणङ्गिनी	पॊरुत्ति	यालॆन
वन्नॆडुञ्	जूलत्तै	वलत्तु	वाङ्गिनान्
इन्नमॊन्	ऱुरैयुळ	दॆन्नक्	कूऱिनान् 1298

अन्नतु कण्टु–उसे देखकर; अवन् तम्पि आनवन्–उसका भाई जो था; पॊन् अटि वणङ्कि–सुन्दर चरणों में नमस्कार करके; नी पॊऱुत्ति–तुम क्षमा करो; ऍन–कहकर; वल् नॆटु चूलत्तै–सशक्त लम्बे शूल को; वलत्तु वाङ्किनान्–दायें हाथ में लिया; इन्नम् ऒन्ऱु–और एक; उरै उळतु–बात कहनी है; ऍन्न–कहकर; कूऱिनान्–कहा। १२९८

रावण के भाई कुंभकर्ण ने इसको देखा। वह अपने भाई के सुन्दर चरणों में नमस्कार करके बोला। भाई! मुझे माफ़ करो। उसने अपने दायें हाथ में शूल सँभाला। फिर बोला और एक बात कहनी है। सुनो। १२९८

❀ वॆन्ऱिवण्	वरुवनॆन्	ऱुरैक्कि	लेन्विदि
यॊन्ऱदु	पिडर्पिडित्	तुन्दु	हिन्ऱदु
पॊन्ऱुवॆन्	पॊन्ऱिनार्	पॊलन्कॊळ्	पूवैयै
नन्ऱॆन	नायह	विडुदि	नन्ऱरो 1299

वॆन्ऱु–जीतकर; इवण्–यहाँ; वरुवन्–आऊँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैक्किलॆन्–कह नहीं सकता; विति–विधि; ऒन्ऱु अतु–नामक वह; पिटर् पिटित्तु–गला पकड़कर; उन्तुकिन्ऱतु–ढकेलता है; पॊन्ऱुवॆन्–मर जाऊँगा; पॊन्ऱिनाल्–मर

जाऊँगा तो; पॉलन्तु कॉळ्-स्वर्णाभरणधारिणी; पूवैयं-सारिका (सीता) को; नायक-नायक; नन्ऱु अँत-भला समझकर; विट्टुति-छोड़ दो; नन्ऱु-(वही) भला है। १२९९

मैं यह कह नहीं सकता कि विजय पाकर लौट आ जाऊँगा। पर विधि नामक वह चीज मुझे गले लगकर भिजवा रही है! लगता है कि मैं युद्ध में मर जाऊँगा। मर जाऊँ तो नायक! स्वर्णकंकणधारिणी सारिका-सम सीता को, भला काम मानकर मुक्त करा दो। वही अच्छा होगा। १२९९

ऍन्ऩैवॆन् ऱुळरॆनि लिलङ्गै कावल
उन्ऩैवॆन् ऱुयरुद लुण्मै यावलाल्
पिन्ऩैनिन् ऱॆण्णुदल् पिळ्ळैप् पॅय्वळै
तन्ऩैनन् ऱळिप्पदु तवत्तिन् पालदे 1300

इलङ्कै कावल-लंकापालक; ऍन्ऩै-मुझे; वॆन्ऱु उळर् ऍनिन्-जीत जाएँगे तो; उन्ऩै वॆन्ऱु-तुम्हें हराकर; उयरुतल्-बड़ा बनना; उण्मै-ध्रुव है; आतलाल्-इसलिए; पिन्ऩै-बाद भी; निन्ऱु-रहकर; ऍण्णुतल्-विचार करना; पिळ्ळै-ग़लत होगा; अ पॅय् वळै तन्ऩै-उस कंकणधारिणी को; नन्ऱु अळिप्पतु-अच्छी रीति से छोड़ देना; तवत्तिन् पालतु-पवित्र काम होगा। १३००

लंकापालक! मुझे हरा देंगे तो उनका तुम्हें हराकर बड़प्पन पाना निश्चित बात है! इसलिए उसके बाद भी पसोपेश मत करो। ग़लत होगा। कंकणालंकृता सीता को अच्छी रीति से (श्रीराम के पास) छोड़ देना तपस्या-जैसा पवित्र काम है!। १३००

इन्दिरत् पहैजनु मिरामन् तम्बिहै
मन्दिर वम्बिनाल् मडिदल् वाय्मैयाल्
तन्दिरङ् गाऱ्ऱुरु शाम्बल् पिन्ऩरुम्
अन्दर मुणर्न्दुनक् कुऱुव दाऱ्ऱुवाय् 1301

इन्तिरत् पकैजनुम्-इन्द्र का शत्रु (इन्द्रजित्); इरामन् तम्पि-राम के छोटे भाई के; कै-हाथ के; मन्तिरम् अम्पिनाल्-मंत्रशर से; मटितल्-मरेगा; वाय्मै-सत्य है; तन् तिरम्-(राक्षस-) सेना; काऱ्ऱु उऱु-पवन लगी; चाम्पल्-राख होगी; पिन्ऩरुम्-फिर भी; अन्तरम् उणर्न्तु-जो होगा वह जानकर; उनक्कु उऱुवतु-अपना हित; आऱ्ऱुवाय्-कर लो। १३०१

इन्द्रशत्रु इन्द्रजित् का राम के अनुज के हाथ के अभिमंत्रित शर से मरना भी निश्चित है! सेना पवनप्रसारित राख बन जायगी। फिर तुम, जो आगे होगा वह सोचकर अपना हित-साधक काम कर लो। १३०१

❀ इऱ्ऱैनाळ् वरैमुद लियान्मुन् शॅय्दन
कुऱ्ऱमु मुळवॆतिऱ् पॊऱुत्ति कॊऱ्ऱव
अऱ्ऱदान् मुहत्तिनिल् विऴित्तल् आरिय
पॆऱ्ऱनन् विडॆयॆनप् पिरिन्दु पोयिनान् 1302

कॊऱ्ऱव–विजयी राजा; मुन् मुतल्–पहले से लेकर; इऱ्ऱै नाळ् वरै–आज दिन तक; यान् चॆय्तत–मेरे किये हुए; कुऱ्ऱमुम्–अपराध भी; उळ ऎतिल्–हों तो; पॊऱुत्ति–माफ़ करो; मुकत्तितिल् विऴित्तल्–तुम्हारे मुख के दर्शन; अऱ्ऱतु–नहीं हो गये; आरिय–उत्तम; विटै पॆऱ्ऱतत्–विदा ली; ऎत–कहकर; पिरिन्तु पोयितात्–अलग चला गया। १३०२

विजयी राजा! पहले से लेकर आज तक मेरे हाथों जो अपराध हो गये हों तो उन सबको माफ़ कर दो। तुम्हारे मुख के दर्शन आगे असम्भव हो गये। आर्य! मुझे विदा दो। कुंभकर्ण यों कहकर विदा हो गया। १३०२

अव्वऴि यिरावण नऩैत्तु नाट्टमुञ्
चॆव्वऴि नीरॊडुङ् गुरुदि तेक्किनन्
अव्वऴि योर्हळु मिरङ्गि येङ्गिनार्
इव्वऴि यवनुम्बोय् वायि लॆय्दिनान् 1303

अ वऴि–तब; इरावणन्–रावण ने; अनैत्तु नाट्टमुम्–सारी आँखों में; चॆव्वऴि नीरॊटुम्–सीधे बहनेवाले अश्रु के साथ; कुरुति–रक्त भी; तेक्कितत्–भर लिया; अव्वऴियोर्कळुम्–सभी प्रकार के रिश्तेदार; इरङ्कि एङ्कितार्–सहानुभूति के साथ दुःखी हुए; इ वऴि–उस स्थिति में; अवतुम् पोय्–वह भी जाकर; वायिल् ऎय्तितात्–द्वार पर पहुँचा। १३०३

तब रावण की सभी आँखों में अश्रु के साथ रक्त भी भर गया। कुंभकर्ण के सभी रिश्तेदार सहानुभूति करके दुःखी हुए। इतने में वह द्वार पर आ गया। १३०३

❀ इरुम्बडै कडिप्पॊडुत् तॆऱ्ऱि येहुह
पॆरुम्बडै यिळवलो डॆन्ऱ पेच्चिनाल्
वरुम्बडै वन्ददु वानु ळोर्हळ्तम्
शुरुम्बडै मलर्मुडि तूळि तूर्क्कवे 1304

इरु पटै–बड़े युद्ध के आयुधों के साथ; इळवलोटु–(रहनेवाले) मेरे भाई के साथ; कटिप्पु ऎटुत्तु ऎऱ्ऱि–चोब से (ढोल) पीटकर; पॆरु पटै–बड़ी सेना; एकुक–चले; ऎन्ऱ पेच्चिनाल्–ऐसी (रावण की) आज्ञा से; वानुळोर्कळ्–आकाशवासी; तम्–देवों के; चुरुम्पु अटै–भ्रमर जिन पर बैठे थे उन; मलर् मुटि–पुष्पालंकृत केशों पर; तूळि तूर्क्क–धूल जम जाए, ऐसा; वरु पटै–आनेवाली सेना; वन्ततु–आयी। १३०४

रावण ने आज्ञा सुनायी कि चोब से पीटकर ढोल बजाओ; और

बड़ी सेना एकत्र होकर छोटे राजा के साथ जाए। उसके अनुसार आने वाली बड़ी सेना आयी, जिससे बहुत धूल उठी और वह धूल आकाशवासी देवों के भ्रमरावृत पुष्पालंकृत केशों में भर गयी। १३०४

तेर्क्कोडि यानैयित् पदाहै शेणुरु
तार्क्कोडि यॆन्ऱिवै तवॆन्दु वीङ्गुव
पोर्क्कोडुन् दूळिपोय्त् तुरक्कम् बुक्कन
आर्प्पन तुडैप्पन पोन्ऱ वाडुव 1305

तेर् कोडि–रथध्वजा; यानैयित् पताकें–और हाथी पर की पताकाएँ; तार्–सेना के अग्र भाग में; चेण् उरु–आकाश से लगी; कोडि–झंडे; ऍन्ऱ इवै–ऐसे जो थे वे; ततैन्तु–सटकर; वीङ्कुव–अधिक संख्या में रहे; पोर् कोटु–युद्धस्थल से; तूळि पोय्–धूलकण जाकर; तुरक्कम् पुक्कन–स्वर्ग पहुँचे; आर्प्पन–जो जमे रहे उन्हें; तुटैप्पन पोन्ऱ–पोंछते-जैसे; आटुव–फहरते हैं। १३०५

रथों पर की ध्वजाएँ, हाथियों पर की पताकाएँ और पैदल वीर जो उठाते चले वे आकाश-छूते झण्डे —सब सटकर जब हिलने लगे तब ऐसा लगा मानो वे युद्ध के कारण उठकर आकाश में घने रूप से छानेवाली धूल को पोंछ रहे हों। १३०५

ऍण्णुरु पडैक्कलम् मिळ्ह वॆऱ्ऱिड
नण्णुरु पॊऱिहळुम् पडैक्कु नायहर्
कण्णुरु पॊऱिहळुङ् गदुवक् कण्णहल्
विण्णुरु मळैयॆलाङ् गरिन्दु वीळ्न्दवाल् 1306

ऍण् उरु–मान्य; पटैक्कलम्–हथियार; इळ्क–व्यापकर; ऍऱ्ऱिट–टकराये इसलिए; नण्णुरु पॊऱिकळुम्–उठे हुए अंगारे; पटैक्कु नायकर्–सेनानियों की; कण् उरु पॊऱिकळुम्–आँखों के अंगारे; कतुव–लगे इसलिए; कण् अकल्–विस्तृत; विण् उरु–आकाश में रहे; मळै ऍलाम्–सभी मेघ; करिन्तु वीळ्न्त–झुलसकर गिर पड़े। १३०६

सुगण्य हथियार सब जगह भरकर आपस में टकराये तो अंगारे निकले। वे अंगारे और सेनानायकों की आँखों के अंगारे —दोनों के लगने से विशाल आकाश के मेघ जलकर काले बनकर गिर गये। १३०६

तेर्शॆलक् करिशॆल नॆरुक्किच् चॆम्मुहक्
कार्शॆलात् तेर्शॆलाप् पुरवि काल्शॆलत्
तार्शॆलक् कडैशॆलच् चॆन्ऱ तानैयुम्
पार्शॆलर् करिदॆन विशुम्बिर् पायन्ददाल् 1307

तेर् चॆल–रथ गये; करि चॆल–गज चले; नॆरुक्कि–तो दबकर; चॆम् मुकम्

कार्-(सिंदूर-लगे) लाल मुख वाले मेघ (हाथी); चॅला-नहीं चल पाते; तेर् चॅला-रथ भी बढ़ नहीं पाते; पुरवि-अश्व; काल् चॅल-वायु के समान चलते हैं, इसलिए; तार् चॅल-झंडे उठानेवाले जाते हैं; कटै चॅल चॅत्ऱ-सबके पीछे जानेवाली; तातैयुम्-सेना भी; पार् चॅलऱ्कु अरितु-भूमि पर जाना कठिन जानकर; विचुम्पिल्-आकाश में; पाय्न्ततु-लपक चली। १३०७

रथ और गज इतनी संख्या में मिले चले कि सिंदूर-मले लाल मुखों के हाथी बढ़ नहीं पाये; न रथ ही चल पाये। अश्व पवनगति में चले; झण्डे लेकर वीर चले तो पीछे आनेवाली सेना भूमि पर चलने को मार्ग न पाकर आकाश में उड़ चली। १३०७

आयिरङ् गोळरि याळि यायिरम्, आयिर मदहरि पूद मायिरम्
मायिरु ञालत्तैच् चुमप्प वाङ्गुव, शेयिरुञ् जुडर्मणित् तेरॊन् ड्रेऱिनान् 1308

आयिरम् कोळरि-हज़ार सिंह; आयिरम् याळि-और सहस्र 'याळि'; आयिरम् मतकरि-सहस्र मत्तगज; आयिरम् पूतम्-हज़ार भूत (इनसे युक्त); मा इरु ञालत्तै-बहुत बड़ी भूमि को; चुमप्प-ढोनेवाले (आठ गज और सर्प); वाङ्कुव-(जिसको) उठाने से पिछड़ जाते हैं, ऐसे; चेय् इरु चुटर्-लाल अत्युज्ज्वल; मणि तेर्-रत्नरथ; ऑन्ऱु-एक पर; एऱितान्-चढ़ा। १३०८

कुंभकर्ण लाल और तेजोमय रत्नजड़ित एक रथ पर चढ़ा, जिसे हज़ार सिंह, हज़ार मत्तगज और हज़ार भूत खींचते थे और जिसे ढोने से भू-भार-वाही अष्टगज और अष्टनाग भी सकुचाएँ। १३०८

तोमरञ् जक्करञ् जूलङ् गोल्मळु
नामवे लुलक्कैवाळ् नाञ्जि ऱण्डॆळु
वामविल् वलैयङ्गऱ् परिशै मऱ्ऱुळ
शेमवॆम् बडैयॆलाञ् जुमन्दु शॆन्ऱवाल् 1309

तोमरम्-तोमर; चक्करम्-चक्र; चूलम्-शूल; कोल्-बाण; मळु-परशु; नामम् वेल्-भयोत्तेजक भाला; उलक्कै-मूसल; वाळ्-तलवार; नाञ्चिल्-हल; तण्टु-दण्डायुध; ऍळु-लोहे के खम्भे; वामम् विल्-सुघड़ धनु; वलयम्-वलय; कल् परिचै-प्रस्तर के ढाल; मऱ्ऱु उळ-अन्य जो हैं; चेमम्-रक्षक; वॆम् पटै-भीषण हथियार; ऍलाम्-सब; चुमन्तु चॆन्ऱ-ढोते हुए चलीं (सेनाएँ)। १३०९

सेना अपने साथ तोमर, चक्र, शूल, बाण, परशु, भयानक भाले, मूसल, तलवारें, हल, दण्ड, लौहदण्ड, सुन्दर धनु, वलय, पत्थर के ढाल आदि रक्षणकारी भीषण हथियार ले चली। १३०९

नरैयुडैत् तशुम्बॊडु नऱुनॆय् वॆन्दवूऩ्
कुऱैविल्नऱ् चहडमो राயि रङ्गॊडु

पिऱैयुडै यॅयिऱ्ऱवऩ् पिऩ्बु शॅऩ्ऱऩर्
मुऱैमुऱै कॅक्कॊडु मुडुहि नीट्टुवार् 1310

मुऱै मुऱै मुटुक्कि—बारी-बारी से आगे बढ़कर; कै कॊंटु—हाथ में ले; नीट्टुवार्—बढ़ानेवाले; नऱै उटै—ताड़ी को लिये रहनेवाले; तऴुम्पॊटु—घड़ों के साथ; नऱु नॅय् वॅन्त—अच्छे घी में पके; ऊऩ्—मांस को; कुऱैवु इल्—अक्षय; नल् चकटम्—अच्छी गाड़ियाँ; ओर् आयिरम् कॊंटु—एक हजार लेकर; पिऱै उटै—चन्द्रकला के समान; ऍयिऱु अवऩ्—दाँत वाले कुम्भकर्ण के; पिऩ्पु चॅऩ्ऱऩर्—पीछे-पीछे गये। १३१०

अर्द्धचन्द्राकार दाँत वाले कुंभकर्ण के पीछे-पीछे एक सहस्र छकड़ों में ताड़ी के घड़ों और सुगन्धित घी में पके मांसों को लेते हुए राक्षस गये, जो बारी-बारी से उन चीजों को हाथों में ले कुंभकर्ण के आगे बढ़ाते जा रहे थे ताकि वह खाता और पीता जाय ! । १३१०

ऒऩ्ऱल पऱ्पल रुदवुम् ऊऩऱै
पिऩ्ऱरुम् बिलऩिडैप पॅय्यु माऱुपोल्
वऩ्ऱिऱ लिरुहरम् वळ्ळ्ङ्ग माऩ्दिये
शॅऩ्ऱऩ तियावरुऩ् दिडुक्क मॅय्दवे 1311

पऱ्पलर्—अनेक-अनेक (नौकर); उतवुम्—जो देते हैं; ऒऩ्ऱु अल—अनेक; ऊऩ् नऱै—मांस (खण्ड) और ताड़ी (के घड़े); वल् तिऱल्—अति कठोर; इरु करम् वळ्ळ्क्क—दोनों हाथों में लेकर डालने पर; पिऩ् तरुम्—अन्धकार-जाल-भरे; पिलऩ् इटै—बिल में; पॅय्युम् आऱु पोल्—गिरनेवाली नदी के समान; माऩ्तिये—अशन करते हुए; यावरुम् तिटुक्कम् ऍय्तवे—सभी चौंक जाएँ ऐसे; चॅऩ्ऱऩऩ्—(कुम्भकर्ण) गया। १३११

कुंभकर्ण ऐसे अनेक भृत्यों से दी जानेवाली मांसराशियों और घड़ों ताड़ी को अँधेरे बिल के अन्दर जानेवाली नदी के समान अपने मुख के अन्दर डालता हुआ चला और सब उसे देखकर सिहर उठते थे। १३११

कणऩ्दरु कुरङ्गॊडु कऴिव दऩ्ऱिदु
निणऩ्दरु नॅडुऩ्दडिक् कुलहु नेरुमो
पिणऩ्दलॅप् पट्टदु पॅयर्व दॅङ्गिऩि
उणर्न्ददु कूऱ्ऱमऩ् ऱुम्ब रोडिऩार् 1312

इतु—(कुम्भकर्ण का) खाना; कणम् तरु—झुण्डों में रहनेवाले; कुरङ्कॊटु—वानरों तक; कऴिवतु अऩ्ऱु—समाप्त होगा नहीं; निणम् तरु—चर्बी-सहित; नॅटु तटिक्कु—बड़े मांस (आहार) के लिए; उलकु नेरुमो—सारा लोक काफ़ी होगा क्या; पिणम् तलै पट्टतु—सर्वत्र शवमय है; कूऱ्ऱम् उणर्न्ततु—यम भी सजग हो गया; ऍङ्कु इऩि पॅयर्वतु—कहाँ अब जाना है; ऍऩ्ऱु—सोचकर; उम्पर्—देव; ओटिऩार्—भागे। १३१२

देवों ने सोचा कि कुम्भकर्ण की यह वृत्ति वानरों को खाकर तृप्ति नहीं पायगी। चर्बी-सहित मांस उसे जो चाहिए उसके लिए सारा संसार भी पर्याप्त नहीं होगा। सब जगह लाशें ही लाशें पड़ी हैं। अब यम भी यह बात जान गया है! अब कहाँ जाकर बचेंगे। वे डर से भाग गये। १३१२

पान्दळि ऩॆडुन्दलै वऴुविप् पारॊडुम्
वेन्दॆन्ऩ विळङ्गिय मेरु माल्वरै
पोन्ददु पोऱ्पॊलन् देरिऱ् पॊङ्गिय
एन्दलै येन्दॆऴि लिराम ऩोक्किऩाऩ् 1313

पान्तळिन्-शेषनाग के; नॆटु तलै वऴुवि-बड़े सिर से फिसलकर; पारॊटुम्-भूमि के साथ; वेन्तु अॆंत विळङ्किय-नगराज के रूप में शोभायमान; मेरु माल् वरै-मेरु का बड़ा पर्वत; पोन्ततु पोल्-जाता हो जैसे; पॊलम् तेरिल्-सुन्दर रथ पर; पॊङ्किय-उत्साह के साथ दिखनेवाले; एन्तलै-राजा (कुम्भकर्ण) को; एन्तु अॆऴिल्-अति सुन्दर; इरामन्-श्रीराम ने; नोक्किनान्-देखा। १३१३

श्री सुन्दरराम ने, शेषनाग के सिर से फिसलकर भूमि और उस पर नगराज मेरु-सहित आ रहा हो, ऐसे सुन्दर रथ पर आनेवाले उत्साहपूर्ण कुम्भकर्ण को देखा। १३१३

※ वीणैयॆन् ऱुणरिऩ:(ह्) दऩ्ऱु विण्डॊडुम्
शेणुयर् नॆडुङ्गॊडि वयवॆञ् जीयमाल्
काणिनुङ् गालिऩ्मे लरिय काट्चियऩ्
पूणॊळिर् मार्विऩ ऩियावऩ् पोलुमाल् 1314

विण् तॊटुम्-गगनस्पर्शी; चेण् उयर्-बहुत ऊँची; नॆटु कॊटि-बड़ी ध्वजा; वीणै अॆंत्ऱु उणरिन्-वीणा है क्या, समझें; अ:.तु अन्ऱु-वह नहीं; वयम् वॆम् चीयम्-बलवान भयंकर सिंह है; कालिन् मेल्-पवन से भी अधिक; काणिनुम्-(मनो-) वेग से देखने पर भी; अरिय काट्चियन्-कठिन लगनेवाले दिखावे का है; पूण् ऑळिर्-आभरणभूषित; मार्पिनन्-वक्षवाला है; यावन् पोलुम्-कौन है तो। १३१४

श्रीराम ने देखा कि क्या वह ऊँची पताका वीणांकित है? नहीं वह सशक्त सिंहध्वजा थी। वे सोचने लगे कि पवनगति से अधिक (मनो-) गति के साथ देखें तो भी उसे पूर्णरूप से एक नज़र में देखना कठिन है! आभरणभूषित वक्ष वाला यह कौन होगा? । १३१४

※ तोळॊडु तोळ्शॆलत् तॊडर्न्दु नोक्कुङ्गिऩ्
नाळ्पल कऴियुमा ऩुडव णिऩ्ऱदोर्

ताळुडै मलैहोलाऌ जमरम् वेट्टवोर्
आळेन वुणर्हिले नार्होला मिवन् 1315

तोळोट्टु तोळ्–कंधे से कंधे तक; चॅल तोटर्न्तु–दृष्टि लगातार चलाकर देखें तो; नोक्कुरिन् नाळ् पल कळियुम्–अनेक दिन बीतेंगे; नट्टुवण निन्र्तु–(भूमि के) मध्य जो खड़ा है वह; ओर् ताळ् उटै मलै कोलाम्–पैरों-सहित पर्वत ही है शायद; चमरम् वेट्टतु–युद्धचिकीर्षु; ओर् आळ्–एक वीर; अॅन–ऐसा; उणर्किलेन्–समझ नहीं सक रहा हूं; इवन् आर् कोलाम्–यह कौन है तो। १३१५

(श्रीराम ने विभीषण से पूछा—) एक कन्धे से दूसरे कन्धे के अन्त तक लगातार देखने का प्रयास करे तो लगता है कि अनेक दिन बीत जायेंगे: यह भूमध्य खड़े एक पर्वत-सा है, जो पैरों-सहित आया है। समरेच्छा से आया वीर भी नहीं लगता। यह कौन है तो ? । १३१५

अॅळुङ्गदि रवनोळि मरैय वॅङ्गणुम्
विळुङ्गिय दिरुळिवन् मॅय्यिनाल् वॅरीइप्
पुळुङ्गुनम् बॅरुम्बडै यिरियल् पोहिनृर
दळुङ्गलिल् शिन्दैया यार्होला मिवन् 1316

अॅळुम्–उदीयमान; कतिरवन् ऑळि–सूरज का प्रकाश; इवन् मॅय्यिनाल् मरैय–इसके शरीर से ढंक जाता है; अॅङ्कणुम्–सब जगहें; इरुळ् विळुङ्कियतु–अन्धकार से कवलित हो गयी हैं; इवन् मॅय्यिनाल्–इसके शरीर से; वॅरीइ–डरकर; पुळुङ्कुम्–तपित; नम् पॅरु पटै–हमारी बड़ी सेना; इरियल् पोकिन्र्तु–अस्त-व्यस्त भागती है; अळुङ्कल् इल् चिन्तैयाय्–अनघीरमन; इवन् यार् कोल् आम्–यह कौन है तो। १३१६

उदीयमान सूर्य का प्रकाश भी इसके शरीर में छिप जाता है और सब जगहें अन्धकारकवलित रह जाती हैं ! इसके शरीर को देखकर हमारी बड़ी सेना तप्तमन होकर तितर-बितर हो जाती है। हे अनघीरमन (विभीषण) ! यह कौन है ? । १३१६

अरक्कनव् वुरुवोळित् तरियिन् शेनैयै
वॅरुक्कोळत् तोन्रुवान् कॉण्ड वेडमो
तॅरिक्किले निव्वुरुत् तॅरियुम् वण्णमनी
पॉरुक्कॅन वीडण पुहरिया लॅन्रान् 1317

अरक्कन्–राक्षस रावण (ने); अ उरुवु ऑळित्तु–अपना वह रूप छोड़कर; अरियिन् चेनैयै–वानर-सेना को; वॅरु कोळ–डराने के लिए; तोन्रुवान् कॉण्ट–प्रगट होने के विचार से जो धर लिया; वेटमो–वह वेश है क्या; इ उरु–यह रूप; तॅरिक्किलेन्–समझ में ही नहीं आता; तॅरियुम् वण्णम्–जानूं ऐसा; वीटण–

विभीषण; नी—तुम; पॉरुक्कॅत्त-झटिति; पुकल्ति-कहो; ॲन्ड्रान्-पूछा (श्रीराम ने)। १३१७

क्या यह राक्षस रावण का नया वेश है, जिसे उसने अपना निजी रूप छोड़कर वानर-सेना को भयभीत करने के लिए ले लिया है ? यह क्या रूप है, समझ ही नहीं पाता, विभीषण जल्दी कहो, समझाकर। श्रीराम ने यह पूछा। १३१७

❀ आरिय नन्नैय कूड़ वडियिणै यिरैञ्जि यैय
पेरिय लिलङ्गै वेन्दन् पिन्नव नॅन्नक्कु मुन्नोन्
कारियल् काल नन्न कळड्कुम्ब करुण नॅन्नुम्
कूरिय शूलत् तानॅन् ड्रवनिलै कूड़ लुड्रान् 1318

आरियन् अन्नैय कूड़-आर्य श्रीराम के वैसा पूछने पर; अटि इणै-चरणद्वय में; इरैञ्चि-नमस्कार करके; ऐय-प्रभु; पेर् इयल्-सुप्रतिष्ठित; इलङ्कै वेन्तन्-लंका के राजा का; पिन्नवन्-अनुज है; ॲनक्कु मुन्नोन्-मेरा अग्रज है; कार् इयल्-काले रंग के; कालन् अन्न-यम के समान; कळल्-वीरपायलधारी; कुम्प करुणन् ॲन्नुम्-कुम्भकर्ण कहलानेवाला; कूरिय चूलत्तान्-तीक्ष्णशूलधारी; ॲन्रु-कहकर; अवन् निलै-उसकी प्रकृति, स्थिति आदि; कूड़ल् उड्रान्-कहने लगा। १३१८

आर्य श्रीराम के ऐसा पूछने पर विभीषण ने चरणवन्दना करके निवेदन किया, प्रभु ! बड़ी प्रतिष्ठावान लंका के राजा रावण का यह अनुज है और मेरा अग्रज। काला यम-सा, वीर पायलधारी कुम्भकर्ण नाम का यह तीक्ष्ण शूलधारी है। फिर विभीषण उसका सारा हाल कहने लगा। १३१८

तवनुणङ् गियरुम् वेदत् तलैवरु मुणरुन् दन्मैच्
चिवनुणर्न् दलरिन् मेलैत् तिशैमुह नुणरुन् देवन्
अवनुणर्न् दॅळुन्द कालत् तशुरर्हळ् पडुव रॅल्लाम्
इवनुणर्न् दॅळुन्द कालत् तिमैयवर् पडुव रॅन्दाय् 1319

ॲन्ताय्-धाता; नुणङ्किय तवरुम्-कठोर तपस्वी और; वेतम् तलैवरुम्-वेदज्ञ श्रेष्ठ ब्राह्मण; उणरुम् तन्मै-जिनको ध्यानस्थ होकर देखते हैं; चिवन् उणर्न्तु-शिवजी के ध्यानगोचर हैं जो; अलरिन् मेलै-कमल पर के; तिचैमुकन् उणरुम्-दिशामुख जिनको ध्यान में जानते हैं; तेवन् अवन्-उन देव के; उणर्न्तु ॲळुन्त कालत्तु-जाग्रत् होकर उठते समय पर; अचुरर्कळ् ॲल्लाम्-सारे असुर; पटुवर्-मरते हैं; इवन्-इसके; उणर्न्तु ॲळुन्त कालत्तु-जाग्रत् हो उठते वक़्त; इमैयवर् पटुवर्-देव मर जाते हैं। १३१९

धाता ! श्रेष्ठ तपस्वियों, वेदज्ञ ब्राह्मण-श्रेष्ठों, शिवजी और कमलासन, दिशामुख के ध्यान का विषय श्रीविष्णु निद्रा से जागते हैं तब असुर मरते हैं। यह जब जागता है तब देव मरते हैं। १३१९

आऴि यायिवन् यारॅन्तिल्, एऴै वाऴ्वुडै यॅम्मुत्तोन्
ताऴ्वि लावॊरु तम्बियोन्, ऊऴि नाळु मुऱङ्गुवान् 1320

आऴियाय्–चक्रधारी; इवन् यार् ऍन्तिल्–यह कौन है (पूछें) तो; एऴै वाऴ्वुटै–दयनीय जीव; ऍम् मुत्तोन्–हमारे ज्येष्ठ का; ताऴ्विला–जो किसी विध कम नहीं; ऑरु तम्पियोन्–एक छोटा भाई है; ऊऴि नाळुम्–युगान्त तक; उऱङ्कुवान्–सोयेगा। १३२०

(आज्ञा-) चक्रधारी देव! यह कौन है? पूछते हैं। दयनीय जीव मेरे बड़े भाई का यह छोटा भाई है, जो उससे किसी विध कम नहीं है। वह युगान्त तक सोनेवाला है!। १३२०

काल नारुयिर् कालनाल्, कालिन् मेनिमिर् कालिनान्
मालि नार्कॊड वाहैये, शूल मेकॊडु शूडिनान् 1321

कालन्–यम के; आरुयिर्–प्यारे प्राणों का; कालन्–यम है; कालिन् मेल्–पवन से अधिक; निमिर्–गतिमान; कालिनान्–पैरों वाला; मालितार् कॊट–इन्द्र को हराकर; चूलमे कॊटु–केवल शूल लेकर; वाकैये चूटिनान्–विजयमाला पहन ली। १३२१

यह काल के प्राणों का भी घातक यम है! पवन से भी तीव्रगामी है। केवल शूल ही की सहायता से इसने देवेन्द्र को हराकर जयमाला पहनी है। १३२१

ताङ्गु कॊम्बॊरु नान्गुकाल्, ओङ्ग लॊन्ऱिनै युम्बर्कोन्
वीङ्गु नॆञ्जन् विऴुन्दिलान्, तूङ्ग निन्ऱु शुऴऱ्ऱिनान् 1322

ताङ्कु कॊम्पु–धृत दाँतों और; ऑरु नान्कु काल्–चार पैरों वाले; ओङ्कल् ऑन्ऱिनै–एक पर्वत (के समान ऐरावत) को; उम्पर् कोन्–देवेन्द्र को; विऴुन्तिलान्–नीचे न गिरकर; वीङ्कु नॆञ्चन्–दुःखपूरित मन; तूङ्क–लटकने देते हुए; निन्ऱु–खड़ा होकर; चुऴऱ्ऱिनान्–ले घुमाया। १३२२

इसने दाँतों और पैरों वाले पर्वत-सम ऐरावत को इन्द्र के सहित उठा लेकर घुमाया था और इन्द्र किसी तरह गिरने से अपने को बचाकर धड़कते दिल के साथ लटकता हुआ घूमा। १३२२

कऴिन्द तीयॊडु कालेयुम्, पिऴिन्दु शाऱुकॊळ् पॆऱ्ऱियान्
अऴिन्दु मीन्नह वाऴिनीर्, इऴिन्दु कालिनि नेऱुवान् 1323

कऴिन्त–बहुत; तीयॊटु कालैयुम्–आग के साथ पवन को भी; पिऴिन्तु–निचोड़कर; चाऱु कॊळ् पॆऱ्ऱियान्–रस ले ले, ऐसा पराक्रमी; मीन् अऴिन्तु उक–मछलियों को मरकर मिटने देते हुए; आऴि नीर् इऴिन्तु–समुद्र-जल में घुसकर; कालिनिन् एऱुवान्–पैदल ही तीर पर चढ़ जाता। १३२३

यह विपुल आग और वायु को निचोड़कर रस निकाल पीनेवाली प्रकृति का है। समुद्रजल में घुसकर मछलियों को मरने देते हुए तीर पर पैदल ही (चढ़कर) चल सकता है। १३२३

ऊऩु यर्ऩ्द वुरत्तिऩाऩ्, मेऩि मिर्ऩ्द मिडुक्किऩाऩ्
ताऩु यर्ऩ्द तवत्तिऩाऩ्, वाऩु यर्ऩ्द वरत्तिऩाऩ् 1324

ऊऩ् उयर्ऩ्त-शरीर का सबसे अधिक; उरत्तिऩाऩ्-बलवान; मेल् निमिर्ऩ्त-सर्वोन्नत; मिट्टुक्किऩाऩ्-साहसी; उयर्ऩ्त तवत्तिऩाल्-उत्कृष्ट तपस्या से; ताऩ्-वह; वाऩ् उयर्ऩ्त-बहुत ही उत्तम; वरत्तिऩाऩ्-वर प्राप्त कर चुका। १३२४

सबसे अधिक शारीरिक बल रखनेवाला है। बड़ा साहसी है। उत्कृष्ट तपस्या करके उसने बहुत बड़े-बड़े वर पाये हैं। १३२४

तिऱङ्गॊळ् शारि तिरिन्दनाळ्, कऱङ्ग लादु कणक्किलाऩ्
इऱङ्गु तारव ऩिऩ्ऱुका, ऱुऱङ्ग लालुल हुयन्ददाल् 1325

इऱक्कु तार् अवऩ्-लटकनेवाली मालाधारी वह; तिऱम् कॊळ्-विविध; चारि तिरिन्त नाळ्-चालों के साथ जब घूमता था तब; कऱक्कु अलातु-वातचक्र के सिवा; कणक्किलाऩ्-अन्य रूप में न गिनने योग्य रहा; इऩ्ऱु काऱु-आज तक; उऱक्कलाल्-सोता रहता था, इसलिए; उयन्ततु-संसार बचा। १३२५

प्रलम्ब मालाधारी यह घूमने में वातचक्र से कम नहीं है। आज तक सोता रहा, इसलिए दुनिया बची है। १३२५

शूल मुण्डदु शूरुळोर्, काल मुण्डदु कैक्कॊळ्वाऩ्
आल मुण्डव ऩाऴिवाय्, ञाल मुण्डव ऩल्हिऩाऩ् 1326

चूर् उळोर्-देव जो हैं; कालम्-उनकी आयु को; उण्टतु-जिसने खा लिया; ओर् चूलम्-ऐसा एक शूल; उण्टु-है; अतु-उसे; कै कॊळ्वाऩ्-हाथ में लिये रहता है; ञालम् उण्टव-हे लोकभुक्; आऴि वाय्-समुद्र के; आलम् उण्टवऩ्-हलाहल को पीनेवाले शिव ने; नल्किऩाऩ्-(उस शूल को इसे) दिया था। १३२६

वह एक शूल रखता है, जिस एक ने देव-बने फिरनेवालों की आयु को कवलित किया था। हे भूभुक् (विष्णु के अवतार)! यह शूल हलाहलभुक् शिव ने उसे दिया था। १३२६

मिऩ्ऩि ऩॊऩ्ऱिय विण्णुळोर्, मुऩ्ऩि लॆऩ्ऱमर् मुऱ्ऱिऩा
रॆऩ्ऩि लॆऩ्ऱमव् वॆण्णिलार्, वॆऩ्ऩि लऩ्ऱि विऴित्तिलाऩ् 1327

मिऩ्ऩिऩ् ऒऩ्ऱिय-बिजली के समान प्रकाशमय; विण्णुळोर्-आकाशवासी देव; मुऩ् निल्-सामने खड़े रहो; ऎऩ्ऱु-कहकर; अमर् मुऱ्ऱिऩार् ऎऩ्ऩिल्-युद्ध

करें तो; अँत्रुम्-सदा; अ अँण्णिलार्-उन असंख्यकों को; बॅन्निल् अत्रि-पीठ के सिवा; विळित्तिलान्-कुछ नहीं देखा है इसने। १३२७

विद्युत्-सम प्रकाशमय देव लड़ने इसको सामने बुलाए तो वह उनकी पीठ को ही देखेगा। (वे सामने टिक नहीं सकेंगे, पीठ दिखाते हुए भाग जाएँगे।)। १३२७

तरुम मत्रिडु तानिदाल्, वरुम्न मक्कुयिर् मायवॅन्ना
उरुमिन् वॅय्यव नुक्कुरै, इरुमै मेलु मियम्बिनान् 1328

इतुतान्-यह (परदारा-ग्रहण का) काम; तरुमम् अन्र-धर्मसंगत नहीं; इताल्-इससे; नमक्कु-हमें; उयिर् मायवु-प्राणनाश; वरुम्-मिल जाएगा; अॅन्ना-ऐसा; उरुमित्-अशनि के समान; उरै-बोलनेवाले; वॅय्यवनुक्कु-क्रूर रावण को; उरै-यह वचन; इरुमै मेलुम्-दो बार से अधिक; इयम्पितान्-इसने कहा। १३२८

इसने वज्रघोष रावण से दो से अधिक बार कहा था कि यह परदाराग्रहण हमारा धर्म नहीं! उससे प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा। १३२८

मरुत्त तन्मुनै वाय्मैयाल्, ऑरुत्तु माव दुणर्त्तिनान्
वॅरुत्तु माळ्वदु मॅय्यॅन्ना, इरुत्तु निन्नॅदि रॅय्दिनान् 1329

मरुत्त-अस्वीकार करनेवाले; तन् मुनै-अपने ज्येष्ठ को; वाय्मैयाल्-वचनों से; ऑरुत्तुम्-खंडन किया और; आवतु-भविष्य में होनेवाली बात भी; उणर्त्तितान्-समझाया; वॅरुत्तु-घृणा करके; माळ्वतु मॅय्-मरना ध्रुव है; अॅन्ना-सोचकर; इरुत्तु-अंतिम बार कहकर; निन् ॲतिर्-आपके सामने; अॅय्तितान्-आया है। १३२९

उसे नकारनेवाले अपने ज्येष्ठ का खण्डन करके इसने भविष्य की बात समझायी। रावण न माना तो घृणा करके मरना ध्रुव है, कहकर आपके समक्ष आया है। १३२९

नन्रि दन्रु नमक्कॅन्ना, ऑन्रु नीदि युणर्त्तिनान्
इन्रु कालन्मु नॅय्दिनान्, अॅन्रु शौल्लि यिरैञ्जिनान् 1330

इतु नमक्कु नन्र अन्र-यह हमारे लिए अच्छा नहीं; अॅन्ना-ऐसा; ऑन्रम् नीति-युक्त नीति; उणर्त्तितान्-समझा चुका; इन्र-आज; कालन् मुन्-यम के सामने; अॅय्तिनान्-पहुँचा है; अॅन्रु चौल्लि-ऐसा कहकर; इरैञ्चितान्-विनय की। १३३०

रावण को समझाया कि तुम्हारा काम हमारे लिए अच्छा नहीं है। अब वह मृत्यु से मिलने आया है। विभीषण ने यह कहकर विनय जतायी। १३३०

अँत्ऱव तुरॅत्त लोडु मिरविशे यिवतै यितुऱु
कौंत्ऱॅरु पयतु मिल्लै कूडुमेऱ् कूट्टिक् कौण्डु
नित्ऱदु पुरिदु मऱ्ऱिन् निरुदर्को त्तिडरु नीङ्गुम्
नत्ऱॅत्त नित्तैन्दे तॅत्ऱात् नादतुम् नयत्ती दॅत्ऱात् 1331

अँत्ऱु–ऐसा; अवत् उरॅत्तल् ओटुम्–उसके कहने पर; इरवि चेय्–सूर्यपुत्र ने; इन्ऱु–आज; इवतै कौत्ऱु–इसको मारकर; ओरु पयतुम् इल्लै–कोई लाभ नहीं; कूट्मेल्–(हमसे) मिल जाएगा तो; कूट्टि कौण्टु–मिला लेकर; नित्ऱतु पुरितुम्–जो हैं वह करेंगे; मऱ्ऱु–और; इ निरुतर् कोन्–इस राक्षस राजा का; इटरुम् नीङ्कुम्–कष्ट भी दूर होगा; नत्ऱु अँत–वही अच्छा, ऐसा; नितैन्तेत्–सोचा; अँत्ऱात्–कहा; नाततुम्–श्रीरामनाथ ने भी; ईतु नयत्–यही न्यायसम्मत है; अँत्ऱात्–कहा। १३३१

विभीषण के यह कहने पर सूर्यपुत्र सुग्रीव ने श्रीराम से निवेदन कया कि तब इसे मारने से कोई लाभ नहीं। अगर वह हमसे मिलने को तैयार रहेगा तो मिला लेंगे और आगे का काम करेंगे। उससे लंकाधिपति विभीषण का भी संकट दूर हो जायगा। इसे मैं अच्छा समझता हूँ। श्रीरामनाथ ने भी सहमति प्रकट की कि हाँ यह न्यायसंगत है। १३३१

एहुदऱ् कुरिया रियारे यॅत्ऱलु मिलङ्गै वेन्दत्
आहित्मऱ् ऱडिय तेशॅत् ऱऱिविता लवतै युळ्ळम्
शेहऱत् तॅरुट्टि यीण्डुच् चॅरुमेऱ् चेर्प्पॅ तॅत्ऱात्
मेहमॉप् पातु नत्ऱु पोहॅन्ऱु विडॅयु मीन्दात् 1332

एकुतऱ्कु–(उसके पास) जाने; उरियार् यार्–योग्य व्यक्ति कौन है; अँत्ऱलुम्–(श्रीराम के) पूछते ही; इलङ्कै वेन्तत्–लंकाधिपति ने; आकित्–तो; मऱ्ऱु–फिर; अटियते चॅन्ऱु–मैं ही जाकर; अऱिविताल्–अपनी बुद्धिचातुरी से; अवतै–उसके; उळ्ळम्–मन को; चेकु अऱ–कलंक-रहित रीति से; तॅरुट्टि–समझा-बुझा करके; ईण्टु चेरुमेऱ्–यहाँ मिलेगा तो; चेर्प्पॅत्–मिला लूँगा; अँत्ऱात्–कहा; मेकम् ऑप्पातुम्–मेघ-सम श्रीराम ने भी; नत्ऱु–अच्छा है; पोक–जाओ; अँत्ऱु–ऐसा; विटॅयुम् ईन्तात्–विदा दी। १३३२

श्रीराम ने पूछा कि अब जाने योग्य कौन हैं? लंकाधिपति विभीषण ने उत्तर दिया कि तो फिर मैं ही जाऊँगा। बुद्धि-चातुरी से उसके मन को संशय-रहित और साफ़ करूँगा। अगर आएगा तो ले आऊँगा। तब मेघश्याम ने भी कहा कि ठीक है, चलो। उन्होंने आज्ञा दी। १३३२

तन्विरक् कडलै नीन्दित् तत्पॅरुम् बडैयैच् चार्न्दात्
वॅन्विऱ् लवतुक् कॅय वीडणत् विरैवि तुत्बाल्
वन्दत तॅत्तच् चौत्तार् वरम्बिला वुवहै कूर्न्दु
शिन्वैयार् कळिक्कित् ऱात्ऱत् शॅऱिहळल् शॅत्त्ति शेर्त्तात् 1333

तन्तिरम् कटलै नीन्ति–सेना रूपी सागर को पार करके; तत् पॅरुम् पटैयै–अपनों की बड़ी सेना; चार्न्तात्–के पास पहुँचा; वॅम् तिऱल्–भयंकर वीर; अवनुक्कु–उस कुम्भकर्ण से; ऐय–प्रभु; वीटणन्–विभीषण; विरैविल्–जल्दी-जल्दी; उन्पाल् वन्तनन्–आपके पास आये हैं; ॲन्ऩ चॊन्ऩार्–यह कहा; वरम्पु इला–असीम; उवकै कूर्न्तु–संतोष पाकर; चिन्तैयाल्–मन में; कळिक्किन्ऱान् तन्–मुदित होनेवाले उसके; वॅरि कऴल्–घनी पायलधारी चरणों को; चॅन्ऩि–अपने सिर पर; चेर्त्तान्–लगा लिया। १३३३

विभीषण वानर-सेना रूपी सागर को पार कर अपनों की सेना के पास जा पहुँचा तो कुछ लोगों ने क्रूर बलवान कुम्भकर्ण के पास जाकर समाचार कहा कि प्रभु ! विभीषण आपके पास त्वरा से आये हैं। कुम्भकर्ण उससे अपार आनंदित हुआ। विभीषण ने जाकर मुदितमन कुम्भकर्ण के पायलधारी चरणों में अपना सिर रख दिया और उन्हें अपने सिर पर धारण कर लिया। १३३३

मुन्दिवन् दिऱैञ्जि ताऩै मोन्दुयि रॊन्ऱप् पुल्लि
उय्न्दऩै यॊरुवै पोऩा यॅऩमन मुवक्किन् ऱेन्ऱन्
शिन्दऩै मुऴुवुञ् जिन्दत् तॅळिविलार् पोल मीळ
वन्दऩॅन् तनियै यॅन्ऱान् मऴैयिनीर् वऴङ्गु कण्णात् 1334

मऴैयिन् नीर्–बारिश के समान अश्रुजल; वऴङ्कु–बहानेवाली; कण्णात्–आँखों के साथ; मुन्ति वन्तु–सामने आकर; इऱैञ्चिताऩै–नमस्कार करनेवाले को; मोन्तु–सिर सूंघकर; उयिर् ऒन्ऱ–प्राणों से प्राण लगाकर; पुल्लि–आलिंगन करके; ऒरुवै–अकेले; पोऩाय्–तुम गये; उय्न्तऩै–उद्धार पा गये; ॲन् मऩम्–अपने मन में; उवक्किन्ऱेन् तन्–खुश होनेवाले मेरा; चिन्तऩै मुऴुवुम्–सभी विचार; चिन्त–बिखेरते हुए; तॅळिवु इलार् पोल–सुलझे विचार न रखनेवाले के समान; मीळ–लौटकर; तनियै वन्तनै–अकेले आये; ॲन्–क्यों; ॲन्ऱान्–पूछा (कुंभकर्ण ने)। १३३४

कुम्भकर्ण ने वर्षा-सम अश्रुजल बहाते हुए अपने सामने विनत विभीषण को उठाकर उसका सिर सूँघा (यह वात्सल्य जताने का एक मार्ग समझा जाता है।) और पूछा कि हममें से अकेले तुम अलग चले और उद्धार पा गये। यही सोचकर जो मैं आनंद पा रहा था, उस मेरे सभी विचारों को छिन्न-भिन्न करके बिखेरते हुए अबूझमन के समान लौट के अकेले आये हो। यह क्या बात है ? । १३३४

अवयनी पॅऱ्ऱ वाऴ ममररुम् बॅऱुद लाऱ्ऱा
उवयलो हत्ति लुळ्ळ शिऱप्पुडॅ ट्टुवन्दे तुळ्ळम्
कवित्तरि तरिवु मिक्काय् कालऩ्वायक् कळिक्किन् ऱेम्बाल्
नवैयिलाय् वन्द वॅन्ऩे यमुदुण्बाय् नञ्जुण् बायो 1335

अवयम्–अभयदान; नी–तुमने (श्रीराम से); पॆट्र्–प्राप्त किया वह; आऱम्–हाल और; अमररुम् पॆऱ्ल् आऱ्ा–अमरों के लिए भी अप्राप्य; उवय लोकत्तिल् उळ्ळ–(इह, पर) दोनों लोकों के; चिऱप्पुम्–वैभवों की प्राप्ति; केट्टु–सुनकर; उळ्ळम् उवन्तेन्–मन-मुदित हुआ; कविञरिन् अऱिवु मिक्काय्–कवियों से भी अधिक ज्ञानी; कालनुवाय्–यम के मुख में (रहते हुए भी); कळिक्किन्ऱ्–जो आनन्द मनाते हैं, उन; ॲम्पाल्–हमारे पास; नवै इलाय्–निर्दोष; नी–तुम्हारा; वन्ततु–आना; ॲन्–क्यों; अमुतु उण्पाय्–अमृत खाने जाकर; नञ्चु उण्पायो–विष पियोगे क्या। १३३५

मैं तुम्हारे अभय-प्रदान प्राप्त करने का हाल और इह, पर दोनों लोकों के वैभवों की प्राप्ति का हाल सुनकर बड़ी खुशी मना रहा था। तुम कवियों से भी बढ़कर ज्ञानी हो! हम हैं यम के मुख में रहकर आनंद मनानेवाले! हे अकलंक! वैसे हमारे पास आने का कारण क्या है? अमृत-पान करने योग्य (या जाकर) तुम विष-पान करोगे क्या? । १३३५

कुलत्तियल् बळित्त देनुङ् गुमरमऱ् ऱुन्नैक् कॊण्डे
पुलत्तियन् मरबु मायाप् पुण्णियम् बॊरुन्दिऱ् ॲन्ना
वलत्तियल् तोळै नोक्कि महिळ्हिन्ऱेन् मननुम् वायुम्
उलर्त्तित्तै तिरिय वन्दा युळेहिन्ऱ दुळ्ळ मन्दो 1336

कुमर–कुमार; कुलत्तु इयल्पु–कुलगौरव; अळिन्ततु एनुम्–मिट गया तो भी; उन्नै कॊण्टे–तुम्हारे जरीए ही; पुलत्तियन् मरपु–पुलस्त्यकुल-संस्कृति को; माया पुण्णियम्–अमिट पुण्य; पॊरुन्तिऱ्–मिला; ॲन्ना–यह सोचकर; वलत्तियल् तोळै नोक्कि–तुम्हारी विजयी भुजाओं को देखकर; मकिळ्किन्ऱेन्–मुदित होता हूँ; मननुम् वायुम्–मेरे मन और मुख को; उलर्त्तित्तै–सुखाते हुए (दुःखी करते हुए); तिरिय वन्ताय्–लौट आये हो; अन्तो–हाय; उळ्ळम् उळैकिन्ऱतु–मन व्यग्र होता है। १३३६

कुमार! हमारा कुल-गौरव नष्ट हो गया तो भी तुम्हारे कारण पुलस्त्यकुल अमिट पुण्य का भागी हुआ। ऐसा सोचकर मैं विजयी भुजाओं को देखता और फूला नहीं समाता था। अब तुमने लौट आकर मेरे मन को और मुख को सुखा दिया है (आनंदहीन कर दिया है)। हाय! मेरा मन क्षुब्ध हो रहा है। १३३६

अऱप्पॆरुन् दुणैवर् तम्मै यवयमॆन् ऱडैन्द नित्तैत्
तुऱप्पदु तुणियार् तङ्ग ळारुयिर् तुऱन्द पोदुम्
इऱप्पॆनुम् बयत्तै विट्टा यिरामनैन् बालेप् पऱ्ऱिप्
पिऱप्पॆनुम् बुन्मै तीर्न्दाय् निन्नैन्दॆन्गोल् पॆयर्न्द वण्णम् 1337

अऱम्–धर्म के; पॆरुम् तुणैवर्–बड़े सहायक; तक्कळ् आर् उयिर्–अपने शरीर

से लगे प्राणों को; तुऱन्त पोतुम्–छोड़ना पड़े तो भी; तम्मै–अपने पास; अपयम् ॲत्ऱु–अभय चाहते हुए; अटैन्त निन्ऱै–आये तुम्हें; तुऱप्पतु–छोड़ने का; तुणियार्–निर्णय नहीं करेंगे; इऱप्पु ॲंतुम्–मृत्यु के; पयत्तै विट्टाय्–भय को छोड़ दिया; इरामन् ॲंत्पातॅप् पऱ्ऱि–राम जो है, उनकी शरण पकड़कर; पिऱप्पु ॲंतुम् पुन्मै–(राक्षस-) जन्म का अगौरव; तीर्न्ताय्–त्याग चुके; पॅयर्न्त वण्णम्–लौट आने की बात; ॲन् नितैन्तु कॉल्–क्या सोचकर तो। १३३७

श्रीराम, जो धर्म के बड़े सहायक हैं, अपनी जान दे देंगे पर शरणागत तुमको त्यागने की बात मन में नहीं लाएँगे। पहले ही मृत्यु-भय से मुक्त हो। अब राक्षसजन्म की हीनता से भी मुक्त हो गये। फिर भी यह लौट आना क्या सोचकर हुआ ? । १३३७

अऱमॅन् निन्ऱ नम्बऱ् कडिमैपॅऱ्ऱ् उवत्ताले
मऱमॅन् निन्ऱ मून्ऱु मरुङ्गऱ माऱ्ऱि मऱ्ऱुम्
तिऱमॅन् निन्ऱ तीमै यिम्मैये तीर्न्द शॅल्व
पिऱऱ्मनै नोक्कु वेमै युऱवॅन्प् पॅऱुदि पोलाम् 1338

अऱम् ॲंत निन्ऱ–धर्म ही-से रहनेवाले; नम्पऱ्कु–पुरुषोत्तम को; अटिमै–दासता; पॅऱ्ऱु–प्राप्त करके; अवत् तत्ताले–उनके द्वारा; मऱम् ॲंत–पाप (के मूल) ही; निन्ऱ–जो रहे; मून्ऱुम्–उन (अज्ञान, अन्यथा ज्ञान, विपरीत ज्ञान) तीनों को; मरुङ्कु अऱ–निशान तक मिटाकर; माऱ्ऱि–दूर करके; मऱ्ऱुम्–और; तिऱम् ॲंत निन्ऱ–सुदृढ़ रूप से रहनेवाले; तीमै–बुराइयों को; इम्मैये तीर्न्त–इसी जन्म में त्याग चुके; चॅल्व–श्रीमान्; पिऱऱ् मनै–परगृह (दारा); नोक्कुवेमै–देखनेवाले हमें; उऱवु ॲंत–बन्धु के रूप में; पॅऱुति पोलाम्–अपनाओगे क्या। १३३८

हे साक्षात् धर्मरूप ! श्रीराम की दासता ग्रहण कर उनकी कृपा से तुमने पाप के मूल (अज्ञान, अन्यथा ज्ञान और विपरीत ज्ञान आदि या अज्ञान, आवरण, विक्षेपादि) तीनों का निराकरण कर दिया। और अन्य बहुत सुदृढ़ बुराइयों को भी दूर कर दिया। यह सब इसी एक जन्म में कर लेनेवाले हे श्रीमान् ! अब परगृहाभिलाषी (परदारा पर दृष्टि डालने वाले) हमारा रिश्ता भी चाहोगे क्या ? । १३३८

नीदियुन् दरुम निन्ऱ निलैमैयुम् बुलमै तानुम्
आदियङ् गडवु ळाले यरुन्दव माऱ्ऱिप् पॅऱ्ऱाय्
वेदियर् तेवन् शॊल्लाल् विळिविला वायुप् पॅऱ्ऱाय्
शादियिन् पुन्मै यित्तुन् दविर्न्दिले पोलुन् दक्कोय् 1339

तक्कोय्–सुयोग्य; नीतियुम्–नीति और; तरुमम् निन्ऱ निलैमैयुम्–धर्म पर स्थित; पुलमै तानुम्–विद्वत्ता को; अरुतवम् आऱ्ऱि–कठोर तपस्या करके; आति अम् कटवुळाले–आदिदेव ब्रह्मा से; पॅऱ्ऱाय्–प्राप्त किया; वेतियर् तेवन्–विप्रदेव (ब्रह्मा) के; चॊल्लाल्–आशीर्वचन से; विळिवु इला–अमर; आयु पॅऱ्ऱाय्–आयु

प्राप्त की; चातियिन् पुन्मै–जातिगत क्षुद्रता को; इन्नुम्–अब भी; तविर्न्तिलै पोलुम्–त्यागा नहीं क्या शायद। १३३९

हे सुयोग्य ! तुमने भारी तपस्या की और आदिदेव ब्रह्माजी से नीति का ज्ञान, धर्म पर आस्था, उत्तम ज्ञान आदि प्राप्त किया है। और उन्हीं विप्रदेव ब्रह्मा के आशीर्वाद से चिरंजीवता भी प्राप्त की। तब भी जातिजन्य क्षुद्रता नहीं छोड़ी क्या ? १३३९

※ एऱ्ऱिय विल्लो ऩियार्क्कु मिऱैयव ऩिराम ऩिन्ऱाऩ्
माऱ्ऱरुन् दम्बि निन्ऱान् मऱ्ऱैयोर् मुऱ्ऱु निन्ऱार्
कूऱ्ऱमु निन्ऱ दॆय्वक् कॊल्लिय विदियु निन्ऱ
तोऱ्ऱवॆम् बक्क लैय वॆव्वलि तॊलैय वन्दाय् 1340

ॲम्मै कॊल्लिय–हमें मारने के लिए; यार्क्कुम् इऱैयवऩ्–सर्वेश्वर; इरामन्–श्रीराम; एऱ्ऱिय विल्लोन्–प्रत्यंचा-चढ़े-धनुर्धर; निन्ऱान्–आकर स्थित हैं; माऱु अरु–अनुपम; तम्पि–(उनका) अनुज; निन्ऱान्–(तैयार) खड़ा है; मऱ्ऱैयोर्–अन्य; मुऱ्ऱु निन्ऱार्–पूर्ण रूप से हैं; कूऱ्ऱमुम् निन्ऱतु–यम भी प्रस्तुत है; वितियुम् निन्ऱ–विधि भी तैयार है; ऐय–तात; वॆव्वलि तॊलैय–अपना अपार बल नष्ट करने के लिए ही; तोऱ्ऱ–हारे हुए; ॲम् पक्कल्–हमारी तरफ़; वन्ताय्–आये। १३४०

सर्वेश्वर श्रीराम धनुसन्नद्ध होकर हम सबको मारने के संकल्प के साथ आ खड़े हैं। अप्रतिम उनका भाई लक्ष्मण भी साथ विद्यमान है। अन्य वानर वीर भी पूर्ण रूप से मिले खड़े हैं। यम और विधि भी प्रतीक्षा में तैयार हैं। हे तात ! इस स्थिति में अपना बल खोने के लिए ही क्या तुम हारे हुए हमारी तरफ़ आ गये ? । १३४०

ऐयनी ययोत्ति वेन्दऱ् कटॆक्कल माहि याङ्गे
उय्हिलै यन्तिन् मऱ्ऱिव् वरक्करा युळ्ळो मॆल्ला
मॆय्हणै मारि याले यिऱन्दुपाळ् पडुदुम् पट्टाऱ्
कैयिऩा लॆण्णीर् नल्हिक् कडन्ऴिप् पारैक् काट्टाय् 1341

ऐय–मेरे प्रभु; इ अरक्कराय्–ये राक्षस जो हैं; उळ्ळोम् ॲल्लाम्–हम सभी; ॲय् कणै मारियाले–प्रेषित शर-वर्षा से; इऱन्तु–मरकर; पाऴ् पटुतुम्–वृथा हो जाएँगे; पट्टाल्–मरें तब; नी–तुम; अयोत्ति वेन्तऱ्कु–अयोध्या के राजा के; अटैक्कलम् आकि–आश्रित बनकर; आङ्के–वहीं; उय्किलै अन्तिन्–नहीं बचे रहोगे तो; कैयिनाल्–हाथों से; ॲण् नीर्–तिलोदक; नल्कि–(तर्पण में) दान करके; कटन् कऴिप्पारै–(पितृ-) ऋण चुकानेवाले को; काट्टाय्–दिखाओ। १३४१

हे मेरे राजा ! ये जो राक्षस हैं, उनका रामप्रेरित शरवर्षा से मर मिटना ध्रुव है। तब अगर तुम अयोध्यापति का शरणागत रहकर वहीं

बचे नहीं रहोगे तो तुम अपने हाथ से भरे हम लोगों के प्रति तिलोदक-क्रिया करनेवाला कौन रहेगा ? दिखाओ तो। १३४१

❀ वरुवदु मिलङ्गै मूदूर्प् पुलैयॅला माण्ड पिन्नैत्
तिरुवुरै मार्ब नोडुम् पुहुन्दुपि नॅन्रुन् दीराप्
पॊरुवरुञ् जॅल्वन् दुय्क्कप् पोहुदि विरैवि नॅन्रान्
करुममुण् डुरैप्प दॅन्रा नुरैयॅनक् कळर लुर्रान् 1342

इलङ्कै मूतूर्–(तुम्हारा) लंका की पुरातन नगरी को; वरुवतुम्–आना भी; पुलै ऍलाम्–सभी क्षुद्रों (राक्षसों) के; माण्ट पिन्नै–मरने के बाद हो; तिरु उरै मार्पत्तोटुम्–श्री-वक्ष श्रीराम के साथ; पुकुन्तु–प्रवेश करके; पिन्–बाद; ऍन्रुम् तीरा–कभी क्षय न होनेवाला; पॊरु अरु–उपमाहीन; चॅल्वम् तुय्क्क–विभव भोगने; विरैविन् पोतुति–शीघ्र चले जाओ; ऍन्रान्–कहा; करुमम् उण्टु–कार्य है; उरैप्पतु–कहने को; ऍन्रान्–कहा; उरै–कहो; ऍन–कहने पर; कळरल् उर्रान्–(विभीषण) कहने लगा। १३४२

तुम प्राचीन लंका नगर आओ तब, जब ये सारे निकृष्ट लोग मर चुके होंगे ! और श्रीनिवासवक्ष श्रीराम के साथ आकर, बाद अक्षय और अप्रतिम वैभव भोगने आओ। अब तुम शीघ्र श्रीराम के पास लौट चलो। कुम्भकर्ण के यह कह चुकने पर विभीषण ने कहा कि तुमसे एक कार्य बताना है। कुम्भकर्ण ने कहा कि बताओ। विभीषण कहने लगा। १३४२

इरुळुरु शिन्दै येऱ्कु मिन्नरुळ् शुरन्द वीरन्
अरुळुनी शेरि नॊन्रो अवयमु मळिक्कु मन्रि
मरुळुरु पिऱवि नोय्क्कु मरुन्दुमाम् माऱ्ऱिच् चॅल्लुम्
उरुळुरु शहड वाऴ्क्कै यॊऴित्तुवी डळिक्कु मन्रे 1343

इरुळ् उरु–अज्ञान-भरे; चिन्तै येऱ्कुम्–मन वाले मेरे प्रति भी; इन् अरुळ्–मधुर करुणा; चुरन्त–पुष्कल मात्रा में करनेवाले; वीरन्–श्रीवीरराघव; नी चेरिन्–तुम आओ तो भी; अरुळुम्–दया करेंगे; ऒन्रो–क्या वही एक है; अवयमुम् अळिक्कुम्–अभय प्रदान भी करेंगे; अन्रि–अलावा; मरुळ् उरु–अविद्याजन्य; पिऱवि नोय्क्कुम्–भव-रोग की भी; मरुन्तुम् आम्–ओषधि होगी; माऱ्ऱि चॅल्लुम्–घूमते चलनेवाले; उरुळ् उरु–चक्रसहित; चकटम् वाऴ्क्कै–छकड़े का जीवन; ऒऴित्तु–दूर करके; वीटु अळिक्कुम्–मोक्ष दिला देंगे। १३४३

अज्ञानमन मेरे प्रति भी मधुर दया दिखानेवाले श्रीवीरराघव तुम भी आओ तो दया दिखाएँगे। यही (एक) नहीं। अभयप्रदान भी करेंगे। अलावा इसके अविद्याजन्य भवरोग की दवा भी होंगे। छकड़े के घूमते चक्र के समान सुख-दुःख के इस भूलोकवास से दूरकर मोक्ष-सुख दिला देंगे। १३४३

ॲन्नक्कवन् तन्द शॅल्वत् तिलङ्गैयु मरशु मॅल्लाम्
नितक्कुनान् तरुवन् तन्दुन् नेवलि नॅडिदि निऱ्पन्
उन्नक्किदि तुरुदि यिलूलै युत्तम वन्विन् वन्देन्
मतक्कुनोय् तुडैत्तु वन्द मरबैयुम् विळक्कु वाळि 1344

उत्तम–उत्तम; ॲन्नक्कु–मुझे; अवन् तन्त चॅल्वत्तु–उन्होंने जो दिया, उस वैभवयुक्त; इलङ्कैयुम्–लंका को और; अरचुम्–राज्याधिकार; ॲल्लाम्–और सब; नान् नितक्कु तरुवन्–मैं तुम्हें दे दूंगा; तन्तु–देकर; उन् एवलिन्–तुम्हारी सेवा में; नॅटितिन् निऱ्पन्–बहुत काल तक लगा रहूँगा; उन्नक्कु–तुम्हारा; इतिन् उऱुति इल्लै–इससे बढ़कर कोई हितकारी कार्य नहीं है; उन्पिन् वन्तेन्–तुम्हारे अनुज, मेरा; मनक्कु नोय्–मन का रोग; तुटैत्तु–दूर करके; वन्त मरपैयुम्–जन्म-कुल को भी; विळक्कु–रोशन करो। १३४४

उत्तम ! उन्होंने जो वैभव, लंका और उस पर आधिपत्य आदि प्रदान किया उस सबको मैं तुम्हें दे दूंगा। देकर तुम्हारी सेवा में अविरत निरत रहूँगा। इससे बढ़कर तुम्हारा कोई हित नहीं हो सकता। तुम्हारा अनुज हूँ मैं, मेरा मानसिक रोग दूर करो और अपने कुल को भी रोशन कराओ। जयजीव ! । १३४४

पोदलो वरिदु पोनाऱ् पुहलिड मिल्लै वल्ले
शादलो शरदम् नीदि यऱत्तॊडुन् दळुवि निन्ऱाय्
आदला लुळदा मावि यनायमे युहुत्तॅन् ऐय
वेदनून् मरबुक् केऱ्ऱ वॊळुक्कमे पिडिक्क वेण्डुम् 1345

अऱत्तॊटुम्–धर्म के साथ; नीति तळुवि निन्ऱाय्–नीतिसम्मत मार्ग में चलनेवाले; पोतलो अरितु–बचना असाध्य है; पोनाल्–बच चलोगे भी तो; पुकलिटम् इल्लै–आश्रयस्थान नहीं; वल्ले–शीघ्र; चातलो चरतम्–मरना निश्चित है; आतलाल्–इसलिए; उळतु आम् आवि–जिन्दा जीव को; अनायमे–वृथा ही; उकुत्तु–छोड़ने से; ॲन्–क्या लाभ; वेतम् नूल् मरपुक्कु एऱ्ऱ–वेदोक्त रीति के अनुसार ही; ऒळुक्कमे–चालचलन; पिटिक्क वेण्टुम्–अपनाना चाहिए। १३४५

हे धार्मिक और नीतिमान् ! यों तो बच जाना असम्भव है। बच जाओगे भी तो कहाँ आश्रय पाओगे ? शीघ्र मरना ही निश्चित है ! इसलिए अपने प्राणों को मुफ़्त क्यों गँवाओ ? हे प्रभु ! वेदशास्त्रोक्त मार्ग का अवलम्बन ही श्रेष्ठ होगा। १३४५

तीयवै शॅय्व राहिऱ् चिऱन्दवर् पिऱन्द वुऱ्ऱार्
तायवै तन्दै मारॅन् ऱुणर्वरो तरुमम् बार्प्पार्
नीयवै यऱिदि यन्ऱे नितक्कुना नुरॅप्प दॅन्नो
तूयवै तुणिन्द पोदु पऴिवन्दु तॊडर्व दुण्डो 1346

तरुमम् पार्प्पार्–धर्मदृष्टि लोग; तीयवै चॅय्वर् आकिल्–बुरे काम करनेवाले हों उनको; चिऱन्तवर्–(अन्यथा) श्रेष्ठ हैं; पिऱन्त उऱ्ऱार्–जन्म के कारण बन्धु हैं; अवै ताय् तन्तै मार्–वे माता, पिता आदि हैं; ॲन्ऱु–मानकर; उणर्वरो–वैसा रिश्ता निबाहेंगे क्या; नी–तुम; अवै–वे सब; अऱिति अन्ऱे–जानते नहीं क्या; निन्तक्कु–तुम्हें; नान्–मैं; उरैप्पतु ॲन्तो–कहूँ क्या; तूयवै तुणिन्त पोतु–पवित्र काम करना निश्चित करने के बाद; पऴि वन्तु–निन्दा आकर; तॉटर्वतु उण्टो–लगेगी क्या। १३४६

धर्म ही पर दृष्टि रखनेवाले लोग, बुरा काम करनेवाले चाहे अन्यथा श्रेष्ठ बन्धु लोग हों, या माँ-बाप ही क्यों न हों, उन्हें मानेंगे क्या ? तुम यह सब जानते ही हो न ! तुमको मैं क्या समझाऊँ ? जब पवित्र संकल्प किया जाता है तब अपयश भी लगेगा क्या ? । १३४६

मक्कळैक् कुरवर् तम्मै मादरै मऱ्ऱु ळोरै
ऑक्कुमिन् नुयिरन् नारै युदविशॅय् दारो डॊन्ऱत्
तुक्कमित् तॊडर्च्चि यॅन्ऱु तुऱप्पराऱ् ऱुणिवु पूण्डोर्
मिक्कदु नलने याह वीडुपे ऱळिक्कु मन्ऱे 1347

इ तॊटर्च्चि–यह बन्धुपाश; तुक्कम्–दुःखजनक है; ॲन्ऱु–ऐसा; तुणिवु पूण्टोर्–निश्चय जिन्होंने कर लिया है वे; मक्कळै–पुत्रों को; कुरवर् तम्मै–माता, पिता को; मातरै–पत्नियों को; मऱ्ऱु उळोरै–अन्य जो हैं, उन रिश्तेदारों को; ऑक्कुम् इन् उयिर् अन्नारै–सम और प्यारे प्राण-सम मित्रों को; उतवि चॅय्तारोटु ऑन्ऱ–सहायों के साथ मिलाकर; तुऱप्पर्–त्यागेंगे ही; मिक्कतु–श्रेष्ठ वह संन्यास; नलने आक–भला ही बनकर; वीटु पेऱु अळिक्कुम् अन्ऱे–मोक्ष-लाभ दिला देगा न। १३४७

इस बन्धुपाश को निश्चित रूप से दुःख माननेवाले लोग अपने पुत्रों, माता, पिता (गुरुओं), दाराओं, अन्य रिश्तेदारों और प्राणप्यारे मित्रों को भी तज देते हैं। अतिश्रेष्ठ वह संन्यासवृत्ति भला ही करती है और मोक्ष का पुरुषार्थ सिद्ध कराती है। १३४७

तीविनै यॊरुवन् शॅय्य अवनॊडुन् दीङ्गि लादोर्
वीविनै युऱुद लैय मेन्मैयो कोळ्मै तानो
आय्विनै युडैयै यन्ऱे यऱत्तिनै नोक्कि यीन्ऱ
ताय्विनै शॅय्य वन्ऱो कॊन्ऱनन् तवत्तिन् मिक्कान् 1348

ऐय–तात; ऑरुवन्–एक के; ती विनै चॅय्य–बुरा काम करने पर; अवनोटुम्–उसके साथ; तीङ्कु इलातोर्–जिन्होंने कोई बुराई नहीं की है, उनका; वीविनै उऱुतल्–नाश को प्राप्त होना; मेन्मैयो–श्लाघ्य काम है; कोळ्मै तानो–या निकृष्ट काम ही है; आय्विनै–विवेकशक्ति; उटैयै अन्ऱे–रखनेवाले हो न; ईन्ऱ ताय्–जननी माता को; विनै चॅय्य अन्ऱो–बुरा काम करने पर ही तो; तवत्तिन् मिक्कान्–

श्रेष्ठ तपस्वी (परशुराम) ने; अऱत्तिऩै नोक्कि–धर्म का विचार करके; कॊऩ्ऱतऩ्–मार दिया। १३४८

तात ! कोई बुरा काम करे और उसके साथ बुरा काम न करनेवाले भी क्यों मरें ? यह श्रेष्ठ काम है क्या ? यह निकृष्ट ही है ! तुम कर्म-विवेकी हो ! श्रेष्ठ तपस्वी परशुराम ने धर्म मानकर अपनी माता को भी मारा इसलिए न कि माता ने बुरा काम किया। १३४८

कण्णुदल् तीमै शॆय्यक् कमलत्तु मुळैत्त तादै
अण्णल्तऩ् तलैयि ऩॊऩ्ऱै यरुक्ककवॆऩ् ऱमैन्दा ऩऩ्ऱे
पुण्णुऱु पुलवु वेलोय् पऴियॊडुम् बोरुन्दिप् पिऩ्ऩै
ऎण्णुऱा नरहिऩ् वीऴ्वदु अऱिञरु मियऱ्ऱु वारो 1349

कण्णुतल् तीमै चॆय्य–भालनेत्र शिवजी के हानि करने पर; कमलत्तु मुळैत्त तातै–कमलभवविधाता; अण्णल् तऩ्–महिमामय ब्रह्मा के; तलैयिऩ् ऒऩ्ऱै–सिरों में एक को; अऱुक्क ऎऩ्ऱु–काटने को; अमैन्ताऩ् अऩ्ऱे–उद्यत हो गया था न; पुण् पुलवु उऱु–व्रण करके उससे मांस-गन्ध से लिप्त; वेलोय्–भालाधारी; पऴियॊटुम् पॊरुन्ति–अपयश के साथ रहकर; पिऩ्ऩै–फिर भी; ऎण्णुऱा–अचित्य; नरकिऩ्–नरक में; वीऴ्वतु–गिरानेवाला काम; अऱिञरुम्–विद्वान् लोग भी; इयऱ्ऱुवारो–करेंगे क्या। १३४६

भालनेत्र शिव ने कमलभव, महिमामय ब्रह्मा का सिर तक इसलिए काट देने का कार्य सोचा कि ब्रह्मा ने कोई बुराई की थी। (कहा जाता है ब्रह्मा ने शिव के सामने डींग मारी कि मेरे भी पाँच सिर हैं। शिव क्या बड़े हुए अपने पाँच सिर लेकर ? तब शिव ने उनका एक सिर काट दिया। तंजाऊर नगर के पास तिरुक्कण्डियूर नामक शिवस्थल है। यहीं यह कार्य हुआ था —माना जाता है।) व्रणमांसलिप्त भालाधारी भैया ! अपयश का भागी बनाकर नरक में गिरनेवाला काम कोई ज्ञानी करेगा क्या ? । १३४९

उडलिडैत् तोऩ्ऱिऱ् ऱॊऩ्ऱै यरुत्तद ऩुदिर मूऱ्ऱिच्
चुडलुऱच् चुट्टु वेऱोर् मरुन्दिऩाऱ् ऱुयरन् दीर्वर्
कडलिडैक् कोट्टन् देय्त्तुक् कऴिवदु करुम मऩ्ऱाल्
मडलुडै यलङ्गल् मार्ब मदियुडै यवर्क्कु मऩ्ऩो 1350

मटल् उटै–बलपूर्ण; अलङ्कल् मार्प–(पुष्पों की) मालाधारी वक्ष वाले; उटल् इटै–शरीर में; तोऩ्ऱिऱ्ऱु ऒऩ्ऱै–जो निकला उस एक (फोड़े) को; अऱुत्तु–काटकर; अतऩ् उतिरम् ऊऱ्ऱि–उसके अन्दर के रक्त को निकालकर; चुटल् उऱ–क्षार लगाकर; चुट्टु–जलाते हैं; वेऱु ओर्–अन्य एक; मरुन्ति ताल्–दवा से; तुयरम् तीर्वर्–कष्ट निवारण पाते हैं; मति उटैयवर्क्कु–बुद्धिमानों के लिए;

कोट्टम्–'कोष्ट' नाम की सुगन्धित लकड़ी को; कटलिटै–समुद्र में; तेय्त्तु कळिवतु–घिसकर छुड़ा देना; करुमम् अन्ऱु–करने योग्य काम नहीं होगा। १३५०

दलसंकुल पुष्पों की माला से शोभित वक्षवाले! शरीर में ही फोड़ा निकलता है तो लोग उसे नश्तर लगाकर खोल देते हैं, बुरे रक्त को निकाल देते हैं, आग से जलाकर नमक छिड़काते हैं। फिर वे दूसरी दवा लगाकर पीड़ा से निवारण पा लेते हैं। 'कोष्ट' (सुगन्धित द्रव्य) को घिसकर समुद्र में घोल दो —यह बुद्धिमानों के निकट उचित कार्य नहीं लगता। १३५०

काक्कला नुम्मुन् तन्नै यॅन्निनदु कण्ड दिल्लै
आक्कलाम् मऱ्ऱत्तै वेऱे यॅन्निनु माव दिल्लै
तीक्कलाङ् गॉण्डु तेवर् शिरिक्कलाञ् जॅरुवि लावि
पोक्कलाम् बुहलाम् पिन्नै नरहन्ऱिप् पॊरुन्दिऱ् ऱुण्डो 1351

नुम् मुन् तन्नै–तुम्हारे बड़े भाई को; काक्कलाम् ऍन्निन्–रक्षा करना चाहो तो; अतु–उसका कोई उपाय; कण्टतु इल्लै–नहीं दिखता; मऱ्ऱत्तै–पाप-मार्ग को; वेऱे आक्कलाम्–बदल देना चाहें; ऍन्निनुम्–तो भी; आवतु इल्लै–सम्भव नहीं है; ती कलाम् कॊण्ट–बुरा कलह चाहकर; तेवर् चिरिक्कल् आम्–देवों द्वारा परहसनीय; चॅरुविल्–युद्ध में; आवि पोक्कलाम्–प्राण त्याग सकते हो; पिन्नै–बाद; नरकु पुकलाम्–नरक पहुँच सकते हो; अन्ऱि–इसके सिवा; पॊरुन्तिऱ्ऱु–जो जुड़ेगा; उण्टो–वह कुछ होगा क्या। १३५१

तुम्हारे बड़े भाई को रक्षित करना चाहें तो भी कोई मार्ग नहीं दीखता। पापवृत्ति को बदलना चाहें तो भी वह साध्य नहीं लगता। अनावश्यक बुरा कलह चाहकर जो यह युद्ध उसने बुला लिया है देवों के परिहास के योग्य उसमें मर सकते हो, मरकर नरक जा सकते हो! इसके सिवा कोई होनेवाला काम भी है क्या? । १३५१

मऱङ्गिळर् शॅरुविल् वॅन्ऱु वाळ्न्तिलै मण्णिन् मेला
यिऱङ्गिनै यिन्ऱु काऱु मिळमैयुम् वऱिदे येह
उऱङ्गिनै यॅन्ब दल्ला लुऱ्ऱदीन् ऱुळदो ऍन्नो
अऱङ्गॊड वुयिरै नीत्तु मेऱ्कॊळ्वा नमैन्द दैया 1352

ऐया–तात; मऱम् किळर्–वीरता जहाँ खिलती है, उस; चॅरुविल्–युद्ध में; वॅन्ऱु–जीत पाकर; मण्णिन्–पृथ्वी पर; मेलाय्–बड़े (बनकर); वाळ्न्तिलै–नहीं रहे; इऱङ्किनै–छोटे बनकर; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; इळमैयुम् वऱिते एक–युवावस्था के व्यर्थ जाते; उऱङ्किनै–सोते रहे; ऍन्पतु अल्लाल्–यह छोड़कर; उऱ्ऱतु ऒन्ऱु–मिला कुछ; उळतो–है क्या; नी–तुम; अऱम् कॊट–धर्म का नाश करके; उयिरै नीत्तु–जीवन त्यागकर; मेऱ्कॊळ्वान् अमैन्ततु–आगे पाओ, ऐसा रहता है; ऍन्–क्या। १३५२

भाई ! वीरता के उत्तेजक युद्ध में विजय पाकर पृथ्वी पर गौरव के साथ रह नहीं पाये। गौरवहीन रहे, आज तक यौवन को वथा जाने दिया और तुम सोते रहे। फिर क्या कर पाये ? धर्म को अपहृत करके मरने के लिए इस युद्ध में भाग लेने जो आये हो, इससे तुम्हें क्या मिलेगा ? । १३५२

तिरुमऱु मार्बऩ् नल्ह अऩन्दरुन् दीर्न्दु शॅल्वप्
पॅरुमैयु मॅय्दि वाऴ़्दि ईऱ़िला नाळुम् बॅऱ़्ऱाय्
ऑरुमैये यरशु शॅय्वा युरिमैयु मुन्नते ऑन्ऱुम्
अरुमैयु मिवऱ़्ऱि निल्लै कालमु मडुत्त दैया 1353

ऐया–स्वामी; तिरु–श्री और; मऱु–श्रीवास का चिह्न; मार्पऩ्–दोनों से विशिष्ट वक्ष वाले के; नल्क–कृपा करने पर; अऩन्तरुम्–निद्रा भी; तीर्न्तु–त्यागकर; चॅल्वम् पॅरुमैयुम्–धन और गौरव; ऍय्ति–पाकर; ईऱ़ इला–अनन्त; नाळुम्–आयु; पॅऱ़्ऱाय्–पाकर; वाऴ़्ति–रहोगे; ऑरुमैये–अकेले ही; अरचु चॅय्वाय्–शासन करोगे; उरिमैयुम् उन्तते–सारा स्वत्व तुम्हारा ही रहेगा; इवऱ़्ऱिऩ्–इनमें; ऑन्ऱुम् अरुमैयुम् इल्लै–कोई कठिनाई भी नहीं; कालमुम्–युक्त समय भी; अटुत्ततु–आया है। १३५३

श्री-श्रीवत्सांकितवक्ष श्रीराम की कृपा से तुम निद्रा के वश से छूटोगे। तुम्हें सम्पत्ति और गौरव प्राप्त होगा। और चिरंजीव बन जाओगे। एकछत्र राज करोगे और सारे स्वत्व तुम्हारे हो जाएँगे। इनमें कोई भी कठिनता नहीं है। योग्य काल भी आ गया है। १३५३

तेवर्क्कुन् देवन् नल्ह विलङ्गैयिऱ़् चॅल्वम् बॅऱ़्ऱाल्
यावर्क्कुञ् जिऱ़ियै यल्लै यारुन्ने नलियु मीट्टार्
मूवर्क्कु मुदल्व रान मूर्त्तिया रऱ़त्तै मुऱ़्ऱुङ्
कावऱ़्कुप् पुहुन्दु निन्ऱार् काहुत्त वेडङ् गाट्टि 1354

मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों के; मुतल्वर् आऩ–जो आदि हैं; मूर्त्तियार्–वे मूर्ति; अऱ़त्तै–धर्म की; मुऱ़्ऱुम् कावऱ़्कु–संरक्षा के लिए; काकुत्त वेटम् काट्टि–काकुत्स्थ का अवतार लेकर; पुकुन्तु निन्ऱार्–(भूमि पर) आये हैं; तेवर्क्कुम् तेवऩ्–देवदेव के; नल्क–देने से; इलङ्कैयिऩ् चॅल्वम् पॅऱ़्ऱाल्–लंका की राज्यश्री पाओगे तो; यावर्क्कुम् चिऱ़ियै अल्लै–तुम किसी से छोटा नहीं रहोगे; उन्ने–तुम्हें; नलियुम् ईट्टार्–कष्ट दे सकनेवाला; यार्–कौन। १३५४

त्रिदेव के आदिमूर्ति धर्मसंरक्षणार्थ काकुत्स्थ के रूप में अवतार ले आये हैं। वे देवदेव हैं। उनके वरदान से तुम लंका का राज्य पाओ तो तुम किसी से कम नहीं रहोगे। तुम्हें त्रस्त करने की शक्ति रखनेवाला कौन होगा ? । १३५४

उऩ्मक्क ळाहि युळ्ळा रुऩ्तोंडु मौरुङ्गु तोऩ्ऱम्
ॲऩ्मक्क ळाहि युळ्ळा रिक्कुडिक् किऱुदि शूऴ्न्दाऩ्
तऩ्मक्क ळाहि युळ्ळार् तलैयोडुन् दिरिव रऩ्ऱे
पुऩ्मक्कट् टरुमम् बूणाप् पुलमक्कळ् तरुमम् बूण्डाल् 1355

नी-तुम; पुऩ् मक्कळ्-निकृष्ट लोगों का; तरुमम् पूणा-धर्म न अपनाकर; पुलम् मक्कळ्-ज्ञानियों का; तरुमम् पूण्टाल्-धर्म-मार्ग अपनाओ तो; उऩ् मक्कळ् आकि उळ्ळार्-तुम्हारे पुत्र जो हुए हैं वे; उऩ्तोंटुम् ऑरुङ्कु तोऩ्ऱम्-तुम्हारे सहोदर; ॲऩ् मक्कळ् आकि उळ्ळार्-मेरे जो पुत्र हुए हैं वे; इ कुटिक्कु-इस घराने का; इऱुति चूऴ्न्ताऩ् तऩ्-अन्त लानेवाले (रावण) के; मक्कळ् आकि उळ्ळार्-जो पुत्र हुए हैं, वे; तलैयुटऩ्-उन्नत सिर हो; तिरिवर् अऩ्ऱे-घूमेंगे न। १३५५

तुम नीच लोगों का मार्ग मत अपनाओ और ज्ञानी लोगों का धर्म अपनाओ तो तुम्हारी सन्तानें, तुम्हारे अनुज, मेरी सन्तानें और अपने ही कुलांतक रावण की सन्तानें —सभी श्रेष्ठ लोगों के मध्य सिर उठाए घूम सकेंगी। १३५५

मुऩिवरुङ् गरुणै वेप्पर् मूऩ्ऱुल हत्तुन् दोऩ्ऱि
इऩिवरुम् बहैयु मिल्लै यीऱुण्डॆऩ् ऱिरङ्ग वेण्डा
तुऩिवरुञ् जॆरुन राऩ तेवरे तुणैव रावर्
कऩिवरुङ् गालत् तैय पूक्कोय्यक करुद लामो 1356

मुऩिवरुम्-मुनिगण भी; करुणै वेप्पर्-करुणा करेंगे; मूऩ्ऱु उलकत्तुम्-तीनों लोकों में; इऩि-अब; तोऩ्ऱि वरुम्-प्रकट हो आनेवाले; पकैयुम् इल्लै-शत्रु नहीं होंगे; ईऱु उण्टु-अंत (मरण) हो जायगा; ॲऩ्ऱु-ऐसा; इरङ्क वेण्टा-दुःख नहीं करना पड़ेगा; तुऩिवरुम्-अप्रिय लगनेवाले; चॆरुनर् आऩ-शत्रु जो बने हैं, वे; तेवरे-देव स्वयं; तुणैवर् आवर्-मित्र बन जाएँगे; ऐय-भाई; कऩि वरुम् कालत्तु-फलते समय; पू कॊय्य-फूल तोड़ने की बात; करुतलामो-सोचना (ठीक) है क्या। १३५६

और मुनिगण भी करुणा करेंगे। तीनों लोकों में कोई शत्रु प्रगट हो नहीं आयगा। मरण होगा यह डर भी नहीं रहेगा। अप्रिय शत्रु जो हैं वे देव भी मित्र बन जाएँगे। तात! जब फल तोड़ने का काल आनेवाला है, तब फूलों को तोड़ लेने का विचार भी किया जा सकता है क्या? । १३५६

❀ वेदना यहत्ते यॆऩ्ऩैक् करुणैयाल् वेण्डि विट्टाऩ्
कादला लुऩ्मेल् वैत्त करुणैयाऱ् करुम मोदे
आदला लवऩैक् काण वऱुत्तोडुन् दिरम्बा दैय
पोदुवाय् नीये यॆऩ्ऩप् पोऩ्ऩडि यिरण्डुम् बूण्डाऩ् 1357

वेत नायकतै–वेदनायक ने स्वयं; करुणैयाल्–(अहेतुक, स्वाभाविक) करुणा से; कातलाल्–और मुझ पर स्नेह करके; उन् मेल् वैत्त–तुम्हारे प्रति हुई; करुणैयाल्–दया से; वेण्टि–तुमसे प्रार्थना करने के लिए; ॲन्नै विट्टान्–मुझे भेजा है; करुमम् ईतॆ–इतना ही कार्य ; आतलाल्–इसलिए; ऐय–भाई; अऱत्तोटुम्–धर्म से; तिऱम्पातु–विमुख न बनकर; अवनै काण–उनसे मिलने; नीयॆ–तुम ही; पोतुवाय्–आओ; ॲन्ऩ–कहकर; पोन् अटि–उसके श्रेष्ठ चरण; इरण्टुम्–दोनों को; पूण्टान्–धारण कर लिया (पैरों पर सिर नवाया)। १३५७

वेदनायक श्रीराम ने ही अपनी अहेतुक अपार करुणा से, मुझ पर प्रेम और तुम पर दया के कारण मुझे तुम्हारे पास यह प्रार्थना करने के लिए भेजा है। कार्य इतना ही। इसलिए, भाई, प्रभु ! धर्म-विमुख मत होओ और तुम्हीं श्रीराम से मिलने आ जाओ। यह कहकर विभीषण ने उसके सुन्दर चरणों पर अपने सिर को रखते हुए दण्डवत की। १३५७

❀ तुम्बैयन् दॉडैयल् मालैच् चुडर्मुडि पडियिल् तोयप्
पम्बुपोऱ् कळल्हळ् कैयाऱ् पऱ्ऱिनन् पुलम्बुम् बॉऱ्ऱोळ्
तम्बियै यॆडुत्तु माऱ्बिल् तळुविनन् तडङ्ग णूडु
वॆम्बुणीर् शॊरिय निन्ऱान् इन्नैयन विळम्ब लुऱ्ऱान् 1358

तुम्पै–'तुंबै' (नामक); अम् तॊटैयल्–सुन्दर फूलों की गुँथी; मालै–माला से अलंकृत; चुटर् मुटि–प्रकाशमय मुकुट को; पटियिल् तोय–भूमि पर रखकर; पम्पु–रुणनशील; पोन् कळल्कळ्–सुन्दर पायलों के चरणों को; कैयाल् पऱ्ऱिनन्–हाथों से पकड़कर; पुलम्पुम्–विलापनेवाले; पोन् तोळ्–सुन्दर-बाहु; तम्पियै–अनुज को; ॲटुत्तु–उठाकर; माऱ्पिल् तळुवि–छाती से लगाकर; तन् तट कण् ऊटु–अपनी विशाल आँखों से; वॆम् पुण् नीर्–गरम रुधिर-सम आँसू; चॊरिय–बहाते हुए; निन्ऱान्–खड़ा रहा; इन्नैयन–ये बातें; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। १३५८

'तुंबै' की माला से अलंकृत उज्ज्वल मुकुट को भूमि पर लगने देते हुए कुम्भकर्ण के रुणनशील पायलधारी चरणों को पकड़कर विभीषण विलाप रहा था। कुम्भकर्ण ने सुन्दर कन्धों वाले उसे उठाया, अपनी छाती से लगा लिया। अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से गरम रुधिर-जल बहाता हुआ वह यों बोलने लगा। १३५८

❀ नीर्क्कोल वाळ्वै नच्चि नॆडिदुनाळ् वळर्त्तु नीङ्गाप्
पोर्क्कोलञ् जॆय्दु विट्टाऱ् कुयिर्हॊडा दड्गुप् पोन्दॆन्
तार्क्कोल मेनि मैन्द ॲन्नुतुयर् तविर्त्ति याहिल्
कार्क्कोल मेनि यानैक् कूडुदि कडिदि नॆहि 1359

तार्–मालायुक्त; कोल मेनि–सुन्दर शरीरी; मैन्त–कुमार; नॆटितु नाळ् वळर्त्तु–बहुत दिनों से पालकर; नीङ्का–न बदलने योग्य रीति से; पोर् कोलम्–युद्धसज्जा; चॆय्तु विट्टाऱ्कु–करके जिसने छोड़ा है, उसके लिए; उयिर् कॊटातु–

प्राण उत्सर्ग न करके; नीर् कोल वाऴ्वै–जल पर के चित्र के समान जीवन को; नच्चि–चाहकर; अङ्कु पोन्तु–वहाँ जाकर; अॅन्–क्या होगा; अॅन् तुयर्–मेरा दुःख; तविर्त्ति आकिल्–दूर करना चाहो तो; कार् कोल मेत्तियातै–मेघ-सुन्दर रूप से; कटितिन् एकि–शीघ्र जाकर; कूट्ति–मिल जाओ। १३५९

मालाओं से शोभायमान सुन्दर शरीरी! रावण ने मुझे बहुत दिनों से पाला। आज अविमुक्त रूप से युद्धसाज सजाकर भेजा है। उसके लिए जान न देकर जलचित्र-सम जीवन की चाह से श्रीराम के पास जाने से क्या होगा? अगर तुम मेरा दुःख दूर करना चाहो तो तुरन्त श्रीराम के पास जा मिलो। १३५९

※ मलरिन्मे लिरुन्द वळ्ळल् वऴुविला वरत्ति नाल्नी
उलैविलात् तरुमम् बूण्डाय् उलहुळ दनैयु मुळ्ळाय्
तलैवनी युलहुक् कॅल्लाम् उनक्कदु तक्क देयाल्
पुलैयुरु मरण मॅयद लॅनक्किदु पुहऴ् देयाल् 1360

मलरिन् मेल् इरुन्त–कमल पर आसीन; वळ्ळल्–उदार प्रभु (ब्रह्मा) के; वऴुविला वरत्तिनाल्–अमोघ वर से; नी–तुमने; उलैवु इला–अक्षय; तरुमम् पूण्टाय्–धर्म-मार्ग अपनाया; उलकु उळतु अनैयुम्–संसार जब तक रहेगा, तब तक; उळ्ळाय्–(अमर) रहोगे; नी–तुम; उलकुक्कु अॅल्लाम्–सारे लोकों के; तलैवन्–नायक हो; उनक्कु–तुम्हारे लिए; अतु–श्रीराम से मिलन; तक्कते–उचित ही है; पुलै उरु–नीच; मरणम् अॅय्तल् इतु–मरण पाने का यही; अॅनक्कु पुकऴ्ते–मुझे यश देगा। १३६०

कमलासन उदार प्रभु ब्रह्मा के वर से तुमने यह अक्षय धर्मपरायणता अपना ली। संसार के रहते तक तुम जीवित रहोगे। तुम सारे लोकों के नायक हो। तुम्हारे लिए श्रीराम का आश्रय उचित है। पर मेरे लिए यही यश है कि मैं निकृष्ट मरण का भागी बनूँ। १३६०

※ करुत्तिला विऱैवन् तीमै करुदिना लदनैक् कात्तुत्
तिरुत्तला माहि नन्ऱे तिरुत्तलान् दीरा दायिन्
पॊरुत्तुरु पॊरुळुण् डामो पॊरुत्तॊऴिऱ् कुरिय राहि
ऒरुत्तरिन् मुन्नञ् जाद लुण्डवर्क् कुरिय दम्मा 1361

करुत्तु इला–अविवेकी; इऱैवन्–राजा; करुतिनाल्–(बुराई) सोचे; अतनै कात्तु–उसे रोककर; तिरुत्तलाम् आकिन् अन्ऱे–सुधार कर सकेंगे तो न; तिरुत्तलाम्–सुधारा जा सकता है; तीरातु आयिन्–असाध्य हो; पॊरुत्तु उरु–करने योग्य; पॊरुळ् उण्टामो–कोई बात है क्या; अॅन्तित्–है तो; पॊरु तॊऴिऱ्कु–युद्ध-कर्म के लिए; उरियर् आकि–योग्य बनकर; ऒरुत्तरिन् मुन्नम्–सभी के पहले; चातल्–मरना; उण्टवर्क्कु–(नमक) खानेवाले के लिए; उरियतु–यही उचित काम है। १३६१

अविवेकी राजा बुराई करे तो उसे रोकना और राजा का सुधार करना सम्भव हो तो तभी न किया जा सकता है ! नहीं तो उचित काम यही है कि युद्ध में जाओ और सभी के पहले मर जाओ। माँ ! फिर क्या हो ? । १३६१

तुम्बैयन् दॊडैयल् वीरन् शुडुहणै तुणिप्पच् चुट्रुम्
वॆम्बुवॆञ् जेनै योडुम् वेरुळ किळैञ रोडुम्
उम्बरुम् बिट्रुम् काण वॊरुवनुमू वुलहै याण्डान्
तम्बियै यिन्ट्रि माण्डु किडप्पतो तमैयन् मण्मेल् 1362

तुम्पै अम् तॊटैयल् वीरन्–'तुंबै' की सुन्दर मालाधारी श्रीवीरराघव के; चुटु कणै–दाहक शरों के; तुणिप्प–खण्डित करने से; मू उलकै आण्टान् ऒरुवन्–त्रिलोकाधिपति एक; तमैयन्–ज्येष्ठ भ्राता; चुट्रुम्–घेरे रही; वॆम्पु–तप्तमन; वॆम्–भयंकर; चेनैयोटुम्–सेना के साथ; वेरु उळ–और रहे; किळैञरोटुम्–परिवारों के साथ; तम्पियै इन्ट्रि–छोटे भाई के पास न रहते; उम्परुम्–देवों के और; पिट्रुम्–अन्य (असुरों) के; काण–देखते; मण् मेल्–भूमि पर; माण्टु किटप्पतो–मरा पड़ा रहेगा क्या। १३६२

और भी सोचो ! "तुंबै" मालाधारी (युद्धसन्नद्ध) श्रीवीरराघव के शरों से छिन्न होकर त्रिलोकाधिपति मेरा भाई रावण उत्तेजित क्रूर सेना और अन्य परिवारों के मध्य, शत्रु देवों और अन्यों के देखते, पृथ्वी पर अकेला मरा पड़ा रहे और उसके साथ उसका भाई न रहे ? । १३६२

❀ अणैयिन्ट्रि ययरन्द वॆन्ट्रि यञ्जिनार् नहैशॆय् दार्क्कप्
पिणैयॊन्रु कण्णाळ् पङ्गन् पॆरुङ्गिरि नडुङ्गप् पेर्त्त
पणैयॊन्रु तिरळ्तोळ् काल पाशत्ताऱ् पिणिप्पक् कूशित्
तुणैयिन्ट्रिच् चॆरल् नन्ट्रो तोट्रुळल् कूट्रिन् शूळल् 1363

पिणै ऒन्रु–हरिण की-सी; कण्णाळ्–आँखों वाली; पङ्कन्–(पार्वतीदेवी को) अर्द्धांग में रखनेवाले शिव की; पॆरु किरि–बड़ी गिरि को; नटुङ्क पेर्त्त–कँपाते हुए उखाड़ने के; पणै ऒन्रु–गौरव से युक्त; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधे; काल पाचत्ताल्–कालपाश से; पिणिप्प–जब बाँधे जायेंगे; अणै इन्ट्रि–बेरोक; अयर्न्त वॆन्ट्रि–प्राप्त विजय से; अञ्चिनार्–जो भयभीत थे, उन शत्रुओं के; नकै चॆय्तु आर्क्क–हँसी उड़ाकर शोर मचाते; कूचि–डरकर; तुणै इन्ट्रि–बिना भाई की सहायता के; तोट्रु उळल्–हारकर दुःखी रहनेवाले; कूट्रिन् चूळल्–यम के स्थान में; चॆरल् नन्ट्रो–जाना अच्छा लगेगा क्या। १३६३

हरिण की-सी आँखों वाली देवी पार्वती के अर्द्धांगी शिवजी की बड़ी गिरि को कँपाते हुए उखाड़नेवाले भाई के पुष्ट कन्धे कालपाश से बाँधे जाएँ और वह उसकी अबाध विजयगाथा से डरे जो रहे उन देवों की हँसी

का पात्र बनकर, विना किसी साथी के उस यम के स्थान में जाए जो उससे हारकर दुःखी हो रहा था ? । १३६३

※ शॆम्बिट्टुच् चॆय्द विज्जित् तिरुनहर्च् चॆल्वन् देऱि
वम्बिट्ट तॆरिय लॆन्नमु नुयिर्हॊण्ड पहैयै वाळ्त्ति
अम्बिट्टुत् तुन्नङ् गॊण्ड पुण्णुडै नॆञ्जो डैय
कुम्बिट्टु वाळ्हि लेनियान् कूर्ऱैयु माडल् हॊण्डेन् 1364

ऐय-भैया; कूर्ऱैयुम्-यम को भी; आटल् कॊण्टेन्-निर्बल जो किया वह; यान्-मैं; चॆम्पु इट्टु-ताँबा लगाकर; चॆय्त इञ्चि-निर्मित प्राचीरों के; तिरु नकर् चॆल्वम्-श्रीनगर लंका को; तेऱि-चुन लेकर; वम्पु इट्ट तॆरियल्-सुगन्धपूर्ण मालाधारी; ऎन् मुन्-मेरे अग्रज के; उयिर् कॊण्ट-प्राणों को हरनेवाले; पकैयै वाळ्त्ति-शत्रु की स्तुति करके; अम्पु इट्टु-शराहत हो; तुन्नम् कॊण्ट-विद्ध; पुण् उटै-चोट के साथ रहनेवाले; नॆञ्चोटु-मन को लिये; कुम्पिट्टु-हाथ जोड़कर खड़ा रहते हुए; वाळ्किलेन्-जीवित नहीं रहूँगा । १३६४

हे मेरे राजा भाई ! यमविजेता मैं ताम्रनिर्मित प्राचीर से युक्त लंका की सम्पत्ति को शाश्वत मानकर सुगन्धित मालाधारी अपने वीर भाई के शत्रु की स्तुति करते हुए और शराहत-से मन की पीड़ा का सहन करते हुए हाथ जोड़े जीना नहीं चाहता । १३६४

अनुमनै वालि शेयै यरुक्कन्शेय् तन्नै यम्बॊन्
तनुवुडै यवरै वेऱोर् नीलनैच् चाम्बन् ऱन्नैक्
कनितॊडर् कुरङ्गिन् शेनैक् कडलैयुङ् गडन्दु मूडुम्
पनितुडैत् तुलहज् जुऱ्ऱुम् परिदियिऱ् ऱिरिवन् पार्त्ति 1365

अनुमनै-हनुमान को; वालि चेयै-वाली के पुत्र अंगद को; अरुक्कन् चेय् तन्नै-अर्कपुत्र को; अम् पॊन् तनु-सुन्दर स्वर्णधनुओं के; उटै-स्वामी; अवरै-उनको; वेऱु ओर् नीलनै-इनसे अलग अनुपम नील को; चाम्पन् तन्नै-जाम्बवान को; कनि तॊटर्-फलों के पीछे दौड़नेवाले; कुरङ्किन् चेनै-वानरों की सेना को; कटन्तु-जीतकर; मूटुम् पनि तुटैत्तु-(पृथ्वी को) आच्छादित करनेवाले कुहासे को हटाकर; उलकम् चुऱ्ऱुम्-भूमि पर घूमनेवाले; परितियिल्-सूर्य के समान; तिरिवन्-घूमूँगा; पार्त्ति-देखो । १३६५

इसके विपरीत मैं हनुमान, वाली-पुत्र, अर्कसूनु, सुन्दर धनुर्धर वीर राम और लक्ष्मण, विलक्षण शक्तिमान् नील, जाम्बवान और फलापेक्षी वानरों की सेना —सभी को हराऊँगा और कुहासे को दूरकर भूमि के ऊपर घूमनेवाले सूर्य के समान घूमूँगा । देख लो । १३६५

आलङ्गण् डञ्जि योडु ममरर्पो लरिह ळोडच्
चूलङ्गॊण् डोडि वेलै तॊडर्वदोर् तोऱ्ऱन् दोन्ऱ

नीलङ्गॊळ् कडलु मोडक् कालॊडु नॆरुप्पु मोडक्
कालङ्गॊण् डुलहु मोडक् करङ्गॊनत् तिरिवन् काण्डि 1366

आलम् कण्टु–हलाहल देखकर; अञ्चि ओडुम्–डर से भागनेवाले; अमरर् पोल्–देवों के समान; अरिकळ् ओट–वानर भागेंगे; वेलै–सागर; चूलम् कॊण्टु–शूल लेकर; ओटि तॊटर्वतु–दौड़ता पीछा करे; ओर् तोऱ्ऱम् तोन्ऱ–ऐसा एक दृश्य उपस्थित करते हुए; नीलम् कॊळ्–नील रंग का; कटलुम् ओट–समुद्र भी हट जाए ऐसा; कालॊटु नॆरुप्पुम् ओट–पवन के साथ अग्नि भी भाग जाएँ; कालम् कॊण्टु–युगान्तकाल पाकर; उलकुम् ओट–लोक भी चला जाए ऐसा; करङ्कु अॆन्न–पतंग के समान; तिरिवन्–घूमूँगा; काण्टि–देखो। १३६६

हलाहल को देखकर भागनेवाले देवों के समान वानर मुझे देखकर दौड़ेंगे; सागर शूल लेकर उनका पीछा करता हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करते हुए मैं उनका पीछा करूँगा; नीला समुद्र भी अलग हटकर जायगा; अनिल और अनल भागेंगे। युगान्तकाल में जैसे होता है, वैसा संसार भी अस्त-व्यस्त होगा। ऐसा मैं वातचक्र के समान घूमूँगा। देखोगे। १३६६

शॆरुविडै यञ्जार् वन्दॆन् कण्णॆदिर् शेर्व रेलक्
करुवरै कनहक् कुन्ऱ मॆन्नलाङ् गाट्चि तन्द
इरुवरु निऱ्क मऱ्ऱिङ् गियारुळ रवरै यॆल्लाम्
ऑरुवरुन् दिरिय वॊट्टे नुयिर्शुमन् दुलहि नॆन्ऱान् 1367

चॆरु इटै अञ्चार्–युद्ध में बेखटके; अॆन् कण् अॆतिर्–मेरे समक्ष; वन्तु चेर्वरेल्–आ जाएँ तो; अ करुवरै–उन काले पर्वत और; कनकम् कुन्ऱम्–स्वर्ण-पर्वत; अॆन्नलाम् काट्चि तन्त–जैसे दृश्य देनेवाले; इरुवरुम् निऱ्क–दोनों को छोड़ो; मऱ्ऱु इङ्कु यार् उळर्–अन्य, यहाँ, कौन हैं; अवरै अॆल्लाम्–उन सभी को; ऑरुवरुम्–किसी को भी; उयिर् चुमन्तु–प्राणधारण करते हुए; उलकिन्–पृथ्वी पर; तिरिय ऑट्टेन्–घूमने नहीं दूँगा; अॆन्ऱान्–कहा। १३६७

युद्ध में बेखटके जो मेरे समक्ष आना चाहेंगे, वे, काले और स्वर्ण-पर्वत-समान श्रीराम और लक्ष्मण को छोड़ो, और कौन होंगे इधर ? उनमें किसी को जीवित दुनिया में विचरने नहीं दूँगा मैं, कुम्भकर्ण ने यों कहा। १३६७

❀ताळ्क्किऱ्पा यल्लै यॆन्शॊल् तलैक्कॊळत् तक्क वॆन्ऱु
केट्किऱ्पा याहि नॆय्दि यवरॊडुङ् गॆळीइय नट्पै
वेट्किऱ्पा यिनियोर् माऱ्ऱम् विळम्बिनाल् विळैवॊण् डॆन्ऱु
शूळ्क्किऱ्पा यल्लै यारुन् दॊळनिऱ्पा यॆन्नच् चॊन्नान् 1368

यारुम् तॊळ निऱ्पाय्–सबसे वंद्य विद्यमान; अॆन् चॊल्–मेरा वचन; तलै कॊळ

तक्कतु–शिरोधार्य है; ॲन्ऱु–ऐसा मानकर; केट्किऱ्पाय् आकिन्–सुन सको तो; ताऴ्क्किऱ्पाय् अल्लै–विलम्ब न करके; ऍय्ति–जाकर; अवरोटुम्–उनके साथ; कॅऴीइय नट्पै–लगी मित्रता को; वेट्किऱ्पाय्–माँग लो; इनि ओर् माऱ्ऱम्–आगे कोई वचन; विळम्पिताल्–कहने से; विळैवु उण्टु–अच्छा फल होगा क्या; ॲन्ऱु–ऐसा; चूऴ्क्किऱ्पाय् अल्लै–विचार मत करो; ॲन्ऩ–ऐसा; चॊन्ऩान्–कहा। १३६८

विभीषण ने फिर भी कहा। हे सर्वस्तुत्य ! अगर मेरी बात को मानने योग्य समझो और उसके अनुसार करो तो कम नहीं बन जाओगे। उनसे गाढ़ी मित्रता कर लो। इससे बात करूँ तो क्या होगा फलस्वरूप ? इस तरह के पसोपेश में मत पड़ो। १३६८

पोदुनी यैय पिन्नैप् पॊन्ऱिनार्क् कॅल्ला निन्ऱ
वेदियर् तेवन् ऱन्नै वेण्डिनै पॅऱ्ऱु मॅय्म्मै
आदिनूल् मरबि ऩाले कडन्गळु माऱ्ऱि येऱ्ऱ
मातुयर् नरह नण्णा वण्णमुङ् गात्ति मन्ना 1369

ऐय–तात; मन्ना–मेरे राजा; नी पोतु–तुम चले जाओ; पिन्नै–बाद; निन्ऱ–खड़े रहनेवाले; वेतियर् तेवन् तन्नै–विप्रस्तुत्य देव से; वेण्टिनै–प्रार्थना करके; पॅऱ्ऱु–(उनकी आज्ञा) पाकर; मॅय्न्मै–सत्य; आति नूल्–पुराने शास्त्रों में उक्त; मरपिनाले–प्रकार से; पॊन्ऱितार्क्कु ॲल्लाम्–जो मरेंगे, उन सबके उद्देश्य में; कटन्कळ् आऱ्ऱि–कर्तव्य पितृकर्म करके; एऱ्ऱ–उनसे प्राप्य; मा तुयर्–अधिक दुःखदायी; नरकम् नण्णा वण्णमुम्–नरक न जाएँ, उस प्रकार; कात्ति–उनकी रक्षा करो। १३६६

कुम्भकर्ण ने कहा कि तात ! मेरे राजा ! जाओ तुम। विप्रस्तुत्य देव श्रीराम की आज्ञा लेकर, जो हम मर जाएँगे, हमारी पितृक्रिया आदि वेदशास्त्रोक्त रीति से करो और हमें दुःखदायी नरक में जाने से बचा लो। १३६९

❀ आहुव दाहुङ् गालत् तऴिवदु मऴिन्दु शिन्दिप्
पोहुव दयले निन्ऱु पोऱ्ऱिनुम् बोदल् शॅय्युम्
जेहऱ्ऱ् तॅळिन्दोर् निन्नि लियारुळर् वरुत्तञ् जॅय्या
देहुदि यॅम्मै नोक्कि यिरङ्गलै यॅन्ऱु मुळ्ळाय् 1370

ॲन्ऱुम् उळ्ळाय्–चिरंजीव; कालत्तु आकुवतु–जिस काल में जो होना होगा; आकुम्–वह होगा ही; अऴिवतु–जिसे मिटना है उसका; अऴिन्तु चिन्ति पोकुवतु–मिटकर नष्ट होना भी; अयले निन्ऱु पोऱ्ऱिनुम्–पास खड़े रहकर रक्षा करें तो भी; पोतल् चॅय्युम्–(अवश्य) हो जायगा; चेकु अऱ्ऱ–संशयहीन रीति से; तॅळिन्तोर्–स्पष्टबुद्धि; निन्निल्–तुमसे बढ़कर; यार् उळर्–कौन हैं; वरुत्तम् चॅय्यातु–विना दुःखी हुए; एकुति–चलो; ॲम्मै नोक्कि–मुझे देखकर; इरङ्कलै–अनुताप मत करो। १३७०

चिरंजीव ! जब जो होना है वह होकर ही रहेगा। जिसको मिटना है वह पास में खड़े होकर रक्षित करने पर भी नष्ट होगा ही। यह सब संशय-रहित जाननेवाले तुमसे अन्य कौन हैं? चलो। विना किसी दुःख के चलो। हमारे लिए दुःख मत करो। १३७०

※ अॅन्ड्रवन् ररुत्तै मीट्टु मॅडुत्तुमार् बिरुहप् पुल्लि
निन्ड्रुनिन् ड्रिरङ्गि येङ्गि निर्हणा नॅडिदु नोक्कि
इन्ड्रोडुन् दविरन्त तन्ड्रे युडन्बिरप् पॅन्ड्रु विट्टान्
वॅन्ड्रिवॅन् दिड्रलि नानु मवन्नडित् तलत्तु वीऴ्न्दान् 1371

अॅन्ड्रु–ऐसा कहकर; अवन् तन्तै–उसको; मीट्टुम्–फिर; अॅट्टुत्तु–उठाकर; मार्पु इरुक–छाती से कसकर; पुल्लि–लगाकर; निन्ड्रु निन्ड्रु–रह-रहकर; इरङ्कि एङ्कि–रोकर दुःख करके; निरै कणाल्–(अश्रु-) भरे नेत्रों से; नॅटितु नोक्कि–लम्बी देर तक देखते रहकर; उटन् पिरप्पु–सहजन्म का रिश्ता; इन्ड्रोटुम् तविर्न्तत्तु अन्ड्रे–आज से समाप्त हो गया न; अॅन्ड्रु–कहकर; विट्टान्–छुड़ाया; वॅन्ड्रि–विजयी और; वॅम् तिड्रलितानुम्–भयानक बलवान (विभीषण) भी; अवन् अटि तलत्तु–उसके चरण-तल में; वीऴ्न्तान्–गिरा। १३७१

यह कहकर कुम्भकर्ण ने विभीषण को फिर से उठाया और छाती से खूब लगा लिया। रह-रहकर दुःख प्रकट किया। रोया और आँसू-भरी अपनी आँखें बहुत देर तक उस पर लगाये रहा। कहा कि हमारा भायपा आज से छूट गया न ! फिर उसको छुड़ा दिया। विजयी और ग़ज़ब का बलवान विभीषण भी उसके पैरों पर गिरा। १३७१

※ वणङ्गिनान् वणङ्गिक् कण्णुम् वदनमुम् मनमुम् वायुम्
उणङ्गिनान् वयिर याक्कै यॉडुङ्गिना नुरॅशॅय् दिन्नुम्
पिणङ्गिना लाव दिल्लैप् पॅयर्वॅनॅ ड्रॅऴुन्दु पेर्न्दान्
कुणङ्गळा लुयर्न्दान् शेनैक् कडलॅलाङ् गरङ्गळ् कूप्प 1372

वणङ्कितान्–विनत विभीषण; वणङ्कि–दण्डवत करके; कण्णुम्–आँखों; वततमुम्–वदन; मतमुम्–मन और; वायुम्–मुख में; उणङ्कितान्–शुष्क हुआ; वयिर याक्कै–वज्रसम शरीर में; ऑटुङ्कितान्–कृशता पायी; इन्नुम् उरै चॅय्तु–आगे भी बात करके; पिणङ्कितान्–तर्क करने से; आवतु इल्लै–होनेवाला (कुछ) नहीं है; पॅयर्वॅन्–चलूँगा; अॅन्ड्रु–ऐसा सोचकर; कुणङ्कळाल् उयर्न्तान्–गुणों से उन्नत; चेनै कटल् अॅलाम्–सारे सेना-सागर के; करङ्कळ् कूप्प–हाथ जोड़े खड़े रहते; अॅऴुन्तु पेर्न्तान्–उठा और हट चला। १३७२

दण्डवत करनेवाले विभीषण की आँखे, वदन, मन और मुख सभी सूख गये। उसका वज्र-सम शरीर कृश हो गया। सद्गुणी विभीषण ने सोचा कि आगे और बातें कहकर बहस करने से होनेवाला कुछ नहीं है।

जाऊँ। वह उठकर चला और सारी सेना अंजलिबद्ध खड़ी रह गयी। १३७२

कळ्ळनीर् वाळ्क्कै येमैक् कैविट्टुक् कालुम् विट्टान्
पिळ्ळैमै तुरन्दा नॅन्नप् पेदुरु मनत्त नाहि
वॅळ्ळनीर् वेलै तन्निल् वीळ्न्दनीर् वीळ वॅङ्गण्
उळ्ळनी रॅल्लाम् मारि युदिरनी रॊळ्ह निन्ड्रान् 1373

कळ्ळम् नीर्–वंचक स्वभाव के; वाळ्क्कैयेमै–जीवन वाले हमें; कै विट्टु–छोड़कर; कालुम् विट्टान्–कुलचलन भी छोड़ दिया; पिळ्ळैमै–बचपन; तुरन्तान्–त्याग दिया; ॲन्न–सोचकर; पेतुरुम् मनत्तन् आकि–भिन्नमन बनकर; वॅळ्ळम् नीर्–अधिक जल-भरे; वेलै तन्निल्–सागर में; वीळ्न्त नीर्—गिरनेवाली नदी का जल भी; वीळ–(उपमा में) गिर जाए ऐसा; वॅम् कण्–तप्त आँखों में; उळ्ळ नीर् ॲल्लाम्–रहनेवाले सारे अश्रुजल के; मारि–सूख जाने पर; उतिर नीर्–रुधिर-जल; ऑळ्क–बहाते हुए; निन्ड्रान्–खड़ा रहा। १३७३

कुम्भकर्ण ने सोचा कि वंचक स्वभाव का जीवन बितानेवाले हमें यह छोड़कर चला। हमारे कुल की रीतियाँ भी त्याग दीं। बचपना छोड़कर प्रौढ़ विचार का हो गया। कुम्भकर्ण का मन बदल गया। उसकी आँखों में आँसू सूख गये और रक्त-जल का प्रवाह इतना बहा कि अपार सागर-जल में मिलने जानेवाली नदी का जल भी उसकी उपमा में पिछड़ जाए। १३७३

ॲय्विय निरुवर् कोनु मिरामनै यिड़ैञ्जि यॅन्दाय्
उय्तिऱ मुडैयार्क् कन्ड्रो वऱन्वळि यॊळ्हु मुळ्ळम्
पॅय्दिऱ नॅल्लाम् पॅय्दु पेशिनॅन् पॅयरुन् दन्मै
शॅय्दिलन् कुलत्तु मानन् दीर्न्दिलन् शिऱिदु मॅन्ड्रान् 1374

ॲय्तिय–आगत; निरुतर् कोनुम्–राक्षसाधिपति विभीषण ने; इरामनै इऱैञ्चि–श्रीराम की स्तुति करके; ॲन्ताय्–मेरे पिता; उय् तिऱम्–उद्धार का भाग्य; उटैयार्क्कु अन्ड्रो–रखनेवाले का न; उळ्ळम्–मन; अऱन् वळि–धर्म-मार्ग पर; ऑळ्कुम्–चलेगा; पॅय्तिऱन् ॲल्लाम् पॅय्तु–दिखाने योग्य सभी चातुर्य लगाकर; पेचिनॅन्–बातें कीं; पॅयरुम् तन्मै–हटने की प्रवृत्ति; चॅय्तिलन्–न की; कुलत्तु मानम्–कुलाभिमान में; चिऱितुम्–कुछ भी; तीर्न्तिलन्–छोड़ा नहीं; ॲन्ड्रान्–कहा। १३७४

राक्षसाधिपति विभीषण श्रीराम के पास आया और विनय करके बोला कि मेरे धाता! उद्धार पाने का भाग्य रखनेवाला हो तभी न उसका मन धर्म-मार्ग का अवलंबन करेगा! मैंने भी आवश्यक सारी कुशलता का

प्रयोग करके बहस किया। पर वह टस से मस नहीं हुआ। कुल का अभिमान कुछ भी नहीं छोड़ता। १३७४

कॊय्दिऱच् चडैयिऩ् गऱ्ऱैक् कॊऩ्दळक् कोलक् कॊण्डल्
नॊय्दिऩिऱ् ऱुळक्कि यैय नुऩ्ऩॆदिर् नुम्मु ऩोऩै
ऎय्दिऱत् तुणित्तु वीऴ्त्त लिऩिदऩ्ऱॆऩ्ऱ् ऱिरङ्गिच् चॊऩ्ऩेऩ्
शॆय्दिऱ ऩिऩिवे ऱुण्डो विदियैयार् तीर्क्क हिऱ्बार् 1375

कॊय् तिऱम् चटैयिऩ्–उलझी रही जटा की; कऱ्ऱै–लटों वाले; कॊऩ्तळम्–केशों के; कोलम् कॊण्टल्–सुन्दर मेघश्याम; नॊय्तिऩिल्–थोड़ा; तुळक्कि–(सिर) हिलाकर; ऐय–तात; नुऩ् ऎतिर्–तुम्हारे सामने; नुम् मुऩोऩै–तुम्हारे अग्रज को; ऎय्तु–(शर) चलाकर; इऱ–भेदकर; तुणित्तु वीऴ्त्तल्–(शरीर को) काटकर गिराना; इऩितु अऩ्ऱु–सुखद नहीं है; ऎऩ्ऱु इरङ्कि–ऐसा सोचकर खेद करके; चॊऩ्ऩेऩ्–कहा था; इऩि–आगे; चॆय् तिऱऩ्–करने की कोई युक्ति; वेऱु उण्टो–दूसरी है क्या; वितियै–विधि (के विधान) को; तीर्क्ककिऱ्पार् यार्–निराकृत करनेवाला कौन। १३७५

उलझी हुई जटा वाले केश के साथ सुन्दर मेघ-सम शोभायमान श्रीराम ने थोड़ा अपना सिर हिलाया और श्रीवचन उच्चारे कि श्रीमान्! तुम्हारे ही समक्ष तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता को शर से काटकर मार गिराना सुखद वात नहीं है —यह समझकर मैं क्लान्त हुआ और तुमसे कुम्भकर्ण को बुला लाने की वात कही। आगे उपयुक्त उपाय और कोई है क्या? विधि के विधान को कौन टाल सकता है?। १३७५

ऎऩ्ऩविऩि दुरैक्कुम् वेलै यिराक्कदर् शेऩै यॆऩ्ऩुम्
कऩैहडल् कविियिऩ् ताऩैक् कऴियिऩै वळैन्दु कट्टि
मुऩैतॊऴिऩ् मुयऩ्ऱ दाह मूवहै युलहु मुऱ्ऱत्
तऩिनॆण्डुन् दूऴि यार्क्क यार्त्तिल परवै तळ्ळि 1376

ऎऩ्ऩ–ऐसा; इऩितु–सुहावनी रीति से; उरैक्कुम् वेलै–कहते समय; इराक्कतर् सेऩै–राक्षस-सेना; ऎऩ्ऩुम्–रूपी; कऩै कटल्–कोलाहलमय सागर ने; कविियिऩ् ताऩै कऴियिऩै–कपि-सेना रूपी (समुद्र से भूमि की ओर बहनेवाले) नमक-जल के नाले को; वळैन्तु कट्टि–घेरा बाँधकर; मुऩै तॊऴिल् मुयऩ्ऱताक–युद्धकर्म में प्रवृत्त हो; मूवकै उलकुम्–त्रिविध लोकों को; मुऱ्ऱ–अन्त करता-सा; तऩि नॆट्टु तूळि आर्क्क–अपूर्वभूत रीति से धूल से आच्छादित कर दिया; परवै–समुद्र भी; तळ्ळि–(उस धूल को) दूर करके; आर्त्तिल–गरज नहीं सका। १३७६

जब श्रीराम सुहावनी रीति से यह कह रहे थे, तब राक्षससेना-सागर वानर-सेना रूपी नाले को घेर गयी और युद्ध करने लग गयी तो इतनी

धूल उठकर छा गयी कि लगा कि तीनों लोकों का अन्त हो जायगा। समुद्र भी धूल हटाकर शब्द नहीं कर सका। १३७६

ओडिऩ पुरवि वेळ्ळ मोडिऩ वुरुळैत् तिण्डेर्
ओडिऩ मलैह ळोड वोडिऩ वुदिरप् पेरा
ड्राडिऩ कवन्द बन्द माडिऩ वलहै मेल्मेल्
आडिऩ पदाहै योङ्गि याडिऩ पऱवै यम्मा 1377

पुरवि ओटिऩ–घोड़े भागे; वेळम् ओटिऩ–गज दौड़े; उरुळै–पहियोंवार; तिण् तेर्–सशक्त रथ; ओटिऩ–तेज़ी से गये; मलैकळ् ओट–(वानर वीरों द्वारा फेंके गये) पर्वत चले (ऐसा बहा लेते हुए); उतिरम् पेर् आऱु–रुधिर की बड़ी नदियाँ; ओटिऩ–बहीं; कवन्त पन्तम्–कबन्धराशियाँ; आटिऩ–नाचीं; अलकै–भूत; मेल् मेल्–उत्तरोत्तर; आटिऩ–नाचे; पताकै–पताकाएँ; ओङ्कि–ऊपर; आटिऩ–फहरीं; पऱवै आटिऩ–(बाज आदि) पक्षी मँड़राते रहे; अम्मा–मैया री। १३७७

अश्व तेज़ गये; गज दौड़े आये; और पहियोंदार सुदृढ़ रथ दौड़े। वानरचालित पर्वतों को लुढ़का लेकर रक्त-नदियाँ वहीं। कवन्धवृन्द नाच उठे। भूतगण उत्तरोत्तर नाचे। पताकाएँ ऊँची फहरीं। बाज, चील आदि पक्षी मँड़राये। मैया! क्या ही दृश्य था! । १३७७

मूळैयुन् दशैयु मॆऩ्बुङ् गुरुदियुम् निणमु मूरि
वाळॊडुङ् गुळम्बु पट्टार् वाळॆयिऱ् ऱरक्कर् मऱ्ऱव्
वाळिरुङ् गुरुदि वॆळ्ळत् तळुन्दिऩ कविह ळम्बॊऩ्
तोळॊडु मरऩुङ् गल्लुञ् जूलमुम् वेलुन् दाक्क 1378

मूळैयुम्–मग़ज़ और; तचैयुम्–मज्जा और; ऍऩ्पुम्–हड्डियाँ और; कुरुतियुम्–रक्त और; निणमुम्–चर्बी में; मूरि वाळॊटुम्–सशक्त तलवार के साथ; वाळ् ऍयिऱु–तलवार-दंतुले; अरक्कर्–राक्षस; मरऩुम्–तरुओं; कल्लुम्–और पर्वतों के; ताक्क–प्रहार से; कुळम्पु पट्टार्–कर्दम बन गये; मऱ्ऱु–और; अ कविकळ्–वे वानर; चूलमुम् वेलुम्–शूलों और बर्छियों के; ताक्क–प्रहार से; अम् पॊऩ् तोळॊटु–सुन्दर स्वर्णिम कन्धों के साथ; आळ्–राक्षस वीरों के; इरु कुरुति वॆळ्ळत्तु–रंगीन रुधिर-प्रवाह में; अऴुन्तिऩ–डूबे। १३७८

वानरों ने पत्थर फेंके और वे राक्षसों के मग़ज़ों, मज्जों, हड्डियों, रक्त और चर्बियों पर लगे, तो अपनी सशक्त तलवारों के साथ उज्ज्वल दन्तुले राक्षस लोग पिसकर कर्दम-से बन गये; और शूलों तथा भालों के प्रहार से वानर अपने स्वर्णिम कन्धों के साथ राक्षसों के चमकीले रक्त की धारा में डूब गये। १३७८

ऍय्वऩर् निरुदर् कल्ला लॆऱिन्दऩर् कविह ळॆन्दिप्
पॆय्दऩ रक्कर् कैयाऱ् पिशैन्दऩ रिरिहळ् पिऩ्रा

वैदन्नर् यादु तानर् वलित्तनर् वान रेशर्
शॅय्दनर् पिऱवुम् वॅम्बोर् तिहैत्तनर् देव रॅल्लाम् 1379

निरुतर् ऍय्तनर्–राक्षसों ने (शर) चलाये; कविकळ्–कपिगणों ने; कल्लाल्–पत्थरों से; ऍरिन्ततर्–मारा; एन्ति–(उन्हें) पकड़कर; अरक्कर्–राक्षसों ने; पॅय्ततर्–फेंका; अरिकळ्–वानरों ने; कैयाऱ्–हाथों से; पिचैन्ततर्–मसल डाला; यातुतातर्–यातुधानों ने; पिन्ऱा–विना पिछड़े; वैततर्–गालियाँ दीं; वातर ईचर्–वानरपतियों ने; वलित्ततर्–पकड़कर खींचा; चॅय्ततर्–इस भाँति युद्ध करनेवालों की; पिऱवुम्–अन्य चेष्टाएँ भी; वॅम् पोर्–कठोर युद्ध को (देखकर); तेवर् ऍल्लाम्–सभी देव; तिकैत्ततर्–भ्रमित हुए। १३७९

राक्षसों ने शर चलाये। वानरों ने पत्थर फेंके। राक्षसों ने उनको पकड़ उन्हीं पर उन्हें फेंक दिया। वानरों ने उन्हें अपने हाथ से मसलकर चूर कर दिया। राक्षसों ने विना पिछड़े गालियाँ दीं। वानर वीरों ने उन्हें पकड़कर खींचा। इस तरह युद्धरत दोनों दलों के वीरों ने जो ये और अन्य कार्य किये उन्हें देखकर सभी देव चकित हो रहे। १३७९

नीरिनै योट्टुङ् गाऱ्ऱुङ् गाऱ्ऱॅदिर् निऱ्कु नीरुम्
पोरिणै याह वेन्ऱु पॊरुहिन्ऱ पूशल् नोक्कित्
तेरिनै योट्टि वन्दान् तिरुविनैत् तेवर् तङ्गळ्
ऊरिनै नोक्का वण्ण मुदिरवेल् नोक्कि युळ्ळान् 1380

नीरिनै ओट्टुम्–जल का पीछा करके उसको बहानेवाले; काऱ्ऱुम्–पवन के और; काऱ्ऱु ऍतिर्–अनिल का सामना करके; निऱ्कुम्–डटे रहनेवाले; नीरुम्–जल के; पोर् इणैयाक–अपने युद्ध की समानता करते; एन्ऱु पॊरुकिन्ऱ–(वानर और राक्षस) जो दावा करके लड़ते हैं; पूचल् नोक्कि–उस लड़ाई को देखकर; तिरुविनै–(विजय-)श्री को; तेवर् तङ्कळ् ऊरिनै–देवों के देश में; नोक्का वण्णम्–दृष्टि न देने देकर; उतिरम् वेल्–अपने रक्तरंजित भाले की ओर; नोक्कि–दृष्टि रखे; उळ्ळान्–रहनेवाला कुम्भकर्ण; तेरिनै ओट्टि–रथ चलाते हुए; वन्तान्–आया। १३८०

राक्षस और वानर आपस में भिड़नेवाले अनिल और जल के समान लड़ रहे थे। उस युद्ध को देखकर कुम्भकर्ण, जिसका शूल विजयश्री को देवों के राज्य में कभी न जाने देता था, रथ चलाता हुआ आया। १३८०

ऊऴियिऱ् पट्ट कालि नुलहङ्गळ् पट्टा लॊप्पप्
पूऴियिऱ् पट्टच् चॅन्नीरप् पुणरियिऱ् पट्टुप् पॊङ्गुज्
जूऴियिऱ् पट्ट नॅऱ्ऱिक् कळिऱ्ऱोडुन् दुरन्द तेरिन्
आऴियिऱ् पट्ट वन्ऱे यवनियिऱ् पट्ट वॅल्लाम् 1381

अवनियिल् पट्ट–मैदान पर रहे; ऍल्लाम्–सभी वानर; ऊऴियिल् पट्ट–युगान्त में उठी; कालिन्–हवा में; उलकङ्कळ्–लोक; पट्टाल् ऑप्प–फँस गये

जैसे; पूऴियिल् पट्टु–धूल में फँसकर; चॆन्नीर्–लाल जल (रक्त) के; पुणरियिल् पट्टु–समुद्र में फँसकर; पॊङ्कुम्–भड़कीले; चूऴियिल् पट्ट–मुखपट से अलंकृत; नॆऱ्ऱि–भाल वाले; कळिऱ्ऱोटुम्–गजों के नीचे; तुरन्त–चालित; तेरिन् आऴियिल्–रथों के पहियों के नीचे; पट्ट–फँसे (मरे); अन्ऱे–पूरक ध्वनि या ऐसा हुआ न। १३८१

युद्धभूमि पर जो रहे, वे सभी वानर युगान्तकालीन प्रभंजन में फँसे लोकों के समान धूल में फंसे, रक्तधारा में फँसे और उज्ज्वल ललाटपट्ट से अलंकृत गजों के पैरों के नीचे फँसे और चलायमान रथों के पहियों में फँसे और मरे। १३८१

कुन्ऱुहॊण् डॆऱियुम् बारिऱ् कुदिक्कुम्वॆङ् गूलम् बऱ्ऱि
ऒन्ऱुहॊण् डॊन्ऱै यॆऱ्ऱु मुदैक्कुम्विट् टुळक्कुम् वारित्
तिन्ऱुदिन् ऱुमिऴुम् बऱ्ऱिच् चिरङ्गळैत् तिरुहुन् देय्क्कुम्
मॆन्ऱुमॆन् ऱिऴिच्चुम् विण्णिल् वीशुमेऱ्. पिशैन्दु पूशुम् 1382

कुन्ऱु कॊण्टु ऎऱियुम्–पर्वत उठाकर फेंकनेवाले; पारिल् कुतिक्कुम्–रथ की पीठ पर कूदनेवाले; वॆम् कूलम् पऱ्ऱि–वानरों की भयंकर दुमों को पकड़कर; ऒन्ऱु कॊण्टु–एक से; ऒन्ऱै ऎऱ्ऱुम्–दूसरे को पीटता; उतैक्कुम्–लात मारता; विट्टु उळक्कुम्–छोड़कर कुचलता; वारि तिन्ऱु–उठाकर खाता; तिन्ऱु उमिऴुम्–खाकर उगलता; चिरङ्कळै पऱ्ऱि–सिरों को पकड़कर; तिरुकुम्–ऐंठता; तेय्क्कुम्–रौंदता; मॆन्ऱु मॆन्ऱु–चबा-चबाकर; इऴिच्चुम्–गिराता; विण्णिल् वीचुम्–आकाश में उछालता; पिचैन्तु–पीसकर; मेल् पूचुम्–अंगों पर मल लेता। १३८२

वानर पर्वत उठाकर फेंकते; रथ के तल पर आकर कूदते। कुम्भकर्ण उनको दुमों से पकड़कर एक-दूसरे पर दे मारता। कुछ को पैरों से लात मारता। कुछ को जाने देकर कुछ को कुचलता। कुछ को मुख में डाल-डालकर उगल देता। कुछ के सिरों को पकड़कर ऐंठता। कुछ को चबा-चबाकर नीचे थूक देता। कुछ को आकाश में फेंक देता। कुछ को हाथ से पीसकर अपने शरीर पर मल लेता। १३८२

वारियि नमुक्कुङ् गैयान् मण्णिडैत् तेय्क्कुम् वारि
नीरिडैक् कुमिऴि यूट्टु नॆरुप्पिडै निमिर वीशुम्
तेरिडै यॆऱ्ऱु मॆट्टुत् तिशैयिनुऱ् जॆल्लच् चिन्दुम्
तूरिडै मरत्तु मोदु मलैहळिऱ् पुडैक्कुज् जुऱ्ऱि 1383

वारियिन् अमुक्कुम्–समुद्र में डुबोता; कैयान्–हाथों से; मण् इटै–भूमि पर; तेय्क्कुम्–पीसता; वारि नीरिटै–समुद्र-जल में; कुमिऴि ऊट्टुम्–(डालकर) बुलबुले उठाता; नॆरुप्पु इटै–अग्नि में; निमिर–सीधे; वीचुम्–फेंक देता; तेरिटै–रथ से; ऎऱ्ऱुम्–पिटवाता; ऎट्टु तिचैयिऩ्ऩुम्–आठों दिशाओं में; चॆल्ल–भेजते

हुए; चिन्तुम्–बिखेर देता; तूरिटै–झंखाड़ों और; मरत्तु–तरुओं पर; मोतुम्–दे मारता; चुऱ्ऱि–घुमाकर; मलैकळिल्–पर्वतों पर; पुटैक्कुम्–पीटता। १३८३

कुम्भकर्ण कुछ वानरों को समुद्रजल में डुबो देता। कुछ को धरती पर डालकर हाथ से मसल देता। कुछ को समुद्रजल में डालकर बुलबुले पैदा करता। कुछ को सीधे आग में फेंकता; कुछ को रथ पर दे मारता। कुछ को आठों दिशाओं में बिखेर देता। कुछ को झाड़ियों पर, कुछ को तरुओं पर दे मारता। कुछ को घुमाकर पर्वत पर उछालता। १३८३

पऱन्दन रमर रञ्जिप् पल्पॆरुम् बिणत्तैप् पुल्लि
निऱैन्दन पऱवै यॆल्ला नॆडुन्दिश नान्गु नान्गुम्
मऱैन्दन पॆरुमै तीर्न्द मलैक्कुलम् वऱ्ऱि वऱ्ऱिक्
कुऱैन्दन कुरक्कु वॆळ्ळङ् गॊन्ऱनन् कूऱ्ऱुङ् गूश 1384

अमरर्–देव; अञ्चि–डरकर; पऱन्तनर्–उड़ गये; पल्–अनेक; पॆरुम्–बड़ी-बड़ी; पिणत्तै–लाशों को; पुल्लि–अपने से लगाते हुए; पऱवै ॲल्लाम्–सारे पक्षी; निऱैन्तन–भर गये; नॆटु तिचै–लम्बी दिशाएँ; नान्कुम् नान्कुम्–चार और चार (आठों); मऱैन्तन–छिप गयीं; मलैकुलम्–पर्वतकुल; पॆरुमै तीर्न्त–गौरव से हीन हुए; वऱ्ऱि वऱ्ऱि–कम हो होकर; कुऱैन्तन–छोटे बने; कूऱ्ऱुम् कूच–यम को भी डराकर; कुरक्कु वॆळ्ळम्–वानर-सेना को; कॊन्ऱनन्–मारा (कुम्भकर्ण ने)। १३८४

यह देख देव डरकर उड़ गये। अनेक लाशों से लगकर पक्षी छा गये। आठों दिशाएँ ढँक गयीं। पर्वतवर्ग छीजे और गौरव खो गये। कुम्भकर्ण ने इतना वानरों को मारा कि यम भी डर गया। १३८४

मऱ्ऱिनि यॊरुवर् मेलोर् मरत्तॊडुङ् गऱ्कळ् वोशप्
पॆऱ्ऱिल मादु मन्ऱे यिन्ऱॊडुम् बॆरुव दादुम्
अऱ्ऱन तीङ्गु मॆन्ना वरिक्कुलत् तलैवर् पऱ्ऱि
ॲऱ्ऱिन वॆऱिन्द वॆल्ला मिणनॆडुन् दोळि नेऱ्ऱान् 1385

मऱ्ऱु इनि–और आगे; ऒरुवर् मेल्–अनुपम वीर पर; वीच–फेंकने के लिए; ओर् मरत्तॊटुम्–एक तरु और; कऱ्कळ् वीच–पत्थर चाहें तो; पॆऱ्ऱिलम् आतुम्–पानेवाले नहीं होंगे; मन्ऱे–निश्चित है; इन्ऱॊटुम्–आज ही; पॆऱुवतु आतुम्–पा जाएँगे; तीङ्कुम् अऱ्ऱन–बुराइयाँ दूर हुईं; ॲन्ना–कहकर; अरि कुल तलैवर्–वानरयूथप; पऱ्ऱि–पकड़कर; ॲऱ्ऱित ॲऱिन्त ॲल्लाम्–जो-जो फेंकते या उछालते उन सबको; इणै नॆटु तोळिन्–समोन्नत दोनों कन्धों पर; एऱ्ऱान्–झेल लिया। १३८५

वानरयूथपों ने सोचा कि आगे फेंकने के लिए कोई पर्वत या तरु नहीं रहेगा। यह निश्चित है। अतः आज ही सारा फेंककर जीत लें।

चलो सारा बखेड़ा दूर होगा। ऐसा सोचकर जो भी पत्थर या तरु उन्होंने फेंके, उन सबको कुम्भकर्ण ने अपने समोन्नत दोनों कन्धों पर झेल लिया। १३८५

कल्लॊडु मरत्तुम् वेरुड् गट्टैयुड् गालिल् तीण्डुम्
पुल्लॊडु पिऱवु मॆल्लाम् पॊडिप्पॊडि याहिप् पोऩ
इल्लैमऱ् ऱॆऱियत् तक्क वॆऱ्ऱुव शुऱ्ऱु मॆऩ्ऩप्
पल्लॊडुम् पल्लु मॆऩ्ऱु पट्टऩ कुरङ्गु मुट्टि 1386

कालिल्–हवा के समान; तीण्टुम्–जोर से लगनेवाले; कल् ऒटु–पर्वत के साथ; मरत्तुम्–तरु और; वेरुम् कट्टैयुम्–जड़ें और लट्ठे; पुल्लॊटु–घास के साथ; पिऱवुम् ऎल्लाम्–अन्य सभी; पॊटि पॊटि आकि–चूर-चूर होकर; पोऩ–मिट गये; मऱ्ऱु–और; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; ऎऱिय तक्क–फेंकने योग्य; ऎऱ्ऱुव–पीटने योग्य; इल्लै–नहीं; ऎऩ्ऩ–देखकर; कुरङ्कु–वानर; पल्लॊटुम् पल्लुम् मॆऩ्ऱु–दाँतों से दाँत किटकिटाकर; मुट्टि–(कुम्भकर्ण से) टकराकर; पट्टऩ–मरे। १३८६

हवा के समान टकरानेवाले पत्थर, पेड़, जड़ें, लकड़ियाँ, घासें सभी चूर हो गयीं। चारों ओर फेंकने के लिए कुछ नहीं बचा है —यह सोचकर वानर दाँत पीसते हुए कुम्भकर्ण से जा टकराये और मरे। १३८६

कुऩ्ऱिऩ्वीऴ् कुरीइक् कुऴात्तिऱ् कुऴाङ्गॊडु कुदित्तुक् कूडिच्
चॆऩ्ऱुमेल् विऴुन्दु पऱ्ऱिक् कैत्तलन् देयक् कुत्ति
वऩ्ऱिऱ ऱॆयिऱ्ऱाऱ् कव्वि वळ्ळुहिर् ऊऩ्ऱिक् कीळा
ऒऩ्ऱुमा हिऩ्ऱ दिल्लै यॆऩ्ऱिऴिऩ् दोडिप् पोऩ 1387

कुऩ्ऱिऩ् वीऴ्–पर्वत पर जमा होनेवाली; कुरीइ कुऴात्तिल्–चिड़ियों के दलों के समान; कुऴाम् कॊटु–दल बाँधकर; कूटि कुतित्तु–भीड़ बनाकर उछलकर; चॆऩ्ऱु–जाकर; मेल् विऴुन्तु–उस पर गिरकर; पऱ्ऱि–पकड़कर; कै तलम् तेय–हस्ततल को घिसाते हुए; कुत्ति–घूंसा मारकर; वल् तिऱल् ऎयिऱ्ऱाल्–सशक्त दाँतों से; कव्वि–ग्रसकर; वळ् उकिर्–तीक्ष्ण नखों को; ऊऩ्ऱि–गड़ाकर; कीळा–चीरकर; ऒऩ्ऱुम् आकिऩ्ऱतु इल्लै–कुछ बनता नहीं; ऎऩ्ऱु–देख; इऴिन्तु–शरीर से उतरकर; ओटि पोऩ–भाग गये। १३८७

पर्वत पर उतरनेवाले चिड़ियों के वृन्दों के समान वानरों ने कुम्भकर्ण पर गिरकर हाथों को घिसने देते हुए घूंसे मारे। दाँतों से काटा उसे। नखों को गड़वाकर चीरा उसके चमड़े को। फिर कुछ न बनता देख नीचे कूदकर भाग खड़े हुए। १३८७

मूलमे मण्णिऩ् मूळ्हिक् किडन्ददोर् पॊरुप्पै मुऱ्ऱुम्
कालमे लॆऴुन्द कालपोऱ् कैयिऩाऱ् कडिदिऩ् वाङ्गि

नीलत्मे तिमिर्न्द दाङ्गोर् नॅरुप्पंनत् तिरित्तु विट्टात्
शूलमे कोण्डु नूरि मुरुवलुन् दोन्ऱ निन्ऱात् 1388

नीलन्–नील ने; मूलमे–निचला भाग ही; मण्णिल्–(जिसका) धरती के अन्दर; मूऴ्कि किटन्तत्तु–छिपा पड़ा रहा; ओर् पॉरुप्पं–ऐसे एक पर्वत को; मुऱ्ऱुम् कालम्–युगान्तकाल में; मेल् ऎऴुन्त–ऊपर उठे; काल् पोल्–प्रबल प्रभंजन के समान; कैयिनाल्–हाथों से; कटितित् वाङ्कि–शीघ्र उठाकर; मेल् निमिर्न्तत्तु–ऊपर उठ चलनेवाली; आङ्कु–वहाँ; ओर् नॅरुप्पु–एक आग; ऎन–ऐसा; तिरित्तु–घुमाकर; विट्टात्–फेंका; चूलमे कोण्टु–शूल से ही; नूरि–चूर करके; मुऱुवलुम् तोन्ऱ–मुस्कुराहट प्रकट करते हुए ही; निन्ऱान्–खड़ा रहा। १३८८

तब नील ने धरती पर खूब गड़े पड़े रहे एक उन्नत पर्वत को युगान्तपवन के समान हाथों से जल्दी ऊपर उठा लिया और घुमाकर फेंका तो वह ऊपर उठी आग के समान जाने लगा। कुंभकर्ण उसे चूर-चूर करके मुस्कराता खड़ा रहा। १३८८

पॅयर्न्दोरु शिहरन् देडि नच्चमाम् विऱर्क्कु मॅन्नाप्
पुयङ्गळे पडेह ळाहत् तेरॅदि रोडिप् पुक्कात्
इयङ्गळुङ् गडलु मेहत् तिडिहळु मौऴिय यारुम्
पयङ्गॉळक् करङ्ग ळोच्चिक् कुत्तिना नुवैत्तान् पल्हाल् 1389

पॅयर्न्तु–अलग जाकर; ओरु चिकरम् तेटिन्–एक पर्वत खोजता फिरूँ तो; पिऱर्क्कुम्–अन्य वानरों को; अच्चम् आम्–डर होगा; ऎन्ना–विचार करके; पुयङ्कळे–भुजाओं को; पटैकळ् आक–हथियार बनाकर; तेर् ऎतिर्–रथ के सामने; ओटि पुक्कात्–दौड़कर गया; इयङ्कळुम्–(मारू) बाजे; कटलुम्–और सागर; मेकत्तु इटिकळुम्–और मेघों की गाजें; ऒऴिय–(शोर में) पिछड़ जाएँ, ऐसा; यारुम् पयम् कॉळ–कोई भी भयातंकित हो जाए ऐसा; करङ्कळ् ओच्चि–हाथ उठाकर; कुत्तिनान्–घूंसे मारे; पल् काल्–अनेक बार; उतैत्तान्–लातें मारीं। १३८९

नील ने सोचा कि फिर एक पर्वत की खोज में अन्यत्र चला जाऊँ तो ये वानर भयातुर हो जायँगे। इसलिए वह अपने हाथों को ही हथियार बनाकर कुंभकर्ण के रथ के सामने जा पहुँचा। उसने कुंभकर्ण पर मुष्टि-प्रहार किया, जिससे मारू बाजों, समुद्र, मेघों और गाजों के शोर को भी हराने वाला शब्द हुआ और लोग डर उठे। उसने अनेक लातें भी मारीं। १३८९

कैत्तलञ् जलित्तुक् कालुङ् गुलैन्दुतन् करुत्तु मुऱ्ऱात्
नॅय्त्तलै यऴलिऱ् कान्दि यॅरिहिन्ऱ नीलन् ऱन्नै
ऎय्त्तुयिर् पवैप्प वन्ना नॅऱ्ऱिना निडवु कैयाल्
मुत्तलैच् चूल मोच्चान् वॅरुङ्गैया नॅन्ऱु मुन्वन् 1390

कैत्तलम्–हाथ; चलित्तु–थक गये; कालुम् कुलैन्तु–पैर डगमगा गये;

तन् करुत्तु–अपने लक्ष्य में; मुट्रात्–पूर्ण न होकर; नॅय् तलै–घृत-पड़ी; अळलिल्–अग्नि के समान; कान्ति–भभककर; ॲरिकिन्ऱ–जलनेवाले; नीलन् तन्नै–नील को; उयिर् ॲय्त्तु–प्राण क्षीण हो जाएँ और; पतैप्प–छटपटाएँ ऐसा; अन्नान्–उस (कुम्भकर्ण) ने; इटतु कैयाल्–अपने बायें हाथ से; ॲड्रिनान्–मारा; वॅऱुम् कैयान् ॲन्ऱ–निरायुधपाणी समझकर; मुन्पन्–बलवान कुम्भकर्ण ने; मुत्तलै चूलम्–त्रिशूल को; ओच्चान्–नहीं उठाया (और उससे नहीं मारा)। १३९०

नील के हाथ-पैर शिथिल पड़ गये। उसका विचार सफल नहीं हुआ। इसलिए उसका मन घृत-लगी आग के समान जलने लगा। तब कुंभकर्ण ने बायें हाथ से एक प्रहार किया, जिससे नील के प्राण छटपटा गये। बलवान कुंभकर्ण ने शूल का प्रयोग इसलिए नहीं किया, उसने नील को निरायुधपाणी देख उसका प्रयोग नीतिसम्मत नहीं समझा। १३९०

आण्डदु नोक्कि निन्ऱ वङ्गद नाळि तन्नुळ्
नीण्डवोर् नॅडुन्दिण् गुन्ऱ निलमुदु हाट्र नोक्कि
माण्डन नरक्कन् दम्बि यॅन्रुल हेळुम् वाळ्त्तत्
तूण्डिन नवनै यन्नान् ऱोरुतनित् तोळि नेट्रान् 1391

आण्टु–तब; अतु नोक्कि–वह देखकर; निन्ऱ–जो खड़ा रहा वह; अङ्कतन्–अंगद ने; आळि तन्नुळ्–समुद्र के अन्दर; नीण्टतु–ऊँचा बने। रहे; ओर्–एक; नॅट्–बड़े; तिण्–कठोर; कुन्ऱम्–पर्वत को; निलम् मुतुकु आट्र–भूमिदेवी की पीठ को भारयुक्त करते हुए; नोक्कि–अलग उठाकर; अरक्कन् तम्पि माण्टनन्–राक्षस (रावण) का भाई मर गया; ॲन्ऱु–ऐसा; उलकु एळुम्–(समस्त) सातों लोकों के; वाळ्त्त–स्तुति करते; तूण्टिनन्–फेंका; अतनै–उस (पर्वत) को; अन्नान्–उस (कुम्भकर्ण) ने; तनि ओरु तोळिल्–अपने एक ही कन्धे पर; एट्रान्–झेल लिया। १३९१

तब अंगद ने, जो इसे देख रहा था, समुद्र के अन्दर रहे एक बड़े और भारी पर्वत को, भूमि की पीठ को विश्रान्ति देते हुए, उठाया और कुंभकर्ण पर फेंका। सातों लोकों ने सोच लिया कि राक्षसेन्द्र रावण का भाई मर गया और अंगद की संस्तुति की। पर कुम्भकर्ण ने उसे अपने एक कन्धे पर झेल लिया। १३९१

एट्रपो दनैय कुन्ऱ मॅण्णरुन् दुहळ दाहि
वीट्रुवीऱ् ऱाहि योडि विळुवलुम् कविथिन् वॅळ्ळम्
ऊट्रमे वॅमक्कॅन् ऱॅण्णि युडैन्दवु कुमर नुट्र
शीट्रमुम् तानु निन्ऱान् पॅयर्न्दिलन् शॅन्ऱ पावम् 1392

एट्रपोतु–जब झेल लिया तब; अनैय कुन्ऱम्–वह पर्वत; ॲण् अरुम्–अनगिनत; तुकळतु आकि–कण बनकर; वीऱु वीऱु आकि–अलग-अलग होकर; ओटि–दूर चलकर; विळुतलुम्–गिरा तो; कवियिन् वॅळ्ळम्–वानरों की सेना;

ऍमक्कु–हममें; ऊऱ्ऱम् एतु–बल कहाँ; ऍऩ्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; उटैन्ततु–हतोत्साह हो गयी; कुमरऩ्–(राजकुमार) अंगद; चॆऩ्ऱ पातम्–आगे जाते पैर को; पॆयर्न्तिलऩ्–पीछे न हटाकर; उऱ्ऱ चीऱ्ऱमुम्–उठा क्रोध और; तानुम्–खुद; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। १३६२

जब कुम्भकर्ण के कन्धे से वह टकराया, तब वह चूर-चूर हो गया और असंख्य कण अलग-अलग विकीर्ण हो गये। वानर-सेना यह सोचकर हड़बड़ा गयी कि अब हमारे पास बल क्या है? पर अंगद ने आगे रखा पैर पीछे नहीं किया। वह और क्रोध दो ही रहे। (अन्य सब भूल गया।)। १३९२

इडक्कैया लरक्क ऩाङ्गो रॆऴुमुऩै वयिरत् तण्डु
तडक्कलान् दरत्त दल्ला वलियदु तरुक्किन् वाङ्गि
मडक्कुवा युयिरै यॆऩ्ऩा वीशिऩ ऩदऩै मैन्दऩ्
तडक्कैयार् पिडित्तुक् कॊण्डाऩ् वाऩवर् तऩ्ऩै वाऴ्त्त 1393

अरक्कऩ्–राक्षस (कुम्भकर्ण); आङ्कु–वहाँ; ओर्–एक; ऍऴुमुऩै–लोहे के खम्भे के समान सिर वाला; तट्क्कलाम् तरत्तु अल्ला–रोकने योग्य जो नहीं था; वलियतु–ऐसा सशक्त; वयिर तण्टु–वज्रदण्ड; इट कैयाल्–बायें हाथ में; तरुक्किऩ् वाङ्कि–अभिमान के साथ लेकर; उयिरै मटक्कुवाय्–(अंगद की) जान निकाल दो; ऍऩ्ऩा–कहकर; वीचिऩऩ्–फेंका; अतऩै–उसको; वाऩवर् तऩ्ऩै वाऴ्त्त–देवों की स्तुति पाते हुए; तट कैयाल्–अपने विशाल हाथ से; पिटित्तु कॊण्टाऩ्–पकड़ लिया (अंगद ने)। १३६३

कुम्भकर्ण ने तब एक वज्रदण्ड को सगर्व लिया, जो लोहे के खम्भे के समान नोकदार था और किसी के द्वारा रोका नहीं जा सकता था। उसने उसे यह कहकर चला दिया कि जाकर अंगद की जान को फँसा लो! अंगद ने उसे अपने विशाल हाथ से पकड़ लिया, जिसे देखकर देवों ने उसका जय-जयकार किया। १३९३

पिडित्तदु शुऴऱ्ऱि मऱ्ऱप् पॆरुवलि यरक्कऩ् तऩ्ऩै
इडित्तुरु मेरु कुऩ्ऱत् तॆरिमडुत् तियङ्गु मापोल्
अडित्तुयिर् कुडिप्प ऩॆऩ्ऩा वऩल्विऴित् तार्त्तु मण्डिक्
कॊडित्तडन् देरिऩ् मुऩ्ऩरक् कुदित्तॆदिर् कुऱुहि निऩ्ऱाऩ् 1394

पिटित्ततु–जिसको पकड़ा; चुऴऱ्ऱि–उसे घुमाकर; मऱ्ऱु–फिर; अ–उस; पॆरु वलि–बड़े बलवान; अरक्कऩ् तऩ्ऩै–राक्षस को; अटित्तु–पीटकर; उयिर् कुटिप्पऩ्–प्राण पी लूँगा; ऍऩ्ऩा–कहकर; आर्त्तु–नारे लगाकर; अऩल् विऴित्तु–आग-सी दृष्टि करके; मण्टि–कुपित होकर; कॊटि–ध्वजायुक्त; तट–बड़े; तेरिऩ् मुऩ्ऩर्–रथ के सामने; इटित्तु–गरजकर; उरुम् एऱु–अशनिराज; कुऩ्ऱत्तु–पर्वत

पर; ऍरि मट्टुत्तु–आग लगाते हुए; इयक्कुमा पोल्–घूमता जैसे; कुतित्तु–कूदकर; ऍतिर् कुरुकि–सामने पास जाकर; निन्राऩ्–खड़ा रहा। १३६४

बलात् गृहीत दण्ड को घुमाते हुए अंगद 'इस दण्डायुध द्वारा महाबली कुम्भकर्ण के प्राणों को पी लूंगा' —ऐसे वीर वचनों के साथ आग के समान दृष्टि करके ध्वजालंकृत विशाल रथ के सामने पास गया, जैसे वज्र घोष के साथ आग उगलता हुआ किसी पर्वत पर जाता हो। १३९४

निन्रवन् तन्नै यन्ना नॅरुप्पॅळ निमिर नोक्किप्
पोन्रवन् दडॅन्द तानॅप् पुरवल नॊरुवन् ऱानो
अन्रवन् महनो वॅम्मू रनल्मडुत् तरक्कर् माळ
वॅन्रवन् ऱानो यारो विळम्बुदि विरैवि नॅन्राऩ् 1395

निन्रवन् तन्नै–जो खड़ा रहा उसे; अन्नान्–उस (कुम्भकर्ण) ने; नॅरुप्पु ऍळ–आग निकालते हुए; निमिर नोक्कि–आँख उठाकर देखकर; पोन्र वन्तु अटैन्त–मरने के लिए जो आ पहुँचा है; तानै पुरवलन् ऒरुवन्–सेना का रक्षक एक (सुग्रीव); तानो–ही है क्या; अन्रु–नहीं तो; अवन् मकनो–उसका पुत्र है; ऍम् ऊर्–हमारे नगर को; अनल् मट्टुत्तु–आग से जलाकर; अरक्कर् माळ–राक्षसों को मारकर; वॅन्रवन् तानो–जो विजयी हुआ वही (हनुमान) है क्या; यारो–कौन; विरैविन्–जल्दी; विळम्पुति–बताओ; ऍन्राऩ्–पूछा। १३६५

अपने सामने आकर स्थित अंगद को कुम्भकर्ण ने आग-सी जलती आँखों को उठाकर देखा और पूछा कि क्या तुम मरण का वरण करके आयी वानर-सेना के राजा सुग्रीव हो? या उसके पुत्र अंगद? या हमारे लंका नगर को आग लगाकर हमारे राक्षसों को मारते हुए जो विजयी लौटा था वह, हनुमान ही हो? इनमें तुम कौन हो?। १३९५

नुम्मुन्नै वालिऱ् चुट्रि नोन्दिशै नाऩ्गुन् दावि
मुम्मुनै नॅडुवे लण्णल् मुळरियञ् जरणन् दाळ्न्द
वॅम्मुनै वीरन् मैन्द निन्नैयॅन् वालिन् वीक्किन्
तॅम्मुनै यिरामन् पादम् वणङ्गिडच् चॅल्वॅ नॅन्राऩ् 1396

नुम् मुन्नै–तुम्हारे बड़े भाई को; वालिल् चुट्रि–पूँछ से लपेटकर; नोन् तिचै नान्कुम्–चारों सबल दिशाओं में; तावि–लपक जाकर; मुम्मुनै नॅटुवेल्–त्रिशूलधारी; अण्णल्–महादेव के; मुळरि अम् चरणम्–सुन्दर चरण-कमलों पर; ताळ्न्त–जो विनत हुआ; वॅम्मुनै वीरन्–भीषण युद्धवीर (वाली) का; मैन्तन्–पुत्र हूँ; निन्नै–तुम्हें; ऍन् वालिन् वीक्कि–अपनी पूँछ में बाँधकर; तॅव् मुनै–युद्ध के मैदान में सामने; इरामन् पातम्–रहनेवाले श्रीराम के चरणों में; वणङ्किट–नमस्कार करने के लिए; चॅल्वॅन्–जाऊँगा। १३६६

अंगद ने (दम्भ के साथ) उत्तर दिया। मैं उस भीषण योद्धा वीर वाली का पुत्र अंगद हूँ, जो तुम्हारे बड़े भाई को अपनी पूँछ से बाँध लेकर

सशक्त चारों दिशाओं में लपक चला और त्रिशूलधारी महादेव के चरणों में विनत हुआ। मैं भी अपनी पूँछ से तुम्हें वाँध लेकर युद्धभूमि में स्थित श्रीराम के श्रीचरणों में नमस्कार करने चलनेवाला हूँ। १३९६

उन्दंये मरैन्दो रम्बा लुयिरुण्ड वुदवि योर्कुप्
पन्दनैप् पहैयैच् चॅर्रुक् कोडुक्किलै यॅन्निर् पारोर्
निन्दनै निन्नैच् चॅय्वर् नल्लदु निनैन्दाय् नेरे
वन्दनै पुरिव रन्रे वीरराय् वशैयिल् तीर्न्दार् 1397

मरैन्तु–छिपा रहकर; उन्तैयै–तुम्हारे पिता को; ओर् अम्पाल्–एक अस्त्र से; उयिर् उण्ट–प्राणाशन करनेवाले; उतवियोर्कु–सहायक को; पन्तनै पकैयै–बँधे शत्रु को; चॅर्रु–मारकर; कोटुक्किलै–न (सहायता) दोगे; ऎन्निल्–तो; पारोर्–पृथ्वीवासी; निन्तै निन्तनै चॅय्वर्–तुम्हारी निन्दा करेंगे; नल्लतु निनैन्ताय्–खूब सोचा है; वीरराय्–शुद्धवीर और; वचैयिल् तीर्न्तार्–किसी दोष से रहित लोग; नेरे वन्तनै पुरिवर् अन्रे–समक्ष तुम्हारी वन्दना करेंगे न। १३९७

कुंभकर्ण ने व्यंग्य किया। तुम्हारे पिता को छिपा रहकर जिसने उसके प्राण का अशन किया और उस रीति से तुम्हारा बड़ा उपकार किया था, उसके बँधे शत्रु को तुम मारकर उसकी सहायता नहीं करोगे तो लोग तुम्हारी निंदा करेंगे! तुमने क्या ही खूब सोचा है! जो शुद्धवीर हैं और निर्दोष हैं, वे बिलकुल तुम्हारे समक्ष आकर तुम्हारी स्तुति करेंगे न? । १३९७

इत्तलै वन्द दॅन्नै यिरामन्बाल् वालि नीर्त्तु
वैत्तलै नुदलि यन्रु वानवर् मार्बिर् रैत्त
मुत्तलै यियिलि नुच्चि मुदुहुरु मूरि वाल्पोल्
कत्तलङ् गालुन् दूङ्गक् किडत्तलैक् करुदि यॅन्रान् 1398

इ तलै वन्ततु–यहाँ तुम्हारा आना; ऎन्नै–मुझे; वालिन् ईर्त्तु–पूँछ से पकड़ खींचकर; इरामन् पाल्–श्रीराम के पास; वैत्तलै–रखना; नुतलि अन्रु–सोचकर नहीं; वानवर् मार्पिल्–देवों के वक्ष में; तैत्त–जो पहले जा धँसा था; मु तलै अयिलिन् उच्चि–त्रिशिर शूल का फल; मुतुकु उरु–पीठ के बाहर निकले; मूरि वाल् पोल्–सशक्त दुम की तरह; कै तलम्–हाथ; कालुम्–और पैर; तूङ्क किटत्तलै–लटके रहें; करुति–इसी को चाहकर; ऎन्रान्–कहा (कुम्भकर्ण ने)। १३९८

कुंभकर्ण ने उसी तर्ज में आगे कहा कि तुम इधर आये हो मुझे अपनी पूँछ में वाँध ले चलने और श्रीराम के पास छोड़ देने का विचार लेकर। पर मेरा देववक्षछेदक शूल पूँछ का काम करेगा और तुम्हारी पीठ के उस पार चला जायगा; और तुम्हारे हाथ और पैर लटके रहेंगे। यही तुम्हारा अंजाम साबित रहेगा। १३९८

अऱ्ऱव तुरैत्त लोड्डु मत्तल्विळित् तशनि कुन्ऱत्
तुऱ्ऱदु पोलु मॅन्नु मॉलिपड वुलह मुट्कप्
पॉऱ्ऱडन् दोळिन् वीशिप् पुडैत्तत्तन् पॉरियिऱ् चिन्दि
इऱ्ऱदु नूरु कूरा यॅळ्मुनै वयिरत् तण्डु 1399

अऱ्ऱु–वैसा; अवन् उरैत्तल् ओटुम्–उसके कहते ही; अत्तल् विळित्तु–आग निकालते देखकर; अचनि–अशनि; कुन्ऱत्तु–पर्वत पर; उऱ्ऱतु पोलुम्–जा लगी हो जैसे; ऍन्नुम् ऑलि–ऐसी ध्वनि; पट–उठे; उलकम् उट्क–संसार के लोग डरें; पॊन् तट तोळिन्–स्वर्णभूषणालंकृत विशाल हाथ से; वीचि पुटैत्ततन्–(कुम्भकर्ण ने) ज़ोर लगाकर मारा; ऍळु मुनै वयिरम् तण्टु–लौहस्तम्भ-सम नोकवार वह वज्रदण्ड; पॊरियिल् चिन्ति–अंगारों में छितरकर; नूरु कूराय्–शत-शत खण्डों में; इऱ्ऱतु–टूट गया। १३९९

वैसा कहकर उसने आग्नेय दृष्टि डालते हुए अपने स्वर्णाभूषणभूषित विशाल हाथ से ज़ोर देकर मारा जिससे पर्वत पर गिरनेवाली अशनि की-सी भीषण ध्वनि उठी और सारे लोकवासी दहल उठे। इससे वह वज्रदण्ड, जिसका अगला भाग लोहे के खम्भे के समान था, सौ-सौ खण्डों में टूटा और सब ओर अंगारे-से छूट निकले। १३९९

तण्डिऱत् तडक्कै योच्चित् तळुविय तरुह णानैक्
कॊण्डिऱप् पुरुव नॆन्ना तलैयुऱक् कुनिक्कुङ् गालै
पुण्डिऱप् पुरव लाळन् कैयिनाऱ् कुहैन्दु कुत्त
मण्डिऱप् पॆयद वीळ्न्दान् मारुदि यिमैप्पिन् वन्दान् 1400

तण्टु इऱ–दण्ड के टूटने पर; तट कै ओच्चि–विशाल हाथ को बढ़ाकर; तळुविय–युद्धसन्नद्ध; तरुकणानै–निडर कुम्भकर्ण को; कॊण्टु–पकड़ लेकर; इऱप्पु उरुवन्–चला जाऊँगा; ऍन्ना–कहकर; तलै उऱ–सिर औंधाकर; कुनिक्कुम् काले–जब झुका तब; वलाळन्–बलवान उस राक्षस ने; पुकैन्तु–खौलकर; पुण् तिऱप्पुऱ–व्रण खुल आएँ, ऐसा; कैयिनाल् कुत्त–अपने हाथों से घूँसे मारे तो; मण् तिऱप्पु ऍय्त–पृथ्वी फट जाए ऐसा; वीळ्न्तान्–(अंगद) गिर गया; मारुति–मारुति; इमैप्पिन् वन्तान्–एक पल में आया। १४००

दण्ड के टूटने पर अंगद ने हाथ बढ़ाकर कहा कि युद्ध के लिए आगत इस अपार निडर राक्षस को ग्रस लेकर अलग हट जाऊँ। खूब सिर औंधाकर वह झुका तो पराक्रमी कुंभकर्ण ने बहुत ही क्रोध के साथ ऐसे ज़ोर के घूँसे मारे कि अंगद के शरीर पर व्रण खुल आये और वह धड़ाम से गिरा कि धरती फूटी-सी लगी। तभी पल झपने की देर में मारुति उधर आ गया। १४००

मऱित्तव नवनैत् तन्गै वयिरवाट् चूल मार्बिल्
कुऱित्तुऱ वॅऱिय लुऱ्ऱ कालैयिऱ् कुन्ऱ मॊन्ऱु

पऱित्तव नॆऱ्ऱि मुऱ्ऱप् परप्पिडैप् पाह मुऴ्ळे
चॆऱित्तॆन्ऩच् चुरिक्क वीशित् तीर्त्तनै वाऴ्त्ति यार्त्तान् 1401

अवऩ्–(जब) वह; मऱित्तु–फिर; अवनै–उसको; तन् कै–अपने हाथ के; वयिर वाळ् चूलम्–बहुत कठोर हथियार शूल को; मार्पिल् उऱ–वक्ष में भोंकने का; कुऱित्तु–उद्देश्य करके; ॲऱियल् उऱ्ऱ कालॆयिल्–चलाने लगा तब; कुऩ्ऱम् ऑन्ऱु पऱित्तु–(हनुमान) एक पर्वत उठाकर; अवन् नॆऱ्ऱि मुऱ्ऱ–उसके माथे भर में; परप्पिटै पाकम् उऴ्ळे–विशाल भाग के अन्दर; चॆऱित्तु ॲऩ–खूब धँस गया हो ऐसा; चुरिक्क–गड़ जाय ऐसा; वीचि–फेंककर; तीर्त्तनै वाऴ्त्ति–श्रीरामतीर्थ की स्तुति करके; आर्त्तान्–नर्दन कर उठा। १४०१

जब कुंभकर्ण फिर से अंगद के वक्ष में अपने सशक्त और तीक्ष्ण त्रिशूल को भोंकनेवाला था, तभी हनुमान ने एक बहुत बड़े पर्वत को उखाड़कर कुंभकर्ण के माथे पर ऐसा फेंका कि वह जाकर माथे के बहुतांश भाग को अपने में समा लेकर धँस गया। हनुमान ने श्रीरामतीर्थ का नाम स्तुति में स्मरण करके भीषण नर्दन किया। १४०१

तलैयिनिऱ् ऱैत्तु वेऱोर् तलैयॆन निन्ऱ दत्ऩ
मलैयिनैक् कैयिन् वाङ्गि मारुदि वयिर मार्बिन्
उलैयुऱ वॆन्द पॊन्शॆय् कम्मियर् कूड मॊप्पक्
कुलैयुरु पॊऱिहळ् शिन्द वीशित्तोळ् कॊट्टि यार्त्तान् 1402

तलैयिनिल् तैत्तु–माथे पर धँसकर; वेऱु ओर् तलै ॲऩ–और दूसरे (एक) सिर के समान; निन्ऱतु अन्त–जो रहा उस; मलैयिनै–पर्वत को; कैयिन् वाङ्कि–अपने हाथ में लेकर; मारुति–मारुति के; वयिरम् मार्पिन्–वज्र-वक्ष पर; उलै उऱ–भट्ठी पर लगकर; वॆन्त पॊन् चॆय्–तपनेवाले स्वर्ण का काम करनेवाले; कम्मियर् कूटम् ऑप्प–लुहारों के हथौड़े के समान; कुलै उऱु पॊऱिकळ् चिन्त–जिगर से अंगारे छितरें ऐसा; वीचि–फेंककर; तोळ् कॊट्टि–कन्धे ठोंककर; आर्त्तान्–गरज उठा। १४०२

वह पर्वत कुंभकर्ण के दूसरे सिर के समान रह गया। कुंभकर्ण ने उसे अपने हाथ से उखाड़कर मारुति के कठोर वक्ष पर भट्ठी में लोहे(स्वर्ण) का काम करनेवाले के हथौड़े के समान फेंका तो हनुमान के मर्मस्थल से (निहाई से निकलनेवाले अंगारों के समान) अंगारे उठे और छितर उठे। कुंभकर्ण ने अपने कन्धे ठोंककर नर्दन किया। १४०२

अव्वळि वालि शेयै यरिकुल वीर रञ्जार्
वव्विनर् कॊण्डु पोनार् मारुदि वानै मुऱ्ऱुम्
कव्वियि दन्नैय दाङ्गोर् नॆडुवरै कडिदिन् वाङ्गि
ॲव्वमि लाऱ्ऱ लानै नोक्किनित् ऱिनैय शॊन्ऩान् 1403

अप्पॊऴुतु–तब; अरिकुल वीरर्–हरिकुल वीर; अच्चार्–विना डरे; वालि चेयै–वालीपुत्र को; वव्वित्तर्–पकड़कर; कॊण्टु पोतार्–ले गये; मारुति–मारुति; वाऩ् मुऱ्ऱुम् कव्वियतु अऩ्ऩतु–आकाश को पूर्ण रूप से छिपा लिया हो, ऐसे; ओर् नॆट्टु वरै–एक बड़े पर्वत को; आङ्कु–वहाँ; कटितिऩ् वाङ्कि–जल्दी लेकर; ऎव्वम् इल्–निर्दोष; आऱ्ऱलाऩै नोक्कि निऩ्ऱु–बलवान को देखता खड़ा रहकर; इऩैय चॊऩ्ऩाऩ्–यों बोला। १४०३

तब वानर वीर विना डरे अंगद को उठा ले गये। मारुति ने आकाश भर को छिपाते-से एक पर्वत को वहाँ जल्दी उखाड़ लिया। फिर उसने बिलकुल दोषहीन बलवान कुंभकर्ण से यों कहा। १४०३

ऍऱिहुव ऩिदऩै निऩ्मे लिमैप्पुऱु मळवि लाऱ्ऱल्
मऱिहुव दऩ्ऱि वल्लाय् माऱ्ऱिऩै यॆऩ्ऩिऩ् वऩ्मै
अऱिहुव रॆवरुम् पिऩ्ऩै याऩुऩ्ऩो डमरुञ् जॆय्येऩ्
पिऱिहुव ऩुलहिल् वल्लोय् पॆरुम्बुहऴ् पॆऱुदि यॆऩ्ऱाऩ् 1404

निऩ्मेल्–तुम पर; इतऩै ऍऱिकुवऩ्–इसको फेंकनेवाला हूँ; इमैप्पुऱुम् अळविल्–पलक झपती देर में; आऱ्ऱल् मऱिकुवतु–(तुम्हारे) प्रताप का मिटना (हो जायगा); अऩ्ऱि–वैसा न होकर; वल्लाय्–बलवान; माऱ्ऱिऩै ऍऩ्ऩिऩ्–रोक लोगे तो; ऍवरुम् वऩ्मै अऱिकुवर्–सब तुम्हारा पराक्रम जान लेंगे; पिऩ्ऩै–बाद; याऩ्–मैं; उऩ्ऩोटु–तुम्हारे साथ; अमरुम् चॆय्येऩ्–युद्ध नहीं करूँगा; पिऱिकुवऩ्–अलग चला जाऊँगा; वल्लवऩे–प्रतापी; उलकिल् पॆरुम् पुकऴ्–संसार में बड़ा यश; पॆऱुति–पाओगे; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १४०४

(कुंभकर्ण!) मैं तुम पर यह पर्वत फेंकूंगा। पलक झपती देर में तुम्हारा सारा पराक्रम काफ़ूर हो जायगा। अगर वैसा नहीं हुआ, और हे प्रतापी, तुम उसे रोक दोगे तो सभी तुम्हारे पराक्रम के क़ायल हो जायेंगे। बाद मैं भी तुम्हारे साथ युद्ध नहीं करूँगा। अलग हट जाऊँगा। पराक्रमी! तुम पृथ्वी में विपुल यश के भागी बन जाओगे। १४०४

माऱ्ऱमः(ह्) दुरैप्पक् केळा मलैमुऴै तिऱन्द वॆऩ्ऩक्
कूऱ्ऱुऱऴ् पहुवाय् विळ्ळ नहैत्तुनी कॊणर्न्द कुऩ्ऱै
एऱ्ऱऩ ऩेऱ्ऱ कालत् तिऱ्ऱैयदऱ् कोऱ्क मॆय्यिऩ्
तोऱ्ऱऩ ऩुतक्कॊऩ् वऩ्मै शुरुङ्गुमॆऩ् ऱरक्कऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 1405

माऱ्ऱम् अ.:तु–वचन वह; उरैप्प केळा–कहते सुनकर; मलै मुऴै–पर्वत-कन्दरा; तिऱन्ततु ऍऩ्ऩ–खुली हो जैसे; कूऱ्ऱु उऱऴ्–यम के-से; पकुवाय् विळ्ळ–खुले मुख को खोलकर; नकैत्तु–हँसकर; नी कॊणर्न्त–तुम्हारे लाये; कुऩ्ऱै–पर्वत को; एऱ्ऱऩऩ्–झेलकर; एऱ्ऱ कालत्तु–झेलते समय; अतऱ्कु–उससे; इऱै ओऱ्कम् ऍय्तिऩ्–जरा भी शिथिल पड़ूँगा तो; तोऱ्ऱऩऩ्–हार गया; उतक्कु–

तुम्हारे (बल के) सामने; ॲंन् वन्मै–मेरा पराक्रम; चुरुङ्कुम्–कम माना जायगा; ॲन्ऱु–ऐसा; अरक्कन् चॊन्नान्–राक्षस ने कहा। १४०५

हनुमान का वह वचन सुनकर कुंभकर्ण ने पर्वत-कंदरा के समान और यम-भयंकर अपना मुख खूब खोला और ठठाकर हँसते हुए कहा कि अगर मैं इसको झेलते ऐन वक़्त पर ज़रा भी शिथिल पड़ जाऊँ तो मान लूँगा कि हार गया। मेरा बल तुम्हारे बल के सामने छोटा होगा। १४०५

मारुदि वल्लै याहिल् निल्लडा माट्टा याहिल्
पेरुदि युयिर्हॊण् डॆन्ऱु पॆरुङ्गैया नॆरुङ्ग विट्ट
कारुदिर् वयिरक् कुन्ऱैक् कात्तिलन् तोण्मे लेऱ्ऱान्
ओरुदिर् नूऱु कूऱा युक्कदॆव् वुलहु मुट्क 1406

मारुति–हनुमान द्वारा; अटा–अरे; वल्लै आकिल् निल्–समर्थ हो तो खड़ा रह; माट्टाय् आकिल्–न कर सकते हो; उयिर् कॊण्टु–जान लेकर; पेरुति–भाग जा; ॲन्ऱु–कहकर; पॆरुकैयाल्–अपने बड़े हाथ से; नॆरुङ्क विट्ट–राक्षस पर जो फेंका गया; कार् उतिर्–और जिससे मेघ बिखर रहे थे; वयिरम् कुन्ऱै–उस वज्र-गिरि को; कात्तिलन्–रोका नहीं (कुम्भकर्ण ने); तोळ् मेल् एऱ्ऱान्–कन्धे पर झेल लिया; ॲ उलकुम् उट्क–सब लोकों को भय में डालते हुए; ओर् उतिर्–एक ही टपक में; नूऱु कूऱाय् उक्कतु–सौ खण्डों में छितर गया। १४०६

मारुति ने सदम्भ कहा कि रे! सामर्थ्य हो तो खड़ा रह। नहीं हो तो जान बचाकर हट जा। यह कहकर उसने अपने बड़े हाथ से पर्वत को कुंभकर्ण पर फेंका। कुंभकर्ण ने मेघ गिराते हुए आनेवाले उस वज्रपर्वत का निवारण नहीं किया पर अपने कन्धे पर झेल लिया। वह एक ही बार टूटा और चरमरा गया और एक ही टपक में सौ-सौ खण्ड हो गिर गया, जिसको देखकर सभी लोक दहल उठे। १४०६

इळक्कमॊन् ड्रिन्ऱि निन्ऱ वियऱ्कैपार्त् तिवन्ऱ दाऱ्ऱल्
अळक्कुरऱ् पालु माहा कुलवरै यमरि ताऱ्ऱा
तुळक्कुरु निलैय नल्लन् शुन्दरत् तोळन् वाळि
पिळक्कुमेऱ् पिळक्कु मॆन्ना मारुदि पॆयर्न्दु पोनान् 1407

इळक्कम् ऒन्ऱु–कोई शिथिलाई; इन्ऱि निन्ऱ–बिना जो खड़ा रहा; इयऱ्कै पार्त्तु–उस स्वभाव-स्थिति को देखकर; मारुति–हनुमान; इवन्तु–इसका; आऱ्ऱल्–पराक्रम; अळक्कुरऱ् पालुम् आका–आँकने में आ सकनेवाला नहीं; कुल वरै–अष्टकुलगिरियाँ; अमरिन्–(इसके) बल को; आऱ्ऱा–सह नहीं सकतीं; तुळक्कुरु–हिलाया जा सके ऐसी; निलैयन् अल्लन्–स्थिति का नहीं; चुन्तरम् तोळन्–सुन्दर-बाहु (श्रीराम) के; वाळि–शर; पिळक्कुमेल्–चीर सकें तो; पिळक्कुम्–काटें; ॲन्ना–कहता हुआ; पॆयर्न्तु पोनान्–अलग चला गया। १४०७

मारुति ने किसी विध की शिथिलता या चंचलता-रहित जो खड़ा रहा उसकी स्वाभाविक गति को देखा, तो वह कह उठा कि इसका पराक्रम आँकने में आनेवाला नहीं है ! आठों कुलगिरियाँ भी इसके पराक्रम का जवाब नहीं हो सकेंगी। यह चंचल होनेवाला नहीं है ! सुन्दरबाहु श्रीराम के बाण इसको भेद सकें तो भेद सकें। यह कहते हुए वह दूर चला गया। १४०७

ऍऴुबदु वॅळ्ळत् तुळ्ळा रिरुन्दव रॊऴिय यारुम्
मुऴुमुदन् माळ्व रिन्ऱे यिवन्वलत् तमैन्द मुच्चूल्
कऴुविनि लॅन्ऱु वानोर् कलङ्गिनार् नडुङ्गि नाराल्
पॊऴुदिनि नुलह मून्ऱुन् तिरियुमॅन् ऱुळ्ळम् बॊङ्गि 1408

ऍऴुपतु वॅळ्ळत्तु–सत्तर 'वॅळ्ळम्' की संख्या; उळ्ळार्–के जो रहे; इऱन्तवर् ऒऴिय–उनमें मरे हुओं को छोड़कर; यारुम्–जो बचे थे वे सभी; इवन् वलत्तु अमैन्त–इसके दायें हाथ में रहे; मु चूल् कऴुविनिल्–त्रिशूल रूपी सूली पर; इन्ऱे–आज ही; मुऴुमुतल्–निपट जड़ से; माळ्वर्–मर जाएँगे; ऍन्ऱु–ऐसा; कवन्ऱु–डरकर; वानोर्–देव; कलङ्कितार्–व्यग्र हुए; पॊऴुतिनिल्–कुछ ही देर में; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोक; तिरियुम्–बदल जाएँगे; ऍन्ऱु–ऐसा; उळ्ळम् पॊङ्कि–चित्ताक्रांत होकर; नडुङ्कितार्–काँप उठे। १४०८

देव डरे कि सत्तर 'वॅळ्ळम्' की संख्या वाली वानर-सेना के जितने वीर मरे हैं, उनको छोड़ बाक़ी जितने बचे रहते हैं, वे सब आज ही इसके दायें हाथ के त्रिशूल रूपी सूली पर चढ़ जाएँगे और मर जाएँगे। उनका मन अति व्यग्र हुआ यह सोचकर कि कुछ ही समय के अंदर तीनों लोक बदल जाएँगे। १४०८

ताक्किनार् ताक्कि नारदङ् गैत्तलञ् जलित्त दन्ऱि
नूक्किना रिल्लै यॊन्ऱुम् नोवुशॆय् वारु मिल्लै
आक्किनान् कळत्ति नाङ्गोर् कुरङ्गिन दडियु मिन्ऱिप्
पोक्किना नाण्मै याले पुदुक्किनान् पुहऴै यन्नान् 1409

ताक्कितार्–(वानर वीरों ने) आक्रमण किया; ताक्कितार् तम्–प्रहार करनेवालों के; कै तलम्–हाथ; चलित्ततु–थकित हुए; अन्ऱि–इसके सिवा; नूक्कितार् इल्लै–उसे थकित करनेवाले नहीं रहे; ऒन्ऱुम्–कोई भी; नोवु चॆय्वारुम्–पीड़ा देनेवाले भी; इल्लै–नहीं रहे; आक्कितान्–युद्ध के रचयिता ने; आङ्कु–वहाँ; कळत्तितिल्–समराजिर में; ओर् कुरङ्कितु अटियुम् इन्ऱि–एक वानर का चरण-निशान भी न रहने देकर; पोक्कितान्–मिटाया; अन्नान्–उसने; आण्मैयाले–अपने पुरुषार्थ से; पुकऴै–अपने यश को; पुतुक्कितान्–ताज़ा कर लिया। १४०९

वानर वीरों ने कुंभकर्ण पर प्रहार किये। किन्तु प्रहार करनेवाले

थके पर उसे हिलानेवाले या थकानेवाले कोई नहीं रहे। युद्ध के रचयिता उसने वहाँ मैदान में वानरों का चरण-निशान तक मिटा दिया और अपने अपूर्व पुरुषार्थ से अपने यश को अभिनव बना लिया। १४०९

शङ्गत्तार् कुरङ्गु शायत् ताबद रॅन्नत् तक्कार्
इङ्गुऱ्ऱा रल्ल रोदान् वेऱुमो रिलङ्गै युण्डो
अॅङ्गुऱ्ऱा रॅङ्गुऱ् ऱारॅन् ऱॅडुत्तळैत् तिमैयो रज्जत्
तुङ्गत्तोळ् कॉट्टि यार्त्तान् कूऱ्ऱॅयुन् दुणुक्कङ् गॉण्डान् 1410

कूऱ्ऱॅयुम् तुणुक्कम् कॉण्टान्–यम को भी जिसने भयभीत कर दिया था, उसने; चङ्कत्तु आर्–भीड़ में रहे; कुरङ्कु चाय–बन्दरों के मरने पर; तापतर् ॲन्न तक्कार्–तपस्वी की प्रशंसा के योग्य (वे); इङ्कु उऱ्ऱार् अल्लरो–यहाँ आये नहीं हैं क्या; वेऱुम्–अन्य; ओर् इलङ्कै–एक लंका; उण्टो–रहती है क्या; ॲङ्कु उऱ्ऱार्–कहाँ रहे; ॲङ्कु उऱ्ऱार्–कहाँ रहे; ॲन्ऱु–ऐसा; ॲटुत्तु अळैत्तु–कण्ठ उठाकर टेर लगाते हुए; इमैयोर् अज्च–देवों को भयातुर करते हुए; तुङ्कम् तोळ् कॉट्टि–उन्नत कन्धे ठोंककर; आर्त्तान्–वीरनर्दन किया। १४१०

काल-भयंकर कुंभकर्ण चिल्ला उठा कि विपुल समूहों में भरे आये वानर मर गये। फिर तपस्वी शंसित वे दोनों (राम और लक्ष्मण) इधर नहीं आये हैं क्या? क्या कोई दूसरी लंका भी कहीं है (जहाँ वे गये हैं)? कहाँ हैं वे? कहाँ? ललकारते हुए देवों के मन में भय भरकर उसने अपने उन्नत कन्धे ठोंके और वीर-नर्दन किया। १४१०

परन्दलै यदनिन् वन्द पलपॅरुङ् गविियिन् पणॅ
इऱन्ददु किडक्क निन्ऱ विरिदलि नियारु मिन्ऱि
वऱन्ददु शोरि पाय वळर्न्ददु महर वेलै
कुऱैन्ददु उवावुऱ् ऱोदङ् गिळर्न्दुमीक् कॉण्ड दॅन्न 1411

परम् तलै अतनिन् वन्त–विशाल समराजिर, जिसमें जो आये; पल पॅरु–अनेक बड़े; कविियिन् पणॅ–वानरों के झुंड; इऱन्तु किटक्क–जो मर गये उनको छोड़; निन्ऱ–जो (जीवित) खड़े रहे; इरितलिन्–उनके तितर-वितर हो जाने से; यारुम् इन्ऱि–बिना किसी के; वऱन्ततु–रिक्त हो गया; कुऱैन्ततु–क्षीण जो रहा; मकरम् वेलै–वह मकरालय; उवा उऱ्ऱु–पूर्णिमा में चन्द्र की ओर; ओतम् किळर्न्तु–जल उठाकर; मी कॉण्टतु ॲन्न–आकाश की ओर फैला हो जैसा; चोरि–रक्त; पाय–बहा और; वळर्न्ततु–(समुद्र) स्फीत हो उठा। १४११

युद्धभूमि रिक्त हो गयी, क्योंकि वानरों के बहुत बड़े-बड़े समूह या तो मर गये या भाग गये। अब रक्त जाकर मकरालय को भरा तो वह पूर्णिमा के दिन पूर्ण चन्द्र को देखकर जैसे क्षीण समुद्र एक दम उमंगीभूत हो जाता है वैसे स्फीत हो गया। १४११

कुन्ऱुङ् गऱ्कळु मरङ्गळुङ् गुऱैन्दन कुरङ्गिऩ्
वॆन्ऱि यम्बॆरुज् जेनैयोर् पादियिऩ् मेलुम्
अन्ऱु तेय्न्ददॆन् ऱुरैत्तन रमरर्कण् डुवप्पच्
चॆन्ऱु ताक्किन नॊरुतनिच् चुमित्तिरै शिङ्गम् 1412

कुन्ऱम्–गिरियाँ; कऱ्कळुम्–चट्टानें; मरङ्कळुम्–और वृक्ष; कुऱैन्तत–कम हो गये; कुरङ्किऩ्–वानरों की; वॆन्ऱि अम् पॆरु चेनै–बड़ी विजयवाहिनी; अन्ऱु–उस दिन; ओर् पातियिन् मेलुम्–आधी से अधिक; तेय्न्ततु–मिट गयी; ऎन्ऱु उरैत्तनर्–ऐसा कहा वानरों ने (तब); अमरर्–देवों को; कण्टु उवप्प–देखकर मुदित होने देते हुए; ऒरु तनि–बहुत ही विलक्षण; चुमित्तिरै चिङ्कम्–सुमित्रा के केसरी (समान पुत्र) ने; चॆन्ऱु–जाकर; ताक्किनन्–आक्रमण किया। १४१२

पर्वत, चट्टानें और तरु सभी कम हो गये। वानरों ने कहा कि उस एक दिन में वानरों की विजयवाहिनी सेना के आधे भाग से अधिक की सेना मिट गयी। तब अप्रतिम सुमित्रा के केसरी-समान सुत ने जाकर कुंभकर्ण से युद्ध किया। १४१२

नाणॆ ऱिन्दनन् शिलैयिनै यरक्कियर् नहुपॊऩ्
पूणॆ ऱिन्दनर् पडियिडै यिडिपॊडित् तॆन्नच्
चेणॆ ऱिन्दॆळु तिशैशॆवि डॆऱिन्दन वलहै
तूणॆ ऱिन्दन कैयॆडुत् ताडिन दुणङ्गै 1413

चिलैयिनै–धनुष का; नाण् ऎऱिन्ततन्–डोरा टंकोरा; अरक्कियर्–राक्षसियों ने; नकु पॊन् पूण्–उज्ज्वल स्वर्णाभरणों को; पटि इटै–भूमि पर; ऎऱिन्ततर्–फेंक दिया; पटि इटै–भूमि में से; इटि पॊटित्तु ऎन्न–अशनि उठी हो जैसे; चेण् ऎऱिन्तु ऎळु–बहुत दूर तक सीधी दिखनेवाली; तिचै–दिशाओं के; चॆविटु ऎऱिन्तन–कान बहरे हुए; अलकै–भूतगण; तूण् ऎऱिन्तन–स्तम्भ उछाल रहे जैसे; कै ऎटुत्तु–हाथ उठाकर; तुणङ्कै आटिन–बद्धहस्त नाच नाचे। १४१३

लक्ष्मण ने धनु का डोरा टंकोरा और राक्षसियों ने अपने सुहाग के स्वर्ण-आभरण भूमि पर फेंक दिये। (कवि का चातुर्य है कि टंकार सुनकर राक्षस मर गये, यह बात कहे बिना ही उन्होंने इंगित कर दिया।) भूमि से ही गाज उठी हो ऐसा सुदूर दिशाएँ बहरी हो गयीं। भूतगण अपने हाथों को एक-दूसरे से पकड़कर स्तम्भों को फेंकते जैसे हिलाते हुए नाच उठे। १४१३

इलक्कु वऩ्कडि देविन विरैपॆरा दिरैप्प
शिलैक्क डुङ्गणै नॆडुङ्गणज् जिरैयुडन् शॆल्ल
उलैक्की डुङ्गनल् वॆंदुम्बिड वायॆरिन् दोडिक्
कुलक्क यङ्गळिर कळिततन कजितलन करुदि 1414

इलक्कुवन्–लक्ष्मण द्वारा; कटितु एवित्त–शीघ्र प्रेरित; इरै पॆरातु–शिकार न पाकर; इरैप्प–फुफकारनेवाले; चिलै कटु कणै–(और) धनुष के क्रूर शरों के; नॆटु कणम्–बड़े-बड़े समूह; चिरैयुटन् चॆल्ल–पंखों के साथ गये; उलै कॊटु कनल्–भट्ठी की भीषण आग; वॆतुम्पिट–तप्त हो जाए ऐसा; वाय् ऒरिन्तु–मुख से आग बरसाते हुए; ओटि–तेज चलकर; कुलम् कयङ्कळिल्–श्रेष्ठ गजों के अन्दर; कुळित्तत्–घुसकर; कुरुति कुटित्तत–रक्त पिया (उन शरों ने)। १४१४

लक्ष्मण-प्रेरित शर शिकार न पाकर फूत्कार करते हुए चले। उस फूत्कार से लुहार की भट्ठी की भभकती आग के समान पंखों-सहित चलनेवाले उन वाणों के समूहों के मुखों पर से आग धधकती थी। वे जाकर कुलीन गजों में घुसे। फिर उनके रक्त को पी (सोख) लिया। (इसमें 'कुल कयङ्कळ्' शब्द आया है। कयम —गज का तमिऴ रूप है। 'कयम' का अर्थ तालाब भी है। शर आग ले तपते हुए आये और कवि कहते हैं कि वे शर 'कयों'— तालावों में कुळित्तन— नहाये। इधर तप्त मनुष्य का नहाकर जल पीना इंगित किया जाता है। उन शरों ने 'गजों' में स्नान किया और उनका रक्त पिया।)। १४१४

अलैप डॆत्तवा ळरक्करैच् चिलकळुत् तरिव
शिलशि रत्तितैत् तुणित्तवै तिशैकॊण्डु चॆल्लक्
कॊलैप डॆत्तवॆङ् गळत्तिडै विऴाक्कॊडु पोव
तलैप डॆत्तन पोन्ऱन वाल्नॆडुञ् जरङ्गळ् 1415

चिल–कुछ (बाणों) ने; अलै पटॆत्त–तरंग (समुद्र) वर्ण निभ; वाळ् अरक्करै–क्रूर राक्षसों के; कळुत्तु अरिव–गले काटे; चिल नॆटु चरङ्कळ्–कुछ लम्बे शर; चिरत्तितै तुणित्तवै–सिरों को काटकर; कॊलै पटॆत्त–संहारकार्यविशिष्ट; वॆम् कळत्तिटै–भीषण मैदान में; विऴा–न गिरने देकर; कॊटु पोव–ले जाते हुए; तिचै कॊण्टु चॆल्ल–दिशाओं में उठाते चले इसलिए; तलै पटॆत्तन–शीर्ष पा गये हों; पोन्ऱ–ऐसे लगे। १४१५

कुछ वाणों ने (समुद्र-) तरंग वर्ण क्रूर राक्षसों के सिर काट गिराये। कुछ लम्बे शर सिरों को काट लेकर संहार-भूमि में उन्हें गिरने न देते हुए दिशाओं में उड़े तो उन शरों के सिर लग गये हों, ऐसा लगा। १४१५

उरुप्प दङ्गनै यॊप्पन शिलकणै योडॆप्
पॊरुप्प दङ्गळै युरुविमऱ् ऱप्पुरम् बोन
शॆरुप्प दम्वॆऱा वरक्करुदन् दलैपल शिन्दिप्
परुप्प वङ्गळ्पुक् कॊऴिप्पन मुळैपुह पाम्बिन् 1416

उरु–रूप में; पतङ्कनै ऒप्पन–पतंग (सूर्य) के समान जो थे; चिल कणै–कुछ वाण; ओटै पॊरुप्पु–मुखपटालंकृत पर्वतों (सम गजों) को; अतङ्कळै–और तरुओं को; उरुवि–भेदकर; मऱ्ऱु–और; अप्पुऱम् पोन–दूसरी तरफ गये; चॆरु

पतम् पॅड़ा–युद्ध में जो चरण (स्थिर) नहीं रख पाये; अरक्कर् तम्–उन राक्षसों के; पल तलै चिन्ति–अनेक सिरों को काट गिराकर; मुळै पुकु पाम्पित्–बिल में घुसनेवाले सर्पों के समान; पउप्पतक्कळ् पुक्कु–पर्वतों में घुसकर; ऑळिप्पत–छिपे। १४१६

सूर्य-सदृश कुछ शर मुखपटालंकृत पर्वत-सम गजों को और तरुओं को भेदकर उस ओर चले; और उन राक्षस वीरों के सिरों को, जिनके पैर युद्ध-क्षेत्र में स्थिर ही नहीं हो पाये थे, काट लेते हुए बिल में घुसनेवाले सर्पों के समान पर्वतों में घुसकर छिप गये। १४१६

मित्बु हुन्दत्र पल्हुळु वामॅत्र मिळिर्व
पॉन्बु हुन्दॉळिर् वडिम्बित्र कडुङ्गणै पोव
मुत्बु नित्रवर् मुहत्तिर्कुङ् गडैक्कुळै मुदुहित्
पित्बु नित्रवर् पिडर्क्कुमिव् विशैयॉक्कुम् बिरळा 1417

पल् कुळ मित्–अनेक विद्युत्राशियाँ; पुकुन्तत आम् ॲत–घुसी हों ऐसा; मिळिर्व–चमकनेवाले; पॉत् पुकुन्तु–स्वर्ण के होकर; ऑळिर्–छटा बिखेरनेवाले; वटिम्पित–नोकों के; कटु कणै पोव–क्रूर शर (जो) गये; मुत्पु नित्रवर्–वे बाण आगे जो खड़े रहे उनके; मुकत्तिर्कुम्–मुखों पर; कटै कुळै मुतुकित् पित्पु–सबसे पीछे की पंक्तियों में; नित्रवर् पिटर्क्कुम्–खड़े रहे वीरों की गर्दन के पिछले भागों में; इ विचै–इस गति में; पिरळा ऑक्कुम्–विना भेद के समान रहे। १४१७

एकत्र हो आयी विद्युत्राशियों के समान चमकीले रुक्म-मुख और दाहक शर जो चले उनके समर की आगे की श्रेणी में रहनेवाले राक्षसों के मुखों और आख़िरी पंक्तियों के वीरों के कण्ठों के पिछले भागों को भेद चलने की गति में निरंतर समानता थी। (वे जाते-जाते धीमे नहीं पड़ते थे।)। १४१७

पोर्त्तत पेरियित् कण्णत्र काळत्तित् पॉहुट्ट
आर्त्तत वायत्र कैयत्र वात्तैयित् कळुत्तत
ईर्त्तत तेरत्र विवुळियित् तलैयत्र वॅवर्क्कुम्
पार्त्तत नोक्कित्र कलन्दत्र विलक्कुवत् पहळि 1418

इलक्कुवत् पकळि–लक्ष्मण के बाण; पोर्त्तत–(चमड़े) मढ़ी; पेरियित् कण्णत–भेरियों की आँखों पर लगते; काळत्तित्–काहलों के; पॉकुट्ट आर्त्तत–स्फीत रूप से नाद करनेवाले; वायत–मुखों पर लगते; कैयत–अन्य वाद्यों के पकड़नेवाले (वीरों के) हाथों पर लगते; आत्तैयित् कळुत्तत–गजों के गलों पर के (लगे) हो रहते; ईर्त्तत तेरत–(अश्व द्वारा) खिंचे रथों पर लगते; इवुळियित् तलैयत–अश्वों के सिरों पर चुभते; एवर्क्कुम्–कोई भी हों; पार्त्तत नोक्कित्–देखनेवालों की आँखों पर लगते; कलन्तत–ऐसा सर्वत्र फैले। १४१८

लक्ष्मण-प्रेरित शर कहाँ नहीं लगे ? चमड़े-मढ़ी भेरियों की गोल आँखों पर (चमड़े के मध्य लगे मिट्टी के गोल लेप पर), काहल वाद्यों के चौड़े मुखों पर, अन्य वाद्य बजानेवालों के हाथों पर, गजों के गलों पर, अश्वकर्षित रथों पर; अश्वों के सिरों पर —क्यों देखनेवाली आँखों पर भी जा लगे और सर्वव्यापी हो गये। १४१८

मरुप्पि ऴन्दऩ कळिऱॆलाम् वाल्शॆवि यिऴन्द
नॆरुप्पु हुङ्गणग ळिऴन्दऩ नॆडुङ्गरन् दुणिन्द
शॆरुप्पु हुङ्गडुङ् गात्तिर मिऴन्दऩ शिहरप्
पॊरुप्पु रुण्डऩ वामॆऩत् तलत्तिडॆप् पुरण्ड 1419

कळिऱ ऍलाम्–सभी गजों ने; मरुपपु इऴन्तऩ–दाँतों को खोया; वाल् चॆवि–पूँछें और कान; इऴन्त–गँवाये; नॆरुप्पु उकुम्–आग बरसानेवाली; कण्कळ् इऴन्तऩ–आँखों को खोया; नॆटु करम् तुणिन्त–लम्बी सूँड़ों के कटे हो रहे; चॆरु पुकुम्–युद्ध में जानेवाले; कटु कात्तिरम्–तेज अगले पैर; इऴन्तऩ–गँवाये; चिकरम् पॊरुप्पु–पर्वत-शिखर; उरुण्टऩ आम् ऍऩ–लुढ़क गये हों जैसे; तलत्तु इटै–भूमि में; पुरण्ट–लोटे। १४१९

लक्ष्मण के शरों के शिकार हाथी दाँतों, पूँछों और कानों से हीन हो गये। अग्निवर्षक आँखें खो गये। उनकी लम्बी सूँड़ें कट गयीं। युद्ध में आगे बढ़नेवाले उनके आगे के पैर नष्ट हो गये। फिर पर्वत-शिखर लुढ़कते-जैसे भूमि पर गिरकर लोटे। १४१९

निरन्द रत्तॊडै नॆहिऴ्त्तलिऱ् ऱिशैयॆङ्गु निऱैन्द
शरन्द लैत्तलप् पडप्पड मयङ्गिऩ शायन्द
उरन्द लत्तुऱ वुळैत्तलाऱ् पिळैत्तदॊऩ् ऱिल्लैक्
कुरन्द लत्तिनुम् विशुम्बिनु मिदित्तिलाक् कुदिरै 1420

तलत्तितुम्–भूमि पर; विचुम्पितुम्–और आकाश में; कुरम् मितित्तिला–खुर न रखते जो जाते थे; कुतिरै–अश्व; निरन्तरम्–लगातार; तॊटै नॆकिऴ्त्तलिल्–बाण लगातार छोड़ने से; तिचै ऍङ्कुम्–सभी दिशाओं में; निऱैन्त चरम्–भरे रहे शर; तलै तलै पट पट–अलग-अलग जा लगे इसलिए; मयङ्कित चायन्त–बेहोश हो जो गिरे; उरम्–वक्षों के; तलत्तु उऱ–भूमि पर टकराकर; उळैत्तलाल्–पीड़ित होने से; पिळैत्तत्तु ऑन्ऱु इल्लै–बचे कुछ नहीं थे। १४२०

अश्व, जिनके पैर न भूमि पर पड़ते थे न आकाश पर, लक्ष्मण के लगातार छूटनेवाले और सभी दिशाओं में जानेवाले बाणों के अलग-अलग लगने से बेहोश होकर गिर गये। उनके वक्ष भूमि से टकराकर चोट खा गये और कोई भी अश्व न बच पाया। १४२०

पल्ल वप्पडै पडप्पडु पुरविय पल्हाल्
विल्लु डैत्तलै याळोडु शूदरै वीळ्त्त
अॅल्लै यर्रशॅङ् गुरुदियि नीर्प्पुणड वल्लाल्
शॅल्ल हिर्रिल निन्ऱिल कोंडिनॅडुन् देर्हळ् 1421

पल्लवम् पटै–उन शरों रूपी हथियारों के; ताक्क–प्रहार से; पट्टु पुरविय–मरे हुए अश्वों वाले और; पल् काल्–अनेक बार; विल् उटै–धनुर्हस्त; तलै आळोटु–नायकों के साथ; चूतरै वीळ्त्त–गिरे हुए सूतों वाले; कोटि नॅटु तेर्कळ्–ध्वजासंयुक्त ऊँचे रथ; अॅल्लै अऱ्ऱ–असीम; चॅम् कुरुतियित्–लाल रक्त से; ईर्प्पुण्ट अल्लाल्–खींच लिये गये नहीं तो; चॅल्लकिऱ्ऱिल–जा न सककर; निन्ऱिल–(एक ही स्थान पर) खड़े नहीं रहे। १४२१

बाणों के लगने से ध्वजाभूषित असंख्यक रथ अश्व-हीन हो गये थे। उनके धनुर्धर स्वामी और अनेक बार बदलकर सारथी भी मर गये। पर वे बड़े रथ अपार लाल रक्त-नदी द्वारा बहाये ले जाने के कारण विना चले कहीं रुके नहीं रह सके। १४२१

पेळै यॊत्तहल् वायन पेय्क्कण मुहक्कुम्
मूळै यॊत्तन कळुत्तऱ वीळ्न्दन मुऱैशाल्
ऊळै यॊत्तन यीरुहणै तैत्तन वुदिरत्
ताळि यॊत्तवॅङ् गुरुदियिल् मिदप्पन तलैहळ् 1422

मुऱै चाल्–(अटट) क्रम-बद्ध; ऊळै ऒत्तत–कर्मबन्ध-सम; ऒरु कणै–अप्रतिम शर; तैत्तत–जिनमें धँसे थे; कळुत्तु अऱ–(जो) गले-कटे; वीळ्न्तत–गिरे थे; पेळै ऒत्तु–(और जो) संदूक़ के समान; अकल् वायत–चौड़े मुखों वाले थे; वॅम् कुरुतियिल्–और गरम रक्त में (जो); मितप्पत–तिर रहे थे; तलैकळ्–(वे) सिर; पेय् कणम् मुकक्कुम्–भूतगण जिनसे उठाते हैं; मूळै ऒत्तत–उन कलछियों के समान लगे; उतिरम् ताळि–रक्त के घड़ों; ऒत्त–के समान भी लगे। १४२२

अचूक कर्मगति के समान चलनेवाले लक्ष्मण के असंख्य अस्त्रों ने अनेक सिरों को काटकर गिराया था। गर्दन के कटने से नीचे गिरे रहे उनके मुख खुले संदूक़ों के समान दिखायी दे रहे थे। उनसे वे शर भी लगे रहते थे। गरम रक्त में तैरनेवाले स-सिर वे शर भूतगणों की कलछियों के समान दिख रहे थे; वे रक्त (में तैरनेवाले) के घड़ों के समान भी दिखे। १४२२

ऑट्टि नायहन् वॅन्ऱिनाळ् कुडित्तोंळिर् मुळैहळ्
अट्टि वॅत्तन पालिहै निहर्त्तन वळिन्दु
नट्ट वामॅन वीळ्न्दन तुडिहळि तडुवण्
वट्ट वायहळिल् वयङ्गिय वरुणशा मरॅहळ् 1423

अऴिन्तु–लटकर; नट्टवाम् अँत–गड़े हुए हों ऐसे; वीऴ्न्तत–जो गिरे थे; तुटिकऴित् नट्टवण्–ऐसे 'तुडि' नाम के ढोलों के मध्य; वट्टम् वाय्कऴिल्–गोल मुखों पर; वयङ्किय–(जो गड़े) दिखे; वरुणम् चामरंकळ्–रंग-बिरंगे चामर; ओट्टि–हाल में सम्भाव्य; नायकन्–नायकवर्य श्रीराम के; वॅन्ऱि नाळ् कुऱित्तु–विजय-दिवस को उद्देश्य करके; पालिकै अट्टि वॅत्तत–'पालिका'ओं में अंकुरित हो आये; ऑळिर् मुळैकळ्–उज्ज्वल अंकुरों; निकर्त्तत–के समान लगे। १४२३

बड़े डमरू-जैसे ढोल अस्त-व्यस्त हो गिरे थे और वे ऐसे लग रहे थे, मानो उन्हें सीधे गाड़ दिया गया हो। उनके ऊपर रंग-बिरंगे चामर पड़े थे। उनको देखने पर वे उन 'पालिकाओं' (मिट्टी के कटोरों के समान वर्तनों) के समान लग रहे थे, जिनमें हाल में संभवनीय श्रीरामविजय-दिवश के उद्देश्य में डाले गये बीज अंकुरित हुए हों। (मंगलोत्सवों में प्रथा है कि निश्चित उत्सवदिवस के आगे पालिकाओं में नवधान्य के बीज बोये जाते हैं। उनमें अंकुर फूटते हैं और उत्सवदिवस में उनकी यथावत् मंत्रसहित पूजा आदि की जाती है।)। १४२३

ॲरिन्द वॅङ्गणै नॅऱ्ऱियिऱ् पडुदलि तियानै
अरिन्द वङ्गुशत् तङ्गैयिन् कल्वियि नमैया
तिरिन्द वेहत्त पाहर्हळ् तीर्न्दन शॅरुविऱ्
पुरिन्द वानरत् तानैयिऱ् पुक्कन पुयलिन् 1424

ॲरिन्त–जलानेवाले; वॅम् कणै–गरम शर; नॅऱ्ऱियिल् पटुतलिन्–माथाओं पर लगे, इसलिए; अङ्कुचत्तु कल्वियित् अमैया–अंकुश के वश में न आकर; अरिन्त अङ्कैयित्–कटी सुन्दर सूँड़ों वाले; पाकर्कळ् तीर्न्तत–महावतों से अलग होनेवाले; तिरिन्त वेकत्त–विकृत गति के साथ; चॅरुविल् पुरिन्त–युद्धोत्साही; वानरम् तानैयिल्–वानर-सेना-मध्य; पुयलिन् पुक्कन–मेघों के समान घुसे। १४२४

जलते-जलते जानेवाले बाणों के माथे पर लग जाने से मतंग अंकुश के वश में नहीं आये। कटी सूँड़ों के साथ अपने महावतों से रहित वे विपरीत गति में युद्धेच्छुक वानरों की सेना के मध्य मेघों के समान जा घुसे। १४२४

वेनि लानन्न विलक्कुवन् विडुङ्गणै विलक्क
मान वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरक्कर्तम् बडैक्कल वारि
पोन पोनवन् तिशैतोरुम् पॉऱिक्कुलम् बॉडिप्प
मीन्नॆ लामुडन् विशुम्बिनिन् ऱुदिर्न्दॆन वीऴ्न्द 1425

वेनिलान् अन्न–वसंतराज-समान; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; विट्ट कणै विलक्क–प्रेरित शरों के रोकने से; मानम्–अभिमानी व; वॅळ् ॲयिऱ्–सफ़ेद दाँतों के; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; पटैक्कल वारि–हथियारों की राशियाँ; पोन पोन–जहाँ-जहाँ गये; वल् तिचै तोऱुम्–सुदृढ़ दिशाओं में; पॉऱि कुल पॉम्टिप्प–

अग्निकण छितराते हुए; मीन् अॅलाम्–सारे नक्षत्र; उटन्–एक साथ; विचुम्पिन् निन्ऱु–आकाश से; उतिर्न्तु अॅन्न–चू पड़े हों ऐसे; वीऴ्न्त–गिरे। १४२५

वसंतराज-सम लक्ष्मण के शरों के आघात से अभिमानी और श्वेत-दंतोले राक्षसों के हथियारों की विपुल राशियाँ सशक्त दिशाओं में अंगारे उगलते हुए ऐसे छितरीं मानों सारे तारे एक साथ आकाश से चू पड़े हों। १४२५

करङ्गु डैन्दन तॊटर्न्दुपोय्क् कॊय्युळैक् कडुमाक्
कुरङ्गु डैन्दन वॆरिनुरक् कॊडिनॆडुङ् गॊऱ्ऱत्
तरङ्गु डैन्दन तमनियत् तेर्क्कुलत् दहर्त्त
अरङ्गु डैन्दन वयिनॆडु वाळिह ळम्मा 1426

अरम् कुटैन्तन–रेती द्वारा पैनाये गये; अयिल् नॆटु–तीक्ष्ण और लम्बे; वाळिकळ्–शर; करम् कुटैन्तन–हाथ से जो (धनु पर) लगाये गये; तॊटर्न्तु पोय्–लगातार गये और; कॊय् उळै–अयाल वाले; कटुमा–तीव्रगामी अश्वों के; कुरम् कुटैन्तन–खुरों को भेदकर; वॆरिन् उऱ–(सवार वीरों को) पीठ दिखाकर भागने को मजबूर करते हुए; नॆटु कॊटि–लम्बी ध्वजाओं की; कॊऱ्ऱम् तरम्–विजयशीलता के भाव को; कुटैन्तन–मिटाते हुए; तमनियम् तेर् कुलम्–स्वर्ण-रथों की राशियों को; तकर्त्त–मिटा गये। १४२६

लक्ष्मण के रेती से पैनाये गये तीक्ष्ण बाणों ने, जो उनके हाथ से चलाये जाकर तीव्र गति से गये, अयालोंवाले तीव्रगामी अश्वों के खुरों को भेदकर सवार वीरों को पीठ दिखाकर भागने को मजबूर करते हुए स्वर्ण-रथों का नाश किया, जिससे उन पर फहरनेवाली ध्वजाओं की विजय-घोषणा भी मिट गयी। १४२६

तुरक्कु मॆय्युणर् विरुविनै कळैयॆनुञ् जॊल्लिऱ्
करक्कुम् वीरमे तीमैयै यॆनुमिदु कण्डोम्
इरक्क नीङ्गिन रऱत्तॊडु तिऱम्बिन रॆन्निनुम्
अरक्क राक्कैयै यरम्बैयर् तऴुविनर् विरुम्बि 1427

मॆय्युणर्वु–तत्त्वज्ञान; इरु विनैकळै–(पाप व पुण्य) दोनों कर्मों को; तुरक्कुम्–निर्मूल कर देगा; अॆनुम् चॊल्लिल्–ऐसे कथन में; वीरमे–वीरता; तीमैयै करक्कुम्–पाप को मिटा देगी; अॆनुम् इतु–ऐसी यह बात; कण्टोम्–हमने देखी; इरक्कम् नीङ्किनर्–निर्दय होकर; अऱत्तॊटु तिऱम्पिनर्–धर्मच्युत थे; अॆन्निनुम्–तो भी; अरक्कर्–राक्षसों के; आक्कैयै–(मरकर स्वर्ग जाने के बाद) शरीरों को; अरम्पैयर्–अप्सराओं ने; विरुम्पि–प्यार के साथ; तऴुविनर्–आलिंगित कर लिया। १४२७

तत्त्वज्ञान दोनों (पाप-पुण्य) कर्मों का निरसन करता है। इस तत्त्व-कथन में हमें यह तत्त्व भी मिल गया कि वीरता पाप का निराकरण कर

सकती है। तभी तो निर्दय, धर्मविरोधी राक्षस जब मरे तब उनके शरीरों को अप्सराओं ने चाह के साथ अपने आलिंगन में लेकर सुख का अनुभव किया। १४२७

मऱक्कॊ डुन्दॊऴि लरक्कर्कण् मरुक्किला मऴैपोल्
निऱक्कॊ डुङ्गणै नॆरुप्पॊडु निकर्वन निमिर
इऱक्क मॆय्दिनर् यावरु मॆय्दिन रॆनिनत्
तुऱक्क मंन्वदिऱ् पॆरियदॊन् ऱुळदॆनच् चॊल्लेम् 1428

मऱम् कॊट्टु–पापिष्ठ क्रूर; तॊऴिल् अरक्कर्कळ्–काम करनेवाले राक्षस; मरुक्किला–दुर्वार; मऴैपोल्–वर्षा के समान (आनेवाले); निऱम् कॊट्टु कणै–(लक्ष्मण-प्रेरित) उज्ज्वल क्रूर बाण; नॆरुप्पॊटु निकर्वत–अग्नि की समानता करनेवाले; निमिर–उन पर लगे, इसलिए; इऱक्कम् ऎय्तिनर् यावरुम्–मृत्यु को जो प्राप्त हुए वे सभी; ऎय्तिनर्–(स्वर्ग में) पहुँचे तो; ऎनिन् अ तुऱक्कम् ऎन्पतिल्–उस स्वर्ग से बढ़कर; पॆरियतु ऒन्ऱु–बड़ा कोई; उळतु–है; ऎन–ऐसा; चॊल्लेम्–नहीं कहेंगे। १४२८

पापी व क्रूर राक्षसों पर अवार्य वर्षा के समान लक्ष्मण के उज्ज्वल और क्रूर बाण आग की भाँति आ लगे तो वे मरे और जो भी मरे वे सब वीर-स्वर्ग पहुँच गये। फिर उस स्वर्ग से बढ़कर कोई है —यह हम नहीं मानना चाहेंगे। १४२८

ऒरुव रॆक्कर मॊरुवरैच् चिरमऱ् ऱङ्गॊरुवर्
कुरैह ऴऱ्ऱुणै तोळिणै पिऱमऱ्ऱुङ् गॊळलाल्
विरव लर्प्पॆऱा वॆरुमैय वायिन वॆव्वे
ऱिरवु करऱ्ऱन पोन्ऱन विलक्कुवन् पहऴि 1429

इलक्कुवन् पकऴि–लक्ष्मण के बाण; ऒरुवर् करम्–एक के हाथों; ऒरुवरै चिरम्–एक के सिर; मऱ्ऱु–और; अङ्कु–वहाँ; ऒरुवर्–एक के; कुरै कऴल् तुणै–रुणनशील पायलधारी चरणद्वय को; तोळिणै–स्कन्धद्वय को; मऱ्ऱम् पिऱ–अन्य अंगों को; कॊळलाल्–काट ले गये इसलिए; विरवलर्–शत्रु को; पॆऱा वॆरुमैय–न पाने से अभावग्रस्त; आयिन–हो गये; वॆव्वेऱु इरवु–अन्य-अन्य वस्तुओं की याचना; करऱ्ऱन पोन्ऱन–सीखते जाते-से (पटके।) रहे। १४२९

लक्ष्मण के बाणों ने किसी के हाथ, किसी का सिर, और किसी के रुणनशील पायलचरण, किसी का स्कन्धद्वय और जो भी आड़े आया वह —काट लिया। फिर वे शत्रु को न पाकर जब आगे इधर-उधर जाते रहे, तब ऐसा लगा कि वे शत्रु न पाने से कंगाल बनकर अलग-अलग वस्तु की याचना करना सीख गये हों। १४२९

शिलव रैक्करञ् जिलव रेच्चॅवि शिलर्नाशि
शिलव रैक्कल्ल् शिलवरैक् कण्गॊळ्ळ्ञ् जॅयलाल्
निलव रैत्तरु पॊरुळवळित् तण्डमिळ् निरप्पुम्
पुलवर् शॊर्रुरै पुरिन्दवुम् बोन्रन पुङ्गम् 1430

पुङ्कम्–(लक्ष्मण-) शर; चिलवरै–कुछ के; करम्–हाथों; चिलवरै चॅवि–कुछ के कानों; चिलर् नाचि–कुछ की नाकों; चिलवरै कळल्–कुछ के चरणों; चिलवरै कण्–कुछ की आँखों; कॊळ्ळुम् चॅयलाल्–छीन ले जाते जो, उस काम से; निल वरै–संसार की सीमा में; तरु पॊरुळ् वळि–(पुरस्कार में) दिये गये पदार्थों के ही अनुरूप; तण् तमिळ् निरप्पुम्–शीतल (मधुर) तमिळ-रचयिता; पुलवर्–पंडितों के; चॊल् तुरै–सूक्तिमार्ग; पुरिन्तवुम् पोन्रन–चुन लेने के समान भी लगे। १४३०

[कवियों में प्रथा है कि वे भूभाग में धनियों के पास जाकर प्रशंसा में कविता बनाकर गाते हैं। उनकी रचना का गुण, शैली, विषय आदि पुरस्कार में मिली वस्तुओं के ही अनुरूप गम्भीर, हलका, महत्त्वपूर्ण या निकृष्ट होता है। यह कवियों की विशिष्टता है।] लक्ष्मण के शरों ने भी वैसा ही कुछ किया। कुछ के हाथों, कुछ के कानों, कुछ की नाकों, कुछ के पैरों और कुछ की आँखों को काट ले लिया। (निशानेबाजी, बल-प्रयोग आदि की प्रशंसा है।) । १४३०

अऱत्ति निन्नुयि रनैयवन् कणॆपड वरक्कर्
इऱत्तु मिङ्गिरै निऱ्पिनॆन् ऱिरियलिन् मयङ्गित्
तिऱत्ति ऱम्बडत् तिशैतॊऱुन् तिशैतॊऱुञ् जिन्दिप्
पुऱत्ति नोडिनर् पॊन्ऱिनर् कुरुदिये पोल 1431

अरक्कर्–राक्षस; इङ्कु इऱै निऱ्पिन्–यहाँ थोड़ी देर खड़े रहें तो; अऱत्तिन्–धर्म के; इन् उयिर् अनैयवन्–प्यारे प्राण ही सम (लक्ष्मण) के; कणै पट–अस्त्र लगने से; इऱ्तुम्–मर जाएँगे; ऎन्ऱु–ऐसा डरकर; इरियलिन्–जब भागे तब; मयङ्कि–भ्रान्त होकर; तिऱम् तिऱम् पट–अनेक खण्डों में; तिचै तॊऱुम् तिचै तॊऱुम् चिन्ति–दिशा-दिशा में छितरकर; पॊन्ऱिनर् कुरुतिये पोल–मरे हुओं के रक्त के ही समान; पुऱत्तिल् ओटिनर्–(मैदान के) बाहर भागे। १४३१

राक्षस यह सोचकर भागे कि यहाँ रहें तो धर्मप्राण लक्ष्मण के शर हमें मरवा देंगे। वे वहाँ के रक्त-प्रवाह के ही समान कहीं रुककर, ठिठककर, अनेक भागों में, और दिशा-दिशा में बिखरकर भागे। १४३१

शॆरुविन् माण्डवर् पॆरुमैयु मिलक्कुवन् शॆय्व
पॊरुवि लाण्मैयु नोक्किय पुलत्तियन् मरुमान्
तिरिपु ऱञ्जॆऱ्ऱ तेवनु मिवनुमे शॆरुविन्
ऒरुवि लाळरॆन् ऱायिरङ् गालॆडत् तुरैत्तान् 1432

चॅरुविल् माण्टवर्–युद्ध में मरे; पॅरुमैयुम्–(लोगों की) बहुलता और; इलक्कुवन् चॅय्त–लक्ष्मण-कृत; पॉरुविल् आण्मैयुम्–अनुपमेय पौरुष का कार्य; नोक्किय–देखनेवाले; पुलत्तियन् मरुमान्–पुलस्त्य-कुल में आये कुम्भकर्ण ने; तिरिपुरम् चॅऱ्ऱ तेवनुम्–त्रिपुरांतक देव और; इवनुमे–यही; चॅरुविल्–युद्ध में; ऑरु विलाळर्–गण्य अकेले धनुर्धर हैं; ऍन्ऱु–ऐसा; आयिरम् काल्–हज़ार बार; ऍट्टत्तु उरैत्तान्–व्यक्त कर कहा। १४३२

पुलस्त्यवंशधर कुंभकर्ण ने देखा कि युद्ध में मरनेवालों की संख्या अत्यधिक हो रही है। उसने लक्ष्मण का अनुपम शौर्य देखा। उसने हज़ार बार शाबाशी दी कि त्रिपुरांतक शिव देव और यह लक्ष्मण —दो ही युद्ध में अद्वितीय धनुर्धर हैं। १४३२

पडर्नॅ डुन्दडत् तट्टिडैत् तिशैतॉऱुम् बाहर्
कडवु हिन्ऱदु काऱ्ऱिनु मनत्तिनुङ् गडिय
तडल्व यङ्गॉळ्वॅञ् जीयनिन् ऱार्क्किन्ऱ दम्बॊन्
वडपॆ रुङ्गिरि पोरुवुते रोट्टिनन् वन्दान् 1433

पटर् नॅट्टतट–विशाल उन्नत और चौड़े; तट्टु इटै–रथ के पीठ पर के; पाकर्–सारथियों के द्वारा; तिचै तॉऱुम्–चारों दिशाओं में; कटवुकिन्ऱतु–चलाये जानेवाले; काऱ्ऱितुम् मनत्तितुम्–पवन से और मन से भी; कटियतु–तेज़ चलनेवाले; अटल् वयम् कॉळ्–बल और विजय-युक्त; वॅम् चीयम् निन्ऱु–भयंकर सिंह (जुते) रहकर; आर्क्किन्ऱतु–जहाँ गरजते हैं; अम् पॊन् वट पॅरु किरि–सुन्दर, स्वर्ण के और उत्तर के उन्नत (मेरु) पर्वत; पॉरुवु तेर्–के समान रथ को; ओट्टिनन्–चलाते हुए; वन्तान्–(कुम्भकर्ण) आया। १४३३

वह एक रथ को चलाता हुआ आया जिसे विशाल आसन पर बैठकर सारथी चलाते आ रहे थे; जो पवन से, मन से भी अधिक गतिशील था; और जिससे जुतकर बलवान व विजयी सिंह गरज रहे थे और जो उत्तर की बड़ी स्वर्ण-मेरु गिरि के समान था। १४३३

तॉळैहोळ् वानुहच् चुडर्नॅडुन् देर्मिशैत् तोन्ऱि
वळैहोळ् वॅळ्ळॅयिर् ऱरक्कन्वॅञ् जॅरुत्तोऴिन् मलैयक्
किळैहो ळादिह लॅन्ऱॅण्णि मारुदि किडैत्ते
इळैय वळ्ळले येऱुदि तोण्मिशै यॅन्ऱान् 1434

वळै कॉळ्–टेढ़ेपन से युक्त; वॅळ् ऍयिऱु–सफ़ेद दाँतवाले; अरक्कन्–राक्षस; तॉळै कॉळ्–रंध्रसहित; वान नुकम्–बड़े जुओं के; चुटर्–उज्ज्वल; नॅटु–उन्नत; तेर् मिचै तोन्ऱि–रथ पर प्रकट होकर; वॅम् चॅरु तॉऴिल्–भीषण युद्धकार्य में; मलैय–(रत) जब लड़ने लगा तब; इकल्–(लक्ष्मण का भूमि पर खड़ा होकर) युद्ध करना; किळै कॉळातु–समस्थिति का नहीं होगा; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर;

मारुति किट्टत्ते–मारुति ने पास आकर ही; इळैय वळ्ळले–युवराजप्रभु; तोण् मिचै एरुति–कन्धों पर चढ़िए; ॲन्ड्रान्–वह प्रार्थना की। १४३४

वक्र दंतोला कुंभकर्ण उन्नत रथ पर आरूढ़ प्रगट हुआ, जिस रथ के सरंध्र जुए बहुत बड़े थे और जो प्रकाशमय और ऊँचा था। हनुमान ने सोचा कि जब कुंभकर्ण रथ पर बैठकर युद्ध करेगा, तब लक्ष्मण भूमि पर खड़े होकर युद्ध करें तो विषमता रहेगी। वह लक्ष्मण के पास आया। लघुप्रभु! चढ़िए मेरे कन्धों पर! —उसने लक्ष्मण से यह प्रार्थना की। १४३४

एऱि नान्ऱिळङ् गोळरि यिमैयव राशि
कूऱि नारॅडुत् तार्त्तत्तु वानरक् कुळ्वुम्
नूऱु पत्तुडॅप् पत्तियि नौॅऱिऱ्परि पूण्ड
आऱु तेरित्तु महन्ऱदव् वनुमन्ऱन् ऱडन्रोळ् 1435

इळ कोळरि–बालकेसरी (-सम लक्ष्मण); एऱिनान्–सवार हुए; इमैयवर्–देवों ने; आचि कूऱिनार्–आशीर्वाद दिये; वानरर् कुळुवुम्–वानरों की सेनाओं ने; ॲट्टुत्तु आर्त्तत्तु–उच्च जयघोष किये; पत्तियिन्–पंक्तियों में; नौॅरिल् परि–तीव्रगामी अश्व; पूण्ट–जो जुते थे; नूऱु पत्तु उटॅ–उन सहस्र के; तेर् आऱिनुम्–छहों रथों से भी; अ अनुमन् तन्–उस हनुमान का; तट तोळ्–विशाल स्कंध-प्रदेश; अकन्ऱत्तु–अधिक विशाल था। १४३५

बालकेसरी (-से) लक्ष्मण भी उसके कन्धों पर आरूढ़ हुए। देवों ने शुभकामनाएँ प्रगट कीं। वानरवृन्दों ने भी जयघोष किया। राक्षस जिस रथ पर चढ़ आया था, वैसे छः रथों के विस्तार से, जिनसे पंक्तियों में तीव्र-गामी हजार घोड़े जुते हों, हनुमान का स्कंधप्रदेश अधिक चौड़ा और विस्तृत था। १४३५

तन्निन् नेर्पिऱर् तानला दिल्लवन् तोण्मेल्
तुन्नु पेरौळि यिलक्कुवन् तोन्ऱिय तोऱ्ऱम्
पौॅन्निन् माल्वरै वॅळ्ळिमाल् वरैमिशैप् पौॅलिन्द
दॅन्नुमा ऱन्ऱिप् पिऱिदॅडुत् तियम्बुव दियादो 1436

तन्निन्–अपनी; नेर्–सानी; तान् अलातु–खुद उसको छोड़; पिऱर् इल्लवन्–कोई दूसरा जो नहीं रखता था उस (हनुमान) के; तोळ् मेल्–कन्धे पर; तुन्नु पेर् ऑळि–संयुक्त अतिशय प्रभा वाले; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; तोन्ऱिय तोऱ्ऱम्–प्रकटीकृत दर्शन; पौॅन्निन् माल् वरै–स्वर्णमय मेरु गिरि; वॅळ्ळि माल् वरै मिचै–बड़ी रजत (कैलास) गिरि पर; पौॅलिन्दतु–शोभी; ॲन्नुमाऱु अन्ऱि–ऐसा कहने की रीति छोड़; पिऱितु–कोई दूसरा प्रकार; ॲटुत्तु इयम्पुवतु–लेकर कहें ऐसा; यातु–कौन सा है। १४३६

हनुमान अप्रतिम रूप से स्वोपम था। उस पर अतिप्रकाशमय

लक्ष्मण के दर्शन स्वर्ण-मेरु पर रजतगिरि कैलास दर्शन दे रही हो, ऐसे लग रहे थे। इस उपमा को छोड़कर अन्य कोई उपमा क्या है जो कही जाय। १४३६

आङ्गु वीरऩो डमरॅ्शॅय्वा ऩमैन्दवा ळरक्कन्
ताङ्गु पल्हणैप् पुट्टिलुन् दहैपॆऱ्क् कट्टि
वीङ्गु तोळ्वलिक् केयदु विशुम्बिल्विल् वॆंळ्ह
वाङ्गि ऩाऩॆडु वडवरै पुरैवदोर् वरिविल् 1437

आङ्कु–तब; वीरऩोटु–लक्ष्मण से; अमर् चॅय्वाम् अमैन्त–युद्ध करने में तत्पर; वाळ् अरक्कन्–क्रूर राक्षस ने; पल् कणै ताङ्कु–अनेक अस्त्र धरनेवाले; पुट्टिलुम्–तूणीर को; तकै पॆऱ कट्टि–सुन्दर रूप से बाँधकर; वीङ्कु तोळ् वलिक्कु–बहुत स्थूल कंधों के वल के; एयतु–योग्य; नॆटु वट वरै पुरैवतु–बड़े उत्तर-मेरु की समानता का; ओर् वरि विल्–एक सवन्ध धनु; विचुम्पिल् विल्–आकाश का (इन्द्र-) धनु; वॆंळ्क–लजा जाए ऐसा; वाङ्कित्तान्–ले झुकाया। १४३७

तव वीर से युद्ध करने को उद्यत क्रूर कुंभकर्ण ने अनेक अस्त्रों से पूर्ण तूणीर को सुन्दर ढंग से बाँध लिया और अपने स्थूल कन्धों के वल के अनुरूप और उत्तर के मेरुपर्वत के समान रहनेवाले एक अप्रतिम सबंध धनु को, जो आकाश के इन्द्रधनु का भी परिहास कर रहा था, हाथ में ले झुकाया। १४३७

※इरामऩ् तम्बिनी यिरावणऩ् तम्बिना निरुवेम्
पॊरानिऩ् ऱेमिदु काणिय वन्दऩर् पुलवोर्
परावुन् दॊल्शॆरु मुऱैवलिक् कुरियऩ पहर्न्दु
विरावु नल्लमर् विळैक्कुदु मियामॆंऩ विळम्बा 1438

नी–तुम; इरामऩ् तम्पि–राम के छोटे भाई हो; नाऩ् इरावणऩ् तम्पि–मैं रावण का छोटा भाई; इरुवेम् पॊरा निऩ्ऱेम्–हम दोनों युद्ध करने खड़े हैं; इतु काणिय–यह देखने; पुलवोर् वन्तऩर्–देव आदे हैं; परावुम्–प्रशंसनीय; तॊल्–प्राचीन; चॅरु मुऱै–युद्धक्रम में; वलिक्कु उरियऩ–वल के विवरण में अनुकूल बातें; पकर्न्तु–कहते हुए; याम्–हम दोनों; विरावुम् नल् अमर्–परस्पर मिलकर करने योग्य श्रेष्ठ युद्ध; विळैक्कुतुम्–करेंगे; ॲऩ विळम्पा–यह कहकर। १४३८

फिर उसने लक्ष्मण से कहा कि तुम राम के छोटे भाई हो और मैं रावण का लघु भ्राता। हम दोनों युद्ध करने पर लगे हुए हैं और देवगण दर्शनार्थ आये हैं। प्रशंसनीय प्राचीन युद्धक्रम के अनुसार वीर-वचन कहते हुए हम परस्पर गम्भीर श्रेष्ठ युद्ध करेंगे। उसने आगे भी कहा। १४३८

※पॆय्द वत्तिऩोर् पॆण्गॊडि यॆम्मुडऩ् पिऱन्दाळ्
शॆय्द कुऱ्ऱमॊऩ् ऱिल्लवळ् नाशिवॆञ् जिऩत्ताऱ्

कॉय्द कॉऱ्ऱव मऱ्ऱवळ् कूऩ्दल्तॉट् टीऱ्ऩ्द
कंद लत्तिडॆक् किडत्तुवॆऩ् काक्कुदि यॆऩ्ऱाऩ् 1439

पॅय् तवत्तिऩ्–की हुई तपस्या के फलस्वरूप; ॲम् उटऩ् पिऱ्ऩ्ताळ्–हमारी सहोदरा; ओर् पॅण् कॉटि–एक नारी-लता; चॅय्त कुऱ्ऱम्–कृत अपराध; ऑऩ्ऱु इल्लवळ्–किसी से रहित; नाचि–(उसकी) नाक को; वॅम् चिऩत्ताल्–कठोर कोप से; कॉय्त–नोच लेनेवाले; कॉऱ्ऱव–राजा वीर; अवळ् कूऩ्तल्–उसके केश को; तॉट्टु ईर्त्त–पकड़कर जिसने खींचा; कै–उस (तुम्हारे) हाथ को; तलत्तिटै–भूमि पर; किटत्तुवॆऩ्–गिरानेवाला हूँ; काक्कुति–बचा लो; ॲऩ्ऱाऩ्–(ललकार में) कहा। १४३९

हमारी की हुई तपस्या के फलस्वरूप पैदा हुई हमारी भगिनी लता-सी शूर्पणखा निरपराध थी। उसकी नासिका को क्रोध करके काटनेवाले हे विजयी वीर! अब मैं उस हाथ को काटकर भूमि पर गिरानेवाला हूँ, जिसने उसके केश पकड़कर खींचे थे। समर्थ हो तो बचा लो। १४३९

❀ अल्लि ऩाऱ्चॅय्द निऱत्तव ऩऩैयदु पहर
मल्लि ऩाऱ्चॅय्द तोळिऩऩ् माऱ्ऱङ्गळ् नुम्बाल्
विल्लिऩाऱ् चॉल्लि ऩल्लदु वॆऩ्दिऱल् वॆळ्हच्
चॉल्लि ऩाऱ्चॉलक् कऱ्ऱिल मियामॆऩच् चॊऩ्ऩाऩ् 1440

अल्लिऩाल्–अन्धकार से; चॅय्त निऱत्तवऩ्–बनाये गये-से रंग वाले के; अऩैयतु पकर–वह कहने पर; मल्लिऩाऱ् चॅय्त–मल्लयुद्ध से सुगठित; तोळिऩऩ्–कन्धों वाले ने; नुम् पाल्–तुम्हारे पास; माऱ्ऱङ्कळ्–उत्तर के वचन; विल्लिऩाल् चॉल्लिऩ् अल्लतु–धनु से कहने के सिवा; वॅम् तिऱल् वॆळ्क–भीषण वीरता को लजाते हुए; चॉल्लिऩाल् चॉल–(कोरे) शब्दों से बात करना; याम् कऱ्ऱिलम्–हमने सीखा नहीं है; ॲऩ–ऐसा; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। १४४०

अन्धकार के-से रंग वाले कुंभकर्ण के वैसा कहने पर मल्लयुद्ध के कारण सुगठित कन्धों वाले लक्ष्मण ने उत्तर में कहा कि हम तुमसे धनु से ही बात करेंगे न कि मुख के शब्दों से। क्योंकि हमने वह बात नहीं सीखी है। १४४०

विण्णि रण्डुकू ऱायदु पिळन्ददु वॆऱ्पु
मण्णि रण्डुऱक् किळिन्ददॆऩ् ऱिमैयवर् मऱुहक्
कण्णि रण्डिनुन् दीयुहक् कदिर्मुहप् पहळि
ऑण्णि रण्डिऩो डिरण्डॊरु तॊडैतॊडुत् तॆय्दाऩ् 1441

कण् इरण्टिऩुम्–दोनों आँखों से; ती उक–आग उगलते हुए; विण् इरण्टु कूऱु आयतु–आकाश के दो खण्ड हुए; वॆऱ्पु पिळन्ततु–पर्वत फटा; मण् इरण्टु उऱ–पृथ्वी दो (भागों) में; किळिन्ततु–चिर गयी; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इमैयवर् मऱुक–देव

डरें ऐसा; कतिर् मुकम् पकऴि–सूर्यमुखी शर; ऍण् इरण्टिनोटु इरण्टु–आठ के दो और दो (अठारह); ऒरु तॊटै–एक ही वार में; तॊटुत्तु–लगाकर; ऍय्तान्–चलाये। १४४१

कुंभकर्ण की आँखों से अंगारे निकल आये। उसने एक ही खेप में सूर्यमुख अठारह शर संधानकर चलाये और तब आकाश के दो भाग हो गये, पर्वत फट गया और भूमि चिर गयी क्या? —ऐसा समझकर देव दुःखी हो गये। १४४१

कॊम्बु नान्गुडैक् कुलक्करि कुम्बत्तिर् कुऴित्त
उम्ब रार्रलै यॊटुक्किय वुरुमॆनच् चॆल्व
वॆम्बु वॆञ्जिनत् तिरावणर् किळैयवन् विट्ट
अम्बु पत्तिनो डॆट्टैयुम् नान्गिना लरुत्तान् 1442

नान्कु कॊम्पु उटै–चार दाँतों वाले; कुल करि–श्रेष्ठ हाथी (ऐरावत) के; कुम्पत्तिल्–कुम्भ में; कुऴित्त–जो धँसे थे; उम्पर् आऱ्ऱलै–देवों के बल को; ऒटुक्किय–जिन्होंने मिटा दिया था; उरुम् ऍन–अशनि के समान; चॆल्व–जानेवाले; वॆम्पु वॆम् चिनत्तु–तपनेवाले भीषण क्रोध के; इरावणऱ्कु इळैयवन्–रावण के भाई के; विट्ट–द्वारा प्रेषित; अम्पु पत्तिनोटु ऍट्टैयुम्–शर-अठारह को; नान्किनाल् चार से; अरुत्तान्–काट दिया (लक्ष्मण ने)। १४४२

खौलते उग्र कोप से अभिभूत कुंभकर्ण के चलाये उन अठारह शरों को, जो चार दाँतों वाले ऐरावत के कुंभों को भेद चुके थे, जिन्होंने देवों के बल को परास्त किया था और जो अशनि के समान चले थे, लक्ष्मण ने चार अस्त्र चलाकर काट दिया। १४४२

अरुत्त कालैयि नरक्कनु ममररै नॆडुनाळ्
ऒरुत्त दायिर मुरुवदु तिशैमुह नुदवप्
पॊरुत्त दाङ्गॊरु पुहर्मुहक् कडुङ्गणै पुत्तेळ्
इरुत्तु माऱ्रिडु वल्लैये लॆन्रुकॊत् तॆय्दान् 1443

अरुत्त कालैयिल्–काटने पर; अरक्कनुम्–राक्षस ने भी; नॆटुनाळ् अमररै ऒरुत्ततु–(जिसने) बहुत दिनों से देवों को सताया था; आयिरम् उरुवतु–जो एक सहस्र रूप रखता था; पुत्तेळ् तिचैमुकन्–देव ब्रह्मा के; उतव–देने पर; पॊरुत्ततु–जो ग्रहण किया गया था; ऒरु पुकर् मुक–एक प्रज्वलित मुख के; कटु कणै–क्रूर अस्त्र को; आङ्कु कॊत्तु–तब लगाकर; वल्लैयेल्–समर्थ हो तो; इतु–इसे; इऱुत्तु माऱ्ऱु–तोड़कर रोक लो; ऍन्ऱु–कहकर; ऍय्तान्–चलाया। १४४३

उनके कटने पर कुंभकर्ण ने और एक उज्ज्वल मुख वाले अस्त्र को चलाया, जिसने देवों को अनेक वार त्रस्त किया था, जो हज़ार रूपों का था और जिसे उसने ब्रह्मा के देने पर ले लिया था; और ललकारा कि हो सके तो इसको काटकर रोक दो। १४४३

पुरिन्दु नोक्किय तिशैतोऱुम् पह्ळियिन् पुयलाल्
ऍरिन्दु शॅल्वदै नोक्किय विराहवर् किळैयान्
तॅरिन्दु मऱ्ऱदु तन्नैयोर् दॅय्ववॅङ् गणैयाल्
अरिन्दु वीळ्त्तलु मायिर वुरुच्चर मऱ्ऱ 1444

पुरिन्तु नोक्किय–इच्छा के साथ देखी गयी; तिचै तोऱुम्–सभी दिशाएँ; पकळियिन् पुयलाल्–अस्त्रवर्षा से; ऍरिन्तु चॅल्वतै–जलती मिटती वह; नोक्किय–जिन्होंने देखा उन; इराकवर्कु इळैयान्–श्रीराघव के छोटे भाई के; तॅरिन्तु–विचार करके; मऱ्ऱु–फिर; अतु तन्नै–उस अस्त्र को; ओर्–एक; तॅय्वम् वॅम् कणैयाल्–दैवी संतापक शर से; अरिन्तु वीळ्त्तलुम्–काटकर गिराने पर; आयिरम् उरु–सहस्र रूपी; चरम्–वह शर; अऱ्ऱ–मिट गया। १४४४

श्रीराघव के छोटे भाई ने देखा कि जिस ओर देखो सभी दिशाएँ जलकर भस्म हो रही हैं! उन्होंने एक क्रूर दिव्य अस्त्र चुनकर चलाया और उसे काट गिरा दिया। वह सहस्ररूप अस्त्र मिट गया। १४४४

आऱि रण्डुवॅङ् गडुङ्गणै यनुमन्मे लळुत्ति
वेऱु वॅञ्जर मिरण्डिळङ् गुमरन्मे लेवि
नूऱु मैम्बदु मोरुतोडै तोडुत्तोरु नोडियिल्
माऱु तिक्कैयुम् विशुम्बैयु मऱैत्तनन् कोडियोन् 1445

कोटियोन्–खल ने; वॅम्–भीषण; कटु–तीव्र; कणै आऱु इरण्टु–बारह बाणों को; अनुमन् मेल् अळुत्ति–हनुमान पर चलाकर; वेऱु वॅम् चरम्–और भीषण अस्त्र; इरण्टु–दो को; इळ कुमरन् मेल्–युवा कुँअर पर; एवि–चलाकर; ओरु तोटै–एक ही बार में; नूऱुम् ऐम्पतुम्–एक सौ और पचास को; तोटुत्तु–चलाकर; ओरु नोटियिल्–एक क्षण में; माऱु–अलग-अलग; तिक्कैयुम्–दिशाओं को; विचुम्पैयुम्–आकाश को; मऱैत्तनन्–ढँक दिया। १४४५

तब खल कुंभकर्ण ने भीषण और तेज़ चलनेवाले बारह बाणों को हनुमान पर धँसा दिया। अन्य दो क्रूर अस्त्रों को युवा कुँअर पर चलाया। और एक ही बार में एक सौ पचास बाण चलाकर एक ही पल में अलग-अलग दिशाओं और आकाश को ढक दिया। १४४५

मऱैत्त वाळिह ळॅवऱ्ऱैयु मवऱ्ऱिनान् माऱ्ऱित्
तुऱैत्त लन्दोऱुम् तलन्दोऱुम् निन्ऱुतेर् शुमक्कुम्
पोऱैक्क मैन्दवॅङ् गरिपरि याळिमाप् पूदन्
दिऱत्ति ऱम्बडत् तुणित्तवन् तेरैयुज् जिदैत्तान् 1446

मऱैत्त वाळिकळ्–ढँकते रहे बाण; ऍवऱ्ऱैयुम्–सभी को; अवऱ्ऱिनाल् माऱ्ऱि–उन्हीं (के अनुरूप) शरों से दूर करके; तुऱै तलम् तोऱुम् तलम् तोऱुम्–जोतने के स्थान-स्थान पर; निन्ऱु–रहकर; तेर् चमक्कुम्–रथ खींचनेवाले; पोऱैक्कु अमैन्त–

भार ढोने योग्य; वॆम् करि—क्रूर हाथी; परि—अश्व; याळि—'याळि'; मा पूतम्—बड़े भूत इनको; तिऱम् तिऱम् पट—खण्ड-खण्ड करके; तुणित्तु—मिटाकर; अवऩ् तेरॆयुम्—उसके रथ को भी; चितैत्तात्—छिन्न कर दिया (लक्ष्मण ने)। १४४६

लक्ष्मण ने कुंभकर्ण के द्वारा प्रेरित और दिशाओं और आकाश को ढके रहे बाणों को उनके अनुरूप शरों को चलाकर उन्हें काट दिया। फिर जोतने के स्थानों पर जुते रहकर रथ को खींच ले आनेवाले भारवाहनयोग्य क्रूर गजों, अश्वों, 'याळि'यों और बड़े भूतों को भी खण्ड-खण्ड करके मिटाया और रथ को भी तोड़कर छिन्न कर दिया। १४४६

तेर ऴिन्दडु शॆङ्गदिर्च् चॆल्वनैच् चेर्न्द
ऊर ऴिन्दडु पोऱ्ऱुरन् दूर्वव रुलन्दार्
नीर ऴिन्दिला नडुमऴैक् कुऴात्तिडै निमिर्न्द
पार वॆञ्जिलै यऴिन्दॆनत् तुमिन्ददप् परुविल् 1447

चॆम् कतिर् चॆल्वतै—लाल किरणों के स्वामी को; चेर्न्त—जो घेरे रहता है; ऊर् अऴिन्ततु पोल्—वह परिवेश मिट गया हो, ऐसा; तेर् अऴिन्ततु—रथ नष्ट हुआ; तुरन्तु ऊर्पवर्—चलाते आनेवाले; उलन्तार्—मरे; नीर् अऴिन्तिला—जिससे जल सूखा नहीं था; नॆटु मऴै कुऴात्तिटै—बड़े मेघसमूह-मध्य; निमिर्न्त—उन्नत जो रहा; पारम् वॆम् चिलै—भारी भीषण इन्द्रधनुष; अऴिन्तु ऎंत—मिटा हो, ऐसा; अ परु विल्—वह भारी भरकम धनु; तुमिन्ततु—टूटा। १४४७

लाल किरणों के स्वामी सूर्य को घेरे रहनेवाला परिवेश मिटा-जैसे कुंभकर्ण का रथ छिन्न-भिन्न हो गया। सारथी आदि मिट गये। अजल-शुष्क मेघ-मध्य भारी इन्द्रधनुष मिट गया-जैसे कुंभकर्ण का भारी-भरकम चाप भी टूट गया। १४४७

शॆय्द पोरिनै नोक्कियित् तेरिडैच् चेर्न्द
कॊय्युळैकडुङ् गोळरि मुदलिय कुऴुवै
ऎय्दु कॊन्ऱन नॊनॆडु मन्दिर मियम्बि
वैदु कॊन्ऱन नॊवॆन वानवर् मयर्न्दार् 1448

चॆय्त—जो किया; पोरितै—उस युद्ध को; नोक्कि—देखकर; इ तेरिटै—इस रथ से; चेर्न्त—जुते; कॊय् उळै—अयाल वाले अश्व; कटु कोळरि—क्रूर सिंह; मुतलिय कुऴुवै—आदि के झुण्डों को; ऎय्तु—(शर) चलाकर; कॊन्ऱततो—मारा क्या; नॆटु मन्तिरम् इयम्पि—उत्तम मंत्र उच्चारण करके; वैतु कॊन्ऱततो—शाप देकर मरवा दिया; ऎंत—सोचकर; वातवर् मयर्न्तार्—देव चक्रित हुए। १४४८

देवों ने लक्ष्मण का युद्धकृत्य देखा। वे विस्मय करने लगे कि क्या इस रथ के जुते अयाल वाले अश्वों, क्रूर सिंहों—आदि के झुंडों को लक्ष्मण ने

अस्त्र चलाकर ही मरवाया था या मंत्रोच्चारण के साथ शाप देकर एक दम मरवाया था ? वे चक्रित हो गये। १४४८

ऊऩ्ऱु तेरॊडु शिलैयिलऩ् कडलॢहिळऱ्ऩ् दॊप्पाऩ्
एऩ्ऱु मऱ्ऱव ऩिऩ्ऩुयिर् कुडिप्पॆऩ्ऩ् ऋलहम्
मूऩ्ऱुम् वॆऩ्ऱमैक् किडुहुऱि यॆऩ्ऩमुच् चिहैत्तायत्
तोऩ्ऱुम् वॆञ्जुडर्च् चूलवॆङ् गूऱ्ऱिऩैत् तॊट्टाऩ् 1449

ऊऩ्ऱु–भूमि पर गहरा चिह्न बनाते चलनेवाले; तेरॊडु–रथ के साथ; चिलै इलऩ्–और विना धनु के; कटल् किळर्न्तु ऒप्पाऩ्–उमगते समुद्र के समान कुंभकर्ण ने; मऱ्ऱु अवऩ्–और उसके; इऩ्नुयिर् कुटिप्पॆऩ्–प्यारे प्राणों को पी लूंगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; एऩ्ऱु–सामना करके; उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों को; वॆऩ्ऱमैक्कु–जो जीता था उस कृत्य के; इट्टु कुऱि ऎऩ्ऩ–परिचायक लक्षण के समान; मु चिकॆत्ताय्–त्रिशिर; तोऩ्ऱुम्–प्रगट; वॆम् चुटर्–भीषण तेजवाले; चूल–शूल रूपी; वॆम् कूऱ्ऱिऩै–भयंकर यम को; तॊट्टाऩ्–हाथ में लिया। १४४९

अब कुंभकर्ण के पास भूमि पर लीक बनाता चलनेवाला रथ नहीं रहा। वह धनुहीन भी हो गया। समुद्र के समान क्रोध से उमग उठा। संकल्प बताया कि उसके प्यारे प्राण पी लूंगा। उसने अपने हाथ में भीषण, तेजोमय और त्रिलोकविजय के निशान-से रहनेवाले त्रिशिर शूल रूपी भयंकर यम को ले लिया। १४४९

इऴियप् पायन्दऩ ऩिरुनिलम् पिळन्दिरु कूराक्
किऴियप् पाय्पुऩल् किळर्न्दॆऩ्ऩक् किळर्शिऩत् तरक्कऩ्
पऴियप् पालिवऩ् पदादियॆऩ् ऱऩुमऩ्ऱऩ् पडर्तोळ्
ऒऴियप् पार्मिशै यिऴिन्दुशॆऩ् ऱिळवलु मुऱ्ऱाऩ् 1450

पाय् पुऩल्–प्रवाह-स्वभाव जल का; किळर्न्तु–समुद्र उमग उठा; ऎऩ्ऩ–जैसे; किळर्–भभकनेवाले; चिऩत्तु–क्रोध के; अरक्कऩ्–राक्षस; इरु निलम्–बड़ी पृथ्वी; पिळन्तु–फटकर; इरु कूऱा किऴिय–दो भागों में चिर जाए, ऐसा; इऴिय–नीचे; पाय्न्ताऩ्–कूदा; इवऩ् पताति–यह पैदल वीर (हो गया); अप्पाल्–(हनुमान पर बैठकर लड़ा तो) फिर; पऴि–अपयश; ऎऩ्ऱु–सोचकर; इळवलुम्–लक्ष्मण भी; अनुमऩ् तऩ् पटर् तोळ् ऒऴिय–हनुमान का विशाल कन्धा छोड़; पार् मिचै इऴिन्तु–भूमि पर उतरकर; चॆऩ्ऱु उऱ्ऱाऩ्–जा रहे। १४५०

प्रवहित होने की प्रकृति के जल से भरा समुद्र उमग उठा हो —ऐसा भभकते क्रोध वाला कुंभकर्ण विशाल भूमि को चीरते हुए भूमि पर कूदा। लक्ष्मण ने देखा तो सोचा कि अब यह पैदल वीर हो गया। मैं हनुमान के कन्धे पर से लड़ूं तो अपयश होगा। इसलिए युवराज लक्ष्मण भी हनुमान के विशाल कन्धे से नीचे उतरकर भूमि पर चले आये। १४५०

उऱ्ऱ कालैयि ऩिरावणऩ् ऱम्बिमा ऱुदव
इऱ्ऱ ताऩैयि ऩिरुमडि यिहऱ्पडै येव
मुऱ्ऱि यऩ्ऩदु मुऴङ्गुमुऩ् नीरॅऩ मुडुहिच्
चुऱ्ऱि यार्त्तदु शुमित्तिरै शिङ्गत्तैत् तॊडरऩ्दु 1451

उऱ्ऱ कालैयिऩ्–भूमि पर जब आये तब; इरावणऩ्–रावण के; तम्पि माट्टु उतव–भाई की सहायता के लिए; इऱ्ऱ तातैयिऩ्–मरी हुई सेना की; इरु मटि–दुगुनी; इकल् पटै–सशक्त सेना को; एव–भिजवाने पर; अऩ्ऩतु–वह सेना; मुऱ्ऱि–भरपूर रहकर; मुऴङ्कु–गर्जन करनेवाले; मुऩ्नीर् अॅऩ–त्रिविध जल वाले सागर के समान; मुटुकि–सवेग आकर; चुमित्तिरै चिङ्कत्तै–सुमित्रा (सुत-) केसरी को; तॊटरऩ्तु चुऱ्ऱि–बराबर घेरकर; आर्त्ततु–नर्दन कर उठी। १४५१

जब लक्ष्मण भूमि पर आये, तब कुंभकर्ण की सहायता के लिए रावण द्वारा भेजी गयी सेना आ गयी। अब तक जो मरी थी उस सेना की दुगुनी सेना वह त्रिविधजलपूर्ण समुद्र के समान बढ़ती आयी और सुमित्रासुत केसरी-सम लक्ष्मण को चारों ओर से बराबर घेरकर नर्दन कर उठी। १४५१

इरिन्दु वाऩर मिरियलिऩ् मयङ्गिऩ वॆङ्गुम्
जॊरिन्द वॆम्बडै तुणित्तिडत् तडुप्परुन् दॊऴिलाल्
परिन्द वण्णलुम् परिविल नॊरुपुडै पडरप्
पुरिन्द वन्नॆडुम् जेऩैयङ् गरुङ्गडल् पुक्काऩ् 1452

इरिन्तु–अस्त-व्यस्त होकर; वानरम्–वानर; इरियलिऩ्–भागने से; मयङ्किऩ–आपस में टकरा गये; ॲङ्कुम्–सर्वत्र; चॊरिन्त वॆम् पटै–(वीरों द्वारा) छोड़े गये भीषण हथियारों को; तुणित्तिट–काटने के लिए; तटुप्पु अरु–अप्रतिहत; तॊऴिलाल्–कृत्य के साथ; परिन्त अण्णलुम्–जो गये वे प्रभु भी; परिवु इलऩ्–दया-रहित हो; ऑरु पुटै पटर–सेना के एक ओर जाते; पुरिन्त–युद्धाभिलाषी; अ नॆटु चेऩै–उस विशाल सेना रूपी; अम् करु कटल्–सुन्दर काले सागर में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुए। १४५२

यह देखकर वानर अस्त-व्यस्त हो भागे और उस रेलपेल में आपस में टकराये। सब ओर से हथियार बारिश के समान आये और लक्ष्मण निर्दय बनकर उनको अपने अप्रतिहत युद्धकर्म से काटते हुए एक ओर गये और उस सिलसिले में उस विस्तृत राक्षस-सेना के सागर में प्रविष्ट हो गये। १४५२

मुरुक्कि ऩाण्मलर् मुहैविरित् तालऩ मुरट्कण्
अरक्कर् शॆम्मयिर्क् करुन्दलै यडुक्किय वण्हऴ्
पॆरुक्कि ऩाऱ्पॆरुङ् गडलिडैप् पॆय्दुपॆय् तॆरुवै
उरुक्कि ऩालऩ्ऩ कुरुदिनी राऱुह ळॊडुङ्ग 1453

मुरुक्किन्–कँटीले पलाश-तरु के; नाण् मलर् मुकं–तभी विकसनेवाले (लाल) फूलों की कलियाँ; विरिन्तालत्त–विकसित हुई जैसे; मुरण् कण्–विरोध-प्रदर्शक आँखों वाले; अरक्कर्–राक्षसों के; चॅम् मयिर् करु तलै–लाल बालों वाले काले सिर; अट्टुक्किय अणैकळ्–एक के उपर एक निर्मित बाँधों द्वारा; अॅरुवै उरुक्कित्ताल् अन्न–ताम्र को पिघलाया हो, ऐसा; कुरुति नीर् आड्कळ्–रक्त-जल की नदियाँ; पॅरुक्कित्ताल्–बाढ़ के कारण; पॅरु कटलिटै–विशाल सागर में; पॅय्तु पॅय्तु ओतुक्क–बहतीं और एक ओर मिली रहतीं। १४५३

राक्षसों के, (कँटीले) पलाश के उसी दिन खिले फूलों की कलियाँ छिटक रही हों —ऐसी विरोधप्रदर्शक आँखों और लाल केशों वाले सिरों के बाँध-से बन गये थे, जो सीढ़ीदार थे। उन पर से होकर पिघले ताम्र के समान लाल रक्त की नदियाँ अधिक बाढ़ के कारण विशाल समुद्र में जा बहीं और एक ओर रक्त जमा रहा। १४५३

करियिन् कैहळुम् पुरवियिन् काल्हळुङ् गालिन्
तिरियुन् देर्हळिन् शिल्लियु मरक्कर्दञ् जिरमुम्
शोरियुञ् जोरियिन् तुरैतोरुन् दुरैतोरुञ् जुळिप्प
नेरियुम् बल्पिणप् पॅरुङ्गरै कडत्तिल नीत्तम् 1454

करियिन् कैकळुम्–कुंजरों की सूँड़ें; पुरवियिन् काल्कळुम्–और वाजियों के पैर; कालिन् तिरियुम्–पवन के समान चल-फिरनेवाले; तेर्कळिन् चिल्लियुम्–रथों के पहिये; अरक्कर् तम्–और राक्षसों के; चिरमुम्–सिर; चॊरियुम् चोरियुम्–बहनेवाले रक्त के; तुरै तॊरुम् तुरै तॊरुम्–स्थान-स्थान पर; चुळिप्प–घूमते रहते; नीत्तम्–रक्त-प्रवाह; नेरियुम्–घने रूप से मिली रही; पल् पिणम् पॅरु करै–अनेक लाशों के बड़े किनारों को; कटन्तिल–पार कर नहीं जा सका। १४५४

गजों की सूँड़ें, अश्वों के पैर, पवनगति से घूमनेवाले रथों के पहिये और राक्षसों के सिर —सभी रक्त-नदियों के घाटों पर यत्र-तत्र घूमते हुए अटक रहे थे। इसलिए रक्त-प्रवाह घने रूप से मिली रही लाशों के बड़े कूलों को लाँघकर आगे नही जा सका। १४५४

कॊर्र वाळॆळुत् तण्डुवेल् कोल्मळुक् कुलिशम्
मर्रुम् वेरुळ पडैक्कल मिलक्कुवत् वाळि
शुर्रु मोडुव तॊडर्न्दिडै तुणित्तिडत् तोहैयाल्
अर्र तुण्डङ्गळ् पडप्पडत् तुणिन्दत वत्तन्दम् 1455

कॊर्रम्–विजयदायी; वाळ्–तलवार; ॲळु–लौहदण्ड; तण्टु–गदा; वेल्–बर्छी; कोल्–बाण; मळु–जलता भाला; कुलिचम्–कुलिश; मर्रुम्–और; चुर्रुम् ओटुव–चारों ओर आनेवाले; वेरु उळ–अन्य जो थे; पटैक्कलम्–वे हथियार; इलक्कुवन् वाळि–(इनको) लक्ष्मण के अस्त्रों के; तॊटर्न्तु–लगातार; इटै

तुणितृतिट–मध्य में ही काट देने से; तोकैयाल्–समूह में; अऱ्ऱ तुण्टङ्कळ्–कटे टुकड़े; पट पट–ज्यों-ज्यों लगे; तुणिन्तन–जो कटे; अनन्तम्–वे अनन्त थे। १४५५

लक्ष्मण के बाण राक्षसों के विजयदायी लौहदंडों, तलवारों, भालों, वाणों, जलती बर्छियों और कुलिशों के अलावा उन सभी हथियारों को, जो चारों ओर से घेरकर तेज़ आ रहे थे, निरंतर काट गिराते रहे और उन कटे खण्डों के द्वारा समूह में जो खण्ड कट गये उनकी संख्या अनंत थी। १४५५

कुण्ड लङ्गळुम् मवुलियु मारमुङ् गोवै
तण्डे तोळ्वळै कडहमॅन् ऱिनैयन तरुहण्
कण्ड कण्डङ्ग ळॊडुङ्गणै तुरन्दन कदिर्चूळ्
मण्ड लङ्गळै माऱुहॊण् डिमैत्तन वानिल् 1456

तरुकण्–निडरता के साथ; तुरन्तन कणै–छोड़े गये बाण; कण्ट–छिन्न; कण्टङ्कळॊटुम्–खण्डों के साथ; कुण्टलङ्कळुम्–कुंडल; मवुलियुम्–और मुकुट; आरमुम्–और हार; कोवै–और मणिमालाएँ; तण्टै–'तण्डै' नामक पैरों के कड़े; तोळ् वळै–बाहुवलय; कटकम्–कटक; ॲन्ऱु इनैयन–ऐसे-ऐसे; कतिर् चूळ् मण्टलङ्कळै–प्रकाशमण्डलों से; माऱु कॊण्टु–भिन्न रहकर; वानिल् इमैत्तन–आकाश में चमके। १४५६

लक्ष्मण निर्भय होकर बाण चला रहे थे। कटे हथियारों के खण्डों के साथ राक्षसों के कुंडल, मुकुट, हार, तंडै नामक पैर के कड़े, बाहुवलय, कटक आदि भी आकाश में गये और प्रकाशमंडलों के मुक़ाबले में चमक रहे थे। १४५६

परन्द वॆण्गुडै शामरै नॆडुङ्गॊडि पदाहै
शरन्द रुञ्जिलै केडहम् पिच्चमॊय् शरङ्गळ्
तुरन्दु शॆल्वन कुरुदिनी राऱुहळ् तोऱुम्
निरन्द पेय्क्कणङ् गरैदोऱुङ् गुविन्दन नीन्दि 1457

परन्त वॆण् कुटै–विशाल श्वेतछत्र; चामरै–और चामर; नॆटु कॊटि–लम्बी ध्वजा; पताकै–और पताकाएँ; चरम् तरु चिलै–शरप्रेरक धनु; केटकम्–ढाल; पिच्चम्–मोरपंख-छत्र; मॊय् चरङ्कळुम्–घने शर; कुरुति नीर् आऱुकळ् तोऱुम्–रक्त-जल की सभी नदियों में; तुरन्तु चॆल्वन–जो खिंचे जा रहे थे; निरन्त पेय् कणम्–(उन्हें) पंक्तियों में आये भूतगणों ने; नीन्ति–तैरकर; करै तोऱुम्–किनारों पर; कुवित्तन–ढेरों में इकट्ठा कर रखा। १४५७

रक्त की नदियों में खुले श्वेतछत्र, चामर, लम्बी ध्वजाएँ, पताकाएँ, शरप्रेषक धनु, ढाल, मोरछल और अधिक संख्या में शर —आदि बहते रहे और उन्हें पंक्तियों में तैरकर भूतगण ले आकर कूलों में उनके ढेर लगा रहे थे। १४५७

ईण्ड्‌ वॅम्‌जॅरु विन्नैयत्त निहळ्‌वुळि यॅवर्क्कुम्
नीण्ड वॅळ्ळॅयिऱ्‌ ऱरक्कन्मऱ्‌ ऱोरुदिशै निन्ऱान्‌
पूण्ड वॅम्‌जॅरु विरविकात्‌ मुळैयोडु पॊरुदान्‌
काण्ड हुम्मॅन्न विमैयवर्‌ कुळुक्कॊण्डु कण्डार्‌ 1458

ईण्टु–यहाँ; वॅम्‌ चॅरु–भीषण संग्राम; ऍवर्क्कुम्‌ इन्नैयत्त–सबका ऐसा; निकऴ्‌वुऴि–चल रहा था तब; नीण्ट–लम्बे; वॅळ्‌ ऒयिऱु–श्वेत वक्र दाँतों वाला; अरक्कन्‌–राक्षस; मऱ्‌ऱोरु तिचै निन्ऱान्‌–दूसरी दिशा में खड़ा रहा; वॅम्‌ चॅरु पूण्ट–भयंकर युद्ध में लगे; इरवि काल्‌ मुळैयोटु–सूर्य के पुत्र से; पॊरुतान्‌–भिड़ा; काण्‌ तकुम्‌–देखने योग्य है; ऍन्न–कहते हुए; इमैयवर्‌–देवों ने; कुऴु कॊण्टु–भीड़ लगाकर; कण्टार्‌–देखा। १४५८

इधर जब घोर संग्राम सबको ले चल रहा था, तब उधर लम्बे और श्वेत वक्र दाँतों वाला कुंभकर्ण दूसरी दिशा में रहकर भीषण युद्धकारी सूर्य-पुत्र से युद्ध कर रहा था। देवों ने सोचा कि यह देखने योग्य युद्ध होगा। वे भीड़ लगाकर देखने लगे। १४५८

पॊऱिन्दॅळु कण्णितन्‌ पुहैयुम्‌ वायितन्‌
शॅऱिन्दॅळु कदिरवन्‌ शिऱुवन्‌ शीऱितान्‌
मुऱिन्दन वरक्कन्मा मुरट्टिण्‌ डोळॅन्न
ऍऱिन्दनन्‌ विशुम्बिन्मा मलैयॊन्‌ ऱेन्दिये 1459

चॅऱिन्तु ऍऴु–घने रूप से उठनेवाली; कतिर्‌ अवन्‌–किरणों के स्वामी का; चिऱुवन्‌–पुत्र; पॊऱिन्तु ऍऴु कण्णितन्‌–अंगारे छोड़नेवाली आँखों का; पुकैयुम्‌ वायितन्‌–धुएँ निकालनेवाले मुख का (जो था); चीऱिनन्‌–फूत्कार (कोप) करके; अरक्कन्‌–राक्षस का; मा मुरण्‌ तिण्‌ तोळ्‌–बड़े, विलक्षण, सुदृढ़ कंधे; मुऱिन्तन–टूटे; ऍन्न–लोग सोचें ऐसा; मा मलै ऒन्ऱु एन्ति–एक बड़ा पर्वत उठा लेकर; विचुम्पिन्‌–आकाश से; ऍऱिन्तनन्‌–फेंका (सुग्रीव ने)। १४५९

किरणसंकुल सूर्य का पुत्र सुग्रीव बड़े क्रोध में था। उसकी आँखों से अंगारे छूट रहे थे और मुख से धुआँ-सा निकल रहा था। उसने एक बहुत बड़े पर्वत को उठाया और आकाश से कुंभकर्ण पर फेंका, जिसे देखकर दर्शकों ने सोचा कि बस, अब राक्षस के बड़े मोटे और सशक्त कन्धे टूटे। १४५९

अम्मलै निन्ऱुवन्‌ दवनि यॅय्दिय
शॅम्मलै यन्नैयवॅङ्‌ गळिऱुञ्‌ जेन्नैयिन्‌
वॅम्मलै वेळमुम्‌ पॊरुद वेऱिनि
ऍम्मलै पुळदवर्‌ कॅडुक्कॊ णाददे 1460

अ मलै निन्ऱु–उस पर्वत से; वन्तु–आकर; अवनि ऍय्तिय–भूमि पर जो

पहुँचे वे; चॅ मलै अत्तैय–श्रेष्ठ पर्वत-सम; वॅम् कळिरुम्–भयंकर गज और; चेत्तैयिन्–राक्षस-सेना के; वॅम् मलै वेळमुम्–क्रूर पर्वत-सम हाथी; पौरुत–आपस में लड़े; अवऱ्कु–उस सुग्रीव के लिए; वेऱु ॲटुक्क ऑणाततु–उठाया जा न सके ऐसा अन्य; ॲ मलै उळतु–कौन (सा) पर्वत है। १४६०

उस पर्वत के साथ उसमें रहे लाल पर्वत-से गज भी भूमि पर आये। उनमें और राक्षस-सेना में जो रहे उन भयंकर पर्वत-सम हाथियों में टकराहट हो गयी। सुग्रीव के बल का क्या कहना! ऐसे पर्वत को उठाकर फेंक सकनेवाला न उठा सके ऐसा कौन सा पर्वत होगा? ।१४६०

इव्वहै नॆडुमलै यिऴिन्द माशुणम्
कव्विय निरुदर्दङ् गळिरुङ् गट्टऱ
अव्वहै मलैयिनै येऱ्ऱॊ रङ्गैयाल्
वव्विन तरक्कन्वा ळवुणर् वाऴ्त्तिनार् 1461

इ वकै–इस तरह के; नॆटुमलै–ऊँचे पर्वत से; इऴिन्त–(जो) उतरे; माचुणम्–उन अजगरों ने; निरुतर् तम् कळिरुम्–राक्षसों के हाथियों को; कट्टु अऱ–निर्बल बनाते हुए; कव्विय–मुख से ग्रस लिया; अ वकै मलैयितै–वैसे पर्वत को; एऱ्ऱु–अपने ऊपर झेलकर; अरक्कन्–राक्षस ने; ओर् अङ्कैयाल्–एक हथेली से; वव्वितन्–पकड़ लिया; वाळ् अवुणर्–क्रूर राक्षसों ने; वाऴ्त्तितार्–जयघोष किया। १४६१

वैसे ही उस पर्वत से नीचे उतर आये अजगरों ने राक्षसों की सेना के हाथियों को वलहीन करते हुए अपने मुखों से ग्रस लिया। ऐसे बड़े पर्वत को राक्षस ने अपने एक हाथ से रोका और अपनी हथेली में पकड़ लिया। क्रूर राक्षसों ने वाहवाही की। १४६१

एऱ्ऱोरु कैयिना लिदुकॊल् नीयडा
आऱ्ऱिय कुन्ऱमॆन् ऱळवि लाऱ्ऱलान्
नीऱ्ऱिनु नुणुहुऱप् पिशैन्दु नीङ्गॆन्नात्
तूऱ्ऱिन निमैयवर् तुणुक्क मॆय्दिनार् 1462

अळविल् आऱ्ऱलान्–अपार वली ने; ओरु कैयिनाल् एऱ्ऱु–एक हाथ से झेलकर; अटा–रे; नी आऱ्ऱिय कुन्ऱम्–तूने जो फेंका, वह पर्वत; इतु कॊल्–क्या यही है; ऎन्ऱु–कहकर; नीऱ्ऱितुम् नुणुकुऱ–भस्म से ही महीन; पिचैन्तु–मसलकर; नीङ्कु ऎन्ना–चलो कहकर; तूऱ्ऱितन्–उड़ा दिया; इमैयवर्–देव; तुणुक्कम् ऎय्तितार्–भय खा गये। १४६२

अपार बलिष्ठ कुंभकर्ण ने एक हाथ में पर्वत को रखते हुए सुग्रीव से पूछा, क्या यही बड़ा पर्वत है, जिसे तूने वहुत परिश्रम के साथ उठा फेंका था? फिर उसने उसे अपने हाथ से पीसकर भस्म से भी महीन धूलकणों में परिवर्तित करके 'चलो' कहकर उड़ा दिया। देव सिहर उठे। १४६२

शॅल्वनो नडुङ्गिरि यिन्नुन् देर्नुवॅना
ॲल्लवन् कान्मुळै युणरु मेल्वैयिल्
कौल्लॅन वॅरिन्दनन् कुरैवि नोन्बिनोर्
शौल्लॅनप् पिळैप्पिलाच् चूलञ् जोर्विलान् 1463

ॲल्लवन्–दिनकर का; कान्मुळै–पुत्र; इत्तम् नॅटु किरि–इससे बड़ा पर्वत; तेर्नुतु चॅलवनो–ढूंढ़ चलेगा क्या; ॲन्ना उणरुम्–ऐसा सोचने के; एल्वैयिल्–अवसर पर; चोर्विलान्–अथक कुम्भकर्ण; कौल्–मारो; ॲन–कहते हुए; कुरैविल् नोन्पितोर्–अमोघ तपस्वियों के; चौल् ॲन–(शाप-) वचन के समान; पिळैप्पु इला–अचूक; चूलम् ॲरिन्ततन्–त्रिशूल को फेंक चुका। १४६३

कुंभकर्ण ने जब सोचा कि क्या सूर्यसूनु सुग्रीव इससे भी बड़े एक पर्वत को ढूँढ़ते हुए जायगा, त्योंही उस अथक राक्षस ने अपने त्रिशूल को 'चलो, मारो' कहकर फेंका; जो कि अक्षय तपस्वी साधुओं के शापवचन के समान अचूक रीति से अपना संहारक काम करनेवाला था। १४६३

पट्टनन् पट्टन तॅन्रु पार्त्तवर्
विट्टुलम् बिडनॅडु विशुम्बिऱ् चेरलुम्
ॲट्टिन नदुपिडित् तिरुत्तु नीक्किनान्
ऑट्टुमो मारुदि यरत्तै योम्बुनान् 1464

पट्टनन् पट्टनन् ॲन्रु–मरा, मरा कहकर; पार्त्तवर् विट्टु उलम्पिट–देखनेवाले मुख खोलकर कलपने लगें, ऐसा; नॅटु विचुम्पिल्–ऊपर आकाश में; चेरलुम्–(जब) पहुँचा तभी; अतु–(हनुमान ने) उसे; ॲट्टितन्–उछलकर; पिटित्तु इऱुत्तु–पकड़कर तोड़ा और; नीक्कितान्–दूर किया; अऱत्तै ओम्पुवान्–धर्मपालक; मारुति–मारुति; ओट्टुमो–(सुग्रीव की हानि देखता) चुप रहेगा क्या। १४६४

देखनेवाले मुख खोलकर दुहाई देने लगे कि मर गया सुग्रीव ! मरा ! ज्योंही वह भयंकर त्रिशूल ऊपर आकाश में गया, त्योंही हनुमान ने उसे उछलकर पकड़, तोड़ा और दूर कर दिया। धर्मपालक हनुमान सुग्रीव पर कुछ बन आते देख चुप रहेगा क्या ? । १४६४

शित्तिर वन्मुलैच् चीदै शॅव्वियाल्
मुत्तनार् मिदिलैयू रड़िवु मुऱ्रिय
पित्तनॅञ् जिलैयिनै यिऱुत्त पेरॊलि
यॊत्तदु शूलमन् ऱिऱ्र वोशैये 1465

अतॄ–तब; चूलम् इऱ्र ओचै–त्रिशूल के टूटने का शोर; चित्तिरम्–चित्रकारी-सहित; वत्र मुलै–सुन्दर स्तनों वाली; चीतै चॅव्वियाल्–सीतादेवी के सौंदर्य से; मुत्तनार्–कर्ममुक्त श्रीराम के; मितिलै यूर्–मिथिला नगरी में; अऱिवु मुऱ्रिय–

ज्ञानवृद्ध; पित्तन्-विभ्रान्त-नाम-भूषित शिव के; वॆम् चिलैयिनै-भीम धनु को; इऱुत्त पेर् ऑलि-तोड़ने की घोर ध्वनि; ऑत्ततु-के समान थी। १४६५

उस दिन त्रिशूल के टूटने की आवाज़, मिथिला नगर में सुन्दर शृंगारिक चित्रकारी से शोभायमान मनोरम स्तनों वाली सीतादेवी की सुन्दरता से प्रभावित होकर कर्ममुक्त होने पर भी श्रीराम ने ज्ञानवृद्ध "विक्षिप्त" संज्ञाभूषित पिनाक-पाणी के धनु को जो तोड़ा था, उसके टूटने की आवाज़ के समान थी। [शैवसंतों में सुन्दरमूर्ति नायनार विख्यात संत हैं। उन्होंने अपने आराध्य देव शिवजी को गुस्से में आकर विक्षिप्त या पागल (पित्तन) बुलाया था। तब से शिव से यह नाम जुड़ गया!]। १४६५

निरुदनु सत्तैयव निलैमै नोक्किये
करुदवु मियम्बवु मरिदुन् कैवलि
अरियन मुडिप्पदर् कनैत्तु नाट्टिनुम्
औरुतनि युळैयिदर् कुवमै यादॆन्ऱान् 1466

निरुतनुम्-राक्षस ने भी; अत्तैयवन् निलैमै-उसके वल की स्थिति को; नोक्कि-देखकर; उन् कै वलि-तुम्हारा भुजवल; करुतवुम्-सोचना और; इयम्पवुम्-कहना; अरितु-कठिन है; आरियन मुटिप्पतऱ्कु-कष्टसाध्य काम पूरा करने को; अनैत्तु नाट्टिलुम्-सभी लोकों में; औरु तनि उळै-अद्वितीय तुम हो; इतऱ्कु-इसकी उवमै यातु-उपमा क्या है; ऎन्ऱान्-विस्मय में कहा। १४६६

राक्षस कुंभकर्ण हनुमान के वल का हाल देख विस्मित हुआ। उसने खोलकर साधुवाद दिया कि तुम्हारा भुजबल सोचना और कहना भी कठिन है। असाध्य कार्य सिद्ध करने में सारे लोकों में तुम अकेले हो। तुम्हारे इस पराक्रम की क्या ही उपमा दी जाय? । १४६६

ऎन्नॊडु पॊरुदिये लिन्नु नीयमर्
शॊन्नन पुरिवलॆन् ऱरक्कन् शॊल्ललुम्
मुन्निनि यॆदिर्क्किलॆ नॆन्ऱु मुऱ्ऱिय
पिन्निहल् पऴुदॆनप् पॆयर्न्दु पोयिनान् 1467

अरक्कन्-राक्षस के; ऎन्नॊटु पॊरुतियेल्-मुझसे लड़ोगे तो; इन्नुम्-और; अमर्-युद्ध में; नी चॊन्नन-तुमने जो (दावे) कहे; पुरिवल्-करूँगा; ऎन्ऱु चॊल्ललुम्-कहने पर; मुन्-पहले; इनि-आगे; ऎतिर्क्किलॆन्-नहीं लडूंगा; ऎन्ऱु-कहकर; मुऱ्ऱिय पिन्-(वात) कर चुकने के वाद; इकल्-युद्ध करना; पऴुतु-ग़लत होगा; ऎन-कहकर; पॆयर्न्तु पोयिनान्-छोड़ चला (हनुमान)। १४६७

कुंभकर्ण ने आगे यों कहा। अगर तुम और भी मुझसे युद्ध करोगे तो तुम जो भी कहोगे वह सब करूँगा। हनुमान ने उत्तर में कहा कि मैंने

तो 'नहीं लड़ूँगा' कहकर बात समाप्त कर दी। फिर लड़ना ग़लत होगा। ऐसा कहकर हनुमान उसे छोड़ चला गया। १४६७

अऱ्ऱदु कालैयि ऩरक्क ऩायुदम्
पॅऱ्ऱिलऩ् पॅयर्न्दिल ऩन्नैय पॅऱ्ऱियिऱ्
पऱ्ऱिऩऩ् पायन्वॆदिर् परुदि काऩ्मुळै
ऑऱ्ऱिऩऩ् कुत्तिऩ ऩॆरुळ्वॆङ् गैहळाल् 1468

अतु अऱ्ऱ कालैयिऩ्–उस (शूल) के टूटने पर; अरक्कऩ्–(कुम्भकर्ण) राक्षस ने; आयुतम् पॅऱ्ऱिलऩ्–हथियार (दूसरा) नहीं लिया; पॅयर्न्तिलऩ्–हटा भी नहीं; अऩ्नैय पॅऱ्ऱियिल्–उस सन्निवेश में; परुति काऩ् मुळै–सूर्य के पुत्र ने; ऎतिर् पायन्तु–सामने झपटकर; पऱ्ऱिऩऩ्–पकड़कर; ऎरुळ्–बलवान; वॆम् कैकळाल्–कठोर हाथों से; ऑऱ्ऱिऩऩ्–पीटकर; कुत्तिऩऩ्–घूँसे मारे। १४६८

कुंभकर्ण का शूल कट गया। फिर उसने कोई दूसरा हथियार नहीं लिया। न ही वहाँ से चला। तब सूर्य के पुत्र सुग्रीव ने सामने से झपटकर कुंभकर्ण को पकड़ा और अपने बलवान हाथों से उसे पीटा और उस पर घूँसे मारे। १४६८

अरक्कनु नन्ऱुनिन् ऩाण्मै यायिनुम्
तरुक्किनि यिन्ऱॊडु शमैयुन् दाऩॆऩ
नॆरुक्किनन् पऱ्ऱिऩ नीङ्गो णावहै
युरुक्किय शॆम्बन वुदिरक् कण्णिनान् 1469

उरुक्किय–पिघले; चॆम्पु अऩ–ताम्र के समान; उतिरम् कण्णिताऩ्–रक्त-सहित आँखों वाले (कुंभकर्ण) ने भी; निऩ् आण्मै नऩ्ऱु–तुम्हारा पौरुष अच्छा है; आयिऩुम्–तो भी; इऩि तरुक्कु–अब तुम्हारा घमंड; इऩ्ऱॊटु चमैयुम्–आज के साथ समाप्त हो जाएगा; ऎऩ–कहकर; नॆरुक्किऩऩ्–कसकर; नीङ्क ऒणा वकै–अलग न जा सके ऐसा; पऱ्ऱिऩऩ्–पकड़ लिया (सुग्रीव को)। १४६९

पिघले ताम्र के समान रक्तमय आँखों वाले कुंभकर्ण ने भी उसे यह कहते हुए कस लिया कि तुम्हारी वीरता बढ़ी-चढ़ी है! तो भी तुम्हारा घमंड आज चूर हो जाएगा। उसे ऐसा पकड़ लिया कि सुग्रीव अपने को छुड़ा नहीं सका। १४६९

तिरिन्दनर् शारिहै तेवर् कण्डिलर्
पुरिन्दनर् नॆडुञ्जॆरुप् पुहैयुम् बोर्त्तॆळ
ऎरिन्दन वॆरुमॆला मिरुवर् वायहळुम्
शॊरिन्दन कुरुदिता मिरैयुज् जोर्न्दिलार् 1470

नॆटु चॆरु पुरिन्तनर्–लम्बा युद्ध किया; चारिकै तिरिन्तनर्–दायें-बायें चक्कर काटे; तेवर् कण्टिलर्–देव पहचान न पाये; पुकैयुम् पोर्त्तु ऎऴ–धुआँ सब स्थानों

को ढँकते हुए फैला; उरुम् ॲलाम्–सभी अशनियाँ; ऍरिन्तत–जल गयीं; इरुवर् वाय्कळुम्–दोनों के मुखों ने; कुरुति चोरिन्तत–रक्त गिराया; ताम्–वे स्वयं; इऱैयुम् चोर्न्तिलार्–थोड़ा भी शिथिल नहीं हुए। १४७०

दोनों लम्बी देर तक लड़े। दायें और बायें चक्कर काटे। वे इतने गुथ गये कि देव पहचान ही नहीं पाये कि कौन सुग्रीव है, कौन कुंभकर्ण। धुआँ दिशाओं को छिपाते हुए उठा। अशनियाँ जलीं। दोनों के मुखों से रक्त वहा। तो भी एक भी शिथिल नहीं पड़ा। १४७०

उरुक्किन्ऱ ऱॉरुवरै यॉरुव रुऱ्ऱिहल्
मुरुक्किन्ऱर् मुऱैमुऱै यरक्कन् मॉय्म्बिन्ऩाल्
पॉरुक्किला वहैनॅडुम् बुयङ्ग ळाऱ्पिडित्
तिरुक्किन्ऩ निवन्शिऱि दुणर्वु मॅञ्जिन्ऩान् 1471

ऑरुवरै ऑरुवर् उऱ्ऱु–एक-दूसरे के पास गये और; उरुक्किन्ऱर्–डाँटे; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; इकल् मुरुक्किऩर्–युद्ध को प्रचंड बनाया; अरक्कन्–राक्षस ने; मॉय्म्पिन्ऩाल्–बल से; पॉरुक्किला वकै–असह्य रीति से; नॅंटु पुयङ्कळाल्–लम्बे हाथों से; पिटित्तु इरुक्किन्ऩन्–पकड़कर दबा दिया; इवन्–यह (सुग्रीव); उणर्वुम् चिऱितु ॲञ्चिन्ऩान्–थोड़ा बेहोश हुआ। १४७१

दोनों परस्पर डाँटे। बारी-बारी से उग्रता बढ़ाकर लड़े। कुंभकर्ण ने बहुत ही ज़ोर के साथ असह्य पीड़ा देते हुए उसे अपने दीर्घ हाथों से कस लिया। तो सुग्रीव किंचित सुध खो गया। १४७१

मण्डम रिन्ऱॉडु मडङ्गु मानिडर्
तिण्डिऱऱ् पॅरुम्बडै शिन्दुन् दक्कदोर्
ऍण्डरु करुममऱ् ऱिदनि निल्लॅनक्
कॉण्डनन् पोयिन्ऩ निरुदर् कोनहर् 1472

निरुतर् को–राक्षस-नायक; मण्टु अमर्–वर्द्धमान युद्ध; इन्ऱु ऑटुम् अटङ्कुम्–आज तक समाप्त हो जायगा; मानिटर् तिण् तिऱल्–नरों की अति बलवान; पॅरु पडै–बड़ी सेना; चिन्तुम्–विघटित हो जाएगी; ऍण् तरु तक्कतु–सोचकर करने योग्य; ओर् करुमम्–एक कार्य; इततिन् इल्–इससे दूसरा नहीं; ॲन्न–ऐसा विचार करके; कॉण्टनन्–(सुग्रीव को) लेकर; नकर् पोयिनन्–नगर की ओर गया। १४७२

राक्षसपति ने सोचा कि मैं इसे लंका नगर में ले जाऊँगा। तो यह बढ़ता चलनेवाला युद्ध आज से समाप्त हो जाएगा। नरों की बलवान वानर-सेना भी छिन्न-भिन्न हो जाएगी। सोचकर करने योग्य कार्य इससे दूसरा नहीं हो सकता। वह सुग्रीव को लेकर लंका की तरफ़ जाने लगा। १४७२

उरऱ्ऱिन्ऩ परवैयै यूरु कॉण्डॅळुच्
चिरऱ्ऱिन्ऩ पार्प्पिनिर् चिन्दै शिन्दिड

विरड्रुरु कैत्तल नॅरित्तु वॅय्दुयिर्त्
तरड्रिन कविक्कुल मरक्क रार्त्ततनर् 1473

उरड्रित–विलापती हुई; परवैयै–चिड़िया को; ऊरु कोण्ट्र अॅळ–बाज के उठा ले जाने पर; चिरड्रित, पार्प्पिनिल्–क्रन्दन करनेवाले बालपक्षियों के समान; कवि कुलम्–वानर-समूहों ने; चिन्तै चिन्तिट–मन मारकर; विरल् तुरु–उंगलियों से पूर्ण; कै तलम् नॅरित्तु–हाथों को मलकर; वॅय्तु उयिर्त्तु–गरम निःश्वास छोड़ते हुए; अरड्रित–रोना मचाया; अरक्कर् आर्त्ततनर्–राक्षसों ने आनन्दघोष किये। १४७३

चिल्लाती माता चिड़िया को जब बाज़ उठा ले जाता है, तब बालपक्षी जैसे रोते-कलपते शोर मचा देते हैं, वैसे ही वानरसमूह मन मारकर हाथों को मलते हुए, ठंडी आहें भरकर चिल्लाये। राक्षसों ने आनन्दघोष किया। १४७३

नडुङ्गिन रमररु नावु लरन्दुवेर्त्
तॉडुङ्गिनर् वानरत् तलैव रुण्मुहिळ्त्
तिडुङ्गिन कण्णिन रॅरिन्द नॅञ्जिनर्
मडङ्गिन वामुयिर्प् पॅत्तु माण्बिनार् 1474

अमररुम्–देव भी; नटुङ्कितर्–काँपे; वेर्त्तु–पसीने के तर; ना उलर्न्तु–जिह्वा सूख गयी; ऑटुङ्कितर्–निर्बल हो गये; वानरर् तलैवर्–वानर-नायक; उण् मुकिळ्त्तु–मन उल्लासहीन करके; इटुङ्किन कण्णितर्–सँकरी बनी आँखों के साथ; अॅरिन्त नॅञ्चितर्–दग्धचित्त हो; उयिर्प्पु मटङ्कित आम्–प्राण भी चले गये; अॅत्तुम् माण्पितार्–ऐसे मान्य प्रकार के हो रहे। १४७४

देव भय से काँप गये। उनके शरीर पसीने से तर हो गये। जिह्वाएँ सूख गयीं। वे (निर्बल) चुप हो गये। वानर-नायकों का उत्साह भंग हो गया। उनकी आँखें सँकरी हो गयीं। दग्ध-चित्त और प्राणवियुक्त-से हो गये। (इससे उनका स्वामिभक्ति का गौरव साफ़ प्रकट हो रहा था।) । १४७४

पुळुङ्गिय वॅञ्जिनत् तरक्कन् पॊङ्गुवान्
अळुङ्गलिल् कोणमुहत् तरव मायिनान्
अॅळुङ्गदि रिरवितन् पुतल्व नॅण्णरु
विळुङ्गिय मदियॅन मॅलिन्दु तोन्ड्रिनान् 1475

पुळुङ्किय–खौलनेवाले; वॅञ्चिततुतु–भीषण क्रोध से; पॊङ्कुवान्–भभकनेवाला; अरक्कन्–राक्षस; अळुङ्कल् इल्–अनायास; कोळ् मुकत्तु–ग्रसनेवाले मुख के; अरवम् आयितान्–सर्प (राहु) के समान बन गया; अॅळुम् कतिर् इरवि तन्–उदीयमान

किरणमाली का; पुतल्वन्–पुत्र; ॲण्णुऱ–सबको चिन्ता में डालते हुए; विऴुङ्किय मति ॲन्न–निगले हुए चन्द्र के समान; मॅलिन्तु तोन्ऱिऩान्–म्लान दिखायी दिया। १४७५

खौलते क्रोध से जो भभक उठा वह कुंभकर्ण अनायास ही ग्रसनेवाले राहु सर्प के समान लगा, तो उदीयमान किरणों के स्वामी सूर्य का पुत्र सुग्रीव उस राहु से निगले हुए चाँद के समान म्लान तथा कृश दिखायी दिया। १४७५

तिक्कुऱ विळक्कुवान् शिऱुवन् तीयवन्
मैक्करु निऱत्तिडै मऱैन्द तन्नुरु
मिक्कदुङ् गुऱैन्ददु माह मेहत्तुट्
पुक्कदुम् पुऱत्तुमा मदियुम् पोन्ऱनन् 1476

तिक्कु–दिशाओं को; उऱ विळक्कुवान्–खूब प्रकाशित करनेवाले का; चिऱुवन्–पुत्र; तीयवन्–खल के; मै करु निऱत्तिटै–अंजन के समान काले शरीर के अन्दर; मऱैन्त तन् उरु–छिपा हुआ अपना शरीर; मिक्कतुम्–कभी बड़ा; कुऱैन्ततुम्–कभी छोटा; आक–जो बना उसके साथ; मेकत्तुळ् पुक्कतुम् पुऱत्तुमाम्–मेघ के अन्दर कभी, बाहर कभी; मतियुम् पोन्ऱनन्–दिखनेवाले चन्द्र के समान भी रहा। १४७६

दिशाप्रकाशक दिनकर का पुत्र अंजनवर्ण कुंभकर्ण के शरीर में छिपा रहा, तो कभी बड़ा दिखा कभी छोटा। तब वह मेघ के अन्दर और बाहर दिखनेवाले चन्द्र के समान लगा। १४७६

ऑरुङ्गमर् पुरिहिले नुन्नोडि यानॆन
नॆरुङ्गिय वुरैयिनै निनैन्दु नेर्हिलन्
करुङ्गडल् कडन्दवक् कालन् कालिन्शेय्
पॆरुङ्गरम् पिशैन्दवन् पिन्बु शॆन्ऱनन् 1477

करु कटल् कटन्त–काले सागर को जिन्होंने लाँघा था; अ कालन्–उन चरणों वाला; कालिन् चेय्–और पवनपुत्र; यान्–मैं; ऑरुङ्कु अमर्–समता में रहकर युद्ध; उन्नोटु–तुमसे; पुरिकिलेन्–नहीं करूँगा; ॲन्न–ऐसा; नॆरुङ्किय–हाल में कहे; उरैयिनै–वचन को; निनैन्तु–स्मरण करके; नेर्किलन्–युद्ध किये बिना; पॆरु करम् पिचैन्तु–बड़े हाथों को मलते हुए; अवन् पिन्पु–उसके पीछे-पीछे; चॆन्ऱनन्–गया। १४७७

काले समुद्र को अपने पैरों के बल जो लाँघ चुका वह वायुपुत्र हनुमान अपने बड़े हाथों को मलते हुए उसके पीछे-पीछे जाता रहा। उसने वादा किया था कि मैं तुम्हारे समकक्ष रहकर तुमसे नहीं लड़ूँगा। उसका स्मरण करते हुए वह लड़ना नहीं चाहता था। १४७७

आयिरम् वॆंयरव नाडियिल् वीऴ्न्दनर्
नायह रॆमक्किनि यावर् नाट्टिनिर्

कायहदिर्च् चिरुवनैप् पिणित्त कैयिनन्
पोयिन नरक्कनैन् रिशैत्त पूशलार् 1478

काय् कतिर्–जलानेवाली किरणों के स्वामी के; चिरुवनै–पुत्र को; पिणित्त कैयित्तन्–बद्धहस्त बनाकर; अरक्कन् पोयित्तन्–राक्षस ले गया; ऎमक्कु–हमारे; इनि–अब; नाट्टिनिल् नायकर् यावर्–देश में राजा कौन हैं; ऎन्रु–ऐसा; इचैत्त पूचलार्–किये गये शोर के साथ; आयिरम् पॆयरवन्–सहस्रनाम श्रीराम के; अटियिल्–चरणों में; वीऴ्न्तनर्–(वानरों ने) गिरकर नमस्कार किया। १४७८

तब वानर चिल्लाते हुए श्रीराम के पास गये कि जलानेवाली किरणों के स्वामी सूर्य के पुत्र को हाथ बाँधकर कुंभकर्ण लंका ले जा रहा है। अब देश में हमारे राजा कौन हैं? वे सहस्रनाम श्रीराम के चरणों में गिरे। १४७८

तीयिनु मुदिर्वुरच् चिवन्द कण्णिनान्
कायहणै शिलैयॊडुङ् गवर्न्व कैयिनान्
एयॆनु मात्तिरत् तिलङ्गै मानहर्
वायिलॊन् रॆय्दिनान् मऴैयिन् मेनियान् 1479

मऴैयिन् मेनियान्–मेघ-देह ने; तीयिनुम्–आग से; मुतिर्वु उऱ–बढ़कर; चिवन्त कण्णिनान्–लाल आँखों वाले; काय् कणै–संतापक शरों को; चिलैयॊटुम् कवर्न्त–धनु के साथ पकड़े रहे; कैयित्तन्–हाथों वाले; ए ऎनुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की मात्रा के अन्दर; इलङ्कै मा नकर् वायिल्–महान् लंका नगर के द्वार पर; चॆन्ऱु ऎय्तिनान्–जा पहुँचे। १४७९

मेघश्याम की आँखें आग से भी अधिक लाल हो गयीं। संतापक शर और धनु को हाथ में झट लेकर 'ए' कहने की देर के अन्दर श्रीराम लंका के बड़े नगर के द्वार में आ पहुँचे। १४७९

उडैप्पॆरुन् दुणैवनै युयिरिऱ् कॊण्डुपोय्क्
किडैप्परुङ् गॊडिनह रडैयिऱ् केडॆनत्
तॊडैप्परुम् बहऴियिन् मारि तूर्त्तुऱ
अडैप्पॆनॆन् ऱडैत्तनन् विशुम्बि नाऱॆलाम् 1480

किटैप्परुम्–कठिनता से प्राप्य; उटै पॆरु तुणैवनै–अपने बने बड़े मित्र को; उयिरिल् कॊण्टु पोय्–मेरे ही प्राणों को जैसे ले जाकर; कॊटि नकर अटैयिल्–ध्वजा-सहित नगर में पहुँच जाएगा तो; केटु–अनर्थ हो जाएगा; ऎन–सोचकर; तॊटै–संधाने जाने योग्य; परु पकऴियिन्–बड़े-बड़े शरों की; मारि तूर्त्तु–वर्षा कराकर; उऱ अटैप्पॆन्–खूब आड़ कर दूँगा; ऎन्ऱु–ऐसा; विचुम्पिन् आऱु ऎलाम्–आकाश-मार्ग सभी; अटैत्तनन्–छिपा दिया। १४८०

श्रीराम ने सोचा कि अलभ्य मेरे मित्र को मेरे ही प्राणों को ले जा

रहा हो —ऐसा कुंभकर्ण ले जाता हुआ ध्वजासज्जित लंका नगर पहुँच जायगा तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा। मैं अब शर चलाकर रोक लूँगा। उन्होंने बड़े-बड़े शरों की वर्षा-सी करके आकाशमार्ग पूरा आड़ में कर दिया। १४८०

मादिर मऱैन्दन वयङ्गु वॅय्यवन्
शोदियिन् किळर्निलै तॊडर्द लोविन
यादुम्विण् पडर्हिल वियङ्गु कार्मळै
मीदुनिन् ऱहन्ऱदु विशुम्बु तूर्त्तलाल् 1481

विचुम्पु तूर्त्तलाल्–आकाश को ढँक देने से; मातिरम् मऱैन्तन–दिशाएँ अदृश्य हो गयीं; वयङ्कु वॅय्यवन्–प्रकाशमान सूर्य की; किळर् चोतियिन् निलै–बढ़ चलनेवाली किरणों की स्थिति; तॊटर्तल् ओविन–जारी नहीं रह सकी; यातुम्–कुछ भी; विण् पटर्किल–आकाश में जा नहीं सका; इयङ्कु कार् मळै–संचरणशील काले मेघ; मीतु निन्ऱु–ऊपर से; अकन्ऱतु–हटे। १४८१

अंतरिक्ष आच्छादित हो गया तो दिशाएँ भी आड़ में हो गयीं। प्रकाशमय सूर्य की उज्ज्वल किरणें भी भूमि पर लगातार प्रकाश नहीं दे सकीं। कोई भी वस्तु आकाश में नहीं जा सकी। आकाशचारी मेघ भी वहाँ से हट गये। १४८१

मनत्तिनुङ् गडियदोर् विशैयिन् वान्शॅल्वान्
इनक्कॊडुम् पहळियिन् मदिलै यॅय्दिनान्
निनैत्तवै नीक्कुद लरुमै यिन्ऱॅनच्
चिनक्कॊडुन् दिऱलवन् तिरिन्दु नोक्किनान् 1482

मनत्तिनुम् कटियतु–मन से भी तेज़; ओर् विचैयिन्–एक गति में; वान् चॅल्वान्–आकाश-मार्ग में जानेवाला; चिनम्–क्रोध के साथ; कॊटु तिऱलवन्–कठोर बलवान; इनम्–समूह में रहकर; कॊटुम् पकळियिन् मतिलै–(बने) क्रूर अस्त्रों के प्राचीर के पास; ऍय्तिनान्–पहुँचा; निनैत्तु–विचार करके; इन्ऱु–अब; अवै नीक्कुतल्–उनको हटाना; अरुमै–कठिन है; ऍन–ऐसा; तिरिन्तु नोक्किनान्–मुड़कर देखा (उसने)। १४८२

क्रोधी और भीमपराक्रम कुंभकर्ण ने, जो मन की गति से भी तेज़ जा रहा था, अस्त्रराशिनिर्मित दीवार को, पास जाकर देखा। सोचा कि इसे दूर करना कठिन है। उसने मुड़कर पीछे देखा। १४८२

कण्डनन् वदनम्वाय् कणगै कालॅनप्
पुण्डरी हत्तडम् बूत्तुप् पोऱ्चिलै
मण्डलन् दोडर्न्दुमण् वयङ्ग वन्ददोर्
कोण्डलिऱ् पोलिदरु कोलत् तान्ऱनै 1483

पुण्टरीकम् तटम्–पंकजसर के समान; वततम् वाय् कण् कै काल् अंत–आनन, (अधर), नेत्र, हाथ और चरण ऐसे; पूत्तु–विकसित होकर; पोन् विलै मण्टलम्–सुन्दर धनु-सम परिवेश से; तोटर्न्तु–घिरकर; मण् वयङ्क–भूमि पर प्रकट हो; वन्ततु–जो आता हो ऐसे; ओर् कोण्डलिल्–एक मेघ के समान; पोलि तरु–शोभायमान; कोलत्ताल् तत्तै–सुन्दरमूर्ति को; कण्टतन्–(कुंभकर्ण ने) देखा। १४८३

उसने तब श्रीराम के दर्शन किये, जिनका सुन्दर शरीर ऐसे मेघ के समान था जिसमें पुण्डरीक-सर के समान आनन, अधर, नेत्र, हस्त और चरणों के कमल खिले हों और जिसके चारों ओर सुन्दर उज्ज्वल धनु का परिवेश हो। १४८३

मडित्तवाय् कोळुम्बुहै वळङ्ग माऱिवळ्
तुडित्तन पुरुवङ्गळ् शुरुक्कोण् डेऱिडप्
पोडित्तती नयतङ्गळ् पोरुक्क लामैयाल्
इडित्तवान् ऱॆळिप्पिना लिडिन्द कुन्ऱॆलाम् 1484

मटित्त वाय्–मुड़े हुए अधरों के मुख से; कोळु पुकै–घना धुआँ; वळङ्क–उठ आया; माऱु–वैर से; इतळ् तुटित्तत–अधर फड़के; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; चुरु कोण्टु–क्रोध से प्रभावित होकर; एऱिट–भाल पर चढ़ गयीं; नयतङ्कळ्–आँखों ने; ती पोटित्त–अंगारे निकाले; इटित्त–निकाले गये; वान् तॆळिप्पिताल्–उच्च निनाद से; पोरुक्कलामैयाल्–सहनशक्ति के न रहने से; कुन्ऱु अॆलाम्–सारे पर्वत; इटिन्त–ढह गये। १४८४

कुम्भकर्ण ने क्रोध से ओंठ काटे। उस मुख से घना धुआँ-सा निकला। वैर से अधर फड़के। भौंहें भाल पर चढ़ गयीं। आँखों ने अंगारे छोड़े। उसने ज़ोर से डाँट बतायी, जिसे न सह सकने के कारण सभी पर्वत ढह गये। १४८४

माक्कवन् दनुम्वलि तोलैन्द वालियाम्
पूक्कवर्न् दुण्णियुम् बोलु मॆन्ऱॆन्त्
ताक्कवन् दत्तैयिवन् ऱन्नै यिन्नुयिर्
काक्कवन् दत्तैयिदु काणत् तक्कदाल् 1485

मा कवन्ततुम्–बड़ा कबन्ध; वलि तोलैन्त–बलहीन और; वालियाम्–वाली नाम का; पू कवरन्तु उण्णियुम्–फूल चुनकर खानेवाला; पोलुम्–जैसा होगा; अॆन्ऱु–ऐसा सोचकर; इवन्–इसके; इन् उयिर् तन्नै–प्यारे प्राणों को; काक्क वन्तत्तै–रक्षा करने आये हो; अॆत्तै ताक्क वन्तत्तै–मुझसे टक्कर लेने आये; इतु काण तक्कतु–यह अवश्य देखने योग्य है। १४८५

(कुम्भकर्ण ने श्रीराम से कहा।) तुम मुझे बड़ा कबन्ध और फूल चुनकर खानेवाला निर्बल वानर वाली समझकर शायद इस सुग्रीव के प्यारे

प्राणों को बचाने आये हो। मेरा सामना करने आये हो! अवश्य यह तुम्हारा साहस देखने योग्य है!। १४८५

उम्बियै मुऩिऩ्दिले ऩवन्दुक् कूर्दियाम्
तुम्बियै मुऩिऩ्दिलेऩ् तॊडर्न्द वालितऩ्
तम्बियै मुऩिऩ्दिलेऩ् शमरऩ् दऩ्ऩिलियाऩ्
अम्बियल् शिलैयिऩाय् पुहऴऩ् ऱादलाल् 1486

अम्पु इयल्–शरप्रेषणक्रियाशील; चिलैयिऩाय्—धनुर्धर; पुकऴ् अऩ्ऱु–यशदायी नहीं; आतलाल्–इसलिए; चमरम् तऩ्ऩिल्–समर में; याऩ्–मैंने; उम्पियै मुऩिऩ्तिलेऩ्–तुम्हारे छोटे भाई से वैर न किया; अवऩ्तुक्कु ऊर्ति आम्–उसका वाहन; तुम्पियै मुऩिऩ्तिलेऩ्–हाथी (के समान हनुमान) से; मुऩिऩ्तिलेऩ्–कोप नहीं किया; तॊटर्न्त–मेरे पीछे आये; वालि तऩ् तम्पियै–वाली के छोटे भाई पर भी; मुऩिऩ्तिलेऩ्–गुस्सा नहीं दिखाया। १४८६

शरप्रेषक धनुर्धर! समर में मैंने यशदायी न समझकर तुम्हारे छोटे भाई पर वैर नहीं दिखाया; उसका वाहन जो बना था उस हाथी-सम हनुमान पर भी क्रोध नहीं दिखाया। मेरा पीछा जो कर आया उस वाली के छोटे भाई सुग्रीव से भी गुस्सा नहीं किया। १४८६

तेडित्तिऩ् तिरिन्दऩॆ निऩ्ऩैत् तिक्किऱन्
दोडिय दुऩ्बडै युम्बि योय्न्दॊरु
पाडुऱ नडन्दऩ ऩऩुमऩ् पाऱिऩऩ्
ईडुऱु मिवऩैक्कॊण् डॆळिदि ऩॆय्दिऩेऩ् 1487

निऩ्ऩै–तुमको; तेटित्तिऩ् तिरिन्तऩॆऩ्–खोजता फिरा; उऩ् पटै–तुम्हारी सेना; तिक्कु इऱन्तु ओटियतु–दिशाएँ लाँघकर भागीं; उम्पि–तुम्हारा छोटा भाई; ओय्न्तु–निर्बल होकर; ऒरु पाटु उऱ–एक ओर; नटन्तऩऩ्–चला गया; अऩुमऩ् पाऱिऩऩ्–हनुमान हत-बल हुआ; ईटु उऱुम्–निर्बल हुए; इवऩै–इसे; कॊण्टु–लेकर; ऎळितिऩ् ऎय्तिऩेऩ्–सुगम रीति से आया। १४८७

तुम्हारी ही खोज में मैं घूमता फिरा। तुम्हारी सेना दिगंत को भी पार कर भाग गयी। तुम्हारा भाई अशक्त होकर एक ओर हट गया। हनुमान निर्बल हो गया। निर्बल इसको आसानी से उठा लाया। १४८७

काक्किय वन्दऩै यॆऩ्ऩिऱ् कण्डॆऩ्
पाक्कियऩ् दऩ्ऩदु निऩ्ऩैप् पऩ्मुऱै
आक्किय शॊरुवॆला माक्कि यॆम्मुऩैप्
पोक्कुवॆऩ् मऩत्तुऱु कादर् पुण्णॊय् 1488

काक्किय–इसे बचाने; वन्तऩै ऎऩ्ऩिऩ्–आये हो तो; कण्टऎऩ् पाक्कियम्–

समक्ष आये मेरे भाग्य ने; निऩ्ऱ तन्ततु–तुम्हें दिलाया है; पत्तुमुऱै आक्किय– अनेक बार; आक्किय चॆरु अॆलाम्–जो किये वे युद्ध सब; आक्कि–अब लड़कर; ऎम् मुऩ्–मेरे ज्येष्ठ के; मनत्तुतु उऱु–मन में के; पुऩ् कण् कातल् नोय्–वेदनादायी कामरोग को; पोक्कुवॆऩ्–दूर करूँगा। १४८८

अगर तुम इसे बचाने आये हो तो समझो कि मेरा भाग्य ही तुम्हें इधर लाया है! जितने युद्ध मैंने अब तक किये हैं, उन सबको फिर से सम्मिलित रूप से करूँगा और अपने बड़े भाई के पीड़ादायक कामरोग को दूर कर दूंगा। १४८८

एदिवॆऩ् दिऱलिऩो यिमैप्पि लारॆदिर्
पेदुरु कुरङ्गैयाऩ् पिणित्त कैप्पिणि
कोदॆवॆञ् जिलैयिऩाऱ् कोडि वीडॆऩिल्
शीदैयुम् बॆयर्न्दतळ् शिऱैनिऩ् ऱामॆऩ्ऱाऩ् 1489

एति–हथियार चलाने में; वॆम् तिऱलिनोय्–भीषण समर्थ; इमैप्पिलार् ऎतिर्–देवों के देखते; पेतुऱु कुरङ्कै–क्षुब्ध वानर को; याऩ् पिणित्त–जो मैंने बाँधा है; कै पिणि–उस हाथ के बन्धन को; कोतै वॆम् चिलैयिताल्–हस्तत्राण के खोल के साथ रहनेवाले भयंकर धनु की सहायता से; वीटुकोटि ऎऩिल्–छुटकारा दिला दोगे तो; चीतैयुम्–सीता भी; चिऱै निऩ्ऱु–जेल से; पॆयर्न्ततळ् आम्–छूट गयी (समझो); ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १४८६

तलवार आदि हथियारों से युद्ध करने में समर्थ राम! देवों के समक्ष भ्रमित सुग्रीव को मैंने अपने हाथों से बाँध लिया है। उस बन्धन को तुम चमड़े के बने हस्तत्राण-सहित रहनेवाले कठोर धनु की सहायता से मुक्त करा दोगे तो समझा जा सकेगा कि सीता कारामुक्त हो गयी। १४८९

ऎऩ्ऱलु मुऱुवलित् तिराम ऩियातुडं
इऩ्ऱुणै यॊरुवऩै यॆडुत्त तोळॆऩुम्
कुऩ्ऱिऩै यरिन्दियाऩ् कुऱैक्कि लेऩॆऩिऱ्
पिऩ्ऱिऩ नुऩक्कुविऱ् पिडिक्कि लेऩॆऩ्ऱाऩ् 1490

ऎऩ्ऱलुम्–कहने पर; इरामऩ्–श्रीराम ने; मुऱुवलित्तु–मुस्कुराकर; याऩ् उटै–मेरे अपने; इऩ् तुणै ऒरुवऩै–एक प्यारे साथी को; ऎटुत्त–जिन्होंने उठाया; तोळ् ऎऩुम् कुऩ्ऱिऩै–उन कन्धों रूपी पर्वत को; याऩ् अरिन्तु–मैं काटकर; कुऱैक्किलेऩ् ऎऩिल्–छिन्न नहीं करूं तो; उऩक्कु पिऩ्ऱिऩऩ्–तुमसे हार मानकर; विल् पिटिक्किलेऩ्–धनु हाथ में नहीं लूंगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १४९०

कुम्भकर्ण के यों कहने पर श्रीराम मुस्कराये। अगर मैं अपने परम मित्र को उठा लानेवाले इन कंधों के पर्वत को काटकर हीन न करूँ तो तुमसे हार गया मान लो और आगे कोदण्ड को हाथ से पकड़ूंगा ही नहीं। १४९०

मीट्टवन् करङ्गळाल् विलङ्ग लारैयै
मूट्टरु नीक्कुवान् मुयलुम् वेलैयिल्
वाट्टलैप् पिडर्त्तलै वयङ्गु वाळिहळ्
शेट्टह नॆऱ्ऱियि ऩिरण्डु शेर्त्तिऩाऩ् 1491

अवऩ्–उसने; मीट्टु–फिर; विलङ्कल् आरैयै–आड़े रहे प्राचीर को; करङ्कळाल्–हाथों से; मूट्टु अऱ–बन्धन काटकर; नीक्कुवाऩ्–दूर करने के लिए; मुयलुम् वेलैयिल्–जब यत्न करने लगा तब; पिटर् तलै–तूणीर से; वयङ्कु वाळ् तलै वाळिकळ्–उज्ज्वल तलवार के सिर के समान शर; इरण्टु–दो को; चेट्टु अकऩ्–उन्नत और विशाल; नॆऱ्ऱियिऩ्–भाल पर; चेर्त्तिऩाऩ्–(श्रीराम ने) चला दिये। १४६१

जब कुम्भकर्ण फिर उस आड़े में आये प्राचीर को तोड़कर दूर करने का यत्न करने लगा, तब श्रीराम ने तूणीर से तलवार के सिर के समान फलों वाले दो बाण लेकर कुम्भकर्ण के उन्नत और विशाल भाल पर लगवा दिये। १४९१

शुऱ्ऱिय कुरुदियिऩ् शॆक्कर् शूऴ्न्दॆऴ
नॆऱ्ऱियि ऩॆडुङ्गणै यॊळिर निऩ्ऱवऩ्
मुऱ्ऱिय कदिरवऩ् मुळैक्कु मुऩ्दुवऩ्
दुऱ्ऱॆऴु मरुणऩ दुदयम् बोऩ्ऱऩऩ् 1492

चुऱ्ऱिय–घेर आये; कुरुतियिऩ्–रक्त के कारण; चॆक्कर् चूऴ्न्तु ऎऴ–संध्यागगन के चारों ओर रहते; नॆऱ्ऱियिऩ्–भाल पर; नॆटु कणै ऒळिर–लम्बे बाण के तेजोमय रहते; निऩ्ऱवऩ्–जो खड़ा रहा; मुऱ्ऱिय–पक्व; कतिरवऩ्–किरणमाली के; मुळैक्कुम् मुऩ्तु–उगने के पहले; उऱ्ऱु ऎऴुम्–युक्त रीति से उठ आनेवाले; अरुणऩतु उतयम् पोऩ्ऱऩऩ्–अरुण के उदय के समान रहा। १४६२

भाल पर लम्बे और प्रकाशमय शरों और चारों ओर बहनेवाले रक्त के साथ कुंभकर्ण सूर्य के उगने के पहले उठ आनेवाले उदीयमान अरुण के समान लगा, जिसके चारों ओर प्रातः संध्या की लालिमा घेरे हुए हो। १४९२

कुऩ्ऱिऩ्वी ऴरुवियिऩ् कुदित्तुक् कोत्तिऴि
पुऩ्ऱलैक् कुरुदिनीर् मुहत्तैप् पोर्त्तलुम्
इऩ्ऱुयि लॆऴुन्दॆऩ वुणर्च्चि यॆय्दिऩाऩ्
वऩ्ऱिऱर् ऱॊऱ्ऱिलाऩ् मयक्क मॆय्दिऩाऩ् 1493

कुऩ्ऱिऩ् वीऴ् अरुवियिल्–गिरि से गिरनेवाली नदी के समान; पुल् तलै–(घास-से केश के या) क्षुद्र सिर से; कुतित्तु–गिरकर; कोत्तु इऴि–मिलकर उतरनेवाला; कुरुति नीर्–रक्त; मुकत्तै पोर्त्तलुम्–मुख को ढँक गया तो; इऩ् तुयिल् ऎऴुन्तु

अँत–मीठी नींद से जाग गया जैसे; उणर्न्दचि अँय्तित्तान्–सुधि पायी (सुग्रीव ने); वल् तिऱल् तोऱ्ऱिलान्–(अब तक) जो अपने प्रताप में परास्त नहीं हुआ था वह कुंभकर्ण; मयक्कम् अँय्तिनान्–बेहोश हुआ। १४६३

पर्वत से गिरनेवाली सरिता के समान राक्षस के क्षुद्र सिर से रक्त की धाराएँ मिलकर बहीं और सुग्रीव के मुख पर लगीं तो उसे होश आ गया और मधुर नींद से जैसे जाग उठा। तब कुम्भकर्ण जिसका बल अब तक कभी परास्त नहीं हुआ था, बेहोश हो गया। १४९३

नॅऱ्ऱियि निन्ऱोळि नॅडिदि मैप्पन
कॉऱ्ऱवन् शरमॅनक् कुऱिप्पि नुन्नित्तान्
शुऱ्ऱुऱ नोक्किनन् तॉळुदु वाळ्त्तिनान्
मुऱ्ऱिय पॉरुट्कॅला मुडिवु ळान्ऱनै 1494

नॅऱ्ऱियिन् निन्ऱु–भाल पर रहकर; नॅटितु ऑळि–बहुत प्रकाश; इमैप्पन–देनेवाले; कॉऱ्ऱवन् शरम्–विजयी वीर (श्रीराम) के शर; अॅन–ऐसा; कुऱिप्पित् उन्नित्तान्–मन में विचार कर; चुऱ्ऱु उऱ–(सुग्रीव ने) चारों ओर; नोक्कितन्–देखा; मुऱ्ऱिय पॉरुट्कु अॅलाम्–संसार के सम्पूर्ण पदार्थों के; मुटिवु उळान्–अंतिम आश्रय; तन्नै–श्रीराम को; तॉळुतु वाळ्त्तिनान्–नमस्कार और स्तुति की। १४६४

सुग्रीव ने कुंभकर्ण के भाल पर चमकनेवाले लम्बे शरों को विजयी श्रीराम का जान लिया। चारों ओर दृष्टि दौड़ायी और संपूर्ण विश्व के अन्तिम आश्रय श्रीराम के दर्शन करके नमन और स्तुति की। १४९४

कण्डन नायहन् ऱन्नैक् कण्णुऱात्
तण्डलिन् मानमु नाणुन् दाङ्गिनान्
विण्डव नाशियुञ् जॅवियुम् वेरॊडुम्
कॊण्डन ॲळुन्दुपोय्त् तमरैक् कूडिनान् 1495

नायकन् तन्नै कण्टतन्–नायक को देखा; कण्णुरा–देखकर; तण्टल् इल्–अबाध; मातमुम्–अभिमान और; नाणुम्–शरम; ताङ्कितान्–उठाते हुए; विण्टवन्–शत्रु की; नाचियुम् चॅवियुम्–नाक और कान को; वेरॊटुम् कॊण्टतन्–जड़ से उखाड़ ले; ॲळुन्तु पोय्–उठ जाकर; तमरै कूटितान्–अपनों में जा मिल गया। १४६५

नायक को देखकर उसमें अपार अभिमान और शरम के भाव जाग उठे। वह शत्रु कुंभकर्ण की नाक और कानों को नोच लेकर अपनों के पास जा पहुँचा। १४९५

वानर मार्त्तन मऱैयु मार्त्तन
तानर महळिरुन् दवरु मार्त्तनर्

मीन्नरल् वेलैयुम् वॅऱ्पु मार्त्तत्
वान्नव रोडुनिन्ऱ् ऱऱमु मार्त्तदे 1496

वानरम् आर्त्तत्त–वानरों ने जयघोष किया; मऱैयुम् आर्त्तत्त–वेदों ने आनन्दरव किया; अर मकळिरुम्–देवस्त्रियों ने और; तवरुम्–तपस्वियों ने; आर्त्ततर्–उच्च नाद किया; मीन् नरल्–मछलियों की ध्वनि से पूर्ण; वेलैयुम्–समुद्र ने और; वॅऱ्पुम् पर्वतों ने; आर्त्तत्त–ध्वनि निकाली; वान्नवरोटु निन्ऱु–देवों के साथ रहकर; अऱमुम् आर्त्ततु–धर्मदेवता ने भी जयघोष किया। १४६६

इस पर वानरों ने, वेदों ने, देवस्त्रियों ने, तपस्वियों ने, मकरालयों और पर्वतों तक ने आनंद-नर्दन किया। देवों के साथ मिलकर धर्म-देवता ने भी दुहाई मचा दी। १४९६

कान्दिह लरक्कन्वॅङ् गरत्तुळ् नीङ्गिय
एन्दलै यहमहिऴ्न् दॅय्व नोक्किय
वेन्दनुज् जानहि यिलङ्गै वॅञ्जिऱैप्
पोन्दन ळामॅनप् पॉरुमल् नीङ्गिनान् 1497

कान्तु–क्रोधशील; इकल् अरक्कन्–वैरी राक्षस के; वॅम् करत्तुळ्–क्रूर हाथों से; नीङ्किय–छूट कर आये; एन्तलै–वानरराज को; अकम् मकिऴ्न्तु–मन मुदित होकर; ऍय्त नोक्किय–खूब जिन्होंने देखा; वेन्तनुम्–उन राजाराम ने भी; चानकि–जानकी; इलङ्कै–लंका के; वॅम् चिऱै–कठोर कारा से; पोन्तनळ् आम्–छूट गयी समझो; ऍन–ऐसा; पॉरुमल् नीङ्किनान्–दुःख से विमुक्त हुए। १४६७

राजाराम ने क्रोधी स्वभाव के शत्रु राक्षस कुंभकर्ण के कठोर चंगुल से छूट आये सुग्रीव को आनन्द के साथ खूब निहारा और तभी समझ लिया कि सीता लंका के कठोर कारा से छूट गयीं और उन्हें दुःख से दिलासा हुआ। १४९७

मत्तहम् पिळन्दुवा युदिरम् वारवे
वित्तहन् शरन्दॉड मॅलिवु तोन्ऱिय
शित्तिरम् पॅरुदलिऱ् चॅवियु मूक्कुङ्गॉण्
डत्तिशै पोयिन नल्ल दॊण्णुमो 1498

मत्तकम् पिळन्तु–मस्तक फूटकर; वाय् उतिरम् वार–मुख से रक्त बहे ऐसा; वित्तकन् चरम् तॊट–दक्ष (श्रीराम) के शर चलाने से; मॅलिवु तोन्ऱिय–निर्बलता में पड़ी; चित्तिरम् पॅऱ्ऱलिल्–स्थिति रही तभी; चेवियुम् मूक्कुम् कॊण्टु–कान और नाक को नोच लेकर; अ तिचै पोयितन्–उस दिशा में (सुग्रीव) गया; अल्लतु–नहीं तो; ऒण्णुमो–हो सकता था क्या। १४६८

श्रीराम ने शर चलाकर मस्तक भेदा और मुख से रक्त की धारा बह निकली। कुंभकर्ण निर्बल हो गया। उसी सन्दर्भ का लाभ उठाकर

सुग्रीव नाक और कान छीन लेकर अपनों के बीच पहुँच सका। नहीं तो क्या वह यों ही हो सकनेवाला कार्य है? । १४९८

अक्कणत् तरिवुवन् दणुह वङ्गैनित्
रुक्कनत् कवियर शॅन्तु मुणमैयुम्
मिक्कुयर् नाशियुत् जॅवियुम् वेरिडम्
पुक्कदु मुणर्न्दत तुदिरप् पोर्वैयान् 1499

अ कणतुतु–उस क्षण में; उतिरम् पोर्वैयान्–रुधिरावृत कुंभकर्ण ने; अरिवु वन्तु अणुक–होश के आने से; कवि अरचु–कपिराज; अक्कै नितुरु–अपनी मुट्ठी से; उक्कनन्–निकल गया; अन्तुम् उणमैयुम्–यह तथ्य भी; मिक्कु उयर्–अधिक ऊँचो; नाचियुम्–नाक और; चॅवियुम्–कान का; वेरु इटम् पुक्कतुम्–दूसरी जगह पर चला जाना भी; उणर्न्ततन्–जाना। १४९९

कुंभकर्ण को तभी होश आया। उसने देखा कि कपिराज मुट्ठी से छूट गया है! वह बात और अपनी उन्नत नाक और कानों के अलग किसी दूसरी जगह पहुँच जाने की बात भी समझी। १४९९

शादुरा हत्तडङ् गुन्रन् दारैशाल्
कूदिर्हाल् नॅडुमळै शॊरियक् कोत्तिळि
ऊदैयो डरुविह ळुमिळ्व दॊत्तनन्
मीदुरु कुरुदिया रॊळुहु मेनियान् 1500

मीतु उरु–भाल के ऊपर से; कुरुति आरु–रक्त की नदी; ऒळुकुम् मेनियान्–जिस पर बह रही थी ऐसे शरीर वाला; धातु राकम् तट कुन्रम्–गैरिकधातुपूर्ण विशाल पर्वत; तारै चाल्–धारा में; कूतिर् काल्–शीतलता देते हुए; नॅटु मळै चॊरिय–दीर्घ वर्षा के होते; कोत्तु इळि–मिलकर बहनेवाली; अरुविकळ्–सरिताओं को; ऊतैयोटु–उदीची के साथ; उमिळ्वतु–उगल रहा हो; ऒत्तनन्–जैसे रहा। १५००

भाल से रक्त की नदी निकलकर उसके शरीर पर बह रही थी। तब वह गैरिक पर्वत के समान दिखा, जो मोटी धारों में शीतल वर्षा के होने पर नदियों को उदीची हवा के साथ निकाल रहा हो। १५००

ऎण्णुडैत् तन्मैय निन्नैय वॆण्णिलाप्
पॆण्णुडैत् तन्मैय दाय पीडैयाल्
पुण्णुडैच् चॅवियॊडु मूक्कुम् पोत्तलाल्
कण्णुडैच् चुळिहळुङ् गुरुदि काल्वन 1501

ऎण्णुटै तन्मैयन्–सोचनेवाले स्वभाव का वह; इत्तैय ऎण्णिला–ऐसी स्थिति की चिन्ता न करके; पॆण् उटै तन्मैयताय–स्त्री-सम्बन्धी कार्य द्वारा; पीटैयाल्–पीड़ा देने से; पुण् उटै–व्रण बने; चॅवियॊटु मूक्कुम् पोत्तलाल्–कान के साथ नाक भी

नष्ट हुई, इसलिए; कण् उटै चुऴिकळुम्–नेत्रगोलों ने भी; कुरुति काल्वत–रक्त बहाया। १५०१

कुम्भकर्ण विवेकशील व्यक्ति था। इसलिए उसने अपनी इस स्थिति को नहीं सोचा। पर रावण के स्त्री-सम्बन्धी वेदनादायक व्यवहार से व्रण बना और नाक और कान नष्ट हो गये। इस विचार से उसके नेत्र-गोलों से रक्त बहने लगा। १५०१

एशियुर् ऍळुम्विशुम् बित्तरैप् पार्क्कुन्दत्
नाशियैप् पार्क्कुमुन् नडन्द नाळुडै
वाशियैप् पार्क्कुमिम् मण्णैप् पार्क्कुमाल्
शीशियुर् ऱदुवॅत्तत् तीयुम् जिन्दैयान् 1502

उऱ्ऱतु–जो हुआ; चीच्चि ऍन्त–छिः छिः कहकर; तीयुम् चिन्तैयान्–दग्धमन; एचि उऱ्ऱ–निन्दा करते हुए; ऍऴुम् विचुम्पित्तरै–उठनेवाले देवों को; पार्क्कुम्–देखता; तन् नाचियै–अपनी नाक को; पार्क्कुम्–देखता; मुन् नटन्त–पहले जो हुआ; नाळ् उटै–उस दिन का; वाचियै–हाल; पार्क्कुम्–सोचता; इ मण्णै पार्क्कुम्–इस पृथ्वी को देखता। १५०२

कुंभकर्ण अपना हाल देखकर छिः छिः कहकर तप्तमन हुआ। वह कभी निंदा करनेवाले देवों की ओर देखता; अपनी नाक को देखता। फिर पिछले दिनों की दशा पर सोचता। फिर भूमि पर दृष्टि डाल लेता। १५०२

ऍन्मुहङ् गाण्बदन् मुन्न मियानवन्
तन्मुहङ् गाण्बदु शरदम् नन्ऱॅनाप्
पॊन्मुहङ् गाण्बदोर् तोलुम् पोरिडै
वन्मुहङ् गाण्वदोर् वाळुम् वाङ्गिनान् 1503

ऍन् मुकम्–मेरे मुख को; काण्पतन् मुन्नम्–देखने से पहले; यान्–मैं; अवन् तन् मुकम्–उस (राम) का मुख; काण्पतु–देखूं, यह; चरतम्–अवश्य; नन्ऱु–अच्छा होगा; ऍना–सोचकर; पॊन् मुकम् काण्पतु–स्वर्ण मुख वाला; ओर तोलुम्–एक ढाल और; पोर् इटै–युद्ध में; वन् मुकम् काणपतु–कठोर मुख दिखानेवाली; ओर् वाळुम्–एक तलवार को; वाङ्कितान्–ले लिया (उस कुंभकर्ण ने)। १५०३

कुंभकर्ण ने सोचा कि राम आकर मेरा मुख देखे, इसके पहले मैं ही जाकर उसका मुख देख लूं; यही अवश्य अच्छा है। उसने स्वर्णमय एक ढाल और युद्ध में कठोर धार का असर करनेवाली एक तलवार ले ली। १५०३

आयिरम् पेय्शुमन् दळित्त दाङ्गॊरु
मायिरुङ् गेडह मिटत्तु वाङ्गिनान्

पेयिरण् डायिरत्र् जुमन्दु पेर्वदोर्
कार्येरि वयिरवाळ् पिडित्त कैयिनान् 1504

इरण्टु आयिरम् पेय्–दो हज़ार भूत; चुमन्तु पेर्वतु–जिसे उठा लाये; ओर्–ऐसे एक; काय् ॲरि–जलानेवाले प्रकाश की; वयिरम् वाळ्–वज्र तलवार को; पिटित्त कैयितान्–पकड़े रहे हाथ का; आयिरम् पेय् चुमन्तु–एक हजार भूत ढो (जिसे) लाये; आङ्कु अळित्ततु–और दिया; ओरु–एक; मा इरु केटकम्–बहुत बड़ी ढाल को; इटत्तु वाङ्कितान्–बायें हाथ में ले लिया। १५०४

वह तलवार जलानेवाले तेज की और वज्र की थी, जिसे दो हज़ार भूतों ने उठा लाकर दिया। वैसे ही एक हज़ार भूतों ने जिसे ला दिया, उस बहुत बड़ी ढाल को उसने अपने बायें हाथ में ले लिया। १५०४

विदिर्त्ततन् वीशिनन् विशुम्बिन् मीनॅलाम्
उदिर्त्तन नुलहिनै यनन्द नुच्चियो
डविर्त्तन नार्त्तन नाधि रम्बॅरुङ्
गविर्त्तलज् जूळ्वड वरैयिन् काट्चियान् 1505

आयिरम् पॅरु कतिर् तलम्–सहस्र अति प्रकाशमय सूर्यमण्डल; चूळ्–जिसे घूम आएँ; वट वरैयिन् काट्चियान्–ऐसे उत्तर के मेरु पर्वत के समान आकार के (उसने); वितिर्त्ततन्–ढाल को हिलाकर; वीचिनन्–फेंका और; विचुम्पित् मीन् ॲलाम्–आकाश के सारे नक्षत्रों को; उतिर्त्ततन्–गिरा दिया; अनन्तन् उच्चियोटु–अनन्तनाग की चोटी के साथ; उलकिनै–पृथ्वी को; अतिर्त्ततन्–कँपा दिया; आर्त्ततन्–नर्दन कर उठा। १५०५

कुंभकर्ण ने, जो सहस्र सूर्यमण्डलों की परिक्रमा के पात्र उत्तरी मेरु पर्वत के समान था, ढाल को हिलाकर ऊपर फेंका तो आकाश के नक्षत्र चू गये। अनंतनाग के सिर काँप गये और पृथ्वी थर्रा गयी। १५०५

वीशिन केडह मुहत्तु वीङ्गुकाल्
कूशिन कुरक्कुवॅङ् गुळुवॅक् कॊण्डॅळुन्
दाशैहळ् तोरुम्विट् टॅरिय वार्त्तॅळुम्
ओशैयोण् कडलैयुम् तिडर्शॅय् दोडुमाल् 1506

वीचित केटकम् मुकत्तु–उछाले गये ढाल के अग्रभाग से; वीङ्कु काल्–फूलकर निकली हवा ने; कूचित–भयभीत; वॅम् कुरक्कु कुळुवै–क्रूर वानर-सेना को; कॊण्टु ॲळुन्तु–उठा लेकर; आचैकळ् तोरुम्–चारों दिशाओं में; विट्टु ॲरिय–फेंका तो; आर्त्तु ॲळुम् ओचै–गर्जन के नाद से युक्त; ऑळ् कटलैयुम्–प्रकाशमय समुद्र को भी; तिटर् चॅय्तु ओटुम्–टीला बना गयी (वानर-सेना)। १५०६

उसने ढाल उछाली। उससे झंझावात उठा, जिसने क्रूर वानरों के समूहों को चारों दिशाओं में उठाकर छितरा दिया। वे गर्जनशील समुद्र को टीले में बदलकर भाग गये। १५०६

पोयित	केडहम्	बोहप्	पोक्कितत्
आयिरम्	बॅयरव	तरियु	मुत्बवन्
पेयिरण्	डायिरम्	पेणुङ्	गेडहम्
एयॅनु	मळविनि	लॅय्दच्	चॅन्रदाल् 1507

आयिरम् पॅयरवन्–सहस्रनामी; अरियु मुत्पवन्–विख्यात बलवान श्रीराम ने; पोयित केटकम्–ऊपर गयी ढाल को; पोक पोक्कितन्–हटा दिया; इरण्टु आयिरम्–दो हजार; पेय् पॅणुम् केटकम्–भूत जिसे लाये वह (दूसरी) ढाल; ए ॲनुम् अळविनिल्–'ए' कहने की देर के अन्दर; ॲय्त चॅन्रतु–(उस राक्षस के पास) पहुँचने आयी। १५०७

सहस्रनामी, विख्यात और लोकशंसित श्रीराम ने ढाल को नष्ट कर दूर किया। तो झट, 'ऐ' कहने की देर के अन्दर दो हज़ार भूत और एक बड़ी ढाल को ढोते हुए ले आये और वह कुम्भकर्ण को मिल गयी। १५०७

तोलिडैत्	तुरक्कवुन्	दुहैक्क	वुञ्जुडर्
वेलुडेक्	कूर्रिनार्	रुणिय	वीशवुम्
कालुडैक्	कडलॅनच्	चिन्दिक्	कॅहॅड
वालुडै	नॅडुम्वडै	यिरिन्दु	मायन्ददाल् 1508

तोल् इटै तुरक्कवुम्–ढाल को बीच में चलाने से; तुकैक्कवुम्–(पैरों से) रौंदने से; चुटर् वेल् उटै कूर्रिताल्–और तेजोमय भाले रूपी यम से; तुणिय वीचवुम्–छिन्न करते हुए वार करने से; काल् उटै कटल् ॲन–पवनविलोडित समुद्र के समान; वाल् उटै नॅट्ट पटै–पूँछ वालों की बड़ी सेना; चिन्ति–बिखरकर कै कॅट–बल खोकर; इरिन्तु मायन्ततु–अस्त-व्यस्त हो नष्ट हो गयी। १५०८

ढाल के प्रहारों के कारण, कुम्भकर्ण के पैरों से रौंदे जाकर और उज्ज्वल भाले रूपी यम के प्रहारों से झंझा से विलोडित समुद्र के समान पूँछों वाले वानरों की सेना अस्त-व्यस्त हुई, निर्बल हुई और तहस-नहस हो गयी। १५०८

एरुपट्	टदुमिडै	यॅदिरन्दु	ळोरॅलाम्
कूरुपट्	टदुङ्गॉळुड्	गुरुदिहोत्	तिळिन्
दारुपट्	टदुनिल	मतन्द	नुच्चियुम्
शेरुपट्	टदुमोरु	कणत्तिर्	डीरन्दवाल् 15

एरु पट्टतुम्–(हथियार) चलाते ही; इटै ॲतिर्न्तुळोर् ॲलाम्–मध्य में सभी; कूरु पट्टतुम्–कट गये वह वात और; कॉळु कुरुति–अत्यधिक परिमाण रक्त; कोत्तु इळिन्तु–बाढ़-सी मिलकर बढ़ा और; आरु पट्टतुम्–नदियाँ

चोटी भी; चेरु पट्टतुम्–पंक-लगी हो गयी, वह बात; ऑरुकणत्तिल् तीर्न्त–(सभी कार्य) एक ही क्षण में हो गये। १५०६

हथियार का चलाया जाना, आड़े आये हुओं का छिन्न-भिन्न हो जाना, रक्त का प्रवाह बनकर बहना, भूभारवाही आदिशेषनाग की चोटी का पंकमय हो जाना —ये सारे कार्य एक ही क्षण में हो गये। १५०९

इडुक्किलै यॅदिरित्ति यिवनै यिव्वळित्
तडुक्किलै यामॅत्तिर् कुरङ्गित् तातैयै
ऑडुक्कित्तै यरक्करै युयर्त्ति त्रायॅन्त
मुडुक्कित्त त्तिरामनैच् चाम्बन् मुन्बितात् 1510

इत्ति–आगे; ॲतिर् इट्टुक्कु–मिलनेवाला (ऐसा) मौक़ा; इलै–नहीं (आएगा); इ वळि–अब; इवतै–इसको; तट्टुक्किलै आम् ॲतिल्–नहीं रोकेंगे तो; कुरङ्कित् तातैयै–वानर-सेना को; ऑट्टुक्कित्तै–क्षीण होने देंगे और; अरक्करै उयर्त्तित्ताय्–राक्षसों को बढ़ावा दे चुकेंगे; ॲंत–कहकर; इरामतै–श्रीराम को; मुन्पित्तात् चाम्पत्–बलवान जाम्बवान ने; मुट्टुक्कित्तन्–उकसाया। १५१०

तब पराक्रमी जाम्बवान ने श्रीराम को यह कहकर प्रेरित किया कि आगे कोई ऐसा मौक़ा नहीं आयगा। अब आप इसे नहीं रोकेंगे तो केवल वानर-सेना को ही क्षीण होने नहीं देंगे; वरन् राक्षसों के बल को बढ़ने देंगे। १५१०

अण्णलुन् दातैयि त्ळिवु माङ्गवन्
तिण्णॅडुङ् गॉऱ्ऱमुम् वलियुञ् जिन्दिया
नण्णित्त तडन्दॅदिर् नमनै यित्ऱिवन्
कण्णिडै निऱुत्तुवॅ नॅन्नुङ् गऱ्पितान् 1511

अण्णलुम्–महिमामय श्रीराम; तातैयित् अळिवुम्–सेना का नाश और; आङ्कु–वहाँ; अवन्–उसकी; तिण् नॆंटु–सुदृढ़ और बड़ी; कॉऱ्ऱमुम्–विजय; वलियुम्–और उसका प्रताप; चिन्तिया–सोचकर; नमतै–यम को; इन्ऱु–आज; इवन् कण् इटै–इसकी आँखों (की दृष्टि) के मध्य; निऱुत्तुवॅत्–खड़ा कर दूंगा; ॲन्नुम् कऱ्पितान्–ऐसे संकल्प के साथ; ॲतिर् नटन्तु–सामने चलकर; नण्णित्तन्–उसके पास गये। १५११

महिमावान श्रीराम सेना का नाश, कुम्भकर्ण की निश्चित विजय और उसके पराक्रम को देखकर यह संकल्प करते हुए कुम्भकर्ण के सामने गये कि इसकी दृष्टि-पथ में मैं यम को ला खड़ा कर दूंगा। १५११

आऱ्ऱलो डेळ्को लशनि येऱॅन्त
ईऱिला विशैयत विराम नॅय्दनन्

पारुहु शिऱैयॅन विशुम्बिऱ् पारिड
नूऱितान् वाळितान् नुणङ्गु कल्वियान् 1512

आऱितोटु एऴु कोल्–(छः के साथ सात) तेरह शर; अचनि एऱु ॲन–बहुत प्रचण्ड अशनि के समान; ईऱु इला विचैयत्त–अपार गतिमान; इरामन्–श्रीराम ने; ॲय्ततन्–चलाये; नुणङ्कु कल्वियान्–सूक्ष्म (धनु-) विद्वान कुंभकर्ण ने; पारु उकु–बाज के चूते; चिऱै ॲन–परों के समान; विचुम्पिल्–अन्तरिक्ष में; पारिट–बिखर जाएँ; वाळितान् नूऱितान्–अपनी तलवार से ऐसा छिन्न-भिन्न कर दिया। १५१२

श्रीराम ने वज्र-सम और तेज़ चलनेवाले तेरह बाण चलाये। युद्धविद्या के सूक्ष्मज्ञानी कुंभकर्ण ने उन्हें अपनी तलवार से आकाश में ही ऐसा खण्ड-खण्ड कर दिया कि वह बाज़ के गिरते परों के समान छितर गये। १५१२

आडवर्क् करशन् मणुहि यव्वळिक्
कोडैयिऱ् कदिरॅनक् कॉडिय कूऱ्ङ्गणै
ईडुऱत् तुरन्दन नवैयु मिऱुहक्
केडहप् पुऱत्तिनाऱ् किऴियच् चिन्दिनान् 1513

आटवर्क्कु अरचनुम्–पुरुषों में राजा श्रीराम ने; अणुकि–पास जाकर; अ वऴि–तब; कोटैयिल् कतिर् ॲन–ग्रीष्मसूर्य के समान; कॉटिय कूर् कणै–भीषण और तीक्ष्ण शर; ईटु उऱ–ज़ोर लगाकर; तुरन्तनन्–छोड़े; अवैयुम् इऱु उक–उनको भी तोड़ गिराते हुए; किऴिय–और चीरते हुए; केटकम् पुऱत्तिनाल्–ढाल के पीछे से; चिन्तितान्–बिखेर दिया। १५१३

पुरुषोत्तम श्रीराम ने कुम्भकर्ण के और पास आकर ग्रीष्मकालीन सूर्य के समान भीषण और तीक्ष्ण शरों को ज़ोर लगाकर चलाया। कुंभकर्ण ने उनको भी अपनी ढाल के पिछले भाग से तोड़-फोड़कर, चीरकर नष्ट कर दिया। १५१३

शिऱुत्तदोर् मुऱुवलुन् दरियच् चॅङ्गणान्
मऱित्तॊरु वडिक्कणै तॊडुक्क मऱ्ऱवन्
ऒऴुत्तॊळिर् वाळॅनु मुरवु नाहत्तै
अऱुत्तदु कलुऴनि नमर रार्क्कवे 1514

चॅम् कणान्–अरुणाक्ष श्रीराम; चिऱुत्ततु–छोटी; ओर् मुऱुवलुम् तॅरिय–एक मुस्कुराहट प्रगट करते हुए; मऱित्तु–फिर; ऒरु वटि कणै तॊटुक्क–एक तीक्ष्ण शर लगाया; अवन्–उसकी; ऒळिर् वाळ्–चमकीली तलवार; ॲनुम्–रूपी; उरवु नाकत्तै–सबल नाग को; अमरर् आर्क्क–देवों के वाहवाही देते; कलुऴनिन्–गरुड़ के समान; ऒऴुत्तु अऱुत्ततु–(उस शर ने) फाटकर टुकड़ों में बदल दिया। १५१४

अरुणाक्ष श्रीराम ने मंदहास के साथ और एक तीक्ष्ण शर प्रेषित

किया तो उसने राक्षस की तेजोमय तलवार रूपी नाग के, गरुड़ के समान प्रहार कर खण्ड-खण्ड कर दिये, जिस पर देव आनंदरव कर उठे। १५१४

अऱ्ऱदु तडक्कैवा ळऱ्ऱ दिल्लॆऩ
मऱ्ऱॊरु वयिरवाळ् कडिदिऩ् वाङ्गिऩाऩ्
मुऱ्ऱिऩऩ् मुऱ्ऱिऩ ऩॆऩ्ऩ मुऩ्बुवऩ्
दुऱ्ऱऩ ऩूऴित्ती यविय वूदुवाऩ् 1515

ऊऴि ती अविय–युगान्त की अग्नि को भी बुझाते हुए; ऊतुवान्–साँस छोड़नेवाला कुंभकर्ण; तट कै वाळ् अऱ्ऱतु–बड़े हाथ की तलवार के कटने पर भी; अऱ्ऱतु इल्–न कटी; ऍन–ऐसा भ्रमित होने देते हुए; मऱ्ऱॊरु वयिरम् वाळ्–अन्य एक वज्रासि को; कटितिन् वाङ्कितान्–तुरन्त लिया; मुऱ्ऱितन् मुऱ्ऱितन्–समाप्त कर दिया, समाप्त कर दिया; ऍन्ऩ–कहते हुए; मुन्पु वन्तु उऱ्ऱतन्–आगे आकर खड़ा रहा। १५१५

युगान्तकालीन अग्नि को बुझा सके, ऐसी साँसें छोड़नेवाले कुंभकर्ण के हाथ की तलवार टूटी। पर 'नहीं टूटी' —यह भ्रम पैदा करते हुए उसने दूसरी तलवार ले ली। समाप्त करूँगा, सबको समाप्त कर दूंगा की दुहाई देते हुए वह आगे आ खड़ा हुआ। १५१५

अन्नॆडु वाळॆयुन् दुणित्त वाण्डहै
पॊन्नॆडुङ् गेडहम् बुरट्टिप् पोर्त्तदोर्
कन्नॆडुङ् गवशत्तु नाम वॆङ्गणै
मिन्नॊडु निहर्प्पन पलवुम् वीशिनान् 1516

अ नॆटु वाळॆयुम्–उस लम्बी तलवार को भी; तुणित्त–खण्डित जिन्होंने किया; आण् तकै–उन पुरुषोत्तम ने; पॊन् नॆटु केटकम्–स्वर्ण की बनी बड़ी ढाल को; पुरट्टि–गिराकर; पोर्त्ततु–आवरण करते रहे; ओर् कल् नॆटु कवचत्तु–एक पत्थर-सम बड़े कवच पर; नामम्–भयानक; मिन्नॊटु निकर्प्पन–बिजली-सम; वॆम् कणै–जलानेवाले शर; पलवुम्–अनेक; वीचितान्–चलाये। १५१६

पुरुषोत्तम ने उस तलवार को भी नष्ट किया। बाद स्वर्ण की बनी ढाल को भी गिरा दिया। फिर जो पत्थर-सम कठिन कवच उसके शरीर को आवृत कर रहा था, उस पर श्रीराम ने अनेक भीषण और बिजली-सी चमक वाले शरों को चलाया। १५१६

अन्दर मन्नदु निहळु मव्वऴि, इन्दिरन् तमरॊडु मिरिय लॆय्दिडच्
चिन्दुवन् तन्निलै कुलैयच् चेणुर, वन्ददु तशमुहन् विडत्त माप्पडै 1517

अत्ततु अन्तरम्–वह हानि; निकऴुम् अ वऴि–जब हो रही थी, तब; इन्तिरन्–देवेन्द्र को; तमरॊटुम्–अपनों के साथ; इरियल् ऍय्तिट–अस्त-व्यस्त हो भागने

को मजबूर करते हुए; चिन्तुवुम्-सिन्धु को भी; तत् निलै कुलैय-स्थिति बिगाड़ते हुए; तचमुकत् विटुत्त-दशग्रीव द्वारा प्रेषित; मा पटै-बड़ी सेना; चेण् उऱ वन्ततु-दूर से पास आने लगी। १५१७

जब कुंभकर्ण की यह बुरी दशा हो रही थी, तब दशग्रीव के द्वारा भेजी गयी बड़ी सेना दूर से पास आ पहुँची, जिस पर इन्द्र अपनों और अपने परिवारों के साथ अस्त-व्यस्त हो भाग गया और सिंधु की स्थिति भी बिगड़ गयी। १५१७

विल्विनै यॉरुवन् मिवनै वीट्टुदऱ्
कॉल्विनै यिदुवॅन्ऩक् करुदि यूऩ्ऱिऩाऩ्
वल्विनै तीयन वन्द पोदॊरु
नल्विनै यॊत्तदु नडन्द ताऩैये 1518

विल् विनै ऑरुवनुम्-धनुर्विद्या में अद्वितीय श्रीराम ने; इवनै वीट्टुतऱ्कु-इसको मारने का; ऑल् विनै इतु-योग्य काल यही; ऍन्न-ऐसा; करुति ऊन्ऱिऩान्-ऐसा गम्भीर विचार किया; नटन्त तानै-जो चलकर आयी वह सेना; वल् तीयत विनै-कठोर बुरा कर्मफल; वन्त पोतु-जब आया तब; ऑरु नल् विनै-एक अच्छा कर्म आया हो; ऑत्ततु-ऐसी रही। १५१८

धनु से युद्ध करने में अद्वितीय श्रीराम कुंभकर्ण को मार डालने के लिए उचित समय मानकर जब तैयार हुए, तभी वह सेना बुरे कर्मफल के प्राप्त होते समय आये पुण्य-कर्म के समान आ गयी। १५१८

कोत्तदु पुडैतॊऱुङ् गुदिरै तेरॊडाळ्
पूत्तिऴि मदमलै मिडैन्द पोर्प्पडै
कात्तदु करुणनैक् कण्डु मायमाक्
कूत्तनुम् वरुहॅनक् कडिदु कूविनाऩ् 1519

कुतिरै-अश्व; तेरोटु-रथों के साथ; आळ्-पदाति वीर; पूत्तु इऴि-निकलकर बहनेवाले; मत मलै-मदनीरयुक्त गज; मिटैन्त-जिसमें मिले रहे; पोर्प्पटै-वह युद्ध-सेना; पुटै तॊऱुम् कोत्ततु-पार्श्व में चारों ओर घेर आयी; करुणनै कात्ततु-कुंभकर्ण को रक्षित करने लगी; कण्टु-उसे देखकर; मायमा कूत्तनुम्-माया-चतुर सूत्रधार श्रीराम ने भी; कटितु वरुक-शीघ्र आओ; ऍन्न कूविनान्-ऐसा पुकारा। १५१९

तुरगों, रथों, पदातियों और मदनीर बहानेवाले गजों की मिश्रित वह चतुरंगिणी सेना चारों ओर से और कुंभकर्ण को बचाने के लिए घेर गयी। मायावी नटवर श्रीराम ने भी उसे 'आओ' कहकर आमन्त्रित किया। १५१९

शूऴिवॅङ् गडहरि पुरवि तूण्डुमाल्
आऴियन् देरॊड मिडैन्द वाऱ्हलि

एऴिरु कोडिवन् वॅय्दिऱ् ऱॅऩ्बराल्
ऊऴियि नॊरुवनु मॆदिर्शॆऩ् ऱूऩ्ऱिनान् 1520

चूऴि–मुखपटालंकृत; वॅम् कट करि–क्रूर, मदमत्त गज; पुरवि–अश्व; तूण्टुम्–चालित; माल्–बड़े; आऴि अम् तेरॊटु–पहियेदार सुन्दर रथों के साथ; मिटॆन्त–एकत्रित; एऴु इरु कोटि–सात के दो करोड़; आर् कलि–समुद्र संख्या की सेना; वन्तु ऍय्तिऱ्ऱु–आ पहुँची; ऊऴियिऩ्–युगान्त में भी; ऑरुवतुम्–अकेले रहनेवाले श्रीराम भी; ऍतिर् चॅन्ऱु–सामने जाकर; ऊऩ्ऱिताऩ्–डट गये। १५२०

मुखपटालंकृत व मदस्रावी गजों, अश्वों और चालित पहियेदार बड़े-बड़े रथों की मिश्रित वह सेना चौदह करोड़ संख्या का सागर थी। वह आयी और युगान्त में भी अकेले रहनेवाले भगवान श्रीराम भी उसके सामने जाकर डट गये। १५२०

कालमुङ् गालनुङ् गणक्किल् तीमैयुम्
मूलमून् ऱिलैयॆन वहुत्तु मुऱ्ऱिय
ञालमुम् नाहमुम् विशुम्बु नक्कुरुम्
शूलमॊन् ऱरक्कनुम् वाङ्गित् तोन्ऱिनान् 1521

कालमुम्–आयु का काल और; कालनुम्–यम; कणक्किल् तीमैयुम्–और अकूत दुष्टता के; मूलम्–मूलों को; मून्ऱु इलै ॲन–तीन फलों के रूप में; वकुत्तु–रखकर; मुऱ्ऱिय–पूर्ण सुगठित; ञालमुम्–पृथ्वी और; नाकमुम्–नागलोक; विचुम्पुम्–और स्वर्गलोक (तीनों) को; नक्कुरुम्–मिटा सकनेवाला; चूलम् ऑन्ऱु–एक त्रिशूल को; अरक्कनुम्–राक्षस भी; वाङ्कि–लेकर; तोन्ऱिताऩ्–प्रगट हुआ। १५२१

राक्षस कुंभकर्ण ने भी अपने हाथ में एक शूल को लिया, जिसके तीनों फल मानो काल, यम और अपार बुराई के मूल कारणों के बने थे; जो सुगठित था और जो पाताल, भूलोक और स्वर्ग को एक साथ मिटा सकता था। १५२१

अरङ्गि डन्दन वरुकुऱै नडिप्पन वल्लवॆन् ऱिमैयोरुम्
मरङ्गि डन्दन मलैक्कुवै किडन्दन वामॆन माऱ्राडिक्
करङ्गि डन्दन कात्तिरङ् गिडन्दन कऱैपडुम् बडिकव्विच्
चिरङ्गि डन्दन कण्डनर् कण्डिल रुयिर्कॊडु तिरिवारे 1522

इमैयोरुम्–देवों ने भी; अरङ्कु–समरांगण में; इटन्तत–कटकर गिरे; अऱु कुऱै–रुण्ड; नटिप्पत अल्ल–नाचनेवाले नहीं; ॲन्ऱु–ऐसा; मरम् किटन्तत–तरुखण्ड पड़े हैं; मलै कुवै किटन्तत आम्–पर्वत-समूह पड़े हैं; ॲन–ऐसा; माऱाटि–भ्रान्त होकर कहें, ऐसा; करम् किटन्तत–हाथ पड़े थे; कात्तिरम् किटन्तत–शरीर पड़े थे; कऱै पटुम्पटि–(उनको) रक्त के धब्बे लगाकर; कव्वि–ग्रस लेकर; चिरम्

किटन्तत–सिर पड़े रहे; कण्टतर्–(उनको) देखा; उयिर् कॉट्–प्राणों के साथ; तिरिवारै–घूमनेवालों को; कण्टिलर्–नहीं देखा। १५२२

'समरांगण में कटकर गिरे जो पड़े हैं, वे नाचनेवाले रुण्ड नहीं। पर वे तरु हैं या पर्वतराशियाँ हैं।' देव लोगों को ऐसा भ्रमित करते हुए शरीर पड़े रहे, जिनके हाथों में तलवारें थीं। और सिर मिट्टी में लोट रहे थे, जिनके चारों ओर रक्त का बड़ा निशान लगा था। देव इनको ही देख सके। इसके सिवा जीवित घूमनेवाले देखने को मिले ही नहीं। १५२२

इऱ्ऱ वल्लवु मीर्प्पुण्ड वल्लवु मिडैयिडै मुऱिन्दॅङ्गुम्
तुऱ्ऱ वल्लवुन् दुणिपट्ट वल्लवुञ् जुडुपॉऱित् तॉहैतूवि
वॅऱ्ऱ वॅम्बॊडि यायिन वल्लवुम् वेऱॊन्ऱु नूऱाहि
अऱ्ऱ वल्लवुङ् गण्डिलर् पडैक्कल मडुहळन् दिडराह 1523

अट्ट कळम्–वध-भूमि; तिटर् आक–टीला बनाकर; इऱ्ऱ अल्लवुम्–जो टूटे नहीं वे; ईर्प्पुण्ट अल्लवुम्–जो खिंचे नहीं वे; इटै इटै मुऱिन्तु–बीच-बीच में फटकर; ऍङ्कुम्–सब स्थानों को; तुऱ्ऱ अल्लवुम्–जिन्होंने नहीं पाटा वे; तुणि पट्ट अल्लवुम्–जो खण्ड नहीं हुए वे; चुट्टु–गरम; पॊऱि तॊकै–अंगारों के समूहों को; तूवि–बिखेरते हुए; वॅऱ्ऱ–व्यर्थ; वॅम् पॊटि आयिन अल्लवुम्–गरम धूल नहीं बने वे; वेऱु ऒन्ऱु नूऱाकि–अन्य एक के सौ-सौ बनकर; अऱ्ऱ अल्लवुम्–मिटे जो नहीं वे; पटैक्कलम्–हथियार (जो थे) उनको; कण्टिलर्–देख नहीं पाये। १५२३

देवों ने हथियार देखे, जो कटकर युद्धभूमि को टीले बना चुके थे; जो रक्त-नदी में बहा लिये जा चुके थे, जो छिन्न-भिन्न होकर सर्वत्र बिखरे पड़े थे; जो खण्डित हुए थे; जो अंगारे बिखेरते चले और व्यर्थ धूल बने थे और जो सौ-सौ टुकड़े होकर नष्ट हो चुके थे। इनके अलावा वे अन्य दुरुस्त हथियारों को देख नहीं पाये। १५२३

पडर्न्द कुम्बत्तुप् पाय्न्दन पहळिहळ् पाहरैप् पऱिन्दोडिक्
कुडैन्दु वैयहम् बुक्कुऱत् तेक्किय कुरुदियाऱ् कुडर्शोरत्
तॊडर्न्दु नोयॊडुन् दुणैमरुप् पिळन्दुदङ् गात्तिरन् दुणियाहिक्
किडन्द वल्लदु नडन्दन कण्डिलर् क्किळर्मदक् किरियॅङ्गुम् 1524

पटर्न्त–विशाल; कुम्पत्तु पाय्न्तन–कुंभों में घुसकर; पकळिकळ्–(श्रीराम के) शरों के; कुटैन्तु–मथने से; पाकरै–महावतों को; पऱिन्तु–न मान करके; ओटि–भागकर; वैयकम् पुक्कु उऱ तेक्किय–भूमि में घुसकर जमा रहे; कुरुतियाल्–ऐसा जो हुआ उस रक्त-प्रवाह के कारण; कुटर् चोर–आँतें अस्त-व्यस्त होकर; नोयॊटुम् तॊटर्न्तु–पीड़ा के साथ; तुणै मरुप्पु इळन्तु–दोनों दाँतों को खोकर; तम् कात्तिरम्–जो अपने शरीरों के; तुणि आकि–टुकड़े-टुकड़े बने; किटन्त–पड़े रहे; अल्लतु–

वैसी स्थिति छोड़कर; नटन्तत्त-जो चल रहे थे; किळर् मत किरि-निरन्तर स्रवणशील मदनीर भरे गिरि के समान हाथियों को; अँङ्कुम् कण्टिलर्-कहीं नहीं देख पाये। १५२४

(देव) लोगों ने युद्धभूमि में मदनीर बहाते हुए चलनेवाले मत्त गिरि-सम गज कहीं नहीं देखे। पर उन गजों को देखा, जिनके कुंभ राम-बाणों से विद्ध हुए थे, जो महावतों के वश से बाहर हो भाग रहे थे, जिनके अन्दर से रक्त बहकर भूमि में गड्ढे बनाकर जम चुके थे, जिनकी आँतें लटक गयी थीं, और जो वेदना के साथ अपने दोनों दाँतों को खोकर छिन्न-भिन्न हुए शरीरों के साथ मरे पड़े थे। १५२४

वीऴ्न्द वायिन विऴिवुऱ्ऱ पदाहैय वॅयिलुमि ऴयिलम्बु
पोऴ्न्द पत्तॅडुम् बुरविय मुऱैमुऱै यच्चॊडुम् बॊऱियऱ्ऱुत्
ताऴ्न्द वॅण्णिणन् दयङ्गुवॅङ् गुऴम्बिडैत् तलैत्तलै माऱाडि
आऴ्न्द वल्लदु पॅयर्न्दन कण्डिल रदिर्हुरल् मणित्तेर्हळ् 1525

अतिर् कुरल्-घड़घड़ाहट की ध्वनि के साथ जानेवाले; मणि तेर्कळ्-सुन्दर रथ; वीऴ्न्त वायित्त-गिरे हुए मुखों वाले; विऴिवु उऱ्ऱ-नष्ट हुई; पताकैय-पताकाओं वाले; वॅयिल् उमिऴ्-प्रकाश छोड़नेवाले; अयिल् अम्पु-तीक्ष्ण शरों से; पोऴ्न्त-कटे; पल-अनेक; नॅटुम् पुरविय-बड़े-बड़े अश्वोंवाले; मुऱै मुऱै-क्रम से; अच्चॊटुम्-धुरों के साथ; पॊऱि अऱ्ऱु-यन्त्र भी नष्ट होकर; ताऴ्न्त-घिनौने; वॅळ् णिणम्-सफ़ेद मज्जा के साथ; तयङ्कु-दृश्यमान; वॅम् कुऴम्पिटै-गरम रक्तकीच में; तलै तलै माऱाटि-अलग-अलग डोलकर; आऴ्न्त-डूबे; अल्लतु-वह छोड़; पॅयर्न्तत-चले; कण्टिलर्-यह नहीं देखा। १५२५

ऐसे रथ देखे गये, जो पहले गड़गड़ाते जाते थे और सुन्दर थे, और अब जिनके मुखभाग टूट गये थे; जिनकी पताकाएँ मिट गयीं थीं; जिनके बड़े बड़े अश्व उज्ज्वल और तीक्ष्ण शरों द्वारा विद्ध हुए थे; जिनकी धुरियाँ, यन्त्र आदि टूट गये थे और जो मांस, मज्जे आदि की बनी कीचड़ में हिलते-डुलते डूब गये थे। उनको छोड़कर अच्छी स्थिति में चलनेवाले रथ नहीं। १५२५

आडल् तीर्न्दन वळैहळुत् तऱ्ऱन वदिर्पॅरुङ् गुरल्नीत्त
ताडु णिन्दन तऱुहण्वॅङ् गरिनिरै ताङ्गिय पिणत्तोङ्गल्
कोड मैन्दवॅङ् गुरुदिनी राऱुहळ् शुऴिवॊऱुङ् गॊणर्न्दुन्दि
ओड लन्ऱिनित् ऱुहळ्वल कण्डिल रुरुहॆऴु परियॆल्लाम् 1526

उरु कॆऴु-रूपवान; परि ॲल्लाम्-सभी अश्व; आटल् तीर्न्तत-बल खोकर; वळै कऴुत्तु-टेढ़े गलों से; अऱ्ऱत-हीन; अतिर् पॆरु कुरल्-हिनहिनानेवाली बड़ी ध्वनि; नीत्त-छोड़कर; ताळ् तुणिन्तत-पैर-कटे; तऱु कण्-निडर; वॅम् करि निरै-भीषण हाथियों की पंक्तियों को; ताङ्किय-बनी; पिणत्तु ओङ्कल् कोटु

अमैन्त–लाशों के उन्नत कूलों के मध्य बनी; वॆम् कुरुति नीर् आऱुकळ्–गरम रक्त की नदियों द्वारा; चुऴि तॊऱुम्–भँवरों में; कॊणर्न्तु–ले आकर; उन्ति ओटल् अन्ऱि–ढकेले जाकर बहते हैं, इनके सिवा; निन्ऱु उकळ्वन–जीवित रहकर चौकड़ी भरनेवाले; कण्टिलर्–न देख पाये। १५२६

सभी सुन्दर अश्व निर्बल हुए, उनके गले टूट गये; हिनहिनानेवाला उनका कण्ठ-स्वर नष्ट हो गया। पैर कट गये। क्रूर गजों की लाशों के पर्वतों के कूलों के मध्य भँवरों के साथ बहनेवाली रक्त-नदी में भँवरों में अटकते नदी द्वारा खिचते गये। ऐसे अश्वों को छोड़कर दौड़ते फिरनेवाले अश्व देखे नहीं गये। १५२६

वेद नायहत्तु वॆङ्गणै वेहत्तिन् मिहुदियै वॆव्वेऱिट्
टोदु हिन्ऱदॆ नुम्बरु मरक्करॆङ् गळत्तुवन् दुऱ्ऱारैक्
कादल् विण्णिडैक् कण्डन रल्लदु कणवर्द मुडल्नाडुम्
मादर् वॆळ्ळमे कण्डनर् कण्डिलर् मलैयॆनुम् पॆरियारै 1527

वेत नायकन्–वेदनायक के; वॆम् कणै–क्रूर बाणों के; वेकत्तिन् मिकुतियै–वेग की अधिकता को; वॆव्वेऱु इट्टु–अलग-अलग करके; ओतुकिन्ऱतु ऎन्–कहना क्यों; उम्परुम्–देवों ने भी; वॆम् कळत्तु–भीषण युद्धभूमि में; वन्तु उऱ्ऱार् अरक्करै–जो आये उन राक्षसों को; कातल् विण् इटै–प्रेम से स्वर्ण में; कण्टनर्–देखा; अल्लतु–इसके सिवा; मलै ऎनुम् पॆरियारै–पर्वताकार उन तगड़े राक्षसों को; कण्टिलर्–नहीं देखा; कणवर् तम् उटल्–पतियों के शरीरों के; नाटुम्–खोजनेवाली; मातर् वॆळ्ळमे–स्त्रियों की भीड़ को ही; कण्टनर्–देखा। १५२७

वेदनाथ श्रीराम के भीषण शरों के वेग की अधिकता की महिमा को विविध प्रकारों से कहने की क्या आवश्यकता है? एक ही बात में कहा जा सकता है। देवों ने, ज्योंही राक्षस युद्धभूमि में आये, त्योंही उन्हें प्यार के साथ स्वर्ग में देखा। नहीं तो उन्हें पर्वताकार उन तगड़े राक्षसों को उस रूप में देखने का मौक़ा मिला ही नहीं था। और देखा भी तो उन राक्षसनारियों को देखा, जो अपने-अपने पतियों की लाशों को ढूंढ़ रही थीं। १५२७

पनिप्पट् टालॆनक् कदिर्वरप् पडुवदु पट्टदप् पडैपऱ्ऱार्
तुनिप्पट् टारॆनत् तुलङ्गिन रिमैयव रियावर्क्कुन् दोलादान्
इनिप्पट् टानॆन वीङ्गिन वरक्करु मेङ्गिन रिवन्नन्दो
तनिप्पट् टानॆन ववन्मुह नोक्कियॊन् ऱुरैत्तनन् तनिनादन् 1528

कतिर् वर–सूर्य के (उग) आने पर; पनि पट्टाल् ऎन–हिम जैसे मिट जाता है; अ पटै–वह सेना; पटुवतु पट्टतु–नाश को प्राप्त हुई; पऱ्ऱार्–विपक्षी; तुनि पट्टार्–डर गये; ऎन–सोचकर; इमैयवर्–देवगण; तुलङ्किनर्–प्रसन्न-मुख हुए; यावर्क्कुम् तोलातान्–किसी से न हारनेवाला; इनि–अब; पट्टान्–मर

गया; अँत–सोचकर; वीङ्कित्त अरक्करुम्–(अब तक) फूले रहे राक्षस भी; एङ्कितर्–हतोत्साह हुए; अन्तो–हंत; इवन् तनि पट्टान्–यह असहाय (अकेला) हो गया; अँत–ऐसा सोचकर; अवन् मुकम् नोक्कि–उसका मुख देखकर; तनि नातन्–अद्वितीय नायक (श्रीराम); ऑन्ऱु उरैत्ततन्–एक (बात) कहने लगे। १५२८

सूर्य के उदय होने पर जैसे हिम ओझल हो जाता है, वैसे राक्षस-सेना नाश को प्राप्त हो गयी! देवगण प्रसन्न हो गये कि विपक्षी राक्षस भयभीत हो गये। 'कभी किसी से न हारनेवाला कुम्भकर्ण अब मर जायगा' यह जानकर राक्षस भी, जो अब तक फूले हुए थे, अब दुःखी हो गये! अद्वितीय नायक श्रीराम ने सोचा कि हाय! यह अकेला और असहाय रह गया। उन्होंने उसका मुख देखकर यों कहा। १५२८

एदि योडॅदिर् पॅरुन्दुणै यिऴन्दनै यॅदिरोरु तनिनिन्ऱाय्
नीदि योनुडन् पिऱन्दनै यादलिन् निन्नुयिर् निनक्कीवन्
पोदि योपिन्ऱै वरुदियो वन्ऱॅलिऱ् पोर्पुरिन् दिप्पोदे
शादि योवुनक् कुऱुवदु शॉल्लुदि शमैवुऱत् तॅरिन्दम्मा 1529

अम्मा–सुनो तो; एतियोटु–हथियारों के साथ; ऍतिर्–लड़ने में; पॅरु तुणै–सहायता देनेवाली बड़ी सेना को; इऴन्तनै–खो दिया; ऍतिर्–मेरे समक्ष; ओरु तनि निन्ऱाय्–अकेले खड़े हो; नीतियोन् उटन् पिऱन्तनै–नीतिज्ञ (विभीषण) के सहोदर जनमे हो; आतलिन्–इसलिए; निन् उयिर्–तुम्हारे प्राण; निनक्कु ईवन्–तुम्हें बख्श दूंगा; पोतियो–(लंका) जाओगे; पिन्ऱै वरुतियो–फिर आओगे; अन्ऱु ऍतिल्–नहीं तो; पोर् पुरिन्तु–लड़कर; इप्पोते चातियो–अभी मरोगे; उनक्कु उऱुवतु–अपने लिए जो योग्य लगता है; तॅरिवुऱ चमैन्तु–खूब विचार कर; चोल्लुति–कहो। १५२९

सुनो तो। तलवार आदि हथियार और सहायता में लड़नेवाली सेना सब खो चुके। मेरे समक्ष अकेले खड़े हो। तुम नीतिमान् विभीषण के सहोदर हो, इसलिए तुम्हें तुम्हारे प्राण बख्श दूंगा। सोच लो! अब चले जाओगे? या फिर आओगे? या अभी लड़कर मरना चाहोगे? तुम्हें जो सोहता है, खूब सोचकर उसे बताओ। १५२९

इऴैत्तत तीविनै यिऱ्ऱिल दाहलि नियानुनै यिळैयोनाल्
अऴैत्त पोदिनुम् वन्दिलै यन्दह ताणैयिन् वऴिनिन्ऱाय्
पिऴैत्त दालुनक् करुन्दिरु नाळॉडु पॅरुन्दुयि लॅंडुङ्गालम्
उऴैत्तु वीडुव दायिनै यॅन्नुनक् कुऱुवदोन् ऱुरैयॅन्ऱान् 1530

इऴैत्तत ती विनै–पूर्वकृत पापकर्म; इऱ्ऱिलतु–मिटे नहीं थे; आकलिन्–इसलिए; यान्–मेरे; इळैयोनाल्–तुम्हारे छोटे भाई द्वारा; उनै अऴैत्त पोतिनुम्–तुम्हें बुला लेने पर भी; वन्तिलै–नहीं आये; अन्तकन् आणैयिन् वऴि–यम की आज्ञा के मार्ग पर; निन्ऱाय्–रह गये; नाळॊटु–आयु के साथ; अरु तिरु–अपूर्व श्री भी; उनक्कु

पिळैत्तनतु–तुमसे छूट गयी; पॆरु तुयिल्–गहरी निद्रा में; नॆटु कालम् उळैत्तु–बहुत काल तक रहकर; वीटुवतु आयिनै–मरने पर तुले हो; उनक्कु उऱुवतु ऒन्ऱु–तुम्हें जो पसन्द आये वह एक बात; ऎन्–क्या है; उरै–कहो; ऎन्ऱान्–(श्रीराम) बोले। १५३०

तुम्हारे पूर्वकृत पापकर्म छूटे नहीं; इसलिए जब मैंने तुम्हें तुम्हारे छोटे भाई द्वारा बुलाया तब तुम नहीं आये और अन्तक की आज्ञा के मार्ग को चुन लिया। इसलिए आयु और श्री खो गयी। गहरी निद्रा में लम्बा समय गँवाया है और अब मृत्यु के सामने आ चुके। अपने मन की बात क्या है? खोलकर कहो। श्रीराम यों बोले। १५३०

मऱ्ऱै लानिऱ्क वाशियु मानमु मऱत्तुऱै वळ्वाद
कॊऱ्ऱ नीदियुङ् गुलमुदऱ् ऱरुममु मॆन्ऱिवै कुडियाहप्
पॆऱ्ऱ नुङ्गळा लॆङ्गळैप् पिरिन्दुतन् पॆरुञ्जॆवि मूक्कोडुम्
अऱ्ऱ वॆङ्गंपो लॆन्मुहङ् गाट्टिनिन् ऱाऱ्ऱल नुयिरम्मा 1531

अम्मा–सुनो; मऱ्ऱु ऎलाम् निऱ्क–अन्य बातें रहें; वाचियुम्–योग्यता; मानमुम्–और अभिमान; मऱम् तुऱै वळुवात–वीर धर्म से न हटनेवाली; कॊऱ्ऱम् नीतियुम्–विजय की नीति; कुलम् मुतल्–कुल के नायक का; तरुममुम्–धर्म; ऎन्ऱ इवै–आदि ये; कुटियाक पॆऱ्ऱ–जहाँ आश्रय पाये हैं; नुङ्कळाल्–वंसे तुमसे; ऎङ्कळै पिरिन्तु–हमसे अलग जाकर; तन् पॆरु चॆवि–अपने वड़े कानों को; मूक्कोटुम् अऱ्ऱ–नाक के साथ (जिसने) कटवा लिया था; ऎङ्कै पोल्–उस अपनी वहिन के समान; ऎन् मुकम् काट्टि निन्ऱु–अपना (कान, नाक-रहित) मुख दिखाता रहकर; उयिर् आऱ्ऱलन्–प्राण धारण न कर सकूँगा। १५३१

(कुंभकर्ण ने उत्तर दिया—) सुनो तो। दूसरी बातें रहें। योग्यता, अभिमान, वीरधर्म से अपृथक् व विजयांकित नीतिपरायणता, कुलनायक के धर्म का आचरण आदि के आश्रय हो तुम लोग। हमारी बहिन ने, हमसे अलग जाकर तुम्हारे द्वारा अपने कान और नाक कटवा ली और वह जीवित रहती है। उसके समान मैं जीवित रहना सह्य नहीं मान सकता। १५३१

नोक्कि ळन्दनर् वानव रॆङ्गळा लव्वहै निलैनोक्कित्
ताक्क णङ्गनै यवळ्पिऱर् मनैयॆनत् तडत्तनॆन् तक्कोर्मुन्
वाक्कि ळन्ददॆन् ऱयर्वुऱु वेन्शॆवि तन्नॊडु माऱ्ऱाराल्
मूक्कि ळन्दपिन् मीळलॆन् ऱालदु मुडियुमो मुडियादाय् 1532

मुटियाताय्–अनंत; वानवर्–देव; ऎङ्कळाल्–हमारे द्वारा; नोक्कु इऴन्तनर्–निर्बल किये हुए हैं; अ वकै निलै नोक्कि–ऐसी स्थिति देखने के बाद; ताक्कणङ्कु अनैयवळ्–आक्रान्तकारिणी दिव्य स्त्री-समाना (सीता); पिऱर् मनै–पराये घर की स्त्री है; ऎन–कहकर; तटुत्तनॆन्–मैंने रोका; तक्कोर् मुन्–योग्य

लोगों के सामने; वाक्कु इळन्तत्तु–मेरा वचन नष्ट हुआ; ॲन्ऱु अयर्वुडुवॅन्–ऐसा दुःखी हूँ; माऱ्ऱाराल्–शत्रुओं द्वारा; चॅवि तन्नॊडु–कान के साथ; मूक्कु–नाक को भी; इळन्तपिन्–गँवा देने के बाद; मीळल् ॲन्ऱाल्–लौट जाना हो तो; अतु मुट्टियुमो–वह संभाव्य है क्या। १५३२

अनंत ! देव हमारे हाथों निर्बल हुए थे। उस उन्नत स्थिति के गौरव का विचार करके मैंने अपने भाई को यह कहकर रोका कि आक्रांतकारिणी दिव्य स्त्री सीता परदारा है। उसने नहीं माना और योग्य व्यक्तियों के सामने मेरे वचन नष्ट हुए। वही मेरे लिए असह्य लगता है और दुःखी हूँ। तो ऐसा मैं शत्रु द्वारा नाक और कान गँवाकर अपने नगर लौट जाऊँगा क्या ? वह होनेवाला काम है ?। १५३२

उङ्गळ् तोळ्तलै वाळ्कॊण्डु तुणित्तुयिर् कुडित्तॆम्मु तुवन्दॆय्द
नङ्गै नन्नलङ् गॊडुक्किय वन्दनान् वानवर् नहैसॆय्यच्
चॆङ्गै ताङ्गिय शिरत्तॊडुङ् गण्णिनीर् कुरुदियि नॊडुतेक्कि
ॲङ्गै पोलॆडुत् तळैत्तुनान् वीळ्वनो विरावण नॆदिरम्मा 1533

उङ्कळ् तोळ् तलै–तुम्हारे कन्धों और सिरों को; वाळ् कॊण्टु–तलवार से; तुणित्तु–काटकर; उयिर् कुटित्तु–प्राण पीकर; ॲम् मुन्–मेरे ज्येष्ठ को; उवन्तु ॲय्त–खुश होने देते हुए; नङ्कै नल् नलम्–सीतादेवी की सौंदर्यश्री को; कॊटुक्किय वन्त–उसे दिलाने जो आया; नान्–वह मैं; वानवर् नकै चॆय्य–देवों के हँसी उड़ाते; चॆम् कै ताङ्किय–श्रेष्ठ हाथों को धारण करनेवाले; चिरत्तॊटुम्–सिर के साथ; कण्णिन् नीर्–आँख का आँसू; कुरुतियित्तॊटु तेक्कि–रक्त के साथ जमाकर; ॲङ्कै पोल्–हमारी बहिन की तरह; ॲटुत्तु अळैत्तु–उच्च स्वर में पुकार मचाकर; नान्–मैं; इरावणन् ॲतिर्–रावण के सामने; वीळ्वनो–गिरूँ क्या; अम्मा–क्या ही अपमानजनक बात है मैया। १५३३

मैं युद्धभूमि में यही हौसला ले आया कि तुम्हारे कन्धों और सिरों को काटकर तुम्हारे प्राणों को पी लूँ और अपने बड़े भाई को आनन्द देते हुए सीता की सौंदर्यश्री का उसे दान करूँ। अब क्या मैं देवों को हँसने देते हुए, सिर पर हाथ धरकर आँखों में अश्रु और रक्त जमा लेकर अपनी बहिन के समान क्रंदन-ध्वनि करते हुए जाऊँ और रावण के सामने गिर पड़ूँ ?। १५३३

ऑरुत्त नीतनि युलहॊरु मून्ऱिऱ्कु मायिनुम् पळियोरुम्
करुत्ति नाल्वरुज् जेवह नल्लैयो शेवहर् कडनोराय्
शॆरुत्तिण् वाळिनार् ऱिऱत्तिर नुङ्गळै यमर्त्तुरैच् चिरङ्गॊय्दु
पॊरुत्ति नालदु पॊरुन्दुमो तक्कदु पुहन्ऱिलै पोलॆन्ऱान् 1534

नी–तुम; तनि उलकु–अनुपम लोक; ऑरु मून्ऱिऱ्कुम्–तीनों के; ऑरुत्तन् आयिनुम्–अद्वितीय नायक हो तो भी; पळि ओरुम् करुत्तिनाल्–अपयश का विचार

करके; वरु–आये; चेवकत् अल्लैयो–वीर नहीं हो क्या; चेवकर् कटन् ओराय्–वीरों का कर्तव्य सोचो (या नहीं सोचते क्या); चॅरु–युद्ध में; तिण् वाळितल्–कठोर तलवार से; तिउम् तिउन्–खण्ड-खण्ड; उङ्कळै–तुम लोगों को; अमर् तुरै–युद्ध में; चिरम् कॉय्तु–सिर काटकर; पॉरुत्तिताल्–फिर से मिला देने पर; अतु पॉरुन्तुमो–मिल जाएँगे क्या; तक्कतु पुकन्ऱिलै–उचित बात नहीं कही तुमने; ॲन्ऱात्–कहा (कुंभकर्ण ने)। १५३४

तुम उत्तम तीनों लोकों के अद्वितीय नायक हो, तो भी अपयश का विचार कर आये वीर नहीं हो क्या? तुम वीरों के धर्म से अज्ञात मनुष्य के समान बात करते हो! युद्ध में कठोर तलवार से तुम्हारे सिरों को खण्ड-खण्ड काट लेने के बाद फिर से उन्हें जोड़ देने पर सिर जुड़ जाएँगे क्या? तुमने उचित बात नहीं की है! । १५३४

ॲन्ऱु तन्नॅडुञ् जूलत्तै यिडक्कैयित् माऱ्ऱितन् वलक्कैयाल्
कुन्ऱु निन्ऱदु पेर्त्तॅडुत् तिरुनिलक् कुडर्हवर्न् दॅनक्कॉण्डान्
शॅन्ऱु विण्णॊडुम् बॉऱियॊडुन् दीच्चॅलच् चेवहत् शॅन्निनेरे
वॅन्ऱु तीर्हॅन विट्टन नदुवन्दु पट्टदु मेलॅन्न 1535

ॲन्ऱु–कहकर; तत् नॅटु चूलम्–अपने बड़े त्रिशूल को; इट कैयिल् माऱ्ऱितन्–बायें हाथ में बदल लिया; वलम् कैयाल्–दायें हाथ से; इरु निलम्–बड़ी भूमि की; कुटर् कवर्न्तु ॲन–आँतें छीन ली हों जैसे; निन्ऱतु कुन्ऱु–खड़े रहे एक पर्वत को; पेर्त्तु ॲटुत्तु–उखाड़ लेकर; कॊण्टान्–हाथ में रखकर; विण्णॊटुम् चॅन्ऱु–अन्तरिक्ष में जाकर; पॊऱियॊटुम्–अग्निकणों के साथ; ती चॅल–आग भी निकालते हुए; चेवकत्–वीर राघव के; चॅन्नि नेरे–सिर के सीधे ऊपर; वॅन्ऱु तीर्क–जय के साथ अन्त कर दो; ॲन–कहकर; विट्टतन्–फेंका; अतु वन्तु–वह आकर; मेल् पट्टतु–उन पर लगा जैसा आया तब। १५३५

यह कहकर कुम्भकर्ण ने अपने बड़े त्रिशूल को दायें हाथ से बायें हाथ में बदलकर रख लिया और दायें हाथ से मानो भूमि की आँतों को, एक पर्वत को नोचकर उठा लिया। उसे अपने हाथ में लेकर वह आकाश में गया और उसे तीव्र गति से श्रीराम के सिर के ठीक ऊपर यह कहते हुए फेंका कि सफलता के साथ अंजाम करो। वह भी अंगारे छोड़ते हुए ऐसा आया कि अभी श्रीराम पर गिर गया लगा। १५३५

अत्तैय कुन्ऱॆन्नु मशनियै यावर्क्कु मऱिवरुन् दन्निमेन्नि
पुत्तैयु नन्नॆडु नीरॆल नूऱिय पुरवलन् पोर्वॆन्ऱु
निन्नैयु मात्तिरत् तॊरुहैनिन् ऱॊरुकैयि निमिर्हिन्ऱ नॆडुवेलत्
तिन्नैयित् मात्तिरत् तुणिपड वरन्मुरै शिन्दिनन् शरञ्जिन्दि 1536

अत्तैय–वैसे (था उस); कुन्ऱु ॲतुम्–पर्वत रूपी; अचनियै–वज्र को; यावर्क्कुम् अऱिवरु–सबके लिए जानने में कठिन; तन्नि मेन्नि–(शिवजी की) अप्रमेय

देह को; पुनैयुम्–अलंकृत करनेवाले; नल् नॅट्टु नीऱु अॅत्त–श्रेष्ठ महिमामय श्रीभभूत के समान; नूऱिय–बुकनी में परिवर्तित जिन्होंने किया; पुरवलन्–देव श्रीराम ने; पोर् वॅन्ऱु–युद्ध में जीतकर; नित्तैयुम् मात्तिरत्तु–सोचने भर की देर में; ऑरु कै निन्ऱु–एक हाथ से; ऑरु कैयिन्–दूसरे हाथ में; निमिर्किन्ऱ–उठ आनेवाले; नॅटु वेलै–लम्बे 'वेल' (भाले) को; तित्तैयित् मात्तिरै–अल्प काल में; तुणि पट–काटते हुए; वरन् मुऱै–यथाक्रम; चरम् चिन्दि–बाण चलाकर; चिन्दितत्–मिटा दिया। १५३६

देव श्रीराम ने उस पर्वत रूपी वज्र को सर्वाङ्गेयशरीरी शिवजी के शरीर को अलंकृत करनेवाले भभूत के समान बुकनी में बदल दिया और सोचने के समय के अन्दर एक हाथ से दूसरे हाथ में कुंभकर्ण के द्वारा बदलकर लिये गये लम्बे 'वेल' को यथाक्रम बाण चलाकर खण्ड-खण्ड करके मिटा दिया। १५३६

अण्णल् विऱ्कोट्टुङ् गाल्विशैत् तुदैन्दत्त वलैहडल् वऱळाह
उण्ण हिऱ्पत्त वुरुमैयुज् जुडुवत्त मेरुवै युरुविप्पोय्
विण्ण हत्तैयुङ् गडप्पत्त पिऴैप्पिला वॅय्यवन् मेऱ्चॅन्ऱु
कण्णु दऱ्पॅरुङ् गडवुळ्तन् कवशत्तैक् कडन्दिल कदिर्वाऴि 1537

अण्णल्–प्रभु के; विल् कोट्टु काल्–धनु के वक्र चरण (भाग) से; विचैत्तु–जोर देकर; उतैन्तत्त–प्रेषित; अलै कटल्–तरंगपूर्ण समुद्र; वऱळ् आक–शुष्क बने ऐसा; उण्णकिऱ्पत्त–उसे सोख देनेवाले; उरुमैयुम् चुटुवत्त–वज्र को भी जला सकनेवाले; मेरुवै उरुवि पोय्–मेरु को भी भेद जाकर; विण् अकत्तैयुम्–आकाश-तल को भी; कटप्पत–पार करनेवाले; पिऴैप्पु इला–अचूक; कतिर् वाऴि–ज्वलन्त बाण; वॅय्यवन् मेल् चॅन्ऱु–भीषण (राक्षस) पर जाकर; कण्णुतल् पॅरु कटवुळ् तत्–भालनेत्र बड़े देव के; कवचत्तै–(दिये) कवच को; कटन्तिल–भेद नहीं सके। १५३७

श्रीराम के धनु से निकले शर तीव्र गति वाले, समुद्र को भी सोख देने वाले, वज्र को जलानेवाले मेरु को भेदकर आकाश को भी पार कर जा सकनेवाले, अचूक और ज्वलंत थे। तो भी वे कुंभकर्ण के शरीर पर लगकर भालनेत्र शिवजी द्वारा दत्त कवच को भेद नहीं सके। १५३७

ताक्कु हित्ऱत्त नुऴैहिल तलैयदु तामरैत् तडङ्गण्णात्
नोक्कि यिङ्गिदु शङ्गरत् कवशमॅन्ऱु णर्वुऱ नुतित्तुन्ऱि
आक्कि यङ्गव तडुपडै तॊडुत्तुविट् टऱुत्तत्त तदुशिन्दि
वीक्कि ऴन्ददु वीऴ्न्ददु वरैशुऴल् विरिशुडर् वीऴ्न्दॆन्त 1538

ताक्कुकित्ऱत्त–टकराते; नुऴैकिल–(पर) भेदते नहीं; तामरै तट कण्णात्–पद्मविशालाक्ष ने; तलैयतु–शीर्षस्थानीय उसको; नोक्कि–देखकर; इङ्कु–यहाँ; इतु–यह; चङ्करत् कवचम्–शंकरजी का (दिया हुआ) कवच है; अॅन्ऱु–यह बात; उणर्वु उऱ–जानकर; नुतित्तु उन्ऱि–सूक्ष्म रूप से विचार कर; आक्कि–

अभिमंत्रित करके (योग्य बनाकर); अङ्कु–वहाँ; अवन् अट्ट पटै–शंकर का ही संहारक अस्त्र; तॊट्टुत्तु विट्टु–लगाकर छोड़कर; अऱुत्तनन्–काट दिया; अतु चिन्ति–वह कटकर; वीक्कु इऴन्ततु–खुल गया; वरै चूऴल्–मेरु की परिक्रमा करनेवाला; विरि चुटर्–विस्तृत किरणों वाला सूर्य; वीऴ्न्तु अॅन्न–गिरा जैसे; वीऴ्न्ततु–गिर गया। १५३८

श्रीराम ने देखा कि वाण टकराते हैं, पर भेद नहीं पाते तो विचार किया कि वह श्रेष्ठ कवच शंकर-दत्त कवच है। इसलिए आवश्यक मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके शंकरास्त्र को ही छोड़ा। और उस संहारक अस्त्र द्वारा कवच को तोड़ दिया। वह कटकर खुला और मेरु की परिक्रमा करनेवाले और विस्तृत किरणराशि वाले सूर्य भूमि पर गिरता हो, ऐसा गिर गया। १५३८

कान्दु वॅञ्जुडर्क् कवशमऱ् ऱुहुदलुङ् गण्डोऱुङ् गनल्शिन्दि
एन्दु वन्नॅडुन् दोळ्मुडैत् तार्त्तङ्गो रॅळ्मुनै वयिरप्पोर्
वायन्द वन्नॅडुन् दण्डुहैप् पऱ्ऱिनन् वानरप् पडैमुऱ्ऱुम्
शान्दु शॅय्हुव नामॅन मुऱैमुऱै यरैत्तनन् तरैयोडुम् 1539

कान्तुम्–कान्ति बिखेरनेवाले; वॅम् चुटर् कवचम्–तापक सूर्य-सदृश वह कवच; अऱ्ऱु उकुतलुम्–खुलकर गिरा तो; कण् तॊऱुम् कनल् चिन्ति–आँखों में अंगारे छोड़ते हुए; एन्तु–उन्नत; वल् नॅटु तोळ्–सुदृढ़ विशाल कन्धे; पुटैत्तु–ठोककर; आर्त्तु–भीषण नाद करके; अङ्कु–वहाँ; ओर्–एक; ऍळ् मुनै–लोहे के सिर वाला; वयिरम्–वज्र-सम; पोर् वायन्त–युद्धयोग्य; वल्–कठोर; नॅटु–लम्बा; तण्टु–दण्डायुध; कै पऱ्ऱिनन्–हाथ में लिया; वानर पटै मुऱ्ऱुम्–सारी वानर-सेना; चान्तु चॅय्कुवन्–रौंदकर पंक बना दूंगा; आम्–हाँ; ॲन–कहकर; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तरैयॊटुम्–भूमि से; अरैत्तनन्–पिसवा दिया। १५३९

कान्तियुक्त व ज्वलन्त कवच जब गिर गया तब कुंभकर्ण आगबबूला हो गया। उसकी आँखें कोपाग्नि बरसाने लगीं। उसने अपने उन्नत कठोर कन्धे ठोंके और गरजते हुए एक युद्धयोग्य दण्डायुध को हाथ में लिया, जिसका अग्रभाग लोहे का था और जो वज्र के समान सुदृढ़ था। 'अब वानर-सेना को रौंदकर कीचड़ बना लूंगा' —यह कहकर उसने बारी-बारी से उनको भूमि पर गिराकर रौंद दिया। १५३९

पऱप्प वायिरम् पडुवन वायिरम् पहट्टॅळि लहन्मार्बम्
तिऱप्प वायिरन् दिरिवन वायिरञ् जॅन्नुऱुपुक् कुरुवाडु
मऱैप्प वायिरम् वरुवन वायिरम् वडिक्कणै यॅन्ऱालुम्
पिऱप्प वायिडैत् तॅळित्तुरत् तिरिन्दनन् करङ्गॅनप् पॅरुञ्जारि 1540

पऱप्प आयिरम्–उड़नेवाले हजार; पटुवन आयिरम्–(शत्रुओं पर) लगनेवाले हजार; पकट्टु–पकड़–गौरव और; ऍऴिल–सौंदर्ययुक्त; अकल मार्पम्–विशाल वक्षों

को; तिऱप्प आयिरम्–खोलने (छेदने) वाले सहस्र; तिरिवत्त आयिरम्–घूमनेवाले सहस्र; चॅन्ऱु पुक्कु–जा घुसकर; उरुवातु–न निकलकर; मऱैप्प–छिपे रहे; आयिरम्–हज़ार; वरुवत्त आयिरम्–आनेवाले हज़ार; वटि कणै–(ऐसे सहस्रों) तीक्ष्ण बाण हैं; ऍन्ऱालुम्–तो भी; पिऱप्प–शब्द पैदा करते हुए; आयिटै–वहाँ; तॅळित्तु उऱ–वीरगर्जन करते हुए; करङ्कु ऍन्न–पतंग के समान; पॅरु चारि तिरिन्तनन्–बड़े-बड़े दायें और बायें चक्कर काटे कुंभकर्ण ने। १५४०

राम के बाणों में उड़नेवाले सहस्र थे; शत्रुओं पर लगनेवाले सहस्र थे। हज़ार अस्त्र कुंभकर्ण के गण्य, सुन्दर और विशाल वक्ष को भेद रहे थे। हज़ार अस्त्र घूम रहे थे। हज़ार अस्त्र लगे पर भेदकर बाहर न निकलकर वहीं ढँकते हुए रह गये। हजार शर अभी धनु से छूट रहे थे। ऐसे अस्त्रों की भयंकर भीड़ के मध्य भी कुंभकर्ण दण्डायुध लेकर नर्दन करते हुए और पतंग के समान दायें और बायें तेज़ी से चक्कर काटते हुए घूम रहा था। १५४०

तण्डु कैत्तलत् तुळदॅनि नुळदन्ऱु तानैयॅन् ऱदुशायक्
कॊण्ड लोत्तवन् कॊडुङ्गणै पत्तोरु तॊडैयिनिऱ् कोत्तॅय्दान्
कण्ड मुऱ्ऱदु मऱ्ऱदु करुङ्गऴ लरक्कनुङ् गनऩ्ऱाङ्गोर्
मण्ड लच्चुड राडहक् केडहम् वाङ्गिनन् वाळोडुम् 1541

तण्टु–दण्डायुध; कै तलत्तु उळतु–हाथ में रहा; ऍनिल्–तो; तानै उळतु अन्ऱु–(वानर-) सेना रहेगी नहीं; ऍन्ऱु–यह विचार कर; अतु चाय–उसको काट गिराने; कॊण्टल् ऒत्तवन्–मेघ-सम श्रीराम ने; कॊटु कणै–क्रूर अस्त्र; पत्तु–दस; ओरु तॊटैयिनिल्–एक ही संधान में; कोत्तु–लगाकर; ऍय्तान्–फेंके; अतु–वह (दण्ड); कण्टम् उऱ्ऱतु–खण्डित हुआ; करु कऴल्–सबल चरणवलयधारी; अरक्कनुम्–राक्षस ने; कनन्ऱु–कोप करके; आङ्कु–वहाँ; वाळोटुम्–तलवार के साथ; मण्टलम् ओर् चुटर्–भूमि पर के अनुपम सूर्य के समान; आटकम् केटकम्–स्वर्ण की ढाल; वाङ्किनन्–(हाथ में) ली। १५४१

मेघश्याम ने, यह सोचकर कि इसके हाथ में दण्डायुध रहा तो वानर-सेना जीवित नहीं रहेगी, एक ही वार में दस क्रूर बाण संधानकर उसे काटने के लिए चलाये। वह कट गया। कठोर चरण-वलयधारी निशाचर ने भी गुस्सा करके तलवार के साथ भूमि पर सूर्य आया हो, जैसी दिखनेवाली एक स्वर्ण की ढाल को अपने हाथों में लिया। १५४१

वाळॆ डुत्तलुम् वानर वीरर्हळ् मऱुहिनर् वळितेडित्
ताळॆ डुत्तनर् शमऴ्त्तनर् वानवर् तलैयॆडुत् तिलर्ताळ्न्दार्
कोळॆ डुत्तदु मीळवॅन् ऱुरैत्तलुङ् गोऱ्ऱवन् कुनऱ्ऱीत्त
तोळॆ डुत्तदु तुणित्तियॆन् ऱीरुशरन् दुरन्दनन् शुरर्वाऴ्त्त 1542

वाळ् ऍटुत्तलुम्–तलवार लेने पर; वानर वीरर्कळ्–वानर वीर; मऱुकिनर्–

व्यग्र हुए; वऴि तेटि–मार्ग खोजते हुए; ताऴ् ॲट्टुत्तत्तर्–पैरों में बल डालकर (भागते हुए); चमऴुत्तत्तर्–संकटग्रस्त हुए; वानवर्–देवों ने; तलै ॲट्टुत्तिलर्–सिर न उठाकर; ताऴ्न्तार्–झुका लिया; मीळ–फिर से; कोळ् ॲट्टुत्ततु–संहार-कार्य आरम्भ हो गया; ॲन्ऱु उरैत्तलुम्–ऐसा कहने पर; कॊट्रवन्–विजयविभूषित श्रीराम ने; ॲट्टुत्ततु–तलवार जिसने उठायी; कुन्ऱु ऒत्त–(उस) पर्वत-सम; तोळ्–कन्धे को; तुणित्ति–काट दो; ॲन्ऱु–कहकर; ऒरु चरम्–एक बाण; चुरर् वाऴ्त्त–सुरों के बधाई देते; तुरन्तनन्–छोड़ा। १५४२

कुंभकर्ण ने ज्योंही तलवार हाथ में उठायी, त्योंही वानर व्यग्र हुए और बचाव का मार्ग खोजते हुए चरणों को तेज़ बनाते हुए संकटग्रस्त हुए। देवों ने सिर नीचा कर लिया। श्रीराम से कहा गया कि फिर से संहार-कार्य आरम्भ हो गया तो विजयी वीरराघव ने 'तलवारधारी उन्नत भुजा को काट दो' —कहकर एक शर छोड़ा, जिस पर देवों ने उनकी स्तुति की और बधाई दी। १५४२

अलक्क णुऱ्ऱदु तीविनै नल्विनै यार्त्तॆऴुन्दुवेर्त्तुक्
कलक्क मुऱ्ऱन रिराक्कदर् कालवॆङ् गरुङ्गडर् ऱिरैपोलुम्
वलक्कै यऱ्ऱदु वाळॊडुङ् गोळुडै वानमा मदिपोलुम्
इलक्कै यऱ्ऱदव् विलङ्गैक्कु मिरावणन् तनक्कुमॆन् ऱॆऴुन्दोडि 1543

ती विनै–पाप (अधर्म); अलक्कण् उऱ्ऱतु–दुःखी हुआ; नल् विनै–पुण्य (सद्धर्म); आर्त्तु ॲऴुन्ततु–आनन्द-नाद कर उठा; इराक्कतर्–राक्षस; कालम्–युगान्त के; वॆम्–गरम; करुकटल्–काले सागर की; तिरै पोलुम्–तरंगों के समान और; वलम् कै–दायाँ हाथ; कोळ् उटै–राहुग्रस्त; वानम्–आकाश में स्थित; मा मति पोलुम्–बड़े चन्द्र के समान; वाळॊटुम्–तलवार के साथ; अऱ्ऱतु–कट गया; अव् इलक्कैक्कुम्–उस लंका की और; इरावणन् तनक्कुम्–रावण की; इलक्कै अऱ्ऱतु–रक्षा मिट गयी; ॲन्ऱु–ऐसा चिल्लाते हुए; ॲऴुन्तु ओटि–उठकर भागे और; कलक्कम् उऱ्ऱनर्–क्षुब्ध हुए। १५४३

(कुंभकर्ण का हाथ कट गया। उस पर) पाप दुःखी हो गया। पुण्य ने आनंद-नर्दन किया। 'कुंभकर्ण का दाहिना हाथ आकाश में राहुग्रस्त बड़े चन्द्र के समान तलवार के साथ काट दिया गया। इसलिए लंका और रावण की रक्षा टूट गयी।' ऐसा विलाप करते हुए सभी राक्षस लोग युगान्त में उमग उठनेवाले सागर की तरंगों के समान उठकर भागने लगे। उनके शरीर स्वेद से भर गये और मन भ्रम से। १५४३

मऱ्ऱुम् वीररह ळुळरॆनर् कॊळिदरो मऱ्ऱॊऴि लिवन्माडु
पॆऱ्ऱु नीङ्गिन रामॆनि नल्लदु पॆरॆऴिऱ् ऱोळॊडुम्
अऱ्ऱु वीऴ्न्दकै यऱादवॆङ् गैयिना लॆडुत्तव नार्त्तोडि
ॲऱ्ऱर वीऴ्न्दन वॆयिऱिऴित् तोडिन वानरक् कुलमॆल्लाम् 1544

पेर् ॲळिल्–बड़े ही सुन्दर; तोळोटुम् अड़्ड–कन्धे के साथ कटकर; वीऴ्न्त–जो गिरा; कै–उस हाथ को; अवन्–उसके; अड़ात–जो नहीं कटा था उस; वॅम् कॅयिताल्–भीषण हाथ से; ॲडुत्तु–उठा लेकर; आर्त्तु ओटि–शोर मचाते हुए दौड़कर; ॲड़्ड–प्रहार करते समय; ॲयिङ इळित्तु–दाँत खोलकर; ओटित्त–जो भागे; वानर कुलम् ॲल्लाम्–वानरवर्ग सभी; वीऴ्न्तन–मरकर गिरे; मड़म् तॊळिल्–वीरकृत्य; इवन् माटु–इससे; पॅड़्ड–याचना कर लेकर; नीक्कितर् आम् ॲतिल्–हटे तो जीवित हुए; अल्लतु–नहीं तो; मड़्ड़म्–अन्य; मड़म् तॊळिल् वीरर्कळ्–साहसिक काम करनेवाले वीर; उळर्–हैं; ॲतड़्कु–कहना; ॲळितरो–सुलभ है क्या । १५४४

कुंभकर्ण ने अत्यन्त सुन्दर कन्धे के साथ कटकर गिरे उस हाथ को अपने दूसरे हाथ से उठा लिया । फिर नारे लगाते हुए दौड़-दौड़कर वानरों पर प्रहार करने लगा तो जो दाँत दिखाते हुए भागते रहे, वे वानर मरकर गिर गये । अगर कोई बचना चाहे तो वह वीरकृत्य उससे प्राणों की भीख माँगकर उसकी दया से ही हट सकता था ! ऐसे युद्ध-साहसी अन्य कोई भी हैं —ऐसा कहना सुलभ नहीं है क्या ? (ऐसा वीर मिलना दुर्लभ है ।) । १५४४

वळ्ळल् कात्तुड निऱ्कवुम् वानरत् तानैयै मड़क्कूड़्ड़म्
कॊळ्ळै कॊण्डिडत् तण्डिनिऩ् मुम्मडि कुमैक्किऩ्ऱ पडिनोक्कि
वॅळ्ळ मिऩ्ऱॊडुम् वीयुन्दऱ मॅन्बदोर् विम्मलुड़् ऱुयिर्वॅम्ब
उळ्ळ कैयिनु मड़्ड़वॅङ् गरत्तैये यञ्जिन वुलहॅल्लाम् 1545

वळ्ळल्–उदार प्रभु के; वानरर् तानैयै–वानर-सेना की; कात्तु–रक्षा करते हुए; उटन् निऱ्कवुम्–साथ रहने पर भी; मड़म् कूड़्ड़म्–क्रूर यम; कॊळ्ळै कॊण्टिट–लूट ले ऐसा; तण्टिऩिऩ् मुम्मटि–दण्डायुध से तिगुना; कुमैक्किऩ्ऱपटि–मारता है वह हाल; नोक्कि–देखकर; उलकु ॲल्लाम्–सारे लोकवासी; वॅळ्ळम्–वानरों की बड़ी सेना; इऩ्ऱॊटुम् वीयुन्तु–आज ही मरकर; अऱुम्–मिट जाएगी; ॲऩ्पतु–ऐसा; ओर् विम्मल् उड़्ड–दुःख से भरकर; उयिर् वॅम्प–प्राणों के कुम्हलाते; उळ्ळ कैयिनुम्–लगे रहे हाथ से; मड़्ड़ वॅम् करत्तैये–अन्य (कटे) भयंकर हाथ से ही; अञ्चिन–डरे । १५४५

प्रभु श्रीराम के वानर-सेना की रक्षा करते हुए पास में रहते भी कुंभकर्ण यम को लूट मचाने देते हुए दण्ड से जितनों को मारता था, उसके तिगुने वानरों को मार रहा था । उसकी स्थिति को देखकर सारे लोकवासी यह सोचकर क्षुब्ध हुए कि वानरसेना-सागर आज मिट जाएगा । उनके प्राण कुम्हलाने लगे । वे कुंभकर्ण के लगे रहे हाथ से अधिक कटे हाथ से डरे । १५४५

माऱु वानरप् पॅरुङ्गड लोडत्तन् तोळ्निऩ्ऱु वार्शोरि
याऱु विण्तॊडम् पिणञ्जुमन् दोडमे लमररु मिरिन्दोडक्

कूरु कूरुपट् टिलङ्गैयुम् विलङ्गलुम् परवैयुङ् गुलैन्दोड
एरु शेवहन् मेलॆऴुन् दोडिन्नन् मळैक्कुल मिरिन्दोड 1546

माऱु–विरोधी; वानर पॆरुम् कटल्–वानरों की सेना का बड़ा सागर; ओट–भागा; तन् तोळ् निन्ऱु–उसके कन्धे से; वार् चोरि आऱु–गिरनेवाले रक्त की नदी; विण् तोट्टुम्–आकाश छूते हुए; पिणम् चुमन्तु ओट–लाशों को बहाता गया; मेल् अमररुम्–आकाशलोक के देव; इरिन्तु ओट–अस्त-व्यस्त हो भागे; इलङ्कैयुम्–लंका और; विलङ्कलुम्–(त्रिकूट-) पर्वत; परवैयुम्–पक्षी; कूऱु कूऱु पट्टु–खण्ड-खण्ड बनकर; कुलैन्तु ओट–तितर-बितर हो उड़े; मळै कुलम्–मेघसमूह; इरिन्तु ओट–छिन्न-भिन्न हो छितरे; मेल् ऎऴुन्तु–अंतरिक्ष में (लाशों पर) चढ़कर; एऱु चेवकन् मेल्–वर्धमान वीरता के वीर राघव की तरफ़; ओटिनन्–दौड़ा। १५४६

विरोधी वानरसेना-सागर भागा; कुंभकर्ण के कन्धे से बहते रक्त की नदी आकाश को छूते हुए लाशों को तिराकर ले बही। आकाश के देव अस्त-व्यस्त हो भागे। और लंकानगर और त्रिकूट पर्वत खण्ड-खण्ड हुए। पक्षीगण अलग-अलग होकर उड़े। मेघ-समूह अस्त-व्यस्त हुए और वितरित हुए। कुंभकर्ण लाशों पर चढ़कर वर्धमान वीरता के नायक श्रीराम की तरफ़ दौड़ा आया। [ओट—(दौड़ना) शब्द संदर्भानुसार अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।]। १५४६

ईऱुक् कैयैयु मिक्कणत् तरिदियॆन् ऱिमैयवर् तॊऴुदेत्तत्
तोऱ्ऱुक् कैयहन् ऱॊऴिन्दव नाळवै तॊलैयवुन् दोन्ऱाद
कूऱ्ऱुक् कैयमु मच्चमुङ् गॆडनॆडुङ् गोऱ्ऱवन् कॊलैयम्बाल्
वेऱुक् कैयैयुम् वेलैयि लिट्टनन् वेऱुमो रणैयाह 1547

ईऱु कैयैयुम्–अंतिम हाथ को भी; इक् कणत्तु अरिति–इसी क्षण काट दो; ऎन्ऱु–कहकर; इमैयवर् तॊऴुतु एत्त–देवों के वन्दना करते और साधुवाद देते; तोऱ्ऱु–हारकर; कै अकन्ऱु–हाथ से हीन होकर; ऒऴिन्तवन्–जो रह गया उसके; नाळ् अवै तॊलैयवुम्–जीवन के दिनों को भी क्षीण करते हुए; तोन्ऱात–(अब तक) अप्रकट; कूऱ्ऱुक्कु–यम के; ऐयमुम् अच्चमुम् कॆट–संशय और डर को मिटाते हुए; नॆटु कोऱ्ऱवन्–बड़े विजयी वीर ने; कॊलै अम्पाल्–संहारक अस्त्र से; वेऱु कैयैयुम्–अन्य हाथ को भी; वेऱु ओर् अणैयाक–दूसरे सेतु के रूप में; वेलैयिल् इट्टनन्–समुद्र में डाल दिया। १५४७

तब अतिप्रतापी विजयी श्रीवीरराघव ने एक संहारक शर यह कहते हुए छोड़ा कि जो बचा है, उस अन्तिम हाथ को काट दो। तब देवों ने बधाई दी। राक्षस की आयु क्षीण करते हुए और यम के संशय और डर को दूर करते हुए उस शर ने कुंभकर्ण के दूसरे हाथ को काटकर दूसरे सेतु के रूप में समुद्र में डाल दिया। १५४७

शन्दि रपॆरुन् दूणॊडुञ् जार्त्तिय ददिलॊन्ऱुन् दवराहा
तन्द रत्तव रलैहड लमुदॆळ्क् कडैवरु मन्नाळिल्

शुन्द रत्तडन् दोळ्वळै माशुणम् जुर्रिय तॊळ्लिल्काट्ट
मन्द रत्तॆयुङ् गडुत्तदु मर्रवन् मणियणि वयिरत्तोळ् 1548

चुन्तरम्–सुन्दर; तट तोळ् वळै–विशाल बाहुवलय के; माचुणम् चुर्रिय–सर्प लिपटा हो जैसा; तॊळ्लिल् काट्ट–कृत्य (दृश्य) उपस्थित करते; अवन् मणि अणि–उसका रत्नाभरणालंकृत; वयिरम् तोळ्–वज्रस्कन्ध; चन्तिरत् पॆरु तूणॊटुम्–चन्द्र रूपी थिरथंभ के साथ; चार्त्तियतु–जो बाँधी गयी थी; अतिल्–उस (मथानी) से; ऒन्रुम्–कुछ भी; तवरु आकातु–कम न रहकर; अन्तरत्तवर्–देव; अलै कटल्–तरंगयुक्त समुद्र से; अमुतु अॆळ–अमृत निकालने; कटैवुरुम्–जब मथते थे उस दिन में; मन्तरत्तैयुम्–जो था उस मंदरपर्वत के भी; कट्टुत्ततु–समान रहा। १५४८

वड़ी और सुन्दर भुजा पर रहनेवाला बाहुवलय (मन्दर पर्वत पर) लपेटा साँप-सा लग रहा था। उसका रत्नाभरणालंकृत कन्धा चन्द्र रूपी थिरथंभ के साथ लगाकर बँधी रही मथानी से किसी विध कम नहीं था। इसलिए वह भुजा उस दिन के मन्दर पर्वत के समान लगी, जब देवों ने अमृत निकालने के लिए तरंगाकुल क्षीरसागर को मथा था। १५४८

शिवण वण्णवान् करुङ्गडर् कॊण्डुयत्त शॆयलिनुम् जॆरिकर्रैच्
चुवण वण्णवॆम् जिरैयुडैक् कडुविशै मुडुहिय तॊळिलालुम्
अवण वण्णल देवलि नियर्रिय वमैविनु मयिल्वाळि
उवण वण्णलै यॊत्तदु मन्दर मॊत्तदव् वुयर्पॊर्रोळ् 1549

चिवण–स्वोपम; वण्णम्–सुन्दर; वान् करु कटल्–बहुत बड़े काले सागर में; कॊण्टु–ले जाकर; उयत्त शॆयलिनुम्–जो डाला उस कृत्य से; चॆरि कर्रै–घनी राशि के; चुवणम् वण्णम्–और स्वर्ण वर्ण के; वॆम्–प्यारे; चिरै उटै–पंखों का होकर; कटु विचै–बहुत वेग के साथ; मुटुकिय तॊळिलालुम्–जो गया उस कृत्य से; अवण–वहाँ के; अण्णलतु–प्रभु के; एवलिन् इयर्रिय–शासन के अनुसार जो किया; अमैविनुम्–उस प्रकार से; अयिल् वाळि–तीक्ष्ण शर; उवण अण्णलै–गरुड़देव के; ऒत्ततु–समान रहा; अव् उयर् पॊन् तोळ्–वह उन्नत स्वर्णभूषित कन्धा; मन्तरम् ऒत्ततु–मन्दर के समान रहा। १५४९

स्वोपम शर ने सुन्दर और बहुत बड़े उस हाथ को समुद्र में पहुँचा दिया। उस शर में घनी राशि में स्वर्ण के पंख लगे थे और वह बहुत तीव्र गति से चला। वहाँ उसने महिमावान प्रभु की आज्ञा पूरी की। क्रमशः उसके कृत्य से, उसके आकार से, उसकी गति से और आज्ञाकारिता के कारण वह शर गरुड़देव के समान रहा, जो मन्दर पर्वत लाया था; और श्रेष्ठ, सुन्दर स्वर्ण-आभूषणों से अलंकृत भुजा (गरुड़ द्वारा लाये गये) मन्दर पर्वत के समान थी। १५४९

पळक्क नाळ्वरु मेरुवै युळ्ळुरत् तॊळैत्तोरु पणैयाक्कि
वळक्कि नालुल हळन्दव नमैत्तदोर् वन्गुणिल् वलत्तेन्दि

मुळक्कि नालॅन मुळङ्गुपे रार्प्पिनान् वानर मुन्नीरै
उळक्कि नान्तशै तोलॅलुम् ॲनुमिवै कुरुवियो डॊन्राह 1550

पळक्कम्–नियम से; नाळ् वरु–दिनकर जिसकी परिक्रमा करता है; मेरुवै–उस मेरु को; उळ् उऱ–अन्दर खूब; तॊळैत्तु–छेद बनाकर; ऑरु पणै आक्कि–एक ढोल बनाकर; वळक्किनाल्–क्रम से; उलकु अळन्तवन्–लोकों को जिन्होंने नापा उनके; अमैत्तत्तु ओर्–द्वारा रचित; वन् कुणिल्–सुदृढ़ छोटी छड़ी को; वलत्तु एन्ति–दायें हाथ में लेकर; मुळक्किनाल् ॲन्न–बजाया गया जैसे; मुळङ्कु–नर्दन करनेवाले; पेर् आर्प्पिनान्–अत्युच्च निनादक कुंभकर्ण ने; तसै–मज्जा; तोल्–चमड़ा; ॲलुम्पु ॲन्नुम् इवै–हड्डियाँ आदि कथित ये; कुरुतियोटु ऑन्ऱ आक–रक्त के साथ मिल एक बने ऐसा; वानर मुन्नीरै–वानर-समुद्र को; उळक्किनान्–मथ दिया। १५५०

मेरु पर्वत को, जिसकी, नियम से सूर्य रोज़ परिक्रमा करता है, अन्दर खोदकर भेरी बनायी गयी हो और त्रिविक्रम देव द्वारा बनाये गये उसके योग्य चोब से पीटकर शब्द निकाला गया जैसे कुंभकर्ण ने अपार शोर करता हुआ वानर-सेना के सागर को ऐसा विलोडित कर डाला कि मांस, चमड़ा, हड्डियाँ आदि सभी वस्तुएँ रुधिर से मिश्रित हो गयीं। १५५०

निलत्त काल्कनल् पुनल्विशुम् बिवैमुरुऱु निरुदन दुरुवाहिक्
कॊलत्त हाददोर् वडिवुहॊण् डालॅन वुयिर्हळैक् कुडिप्पानैच्
चलत्त कालनैत् तरुकणर्क् करशनैत् तरुक्किनिर् पॅरियानै
वलत्त कालैयुम् वडित्तवॅङ् गणैयिनार् तडिन्दनन् तनुवल्लान् 1551

निलत्त–पृथ्वी से सम्बद्ध; काल्–वायु; कनल्–अग्नि; पुनल्–जल; विचुम्पु–आकाश; इवै मुऱ्ऱुम्–ये सभी; निरुतनतु उरु आकि–राक्षस का रूप लेकर; कॊल तकातु–न मारा जा सके ऐसा; ऑरु वटिवु कॊण्टाल् ॲन–एक आकार बने हों, ऐसा; उयिर्कळै कुटिप्पानै–प्राणों को पीनेवाले (मारनेवाले) के; चलत्त कालनै–कुपित यम (सम उस) के; तरुकणर्क्कु अरचनै–निडरों में राजा के; तरुक्किनिल् पॅरियानै–अभिमानियों में बड़े कुंभकर्ण के; वलत्त कालैयुम्–दाहिने पैर को भी; वटित्त–तीक्ष्ण; वॅम् कणैयिताल्–क्रूर अस्त्र से; तनु वल्लान्–धनुर्दक्ष श्रीराम ने; तटिन्तनन्–काट दिया। १५५१

कुंभकर्ण पृथ्वी, वायु, अग्नि, जल और आकाश के पाँचों भूतों का बना राक्षस-रूप-सा था। उसे मारना कठिन था। खूनी, क्रोधी यम-से, निडरों में राजा और अभिमानियों में अग्रगण्य उसके दाहिने पैर को भी धनुकृत्यदक्ष श्रीराम ने काट दिया। १५५१

पन्दि पन्वियिन् पर्कुल मीन्गुलम् पाहुपा डुऱ्प्पाहत्
तिनदु वॅळ्ळॅयि ऱ्मैत्तिडक् कुरुदिया ऱॊळ्क्कल्कॊण डॆळुशॆक्कर्

अन्वि वन्वॅन वहत्तॅडु वाय्विरित् तडियॉन्रु कडिदोट्टिक्
कुन्दि वन्दन तॅडुनिलङ् गुळ्िपडक् कुरॅहडल् कोत्तेर 1552

पन्ति पन्तियिन्–पंक्तियों में रहे; पल् कुलम्–दाँतों की राशि; मीन् कुलम्–नक्षत्र-राशि का-सा; पाकुपाटु उऱ–विभाजन पा गयी; पाकत्तु इनतु–बालचन्द्र के समान; वॅळ् ॲयिऱु–सफ़ेद दाँत; इमैत्तिट–चमके; कुरुति आऱु–रक्त-नदी को; ऑळुक्कल् कोण्टु ॲळु–धारा से उठनेवाली; चॅक्कर्–लालिमा; अन्ति वनतु ॲन–संध्या हो गयी जैसे; अकल् नॅटु वाय् विरित्तु–चौड़े और लम्बे मुख को खोलकर; नॅटु निलम्–लम्बी भूमि में; कुळि पट–गड्ढा बनाते हुए; कुरॅ कटल्–गर्जनशील सागर; कोत्तु एऱ–उमड़कर भूमि पर बहे ऐसा; अटि ऑन्ऱु–एक चरण को; कटितु ओट्टि–वेग के साथ रखता हुआ; कुन्ति वन्तनन्–लँगड़ाता आया। १५५२

तब भी वह एक ही पैर से लँगड़ाता हुआ आगे बढ़ आया। पंक्तियों में रहे उसकी दन्तावली नक्षत्रों के समान चमक रही थीं। वक्र दाँत कलाचन्द्र के समान प्रकाशमय दिख रहे थे। उसका खुला बड़ा मुख उठकर बहनेवाली रक्त-नदी के कारण संध्या-गगन के समान लग रहा था। जब वह आया तब भूमि पर गड्ढे पड़ रहे थे और गर्जनशील समुद्र उमड़कर भूमि पर बहने लग गया। १५५२

माऱु कालिन्ऱि वानुऱ निमिर्न्दुमा डुळवॅलाङ् गडित्तेन्दिच्
चूऱै मारुद मामॅनच् चुळित्तुमेऱ् ऱॉडर्हित्तुऱ तॉळिलानै
एऱु शेवहन् ॲरिमुहप् पहळ्ियालिरुनिलम् पॉरॅनीङ्ग
वेऱु कालैयुन् दुणित्तनन् ऱऱत्तॉडु वेदङ्गळ् कूत्ताड 1553

माऱु काल् इन्ऱि–अन्य पक्ष के पैर के बिना; वान् उऱ–आकाश तक; निमिर्न्तु–ऊँचा बनकर; माटु उळ ॲलाम्–पार्श्व में रहे सभी को; कटित्तु एन्ति–दाँतों से काट लेते हुए; चूऱै मारुतम् आम् ॲन–चक्रवात के समान; चुळित्तु–चक्कर लगाता हुआ; मेल् तॉटर्किन्ऱ–आगे बढ़ आनेवाले; तॉळिलानै–क्रियाशील कुंभकर्ण के; एऱु चेवकन्–वर्धमान वीरता के श्रीराम ने; ॲरि मुकम् पकळ्ियाल्–अग्निमुखी अस्त्र से; इरु निलम् पॉरै नीङ्क–बड़ी भूमि के भार को दूर करते हुए; अऱत्तॉटु–धर्म के साथ; वेतङ्कळ् कूत्तु आट–वेदों के (आनन्द-) नाच करते; वेऱु कालैयुम्–दूसरे पैर को भी; तुणित्तनन्–काट दिया। १५५३

चक्रवात के समान एक ही पैर पर आकाश तक ऊँचा होकर पास में रहे सभी को दाँतों से काटकर लेते हुए जो आगे बढ़ रहा था, उसके दूसरे पैर को भी वर्धनशील वीरता के स्वामी श्रीवीरराघव ने एक अग्निमुखी अस्त्र चलाकर काट दिया तो भूमि का भार कम हुआ देख धर्म और वेद आनंद से नाच उठे। १५५३

कैयि रण्डॉडु कालुहळुन् दुणिन्दन करुवरै पॉरुवुन्दन्
मॅय्यि रण्डुनू ऱायिरम् पहळ्ियाल् वॅरिनुऱत् तॉळैपोन

शॆय्य कण्बॊऴि तीच्चिहै यिरुमडि शिऱन्ददु तॆऴिप्पोडुम्
पॆय्युम् वानिडै यिडियिनुम् पॆरुत्तदु वळर्न्ददु पॆरुञ्जीऱ्ऱम् 1554

कै इरण्टॊटु–दोनों हाथों के साथ; काल्कळुम् तुणिन्तन–दोनों पैर भी कट गये; करु वरै पोलवुम्–बड़े पर्वत के समान; तन् मॆय्–उसका शरीर; इरण्टु नूऱायिरम् पकऴियाल्–दो लाख शरों के; वॆरिन् उऱ–पीठ के बाहर आने से; तॊळै पोन–छेदयुक्त हो गया; चॆय्य–लाल बने; कण् पॊऴि–आँखों से निकली; ती चिकै–अग्नि की ज्वालाएँ; इरु मटि चिऱन्ततु–दुगुनी बन गयीं; पॆरुम् चीऱ्ऱम्–बहुत बड़ा (उग्र) कोप; तॆऴिप्पोटुम्–शोर के साथ; पॆय्युम्–गिरनेवाले; वान् इटै–आकाश के; इटियिनुम्–वज्र से बढ़कर; पॆरुत्ततु–अधिक होकर; वळर्न्ततु–बढ़ा। १५५४

कुम्भकर्ण के दोनों हाथ और दोनों पैर कट चुके। उसका बड़े पर्वत के समान शरीर दो लाख शरों से, जो पीठ-पीछे निफर गये, विद्ध रहा। लाल आँखों से निकली अग्निशिखा दुगुनी हो रही। उसका क्रोध गर्जन के साथ प्रकट होनेवाले आकाश के वज्र से भी बढ़ गया। १५५४

पादङ् गैहळो डिऴन्दनन् पडियिडै यिरुन्दुतन् पहुवायाल्
काद नीळिय मलैहळैक् कडित्तिरुत् तॆडुत्तुवॆङ् गनल्पॊङ्गि
मीदु मीदुतन् नहत्तॆऴु काऱ्ऱिनाल् विचैकॊडु तिशैशॆल्ल
ऊद वूदप्पट् टुलन्दन वानर वुरुमिन्वी ऴुयिरॆन्न 1555

पातम् कैकळोटु इऴन्ततन्–पैरों और हाथों को जिसने गँवाया था, वह कुंभकर्ण; पटि इटै इरुन्तु–भूमि पर रहकर; तन् पकु वायाल्–अपने फटे (-से) मुख से; कातम् नीळिय–कोसों लम्बे; मलैकळै–पर्वतों को; कटित्तु इऱुत्तु ऎटुत्तु–काटकर, टुकड़े करके, लेकर; वॆम् कनल् पॊङ्कि–गरम (कोप की) अग्नि अधिक करके; मीतु मीतु–उत्तरोत्तर; तन् अकत्तु–अपने अन्दर से; ऎऴु–उठनेवाली; काऱ्ऱिनाल्–वायु से; विचै कॊटु–ज़ोर लगाकर; तिचै चॆल्ल–दिशाओं में भेजते हुए; ऊत ऊत–ज्यों-ज्यों फूँकता; वानरम्–वानर; उरुमिन् वीऴ्–वज्र से प्राण खोनेवाले; उयिर् ऎन्न–जीवों के समान; पट्टु उलन्तन–मरकर मिट गये। १५५५

चरणहस्त-रिक्त कुंभकर्ण ने भूमि पर ही पड़ा रहकर कोस-कोस तक लम्बे रहनेवाले पर्वतों को अपने मुख से पकड़ लिया; काटकर खण्ड-खण्ड किया और बढ़ते क्रोध के साथ अपने अन्दर से उठनेवाली हवा के सहारे उन्हें ज़ोर से फूंका। वे खण्ड दिशा-दिशा में गये और उनसे आहत होकर वानर वज्र के शिकार जीवों की भाँति मरे और मिटे। १५५५

तीयि ऩाऱ्चॆय्द कण्णुडै यानॆऴुञ् जिहैयिऩाऱ् ऱिशैतीय
यिवॆ ऩाऱ्ऱिणि वॆऱ्पॊऩ्ऱु नाविनाल् विशुम्बुऱ वळैत्तॆन्दिप्
पेयि ऩाऱ्पुडैप् पॆरुङ्गळ मॆरिन्दॆऴप् पिलन्दिऱन् ददुपोलुम्
वायि ऩाऱ्चॆल वूदिनन् वळ्ळलु मलर्क्करम् विदिर्प्पुऱ्ऱान् 1556

तोयित्ताल् चॅय्त–अग्नि की बनी (-सी); कण् उटैयान्–आँखों वाले ने; ॲळुम्–उठती; चिकॅयित्ताल्–अग्निशिखा से; तिचै तीय–दिशाओं को झुलसाते हुए; वेयित्ताल् तिणि–बाँसों से पूर्ण; वॅऱ्पु ऑन्ऱु–एक पर्वत को; नावित्ताल्–जीभ को; विचुम्पु उऱ–आकाश तक; वळैत्तु–बढ़ाकर लपेटकर; एन्ति–उठाकर; पेयित्त आर्प्पुर्ट–भूतगणों के कोलाहल से भरे; पॅरुकळम्–बड़े युद्धाजिर को; ॲरिन्तु ॲळ–जल उठने देते हुए; पिलम् तिऱन्ततु पोलुम्–बिल खुला हो ऐसे; वायित्ताल्–मुख से; चॅल ऊतित्तन्–फेंकते हुए फूँका; वळ्ळलुम्–प्रभु श्रीराम के भी; मलर् करम्–कमलहस्त; वितिर्प्पु उऱ्ऱान्–काँप गये। १५५६

अग्निकृत-सी आँखों वाले से उठनेवाली अग्निशिखा से चारों दिशाएँ झुलसीं। उसने अपनी जीभ को आकाश तक ऊँचा करके घुमाया और बाँसों से पूर्ण एक पर्वत को पकड़ लिया और बिल के समान खुले मुख के ज़ोर से उसे फूँका। उससे भूतों के कोलाहल से पूर्ण समरभूमि जल उठी। वह पर्वत बहुत दूर जाता रहा देख प्रभु श्रीराम का कमलहस्त भी काँप गया। १५५६

ऐयन् विऱ्ऱॉळिऱ् कायिर मिरावण रमैविल रन्दोयान्
कैयुङ् गाल्हळु मिळन्दनॅन् वेऱिति युदवलान् दुणैकाणेन्
मैयल् नोय्हॉडु मुडिन्दवॅन् मुन्नवन् वरम्बिन्ऱि वाऴ्वान्क्
कुय्यु माऱरि वॅन्ऱुद नुळ्ळत्ति नुणर्न्दोरु तुयरुऱ्ऱान् 1557

ऐयन् विल् तॉळिऱ्कु–प्रभु के धनु-कर्म के सम्बन्ध में सोचें तो; आयिरम् इरावणर्–एक हज़ार रावण; अमैवु इलर्–शक्त नहीं; अन्तो–हंत; यान्–मैं; कैयुम् काल्कळुम्–हाथ और पैर; इळन्तनॅन्–खो गया; इनि–अब; वेऱु–अन्य; उतवलाम् तुणै–सहायक साथी; काणेन्–नहीं देखता; मैयल् नोय् कॉट्–कामरोग से पीड़ित; मुटिन्त–जो मिट गया वह; ॲन् मुन्नवन्–मेरा ज्येष्ठ भ्राता; वरम्पिन्ऱि वाऴ्वान्क्कु–जो अनन्तकाल तक जिएगा उसे; उय्युमाऱु–बचने का मार्ग; अरितु–दुर्लभ है; ॲन्ऱु–ऐसा; तन् उळ्ळत्तिन् उणर्न्तु–अपने मन में जानकर; ओरु तुयर् उऱ्ऱान्–अपार दुःख पाया। १५५७

कुम्भकर्ण ने सोचा प्रभु श्रीराम के धनुकार्य को लेकर देखा जाय तो हज़ार रावण भी पर्याप्त नहीं होंगे। हाय! मैं पैरों और हाथों से हीन हो गया। अब मुझे कोई सहायक साथी दिखायी नहीं देता। क्या करूँ? मेरा भाई कामरोग का शिकार बनकर मिट गया! अब चिरंजीव रहने योग्य इसे बचने का कोई मार्ग नहीं रहा। इस पर उसे अपार दुःख हुआ। १५५७

❀ शिन्दुरच्चॅम् बशुङ्गुरुदि तिशैहळ्तोऱुन् दिरैयाऱा
ॲन्दिरत्तेर् करिपरिया ळीर्त्तोडप् पार्त्तिरुन्द
कन्दरप्पोऱ् किरियाणैक् कळिऱ्ऱनैयान् कण्णिन्ऱ्
शुन्दरप्पोऱ् ऱोळाने मुहनोक्कि यिवैशोल्वान् 1558

चिन्तुरम्–सिंदूर-सा; चॆम्–लाल; पचुम्–ताजा; कुरुति–रक्त; तिचैकळ् तोऱुम्–सभी दिशाओं में; तिरै आऱा–लहरों से युक्त नदियाँ बनकर; ऎन्तिरम् तेर्–यन्त्र-सहित रथ; करि परि–गज, अश्व; आळ्–पदाति; ईर्त्तु–खींच लेकर; ओट–बहा; पार्त्तु इरुन्त–जो देखता रहा; चुन्तरम् पॊन् किरि–सुन्दर स्वर्णगिरि की ओर; आण्मै कळिऱु–वीर गज की; अतैयान्–समानता करनेवाला कुंभकर्ण; कण् निन्ऱ–समक्ष रहे; चुन्तरम् पॊन् तोळान्–सुन्दरबाहु श्रीराम से; मुकम् नोक्कि–मुख देखकर; इवै चॊल्वान्–यों बोला। १५५८

सिंदूर के समान लाल और ताजा रक्त नदियाँ बनकर सभी दिशाओं में वह चला और यंत्र-सहित रथों, गजों, अश्वों और पदाति वीरों को बहाता ले चला। सुन्दर स्वर्ण-गिरि मेरु के समान आकार का और वीरता-पूर्ण गज के समान वीरता का कुम्भकर्ण यह देखकर अपने समक्ष रहे सुन्दर-बाहु श्रीराम से, उनका मुख देखकर यों बोला। १५५८

पुक्कडैन्द पुऱवॊन्ऱिऩ् पॊरुट्टाहत् तुलैपुक्क
मैक्कडङ्गार् मदयाऩै वाळ्वेन्दऩ् वऴिवन्दीर्
इक्कडऩ्ग ळुडैयीर्नी रॆम्विऩैतीर्त् तुमुमुडैय
कैक्कडन्दा ऩुयिर्हाक्कक् कडवीरॆऩ् कडैक्कूट्टाल् 1559

पुक्कु अटैन्त–शरणागत; पुऱवु ऒन्ऱिऩ् पॊरुट्टाक–एक कबूतर के लिए; तुलै पुक्क–तराजू के पलड़े पर जो चढ़ा (अपना शरीर देने); मै–काले; कटम् कार्–मदनीर को मेघ के समान बरसानेवाले; मत याऩै–मत्त गज के समान और; वाळ्–तलवारधारी; वेन्तऩ्–(शिबि) राजा के; वऴि वन्तीर्–कुल में उत्पन्न; इ कटऩ्कळ्–ऐसे कर्तव्य; उटैयीर्–करवानेवाले; नीर्–तुम; ऎऩ् कटै कूट्टाल्–मेरी अंतिम प्रार्थना से; ऎम् विऩै तीर्त्तु–हमारे सहवास के पाप को मिटाकर; उम्मुटैय कैक्कु–तुम्हारे पक्ष में; अटैन्ताऩ्–जो आया है; उयिर् काक्क–(उस विभीषण के) प्राणों को रक्षित करने; कटवीर्–का कर्तव्य करें। १५५९

शरणागत कपोत के जीवन को बचाने के लिए तुला पर जो चढ़े थे; जो काले, मदनीर बहानेवाले, मत्त गजों और तलवारधारी सेना के स्वामी थे, उन शिवि के वंशस्थ राम! तुम्हारे भी ऐसे कर्तव्य हैं! यह मेरे अन्तिम समय की प्रार्थना है। उसे मानो और उस विभीषण के प्राणों को सुरक्षित करो, जो कि हमारे घर में जन्म लेने के और हमारे सहवास के पाप को दूरकर तुम्हारे पक्ष में आ चुका है। १५५९

*नीदियाल् वन्ददीरु नॆडुन्दरुम नॆऱियलुलाल्
शादियाल् वन्दशिऱु नॆऱियऱिया ऩॆन्तम्बि
आदिया युनैयडैन्दा ऩरशरुरुक् कॊण्डमैन्द
वेदिया विन्नमुनक् कडैक्कलमियान् वेण्डिनेन् 1560

आतियाय्–आदिवस्तु; अरचर् उरु कॊण्टु–राजा के रूप में आये; अमैन्त

वेतिया–वेदप्रतिपादित परमदेव; नीतियाल् वन्त–नीतिसम्मत के; ऑरु–अनुपम; नॅट्टरुम नॅरि अल्लाल्–उन्नत धर्म-मार्ग छोड़कर; चातियाल् वन्त–जाती से उत्पन्न; चिड नॅरि–निकृष्ट मार्ग; अरियान्–नहीं जानता; ॲन् तम्पि–मेरा लघु भ्राता; उन्नै अटॅन्तान्–तुम्हारे पास आया है; इत्तम्–फिर; उनक्कु अटॅक्कलम्–तुम्हारी धरोहर है; यान् वेण्टिनेन्–यह मैं भी याचना करता हूँ। १५६०

आदि परमदेव ! राजा के रूप में अवतरित वेदतत्त्व ! मेरा छोटा भाई नीति और धर्ममार्ग का अवलंबी है और हमारी जाति-निर्दिष्ट निकृष्ट मार्ग नहीं जानता। वह तुम्हारी शरण में आया है। फिर से मैं उसे तुम्हारी धरोहर कहकर तुम्हारे पास सौंप रहा हूँ। यह मेरी याचना है। १५६०

वॅल्लुमा निनैक्किनृर वेलरक्कन् वेरोडुम्
कल्लुमा मुयल्हिन्ड्रा न्निवनॅन्नुङ् गरुवुडैयान्
ऑल्लुमा रियलुमे लुडन्पिरप्पिन् पयनोरान्
कॉल्लुमा लवनिवनैक् .कुरिक्कोडि कोडादाय् 1561

कोटाताय्–अच्युत; वॅल्लुमा निनैक्किनृर–जीतना चाहनेवाला; वेल् अरक्कन्–भाले वाला; इवन्–यह विभीषण; वेरोटुम् कल्लुमा–जड़ से खोदने का; मुयल्किन्ड्रान्–प्रयत्न करता है; ॲन्नुम् करु उटॅयान्–यह वैर (भाव) रखता है; उटन् पिरप्पिन्–भ्रातृत्व का; पयन् ओरान्–मान नहीं जानता; ऑल्लुमारु–साध्य; इयलुमेल्–हो सके तो; अवन् कॉल्लुम्–वह मार देगा; इवनै कुरि कोटि–इस पर ध्यान रखो। १५६१

धर्म से अच्युत ! विजयविश्वासी रावण इसके प्रति यह समझकर वैर पालता है कि विभीषण जड़ से मुझे नष्ट करना चाहता है। भ्रातृत्व का महत्त्व और फल नहीं जानता। वह अगर हो सके तो इसकी हत्या कर देगा। इसलिए तुम इसकी सावधानी से रक्षा करो। १५६१

❀ तम्बियॅन्न निनैन्दिरङ्गित् तविरानत् तहविल्लान्
नम्बियिवन् ड्रनैक्काणिर् कॉल्लुमिरै नल्हानाल्
उम्बियॅत्ता नुन्नैत्ता ननुमनैत्ता नॊरुपॊळुदुम्
ॲम्बिपिरि यानाह वरुळुदियान् वेण्डिनेन् 1562

अ तकवु इल्लान्–वह अयोग्य; तम्पि ॲन्न–छोटा भाई है ऐसा; निनैन्तु–सोचकर; इरङ्कि–संवेदना करके; तविरान्–इसको नहीं छोड़ेगा; नम्पि–नायक; इवन् तनै–इसको; काणिल्–देख ले तो; कॉल्लुम्–मारेगा; इरै नल्कान्–कुछ भी दया नहीं करेगा; उम्पियॅ तान्–तुम्हारे भाई से; उन्नै तान्–तुमसे; अनुमनै तान्–हनुमान से भी; ऑरु पॊळुतुम्–कभी भी; ॲम्पि पिरियान् आक–मेरा भाई अलग न हो ऐसी; अरुळुति–दया करो; यान् वेण्टिनेन्–मैं यह प्रार्थना करता हूँ। १५६२

वह सुयोग्य नहीं है। इसे और सहानुभूति के योग्य अपना भाई नहीं मानता, इसलिए इसे विना मारे नहीं छोड़ेगा। इसको देख ले तो अवश्य हनन कर देगा। इसलिए यह दया करो कि वह तुम्हारे भाई से, तुमसे और हनुमान से कभी भी अलग न हो पाये। मैं यह याचना करता हूँ। १५६२

मूक्किला मुहमॆन्ऱु मुऩिवर्हळु ममरर्हळुम्
नोक्कुवार् नोक्कामे नोऩ्गणैया लॆऩ्कळुत्तै
नीक्कुवाय् नीक्कियपि ऩॆड्डुन्दलैयैक् करुङ्गडलुट्
पोक्कुवा यिदुनिऩ्ऩै वेण्डुहिऩ्ऱ पॊरुळॆऩ्ऱाऩ् 1563

मुऩिवर्कळुम्–मुनिगण; अमरर्कळुम्–व देवगण; मूक्कु इला मुकम्–नासिकाहीन आनन; ऎऩ्ऱु नोक्कुवार्–कहकर देखेंगे; नोक्कामे–ऐसा देखने न देते हुए; नोऩ् कणैयाल्–सशक्त अस्त्र से; ऎऩ् कळुत्तै–मेरा गला; नीक्कुवाय्–काट दो; नीक्किय पिऩ्–अलग करने के बाद; नॆट्टु तलैयै–बड़े सिर को; करु कटलुळ्–काले सागर में; पोक्कुवाय्–भिजवा दो; निऩ्ऩै वेण्टुकिऩ्ऱ–तुमसे जो याचना करता हूँ; पॊरुळ् इतु–वह कार्य यह है; ऎऩ्ऱाऩ्–कुम्भकर्ण ने कहा। १५६३

(और एक बात है—) मुनिगण और देव लोग नासिका-हीन मुख का तमाशा देखने लगेंगे। उनको ऐसा अवकाश न देते हुए तुम अपने सबल अस्त्र से मेरा गला काट दो और सिर को धड़ से अलग कर दो। फिर उस बड़े सिर को काले रंग के सागर में मग्न करके छिपा दो। यह मेरी तुमसे याचना का विषय है। कुम्भकर्ण ने अपनी बात समाप्त की। १५६३

वरङ्गॊण्डा ऩिदिमऱुत्तल् वऴक्कऩ्ऱॆऩ् ऱॊरुवाळि
उरङ्गॊण्ड तडञ्जिलैयि ऩुयर्नॆड्डुना णुट्कॊळुवाच्
चिरङ्गॊण्डाऩ् कॊण्डदऩैत् तिण्काऱ्ऱिऩ् कडुम्बडैयाल्
अरङ्गॊण्ड करुङ्गडलु ळऴुवत्तु ळऴुत्तिऩाऩ् 1564

वरम् कॊण्टाऩ्–वर माँगता है; इति–अब; मऱुत्तल्–इन्कार करना; वऴक्कु अऩ्ऱु–क्रम नहीं होगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; उरम् कॊण्ट–बलसंयुक्त; तट चिलैयिऩ्–बड़े धनु के; उयर् नॆट्टु नाण्–उत्कृष्ट लम्बा डोरा; उळ् कॊळुवा–अन्दर से बाँधकर; ऒरु वाळि–एक अस्त्र से; चिरम् कॊण्टाऩ्–सिर काट दिया; कॊण्टततै–कटे उसको; तिण्–कठोर; काऱ्ऱिऩ् कटु पटैयाल्–तेज वायवास्त्र द्वारा; अरम् कॊण्ट–पाताल तक गहरे; करुकटलुळ् अऴुवत्तुळ्–काले सागर की गहराई में; अऴुत्तिऩाऩ्–धँसा दिया। १५६४

श्रीराम ने सोचा कि यह वर माँगता है, अस्वीकार करना उचित क्रम नहीं होगा। इसलिए उन्होंने एक सबल धनु के अन्दर से डोरा चढ़ाया

और एक बाण चलाकर कुंभकर्ण के सिर को काट दिया। उस कटे सिर को उन्होंने तेज़ वायवास्त्र द्वारा पाताल तक गहरे उस काले सागर के मध्य गहराई में मग्न करवा दिया। १५६४

माक्कूडु पडर्वेलै मरिमहरत् तिरैवाङ्गि
मेक्कूडु किळक्कूडु मिक्किरण्डु तिक्कूडु
पोक्कूडु तविर्त्तिरुहण् पुहैयोडु पुहैयुयिर्क्क
मूक्कूडु पुहप्पुक्कु मूळ्हियदम् मुहक्कुन्ऱम् 1565

मा कूटु–प्राणियों से पूर्ण; पटर्–विस्तृत; मकरम् वेलै–मकरालय में; मऱि तिरै वाङ्कि–मुड़नेवाली लहरों को हटाकर; मेक्कु ऊटु–पश्चिम दिशा में; किळक्कु ऊटु–पूर्व दिशा में; मिक्कु इरण्टु तिक्कु ऊटु–अन्य दो दिशाओं में; पोक्कूट तविर्त्तु–जाना छोड़कर; इरु कण्–दोनों आँखों से; पुकै योटु पुकै उयिर्क्क–(अस्त्र के) धुएँ के साथ धुएँ के निकलते; अ मुक कुन्ऱम्–वह मुख रूपी पर्वत; मूक्कु ऊटु–नाक से होकर; पुक–जल के घुसने से; पुक्कु–डूबकर; मूळ्कियतु–(अवश्य) मग्न हो गया। १५६५

जलप्राणियों से भरे उस विस्तृत सागर में वह सिर न पूरब में गया; न पश्चिम की दिशा की ओर। न ही वह अन्य दो दिशाओं में गया। उसकी दोनों आँखों से अस्त्रों के धुएँ से अतिरिक्त धुआँ निकल रहा था। वैसे ही वह मुख-पर्वत नाक के द्वारा जल के घुसते एकदम गर्क हो गया। १५६५

आडिन्ऩार् वान्ऩवर्ह ळरमहळि रमुदविशै
पाडिन्ऩार् मादवरुम् वेदियरुम् पयन्दीर्न्दार्
कूडिन्ऩार् पडैत्तलैवर् कॊऱ्ऱवऩैक् कुडर्हलङ्गि
ओडिन्ऩा रडलरक्क रिरावणऩुक् कुणर्त्तुवान् 1566

वानवर्कळ्–देव; आटिन्ऩार्–नाचे; अर मकळिर्–देवांगनाएँ; अमुतम् इचै पाटिन्ऩार्–मधुर संगीत गायीं; मातवरुम्–महान् तपस्वी और; वेतियरुम्–वेदज्ञ ब्राह्मण; पयम् तीर्न्तार्–भय से छूट गये; पटै तलैवर्–सेनानायक; कॊऱ्ऱवऩै–विजयराघव से; कूटिन्ऩार्–आ मिले; अटल् अरक्कर्–बलवान राक्षस; कुटर् कलङ्कि–पेट में खलबली के मचते; इरावणऩुक्कु उणर्त्तुवान्–रावण को बताने; ओटिन्ऩार्–दौड़े। १५६६

देवगण नाच उठे। अप्सराएँ मधुर गीत गायीं। तपोधन, ऋषि लोग, वेदज्ञ ब्राह्मण, सब भय-विमुक्त हो गये। वानर सेनापति अपने श्रीविजय-राघव से जा मिले। सबल राक्षसों के पेट में खलबली मच गयी। वे रावण को समझाने के लिए दौड़े। १५६६

16. मायाशऩ्हप् पडलम् (माया-जनक पटल)

अव्वळिक् करुणऩ् शॅय्द पेरॅळि लाण्मै यॅल्लाम्
शॅव्वळि युणर्वु तोऩ्ऱच् चॅप्पिऩऩ् जिऱुमै तीरा
वॅव्वळि मायै यॊऩ्ऱु वेऱिरुन् दॅण्णि वेट्कै
इव्वळि यिलङ्गै वेन्द ऩियऱ्ऱिय वियम्ब लुऱ्ऱाम् 1567

अ वळि–उस स्थान (समरांगण) में; चॅ वळि–सीधे मार्ग पर; करुणऩ् चॅय्त–कुंभकर्ण ने जो किया; पेर् ॲळिल्–बड़ा ही सुन्दर; आण्मै ॲल्लाम्–सभी वीरकृत्य; उणर्वु तोऩ्ऱ–खूब समक्ष में आ जाए ऐसा; चॅप्पिऩम्–हमने कहा; इ वळि–यहाँ; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंकाराज; वेट्कै–(सीता-) प्रेम से; वॅ वळि–बुरे मार्ग की; चिऱुमै तीरा–जो नीचता से अलग नहीं था; ऒऩ्ऱु मायै–अनुपम माया को; वेऱु इरुन्तु ॲण्णि–अलग रहकर सोचकर; इयऱ्ऱियतु–जो किया; इयम्पल् उऱ्ऱाम्–कहने लगते हैं। १५६७

(कवि कहते हैं कि) अब तक हमने, युद्धभूमि में कुंभकर्ण ने सीधे मार्ग से जो अत्यन्त सुन्दर वीरकृत्य किये उनका, मन में बैठ जाएँ, ऐसा वर्णन किया। अब लंकेश ने सीताप्रेम से प्रेरित होकर क्रूर मार्ग की नीचता भरी और अनुपम माया रचने का, अकेले रहकर, विचार करके जो कार्य किया उसको बखानेंगे। १५६७

मादिरङ् गडन्द तोळाऩ् मन्दिर विरुक्कै वन्द
मोदर नॅऩ्ऩु नामत् तॊरुवऩै मुऱैयि ऩोक्किच्
चीदैयै यॅय्दि युळ्ळञ् जिऱुमैयिऱ् ऱीरुञ् जॅय्है
यादॅऩक् कुणर्त्ति यिऩ्ऱॆऩ् ऩिऩ्ऩुयि रीदि यॆऩ्ऱाऩ् 1568

मातिरम् कटन्त तोळाऩ्–दिग्विजयी भुजा वाले ने; मन्तिर इरुक्कै वन्त–मन्त्रणामण्डप में आये; मोतरऩ् ॲऩ्ऩुम् नामत्तु–महोदर नाम के; ऒरुवऩै–एक राक्षस को; मुऱैयिऩ् नोक्कि–सीधे देखकर; चीतैयै ॲय्ति–सीता को प्राप्त करके; उळ्ळम्–मन; चिऱुमैयिल् तीरुम्–दुःख से छूट जाए ऐसा; चॅय्कै–उपाय; यातु–क्या है; ॲऩक्कु उणर्त्ति–मुझे समझा दो; इऩ्ऱु–(और) आज; ॲऩ् इऩ् उयिर्–मेरे प्यारे प्राण; ईति–दिला दो; ॲऩ्ऱाऩ्–याचना की। १५६८

दिग्विजयी भुजाओं वाला रावण मंत्रणागृह में आया। वहाँ महोदर नामक राक्षस से साफ़-साफ़ पूछा की मुझे सीता को प्राप्त करके अपने मन की व्यथा दूर करनी है। उसका उपाय क्या है? बताओ। और अब मेरे प्राण बचा दो। १५६८

उणर्त्तुवॅऩ् ऩिऩ्ऱे नऩ्ऱो रुबायत्ति ऩुऱुदि मायै
पुणर्त्तुवॅऩ् शीदै ताऩे पुणर्वदोर् विऩैयम् बोऱ्ऱिक्

कणत्तुवन् शनहन् उन्नैक् कट्टिनॅन् कॉणर्न्दु काट्टिन्
मणत्तॉळिल् पुरियु मन्ऱे मरुत्तनै युरुव माऱ्ऱि 1569

इन्ऱे–अभी; नन्ऱ–अच्छे; ओर् उपायत्तितन्–एक उपाय द्वारा; उऱुति उणर्त्तुवॅन्–हित समझा दूंगा; चीतै–सीता; ताते पुणर्वतु–स्वयं आकर मिले, ऐसा; ओर् मायै–एक मायाकृत्य; पुणर्त्तुवॅन्–करूँगा; वितैयम् पोऱ्ऱि–साजिश करके; मरुत्तनै–मरुत को; कणत्तु–एक ही क्षण में; उरुवम् माऱ्ऱि–रूप बदलकर; वन् चतकन् तत्तै–(वैसे बने) सबल जनक को; कट्टिनॅन्–बाँधकर; कॉणर्न्दु काट्टिन्–लाकर दिखाऊँ तो; मणम् तॉळिल्–विवाह का कार्य; अन्ऱे पुरियुम्–तभी कर लेगी। १५६६

(महोदर ने आश्वासन दिया। उसने कहा—) अभी एक बहुत कारगर उपाय बताकर तुम्हारा भला करूँगा। ऐसी माया रचूँगा कि सीता स्वयं आकर तुमसे मिल जाएगी। माया द्वारा मरुत नामक राक्षस को एक क्षण में जनक के रूप में बदल दूँगा। फिर उस हठी जनक को बाँधकर लाऊँगा और सीताजी को दिखाऊँगा। सीता तभी तुमसे विवाह करने को सम्मत हो जायगी ताकि जनक को छुटकारा मिले। १५६९

ऍन्नवव नुरैत्त लोडु मॅळुन्दुमार् बिऱुहप् पुल्लि
अन्नैयवन् ऱन्नैक् कॉण्डाङ् गणुहुदि यन्ब वॅन्नाप्
पुन्मलर्च् चरळच् चोलै नोक्किन नॅळुन्दु पोनान्
वित्तैहळैक् कऱ्पिन् वॅन्ऱ विळक्किनै वॅरुवल् काण्बान् 1570

ऍन्न–ऐसा; अवन्–उसके; उरैत्तल् ओटुम्–कहते ही; ऍळुन्तु–उठकर; मार्पु इऱुक पुल्लि–गले से कसकर लगाकर; अन्प–प्यारे; अन्नैयवन् तन्नै कॉण्टु–ऐसे उसको लेकर; आङ्कु अणुकुति–वहाँ (आ) जाओ; ऍन्ना–कहकर; वित्तैकळै–वंचना के कर्मों को; कऱ्पिन् वॅन्ऱ–अपने सतीत्व के द्वारा हरानेवाली; विळक्किनै–दीप-सी सीता को; वॅरुवल् काण्पान्–भयभीत देखना चाहता; मलर् पुन्–पुष्पों से शोभित; चरळम् चोलै–मधुर अशोक वन को; नोक्कितन्–उद्दिश्य करके; ऍळुन्तु पोनान्–उठकर चला। १५७०

उसके यों कहते ही रावण उठा और उसे खूब कसकर छाती से लगा लिया। उसने महोदर से कहा कि प्यारे! उसे लेकर वहाँ जाओ। फिर वह सतीत्व के बल से माया-कार्यों को हरानेवाली, दीप-सी सीता को भय दिखाने के विचार से पुष्पों से शोभायमान मधुर अशोक वन को लक्ष्य करके उठ चला। १५७०

पण्गळार् किळवि शॅय्दु पवळत्ता लदर माक्किप्
पॅण्गळा नार्क्कुळ् नल्ल वुरुप्पॅलाम् बॅरुक्कि योट्टि

यॆण्गळा लळवा मातक् कुणन्दॊहुत् तियट्रि ताळैक्
कण्गळा लरक्कन् कण्डा नवळॆयोर् कलक्कङ् गाण्बान् 1571

किळवि–वचन को; पण्कळाल्–संगीत से; चॆय्तु–बनाकर; अतरम्–अधरों को; पवळत्ताल् आक्कि–प्रवाल का बनाकर; पॆण्कळ् आतारक्कुळ्–स्त्री-जाति के; नल्ल उरुप्पु ॲलाम्–श्रेष्ठ सभी अंगों को; पॆरुक्कि ईट्टि–मिला लेकर; ऍण्कळाल् अळवा मातम्–संख्या द्वारा अगण्य परिमाण में; कुणम्–गुणों को; तॊकुत्तु–एकत्रित करके; इयट्रिताळै–रचित; अवळै–उस सीतादेवी को; ओर् कलक्कम् काण्पान्–व्यथित कर देखने के लिए; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; अरक्कन् कण्टान्–राक्षस (रावण) ने देखा। १५७१

रावण ने मधुर-संगीत की वाणी, प्रवाल-से अधर, स्त्री-जाति के सर्वोत्कृष्ट अंगों और अनंत सर्वश्रेष्ठ गुणों के साथ सृष्ट सीतादेवी को व्यथा देने का उद्देश्य लेकर अपनी दृष्टि उस पर दौड़ायी। १५७१

मिन्नॊळिर् महुड कोटि यिळवॆयिल् विरित्तु वीशत्
तुन्निरु ळिरिन्दु तोट्पच् चुडर्मणित् तोळिऱ् ऱोन्रुम्
पॊन्नरि मालै नील वरैयिन्वी ळरुवि पॊऱ्प
नत्तॆडुङ् गळिमा लियानै नाणुर नडन्दु वन्दान् 1572

मिन् ऑळिर्–विद्युत्-से प्रकाशमय; मकुटम् कोटि–किरीटों की चोटी; इळ वॆयिल्–बालातप से प्रकाश; विरित्तु वीच–विस्तृत रूप से छिटक रही; तुन् इरुळ्–(इससे) घना अंधकार; तोऱ्ऱ इरिय–हारकर अस्त-व्यस्त हुआ; चुटर् मणि–चमकीले रत्नाभरण से भूषित; तोळिन् तोन्रुम्–कन्धों पर रहनेवाले; पॊन् अरि मालै–स्वर्ण का फूलों के रूप में बना हार; नील वरैयिन्–नीली गिरि पर से; वीऴ् अरुवि–गिरनेवाली सरिता के समान; पॊऱ्प–शोभायमान था; नल्–अति; नॆटु–श्रेष्ठ; कळि माल् यानै–मत्त और बड़ा गज; नाण् उऱ–शरमाए ऐसा; नटन्तु वन्तान्–पग धरता आया। १५७२

उसके विद्युत्-सा प्रकाश फैलानेवाले किरीटों की चोटियाँ बालातप-सा प्रकाश छिटका रही थीं। इसलिए घना अन्धकार अस्त-व्यस्त हो रहा था। चमकते रत्नाभरणों से भूषित कंधों पर स्वर्ण-निर्मित फूलों का हार नीली गिरि से गिरनेवाली सरिता के समान शोभा दे रहा था। वह उत्तम लक्षणों से पूर्ण श्रेष्ठ मत्तगज के समान पग धरता आया। १५७२

विळक्कॊरु विळक्कन् दाङ्गि मिन्नणि कलाबम् शुट्रि
यिळैप्पुरु मरुङ्गु नोव मुलैशुमन् दियङ्गु मापोल्
मुळैप्पिऱै नॆऱ्ऱि वात मडन्दैयर् मुन्नुम् बिन्नुम्
वळैत्तनर् वन्दु शूऴ्ऴ वन्दिहर् वाऴ्त्त वन्दान् 1573

मुळै पिऱै–उगनेवाले बालचन्द्र के समान; नॆऱ्ऱि–भालों की; वातम् मटन्तैयर्–देवललनाएँ; विळक्कु–एक दीप; विळक्किनै ताङ्कि–दूसरे दीप को धरकर;

मित् अणि कलापम्–चमकदार कलाप; चुऱ्ऱि–लपेटकर; इळैप्पु उऱ–महीन पड़नेवाली; मरुङ्कुल् नोव–कमर को दुःख देते हुए; मुलै चुमन्तु–स्तन ढोकर; इयङ्कुमा पोल्–संचार करता जैसे; मुन्तुम् पिन्तुम्–आगे और पीछे; वळैत्तत्तर्–घेरकर; वन्तु चूळ–आ इकट्ठी हुई और; वन्तिकर्–वंदी लोग; वाळ्त्त–यशोगान करते आये इस साज में। १५७३

उसके साथ दीप लेते हुए अप्सराएँ घेरे आयीं। उनमें हर एक ऐसे एक अनोखे दीप के समान लगी जिसका ललाट बालचंद्र के समान हो, जिसकी कमर को कलाप अलंकृत कर रहा हो; और जो दुर्बल होती कमर को पीन स्तन ढोने का दुःख देते हुए दूसरा दीप उठाकर चला आ रहा हो। वंदीगण भी यशोगान गाते साथ आये। १५७३

इट्टदो रिरण पीडत् तमररै यिरुक्कै नित्रुम्
कट्टदोर् कातज् जुऱ्ऱक् कळ्ळोन्ऱु कवानिर् काण
वट्टवॆण् कविहै योङ्गच् चामरै मरुङ्गु वीशत्
तॊट्टदोर् शुरिहै याळ तिरुन्वन तिनैय शॊन्नान् 1574

अमररै–देवों को; इरुक्कै नित्रुम्–उनके वासस्थान से; कट्ट तोळ् कातम्–जिन्होंने खदेड़ दिया, उन भुजाओं का वन (समूह); चुऱ्ऱ–चारों ओर लगे रहे; कळ्ळल् ऑन्ऱु–एक पैर के; कवातिल् काण–ऊरु पर दिखते; वट्टम् वॆण् कविकै–गोल श्वेत छत्र; ओङ्क–ऊपर छाया रहा, ऐसे; चामरै–चामरों के; मरुङ्कु वीच–पार्श्व में डुलते; तॊट्टतु ओर् चुरिकै आळत्–(कमर में) खोंसी हुई छुरी वाला बन; इट्टतु–रखे हुए; ओर् इरणम् पीटत्तु–एक हिरण्य (स्वर्ण) के आसन पर; इवन्तत्तन्–बैठा हुआ; इतैय चॊन्नान्–यों बोला। १५७४

रावण एक स्वर्णासन पर आसीन हो गया। देवों को उनके वासस्थान से जिन्होंने खदेड़ा था, उन हाथों का वन-सा उसके चारों ओर दिख रहा था। उसका एक पैर दूसरे पैर के ऊपर रखा हुआ था। ऊपर गोल और श्वेत छत्र शोभ रहा था। चामर पार्श्वों में डुलाए जा रहे थे। कमर में छुरी खोंसी हुई थी। वह सीताजी से यों बोला। १५७४

ऎन्ऱुता तडिय नेतुक् किरङ्गुव दिन्वु वॆन्बात्
ऎन्ऱुता तिरवि योडुम् वेऱुमै तॆरिव वॆन्बाल्
ऎन्ऱुता ननङ्ग वाळिक् किलक्किला दिरुक्क लाव
वॆन्ऱुता नुऱ्ऱ वॆल्ला मियम्बुवा नॆडुत्तुक् कॊण्डान् 1575

अटियतेतुक्कु–मुझ दास को; इरङ्कुवतु ऎन्ऱु तात्–दया दिखाना भी कब हो; ऎन् पाल्–मेरे मन में; इरवियोटुम् इन्तु ऎन्पात्–रवि और चाँद में; वेऱुमै तॆरिवतु–फ़र्क़ मालूम होना; ऎन्ऱु तान्–किस दिन होगा; अतङ्क वाळिक्कु–अनंगशरों का; इलक्कु इलातु–निशाना न बनकर; इरुक्कल् आवतु–रहना होगा;

ॲन्ऱु तान्–किस दिन ही तो; ॲन्ऱु–ऐसा; तान् उऱ्ऱतु ॲल्लाम्–आप-बीती सब; इयम्बुवान्–कहने के लिए; ॲट्टुत्तु कॉण्टान्–कहना आरम्भ किया (रावण ने)। १५७५

तुम मुझ दास पर कब दया करोगी ? मैं सूर्य और चंद्र में किस दिन भेद देख सकूँगा ? (अब दोनों मुझे जला रहे हैं।). अनंग-शर का निशाना बनने से कब छुटकारा मिलेगा ? रावण ऐसा पूछकर आगे अपने अनुभूत कष्टों का बखान करने लगा। १५७५

वञ्जने तॅंतक्कु नाने मादरार् वडिवु कॉण्ड
नञ्जुतो यमुद मुण्बा नच्चिने नाळुन् देयन्द
नॅञ्जुनेर्न् दुम्मै नायेन् निनैप्पुविट् टावि नीक्क
वञ्जिने नडिय नेनु मडैक्कल ममुदिन् वन्दोर् 1576

वञ्चतेन्–वंचक मैंने; ॲंतक्कु नाने–अपने लिए आप ही; मातरार् वटिवु कॉण्ट–स्त्री रूपी; नञ्चु तोय्–विषमिश्रित; अमुतम् उण्पान्–अमृत खाना; नच्चितेन्–चाहा; नाळुम् तेय्न्त–दिने-दिने क्षीण होते हुए; नॅञ्चु नेर्त्तु–मन से; नायेन्–दास मैं; उम्मै निनैप्पु विट्टु–तुम्हारा स्मरण करना छोड़कर; आवि नीक्क–प्राण त्यागने से; अञ्चितेन्–डरता हूँ; अमुतिन् वन्तीर–अमृत के साथ उत्पन्न; अटियनेन्–मैं; उम् अटैक्कलम्–तुम्हारी धरोहर हूँ। १५७६

वंचक मैंने स्वयं स्त्री-रूप में रहनेवाले विष-मिश्रित अमृत को खाना चाह लिया। मेरा मन दिनों दिन दुर्बल होता जाता है। पर मन से मैं नहीं चाहता कि आपका स्मरण छोड़कर प्राण त्याग दूँ। (स्मरण छोड़ देता तो प्राण चले जाते। अतः मन के निर्बल होने पर भी स्मरण करना नहीं छोड़ता।) मैं मरने से डरता हूँ। हे अमृत के साथ उत्पन्न सीते ! मैं तुम्हारी धरोहर हूँ। (इस पद्य में रावण के आंतरिक सद्भावों और ऊपर के दुर्गुणों का मिश्रण साफ़ है।)। १५७६

तोऱ्पित्तीर् मदिक्कु मेनि शुडुवित्तीर् तॅन्ऱल् तूऱ्ऱ
वेर्प्पित्तीर् वयिरत् तोळै मॅलिवित्तीर् वेनिल् वेळै
आर्प्पित्ती रॅन्नै यिन्न लऱिवित्ती रमर रच्चन्
दीर्प्पित्ती रिन्न मॅन्नॅन् शॅय्वित्तुत् तीर्दि रम्मा 1577

तोऱ्पित्तीर्–(तुमने) मुझे पराजित कर दिया; मतिक्कु–चन्द्र द्वारा; मेनि–मेरे शरीर को; चुट्टुवित्तीर्–जलवा दिया; तॅन्ऱल् तूऱ्ऱ–मलयपवन के साथ सीकरों द्वारा; वेर्प्पित्तीर्–स्वेदयुक्त करा दिया; वयिरम् तोळै–वज्रस्कन्ध को; मॅलिवित्तीर्–पतला करा दिया; वेनिल् वेळै–वसंतराज (मन्मथ) को; आर्प्पित्तीर्–कोलाहल मचाने दिया है; ॲन्नै–मुझे; इन्नल् अऱिवित्तीर्–दुःख सिखा दिया; अमरर् अच्चम्–देवों को डर से; तीर्प्पित्तीर्–मुक्त करा दिया; इन्नम्–और भी;

ऍन्नॅन् चॅय्वितुतु–क्या-क्या कराकर; तीर्तिर्–चुकता करनेवाली हो; अम्मा–हाय मैया। १५७७

तुमने मुझे परास्त कर दिया। चन्द्र द्वारा मेरे शरीर को ताप दिलवा दिया। मलय-पवन और जल-सीकरों द्वारा स्वेद पैदा कर दिया। वज्र के समान मेरे कन्धों को अस्थूल बनवा दिया। वसंतकाल के राजा मन्मथ को विजय-कोलाहल मचाने दिया। मुझे सिखा भी दिया कि कष्ट क्या है? देवों के भय को दूर कर दिया। आगे और क्या-क्या क्रूरताएँ कर चुकना चाहती हो?। १५७७

पॅण्णॅला नीरे याक्किप् पेरॅला मुमदे याक्किक्
कण्णॅला नुङ्ग णाक्किक् कामवे ळॅन्नु नामत्
तण्णलॅय् वातु माक्कि यैङ्गणैक् करियत् तक्क
पुण्णॅला मॅन्क्के याक्कि विबरीदम् बुणर्त्तु विट्टीर् 1578

पॅण् ऍलाम्–सारी स्त्रियाँ; नीरे आक्कि–तुमको बनाकर; पेर् ऍलाम्–सारे नाम; उमते आक्कि–तुम्हारा ही बनाकर; कण् ऍलाम्–सारी आँखों को; नुम् कण् आक्कि–तुम्हारी आँखें बनाकर; कामम् वेळ्–कामदेव; ऍन्नुम् नामत्तु–के नाम के; अण्णल्–महिमावान को; ऍय्वातुम् आक्कि–सुमनशरप्रेषक बनाकर; ऐ कणैक्कु अरिय तक्क–पाँचों शरों से वेधकर बनाने योग्य; पुण् ऍलाम्–सारे व्रण; ऍन्क्के आक्कि–मेरे ही बनाकर; विपरीतम्–बड़ा अनर्थ; पुणर्त्ति विट्टीर्–रच दिया है। १५७८

अब सारी स्त्रियाँ मेरे लिए तुम एक ही हो गयीं। सारे नाम तुम्हारा एक नाम हो गये हैं। मेरी सभी आँखें तुम्हारी आँखों को ही देखना चाहती हैं। तुमने कामदेव को मुझ पर शर चलानेवाला बना दिया है। उसके पाँच शरों से हो सकनेवाले सारे व्रण मेरे हो गये हैं। यह सब तुमने करके क्या ही अनर्थ रच लिया है!। १५७८

ईशन्ते मुदला मर्रै मानिड रिरुदि यारुम्
कूशमून् रुलहुङ् गाक्कुङ् गॉर्रत्तेन् वीरक् कोट्टि
पेशुवा रॉरुवर्क् कावि तोर्रिलॅन् पॅण्बाल् वॅत्त
आशैनोय् कॉन्रु वॅन्रा लाण्मैमा शुणणा दौतान् 1579

ईचन्ते मुतलाम्–ईश्वर (शिव) आदि; मर्रै मातिटर् इरुति–इस ओर मनुष्य तक; यारुम्–सभी; कूच–भय करें ऐसा; मून्रु उलकुम्–तीनों लोकों का; काक्कुम्–पालन करनेवाले; कॉर्रत्तेन्–विजयी वीर मैंने; वीरम् कोट्टि–वीरों की गोष्ठी में; पेचुवार्–उल्लेख किये जानेवाले; ऑरुवर्कु–किसी के सामने; आवि तोर्रिलेन्–प्राण नहीं हारे हैं; पॅण् पाल् वॅत्त आचै नोय्–स्त्री पर रखे प्रेम-रोग ने; कॉन्रतु–हत्या कर दी; ऍन्राल्–कहा जाय तो; आण्मै–वीरता; मासु उणणातो–कलंक नहीं खा जायगी क्या। १५७९

शिव से लेकर मनुष्य तक मुझसे डरते हैं। त्रिलोकपालक विजयी हूँ मैं। वीरों की गोष्ठी में रखने योग्य किसी से मैं अब तक हारा नहीं हूँ। ऐसे मुझे स्त्री पर रखे प्रेम ने मार दिया तो मेरी वीरता कलंकित नहीं हो जायगी क्या ? । १५७९

नोयित्तै नुहर वेयु नुणङ्गिनिऩ् रुणङ्गु मावि
नायुयि राहु मऩ्ऱे नाळ्पल कऴिन्द कालॆप्
पायिर मुणर्न्द नूलोर् कामत्तुप् पहुत्त पत्ति
यायिर मल्ल पॊऩ्ऩे वॆयिरण् डॆऩ्बर् पॊय्ये 1580

पॊऩ्ऩे–श्रीदेवी; नुणङ्कि निऩ्ऱु–क्षीण हो रहकर; उणङ्कुम् आवि–कुम्हलानेवाले मेरे प्राण; नोयित्तै नुकरवेयुम्–कामरोग-पीड़ित होने पर; नाळ् पल कऴिन्त काले–ऐसे ही अधिक दिन बीत जायँगे तो; नाय् उयिर् आकुम् अऩ्ऱे–कुत्ते का जन्म न मिलेगा; पायिरम् उणर्न्त नूलोर्–आद्यन्त पढ़कर शास्त्रज्ञ बने लोग; कामत्तु पकुत्त पत्ति–कामरोग की अवस्थाओं की गणना में; पॊय्ये–झूठ-मूठ; ऐयिरण्टु ऍऩ्पर्–दस ही कहते हैं; आयिरम् अल्ल–केवल हज़ार भी नहीं। १५८०

श्रीदेवी ! मेरे प्राण कुम्हला रहे हैं। कामरोग-पीड़ित अवस्था में अनेक दिन बीत जायँ और मैं मर जाऊँ तो कुत्ते का जन्म ही न लेना पड़ेगा। संपूर्णशास्त्रज्ञ विरह की दस ही अवस्थाएँ गिनाते हैं। पर वह झूठ है। वे हज़ार भी नहीं उससे भी अधिक हैं। (अभिलाषा, चिंता, स्मृति, उद्वेग, गुण-कथन, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण ये विरह की दस अवस्थाएँ कही जाती हैं।) । १५८०

अऱन्दरुम् शॆल्व मऩ्ऩी रमुदिऩु मिनियी रॆऩ्ऩैप्
पिऱन्दिल ताक्क वन्दीर् पेरॆऴिऩ् माऩङ् गॊल्ल
मऱन्दऩ पॆरिय पोऩ वरुमॆऩ्ऱु मरुन्दु तऩ्ऩाल्
इऱन्दिऱन् दुय्हिऩ् ऱेऩ्याऩ् यारिदु तॆरियु मीट्टार् 1581

अऱम् तरुम्–धर्म-प्राप्त; चॆल्वम् अऩ्ऩीर्–सम्पत्ति के समान रहनेवाली; अमुतिऩुम् इतियीर्–अमृत से भी मधुर; ऍऩ्ऩै–मुझे; पिऱन्तिलन्–निरर्थ-जन्म; आक्क वन्तीर–बनाने आयीं; पेर् ऍऴिल्–आपका बड़ा सौन्दर्य; माऩम् कॊल्ल–मेरे मान का नाश कर रहा है; पॆरिय–और बड़े-बड़े कृत्य; मऱन्तऩ पोऩ–भुलाये गये और मिट गये; याऩ् इऱन्तु इऱन्तु–मैं मर-मरकर; वरुम् ऍऩ्ऱु–मिलेगी, इस आशा को; मरुन्तु तऩ्ऩाल्–दवा से; उय्किऩ्ऱेऩ्–जीवित रहता हूँ; इतु तॆरियुम्–इसको जानने का; ईट्टार् यार्–सामर्थ्य रखनेवाला कौन है। १५८१

धर्ममार्ग द्वारा प्राप्त संपत्ति के समान विद्यमान सीते ! अमृत से भी मधुर देवी ! तुम मेरे जन्म को निरर्थक बनाने आयी हो ! तुम्हारा अति-सौन्दर्य मेरे मान को मिटा रहा है और मेरे बड़े-बड़े कार्य भुलाये गये और

मिट गये हैं। मैं मर-मर जाकर 'तुम्हारी दया प्राप्त होगी' —इस आशा-दवा से जिलाया जाता रहता हूँ। इसको समझने की शक्ति रखनेवाले कौन हैं? । १५८१

अन्दर मुणरिन् मेन्ना ळहलिहै यॅन्बाळ् कादल्
इन्दिर नुणर्त्त नल्हि यॅय्दिन्ना ळिळ्क्कुऱ् ऱाळो
मन्दिर मिल्लै वेऱोर् मरुन्दिल्लै मैयल् नोय्क्कुच्
चुन्दरक् कुमुदच् चॅव्वा यमुदला लमुदच् चॉल्लीर् 1582

अमुतम् चॉल्लीर्–अमृतवाणी; अन्तरम् उणरिन्–तटस्थता से जानो तो; मेल् नाळ्–प्राचीन दिन में; अकलिकै ॲन्पाळ्–अहल्या नामक स्त्री; कातल्–अपना प्रेम; इन्तिरन् उणर्त्त–इन्द्र के बताने पर; नल्कि–सहमत होकर; ॲय्तिनाळ्–उससे मिली; इळ्क्कु उऱ्ऱाळो–पतित हुई क्या; मैयल् नोय्क्कु–काममोह के रोग के लिए; चुन्तरम्–मनोरम; कुमुतम् चॅव्वाय्–कुमुदारुणाधरनिःसृत; अमुतु अलाल्–अमृत को छोड़; वेऱु ओर्–अन्य कोई; मरुन्तु इल्लै–श्रेष्ठ दवा नहीं है; मन्तिरम् इल्लै–मन्त्र नहीं। १५८२

अमृत-वाणी! तटस्थ रहकर देखो। पहले अहल्या ने उससे प्रेम जतानेवाले इन्द्र को प्रेम-दान किया। तब क्या वह पतित हो गयी? मेरे काम-रोग की तुम्हारे कुमुदाधररस के सिवा कोई दवा है ही नहीं। कोई मंत्रोपचार भी नहीं। १५८२

ॲन्ऱुरैत् तॅळुन्दु शॅन्ऱङ् गिरुबदॅन् ऱुरैक्कु नीलक्
कुन्ऱुरैत् तालु नेराक् कुववुत्तोळ् निलत्तैक् कूड
मिन्ऱिरैत् तरुक्कन् ऱन्नै विरित्तुमीन् ऱॉहुत्त पोलुम्
निन्ऱिमैक् किन्ऱ दन्न मुडिपडि नॅडिदिन् वैत्तान् 1583

ॲन्ऱु उरैत्तु–यों कहकर; अङ्कु–यहाँ; ॲळुन्तु चॅन्ऱु–उठकर पास गया और; अङ्कु–वहाँ; इरुपतु ॲन्ऱु उरैक्कुम्–बीस कहलानेवाले; नीलम् कुन्ऱु–नीले पर्वत हैं; उरैत्तालुम्–कहा जाय तो भी; नेरा–जिनका उपमान नहीं हो सकते; कुववु तोळ्–वे स्थूल कन्धे; निलत्तै कूट–भूमि से लगें, ऐसा; मिन् तिरैत्तु–बिजली को जमा करके; अरुक्कन् तन्नै–सूर्य को; विरित्तु–प्रकाश बिलाने को उस पर रखकर; मीन् तॉकुत्त पोलुम्–नक्षत्र-समूह; निन्ऱु इमैक्किन्ऱतु–उस पर चमकते रहते हों; अन्न–ऐसा दृश्य उपस्थित करते हुए; मुटि–किरीटों को; पटि नॅटितिन्–भूमि पर देर तक; वैत्तान्–टेक रखा। १५८३

यह कहकर रावण उठा। उनके पास गया और भूमि पर गिरियों से भी अनुपमशक्य अपने बीसों हाथों को और मुकुटों को भूमि पर लगने देते हुए दण्डवत की। तब बिजली के समान मुकुटों से सूर्य का-सा प्रकाश

छूट रहा था और उनके रत्न नक्षत्रराशि का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। १५८३

वल्लिय मरुङ्गु कण्ड मानॆन मरुक्क मुऱ्ऱ
मॆल्लिय लाक्कै मुऱ्ऱु नडुङ्गिनळ् विम्मु हिन्ऱाळ्
कॊल्लिय वरितु मुळ्ळङ् गूऱुवॆन् तॆरिय वॆन्नाप्
पुल्लिय किडन्द दॊन्ऱै नोक्किनळ् पुहल्व दाताळ् 1584

वल्लियम्–व्याघ्र को; मरुङ्कु कण्ट–पास में जिसने देखा; मान् अॅन–उस हरिण के समान; मरुक्कम् उऱ्ऱ–व्यग्र हुई; मॆल्लियल्–कोमल देवी; आक्कै मुऱ्ऱुम्–शरीर भर में; नटुङ्किनळ्–काँप गयी; विम्मुकिन्ऱाळ्–सिसकतीं; कॊल्लिय वरितुम्–मारने आयगा तो भी; उळ्ळम् तॆरिय–मन की बात साफ़ समझाकर; कूऱुवॆन्–कहूँगी; अॅन्ना–सोचकर; किटन्ततु–(भूमि पर) पड़े रहे; पुल्लिय ऑन्ऱै–अल्प एक (तृण) को; नोक्किनळ्–देखती हुई; पुकल्वतु आनाळ्–कहने लगीं। १५८४

सीताजी उस हरिण के समान डर गयीं, जिसने अपने पास व्याघ्र को आया देख लिया हो। कोमलांगी सीता का मन व्यग्र हुआ; शरीर काँपने लगा और वे सिसकने लगीं। फिर सँभलकर उन्होंने निश्चय किया कि चाहे वह मुझे मारने पर ही क्यों न तुल जाय, मैं अपने मन की बात साफ़-साफ़ बता दूंगी। उन्होंने भूमि पर पड़े रहे एक अल्प तृण को संबोधित कर यों कहा। १५८४

पऴियिदु पाव मॆन्ऱु पार्क्किलै पहरत् तक्क
मॊऴियिवै यल्ल वॆन्ब दुणर्हिलै मुऱैमै नोक्काय्
किऴिहिलै नॆञ्जम् वञ्जक् किळैयॊडु मिन्ऱु काऱुम्
अऴिहिलै यॆन्ऱ पोदॆन् कऱ्पॆन्ना मऱन्दा नॆन्नाम् 1585

इतु–यह; पऴि–अपयश का है; पावम्–पाप है; अॅन्ऱु पार्क्किलै–यह नहीं देखते; पकर तक्क मॊऴि–कहने योग्य वचन; इवै अल्ल–ये नहीं है; अॅन्पतु उणर्किलै–यह भी नहीं सोचते; मुऱैमै नोक्काय्–क्रम भी नहीं देखते; नॆञ्चम् किऴिकिलै–विदीर्ण-हृदय नहीं हुए; वञ्चम् किळैयॊटुम्–वंचक भाई-बन्धुओं के साथ; इन्ऱु काऱुम्–अब तक; अऴिकिलै–मिटे नहीं; अॅन्ऱ पोतु–तो; कऱ्पु अॅन्ताम्–मेरे सतीत्व से क्या फल हुआ; अऱम् तान् अॅन् आम्–धर्म का ही क्या रहा। १५८५

तुम्हारा यह काम (इह में) अपयशदायी है और पाप है (जो पर में नरकदायी है)। यह तुम नहीं देखते। ये कहने योग्य वचन नहीं हैं—यह भी नहीं समझते। (किससे क्या बात करना—) यह क्रम भी नहीं जानते। इतना होने पर भी तुम्हारा हृदय विदीर्ण नहीं हुआ। अपने बन्धु-बान्धव

शाखाओं के साथ नष्ट नहीं हुए हो। फिर मेरे सतीत्व का क्या अर्थ रहा ? धर्म के अस्तित्व से ही क्या लाभ हुआ ? । १५८५

वानुळ मरुत्तिर् रोन्रुञ् जोल्वळि वाळु मण्णिन्
ऊनुळ वुडम्बुक् कॅल्ला मुयिरुळ वुणर्वु मुण्डाल्
तानुळ पत्तुप् पेळ्वाय् तहादन वुरैक्कत् तक्क
यानुळन् केट्क वॅन्रा लॅन्शोल्लाय् यादु शॅय्याय् 1586

वान् उळ–आकाश तक व्याप्त; मरुत्तिल् तोन्रुम्–क्रूर लगनेवाले; चोल् वळि–वचनों के अनुसार; वाळुम्–जीनेवाली; मण्णिन्–इस धरती के; ऊन् उळ–मांसमय; उटम्पुक्कु ऍल्लाम्–सभी शरीरों के साथ; उयिर् उळ–प्राण लगे हैं; उणर्वुम् उण्टु–अनुभूति भी है; तकातन उरैक्कत् तक्क–अनुचित बातें कहने में समर्थ; पत्तु पेळ् वाय् उळ–दस फटे हुए मुंह हैं; केट्क–सुनने के लिए; यान् उळन् ऍन्राल्–मैं हूँ तो; ऍन् चोल्लाय्–क्या ही नहीं कहोगे; यातु चॅय्याय्–क्या ही नहीं करोगे। १५८६

आकाश तक व्याप्त (देवलोक तक प्रभाव डालनेवाले) और क्रूरता-भरे तुम्हारे वचन के अनुसार जीनेवाले लोगों से भरी इस पृथ्वी में मांस-शरीरी लोग अनेक हैं, जिनके प्राण हैं और जिनकी ऐसी अनुभूतियाँ भी हैं। तो भी वे ऐसी बातें नहीं करते। तुम्हारे तो दस ऐसे फटे-से मुँह हैं और सुनने के लिए मैं मिल गयी हूँ। फिर तुम मनमाना क्या ही न कहोगे ? क्या ही न करोगे। १५८६

वाशवन् मलरिन् मेलान् मळुवलान् मैन्दन् मट्रैक्
केशवन् शिवनॅन् ट्रिन्दन् तन्मैयोर् तन्मै केळाय्
पूशलि नॅदिरन्दै नॅन्राय् पोर्क्कळम् बुक्क पोदॅन्
आशैयिन् कनियैक् कण्णिर् कण्डिलै पोलु मञ्जि 1587

वाचवन्–इन्द्र और; मलरिन् मेलान्–कमलासन; मळुवलान्–परशुधर शिवजी के; मैन्तन्–पुत्र; मट्रै–और; केचवन्–केशव; चिवन्–शिव; ऍन्रु इन्त तन्मैयोर्–वर्गः ऐसे प्रभावशाली देवों के; तन्मै केळाय्–हाल पर ध्यान न देकर; पूचलिन् ऍतिर्न्तनै–युद्ध में सामना किया; ऍन्राय्–ऐसा तुमने कहा; ऍन् आचैयिन् कनियै–मेरे प्रेम के पक्व फल को; पोर्क्कळम् पुक्क पोतु–जब युद्धभूमि में वे पहुँचे हैं, तब; अञ्चि–डर से; कण्णिल् कण्टिलै पोलुम्–आँखों से देखा नहीं क्या शायद। १५८७

तुम शेखी बघारते हो कि तुमने वासव, कमलासन, परशुधर शिव के पुत्र (कार्तिकेय), केशव और शिव इत्यादि का, उनके स्वभाव जाने विना ही, युद्ध में सामना करके हराया था ! पर जो मेरे प्रेम के पात्र, पक्वफल के समान रहनेवाले (श्रीराम) को, जबसे युद्ध-मैदान में पहुँचे तब से डर के कारण तुमने नहीं देखा शायद ? । १५८७

ऊणिला याक्कै पेणि युयर्पुहळ् शूडा दुन्मुन्
नाणिला दिरुन्दे नल्ले नवैयरु गुणङ्ग ळेन्नुम्
पूणॅलाम् पॉरुत्त मेनिप् पुण्णिय मूर्त्ति तन्नैक्
काणला मिन्नु मॅन्नुङ् गादला लिरुन्देन् कण्डाय् 1588

ऊण् इला–आहार-हीन; याक्कै पेणि–इस शरीर को चाहकर; उयर् पुकळ् चूटातु–उन्नत यश का अर्जन न करके; उन् मुन्–तुम्हारे सामने; नाण् इलातु–शरम त्यागकर; इरुन्तेन् अल्लेन्–रही नहीं; नवै अरु–निर्दोष; कुणक्कळ् ॲन्नुम्–गुणों रूपी; पूण् ॲलाम्–सभी आभरण; पॉरुत्त मेनि–धारण करनेवाले शरीर के; पुण्णिय मूर्त्ति तन्नै–पुण्यमूर्ति के; इन्नुम् काणलाम्–अब भी दर्शन कर सकूँगी; ॲन्नुम् कातलाल्–इस आशा से; इरुन्तेन–जीवित रही; कण्टाय्–देखो (या पूरक ध्वनि)। १५८८

यह मत समझो कि मैं अब तुम्हारे सामने आहारहीन इस शरीर को रखते हुए और उन्नत यश को त्यागकर निर्लज्ज पड़ी हूँ। निर्दोष गुणभूषित पुण्य-मूर्ति श्रीराम के दर्शन मिल जाएँगे —इसी आशा से मैं जीवित रहती हूँ। यह जान लो। १५८८

शॅन्रुशॅन् ऱळियु माविं तिरिक्कुमाऱ् चॅरुविऱ् चॅम्बॊन्
कुन्ऱुनिन् ऱनैय तम्बि पुऱक्कॉडै कात्तु निऱ्पक्
कॊन्ऱुनिन् ऱलैहळ् शिन्दि यरक्कर्दङ् गुलत्तै मुऱ्ऱुम्
वॅन्ऱुनिन् ऱुरुळुङ् गोलङ् गाणिय किडन्द वेट्कै 1589

चॅरुविल्–युद्ध में; चॅम् पॊन् कुन्ऱु–लाल स्वर्ण-गिरि; निन्ऱु अनैय–खड़ी हो जैसे; तम्पि–छोटे भाई के; पुऱम् कॊटै–तुम्हारा पीठ दिखाना (भागना); कात्तु निऱ्प–रोककर खड़े रहते; कॊन्ऱु–तुम्हें मारकर; निन् तलैकळ् चिन्ति–तुम्हारे सिरों को काट गिराकर; अरक्कर् तम् कुलत्तै–राक्षसकुल को; मुऱ्ऱुम् वॅन्ऱु–पूर्णरूप से हराकर; निन्ऱु अरुळुम्–जो शोभायमान हो दर्शन देंगे; कोलम्–उस सौंदर्य को; काणिय–देखने की; किटन्त वेट्कै–बनी रही कामना; चॅन्ऱु चॅन्ऱु अळियुम्–जा-जाकर मरनेवाले; आवि–प्राणों को; तिरिक्कुम्–लौटा लेती है। १५८९

श्रीराम के साथ लाल स्वर्ण-गिरि-सदृश उनके छोटे भाई तुमको पीठ दिखाकर भागने से रोकते हुए खड़े रहेंगे। श्रीराम तुम्हारे सिरों को काटकर गिरा देंगे, तुम्हारे राक्षसकुल को निर्मूल करके परास्त कर देंगे और शान के साथ दर्शन देंगे। उस रूप के दर्शन करने की अभिलाषा ही फिर-फिर जाकर मिटते प्राणों को रोक लेती है। १५८९

ॲन्नक्कुयिर् पिऱिदु मॊन्ऱुण् डॆण्णलै यिरक्क मल्लाल्
तन्नक्कुयिर् वेऱिन् ऱाहित् तामरैक् कण्ण वाहिक्
कन्नक्करु मेह मॊन्ऱु कार्मुहन् दाङ्गि यार्क्कुम्
मन्नक्किनि दाहि निऱ्कु मः(ह्)दन्ऱि वरम्बि लादाय् 1590

वरम्पु इलाताय्–अमर्याद; इरक्कम् अल्लाल्–करुणा के सिवा; तत्क्कु उयिर्–अपने प्राण; वेरु इन्राकि–दूसरा न रखनेवाले; तामरै कण् अतु आकि–कमलाक्ष बनकर; कतम्–घना; करु मेकम् ऑन्रु–एक काला मेघ; कार्मुकम् ताङ्कि–कार्मुक लेकर; यार्क्कुम्–सभी के लिए; मतक्कु इत्तिताकि–मनमधुर होकर; निर्कुम्–रहता हो जैसे विद्यमान; अ.ं.तु अन्रि–उसके अलावा; ऍनक्कु–मेरे; पिरितुम् उयिर् ऑन्रु–अन्य प्राण कोई; उण्टु–है; ऍन्रु–ऐसा; ऍण्णलै–मत सोचो। १५६०

अमर्याद ! मेरे उन करुणाप्राण, सर्वमनमधुर, कार्मुकधारी, कमलाक्ष काले मेघ (श्रीराम) के सिवा प्राण अलग होंगे —यह तुम मत समझो। (यानी उनके विना मैं जीवित नहीं रहूँगी)। १५९०

ऍन्रन ळॅन्र लोडु मॅरियुरु कण्णन् रन्नैक्
कॊन्रॅन मानन् दोन्रक् कूर्रॅनच् चीर्रङ् गॊण्डान्
वॅन्रॅन्नै यिराम नुन्नै मीट्टपि नवनो डावि
यॊन्रॅन वाळ्दि पोलॅन् रिडियुरु मॊक्क नक्कान् 1591

ऍन्रनळ्–कहा (सीतादेवी ने); ऍन्रलोटुम्–कहते ही; ऍरि उरु–अग्नियुक्त; कण्णन्–आँखोंवाला; तन्नै कॊन्रु ऍन–उसको कोई मारने आया हो और उसका; मातम् तोन्र–अभिमान जागा हो ऐसा; कूर्रु ऍन–यम के समान; चीर्रम् कॊण्टान्–क्रुद्ध हुआ; ऍन्नै वॅन्रु–मुझे हराकर; इरामन् उन्नै मीट्ट पिन्–राम के तुमको छुड़ाने के बाद; अवनोटु–उसके साथ; आवि ऑन्रु–एक प्राण हो; ऍन वाळ्तिपोल्–रहोगी भी शायद क्या; ऍन्रु–कहकर; उरुम् इटि ऑक्क–वज्र फूटा जैसा; नक्कान्–हँसा। १५६१

सीतादेवी ने ऐसा कहा। कहते ही रावण का, जिसकी आँखों से आग-सी निकल रही थी, मान जाग उठा मानो कोई उसे मारने आया हो। यम के समान क्रोध से भरकर उसने परिहास के स्वर में कहा कि तुम्हारे राम के मुझे हराकर तुम्हें छुड़ाने के बाद एकप्राण होकर उसके साथ जीवन विताओगी शायद ! यह कहकर ऐसा ठठाकर हँसा मानो वज्र गिरा हो। १५९१

इत्तत्तुळा रुलकत् तुळ्ळा रिमैयवर् मुदलि नारॅन्
शित्तत्तुळा रियावर् तीर्न्दार् तयरदन् शिरुवन् रन्नैप्
पुत्तत्तुळाय् माले यानॅन् रुवक्कित्र वॊरुवत् पुक्कुन्
मत्तत्तुळा नॅन्तिनुङ् गॊल्वॅन् वाळ्दि पिन्नै मन्नो 1592

उलकत्तु उळ्ळार्–भूलोकवासी; इमैयवर् इत्तत्तुळार्–देववर्ग; मुतलितार्–आदि; ऍन् चित्तत्तुळार्–मेरे कोप का पात्र बने तो; यावर् तीर्न्तार्–कौन बच अलग हुए; पुत्तम् तुळाय्–बाग में उत्पन्न तुलसी की; मालैयान्–मालाधारी; ऍन्रु–कहकर; उवक्कित्र–संतोष जो करती हो; ऑरुवन्–वह एक; उन् मत्तत्तु–

तुम्हारे मन में; पुक्कु उळान् ॲतितुम्–प्रविष्ट रहता है तो भी; तयरतन् चिरुवन् तन्नै–उस दशरथ के छोकरे को; कोल्वेन्–मार दूँगा; पिन्नै वाऴ्ति–पश्चात् तुम जीओगी। १५६२

पृथ्वीवासी हों या देववर्ग के— कौन हैं जो मेरे क्रोध के पात्र बनने के बाद जीवित बच सके हों? नंदनवनतुलसीमालाधारी कहकर जिसके स्मरण से तुम आनन्दानुभव कर रही हो वह तुम्हारे मन में प्रविष्ट रहे तो भी उस दशरथ के छोकरे को मैं मार दूँगा ही। फिर जीवित रहो मज़े से! । १५९२

वळैत्तन मदिलै वेलै वकुत्तन वरम्बु वायाल्
उळैत्तन कुरङ्गु पल्हा ॲन्रुॅह मुवन्द दुण्डेल्
इळैत्तनुण् मरुङ्गुल् नङ्गा यॅन्नॅदि रॅय्दिऱ् ऱॅल्लाम्
विळक्कॅदिर् वीऴ्न्द विट्टिऱ् पान्मैय वियक्क वेण्डा 1593

इळैत्त–महीन; नुण् मरुङ्कुल्–सूक्ष्म कमरवाली; नङ्काय्–स्त्री; कुरङ्कु–वानरों ने; वेलै वरम्पु वकुत्तन–समुद्र पर बाँध बना दिया; मतिलै वळैत्तन–प्राचीरों को घेर लिया; वायाल्–मुख से; पल् काल् उळैत्तन–अनेक बार नर्दन किया; ॲन्ऱु–यह सोचकर; अकम् उवन्ततु–मन में प्रसन्न हुई; उण्टेल्–हो तो; वियक्क वेण्टा–विस्मय मत करो; ॲन् ॲतिर् ॲय्तिऱ्ऱु ॲल्लाम्–मेरे सामने जो भी आये वे सभी; विळक्कु ॲतिर्–दीप में; वीऴ्न्त–गिरे हुए; विट्टिल् पान्मैय–फतिंगे-जैसे हैं। १५६३

पतली और सूक्ष्म कटि वाली रमणी! वानरों ने समुद्र को बाँध दिया; लंका के प्राचीरों को घेर लिया और अनेक बार शोर मचाये। यह सोचकर इतरा रही हो तो सुनो। उन पर विस्मय करना नहीं है, क्योंकि वे सब जब मेरे सामने आएँगे तब दीप के सामने आये फतिंगों की स्थिति में पड़ जाएँगे। १५९३

कॊऱ्ऱवा ळरक्कर् तम्मै ययोत्तियर् कुलत्तै मुऱ्ऱुम्
पऱ्ऱिनीर् तरुदि रन्ऱेऱ् पशुन्दलै कॊणर्दिर् पारित्
तुऱ्ऱदॊन् ऱियऱ्ऱु वीरॆन् ऱुन्दिनै तुन्दै मेलुम्
वॆऱ्ऱियर् तम्मैच् चॆल्लच् चॊल्लिनन् विरैवि नॆन्ऱान् 1594

अयोत्तियर् कुलत्तै–अयोध्या के राजकुल के; मुऱ्ऱुम् पऱ्ऱि–सारे लोगों को पकड़कर; नीर् तरुतिर्–तुम ला दो; अन्ऱेल्–नहीं तो; पचु तलै–(कटे) ताज़े सिरों को; कॊणर्तिर्–लाओ; पारित्तु–सतत प्रयत्न करके; उऱ्ऱतु ऒन्ऱु–जो सम्भव है वह एक; इयऱ्ऱुवीर्–करो; ॲन्ऱु–ऐसी आज्ञा देकर; कॊऱ्ऱम् वाळ्–विजयी तलवारधारी; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; उतित्तेन्–भेजा है; उन्तै मेलुम्–तुम्हारे पिता पर भी; वॆऱ्ऱियर् तम्मै–विजयी राक्षसों को; विरैवित् चॆल्ल–शीघ्र जाने को; चॊल्लिनन्–कहा है; ॲन्ऱान्–(रावण ने) कहा। १५६४

'अयोध्या के राजकुल के सभी को पकड़ लाओ। नहीं तो नगरवासियों को मारकर उनके ताज़े कटे सिरों को ले आओ। सतत परिश्रम करके युक्त एक कार्य कर आओ'—यह आज्ञा देकर विजय तलवारधारी राक्षसों को मैंने वहाँ भेजा है। तुम्हारे पिता पर भी 'आक्रमण करने के लिए शीघ्र चलो' ऐसा विजयवाह वीरों से भी कह आया हूँ। १५९४

ॲन्ऱव नुरैत्त काले यॆन्ऩैयिम् मायम् जॆय्दाऱ्
कॊन्ऱुमिङ् गरिय दिल्लै यॆन्बदोर् तुणुक्क मुन्द
निन्ऱुनिन् ऱुयिर्त्तु नॆञ्जम् वॆदुम्बिन्ऩाळ् नॆरुप्पै मीळत्
तिन्ऱुतिन् ऱुमिळ्हिन् ऱारिऱ् ऱुयरुक्के शेक्कै यानाळ् 1595

ॲन्ऱ–ऐसा; अवन् उरैत्त काले–उसके कहते समय; ॲन्ऩै–मेरे साथ; इ मायम् चॆय्ताऱ्कु–इस वंचना को जिसने की है उसके लिए; इङ्कु अरियतु ऒन्ऱुम् इल्लै–यहाँ कोई काम अकरणीय नहीं; ॲन्पतु–ऐसा; ओर् तुणुक्कम् मुन्त–एक डर के पैदा होते; निन्ऱु निन्ऱु उयिर्त्तु–रह-रहकर लम्बे श्वास छोड़कर; नॆञ्चम् वॆतुम्पिन्ऩाळ्–तप्तमन हुई; नॆरुप्पै–आग को; मीळ–बार-बार; तिन्ऱु तिन्ऱु–खा-खाकर; उमिळ्किन्ऱारिल्–उगलनेवाले के समान; तुयरुक्के–दुःख का ही; चेक्कै आनाळ्–आश्रय बन गयीं। १५९५

जब रावण ने यह कहा तो सीताजी ने सोचा कि जिसने मेरे साथ यह वंचना की, उसके लिए कोई भी कार्य कठिन (अकरणीय) नहीं। इस डर से वे रह-रहकर निःश्वास छोड़ने लगीं। उनका मन तप्त हुआ। उस मनुष्य के समान दुःख का आश्रय हुई जो आग को पुनःपुनः खाकर उगल रहा हो। १५९५

इत्तलै यित्त शॆय्द विदियिन्ऩा रॆन्ऩै यिन्ऩुम्
अत्तलै यन्ऩ शॆय्यच् चिऱियरो वलिय रम्मा
पॊय्त्तलै युडैय वॆल्लान् दरुममे पोलु मॆन्ऩाक्
कैत्तन ळुळ्ळम् वॆळ्ळक् कण्णिन्नीर्क् करैयि लादाळ् 1596

कण्णिन् वॆळ्ळम् नीर्–जिनकी आँखों के अश्रुजल-प्रवाह का; करै इलाताळ्–कूल-किनारा नहीं रहा वे; ॲन्ऩै–मुझे; इ तलै–इस स्थल में; इन्ऩ–इस भाँति; चॆय्त–जिसने किया वह; वितियिन्ऩार्–विधि-देव; इन्ऩुम्–और भी; अ तलै–वहाँ (अयोध्या में); अन्ऩ–वे काम; चॆय्य–करने में; चिऱियरो–असमर्थ अल्पबली हैं क्या; वलियर्–समर्थ हैं ही; पॊय्त्तलै–असत्य; उटैयतु–बनने के स्वभाववाले; ॲल्लाम्–सभी; तरुममे पोलुम्–धर्म हो गया शायद; ॲन्ऩा–सोचकर; उळ्ळम् कैत्तनळ्–कटुमन हुई। १५९६

उनकी आँखों के अश्रुजलप्रवाह का कोई बाँध ही न रहा। 'हाय!

विधिदेवता, जिसने मुझे यहाँ ऐसी दुर्गति में डाल दिया है, वहाँ अयोध्या में ऐसे काम करने में असमर्थ हों —ऐसे दुर्बल हैं क्या ? नहीं अवश्य वे शक्ति रखनेवाले ही हैं ! मिथ्या सब धर्म हो गया क्या ? यह सोचकर उनके मन ने कटुता का अनुभव किया । १५९६

आयदोर् कालत् ताङ्गण् मरुत्तनैच् चनह नाक्कि
वायतिऱन् दरर्ऱप् पर्ऱि महोदरन् कडिदिन् वन्दु
कायॅरि यनैयान् मुन्नरक् काट्टिनन् वणङ्गक् कण्डाळ्
तायॅरि वीऴक् कण्ड पार्प्पॅनत् तरिक्कि लादाळ् 1597

मकोतरन्–महोदर को; आयतु ओर् कालत्तु–ऐन समय; आङ्कण्–वहाँ; मरुत्तनै–मरुत नामक राक्षस को; चनकन् आक्कि–जनक बनाकर; वाय् तिऱन्तु अरर्ऱ–मुख खोलकर रुलाते हुए; पर्ऱि–पकड़कर; कटितिन् वन्तु–शीघ्र आकर; काय् ॲरि–धधक जलनेवाली अग्नि; अनैयान् मुन्नर्–के समान रहनेवाले (रावण) के सामने; काट्टिनन्–दिखाकर; वणङ्क–नमस्कार करते; कण्टाळ्–देखा (देवी ने); ताय्–मातापक्षी को; ॲरि वीऴ–आग में गिरते; कण्ट पार्प्पु ॲन–देखनेवाले शिशुपक्षी के समान; तरिक्किलाताळ्–सह नहीं सकीं । १५९७

तब ऐन समय पर महोदर मरुत नाम के राक्षस को जनक का माया-रूप बनाकर उसे मुख खोलकर रोने देते हुए पकड़कर सवेग ले आया । धधकती आग के समान रहनेवाले रावण के सामने दिखाकर उसने रावण को नमस्कार किया । इसको देखकर मातापक्षी को आग में गिरते देखनेवाले शिशुपक्षी के समान देवी असह्य वेदना से पीड़ित हुई । १५९७

कैहळै नॅरित्ताळ् कण्णिन् मोदिनाळ् कमलक् काल्हळ्
नॅय्यॅरि मिदित्ता लॅन्न निलत्तिडैप् पदैत्ताळ् नॅञ्जम्
मॅय्यॅन वॅरिन्दा ळेङ्गि विम्मिनाळ् नडुङ्गि वीऴ्न्दाळ्
पॊय्यॅन वुणरा ळन्बाऱ् पुरण्डरुम् बूश लिट्टाळ् 1598

पॊय् ॲन उणराळ्–मिथ्या नहीं जानतीं; अन्पाल् कैकळै नॅरित्ताळ्–पितृप्रेम से हाथों को मलतीं; कण्णिल् मोतिनाळ्–आँखों पर पीट लिया; कमलम् काल्कळ्–कमल-चरण; नॅय् ॲरि–घी से जलनेवाली आग पर; मितित्ताल् ॲन्न–रख रही हों, ऐसा; निलत्तिटै–भूमि पर; पतैत्ताळ्–अस्थिर लड़पने लगीं; मॅय् ॲन–सत्य समझकर; नॅञ्चम् ॲरिन्ताळ्–मन में तप्त हुईं; एङ्कि विम्मिनाळ्–रोयीं, सिसकीं; नटुङ्कि–काँपकर; वीऴ्न्ताळ्–भूमि पर गिर गयीं; पुरण्टु पुरण्टु–लोट-लोटकर; अरु पूचल्–अपार दुःख की चीख; इट्टाळ्–मचायी । १५९८

वे नहीं जानती थीं कि यह माया है । इसलिए पितृप्रेम से अभिभूत होकर उन्होंने हाथ मले । आँखों को पीट लिया । घी से जलनेवाली आग पर पैर रख रही हों —ऐसा वे अपने कमल-चरणों को भूमि पर रख-रख उठाने लगीं । सत्य समझकर तप्तमना हुईं । रोयीं, सिसकीं,

काँपते हुए भूमि पर गिरीं। लोटती हुई उच्च स्वर में क्रंदन-ध्वनि निकाली। १५९८

दॅय्वमे यॅन्नु मॅय्म्मै शिवॅन्ददो वॅन्नुन् दीय
वॅवलो वुलहै यॅन्नुम् वञ्जमो वलिय दॅन्नुम्
उय्वलो विन्न मॅन्नु मोन्ऱल तुयर मुऱ्ऱाळ्
तैयलो तरुम मेयो यारवळ् तन्मै तेर्वार् 1599

तॅय्वमे ॲन्नुम्–देव, पुकारतीं; मॅय्म्मै चितॅन्ततो–धर्म शिथिल हो गया क्या; ॲन्नुम्–कहतीं; उलकै तीय–लोक को जलाते हुए; वैवलो–शाप दूँ क्या; ॲन्नुम्–कहतीं; वञ्चमो–क्या वंचना ही; वलियतु–कठोर है; ॲन्नुम्–कहतीं; इन्नम् उय्वलो–अब भी जीना है क्या; ॲन्नुम्–कहतीं; ओन्ऱु अल–एक नहीं, भाँति-भाँति के; तुयरम् उऱ्ऱाळ्–दुःख का अनुभव किया; तैयलो–(दुःख किया केवल) स्त्री ने (क्या); तरुममेयो–धर्मदेवता ही ने; अवळ् तन्मै–उनकी सच्चाई; तेर्वार्–जाननेवाले; यार्–कौन हैं। १५९९

'हे देव', पुकारतीं। धर्म शिथिल पड़ गया क्या ? —कहतीं। लोक को जल जाने का शाप दे दूँ क्या ? —पूछतीं। माया सबल हो गयी क्या ? —कहतीं। अब भी जीना चाहिए क्या ? —पूछतीं। एक नहीं भाँति-भाँति के दुःख से पीड़ित हुईं। क्या दुःखदग्ध वे केवल नारी हैं या स्वयं धर्मदेवता ? उनकी सच्ची स्थिति परखने की शक्ति किसके पास है ? । १५९९

ॲन्दैये यॅन्दै येयॅन् पॊरुट्टिता लुनक्कु मिक्कोळ्
वन्ददे यॅन्नैप् पॅऱ्ऱु वाऴ्न्दवा ऱिदुवो मण्णोर्
तन्दैये ताये शॅय्द तरुममे तवमे यॅन्नुम्
वॅन्दुयर् वीङ्गित् तीवीऴ् विऱहॅन वॅन्दु वीऴ्वाळ् 1600

ॲन्तैये–मेरे पिताजी; ॲन्तैये–मेरे पिताजी; उनक्कुम्–आप पर भी; ॲन् पॊरुट्टिताल्–मेरे कारण; इ कोळ् वन्तते–यह कष्ट आ गया तो; ॲन्नै पॅऱ्ऱु–मुझे (सुता के रूप में) पाकर; वाऴ्न्त आऱु–जीने का प्रकार; इतुवो–यही क्या; मण्णोर्–पृथ्वीवासियों के; तन्तैये–पिता-(सम); ताये–माता (सम); चॅय्त तरुममे–कृत धर्म के साकार रूप; तवमे–तपोरूप; ॲन्नुम्–कहती हुई; वॅम् तुयर्–संतापक दुःख के; वीङ्कि–बढ़ने से; ती वीऴ् विऱकु ॲन–अग्नि से गिरनेवाली इंधन की लकड़ी के समान; वॅन्तु–दुःखी होकर; वीऴ्वाळ्–गिर गयीं। १६००

हे मेरे पिता ! मेरे पिता ! आप पर भी मेरे कारण यह कष्ट आ गया, हाय ! मुझे पुत्री के रूप में प्राप्त करके मिला जीवन-भाग्य यही रहा क्या ? लोकवासियों के लिए पिता-तुल्य ! माता-तुल्य ! हे तपोरूप ! हे धर्ममूर्ति ! ऐसा संबोधन करते हुए बढ़ते दुःख से पीड़ित होकर अग्निग्रस्त इंधन की लकड़ी के समान तप्त गिर गयीं। १६००

इट्टुण्डा यऱङ्गळ् शॅय्दा यॅदिर्न्दुळो रिरुक्कै यॆल्लाम्
शुट्टुण्डा युयर्न्द वेळ्वित् तुऱैयॆलाङ् गरैयुङ् गण्डाय्
मट्टुण्डार् मनिशर्त् तिन्ऱ वञ्जराल् वयिरत् तिण्डोळ्
कट्टुण्डा यॆन्ने यानुङ् गाण्गिन्ऱेन् पोलुङ् गण्णाल् 1601

इट्टु उण्टाय्–(अतिथियों को) भोजन खिलाकर वाद भोजन किया; अऱक्कळ् चॆय्ताय्–धर्मपालन किया; ऎतिर्न्तु उळोर्–विरोध करनेवालों के; इरुक्कै ऎल्लाम्–वासस्थान सब; चुट्टु उण्टाय्–जला दिया; उयर्न्त वेळ्वित् तुऱै–उत्कृष्ट याग-विभाग; ऎलाम् करैयुम् कण्टाय्–सब पार पाया; मट्टुण्टार्–ताड़ी पीनेवाले; मऩिचर् तिऩ्ऱ–नरमांसभक्षक; वञ्चराल्–वंचकों द्वारा; वयिरम् तिण् तोळ्–वज्र-सम सुदृढ़ भुजाओं को; कट्टु उण्टाय्–बँधवा चुके हैं; यानुम्–मैं भी; कण्णाल्–अपनी आँखों से; काण्किन्ऱेन् पोलुम्–देखती हूँ न; ऎन्ने–यह क्या ही (दुर्भाग्य) है। १६०१

आपने मेहमानों को भोजन खिलाने के वाद भोजन करने का धर्म निभाया। अन्य धर्मों का भी यथाक्रम पालन किया। शत्रुओं के नगरों को जला दिया। सभी उत्कृष्ट यज्ञ के सभी प्रकारों को सम्पन्न किया और पार पाया। ऐसे आप मद्यप, नरमांसाहारी और वंचकों द्वारा बद्ध-वज्रहस्त हो गये। मैं भी अपनी आँखों से इसे देखती रहती हूँ! हाय! । १६०१

ऎन्ऱिऩ पलवुम् बन्ऩि यॆऴुन्दुवीऴ्न् दिडरिऱ् ऱोय्न्दाळ्
पॊन्ऱिऩळ् पोलु मॆन्ऩाप् पॊऱियऴिन् दुयिर्प्पुप् पोवाळ्
मिऩ्तऩि निलत्तु वीऴ्न्दु पुरळ्हिऩ्ऱ दन्नैय मॆय्याळ्
अऩ्ऱिलम् बेडै पोल वाय्तिऱन् दरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ् 1602

ऎऩ्ऱु–ऐसा; इऩ पलवुम्–इस भाँति अनेक; पऩ्ऩि–कहकर; ऎऴुन्तु–उठकर; वीऴ्न्तु–गिरकर; इटरिल् तोय्न्ताळ्–दुःख में डूबकर; पॊऩ्ऱिऩळ् पोलुम् ऎऩ्ऩा–मर गयीं क्या ऐसा संशय उत्पन्न करके; पॊऱि अऴिन्तु–इन्द्रियों की शक्ति खोकर; उयिर्प्पु पोवाळ्–श्वासहीन-सी बनीं; मिऩ्–बिजली; निलत्तु–भूमि पर; तऩि वीऴ्न्तु–अकेली गिरकर; पुरळ्किऩ्ऱतु–लोटती हो; अन्नैय–ऐसे; मॆय्याळ्–शरीरवाली बनकर; अऩ्ऱिल् अम् पेटै पोल–मादा क्रौंच पक्षी के समान; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱल् उऱ्ऱाळ्–विलाप करने लगीं। १६०२

ऐसी वहुत भाँति प्रलाप करती हुई सीताजी उठीं और गिरीं। दुःख-मग्न हो मरी-सी हालत में रहीं। इंद्रियाँ संज्ञाशून्य हो गयीं। स्वास भी रुक-से गये। भूमि पर अकेले गिरकर लोटती बिजली की रेखा के समान नीचे गिरकर लोटीं ओर क्रौंची के समान विलपने लगीं। १६०२

पिऱैयुडै नुदलारुक् केऱ्ऱ पिऱन्दविऱ् कडन्गळ् शॅय्य
इऱैयुडै यिरुक्कै मूद्द रॅन्ऱुम्वन् दिरुक्क लादीर्

शिऱैयिडैक् काण नीरुम् जिऱैयिडैच् चेर्न्द वाऱो
मऱैयुडै वरम्पु नीङ्गा वऴिवन्द मन्नर् नीरे 1603

मऱै उटै–वेदविहित; वरम्पु नीङ्का–सीमा न लाँघकर (कर्मानुष्ठान में लगे रहे); मन्नर् नीरे–महाराज आप; पिऱै उटै–बालचन्द्र-सम; नुतलार्क्कु एऱ्ऱ–ललाटवालियों के योग्य; पिऱन्त इल् कटन्कळ् चेय्य–नैहर के प्रति कर्तव्य करने (को मौक़ा देते हुए); इऱै उटै–मेरे पतिदेव के; इरुक्कै–वासस्थान; मूतूर्–प्राचीन नगर को; ऍन्ऱुम् वन्तु–कभी न आकर; इरुक्कलातीर–ठहरे नहीं; नीरुम्–आप भी; चिऱै इटै काण–कारागृह में देखने; चिऱै इटै–कारागृह में; चेर्न्त आऱो–आ जाएँ, ऐसा हाल हो गया क्या। १६०३

वेदविहित सीमा का उल्लंघन किये विना नित्यकर्मानुष्ठान में लगे रहनेवाले राजा हैं आप। इसीलिए आप मेरे पतिदेव के नगर में आकर कभी नहीं रहे और मुझे चंद्रललाटिनी स्त्रियों के योग्य नैहर के प्रति अपना कर्तव्य करने का मौक़ा भी नहीं दे पाये। ऐसे आप काराबद्ध मुझे देखने के वास्ते कारा में आ गये क्या! यह भी अच्छा मिलन हुआ। १६०३

वन्शिऱैप् पऱवै यूरुम् वानवन् वरम्बिन् मायप्
पुन्शिऱैप् पोऱैयैत् तीर्प्पा नुळनॆनप् पुलवर् निन्ऱार्
ऍन्शिऱै नीक्कु वारैक् काण्गिले नॆन्निल् वन्द
उन्शिऱै विडुक्क वल्ला रियारुळ रुलहत् तुळ्ळार् 1604

वल् चिऱै पऱवै–सशक्त पंखों वाले गरुड़ पक्षी पर; ऊरुम् वानवन्–सवार होनेवाले भगवान; वरम्पिल्–निस्सीम; मायम्–माया का फल; पुल् चिऱै–क्षुद्र (भव रूपी) कारागृह के; पोऱैयै तीर्प्पान्–बन्धन से मुक्त करने के लिए; उळन्–हैं; ऍन–ऐसा; पुलवर् निन्ऱार्–पंडित लोग कहते रहते हैं; ऍन् चिऱै नीक्कुवारै–(मेरे) अपने कारावास को दूर करनेवाले को; काण्किलेन्–नहीं देख पाती; ऍन्निल् वन्त–मेरे कारण प्राप्त; उन् चिऱै–आपका बन्धन; विटुक्क वल्लार्–काटनेवाले; उलकत्तु उळ्ळार्–लोक में रहते; यार् उळर्–कौन हैं। १६०४

सशक्त पंखों वाले गरुड़ के सवार श्रीविष्णु असीम माया के फलस्वरूप मिलनेवाले भव रूपी क्षुद्र कारा से छुड़ा देने को हैं—ऐसा पंडित लोग कहते रहते हैं। पर मैं किसी को नहीं देखती, जो मुझे बंदीगृह से छुड़ा सके। अब मेरे कारण आपको यह जो कारावास मिला है, उससे आपको मुक्त करानेवाले कौन होंगे? । १६०४

पण्बॆऱ्ऱा रोडु कूडाप् पहैपॆऱ्ऱाय् पहऴि पाय
विण्बॆऱ्ऱा यॆन्नि नन्ऱाल् वेन्दरा युयर्न्द मेलोर्
ऍण्बॆऱ्ऱाय् पऴियुम् बॆऱ्ऱाय् इदुनिन्नार् पॆऱ्ऱ दन्ऱाल्
पॆण्बॆऱ्ऱा यदनार् पॆऱ्ऱा यावर्निन् पेऱु पॆऱ्ऱार् 1605

पण् पॆऱ्ऱारोट् कूटा–सभ्य लोगों से अपरिचित; पकै पॆऱ्ऱाय्–शत्रु को पा गये हैं; पकऴि पाय–शर के लगने से; विण् पॆऱ्ऱाय् ऎनिनुम्–स्वर्ग पा जाएँ तो भी; नन्ऱु–भला होगा; वेन्तराय् उयर्न्त–राजा बनकर यशस्वी बने; मेलोर् ऎण् पॆऱ्ऱाय्–उत्तम लोगों में गिने जाने का भाग्य पा चुके; पऴियुम् पॆऱ्ऱाय्–(अब) अपयश के भी भागी बन गये; इतु–यह (बुरी स्थिति); निन्ताल् पॆऱ्ऱतु अन्ऱु–आपको अपने कार्य द्वारा नहीं मिली है; पॆण् पॆऱ्ऱाय्–मुझे पुत्री के रूप में पाये; अतनाल् पॆऱ्ऱाय्–इससे मिली; नित् पेऱु–आपका(-सा) भाग्य; यावर् पॆऱ्ऱार्–कौन पाये हैं। १६०५

सभ्य लोगों का जिन्हें साथ ही नहीं मिला है, वे आपके शत्रु हो गये हैं। इनके हाथ में पड़ने से शराहत होकर स्वर्ग जाना सुखद होगा। सम्मानित राजा लोगों में गिने जाने का आपको भाग्य मिला है। अब इनके हाथ में फँसकर अपयश के भागी हो गये हैं। यह स्थिति आपकी अपनी बनायी नहीं है। मुझे सुता के रूप में पाने का यह फल है! ऐसा दुर्भाग्य भी किसे प्राप्त था ? । १६०५

शुऱ्ऱुण्ड पाश नाञ्जिऱ् चुमैयॊडुञ् जूडुण् डाऱ्ऱ
ऎऱ्ऱुण्डु मळऱ्ऱु नीङ्गा वुळुशिऱु कुण्डे यॆन्नप्
पऱ्ऱुण्ड नाळे माळाप् पाविये नुम्मै यॆल्लाम्
विऱ्ऱुण्डे नॆनक्कु मीळुम् विदियुण्डो नरहिल् वीऴ्न्दाल् 1606

पाचम् चुऱ्ऱुण्ट–रस्सी से बद्ध; नाञ्चिल्–हल में; चुमैयॊटुम्–बोझे के साथ; चूटुण्टु–गरमी पाकर; आऱ्ऱ ऎऱ्ऱुण्टुम्–बहुत पिटकर; अळऱ्ऱु नीङ्का–कीचड़ से बाहर न आकर; उऴु–जीतनेवाले; चिऱु कुण्टे ऎन्न–छोटे बैल के समान; पऱ्ऱुण्ट नाळे–वश में जिस दिन हुई उसी दिन; माळा–जान जिसने त्याग नहीं दी वह; पावियेन्–पापिनी मैं; उम्मै ऎल्लाम्–आप सबको; विऱ्ऱु उण्टेन्–बेचकर खा चुकी हूँ; नरकिल् वीऴ्न्ताल्–नरक में गिर जाऊँ तो; ऎनक्कु–मेरा; मीळुम् वितियुण्टो–बचने का मार्ग होगा क्या। १६०६

मैं उस छोटे बैल के समान हूँ, जो मोटी रस्सी से हल से बद्ध होकर हल का बोझा उठाते हुए गरम हुए शरीर के साथ, मार खाकर कीचड़ से बाहर न आकर जोत रहा हो। उसी दिन, जिस दिन मैं पकड़ी गयी, पापिनी मैंने अपने प्राण नहीं छोड़े। मैंने आप सबको बेचकर खा डाला। नरक में जाऊँ तो बचकर निकलने का मार्ग भी होगा क्या ? । १६०६

इरुन्दुनात् पहैयै यॆल्ला मीरुकण् डळवि लिन्बम्
पॊरुन्दिने नल्ले नॆङ्गोन् तिरुवडि पुनैन्दे नल्लेन्
वरुन्दिने नॆडुना ळुम्मै वळियॊडु मुडित्तेन् वायाल्
अरुन्दिने नयोत्ति वन्द वरशर्दम् पुहऴे यम्मा 1607

नान्–मैं; इरुन्तु–यहाँ रहकर; पकैयै ऎल्लाम्–सभी शत्रुओं का; ईरु

कण्टु–अन्त देखकर; अळवु इल्–अपार; इन्पम् पॆरुन्तिलेन् अल्लेन्–आनन्दित हुई नहीं; ऎम् कोन्–अपने प्रभु के; तिरुवटि पुनैन्तेन् अल्लेन्–चरणों को सिर पर धारण नहीं कर पायी; नॆटुनाळ् वरुन्तिलेन्–बहुत दिनों से दुःख में मग्न हूँ; उम्मै–आपका; वळियॊटुम्–वंश के साथ; मुटित्तेन्–अन्त कर दिया; अयोत्ति वन्त–अयोध्या में जनमे; अरचर् तम् पुकळै–राजाओं के यश को; वायाल् अरुन्तिनेन्–अपने ही मुख से पी चुकी। १६०७

मैं बंदीगृह में रहकर शत्रुओं का अन्त देखूँ और अपार सुख पाऊँ, यह भाग्य नहीं रहा। अपने प्रभु के श्रीचरणों को सिर पर धारण कर लेने का सौभाग्य भी प्राप्त नहीं हुआ। बहुत दिनों से (दस महीनों से) दुःख में रह रही हूँ। आपका भी आपके वंश के साथ अंत कर दिया। अयोध्याधिपतियों के यश को भी अपने मुख से खा (मिटा) चुकी हूँ, माँ! कितना अनर्थ हो गया। १६०७

कॊल्लॆनक् कणवऱ् काङ्गोर् कॊडुम्बहै कॊडुत्ते नॆन्वै
कल्लॆनत् तिरण्ड तोळॆप् पाशत्ताऱ् कट्टक् कण्डेन्
इल्लॆनच् चिऱन्दु निन्ऱ विरण्डुक्कु मित्तल् शूळ्न्देन्
अल्लनो वॆळिय नोया नळियऱ्ऱे तिऱक्क लादेन् 1608

कणवऱ्कु–पतिदेव को; कॊल् ऎन–मारो कहकर; ओर्–एक; कॊटु पकै–क्रूर शत्रु; कॊटुत्तेन्–बना दिया; ऎन्तै–मेरे पिता के; कल् ऎन तिरण्ट तोळ्–पत्थर-सम कठोर कन्धों को; पाचत्ताल् कट्ट–पाश से बद्ध; कण्टेन्–देखा; इल् ऎन–गृह के नाम से; चिऱन्तु निन्ऱ–श्रेष्ठ रहे; इरण्टुक्कुम्–दोनों के लिए; इत्तल् चूळ्न्तेन् अल्लनो–कष्ट संपादित कर दिया न; यान् ऎळियनो–मैं भी सामान्य, क्षुद्र हूँ क्या; इऱक्कलातेन्–जो मरी नहीं वह मैं; अळियऱ्ऱेन्–निर्दय हूँ। १६०८

मैंने अपने पतिदेव का एक शत्रु तैयार कर दिया है, जिससे 'उन्हें मारो' भी कह दिया है! अब मैंने अपने पिता के पत्थर-सम कठोर कंधों को पाश से बद्ध देख लिया। क्या मैं मातृगृह, स्वसुरगृह दोनों सम्मानित गृहों पर सितम ढानेवाली नहीं बनी? क्या मैं सामान्य अल्प स्त्री रही? मरती भी नहीं। बड़ी करुणाहीन हूँ। १६०८

इणैयरु वेळ्वि मेन्ना ळियऱ्ऱियीन् ऱॆडुत्त वॆन्वै
पुणैयुरु तिरडोळ् यात्तुप् पूळियिऱ् पुरळक् कण्डेन्
मणवितै मुडित्तॆन् कैयै मन्दिर मरबिऱ् ऱॊट्ट
कणवतै यितैय कण्डा लल्लदु कळिहित् ऱेतो 1609

मेल् नाळ्–पहले किसी दिन; इणै अरु–अद्वितीय; वेळ्वि इयऱ्ऱि–यज्ञ सुसंपन्न करके; ईन्ऱु ऎटुत्त–मुझे जन्म जिन्होंने दिया उन; ऎन्तै–मेरे पिता के; पुणै अरु–डोंगे के समान; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कन्धे; यात्तु–बाँधकर; पूळियिल् पुरळ–धूल पर लोटते; कण्टेन्–देखा; मणम् वितै–विवाहकार्य; मुटित्तु–पूरा करके;

ऍत् कैयै–मेरे हाथ का; मन्तिर मरपिल् तॉट्ट–मन्त्रपूर्वक जिन्होंने स्पर्श (ग्रहण) किया; कणवत्तै–अपने पतिदेव को भी; इतैय कण्टाल् अल्लतु–ऐसी स्थिति में देखे विना; कऴिकिन्ऱेतो–मरूँगी (नहीं) क्या। १६०९

बहुत ही उत्कृष्ट, अद्वितीय यज्ञ सुसम्पन्न करके जिन्होंने मुझे जन्म दिया था, उन पिता के डोंगे के समान पुष्ट कन्धे रस्सी से बाँधे गये हैं और वे धूल पर लोट रहे हैं, यह स्थिति देख रही हूँ। विवाह का रस्म अदा करके जिन्होंने मेरा हस्त स्पर्श किया, उनको भी ऐसी स्थिति में डलवाये विना मैं मरूँगी नहीं क्या ? । १६०९

अन्नैमी रैयन् मीरे यारुयिरत् तङ्गै मीरे
ऍन्नैयीन् ऱॅडुतत वॅन्दैक् कॅय्दिय दियादु मॊन्ऱु
मुन्ननी रुणर्न्दि लीरो वुमक्कुम्वे ऱुऱ्ऱ दुण्डो
तुन्नरु नॅऱियित् वन्दु तॊडर्न्दिलीर् तुञ्जि नीरो 1610

अन्नै मीर्–माताओ; ऐयन्मीरे–बड़े लोगो; आर् उयिर् तङ्कैमीरे–प्राणप्यारी बहिनो; ऍन्नै ईन्ऱु ऍटुतत–मुझे जिन्होंने जन्म दिया; ऍन्तैक्कु ऍय्तियतु–उन पिता पर जो वीता; यातुम् ऒन्ऱुम्–कुछ भी, कोई भी; मुन्नम् नीर्–पहले तुम लोगों ने; उणर्न्तिलीरो–नहीं जाना क्या; उमक्कुम्–तुम्हें भी; वेऱु उऱ्ऱतु उण्टो–कुछ (कष्ट) हो गया है क्या; तुन् अरु नॅऱियिल्–अगम मार्ग में; वन्तु तॊटर्न्तिलीर्–आकर पीछा नहीं किया (तुम लोगों ने); तुञ्चितीरो–मर भी गये हो क्या। १६१०

हे माताओ ! बड़े लोगो ! प्यारी बहिनो ! मेरे पिता पर जो बन आयी, उसकी कुछ भी ख़बर नहीं है क्या तुम लोगों को ! या तुम लोगों का भी कुछ हो गया ? फिर क्यों अगम मार्ग पर कोई उनका पीछा कर नहीं आये हो ? क्या तुम लोग भी मर गये हो ? । १६१०

मेरुविऩ् कुम्बरच् चेर्न्दु विण्णिनै मीक्कॊण् डालुम्
नीरुडैक् कावन् मूदू रॅय्दला नॅऱियिऱ् ऱन्ऱाल्
पोरिडैक् कॊण्डा रेनुम् वञ्जनै पुणर्त्ता रेनुम्
आरुमक् करैयऱ् पाला रनुमनु मुळनो नुम्बाल् 1611

मेरुविऱ्कु–मेरु के; उम्पर् चेर्न्तु–ऊपर जाकर; विण्णितै–आकाशलोक को; मी कॊण्टालुम्–वश कर लिया जाय तो भी; नीर् उटै–जलवलयित; कावल्–सुरक्षित; मूतूर्–प्राचीन यह लंका नगरी; अय्तलाम् नॅऱियिऱ्ऱु अन्ऱु–पहुँचने के लिए सुलभ मार्ग नहीं है; पोर् इटै कॊण्टार् एनुम्–युद्ध में (शत्रु) प्राण हर लें तो भी; वञ्चनै पुणर्त्तार् एनुम्–वंचना करें तो भी; उमक्कु अऱैयर् पालार्–तुम लोगों को बतानेवाले; आर्–कौन हैं; नुम् पाल्–तुम लोगों के पास; अनुमनुम् उळनो–हनुमान भी है क्या। १६११

मेरु पर चढ़कर आकाशलोक को वश में कर सकते हैं; पर

इस जलवलयित प्राचीन नगर लंका का मार्ग अगम है। यहाँ के शत्रु युद्ध में हत्या ही कर लें या कोई माया रच लें तो तुम लोगों को आकर बतलायगा कौन ? क्या तुम्हारे यहाँ हनुमान भी है ? । १६११

शरदमऱ् ऱिवर्त्त् तन्दाऱ् तवमुबुरिन् दाऱ्ऱल् ताळ्न्द
बरदत्तैक् कॉणर्दऱ् केतु मैयुरु विल्लेप् पन्नाळ्
वरदनुम् वाळ्वा नल्लन् तम्बियु मन्नैयन् वाळान्
विरदमुऱ् ऱऱत्ति निन्ऱार्क् किवैहॉलाम् विळैव मॅन्मेल् 1612

इवर्त्त तन्दार्–इनको जो लाये हैं; तवम् पुरिन्तु–तपस्या करने से; आऱ्ऱल् ताळ्न्त–दुर्बल हुए; परतत्त कॉणर्तऱ्कु–(उनके) भरत को भी लाने में; एतुम् ऐयुरवु इल्ले–कोई संशय नहीं; चरतम्–यह निश्चित है; वरतनुम्–वरद श्रीराम भी; पन्नाळ्–अनेक दिन; वाळ्वान् अल्लन्–जीवित रहनेवाले नहीं हैं; तम्पियुम्–उनके छोटे भाई भी; अन्नैयन्–वैसे ही; वाळान्–नहीं जिएँगे; विरतम् उऱ्ऱु–व्रतधारी बनकर; अऱत्तिल् निन्ऱार्क्कु–धर्म पर अवलंबित रहनेवालों को; इवै कॉलाम्–क्या ऐसे ही; मॅन् मेल्–उत्तरोत्तर; विळैव–प्राप्त हों। १६१२

इन (जनक) को पकड़ लाये हैं ये शत्रु ! ये तपस्या के कारण क्षीण-बल हुए भरत को भी लाएँगे, इसमें संदेह नहीं। यह निश्चय होगा। ऐसी स्थिति में वरद (श्रीराम) भी बहुत दिन नहीं जिएँगे। उनके छोटे भाई भी उन्हीं की तरह जीवित नहीं रहेंगे। धर्मवर्ती लोगों को भी उत्तरोत्तर ऐसे ही कष्ट मिलते रहेंगे क्या ? । १६१२

अडेत्तदु कडलै मेल्वन् दडैन्ददु मदिलै यावि
तुडैत्तदु पहैयैच् चेनै यॅन्नच्चिलर् शॉल्लच् चॉल्लप्
पडैत्तदो रुवहै तन्नै वेरॉरु वित्नयम् बण्णि
युडैत्तदु विदिये यॅन्ऱॅन् ऱुळैन्दन ळुणर्वु शोर्वाळ् 1613

चेनै–वानर-सेना ने; कटलै अटैत्ततु–समुद्र पर बाँध बनाया; मतिलै–(लंका के) प्राचीर को; मेल् वन्तु अटैन्ततु–चढ़कर आ पहुँचे; पकैयै आवि तुटैत्ततु–शत्रुओं को प्राणहीन किया; अन्न–ऐसा; चिलर् चॉल्ल चॉल्ल–कुछ लोगों ने जब-जब कहा; पटैत्ततु–मुझे जो हुआ; ओर् उवकै तन्नै–उस अति आनन्द को; वितिये–विधि ने ही; वेऱु ऑरु वित्तयम् पण्णि–दूसरा एक षड्यन्त्र रचकर; उटैत्ततु–तोड़ दिया; ॲन्ऱु ॲन्ऱु–कहते-कहते; उळैन्तनळ्–क्षुब्ध होकर; उणर्वु चोर्वाळ्–मतिभ्रंश हुई। १६१३

'वानर-सेना ने समुद्र पर सेतु बाँधा है। वह प्राचीर पर चढ़ गयी है। अपने शत्रुओं की हत्या कर दी है।' जब-जब मैंने ऐसी खबरें सुनीं, तब मैं अपार हर्ष पाती रही। विधि ने उस अनुपम आनन्द को षड्यंत्र रचकर दूर कर दिया। ऐसी बातें लगातार कहती हुई देवी अत्यधिक दुःख से सुधिहीन होने लगीं। १६१३

एङ्गुवा ळितैय पत्ऩ विमैयव रेऱ्ऱ मॅल्लाम्
वाङ्गुवा ळरक्क ऩाऱ्ऱ मऩमहिऴ्न् दिऩिदि ऩोक्कित्
ताङ्गुवा ळल्लळ् तुऩ्ब मिवऩैयुन् दाङ्गित् ताऩुम्
ऑङ्गुवा ळॅन्ऩ वुऩ्ऩि यितैयऩ वुरैक्क लुऱ्ऱाऩ् 1614

एङ्कुवाळ्–दुःखी होकर; इतैय पऩ्ऩ–ऐसा कहते समय; इमैयवर्–देवों के; एऱ्ऱम् ऍल्लाम्–सारे उत्थान को; वाङ्कु वाळ् अरक्कऩ्–छीननेवाला तलवारधारी राक्षस; आऱ्ऱ मऩम् मकिऴ्न्तु–बहुत मन में खुश होकर; इऩितिऩ्–मधुर भाव के साथ; नोक्कि–देखकर; तुऩ्पम् ताङ्कुवाळ् अल्लळ्–दुःख सहनेवाली नहीं है; इवऩैयुम् ताङ्कि–इस (जनक) को भी बचाकर; ताऩुम् ओङ्कुवाळ्–खुद भी सँभल जाएगी; ऍऩ्ऩ उऩ्ऩि–ऐसा सोचकर; इतैयऩ–इस भाँति; उरैक्कल् उऱ्ऱाऩ्–कहने लगा। १६१४

जब देवी ने इस तरह दुःखी होकर प्रलाप किया तो देवों की उन्नति के नाशक तलवारधारी राक्षस बहुत सुखी हुआ। उसने सोचा कि यह दुःख सह नहीं सकेगी। इसलिए यह जनक की रक्षा में अपना दुःख दूर करने का प्रयास करके सम्हल जायगी। इसलिए वह यों बोलने लगा। १६१४

कारिहै निऩ्ऩै यॅय्दुङ् गादलाऱ् करुद लाहाप्
पेरिड रियऱ्ऱ लुऱ्ऱेऩ् पिऴैयिदु पॊरुत्ति यिऩ्ऩुम्
वेरऱ मिदिलै योरै विळिहिलेऩ् विळिन्द पोदुम्
आरुयि रिवऩै युण्णे ऩञ्जलै यऩ्ऩ मऩ्ऩाय् 1615

कारिकै–रमणी; अऩ्ऩम् अऩ्ऩाय्–मरालसमाना; निऩ्ऩै ऍय्तुम् कातलाल्–तुम्हें प्राप्त करने की कामना से; करुतल् आका–अचिंत्य; पेर् इटर्–बड़ा दुःख; इयऱ्ऱल् उऱ्ऱेऩ्–देने लगा; इतु पिऴै–यह अपराध; पॊरुत्ति–क्षमा करो; इऩ्ऩुम्–और भी; मितिलैयोरै–मिथिलावासियों को; वेर् अऱ–जड़ काटकर; विळिकिलेऩ्–नहीं मारूँगा; विळिन्त पोतुम्–खुद मरने पर भी; इवऩ् आरुयिरै–इसके मूल्यवान प्राणों को; उण्णेऩ्–मैं नहीं हरूँगा; अञ्चलै–मत डरो। १६१५

हे सुन्दरी रमणी! हंस-तुल्य! तुम्हें पाने की कामना के कारण मैं तुमको अपार व अचिन्त्य कष्ट दे चुका हूँ। यह अपराध क्षमा कर दो। अब मिथिलावासियों का समूल वध नहीं करूँगा। चाहे मैं ही क्यों न मर जाऊँ, मैं इसके प्यारे प्राणों का अन्त नहीं करूँगा। मत डरो। १६१५

इमैयव रुलह मेदा ऩिव्वुल हेऴु मेदाऩ्
अमैवरुम् बुवऩ मूऩ्ऱि लॅऩ्ऩुडै याट्चि येदाऩ्
शमैवुऱत् तरुवॆऩ् मऱ्ऱित् तारणि मऩ्ऩर् किऩ्ऩल्
शुमैयुडैक् काम वॆन्नोय् तुडैत्तियेऱ् ऱॊऴुदु वाऴ्वेऩ् 1616

इऩ्ऩल्–दुःखदायी; चुमै उटै–बोझिल; कामम्–काम रूपी; वॆम् नोय्–

भयंकर रोग को; तुट्टूतियेल्–दूर करो तो; इ तार् अणिमत्तरक्कु–इस मालाधारी राजा को; इमैयवर् उलकमे तान्–देवलोक ही क्यों न; इ एळु उलकमे तान्–ये सातों लोक ही सही; अमैवरुम्–सुरक्षित; पुवनम् मून्ड्रिल्–तीनों लोकों में; अन्नुट्ट आट्चिये तान्–मेरा ही शासन क्यों न हो; चमैवु उर–उसका अपना बनाकर; तरुवेन्–दे दूंगा; तोळुतु वाळ्वेन्–उसकी स्तुति करता जीवन बिताऊँगा। १६१६

इस दुःखदायी और बोझिल कामरोग को दूर करो तो इस मालाधारी राजा जनक को देवलोक चाहो, या सातों लोकों को या मेरा त्रैलोकाधिपत्य ही क्यों न चाहो अच्छी तरह सुरक्षित रूप से दिला दूंगा। वही नहीं, मैं भी उसकी स्तुति करता हुआ उसकी सेवा में लगा रहूँगा। १६१६

इलङ्गैयू रिवनुक् कीन्दु वेर्रिडत् तिरुन्दु वाळ्वेन्
नलङ्गिळर् निदिमुम् मून्रुम् नल्हुवॅ नामत् तॅय्वप्
पॉलङ्गिळर् मानन् दाने पॉदुवरक् कॊडुप्पॅन् पुत्तेळ्
वलङ्गिळर् वाळुम् वेण्डिल् वळङ्गुवॅ नियादु मार्रेन् 1617

वेण्टिल्–तुम चाहो तो; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर; इवनुक्कु ईन्तु–इसे देकर; वेरु इटत्तु–दूसरे स्थान में; इरुन्तु वाळ्वेन्–रहकर अपना जीवन बिताऊँगा; नलम् किळर्–भला करनेवाली; निति मुम्मूत्रुम्–नवनिधि को; नल्कुवेन्–दूंगा; नामम्–प्रसिद्ध; तॅय्वम्–दिव्य; पॉलम् किळर्–सौंदर्यमय; मानम् ताने–पुष्पक यान को भी; पॉतु अर–बिना किसी की साझेदारी के; कॊटुप्पॅन्–दे दूंगा; पुत्तेळ्–शिवदेव की (दी हुई); वलम् किळर्–बलयुक्त; वाळुम्–तलवार को भी; वळङ्कुवॅन्–दान कर दूंगा; यातुम् मार्रेन्–किसी वस्तु से वंचित नहीं करूँगा। १६१७

तुम कहो तो लंका का राज्य इसे देकर मैं कहीं दूसरी जगह पर जाकर रहूँगा। उसे सौभाग्यदायिनी नवनिधि को दे दूंगा। प्रसिद्ध, दैवी और सौन्दर्यमय पुष्पकयान को भी दे दूंगा, जिसे वह अकेले आप ही उपयोग में ला सके। शिवदेव की दी हुई चंद्रहास तलवार को भी इसे दिला दूंगा। किसी भी वस्तु को देने से इन्कार नहीं करूँगा। १६१७

इन्दिरन् कविक्क मौलि यिमैयव रिरॅञ्जि येत्त
मन्दिर मरबिर् चूट्टि वानवर् महळि रियारुम्
पन्दरि नुरिमै शॅय्य यानिवन् पणियि निऱ्पन्
शुन्दरप् पवळ वाया लॊरुमॊळि शिऱिदु शॊल्लिन् 1618

चुन्तरम्–सुन्दर; पवळम् वायाल्–प्रवालारुण मुख से; ऑरु मॊळि–एक वचन; चिऱितु चॊल्लिन्–थोड़ा कह दो तो; इन्तिरन् मौलि कविक्क–इन्द्र मुकुट धरवा (दे)गा; इमैयवर् इरॅञ्चि एत्त–देव विनय करके स्तुति करेंगे; मन्तिरम् मरपिल्–(इस भाँति) मन्त्रपूर्वक; चूट्टि–मुकुटधारण कराकर; वानवर् मकळिर् यारुम्–सभी (दे)वांगनाएँ; पन्तरिन् उरिमै चॅय्य–अभिषेकमण्डप में सेवाएँ करेंगी; यान्–मैं; (इ)वन् पणियिन्–इसकी सेवा में; निऱ्पन्–उपस्थित रहूँगा। १६१८

सीते ! अपने सुंदर प्रवाल-सदृश मुख से एक शब्द कहो और थोड़ा कहो तो देखो इन्द्र तुम्हारे पिता के सिर पर मुकुट धरवाएँगे। देवगण विनय और स्तुति करेंगे। मंत्र-सहित मुकुट धारण किया जायगा। अभिषेक-मंडप में अप्सराएँ इसकी परिचर्या करेंगी। और मैं भी इसका आज्ञाकारी सेवक बना रहूँगा। १६१८

ऎन्दैतन् तन्दै तादै यिव्वुल हीन्ऱ मुन्नोन्
वन्दिवन् ताते वेट्ट वरमॆलाम् वऴङ्गुम् मऱ्ऱै
अन्दह नडियार् शॆय्है याऱ्ऱुमा लमिऴ्दिन् वन्द
शॆन्दिरु नीरल् लीरे लवळुम्वन् देवल् शॆय्युम् 1619

ऎन्तै–मेरे पिता के; तन् तन्तै–पिता के; तातै–पिता (ब्रह्मा); इ उलकु–इस लोक को; ईन्ऱ–जिन्होंने जन्म दिया वे; मुन्नोन् ताते–पुरातन पुरुष स्वयं; वन्तु–आकर; इवन् वेट्ट–इसके माँगे; वरम् ऎलाम्–सभी वर; वऴङ्कुम्–देंगे; मऱ्ऱै–और; अन्तकन्–यम भी; अटियार् चॆय्कै आऱ्ऱुम्–दास का काम करेगा; अमिऴ्तिन् वन्त–अमृत के साथ आयी; चॆन्तिरु–वह लक्ष्मी; नीर् अल्लीरेल्–तुम नहीं हो तो; अवळुम् वन्तु–वह भी आकर; एवल् चॆय्युम्–आज्ञापालन करेगी। १६१९

(तुम 'हाँ' कह दो तो) मेरे पिता (विश्रवा) के पिता पुलस्त्य के पिता ब्रह्मा, जो लोकसर्जक पुराणपुरुष हैं वे, स्वयं आकर इसके माँगे सारे वर दे देंगे। यम भी इसकी दास की-सी सेवा-टहल करेगा। अगर तुम ही वह लक्ष्मी नहीं हो, जो अमृत के साथ पैदा हुई थी, तो वह भी आकर परिचर्या करेगी। १६१९

तेवरे मुदला मऱ्ऱैत् तिण्डिऱल् नाहर् मण्णोर्
यावरुम् वन्दु नुन्दै यडित्तॊऴु देवल् शॆय्वार्
पावैनी यिवनिन् वन्द पयन्वऴु दाव दन्ऱाल्
मूवुल हाळुञ् जॆल्वङ् गॊडुत्तदु मुडित्ति यॆन्ऱान् 1620

तेवरे मुतला–देवों से लेकर; मऱ्ऱै–अन्य; तिण् तिऱल्–अतिबली; नाकर्–(पाताललोकवासी) नाग; मण्णोर्–पृथ्वीवासी; यावरुम् वन्तु–सभी आकर; नुन्तै अटि तॊऴुतु–तुम्हारे पिता की चरण-वन्दना करके; एवल् चॆय्वार्–परिचर्या करेंगे; पावै–चित्र-प्रतिमा; नी–तुम्हारे; इवनिन् वन्त पयन्–इससे जन्म लेने का फल; पऴुतावतु अन्ऱु–निरर्थक नहीं होगा; मू उलकु आळुम् चॆल्वम्–त्रैलोकाधिपत्य का भाग्य; कॊटुत्तु–उसे देकर; अतु मुटित्ति–उस (फल) को चरितार्थ करो; ऎन्ऱान्–रावण ने कहा। १६२०

देवों से लेकर अतिबली पातालवासी नाग लोग और पृथ्वीवासी मानव तक सभी आकर इसकी चरण-वंदना करके दासता करेंगे। हे चित्र-प्रतिमा-सी मोहिनी ! तुम्हारा इसके द्वारा जन्म लेने का फल व्यर्थ नहीं

होगा। त्रैलोकाधिपत्य दिलाकर उसको चरितार्थ बनाओ। रावण ने अपनी बात यों कहकर समाप्त की। १६२०

इत्तिरुप् पॆरुहिर् पानु मिन्दिर निलङ्गै नुङ्गळ्
पॊय्त्तिरुप् पॆरुहिर् पानुम् वीडणन् पुलवर् कोमान्
कैत्तिरुच् चरङ्ग ळुन्रन् मार्बिडैक् कलक्कर् पाल
मैत्तिरु निरत्तान् ताळॆन् तलैमिशै वैक्कर् पाल 1621

इ तिरु–यह श्री; पॆरुकिर्पानुम् इन्तिरन्–पानेवाला इन्द्र है; इलङ्कै नुङ्कळ् पॊय् तिरु–लंका-सह तुम्हारा झूठा वैभव; पॆरुकिर्पानुम्–पानेवाला भी; पुलवर् कोमान्–पण्डितराज; वीटणन्–विभीषण ही होगा; उन् तन् मार्पिटै–तुम्हारे वक्ष-मध्य; कलक्कर्पाल्–आकर लगनेवाले होंगे; मै तिरु निरत्तान्–मेघ-से सुन्दर वर्णवाले श्रीराम के; कै तिरु चरङ्कळ्–हाथ के दिव्य अस्त्र; ऍन् तलै मिचै–मेरे सिर पर; वैक्कल् पाल–धारण करने योग्य हैं; मै तिरु निरत्तान्–अंजन-सम दिव्य वर्ण वाले श्रीराम के; ताळ्–श्रीचरण। १६२१

यह सुनकर सीताजी ने उत्तर में कहा। यह तुम्हारी त्रैलोकाधिपत्य-श्री इंद्र को मिल जायगी। असत्य-मिश्रित राज्य, लंका-सहित इस राज्यश्री का अधिकारी पंडितों में राजा विभीषण होगा। तुम्हारे वक्ष में लगनेवाले मेघश्याम श्रीराम के श्रीहस्त के दिव्य शर ही हैं (उनकी पत्नी के हाथ नहीं)। मेरे सिर पर लगनेवाले हैं अंजनवर्ण श्रीराम के श्रीचरण। १६२१

नहुवन निन्नो डैय नायह नाम वाळि
पुहुवन पोळ्न्दुन् मार्बिर् ट्रिरन्वन पुण्ग ळॆल्लाम्
तहुवन विनिय शॊल्लत् तक्कन शाब नाणिन्
उहुवन मलैह ळॆञ्जप् पिरप्पन वॊलिह ळम्मा 1622

ऐयन्–सुन्दर; नायकन्–नायक के; नाम वाळि–नामांकित शर; निन्नॊटु नकुवन–तुम्हारे साथ हंसते हुए; पोळ्न्तु–भेदकर; उन् मार्पिल्–तुम्हारे वक्ष में; पुकुवन–घुसेंगे; पुण्कळ् ऍल्लाम्–सभी व्रणों को; तिरन्तन–खोलकर; तकुवन–योग्य; इनिय–मधुर; चॊल्ल तक्कन–बातें कहनेवाले हैं; उकुवन–गिरनेवाले; मलैकळ् ऍञ्च–पर्वतों को भी पीछे ढकेलते हुए; चापम् नाणिन्–धनु के डोरे से; पिरप्पन ऒलिकळ्–निकलनेवाली होंगी ध्वनियां; अम्मा–मैया जान लो। १६२२

सुन्दर नायक श्रीरामनामांकित सायक हंसते हुए तुम्हारे वक्ष को भेदकर घुस जाएँगे और व्रणों को खोलकर हितकारी उपदेश देंगे! गिरनेवाले पर्वतों से भी अधिक शोर के साथ चाप का डोरा टंकृत होगा। १६२२

शॊल्लुव मदुर मारुन् दुण्डत्ता लुण्डुन् कण्णैक्
कल्लुव काहम् वन्दु कलप्पन कमलक् कण्णन्

विल्लुमिऴ् पहऴि पिन्नर् विलङ्गॆऴि ललङ्गन् मार्बम्
पुल्लुव कऴिप्पुक् कूर्न्दु पुलवुना इलहै यॆल्लाम् 1623

कमलम् कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम के; विल् उमिऴ् पकऴि–धनु से निकलनेवाले शर; ऍऴिल्–सुन्दर; विलङ्कु–पर्वत-सम; अलङ्कन् मार्पु–माला से अलंकृत वक्ष में; वन्तु–आकर; कलप्पन–लगनेवाले हैं; काकम्–कौए; मतुरम् माऱ्ऱम् चॊल्लुव–मधुर वचन करते हुए; उन् कण्णै–तुम्हारी आँखों को; तुण्टत्ताल्–अपनी चोंचों से; उण्टु–खाने के लिए; कल्लुव–नोचेंगे; पिन्नर्–बाद; पुलवु नाऱु–मांसगन्धयुक्त; अलकै ऍल्लाम्–सभी प्रेतगण; कऴिप्पु कूर्न्तु–आनन्द में बढ़कर; पुल्लुव–आलिंगन करेंगे। १६२३

कमलाक्ष श्रीराम के धनु द्वारा चलाये गये शर आकर तुम्हारे सुन्दर, लंबे-चौड़े (या पर्वत-सम) और मालाधारी वक्ष में लगेंगे। कौए मधुर वचन कहते हुए अपनी चोंचों से तुम्हारी आँखों को खाने के लिए नोच लेंगे। फिर मांसगंधयुक्त प्रेतगण आनन्द के साथ तुम्हारा आलिंगन कर लेंगे। १६२३

विरुम्बिनान् केट्प दुण्डाल् निन्नुऴै वार्त्तै वीरन्
इरुम्बियल् वयिर वाऴि यिडऱिड वॆयिऱ्ऱुप् पेऴ्वाय्प्
पॆरुम्बियल् तलैहळ् शिन्दिप् पिऴैप्पिलै मुडिन्दा यॆन्न
अरुम्बियल् तुळवप् पैन्दा रनुमन्वन् दऴैत्त वन्नाळ् 1624

वीरन्–वीर के; इरुम्पु–लोहे की-सी; इयल्–प्रकृति के; वयिरम् वाऴि–शरों के; इटऱिट–ठोकर मारने से; ऍयिऱु–वक्र दाँतों वाले; पेऴ्वाय्–फटे-से (खुले) मुखों-सहित; पॆरु पियल्–बड़े गलों के साथ लगे; तलैकळ् चिन्ति–सिर बिखरेंगे; पिऴैप्पु इलै–बचना नहीं है; मुटिन्ताय्–खातमा हो गया; ऍन्न–कहकर; अरुम्पु इयल्–पनपते; तुळवप् पै तार्–तुलसीमालाधारी; अनुमन्–हनुमान; वन्तु–आकर; अऴैत्त अ नाळ्–जिस दिन मुझे बुलायगा उस दिन; निन् उऴै वार्त्तै–तुमसे सम्बन्धित (मृत्यु समाचार का) वचन; नान् विरुम्पि केट्पतु–मेरा चाव के साथ सुनना; उण्टु–होगा। १६२४

श्रीवीरराघव के लौहशर ठुकरा देंगे और तुम्हारे वक्रदंतोले फटे मुखों वाले और बड़े कंठों पर रहनेवाले सिर बिखर जाएँगे। 'अब रावण नहीं बचा। उसका अन्त हो गया।' यह समाचार लेता हुआ तुलसी-पल्लवमालाधारी हनुमान जब मुझे बुलाने आयगा, उस दिन तुमसे संबंधित समाचार को मैं चाव के साथ सुननेवाली हूँ। १६२४

पुन्महु केट्टि केट्टर् किन्नियन् पुहुन्द पोरिन्
उन्महु नुयिरै यॆम्मोय् शुमित्तिरै युय्य वीन्ऱ
नन्महन् वाऴि नक्क नायव नुडलै नक्क
ऍन्महु निऱन्दा नॆन्न नीयॆडुत् तरऱ्ऱ लॆन्राळ् 1625

पुन् मक–क्षुद्र प्राणी; केट्टर्कु इतियन–मेरे लिए श्रवण-मधुर बातें जो होंगी; केट्टि–सुनो; पुकुन्त पोरिल्–चलते इस युद्ध में; उन् मकन् उयिरै–तुम्हारे पुत्र के प्राणों को; ॲम् ओय् चुमित्तिरै–हमारी माता सुमित्रा के; उयय ईन्र–सौभाग्य के लिए जनित; नन्मकन्–श्रेष्ठ पुत्र लक्ष्मण के; वाळि–अस्त्रों के; नक्क–चाट लेने पर (अन्त करने पर); अवन् उटलै–उसके शरीर को; नाय् नक्क–कुत्ते चाटेंगे तब; ॲन् मकन् इरन्तान्–मेरा पुत्र मर गया; ॲन्त–कहकर; नी–तुम; ॲटुत्तु–उच्च स्वर में; अरर्रल्–रोओगे वह; ॲन्राळ्–(सीता ने) कहा। १६२५

क्षुद्र प्राणी ! और भी जो मैं सुननेवाली हूँ और जो आनन्द देगा वह सुनो। चल रहे इस युद्ध में तुम्हारे पुत्र का, हमारी माता सुमित्रा के सौभाग्यदायी पुत्र लक्ष्मण के शर मारकर हनन कर देंगे। उसके शरीर को कुत्ते चाटने लगेंगे। तब तुम यह कहते हुए कि मेरा पुत्र मर गया, उच्च स्वर में रोओगे। वह स्वर मुझे प्रिय लगेगा। १६२५

वॅय्यव नतैय केळा वॅयिलुह विळित्तु वीरक्
कैपल पिशैन्दु पेळ्वा यॅयिरुर वळुन्दक् कवित्
तैयत्मे लोड लोडु महोदरन् तडुत्ता नीन्र
मॉय्हळर् रादै वेण्ड विशैयुनी मुतिय लॅन्रान् 1626

वॅय्यवन्–दुष्ट रावण; अतैय केळा–वह सुनकर; वॅयिल् उक–गरम अंगारे छोड़ते हुए; विळित्तु–तरेरकर देखकर; वीरम् कै–वीरतायुक्त हाथ; पल–जो अनेक थे; पिचैन्तु–उन्हें मलते हुए; पेळ्वाय्–बड़े मुखों (के अधरों) को; ॲयिरु उर–दाँतों को खूब; अळुन्त कव्वि–गड़ाते हुए दबाकर; तैयल् मेल्–(सीता) देवी की तरफ़; ओटल् ओटुम्–दौड़ने लगा तब; मकोतरन्–महोदर ने; तटुत्तान्–रोका; ईन्र–इसके जनक; मॉय् कळल् तातै–बड़ी पायल पहने हुए पिता के; वेण्ट–कहने पर; इचैयुम्–मान लेगी; नी मुतियल्–तुम गुस्सा मत करो; ॲन्रान्–कहा। १६२६

दुष्ट रावण को यह सुनकर अपार क्रोध हुआ। आँखों से अंगारे छूटे। तरेरते हुए उसने अपने अनेक हाथों को मला। फटे मुख के अधरों को दाँतों से काट लिया। और वह सीतादेवी की तरफ़ झपटने लगा तो महोदर ने उसे रोका और कहा कि तुम ग़ुस्सा मत करो। वीर-पायलधारी इसका पिता कहे तो वह तुम्हारी इच्छा को मान लेगी। १६२६

ॲन्रवन् तहैप्प मीण्डा नाशनत् तिरुक्क वावि
पॉन्रिन नाहु मॅन्नत् तरैमिशैक् किडन्द पॉय्योन्
इन्रिदु नेरा यॅन्नि नॅन्नैयुन् कुलत्ति नोडुम्
कॉन्रनै यादि यॅन्ना विनैयन कूर लुर्रान् 1627

ॲन्र–कहकर; अवन् तकैप्प–उसके रोकने पर; मीण्टान्–मुड़ा; आचनत्तु इरुक्क–और आसन पर बैठ गया; ...

अॅन्नुत-ऐसा; तरै मिचै किटन्त-भूमि पर जो पड़ा रहा वह; पॉय्योत्-मायिक; इत्रु-आज; इतु-यह; नेराय् अॅन्निन्-(रावण की माँग) पूरी नहीं करो तो; अॅन्नै-मुझे; उन् कुलत्तिनोटुम्-अपने कुल के साथ; कॉन्रुरै आति-मारनेवाली बन जाओगी; अॅन्ना-कहकर; इतैयन-और भी ये; कूरल् उर्रान्-कहने लगा। १६२७

उसके ऐसा रोकने पर रावण लौटकर अपने आसन पर बैठ गया। तब मायिक जनक, जो अब तक मरा-सा पड़ा रहा, बोला। अब तुम इसकी माँग पूरा न करो तो तुम मुझे अपने कुलसहित मरवानेवाली बन जाओगी। वह आगे भी यों बोला। १६२७

पूविन्मे लिरुन्द वॅय्वत् तैयलुम् पॉदुमै युर्राळ्
पावियान् पयन्द नङ्गै निन्पॉरुट् टाहप् पट्टेन्
आविपो यळिदल् नन्रो वमरर्क्कु मरश नावान्
तेविया यिरुत्तल् तीदो शिरैयिडैत् तेम्बु हिन्राय् 1628

पूविन् मेल् इरुन्त-कमल पर रहनेवाली; तॅय्वम् तैयलुम्-दैवी स्त्री (लक्ष्मी) भी; पॉतुमै उर्राळ्-सामान्या हो गयी है; पावि यान् पयन्त नङ्कै-पापी मेरी जनित कन्या; निन् पॉरुट्टाक-तुम्हारे ही (इन्कार करने के) कारण; पट्टेन्-बन्दी हुआ; आवि पोय् अळितल्-प्राण खोकर मिटना; नन्रो-अच्छा है क्या; चिरै इटै-कारागृह में; तेम्पुकिन्राय्-रो रही हो; अमरर्क्कुम् अरचन् आवान्-देवों का भी जो राजा है; तेवियाय् इरुत्तल्-उसकी स्त्री बनकर रहना; तीतो-बुरा होगा क्या। १६२८

देवी कमला भी तो सामान्या (सर्वभोग्या) हैं! पापी मेरी पुत्री! तुम्हें जन्म देने के कारण तो मैं बंदी हो गया हूँ। मैं अपने प्राण खोकर मिट जाऊँ—यह अच्छा है क्या? कारागृह में रहकर संकट उठा रही हो! देवों का भी अधिपति जो है, उसकी देवी रहना बुरा है क्या? । १६२८

अॅन्नैयुन् कुलत्ति नोडु मिन्नुयिर् ताङ्गि यीण्डु
नन्नॅडुञ् जॅल्वन् दुय्प्पे नाक्किने नल्हि नाळुम्
उन्नैवॅञ् जिरैयि नीक्कि यिन्बत्तु ळुय्प्पा यॅन्नाप्
पॉन्नडि मरुङ्गु वीऴ्न्दा नुरुमुहप् पॉरुमु हिन्रान् 1629

उरुम् उक-वज्र भी टूटकर गिर जाए ऐसा; पॉरुमुकिन्रान्-उच्च स्वर में रोनेवाला (वह मायिक जनक); अॅन्नै-मुझे; उन् कुलत्तिनोटुम्-अपने कुल के साथ; इन् उयिर् ताङ्कि-प्यारे प्राणों को धारण करके; ईण्टु-इस पृथ्वी में; नल् नॅटु चॅल्वम्-अच्छा और दीर्घ धन; तुय्प्पेन् आक्किनै-भोगनेवाला बनाकर; उन्नै-अपने को; वॅम् चिरैयिन् नीक्कि-कठोर कारा से छुड़वा लेकर; नाळुम्-सदा; इन्पत्तुळ् उय्प्पाय्-सुख में रख लो; अॅन्ना-कहकर; पॉन् अटि मरुङ्कु-सुन्दर चरणों पर; वीऴ्न्तान्-गिरा। १६२९

वह मिथ्या जनक वज्र-स्वर में चीखते-चिल्लाते आगे बोला। मुझ पर दया करो। मुझे अपने कुल के साथ जीवित और श्रेष्ठ और दीर्घ वैभव का भोगी बनाए रखो और अपने को भी इस कारा से छुड़वा लेकर सदा आनन्द-भोग करती रहो। यह कहते हुए वह उनके सुन्दर चरणों पर गिरा। १६२९

अव्वुरै केट्ट नङ्गै शॅविहळै यमैयप् पॉत्ति
वॅव्वुयिर्त् तावि तळ्ळि वीङ्गितळ् वॅहुळि पॉङ्गि
इव्वुरै यॅन्दै कूऱा निऩ्ऩुयिर् वाळ्क्कै पेणिच्
चॅव्वुरै यन्ऱॆ ऩॆन्ऩाच् चीऱिऩ ळुळैयच् चॅप्पुम् 1630

अ उरै–वह वचन; केट्ट–सुननेवाली; नङ्कै–देवी; चॅविकळै–कानों को; अमैय पॉत्ति–खूब बन्द करके; वॅम् उयिर्त्तु–गरम साँसें छोड़कर; आवि तळ्ळि–चेतना खोकर (फिर होश सम्हालकर); वॅकुळि पॉङ्कि वीङ्कितळ्–अत्यधिक गुस्से से भर गयीं; ऍन्तै–मेरे जनक; इऩ् उयिर् वाळ्क्कै–मधुर जीवन; पेणि–चाहकर; इ उरै कूऱाऩ्–यह वचन नहीं कहेंगे; इतु–यह; चॅ उरै अऩ्ऱु–श्लाघ्य वचन नहीं है; ऍऩ्ऩा–यह विचार करके; चीऱिऩळ्–कुपित हो; उळैय–चोट पहुँचाते हुए; चॅप्पुम्–कहने लगीं। १६३०

सीतादेवी ने जब यह वचन सुना तो तुरंत उन्होंने अपने कान बन्द कर लिये। लंबी साँसें छोड़ती हुई उन्होंने सुधि खो दी। फिर सम्हलीं। अत्यधिक बढ़े हुए क्रोध से उन्होंने यह सोचकर कि 'अपने जीवन के मोह में पड़कर मेरे पिता ऐसा बोलनेवाले नहीं हैं। यह श्लाघ्य वचन नहीं रहा', उसके मन को चोट पहुँचाते हुए निम्नोक्त बातें कहीं। १६३०

अऱङ्गॅड वळ्क्कु नीङ्ग वरशर्त मरबिऱ् काऩ्ऱ
मऱङ्गॅड मॅय्म्मै तेय वशैवर मऱैह ळोदुम्
तिऱङ्गॅड वॉळुक्कङ् गुऩ्ऱत् तेवरुम् बेणत् तक्क
निऱङ्गॅड विनैय शॊऩ्ऩाय् शऩहऩ्गोल् निऩैयि ऩैया 1631

अऱम् कॅट–धर्म को ग्लानि पहुँचाते हुए; वळक्कु नीङ्क–रीति को दूर करते हुए; अरचर् तम् मरपिऩ्कु–राजकुल-परंपरा की; आऩ्ऱ–श्रेष्ठ; मऱम् कॅट–वीरता को नष्ट कर; मॅय्म्मै तेय–सत्य को निर्बल बनाकर; वचै वर–अपयश सम्पादन कर; मऱैकळ् ओतुम्–वेदोक्त; तिऱम् कॅट–धर्म-विधानों को बिगाड़कर; ऑळुक्कम् कुऩ्ऱ–आचरणों को हीनता दिलाकर; तेवरुम् पेण तक्क–देवों के भी पालनार्ह; निऱम् कॅट–गौरव नष्ट करते हुए; इऩैय चॊऩ्ऩाय्–ये बातें कहीं (आपने); निऩैयिऩ्–विचार करने पर; ऐया–जी; चऩकऩ् कॊल्–जनक हैं क्या आप। १६३१

आपने जो कहा उससे धर्म नष्ट हो गया; नियम टूट गया। राजवंश की श्रेष्ठ वीरता मिट गयी। सत्य क्षीण हो गया। निंदा बढ़ी।

वेदोक्त धर्म-विधान छूट गये। आचरण हीन हो गया। देवों से भी आदृत गौरव मिट गया। सोचती हूँ तो हे जी, तुम जनक हो क्या ? । १६३१

वऴिकॅड वरिनुन् दत्तम् वाऴ्क्कैदेय्न् दिऱिनु मार्बम्
किऴिपट वयिल्वेल् वन्दु किऴिप्पिनुञ् जान्ऱोर् केट्कुम्
मॊऴिकॊडु वाऴ्व दल्लान् मुऱैकॅडप् पुऱनिन् ऱार्क्कुम्
पऴिपड वाऴ्हिऱ् पारुम् पार्त्तिब रुळरो पावम् 1632

वऴि–वंश; कॅट वरितुम्–नष्ट हो जाय तो भी; तम् तम् वाऴ्क्कै–अपना जीवन; तेय्न्तु इऱितुम्–क्षय होकर मिट जाए तो भी; मार्पम् किऴि पट–वक्ष को चीरते हुए; अयिल् वेल् वन्तु–तीक्ष्ण शक्ति आकर; किऴिप्पितुम्–भेद दे तो भी; चान्ऱोर् केट्कुम्–साधु द्वारा सुनने योग्य; मॊऴि कॊटु–यश का वचन प्राप्त करके; वाऴ्वतु अल्लाल्–जीने के सिवा; मुऱै कॅट–नैतिक क्रम का नाश करते हुए; पुऱम् निन्ऱु आर्क्कुम्–लोग पार्श्व में खड़े होकर उच्च स्वर में निन्दा करें ऐसा; पऴि पट–अपयश का भागी बनकर; वाऴ्किऱ्पार् पार्त्तिपरुम्–जीनेवाले पृथ्वीपति भी; उळरो–हैं क्या; पावम्–हाय पाप। १६३२

चाहे वंश मिट जाय; अपना जीवन ही क्यों न क्षीण होकर अंत पा जाय; तीक्ष्ण शक्ति आकर वक्ष को विदीर्ण कर दे तो भी साधुओं के श्रवण-योग्य यशप्रशंसा का पात्र बनकर रहने के सिवा नैतिक क्रम को तोड़ते हुए, चारों ओर से लोगों की खुली निंदा का पात्र बनकर, अपयश ढोते हुए जीनेवाले पृथ्वीपति भी होते हैं क्या ? हाय ! पाप ! । १६३२

नीयुनिन् किळैयु मऱ्ऱिन् नॆडुनिल वरैप्पु नेरे
मायिनु मुऱैमै कुन्ऱ वाऴ्वॅनो वयिरत् तिण्डोळ्
आयिर नामत् ताऴि यरियिनुक् कडिमै शॆय्वेन्
नायिन्नै नोक्कु वेनो नाण्डुऱन् दावि नच्चि 1633

नीयुम्–आप और; निन् किळैयुम्–आपके रिश्तेदार; मऱ्ऱुम्–और; इ नॆटु निलम् वरैप्पुम्–इस विशाल भूभाग के वासी; नेरे मायितुम्–मेरे सामने मर जाएँगे तो भी; मुऱैमै कुन्ऱ–नीति का नाश करके; वाऴ्वॅनो–जिऊँगी क्या; वयिरम् तिण् तोळ्–वज्रकठोरस्कन्ध; आयिरम् नामत्तु–सहस्रनामी; आऴि–चक्रधारी; अरियिनुक्कु–हरि की; अटिमै चॆय्वेन्–दासता करनेवाली मैं; आवि नच्चि–प्राणों का मोह कर-करके; नाण् तुऱन्तु–शरम तजकर; नायिनै–कुत्ते पर; नोक्कुवेनो–दृष्टि डालूँगी क्या। १६३३

तुम, तुम्हारे परिवार क्यों इस विशाल भूभाग के वासी सभी मेरे समक्ष मर जायँ तो भी नियम तोड़कर रहना चाहूँगी क्या ? वज्रदृढ़स्कन्ध, सहस्रनामी और चक्रधारी हरि (श्रीराम) की दासी मैं प्राणों के मोह में पड़कर शरम खोकर कुत्ते पर दृष्टि डालूँगी क्या ? । १६३३

वरिशिलै यौरुव ऩल्लाऩ् मैऩ्दरॆऩ् मरुङ्गु वऩ्दार्
ऍरियिडै वीऴ्ऩ्द विट्टि लल्लरो वरशुक् केऱ्ऱ
अरियॊडुम् वाऴ्ऩ्द पेडै यङ्गणत् तऴुक्कुत् तिऩ्ऩुम्
नरियॊडुम् वाऴ्व दुण्डो नायिऩुङ् गडैप्पट् टोऩे 1634

नायित्तुम् कडैप्पट्टोते–कुत्ते से भी गये बीते; वरि चिलै ऑरुवऩ् अल्लाल्–सबन्ध धनुर्धर एक (श्रीराम) के सिवा; ऍऩ् मरुङ्कु वऩ्तार्–मेरे समीप जो आते हैं; मैऩ्तर्–वे वीर; ऍरि इटै वीऴ्न्त–अग्नि में गिरे; विट्टिल् अल्लरो–शलभ नहीं होंगे क्या; अरचुक्कु एऱ्ऱ–(जानवरों के, स्वाभाविक रूप से) राजा बनने योग्य; अरियॊटुम्–केसरी के साथ; वाऴ्न्त पेटै–जो रही वह सिंहनी; अङ्कणत्तु–नाले में से; अऴुक्कु तिऩ्ऩुम्–गन्दी वस्तुएँ खानेवाले; नरियॊटुम्–सियार के साथ; वाऴ्वतु उण्टो–रहेगा क्या। १६३४

हे कुत्ते से गये बीते ! सबन्ध धनुर्धर एक श्रीराम को छोड़ कोई भी मेरे पास आनेवाले दीपक में गिरे शलभ नहीं हो जाएँगे क्या ? जानवरों के स्वाभाविक रूप से राजा बनने की योग्यता रखनेवाले पुरुष केसरी के साथ रहनेवाली सिंहिनी का क्या नाले की गन्दगी खाकर जीवन बितानेवाले सियार के साथ जीवन बिताना हो भी सकता है क्या ? । १६३४

अल्लैये यॆऩ्दै याऩा याहत्ता ऩलङ्गल् वीरऩ्
विल्लैये वाऴ्त्ति मीट्किऩ् मीऴुदि मीट्चि यॆऩ्ब
दिल्लैये लिऱन्दु तीर्दि यिदुवला लियम्ब लाहाच्
चॊल्लैये युरैत्ता यॆऩ्ऱुम् पऴिहॊण्डा यॆऩ्ऩच् चॊऩ्ऩाऴ् 1635

ऍऩ्तैये अल्लै–(तुम) मेरे पिता नहीं हो; ऍऩ्तै आताय् आक–मेरे पिता हो तो भी; अलङ्कल् वीरऩ्–मालाधारी वीर (श्रीराघव) के; विल्लैये–धनु की ही; वाऴ्त्ति–प्रशंसा करके; मीट्किऩ्–छुड़ा देंगे तो; मीऴुति–छुटकारा पाओ; मीट्चि ऍऩ्पतु इल्लैयेल्–छुटकारा मिलेगा ही नहीं तो भी; इऱन्तु तीर्ति–मर जाओ; इतु अलाल्–इसके सिवा; इयम्पल् आका–कुछ कहा नहीं जा सकता; इयम्पल् आका–न कहने योग्य; चॊल्लैये उरैत्ताय्–कथन किया; ऍऩ्ऱुम् पऴि कॊण्टाय्–सदा के लिए अपयश पा गये हो; ऍऩ्ऩ–ऐसा; चॊऩ्ऩाऴ्–कहा। १६३५

तुम मेरे पिता हो ही नहीं। सचमुच तुम मेरे पिता हो तो विजय-मालाधारी श्रीवीरराघव के धनु की दुहाई करो और वे तुम्हें छुड़ाएँ तो छुटकारा पाओ। अगर छुटकारा नहीं मिला तो मर जाओ। इसके सिवा कुछ कहने को नहीं है। तुमने भी न कहने योग्य बात कही। इससे तुम्हें अचल अपयश मिल गया। सीताजी ने यह कहा। (इस पद्य में 'इयम्बलाहा' शब्द दो वाक्यों के बीच में है और उसे दोनों के साथ मिलाकर अर्थ किया गया है। इसको 'देहलीदीप' कहते हैं।) । १६३५

वन्रिऱ लरक्क नन्न वाशह मनत्तुक् कॊळ्ळा
निन्ऱदु निऱ्क मेन्मे निहळ्न्दवा निहळ्ह निन्ऱान्
इन्ऱिव नल्लन् पोला मॆन्ऱनै कणत्तिन् कण्णे
कॊन्ऱुयिर् कुडिप्प नॆन्नाच् चुरिहैवा ळुरुविक् कॊण्डान् 1636

वल् तिऱल् अरक्कन्–क्रूर, बलवान राक्षस रावण; अन्न वाचकम्–उन शब्दों को; मनत्तु कॊळ्ळा–मन में लेकर; निन्ऱतु निऱ्क–(तुम्हारे मन में) जो (भाव) है वह (स्थिर) रहे; मेन् मेल्–आगे और आगे; निकळ्न्तवा निकळ्क–जो होगा वह हो; इन्ऱु–अब; निन्ऱान् इवन्–जो खड़ा रहता है, इसको; अल्लन् पोल् आम् ऎन्ऱनै–(मेरा) पिता नहीं है शायद, ऐसा कहा तुमने; कणत्तिन् कण्णे–एक ही क्षण में; कॊन्ऱु–मारकर; उयिर् कुटिप्पन्–प्राण पी लूँगा; ऎन्ना–कहकर; चुरिकै वाळ्–छुरे को; उरुवि कॊण्टान्–निकाल लिया। १६३६

क्रूर बलवान रावण ने सीता के कथन को मन में धारण करके कहा कि तुम्हारे मन में जो भाव है वह रहे। आगे जो होगा वह भी हो। तुमने, जो सामने खड़ा है, उसके सम्बन्ध में संशय प्रगट किया कि वह शायद मेरा पिता नहीं है। इसे एक क्षण में मारकर उसके प्राण पी लूँगा। और झट अपनी छुरी को हाथ में निकाल लिया। १६३६

ऎन्नैयुङ् गॊल्ला यिन्ने यिवनैयुङ् गॊल्ला यिन्नुम्
उन्नैयुङ् गॊल्लाय् मऱ्ऱिव् वुलहैयुङ् गॊल्ला यानो
इन्नलु नीङ्गि यॆन्ऱुङ् कॆडाप्पुह ळॆय्दु हिन्ऱेन्
पिन्नैयु मॆङ्गो नम्बिर् किळैयॊडुम् पिळैया यॆन्ऱाळ् 1637

ऎन्नैयुम् कॊल्लाय्–(तुम) मुझे भी नहीं मारोगे; इन्ने–अब; इवनैयुम् कॊल्लाय्–इसे भी नहीं मारोगे; इन्नुम्–और भी; उन्नैयुम् कॊल्लाय्–अपने को भी नहीं मारोगे; मऱ्ऱु–दूसरा; इ उलकैयुम् कॊल्लाय्–इस लोक का भी अन्त नहीं करोगे; पिन्नैयुम्–और भी; ऎम् कोन् अम्पिन्–मेरे राजा (प्राणपति) के बाण से; किळैयॊटुम्–परिवारों-सहित; पिळैयाय्–नहीं बचोगे; यान्–मैं; इन्नलुम् नीङ्कि–दुःख से छूटकर; ऎन्ऱुम् कॆटा–कभी मन्द न पड़नेवाला; पुकळ् ऎय्तुकिन्ऱेन्–यश पाऊँगी; ऎन्ऱाळ्–कहा। १६३७

सीताजी ने कहा कि तुम मुझे मार नहीं सकोगे; न इसका भी अंत कर सकोगे। न तुम अपना भी अंत कर सकोगे। क्यों ? तुम इस लोक के वासियों को भी मार नहीं सकोगे। (फिर होगा क्या, मालूम है ?) मेरे राजा श्रीरामनाथ के बाणों से तुम अपने परिवारों-सहित जीवित बच नहीं पाओगे ! मैं दुःख से छुटकारा पाकर अक्षय यश की भागिनी बनूँगी। १६३७

इरन्दनन् वेण्डिऱ् ऱल्ला लिवन्पिऴै यिऴैत्त ऱुण्डो
पुरन्दरन् शॆल्वत् तैय कॊल्हैयोर् पॊरुळिऱ् ऱोदान्

परन्दवॅम् बहैयै वॅन्ड्रा निन्वळिप् पडरु नङ्गै
यरन्दय ळाहु मन्ड्रे तन्दैयै निनैव दाताल् 1638

पुरन्तरन् चॅल्वत्तु ऐय–इन्द्र-सम्पत्ति के स्वामी; इवन्–इसने; इरन्ततन्–प्रार्थना करके; वेण्टिड्रु–याचना की; अल्लाल्–उसको छोड़कर; इळैत्ततु–किया; पिळै उण्टो–अपराध है क्या; कोल्कै–मारना; ओर् पॉरुळिड्रो–कोई बात है क्या; परन्त वॅम् पकैयै–व्याप्त बड़े शत्रु को; वॅन्ड्राल्–जीतेंगे तो; निन् वळि–तुम्हारे वश में; पटरुम् नङ्कै–आनेवाली यह स्त्री; तन्तैयै निनैवतु आताल्–पिता के सम्बन्ध में सोचेगी तो; अरन्तैयळ् आकुम् अन्ड्रे–दुःखिनी होगी न। १६३८

तब महोदर ने रावण से प्रार्थना की। हे इन्द्रसम्पत्ति के स्वामी! इसने आपकी इच्छा के अनुसार सीता से प्रार्थना करके याचना की। इसके सिवा उसने अपराध क्या किया? इसको मारने में कोई प्रयोजन होगा क्या? शत्रुविजय के बाद यह देवी तुम्हारी हो जाएगी। तब अगर वह अपने पिता का स्मरण करेगी तो दुःखिनी बन जाएगी न? । १६३८

ऍन्ड्रवन् विलक्क मीट्टाण् डिरुन्ददो रिरुदि यिन्कट्
कुन्ड्रॅन नीण्ड कुम्ब करुणनै यिरामन् कॉल्ल
वन्ड्रिरर् कुरङ्गिन् तानै वानुर वार्त्त वोदै
शॅन्ड्रन शॅविवि नूडु तेवर्ह ळार्प्पुम् जॅल्ल 1639

ऍन्ड्रु–कहकर; अवन्–उस (महोदर) के; विलक्क–इरादा बदलने पर; मीट्टु–रुककर; आण्टु–वहाँ; इरुन्ततु ओर् इरुतियिन् कण्–जब रावण रहा तब; कुन्ड्रु ॲॅन–पर्वत के समान; नीण्ट–ऊँचे; कुम्पकरुणनै–कुम्भकर्ण को; इरामन् कॉल्ल–श्रीराम के मारने पर; वल् तिड्रल्–अति बलवान; कुरङ्किन् तानै–वानरों की सेना का; वान् उड्र–आकाशव्यापी रीति से; आर्त्त–निकाला गया; ओतै–नाद; तेवर्कळ्–(और) देवों का; आर्प्पुम्–कोलाहल; चॅल्ल–साथ गये; चॅवियिन् ऊटु–(रावण के) कानों में; चॅन्ड्रन–पड़े। १६३९

महोदर ने रावण को रोका। रावण मन बदलकर वहाँ बैठा ही था कि पर्वतोन्नत कन्धों वाले कुंभकर्ण को श्रीराम ने मार दिया और कठोर बलवान वानर-सेना ने आकाशव्यापी नाद उठाया। उस ध्वनि के साथ देवों का आनन्दरव भी मिल गया। दोनों रावण के कानों में घुस गये। १६३९

उहुन्दिड्र लमरर् नाडुम् वानर यूहत् तोरुम्
मिहुन्दिड्रम् वेड्रॊन् ड्रिल्ला विरुवर्ना णॊलियुम् विञ्ज
तहुन्दिड्र निनैन्दे नॅम्बिक् कमरिडैत् तनिमैप् पाडु
पुहुन्दुळ दुण्डॅन्ड्र ड्रुळ्ळम् पॊरुमल्वन् दुड्रॅ पॊळ्दिन् 1640

मिकुम् तिड्रम्–(जिससे) बढ़कर उठने का सामर्थ्य; वेड्रु ऒन्ड्रु इल्ला–किसी

का नहीं रहा; इरुवर् नाण् ऑलियुम्-(वैसे) दोनों के ज्यास्वन को; तिऱल् उकुम्-जिनका बल कम हो गया था; अमरर्-वे देव और; नाटुम्-(युद्ध के) अन्वेषी; वानर यूकत्तोरुम्-वानर-सेना के वीर; विञ्च-आरूढ़ हो रहे हैं, इसका; तकुम् तिऱन्-योग्य हेतु; नितैन्तेन्-विचारा; ऍम्पिक्कु-मेरे छोटे भाई का; अमर् इटै-युद्ध में; तनिमैप्पाटु-अकेलापन; पुकुन्तु उळतु उण्टु-आ गया है; ऍन्ऱु-ऐसा; उळ्ळम्-मन में; पॊरुमल् वन्तु-दुःख आकर; उऱ्ऱ पोऴ्तिन्-रह गया तब। १६४०

रावण के मन में यह भाव उठा। किसी भी ध्वनि में श्रीराम और लक्ष्मण के ज्यास्वन से बढ़ निकलने की शक्ति नहीं है। ऐसी अद्वितीय ध्वनि को भी जीतकर निर्बल अमरों और युद्ध खोजनेवाले वानरों का जयनाद उठा। इसका कारण क्या है ? सोचने पर यही लगता है कि कुंभकर्ण अकेला फँस गया हो। रावण को दुःख सताने लगा; तब। १६४०

पुरन्दरु शेनै मुन्नी ररुञ्जिरैप् पोक्किप् पोदप्
परन्दन रनैय तूदर् शॅविमरुङ् गॅय्दिप् पैयत्
तिरन्दिर माह निन्ऱ कविप्पॆरुङ् गडलैच् चिन्दि
इरन्दन नुम्बि यम्बिऱ् कॊन्ऱन निराम नॆन्ऱार् 1641

पुरम् तरुम्-रक्षक; चेनै मुन्नीर्-सेना-सागर रूपी; अरु चिऱै पोक्कि-कठिन गारद को पार करके; पोत-बहुत; परन्तनर्-उड़नेवाले (तेज़ आये); अनैय तूतर्-उन दूतों ने; चॆवि मरुङ्कु ऍय्ति-(रावण के) कानों के पास आकर; तिरम् तिरमाक-झुण्डों में; निन्ऱ-जो खड़ी रही; कवि पॆरु कटलै-वानरों की बड़ी सेना के सागर को; चिन्ति-तितर-बितर करके; उम्पि-आपके छोटे भाई; इरन्तनन्-मर गये; इरामन्-राम ने; अम्पिल्-बाण से; कॊन्ऱनन्-मार दिया; ऍन्ऱार् पैय-कहा धीरे से। १६४१

रक्षक सेना-सागर के सख्त पहरे को पार कर दूत रावण के (कानों के) पास आये और धीरे से कहा कि जिन्होंने झुंडों में रहे वानरों के सेना-सागर को छिन्न-भिन्न कर दिया था, वे आपके भाई मर गये। राम के बाण ने उनका अंत कर दिया। १६४१

ऊरॊडुम् बॊरुन्दित् तोन्ऱु मौळियव नॆन्न वॊण्बॊन्
तारॊडु पुनैन्द मौलि तरैयॊडुम् पॊरुन्दत् तळ्ळिप्
पारॊडुम् पॊरुन्दि निन्ऱ मरामरम् पणैह ळोडुम्
वेरॊडुम् पऱिन्दु मण्मेल् वीऴ्वदे पोल वीऴ्न्दान् 1642

ऊरॊटुम् पॊरुन्ति-परिवेश-सहित; तोन्ऱुम्-दिखनेवाले; ऒळियवन् ऍन्न-प्रभाकर (सूर्य) के समान; ऒळ्-सुन्दर; पॊन् तारॊटु पुनैन्त-स्वर्णहार से युक्त; मौलि-किरीट के; तरैयॊटुम् पॊरुन्त-भूमि पर पड़ते; तळ्ळि-ढकेला जाकर; पारॊटुम् पॊरुन्ति निन्ऱ-भूमि में लगा रहा; मरामरम्-सालवृक्ष; वेरॊटुम् पऱिन्त-जड़ से

उखड़कर; पणैकळोटुम्–डालों-सहित; मण् मेल् वीळ्वते पोल–भूमि पर गिरा जैसे; वीळ्न्तान्–गिरा। १६४२

परिवेश के साथ प्रभाकर गिरा हो जैसे वह सुन्दर स्वर्णहारों से अलंकृत किरीटों के साथ और शाखाओं-सहित बड़ा सालवृक्ष ढकेला जाकर भूमि पर गिरा पड़ा हो— वैसे भूमि पर गिर गया। १६४२

पिरिवॆन्नुम् पीळै ताङ्गळ् पिऱन्दनाळ् तॊडङ्गि यॆन्ऱुम्
उरुवदोन् ऱिन्ऱि यावि यॊन्ऱॆन्न निनैन्दु निन्ऱान्
ॲरिवरु ममरिऱ् ऱम्बि तन्पॊरुट् टिऱन्दा नॆन्न
अऱिवळिन् दवश नाहि यरऱ्ऱिन् नण्ड मुऱ्ऱ 1643

ताङ्कळ्–उनके; पिऱन्त नाळ् तॊटङ्कि–जन्म के दिन से लेकर; पिरिवु ऎन्नुम्–वियोग का; पीळै–दुःख; ऒन्ऱु ऎन्ऱुम् उरुवतु इन्ऱि–कभी नहीं होगा और; आवि ऒन्ऱु–प्राण एक हैं; ऎन्न–ऐसा; निनैन्तु निन्ऱान्–जो सोचता रहा (वह); ऎरि वरुम् अमरिल्–(हथियार) जिसमें चलते हैं उस युद्ध में; तम्पि–छोटा भाई; तन् पॊरुट्टु–मेरे लिए; इऱन्तान्–मरा; ऎन्न–जानने पर; अऱिवु अऴिन्तु–मतिभ्रष्ट होकर; अवचन् आकि–अवश होकर; अण्टम् मुऱ्ऱ–(शोर से) अण्ड भरते हुए; अरऱ्ऱिनन्–विलापा। १६४३

जन्म से ही दोनों भाई कभी पृथक् नहीं हुए थे। अतः रावण दोनों को एकप्राण ही समझता रहा। 'वह कुंभकर्ण अब हथियारों के क्रिया-क्षेत्र समर में अपने कारण मर गया।' जब उसने यह समाचार सुना तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी। अवश होकर वह ऐसे उच्च स्वर में कलपने लगा कि उसकी ध्वनि सारे अण्डों में भर गयी। १६४३

तम्बियो वानवरान् दामरैयिन् काडुळक्कुम्
तुम्बियो नान्मुहत्तोन् शेय्मदलै तोन्ऱालो
नम्बियो विन्दिरनै नामप् पॊरित्तुडैत्त
ॲम्बियो यानुन्नै यिव्वुरैयुङ् गेट्टेने 1644

तम्पियो–हे छोटे भाई; वानवराम्–देव रूपी; तामरैयिन् काटु–कमलवन को; उळक्कुम्–मथनेवाले; तुम्पियो–गज; नान् मुकत्तोन्–चतुर्मुख के; चेय्–पुत्र के; मतलै–पुत्र के; तोन्ऱालो–पुत्र; नम्पियो–नायक वर्य; इन्तिरनै नामम् पॊरि–इन्द्र का नामोनिशान; तुटैत्त–मिटानेवाले; ऎम्पियो–मेरे कनिष्ठ; उन्नै–तुम्हारा; इ उरैयुम्–यह हाल भी; यान् केट्टेनै–मुझे सुनना पड़ा। १६४४

हे मेरे छोटे भैया! देवों के कमलवन के विलोडक हाथी! चतुर्मुख के प्रपौत्र! नायक! इन्द्र के नाम व निशान तक के नाशक अनुज! तुम्हारे सम्बन्ध में यह समाचार भी सुनना पड़ गया, हाय!। १६४४

मिऩ्ऩिलैय वेलोऩे यान्ऩ् विऴिहाणेऩ्
निऩ्ऩिलै यादॆऩ्ऩे नुयिर्पेणि निऱ्किऩ्ऱेऩ्
उऩ्ऩिलैमै यीदायि ऩोडै कळिऱुन्दिप्
पॊऩ्ऩुलह मीळप् पुहारो पुरन्दरऩार् 1645

मिऩ् इलैय–चमकदार पत्र के आकार के फल के; वेलोऩे–भालेवाले; उऩ् विऴि काणेऩ्–तुम्हारी आंखों से अदृश्य रहा; निऩ् निलै–तुम्हारी स्थिति; यातु–कैसी है; ॲॅऩ्ऩेऩ्–यह न जाना; याऩ्–मैं; उयिर् पेणि निऱ्किऩ्ऱेऩ्–प्राणों को पालता रहा; उऩ् निलैमै–तुम्हारी स्थिति; ईतु आयिऩ्–यह हो तो; ओटै कळिऱु उन्दि–मुखपट से अलंकृत (ऐरावत) गज को चलाते हुए; पुरन्तरऩार्–पुरंदर जी; पॊऩ् उलकम्–स्वर्णलोक (अमरावती); मीळ पुकारो–लौटकर पहुँचेंगे नहीं क्या। १६४५

विद्युत्-सम चमकदार फल से युक्त भालेवाले ! न तुम्हें देख रहा हूँ; न तुम्हारे सम्बन्ध में कुछ जानता हूँ। इस स्थिति में मैं अपनी जान की रक्षा करता हुआ जीवित रहता हूँ ! अगर तुम्हारी गति यह हो तो मुखपट से अलंकृत हाथी (ऐरावत) को चलाते हुए पुरंदरजी स्वर्ण-नगरी अमरावती को लौट नहीं जाएँगे क्या ? (इसमें "पुरन्दरऩार्" आदरसूचक बहुवचन का प्रयोग रावण अपमान के गुस्से में करता है।)। १६४५

वऩ्ऩॆञ्जि ऩॆऩ्ऩैनी नीत्तुप्पोय् वानडैन्दाल्
इऩ्ऩञ् जिलरो डॊरुवयिऱ्ऱि नियार्पिऱप्पार्
मिऩ्ऩञ्जु वेलोय् विऴियञ्जि वाऴ्हिऩ्ऱार्
तऩ्ऩॆञ्जन् दामे तडवारो दाऩवर्हळ् 1646

मिऩ् अञ्चुम्–विद्युत् को डरा दे ऐसे; वेलोय्–भाले के धारक; नी–तुम; वऩ् नॆञ्चिऩ् ॲॅऩ्ऩै–कठोर मनवाले मुझे; नीत्तु पोय्–छोड़ जाकर; वाऩ् अटैन्ताल्–स्वर्ग पहुँचो तो; इऩ्ऩम् चिलरोटु–और कुछ लोगों के साथ; ऑरु वयिऱ्ऱिऩ् यार् पिऱप्पार्–एक कोख में कौन जन्म लेगा (लेना चाहेगा); विऴि अञ्चि वाऴ्किऩ्ऱार्–तुम्हारी दृष्टि से डरकर जो जीते हैं वे; ताऩवर्कळ्–दानव; तम् नॆञ्चम्–अपनी छाती; तामे तटवारो–स्वयं नहीं सहलाएँगे (फुलायेंगे क्या)। १६४६

विद्युत् को भी भय से भरनेवाले भाले के धारक ! मैं बहुत ही सख्त दिल का हूँ। तुम मुझे छोड़कर वीर-स्वर्ग पहुँच गये। यह देखकर कौन सहोदरों के साथ पैदा होना चाहेगा ? तुम्हारी दृष्टि से डरते रहनेवाले दानव भी अब अपनी छाती फुलाते नहीं फिरेंगे क्या ?। १६४६

कल्लऩ्ऱो नीराडुङ् गालत्तुऩ् काल्तेय्क्कुम्
मल्लॊऩ्ऱु तोळाय् वडमेरु माऩुडवऩ्
विल्लॊऩ्ऱु निऩ्ऩै विऴिवित्त तुळदॆऩ्ऩुम्
शॊल्लऩ्ऱो वॆऩ्ऩैच् चुडुहिऩ्ऱ दुतोऩ्ऱाल् 1647

मल् ऑन्ऱु तोळाय्–मल्लयोग्य कन्धों वाले; वटमेरु–उत्तरी मेरु; नीराट्टुम् कालत्तु–तुम्हारे नहाते समय; उन् काल् तेय्क्कुम् कल् अन्ऱो–पैरों को मलकर मैल निकालने के लिए उपयुक्त पत्थर नहीं क्या; तोन्ऱाल्–महिमामय; निन्नै–तुम्हें; मानुटवन् विल् ऑन्ऱु–मानव के एक धनु ने; विळिवित्तु उळतु–मरवा दिया है; ॲन्नुम् चोल् अन्ऱो–यह कथन न; ॲन्नै चुट्टुकिन्ऱतु–मुझे जलाता है। १६४७

मल्लयुद्ध-योग्य कंधोंवाले! उत्तर का मेरु पर्वत भी तुम्हारे स्नान करते वक़्त तुम्हारा पैर का मैल रगड़नेवाला पत्थर था। महिमावान्! ऐसे तुम्हारा एक नर के धनु ने अंत करा दिया —यह कथन ही न मेरे मन को तपा रहा है! । १६४७

माण्डन्नवाञ् जूलमुञ् जक्करमुम् वच्चिरमुम्
तीण्डिन्नवा वॉन्ऱुञ् जॅयलऱ्ऱु वाटॅरित्तु
मीण्डन्नवा मानिडवन् मॅल्लम्बु मॅय्युरुव
नीण्डन्नवान् दामिन्नु निन्ऱारान् दोळ्नोक्कि 1648

चूलमुम्–(शिवजी का) त्रिशूल और; चक्करमुम्–(विष्णु का) चक्र; वच्चिरमुम्–(इन्द्र का) वज्र; तीण्टिन्नवा–लगे; ऑन्ऱुम् चॅयल् अऱ्ऱवा–पर कुछ न कर सके और; माण्टन आम्–मिटे; तॅरित्तु मीण्टन आम्–टूटकर लौट गये; मानिटवन्–नर के; मेल् अम्पु–मृदु शर; मॅय् उरुव–(तुम्हारे शरीर को) भेदकर बाहर आने के वास्ते; नीण्टन आम्–बढ़े; ताम्–(रावण) आप; तोळ् नोक्कि–अपने कन्धों को देखते हुए; निन्ऱाराम्–रहा। १६४८

शिव का त्रिशूल, विष्णु का चक्र और इन्द्र का वज्र —ये तुम्हारे शरीर पर लगे, बेकार हुए; निष्क्रिय होकर, अपना सत्त्व खोकर टूटे और दूर चले गये। एक नर के शर में इतनी ताक़त रही कि वह तुम्हें भेद गया। अब भी रावण अपने कंधों को देखता हुआ खड़ा रहता है। क्या खूब! । १६४८

नोक्कऱवु मॅम्बियर्हळ् माळवुमिन् नीय्दिलङ्गै
पोक्कऱवु मादुलनार् पॉन्ऱवुमॅन् पिन्पिऱन्दाळ्
मूक्कऱवुम् वाळ्न्दे नॉरुत्ति मुलैक्किडन्द
एक्कऱवा लिन्नु मिरेन्नो वुन्नैयिळन्वुम् 1649

ॲम्पियर्कळ्–मेरे छोटे भाई लोग; नोक्कु अऱवुम्–अवश्य हो; माळवुम्–मरें और; इ इलङ्कै–यह लंका; नॉय्तु पोक्कु अऱवुम्–आसानी से शत्रु के हाथ लग जाये; मातुलनार् पॉन्ऱवुम्–मेरा मामा मर जाय और; ॲन् पिन् पिऱन्ताळ्–मेरी अनुजा; मूक्कु अऱवुम्–नाक-कटी हो जाय और; ऑरुत्ति–एक स्त्री के; मुलै किटन्त–स्तनों पर पड़े रहे; एक्कऱवाल्–राग से; वाळ्न्तेन्–जीवित रहता हूँ; उन्नै इळन्तुम्–(वैसा मैं) तुम्हें खोकर; इन्नम् इरेनो–(अब) भी नहीं रहूँगा क्या। १६४९

मेरे अनुज मरे। यह लंका आसानी से शत्रु के वश में चली जायगी।

मामा मरे। मेरी अनुजा की नाक कटी। ऐसी हालत में भी मैं किसी स्त्री के स्तनों पर आसक्ति के कारण न (निर्लज्ज होकर) जीवित रहता हूँ। (ऐसा मैं) तुमको खोकर भी जीवित नहीं रहूँगा क्या ? । १६४९

तन्ऩैत्तान् तम्बियैत्तान् तानैत् तलैवऩैत्तान्
मन्ऩैत्तान् मैन्दऩैत्तान् मारुदत्तिन् कादलैत्तान्
पिन्ऩैक् करडिक् किऱैयैत्तान् पेर्मायत्ताय्
ॲन्ऩत्तान् केट्टिले ॲन्ऩात वाऱिदुवे 1650

तऩ्ऩै तान्–श्रीराम को और; तम्पियै तान्–उसके भाई को और; तानै तलैवनै तान्–सेनानायक नील को और; मऩ्ऩै तान्–वानरराज (सुग्रीव) को; मैन्तनै तान्–उसके पुत्र को; मारुतत्तिन् कातलै तान्–वायुनन्दन को; पिऩ्ऩै–और; करटिक्कु इऱैयै तान्–रीछों के राजा जाम्बवान को; पेर् मायत्ताय्–नाम (गौरव-) नहीं कर अन्त कर दिया (तुमने); ॲन्ऩ तान् केट्टिलेन्–ऐसा न सुन पाया; इतु आन आऱु–यह होने का हाल; ॲन्–कैसे हुआ। १६५०

हाय ! मुझे यह सुनने का भाग्य तुमने नहीं दिया कि राम को, उसके छोटे भाई को, सेनापति नील को, राजा सुग्रीव को, उसके पुत्र को, वायुनंदन हनुमान को और रीछों के राजा जांबवान को, नाम-निशान-हीन करके मरवा दिया ! यह हुआ कैसा ? । १६५०

एऴै महळिर् रडिवरुड वीर्न्दॆन्ऱल्
वाऴु मणियरङ्गिर् पूम्बळ्ळि वैहुवाय्
शूऴु मलहै तुणङ्गैप् पऱैतुवैप्पप्
पूऴि याणैमेल् तुयिन्ऱऩैयो पोर्क्कळत्ते 1651

एऴै मकळिर्–अबोध स्त्रियों के; अटि वरुट–पैर सहलाते; ईर्न् तॆन्ऱल्–ठण्डा मलयपवन; वाऴुम्–जहाँ बहता रहता है; मणि अरङ्किल्–सुन्दर नृत्यशाला में; पूम् पळ्ळि वैकुवाय्–सुमनशय्या पर सोनेवाले; पोर् कळत्तु–युद्धभूमि को; शूऴुम् अलकै–घेरे रहनेवाले भूतों के; तुणङ्कै पऱै–'तुणङ्गै' नाम के नाच के योग्य ढोल; तुवैप्प–(जब) बजाते; पूऴि अणै मेल्–धल की शय्या पर; तुयिन्ऱऩैयो–सो गये क्या। १६५१

सुन्दर नृत्यशाला में, जहाँ दक्षिणी मलयपवन बहता रहता है, अबोध ललनाओं के तुम्हारे पैर सहलाते सुमनशय्या में लेटनेवाले हे मेरे भैया ! अब युद्धभूमि में, जहाँ भूतगणों के "तुणङ्गै" नाच के ढोल बजाते, धूल की शय्या में सोते हो क्या ? । १६५१

शॆन्देन् परुहित् तिशैतिशैयु नीवाऴ
उय्न्दे ऩिऩियिऩ्ऱु नानु मुऩक्काक्कि

तन्देन् पिरियेन् तनिपोहत् ताळ्क्किलेन्
वन्देन् तॉडर मदक्कळिऱे वन्देनाल् 1652

चॅं तेन् परुकि–लाल रंग का मधु पीकर; तिचै तिचैयुम्–चारों दिशाओं में; नी वाळ–तुम अच्छी तरह जीते रहे तो; उयन्तेन्–मैं भी (सुखमय) जीवन बिताता रहा; इनि–आगे; इन्ऱु–अब; नानुम्–मैंने भी; उनक्कु–तुम्हारे लिए; आवि तन्तेन्–प्राण छोड़कर; तनि पोक–अकेले जाने में; ताळ्क्किलेन्–विलम्ब नहीं करूँगा; पिरियेन्–अलग नहीं होऊँगा; तॉटर वन्तेन्–अनुगमन करने आ गया; मतम् कळिऱे–मत्त हाथी; वन्तेन्–आ गया। १६५२

तुम लाल रंग की ताड़ी पीकर दिशा-दिशा में सुख के साथ जीते रहे और मैं उसी के बल पर सुखी जीवन बिता रहा था। अव मैं तुम्हारे वियोग में प्राण दे दूँगा। तुमको अकेले जाने देकर मैं विलंब नहीं करूँगा। तुम्हारा अनुगमन करूँगा। हे मत्तगज ! अभी आ गया मैं। १६५२

अण्डत् तळवु मिनैय पहर्न्दळैत्तुप्
पण्डैत्तन् नामत्तिन् कारणत्तैप् पारित्तान्
तॉण्डैक् कनिवाय् तुडिप्प मयिर्पॉडिप्पक्
कॅण्डैत् तडङ्गण्णा ळुळ्ळे किळुकिळुत्ताळ् 1653

इनैय पकर्न्तु–ऐसा कहकर; अण्टत्तु अळवुम्–आकाश की चोटी तक; अळैत्तु–(ध्वनि पहुँचे) ऐसा पुकार मचाकर; पण्टै–प्राचीन; तन् नामत्तिन्–अपने नाम के; कारणत्तै–कारण को; पारित्तान्–सब पर प्रगट किया; कॅण्टै तटम् कण्णाळ्–'शेल' नामक मछली-सी और आयत आँखों वाली सीताजी; तॉण्टै कनिवाय्–बिंबफलाधरों के; तुटिप्प–फड़कते; मयिर् पॉटिप्प–रोंगटे खड़े होते; उळ्ळे–अन्दर ही अन्दर; किळुकिळुत्ताळ्–प्रफुल्ल हुईं। १६५३

रावण ने ऐसी बातें कहते हुए आकाश तक पहुँचनेवाले स्वर में रोकर अपने नाम के प्राचीन अर्थ को ("रोनेवाला" —भी रावण के शब्द का अर्थ है) साबित कर रहा था। मीनाक्षी सीताजी के बिंबफलाधर आनंद में फड़क उठे। रोंगटे खड़े हो गये। और वे मन ही मन प्रफुल्लित हुईं। १६५३

वीङ्गिनाळ् कॊङ्गै मॅलिन्द मॅलिवहल
ओङ्गिना ळुळ्ळ मुवन्दा ळुयिरुयिर्त्ताळ्
तीङ्गिलाक् कऱ्पिऱ् ऱिरुमडन्दै शेडियाम्
पाङ्गिना ळुऱ्ऱदनै यारे पहर्हिऱ्पार् 1654

कॊङ्कै वीङ्किनाळ्–विवर्द्धितस्तना हुईं; मॅलिन्त मॅलिवु अकल–(कृश) हुई कृशता दूर हुई; ओङ्किनाळ्–मोटी हुईं; उळ्ळम् उवन्ताळ्–मन में प्रसन्न हुईं; उयिर् उयिर्त्ताळ्–प्राणपरिचायक श्वास छोड़े; तीङ्किला कऱ्पिन्–अकलंक सतीत्व

मामा मरे। मेरी अनुजा की नाक कटी। ऐसी हालत में भी मैं किसी स्त्री के स्तनों पर आसक्ति के कारण न (निर्लज्ज होकर) जीवित रहता हूँ। (ऐसा मैं) तुमको खोकर भी जीवित नहीं रहूँगा क्या ? । १६४९

तऩ्ऩैत्ताऩ् तम्बियैत्ताऩ् ताऩैत् तलैवऩैत्ताऩ्
मऩ्ऩैत्ताऩ् मैन्दऩैत्ताऩ् मारुदत्तिऩ् कादलैत्ताऩ्
पिऩ्ऩैक् करडिक् किऱैयैत्ताऩ् पेर्मायत्ताय्
ॲऩ्ऩत्ताऩ् केट्टिले ऩॆऩ्ऩाऩ वाऱिदुवे 1650

तऩ्ऩै ताऩ्–श्रीराम को और; तम्पियै ताऩ्–उसके भाई को और; ताऩै तलैवऩै ताऩ्–सेनानायक नील को और; मऩ्ऩै ताऩ्–वानरराज (सुग्रीव) को; मैन्तऩै ताऩ्–उसके पुत्र को; मारुतत्तिऩ् कातलै ताऩ्–वायुनन्दन को; पिऩ्ऩै–और; करटिक्कु इऱैयै ताऩ्–रीछों के राजा जाम्बवान को; पेर् मायत्ताय्–नाम (गौरव-) नहीं कर अन्त कर दिया (तुमने); ॲऩ्ऩ ताऩ् केट्टिलेऩ्–ऐसा न सुन पाया; इतु आन आऱु–यह होने का हाल; ॲऩ्–कैसे हुआ। १६५०

हाय ! मुझे यह सुनने का भाग्य तुमने नहीं दिया कि राम को, उसके छोटे भाई को, सेनापति नील को, राजा सुग्रीव को, उसके पुत्र को, वायुनंदन हनुमान को और रीछों के राजा जांबवान को, नाम-निशान-हीन करके मरवा दिया ! यह हुआ कैसा ? । १६५०

एऴै महळि रडिवरुड वीर्न्दॆऩ्ऱल्
वाऴु मणियरङ्गिऱ् पूम्बळ्ळि वैहुवाय्
शूऴु मलहै तुणङ्गैप् पऱैतुवैप्पप्
पूऴि याणमेल् तुयिऩ्ऱऩैयो पोर्क्कळत्ते 1651

एऴै मकळिर्–अबोध स्त्रियों के; अटि वरुट–पैर सहलाते; ईर्न् तॆऩ्ऱल्–ठण्डा मलयपवन; वाऴुम्–जहाँ बहता रहता है; मणि अरङ्किल्–सुन्दर नृत्यशाला में; पूम् पळ्ळि वैकुवाय्–सुमनशय्या पर सोनेवाले; पोर् कळत्तु–युद्धभूमि को; चूऴुम् अलकै–घेरे रहनेवाले भूतों के; तुणङ्कै पऱै–'तुणङ्गै' नाम के नाच के योग्य ढोल; तुवैप्प–(जब) बजाते; पूऴि अणै मेल्–धल की शय्या पर; तुयिऩ्ऱऩैयो–सो गये क्या। १६५१

सुन्दर नृत्यशाला में, जहाँ दक्षिणी मलयपवन बहता रहता है, अबोध ललनाओं के तुम्हारे पैर सहलाते सुमनशय्या में लेटनेवाले हे मेरे भैया ! अब युद्धभूमि में, जहाँ भूतगणों के "तुणङ्गै" नाच के ढोल बजाते, धूल की शय्या में सोते हो क्या ? । १६५१

शॆन्देऩ् परुहित् तिशैतिशैयु नीवाऴ
उयन्दे ऩिऩ्ऩियिऩ्ऱु नाऩु मुऩक्काविल

तन्देन् पिरियेन् तनिपोहत् ताळ्क्किलेन्
वन्देन् तॊडर मदक्कळिऱे वन्देताल् 1652

चॆं तेन् परुकि–लाल रंग का मधु पीकर; तिचै तिचैयुम्–सारी दिशाओं में; नी वाळ–तुम अच्छी तरह जीते रहे तो; उय्न्तेन्–मैं भी (सुखमय) जीवन बिताता रहा; इनि–आगे; इन्ऱु–अब; नानुम्–मैंने भी; उनक्कु–तुम्हारे लिए; आवि तन्तेन्–प्राण छोड़कर; तनि पोक–अकेले जाने में; ताळ्क्किलेन्–विलम्ब नहीं करूँगा; पिरियेन्–अलग नहीं होऊँगा; तॊटर वन्तेन्–अनुगमन करने आ गया; मतम् कळिऱे–मत्त हाथी; वन्तेन्–आ गया। १६५२

तुम लाल रंग की ताड़ी पीकर दिशा-दिशा में सुख के साथ जीते रहे और मैं उसी के बल पर सुखी जीवन बिता रहा था। अब मैं तुम्हारे वियोग में प्राण दे दूँगा। तुमको अकेले जाने देकर मैं विलंब नहीं करूँगा। तुम्हारा अनुगमन करूँगा। हे मत्तगज ! अभी आ गया मैं। १६५२

अण्डत् तळवु मिन्नैय पहर्न्दळैत्तुप्
पण्डैत्तन् नामत्तिन् कारणत्तैप् पारित्तात्
तॊण्डैक् कनिवाय् तुडिप्प मयिर्पॊडिप्पक्
कॆण्डैत् तडङ्गण्णा ळुळ्ळे किळुकिळुत्ताळ् 1653

इन्नैय पकर्न्तु–ऐसा कहकर; अण्टत्तु अळवुम्–आकाश की चोटी तक; अळैत्तु–(ध्वनि पहुँचे) ऐसा पुकार मचाकर; पण्टै–प्राचीन; तन् नामत्तिन्–अपने नाम के; कारणत्तै–कारण को; पारित्तान्–सब पर प्रगट किया; कॆण्टै तटम् कण्णाळ्–'शेल' नामक मछली-सी और आयत आँखों वाली सीताजी; तॊण्टै कनिवाय्–बिंबफलाधरों के; तुटिप्प–फड़कते; मयिर् पॊटिप्प–रोंगटे खड़े होते; उळ्ळे–अन्दर ही अन्दर; किळुकिळुत्ताळ्–प्रफुल्ल हुई। १६५३

रावण ने ऐसी बातें कहते हुए आकाश तक पहुँचनेवाले स्वर में रोकर अपने नाम के प्राचीन अर्थ को ("रोनेवाला" —भी रावण के शब्द का अर्थ है) साबित कर रहा था। मीनाक्षी सीताजी के बिंबफलाधर आनंद में फड़क उठे। रोंगटे खड़े हो गये। और वे मन ही मन प्रफुल्लित हुईं। १६५३

वीङ्गिनाळ् कॊङ्गै मॆलिन्द मॆलिवहल
ओङ्गिना ळुळ्ळ मुवन्दा ळुयिरुयिर्त्ताळ्
तीङ्गिलाक् कऱ्पिऱ् ऱिरुमडन्दै शेडियाम्
पाङ्गिना ळुऱ्ऱदनै यारे पहर्हिऱ्पार् 1654

कॊङ्कै वीङ्किनाळ्–विवर्द्धितस्तना हुई; मॆलिन्त मॆलिवु अकल–(कृश) ई कृशता दूर हुई; ओङ्किनाळ्–मोटी हुई; उळ्ळम् उवन्ताळ्–मन में प्रसन्न हुई; यिर् उयिर्त्ताळ्–प्राणपरिचायक श्वास छोड़े; तीङ्किला कऱ्पिन्–अकलंक सतीत्व

को; तिरुमटन्तै–श्रीदेवी भी; चेटियाम् पाङ्किऩाळ्–उनकी दासी बने ऐसे गौरव-वाली; उऱ्ऱतत्तै–जिस स्थिति में आयीं; पकर्किऱ्पार् यार्–उसको कह सके कौन। १६५४

आनंदातिरेक के कारण देवी के स्तन वर्द्धित हुए। मन में हर्ष का अनुभव किया। जीवन को साबित करती हुई श्वास छोड़े। अनिंद्य सतीत्व वाली श्रीदेवी भी जिनकी चेरी बनें, ऐसी सुन्दर सीताजी की तब की हालत का वर्णन कौन कर सकेगा ? । १६५४

कण्डाळ् करुणतैत्तन् कण्गडन्द तोळाऩैक्
कॊण्डा ळॊरुतुणुक्क मऩ्ऩवनैक् कॊऱ्ऱवऩार्
तण्डाद वाळि तडिन्द तनिवार्त्तै
उण्डा ळुडल्तडित्ताळ् वेऱॊरुत्ति यॊक्किऩ्ऱाळ् 1655

तन् कण् कटन्त–अपनी दृष्टि-विस्तार को पार करनेवाले; तोळातै–कन्धों से युक्त; करुणतै–कुंभकर्ण को; कण्टाळ्–(पहले कभी) देखकर; ऒरु तुणुक्कम्–अगाध भय; कॊण्टाळ्–(जिन्होंने) अनुभव किया था; अऩ्ऩवतै–उसको; कॊऱ्ऱवऩार्–विजयराघव के; तण्टात वाळि–अमोघ शर के; तटित्त–काटने का; तनि वार्त्तै–अपूर्व कथन; उण्टाळ्–सुनकर; उटल् तटित्ताळ्–शरीर की मोटी बनीं; वेऱु ऒरुत्ति ऒक्किऩ्ऱाळ्–किसी दूसरी स्त्री के समान लगती हैं। १६५५

देवी ने कुम्भकर्ण को, जिसके कंधे इतने विशाल थे कि देवी की दृष्टि के दायरे में वे नहीं आ सके, एक बार देखा था। देखकर भय का अनुभव किया था। उस कुम्भकर्ण का विजयराघव के शर द्वारा कट जाने का समाचार सुनकर उनका शरीर मोटा हो गया और वे किसी दूसरी स्त्री के समान लगीं। १६५५

तावरिय पेरुलहत् तिऩ्ऱॆऩ् शरङ्गोलि
यावरैयुङ् गॊऩ्ऱडक्कि यॆऩ्ऱुम् इऱवाद
मूवरैयु मेलैनाण् मूवा मरुन्दुण्ड
तेवरैयुम् वैप्पेऩ् शिऱैयॆऩ्ऩच् चीऱिऩाऩ् 1556

ता अरिय–अमिट; पेर् उलकत्तु–इस बड़े संसार में; इऩ्ऱु–आज; ऎऩ् चरम् कोलि–अपना शर चलाकर; यावरैयुम् कॊऩ्ऱु अटक्कि–सबका हनन कर दबाकर; ऎऩ्ऱुम् इऱवात–कभी न मरनेवाले; मूवरैयुम्–त्रिदेवों को और; मेलै नाळ्–प्राचीन काल में; मूवा मरुन्तु उण्ट–नित्ययौवन की दवा जिन्होंने खायी उन; तेवरैयुम्–देवों को; चिऱै वैप्पेऩ्–कारागृह में बन्द करूँगा; ऎऩ्ऩ–ऐसा कहकर; चीऱिऩाऩ्–कुपित हुआ। १६५६

तब रावण कोपाक्रांत हुआ। उसने गुस्से में कहा— इस अक्षय बड़े संसार के सभी जीवों को अपने बाणों को चलाकर मार दूंगा और अमर त्रिदेवों और अन्य अमृतपायी देवों को कारागृह में बन्द कर दूंगा। १६५६

अक्कणत्तु मन्दिरिय राऱ्ऱुच् चिऱ्ऱिदाऱि
इक्कणत्तु मानिडव रीरक् कुरुदियाल्
मुक्कैप् पुनलुहुप्पॅ नॅम्बिक् कॅन्नमुनियात्
तिक्कनैत्तुम् बोर्कडनदान् पोयिनान् तीविळियान् 1657

तिक्कु अनैत्तुम्—सभी दिशाओं में; पोर् कटन्तान्—युद्ध करके जो जीत पाया था वह रावण; अ कणत्तु—तब; मन्तिरियर् आऱ्ऱ—मन्त्रियों के धीरज देते; चिऱ्ऱितु आऱि—थोड़ा धैर्य पाकर; इ कणत्तु—इसी क्षण; मानिटवर्—नरों के; ईरम् कुरुतियाल्—आर्द्र रक्त से; ऍम्पिक्कु—मेरे भाई को; मुक्कै पुनल् उकुप्पॅन्—तीन बार हाथों से (जल) छोड़ूँगा; ऍन—ऐसा; मुनिया—कोप के साथ कहकर; ती विळियात्—आग्नेय दृष्टि के साथ; पोयिनान्—चला गया। १६५७

दिग्विजयी रावण को मंत्रियों ने ढाढ़स दिया और वह थोड़ा शांत हुआ। अग्निमय आँखों के साथ वह अपना यह निश्चय सुनाकर उठ चला कि अभी इन नरों के ताज़े रक्त को तीन बार अपने हाथ से छोड़कर अपने भाई का तर्पण करूँगा। १६५७

कूऱो मिनिना मक्कुम्ब करुणनार्
पाऱाडु वॅङ्गळत्तुप् पट्टा रॅनप्पदैया
वेऱोर् शिऱैयिवनै वैम्मिन् विरैन्दॅन्न
माऱोर् तिशैनोक्किप् पोनार् महोदरनार् 1658

इति नाम् कूऱोम्—आगे हम नहीं बोलेंगे; अ कुम्पकरुणनार्—वे कुम्भकर्ण; पाऱु आटु—बाज़ जहाँ क्रीडा करते हैं; वॅम् कळत्तु—उस भयंकर युद्ध के मैदान में; पट्टार्—मरे; ऍन पतैया—ऐसा तड़पकर; वेऱु ओर् चिऱै—दूसरी एक कारा में; इवनै—इसे; विरैन्तु वैम्मिन्—जल्दी डाल दो; ऍन्न—यह आज्ञा सुनाकर; मकोतरनार्—महोदरजी; माऱु ओर् तिचै नोक्कि—अन्य एक दिशा की ओर; पोनार्—गये। १६५८

अब हम कुछ नहीं कहेंगे। (यह कवि की उक्ति है।) कुम्भकर्ण बाज़ों के क्रीडास्थल, युद्धभूमि में मारा गया—इस खबर से विह्वलमन होकर महोदरजी यह आज्ञा देकर दूसरी एक दिशा में चला कि इसे दूसरी कारा में जल्दी बन्द करो। १६५८

वरिशडै नऱुमलर् वण्डु पाडिलात्
तुरिशडै पुरिहुळऱ् चुम्मै शुऱ्ऱिय
ऑरुशडै युडैयवट् कुडैय वन्बिनाळ्
तिरिशडै तॅरुट्टुवा ळितैय शॅप्पुवाळ् 1659

वरिचटै—लकीरों से युक्त पंखों वाले; नऱु मलर्—और सुगन्धमय फूलों के; वण्टु—भ्रमर; पाटु इला—जिस पर नहीं मँड़राते; तुरिचु अटै—मैले; पुरि कुऴल्

चुम्मै–ऐंठे केश का भार; ऑरु चटै चुऱ्ऱिय–एक वेणी बनाकर; उटैयवट्कु–जो रहीं उन (सीतादेवी) पर; उटैय अऩ्पिताळ्–जो प्रेम रखती थी उस; तिरिचटै–त्रिजटा ने; तॆरुट्टुवाळ्–समझाती हुई; इत्तैय चॆप्पुवाळ्–ये बातें कहीं। १६५९

देवी सीता का केशभार मैला हो गया था। उस पर लकीरों से युक्त पंखों वाले भ्रमर नहीं मँड़राते थे। वह एक ही वेणी में बटा हुआ था। ऐसी देवी से उनसे आसक्त त्रिजटा ने उसके मन को साफ़ करने के वास्ते ये बातें कहीं। १६५९

उन्दैयॆंऩ् ऱुऩक्कॆदि रुरुव माऱ्ऱिये
वन्दवऩ् मरुत्तऩॆंऩ् ऱुळऩोर् मायैयाऩ्
अन्दमिल् कॊडुन्दॊऴि लरक्कऩ् ऩामॆऩाच्
चिन्दैयि लुणर्त्तिऩ ळमुदिऩ् शॆय्हैयाळ् 1660

उन्तै ऎंऩ्ऱु–तुम्हारा पिता कहता हुआ; उऩक्कु ऎतिर्–तुम्हारे समक्ष; उरुवम् माऱ्ऱिये–रूप बदलकर; वन्तवऩ्–जो आया वह; मरुत्तऩ् ऎंऩ्ऱु उळऩ्–मरुत नाम का जो है वह; ओर्–अद्वितीय; मायैयाऩ्–मायावी; अन्तम् इल्–अगाध; कॊटु तॊऴिल्–क्रूरकर्म; अरक्कऩ् आम्–राक्षस है; ऎऩा–ऐसा; अमुतिऩ् चॆय्कैयाळ्–अमृत-सम कार्य करनेवाली त्रिजटा ने; चिन्तैयिल् उणर्त्तिऩळ्–(सीताजी के) मन में लगे ऐसा समझाया। १६६०

तुम्हारे सामने, तुम्हारे पिता के रूप में जो अपना रूप बदलकर आया था, वह बड़ा ही अगाध क्रूर मायावी मरुत नाम का निशाचर है। ऐसा अमृतकृत्या त्रिजटा ने सीतादेवी के मन में बात लगे, ऐसा समझाया। १६६०

नङ्गैयु मवळुरै नाळुन् देऱुवाळ्
शङ्गैयु मिऩ्ऩलुन् दुयरुन् दळ्ळिऩाळ्
इङ्गुनिऩ् ऱेहिय विलङ्गैक् कावलऩ्
अङ्गुनिऩ् ऱियऱ्ऱिय दऱैहु वामरो 1661

अवळ् उरै–उसकी बात; नाळुम्–प्रतिदिन (सदा); तेऱुवाळ्–माननेवाली नङ्कैयुम्–सीतादेवी ने भी; चङ्कैयुम् इऩ्ऩलुम्–संशय और दुःख को; तुयरम्–और कष्ट के भावों को; तळ्ळिऩाळ्–छोड़ दिया; इङ्कु निऩ्ऱु–यहाँ से; एकिय–जो गया; इलङ्कै कावलऩ्–लंकापालक ने; अङ्कु निऩ्ऱु–वहाँ रहकर; इयऱ्ऱियतु–जो किया; अऱैकुवाम्–कहेंगे। १६६१

सीताजी त्रिजटा की बातों पर सदा विश्वास करती थीं। अब भी उसकी बातों को मानकर वे संशय, दुःख और दुःख के भावों (लक्षणों) से विमुक्त हुईं। यहाँ से जो गया, उस रावण ने वहाँ क्या किया? अब हम उसका बखान करेंगे। १६६१

17. अदिकायन् वदैप् पडलम् (अतिकाय-वध पटल)

कॊळ्ळुन्दुविट् टळन्ऱॆरि मडङ्गल् कूट्टर
ऍळ्ळुन्दॆरि वॆहुळिया तिरुम रुङ्गिनुम्
तॊळ्ळुन्दकै यमैच्चरैच् चुळित्तु नोक्कुरा
मॊळ्ळिन्दत तिडियॊडु मुहिलुञ् जिन्दवे 1662

कॊळ्ळुनतु विट्टु–ज्वालाएँ निकालते हुए; अळन्ऱु–धधककर; मटक्कल् ऎरि–युगान्त की अग्नि भी; कूट्टु अऱ–समानता न कर सके ऐसा; ऍळ्ळुनतु ऎरि–भभककर जलनेवाली; वॆकुळियात्–कोपाग्निवाला; इरु मरुक्कितुम्–दोनों ओर; तॊळ्ळुम् तकै–नमस्कार करनेवाले; अमैच्चरै–मन्त्रियों को; चुळित्तु नोक्कुरा–कुपित हो देखकर; इटियॊटु मुकिलुम् चिन्त–वज्र के साथ मेघों को भी गिराते हुए; मॊळ्ळिनतत्–बोला। १६६२

उसका कोप इतना अधिक हो गया कि उस अग्नि की युगांत की ज्वाला-सहित भभककर जलनेवाली अग्नि भी समता नहीं कर सके। उसने अपनी दोनों ओर के नमन करते रहे मंत्रियों से ऐसे उच्च स्वर में दहाड़ा कि अशनि के साथ मेघ भी बिखर जाएँ। १६६२

एहुदि ऎम्मुहत् तॆवरु मॆन्नुडै
योहवॆञ् जेनैयु मुडऱ्ऱु मुम्मुडैच्
चाहरत् तानैयुन् दळुवच् चाऱ्न्दवर्
वेहवॆञ् जिलैत्तॊळ्ळिल् विलक्कि मीळ्हिलिर् 1663

ऍन् उटै–मेरी; योक–उपायचतुर; वॆम्–और संतापक; चेनैयुम्–सेना और; उम् उटै–तुम्हारी; उटऱ्ऱुम्–नाशक; चाकरम् तानैयुम्–सागर-सी सेना; तळुव चाऱ्न्तु–सम्मिलित होकर; अवर् वेकम् वॆम् चिलै–उनके तीव्र और दाहक धनु के; तॊळ्ळिल् विलक्कि–कार्य का निवारण कर; मीळ्किलीर्–लौट नहीं सके; ऍन् मुकत्तु–मेरे मुख के सामने से; ऍवरुम् एकुतिर्–सब चले जाओ। १६६३

तुम्हारे पास मेरी उपाय-चतुर सेना के साथ मिला हुआ तुम्हारी नाशकारी सेना का सागर भी था। तो भी तुम उनके भयंकर वा तेज धनु के कार्य को रोककर नहीं आ सके। इसलिए सब मेरे सामने से हट जाओ। १६६३

ऍडुत्तव रिरुन्दुळ्ळि यय्दि यारैयुम्
पडुत्तिवण् मीडुमॆन् ऱुरैत्त पण्बितोर्
तुडुत्तिलो ऎम्बियैत् ताङ्ग हिऱ्ऱिलीर्
कॊडुत्तिलो रुम्मुयिर् वीरक् कोट्टियोर् 1664

अॅट्टुत्तवर्–युद्ध का आरम्भ करनेवाले; इरुन्तुऴि अॅय्ति–जहाँ रहते हैं, उस स्थान जाकर; यारॅयुम् पट्टुत्तु–सबको धराशायी करके; इवण् मीट्टुम्–यहाँ लौट आएँगे; अॅन्ऱु उरॅत्त–ऐसा कहने का; पण्पित्तीर्–साहस रखनेवाले; अॅम्पियॅ तट्टुत्तिलीर्–मेरे अनुज को नहीं रोका; ताङ्क किऱ्ऱिलीर्–न उसे बचा सके; उम् उयिर् कोट्टुत्तिलीर्–अपने प्राण उत्सर्ग नहीं किये; वीरम् कोट्टियोर्–वीरों की गोष्ठी में रहते हो। १६६४

तुम लोगों ने डींग मारी थी कि युद्ध में आये लोग जहाँ हैं वहीं जाकर सभी को धराशायी करके लौट आओगे। ऐसे हे साहसी ! तुमने मेरे छोटे भाई को युद्ध में जाने से नहीं रोका। न तुम उसे बचा सके। तुमने अपने प्राण नहीं दिये। तुम भी वीरों की गोष्ठी में माने जाते हो ! । १६६४

उम्मैयि निऩ्ऱुना तुलह मूऩ्ऱुमॅऩ्
वॅम्मैयि ताण्डदु नीरॅऩ् वॅऩ्ऱियाल्
इम्मैयि नॅडुन्दिरु वॅय्दि ऩीरिऩिच्
चॅम्मैयि निऩ्ऱुयिर् तुऱन्दु तीर्दिराल् 1665

उम्मैयिऩ् निऩ्ऱु–उन दिनों से; नाऩ्–मेरा; उलकम् मूऩ्ऱुम् आण्टतु–तीनों लोकों का पालन करना; अॅऩ् वॅम्मैयिऩ्–मेरी वीरता के बल पर; अॅऩ् वॅऩ्ऱियाल्–मेरी विजय से; नीर्–तुम; इम्मैयिल्–इस जन्म में; नॅटु तिरु–बहुत सम्पत्ति; अॅय्तितीर्–पा सके; इऩि–अभी सही; चॅम्मैयिऩ् निऩ्ऱु–(वीरता के) सीधे मार्ग पर रहकर; उयिर् तुऱन्तु–प्राण देकर; तीर्तिर्–कर्तव्य अदा करो। १६६५

मेरा उन दिनों से त्रैलोकाधिपत्य मेरी ही वीरता के बल पर साधित है। मेरी ही विजय के कारण तुम इतना वैभव प्राप्त कर सके। अब सीधा मार्ग अपनाओ, प्राण देकर ही सही अपना कर्तव्य अदा करो। १६६५

आऱ्ऱलॅ मॅऩ्ऱिरे लॅऩ्मिऩ् यानवर्
तोऱ्ऱलम् वन्दुहत् तुरन्दु तॊऩ्ऩॅडुम्
कूऱ्ऱल मरवुयिर् कुडित्तुक् कूर्त्तवॅऩ्
वेऱ्ऱलै मातुडर् वॅरिनिऱ् काण्बॅऩाल् 1666

आऱ्ऱलॅम्–समर्थ नहीं; अॅऩ्ऱिरेल्–कहोगे तो; अॅऩ्मिऩ्–साफ़ कह दो; याऩ्–मैं; अवर्–वे; तोऱ्ऱु–हारकर; अलम् वन्तु–विकल हो; उक–निर्बल रहें ऐसा; तॊऩ्–प्राचीन; नॅटु कूऱ्ऱु–बड़ा यम; अलमर–भ्रमित हो ऐसा; उयिर् कुटित्तु–प्राणों को पीकर; कूर्त्त–तीक्ष्ण; अॅऩ्–मेरे (अपने); वेल् तलै–भाले के सिर को; तुरन्तु–भोंककर; मातुटर् वॅरिनिल्–(उसको) उनकी पीठ में (से निकलते हुए); काण्पॅऩ्–देखूंगा। १६६६

अगर तुम अपनों को असमर्थ समझते हो तो बता दो। मैं शत्रुओं को हारकर दुःखी और निर्बल होने देते हुए, पुराने और बड़े यम को भ्रमित करते हुए उनके प्राण पी लूंगा और अपने भाले को उनकी छाती को भेदते हुए पीठ से निकलता देख लूंगा। १६६६

अल्लदु मुण्डुमक् कुरैप्प दारमर्
वॅल्लुवु मॅत्ट्रिरेन् मेऱ्चॅल् वीरिति
वल्लदु मडिदले यॅन्तित् माऱ्दिर्
शॉल्लुनुङ् गरुत्तॅत मुतिन्दु शॉल्लितात् 1667

अल्लतुम्–अलावा; उमक्कु–तुमसे; उरैप्पतु उण्टु–कहने की बात है; आर् अमर्–कठिन युद्ध में; वॅल्लुतुम् ॲत्ट्रिरेल्–जीतेंगे, समझो तो; मेल् चॅल्वीर्–युद्ध में जाओ; इति–अब; मटितले–मरना है; वल्लतु ॲत्तिन्–हो सकता है समझो तो; माऱ्तिर्–(रास्ता) बदल लो; नुम् करुत्तु–अपनी राय; तुणिन्तु चॉल्लुम्–निश्चय करके कहो; ॲत–ऐसा; मुतिन्तु चॉल्लितात्–नाराज होकर कहा। १६६७

इसके अलावा और एक बात है, जो तुमसे कहनी है। कठोर युद्ध में हम जीत लेंगे। ऐसा विश्वास है तो युद्ध में चलो। लेकिन अब मरना ही हो सकता है, ऐसा समझते हो तो दूसरी दिशा में चले जाओ। अब अपना निश्चय सुना दो। रावण ने गुस्से के साथ कहा। १६६७

नदिकाय्नॅडु मान्मु नाणुमुऱा, मदिकाय्कुडै मन्ततै वॅदुरैया
विदिकायितुम् वीरम् वॅलऱ्करियात्, अदिकाय तॅतुम्बॅय रातऱैवात् 1668

विति कायितुम्–विधि गुस्सा करे तो भी; वीरम् वॅलऱ्कु अरियात्–जीता नहीं जा सके ऐसा वीर (अतिकाय); नति काय्–नदी को भी सुखानेवाले; नॅटु मात्मुम्–अधिक गुस्से से और; नाणुम् उऱा–शरम से भरकर; मति काय्–चन्द्र को भी (रूप में) जीत सकनेवाले; कुटै मन्ततै–श्वेतछत्रधारी (रावण) से; वॅतु उरैया–डाँटकर बताने लगा; अतिकायत् ॲत्तुम् पॅयरात्–अतिकाय नाम का (राक्षस); अऱैवात्–कहने लगा। १६६८

तब, विधि गुस्सा करे तो भी अजेय अतिकाय नामक राक्षस, नदी का जल भी खौल उठे, ऐसा गुस्से से और लज्जा से भरकर चंद्रजयी, श्वेतछत्र के स्वामी रावण से डाँटते हुए कहने लगा। १६६८

वानञ्जुह वैयह मञ्जुहमा, लानञ्जु मुहत्तव नञ्जुहमेल्
नानञ्जिनॅ तॅन्ऱुनै नाणुहपोर्, यानञ्जिनॅ तॅन्ऱु मियम्बुवदो 1669

वान् अञ्चुक–आकाश डरे तो डरे; वैयकम् अञ्चुक–पृथ्वी भयभीत हो; मालात्–विष्णु; अञ्चु मुकत्तवन्–पंचमुख शिव; अञ्चुक–डरें; मेल्–और; नान् पोर् अञ्चितॅन्–मैं युद्ध से डरा; ॲन्ऱु उतै नाणुक–ऐसा आपसे शरम (आप) खाएँ; यान् अञ्चितॅन्–मैं डरा; ॲन्ऱुम् इयम्पुवतो–ऐसा कहना उचित है क्या? । १६६९

चाहे आकाश डरे, भूमि डरे, विष्णु और पंचमुखी शिव डरे, मैं युद्ध से

डरा —यह कहते हुए आप शरम खायें पर "मैं डरा" यह कहना भी उचित है क्या ? । १६६९

वॆम्मैप्पॊरु तानवर् मॆय्वलियोर्, तम्मैत्तळै यिट्कॊडु तन्दिलॆनो
मुम्मैक्कुलै यप्पॊरु मुम्बरैयुम्, कॊम्मैक् कुयवट्टणै कॊण्डिलॆनो 1670

वॆम्मै–कठोर; पॊरु–योद्धा; तानवर–दानवों में; मॆय् वलियोर् तम्मै–अति बलवानों को; तळैयिल् कॊटु–बन्धन में डालकर ले आकर; तन्तिलॆनो–नहीं दिया था क्या; मुम्मै कुलैय पॊरुम्–तीन बार लड़नेवाले; उम्परैयुम्–देवों को भी; नट्टकुमाऱु कॊम्मै–विस्तृत गोलवाले; कुयम् वट्टणै कॊण्टिलेनो–कुलाल के चक्र के समान नहीं घुमाया था क्या । १६७०

भयंकर युद्ध करनेवाले दानवों में शरीर के अति बलवानों को बाँध लाकर क्या मैंने आपको नहीं दिया था; तीन बार युद्ध करनेवाले देवों को भी क्या मैंने कुम्हार के चक्र के समान नहीं घुमाया था ? । १६७०

काय्प्पुण्ड नॆडुम्वडै कैयुळदात्, तेय्प्पुण्ड वनुञ्जिल शिल्कणैयाल्
आय्प्पुण्डव नुम्मवर् शॊल्वलदाल्, एय्प्पुण्डव नुम्मॆन वॆण्णिनैयो 1671

काय्प्पु उण्ट–खूब तपाकर बनाये गये; नॆटु पटै–बड़े हथियारों के; कै उळता–हाथ में रहते; तेय्प्पु उण्टवनुम्–जो रौंदा गया वह (अक्षकुमार) और; चिल चिल् कणैयाल्–कुछ छोटे बाणों से; आय्प्पु उण्टवनुम्–जो श्वासहीन हो मिट गया वह और; अवर् चॊल् वलताल्–उन (नरों) के यश के प्राबल्य से; एय्प्पु उण्टवनुम्–जो धोखा खा गया वह; ऎन–ऐसा; ऎण्णितैयो–मुझे भी समझ लिया क्या । १६७१

क्या मुझे आप अक्षकुमार समझते हैं, जो अपने हाथ में खूब तपाकर बनाये गये लम्बे हथियार के हाथ में रहते हुए भी भूमि पर रौंदा गया था ? या कुम्भकर्ण समझते हैं, जो कुछ बाणों से प्राण खोकर मिट गया था ? या आपने मुझे वह विभीषण समझ लिया जो राम और लक्ष्मण के यश-कथन से प्रभावित होकर धोखा खा गया । १६७१

उम्बिक्कुयि रीऱुशॆय् दानॊरुवन्, तम्बिक्कुयि रीऱु शमैत्तवनैक्
कम्बिप्पदॊर् वन्तुयर् कण्डिलनेल्, नम्बिक्कॊरु नन्मह नोविनिनान् 1672

उम्पिक्कु–तुम्हारे छोटे भाई की; उयिर् ईऱु चॆय्तान्–जान की हानि जिसने करा दी; ऒरुवन्–उस एक राम के; तम्पिक्कु–लघु भ्राता को; उयिर् ईऱु चमैत्तु–प्राणों का अन्त कराकर; अवनै–उसको; कम्पिप्पतु ओर्–कँपानेवाला; वल् तुयर–कठोर संकट; कण्टिलनेल्–नहीं दूँ तो; इनि–आगे भी; नान्–मैं; नम्पिक्कु–वीर नायक आपका; ऒरु नल् मकनो–एक पुत्र रहूँगा क्या । १६७२

आपके भाई के प्राणों के घातक लक्ष्मण के प्राणों का अन्त करके उसके भाई को कँपानेवाले अपूर्व कठोर दुःख से अभिभूत नहीं करूँगा तो मैं आप नायक का एक श्रेष्ठ पुत्र रहूँगा क्या ? । १६७२

किट्टिप्पोरु दक्किळर् शेनैयॅलाम्, मट्टित्तुयर् वानरर् वन्र्लैयै
वॅट्टित्तरै यिट्टिरु विल्लिनरैक्, कट्टित्तरु वॅन्निदु काणुदियाल् 1673

किट्टि–पास जाकर; पोरुतु–लड़कर; अ किळर् चेतै ऍलाम्–उत्साहपूर्ण उस सारी सेना को; मट्टित्तु–मिटाकर; उयर् वानरर्–वानर नायकों के; वल् तलैयै–कठोर सिरों को; वॅट्टि–काटकर; तरै इट्टु–धरती पर गिराकर; इरु विल्लिनरै–दोनों धनुर्धरों को; कट्टि तरुवॅन्–बाँध लाऊँगा; इतु–यह; काणुति–आप देख लें। १६७३

पास जाऊँगा, लड़ूँगा, उत्साहपूर्ण सारी वानर-सेना का नाश करूँगा, वानरों के सिरों को काटकर भूमि पर गिरा दूँगा और दोनों धनुर्धरों को बाँध लाऊँगा। आप देख लें। १६७३

शेनैक्कड लोडिडै शॅल्हॅन्निनुम्, यानिप्पॊळु देतनि येहॅन्निनुम्
तानॊत्तदु शॊल्लुदि ताविडैयॅन्, रानित्तिर मुन्नि यरक्कर्पिरान् 1674

चेतै कटलोटु–सेना-सागर के साथ; इटै चॅल्क–युद्ध-मध्य चलो; ऍन्निनुम्–कहें तो भी; तनिये एकु–अकेले चलो; ऍन्निनुम्–कहें तो भी; यान्–मैं; इप्पॊळुते–अभी; तान् ऒत्ततु–आपको जो ठीक लगे वह; चॊल्लुति–कहें; विटै ता–बिदा दें; ऍन्रान्–कहा; इ तिरम् उन्नि–उस पर सोचकर; अरक्कर् पिरान्–राक्षसराज। १६७४

सेना-सागर को साथ ले जाओ —यह कहें या यह कहें कि अकेले जाओ तो मैं अभी जाऊँगा। आप जो चाहें कहें। मुझे विदा दें। अतिकाय ने यह कहकर रावण की आज्ञा की प्रतीक्षा में रहा। तब राक्षसों के प्रभु ने इस पर विचार कर —। १६७४

शॊन्नायिदु नन्रु तुणिन्दनैनी, अन्नानुयिर् तन्दनै यामॅनिन्यान्
पिन्नाळ विराम नॅनुम्बॆयरान्, तन्नारुयिर् कॊण्डु शमैक्कुवॅनाल् 1675

नी नन्रु तुणिन्तनै–तुमने अच्छा निर्णय किया है; इतु चॊन्नाय्–यह कहा; अन्नान्–उस (लक्ष्मण) के; उयिर् तन्तनै आम्–प्राण हर लाओगे; ऍनिन्–तो; यान्–मैं; पिन्नाळ्–दूसरे दिन; अव् इरामन् ऍनुम् पॆयरान्तन्–राम नाम के उसके; आर् उयिर् कॊण्टु–प्यारे प्राणों का अन्त करके; चमैक्कुवॅन्–बात समाप्त कर दूँगा। १६७५

—यों कहा, "तुमने खूब सोचकर बात कही है। अगर तुम लक्ष्मण के प्राणों को हर लाओगे तो मैं अगले दिन राम-नाम के उस वीर का जीवन समाप्त कर बात पूरा कर दूँगा।" १६७५

पोवा यिदुपोदु पोलङ्गळ्ळलोय्, मूवायिर कोडिय रोडुमुरण्
कावार्करि तेर्परि कावलिनॅन्, रेवादन यावैयु मेविननाल् 1676

पॉलम् कऴलोय्–स्वर्णवीरचरणकटक-धारी; मूवायिर कोटियरोटु–तीन हज़ार पदातियों के साथ; मुरण्–अलग; का आर्–रक्षण में लगे; करि तेर् परि–गजों, रथों, अश्वों; कावलित्–के रक्षण में; इतु पोतु पोवाय्–अब जाओ; ऍन्ऱु–कहकर; एवातत यावैयुम्–अब तक जिन्हें जाने की आज्ञा नहीं मिली थी; एवितत्–उन सबको जाने की आज्ञा दी। १६७६

"स्वर्णपायलधारी तीन हज़ार करोड़ पदाति और आड़े समय पर रक्षा कर सकनेवाले गजों, रथों और अश्वों के रक्षण में अब चलो।" कहकर रावण ने अब तक जिनको जाने की आज्ञा नहीं दी थी, उनको आज्ञा देकर भेजा। १६७६

कुम्बक्कॉडि योतु निहुम्बत्तुम्वे, ड्रम्बॊर्कऴल् वीर नहम्बनॊडुम्
शॆम्बॊऱ्पॊलि तेरयल् शॆल्हुवराल्, उम्बर्क्कुम् वॆलऱ्करि याऱुरवोर् 1677

उम्पर्क्कुम् वॆलऱ्कु अरियार्–देवों के भी अजेय और; उरवोर्–बहुत बलिष्ठ; कुम्पम् कॉटियोतुम्–क्रूर कुंभ और; निकुम्पतुम्–निकुम्भ और; वेऱु–इनसे विलक्षण; अम् पॊत् कऴल् वीरत्–सुन्दर स्वर्णचरणकटकधारी; अकम्पतॊटुम्–अकम्पन के साथ; उत्–तुम्हारे; चॆम् पोत् पॊलि–लाल स्वर्णमय और चमकीले; तेर् अयल्–रथों के पास ही पास; चॆल्कुवर्–जाएँ। १६७७

देवों से भी अजेय और बलवान क्रूर कुंभ और निकुंभ और इनसे अलग अकंप नामक स्वर्णपायलधारी वीर तुम्हारे लाल स्वर्ण से निर्मित रथ के साथ-साथ पास में रहकर जायेंगे। १६७७

ओरेऱु शिवऱ्कुळ दॊप्पुळवाम्, वारेऱु वयप्परि यायिरम्वत्
पोरॆऱ्ऱिड वेऱुव पूणुऱ्ऱतिण्, तेरेऱुदि तन्दतन् वॆन्दिऱ्लोय् 1678

वॆम् तिऱलोय्–परंतप पराक्रमी; वल् पोर्–घमासान युद्ध के; एऱ्ऱिट्–चलते; एऱुव–आगे बढ़नेवाले; चिवऱ्कु उळतु–शिवजी के पास जो है; ओर् एऱु ऒप्पुळवाम्–एक बैल के समान; वार् एऱु–और लगाम-लगे; वयम् परि–विजयदायी अश्व; आयिरम्–हज़ार; पूणुऱ्ऱ–जिससे जुते थे; तिण्–वह सुदृढ़; तेर्–रथ; तनृततन्–दिलाया; एऱुति–सवार हो जाओ। १६७८

परंतप पराक्रमी! जब घमासान युद्ध चलेगा तब आगे चलें और शिवजी के अप्रतिम बैल के समान रहनेवाले, लगाम-लगे और विजयदायी अश्वों का जुता सारयुक्त एक रथ मैंने तुम्हारे लिये दिया है। उस पर सवार हो जाओ। १६७८

आमत्ततै मावुडै यत्तनैतेर्, शेमत्तन पित्बुडै शॆल्लवडुम्
कोमत्त नॆडुङ्गरि कोडियॊडुम्, पोमत्ततै वॆम्बुर विक्कडले 1679

आम्–युक्त; अत्तत्तै मा उटै–उतने ही अश्वों के साथ रहे; अत्तत्तै चेमत्तन

तेर्–उतने रक्षक रथों के; पिन् पुटै चॅल्ल–पीछे और पार्श्वों में जाते; अट्टम्–शत्रुघातक; मत्त–मदमत्त; कोटि–करोड़; को नॅट्ट करि–बड़े गजराजों के साथ; अत्तत्तै–उतने; वॅम् पुरवि कटल्–भयानक अश्वों का झुण्ड भी; पोम्–तुम्हारे साथ जायगा। १६७६

उतने ही योग्य अश्वों के जुते उतने ही रक्षक रथ तुम्हारे पीछे-पीछे आयेंगे। करोड़ों शत्रु घातक, मदमत्त राजगजों के साथ उतने ही भयानक अश्वों के समूह भी तुम्हारे साथ आयेंगे। १६७९

ॲन्ऱॆविडै नल्ह विऱैञ्जियॅऴा, वन्ऱाळ्वयि रच्चिलै कैक्कॉडुवाळ्
पॉन्ऱाळ्कव शम्बुहु दामुहिलिन्, निन्ऱानिमै योर्हळ् नॅळिन्दनराल् 1680

ॲन्ऱे–कहकर; विटै नल्क–विदा देने पर; इऱैञ्चि ॲऴा–नमस्कार कर उठा; वल् ताळ्–कठोर बाजुओं के; वयिरम् चिलै–सुदृढ़ धनु को; कै कॉट्–हाथ में लिये हुए; वाळ्–उज्ज्वल; पॉन् ताळ् कवचम्–स्वर्णयुक्त कवच के अन्दर; पुकुता–घुसकर; मुकिलिन्–मेघ के समान; निन्ऱान्–खड़ा रहा; इमैयोर्कळ्–देवगण; नॅळिन्तनर्–बल खा गये। १६८०

यह कहकर रावण ने विदा दी। अतिकाय नमस्कार करके उठा और कठोर दंड वाले एक सुदृढ़ धनुष को हाथ में लिये हुए स्वर्णयुक्त कवच पहन लिया। उसको इस योद्धा के साज में खड़ा रहता देखकर देवगण लचक गये। १६८०

पल्वेऱु पडैक्कलम् वॅम्बहलोन्, ॲल्वेऱु तॅरिप्पकॉ डेहिनताल्
शॉल्वेऱु तॅळिक्कुनर् शुऱ्ऱुरमा, विल्वेऱु तॅरिक्करु मेहमतान् 1681

माविल्–गज से; वेऱु तॅरिक्क अरु मेतियतात्–अलग न माना जाय ऐसे शरीर वाला; मेकमतान्–और मेघसदृश (अतिकाय); चॉल् वेऱु तॅळिक्कुनर्–अपने वचनों से अलग डाँटनेवाले वीरों के; चुऱ्ऱुऱ–घेरे आते; वॅम् पकलोन्–गरम दिनकर से; वेऱु–विभिन्न; ॲल् तॅरिप्प–प्रकाश छोड़नेवाले; पल् वेऱु पटैक्कलम्–अनेक विविध हथियारों को; कॉट्टु एकितन्–लिये हुए गया। १६८१

"यह हाथी से भिन्न है" ऐसा कहने अनर्ह (हाथी-सा) और मेघ-सदृश अतिकाय डाँट के नारे लगाते आनेवाले वीरों के मध्य सूर्य से भी विलक्षण प्रकाश झिटकानेवाले विविध हथियारों को लिये हुए बढ़ चला। १६८१

इऴैयञ्जत्त माल्हळि ऍण्णिलरि, मुऴैयञ्ज मुऴङ्गिन मुम्मुऱैनीर्
कुऴैयञ्ज मुऴङ्गिन नाणॉलिहोळ्, मऴैयञ्ज मुऴङ्गिन मामुरशे 1682

इऴै–आभरणभूषित; अञ्चतम् माल् कळिऱु–अंजनवर्ण हाथी; ऍण्णिल् अरि–अनगिनत सिंह; मुऴै अञ्च–अपनी कन्दराओं में डर से घुस जाएँ ऐसा; मुऴङ्कित–चिंघाड़े; नाण् ऑलि–ज्यास्वन; मुम मुऱै नीर्–तीन बार जल प्राप्त करनेवाले सागर को; कुऴै अञ्च–लचका डराते हुए; मुऴङ्कित–गरज उठे; मा

मुरशु–बड़ी भेरियाँ; कोळ् मळै अञ्च–जलपायी मेघों को डराते हुए; मुळङ्कित–बज उठीं। १६८२

आभरण-भूषित और अंजन वर्ण बड़े-बड़े हाथी चिंघाड़ रहे थे, जिससे असंख्यक नरकेसरी कंदराओं में भी भय से काँप उठे। डोरे का नाद सुनकर त्रिनीर समुद्र डरा और ढीला पड़ गया। भेरियाँ बजीं तो जलपायी मेघ डर से गरजे। १६८२

आर्त्तार् नॅडुवान नडुङ्गवडिप्, पेर्त्तार् निलमामहळ् पेर्वळॆनत्
तूर्त्तार् नॅडुवेलैहळ् तूळियिनाल्, वेर्त्ता रदुहण्डु विशुम्बुरैवोर् 1683

नॅटुवानम् नटुङ्क–लम्बा आकाश डर जाए ऐसा; आर्त्तार्–(वीरों ने) नर्दन किया; निलम् मा मकळ्–मान्य पृथ्वीदेवी; पेरवळ् ॲन–हट जाए ऐसा; अटि पेर्त्तार्–पग धरे; नॅटु वेलैकळ्–विशाल सागरों को; तूळियिताल्–धूल से; तूर्त्तार्–पाट दिया; अतु कण्टु–वह देखकर; विचुम्पु उरैवोर्–आकाशलोकवासी; वेर्त्तार्–स्वेदयुक्त हो गये। १६८३

वीरों ने नर्दन किया, जिससे आकाश थर्रा गया। वे डग भरे तो भूमि हटती-सी लगी। धूल इतनी उड़ा दी की सागर पट-से गये। उसको देखकर व्योमवासी पसीना-पसीना हो गये। १६८३

अडियोडु मदक्कळि यानैहळिन्, पिडियोडु निहर्त्तन पिन्बुरमिन्
तडियोडु तुडक्किय तारैयवॆण्, कॊडियोडु तुडक्किय कॊण्मुवॆलाम् 1684

मिन् तटियोटु–चमकदार तड़ितों के साथ; तुटक्किय तारैय–लगी धारा के; वॆण् कॊटियोटु–श्वेत पताकाओं से; तुटक्किय–लगे; कॊण्मु ॲलाम्–सभी मेघ; अटि ओटुम्–पैरों के बल दौड़नेवाले; मतम् कळि यातैकळिन्–मदमत्त गजों के; पिन् पुरम्–पीछे लगी जानेवाली; पिटियोटु निकर्त्तत–हथिनियों के समान लगे। १६८४

ध्वजाओं के साथ मेघ गये, जो चमकीली तडितों से मिले हुए थे। वे सारे मेघ पैदल चलनेवाले गजों के (जिन पर बैठकर वीर ध्वजा पकड़े जाते थे।) पीछे चलनेवाली हथिनियों के समान लगे। १६८४

तारडिन मालुहरि यिन्पुडैताळ्, मारडिन मामद मण्डुदलाल्
आरडिन पाय्परि यानैहळुम्, शेरडिन शेऩ्ऱ्रि शॆन्ऱवॆलाम् 1685

तार् आटित–अंकुश-प्रहरित; माल् करियिन्–बड़े गजों के; पुटै ताळ्–पार्श्वों में; मारटित ताळ्–विलक्षण रूप से रहनेवाले; मा मतम्–विपुल दानवारि; मण्टुतलाल्–भरकर; आरु–वनी नदी में; पाय्परि–लपक चलनेवाले अश्व; यातैकळुम्–और हाथी; आटित–डूबे; चेतैकळ् चॆन्ऱ–जहाँ सेनाएँ चलीं; चेण् नॆऱि ॲलाम्–उन सभी लम्बे मार्गों में; चेरु अटित–कीच भर गयी। १६८५

अंकुश से उकसाये जानेवाले मत्तगजों के दोनों गालों से दानवारि

गिरकर बहा और उससे भरी बनी नदी में लपक चलनेवाले अश्व और गज डूब गये। सेना के गमन के सारे मार्गों में कीच भर गयी। १६८५

तेर्शॅन्ऱऩ शॅङ्गदि रोनॉडुशेर्, ऊर्शॅन्ऱऩ पोलॉळि योडैहळिन्
कार्शॅन्ऱऩ कार्निरै शॅन्ऱऩपोऱ्, पार्शॅन्ऱिल शॅन्ऱऩ पाय्परिये 1686

चॅङ्कतिरोनॉटु–लाल किरणों के स्वामी के साथ; **चेर्**–मिलकर; **ऊर् चॅन्ऱऩ पोल्**–परिवेश जाते हों जैसे; **तेर् चॅन्ऱऩ**–रथ चले; **कार्**–मेघ; **निरै**–पंक्तियों में; **चॅन्ऱऩ पोल्**–चले जैसे; **ऑळि ओटैकळिन्**–प्रकाशमय मुखपटालंकृत; **कार् चॅन्ऱऩ**–गज चले; **चॅन्ऱऩ पाय्परि**–चलनेवाले अश्व; **पार् चॅन्ऱिल**–भूमि पर नहीं चले। १६८६

लालकिरण सूर्य के साथ-साथ परिवेश जाते हों जैसे रथ गये। मेघ-पंक्तियों के जैसे मुखपटधारी हाथी गये। सरपट दौड़नेवाले अश्व भूमि पर नहीं गये (यानी उड़ते-से दौड़ रहे थे)। १६८६

मेरुत्तनै वॅऱ्पिऩ मॊय्त्तुनॅडुम्, पारिऱ्चॅलु माऱुप डप्पडरुम्
तेर्शुऱ्ऱिड वेहॊडु शॅलॢमुरट्, पोर्मुऱ्ऱु कळत्तिडै पुक्कऩऩाल् 1687

मेरु तनै वॅऱ्पु इऩम्–मेरु जितने बड़े पहाड़ों का समूह; **मॊय्त्तु**–सटकर; **नॅट्टु पारिल् चॅलुम् आऱु पट**–लम्बी भूमि पर चलते जैसे; **पटरुम्**–जानेवाले; **तेर् चुऱ्ऱिट**–रथों के घेरे आते; **मुरण् कॊटु**–वैर के साथ; **चॅन्ऱु**–जाकर; **पोर् मुऱ्ऱुम्**–जहाँ लड़ा जाता है उस; **कळत्तु इटै**–मैदान में; **पुक्कऩन्**–(अतिकाय) जा पहुँचा। १६८७

मेरु-से पर्वतों का समूह भूमि पर चलता हो —ऐसा जानेवाले रथों के मध्य वैर के साथ जहाँ लड़ा जाता है, उस युद्धभूमि में अतिकाय आ पहुँचा। १६८७

कण्डाऩ् विरामनॆ तुङ्गळिमा, उण्डाडिय वॅङ्गळ नूडुरुवप्
पुण्डाङ्गु नॅञ्जु पुळुक्कमुऱत्, तिण्डाडिनन् वन्द शिनत्तिरलोन् 1688

अव् इरामन् ऍनुम्–उन श्रीराम रूपी; **कळिमा**–मत्तगज द्वारा; **उण्टु आटिय**–संहार-क्रीडा जहाँ हुई थी; **वॅम् कळन्**–उस भयंकर समरभूमि को; **ऊटु उरुव**–आर-पार देख; **पुण् ताऩ् उऱु**–चोट खाये; **नॅञ्चु**–दिल के; **पुळुक्कम् उऱ**–विकल होते; **वन्त चित्तम्**–उठे क्रोध का; **तिऱलोन्**–पराक्रमी; **तिण्टाटिनन्**–विभ्रांत हुआ। १६८८

राम रूपी मत्तगज जहाँ प्राणों को पीकर क्रीड़ा कर रहा था, उस भयंकर युद्धभूमि के अतिकाय ने आर-पार देखा। उसका मन विक्षत हो गया। बड़ा बलिष्ठ अतिकाय विकलता से हड़बड़ा गया। १६८८

मलैहण्डऩ पोल्वरु तोळीडुतान्, कलैहण्ड करुङ्गडल् कण्डुळल्वान्
निलैहण्डऩ कण्डॊरु तादैनॅडुन्, दलैहण्डिल नॅन्ऱु शलित्तऩऩाल् 1689

मलै कण्टत्त पोल् वरु–पर्वत दिखते हों ऐसे; तोळोटु–कन्ध के साथ; ताळ् कलै कण्ट–पैर भी जिसके कटे थे; करु कटल्–उस काले सागर (कुंभकर्ण) को; कण्टु–देखकर; उळल्वान्–क्षुब्ध हुआ (अतिकाय); निलै कण्टत्त कण्टु–कुंभकर्ण पर बीती स्थितियाँ सोचकर; ओरु तातै–अद्वितीय पिता के; नॅटु तलै–बड़े सिर को; कण्टिलन्–देख नहीं पाता; ऍऩ्ऱु चलित्तऩऩ्–ऐसा विचलित हुआ। १६८९

वह काले सागर-सम कुंभकर्ण की लाश को, जिसके पर्वत-सम दिखने वाले कंधे और पैर कट गये थे, देख विक्षुब्ध हुआ। उसने कुंभकर्ण पर बीती स्थितियों का अनुमान किया। "एक अद्वितीय पिता के बड़े सिर को देख नहीं पाता" —यह सोचकर वह विचलित हुआ। १६८९

मिडलॉऩ्ऱु शरत्तॊडु मीदुयर्वान्, तिडलऩ्ऱु तिशैक्कळि ऱऩ्ऱॊऱुतिण्
कडलऩ्ऱिदॆ ऍऩ्दै कडक्करियान्, उडलॆऩ् ऱुयिरोडु मुरुत्तऩऩाल् 1690

इतु–यह; मिटल् ऒऩ्ऱु–शक्तियुक्त; चरत्तॊटु–शर से; वान् मीतु उयर्–आकाश पर उन्नत; तिटल् अऩ्ऱु–पत्थरों की राशि नहीं; तिचै कळिऱु अऩ्ऱु–दिग्गज नहीं; तिण् कटल् अऩ्ऱु–विपुल सागर नहीं; इतु–यह; कटक्क अरियान्–अजेय; ऍऩ्तै–मेरा पिता (पिता की लाश) है; ऍऩ्ऱु–कहते हुए; उयिरोटुम्–निःश्वास छोड़ते हुए; उरुत्तऩऩ्–कुपित हुआ। १६९०

'यह कठोर शर के साथ रहनेवाला आकाशोन्नत पत्थरों का ढेर नहीं; न यह दिग्गज ही है, न बड़ा सागर। यह अप्रतिहत वीर मेरे पिता कुंभकर्ण का शरीर है।' यह कहते हुई उसने गुस्से की लंबी साँसें भरीं। १६९०

ऍल्लेयिवै काणिय वॆय्दिऩॆऩो, वल्लैयुळ रायिऩ माऩिडरैक्
कॊल्लेऩॊरु नाऩुयिर् कोणॆऱियिल्, शॆल्लेऩॆऩि ऩिव्विडर् तीर्हुवॆऩो 1691

ऍल्ले–हे; इवै काणिय–यही देखने को; ऍय्तिऩॆऩो–आया क्या; वल्ले–शीघ्र; ओरु नान्–अकेला मैं; उळर् आयिऩ माऩिटरै–जीवित रहनेवाले नरों को; कॊल्लेऩ्–न मारूँ; उयिर् कोळ् नॆऱियिल्–और अपने प्राण बचाने के मार्ग में; चॆल्लेऩ् ऍऩिल्–नहीं जाऊँ तो; इव् इटर् तीर्कुवॆऩो–इस दुःख से छूटूँगा क्या। १६९१

हे! यही देखने मैं आया क्या? अकेले ही अकेला मैं अब तक जीवित रहे इन नरों को न मारूँ और अपने वचने के मार्ग में न जाऊँ तो मेरा यह क्षोभ दूर होगा क्या ?। १६९१

ऍऩ्ऩा मुऩियावि दिळैत्तुळवऩ्, पिऩ्ऩाऩैयु मिप्पडिच् चॆय्दुपॆयर्न्
दऩ्ऩाऩिडर् कण्डिड राऱुवॆऩॆऩ्, ऱुऩ्ना वीऱुवर्क्कि दुणर्त्तिऩाल् 1692

ऍऩ्ऩा–ऐसा कहकर; मुऩिया–क्रोध करके; इतु–यह स्थिति; इऴैत्तु उळवऩ्–करानेवाले (राम) के; पिऩ्ऩाऩैयुम्–छोटे भाई को भी; इप्पटि चॆय्तु–ऐसी स्थिति कराके; पॆयर्न्तु–लौट जाकर; अऩ्ऩाऩ् इटर् कण्टु–उस (राम) के

दुःख को देखकर; इटर् आऱुवॆन्–अपना दुःख शान्त कर लूँगा; ऍन्ऱु उन्ना–ऐसा सोचकर; ऒरुवर्कु–एक दूत के पास; इतु उणर्त्तितन्–यह बतलाया। १६६२

यह कहकर गुस्सा करके उसने संकल्प किया कि ऐसा जिसने किया है, उस राम के अनुज को ही यह गति देकर लौटूं और राम को दुःख देकर अपने दुःख को शांत कर लूंगा। यह सोचकर उसने एक दूत से यों कहा। १६९२

वानीमयि डन्ऩॊरु वल्विशैयिल्, पोनीय विलक्कुव निऱ्पुहल्वाय्
नान्ईदु तुणिन्दन नण्णिऩॆऩाल्, मेन्ईदि युणर्न्दु विळम्बिडुवाय् 1693

मयिटन् नीवा–महिष तुम आओ; ऒरु वल् विचैयिल् पो–अति तीव्र गति से जाओ; नी–तुम; अव् इलक्कुवऩिल्–उस लक्ष्मण से; पुकल्वाय्–कहो; नान्–मैं (अतिकाय); ईतु तुणिन्तनॆन्–यह निश्चय करके; नण्णिनॆन्–आया हूँ; मेल् इतु–श्रेष्ठ यह; नी उन्ऩि–तुम सोचकर; विळम्पिटुवाय्–बतला दो। १६६३

हे महिष ! आओ। जल्दी चलो और उस लक्ष्मण से कहो। मैं सिर से हीन लक्ष्मण को रुण्ड बनाने को ठानकर आया हूँ। यह उचित विचार ही है। तुम भी तर्क करके बतला दो। १६९३

अन्दारिळ वर्कयर् वॆय्दियळुम्, तन्दाद मनत्तिडर् तळ्ळिडुवान्
उन्दार् तुयरोडु मुरुत्तॆरिवान्, वन्दानॆन मुऱ्चॊल् वळङ्गुदियाल् 1694

उन्तु आर् तुयरोटुम्–अवार्य दुःख से; उरुत्तु ऍरिवान्–क्रोध करके जलनेवाला; अम् तार्–सुन्दर हारविभूषित; इळवर्कु–अपने छोटे भाई (की मृत्यु) पर; अयर्वु ऍय्ति–शिथिल होकर; अऴुम्–रोनेवाले; तम् तातै मनत्तु–अपने पिता के मन का; इटर् तळ्ळिटुवान्–दुःख दूर करने के निमित्त; वन्तान्–आया; ऍन–यह; मुन् चॊल्–प्रथम कथनीय बात; वऴङ्कुति–बतला दो। १६६४

"अवार्य दुःख से खौलनेवाले मन का अतिकाय अपने छोटे भाई के निमत्त शिथिलमन हो रोनेवाले अपने पिता का दुःख दूर करने के विचार से आया है।" यह समाचार उसे पहले सुना दो। १६९४

कोळुऱ्ऱव नॆञ्जु शुडक्कुऴैवान्, नाळुऱ्ऱ विरुक्कैयिल् नानॊरुवन्
ताळऱ्ऱुरु ळक्कणै तळ्ळिडुवान्, शूळुऱ्ऱदु मुण्डदु शॊल्लुदियाल् 1695

कोळ् उऱ्ऱवन्–दुःखग्रस्त; नॆञ्चु चुट–चित्ततप्त; कुऴैवान्–विक्षुब्ध रावण का; नाळ् उऱ्ऱ इरुक्कैयिल्–दैनिक दरबार में; ऒरुवन् तान् अऱ्ऱु–अनुपम उस लक्ष्मण का पैर कटकर; उरुळ–लुढ़कने देते हुए; कणै तळ्ळिटुवान्–बाण चलाने के लिए; नान्–मैं; चूळ् उऱ्ऱतुम् उण्टु–वादा जो कर चुका हूँ; अतु–वह भी; चॊल्लुति–कहो। १६६५

यह भी कहो की मैंने व्याकुल मन के साथ शिथिल रहनेवाले रावण

के दरबार में अनुपम लक्ष्मण के पर को काटकर लुढ़का देने की प्रतिज्ञा की है। १६९५

तीदॆंन्ऱदु शिन्दनै शॆय्दिलॆंनाल्, ईदॆंन्ऱिऱ मन्नॆंऱि यामॆंन्नी
तूदॆंन्ऱिह ऴादुन शॊल्वलियाल्, पोदॆंन्ऱुड नेहॊंडु पोदुदियाल् 1696

अतु–वह; तीतु ऍन्ऱु–बुरा है ऐसा; चिन्तनै चॆय्किलॆंन्–मन में नहीं मानता; ईतु–यह; ऍन् तिऱम्–मेरा स्वभाव है; मन् नॆंऱि आम्–राजधर्म भी है; ऍन्–कहकर; तूतु ऍन्ऱु इकऴातु–दौत्य समझकर उपेक्षा न करके; उन चॊल् वलियाल्–अपने बोलने के चातुर्य से; पोतु ऍन्ऱु–आओ कहकर; उटने कॊंटु–साथ लेकर; पोतुति–आओ। १६९६

मैं इस काम को बुरा नहीं मानता। यह मेरा स्वभाव है। राजधर्म भी वही है। [मेरे पिता के भाई को मारकर उन्हें क्लेश दिया गया। राम के भाई को मारकर उन्हें क्लेश देना शत्रु (-राजा) का धर्म ही है।] तुम केवल दौत्य समझकर उपेक्षा मत करो। अपनी वाक्पटुता से लक्ष्मण को साथ ले आओ। १६९६

शॆंरुवाशैयि नार्पुहऴ् तेडुरुवार्, इरुवोरैयु नीवलै युऱ्ऱॆंदिरे
पोरुवोर्नम नार्पदि पुक्कुऱैवोर्, वरुवोरॆ यॆलाम्वरु हॆंन्ऱुदियाल् 1697

चॆरु आचैयिनार्–युद्धाकांक्षी; पुकऴ् तेटुरुवार्–यश के अन्वेषक; इरुवोरैयुम्–उन दोनों के; नी–तुम; वलै उऱ्ऱु–जल्दी पास जाकर; ऍतिरे पॊरुवोर्–समक्ष लड़नेवाले; नमनार् पति पुक्कु–यम के स्थान में जाकर; उऱैवोर्–वास करनेवाले बनेंगे; वरुवोरॆ ऍल्लाम्–आनेवाले सभी; वरुक–आओ; ऍन्ऱुति–ऐसा (निमन्त्रण) कहो। १६९७

युद्धाकांक्षी और यशाभिलाषी दोनों के पास जल्दी जाओ। समक्ष आकर लड़नेवाले यमलोक पहुँचकर ठहर सकेंगे। इसलिए सभी आनेवाले आ जायें —यह कहकर आमंत्रित कर दो। १६९७

शिन्दाकुल मॆंन्दै तिरित्तिडुवान्, वन्दानॆंन वन्नॆंदि रेन्दियोय्
तन्दायॆंनिन् यानल दियार्तरुवार्, उन्दारिय वुऴ्ळ वुयर्न्दवॆलाम् 1698

मतियोय्–मतिमान्; ऍन्तै–मेरे पिता के; चिन्ताकुलम्–चित्त की आकुलता को; तिरित्तिटुवान्–दूर करने हेतु; वन्तान्–आ गया (लक्ष्मण); ऍन–कहकर; ऍन् ऍतिरे–मेरे सामने; तन्ताय् ऍनिन्–ला दोगे तो; उन्त अरिय उऴ्ळ–अनुपेक्षणीय रहनेवाले; उयर्न्त ऍलाम्–उत्कृष्ट सारे पदार्थ; यान् अलतु–मेरे सिवा; यार् तरुवार्–कौन देंगे। १६९८

हे मतिमान्! मेरे पिता के चित्त की व्याकुलता को दूर करने हेतु तुम, 'यह लो लक्ष्मण आ गया' कहते हुए लक्ष्मण को मेरे सामने प्रस्तुत

कर दो तो अनुपेक्षणीय उत्कृष्ट सारी वस्तुएँ उपहार में दे दूँगा। उन्हें मेरे सिवा अन्य कौन दे सकेंगे ? । १६९८

वेऱ्ऱेय विलिक्कुव नॆन्ऩविळम्, बेऱ्ऱेवरु मेलिमै योरॆदिरे
कूऱ्ऱेपल शॆय्दुयिर् कॊण्डुन्तैयुम्, माऱ्ऱेयोरु मन्ऩॆन वैक्कुवॆनाल् 1699

अ इलक्कुवन् ऍन्ऩ–उस लक्षमण के रूप में; वेऱ्ऱे विळम्पु–अलग प्रकीर्तित; एऱ्ऱे वरुमेल्–नरकेसरी आये; इमैयोर् ऍतिरे–देवों के सामने; पल कूऱ्ऱे चॆय्तु–अनेक भाग करके; उयिर् कॊण्टु–प्राण हरकर; उन्तैयुम्–तुम्हें भी; माऱ्ऱे–प्रतिकार में; ऑरु मन् ऍन–एक राजा के रूप में; वैक्कुवॆन्–रखूँगा। १६९९

लक्ष्मण-संज्ञित और विशेष रूप से प्रकीर्तित वह नरकेसरी लड़ने आ जाए तो, देवों के देखते, उसके कई खण्ड करके, उसके प्राण को पिऊँगा और तुम्हें भी प्रतिकार में एक राजा बना दूँगा। १६९९

विण्णाडियर् विज्जैय रञ्जॊलिनार्, पॆण्णारमु दन्ऩवर् पॆय्दॆवरुम्
उण्णादन कूऱ्ऩऱ वुण्डदशुम्, ऍण्णायिर मायिनु मीहुवॆनाल् 1700

विण् नाटियर्–व्योमलोकवासिनी और; विज्जैयर्–विद्याधरी; अम् चॊलिनार्–मधुरभाषिणी स्त्रियों में; अमुतु अन्ऩवर्–अमृत-समाना; पॆण्णार् ऍवरुम्–सारी स्त्रियाँ; पॆय्तु उण्णातन–ढालकर पी नहीं सकीं; कूर् नऱवु–ऐसी पुरानी ताड़ी से; उण्ट तचुम्पु–भरे घट; ऍण्णायिरम् आयिनुम्–आठ हज़ार भी चाहो तो; ईकुवन्–दूंगा। १७००

मधुरभाषिणी व्योमलोकवासिनियों और विद्याधरियों में श्रेष्ठ अमृत-भाषिणी स्त्रियों को भी पीने को न मिल सके, ऐसी बहुत पुरानी ताड़ी के भरे आठ हज़ार घट भी चाहो तो दिला दूंगा। १७००

उऱ्ऱैतन्दन शॆङ्गदि रोनुरुविऱ्, पॊऱ्ऱैतन्दन काशॊळिर् पूणिमैयोर्
तिऱ्ऱैतन्दन दॆय्व निदिक्किळवन्, मुऱ्ऱैतन्दन तन्दु मुडिक्कुवॆनाल् 1701

चॆम् कतिरोन्–अरुणकिरणमाली के-से; उरुविल् उऱ्ऱै तन्तन–रूप वाले; पॊऱ्ऱै तन्तन–भारी; इमैयोर्–देवों द्वारा; इऱ्ऱै तन्तन–कर के रूप में दिये गये; तॆय्वम् निति किळवन्–दिव्यनिधिनाथ (कुबेर) द्वारा; मुऱ्ऱै तन्तन–(करके) क्रम में दिये गये; काचु ऑळिर्–रत्न जिनमें चमकते हैं; पूण्–ऐसे आभरणों को; तन्तु मुटिक्कुवॆन्–दे चुकूंगा। १७०१

लाल किरणों वाले सूर्य के समान रूप-रंग के बहुत भारी, देवों द्वारा कर के रूप में दिये गये, दिव्य निधिनाथ और कुबेर द्वारा कर के अदा करने के क्रम में दत्त और जिनमें रत्न चमकते रहते हैं, ऐसे आभरण दे दूंगा। १७०१

माऱामद वारिय वण्डिनॊडुम्, पाऱाडु मुहत्तन पल्पहलुम्
तेऱादन शॆङ्गळि वॆङ्गदमा, नूऱायिर मायिनु नुन्दुवॆन्नाल् 1702

माऱा मतम् वारिय–निरन्तर दानवारि बहानेवाले; वण्टिनॊटुम्–भ्रमरों के साथ; पाऱु आटु–जिनके सामने बाज़ उड़ते हैं ऐसे; मुकत्तत–अग्रभाग वाले; पल् पकलुम्–अनेक दिन; तेऱातत–जो सुध में नहीं आते (नशे में रहते); चॆम् कळि–अधिक मस्ती के साथ; वॆम् कतम् मा–अधिक क्रोध रखनेवाले जानवर, हाथी; नूऱु आयिरम् आयितुम्–सौ हज़ार भी हों तो; नुन्तुवॆन्–दे दूँगा। १७०२

ऐसे सौ हज़ार हाथी भी, क्यों न हो, दूँगा, जिनका मद निरन्तर बहता रहता है, जिनके मुख के सामने भ्रमर और बाज़ उड़ते मँड़राते रहते हों, जो कभी-कभी अनेक दिन सुध में नहीं आते, मत्त रहते हों और जो कठोर क्रोध से युक्त हों। १७०२

शॆम्बॊन्नि नमैन्दु शमैन्दततेर्, उम्बर्नॆडु वानिनु मॊप्पुऱाप्
पम्बुम्मणि तारणि पाय्परिमा, इम्बर् नडवादन वीहुवॆन्नाल् 1703

चॆम् पॊत्तिन् अमैन्तु–लाल (चोखे) स्वर्ण से निर्मित होकर; चमैन्तत तेर्–अच्छी रीति से बने रथ; उम्पर् नॆटुवानितुम्–देवों के लम्बे आकाश में; ऑप्पु उऱा–समान वस्तु न पाकर; पम्पुम्–विशाल; मणि तार् अणि–नवरत्न से अलंकृत; इम्पर् नटवातत–भूमि पर नहीं चलनेवाले; पाय् परि मा–उछलकर चलनेवाले अश्व; ईकुवॆन्–दूँगा। १७०३

अलावा इनके, लाल स्वर्ण से निर्मित और सुगठित रथ दिला दूँगा। लम्बे आकाश से भी अधिक विस्तृत रूप से रहनेवाले रत्नों के आभरणों से भूषित अनेक अश्व दूँगा, जो भूमि पर पैर लगने न देकर उछलकर उड़ते-जैसे दौड़नेवाले हों। १७०३

निदियिन्निरै कुप्पै निरैन्दनवुम्, पॊदियिन्मिळिर् काशु पॊऱुत्तनवुम्
मदियिन्नॊळिर् तूशु वहुत्तनवुम्, अदिहज्जह डायिर मीहुवॆन्नाल् 1704

नितियिन् निरै–निधियों के समूह; कुप्पै निरैन्ततवुम्–कूड़े के समान जिनमें भरे हैं; पॊतियिन् मिळिर्–गट्ठरों में चमकनेवाले; काचु पॊऱुत्ततवुम्–रत्न ढोनेवाले; मतियिन् ऑळिर्–चन्द्र-समान प्रकाशमय; तूचु–रेशम के कपड़े; वकुत्ततवुम्–भर लानेवाले; चकटु आयिरम् अतिकम्–हज़ार से अधिक छकड़े; ईकुवन्–दूँगा। १७०४

हज़ार से अधिक छकड़े दूँगा, जिन पर निधियों के ढेर कूड़ों के समान रखे गये हों, बहुत बड़ी राशि में चमकनेवाले रत्न होते हों और जिन पर चंद्र-सम प्रकाशमय रेशम के कपड़े रखे गये हों। १७०४

मऱुमॊरु तॊविन् मणिप्पणितन्, दुऱुनित्तै वियावॆयु मुन्दुवॆन्नाल्
पॊऱ्ऱिणगळ लायननि पोवॆन्नलो, ऍऱ्ऱुन्दिरळ् तॊळव नॆहिन्नाल् 1705

पॊन् तिण् कऴलाय्–सुदृढ़ स्वर्णपायलधारी; मऱ्ऱुम्–और भी; ऒरु–अनुपम तीतु इल्–निर्दोष; मणि पणि तन्तु–रत्नाभरण देकर; उन् निनैवु उऱ्ऱ–तुम जो सोचोगे; यावैयुम् उन्तुवॆन्–वे सभी लुटा दूंगा; नति पो–शीघ्र चलो; ऎन्तलोटु–कहते ही; ऎऱ्ऱुम्–ढकेलनेवाले; तिरळ् तोळवन्–पुष्ट कन्धों का (वह महिष); एकितन्–गया। १७०५

स्वर्ण-निर्मित सुदृढ़ पायलधारी! और भी निर्दोष नवरत्नमय आभरण दूंगा। जो मन में सोचते हो वे सब दिला दूंगा। जाओ जल्दी। जब अतिकाय ने यह आज्ञा दी तो लड़ाकू पुष्ट कंधों वाला महिष चला। १७०५

एहित्तनिच् चॆन्ऱॆदि रॆय्दलुरुम्, काहुत्तनै यॆय्दिय कालॆयिन्वाय्
वेहत्तॊडु वीरर् विडैत्तॆऴलुम्, ओहैप्पॊरु ळुण्डॆन वोदिनताल् 1706

एकि–निकलकर; तनि चॆन्ऱु–अकेले जाकर; ऎतिर्–सामने; ऎय्तल् उऱुम्–आते रहे; काकुत्तनै ऎय्तिय कालॆयिन्–काकुत्स्थ के पास जब पहुँचा; वाय्–तब; वीरर्–वानर वीर; वेकत्तोटु–झट; विटैत्तु ऎऴलुम्–तनकर उठे तो; ओकै पॊरुळ् उण्टु–संतोष देनेवाला समाचार है; ऎन–कहकर; ओतितन्–आगे बोला। १७०६

महिष चला और काकुत्स्थ के समक्ष गया, जो उसके सामने आ रहे थे। वानरवीर झट तनकर खड़े हो गये तो उसने कहा कि आपको संतोष देनेवाला एक समाचार लाया हूँ। १७०६

पोदम्मुदल् वाय्मॊऴि यॆपुहल्वोन्, एदुम्मरि यान्वऱि देहितनाल्
तूदन्निव नैच्चुऴि यन्मिनॆना, वेदम्मुदल् नादन् विलक्कितनाल् 1707

पोतम् मुतल्–बोध के आधार; वेतम् मुतल् नातन्–वेदमूल श्रीरामनाथ ने; इवन् तूतन्–यह दूत है; वाय् मॊऴियॆ पुकल्वोन्–सुना हुआ (मुख का) वचन ही कहनेवाला; एतुम् अऱियान्–(उसके आगे) कुछ नहीं जानता; वऱितु एकितन्–दीनहीन आया है; इवनै चुऴियन्मिन्–इस पर कोप मत करो; ऎना–कहकर; विलक्कितान्–रोका। १७०७

बोध के आधार और वेदों के मूल श्रीरामनाथ ने वानरों से कहा कि यह दूत है और अपने स्वामी का कथन दुहरानेवाला है। उसके आगे यह कुछ नहीं जानता। यह अकेला और निःशस्त्र आया है। इस पर गुस्सा मत करो। उन्होंने वानरों को रोक दिया। १७०७

ऎन्वन्द कुऱिप्प दियम्बॆनलुम्, मिन्वन्द वॆयिऱ्ऱवन् विल्वलनिन्
पिन्वन्दव नॆयऱि पॆऱ्ऱियदाल्, मन्वन्द करुत्तॆन मन्नर्पिरान् 1708

वन्त कुऱिप्पु (अतु) ऎन्–आने का हेतु क्या है; अतु इयम्पु–वह बतला दो; ऎन्नलुम्–पूछने पर; मिन् वन्त ऎयिऱ्ऱवन्–प्रकाशमान (वक्र) दंतोले के; विल्वल–

धनुनिपुण; मऩ्ऩर् पिराऩ्–राजाओं के राजा; मऩ् वऩ्त करुत्तु–मेरे राजा की राय; निऩ् पिऩ् वऩ्तवर्ते–आपके अनुज द्वारा ही; अऱि पॆऱ्ऱियतु–जानी जाने की है; ऎऩ्ऩ–कहने पर। १७०८

श्रीराम ने उससे पूछा कि तुम आये किस हेतु हो ? बतलाओ। चमकदार दाँतों वाले राक्षस ने कहा कि धनुकार्य-कुशल ! राजराज ! मेरे राजा की राय आपके छोटे भाई से ही जानी जाने योग्य है। १७०८

शॊल्लायदु शॊल्लिडु शॊल्लिडॆऩ्ऩा, विल्लाळ निळङ्गिळै योऩ्विऩवप्
पल्लायिर कोडि पडैक्कडऩ्मुऩ्, निल्लायॆऩ निऩ्ऱु निहऴ्त्तिऩऩाल् 1709

विल्लाळऩ् इळ किळैयोऩ्–कोदंडपाणी के छोटे भाई के नातेवाले ने; अतु चॊल्लाय्–वह कहो; चॊल्लिटु चॊल्लिटु–कहो, कहो; ऎऩ्ऩा विऩव–ऐसा पूछने पर; पल् आयिरम् कोटि–अनेक हज़ार करोड़; पटै कटल् मुऩ्–सेना-सागर के समक्ष; निल्लाय्–खड़े रहें; ऎऩ्ऩ–ऐसा; निऩ्ऱु–सावधानी से; निकऴ्त्तिऩऩ्–कहा। १७०९

कोदण्डपाणी श्रीराम के भाई ने कहा कि कहो क्या है। कहो, कहो। तब उसने सावधानी से कहा कि अनेक सहस्र कोटि सेना के समक्ष युद्ध करने चलिये और खड़े रहिये। १७०९

उऩ्मे लदिहाय ऩुरुत्तुळऩाय्, नऩ्मेरुवि लिऩ्ऱऩ ऩाडियवऩ्
तऩ्मे लॆदिरुम्वलि तक्कुळैयेल्, पॊऩ्मेऩिय वॆऩ्ऩॊडु पोदुदियाल् 1710

उऩ् मेल्–तुम पर; अतिकायऩ्–अतिकाय; उरुत्तुळऩाय्–गुस्सा करके; नाटि–खोजते हुए; नल् मेरुविल्–श्रेष्ठ मेरु के समान; निऩ्ऱऩऩ्–खड़ा है; अवऩ् तऩ् मेल्–उस पर; ऎतिरुम्–आक्रमण करने का; वलि तक्कु उळैयेल्–बल और साहस रखते हों तो; पॊऩ् मेऩिय–स्वर्ण-से रूपवान; ऎऩ्ऩॊटु–मेरे साथ; पोतुति–चलो। १७१०

अतिकाय आप पर वैर करके आपको खोजते हुए आया है और श्रेष्ठ मेरु पर्वत के समान खड़ा है। हे स्वर्ण-सम शरीरी ! उस पर आक्रमण करने का बल और साहस है तो आओ मेरे साथ। १७१०

शैयप्पडि वत्तॊरु तऩ्दैयैमुऩ्, मॆय्यॆप्पडि शॆय्दऩ ऩुऩ्मुऩ्विरैन्
दैयप्पड लप्पडि यिप्पडियिऱ्, शॆय्यप् पडुहिऱ्ऱि तॆरित्तऩऩाल् 1711

चॆयम् पटिवत्तु–शैल के-से आकार के; ऒरु तऩ्तैयै–अनुपम उसके पिता के; मॆय्–शरीर की; उऩ् मुऩ्–आपके ज्येष्ठ भाई ने; मुऩ्–पहले; ऎप्पटि चॆय्तऩऩ्–जैसी गति करा दी; अप्पटि–वैसा; इ पटियिल्–इस भूमि पर; विरैन्तु चॆय्यप्पटु किऱ्ऱि–शीघ्र आप कराये जायेंगे; ऐयम् पटल्–शंकित न हों; तॆरित्तऩऩ्–बतला दिया। १७११

शैलाकार अपने पिता के शरीर की जो दुर्गति आपके भाई ने करा दी,

थी, वही स्थिति आपकी भी वह जल्दी करा देगा। इसमें कोई संशय नहीं है। मैं आपको बता देता हूँ। १७११

कॊत्ऱानॊळि यक्कॊलै कोळऱिया, निऩ्ऱानॊडु निऩ्ऱदॆ ऩॆडियॆऩिऱ्
तऩ्ऱादै पडुन्दुयर् तऩ्दैयैमुऩ्, वॆऩ्ऱाऩै यियऱ्ऱुरुम् वेट्कैयिऩाल् 1712

कॊऩ्ऱात् ऑळिय–(कुंभकर्ण के) हंता (राम) को छोड़कर; कॊलै कोळ् अऱिया–मारने का काम न जानकर; निऩ्ऱानॊटु–जो रहा उसको; नेटि निऩ्ऱतु–खोजता रहना; ऍन् ऍऩिल्–क्यों, पूछें तो; तऩ् तातै पटु तुयर्–अपना पिता जैसा दुःख करता है वैसा दुःख; तऩ्तैयै मुऩ् वॆऩ्ऱातै–अपने पिता (चाचा) को जिसने पहले हराया उसको; इयऱ्ऱुरुम्–देने की; वेट्कैयिताल्–अभिलाषा से (महिष ने समाप्त किया।)। १७१२

अगर आप पूछें कि कुम्भकर्ण को मारनेवाले राम को छोड़कर चुप जो खड़े रहे, उन लक्ष्मण को क्यों मारा जाय? तो उसका कारण अपने पिता के जैसे दुःख को, अपने चाचा के घातक को दिलाने की उसकी इच्छा ही है। १७१२

वाऩोर्हळु मण्णिऩु ळोर्हळुमर्, ऱॆऩोर्हळु मिव्वुरै केण्मिऩिवऩ्
ताऩेपॊरु वाऩय लेदमर्वऩ्, दाऩोरु मुडऩ्बॊरु वाऩमैवाऩ् 1713

वातोर्कळुम्–व्योमलोकवासी और; मण्णिऩ् उळोर्कळुम्–पृथ्वीवासी; मऱ्ऱु एऩोर्कळुम्–और अन्य; इ उरै केण्मिऩ्–यह वचन सुनो; इवऩ् ताऩे–यह ही; पॊरुवाऩ्–युद्ध करेगा; अयले–पक्ष में; वऩ्तु–आनेवाले; तमर् आऩोरुटऩुम्–(अतिकाय के) अपनों के साथ भी; पॊरुवान् अमैवाऩ्–लड़ने को सम्मत होगा। १७१३

जब उसने अपनी बात समाप्त की, तब श्रीराम ने अपनी सम्मति प्रगट की। आकाशवासी, पृथ्वीवासी और अन्य सभी लोगो! यह मेरा वचन सुन लो। यह लक्ष्मण अकेला अतिकाय से युद्ध करने जायगा। अतिकाय के पक्ष में जो उसके लोग आयेंगे, उनसे भी युद्ध करने में लग जायगा। १७१३

ऍळुवायिऩि यॆऩ्ऩुड ऩॆऩ्ऱॆरियुम्, मळुवाय्निहर् वॆञ्जॊल् वळङ्गुदलुम्
तळुवा वुडऩेहुदि ताळ्लॆऩत्, तॊळुवार् तॊळुदाळरि शॊल्लुवलुम् 1714

इऩि–अब; ऍऩ्ऩुटऩ् ऍळुवाय्–मेरे ही साथ उठ चलिए; ऍऩ्ऱु–ऐसा; ऍरियुम् मळुवाय् निकर्–जलनेवाले परशु के मुख के समान; वॆम् चॊल्–चोट करनेवाले वचनों को; वळङ्कुतलुम्–महिष के कहने पर; तॊळुवार्–वन्दना करनेवालों द्वारा; तॊळु ताळ् अरि–नमनीय चरणों के स्वामी ने; तळुवा–(लक्ष्मण का) आलिंगन करके; उटऩ् एकुति–साथ जाओ; ताळ्ल्–विलम्ब मत करो; ऍऩ चॊल्लुतलुम्–ऐसा कहा तब। १७१४

तब महिष ने जलते परशु के मुख के समान तीक्ष्ण शब्द कहे और कहा कि अभी चलो मेरे साथ। तब वंदना करनेवालों के वंदनीय श्रीराम ने अपने भाई का आलिंगन करके कहा कि चलो तुरन्त। विलंब मत करो। तब। १७१४

ऍल्लामुड नॆय्दिय पिऩ्ऩिवऩै, विल्लाऩॊडु पोर्शॆय वेण्डुमॆऩ्ऩा
नल्लाऱुडै वीडण ऩारणऩ्मुऩ्, शॊल्लाडिऩ ऩऩ्ऩवै शॊल्लुदुमाल् 1715

नल्लाऱुटै–सन्मार्गावलम्बी; वीटणऩ्–विभीषण; ऍल्लाम् उटऩ् ऍय्तिय पिऩ्–सबके साथ जाने के बाद; इवऩै–इनको; विल्लाऩॊटु–धनुर्धर (अतिकाय) के विरुद्ध; पोर् चॆय वेण्टुम्–युद्ध करना चाहिए; ऍऩ्ऩ–ऐसा; नारणऩ् मुऩ्–श्रीनारायण (राम) के आगे; चॊल् आटिऩऩ्–कुछ कहा; अवै चॊल्लुतुम्–उन्हें बताएँगे (हम–कवि)। १७१५

सन्मार्गावलंबी विभीषण ने कहा कि हमारे सबके साथ जाने के बाद ये ही उस धनुकर्मचतुर अतिकाय से लड़ें। वह आगे भी श्रीनारायण से बोला। १७१५

वारेऱुह ऴऱ्चिऩ वाळरियॆम्, पोरेऱॊडु पोर्पुरि वाऩमैयाऩ्
तेरेऱि शिऩक्कडु वॆन्दरुहण्, कारेऱॆऩ वन्द कदत्तॊऴिलोऩ् 1716

वार् एऱु–फ़ीते से बँधी; कऴल्–पायलधारी; चिऩम्–क्रुद्ध; वाळ् अरि–क्रूर सिंह-सदृश; ऍम् पोर् एऱॊटु–हमारे योद्धा केसरी (लक्ष्मण) के साथ; पोर् पुरिवाऩ् अमैया–लड़ने को उद्यत होकर; चिऩम्–क्रोध; कटु–अधिक; वॆम्–भयंकर; तरुकण्–निडरता ले; तेर् एऱु–रथ पर सवार; कार् एऱु ऍऩ–मेघराज के समान; वन्त–आया; कतम् तॊऴिलोऩ्–क्रुद्ध कर्मी है। १७१६

फ़ीते से बद्ध पायलधारी क्रुद्ध क्रूर सिंह-सदृश हमारे योद्धा के नर-केसरी लक्ष्मण से लड़ने को तैयार होकर जो आया है, वह क्रोधी और क्रूर व निडर है। रथ पर आये मेघ के समान है और क्रोधकर्मी है। १७१६

ओवानॆडु मादव मॊऩ्ऱुडैयाऩ्, देवाशुर रादियर् शॆय्शॆरुविल्
शावातिरै युज्जलि यावलियाऩ्, मूवामुद ऩाऩ्मुह ऩार्मॊऴियाल् 1717

ओवा–अन्तरहीन; नॆटु मा तवम् ऒऩ्ऱुटैयाऩ्–लम्बी और कठोर तपस्या वाला है; मूवा–अजर; मुतल् नाऩ्मुकत्तार्–आदिपुरुष चतुर्मुख के; मॊऴियाल्–(वर के) वाक्यों से; तेव अचुरर्–देवासुरों द्वारा; चॆय् चॆरुविल्–किये गये युद्ध में; चावात्–विना मरे; चलिया–चंचल हुए विना (जो रहा); वलियाऩ्–वैसा बलवान है। १७१७

बहुत लम्बी और निरंतर तपस्या कर चुका है। अजर और आदि-पुरुष चतुर्मुख द्वारा दत्त वर के बल से वह देवासुर युद्ध में नहीं मरा। वह कभी न शिथिल पड़नेवाली ताकत का है। १७१७

कडमेय् कयिलैक्किरि कण्णुदलो, डिडमेल वॅडुत्तव नेयिवनैत्
तिडमेयुल हिऱ्पल देवरोडुम्, वडमेरु वॅडुक्क वळर्त्तननाल् 1718

कटम् एय्–वनों से पूर्ण; कयिलै किरि–कैलास पर्वत को; कण्णुतलोट्–भालनेत्र शिव के साथ; इटम्–उसके स्थान से; एल ॲट्टुत्तवत्ते–जिसने ऊपर उठाया था उसी रावण ने; उलकिल् पल तेवरोटुम्–लोक में अनेक देवों के साथ; वट मेरु ॲट्टुक्क–उत्तर के मेरु को उठाने; इवनै–इसे; तिटमे वळर्त्ततन्–योग्य वृढ़ता के साथ पाला है। १७१८

वनसंकुल कैलासगिरि को उसके स्थान से उखाड़ उठानेवाले रावण ने स्वयं, देवों के साथ उत्तर के मेरु को उत्पाटित करवाने के उद्देश्य से इसको सशक्त पाला है। १७१८

मालारोडु मन्दर माशुणमुम्, मेलाहिय देवरुम् वेण्डुमॅना
तालालमु मारमिऴ् दुम्ममैयक्, कालाल्नॅडु वेलै कलक्किडुमाल् 1719

मालारोटु–विष्णुजी के साथ; मन्तरम्–मन्दर पर्वत को और; माचुणमुम्–सर्प वासुकी और; मेलाकिय तेवरुम्–श्रेष्ठ वेव भी; वेण्टुम् ॲन्नातु–चाहिए यह न कहकर; आलालमुम्–हलाहल और; आर् अमिऴ्तुम्–बहुमूल्य अमृत; अमैय–प्रगट कराते हुए; कालाल्–अपने पैरों से; नॅटु वेलै–बड़े समुद्र को; कलक्किटुम्–मथ सकनेवाला है। १७१९

विष्णु, मंदरपर्वत, (वासुकी) सर्प, श्रेष्ठ देव इनमें किसी की अपेक्षा किये विना ही वह हलाहल और बहुमूल्य अमृत निकल जायें, ऐसा अपने पैरों से विशाल क्षीरसागर को मथ सकनेवाला है। १७१९

ऊऴिक्कु मुयर्न्दत्त नाळोडुम्वाऴ्, पाऴित्तिशै निन्ऱु शुमन्दपणैच्
चूऴिक्करि तळ्ळुदल् तोऴ्वलियो, आऴिक्किरि तळ्ळुमो रङ्गैयिनाल् 1720

ऊऴिक्कुम् उयर्न्तत–युगान्त से भी बड़ी; नाळोटुम् वाऴ्–आयु के साथ रहने वाले; पाऴि तिचै निन्ऱु–सबल दिशाओं में खड़े होकर; चुमन्त–(भूमि को) ढोने वाले; पणै–स्थूल; चूऴि–मुखपट से युक्त; करि–हाथी को; आऴि किरि–चक्रवालगिरि को; तळ्ळुम्–गिरानेवाले; ओर् अम् कैयिनाल्–बेजोड़ व सुन्दर हाथ से; तळ्ळुतल्–पछाड़ना; तोऴ् वलियो–कोई भुजबल है क्या। १७२०

युग से भी अधिक लम्बी आयु वाले, सबल दिशाओं में खड़े रहकर भूमि को ढोनेवाले, मोटे और मुखपटालंकृत गजों को वह अपने सुन्दर हाथ से ढकेल देगा —यह कहने से उसके भुजबल की महत्ता बताना नहीं होगा, क्योंकि वह चक्रवालगिरि को भी अपने सुन्दर और वेजोड़ हाथ से ढकेल दे सकता है। १७२०

कालङ्गळ् कणक्किऱ् कण्णिमैया, आलङ्गोळ् मिडऱ्ऱव नारुळ्वाय्
वेलङ्गॅरि यक्कोडु विट्टदुनी, शूलङ्गो लॅन्नप्पहर् शोल्लुडैयान् 1721

कालङ्कळ् कणक्कु इऱ्–अगणित काल के बीतने पर भी; कण् इमैया–पलक न मारनेवाले; आलम् कॊळ् मिटऱ्ऱु अवऩ्–हलाहलकण्ठ शिव के; आर् अऴल् वाय्–अत्यग्निमुखी; वेल्–त्रिशूल को; अङ्कु ऍऱिय–वहाँ फेंकने पर; कोट्टु–हाथ में (पकड़) लेकर; नी विट्टतु–तुमने जो फेंका वह; चूलम् कॊल्–शूल है क्या; ऍऩ्ऩ पकर्–ऐसा कहने का; चॊल् उटैयाऩ्–वातूनी है। १७२१

अगणित काल के बीतने पर भी जिनकी पलकें नहीं झपतीं, उन शिवजी ने इस पर अपने अग्निमुखी त्रिशूल को चलाया। इसने उसे हाथ में पकड़ लिया और शिव से पूछा कि तुमने जो चलाया क्या वह शूल है? ऐसा वाचाल है वह। १७२१

पहैयाडिय वाऩवर् पल्वहैयूर्, पुहैयाडिय नाळ्पुऩै वाहैयिऩाऩ्
मिहैयारुयि रुण्ऍऩ वीशियवॆन्, दहैयाऴि तहैन्द तऩुत्तॊऴिलाऩ् 1722

पकै आटिय वाऩवर्–शत्रुता बरती (जिन्होंने) उन देवों के; पल् वकै ऊर्–विविध नगरों को; पुकै आटिय नाळ्–जिस दिन धुआँ बना दिया उस दिन; वाकैयिऩाऩ्–विजयमालाधारी विष्णु ने; मिकै आर्–पापबहुल; उयिर् उण्–इसके प्राणों को खा जाओ; ऍऩ्ऩ–कहकर; वीचिय–जो फेंका; वॆम् तकै–क्रूर प्रकृति के; आऴि–चक्रायुध को; तकैत्त–रोक लिया (इसने) ऐसे; तऩु तॊऴिलाऩ्–धनुकृत्य करनेवाला है। १७२२

शत्रुता बरतनेवाले देवों के विविध नगरों को जब इसने जलाया और धुआँ उठा, तब विजयमालाधारी विष्णु ने उसके अपराधी प्राण हरने की आज्ञा देकर अपना चक्र चलाया, तब इसने अपने बाण से इस संतापक चक्र को रोक दिया। ऐसा धनुर्वीर है यह। १७२२

उयिरॊप्पुरु पल्पडै युळ्ळवॆलाम्, शॆयिरॊप्पुरु मिऩ्दिरऩ् शिन्दियनाळ्
अयिरॊप्पऩ नुण्डुहळ् शॆय्दवऩ्तम्, वयिरप्पडै तळ्ळिय वाळियिऩाऩ् 1723

उयिर् ऒप्पुरु–प्राण-सम; पल् पटै उळ्ळ–विविध हथियार जो हैं; ऍलाम्–उन सभी को; चॆयिर् ऒप्पुरुम् इन्तिरऩ्–क्रुद्ध इन्द्र ने; चिन्तिय नाळ्–जब इस पर चलाया; अयिर् ऒप्पऩ–बालू के समान; नुण् तुकळ् चॆय्तु–बारीक कण बनाकर; अवऩ् तम्–उसके; वयिरप्पटै–वज्रायुध को भी; तळ्ळिय–जिसने हटा दिया; वाळियिऩाऩ्–ऐसा शरप्रेषक है। १७२३

क्रुद्ध इन्द्र ने अपने प्राणों-से प्यारे विविध हथियार इस पर चलाये। तब इसने उन्हें बालुओं के समान चूर्ण कर दिया और उसके वज्र को भी बेकार कर दिया। ऐसा बाण चलानेवाला है वह। १७२३

कऱ्ऱाऩ्मऱै नूलॊडु कण्णुदल्पाल्, मुऱ्ऱादऩ देवर् मुरट्पडैताम्
मऱ्ऱारुम वळ्ङ्ग वलारिलवम्, पॆऱ्ऱाऩॆडि दाणमै पिऱन्दडैयाऩ् 1724

मऱै–धनुर्वेद के रहस्यों को; नूलोडु–शास्त्र के साथ; कण् णुतल् पाल्–भालनेत्र शिवजी से; कऱ्ऱान्–इसने सीखा; तेवर् मुऱ्ऱातत–देव जिनको पूरा न कर सके; वळङ्क वलार्–जिनको चला सकनेवाले; मऱ्ऱु आरुम् इलवुम्–अन्य कोई नहीं; मुरण् पटै–ऐसे सशक्त हथियारों को; पॆऱ्ऱान्–प्राप्त कर लिया; नॆटितु–बहुत अधिक; आण्मै पिऱन्तुटैयान्–वीरता से युक्त है। १७२४

इसने शिवजी से धनुर्वेद के रहस्यों को शास्त्रों के साथ सीख लिया है। उसके पास ऐसे सबल अस्त्र हैं, जिन्हें देव पूर्ण रूप से न सीख सके और जिनको चलाने में समर्थ अन्य लोग नहीं हैं। वह बड़ी वीरता का स्वामी है। १७२४

अऱनल्लदु अल्लदु माऱ्ऱियान्, मऱनल्लदु पल्पणि मऱ्ऱरियान्
तिऱनल्लदो रारुयि रुञ्जिदैयान्, उऱनल्लदु पेरिसै यॆन्ऱुणर्वान् 1725

अऱन् अल्लतु–अधर्म; अल्लतु अन्ऱि–छोड़कर; माऱु अऱियान्–कुछ नहीं जाननेवाला; मऱन् अल्लतु–वीरता के सिवा; मऱ्ऱु–अन्य; पल् पणि–अनेक आभरणों को; अणियान्–न पहननेवाला है; तिऱन् अल्लतु–सबल जीव को छोड़कर; ओर् आर् उयिरुम्–किसी एक जीव का; चितैयान्–नाश नहीं करता; पेर् इचै–बड़ा यश; उऱल् नल्लतु–पाना श्लाघनीय है; ॲन्ऱु उणर्वान्–यह जानता है। १७२५

जो धर्मरहित है, उसे छोड़कर कुछ नहीं जानता। वीरता के सिवा अन्य कोई आभरण नहीं पहनता। निर्बल किसी जीव को नहीं मारता। उच्च यश पाना ही अच्छा है —यह वह जानता है। १७२५

कायत्तुयि रेविडु कालैयिनुम्, मायत्तवर् कूडि मलैन्दिडिनुम्
तेयत्तवर् शॅय्हुदल् शॅय्दिडिनुम्, मायत्तोळ्िल् शॅय्य मदित्तिलनाल् 1726

कायत्तु उयिरे–शरीर से लगे प्राणों को; विटु कालैयितुम्–छोड़ते समय में भी; मायत्तवर् कूटि–मायावियों के मिलकर; मलैन्तिटितुम्–लड़ने पर भी; तेयत्तवर्–देश के वासी सभी; चॅय्कुतल् चॅय्तिटितुम्–(विषम) कर्म करें तो भी; मायम् तॊळ्िल् चॅय्य–स्वयं वंचना का कार्य करना; मतित्तिलन्–नहीं सोचता। १७२६

शरीर से प्राणों को छोड़ते समय भी, मायावी लोगों के इसके साथ भिड़ने के समय भी, देश के सभी लोगों के अहित कार्य करने पर भी यह माया-रचना नहीं सोचता। १७२६

मदुकैडव रॆन्बवर् वानवर्तम्, पदिहैकॊडु कट्टवर् पण्डॊरुनाळ्
अदिहैतव राळि यनन्दनैयुम्, विदिकैम्मिह मुट्टिय वॆम्मैयिनार् 1727

अति कैतवर्–बड़े वंचक; मतुकैटवर्–मधु-कैटभ; वानवर् तम् पति कै कॊटु–देवों के लोक को हस्तगत कर; कट्टवर्–नाश कर; पण्टु ओरु नाळ्–प्राचीन काल में एक दिन; विति कै मिक–विधि के प्रबल होने से; आळि अनन्तनैयुम्–समुद्रवासी अनन्तदेव विष्णु को भी; मुट्टिय–टकरानेवाले; वॆम्मैयितार्–भयानक लोग। १७२७

बड़े वंचक मधु और कैटभ दो थे, जिन्होंने देवलोक को वश में करके उसे हानि पहुँचा दी थी। पहले एक दिन विधि के गुस्से के पात्र बनकर वे क्षीरसागरवासी अनंत भगवान विष्णु पर भी आक्रमण करनेवाले क्रूर बने। १७२७

नीराऴि यिऴिन्दु नॆडुन्दहैयैत्, तारायअम रॆन्ऱनर् तामॊरुनाळ्
आराऴिय वण्णलु मः(ह्)दिशैया, वारावमर् शॆय्हॆन्न वन्दननाल् 1728

ताम्–वे; नीर् आऴि इऴिन्तु–जल-समुद्र में घुसकर; ऒरुकाल्–एक बार; नॆट्ट तकैयै–सम्मान्य विष्णु से; अमर् ताराय्–युद्धदान करो; ऍन्ऱनर्–बोले; आर् आऴिय अण्णलुम्–अपूर्व-चक्रधारी महिमावान प्रभु भी; अ.·.तु इचैया–उससे सहमत होकर; वारा अमर् चॆय्क–अभूतपूर्व युद्ध करो; ऍन्न–कहते हुए; वन्तनन्–आये। १७२८

एक बार वे क्षीरसागर में घुसकर विष्णु के पास गये। उनसे युद्ध का दान माँगा। अपूर्व चक्रधारी विष्णु सहमत हुए और यह कहते हुए आये कि अभूतपूर्व युद्ध करने का मौक़ा लो। १७२८

वल्लारुरु वायिर माय्वरिनुम्, नल्लार् मुऱैवीशि नहुन्दिऱलार्
मल्ला लिळहादु मलैन्दनन्माल्, अल्लायिर मायिर मः(ह्)किनवाल् 1729

वल्लार्–बलवान लोग; आयिरम् उरुवाय् वरितुम्–सहस्र रूप ले आएँ तो भी; नल्लार् मुऱै–अच्छे वीरों के ही रास्ते में; वीचि–तितर-बितर करके; नकुम् तिऱलार्–हँसी उड़ाने की शक्ति रखनेवाले उनके साथ; माल्–विष्णु ने; इळकातु–बिना शिथिल हुए; मल्लाल्–मल्लयुद्ध में; मलैन्तनन्–सामना किया; आयिरम् आयिरम्–सहस्र-सहस्र; अल्–दिन; अ.·.कित्त–बीते। १७२९

श्रीविष्णुदेव ने बिना ढीला पड़े उनसे मल्लयुद्ध किया, जो बलवान लोग सहस्र रूप में भी आयें तो उन्हें सीधे मार्ग से अस्तव्यस्त करके हँसनेवाले थे। १७२९

तन्पोल्बव रारु मिलादतनिप्, पॊन्बोलॊळिर् मेनिय नैप्पुहऴोय्
ऍन्पोल्बवर् शॊल्लुव दॆण्णुडैयार्, उन्पोल्बव रियारुळ रॆन्ऱुरैया 1730

तन् पोल्पवर्–अपने समान; आरुम् इलात–किसी को न पानेवाले; तनि पॊन् पोल् ऒळिर्–बेमिलावट के स्वर्ण के समान तेजोमय; मेनियनै–शरीरी विष्णु से; पुकऴोय्–यशस्वी; ऍन् पोल्पवर्–मेरे-जैसे लोगों का; चॊल्लुवतु–कहना है; ऍण् उटैयार्–गण्य-मान्य लोगों में; उन् पोल्पवर् यार् उळर्–तुम्हारे समान कौन है; ऍन्ऱु उरैया–ऐसा कहकर। १७३०

अप्रतिम और स्वर्ण-सदृश प्रकाशमय रूपवान विष्णु से मधु-कैटभ ने यों कहा। यशस्वी! हमारे-जैसे लोगों का यही कहना है कि गण्य-मान्य बलवानों में तुम-जैसे बलवान कौन हैं? । १७३०

ऑरुवो मुलहेऴैयु मुण्डुमिऴ्वोम्, इरुवोमोंडु नीतनि यित्ततैनाऴ्
पॉरुवोमोंडु नेर्पॉरु दाय्पुकऴोय्, तरुवोम्नित् मनत्तदु तन्दनमाल् 1731

ऑरुवोम्–हममें एक-एक ही; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; उण्टु–निगलकर; उमिऴ्वोम्–उगल सकते हैं; नी–तुमने; तनि–अकेले ही; इत्तत्तै नाऴ्–इतने दिन; पॉरुवोमोंटु–लड़नेवाले; इरुवोमोंटु–हम दोनों के साथ; नेर् पॉरुताय्–सीधे युद्ध किया; पुकऴोय्–यशस्वी; निन् मनत्ततु–तुम्हारे मन की चाह को; तरुवोम्–देंगे; तन्तनम्–हमने दे ही दिया। १७३१

हम दोनों में एक-एक ही सातों लोकों को निगल सकते हैं, उगल भी सकते हैं। ऐसे हम दोनों के विरुद्ध तुमने ठीक रीति से इतने दिन युद्ध किया। हमने वर दिया जो चाहो वह देने का। दे ही दिया। १७३१

ऑल्लुम्बडि नल्ल दुनक्कुदवच्, चॉल्लुम्बडि ऍन्ऱवर् शॉल्लुदलुम्
वॅल्लुम्बडि नुम्मै विळम्बुहॅनक्, कॉल्लुम्बडि यालरि कूऱुदलुम् 1732

चॉल्लुम् पटि–यह कहने का प्रकार; ऑल्लुम् पटि–यथासाध्य; उनक्कु नल्लतु उतव–तुम्हें भला देने के लिए; ऍन्ऱु–ऐसा; अवर् चॉल्लुतलुम्–उनके कहने पर; नुम्मै वॅल्लुम् पटि–तुम्हें जीतने का मार्ग; विळम्पुक–बतलाओ; ऍन्न–ऐसा; कॉल्लुम् पटियाल्–मारने के विचार से; अरि–हरि के; कूऱुतलुम्–कहने पर। १७३२

तुम्हारा माँगने का विषय तुम्हारा हितकारी हो, यही हमारा मंशा है। उनके यों कहने पर श्रीविष्णु ने कहा कि तुम्हें मारने का मार्ग कहो। वे उन्हें मारना चाहते थे। १७३२

इडैयिऱ्पडु हिऱ्किलम् यामॊरुनिन्, तुडैयिऱ्पडु हिऱ्ऱु मॅनत्तुणिया
अडैयच्चॅय हिऱ्ऱिय दाणैयॅना, नडैयिऱ्पडु नीदियर् नलहुदलुम् 1733

याम्–हम; ऑरु–अनुपम; निन् तुटैयिल्–तुम्हारी जाँघ पर; पटु किऱ्ऱुम्–मर सकते हैं; इटैयिल्–अन्य कहीं; पटुकिऱ्किलम्–मारे नहीं जा सकते; ऍन्न–कहकर; तुणिया–मरने को तैयार हो; अटैय चॅयकिऱ्ऱि–मृत्यु प्राप्त कराओ; अतु आणै–वह हमारी आज्ञा है; ऍन्ना–कहकर; नटैयिल् पटु नीतियर्–सदाचारी उनके; नलकुतलुम्–कहने (वर देने) पर। १७३३

उन्होंने कहा— हम मरेंगे तो तुम्हारी जाँघ पर ही। अन्य कहीं मारना असम्भव है। वे तैयार हो गये। उन्होंने ललकारा। अब अपना पराक्रम दिखाओ और हमें मृत्यु को प्राप्त करा दो। यह हमारी आज्ञा है। ऐसा सदाचारी नीतिमान मधु-कैटभों ने कहा। १७३३

विट्टा नुलहि यावैयु मेलॊडुकीऴ्, ऍट्टा वॊरुवन्ऱ तिडत्तुडैये
ऑट्टादव रॊन्ऱिल रूऴ्वलियाल्, पट्टारिवु पट्टदु पण्डॊरुनाऴ् 1734

ऍट्टा ऑरुवन्–अगोचर अद्वितीय श्रीविष्णु; मेलॊटु कीऴ् उलकु यावैयुम्–ऊपर-

नीचे सभी लोकों पर; तन् इट तोटैयै विट्टान्–अपनी जाँघ को बढ़ाया; ओट्टातवर्–विरोधी; ऊऴ्वलियाल्–विधि के बल से; ओन्ऱिऩर्–मिलकर; पट्टार्–फँसे; इतु–यह; पण्टु–पहले; ओरुनाळ्–एक दिन में; पट्टतु–घटा। १७३४

अगोचर, अनुपम विष्णु ने अपनी जंघा को ऊपर और नीचे के सभी लोकों पर व्याप्त करते हुए बढ़ाया। विरोधी विधि की प्रबलता से एक साथ होकर जाँघ में फँस गये। यह घटना पहले किसी दिन हुई थी। १७३४

तऩिनायहऩ् वऩ्गदै तऩ्कैहॊळा, नऩिशाड विऴुन्दऩर् नाळुलवाप्
पतियामदु मेदै पडप्पडर्मे, दिऩियानदु पूवुल हॆङ्गणुमे 1735

तनि नायकन्–अकेले नायक के; वन् कतै–कठोर गदा को; तन् कै कोळा–अपने हाथ में लेकर; नति चाट–खूब प्रहार करने पर; नाळ् उलवा–आयु नष्ट होकर; विऴुन्तनर्–मरकर गिर गये; पटर्–विशाल; पू उलकु ऍङ्कणुम्–चतुर्विधा भूमि पर सर्वत्र; पतिया–कंपनहीन; मतु मेतै पट–मधु के मेदे के लगने से; मेतिनि आततु–मेदिनी नाम की हो गयी (पृथ्वी)। १७३५

अप्रतिम जगन्नायक श्रीविष्णु ने अपना कठोर गदा हाथ में लिया और उससे उन्हें खूब पीटा। उनकी आयु कटी और वे मरे। मधु का मेदा विशाल चतुर्विधा भूमि पर सर्वत्र फैला। इसलिए यह पृथ्वी 'मेदिनी' नाम से भूषित हो गयी। १७३५

विदियालि वुहन्दऩिऩ् मॆय्वलियान्, मदुवाऩव नॆम्मुऩ् मडिन्दऩनार्
कदिर्दाऩिहर् कैडव ऩिक्कदिर्वेल्, अदिहाय ऩिदाह वरैन्दऩऩाल् 1736

इ उकम् तनिल्–इस युग में; मॆय् वलियान्–सच्चा बलिष्ठ; मतु आतवन्–मधु जो था वह; ॲम् मुन्–मेरा बड़ा भाई (कुंभकर्ण) है; वितियाल् मुटिन्तनन्–विधि के कारण मरा; कतिर् तान् निकर्–सूर्य ही सम; कैटवन्–कैटभ; इ–यह; कतिर्वेल्–उज्ज्वल भाले का धारक; अतिकायन्–अतिकाय है; इतु–यह वृत्तांत; आक–आप जान लें, इसलिए; अरैन्तनन्–मैंने बतलाया। १७३६

इस युग में वही सच्चा बलवान मधु मेरा बड़ा भाई कुम्भकर्ण बना था, जो विधि के प्रबल विधान से मर गया। सूर्य-सम कैटभ ही उज्ज्वल भालाधारी यह अतिकाय है। यह आपको विदित हो इसीलिए मैंने आपसे यह वृत्तांत कहा। (विभीषण ने यों बतलाया।)। १७३६

ॲऩ्ऱाऩ विरावण ऩुक्किळैयान्, नऩ्ऱाहुह वॆऩ्ऱॊरु नायहऩुम्
मिऩ्ऱातुमिऴ् वॆण्णहै वेरुशॆया, निऩ्ऱानिदु कूऱ निहऴ्त्तिऩनाल् 1737

अ इरावणन्तक्कु इळैयान्–रावण के उस छोटे भाई (विभीषण) ने; ऍन्ऱान्–ऐसा बताया; नन्ऱु आकुक–भला हो; ऍन्ऱु–कहकर; ऒरु नायकनुम्–अद्वितीय

नायक ने भी; मिन् ताऩ् उमिऴ्-बिजली का-सा प्रकाश छिटकानेवाला; वॆळ् नकै-श्वेत (प्रसन्न) हास; वेऱु चॆया-करके, अलग; निऩ्ऱाऩ्-खड़े होकर; इतु कूऱ निकऴ्त्तिऩऩ्-यह कहने लगे। १७३७

रावण के अनुज ने यह वृत्तांत कह सुनाया तो श्रीराम ने कहा—अच्छा। भला हो। अद्वितीय नायक श्रीराम ने बिजली के समान प्रकाश छिटकाते हुए हास दिखाया और अलग खड़े होकर निम्नोक्त बातें कहीं। १७३७

अण्णायिर कोडि यिरावणरुम्, विण्णाडरुम् वेऱुल हत्तॆवरुम्
नण्णावॊरु मूवरु नण्णिडिनुम्, कण्णालिवऩ् विऱ्ऱॊऴिल् काणुदियाल् 1738

ऍण्णायिरम् कोटि-आठ सहस्र करोड़; इराबणरुम्-रावण; विण्णाटरुम्-और व्योमलोकवासी; वेऱु उलकत्तु ऍवरुम्-अन्य लोकों के सभी; नण्णा ऒरु मूवरुम्-जिनके पास नहीं जा सकते, वे त्रिमूर्ति; नण्णिटिनुम्-आयें तो भी; इवऩ्-इसका; विल् तॊऴिल्-धनुकृत्य; कण्णाल् काणुति-अपनी आँखों से देख लो। १७३८

आठ हज़ार करोड़ रावण, आकाशवासी लोग और अन्य लोकों के वासी और अगम त्रिमूर्ति —सभी आ जाएँ— तब तुम देखोगे इसका धनुकृत्य ! । १७३८

वाऩॆऩ्बवॆऩ् वैयह मॆऩ्बवॆऩ्माल्, ताऩॆऩ्बवॆऩ् वेऱु तऩिच्चिलैयोर्
याऩॆऩ्बवॆऩ् ईशऩॆऩ् वाऩवर्तम्, कोऩॆऩ्बवॆऩ् ऍम्बि कॊदित्तिडुमेल् 1739

ऍम्पि कॊतित्तिटुमेल्-मेरा छोटा भाई खौल उठेगा तो; वाऩ् ऍऩ्पतु ऍऩ्-आकाशवासी क्या; वैयकम् ऍऩ्पतु ऍऩ्-पृथ्वी क्या; माल् ताऩ् ऍऩ्पतु ऍऩ्-विष्णु जो हैं वे ही क्या; वेऱु-अन्य; तऩि चिलैयोर् ऍऩ्पतु ऍऩ्-अद्वितीय धनुर्धर जो माने जायँ, वे क्या; याऩ् ऍऩ्पतु ऍऩ्-मैं ही क्या; ईचऩ् ऍऩ्-ईश्वर शिव क्या; वाऩवर् तम् कोऩ्-देवेंद्र; ऍऩ्पतु-कहो; ऍऩ-(वह भी) क्या। १७३९

मेरा छोटा भाई खौल उठेगा तो आकाशवासी क्या, भूलोकवासी क्या, विष्णु क्या? या अन्य धनुर्धर क्या? क्यों मैं ही क्या या ईश्वर शिव क्या? देवेंद्र भी क्या? (कोई ठहर नहीं सकेंगे इनके सामने।) । १७३९

दॆय्वप्पडै युऩ्जिऩ मुऩ्दिऱनुम्, मैयऱ्ऱॊऴि मादव मऱ्ऱॆलाम्
ऍय्दऱ्कुळ वोविव ऩिच्चिलैयिल्, कैवैप्पळ वेयिऱल् काणुतियाल् 1740

दॆय्वम् पटैयुम्-दिव्य हथियार और; चिऩमुम्-क्रोध; तिऱऩुम्-पराक्रम; मै अऱ्ऱु-निर्दोष; ऒऴि मातवम्-बीता महान तप; मऱ्ऱुम् ऍलाम्-अन्य सभी; ऍय्तऱ्कु उळवो-(इसके सामने) आने का सामर्थ्य रखते हैं क्या; इवऩ्-यह लक्ष्मण; इ चिलैयिल्-इस धनु पर; कै वैप्पु अळवे-हाथ रखे बस उतने ही में; इऱल् काणुति-(उन सबका) मिट जाना देख लोगे। १७४०

दिव्यास्त्र, प्रताप, क्रोध, निर्दोष और दीर्घ तपस्या और सभी कुछ —जो भी लो, वे इसके सामने खड़े होने अर्ह होंगे क्या ? इसके धनु पर हाथ रखने की ही देर है सब मिट गये —देखोगे। १७४०

ऍन्ड्रेवियै वञ्जत्तॆ शॆय्दॆळुवान्, अन्ड्रेमुडि वानिव नन्नवळ्शॊल्
कुन्ड्रेॅन्न वेहिय कॊळ्हैयिनाल्, निन्ड्रानुळ नाहि नॆडुन्दहैयाय् 1741

नॆट्नूतकैयाय्–सुयोग्य; ऍन् तेवियै–मेरी देवी को; वञ्चत्ते चॅय्तु–वंचना करके; ऍळुवान्–ले जो गया वह; अन्ड्रे मुटिवान्–तभी मर जाता; इवन्–यह; अन्नवळ् चॊल्–सीताजी की बात; कुन्ड्रेन्–नहीं लाँघूंगा; ऍन्न–कहकर; एकिय कॊळ्कैयिनाल्–आ गया (मेरे पास) इस कार्य से; उळन् आकि निन्ड्रान्–जीवित बना रहा। १७४१

सुयोग्य विभीषण ! वंचक सीतापहारी उसी दिन मरता जो यह 'देवी के वचन का उल्लंघन नहीं करूँगा' कहकर मेरे पास नहीं आता। उसी बात से यह बच गया। १७४१

एहायुड नीयु मॆदिर्न्दुळनाम्, माहाय नॆडुन्दल वाळियॊडुम्
आहाय मळन्दु विळुन्ददनै, काहादिह णुङ्गुदल् काणुदियाल् 1742

नीयुम् उटन् एकाय्–तुम भी साथ जाओ; ऍतिर्न्तुळनाम्–लड़ने जो आया है उस; माकायन्–अतिकाय का; मॆट्टु तलै–बड़ा सिर; वाळियॊटुम्–शर के साथ; आकायम् अळन्तु–आकाश को नापकर; विळुन्ततनै–जो गिरेगा उसे; काकातिकळ्–कौए आदि; तुक्कुतल्–खायेंगे वह; काणुति–देखोगे। १७४२

तुम भी इसके साथ जाओ। इससे भिड़नेवाले अतिकाय (बड़ा शरीर वाला) का सिर अपने पर लगे शर के साथ आकाश को माप करके नीचे गिरेगा और उसे कौए चाव के साथ खाएँगे। तुम देखोगे। १७४२

नीरॆक्कॊडु नीरॆदिर् निऱ्कॊणुमे, तीरक्कॊडि यारॊडु तेवर्पॊरुम्
पोरॆक्कॊडु वन्दु पुहुन्ददुनाम्, आरॆक्कॊडु वन्द दऱिन्दिलैयो 1743

नीरै कॊट्टु–जल लेकर; नीर् ऍतिर्–जल का सामना; निऱ्कॊणुमे–कर सकते हैं क्या; तीर कॊटियारॊटु–निपट दुष्टों के साथ; तेवर् पॊरुम् पोरै–देवों के लिए जो करते हैं, उस युद्ध को; कॊट्टु वन्तु–ले आकर; नाम् पुकुन्ततु–जो हम पहुँचे हैं वह; आरै कॊट्टु वन्तु–किसकी सहायता लेकर; अतु अऱिन्तिलैयो–वह नहीं जानते क्या। १७४३

जल का सहारा लेकर जल से लड़ा जा सकता है क्या ? निपट नृशंस राक्षसों के साथ देवों के वास्ते युद्ध का ज़िम्मा लेकर जो हम आये हैं, वह किसकी सहायता के बल पर ? तुम यह नहीं जानते क्या ? । १७४३

शिवऩल्ल ऩॆऩिल्तिरु विऩ्बॆरुमाऩ्, अवऩल्ल ऩॆऩिऱ्पुवि तन्दरुळुम्
तवऩल्ल ऩॆऩिल्तऩि येवलियोऩ्, इवऩल्ल ऩॆऩिऱ्पिऱ रियारुळरो 1744

चिवऩ् अल्लऩ् ऎऩिल्–शिव नहीं तो; तिरुविऩ् पॆरुमाऩ्–श्री का पति; अवऩ् अल्लऩ् ऎऩिल्–वह नहीं तो; पुवि तन्तु अरुळुम्–भूमि की सृष्टि करके उपकार करनेवाले; तवऩ्–तपस्वी; अल्लऩ् ऎऩिल्–नहीं तो; तऩि वलियोऩे–अनुपम पराक्रमी यही लक्ष्मण (उसे जीत सकता है); इवऩ् अल्लऩ् ऎऩिल्–यह नहीं हो तो; पिऱर् यार् उळर्–दूसरे कौन हैं। १७४४

इसको शिवजी जीत सकते हैं; नहीं तो श्रीलक्ष्मीपति, नहीं तो लोकों के करुणामय सर्जक ब्रह्मा जीत सकते हैं। नहीं तो यही अप्रतिम प्रतापी जीत सकता है। फिर कौन हैं ? । १७४४

ऒऩ्ऱायिर वॆळ्ळ मॊरुङ्गुळवाम्, वऩ्ऱाऩैयर् वन्दु वळैन्दवॆलाम्
कॊऩ्ऱाऩिव ऩल्लदु कॊण्डुडऩे, निऩ्ऱार्पिऱ रिऩ्मै निऩैन्दिलैयो 1745

ऒऩ्ऱु आयिरम्–एक हज़ार; वॆळ्ळम् ऒरुङ्कु उळ आम्–'वॆळ्ळम्' एक साथ जो थे; वल् ताऩैयर्–सबल सेना के वीर; वन्तु वळैन्त–जो आ घेर गये; ऎलाम्–उन सबको; कॊऩ्ऱाऩ्–जिसने मारा; इवऩ् अल्लतु–इसके सिवा; कॊण्टु उटऩे निऩ्ऱार्–इसके सहायक; पिऱर् इऩ्मै–किसी दूसरों का न रहना; निऩैन्तिलैयो–नहीं सोचा क्या तुमने। १७४५

कुम्भकर्ण के साथ एक हज़ार 'वॆळ्ळम्' की सेना आयी। घेर आयी उस सबका नाश किया अकेले इसने। इसके साथ और कोई सहायक नहीं रहा। क्या यह बात याद नहीं करते तुम ? । १७४५

कॊल्वाऩु मिवऩ्कॊडि योरॆवॆलाम्, वॆल्वाऩु मिवऩडल् विण्डुवॆऩ
ऒल्वाऩु मिवऩ्नुड ऩॆयॊरुनी, शॆल्वायॆऩ वेवुदल् शॆय्दऩऩाल् 1746

कॊटियोरै ऎलाम्–सभी दुष्टों को; कॊल्वाऩुम् इवऩ्–मारनेवाला भी यही है; वॆल्वाऩुम् इवऩ्–जीतनेवाला भी यही; अटल् विण्टु ऎऩ–पराक्रमी विष्णु के समान; ऒल्वाऩुम् इवऩ्–आक्रान्त करनेवाला भी यही; ऒरु नी–अनुपम तुम; उटऩे चॆल्वाय्–साथ चलो; ऎऩ–ऐसा; एवुतल् चॆय्तऩऩ्–प्रेरित किया। १७४६

सभी दुष्टों को यही मारेगा; जीतेगा और प्रतापी विष्णु के समान भिड़ेगा। अनुपम तुम इसके साथ जाओ। श्रीराम ने आज्ञा सुनायी। १७४६

अक्कालॆयि लक्कुव ऩारियऩै, मुक्कालुम् वलङ्गॊडु मुवुणर्विऩ्
मिक्काऩडल् वीडणऩ् मॆय्तॊडरप्, पुक्काऩवऩ् वन्दु पुहऩ्दकळम् 1747

अक्काले–तब; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण; आरियऩै–श्रीराम को; मुक्कालुम्

वलम् कॊंटु–तीन बार परिक्रमा करके; **मूतुणर्वित् मिक्कात्**–उत्कृष्ट भावना में बढ़कर (या अति ज्ञानवान); **अटल्**–विक्रमी; **वीटणन्**–विभीषण के; **मॆय् तॊटर्**–उनके पीछे आते; **अवन् वन्तु पुकुन्त**–अतिकाय के प्रविष्ट; **कळम्**–समरांगण में; **पुक्कान्**–पहुँचा। १७४७

तब लक्ष्मण ने तीन बार आर्य श्रीराम की परिक्रमा की और बड़ी भावुकता के साथ युद्धस्थल में गया, जिसमें अतिकाय पहले ही आ चुका था। विभीषण ने भी उनका अनुगमन किया। (मूतुणर्विन् मिक्कान्—का अर्थ अतिभावुक होकर कहा गया है। अति ज्ञानवान का अर्थ भी लगाया जा सकता है; तब वह विभीषण का विशेषण बनेगा।)। १७४७

शेतॆक्कडल् शॆन्ऱदु तॆन्कडल्मेल् एतॆक्कडल् वन्द दॆऴुन्ददॆना
आतॆक्कडल् तेर्प्परि याऴ्मिडॆयुम्, तातॆक्कड लोडु तलैप्पडलुम् 1748

तॆत् कटल् मेल्–दक्षिणी सागर पर; **एतॆ कटल्**–अन्य सागर; **वन्तु**–आकर; **ऎऴुन्ततु ऎन्ता**–चढ़ आये जैसे; **आतॆ कटल्**–गजों का सागर (-सम झुण्ड); **तेर् परि**–रथ-अश्व; **आऴ्**–और पदाति वीर; **मिटॆयुम्**–जिसमें मिले थे; **तातॆ कटल्**–सेना-सागर के साथ; **चॆन्ऱतु**–(लक्ष्मण के साथ जो) गयी उस; **चेतॆ कटल्**–सेना-सागर के; **तलैप् पटलुम्**–टकराते ही। १७४८

दक्षिणी समुद्र पर अन्य समुद्र चढ़ आये हों ऐसा गजों, रथों और पदाति वीरों के राक्षस-सेना के सागरों से लक्ष्मण के साथ आयी सेना का सागर जाकर टकराया। तब। १७४८

पशुम्बडु कुरुदियिऱ् पण्डु शेऱुपट्
टशुम्बुऱ वुरुहिय वुलह मार्त्तॆऴुक्
कुशुम्बॆयि ऩऱुमलर्च् चुण्णक् कुप्पॆयिऩ्
विशुम्बॆयुङ् गडन्ददु विरिन्द तूळियॆ 1749

पचुम् पटु कुरुतियिल्–ताज़े रक्त से; **अचुम्पु उऱ**–नमी पड़ने से; **पण्टु चेऱुपट्टु**–पहले से पंकिल जो बन गया था; **उरुकिय उलकम्**–उस लचीली समरभूमि में; **आर्त्तु ऎऴु**–शोर के साथ उठी; **विरिन्त तूळि**–विशाल धूल का पटल; **कुचुम्पॆयिन्**–"कुशुंबॆ" नाम के फूलों के; **चुण्णम् कुप्पॆयिन्**–चूर्ण की वृहत् राशि के समान; **विचुम्पॆयुम् कटन्ततु**–आकाश को भी पार कर गया। १७४९

ताज़े रक्त की नमी मिली और पहले जो पंक बना था, उस लचीले मैदान में सेना के शोर के साथ पिल पड़ने से धूल उठी और 'कुशुंबॆ' नामक फूलों के चूर्ण की राशियों के समान उठी और आकाश पार कर गयी। १७४९

तामिडित् तॆऴुम्बणॆ मुऴक्कुञ् जङ्गिऩम्
आमिडिक् कुमुऱलु मार्प्पि ऩोवॆयुम्

एमुडैक् कॉडुञ्जिलै यिडिप्पु मञ्जित्तम्
वाय्मडित् तॊडुङ्गिन महर वेलैये 1750

ताम् इटित्तु–पिटने से; ॲळुम्–उठनेवाली; पणै मुळक्कुम्–भेरियों की ध्वनि और; चङ्कित्तम् आम्–शंखराशि की; इटि कुमुऱलम्–वज्र-सम गूंज; आर्प्पित्त ओतैयुम्–(वीरों के) गर्जन का शोर; ऐम् उटै–रक्षक; कोटु चिलै–भयानक धनु की; इटिप्पुम्–टंकार और; अञ्चि–(इनसे) डरकर; मकरम् वेलै–मकरयुक्त सागर; तम् वाय् मटित्तु–अपना मुख बन्द करके; ऑटुङ्कित–चुप रह गया। १७५०

पिटने पर उठी भेरियों की ध्वनि, शंखसमूह की वज्र-सम गूंज, वीरों के नर्दन का नाद, रक्षक क्रूर धनुओं का टंकार-नाद —इन सबसे डरकर मकरालय ने अपना मुख बन्द कर चुप्पी साध ली। १७५०

उलैतॊऱुङ् गुरुदिनी ररुवि यॊत्तुह
इलैतुऱ मरमॅनक् कॉडिह ळिऱ्ऱुह
मलैतॊऱुम् वाय्न्दॅन मान यातैयित्
तलैतॊऱुम् वाय्न्दन कुरङ्गु ताविये 1751

उलै तॊऱुम्–राक्षस जब-जब मरते; कुरुति नीर्–रक्तवारि; अरुवि ऑत्तु–नदी के समान; उक–निकलकर बहा; इलै तुऱ मरम् ॲन–पत्तों से खूब भरे तरुओं के समान; कोटिकळ्–ध्वजाएँ; इऱ्ऱु उक–कटकर गिरीं; कुरङ्कु–वानर; मलै तॊऱुम् पाय्न्तॅन–पर्वत-पर्वत पर झपटते जैसे; मातम् यातैयित्–बड़े-बड़े गजों के; तलै तॊऱुम्–सिर-सिर पर; तावि पाय्न्तन–झपट पड़े। १७५१

जब राक्षस मरे तब रक्तवारि सरिता के समान बह निकला। ध्वजाएँ, जो खंभों के पत्तों के समान लगकर खंभों को पत्तों-सहित तरु का रूप दे रही थीं, कटकर गिरीं। वानर पर्वतों पर झपटते-जैसे बड़े हाथियों के सिरों पर झपटे। १७५१

किट्टिन किळैनॅडुङ् गोट्ट कोळुह
मट्टिन वरुवियिन् मदत्त वानरम्
विट्टन नॅडुवरै वेळम् वेळत्तै
मुट्टिन वॊत्तन मुहत्तिन् वीऴ्वन 1752

किट्टितकिळै–पास-पास रहनेवाली शाखाओं के समान; नॅटु कोट्ट–लम्बे दाँतों वाले; कोळ् उकु–नीचे गिरनेवाले; मट्टु इत–शहद की बहुलता की; अरुवियित्–सरिता से; मतत्त–मदमत्त; वानरम्–वानरों ने; विट्टत नॅटु वरै–जो फेंके वे बड़े पर्वत; वेळम् वेळत्तै–हाथी हाथियों से; मुट्टित–टकराते; ऑत्तत–जैसे लगे; मुकत्तित् वीऴ्वत–युद्ध-मुख में गिरे। १७५२

पर्वत गज के समान लगे। उनको तोड़कर वानरों ने फेंका। तब उन पर लगी शाखाएँ दाँतों के समान लगीं और वे पर्वत हाथियों के समान।

उन डालों से चूनेवाले शहद को पीकर वानरों ने मदमत्त होकर उन पर्वतों को हाथियों पर फेंका। तब हाथी हाथियों से भिड़ते हों, ऐसा लगा। १७५२

इडित्तऩ वुरुक्किऩ विरुक्कि येय्न्दऩ
तडित्तऩ वॆयिऱ्ऱिऩाऱ् ऱलैहळ् शन्दऱक्
कडित्तऩ कविक्कुलङ् गाल्हण् मेऱ्पडत्
तुडित्तऩ कुरुदियिल् तुरह राशिये 1753

कविकुलम्–वानरयूथ; इटित्तऩ–टकराये; उरुक्किऩ–गुस्सा दिखाया; इरुक्कि एय्न्तऩ–कसकर पकड़ा; तटित्तऩ–टुकड़े किये; ऍयिऱ्ऱिऩाल्–दाँतों से; तलैकळ् चन्तु अऱ–सिर के जोड़ टूट जाएँ ऐसे; कटित्तऩ–काटा; तुरक राचि–तुरंगवृन्द; काल्कळ् मेल् पट–पैरों को ऊपर उठाते हुए; कुरुतियिल्–रक्त में; तुटित्तऩ–छटपटाये। १७५३

वानरों ने अश्वों को पीटा, गुस्सा दिखाया, कसकर पकड़ा, दाँतों से सिर की हड्डियों के जोड़ों को तोड़ते हुए काटा और खूब त्रस्त किया। उससे तुरगसमूह रक्त में गिरे और पैरों को ऊपर करके छटपटाये। १७५३

अडैन्दऩ कविक्कुल मॆऱ्ऱ वऱ्ऱऩ
कुडैन्दॆऱि काल्पॊरप् पूट्कैक् कुप्पैहळ्
इडैन्दऩ मुहिऱ्कुल मिरिन्दु शाय्न्दऩ
उडैन्दऩ कुलमरुप् पुहुत्त मुत्तमे 1754

अटैन्तऩ कविकुलम्–जो घेर आये वे वानरगण; ऍऱ्ऱ–ढकेलने से; अऱ्ऱऩ–निर्बल हुए; पूट्कै कुप्पैकळ्–हाथियों के समूह; कुटैन्तु ऍऱि–भेदते हुए बहनेवाले; काल् पॊर–पवन के टकराने से; मुकिल् कुलम्–मेघवृन्द; इटैन्तऩ–प्रतिहत होकर; इरिन्तु चाय्न्तऩ–अस्त-व्यस्त गिरते जैसे; उटैन्तऩ–टूटकर गिरे; मरुप्पु कुल–दाँतों के समूहों ने; मुत्तम् उकुत्त–मोती गिराये। १७५४

घेर आये वानरों के ढकेलने से गजवृन्द उन मेघों के समान अस्त-व्यस्त हुए जो भेदते हुए-से बहनेवाले पवन के झोंकों से अवरुद्ध होकर अस्त-व्यस्त हो जाते हों। तब उनके दाँतों से मोती गिरे। १७५४

तोल्पडत् तुहैन्दॆळ वयिरत् तूणिहर्
काल्पडक् कैपडक् काल पाशम्बोल्
वाल्पडप् पुरणडऩर् निरुदर् मऱ्ऱवर्
वेल्पडप् पुरण्डऩर् कवियित् वीररे 1755

तोल् पट–गजों को मारते हुए; तुतैन्तु ऍऴु–जल्दी उठनेवाले; वयिरम् तूण् निकर्–वज्र खंभों के समान; काल् पट–पैरों के लगने से; कै पट–हाथों के लगने से; कालम् पाचम् पोल्–कालपाश के समान; वाल् पट–पूँछों के प्रहार से; निरुतर्–

राक्षस; पुरण्टऩर्–लुढ़क गये; अवर् वेल् पट–उनकी शक्तियों के प्रहार से; कविपिन् वीरर्–वानर वीर; पुरण्टत्तर्–लुढ़के। १७५५

वानरों के वज्रस्तम्भ-सम पैरों के प्रहारों से, हाथों के प्रहारों से और कालपाश-सम पूंछों की मार से राक्षस लुढ़क गये। राक्षसों के भालाओं के लगने से वानर वीर लुढ़के। १७५५

मरवमुन् जिलैयॊडु मलैयुम् वाळॆयिऱ्
ऱरवमुङ् गरिहळुम् परियु मल्लवुम्
विरविन कविक्कुलम् वीश विम्मलाल्
उरवरुङ् गाऩॆऩप् पॊलिन्द वुम्बरे 1756

विरवित कवि कुलम्–संकुलित वानरगणों ने; मरवमुम्–कुंकुम के पेड़ों; चिलैयोटु मलैयुम्–चट्टानों के साथ पर्वतों; वाळ् ऍयिऱु–उज्ज्वल दांतों के; अरवमुम्–सांपों; करिकळुम्–गजों; परियुम्–अश्वों; अल्लवुम्–और दूसरों को; वीच–फेंका तब; विम्मलाल्–उनके अत्यधिक होने से; उम्पर्–आकाश; उरवु–सबल; अरु–अगम; कान् ॲन–जंगल के समान; पॊलिन्ततु–सुन्दर दिखा। १७५६

कपिकुल ने एक साथ कुंकुमतरुओं, चट्टानसहित पर्वतों, तलवार-सम दांत वाले सर्पों, गजों, अश्वों आदि को और दूसरी चीज़ों को लगातार फेंका। उनकी अधिकता के कारण आकाश विपुल और अगम वन के समान दिखायी दिया। १७५६

तडवरै कविक्कुलत् तलैवर् ताङ्गिऩ
अडल्वलि निरुदर्त मऩिह राशिमेल्
विडविड विशुम्बिडै मिडैन्दु वीऴ्वऩ
पडर्हड लिऩमऴै पडिव पोऩ्ऱवे 1757

कवि कुलम् तलैवर्–वानरयूथप; ताङ्किऩ तटवरै–जिनको उठा लाये उन विशाल पर्वतों को; अटल् वलि–अधिक बलवान; निरुतर् तम्–राक्षसों की; अऩिक राचि मेल्–सेनाओं के समूहों पर; विट विट–ज्यों-ज्यों फेंकते; विचुम्पिटै–त्यों-त्यों वे आकाश में; मिटैन्तु–सटे हुए मिलकर; वीऴ्वऩ–गिरते बनते; पटर् कटल्–विस्तृत सागर में; इऩम् मऴै–मेघसमूह; पटिव पोऩ्ऱ–जमा होते जैसे दिखे। १७५७

ज्यों-ज्यों वानरयूथप बड़े-बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर राक्षसों की सेनाराशि पर फेंकते, त्यों-त्यों वे पर्वत आकाश में उठकर गिरते और तब विशाल सागर में मेघसमूह पड़ते-से लगते। १७५७

इऴुक्किऩ रडिहळि ऩिङ्गु मङ्गुमाय्
मऴुक्कळु मयिल्हळुम् वाळुन् दोळ्हळुम्

मुळुक्कित्त ऩुळक्कितर् मूरि याक्कैयै
ऑळुक्कितर् निरुदरै युदिर वाऱ्ऱिऩे 1758

इङ्कुम् अङ्कुमाय्—इधर-उधर (दौड़कर); अटिकळिऩ् इळुक्कितर्—जिनके पैर फिसले; निरुतरै—उन राक्षसों के; मळुक्कळुम्—परशुओं को; अयिल्कळुम्—उनके भालाओं को; वाळुम्—तलवारों को; तोळ्कळुम्—कन्धों को; मुळुक्कितर्—डुबोकर; मूरि याक्कैयै—बड़े शरीरों को; उळक्कितर्—पीसकर; उतिर आऱ्ऱिऩ्—रक्त-नदी में; ऑळुक्कितर्—बहा दिया (वानरों ने)। १७५८

वानर इधर-उधर दौड़ते और फिसलकर गिरे राक्षसों के परशु, भाले, तलवारें आदि हथियारों को और हाथों को रक्त में डुबाते, तगड़े शरीरों को छिन्न-भिन्न करके घोलते और रक्त-नदी में बहा देते। १७५८

मिडलुडैक् कविक्कुलङ् गुरुदि वॆळ्ळनीर्
इडैयिडै नीन्दिऩ वियॆन्द यात्तैयिऩ्
तिडरिडैच् चॆऩ्ऱवै यॊळुक्कच् चेर्न्दऩ
कडलिडैप् पुक्कऩ करैयुङ् गाण्गिल 1759

मिटल् उटै कवि कुलम्—सशक्त वानरगण; वॆळ्ळम् कुरुति नीर्—बाढ़ की रक्त-वारि में; इटै इटै नीन्तिऩ—मध्य-मध्य तैरे; इयॆन्त यात्तैयिऩ्—वहाँ रहे गजों के बने; तिटर् इटै चॆऩ्ऱु—टीलों पर जाकर; अवै ऑळुक्क—उनके बहने पर; चेर्न्तऩ—मिलकर; कटल् इटै पुक्कऩ—समुद्र में घुसे; करैयुम् काण्किल—पार भी नहीं पा सके। १७५९

सबल वानरवृन्द प्रवाहमय रक्तवारि में तैरते और बीच-बीच में टीलों के समान पड़े रहे गजों पर खड़े हो जाते। वे गज धारा में बहते जाते और ये भी खींचे जाकर समुद्र-मध्य पहुँच जाते और उन्हें किनारा भी दिखायी नहीं देता। १७५९

काल्पिडित् तीर्त्तिळि कुरुदिक् कण्णहट्
चेल्पिडित् तॆळुदिरै याऱ्ऱिऱ् ऱिण्णॆडुम्
कोल्पिडित् तॊळुहुरु कुरुडर् कूट्टम्बोल्
वाल्पिडित् तॊळुहिऩ कवियिऩ् मालैये 1760

कवियिऩ् मालै—वानरवृन्द; काल् पिटित्तु ईर्त्तु इळि—पैरों को पकड़कर खींचते हुए बहनेवाले; कुरुति कण्ण—रक्तधारा में फँसे होकर; कण् चेल्—आँखों-सी 'शेल' मछली को; पिटित्तु ऍळु—लेकर उठनेवाली; तिरै आऱ्ऱिल्—लहरों की नदी में; तिण् नॆटु कोल् पिटित्तु—सुदृढ़ व लम्बी छड़ी पकड़कर; ऑळुकुरु—जानेवाले; कुरुटर् कूट्टम् पोल्—अन्धों के समूहों के समान; वाल् पिटित्तु—परस्पर पूँछ पकड़ते हुए; ऑळुकिऩ—चले। १७६०

वानरवृन्द, उनके पैरों को पकड़कर खींच ले जानेवाली रक्त-धारा में फँस गये। तब वे एक-दूसरे की पूँछ को पकड़ते हुए जाने लगे और तब वे अन्धों के समान लगे, जो कि परस्पर लम्बी और सुदृढ़ छड़ियों को पकड़कर जाते हों। १७६०

पाय्न्दतु निरुदर्तम् परवै पत्मुरै
काय्न्दतु कडुम्बडै कलक्किक् कैदौरुम्
तेय्न्ददु शिवैन्ददु शिन्दिच् चेणुरच्
चाय्न्ददु तहैप्पॅरुङ् गविवियिन् तानैये 1761

निरुत्तर् तम् परवै–राक्षस-सागर; पल्मुरै पाय्न्ततु–अनेक बार झपटा; कडु पटै–(वानरों की) उग्र सेना को; कलक्कि–विलोडित करके; काय्न्ततु–कोप दिखाया; तकै–योग्य; पॅरु–बड़ी; कविवियिन् तानै–कपियों की सेना; कै तोरुम्–हर भाग में; तेय्न्ततु–क्षीण हुई; चिन्ति चितैन्ततु–बिखरी, अस्त-व्यस्त हुई; चेण् उर–स्वर्ग जा पहुँचे ऐसा; चाय्न्ततु–मरी। १७६१

राक्षसों की सागर-सम सेना ने अनेक बार झपटकर वानरों की उग्र सेना को अशांत कर दिया और अपना क्रोध दिखाया। सुयोग्य व विशाल वानर-सेना के विविध भाग भी क्षीण होकर निर्बल और अस्त-व्यस्त हुए और मरकर वीर(-स्वर्ग) पहुँच गये। १७६१

अत्तुणै यिलक्कुव नञ्ज लञ्जलॅन्
ऱॆत्तुणै मौऴिहळ् मियम्बि येऱ्ऱिनन्
कैत्तुणै विल्लिनैक् कालन् वाऴ्विनै
मॊय्त्तुणै नाणिनै मुऴङ्गत् ताक्किनान् 1762

अत्तुणै–तब; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; अञ्चल् अञ्चल्–मत डरो, मत डरो; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍत्तुणै मौऴिकळुम्–कितने ही धीरज के वचन; इयम्पि–कहकर; एऱ्ऱिनन्–प्रोत्साहित किया; कालन् वाऴ्विनै–यम के उत्थान के लिए; मॊय् तुणै–सबल सहायक; कै तुणै विल्लिनै–हस्तसंगी धनु के; नाणिनै–डोरे को; मुऴक्क–नाद उठाये ऐसा; ताक्किनान्–टंकोरा। १७६२

तब लक्ष्मण ने उनको, 'मत डरो, मत डरो' कहते हुए कितने ही धीरज के वचन कहे। उनको प्रोत्साहित किया। और यम के जीवन के साथी और अपने हाथों के संगी धनुष के डोरे को टंकोरा। १७६२

नान्मरैन् दौळिप्पिनुम् नुवत्तु पूवङ्गळ्
मेन्मरैन् दौळिप्पिनुम् विरिञ्जन् वीयिनुम्
कान्मरैन् दौळिप्पिलाक् कडैयिऱ् कण्णहल्
नान्मरै यार्प्पॅन नडन्द दव्वॊलि 1763

नूल् मरैन्तु ऑळिप्पितुम्–सभी शास्त्र ओझल हो छिप जाएँ तो भी; नुवन्ऱ पूतङ्कळ्–प्रकीर्तित पाँचों भूत; मेल् मरैन्तु–अपनी सूक्ष्म अवस्था में छिपकर; ऑळिप्पितुम्–अदृश्य हो जाएँ तो भी; विरिञ्चन् वीयितुम्–विरंचि भी मर जाएँ; काल् कटैयिल्–युगान्त में; मरैन्तु–जो अगोचर हो; ऑळिप्पु इला–नहीं छिपता; कण् अकल्– विशाल; नान् मरै आर्प्पु ॲन–चतुर्वेदघोष के समान; अ ऑलि–वह ध्वनि; नटन्ततु–फैली। १७६३

धनुष के डोरे का नाद उस चतुर्वेद-घोष के समान फैला जो कि प्रकीर्तित, शास्त्रों के अप्राप्य होने पर भी, पंचभूतों के अपने मूलरूप में सूक्ष्म और अदृश्य होने पर भी अमल में रहेंगे; और जो ब्रह्मा के और युग के अन्त होने पर भी इस विशाल भूमि पर प्रचलित रहेंगे। १७६३

तुरन्दन शुडुशरन् दुरन्द तोन्ऱल
करन्दन निरुदर्दङ् गरैयिल् याक्कैयिन्
निरन्दर नॅडुम्बिणम् विशुम्बिन् नॅञ्जुऱप्
परन्दन कुरुदियप् पऴ़ऴ वॅळ्ळत्तिन् 1764

तुरन्तन चुटु चरम्–संवाहक शर प्रेरित किये गये; तुरन्त–ऐसे जो चलाये गये, वे; तोन्ऱल–दृष्टि में न पड़कर; निरुतर् तम्–राक्षसों के; करै इल्–अपार; याक्कैयिल्–शरीरों में; करन्तन–ओझल हो गये; नॅटु पिणम्–(उनकी) अधिक लाशें; निरन्तरम्–अन्तर न छोड़कर; विचुम्पिन्–आकाश के; नॅञ्चुऱ–हृदय में (बीच में) लगे; कुरुति–रक्त; अ पऴ़ऴ वॅळ्ळत्तिल्–उस गहरे सागर में; परन्तन–घुसकर फैला। १७६४

लक्ष्मणप्रेषित शर विना दृष्टिगोचर हुए राक्षसों के अपार शरीरों में घुसकर ओझल हुए। तब उनकी लाशें आकाश-मध्य बराबर भर गयीं। उनसे गिरा रक्त उस गहरे सागर में भरकर फैल गया। १७६४

यानैयिन् करन्दुरन् दिरद वीरर्तन्
वानुयर् मुडित्तलै तडिन्दु वाशियिन्
कान्निरै यऱुत्तुवॅङ् गनऱ्कण् मॉय्म्बरै
ऊनुडै युडल्पिळन् दोडु मम्बुहळ् 1765

अम्पुकळ्–(लक्ष्मण-प्रेषित) शर; यानैयिन् करम्–गजों की सूँड़ों को; तुरन्तु–अलग करके; इरत वीरर् तम्–रथ पर सवार वीरों के; वान् उयर्–अति उन्नत; मुटि तलै–मुकुटयुक्त सिरों को; तटिन्तु–काटकर; वाचियिन्–(और) अश्वों के; कान् निरै–पैरों की पंक्तियों को; अऱुत्तु–छिन्न कर; वॅम् कनल् कण्–(और) भयंकर आग्नेय आँखों के; मॉय्म्पर्–वीरों के; ऊन् उटै–मांससहित; उटल्–शरीरों को; पिळन्तु–चीरते हुए; ओटुम्–आगे जाते हैं। १७६५

लक्ष्मण के शरों ने गजों की सूँड़ों को काटकर अलग किया, रथों पर

सवार वीरों के अधिक बड़े मुकुटमंडित सिरों को काटा, वाजियों के पैरों की पंक्तियों को छिन्न किया और वे क्रूर आग्नेय आँखों वाले वीरों के शरीरों को चीरते हुए चले। १७६५

विल्लिडै यऱुत्तुवेल् तुणित्तु वीरर्तम्
ऍल्लिडु कवशमु मार्बु मीर्न्दॆरि
कल्लिडै यऱुत्तुमाक् कडिन्दु तेरऴीइक्
कॊल्लिय लियानैयैक् कॊल्लुङ् गूऱ्ऱिऩे 1766

विल् इटै अऱुत्तु–धनुओं को मध्य से काटकर; वीरर् तम्–वीरों को; वेल् तुणित्तु–शक्तियों को काटकर और; ऍल् इटु कवचमुम्–प्रकाशमय कवचों और; मार्पुम्–वक्षों को; ईर्न्तु–चीरकर और; ऍऱि कल्–फेंके गये पर्वतों को; इटै अऱुत्तुम्–बीच ही में छिन्न करके; मा कटिन्तु–अश्वों को काटकर; तेर् अऴीइ–रथों को मिटाकर; कॊल् इयल्–(और) खूनी; यानैयै–गजों को; कूऱ्ऱिऩ्–यम की भाँति; कॊल्लुम्–मारते (लक्ष्मण-शर)। १७६६

लक्ष्मण के शरों ने धनुषों को तोड़ा; वीरों के भालाओं के टुकड़े किये, प्रकाशमय कवचों और वक्षों को चीरा। फेंके गये पर्वतों को बीच में ही चूर किया। अश्वों को काटा, रथों को मिटाया और खूनी गजों को भी यम के समान मारा। १७६६

वॆऱ्ऱिवॆङ् गरिहऴित् वळैन्द वॆण्मरुप्
पऱ्ऱॆऴु विशैहऴि नुम्ब रणमित
मुऱ्ऱरु मुप्पहऱ् ऱिङ्गळ् वॆण्मुळै
उऱ्ऱऩ विशुम्बिडै पलवु मॊत्तऩ 1767

वॆऱ्ऱि–विजयी; वॆम् करिकऴित्–क्रूर हाथियों के; वळैन्त वॆण् मरुप्पु–वक्र व श्वेत दाँत; अऱ्ऱु–छिन्न होकर; ऍऴु–ऊपर उठने की; विचैकऴितु–गति से; उम्पर् अणमित्त–स्वर्ग गये; मुऱ्ऱु अरु–अपूर्ण रूप में; मु पकल्–तृतीया में; वॆण्–(दिखायी देनेवाले) श्वेत; मुळै तिङ्कळ्–अंशचन्द्र; पलवुम्–अनेक; विचुम्पिटै उऱ्ऱऩ–आकाश में लगे हों; ऒत्तऩ–जैसे दिखायी दिये। १७६७

विजयी हाथियों के वक्र और श्वेत दाँत कटे और कटने की गति से ही आकाश में गये। वे वहाँ तृतीया के कलाचन्द्र के समान आकाश में लगे रहे। १७६७

कण्डहर् नॆडुन्दलै कऩलुङ् गण्णऩ
तुण्डवॆण् पिऱैत्तुणै कव्वित् तूक्किय
कुण्डल मीऩ्गुलऩ् दऴुविक् कोण्मदि
मण्डलम् विऴुन्दऩ पोऩ्ऱ मण्णिऩे 1768

कतलुम्–ज्वलन्त; कण्णत–आँखोंवाले; कण्टकर्–कंटकों (राक्षसों) के; मॅट्टम् तलै–बड़े सिर; तुण्टम् तुणै–दो टुकड़ों के; वॅळ् पिरै–श्वेत अर्धचन्द्रों को; कव्वि–ग्रस लेकर; तूक्किय–लटकाये गये; कुण्टलम्–कुण्डल रूपी; मीन् कुलम्–तारागणों को; तऴुवि–साथ लेकर; कोळ्मति मण्टलम्–ग्रहों के आश्रय, आकाश-मण्डल; मण्णित् वीऴ्न्तत पोन्ऱत–भूमि पर गिरा हो जैसे लगे। १७६८

युद्ध के मैदान में लोककंटक राक्षसों के बड़े सिर कटे पड़े रहे। उनकी आँखें ज्वलंत थीं। उनके अर्द्धचंद्र के समान दो दो दाँत थे। कानों में कुण्डल लटक रहे थे। उनको देखकर ऐसा लगा मानो आकाश-मंडल चंद्र, नक्षत्र और ग्रहों को लेकर भूमि पर गिर पड़े हों। (हर सिर आकाशमंडल समझा गया।) । १७६८

कूर्मरुप् पिणैयत्त कुऱैन्द कैयत्त
कार्मदक् कन्नवरै कविऴ्न्दु वीऴ्वत्त
पोर्मुहक् कुरुदियिन् पुणरि पुक्कन
पारॅडुक् कुरुनॅडुम् पन्ऱि पोन्ऱन 1769

कूर् मरुप्पु इणैयत्त–तीक्ष्णदंतद्वय वाले; कुऱैन्त कैयत्त–कटी सूँड़ वाले; मतम् कार्–मत्त और काले; कत्त वरै–पर्वत-सम हाथी; कविऴ्न्तु वीऴ्वत्त–औंधे जो गिरते हैं; पोर् मुकम्–युद्धसम्मुख; कुरुतियिन् पुणरि–रक्त-सागर में; पुक्कत–घुसते हैं; पार् ॲटुक्कुऱुम्–भूमि को उठा लानेवाले; नॅटु पन्ऱि–श्रीमहावराहमूर्ति; पोन्ऱत–के समान दिखे। १७६९

तीक्ष्णदंतद्वय वाले हाथी कटी सूँड़ों के साथ मत्त, काले पर्वतों के समान जो रहे वे औंधे गिरकर रक्तधारा में बहे और समुद्र पर तिरते रहे। वे भूमि को उठा लाने जो गये उन महावराहमूर्ति (श्रीविष्णु के अवतार) के समान लगे। १७६९

पुण्णुऱ वुयिरुहुम् पुरवि पूट्टऱ्क्
कण्णहन् तेर्क्कुलम् मऱिन्द काट्चिय
ऍण्णरु पॅरुम्बदम् विन्नैयि नॅञ्जिड
मण्णुऱ विण्णिन्वीऴ् मानम् बोन्ऱन 1770

पुण् उऱ–व्रण लगने से; उयिर् उकुम्–प्राण-छूटे; पुरवि–अश्व; पूट्टु अऱ–बन्धन से मुक्त हुए; कण् अकन्–विशाल; तेर् कुलम्–रथों के समूह; मऱिन्त काट्चिय–सिर-नीचे गिरे दिखते; ऍण् उरु–सम्मान्य; पॅरु पतम्–ऊँचा पद; ऍञ्चिट–छूट जाने से; वितैयिन्–कर्मवशात्; विण्णित्–आकाश से; मण् उऱ–धरती पर; वीऴ्–पतित; मातम् पोन्ऱत–विमान के समान लगे। १७७०

व्रणों के कारण अश्व मरे और वे जोत के बंधन से छूट गये।

विशाल रथ सिर नीचा करके पड़े रहे। तब वे मान्य ऊँचे पद से छूटकर प्रारब्धकर्मवश नीचे गिरे विमान के समान लगे। १७७०

अडक्करुङ् गवन्दम्नित् ऱाडु हिन्ऱन
विडऱ्करुम् विन्नैयऱच् चिन्दि मॅय्युयिर्
कडक्करुन् दुऱक्कमे कलन्द वामॅन
उडऱ्पोॅऱै युवहैयिऱ् कुत्तिप्प वोॅत्तन 1771

अट–आघात करने से; करु कवन्तम्–काले कबन्ध; निन्ऱु आट्किन्ऱन–जो खड़े होकर नाचते हैं; विटऱ्कु अरु–दुर्वार्य; वित्तै अऱ–कर्मबन्धन छूट जाए ऐसा; चिन्ति–दूर करके; मॅय् उयिर्–शरीरों में रहे जीव; कटक्क अरु–पार कर पहुँचने में कठिन; तुऱक्कमे कलन्त आम्–स्वर्ग में ही पहुँच गये; ॲन–ऐसा; उवकैयिल्–आनन्द से; उटल् पोॅऱै–मुण्ड; कुत्तिप्प ऑत्तन–नाचते हों, ऐसा लगा। १७७१

लक्ष्मण के शरों के संहार-कार्य से बने काले कबंध जो नाचते हैं वे इसीलिए नाचते लगते हैं कि अवार्य कर्मफल से मुक्त होकर पार करने में दुस्तर भवसागर को पार कर उनके जीव स्वर्ग पहुँच गये और इससे उन्हें अपार आनन्द हुआ है। १७७१

आडुव कवन्दमोॅन् ऱाऱॆण् णायिरम्
वीडिय पोॅळुदॆनुम् पन्नुवन् मॅय्यदेल्
कोडियिन् मेलुळ कुत्तित्त कोॅऱ्ऱवन्
पाडिनि योॅरुवराऱ् पहरऱ् पालदो 1772

आडु ऑण्णायिरम्–छः के आठ (अड़तालीस) हज़ार वीर; वीटिय पोॅऴुतु–जब मरते हैं तब; कवन्तम् ऑन्ऱु आटुव–एक कबन्ध (के हिसाब से) नाचता है; ॲनुम्–ऐसा; पन्नुवल्–शास्त्र की उक्ति; मॅय्यतेल्–सच्ची हो तो; कुत्तित्त–जो नाचे; कोटियिन् मेल् उळ–करोड़ से अधिक थे; इति–अब; कोॅऱ्ऱवन्–विजयी (वीर लक्ष्मण) का; पाटु–गौरव; ऑरुवराल्–किसी से; पकरल् पालतो–कहना आसान है क्या। १७७२

शास्त्रों का कथन है कि अड़तालीस हज़ार वीर मरते हैं तो एक कबंध उठकर नाचता है। अगर वह सत्य है तो उस युद्ध में नाचनेवाले कबंध करोड़ों थे। तो विजयी वीर लक्ष्मण के पराक्रम की महत्ता किसी के द्वारा वर्ण्य हो सकेगी क्या? । १७७२

आन्नैयिन् कुरुवियु मरक्कर् शोरियुम्
एन्नैवॅम् बुरवियि नुदिरत् तोट्टमुम्
कान्निनु मलैयिनुम् परन्द काऱ्पुनल्
वान्नया ऱामॅनक् कडन्म डुत्तवे 1773

आतैयिऩ् कुरुतियुम्–हाथियों का रक्त; अरक्कर् चोरियुम्–(और) राक्षसों का रुधिर; एतै–अन्य; वॆम् पुरवियिऩ्–तीव्रगामी अश्वों के; उतिरत्तु ईट्टमुम्–रुधिरों का प्रवाह; कातिनुम् मलैयितुम्–जंगलों और पर्वतों पर; परन्त–फैले; काल् पुनल्–वर्षा की धारों के जल से बनी; वातम् याऱु आम् अँत–आकाशगंगा के समान; कटल् मट्टुत्तवे–समुद्र में वहे। (आखिरी पंक्ति में पाठांतर 'मात' है, जिसका अर्थ बड़ा है। वह अर्थ अधिक उपयुक्त लगता है। इधर आकाशगंगा को अपवित्र बनाने की आवश्यकता नहीं।)। १७७३

हाथियों, राक्षस वीरों और तीव्रगामी अश्वों का रक्त पर्वतों और जंगलों में फैला और वर्षा के जल से बनी बड़ी-बड़ी नदियों के समान बहकर समुद्र में बह गया। १७७३

ताक्किय शरङ्गळिऱ् ऱलैहळ् नीङ्गिय
आक्कैय पुरशैयो डणैन्द ताळऩ
मेक्कुय रङ्गुशक् कैय वॆङ्गरि
नक्कुव कणिपपिल वरक्कर् नोऩ्बिणम् 1774

ताक्किय–आक्रमणकारी; चरङ्कळिल्–शरों से; पुरचैयोटु–गजों के कंठ की रस्सी के साथ; अणैन्त ताळऩ–मिले पैरों वाले; तलैकळ् नीङ्किय–सिरहीन; आक्कैय–शरीरों वाले; अरक्कर् नोऩ् पिणम्–राक्षसों की बड़ी लाशें; मेक्कु उयर् अङ्कुचम् कैय–(जो) ऊपर उठे अंकुश-सह हाथों वाले हो; वॆम् करि–क्रूर गजों को; नूक्कुव–हटाते रहे ऐसे; कणिप्पिल–असंख्यक थे। १७७४

हाथियों पर के अनेक वीरों के सिर लक्ष्मण के शरों से कट गये। तब उनके पैर हाथियों के कण्ठों की रस्सी में फँसे रहते थे। अंकुशवाले हाथ ऊपर उठे हुए थे। तब भी वे भयानक गजों को बढ़ाते रहे। ऐसी लाशें असंख्यक थीं। १७७४

कोळुडैक् कणैपडप् पुरविक् कूत्तऩ
तोळुडै नॆडुन्दलै तुमिन्दुन् दीर्हिल
आळुडैक् कुऱैत्तलै यदिर वाडव
वाळुडैत् तडक्कैय वाशि मेलऩ 1775

कोळ् उटै–प्राणापहारी; कणै पट–शरों के लगने से; तोळ् उटै–कंधों पर के; नॆटु तलै–बड़े-बड़े सिर; तुमिन्तुम्–जिनके कटे ऐसे और; वाळ् उटै तट कैय–जिनके विशाल हाथों में तलवारें रहीं; वाचि मेलऩ–(जो) अश्वों पर सवार थे; आळ् उटै–उन पदाति वीरों के; कुऱै तलै–सिरहीन रुण्ड; पुरवि कूत्तऩ–अश्वों के साथ नाच करते हुए; तीर्किल–विना अन्तर दिये; अतिर–थर्राहट पैदा करते हुए; आटुव–नाचे। १७७५

शत्रुओं के प्राणापहारी लक्ष्मण के शरों के लगने से वीरों के कंधों

पर लगे सिर कट गये। उन घुड़सवार रुण्डों का अश्वों के साथ नाच थर्राहट पैदा कर रहा था। १७७५

वैवत्त मुऩिवर्शॊल् लऩैय वाळिहळ्
कॊय्वत्त तलैकॊळक् कुऱैतॆत लैक्कुळाम्
कैवळै वरिशिलैक् कडुप्पिर् कैविडा
ऎय्वत्त वॆत्तैप्पल विरद वीररे 1776

वैवत्त–शाप देनेवाले; मुऩिवर् चॊल् अऩैय–मुनिवचन के समान; कॊय्वत्त वाळिकळ्–काटनेवाले शरों के; तलै कॊळ–सिरों को काटने पर; इरत वीरर्–रथी वीरों के; कुऱै तलै कुळाम्–सिरहीन रुंड; कै वळै–हाथों से झुकाये जानेवाले; वरि चिलै–सबन्ध धनुओं से; कटुप्पिल् कैविटा–तेज़ी न छोड़कर; ऎय्वत्त–जो शर चलाते हैं वे; ऎत्तै पल–बहुत अनेक हैं। १७७६

लक्ष्मण के शर मुनि-शाप के समान अचूक थे। उनके वीरों के सिरों को काट लेने से रथी वीरों के रुण्ड बन गये। वे रुण्ड भी धनु झुकाकर वेग में कमी न पड़ने देते हुए शर चलाने लगे। ऐसे शर बहुत अधिक थे। १७७६

तादैयैत् तम्मुऩैत् तम्बि यैत्तऩिक्
कादलैप् पेरत्तै मरुह तैक्कळत्
तूवैयि ऩॊरुहणै युरुव माण्डऩर्
शीदैयॆऩ् ऱॊरुहॊडुङ् गूऱ्ऱऩ् वेडिऩार् 1777

चीतै–सीता; ऎऩ्ऱु–नाम के; ऒरु कॊटु कूऱ्ऱम्–एक क्रूर यम को; तेटिऩार्–जिन्होंने खोज लिया, वे राक्षस; तातैयै–(अपने) पिताओं को; तम् मुऩै–अपने अग्रज भाइयों को; तम्पियै–छोटे भाइयों को; तऩि कातलै–अतिप्रिय पुत्रों को; पेरत्तै–पौत्रों को; मरुकतै–भतीजों, भांजों को; कळत्तु–युद्धस्थल में; ऊवैयिऩ् ऒरु कणै–लक्ष्मण के अनोखे वायवास्त्र के; उरुव–भेदते (देखते और); माण्टऩर्–खुद मर जाते। १७७७

राक्षसों ने सीता के रूप में यम को निमंत्रण दे रखा था। अतः उनके साथ उनके पिता, भ्राता, प्यारे पुत्र, पौत्र, भतीजे, भांजे सभी लक्ष्मण के वायवास्त्र के भेदकर जाने से मर गये। १७७७

तूण्डरुङ् गणैपडत् तुमिन्दु तुळ्ळिय
तोण्डरु नॆडुन्वलै तळ्विच् चॆर्न्दऩ
पूण्डॊळु करदलम् बॊरुक्क लादऩ
आण्डलै निहर्त्तऩ वॆरुवै याहुव 1778

तूण्ट अरु–जिनको वेग दिलाने की आवश्यकता नहीं है (जो स्वतः वेगवान हैं) उन; कणै पट–अस्त्रों के लगने से; तुमिन्तु–कटकर; तुळ्ळिय–छटपटानेवाले;

तोण्ट अरु–अस्पृश्य; नॅट्टु तलै–बड़े सिरों के पास; तळुवि चेर्न्तत–जो लगे मिले; ॲरुवै–वे चील; पूण्टु ॲळु–जोड़कर उठाये जा सकें ऐसे; करतलम् पोऱ्ऱुक्कलातत–हस्तों से हीन; आण्टलै निकर्त्तत–'आण्डलै' नाम के (मुर्ग़े ?) पक्षी के समान; आटुव–सब जगह घूमे। १७७८

जो स्वतः वेगवान थे और जिनको वेग देने की आवश्यकता न थी, ऐसे लक्ष्मण के शरों के धँसने से कटकर गिरे बड़े-बड़े सिर छटपटाये। उनके साधारण रूप से अगम सिरों को ले हस्तहीन बाज "आण्डलै" नाम के पक्षियों के समान नाचे। (आण्डलै का अर्थ "मुर्ग़ी" दिया गया है। पर वह नाचता भी है क्या ?)। १७७८

आयिर वायिर कोडि याय्वरुम्
तीयुमिऴ् नॅडुङ्गणै मऩत्तिऩ् चॅल्वऩ
पाय्वऩ पुहुवऩ निरुदर् पल्लुयिर्
ओय्वऩ नमऩ्तमर् काल्ह ळोयवे 1779

आयिरम् आयिर कोटियाय्–अनेक हज़ार कोटि; वरुम्–आनेवाले; मऩत्तिल् चॅल्वऩ–मनोगति से जानेवाले; पाय्वऩ–लपक चलनेवाले; पुकुवऩ–शरीर में घुसने वाले; ती उमिऴ्–आग बरसानेवाले; नॅट्टु कणै–लम्बे शर; निरुतर् पल् उयिर्–अनेक राक्षसों की जानें; नमऩ् तमर् काल्कळ्–यमकिंकरों के पैरों के; ओयवे–थकते; ओय्वऩ–मिटीं। १७७९

धनुर्विमुक्त, मन की-सी गति से चलनेवाले, उड़ते, शरीरों में घुसते, आग निकालते हज़ारों करोड़ शरों के लगने से अनेक राक्षसों के इतने प्राण छीजे कि यम के पैर भी थक गये। १७७९

विळक्कुवाऩ् कणैहळाल् विऴिन्दु मेरुवैत्
तुळक्कुवा रुडऱ्पॊऱै तुणिन्दु तुळ्ळुवार्
इळक्कुवा रमरर्तञ् जिरत्तै यॆण्मुदु
हुळुक्कुवाळ् निलमहळ् पिणत्ति ऩोङ्गलाल् 1780

मेरुवै तुळक्कुवार्–मेरु को भी हिला सकनेवाले राक्षस; विळक्कु वाऩ् कणैकळाल्–प्रकाश देनेवाले शरों से; विऴिन्तु–मरकर; उटल् पॊऱै तुणिन्तु–कटे शरीर बोझ के साथ होकर; तुळ्ळुवार्–छटपटाते; अमरर्–देव (उसे देखकर); तम् चिरत्तै इळक्कुवार्–अपने सिरों को हिलाते; पिणत्तिऩ् ओङ्कलाल्–शवपर्वत से; ऍण् निलमकळ्–गण्य भूदेवी; मुतुकु उळुक्कुवाळ्–पीठ को लचकाती। १७८०

मेरु को भी हिला सकनेवाले राक्षस लक्ष्मण के ज्वलंत बाणों से मरे और उनके भारी शरीर चिरे रहे और उनकी लाशें छटपटाती रहीं। देव यह देखकर अपना सिर हिलाने लगे। शवपर्वत के कारण भूदेवी ने अपनी पीठ लचकायी। १७८०

तारुह नॆऩ्ऱुळ नीरुवऩ् तानॆडु
मेरुविऩ् पॆरुमैया नॆरियिऩ् वॆम्मैयाऩ्
पोरुवऩ् दुळक्कुवाऩ् पुहुन्दु ताङ्गिऩाऩ्
तेरिऩऩ् शिलैयिऩ ऩुमिळुऩ् दीयिऩऩ् 1781

ताऩ् नॆटु मेरुविऩ् पॆरुमैयाऩ्–(जो) स्वयं बड़े मेरु के समान बड़े आकार का; ऎरियिऩ् वॆम्मैयाऩ्–आग की-सी गरमी (क्रूरता) रखता है; तारुकऩ् ऎऩ्ऱु उळऩ् ऒरुवऩ्–(वह) दारुक नाम का एक; पोर् उवन्तु–युद्ध चाहकर; उळक्कुवाऩ् पुकुन्तु–विक्षुब्ध करने के लिए आकर; तेरिऩऩ्–रथ पर से; चिलैयिऩऩ्–धनुर्हस्त हो; उमिळुम्–(आँखों से) निकलनेवाली; तीयिऩऩ्–आग के साथ; ताङ्किऩाऩ्–सामना करने लगा। १७८१

तब दारुक नाम का राक्षस, जो मेरु के-से आकार का और आग के समान आक्रांतकारी था, लड़ने की चाव के साथ युद्धभूमि में आया और सबको विक्षुब्ध करने लगा। रथ पर सवार वह हाथ में धनु लेकर, आँखों से अंगारे छोड़ते हुए लक्ष्मण के सामने आ खड़ा हुआ। १७८१

तुरन्दऩ नॆडुञ्जर नॆरुप्पिऩ् तोऱ्ऱत्त
परन्दऩ विशुम्बिडै यॊडुङ्गप् पण्डुडै
वरन्दऩिऩ् वळर्वऩ ववऱ्ऱै वळ्ळलुम्
करन्दऩऩ् कणैहळाऩ् मुऩिवु कान्दुवाऩ् 1782

पण्टु उटै–पहले प्राप्त; वरम् तऩिल् वळर्वऩ–वरों से बढ़नेवाले और; नॆरुप्पिऩ् तोऱ्ऱत्त–आग के रूप के; नॆटु चरम्–लम्बे अस्त्रों को; तुरन्तऩऩ्–(दारुक ने) चलाया; विचुम्पु इटै ऒटुक्क–आकाश के स्थल को कम करते हुए; परन्तऩ–फैले; अवऱ्ऱै–उन्हें; वळ्ळलुम्–प्रभु लक्ष्मण ने भी; मुऩिवु कान्तुवाऩ्–कोप से गरम होकर; कणैकळाल्–अस्त्रों से; करन्तऩऩ्–छिपा दिया। १७८२

दारुक ने प्राचीन काल में प्राप्त वरों के कारण, जो बलवान थे और जो अग्नि के समान ज्वलंत थे, ऐसे शरों को चलाया। वे आकाश को छोटा बनाते हुए फैले। प्रभु लक्ष्मण ने गुस्से से खौलते हुए अपने शरों से उनको छिपा दिया। १७८२

अण्णल्तऩ् वडिक्कणै तुणिप्प वऱ्ऱवऩ्
कण्णह नॆडुन्दलै विशैयिऱ् कार्त्त
बिण्णिडै यार्त्तदु विरैविऩ् मॆय्युयिर्
उण्णिय वन्दवॆङ् गूऱ्ऱु मुट्कवे 1783

अण्णल् तऩ्–महिमावान लक्ष्मण के; वटि कणै–तीक्ष्ण शरों के; विचैयिऩ् तुणिप्प–जल्दी काटने से; अवऩ्–उसके; कण् अकल् नॆटुतलै–विशाल और ऊँचा सिर; अऱ्ऱु–कटकर; विरैविऩ्–जल्दी; मॆय् उयिर्–शरीर की जान; उण्णिय

वन्त–खाने आये; वॅम् कूऱ्ऱुम्–भयानक यम भी; उट्क–डर जाए ऐसा; कार्
ॲंत–मेघ के समान; विण् इटै–आकाश में; आर्त्ततु–गरजा। १७८३

महात्मा लक्ष्मण के शरों ने शीघ्र ही दारुक के बड़े सिर को काट दिया। तब उसने आकाश में जो मेघ के समान उच्च नाद उठाया उसे सुनकर शीघ्र उसके प्राण हरने जो आया वह यम भी डर गया। १७८३

कालनुङ् गुलिशनुङ् गाल शङ्गनुम्
मालियु मरुत्तनु मरुवु मैवरुम्
शूलमुङ् गणिच्चियुङ् गडिदु शुऱ्ऱिनार्
पालमुम् बाशमु मयिलुम् बऱ्ऱुवार् 1784

कालनुम्–काल और; कुलिचनुम्–कुलिश; कालचङ्कनुम्–और कालशंख; मालियुम् मरुत्तनुम्–माली और मरुत; मरुवुम् ऐवरुम्–जुड़े पाँचों; चूलमुम्–शूल; कणिच्चियुम्–और परशु; कटितु चुऱ्ऱिनार्–वेग से घुमाते; पालमुम् पाचमुम्–भिंडिपाल और पाश; अयिलुम्–और; पऱ्ऱुवार्–बर्छियाँ हाथ में लेते बने। १७८४

तब काल, कुलिश, कालशंख, माली और मरुत —ये पाँचों शूल और परशु घुमाते हुए भिंडिपाल और पाश हाथ में ले आये। १७८४

अन्नव रॅय्दन वॅऱिन्द वायिरम्
तुन्नरुम् बडैक्कलन् दुणित्तुत् तूविनन्
नन्नॆडुन् दलैहळैत् तुणित्तु नाल्वहैप्
पन्नॆडुन् दानैयैप् पाऱ् नूऱिनान् 1785

अन्नवर्–उनके; ॲय्तत–चलाये गये; अऱिन्त–फेंके गये; आयिरम्–हजारों; तुन्नरुम्–अगम; पटै कलम्–युद्ध-हथियारों को; तूविनन्–छितराकर; तुणित्तु–काटकर; नल् नॆटु–खूब बड़े; तलैकळै तुणित्तु–सिरों को काटकर; नाल् वकै पल् नॆटु तानैयै–बड़ी चतुरंगिनी सेना को; पाऱ्–तितर-बितर करके; नूऱिनान्–मार दिया। १७८५

उन्होंने अनेक हथियार फेंके और अनेक हथियार चलाये। उन सबको लक्ष्मण ने काट दिया। उनके सिरों को काटा और चतुरंगिनी सेना को तितर-बितर करके सबका नाश कर दिया। १७८५

आणडदि कायनृतन् शेनै याडवर्
ईण्डिन मदगिरि येऴॆण् णायिरम्
तूण्डिनर् मरुङ्गुऱच् चुऱ्ऱि नार्तॊहै
वेण्डिय पडैक्कल मुऱैयिन् वीशुवार् 1786

आण्टु–तब; अतिकायन् तन्–अतिकाय के; चेनै आटवर्–सेना वीर; ईण्टित मतकिरि–एक साथ मत्त गिरि; एऴ् ॲण्णायिरम्–सात के आठ हजार (हाथियों) को;

तूण्टित्तर्–चलाते हुए; मरुङ्कु उऱ–पास ही; चुऱ्ऱित्तार्–चारों ओर घेर आये; तोंकै–राशि में; वेण्टिय पटैक् कलम्–मन चाहे हथियारों को; मुऱैयित् वीचुवार्–यथाक्रम चलाये। १७८६

तब अतिकाय के सैनिक छप्पन हज़ार मत्त गजों को चलाते हुए आ घेर गये। उन्होंने एक साथ अनेक हथियार कई बार यथाक्रम चलाये। १७८६

पोक्किला वहैपुऱम् वळैत्तुप् पोङ्गित्तार्
ताक्कित्तार् तिशैदोऱुन् दडक्कै माल्वरै
नूक्कित्तार् पडैहळाल् नुरुक्कि तार्कुळम्
बाक्कित्तार् कविहळ्दङ् गुळुवै यार्प्पित्ताल् 1787

पोक्कु इला वकै–बचकर न जाए उस प्रकार से; पुऱम् वळैत्तु–चारों ओर से घेरकर; पोङ्कित्तार्–ग़ुस्सा करके; ताक्कित्तार्–धावा किया (अतिकाय के वीरों ने); तिचै तोऱुम्–चारों दिशाओं में; तट कै माल् वरै–बड़ी सूँड़ों के उन्नत पर्वत-सम गजों को; नूक्कित्तार्–चलाया; पटैकळाल्–हथियारों से; नुरुक्कित्तार्–प्रहार किया; आर्प्पित्ताल्–गर्जन के साथ; कविकळ् तम् कुळुवै–कपियों के समूहों को; कुळम्पु आक्कित्तार्–कीच बना दिया। १७८७

वानरों को बच जाने का मार्ग न देकर उन्होंने रोष के साथ वार किया। चारों दिशाओं से लंबी सूँड़ वाले बड़े पर्वतसदृश हाथियों को प्रेरित किया। हथियारों से मारा और बड़े शोर के साथ वानरों को कीच बना दिया। १७८७

ऍऱिन्दत्त वॆय्दत्त वॆय्दि यॊन्ऱॊडॊन्
ऱुऱैन्दत्त वशऩियित् विशैयि ऩाशैहळ्
निऱैन्दत्त मळैयॆऩ नॆरुक्कि निऱ्ऱलाऩ्
मऱैन्दत्त वुलहॊडु तिशैयुम् वाऩमुम् 1788

ऍऱिन्तत्त–फेंके गये (पर्वत आदि); ऍय्तत्त–प्रेरित किये (अस्त्र आदि); ऍय्ति–आकर; ऒन्ऱॊटु ऒन्ऱु–एक-दूसरे से; उऱैन्तत्त–टकराये; अचऩियित् विचैयित्–अशनि की गति में; आचैकळ् निऱैन्तत्त–दिशाएँ भरकर; मळै ऍऩ–मेघों के समान; नॆरुक्कि निऱ्ऱलाऩ्–घने रूप से मिले रहे, इसलिए; उलकॊटु–भूमि के साथ; तिचैयुम् वाऩमुम्–दिशाएँ और आकाश; मऱैन्तत्त–अदृश्य हुए। १७८८

वानरों के फेंके गये पर्वत और राक्षस-प्रेषित शर आकर आपस में ज़ोर से टकराये। और अशनि की गति से दिशाओं में भर गये। मेघ-सम घने रूप से भरे रहे, इसलिए पृथ्वी, दिशाएँ और आकाश अदृश्य हो गये। १७८८

अप्पडै यनैत्तैयु मऱुत्तु वीऴ्त्तवर्
तुप्पुडैत् तडक्कैहळ् तुणित्तुच् चुऱ्ऱिय
मुप्पुडै मदमलैक् कुलत्तै मुट्टिनान्
ऍप्पुडै मरुङ्गिनु मॅरियुम् वाळियान् 1789

ऍरियुम् वाळियान्–जलनेवाले शरों के स्वामी लक्ष्मण; अ पटै अत्तैतुम्–उन सभी हथियारों को; अऱुत्तु वीऴ्त्तु–काट गिराकर; अवर् तूप्पु उटै–उनके सारयुक्त; तट कैकळ्–विशाल हाथों को; तुणित्तु–काटकर; चुऱ्ऱिय–घेर आये; मु पुटै मतम् कुलत्तै–त्रिविध मदनीर बहानेवाले मत्त गजों पर; ऍ पुटै मरुङ्किनुम्–सभी ओर से; मुट्टिनान्–आक्रमण किया। १७८९

जलानेवाले शरों के स्वामी लक्ष्मण ने उन सभी हथियारों को काट गिराया। उनके सारयुक्त हाथों को काटा और अपने चारों ओर घेरे रहे हाथियों पर सब ओर से आक्रमण किया। १७८९

कुन्ऱन मदकरि कॊम्बॊडु करमऱ
वन्ऱलै तुमिदर मञ्जॆन मऱिवन
ऒन्ऱल वॊरुपदु मॊन्बदु मॊरुकणै
शॆन्ऱरि तरमऴै शिन्दुव मदमलै 1790

ऒरु कणै–एक शर के; चॆन्ऱु–जाकर; अरि तर–काटने से; कुन्ऱु अन–पर्वत-सम; मत करि–मत्त गज; कॊम्पॊटु करम् अऱ–दाँतों के साथ सूँड़ों के कट जाने से; वल् तलै तुमि तर–कठोर सिरों के कट जाकर; मञ्चु अॆन–मेघों के समान; मऱिवन–गिरे पड़े; ऒन्ऱु अल–एक-एक नहीं; मत मऴै चिन्तुव–मदवारिश गिरानेवाले; मलै–पर्वत (सम वे हाथी); ऒरुपतुम् ऒन्पतुम्–दस-दस और नौ नौ हैं। १७९०

लक्ष्मण का एक शर जा लगा तो पर्वतोपम मत्त गजों की सूँड़ें कट गयीं। दाँत कट गये। बलवान सिर कट गये। और ऐसे मेघों के समान जो पड़े रहे वे एक-एक नहीं अनेक थे। मदवारि बहानेवाले पर्वतोपम वे दस दस, नौ नौ थे। १७९०

ऒरुतॊडै विडुवन वुरुमुऱऴ् कणपड
इरुतुडै पुरशैयॊ डिऱुबव रॆऱिपडै
विरुदुडै निरुदर्हण् मलैयॆन विऴुवर्हळ्
पॊरुदुडै वनमद मळैयन पुहर्मलै 1791

ऒरु तॊटै–एक संधान में; विटुवन–जो चलाये गये वे; उरुम् उऱऴ्–अशनि-सम; कणै पट–अस्त्रों के लगने से; ऍऱि पटै–फेंके जानेवाले हथियारों; विरुतु–और बिरदों को; उटै–रखनेवाले; निरुतर्कळ्–राक्षस; इरु तुटै–दोनों जाँघों के; पुरचैयॊटु इऱुपवर्–हाथियों के कण्ठ की रस्सी से कसे जाकर; मलै अॆन–पर्वत-समान;

विछुवर्कळ्–गिरते हैं; मतम् मळै अॅन्–मदवारि बारिश के समान; पुकर्–विद्यमान; मलै–पर्वत (सम गज); पॉरुतु–युद्ध करके; उटॅवत–मरते हैं। १७६१

एक संधान में (लक्ष्मण के द्वारा) जो चलाये गये उन वज्र-सम अस्त्रों के लगने से, फेंके जानेवाले हथियारों और बिरुदों को धारण करनेवाले राक्षस, गजों के कण्ठ की रस्सी के साथ ही उनकी दोनों जाँघों के कटकर गिर जाने से पर्वत-समान गिरते हैं। और मदवारि जिनमें बारिश के समान मौजूद है, ऐसे पर्वत (-सम गज) युद्ध करके मृत्यु को प्राप्त होते हैं। १७९१

परुममुम्	मुदुहिडु	पडिहैयुम्	वलिपडर्
मरुममु	मळिपड	नुळैवन	वडिहणै
उरुमिनुम्	वलियन	वुरुळ्वन	तिशैतिशै
करुमलै	निहर्वन	कदमलै	कतल्वन 1792

कतल्वत–बौखला उठनेवाले; कत मलै–क्रोधी गज; उरुमिनुम् वलियत–वज्र से भी कठोर; वटि कणै–तीक्ष्ण शर; नुळैवत–उनमें घुस जाते हैं तो; परुममुम्–पीठ के आसनों; मुतुकिडु–पीठ पर के; पटिकैयुम्–हौदों; वलि पटर्–सशक्त; मरुममुम्–मर्मस्थानों के; अळि पट–नष्ट होते; तिचै तिचै–दिशा-दिशा में; उरुळ्वत–लोटते हुए; करु मलै–काले पर्वतों के; निकर्वत–समान लगे। १७६२

उमगकर आनेवाले रोषपूर्ण हाथियों के शरीरों पर वज्र से भी कठोर और तीक्ष्ण शर घुसे। उनके पीठ के आसन और हौदे और मर्म-स्थान आहत होकर मिटे। वे चारों दिशाओं में लोटते हुए काले पर्वतों के समान दिखायी दिये। १७९२

इरुवन	कॉडियवै	ऍरिवन	विडैयिडै
तुरुवन	शुडुहणै	तुणिवन	मदहरि
अरुवन	ववैयवै	कडवित्तर्	तडिदलै
वॅरुमैहळ्	कॅडुवन	विळिकुळि	कळुवुहळ् 1793

ऍरिवत–जलनेवाले; इटै इटै–मध्य-मध्य; तुरुवत–पहुँचनेवाले; चुटु कणै–गरम शर; कॉटि अवै इरुवत–(लगकर) ध्वजाएँ कट जाती हैं; मत करि तुणिवत–मत्त गज छिन्न हो जाते हैं; अवै अवै कटवित्तर्–उनको चलानेवाले; तटि तलै–(वीरों के) स्थूल सिर कटे; अरुवत विळि कुळि–(भूख से) धँसी आँखों वाले; कळुतुकळ्–भूत; वॅरुमैकळ्–अभाव की दशाओं से; कॅटुवत–रहित हो गये। १७६३

और जगह-जगह पर जलते हुए जानेवाले लक्ष्मण के गरम शरों से ध्वजाएँ कटीं और मत्तगज भी कट गये। उनके ऊपर सवार वीरों के बड़े सिर कटे। तब धँसी हुई आँखों वाले भूतों का अभाव दूर हो गया। १७९३

मिडलोडु विडुहणै मळैयितुम् मिहैयुळ
पडलोडु मुरुमेरि परुवरै निलैयत
उडलोडु मुरुळहरि युदिरम दुरुहेळ
कडलोडु पोरुददु करियोडु करियत 1794

मिटलोटु–ज़ोर के साथ; विटु कणै–चलाये गये शर; मळैयितुम् मिकै उळ–जो वर्षा से भी अधिक थे उनके; पटलोटुम्–लगने से; उरुम् ऍरि–वज्राहत; परु वरै निलैयत–बड़े पर्वतों की-सी स्थिति में रहे; उटलोटुम्–शरीर के साथ; उरुळ् करि–लोटनेवाले गजों का; उतिरम् अतु–रक्त; करियोटु करि ऍत–गज से गज भिड़ता-जैसे; उरु कॅळु–भयातुर; कटलोटु–सागर से; पोरुततु–भिड़े। १७९४

लक्ष्मण द्वारा ज़ोर के साथ चलाये गये शर वर्षा से भी अधिक थे। उनके आघात से वज्राहत बड़े पर्वतों की-सी स्थिति में जो हाथी लोटने लगे, उनके शरीरों से निकला रक्त डरे हुए समुद्र से जा टकराया और तब वह आवाज़ दो हाथियों की परस्पर टकराहट के समान लगी। १७९४

मेलवर् पडुदलिन् विडुमुरै यिलमिडल्
आलमु मशनियु मनैयत वडुहिरि
मालुरु कळियत मरुहिन मदमळै
पोल्वत तमदम वॅदिरॅदिर् पोरुवन 1795

मेलवर्–हाथी पर रहनेवालों के; पटुतलिन्–मर जाने से; विटुम् मुरै इल–क्रम से चलाये जानेवाले नहीं रहे; मिटल् आलमुम्–ज़ोरदार हलाहल; अचनियुम्–और वज्र; अनैयत–जैसे; अटु–घातक; किरि–गज; माल् उरु कळियत–मोहक मत्तता के; मरुकिन–क्षुब्ध होकर; मतम् मळै पोल्वत–मदनीर को वर्षा के समान बहाते हुए; तम तम ऍतिर् ऍतिर् पोरुवन–आपस में ही लड़े। १७९५

हाथियों के ऊपर रहनेवाले महावतों के मर जाने से कुछ मत्त गज, जो ज़ोरदार हलाहल और वज्र के समान घातक थे, मोहक मद के कारण विक्षुब्ध होकर मदनीर को वर्षा-सम बहाते हुए परस्पर एक-दूसरे से युद्ध करने लगे। १७९५

काल्शिल तुणिवन करमरु वनकदळ्
वाल्शिल तुणिवन वयिरुहळ् वॅळिप्पड
नाल्वन कुडरन नहळ्वन शिलवरु
तोल्शिल कणैपल शॊरिवन मळैयन 1796

मळै अन–(चिंघाड़ से) मेघ-सम; पल कणै चॊरिवन–अपने पर लगे अनेक शरों के साथ रहनेवाले; चिल वरु तोल्–कुछ आनेवाले गज; काल् तुणिवन–कटे पैरों वाले हुए; करम् अरुवन–कटी सूँड़ों वाले हुए; चिल–कुछ; कतळ्वाल्–जल्दी हिलने वाली पूँछ; तुणिवन–के कटे हो गये; चिल–कुछ; वयिरुकळ् वॅळि पट–पेटों को

दिखाते हुए; नाल्वत्त–लटकनेवाली; कुटरत्–आँतों के हुए; चिल मकळ्वत्त–कुछ छिली खाल वाले हो रहे। १७९६

कुछ जवान हाथी आये और मेघ के समान चिंघाड़नेवाले उन पर अनेक शर आ लगे। तब उनके पैर खण्डित हो गये। कुछ की तेज़ हिलनेवाली पूँछें कट गयीं। कुछ की आँतें पेट को बाहर निकालते हुए लटकने लगीं। कुछ की खालें छिल गयीं। १७९६

मुट्टित्त मुट्टरु मुरणुरु तिशैनिलै
अॅट्टिनु मॅट्टरु निलैयत्त वॅवैयवन्
विट्टत्त विट्टत्त विडुहणै पडुतोरुम्
पट्टत्त पट्टत्त पडर्मद करिपल 1797

मुरण् उरु–आक्रमणकारी; तिचै निलै अॅट्टिनुम्–(और) (आठों) दिशाओं में; मुट्टित्त–जा टकरानेवाले (लक्ष्मण-) शरों से; मुट्टु अरु–टकराये विना; अॅट्ट अरु निलैयत्त–अगम स्थिति में रहनेवाले (गज); अॅवै–क्या थे; अवन्–उन (लक्ष्मण) के; विट्टत्त विट्टत्त–लगातार प्रेषित; विटु कणै–प्रेषणीय शर; पटु तोरुम्–ज्यों-ज्यों लगते; पटर्–सामने आनेवाले; मत करि–मत्त गज; पट्टत्त–मरे; पट्टत्त–मरे। १७९७

आक्रमणकारी और आठों दिशाओं में जाकर आघात करनेवाले लक्ष्मण के शरों से विना टकराये, अगम स्थिति में रहे गज कौन से थे? (कोई नहीं था।) लगातार प्रेषित शर ज्यों-ज्यों लगे, त्यों-त्यों विविध मत्तगज मरे और अनेक मरे। १७९७

अरुपदिन् मुदलिडै नालोळि यायिरम्
इरुदिय मदहरि यिरुदलु मॅरियुमिळ्
तरुहणर् तहैयरु ञिलैयित्तर् शलमुरु
करुवित्त रवत्तॅदिर् कडविनर् कडलॅत्त 1798

अरुपतिन् मुतल् इटै–साठ से; नाल् ऑळि–चार कम (छप्पन); आयिरम्–हज़ार; इरुतिय–तक के; मतम् करि–मत्त गज; इरुतलुम्–मरे तो; अॅरि उमिळ्–आग उगलनेवाली; तरु कणर्–रुष्ट आँखोंवाले; तकै अरु–असंस्कृत; निलैयित्तर्–स्वभाववाले; चलम् उरु–क्रुद्ध; करुवित्तर्–वैरी (राक्षस); अवन् अॅतिर्–उन (लक्ष्मण) के समक्ष; कटल् अॅन–समुद्र के समान; कटवित्तर्–(गजों को) भेजा। १७९८

ऐसे छप्पन हज़ार मत्तगज मिट गये। तब आग उगलती आँखों के और असंस्कृत स्वभाव वाले और क्रुद्ध वैरी राक्षसों ने उन लक्ष्मण के सामने फिर से सागर के समान गज-सेना को भेजा। १७९८

अॅल्लैयिन् मदहरि यिरवित्त दिरम्निहर्
शॅल्वन मुडिविल तॅरुतोळित् मरुवत्तॅ

विल्लियै यिऩिदुऱ् विडुहणै मऴैयिऩर्
कॊल्लुदि यॆऩवॆदिर् कडविऩर् कॊडियवर् 1799

कॊटियवर्–क्रूर राक्षस; इऩितु उऱ्–आराम से; विटु कणै मऴैयिऩर्–शरों को वर्षा के समान चलानेवाले; मुटिव् इल–अनन्त रूप से; तॆऱु तॊऴिल्–संहार का कृत्य करनेवाले; मऱवऩ्–वीर; विल्लियै–धनुर्धर को; कॊल्लुति–मारो; ऎऩ–कहते हुए; इरविऩतु इऩम् निकर्–अन्धकार के पुंजों के समान; चॆल्वऩ–जानेवाले; ऎल्लै इल् मतकरि–असीम मत्त गजों को; ऎतिर् कटविऩर्–समक्ष चलाया। १७६६

क्रूर राक्षसों ने आराम से वर्षा के समान अस्त्र छोड़े। अनंत रूप से संहारक कार्य में लगे वीर धनुर्धर के सामने 'मारो' कहते हुए अंधकार-पुंजों के समूह के समान दिखनेवाले हाथियों के झुंडों को चलाया। १७९९

वन्दऩ मदहरि वळैदलिऩ् मऴैपॊदि
शॆन्दऩि यॊरुशुड रॆऩमऱै तिऱलवऩ्
इन्दिर तऩुवॆऩ वॆऴुशिलै कुऩिवुऴि
तन्दियिऩ् ऩॆडुमऴै शिदऱिऩ तरैयिऩिल् 1800

वन्तऩ मतकरि–आये मत्त गजों के; वळैतलिऩ्–घेरने से; मऴै पॊति–मेघावृत; चॆम्–लाल; तऩि ऒरु–अपूर्व; चुटर् ऎऩ–किरणमाली के समान; मऱै तिऱल् अवऩ्–प्रच्छन्न पराक्रमी के; इन्तिर तऩु ऎऩ–इन्द्रधनुष के समान; ऎऴु चिलै–शरप्रेषक धनु को; कुऩिवुऴि–झुकाते ही; तरैयिऩिल्–भूमि पर; तन्तियिऩ् नॆटु मऴै–गजों के बड़े मेघ; चितऱिऩ–बिखर गये। १८००

आगत मत्तगजों के घेरने से मेघाच्छन्न लाल किरणमाली-सम और प्रच्छन्न पराक्रम के लक्ष्मण ने ज्योंही इन्द्रधनुष के समान अपने धनु को झुकाया त्योंही अनेक गज-मेघ पृथ्वी पर गिर गये। १८००

मैयल्तऴै शॆविमुऩ्पॊऴि मऴैपॆऱ्ऱऩ मलैयिऩ्
मॆय्पॆऱ्ऱऩ कडलॊप्पऩ वॆयिलुक्कऩ विऴियिऩ्
मॊय्पॆऱ्ऱुयर् मुदुहिऱ्ऱऩ मुहमुक्कऩ मुरण्वॆङ्
कैयऱ्ऱऩ मदमुऱ्ऱिऩ कळियऱ्ऱिल कदमा 1801

मैयल् तऴै–मदोन्मत्त; चॆवि मुऩ्–कानों द्वारा; मऴै पॊऴि पॆऱ्ऱऩ–मदवारि जिनकी बरसती थी; मलैयिऩ् मॆय्–पर्वत-सम शरीर; पॆऱ्ऱऩ–जिन्हें प्राप्त थे; कटल् ऒप्पऩ–(रंग में) समुद्र-सम; विऴियिऩ्–आँखों द्वारा; वॆयिल् उक्कऩ–(कोप की) गरमी दिखानेवाले; कतम् मा–क्रुद्ध हाथी; मॊय् पॆऱ्ऱु–दृढ़ता-सहित; उयर्–उन्नत; मुतुकु इऱ्ऱऩ–पीठ से हीन हुए; मुकम् उक्कऩ–(उनके) मुख छितर गये; वॆम् कै अऱ्ऱऩ–कठोर सूंड़ें कट गयीं; मतम् मुऱ्ऱिऩ–मद से वर्धित; कळि–मोद; अऱ्ऱिल–उनका दूर नहीं हुआ था। १८०१

मदमत्त, कानों से मदनीर बहानेवाले, पर्वताकार, रंग में सागरोपम

और आँखों से आग-सी निकालते हुए क्रुद्ध गजों की सबल पीठें छिन्न हो गयीं; मुख कटकर गिर गये। त्रास देनेवाली सूँड़ें कट गयीं। तो भी उनके नशे का मोद नहीं छूटा। १८०१

उण्णितूट्रलै कडलूनीरुह विरुदिक्कडै युरुहाल्
ॲण्णितूट्रलै निमिर्हितूट्रत विहलूवॆङ्गणै यिरणप्
पण्णितूवडर् तलैयिट्पड मडिहितूट्रत पलवाम्
मण्णितूट्रलै युरुळ्हितूट्रत मळैयॊत्तुयर् मदमा 1802

उळ् नितूट्र–सीमा के अन्दर रहकर; अलै कटल् नीर्–तरंगें फेंकनेवाले समुद्र का जल; उक–(तीर पार कर) बहे, ऐसा; कटै इरुति–युगान्त में; उरु काल्–प्रचण्ड पवन के समान; ॲण्णित् तलै–संख्या के विधान से; निमिर्कितुट्र–बढ़े हुए; इकल् वॆम् कणै–घातक गरम शर (लक्ष्मण के); इरणम् पण्णित्–स्वर्णालंकार के; पटर् तलैयिल्–बड़े सिरों पर; पट–लगे तो; मळै ऒत्तु–मेघ-सम; उयर्–ऊँचे; मतम् मा–मत्त गज; मण्णित् तलै–भूमि पर; उरुळ्कितूट्रत–लोटते; मटिकितूट्रत–मरते; पल आम्–अनेक हैं। १८०२

सीमा के अन्दर रहते हुए लहरानेवाले सागर के जल को तीर लाँघकर बहने को मजबूर करते हुए युगांत में बहनेवाली आँधी के समान (लक्ष्मण के) असंख्य, घातक और भयंकर शर स्वर्णाभरणालंकृत सिरों पर लगे तो मेघों के समान और मत्त रहनेवाले गज भूमि पर लोट गये। ऐसे जो मरे वे अनेक थे। १८०२

पिरैपट्रिय वॆन्नॆट्रिय पिळैयट्रत पिरळप्
परैयट्रमिल् विशैपॆट्रत परियक्किरि यमरर्क्
किरैयट्रैय मुनिविट्पडै यॆरियप्पुडै यॆळुपॊर्
चिरैयट्रत वॆन्विट्रत शिनमुट्रिय मदमा 1803

परै–पक्षी के समान; अट्रम् इल्–निर्दोष; विचै पॆट्रत–तीव्र गति वाले; चितम् मुट्रिय–क्रोध के पक्के; मतमा–मत्त गज; पिळै अट्रत–असफल न होनेवाले; पिरळ–(शर लगकर) बिलसते हैं, इसलिए; पिरै पट्रिय–अर्धचन्द्र लगे हैं; ऐतुम्–ऐसा कहने योग्य; नॆट्रिय–मस्तक वाले; अमरर्क्कु इरै–देवराज के; अट्रैय मुनिविल्–उस दिन कोप से; पटै ऎरिय–वज्रायुध चलाने से; किरि–पर्वत; पुटै ऎळु–पार्श्वों में उठे; पॊन् चिरै–सुन्दर पंखों के; अट्रत ऎंत–कटे हुए हो गये-जैसे; परिय–दया के पात्र होकर; इट्रत–प्राणहीन हो गये। १८०३

पक्षियों का भ्रम पैदा करते हुए अत्यधिक तीव्र गति से युक्त और क्रोध के पक्के मत्तगजों के सिरों पर लक्ष्मण के अचूक बाण लगकर गड़े थे। वे अर्द्धचंद्रों के साथ लगे हुए-से मस्तकों के साथ जब मरे तब वे,

देवराजा के उस दिन क्रोध के साथ काटने से बाज़ुओं के पंखों को खोकर जो रहे उन पर्वतों के समान लगे। १८०३

कदिरोप्पऩ कणैपट्टुळ कदमऱ्ऱिल कदळ्कार्
अदिरत्तऩि यदिर्हैक्करि यळवऱ्ऱऩ वुळवा
ॲदिर्पट्टऩल् पॊऴियक्किरि यिडऱत्तिशै यॆऴुकार्
उदिरत्तोडु मोऴुहिक्कडल् नडुवुऱ्ऱवु मुळवाल् 1804

कतिर् ऑप्पऩ–सूर्यसदृश; कणै पट्टु उळ–शरों से भरे रहे; करि–गज; कतम् अऱ्ऱिल–क्रोध दूर न करके; कतळ् कार् अतिर–तेज चलनेवाले मेघ; अतिर–गरजते-जैसे; तऩि–अप्रतिम रीति से; अतिर्–चिंघाड़ते और; अळवऱ्ऱऩ उळवा–असंख्य रहे; ऍतिर् पट्टु–सामना करके; अऩल् पॊऴिय–आग निकालते हुए; किरि इटऱि–पर्वतों से ठोकर खाकर; तिचै ऍऴु–दिशाओं में प्रकट होनेवाले; कार् उतिरत्तोटुम्–काले रक्त के प्रवाह के साथ; ऑऴुकि–जाकर; कटल् नटु–समुद्र-मध्य; उऱ्ऱवुम्–जो पहुँचे वे गज भी; उळ–हैं। १८०४

सूर्य-सदृश अस्त्र जिन पर गड़े थे वे असंख्यक गज, कोप न छोड़कर शीघ्र चलनेवाले मेघों के समान चिंघाड़ते हुए और आँखों से अंगारे निकालते हुए भागे और पर्वतों से ठोकर खाकर आठों दिशाओं में बहनेवाले काले रक्त के प्रवाह के साथ बहकर समुद्र-मध्य जा पहुँचे। ऐसे हाथी भी थे। १८०४

कण्णिऩ्ऱलै ययिल्वॆङ्गणै पडनिऩ्ऱऩ काणा
ॲण्णिऩ्ऱलै निमिर्वॆङ्गद मुदिर्हिऩ्ऱऩ विऩ्मा
मण्णिऩ्ऱलै नॆरियुम्बडि तिरिहिऩ्ऱऩ मलैपोल्
उण्णिऩ्ऱलै निरुदक्कड लुळक्किट्टवु मुळवाल् 1805

कण्णिऩ् तलै–आँखों में; अयिल् वॆम् कणै–तीक्ष्ण कठोर शर; पट निऩ्ऱऩ–लगकर रहे; काणा–दृष्टि बन्द कर; ऍण्णिऩ् तलै–गिनती से; निमिर्–अधिक रहनेवाले; वॆम् कतम् मुतिर्किऩ्ऱऩ–क्रूर कोप जिनका पक्का हो गया; मा इऩम्–गजवृन्द; मण्णिऩ् तलै–धरती पर; नॆरियुम् पटि–दबाते हुए; तिरिकिऩ्ऱऩ–घूमते हैं; उळ्–अपने स्थान पर; मलै पोल् निऩ्ऱु–पर्वत के समान खड़े होकर; निरुतर् अलै कटल्–राक्षसों की सेना के सागर को; उळक्किट्टवुम्–विक्षुब्ध करने वाले भी; उळ–थे। १८०५

ऐसे भी गज थे, जिनकी आँखों में शर लगे गड़े रहे। वे देख नहीं सके। अपार क्रोध के साथ ऐसे गजों के समूह पृथ्वी को दबाते हुए घूमे। पर अपने ही स्थान में पर्वत के समान रहकर पक्ष में रहनेवाले राक्षसों के सागर को मथ रहे थे। १८०५

ओरायिर मयिल्वॅङ्गणै यॊरुहाल्विडु तॊडैयिऱ्
कारायिरम् विडुतारैयि ऩिमिर्हिऩ्ऱऩ कदुवुऱ्
ईरायिर मदमाल्करि विऴुहिऩ्ऱऩ विऩिमेल्
आरायवदॅ ऩवऩ्विऱ्ऱॊऴि लमरेशरु मऱियाऱ् 1806

ऑरु काल् विटु–एक बार चलाये जानेवाले; तॉटॅयिल्–संधान में; ओर् आयिरम्–एक हज़ार; अयिल् वॅम् कणै–तीक्ष्ण और क्रूर शर; आयिरम् कार्–हज़ारों मेघों की; विटु तारॅयिऩ्–छूटती धारों के समान; निमिर्किऩ्ऱऩ–उठकर; कतुवुऱ्ऱु–घुसते हैं, इसलिए; मतम् माल्–मत्त और बड़े; ईरायिरम् करि–दो हज़ार हाथी; विऴुकिऩ्ऱऩ–गिरते हैं; अवऩ् विल् तॉऴिल्–उनका धनुकृत्य; अमरेचरुम्–प्रमुख देव भी; अऱियार्–नहीं जानते; इऩिमेल् आरायवतु–आगे अन्वेषण (विवेचना) करना; ऍऩ्–क्या। १८०६

एक ही बार लक्ष्मण ने एक हज़ार तीक्ष्ण और कठोर अस्त्र एक साथ चलाये। वे हज़ार मेघों से गिरती धारों के समान गये और गजों पर लगे। तब मदमत्त दो हज़ार हाथी आहत हो गिरे। उनका धनुकृत्य प्रमुख देवों के लिए भी अज्ञात है! फिर उसका अन्वेषण क्या (किया जाय)? । १८०६

तेरुन्दॅरु करियुम्बॊरु शिऩमळ्ळरुम् वयवॅम्
पोरिऱ्ऱलै युहळ्हिऩ्ऱऩ पुरविक्कुल मॅवैयुम्
पेरुन्दिशै पॅऱुहिऩ्ऱिल पणैयिऩ्पिणै मदवॅङ्
कारिऩ्ऱरु कुरुदिप्पॊरु कडलिऩिऩ्ऱऩ कडवा 1807

पणॅयिऩ्–दाँतों से; पिणै–युक्त; मतम्–मत्त; वॅम्–भयानक; कारिऩ् तरु–(मेघों) हाथियों से बहनेवाले; कटल् पॊरु–सागर-सम; कुरुति निऩ्ऱऩ–रक्त में रहनेवालों को; कटवा–पार न कर सककर; तेरुम्–रथ और; तॅऱु करियुम्–खूनी हाथी; पॊरु चिऩ मळ्ळरुम्–लड़ाकू और क्रुद्ध सैनिक; पुरवि कुलम् ऍवैयुम्–और सभी अश्वसमूह; वयम्–बहुत; वॅम् पोरिऩ् तलै–घमासान युद्ध में; उकळ्किऩ्ऱऩ–लोटते हैं; पेरुम् तिचै–स्थान बदलकर जाने की दिशा; पॅऱुकिऩ्ऱिल–प्राप्त नहीं करते। १८०७

दाँतों से युक्त मदमत्त क्रूर गजों से बहनेवाले रक्त की नदियों में जो पड़े थे, उनको पार कर न जा सकने से खूनी हाथी, योद्धा सैनिक और सभी अश्वकुल उस घोर संग्राम में लोट गये और उनको कहीं हटने को भी दिशा नहीं मिल रही थी। १८०७

नूऱायिर मदवॅङ्गरि यॊरुनाऴिहै नुवलक्
कूऱायिऩ पयमुऱ्ऱॊरु कुलैवायिऩ वुलहम्
तेऱादऩ मलैनिऩ्ऱऩ तॅरियादऩ शिऩमा
वेऱायिऩ ववैयावैयु मुडऩेवर विट्टाऩ् 1808

मतम् वॅम् करि–मत्त, क्रूर हाथी; नूऱायिरम्–लाख; ऑरु नाऴिकै–एक घड़ी;

नुवल–कहते (पूरा होते) ही; कूरायित–छिन्न-भिन्न हुए; उलकम्–लोकवासी; ऑरु पयम् उऱ्ऱु–अभूतपूर्व भय खाकर; कुलैवु आयित–विकल हुए; तेऱातत–(तब) नशे से जो नहीं छूटे थे; मलै नितृरत–पर्वत-समान जो रहे; तॆरियातत–दूसरों को अज्ञात; वेऱु आयिऩ–अलग जो रखे गये थे; चितम् मा–क्रोधी गज थे; अवै–उन (को); यावैयुम्–सभी को; उटऩे–तुरंत; वर विट्टाऩ्–भिजवाया। १८०८

लाख क्रूर व मदमत्त गज एक घड़ी के अन्दर छिन्न हो गये। लोकवासी एक अभूतपूर्व भय का अनुभव करके बेचैन हो गये। तब रावण ने उन सभी गजों को युद्धभूमि में तुरन्त भिजवाया, जिनका नशा अभी दूर नहीं हुआ था, जो पर्वतोपम थे और जिनको दूसरों ने नहीं देखा था। वे सुरक्षा-गजसेना थी। १८०८

ऑरुकोडिय मदमाल्करि युळवन्दऩ वुडऩ्मुऩ्
पॊरुकोडियि लुयिरुक्कऩ वॊऴियप्पॊऴि मदया
ऱुरुहोडुव वरउन्दिऩ रशनिप्पडि कणैहाल्
इरुकोडुडै मदवॆञ्जिलै यिळवाळरि यॆदिरे 1809

मुऩ्–पहले; पॊरु–युद्ध के; कोटियिल्–अन्त में; उयिर् उक्कऩ–जो प्राण छोड़ गये; ऑऴिय–उनको छोड़; उळ–जो जीवित रहे; उटऩ् वन्तऩ–साथ जो आये; पॊऴि मत याऱु–बरसनेवाले मदनीर की नदी; अरुकु ओटुव–जिनके पास बहती है ऐसे; ऑरु कोटिय–एक करोड़ के; मतम् माल् करि–मत्त और भीमकाय हाथी; अचनि पटि–वज्र के समान; कणै काल्–शर भेजनेवाले; इरु कोटु उटै–दो छोरों से युक्त; मतम् वॆम् चिलै–कठोर व भयानक धनु को रखनेवाले; इळ वाळ् अरि–क्रूर बालकेसरी (सम लक्ष्मण) के; ऍतिरे–सामने; वर–आएँ; उन्तिऩर्–ऐसा प्रेरित किया (वीरों ने)। १८०९

पहले युद्ध के अन्त तक जितने मरे उनको छोड़ बाक़ी जो रहे और जो आये दोनों को मिलाकर एक करोड़ गज हुए। उन बड़े हाथियों के पार्श्व में मदवारि बहती थी। उनको वीरों ने वज्र-सम शरों को चलानेवाले दो छोरों के कठोर धनु के स्वामी कठोर बाल-केसरी (-सम लक्ष्मण) के सामने जाने को प्रेरित किया। १८०९

उलहत्तुळ मलैयॆत्तऩै यवैयत्तऩै युडऩे
कॊलनिऱ्पऩ पॊरुहिऱ्पऩ पुडैशुऱ्ऱिऩ कुऴुवाय्
अलहऱ्ऱऩ शिऩमुऱ्ऱिय वऩलॊप्पऩ ववैयुम्
तलैयऱ्ऱऩ करमऱ्ऱऩ तऩिविऱ्ऱॊऴि लवऩाल् 1810

उलकत्तुळ–संसार के; मलै ऍत्तऩै–पर्वत जितने; अवै अत्तऩै–उतनों को; उटऩे कॊल–तुरन्त मिटाने; निऱ्पऩ–जो तैयार हैं; पॊरुकिऱ्पऩ–उनके समान; कुऴुवाय्–झुण्डों में; पुटै चुऱ्ऱिऩ–चारों ओर से (लक्ष्मण को) घेर आये; अलकु अऱ्ऱऩ–अनगिनत; चितम् मुऱ्ऱिय–क्रोध के पक्के; अऩल् ऑप्पऩ–अनल के समान;

अवैयुम्–वे (हाथी) भी; तत्ति विल् तॉळ्िल् अवत्ताल्–अनोखे धनुकृत्य करनेवाले लक्ष्मण द्वारा; तलै अऱ्ऱ–कटे सिरों के हुए; करम् अऱ्ऱ–छिन्न सूँड़ों के हुए। १८१०

संसार के सभी पर्वतों को मारते-जैसे जो रहे, वे सभी मत्तगज-समूहों में लक्ष्मण को घेरे खड़े हो गये। वे असंख्यक थे, क्रुद्ध थे और आग के समान भयंकर थे। लक्ष्मण के अपूर्व धनुकृत्य से वे भी कटे सिरों के और छिन्न सूँड़ों के हो रहे। १८१०

नालायिर	नवयोशनै	नत्तिवन्ऱिशै	यॅवैयुम्
मालायिन	मदवॅङ्गरि	तिरिहिन्ऱन	वरलुम्
तोलायिन	वुलहॅङ्गणु	मॅन्नवञ्जिनर्	तुहळे
पोलायिन	वयवानमु	माऱानदु	पुवियॆ 1811

नवम् नालायिरम् योचनै–नौ के चार हज़ार योजन; वल् तिचै अॅवैयुम्–सारी सबल दिशाओं में; माल् आयित–नशे में रहे; मतम् वॅम् करि–मत्त व क्रूर गज; तिरिकिन्ऱत–घूमते हुए; नत्ति वरलुम्–अधिक संख्या में आये तो; उलकु अॅङ्कणुम्–संसार भर में; तोल् आयित–गज ही गज बन गये हैं; अॅन्ऱु–ऐसा; अञ्चितर्–सब डरे; वयम् वातमुम्–सबल आकाश भी; तुकळ् पोल्–धूल के समान; आयित–बन गये; पुवि–भूमि; माऱु आयित–उसके विपरीत बनी। १८११

चारों दिशाओं में छत्तीस योजन के फैलाव में नशे में चूर मदमत्त गज चलते आये। सभी डर गये कि क्या जग में सर्वत्र गज ही गज हैं। आकाश धूल से भर गया और भूमि मिट्टी से रिक्त होने से उसके विपरीत दशा की बन गयी। १८११

कडैहण्डिल	तलैहण्डिल	कळुदिन्तिरळ्	पिणमा
इडैहण्डन	मलैहॊण्डॆन	वॆळुहिन्ऱन	तिरैयाल्
पुडैहॊण्डॆऱि	कुरुदिक्कडल्	पुणर्हिन्ऱन	पॊऱिवॆम्
पडैहॊण्डिडै	पडर्हिन्ऱन	मदयाऱुहळ्	पलवाल् 1812

कळुतिन् तिरळ्–भूतसमूहों ने; कटै कण्टिल–अन्त नहीं देखा; तलै कण्टिल–आरम्भ न देखा; पिणम् मा–लाशों के रूप में गजों को; इटै कण्टत–मध्य में देखा; मलै कॊण्टु–पर्वत को उठाये हुए; अॅन–जैसे; अॅळुकिन्ऱत–लिये चलते हैं; तिरैयाल्–लहरों से; पुटै कॊण्टु–फूलकर; अॅऱि–लहरें उठानेवाले; कुरुति कटल्–रक्त-सागर में; पॊऱि–अंगारे निकालनेवाले; वॆम् पटै–भयंकर अस्त्रों को; इटै कॊण्टु–बहा लेते हुए; पटर्किन्ऱत–चलनेवाली; मत याऱुकळ्–मदनीर की नदियाँ; पल पुणर्किन्ऱत–अनेक आपस में मिलती हैं। १८१२

भूतगण गजों के झुंड का आरम्भ-स्थान न देख सके, न वह स्थान देख सके जहाँ उनका अन्त होता था। बीच में से पर्वतों को ले जाते हों-जैसे

उनको उठाकर चलने लगे। रक्त की नदियाँ बहीं और अंगारे बिखेरनेवाले हथियारों को बहा लेते आनेवाली मदनीर की नदियाँ आ मिलीं। १८१२

ऑऱ्ऱैच्चर मदत्तोडॉरु करिपट्टुह वौळिर्वाय्
वॆऩ्ऱिक्कणै युरुमॊप्पत्त वॆयिलॊप्पत्त वयिल्पोल्
वऱ्ऱक्कडल् शुडुहिऱ्पत्त मऴैयॊप्पत्त पॊऴियुम्
कॊऱ्ऱक्करि पदिऩायिर मॊरुपत्तियिऱ् कॊल्वाऩ् 1813

ऑऱ्ऱै चरम् अतत्तोटु–एक शर के; ऑरु करि पट्टु–एक गज के हिसाब से हत होकर; उक–गिरा; उरुम् ऑप्पत्त–अशनि-समान (गरजनेवाले); वॆयिल् ऑप्पत्त–धूप के समान (प्रखर); अयिल् पोल्–भाले के समान; कटल् वऱ्ऱ–समुद्र सुखाते हुए; चुट्टुकिऱ्पत्त–जलानेवाले; ऑळिर् वाय्–उज्ज्वल मुख के; वॆऩ्ऱि कणै–विजयदायी शरों से; मऴै ऑप्पत्त–वर्षा-सम; पॊऴियुम्–मदवारि बहानेवाले; पतिऩायिरम् कॊऱ्ऱम् करि–दस हज़ार विजयदायी गजों को; ऑरु पत्तियिल् कॊल्वाऩ्–एक पंक्ति में निपात कर देते लक्ष्मण। १८१३

एक शर से एक गज —इस हिसाब से लक्ष्मण ने अशनि-सम नाद उठानेवाले, धूप-सम प्रखर और शक्ति के समान समुद्रशोषक, उज्ज्वल मुख वाले और विजयदायी शर वर्षा के समान चलाकर विजय से शोभित दस हज़ार गजों को एक पंक्ति में निपात दिया। (तमिळ में पुराण कथा है कि देवेन्द्र ने उग्रकुमार पांड्य से ईर्ष्या करके वरुण को उसका देश नष्ट करने को प्रेरित किया। शिवजी ने राजा को स्वप्न में प्रगट होकर एक शक्ति दी, जिसके प्रयोग से वरुणसृष्ट समुद्र सूख गया।) । १८१३

मलैयञ्जिऩ मऴैयञ्जिऩ वऩमञ्जिऩ पिऱवुम्
निलैयञ्जिऩ दिशैवेङ्गरि निमिर्हिऩ्ऱऩ कडलिऩ्
अलैयञ्जिऩ पिऱिदॆऩ्शिल तऩियेङ्गर करियुम्
कॊलैयञ्जुदल् पुरिहिऩ्ऱदु करियिऩ्वडि कॊळलाल् 1814

मलै अञ्चिऩ–पर्वत डरे; मऴै अञ्चिऩ–मेघ डरे; वऩम् अञ्चिऩ–वन डरे; पिऱवुम्–अन्य; वॆम् तिचै करि–भयंकर दिग्गज; निलै अञ्चिऩ–अपने स्थान से डरकर भागे; निमिर्किऩ्ऱऩ–उठनेवाली; कटलिऩ् अलै–समुद्र की तरंगें; अञ्चिऩ–डरीं; चिल पिऱितु ऎऩ्–कुछ का अलग ज़िक्र क्यों; तऩि–विलक्षण; ऐङ्कर करियुम्–पंचहस्त विनायकदेव भी; करियिऩ् वटि कॊळलाल्–अपने गज के रूप के कारण; कॊलै–(लक्ष्मण द्वारा) हत्या से; अञ्चुतल् पुरिकिऩ्ऱतु–भय करता है। १८१४

(इस तरह गजों की हत्या देखकर गजों की किसी भी विषय में समानता रखनेवाले सारे पदार्थ डर गये।) पर्वत, मेघ, वन, दिग्गज, उठती समुद्रतरंगें —सभी भयातुर हो गये। अलग-अलग कुछ की बनिस्बत

क्या कहना ? स्वयं पंचहस्त कहलानेवाले विनायक देव भी गजों के-से रूप के होने के कारण हत्या की संभावना से डर गये। १८१४

कालेरित्त शिलैनाणीलि कडवेरुहळ् पडवान्
मेलेरिन मिशैयाळर्हळ् तलैमीय्दोरु मुरुवक्
कोलेरित्त उरुमेरुहळ् कुडियेरित्त वैत्तलाय्
मालेरिय कळियात्तैहण् मळैयेरित्त मरिय 1815

काल् एरित्त–धनु के बाजुओं के छोरों पर के गहरे दाँतों पर बँधकर जो चढ़ा; चिलै नाण् ओलि–उस धनु के डोरे की (टंकार-) ध्वनि; कटम्–वन में रहे; एरुकळ् पट–पुरुष सिंहों को मारते हुए; वान् मेल् एरित्त–आकाश पर चढ़ी; उरुम् एरुकळ्–अशनिश्रेष्ठ; कुटि एरित्त अँत्तलाय्–जा ठहरे हैं, ऐसा कहने योग्य रीति से; कोल्–शर; माल् एरिय–नशे में चूर; कळि यात्तैकळ्–मत्त गज; एरु मळै अँत–जोरदार वर्षा के समान; मरिय–कटकर गिरें ऐसा और; मिचै याळर्कळ्–उनके ऊपर रहनेवालों के; तलै मॅय् तोरुम् उरुव–सिरों और शरीरों को भेद जाएँ ऐसा; एरित्त–बढ़ चले। १८१५

धनु के दोनों बाजुओं के छोरों पर पड़े दाँतों से (कटावों से) लगाकर चढ़ाये गये डोरे की ध्वनि आकाश तक चढ़ी तो वन में रहनेवाले पुरुष सिंह मर गये। धनु से निकले शर, बृहत् अशनियाँ गिरकर ठहर गयीं जैसे जाकर हाथियों पर लगे। तो नशे में चूर मदमत्त गज बड़ी बारिश के समान टूटकर गिर गये और वे शर उन पर सवार वीरों के सिरों और शरीरों को भेद चले। १८१५

इव्वेलैयि त्तनुमान्मुद लॅळुवेलैयु मत्तैयार्
वॅव्वेलवर् शॅलवेविय कॉलैयात्तैयित् मिहैयैच्
चॅव्वेयुर नित्तैयावोरु शॅयलॄशॅय्हुव त्तॆंबान्
तव्वेलॅंत वन्दानवन् तन्निवेलॅन्नत् तहैयान् 1816

इ वेलैयिल्–इस समय में; मुतल् एळु वेलैयुम्–प्रथम सातों समुद्रों के; अत्तैयार्–मान रहनेवाले; वॅस् वेलवर्–कठोर भालाधारी राक्षसों ने; चॅल एविय–जिन्हें लाया; कॉलै यात्तैयित् मिकैयै–खूनी हाथियों की बहुलता को; अनुमान्–हनुमान; बुधे उर नित्तैया–खूब (मन) लगाकर सोचकर; ओरु चॅयल् चॅय्कुवॅन्–एक काम करूँगा; अॅत्पान्–कहकर; अवन् तत्ति वेल्–लक्ष्मण का अनोखा भाला; अॅत तैयान्–कहने योग्य पराक्रमी; तव्वेल् अॅत–अकस्मात्; वन्तान्–उधर आया। १८१६

तब हनुमान ने प्रमुख सातों समुद्रों के समान रहनेवाली राक्षस-सेना के वीरों के द्वारा प्रेरित खूनी हाथियों की बहुलता को देखा, तो मन में खूब विचार किया और 'एक कार्य करूँगा' कहते हुए लक्ष्मणजी की अप्रतिम बर्छी माने जाने योग्य बनकर सहसा वहाँ आया। १८१६

आर्त्तङ्गनल् विऴियामुदिर् मदयानैय यनैयान्
तीर्त्तनृगऴल् परवामुद लरिपोल्वरु तिऱलान्
वार्त्तङ्गिय कऴलानोरु मरनिन्ऱदु नमनार्
पोर्त्तण्डिनुम् वलिदायदु कोण्डान् पुहऴ्कोण्डान् 1817

मुतिर् मतम् यानैयै अनैयान्–पूर्ण मदमत्त गज के समान वह; मुतल् अरि पोल्–देव नृसिंह के समान; वरु तिऱलान्–रहनेवाला बलवान; वार् तङ्किय कऴलान्–फ़ीते पर बँधी घुंघुरुओं की पायलधारी; पुकऴ् कोण्टान्–और यशस्वी; अङ्कु–वहाँ; तीर्त्तन्–श्रीरामतीर्थ के; कऴल्–चरणों की; परवा–स्तुति करके; आर्त्तु–नर्दन करके; अतल् विऴिया–अग्नि-दृष्टि डालते हुए; निन्ऱतुम्–वहाँ खड़ा रहा तो; नमनार्–यम के; पोर्त्तण्टिनुम् वलितायतु–युद्धदण्ड से भी बलवान; ओरु मरत्–एक वृक्ष को; कोण्टान्–लिया (हनुमान ने)। १८१७

पूर्ण मदमत्त गज-समान, नरसिंहदेव के समान पराक्रमी, फ़ीते में बँधी पायलधारी और यशस्वी हनुमान ने श्रीरामतीर्थ के चरणों की स्तुति की। फिर आँखों में आग-सी भरकर गर्जन किया। उसने यम के युद्ध-दंड से भी कठोर एक तरु को हाथ में ले लिया। १८१७

करुङ्गार्पुरै नॆडुङ्गैयन कळियानैह ळवैशॆन्
ड्रोरुङ्गायिन वुयिर्मायन्दन पिऱिदॆन्बल वुरैयाल्
वरुङ्गालनुम् पॆरुम्बूदमु मऴैमेहमु मुडनाप्
पॊरुहालैयिन् मलैमेल्विऴु मुरुमेऱॆनप् पुडैत्तान् 1818

वरुम् कालनुम्–(प्राण हरने) आनेवाला यम और; पेरु पूतमुम्–पाँचों बड़े भूत और; मऴै मेकमुम्–बरसनेवाले मेघ और; उटना–साथ मिलकर; पोरु कालैयिल्–जब प्रपंच का नाश करते हैं, तब; मलै मेल् विऴुम्–पर्वत पर गिरनेवाले; उरुम् एऱु अॆन–अशनिराज है (क्या) ऐसा; पुटैत्तान्–पीटा; करु कार् पुरै–काले मेघ-सम और; नॆटु कैयन–लम्बी सूँड़ों वाले; कळि यानैकळ्–मत्तगज; अवै–वे; चॆन्ऱु–चलकर; ओरुङ्कायिन–एक साथ; उयिर् मायन्तन–प्राण छोड़े; पिऱितु–फिर; पल उरैयाल्–विविध कथनों से; ऎन–क्या लाभ है। १८१८

उसने प्राणापहारी यम, भूत और बरसनेवाले मेघों के सम्मिलित होकर प्रपंच-नाश-कार्य में लगते वक़्त पर्वतों पर गिरनेवाले वज्र के समान उस तरु से प्रहार किये। तो काले मेघ-सम, और लम्बी सूँड़ों वाले मदमत्त गज झुंडों में हत हो गये। फिर विविध वर्णन का क्या मतलब होगा ?। १८१८

मिदियार्पल विशैयार्पल मिडलार्पल इडऱुम्
कदियार्पल कालार्पल वालार्पल वालिन्
नुदियार्पल नुदलार्पल नॊडियार्पल पयिलुम्
कदियार्पल [illegible] [illegible] [illegible] 1819

अऱम् निन्ऱात्–धर्मावलंबी हनुमान ने; मितियाल्–पैरों से दबाने से; पल–अनेक; विचैयाल् पल–वेग से अनेक; मिटलाल् पल–बल (के प्रयोग) से अनेक; इटऱुम् कतियाल्–ज़ोर से ठुकराकर; पल–अनेक; कालाल् पल–श्वास के पवन से अनेक; वालाल् पल–पूँछ से अनेक; वालिन् नुतियाल्–पूँछ के छोर से; पल–अनेक; नुतलाल् पल–मस्तक मारकर अनेक; नोंटियाल् पल–चुटकी से अनेक; पयिलुम् कुतियाल्–अभ्यस्त उछल-कूद से अनेक; कुमैयाल् पल–पीसने से अनेक; कोन्ऱात्–मारे। १८१९

धर्मनिष्ठ हनुमान ने लातों से अनेक गजों का हनन किया। वेग से, बल से, ठुकराकर, फूँककर, पूँछ से, पूँछ के छोर से, मस्तक से, चुटकी से, उछल-कूदकर और पीसकर अनेक-अनेक गज मार दिये। १८१९

परित्तान्शिल पहिर्न्दान्शिल वहिर्न्वान्शिल पणैपोत्
इऱुत्तान्शिल विडन्दान्शिल पिळन्वान्शिल वॆयिऱ्ऱाल्
करित्तान्शिल कवर्न्दान्शिल करत्ताऱ्चिल पिडित्तान्
मुरित्तान्शिल तिऱत्तानैयि नॆडुङ्गोडुहण् मुनिन्दान् 1820

मुनिन्तात्–क्रुद्ध हनुमान ने; चिल परित्तात्–कुछ को खींचा; चिल पकिर्न्तात्–कुछ को चीर डाला; चिल वकिर्न्तात्–कुछ को नाखूनों से क्षत कर दिया; चिल–कुछ को; पणैपोत्ऱु–बाँस को जैसे; इऱुत्तात्–तोड़ा; चिल इटन्तात्–कुछ को उधेड़ा; चिल पिळन्तात्–कुछ के खण्ड-खण्ड कर दिये; चिल–कुछ को; ऍयिऱ्ऱाल्–दाँतों से; करित्तात्–काटा; चिल कवर्न्तात्–कुछ को छीन लिया; करत्ताऱ्–हाथों से; चिल–कुछ को; पिटित्तात्–पकड़ लिया; चिल तिऱत्तु यानैयिन्–कुछ प्रकारों के गजों के; नॆटु कोटुकळ्–लम्बे दाँतों को; मुरित्तात्–तोड़ दिया। १८२०

कोप में आये उसने कुछ को खींचा, कुछ को चीरा, कुछ को फोड़ा, कुछ को नखों से नोचा, कुछ को बाँस के समान तोड़ा। कुछ की खाल उधेड़ दी। कुछ को दाँतों से काट क्षत-विक्षत किया। कुछ को छीना। कुछ को हाथों से पकड़ा। कुछ प्रकार के गजों के दाँतों को तोड़ दिया। १८२०

वारिक्कुरै कडलिऱ्पुह वॆऱियुम्नॆडु मरत्ताऱ्
चारित्तलैत् तुरुट्टुम्नॆडुन् दलत्तिऱ्पडुत् तरैक्कुम्
पारिऱ्पिडित् तडिक्कुङ्गुडर् परिक्कुम् पडर्विशुम्बित्
ऊरिऱ्चॆल वॆऱियुम्मिदित् तुळक्कुम् मुहत्तुवक्कुम् 1821

वारि–(उठाकर या) जल-भरे; कुरै कटलिल् पुक–शब्दायमान सागर में घुस जाएँ ऐसा; ऍऱियुम्–फेंकता; नॆटु मरत्ताल्–दीर्घ तरु से; चारित्तु–चक्कर काटते हुए; अलैत्तु–हिलाकर; उरुट्टुम्–लुढ़का देता; नॆटु तलत्तिल्–लम्बी भूमि पर; पटुत्तु–पट गिराकर; अरैक्कुम्–पीसता; पारिल्–भूमि पर; पिटित्तु–पकड़कर;

अटिक्कुम्–पटकता; कुटर् परिक्कुम्–आँतों को छीन लेता; पटर् विचुम्पिन् ऊरिल्–विशाल आकाशलोक में; चॅल ॲरियुम्–जाये ऐसा फेंकता; मितित्तु उऴक्कुम्–रौंदकर पीस डालता; मुकत्तु उतैक्कुम्–मुख पर लात मारता। १८२१

और भी उन हाथियों को उसने पकड़कर शब्दायमान समुद्र में फेंका। लम्बे तरु लेकर घूमते हुए उन्हें भगाते हुए पीटा और लुढ़काया। भूमि पर गिराकर रौंदा। भूमि पर ले पटका। आँतों को छीन लेकर आकाश में उछाला। पैरों से रौंदकर कीच बनाया और मुखों पर लात मारी। १८२१

वालाल्वर वळैक्कुन्नॅडु मलैप्पाम्बॅन्न वळैया
मेलाळोडु मिडैयुम्मुळ्ळु मलैमेर्चॅल विलक्कुम्
आलालमुण् डवन्नेयॅन वहल्वायिन्निट् टदुक्कुम्
तोलायिर मिमैप्पोदिनि नरियेरॅन्नत् तॊलैक्कुम् 1822

वालाल्–पूँछ से; वर–पास आये ऐसा; नॅटुमलै पाम्पु ॲन्न–लम्बे अजगर के समान; वळैक्कुम्–लपेटता; वळैया–लपेटकर; मेल् आळोटु–ऊपर रहनेवाले वीर के साथ; मिटैयुम्–सटे रहे; मुळ्ळु मलै मेल् चॅल–बड़े पर्वतों पर जायें ऐसा; विलक्कुम्–फेंकता; आलालम् उण्टवन्ने–हलाहलभक्षक; ॲन्न–ही के समान; अकल् वायिन् इट्टु–चौड़े मुख में डालकर; अतुक्कुम्–दबाता; इमै पोतिनिल्–पलक मारते समय में; अरि एऱु ॲन्न–नर केसरी के समान; आयिरम् तोल्–हज़ार गजों को; तॊलैक्कुम्–मिटा देता। १८२२

अपनी लम्बी पूँछ से वह अजगर के समान बहुत दूर तक के हाथियों को उनके ऊपर के वीरों के साथ लपेट लेता और पर्वतों पर फेंककर मरवा देता। हलाहलभोगी शिव के समान उन्हें मुख में डालकर चबाता। पलक मारती देर में नरकेसरी के समान हज़ार हाथियों का नाश कर देता। १८२२

शैयत्तिनु मुयर्वुऱ्ऱन तरुहट्कळि मदमा
नॊय्दिर्कडि दॅदिरुऱ्ऱन नूऱायिरम् माऱा
मैयर्करि युयिरिऱ्ऱन विण्पुक्कन मऱैयत्
तॊय्यर्पड रळुवक्कोळ्ळ् जेऱायुहत् तुहैत्तान् 1823

माऱा मैयल्–अक्षय मद के; करि–हाथी; उयिर् इऱ्ऱन–प्राणहीन होकर; विण् पुक्कन–जो स्वर्ग पहुँचे; मऱैय–वे अदृश्य हुए; चैयत्तितुम्–पर्वत से भी; उयर्वु उऱ्ऱन–ऊँचे रहनेवाले; तरुकण्–निडर; कळि मत मा–मदमत्त हाथी; नूऱु आयिरम्–एक लाख; नॊय्तिल्–जल्दी; कटितु–जल्दी; ऍतिर् उऱ्ऱन–जो सामने आये; तॊय्यल् पटर्–(वे) कीच-भरे; अळुवम्–जल में; कोळ्ळ् चेऱाय्–और भी पक्की कीच बने; उक–और गिर जाय ऐसा; तुकैत्तान्–रौंदा। १८२३

लगातार नशे में रहनेवाले हाथी प्राणहीन होकर आकाश में अदृश्य हो गये। तब निडर और मदमत्त हज़ार हाथी समक्ष आ गये। उन्हें हनुमान ने कीच-भरे जलगर्त में डालकर रौंदा और घनी कीच बना दिया। १८२३

वेऱायित्त मदवॆंङ्गरि यॊरुकोडियित् विऱलोन्
नूऱायिरम् बडुत्तानिदु नुवल्कालैयि लिळैयोन्
कूऱायित्त वॆंनवन्नवै कॊलैवाळियिऱ् कॊन्ऱान्
एऱानॆंडुम् बयत्तालनॆंडुन् दिशैक्कावल रिरिन्दार् 1824

विऱलोन्–बलवान हनुमान ने; वेऱायित्त–विलक्षण; मतम् वॆम् करि–क्रूर उन्मत्त गज; ऒरु कोटियिन्–एक करोड़ में; नूऱायिरम्–लाख को; पटुत्तान्–मार मिटाया; इतु नुवल् कालैयिल्–जब यह काम पसन्द (कर) करता था; इळैयोन्–तब लघु प्रभु; कूऱु आयित्त अॆंत–अपने भाग के-से; अन्नवै–उन्हें; कॊलै वाळियिल्–घातक शरों से; कॊन्ऱान्–मार दिया; नॆंटु तिचै कावलर्–बड़े दिग्पालक; नॆंटु पयत्ताल्–बड़े डर से; एऱा–इस तरफ़ देखे बिना ही; इरिन्तार्–तितर-बितर हो भागे। १८२४

बलवान हनुमान ने करोड़ विलक्षण मत्त गजों में एक लाख को मार दिया। जब वह यह काम चाव के साथ कर रहा था, तब लक्ष्मण ने अपने भाग के हाथियों को घातक शरों से मार दिया। तब बड़े दिग्पालक डरकर युद्धभूमि की तरफ़ आँख भी न फिराकर तितर-बितर भाग गये। १८२४

इरिन्दार्तिशै तिशैयॆंङ्गणुम् यानैप्पिण मॆंऱ्ऱ
नॆंरिन्दार्हळुम् नॆंरियादुयर् निलैत्तार्हळुम् नॆंरुक्काल्
ऎरिन्दार्नॆंडुन् दडन्देरिळिन् दॆल्लारुमुन् शॆल्लत्
तिरिन्दानॊरु तनियेनॆंडुन् देवान्दहन् शिनत्तान् 1825

तिचै तिचै ऎंङ्कणुम्–सारी दिशाओं में; यानै पिणम्–गजों की लाशों के; ऎऱ्ऱ–ठोकर लगने से; नॆरिन्तार्कळुम्–दबनेवाले; इरिन्तार्–अस्त-व्यस्त भागे; नॆरियातु–बिना दबे; उयिर् निलैत्तार्कळुम्–प्राण जिनके बचे वे भी; नॆरुक्काल्–भीड़ की वजह से; ऎरिन्तार्–जल गये; ऎल्लारुम्–सभी लोग; नॆंटु तट तेर्–ऊँचे और विशाल रथ से; इळिन्तु–उतरकर; मुन् चॆल्ल–आगे भागे तो; नॆंटु तेवान्तकन्–सबल देवांतक; चिनत्तान्–गुस्से के साथ; ऒरु तनिये–अकेले ही; तिरिन्तान्–घूमा। १८२५

सारी दिशाओं में रहे गजशवपर्वतों के बीच फँसकर अनेक वीर दबकर मरे। जो नहीं दबे वे अस्त-व्यस्त भागे। जो बचे वे भीड़ के कारण मरे। रथ से उतरकर सब आगे-आगे भागे तो बलवान देवांतक (नाम का राक्षस) कोप के साथ अकेला-अकेला घूमा। १८२५

उदिरक्कडल् पिणमाल्वरै यौन्ऱल्लन पलवाय्
ऍदिरक्कडु नॆडुम्बोर्क्कळत् तोरुदान्बुहुन् देऱ्ऱान्
कदिरॊप्पन शिलवॆङ्गणै यनुमानुडऱ् करन्दान्
अदिरक्कडल् नॆडुन्देरितन् मऴैयॆऩ्ऩ वार्त्तान् 1826

उतिरम् कटल्–रक्तसागर; माल् पिणम् वरै–और बड़े शवपर्वत; ऑन्ऱु अल्लन–एक नहीं; पलवाय्–अनेक; ऍतिर–सामने रहे तो भी; नॆटु तेरितन्–ऊँचे रथ वाले (देवांतक) ने; कटु नॆटु पोर् कळत्तु–विकट विशाल समरांगण में; ऑरुतान् पुकुन्तु–आप एक ही प्रवेश कर; एऱ्ऱान्–लड़नेवाला बन; कतिर् ऑप्पन–सूर्य-सम; चिल वॆम् कणै–कुछ तापक अस्त्रों को; अनुमान् उटल् करन्तान्–हनुमान के शरीर में छिपाकर; कटल् अतिर–समुद्र को भी थर्राने देते हुए; मऴै एऩ्ऩ–मेघगर्जन के समान; आर्त्तान्–शोर मचाया। १८२६

रक्त-समुद्र और बड़े शवपर्वत एक नहीं अनेक सामने रहे। तो भी ऊँचे रथ पर सवार उसने घोर तथा विशाल समरांगण में अकेले प्रवेश कर सूर्य-सम कुछ क्रूर शरों को हनुमान के शरीर पर ज़ोर से चलाया और वे उसके शरीर में छिप गये। उसने समुद्र को भी थर्राते हुए गर्जन किया। १८२६

अप्पोदिनि ननुमानुमोर् मरमोच्चिनिन् ऱार्त्तान्
इप्पोदिव नुयिर्पोमॆन वुरुमेऩ्ऩ वॆऱिन्दान्
वॆप्पोवॆन वॆयिल्काल्वन वयिल्वॆङ्गणै विशैयाल्
तुप्पोवॆनत् तुणियाम्वहै देवान्दहन् तुरन्दान् 1827

अप्पोतितिन्–उस समय; अनुमानुम्–हनुमान ने भी; ऑरु मरम्–एक वृक्ष को; ओच्चि निन्ऱु–ऊँचा उठाये खड़ा होकर; आर्त्तान्–नर्दन करके; इप्पोतु–अब; इवन् उयिर् पोम्–इसके प्राण छूट जायेंगे; ऍऩ–कहकर; उरुम् एऱु ऍऩ–अशनिवृषभ के समान; ऍऱिन्तान्–फेंका; वॆप्पो ऍऩ–क्या अग्नि है, ऐसा भ्रम पैदा करनेवाले; वॆयिल् काल्वन–गरमी निःसृत करनेवाले; अयिल्–तीक्ष्ण; वॆम् कणै–क्रूर शर को; विसैयाल्–तेज़ी से; तुप्पो–यह भी बल रखता है क्या; ऍऩ–कहकर; तुणि आम् वकै–खण्ड-खण्ड हो जायें ऐसा; तेवान्तकन्–देवांतक ने; तुरन्तान्–छोड़ा। १८२७

तब हनुमान ने भी एक पेड़ को उखाड़ लिया और ऊपर बढ़ाकर 'अब यह मरेगा' —कहते हुए अशनिराज-सम उसे फेंका। तब देवांतक ने भी 'यह क्या बहुत सारयुक्त है ?' यह कहते हुए अग्नि का भ्रम पैदा करनेवाले और गरमी निःसृत करनेवाले एक शर को वेग के साथ उस पेड़ को खंडित करने के लिए चलाया। १८२७

माऱाङ्गॊरु मलैवाङ्गितन् वयवानरक् कुलत्तोर्
एऱाङ्गदु वॆरियादमुन मरियायह वॆय्दान्

कोऱाङ्गिय शिलैयानुडन् नॅडुमारुदि कॉदित्तान्
पाऱामॆंऩप् पुहप्पायन्दव नॅडुविल्लिनैप् पऱित्तान् 1828

वयम् वानरम् कुलत्तोर्–विजयी वानरकुल के वानरों में; एऱु–श्रेष्ठ हनुमान ने; आङ्कु–तब; माऱु ऑरु मलै–जवाब में एक पर्वत; वाङ्कित्तन्–उठाया; अतु–उसे; आङ्कु–वहाँ; ऍऱियात मुन्–फेंकने से पहले; मुऱियाप् उक–टुकड़ों में गिर जाए ऐसा; ऍय्तान्–(देवांतक ने) चलाया; कोल् ताङ्किय–शर-सहित; चिलैयानुटन्–धनु रखनेवाले उससे; नॅटु मारुति–मान्य मारुति; कॉतित्तान्–गुस्सा करके; पाऱु आम् ऍन–बाज के समान; पुक पायन्तु–घुसता-(जैसा) झपटकर; अवन्–उसके; नॅटु विल्लिनै–बड़े धनु को; पऱित्तान्–छीन लिया। १८२८

वानरकुल के ऋषभ-सम हनुमान ने उसके वदले और एक पर्वत को ले लिया। देवांतक ने उस पर उसे फेंकने के पूर्व ही एक शर चलाया। वह टूट गया। हनुमान नाराज़ हुआ और शर के साथ धनु को अपने हाथ में लिये रहे उस पर वाज़ के समान झपटा और बड़े धनु को छीन लिया। १८२८

पऱित्तानॆंडुम् पडैवानवर् पलरार्त्तिडप् पलवा
मुऱित्तानवन् वालिहण्डुयर् देवान्दहन् मुनिन्दान्
मऱित्ताङ्गॊरु शुडर्त्तोमरम् वाङ्गामिशै योङ्गाच्
चॆंऱित्तानव निडत्तोण्मिशै यिमैयोर्हळुन् दिहैत्तार् 1829

नॅटु पटै पऱित्तान्–बड़े धनुष को छीनकर; वानवर् पलर्–देवों में अनेकों के; आर्त्तिट–आरव करते; पलवा मुऱित्तान्–कई तरह से तोड़ा; अवन्–उसका; वलि कण्टु–वल देखकर; उयर्–वीरता में बड़ा; तेवान्तकन् मुनिन्तान्–देवांतक बौखला उठा; मऱित्तु–फिर; आङ्कु–वहाँ; ऑरु चुटर् तोमरम्–एक प्रकाशमय तोमर को; वाङ्का–हाथ में ले; मिचै ओङ्का–ऊपर बढ़ाकर; अवन्–उसके; इट तोळिन् मिचै–बायें कंधे पर; चॅऱित्तान्–खूब दे मारा; इमैयोर्कळुम्–व्योमवासी भी; तिकैत्तार्–भ्रमित हो गये। १८२९

हनुमान ने उसे छीनकर देवों के हर्षध्वनि करते, उसे कई प्रकार से तोड़ दिया। उसका बल देखकर वीरता में बढ़ा हुआ देवांतक कुपित हुआ। फिर उसने तेजोमय एक तोमर हाथ में लिया और ऊपर उठाकर हनुमान के बायें कंधे पर जाकर गंभीर रूप से लग जाए ऐसा पीटा। यह देखकर देव भी भ्रमित हो गये। १८२९

शुडर्त्तोमर मॆंरिन्दार्त्तलुङ् गनलामॆंनच् चुळित्तान्
अडल्तोमरम् पऱित्तानुतिरित् तुरुमेऱॆंन वार्त्तान्
पुडैत्तानवन् तडन्देरॊडु नॅडुञ्जारदि पुरण्डान्
मडत्तोहैयर् वलिवॆंन्ऱवन् वानोर्मुह मलर्न्दार् 1830

चुटर्–प्रकाशमय; तोमरम्–तोमर को; ऍरिन्तु–फेंककर; आर्त्तलुम्–जब राक्षस ने नर्दन किया तब; मटम् तोकैयर् वलि–अबोध कलापी-सी ललनाओं के; आकर्षण बल को; वॅन्ऱवन्–जिसने जीता था, उस हनुमान ने; कनल् आम् ॲंत–अग्नि है, ऐसा; चुळित्तान्–नाराज होकर; अटल् तोमरम्–सशक्त तोमर को; पऱित्तान्–पकड़ लिया; तिरिन्तु–घूमते हुए; उरुम् एऱु ॲंत–अशनिराज के समान; आर्त्तान्–गर्जन करके; पुटैत्तान्–उससे पीटा; अवन्–उस (देवांतक) के; नॅटु तट तेरोटु–ऊँचे और विशाल रथ के साथ; चारति पुरण्टान्–सारथी लोट गया; वानोर्–देव; मुकम् मलर्न्तार्–खिले मुख वाले हो गये। १८३०

उज्ज्वल तोमर से पीटकर जब देवांतक हर्षध्वनि कर उठा तो अबोधता के स्वाभाविक गुणवाली ललनाओं के आकर्षण के बल पर जिसने विजय प्राप्त की थी, उस हनुमान ने आगबबूला होकर उस तोमर को पकड़ लिया। घुमाते हुए ज़ोर की वज्र-सम ध्वनि निकाली और उससे पीटा। उस प्रहार से देवांतक के ऊँचे रथ के साथ सारथी भी भूमि पर लोट गया। देवों के मुख खिल गये। १८३०

शूलप्पडै तॉडुवान्ऱनै यिमैयादमुन् तॉडर्न्दान्
आलत्तिनुम् वलियानुम्वन् दॅदिरेपुहुन् दडर्त्तान्
कालऱ्किरु कण्णान्ऱन कैयालवन् कदुप्पिन्
मूलत्तिडैप् पुडैत्तानुयिर् मुडित्तान्शिर मडित्तान् 1831

चूलम् पटै–शूलायुध को; तॉटुवान् तनै–जो पकड़ रहा था, उस देवांतक से; इमैयात मुन्–पलक झपने से पूर्व; तॉटर्न्तान्–हनुमान ने लड़ना चालू रखा; आलत्तिनुम् वलियानुम्–हलाहल से अधिक प्रभावकारी ने भी; ऍतिरे वन्तु–सामने आ; पुकुन्तु–पहुँचा और; अटर्त्तान्–युद्ध किया; कालऱ्कु इरु कण्णान्–यम की दो आँखों के सदृश रहनेवाले हनुमान ने; तन कैयाल्–अपने हाथ से; अवन् कतुप्पिन् मूलत्तु इटै–गाल के मूल में; पुटैत्तान्–प्रहार किया; चिरम् मटित्तान्–सिर को मोड़कर तोड़ा; उयिर् मुटित्तान्–प्राणों का अन्त कर दिया। १८३१

शूलपाणी देवांतक से लड़ना जारी रखा हनुमान ने। हलाहल से भी घातक देवांतक भी समक्ष आकर लड़ा। यम के अक्षद्वय-सम हनुमान ने उसके गाल के मूल भाग में अपने हाथ से प्रहार किया और सिर नोच लेकर उसका काम तमाम किया। १८३१

कण्डानॅदि रदिहायनुङ् गनलामॅनक् कनन्ऱान्
पुण्डानॅनप् पुनलोडिळि युदिरम्विळि पॉळिवान्
उण्डेनिव नुयिरिप्पॉळु दॉळियेनॅन वुरैयात्
तिण्डेरिनैक् कडिदेवॅनच् चॅन्ऱानव निन्ऱान् 1832

अतिकायनुम्–अतिकाय ने भी; ऍतिर् कण्टान्–समक्ष देखा; कनल् आम् ॲंत–अग्नि के समान; कनन्ऱान्–जल उठा; पुण तान् ॲंत–व्रण के ही समान; पुनलोटु

इऴि–जल के रूप में बहनेवाले; उतिरम्–रक्त को; विऴि पोऴिवान्–आँखों से बहानेवाला; इवन् उयिर्–इसके प्राणों को; इप्पोऴुतु–अभी; उण्टेन्–पी लिया; ओऴियेन्–(विना मारे) नहीं हटूँगा; ॲन्न उरैया–ऐसा कहकर; तिण् तेरिनै–सुदृढ़ रथ को; कटितु एवु–शीघ्र चलाओ; ॲन्न–ऐसा कहकर; चॆन्ऱान्–गया; अवन्–वह (हनुमान) भी; निन्ऱान्–सन्नद्ध खड़ा रहा। १८३२

अतिकाय ने अपने ही समक्ष देवांतक का मारा जाना देखा। व्रण के समान बनी उसकी आँखों से जल के साथ रक्त भी निकल आया। आग-बबूला होकर उसने दावा किया कि मैं अभी इसके प्राण खा लूंगा। छोड़ूंगा नहीं। अपने सारथी से कहा कि रथ को जल्दी चलाओ। वह हनुमान के समक्ष आया और हनुमान भी सन्नद्ध हो खड़ा हुआ। १८३२

अन्नान्वरु मळविन्ऱलै निलैनिन्ऱन वतिहम्
पिन्नानदुम् मुन्नानदु पिरिन्दार्हळुम् जॆरिन्दार्
पॊन्नालुयर् नॆडुमाल्वरै पोल्वानॆदिर् पुक्कान्
शॊन्नानिवै यदिहायनुम् वडमेरुवॆन् तुणिप्पान् 1833

अन्नान् वरुम् अळविन् तलै–उसके आते समय; अतिकम् निलै निन्ऱन–(राक्षसों की) सेनाएँ सिर उठाये खड़ी रहीं; पिन्नानतुम्–जो पीछे चली गयी थीं; मुन्नानतु–आगे आयीं; पिरिन्तार्कळुम्–जो अलग गये थे; चॆरिन्तार्–आ एकत्रित हो गये; वट मेरुवै–उत्तर के मेरु को; तुणिप्पान्–तोड़ सकनेवाला; अतिकायनुम्–अतिकाय भी; पॊन्नाल्–स्वर्णमय; उयर् नॆडु माल् वरै–ऊँचे, बहुत बड़े पर्वत; पोल्वान्–के समान रहनेवाले; ॲतिर् पुक्कान्–(हनुमान) के सामने आया; इवै चॊन्नान्–यों बोला। १८३३

जब अतिकाय आया तो उसकी सेना सिर उठाये खड़ी रही। जो पीछे चली गयी थी वह भी आगे आयी। अलग जो गये थे वे वीर भी आ मिले। मेरुभंजक अतिकाय स्वर्णमेरु-सदृश हनुमान से यों बोला। १८३३

तेय्त्तायॊरु तनियॆम्बियैत् तलत्तोडॊरु तिरत्ताल्
पोय्त्तायिनै नॆडुमाकडल् पिऴैत्तायकडल् पुहुन्दाय्
वाय्त्तानैयु मडित्तायदु कण्डेनॆदिर् वन्देन्
आय्त्तायदु मुडिविन्ऱुनक् कणित्ताहवन् दडुत्ताय् 1834

ऑरु–अप्रतिम; तनि ॲम्पियै–अकेला जो रहा, उस मेरे कनिष्ठ भ्राता को; तलत्तोटु–भूमि पर; तेय्त्ताय्–पीसकर; ऑरु तिरत्ताल्–अपूर्व एक साहस के साथ; नॆटु मा कटल्–लम्बे, बड़े समुद्र को; तायिनै पोय्–लाँघ जाकर; पिऴैत्ताय्–बच गये; कटल् पुकुन्ताय्–(राक्षस-सेना-) सागर में प्रवेश करके; वाय्त्तानैयुम्–सेनासंयुक्त (देवांतक) को भी; मटित्ताय्–मार दिया; अतु कण्टेन्–वह देखा; ॲतिर् वन्तेन्–सामने आया; इन्ऱु–आज; उनक्कु–तुम्हें; मुटिवु–अन्त; आय्त्तु आयतु–मिल जाने का समय आ गया है; अणित्तु आक–(इसीलिए) मेरे पास; अटुत्ताय्–आ गये हो। १८३४

मेरे अद्वितीय छोटे भाई को भूमि पर डालकर तुमने पीसा। पर साहस के साथ लम्बे चौड़े समुद्र को लाँघकर बच गये। अब सेना-सागर में घुसे हो। अतिबली देवांतक को भी मार दिया। उसको देखा तभी मैं तुम्हारे समक्ष आया। आज तुम्हारा अन्त पास आ गया। तभी मेरे इतने पास आये हो। १८३४

इन्ऱल्लदु	नॆडुनाळुन्नै	यॊरुनाळिनु	मॆंदिरेन्
ऒन्ऱल्लदु	शॆय्दाय्पल	इळैयोनैयु	मुन्नैयुम्
वॆन्ऱल्लदु	मीळादवॆन्	मिडल्वॆङ्गणै	मऴैयाल्
कॊन्ऱल्लदु	शॆल्लेनिदु	कॊळ्ळॆन्ऱनन्	कॊडियोन् 1835

इन्ऱु अल्लतु–आज नहीं तो; उन्नै–तुमसे; नॆंटु नाळ् ओरु नाळितुम्–लम्बे समय तक किसी दिन भी; ऍतिरेन्–नहीं लड़ूँगा; ऒन्ऱु अल्लतु–एक नहीं; पल चॆय्ताय्–अनेक (दुर्व्यवहार) किये; वॆन्ऱु अल्लतु मीळात–विजय के विना न लौटने वाले; ऍन् मिटल् वॆम् कणै मऴैयाल्–मेरे सबल अस्त्रों की वर्षा से; इळैयोनैयुम्–लघुराज लक्ष्मण को और; उन्नैयुम्–तुम्हें; कॊन्ऱु अल्लतु–विना मारे; चॆल्लेन्–वापस नहीं जाऊँगा; इतु कॊळ्–यह मन में धर लो; ऍन्ऱनन्–कहा; कॊटियोन्–क्रूर ने। १८३५

आज नहीं तो बहुत दिनों तक तुमसे लड़ूँगा नहीं। तुमने एक नहीं अनेक बुराइयाँ की हैं। मैं अपने विजय पाये विना न लौटनेवाले शरों की वर्षा से लघुराज लक्ष्मण को और तुमको मारे विना नहीं लौट जाऊँगा। यह मन में धर लो—अतिकाय ने कहा। १८३५

पिऴैयादिदु	पिऴैयावॆनप्	पॆरुङ्गैत्तलम्	बिशैया
मऴैयामॆनच्	चिरित्तान्वड	मलैयामॆनु	निलैयान्
मुऴैवाळरि	यनैयानैयुम्	ऍन्नैयुम्मिह	मुनिवाय्
अऴैयाय्तिरि	शिरत्तोनैयुम्	निलत्तोडुमिट्	टरैप्पान् 1836

वट मलैयाम् ऍनुम् निलैयान्–उत्तर के पर्वत (मेरु-) समान स्थिति वाला हनुमान; मुऴै वाळ् अरि–कंदरा में रहनेवाले क्रूर सिंह के; अनैयानैयुम्–सदृश (लक्ष्मण) पर और; ऍन्नैयुम्–और मुझ पर; मिक मुनिवाय्–अधिक कोप करते हो; निलत्तोटुम् इट्टु–भूमि पर डालकर; अरैप्पान्–पीसने के वास्ते; तिरिचिरत्तोनैयुम्–तीन सिरों वाले (त्रिशिरा) को भी; अऴैयाय्–बुला लो; इतु पिऴैयातु–यह निरर्थक नहीं होगा; पिऴैयातु–निरर्थक नहीं होगा; ऍन–कहकर; पॆरु कै तलम्–बड़े हाथों को; पिचैया–मलकर; मऴैयाम् ऍन–मेघ (मध्य वज्र) के समान; चिरित्तान्–हँसा। १८३६

उत्तरी मेरु-सम अचंचल हनुमान ने कहा कि तुम्हें कंदरावासी सिंह-सदृश लक्ष्मण और मुझसे कोप है ! मैं चाहूँगा कि तुम्हें त्रिशिरा के साथ

भूमि पर डालकर पीस दूँ। इसलिए उसे भी बुला दो। मेरा वचन झूठा नहीं होगा। व्यर्थ नहीं होगा। यह कहते हुए हनुमान ने अपना विशाल हाथ मला और ठठाकर मेघ गरजता-जैसे हँसा। १८३६

आमामॅन्नत् तलैमून्ऱुडै यवनार्त्तुवन् दडर्त्तान्
कोमान्तनिप् पॅरुन्दूदन् मॅदिरेशॅरुक् कोडुत्तान्
कामाण्डवर् कल्लादवर् वल्लीरॅन्नक् कळ्ऱा
तामाण्डऱ वयल्निन्ऱवर् नडुवेपुह नडन्दान् 1837

आम् आम्–हाँ-हाँ; ॲन्न–कहकर; मून्ऱु तलै उटैयवन्–त्रिशिरा ने; आर्त्तु वन्तु–शोर मचाते हुए आकर; अटर्त्तान्–सामना किया; कोमान्–चक्रवर्तीसुत के; तनि पॅरु तूततुम्–अद्वितीय बड़े दूत ने भी; ॲतिरे–सामने; पॅरु कॉटुत्तान्–युद्ध किया; का माण्टवर् अल्लातवर्–रक्षण-कार्य में मान्यता प्राप्त नहीं तुम्हें, इसलिए तुम; वल्लीर्–अर्ह हो; ॲन्न कळ्ऱा–यह कहकर; अयल् निन्ऱवर्–पास जो खड़े रहे, उनकी; ना माण्टु अऱ–जीभ सूख जाये, ऐसा; नटुवे पुक–बीच में घुसने को; नटन्तान्–चलकर आया। १८३७

त्रिशिरा ने यह सुना तो 'हाँ, हाँ' कहते हुए गर्जन किया और आकर लड़ाई की। चक्रवर्तीपुत्र श्रीराम के दूत ने भी प्रतियुद्ध किया। 'रक्षण-समर्थ तुम नहीं हो। तुम युद्ध करने अर्ह ही हो।' यह कहते हुए वीरों के बीच से गया। तब वीरों की जिह्वा भय से सूख गयी। १८३७

तेर्मेर्चॅलक् कुदित्तान्तिरि शिरत्तानॅयॉर् तिऱत्ताल्
कार्मेल्तुयिन् मलैपोलियैक् करत्ताऱ्पिडित् तॅडुत्तान्
पार्मेऱ्पडुत् तरॅत्तानवन् पऴिमेऱ्पडप् पडुत्तान्
पोर्मेऱ्ऱिशै नॅडुवायिलि नुळदामॅन्नप् पोनान् 1838

तेर् मेल् चॅल–रथ पर पहुँचने; कुतित्तान्–उछलकर कूदा; कार् मेल् तुयिल् मलै–मेघ जिस पर रहते हों, उस पर्वत; पोलियै–के सदृश उसको; तिरिचिरत्तानै–त्रिशिरा को; ओर् तिऱत्ताल्–बहुत ही बल लगाकर; करत्ताल् पिटित्तु–हाथ से पकड़कर; ॲटुत्तान्–उठाया; पार् मेल् पटुत्तु–भूमि पर लिटाकर; अरॅत्तान्–पीसा; अवन्–उसे; पऴि मेल् पट–अपयश अधिक दिलाते हुए; पटुत्तान्–मारा; पोर्–युद्ध; मेल् तिचै–पश्चिमी दिशा के; नॅटु वायलिल्–बड़े द्वार पर; उळतु आम्–है तो; ॲन्न–कहकर; पोनान्–(वहाँ) गया। १८३८

फिर हनुमान त्रिशिरा के रथ पर कूदा। मेघाच्छादित पर्वत-सम त्रिशिरा को उसने अपने बल के साथ हाथ से पकड़ा, भूमि पर पटका और पीस दिया। और अपयश का भागी बनाते हुए प्राणहीन कर दिया। फिर 'युद्ध पश्चिमी द्वार पर चलता है' कहकर वह उस तरफ़ चला। १८३८

इमैयिडै याहच् चॆन्ऱा निहलदि हाय निन्ऱान्
अमैवदोन् ऱाऱ्ऱल् तेऱ्ऱा नरुवियो डळल्हाल् कण्णान्
उमैयॊरु बाह नेयु मिवन्मुनिन् दुरुत्त पोदु
कमैयिल नाऱ्ऱ लॆन्नाक् कदत्तोडुङ् गुलैक्कुङ् कैयान् 1839

इमै इटै आक–पल भर में; चॆन्ऱान्–गया; इकल् अतिकायन्–वैरी अतिकाय; अमैवतु ऑन्ऱु–कर्तव्य एक काम; आऱ्ऱल्–करना; तेऱ्ऱान्–निश्चय नहीं कर सका; अरुवियोटु अळल्–जल के साथ अनल; काल् कण्णान्–निकालनेवाली आँखों का हो; निन्ऱान्–खड़ा रहा; उमै ऑरु पाकनेयुम्–उमा को एक भाग में रखनेवाले अर्धनारीश्वर शिव भी; इवन् मुतिन्तु उरुत्त पोतु–जब यह (हनुमान) गुस्से से तरेरे; कमै आऱ्ऱल् इलन्–तव सहने की शक्ति वाला नहीं; ऍन्ना–कहकर; कतत्तोटुम्–गुस्से के साथ; कुलैक्कुम् कैयान्–काँपनेवाले हाथों का बना रहा। १८३९

एक पल में वह चला गया। वैरी अतिकाय किंकर्तव्यविमूढ़ रह गया। अनल व जल को निकालनेवाली आँखों का होकर खड़ा रहा। उमा को अपने शरीर का आधा भाग जो दे चुका वह शिव भी, जब हनुमान 'गुस्से के साथ तरेरेगा तो सह नहीं सकता।' यह कहते हुए अतिकाय भय के कारण कंपायमान हाथों का हुआ। १८३९

पूणिप्पॊन् ऱुडैय नाहिप् पुहुन्दनान् पुऱत्तु निन्ऱु
पाणित्तल् वीर मन्ऱाऱ् परुवलि पडैत्तोर्क् कॆल्लाम्
आणिप्पॊन् नानान् तन्नैप् पिन्नुङ्गण् डऱिव नॆन्नात्
तूणिप्पॊऱ् पुऱत्तान् तिण्डे रिळवन्मेल् तूण्डच् चॊन्नान् 1840

पूणिप्पु ऑन्ऱु–एक संकल्पबद्धता; उटैयन् आकि–रखनेवाला बन; पुकुन्तनान्–प्रविष्ट हुआ मैं; निन्ऱु पाणित्तल्–रुककर विलम्ब करूँ यह; वीरम् अन्ऱु–वीरता नहीं; तूणि पॊन् पुऱत्तान्–तूणीर को स्वर्ण के समान जिसने पीठ पर बाँध रखा है; परु वलि–बहुत बल; पटैत्तोर्क्कु ऍल्लाम्–रखनेवाले सभी लोगों के लिए; आणिप्पॊन् आनान् तन्नै–कसौटी के कील के स्वर्ण के समान रहनेवाले लक्ष्मण को; पिन्नुम् कण्टु अऱिवन्–बाद देख समझूंगा; ऍन्ना–कहकर; इळवल् मेल्–लघुराज की तरफ़; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ को; तूण्ट–चलाने को; चॊन्नान्–कहा। १८४०

अतिकाय ने सोचा लक्ष्मण को मारने का संकल्पबद्ध हूँ मैं। रुककर विलम्ब करना वीरता नहीं होगा। तूणीर को स्वर्ग के समान जिसने अपनी पीठ पर बाँध रखा है, जो बलवान लोगों के बल की कसौटी के कील के समान है उसकी वीरता को इस युद्ध में समझ लूँगा। यह कहते हुए उसने अपने सारथी को आज्ञा दी कि सुदृढ़ रथ को लक्ष्मण पर आक्रमण करने के लिए उसकी ओर चलाओ। (कसौटी की स्वर्णकील— खरे स्वर्ण की कील बनी रहती है, जिसके मुक़ाबले में स्वर्ण के खरेपन की जाँच की जाती है। 'आणिप्पॊन्' स्वर्णकील का अर्थ खरा सोना है। लक्ष्मण सर्वश्रेष्ठ हैं, यह द्योतित है।)। १८४०

तेरॊलि कडलैच् चीऱच् चिलैयॊलि मळैयैच् चीऱप्
पोरॊलि मुरशि नोदै तिशैहळिऱ् पुऱत्तुप् पोहत्
तारॊलि कळऱ्कान् मैन्दन् तानैयुन् दानुञ् जॆन्ऱान्
वीरनु मॆदिरे निन्ऱान् विण्णवर् विशयम् वेण्ड 1841

तेर् ऑलि–रथ की ध्वनि; कटलै चीऱ–समुद्र से फूत्कारता है; चिलै ऑलि–धनु की ध्वनि; मळैयै चीऱ–मेघों से बिगड़ता है; पोर् ऑलि–युद्ध में ध्वनि देनेवाली; मुरचिन् ओतै–भेरियों का नाद; तिचैकळिन् पुऱत्तु–दिशाओं को भी पार करके; पोक–जाता है; तार् ऑलि–(युद्धोचित) 'वंजी' मालाधारी; कळल् काल् मैन्तन्–पायलधारी वीर अतिकाय; तानैयुम्–सेना और; तानुम् चॆन्ऱान्–स्वयं गया; विण्णवर्–व्योमवासियों ने; विचयम् वेण्ट–विजय की कामना की और; वीरनुम्–वीर (लक्ष्मण) भी; ऍतिरे निन्ऱान्–सामने खड़ा रहा। १८४१

रथ की घरघराहट ने समुद्र की ध्वनि से और धनु की टंकार मेघ-गर्जन से गुस्सा किया (यानी उसको नीचा दिखाया)। युद्ध-भेरियों की ध्वनि दिशाओं को पार कर गयी। 'वञ्जी' पुष्पों की माला से अलंकृत और पायलधारी वीर अतिकाय अपनी सेना-सहित गया। वीर लक्ष्मण भी उसके सामने आ खड़े हुए। देवों ने उनकी विजय की कामना की। १८४१

वल्लैयि नणुह वन्दु वणङ्गिनन् वालि मैन्दन्
शिल्लियन् देरिन् मेला नवनमर् शॆव्वि दन्ऱाल्
विल्लियर् तिलद मन्न नित्तिरु मेनि ताङ्गप्
पुल्लिय वॆन्निनु मॆन्ऱो ळेऱुदि पुन्निद वॆन्ऱान् 1842

वल्लैयिन्–शीघ्र; अणुक वन्तु–पास आकर; वणङ्किनन्–नमन करके; वालि मैन्तन्–वालीपुत्र ने; अवन् चिल्लि–वह पहियोंदार; अम् तेरिन् मेलान्–सुन्दर रथ पर सवार है; अमर् चॆव्वितु अन्ऱु–(आपका भूमि पर खड़े होकर) युद्ध (करना) सम नहीं होगा; विल्लियर् तिलतम् अन्न–धनुर्धरों में तिलक-समान; निन् तिरु मेनि–आपके दिव्य शरीर को; ताङ्क–धारण करने; पुल्लिय–अल्प हैं; ऍन्निनुम्–तो भी; पुन्नित–पवित्र; ऍन् तोळ्–मेरे कन्धे पर; एऱुति–चढ़िये; ऍन्ऱान्–कहा। १८४२

तब वाली का पुत्र अंगद तेजी से पास आया और प्रणाम करके विनय के साथ बोला। वह पहियोंदार रथ पर सवार है। आप भूमि पर खड़े होकर लड़ें तो लड़ाई सम नहीं रहेगी। धनुर्धरों में तिलक-समान आपके श्रीशरीर को धारण करने के लिए मेरे कन्धे दुर्बल हों तो भी, हे पवित्र पुरुष! मेरे कन्धों पर सवार हों। १८४२

आमॆन वमलन् तम्बि यङ्गद नलङ्गऱ् ऱोण्मेल्
तामरैच् चरणम् वैत्तान् कलुळनिऱ् ऱाङ्गि निन्ऱ

कोमह ताऱ्ऱ नोक्किक् कुळिर्हित्ऱ मनत्त राहिप्
पूमऴै पॉऴिन्दु वाऴ्त्तिप् पुहऴ्न्दनर् पुलव रॅल्लाम् 1843

आम् अँत–हाँ कहके; अमलत् तम्पि–विमल देव श्रीराम के लघु भ्राता; अङ्कतत्–अंगद के; अलङ्कल् तोळ् मेल्–माला से अलंकृत कंधों पर; तामरै चरणम् वैत्तान्–कमल-चरण रखे; कलुऴतिल्–गरुड़ के समान; ताङ्कि नित्ऱ–धारण किये जो रहा; कोमकत्–उस वानरराजतनय का; आऱ्ऱल्–बल; नोक्कि–देखकर; कुळिर्कित्ऱ मतत्तर् आकि–शीतल (मुदित) मन वाले होकर; पुलवर् ऍल्लाम्–सभी देवों ने; पूमऴै पॉऴिन्तु–पुष्पवर्षा करके; वाऴ्त्ति–वधाई देकर; पुकऴ्न्तनर्–प्रशंसा की। १८४३

पवित्रात्मा श्रीराम के भाई ने सकारा। अंगद के पुष्पमाला से शोभित कन्धों पर अपने श्रीचरण रखे। गरुड़ के समान लक्ष्मण को धारण किये रहनेवाले अंगद के सामर्थ्य को देखकर सभी देवों ने मुदित होकर फूल वरसाये, वधाइयाँ दीं और प्रशंसा की। १८४३

आयिरम् पुरवि पूण्ड वदिर्कुर लशनित् तिण्डेर्
पोयिन तिशैह ळॅङ्गुम् करुङ्गॅनच् चारि पोमाल्
मीयॅऴि नुयरुन् दाऴिऱ् ऱाऴुम्विण् शॅल्लिऱ् चॅल्लुम्
तीयॅऴ वुवरि नीरैक् कलक्किनान् चिरुव नम्मा 1844

उवरि नीरै–क्षीरसागर के जल को; ती ऍऴ–आग निकालते हुए; कलक्किनान्–जिसने मथ डाला, उस वाली का; चिरुवन्–पुत्र; आयिरम् पुरवि पूण्ट–हजार घोड़े जिससे जुते थे; अतिर् कुरल् अचति–घरघराहट में अशनि के टक्कर का; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; पोयिन तिचैकळ्–ऍङ्कुम्–जहाँ गया, उन सारी दिशाओं में; करुङ्कु ॲॅन–पतंग के समान; चारि पोम्–तीव्र गति से घूमता; मी ऍऴिन्–ऊपर गया तो; उयरुम्–खूब ऊँचा उठकर जाता; ताऴिल्–नीचे चले तो; ताऴुम्–स्वयं नीचे जाता; विण् चॅल्लिल्–आकाश में जाता तो; चॅल्लुम्–खूब वहाँ जाता; अम्मा–(क्या ही आश्चर्य है) मैया। १८४४

क्षीरसागर को आग निकालते हुए जिसने मथा था, उसका पुत्र अंगद सहस्र अश्व-जुता, वज्रध्वनि व सुदृढ़ रथ जहाँ-जहाँ गया, वहाँ स्वयं पतंग के समान गया। अगर वह ऊपर उठता तो यह भी ऊपर उछलता। रथ नीचे जाता तो अंगद भी जाता। अंतरिक्ष में उड़ता तो यह भी आकाश मार्ग पर जाता। री मैया! कितनी बड़ी करामात की उसने। १८४४

अत्तॊऴिल् नोक्कि याङ्गु वानरत् तलैव रार्त्तार्
इत्तॊऴिल् कलुऴर् केयु मरिदॆन विमैयो रॅल्लाम्
कॆत्तलङ् गुलॆत्ता राहक् कळिर्रिनुम् बुरवि मेलुम्
तेत्तन विळैय वीरन् शरमॆनुन् दारै मारि 1845

अ तॊऴिल् नोक्कि–उसका कार्य देखकर; आङ्कु–तब; वानरर् तलैवर्–

वानरनायक; आर्त्तुतार्–आनन्दरव कर उठे; इ तॊळ्लिल्–यह करामात; कलुळर्क्केयुम् अरितु–गरुड़ के लिए भी कठिन है; ऎंन–ऐसा; इमैयोर् ऎल्लाम्–सभी व्योमलोकवासी देवों के; कै तलम् कुलैत्तार् आक–कंपित हाथों वाले हुए; कळिर्रितम् पुरवि मेलुम्–गजों और अश्वों पर; इळैय वीरन्–छोटे वीर के; चरम् ऎंनुम् तारै मारि–शर रूपी धारों की वर्षा; तंग्तन–जा लगी। १८४५

वानरनायकों ने अंगद की करामात देखकर आनन्दनर्दन किया। सभी देवों ने कहा कि यह काम गरुड़ के लिए भी कठिन है। तब लक्ष्मण ने गजों और अश्वों पर शर-वर्षा चलायी, जो उन पर जाकर लगे। उसको देखकर देवों के हाथ भी काँपने लगे। १८४५

मुळङ्गिन मुरशम् वेळ मुळङ्गिन मूरित् तिण्डेर्
मुळङ्गिन मुरणप् पाय्मा मुळङ्गिन मुळ्वॆण् शङ्गम्
मुळङ्गिन तनुवि नोदै मुळङ्गिन कळ्लुन् दारुम्
मुळङ्गिन तॊळ्लिप्पु मार्प्पु मुळङ्गिन मुहिलिन् मुम्मै 1846

मुरचम् मुळङ्किन–भेरियाँ बज उठीं; वेळम् मुळङ्किन–हाथी चिंघाड़े; मूरि तिण् तेर्–अति बलवान रथ; मुळङ्किन–ध्वनि कर उठे; पाय् मा–फाँद चलनेवाले अश्व; मुरण–विरोध में; मुळङ्किन–हिनहिनाये; मुळु वॆण् चङ्कम्–पूर्ण श्वेत शंख; मुळङ्किन–बज उठे; तनुविन् ओतै–धनु-रव; मुळङ्किन–उठे; कळ्लुम्–पायलों और; तारुम्–घुँघुरुओं के हारों ने; मुळङ्किन–ध्वनि निकाली; तॊळ्लिप्पुम्–वीरों की डाँटें और; आर्प्पुम्–नारे; मुकिलिन् मुम्मै–मेघों से तिगुने; मुळङ्किन–उठे। १८४६

युद्धक्षेत्र भेरियों की ठनक, हाथियों की चिंघाड़, सुदृढ़ रथों की घरघराहट, वाजियों का हिनहिनाना, पूर्ण शंखों की गूँज, धनु की टंकार, पायलों की ध्वनि, हारों के हिलने का शब्द और वीरों की डाँटों से भर गया। वीरों का शोर समुद्र-गर्जन से तिगुने ज़ोर का था। १८४६

करिपडक् कालाळ् वॆळ्ळङ् गळम्बडक् कलिन कालपोल्
परिपडक् कण्ड नर्रुम् पयम्बडप् पॆम्बॊर् रिण्डेर्
ऎरिपडप् पॊरुव बूमि यिडम्बड वॆदिर्न्द वॆल्लाम्
मुरिपडप् पट्ट वीरन् मुरट्कणै मूरि मारि 1847

कळम्–मैदान में; करि पट–हाथी मरे; कालाळ् वॆळ्ळम्–पदाति वीरों की बाढ़; पट–मरी; कलितम्–लगाम से युक्त; काल् पोल्–पवनगति: परि–अश्व; पट–मरे; कण्ट कूर्रुम्–जिसने देखा, वह यम भी; पयम् पट–डर गया; पॆम् पॊन्–चोखे स्वर्ण के; तिण् तेर्–सशक्त रथ; ऎरि पट–जल गये; पॊरुत पूमि–जहाँ युद्ध चला वहाँ की भूमि; इटम् पट–खाली स्थान बनी; ऎतिर्न्त ऎल्लाम्–सामना करनेवाले सभी; मुरि पट–मिटे; वीरन्–(ऐसा कहते हुए) वीर लक्ष्मण के; मुरण् कणै–सबल शरों की; मूरि मारि–विपुल वर्षा; पट्ट–हुई। १८४७

युद्ध के मैदान में गज मरे; पदाति वीरों की भीड़ मिटी; पवन-गति अश्व मिटे। यह देखकर यम भी भयभीत हुआ। स्वर्णमय सुदृढ़ रथ मिटे। युद्धभूमि वीरों आदि से रिक्त होने से बड़ी लगी। जो भी सामने आये, वे सब मर गये। वीर लक्ष्मण के सशक्त शरों की वर्षा अधिक हुई। (इसमें "पट्टु" के अनेक अर्थ में प्रयोग की विशेषता है।)। १८४७

मऩ्ऩवऩ् तम्बि मऱ्ऱव् विरावणऩ् महऩै नोक्कि
ऍऩ्ऩुऩक् किच्चै निऩ्ऱ वॆऱिकडऱ् ऱाऩै यॆल्लाम्
शिऩ्ऩपिऩ् ऩङ्गळ् पट्टाऱ् पॊरुदियो तिरिन्दु नीये
नऩ्ऩॆडुञ् जॆरुच्चॆय् वायो शॊल्लुदि नयन्द वॆऩ्ऱाऩ् 1848

मऩ्ऩवऩ् तम्पि–राजा राम के अनुज ने; मऱ्ऱु–फिर; अव् इरावणऩ् मकऩै–उस रावण के पुत्र को; नोक्कि–देखकर; उऩक्कु–तुम्हारी; ऍऩ्–क्या; इच्चै–इच्छा; ऍऱि कटल् ताऩै–तरंगें मारनेवाले सागर-सी सेना; ऍल्लाम्–सारी; चिऩ्ऩ पिऩ्ऩङ्कळ् पट्टाल्–छिन्न-भिन्न हो जाय तभी; पॊरुतियो–लड़ोगे क्या; तिरिन्तु–घूमकर; नीये–तुम ही; नल् नॆटु चॆरु–अच्छा लम्बा युद्ध; चॆय्वायो–करोगे; नयन्तनु–जो पसंद करते हो; चॊल्लुति–कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १८४८

तब श्रीराजाराम के छोटे भाई लक्ष्मण ने रावण के पुत्र को देखकर पूछा कि अब तुम्हारी इच्छा क्या है ? तरंगायमान सागर-सम सेना के तहस-नहस होने के बाद आकर लड़ोगे ? या अभी तुम्हीं युद्धभूमि में घूमकर फिर युद्ध करनेवाले हो ? तुम्हें जो पसन्द है, वह बताओ। १८४८

यावरुम् बॊरुव रल्ल रॆदिर्न्दुळ यानु नीयुम्
तेवरुम् पिऱरुङ् गाणच् चॆय्वदु शॆय्व वॆल्लाम्
कावल्वन् दुऩ्ऩैक् काप्पार् काक्कवु मनैयुम् वेऱे
कूविय ददनुक् कन्ऱो वॆऩ्ऱनऩ् कूऱ्ऱिऩ् वॆय्योऩ् 1849

कूऱ्ऱिऩ् वॆय्योऩ्–यम से भी क्रूर ने; यावरुम् पॊरुवर् अल्लर्–कोई भी युद्ध नहीं करता; तेवरुम् पिऱरुम् काण–देवों और अन्यों के देखते; चॆय्व ऍल्लाम्–जो किया जायगा, वह सब; ऍतिर्न्तुळ–परस्पर युद्ध में लगे; यानुम् नीयुम्–तुम और मैं; चॆय्वतु–जो करेंगे वही; कावल् वन्तु–रक्षा में आकर; उऩ्ऩै काप्पार्–तुम्हारी रक्षा करनेवाले; काक्कवुम्–करें तो भी; अमैयुम्–ठीक होगा; वेऱे–अलग; कूवियतु–बुलाया (जो मैंने तुम्हें); अतऩुक्कु अऩ्ऱो–उसी वास्ते न; ऍऩ्ऱऩऩ्–कहा। १८४९

यम से भी क्रूर अतिकाय ने उत्तर में कहा कि अन्य कोई भी लड़नेवाला नहीं। देवों और अन्यों के देखते जो युद्ध होगा वह मेरा और तुम्हारा द्वन्द्वयुद्ध होगा। पर हाँ—जो तुम्हारी सहायता में आएँगे उनकी

भी गणना कर ले सकते हो। अलग तुम्हें बुलाया इसी वजह से न ? । १८४९

उमैयत्ते काक्क मरुङ्ग् गुमैयोरु कूरत्त् काक्क
इमैयव रॅल्लाङ् गाक्क वुलहमो रेळ्ळुङ् गाक्क
शमैयुमुन् वाळ्क्कै यित्रो डत्रुतत् शङ्गमूदि
नमतुरुक् कोण्ड विल्लै नाणॅरिन् दुरुमि तारत्तात् 1850

उम् ऐयते काक्क–चाहे तुम्हारे भाई ही रक्षा करें; उमै ओरु कूरत्–उमा जिनका एक भाग हों; काक्क–शिव ही रक्षा करें; इमैयवर् ॲल्लाम्–सभी देव; काक्क–रक्षा करें; उलकम् ओर् एळुम् काक्क–सातों लोक सहायता दें; उन् वाळ्क्कै–तुम्हारा जीवन; इत्रोडु–आज ही; चमैयुम्–पूरा हो जाएगा; ॲन्रु–कहकर; तन् चङ्कम् ऊति–अपना शंख बजाकर; नमन् उरु कोण्ट–यम रूपी धनु को; विल्लै नाण् ॲरिन्तु–डोरे को टंकोरकर; उरुमिन् आर्त्तात्–वज्र के समान शोर मचाया। १८५०

तुम्हारी रक्षा (सहायता) तुम्हारा भाई करे; चाहे उमा को अपना अर्द्धभाग जिसने दे दिया है वह शिव करे। सारे देव, व सातों लोक ही क्यों न करें। तुम्हारा जीवन आज के साथ समाप्त हो जायगा। यह कहकर उसने शंख बजाया और यम रूपी धनु को टंकोरा। साथ-साथ वज्र के समान ज़ोर का शोर उठाया। १८५०

अन्नतु केट्ट मैन्द नरुम्बियत् मुरुवल् तोन्रच्
चॊन्नवर् वारार् यात्ते तोऱ्किनुन् दोऱ्कत् तक्केन्
ॲन्नैनी पोरुदु वॆल्लि नवरैयुम् वॆन्रि यॆन्ना
मिन्निनु मिळिर्व दाङ्गोर् वॆञ्जरङ् गोत्तु विट्टान् 1851

अन्नतु–वह; केट्ट–सुनकर; मैन्तत्–कुमार (लक्ष्मण); अरुम्पु इयल्–कली-सा; मुरुवल् तोन्र–मंदहास प्रगट करके; चॊत्तवर्–तुम्हारे कथित; वारार्–लोग नहीं आएँगे; यात्ते तोऱ्किनम्–मैं हार जाऊँ; तोऱ्क तक्केन्–हाँ हार जा सकता हूँ; ॲन्नै–मुझे; नी–तुम; पोरुतु–लड़कर; वॆल्लिन्–जीतोगे तो; अवरैयुम् वॆन्रि–उन्हें भी जीत गये; ॲन्ना–कहकर; मिन्निनुम्–बिजली से भी; मिळिर्वतु–चमकदार; ओर् वॆम् चरम्–एक गरम शर; आङ्कु–वहाँ; कोत्तु विट्टान्–संधानकर चलाया। १८५१

लक्ष्मण ने वह वचन सुनकर खिलती कली के समान मृदु हास छिटकाते हुए कहा कि तुम जिनकी चर्चा करते हो वे कोई नहीं आएँगे। शायद मैं भी हार जाऊँ, यह भी संभव है। अगर तुम मुझ पर विजय पा जाओ तो उन सभी को हरा चुके, समझो। यह कहकर लक्ष्मण ने बिजली से भी अधिक चमकदार और संतापक शर संधानकर छोड़ा। १८५१

विट्टवॆम्　बहऴि　तन्नै　त्तॆऱ्पितै　वॆदुप्पुन्　दोळान्
शुट्टदोर्　पहऴि　तन्नाल्　विशुम्बिडैत्　तुणित्तु　नीक्कि
अॆट्टिनो　डॆट्टु　वाऴि　यिलक्कुव　विलक्का　यॆन्नात्
तिट्टियिन्　विडत्तु　नाह　मनैयत　शिन्दि　यार्त्तान् 1852

वॆऱ्पितै–पर्वत को भी; वॆतुप्पुम् तोळान्–निर्बल करनेवाले कंधों का अतिकाय; विट्ट–(लक्ष्मण ने) जो छोड़ा; वॆम् पकऴि तन्नै–उस भयानक अस्त्र को; चुट्टतु–जलानेवाले; ओर् पकऴि तन्नाल्–एक अपूर्व शर से; विचुम्पिटै–आकाश में ही; तुणित्तु नीक्कि–खण्ड-खण्ड कर दूर करके; इलक्कुव–लक्ष्मण; विलक्काय्–इनको रोको; अॆन्ना–कहकर; तिट्टियिन् विटत्तु–"दृष्टिविष"; नाकम् अनैयत–के नागों के समान; अॆट्टितोटु अॆट्टु वाऴि–आठ और आठ अस्त्र; चिन्ति–चलाकर; आर्त्तान्–बड़ा शोर मचाया। १८५२

अतिकाय पर्वत को भी निर्बल कर सकनेवाले कधों का था। उसने लक्ष्मण-प्रेषित क्रूर शर को जलानेवाले एक अप्रतिम अस्त्र द्वारा आकाश में ही काटकर दूर किया। फिर लक्ष्मण से ललकारते हुए कहा कि अब जो छोड़नेवाला हूँ, उन शरों को रोको। यह कहकर उसने 'दृष्टिविष' नाम के नाग के समान सोलह वाण छोड़े और (अहंभाव-मिश्रित विश्वास की) हर्ष-ध्वनि निकाली। १८५२

आर्त्तव　नॆय्द　वाऴि　यनैत्तैयु　मरुत्तु　माऱ्ऱि
वेर्त्तोलि　वयिर　वॆङ्गोन्　मेरुवैप्　पिळक्कड्　पाल
तूर्त्तन　िरामन्　तम्बि　यवैयॆलाम्　दुणित्तुच्　चिन्दिक्
कूर्त्तन　पहऴि　कोत्तान्　कुबेरनै　याडल्　कॊण्डान् 1853

इरामन् तम्पि–श्रीराम के अनुज ने; आर्त्तु–मर्दन करके; अवन्–उसने; अॆय्त–जो चलाये; वाऴि अनैत्तैयुम्–उन सभी अस्त्रों को; अरुत्तु माऱ्ऱि–काटकर दूर करके; वेर्त्तु–स्वेद से भरकर; मेरुवै पिळक्कल् पाल–मेरु को तोड़नेवाले; ऑलि–शब्दयुक्त; वयिरम्–वज्र-सम; वॆम् कोल्–तापक शर; तूर्त्तनन्–अत्यधिक परिमाण में चलाये; कुपेरनै–कुबेर को; आटल् कॊण्टान्–जिसने हराया था उस अतिकाय ने; अवै अॆलाम्–उस सबको; तुणित्तु चिन्ति–काटकर विखेरकर; कूर्त्तन–तीक्ष्ण; पकऴि–अस्त्र; कोत्तान्–(डोरे से) लगाकर चलाये। १८५३

श्रीराम के भाई ने, आरव करके अतिकाय ने जितने बाण चलाये, उन सबको काटकर दूर किया। इतना परिश्रम करना पड़ा कि उनका शरीर पसीने से भर गया। उन्होंने मेरु को भी तोड़नेवाले, ध्वनियुक्त, वज्र-सम और संतापक शरों से भर दिया। कुबेरविजेता अतिकाय ने उन सबके टुकड़े करके दूर कर दिया। फिर उसने तीक्ष्ण शर डोरे से लगाकर छोड़े। १८५३

अँय्दत्त नॅय्द वॅल्ला मॅरिमुहप् पहळ्ि याले
कॉय्दत्त नहट्ट्रि यार्क्कु मरक्कनैक् कुरिशिल् कोबम्
शॅय्दत्तत् तुरन्दात् वॅय्वच् चॅयलत्त्त कणैयै वॅङ्गोल्
नॉय्दवन् कलशत्त् जीट्ट्रि नुळैवत्त पिळैप्पि लाव 1854

कुरिचिल्–प्रभु लक्ष्मण ने; अॅय्ततत्–प्रेषक अतिकाय के; अॅय्त अॅल्लाम्–प्रेषित सभी (शरों) को; अॅरि मुकम् पकळ्ियाले–अग्निमुखी शरों से; कॉय्ततत्–काटकर; अकट्ट्रि–दूर करके; आर्क्कुम् अरक्कतै–गरजते राक्षस को; कोपम् चॅय्ततत्–कोप करके; तॅयवम् चॅयल् अतृत–दैवी कर्म के समान; कणैयै तुरन्तात्–शरों को छोड़ा; वॅम् कोल्–क्रूर बाण; पिळैप्पिलात–अचूक; नॉय्ततु–सुगम रीति से; अवन् कवचम् कीट्ट्रि–उसके कवच को चीरकर; नुळैवत्त–घुसे। १८५४

प्रभु लक्ष्मण ने उसके द्वारा चलाये गये सारे शरों को अग्निमुखी (या आग्नेय) अस्त्रों से काटकर दूर किया। फिर कोप करके दैवीकृत्य-से अचूक अस्त्रों को गरजनेवाले राक्षस पर चलाया। वे क्रूर अस्त्र भी निशाने पर जाते हुए अनायास उसके कवच को भेदकर उसके शरीर में घुसने लगे। १८५४

नूऱ्होल् कवशङ् गीट्रि नुळैदलुङ् गुळैवु तोत्ट्रत्
तेट्रलान् दुणैयुन् वॅय्वच् चिलैनॅडुन् देरि नूत्ट्रि
आट्रिता नवुहा लत्तङ् गवनुडै यत्तीह मल्लाम्
कूरुहू ट्राक्कि यम्बाट् कोडियित् मेलुङ् गॉत्ट्रात् 1855

नूऱ कोल्–सौ अस्त्रों के; कवचम् कीट्ट्रि–कवच को भेदकर; नुळैतलुम्–घुसते ही; कुळैवु तोत्ट्र–शिथिल होकर; तेट्रलाम् तुणैयुम्–विश्रांत होते तक; तॅय्वम् चिलै–दिव्य धनु को; नॅडु तेरिल् ऊत्ट्रि–बड़े रथ पर टेककर; आट्रितात्–विश्राम किया (अतिकाय ने); अतु कालत्तु–उस समय; अङ्कु–वहाँ; अवतुटै अतीकम् अॅल्लाम्–उसकी सारी सेना को; अम्पाल्–अस्त्रों से; कूऱु कूऱु आक्कि–छिन्न-भिन्न करके; कोटियित् मेलुम्–करोड़ से अधिक को; कॉत्ट्रात्–(लक्ष्मण ने) मरवा दिया। १८५५

सौ अस्त्र कवच भेदकर घुसे तो अतिकाय को थकावट का अनुभव हुआ और वह बेहोशी दूर होने तक दिव्य धनु को बड़े रथ पर टेककर विश्राम लेने लगा। उस अवधि में लक्ष्मण ने उसकी सारी सेना को अपने बाणों से छिन्न-भिन्न करके करोड़ से अधिक वीरों का हनन कर दिया। १८५५

पुडैनित्ट्रार् पुरण्ड वारुम् पोहित्ट्र पुड्ग वाळि
कडैनित्ट्र कणिक्क वाङ्गोर् कणक्किला वारुड् गण्डात्
इडैनित्ट्र मयक्कन् दीरन्दा नॅन्दिय शिलैयत् कान्दित्
नॉडैनित्ट्र पहळि मारि मारियित् मुम्मै तूरत्तात् 1856

इटै निऩ्ऱ–बीच में हुई; मयक्कम् तीर्न्तान्–बेहोशी से मुक्त हुए अतिकाय ने; पुडै निऩ्ऱार्–पास में जो रहे उनके; पुरण्ट आऱुम्–लोटने का हाल और; पोकिऩ्ऱ–चलनेवाले; पुङ्कम् वाळि–(लक्ष्मण के) श्रेष्ठ शर; कटै निऩ्ऱु कणिक्क–पूर्ण रूप से गणना करने को; आङ्कु–वहाँ; ओरु कणक्किला–कोई हिसाब न रहा वह; आऱुम्–हाल भी; कण्टान्–देखा; एन्तिय चिलैयऩ्–धृत धनु का होकर; कान्ति–जलकर; तॊटै निऩ्ऱ–संधाने गये; पकळि मारि–शरों की वर्षा को; मारियिन् मुम्मै–वर्षा का तिगुना; तूर्त्तान्–चलाकर पाट दिया। १८५६

अतिकाय बीच में हुई थकावट से बाहर होश में आया। पास रहनेवालों के लोटने का हाल और लक्ष्मण के शर संख्या में नहीं आ रहे —यह बात दोनों को देखकर उसने अपना धनुष सँभाला और क्रोध के साथ वर्षा से तिगुने शरों को चलाकर सब जगहों को पाट दिया। १८५६

वाऩॆलाम् पहळि वाऩिऩ् वरम्बॆलाम् पहळि मण्णुम्
दाऩॆलाम् पहळि कुऩ्ऱिऩ् तलैयॆलाम् पहळि शार्न्दोर्
ऊऩॆलाम् पहळि येऩ्ऱो रुयिरॆलाम् पहळि वेलै
मीऩॆलाम् पहळि याह वित्तिनऩ् वॆहुळि मिक्कोऩ् 1857

वॆकुळि मिक्कोऩ्–अतिक्रुद्ध अतिकाय ने; वाऩ् ऍलाम्–आकाश भर में; पकळि–शर; वाऩिऩ् वरम्पु ऍलाम्–आकाश के छोरों भर में; पकळि–शर; मण्णुम् ताऩ् ऍलाम्–भूमि भर में; पकळि–शर; कुऩ्ऱिऩ् तलै ऍलाम्–पर्वतों की सारी चोटियों पर; पकळि–शर; चार्न्तोर् ऊऩ् ऍलाम्–प्राप्त सभी के शरीरों में; पकळि–शर; एतिर्न्तोर् उयिर् ऍलाम्–लड़ने आये उन सभी के प्राणों पर; पकळि–शर; वेलै मीऩ् ऍलाम्–समुद्र की सभी मछलियों पर; पकळि–शर; आक–हों ऐसा; वित्तिनऩ्–बो दिया। १८५७

अतिक्रुद्ध अतिकाय ने इस भाँति शर छोड़े कि आकाश, आकाश की सीमाएँ, पृथ्वी, पर्वतों के सिर, पास रहे लोगों के शरीर, सामना करनेवालों के प्राण, समुद्र की मछलियाँ सभी पर शर बो दिये गये। १८५७

मऱैन्दऩ तिशैहळ् ऍल्लाम् वाऩवर् मऩमे पोलक्
कुऱैन्दऩ शुडरिऩ् मुम्मैक् कॊळुङ्गदिर् कुविन्दोऩ् ऱोऩ्ऱै
अऱैन्दऩ पहळि वैय मदिर्न्ददु विण्णु मः(ह्)दे
निऱैन्दऩ पॊऱियिऩ् कुप्पै निमिर्न्ददु नॆरुप्पिऩ् कऱ्ऱै 1858

तिचैकळ् ऍल्लाम्–सारी दिशाएँ; मऱैन्तऩ–छिप गयीं; वाऩवर् मऩमे पोल–देवों के मन के ही समान; मुम्मै चुटरिऩ्–(सूर्य, चन्द्र और अग्नि) तीन तेजपुंजों की; कॊळु कतिर्–पुष्ट किरणें; कुऱैन्तऩ–क्षीण हो गयीं; पकळि–शर; कुविन्तु–अधिक होकर; ऒऩ्ऱु ऒऩ्ऱै–परस्पर; अऱैन्तऩ–टकराये; वैयम्–पृथ्वी; अतिर्न्ततु–थर्रा उठी; विण्णुम्–आकाश भी; अ:ते–उसी तरह; पॊऱियिऩ् कुप्पै–अंगारों

की राशियाँ; निऱैन्तत–भरपूर बनीं; नॆरुप्पित् कट्टै–आग के पुंज; तिमिर्न्ततु–अधिक बने। १८५८

अतिकाय के बोये (चलाये) अस्त्रों से दिशाएँ छिप गयीं। देवों के मन के ही समान सूर्य, चन्द्र और अग्नि निष्प्रभ हो गये। अस्त्र इतने अधिक चले कि आपस में टकराये। भूमि थर्रा गयी। आकाश की भी वही हालत हुई। अंगारों की राशियाँ अधिक बनीं। आग के पुंजों की अधिकता पायी गयी। १८५८

मुऱ्ऱिय दिन्ऱे यन्ऱो वानर मुळङ्गु ताऩै
मऱ्ऱिवन् तन्नै वॆल्ल वल्लनो वळ्ळल् तम्बि
कऱ्ऱवु काल नोडो कॊलैयिव नॊरुवन् कऱ्ऱ
विऱ्ऱॊऴि लॆन्नै यॆन्नत् तेवरुम् वॆरुव लुऱ्ऱार् 1859

मुळङ्कु–नर्दन करनेवाले; वानर तानै–वानरों की सेना; इन्ऱे–आज ही; मुऱ्ऱियतु अन्ऱो–समाप्त हो गयी न; वळ्ळल् तम्पि–करुणामय प्रभु के भाई; इवन् तन्नै–इसको; वॆल्ल वल्लनो–जीत सकेंगे क्या; इवन्–इसने; कॊलै कऱ्ऱतु–मारना सीखा; कालनोटो–क्या यम से; ऒरुवन्–अद्वितीय यह; कऱ्ऱ विल् तॊऴिल्–जो सीख चुका वह धनुकृत्य; ऎन्नै–कैसा; ऎन्न–कहकर; तेवरुम्–देव भी; वॆरुवल् उऱ्ऱार्–भय खा गये। १८५९

यह देख देव भी भयभीत हुए और संदेह करने लगे कि क्या नर्दन करनेवाले वानरों की सेना आज ही नहीं समाप्त हो जायगी ? प्रभु श्रीराम का भाई इसको जीत सकेगा क्या ? क्या इसने यह संहार का काम यम से सीखा था ? वे विस्मय करने लगे कि इसका सीखा धनुकृत्य भी कैसा (विस्मयकारी है) ? । १८५९

अङ्गद नॆऱ्ऱि मेलुन् दोळिनु माहत् तुळ्ळुम्
पुङ्गमे तोन्ऱा वण्णम् पोरुशरम् बलवुम् बोक्कि
वॆङ्गणै यिरण्डु मोन्ऱुम् वीरन्मे लेवि मेहच्
चङ्गमु मूदि विण्णोर् तलैपोदि रॆऱ्ऱिय वार्त्तान् 1860

अङ्कतन्–अंगद के; नॆऱ्ऱि मेलुम्–ललाट पर और; तोळिनुम्–कंधों पर; आकत्तु उळ्ळुम्–वक्ष में; पुङ्कमे तोन्ऱा वण्णम्–पुंख भी न दिखे ऐसा; पोर् चरम्–गड़नेवाले शरों; पलवुम्–अनेक को; पोक्कि–चलाकर; वॆम् कणै–अनर्थकारी शर; इरण्टुम् ऒन्ऱुम्–दो और एक को; वीरन् मेल्–वीर लक्ष्मण पर; एवि–चलाकर; मेकम् चङ्कमुम् ऊति–और मेघ-सम शंख को बजाकर; विण्णोर् तलै पोतिर् ऎऱ्ऱिय–देवों के सिरों को कँपाते हुए; आर्त्तान्–गर्जन किया। १८६०

अतिकाय ने अंगद के ललाट और कंधों पर और वक्ष में घुसनेवाले शरों को इस तरह गड़ा दिया कि उनके पुंख भी बाहर नहीं दिखे। फिर

उसने तीन भयानक बाणों को वीर लक्ष्मण पर चलाकर शंख बजाया और देवों के सिर कांप जाएँ ऐसा ऊँचा शोर मचाया। १८६०

वालिशेय् मेनि मेलु मऴैपॊरु कुरुदि वारि
कालुयर् वरैयिऱ् चॅङ्गे ऴरुविपो लॊऴुहक् कण्डान्
कोलॊरु पत्तु नूऱ्ऱार् कुदिरैयिन् तलैहळ् कॊय्दु
मेलवन् शिरत्तैच् चिन्दि विल्लैयुन् दुणित्तान् वीरन् 1861

काल् उयर् वरैयिल्–थोड़ी ऊँची तलहटी में; चॅम् केऴ अरुवि पोल्–लाल रंग की सरिताओं के समान; वालि चेय्–वालीपुत्र के; मेनि मेलुम्–शरीर पर भी; मऴै पोरु–वर्षा के समान; कुरुति वारि–रक्त-वारि को; ऒऴुक–बहता; कण्टान्–देखकर; वीरन्–वीर लक्ष्मण; ऒरु–अनुपम; पत्तु नूऱु कोलाल्–हज़ार बाणों से; कुतिरैयिन् तलैकळ् कॊय्तु–अश्वों के सिरों को काटकर; मेलवन्–सारथी का; चिरत्तै चिन्ति–सिर को अलग करके; विल्लैयुम् तुणित्तान्–धनु को भी खंडित किया। १८६१

कम ऊँचे पर्वत की तलहटी में लाल रंग की सरिता बहती हो जैसे अंगद के शरीर पर बारिश के समान रक्त की धारा बह रही थी। वीर लक्ष्मण ने वह देखा और हज़ार अनुपम बाणों से घोड़ों के और सारथी के सिरों को और धनु को काट दिया। १८६१

माऱ्ऱॊरु तडन्दे रेऱि माऱॊरु शिलैयुम् वाङ्गि
एऱ्ऱवल् लरक्कन् तन्मे लॅरिमुहक् कडवु ळॅन्बान्
आऱ्ऱल्शाल् पडैयै विट्टा नारिय नरक्क नम्मा
वेऱ्ऱुळ दाङ्ग वॅन्ना वॅय्यवन् पडैयै विट्टान् 1862

माऱ्ऱु–बदले में; ऒरु तटतेर् एऱि–एक विशाल रथ पर चढ़कर; माऱु ऒरु चिलैयुम् वाङ्कि–दूसरा एक धनुष भी लेकर; एऱ्ऱु–लड़ने आये; वल् अरक्कन् तन् मेल्–बलवान राक्षस पर; आरियन्–आर्य लक्ष्मण ने; ऎरि मुकम् कटवुळ् ऎन्पान्–अग्निमुख देव के; आऱ्ऱल् चाल्–सशक्त; पटैयै–अस्त्र को; विट्टान्–चलाया; अरक्कन्–राक्षस ने भी; ताङ्क–झेल लो; ऎन्ना–कहकर; वेऱु उळ–दूसरे; वॅय्यवन्–तेजपुंज सूर्य का; पटैयै–अस्त्र; विट्टान्–चलाया; अम्मा–आश्चर्य। १८६२

बदले में एक विशाल रथ पर चढ़कर दूसरे एक धनु को हाथ में ले जो लड़ने आया उस राक्षस पर आर्य लक्ष्मण ने कठोर आग्नेय अस्त्र को प्रेरित किया। अतिकाय ने बदले में दूसरे तेजपुंज सूर्यास्त्र को 'झेलो' कहते हुए चलाया। १८६२

पॊरुपडै यिरण्डुन् वम्मिऱ् पॊरुदन पॊरुद लोडुम्
ऎरिहणै युरुमिन् वॅय्य विलक्कुवन् तुरन्द मारुवॆ

उरुविऩ वुलप्पि लाद वुळेहिल ऩाऱ्ऱ लोयाऩ्
शॊरिहणै मळैयिऩ् मुम्मै शॊरिन्दऩऩ् ऱॆळिक्कुञ् जॊल्लाऩ् 1863

पॊरु पटै–टकरानेवाले अस्त्र; इरण्टुम्–दोनों; तम्मिऱ् पॊरुतल–आपस में टकराये; पॊरुतलोटुम्–टकराते समय; इलक्कुवऩ् तुरन्त–लक्ष्मण-प्रेषित; उरुमिऩ् वॆय्य–वज्र से भी संतापक; ऎरि कणै–आग्नेय अस्त्र; उलप्पु इलात–बिना मंद पड़े; मार्पै उरुविऩ–(अतिकाय के) वक्ष को भेद चले; उळैकिलऩ्–तब भी जो श्रांत नहीं हुआ; आऱ्ऱल् ओयाऩ्–और बलहीन नहीं बना उस; तॆळिक्कुम् चॊल्लाऩ्–डाँटते वचन वाले ने; चॊरि कणै–लक्ष्मण जितने अस्त्र बरसाते थे, उनसे; मुम्मै चॊरिन्तनऩ्–तिगुने चलाये। १८६३

दोनों विरोधी शर आपस में टकराये। तब लक्ष्मणप्रेरित वज्र से भी भयानक आग्नेय अस्त्रों ने अमोघ होकर अतिकाय के वक्ष को भेद दिया। तब भी वह शिथिल नहीं हुआ और निर्बल न होकर डाँट बताते हुए उसने लक्ष्मण के शरों के तिगुने बाण बरसाये। १८६३

पिऩ्निऩ्ऱार् मुऩ्ऩिऩ् ऱारैक् काणलाम् बॆऱ्ऱित् ताह
मिऩ्निऩ्ऱ वयिर वाळि तिऱन्दऩ मेऩि मुऱ्ऱुम्
अऩ्निऩ्ऱ निलैयि ऩाऱ्ऱल् कुऱैन्दिल ऩावि नीङ्गाऩ्
पॊऩ्निऩ्ऱ वडिम्बिऩ् वाळि मळैयॆऩप् पॊळियुम् विल्लाऩ् 1864

मिऩ् निऩ्ऱ–प्रकाशमय; वयिरम् वाळि–वज्र-सम बाणों ने; पिऩ् निऩ्ऱार्–(अतिकाय के) पीछे जो खड़े रहे; मुऩ् निऩ्ऱारै–(अतिकाय के) सामने जो खड़े रहे उन्हें; काणलाम्–देख सकें; पॆऱ्ऱित्तु आक–साध्य करते हुए; मेऩि मुऱ्ऱुम्–(अतिकाय के) शरीर भर को; तिऱन्तऩ–छेदकर खोल दिया; अऩ् निऩ्ऱ निलैयिऩ्–उस दशा में भी; आऱ्ऱल् कुऱैन्तिलऩ्–शक्ति में कम नहीं हुआ; आवि नीङ्काऩ्–प्राणहीन न हुआ; पॊऩ् निऩ्ऱ–स्वर्ण-सम; वटिम्पिऩ्–छोर वाले; वाळि–बाणों को; मळै ऎऩ–वर्षा के समान; पॊळियुम्–बरसानेवाला; विल्लाऩ्–धनुर्धर बना रहा। १८६४

लक्ष्मण के विद्युत् से चमकदार शरों ने अतिकाय के शरीर को इस तरह खोल दिया कि उसके पीछे रहनेवाले उसके आगे रहनेवालों को उस छेद से देख सकें। तब भी उसका बल क्षीण नहीं हुआ। उसका प्राणांत भी नहीं हुआ। और वह स्वर्ण के छोर वाले अस्त्रों को बरसात के समान चलाता ही रहा। १८६४

कोऩ्मुहऩ् दळ्ळि यळ्ळिक् कॊडुञ्जिलै नाणिऱ् कॊत्तुक्
काऩ्मुहम् कुळैय वाङ्गिच् चॊरिहिऩ्ऱ काळै वीरऩ्
पाऩ्मुहऩ् दॊऩ्ऱ निऱ्ऱु काऱ्ऱिऩुक् करशऩ् पण्डै
नाऩ्मुहऩ् पडैयि ऩऩ्ऱिच् चाहिल ऩम्ब वॆऩ्ऱाऩ् 1865

कोल् अळ्ळि अळ्ळि मुकन्तु–बाणों को बार-बार निकालकर; कॊटु चिलै–

नाशकारी धनु के; नाणिल् कोत्तु–डोरे पर रखकर; काल् मुकम्–बाज़ू के दंडों के अग्र भाग; कुऴैय–झुक जाएँ ऐसा; वाङ्कि–खींचकर; चॊरिकिन्ऱ–जो बरसाते रहे; काळै–ऋषभ-सम; वीरन् पाल्–वीर लक्ष्मण के पास; काऱ्ऱिनुक्कु अरचन्–वायु का राजा; मुकम् तोन्ऱ–मुख दिखाते हुए; निन्ऱु–खड़ा होकर; नम्प–श्रेष्ठ नायक; पण्टै–पुरातन; नान्मुकन्–चतुर्मुख के; पटैयिन् अन्ऱि–अस्त्र के सिवा; चाकिलन्–नहीं मरेगा; ऍन्ऱान्–ऐसा बोला। १८६५

धनुर्धर लक्ष्मण भी शरों को जल्दी-जल्दी लेकर नाशकारी धनु के डोरे से लगाकर दोनों छोरों को पास आने देते हुए डोरा खींचकर छोड़ रहे थे। उनके पास वायुदेव आया और बोला हे नायक! पुरातन चतुर्मुख ब्रह्मा के अस्त्र के सिवा और कोई अस्त्र इसको मार नहीं सकता। १८६५

नन्ऱॆन्न वुवन्दु वीरन् नान्मुहन् पडैयै वाङ्गि
मिन्ऱन्नि तिरण्ड वॆन्नच् चरत्तॊडुङ् गूट्टि विट्टान्
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तोळान् तलैयिनैक् कॊण्डव् वाळि
शॆन्ऱदु विशुम्बि नूडु तेवरुन् दॆरियक् कण्डार् 1866

वीरन्–वीर लक्ष्मण ने; नन्ऱु–अच्छा; ऍन्न उवन्तु–कहकर प्रसन्न होकर; नान्मुकन् पटैयै वाङ्कि–ब्रह्मास्त्र को लेकर; मिन् तन्नि तिरण्टतु ऍन्न–विद्युत् अलग पुंजीभूत हो गयी हो जैसे; चरत्तॊटुम् कूट्टि–अस्त्र के साथ मिलाकर; विट्टान्–चलाया; अ वाळि–वह शर; कुन्ऱिनुम् उयर्न्त तोळान्–पर्वत से भी उन्नत कंधों वाले (अतिकाय) के; तलैयिनै कॊण्टु–सिर को काट लेकर; विचुम्पिन् ऊटु–आकाश-मार्ग में; चॆन्ऱतु–गया; तेवरुम्–देवों ने भी; तॆरिय कण्टार्–साफ़ देखा। १८६६

वीर लक्ष्मण ने कहा 'अच्छा'। फिर उसने ब्रह्मास्त्र को लिया और विद्युत् के तेजपुंज के समान रहे अस्त्र के साथ प्रेरित कर दिया। वह अस्त्र पर्वत से भी उन्नत कंधों वाले अतिकाय के सिर को काट लेते हुए आकाशमार्ग से चला गया। देवों ने उसे प्रत्यक्ष देखा। १८६६

पूमऴै पॊऴिन्दु वानोर् पोयदॆम् बॊरुम लॆन्ऱार्
तामऴैत् तलऱि यॆङ्गुम् शरिन्दन ररक्कर् तऴित्
तीमैयुम् तहैप्पुम् नीङ्गित् तॆळिन्दद् कुरक्कुच् चेनै
कोमहन् तोळि निन्ऱुङ् गुदित्तनन् कॊऱ्ऱ विल्लान् 1867

वानोर्–व्योमवासियों ने; पू मऴै–पुष्पवर्षा; पॊऴिन्तु–बरसाकर; ऍम् पॊरुमल्–हमारा दुःख; पोयतु–छूट गया; ऍन्ऱार्–कहा; अरक्कर्–राक्षस; ताम् अऴैत्तु अलऱि–बुला-बुलाकर रोये और; ऍङ्कुम् चरिन्तनर्–सर्वत्र अस्त-व्यस्त होके; कुरक्कु चेनै–वानर-सेना; तीमैयुम्–संकट और; तकैप्पुम्–भ्रम; नीङ्कि–छोड़कर; तॆळिन्ततु–साफ़ हुए; कॊऱ्ऱम् विल्लान्–विजयी धनुर्धर; कोमकन्–वानरराजकुमार के; तोळि निन्ऱुम् कुतित्तनन्–कंधों से नीचे कूदे। १८६७

देवों ने पुष्पवर्षा की और राहत की साँस ली। 'हमारा संकट दूर हो गया' —कहा। राक्षस लोग नाम ले-लेकर उच्च स्वर में रोने लगे। वानर-सेना संकट और भ्रम से मुक्त हो गयी और वीरों का मन साफ़ हो गया। विजयी वीर वानरराजकुमार के कंधों से नीचे कूदे। १८६७

वॅन्दिऱ्र् चित्ति कण्ड वीडणन् वियन्द नॅञ्जन्
अन्दरच् चित्त राऱ्कु ममलेयुङ् गेट्टान् ऐयन्
मन्दिर शित्ति यन्न शिलैत्तॉऴिल् वलियी दायिन्
इन्दिर शित्ति नाऱ्कु मिऱुदिये यियैव वॅन्ऱान् 1868

वॅम् तिऱल्–कठोर बल की; चित्ति–सिद्धि को; कण्ट–जिसने देखा; वीटणन्–उस विभीषण ने; वियन्त नॅञ्चन्–विस्मित-मन; अन्तरम् चित्तर्–आकाशचारी सिद्धों की; आऱ्कुम्–शोर मचाने की; अमलेयुम् केट्टान्–ध्वनि को भी सुना; ऐयन्–महिमामय लक्ष्मण का; मन्तिर चित्ति अन्न–मंत्रसिद्ध-सा; चिलै तॉऴिल् वलि–धनुकृत्य बल; ईतु आयिन्–यही हो तो; इन्तिरचित्तितार्कुम्–इन्द्रजित् का भी; इऱुतिये इयैवतु–अन्त ही होगा; ऑन्ऱान्–कहा। १८६८

कठोर बल की सिद्धि को देख विभीषण विस्मयमन हुआ। उसने आकाश-चारी सिद्धों का जयघोष भी सुना। उसे विचार हुआ कि अगर लक्ष्मण का मंत्रसिद्ध-सा धनुकृत्य यह है तो इन्द्रजित् का अन्त भी निश्चय होनेवाला कार्य है। १८६८

एन्दॅऴि लाहत् तॅम्मु तिऱन्दन नॅन्ऱु नीनिन्
शान्दहन् माऱ्बु तिण्डोळ् नोक्किनित् तनुवॅ नोक्किप्
पोन्दहैक् कुरियै यन्ऱाल् पोहले पोह लॅन्ना
नान्वह मिन्नत् तेरै नरान्दहन् नडत्ति वन्दान् 1869

एन्तु ऍऴिल्–बड़ी सुन्दरता से विशिष्ट; आकत्तु–वक्षवाला; ऍम् मुन्–मेरा ज्येष्ठ; इऱन्ततन् ऍन्ऱु–मर गया सोचकर; नी–तुम; निन्–अपने; चान्तु अकल् माऱ्पु–चन्दनचर्चित विशाल वक्ष को; तिण् तोळ्–और सुदृढ़ कंधों को; नोक्कि–हेरते हुए; निन् तनुवै नोक्कि–अपने धनुष को देखते हुए; पोम् तकैक्कु–जाने के हक़ के; उरियै अन्ऱु–योग्य नहीं हो; पोकलै पोकल्–चलो मत, मत चलो; ऍन्ना–कहते हुए; नान्तकम् मिन्न–तलवार के चमचमाते; नरान्तकन्–नरांतक; तेरै नटत्ति–रथ को चलाता हुआ; वन्तान्–आया। १८६९

तब नरांतक यह ललकार का वचन कहते हुए रथ चलाता आया कि सुन्दर विशाल वक्ष वाला मेरा भाई मर गया। इस पर इतराकर अपना चंदनचर्चित वक्ष, सबल कंधों और धनु को घमण्ड के साथ निहारते हुए जाने अर्ह नहीं हो। चलो मत, मत चलो। उसकी तलवार चमचमा रही थी। १८६९

तेरिडै निऩ्ऱु कण्गळ् तीयुहच् चीऱ्ऱम् बॊङ्गप्
पारिडैक् किऴियप् पाय्न्दु पहलिडैप् परिदि यॆऩ्बाऩ्
ऊरिडै निऩ्ऱा लॆऩ्ऩक् केडह मॊरुहै तोऩ्ऱ
नीरुडै मुहिलिऩ् मिऩ्बोल् वाळोडु निमिर वन्दाऩ् 1870

कण्कळ् ती उक–आँखों के आग उगलते; चीऱ्ऱम् पॊङ्क–क्रोध के उमड़ते; तेर् इटै निऩ्ऱु–रथ में से; पार् किऴिय–भूमि को चीरते हुए; इटै पाय्न्तु–उसमें झपटकर; पकलिटै–दिन में; परिति ऍऩ्पाऩ्–सूर्य; ऊर् इटै–परिवेश-मध्य; निऩ्ऱाऩ्–रहा; ऍऩ्ऩ–जैसा; ऒरुकै–एक हाथ में; केटकम् तोऩ्ऱ–ढाल के रहते; नीर् उटै मुकिलिऩ्–जलपूर्ण मेघ में की; मिऩ् पोल्–बिजली के समान; वाळोटु–तलवार लिये; निमिर वन्ताऩ्–सिर ऊँचा किये आया। १८७०

आँखों से अंगारे निकालते हुए बहुत कोप के साथ वह रथ पर से भूमि को चीरता-सा नीचे कूदा। दिन में सूर्य परिवेश के साथ दिखता हो जैसे हाथ में ढाल ले ली। जलपूर्ण मेघ-मध्य विद्युत् के समान तलवार के साथ सिर उठाये हुए बढ़ आया। १८७०

वीशिऩ मरमुङ् गल्लुम् विलङ्गलुम् वीऱ्ऱु वीऱ्ऱाय्
आशैहळ् तोऱुम् शिन्द वाळिऩा लऱुत्तु माऱ्ऱिऩ्
तूशियु मिरण्डु कैयु मॆऱ्ऱियुञ् जुरुण्डु नीर्मेल्
पाशियि ऩॊदुङ्ग वन्दा ऩङ्गद ऩदऩैप् पार्त्ताऩ् 1871

वीचिऩ मरमुम्–(वानरों द्वारा) फेंके गये पेड़ और; कल्लुम् विलङ्कलुम्–चट्टानें और पर्वत; वीऱ्ऱु वीऱ्ऱाय्–अलग-अलग; आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; चिन्त–बिखर जाएँ; वाळिऩाल्–(ऐसा) तलवार से; अऱुत्तु–तोड़कर; माऱ्ऱि–दूर करके; तूचियुम्–सेना का अग्रभाग; इरण्टु कैयुम्–और दोनों पार्श्व; ऍऱ्ऱियुम्–और "मस्तक" का भाग; चुरुण्टु–मुड़कर; नीर् मेल् पाचियिऩ्–जल के ऊपर की काई की भाँति; ऒतुङ्क–हटकर; वऴि विट्टिट–मार्ग छोड़ते; वन्ताऩ्–(नरांतक) आया; अङ्कतऩ् अतऩै पार्त्ताऩ्–अंगद ने उसे देखा। १८७१

उस पर वानरों ने पेड़ों, चट्टानों और पर्वतों को फेंका। उसने उन्हें तलवार से काटकर चारों दिशाओं में अलग-अलग टुकड़ों में बिखेर दिया। वानर-सेना, आगे, पार्श्वों में और सेना के मस्तक भाग में सर्वत्र जल में काई के समान फटकर मार्ग देने लगी। वह आगे बढ़ता गया और अंगद ने उसे देखा। १८७१

मरमॊऩ्ऱु विरैविऩ् वाङ्गि वाय्मडित् तुरुत्तु वळ्ळल्
शरमॊऩ्ऱिऱ् कडिदु शॆऩ्ऱु ताक्किऩाऩ् ताक्कि ऩाऩ्ऱऩ्
करमॊऩ्ऱिल् तिरिव दाऱुङ् गाण्गिला ददऩैत् तऩ्गै
अरमॊऩ्ऱु वयिर वाळा लायिरङ् गण्डङ् गण्डाऩ् 1872

मरम् ऑन्ऱु–एक पेड़ को; विरैविऩ् वाङ्कि–शीघ्र लेकर; वाय् मटित्तु–अधर काटकर; उरुत्तु–कुपित होकर; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम के; चरम् ऑत्ऱिल्–एक अनुपम बाण के समान; कटितु चॆऩ्ऱु–शीघ्र जाकर; ताक्किताऩ्–आक्रमण किया; ताक्किताऩ् तऩ्–आक्रमणकारी के; करम् ऑत्ऱिल्–एक हाथ में; तिरिवतु–(एक पेड़ को) घूमते हुए; आरुम् काण्किलातु–कोई देख न पाए, ऐसा; अतऩै–उसे; तऩ् कै–(नरांतक) अपने हाथ के; अरम् ऑत्ऱु–रेती से पैनाये गये; वयिरम् वाळाल्–वज्र-खड्ग से; आयिरम् कण्टम्–हज़ार खण्डों में; कण्टात्–छेद डाला। १८७२

उसने एक पेड़ को जल्दी उठाया, अधर काटकर ग़ुस्से के साथ प्रभु श्रीराम के शर के समान तेज़ जाकर नरांतक पर आक्रमण किया। अंगद के हाथ में जो तरु घूम रहा था उसके, कोई न देख पाए, इतनी तेज़ी से नरांतक ने अपनी रेती से पैनायी गयी तलवार से हज़ार खण्ड बना दिये। १८७२

अव्विडै वॆरुङ्गै निऩ्ऱ वङ्गद ऩाण्मै यऩ्ऱाल्
इव्विडै पॆयर्व लॆऩ्ऩा विमैयिडै यॊवुङ्गा मुऩ्ऩर्
वॆव्विड मॆऩ्ऩप् पॊङ्गि यवऩिडै यॆऱिऩ्द वीच्चुत्
तव्विड वुरुमिऱ् पुक्कु वाळॊडु तऴुविक् कॊण्डाऩ् 1873

अव् इटै–तब; वॆरु कै–ख़ाली हाथ; निऩ्ऱ–जो खड़ा रहा वह; अङ्कतऩ्–अंगद ने; इव् इटै पॆयर्तल्–यहाँ से हटना; आण्मै अऩ्ऱु–पौरुष नहीं है; ऎऩ्ऩा–सोचकर; इमै इटै–पलक की देर; ऒतुङ्का मुऩ्ऩर्–बीते इसके पहले ही; वॆम् विटम्–भयंकर विष; ऎऩ्ऩ–के समान; पॊङ्कि–भभककर; अवऩ् इटै–उस (नरांतक) की; ऎऱिऩ्त वीच्चु–की हुई वार; तव्विट–ख़ाली जाए ऐसा; उरुमिल् पुक्कु–गाज के समान पास जाकर; वाळॊटु–तलवार के साथ; तऴुविक् कॊण्टात्–आलिंगन कर लिया। १८७३

तब अंगद ने सोचा कि दूसरे पेड़ की खोज में जाना वीरता पर कलंक लायगा। पल भर के अंदर भयंकर विष के समान भभककर नरांतक की तलवार की वार को ख़ाली करते हुए अपने को बचा लिया और अशनि के समान जाकर उसे उसकी तलवार के साथ लपेट लिया। १८७३

अत्तॊऴिल् कण्ड वाऩो रावलङ् गॊट्टि यार्त्तार्
इत्तॊऴि लिवऩुक् कल्ला लीशऱ्कु मियला दॆऩ्बार्
कुत्तॊऴित् तवऩ्ऱै वाळ्तऩ् कूरुहिर्त् तडक्कै कॊण्डाऩ्
ऒत्तिरु कूऱाय् वीऴ वोशिवा ऩुलैय वार्त्ताऩ् 1874

अ तॊऴिल्–वह कार्य; कण्ट वाऩोर्–देखनेवाले देवों ने; आवलम् कॊट्टि–ताली पीटकर; आर्त्तार्–शाबाशी का घोष किया; इ तॊऴिल्–यह कार्य; इवऩुक्कु अल्लाल्–इसे छोड़कर; ईचऱ्कुम् इयलातु–ईश्वर के लिए भी सम्भव नहीं;

ऍऩ्पार्-कहते; कुत्तु ऒऴित्तु-घूँसा मारना छोड़कर; अवऩ्-उस (नरांतक) के; कै वाळ्-हाथ की तलवार को; तऩ् कूर् उकिर्-अपने तीक्ष्ण नाखूनों के; तट कै-विशाल हाथ में; कॊण्टाऩ्-छीन लेकर; ऒत्तु इरु कूराय् वीऴ-दो समान भागों में गिरें ऐसा; वीचि-चलाकर; वाऩ् उलैय-आकाश अस्त-व्यस्त हो जाए ऐसा; आर्त्ताऩ्-ज़ोर का घोष उठाया। १८७४

देवों ने यह देखकर ताली बजायी और वाहवाही दी कि ऐसा काम इसको छोड़कर ईश्वर के लिए भी साध्य नहीं। अंगद ने घूँसा मारना छोड़कर नरांतक की तलवार को छीन लिया। अपने तेज़ नाखून वाले हाथों से उसे दो खण्डों में तोड़ा और फेंककर उच्च घोष किया। १८७४

कूर्मत्तिऩ् वॆरिनिऩ् वैत्तु वाऩव रमुदङ् गॊण्ड
नीर्मत्ति ऩिमिर्न्द तोळाऩ् निऱैमतुत मदुवैत् तेक्कि
ऊर्मत्त मुण्डा लऩ्ऩ मयक्कत्ता ऩुरुमैत् तिऩ्बाऩ्
पोर्मत्त ऩॆऩ्बाऩ् वन्दाऩ् पुहर्मत्तप् पूट्कै मेलाऩ् 1875

कूर्मत्तिऩ्-कछुए की; वॆरिनिऩ् वैत्तु-पीठ पर रखकर; वाऩवर् अमुतम् कॊण्ट-देवों की अमृत-प्राप्ति का हेतु जो रहा; नीर् मत्तिऩ्-उस पयमथनसाधन (मन्दर पर्वत) के समान; निमिर्न्त तोळाऩ्-उन्नत कंधोंवाला और; निऱै मत्तम्-पूर्ण नशा देनेवाले; मतुवै तेक्कि-मद्य को अघाते हुए पीकर; ऊर् मत्तम् उण्टाल् अऩ्ऩ-धतूरा खा लिया हो इस भाँति; मयक्कत्ताऩ्-उन्मत्त; उरुमै तिऩ्पाऩ्-वज्र को भी खा सकनेवाला; पोर् मत्तऩ् ऍऩ्पाऩ्-युद्धसमर्थ; मत्तऩ् ऍऩ्पाऩ्-रणमत्त नाम का राक्षस; पुकर्-मुख पर चित्तियों वाले; मत्तम्-मत्त; पूट्कै मेलाऩ्-हाथी पर सवार; वन्ताऩ्-आया। १८७५

तब रणमत्त नाम का मस्त वीर मुख पर चित्तियों-सहित रहनेवाले एक मत्त हाथी पर सवार हो आया। उसके कंधे उस मन्दर पर्वत से भी उन्नत थे, जिसे उस दिन देवों के अमृत निकालने के लिए क्षीरसागरमथनार्थ कच्छप की पीठ पर रखा गया था। खूब नशा करनेवाली सुधा का खूब पान करके, धतूरा खाकर जैसे उन्मत्त अवस्था में वज्र को भी खा सकने वाला वह युद्धोन्मत्त राक्षस आया। १८७५

काऱ्ऱऩ्ऱेल् कडुमै यॆऩ्ऩाङ् गडलऩ्ऱेऩ् मुऴक्क मॆऩ्ऩाम्
कूऱ्ऱऩ्ऱेल् कॊलैमऱ् ऱॆऩ्ऩाम् उरुमऩ्ऱेल् कॊडुमै यॆऩ्ऩाम्
शीऱ्ऱऩ्बा ऩऩ्ऱेल् चीऱ्ऱम् वेऱॆऩ्ऱु तॆरिप्प वॆङ्गे
माऱ्ऱऩ्ऱे मलैमऱ् ऱॆऩ्ऩे मत्तऩ्ऱऩ् मत्त याऩै 1876

मत्तऩ् तऩ्-रणमत्त का; मत्त याऩै-मस्त हाथी; काऱ्ऱु अऩ्ऱेल्-वायु नहीं हो तो; कटुमै ऍऩ् आम्-तेज़ी क्या होगी; कटल् अऩ्ऱेल्-समुद्र नहीं हो तो; मुऴक्कम् ऍऩ् आम्-गर्जन क्या होगा; कूऱ्ऱु अऩ्ऱेल्-यम नहीं हो तो; कॊलै मऱ्ऱु ऍऩ् आम्-हत्या कैसे होगी; उरुम अऩ्ऱेल्-वज्र न हो तो; कॊटुमै ऍऩ्ऩाम्-क्रूरता

कहाँ से होगी; चीऱ्ऱम् तान् अन्ऱेल्–क्रोध ही नहीं हो तो; वेऱु ऑन्ऱु–दूसरा कोई; चीऱ्ऱम् तॅरिप्पतु अॅन्के–क्रोध दिखाता कहाँ; मलै माऱु अन्ऱे–पर्वत इसकी सानी नहीं रख सकता; मऱ्ऱु–फिर; ॲन्ऩे–क्या कहा जाय। १८७६

रणमत्त का हाथी पवन, समुद्र, यम, वज्र और क्रोध सबका सम्मिलित रूप था। नहीं तो क्रमशः इतनी तेजी, इतना गर्जन, इतना घातक गुण, इतनी क्रूरता और इतना बेजोड़ क्रोध कहाँ से आता ? उसे पर्वत से उपमित करना भी ठीक नहीं है। फिर क्या कहा जाय ? । १८७६

वेहमाक् कविहळ् वीशुम् वॅऱ्पिनम् विळुव मेन्मेल्
पाहर्काऱ् चिलैयिऱ् ऱूण्डु मुण्डैया मॅन्नवुम् बऱ्ऱा
माहमा मरङ्ग ळॅल्लाङ् गडात्तिडै वण्डु शोप्पि
आहितु माम दन्ऱेऱ् करुम्बॅन्ऱे यरैय लामाल् 1877

कविकळ्–वानरों ने; वेकमा वीचुम्–तेजी से जो फेंके; वॅऱ्पिनम्–वे पर्वत-समूह; मेन्मेल् विळुव–उत्तरोत्तर गिरे; पाकर् काल्–महावतों के पैरों पर; चिलैयिल् तूण्टुम्–धनु से चलाये जानेवाले; उण्टै आम्–गुलेले हैं ऐसा भी; ॲन्नवुम् पऱ्ऱा–कहने योग्य नहीं; माकम् मा मरङ्कळ् ॲल्लाम्–(और) आकाशोन्नत बड़े तरु सब; कटात्तिटै–(गज के) गंडस्थल पर से; वण्टु चोप्पि आकितुम् आम्–भ्रमरों को भगानेवाले हो सकें तो हो सकते हैं; अतु अन्ऱेल्–वह नहीं तो; करुम्पु ॲन्ऱे–ईख ही; अरैयलाम्–कहे जा सकते हैं। १८७७

वानर जिन पर्वतों को जल्दी-जल्दी फेंकते थे, उनमें महावतों पर गुलेलों के समान लगने की शक्ति भी नहीं थी। आकाशस्पर्शी जो बड़े-बड़े वृक्ष फेंके गये वे हाथियों के गालों से मक्खियों को उड़ानेवाले उपकरण कह सकते हैं। अगर वह उपमा ठीक नहीं हो तो ईख कहा जा सकता है। १८७७

कालिडैप् पट्टुम् मातक् कैयिडैप् पट्टङ् गाल
वालिडैप् पट्टुम् वॅय्य मरुप्पिडैप् पट्टुम् माण्डु
नालिडैप् पट्ट शेनै नायहन् तम्बि यॅय्द
कोलिडैप् पट्ट वॅल्लाम् पट्टवु कुरक्कुच् चेनै 1878

कुरक्कु चेनै–वानर-सेना; काल् इटै पट्टुम्–(उस गज के) पैरों के नीचे दबकर; मातम्–बड़ी; कै इटै पट्टुम्–सूंड़ में फँसकर; काल वाल् इटै पट्टुम्–और पूंछ से फंसकर; वॅय्य–भयानक; मरुप्पु इटै पट्टुम्–दाँतों के मध्य फँसकर; माण्टु–मरकर; नायकन् तम्पि ऍय्त–लोकनायक श्रीराम के छोटे भाई के द्वारा चलाये गये; कोल् इटै पट्टतु ॲल्लाम्–शरों में फँसे; नाल् इटै पट्ट–चार भागों में विभक्त; कुरक्कु चेनै–वानर-सेना के अंश; माण्टु–मरे और; पट्टतु–जितना होना है उतना; ॲल्लाम् पट्टतु–संकट-ग्रस्त हुए। १८७८

वानर-सेना मत्त गज के पैरों, सडौल सूंड, यम-सी पूंछ और भयंकर

दाँतों में फँसकर मरी और उस चार तरह से मरनेवाली सेना की स्थिति
उस राक्षस-सेना की-सी रही जो श्रेष्ठ नायक श्रीराम के भाई लक्ष्मण के
शरों का निशाना बनी हुई संकट उठाती रही। १८७८

तन्बडै पट्ट तन्मै नोक्कितान् तरिक्कि लामै
अन्बडै युळ्ळत् तण्ण लङ्गियिन् पुतल्व नाऴि
वन्बडै यनैय दाङ्गोर् मरामरञ् जुऴऱ्ऱि वन्दान्
पिन्बडै शेल्ल नळ्ळार् पॆरुम्बडै यिरिन्दु पेर 1879

तन् पटै–अपनी सेना का; पट्ट तन्मै–हुआ हाल; नोक्कितान्–देखा जिसने था, वह; अन्पु अटै–प्रेम-सहित; उळ्ळत्तु अण्णल्–मन वाला उदार; अङ्कियिन् पुतल्वन्–अग्नि का पुत्र नील; तरिक्किलामै–न सह सककर; आङ्कु–वहाँ; ओर्–एक; मरामरम्–सालवृक्ष को लिये हुए; पटै पिन् चॆल्ल–सेना के पीछे आते; नळ्ळार् पॆरु पटै–शत्रुओं की बड़ी सेना के; इरिन्तु पेर–तितर-बितर हट जाते; आऴि वन्पटै–चक्र के सबल आयुध; अनैयतु–को जैसे; चुऴऱ्ऱि वन्तान्–घुमाता आया। १८७९

तब अग्निकुमार दयापूर्ण नील ने अपनी सेना की स्थिति देखी तो बेचैन होकर उसने एक सालवृक्ष उठाया और वह सशक्त चक्रायुध के समान घुमाता हुआ बढ़ आया जिससे शत्रुओं की सेना तितर-बितर हुई। वानर-सेना उसके साथ उसके पीछे आयी। १८७९

शेऱलुङ् गळिऱ्ऱिन् मेलान् तिण्डिऱ लरक्कन् शॆव्वे
आऱिरण् डम्बि नालन् नॆडुमर मऱुत्तु वीऴ्त्तान्
वेऱोरु कुन्ऱु नीलन् वीशिना नदनै विण्णिन्
नूऱुवॆम् बहऴि याले नुऱुक्कितान् कळिऱु नूक्कि 1880

चेऱलुम्–(नील के) पास आने पर; कळिऱ्ऱिन् मेलान्–गज पर जो सवार था, उस; तिण् तिऱल् अरक्कन्–अति बलवान राक्षस ने; चॆव्वे–सीधे; आऱु इरण्टु अम्पिनाल्–बारह बाणों से; अ नॆटु मरम्–उस जड़े वृक्ष को; अऱुत्तु वीऴ्त्तान्–काट गिराया; नीलन्–नील ने; वेऱु ओरु कुन्ऱम्–दूसरा एक पर्वत; वीचितान्–फेंका; अततै–उसको; कळिऱु नूक्कि–हाथी को चलाते-चलाते; नूऱु वॆम् पकऴियाले–सौ भयंकर शरों से; विण्णिन्–आकाश में ही; नुऱुक्कितान्–टुकड़ों में काट दिया। १८८०

नील के आने पर हाथी पर जो रहा उस अति बलवान राक्षस ने सीधे बारह शर चलाकर उस बड़े तरु को काटा और भूमि पर गिराया। नील ने दूसरे एक पर्वत को ले फेंका। राक्षस ने हाथी को बढ़ाते हुए आते-आते सौ भयानक शर चलाकर उस पर्वत को आकाश में ही चूर-चूर कर दिया। १८८०

पिन्नॅडुङ् गुन्ड्रन् देडिप् पॅयर्हुवान् पॅयरा वण्णम्
पॉन्नॅडुङ् गुन्ड्रज् जूळ्न्द पॉरिवरि यरवम् बोल
अन्नॅडुङ् गोब यानै यमररुम् वयर्प्प वङ्गि
तन्नॅडु महनैच् चुड्रिप् पिडित्तदु तडक्कै नीट्टि 1881

पिन्–उसके वाद; नॅटु कुन्ड्रम्–बड़े पर्वत को; तेटि–खोजते हुए; पॅयर्कुवान्–जानेवाला (नील); पॅयरा वण्णम्–न आ सके ऐसा; पॉन् नॅटु कुन्ड्रम्–स्वर्ण के, वृहत् मेरु को; चूळ्न्त–जिसने आवृत किया उस; पॉरि वरि–चित्तियों और लकीरों से युक्त; अरवम् पोल–सर्प (वासुकि) के समान; अ नॅटु कोपम् यानै–उस बड़े क्रुद्ध हाथी ने; अमररुम् वॅयर्प्प–देवों को भी पसीना-पसीना होने को मजबूर करते हुए; अङ्कि तन्–अग्नि के; नॅटु मकनै–उत्तम पुत्र नील को; तट कै नीट्टि–बड़ी सूंड़ को बढ़ाकर; चुड्रि पिटित्ततु–लपेट पकड़ लिया। १८८१

फिर नील और एक बड़े पर्वत की खोज में जाए यह असम्भव करते हुए उस बड़े और क्रुद्ध गज ने स्वर्णमेरु पर लपेटे, बिंदियों और लकीरों से युक्त वासुकी सर्प के समान अपनी सूंड़ से अग्निपुत्र को लपेटकर पकड़ लिया। इनको देखकर देवगण भी भय के कारण स्वेदयुक्त हो गये। १८८१

ऑडुङ्गिन तुरमु माड्रऱ् लूड्रमु मुयिरु मॅन्नक्
कॉडुम्बडै वयिरक् कोट्टाऱ् कुत्तुवान् कुऱिक्कुङ् गालै
नॅडुङ्गैयुन् दलैयुम् बिय्या नॉय्दिनि निमिर्न्दु पोनान्
नडुङ्गिन रक्कर् विण्णोर् नन्ड्रुनन् ड्रॅन्न नक्कार् 1882

उरमुम्–बल; आड्रल् ऊड्रमुम्–और विक्रम का साहस; उयिरुम्–और प्राण; ऑटुङ्कितन्–क्षीण हो गये उसके; ॲन्न–ऐसी स्थिति पैदा करते हुए; कॉटु पटै–वक्र छुरे के समान; वयिरम् कोट्टाल्–वज्रवलय-भूषित दाँतों से; कुत्तुवान्–भोंकने के लिए; कुऱिक्कुम् कालै–जब गज तैयारी कर रहा था तब; नॅटु कैयुम् तलैयुम् पिय्या–लम्बी सूंड़ और सिर को नोच लेकर; नॉय्तितिन्–अनायास; निमिर्न्तु पोनान्–जल्दी ऊपर उठ गया; अरक्कर्–राक्षस; नटुङ्कितर्–काँपे; विण्णोर्–व्योमवासी; नन्ड्रु नन्ड्रु–खूब-खूब; ॲन्न–कहकर; नक्कार्–हँसे। १८८२

फिर वह हाथी नील के बल, साहस और प्राणों की हानि करने को अपने वक्र छुरे के समान वज्र-वलय-भूषित दाँतों को उसके शरीर में चुभाने-वाला ही था कि नील ने उसकी लंबी सूंड़ और सिर को नोच लिया और उन्हें लेकर अनायास ऊपर चला गया। यह देखकर राक्षस काँप गये और देव खूब! खूब! कहकर हँसे। १८८२

तडैत्तलै युड्रा नील नॅन्बदोर् कालन् दन्निल्
निरैवलै वळङ्गज जोरि नीत्ततु नॅडुङ्गुन् ड्रॅन्नक्

कुरैत्तलै वेऴम् वीऴ विशुम्बिन्मेऱ् कॊण्डु निन्ऱान्
पिऱैत्तलै वयिर वाळि मऴैयॆनप् पॆय्युम् विल्लान् 1883

नीलन्–नील; तरै तलै उऱ्ऱान्–भूमि पर आया; ऍन्पतु ओर् कालम् तन्निल्–कहने के समय के अन्दर; निरै तलै–अधिक सिरों को; वऴङ्कुम्–बहा ले जानेवाले; चोरि नीत्तत्तु–रक्त-प्रवाह में; नॆट्टु कुन्ऱु ऍन्न–बड़े पर्वत के समान; तलै कुरै–सिर से हीन; वेऴम् वीऴ–हाथी अब गिरा; विचुम्पिन् मेल् कॊण्डु–आकाश में ऊपर; निन्ऱान्–खड़ा होकर; पिरै तलै–अर्द्धचन्द्राकार; वयिरम् वाळि–वज्रबाण; मऴै ऍन्न–वर्षा के समान; पॆय्युम् विल्लान्–बरसानेवाले धनु का (बना रणोन्मत्त)। १८८३

नील के नीचे भूमि पर आने के समय के अंदर बड़े पर्वत के समान सिरहीन हाथी उस रक्त की नदी में गिर गया, जिसमें कि अनेक सिर बहते जा रहे थे। तब उस पर जो रहा वह रणमत्त आकाश में गया और अर्द्धचन्द्र बाणों को छोड़नेवाले धनु को हाथ में ले लिया। १८८३

वाङ्गिय शिरत्तिन् मऱ्ऱै वयिरवान् कोट्टै वव्वि
वीङ्गिय विशैयि नील नरक्कन्मेऱ् चॆल्ल विट्टान्
आङ्गव नवऱ्ऱै याण्डो रम्बिना लऱुत्तो रम्बाल्
ओङ्गल्पोऱ् पुयत्ति नान्ऱ नुरत्तिडै यौळिक्क वॆय्दान् 1884

नीलन्–नील ने; वाङ्किय चिरत्तिन्–जिस सिर को उखाड़ लिया था, उस सिर के; मऱ्ऱै वयिरम् वाल् कोट्टै–उस वज्र-सम श्वेत दाँत को; वव्वि–उखाड़ लेकर; वीङ्किय विचैयिन्–बहुत बढ़ी हुई तेज़ी से; अरक्कन् मेल्–राक्षस पर; चॆल्ल विट्टान्–चलाते हुए छोड़ा; आङ्कु–तब; अवन्–उस राक्षस ने; अवऱ्ऱै–उन दाँतों को; आण्टु–वहाँ; ओर् अम्पिनाल्–एक बाण से; अऱुत्तु–काटकर; ओर् अम्पाल्–(दूसरे) एक शर से; ओङ्कल् पोल् पुयत्तिनान् तन्–पर्वत-सम भुजा वाले के; उरत्तिटै–वक्ष में; ऒळिक्क–छिप जाये ऐसा; ऍय्तान्–चलाया। १८८४

नील ने अपने द्वारा उखड़े हुए गजसिर के दाँतों को निकालकर उन्हें बहुत तेज़ी से राक्षस पर फेंका। राक्षस ने उन्हें एक अस्त्र से काटा और दूसरे एक अस्त्र को इस क़दर तेज़ी से चलाया कि वह जाकर पर्वत-स्कन्ध नील के शरीर में छिप गया। १८८४

ऍय्वदु कालं माह विऴिन्दिल दियानै यॆन्नक्
कैयुडै मलैयॊन् ऱेरिक् काऱ्ऱिनक् कडावि वन्दान्
वॆय्यव नवनैत् तानु मेऱ्कॊळा विल्लि नोडु
मॊय्म्बॆरुङ् गळिऱ्ऱि निट्टान् मुन्मदक् कळिऱ्ऱिन् मुन्नर् 1885

ऍय्त अतु कालम् आक–प्रेषण के उस समय; यानै विऴिन्तिलतु–हाथी मरा नहीं; ऍन्न–ऐसा लोग सोचें इस भाँति; कै उटै मलै ऒन्ऱु–सूँड़-सहित एक पर्वत

पर; एरि–चढ़कर; कारॣरु अँत–वायु के समान; कटावि वन्तान्–चलाता आया; वॅय्यवन्–क्रूर (नील) ने; अवनै तानुम्–उसको भी; विल्लिनोटु–धनु के साथ; मॊय् पॅरु कळिऱ्ऱिन् मेल्–बलवान और बड़े हाथी से ऊपर; कॊळा–उठाकर; मु मतम् कळिऱ्ऱिन् मुन्नर्–त्रिमदगज के आगे; इट्टान्–डाल दिया। १८८५

शर चलाते-चलाते वह दूसरे हाथी पर इतनी जल्दी सवार हो गया कि लोगों को यह भ्रम हो जाये कि पहला हाथी मरा नहीं। उस हाथी को पवनगति में चलाता आया। क्रूर वीर नील ने उसे उसके कठोर धनु के साथ बड़े और बलवान हाथी के ऊपर से उठाया और त्रिमदगज के सामने डाल दिया। १८८५

इट्टव नवनि निन्ऱु मॅळुवदन् मुन्न मियानै
कट्टमै वयिरक् कोट्टार् कळप्पड वीऴ्त्तिक् कालाल्
अँट्टिवन् तडक्कै तन्ता लॅडुत्तँङ्गुम् विशैयिन् वीशप्
पट्टिलन् तानॆ तन्बोरक् करियिनैप् पडुत्तु वीऴ्त्तान् 1886

इट्टवन्–डाला जो गया उसके; अवनि निन्ऱुम्–भूमि पर से; अॅळुवतन् मुन्नम्–उठने से पहले; यानै–हाथी; कट्टु अमै–वलय-सहित; वयिरम् कोट्टाल्–वज्र-सम दाँतों से; कळम् पट–भूमि पर गिर जाये ऐसा; वीऴ्त्ति–गिराकर; कालाल् अँट्टि–पैरों से कुचलकर; वल् तट कै तन्नाल्–कठोर बड़ी सूंड़ से; अँटुत्तु–उठाकर; अँङ्कुम् विचैयिन् वीच–कहीं तेजी से उछालने पर; पट्टिलन्–बिना मरे; तन् पोर् करियिनै–अपने युद्ध-गज को; तानॆ पटुत्तु–स्वयं मारकर; वीऴ्त्तान्–गिराया। १८८६

नीचे पड़े उसको नशे में रहे हाथी ने उसके उठने से पहले ही अपने वलयभूषित दाँतों से ढकेलकर उसे भूमि पर गिराया और पैरों से कुचला और अपनी बड़ी सूँड़ में उठाकर चारों ओर तेज़ी से घुमाने के बाद दूर फेंक दिया। इतने पर भी राक्षस मरा नहीं। पर ग़ुस्से में आकर उसने अपने हाथी को आप ही मारकर धराशायी कर दिया। १८८६

तन्करि तानॆ कॊन्ऱु तडक्कैयाऱ् ऱडिन्दु वीऴ्त्तुम्
मिन्करि यॆन्न मिन्नु मॅयिऱ्ऱिनान् वॅहुळि नोक्किप्
पॊन्करि यॅन्नङ् गणगळ् पॊऱियुह नीलन् पुक्कान्
वन्कर मुरुक्कि मार्बिऱ् कुत्तिनन् मत्तन् माण्डान् 1887

तट कैयाल्–विशाल हाथों से; तन् करि–अपने हाथी को; तानॆ–ख़ुद; कॊन्ऱु–मारकर; तटिन्तु वीऴ्त्तुम्–काटकर गिरायी गयी; मिन् करितु–बिजली काली है; अॅन्न–ऐसा; मिन्नुम् अॅयिऱ्ऱिनान्–चमकनेवाले दाँतों का जो था, उसके; वॅकुळि नोक्कि–क्रोध को देखकर; नीलन्–नील ने; पॊन् करितु अॅन्नुम्–स्वर्ण काला लगे, ऐसा; कण्कळ् पॊऱि उक–आँखों से अंगारों के बिखरते; पुक्कान्–प्रविष्ट

होकर; वल् करम् मुऱुक्कि–बलवान हाथ को ऐंठकर; मार्पिल् कुत्तिनन्–वक्ष में घूंसा मारा; मत्तन् माण्टान्–रणमत्त मर गया। १८८७

अपने हाथ से अपने हाथी को मार गिराकर बिजली को भी काला करे, ऐसे दाँतों के साथ खड़े उस रणमत्त का क्रोध देखा स्वर्ण को भी निस्तेज करे ऐसे अंगारे छोड़ती हुई आँखों वाले नील ने। फिर उसने बलवान हाथ को ऐंठकर मत्त की छाती पर एक घूंसा मारा। रणमत्त मरा। १८८७

उन्मत्तन् वयिर मार्बि नुरुमोत्त करज्जॆन् ऱुऱ्ऱ
वन्मत्तैक् कण्डुम् माण्ड मदमत्त मलैयैप् पार्त्तुम्
शन्मत्तिन् तन्मै यानुन् दरुमत्तैत् तळ्ळि वाऴ्न्द
कन्मत्तिन् कडैक् कूट्टानुम् वयमत्तन् कडिदिन् वन्दान् 1888

माण्ट–गौरवयुक्त; मतमत्त मलैयै–मदमत्त हाथी को; उन्मत्तन्–रणोन्मत्त के; वयिरम् मार्पिल्–वज्र-सम वक्ष में; उरुम् ऒत्त–अशनि-सम; करम् चॆन्ऱु उऱ्ऱ–हाथ का जाकर; वन्मत्तै–टकराने का बल; कण्टुम्–देखकर और; चन्मत्तिन् तन्मैयानुम्–जन्मजात प्रकृति से; तरुमत्तै तळ्ळि वाऴ्न्त–धर्म की उपेक्षा करके जीने के; कन्मत्तिन् कटै कूट्टानुम्–पाप के अंतिम फलदायी (मृत्यु) काल के आने से; वयमत्तन्–"वयमत्त" नाम का राक्षस; कटितिन् वन्तान्–तीव्र गति से आया। १८८८

गौरवपूर्ण मत्त गज को और रणमत्त के वज्र-वक्ष पर पड़े नील के घूँसे की कठोरता को वयमत्त देख रहा था। उसके जन्मजात स्वभाव से और धर्म-विमुख जीवन के पाप के द्वारा लाये गये जीवनांत काल के निकट आ जाने से वह जल्दी-जल्दी उधर आया। १८८८

पॊय्यिनुम् बॆरिय मॆय्यान् पॊरुप्पिनैप् पऴित्त तोळान्
वॆय्यनॆन् ऱुरैक्कच् चालत् तिण्णियान् विल्लिन् शॆल्वन्
पॆय्हऴ लरक्कन् शेनै यार्त्तॆऴप् पिरङ्गु पल्पेय्
ऐयिरु नूऱु पूण्ड वाऴियन् देरिन् मेलान् 1889

पॊय्यिनुम् पॆरिय मॆय्यान्–असत्य से भी बड़े शरीर वाला; पॊरुप्पिनै पऴित्त–पर्वतहासी; तोळान्–कंधों वाला; वॆय्यन् ऎन्ऱु उरैक्क–क्रूर कहो, ऐसा; चाल तिण्णियान्–अति दृढ़चित्त; विल्लिन् चॆल्वन्–धनुधनी; पॆय्कऴल् अरक्कन्–पहनी हुई पायलधारी राक्षस रावण की; चेनै–सेना के; आर्त्तु ऎऴ–घोष करते हुए उठते; पिरङ्कु पल् पेय्–ध्यानाकर्षक विविध भूत; ऐयिरु नूऱु पूण्ट–पाँच के दो के सौ (हजार) जिससे जुते थे; आऴि अम् तेरिन्–पहियोंदार सुन्दर रथ; मेलान्–पर सवार। १८८९

वह असत्य से भी बड़े शरीर वाला था। पर्वत का परिहास करने वाले कन्धों का; क्रूर कहलाने योग्य अविकंपित मन का था और धनु को

ही धन के रूप में माननेवाला था। विविध एक हज़ार भूतों के जुते रथ पर बैठकर वह आया और पायलधारी रावण द्वारा प्रेषित सेना घोष के साथ उठ आयी। १८८९

आर्क्किन्ड़ा नुलहै यॅल्ला मदिर्क्किन्ड़ा नशनि यञ्जप्
पार्क्किन्ड़ान् पॊन्ड़ि नारॆप् पळिक्किन्ड़ान् पहळि मारि
तूर्क्किन्ड़ान् कुरङ्गुच् चेनै तुरक्कित्ड़ान् तुणिवै नोक्कि
एड़्किन्ड़ा रिल्लै यॆन्ना विडबत्वन् दवत्तो डेड़्ड़ान् 1890

आर्क्किन्ड़ान्–नारे लगानेवाला; उलकं ॲल्लाम् अतिर्क्किन्ड़ान्–सारे लोकों को कँपानेवाला; अचति अञ्च–अशनि को भी डराते हुए; पार्क्किन्ड़ान्–घूरनेवाला; पॊन्ड़िनारै–मरे हुओं की; पळिक्किन्ड़ान्–निंदा करनेवाला; पकळि मारि तूर्क्किन्ड़ान्–शरवर्षा से युद्ध के मैदान को पाटनेवाला; कुरङ्कु चेनै–वानर-सेना को; तुरक्कित्ड़ान्–भगानेवाला; तुणिवै–उसके साहस को; नोक्कि–देखकर; एड़्किन्ड़ार् इल्लै–सामना करनेवाला नहीं है; ॲन्ना–कहकर; इटपत्–ऋषभ (वानर वीर); वन्तु–आकर; अवत्तोटु एड़्ड़ान्–उससे भिड़ गया। १८९०

वह शोर मचाता आ रहा था। सारी दुनिया को कँपाता, वज्र-भयंकर दृष्टि डालता हुआ, मरे हुओं की निंदा करता हुआ, और शर-वर्षा करते हुए वानर-सेना को भगाता हुआ आ रहा था। उसके साहस को देखकर ऋषभ नामक वानर वीर ने सोचा कि इसका सामना करनेवाला कोई नहीं। वह खुद आकर वयमत्त से लड़ने लगा। १८९०

शॆन्ड़वन् तन्नै नोक्किच् चिरित्तुनी शिड़ियै युन्नै
वॆन्ड़वन् उम्मै यॅल्लाम् विळिप्पत्तो विरिञ्जन् ड़ाने
ॲन्ड़व नॆदिर्न्द पोदु मिरावणत् महनै यिन्ड़ु
कॊन्ड़वन् तन्नैक् कॊन्ड़े कुरङ्गिन्मेड़् कॊदिप्प मॆन्ड़ान् 1891

चॆन्ड़वन् तन्नै–जो आ पहुँचा, उस (ऋषभ) को; नोक्कि–देखकर; चिरित्तु–हँसकर; नी चिड़ियै–तुम छोटे हो; उम्मै ॲल्लाम् वॆन्ड़ु–तुम सबको जीतना; अवम्–वृथा है; विळिप्पत्तो–तुम्हें ललकारूँ क्या; विरिञ्चन् ताने–विरंचि ही; ॲन्ड़ु–मान्य; अवन्–उस हनुमान के; ॲतिर्न्त पोतुम्–सामना करने पर भी; इरावणन् मकनै–रावण के पुत्र को; इन्ड़ु कॊन्ड़वन् तन्नै–आज जिसने मारा, उसको; कॊन्ड़े–मारकर ही; कुरङ्किन् मेल्–वानर पर; कॊतिप्पन्–कोप उतारूँगा; ॲन्ड़ान्–कहा। १८९१

लड़ने आये ऋषभ को देखकर वयमत्त हँसा और दंभ के साथ कहा कि तुम अल्प हो। तुम सबको मारना भी वृथा है। तुमको ललकारा था क्या मैंने ? विरंचि ही के रूप में मान्य हनुमान आकर भिड़े तो भी पहले रावण के पुत्र के हंता को मारने के बाद ही वानरों पर गुस्सा उतारूँगा। १८९१

वाय्कोंण्डु शोंऱ्ऱर् केऱ्ऱ वलिकोंण्डु बलियुण् वाऴ्क्कैप्
पेय्कोंण्डु वॆंल्ल वन्द पित्तने मिडुक्कैप् पेणि
नोय्कोंण्डु मरुन्दैच् चॆंय्या वोंरुवनिन् नोन्मै यॆंल्लाम्
ओय्हिन्ऱाय् काण्डि यॆंन्ना वुरैत्तन निडब नॊंल्हान् 1892

वाय् कोंण्टु–(केवल) मुख से; चोंऱ्ऱक्कु एऱ्ऱ–कहने योग्य; वलि कोंण्टु–बल ले; पलि उण् वाऴ्क्कै–बलि खाने के जीवन वाले; पेय् कोंण्टु–भूतों की सहायता से; वॆंल्ल वन्त–जीत पाने आये; पित्तते–पागल; मिटुक्कै पेणि–बल की प्रशंसा करके; नोय् कोंण्टुम्–रोगग्रस्त होकर भी; मरुन्तै चॆंय्या–दवा सेवन न करनेवाले; ओंरुव–एक; नित् नोन्मै ऍल्लाम्–अपनी सारी शक्ति; ओय्किन्ऱाय्–खोनेवाले हो; काण्टि–देखो; ॲन्ना–कहकर; ऑल्कान्–बिना पीछे हटे; इटपन् उरैत्तनन्–ऋषभ ने कहा। १८९२

ऋषभ ने उत्तर में कहा कि डींग का बल और बलिभोक्ता प्रेतों को लेकर सफलता की इच्छा करके आये हुए हे पागल ! बल की डींग मारते हुए रोग की दवा का सेवन करने में असमर्थ ! तुम अपना सारा बल खोकर शिथिल पड़ोगे। देखो अभी। १८९२

ओडुदि यॆंन्न वोडा दुरैत्तिये लुन्नो डिन्ने
आडुवन् विळैयाट् टॆंन्ना वयिलॆंयिऱ् ऱरक्कन् नम्बोंऱ्
कोडुऱ वयिरप् पोऱ्विऱ् कालोंडु पुरुवङ् गोट्टि
ईडुऱ विडबन् मारबन् तीरैन्दु पहऴि यॆंय्दान् 1893

अयिल् ऍयिऱ्ऱु अरक्कन्–तीक्ष्ण दंतोले राक्षस ने; ओटुति ऍन्न–भाग जाओगे समझा, पर तुम; ओटातु उरैत्तियेल्–बिना भागे बात बनाओगे तो; इन्ने–अभी; उन्नोटु–तुमसे; विळैयाट्टु आटुवन्–युद्धलीला खेलूँगा; ऍन्ना–कहकर; अम् पोंन् कोटु उऱ–सुन्दर स्वर्ण (मेरु) पर्वत-सम; वयिरम् पोंऱ् विल्–वज्रयुद्धचाप के; कालोटु पुरुवम् कोट्टि–बाजुओं को अपनी भौंहों के साथ झुकाकर; इटपन् मार्पतुउ–ऋषभ के वक्ष में; ईटु उऱ–ज़ोर से लग जाए ऐसा; ईरैन्तु पकऴि–दस बाण; ऍय्तान्–चलाये। १८९३

तीक्ष्ण दंतोले राक्षस ने कहा कि मैंने सोचा था कि तुम भाग जाओगे। उसके विपरीत तुम नहीं भागे। अगर ललकार के वचन बोलते रहोगे तो अभी तुमसे युद्ध की लीला करूँगा। यह कहकर उसने अपनी भौंहों और स्वर्णमेरु-सम अपने कठोर धनु के दोनों बाज़ुओं को कुंचित करके दस शर ऋषभ की छाती में धँसाते हुए चलाये। १८९३

अशुम्बुबैक् कुरुदि पायु माहत्तान् वेहत् तालन्
दशुम्बुबैक् कोडुन्देर् तन्नंन् तडक्कैया लॆंडुत्तु वीशप्
पशुङ्गळऱ् कण्ण पेयुम् परन्दन परवै नोक्कि
विशुम्बिडैच् चॆंल्लुङ् गारिन् तारैपोल् नात्ऱ मॆंय्यान् 1894

अच्चुम्पु उटै–पंक-सम गीला; कुरुति पायुम्–रक्त जिस पर बहा वैसे; आकत्तात्–वक्षवाले के; वेकत्ताल्–तेज; अ–उस; तच्चुम्पु उटै–कलश-सहित; कोट्टु तेर् तत्तै–भयानक रथ को; तट कैयाल्–विशाल हाथ से; ऍटुत्तु–उठाकर; वीच–फेंकने पर; पचु कळ्ळल् कण्ण–ताज़े 'कळ्ळल्' नाम के फल के समान आँखोंवाले; पेयुम्–भूत भी; परवै नोक्कि–समुद्र की तरफ़; पद्रन्तत–उड़े; विचुम्पु इटै–(तब वयमत्त) आकाश में; चॅल्लुम्–जानेवाले; कारित् तारै पोल्–मेघ की लकीर के समान; नात्र मॅय्यात्–लटकनेवाले शरीर का हो गया। १८९४

ऋषभ के शरीर पर कीच के समान रक्त बह निकला। उसने शीघ्र कलश के साथ भयानक रथ को अपने विशाल हस्त से उठाकर फेंक दिया। 'कळ्ळल्' नामक फल के समान आँखों वाले प्रेत भी समुद्र की तरफ़ उड़े। वयमत्त भी आकाश मार्ग में चलनेवाले मेघ की बनी लकीर के समान लटकता जाता था। १८९४

तेरोडुङ् गडलित् वीऴ्न्दु शिलैयुन्दत् तलैयु मॅल्लाम्
नीरिडै यऴुन्दिप् पित्तु नॅरुप्पोडु निमिर वन्दान्
पारिडैक् कुदिया मुत्त मिडबनुम् बदह नीपोय्
आरिडैप् पुहुदि यॅन्ना वन्दरत् तार्त्तुच् चॅन्ड्रान् 1895

तेरोट्टुम्–रथ के साथ; कटलित् वीऴ्न्तु–समुद्र में गिरकर; चिलैयुम् तत् तलैयुम्–धनु और उसका सिर; ऍल्लाम्–सभी; नीर् इटै अऴुन्ति–जल में डूबकर; पित्तुम् नॅरुप्पोटुम्–फिर भी कोपाग्नि के साथ; निमिर वन्तात्–ऊपर आया; पार् इटै–भूमि पर; कुतिया मुत्तम्–वयमत्त के कूदने के पहले; इटपत्तुम्–ऋषभ भी; पतक–पातक; नी–तू; पोय्–जाकर; आर् इटै पुकुति–किसकी शरण में पहुँचेगा; ऍन्ना–ललकारते हुए; अन्तरत्तु–मैदान में; आर्त्तु चॅन्ड्रात्–नारे लगाकर गया। १८९५

वह रथ के साथ समुद्र में गिरा। उसका धनुष, सिर सभी जल में मग्न हुए। वह ऊपर आया, बड़ी ही कोपाग्नि के साथ। उसके भूमि पर उछलने से पहले ऋषभ यह ललकार का वचन कहता हुआ मैदान में दौड़ा आया कि अब तू किसकी शरण में जायगा ? । १८९५

अल्लितैत् तऴुवि नित्ड्र पहलॅन वरक्कन् तत्तैक्
कल्लितुम् वलिय तोळार् कट्टियिट् टिरुक्कुङ् गालॅप्
पल्लुडैप् पिलवा यूडुम् पशुम्बॅरुङ् गुरुदि पाय
विल्लुडै मेह मॅन्न विऴुन्दत तुयिर्विण् शॅल्ल 1896

अल्लितै–रात को; तऴुवि नित्ड्र–लगे रहनेवाले; पकल् ऍत–दिन के समान; अरक्कत् तत्तै–राक्षस को; कल्लितुम् वलिय–पत्थर से भी कठिन; तोळाल्–कंधों से; कट्टि इट्टु–बाँधकर; इरुक्कुम् कालै–जब दबाया तब; पल् उटै–दाँतों-सहित; पिलम् वाय् ऊटुम्–बिल के समान मुख से; पचुम् पॅरु कुरुति–ताजा और अधिक रक्त;

पाय–बहा; उयिर् विण् चॅल्ल–प्राण ऊपर गये; विल् उटै–इन्द्रधनुष-सह; मेकम् ऍन्न–मेघ के समान; विऴुन्तनन्–गिरा। १८९६

रात को अपने से लगानेवाले दिन के समान ऋषभ ने राक्षस को अपने सशक्त कन्धों से लपेटकर खूब दवाया तो दाँतों-सहित बिल के समान रहनेवाले उसके मुख से ताज़ा खून बह निकला और उसके प्राण आकाश-लोक में चले गये। इंद्रधनुषयुक्त मेघ के समान वयमत्त गिर पड़ा। १८९६

कुरङ्गिनुक् करशुम् वॅन्ऱिक् कुम्बनुङ् गुऱित्त वॅम्बोर्
अरङ्गिनुक् कऴहु शॅय्य वायिरञ् जारि पोन्दार्
मरङ्गॉण्डुन् दण्डु कॊण्डु मलैयॅन मलैया निन्ऱार्
शिरङ्गळङ् गरमु मॅल्लाङ् गुलैन्दनर् कण्ड तेवर् 1897

कुरङ्किनुक्कु अरचुम्–वानर राजा और; वॅन्ऱि कुम्पनुम्–विजयी कुंभ; कुऱित्त–उक्त; वॅम् पोर्–घमासान युद्ध के; अरङ्किनुक्कु–मैदान को; अऴकु चॅय्य–सुन्दरता प्रदान करने; आयिरम् चारि पोन्तार्–हजार बार (दाहिने और बायें) घूमे; मरम् कॊण्टुम्–तरु से और; तण्टु कॊण्टुम्–दण्ड से; मलै ऍन–पर्वत-सदृश; मलैया निन्ऱार्–युद्ध करते रहे; कण्ट–दर्शक; तेवर्–देवों ने; चिरङ्कळुम्–सिरों और; करमुम् ऍल्लाम्–हाथों सभी में; कुलैन्तनर्–कंपन का अनुभव किया। १८९७

तब वानरराज सुग्रीव और विजयी कुंभ युद्ध-मैदान को आकर्षण प्रदान करते हुए हजार बार घूम-घूमकर युद्ध कर रहे थे। तरु और दंडायुध ले वे पर्वत के समान डटे रहे। उनके युद्ध को देखकर देवों के सिर और हाथ सभी काँप गये। १८९७

❀ किडैत्ता रुडलिऱ् किऴिशो रियैवारित्
तुडैत्तार् विऴियिऱ् ऱऴल्मारि शॊरिन्दार्
उडैत्ता रॊडुपैङ् गऴलार्प्प वुलाविप्
पुडैत्तार् पॊरुहिन्ऱनर् कोळरि पोल्वार् 1898

पॊरुकिन्ऱनर्–युद्धरत; कोळ् अरि पोल्वार्–सबल सिंह-सदृश (कुंभ-सुग्रीव) दोनों ने; किटैत्तार्–परस्पर मिलकर; उटलिल्–शरीर में; किऴि चोरियै–चीरकर निकलनेवाले रक्त को; वारि तुटैत्तार्–दूर कर पोंछ लिया; विऴियिल्–आँखों से; तऴल् मारि–अग्निकण-वर्षा; चॊरिन्तार्–बरसायी; उटै तारॊटु–पहने हुए हारों के साथ; पैं कऴल् आर्प्प–स्वर्ण-चरण-कंकणों के नाद करते; उलावि–पैंतरे बदलकर; पुटैत्तार्–परस्पर पीटा। १८९८

युद्धरत बलवान केसरियों के समान कुंभ और सुग्रीव आपस में गुथे। दोनों ने शरीर पर बहनेवाले रक्त को निकालकर पोंछ लिया और आँखों

से अंगारे निकाले। उनके हारों के साथ चरणकंकण भी ध्वनि कर उठे। इधर-उधर चलकर उन दोनों ने परस्पर एक-दूसरे को खूब पीटा। १८९८

❀ तण्डङ्गैयित् वीशिय तक्क वरक्कन्
अण्डङ्गळ् वॅडिप्पन वॅन्न वडित्तान्
कण्डङ्गदु मामर मेकॊडु कात्तान्
विण्डङ्गदु तीर्न्ददु मन्नन् वॅहुण्डान् 1899

तण्टम्–दण्डायुध को; कैयित् वीचिय–हाथ से घुमाते हुए; तक्क अरक्कन्–समर्थ राक्षस ने; अण्टङ्कळ् वॅटिप्पत ॲन्त–अंड फटते हों जैसे; अटित्तान्–प्रहार किया; अङ्कु–तब; अतु कण्टु–उसको देखकर; मा मरमे कॊटु–बड़े तरु से; कात्तान्–(सुग्रीव ने) अपने को बचा लिया; अङ्कु–तब; अतु–वह; विण्टु तीर्न्ततु–टूटकर बेकार हुआ; मन्तन् वॅकुण्टान्–राजा क्रुद्ध हुआ। १८९९

युद्धसमर्थ राक्षस ने दंडायुध को घुमाकर ऋषभ को ऐसा मारा कि अंडों के फटने की-सी ध्वनि उठी। तब ऋषभ ने एक बड़े तरु से उसे रोका तो वह तरु टूट गया। वानरराज झल्ला उठा। १८९९

❀ पॊन्ऱुप् पॊरुवेतिनि यॅन्ऱु पॊऱादान्
ऑन्ऱुप् पुहुहिन्ऱदोर् काल मुणर्न्दान्
निन्ऱुप् पॅरियो ऩिनैयादमु नीलन्
कुन्ऱॊप्पदोर् तण्डु कॊणर्न्दु कॊडुत्तान् 1900

पॊन्ऱ पॊरुवेन्–मारने को लड़ूंगा; ॲन्ऱु–कहकर; पॊऱातान्–अधीर (सुग्रीव) ने; ऑन्ऱ पुकुकिन्ऱतु ओर् कालम्–युद्ध प्रवेश का समय; उणर्न्तान् निन्ऱ–जानता रहकर; अ–उस; पॅरियोन्–बड़े सुग्रीव के; निनैयात मुन्–सोचने के पहले ही; नीलन्–नील ने; कुन्ऱ ऑप्पतु ओर्–पर्वत-सदृश एक; तण्टु–दण्डायुध को; कॊणर्न्तु कॊटुत्तान्–लाकर दिया। १९००

बेचैन होकर सुग्रीव ने वादा किया कि इसे मार दूंगा। लड़ने के उचित समय के ताक में खड़ा ही रहता था कि उस गौरववान सुग्रीव के प्रतीक्षा किये विना ही नील ने पर्वत-सम एक दंड लाकर दिया। १९००

❀ अत्तण्डु कॊडुत्तदु कैक्कॊ डडैन्दान्
ऑत्तण्डमु मण्णु नडुङ्ग वुरुत्तान्
पित्तन्तड मार्बॊडु तोळ्हळ् पिळन्दान्
चित्तङ्गळ् नडुङ्गि यरक्कर् तिहैत्तार् 1901

कॊटुत्ततु–(नील का) दिया हुआ; अ तण्टु–वह दण्ड; कै कॊटु–हाथ में लेकर; अटैन्तान्–लड़ने जो आया उस सुग्रीव ने; अण्टमुम् विण्णुम् ऑत्तु–अंड और आकाशलोक समान रूप से; नटुङ्क–काँप उठें ऐसा; उरुत्तान् पित्तन्–युद्ध के लिए

पागल कुंभ के; तट मार्पोट्टु–विशाल वक्ष के साथ; तोळ्कळ्–कंधों को; पिळन्तान्–फाड़ दिया; अरक्कर्–राक्षस; चित्तङ्कळ् नट्टुङ्कि–मन में काँपकर; तिकैत्तार्–भ्रमित हुए। १९०१

उसका दिया वह दंड हाथ में लेकर सुग्रीव लड़ने गया। उसका क्रोध देखकर आकाश और भूमि समान रूप से काँप गयी। उसने युद्ध के दीवाने कुंभ के विशाल वक्ष और कन्धों को फाड़ दिया। राक्षसों के मन भय-भ्रमित हो गये। १९०१

❀ अडियुण्ड वरक्क नरुङ्गतन् मिन्ना
विडियुण्डदोर् मालवरै यॅन्न विऴुन्दान्
मुडियुम्मिव नॅन्बदोर् मुन्नम् वॅहुण्डान्
ऑडियुम्मुन तोळॅन मोदि युडन्ऱान् 1902

अटियुण्ट–चोट खाकर; अरक्कन्–राक्षस; अरु कतल् मिन्ना–असह्य आग के चमकते; इटियुण्ट–वज्राहत; ओर् माल् वरै–एक बड़ा पर्वत; ऍन्न–मानो; विऴुन्तान्–गिरा; इवन् मुटियुम्–यह समाप्त हो जायगा; ऍन्पतु ओर् मुन्नम्–ऐसा सोचने के पूर्व ही; वॅकुण्टान्–कुपित होकर; उन् तोळ् ऑटियुम्–तुम्हारा कंधा टूटेगा; ऍन–कहकर; मोति–टकराकर; उटन्ऱान्–कोप दिखाया। १९०२

आहत राक्षस वज्राहत हो आग के साथ चमकनेवाले पर्वत के समान नीचे गिरा। लोगों ने सोचा कि वह अभी मर जायगा। उनके सोचने के पहले ही वह क्रुद्ध होकर, 'तुम्हारा कंधा तोड़ दूँगा' —यह कहते हुए सुग्रीव से लड़ने गया। १९०२

❀ तोळिऱ् पुडैयुण्डयर् शूरियन् मैन्दन्
ताळिऱ् ऱडुमाऱल् तविर्न्दु तहैन्दान्
वाळिक् कडुवल्विशै यालॅदिर् मण्डि
आळित् तॊळिलन्नवन् मार्बि नऱैन्दान् 1903

तोळिल् पुटै उण्टु–कंधे पर आघात पाकर; अयर्–शिथिल पड़नेवाले; चूरियन् मैन्तन्–सूर्यसूनु ने; ताळिल्–युद्ध में; तटुमाऱल् तविर्न्तु–पसोपेश छोड़कर; वाळि–अस्त्र के समान; कटु वल् विचैयाल्–अत्यधिक तेजी से; ऍतिर् मण्टि–समक्ष नियराकर; तकैन्तान्–रोककर; आळि तॊळिल् अन्नवन्–सिंह की भाँति कार्यरत उसकी; मार्पिल्–छाती पर; अऱैन्तान्–तमाचा दिया। १९०३

सुग्रीव के कंधे पर चोट लगी। वह शिथिल हो गया। तो भी सूर्यसूनु युद्ध में शिथिलता न दिखाकर, बाण की-सी तेज़ी से राक्षस के समक्ष गया। और उसने केसरी के समान युद्ध करनेवाले उसके वक्ष पर आघात लगाया। १९०३

❀ अडियायिर कोडियित् मेलु मडित्तार्
मुडिवानव रियारॆन वानवर् मॊय्त्तार्
इडियोडिडि किट्टिय वॆन्न विरण्डुम्
पॊडियायिन तण्डु पॊरुन्दिनर् पुक्कार् 1904

आयिरम् कोटियित् मेलुम्–हज़ार करोड़ से अधिक; अटि अटित्तार्–(दण्डायुध) की चोटें करायीं (परस्पर दोनों ने); मुटिवानवर् यार्–अन्तिम रूप से सफल कौन; ऎन–जानने के लिए; वानवर् मॊय्त्तार्–देव भीड़ लगाकर एकत्र हो गये; इटियोटु इटि किट्टियतु ऎन्न–वज्र से वज्र टकराया, ऐसा; तण्टु इरण्टुम्–दोनों दण्डायुध; पॊटियायिन–चूर हुए; पॊरुन्तिनर् पुक्कार्–गुंथकर मल्लयुद्ध करने लगे। १६०४

दोनों ने परस्पर हज़ार से अधिक प्रहार किये। देव आकर पिल पड़े यह देखने के लिए कि अंतिम सफलता किसे मिलती है? दोनों के दण्डायुध वज्र के समान परस्पर टकराये और चूर हो गये। तब दोनों गुँथकर मल्लयुद्ध में लग गये। १९०४

❀ मत्तच्चिन मालकळि ऱॆन्न मलैन्दार्
पत्तुत्तिशै युञ्जॆवि डॆय्दिन पलहाल्
तत्तित्तळु वित्तिरळ् तोळ्हॊडु तळ्ळिक्
कुत्तित्तनिक् कुत्तॆन मार्बु कॊडुत्तार् 1905

मत्तम्–मत्त; चितम्–क्रुद्ध; माल् कळिऱु ऎन्न–हाथी के समान; मलैन्तार्–लड़े; पत्तु तिचैयुम्–दसों दिशाएँ; चॆविटु पट्टन–बहरी हो गयीं; पल काल्–अनेक बार; तत्ति तळुवि–उछलकर लपेटकर; तिरळ् तोळ् कॊटु तळ्ळि–पुष्ट कंधे से ढकेलकर; कुत्ति–घूँसा मारकर; तनि कुत्तु–अपना विशेष घूँसा; कुत्तु–लगाओ; ऎन–कहकर; मार्पु कॊटुत्तार्–वक्ष दिखाकर, ऐसा युद्ध किया। १६०५

दोनों क्रुद्ध और मत्त हाथियों के समान भिड़े। दसों दिशाएँ बहरी हो गयीं। वे अनेक बार उछलते और गले लगा लेते। पुष्ट कंधे से ढकेलते; घूँसा मारते और यह कहकर अपनी छाती तानते कि अपना विशिष्ट मुष्टिप्रहार करो। १९०५

❀ निलैयिऱ्चुड रोन्महन् वन्गै नॆरुङ्गक्
कलैयिऱ्पडु कम्मियर् कूड मलैप्प
उलैयिऱ्पडि रुम्बॆन वन्मै यॊडुङ्ग
मलैयिऱ्पिळ वुऱ्ऱदु तोयवन् मार्बम् 1906

निलैयिल्–उस स्थिति में; चुटरोन् मकन्–किरणमाली के पुत्र के; वन् कै–कठोर हाथों के; नॆरुङ्क–दबाने से; कलैयिल् पटु–कला में निष्णात; कम्मियर् कूटम् अलैप्प–लुहारों के हथौड़े की चोट खाने से; उलैयिल् पटु–भट्ठी से निकले;

इरुम्पु ॲन्त–लोहे के समान; वल्मै ऒॅट्टुङ्क–बल खोकर; तीयवल् मार्पम्–दुष्ट का वक्ष; मलैयिल् पिळवु उर्र्तु–पर्वत के समान फट गया। १९०६

युद्ध के सिलसिले में किरणमाली के पुत्र के कठोर हाथ ने खूब दबाया तो दुष्ट राक्षस का वक्ष दक्ष लुहार के हथौड़े की चोट खाकर भट्ठी में रहनेवाला लोहा-जैसा बल खोकर पर्वत फटा-सा दरार खा गया। १९०६

ॲय्वायिह लॅन्र्व निन्रु शिरित्तान्
ऐवायर वम्मुळै पुक्कॅन्न वेयन्
कंवाय्वळि शॅन्रव नारुयिर् कक्कप्
पैवायॅनॅ्डु नावै मुतिन्दु परित्तान् 1907

अवन्–वह; इकल् चॅय्वाय्–युद्ध करो; ॲन्रु–कहकर; निन्रु चिरित्तान्–खड़ा होकर हँसा; ऐवाय् अरवम्–पंचसिर सर्प; मुळै पुक्कु ॲन्न–बिल में घुसा जैसे; ऐयन्–सुग्रीव ने; कै–हाथ को; वाय् वळि चॅन्रु–(राक्षस के) मुख में ठूँसकर; अवन् आरुयिर् कक्क–वह प्राणों को वमन करे (प्राण निकल जाएँ) ऐसा; पैवाय्–विषथैली-सम; नॅडु नावै–लम्बी जीभ को; मुतिन्दु परित्तान्–गुस्से के साथ उखाड़ दिया। १९०७

उस स्थिति में भी वह निकुंभ 'लड़ो' कहकर हँसा। तब सुग्रीव ने कोप करके बिल में पाँच सिरों का सर्प घुसा जैसा अपना हाथ उसके मुख के अन्दर चलाकर उसकी विषथैली के समान रही जीभ को पकड़कर छीन लिया। कुंभ ने अपने प्राणों का भी वमन कर दिया। १९०७

❀ अक्काले निहुम्ब नन्र्चौरि कण्णन्
पुक्कानिनि यॅङ्गड पोहुव दॅन्ना
मिक्कान्दि रङ्गद नुर्रु वॅहुण्डान्
ऑक्कालमु मिल्लदोर् पूश लिळैत्तार् 1908

अक्काले–तब; निकुम्पन्–निकुंभ; अतल् चौरि कण्णन्–अग्नि-वर्षाक्ष; पुक्कान्–प्रवेश करके; इनि ॲङ्कट पोवतु–अब कहाँ जायगा रे; ॲन्न–कहकर; मिक्कान्–आरूढ़ हो रहा; ॲतिर्–उसके सामने; अङ्कतन् उर्रु–अंगद आकर; वॅकुण्टान्–कुपित हुआ; ऑक्कालमुम् इल्लतु–जो किसी काल में न हुआ था ऐसा; ओर्–अभूतपूर्व; पूचल् इळैत्तार्–युद्ध किया (दोनों ने)। १९०८

तब निकुंभ अनलवर्षाकारी आँखों के साथ घुस आया और 'कहाँ जाएगा रे' कहता हुआ घमंड के साथ आ खड़ा हुआ। अंगद उसके सामने गुस्से के साथ गया तो दोनों में अभूतपूर्व युद्ध चलने लगा। १९०८

शूलप्पडै यानिडै वन्दु तौडर्न्दान्
आलत्तिनुम् वॅय्यव नङ्गद नङ्गोर्

तालप्पत्तै कैक्कोंडु शेंन्ऱु तडुत्तान्
नीलक्किरि मेल्निमिर् पॊऱ्किरि नेर्वान् 1909

चूलप् पडैयानिडै–शूलायुधधारी के पास; आलत्तिनुम् वेय्यवन्–हलाहल से भी अनिष्टकारी; अङ्गतन्–अंगद ने; वन्तु तॊडर्न्तान्–आकर युद्ध जारी करके; अङ्कु–वहाँ; ओर्–एक; तालम् पत्तै कैक्कोंडु–तालवृक्ष को हाथ में लेकर; चॆन्ऱु तडुत्तान्–जाकर रोका; नीलम् किरि मेल् निमिर्–नीली गिरि पर उगे हुए; पॊन् किरि नेर्वान्–स्वर्ण-पर्वत-सम बना। १६०६

शूलधारी निकुंभ के पीछे लगकर हलाहल से भी क्रूर अंगद ने एक तालवृक्ष हाथ में लेकर उसको रोका। नीली गिरि पर स्वर्णगिरि चढ़ गयी जैसे अंगद निकुंभ पर आरूढ़ हुआ। १९०९

ऍऱिवान्उयर् शूल मॆडुत्तलु मित्तै
मुऱिवान्इह लङ्गद नॆन्नुवदन् मुन्नॆ
अऱिवान्अडल् मारुदि यरुऱ मुणर्न्दान्
पॊऱिवान्उहु तीयॆन वन्दु पुहुन्दान् 1910

ऍऱिवान्–चलाने के वास्ते; उयर् चूलम्–उत्कृष्ट शूल को; ऍडुत्तलुम्–ज्यों ही निकुंभ ने उठाया त्योंही; इकल् अङ्कतन्–युद्धसमर्थ अंगद; इत्तै मुऱिवान्–अभी मिट जाएगा; ऍन्नुवतन् मुन्नै–यह सोचने के पहले; अटल् मारुति–महावीर मारुति; अऱिवान्–वह जानकर; अऱ्ऱम् उणर्न्तान्–मौक़ा समझकर; वान् पॊऱि उकु–श्रेष्ठ अंगारे छितरानेवाली; ती ऍन–आग के समान; वन्तु पुकुन्तान्–आकर प्रविष्ट हुआ। १६१०

निकुंभ ने शूल उठा लिया। 'युद्धसमर्थ अंगद मर जायगा' —यह विचार उठने के पहले ही पराक्रमी मारुति मौक़ा जानकर आग के समान आ पहुँचा जिससे कि अंगारे छूट रहे हों। १९१०

तडैयेदुमिल् शूल मुनिन्दु शलत्ताल्
विडैयेनिह रङ्गदन् मेल्विडु वानै
इडैयेतडै कॊण्डुतन् एडवि ऴङ्गॊप्
पुडैयेकॊडु कॊन्ऱडन् मारुदि पोनान् 1911

तडै एतुम् इल्–दुर्धर्ष; चूलम्–शूल को; मुनिन्तु–कोप करके; विडैये निकर्–ऋषभ ही सम; अङ्कतन् मेल्–अंगद पर; चलत्ताल्–वैर के कारण; विडुवानै–चलानेवाले को; इडैये तडै कॊण्डु–बीच में अटकाकर; तन् एडु अविऴ्–अपने दलों के खिले पुष्प-समान खुले; अङ्कै–सुन्दर हाथ से; पुडैये कॊडु–प्रहार करके; कॊन्ऱु–मरवाकर; अटल् मारुति–बलवान मारुति; पोनान्–चला। १६११

दुर्धर्ष शूल को कोप के साथ निकुंभ अंगद पर चलाने ही वाला था कि हनुमान बीच में आ गया और उसने अपने खिले दलों वाले पुष्प के

साथ खुले हाथ से उस पर प्रहार किया। हनुमान उसे मारकर अलग चला गया। १९११

निऩ्ऱार्हळ् तडुप्पव रिऩ्मै नळिन्दार्
पिऩ्ऱादवर् पिऩ्ऱि यिरिन्दु पिरिन्दार्
वऩ्ऱाण्मरम् वीशिय वानर वीरर्
कॊऩ्ऱार्मिहु ताने यरक्कर् कुऱैन्दार् 1912

पिऩ्ऱातवर्कळ्–(अब तक) जो विना पिछड़े; निऩ्ऱार्कळ्–खड़े रहे वे राक्षस; तटुप्पवर् इऩ्मै–(वानर-सेना को) रोकनेवालों के न होने से; नॆळिन्तार्–बेचैन होकर; पिऩ्ऱि इरिन्तु–पिछड़कर तितर-वितर हुए और; पिरिम्तार्–अलग हट गये; अव्वानर वीरर्–उन वानर वीरों ने; वल् ताळ्–कठोर तने के; मरम् वीचि–पेड़ों को फेंककर; कॊऩ्ऱार्–मार दिया; मिकु ताऩै अरक्कर्–बड़ी सेना के राक्षस; कुऱैन्तार्–कम हुए। १९१२

अब तक जो राक्षस वीर विना पिछड़े डटे रहे, अब उन्होंने देखा कि वानर वीरों को रोकनेवाला कोई न रहा। वे बेचैन हुए, अस्त-व्यस्त होकर भाग गये। वानर वीरों ने कठोर तनों के वृक्षों से मारकर उन्हें मरवा दिया। राक्षस-सेना के वीर संख्या में कम हुए। १९१२

ओडिप्पुहु वायि नॆरुक्कि नुलन्दार्
कोडिक्कणि दत्तिनु मेलुळर् कुत्तार्
पीडिप्पुऱ पुण्णुड लोडु पॆयर्न्दार्
पाडित्तलै युऱ्ऱव रॆण्णिलर् पट्टार् 1913

ओटि पुकु–दौड़कर प्रवेश करने के; वयिल् नॆरुक्कित्–द्वार की भीड़-भम्भड़ में; उलन्तार्–जो दबकर मरे; कोटि कणितत्तिऩुम् मेल् उळर्–करोड़ की संख्या से भी अधिक थे; कुत्ताल्–घूंसों से; पीटिप्पु उऱ–पीड़ित; पुण् उटलोटु–चोटों के साथ शरीर लेकर; पॆयर्न्तार्–जो हटे; पाटित्तलै उऱ्ऱार्–और पड़ावों में जाकर; पट्टार्–मरे; ऍण्णिलर्–वे असंख्यक रहे। १९१३

भागकर द्वार की भीड़ में दबकर जो मरे उनकी संख्या करोड़ से भी अधिक थी। मुष्टिप्रहारों से चोट पाकर घायल शरीरों के साथ पड़ावों में जाकर वहाँ जो मरे वे अनगिनत थे। १९१३

तण्णीर्तरु हॆऩ्ऱऩर् तावऱ वोडि
उण्णीरऱ वावि युलर्न्दन रुक्कार्
कण्णीरॊडु मावि कलुऴ्न्दनर् कालाल्
मण्णीरमु ऱक्कडि दूर्पुह वन्दार् 1914

तण्णीर् तरुकॆऩ्ऱऩर्–जल दो; ऍऩ्ऱऩर्–ऐसा माँगनेवाले; ता अऱ ओटि–पीड़ा दूर करने के लिए भागकर; उण्णीर् अऱ–अंदर की नमी सूखने से; आवि

उलर्न्तनर्–प्राण सूख गये और; उलन्तार्–मर गये; कण्णीरोडु–अश्रु के साथ; आवि कलुळ्न्तनर्–जीवन के लिए रोकर; कालाल्–पैर द्वारा; ईरम् मण् उरु–नमी के धरती पर लगते; कटितु–तेजी से; ऊर् पुक वन्तार्–नगर में प्रवेश करने आये। १६१४

पानी माँगनेवाले वीर पीड़ा के निवारणार्थ दौड़े पर जीभ के पानी के सूख जाने से प्राण छोड़ गये। कुछ राक्षस आँसू वरसाते हुए प्राणों को रोये। कुछ राक्षसों के आँसू पैरों से होकर नीचे बहे और पृथ्वी को गीला करते गये। इस स्थिति में वे शीघ्र नगर में प्रवेश करने आये। १९१४

विण्मेल्नॅंडि	दोडिन	रारुयिर्	विट्टार्
मण्मेल्नॅंडु	माल्वरै	यॅन्न	मरिन्दार्
ऍण्मेलुम्	निमिर्न्दुळ	रीरल्	तयङ्गुम्
पुण्मेलुडै	मेनियि	नार्तिशै	पोनार् 1915

विण् मेल्–अंतरिक्ष में; नॅटितु ओटिनर्–बहुत दूर दौड़कर; आरुयिर् विट्टार्–प्यारे प्राण छोड़कर; मण् मेल्–पृथ्वी पर; नॅटु माल् वरै ऍन्न–ऊँचे, बड़े पर्वत हों ऐसे; मरिन्तार्–मुड़कर जो पड़े थे वे; ईरल् तयङ्कुम्–यकृत् बाहर दिखे ऐसा; पुण् मेल् उटै–अधिक व्रणों से युक्त; मेनियिनार्–शरीर वाले; तिचै पोनार्–जो दिशाओं में गये वे; ऍण् मेलुम् निमिर्न्तुळर्–गणित की सीमा के पार रहे। १६१५

अंतरिक्ष में बहुत दूर जो वीर दौड़े वे प्यारे प्राणों के छूटने से पृथ्वी पर बड़े पर्वतों के समान गिरे और मुड़े पड़े रहे। यकृत् को बाहर दिखानेवाले व्रणों से युक्त शरीरों वाले जो सभी दिशाओं में तेज भागे उनकी संख्या भी गिनती में न आ सकी। १९१५

अऱियुम्मवर्	तङ्गळै	ऐयवि	वम्बॅप्
पऱियुम्मॅन	वन्दु	परित्तलु	मावि
पिरियुम्मव	रॅण्णिलर्	तम्मनै	पॅऱ्ऱार्
कुऱियुम्मऱि	हिन्ऱिलर्	शिन्दै	कुरैन्दार् 1916

अऱियुम् अवर् तङ्कळै–परिचित वीरों से; एय–जो; इ अम्पै पऱियुम्–यह बाण निकाल दो; ऍन–कहने पर; वन्तु परित्तलुम्–आकर निकालते ही; आवि पिरियुम् अवर्–प्राण छोड़नेवाले वे; ऍण्णिलर्–बेशुमार थे; तम् मनै पॅऱ्ऱोर्–अपने घर में पहुँचकर; कुऱियुम् अऱिकिन्ऱिलर्–पहचान नहीं पाते जो; चिन्तै कुरैन्तार्–विकलमन हुए (वे भी असंख्यक हैं)। १६१६

अनेक राक्षसों ने जान-पहचान के लोगों से मिलकर प्रार्थना की कि यह बाण निकाल दो। ज्योंही बाण निकाले गये, त्योंही उनके प्राण छूट गये। ऐसे राक्षसों की संख्या भी अनगिनत थी। असंख्य राक्षसों के

मन अपनी शक्ति खो चुके थे कि वे अपने लोगों को पहचान ही नहीं सके। १९१६

※ परिपट्टु विळ्च्चिलर् नित्ऱु पदैत्तार्
करिपट्टु रुळच्चिलर् कालृहोंडु शॅन्ऱार्
नॅरिपट्ट ळितेरिडै येशिलर् नित्ऱार्
ऍरिपट्ट मलैक्क णिरुन्दव रॅन्न 1917

परि पट्टु विळ्-अश्व मरे और गिरे; चिलर्-कुछ वीर; नित्ऱु पतैत्तार्-खड़े होकर हड़बड़ाये; करि पट्टु उरुळ-हाथियों के मरकर लोट जाने पर; चिलर्-कुछ; काल् कोट्टु-पैदल; चॅन्ऱार्-चले; ऍरि पट्ट-जल गये; मलैक्कण् इरुन्तवर् ऍन्न-पर्वत पर रहे लोगों के समान; नॅरि पट्टु अळि-दबकर नष्ट हुए; तेर् इटैये-रथों में; चिलर् नित्ऱार्-कुछ लोग खड़े रहे। १६१७

अश्व गिर गये और कुछ (उन पर सवार) वीर काँपते खड़े रहे। हाथी लुढ़क गये तो उन पर सवार वीर पैदल चले। रथ टूट गये थे और जले पर्वत पर रहनेवाले लोगों के समान उन रथों पर कुछ वीर खड़े थे। १९१७

मण्णित्ऱलै वात्तर मेत्तियर् वन्दार्
पुण्णित्ऱ वुडर्पोऱै योर्शिलर् पुक्कार्
कण्णित्ऱ कुरङ्गु कलन्दत वॅन्ना
उण्णित्ऱ वरक्कर् मलैक्क वुलन्दार् 1918

पुण् नित्ऱ-घायल; उटल् पोऱैयोर्-शरीर-भार वहन करनेवाले कुछ लोग; मण्णिन् तलै-पृथ्वी पर; वानरर् मेत्तियर् वन्तार्-वानर-शरीर ले आये; कुरङ्कु कण् नित्ऱ-वानर आँखों के आगे खड़े होकर; कलन्तत-मिल गये; ऍन्ना-ऐसा सोचकर; उळ् नित्ऱ अरक्कर्-अन्दर रहे राक्षसों के; मलैक्क-लड़ने से; उलन्तार्-मरे। १६१८

व्रणयुक्त शरीर-भार के वाहक कुछ वीर वानरवेश में आये। वहाँ जो राक्षस थे, उन्होंने इन्हें लड़ने आये बंदर समझ लिया और उनके प्रहार से ये मर गये। १९१८

※ इरुहणन् दिऱन्दु नोक्कि ययलिरुन् दिरङ्गु हित्ऱ
उरुहुदङ् गाद लोरै युण्णुनी रुदवु मॅन्ऱार्
वरुवदन् मुन्नम् माण्डार् शिलर्शिलर् वन्दु तण्णीर्
परुहुवा रिडैये पट्टार् शिलर्शिलर् परुहिप् पट्टार् 1919

इरु कणुम् तिऱन्तु नोक्कि-दोनों आँखों को खोलकर देखकर; अयल् इरुन्तु-पास में रहकर; इरङ्कुकिन्ऱ-दुःखी होनेवाले; उरुकुम्-द्रवीभूत होनेवाले; तम् कातलोरै-अपने प्रियजनों से; उण्णुम् नीर्-पेय जल; उतवुम्-देकर उपकार करो;

ॲन्ड्रार्–जो बोले वे; वरुवतन् मुन्नम्–(जल) आने से पहले; माण्टार्–मर गये; चिलर्–कुछ लोग; चिलर्–कुछ लोग; वन्तु–लाया गया; तण्णीर–जल; परुकुवार्–पीनेवाले; इडैये पट्टार्–बीच में ही मरे; चिलर् चिलर्–कुछ-कुछ; परुकि–पीने के बाद; पट्टार्–मरे। १६१६

कुछ आहत लोगों ने अपनी दोनों आँखों को खोलकर अपने प्रिय जनों को देखा और उनसे पेय पानी माँगा। उनके जल लाने के पहले ही इनमें कुछ मर गये। कुछ लोग जल पीते-पीते मरे। कुछ पीने के बाद मरे। १९१९

❀ मक्कळैच् चुमन्दु शॅल्लुन् दादैयर् वऴियि ऩावि
उक्कऩ रॅऩ्ऩ वीशित् तम्मैक्कॊण् डोडिप् पोऩार्
कक्किऩर् कुरुदि वायाऱ् कण्मणि शिदऱक् कालाल्
तिक्कॊडु नॅऱियुङ् गाणार् तिरिन्दुशॅऩ् ऱुयिरुन् दीर्न्दार् 1920

मक्कळै चुमन्तु चॅल्लुम्–सन्तानों को उठाये चलनेवाले पिता लोगों ने; वऴियित्–मार्ग में; आवि उक्कऩर्–प्राण छोड़ दिये; वीचि–(लाश को) फेंककर; तम्मै कॊण्टु–अपने को लेकर; ओटि पोनार्–भाग चले; कुरुति–रक्त; वायाऱ् कक्किऩर्–मुख से वमन किया; कण् मणि चितऱ–आँखों की पुतलियाँ छितर गयीं; तिक्कॊटु नॅऱियुम्–(इसलिए) दिशाओं और मार्ग को; काणार्–न जान सके; कालाल् तिरिन्तु चॅन्ऱु–पैरों से टटोलते हुए घूम-फिरकर; उयिरुम् तीर्न्तार्–प्राणों से हीन हो गये। १६२०

पिता लोग अपने पुत्रों को ढोते हुए ले जा रहे थे। रास्ते में उनकी जान छूट गयी तो उन्हें फेंक दिया और वे अपने को बचा लेकर भाग गये। मुख से रक्त का वमन करते हुए, आँखों की पुतलियों के बिखर जाते, वे दिशा या मार्ग को पहचान न पाकर पैरों से रास्ता टटोलते भटके और आखिर प्राणों से हाथ धो लिये। १९२०

❀ इन्नदोर् तन्मै यॅय्दि यिराक्कद रिरिन्दु शिन्दिप्
पॊन्नहर् पुक्कार् इप्पाऱ् पूशल्कण् डोडिप् पोऩ
तुन्नरुन् दूदर् शॅन्ऱार् तॊडुकऴ लरक्कर्क् कॅल्लाम्
मन्नव ऩडियिल् वीऴ्न्दार् मऴैयिन्नीर् वऴङ्गु कण्णार् 1921

इन्नतु ओर् तन्मै ऍय्ति–ऐसी एक स्थिति को प्राप्त करके; इराक्कतर्–राक्षस; इरिन्तु चिन्ति–तितर-बितर अलग-अलग होकर; पॊन् नकर् पुक्कार्–सोने की (लंका) नगरी में घुसे; इप्पाल्–यहाँ; पूचल् कण्टु–लड़ाई देखकर; ओटि पोन–जो दौड़े गये; तुन्नरुम् तूतर्–दुर्धर्ष दूत; चॅन्ऱार्–गये; मऴैयिन् नीर्–वर्षा के समान जल; वऴङ्कु कण्णार्–बरसाती आँखों वाले; तॊटु कऴल्–वीरपायलधारी; अरक्कर्क्कु ॲल्लाम्–सभी राक्षसों के; मन्नवन् अटियिल्–राजा (रावण) के चरणों में; वीऴ्न्तार्–गिरे। १६२१

इस भाँति अस्त-व्यस्त हो राक्षस स्वर्णनगरी लंका में पहुँचे। इधर इस युद्ध को देखकर दुर्धर्ष दूत जल्दी पायलधारी राक्षसों के राजा रावण के पास जाकर आँखों से आँसू बहाते हुए उसके चरणों में गिरे। १९२१

※ नोक्किय विलङ्गै वेन्द नुट्रदु नुवल्मि ॲन्ड्रान्
पोक्किय शेनै तन्निल् पुहुन्दुळ विरैयुम् बोदा
आक्किय शॅरुवि तैय वदिहायन् मुदलव राय
कोक्कुलक् कुमर रॅल्लाङ् गोडुत्तन राबि यॅन्ड्रार् 1922

नोक्किय–उन्हें देखनेवाले; **इलङ्कै वेन्तन्**–लंका के राजा ने; **उट्रतु**–जो घटा; **नुवल्मितृ**–कहो; **ॲन्ड्रान्**–पूछा; **पोक्किय चेनै तन्तिल्**–(आपसे) भेजी सेना में; **पुकुन्तु उळ**–जो वापस पहुँची; **इरैयुम् पोता**–वह कुछ है यह कहने के लिए भी पर्याप्त नहीं; **आक्किय चॅरुविल्**–चली लड़ाई में; **ऐय**–प्रभु; **अतिकायन् मुतल्वर् आय**–अतिकाय आदि; **कोकुलम् कुमरर् ॲल्लाम्**–राजवंश के कुमार सब; **आवि कोट्टुत्तार्**–प्राण छोड़ गये; **ॲन्ड्रार्**–कहा। १९२२

उनको देखकर रावण ने उनसे पूछा कि बात क्या है? बताओ। उन्होंने समाचार सुनाया कि आपने जो सेना भेजी उसमें जो बची है उसे 'कुछ' भी नहीं कह सकते। प्रभु! वहाँ हुई लड़ाई में अतिकाय आदि राजवंश के सभी कुमार निष्प्राण हो गये। १९२२

※ एङ्गिय विम्मल् मान सिरङ्गिय विरक्कम् वीरम्
ओङ्गिय वॅहुळि तुन्नब मॅन्ड्रिवै यॊन्ड्रॊ डॊन्ड्रु
ताङ्गिय तरङ्ग माहत् तरैयिनैत् तळ्ळित् तळ्ळि
वाङ्गिय कडल्पोल् निन्ड्रा नरुविनीर् वळङ्गुङ् गण्णान् 1923

अरुवि नीर्–सरिता के समान जल; **वळङ्कुम् कण्णान्**–बहानेवाली आँखों का; **एङ्किय**–दुःखजनित; **विम्मल्**–दयनीयता; **मानम्**–अभिमान; **इरङ्किय इरक्कम्**–सहानुभूति का अनुताप; **वीरम्**–वीरता; **ओङ्किय वॅकुळि**–उमड़ता क्रोध; **तुन्पम्**–क्लेश; **ॲन्ड्र इवै**–ऐसे इनके; **ओन्ड्रॊडु ओन्ड्रु**–एक-दूसरे को; **ताङ्किय**–अनुगमन करती आनेवाली; **तरङ्कम् आक**–तरंगें बने; **तरैयित्**–तीर पर (उन्हें); **तळ्ळि तळ्ळि**–चला-चलाकर; **वाङ्किय**–फिर अपने में लेनेवाले; **कटल् पोल्**–समुद्र के समान; **निन्ड्रान्**–रहा। १९२३

यह समाचार पाकर रावण की आँखों से अश्रु नदी के समान बह चला! लंकापति दुःख के कारण जो थे उन शोक, अपमान, सहानुभूतिजन्य अनुताप, वीरता, आहतता आदि तरंगों को तीरों से टकराने के लिए भेजकर फिर वापस बुला लेनेवाले सागर के समान खड़ा रहा। १९२३

※ तिशैयिनै नोक्कुम् निन्ड्र तेवरै नोक्कुम् वन्द
वशैयिनै नोक्कुङ् गीर्ट्र वाळिनै नोक्कुम् पट्रिप्

पिशैयुरुङ् गैयै मीशै शुरुक्कोळ वुयिर्क्कुम् बेदै
नशैयिडैक् कण्डा लॅन्न नहुमळुम् मुनियुम् नाणुम् 1924

तिचैयित्तै नोक्कुम्–(रावण) दिशाओं को देखता; नित्र तेवरै नोक्कुम्–खड़े रहे देवों को निहारता; वन्त वचैयित्तै नोक्कुम्–प्राप्त निन्दा पर सोचता; कॊर्रम् वाळित्तै नोक्कुम्–विजयदायिनी तलवार पर दृष्टि डालता; कैयै पर्रि–हाथों को पकड़कर; पिचैयुरुम्–मलता; मीचै चुड़ कॊळ–मूँछें जल जाएँ; उयिर्क्कुम्–ऐसा श्वास छोड़ता; पेतै–अबोध पत्नी को; नचै इटै कण्टात्–उसके प्यारे (पर पुरुष) के पास देखा हो; ऍन्त–ऐसा; नकुम्–हँसता; अळुम्–रोता; मुनियुम्–कुपित होता; नाणुम्–शरमाता। १९२४

तब रावण दिशाओं को कभी देखता, कभी देवों पर दृष्टिपात करता। अपने पर आये कलंक को सोचता; अपनी विजयदायिनी तलवार पर दृष्टि लगाता। हाथ मलता और इतनी गरम साँसें छोड़ता कि मूँछें जल उठतीं। वह उस पुरुष की स्थिति में आ रहा जिसने अपनी प्रिया को उसके प्यारे चोर नायक के पास देख लिया हो। वह गुस्से की हँसी हँसता, फिर रोता और फिर शरमाता। १९२४

❀ मण्णितै यॅडुक्क वॅण्णुम् वात्तितै यिडिक्क वॅण्णुम्
ऍण्णिय वुयिर्ह ळॅल्ला मॊरुहणत् तॅर्र वॅण्णुम्
पॅण्णॅन्नुम् बॅयर वॅल्लाम् पिळप्पॅन्न् ड्रॅण्णु मॅण्णिप्
पुण्णिडै यॅरिपुक् कॅन्न मानत्ताऱ् पुळुङ्गि नैयुम् 1925

मण्णितै–पृथ्वी को; ऍटुक्क ऍण्णुम्–उखाड़ लेना चाहता; वात्तितै–आकाश को; इटिक्क ऍण्णुम्–गिरा देना चाहता; ऍण्णिय उयिर्कळ् ऍल्लाम्–गणित सभी जीवों को; ऒरु कणत्तु–एक पल में; ऍर्र ऍण्णुम्–ठुकराना चाहता; पॆण् ऍन्नुम् पॆयर ऍल्लाम्–स्त्री नामधारी सभी को; पिळप्पॆन्–तोड़ दूंगा; ऍन्र ऍण्णुम्–ऐसा सोचता; ऍण्णि–सोचकर; पुण् इटै–व्रण में; ऍरि–आग; पुक्कु ऍन्न–घुसी हो जैसे; मानत्ताल्–अपमान से; पुळुक्कि–तपकर; नैयुम्–घुलता। १९२५

रावण कभी सोचता कि मैं पृथ्वी को उखाड़ लूंगा। आकाश को तोड़ना चाहता हूँ। गिने हुए सभी जीवों का एक पल में अन्त करना चाहता। सोचता कि स्त्री नामधारी सभी को चीर दूं। इस तरह भाँति-भाँति का विचार करता और व्रण में आग घुसी हो जैसे अपमान से जल-भुनकर घुलता। १९२५

❀ ऒरुवरु मुरैयार् वायि नुयिर्त्तिल रुळ्ळ मोय्वार्
वॅरुवरुन् दहैय राहि विम्मित रिरुन्द वेलैत्

तरुवऩ मऩैय तोळात् तऩ्ऩॆदिर् तािऩ मालि
इरियलिट् टलऱि योयाप् पूशलिट् टेङ्गि वन्दाळ् 1926

ऑरुवरुम् वायित् उरैयार्–कोई मुख खोल कुछ नहीं कहता; उयिर्त्तिलर्–साँसें भी नहीं छोड़ता; उळ्ळम् ओय्वार्–शिथिल-मन होकर; वॆरुवरु तकैयर् आकि–भय से आक्रान्त स्थिति में रहकर; विम्मितर्–रोते; इरुन्त वेलै–रहते समय; तरुवनम् अऩैय तोळान्–तरुसंकुल वन के समान कन्धों वाले; तन् ऍतिर्–के सामने; तािनमालि–धान्यमालिनी; इरियल् इट्टु अलऱि–अस्त-व्यस्त, चिल्लाती हुई; ओया पूचल् इट्टु–लगातार शोर मचाते हुए; एङ्कि वन्ताळ्–शोकतप्त हो आयी। १९२६

वहाँ जो रहे उनमें कोई कुछ नहीं बोला। साँसें भी नहीं छोड़ीं। उनका मन श्लथ हो गया था। भय ने उनके मन को आक्रांत कर लिया। जब वे विलाप करते रहे, तब तरुसंकुल वन के समान हाथों के समूह से शोभित रावण के सामने धान्यमालिनी अस्त-व्यस्त चीखती-चिल्लाती और लगातार शोर मचाती हुई पुत्रहानि के शोक से संतप्त हो आयी। १९२६

ॐ मलैक्कुवट् टिडिवीऴ्न् दॆऩ्ऩ वळैहळो डार मेङ्ग
मुलैक्कुवट् टॆऱ्ऱुङ् गैयाळ् मुऴैतिऱन् दऩ्ऩ वायाळ्
तलैक्कुवट् टणैन्द शॆक्कर् शरिन्दऩ कुऴल्ह डत्ति
युलैक्कुवट् टुरुहु शॆम्बोत् तुदिरनीर् उमिऴुम् कण्णाळ् 1927

मलै कुवट्टु–पर्वतशिखर पर; इटि वीऴ्न्तु ऍऩ्ऩ–वज्र गिर गया हो जैसे; वळैकळोटु–कंकणों के साथ; आरम् एङ्क–हारों के ध्वनि करते; मुलै कुवट्टु–स्तनों के शिखरों पर; ऍऱ्ऱुम् कैयाळ्–पीटनेवाले हाथों की; मुऴै तिऱन्तु अऩ्ऩ वायाळ्–कंदरा खुली हो जैसे मुख वाली; तलैकुवट्टु अणैन्त–सिर की चोटी पर रहनेवाले; चॆक्कर् कुऴल्कळ्–लाल केश; ताङ्कि–जो रहे; तत्ति–उनके चारों ओर बिखरे रहते; उलै कुवट्टु–भट्ठी में; उरुकु–पिघलनेवाले; चॆम्पु ऑत्तु–ताम्र के समान; उतिरम् नीर्–रक्तवारि; उमिऴुम् कण्णाळ्–बहानेवाली आँखों से युक्त। १९२७

वह कंकणों और हारों को पर्वतशिखर पर गिरे वज्र के समान ध्वनि करने देते हुए अपने स्तनों के शिखरों पर पीटती, कंदरा के समान खुले मुख के साथ, सिर पर के लाल केशों को चारों ओर बिखेरकर, भट्ठी पर पिघले ताँबे के समान आँखों से रक्तवारि बहाते हुए आयी। १९२७

ॐ वीऴ्न्दऩ ळरक्कऩ् ताळ्मेऩ् मॆऩ्मैत्तोळ् निलत्तै मेवप्
पोऴ्न्दऩळ् पॆरुम्बाम् बॆऩ्ऩप् पुरण्डऩळ् पॊरुमिप् पॊङ्गिच्
चूऴ्न्दवै कॊडुमै यॆऩ्ऩात् तुडित्तरुन् दुयर वॆळ्ळत्
ताऴ्न्दऩळ् पुलम्ब लुऱ्ऱा ळऴक्कण्डु मऱिन्दि लादाळ् 1928

अऴक्कण्टुम्–दूसरों का रोना भी; अऱिन्तिलाताळ्–जिसने नहीं देखा था वह; मॆऩ्मै तोळ्–मृदु कंधे; निलत्तै मेव–भूमि पर लगे रहें ऐसा; अरक्कन् ताळ् मेल्–

राक्षस (रावण) के चरणों पर; वीऴ्न्ततऴ्–गिरी; पॊरुमि पॊङ्कि–रोकर, सिसककर; पोऴ्न्ततऴ्–मुख खोलकर; पॆरु पाम्पु ॲन्न–बड़े सर्प के समान; पुरण्टतऴ्–लोटी; कॊटुमै चॆय्तनै–निष्ठुरता करा दी; ॲन्ऱा–कहकर; तुटित्तु–तड़पकर; अरु तुयरम् वॆळ्ळत्तु–अपार दुःखप्रवाह में; आऴ्न्ततऴ्–मग्न होकर; पुलम्पल् उऱ्ऱाळ्–विलाप करने लगी। १९२८

उसने इसके पहले रोना नहीं जाना था। असल में उसने किसी को रोते हुए देखा भी नहीं था। वह ऐसा रावण के चरणों पर गिरी कि उसके मृदु कंधे भूमि से लग गये। अत्यधिक दुःख के कारण वह विलपी। और मुख खोलकर वड़े साँप के समान लोटी। "तुमने मेरा बड़ा बुरा किया है" —कहकर वह तड़पी और अतरणीय दुःख के प्रवाह में मग्न हो रही। १९२८

❀ माट्टायो विक्कालम् वल्लोर् वलितीर्क्क
मीट्टायो वीरम् मॆलिन्दायो तोळाऱ्ऱल्
केट्टा युणर्न्दिलैयो वॆन्नुरैयुङ् गेळायो
काट्टायो वॆन्नुडैय कण्मणियैक् काट्टायो 1929

इ कालम्–अब; बल्लोर्–बलवानों की; वलि तीर्क्क माट्टायो–कठोरता दूर नहीं करोगे क्या; वीरम् मीट्टायो–वीरता लौटा ली क्या; तोळ् आऱ्ऱल्–भुजबल; मॆलिन्तायो–क्षीण हो गये क्या; केट्टाय्–सुनकर; उणर्न्तिलैयो–न समझे क्या; ॲन् उरैयुम्–मेरा कहना; केळायो–न सुनोगे क्या; ॲन्नुटैय कण्मणियै–मेरी आँखों के तारे को; काट्टायो–न दिखाओगे क्या। १९२९

अब तुम बलवान शत्रुओं के पराक्रम को परास्त नहीं करोगे क्या? तुम्हारा प्रताप लौट आ गया क्या? भुजबल क्षीण हो गया? यह जो मैं कह रही हूँ इसे तुमने पहले नहीं सुना, नहीं जाना क्या? अब मैं जो कह रही हूँ वह भी नहीं सुनते हो क्या? क्या मेरी आँख के तारे को लाकर नहीं दिखाओगे?। १९२९

❀ इन्दिरर्कुन् दोलाद नन्महनै यीन्ऱाळॆन्
ऱुन्दरत्तु वाऴ्वारु मेत्तु मळियत्तेन्
मन्दरत्तो ळॆन्महनै माट्टा मनिदन्ऱन्
उन्दुशिलैप् पहऴिक् कुण्णक् कॊडुत्तेने 1930

इन्तिरर्कुम् तोलात–इन्द्र भी जिसे हरा नहीं सकता; नल् मकनै–उस उत्तम पुत्र को; ईन्ऱाळ् ॲन्ऱु–जन्म दिया ऐसा; अन्तरत्तु वाऴ्वारुम्–व्योमवासी भी; एत्तुम्–प्रशंसा करें; अळियत्तेन्–इस प्रशंसा का पात्र रही बेचारी मैंने; मन्तरम् तोळ् ॲन् मकनै–मंदरस्कंध अपने पुत्र को; माट्टा मनितन् तन्–निर्बल मनुष्य के; चिलै उन्तु–धनु द्वारा चलाये गये; पकऴिक्कु–शर को; उण्ण–भक्षण करने; कॊटुत्तेने–दे दिया न। १९३०

देवों ने यह कहकर मेरी प्रशंसा की थी कि मैंने ऐसे पुत्र को जन्म दिया जिसे देवेन्द्र भी हरा नहीं सके। अब मैं वेचारी अपने मन्दर-स्कन्ध पुत्र को दुर्बल मानव के धनु-प्रेरित शर को भक्षण करने के लिए दे चुकी हूँ, हाय ! । १९३०

❀ अक्क तुलन्दा ऩदिहायन् ताऩ्पट्टाऩ्
मिक्कतिऱत् तुळ्ळार्ह ळॅल्लारुम् वीडिऩार्
मक्कळिऩि लिऩ्ऱुळाऩ् मण्डोदरि महऩ्
तिक्कु विशय मिऩियॊरुहार् चॅल्लायो 1931

अक्कन् उलन्ताऩ्–अक्षकुमार सूखा; अतिकायन् पट्टाऩ्–अतिकाय मरा; मिक्क–अधिक; तिऱत्तु उळ्ळार्कळ्–बल रखनेवाले; ऍल्लोरुम्–सभी; वीटिऩार्–मर गये; मक्कळितिल्–संतानों में; निऩ्ऱुळाऩ्–जो बचा रहता है; मण्टोतरि मकऩ्–वह मंदोदरी का पुत्र ही; इऩि–अब; तिक् विचयम्–दिग्विजय पर; ऒरुकाल्–एक बार; चॅल्लायो–नहीं जाओगे क्या। १९३१

अक्षकुमार मरा और अतिकाय का भी निधन हो गया। वहुत बलवान सभी चल बसे। संतानों में अभी वचा रहा केवल मंदोदरी का पुत्र। फिर क्या एक बार दिग्विजय करने जाओगे ? । १९३१

❀ एदैया शिन्दित् तिरुक्किऩ्ऱा यॆण्णिऱन्द
कोदैयार् वेलरक्कर् पट्टारैक् कूवायो
पेदैयाय्क् कामम् पिडित्तार् पिऴैप्पारो
शीदैया लिऩ्ऩम् वरुव शिलवेयो 1932

ऐया–स्वामी; एतु चिन्तित्तु–क्या सोचते हुए; इरुक्किऩ्ऱाय्–रहते हो; कोतैयार्–विजयमाला से अलंकृत; वेल्–बर्छियों वाले; अरक्कर्–राक्षस; पट्टारै–जो मरे उनको; कूवायो–न बुलाओगे क्या; पेतैयाय्–जड़मति होकर; कामम् पिटित्तार्–कामग्रस्त; पिऴैप्पारो–उभरेंगे क्या; चीतैयाल् वरुव–सीता के निमित्त जो आनेवाले (अनर्थ) हैं; इऩ्ऩम् चिलवेयो–और कुछ ही हैं क्या। १९३२

स्वामी ! क्या सोचते रहते हो ? विजयमालाभूषित भाले वाले राक्षस जो मौत के घाट उतर चुके हैं उनको लौटा लोगे ? मतिहीन ! कहीं कामग्रस्त लोग वचेंगे ? सीता के निमित्त और क्या केवल कुछ ही अनर्थ आएँगे ? । १९३२

❀ उम्बि युणर्वुडैयान् शॊऩ्ऩ वुरैकॊळ्ळाय्
नम्बि कुलक्किऴवन् कूऱु नलमोराय्
कुम्ब करुणऩैयुङ् गॊल्वित्तऩ् कोमहऩे
अम्बुक् किरैयाक्कि याण्डा यरशैय 1933

उणरव उडैयान–विवेकी;

कथन; कोळ्ळाय्–तुमने नहीं माना; कुलम् किळवत्–कुल के श्रेष्ठ; नम्पि कूरुम्–नायक (विभीषण) का कहा; नलम्–उपदेश; ओराय्–नहीं समझे; कुम्पकरुणत्तैयुम् कोल्वित्तु–कुम्भकर्ण को भी मरवाकर; ऍन् कोमकनै–मेरे राजकुमार को भी; अम्पुक्कु इरै आक्कि–अस्त्र का शिकार बनाकर; ऐय–प्रभु; अरचु पुरिन्तनै–तुमने शासन किया। १९३३

तुम्हारा भाई कुंभकर्ण बड़ा बुद्धिमान था। उसका कहा तुमने नहीं माना। कुल का श्रेष्ठ पुत्र विभीषण ने सदुपदेश किये। वह तुम समझ ही नहीं सके। कुंभकर्ण को मरवा दिया और मेरे राजकुमार को अस्त्र का शिकार बनवा दिया। तिस पर, प्रभु! तुमने शासन खूब किया! । १९३३

❀ ऍन्ऱु पलप्पलवुम् बन्नि यॅडुत्तळैत्तुक्
कन्ऱु पडप्पिळैत्त तायपोर् कवल्वाळै
निन्ऱ वुरुप्पशियुम् मेनहैयु नेर्न्दॅडुत्तुक्
कुन्ऱु पुरैयुम् नॅडुङ्गोयिल् कॊण्डणन्दार् 1934

ऍन्ऱु–ऐसा; पल पलवुम् पन्ति–विविध बातें बार-बार कहकर; ऍडुत्तु अऴैत्तु–उच्च स्वर में चिल्लाकर; कन्ऱु पट–बच्चे के मरने पर; ताय् पोल्–माता (गाय) जैसे; कवल्वाळै–जो व्याकुल थी उसको; निन्ऱ उरुप्पचियुम्–वहाँ जो खड़ी थी वह उर्वशी और; मेनकैयुम्–मेनका; नेर्न्तु ऍडुत्तु–पास जाकर उठाकर; कुन्ऱु पुरैयुम्–पर्वत-सदृश; नॅटु कोयिल्–बड़े महल में; कॊण्टु अणैन्तार्–ले गयीं। १९३४

ऐसी विविध बातें बार-बार कहते हुए धान्यमालिनी उच्च स्वर में रोने-पीटने लगी और मरे बछड़े की माता गाय के समान व्याकुल हुई। वहाँ उर्वशी और मेनका जो खड़ी रहीं वे उसे उठाकर पर्वत-सम महल में ले गयीं। १९३४

❀ तान नहरत् तरक्कर् तलैमयङ्गिप्
पोत महवुडैयार् पोलप् पुलम्बिनार्
एनै महळिर् निलैयॅन्नाम् पोयिरङ्गि
वान महळिरुन्दम् वाय्तिऱन्दु माळ्हिनार् 1935

तानम्–प्रमुख; नकरत्तु अरक्कर्–नगर के राक्षस; तलै मयङ्कि–मिलकर; पोत मकवु उटैयार् पोल–अपने पुत्र खो चुके हों, ऐसा; पुलम्पिनार्–रोये; वान मकळिरुम्–देवस्त्रियाँ भी; पोय् इरङ्कि–बहुत दुःखी होकर; तम् वाय् तिऱन्तु माळ्किनार्–अपना मुख खोलकर रोयीं और बेहोश हुईं; एनै मकळिर् निलै–अन्य स्त्रियों की स्थिति; ऍन्नाम्–क्या हो। १९३५

लंका के उच्च पद के सभी राक्षस जुटे और अपनी सन्तान के नष्ट होने पर जैसे विलाप करने लगे। देवस्त्रियाँ भी उस रुदन को

सुनकर अपना मुख खोलकर रोयीं और बेहोश हुईं। फिर अन्य स्त्रियों की हालत क्या होगी ? । १९३५

तारहलत् तण्णल् तन्निक्कोयिल् ताशरदि
पेरवुल हुर्र् दुर्र्दार् पेरिलङ्गै
ऊरहल मेंल्ला मरन्दै युवावुर्र्
आर्हलिये यौत्त दळुद कुरलोशै 1936

पेर् इलङ्कै–नामी लंकानगरी की; तार् अकलत्तु–मालाभूषित विशाल वक्षःस्थल के; अण्णल्–महिमावान दशरथ के; तन्नि कोयिल्–अनुपम महल से; ताचरति–दाशरथी के; पेर–निकलने पर; उलकु उर्र्तु उर्र्तु–जो लोक का हुआ वही स्थिति हुई; ऊर् अकलम् ऍल्लाम्–नगर के स्थान सभी; अरनृतै–गंभीर दुःख से; अळुत कुरल् ओचै–जो रोये उनके कंठ-स्वर; उवा उर्र्–पौर्णिमा के दिन को देख; आर् कलिये ऑत्ततु–उमँग उठनेवाले समुद्र के ही समान रहे। १९३६

तब श्रेष्ठ लंका की हालत तब के लोक की-सी रही, जब कि विजय-मालाभूषित विशाल वक्ष वाले चक्रवर्ती दशरथ के अनुपम महल से दाशरथी वनगमनार्थ निकले थे। नगर भर का आर्तनाद पूर्णिमा के सागर-गर्जन के ही समान था। (इस उपमा में 'कम्बन' का राक्षस-रुदन से प्राप्त आनन्द भी इंगित है ! क्योंकि समुद्र का उमँगना आनन्द के कारण होता समझा जाता है।) । १९३६

18. नाहपाशप् पडलम् (नागपाश पटल)

कुळुमिक् कॉलैवाट्क णरक्कियर् कून्दल् ताळत्
तळुवित् तलैप्पॅय्दु तङ्गैहोडु मार्बि नॅर्रि
अळुमित् तॉळ्लियादुहो लॅन्रो रयिर्प्पु मुर्रान्
ऍळ्लित् तनियेरॅन्तविन् दिरशित् तॅळुन्दान् 1937

इन्तिरचित्तु–इन्द्रजित् को; कॉलै वाळ् कण्–घातक तलवार-सी आँखों वाली; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; कुळुमि–एकत्रित होकर; तलै पॅय्तु–भीड़ बनाकर; कून्तल् ताळ–केश को खोल-लटकाकर; तळुवि–गले मिलकर; तम् कै कोटु–अपने हाथों से; मार्पिन् ऍर्रि–छाती पीटकर; अळुम्–रोती हैं जो; इ तॉळ्लिल्–यह काम; यातु कॉल्–किस कारण; ऍन्रु–ऐसा; ओर् अयिर्प्पुम्–एक संदेह; उर्रान्–हुआ; ऍळ्लि–मेघ के; तनि एरु ऍन्न–अनुपम वज्र के समान; ऍळुन्तान्–उठ चला। १९३७

प्राणापहारी तलवार-सी आँखों वाली राक्षस-स्त्रियाँ एकत्रित होकर खुले व बिखरे केश के साथ अपनी छाती पीटती चीखती-चिल्लाती रो रही थीं। इन्द्रजित् ने यह देखकर संदेह किया कि यह कार्य क्यों हो रहा है ! तब मेघ-मध्य उठनेवाली बिजली के समान निकल पड़ा। १९३७

❀ अँट्टाहिय तिक्कैयुम् वॅन्ऱवऩ् इऩ्ऱुम् ईट्टु
पट्टाऩ्गॊल् अवऩ्ड्रॅलिऱ् पट्टऴिऩ् दाऩ्गॊल् पण्डूर्
शुट्टाऩ् वहऩ्पदि येत्तोडु वेलै योडुम्
कट्टाऩ्गॊ लिदर्कोरु कारण मॅऩ्गॊ लॅन्ऱाऩ् 1938

अँट्टु आकिय–आठ के हिसाब की; तिक्कैयुम् वॅन्ऱवऩ्–दिशाओं को जीतनेवाला; इऩ्ऱुम्–आज भी; ईट्टु पट्टाऩ् कॊल्–बल खो गया क्या; अतु अऩ्ऱु ॲलिल्–वह नहीं तो; पट्टु अऴिन्ताऩ् कॊल्–मर गया क्या; पण्टु–पहले; ऊर् चुट्टाऩ्–नगर को जिसने जलाया था उसने; तॊकु वेलैयोटुम्–(सगरपुत्रों द्वारा) खोदे गये समुद्र के साथ; इव्–इस; अकल् पतियै–विशाल नगर को; कट्टाऩ् कॊल्–ध्वस्त कर दिया क्या; इतऱ्कु–इस (रुदन) का; ओरु कारणम्–कारण; ॲऩ् कॊल्–क्या है; ॲऩ्ऱाऩ्–सोचा (इन्द्रजित् ने)। १६३८

अष्टदिग्विजयी रावण आज भी (जैसे पहले दिन) परास्त हो गया क्या? नहीं तो मर ही गया क्या? या पहले लंका को जिसने जलाया था उसने सगरपुत्रखनित सागर के साथ लंका को मिटा दिया? इस तरह राक्षसियों के रोने का हेतु क्या है? इन्द्रजित् ने यह विचार किया। १९३८

❀ केट्टा ऩिङ्गेयुड्ड्र् वॅऩ्ऩॆऩ्ऱु किळत्तलि यारुम्
माट्टावु नडुङ्गिऩर् माऱ्ऱम् मऱन्दु निऩ्ऱार्
ओट्टा नॅडुन्देर् कडिदोट्टि यिमैप्पि नुऱ्ऱाऩ्
काट्टादऩ काट्टिय तादैयैक् कण्णिऩ् कण्डाऩ् 1939

इटै–यहाँ; उऱ्ऱ ॲऩ्–हुआ क्या; ॲऩ्ऱु–ऐसा; केट्टाऩ्–पूछा; यारुम्–सभी; किळत्तल् माट्टातु–कह नहीं सककर; नटुङ्कितर्–डरते हुए; माऱ्ऱम् मऱन्तु–उत्तर देना भूलकर; निऩ्ऱार्–खड़े रहे; ओट्टा–जिसको उकसाने की जरूरत नहीं, उस; नॅटु तेर्–बड़े रथ को; कटितु ओट्टि–तेज दौड़ाते हुए; इमैप्पिऩ्–पलक मारती देर में; उऱ्ऱाऩ्–(पिता के पास) गया; काट्टातऩ–अप्रकटीकृत; काट्टिय–स्थिति को जो दिखा रहा था उस; तातैयै–पिता को; कण्णिल् कण्टाऩ्–आँखों से देखा (इन्द्रजित् ने)। १६३६

इन्द्रजित् ने वहाँ रहे लोगों से पूछा कि इधर हुआ क्या है? पर कोई उत्तर नहीं दे सके। बिलकुल भयभीत होकर मौन रहे। तब इन्द्रजित् अपने रथ को, जिसे उकसाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, तेज़ी से चलाकर पल भर में पिता के पास आया। वहाँ रावण की वह स्थिति देखी जो इसके पहले कभी नहीं हुई थी। (इस वाक्य का यह अर्थ भी हो सकता है कि जो अन्य करके दिखा नहीं सकें, ऐसी बातें करके दिखानेवाले रावण को देखा।) । १९३९

❀ कण्डा ऩिरैयाऴिय नॆञ्जिऩऩ् कैहळ् कूप्पि
उण्डायदॆ निव्वुऴि यॆऩ्ऱलु मुम्बि मारैक्

कॉण्डा तुयिर्कालतुङ् गुम्ब निकुम्ब रोडुम्
विण्डा तडैन्दा तदिहायतुम् वीर वॆन्ऱान् 1940

कण्टान्–देखकर; इऱै आऱिय–थोड़ा आश्वस्त; नॆञ्चितन्–मनवाला; कैकळ् कूप्पि–हाथ जोड़कर; इव् उळ्ि–यहाँ; उण्टायतु ॲन्–हुआ क्या; ॲन्ऱलुम्–पूछने पर; वीर–वीर; कालतुम्–यम ने भी; उम्पि मारै–तुम्हारे भाइयों के; उयिर् कॊण्टान्–प्राण ले लिये; कुम्प निकुम्परोटुम्–कुंभ-निकुंभ के साथ; अतिकायतुम्–अतिकाय भी; विण् अटैन्ताऩ्–स्वर्ग चला गया; ॲन्ऱाऩ्–कहा रावण ने। १६४०

इन्द्रजित् ने रावण को (जीवित) देखा तो वह थोड़ा आश्वस्त हुआ। हाथ जोड़कर उसने प्रश्न किया कि यहाँ क्या हुआ? रावण ने उत्तर दिया— हे वीर! (यम को भी यह साहस हो गया कि) यम ने तुम्हारे छोटे भाइयों के प्राण हर लिये। कुंभ-निकुंभ मरे और उनके साथ अतिकाय भी स्वर्गवासी हो गया। १९४०

शॊल्लाद मुन्नञ् जुडरैच् चुडर्तुण्डु कण्णान्
पल्ला लदरत्तै यदुक्किविण् मीदु पार्त्तान्
ॲल्लारु मिड़न्दन रोवॆन्ऱ वेङ्गि नैन्दान्
विल्लाळरै यॆण्णिल् विरऱ्कुमुन् निऱ्कुम् वीरन् 1941

विल्लाळरै ॲण्णिल्–धन्वियों को गिनने में; विरऱ्कु मुन् निऱ्कुम् वीरन्–उँगलियों में सबसे पहला रहनेवाला वीर; चॊल्लात मुन्नम्–रावण के कह चुकने के पहले ही; चुटरै चुटर् तुणट् कण्णाऩ्–सूर्य को भी तेज प्रदान करनेवाली आंखों का होकर; पल्लाल्–दांतों से; अतरत्तै अतुक्कि–अधर को दबाकर; विण् मीतु पार्त्ताऩ्–आकाश की तरफ़ देखकर; ॲल्लारुम् इऱन्तनर्–सभी मर गये; ओ–हन्त; ॲन्–ऐसा कहकर; एङ्कि नैन्ताऩ्–तरसते हुए व्याकुल हुआ। १६४१

उँगलियों पर गिनते समय प्रथम उँगली पर गिने जानेवाला धन्वी इन्द्रजित् रावण के कह चुकने के पहले ही सूर्य को भी अग्नि प्रदान करनेवाली आँखों वाला हो गया। अधरों को दाँतों से काटते हुए उसने आकाश को देखा और बहुत ही व्याकुलता के साथ उद्गार निकाला कि हाय! सभी मर गये। १९४१

*आर्कॊन् ऱवरॆन्ऱलुम् पेरदि हाय नॆन्नुम्
पेर्कॊन् ऱवन्ऱॆन्ऱि यिलक्कुवन् पित्बु निन्ऱार्
ऊर्कॊन् ऱवशाऱ् पिड़रालॆन वुऱ्ऱ वॆल्लाम्
तार्कॊन् ऱैयितान् किरिशायत्तवन् तानु रैत्तान् 1942

कॊन्ऱवर् आर्–हननकारी कौन है; ॲन्ऱलुम्–पूछने पर; कॊन्ऱै तारिताऩ्–अमलतास की मालाधारी (शिव) की; किरि चाय्त्तवन्–(कैलास) गिरि को जिसने गिराया था उस रावण ने; पेर्–नामी; अतिकायन् ॲन्नुम् पेर्–अतिकाय नाम के

वीर को; कॊन्ऱवन्–जिसने मारा वह; वॆन्ऱि इलक्कुवन्–विजयी वीर लक्ष्मण है; पिन्पु निन्ऱार्–और जो रहे; ऊर् कॊन्ऱवताल्–लंकानगर को नाशकारी (हनुमान) से; पिऱराल्–और दूसरों से; ऎन–ऐसा; उऱ्ऱ ऎल्लाम्–हुआ सब (हाल); उरैत्तान्–कहा। १९४२

इन्द्रजित् ने लंकाधिपति से पूछा कि मारा किसने ? तो अमलतास के फूलों की मालाधारी शिवजी के कैलासपर्वत के उत्पाटक रावण ने उत्तर में कहा कि नामी अतिकाय का हन्ता विजयी लक्ष्मण है। फिर अन्यों को लंका के नाशकारी हनुमान ने और अन्यों ने मार दिया। उसने फिर सारी घटनाएँ कह सुनायीं। १९४२

❀ कॊन्ऱा रवरो कॊलैशूळ्हॆन नीकॊ डुत्ताय्
वन्ऱानैयर् मानिडर् वन्मै यऱिन्दुम् मन्ना
ऎन्ऱान् मॆनैच्चॆल वेवलै यिऱ्ऱ ऎन्ना
निन्ऱान् नॆडिदुन्नि मुनिन्दु नॆरुप्पु यिर्प्पान् 1943

मन्ना–राजा; वल् तानैयर्–बलवान सेना रखनेवाले; मानिटर्–नरों की; वन्मै–कठोरता; अऱिन्तुम्–जानकर भी; ऎन् तानुम्–मुझे तो; चॆल–जाने को; ऎन्नै एवलै–थोड़ा भी प्रेरित नहीं किया; कॊन्ऱार् अवरो–(इसलिए) उनको मारने वाले वे हैं क्या; कॊलै चूळ्क ऎन–मारने का उपाय करो कहकर; नी कॊटुत्ताय्–तुमने उन्हें दे दिया; इऱ्ऱतु–इस कारण हानि हुई; ऎन्ना–कहकर; नॆटितु उन्नि–बहुत देर तक विचारमग्न रहकर; मुनिन्तु–गुस्सा करके; नॆरुप्पु उयिर्प्पान्–आग्नेय श्वास छोड़ते हुए; निन्ऱान्–खड़ा रहा। १९४३

इन्द्रजित् ने कहा कि राजा ! उन प्रबल सेना के स्वामी नरों का बल जानकर भी तुमने थोड़ा भी मुझे लड़ने भेजने का विचार नहीं किया। फिर उनको मारनेवाले क्या शत्रुओं को बता सकते हैं ? नहीं। तुमने ही 'मारो इन्हें' कहकर उनके हाथ में दे दिया ! इसलिए हमारा बल मिट गया। यह कहकर वह बहुत देर तक गुस्से के साथ आग-सी साँसें छोड़ता खड़ा रहा। १९४३

❀ अक्कप् पॆयरोनै निलत्तॊ डरैत्तु ळानै
विक्कऱ्कॊरु वॆव्वुरैत् तूदुव नॆन्ऱु विट्टाय्
पुक्कत् तलैप्पॆय्दल् निनैन्दिलै पुन्दि यिल्लाय्
मक्कळ् तुणैयऱ्ऱनै यिऱ्ऱदुन् वाळ्क्कै मन्नो 1944

अक्कन् पॆयरोनै–अक्षकुमार को; निलत्तॊटु अरैत्तुळानै–जिसने भूमि पर पीसा (उसे); विक्कऱ्कु–गला घोंटना छोड़कर; ऒरु वॆम् उरै तूतुवन्–एक (शत्रु की) इच्छित बातें कहनेवाला दूत; ऎन्ऱु–कहकर; विट्टाय्–छोड़ दिया; पुक्कु–(यहाँ के रहस्य) जाकर; अ तलै पॆय्तल्–वहाँ पहुँचेंगे; निनैन्तिलै–नहीं सोचा,

तुमने; पुन्ति इल्लाय्-बुद्धिहीन; मक्कळ् तुणै अऱ्ऱतै-लोगों की सहायता खो चुके; उन् वाळ्क्कै इऱ्ऱतु-तुम्हारा जीवन समाप्त हो गया है। १९४४

फिर बोला— हनुमान ने अक्षकुमार को भूमि पर डालकर पीसा था। उसको मारने के बजाय तुमने 'शत्रु का इच्छित संदेश सुनानेवाला दूत है' कहकर जीवित छोड़ दिया। तुमने नहीं सोचा कि यहाँ के सभी रहस्य वहाँ पहुँच जाएँगे। बुद्धिहीन ! अब लोगों की सहायता से वंचित हो गये। अब तुम्हारा जीवन ही समाप्त हो गया। १९४४

❀ ऍन्निन्ऱ निनैन्दु मियम्बियु मॆण्णि युन्दान्
कॊन्निन्ऱ पडैक्कलत् तॆम्बियैक् कॊन्ऱु ळानै
अन्निन्ऱ निलत्तव नाक्कैयै वीट्टि यल्लाल्
मन्निन्ऱ नहर्क्किनि वारलॆन् वाळ्वुम् वेण्डेन् 1945

निन्ऱु निनैन्तुम्-सावधानी से विचार करके; ऍण्णियुम् इयम्पियुम्-सोचने-समझाने से; ऍन्-क्या (लाभ है); कॊन् निन्ऱ-तीक्ष्णता से युक्त; पटै कलत्तु ऍम्पियै-हथियारों वाले मेरे छोटे भाई को; कॊन्ऱुळानै-जिसने मारा; अवन् आक्कैयै-उस लक्ष्मण के शरीर को; अन्निन्ऱ-वह जहाँ रहता है उसी; निलत्तु-युद्धभूमि में; वीट्टि अल्लाल्-नाश किये बिना; मन् निन्ऱ-मान-प्राप्त; नकर्क्कु-नगर को; इनि वारलॆन्-अब नहीं आऊँगा; वाळ्वुम्-जीना भी; वेण्टेन्-नहीं चाहूँगा। १९४५

हाँ ! सावधानी से सोचना, विचारना, समझाना —अब इनसे क्या होगा ? तीक्ष्ण हथियार वाले अपने भाई के घातक, लक्ष्मण को वहीं युद्ध के मैदान में शरीर को गिराकर बिना मारे मैं गौरवपूर्ण इस नगर को लौट नहीं आऊँगा। जीवित रहना भी नहीं चाहूँगा। १९४५

❀ माऱ्ऱावुयि रॆम्बियै माऱ्ऱिय मानु डन्ऱन्
ऊऱ्ऱार् कुरुदिप्पुनल् पार्मह ळुण्डि लाळेल्
एऱ्ऱा निहलिन्दिर नीरिरु कालॆ नक्के
तोऱ्ऱान् ऱनक्कॆन् नॆडुशेवहन् दोऱ्क वॆन्ऱान् 1946

माऱ्ऱा उयिर्-अहन्य प्राणों वाले; ऍम्पियै-मेरे छोटे भाई को; माऱ्ऱिय-जिसने वध किया उस; मानुटन् तन्-नर के; ऊऱु आर्-स्रवन का गुण रखनेवाले; कुरुति पुनल्-रक्त-प्रवाह को; पार्मकळ्-भूदेवी; उण्टिलाळेल्-नहीं पिएगी तो; इकल् एऱ्ऱान्-युद्ध का स्वागत करके; तोऱ्ऱान्-जो हारा; इन्तिरन् तनक्के-उस इन्द्र से ही; ऍन् नॆटु चेवकम्-मेरी बड़ी वीरता; ईरिरु काल्-चार बार; तोऱ्क-हार जाए; ऍन्ऱान्-दावा बोला। १९४६

इस भूमिदेवी को अहन्य मेरे भाई के हंता के स्रवणशील रक्त-प्रवाह को नहीं पिलाऊँ तो युद्ध का स्वागत करके जो मुझसे हारा उस इन्द्र से मेरी बड़ी वीरता चार बार परास्त हो जाय ! । १९४६

वॆङ्गण् ऩॆडुवानरत् तानैयै वीट्टि वीट्टायप्
पङ्गम् बडनूऱि यिलक्कुव ऩैप्प डेऩेल्
अङ्गन् वरवञ्जियॆऩ् ऩाणै कडक्क लाद
शॆङ्गण् ऩॆडुमाल् मुदट्टेवर् शिरिक्क वॆऩ्ऱाऩ् 1947

वॆम् कण्–क्रूर; नॆटु–बड़ी; वानर तानैयै–वानर-सेना को; वीट्टि वीट्टाय्–छिन्न-भिन्न; पङ्कम् पट–भग्न करके; नूऱि–मिटाकर; इलक्कुवनै पटेतेल्–लक्ष्मण का हनन नहीं करूँ तो; अङ्कम् तर अञ्चि–शरीर दिखाने से डरकर; ऎऩ् आणै कटक्कलात–मेरी आज्ञा का उल्लंघन जो नहीं करते; चॆं कण्–अरुणाक्ष; नॆटु माल्–श्रेष्ठ विष्णु; मुतल् तेवर्–आदि देवता; चिरिक्क–हँसी उड़ाएँ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १९४७

अगर मैं क्रूर और बड़ी वानर-सेना को छिन्न-भिन्न करके लक्ष्मण को भी न मार दूँ तो मेरे सामने अपना शरीर दिखाने से डरकर मेरा आज्ञाकारी बना रहनेवाला विष्णु और अन्य देव मेरी हँसी उड़ावें। इन्द्रजित् ने ऐसे शपथ-वचन कहे। १९४७

पाम्बिऩ् ऱरुवॆम्बडै पाशु पदत्ति ऩोडुम्
तेम्बऱ् पिऱैशॆऩ्ऩि वैत्तानुरु तॆय्व वेदि
ओम्बित् तिरिन्देऱ् किऩियिऩ् ऱुदवादु पोमेल्
शोम्बित् तिरिवे ऩिऩिच्चोऱु मुवन्दु वाऴेऩ् 1948

पाम्पिल् तरु–सर्परूप में रहनेवाले; वॆम् पटै–भयंकर अस्त्र को; पाशु-पतत्तिऩोटुम्–पाशुपतास्त्र के साथ; तेम्पल् पिऱै–घटनेवाले चन्द्र को; चॆऩ्ऩि–सिर पर; वैत्तात्–धारण करनेवाले शिव की; तरु–दी हुई; तॆय्व एति–दिव्य तलवार का हथियार; ओम्पि–पालन करके; तिरिन्तेऱ्कु–घूमनेवाले मेरी; इऩि–आगे; इऩ्ऱु–आज; उतवातु पोमेल्–सहायता किये बिना रह जायगा तो; चोम्पि–आलसी बनकर; तिरिवेऩ्–घूमूँगा; इऩि–आगे; चोऱुम्–भात (भोजन) भी; उवन्तु वाऴेऩ्–चाहूँगा और जीवित रहूँगा नहीं। १९४८

नागास्त्र, पाशुपतास्त्र और क्षयीचन्द्रशेखर शिवजीदत्त दिव्य खड्ग इनका रक्षण करते फिरनेवाले मेरी सहायता आज नहीं करेंगे तो मैं आलसी बनकर फिरूँगा। खाने और जीवित रहने की चाह भी छोड़ दूँगा। १९४८

मरुन्दे निहरॆम्बितत् ऱारुयिर् वव्वि ऩाऩै
विरुन्दे यॆऩवन्दहऩ् कोहिलॆऩ् विल्लु मेऩ्विप्
पॊरुन्देवर् कुऴानहै शॆय्विडप् पोन्दु पारिऩ्
इरुन्दे ऩॆऩिनाऩव् विरावणि यल्ल ऩॆऩ्ऱाऩ् 1949

मरुन्ते निकर्–अमृत ही सम; ऎम्पि तत्–मेरे छोटे भाई के; आर् उयिर् वव्विताऩै–प्यारे प्राणों को हरनेवाले को; अन्तकऩ्कु–यम को; विरुन्ते ऎऩ–दावत

के रूप में; ईकिलॆन्-नहीं देकर; पोरुम् तेवर् कुऴाम्-योद्धा देवगण; नकै चॆय्तिट-हँसी करें ऐसा; विल्लुम् एन्ति-धनु ढोकर; पोन्तु-जाकर; पारिन् इरुन्तेन्-भूमि पर (भारस्वरूप) रहा; ऎतिन्-तो; नान्-मैं; अव् इरावणि अल्लन्-रावणि नहीं; ऎन्ऱान्-दावा-वचन कहा। १९४९

मेरे अमृत ही सम भाई के प्यारे प्राणों के हरनेवाले लक्ष्मण को अंतक का मेहमान नहीं बना दूँगा तो योद्धा देवगण मेरी हँसी उड़ायें —इस स्थिति में मैं अपना धनु ढोकर भूमि पर भारस्वरूप रहूँ तो मैं रावणि नहीं हूँ। १९४९

❀ एहा विडुशॆय् दॆन्तदिन्नलै नीक्कि डॆन्दैक्
काहा दनवुम् मुळवोवॆन्नक् काऱ्ऱ लार्मेल्
माहाल् वरिवॆज् जिलैयोडुम् वळैत्त पोदु
शेहाहु मॆन्ऱॆण्णि यिव्विन्नलिर् चिन्दै शॆय्देन् 1950

एका-जाकर; इतु चॆय्तु-यही करके; ऎन्तु इन्नलै-मेरे संकट को; नीक्किटु-दूर करो; ऎन्तैक्कु-मेरे तात के लिए; आकातनवुम् उळवो-असाध्य भी है क्या; इव् इन्नलिर्-इस दुःख में; ऎनक्कु-मेरे लिए; आऱ्ऱलार् मेल्-शत्रुओं पर; मा काल्-बड़े दण्ड के; वरि वॆस् चिलैयोटुम्-सवन्ध धनु को; वळैत्त पोतु-झुकाते समय; चेकु आकुम्-भला होगा; ऎन्ऱु ऎण्णि-ऐसा विचार कर; चिन्तै चॆय्तेन्-तुम्हारा खयाल किया। १९५०

रावण ने यह सुनकर कहा कि ठीक है बेटे! जाओ और यह करो और मेरा क्लेश दूर कर दो। मेरे तात! तुम्हारे लिए असाध्य कुछ है क्या? इस स्थिति में भी मैं यही तुम्हारे बारे में सोचता रहा कि शत्रुओं के विरुद्ध जब तुम अपना लम्बी दांड वाला धनुष झुकाओ तब सब भला ही भला होगा। १९५०

❀ ऎन्ऱानै वणङ्गि यिलङ्गयिल् वाळु मार्त्तिट्
टॊन्ऱा तुमरा वुरुवा वुडऱ्काव लोडुम्
पॊन्ऱाळ् कणैयिन् नॆडुम्बुट्टिल् पुऱत्तु वीक्कि
वन्ऱाळ् वयिरच् चिलैवाङ्गितन् वानै वॆन्ऱान् 1951

ऎन्ऱानै-ऐसा कहनेवाले (रावण) को; वानै वॆन्ऱान्-व्योमविजेता ने; वणङ्कि-नमस्कार करके; ऒन्ऱातुम् अऱा-किसी से भी अकाट्य; उरुवा-किसी से भी अभेद्य; उटल् कावलोटुम्-शरीर-रक्षक कवच के साथ; इलङ्कु-छविमय; अयिल् वाळुम्-तीक्ष्ण तलवार भी; आर्त्तिट्टु-बाँधकर; पॊन् ताळ्-स्वर्ण का बना और गहरा; नॆटु कणैयिन् पुट्टिल्-लम्बे शरों का तूणीर; पुऱत्तु वीक्कि-बाजू में बाँधकर; वल् ताळ्-कठोर दण्ड का; वयिरम् चिलै-वज्रधनु; वाङ्कितन्-हाथ में ले लिया। १९५१

ऐसा जिसने कहा उस रावण को स्वर्गविजेता इन्द्रजित् ने नमस्कार

किया और युद्धसन्नद्ध हुआ। उसने अकाट्य, अभेद्य कवच पहना; शोभायमान तीक्ष्ण तलवार बाँध ली, और स्वर्णनिर्मित बड़ा और गहरा तूणीर कस लिया। और कठोर दण्ड का बना वज्रधनुष हाथ में लिया। १९५१

वयिरन् नॆडुमाल् वरैकॊण्डु मलर्क्कण् वन्दान्
शॆयिरॊन्ऱु मुऱावहै यिन्दिरऱ् कॆन्ऱु शॆय्द
उयर्वॆञ्जिलै यच्चिलै पण्डवन् ऱन्नै योट्टित्
तुयरित् तलैवैत् तिवन्गॊण्डदु तोऱ्ऱ मीदाल् 1952

अ चिलै–वह चाप; मलर् कण् वन्तान्–कमलभव से; चॆयिर् ऒन्ऱुम् उऱा वकै–कोई दोष न हो ऐसा; इन्तिरऱ्कु ऎन्ऱु–देवेन्द्र के लिए; नॆटु माल्–बहुत ऊँचे; वयिरम् वरै कॊण्टु–वज्रपर्वत से; चॆय्त–निर्मित; उयर्–उत्कृष्ट; वॆम् चिलै–भयानक धनु था; पण्टु–प्राचीन समय में; अवन् तन्नै ओट्टि–उस (इन्द्र) को भगाकर; तुयरिन् तलै वैत्तु–कष्ट में डालकर; इवन्–इस (इन्द्रजित्) के द्वारा; कॊण्टतु–गृहीत; तोऱ्ऱम् ईतु–वृत्तान्त यह है। १९५२

वह धनुष कमलभव द्वारा निर्दोष रूप से इन्द्र के लिए निर्मित उन्नत वज्र-पर्वत का उत्कृष्ट भयानक धनुष था। पहले उसने इन्द्र को भगाकर उसे कष्ट में डालकर उसे छीन लिया था। यही उसकी प्राप्ति का वृत्तांत था। १९५२

तोळिऱ् कणैप्पुट्टिलु मिन्दिरन् तोऱ्ऱ ञान्ऱे
आळित् तिऱलन्नवन् कॊण्डन आऴि येऴुम्
माळप् पुनल्वऱ्ऱिनुम् वाळि यऱाद वन्गण्
कूळिक् कॊडुङ्गूऱ्ऱिनुक् कावदोर् कूडु पोल्व 1953

तोळिल् कणै पुट्टिलुम्–कन्धों पर के तूणीर भी; इन्तिरन् तोऱ्ऱ ञान्ऱे–इन्द्र की पराजय के ही दिन; आळि तिऱल् अन्नवन्–याळि (शरभ ?) का-सा बलवान; कॊण्टन–(द्वारा) गृहीत थे; एऴु आऴियुम्–सातों समुद्र; माळ–शुष्क करते हुए; पुनल् वऱ्ऱिनुम्–जल सूख जाय तो भी; वाळि अऱात–बाण-हीन न होनेवाले; वन् कण् कूळ–क्रूरकर्म; कॊटु कूऱ्ऱिनुक्कु–क्रूर यम के लिए; आवतु ओर्–बने एक; कूटु पोल्व–पिंजरे के समान रहा। १९५३

कंधों पर जो कसे थे वे तूणीर भी इन्द्र-पराजय के उसी दिन शरभ-सम बलवान इन्द्रजित् द्वारा गृहीत थे। सातों समुद्र के जल के सूखने पर भी वे तूणीर रिक्त होनेवाले नहीं थे। वे निर्मम संहारकार्यरत यम के पिंजरे के समान थे। १९५३

पल्लायिर कोडि पडैक्कलम् पण्डु तेवर्
ऎल्लारु मुनैत्तलै यावरु मोन्द मेरु
विल्लाळन् कॊडुत्त विरिञ्ज नळित्त मॆय्म्मै
अल्लार् पुरियादन यावैयुम् आय्न्दु कॊण्डान् 1954

पण्टु–प्राचीन समय में; तेवर् ऍल्लारुम्–सभी देवों के; मुनै तलै–युद्धस्थल में; यावरुम्–(हारे) सभी के द्वारा; ईन्त–दिये गये; मेरु विल्लाळन्–मेरुधन्वा (शिव) द्वारा; कॊटुत्त–दिये गये; विरिञ्चन् अळित्त–विरंचि से दिये गये; मॆय्म्मै अल्लाल्–अचूक रीति से (संहार-) कार्य करना छोड़कर; पुरियातत–चूकने का काम नहीं करनेवाले; पल्लायिरम् कोटि–अनेक हजार करोड़; पटै कलम् यावैयुम्–हथियार, सभी को; आय्न्तु कॊण्टान्–चुनकर ले लिया। १६५४

इन्द्रजित् ने अनेक सहस्र करोड़ हथियार चुनकर लिये। वे देवों द्वारा युद्धस्थल में दिये गये, मेरुधन्वा शिव द्वारा दत्त, और ब्रह्मा द्वारा प्रदत्त हथियार थे। वे अचूक रहनेवाले, कभी न चूकनेवाले हथियार थे। १९५४

नूऱायिरम् याळियि नोन्मै तॆरिन्द शीयत्
तेऱामवै यन्नवै यायिरम् पूण्ड वॆन्ब
माऱाय्यॊ रिलङ्गै निहर्प्पदु वानु ळोरुम्
तेऱादडु मर्ऱव नेऱिय दॆय्व मात्तेर् 1955

अवन् एऱिय–वह जिस पर चढ़ा वह; तॆय्वम् मा तेर्–दिव्य बड़ा रथ; नूऱु आयिरम् याळियिन्–लाख 'याळियों' का; नोन्मै तॆरिन्त–बल रखनेवाले; चीयत्तु–सिंहों के; अन्नवै–वैसे; आयिरम् एऱाल्–हजार पुरुष सिंह; अवै पूण्टतु–उनसे युक्त; माऱाय्–अलग; ओर् इलङ्कै निकर्प्पतु–एक लंका के समान रहनेवाला; वानुळोरुम् तेऱातटु–आकाशवासी भी जिसको सम्पूर्ण रूप से न जान सकें ऐसा। १६५५

जिस पर इन्द्रजित् चढ़ा उस रथ में हज़ार नर सिंह जुते थे और उनमें एक एक लाख याळियों (शरभों) का सम्मिलित बल रखता था। वह अलग एक लंका की समानता करनेवाला था। व्योमवासी भी उसके सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान नहीं रखते थे। १९५५

पॊन्शॆन् ऱऱिया वुवणत्तनिप् पुळ्ळि नुक्कुम्
मिन्शॆन् ऱऱिया मऴुवाळन् विडैक्कु मेनाट्
पिन्शॆन्ऱ दल्लाऱ् पॆरुहुञ्जिऱप् पुर्ऱु पोदुम्
मुन्शॆन् ऱऱियादडु मून्ऱुल हत्ति नुळ्ळुम् 1956

पॊन् चॆन्ऱु अऱिया–स्वर्ण भी (उपमा-) गम्य न हो ऐसे; उवणम् तनि पुळ्ळिनुक्कुम्–गरुड़ के अनुपम पक्षी का; मिन् चॆन्ऱु अऱिया–बिजली भी जिसकी उपमा न करना जाने ऐसे; मऴु आळन्–परशुधर (शिव) के; विटैक्कुम्–ऋषभ का; मेल् नाळ्–प्राचीन दिन में; पिन् चॆन्ऱतु–पीछा करते जाने के सिवा; पॆरुकुम् चिऱप्पु उऱ्ऱु पोतुम्–बहुत विशेष रहने पर भी; मून्ऱु उलकत्तिन् उळ्ळुम्–तीनों लोकों में; मुन् चॆन्ऱु अऱियाततु–उनके आगे जाना नहीं जानता जो, वह रथ। १६५६

स्वर्ण भी जिसकी उपमा नहीं कर सकता है उस गरुड़ को और बिजली जिसकी उपमा नहीं हो सकती उस परशु के धारक शिवजी के वाहन बैल को भगाते हुए उनके पीछे जाने के सिवा, उनके बड़े दिनों में

भी, तीनों लोकों में उनके सामने जाना ही नहीं जाना था उस रथ ने। (विष्णु और इन्द्र इन्द्रजित् से हारे और गरुड़ और वृषभ भागे।)। १९५६

एयात् तत्तिपोर् वलिहाट्टिय विन्दि रत्रन्
शायाप् परुञ्जाय् कॅडत्ताम्बुह ळाड्ड डन्दोळ्
पोयार्त्तवन् वन्दनन् वन्दन नॅन्रु पूशल्
पेयार्त् तॅळुन्दाडु नॅडुङ्गोडि पॅट्र दम्मा 1957

एया–अनुपम; तत्ति पोर् वलि–अपूर्व युद्धवीरता; काट्टिय–जिसने दिखायी; इन्तिरन् तन्–उस इन्द्र के; चाया–अमिट; पॅरु चाय् कॅट–श्रेष्ठ गौरव का नाश करते हुए; पोय्–(अमरावती) जाकर; ताम्पुकळाल्–रस्सियों से; तट तोळ् पोय्–विशाल कंधों को; आर्त्तवन्–जिसने बाँधा था; वन्ततन् वन्ततन्–आया, आया; ऍन्रु–यह चिल्लानेवाले; पूचल्–नर्दनशील; पेय्–भूत; आर्त्तु ऍळुन्तु–शब्द करते हुए उठकर; आटु–नाचे ऐसी; नॅटु कोटि पॅट्रतु–लम्बी ध्वजा वाला है (वह रथ)। १९५७

ऐसी लंबी भूतध्वजा से युक्त था (वह रथ) जिसका भूत यह उच्च विरुद-घोष करता था कि अप्रतिम युद्धबलदर्शी इन्द्र की अप्रतिहत छवि (गौरव) का नाश करते हुए अमरलोक में जाकर उसके विशाल कंधों को जिसने बाँध दिया था वह वीर आ गया, आ गया। १९५७

शॅंदुहैप् पॅरुन् दानव रून्रॊडुन् देय्त्तनेमि
यदुहैत् तिशैयानैयै योट्टिय दॅन्न लामे
मदुहैत् तडन्दोळ्वलि काट्टिय वान वेन्दन्
मुदुहैत् तळुम्बाक्किय मॊय्यॊळि मॊट्ट दम्मा 1958

चॅतुकै–खूनी; पॅरु तानवर्–बड़े राक्षसों को; ऊन्रॊटुम् तेय्त्त–शरीरों-सह कुचलनेवाले; नेमियतु–पहियोंवाला है; मतुकै–सबल; तट तोळ् वलि–विशाल भुजाओं का बल; काट्टिय–जिसने प्रदर्शित किया उस; वान वेन्तन्–व्योम के राजा को; मुतुकै–पीठ को; तळुम्पु आक्किय–दाग जिसने बना दिया; मॊय् ऑळि–घनी प्रभा वाले; मॊट्टतु–'मॊट्टु' (कली) नाम के अंग का है; अतु–उसने; कै तिचै यानैयै–सूंड़ वाले दिग्गज को; ओट्टियतु–हराकर भगाया; ऍन्नल् आमे–यह कहना भी कुछ (अर्थ रखता) है क्या। १९५८

और भी ऐसे पहियों का है वह रथ जिन्होंने खूनी दानवों को भूमि पर डालकर उनके शरीर को कुचल डाला था। उसका (कमल-कली के आकार का) 'कली' नाम का भाग ऐसा था, जो घनी आभामय था और जिसने बहुत ही प्रबल भुजपराक्रम दिखानेवाले व्योमराजा इन्द्र की पीठ पर दाग लगवा दिया था। फिर यह क्या कहना कि उसने दिग्शुंडी को मारकर भगा दिया था। १९५८

अत्तेरित्तै येऱिय दौप्पत्त वायि रन्देर्
ऑत्तेय्वत्त शेमम दाय्वर् वुळ्ळम् वॅम्बोर्प्
पित्तेऱित्त तॅन्न नडन्ददनन् पिन्व लाऩ्मर्
ऱॅत्ते वरैयुम् मुहङ्गण् डऱियाद वीट्टान् 1959

ऑ तेवरैयुम्–सभी देवों को (हराकर); पिऩ्पु अलाल्–उनकी पीठों के सिवा; मुकम् कण्टु अऱियात–मुख देखकर जिसने नहीं जाना था; ईट्टात्–वैसे बलशाली इन्द्रजित्; अ तेरित्तै एऱि–उस रथ पर चढ़कर; अतु ऑप्पत्त ऑत्तु–उसके समान और; एय्वत्त–युक्त; आयिरम् तेर्–हजार रथों को; चेममतु आय् वर–रक्षक-रथों के रूप में आने देते हुए; उळ्ळम्–मन में; वॅम्पोर् पित्तु–भयंकर युद्ध का दीवानापन; एऱितत्–चढ़ा है; ऍन्त–ऐसा कहे जाने की रीति से; नटन्तनन्–(युद्ध में) गया। १६५६

उस पर जिसने सभी देवों को हराकर उनकी पीठ देखना छोड़कर कभी उनका मुख देखना नहीं जाना था और जो बहुत बलवान था वह इन्द्रजित् चढ़ा। उस रथ के समान 'सुरक्षा' रथ हजार रथ साथ गये। इन्द्रजित् को देखो तो झट लगा कि उसके सिर पर भयंकर युद्धोन्मत्तता का भूत सवार है। १९५९

अन्नातोंडु पोयिन तातै यळन्दु कूऱ
ऍन्नालरि देनु मियम्बुवान् मीह तॅन्नुम्
नन्नान् मऱैयानदु नाऱ्पदु वॅळ्ळ मॅन्नच्
चौन्नान् पिऱरियार:(ह्) दुणर्न्दु तौहुक्क वल्लार् 1960

अन्नातोंटु पोयिन–उसके साथ (जो) गयी उस; तातै–सेना को; अळन्तु कूऱ–गिनकर कहना; ऍन्नाल् अरितु एऩुम्–मुझे कठिन है तो भी; इयम्पु–(सर्व-) शंसित; वान्मीकन् ऍन्नुम्–वाल्मीकि नाम के; नल् नान् मऱैयान्–श्रेष्ठ चतुर्वेदी (मुनि) ने; अतु–वह; नाऱ्पतु वॅळ्ळम्–चालीस 'वॅळ्ळम्'; ऍन्न चौन्नान्–ऐसा कहा है; पिऱर् यार्–और कौन; अ॰॰तु उणर्न्तु–उसको जानकर; तौकुक्क वल्लार्–संग्रह कर कह सकते हैं। १६६०

उसके साथ जो सेना गयी उसका गणित कहना हमारे लिए असम्भव है। तो भी सर्वप्रशंसित चतुर्वेदज्ञ महर्षि वाल्मीकि ने कहा कि वह चालीस 'वॅळ्ळम्' की सेना है। फिर कौन उसकी गिनती संग्रह कर कह सकेगा ?। १९६०

तूमक्क णरक्कनुन् दौल्लमर् यार्क्कुन् दोला
मापक्कनु मन्नॅडुन् देर्मणि याळि काक्कत्
तामक् कुडैमी दुयरप् पॅरुञ्जङ्गम् विम्म
नामक् कडर्पल्लिय नाऱ्कडन् मेलु माऱ्प्प 1961

तूमम् कण् अरक्कनुम्–राक्षस धूम्राक्ष और; तौल्–प्राचीन; अमर्–युद्ध में;

यार्क्कुम् तोला–किसी से भी अजेय; मा पक्कतुम्–महापार्श्व ने; अ नॅट्ट तेर् मणि आळ्ि–उस बड़े रथ के पहियों की; काक्क–रक्षा करने के लिए; तामम् कुटै मीतु उयर–उज्ज्वल श्वेतछत्र ऊपर शोभे ऐसा; पॅरु चङ्कम् विम्म–बड़े-बड़े शंखों के गूंजते; नामम् कटल् पल् इयम्–डरावने, विविध बाजों के समूह के; नाल् कडल् मेलुम्–चारों दिशाओं के समुद्रों से बढ़कर स्वर उठाते। १६६१

धूम्राक्ष और अजेय महापार्श्व उस बड़े रथ के सुन्दर पहियों की रक्षा करते आये। उसके ऊपर प्रकाशमय श्वेतछत्र शोभ रहा था। बड़े शंख और अनेक भयानक वाद्य चारों दिशाओं के सागर से भी अधिक नाद उठा रहे थे। १९६१

❀ तेरा यिरमा यिरकोडि तन्माडु शॅल्लप्
पोरातै पुऱत्ति नवऱ्ऱि तिरट्टि पोदत्
तारार् पुरविक्कडल् पिन्शॅलत् तातै वीरप्
पेराऴि मुहञ्जॅलच् चॅन्ऱनन् पेर्च्चि यिल्लान् 1962

आयिरम् आयिरम् कोटि तेर्–सहस्र-सहस्र कोटि रथों को; तन् माट्टु–अपने पास; चॅल्लवुम्–आने देते हुए; अवर्ऱित् इरट्टि–उनके दुगुने; पोर् आनै–युद्ध-मातंगों के; पुऱत्तिन–उनके बाहर के व्यूह में; पोत–जाते; तार् आर्–वामालंकृत; पुरवि कटल्–अश्व-सागर; पिन् चॅल–पीछे आएँ; तानै वीरम् पेराऴि–पदाति वीरों का बड़ा सागर (सेना-समूह); मुकम् चॅल–अग्रभाग में आये; पेर्च्चि इल्लात्–अडिग वीर; चॅन्ऱनन्–(इस साज में) गया। १६६२

सहस्र-सहस्र कोटि रथ उसके चारों ओर (भीतरी पहली) पंक्ति में घेरे आ रहे थे। उसके दुगुने युद्ध-गज उस पंक्ति को घेरे आ रहे थे और पदाति वीरों की बड़ी सेना उसके आगे जा रही थी। इस साज़ में अचल इंद्रजित् जा रहा था। १९६२

निन्ऱन निलक्कुवन् कळत्तै नीङ्गलन्
पॊन्ऱिन तिरावणन् पुदल्वन् पोर्क्किनि
अन्ऱव नल्लने लमरर् वेन्दनै
वॅन्ऱवन् वरुमॅन विरुम्बुञ् जिन्दैयान् 1963

इरावणन् पुतल्वन्–रावण का पुत्र (अतिकाय); पॊन्ऱितन्–मरा; इनि–आगे; अन्ऱु–विरोधी जो है; अवन् अल्लतेल्–रावण नहीं हो तो; पोर्क्कु–लड़ने; अमरर् वेन्तनै वॅन्ऱवन्–देवेंद्र का विजेता; वरुम्–आएगा; ऍन–ऐसा; विरुम्पुम् चिन्तैयान्–उत्सुकता से प्रतीक्षा करनेवाले मन के; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; कळत्तै नीङ्कलन्–समरांगण न छोड़कर; निन्ऱनन्–खड़े रहे। १६६३

'रावण का पुत्र अतिकाय मर गया। अब या तो वैरी रावण आयेगा या देवेंद्र का विजेता रावणि आयेगा।' ऐसा सोचकर उसकी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा में लक्ष्मण विना युद्धभूमि छोड़े खड़े थे। १९६३

यारिवन्	वरुबव	नियम्बु	वायॆंन
वीरवॆन्	दॊळ्ळिलिनान्	विनव	वीडणन्
आरिय	विननिह	लमरर्	वेन्दनैप्
पोर्हडन्	दवनिनुरु	वलिदुपो	रॆन्ऱान् 1964

वीरम् वॆम् तॊळ्ळिलितान्–वीरतापूर्ण शत्रुघातक कार्यकर्ता के; वरुपवन् इवन् यार्–आता है, यह कौन; इयम्पुवाय्–कहो; ॲन–ऐसा; वितव–पूछने पर; वीटणन्–विभीषण ने; आरिय–आर्य; इवन्–यह; इकल्–युद्धचतुर; अमरर् वेन्तनै–देवपति को; पोर् कटन्तवन्–युद्ध में हरानेवाला है; इन्ऱु पोर् वलितु–आज युद्ध घोर होगा; ॲन्ऱान्–कहा। १६६४

(तब लक्ष्मण ने इंद्रजित् को आता देखा। उन्होंने विभीषण से पूछा कि) आनेवाला यह कौन है? बतलाओ। विभीषण ने उत्तर दिया कि यह अति युद्ध-समर्थ देवराज का विजेता इंद्रजित् है। आज युद्ध बड़ा ही तुमुल रहेगा। १९६४

ऍण्णिन	दुणर्त्तुव	दुळदॊन्	ऱॆम्बिरान्
कण्णहल्	पॆरुम्बडैत्	तलैवर्	कात्तिड
नण्णिन	तुणैयॊडु	पॊरुदल्	नन्ऱिदु
तिण्णिदि	नुणर्दियाऱ्	ऱॆळ्ळियुञ्	जिन्दैयाल् 1965

ॲम्पिरान्–हमारे नायक; ॲण्णित्तु ओन्ऱु–जो सोचा मैंने एक; उणर्त्तुवतु उळतु–समझाना है; कण् अकल्–विशाल; पॆरु पटै–बड़े सेना वीर; तुणैवर्–सहायक; कात्तिट–रक्षा करने; नण्णिन तुणैयॊटु–जो आये हैं उनके साथ; पॊरुतल्–लड़ना; नन्ऱु–अच्छा है; इतु–इसे; तॆळ्ळियुम् चिन्तैयाल्–विवेचनशील मन से; तिण्णितिन् उणर्ति–निश्चय जान लें। १६६५

हे हमारे प्रभु! एक विचार है जो आपको बतलाना है। विस्तृत सेना के नायकों की सहायता लेकर वह आ रहा है। उसके साथ युद्ध अच्छा होगा। आप इसे विवेकशील मन से समझकर निश्चय समझ लें। १९६५

मारुदि	शाम्बवन्	वान	रेन्दिरन्
तारॆशेय्	नीलनॆन्	ऱिनैय	तन्मैयार्
वीरर्वन्	दुडनुर्	विमल	नीनॆडुम्
पोर्शॆयत्	तहुदियाऱ्	पहळ्ळिन्	पूणिनाय् 1966

विमल–विमल; पुकळ्ळिन् पूणिताय्–यशभूषण; मारुति चाम्पवन्–मारुति, जाम्बवान; वानर इन्तिरन्–वानरेन्द्र (सुग्रीव) और; तारै चेय्–तारासुत; नीलन् ॲन्ऱु–नील आदि; इनैय तन्मैयार्–ऐसे प्रकार के; वीरर् वन्तु–वीर आकर; उटन् उऱ–साथ लगे रहें; नी–आप; नॆटु पोर् चॆय–युद्ध करने; तकुति–अर्ह हैं। १६६६

विमल देव ! यशोभूषण ! आप मारुति, जाम्बवान, वानरेन्द्र सुग्रीव, तारासुत अंगद और नील इत्यादि वीरों को साथ रखें और लम्बे काल तक युद्ध करने को उद्यत रहें। १९६६

पल्पदि नायिरन् देवर् पक्कमा
ऑल्लेयिल् शेन्कोण् डॅदिरन्द विन्दिरन्
ऑल्लेयि नुडैन्दन नुयिर्हॊण् डुय्न्दुळान्
मल्लन् दोळिना यमुदिन् वन्मैयाल् 1967

मल्लल् अम् तोळिताय्–पुष्ट व उन्नत कंधों वाले; पल् पतिनायिरम् तेवर्–अनेक दस सहस्र देव; पक्कमा–सहायक रहे; ऑल्लै इल्–असंख्य; चेनै कॊण्डु–सेना लेकर; ऍतिर्न्त–जिसने युद्ध किया; इन्तिरन्–इन्द्र; ऑल्लैयिन्–जल्द ही; उटैन्तनन्–हारा; अमुतिन् वन्मैयाल्–अमृत के प्रभाव से; उयिर् कॊण्डु उय्न्तुळान्–जीवित बचा है। १९६७

उन्नत और पुष्ट भुजाओंवाले ! इंद्र अनेक-अनेक सहस्र देवों को साथ ले आकर लड़ा था। तो भी वह इसके सामने शीघ्र हार गया। अमृत अशन किया है, उसी के प्रभाव से वह जीवित रह सका है। १९६७

इन्नियवै मरैयुमो विन्दि रन्पुयप्
पनिवरै यळनॅडुम् बाशप् पः(ह्)रळुम्
बनुमनैप् पिणित्तुळ नान पोदिवन्
तनुमरै वित्तहञ् जाऱ्ऱऱ् पालदो 1968

इन्तिरन् पुयम् पनिवरै उळ–इन्द्र की भुजा रूपी हिमालय पर्वत पर लगे हुए; नॆटु पाचम्–लम्बे पाश के (बन्धन के कारण) बने; पल् तळुम्पु अवै–विविध दाग; इनि मरैयुमो–अब लुप्त हो जाएँगे क्या; अनुमनै–हनुमान को भी; पिणित्तुळन् आन पोतु–जो इसने बाँध दिया था तो; इवन्–इसकी; तनुमरै वित्तकम्–(प्रदर्शित) धनुर्वेदचातुरी; चाऱ्ऱल् पालतो–कहने अर्ह (सुलभ है क्या)। १९६८

इंद्र के हिमालय-सदृश कंधों को इंद्रजित् ने बड़े पाश से बाँध दिया था। उसके निशान क्या कभी अदृश्य होंगे ? हनुमान को भी इंद्रजित् ने बाँधा था। उसकी धनुर्वेद-दक्षता कथनीय है क्या ? । १९६८

ऍन्ऱव निरैञ्जिनन् इळैय वळ्ळलुम्
नन्ऱॆन मॊऴिदलुम् नणुहि नानरो
वन्ऱिरन् मारुदि यिलङ्गैक् कोमहन्
शॆन्ऱन निळवन्मे लॆन्नुञ् जिन्दैयान् 1969

ऍन्ऱु–कहकर; अवन् इरैञ्चिनन्–उसने विनय की; इळैय वळ्ळलुम्–छोटे प्रभु के भी; नन्ऱु–अच्छा; ऍन मॊऴितलुम्–कहने पर; वल् तिऱल् मारुति–कठोर

बलवान मारुति; इलङ्कै कोमकन्–लंकापतिसुत; इळवल् मेल् चॅन्ड्रनन्–लघुराज पर चढ़ आया; ॲन्नुम् चिन्तैयात्–यह चिन्ता करके; नणुकिनान्–आ पहुँचा। १९६९

विभीषण ने यह वचन बड़ी विनय के साथ कहा। लक्ष्मण अच्छा कहकर सहमत हुए। तब मारुति ने देखा कि लंकाधिपति का पुत्र लघुराज लक्ष्मण के विरुद्ध लड़ने जा रहा है। चिन्ता लेकर वह उनके पास आया। १९६९

कूड्रमुङ्	गट्पुलम्	बुदैप्पक्	कोत्तॅळु
तोड्रमु	मिरावणि	तुणिबुम्	नोक्कुरा
मेड्रिशै	वायिलै	विट्टु	वॅङ्गडुङ्
गाड्रॅन्न	वणुहिनान्	कडिदिल्	काक्कवे 1970

कूड्रमुम्–यम को भी; कण् पुलम् पुतैप्प–आँखों को मूंदने को मजबूर करते हुए; कोत्तु ॲळु–सेना ले आनेवाले; इरावणि तुणिपुम्–रावणि का साहस और; तोड्रमुम्–आकार; नोक्कुरा–देखकर; मेल् तिचै पायिलै विट्टु–पश्चिमी द्वार को छोड़कर; वॅम् कटु काड्रु ॲन्न–भयंकर क्रूर पवन के समान; कटिदिन् काक्क–जल्दी रक्षा करने; पक्कल् अटैन्तान्–(लक्ष्मण के) पास पहुँचा। १९७०

हनुमान ने रावणि की सेना को देखा, जिसको देखकर यम भी डर से आँखे मूंद ले; और उसका साहस और शान देखा। तो वह पश्चिमी द्वार को छोड़कर कठोर वात के समान रक्षा करने के विचार से शीघ्र आ गया। १९७०

अङ्गदन्	मुन्नरे	याण्डै	यान्यल्
तुङ्गवन्	तोळिन्ना	रॅवरुञ्	जुड्रिन्नार्
शॅङ्गदि	रोन्महन्	मुन्बु	शॅन्ड्रनन्
शङ्गनीर्क्	कडलॅन्नत्	तळीइय	तानैये 1971

अङ्कतन्–अंगद; मुन्नरे–उसके पहले ही; आण्मैयान् अयल्–वीर (लक्ष्मण) के निकट (था); तुङ्कम् वल्–उन्नत और सारयुक्त; तोळिनार् ॲवरुम्–कंधोंवाले सभी; चुड्रिनार्–घेर गये; चॅम् कतिरोन् मकन्–अरुणकिरण का पुत्र; मुन्पु चॅन्ड्रनन्–सामने गया; चङ्कम् नीर् कटल्–सशंखजल सागर; ॲन्न–के समान; तळीइय तानै–सेना भी मिली आयी। १९७१

अंगद उसके पूर्व ही पराक्रमी सौमित्रि के पास आ चुका था। उन्नत और पुष्ट कधों वाले सभी वानर आकर लक्ष्मण को घेरे हुए थे। अरुणकिरण सूर्य का सुत आगे गया। सशंख जलपूर्ण सागर के समान सेना भी साथ मिल गयी। १९७१

इरुदिरैप् पॅरुङ्गड लिरण्डु तिक्किनुम्
पॊरुतॊऴिल् वेट्टॆऴुन् दार्त्तुप् पॊङ्गिन
वरुवन पोल्वन मनत्ति नाऱ्चिनम्
तिरुहिन वॆदिरॆदिर् शॆल्लुज् जेनैये 1972

चिनत्तिनाल्–क्रोध से; मनम् तिरुकिन–विकृत मन वाले वनकर; ऍतिर् ऍतिर् चॅल्लुम्–आमने-सामने जो जा रही थीं; चेनै–सेनाएँ; तिरै–ऊर्मिपूर्ण; इरु पॅरु कटल्–दो बड़े सागर; पॊरु तॊऴिल्–युद्धकृत्य; वेट्टु ऍऴुनुतु–चाह उठकर; इरण्टु तिक्किनुम्–दोनों दिशाओं में से; आर्त्तु पॊङ्कित–घोर शब्द करते उमगकर; वरुवत पोल्वत–आते जैसे लगी। १६७२

क्रोधविकृतमन और आमने-सामने जानेवाली दोनों सेनाएँ दो बड़े सागरों के समान लगीं, जो युद्धकृत्य की इच्छा करके उठें और दो दिशाओं से बड़े गर्जन के साथ उमड़कर आयें। १९७२

कण्णिनान् मनत्तिनाऱ् करुत्तिनाऱ् ऱॆरिन्
दॆण्णिनाऱ् पॆरुपय नॆय्दु मिन्ऱॆन
नण्णिना रिमैयवर् नङ्गै मारॊडुम्
विण्णिना डुऱैविडम् वॆऱुमै कूरवे 1973

इमैयवर्–देवगण; करुत्तिनाल् तॅरिनुतु–मन लगाकर; ऍण्णिताल्–सोचें तो; कण्णिताल्–आँखों से; मनत्तिताल्–मन से; पॅरु पयन्–प्राप्य फल; इन्ऱु ऍय्तुम्–आज प्राप्त होगा; ऍन्–कहकर; विण्णित् नाटु–व्योमलोक; उऱैविटम्–वासस्थान; वॅऱुमै कूर–रिक्त करके; नङ्कै मारॊटुम्–देवियों के साथ; नण्णितार्–आ पहुँचे। १६७३

देवों ने सोचा कि विचार करके देखा जाय तो आँखों और मन का आज साफल्य होगा। इसलिए वे व्योमलोक को रिक्त करके अपनी देवियों के साथ आकर जुट गये। १९७३

ऒत्तिरु तानैयु मुडऱ्ऱु वुऱ्ऱऴि
अत्तनै वीररु मार्त्त वव्वॊलि
नत्तॊलि मुरशॊलि नडुक्क लाऱ्ऱलै
पॊत्तिनर् शॆविहळैप् पुरन्द रादियर् 1974

इरु तानैयुम्–दोनों (विरोधी) सेनाएँ; ऑत्तु उटऱ्ऱु उऱ्ऱऴि–जब मिलकर लड़ने को हुईं; अत्तनै वीररुम्–सभी वीरों ने; आर्त्त–जो घोष निकाले; अव् ऑलि–वह शोर और; नत्तु ऑलि–शंख का स्वर; मुरचु ऑलि–भेरियों का नाद; नटुक्कल् आल्–कँपा रहे थे, इसलिए; पुरन्तर आतियर्–पुरंदर आदि देवों ने; चॅविकळै–कानों को; तलै पॊत्तितर्–बन्द कर लिया। १६७४

जब दोनों सेनाएँ डटकर युद्ध करने लगीं तो सभी वीरों ने जो नाद

निकाला वह नाद, शंखनाद और भेरीनाद सबको डराने लगा तो पुरंदर आदि देवों ने अपने कानों को बन्द कर लिया। १९७४

ऍऱ्ऱुमिन्	पऱ्ऱुमि	ऍऱिमि	ऍय्म्मिऩ्ऩ्
ऱुऱ्ऱत्त	वुऱ्ऱत्त	वुरैक्कु	मोदैयुम्
मुऱ्ऱुऱु	कडैयुहत्	तिडियिन्	मुम्मडि
पॅऱ्ऱत्त	पिऱन्दत्त	शिलैयिन्	पेरोलि 1975

ऍऱ्ऱुमिन्–पीटो; पऱ्ऱुमिन्–पकड़ो; ऍरियुमिन्–हथियार फेंको; ऍय्मिन्–(बाण) चलाओ; ऍन्ऱु–ऐसा; उऱ्ऱत्त उऱ्ऱत्त–उस-उस समय के अनुसार; उरैक्कुम् ओतैयुम्–जो कह रहे थे वह नाद; चिलैयिन् पिऱन्तत्त पेर् ऑलि–धनुषों से जो स्वन निकला वह और; मुऱ्ऱुऱु–सृष्टि समाप्त होते; कटै उकत्तु–युगान्त में; इटियिन्–(होनेवाले) वज्रनाद के; मुम्मटि पॅऱ्ऱत्त–तिगुने रहे। १९७५

दोनों दलों के वीरों ने संदर्भानुसार, 'पकड़ो, मारो, हथियार फेंको' आदि शब्द कहे। वह ध्वनि और धनुष की टंकार का नाद दोनों युगांतकालीन वज्रनाद के तिगुने ज़ोर से उठे। १९७५

कल्पड	मरम्बडक्	काल	वेल्पड
विल्पडु	कणैपड	वीऴुम्	वीरर्तम्
ऍल्पडु	मुडल्पड	विरण्डु	शेऩैयुम्
पिऩ्पड	विरुनिलम्	पिळन्दु	पेरुमाल् 1976

इरण्टु चेऩैयुम्–दोनों सेनाओं को; पिऩ् पट–पीछे हटने को मजबूर करते हुए; कल् पट–पत्थर लगने से और; मरम् पट–पेड़ों के लगने से; काल वेल् पट–यम-से भालों के लगने से; विल् पटु–धनु से छूटे; कणै पट–शरों के लगने से; विऴुम् वीरर् तम्–(मरकर) गिरनेवाले वीरों के; ऍल् पटुम्–प्रकाशमान; उटल् पट–शरीरों के लगने से; इरु निलम्–बड़ी भूमि; पिळन्तु पेरुम्–फटकर हट जाती है। १९७६

दोनों सेनाओं ने परस्पर पीछे ढकेलते हुए पत्थर फेंके, तरु फेंके और यम के समान भाले फेंके। धनुषों से बाण निकलकर वीरों पर लगे। तब वीर मरकर गिरे। प्रकाशमय उनके शरीरों के भार से लंबी भूमि फटी और हटी। १९७६

ऍऴुत्तॊडर्	मरङ्गळा	लॅऱ्ऱु	मुऱ्ऱिय
विऴुत्तलै	मुऴुवदुम्	जिदरि	वीऴ्न्दन
अऴुत्तिय	पॅरुञ्जिनत्	तरक्क	राक्कैहळ्
कऴुत्तुळ	तलैयिल	कळत्ति	ताडुव 1977

ऍऴु तॊटर्–वज्र दण्डों और सांकलों; मरङ्कळाल्–और तरुओं से; ऍऱ्ऱ–पीटने से; मुऱ्ऱिय–मरे; विऴु तलै मुऴुवतुम्–श्रेष्ठ सभी सिर; चितऱि वीऴ्न्तत–

बिखर गये; अळुत्तिय-(उनके) दबानेवाले; पॅरुचित्तत्तु-बड़े क्रोध से आक्रान्त; अरक्कर् आक्कैकळ्-राक्षसों के शरीर; कळुत्तु उळ-कण्ठों से युक्त हैं पर; तलै इल-वे सिर हैं; कळत्तिन् आटुव-रणांगण में नाचते हैं। १६७७

वक्र दंडों और साँकलों से प्रहार करने के कारण (राक्षस) वीरों के श्रेष्ठ सिर कटकर अलग-अलग गिर गये। क्रोधाभिभूत राक्षसों के शरीर, जिनके कंठ रह गये पर जिनके सिर अलग हो गये, रणांगण में नाचे। १९७७

वॅट्टिय तलैयन नरम्बु वीशमेल्
मुट्टिय कुरुदिय कुरङ्गिन् मॉय्युडल्
शुट्टुयर् नॅडुवनन् दॊलैन्द पिन्नॅडुम्
कट्टैह ळॅरिवन पोन्ऱु काट्टुव 1978

वॅट्टिय तलैयत-सिर-कटे; नरम्पु वीच-नसों के कटने से; मेल् मुट्टिय कुरुतिय-ऊपर टकरानेवाले रक्त के; कुरङ्कित्-वानरों के; मॊय् उटल्-मोटे शरीर; उयर् नॅटु वतम्-ऊँचे तरुओं के विशाल वन; चुट्टु-जलकर; तॊलैन्त पिन्-नष्ट होने के बाद; नॅटु कट्टैकळ्-लम्बे ठूंठ; ऍरिवत पोन्ऱु-जलते जैसे; काट्टुव-दिखते हैं। १६७८

वानरों के शरीर कटे सिर वाले और नसों के कटने से रुधिर उछालने वाले रहे। वह दृश्य उस दीर्घतरुसंकुल वन के समान रहा, जो जलकर राख बन गया हो और जिसके ठूंठ अब भी जल रहे हों। १९७८

पिडित्तन निरुदरैप् पॅरिय तोळ्हळै
ऑडित्तन कालविशैत् तुदैत्त वुन्दिन
कडित्तन कळुत्तऱक् कैह ळालॅडुत्
तडित्तन वरैत्तन वार्त्त वानरम् 1979

वानरम्-वानरों ने; निरुतरै पिटित्तत-राक्षसों को पकड़कर; पॅरिय तोळ्कळै ऑटित्तत-बड़े कंधों को तोड़ा; काल् विचैत्तु-पैरों से लात मारकर; उन्तित-ढकेल दिया; कळुत्तु अऱ-गला अलग करके; कटित्तत-काटा; कैकळाल् ऍटुत्तु-हाथों से उठाकर; अटित्तत-पटक दिया; अरैत्तत-पीसा; आर्त्त-आरव मचाया। १६७६

वानरों ने राक्षसों को पकड़ा, और उनके बड़े कन्धों को तोड़ा। लात मारकर उनको ढकेला। गला तोड़ते हुए काटा। हाथों पर उठाकर भूमि पर पटका और पीस डाला। १९७९

वाळ्हळिऱ् कविक्कुल वीरर् वार्हळ्ल्
ताळ्हळैत् तुणित्तनर् तलैयैत् तळ्ळिनर्
तोळ्हळैप् पिरित्तन रुडलैत् तुण्डमिट्
टाळ्हडर् पुरट्टिनर् अरक्कर् आर्त्तनर् 1980

अरक्कर्–राक्षसों ने; वाळ्कळिल्–तलवारों से; कविकुलम् वीरर्–कपिकुल के वीरों के; वार् कळल्–लम्बी पायलधारी; ताळ्कळै तुणित्तनर्–पैरों को काट अलग किया; तलैये तळ्ळिनर्–सिरों को गिराया; तोळ्कळै पिरित्तनर्–भुजाओं को अलग किया; उटलै तुण्टम् इट्टु–शरीरों के टुकड़े किये; आळ् कटलिल्–गहरे समुद्र में; पुरट्टिनर्–लुटवा दिया; आर्त्तनर्–उच्च नर्दन किया। १९८०

राक्षसों ने कपिकुलवीरों के पायल-चरणों को काटा; सिरों को गिराया; कन्धों को धड़ से अलग किया; शरीरों के टुकड़े किये और समुद्र में लोटाकर उच्च नाद किये। १९८०

मरङ्गळि लरक्करै मलैहळ् पोऩ्ऱुयर्
शिरङ्गळैच् चिदरिऩ वुडलैच् चिऩ्दिऩ
करङ्गळैक् कळल्हळै यॊडियक् कादिऩ
कुरङ्गॆऩप् पॆयर्हॊडु तिरियुङ् गूऱ्ऱमे 1981

कुरङ्कु ऎऩ–'वानर' का; पॆयर् कॊटु–नाम धारण करके; तिरियुम्–घूमने वाले; कूऱ्ऱम्–यमों ने; मरङ्कळिल्–तरुओं से; अरक्करै–राक्षसों के; मलैकळ् पोऩ्ऱु उयर् चिरङ्कळै–पर्वत-सम उन्नत सिरों को; चितरिऩ–चूर कर बिखेर दिया; उटलै चिन्तिऩ–शरीरों का नाश कर दिया; करङ्कळै कळल्कळै ऒटिय–हाथों को और पैरों को तोड़ा; कातिऩ–(ऐसा) युद्ध किया। १९८१

वानर का नाम ले घूमनेवाले मृत्युदेवताओं ने राक्षसों के पर्वत-सम सिरों को पेड़ों से मारकर गिराया, शरीरों को छितराया और हाथ-पैरों को तोड़ा —इस भाँति युद्ध किया। १९८१

शुडर्त्तलै नॆडुम्बॊऱि शॊरियुङ् गण्णऩ
अडर्त्तलै नॆडुमर मऱ्ऱ कैयऩ
उडर्त्तलै वॆरवे लुरुव वुऱ्ऱवर्
मिडऱ्ऱिऩैक् कडित्तुडऩ् विळिन्दु पोयिऩ 1982

चुटर् तलै–किरणों को अपने में लिये हुये रहनेवाले; नॆटु पॊऱि–बड़े-बड़े अंगारे; चॊरियुम्–निकालनेवाली; कण्णऩ–आँखों के (कुछ वानरों) ने; अटर्त्तलै–चोट करनेवाले; नॆटु मरम्–लम्बे तरुओं के साथ; अऱ्ऱ कैयऩ–कटे हाथों के; उटर् तलै–शरीरों को; वॆरम् वेल्–शत्रु के कठोर भाले; उरुव–भेदने देकर; उऱ्ऱवर्–भाले फेंकनेवालों के; मिटऱ्ऱिऩै–कण्ठों को; कटित्तु–काटकर; उटऩ् विळिन्तु पोयिऩ–उनके साथ खुद भी मौत पा ली। १९८२

ज्वलंत अंगारे बरसाती हुई आँखों वाले कुछ वानरों के हाथ त्रासक-तरुओं के साथ कट गये। उनके शरीरों में शत्रु-प्रेषित वज्र-सम भाले लगे थे। तो भी उन्होंने उन राक्षसों के कंठों को काटा और अपने प्राण भी त्याग दिये। १९८२

अडर्न्वत्त किरिहळै यशत्ति येऱ्रत्त्
तॊडर्न्दत्त मळैपॊळि तुम्बिक् कुम्बङ्गळ्
इडन्दत्त मूळैह ळितिदि नुण्डत्त
कडन्दत्त पशित्तळल् करडि कादुव 1983

कातुव–लड़ाकू; करटि–रीछ; किरिकळै–गिरियों को; अटर्न्तत्त–उनसे लगकर नाश करनेवाले; अशनि एऱ्र अॅत्त–वज्रर्षभ के समान; तॊटर्न्तत्त–पीछा करके जाकर; मळै पॊळि–मदवारिवर्षक; तुम्पि कुम्पङ्कळ्–हाथियों के कुंभों को; इटन्तत्त–तोड़कर; मूळैकळ्–मज्जों को; इतितित् उण्टत्त–खुशी के साथ खा लिया। १९८३

युद्धरत रीछों ने पर्वतभंजक अशनि के समान लगातार जाकर मदस्रावी गजों के मस्तकों को फोड़ा और मजे के साथ उनके मज़्ज़ों को खाया। १९८३

कॊलैमद करियत्त कुदिरै मेलत्त
वलमणित् तेरत्त वाळित् मेलत्त
शिलैहळित् कुडुमिय शिरत्तित् मेलत्त
मलैहळिऱ् पॆरियत्त कुरङ्गु वावुव 1984

मलैकळिल् पॆरियत्त कुरक्कु–पर्वत से भी बड़े वानर; वावुव–झपटकर; कॊलै मत करियत–घातक मत्त गजों पर के हुए; कुतिरै मेलत्त–अश्वों पर के; वलम् मणि तेरत्त–बलवान सुन्दर (घंटीदार) रथों पर के; वाळित् मेलत्त–तलवारों पर सवार; चिलैकळित् कुटुमिय–धनुओं के नोकों पर झपटे; चिरत्तित् मेलत्त–सिरों पर के। १९८४

पर्वत से भी बड़े वानर घातक गजों के ऊपर लपके। अश्वों के ऊपर झपटे सबल और घंटियों-सहित रथों के ऊपर के हुए। तलवारों पर के हुए। धनुओं के नोकों और धनुर्वीरों के सिरों पर भी देखे गये। १९८४

तण्डुहॊण् डरक्कर् ताक्कच् चायन्दुहु निलैय शन्दिन्
तुण्डङ्ग ळाह वाळिऱ् ऱुणिन्दपे रुडलैत् तूविक्
कॊण्डॆळु मलैह ळोडुङ् गुरक्किनप् पिणत्तित् कुप्पै
मण्डुवॆङ् गुरुदि याऱाय् मऱिहडत् मडुत्त मादो 1985

कुरक्कु इतम्–वानरसमूह को; पिणत्तित् कुप्पै–लाशों के ढेर से; मण्टु वॆम् कुरुति–बहुत बहनेवाला रक्त; आऱाय्–नदी बनकर; अरक्कर् तण्टु कॊण्टु ताक्क–राक्षसों के दण्ड लेकर आक्रमण करते; चायन्तु उकुम् निलैय–शिथिल गिरने की स्थिति में आये; वाळिल् तुणिन्त–तलवार से काटे गये; पेर् उटलै–बड़े शरीरों को; चन्तित्–चन्दन के; तुण्टङ्कळ् आक–टुकड़ों के रूप में; तूवि–छिड़काकर;

कॊण्टु ऍऴुम्–खिलकर उठनेवाली; अलैकळोटुम्–तरंगों के साथ; मड़ि कटल् मटुत्त–प्रत्यावर्तनशील तरंगों से युक्त समुद्र में जा भरा। १९८५

वानरसमूहों की लाशों के ढेर से गरम रक्त बहुत बहा और वह नदी बना। राक्षसों ने गदायुध से मारा तो वानर मरकर गिरने की दशा में रहे। उनके शरीर तलवार से कटे। उनको ले बहनेवाले रक्त के प्रवाह ने उन्हें चंदनखंडों के समान छितराता हुआ और उत्तुंग लहरों के साथ आवर्तनशील लहरों के सागर में जा मिला। १९८५

पतिवॆन्ऱ पताहै यॆन्ऱुम् पल्लुळॆप् परिमा वॆन्ऱुम्
ततुवॆन्ऱुम् वाळि यॆन्ऱुन् तण्डॆन्ऱुन् दनिवे लॆन्ऱुम्
शितवॆन्ऱि मदमा वॆन्ऱुन् तेरॆन्ऱुन् दॆरिन्द दिल्लै
अनुमन्कै वयिरक् कुन्ऱा लरैप्पुण्ड वरक्कर् तानै 1986

अनुमन्–हनुमान के; कै वयिरम् कुन्ऱाल्–हस्त रूपी वज्र-पर्वतों से; अरैप्पुण्ट–पिसी; अरक्कर् तानै–राक्षस-सेना में; पति वॆन्ऱ–भय को जीतनेवाली; पताकै ऍन्ऱुम्–पताकाएँ ये हैं ऐसा; पल् उळै–विविध, सिर हिलानेवाले; परिमा ऍन्ऱुम्–अश्व, ऐसा; ततु ऍन्ऱुम्–धनु ऐसा; वाळि ऍन्ऱुम्–बाण ऐसा और; तण्टु ऍन्ऱुम्–दण्ड, ऐसा; तति वेल् ऍन्ऱुम्–अलग शक्तियाँ हैं ऐसा; चितम् वॆन्ऱि–क्रोधी और विजयी; मतम् मा–मत्त गज ऐसा; तेर् ऍन्ऱुम्–रथ, ऐसा; तॆरिन्ततु इल्लै–अलग-अलग मालूम नहीं हुआ। १९८६

हनुमान के हाथों रूपी वज्र-पर्वतों से जो राक्षस-सेना पिसी, उसमें सब इतना मिश्रित हो गया कि डर को दूर करनेवाली पताकाओं, विविध रीति से सिर हिलाते हुए जानेवाले अश्वों, धनुओं, बाणों, दंडायुधों, अप्रतिम शक्तियों, क्रोधशील और विजयी गजों और रथों की अलग-अलग कोई पहचान नहीं रही। १९८६

पॊङ्गुतेर् पुरवि यानै पॊरुतॊळिल् निरुद रॆन्नुम्
शङ्गैयु मिल्ला वण्णन् दन्नुळे तऴविक् कूऱ्ऱम्
ऍङ्गुळ वुयिरॆन् ऱॆण्णि यिणैक्कयाऱ् किळैत्त दॆन्ब
अङ्गदन् मरङ्गॊण् डॆऱ्ऱ वऴुप्पट् टऴिन्द तानै 1987

अङ्कतन्–अंगद के; मरम् कॊण्टु ऍऱ्ऱ–पेड़ लेकर मारने से; अऴु पट्टु–(रक्तमांस-मिश्रित) कीच बनकर; अऴिन्त–जो मिट गये; पॊङ्कु–परिमाण में अधिक; तेर् पुरवि यानै–रथ, अश्व, गज और; निरुतर् ऍन्नुम् तानै–राक्षसवीर आदि की सेनाओं में; कूऱ्ऱम्–यम ने; तन् उळ्ळे–अपने मन में; चङ्कैयुम् इल्ला वण्णम्–बिना किसी हिचक के; तऴुवि–आ लगकर; उयिर् ऍङ्कु उळ–जीव कहाँ हैं; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा खोज-खोजकर; इणै कैयाल्–अपने हस्तद्वय से; किऴ्ऱिप् पार्त्ततु–कुरेद देखा। १९८७

अंगद ने तरुओं से मारा तो अधिक संख्या में रहे रथों, अश्वों, गजों और पदातियों की सेना पिस गयी और खिचड़ी-सी बन गयी। उसमें यम अपने पहले का हिचक त्यागकर अपने दोनों हाथों से जीवों को खोजता रहा, इस टोह में कि कहीं जीव छिपा तो नहीं रहा है। १९८७

ताक्किय तिशैहळ् तोऱुन् दलैत्तलै मयङ्गित् तम्मिल्
नूक्किय कळिऱुन् देरुम् पुरवियु नूऴिल् शॅय्य
आक्किय शॅरुवै नोक्कि यमररो डशुरर् पोरॅत्
तूक्किनर् मुनिव रॅन्नै यिदऱ्कदु तोऱ्कु मॅन्ऱार् 1988

ताक्किय तिचैकळ् तोऱुम्–भिड़नेवाली सभी दिशाओं में; तम्मिल् तलै मयक्कि–आपस में मिश्रित होकर; नूक्किय कळिऱुम्–लड़नेवाले गजों और; तेरुम्–रथों और; पुरवियुम्–अश्वों को; नूऴिल् शॅय्य–(वानरों के) मारकर ढेर लगाते; आक्किय चॅरुवै–ऐसे हुए युद्ध को; नोक्कि–देखकर; अमररोटु अचुरर् पोरै–देवासुर युद्ध को; तूक्किनर् मुनिवर्–दोनों की तुलना करनेवाले ऋषियों ने; ऍन्नै–क्या है; अतु–वह; इतऱ्कु–इसके सामने; तोऱ्कुम्–हार जायगा; ऍन्ऱार्–कहा। १९८८

सभी दिशाओं में लड़ाई हो रही थी और आपस में मिश्रित होकर रथ, अश्व और गज युद्ध कर रहे थे। वानर उन सभी को मिटा रहे थे। ऐसी लड़ाई को देखकर ऋषियों ने देवासुर-युद्ध की इस युद्ध से तुलना की और यह निर्णय किया कि वह (देवासुर-) युद्ध इसके सामने हार जायगा (तुच्छ है)। १९८८

ऍडुत्तदु निरुदर् तानै यिरिन्ददु कुरङ्गि नीट्टम्
तडुत्तनर् मुहङ्गळ् ताङ्गित् तनित्तनित् तलैवर् तळ्ळिप्
पडुत्तन ररक्कर् वेलै पट्टदुम् पडवुम् पारार्
कडुत्तनर् कडुत्त पिन्नुङ् गात्तनर् कवियिन् वीरर् 1989

निरुतर् तानै–राक्षस-सेना; ऍटुत्ततु–हावी रही; कुरङ्किन् ईट्टम्–वानरों की भीड़; इरिन्ततु–तितर-बितर हुई; तलैवर्–नायकों ने; मुकङ्कळ् ताङ्कि–सम्मुख आकर; तनित्तनि–अलग-अलग (उनको); तटुत्ततर्–रोका; अरक्कर्–राक्षसों ने; वेलै पटुत्ततर्–सागर के समान रहे वानरों को; तळ्ळि पटुत्ततर्–मार गिराया; पट्टतुम्–मरने पर; कवियिन् वीरर्–(बचे रहे) वानर वीर; पटवुम् पारार्–(अपने वीरों के) मरने की परवाह न करके; कटुत्त पिन्नुम्–भागने के बाद भी; कात्तनर्–(भागते वानरों को) रोका। १९८९

राक्षस-सेना हावी आयी तो वानर-सेना भागने लगी। वानर-यूथपों ने उनको सामने से आकर रोका और युद्ध में भेजा। राक्षसों ने सागर-सम उस सेना को निहत किया। यह देखकर भी कि वानर-सेना हताहत हो रही है, यूथप न पसीजे। फिर भी उन्होंने भागनेवाले वानरों को रोका। १९८९

शूलमुम् मऴुवुन् दाङ्गित् तोळिरु नात्गुन् दोत्र
मूलम्वन् दुलहै युण्णु मुरुत्तिर मूर्त्ति यॅत्न
नीलनित् ऱुळिये नित्ऱा तिरन्दरङ् गणङ्ग ळोडुम्
कालनॅत् ऱोरुव नियाण्डुम् पिरिन्दिलन् पाशक् कैयान् 1990

चूलमुम् मऴुवुम्–शूल और (जलते) फरसे; ताङ्कि–लेकर; इरु नान्कु तोळुम्–आठों कंधों को प्रकट करते हुए; मूलम् वन्तु–आदिनाथ बनकर; उलकै उण्णुम्–लोक को संहार करनेवाले; उरुत्तिर मूर्त्ति ऍन्त–रुद्र मूर्ति के समान; नीलन्–नील; निन्ऱुळिये–जहाँ खड़ा रहा, वहीं; कालन् ऍन्ऱु ओरुवन्–यम नामक एक; कणङ्कळोटुम्–अपने गणों के साथ; पाचम् कैयान्–पाशहस्त हो; याण्टुम् पिरिन्तिलन्–कहीं न जाकर; निरन्तरम् निन्ऱान्–निरंतर खड़ा रहा। १९९०

उधर नील शूल और अग्नि-परशु के धारक अष्टभुज रुद्र के समान लड़ रहा था। वहाँ जहाँ खड़ा था, उसी स्थान पर यम नामक देवता भी पाश-हस्त होकर, विना इधर-उधर गये निरंतर खड़ा रहा। १९९०

काऱ्ऱल्लन् पुनलो वल्लन् कनलल्ल निरण्डु कैयाल्
आऱ्ऱल ताऱ्ऱु हिन्ऱ वरुञ्जम मिदुवे याहिल्
एऱ्ऱमॅन् पलवुञ् जोल्लि यॅन्बद मिळन्दे नॅन्नक्
कूऱ्ऱमुम् कुलुङ्गि यञ्ज वॅङ्गदक् कुमुदन् कोन्ऱान् 1991

कूऱ्ऱमुम्–यम देवता भी; ऍन् पतम् इऴन्तेन्–अपना पद खोया; कुलुङ्कि अञ्च–हिले, काँपे, ऐसा; वॅम् कतम्–भयंकर क्रोधी; कुमुतन्–कुमुद ने; कोन्ऱान्–(शत्रुओं को) मारा; काऱ्ऱु अल्लन्–पवन नहीं; पुनल् अल्लन्–जल नहीं; कनल् अल्लन्–अनल नहीं; आऱ्ऱलन्–सह न सककर; इरण्टु कैयाल्–दोनों हाथों से; आऱ्ऱुकिन्ऱ–जो करता वह; अरु चमम्–प्रखर युद्ध; इतुवे आकिल्–यह हो; पलवुम् चोल्लि–विविध प्रकार से कहने से; एऱ्ऱम् ऍन्–बड़ाई क्या होगी। १९९१

भयानक क्रोधी कुमुद इस भाँति शत्रु-संहार करता था कि यम भी 'मेरा पद छिन गया' समझकर हिलकर काँपा। वह न तो पवन था, न जल, न अनल। आतुरता के साथ अपने दोनों हाथों से यह जो कर रहा है, वह असाध्य युद्ध यही है तो फिर विविध भाँति की श्लाघा करने में क्या वड़ाई है ? । १९९१

मऱिकडल् पुडैशूऴ् वैप्पित् मानवत् वाळि पोन
शॅऱिपणै मरमे नित्ऱ मरङ्गळिऱ् ऱॅरियच् चॅप्पुम्
कुऱियुडै मलैहळ् तम्मिऱ् कुलवरैक् कुलमे कॉळ्ळा
ऍऱिवलो डरैदल् वेट्ट विडवनन् ऱॅडुत्ति लाद 1992

कोळ्ळा–लेकर; ऍऱितलोटु–फेंकना और; अरैतल्–पीटना; वेट्ट–चाहकर; इटवन्–ऋषभ ने; अन्ऱु–तब; ऍटुत्तिलात–जिसको नहीं उखाड़ा थे; मऱि कटल्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर से; पुटै चूऴ्–वलयित; वैप्पिन्–संसार में; निन्ऱ

मरङ्कळिल्–खड़े तरुओं में; मातवन् वाळि पोत–मान्य श्रीराघव के बाणों से विद्ध; चॅरि पणै–घनी शाखाओं से युक्त; मरमे–सात साल वृक्ष ही हैं; तॅरिय चॅप्पुम्–सबको जो कहे जाते हैं; कुरि उटै–वैसे नामी; मलैकळ् तम्मिल्–पर्वतों में; कुलवरै–कुलगिरियाँ ही। १९९२

जो हाथ में लेकर चलाना या पीटना चाहता था, उस ऋषभ के द्वारा अनुत्पाटित तरु इस ऊर्मिमाली सागर-वलयित संसार में सिर्फ़ वे ही सालवृक्ष थे, जिनको मान्य श्रीराम के बाणों ने विद्ध किया था। प्रकीर्तित पर्वतों में अनुत्पाटित गिरियाँ केवल कुलगिरियाँ थीं। १९९२

वाम्बरि मदमा मान्तेर् वाळॅयिऱ् ऱरक्कर् मातप्
पाम्बिनुम् वॅय्योर् शालप् पडुहुवर् पयमीन् ऱिन्ऱॆ
तूम्बुऱळ् कुरुदि मण्डत् तॊडर्नॆड् मरङ्गळ् शुऱ्ऱिच्
चाम्बवन् कॊल्लच् चाम्बु मॆन्ऱु कॊण्डम रार्त्तार् 1993

वाम् परि–सरपट दौड़नेवाले अश्वों; मतम् मा–और मत्त गजों; मान् तेर्–और अश्व-जुते रथों के स्वामी; मातम् पाम्पिनुम्–विषविशिष्ट सर्पों से भी; वॅय्योर्–हानिकारक; वाळ् ऍयिऱु–तीक्ष्ण दाँतों वाले; अरक्कर्–राक्षस; चाल पटुकुवर्–अधिक मरेंगे; इन्ऱु पयम् इन्ऱु–आज कोई डर नहीं; तूम्पु उऱळ्–पुल के मुख से आते-से; कुरुति मण्ट–रक्त के अधिक आते; तॊटर् नॆटु मरङ्कळ्–जटिल डालों से युक्त तरुओं को; चुऱ्ऱि–घुमाकर; चाम्पवन् कॊल्ल–जाम्बवान मारता रहा तब; चाम्पुम्–(राक्षसदल) मिटेगा; ऍन्ऱु कॊण्टु–यह धारणा लेकर; अमरर् आर्त्तार्–देवों ने आनन्दनर्दन किया। १९९३

"जाम्बवान अश्वों, मत्त गजों और अश्वयुक्त रथों के स्वामी राक्षसों को खूब मार देगा। पुल के मुख से आनेवाले जल के समान रक्त वह चले, इस भाँति वह जटिल डालियों से युक्त तरुओं को घुमाकर संहार करेगा। राक्षसदल मिट जाएगा।" यह धारणा बनाकर देवों ने आनंदारव किया। १९९३

पॅरुङ्गलप् पुरवि यान् तिरैहळुम् कलम्बॊऱ् ऱेरुम्
इरुङ्गळि यानै यान् महरमु मिरियल् पोह
नॅरुङ्गिय पडैह ळान् मीन्गुलम् मिरिन्दु शिन्दक्
करुङ्गडल् कलक्कु मत्तिऱ् पनशनुङ् गलक्किप् पुक्कान् 1994

पॊरुम्–युद्ध करनेवाले; पुरवि आन तिरैकळुम्–अश्व रूपी तरंगें; पॊन् तेर्–स्वर्णरथ रूपी; कलङ्कळुम्–पोत और; इरु कळि यानै आन–बड़े मत्तगज रूपी; मकरमुम्–मगर; इरियल् पोक–हड़बड़ाकर हट गये; नॅरुङ्किय–घनी; पटैकळ् आन–सेनाएँ रूपी; मीन् कुलम्–मछलियों का समूह; नॅरिन्तु चिन्त–अस्त-व्यस्त हो छितरा; करु कटल् कलक्कुम्–(इस तरह) काले सागर को मथनेवाली; मत्तिल्–मथानी के समान; पनचनुम्–पनश (नाम का वानर वीर); कलक्कि–विलोडित करते हुए; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ। १९९४

वह युद्धस्थल सागर के समान रहा। उसको पनश मंदर-मथानी के समान घुसकर इस भाँति मथने लगा कि अश्व रूपी लहरें, स्वर्णरथ रूपी पोत और बड़े मत्त गज रूपी मगर अस्त-व्यस्त हो गये; और सेनाएँ रूपी मछलियों के समूह बिखर गये। १९९४

मयिन्दनुन् दुमिन्दन् तानु मळैक्कुलङ् गिळित्तु वानत्
तुयर्न्दॅळु मेरुवॅ वेन्द रुडन्पिरन् दवरॅ यॊत्तार्
कयङ्गुडॅन् दाडुम् वीरक् कळिरॊत्तान् कयवन् कालिऱ्
पॅयर्त्तिल नुऱ्ऱ दल्लाड् केशरि पॅरुम्बॊऱ् ऱोळान् 1995

मयिन्ततुम्–ये मैंद और; तुमिन्तन् तानुम्–द्विविद भी; मळै कुलम् किळित्तु–मेघकुल को चीरकर; वानत्तु–आकाश की ओर; उयर्न्तु ॲळुम्–ऊपर उठनेवाले; ऍरुवै वेन्तर्–गीधों के राजा; उटन् पिऱन्तवरॅ–सहोदर जो (संपाति, जटायु) थे, उनकी; ऑत्तार्–समता करनेवाले रहे; कवयन्–गवय; कयम् कुटॅन्तु आटुम्–तालाब में घुसकर क्रीड़ा करनेवाले; वीर कळिऱु ऑत्तान्–वीर हाथी के समान रहा; केचरि पॅरुम् पॊन् तोळान्–केसरी नाम का बड़े सुन्दर कंधों वाला; उऱ्ऱतु अल्लाल्–स्थिर एक स्थान पर रहने के अलावा; कालिल् पॅयर्न्तिलन्–पैर नहीं हटाता था। १९९५

मैंद और द्विविद मेघकुल को चीरकर ऊपर आकाश में उड़नेवाले गीधों के सहोदर राजाओं (संपाति और जटायु) के समान रहे। गवय तालाब में क्रीडा करनेवाले वीर मत्त गज के समान लगा। सुन्दर-भुज केसरी जहाँ रहा वहीं अचल खड़ा रहा; विचलित कभी नहीं हुआ। १९९५

पॅरुम्बडॅत् तलॅव रियारुम् पॅयर्न्दिलर् पिणत्तिन् कुप्पॅ
वरम्बिल परम्बि यार्त्तु मलॅहिन्ऱ पॊळ्दिन् वन्दुऱ्
ऱिरिन्दन कवियुङ् गूडि यॅडुत्तन वॅडुत्त लोडुम्
शरिन्दतु निरुदर् तानॅ ताक्किन ऩरक्कन् तानॆ 1996

पॅरु पटॅ तलॅवर्–बड़े-बड़े वानरयूथप; यारुम्–सभी; पॅयर्न्तिलर्–न हटे; पिणत्तिन् कुप्पॅ–लाशों के ढेर; वरम्पिल–अपार; परम्पि आर्त्तु–फैलाकर घोष करके; मलॅकिन्ऱ पॊळुतिन्–जब लड़ते रहे तब; इरिन्तन कवियुम्–जो भागे थे, वे वानर भी; वन्तुऱ्ऱु–लौट आकर; ॲटुत्तन–युद्ध में लग गये; ॲटुत्तलोटुम्–जब युद्ध (हाथ में) लिया तो; निरुतर् तानॅ–राक्षसों की सेना; चरिन्ततु–शिथिल हुई; अरक्कन् तानॆ–राक्षस इन्द्रजित् स्वयं अकेला; ताक्किनन्–लड़ा। १९९६

बड़े-बड़े वानरयूथप अचल रहकर लाशों के असंख्यक ढेर लगाते हुए नर्दन करते रहे; तब हारकर जो भागे थे, वे वानर भी वापस आकर युद्धरत हुए। तब राक्षस-सेना घट गयी। तब इन्द्रजित् अकेला रहकर लड़ने लगा। १९९६

पूर्णॅ रॉिन्दकुव डलॅय तोळ्हळिरु पुडॅप रन्दुयर वडल्वलित्
तूर्णॅ रॉिन्दलॅय विरल्हळ् कोदॅयोडु शुवडॅ रॉिन्ददॊरु तॊळि़ल्पडच्
चेर्णॅ रॉिन्दुनिमिर् तिशॅह ळोडुमलॅ शॅविडॅ रॉिन्दुडॅय मिडल्वलोन्
नार्णॅ रॉिन्दुमुरॆ मुरॆतॊ डरन्दुकड लुलह मियावॅयु नडुक्कितान् 1997

मिटल्वलोन्–बल में बढ़े हुए इन्द्रजित् ने; पूण् ऍरि़न्त–आभरणप्रभा-युक्त; कुवट्ट अलॅय तोळ्कळ्–पर्वतोपम कंधों के; इरु पुटॅ–दोनों पार्श्वों में; परन्तु उयर–चौड़े व उन्नत रहते; अटल् वलि तूण्–बहुत कठोर खम्भों के; ऍरि़न्तलॅय–मिले रहने के जैसे; विरल्कळ्–उँगलियों के; कोतॅयोटु–व्यवस्थित रूप से; चुवटु ऍरि़न्ततु–निशान लगवा लेने के; ऑरु तॊळि़ल् पट–एक काम में लगे रहते; चेण् ऍरि़न्तु–बहुत दूर फैलकर; निमिर् तिचॅकळोटु–उन्नत दिशाओं के साथ; मलॅ–पर्वतों के; चॅविटॅरि़न्तु–बहरे होकर; उटॅय–बिखरते; मुरॆ मुरॆ तॊटरन्तु–बारी-बारी से लगातार; नाण् ऍरि़न्तु–डोरा टंकृत करके; कटल् उलकम् यावॅयुम्–सारी ससागरा पृथ्वी को; नटुक्कितान्–कँपा दिया। १९९७

अतिबली इन्द्रजित् के आभरण के प्रकाश से आवृत कंधे दोनों पार्श्वों में उन्नत हुए; बहुत सशक्त खम्भों के समान उँगलियाँ क्रम से डोरे का टंकार करती रहीं, जिससे उन पर निशान पड़ रहा था; बहुत दूर तक फैलकर ऊँची दिशाओं और पर्वतों को बहरा बनाकर तोड़ते हुए उसने बारी-बारी से डोरा टंकृत कर समुद्र, भूमि सबको कँपा दिया। १९९७

शिङ्ग वेरुहडल् पोन्मु ळङ्गिनिमिर् तेर्ह डायॅनॅडिदु शॅल्हॆन्ना
अङ्ग दादिय रनुङ्ग वानवर्ह ळञ्ज वॅञ्जिन मतन्दमाच्
चङ्ग पालकुळि हादि वालॅयिरु तन्द तीविडमु मिळ्न्दुशार्
वॅङ्ग णाहमन वेहमा युरुमु वॅळ्ह वॅङ्गणॅहळ् शिन्दिनान् 1998

शिङ्क एरु–पुरुषसिंह (इन्द्रजित्) ने; कटल् पोल् मुळङ्कि–सागर के समान गरजकर; निमिर् तेर्–उन्नत रथ को; कटाय्–चलाता हुआ; नॅटितु चॅल्क ऍन्ना–बहुत दूर जाओ (सारथी से) कहकर; अङ्कत आतियर्–अंगदादि के; अनुङ्क–चिंतित होते; वानवर्कळ् अञ्च–देवों के डरते; उरुमुम् वॅळ्क–अशनि के भी लजाते; वाल् ऍयिरु–श्वेत दाँतों से; तन्त–निकला; ती विटम्–क्रूर विष; उमिळ्न्तु चार्–निकालते आये; चङ्कपाल कुळिक आति–शंखपाल, गुळिक आदि; वॅम् कण् नाकम् अॅन–भयावने नागों के समान; वॅम् कणॅकळ्–क्रूर अस्त्रों को; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध के साथ; अनन्तमा–अनंत; वेकमा–और त्वरित गति से; चिन्तितान्–बिखेर दिया। १९९८

नर केसरी-सम इन्द्रजित् ने समुद्र का-सा गर्जन करके सारथी को आज्ञा दी कि दूर तक रथ को चलाता चल। उसने बड़े ही क्रोध के साथ दाँतों के मध्य से भयंकर विष उगलनेवाले शंखपाल, गुळिक आदि सर्पों के समान अनंत क्रूर अस्त्रों को तेज़ चलाया जिससे अंगदादि वीर क्षुब्ध हुए और देव काँपे। १९९८

शुऱ्ऱुम् वन्दुकवि वीरर् वीशिय शुडर्त्त डङ्गल्वरै तोय्मरम्
इऱ्ऱॆ रिन्दुपॊडि यायु दिर्न्दन वॆळुन्दु शॆणिडै यिऴिन्द पोल्
वॆऱ्ऱि वॆङ्गणै पडप्प डनन्तलैहळ् विण्णि नूडुतिशै मीदुपोय्
अऱ्ऱॆ ळुन्दन विळुन्दु मण्णिडै यळुन्दु हिन्ऱन वननदमाल् 1999

वॆऱ्ऱि वॆम् कणै–विजयशील और क्रूर शरों के; पट पट–लगातार गिरने पर; कवि वीरर्–वानर वीरों के द्वारा; चुऱ्ऱुम् वन्तु–चारों ओर घेरकर; वीचिय–फेंके गये; चुटर्–तेजोमय; तट कल् वरै–बड़े पत्थर के पर्वत और; तोय् मरम्–गगनस्पर्शी तरु; इऱ्ऱु–टूटकर; ऎरिन्तु–जलकर; पॊटियाय् उतिर्न्तन–चूर्ण बन गिर गये; अऱ्ऱु ऎळुन्दन–कटकर जो उठे; अनन्तम् तलैकळ्–अनंत सिर; चेण् इटै ऎळुन्तु–आकाश में उठकर; इऴिन्त पोल्–नीचे उतरते से; विण्णिन् ऊटु–आकाश में; तिचै मीतु पोय्–दिशाओं में जाकर; विळुन्तु–गिरकर; मण्णिटै अळुन्तुकिन्ऱन–मिट्टी में धँसते हैं। १९९९

मेघनाद के विजयदायी व क्रूर शरों के लगातार पड़ने से वानरों के उसे घेरकर फेंके गये प्रकाशपूर्ण विशाल पर्वत और गगनचुंबी तरु टूटे, जले और चूर्ण होकर चू गये। कटकर जो उड़े वे अनंत वानरसिर आकाश से उतरनेवाले पक्षियों के समान अंतरिक्ष में सभी दिशाओं में गये, नीचे गिरे और धरती में धँस गये। १९९९

शिलैत्त डम्बॊऴि वयक्क डुम्बहऴि शॆल्ल वॊल्हिन्ऱ् शिनत्तिनाल्
उलैत्तॆ ऱिन्दिड वॆडुत्त कुन्ऱतॊ ऱुडऱ्प रङ्गळ्कॊ डोदुङ्गिनार्
निलैत्तु निन्ऱुशिन मुन्दु शॆल्लवॆदिर् शॆन्ऱु शॆन्ऱुऱ नॆरुक्कलान्
मलैत्त लङ्गळॊ डुरत्त लङ्गळूल वूडु शॆन्ऱपल वाळिये 2000

चिलै तटम् पॊऴि–धनु से धारावाही रूप से निकलनेवाले; वयम्–कठोर; कटु–घातक; पकऴि–शर; चॆल्ल–(शरीरों को) भेद जाने से; ऒल्कित्तर्–थककर; चिनत्तिनाल्–क्रोध से; उलैत्तु–दुःखी होकर; ऎऱिन्तिट–फेंकने के वास्ते; ऎटुत्त–उठाये गये; कुन्ऱु तॊऱु–हर पर्वत पर; उटल् परङ्कळ् कॊटु–शरीर-भार छिपाकर; ऒतुङ्किनार्–आड़ में रहकर; निलैत्तु निन्ऱु–अचल रहकर; चिनम् मुन्तु चॆल–क्रोध के आगे खींचते जाने से; ऎतिर् चॆन्ऱु–सामने जा; चॆन्ऱुऱ–जाकर; नॆरुक्कलान्–पास होने पर; पल वाळि–अनेक शर; मलै तलङ्कळॊटु–पर्वतों के साथ; उरम् तलम्–छाती के प्रदेशों को भी; ऊटु चॆन्ऱ–मध्य में वेधकर बाहर गये। २०००

इन्द्रजित् के बड़े धनु से धारावाही निकलनेवाले शर वानर-शरीरों को भेद चले। वे थके, क्रोध से भरे और पर्वतों को उठा ले आये। उन पर्वतों के पीछे अपने शरीरों को छिपाकर स्थिर रूप से क्रोध के वशीभूत होकर बढ़कर इन्द्रजित् को घेर गये। तब अनेक शर पर्वतों के साथ उनके वक्षःस्थलों को भी भेदकर बाहर निकल गये। २०००

मुळ्त्त मौन्ऱिलोरु वॅळ्ळ वानर मुडिन्दु माळ्वन तडिन्दुपोय्क्
कळ्त्त कैयनिमिर् काल वालपल कण्ड मानपडि कण्डुनेर्
ॲळ्त्तौ डर्न्दपडर् तोळ्हळा लॅऱिय वॅऱ्ऱ वुऱ्ऱन वॅळ्न्दुमेल्
विळ्त्त पैन्दलैय वेणु माल्वरैहळ् वीशि वीशियुडन् वीळ्माल् 2001

मुळ्त्तम् ओन्ऱिल्–एक मुहूर्त में; ओरु वॅळ्ळम् वानरङ्कळ्–एक 'वॅळ्ळम्' के वानर वीर; मुटिन्तु–अंत पाकर; तटिन्तु पोय्–छिन्न होकर; माळ्वन–निष्प्राण हुए; कळ्त्तुत–कण्ठ वाले हुए; कैय–हाथों वाले हुए; निमिर् काल–ऊपर उठे पैरों वाले हो गये; वाल–पूँछ वाले हो गये और; कण्टम् आन पटि–खण्ड-खण्ड जो हुए वह प्रकार; नेर् कण्टु–समक्ष देखकर; ॲळु तोटर्न्त–स्तंभ-सम; पटर् तोळ्कळाल्–विशाल करों से; ॲऱिय–फेंकने; ॲऱ्ऱ–ढकेलने; मेल् उऱ्ऱन–ऊपर उछलकर; उऱ्ऱन–जो उठे वे वानर; विळ्त्त–गिरे; पैन् तलैयत–ताज़े सिरों वाले; वेणु माल् वरैकळ्–बाँस-सहित बड़े पर्वतों को; वीचि वीचि–निरंतर फेंककर; वीळ्म्–गिरे। २००१

एक ही मुहूर्त के अन्दर एक "वॅळ्ळम्" के वानर वीर इन्द्रजित् के शरों से अपने कंठ, हाथ, पैर और पूँछ आदि के कट जाने से छिन्न होकर मरे। इसको देखकर अन्य वानर स्तंभ-सम अपने हाथों से उस पर फेंकने के वास्ते पर्वत आदि लेकर उछले। राक्षस ने उनके सिर काट लिये। वानरों ने अपने ताज़े कटे सिरों को और अपने हाथ के बाँस के पेड़ों से पूर्ण तरुओं को और अपने शरीरों को उस पर निरंतर गिराया और वे स्वयं भी मर गये। ("मुळ्त्तम्" का "मुहूर्त" अर्थ बताया गया है। असल उसका अर्थ शीशे पर लुढ़काये गये उड़द के लुढ़कने का समय है।)। २००१

अऱ्ऱ पैन्दलै यरिन्दु शॅन्ऱन वयिऱ्ऱ डुङ्गणै वॅयिऱ्कळ्पोर्
पुऱ्ऱ डैन्दकोडु वॅव्व राविनॅडु नाह लोहमदु पुक्कवाल्
वॅऱ्ऱ वॅळ्ळिडै विरिन्दु पोवदोरु मेडु पळ्ळम्वॅळि यिन्मैयाल्
उऱ्ऱ शॅङ्गुरुदि वॅळ्ळ मुळ्ळतिरै योद वेलैयोडु मौत्तदाल् 2002

अऱ्ऱ–कटे हुए; पै तलै–ताज़े सिरों को; अरिन्तु–चीरते हुए; चॅन्ऱन–जो गये; अयिल्–तीक्ष्ण; कटु–तेज़; कणै–शर; वॅयिल्कळ् पोल्–धूप की किरणों के समान; पुऱ्ऱु अटैन्त–बाँबी में आये; कोटु वॅव्–बहुत भयानक; अराविन्–साँपों के समान और; नॅट–गहरे; नाकलोकम् अतु–नागलोक में; पुक्क–पहुँचे; मेटु पळ्ळम् वॅळि इन्मैयाल्–ऊँची ज़मीन, नीची ज़मीन, समतल ऐसा कोई भेद न रहे, ऐसा; वॅऱ्ऱ वॅळ्ळिटै–खुले मैदान में; पोवतु उऱ्ऱ ओरु–जानेवाला एक; चॅम् कुरुति वॅळ्ळम्–लाल रक्त-प्रवाह; उळ्ळ–पहले ही रहे; तिरै–तरंगपूर्ण; ओतम्–उमगनेवाले; वेलैयोटुम्–समुद्र के; ऒत्ततु–भी समान रहा। २००२

कटे हुए वानरों के ताज़े सिरों को भेदते हुए चलनेवाले इन्द्रजित् के तीक्ष्ण और भयानक शर धूप की किरणों और बाँबी में घुसनेवाले अतिक्रूर

सर्पों के समान नरकलोक में घुस चले। रक्त-प्रवाह ने ज़मीन की ऊँच-नीच को पाटकर समतल बना दिया। वह तब तरंगपूर्ण और सघोष समुद्र के समान रहा। २००२

विऴिक्कु मेल्विऴिय निऱ्किन् माऱ्बिडैय मीळ् मेन्मुदुह मेनिय
कऴिक्कु मेलुयर वोडु मेन्नॅडिय काल वीशिन्निमिर् कैयवाय्त्
तॅऴिक्कु मेलहवु नाव शिन्दैयिन वुन्नु मेड्चिहर मियावैयुम्
पऴिक्कु मेनिय कुरक्किन् मेलवन् विडुङ्गॉ डुम्बहऴि पायवे 2003

चिकरम् यावैयुम्–सभी (पर्वत-) शिखरों का; पऴिक्कुम् मेनिय–परिहास करनेवाले शरीरों के बंदरों पर; अवन्–इन्द्रजित् के; कॉटु पकऴि–क्रूर शर; पायवे–जब लगे तब; विऴिक्कुमेल्–(अगर) वानर आँख खोलें तो; विऴिय–उन आँखों के; निऱ्किन्–खड़े हो जाते तो; माऱ्पिटैय–वक्ष-मध्य के; मीळ्मेल्–पीठ दे भागें तो; मुतुक–पीठों के; कऴिक्कुमेल्—बचाना चाहें तो; मेनिय–सारे शरीर पर के; उयर ओटुमेल्–उछलें तो; नॅटिय काल–लम्बे पैरों पर लगनेवाले; वीचिन्–(हाथ) पटकें तो; निमिर् कैय–बड़े हाथों में लगनेवाले; आय्–बनकर; तॅऴिक्कुमेल–डाँट बताएँ तो; अकवुम् नाव–हिलनेवाली जीभ के; उन्नुमेल्–सोचें तो; चिन्तैयिन–मन पर लगनेवाले बने। २००३

पर्वतों का परिहास करनेवाले (पर्वतों से भी बड़े और कठोर) वानर-शरीरों पर इन्द्रजित्-प्रेरित भयानक शर लगे। वे वानर अगर आँखें खोलते तो उन आँखों पर लगते; वे खड़े होते तो शर छातियों पर लगते। वे भागते तो पीठों पर लगते। बचाने की कोशिश करते तो सारे शरीर पर लगते थे। उछलते तो लम्बे पैरों में घुसते। हाथ पटकते तो ऊँचे हाथों में लगते। वे मुख खोलकर डाँट बताते तो उनकी जीभ पर लगते। यहाँ तक कि अगर कुछ सोचते तो उनके मन पर ही लग जाते थे। २००३

मॉय्यॅ डुत्तकणै मारि यालिडै मुडिन्द दॊन्ऱुमुऱै कण्डिलार्
ऍय्वि डत्तॅऱियु नाणि नोशैयल दियादु मॊन्ऱुशॅवि युऱ्ऱिलार्
मॅय्यॅ डुत्तकवि वॆळ्ळ मियावैयुम् विऴुन्दु पोनवॆन्नुम् विम्मलार्
कैयॅ डुत्तन कुरङ्गि नोडुमुऱै कण्डु तेवर्हळ् कलङ्गिनार् 2004

तेवर्कळ्–देव; मॊय् ऍटुत्त–लड़ने के लिए छोड़े गये; कणै मारियाल्–शरों की वर्षा से; इटै मुटिन्ततु ऑन्ऱुम्–बीच में घटी कुछ; मुऱै कण्टिलार्–क्रम से देख न पाये; ऍय्वु इटत्तु–बाण चलाते समय; ऍऱियुम् नाणिन् ओचै अलतु–टंकृत डोरे की ध्वनि के सिवा; यातु ऑन्ऱुम्–कुछ भी; चॆवि उऱ्ऱिलार्–कानों में सुन नहीं पाये; मॅय् ऍटुत्त–शरीरधारी; कवि वॆळ्ळम् यावैयुम्–वानरों के सभी 'वॆळ्ळम्' (समूह); विऴुन्तु पोन–मर गये; ऍन्नुम् विम्मलाल्–ऐसे दुःख से; कै ऍटुत्तन–हाथ ऊपर उठाये रखनेवाले; कुरङ्कित्–वानरों के; ओटुम् मुऱै–भागने का प्रकार; कण्टु–देखकर; कलङ्कितार्–विक्षुब्ध हुए। २००४

देव दर्शक थे। पर शर वर्षा के अन्दर से जो घटता था उसे देख नहीं पाये। इन्द्रजित् के शर चलाते समय डोरे की निरंतर टंकारध्वनि के सिवा और कुछ सुन नहीं पाये। सोच लिया कि वानरशरीरधारी सभी जीव मर गये। इसलिए वे दुःख से भर गये। तब उन्होंने देखा कि कुछ वानर हाथ उठाये हुए भाग रहे हैं। उन्हें देखकर वे क्षुब्ध हुए। २००४

कण्ड वानर मनन्द कोडिमुऱै कण्ड माऱ्पडि कण्डवऩ्
कण्डत् माऱ्ॊरुव रिऩ्मै कण्डुकणै माऱ्ि ऩाऩ्विडुद लिऩ्मैयाय्
कण्ड कालैयिल् विलङ्गि ऩाऩिरवि कादल् कादुवदोर् कादलाऱ्
कण्ड कार्शिदैय मीदु यर्न्दोळिर् मराम रज्जुलवु कैयिऩाऩ् 2005

कण्ट–दृष्टि में आये; अनन्त कोटि वानरर्–अनंत कोटि वानर; मुऱै–क्रम से; कण्टम् आत्त पटि कण्ट–छिन्न हुए, वह हाल देखकर; अ कण्टऩ्–उस लोककंटक इन्द्रजित् ने; माऱु ओरुवर्–कोई शत्रु; इऩ्मै कण्टु–न रहा देखकर; विट्टतल् इऩ्मैयाय्–छोड़ना छोड़कर; कणै माऱ्िऩाऩ्–शर का चलाना रोक लिया; इरविकातल्–सूर्य का प्यारा (पुत्र); कण्ट कालैयिल्–जब उसे देखा तब; कातुवतु ओर् कातलाल्–प्रेरक एक इच्छा से; कण्ट कार् चितैय–दृष्टिगोचर मेघों को बिखेरते हुए; मीतु उयर्न्तु–ऊपर बढ़े; ओळिर् मरामरम्–प्रकाशमय साल वृक्ष को; चुलवु कैयताऩ्–घुमानेवाले हाथ का बनकर। २००५

इन्द्रजित् ने देखा कि उसकी दृष्टि में आये अनंत कोटि वानर वीर छिन्न-भिन्न हो गये और कोई वानर-शत्रु नहीं दिखता। तब उसने लगातार शर छोड़ना छोड़ दिया। तब सूर्यनंदन को यह देखकर क्रोध और इन्द्रजित् पर आक्रमण करने की कामना हो गयी। वह मेघों को बिखेरते हुए ऊँचे उठे और प्रकाशमय एक सालवृक्ष को उखाड़ लेकर घुमाता हुआ (आया)। २००५

उडैन्दु तऩ्पडै युलैन्दु शिन्दियुयि रोलुह वॆल्शॆरु वुडऱ्ऱलाऱ्
कडैन्दु तॆळ्ळमुदु कॊळ्ळुम् वळ्ळलॆऩ मेऩि मिर्न्ददोर् करुप्पिऩाऩ्
इडैन्दु शॆऩ्ऱवऩै यॆय्दि यॆय्दरिय कावल् पॆऱ्ऱिह लियऱ्ऱुवाऩ्
मिडैन्दु निऩ्ऱपडै वेलै काल्तळर वीशि ऩातिरुदर् कूशिऩार् 2006

तऩ् पटै–अपनी सेना को; उटैन्तु उलैन्तु–टूटकर, संकट-ग्रस्त होकर; चिन्ति–तितर-बितर होकर; उयिर् ओलुक–प्राण निकल जाएँ ऐसा; वॆल् चॆरु–विजयी समर; उटऱ्ऱलाल्–(राक्षस के) उग्र रूप से करने से; कटैन्तु–(सागर) मथकर; तॆळ् अमुतु कॊळ्ळुम्–शुद्ध अमृत को निकालनेवाले; वळ्ळल् ऎऩ–उदार (बाली) के समान; मेल् निमिर्न्ततु–ऊपर उभर आये; ओर् करुप्पिऩाऩ्–अपार क्रोध का होकर; इटैन्तु–(युद्ध) रोककर; चॆऩ्ऱवऩै–जानेवाले उसके; ऎय्ति–पास जाकर; ऎय्तरिय कावल् पॆऱ्ऱु–अगम रक्षण पाकर; इकल् इयऱ्ऱुवाऩ्–युद्ध करने; मिटैन्तु–घने रूप से मिलकर; निऩ्ऱ–जो खड़ी थी; पटै वेलै–वह सेना

रूपी सागर; काल् तळर–अस्त-व्यस्त हो ऐसा; वीचितान्–फेंका (उस तरु को) सुग्रीव ने। २००६

उसने देखा कि उसकी सेना परास्त हो छिन्न हो गयी है। उनके प्राण हरते हुए इन्द्रजित् उग्र युद्ध कर रहा था। तब वह क्षीरसागर मथ कर अमृत निकालनेवाले उदार वाली के समान उभर उठे क्रोध के साथ युद्ध रोककर चलनेवाले इन्द्रजित् के पास आया और अगम सुरक्षा के साथ युद्ध करने के लिए खड़ी रही उसकी सेना रूपी सागर को अस्त-व्यस्त करते हुए उस सालवृक्ष को फेंककर युद्ध करने लगा। २००६

शुऱ्ऱु निऩ्ऱपडै शिन्दि योडवोरु मराम रङ्गोडु तुहैत्तुळान्
वॆऱ्ऱि कण्डुवलि नऩ्ऱु नऩ्ऱॆऩ वियन्दु वॆङ्गणै तॆरिन्दवन्
नॆऱ्ऱि यिऩ्ऱलै यिरण्डु मार्बिडै यॊरञ्जु नञ्जॆऩ निऱुत्तवन्
पऱ्ऱि वन्दमरम् वेऱु वेऱुर नॊऱुक्कि नुण्बॊडि परप्पिनान् 2007

चुऱ्ऱु निऩ्ऱ–चारों ओर खड़ी रही; पडै–सेना; चिन्ति ओट–तितर-बितर हो भाग जाए ऐसा; ऑरु मरामरम् कोंटु–एक सालवृक्ष लेकर; तुकैत्तुळान्–जिसने मिटाया उस सुग्रीव को; वॆऱ्ऱि कण्टु–विजय को देखकर; वलि नऩ्ऱु–(इसका) बल खूब है; नऩ्ऱु–अच्छा है; ऎऩ वियन्तु–ऐसा बधाई देकर; नञ्चु ऎऩ–विष-सदृश; वॆम् कणै तॆरिन्तु–भयंकर बाण चुन लेकर; अवऩ् नॆऱ्ऱियिऩ् तलै–उसके माथे पर; इरण्टु–दो बाणों को; मार्पिटै–छाती में; ओर् अञ्चुम्–एक पाँच को; निऱुत्तु–गड़ाकर; अवऩ्–उसके; पऱ्ऱि वन्त मरम्–पकड़ लाये वृक्ष को; वेऱु वेऱु उऱ–अलग-अलग हों ऐसा; नॊऱुक्कि–खण्ड-खण्ड करके; नुण् पॊटि परप्पिनान्–महीन चूर्ण बनाया और छितराया (इन्द्रजित् ने)। २००७

इन्द्रजित् ने देखा कि सुग्रीव एक सालवृक्ष से चारों ओर खड़ी रही सेना को इधर-उधर अस्त-व्यस्त भगा रहा है। उसकी उस विजय को देखकर इन्द्रजित् ने शबाशी दी कि 'इसका साहस अद्भुत है, अच्छा है।' फिर उसने विष के समान बाण चुनकर उसके माथे पर दो और छाती में पाँच चलाये। वे बाण उनके शरीर में चुभ गये। फिर उसने उसके हाथ के वृक्ष को भी खण्डित किया और चूर्ण बनाकर छितरा दिया। २००७

अक्क णत्तनुम नाल कालमॆऩ लाय दोर्वॆहुळि यायिनान्
पुक्क तैत्तुलह मुङ्गु लुङ्गनिमिर् तोळ्पु डैत्तुरुमु पोलुऱा
इक्क णत्तव निऱक्कु मॆऩ्वदोरु कुऩ्ऱॆडुत्तु मिशै येविनान्
उक्क दक्किरि शॊरिन्द वाळिहळि नूऴिलाद शिऱु पूऴियाय् 2008

अ कणत्तु–उस क्षण; अनुमऩ्–हनुमान ने; आलकालम् ऎऩल् आयतु–हलाहल ही बन गया जैसा; ओर् वॆकुळि आयिनान्–अपार क्रोध करके; पुक्कु–घुसकर; अनैत्तु उलकमुम् कुलुङ्क–सारे लोकों को कँपाते हुए; निमिर् तोळ् पुटैत्तु–उन्नत कंधों को ठोंककर; उरुमु पोल्–अशनि के समान; उऱा–शब्द करके जाकर; इ कणत्त–

इसी क्षण; अवन् इऱक्कुम्–वह मरेगा; ऍन्ऩपतु–यह लोग मानें ऐसा; ओर कुन्ऱु ऍट्टुत्तु–एक पर्वत लेकर; मिचै एविऩाऩ्–उसके ऊपर चलाया; चोरिन्त वाळिकळिऩ्–बरसाये गये शरों से; अ किरि–वह गिरि; ऊऴ् इलात–रूपक्रम-हीन हो; चिऱु पूळियाय्–महीन चूर्ण बनकर; उक्कतु–गिर गयी। २००८

तव हनुमान हलाहल ही सम क्रोध से अभिभूत होकर वहाँ आ घुसा। सभी लोकों को कँपाते हुए उन्नत कंधे ठोंके और अशनि के समान नर्दन किया। फिर एक पर्वत उठाकर उस पर फेंका जिसे देखकर लोग समझे कि अब मरा राक्षस। पर राक्षस के द्वारा चलायी गयी बाण-वर्षा से वह पर्वत महीन चूर्ण बनकर चू गया। २००८

निल्ल डाशिऱिदु निल्ल डावुऩै निऩैन्दु वन्दनऩ् मुऩैक्कुनाऩ्
विल्लॆ डामैनिऩ दाण्मै पेशियुयि रोडु निऩ्ऱुविळै याडिऩाय्
कल्ल डानॆडु मरङ्ग ळोवरु करुत्ति ऩेऩ्वलि कडप्पवो
शॊल्ल डावॆऩ वियम्बि ऩाऩिह लरक्क ऩैयनिवै शॊल्लिऩाऩ् 2009

इकल् अरक्कऩ्–वैरी योद्धा राक्षस; निल् अटा–खड़ा रह रे; चिऱितु निल् अटा–ज़रा खड़ा रह रे; उऩ्ऩै निऩैन्तु–तुमको ही सोचकर; मुऩैक्कु वन्तऩऩ्–युद्धाग्र में आया; विल् ऍटामै–धनु बिना लिये; निऩतु आण्मै–अपना पौरुष; पेचि–बखानकर; उयिरोटु निऩ्ऱु–सप्राण खड़ा रहकर; विळैयाटिऩाय्–लीला रचता है; वरु करुत्तिऩेऩ्–(युद्ध करने) आने का विचार रखनेवाले मेरे; वलि कटप्प–बल के पार होनेवाले; कल्–पत्थर और; नॆटु मरङ्कळो–ऊँचे तरु होंगे क्या; अटा अटा–अरे, रे; चॊल्–कहो; ऍऩ इयम्पिऩाऩ्–ऐसा (ताने के स्वर में) कहा; ऐयऩ्–महिमावान ने; इवै–ये वचन; चॊल्लिऩाऩ्–कहे। २००९

इन्द्रजित् ने हनुमान को डाँटा। अरे! खड़ा रह! ज़रा खड़ा रह! तुम्हीं को सोचकर मैं युद्धाग्र में आया। बिना धनु लिये ही अपनी डींग मारकर सप्राण लीला रच रहा है! तुझसे युद्ध करने का विचार रखनेवाले मेरे बल को परास्त कर सकते हैं ये पत्थर और उन्नत तरु क्या? अरे, बता। बता रे! उसका हनुमान ने यों जवाब दिया। २००९

विल्लॆ डुक्कवुरि यारॆुळ् वॆय्यशिल वीर रिङ्गुमुळर् मॆल्लियोय्
कल्लॆ डुक्कवुरि यानु निऩ्ऱऩ ऩदिऩ्ऱु नाळैयिडै काणलाम्
ऍल्लॆ डुत्तपडै यिन्दि रादिय रुऩक्किडॆन् दुयिर्हॊ डेहुवार्
पुल्लॆ डुत्तवर्ह ळल्लम् वॆऱुशिल पोरॆ डुत्तविर् पुहुन्दुळेम् 2010

इङ्कुम्–यहाँ (हमारे पक्ष में) भी; विल् ऍटुक्क उरियार्कळ्–धनु के प्रयोग में समर्थ; वॆय्य–प्रखर; चिल वीरर्–कुछ वीर; उळर्–हैं; मॆल्लियोय्–दुर्बल; कल् ऍटुक्क उरियाऩुम्–पत्थर उठाने का हक़दार भी; निऩ्ऱऩऩ्–खड़ा है (हूँ); अतु–वह; इऩ्ऱु नाळै इटै–आज या कल के अवकाश में; काणलाम्–देख सकते हो; ऍल् ऍटुत्त–तेजोमय; पटै–हथियारधारी; इन्तिर आतियर्–इन्द्रादि; उऩक्कु इटैन्तु–तुमसे हारकर; उयिर् कॊटु–जान बचा लेकर; एकुवार्–भागेंगे; पुल्

ऍट्टुत्तवर्कळ् अल्लम्–तृण मुखों से पकड़नेवाले हैं नहीं हम; वेरु चिल पोर् ऍट्टुत्तु–अन्य कुछ युद्धतंत्र अपनाकर; ऍतिर् पुकुन्तु उळोम्–सामने आये हैं। २०१०

हमारे पक्ष में भी धनु ले लड़नेवाले कुछ प्रखर वीर हैं। रे दुर्बल! पत्थर ले लड़नेवाला भी है (मैं खड़ा हूँ)। वह आज या कल विदित हो जाएगा। तेजोमय अस्त्र-शस्त्रधर इन्द्रादि तुमसे हारकर भाग सकेंगे। पर हम तृण काटनेवाले नहीं! कुछ अन्य युद्ध-तंत्र लेकर हम आये हुए हैं। (जो हार जाते हैं, उनका उनके मुख से तृण पकड़वा लेना अपमानित करने का एक उपाय है।)। २०१०

ऍन्नॊ डॆपॊरुदि योव दन्ड्रॆन्नि निलक्कु वप्पॆयरि नॆम्बिरान्
तन्नॊ डॆपॊरुदि योशॊ लुनवॆतलै तळ्ळ निन्ड्रतनि वळ्ळलाम्
मन्नॊ डॆपॊरुदि योवु रॆत्तदु मरुक्कि लेमॆन्न वळङ्गिनान्
पॊन्नॊ डॆपॊरुवि नल्ल दॊन्ड्रॊडु पॊदुप्प डावुयर् पुयत्तिनान् 2011

पॊन्नॊटे पॊरुवित् अल्लतु–स्वर्ण (पर्वत, मेरु) से उपमित होने के सिवा; ऒन्ड्रॊटु पॊतुपटा–किसी दूसरी चीज से साम्य जिसका नहीं; उयर् पुयत्तिनान्–ऐसे उन्नत कंधों वाले हनुमान; ऍन्नॊटे पॊरुतियो–मुझसे लड़ोगे क्या; अतु अन्रु ऍतिन्–वह नहीं तो; इलक्कुवन् पॆयरिन्–लक्ष्मण नाम के; ऍम्पिरान् तन्नॊटे–मेरे प्रभु से; पॊरुतियो–लड़ोगे; उन्तॆ तलै तळ्ळ–तुम्हारे पिता के सिरों को काट गिराने; निन्ड्र–जो आये हैं; तनि वळ्ळल् आम्–वे श्रेष्ठ प्रभु जो हैं; मन्नॊटे–उन राजाराम से; पॊरुतियो–लड़ोगे; चॊल्–कहो; उरॆत्ततु मरुक्किलेम्–जो कहो उससे नहीं मुकरेंगे; ऍन्न वळङ्किनान्–ऐसा कहा। २०११

हनुमान के कंधे स्वर्ण (मेरु) पर्वत से ही उपमित हो सकते थे; अन्य किसी से नहीं। उस हनुमान ने इन्द्रजित् से कहा कि तुम मुझसे लड़ोगे? या लक्ष्मण नाम के मेरे प्रभु के साथ? या तुम्हारे पिता के सिरों को काटने का संकल्प ले जो खड़े हैं, उन अनुपम उदार पुरुषोत्तम श्रीराम से लड़ना चाहोगे? बताओ। हम इन्कार नहीं करेंगे। २०११

ऍङ्गु निन्ड्रन निलक्कु वप्पॆयरव् वेळै यॆम्बियदि कायनाम्
शिङ्गम् वन्दवनॆ वॆन्रु तन्नुयि रॆन्नक्कु वॆत्तदॊर् शिड्रप्पिनान्
अङ्ग वन्ड्रनॆ मलैन्दु कॊन्ड्रुमुनि वाड्र वन्दनॆ नदन्ड्रियुम्
उङ्ग डन्मैयि नडङ्गु मोवुल हॊडुक्कुम् वॆङ्गणॆ तॊडुप्पिनॆ 2012

ऍम्पि–मेरे छोटे भाई; अतिकायनाम्–अतिकाय नामक; चिङ्कम्–सिंह को; वन्तवनॆ–जो आया; वॆन्रु–हराकर; तन् उयिर्–अपने प्राणों को; ऍन्नक्कु–मेरे (मारने के) लिए; वॆत्ततु–जो रख रहा है; ओर् चिड्रप्पिनान्–उस विशिष्टता युक्त; अव्विलक्कुवन् पॆयर् एळै–वह लक्ष्मण नाम का जड़मति; ऍङ्कु निन्ड्रनन्–कहाँ स्थित है; अङ्कु–वहीं; अवन् तनॆ मलैन्तु–उसका सामना करके; कॊन्रु–मारकर; मुनिवु आड्र–क्रोध शान्त करने; वन्तनॆन्–आया; अतन्ड्रियुम्–

उसके अलावा; उलकु ऑट्टक्कुम्–सारे लोकों का नाश करनेवाले; वॅम् कणै–क्रूर अस्त्रों को; तॉट्टप्पिन्–चलाऊँ तो; उङ्कळ् तन्मैयित्–तुम्हारे बल के अंदर अटङ्कुमो–समा सकेंगे क्या। २०१२

इन्द्रजित् ने उत्तर में कहा कि मेरे भाई अतिकाय को, जो सिंह-सदृश था, जिसने हराया और जो अपने प्राणों को मेरे हरने के वास्ते रखता रहता है, उस लक्ष्मण नाम का बुद्धिहीन कहाँ है? वहीं जाकर उससे लड़ूँ, उसे मारूँ, अपना क्रोध शांत करूँ, यही साध ले आया हूँ। उसके सिवा क्या तुम्हारी वीरता में मेरे द्वारा चलाये जानेवाले बाण समाये रह सकते हैं? । २०१२

आरु मॅन्पडॆञ्र रॅय्द लिन्ऱियय लेह यानुमिहल् विल्लुमोर्
तेरि निन्ऱुमै यडङ्ग लुन्दिरळ् शिरन्दु णिप्पॆनिदु तिण्णमाल्
वारु मुङ्गळुडन् वान् ळोर्हळैयु मण्णु ळोरॅयुम् वरच्चॊलुम्
पोरु मिन्ऱोरु पहर्क णॆपॊरुदु वॆल्वॆन् वॆन्ऱलदु पोहिलेन् 2013

ॲन् पटॅञर् यारुम्–मेरे सभी वीर; ॲय्तल् इन्ऱि–न पास आये ही; अयल् एक–हट जाएँगे और; यानुम्–अकेला मैं और; इकल् विल्लुम्–मेरा साहस और धनु; ओर् तेरित् निन्ऱु–एक रथ पर रहकर; उमै अटङ्कलुम्–तुम सभी के; चिरम् तुणिप्पॅन्–सिरों को काट लूँगा; इतु तिण्णम्–यह ध्रुव है; वारुम्–आओ; उङ्कळुटन्–अपने साथ; वान् उळोर्कळैयुम्–व्योमवासियों को भी; वर चॊलुम्–आने को कहो; इन्ऱु ओरु पकल् कणे–आज एक अहन में ही; पॊरुतु–लड़कर; वॆल्वेन्–जीत लूँगा; वॆन्ऱलतु–विना विजय पाये; पोकिलेन्–नहीं जाऊँगा। २०१३

मेरे सभी वीर मेरे साथ नहीं रहेंगे और हट जाएँगे। मैं रहूँगा अकेला; मेरा धनु रहेगा और रथ! उसी एक रथ में रहकर मैं सभी तुम लोगों के सिर काट दूँगा। चाहो तो तुम लोग व्योमलोकवासियों को भी अपने पक्ष में बुला लो। आज एक ही अहन में युद्ध में विजय पाऊँगा। विजय पाये बगैर नहीं लौटूँगा। २०१३

ॲन्ऱु वॅम्बहळि येळ् नूऱ्मिरु नूऱुम् वॅञ्जिलैहॉ डेविनान्
कुन्ऱु निन्ऱनैय वीर मारुदितन् मेनि मेलवै कुळ्क्कळाय्च्
चॆन्ऱु चॆन्ऱुरुव लोडुम् वाळॆयिरु तिन्ऱु शीऱियॊरु शेमवन्
कुन्ऱु निन्ऱदु पऱित्तॆ डुत्तवनै यॆय्दि नॊय्दिनिदु कूऱिनान् 2014

ॲन्ऱु–कहकर; वॅम् चिलै कॉटु–भयानक धनु लिये हुए; वॅम्–संतापक; ॲळुनूऱुम् इरु नूऱुम् पहळि–सात सौ और दो सौ (नौ सौ) शर; एवितान्–(इन्द्रजित् ने हनुमान पर) चलाये; अवै–वे; तन् मेनि मेल्–उसके शरीर पर; कुळुक्कळाय्–समूहों में जाकर; चॆन्ऱु चॆन्ऱु–जा-जाकर; उरुवलोटुम्–ज्योंही भेद चले, त्योंही; कुन्ऱु निन्ऱनैय–पर्वत-सा जो खड़ा था; वीरम् मारुति–उस वीर मारुति ने; वाळ् ॲयिऱु तिन्ऱु–उज्ज्वल दाँत पीसकर; चीऱि–गुस्सा करके; निन्ऱतु–वहाँ जो स्थित

था; चेमवत् कुन्रु–रक्षा दे सकनेवाले एक पर्वत को; पऱित्तु अॅटुत्तु–उखाड़ लेकर; अवतै अॅय्ति–उसके पास जाकर; नॉय्तिन्–सुगम रीति से; इतु कूऱितान्–ये बातें कहीं। २०१४

यों कहकर इन्द्रजित् ने नौ सौ बाण हनुमान पर चलाये। वे अलग-अलग समूहों में जाकर उसे भेद गये। सुस्थित पर्वत जैसे वीर हनुमान ने अपने उज्ज्वल दाँत पीसे, गुस्सा किया और पास उसकी रक्षा में स्थित पर्वत को उखाड़ लिया। उसे ऊँचा उठाये हुए वह इन्द्रजित् के पास गया और अनायास यों बोला। २०१४

तुम्बि यॅन्रुलहि नुळ्ळ यावैयवै येवै युन्दोहुवु तुळ्ळुताळ्
वॅम्बु वॅञ्जिन मडङ्ग लॊन्ऱिऩ्वलि तन्नै निन्ऱॅळिदिन् वॅल्लुमो
नम्बि तम्बियॅन वॅम्बि रान्वरु तुणैत्त रिक्किलै नलित्तियेल्
अम्बिन् मुन्दियुत दावि युण्णुमिदु काव डाशिलैव लाण्मैयाल् 2015

उलकिन्–संसार में; तुम्पि अॅन्रु उळ्ळ–गज-संज्ञित; यावै–जो हैं; अवै एवैयुम्–वे सभी; तॊकुपु–मिल आएँ तो भी; तुळ्ळु ताळ्–चौकड़ी भरनेवाले पैरों और; वॅम्पु वॅम् चिऩम्–दहमेवाले भयंकर क्रोध के; मटङ्कल् ऑन्ऱिन्–एक सिंह के; वलि–बल को; निन्ऱु–सामने खड़े होकर; ॲळितिन् वॅल्लुमो–सुगम रीति से परास्त कर सकते हैं क्या; नम्पि तम्पि–पुरुषोत्तम के लघु भ्राता; ॲन्तु तम्पिरान्–और हमारे प्रभु के; वरु तुणै–आते समय तक; तरिक्किलै–सब्र न करके; नलित्तियेल्–(मुझे) सताओ तो; अम्पिन् मुन्ति–तुम्हारे शर के पहले; इतु–यह पर्वत; उनतु आवि उण्णुम्–तुम्हारे प्राणों को खा लेगा; वल् चिलै–कठोर धनु के; आण्मैयाल्–बल से; अटा–अरे; कावटा–अपनी रक्षा कर ले। २०१५

दुनिया में जितने गज-संज्ञित जानवर हैं, वे सब मिल जाएँ तो भी उछलनेवाले पैरों और भयंकर क्रोध से युक्त सिंह को आसानी से परास्त कर सकेंगे क्या? पुरुषोत्तम श्रीराम के भाई, हमारे प्रभु लक्ष्मण के आते तक ठहरना नहीं चाहते; मुझे त्रास देना चाहते हो! तब देखो यह मेरा पर्वत तुम्हारे बाण के छूटने के पहले ही तुम्हारे प्राणों को हर लेगा। अरे! अब अपने धनु के बल पर अपने को बचा ले! (यह कहकर हनुमान ने पर्वत को फेंका।)। २०१५

शॅरुप्प यिऱ्ऱिय तडक्कै याळिशॅल विट्ट कुन्ऱुतिशै यानैयिन्
मरुप्पै युऱ्ऱदिर डोळि रावणन् महन्ऱन् माऱ्पिनुयर् वच्चिरप्
पॊरुप्पै युऱ्ऱदॊर् पॊरुप्पॆनक्कडि दॊडिन्दि डिन्दुतिशै पोयदाल्
नॆरुप्पै युऱ्ऱदॊ रिरुम्बु कूडमुऱ नीऱु पट्टदु निहर्त्तदाल् 2016

चॅरु पयिऱ्ऱिय–युद्धाभ्यस्त; तटक्कै–विशाल हस्त; याळि–'याळि'–से हनुमान द्वारा; चॅल विट्ट कुन्ऱु–फेंका गया पर्वत; तिचै यानैयिन्–दिग्गजों के; मरुप्पै उऱ्ऱ–दाँत जिनमें गड़े थे; तिरळ् तोळ्–उन पुष्ट कंधों वाले; इरावणन् मकन् तन्

मार्पिन्-रावण के पुत्र की छाती में; उयर् वच्चिरम् पोरुप्पै-ऊँचे वज्र-पर्वत से; उड्रु और् पोरुप्पु अँत्त-टकरानेवाले एक पर्वत के समान; कटितु ऑटिन्तु-शीघ्र फूटकर; इटिन्तु-टूटकर; तिचै पोयतु-दिशाओं में बिखर गया; नॅरुप्पै उड्रु ओर् इरुम्पु-आग में तपा लोहा; कूटम् उड्र-हथौड़े की चोट के लगने से; नीड़ पट्टतुम् निकर्त्ततु-अंगारे बना जैसा भी हो गया। २०१६

हनुमान ने अपने युद्धाभ्यस्त हाथों से जिस पर्वत को फेंका, वह दिग्गजों के दाँतों से जड़े कन्धों वाले रावण के पुत्र के वक्ष पर एक पर्वत दूसरे पर्वत से टकराया जैसे जा टकराया और तुरन्त फूटा, टूटा और छितर गया। वह उस हथौड़े की चोट से अंगारों के रूप में छितरनेवाले अग्नितप्त लोहे के समान बना। २०१६

विलङ्गन् मेल्वर विलङ्ग वीशिय विलङ्ग नीरुपडु वेलैयिर्
चलङ्गै मेनिमिर वॅम्जि ननदिरुहि वञ्जन् मेनिमिर् तरुक्किनान्
वलङ्गॉळ् पेरुलह मेरु वोडॅन मरिक्कु मारुदितन् वाशना
ट्रलङ्गन् मार्बिनॊडु तोळि नूडुरुव वायि रञ्जर मळुत्तिनान् 2017

विलङ्कल् मेल्-पर्वत (वक्ष) पर; वर-चोट करने; विलङ्क-दूर; नित्र अनुमन्-जो खड़ा था, उस हनुमान से; वीचिय विलङ्कल्-फेंका गया पर्वत; नीड़ पट्टु वेलैयिल्-जब धूल बन गया तब; वञ्चन्-वंचक; चलम् कै मेल् निमिर-क्रोध के बढ़ने से; वॅम् चितम्-भयंकर क्रोध से; तिरुकि-ऐंठकर; निमिर् तरुक्किताम्-गर्व से भरकर; वलम् कॉळ्-बलवान; पेर् उलकम्-बड़े संसार को; मेरुवोटु अँत्त-और मेरु को; मरिक्कुम्-उखाड़ सकनेवाले; मारुति तन्-मारुति की; वाचम् नाऱु अलङ्कल्-सुवासयुक्त माला से अलंकृत; मार्पिनॊटु तोळिन्-छाती और कंधों से; ऊटुरुव-भेद जाएँ ऐसा; आयिरम् चरम्-हजार बाण; अळुत्तिनान्-चलाये। २०१७

जब इन्द्रजित् ने देखा कि अपने पर्वत-सम वक्ष पर आघात करने के लिए दूर रहकर हनुमान ने जो पर्वत फेंका था, वह धूल में बदल गया तो उस वंचक का क्रोध बढ़ा और वह ऐंठकर गर्वोन्मत्त हो गया। तब उसने उस मारुति के मालालंकृत वक्ष और कन्धों को भेदते हुए जानेवाले एक हजार बाण चलाए, जो कि बलवान भूखण्ड के साथ मेरु को भी उखाड़ने में समर्थ था। २०१७

ऑन्रु पोल्वनवॊ रायि रम्बहळि यूडु पोयुरुव वाडहक्
कुन्रु काल्कुडय मेलु यर्न्दिडॅ कुलुङ्गु हिन्ररत्तैय कॉळ्हैयान्
मन्र नाऱुतड मेनि मेलुदिर वारि शोरवरु मारुदि
निन्रु तेरुमळ वित्गण् वॅङ्गण्विळि नीलन् वन्दिडॅ नॅरुक्किनान् 2018

ऑन्रु पोल्वत-एक ही सम; ओर् आयिरम् पकळि-एक हजार बाण; ऊटु पोय् उरुव-शरीर को भेद निकले तो; आटकम् कुन्रु-स्वर्ण-पर्वत; काल् कुटैय-

कांप रहा जैसे; कौळ्कैयान्–हाल में रहनेवाला; मन्ऱल् नाऱु–(माला के कारण) सुगन्ध छोड़नेवाले; तट मेनि मेल्–विशाल शरीर पर; उतिरम् वारि–रक्तवारि; चोर वरुम्–बहता आया; मारुति–वह हनुमान; निन्ऱु तेऱुम् अळविन् कण्–रहकर सँभले, उसके अन्दर; वॆम् कण् विऴि–भयंकर अक्ष (दृष्टि) वाला; नीलन् वन्तु–नील ने आकर; इटै नॆरुक्किनान्–बीच में आक्रमण किया। २०१८

इन्द्रजित् द्वारा चलाये गये एक समान सहस्र बाण हनुमान के शरीर को भेद चले तो वह उस पवनविदग्ध स्वर्ण (मेरु) पर्वत के समान रहा, जो बाहर से तो उन्नत हो खड़ा है पर अन्दर से काँप गया है। उसके सुवासित शरीर पर रक्तवारि बह चली। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो थोड़ा आश्वासन पा ही रहा था कि क्रूर आँखों वाला नील बीच में लड़ने के विचार से आ पहुँचा। २०१८

नील निन्ऱदोरु नील माल्वरै नॆडुन्द डक्कैयि ऩिडन्दुनेर्
मेले ळुन्दॆरि विशुम्बु शॆल्वदोरु वॆम्मै योडुवर वीशलुम्
शूल मन्दह नॆऱिन्द दन्ऩदु तुणिन्दु शिन्दविडै शॊल्लुरुङ्
काल मोन्ऱुमऱि याम लम्बुहॊडु कल्लिऩा नॆडिय विल्लिऩान् 2019

नीलन्–नील के; निन्ऱतु–जो खड़ा था उस; ऒरु नीलम् माल् वरै–एक नीले बड़े पर्वत को; नॆटु तट कैयिन्–बड़े और चौड़े हाथों से; इटन्तु–उखाड़कर; ऎरि–अग्नि; मेल् ऎऴुन्तु–ऊपर उठकर; विचुम्पु चॆल्वतु–आकाश में जाता जैसे; ऒरु वॆम्मैयोटु–अपार गर्मी के साथ; नेर् वर वीचलुम्–सीधे जाए ऐसा फेंकने पर; नॆटिय विल्लिनान्–लम्बे धनुधारी ने; अन्तकन् ऎऱिन्ततु–यमप्रेरित; चूलम् अन्नतु–शूल-जैसा वह पर्वत; तुणिन्तु चिन्त–टूटकर गिरे ऐसा; इटै चॊल्लुरुम् कालम्–मध्य में कहने का समय; ऒन्ऱुम् अऱियामल्–कुछ जानने न देकर; अम्पु कॊटु–बाणों से; कल्लिनान्–तराश दिया। २०१९

नील ने वहाँ स्थित एक नीले और भीमकाय पर्वत को उखाड़कर फेंका तो वह आकाश में चलती आग के समान गरमी के साथ इन्द्रजित् के सामने सीधे गया। तब श्रेष्ठ धनुर्धर इन्द्रजित् ने यमप्रेषित शूल-जैसे एक अस्त्र चलाया जिसने अवकाश न देकर उस पर्वत को तराश (नाश कर) दिया। २०१९

ऊह मॆङ्गुमुयि रोडु निन्ऱवु मोड वानवर्ह ळुळ्ळमुम्
मोह मॆङ्गुमुळ वाह मेरुविनु मुम्म डङ्गुवलि तिण्मैशाल्
आह मॆङ्गुमॆंळि याह वॆङ्गुरुदि याऱु पायवन लज्जुवाय्
नाह वॆङ्गणहु वाळि पाय्तॊऱु नडुङ्गि नान्मलै पिडुङ्गिनान् 2020

उयिरोटु निन्ऱन–जीवित जो खड़े थे; ऊकमुम् ऎङ्कुम् ओट–वन्दरों के सब ओर भागते; वानवर्कळ् उळ्ळमुम्–देवों के मनों में; ऎङ्कुम्–अन्य सभी में;

तिण्मै चाल्-अधिक कठोरतायुक्त; आकम् ऍङ्कुम्-शरीर भर में; वॅळियाक-खुले स्थान और; वॅम् कुरुति आऱु पाय-गरम रक्त बहे ऐसा; नकुवाय्-तीक्ष्णमुख; नाकम् वॅम् कण्-सर्प की-सी क्रूरता से युक्त; अऴल् अञ्चुम् वाय्-अग्नि को भी डराने वाले फलों के; वाळि-बाण; पाय्तॉरुम्-ज्यों-ज्यों आते; मलै पिटुङ्कित्तान्-पर्वत को उठानेवाला नील; नटुङ्कित्तान्-काँप उठा। २०२०

जीवित खड़े रहे वानर भाग चले। देवों और अन्यों के मन भ्रमित हो गये। मेरु से तिगुना बलवान नील के शरीर भर में मैदान में जैसे रक्त का प्रवाह फैल गया। ऐसा इन्द्रजित् ने तीक्ष्ण और सर्प की आँखों के समान ज्वलंत बाण चलाये। ज्यों-ज्यों वे बाण आये, त्यों-त्यों पर्वतोत्पाटक नील काँपा। २०२०

मेरु मॅरुवॅन वल्ल वल्लवॅन वेरि तोडुनॅडु वॅऱ्पॅलाम्
मार्बिन् मेलुमुयर् तोळिन् मेलुम्वर वालि कादलन् वळङ्गिनान्
शेरु मेयवै तनुक्कै निऱ्कवॅदिर् शॅल्लु मेकडिदु शॅल्लिनुम्
पेरु मेकॊडिय वाळि यान्मुरि पॊरुक्कॊणा वहै नुरुक्कित्तान् 2021

मेरु मेरु ऍन-मेरु है मेरु, ऐसा; अल्ल अल्ल ऍन-नहीं, नहीं (कहा जाए) ऐसा; नॅटु वॅऱ्पु ऍलाम्-सभी बड़े-बड़े पर्वतों को; वेरितोटु-जड़ के साथ उखाड़ लेकर; मार्पिन् मेलुम्-छाती पर और; उयर् तोळिन् मेलुम्-उन्नत कंधों पर; वर-जाएँ ऐसा; वालि कातलन्-वाली-नंदन ने; वळङ्कित्तान्-खुले दिल से वे मारा; अवै-वे; तनु कै निऱ्क-धनु के हाथ में रहते; चेरुमे-उस पर लगेंगे क्या; ऍतिर् चॅल्लुमे-समक्ष भी जा सकेंगे क्या; कटितु चॅल्लिनुम्-तेज जाएँ तो भी; पेरुमे-(बाणों से) बच जाएँगे क्या; कॊटिय वाळियान्-भयंकर बाणों से; मुन् पॊरुक्कला वकै-चुन भी न लिये जा सकें ऐसा; नुरुक्कित्तान्-चूर कर दिया। २०२१

वालीनन्दन ने मेरु पर्वत का संशय पैदा करनेवाले सभी बड़े पर्वतों को जड़ से उखाड़कर इन्द्रजित् के वक्ष और कन्धों का निशाना बनाकर फेंका। वे सब जब तक इन्द्रजित् के हाथ में धनु हो उसके पास कैसे जा सकेंगे। उसके समक्ष भी जा सकेंगे क्या ? शायद एकाध अपनी गति के कारण पास जाएँ तो भी वह उन्हें अपने भयंकर बाणों से इतना चूर कर देता कि टुकड़ों को चुनना भी कठिन हो जाए। २०२१

नॅऱ्ऱि मेलुमुयर् तोळिन् मेलुनॅडु मार्बिन् मेलुनिमिर् ताळिनुम्
पुऱ्ऱि नूडनुळै नाह मन्नपुहै वेह वाळिहळ् पुहप्पुहत्
तॆऱ्ऱि वाळॅयिऱु तिन्ऱु कैत्तुणै पिशैन्दु कण्गळॅरि तीयुह
वऱ्ऱि योडुदिर वारि शोर्वुऱ मयङ्गि ताऩिल मुयङ्गिनान् 2022

नॅऱ्ऱि मेलुम्-माथे पर और; उयर् तोळिन् मेलुम्-उन्नत कंधों पर; नॅटु मार्पिन् मेलुम्-विशाल छाती में; निमिर् ताळिनुम्-लम्बे पैरों पर; पुऱ्ऱिन् ऊटु-बांबी में; नुळै नाकम्-घुसनेवाले सर्प; अन्न-की तरह; पुकै वेकम्-धुएँ की-सी

गति के; वाळिकळ्–बाण; पुक पुक–ज्यों-ज्यों लगे; तॆड्रि–त्यों-त्यों लड़खड़ाकर; वाळ् ऍयिक्रु तिन्रु–श्वेत दाँत पीसकर; तुणै कै पिचैन्तु–दोनों हाथों को मलकर; कण्कळ् ऍरि तीयुक–आँखों से जलती आग निकालते हुए; वड्रि–शरीर सूखकर; ओटु उतिरम् वारि–बहनेवाले रक्तप्रवाह के; चोर्वुड्–बहते रहते; मयङ्कितान्–भ्रमित होकर; निलम् मुयङ्कितान्–भूमि से लगा (लगकर गिरा)। २०२२

इन्द्रजित् ज्यों-ज्यों अंगद के माथे, उन्नत कन्धों और लम्बे पैरों का निशाना बनाकर बिल में प्रवेश करनेवाले सर्प के समान, धुएँ की गति के साथ बाण चलाता। ज्यों-ज्यों वे आकर लगते तब अंगद लड़खड़ा जाता; दाँत पीसता और हाथ मलता। शरीर भर में लगातार रक्त बहता रहता। इस स्थिति में वह बेहोश होकर भूमि पर गिर गया। २०२२

मड्रै वीरर्हळ्तम् मार्बिन् मेलुमुयर् तोळिन् मेलुमळै मारिपोल्
कॊड्रै वॆङ्गणै युलक्क वॆय्दवे कुळिप्प निन्ऱुडल् कुलुङ्गिनार्
इड्र विन्दन पॆरुम्ब दादियुयि रुळ्ळ वॆङ्गणु मिरिन्दवप्
पॆड्रि कण्डिळैय वळ्ळ लॊळ्ळॆरि पिड्न्द कण्णनिवै पेशिनान् 2023

मड्रै वीररकळ्–अन्य वीर; तम् मार्पिन् मेलुम्–अपनी छातियों में; उयर् तोळिन् मेलुम्–उन्नत कंधों में; मळै मारि पोल्–वर्षा के समान; उलक्क–नाश करते हुए; ऍय्तवे–प्रेरित; कॊड्रम्–विजयदायी; वॆम् कणै–भयंकर अस्त्र; कुळिप्प–धँसे इसलिए; निन्ऱु–खड़े होकर; उटल् कुलुङ्किनार्–कंपित शरीरों के हुए; पॆरु पताति–बड़ी पैदल सेना के वानर वीर; इड्रु अविन्तन–मर मिटे; उयिर् उळ्ळ–जीवित जो बचे; ऍङ्कणुम् इरिन्त–सब ओर भागे; अ पॆड्रि कण्टु–वह हाल देखकर; इळैय वळ्ळल्–लघु प्रभु; ऑळ् ऍरि–ज्वलन्त अग्नि; पिड्न्त कण्णन्–निकालती आँखों के होकर; इवै पेचिनान्–यों बोले। २०२३

अन्य वीरों की भी स्थिति देखिए। उनके वक्षों में, और ऊँचे कन्धों पर वर्षा के समान उन्हें निर्बल करते हुए इन्द्रजित् द्वारा चलाए गये विजयदायी और क्रूर बाण आ चुभे तो उनके शरीर काँप गये। पैदल वानर वीर सब मर मिटे। जो भी बचे वे सब ओर भाग गये। उस हालत को देखकर लघुराज लक्ष्मण ने आँखों में ज्वलंत अग्नि को निकलने देते हुए विभीषण से यह कहा। २०२३

पिळैत्तदु कॊळ्है पोदप् पॆरुम्बडैत् तलैवर् यारुम्
उळैत्तनर् कुरुदि वॆळ्ळत् तुलन्ददु मुलप्पिर् इन्ड्रे
अळैत्तिमन् तन्नै याने यारुयिर् कॊळप्प डादे
इळैत्तदु पळुदे यन्ड्रो वीडण वॆन्नच् चॊन्नान् 2024

वीटण–विभीषण; कॊळ्कै पोत पिळैत्ततु–(हमारा) उद्देश्य बिलकुल विफल हो गया; पॆरु पटै तलैवर् यारुम्–हमारे सभी बड़े वानरयूथप; कुरुति वॆळ्ळत्तु–रक्तप्रवाह में; उळैत्तनर्–फँसकर कष्ट उठा रहे हैं; उलन्ततुम्–मरी सेना भी;

उलप्पिरुरु अन्ऱु–अनगिनत है; इवन् तन्नै अऴैत्तु–इसका (युद्ध में) आह्वान करके; याने–मैंने ही; आर् उयिर् कॊळप्पट्टाते–इसके प्राण क्यों नहीं हर लिये; इऴैत्ततु–उनको लड़ने देना; पऴुते अन्ऱो–वृथा हुआ न; ऍन्ऩ चॊन्ऩान्–ऐसा कहा। २०२४

विभीषण ! देखो हमारा उद्देश्य ही विफल हो गया। हमारे बड़े-बड़े यूथप सभी रक्त-प्रवाह में फँसकर संकट उठा रहे हैं। मृतकों की संख्या नहीं है ! क्यों न मैंने इसका आह्वान करके इसके प्राण नहीं हर लिये ? ऐसा न करके जो ऐसा होने दिया वह बड़ा अनर्थ और व्यर्थ बात हो गया। २०२४

ऐयवी दन्ऩ देया लायिर कोडित् तेवर्
ऍय्दिन रॅय्दि ऩारे यीडुपट् टिरिन्द दल्लाल्
शॅय्दिल रिवनै यॊन्ऱुम् नीयिदु तीर्प्पि नल्लाल्
उय्दिऱ मुण्डो वेऱिव् वुलहिनुक् कुयिरो डॅन्ऱान् 2025

ऐय–प्रभु; ईतु अन्ऩते–वह यही (सही) है; ऍय्तिनार् ऍय्तिनार्–जो बराबर आये; आयिरम् कोटि तेवर्–हज़ार करोड़ (करोड़ों) देव; ईटु पट्टु–बल खोकर; इरिन्ततु–भागे; अल्लाल्–उसके सिवा; इवनै ऑन्ऱुम् चॅय्तिलर्–इसका कुछ बिगाड़ नहीं सके; इतु–इसका; नी तीर्प्पिन् अल्लाल्–आप फ़ैसला करें, नहीं तो; इ उलकिनुक्कु–इस लोक के सामने; उयिरोटु उय्तिऱम्–जीवित बचने का मार्ग; वेऱु उण्टो–दूसरा है क्या; ऍन्ऱान्–कहा (विभीषण ने)। २०२५

विभीषण ने उत्तर दिया कि नायक ! आपका कहना सही है। जो देव लगातार इस इन्द्रजित् से युद्ध करने आये वे सभी हज़ार करोड़ बल खोकर भाग गये। इसके सिवा वे इसका कुछ नहीं बिगाड़ सके। यह संकट आपके किये ही दूर हो सकता है। नहीं तो इस दुनिया के जीवित बचने का कोई मार्ग है क्या ? । २०२५

ऍन्ऩबु शॊल्लक् केट्ट विन्दिर विल्लि तोडुम्
पॊन्बॊरु मेह मॊन्ऱु वरुवदु पोल्हिन् ऱानै
मुन्बनै मुन्बु नोक्कि यिवन्गॊलाम् बरदन् मुन्तोन्
तन्बॆरुन् दम्बि यॆन्ऱान् आमॆन्च् चारन् शॊन्ऩान् 2026

ऍन्ऩ्पतु–ऐसा; चॊल्ल केट्ट–जो कहा गया वह जिन्होंने सुना; पॊन् पॊरु–स्वर्ण-सदृश; मेकम् ऑन्ऱु–एक मेघ; इन्तिर विल्लितोटुम्–इन्द्रधनुष के साथ; वरुवतु पोल्किन्ऱानै–आता-जैसे लगनेवाले को; मुन्पनै–बलशाली को; मुन्पु नोक्कि–समक्ष देखकर; परतन् मुन्तोन्–भरत के अग्रज; तन् पॆरु तम्पि–का बड़ा छोटा भाई; इवन् कॊलाम्–यही है क्या; ऍन्ऱान्–(इन्द्रजित् ने गुप्तचर से) पूछा; चारन्–गुप्तचर ने; आम्–हाँ; ऍन–ऐसा; चॊन्ऩान्–कहा। २०२६

विभीषण की इन्ही बातें सुनकर स्वर्ण-सदृश एक मेघ

इन्द्रधनुष के साथ आता हो जैसे आ रहे थे। इन्द्रजित् ने उन वीर को देखकर गुप्तचर से पूछा, क्या यही श्रीरामपादुकाधारी भरत के दो छोटे भाइयों में बड़ा है? गुप्तचर ने हाँ कहा। २०२६

तीयव इळवल् तन्मेऱ् चॅल्वदन् मुन्नम् जॅल्हॅन्
ऱॆयिन ऱोरुव रिन्ऱि यिराक्कदत् तलैव रॆङ्गळ्
नायहन् महनैक् कॊन्ऱाय् नण्णिनै नाङ्गळ् काणप्
पोयिनि युय्व दॆङ्गे यॆन्ऱॆरि विऴित्तुप् पुक्कार् 2027

तीयवन्–खल इन्द्रजित् के; इळवल् तन् मेल्–लघुराज पर; चॅल्वतन् मुन्नम्–चढ़ जाने से पहले; चॅल्क–तुम आक्रमण करो; ऍन्ऱु–ऐसा; एयितर् ओरुवर् इन्ऱि–प्रेरित करनेवाले किसी के बग़ैर ही; इराक्कतर् तलैवर्–राक्षस-सरदार; ऍङ्कळ् नायकन् मकनै–हमारे नायक के पुत्र के; कॊन्ऱाय्–घातक; नाङ्कळ् काण–हम देखें ऐसा; नण्णिनै–आये हो; इनि पोय्–अब जाकर; उय्वतु–बचना; ऍङ्के–कहाँ; ऍन्ऱु–कहते हुए; ऍरि विऴित्तु–अग्नि-दृष्टि करते हुए; पुक्कार्–(युद्ध में) प्रविष्ट हुए। २०२७

खल इन्द्रजित् लघुराज लक्ष्मण पर आक्रमण करे, इसके पूर्व ही बिना किसी से जाने की आज्ञा की प्रतीक्षा किये ही राक्षस-सेनापतियों ने आग्नेय दृष्टि डालते हुए लक्ष्मण से कहा कि हमारे नायक के पुत्र (अतिकाय) के घातक तुम अब हमारी दृष्टि के सम्मुख आ गये। अब बचकर जाना कहाँ? वे उनसे लड़ने में प्रवृत्त हुए। २०२७

कोडिनू ऱमैन्द कूट्टत् तिराक्कदर् कॊडित्तिण् डेरुम्
आडन्माक् कळिऱुम् मावुङ् गडाविन रार्त्तु मण्डि
मूडिनार् मूडिनारै मुऱै मुऱै तुणित्तु वाहै
शूडिना निरामन् पादञ् जूडिय तोन्ऱल् तम्बि 2028

कोटि नूऱु अमैन्त–सौ करोड़; कूट्टत्तु इराक्कतर्कळ्–समूह के राक्षस; कॊटि तिण् तेरुम्–ध्वजायुक्त सशक्त रथों और; आटल्–बलवान; मा कळिऱुम्–बड़े-बड़े गजों और; मावुम्–अश्वों को; कटावितर्–चलाते हुए; आर्त्तु मण्टि–शोर करते हुए टूट पड़े; मूटिनार्–उन्हें घेर गये; मूटिनारै–वैसा घेरनेवालों को; इरामन् पातम् चूटिय–श्रीरामपादुकाधारी; तोन्ऱल्–राजा भरत के; तम्पि–लघुभ्राता ने; मुऱै मुऱै–क्रम से; तुणित्तु–काटकर; वाकै चूटिनान्–(वाहै) विजयमाला पहन ली। २०२८

करोड़ों राक्षस ध्वजायुक्त सबल रथों, सशक्त बड़े गजों और अश्वों को चलाते हुए उच्च घोष के साथ गये और उनको चारों ओर से घेर लिया। श्रीरामपादुकाभक्त भरत के छोटे भाई ने क्रम से उन सबको छिन्न-भिन्न कर दिया। २०२८

अदिर्न्दन वुलह मेळु मनऱ्पॊरि यशनि यॆन्नप्
पिदिर्न्दन मलैयुम् बारुम् पिळन्दन पिणत्तिन् मेन्मेल्
उदिर्न्दन तलैहळ् मण्डि योडिन वुदिर नीत्तम्
विदिर्न्दन वमरर् कैहळ् विळैन्दवु कॊडिय वॆम्बोर् 2029

उलकम् एऴुम्–सातों लोक; अतिर्न्तन–दहल उठे; अतल् पॊऱि–अंगारों-सहित; अचति अॆन्न–अशनि के समान; मलैयुम् पितिर्न्तन–पर्वत भी टूटे; पारुम् विळन्तन–भूमि भी दरारें खा गयी; पिणत्तिन् मेल् मेल्–लाशों के ऊपर-ऊपर; तलैकळ् उतिर्न्तन–सिर गिरे; उतिरम् नीत्तम्–रुधिर-वारि; मण्टि ओटिन–घने रूप से मिल बहो; अमरर् कैकळ्–देवों के हाथ; वितिर्न्तन–काँपे; कॊडिय वॆम्पोर्–घोर युद्ध; विळैन्ततु–हो गया। २०२९

तब सातों लोक दहल उठे; अग्निकणवर्षक अशनि से आहत हुए जसे पर्वत चूर हुए। भूमि दरारें खा गयी। लाशों पर कटे सिर गिरते गये। रक्त का प्रवाह अधिक बह चला। देवों की भुजाएँ काँप गयीं। वहुत ही घोर युद्ध छिड़ गया। २०२९

विट्टनन् विशिहम् वेहम् विडादन वीरन् मार्बिल्
पट्टन वुलह मॆङ्गुम् परन्दन पदाहैक् काट्टैच्
चुट्टन तुरह राशि तुणित्तन पनैक्कैम् मावै
अट्टन कूऱ्ऱ मॆन्न वडर्त्तन वन्नद मम्मा 2030

वीरन्–वीर लक्ष्मण; वेकम् विटातन–त्वरित गति न छोड़नेवाले; अनन्तम् विचिकम्–अनंत विशिख; विट्टनन्–छोड़े; मार्पिल् पट्टन–(वे राक्षसों के) वक्षों में लगे; उलकम् अॆङ्कुम्–सारे लोक में; परन्तन–फैले; पताकै काट्टै–पताका-वन को; चुट्टन–जलाया; तुरकम् राचि–तुरंगराशि को; तुणित्तन–छिन्न किया; पनै कै मावै–तालवृक्ष-सरीखी सूँड़ों वाले गजों को; अट्टन–मिटाया; कूऱ्ऱम् अॆन्न–यम के समान; अटर्त्तन–दबाया; अम्मा–मैया। २०३०

वीर लक्ष्मण ने अनन्त शर छोड़े जिनकी गति कम ही नहीं पड़ती थी। वे राक्षसों के वक्षों में चुभे। दुनिया में सर्वत्र फैले। पताकावन को जला दिया। तुरंगराशि को छिन्न-भिन्न कर दिया। तालवृक्ष-सी सूँड़ वाले हाथियों का नाश किया। यम के समान सब ओर भर गये। माँ! क्या कहा जाय!। २०३०

उलक्किन्ऱा रुलक्किन् ऱारै यॆण्णुवा नुऱ्ऱ विण्णोर्
कलक्कुरु कण्ण राहिक् कडैयुऱक् काण लाऱ्ऱार्
विलक्करुम् बहळि मारि विळैक्किन्ऱ विळैवै युन्नि
इलक्कुवन् शिलैहॊ डॆकॊ लॆळ्ळुमळ् पयिन्ऱ वॆन्ऱार् 2031

उलक्किन्ऱार् उलक्किन्ऱारै–उत्तरोत्तर मरनेवाले राक्षसों को; अॆण्णुवान् उऱ्ऱ–जो गिनने लगे वे; विण्णोर्–आकाशवासी (देव); कलक्कुऱु कण्णर् आकि–

दुःखी आँखों वाले होकर; कडै उऱ-अंत तक; काणल् आऱ्ऱार्-न गिन पाये; विलक्करुम्-अवार्य; पकळि मारि-शर-वर्षा; विळैक्कितुऱ-जो बना रही हैं; विळैवै उऱ्ऱि-उस कार्य को देखकर; ऍऴु मळै-सप्तमेघों ने; पयितुऱ्ऱतु-(बरसना) सीखा; इलक्कुवन् चिलै कॊंडे-लक्ष्मण के धनु से क्या; ऍन्ऱार्-पूछने लगे। २०३१

देवों ने उत्तरोत्तर मरनेवाले राक्षसों को गिनना चाहा; उस प्रयास में उनकी आँखें पथरा गयीं; अन्त तक आना असाध्य हो गया। लक्ष्मण का अवार्यबाणवर्षा का कार्य देखकर वे विस्मय करने लगे कि क्या सप्तमेघों ने बरसना सीखा लक्ष्मण के इसी धनु से ? । २०३१

ओऴियॊण् कणॆहक् तोऱु मुन्दिय वेऴ मॊऱ्ऱै
वाऴियिन् तलैय पारिन् मरिवन मलैयिऱ् चूऴ्न्द
आऴियिन् ऱुप्पिन् वीरर् पॊरुहळत् तार्त्त वाळित्
तूऴियिन् तॊहैय वळ्ळल् शुडुहणत् तॊहैयु मम्मा 2032

ओऴि ऒळ्-पंक्तियों में आनेवाले और उज्ज्वल; कणॆकळ तोऱुम्-शर ज्यों-ज्यों आते रहे; उन्तिय वेऴम्-गिराये गये गज; ऒऱ्ऱै वाऴियिन् तलैय-एक-एक शिर के अग्रभाग के साथ; पारिल् मरिवन-भूमि पर मर गिरे; मलैयिल् चूऴ्न्त-पर्वतों के समान घेरे पड़े रहे; आऴियिन् तुप्पिन् वीरर्-'वाळि' के-से बल वाले वीर; पॊरुकळत्तु-युद्धभूमि में; वळ्ळल्-प्रभु के; चुडु कणै-संतापक शरों की; तोकैयुम्-संख्या; आर्त्त-नर्दन करनेवाले; आऴि तूऴियिन् तॊकैय-समुद्र के बालू की संख्या है; अम्मा-मैया री। २०३२

ज्यों-ज्यों ज्वलंत शर पंक्तियों में छोड़े गये, त्यों-त्यों गज अपने सिरों में एक-एक शर लेकर मरे और गिरे। वे भूमि पर पर्वतों के समान पड़े रहे। सिंह-समान राक्षस वीर जो मरे उनकी संख्या, युद्धभूमि में प्रभु के सन्तापक शरों की संख्या और गरजते सागर के वालुओं की संख्या बराबर थीं। २०३२

पिऱवियिऱ् पॆरिय नोक्किऱ् पिशिदमुण् डुळ्ळुम् बॆऱ्ऱिच्
चिऱैयन वॆन्न नोक्किल् तेवरुन् दिहैक्कत् तेऱ्ऱित्
तुऱैदॊऱुन् दॊडर्न्दु वानम् वॆळियऱत् तुवन्ऱि वीऴुम्
पऱवैयिऱ् पॆरिदु पट्टार् पिणत्तिन्मेऱ् पडिव मादो 2033

पिऱवियिल्-जन्म से ही; पॆरिय नोक्किल्-बड़ा दृश्य; पिशितम् उण्डु-मांस खाता; उळ्ळुम् पॆऱ्ऱि-फिरनेवाला स्वभाव और; चिऱैयन-पंखों वाले पक्षी हैं; ऍन्न-ऐसा मानकर; तेवरुम् नोक्कि-देव भी देखकर; तिकैक्क-भ्रमित हों ऐसा; तेऱ्ऱि-अपने को दिखाते हुए; तुऱै तॊऱुम् तॊडर्न्तु-(लक्ष्मण के शर) सब स्थानों में भरकर; वानम्-आकाश को; वॆळि अऱ-खाली स्थान न छोड़कर; तुवन्ऱि-मिलकर; वीऴुम् पऱवैयिल्-(लाशों पर) टूट पड़नेवाले पक्षियों की भाँति; पॆरितु-अधिक परिमाण में; पट्टार् पिणत्तिन् मेल्-मृत लोगों की लाशों पर; पडिव-पड़े रहे। २०३३

जन्म से ही बड़े दिखनेवाले, मांस भक्षण कर फिरने के स्वभाव वाले और पंखों वाले पक्षी ही हैं —ऐसा देव देखकर भ्रमित हो रहे थे। ऐसे जानेवाले लक्ष्मण के शर सर्वत्र भर गये। आकाश में स्थान नहीं बचा। फिर अपने शिकार पर झपटनेवाले पक्षियों के समान मृतकों की अधिक लाशों पर गिरे। २०३३

तिऱन्दरु कवियिन् शेनै शॅऱिहऴ् निरुदन् शीऱ
इऱन्दन किडन्द वॆळ्ळ मॆऴुपदिऱ् पादि मेलुम्
परन्दलै मुऴुदुम् वट्ट वञ्जहर् पडिव मूड
मऱैन्दन कुरुदि योडि मरिहडन् मडुत्ति लाद 2034

चॅऱि कऴल् निरुतत्–धारण की हुई पायल वाला राक्षस इन्द्रजित् के; चीऱ्–कोप (के साथ लड़ने) से; तिऱम् तरु–बलवान; कवियिन् चेनै–कपियों की सेनाएँ; ऐऴुपतिल् पाति वॆळ्ळम्–सत्तर में आधा 'वॆळ्ळम्'; मेलुम् इऱन्तन किटन्त–मरी पड़ी रहीं; परन्तलै मुऴुतुम्–पूरा युद्धांगन; वट्ट वञ्चकर्–मृतक वंचकों के; पटिवम् मूट–शरीरों के ढकने से; मऱैन्तन–छिप गया; कुरुति–रक्त; ओटि–बहकर; मरि कटल्–लौट-लौट आनेवाली तरंगों के सागर में; मटुत्तिलात–समा नहीं सका। २०३४

वीरपायलधारी इन्द्रजित् गुस्से के साथ युद्ध करता रहा। इसलिए समर्थ वानर-सेना सत्तर के आधे से अधिक 'वॆळ्ळम्' की संख्या में मरकर पड़ी रही। युद्धभूमि भर राक्षस-सेना की लाशों के ढाँपे रहने से वह ढँकी रही। रक्त जो वहा वह समुद्र में गया पर उसमें समा नहीं सका। २०३४

कैयऱ्ऱार् कालह ळऱ्ऱार् कऴुत्तऱ्ऱार् कवश मऱ्ऱार्
मॆय्यऱ्ऱार् कुडर्हळ् शोर विशैयऱ्ऱार् विळिवु मऱ्ऱार्
मैयऱ्ऱारक् करियुन् देरुम् वाशियु मऱ्ऱु मऱ्ऱार्
उय्यच् चायन् दोडिच् चॆन्ऱा रुयिरुळ्ळा राहियुळ्ळार् 2035

कै अऱ्ऱार्–हाथों से हीन हुए; काल्कळ् अऱ्ऱार्–पैर-कटे हुए; कऴुत्तु अऱ्ऱार्–कण्ठों से हीन हो गये; कवचम् अऱ्ऱार्–कवच खो गये; कुटल्कळ् चोर–आँतों को निकलने देकर; मॆय् अऱ्ऱार्–शरीर छोड़े; विचै अऱ्ऱार्–गतिहीन हुए; विळिवुम् अऱ्ऱार्–बुलाने की शक्ति भी खो गये; मैयल्–मत्त; तार्–हारालंकृत; करियुम्–हाथ; तेरुम्–और रथ; वाचियुम्–अश्व; मऱ्ऱुम्–और अन्य वस्तुओं से भी; अऱ्ऱार्–हीन हो गये; उयिर् उळ्ळार् आकि उळ्ळार्–जो जीवित रहे वे; उय्य–जान बचाने; चायन्तु–थके हुए; ओटि चॆन्ऱार्–भाग चले। २०३५

हाथ-कटे, पैर-कटे, कण्ठहीन व कवचविमुक्त बने राक्षस। उनकी आँतें चू गयीं और वे शरीरों से हीन हो गये। उनकी गति खो गयी। बुलाने की शक्ति भी छूट गयी। मदमत्त और हारालंकृत गज, रथ और वाजी और अन्य छूट गये। इस स्थिति में जो जीवंत रहे वे जान बचाकर ज्यों-त्यों करके भाग चले। २०३५

वऱ्ऱिय कडलुळ् निन्ऱ मलैयॅऩ मरुङ्गिऩ् यारुम्
शुऱ्ऱिऩ रिऩ्ऱित् तोऩ्ऱुऩ् दशमुहऩ् तोऩ्ऱ ऱुळ्ळित्
तॅऱ्ऱिऩ पुरुवत् तोऩ्ऱऩ् मऩमॆऩच् चॆल्लुम् देरात्
उऱ्ऱऩ ळिळैय कोवै यऩुमऩु मुडऩ्वन् दुऱ्ऱाऩ् 2036

वऱ्ऱिय कटलुळ् निऩ्ऱ–सूखे समुद्र में स्थित; मलै अॅऩ–पर्वत के समान; मरुङ्किऩ्–आसपास; चुऱ्ऱिऩर् यारुम् इऩ्ऱि–घेरे रहनेवाले किसी के बिना; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाला; तचमुकऩ् तोऩ्ऱल्–दशमुख का पुत्र; तुळ्ळि–उछलकर; तॅऱ्ऱिऩ पुरुवत्तोऩ्–चढ़ी भौंहों वाला; तऩ् मऩम् अॅऩ–अपने मन के ही समान; चॆल्लुम् तेरात्–चलनेवाले रथ का; इळैय कोवै–लघुराज लक्ष्मण के; उऱ्ऱऩऩ्–पास गया; अनुमऩुम्–हनुमान भी; उटऩ् वन्तु–पास आकर; उऱ्ऱाऩ्–मिल गया। २०३६

सूखे समुद्र में स्थित पर्वत के समान दशमुख का पुत्र अकेला खड़ा रहा और उसके पार्श्व में कोई नहीं रहा। वह हड़बड़ाया। भौंहें चढ़ाकर अपने मन की ही गति में रथ चलाते हुए वह लघुराज के पास आया। हनुमान भी तुरन्त आ मिल गया। २०३६

तोळिऩ्मे लादि यैय वॆऩ्ऱडि तॊऴुदु निऩ्ऱाऩ्
आळिपोऩ् मॊय्म्बि ऩानु मेऱिऩ ऩमर रार्त्तार्
काळिये यऩैय कालऩ् कॊलैयऩ कऩलिऩ् वॆय्य
वाळिमेल् वाळि तूर्त्तार् मऴैयिऩ्मेल् मऴैवन् दऩ्ऩार् 2037

ऐय–नायक; तोळिऩ् मेल् आति–कंधे पर के हो जाएँ; अॅऩ्ऱु–कहकर; अटि तॊऴुतु निऩ्ऱाऩ्–चरण-नमस्कार करके खड़ा रहा; आळि पोल्–सिंह-सदृश; मॊय्म्पिऩाऩुम्–बलवान भी; एऱिऩऩ्–चढ़े; अमरर् आर्त्तार्–देवों ने जयघोष किया; मऴैयिऩ् मेल्–एक मेघ पर; मऴै वन्तु अऩ्ऩार्–मेघ चढ़ आया हो, ऐसे लगनेवाले ने; काळिये अऩैय–काली (देवी के ही समान); कालऩ् कॊलैयऩ–यम के समान घातक; कऩलिऩ् वॆय्य–अग्नि के समान संतापक; वाळि मेल् वाळि–शरों पर शर; तूर्त्तार्–बरसाकर भर दिये। २०३७

हनुमान ने लक्ष्मण से चरणों में विनय की कि प्रभु ! मेरे कन्धे पर के हो जाइए। सिंह-सम सुमित्रानन्दन भी चढ़ बैठे। देवों ने आनन्द-घोष किया। एक मेघ दूसरे मेघ से भिड़ता हो, वैसा दोनों लड़ने लगे और उन्होंने कालीदेवी-सम (शत्रुसंहारक) यम के समान घातक और अनल से गरम शस्त्र लगातार एक-दूसरे के पीछे छोड़कर सब स्थानों को भर दिया। २०३७

इडित्तऩ शिलैयि ऩाण्ग ळिरिन्दऩ तिशैह ळिऱ्ऱु
वॆडित्तऩ मलैहळ् विण्डु पिळन्दऩ विशुम्बु मेऩ्मेल्
पॊडित्तविऩ् वुलह मॆङ्गुम् पॊऴिन्दऩ पॊऱिहळ् पॊङ्गिक्
कडित्तऩ कणैह ळोड कणैहळतम मयिलवाय कवबि 2038

चिलैयित् नाण्कळ् इटित्तत्त–धनु के डोरों ने वज्रनाद निकाला; तिक्कळ्–दिशाएँ; इऱ्ऱु इरिन्तत्त–टूटीं और बिखरीं; मलैकळ्–पर्वत; विण्टु वॅटित्तत्त–फूटे और फटे; विचुम्पु–आकाश; मॅन्मेल्–उत्तरोत्तर; पिळन्तत्त–चिरा; इव् उलकम्–यह लोक; ॲङ्कुम् पॊटित्त–सर्वत्र चूर हुआ; पॊऱिकळ् पॊळिन्तत्त–चिनगारियाँ छितरीं; कणैकळॊटु कणैकळ्–शरों को शरों ने; तम् अयिल् वाय्–अपने तीक्ष्ण मुख से; कव्वि–ग्रसकर; पॊङ्कि–गुस्से के साथ; कटित्तत्त–काटा। २०३८

धनु के डोरों ने टंकार निकाली अशनिध्वनि के समान। दिशाएँ चिरीं और अलग हुईं। पर्वत फूटे और टूटे। आकाश उत्तरोत्तर फटता गया। सारा लोक चूर हो गया। अंगारे बरसे। शरों ने शरों को अपने तीक्ष्ण मुखों से ग्रसा, गुस्सा दिखाया और काट दिया। २०३८

अम्बित्तो डम्बॊन्‌ ऱॊन्ऱै यऱुक्कमऱ् ऱऱुक्कि लाद
वॅम्बॊऱि कदुव विण्णिल् वॅन्दत्त करिन्दु वीळ्न्द
उम्बरु मुणर्वु शिन्दि यॊडुङ्गिना रुलह मियावुम्
कम्बमुऱ् ऱुलैन्द वेलैक् कलमॆतक् कलङ्गिऱ् ऱण्डम् 2039

अम्पित्तोटु अम्पु–शरों को शर; ऒन्ऱै ऒन्ऱु–एक-दूसरे को; अऱुक्क–काटा; अऱुक्किलात–जो काट नहीं सके; वॅम् पॊऱि कतुव–दाहक अंगारों के लगने से; विण्णिल् वॅन्तत्त–आकाश में जलकर; करिन्तु वीळ्न्त–झुलसकर गिरे; उम्परुम्–देवों ने भी; उणर्वु चिन्ति–भ्रमित-बुद्धि बनकर; ऒटुङ्कितार्–सकुचकर हटे; उलकम् यावुम्–सभी लोक; कम्पम् उऱ्ऱु–कंपित होकर; उलैन्त–अस्त-व्यस्त हुए; अण्टम्–अण्डगोल; वेलै कलम् ऎन–समुद्र के पोत के समान; कलङ्किऱ्ऱु–क्षुब्ध हुए। २०३९

शरों ने शरों को काट दिया। कुछ शर काट नहीं सके। वे गरम अग्निकणों के शिकार बने और आकाश में ही जलकर गिरे। देव भी वह गरमी न सह सके। उनकी बुद्धि भ्रमित हुई और वे सूख गये। सारे लोक विकम्पित हो गये। अण्ड भी समुद्रमध्य पोत के समान काँप उठा। २०३९

अरियिनम् पूण्ड तेरु मनुमनु मनन्द शारि
पुरिदलि निलङ्गै यूरुन् दिरिन्ददु पुलव रेयुम्
ॲरिहणैप् पडल मूड विलरुळ रॅन्नुन् दन्मै
तॆरिहिलर् शॆविडु शॆल्लक् किळिन्दत्त तिशैह ळॆल्लाम् 2040

अरि इनम् पूण्ट–सिंह-समूह का जुता; तेरुम्–रथ; अनुमनुम्–और हनुमान; अनन्त चारि पुरितलिन्–अनन्त रीतियों से पैंतरे बदलते रहे तब; इलङ्कै ऊरुम्–लंका नगर भी; तिरिन्ततु–घूमा; ॲरि कणै पटलम्–जलते बाणों का पटल; मूट–ढाँप गया; इलर् उळर्–हैं (या) नहीं; ॲन्नुम् तन्मै–यह प्रकार; पुलवरेयुम्–देव

भी; तॅरिकिलर्–न जान सके; तिचैकळ् ऍल्लाम्–सारी दिशाएँ; चॅविट्टु चॅल्ल–बहरा बनाते हुए; किळिन्तत–चिर गयीं। २०४०

सिंहयुक्त इन्द्रजित् का रथ और हनुमान अनन्त रीति से पैंतरे बदले। इसलिए लंका नगरी भी घूम गयी। दाहक शरों के पटलों ने ढाँप दिया तो दोनों वीर हैं भी क्या, या नहीं? —यह संशय देवों में भी पैदा हो रहा था। दिशाएँ जीवों को बहरा बनाती हुई फटीं। २०४०

नाण्बोरु वरिविऱ् चॅङ्गै नामनूल नविऩ्ऱ कल्वि
माण्बोरु वहैयिऱ् ऱऩ्ऱु वलिक्किलै यवधि वाऩम्
चेण्बॅरि दॅऩ्ऱु चॅऩ्ऱ तेवरु मिरुवर् चॅय्है
काण्बरि दॅऩ्ऱु काट्चिक् कैयुऱ वॅय्दिऱ् ऱऩ्ऱो 2041

माण् पोरु–प्रत्यंचा से युक्त; वरि विल्–सबन्ध धनु की; नामम् नूल्–प्रसिद्ध विद्या को; चॅम् कै–लाल हाथों द्वारा; नविऩ्ऱ–जो सीखा था; कल्वि माण्पु–वह विद्या-गौरव; ओरु वकैयिऱ्ऱु अऩ्ऱु–एक प्रकार का नहीं; वलिक्कु अवति इलै–बल की सीमा नहीं; वाऩम्–आकाश से; चेण् पॅरितु–विस्तार में बड़ा है; ऍऩ्ऱु–सोचकर; चॅऩ्ऱ तेवरुम्–जो गये वे देव भी; इरुवर् चॅय्कै–दोनों के कार्य; काण्परितु–देखना कठिन है; ऍऩ्ऱु–कह गये, इसलिए; काट्चिक्कु–प्रत्यक्ष प्रमाण का; ऐयुऱवु–संशय; ऍय्तिऱ्ऱु–हो गया। २०४१

दोनों की डोरे-सहित धनु सम्बन्धी शास्त्र की विद्या का गौरव केवल एक प्रकार का नहीं था। बल की भी सीमा नहीं थी। आकाश से भी विशाल था। अतः यह युद्ध दर्शनीय है। यह सोचकर देव गये थे। पर वे भी उनका कार्य देखने में नहीं आयगा —यह मान गये। फिर प्रत्यक्ष प्रमाण में भी संशय हो गया। (उनकी इतनी तीव्र गति थी कि उनके युद्धतन्त्र देखने में न आये।)। २०४१

ऍऩ्चॅय्दा रॅऩ्चॅय् दारॅऩ् ऱियम्बुवा रिवैय तऩ्मै
मुऩ्चॅय्दा रियाव रॅऩ्बार् मुऩ्ऩॅदु पिऩ्ऩे दॅऩ्बार्
कोऩ्चॅय्दार् वीर रिऩ्ऩ तिचैयिऩा रॅऩ्ऱुङ् गोळ्ळार्
पोऩ्चॅय्दार् मवुलि विण्णो रुणर्न्दिलर् पुहुन्द दॊऩ्ऱुम् 2042

पोऩ् चॅय् तार्–स्वर्णवर्ण (मंदार) माला से अलंकृत; मवुलि विण्णोर्–सिर वाले देव; पुकुन्ततु ऒऩ्ऱुम्–जो हुआ वह कुछ भी; उणर्न्तिलर्–न जानकर; ऍऩ् चॅय्तार् ऍऩ् चॅय्तार्–क्या किया, क्या किया; ऍऩ्ऱु इयम्पुवार्–ऐसा कहते हुए; इवैय तऩ्मै–यह कार्य; मुऩ्–इसके पूर्व; यावर् चॅय्तार्–किसने किया; ऍऩ्पार्–कहते; मुऩ् एतु–पहले कहाँ (हुआ); पिऩ् एतु–पीछे कहाँ (होगा); ऍऩ्पार्–कहते; कोऩ् चॅय्तार्–भयोत्पादक वीर; इऩ्ऩ तिचैयिऩार्–किस दिशा के; ऍऩ्ऱुम् कॊळ्ळार्–यह भी जान नहीं पाते। २०४२

स्वर्णवर्ण मंदार पुष्पों की माला से अलंकृत केशों वाले देव घटी

बात कोई भी न जान पाये। पूछने लगे कि क्या किया, उन्होंने क्या किया ? ऐसा युद्ध पहले किसने किया था ? कौन कर सके ? पहले भी किसी ने नहीं किया; आगे भी कोई नहीं कर सकेगा। लोगों में भय भरते हुए लड़नेवाले ये हैं भी किस दिशा में ? यह भी कोई जान नहीं पाया। २०४२

आयिर कोडि पल्ल मयिलॅयिऱ् ऱरक्क नॅय्दान्
आयिर कोडि पल्लत् तवैतुणित् तऱुत्ता नैयत्
आयिर कोडि नाहक् कणैतॊडुत् तरक्क नॅय्दान्
आयिर कोडि नाहक् कणैहळा लऱुत्ता नण्णल् 2043

अयिल् ऍयिऱ्ऱ अरक्कन्–तीक्ष्ण दंतोरे राक्षस ने; आयिरम् कोटि–सहस्र कोटि; पल्लम् ऍय्तान्–मल्लम (अस्त्र) चलाये; ऐयन्–प्रभु ने भी; आयिरम् कोटि पल्लत्तु–सहस्र करोड़ अस्त्रों से; अवै तुणित्तु अऱुत्तान्–उन्हें काट दिया; अरक्कन्–मेघनाद ने; आयिरम् कोटि नाकम् कणै–सहस्र कोटि नागास्त्र; तॊटुत्तु ऍय्तान्–संधान करके चलाये; अण्णल्–महिमावान ने; आयिरम् कोटि नाक कणैकळाल्–सहस्र कोटि नागास्त्रों से; अऱुत्तान्–उन्हें काट दिया। २०४३

तीक्ष्ण दंतोरे राक्षस ने सहस्र कोटि अस्त्र चलाये। लघुराज ने भी सहस्र कोटि बाणों से उन्हें काटा। राक्षस ने सहस्र कोटि नागास्त्र चलाये। महिमावान सुमित्रानन्दन ने भी सहस्र कोटि नागास्त्रों से उन्हें काट दिया। २०४३

कोट्टियिन् तलैय कोडि कोडियम् बरक्कन् कोत्तान्
कोट्टियिन् तलैय कोडि कोडियाऱ् कुऱैत्तान् कॊण्डल्
मीट्टॊरु कोडि कोडि वॅञ्जिनत् तरक्कन् विट्टान्
मीट्टॊरु कोडि कोडि कॊण्डवै तडुत्तान् वीरन् 2044

अरक्कन्–राक्षस ने; कोट्टियिन् तलैय–दुःखदायी; कोटि कोटि अम्पु–करोड़ों अस्त्रों को; कोत्तान्–चलाया; कॊण्टल्–मेघ-सम; इळैय को–लघुराज ने; कोट्टियिन् तलैय–संत्रासक; कोटि कोटियाल्–करोड़ों बाणों से; कुऱैत्तान्–उन्हें खण्डित किया; वॆम् चिनत्तु अरक्कन्–अतिक्रुद्ध राक्षस ने; मीट्टु ऒरु कोटि कोटि–फिर एक कोटि-कोटि; विट्टान्–अस्त्र छोड़े; वीरन्–वीर लक्ष्मण ने; मीट्टु ऒरु–फिर एक; कोटि कोटि कॊण्टु–एक कोटि-कोटि से; अवै तटुत्तान्–उन्हें रोक दिया। २०४४

राक्षस ने करोड़ों त्रासक अस्त्र चलाये। मेघ के समान छोटे राजा ने करोड़ों संत्रासक अस्त्र छोड़कर उन्हें मिटा दिया। भयंकर क्रोधी राक्षस ने फिर-फिर करोड़ों बाण चलाये। वीर ने भी फिर-फिर करोड़ों बाणों से उन्हें काट दिया। २०४४

कङ्गपत् तिरमोर् कोडि कैविशैत् तरक्क नॆय्दान्
कङ्गपत् तिरमोर् कोडि कणैतॊडुत् तिळवल् कात्तान्
तिङ्गळिऱ् पादि कोडि यिलक्कुवन् तॆरिन्दु विट्टान्
तिङ्गळिऱ् पादि कोडि तॊडुत्तवै यरक्कन् ऱीर्त्तान् 2045

अरक्कन्–(इन्द्रजित्) राक्षस ने; ओर् कोटि–एक करोड़; कङ्कम् पत्तिरम्–कंकपत्र; कै विचैत्तु–हाथ हिलाकर; ऍय्तान्–फेंके; इळवल्–लघुराज ने; ओर् कोटि कङ्क पत्तिरम् कणै तॊट्टु–एक करोड़ कंकपत्र हथियार चलाकर; कात्तान्–निवार दिया; इलक्कुवन्–लक्ष्मण ने; तिङ्कळिल् पाति–अर्धचन्द्र (वाण); कोटि–करोड़; तॆरिन्तु–चुनकर; विट्टान्–छोड़े; अवै–उन्हें; कोटि–करोड़; तिङ्कळिल् पाति–अर्धचन्द्र वाण; तॊट्टु–देकर; तीर्त्तान्–निवार दिया। २०४५

राक्षस ने एक करोड़ कंकपत्र छोड़े। लघुराज ने भी करोड़ कंकपत्र अस्त्र चलाकर उन्हें रोका। लक्ष्मण ने करोड़ अर्द्धचन्द्र वाण चलाये। उन्हें इन्द्रजित् ने करोड़ अर्द्धचन्द्र वाण चलाकर मिटा दिया। २०४५

कोरैयिन् तलैय कोडि कॊडुङ्गणै यरक्कन् कोत्ताल्
कोरैयिन् तलैय कोडि तॊडुत्तवै यिळवल् कॊय्दान्
पारैयिन् तलैय कोडि परप्पिना निळवल् पलहाल्
पारैयिन् तलैय कोडि यरक्कनुम् पदैक्क वॆय्दान् 2046

अरक्कन्–राक्षस ने; कोरैयिन् तलैय–मोथे के सिर के समान फलों के; कोटि–करोड़; कॊटु कणै–क्रूर अस्त्र; कोत्तान्–संधान करके चलाये; इळवल्–लघुराज ने; कोरैयिन् तलैय–मोथे के नोक के जैसे फलवाले; कोटि तॊट्टु–करोड़ अस्त्र चलाकर; अवै कॊय्तान्–उन्हें काट दिया; इळवल्–लघुराज ने; पारैयिन् तलैय–सब्बल के जैसे फल वाले; कोटि–करोड़ वाण; पल काल्–अनेक बार; परप्पितान्–चलाकर फैलाये; अरक्कनुम्–राक्षस ने भी; पारैयिन् तलैय–सब्बल के जैसे सिरवाले; कोटि–करोड़; पतैक्क–तेजी से; ऍय्तान्–चलाये। २०४६

राक्षस इन्द्रजित् ने मोथे के सिर के जैसे फलवाले करोड़ अस्त्र चलाये। छोटे राजा लक्ष्मण ने वैसे ही करोड़ अस्त्र चलाकर उन्हें काट दिया। प्रभु लक्ष्मण सब्बल-जैसे सिर वाले करोड़ों अस्त्र अनेक बार चलाये। इन्द्रजित् ने भी वैसे ही अस्त्र तेज़ी से चलाये। २०४६

तामरैत् तलैय वाळि तामरैक् कणक्किऱ् चार्न्द
ताम्वरत् तुरन्दु मुन्दित् तशमुहन् तनय नार्त्तान्
तामरैत् तलैय वाळि तामरैक् कणक्किऱ् चार्न्द
ताम्वरत् तडुत्तु वीऴ्त्तान् तामरैक् कणनत् तम्बि 2047

तचमुकन् तनैयन्–दशग्रीवतनय ने; तामरै तलैय–कमल-से सिर वाले; वाळि–शर; तामरै कणक्किल् चार्न्त–पद्म की संख्या में; ताम्–स्वयं; वर–धनु से छूटे; मुन्ति तुरन्तु–उससे पहले प्रयुक्त करके; आर्त्तान्–गर्जन किया; तामरै

कण्णम् तम्पि–कमलाक्ष के भाई ने; तामरै तलैय वाळि–कमलकली-से सिर वाले बाण; तामरै कणक्किल् चारन्त–'पद्मों' की संख्या में; ताम् वर–धनु से छूटे ऐसा छोड़कर; तट्टुत्तु वीऴ्त्ताऩ्–रोककर बेकार किया। २०४७

दशग्रीवतनय ने कमलकली-सम सिर वाले अस्त्र 'पद्म' की संख्या में धनु से निकाले और गर्जन किया। पुण्डरीकाक्ष के भ्राता ने भी वैसे ही अस्त्र उसी संख्या में अपने धनु से जाने दिये और उन्हें बेकार कर दिया। २०४७

वच्चिरप् पहऴि कोडि वळैयॅयिऱ् ऱरक्क ऩॆय्दाऩ्
वच्चिरप् पहऴि कोडि तुरन्दवै यऩहऩ् माय्त्ताऩ्
मुच्चिरप् पहऴि कोडि यिलक्कुवऩ् मुडुह विट्टाऩ्
मुच्चिरप् पहऴि कोडि तॊडुत्तवै तडुत्ताऩ् मुऩ्वऩ् 2048

वळै ॲयिऱु अरक्कऩ्–वक्र दाँतों वाले राक्षस ने; कोटि–करोड़; वच्चिरम् पकऴि–वज्रशर; ॲय्ताऩ्–चलाये; अऩकऩ्–अनघ (लक्ष्मण) ने; कोटि वच्चिरम् पकऴि–कोटि वज्रशर; तुरन्तु–चलाकर; अवै–उन्हें; माय्त्ताऩ्–मिटाया; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण; कोटि मुचिरम् पकऴि–कोटि त्रिशिर बाणों को; मुटुक विट्टाऩ्–तेज चलाया; मुऩ्पऩ्–सशक्त राक्षस ने; कोटि–कोटि; मु चिरम् पकऴि–'त्रिशिर' बाण; तॊट्टुत्तु–चलाकर; अवै तट्टुत्ताऩ्–उन्हें रोक दिया। २०४८

वक्र दंतोरे राक्षस ने करोड़ वज्र-अस्त्र चलाये। अनघ वीर ने भी वे ही अस्त्र चलाकर उन्हें काट गिराया। लक्ष्मण ने 'त्रिशिर' नामक अस्त्र तेजी से चलाये तो बलवान इन्द्रजित् ने भी वैसे ही बाण छोड़कर उन्हें रोक दिया। २०४८

अञ्जलि यञ्जु कोडि तॊडुत्तिह लरक्क ऩॆय्दाऩ्
अञ्जलि यञ्जु कोडि तॊडुत्तवै यऱुत्ता ऩैयऩ्
कुञ्जरक् कऩ्ऩङ् गोडि यिलक्कुवऩ् शिलैयिऱ् कोत्ताऩ्
कुञ्जरक् कऩ्ऩङ् गोडि तॊडुत्तवै यरक्कऩ् कात्ताऩ् 2049

इकल् अरक्कऩ्–बलवान राक्षस; अञ्चु कोटि–पाँच करोड़; अञ्चलि–'अंजलि' अस्त्र; तॊट्टुत्तु–संधान करके; ॲय्ताऩ्–चलाये; ऐयऩ्–सुन्दरकुमार ने; अवै–उन्हें; अञ्चु कोटि–पाँच करोड़; अञ्चलि तॊट्टुत्तु–'अंजलि' के अस्त्र चलाकर; अऱुत्ताऩ्–उन्हें काट दिया; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण ने; कोटि–करोड़; कुञ्चरम् कऩ्ऩम्–'कुंजरकर्ण' के बाण; चिलैयिल् कोत्ताऩ्–धनु से लगाये (चलाये); अरक्कऩ्–राक्षस ने; कोटि–करोड़; कुञ्चरम् कऩ्ऩम्–कुंजरकर्ण के अस्त्र; तॊट्टुत्तु–चलाकर; कात्ताऩ्–रोक दिया। २०४९

बलवान इन्द्रजित् ने 'अंजलि' नाम के अस्त्र पाँच करोड़ चलाये। सुन्दर प्रभु ने वे ही अस्त्र उतने ही चलाकर उन्हें छेद दिया। लक्ष्मण

ने करोड़ों 'कुंजरकर्ण' नामक अस्त्र संधान कर छोड़े। राक्षस ने भी उन्हीं अस्त्रों द्वारा उन्हें रोक दिया। २०४९

अय्यवु मॅय्द वाळि विलक्कवु मुलहु मॅल्लाम्
मॊय्हणैक् कान माहि मुडिन्ददु मुळङ्गु वेलै
पॅय्हणेप् पॊदिह ळाले वळर्न्ददु पिऱन्द कोबम्
कॅम्मिहक् कतन्ऱ दल्लाल् तळर्न्दिलर् काळै वीरर् 2050

ऍय्यवुम्–चलाने और; ऍय्त वाळि विलक्कवुम्–चलाये हुए अस्त्र को रोकने से; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोकों में; मॊय् कणै कानम् आकि–खूब भरे अस्त्रों का कानन वन; मुटिन्ततु–चुका; मुळङ्कु वेलै–गर्जनशील सागर; पॅय् कणै पॊतिकळाले–बरसाये गये शरों के कारण; वळर्न्ततु–उमग चला; काळै वीरर्–ऋषभ-सम वीरों में; पिऱन्त कोपम्–उत्पन्न क्रोध; कॅ मिक–अधिक बढ़ा; कतन्ऱतु अल्लाल्–और बढ़ा, इसके सिवा; तळर्न्तिलर्–शान्त नहीं हुए। २०५०

तब अस्त्र छोड़े जाते थे या रोके जाते थे तो सारे लोक अस्त्रमय हो गये। गर्जनशील समुद्र इन अस्त्रों के कारण स्फीत हो गया। दोनों वीरों का कोप बढ़ता गया। किंचित भी शान्त नहीं हुआ। २०५०

वीऴियिन् कनिपोन् मेनि किऴिपड वनुमन् वीरच्
चूऴ्ऴ् वनैय तोण्मे लायिरम् वकऴि तूवि
ऊऴियि निमिर्न्द शॅन्दी युरुमिनै युमिऴ्व दॅन्न
एऴिरु नूऱु वाळि यिलक्कुवन् कवशत् तॅय्दान् 2051

वीऴियिन् कनि पोल्–'वीऴि' नाम के फल के समान (जो अत्यन्त लाल है); अनुमन् मेनि–हनुमान का शरीर; किऴि पट–चिर जाय ऐसा; वीरम् चूऴ्–वीरता-भरे; ऍऴ् अनैय–स्तम्भ-सम; तोळ् मेल्–कंधों पर; आयिरम् पकऴि–सहस्रों अस्त्र; तूवि–बरसाकर; ऊऴियिन् निमिर्न्त–युगान्त में उठी; चॅन्ती उरुमिनै–लाल आग ने अशनि को; उमिऴ्वतु ऍन्न–निकाला हो जैसे; एऴ् इरु नूऱु वाळि–एक हजार चार सौ बाणों को; इलक्कुवन् कवचत्तु–लक्ष्मण के कवच पर; ऍय्तान्–चलाये। २०५१

हनुमान का शरीर चिरकर 'वीऴि' के फल के समान अत्यन्त लाल दिखायी दिया। वीरतायुक्त लौहस्तम्भ-सम उसके कन्धों पर हजार बाण चलाकर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के कवच पर एक हज़ार चार सौ शर चलाये, जो कि प्रलयकाल की उठी अग्नि द्वारा गिरायी गयी अशनियों के समान थे। २०५१

मुऱ्कॊण्डा नरक्क नॆम्मा मुळरिवाण् मुहङ्गळ् तेवर्
पिऱ्कॊण्डा रिळैय कोवॆप् पियऱ्कॊण्डान् पॆरुन्दो णित्तुऱ्
गऱ्गॊण्डार् गिरियिन् नालु मरुविपोऱ् कुरुदि कण्डार्
विऱ्कॊण्डा निवने यॆन्ना वॆरुक्कॊण्डार् मुनिवर् मेलोर् 2052

मेलोर् तेवर्–ऊपर जो रहे उन देवों ने; अरक्कन् मुन् कोण्टान्–राक्षस आगे बढ़ गया; ॲन्ना–सोचकर; मुळरि–कमल-सम; वाळ् मुकङ्कळ्–उज्ज्वल मुखों को; पिन् कोण्टार्–पीछे फिरा लिया; मुनिवर्–ऋषियों ने भी; इळैय कोवै–लघुराज को; पियल् कोण्टान्–अपने कंधे पर जो उठाये हुए था उसके; पॅरु तोळ् निन्ऱुम्–बड़े कंधों पर से (बहनेवाली); कल् कोण्टु आर्–पत्थरों से भरी; किरियिन्–गिरि से; नालुम्–गिरनेवाली; अरुवि पोल–नदियों के समान; कुरुति कण्टार्–रक्तवारि को देखा; विल् कोण्टान् इवने–सच्चा धनुर्धर यही है; ॲन्ना–कहकर; वॅरु कोण्टार्–डर गये। २०५२

आकाश के देवों ने सोच लिया कि राक्षस युद्ध में आगे बढ़ गया। उन्होंने अपने उज्ज्वल कमलमुखों को फिरा लिया। ऋषियों ने लक्ष्मण को अपने कन्धे पर उठाये रहनेवाले हनुमान के विशाल कन्धों से गिरि से निकलनेवाली नदी के समान रक्त को बहता हुआ देखा तो उन्हें लगा कि यही (इन्द्रजित्) सच्चा धनुर्धर है। उन्हें डर हुआ। २०५२

शीऱुन् तॅरिन्द शिन्दै यिलक्कुवन् शिलैक्कै वाळि
नूऱुनू ऱेवि नॊय्दि नुडङ्गुळै मडङ्गल् मावुम्
वेऱुकू ऱियऱ्ऱि वीरक् कॊडियैयु मऱुत्तु वीऴ्त्ति
आऱुनू ऱम्बु शॅम्बॊऱ् कवशम्बुक् कळुन्द वॅय्दान् 2053

चीऱु नूल् तॅरिन्त–कोप सिखानेवाले (युद्ध-) शास्त्र खूब जाननेवाले; चिन्तै इलक्कुवन्–मन के लक्ष्मण ने; चिलै कै–अपने हाथ के धनु से; नूऱु नूऱु वाळि एवि–सैकड़ों अस्त्र चलाकर; मुटक्कु उळै–मुड़े हुए अयाल-बालों वाले; मटङ्कल् मावुम्–सिंहों को; नॊय्तिन्–आसानी से; वेऱु कूऱु इयऱ्ऱि–जल्दी खण्ड-खण्ड करके; वीरम् कॊटियैयुम्–वीरता के प्रतीक ध्वजा को भी; अऱुत्तु वीऴ्त्ति–काट गिराकर; चॅम् पॊन् कवचम्–लाल स्वर्णकवच में; पुक्कु–घुसकर; अऴुन्त–चुभ जाएँ ऐसा; आऱु नूऱु अम्पु ॲय्तान्–छः सौ अस्त्र चलाये। २०५३

क्रोध के साथ किये जानेवाले युद्ध के शास्त्र में खूब अभ्यस्त लक्ष्मण ने सैकड़ों बाण अपने हाथ के धनु द्वारा चलाकर मुड़े हुए अयाल के बालों वाले सिंहों के खण्ड-खण्ड कर दिये। वीरताद्योतक ध्वजा को भी काट गिराया। फिर उसके लाल स्वर्ण के कवच के अन्दर जा घुसें, ऐसे छः सौ शस्त्र चलाये। २०५३

काळमे हत्तैच् चार्न्द कदिरव नॆन्नक् कान्दित्
तोळिन्मेन् मार्बिन् मेलुञ् जुडर्विडु कवशञ् जूळ
मीळनीळ् पवळ वल्लि निरैयॊळि निमिर्व वॆन्न
वाळिवाय् तोऱुम् वन्दु वडिन्दन कुरुदि वारि 2054

काळम् मेकत्तै चार्न्त–काले मेघ से लगे; कतिरवन् ॲन्न–सूर्य के समान; कान्ति–प्रकाश फैलाकर; तोळिन् मेल् मार्पिन् मेलुम्–कंधों और वक्ष पर; चुटर्

विट्–प्रकाशमय; कवचम् चूऴ–कवच के चारों ओर; नीळ नीळ्–लम्बी दूर तक बढ़ी; पवळम् विल्लि निरै–प्रवालवल्लरियों की पंक्तियाँ; ऑळि निमिरुव ॲन्न–प्रकाश में बढ़ी लगतीं जैसे; कुरुति वारि–रक्तवारि; वाळि वाय्तोरुम्–बाण जहाँ-जहाँ लगे, वहाँ-वहाँ; वन्तु वटिन्तत–निकल वही। २०५४

काले मेघ से लगे सूर्य के समान इन्द्रजित् का कवच प्रकाश फैलाते हुए इन्द्रजित् के कंधों और वक्ष पर लगा था। उसके चारों ओर लम्बी प्रवालवल्लरियों की पंक्तियों के समान बाणाहत स्थानों से रक्त की धाराएँ छूट निकलीं। २०५४

पॊन्नुरु तडन्देर् पूण्ड मडङ्गल्माप् पुरण्ड पोदुम्
मिन्नुरु पदाहै योडु शारदि वीऴ्न्द पोदुम्
तन्निड्रत् तुरुव वाळि तडुप्पिल शार्न्द पोदुम्
इन्नदॆन् ड्रिया नन्ना निलैयदोर् माड्रज् जॊन्नान् 2055

पॊन् उरु–स्वर्णनिर्मित; तट–बड़े; तेर् पूण्ट–रथ में जुते; मटङ्कल् मा–अश्व; पुरण्ट पोतुम्–लोट जायँ तब भी; मिन् उरु पताकैयॊटु–उज्ज्वल पताका के साथ; चारति वीऴ्न्त पोतुम्–सारथी के गिरने पर भी; तन् निऱत्तु उरुव–अपने वक्ष को भेद जाएँ ऐसा; वाळिकळ्–बाण; तटुप्पु इल–वेरोक-टोक; चार्न्त पोतुम् –आ लगें तब भी; इन्नतु ॲन्ऱु–क्या हुआ यह; अऱियान्–न जानकर; अन्नान्–उस राक्षसकुँवर ने; इत्तैयतु ओर् माऱ्ऱम्–यह बात; चॊन्नान्–कही। २०५५

लक्ष्मण के शरों से विशाल रथ से जुते बड़े सिंह (या अश्व) गिर कर लोट गये, तब भी; ज्वलंत पताका के साथ सारथी गिरकर मर गया, तब भी; इन्द्रजित् के वक्ष को छेदने के लिए अवार्य शर आ लगे। तब भी वह कुछ भी न जानते हुए (कोई परवाह न करके) यह बात बोला। २०५५

अन्नर नल्ल नाहिन् नारण नैय नन्ड्रेल्
पिन्नरन् पिरम नॆन्बार्प् पेशुह पिड्रन्दु वाऴ्म्
मन्नर्नम् बदियिन् वन्दु वरिशिलै पिडित्ल कल्वि
इन्नरन् तन्नों डॊप्पा रियारुळ रॆन्ड्रान् 2056

अ नरन्–वही नर है; अल्लन् आकिन्–नहीं तो; नारणन् अनैयन्–नारायण ही सम है; अन्ऱेल्–वह भी नहीं तो; पिन्–फिर; अरन्–हर; पिरमन् ॲन्पार्–ब्रह्म आदि; पेचुक–का नाम लो; नम् पतियिन् वन्तु–हमारे नगर में आकर; वरि शिलै पिटित्त कल्वि–सबन्ध धनु की क्रिया में निपुण; इ नरन् तन्नॊटु ऑप्पार्–इस नर की समानता करनेवाले; पिऱन्तु वाऴ्म्–(इस धरती में) जन्म लेकर जीनेवाले; मन्नर्–राजाओं में; यार् ऑरुवर् उळर्–कौन कोई हैं; ॲन्ऱान्–कहा (इन्द्रजित् ने)। २०५६

यह लक्ष्मण वही नर (राम) होगा। नहीं तो नारायण के समान

होगा। नहीं तो हर, ब्रह्मादि के समान कोई होगा। हमारे नगर में आकर जो इतनी धनुर्विद्या का प्रदर्शन करता है, इसके समान इस धरती के जीवंत राजाओं में कौन होगा ? । २०५६

वायिडै नॅरुप्पुक् काल कुडनॅडुङ् गुरुदि वारत्
तीयिडै नॅय्वारत् तन्न वॅहुळिया नुयिर्त्तीर्ंम् बालुम्
ओय्विड मिल्लात् वल्लै योरिमै यॉडुङ्गा मुन्नम्
आयिरम् पुरवि पूण्ड वाळियन् वेरि नाताल् 2057

उयिर् तीर्म्तालुम्–प्राण निकल आएँ तो भी; ओय्विडम् इल्लात्–(युद्ध-) विरत न होनेवाला; वाय् इडै–मुख से; नॅरुप्पु काल–आग निकालता; उडल्–शरीर में; नॅडु कुरुति वार–अधिक रक्त बहता; ती इडै–आग में; नॅय् वारत्तु अन्न–घी डाला गया जैसे; वॅकुळियात्–क्रोध करके; वल्लै–जल्दी; ओर् इमै ऑडुङ्का मुन्नम्–एक पलक के झपने से पूर्व; आयिरम् पुरवि पूण्ड–हजार अश्वों के जुते; आळि अम् तेरिन्–सुन्दर पहियेदार रथ पर; आतात्–सवार हुआ। २०५७

मरने पर भी युद्धविरत होनेवाला नहीं था इन्द्रजित्। उसके मुख से आग-सी निकल आयी। शरीर पर रक्त की लंबी धाराएँ बहीं। घी पाकर बढ़ती आग के समान उसका क्रोध भभक उठा। एक पल के अन्दर वह हजार अश्वों के जुते और पहियोंदार सुन्दर (दूसरे) रथ पर सवार हो गया। २०५७

आशै यॅङ्गणु मम्बुह वॅम्बुपोर्, ओशै विम्म बुरुत्तिर नुम्मुडल्
कूश वायिर कोडि कॉलैक्कणै, वीशि विण्णै वॅळियिल दाक्किनान् 2058

वॅम्पु–क्रुद्ध; पोर् ओशै–वीरों के युद्ध-कोलाहल के; विम्म–बढ़ चलते; उरुत्तिरनुम्–रुद्र के भी; उडल् कूश–शरीर के ठिठुरते; आशै ऍङ्कणुम्–सारी दिशाओं में; अम्पु उक–बाण बिखरे; आयिरम् कोटि–(ऐसा) सहस्र कोटि शर; वीचि–चलाकर; विण्णै–आकाश को; वॅळि इलतु–रिक्तस्थानहीन; आक्कितात्–बनाया। २०५८

वीरों के बढ़ते क्रोध के युद्ध का शोर बढ़ गया। इन्द्रजित् ने हजार करोड़ घातक शर चलाकर आकाश को रिक्तस्थानहीन बना दिया। स्वयं रुद्र का शरीर भी कंपित हो गया। २०५८

अत्ति रत्ति लनहनु मायिरम्, पत्ति पत्तियि नॅयहुव पल्हणै
शित्ति रत्तिनिर् चिन्वि यिरावणन्, पुत्ति रऱ्कुमौ रायिरम् बोक्किनान् 1059

असकलन्–अनघ ने भी; अ तिऱत्तिल्–तब; पत्ति पत्तियिल्–पंक्ति-पंक्ति में; ऍयकुव–चलाये गये; पल् आयिरम् कणै–अनेक सहस्र बाण; चित्तिरत्तिनिल् चिन्नति–चित्र-विचित्र रूप से चलाकर (उन्हें काटकर); इरावणन् पुत्तिरऱ्कुम्–रावणि को लक्ष्य बनाकर; ओर् आयिरम् पोक्कितात्–एक सहस्र चलाये। २०५९

अनघ लक्ष्मण ने भी पंक्ति-पंक्ति में अनेक सहस्र बाण चलाये; विस्मयकारी चित्र-विचित्र रूप से इंद्रजित् के उन अस्त्रों को बिखेर दिया और फिर रावणि पर भी एक सहस्र शर चलाए। २०५९

आयि रङ्गणै पाय्दलु माऱ्ऱरुम्, फार्यै रित्तलै नॆय्यॆन्नक् कान्दुरात्
तीय वन्बॆरुज् जेवहन् शॆन्निमेल्, तूय वॆङ्गणै नूऱुडन् तूण्डिनान् 2060

आयिरम् कणै–सहस्र बाण; पाय्तलुम्–चले तो; माऱ्ऱमुम्–अवार्य; कार्यॆरि तलै–जलती आग में; नॆय् ॲन्–घी के समान; कानतुरा–क्रुद्ध होकर; तीयवन्–खल इन्द्रजित् ने; पॆरु चेवकन्–बड़े वीर के; चॆन्नि मेल्–सिर पर; तूय वॆम् कणै–पवित्र व तापक शर; नूऱु–सौ; उटन् तूण्टिनान्–एक साथ चलाये। २०६०

जब वे हज़ार बाण उस पर लगे तब घी पाकर अग्नि जैसे भभक उठती हो वैसा वह दुष्ट कुपित हुआ। उसने बड़े वीर लक्ष्मण के लाल भाल पर शुद्ध और भयंकर अस्त्र, एक सौ, एक साथ चलाये। २०६०

नॆऱ्ऱि मेलॊरु नूऱु नॆडुङ्गण, उऱ्ऱ पोदिनु मियादुमॊन् ऱुऱ्ऱिलन्
मऱ्ऱ वन्तॊऴि लोन्मणि मार्बिडै, मुऱ्ऱ वॆङ्गणै नूऱु मुडुक्किनान् 2061

नॆऱ्ऱिमेल्–भाल पर; ऑरु नूऱु नॆटु कणै–एक सौ अपूर्व शर; उऱ्ऱ पोतिनुम्–जो लगे तब भी; यातु ऑन्ऱुम् उऱ्ऱिलन्–कुछ भी प्रभावित नहीं हुआ; अवन् तॊऴिलोन्–उस समर्थकार्य; मणि मार्पिटै–(इन्द्रजित्) के सुन्दर वक्ष से; मुऱ्ऱ–होकर चलें ऐसा; नूऱु वॆम् कणै–सौ भयंकर शर; मुटुक्किनान्–लक्ष्मण ने छोड़े। २०६१

लक्ष्मण के भाल पर एक सौ अति बलवान बाण लगे; तो भी वह कुछ विचलित नहीं हुए। फिर उस प्रबल कार्य करनेवाले उसके वक्ष को भेद चलनेवाले एक सौ संतापक शर चलाये। २०६१

नूऱु वॆङ्गणै मार्बि नुऴैदलिन्, ऊऱु शोरियॊ डुळ्ळमुञ् जोर्दरत्
तेऱ लान्दुणै युञ्जिलै यून्ऱिये, आऱ्ऱि निन्ऱन नाऱ्ऱलिऱ् ऱोऱ्ऱिलान् 2062

आऱ्ऱलिल्–बल-विक्रम में; तोऱ्ऱिलान्–जो कभी परास्त नहीं हुआ (उस इन्द्रजित् ने); नूऱु वॆम् कणै–सौ संत्रासक शरों के; मार्पिन् नुऴैतलिन्–वक्ष में घुसने पर; ऊऱु चोरियॊटु–निकलनेवाले रक्तस्राव के साथ; उळ्ळमुम् चोर् तर–मन भी थक गया तो; तेऱलाम् तुणैयुम्–सँभलते समय तक; चिलै उन्ऱिये–रथ पर अचल खड़ा रहा (या धनु टेककर) और; आऱ्ऱि निन्ऱनन्–स्तब्ध खड़ा रहा। २०६२

अजेय इन्द्रजित् का मन, इनके लगने पर शिथिल पड़ गया। शरीर रक्त से लथपथ हो गया। वह शिथिलता दूर होते तक रथ पर विश्रांत और अचल (धनु टेककर) खड़ा रह गया। २०६२

पुवैयु नन्मणिप् पॊन्नुरु ळच्चॊडुम्, शिदैय वायिरम् वाय्पऱि शिन्दिड
ववैयिन् मऱ्ऱॊरु कूऱ्ऱॆन मारुदि, उदैयि नालवन् ऱेरै युरुट्टिनान् 2063

बतैयिल्-(शिवजी द्वारा) जो मारा नहीं गया उस; मऱ्ऱोर कूऱ्ऱु अन-अन्य यम के समान; मारुति-मारुति ने; पुतैयुम्-धँसते चलनेवाले ने; नल् मणि-श्रेष्ठ मणियों और; पॊन् उरुळ्-स्वर्ण से निर्मित पहिये; अच्चोटुम् चितैय-धुरी के साथ टूट जाएँ ऐसा; पाय् परि-सरपट भागनेवाले अश्व; चिन्तिट-मिट जाएँ ऐसा; उतैयिताल्-लात मारकर; अवन् तेरै-उसके रथ को; उरुट्टिनान्-लुढ़का दिया। २०६३

तब मारुति ने, जो उस अन्य यम के समान था, जिसे शिवजी ने नहीं मारा हो, एक ही लात मारकर उसके रथ को लुढ़का दिया जिससे श्रेष्ठ मणि-स्वर्णनिर्मित पहिये धुरी के साथ टूट गये और सरपट भागनेवाले अश्व भी मर गये। २०६३

पेयॊ रायिरम् पूण्डवु पॆय्म्मणि, एय तेरिमैप् पित्तिडै येऱिनान्
तूय वन्ऱुडर्त् तोळिणैमेऱ् चुडर्, तीय् वॆङ्गणै यॆम्बदु शिन्दिनान् 2064

ओर् आयिरम् पेय्-एक हज़ार पिशाचों से; पूण्टतु-युक्त; पॆय्मणि एय-अनेक रत्नों से जटित; तेर्-रथ पर; इमैप्पित् इटै-पलक मारती देर के अन्दर; एऱिनान्-चढ़ा; तूयवन्-पावनपुरुष के; चुटर् तोळ्-उज्ज्वल कंधों के; इणै मेल्-जोड़े पर; चुटर्-ज्वलन्त; तीय-नाशक; वॆम् कणै-कठोर अस्त्र; चिन्तितात्-भरपूर चला दिये। २०६४

इन्द्रजित् पल भर में दूसरे एक रथ पर आरूढ़ हो गया, जिससे एक हज़ार भूत जुते थे और जिसमें उत्तम मणियाँ जड़ी थीं। फिर उसने पावन पुरुष लक्ष्मण के उज्ज्वल स्कन्धद्वय पर ज्वलंत, नाशकारी और भयंकर बाण चलाये। २०६४

एऱि येऱि यिऴिन्ददल् लालिहल्, वेऱु शॆय्दिलन् वॆय्यवन् वीरनुम्
आऱु कोडि पहऴियि नैयिरु, नूऱु तेरॊरु नाऴिहै नूऱिनान् 2065

वॆय्यवन्-क्रूर इन्द्रजित् ने; एऱि एऱि इऴिन्ततु अल्लाल्-चढ़ा और उतरा, यही क्रम छोड़कर; वेऱु इकल् चॆय्तिलन्-कोई दूसरा युद्ध नहीं किया; वीरनुम्-वीर लक्ष्मण ने भी; आऱु कोटि पकऴियिन्-छः करोड़ अस्त्रों से; ऐयिरु नूऱु तेर्-(पाँच × दो × सौ =) एक हज़ार रथों को; ओरु नाऴिकै-एक घड़ी में; नूऱिनान्-तोड़-फोड़ दिया। २०६५

लक्ष्मण ने इन्द्रजित् के रथों को, जिन पर वह बारी-बारी से सवार हुआ, मिटा दिया। इसलिए रथ पर चढ़ना-उतरना, यही क्रम रहा। उसके सिवा वह और कोई युद्ध नहीं कर पाया। वीर लक्ष्मण ने छः करोड़ शर चलाकर एक घड़ी के अन्दर एक हज़ार रथों को मिटाया। २०६५

आशि कूऱिन रार्त्तन राय्मलर्, वीशि वीशि वणङ्गिनर् विण्णवर्
ऊशल् नीङ्गिन रुत्तरि हत्तोडु, तूशु वीशिनर् नन्तॆऱि तुन्निनार् 2066

नल् नॅऱि तुलुत्तिनार्–आकाशमार्ग में जो पिल पड़े थे उन; विण्णवर्–देवों ने; भाषि कूऱिनर्–आशीर्वाद दिये; आर्त्तनर्–उच्च घोष किया; आय्मलर्–श्रेष्ठ सुमनों को; वीचि वीचि वऴुत्तिनर्–अर्पण कर स्तुति की; ऊचल् नीक्किनर्–चंचलता छोड़ी; उत्तरीयत्तोट–उत्तरीय के साथ; तूष् वीचिनर्–(अधो-) वस्त्र को भी उठाकर फेंका। २०६६

आकाशस्थित देवों ने यह अद्भुत देखकर आशीर्वाद दिये। उच्च आनन्द-रव किया। उत्तम सुमनों को बरसाकर स्तुति की। मन की चंचलता से छूटे। और उत्तरीय के साथ अधोवस्त्र भी उछाले। २०६६

अक्क णत्ति नॊरायिर मायिरम्, मिक्क वॆङ्ग णरक्करव् वीरनो
डॊक्क विऩ्ब मॊरुवऴि यूणितार्, पुक्कु मुऩ्दिनर् पोरिडॆप् पोऩ्ऱुवार् 2067

अ कणत्तिल्–उस समय; अ वीरनोटु–उस वीर (इन्द्रजित्) के साथ; ओक्क–समान रूप से; इऩ्पम्–सुख भोगने और; ऊणितार्–भोजन करनेवाले; मिक्क वॆम् कण्–अति दुष्ट; ओर् आयिरम् आयिरम् अरक्कर्–एक लाख राक्षस; पोऩ्ऱुवार्–मरने को तैयार होकर; पोर् इटै पुक्कु–युद्ध में घुसकर; ओरु वऴि–एक साथ; मुऩ्तिनर्–लड़ने लगे। २०६७

तब इन्द्रजित् के सहभोजी और भोगी एक लाख दुष्ट राक्षस मरण का वरण करके युद्धस्थल में आये और लड़ाई में प्रवृत्त हो गये। २०६७

तेरर् तेरि ऩिवुऴियर् शॆम्मुहक्, कारर् कारि ऩिडिप्पिनर् कण्डॆयिऩ्
तारर् तारणि युम्विशुम् बुऩ्दवऴ्, पेरर् पेरि मुऴक्कऩ्ऩ पेच्चिनार् 2068

तेरिऩ्–खूब सोचा जाय तो; तेरर्–रथी और; इवुऴियर्–अश्वारोही वीर; चॆम्मुकम् कारर्–लाल बिंदियों वाले गजों के वीर; कारिऩ् इटिप्पिनर्–मेघ-सम गर्जन करनेवाले; कण्टॆयिऩ् तारर्–घंटियोंदार हार वाले; तारणियुम्–भूतल में और; विचुम्पुम्–आकाश में; तवऴ्–चलने में समर्थ; पेरर्–नामी; पेरि मुऴक्कु अऩ्ऩ–भेरियों के नाद के समान; पेच्चिनार्–वाणी वाले। २०६८

उनके बारे में अन्वेषण किया जाय तो लगेगा कि वे रथ-तुरग-गज वीर मेघ-सम गर्जन करनेवाले थे। घंटियोंदार हारों से अलंकृत थे। आकाश और भूमि में चलने में समर्थ थे और विख्यात थे। भेरियों के नाद के समान वाणी वाले थे। २०६८

पार्त्त पार्त्त तिशैदॊऱुम् बल्मऴै, पोर्त्त वाऩ मॆऩविडि पोर्त्तऴ
आर्त्त वोदैयु मम्बॊडु वॆम्बडै, तूर्त्त वोशैयुम् विण्णिऩैत् तूर्त्तवाल् 2069

पार्त्त पार्त्त–जहाँ-जहाँ देखा; तिचैतोऱुम्–उस दिशा-दिशा में; पल् मऴै पोर्त्त–अनेक मेघों से आच्छादित; वाऩम् ऎऩ–आकाश के समान; इटि पोर्त्तु अऴ–वज्रनाद कर उठे; आर्त्त ओतैयुम्–ऐसा वीरों ने जो घोष किया वह शोर और;

अम्पोडु–अस्त्रों के साथ; वॆम् पटै–भयंकर अस्त्र; तूर्तुत–जो चलाये गये; ओवॆयुम्–महु शोर; विण्णिनै–आकाश को; तूर्तुत–ढाँप गये। २०६९

दिखती सभी दिशाओं में मेघाच्छादित आकाश की अशनि के समान वीरों के मेघगर्जन का शोर और शरों और हथियारों के चलने का शोर आकाश को ढाँप गया। २०६९

आळि यार्त्तन वाळरि यार्त्तन, कूळि यार्त्तन कुञ्जर मार्त्तन
वाळि यार्त्तन वानवर् मण्डिलम्, तूळि यार्त्तिल दाऱ्पिणन् दुन्ऩलाल् 2070

आळि आर्त्तत–'याळि' (शरभ) गरजे; वाळरि आर्त्तत–सिंह गरजे; कूळि आर्त्तत–पिशाच चिल्लाये; कुञ्चरम् आर्त्तत–गज चिंघाड़े; वाळि आर्त्तत–चक्राकर घूमनेवाले अश्व हिनहिनाये; वानवर् मण्डिलम्–देवलोक; पिणम् तुन्नलाल्–लाशों से भरने से; तूळि आर्त्तिलतु–धूल को ऊपर उठने नहीं देता था। २०७०

'याळि'यों (शरभों ने) नाद किया। केसरी गरजे। भूत चिल्लाये। गज चिंघाड़े। चक्राकार भागनेवाले अश्व हिनहिनाये। देवलोक ने लाशों से भरे रहने के कारण धूल को ऊपर उठने नहीं दिया। २०७०

वन्द णॆन्ऱवीर् वाळरि वावुतेर्, इन्दि रऩ्ऱनै वॆन्ऱव नेऱिनात्
शिन्दि नन्शर मारि तिशैतिशै, अन्दि वण्णनो रम्बि नहऱ्ऱिनात् 2071

वन्तु अणैन्ततु–आ मिला; 'ओर् वाळ् अरि वावु तेर्–एक क्रूर सिंहों से युक्त और झपट चलनेवाला रथ (उस पर); इन्तिरन् तनै वॆन्ऱवन्–इन्द्रजित्; एऱिनात्–चढ़ा; शरम् मारि–शर-वर्षा; तिशै तिशै चिन्तिनन्–दिशा-दिशा में करायी; अन्ति वण्णन्–संध्यागगनवर्ण (लक्ष्मण) ने; ओर् अम्पिन्–एक अस्त्र से; अकऱ्ऱिनान्–रोक दिया। २०७१

इन्द्रजित् एक रथ पर चढ़ा, जो उधर लाया गया और जिससे खूनी सिंह जुते थे। उस पर से उसने सभी ओर शर-वर्षा करायी। संध्यागगन-वर्ण सुमित्रानन्दन ने एक ही बाण से उन्हें रोक दिया। २०७१

शुऱ्ऱम् वन्दु परन्दु तॊडर्न्दवर्, ऎऱ्ऱु हिन्ऱन वॆय्द वॆऱिन्दन
अऱ्ऱु तीर्न्दन वायिरम् वन्ऱलै, ऒन्ऱॆ वॆङ्गणै योडु मुरण्डवाल् 2072

चुऱ्ऱम् वन्तु–चारों ओर आकर; परन्तु तॊटर्न्तवर्–(जो राक्षस) बराबर लगे रहे उन राक्षसों के; ऎऱ्ऱुकिन्ऱन–पीटनेवाले; ऎय्त–चलाये गये; ऎऱिन्तन–फेंके गये (हथियार); अऱ्ऱु उतिर्न्तन–कटे, चूर हुए; आयिरम् वन् तलै–हजार कठोर सिर; ऒन्ऱे–एक ही; वॆम् कणैयोटुम्–भयंकर बाण के द्वारा; उरुण्ट–लोट गये। २०७२

जो राक्षस घेर आये उन्होंने हथियार फेंके, चलाये और मारे। वे सब लक्ष्मण के शरों से चूर-चूर होकर चू पड़े। हज़ार कठोर सिर एक ही भयंकर बाण से कटकर लोट गये। २०७२

कुडर्हि डन्दत्त पाम्बॅनक् कोण्मदि, तिडर्हि डन्दन शिन्दित्त तेर्त्तिरळ्
पडर्हि डन्दत्तर् पल्पडक् कैयित्तर्, कडर्हि डन्दन पोऩ्ऱ कळत्तिऩे 2073

कुटर् किटन्तत पोऩ्ऱ–समुद्र पड़ा हो जैसे; कळत्तित्ते–युद्धाजिर में; कुटर्–आँतें; पाम्पु अॅत किटन्तत–सर्पों के समान पड़ी रहीं; कोण् मति–ग़जय के बल के गज; तिटर् किटन्तत–टीलों के समान पड़े रहे; तेर्–रथ; तिरळ् चिन्तित्त–खण्ड-खण्ड हुए और बिखर गये; पल्–अनेक; पटै कैयितर्–हथियार हाथ में रखने वाले; पटर् किटन्तत्तर्–वीर विस्तृत क्षेत्र में पड़े रहे। २०७३

युद्धांगन समुद्र के समान रहा। उसमें आँतें सर्पों के समान पड़ी रहीं। बलवान मदमत्त गज टीलों के समान पड़े रहे। रथों के खण्ड इधर-उधर पड़े रहे। अनेक हथियारधारी वीर यत्र-तत्र पड़े रहे। २०७३

कुण्ड लङ्गळु मारमुङ् गोवैयुम्, कण्ड नाणुङ् गळलुङ् गवशमुम्
शण्ड मारुदम् वीशत् तलत्तुहुम्, विण्ड लत्तितिऩ् मीनॅन वीऴ्न्दवाल् 2074

कुण्टलङ्कळुम्–कुंडल; आरमुम्–और हार; कोवैयुम्–लड़ियाँ; कण्टम् नाणुम्–और कण्ठहार; कळलुम्–वीर पायलें; कवचमुम्–और कवच; चण्टम् मारुतम् वीच–चंडमारुत के बहने से; तलत्तु उकुम्–भूमि पर गिरनेवाले; विण् तलत्तितिऩ्–आकाश के; मीऩ् अॅत–नक्षत्रों के समान; वीऴ्न्त–चू गये। २०७४

कुंडल, हार, लड़ियाँ, कंठहार, पायलें, कवच आदि प्रचण्डमारुत में आकाश के नक्षत्र-जैसे चू गये। २०७४

अरक्कन् मैन्दनै यारिय नम्बिनाल्, करक्क नूऱ्ऱि यॅदिर्पॊरु कण्डहर्
शिरक्कॊ डुङ्गुवैक् कुन्ऱु तिरट्टिनान्, इरक्क मॅय्दिवॅङ् गालनु मॅञ्जवे 2075

आरियन्–लक्ष्मण ने; अरक्कन् मैन्तनै–राक्षसपुत्र को; अम्पिताल्–अपने बाणों से; करक्क नूऱ्ऱि–छिपाते हुए चलाकर; वॆम् कालतुम्–भयंकर यम भी; इरक्कम् अॅय्ति–पछताकर; अॅञ्च–हट जाए ऐसा; अॅतिर् पॊरु–सामना करनेवाले; कण्टकर्–कंटकों के; कॊटु चिरम्–क्रूर सिरों के; कुवै कुन्ऱु–ढेरों के पर्वत; तिरट्टितान्–एकत्र कर लिये। २०७५

लक्ष्मण ने राक्षसपुत्र को अपने बाणों से ढँक-सा दिया। लड़नेवाले कंटकों के सिरों के ढेर-से लगा दिये। यह देख यम भी पछताकर हट गया। २०७५

शुऱ्ऱि वाल्कॊडु तूवुन् दुवैक्कुम्विट्, टॆऱ्ऱुम् वाति नॆडुत्तॆरि युम्मॆदिर्
उऱ्ऱ मोदु मुवैक्कु मुळक्कुमाल्, कॊऱ्ऱ विल्लियन् ऱेऱिय कूऱ्ऱमे 2076

कॊऱ्ऱम् विल्लि–विजयी धनुर्धर; अन्ऱु–उस दिन; एऱिय कूऱ्ऱम्–जिस पर चढ़े थे वह यम (मारुति); वाल् कॊटु–अपनी पूंछ से; चुऱ्ऱि तूवुम्–(राक्षसों को) चारों ओर पटकता; तुवैक्कुम्–पैरों से रौंदता; विट्टु अॅऱ्ऱुम्–ठोकर मारता;

वालित् अँडुत्तु अँड्रियुम्–आकाश में ले उछालता; अँतिर् उड्रु–सामने जा; मोतुम्–टकराता; उतैक्कुम्–लात मारता; उळक्कुम्–दुःखी करता। २०७६

विजयी वीर का वाहन हनुमान मानो यम था। वह पूँछों से पकड़कर राक्षसों को इधर-उधर पटकता। पैरों से रौंदता। आकाश में ले उछालता। सामने जाकर टकराता। लात मारता। दुःखी करता। २०७६

पार्क्कु मञ्ज उरुक्कुम् पहट्टिनाल्
तूर्क्कुम् वेलैयैत् तोळ्पुडै कॉट्टिनित्तु
आर्क्कु मायिरन् तेर्पिडित् तङ्गैयाल्
ईर्क्कु मैयतन् ऍड्रिय यानैये 2077

ऐयत् अन्ड्रु एड्रिय यानै–प्रभु जिस पर चढ़े थे वह गज (-हनुमान); अञ्च पार्क्कुम्–भय में डालते हुए तरेरता; उरुक्कुम्–डाँटता; पकट्टिनाल्–गजों से; वेलैयै तूर्क्कुम्–समुद्र को पाटता; तोळ् पुडै कॉट्टि निन्ड्रु–कंधों को ठोंकते हुए खड़ा रहता और; आर्क्कुम्–गर्जन करता; अम् कैयाल्–सुन्दर हाथ से; आयिरम् तेर् पिटित्तु–हज़ार रथों को पकड़कर; ईर्क्कुम्–खींचता। २०७७

प्रभु का वाहन मारुति गज-सा था। वह शत्रुओं का दिल दहलाते हुए उन्हें तरेरता। डाँटता। गजों को उठाकर समुद्र को पाटता। कंधे ठोककर खड़ा होता और नर्दन करता। अपने सुन्दर हाथ से हज़ार रथों को पकड़ खींचता। २०७७

मावु मियानैयुम् वाळुडैत् तानैयुम्, पूवु नीरुम् पुत्तळि रम्मॅन्त्
तूवु मळ्ळुम् पिशैयुन् दुहैक्कुमाल्, शेव हत्तॅरिन् देड्रिय शीयमे 2078

चेवकत्–वीर; तॅरिन्तु एड्रिय–विवेक करके जिस पर सवार थे; चीयम्–वह सिंह (हनुमान); मावुम्–अश्वों; यानैयुम्–गजों और; वाळ् उटै–तलवारधारी; तानैयुम्–पदाति वीरों को; पूवुम् नीरुम्–पुष्प व जल; पुत्तळिरुम् अॅन्त–सुन्दर पल्लवों के समान; तूवुम्–ले छितराता; अळ्ळुम्–उठा लेता; पिशैयुम्–पीसता; तुवैक्कुम्–रौंदता। २०७८

वीर जिस पर खूब विवेक कर सवार हुए थे वह मारुति सिंह था। वह अश्वों, गजों और तलवारधारी पदाति वीरों को पुष्प, जल और मृदु पल्लवों के समान बिखेरता, उठाता, पीसता और रौंदता। २०७८

उरहम् बूण्ड वुरुळै पॉरुन्दिन्, इरद मायिर मेयॅनु मात्तिरै
शरद माहत् तरैप्पडच् चाडुमाल्, वरद नन्रुवन् देड्रिय वाशिये 2079

वरतन्–वरद लक्ष्मण; अन्ड्रु–उस दिन; उवन्तु एड्रिय–आनन्द के साथ जिस पर चढ़े; वाचि–वह अश्व (हनुमान); उरकम् पूण्ट–सर्पयुक्त; उरुळै पॉरुन्तिन्–पहियोंवार; आयिरम् इरतम्–हज़ार रथों को; ए अॅनुम् मात्तिरै–'ए'

कहने की देर के अन्दर; वरतमाक-खेल ही खेल में; तरै पट-भूमि पर गिरें; चाडुम्-ऐसा पीटता। २०७९

वरद द्वारा आरूढ़ वाजी-सम वायुपुत्र सर्पयुक्त व पहियोंदार हज़ार रथों को 'ए' कहने की देर के अन्दर खेल ही खेल में ले भूमि पर पटक देता। २०७९

अब्वि डत्तिऩि लाय्मरुन् दालळ्ल्, वॅव्वि डत्तितै युण्डवर् मीण्डॅऩ
ऑव्वि डत्तिऩुम् वीऴ्न्द विऩत्तलेत्, तॅव्व डक्कुम् वलियवर् तेऱिऩार् 2080

अ इटत्तितिल्-तब; अऴल् वॅव्विटत्तितै-गरम और घातक विष को; उण्टवर्-जिन्होंने खा लिया; आय् मरुन्ताल्-उत्तम दवा से; मीण्टॅऩ-फिर जाग गये हों, ऐसे; ऑव्विटत्तिऩुम् वीऴ्न्त-सर्वत्र (मूर्च्छित) पड़े रहे; इऩम् तलै-वानर-समूह को; तॅव् अटक्कुम्-शत्रुपरास्तकारी; वलियवर्-वीर; तेऱिऩार्-होश में आ गये। २०८०

तब वानरगणों के वीर मूर्च्छा से ऐसा जागे मानो विषभोक्ता मनुष्य श्रेष्ठ दवा के कारण जाग उठे हों। २०८०

तेऱि ताऱ्ह णॅरुप्पुहच् चीऱिऩार्, ऊऱि ऩार्वन् दिळवलै यॉत्तिऩार्
माऱु माऱु मलैयु मरङ्गळुम्, नूऱु मायिर मुङ्गॉड् नूऱिऩार् 2081

तेऱिऩार्कळ्-जो होश में आ गये थे (वानर वीर); नॅरुप्पु उक-आग निकल आये ऐसा; चीऱिऩार्-नाराज हुए; ऊऱिऩार् वन्तु-सटे हुए आकर; इळवलै ऑत्तिऩार्-लघुराज के समीप हुए; माऱुमाऱु-शत्रुओं के विरुद्ध; मलैयुम् मरङ्कळुम्-पर्वतों और तरुओं को; नूऱुम् आयिरमुम् कॉण्टु-सैकड़ों और हजारों की संख्या में ले; नूऱिऩार्-मार मिटाया। २०८१

होश में आकर वे वानर वीर आगबबूला हो आगे सटे आये, लघुराज लक्ष्मण के समीप हुए और शत्रुओं के विरुद्ध पर्वतों व तरुओं को सैकड़ों व हज़ारों की तादाद में दे मारकर राक्षसों का नाश किया। २०८१

विहड मुऱ्ऱ मरत्तॊडु वॅऱ्पिऩम्, पॊहड वुऱ्ऱ पॊऱुत्तऩ पोवऩ
तुहड वत्तॊऴिल् शॅय्युऱक् कम्मियर्, शहड मॊत्तऩ तारणि तेरॅलाम् 2082

विकटम् उऱ्ऱ-विविध; मरत्तॊटु-तरुओं के साथ; वॅऱ्पु इऩम्-पर्वतसमूहों को; पॊकट-फेंकने पर; उऱ्ऱ-उससे प्राप्त कष्ट; पॊऱुत्तऩ-पाकर; पोवऩ-जो मिटे; तार् अणि तेर् ऍलाम्-हारालंकृत सभी रथ; कम्मियर्-कारीगरों के; तुकळ् तव-निर्दोष रीति से; तॊऴिल् चॅय्-कर्म करने के; तुऱै-स्थानों पर पाये जानेवाले; चकटम् ऒत्तऩ-अधूरे रथों के समान लगे। २०८२

जब उन्होंने विविध तरुओं और पर्वतसमूहों को फेंका तो उनसे अनेक हारों से अलंकृत रथ आहत हो टूट गये। तब वे बढ़इयों के कर्म-स्थल पर अधूरे बने रहनेवाले रथों की मानिंद लगे। २०८२

वालि मैन्दत्तोर् मामरम् वाङ्गितान्, कालिन् वन्द वरक्कर्नैक् काविदु
पोलु मुन्नुयि रुण्बदु पुक्कॆन्ना, मेलॆनि मिरन्दु नॆरुप्पुह वीशितान् 2083

वालि मैन्तन्–वाली के पुत्र ने; ओर् मामरम् वाङ्कितान्–एक सालवृक्ष उखाड़ लिया; कालिन् वन्त–रथ पर आये; अरक्कर्न–राक्षस को (देख); इतु पुक्कु–इसके प्रवेश करके; उन् उयिर् उण्पतु–तुम्हारी जान खा लेने से; का–अपने को बचा लो; ऎन्ना–कहकर; मेल् ऎऴुन्तु–ऊपर उछलकर; नॆरुप्पु उक–आग निकालते हुए; वीचितान्–फेंका। २०८३

वाली के पुत्र अंगद ने एक सालवृक्ष उखाड़ लिया। रथ पर सवार हो आये इन्द्रजित् से बोला कि देखो यह तुम्हारे अन्दर प्रवेश करके तुम्हारी जान खानेवाला है। उससे अपने को बचा लो। कहकर उसने उसे फेंका और उससे अंगारे छूट निकले। २०८३

एर ऴित्तदु शॆय्दव नीण्डॆऴिल्, शीर ऴित्तव नामॆनत् तेवर्हळ्
ऊर ऴित्त वुयर्वरैत् तोळवन्, तेर ऴित्त दिमैप्पिनिर् चॆन्ऱदाल् 2084

एर् अऴित्ततु चॆय्तवन्–सुन्दरता से हीन (अभद्र) कर्मकारी रावण के; ईण्ट ऎऴिल् चीर्–पूर्ण बल की श्रेष्ठता को; अऴित्तवन् आम्–जिसने मिटा दिया; ऎन–ऐसा कहने योग्य रीति से; तेवर्कळ् ऊर् अऴित्त–देवों के नगर के नाशक और; उयर् वरै–उन्नत पर्वत-सम; तोळवन्–कंधों वाले के; तेर्–रथ को; इमैप्पितिल्–पल भर में; अऴित्ततु चॆन्ऱतु–मिटाता चला। २०८४

"अभद्र कार्य करनेवाले रावण के ही श्रेष्ठ बल को मिटा दिया इसने।" ऐसा लोग कह उठें, इस रीति से देवलोकनाशक उन्नत-स्कंध-इन्द्रजित् के रथ को एक पल में वह वृक्ष मिटाता चला। २०८४

अन्द वेलैयि नार्त्तॆऴुन् दाडिनार्, शिन्दै शीरि तुयर्न्दनर् तेवर्हळ्
तन्दै तन्दैपण् डुऱ्ऱ शळक्कॆलाम्, ऎन्दै तीर्त्तन नॆन्बदो रेम्बलाल् 2085

अन्त वेलैयिल्–तब; तेवर्कळ्–देव; चिन्तै चीरित् उयर्न्तनर्–मन की ऊँचाई में बढ़े हुए; पण्टु–पहले; तन्तै तन्तै–पितामह का; उऱ्ऱ चळक्कु ऎलाम्–प्राप्त पराभव सब; ऎन्तै–हमारे तात (अंगद) ने; तीर्त्तनन्–मिटा दिया; ऎन्पतु ओर् एम्पलाल्–इस एक आनन्द से; आर्त्तु–शोर मचा; ऎऴुन्तु–उठे और; आटिनार्–नाचे। २०८५

तब देवों का मन उन्नत हुआ। उन्होंने कहा कि हमारे तात इसने अपने दादा इन्द्र पर मेघनाद के हाथों हुए पराभव को दूर कर दिया है। इस आनन्द से वे नर्दन कर उठे और नाचे। २०८५

अऴिन्द तेरिनिन् ऱुन्दरत् तक्कणत्, तॆऴुन्दु मऱ्ऱो रिरदमुऱ् ऱेऱिनान्
कऴिन्दु पोहलै निल्लॆनक् कैक्कणै, पॊऴिन्दु शॆन्ऱनन् तोयॆनप् पोङ्गितान् 2086

अ कणत्तु–उस समय; अऴिन्त तेरिन्–टूटे रथ पर से; अन्तरत्तु

ऍऴुन्तु–आकाश में उछलकर; मट्रु ओर् इरतम्–दूसरे एक रथ से; उट्रु–लगकर; एऱिनान्–उस पर सवार हुआ; ती ॲन–आग के समान; पोङ्किनान्–खोल उठा; कऴिमिनु पोकल्–हट जाओ मत; निल्–खड़े रहो; ॲन–कहकर; कै कणै पोऴिन्तु–हाथ के बाणों को धड़ाधड़ चलाते हुए; ॲन्ट्रतन्–आगे बढ़ आया। २०८६

इन्द्रजित् टूटे रथ पर से उछला और दूसरे एक रथ पर सवार हुआ। आग के समान भभककर उसने अंगद को डाँटा कि हटकर मत चलो। खड़े रहो। अपने हाथ के अस्त्रों को बेतहाशा चलाते हुए वह आगे बढ़ा। २०८६

इनदि रन्महन् मैन्दनै यिन्नुयिर्, तनदु पोहॆनच् चारलुट् ऱ्रान्ट्रनै
वनदु मट्रैय वानर वीररुम्, मुनदु पोर्क्कु मुऱैमुऱै मुट्रिनार् 2087

इन्तिरन् मकन् मैन्तनै–इन्द्र के पुत्र (वाली) के पुत्र को (देख); इन् उयिर्–प्यारे प्राण; तन्तु पोक–दे जाओ; ॲन–कहकर; चारल् उट्रान् तनै–बढ़ आने वाले को; मट्रैय वानर वीररुम्–अन्य वानर वीर; मुन्तु वन्तु–आगे आकर; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; पोर्क्कु–युद्ध करने; मुट्रिनार्–घेर गये। २०८७

अंगद से यह कहते हुए कि तुम अपने प्राण देकर चलो, उसके सामने आनेवाले इन्द्रजित् से लड़ने के लिए अन्य वानर वीर भी आ गये और बारी-बारी से उससे युद्ध करने लगे। २०८७

मरमुङ् गुन्ऱु मडिन्द वरक्कर्तल्, शिरमुन् देरुम् पुरवियुम् तिण्करिक्
करमु माळियुम् वारिक् कडैयवन्, शरमुन् दाऴ्दर वीशिनर् ताङ्गिनार् 2088

मरमुम् कुन्ऱुम्–तरुओं और पर्वतों; मटिन्त अरक्कर् तम्–मरे हुए राक्षसों के; शिरमुम्–सिरों; तेरुम् पुरवियुम्–रथों और अश्वों को; तिण् करि–सशक्त गजों की; करमुम्–सूंड़ों को; आळियुम्–और सिंहों को; वारि–उठा लेकर; कडैयवन् शरमुम्–अधम इन्द्रजित् के बाणों को भी; ताऴ् तर–पिछड़ने देते हुए; वीशिनर् ताङ्किनार्–फेंककर रोकते रहे। २०८८

वानर वीरों ने तरुओं, पर्वतों, मरे हुए राक्षसों के सिरों, रथों, अश्वों, सबल गजों की सूंड़ों और सिंहों को अपने हाथों से उठाकर इतनी तेज़ी से फेंका कि अधम इन्द्रजित् के शर भी पिछड़ गये। उन्होंने उसे ऐसा रोकने का प्रयास किया। २०८८

अनैय कालैयि लायिर मायिरम्, विनैय वॆङ्ग णरक्करै विण्णवर्
निनैयु मात्तिरत् तारुयिर् नीक्किनान्, मनैयुम् वाऴ्वु मुऱक्कमु माट्रिनान् 2089

अनैय कालैयिल्–उस समय; मनैयुम्–गृहवास; वाऴ्वुम्–सुखमय जीवन और; उऱक्कमुम्–निद्रा को; माट्रिनान्–जिसने छोड़ दिया था, (उन लक्ष्मण ने); विनैयम्–युद्धकार्यदक्षता; वॆम् कण्–क्रूर स्वभाव के; आयिरम् आयिरम् अरक्करै–हज़ारों राक्षसों को; विण्णवर् निनैयुम् मात्तिरत्तु–देवों के सोचने के समय के अन्दर ही; आर् उयिर् नीक्किनान्–प्यारे प्राणों से हीन कर दिया। २०८९

उस समय में गृहवास, सुखमय जीवन और निद्रा जो त्याग चुके थे, उन लक्ष्मण ने हज़ारों की तादाद में युद्धकुशल और क्रूर राक्षसों के प्यारे प्राण, देवों की भी सोचने की मन की गति से भी अधिक त्वरित गति से निकाल दिये। २०८९

आनै युन्दडन् देरुन्दन् नारुयिर्त्, तानै युम्बरि युम्बट्ट तन्मैयै
मान वॅङ्ग णरक्कन् महन्गॉळाप्, पोन वॅन्रियन् तीयॅनप् पॉङ्गिनान् 2090

मानम् वॅम् कण्–अभिमान और क्रूरता से भरे; अरक्कन् मकन्–राक्षस (रावण) का पुत्र; आनैयुम्–गजों; तट तेरुम्–विशाल रथों; तन् आरुयिर्–अपने प्यारे प्राण-सम; तानैयुम्–सेनावीरों; परियुम्–और अश्वों के; पट्ट तन्मैयै–मरने का प्रकार; कॉळा–मन में लेकर; पोन वॅन्रियन्–विजयच्युत हो; ती ऑन–आग के समान; पॉङ्कितान्–भभक उठा। २०९०

गर्वीले और क्रूर राक्षस राजा के पुत्र इन्द्रजित् ने गजों, बड़े-बड़े रथों और अपने प्राणप्यारे वीरों के मरने का हाल देखा तो उसे लग गया कि विजय हाथ से छूट गयी है। तब वह अनल के समान खौल उठा। २०९०

शोर्त्त डम्बॅरुञ् जिल्लियन् देरिनर्
कात्तु निन्ड्र विरुवरैक् कण्डनन्
आर्त्त तम्बॅरुञ् जेनैकॉण् डण्डमेल्
ईर्त्त शोरिप् परवैनिन् ड्रीर्त्तलाल् 2091

आर्त्त–उच्चगर्जनकारी; तम् पॅरु चेनै–अपनी बड़ी सेना; कॉण्टु–उठा लेकर; अण्टम् मेल् ईर्त्त–अण्ड की चोटी से टकरानेवाला; चोरि परवै–रक्त-प्रवाह; निन्ड्र–रहकर; ईर्त्तलाल्–खींचता रहा इसलिए; कात्तु निन्ड्र–(परिश्रम से) अपने को जो बचाये रहे उन; चोर्–श्रेष्ठ; तट पॅरु–बहुत बड़े; अम्–सुन्दर; चिल्लि तेरितर्–पहियोंदार रथ के सवार; इरुवरै–दोनों (धूम्राक्ष और महापार्श्व) को; कण्टतन्–(इन्द्रजित् ने) देखा। २०९१

प्रबल गर्जन करनेवाली सेना को भी खींच ले जाता हुआ रक्त-प्रवाह अंड की चोटी से टकराया। वह इन्द्रजित् के विशाल, श्रेष्ठ और सुन्दर पहियोंदार रथ को भी बहा ले जाने का प्रयास करने लगा। पर उसे रोककर उसकी रक्षा कर रहे थे धूम्राक्ष और महापार्श्व दो राक्षस। इन्द्रजित् ने उन्हें देख लिया। २०९१

नेर्शॅलाविडै निन्ड्रनर् नीणॅडुम्, कार्शॅलाविरुळ् कीड्रिय कण्णहल्
तेर्शॅलादु विशुम्बिडैच् चॅल्वदोर्, पेर्शॅलादु पिणत्तिन् पिरक्कमे 2092

पिणत्तिन् पिरक्कम्–लाशों के पर्वतों के कारण; नीळ्–लम्बे; नॅटु कार्–बड़े मेघ; नेर् चॅला–(ऊपर) सीधे जा नहीं सके; इरुळ् कीड्रिय–अन्धकार चीरनेवाला (दूर करनेवाला); कण् अकल् तेर्–विशाल (सूर्य का) रथ; चॅलातु–नहीं जा

सका; विचुम्पिटै चॅल्वतु–आकाशचारी; ओर् पेर् चॅला–कोई भी जीव नहीं जा सका; नेर् चॅलातु–(वे दोनों भी) आगे न जा सके और; इटै निन्ऱनर्–(एक ही) स्थान में खड़े रहे। २०६२

लाशों के ढेर पर्वतों के समान बने पड़े थे। इसलिए उनके ऊपर से न मेघ जा सके, न सूर्य का अंधकारनाशक विशाल रथ। न ही आकाश-चारी कोई जीव जा सका। और दोनों राक्षस भी आगे न चल सके और वहीं खड़े रहे। २०९२

अन्ऱु तन्नयल् निन्ऱ अरक्करै, ऑन्ऱु वाळ्मुह नोक्कि यॊरुविलान्
नन्ऱु नम्बडै नाऱ्पदु वॆळ्ळमुम्, कॊन्ऱु निन्ऱ पडियॆनक् कूऱिनान् 2093

अन्ऱु–तब; तन् अयल् निन्ऱ–अपने पास जो खड़े रहे; अरक्करै–उन राक्षसों के; वाळ् ऑन्ऱु मुकम् नोक्कि–प्रकाशमय चेहरे देखकर; ऑरु विलान्–अनुपम धनुर्धर; नम् पटै–हमारी सेना के; नाऱ्पतु वॆळ्ळमुम्–चालीस 'वॆळ्ळम्' को; कॊन्ऱु निन्ऱ पटि–मारकर खड़ा रहता, यह प्रकार; नन्ऱु–खूब है; ऍन्न कूऱिनान्–ऐसा कहा (इन्द्रजित् ने)। २०६३

तब इन्द्रजित् ने अपने पास खड़े रहे उन दोनों वीरों के प्रकाशमय चेहरे देखकर उनसे कहा कि अनुपम धनुर्धर लक्ष्मण का हमारी चालीस 'वॆळ्ळम्' की सेना का हनन करना भी कैसा खूब है ! । २०९३

आय वीररु मैय वमर्त्तलै, नीयु नाऱ्पदु वॆळ्ळ नॆडुम्बडै
माय वॆङ्गणै मारि वऴङ्गिनै, ओय्विल् वॆञ्जॆरु वॊक्कुमॆन् ऱोदिनार् 2094

आय वीररुम्–उन वीरों ने भी; ऐय–सुन्दर कुँअर; अमर् तलै–युद्धस्थल में; नीयुम्–आपने भी; नाऱ्पतु वॆळ्ळम्–चालीस 'वॆळ्ळम्' की; नॆटु पटै–बड़ी (वानर) सेना को; माय–मारते हुए; वॆम् कणै मारि–संतापक अस्त्रों की वर्षा; वऴङ्गिनै–बरसायी; ओय्विल्–अथक; वॆम् चॆरु ऑक्कुम्–भयंकर युद्ध (उसकी) समानता करेगा; ऍन्ऱु ओतिनार्–ऐसा कहा। २०६४

दोनों ने उत्तर में इन्द्रजित् की सराहना की। सुन्दर राजकुमार ! आपने भी क्रूर शरों की वर्षा करके वानरों की चालीस 'वॆळ्ळम्' की सेना को हत कर दिया। आपका युद्धतन्त्र भी उसके ही बराबर है। २०९४

वन्दु नेर्न्दनर् मारुदि मेल्वरुम्, अन्दि वण्णनु मायिर मायिरम्
शिन्दि नान्गणै देवरै वॆन्ऱवन्, नुन्द नुन्द मुऱैमुऱै नूऱिनान् 2095

वन्तु नेर्न्तनर्–(लक्ष्मण और इन्द्रजित्) आ भिड़े; मारुति मेल् वरुम्–मारुति पर आनेवाले; अन्ति वण्णनुम्–संध्यागगनवर्ण लक्ष्मण ने भी; आयिरम् आयिरम् कणै चिन्तिनान्–हजारों बाण चलाये; तेवरै वॆन्ऱवन्–देवविजेता ने; नुन्त नुन्त–(लक्ष्मण) ज्यों-ज्यों चलाते; मुऱै मुऱै–त्यों-त्यों क्रम से; नूऱिनान्–उन्हें चूर कर दिया। २०६५

फिर लक्ष्मण और इन्द्रजित् आमने-सामने हुए। मारुति पर सवार, संध्या-वर्ण लक्ष्मण ने हज़ारों बाण बरसाये। देवविजेता इन्द्रजित् ने भी उन्हें आते-आते उसी क्रम से चूर कर दिया। २०९५

आरु मेळ्ळु मरुपदु मैम्बदुम्, नूरु मायिर मुड्गणै नूक्किवन्
दूरि ऩारै युणर्वु तॉलैन्दुयिर्, तेरि ऩारै नॅडुनिलज् जेर्त्तिऩान् 2096

आरुम् एळ्रुम् अरुपतुम् ऐम्पतुम् नूरुम् आयिरमुम्–छः, सात, पचास, साठ, सौ और हज़ार, इन संख्याओं में; कणै नूक्कि वन्तु–अस्त्र चलाता आकर; ऊरिऩारै–बढ़ आनेवाले शत्रुओं को; उणर्वु तॉलैत्तु–बेहोश बनाकर; उयिर् तेरिऩारै–जीवित हो आनेवालों को; नॅट्टु निलम् चेर्त्तिऩाऩ्–लम्बी भूमि पर गिरा दिया (इन्द्रजित् ने)। २०९६

इन्द्रजित् ने छहों, सातों, पचासों, साठों, सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में बाण चलाये; सोत्साह बढ़ आये वानरों को बेहोश कर दिया। फिर जो सुध पाकर बढ़ आये उन्हें भूमि पर गिरा दिया। २०९६

कदिरिऩ् मैन्दऩ् मुदलिऩोर् कावलार्, उदिर वॅळ्ळत्ति ऩोल्हि यॉदुङ्गलुम्
ॲदिरि ऩिऩ्ऱ इरावणि येडुऱ, वॅदिरिऩ् काट्टॅरि पोर्चरम् वित्तिऩाऩ् 2097

कतिरिऩ् मैन्तऩ्–सूर्यपुत्र; मुतलिऩोर्–आदि; कावलार्–वानररक्षक; ऑल्कि–थककर; उतिरम् वॅळ्ळत्तिऩ्–रक्त-प्रवाह में; ऑतुङ्कलुम्–हटे तो; ॲतिरिल् निऩ्ऱ–सामने स्थित; इरावणि एट्टु उऱ–रावणि को शिथिल बनाते हुए; वॅतिरिऩ् काट्टु ॲरि पोल्–वंशीवन की आग के समान; चरम् वित्तिऩाऩ्–शर उत्तरोत्तर चलाये (लक्ष्मण ने)। २०९७

सूर्यपुत्र आदि वानररक्षक वीर शिथिल हो गये और रक्त के प्रवाह में बहकर एक ओर हो गये। लक्ष्मण ने यह देखा तो वंशीवन की आग के समान शरों की वर्षा करके रावणि को थका दिया। २०९७

उळैवु तोऩ्ऱ इरावणि यॉल्हिऩाऩ्, किळैयि ऩिऩ्ऱ इरुवर् किळैत्तलुम्
अळविल् शेऩै यविदर वारियर्, किळैय वीरऩ् शुडुशर मेविऩाऩ् 2098

इरावणि–रावणपुत्र; उळैवु तोऩ्ऱ–शिथिलता महसूस होने पर; ऑल्किऩाऩ्–थक गया; किळैयिऩ् निऩ्ऱ–शाखाओं के समान जो खड़े रहे वे; इरुवर्–दोनों; किळैत्तलुम्–खौल उठे तो; आरियर्कु इळैय वीरऩ्–आर्य श्रीराम के लघुभ्राता वीर लक्ष्मण ने; अळवु इल् चेऩै–अपार सेना; अवि तर–मिट जाए ऐसा; चुट्टु चरम्–संतापक शर; एविऩाऩ्–चलाये। २०९८

रावणपुत्र थका और दुःखी हुआ। उसके पास शाखाओं के समान जो रहे वे दोनों वीर भड़क उठे। आर्य श्रीराम के लघुभ्राता लक्ष्मण ने संतापक शर चलाये जिससे अपार सेना मर मिटे। २०९८

तॅरिहणै मारि पॅय्यत् तेर्हळुम् शित्तैक्कैम् मावुम्
परिहळु मरक्कर् तामुम् पट्टन्न किडक्कक् कण्डार्
इरुवरु नित्ड्रार् मट्रङ् गिराक्कद रॅन्नुम् बेरार्
ऑरुवरु नित्ड्रा रिल्लै युळ्ळव रोडिप् पोऩार् 2099

तॅरि कणै मारि पॅय्य–चुने हुए शरों की वर्षा जब हुई; तेर्कळुम्–रथ और; चित्तै कै मावुम्–सूंड़ को अंग के रूप में प्राप्त (हाथी) जानवर; परिकळुम्–और अश्व; अरक्कर् तामुम्–राक्षस; पट्टन–मरे; किटक्क–पड़े हैं; कण्टार्–देखकर; इरुवरुम्–दोनों राक्षस; नित्ड्रार्–(जीवंत) खड़े रहे; इराक्कतर् ऍन्नुम् पेरार्–राक्षस नामधारी; ऑरुवरुम्–कोई भी; निऩ्ड्रार् इल्लै–रहा नहीं; उळ्ळवर्–जीवधारी; ओटि पोऩार्–भाग निकले। २०९९

लक्ष्मण ने चुन-चुनकर बाण छोड़े। उस बाण-वर्षा के सामने रथ मिटे। शुंडियाँ मिटीं। अश्व और राक्षस वीर मरे और गिर पड़े। इनको देखनेवाले वे दो वीर ही जीवित खड़े थे। राक्षस नामधारी कोई भी न रहा। जीवित कुछ राक्षस भाग गये। २०९९

ओडिना ररक्कर् तण्णी रुण्णशै युट्र नावर्
तेडिना रॅदिर्न्दु कैयाल् मुहिलिनै मुहन्दु तेक्किप्
पाडुरु पुण्गळ् तोरुम् पशुम्बुनल् पायप् पाय
वीडिनार् शिलवर् शिल्लोर् पट्रिलर् विळिन्दु वीळ्न्दार् 2100

ओटिनार् अरक्कर्–राक्षस दौड़े; चिलवर्–कुछ; तण्णीर् उण्–जल पीने की; मचै उट्र–इच्छा से प्रेरित; नावर्–जीभ वाले वन; तेटिनार्–खोजकर; मुकिलिनै ॲतिर्न्तु–मेघ के सामने जाकर; कैयाल्–अपने हाथों में; मुकन्तु तेक्कि–लेकर पीकर; पाटु उरु–दुःखदायी; पुण्कळ् तोरुम्–सभी व्रणों से; पचुम् पुनल्–ताजा पानी के; पाय पाय–निकलने से; चिलवर् वीटिनार्–कुछ लोग मरे; चिल्लोर्–अन्य कुछ; पॅट्रिलर्–जल न पाकर; विळिन्तु–मरकर; वीळ्न्तार्–गिरे। २१००

भागनेवालों में कुछ राक्षसों को जल-पिपासा हुई। वे खोजते जाकर मेघ से अपने हाथों से जल लेकर पीने लगे। वह जल उनके दुःखदायी व्रणों से बहने लगा और वे मर गये। जिन्हें जल नहीं मिला वे लोग प्यास के ही कारण गिरकर मर गये। २१००

वॅङ्गणै तिट्न्द मॅय्यर् विळिन्दिलर् विरैन्दु शॅन्ड्रार्
शॅङ्गुळर् कट्रै शोरत् तॅरिवैय राट्रत् तॅय्वप्
पॊङ्गिरुम् पळ्ळि पुक्का रघरुडल् पोरुन्दप् पुल्लि
अङ्गव रावि योडुन् दम्मुयिर् पोक्कि यट्रार् 2101

वॅम् कणै–अतिदुःखदायी शरों से; तिट्न्त मॅय्यर–जिनके शरीर चिर गये थे वे; विळिन्तिलर्–बिना मरे; विरैन्तु चॅन्ड्रार्–तेजी से जाकर; तॅरिवैयर्–(उनकी) स्त्रियों के; चॅम् कुळल् कट्रै–लाल केशों की लटों को; चोर–बिखरने देते

हुए; आट्रु-आश्वासन देने पर; अवर् उटल् पोरुन्त-उनके शरीर से लगकर; पुल्लि-आलिंगन करके; अङ्कु-वहाँ; अवर् आवियोटुम्-उनके प्राणों के साथ; तम् उयिर् पोक्कि-अपनी जानें त्यागकर; अट्टार्-मरे; तॅय्वम् पोङ्कु-दिव्यता से भरी; इरु पळ्ळि-बड़ी शय्या में; पुक्कार्-पहुँचे। २१०१

कुछ राक्षसों के शरीर प्रखर बाणों से विद्ध हो गये थे, वे मरे नहीं पर तेजी से गये। उनकी स्त्रियाँ लाल केशों की लटों को खुलकर बिखरने देते हुए आकर आश्वासन देने लगीं। राक्षस लोग उनका कसकर आलिंगन करके उनके प्राणों के साथ अपने प्राणों को भी त्यागकर (स्वर्ग की) दिव्य शय्या में पहुँच गये। २१०१

पॉरिक्कॉडुम् बहळि मार्बर् पोयिन रिडङ्गळ् पुक्कार्
मरिक्कॉळुम् जिडुवर् तम्मै मरुळ शुट्रन् दम्मैक्
कुरिक्कॉळ् मॅन्रु कूरि यवर्मुहङ् गुळॅय नोक्कि
नॅरिक्कॉळुङ् गूट्रै नोक्कि यारुयिर् नॅडिविस् मीत्तार् 2102

पॉरि कॉडु-अंगारे छोड़ते हुए आनेवाले; पकळि-शरों-सह; मार्पर्-रहनेवाले वक्षःस्थलों के राक्षस; पोयिनर्-जाकर; इटङ्कळ् पुक्कार्-अपने-अपने डेरों में गये; उळ् चुट्रम् तम्मै-अपने रिश्तेदारों से; मरिकॉळुम् चिडुवर् तम्मै-पैरों से लिपटने वाले हमारे बच्चों को; कुरिकॉळुम्-सावधानी से पालिए; ॲन्रु कूरि-ऐसा कहकर; अवर् मुकम्-उनके मुख; कुळॅय नोक्कि-प्रेम से देखकर; नॅरि कॉळुम् कूट्रै-अपने मार्ग में ले जाने आये यम को; ऑरुत्तु नोक्कि-तरेरकर; आरुयिर्-प्यारे प्राणों को; नॅटितिन्-बहुत ही दुःख के साथ; मीत्तार्-छोड़ गये। २१०२

कुछ राक्षसों के वक्ष में क्रूर शर धँस गये थे, वे उन्हीं के साथ अपने स्थानों में गये। वहाँ उनके रिश्तेदार आ मिले। उनसे इन लोगों ने कहा कि हमारे पैरों से लिपटकर हमें रोकनेवाले इन बच्चों की सावधानी से देख-रेख कर लें। फिर उन्होंने अपने बाल-बच्चों को प्रेम के लोच के साथ निहारा। अपने मार्ग में इन्हें ले जाने के लिए जो यम आ गया था, उसको घूरते हुए उन्होंने अपने प्यारे प्राण गहरे दुःख के साथ छोड़ दिये। २१०२

तामरैक् कण्णन् तम्बि तन्मैयी दायिन् मॅय्ये
वेमरैक् कणत्ति लिव्वू रिरावणि विळिवन् मुन्नम्
मामरक् कानिड् कुन्द्रिन् मडैन्दिरु मडैय वल्ले
पोमॅनत् तमरैच् चॉल्लिच् चिलरुडल् तुरन्दु पोनार् 2103

चिलर्-कुछ राक्षसों ने; तामरै कण्णन् तम्पि-कमलाक्ष के छोटे भाई का; तन्मै ईतु आयिन्-(वीर-) स्वभाव यह है तो; इ ऊर्-यह नगर; अरै कणत्तिन् वेम्-आधे क्षण में जल जाएगा; मॅय्ये-सच; इरावणि-रावणपुत्र के; विळितल्

मुऩ्तम्–मरने के पहले; मामरम् कात्तिल्–बड़े वृक्षों के वनों में और; कुऩ्ऱिल्–पर्वतों में; मऱैन्तिरुम्–छिपे रहो; मऱैय–छिपने; वल्लै पोम्–जल्दी जाओ; ऍऩ–ऐसा; तमरै चॉल्लि–अपनों से कहकर; उटल् तुऱन्तु पोत्तार्–शरीर त्यागकर; पोत्तार–(स्वर्ग) गये। २१०३

कुछ राक्षसों ने अपनों से कहा कि पद्माक्ष के छोटे भाई का स्वभाव और कार्य यही है, तो यह नगर आधे पल में जल जायगा। हाँ सच! इसलिए रावण के पुत्र के मरने के पहले बड़े-बड़े तरुओं के काननों और पर्वतों में छिपे रहो। छिपने के लिए जल्दी दौड़ो। फिर वे प्राण त्याग कर वीर-स्वर्ग पहुँच गये। २१०३

वरैयुण्ड मदुहै मेति मरुमत्तु वळ्ळल् वाळि
इरैयुण्डु तुयिलच् चॅऩ्ऱार् वाङ्गिडि ऩिऱप्प मॅऩ्बार्
पिरैयुण्ड पालि ऩुळ्ळम् बिरिदुरप् पिऱर्मुऩ् शॊल्ला
उरैयुण्ड नल्लो रॅऩ्ऩ वुयिर्त्तुयिर्त् तुळप्प दाऩार् 2104

वरै उण्ट–पर्वतोपम; मतुकै मेति–बलवान शरीरों के; मरुमत्तु–मर्मस्थानों में; वळ्ळल्–प्रभु के; वाळि इरै उण्टु–बाणों के भोजन करके; तुयिल–पड़े रहते; चॅऩ्ऱार्–जो जाते रहे वे; वाङ्किटिऩ् इऱप्पम्–निकालने पर मर जाएँगे; ऍऩ्पार्–सोचते; पिरै उण्ट पालिऩ्–जामन-लगे दूध की तरह; उळ्ळम् पिरितु उऱ–मन के फटने पर; पिऱर् मुऩ् चॊल्ला–दूसरों से न कहे गये; उरै उण्ट–शब्दों वाले; नल्लोर् ऍऩ्ऩ–(मौनी) साधुओं की तरह; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–लम्बी आहें भरकर; उळैप्पतु आऩार्–दुःखी हो रहे थे। २१०४

कुछ राक्षसों के पर्वतोपम शरीरों के मर्मस्थलों में प्रभु लक्ष्मण के शर धँसे हुए मानो वहीं भोजन करते हुए पड़े रहे। उन लोगों ने सोचा कि बाण बाहर निकाल देंगे तो मर जाएँगे। इसलिए उनका मन जामन-लगे दूध के समान फट गया। वे अवाक् मौनी साधू के समान लम्बी आहें भरते हुए दुःखी हो रहे थे। २१०४

तेरिडैच् चॅल्लार् मातप् पुरवियिर् चॅल्लार् शॅङ्गण्
कारिडैच् चॅल्लार् कालिऱ् कालॅऩच् चॅल्लार् कावल्
ऊरिडैच् चॅल्लार् नाणा लुयिरिऩ्मे लुडैय वऩ्बाल्
पोरिडैत् तिरिया निऩ्ऱु नडुङ्गिऩर् पुऱत्तुम् बोहार् 2105

तेर् इटै चॅल्लार्–रथ पर न जानेवाले; मातम् पुरवियिल्–शानदार अश्वों पर; चॅल्लार्–न जानेवाले; चॅम् कण्–लाल आँखों के; कार् इटै–मेघ-सम गजों पर; चॅल्लार्–न जानेवाले; काल् ऍऩ–पवन के समान; कालिल् चॅल्लार्–(तेजी से) पैदल न चलनेवाले; नाणाल्–शरम के कारण; कावल्–संरक्षित; ऊरिटै चॅल्लार्–नगर में न जाते; पुऱत्तुम् पोकार्–उस तरफ़ भी न जाते; उयिरिऩ् मेल् उटैय–प्राणों पर रखे; अऩ्पाल्–प्रेम से; पोरिटै तिरिया–युद्धांगन में न चलकर; निऩ्ऱु–एक ओर खड़े रहकर; नटुङ्किऩर्–काँपते रहे। २१०५

अन्य राक्षस रथों पर या शानदार अश्वों पर या लाल आँखों के मेघ-सम गजों पर या पवन-गति में पैदल ही सुरक्षित लंका नगर में नहीं गये। न वे कहीं दूसरी तरफ़ भाग चले। उनको अपने प्राणों से बड़ा मोह था। इसलिए वे युद्ध-मैदान में इधर-उधर न घूमकर एक ओर खड़े रहे और काँपते रहे। २१०५

नॉय्दिऩिऱ् चॅऩ्ऱु कूडि यिरावणि युळवै नोक्कि
वॅय्दिऩिऱ् कॊऩ्ऱु वीऴ्प्प लॅऩ्बदोर् वॅहुळि वीङ्गिप्
पॅय्वुळिप् पॅय्यु मारि यऩैयवऩ् विणङ्गु कूऱ्ऱिऩ्
कैयिऩिऱ् पॅरिय वम्बाऱ् कवशत्तैक् कळित्तु वीऴ्त्ताऩ् 2106

पॅय्तुळि–जहाँ बरसता है; पॅय्युम्–वहीं पूर्ण रूप से बरसनेवाले; मारि अऩैयवऩ्–मेघ के समान लक्ष्मण ने; नॉय्तिऩिल्–तेजी से; चॅऩ्ऱु कूटि–जा मिले; इरावणि–रावणि का; उळवै–तन्त्र; नोक्कि–देखकर; वॅय्तिऩिल्–जल्दी; कॊऩ्ऱु वीऴ्प्पल्–मार डालूँगा; ऍऩ्पतु–ऐसा; ओर् वॅकुळि वीङ्कि–कोप में बढ़कर; पिणङ्कु कूऱ्ऱिऩ्–गुस्सैवर यम के समान; कैयिऩिल्–हाथ के; पॅरिय अम्पाल्–बड़े बाण से; कवचत्तै–कवच को; कळित्तु वीऴ्त्ताऩ्–काटकर गिरा दिया। २१०६

अपने स्थान में रहकर एकदम बरसनेवाले मेघ के समान जो रहे वे लक्ष्मण जल्दी इन्द्रजित् (रावण के पुत्र) के पास गये। उसके तंत्र को देखकर उन्हें अपार क्रोध हुआ। "इसको जल्दी मार दूंगा" यह संकल्प करके उन्होंने अपने हाथ के एक मृत्यु-तुल्य बड़े बाण से उसके कवच को काटकर गिराया। २१०६

कवशत्तैक् कळित्तु वीऴ्प्पक् काप्पुऱु कडऩिऩ् ऱाहि
अवशत्तै यडैन्द वीर ऩऱिवुवऩ् दडैयु मुऩ्ऩम्
तुवशत्तिऩ् पुरवित् तिण्डेर् कडिदुऱत् तूण्डि यामिऩ्
तिवशत्तिऩ् मुडित्तुम् वॅम्बो रॅऩच्चिऩत् दिरुहिच् चॅऩ्ऱार् 2107

कवचत्तै कळित्तु वीऴ्प्प–कवच को काट गिराने पर; काप्पुऱु कटऩ् इऩ्ऱु आकि–स्वरक्षण के उपाय से हीन बनकर; अवचत्तै अटैन्त वीरऩ्–अवश (बेहोश) हुए वीर के; अऱिवु वन्तु अटैयुम् मुऩ्ऩम्–होश में आने से पहले; तुवचत्तिऩ्–ध्वजा से अलंकृत; पुरवि–अश्व-जुते; तिण् तेर्–सशक्त रथ को; कटितु उऱ–तेजी से; तूण्टि–चलाते हुए; याम्–हम; इ तिवचत्तिऩ्–इसी दिवस; वॅम् पोर् मुटित्तुम्–इस भयंकर युद्ध को समाप्त कर देंगे; ऍऩ–कहकर; चिऩम् तिरुकि–कोप से ऐंठकर; चॅऩ्ऱार्–चले (धूम्राक्ष और महापार्श्व दोनों)। २१०७

इन्द्रजित् का कवच अलग हो गया तो उसके स्वरक्षण का साधन दूर हो गया। वह बेहोश हो गया। उसके होश में आने से पहले धूम्राक्ष और महापार्श्व दोनों ध्वजायुक्त और अश्व-जुते रथों को जल्दी-

जल्दी चलाते हुए गुस्से के साथ आगे यह विचार लेते हुए बढ़े कि आज ही यह भयंकर युद्ध समाप्त कर देंगे। २१०७

मारुदि मेलु मैयन् मार्बिनुम् तोळिन् मेलुम्
तेरिन रिरुवर् शॆन्ड्रार् शॆन्दळड् पहळि तूवि
आरियन् अवर्हळ् विल्लु मच्चुडॆत् तेरु मत्तेर्
ऊर्हुवा रुयिरुम् बूट्टुम् पुरवियि नुयिरु मुण्डान् 2108

तेरितर्–रथी; इरुवर्–दोनों; मारुति मेलुम्–मारुति पर और; ऐयन् मार्पितुम्–प्रभु के वक्ष पर और; तोळित् मेलुम्–कंधों पर; चॆम् तळल्–लाल आग के समान; पकळि–शर; तूवि–पुष्कल रीति से चलाते; चॆन्ड्रार्–गये; आरियन्–आर्य लक्ष्मण ने; अवर्कळ् विल्लुम्–उनके धनु को और; अच्चुटै तेरुम्–धुरीदार रथों को; अ तेर् ऊर्कुवार्–उन रथों के सारथियों के; उयिरुम्–प्राणों को; पूट्टुम् पुरवियित्–जुते अश्वों के; उयिरुम्–प्राणों को; उण्टात्–अन्त कर दिया। २१०८

दोनों रथी मारुति और लक्ष्मण के वक्ष और कन्धों पर लाल रंग के अग्नि के समान शरों को चलाते हुए सामने गये। आर्य लक्ष्मण ने उनके चापों, धुरीदार रथों और सारथियों और अश्वों के प्राणों को निकाल दिया। २१०८

इरुवरु मिळन्द विल्ल रॆळ्मुतै वयिरत् तण्डर्
उरुमॆनक् कडिदि नोडि यनुमनै यिमैप्पि नुड्रार्
पॊरुहनर् पॊरिहळ् शिन्दप् पुडॆत्तनर् पुडॆत्त लोडुम्
परुवलिक् करत्ति नाड्रण् डिरण्डॆयुम् परित्तुक् कॊण्डान् 2109

इळन्त विल्लर्–धनु खोकर; इरुवरुम्–दोनों; ऍळु मुतै–लोहे की सामी से युक्त; वयिरम् तण्टर्–वज्र-सम गदायुध लेकर; उरुम् ऍत–अशनि के समान; कटितिल् ओटि–तेज भागकर; इमैप्पित्–पल भर में; अनुमतै उड्रार्–हनुमान के समीप गये; पॊरु कतल् पॊरिकळ् चिन्त–घने रूप से अंगारे छूटें ऐसा; पुटैत्ततर्–पीटा; पुटैत्तलोटुम्–पीटते ही; परु वलि–मोटे और बलवान; करत्तिनाल्–हाथों से; तण्टु इरण्टैयुम्–दोनों दण्डों को; परित्तु कॊण्टान्–छीन लिया। २१०९

धनु खोकर दोनों ने लोहे की सामी से युक्त सशक्त गदाओं को लिये हुए अशनि के समान पल भर में मारुति के पास पहुँच गये। उन्होंने उसे ऐसा पीटा कि अंगारे छूटने लगे तो उसने अपने स्थूल हाथों से दोनों की गदाओं को छीन लिया। २१०९

तण्डवन् कैय दाय तन्मैयैत् तरुह णाळर्
कण्डनर् कण्डु शॆय्य लावदॆन् ड्रानुड् गाणार्
कॊण्डन नॆड्रिन्दु नम्मैक् कॊल्लुमॆन् ड्रुच्चड् गॊण्डार्
उण्डशॊज् जोड्र नोक्का रुयिरुक्के युदवि शॆय्दार् 2110

तड़कण् आळर्–निडर उन्होंने; तण्ड़ु–दण्ड; अवन्–उसके; कैयतु आय तन्मैयै–हाथ के बने वह हाल; कण्टनर्–देखा; चॅय्यल् आवतु–करणीय; ऑन्ड्रानुम् काणार्–कुछ नहीं देखा; कॉण्टतन्–जिसने छीन लिया है वह; ऍरिन्तु–चलाकर; नम्मै कॉल्लुम्–हमें मार देगा; ॲन्ड्रु अच्चम् कॉण्टार्–यह भय खाया; उण्ट चॅम् चोरुम्–भुक्त अच्छे भोजन का; नोक्कार्–ध्यान नहीं किया; उयिरक्के–अपने प्राणों ही की; उतवि–सहायता; चॅय्तार्–की। २११०

दोनों ने अपनी गदाओं को हनुमान के हाथों में फँसा हुआ देखा। उन निडर राक्षसों के सामने करणीय कोई काम नहीं दिखा। उन्हें यह डर भी लगा कि यह उन्हीं गदाओं से हमें मार देगा। उन्होंने अपनी नमकहलाली नहीं देखी (पालक रावण के प्रति कर्तव्य नहीं सोचा), बल्कि अपने प्राणों का ही हित देखा (यानी जान लेकर भाग गये)। २११०

कार्ड्रुवन् दशैत्त लालुङ् गालमल् लामै यालुम्
कूर्ड्रुवन् दावि कॉळ्ळुङ् गुरियितमै कुरित्त लालुम्
तेर्ड्रम्वन् दॅय्दि निन्ड्र मयक्कमु नोवुन् दीर्न्दार्
एर्ड्रमुम् वलियुम् बॅर्ड्रा रॅळुन्दनर् वीर रॅल्लाम् 2111

वीरर् ॲल्लाम्–सभी वानर वीर; काड्रु वन्तु अचैत्तलालुम्–शीतल वायु के बहने से; कालम् अल्लामैयालुम्–(मौत का) काल (प्राप्त) नहीं था, इसलिए और; कूड्रु वन्तु–यम आकर; आवि कॉळ्ळुम्–प्राण हर ले इसके; कुरि इन्मै–लक्षण नहीं थे; कुरित्तलालुम्–यह जाना जाता था, इसलिए; तेड्रम् वन्तु ऍय्ति–सुधि आ गयी और; निन्ड्र मयक्कमुम्–पहले रही मूर्च्छा; नोवुम्–और दुःख; तीर्न्तार्–छोड़ गये; एड्रमुम् वलियुम्–उत्साह और बल; पॅड्रार्–पाकर; ऍळुन्ततर्–उठे। २१११

इन्द्रजित् के बाणों से जो मूर्च्छित हो गये थे वे वानर वीर, शीतल पवन के आ लगने से, मौत का काल नहीं आया था, इसलिए और मृत्यु के लक्षणों के न रहने से मरे नहीं वरन् होश में आ गये। उनका भ्रम और दुःख दूर हो गया और उत्साह और बल पाकर वे उठ आये। २१११

अङ्गदन् कुमुद नीलन् शाम्बव नरुक्कन् मैन्दन्
पङ्गमिन् मयिन्दन् तम्बि शदवलि पनशन् मुन्नाच्
चिङ्गवे रनैय वीरर् यावरुञ् जिहरि येन्दि
मङ्गलम् वानोर् शॊल्ल मळैयॅन्न वार्त्तुर् वन्दार् 2112

अङ्कतन्–अंगद; कुमुतन्–कुमुद; नीलन्–नील; चाम्पवन्–जाम्बवान; अरुक्कन् मैन्तन्–अर्कपुत्र; पङ्कम् इल्–कभी न हारनेवाला; मयिन्तन्–मैंद; तम्पि–उसका भाई दुमिन्द; चतवलि–शतबली; पनचन्–पनश; मुन्ना–आदि; चिङ्क एड्रु अनैय–नर केसरी-सम; वीरर् यावरुम्–सभी वीर; वानोर् मङ्कलम् चॊल्ल–देवों के मंगल-वचन कहते; चिकरि एन्ति–पहाड़ों को उठाये हुए; मळै ॲन्न–मेघ के समान; आर्त्तु–नर्दन करते हुए; वन्तार्–आये। २११२

अंगद, कुमुद, नील, जाम्बवान, सूर्यपुत्र सुग्रीव, मैंद, जो कभी हारने वाला नहीं था, उसका भाई द्विविद, शतबली और पनश आदि नर केसरी-सम सभी वीर पर्वतों को उठाकर नर्दन करते हुए बढ़ आये। तब देवों ने मंगल-वचन कहे। २११२

अत्तनै योरुङ् गुन्ऱ मऴप्पिला वशनि येऱ्ऱो
डीत्तन्न नॆरुप्पु वीशु मुरुमॆन्न वीरुङ्ग वुय्त्तार्
इत्तनै पोलुज् जॆय्यु मिहलॆन्ना मुऱुव लॆय्दिच्
चित्तिर विल्व लोनुम् जिन्नबिन् नङ्गळ् शॆय्दान् 2113

अत्तनैयोरुम्–सारे वीर; अचनि एऱ्ऱोटु ऒत्तन्न–प्रबल अशनि के समान; कुन्ऱम्–पर्वतों को; नॆरुप्पु वीशुम् उरुम् ऎन्न–आग बरसानेवाले वज्र के समान; मऴप्पु इला–अपार रूप से; ऒरुङ्क उय्त्तार्–एक साथ फेंका; चित्तिरम्–अनोखे; विल् वलोनुम्–धनुर्विद्यादक्ष इन्द्रजित् ने भी; चॆय्युम् इकल्–किया जानेवाला युद्ध; इत्तनै पोलुम्–इतना है; ऎन्ना–ऐसा; मुऱुवल् ऎय्ति–मुस्कुराकर; चिन्न पिन्नङ्कळ् चॆय्तान्–छिन्न-भिन्न कर दिया। २११३

उन सभी वीरों ने वज्रोपम पर्वतों को आग बरसानेवाली गाजों के समान अपार रूप से एक साथ फेंका। अनोखे धनुर्दक्ष इन्द्रजित् ने भी मुस्कुराते हुए यह कहा कि क्या इतना ही तुम्हारा युद्धतंत्र है और उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया। २११३

मरङ्गळ् मलैयुङ् गल्लु मऴैयॆन्न वऴङ्गि वन्दु
नॆरुङ्गिनार् नॆरुङ्गु माहण् डीरुतनि नॆञ्जुम् विल्लुम्
शरङ्गळुन् दुणैयाय् निन्ऱ निशाशरन् तनिमै नोक्कि
इरङ्गिना नॆन्न मेल्पाऱ् कुन्ऱुपुक् करुक्क निन्ऱान् 2114

मरङ्कळुम्–तरुओं; मलैयुम्–पर्वतों और; कल्लुम्–चट्टानों को; मऴै ऎन्न–वर्षा के समान; वऴङ्कि वन्तु–फेंकते हुए बढ़कर; नॆरुङ्कितार्–समीप आये; नॆरुङ्कुमा कण्टु–पास आना देखकर; ओरु तनि नॆञ्चुम्–अकेला मन (साहस); विल्लुम्–धनु और; चरङ्कळुम्–शरों की; तुणैयाय् निन्ऱ–सहायता लेकर जो रहा उस; निशाचरन्–निशाचर की; तनिमै नोक्कि–तनहाई देख; इरङ्कितान् ऎन्न–दया करता जैसे; अरुक्कन्–सूर्य; मेल् पाल्–पश्चिम की तरफ़; कुन्ऱु पुक्कु–(अस्त-) गिरि में प्रवेश कर; निन्ऱान्–स्थित रहा। २११४

वानर फिर से तरुओं, पर्वतों और चट्टानों को वर्षा के समान गिराते हुए बढ़ आये। तब सूर्य अस्ताचल में पहुँच गया। शायद उसने इन्द्रजित् पर इसलिए दया की कि वह केवल अपना साहसिक मन, धनुष और शरों की सहायता लेकर अकेला खड़ा था। २११४

वाऴिय वेद नाऩ्गु मऩुमुदल् वन्द नूलुम्
वेळ्वियु मॆय्म्मुऩ् दॆय्व वेदियर् विऴैवु मः(ह्)दे
आऴियङ् गमलक् कैया ऩाहिय परम ऩॆऩ्ऩा
एऴैय रुळ्ळ मॆऩ्ऩ विरुण्डऩ तिशैह ळॆल्लाम् 2115

वाऴिय–शाश्वत; वेत नाऩ्कुम्–चारों वेद; मनु मुतल्–मनु आदि (द्वारा); वन्त नूलुम्–प्रणीत शास्त्र-ग्रन्थ; वेळ्वियुम्–यज्ञ; मॆय्युम्–और सत्य; तॆय्व वेतियर्–दिव्य वेदविप्र; विऴैवु–जिसे चाहते हैं; अ.'.तुम्–वह पद (सभी); आऴि अम् कमलम् कैयाऩ्–चक्रधारी सुन्दर कमलहस्त; आकिय परमऩ्–जो हैं वे ही परमपुरुष हैं; ऎऩ्ऩा–यह जो नहीं समझते; एऴैयर् उळ्ळम्–उन अज्ञानियों के; उळ्ळम् ऎऩ्ऩ–मन के समान; तिचैकळ् ऎल्लाम्–सारी दिशाएँ; इरुण्टऩ–अंधकारमय हो गयीं। २११५

तब अंधकार फैला और सारी दिशाएँ अंधकारमय हो गयीं। वे दिशाएँ उस अज्ञानी मन के समान थीं जो यह नहीं जानता था कि चारों शाश्वत वेद, मनुधर्म आदि शास्त्र, यज्ञ, सत्य और विप्रों द्वारा इच्छित पद सभी चक्रधारी कमलहस्त परमपुरुष श्रीमन्नारायण के ही स्वरूप हैं। २११५

नाहमे यऩैय नम्ब नाऴिहै यॊऩ्ऱु नाऩ्गु
पाहमे काल माहप् पडुत्तियेऱ् पट्टा ऩऩ्ऱेल्
वेहवा ळरक्कर् कालम् विळैन्ददु विशुम्बिऩ् मीदा
एहुमेल् वॆल्व ऩॆऩ्ब दिरावणऱ् किळवल् शॊऩ्ऩाऩ् 2116

नाकमे अऩैय नम्प–नाग ही सम (फूत्कारनेवाले) नायक; नाऴि ऒऩ्ऱु नाऩ्कु पाकमे–एक घड़ी की एक चौथाई भाग के; कालमाक–काल में; पटुत्तियेल्–मारिये तो; पट्टाऩ्–मरेगा; अऩ्ऱेल्–नहीं तो; वेकम् वाळ् अरक्कर्–तेजी से काम करनेवाले राक्षसों का; कालम्–काल; विळैन्ततु–आ जायगा; विचुम्पिऩ् मीता एकुमेल्–आकाश में चला जाएगा तो; वॆल्वऩ्–वह जीतेगा; ऎऩ्पतु–यह बात; इरावणऱ्कु इळवल्–रावण के छोटे भाई ने; चॊऩ्ऩाऩ्–कही। २११६

तब रावण के छोटे भाई ने लक्ष्मण से निवेदन किया कि सर्प-स्वभाव के नायक! एक चौथाई घड़ी में इन्द्रजित् को मारिये तभी वह मरेगा; नहीं तो रात हो जायगी तब राक्षस लोग क्षिप्र गति से मायाकार्य रच सकते हैं, इन्द्रजित् आकाश में चला जाएगा तो जय उसी की होगी। २११६

अत्तऩै वीरर् मेलु माण्डहै यऩुमऩ् मेलुम्
ऎत्तऩै कोडि वाळि मऴैयॆऩ वॆय्या निऩ्ऱु
वित्तह विल्लि ऩालॆक् कॊल्वदु विरुम्बि वीरऩ्
शित्तिरत् तेरैत् तॆय्वप् पहऴियाऱ् चिदैत्तु वीऴ्त्ताऩ् 2117

अत्तत्ते वीरर् मेलुम्–सारे वीरों पर; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; अनुमन् मेलुम्–हनुमान पर; ऍत्तत्ते कोटि वाळि–कितने ही करोड़ शर; मऴै ऍन–वर्षा के समान; ऍय्या निन्ऱ्–जो चलाता रहा; वित्तक विल्लित्तातै–विद्याविदग्ध धनुर्धर को; कॊल्वतु विरुम्पि–मारना चाहकर; वीरन्–वीर लक्ष्मण ने; चित्तिरम् तेरै–चित्र रथ को; तॆय्वम् पकळियाल्–दिव्य अस्त्र से; चितैत्तु वीऴ्त्तान्–तोड़कर गिराया। २११७

लक्ष्मण ने उस इन्द्रजित् को मारना चाहा, जो धनुर्विद्या-विदग्ध इन्द्रजित् उन सभी वीरों पर और पुरुषश्रेष्ठ हनुमान पर करोड़ों बाणों को वर्षा के समान चला रहा था। वीर लक्ष्मण ने उसके सुन्दर रथ को अपने दिव्य अस्त्र से छिन्न कर गिरा दिया। २११७

अऴित्तदे रऴुन्दा मुन्न मम्बॊडु किडन्दु वॆम्बि
उळैत्तुयिर् विडुव दल्ला लुरुशॆरु वॆन्ऱो मॆन्ऱु
पिऴैत्तिवर् पोव रल्लर् पाशत्ताऱ् पिणिप्पि नॆन्न
विऴित्तिमै याद मुन्नम् विल्लॊडुम् विशुम्बिऱ् चॆन्ऱान् 2118

अऴित्त तेर्–तोड़ा गया रथ; अऴुन्ता मुन्नम्–धँस जाए इसके पहले; पाचत्ताल्–(नाग-) पाश से; पिणिप्पित्–बाँध लूँगा तो; इवर्–ये; अम्पॊटु किटन्तु–बाणों के साथ पड़े रहकर; वॆम्पि–तप्त होकर; उळैत्तु–दुःखी हो; उयिर् विटुवतु अल्लाल्–प्राण छोड़ देंगे, इसके सिवा; उरु चॆरु–प्राप्त युद्ध में; वॆन्ऱोम्–जीते; ऍन्ऱु–यह (गौरव) पाकर; पिऴैत्तु पोवर् अल्लर्–बच नहीं जा पावेंगे; ऍन्ना–सोचकर; विऴित्तु इमैया मुन्नम्–पलक खोलने से पहले; विल्लॊटुम्–धनु के साथ; विचुम्पिल्–आकाश में; चॆन्ऱान्–गया। २११८

टूटा रथ भूमि में धँस जाय इसके पहले वह इन्द्रजित् यह सोचकर पल भर में आकाश में चला गया कि मैं इन्हें नाग-पाश-बद्ध कर दूँगा, और ये अस्त्रों के साथ गिरकर तप्तमन होकर मर जाएँगे। वे विजय का गर्व करते हुए बच नहीं जा सकेंगे। २११८

पॊन्गुला मेनि मैन्दन् तन्नॊडुम् बुहऴ्दऱ् कॊत्तान्
वन्गला मियऱ्ऱि निन्ऱान् मऱ्ऱॊरु मनत्त नाहि
मिन्गुलाङ् गऴऱ्काल् वीरन् विण्णिडै विरैन्द तन्मै
ऍन्गॊला मॆन्न वञ्जि वानव रिरियल् पोनार् 2119

पॊन् कुलाम् मेनि मैन्तन् तन्नॊटुम्–स्वर्णवर्णशरीरी कुमार से; पुकऴ्तऱ्कु ऒत्तान्–यश में तुल्य; वन् कलाम्–कठोर युद्ध; इयऱ्ऱि निन्ऱान्–जो करता रहा; मिन् कुलाम्–बिजली (प्रकाश) युक्त; कऴल् काल् वीरन्–पायलधारी पैरों वाला; मऱ्ऱॊरु मनत्तन् आकि–दूसरे मन (भाव) का होकर; विण् इटै विरैन्त तन्मै–आकाश में जल्दी जाने का फल; ऍन् आम् कॊल्–क्या ही होगा; ऍन्न अञ्चि–ऐसा डरकर; वानवर्–देव; इरियल् पोनार्–इधर-उधर भाग गये। २११९

देव लोगों के मन में भय पैदा हो गया। "स्वर्ण-वर्ण लक्ष्मण के समान यशस्वी, कठोर योद्धा और प्रकाशमय पायलधारी इन्द्रजित् मन का भाव बदलकर आकाश में जल्दी चला गया है, इसका फल क्या होगा ?" इस डर से वे तितर-बितर भाग गये। २११९

ताङ्गुविर् करत्तन् तूणि तळुविय पुऱत्तन् तन्निन्
ओङ्गियुऱ् ऍरिया निन्ऱ वॅहुळिय नुयिर्प्पन् तीयन्
तोङ्गिळॅप् पवर्हट् कॅल्लाञ् जोरियन् मायच् चॅल्वन्
वीङ्गिरुट् पिळम्बि नुम्बर् मेहत्तिन् मीदि नानान् 2120

विल् ताङ्कु करत्तन्–धनुधारी हाथों वाला; तूणि तळुविय पुऱत्तन्–तूणीर-बद्ध पीठ वाला; तन्तिन्–स्वयं; ओङ्कि उऱ्ऱ–भभककर; ऍरिया निन्ऱ–जलनेवाले; वॅकुळियन्–क्रोध से युक्त; उयिर्प्पन्–दीर्घ निःश्वास छोड़नेवाला; तीयन्–दुष्ट; तीङ्कु इऴैप्पवर्कट्कु ऍल्लाम्–सभी बुराई करनेवालों में; चीरियन्–बड़ा; मायम् चॅल्वन्–मायाधनी; उम्पर्–आकाश में; वीङ्कु इरुळ् पिऴम्पिन्–घने अंधकार के पुंज में; मेकत्तिन् मीतिन् आनान्–मेघ पर का हुआ। २१२०

धनुर्हस्त, तूणीर से युक्त पीठ वाला, भभकती अग्नि के समान क्रोधी, दुष्ट, आततायियों में सबसे बड़ा दुष्ट और माया का धनी इन्द्रजित् दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए आकाश में गया और मेघ के ऊपर का हो गया। २१२०

तणिवरुप् पण्डु शॅय्द तवत्तिनुन् दरुमत् तानुम्
पिणियरुप् पवरिऱ् पॅऱ्ऱ वरत्तिनुम् पिऱप्पि नानुम्
मणिनिऱत् तरक्कन् शॅय्द मायमन् दिरत्ति नानुम्
अणुवॅनच् चिऱिय दाङ्गो राक्कॅयु मुडॅय नानान् 2121

मणि निऱत्तु अरक्कन्–(नील-) मणिवर्ण राक्षस; आङ्कु–तब; पण्टु–पहले; तणिवु अऱ–अक्षय रूप से; चॅय्त–की हुई; तवत्तिनुम्–तपस्या के कारण; तरुमत्तानुम्–धर्म से; पिणि अरुप्पवरिल्–(भव-) रोगनिवारक (ब्रह्मा) से; पॅऱ्ऱ वरत्तिनुम्–प्राप्त वरों से; पिऱप्पितानुम्–जन्म से; चॅय्त–साधे गये; मायम् मन्तिरत्तिनानुम्–मायामन्त्र से; अणु ऍन चिऱियतु–अणु-से छोटे; ओर् आक्कॅयुम् उटॅयन् आनान्–एक छोटे शरीर वाला बन गया। २१२१

तब नीलमणिवर्ण इन्द्रजित् ने वहाँ एक अणु के समान छोटा रूप धर लिया। यह क्योंकर संभव हुआ ? उसने पहले अक्षय तपस्या की थी। धर्म साधा था। अविद्या-नाश-कारी ब्रह्मा के वर थे तथा राक्षस जन्म था, और उसे मायामंत्र मालूम था। २१२१

वाङ्गिनान् मलरिन् मेलै वानवन् वातक् कङ्गै
ताङ्गिना नुलहन् दाङ्गुञ् जक्करत् तवनेन् ऱालुम्
वीङ्गुवान् तोळे वीक्कि वीऴ्त्तलान् मोऴ्हि लाव
ओङ्गुवा ऴरवि नामत् तोरुदनिप् पडैयॅ युन्नि 2122

मलरित् मेलै वातवत्–कमलासन ब्रह्मा देव; **वात्तम् कङ्कै ताङ्कितान्**–आकाश-गंगा को धारण करनेवाले (शिव); **उलकम् ताङ्कुम्**–लोकरक्षक; **चक्करत्तवत्तॅन्ड्रालुम्**–चक्रधारी हों तो भी; **वीङ्कु वाळ् तोळै**–पुष्ट उज्ज्वल कंधों को; **वीक्कि**–बाँधकर; **वीऴ्त्तु अलाल्**–गिराये विना; **मीळ्किलात**–कोरा न लौटनेवाले; **ओङ्कुम् वाळ् अरवित् नामत्तु**–ऊँचे क्रूर नाग नामधारी; **ऑरु तत्ति पटैये**–एक अनुपम अस्त्र को; **उन्नि**–सोचकर; **याङ्कितान्**–हाथ में लिया इन्द्रजित् ने। २१२२

उसने वहाँ अपने हाथ में एक नागास्त्र लिया। वह बहुत ही अपार क्रूर अस्त्र ऐसा था जो, चाहे शत्रु कमलासन हो या गंगाधर या लोकपालक चक्रधर, उसके उन्नत कंधों को बाँधकर गिराये विना नहीं लौट सकता था। २१२२

आयित् कालत् तार्त्ता रमर्त्तॊऴि लञ्जि यप्पाल्
पोयित् तॅन्व दुन्नि वानर वीरर् पोल्वार्
नायहर् किळैय कोवु मन्नदे निलैन्दु नक्कान्
मायैयैत् तॅरिय वुन्नार् पोर्त्तॊऴिन् माऱ्ऱि निन्ड्रार् 2123

आयित् कालत्तु–उस समय; वानर वीरर् पोल्वार्–वानर वीर; **मायैयै तॅरिय उन्नार्**–माया-कार्य न जानते; अमर् तॊऴिल् अञ्चि–युद्धकृत्य से डरकर; **अप्पाल् पोयिनन्**–आकाश में गया है; ऍन्नवतु उन्नि–यह सोचकर; आर्त्तार्–**शोर मचाते;** पोर् तॊऴिल् माऱ्ऱि निन्ड्रार्–युद्धकार्य छोड़ खड़े हुए; **नायकर्कु इळैय कोवुम्**–नायक श्रीराम के कनिष्ठ राजा भी; अन्नते निनैन्दु–वही सोचकर; **नक्कान्**–हँसे। २१२३

तब वानर वीर इन्द्रजित् की माया को नहीं जानने के कारण यह सोचकर आनन्दारव करने लगे कि इन्द्रजित् युद्ध से डरकर आकाश में भाग गया। इसलिए उन्होंने युद्ध का काम छोड़ दिया। नायक राम के छोटे भाई ने भी वैसा ही सोचा और वे हँसे। २१२३

अदुकणत् तनुमत् तोळिन् ऱैयनु मिऴिन्दु वॅय्य
कदुवलिच् चिलैयै वॅन्ऱि यङ्गदन् कैय दाक्कि
मुदुहुऱच् चॅन्ऱु निन्ऱ कणैयॅला मुऱैयिन् वाङ्गि
विदुविदुप् पाऱ्ऱ लुऱ्ऱान् विळैहिन्ऱ दुणर्न्दि लादान् 2124

अदु कणत्तु–उस समय; ऐयनुम्–प्रभु भी; **विळैकिन्ड्रतु**–होनी; **उणर्न्तिलातान्**–नहीं जानकर; अनुमन् तोळ् निन्ड्रु–हनुमान के कंधों से; इऴिन्तु–उतरकर; **वॅय्य**–**शत्रुतापक;** वलि कतु–सबल; वॅन्ड्रि चिलैयै–विजयी धनु को; वॅन्ड्रि अङ्कतन्–विजयी **अंगद के;** कैयतु आक्कि–हाथ का बनाकर (हाथ में देकर); **मुतुकु उऱ चॅन्ड्रु निन्ड्र**–**पीठ तक चुभे** जो रहे; **कणै ऍलाम्**–सारे शरों को; **मुऱैयिन् वाङ्कि**–क्रम से निकाल **कर;** वितुवितुप्पु आऱ्ऱल् उऱ्ऱान्–दर्द का निवारण करने लगे। २१२४

तब प्रभु लक्ष्मण होनी न जानकर हनुमान के कंधे से नीचे उतरे।

अपने सबल विजयी धनु को विजयी अंगद के हाथ में दे दिया। फिर अपने वक्ष से उन अस्त्रों को एक-एक करके बाहर निकाला, जो पीठ तक छेद आये थे। वे अपनी पीठ का दर्द दूर करने लगे। २१२४

विट्टत्त नरक्कन् वॅय्य पडेयिनै विडुत्त लोडुम्
ऍट्टितो डिरण्डु तिक्कु मिरुळ्तिरिन् दिरिय वोडिक्
कट्टिन वॅन्व मत्तो काहुत्तर् किळेय काळै
वट्टवान् वयिरत् तिण्डोळ् मलैहळै युळैय वाङ्गि 2125

अरक्कन्–राक्षस ने; वॅय्य पटैयिनै–प्रखर अस्त्र को; विट्टनन्–छोड़ा; विडुत्तलोडुम्–छोड़ते ही; ऍट्टितोडु इरण्डु तिक्कुम्–दसों दिशाओं के; इरुळ् तिरिन्तु–अंधकार दूर करते हुए; इरिय ओटि–लोगों को तितर-बितर करते हुए जाकर; काकुत्तर्कु–काकुत्स्थ के; इळैय–छोटे भाई; काळै–ऋषभ-सम लक्ष्मण के; वट्टम्–पुष्ट; वान्–उन्नत; वयिरम्–वज्र-सम; तिण्–सुदृढ़; तोळ् मलैकळै–कंधों रूपी पर्वतों को; उळैय–दुःखी करते हुए; वाङ्कि कट्टिनतु–लपेटकर कस लिया (अस्त्र ने)। २१२५

उधर इन्द्रजित् ने नागास्त्र छोड़ दिया। छूटते ही उस अस्त्र ने दसों दिशाओं के अंधकार को दूर करते हुए जाकर काकुत्स्थ श्रीराम के छोटे भाई ऋषभतुल्य लक्ष्मण के पुष्ट, ऊँचे और वज्रदृढ़ कन्धों रूपी पर्वतों को कष्ट देते हुए कस लिया। २१२५

इरुहुरप् पिणित्त लोडु मियावैयु मॅदिर्न्द पोदुम्
मरुहुरक् कडवा नल्लन् मायमॅन् रुणर्वा नल्लन्
उरुहुरैत् तुन्ब मिल्ला नॉडुङ्गिनन् शॅय्व दोरान्
अरुहुरैक् कळत्तै नोक्कि यन्दर मदनै नोक्कुम् 2126

यावैयुम् ऍतिर्न्त पोतुम्–सभी सामना करें तो भी; मरुकु उऱ कटवान्–क्षुब्ध होनेवाले; अल्लन्–नहीं; उरु कुऱै–स्वाभाविक कमजोरी; तुन्पम् इल्लान्–दुःख से हीन; इरुकुऱ–कसकर; पिणित्तलोटुम्–(अस्त्र के) बाँध लेने पर; मायम् ऍन्ऱु–माया है वह; उणर्वान् अल्लन्–जानते नहीं; चॅय्वतु ओरान्–क्या करना यह न जानते; ऑटुङ्किनन्–निर्बल हुए; अऱु कुऱै–कबन्धों से भरे; कळत्तै नोक्कि–युद्धांगण को देख; अन्तरम् अतनै नोक्कुम्–अन्तरिक्ष को देखते। २१२६

लक्ष्मण ऐसे वीर थे जो सारे जीवों के एक साथ मिलकर लड़ने आने पर भी विचलित होनेवाले नहीं थे। और जिनके मन में स्वाभाविक दुःख के लिए भी स्थान नहीं था। जब वे पाशबद्ध हुए तब उन्हें यह नहीं मालूम था कि यह माया का कार्य है। वे किंकर्तव्यविमूढ़ हुए, निर्बल हुए और कबन्धों से भरे युद्ध के मैदान को देखकर आकाश को देखने लगे। २१२६

कालुडैच् चिऱुवन् मायक् कळ्वनैक् कणत्तिन् काले
मेल्विशैन् दॅऴुन्दु नाडिप् पिडिप्पॅन्ऱॅन् ऱुरुक्कुम् वेलै
एल्पुडैप् पाश मेन्ना विरावणन् पुयत्तै वालि
वाल्पिणित् तॅन्नच् चुऱ्ऱिप् पिणित्तदु वयिरत् तोळ् 2127

काल् उटै चिऱुवन्–वायुपुत्र के; मायस् कळ्वनै–मायावी चोर को; कणत्तिन् काले–एक क्षण के समय में; नाटि–खोजकर; मेल्–आकाश में; विचैत्तु ऍऴुन्तु–जल्दी उठ जाकर; पिटिप्पॅन् ऍन्ऱु–पकड़ूँगा कहकर; उरुक्कुम् वेलै–डाँटते समय; एल्पुटै–(दुःखदायी) स्वभाव के; पाचम्–नागपाश ने; मेन्नाळ्–पहले; इरावणन् पुयत्तै–रावण की भुजाओं को; वालि वाल्–वाली की पूँछ ने; पिणित्तु ऍन्न–बाँध लिया जैसे; वयिरम् तोळ्–वज्र-सम कंधों को; चुऱ्ऱि पिणित्तदु–लपेटकर ग्रस लिया। २१२७

वायुपुत्र ने डाँट बतायी कि इस मायावी चोर को खोजकर एक पल में आकाश में जाऊँगा और उसको पकड़ लूँगा। पर दुःखदायी नागपाश ने उसके वज्र-सम कंधों को ऐसा कसकर पकड़ लिया, जिस तरह पुराने समय में रावण की भुजाओं को वाली की पूँछ ने लपेटकर बाँध लिया था। २१२७

मऱ्ऱैयोर् तमैयु मॅल्लाम् वाळॅयिऱ् ऱरवम् वन्दु
शुऱ्ऱिन वयिरत् तूणिन् मलैयिनिऱ् पॅरिय तोळ्हळ्
इऱ्ऱन विऱ्ऱ वॅन्न विरुक्किन विळहा वुळ्ळम्
तॅऱ्ऱॅन वुडैय वीर रिरुन्दनर् शॅय्व दोरार् 2128

वाळ् ऍयिऱु अरवम्–तीक्ष्णदंत सर्पों ने; मऱ्ऱैयोर् तमैयुम्–अन्यों को भी; ऍल्लाम्–सभी को; वन्तु चुऱ्ऱिन–आ लपेट लिया; वयिरम् तूणिन्–वज्रस्तम्भ; मलैयिनिल्–पर्वतों के समान; पॅरिय–ऊँचे; तोळ्कळ्–कंधों को; इऱ्ऱन–टूट गये; इऱ्ऱ–टूटे; ऍन्न–ऐसा चिल्लाएँ, ऐसा; इरुक्किन–कस लिया; इळका उळ्ळम्–अथक मन; तॅऱ्ऱॅन उटैय–जिनका साफ़ तौर से थे; वीरर्–वे वीर; चॅय्वतु ओरार्–क्या करना न जानकर; इरुन्तनर्–चुप रहे। २१२८

नागास्त्र से निकले तेज़ दाँतों के सर्पों ने अन्य वानर वीरों को घेरकर उनके वज्र-स्तम्भ व पर्वत-सम बड़े कंधों को ऐसा कस लिया, जिससे वे चिल्लाने लगे कि 'हाय! कंधे टूट गये, हाँ टूट गये।' वे अथक मन वाले वीर यह नहीं निश्चय कर सके अब क्या करना है। २१२८

मलैयॅन वॅऴुवर् वीऴ्वर् मण्णिडैप् पुरळ्वर् वानिल्
तलैहळै यॅडुत्तु नोक्कित् तळ्ळॅऴ विळिप्पर् तावि
अलैहिळर् वालाऱ् पारि नडिप्पवर्वाय् मडिप्प राण्मैच्
चिलैयवर् किळैप कोवै नोक्कुव रुळ्ळन् दीवर् 2129

मलै ऍन्न–पर्वत के समान; ऍऴुवर्–उठते; वीऴ्वार्–गिरते; मण् इटै–भूमि पर; पुरळ्वर्–लोटते; तलैकळै ऍटुत्तु–सिर उठाकर; वानिल् नोक्कि–

आकाश में देखकर; तळल् अँळ–आग निकालते हुए; विळिप्पर्–तरेरते; ताबि–झपटकर; अलै किळर् वालाल्–हिलनेवाली पूँछों से; पारित् अडिप्पर्–भूमि पर पीटते; वाय् मडिप्पर्–ओंठ काटते; आण्मै–पौरुषयुक्त; विलैयवऱ्कु–धनुर्धर श्रीराम के; इळैय कोवै–छोटे भाई राजा को; नोक्कुवर्–देखते; उळ्ळम् तीवर्–मन में तप्त हो जाते। २१२९

वे बेचारे पर्वत के समान ऊपर उछलते और नीचे गिरते। भूमि पर लोटते, सिर उठाकर ऊपर देखते और आग उगलते हुए तरेरते। लपकते और हिलनेवाली पूँछों से भूमि को पीटते। पुरुषश्रेष्ठ धनुर्धर श्रीराम के छोटे भाई को देखकर मन मारते। २१२९

वीडणन् मुहत्तै नोक्कि विन्नैयुण्डे यिदनुक् कॅन्बर्
मूडिन कङ्गुल् माले यिरुळित्तै मुनिवर् मॉय्म्बिल्
ईडुऱ्त् तक्क पोलाम् नम्मॅदि रॅन्ना एन्दल्
आडहत् तोळै नोक्कि नॉन्दुनॉन् दळुङ्गि नैवर् 2130

वीटणन् मुकत्तै नोक्कि–विभीषण का मुख देखकर; इतऱ्कु वित्तै उण्टे–इसका परिहार है क्या; ॲन्पर्–पूछते; मूटिन–ढँकते आये; कङ्कुल् माल इरुळित्तै–रात के घनीभूत अंधकार से; मुनिवर्–गुस्सा करते; नम् ॲतिर्–हमारे ही सामने; मॉय्म्पिल्–बल में; ईटु उऱ–हीन होने; तक्क पोलाम्–अर्ह है क्या; ॲन्ना–कहकर; एन्तल्–कुमार के; आटकम् तोळै नोक्कि–स्वर्णस्कंधों को देखकर; नॉन्तु अळुङ्कि नैवर्–लटते, दुःखी होते और क्षीण होते। २१३०

वानर विभीषण के मुख को देखकर यह पूछते क्या इसका कोई परिहार है? वे छिपाते आनेवाले रात के अंधकार-से गुस्सा करते। लक्ष्मण के स्वर्णवर्ण कंधों को देखते, पूछते कि क्या हमारे देखते ये कन्धे भी अपना बल खो सकेंगे? और रोते, कलपते तथा लट जाते। २१३०

आरिदु तीर्क्क वल्ला रञ्जनै पयन्द वळ्ळल्
मारुदि पिळैत्तान् कॉल्ला ॲन्ऱ्रनर् मऱुहि नोक्कि
वीरनैक् कण्डु पट्ट विदुहॉला मॅन्ऱु विम्मि
वार्हळऱ् ऱम्बि तन्मै काणुमो वळ्ळ लॅन्बार् 2131

इतु–इसका; तीर्क्क वल्लार् आर्–हटा सकनेवाला कौन; अञ्चनै पयन्त–अंजना का पुत्र; वळ्ळल्–प्रभु; मारुति–मारुति; पिळैत्तान् कॉल्लो–बचा है क्या; ॲन्ऱ्रनर्–कहते; मऱुकि नोक्कि–क्षुब्ध हो देखते; वीरन् कण्टु–वीर लक्ष्मण को देखकर; पट्टतु इतु कॉलाम्–हुआ यही क्या; ॲन्ऱु विम्मि–ऐसा कलपकर; वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; वार्कळल् तम्पि तन्मै–लम्बी पायलधारी छोटे भाई का हाल; काणुमो–देख (कर सह) सकेंगे क्या; ॲन्पार्–कहते। २१३१

वानर आपस में यह पूछते कि यह संकट दूर कर सकनेवाला कौन है? क्या अंजनासुत प्रभु मारुति जीवित है? वे दुःखी होकर वीर लक्ष्मण को

देखते और विलापते कि क्या यही हो गया है। क्या प्रभु श्रीराम लम्बी पायलधारी लक्ष्मण की स्थिति को देखकर सह सकेंगे ? । २१३१

ऎऩ्ऱॆऩ्ऱु तऩ्मै शॊल्लि यॆऴुवलि यरक्क ऩॆय्दाऩ्
मिऩ्ऱॆऩ्ऱु दऩ्ऩ वाऩत् तुरुमिऩम् वीऴ्व वॆऩ्ऩप्
पॊऩ्ऱॆऩ्ऱु वडिम्बिऩ् वाळि पुहैयॊडु पॊऱियुञ् जिऩ्दि
मुऩ्ऱॆऩ्ऱु मुदुहिऱ् पायप् पिऩ्ऱॆऩ्ऱु मार्ब मुऱ्ऱ 2132

ऎऩ्ऱु तऩ्मै शॊल्लि–बीता हाल कहकर; ऎऩ्–(होनेवाला) क्या; ऎऴुल् वलि अरक्कऩ्–अतिबली राक्षस ने; वाऩत्तु–आकाश में रहकर; मिऩ् ऎऩ्ऱु अऩ्ऩ–बिजली फैली जैसे; ऎय्दाऩ्–बाण चलाये; पॊऩ् ऎऩ्ऱु वटिम्पिऩ्–स्वर्णपुंख; वाळि–वे शर; उरुम् इऩम्–गाजों का समूह; वीऴ्व ऎऩ्ऩ–गिरा जैसे; पुहैयॊडु–धुएँ के साथ; पॊऱियुम् चिन्दि–अंगारे छोड़ते हुए; मार्बम् उऱ्ऱ–वक्ष में जो घुसे; मुदुकिऱ् पाय–पीठ से निकले; पिऩ् ऎऩ्ऱु–पीठ पर लगे; मुऩ् ऎऩ्ऱु–वक्ष से निकले। २१३२

"अब जो बीत गया उसको कहने से क्या होगा ?" वहुत बलवान इन्द्रजित् ने आकाश में बिजली के समान जाकर अस्त्र चलाया। स्वर्णपुंख वे शर अशनि के समान धुआँ और अंगारे निकालते हुए वक्ष में घुसे तो पीठ से निकले। और जो पीठ में घुसे वे छाती से निकले। २१३२

मलैत्तलैक् कालमारि मऱित्तॆऱि वाडै मोदत्
तलैत्तलै मयङ्गि वीऴ्न् दऩ्मैयिऱ् ऱलैहळ् शिऩ्दुम्
कॊलैत्तलै वाळि पायुङ् गुऩ्ऱऩ कुववुत् तोळार्
निलैत्तिल रुलैन्दु शाय्न्दार् निमिर्न्दवु कुरुदि नीत्तम् 2133

मऱित्तु ऎऱि–घूम-घूमकर बहनेवाली; वाडै मोत–उदीची हवा के झोंकों से; मलै तलै–पर्वत पर के; कालम् मारि–वर्षाकालीन मेघ; तलै तलै–यत्र-तत्र; मयङ्कि वीऴुम्–शिथिल हो गिरते; तऩ्मैयिल्–उसी प्रकार; तलैकळ् चिन्दुम्–सिर गिरानेवाले; कॊलै तलै–घातक; वाळि–बाण; पायुम्–चलते; कुऩ्ऱु अऩ–पर्वत-सम; कुववु तोळार्–पुष्ट कंधोंवाले; निलैत्तिलर्–एक स्थान पर नहीं टिकते; उलैन्दु–जर्जर होकर; चाय्न्दार्–गिर पड़े; कुरुति नीत्तम्–रक्त का प्रवाह; निमिर्न्दतु–बह चला। २१३३

घूम-घूमकर वहनेवाली उदीची हवा के झोंकों से जैसे पर्वत पर रहनेवाले वर्षाकालीन मेघ यत्र-तत्र गिरते हैं, वैसे सिरों को काटनेवाले घातक शर भेदते चले तो पर्वत के समान कंधों वाले वानर वीर एक स्थान पर खड़े नहीं रह सके। और दुःखी होकर नीचे गिरे। रक्त-प्रवाह बह चला। २१३३

आयिर कोडि मेलु मम्बुतत् नाहत् तूडु

तीयॅरि शिवुरुञ् जॅङ्ग णञ्जत्तै शिक्ङ्गम् दॅय्व
नायहन् तम्बिक् कुट्रर् तुयर्शुड नडुङ्गु हिन्ड्रान् 2134

पॉंटित्त मातम्-उठे क्रोध से; तो ऍरि-अंगारे; चितरुम्-बिखेरनेवाली; चॅं कण्-लाल आँखों वाला; अञ्चनै चिक्कम्-अंजना का केसरी (सम सुत); आयिरम् कोटि मेलुम्-हज़ार करोड़ से भी अधिक; अम्पु-बाण; तन् आकत्तु-उसके शरीर को; ऊढु पोयित पोतुम्-भेद चले तो भी; ऑन्ड्रम् तुटित्तिलन्-कुछ भी नहीं छटपटाया; तॅय्व नायकन् तम्पिक्कु-दिव्य नायक श्रीराम के भाई पर; उट्र तुयर्-आया दुःख; चुट-उसको जलाता है और वह; नटुङ्कुकिन्ड्रान्-काँपता है। २१३४

उठे हुए क्रोध के कारण अंगारे निकालनेवाली लाल आँखों से युक्त अंजनासुत, जो केसरी के समान था, कुछ भी बेचैन नहीं हुआ; यद्यपि हज़ार करोड़ से ज़्यादा बाण उसको भेद चले थे। पर दिव्य नायक श्रीराम के भाई का दुःख उसे तपा रहा था और वह कंपित हो रहा था। २१३४

वेरुळ वीर रॅल्लाम् वीळ्न्दनर् उरुमिन् वॅय्य
नूरुमा यिरमुम् वाळि युडलिडै नुळैयच् चोरि
आरुपो लॉळुह अण्ण लङ्गद नननद वाळि
एरिन मॅय्य नेनु मिरुन्दन लिडैन्दि लावान् 2135

वेरु उळ वीरर् ॲल्लाम्-अन्य सभी वीर; उरुमिन् वॅय्य-गाज से भी संवाहक; नूरुम् आयिरमुम्-सैकड़ों और हज़ारों (की संख्या) में; उडलिडै वाळि-बाणों के; नुळैय-शरीर में घुसने से; चोरि आरु पोल् ऑळुक-रक्त के नदी के समान बहते; वीळ्न्ततर्-गिरे पड़े रहे; अण्णल् अङ्कतन्-महिमावान अंगद; अनन्तम् वाळि-अनंत शरों के; एरिय मॅय्यन्-चढ़े शरीर वाला; एतुम्-था, तो भी; इडैन्तिलातान्-शिथिल न हुआ; इरुन्तनन्-रहा। २१३५

अन्य सभी वीरों के शरीरों के अन्दर वज्र से भी भयंकर बाण सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में घुसे। इसलिए रक्त नदी के समान बहने लगा। वे नीचे पड़े रहे। महिमावान अंगद के शरीर में भी अनन्त बाण घुसे थे, तो भी वह शिथिल नहीं हुआ। २१३५

कविरवन् कावन् मैन्दन् कळलिळय् बशुङ्गा यन्न
ॲदिरॅदिर् पहळि तैत्त याक्कैय नॅरियुङ् गण्णन्
वॅदिर्नॅडुङ् गातमॅन्न वेहिन्र मनत्तन् मॅय्यन्
उदिरवॅङ् गडलुट् टावै युदिक्किन्ड्रान् तसैयु मॊत्तान् 2136

कतिरवन् कातल् मैन्तन्-सूर्यनन्दन; ॲतिर् ॲतिर्-सीधे; पकळि तैत्त-शर लगे इसलिए; इळ पचुम् कळर्काय् अन्न-कच्चे 'कळल्' नाम के फल के समान; ऍरियुम् कण्णन्-कोपाग्नियुक्त आँखों वाला; मॅडु वॅतिर् याक्कैयन्-शरीर वाला बन; कानम् ॲन्न वेकिन्र-जलते बड़े बाँस के बन के समान; मनत्तन् मॅय्यन्-तप्त मन और तन वाला; वॅम् उतिर कटलुळ्-गरम रक्त समुद्रमध्य; उतिक्किन्ड्रान् ताते तसैयुम्-... अपने पिता के भी; ऒत्तान्-समान लगा। २१३६

सूर्यनन्दन सुग्रीव सीधे शरों के लगने से (काँटों से पूर्ण) 'कळल्' नाम के फल के समान शरीर वाला हो गया। आँखों से अंगारे छूटते थे। जलते बाँस के वन के समान उसका शरीर और मन जल रहा था। तब वह उस रक्त-सागर के बीच उदीयमान अपने पिता सूर्य के समान दिख रहा था। २१३६

वॆप्पारुम् पाशम् वीक्कि वॆङ्गणै वळैक्कु मॆय्यन्
ऒप्पारु मिल्लात् तम्बि युणर्न्दिरुन् दिन्न त्रुय्प्पान्
इप्पाश माय्क्कु माय मियान्वल्ल नॆन्ब दोर्न्तुम्
अप्पाशम् वीश वाऱ्ऱा दळिन्दनल् लऱिवु पोन्ऱान् 2137

ऒप्पु आरुम् इल्लात् तम्पि–जिनकी कोई सानी नहीं, उन श्रीराम के भाई; वॆप्पु आरुम्–क्रूरता-भरे; पाचम् वीक्कि–पाश से बद्ध; वॆम् कणै–भयंकर शरों से; वळैक्कुम्–आच्छादित; मॆय्यन्–शरीरी; उणर्न्तिरुन्तु–(पाश हटाने का उपाय) जानते हुए भी; इन्तल् तुय्प्पान्–संकट उठाते; इ पाशम् माय्क्कुम्–इस सांसारिक बन्धन-पाश को दूर करने के; मायम्–रहस्य में; यान् वल्लन्–मैं समर्थ हूँ; ऎन्पतु ओर्न्तुम्–यह जानने पर भी; अ पाचम् वीच आऱ्ऱातु–पाश को दूर करने की शक्ति से हीन हो; अळिन्त–नष्ट हुई; नल् अऱिवु पोन्ऱान्–सद्बुद्धि के समान रहे। २१३७

अद्वितीय वीर भाई लक्ष्मण क्रूर नागपाश से बद्धशरीरी होकर दुःख उठा रहे थे। उसको काटने का मार्ग उन्हें मालूम था। तो भी संसार-बन्धन को काटने की शक्ति रखनेवाले उसको काटने की बुद्धि खोकर जैसे संकट उठाते हैं, वैसे श्रेष्ठ आत्माओं के समान वे दुःख झेल रहे थे। २१३७

अम्बॆलाङ् गदिर्ह ळाह वळिन्दळिन् दिळियु माहच्
चॆम्बुनल् वॆयिलिऱ् ऱोन्ऱत् तिशैयिरु ळिरियच् चीऱिप्
पम्बुपे रॊळिय नाहम् पऱ्ऱिय पडिवत् तोडुम्
उम्बर्ना डिऱन्दु वीऴ्न्द वॊळियव नेयु मॊत्तान् 2138

अम्पु ऎलाम्–सारे बाण; कतिर्कळ् आक–(धूप की) किरणें बने; आकम्–शरीर; अळिन्तु अळिन्तु इळियुम्–क्षीण करते हुए बहनेवाला; चॆम् पुनल्–लाल रक्त; वॆयिलिल् तोन्ऱ–धूप के समान लगता; तिचै इरुळ्–दिशाओं का अंधकार; इरिय चीऱि–भगाते हुए गुस्सा करके; पम्पुम्–फैले रहनेवाले; पेर् ऒळिय–पुष्कल प्रकाश के; नाकम् पऱ्ऱिय–(राहु-) सर्पग्रस्त; पटिवत्तोटुम्–शरीर के साथ; उम्पर् नाटु इऱन्तु–आकाशलोक छोड़कर; वीऴ्न्त–गिरे हुए; ऒळियवनेयुम् ऒत्तान्–किरणमाली के समान भी रहा। २१३८

लक्ष्मण के शरीर पर लगे शर किरणें थे। उनके शरीर पर बहने वाला रक्त धूप था। दिशाओं के अन्धकार को भगानेवाला प्रकाशमय उनका शरीर था। राहु के समान नागपाश उनको बाँधे हुए था। तब वे आकाशलोक से गिरे हुए किरणमाली के समान रहे। २१३८

मयङ्गित्तान् वळ्ळल् तम्बि मट्रैयोर मुट्रुम् मण्णै
मुयङ्गित्तार् मेनि यॅल्लाम् मूडित्ता ऩरक्कत् मूरित्
तयङ्गुपे राट्र लाऩुन् दन्नुडल् तैत्त वाळिक्
कुयङ्गित्ता नुळैन्दान् वाया लुदिरनी रुमिळा निन्ऱान् 2139

वळ्ळल् तम्पि–प्रभु श्रीराम के भाई; मयङ्कित्तान्–बेहोश हुए; मट्रैयोर् मुट्रुम्–अन्य सारे वीर; मण्णै मुयङ्कित्तार्–भूमि से लिपटे पड़े रहे; मेनि ऍल्लाम्–सारे (लोगों के) शरीरों को; मूटित्तान्–जिसने अस्त्रों से ढाँप दिया; मूरि तयङ्कु–बलसंयुक्त; पेर् आट्रलान् अरक्कन्नुम्–बहुत शक्तिमान राक्षस; तन् उटल् तैत्त–अपने शरीर में चुभे; वाळिक्कु–बाणों के कारण; उयङ्कित्तान्–दुःखी हुआ; उळैन्तान्–जर्जर हुआ; वायाल्–मुख से; उतिरम् नीर्–रुधिर वारि; उमिळा निन्ऱान्–वमन करता रहा। २१३६

उदार प्रभु श्रीराम के भाई मूर्च्छित हो गये। अन्य सभी वीर भूमि के गले लगे पड़े रहे। उधर इनके शरीरों को जिसने बाणों से ढँक दिया था, वह अतिबली इन्द्रजित् भी अपने शरीर पर लगे बाणों के कारण दुःखी होकर जर्जर हुआ। उसके मुख से रक्त निकल आया। २१३९

शॊट्रदु मुडित्ते नाळै यॅन्नुडर् चोर्वै नीक्कि
मट्रदु मुडिप्पे नॅन्ना वॅण्णित्तान् मन्दि वाळ्क्कै
इट्रदु कुरङ्गिन् ताऩै यिऱन्दॆन् ट्रिरण्डु पालुम्
कॊट्रमङ् गलङ्ग ळार्प्प विरावणन् कोयिल् पुक्कान् 2140

चॊट्रतु मुटित्तेन्–जो कहा वह कर चुका; ऍन् उटल् चोर्वै–अपने शरीर की थकावट को; नीक्कि–दूर करके; नाळै–कल; मट्रतु–दूसरा काम; मुटिप्पॆन्–पूरा करूँगा; ऍन्ना ऍण्णितान्–ऐसा सोचकर; मन्तितन् वाळ्क्कै–नर का जीवन; इट्रतु–समाप्त हो गया; कुरङ्किन् तानै–वानर-सेना; इऱन्ततु–मर मिटी; ऍन्ऱु–ऐसा; इरण्टु पालुम्–दोनों बाजुओं में; कॊट्र मङ्कलङ्कळ्–विजय के मंगलगीत; आर्प्प–ध्वनित हों, ऐसा; इरावणन् कोयिल्–रावण के महल में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ। २१४०

"मैंने जो कहा था, वह कर दिखाया। थकावट दूर करके कल दूसरा काम भी कर दूंगा। इस नर का जीवन आज समाप्त हो गया। वानर-सेना मिट गयी।" यह विचार लेकर वह रावण के मन्दिर में गया। उसके दोनों बाजुओं में जय-जयकार की मंगल ध्वनियाँ हो रही थीं। २१४०

ईर्क्कडै पहळि सारि यिलक्कुव तॆन्न निन्ऱ
नीर्क्कडै मेहन् दन्नै नीक्कियुञ् जॆरुवि नीङ्गान्
वार्क्कडै मदुहैक् कॊङ्गै मणिक्कुरु मुरुवन् मादर्
पोर्क्कडै करुङ्गण् वाळि पुयत्तॊडु पोळियप् पुक्कान् 2141

ईर्क्कु अटै–तीलियों के घने समूह के समान; पकळि मारि–शरों की वर्षा के; इलक्कुवत् अंतृत निन्‍ऱु–लक्ष्मण के रूप में रहे; कटै नीर् मेकम् तन्‍नै–युगान्त के मेघ को; नीक्किपुम्–हटाने पर भी; चॅरुविन् नीङ्कान्–युद्ध छोड़ नहीं सका; वार् कटै–अंगिया को फाड़नेवाले; मतुर्क कोङ्कै–सुदृढ़ स्तनों और; मणि कुड मुरुवल्–सुन्दर मंदहास वाली; मातर्–स्त्रियों के; पोर्–युद्धोत्साही; करु कटै कण् वाळि–काली आँखों की कोर से निकलनेवाले दृष्टि-शरों के; पुयत्तोटु पोळिय–भुजाओं पर निरन्तर लगते; पुक्कान्–गया। २१४१

तीलियों के समान घनी शर-धाराओं को बरसानेवाले, युगांत के मेघ के समान लक्ष्मण को हटाने के बाद भी इन्द्रजित् युद्ध से विरत नहीं हुआ। क्योंकि अंगिया को फाड़नेवाले कठोर स्तनों और सुन्दर मुस्कराहट वाली स्त्रियों की झगड़ालू और काली आँखें रूपी शर उसकी भुजाओं पर निरंतर गिर रहे थे। वह उनको झेलता हुआ गया। २१४१

ऐयिरु कोडि शॅम्पॊन् मणिविळक् कङ्गै येन्दि
मैयरु वात नाट्टु मादरु मऱ्ऱै नाट्टुप्
पैयर वलुहु लारुम् पलाण्डिशै परवत् तङ्गळ्
तैयल रुहु तूवि वाळ्त्तितर् तळुवच् चार्न्दान् 2142

चॅम् पोन्–लाल स्वर्ण और; मणि विळक्कु–मणिमय दीप; अङ्कै एन्ति–सुन्दर हाथों में लेकर; मै अऱु–निर्दोष; वातम् नाटु मातरुम्–आकाशलोक की स्त्रियाँ और; मऱ्ऱै नाट्टु–अन्य लोकों की; अरवु पै–सर्पफन-सम; अल्कुलारुम्–वरांग वाली अंगनाएँ; ऐ इरु कोटि–दस करोड़; इसै पल्लाण्टु परव–जय जीव का गीत गाती आयीं; तङ्कळ् तैयलर्–उसके (राक्षस-) कुल की स्त्रियाँ; अऱुकु तूवि–दूर्वादल बरसाकर; वाळ्त्तितर्–स्तुति करती; तळुव–साथ गयीं; चार्न्तान्–महल में गया। २१४२

लाल स्वर्ण, मणिमय दीप अपने सुन्दर हाथों में लेते हुए निर्दोष देव-रमणियाँ और अन्य लोगों की सर्पभगा अंगनाएँ दस करोड़ की संख्या में जयजीव का गीत गाती हुई आ रही थीं। तब उसके (राक्षस) कुल की स्त्रियाँ दूर्वादल फेंकते हुए साथ आयीं। २१४२

तन्दैयै यॅय्दि यॊन्‍नारक् कुऱ्ऱुळ तन्मै यल्लाम्
शिन्दैयि नुणरक् कूऱित् तीरुदि यिडर्नी यॅन्दाय्
नॊन्दन नियाक्कै नॊय्दि नारिमे नुवल्वॆ नॆन्‍नाप्
पुन्दियि लनक्कन् दीर्प्पपान् तन्‍नुडैक् कोयिल् पुक्कान् 2143

तन्तैयै ऍय्ति–पिता के पास जाकर; ऒन्‍नार्क्कु–शत्रुओं पर; उऱ्‍ऱु उळ–बीती; तन्मै ऍल्लाम्–हालत सारी; चिन्तैयिन् उणर–मन में लग जाए ऐसा; कूऱि–कहकर; ऍन्ताय्–मेरे पिताजी; नी–आप; इटर् तीरुति–दुःख छोड़ दें; याक्कै नॊन्तनन्–शरीर से श्लथ हूँ; नॊय्तिन् आऱि–जल्दी विश्रान्त होकर; मेल्

मुवल्वॅन्–आगे कहूँगा; ऍन्ऱा–कहकर; पुन्तियिल्–मन की; अतुक्कम्–थकावट; तीर्प्पान्–दूर करने; तन् उऱै–अपने; कोयिल्–महल में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ। २१४३

इन्द्रजित् रावण के पास आया और सारी बातें जो हुईं बतायीं और कहा कि पिताजी आप दुःख छोड़ दें। मेरा शरीर थका हुआ है। शीघ्र थकावट दूर करके आऊँगा और आगे की होनेवाली बात बताऊँगा। यह कहकर वह मन की शिथिलता को दूर करने के लिए अपने महल में गया। २१४३

इत्तलै यित्ऩ लुऱ्ऱ वीडण निळैप्प वोरात्
मत्तुरु तयिरि ऩुळ्ळम् मऱुहिऩ्ऩ् मयङ्गु हिऩ्ऱाऩ्
अत्तलैक् कॊडिय ऩॆऩ्ऩै यट्टिल ऩळियत् तेऩाऩ्
शॆत्तिलॆऩ् वलियऩ् निऩ्ऱे ऩॆऩ्ऱुपोय् वैयज् जेर्न्दाऩ् 2144

इ तलै–इधर; इन्नल् उऱ्ऱ–दुःखी जो हुआ वह; वीटणन्–विभीषण; इऴैप्पतु–करना; ओरान्–न जानकर; मत्तु उऱु–मथानी-लगे; तयिरिन्–दही के समान; उळ्ळम् मऱुकिनन्–चिन्ताकुलित हुआ; मयक्कुकिन्ऱान्–भ्रमित हुआ; अ तलै–उस तरफ़; कॊटियन्–क्रूर इन्द्रजित् ने; ऍन्नै अट्टिलन्–मुझे नहीं मारा; अळियत्तेन् नान्–दयनीय मैं; चॆत्तिलॆन्–मरा भी नहीं; वलियन् निन्ऱेन्–सबल रहता हूँ; ऍन्ऱु–कहता; पोय्–जाकर; वैयम् चेर्न्तान्–भूमि पर गिरा। २१४४

इधर दुःखी विभीषण किंकर्तव्यविमूढ़ होकर मथे हुए दही के समान अधीर-बुद्धि हो गया। "विरोधी क्रूर इन्द्रजित् ने मुझे नहीं मारा। दयनीय मैं मरा भी नहीं। सबल खड़ा हूँ।" यह कहते हुए गया और भूमि पर गिर पड़ा। २१४४

पाशत्ता लऩहऩ् तम्बि पिणिप्पुण्ड पडियैक् कण्डु
नेशत्ता रॆल्लाम् वीऴ्न्दा रियाऩोरु तमिय निऩ्ऱेऩ्
तेशत्ता रॆऩ्ऩै यॆऩ्ऩे शिन्दिप्पा रॆऩ्ऱु नैयुम्
वाशत्तार् मालै मार्बऩ् वाय्दिऱन् दरऱ्ऱ लुऱ्ऱाऩ् 2145

अनकन् तम्पि–अनघ श्रीराम के छोटे भाई का; पाचत्ताल्–नागपाश से; पिणिप्पु उण्ट–बन्धन पाने का; पटियै कण्टु–हाल देखकर; नेचत्तार् ऍल्लाम्–मित्र सभी; वीऴ्न्तार्–मर गये; यान् ओरु तमियन्–मैं अकेला; निन्ऱेन्–बचा रहा; तेचत्तार्–दुनिया वाले; ऍन्नै–मुझे; ऍन्ने चिन्तिप्पार्–क्या सोचेंगे; ऍन्ऱु–सोचकर; नैयुम्–व्याकुल होता; वाचम् तार्मालै मार्पन्–सुगन्धित मालाधारी वक्ष का (विभीषण); अरऱ्ऱल् उऱ्ऱान्–कलपने लगा। २१४५

वह ऐसा भी सोचकर मन मारने लगा कि अनघ श्रीराम के भाई का पाशबद्ध होने का हाल देखकर लोक उनके सभी प्यारों के मरने के

बाद अकेले बचे रहनेवाले मेरे सम्बन्ध में क्या सोचेंगे ? सुगंधित माला-धारी विभीषण रोने-कलपने लगा। २१४५

कॊल्वित्ता नुडने नित्रुरुक् ॲॆन्बरो कॊण्डु पोतात्
वॆल्वित्तात् महने यॆन्रु पहर्वरो विळैविर् कॆल्लाम्
नल्वित्ताय् नडन्दात् मुन्ने यॆन्बरो नयन्दोर् तत्तम्
कल्वित्ताम् वार्त्तै यॆन्रु करैवित्ता नुयिरैक् कण्बोल् 2146

उडने नित्रु-साथ ही रहकर; अङ्कु कॊल्वित्ताम्-वहाँ मरवा दिया; ॲॆन्बरो-कहेंगे क्या; कॊण्डु पोतात्-(इन्द्रजित् के पास) ले गया और; मकने वॆल्वित्तात्-अपने भतीजे को जीत दिला दी; ॲॆन्रु पकर्वरो-ऐसा कहेंगे क्या; विळैविर्कु ॲॆल्लाम्-जो भी हुआ उस सबका; नल् वित्ताय्-अच्छा (हेतु) बीज बनकर; मुन्ने नडन्ताम्-पहले व्यवहार किया; ॲॆन्परो-कहेंगे क्या; नयन्तोर्-श्रीराम के प्रेमी-जनों के; वार्त्तै-वचन; तम् तम् कल्वित्तु आम्-उन उनके अध्ययन के अनुकूल ही होंगे; ॲॆन्रु-कहकर; कण् पोल्-आँखों के समान; उयिरै-प्राणों को; करैवित्तात्-गला दिया। २१४६

"साथी रहकर मरवा दिया।" क्या ऐसा कहेंगे ? "इन्द्रजित् के पास ले जाकर उसको जीत दिला दी" ऐसा कहेंगे शायद। "पीछे जो होगा उसके अच्छे बीज के रूप में शायद यह व्यवहार करता रहा।" शायद लोग ऐसा कहेंगे क्या ? श्रीराम के प्रेमी अपनी-अपनी शिक्षा के अनुकूल ही टीकाएँ करेंगे। ऐसा कहते हुए वह अपनी आँखों को जैसे प्राणों को भी गलाता रहा। २१४६

पोरवन् पुरिन्द पोदे पॊरुवरु वयिरत् तण्डाल्
तेरोडुम् पुरण्डु वीळच् चिन्दियॆन् शिन्दै शॆप्पुम्
वीरमुन् तॆरित्ते नल्लेन् विळिन्दिलेन् मॆलिन्दे निऩ्ऱात्
आरुरा वाहत् तक्के नळियत्ते नळुन्दु हिन्ऱेन् 2147

अवन् पोर् पुरिन्त पोते-जब वह लड़ रहा था तभी; पॊरु अरु-अप्रतिम; वयिरम् तण्टाल्-वज्रदण्ड से; तेरोटुम् पुरण्टु वीळ-रथ के साथ लुढ़क जाए, ऐसा; चिन्ति-छिन्न-भिन्न करके; ॲॆन् चिन्तै शॆप्पुम्-अपने मन के अनुसार; वीरम्-वीरता; मुन् तॆरित्तेन् अल्लेन्-पहले नहीं दिखायी। विळिन्तिलेन्-मरा नहीं; इन्ऱातु मॆलिन्तेन्-अब निर्बल हो रहा हूँ; अळियत्तेन्-दयनीय; अळुन्तुकिन्ऱेन्-(दुःख) मग्न हो रहा हूँ; आर् उऱवु-किसका नातेदार; आक-बनने; तक्केन्-योग्य हूँ। २१४७

जब वह लड़ रहा था तभी मैंने अपने अनुपम वज्रदण्ड से उसको उसके रथ के साथ मिटाकर अपनी हृदयगत वीरता नहीं दिखायी। मैं मरा भी नहीं, अब क्षीण हो रहा हूँ। बेचारा मैं अब (दुःख-सागर में) डूब रहा हूँ। मैं किसका नातेदार होने योग्य रहा। २१४७

ऑत्तलैन् दॉक्क वीडि युय्यिनु मुय्नॅ नुळ्ळम्
कैत्तलै नॅल्लि यॉप्पक् काट्टिलेन् कळितु मिल्लेन्
अत्तलैक् कल्लेन् यानीण् डबयमॅन् ड्रडैन्दु निन्ड्र
इत्तलैक् कल्ले नल्ले निरुतलैक् कॉळ्ळि यॉप्पेन् 2148

ऑत्तु–(वानरों से) सम होकर; अलैत्तु–(शत्रु को) कष्ट देकर; ऑक्कवीटि–साथ मरकर; उय्यिनुम्–या उनके बचने पर; उय्नतु–बचकर; ऍन् उळ्ळम्–मेरे आन्तरिक भाव को; कै तलै नॅल्लि ऑप्प–हाथ के आँवले के समान; काट्टिलेन्–नहीं दिखाया; कळिन्तुम् इल्लेन्–मरा भी नहीं; यान् अ तलैक्कु अल्लेन्–मैं न उस ओर का रहा; ईण्टु–यहाँ; अपयम् ऍन्ड्र–अभयदान चाहकर; अटैन्तु निन्ड्र–जहाँ आया हूँ; इ तलैक्कु अल्लेन्–इधर का ही न रहा; नल्लेन्–भला मैं; इरुतलै कॉळ्ळि–दोनों ओर जलनेवाली लकड़ी; ऑप्पेन्–समान हूँ। २१४८

वानर वीरों के साथ मरकर या जीकर अपने मन के सच्चे भाव को हाथ के आँवले की तरह दिखा नहीं पाया। न ही मैं यह देखने के बाद भी मरा। अब मैं न उधर का रहा न इधर का रहा, जहाँ मुझे शरण मिली है। भला मैं दोनों ओर जलनेवाली लकड़ी के समान बन गया हूँ। —विभीषण चिंता करता रहा। २१४८

अनैयन पलवुम् पन्नि याहुलित् तरर्रु वानै
विनैयुळ पलवुञ् जॅय्यत् तक्कन वीर नीयुम्
निनैविलार् पोल नॅञ्जम् नॅहिळ्दियो नीत्ति यॅन्ना
इनैयन शॊल्लित् तेड्रि यनलन्मड् ड्रिनैय शॅय्दान् 2149

अनैयन–वैसा; पलवुम्–विविध बातें; पन्नि–कहकर; आकुलित्तु–व्याकुल होकर; अरर्रुवानै–जो रो रहा था उसे; अनलन्–अनल (नाम के मन्त्री) ने; वीर–वीर; चॅय्य तक्कन–करने योग्य; विनै–कार्य; पलवुम्–अनेक; उळ–हैं; नीयुम्–आप भी; निनैविलार् पोल–भ्रान्त की तरह; नॅञ्चम् नॅकिळ्तियो–मन मारेंगे क्या; नीत्ति–छोड़ दीजिए; ऍन्ना–कहकर; इनैयन चॊल्लि–इस भाँति की बातें कहकर; तेड्रि–आश्वासन देकर; मड्रु–और; इनैय चॅय्तान्–यों किया। २१४९

इस तरह विविध प्रकार से व्याकुल होकर कलपनेवाले विभीषण से अनल (विभीषण के एक मंत्री) ने कहा, आगे करने के लिए बहुत काम है। इस समय अविवेकी के समान बुद्धिमान आप अधीर होंगे क्या? छोड़ दीजिए। ऐसा उसको आश्वासन देकर उसने यह कार्य किया। २१४९

नीयिनि विरुत्ति याम्पोय् नॅडियवर् कुरॅप्प नॅन्नाप्
पोयिन नलन् पोयप् पुण्णियन् पॉलन्गॉळ् पादम्
मेयिनन् वणङ्गि युड्र वितैयॅलाम् विळङ्गच् चॊन्नान्

नी–आप; इतितु इरुत्ति–सुख से रहिए; यात्–मैं; पोय्–जाकर; मॆटियवर्कु–उरॆप्पत्–श्रीराम को बताऊँगा; ऎन्ता–कहकर; अतलत्–अनल; पोयितत्–गया; पोय्–जाकर; अ पुण्णियत्–उन पुण्यमूर्ति के; पॊलत् कॊळ् पातम्–सुन्दर चरणों में; मेयितत् वणङ्कि–पड़कर नमस्कार किया; उऱ्ऱ वितै ऎलाम्–और जो हुई वह सारी घटनाएँ; विळङ्कच् चॊन्तात्–समझाते हुए कहीं; आयिरम् पॆयरितातुम्–सहस्रनाम भी; अरु–कठोर; तुयर कटलुळ्–दुःखसागर में; आळ्न्तात्–मग्न हुआ। २१५०

"आप यहीं रहें। मैं जाकर प्रभु श्रीराम से कहूँगा" ऐसा कहकर अनल श्रीराम के पास गया। उन पुण्यमूर्ति के सुन्दर चरणों में नमस्कार किया और सारी घटनाएँ सुना दीं। सहस्रनाम श्रीराम दुःख-सागर में मग्न हो गये। २१५०

उरॆत्तिल नॊन्ऱुन् दन्तै युणर्न्दिल नुयिरु मोडक्
करॆत्तिलन् कण्णि नीरॆक् कण्डिल नियादुङ् गण्णाल्
अरॆत्तिल नुलहु मॆल्ला मङ्गैयाऱ् पॊङ्गिप् पॊङ्गि
इरॆत्तिल नुळतॆन् ऱॆण्णि यिरुन्दनन् विम्मि येङ्गि 2151

विम्मि एङ्कि–दुःख से भरकर तरसकर; उयिरुम् ओट–प्राणों के भागते; ऒन्ऱुम् उरॆत्तिलन्–कुछ नहीं बोले; तन्तै–अपने सम्बन्ध में; उणर्न्तिलन्–सुधि नहीं रखी; कण्णित् नीरिल्–आँखों से आँसू; करॆत्तिलन्–नहीं बहाये; यातुम्–कुछ भी; कण्णाल्–आँखों से; कण्टिलन्–नहीं देखा; पॊङ्कि पॊङ्कि–क्रोध में बढ़-बढ़कर; अम् कैयाल्–सुन्दर हाथों से; उलकम् ऎल्लाम्–सारे लोकों को; अरॆत्तिलन्–पीसा नहीं; इरॆत्तिलन्–मुख खोलकर न रोये; उळन् ऎन्ऱु ऎण्णि–मैं हूँ इतना सोचकर; इरुन्ततन्–रहे। २१५१

उन्हें दुःख सताने लगा। उनके प्राण क्षीण हो गये। वे कुछ नहीं बोले। उनकी कुछ सुधि नहीं रही। उनकी आँखों ने न जल बहाया, न कुछ देखा। क्रोध उमँग उठा, पर उन्होंने संसार को पीस नहीं डाला। मुख खोलकर उन्होंने रुदन नहीं किया। "मैं अब भी जीवित (क्यों) रहता हूँ" ऐसा सोचते हुए वे मौन खड़े रहे। २१५१

विम्मितन् वॆवुम्बि वॆय्दुऱ् ऱेङ्गित निरुन्द वीरत्
इम्मुऱॆ यिरुन्दु शॆय्व दियावदु मिल्लॆन् ऱॆण्णिप्
पॊम्मॆन वॆळुन्दु नॊय्दिऱ् पॊरुक्कॆन विशैयिऱ् पोनान्
तॆम्मुऱॆ तुऱन्दु वॆन्ऱ शॆङ्गळ मरुङ्गिऱ् चेर्न्दान् 2152

विम्मितन्–सिसके; वॆतुम्पि–तप्त हुए; वॆय्तुऱ्ऱु–व्यग्र हुए; एङ्कितन्–तरसे; इरुन्त वीरन्–रहे वीर; इ मुऱॆ–इस भाँति; इरुन्तु चॆय्वतु–रहकर करना; यावतुम् इल्–कुछ नहीं; ऎन्ऱु ऎण्णि–ऐसा सोचकर; नॊय्तिल्–जल्दी; पॊम्मॆन ऎळुन्तु–झटिति उठकर; पॊरुक्कॆन–तुरन्त; विशैयिल्–तेजी से; पोनान्–जाकर;

तॅव् मुरै–उचित क्रम; तुरन्तु–भंग कर; वॅन्ऱ–जिसने जीता था; चॅम् कळम् मरुङ्किल्–युद्धमैदान के पास; चेर्न्तान्–गये। २१५२

विलापते हुए मन और शरीर से तप्त होकर जो दुःखी रहे वे वीर यह सोचकर कि इस तरह रहने से क्या होगा ? कुछ नहीं, जल्दी उठे, और तीव्र गति से उस युद्धभूमि में गये जहाँ शत्रु ने क्रम भंग करके (अनुचित रीति से) जीत पायी थी। २१५२

इऴिन्दॅऴुङ् गाळमेह मॅरिकड लनैय मऱ्ऱुम्
ऑऴिन्दन नील वण्ण मुळ्ळन वॅल्ला मॉक्कप्
पिऴिन्ददु काल माहक् काळिमैप् पिळम्बु पोदप्
पॊऴिन्ददु पोन्ऱ वन्ऱे पॊङ्गिरुट् कङ्गुर् पोर्वै 2153

पॊङ्कु इरुळ्–घने अन्धकार का; कङ्कुल् पोर्वै–रात की चादर; इऴिन्तु–समुद्र में पड़कर; ऍऴुम्–ऊपर उठनेवाले; काळ मेकम्–काले मेघों को; ऍरिकटल्–तरंगायमान समुद्रों को; मऱ्ऱुम् ऑऴिन्तत–अन्य जो कहने से छूटे हैं; अनैय नील वण्णम् उळ्ळत–वैसे नीले वर्ण के; ऍल्लाम्–सभी को; ऑक्क पिऴिन्तु–एक साथ निचोड़कर; अतु–उसी समय; कालम् आक–समय मानकर; काळिमै पिळम्पु–घनीभूत कालिमा को; पोत–अधिक परिमाण में; पॊऴिन्ततु पोन्ऱतु–बरसाता जैसे रहा। २१५३

तब रात के अँधेरे की चादर समुद्र में पड़कर ऊपर उठनेवाले काले मेघों को, तरंगायमान समुद्र को और अन्य सारे काले पदार्थों को निचोड़ कर उसी रात में उस कालिमा-पुंज को बरसा रही हो ऐसा लग रहा था। २१५३

आरिरु ळन्नदाह वायिर नामत् तण्णल्
शीरिय वन्नलित् तॅय्वप् पडैक्कलन् दॅरिन्दु वाङ्गिप्
पारिन्मेल् विडुत्त लोडुम् पहैयिरु ळिरिन्दु पाऱच्
चूरिय नुच्चि युऱ्ऱा लॊत्तदव् वुलहिन् शूऴल् 2154

आर् इरुळ्–घना अंधकार; अन्ततु आक–वैसा रहा तब; आयिरम् नामत्तु अण्णल्–सहस्रनामी प्रभु के; चीरिय–श्रेष्ठ; तॅय्वम् अन्नलि पटैक्कलम्–दिव्य आग्नेयास्त्र को; तॅरिन्तु वाङ्कि–चुन लेकर; पारिन् मेल्–भूमि पर; विटुत्तलोटुम्–चलाते ही; पकै इरुळ्–विरोधकारी अंधकार; इरिन्तु पाऱ–टटकर दूर हो गया; चूरियन् उच्चि उऱ्ऱाल् ऑत्ततु–सूर्य अ उलकिन् चूऴल्–उस स्थान का वातावरण; आकाश-मध्य आने पर जैसे हुआ। २१५४

ऐसे घने अन्धकार में प्रभु श्रीराम ने श्रेष्ठ, दिव्य आग्नेयास्त्र चुन लेकर भूमि पर चलाया तो विरोधकारी अन्धकार दूर हो गया। वहाँ आकाश के मध्य पर सूर्य जब पहुँच जाता है तब जैसा रहेगा वैसा (प्रकाश-प्रभावित) रहा। २१५४

पडैयुरु पिणत्तिन् पम्मर् परुप्पदन् दुवन्ड्रिप् पल्वे
रिडैयुरु कुरुदि वॆळ्ळत् तॆड्रिहड लॆळ्नीर्त् तुम्बि
उडैयुरु तलैक्कै यण्ण नुयिरॆला मॊरुङ्गि युण्णुङ्
गडैयुरु कालत् ताऴि युलहन्न कळत्तैक् कण्डान् 2155

पटै उरु–आयुध-लगी; पिणत्तिन् पम्मल्–लाशों के ढेरों के; परुप्पतम् तुवन्ड्रि–पर्वत मिलकर; पल् वेरु–विविध रूप से; इटै उरु–मध्य में रहे; कुरुति वॆळ्ळत्तु–रक्तप्रवाह के; ऍड्रि कटल् ऍऴु नीर्–तरंगायमान समुद्र के जल के कारण; तुम्पि उटै उरु–गजचर्मांबर; तलै कै अण्णल्–और ब्रह्मकपाल को हाथ में लिये चलनेवाले शिव; उयिर् ऍलाम्–सारे जीवों को; ऑरुङ्कि उण्णुम्–एक साथ मिटानेवाले; कटै उरु कालत्तु–युगान्त में; आऴि उलकु अन्न–समुद्रवलयित संसार (जैसा रहता हो वैसे; कळत्तै कण्टान्–युद्धरंग को देखा (श्रीराम ने)। २१५५

युद्ध के मैदान में अस्त्र-शस्त्र-विद्ध लाशों के ढेर पर्वतों के समान पड़े रहे। बीच-बीच में रक्त के प्रवाह के तरंगायमान सागर उमड़ रहे थे। तब वह प्रलयकालीन समुद्रवलयित संसार के समान रहा, जब गजचर्मांबर और कपाली शिव सारे जीवों को खा (मिटा) रहे हों। २१५५

पिणप्पॆरुङ् गुन्ड्रि नूडुङ् गुरुदिनीर् पॆयरप् पेरुम्
निणप्पॆरुञ् जेड्रि नूडुम् पडैक्कल नॆरुक्कि नूडुम्
मणप्पॆरुङ् गळत्तिन् मोडि मङ्गल वाऴ्क्कै वैप्पिर्
कणत्तिनुम् बादिप् पोदिल् तम्बियैच् चॆन्रु कण्डान् 2156

मोटि–दुर्गा के; मङ्कल वाऴ्क्कै–शुभवासस्थान; मणम्–मांसगन्ध; पॆरु कळत्तिन् वैप्पिल्–बड़े युद्धांगन में; पिणम् पॆरु कुन्ड्रिन् ऊटुम्–लाशों के बड़े पर्वतों से होकर और; कुरुति नीर् पॆयर–रक्त-प्रवाह से; पेरुम्–स्थान से स्थान जानेवाली; निणम् पॆरु चेड्रिन् ऊटुम्–चर्बी के घने कीचड़ में; पटै कलम् नॆरुक्किन् ऊटुम्–हथियारों के समूह के मध्य; कणत्तितुम् पाति पोतिल्–पल के आधे समय में; चॆन्रु–जाकर; तम्पियै कण्टान्–भाई को देखा श्रीराम ने। २१५६

दुर्गादेवी की प्यारी भूमि और मांस-गंध-युक्त उस युद्ध-मैदान में श्रीराम ने लाशों के बड़े पर्वतों के और रक्त के बहाव के कारण इधर-उधर चलती रहनेवाली चर्बी की कीच के बीच और हथियारों के मध्य चलते हुए आधे क्षण में अपने भाई को जाकर देखा। २१५६

अय्यव नाक्कै तन्मेल् विऴुन्दुमार् बऴुन्दप् पुल्लि
उय्यल नॆन्न वाविं युयिर्त्तुयिर्त् तुरुहु हिन्रान्
पॆय्यिरु तारैक् कण्णन् पॆरुन्दुळि पिरङ्ग वानिन्
वॆय्यवन् तन्नैच् चेर्न्द नीत्तिरु मेह मॊत्तान् 2157

अय्यवन्–भाई के; आक्कै तन् मेल्–शरीर पर; विऴुन्तु–गिरकर; मार्पु अऴुन्त–छाती खूब चिपक आए ऐसा; पुल्लि–आलिंगन करके; उय्यलन्–ये

(श्रीराम) अब नहीं जिएँगे; ऍन्नुन–ऐसा लोग कहें ऐसा; आवि उयिर्त्तु उयिर्त्तु–लम्बी आहें भर-भरकर; उरुकुकिन्ड्रार्–घुलते हैं; तारै पॅय्–अश्रुधारा बहानेवाली; इरु कण्णन्–दो आँखों वाले होकर; पॅरु तुळि पिड्रक्क–बड़ी बूंदों के बिखते; वानिन्–आकाश में; बॅय्यवन् तन्नॊडुम्–सूर्य से; चेर्न्दु–मिले; नील निऱम् मेकम्–नीले रंग के मेघ के; ऒत्तान्–समान रहे। २१५७

वे अपने भाई के शरीर पर गिरे और उनका कसकर आलिंगन किया। वे ऐसा निःश्वास छोड़ते रहे कि देखनेवालों को यह संदेह हो जाय कि यह जीवित नहीं रहेंगे। निर्बल होते हुए, आँसू बरसानेवाली आँखों के साथ वे आकाश में सूर्य से मिले हुए काले मेघ के समान लगे जिससे बूंदें टपक रही हों। २१५७

उळैक्कुम्वय् वुयिर्क्कु मावि युरुक्कुम्बो युणर्वु शोरुम्
इळैक्कुव दऱिद ऱेऱ्ऱा तिलक्कुवा विलक्कु वावॅन्
ऱळैक्कुन्वन् कैयै वायिन् मूक्किन्वॆत् तयर्क्कु मैया
पिळैत्तियो वॆन्नुम् मॆय्ये पिऱन्देयुम् पिऱन्दि लादान् 2158

मॆय्ये पिऱन्तेयुम्–सचमुच जन्म लेने पर भी; पिऱन्तिलातान्–जो अजन्मा हैं वे; उळैक्कुम्–दुःखी होते; वॆय्तु उयिर्क्कुम्–गरम निःश्वास छोड़ते; आवि उरुक्कुम्–प्राण क्षीण करते; उणर्वु पोय्–सुधि खोकर; चोरुम्–शिथिल पड़ते; इळैक्कुवतु–करना; अऱितल् तेऱ्ऱार्–न जान पाते; इलक्कुवा इलक्कुवा–लक्ष्मण, लक्ष्मण; ऍन्ऱु–पुकारकर; तन् कैयै–अपने हाथ को; वायिन् मूक्किन्–मुख में और नाक पर; वैत्तु–रखते और; अयर्क्कुम्–घुलते; ऐया–तात; पिळैत्तियो–जिओगे क्या; ऍन्नुम्–चीख उठते। २१५८

श्रीराम ने जन्म लिया था यह सच था तो भी वे अजन्मा थे, क्योंकि वे परमात्मा थे। ऐसे श्रीराम दुःखी हुए। लम्बी आहें भरीं, निर्बल हुए और सुधि खोकर शिथिल हुए। 'क्या करें' यह न जानकर पुकारने लगे कि "लक्ष्मण! लक्ष्मण!" उन्होंने अपने हाथ को लक्ष्मण के मुख और नाक पर रखकर देखा कि क्या श्वास चलता है। व्याकुल होकर चीखे कि हे तात! क्या तुम बचोगे भी?। २१५८

तामरैक् कैयाऱ् ऱाळैत् तैवरुम् कुऱङ्गैत् तट्टुम्
तूमलर्क् कण्णं नोक्कुम् मार्बिडैत् तुडिप्पुण् डॆन्ना
एमुऱम् विशुम्बै नोक्कु मॆडुत्तॆडुत् तिऱुहप् पुल्लुम्
पूमियिल् वळर्त्तुम् कळ्वत् पोयहन् ऱानो वॆन्नुम् 2159

तामरै कैयाल्–कमल-से हस्त;से; ताळै तै वरुम्–पैरों को सहलाते; कुऱङ्कै तट्टुम्–ऊरुओं पर थपकी देते; तूमलर् कण्णै–पवित्र दृष्टि को; नोक्कुम्–देखते; मार्पिडै–छाती में; तुडिप्पु उण्टु–धड़कन है; ऍन्ना एमुऱम्–ऐसा सुखी होते; विशुम्पै नोक्कुम्–आकाश को देखते; ऍडुत्तु ऍडुत्तु–उठा-उठाकर; इऱुक पुल्लुम्–

गाढ़ालिंगन करते; पूमियिल् वळर्त्तुम्–भूमि पर लिटाते; कळ्वन्–चोर; पोय् अकन्ऱातो–चला गया क्या; ऍन्नुम्–पूछते। २१५६

वे अपने कमल-सम हाथ से लक्ष्मण के पैरों को सहलाते; ऊरुओं पर थपकी देते। पवित्र नेत्रकमल को निहारते। "वक्ष में धड़कन सुनाई देती है" —यह देखकर खुश होते। आकाश को देखते। लक्ष्मण को बार-बार उठाकर गले लगा लेते और फिर नीचे रख देते। पूछते कि क्या चोर (इन्द्रजित्) चला गया? । २१५९

विल्लिनै नोक्कुम् पाश विशिप्पिनै नोक्कुम् वीया
अल्लिनै नोक्कुम् वानत् तमररै नोक्कुम् पारैक्
कल्लुवन् वेरो डॅन्नुम् पवळवाय् कडिक्कुम् कट्रोर्
शॊल्लिनै नोक्कुम् तन्बोल् पुहऴिनै नोक्कुम् दोळान् 2160

तन् पोल्–अपने प्राणों के समान; पुकऴिनै–यश को; नोक्कुम्–देखनेवाले; तोळान्–कंधों वाले; विल्लिनै नोक्कुम्–धनु को देखते; पाश विचिप्पिनै नोक्कुम्–पाशबन्धन को देखते; वीया–जो अन्त नहीं होती; अल्लिनै नोक्कुम्–उस रात को देखते; वानत्तु अमररै–आकाशलोक के देवों को; नोक्कुम्–देखते; पारै वेरोटु कल्लुवन्–भूमि को जड़ से उखाड़ दूँगा; ऍन्नुम्–कहते; पवळम् वाय्–प्रवाल-सम मुख (होंठ); कडिक्कुम्–काटते; कट्रोर् चॊल्लिनै–विद्वानों की सूक्तियों का; नोक्कुम्–विचार करते। २१६०

यश को भी अपने प्राण-सम माननेवाले सुन्दरभुज श्रीराम अपने धनु को देखते, फिर पाश-बंधन को देखते। उस रात को देखते जिसका प्रभात ही नहीं होता। आकाश के देवों को देखते और ललकारते कि भूमि को जड़ से उखाड़ दूँगा। वे प्रवाल-सम होंठ काटते और विद्वानों के कथनों पर विचार करते। २१६०

वीररै यॆल्लाम् पार्क्कुम् विदियिनैप् पार्क्कुम् वीरप्
पारवॆञ् जिलैयैप् पार्क्कुम् पहऴियैप् पार्क्कुम् पारिल्
यारिवु पट्टा रॆन्बो लिऴिवन्द तण्ण मॆन्नुम्
नेरिवु पॆरिदॆन् ड्रोदु मळवैयि निमिर निन्ड्रान् 2161

अळवैयिन्–प्रमाणों से भी; निमिर निन्ड्रान्–परे जो रहते हैं वे श्रीराम; वीररै ऍल्लाम् पार्क्कुम्–वीरों को देखते; वितियिनै पार्क्कुम्–विधि को देखते; वीरम्–वीरकृत्य; पार वॆम् चिलैयै–भाररूप कठोर धनु को देखते; पकऴियैप् पार्क्कुम्–शरों पर दृष्टि डालते; पारिल्–भूमि पर; ऍन् पोल्–मेरे समान; इऴिवन्त वण्णम् इतु–निम्न स्थिति; यार् पट्टार्–किसने पायी; ऍन्नुम्–कहते; इतु पॆरितु नेरितु–यह बड़ा ही सुन्दर है; ऍन्ड्र ओतुम्–ऐसा कहते। २१६१

अप्रमेय श्रीराम पड़े रहे वानर वीरों को देखते और विधि के विधान को सोचते। वीरकृत्य योग्य पर भार-रूप भयंकर धनु को और शरों को

देखते। कहते इस संसार में मेरी जैसी यह निंद्य स्थिति किसने पायी है। व्यंग्य की वाणी में कहते कि यह भी बड़ी सुन्दर स्थिति है। २१६१

ॲडुत्तपो रिलङ्गै वेन्दन् मैन्दत्तो डिळैय कोवुक्
कडुत्तवॅन् रॅन्नै वल्लै यळैत्तिलै यरविन् पाशम्
तॊडुत्तकै तलैयि तोडुन् दुणित्तुयिर् तुडैक्क वॅन्नैक्
कॅडुत्तनै वीड णानी यॅन्ऱनन् केडि लादान् 2162

केट्ठ इलातान्–अक्षयपुरुष श्रीराम ने; इलङ्कै वेन्तन् मैन्तत्तोटु–लंका के राजा के पुत्र के साथ; इळैय कोवुक्कु–लघुराज का; अॅटुत्त पोर्–भीषण युद्ध; **अटुत्तदु–हो गया;** अॅन्ऱु–कहकर; अरविन् पाचम् तॊटुत्त–नागपाश चलानेवाले; **कै–हाथ को;** तलैयित्तोटुम् तुणित्तु–सिर के साथ काटकर; उयिर् तुटैक्क–**प्राणों का अन्त करने;** अॅन्नै–मुझे; वल्लै अळैत्तिलै–जल्दी से नहीं बुलाया तुमने; **वीटणा–बिभीषण;** नी अॅन्नै कॅटुत्तनै–तुमने मुझे बिगाड़ दिया; अॅन्ऱनन्–कहा। २१६२

अक्षयपुरुष श्रीराम ने विभीषण से शिकायत की, तुमने मुझे यह सुनाकर नहीं बुलाया कि लंकाधिपति के पुत्र और आपके भाई में बड़ा भीषण युद्ध हो गया है आप आकर नागपाश लिये हुए शत्रु के हाथों को उसके सिर के साथ काट दीजिए और प्राणों का अन्त करा दीजिए। तुमने मुझे बिगाड़ दिया है। २१६२

अव्वुरै यरुळक् केट्टा नऴिहिन्ऱ वरक्कन् ऱम्बि
इव्वऴि यवन्वन् देऱ्प दऱिन्दिलॅ मॅदिर्न्द पोदुम्
वॅव्वऴि यवने तोऱ्कु मॅन्पदु विरुम्बि निन्ऱेन्
वॅय्यवन् पाशञ् जॅय्द शॅयलिन्द मायच् चॅय्है 2163

अऴिकिन्ऱ–जो खुद घुल रहा था; अरक्कन् तम्पि–**राक्षस के उस भाई ने; अव् उरै–वह वचन;** अरुळ–कृपा के साथ कहते; केट्टान्–सुना; **इ वऴि–यहाँ; अवन्–उस (इन्द्रजित्) का;** वन्तु एऱ्पतु–आकर युद्ध ठानना; **अऱिन्तिलॅम्–हमने नहीं जाना था;** अॅतिर्त्त पोतुम्–भिड़ने के बाद भी; **वॅव्वऴि–दुष्टमार्गी; अवने–वही;** तोऱ्कुम्–हारेगा; अॅन्पतु–**वही; विरुम्पि निन्ऱेन्–प्रतीक्षा करता रहा; इन्त माय चॅय्कै–यह मायाकार्य;** वॅय्यवन् पाचम्–**दैवी और कठोर पाश का; चॅय्त चॅयल्–किया काम है।** २१६३

उस कृपा-वचन को सुनकर दुःख से क्षीण होनेवाले विभीषण ने निवेदन किया, हमने पहले यह नहीं जाना था कि वही आकर युद्ध करेगा। जब वह आ ही गया और दोनों लड़ने लगे, तब मैंने यही प्रतीक्षा की कि दुष्ट इन्द्रजित् हारेगा। यह माया का काम दैवी और कठोर नागपाश का काम है। २१६३

अऱ्ऱवि हाय नाक्कै तलैयिल वाक्कि याण्डु
वॅऱ्ऱिय नाय वीरन् मीण्डिल तिलङ्गै मेताट्

पॆऱ्ऱव नॆय्दु मॆन्नुम् पॆऱ्ऱियै युन्निप् पिऱ्पो
वुऱ्ऱनन् मैन्दन् तानै नाऱ्पदु वॆळ्ळत् तोडुम् 2164

अऱ्ऱ–उस दिन; अतिकायन् आक्कै–अतिकाय का शरीर; तलै इलतु आक्कि–सिर से रहित बनाकर; आण्ट वॆऱ्ऱियन्–प्राप्त विजय का; आय वीरन्–स्वामी बने वीर; मेनाळ्–पहले; इलङ्कै पॆऱ्ऱवन्–जिसने लंका को (कुबेर से छीन) लिया था, वही; ऎय्तुम्–लड़ने आएगा; ऎन्नुम् पॆऱ्ऱियै–उस संभावना को; उन्नि–सोचकर; मीण्टिलन्–बिना लौटे रह गये (लक्ष्मण); पिऱ्पोतु–पश्चात्; तानै–सेना; नाऱ्पतु वॆळ्ळत्तोटुम्–चालीस 'वॆळ्ळम्' के साथ; मैन्तन्–रावणपुत्र; उऱ्ऱनन्–आ गया। २१६४

उस दिन जिन विजयी वीर लक्ष्मण ने अतिकाय को सिरहीन बना दिया था वे वीर यही सोचकर युद्धरंग में खड़े रह गये कि रावण, जिसने लंका को कुबेर से हथिया लिया था, स्वयं लड़ने आयेगा। लेकिन रावण का पुत्र चालीस 'वॆळ्ळम्' सेना के साथ लड़ने आ गया। २१६४

ईण्डुनञ् जेनै वॆळ्ळ मिरुपदिऱ् ऱिरट्टि माळत्
तूण्डिनन् पहऴि मारि तलैवर्हळ् तॊलैन्दु शोर
मूण्डॆऴु पोरिऱ् पारिन् मुऱैमुऱै मुडित्तान् पिन्नर्
आण्डहै योडु मॆऱ्ऱा नायिर मडङ्गर् ऱेरान् 2165

आयिरम् मटङ्कल् तेरान्–हजार सिंहों के रथ के सवार ने; मूण्टु ऎऴु पोरिल्–घोर रूप से हुए युद्ध में; ईण्टु–मिली हुई; नम् चेनै वॆळ्ळम्–हमारी सेनाओं के समूह में; इरुपतिऱ्ऱु इरट्टि माळ–दो के बीस (चालीस) 'वॆळ्ळम्' मर जाएँ ऐसा; तलैवर्कळ्–वानरयूथप; तॊलैन्तु–मरकर; पारिल् चोर–भूमि पर गिर जाएँ ऐसा; पकऴि मारि तूण्टिनन्–शरवर्षा चलायी; मुऱै मुऱै मुटित्तान्–बारी-बारी से काम तमाम किया; पिन्नर्–बाद; आण्टकैयोटुम्–पुरुषश्रेष्ठ के साथ; ऎऱ्ऱान्–भिड़ा। २१६५

हजार सिंहों के जुते रथ पर इन्द्रजित् आया। उसने प्रचंड युद्ध में शरों की वर्षा कराकर हमारी चालीस 'वॆळ्ळम्' की सेना को और सेनापतियों को बारी-बारी से मार गिराया। फिर पुरुषतिलक लक्ष्मण से भिड़ा। २१६५

अनुमन्मेल् निन्ऱ वैय नायिरत् तेरु मायत्
तनुवलङ् गाट्टिप् पिन्नै नाऱ्पदु वॆळ्ळत् तानै
पनियियैप् पडुवित् तन्नान् बलत्तैयुन् दॊलैत्तुप् पट्टान्
इनियॆन वयिर वाळि यॆण्णिल निऱुत्ति नॆय्दान् 2166

अनुमन् मेल् निन्ऱ–हनुमान पर सवार; ऐयन्–प्रभु ने; आयिरम् तेरुम्–हजारों रथों को; माय–मिटाते हुए; तन वलम् काट्टि–धनु-बल दिखाकर; पिन्नै–बाद;

नाऱ्पतु वॆळ्ळम्–चालीस 'वॆळ्ळम्'; तानै पत्तियित्तै–सेना रूपी ओस को; पट्वित्तु–मिटाकर; अन्तान् पलत्तैयुम्–उसके पार्श्वरक्षकों (धूम्राक्ष और महापार्श्व) को; तॊलैत्तु–मिटाकर; इत्ति पट्टान्–अब मरा; ऎन्न–ऐसा; ऎण् इल–बेशुमार; वयिरम् वाळि–वज्र-सम शर; निरुत्तितन्–वक्ष पर; ऎय्तान्–चलाये। २१६६

हनुमान पर सवार लक्ष्मण ने धनु का कौशल दिखाया, जिससे इन्द्रजित् के हज़ार रथ नष्ट हुए; चालीस 'वॆळ्ळम्' सेना का कुहरा दूर हुआ और उसके अंगरक्षक धूम्राक्ष और महापार्श्व मर गये। फिर उन्होंने इन्द्रजित् के वक्ष पर असंख्यक हज़ारों शर चलाये, तब लोगों ने समझा कि वह अभी मर गया। २१६६

एवुण्ड पहुवा योडुङ् गुरुदिनी रिळ्िय निन्ऱान्
तूवुण्ड तानै मुऱ्ऱुम् पडवीरु तमियन् शोर्वान्
पोवुण्ड ऎन्ऩि नैय पुणर्क्कुमो माय मॆन्ऱु
पावुण्ड कीर्त्ति यानुक् कुणर्त्तिनऩ् परिदि पट्टान् 2167

ए उण्ट–शरविद्ध; पकुवाय्–भागों से; कुरुति नीर्–रक्तवारि; इळिय–बहाते हुए; निन्ऱान्–जो खड़ा रहा वह; तू उण्ट–मांसाहारी; तानै मुऱ्ऱुम् पट–सारी सेना के मिटते; तमियन्–अकेला; चोर्वान्–निर्बल हुआ; ऐय–प्रभु; पोवुण्टतु ऎन्निन्–यह बच जाएगा तो; मा मायम् पुणर्क्कुम्–बड़ा मायाकार्य करेगा; ऎन्ऱु–ऐसा; पा उण्ट कीर्त्तियानुक्कु–विद्वज्जन-शंसित कीर्ति वाले से; उणर्त्तिनन्–समझाया; परिति पट्टान्–सूर्य अस्त हुआ। २१६७

इन्द्रजित् के शरीर पर जहाँ-जहाँ शर लगे, वहाँ गहरे व्रण हो गये और रक्त बहता रहा। मांसाहारी राक्षस-सेना सारी मर गयी और वह अकेला थकित खड़ा रहा। मैंने विद्वानों से प्रशंसित लक्ष्मण को समझाया कि अगर यह बच जाएगा तो बहुत बड़ा मायाकार्य करेगा। उसी क्षण सूर्य डूब गया। २१६७

मायत्ता लिरुण्ड ताळि युलहॆलाम् वञ्जन् वानिऱ्
पोयत्ता नुडैय वञ्ज वरत्तिना लॊळित्तुप् पोयिन्
वायत्तारप् पाशम् वीशि ययर्वित्ता नम्बिन् वॆम्बुम्
कायत्ता नॆन्नच् चॊल्लि वणङ्गिनान् कलुळुङ् गण्णान् 2168

आऴि उलकु ऎलाम्–समुद्रवलयित भूमि भर; मायत्ताल्–माया के हेतु; इरुण्टतु–अन्धकारमय हो गयी; अम्पिन्–(लक्ष्मण के) बाणों से; वॆम्पुम् कायत्तान्–तप्त शरीर वाले ने; वञ्चन् वानिल् पोय्–आकाश में जाकर; तान् उटैय–अपने प्राप्त; वञ्चम् वरत्तिताल्–वंचक वर से; पोय् ऒळित्तु–जा छिपकर; इव् आयत्तार्–इस वानरगण को; पाचम् वीचि–पाश फेंककर; अयर्वित्तान्–बेहोश कर दिया; ऎन्न चॊल्लि–यह कहकर; कलुळुम् कण्णान्–आंसू बहाती आँखों वाले (विभीषण) ने; वणङ्कितान्–नमस्कार किया। २१६८

समुद्रमेखला भूमि अंधकार में डूब गयी। शस्त्र-व्रणों से तप्त शरीर वाला वंचक इन्द्रजित् आकाश में गया, मायानुकूल वर के बल से छिप गया। वहाँ से उसने पाश फेंककर वानरों को बेहोश कर दिया। यह कहते हुए रोती हुई आँखों का विभीषण विनत हुआ। २१६८

पिन्नैयु मॅऴुन्दु पेर्त्तुम् वणङ्गियॅम् बॅरुम यारुम्
इन्नुयिर् तुऱन्दा रिल्लै यिऱुक्किय पाश मिऱ्ऱाल्
पुन्नुनैप् पहळिक् कोयुन् दरत्तरो पुलम्बि यॅन्नै
इन्नलुऱ् ऱयरल् वॅल्ला वऱत्तदिन्नैप् पाव मॅन्ऱान् 2169

पिन्नैयुम् ॲळुन्तु–फिर उठकर; पेर्त्तुम् वणङ्कि–फिर नमस्कार करके; ॲम् पॅरुम–हमारे स्वामी; इऱुक्किय पाचम्–बाँधनेवाला पाश; इऱ्ऱाल्–टूटे तो; इन् उयिर् तुऱन्तार् इल्लै–प्यारे प्राणों को नहीं छोड़ गये हैं; पुल् नुनै–अल्प नोक वाले; पकळिक्कु–शर से; ओयुम् तरत्तरो–मरनेवाले हैं क्या; पुलम्पि ॲन्नै–रोने से क्या; इन्नल् उऱ्ऱु–दुःखी होकर; अयरल्–निर्बल मत हों; पावम्–पाप; अऱत्तिनै वॅल्ला–धर्म को नहीं जीतेगा; ॲन्ऱान्–कहा। २१६९

उसने उठकर फिर नमस्कार किया और कहा कि हे हमारे प्रभु! बाँधनेवाला पाश टूट जायेगा तो ये जी जाएँगे। क्या ये छोटी नोक के अल्प अस्त्रों से बल खोनेवाले हैं। रोने से क्या लाभ है? आप दुःखी होकर संकट मत करें। पाप धर्म को जीत नहीं सकता। २१६९

यारिदु कॊडुत्त दैव मॅन्नैयी दिदनैत् तीरुम्
कारण मियादु निन्ना लुणर्न्ददु कळ्ऱिक् काणॆन्
ऱारियन् विनव वण्णल् वीडण नमल शालच्
चीरिदॆन् ऱुदनै युळ्ळ परिशॆलान् दॆरियच् चॊन्नान् 2170

इतु–यह; कॊटुत्त–जिसने दिया वह; तेवन् यार्–देव कौन है; ईतु ॲन्नै–इसका गुण क्या है; इतनै तीरुम्–इससे छूटने का; कारणम् यातु–उपाय क्या है; निन्नाल् उणर्न्ततु–तुम्हें जो विदित है; कळ्ऱि काण्–वह बताओ; ॲन्ऱु–ऐसा; आरियन् विनव–आर्य के पूछने पर; अण्णल् वीटणन्–महिमावान विभीषण ने; अमल–अमल; चाल चीरितु–बहुत अच्छा कहकर; अतनै उळ्ळ–उसके सम्बन्ध में; परिचु ॲल्लाम्–सारी बातें; तॆरिय चॊन्नान्–समझाकर कहीं। २१७०

आर्य श्रीराम ने पूछा कि यह नागपाश देनेवाला देवता कौन है? इससे छूटने का उपाय क्या है? तुम जो जानते हो, बताओ। महिमावान विभीषण ने अच्छा कहकर तत्सम्बन्धी सारी बातें बतायीं। २१७०

आऴियञ् जॅल्व पण्डिव् वहलिड मळित्त वण्णल्
वेऴ्वियिर् पडैत्त दीशन् वेण्डिनन् पॅऱ्ऱु वॅऱ्ऱि

ताळ्वरु शिन्दै योर्क्कुत् तवत्तिना लळित्त तानै
ऊळियि निमिर्न्द कालत् तुरुमिन दूर्र मीदाल् 2171

आळि अम् चॅल्व–चक्रधारी सुन्दर प्रभु; पण्टु–प्राचीन दिन में; इ अकल् इडम्–यह विशाल भूमि; अळित्त अण्णल्–सृष्ट जिन्होंने की, उन महिमामय ब्रह्मा का; वेळ्वियिल् पटैत्तततु–यज्ञ में पैदा किया हुआ है; ईचन्–शिवजी का; वेण्टित्त पॅर्र–माँग लेकर; वॅर्रि पॅर्रु–विजय पाकर; ताळ्वु अरु–न झुकनेवाले; चिन्तैयोर्क्कु–मनवाले इन्द्रजित् को; तवत्तिनाल्–तपस्या के बदले में; अळित्ततु–प्रदान किया हुआ; आणै–यह सच है; ऊळियिन् निमिर्न्त कालत्तु–प्रलयकाल में उठनेवाली; उरुमित्तु–गाज के स्वभाव का है; इतन् ऊर्रम् इतु–इसका प्रभाव यह है। २१७१

चक्रधारी श्रीमान्! पुराने समय में विश्वस्रष्टा ब्रह्मा ने इसको एक यज्ञ द्वारा पैदा किया। शिव ने उसको ब्रह्मा से माँग लिया था। फिर उन्होंने उत्कृष्ट तपस्या के फलस्वरूप इन्द्रजित् को इसे दिया था। यही सच है। इसका युगांतकालीन वज्र का जैसा बल है। २१७१

अन्नद नार्र लन्रे यायिरङ् गण्णि नानैप्
पिन्नुर वयिरत् तिण्डोळ् पिणित्तदु पॅयर्त्तोन् ऱॅण्णि
ऑन्निनि यनुमन् तोळै यिरुक्किय दिदना लाण्डुम्
पोन्नुल हाळुम् जॅल्वन् दुरन्ददु पुलव रॅल्लाम् 2172

आयिरम् कण्णिनानै–सहस्राक्ष इन्द्र के; तिण् वयिरम् तोळ्–सुदृढ़ वज्र-सम कंधों को; पिन् उर–पीठ पर कसकर; पिणित्ततु–जो बाँधा था; अन्नतत् आर्रल् अन्रे–इसका ही बल था न; आण्टुम्–तब भी; अनुमन् तोळै–हनुमान के कंधों को; इरुक्कियतु इततनाल्–बाँधा था इसी से; पुलवर् ऍल्लाम्–सभी देवों को; पॊन् उलकु आळुम्–स्वर्णनगरी (देवलोक) के शासन को; तुरन्ततु–छोड़ना पड़ा; इनि ऑन्रु पॅयर्त्तु–अब फिर किसी दूसरी बात को; ऍण्णि ऍन्–सोचने से क्या। २१७२

सहस्रनेत्र इन्द्र के कठोर और सुदृढ़ कंधे बँधे, इसी के प्रताप से न! लंका में हनुमान के कंधों को मेघनाद ने बाँधा था इसी नागपाश से। देवों ने अपना स्वर्गलोक गँवाया था इसी की कठोरता से। फिर और कुछ सोचने से क्या लाभ है। २१७२

तान्विडिल् विडुमि दॊन्रे शदुमुहन् मुदल्व राय
वान्विडिल् विडावु मर्रिम् मण्णिनै यॅण्णि यॅन्नॆ
ऊन्विड वुयिर्पोय् नीङ्ग नीङ्गुम्वे रुय्वि यिल्लैत्
तेन्विडु तुळवत् तारा यिदुविदन् शॅय्है यॅन्राल् 2173

तेन् विटु–मधु बहानेवाली; तुळवम् ताराय्–तुलसीमालाधारी; ऑन्रु–एक; इतु तान् विटिल्–यह खुद छूटे तो; विटुम्–छोड़े; चतुमुकन् मुतल्वर् आय–चतुर्मुख

आदि; वान् विटिल् विटातु–देवों के प्रयत्न से भी नहीं छूटेगा; मऱ्ऱु–फिर; इ मण्णिनै–इस पृथ्वी को; ॲण्णि ॲन्नै–सोचने से क्या लाभ; ऊन् विट–शरीर गिरे; उयिर् पोय् नीङ्क–प्राण चले जाएँ तो; नीङ्कुम्–यह छूटे; उय्ति वेऱु इल्लै–और कोई बचाव नहीं; इतन् चॅय्कै इतु–इसका काम यही; ॲन्ऱान्–कहा बिभीषण ने। २१७३

शहद बहानेवाली तुलसीमालाधारी ! यह पाश खुद छूटे तो छूटे। नहीं तो चतुर्मुख आदि देवों द्वारा भी छुड़ाया नहीं जा सकता। फिर इस भूलोकवासी के सम्बन्ध में सोचना क्या ? शरीर टूट जाय, प्राण निकल जाएँ, तभी यह छूटेगा और कोई उपाय नहीं। इसका यही क्रम है। २१७३

ईन्ऱुळ तेवर् मेले ऍऴुहॅन्नो वुलहॅमि यावुम्
तोन्ऱुह नूऱि यानुन् दीर्हॅन्नो विलङ्गै शिन्दप्
पाय्न्दवर् शुऱ्ऱ मुऱ्ऱुम् पडुप्पॅन्नो वियन्ऱ पण्बो
डेय्न्दद पहर्दि यॅन्ऱा निमैयव रिडुक्कण् डीर्प्पान् 2174

इमैयवर् इडुक्कण् तीर्प्पान्–देवसंकट-हारी (श्रीराम) ने; ईन्ऱुळ तेवर् मेले–देनेवाले देवों पर; ऍऴुकॅन्नो–धावा बोल दूँ; उलकम् यावुम्–सारे लोकों को; तोन्ऱु उक नूऱि–जला मिटाकर; यानुम्–मैं भी; तीर्कॅन्नो–मर जाऊँ; इलङ्कै चिन्त–लंका मटियामेट कर; पाय्न्तु–उस पर आक्रमण करके; अवर् चुऱ्ऱम् मुऱ्ऱुम्–उनके बन्धु-बान्धव सभी को; पडुप्पॅन्नो–मार डालूँ; इयन्ऱ पण्पोटु एय्न्ततु–अब की हालत में योग्य; पकर्ति–कहो; ॲन्ऱान्–पूछा। २१७४

देवकष्टहारी श्रीराम ने विभीषण से गुस्से के साथ पूछा कि क्या मैं उन देवताओं पर आक्रमण करूँ जिन्होंने यह दिया है। या सभी लोकों का नाश करके मैं भी मर जाऊँ ? या लंका नगर को मिटाकर उस पर चढ़ूँ और राक्षसों को उनके रिश्तों के साथ मार डालूँ ? इस समय योग्य जो काम है वह बताओ। २१७४

वरङ्गॊडुत् तिन्नैय पाशम् वळङ्गिनान् तानॆ नेर्वन्
दिरङ्गिडत् तक्क दुण्डे लिहऴ्हिलॅ निल्लै यॅन्निन्
उरङ्गॊडुत् तुलह मून्ऱु मोरुवनो रम्बिर् चुट्ट
पुरङ्गळिऱ् ऱीय्त्तुक् काण्बॅन् पॊडियॊरु कडिहैप् पोऴ्दिन् 2175

वरम् कॊटुत्तु–वर देकर; इन्नैय पाचम् वऴङ्किनान्–ऐसा पाश जो दिया; तानॆ नेर् वन्तु–वह खुद आकर; इरङ्किट–दया चाहने; तक्कतु उण्टेल्–का काम करे तो; इकऴ्किलॅन्–उपेक्षा नहीं करूँगा; इल्लै ॲन्निन्–नहीं तो; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों का; उरम् कॊटुत्तु–बल मिटाकर; ओरुवन्–अद्वितीय शिव ने; ओर् अम्पिल्–एक बाण से; चुट्ट पुरङ्कळिल्–जिन्हें जलाया उन त्रिपुरों के समान; ओरु कटिकै पोऴ्तिन्–एक घड़ी में; पॊटि काण्पॅन्–धूल में मिलाऊँगा। २१७५

इन्द्रजित् को जिसने वर देकर यह पाश दिया वही देवता स्वयं आकर पछताएगा तो मैं उसकी अवहेलना नहीं करूँगा। नहीं तो तीनों लोकों को निर्बल बनाकर, जैसे अद्वितीय शिवजी ने त्रिपुर को जलाया था वैसे उन्हें जलाकर एक घड़ी में राख बना दूंगा। २१७५

ऍम्बिये थिऱक्कु मॅऩ्ऩि लॅऩक्किऩि यिलङ्गै वेन्दत्
तम्बिये पुहऴ्ता ऩॅऩ्ऩै पऴियॅऩ्ऩै यऱन्दा ऩॅऩ्ऩै
नम्बिये यॅऩ्ऩैच् चेर्न्द नण्बरि ऩल्ल वामे
उम्बरु मुलहत् तुळ्ळ वुयिर्हळु मुदवि पार्त्ताल् 2176

इलङ्कै वेन्तन् तम्पिये–लंकाराज के छोटे भाई; ऍम्पिये–मेरा छोटा भाई हो; इऱक्कुम् ऍऩ्ऩिल्–मरेगा तो; ऍऩक्कु–मुझे; इऩि–अब; पुकऴ्तान् ऍऩ्ऩै–यश से क्या (मतलब); पऴि ऍऩ्ऩै–निन्दा से क्या; अऱम् तान् ऍऩ्ऩै–धर्म क्या; उतवि पार्त्ताल्–उपकार का विचार करें; उम्पुरम्–आकाशलोकवासी; उलकत्तु उळ्ळ–और भूलोकवासी; उयिर्कळम्–जीव; नम्पिये ऍऩ्ऩै चेर्न्त–मुझ पर विश्वास करके जो मेरे साथ आये; नण्परिन्–मित्रों (वानरों) से; नल्ल आमे–अच्छे होंगे क्या। २१७६

लकाधिपति के छोटे भाई ! मेरे छोटे भाई मर ही गये तो आगे के मेरे किसी भी कार्य से होनेवाले यश से क्या ? या मिलनेवाली निंदा से क्या ? धर्म भी क्या ? उपकार देखूं तो देवलोकवासी, भूलोकवासी और मेरे मित्र वानर इनसे बढ़कर कोई अच्छे हैं क्या ? । २१७६

ऍऩ्ऱुकॊण् डियम्बि यीण्डिङ् गॊरुवऩिङ् गिडुक्कण् शॅय्य
वॆऩ्ऱऱ मुलहै माय्त्तल् विदियऩ्ऱा लॆऩ्ऱु विम्मि
निऩ्ऱुनिऩ् ऱुऩ्ऩि युऩ्ऩि नॆडिदुयिर्त् तलक्क णुऱ्ऱाऩ्
तऩ्ऱुणैत् तम्बि तऩ्मेऱ् ऱुणैवर्मेऱ् ऱाऴ्न्द वऩ्बाऩ् 2177

तन् तुणै तम्पि तन् मेल्–अपने साथी अपने छोटे भाई पर; तुणैवर् मेल्–साथी वानरों पर; ताऴ्न्त अन्पान्–स्थिर प्रेम रखनेवाले; ऍन्ऱु कॊण्टु इयम्पि–ऐसा कहकर; ईण्टु–यहाँ; ऑरुवन्–एक के; इङ्कु–यहाँ; इटुक्कण् चॆय्य–संकट देने पर; अऱम् उलकै–श्रेष्ठ संसार को; वॆन्ऱु माय्त्तल्–हराना और मिटाना; वितियन्ऱु–उचित नहीं है; ऍन्ऱु विम्पि–कहकर दुःख से भरकर; निन्ऱु निन्ऱु–रह-रहकर; उऩ्ऩि उऩ्ऩि–सोच-सोचकर; नॆटितु उयिर्त्तु–लम्बी आहें भरकर; अलक्कण् उऱ्ऱान्–व्याकुल हुए। २१७७

अपने साथी छोटे भाई पर और वानर मित्रों पर अचल प्रेम रखनेवाले श्रीराम ने यह कहने के बाद यह कहा कि यहाँ एक ने कष्ट दिया तो उसके बदले श्रेष्ठ संसार का नाश करना उचित नहीं है। इस भाँति वे विलाप करते हुए, तरह-तरह से सोचते हुए और लम्बी आहें भरते हुए दुःखी रहे। २१७७

मीट्टुम्वन्दु इळैय वीरत् तॅरुपत्त विशयत् तोळप्
पूट्टुरु पाशन् दत्तैप् पन्मुरै पुरिन्दु नोक्कि
वीट्टिय तॅन्निल् पिन्नै वीवत्तॅन् ऱॅण्णुम् वेदत्
तोट्टियित् तॉडक्कि ऩिऱ्कुन् दुणैक्कैम्मा लियानै यन्नान् 2178

वेतम् तोट्टियित्–वेद रूपी अंकुश के; तॉटक्किल् निऱ्कुम्–वश में रहनेवाले; तुणै कै–दो सूँड़ों के; माल् यानै–बड़े गज; अन्नान्–के समान श्रीराम; मीट्टुम् वन्तु–फिर आकर; इळैय वीरत्–लघुवीर के; वॅऱ्पु अन्न–पर्वतोपम; विचयम् तोळै–विजयी कंधों को; पूट्टुरु–बाँधनेवाले; पाचम् तन्नै–पाश को; पन्मुरै–बार-बार; पुरिन्तु नोक्कि–ग़ौर से देखकर; वीट्टियतु ॲन्निल्–(यह लक्ष्मण का) अन्त कर देगा तो; वीवन्–मर जाऊंगा; ॲन्ऱु ॲण्णुम्–ऐसा सोचते। २१७८.

वेदों के अंकुश के अधीन रहनेवाले दो सूँड़ों के हाथी के समान श्रीराम ने लौट आकर लघु वीर लक्ष्मण के पर्वत सम कंधों को और उनको बाँधे रहनेवाले नागपाश को अनेक वार अर्थपूर्ण दृष्टि से देखकर मन में सोचा कि अगर यह लक्ष्मण को जान से मार देगा तो मैं भी मर जाऊँगा। २१७८

इत्तन्मै यॅय्दु मळविन्ग णिन्ऱ विमैयोर्ह ळञ्जि यिदुपोय्
ॲत्तन्मै यॅय्दि मुडियुङ्गॉ लॅन्ऱु कुलैहिन्ऱ वॅल्लै यवन्वाय्
अत्तन्मै कण्डु पुडैनिन्ऱ वण्णल् कलुळन्ऱ तन्बिन् मिहैयाल्
शित्तन् नडुङ्गि यिदुतीर्प्पॅ ऩॅन्न विरुळूडु वन्दु तॅरिवान् 2179

इ तन्मै ॲय्तुम् अळविन् कण्–इस स्थिति में आते समय; निन्ऱ–जो स्थित रहे वे; इमैयोर्कळ्–देव; अञ्चि–डरकर; इतुपोय्–यह जाकर; ॲ तन्मै ॲय्ति–किस प्रकार बदलकर; मुटियुम् कॉल्–पूरा होगा; ॲन–ऐसा; ॲण्णि–सोचकर; कुलैकिन्ऱ ॲल्लै–जब व्यग्रमन हुए; अतन् वाय–उस समय; अ तन्मै कण्टु–उस हालत को देखकर; पुटै निन्ऱ–(विष्णु का) पार्श्ववर्ती; अण्णल् कलुळन्–महिमावान गरुड़; तन् अन्पिन् मिकैयाल्–अपने प्रेमाधिक्य से; चित्तम् नटुङ्कि–विकंपितमन होकर; इतु तीर–इसको दूर करने; मॅळ्ळ–धीरे-धीरे; इरुळ् ऊटु–अन्धकार के मध्य; वन्तु तॅरिवान्–आ दिखनेवाला; पणिवान्–नमस्कार करनेवाला (बनकर)। २१७९

जब वे इस स्थिति में आये रहे और देव लोग इस डर से बेचैन होने लगे कि इनका कोप कहाँ जा रुकेगा, तब पास स्थित महिमावान गरुड़ अपने प्रेम के अतिरेक के कारण मन में भय खाकर अंधकार से होकर इस संकल्प के साथ आ प्रकट हुआ कि उनका यह दुःख दूर करूँगा। २१७९

अशैयाव शिन्दै यरवा लनुङ्ग वळियाव युळ्ळ मळिवान्
इशैया विलङ्गै यरशोडु मण्ण लरुळिन्मै कण्डु नयवान्
विशैया लनुङ्ग वडमेरु वेय मॊळियाल् विळङ्ग विमैयात्
तशैयानै कण्गळ् मुहिळा वीडुङ्ग निऱैहाल् वळङ्गु शिऱैयान् 2180

अचैयात–अचलमन; चिन्तै–का मन; अरवाल् अतुङ्क–सर्पपाश की बात लेकर दुःखी रहा; अळियात उळ्ळम्–कभी व्यग्र नहीं होनेवाले मन को; अळिवात्–मारनेवाले; इचैया–निद्य; इलङ्कै अरचोटुम्–लंकाधिपति के साथ; अण्णल्–(अन्यों से भी) महात्मा (श्रीराम) की; अरुळ् इतमै–दया का अभाव; कण्टु–देखकर; नयवात्–उससे दुःखी; ओळियाल्–अपने शरीर के प्रकाश से; वैयम् विळङ्क–भूमि के प्रकाशमय होते; विचैयाल्–गति से; वट मेरु अतुङ्क–उत्तर के मेरु के कंपित होते; इमैया–अपलक; तिचै यातै–दिग्गज; कण्कळ मुकिळा–आँखें बन्द करके; ओटुङ्क–संकुचित हुए ऐसा; निरै काल् वळङ्कु–अधिक हवा चालित करनेवाले; चिरैयात्–पंखों वाला। २१८०

कभी व्याकुल न होनेवाले श्रीराम का मन नागपाश देखकर व्यग्र हुआ। इसको देखकर गरुड़, जो साधारण रूप से दुःखी नहीं होता था, अब अधीर हुआ। अब श्रीराम के मन में लंका के राजा के साथ सभी के प्रति निर्दयता पैदा हो गयी। गरुड़ इससे तृप्त नहीं रहा। ऐसा गरुड़ जब आया तब उसके शरीर के पुष्कल प्रकाश से सारी दुनिया दीप्त हुई। उसकी गति से उत्तर का मेरु पर्वत अस्थिर हुआ और अपलक दिग्गज आँखें मूंदकर काँपने लगे। इस तरह भरी हवा चलानेवाले पंखों का था वह गरुड़। २१८०

कादङ्गळ् कोडि कडैशॅन्ऱु काणु नयनङ्गळ् वारि कलुळक्
केदङ्गळ् कूर वयर्हिन्ऱ वळ्ळल् तिरुमेनि कण्डु किळर्वान्
शीदङ्गॊळ् वेलै यलैशिन्द जाल मिरुळ्शिन्द वन्द शिऱैयान्
वेदङ्गळ् पाड वुलहङ्गळ् यावुम् विनैशिन्द नाह मॆलिय 2181

केतङ्कळ् कूर–दुःखों की अधिकता से; अयर्किन्ऱ–अस्वस्थ रहनेवाले; वळ्ळल्–उदार प्रभु के; तिरु मेनि कण्टु–श्रीशरीर देखकर; कटै कोटि कातङ्कळ्–करोड़ों कोसों तक; चॆन्ऱु–जाकर; काणुम् नयतङ्गळ्–देखनेवाली आँखों में; वारि कलुळ–अश्रु को बहाते हुए; किळर्वान्–आतुरता के साथ रहनेवाला; चीतम् कॊळ्–शीतलता से युक्त; वेलै–समुद्र के; अलै चिन्त–लहरें मारते; आलम् इरुळ् चिन्त–भूलोक के अन्धकार को दूर करते; वन्त चिऱैयार–आनेवाले पंखों के; वेतङ्कळ् पाट–वेदगान करके; उलकङ्कळ् यावुम्–सभी लोकों के; विनै चिन्त–पापों के दूर होते; नाकम् मॆलिय–नागों के बलहीन होते। २१८१

विविध दुःखों के कारण शिथिल हुए श्रीराम के श्रीशरीर को देखकर उसकी सबल आँखों में, जो करोड़ों कोसों तक देख सकती थीं, आँसू बहने लगे और उसका मन अधीर रहा। उसके हिलते पंखों से वेद-गीत निकल रहा था। सारे लोक पापहीन हुए और सर्प शिथिल हुए। २१८१

अल्लैच् चुरुट्टि वॆयिलेप् परप्पि यहलाशै यॆङ्गु मळिया
विल्लैच् ...

ॲल्लैक् कुयिऱ्ऱि यॅरिहित्ऱ मोलि यिडैनित्ऱ मेरु वॅनुमत्
तॊल्लैप् पॊरुप्पित् मिशैये विळङ्गु शुडरोतित् मुम्मै शुडर 2182

अकल् आर्व ॲङ्कुम्–विशाल दिशाओं भर में; अळिया विलर्ल चॅलुत्ति–अचल ज्योति फैलाता हुआ; अल्लै चुरुट्टि–अन्धकार को समेटकर; विरिकित्ऱ–फैलाने वाली; चोति मिळिर–ज्योति के बढ़ते; ॲल्लै कुयिऱ्ऱि–दिन बनाते हुए; ऍरिकित्ऱ मोलि–ज्वलन्त किरीट के; इटै नित्ऱ–(जम्बूद्वीप-) मध्य रहनेवाले; मेरु ॲनुम्–मेरु नामक; अ तोल्लै पॊरुप्पित्–उस प्राचीन (मेरु) पर्वत के; मिचैये–ऊपर; विळङ्कु–प्रकाशमान; चुटरोतित्–किरणमाली के; मुम्मै चुटर–तिगुना प्रकाश निकालते। २१८२

विशाल दिशाओं में अमिट प्रकाश फैलाने के कारण अंधकार को समेटकर धूप फैलाई और उसके श्वेत गले से चाँदनी-सी ज्योति फैली। दिन का-सा भी वातावरण हो गया। उसका उज्ज्वल मुकुट उस सूर्य के दुगुने प्रकाश से दीप्त था जो जम्बूद्वीप के मध्य में रहनेवाले उस पुराने मेरु के पर्वत पर प्रकाशमान रहता है। २१८२

नत्वाल् विळङ्गु मणिहोडि योडु नळिर्पोदु शॅम्बॊत् मुदलात्
तत्बा लियॅन्द निळल्कॊण् डमैन्द तळुवादु वन्दु तळुव
मित्बा लियत्ऱ दॊरुकुत्ऱम् वातिल् मिळिर्हित्ऱ वॅन्न वॅयिलोत्
तॅत्बा लॅळुन्द वडपाल् निमिर्न्दु वरुहित्ऱ शॅय्है तॅरिय 2183

नत्पाल्–सुखद; विळङ्कुम्–प्रकाश देनेवाली; कोटि मणियोटु–कोटि मणियों के साथ; नळिर् पोतु–शीतल पुष्पों के; चॅम् पॊत् मुतला–और लाल स्वर्ण आदि हारों के; तत् पाल् इयॅन्त–अपने पास रहे; निळल् कॊण्टु अमैन्त–प्रभायुक्त बने आभरणों के; तळुवातु वन्तु तळुव–कभी हटते कभी लगते; मित्पाल् इयत्ऱतु–बिजली से बने; ऑरु कुत्ऱम्–एक पर्वत; वातित् मिळिर्कित्ऱतु–आकाश में दीप्तियुत विद्यमान है; ॲत्त–जैसे; वॅयिलोत्–सूर्य; तॅत् पाल् ॲळुन्तु–दक्षिण से उठकर; वटपाल् निमिर्न्तु–उत्तर में बढ़कर; वरुकित्ऱ चॅय्कै तॅरिय–आने का-सा दृश्य उपस्थित करते हुए। २१८३

सुखद और उज्ज्वल असंख्यक रत्नहारों के साथ शीतल पुष्प और स्वर्णमालाओं को धारण कर वह आ रहा था। वे हार और मालाएँ कभी उसके वक्ष से लग जातीं और कभी हट जातीं। विजली का पर्वत आकाश में आता हो या सूर्य दक्षिण से उत्तर की तरफ़ आता हो, ऐसा लग रहा था वह। २१८३

पत्ताहर् शॅत्ति मणिकोडि कोडि पलहॊण्डु शॅय्द वहैयात्
मित्ता लियत्ऱ वॅत्तलाय् विळङ्गु मिळिर्पूण् वयङ्गुम् वॅयिल्हाल्
पॊत्ता लियत्ऱ नहैयोडै पॊङ्ग वत्तमालै मार्बु पुरळत्
तॊत्ताळ पिरिन्द तुयरतीर वणणल तिरुमेति कणड वॊळवाल 2184

पल् नाकर् चॅन्ऩि–अनेक सर्पों के सिरों पर के; कोटि कोटि मणि पल कॉण्टु–करोड़ों रत्न लेकर; चॅय्त वकॅयाल्–निर्मित होने के कारण; मिऩ्ऩाल् इयऩ्ऱतु अॅऩ्ऩलाय्–बिजली का बना हो जैसे; विळङ्कुम्–प्रकाशमान; मिळिर् पूण्–सुन्दर आभरणों के; वयङ्कुम् वॅयिल् काल्–शोभायमान दीप्ति दिखानेवाले; पॉऩ्ऩाल् इयऩ्ऱ–स्वर्णनिर्मित; नकै ओटै–भाल की पट्टी के; पॉङ्क–छटा बिखेरते; वतमालै–तुलसीमाला के; मार्पु पुरळ–वक्ष में डोलते; तॉल् नाळ्–बहुत दिनों से; पिरिन्त तुयर्–बिछुड़े रहने का दुःख; तीर–दूर हो ऐसा; अण्णल् तिरुमेऩि–महात्मा श्रीराम के श्रीशरीर के; कण्टु–दूर से दर्शन करके; तॉऴुवाऩ्–हाथ, जोड़कर नमस्कार करनेवाला। २१८४

अनेक सर्पों के सिरों की मणियों से उसके भाल की पट्टी बनी थी। इसलिए वह बिजली की-सी लगती थी। उसमें अनेक आभरण भी लगे थे। वे स्वर्णाभरण सूर्य की-सी ज्योति उगल रहे थे। उसके वक्ष पर तुलसीमाला डोल रही थी। बहुत दिनों से बिछुड़े रहने से उसके मन में अपार दुःख था। उसको दूर करने के लिए वह श्रीराम के श्रीशरीर को देखकर दूर से ही नमस्कार करते हुए आ रहा था। (ऐसा गरुड़)। २१८४

मुडिमेल् निमिर्न्द मुहिऴॆरु कैयऩ् मुहिऩ्मेल् निमिर्न्द वॊळियाऩ्
अडिमेल् विऴुन्दु पणियामल् निऩ्ऱ निलैयुऩ्ऩि युऩ्ऩि अऴिवाऩ्
कॊडिमे लिरुन्दिव् वुलहेऴॊ डेऴु तॊऴनिऩ्ऱ कॊळु मिलऩ्ऱाय्प्
पडिमे लॆऴुन्दु वरुवाऩ् विरैन्दु पलहाल् निऩैन्दु पणिवाऩ् 2185

मुटि मेल् निमिर्न्त–सिर पर चढ़ाए; मुकिऴ् एरु–अंजलिबद्ध; कैयऩ्–हाथों वाला; मुकिल् मेल्–मेघ से भी बढ़कर; निमिर्न्त ऑळियाऩ्–अधिक रही ज्योति के श्रीराम के; अटि मेल् विऴुन्तु–चरणों पर गिरकर; पणियामल् निऩ्ऱ–प्रणाम न किये जो रह गया; निलै उऩ्ऩि उऩ्ऩि–वह हाल सोच-सोचकर; अऴिवाऩ्–मन मारनेवाला; कॊटि मेल् इरुन्तु–(श्रीमन्नारायण की) ध्वजा पर रहकर; इ उलकु–ये लोक; एऴॊटु एऴु–सात और सात (चौदहों) के; तॊऴ निऩ्ऱ–स्तुति करते रहने के; कोळुम् इलऩाय्–स्थिति से भी रहित रहकर; ऍऴुन्तु विरैन्तु–उठकर तेजी से; पटि मेल् वरुवाऩ्–भूमि पर आनेवाला; पल काल् निऩैन्तु–बार-बार स्मरण करके; पणिवाऩ्–नमन करनेवाला। २१८५

सिर पर अंजलिबद्ध हाथ रखनेवाला, नीले मेघ से भी अधिक जटा वाले श्रीराम के चरणों में बहुत दिनों से नमस्कार किये विना रह जाने की स्थिति सोचकर चिंतित रहनेवाला, विष्णु की ध्वजा पर रहकर चौदहों लोकों के नमस्कार पाने की स्थिति से जो वञ्चित रहा, और जो भूमि पर बार-बार नमस्कार करते आ रहा था वह—। २१८५

वन्वाऩ् मरैन्दु पिरिवाल् वरुन्दु मलर्मे लयऩ्ऱऩ् मुदलोर्
तऩ्वावै तावै यिरैवा मरैन्दु विळैयाडु हिऩ्ऱ तऩियोय्

शिन्वा हुलङ्गळ् कळैवाय् तळर्न्दु तुयर्हूर लॅन्न शॅयलो
ॲन्दाय् वरुन्द लुडैयाय् वरुन्द लॅन्नवित्त पन्नि मौऴिवान् 2186

मऱैन्तु वन्तान्–(अपना स्वरूप) छिपाकर जो अवतरित हुए, उन लक्ष्मण के; पिरिवाल्–बिछोह से; वरुन्तुम्–दुःखी और; मलर् मेल्–कमल पर उद्भूत; अयन् तन् मुतलोर्–अज आदि देवों के; तम् तातै तातै–पिता के पिता; इऱैवा–भगवान; मऱैन्तु विळैयाट्टुकिन्ऱ–(स्वरूप) छिपाकर लीला रचनेवाले; तनियोय्–अद्वितीय; चिन्ताकुलङ्कळ्–मन के दुःखों को; कळैवाय्–दूर करनेवाले; तळर्न्तु–जर्जर होकर; तुयर् कूरल्–व्याकुल होना; ॲन्न चॅयलो–क्या काम है; ॲन्ताय्–मेरे पिता; वरुन्तल्–दुःखी मत हों; उटैयाय्–सर्वस्व के स्वामी; वरुन्तल्–दुःखी मत हों; ॲन इन्न–ऐसा, ऐसा; पन्नि अऴिवान्–कहकर दुःखी हुआ। २१८६

वह आया और यों बोला। विष्णु के श्रीरामावतार के अनुकूल स्वयं आदिशेष का रूप बदलकर अयोध्या में आये लक्ष्मण के बिछोह से दुःखी और कमलासन अजदेव आदि देवों के पितामह! हे भगवान्! रूप छिपाकर लीला रचनेवाले अनुपम देव! हे चिंता मिटानेवाले! आप स्वयं शिथिल और दुःखी हों, यह क्या काम है? दुःखी मत हों। हे मालिक! दुःखी मत हों। उसने आगे भी अपना दुःख इन शब्दों में प्रकट किया। २१८६

देवादि देवर् पलरालु मुन्दु तिरुनाम मोदु शॅयलोय्
मूवादॆ नाळु मुलहेऴॆ डेऴ् मरशाळ मॆन्नै मुदल्वा
मेवाद विन्ब मवैमेवि मेव नॆडुवीडु काट्ट मुडियाय्
आवाय् वरुन्दि यऴिवाय्कॊ लारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2187

तेवर्–देव; अतितेवर्–अतिदेव (बड़े देवता); पलरालुम्–अनेकों से; मुन्तु तिरुनामम्–आपके श्रेष्ठ नामों को; ओतु चॅयलोय्–दुहराएँ, ऐसे कृत्य वाले; ॲ नाळुम् मूवातु–कभी वृद्ध न होकर; उलकु एऴॊटु एऴुम्–सात और सात लोकों पर; अरचु आळुम्–शासन करनेवाले; मॆन्नै मुतल्वा–आदिनायक; मेवा इन्पम् अवै–अप्राप्य सुख; मेवि–प्राप्त करके; मेव–आपके हों; नॆटु वीटु काट्ट–ऐसा विशाल मोक्ष (-साम्राज्य) दिलाने (वाले); मुटि आय् आवाय्–प्रथम नाथ हैं आप; वरुन्ति अऴिवाय् कॊल्–दुःख करके क्षीण होंगे क्या; इ अतिरेकम्–यह अतिरेक को; मायै–माया; अऱिवार्–जानें; आर्–कौन। २१८७

आप ऐसे काम करनेवाले हैं, जिनकी देव और देवों के देव प्रशंसा करें और आपका नाम लें। सातों लोकों के पालक, हे आदिपुरुष, जो कभी वृद्ध नहीं होते! हे आदिनाथ, जो अपने भक्तों को अप्राप्य सुख देकर फिर विशाल मोक्षसाम्राज्य देते हों, ऐसे आप भी दुःख से शिथिल होंगे क्या? यह अतिरेक-माया कौन जाने? । २१८७

ॲऴुवा यॆवर्क्कु मुदलाहि यीऱो डिडैयाहि यॆङ्गु मुळैयाय्
वऴुवाद वर्क्कुम् वरमीय वललै यवराल वरुङ्गळ यॆङ्गाय

तॊऴुवा युणर्च्चि तॊडराद तन्मै युरुवाय् मऱैत्तु तुयराल्
अऴुवा यॊरुत्त नुळैपोलु मारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2188

ऎवर्क्कुम्–सब जीवों का; मुतल् आकि–कारण (आदि) बनकर; ईरोट्–संहार का कारण बनकर; इटै आकि–मध्य पालक रहकर; ऎऴुवाय्–व्यूह बनकर उठते हैं; ऎङ्कुम् उळैयाय्–सर्वत्र विद्यमान हैं; वऴुवातु–अचूक रीति से; अवर्क्कुम्–पूजकों को; वरम् ईय वल्लै–वर देने की शक्ति रखते हैं; उणर्च्चि तॊटरात–पूर्णज्ञान जिसमें नहीं होता; तन्मै उरुवाय्–उस प्रकार के (मानव-) रूप में आकर; मऱैत्तु–अपना सच्चा रूप छिपाकर; तॊऴुवाय्–अपने (अधीनस्थ देवों की) वंदना करते हैं; अवराल्–उनसे; वरक्कळ् पॆऱुवाय्–वर पाते हैं; तुयराल् अऴुवाय्–दुःख से रोते हैं; ऒरुत्तन् उळै पोलुम्–ऐसे भी एक आप हैं शायद। २१८८

आप सभी के मूल, अन्त और मध्य का कारण बनकर व्यूह बने हैं। आप सर्वव्यापी हैं। भक्तों को अमोघ वर देनेवाले हैं। अपूर्ण ज्ञान के मनुष्य का रूप लेकर अपना स्वरूप छिपाकर छोटे-मोटे देवताओं की भी स्तुति करते हैं और उनसे वर प्राप्त करते हैं। दुःख से रोते हैं। आप ऐसे भी एक हैं शायद। यह अतिरेक-माया कौन जाने ? । २१८८

उन्नॊक्क वैत्त विरुवर्क्कु मॊत्ति यॊरुवर्क्कु मुण्मै युरैयाय्
मुन्नॊक्क निऱ्ऱि युलहॊक्क वॊत्ति मुडिवॊक्कि नॊन्ऱु मुडियाय्
ऎन्नॊक्कु मिन्न शॆयलो विवॆन्नि लिरुळॊक्कु मॆन्ऱु विडियाय्
अन्नॊप्प मेहॊल् पिऱिदेकॊ लारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2189

उन् ऒक्क वैत्त–आपने जिन (शिव और ब्रह्मा) को अपनी समानता दी; इरुवर्क्कुम्–दोनों के; ऒत्ति–समान हैं; ऒरुवर्क्कुम्–(उनमें) किसी को; उण्मै उरैयाय्–सच्ची बात नहीं कहते; ऒक्क मुन् निऱ्ऱि–प्रथम हैं; उलकु ऒक्क ऒत्ति–लोकसामान्य (अन्तर्यामी के रूप में) रहते हैं; मुटिवु ऒक्किन्–अन्त चाहते हैं तो; ऒन्ऱुम्–लोकों का अन्त हो जाएगा; मुटियाय्–आपका अन्त नहीं; इन्न चॆयल् इतु–ऐसा आपका काम; ऎन् ऒक्कुम् ऎन्निन्–किसके समान है पूछो तो; इरुळ् ऒक्कुम्–अन्धकारमय स्थान की समानता करे; ऎन्ऱु–ऐसा; विटियाय्–अपने को प्रकट नहीं कराते; अ नॊप्पमे कॊल्–(हमारा) अज्ञान है; पिऱिते कॊल्–या अन्य कुछ; इ अतिरेक मायै–यह अतिरेक की माया; अऱिवार् यार्–जाने कौन। २१८९

आपने ही शिव और ब्रह्मा को अपने समान स्थान दिया और आप उनके समान रहते हैं। लेकिन आप (उनमें) किसी को सत्य नहीं बताते। आप त्रिदेवों के आदि हैं। आप अन्तर्यामी हैं। आपके संकल्प मात्र से दुनिया मिट जाएगी। लेकिन आप अमर हैं। यह पूछो कि ऐसे काम कैसे हैं, तो अन्धकारमय स्थान की भाँति हैं —इस तरह सत्य को प्रकट नहीं होने देते। यह लोगों की बुद्धिहीनता है या और कुछ ? यह अतिरेक-माया कौन जाने ? । २१८९

वाणा ऴळितृति मुडियामल् नीदि वरुनाळु निऱ्ऱि मऱैयोय्
पेणा युनक्कोर् पॊरुळ्वेण्डु मॆन्ऱु पॆऱुवा नरुत्ति पिऴैयाय्
ऊणा युयिर्क्कु मुयिराहि निऱ्ऱि युणर्वाय पॆण्णि नुरुवाय्
आणा हिमऱ्ऱु मलियाहि यारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2190

मऱैयोय्–वेदों से प्रशंसित; वाऴ् नाळ् अळितृति–जीवों को प्राण तथा दिन प्रदान करते हैं; नीति मुटियामल्–नीति का अन्त न हो तदर्थ; वरु नाळुम् निऱ्ऱि–भविष्य में भी रहेंगे; उनक्कु–अपने लिए; ओर् पॊरुळ् वेण्टुम्–कोई वस्तु चाहिए; ऎन्ऱु पेणाय्–ऐसा नहीं चाहते; पॆऱुवान् अरुत्ति पिऴैयाय्–(पर भक्त की) माँग को अचूक रीति से देते हो; ऊण् आय्–भोजन बने; उयिर्क्कुम् उयिराकि–प्राणों के प्राण बने; उणर्वु आय–दृश्यमान; पॆण्णिन् उरुवाय्–स्त्री के रूप बने; आण् आकि–पुरुष रूप बने; मऱ्ऱुम्–और भी; अलि आकि–नपुंसक बने; निऱ्ऱि–रहते हैं; इ अतिरेकम् मायै–इस बड़ी माया को; अऱिवार् आर्–जानें कौन। २१६०

हे वेदशंसित! आप ही सबको उनके कर्मों के अनुसार आयु प्रदान करते हैं। नीति स्थापित करते हुए आप भविष्य में भी रहनेवाले हैं। आप अपने लिए कोई चाह नहीं रखते। लेकिन भक्तों की चाह को पूरा करने से नहीं चूकते। आप भोजन हैं। प्राणों के प्राण हैं। दृश्यमान स्त्रियों, पुरुषों और नपुंसकों के रूप बनके रहते हैं। यह अतिरेक-माया कौन जाने? । २१९०

तानन् दमिल्लै पलवॆन्नु मॊन्ऱु तनियॆन्नु मॊन्ऱु तधिरा
ञानन् दॊडर्न्द शुडरॆन्नु मॊन्ऱु नयनन् दॊडर्न्द वॊळियाल्
वानन् दॊडर्न्द पदमॆन्नु मुन्नै मऱैनालिन् वन्द मुऱैयाल्
आनन् दमॆन्नु मयलॆन्नु मारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2191

उन्नै–आपको; मऱै नालिन्–चार वेदों में; ऒन्ऱु–एक; तान्–वे; अन्तम् इल्लै–अनन्त और; पल ऎन्नुम्–अनेक कहता है; ऒन्ऱु–एक; चुरुति तनि ऎन्नुम्–एक ही कहता; ऒन्ऱु–एक; तधिरा ञानम् तॊटर्न्त–अप्रमत्त ज्ञान की; चुटर्–ज्योति; ऎन्नुम्–कहता; ऒन्ऱु–तीसरा एक; नयनम् तॊटर्न्त–दृष्टिगोचर; ऒळियाल्–ज्योति के रूप में; वानम् तॊटर्न्त–आकाश में रहनेवाला; पतम्–(सविता का) पद कहता है; ऒन्ऱु–और एक; वन्त मुऱैयाल्–आगत क्रम में; आनन्तम् ऎन्नुम्–आनन्दमय बताता; अयल् ऎन्नुम्–इन्द्रियों के ज्ञान से परे हैं, कहा; इव् अतिरेकम् मायै–यह अपार माया; अऱिवार् यार्–कौन जानें। २१६१

चार वेदों में एक आपके सम्बन्ध में कहता है कि आपके अनन्त रूप हैं, तो दूसरा कहता है, आपके एक ही रूप है। एक अमरज्ञानज्योति कहता है। दूसरा आकाश का सविता-रूप हैं, कहता है। फिर एक आनन्दमय कहता है, तो दूसरा परावस्तु कहता है। यह अतिरेक-माया कौन जाने? । २१९१

मीळाद वेद मुडिवित्कण् नित्तै मॅय्याह मॅय्यि नित्तैयुम्
केळाद वॅन्ऱु पिऱवॅन्ऱु शॊन्न कॅडुवार्हळ् शॊन्न कडवात्
माळाद नीदि यिहळामै निन्क णविमात मिल्लै वऱियोर्
आळायुम् वाळ्दि यरशाळ्दि यारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2192

मीळात–जो नहीं मुकरते; वेत मुटिवित् कण्–उन वेदांतों (उपनिषदों) में; नित्तै–आपको; मॅय् आक–सत्यवस्तु; मॅय्यित् नित्तैयुम्–अपने सत्यज्ञान से बताते हैं; केळातवै ऑन्ऱु–अश्रुत ऐसा; पिऱ ऑन्ऱु–अन्य ऐसा; चॊन्न–जिन्होंने कहा; वऱियोर्–बुद्धि के कंगाल; चॊन्न कटवाल्–अपने ही शब्दों के अनुसार; माळात नीति–अमिट शास्त्र के क्रम का; इकळामै–उल्लंघन न करके; नित् कण् अपिमानम्–आपकी दया; इल्लै–नहीं होती; कॅट्टुवार्कळ्–बिगड़ जाते हैं; आळ् आयुम् वाळ्ति–(भक्त-) पराधीन होकर भी रहते हैं; अरचु आळ्ति–शासक भी रहते हैं; इव् अतिरेकम् मायै–यह अपार माया; यार् अऱिवार्–कौन जानें। २१९२

सत्यभाषी वेदों के अन्त उपनिषद् अनुभव के आधार पर सत्य बताते हैं। जो मूर्ख लोग इन सबको अश्रुतपूर्व और सत्यविपरीत आदि कहते हैं, वे शास्त्र-सम्मत नीति के अनुसार आपकी कृपा न पाकर नरक में गिर जाते हैं। आप तो भक्तपराधीन हैं। आप ही सर्वनियंता हैं। यह अतिरेक-माया कौन जाने? । २१९२

शॊल्लॊन्ऱुरैत्ति पॊरुळादि तूय मऱैयुन् दुरन्दु तिरिवाय्
विल्लॊन्ऱॆडुत्ति शरमॊन्ऱॆडुत्ति मिळिर्शङ्ग मङ्गै युडैयाय्
कॊल्लॆन्ऱुरैत्ति कॊलैयुण्डु निऱ्ऱि कॊडियायुन् मायै यऱियेन्
अल्लॆन्ऱु निऱ्ऱि पहलादि यारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2193

ऑन्ऱु चॊल्–अत्युत्तम शब्दरूप; उरैत्ति–बताये जाते हैं; पॊरुळ् आति–अर्थ भी हैं; तूय मऱैयुम् तुरन्तु–पवित्र वेदों से भी परे; तिरिवाय्–रहते हैं; विल् ऑन्ऱु ऍटुत्ति–एक धनु भी लिया है; चरम् ऑन्ऱु ऍटुत्ति–बाण भी रखते हैं; मिळिर् चङ्कम्–प्रकाशमय शंख; अम् कै उटैयाय्–अपने सुन्दर हाथ में रखनेवाले हैं; कॊल् ऍन्ऱु उरैत्ति–मारो कहनेवाले भी आप हैं; कॊलै उण्टु निऱ्ऱि–(राक्षस के रूप में) मारे जानेवाले भी आप हैं; कॊटियाय्–क्रूर; उन् मायै अऱियेन्–आपकी माया जान नहीं पाता; अल् ऍन्ऱु–रात कहकर; निऱ्ऱि–रहते हैं; पकल् आति–दिन भी होते हैं; इव् अतिरेकम् मायै–यह अपार माया; अऱिवार् यार्–जाननेवाले कौन। २१९३

आप अद्वितीय शब्द-रूप हैं। आप अर्थ भी हैं। आप वेदों से भी परे हैं। हाथ में एक धनु लेते हैं एक शर भी लेते हैं। शत्रु हननकारी शंख हाथ में रखते हैं। (राक्षस-शत्रु बनकर) मारो की आज्ञा देते हैं। राक्षस (के रूप में) मारे जाते हैं। ऐ क्रूर! आपकी माया मैं नहीं जानता। रात भी आप ही हैं, दिन भी आप ही बने रहते हैं। यह अतिरेक-माया कौन जाने? । २१९३

मऱ्ऩ्दायु मौत्ति मऱ्वायु मौत्ति मयलारुम् यानु मऱियेम्
तुऱ्ऩ्वायु मौत्ति तुऱ्वायु मौत्ति यौरुतऩ्मै शौल्ल वरियाय्
पिऱ्ऩ्वायु मौत्ति पिऱ्वायु मौत्ति पिऱ्वामल् नल्हु पॅरियोय्
अऱ्ऩ्वा निऱुत्त लरिदाह वारिव् वदिरेह माये यऱिवार् 2194

पिऱ्वामल्–फिर जन्म न लें, (भक्त) ऐसा; नल्कु–वर देनेवाले; पॅरियोय्–महात्मा; मऱ्ऩ्तायुम् औत्ति–अपने को भूल चुके हों ऐसा भी लगते हैं; मऱ्वायुम् औत्ति–नहीं भूले ऐसा भी लगते; मयल्–आपकी माया के विस्तार को; आरुम्–कोई भी; यानुम्–मैं भी; अऱियोम्–नहीं जान पाते; तुऱ्ऩ्तायुम् औत्ति–संन्यासी भी दिखते हैं; तुऱ्वायुम् औत्ति–संसारी भी लगते हैं; औरु तऩ्मै शौल्ल–किसी एक प्रकार के हैं कहना; अरियाय्–कठिन है; अऱम् तान्–धर्म को; निऱुत्तल् अरितु आक–स्थापित करना कठिन बना, तब; पिऱ्ऩ्तायुम्–जन्म ले चुके हों; औत्ति–ऐसा भी लगते हैं; पिऱ्वायुम् औत्ति–(कर्मजन्म नहीं, अतः) अजन्मा भी रहते हैं; इव् अतिरेकम् माये–यह अपार माया; अऱिवार् यार्–कौन जाने। २१९४

भक्तों को फिर जन्म न लेने का सौभाग्य देनेवाले प्रभु ! अपना स्वरूप भूले हुए-से भी लगते हैं। नहीं भूले हैं —ऐसे भी लगते हैं। आपकी माया को कोई नहीं जानता, मैं भी नही जानता। आप मुक्त भी लगते हैं, बद्ध भी लगते हैं। आप किसी लक्षण में नहीं आते। धर्मस्थापना को श्रीवैकुंठ से करना कठिन जानकर आपने जन्म लिया हो —ऐसा लगता है। और ऐसा भी लगता है कि आपने (साधारण रूप से कर्मों के हेतु) जन्म नहीं लिया है। यह अतिरेक-माया कौन जाने ? । २१९४

विऩैवर्क्क मुऱ्ऱु मुडऩे पडैत्ति यवैयॅय्दि यॅऩ्ऱुम् विळैया
निऩैवर्क्कु नॅञ्जि नुऱुहाम मुऱ्ऱि यऱियामै निऱ्ऱि मऩमा
मुऩैवर्क्कु मुत्ति यमरर्क्कु मऱ्ऱिम् मुळुमूड रॅऩ्ऩु मुदलोर्
अऩैवर्क्कु मौत्ति यऱियामै यारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2195

विऩै वर्क्कम् मुऱ्ऱुम्–सभी कर्मसमूहों के अनुरूप; उडऩे–एकदम; पडैत्ति–(जीवों को) सृष्ट करते हैं; निऩैवर्क्कु–आपका स्मरण करनेवालों को; अवै ऍय्ति–कर्म-प्राप्त होकर; ऍऩ्ऱुम् विळैया–कभी फल न दें ऐसा करके; नॅञ्चिल् उऱु कामम्–उनके मन में रहनेवाली कामनाएँ; मुऱ्ऱि–पूरी करके; अऱियामै–रहस्य न जानने वाला; मऩम् आ निऱ्ऱि–मन भी बने खड़े हैं; मुऩैवर्क्कुम्–मुनियों के; मुत्ति अमरर्क्कुम्–मुक्त (नित्य) सूरियों के; मऱ्ऱुम्–और; मुतलोर्–आदि विदेवों के; मुळुमूडर्–पूर्ण रूप से मूर्खों के; इ अऩैवर्क्कुम्–इन सभी के; अऱियामै–(आपके प्रति) अज्ञान के; पण्पिल्–गुण में; औत्ति–एक-सम रहते हैं। २१९५

जीवों को उनके कर्मवर्गों के अनुसार तुरन्त शरीर दिला देते हैं। आपके ध्यान करनेवालों को कर्मफलों से अलग रखकर उनकी मनोकामनाओं को पूरा करते हैं। पर वे यह जान नहीं पाते कि आप ही ने उनका मनोरथ पूरा किया है। न वे ये जानते हैं कि आप ही उनका

मन हैं। आपको मुनि, मोक्षलोक के नित्यसूरी, त्रिदेव और मूर्ख, इनमें कोई नहीं जानता। इस बात में आप सर्वसामान्य हैं। यह अतिरेक-माया कौन जाने ? । २१९५

ऍऱिन्दारु मेरु पडुवारु मित्त्त पॉरुळ्कण् डिरङ्गु पवरुम्
शॅऱिन्दारि नुण्मै यॅन्नलाय तन्मै तॅरिहिन्ऱ दुन्त दिडंये
पिऱिन्दार् पिऱिन्द पॉरुळोडु पोदि पिऱियादु निऱ्ऱि पॅरियोय्
अऱिन्दा रऱिन्द पॉरुळादि यारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2196

पॅरियोय्–महान्; ऍऱिन्तारुम्–(हथियार) चलानेवाले; एरु पट्टवारुम्–चोट खानेवाले; इत्तु पॉरुळ् कण्टु–यह हाल देखकर; इरङ्कुपवरुम्–दुःखी होनेवाले; चॅऱिन्तारिल्–यहाँ जो भरे रहते हैं उनमें; उण्मै–आप हैं; ऍन्नल् आय तन्मै–इस तथ्य का हाल; उन्तनु इटये–आपमें; तॅरिकिन्ऱतु–विदित होता है; पिऱिन्तार्–(जो ज्ञान से) पृथक् होते हैं उनसे; पिऱिन्त पॉरुळोटु–अलग हुए ज्ञान के साथ; पोति–आप भी दूर हो जाते हैं; पिऱियातु निऱ्ऱि–तो भी आप अपृथक् ही रहते हैं; अऱिन्तार्–ज्ञानियों का; अऱिन्त पॉरुळ्–ज्ञात तत्त्व भी; आति–होते हैं; इव् अतिरेक मायै–यह अपार माया; अऱिवार् यार्–जानें कौन। २१९६

ऐ महान देव ! हथियार चलानेवाले, हथियारों से आहत और इनको देखकर कातर होनेवाले, ऐसे जो यहाँ भरे हैं, उनमें आप ही हैं। यह बात आपमें प्रकट होती है। जब लोग ज्ञान खोते हैं, तब आप भी उनके लिए खो जाते हैं। उस स्थिति में भी आप उनसे अलग नहीं होते। तत्त्वज्ञों के ज्ञेय विषय आप ही हैं। यह अतिरेक-माया कौन जाने ? । २१९६

पेरा यिरङ्ग ळुडैयाय् पिऱन्द पॉरुडोरु निऱ्ऱि पिरियाय्
तीराय् पिरिन्दु तिरिवाय् तिऱन्दॊ ऱुवैतेरु मॅन्ऱु तॅळियाय्
कूराऴि यङ्गै युडैयाय् तिरण्डॊ रुरुवादि कोड लुरिपोल्
आरायि नेदु मिलैयादि यारिव् वदिरेह मायै यऱिवार् 2197

पेर् आयिरङ्कळ्–नाम सहस्र; उटैयाय्–धारण करनेवाले; पिऱन्त–प्रकट; पॉरुळ् तोऱुम्–हर वस्तु में; पिरियाय् निऱ्ऱि–अपृथक् स्थित हैं; तीराय्–अमर; पिरिन्तु तिरिवाय्–अपने सत्यस्वरूप से भिन्न (जाति के हो रहते); तिऱम् तोऱु–उस-उस योनि के जीव; अवै तेरुम्–वे आपको अपने समूह का समझ लेते; मॅन्ऱु तॅळियाय्–और आपका सत्यरूप न जान पाएँ ऐसा (नाट्य) रखते हैं; कूर् आऴि–तेज चक्र; अम् कै उटैयाय्–सुन्दर हाथ में रखते हैं; तिरण्टु ओर् उरु–विराट्-स्वरूप; आति–हैं; आरायिन्–सोचें तो; कोटल् उरि पोल्–'कोडल्' नाम के कन्द की छीलन की तरह; एतुम् इलै आति–अन्दर कुछ न रहते; इव् अतिरेकम् मायै–यह अपार माया; अऱिवार् यार्–जाननेवाले कौन हैं। २१९७

हे सहस्रनाम भगवान् ! सृष्ट सभी पदार्थों में आप व्याप्त रहते हैं। आप अमर हैं। स्वरूप बदलकर रहनेवाले हैं। जब आप किसी

जाति में जीवन धारण करते हैं, तो उस जाति के जीव आपको अपना ही समझ लेते हैं। आप उनकी समझ में नहीं आते। तीक्ष्ण चक्रहस्त! आप विराट्स्वरूप हैं। "कोडल" नामक (प्याज?) कंद को जैसे छीलने पर अन्दर कुछ नहीं रह जाता, वैसे ही हैं। यह अतिरेक-माया कौन जाने? । २१९७

ऍऩ्ऱिऩ्ऩ पऩ्ऩि यऴिवा ऩॆरिन्द वॆरिशोदि कीऱ विरुळ्पोय्प्
पॊऩ्ऱुऩ्ऩि यऩ्ऩ वॆयिल्वीशु हिऩ्ऱ पॊरुळ्कण्डु निऩ्ऱ पुहऴोऩ्
निऩ्ऱुऩ्ऩि युऩ्ऩि यिवऩ्याव ऩॆऩ्ऱु निमिर्हिऩ्ऱ वॆल्लै निमिरच्
चॆऩ्ऱुऩ्ऩ मुऩ्ऩ रुडऩायि ऩाऩिव् वुलहेऴ् मूडु शिऱैयाऩ् 2198

ऍऩ्ऱु–इस भांति; इन्न पऩ्ऩि–ऐसे (स्तोत्र) कहकर; अऴिवान्–गद्गद रहनेवाला; ऍरिन्त–जो छिटकाता रहा; ऍरि–(उस) ज्वलन्त; चोतिकऱी–ज्योति के चीरने से; इरुळ् पोय्–अन्धकार दूर हुआ; पॊन् तुऩ्ऩि अन्न–स्वर्ण की आभा घनी हो आयी हो, ऐसा; वॆयिल् वीचुकिऩ्ऱ–लाल प्रकाश के फैलने का; पॊरुळ्–हाल; निऩ्ऱ पुकऴोऩ्–स्थायी यश के स्वामी राम ने; कण्टु–देखकर; निऩ्ऱु–रुककर; इवन् यावन्–यह कौन है; ऍन्ऩ–ऐसा; उऩ्ऩि उऩ्ऩि–सोच-सोचकर; निमिर्किऩ्ऱ ऍल्लै–जब सिर उठाया, तब; इ उलकम् एऴुम्–इन सातों लोकों को; मूटु चिऱैयान्–आच्छादक पंखों वाला; निमिर चॆन्ऱु–सीधे जाकर; उन्नुम् मुऩ्ऩर्–सोचने के समय के अन्दर; उटन् आयिनान्–समीप पहुँचा। २१९८

इस तरह स्तुति करते हुए खिन्नमन गरुड़ आ रहा था। तब उसके शरीर की ज्योति से अंधकार दूर हो गया और स्वर्ण-सम प्रकाश फैला। यह देखकर स्थिर-कीर्ति श्रीराम ने गौर से देखकर विस्मय किया कि यह कौन है? और अपना सिर उठाया। तब सप्तलोकआच्छादक पंखों वाला गरुड़ उनके सामने, उनके सोचने के पहले ही, जा पहुँचा। २१९८

वाशङ् गलन्द मरैनाळ नूलिऩ् वहैयॆऩ्ऩ दॆऩ्ऩै मऴैयॆऩ्
ऱाशङ् गॆहॊण्ड कॊडैमीळि यण्णल् शडैयऩ्ऱऩ् वॆण्णॆ यणुहुम्
देशङ् गलन्द मऱैवाणर् शॆम्जॊ लऱिवाळ रॆऩ्ऱिम् मुदलोर्
पाशङ् गलन्द पशिपो लहऩ्ऱ पदहऩ् ऱुरन्द वुरहम् 2199

पतकन् तुरन्त–पातक (इन्द्रजित्) द्वारा प्रेषित; उरकम्–नाग; मऴै ऍन्ऱु–'मेघ' ऐसा; आचङ्कै कॊण्ट–शंकित; कॊटै–दानी; मीळि अण्णल्–गौरव में बड़े; चटैयन् तन्–शडैयप्पन के; वॆण्णॆय् अणुकुम् तेचम्–वॆण्णॆय जिसके आदि में हो उस; करक्कु–स्थान; कलन्त–जो गये; मऱैवाणर्–वेदपाठी ब्राह्मणों; चॆम् चॊल् अऱिवाळर्–उत्कृष्ट शब्दों के ज्ञाता विद्वानों; ऍन्ऱु इ मुतलोर्–और ऐसे अन्यों के; पाचम् कलन्त पचि पोल्–रिश्तेदारों की भी भूख के समान; अकन्ऱ–हट गये; वाचम् कलन्त–सुवासित; मरै नाळम् नूलिन् वकै–कमल-नाल के तागे की तरह हो गये; ऍन्पतु ऍन्नै–कहना क्या (अर्थ रखता)। २१९९

तब पातक इन्द्रजित् द्वारा प्रेरित पाश उन वेदविप्रों, शास्त्रज्ञों, अन्यों और उनके रिश्तेदारों की भूख के समान हट गया, जो मेघ-सम दानी 'वॅण्णॅय नल्लूर' के दाता 'शडैयप्पन' के गाँव को पहुँचे हों। वे नाग सुगन्धित कमल-नाल के अन्दर के तागे के समान (पतले) बने —ऐसा कहने में क्या विशेषता है ? । २१९९

पल्ला यिरत्तिऩ् मुडियाद पक्क मवैवीश वन्दु पडर्हाल्
शॅल्ला निलत्ति ऩिरुळादल् शॅल्ल वुडऩिऩ्ऱ वाळि शिदऱ्ऱ्
ऱॅल्ला विदत्तु मुणर्वोडु नण्णि यिवऩे पिळैक्कु मॅऩ्वोर्
वल्ला ऩॊरुत्त ऩिडैये पडुत्त वडुवाऩ मेऩि वडुवुम् 2200

पल् आयिरत्तिऩ्–अनेक सहस्र वर्षों में भी; मुटियात–जो नहीं झड़ते; पक्कम् अवै–उन पक्षों के; वीच–फड़फड़ाने से; वन्तु पटर्–आ बहनेवाली; काल्–वायु; चॅल्ला निलत्तिल्–जहाँ चल नहीं सकती, उस युद्धरंग में; इरुळ् आतल्–अन्धकार; चॅल्ल–हट गया तो; उटल् निऩ्ऱ वाळि–(लक्ष्मण आदि के) शरीरों के शर; चितऱ्ऱ्–छिन्न-भिन्न होकर; वटुवाऩ–दाग़ बने; मेऩि वटुवुम्–दाग़ भी; ॲल्ला वितत्तुम्–सब तरह से; उणर्वोटु नण्णि–प्रज्ञा के साथ रहकर; इवऩ्–यह; पिळैक्कुम्–अपराध करेगा क्या; ॲॅऩ–ऐसा कहा जाय, इस रीति से; ओर्–विवेक में; वल्लाऩ् ऒरुत्तऩ्–समर्थ एक ज्ञानी में; इटैये पटुत्त–मध्य में हुए; वटु आऩ–(पाप के) चिह्न बने (हटे) । २२००

गरुड़ के पंख ऐसे थे जो सहस्रों वर्षों के बाद भी झड़ें नहीं। गरुड़ उन पंखों को फड़कने लगा तो उससे हवा उठी। वह अगम युद्ध-भूमि में सब जगह फैली जिससे अन्धकार ही नहीं छूटा, बल्कि शरीरों पर लगे अस्त्र भी टूट गये और छूट गये। उनके दाग़ भी उन ज्ञानियों के पाप के समान छिप गये, जिनके सम्बन्ध में लोग संशय करें कि यह भी पाप करेगा क्या। २२००

तरुमत्ति ऩॊऩ्ऱु मॊळुहाद शॅय्है तळुविप् पुणर्न्द तहैयाल्
उरुमॊत्त वॅङ्गण् विऩैतीय वञ्ज रुडलुयन्द दिल्लै युलहिऩ्
करुमत्ति ऩिऩ्ऱ कविशेनै वॆळ्ळ मलर्मेलव् वळ्ळल् कडैनाळ्
निरुमित्त वॆऩ्ऩ वुयिरो डॆळुन्दु निलैनिऩ्ऱ दॅय्व नॆऱियाल् 2201

तरुमत्तिऩ्–धर्म से; ऒऩ्ऱुम् ऒळुकात चॅय्कै–किसी तरह भी न लगकर किये जानेवाले कृत्यों से; तळुवि पुणर्न्त तकैयाल्–सम्बद्ध रहने के स्वभाव से; उरुम् ऒत्त–वज्र के समान; वॅम् कण्–क्रूर आँखों वाले; तीय विऩै–दुष्टकर्म; वञ्चर् उटल्–वंचकों (राक्षसों) के शरीर; उयन्ततु इल्लै–प्राणवान नहीं हो उठे; मलर् मेल् अ वळ्ळल्–कमलासन प्रभु; कटै नाळ्–युगान्त में; निरुमित्त ॲॅऩ्ऩ–सृष्ट कर चुके जैसे; उलकिऩ् करुमत्तिऩ् निऩ्ऱ–लोकपालनकर्मरत; कवि चेऩै वॆळ्ळम्–कपिसेना का प्रवाह; तॅय्व नॆऱियाल्–दिव्य संकल्प के कारण; उयिरोटु ॲॅळुन्त–प्राणों के साथ उठे; निलै निऩ्ऱ–स्थिर खड़े हुए । २२०१

अधर्मकर्मी होने से गाज के समान क्रूर आँखों वाले दुष्टकर्म वंचक राक्षस जी नहीं उठे। लेकिन युगान्तर में कमलासन द्वारा सृष्ट जीवों के समान, लोकपालनकार्य में लगे वानर दैवेच्छा से जी उठे। २२०१

इळैया ळॅऴुन्दु तॊऴुवाऩै यऩ्बि ऩिणैयार मार्बि ऩणैया
विळैयाद तुऩ्बम् विळैवित्त तॆय्वम् वॆळिवन्द दॆऩ्ऩ वियवाक्
किळैयारि ऩिऩ्ऩ तुणैयोरै यावि कॊऴुवत् तॊडर्न्दु तऴुवा
मुळैयाद तिङ्ग ळुहिरात्तमुत्त् वन्दु मुऱैनिऩ्ऱ वीरऩ् मॊऴिवाऩ् 2202

मुऱै निन्ऱ वीरन्–धर्मावलम्बी वीर; अॅऴुन्तु तॊऴुवान्–उठकर नमस्कार करनेवाले; इळैयानै–कनिष्ठ को; अन्पिन्–वात्सल्य के साथ; आरम् इणै–माला से अलंकृत; मार्पिन् अणैया–वक्ष से लगाकर; विळैयात तुन्पम्–असाध्य दुःख; विळैवित्त–जिसने दिया; तॆय्वम्–वही देवता; वॆळि वन्ततु–प्रगट हो आया; अॅन्न–कहकर; वियवा–विस्मय दिखाकर; किळैयारिन् इतृत–बांधवों के समान प्यारे; तुणैयोरै–मित्रों को; आवि कॊळुव–प्राणों से लगाकर; तॊटर्न्तु तऴुवा–लगातार आलिंगन करके; मुळैयात–जो आगे नहीं बढ़ता; तिङ्कळ् उकिरान् मुन् वन्तु–(अर्ध) चन्द्र के समान नखों वाले (गरुड़) के सामने आकर; मॊऴिवान्–बोले। २२०२

अधर्मच्युत श्रीराम ने जी उठकर अपने चरणों में नमस्कार करनेवाले अपने छोटे भाई को प्रेम से अपने गले से लगा लिया। "अभूतपूर्व कष्ट जिसने दिलाया वही दैव गरुड़ बनकर आया।" यह विस्मय करके श्रीराम ने रिश्तेदार-मान्य सभी वानरों को गले से लगा लिया और वे अर्धचन्द्र-सम नखों वाले गरुड़ के सामने आकर (उसकी स्तुति में) निम्न बातें करने लगे। २२०२

ऐयनी यारै यॅङ्ग ळरुन्दवप् पयत्तिऩ् वन्दिङ्
गॅय्दिऩै युयिरुम् वाऴ्वु मीन्दनै यॆम्म ऩोराल्
कैयुऱै कोडऱ् कॊत्त काट्चियै यल्लै मीट्चि
सॆय्दिऱ मिलेया लॆऩ्ऱाऩ् ऱेवर्क्कुम् ऱॆरिक्कि लादाऩ् 2203

तेवर्क्कुम् तॆरिकिलातान्–देवों के लिए भी अज्ञेय (श्रीराम) ने; ऐय–जी! नी यारै–तुम कौन हो; अॅङ्कळ् अरु तव पयत्तिन्–हमारे अच्छे तप के फलस्वरूप; इङ्कु वन्तु अॅय्तिनै–यहाँ आ पहुँचे; उयिरुम् वाऴ्वुम्–प्राण और जीवन; ईन्तनै–प्रदान किये; अॅम्मनोराल्–हम-जैसों से; कैयुऱै कोटऱ्कु ऒत्त–भेंट की वस्तु लेने योग्य; काट्चियै अल्लै–आकार-प्रकार के नहीं लगते; मीट्चि–उऋण होने का (प्रत्युपकार) का काम; सॆय् तिऱम् इलै–करने की शक्ति नहीं; अॅन्ऱान्–कहा। २२०३

देवों को भी अज्ञात श्रीराम ने यों कहा। प्रभु! तुम कौन हो? हमारी अपूर्व तपस्या के फलस्वरूप इधर आये हो। हमें आयु और जीवन

प्रदान किया। हमारा प्रत्युपकार लोगे ऐसा भी नहीं दीखते। प्रत्युपकार करने की शक्ति भी हमारे पास नहीं है। २२०३

पोरुळिनि उणर वेरु पुरत्तुमोन् रुण्डो पुन्दित्
तॆरुळित्तै युडैय रायिर् चॆयलरुङ् गरुणैच् चॆल्वम्
अरुळित्तै वरवित् वन्द वाळ्क्कैयो दाहित् वायाल्
अरुळित्तै ऍन्निन् ऍय्द वरियत वुळवो वैय 2204

चॆयल् अरु–दुस्साध्य; करुणै चॆल्वम्–करुणा का धन; अरुळित्तै–प्रदान करने की कृपा की; वरवित् वन्त–तुम्हारे आगमन से मिला; वाळ्क्कै ईतु आकिल्–जीवन यही है तो; पोरुळ्–(प्रत्युपकार की) वस्तु; वेरु पुरत्तुम्–दूसरे लोकों में भी; उणर् ऒन्रु उण्टो–जानूँ, ऐसी कुछ है क्या; इनि–अब; वायाल्–मुख खोलकर; अरुळित्तै ऍन्तिन्–(बोलने की) कृपा करो तो; ऍय्त अरियत–हमारे लिए अप्राप्य; उळवो–हैं क्या। २२०४

तुमने असाध्य करुणा का धन प्रदान दिया है। तुम्हारे आने से प्राप्त सौभाग्यमय जीवन यह है तो तुम्हें देने योग्य पदार्थ दूसरे लोकों में भी हो सकता है क्या, जिसके सम्बन्ध में मैं जान सकूँ। तुम कृपा-वचन कहो तो हमारे लिए अप्राप्य क्या होगा ? । २२०४

कण्डिलै मुन्बु शॊल्लक् केट्टिलै कडनॊन् रॆम्बाल्
कॊण्डिलै कॊडुप्प दल्लार् कुरैयिलै यिदुनित् कॊळ्है
उण्डिलै यॆन्न निन्र वुयिर् तन्द वुदवियोने
पण्डिलै नण्बु नाङ्गळ् शॆय्वदॆन् पहर्दि यॆन्रात् 2205

उण्टु इलै–'है', 'नहीं'; ऍन्त निन्र–ऐसे (संशय में) स्थित; उयिर्–प्राण; तन्त उतवियोते–देनेवाले उपकारी; पण्टु–पहले की; नण्पु इलै–मित्रता नहीं थी; कण्टिलै–तुमने मुझे देखा भी नहीं था; मुन्पु–इससे पूर्व; चॊल्ल केट्टिलै–कथित सुना नहीं; कॊटुप्पतु अल्लाल्–देना छोड़; कटन् ऒन्रु–ऋण के रूप में; ऍम्पाल् कॊण्टिलै–तुमने लिया नहीं; कुरै इलै–कुछ कमी भी नहीं है (तुम्हारे पास); निन् कॊळ्कै इतु–तुम्हारा सिद्धान्त ऐसा है; नाङ्कळ् चॆय्वतु ऍन्–हमारा करणीय क्या; पकर्ति ऍन्रात्–बताओ कहा। २२०५

"हैं या नहीं" इस संशय में लक्ष्मण आदि की जानें थीं। उनको देने वाले हे उपकारी ! पहले हमारी मित्रता नहीं थी, तुमने मुझे पहले नहीं देखा था, न किसी से मेरे बारे में सुना होगा; तुमने कुछ प्रदान किया है, हमसे ऋण नहीं लिया है तुम्हारे पास कोई कमी भी नहीं है। तुम्हारा हाल ऐसा है। अब हम क्या करें, यह बताओ। २२०५

पऱवैयिन् कुलङ्गळ् काक्कुम् पावहन् पलैय निन्नो
उऱवळ तन्मै यॆल्ला मुणर्त्तुवॆ नरक्क नोडम्

मऱ्विनै मुडित्त पिन्नर् वरुवनिन् नुळैयन् मायप्
पिऱविषित्तु पकैज नल्हु विडैयॅनप् पॅयर्न्दु पोनान् 2206

पऱ्वैयित् कुलक्कळ्-खगकुल; काक्कुम्-पालक; पावकन्-पावक (गरुड़); मायम् पिऱविषित्-माया जन्म-जन्म के; पकैज्-शत्रु; निन् उळैयन्-आपके पार्षद; अरक्कनोटु-राक्षस से; अ मऱ्विनै-वह युद्धकर्म; मुटित्त पिन्नर्-पूरा करने के बाद; निन् उळैयन् वरुवन्-आपके पास आकर; निन्नोटु पळैय उऱवु उळ-आपसे पुराने नाते का; तन्मै ॲल्लाम्-हाल सब; उणर्त्तुवॅन्-समझा दूँगा; विडै नल्कु-विदा दें; ॲन-कहकर; पॅयर्न्तु पोनान्-हट गया। २२०६

पक्षीगण पालक पवित्रकारी गरुड़ ने श्रीराम से निवेदन किया कि हे मायाजन्य जन्म (मरण) के शत्रु ! मैं आपका ही पार्श्वसेवक हूँ। आपके राक्षसों के साथ युद्धकर्म पूरा करने के बाद आपके पास आऊँगा और अपना पुराना नाता बताऊँगा। अब बिदा दें। यह कहकर वह चला गया। २२०६

आरिय नवनै नोक्कि यारुयि रुदवि यादुम्
कारिय मिल्लान् पोनान् करुणैयोर् कडन्मै यीदार्
पेरिय लाळर् शॅय्है यूदियम् बिडित्तु मॅन्नार्
मारियै नोक्किक् कैम्मारि यऱ्ऱुमो वैय मॅन्ऱान् 2207

आरियन्-आर्य श्रीराम ने; अवनै नोक्कि-उसको देखकर (बाद); कारियम् यातुम् इल्लान्-हमसे कोई कार्य नहीं रखता था; आर् उयिर् उतवि-प्यारे प्राण दिलाकर; पोनान्-गया; करुणैयोर्-करुणामय लोगों का; कटन्मै ईतु-स्वभाव यह है; पेरियल् आळर् चॅय्कै-उदारचेता लोगों का काम; ऊतियम् पिटित्तुम्-उपकार का प्रत्युपकार लें; ॲन्नार्-नहीं कहेंगे; वैयम्-संसार; मारियै नोक्कि-मेघ के प्रति; कैम्मारु-प्रत्युपकार; इयऱ्ऱुमो-कर सकता है क्या; ॲन्ऱान्-कहा। २२०७

आर्य श्रीराम उसको जाता हुआ कुछ देर देख रहे थे। फिर पास वालों से कहा कि हम पर इसका कोई ऋण नहीं था तो भी इन सबको प्राण देकर चला जाता है, सकरुण लोगों का कार्य ऐसा ही होता है न ? उदार लोग प्रत्युपकार की प्रतीक्षा नहीं करते। क्या यह संसार मेघ का प्रत्युपकार कर सकता है ? । २२०७

इऱन्दन निळव लॅन्ना विऱैवियु मिडुक्क णॅय्दुम्
मऱन्दन रुऱङ्गु हिन्ऱ वञ्जरु मरुहि मीळप्
पिऱन्दन रॅन्रु कॊण्डोर् पॅरुम्बयम् बिडिप्प रन्ऱे
अऱन्दरु शिन्दै यन्ब वार्त्तुमॅन् ऱनुमन् शॊन्नान् 2208

अनुमन्-हनुमान; अऱम् तरु चिन्तै-धर्मचित्त; अन्प-कृपालु; इळवल्-छोटे कुमार; इऱन्तनन् ॲन्ना-मर गये समझकर; इऱैवियुम्-भगवती (सीता) भी; इडुक्कण् ॲय्तुम्-आकुलता पाएँगी; मऱन्तनर्-(अपने को) भूलकर; उऱङ्कुकिन्ऱ-

सोनेवाले; वन्चरुम्–वंचक भी; मीळ विड्रन्ततर्–फिर जी गये; ॲन्ड्र कॊण्डु–ऐसा जानकर; मऱुकि–भ्रान्त होकर; ओर् पॆरुम् पयम्–एक बड़े भय से; पिटिप्पर् अल्ड्रे–पीड़ित होंगे न; आर्त्तुम्–नर्दन करें; ॲन्ड्र–ऐसा; चॊन्नान्–बोला। २२०८

हनुमान ने श्रीराम से कहा। हे दया-धर्म-चित्त ! (अगर हम अब उच्च घोष नहीं करेंगे तो) सीतादेवी भी दुःखी होंगी कि लघुराज लक्ष्मण मर गये हैं। दूसरा, घोष करेंगे तो अपने को भूलकर गहरी निद्रा में रहने वाले राक्षस भी यह जानकर भय करेंगे कि वानर लोग जी उठे हैं, इसलिए हमें नर्दन करने दें। २२०८

अऴहिदॆन् ऱण्णल् कूऱ वार्त्ततर् कडल्ह ळञ्जिक्
कुऴैवुऱ वनन्द नुच्चिक् कुन्ऱुनिन् ऱण्ड गोळम्
ॲऴमिशै युलह मेन्मे लेङ्गिड विरिन्दु शिन्दि
मऴैविऴ मलैहळ् कीऱ मादिरम् पिळक्क मादो 2209

अण्णल्–प्रभु के; अऴकितु–सुन्दर यह; ॲन्ड्र कऱ–ऐसा कहने पर; कडल्कळ्–सागर; अञ्चि–डरकर; कुऴैवु उऱ–विलोडित हो जाएँ ऐसा; अनन्तन्–आदिशेषनाग के; कुन्ड्र उच्चि निन्ड्र–पर्वतोपम सिरों से; अण्टकोळम्–अंडगोल; मिचै ॲऴ–ऊपर उठे ऐसा; उलकम्–लोकवासी; मेल् मेल् एङ्किट–उत्तरोत्तर संकटग्रस्त हों ऐसा; मऴै–मेघ; विरिन्तु चिन्ति विऴ–फटकर, चर होकर, गिर जाएँ ऐसा; मातिरम् पिळक्क–दिशाएँ चिर जाएँ, ऐसा; आर्त्ततर्–नर्दन किया वानरों ने। २२०९

महिमावान् श्रीराम ने कहा कि सुन्दर है। तब वानरों ने इतना उच्च गर्जन किया कि समुद्र डर से क्षुब्ध हो गये। अनन्तनाग के पर्वतोपम सिरों से अंडगोल ऊपर उठ गया। लोकवासी तरसने लगे। मेघ टूटकर छितर गये। पर्वत फट गये और आठों दिशाएँ चिर गयीं। २२०९

पऴिप्परुञ् जिन्दै याऴपाऱ् चिन्दनै पडरक् कण्गळ्
विऴिप्पिलन् मेनि शाल वॆंदुम्बिन नीशन् वेलुम्
कुऴिप्परि दाय मार्बै मन्मदन् कॊऱ्ऱ वाळि
किऴिप्पुऱ वुयिर्प्पु वीङ्गिक् किडन्दवा ळरक्कन् केट्टान् 2210

पऴिप्पु अरु–अनिंद्य; चिन्तैयाळ्–चित्तवाली; पाल्–(सीता) के प्रति; चिन्तनै पटर–मन (इच्छा) के जाने से; कण्कळ् विऴिप्पिलन्–आँखों को न खोलकर; मेनि चाल वॆंतुम्पिनन्–शरीर खूब तप्त रहा; ईचन् वेलुम्–ईश्वर का शूल भी; कुऴिप्पु अरितु आय–जिसको भेदने में अशक्त रहेगा उस; मार्पै–वक्ष को; मन्मतन् कॊऱ्ऱम् वाळि–मन्मथ के विजयी बाण; किऴिप्पुऱ–भेद चलें ऐसा; उयिर्प्पु वीङ्कि–लम्बी आहें भरकर; किटन्त–जो पड़ा रहा; वाळ् अरक्कन्–तलवारधारी उस राक्षस (रावण) ने; केट्टान्–(शोर को) सुना। २२१०

तब रावण ने यह गर्जन सुना। उसका मन अनिंद्य मन वाली सीताजी

के पास गया रहा, इसलिए आँखें न खोलकर भी तप्तशरीरी होकर पड़ा रहता था। मन्मथ के विजय-बाण उसके वक्ष को भेद रहे थे, जिस वक्ष को ईश्वर का शूल भी नहीं भेद सकता था। वह तलवारधारी राक्षस दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए पड़ा रहता था। २२१०

तादैशोऱ् ऱलैमेऱ् कॊण्ड ताबदन् तरुम मूर्त्ति
ईदैहळ् तीर्क्कु नामत् तिरामनै यॆण्णि येङ्गुम्
शीदैयु मवळै युन्निच् चिन्दनै तीर्न्दुन् दीराप्
पेदैयु मऱ्ऱि यव्वू रियारुळर् तुयिल्पॆ ऱादार् 2211

तातै चॊल्–पितृवचन; तलै मेल् कॊण्ट–सिर पर धारण करके; तापतन्–भाये तपस्वी; तरुम मूर्त्ति–धर्ममूर्ति; ईतैकळ् तीर्क्कुम्–संकटहारी; नामत्तु–नामधारी; इरामनै–राम का; ऍण्णि–स्मरण करके; एङ्कुम्–तरसनेवाली; चीतैयुम्–सीता को; अवळै–उन्हें; उन्नि–सोचकर; चिन्तनै तीर्न्तुम्–व्यग्रमन; तीरा–प्राणों को न छोड़नेवाला; पेतैयुम्–जड़मति रावण को; अऱ्ऱि–छोड़कर; अव्वूर्–उस नगर में; तुयिल् पॆऱातार्–अनिद्राग्रस्त; यार् उळर्–कौन थे। २२११

पिता की आज्ञा को शिरोधार्य करके रहनेवाले तपस्वी धर्ममूर्ति और भक्त संकटहारी नाम के देव श्रीराम को याद करके जो तरस रही थीं उन सीतादेवी को और उनके स्मरण से अपना मन व्यथित करके भी जो मरा नहीं उस जड़मति (रावण) को छोड़कर उस नगर में कौन था, जो नहीं सोता था? । २२११

शिङ्गवे ऱशनि येऱु केट्टलुञ् जीऱ्ऱच् चेनै
पॊङ्गिय दॆन्न मन्नन् पॊरुक्कॆन वॆऴुन्दु पोरिल्
मङ्गिनर् पहैञ रॆन्ऱ वार्त्तैये वलिय दॆन्ना
अङ्गैयो डङ्गै कॊट्टि यलङ्गल्दोळ् कुलुङ्ग नक्कान् 2212

चिङ्क एऱु–नरसिंह-सदृश; मन्नन–राजा रावण; अचनि एऱु–अशनिश्रेष्ठ को; केट्टलुम्–सुनते ही; चीऱ्ऱम् चेनै–क्रुद्ध वानर-सेना; पॊङ्कियतु–उमँग से भर गयी है; ऍन्न–ऐसा; पॊरुक्कॆन ऍऴुन्तु–झट उठकर; पकैञर्–शत्रु; पोरिल्–युद्ध में; मङ्किनर्–मर गये; ऍन्ऱ–ऐसा; वार्त्तैये–वचन ही; वलियतु–समर्थ है; ऍन्ना–(व्यंग्य में) कहकर; अङ्कैयोटु अङ्कै कॊट्टि–हथेली से हथेली मारकर; अलङ्कल् तोळ्–माला से अलंकृत कंधों को; कुलुङ्क–हिलने देते हुए; नक्कान्–हँसा। २२१२

नर केसरी के समान रावण ने अशनि-सम यह गर्जन सुना तो झट यह समझकर उठा कि क्रुद्ध वानर-सेना उमँग उठी है। वह हाथ से हाथ मारकर ऐसा हँसा कि उसके मालाधारी कंधे हिल उठे। उसने व्यंग्य किया कि इन्द्रजित् ने जो यह कहा कि शत्रु युद्ध में मर गये, वह वचन भी कितना दृढ़ है। २२१२

इडिक्किन्ऱ वशनि यॅन्न विरॅक्किन्ऱ दिरामन् पोर्विल्
वॅडिक्किन्ऱ दण्ड मॅन्नप् पडुवदु तम्बि विन्नाण्
अडिक्किन्ऱ दॅन्नै वन्दु शॅविदोऱु मनुम नार्प्पुप्
पिडिक्किन्ऱ दुलह मॅङ्गुम् परिदिशे यार्प्पिन् पॅऱ्ऱि 2213

इरामन् पोर् विल्–श्रीराम का युद्धचाप; इटिक्किन्ऱ अचनि ॲन्न–टूटनेवाले वज्र के समान; इरॅक्किन्ऱतु–टंकोरता है; तम्पि विल् नाण्–उसके छोटे भाई के धनु का डोरा; अण्टम् वॅटिक्किन्ऱतु ॲन्न–अण्ड फटता जैसा; पटुवतु–नाद उठाता है; अनुमन् आर्प्पु–हनुमान का नर्दन; ॲन्नै वन्तु–मेरे पास आकर; चॅवि तोऱुम्–हर कान में; अटिक्किन्ऱतु–पीटता है; परिति चेय्–सूर्यपुत्र के; आर्प्पिन् पॅऱ्ऱि–गर्जन का हाल; उलकम् ॲङ्कुम्–संसार भर में; पिटिक्किन्ऱतु–फैलता है। २२१३

श्रीराम का युद्धधनुष वज्र के समान नाद उठाता है। छोटे भाई के धनुष का डोरा फटते अंड के समान ध्वनि करता है। हनुमान का गर्जन तो मेरे पास आकर मेरे कानों पर प्रहार करता है। सूर्यसूनु के गर्जन का हाल ऐसा है कि वह सारी दुनिया पर फैल जाता है। २२१३

अङ्गद नवनो वार्त्ता नन्दर मार्क्किन् ऱानुम्
वॅङ्गद नीलन् मऱ्ऱै वीररुम् वेऱु वेऱु
पॊङ्गिन रार्त्त वोशै यण्डत्तुम् बुऱत्तुम् बोन
शङ्गैयॊन् ऱिन्ऱित् तीर्न्दार् पाशत्तैत् तरुम नल्ह 2214

अङ्कतन् अवनो–अंगद भी; आर्त्तान्–शोर मचाता है; वॅम् कतम्–भयावने रूप से क्रुद्ध; नीलनुम्–नील भी; अन्तरम् आर्क्किन्ऱान्–अंतरिक्ष में भरते हुए नर्दन करता है; मऱ्ऱै वीररुम्–अन्य वीर भी; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; पॊङ्किनर्–उत्साह के साथ; आर्त्त ओचै–जो नारे निकालते हैं उनकी ध्वनि; अण्टत्तुम्–अण्ड के अन्दर और; पुऱत्तुम्–बाहर; पोन–जा व्याप्त होती है; तरुमम् नल्क–धर्मदेवता के कृपा करते; चङ्कै ऑन्ऱु इन्ऱि–बिना शंका के; पाचत्तै तीर्न्तार्–पाश से छूट गये। २२१४

अंगद भी गर्जन करता है। अतिक्रुद्ध नील भी आसमान सिर पर उठाता है। अन्य वीरों ने अलग-अलग जो उत्साह के साथ नर्दन किया वह अंड और अंड के बाहर भी फैल गया है। इसलिए धर्मदेवता की कृपा से निस्सन्देह शत्रु नागपाश से छूट गये हैं। २२१४

ॲन्बदु शॊल्लिप् पळ्ळिच् चेक्कैनिन् ऱिऴिन्दु वेन्दन्
ऑन्बदु कोडि वाट्कै यरक्कर्दन् दुळैयर् शुऱ्ऱप्
पॊन्बॊदि विळक्कड् गोडिप् पुङ्गुळै महळि रेन्दत्
तन्बॆरुङ् गोयिल् निन्ऱु महन्तनिक् कोयिल् शार्न्दान् 2215

नितुङ–पलंग से; इळिनृतु–उतरकर; वाळ् कै–करवाल-हस्त; ऑन्पतु कोटि अरक्कर्–नौ करोड़ राक्षसों के; उळैयर् वनृतु–पास लगे; चुऱ्ऱ–घेरे आते; पू कुळै–सुन्दर कर्णाभूषणधारिणी; कोटि मकळिर्–करोड़ सुन्दरियों के; पॊन् पॊति विळक्कम्–स्वर्णमय दीप; एनृत–उठाए आते; तन् पॆरु कोयिल् नितुङ–अपने बड़े महल से; मकन् तनि कोयिल्–पुत्र के श्रेष्ठ महल में; चार्न्तान्–आ पहुँचा। २२१५

ऐसा कहकर रावण शय्या से उतरा और अपने महल से निकलकर अपने पुत्र के अप्रतिम महल में गया। उसके साथ करवालहस्त नौ करोड़ राक्षस गये और सुन्दर कर्णाभूषणधारिणी करोड़ स्त्रियाँ स्वर्ण-निर्मित दीप लिये हुए गयीं। २२१५

ताङ्गिय तुहिलार् मॆळ्ळच् चरिन्दुवीऴ् कुऴलार् ताङ्गि
वीङ्गिय वुयिर्प्पार् विण्णै विऴुङ्गिय मुलैयार् मॆल्लत्
तूङ्गिय विऴियार् तळ्ळित् तुळङ्गिय नडैयार् वल्लि
वाङ्गिय मरुङ्गुल् मादर् अनन्दरात् मयङ्गि वन्दार् 2216

वल्लि वाङ्किय–वल्लरी भी जिसके सामने हारकर झुक जाए; मरुङ्कुल् मातर्–ऐसी कमरवाली स्त्रियाँ; ताङ्किय तुकिलार्–हाथ में साड़ियाँ उठानेवाली होकर; मॆळ्ळ चरिन्तु–धीरे खुलकर; वीऴ्–गिरनेवाले; कुऴलार्–केश की; ताङ्कि–रुक-रुककर; वीङ्किय–फूले; उयिर्प्पार्–वम वाली; विण्णै विऴुङ्किय–आकाश को निगलनेवाले; मुलैयार्–स्तनों वाली; मॆल्ल–मन्द; तूङ्किय विऴियार्–निद्रित आँखों वाली; तळ्ळि तुळङ्किय–लड़खड़ाती; नडैयार्–चाल वाली; अनन्तरात्–खुमारी के साथ; मयङ्कि वन्तार्–मोहमग्न हो आयीं। २२१६

ऐसी स्त्रियाँ भी खुमारी के कारण लड़खड़ाती चाल के साथ जा रही थीं, जिनकी लता को भी हरानेवाली कमरें लचक उठती थीं; जो कि अपनी साड़ी को हाथ से उठा लिये थीं; जिनके वाल खुले लटकते थे; जो रुक-रुककर दीर्घ निःश्वास छोड़ती थीं; और जिनके स्तन आकाश को भी ढँक रहे थे। २२१६

पानमुन् दुयिलुङ् गण्ड कनवुम्वण् कनिन्द पण्णैक्
कानमुन् वळ्ळत् तळ्ळिक् कळियॊडुङ् गळ्ळङ् गऱ्ऱ
मीनिलुम् पॆरिय वाट्कण् विऴिप्पदु मुहिऴ्प्प वाह
वानवर् महळिर् पोनार् मळ्ळैयज् जदङ्गै माळ्ह 2217

वानवर् मकळिर्–देवांगनाएँ; पानमुम् तुयिलुम्–पान और निद्रा; कण्ट कनवुम्–और देखे हुए स्वप्न; पण् कनिन्त–रागयुक्त; पण्णै कानमुम्–गानों का समूह; तळ्ळ–उनको ठेलते रहे; कळियॊटुम्–मस्त; कळ्ळम् कऱ्ऱ–दुराव-शिक्षित; मीनिलुम् पॆरिय–मछलियों से बड़ी; वाळ् कण्–तलवार के समान आँखों को; विऴिप्पतुम्–खोलतीं; मुकिऴ्प्पताक–और बन्द करतीं; मळ्ळै अम् चतङ्कै–क्वणनशील सुन्दर पायलों की घंटियों के; माळ्क–मन्दस्वर करते; तळ्ळि–लड़खड़ाती; पोनार्–चलीं। २२१७

देवांगनाओं के पान, निद्रा, स्वप्न और रावण पर गाये गये गाने उनको आगे ठेल रहे थे। उनकी वंचक मछलियों से भी बड़ी और तलवार के समान आँखें खुलतीं और बन्द होती थीं। अधिक शब्द करने वाली सुन्दर पायलें थोड़ा नाद उठा रही थीं। इस स्थिति में वे भी लड़खड़ाती हुई जा रही थीं। २२१७

मळैयिनै नील मूट्टि वाशमुम् पुहैयु माट्टि
उळैयुळै शुरुट्टि मॅन्बूत् तॉडुत्तिडैक् किडैयू रॅन्नाप्
पिळैयुडै विदियार् शॅय्द पॅरुङ्गुळल् करुङ्गट् चॅव्वाय्
इळैयणि महळिर् शूळ्न्दा रन्नदरा लिडङ्गळ् तोरुम् 2218

मळैयिनै नीलम् ऊट्टि–मेघ पर नीला रंग चढ़ाकर; वाशमुम्–सुगन्धि को; पुकैयुम्–और धुएँ को; माट्टि चुरुट्टि–लगाकर घुसाकर; उळै उळै–बीच-बीच में; मॅल् पू–कोमल पुष्प; तॉडुत्तु–गूँथकर; इटैक्कु–कमर को; इटैयूरु–दुखेगा, ऐसा; ॲन्ना–न सोचनेवाले; पिळै उटै–अपराधी; वितियार् चॅय्त–विधाता द्वारा निर्मित; पॅरु कुळल्–घने और लम्बे केश की; करु कण्–काली आँखों की; चॅ वाय्–लाल अधरों की; इळै अणि–आभरणधारिणी; मकळिर्–स्त्रियाँ; अन्नतराल्–तन्द्रालस्य के साथ; इटङ्कळ् तोरुम्–सभी स्थानों में; चूळ्न्तार्–घेरे खड़ी रहीं। २२१८

और भी स्त्रियाँ रावण को घेरकर आयीं। वे कैसी थीं? उनके केश मेघों के समान थे जिन पर नीला रंग चढ़ाया गया था, जिनमें सुवास और धुआँ लगाकर मध्य-मध्य कोमल पुष्प लगे हुए थे और जिन्हें ब्रह्मा ने ग़लती से यह न सोचकर बनाया था कि उनकी पतली कमरें दुखेंगी। उनके काली आँखें थीं और लाल अधर थे। वे सुन्दर आभरणों से अलंकृत थीं। २२१८

तेनिडैक् करुम्बिर् पालि लमुदिनिर् किळवि तेडि
मानिडैक् कयलिल् वाळिल् मलरिडै नयतम् वाङ्गि
मेतडै यनैय मट्रुम् नलवळि नलह वेण्डि
वानुडै यणणल् शॅयद मङ्गैयर् मरुङ्गु शॅन्ड्रार् 2219

वानुडै अण्णल्–सत्यलोक के देव द्वारा; मल् वळि मलक वेण्टि–अच्छी रीति से सृष्टि करना चाहकर; तेन् इटै–मधु से; करुम्पिन्–ईख से; पालिल्–दूध से; अमुतितिल्–अमृत से; किळवि तेटि–वाणी (के अंश) ढूँढ़कर; मानिटै–हिरणों से; कयलिल्–मछली से; वाळिल्–तलवार से; मलरिटै–पुष्प से; नयतम्–आँखें (अक्षांश); वाङ्कि–लेकर; मट्रुम्–और; मेल् नटैय कॉण्टुम्–श्रेष्ठ वस्तुओं से गुण लेकर; चॅय्त मङ्कैयर्–रचित; मरुङ्कु चॅन्ड्रार्–पास-पास चलीं। २२१६

अन्य तरुणियाँ भी रावण के साथ गयीं। वे कैसी थीं? इनको बनाने में सत्यलोक के देव ब्रह्मा ने बहुत परिश्रम किया था। उन्होंने मधु,

दुग्ध और अमृत से वाणी की सामग्रियाँ चुन लीं। मृग, मछली, तलवार और कमल के आवश्यक अंशों को लेकर नेत्र बनाये। और भी अन्य अच्छे-अच्छे लक्षणों को लेकर उन्होंने उन तरुणियों को निर्मित किया था। २२१९

तॊडङ्गिय वार्प्पि नोशै शॆविप्पुलन् दॊडर्द लोडुम्
इडङ्गरिन् वयप्पोत् तन्न वॆरुळ्वलि यरक्क रियारुम्
मडङ्गलिन् मुळक्कङ् गेट्ट वान्करि यॊत्तार् मादर्
अडङ्गलु मशनि केट्ट वळैयुऱै यरव मॊत्तार् 2220

तॊटङ्किय–आरब्ध; आर्प्पिन् ओचै–नारों का शोर; चॆवि पुलम्–कर्णेन्द्रिय में; तॊटर्तल् ओटुम्–घुसा तो; इटङ्करिन्–नक्र के; वयम् पोत्तु अन्न–नर जानवर के समान; ॲरुळ् वलि–अतिबलिष्ठ; अरक्कर् यारुम्–सभी राक्षस; मटङ्कलिन् मुळक्कम् केट्ट–केसरीगर्जनश्रोता; वान् करि–उत्तम गजों के; ऒत्तार्–समान रहे; मातर् अटङ्कलुम्–सभी स्त्रियाँ; अचनि केट्ट–वज्रनादश्रोता; अळै उऱै–बिल में रहते; अरवम् ऒत्तार्–सर्प के समान रहीं। २२२०

जब वानरों का आरब्ध नर्दन-स्वर लोगों के कानों में पड़ा, तब नक्र-सम अति बलवान राक्षस सब सिंहगर्जन-श्रोता गजों की-सी स्थिति में आ गये। सभी स्त्रियाँ बिल के अंदर रहनेवाले वज्र-श्रोता सर्पों की-सी स्थिति में आ गयीं। २२२०

अरक्कनु मैन्दन् वैहु माडकत् तमैन्द माडम्
पॊरुक्कॆनच् चॆन्ऱु पुक्कान् पुण्णिनीर्क् कुमिऴि पॊङ्गत्
तरिक्किलन् मडङ्ग लेऱ्ऱाऱ् ऱॊलैप्पुण्डु शाय्न्दु पोन
करुक्किळर् मेह मॆन्न कळिऱनै यानैक् कण्डान् 2221

अरक्कनुम्–राक्षस रावण भी; मैन्तन् वैकुम्–पुत्र जहाँ वास करता था; आटकत्तु अमैन्त–स्वर्ण-निर्मित उस; माटम्–महल में; पॊरुक्कॆन–झटिति; चॆन्ऱु पुक्कान्–आ पहुँचा; पुण्णिल्–व्रणों से; नीर्कुमिऴि पॊङ्क–रुधिर जल के बुलबुलों की तरह प्रगट होते; तरिक्किलन्–नहीं सह सककर; करु किळर् मेकम्–जलगर्भित मेघ; अन्न–के समान; मटङ्कल् एऱ्ऱाल्–(नर) केसरी से; तॊलैप्पुण्टु–प्रहार पाकर; चाय्न्तु पोन–निर्बल हुए; कळिऱु अनैयानै–हाथी के समान इन्द्रजित् को; कण्टान्–देखा। २२२१

रावण, पुत्र के स्वर्णनिर्मित महल में जल्दी पहुँचा। उसने देखा कि इन्द्रजित् व्रणों से बुलबुलों के साथ रक्त को बहने देते हुए बेचैन हो रहा था। नीले मेघ-सम वह नर केसरी से आहत निर्बल पुरुष गज के समान पड़ा रहता था। २२२१

ऎऴुन्दडि वणङ्ग लाऱ्ऱा तिरुहैयु मरिदि नेऱ्ऱित्
तॊऴुन्दॊऴि लानै नोक्कित् तुणुक्कुऱ्ऱु मनत्तन् तोन्ऱल्

अळुङ्गित्तै वन्द वेन्नै यडुत्तदेन् ऱडुत्तुक् केट्टान्
पुळुङ्गिय पुण्णि नानु मितैयन पुहल लुड्ऱान् 2222

ऍळुन्तु–उठकर; अटि वणङ्कल् आऱ्ऱान्–चरणों में नमस्कार कर नहीं सका; इरु कैयुम्–(लेटे ही लेटे) दोनों हाथों को; अरितिन्–सक्लेश; एऱ्ऱि–सिर पर (चढ़ा) रखकर; तॊळुम्–नमस्कार करने का; तॊळिलातै–काम करनेवाले को; नोक्कि–देखकर; तुणुक्कुऱ्ऱ मनत्तम्–व्यग्रचित्त; तोन्ऱल्–पुत्र; अळुङ्कितै–तुम निर्बल हो; वन्तवु ऍन्तै–हुआ क्या; अटुत्ततु–क्या हुआ; ऍन्ऱु–ऐसा; अटुत्तु केट्टान्–बार-बार पूछा; पुळुङ्किय पुण्णितानुम्–मन को कष्ट देनेवाले व्रणों का वह; इतैयन–यह; पुकलल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। २२२२

वह उठकर पिता के चरणों में नमस्कार नहीं कर सका। उसने बहुत कष्ट के साथ अपने सिर पर अपने हाथ धर लिये। रावण उसको इस स्थिति में देखकर ठिठक गया। उसने अपने पुत्र से पूछा कि हे बेटे ! तुम श्रान्त हो, क्या बात हुई ? व्रणों से दुःखी इन्द्रजित् यों कहने लगा। २२२२

उरुविन वुरत्तै मुऱ्ऱु मुलप्पिल वुदिरम् वऱ्ऱप्
परुहिन वळप्पि लाद पहळिहळ् कवशम् पऱ्ऱऱ्
ऱरुहिन पिन्नैच् चाल वलशिनैं नैय कण्गळ्
शॅरुहिन वन्ऱे यातुम् मायैयिऱ् ऱीरन्दि लेत्तै 2223

ऐय–तात; अळप्पु इलात–असंख्य; पकळिकळ्–अस्त्र; उरत्तै–वक्ष को; मुऱ्ऱुम् उरुविन–पूर्ण रूप से निफर गये; उलप्पु इल–अक्षय; उतिरम्–रक्त; वऱ्ऱ परुकिन–सुखाते हुए पी गये; कवचम्–कवच; पऱ्ऱु अऱ्ऱु–सन्धिबन्ध टूटकर; अरुकिन–मिटा; पिन्नै–बाद; चाल–खूब; अलचिनैन्–जर्जर हुआ; कण्कळ् चॅरिकिन–आँखें (पुतलियाँ) धँस गयीं; यानुम् मायैयिल् तीरन्तिलेन्–(अच्छा हुआ) माया के कारण बच गया, सही। २२२३

प्रभु ! बेशुमार बाणों ने मेरी छाती को पूर्ण रूप से चलनी बनाकर मेरे रक्त को पूर्ण रूप से पी लिया। कवच, संधियाँ टूटने से मिट गया। फिर मैं बहुत जर्जर हो गया। आँखें ऊपर चढ़ गयीं। अपनी ही माया के बल से बिना मरे बचा। २२२३

इन्दिरन् विडैयिन् पाह नॅरुळ्वलिक् कलुळ नेरुम्
शुन्दर नरुक्क नॅन्ऱित् तॊडक्कत्तार् तॊडर्न्द पोरिल्
नॊन्दिल लिनैय वॊन्ऱुम् नुवल्ऱिलन् मनिद नोन्मै
मन्दर मनैय तोळाय् वरम्बुडैत् तन्ऱु मन्नो 2224

मन्तरम् अनैय तोळाय्–मंदर-सम स्कन्धों वाले; इन्तिरन्–इन्द्र और; विटैयिन् पाकन्–ऋषभवाहन; ऍरुळ्वलि–अति बलवान; कलुळन्–गरुड़ पर; एऱुम् चुन्तरन्–आरूढ़ सुन्दर विष्णु; अरुक्कन्–और सूर्य; ऍन्ऱु इ तॊटक्कत्तार्–आदि लोगों से;

तॊटरन्त पोरिल्–जो-जो युद्ध आरम्भ किया उसमें; मॊन्तिलन्–श्रान्त नहीं हुआ; इतैयतु ऒन्ऱुम्–ऐसी कोई बात; नुवत्रिलन्–कही नहीं; मनितन् नोन्मै–नर (लक्ष्मण) का बल; वरम्पु उटैत्तु अन्ऱु–ससीम नहीं है। २२२४

मंदर पर्वतोपम कंधोंवाले ! मैं उन युद्धों में नहीं थका, जिन्हें इन्द्र, ऋषभवाहन शिवजी, बलवान गरुड़ पर आरूढ़ सुन्दर विष्णु आदि के साथ हुए थे, तब भी ऐसी बातें मैंने नहीं कही थीं। लगता है कि मनुष्य (लक्ष्मण) की शक्ति निस्सीम है। २२२४

इळैयवन् तन्मै यीदा लिरामन दाऱ्ऱ लॆण्णिल्
तळैयवि ऴलङ्गन् मार्ब नम्वयिऱ् ऱङ्गिऱ् ऱन्ऱाल्
विळैवुकण् डुणर्व लल्लाल् वॆन्ऱिमेल् विळैयु मॆन्न
उळैवदन् ऱॆन्ऩच् चॊन्ना नुऱ्ऱुळ दुणर्न्दि लादान् 2225

उऱ्ऱु उळतु–बीती बात; उणर्न्तिलातान्–जिसने नहीं जाना था उसने; तळै अविऴ्–खिली कलियों की; अलङ्कल् मार्प–मालाधारी वक्षवाले; इळैयवन् तन्मै ईतु–छोटे नर (लक्ष्मण) का बल ऐसा है; इरामनतु आऱ्ऱल् ऎण्णिल्–राम का बल सोचो तो; नम् वयिन् तङ्किऱ्ऱु–हमारे वश का रहनेवाला; अन्ऱु–नहीं; विळैवु कण्टु–आगे जो होगा उसको देखकर; उणर्तल् अल्लाल्–जानने के सिवा; मेल्–आगे; वॆन्ऱि विळैयुम् ऎन्न–विजय होगी वैसा; उळैवतु–व्यग्र रहना; अन्ऱु–ठीक नहीं; ऎन्न चॊन्नान्–ऐसा कहा। २२२५

इन्द्रजित् को वह मालूम नहीं था जो हुआ था। इसलिए उसने पिता से कहा। प्रफुल्ल मालाधारी वक्षवाले ! लघु भाई लक्ष्मण का हाल यह है। श्रीराम की शक्ति सोचें तो हमारे लिए असाध्य है। जो होगा उससे ही फल जाना जा सकता है, नहीं तो अभी विजय को संभव जानकर मन को चोट लगाने से कोई फ़ायदा नहीं। २२२५

वॆन्ऱदु पाशत् तालु मायैयिन् विळैवि नालुम्
कॊन्ऱदु कुरङ्गु वीरर् तम्मॊडक् कॊऱ्ऱत् तोनै
निन्ऱन निराम निन्नुम् निहऴ्न्दवा निहऴ्ग मॆन्मेल्
ऎन्ऱन नॆन्नक् केट्ट विरावण निदनैच् चॊन्नान् 2226

कुरङ्गु वीरर् तम्मॊटु–वानर वीरों के साथ; अ कॊऱ्ऱत्तोनै–उस विजयी लक्ष्मण को; कॊन्ऱतु–मेरा मारना; वॆन्ऱतु–हराना; पाचत्तालुम्–नागपाश से और; मायैयिन् विळैविनालुम्–माया के प्रभाव से; इन्नुम् इरामन् निन्ऱनन्–अब भी राम ही बचा है; मेन् मेल्–उत्तरोत्तर; निकऴ्न्तवा–जो होगा; निकऴ्क–वह हो; ऎन्ऱनन्–कहने पर; केट्ट इरावणन्–जो सुना उस रावण ने; इतनै चॊन्नान्–यह कहा। २२२६

मैंने वानर वीरों के साथ विजयी लक्ष्मण को जो मारा और जो मैं

जीता वह पाश और माया का फल है। अब राम बचा है। आगे जो होगा वह होगा। रावण ने उसको सुनकर यह कहा। २२२६

वार्हळर् काल मऱ्ऱव् विलक्कुवत् वयिर विल्लित्
पेरोलि यरवम् विण्णप् पिळन्दिडक् कुरङ्गु पोन्दु
कारोलि यडङ्ग वल्लै कम्बिक्कक् कळत्ति नार्त्त
पोरोलि योन्ऱु मैय वरिन्दिलै पोलु मॆन्ऱान् 2227

वार्कळल् काल–वीर पायल-चरण; ऐय–सुन्दर कुमार; मऱ्ऱु–विपरीत; अव् इलक्कुवत्–उस लक्ष्मण के; वयिरम् विल्लित्–वज्रधनु के; पेर् ऑलि अरवम्–बड़े नाद के शोर के; विण्णै पिळन्तिट–आकाश को चीर देते; कुरङ्कु पोन्तु–वानर आये; कारोलि अटङ्क–मेघ-रव को दबाते हुए; वल्लै कम्पिक्क–(जीवों को) सवेग कँपाते हुए; कळत्तिन् आर्त्त–युद्धरंग में जो नारे लगाये; पोर् ऑलि–वह युद्धघोष; ऑन्ऱुम्–कुछ भी; अऱिन्तिलै पोलुम्–नहीं जानते शायद; ऎन्ऱान्–कहा। २२२७

दीर्घ-पायल-चरण! सुन्दर इन्द्रजित्! तुमने शायद युद्धघोष नहीं सुना है। जिसमें लक्ष्मण के वज्रधनु की टंकार ने आकाश को चीर दिया। वानरों के नाद से मेघों का वज्रनाद थम गया और सभी जीव शीघ्र कंपित हो गये। २२२७

ऐयवॆम् बाशम् तत्ता लार्प्पुण्डा रशनि यॆन्नप्
पॆय्युम्वॆञ् जरत्तान् मेनि बिळप्पुण्डा रुणर्वु पेर्न्दार्
उय्युन रॆन्ऱु रैत्त दुण्मैयो वॊळिक्क वॊन्ऱो
शॆय्युमॆन् ऱॆण्णत् तॆय्वञ् जिऱिदन्ऱो तॆरियि नॆन्ऱान् 2228

ऐय–पिताजी; वॆम् पाचम् तत्ताल्–भयंकर पाश से; आर्प्पुण्टार्–जो बँधे थे; अचति ऎन्न–अशनि के समान; पॆय्युम्–गिराये गये; वॆम् चरत्ताल्–क्रूर शरों से; मेनि पिळप्पुण्टार–विद्धशरीर हुए; उणर्वु पेर्न्तार्–सुध खो गये; उय्युनर्–जी गये; ऎन्ऱु उरैत्ततु–ऐसा जो कहा वह; उण्मैयो–सच है क्या; ऒळिक्क ऒन्ऱो–(क्या वह पाश) निवार्य एक है; तॆरियिन्–सोचें तो; चॆय्युम् ऎन्ऱु ऎण्ण–ऐसा करेगा, यह सोचें तो; तॆय्वम्–देवता; चिऱितु अन्ऱो–छोटा है न। २२२८

इन्द्रजित् ने संशय के साथ कहा। पिताजी! पाशबद्ध मेरे शत्रुओं के शरीर वज्र-सम भयंकर बाणों द्वारा चिर गये थे। उनकी सुधि भी जाती रही। फिर क्या यह सच है कि वे जी गये। क्या सच्च है? क्या वह पाश साधारण बन्धन है? तब (पाश देनेवाले) देवता सत्त्वहीन नहीं हो जायेंगे। २२२८

ईदुरै निहऴुम् वेलै यॅय्दिय दरियप् पोन
तूवुवर् विरैविन् वन्दार् पुहुन्दडि तॉऴुद लोडुम्
यादव णिहऴ्न्द वॅन्न विरावण तियम्ब वीरिन्रु
ओदिय कल्वि याळर् पुहुन्दुळ दुरैक्क लुऱ्ऱार् 2229

ईतु उरै निकऴुम् वेलै–जब यह बातचीत चल रही थी तब; ॲय्तियतु–जो हुआ वह; अरिय पोन–जानने जो गये; तूतुवर्–दूत; विरैविन् वन्तार्–जल्दी आये; पुकुन्तु अटि तॉऴुतलोटम्–और जब आकर चरणों में नमस्कार किया तब; इरावणन्–रावण के; अवण् निकऴ्न्ततु यातु–वहाँ हुआ क्या; ॲन्न इयम्प–ऐसा पूछने पर; ईरु इन्रु–अनन्त; ओतिय–विद्या का अध्ययन जो कर चुके; कल्वियाळर्–वे विद्वान् दूत; पुकुन्तुळतु–जो हुआ वह; उरैक्कल् उऱ्ऱार्–कहने लगे। २२२९

जब वे बोल रहे थे तब वहाँ वे दूत शीघ्र आ पहुँचे, जो कि समाचार जानने गये थे। उन्होंने रावण के चरणों में नमस्कार किया। लंकेश ने पूछा कि क्या हुआ ? तब अपार विद्वान् वे दूत कहने लगे। २२२९

पाशत्ताऱ् पिणिप्पुण् डारैप् पहऴियाऱ् कळप्पट् टारैत्
तेशत्ता ररशन् मैन्द निडैयिरुळ् शेर्न्दु निन्रे
एशत्ता निरङ्गि येङ्गि युलहॅला मॅरिप्पॅ नॅन्रान्
वाशत्तार् मालै मार्ब वानुरै कलुळन् वन्दान् 2230

वाचम् तार्मालै–सुगन्धित मालाधारी; मार्प–वक्ष वाले; तेचत्तार् अरचन्–(कोसल) देशवासियों के राजा के; मैन्तन्–पुत्र, राम; पाचत्ताल् पिणिप्पुण्टारै–पाशबद्ध लोगों; पकऴियाल् कळप्पट्टारै–अस्त्रहतों को; इटै इरुळ्–अर्धरात्रि में; चेर्न्तु निन्रे–पास आ स्थित होकर; एचऱ्ऱान्–दुःखी; इरङ्कि एङ्कि–सहानुभूति में तरसकर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; ॲरिप्पॅन्–जला डालूंगा; ॲन्ऱान्–कहा; वान् उरै–आकाशवासी; कलुळन् वन्तान्–गरुड़ आया। २२३०

सुगंधित मालाधारी वक्षवाले ! कोसलाधिपति के पुत्र श्रीराम अर्धरात्रि में उनके पास आया जो पाशबद्ध और शरविद्ध मैदान में पड़े थे। दुःखी होकर उनके लिए व्यग्र होकर राम ने कहा कि मैं सारे लोकों को जला दूंगा। तब आकाशवासी गरुड़ आया। २२३०

अन्नवन् वरवु काणा वयिलॅयिऱ् ऱरव मॅल्लाम्
शिन्नपिन् नङ्ग ळान पुण्णॉडु मयर्वु तीर्न्दार्
मुन्नैयिन् वलिय राहि मॊय्क्कळ नॅरुङ्गि मॊय्त्तार्
इन्नदु निहऴ्न्द वॅन्ऱा ररक्कली दॅडुत्तुच् चॊन्नान् 2231

अत्तवन्–उसका; वरवु–आगमन; काणा–देख; अयिल् ॲयिरु–तीक्ष्णदन्त; अरवु ॲलाम्–सभी सर्प; चिन्न पिन्नङ्कळ्–छिन्न-भिन्न; आन–हुए; पुण्णॉटुम्–व्रणों के साथ; अयर्वु–बेहोशी से; तीर्न्तार्–छटे; मुन्नैयिन् वलियर् आकि–

पहले से अधिक सबल होकर; मॉय् कळम्-युद्ध के मैदान में; मॅरुक्कि मॉय्त्तार्-सटे आ गये; इन्नतु निकळ्न्ततु-यही हुआ; ऍन्र्रार्-कहा (दूतों ने); अरक्कन्-राक्षस ने; इतु-यह; ऍन्रुतु चॉन्नान्-लेकर कहा। २२३१

उसके आने से तीक्ष्णदन्त सर्प सब छिन्न-भिन्न हो गये। व्रण भी दूर हो गये, वीर होश में आ गये और पहले से भी अधिक बलवान होकर युद्ध के मैदान में पिल पड़े। यही हुआ है। रावण यों बोलने लगा। २२३१

एत्तरुन् दडन्दो ळाऱ्ऱ लॅन्मह नॅय्द पाशम्
काऱ्ऱिडैक् कळित्तुत् तीर्त्तान् कलुळ्नाङ् गाण्मिन् काण्मिन्
वार्त्तैयि दायि नन्ऱा लिरावणन् वाळ्न्द वाळ्क्कै
मूत्तदु कॉळ्है पोला मॅन्नुडै मुयऱ्चि यॅल्लाम् 2232

एत्तरम्-जिसकी प्रशंसा असाध्य है; तट तोळ् आऱ्ऱल्-ऐसे बड़े भुजबल के; ऍन् मकन्-मेरे पुत्र के; ऍय्त पाचम्-चलाये पाश को; कलुळन्-गरुड़ ने; काऱ्ऱिटै कळित्तु-(अपने पंखों के) पवन द्वारा हटाया और; तीर्त्तान् आम्-मिटाया तो; काण्मिन् काण्मिन्-देखो, देखो; वार्त्तै इतु आयिन्-समाचार यही है तो; इरावणन् वाळ्न्त वाळ्क्कै नन्ऱु-रावण का जिया जीवन भी भला रहा; ऍन्नुटै मुयऱ्चि ऍल्लाम्-मेरा सारा प्रयास; मूत्ततु कॉळ्कै पोलाम्-बुढ़िया (बेकार हो) गया शायद क्या। २२३२

अप्रसंशनीय अधिक भुजबली मेरे पुत्र इन्द्रजित् द्वारा प्रेरित पाश को गरुड़ ने हवा में मिला दिया? (नेकी और पूछ-पूछ!) देखो, देखो। यही बात है तो रावण का जीवन भी अच्छा बीता है! मेरे सभी प्रयत्न वृद्ध (निर्बल) हो गये हैं क्या? । २२३२

उण्डुल हेळुमेळु मुमिळ्न्दव नॅन्नु मूऱ्ऱम्
कॉण्डव नॅन्नॉ डेऱ्ऱ शॅरुविनिन् मरुक्कङ् गॉण्डान्
मण्डलन् दिरिन्द पोदु मऱिकटन् मऱिन्द पोदुम्
कण्डिलन् पोलुम् जॉऱ्ऱ कलुळ्ळन् ऍन्नैक् कण्णाल् 2233

उलकु एळुम् एळुम्-चौदहों लोकों को; उण्टु उमिळ्न्तवन्-निगलकर फिर बाहर निकाल दिया; ऍन्नुम् ऊऱ्ऱम्-ऐसा सामर्थ्य; कॉण्टवन्-जिसके पास है, उसके; ऍन्नॊटु एऱ्ऱ-मेरे साथ हुए; चॅरुविनिल्-युद्ध में; मरुक्कम् कॉण्टान्-बेहाल होकर; मण्टलम् तिरिन्त पोतु-भूमण्डल पर घूम आया, तब; मऱि कटल्-और तीर से टकराकर मुड़नेवाली तरंगों के समुद्र में; मऱिन्त पोतु-जब छिप गया, तब; चॉऱ्ऱ कलुळन्-उक्त गरुड़ ने; ऍन्नै-मुझे; कण्णाल् कण्टिलन् पोलुम्-आँखों से नहीं देखा था क्या। २२३३

जब विष्णु के साथ, जिसमें चौदहों भुवनों को निगलकर उगलने का सामर्थ्य था, मेरा युद्ध हुआ था, उसमें वह आक्रांत होकर भूमंडल में घूम

आया और तीर से टकराकर मुड़नेवाली तरंगों से युक्त समुद्र में जा छिपा। तब क्या तुम्हारे कथित गरुड़ ने मुझे अपनी आँखों से नहीं देखा था ? । २२३३

करङ्गळि नेमि शङ्गन् दाङ्गिय करियोन् काक्कुम्
पुरङ्गळु मळियप् पोन पॊळुदिलॆन् शिलैयिऱ् पॊङ्गि
उरङ्गळिन् मुदुहिऱ् ऱोळि नुरैयुरु शिऱैयि नुऱ्ऱ
शरङ्गळु निऱ्क वेहॊल् वन्ददव् वरुणन् तम्बि 2234

करङ्कळिल्–हाथों में; नेमि चङ्कम् ताङ्किय–जो चक्र धारण करता है उस; करियोन् काक्कुम्–काले देव से पालित; पुरङ्कळुम्—नगरों को भी; अऴिय पोन पॊऴुतिल्–मिटाने के लिए जब मैं युद्ध पर गया, तब; ऎन् चिलैयिल् पॊङ्कि–मेरे धनु से छूटकर; उरङ्कळिल्–वक्ष में; मुतुकिल्–पीठ में; तोळिन्–कन्धों में; उरै उऱु चिऱैयिन्–साजू के पक्षों में; उऱ्ऱ–जो लगे; चरङ्कळुम्–उन शरों के; निऱ्कवे कॊल्–लगे रहते ही क्या; अव् अरुणन् तम्पि–वह अरुण का लघुसहोदर; वन्ततु–आया। २२३४

शंख-चक्रधर विष्णु द्वारा पालित लोगों को मिटाते हुए जब मैं दिग्विजय के लिए गया था, तब इस गरुड़ के वक्ष, पीठ कंधों और पक्षों पर मेरे धनु से निकले हुए जो शर लगे थे, वे अब भी वहीं स्थित हैं। क्या वही अरुण का भाई आया था (सहायता देने) ? । २२३४

ईण्डदु किडक्क मेन्मे लिशैन्दवा ऱिशैह वॆञ्जि
मीण्डवर् तम्मैक् कॊल्लुम् वेट्कैयै वेट्कु मन्ऱे
आण्डहै नीये यिन्नु माऱुदि यरुमैप् पोर्हळ्
काण्डलु नाणु मॆन्ऱान् मैन्दनुङ् गरुत्तैच् चॊन्नान् 2235

ईण्टु–अब; अतु किटक्क–वह रहे; मेन् मेल्–आगे और आगे; इचैन्तवा–जो होगा वह; इचैक–हो; ऎञ्चि–वचकर; मीण्टवर् तम्मै–जो जी गये उन्हें; कॊल्लुम्–मार डालें; ऎन्ऱ वेट्कैयै–इस लालसा को; वेट्कुम् अन्ऱो–चाहेंगे न; आण्ट कै–वीर; नीये–तुम्हीं; इन्नुम्–अब भी; अरुमै पोर्कळ् आऱ्ऱुति–अपूर्व युद्ध करो; काण्टलुम्–देखकर झट; नाणुम्–(गरुड़) शरमाएगा; ऎन्ऱान्–कहा रावण ने; मैन्तनुम्–पुत्र ने भी; करुत्तै–अपने मन की बात; चॊन्नान्–कहो। २२३५

अब यह रहे; आगे जैसा होगा वैसा हो। जो जी उठे हैं उनको मारने की चाह है न ? वीर ! तुम ही जाओ और कठोर युद्ध करो। गरुड़ देखे तो शरम खायेगा। रावण की यह बात सुनकर कुमार ने कहा। २२३५

इन्ऱीरु पॊऴुदु ताऴ्त्तॆ निहर्पॆरुञ् जिरम नीङ्गिच्

वॆन्ऱिशॆय् पडैयिऩ् नाळुन् मऩत्तुयर् मीट्पॆऩ् ऎऩ्ऱाऩ्
नन्ऱॆऩ वरक्कऩ् पोय्त्तऩ् नळिमलर्क् कोयिल् पुक्काऩ् 2236

इऩ्ऱु ऒरु पॊऴुतु–आज एक दिन; ताऴ्त्तु–विलम्ब करके; ऎऩ्–अपना; इकल् पॆरु चिरमम्–युद्ध के कारण हुआ बड़ा कष्ट; नीक्कि–दूर करके; नाळै–कल; ऒरु कणत्तिल्–एक क्षण में; नाऩ्मुकऩ् पटैत्त–चतुर्मुख-सृष्ट; तॆय्व–दिव्य; वॆन्ऱिचॆय्–विजयदायी; पटैयिऩाल्–अस्त्र से; उऩ्मऩम् तुयर्–आपके मन का; तुयर्–शूल; मीट्पॆऩ्–दूर करूँगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (इन्द्रजित् ने); नऩ्ऱु–अच्छा; ऎऩ–कहकर; अरक्कऩ्–राक्षस (रावण); पोय्–जाकर; तऩ्–अपने; नळिमलर् कोयिल्–श्रेष्ठ पुष्पों से अलंकृत मन्दिर में; पुक्काऩ्–पहुँचा। २२३६

आज एक दिन छोड़ दीजिए। अपना बड़ा युद्ध-श्रम दूर करके कल एक ही क्षण में चतुर्मुख-सृष्ट, दिव्य विजयी अस्त्र से (शत्रु को मारकर) आपके मन का दुःख दूर करूँगा। "अच्छा" कहकर रावण श्रेष्ठ पुष्पों से अलंकृत अपने महल में गया। २२३६

19. पडैत्तलैवर् वदैप् पडलम् (सेनानायक-वध पटल)

आर्त्तॆऴु मोशै केट्ट वरक्करु मुरश मार्प्पप्
पोर्त्तॊऴिल् वेट्कै पूण्डु पॊङ्गिऩर् पुकुन्दु मॊय्त्तार्
तार्त्तड मार्बऩ् ऱऩ्ऩैत् ताविडै यॆऩ्ऩच् चाऱ्ऩदार्
पार्त्तऩऩ् मुऩिन्दु मऩ्ऩ ऩिऩैयऩ पहरुम् काले 2237

आर्त्तु ऎऴुम्–नारे जो उठाते उनका; ओचै–शोर; केट्ट–जिन्होंने सुना; अरक्करुम्–वे राक्षस और; मुरचम् आर्प्प–भेरियों के बजते; पोर्त्तॊऴिल्–युद्धकार्य की; वेट्कै पूण्टु–लालसा करके; पॊङ्किऩर्–क्रुद्ध हो; पुकुन्तु–रावण के पास जाकर; मॊय्त्तार्–पिल पड़े; तार्–मालायुक्त; तट मार्पऩ् तऩ्ऩै–विशालवक्ष उससे; विटै ता–विदा दें; ऎऩ्ऩ चाऱ्ऩार्–कहकर निपराये; मऩ्ऩऩ्–रावण ने भी; पार्त्तऩऩ्–देखा; मुऩिन्तु–गुस्सा करके; इऩैयऩ–ये बातें; पकरुम् काले–जब कहीं तब। २२३७

राक्षसों ने उमँग के साथ उठा गर्जन सुना तो वे भेरियाँ बजाते हुए युद्ध-प्रिय होकर क्रोध के साथ रावण के पास गये और मालालंकृत विशाल-वक्ष रावण से बोले कि हमें आज्ञा दें। रावण उनको देखकर सकोप कुछ कहने लगा। २२३७

मापॆरुम् बक्क मॊड् वाऩ्पुहैक् कण्णऩ् वन्दिङ्
गेवुदि यॆम्मै यॆऩ्ऱा ऩवर्मुह मिऩिदि नोक्किप्
पोवदु पुरिदि यॆऩ्ऩप् पुहऱ्लुम् बॊऱाद तूवर्
तेवमर् ऱिवरुहळ् शॆय्है केळॆऩत् तॆरियच् चॊऩ्ऩार् 2238

मा पॅरु पक्कत्तोटु–महापार्श्व के साथ; वात्–ऊँचा; पुर्क कण्णन्–धूम्राक्ष; वन्तु–आकर; इङ्कु–यहाँ; ॲम्मै एवुति–हमें पठाओ; ॲन्ऱान्–बोला तो; अवर् मुकम्–उनका मुख; इतितिन् नोक्कि–मधुर रूप से देखकर; पोवतु पुरितिर्–गमन करो; ॲन्न–ऐसा; पुकऱलुम्–कहने पर; पोऱात तूतर्–असहनशील दूतों ने; तेव–देव; इवर्कळ् चॅय्कै केळ्–इनका कृत्य सुनो; ॲन–कहकर; तॅरिय चोऩ्ऩार्–समझाते हुए कहा। २२३८

तव महापार्श्व ने धूम्राक्ष के साथ आकर कहा कि हमें भेजिए। उनको प्यार के साथ देखकर रावण ने कहा कि चलो। तव दूत, जिन्हें यह असह्य लगा, बोले कि देव! इनका काम सुनिए। फिर वे समझाते हुए कहने लगे। २२३८

आनैयुम् बरियुन् देरु मरक्करु मलैन्द वाळित्
तानैहळ् वीय निन्ऱ तलैमहन् ऱनिमै योरार्
मानवन् वाळि वाळि यॆन्गिन्ऱ मळलै वायर्
पोनवर् मीळ वन्दु पुहुन्दनर् पोलु मॆन्ऱार् 2239

आनैयुम्–हाथी और; परियुम्–अश्व और; तेरुम्–रथ; अरक्करुम्–राक्षस (पदाति वीर); अमैन्त–जिनमें मिले थे; आळि तानैकळ्–वे विशाल सेनाएँ; वयि–मरीं; निन्ऱ तलैमकन्–अकेले खड़े रहे नायक; तनिमै–उनका अकेलापन; ओरार्–सोचा नहीं; मानवन् वाळि–संमान्य राम का वाण; वाळि–वाण; ॲन्किन्ऱ–कहनेवाली; मळलै वायर्–अस्पष्ट बोली वाले मुख के; पोनवर्–जो भागे; मीळ वन्तु–वे अव फिर आकर; पुकुन्तनर् पोलुम्–पहुँच गये शायद; ॲन्ऱार्–बोले दूत। २२३९

गज, तुरग, रथ और पदाति सेनाएँ मर गयीं और नायक इन्द्रजित् अकेले खड़े थे। तव ये "सम्मान्य राम के वाण हैं, वाण आ रहे हैं" —यह कहते हुए भाग गये थे। अब ये फिर से आ गये हैं क्या शायद? । २२३९

अऱ्ऱवर् कूऱलु मारळ लिऱ्ऱाय्, मुऱ्ऱिय कोब मुरुङ्ग मुनिन्दान्
इऱ्ऱदु वोविवर् शेवह मॆन्ऩाय्, पऱ्ऱुमि नॆन्ऱन्ऩ् वॆम्मै पयिन्ऱान् 2240

अऱ्ऱ–वैसा; अवर् कूऱलुम्–उनके कहने पर; वॆम्मै पयिन्ऱान्–क्रूरता से अभ्यस्त रावण; आर् अळलिऱ्ऱाय्–जलती आग-से; मुऱ्ऱिय कोपम्–बड़े कोप से; मरुङ्क–ऐंठते; मुनिन्तान्–नाराज हुआ; इवर् चेवकम्–इनकी वीरता; इऱ्ऱतुवो–ऐसी है क्या; ॲन्ऩा–कहकर; पऱ्ऱुमिन्–पकड़ो इन्हें; ॲन्ऱनन्–हुक्म दिया। २२४०

उनके ऐसा कहने पर कठोरता में अभ्यस्त रावण अग्नि के समान भभकते क्रोध से अपना वश खोकर यों बोला। क्या इनकी वीरता यही है? पकड़ो इन्हें। २२४०

ॲन्ऱलु मॆय्दिनर् किङ्गर रॆन्बार्, पिन्ऱलि नोरै वलिन्दु पिडित्तार्
निन्ऱन रायिडै तोल [illegible]

अँन्ऱलुम्–कहते ही; किङ्करर्कळ्–किंकर; अँन्पार्–जो थे वे; अँय्तिनर्–आये; पिन्ऱलित्तोरै–जो पीछे जाने लगे उन्हें; वलिन्तु पिटित्तार्–बलात् पकड़ लिया; नील निऱत्तान्–नीलवर्ण; कोन्ऱिटुवीर् अलीर्–मारो मत; इतु कोण्मित्–इस पर ध्यान दो; अँन्ऱान्–बोले। २२४१

उसके यों कहते ही किंकर लोग आये। पीछे की ओर जानेवाले उन्हें पकड़ लिया। तब नीलवर्ण रावण ने आज्ञा सुनायी कि मारो मत। मेरे कहने पर ध्यान दो। २२४१

एऱ्ऱ मिऴिच्चॅयल् वेऱिलै यीर्वीर्
नाऱ्ऱ नुहर्न्दुयर् नाशियै नामक्
कोऱ्ऱ तिण्बऩै कॉट्टिऩिर् कॉण्डूर्
शाऱ्ऱुमि लञ्जिन रॅन्ऱुरै तन्दे 2242

नाऱ्ऱम् नुकर्न्तु–गंध सूँघती; उयर् नाचियै–ऊँची नासिका को; ईर्वीर्–काट दो; ऊर् कॉण्टु–नगर में ले जाकर; अञ्चिनर्–बुजदिल हैं; अँन्ऱु उरै तन्तु–यह घोषणा करते हुए; नामम् कोल् तरु–चोब से पिटनेवाले; तिण् पणै–कड़े ढोल को; कॉट्टिऩिर्–बजाते हुए; चाऱ्ऱुमित्–घोषित कर दो; इति–अब; एऱ्ऱम् चॅयल्–उचित कार्य; वेऱु इलै–दूसरा कुछ नहीं; अँन्ऱु उरै तन्तु–यह कथन करके। २२४२

इनकी नाकों को काट लो, जो गंध सूँघ-सूँघकर उठी हुई हैं। फिर इनको नगर के अंदर ले जाओ और यह ज़ोर से ढिंढोरा पीटते हुए घुमाओ कि "ये लोग कायर हैं"। और कोई योग्य काम नहीं है। जब उसने यह आज्ञा सुनायी—। २२४२

अक्कण नेययिल् वाळितर् नेरा, मिक्कुयर् नाशियै यीर विरैन्दार्
पुक्कन रप्पॉऴ्दिऱ्पुहऴ् तक्कोय्, तक्किल दॅन्ऱनन् मालि तडुत्तान् 2243

अक्कणते–उसी क्षण; नेरा–सम्मत होकर; अयिल् वाळितर्–तेज तलवार ले; मिक्कु उयर्–अधिक ऊँची; नाचियै–नाक को; ईर–काटने; विरैन्तार्–तेजी से गये; अप्पॉऴुतु–तब; मालि–माली ने; पुकऴ् तक्कोय्–यश में बढ़े; तक्किलतु–उचित नहीं; अँन्ऱतन्–कहकर; तटुत्तान्–रोका। २२४३

उसी क्षण किंकर आज्ञा मानकर तेज़ तलवार से उनकी उठी हुई नाक को काटने के लिए जल्दी चले ही थे कि (इतने में) माली ने रावण से कहा कि बड़े यशस्वी! यह काम उचित नहीं है और उसे रोका। २२४३

अञ्जम मञ्जि यऴिन्दुळ रानोर्, वॅञ्जमम् वेऱलुम् वॅन्ऱिय दिन्ऱायत्
तुञ्जलु मॅन्ऱिवै तोल्लॅय वन्ऱे, तञ्जॅन वारुळ राण्मै तहैन्दार् 2244

अञ्चमम्–समर युद्ध में; अञ्चि–डरकर; अऴिन्तुळर् आयिनार्–जो एक

इऩ्ऱाय्–विजय न पाकर; तुञ्चलुम्–मरना; ऎऩ्ऱु इवै–आदि ये; तॊल्लैय अऩ्ऱो–प्राचीन बातें हैं न; आण्मै तञ्चु ऎऩ–वीरता मेरे ही आश्रय में है ऐसा; तकैन्ताऱ्–रोक रखनेवाले; आर् उळर्–कौन हैं। २२४४

उसने समझाया कि श्रेष्ठ युद्ध में एक बार जो हार जाते हैं, उनका दूसरे भयंकर युद्ध में जीतना या विजय न पाकर मरना, ये सब प्राचीन क्रम हैं न ? वीरता को सदा अपने आश्रय में रोके रखनेवाले कौन हैं ? । २२४४

अन्दर मॊन्ऱु मऱिन्दिलै यऩ्ऱे, वन्ददु नम्वयि ऩॆत्तनै मऩ्ऩा
तन्दिरम् वाऩवर् ताऩव रॆऩ्ऩुम्, इन्दिर ऩञ्जिऩ ऩॆण्णुदि यऩ्ऱे 2245

मऩ्ऩा–राजा; अन्तरम् ऒऩ्ऱुम्–अन्तर कुछ; अऱिन्तिलै–नहीं जानते; वाऩवर् ताऩवर् ऎऩ्ऩुम्–देव-दानव जो हैं; ऎत्तऩै तन्तिरम्–उनकी कितनी सेनाएँ; नम् वयिऩ् वन्तदु–हमारे विरुद्ध आयीं; इन्तिरऩ् अञ्चिऩऩ्–इन्द्र डर गया; ऎण्णुति–सोचो। २२४५

राजा ! तुम अंतर नहीं जानते। देवों और दानवों की कितनी सेनाएँ हम पर चढ़ आयीं ! वे सब पराजित हुईं। इन्द्र डर गया था। यह सोचो। २२४५

वरुण ऩडुङ्गिऩऩ् वन्दु वणङ्गिक्, करुणै पॆऱुन्दुणै युन्मुयिर् काला
इरुणिऱ वञ्जह रॆङ्गुळ रॆन्दाय्, परुणिदर् दण्डमि दऩ्ऱु पहर्न्दाल् 2246

वन्तु वणङ्कि–आकर नमस्कार करके; करुणै पॆऱुम् तुणैयुम्–उनकी कृपा पाते समय तक; वरुणऩ्–वरुण; उयिर् काला नटुङ्किऩाऩ्–निश्वास छोड़ता कंपित हुआ; इरुळ् निऱ–अँधेरे के रंग के; वञ्चकर्–वंचक (राक्षस); ऎङ्कु उळर्–कहाँ होंगे; ऎन्ताय्–मेरे पिता; पकर्न्ताल्–कहें तो; इतु–यह; परुणितर् तण्टम् अऩ्ऱु–विद्वानों का मान्य दण्ड नहीं है। २२४६

वरुण राम के चरण में गिरकर तब तक निश्वास छोड़ता और काँपता हुआ खड़ा रहा, जब तक उसे राम की करुणा नहीं मिली थी। उस हालत में अंधकार के रंग वाले राक्षस कहाँ टिकेंगे ! तात ! कहूँ तो यह दंडविधान शास्त्रज्ञों का सम्मत काम नहीं। २२४६

पत्तॊरु नालु पहुत्त परप्पिऩ्, अत्तऩै वॆळ्ळ मरक्क रविन्दार्
ऒत्तॊरु मूवर् पिऴैत्तऩ रुयन्दार्, वित्तह यारिऩि वीरम् विळैप्पार् 2247

पत्तु ऒरु नालु वॆळ्ळम्–चालीस 'वॆळ्ळम्'; पकुत्त परप्पिऩ्–विभक्त विस्तार में; अत्तऩै अरक्कर् अविन्तार्–उतने राक्षस मरे; ऒरु मूवर्–एक तीन ही; ऒत्तु उयन्तार्–प्राणों के साथ बचे; वित्तक–विद्वान्; इऩि–आगे; वीरम् विळैप्पार्–वीरता दरसानेवाले; यार्–कौन। २२४७

चालीस 'वॆळ्ळम्' की सेना में सभी राक्षस खेत रह गये। केवल

तीन ही जीवित रहे। हे विद्वान्! इससे बड़ी वीरता कौन दिखा सकता है? । २२४७

पाशमु मिऱ्ऱवु पादियिन् मेलुम्, नाशमु मुऱ्ऱवु नम्बि नडन्दाय्
पूशल् मुहत्तीरु कान्मुळ पोद, नीशरै योरुदि योनॆडु नाशि 2248

पाचमुम् इऱ्ऱतु–पाश टूटा; पातियिन् मेलुम्–आधे से अधिक (सेना); नाचमुम् उऱ्ऱतु–नष्ट हुई; नम्पि–नायक; नटन्ताय्–(आप भी) एक बार हो लौट आये; पूचल् मुकत्तु–युद्धमुख से; ओरु–अद्वितीय; कान् मुळै–आपका पुत्र; पोत–(रिक्तहस्त लौट) आया; नीचरै–तब क्षुद्र इनकी; नॆटु नाचि–लम्बी नाक; ईरुतियो–काटोगे क्या। २२४८

पाश टूट गया। आधे से अधिक सेना मिट गयी। नायक तुम भी एक बार हो आये। युद्धाग्र से जब तुम्हारा पुत्र खाली हाथ आया है, तब इन अल्प लोगों की लम्बी नाक को काटोगे क्या? । २२४८

वाळि यिलक्कुव नॆन्निन् मरुक्कुऱ्, ऱाळि यरक्कर्तम् वायि लडैप्पार्
एळु कडऱ्ऱुणै योविलि नाशि, ऊळि यरुत्तिडि नुम्मुल वादाल् 2249

इलक्कुवन् ऍन्तिन्–'लक्ष्मण' कहने पर; मरुक्कुऱ्ऱु–डरकर; आळि अरक्कर्–सागर-सम राक्षससमूह; तम् वायिल् अटैप्पार्–अपना द्वार बन्द कर लेंगे; इलि–आगे; नाचि–(काटोगे तो) नासिकाएँ; एळु कटल् तुणैयो–सात समुद्र ही रहेंगे क्या; ऊळियुम् अरुत्तिटिन्–युग-युग काटेंगे तो; उलवातु–पूरा नहीं होगा। २२४९

"लक्ष्मण" कहते ही बड़ी संख्या के राक्षस डर के मारे अपने किवाड़ों को बन्द कर लेंगे। उस स्थिति में नाक काटना आरम्भ करो तो क्या केवल सात समुद्रों के-से परिमाण तक सीमित रहेगा? युगांत तक काटते रहो, तब भी पूरा नहीं होगा। २२४९

तूदु नडन्दव नैत्तॊळु दन्नाळ्, ओदु नॆडुञ्जॆरु वञ्जि युडैन्दार्
तीदिलर् निन्ऱवर् शेनैयि नुळ्ळार्, पादियिन् मेलुळर् नाशि पडैत्तार् 2250

ओतुम् नॆटु चॆरु–प्रकीर्तित बड़े युद्ध में; अ नाळ्–उस दिन; अञ्चि–डरकर; उटैन्तार्–हारकर; तूतु नटन्तवन् तॊळुतु–दूत के रूप में जो आया उसकी स्तुति करके; तीतु इलर्–बिना आँच के; निन्ऱवर्–जो बचे रहते हैं और; नाचि पटैत्तार्–नाक रखते हैं; चेनैयिन् उळ्ळार्–सेना में रहते हैं; पातियिन् मेल्–आधे से अधिक; उळर्–हैं। २२५०

प्रकीर्तित युद्ध में उस दिन भय से दूत के रूप में आये हनुमान के चरणों में गिरकर जो अपनी जान को और नाक को बचा लेकर अब भी हमारी सेना में हैं, वे आधे से अधिक हैं। २२५०

शिन्दिनै शीरैय यामॆनिन् वीरर्, ऑट्टिय पोरुळ वोवोरु नाळे

चीतैयै–सीता को; विट्टिलैयाम्–नहीं छोड़ो; ॲन्निन्–तो; वीरर् ऑट्टिय पोर्–वीरों ने जो दावा किया वैसा युद्ध; ओर नाळे उळतो–एक दिन भी हुआ क्या; वॅम् तॊऴिल् वल्लोर्–कठोर युद्धकर्मचतुर; पट्टिलर्–नहीं मरे (राम-लक्ष्मण); नाचियै वॅट्टुति–नासिका काटो; ॲऩ्ऱिलै–नहीं कहा; ॲन्ऱु पकर्न्तान्–यों कहा। २२५१

तुमने सीता को नही छोड़ा। तब दावा जो किया गया था उसके अनुसार एक दिन भी युद्ध हुआ क्या? कठोर युद्ध-कुशल (राम और लक्ष्मण) तो मरे नहीं। तुमने सभी वीरों की नाक काट देने की आज्ञा तो नहीं दी थी। २२५१

आऱ्ऱिन नॆन्ब दऱिन्दन रन्नार्, तेऱ्ऱिनर् निऩ्ऱनर् शिन्दै तॆळिन्दार्
शीऱ्ऱिय नॆञ्जिनर् शॆङ्गण रॊन्ऱे, कूऱ्ऱिनर् तन्निलै शॆय्है कुऱित्तार् 2252

आऱ्ऱिनन्–शान्त हो गया रावण; ॲन्पतु–ऐसा; अऱिन्तनर्–जाना (महापार्श्व और धूम्राक्ष ने); अन्नार्–वे; तेऱ्ऱिनर्–धीरज धरकर; चिन्तै तॆळिन्तार् निन्ऱनर्–साफ़ मन वाले हो खड़े रहे; चीऱ्ऱिय नॆञ्चिनर्–क्रुद्ध मन वाले और; चॆम् कणर्–लाल आँखों वाले; तम् निलै चॆय्कै–अपनी स्थिति और अपना कार्य; कुऱित्तार्–विचार करके; ऑन्ऱु कूऱ्ऱिनर्–एक बात कही (उन्होंने)। २२५२

यह सुनकर रावण शांत हो गया —यह उन दोनों ने देख लिया। दोनों धैर्य अवलम्बित कर सुलझे हुए विचार के साथ क्रुद्धमन और अरुणाक्ष होकर अपनी स्थिति और कार्य के सम्बन्ध में यह कहने लगे। २२५२

उन्मह नॊन्दॊडिं यॊदुङ्गिन नॊन्ऱो, मिन्नहु वानिडै येहि विरैन्दे
अन्नदिन् मायै यियऱ्ऱि यहन्ऱान्, इन्नह रॆय्दिन नॆन्दै यॆनुङ्गळ् 2253

ॲन्ताय्–पितातुल्य; उन् मकन्–आपका पुत्र; नॊन्तु–थककर; ऑतुङ्किनन्–हटा; ऑन्ऱो–यही एक क्या; मिन् नकुम्–बिजली से प्रकाशित; वानिडै–आकाश में; विरैन्तु एकि–तेजी से जाकर; अन्नतिन्–वहाँ; मायै इयऱ्ऱि–माया रचकर; अकन्ऱान्–दूर चला गया; इ नकर्–इस नगर को; ॲय्तिनन्–आ गया। २२५३

हे पितातुल्य! तुम्हारा पुत्र थककर हटा। केवल वही नहीं, बिजली से प्रकाशित आकाश में गया और वहाँ माया रचकर नगर में आ गया। २२५३

इप्पह लॊन्ऱिनि नाळैयि लॆल्लाम्, मुप्पह डीर्क्किल साधि मुडिप्पोम्
वॆप्पह लावॆरि वॆन्दळल् वॆन्द, शॆंप्पहल् वॆण्णॆयि नॊन्मै तॆरिन्दोय् 2254

वॆप्पु अकला–ताप जिससे दूर नहीं हुआ; ॲरि–ऐसा जलनेवाली; वॆम् तळल्–गरम आग में; वॆन्त–तप्त; चॆप्पु अकल्–ताम्र के दीये में पके; वॆण्णॆयिन्–मक्खन के समान जमानेवाले; नोन्मै–हमारे बल को; तॆरिन्तोय्–जाननेवाले; इ पकल् ऑन्ऱिलिल्–इस एक दिन में; नाळैयिल्–और कल (के अन्दर); ॲल्लाम्–सभी

के; आवि मुडिप्पोम्–प्राण निकाल देंगे; मुप्पकल्–तीसरा दिन; तीर्क्किलम्–न होने देंगे। २२५४

गर्मी के साथ जलती आग से तप्त ताम्रपात्र पर रखे हुए मक्खन की-सी स्थिति में शत्रु को पहुँचाने की हमारी शक्ति जाननेवाले! आज के दिन और कल में हम सभी की जानें निकाल देंगे। हम तीसरे दिन को बीतने नहीं देंगे। २२५४

विट्टनै यॅम्मै विडुत्तिति वॅम्बोर्, पट्टन रॊन्ऱु पडुत्तन रॊन्ऱो
कॅट्टन रॅन्बदु केळले यॅन्ना, ऑट्टिन रावि मुडिक्क वुवन्दार् 2255

विट्टतै–भेजिए; विटुत्तु–आज्ञा देकर; इत्ति–अब; वॅम् पोर् पट्टनर्–कठोर युद्ध में मरे; ऑन्ऱु–एक; पटत्तनर्–मर गये; ऑन्ऱु–यह एक (समाचार); कॅट्टनर्–हार गये; ॲन्पतु केळले–यह नहीं सुनेंगे; ॲन्ना–ऐसा; आवि मुडिक्क–प्राण देने में; उवन्तार्–संतुष्ट हो; ओट्टिनर्–दावा किया। २२५५

अब हमें बिदा दीजिए, फिर या तो यह सुनेंगे कि घोर युद्ध में वे मर गये या यह सुनेंगे कि शत्रुओं को मार दिया। हार गये —यह बात नहीं सुनेंगे। अपने प्राण देने में आनन्द मानते हुए उन्होंने यह दावे का वचन कहा। २२५५

अन्नवर् तम्मोडु मैयिरु वॅळ्ळम्, मिन्नु पडैक्क यरक्करै विट्टान्
शॊन्न तॊहैक्कमै यानै शुडर्त्तेर्, तुन्नु वयप्परि योडु तॊहुत्तान् 2256

अन्नवर् तम्मोटुम्–उनके साथ; मिन्नु पटै कै–चमकदार हथियार हाथ में लिये; ऐयिरु वॅळ्ळम् अरक्करै–दस 'वॅळ्ळम्' राक्षसों को; विट्टान्–भिजवाया (रावण ने); चॊन्न तॊकैक्कु–उक्त संख्या के; अमै–योग्य; यानै–गजों; चुटर् तेर्–और प्रकाशमय रथों को; तुन्नुम्–युक्त; वयम् परियोटु–विजयदायी अश्वों के साथ; तॊकुत्तान्–एकत्र करके भिजवाया। २२५६

रावण ने उन दोनों (महापार्श्व और धूम्राक्ष) के साथ दस 'वॅळ्ळम्' राक्षसों को भेजा, जिनके हाथ में प्रकाश छिटकानेवाले हथियार थे। उसी के अनुकूल गज, प्रकाशमय रथ, और युक्त, विजयी अश्व-सेना को भी लगवा दिया। २२५६

नॅय्यळल् वॅळ्वि नॅडुम्बहै नेर्विण्, तेवरु शूरिय शत्तुरु वॅन्बान्
पॅय्हळल् मालि पिशाश नॅनुम्बेर्, वॅय्यवन् वच्चिरम् वॅन्ऱु वॅयिऱ्ऱान् 2257

नॅय् अळल्–घी पाकर जलनेवाले; नॅटु वेळ्वि–बड़े यज्ञ का; पकै–शत्रु; विण् तेवरुम्–आकाशचारी; चूरियन् नेर् चत्तुरु–सूर्य का सीधा वैरी (भानुकोप); ॲन्पान्–जो कहा जाता था वह यज्ञहा; पॅय् कळल् मालि–पहनी हुई पायल वाला माली; पिचाचन् ॲनुम् पेर्–पिशाच नाम का; वॅय्यवन्–दुष्ट; वच्चिरम् वॅन्ऱु–वज्र (जयी); ॲयिऱ्ऱान्–दाँतों वाला (वज्रदंष्ट्र)। २२५७

यज्ञहा यज्ञों का विरोधी था, जिनमें घी डालकर अग्नि जलायी जाती है और भानुकोप आकाशचारी सूर्य का भी शत्रु था, पायलधारी माली, पिशाच और वज्रदंष्ट्र। २२५७

ऍन्ड्रव रोडु मॅऴुन्दुल हेऴुघ्, वॅन्ड्रव तेवलिन् मुन्नम् विरैन्दार्
शॅन्ड्रन माल्हरि तेर्परि शॅल्लक्, कुन्ड्रिन मॅन्न नडन्दनर् कॉट्पाल् 2258

ऍन्ड्रवरोटुम्–जो थे उनके साथ; ऍऴुन्तु–उठकर; उलकु एऴुम् वॅन्ड्रवन्–सप्तलोकविजेता की; एवलिन्–आज्ञा के अनुसार; मुन्नम् विरैन्तार्–तेजी से गये; माल् करि–बड़े हाथी; तेर्–रथ; परि–घोड़े आदि; चॅन्ड्रन–जो गये; चॅल्ल–उनके जाते; कुन्ड्रिनम् ऍन्न–पर्वतकुल के समान; कॉट्पाल्–सगर्व; नटन्ततर्–चले। २२५८

आदि भी उठकर सप्तलोकविजेता रावण की आज्ञा लेकर गज-तुरग-रथ सेना के साथ पर्वतों के समान चले। २२५८

विण्णै विऴुङ्गिय तूऴिय विण्णोर्, कण्णै विऴुङ्गु दलिड्करै काणार्
अंण्णै विऴुङ्गिय शेनैयै यारुम्, पण्णै विऴुङ्ग वुणर्न्दिलर् पण्बाल् 2259

विण्णै विऴुङ्किय–आकाश को ढँकती; तूऴि–धूलराशि के; अ विण्णोर्–उस आकाश के वासियों की; कण्णै–आँखों को; विऴुङ्कुतलिल्–मूँद लेने से; पण्णै करै काणार्–सेना का छोर नहीं देखा; ऍण्णै विऴुङ्किय–संख्यागणिति को पार कर जानेवाली; चेनै पण्णैयै–सेना के विभागों को; पण्पाल्–क्रम से; यारुम्–कोई भी; विऴुङ्क–पूर्ण रूप से; उणर्न्तिलर्–नहीं समझे। २२५९

अंतरिक्षभक्षक धूल ने देवों की आँखें बन्द करायीं और वे सेना का ओर-छोर नहीं देख सके। वे ही क्या कोई भी संख्यातिक्रमी उस सेना को क्रम से पूर्ण रूप से अपनी दृष्टि के अंदर लाकर नहीं जान सके। २२५९

काल्हिऴर् तेरॉडु काल्वरै योडुम्, मेल्हिऴर् पल्कॉडि वॅण्डिरै वीश
माल्हड लानदु माप्पडै वाऴ्हळ्, पाल्हिऴर् मीनिडै याडिय पण्बाल् 2260

काल् किऴर्–पैरों के साथ शोभनेवाले; तेरॉटु–रथों के साथ; काल् वरै ओटुम्–चरण-सहित पर्वतों के समान हाथियों के साथ; मेल् किऴर्–ऊपर फहरनेवाली; पल् कॉटि–अनेक ध्वजा रूपी; वॅळ् तिरै वीच–श्वेत लहरों के हिलते; वाऴ्कळ्–तलवारों के; मापटै पाल्–बड़ी सेना के मध्य; किऴर् मीन् इटै आटिय–उछलती मछलियों के समान चमकने के; पण्पाल्–प्रकार के कारण; मा पटै–बड़ी सेना; माल् कटल् आनतु–बड़ा सागर (-सी) बन गयी। २२६०

पहियेदार रथ, दृढ़ पैरों से युक्त पर्वतोपम गज —इनके ऊपर फहरनेवाली ध्वजाएँ श्वेत लहरें बना रही थीं। सेना के मध्य तलवारें मछलियाँ बन रही थीं। इसलिए वह बड़ी सेना बड़ा सागर (-सम) बन गयी। २२६०

पेरि कलित्तन पेरुल हैच्चूळ्, वारि कलित्तन वामॅन यानै
कारि कलिक्कड लोड्डु कलित्त, मारि कलित्तॅन वाशि कलित्त 2261

पेर् उलकॅ ॲलाम्–सारे बड़े लोक को; चूळ् वारि–वलयित करनेवाले सागर; कलित्तन आम् ॲत्न–गरज रहे हों जैसे; पेरि कलित्तन–भेरियाँ बज उठीं; यानै–हाथी; कार् इकलि–मेघों से होड़ लगाकर; कटलोटु–समुद्र के साथ; कलित्त–चिघाड़े; मारि कलित्तु ॲत्न–बारिश के शोर के समान; वाचि कलित्त–अश्व हिनहिनाये। २२६१

विशाल भूमि को घेरे रहनेवाला सागर गरजता हो वैसा भेरियाँ ठनक उठीं। गज मेघों से होड़ लगाकर सागर के साथ चिघाड़ उठे। मेघ-गर्जन के समान अश्व हिनहिनाये। २२६१

शॅन्ड्रन शॅन्ऱ शुवट्टॊडु शॅल्ला, निन्ऱु पिणङ्गिय कल्वियि निल्ला
ऑन्ऱिनै यॊन्ऱु तॊडर्न्दन वोडॅक्, कुन्ऱु नडन्दन पोर्कॊल यानै 2262

कॊलै यानै–खूनी हाथी; चॅन्ऱन (पटकळ्)–जानेवाली सेनाएँ; चॅन्ऱ चुवटॊटु–जिस मार्ग से गयीं उस मार्ग से; चॅल्ला निन्ऱु–न जाकर, रुककर; पिणङ्किय–बिमुख रहे; कल्वियिन् निल्ला–संकेतवचनों के अधीन न बनकर; ओटै कुन्ऱु नटन्तन पोल्–मुखपटधारी पर्वत चलते हों जैसे; ऑन्ऱिनै ऑन्ऱु तॊटर्न्तन–एक-दूसरे का अनुगमन करते गये। २२६२

खूनी हाथी सेना के मार्ग में नहीं गये। भिन्न गति में गये और महावत के कहने में नहीं आये और भाल की पट्टी-सहित जानेवाले पर्वत के समान एक के पीछे एक गये। २२६२

माह नॅडुङ्गरम् वानिन् वळङ्गा, मेह नॅडुम्बुनल् वारिन मेन्मेऱ्
पोह विलङ्गिन वुण्डन पोलाङ्, गाह नॅडुङ्गळि यानै कळिप्पाल् 2263

काकम्–कौए जिनको घेर गये; नॅटु कळि यानै–वे बड़े मत्त हाथी; कळिप्पाल्–मस्ती से; माकम्–आकाश तक; नॅटु करम्–लम्बी अपनी सूँड़ों को; वानिन् वळङ्का–आकाश में बढ़ाकर; मेकम्–मेघों का; नॅटु पुनल्–अधिक जल; वारिन–उठा लेकर; मेल् मेल् पोक विलङ्किन–उत्तरोत्तर बढ़ना रोककर; उण्टन–पीने में लगे रहे। २२६३

वे हाथी, जिनके चारों ओर कौए मँड़रा रहे थे, आगे नहीं बढ़े पर मस्ती के साथ अपनी बड़ी सूँड़ ऊपर बढ़ाकर मेघ के जल को चूस रहे थे। २२६३

ऍरिन्दॅळु पल्पडै यिन्नॊळि वीरर्, अरुङ्गल मिन्नॊळि तेर्परि यानै
पॊरुन्दिय पण्णॊळि तारॊळि पॊङ्ग, इरिन्ददु पेरिरुळॅण्डिशै यॅङ्गुम् 2264

ऍरिन्तु ऍळु–प्रकाश देनेवाले; पल् पटैयिन् ऑळि–अनेक हथियारों की चमक; वीरर्–वीरों के; अरु कलम्–अपूर्व आभरणों की; मिन् ऑळि–चमकनेवाली चमक;

तेर् परि यातै–रथों, अश्वों और गजों के; पॉरुन्तिय पण् ऑळि–पहने आभरणों की दीप्ति; तार् ऑलि–किंकिणियों की छवि; पॉङ्क–अधिक रही, इसलिए; ऍण् तिचै ऍङ्कुम्–आठों दिशाओं भर में; पेर् इरुळ् इरिन्ततु–अन्धकार छँट गया। २२६४

प्रकाशमान विविध हथियारों की दीप्ति, वीरों के सुन्दर आभरणों की कांति, रथों, अश्वों और हाथियों के आभरणों का प्रकाश और किंकिणियों की ज्योति अधिक रही। इसलिए आठों दिशाओं का अंधकार कम होकर हट गया। २२६४

ऍय्दिय शेतैयै योश तॆरिन्दान्, वॆय्दिवण् वन्दवन् मायैयिन् वॆऱ्‌ऱि
शॆय्दव नॆकॊ तॆरित्ति यॆन्ऱान्, ऐयमिल् वीडण नन्न दुरैत्तान् 2265

ईचन्–सर्वेश्वर (श्रीराम) ने; ऍय्तिय चेतैयै–आगत सेना को; तॆरिन्तान्–सामने से देखकर; वॆय्तु–प्रखर रूप से; इवण् वन्तवन्–यहाँ जो आया है; मायैयिन्–माया द्वारा; वॆऱ्‌ऱि चॆय्तवने कॊल्–विजय जिसने बना ली क्या वही; इतु तॆरित्ति–यह बताओ; ऍन्ऱान्–पूछा; ऐयम् इल्–जिसके मन में संशय नहीं था; वीटणन्–विभीषण ने; अन्नतु उरैत्तान्–उसके सम्बन्ध में कहा। २२६५

परमेश्वर श्रीराम ने सामने आयी सेना को देखकर विभीषण से पूछा कि प्रचंड रूप से आनेवाली इस सेना के साथ जो आया है, क्या वह इन्द्रजित् है, जिसने माया के वल से अपनी विजय बना ली थी? असंशयज्ञान विभीषण ने उसके सम्बन्ध में यों बताया। २२६५

मुळैक्कुलच् चीयम् वॆम्बोर् वेट्टदु मुनिन्द दॆन्नप्
पुळैप्पिऱै यॆयिऱ्‌ऱुप् पेळ्वा यिडिक्कुलम् बॊडिप्प वार्त्तुत्
तळ्ऱ्पॊऱि वाळिप् पुट्टिल् कट्टिविऱ् ऱाङ्गिच् चार्वान्
मळैक्कुरऱ् ऱेरिन् मेलान् मापॆरुम् बक्कन् मन्नो 2266

मुळै कुलन् चीयम्–कंदरावासी सिंह; वॆम् पोर् वेट्टतु–घोर युद्ध चाहकर; मुनिन्ततु ऍन्न–रुष्ट हुआ हो ऐसा; पिऱै ऍयिऱु–अर्धचन्द्र-सम दाँतों के; पेळ्वाय् पुळै–फटे-से मुख के रंध्र से; इटि कुलम् पॊटिप्प–अशनिकुल को चूर करते हुए; आर्त्तु–शोर मचाकर; तळ्ल् पॊऱि–अंगारे उगलनेवाले; वाळि पुट्टिल्–वाणों का तूणीर; कट्टि–पीठ से बाँध लेकर; विल् ताङ्कि–धनु लिये हुए; मळैक्कुरल्–मेघ-रव; तेरिन् मेलान्–रथारूढ़; चार्वान्–जो आता है वह; मा पॆरुम् पक्कन्–महापार्श्व है। २२६६

गुफा में रहनेवाला सिंह भयंकर युद्ध चाहकर जैसे क्रुद्ध हो, वैसे अर्द्ध चन्द्र-सम दाँतों से युक्त, फटे-से मुख द्वारा वज्रसमूह को भी चूर करते हुए, नर्दन करता हुआ, अंगारे उगलनेवाले तूणीर को पीठ से बाँधकर और धनु को हाथ में लिये हुए मेघ-रव रथ पर जो उधर आ रहा है, वह महापार्श्व है। २२६६

शिहैनिऱक् कनल्पॊऴि तॆऱुहट् चॆक्करान्
पहैनिऱत् तवरुयिर् परुहुम् पण्बिनान्
नहैनिऱप् पॆरुङ्गडे वायॆ नक्कुवान्
पुहैनिऱक् कण्णवन् पॊलम्बॊऱ् ऱेरिनान् 2267

चिकै निऱम् कनल् पॊऴि–ज्वाला के कारण रंगीन बनी आग बरसानेवाले; तॆऱु–नाशक; कण्–नेत्र; चॆक्करान्–(जिसके) लाल हुए हैं; पकै निऱत्तवर्–शत्रुता बरतनेवालों के; उयिर् परुकुम्–प्राण पीने के; पण्पिनान्–स्वभाव वाला; नकै निऱम्–हँसी से रंगीन बने; पॆरु कटै वायॆ–बड़े होंठों के छोरों पर; नक्कुवान्–जीभ फेरनेवाला; पॊन् तेरिनान्–स्वर्णरथी; पुकै निऱत् कण्णवन्–धूम्राक्ष है। २२६७

जिसकी आँखें ज्वालाओं के कारण रंगीन अग्नि उगलती हैं, घातक हैं और लाल हैं, जो शत्रुता रखनेवाले लोगों की आयु को चाट लेनेवाला है, और जो हँसी के कारण रंगीन बने अपने बड़े अधरों पर दाँत फेर रहा है, और जो स्वर्णमय रथ पर सवार हो आता है, वह धूम्राक्ष है। २२६७

पिच्चरिऱ् ऱिहैत्तवन् वॆऱ्ऱिप् पेच्चिनान्
मुच्चिरत् तयिलिनान् मूरित् तेरिनान्
इच्चिर मुमदे यॆनवन् दॆय्दुवान्
वच्चिरत् तॆयिऱ्ऱवन् मलैयिन् मेनियान् 2268

पिच्चरिल् तिकैत्त–पागलों के समान भ्रान्त; वल् वॆऱ्ऱि पेच्चिनान्–कटु वचन बोलनेवाला; मु चिरत्तु अयिलिनान्–त्रिशूलधारी; मूरि–सशक्त; तेरिनान्–रथ वाला; मलैयिन् मेनियान्–पर्वतसदृशशरीरी; इ चिरमुम् अते–यह सिर भी वैसा; ऎन–ऐसा; वन्तु ऎय्तुवान्–जो आ पहुँचा है वह; वच्चिरत्तु ऎयिऱ्ऱवन्–वज्रदंष्ट्र है। २२६८

जो पागल के समान भ्रांत और कठोर बोली बोलनेवाला वीर त्रिशूल लेकर बलवान रथ पर आ रहा है और जिसका शरीर पर्वत के समान है, वही वज्रदंष्ट्र है। वह ऐसा आ रहा है, मानो यह बतला रहा है कि यह सिर भी वही (वज्र) है। २२६८

कालैयु मनत्तैयुम् बिऱहु काण्बदोर्
वालुळैप् पुरवियन् मडित्त वायिनान्
वेलैयि नाऱ्ऱपित्तन् विण्णै मीक्कॊळुम्
मूलमोन् ऱुडैयवन् पिशाशन् ऱोन्ऱुवान् 2269

कालैयुम्–पवन को; मनत्तैयुम्–और मन को; पिऱकु काण्पतु–पिछड़ता देखनेवाले; ओर्–अनुपम; वाल् उळै–सफ़ेद अयाल वाले; पुरवियन्–घोड़े का सवार; मटित्त वायिनान्–अधर मोड़ दाँतों से दबाते रहनेवाला; वेलैयिन् आर्प्पितन्–समुद्र-सम गरजनेवाला; विण्णै मी कॊळुम्–आकाश को भी वश में करने

वाला; चूलम् ऑन्ऱु उटैयवऩ्–एक शूल धारण करनेवाला; तोऩ्ऱुवाऩ्–जो दिखता है वह; पिचाचऩ्–पिशाच है। २२६९

वह पिशाच जिसका अनुपम अश्व पवन और मन को तेज़ी में हरा देगा, जिसका ओंठ मुड़ा हुआ है, समुद्र के समान गरजनेवाला है। वह एक शूल रखता है, जो आकाश को भी अपने वश में कर सकता है। वही पिशाच उधर सामने दीखता है। २२६९

शूरियऩ् पहैजऩच् चुटर्पॊऱ् ऱेरिऩऩ्
नीरिऩ् मुऴक्किऩ ऩॆरुप्पिऩ् वॆम्मैयाऩ्
शोरियुङ् गऩलियुञ् जॊरियुङ् गण्णिऩाऩ्
आरिय वेळ्वियिऩ् पहैञ् ऩामरो 2270

नीरिऩम्–समुद्र से; मुऴक्किऩऩ्–अधिक गरजनेवाला; नॆरुप्पिऩ् वॆम्मैयाऩ्–अग्नि से अधिक संतापक; अ–उस; चुटर्–प्रकाशमय; पॊऩ् तेरिऩऩ्–स्वर्णरथ पर सवार; चूरियऩ् पकैंजऩ्–सूर्य का शत्रु (भानुकोप) है; आरिय–आर्य; चोरियुम् कऩलियुम्–रक्त और आग; चॊरियुम् कण्णिऩाऩ्–बरसानेवाली आंखों का; वेळ्वियिऩ् पकैंजऩ् आम्–वह यज्ञ का भी शत्रु (यज्ञहा) है। २२७०

समुद्र से भी अधिक गर्जनशील, अनल से भी तापक और उस प्रकाशमय रथ पर जो खड़ा है, वह भानुकोप है। हे आर्य ! रक्त और आग निकालनेवाली आँखों का वह यज्ञों का शत्रु (यज्ञहा) है। २२७०

शालिवण् कदिर्निहर् पुरवित् ताऩैयाऩ्
मूलवॆङ् गॊडुमैयिऩ् ऱवत्तिऩ् मुऱ्ऱिऩाऩ्
शूलियुम् वॆरुक्कॊळत् तेरिल् तोऩ्ऱुवाऩ्
मालियॆऩ् ऱडिमुऱै वणङ्गिक् कूऱिऩाऩ् 2271

चालि वण् कतिर्–शालि की पुष्ट वालियों; निकर्–के समान; पुरवि ताऩैयाऩ्–अश्व-सेना वाला; मूलम्–अनादि; वॆम् कॊटुमैयिऩ्–भयानक क्रूरता के; तवत्तिऩ् मुऱ्ऱिऩाऩ्–तप में बढ़ा हुआ; चूलियुम् वॆरु कॊळ–शूली भी भयग्रस्त हों ऐसा; तेरिल् तोऩ्ऱुवाऩ्–रथ पर प्रकट; मालि–माली; ऎऩ्ऱु–ऐसा; अटि चरणों में; मुऱै वणङ्कि–यथाक्रम नमस्कार करके; कूऱिऩाऩ्–कहा (विभीषण ने)। २२७१

शालि की पुष्ट वालियों के समान अश्वों की सेना वाला और अति कठोर यज्ञकर्ता और शूली को भी डरानेवाला जो रथ पर दीखता है, वह माली है। विभीषण ने श्रीराम के चरणों में यथाक्रम नमस्कार करके कहा। २२७१

आर्त्तॆदिर् नडन्ददव् वरियि ऩार्हलि
तोर्त्तऩै वाळ्त्तियोत् तिरण्ड शेऩैयुम्

पोर्त्तोळिल् पुरिन्दत्त पुलवर् पोक्किलार्
वेर्त्तुयिर् पदैत्तत्तर् नडुङ्गि विम्मिये 2872

तीर्त्ततै पाळुत्ति–तीर्थ की स्तुति करके; अव् अरियिन् आर् कलि–बहु वानर-सेना-सागर; आर्त्तु–नारे लगाते हुए; ऍतिर् नडन्त्तु–सामने गया; इरण्डु सेतैयुम्–दोनों सेनाएँ; ओत्तु–मिलकर; पोर् तोळिल् पुरिन्तत–लड़ीं; पुलवर्–देव; पोक्कु इलार्–नहीं जा सके; नट्ङ्कि–काँपकर; विम्मि–दुःख में भरकर; वेर्त्तु–स्वेदयुक्त होकर; उयिर् पतैत्ततर्–प्राणविह्वल हुए। २२७२

तब वानर-सेना-सागर तीर्थ श्रीराम की स्तुति करके राक्षस-सेना के सामने गर्जन के साथ चला। दोनों सेनाएँ आपस में भिड़ीं। देवगण अलग नहीं जा सके, इसलिए कंपित हुए। सिसकियाँ भरीं। पसीना-पसीना हुए और उनके प्राण छटपटाने लगे। २२७२

कल्लॅरिन् दत्तकडै युरुमित् कारॅत्त
विल्लॅरिन् दत्तकणै विशुम्बिन् मेहत्तुच्
चॅल्लॅरिन् दत्तवॅत्तच् चिदरि वीळ्न्दत्त
पल्लॅरिन् दत्ततलै मलैयित् पण्बॅत्त 2273

कटै–युगांत के; उरुमित् कार् ऍत्त–अशनिसहित मेघ के समान; कल् ऍरिन्तत–(वानरों ने) पत्थर फेंके; विल्–(राक्षसों के) धनुओं ने; कणै ऍरिन्तत–बाण चलाये; विसुम्पित् मेकत्तु–आकाश के मेघों से; चॅल् ऍरिन्तत ऍत–गाजें गिरती हों ऐसा; पल् ऍरिन्तत–दाँत टूट गिरे; मलैयित् पण्पु ऍत्त–पर्वतों की-सी हालत में; तलै–वानरों के सिर (गिरे)। २२७३

वानरों ने युगांत के वज्र-सहित मेघों के समान पत्थर फेंके। जवाब में राक्षसों के हाथों के धनुओं ने बाण फेंके। आकाश के मेघों से वज्र गिरते हों, वैसे वानरों के दाँत टूटकर गिरे और पर्वतों के समान उनके सिर बिखर गये। २२७३

कडम्बडु करिपडक् कलित्त माप्पड
इडम्बडु शिल्लियि त्तीर्त्त तेर्पड
उडम्बडु मरक्करै यत्तन्द नुच्चियिर्
पडम्बडु मॅत्तप्पडुङ् गवियित् कर्पल 2274

कटम् पटु–मदस्रावी; करि पट–हाथी मिटे; कलितम् मा पट–लगाम से युक्त घोड़े मरे; इटम् पटु–विशाल; चिल्लियित् ईर्त्त–पहियों द्वारा खींचे जानेवाले; तेर् पट–रथ मिटे; उटम्पु अटु अरक्करै–शरीर जिनके छिन्न-भिन्न हुए उन राक्षसों को; अनन्तत् उच्चियिल्–अनंत के शीर्षों के; पटम् पटुम् ऍत–फन मिट जाएं, ऐसा; कवियित् पल कल्–कपियों के (फेंके) पत्थर; पटुम्–मिटाते। २२७४

मत्त गज मरे, लगाम-लगे अश्व मरे, विशाल और पहियोंदार

रथ टूटे और राक्षसों के शरीर छिन्न हुए। ऐसा वानरों के फेंके हुए पत्थरों ने ऊधम मचाया। यह भी डर लगा कि अनन्तनाग के फन भी मिट जाएँगे । २२७४

कॊलैयॊडुङ् गानॆडुम् बुयत्तिन् कुन्ऱॊडुम्
निलैनॆडुङ् गालॊडु निमिर्न्द वालॊडुम्
मलैयॊडु मरत्तॊडुङ् गविियिन् वलनॆडुन्
दलैयॊडुम् बोय्विशैत् तॆऱिन्द शक्करम 2275

विचैत्तु–जोर लगाकर; ऍऱिन्त–जो फेंके गये; चक्करम् कवियित्–उन चक्रों ने वानरों के; कोलै ऑटुङ्का–मारने के कार्य से अविरत; नॆटु पुयत्तिन्–लम्बी भुजाओं के (रूपी); कुन्ऱॊटुम्–पर्वतों के साथ; नॆटु निलै–ऊँचे रहनेवाले; कालॊटुम्–पैरों-सह; निमिर्न्त वालॊटुम्–ऊपर बढ़ायी पूँछों के साथ; मलैयॊटुम् मरत्तॊटुम्–गिरियों, तरुओं के साथ; वलनॆटु तलैयॊटुम्–सबल बड़े सिरों के साथ; पोम्–चले । २२७५

राक्षसों ने जो चक्र तेज़ी से चलाये वे वानरों के हत्या के काम से अविरत भुजा रूपी पर्वतों, लम्बे और स्थिर पैरों, ऊँची पूँछों और पर्वतों, तरुओं और बलवान बड़े सिरों के साथ गये । २२७५

आण्डहैक् कविक्कुलत् तलैव राक्कैयैक्
कोण्डत पुविियिलक् किऴित्त मादिरम्
ताण्डुव मनत्तिऴ् ऱावुव
तूण्डिलर् कैविशैत् तॆऱिन्द तोमरम् 2276

मातिरम् ताण्टुव–दिशाओं को लाँघनेवाले; मनत्तिल् तावुव–मन के समान बढ़कर तीव्रगति से उछलनेवाले; कुलम् परि–उच्च जाति के अश्वों को; तूण्टिनर्–उकसानेवालों के हाथों ने; विचैत्तु ऍऱिन्त तोमरम्–वेग लगाकर जो फेंके वे तोमर; आण् तकै–पौरुषयुक्त; कविकुलम् तलैवर्–वानरयूथपों के; आक्कैयै–शरीरों को; कोण्टन–चीरते हुए; पुविियिलै किऴित्त–भूमि को भी चीर गये । २२७६

उन वीरों के हाथों ने वेग के साथ तोमर फेंके, जो दिशाओं को लाँघनेवाले और मन के समान झपटनेवाले अश्वों को चला रहे थे। उन तोमरों ने पौरुषपूर्ण वानर-सेनानायकों के शरीरों को भेदकर भूमि को भी चीर दिया । २२७६

शिल्लियन् देर्क्कॊडि शिदैयच् चारदि
पल्लॊडु नॆडुन्दलै शडियप् पादहर्
विल्लॊडु कऴुत्तिऴप् पहट्टै वीट्टुमाल्
कल्लॆनक् कविक्कुलम् वीशुङ् गल्लरो 2277

कल् ऍन–'गल' शब्द के साथ; कविकुलम्–वानरगणों के; वीचुम् कल्–फेंके गये पत्थर; चिल्लि–पहियोंदार; अम् तेर्–सुन्दर रथों की; कॊटि चितैय–

ध्वजाओं का नाश करते हुए; पारति–सारथी के; पल्लोडु–दाँतों के साथ; नेडु तलै मटिय–सिरों को मिटाते हुए; पातकर्–पातक राक्षसों के; विल्लोडु–धनुओं के साथ; कळुत्तु इऱु–गलों को काटते हुए; पकट्टै वीट्टुम्–हाथियों का भी नाश करते। २२७७

वानरों ने पत्थर लेकर फेंके जो 'गल्ल' शब्द के साथ गये। उन पत्थरों ने पहियेदार रथों की सुन्दर पताकाओं का नाश किया; सारथी के दाँतों के साथ बड़े सिरों को मिटाया; पातक राक्षसों के धनुओं के साथ गलों को काटा और हाथियों को भी मारा। २२७७

करहमुन् दियमलै मुळैयिऱ् कट्चॅवि
उरहमुन् विन्नवॅन्न वॉळिक्कु मोळ्ळिलै
अरहमुन् विन्नॅडुङ् गवियि नाक्कैयिल्
तुरहमुन् विन्नरॅडुत् तॅरियुञ् जूलमे 2278

तुरकम् उन्तितर्–अश्वचालक राक्षस; ॲटुत्तु ॲरियुम्–जो उठाकर फेंकते; ओळ् इलै–उज्ज्वल पत्र के; चूलम्–शूल; करकम् उन्तिय–जिन पर ओले गिरते हों; मलै मुळैयित्–उन पर्वतों की कन्दराओं में; कण् चॅवि–आँखें ही जिनके कान सी हैं वे; उरकम् मुन्तित्त ॲन्न–सर्प घुसे जैसे; नॅटु कवियिन् आक्कैयिल्–बड़े वानरों के शरीरों में; अरकम् मुन्तित्त–बहुत तीव्र गति से; ऑळिक्कुम्–चुभ जाते। २२७८

अश्वचालक राक्षसों ने प्रकाशमान फलोंदार शूल फेंके। वे पर्वतकंदराओं में, जिनके ऊपर ओले गिरते हैं, घुसनेवाले अक्षकर्ण उरगों के समान वानरों के शरीरों के अन्दर उनको मारते हुए घुसे। २२७८

वाल्पिडित् तडिक्कुम्वा नरत्तै माल्हरि
काल्पिडित् तडिक्कुमक् करियि नैक्कवि
तोल्पिडित् तरक्करै यॅड्रियुञ् जूर्मुशु
वेल्पिडित् तॅड्रिवरम् मुहवै वॅङ्गणार् 2279

माल् करि–बड़ा हाथी; वानरत्तै–वानरों को; वाल् पिटित्तु–पूंछ पकड़कर; अटिक्कुम्–मारता; अ करियिनै–उस हाथी को; कवि–वानर; काल् पिटित्तु–पैर पकड़कर; अटिक्कुम्–मारते; चूर् मुचु–डरावना वानर; तोल्–हाथियों को; पिटित्तु–पकड़कर; अरक्करै ॲट्रियुम्–राक्षसों पर पटकते; अ मुचुवै–उस वानर को; वॅम् कणार्–क्रूर आँखों वाले राक्षस; वेल् पिटित्तु–भाला लेकर; ॲट्रिवर्–मारते। २२७९

बड़े गज वानरों को पूंछ पकड़कर पटकते। उन गजों को वानर पैर पकड़कर पटक देते। डरावने वानर गजों को हाथ से उठा लेकर राक्षसों पर फेंकते। उन वानरों को क्रूर आँखों वाले राक्षस बर्छियों द्वारा उठाकर दूर फेंक देते। २२७९

मुऱ्पडु कविक्कुल मुडुह वीशिय
कऱ्पडक् कळम्बडु मरक्कर् कार्क्कडल्
पऱ्पडु तलैप्पडप् पडुव पावहर्
विऱ्पडु कणैपडक् कुरङ्गिन् वेलैये 2280

मुन् पडु–आगे जानेवाले; कविकुलम्–वानरगण; मुडुक वीचिय–तेजी के साथ जो फेंकते रहे; कल् पट–उन पत्थरों के लगने से; अरक्कर् कार् कटल्–राक्षस-सेना का काला सागर; कळम् पडुम्–खेत रह जाते; पातकर्–पातकों के; विल् पडु–धनु से निकले; कणै पट–बाणों के लगने से; कुरङ्किन् वेलै–वानर-सागर; पल् पडु–दाँतों को दिखानेवाले; तलै पट–सिरों के नष्ट होने पर; पडुव–मर जाते। २२८०

अग्रगामी वानरों ने जो उठाकर तेज़ी से फेंके, उन पत्थरों के लगने से राक्षसों की सेना का काला सागर मिट जाता। पातकों के धनुओं से निकलनेवाले शरों के लगने से वानरों के दाँत दिखानेवाले सिर कट जाते और वानर-सेना-सागर मिट जाता। २२८०

कियुरु किरिपडक् किळर्पोर् ट्रेर्निरै
अच्चिरुच् चॅल्हिल वाडल् वाम्बरि
ऒय्युरु तुयरिडै यॅय्द ईत्तुणा
मुघ्चिरु वाळ्क्कैयिन् मूण्डु ळोरॅत्त 2281

ऑय्चु उरु–निरुत्साह करनेवाले; तुयर्–(दरिद्र) दुःख के; इडै ऍय्त–मध्य में आ जाने से; ईत्तु उणा–दान न देकर और स्वयं न खाकर; मुय्चु इरु–दम घुटानेवाले; वाळ्क्कैयिल् मूण्डु उळोर्–जीवन में लगे रहनेवालों; ऑत्त–के समान; किच्चु उरु–अग्नि-सहित; किरि पट–पर्वतों के टकराने से; किळर् पोन्–शोभायमान सुन्दर; तेर्–रथों; निरै–के समूह; अच्चु इरु–धुरियों के टूटने से; आडल् वाम् परि–सबल वाजी; चॅल्किल–बढ़ नहीं। २२८१

उत्साहनाशक दरिद्र दुःख में पड़े लोग दूसरों को दान न दे सककर और स्वयं भी भोजन न पाकर जैसे दम घुटानेवाले जीवन में लगे रहते हैं, वैसे ही अग्नि-सहित पर्वतों के टकराने से स्वर्णमय धुरी के टूट जाने के कारण बलवान अश्व (उन रथों को खींचकर) आगे नहीं जा सके। २२८१

मीयवर् यावरुम् विळिय वॅङ्गरि
शेयिरुङ् गुरुदियिल् तिरिव शेर्विल
नायह राळोडु मविय नव्विहळ्
पायोडु वेलैयिल् तिरियुम् पण्बिन 2282

मीयवर् यावरुम्–सभी सवारों के; विळिय–मरने पर; वॅम् करि–क्रूर हाथी; चे इरु कुरुतियिल्–लाल और बहुत रक्त-प्रवाह में; तिरिव–घूमते; चेर्विल–कहीं पहुँच नहीं पाते; नायकर् आळोडुम् अविय–मल्लाहों के नौकरों के साथ मरने पर;

पायॊडु–पालों के साथ; वेलैयिल् तिरियुम्–समुद्र में भटकनेवाले; नव्विकळ् पण्पित्त–पोतों के जैसे बने। २२८२

हाथियों पर सवार वीर मर गये तो डरावने हाथी लाल और अधिक परिमाण के रक्त-प्रवाह में भटकते रहे और कहीं नहीं जा सके। तब वे मल्लाहों और नौकरों के मरने पर पाल के साथ समुद्र पर भटकनेवाले पोतों के समान लगे। २२८२

पडैयॊडु मेलवर् मडियप् पल्परि, इडैयिडै तावॆऴुन् दळ्न्वु पण्बन
कडलॆडुङ् गुरुदिय कनलि कालुरु, वडवैयै निहर्त्तन वुदिर वायन 2283

पण् परि–अनेक घोड़े; पडैयॊडु–हथियारों के साथ; मेलवर्–सवारों के; मडिय–नष्ट होने पर; कडल्–समुद्र-सम; कुरुतिय–रक्त में फंसे; इटै इटै ता ऍऴुन्तु–बीच-बीच (अब तब) उछलकर (जोर लगाकर); ऍऴुन्तु–उठकर; अऴुन्तु पण्पत–डूबने की हालत में रहे; उतिरम् वायत–रक्त बहानेवाले मुखों के; कतलि काल् उरु–अनल निकालनेवाली; बटवैयै निकर्त्तत–बड़वा के समान दिखे। २२८३

हथियारधारी अश्वारोही मरे तो घोड़े समुद्र-सदृश रक्त के प्रवाह में फंस गये। वे कभी-कभी उछलते पर गिर जाते। उनके मुख से रक्त बह रहा था, इसलिए वे ज्वालामुखी बड़वा के समान लगे। २२८३

ऍयिऱ्ऱॊडु नॆडुन्दलै यिट्ट कल्लॊडुम्
वयिऱ्ऱिडैप् पुहप्पल पहलुम् वैहिय
पयिऱ्ऱिय रायिनुन् दॆरिक्कुम् वण्बिलार्
अयिर्प्पर्तङ् गणवरै यणुहि यन्नलार् 2284

ऍयिऱ्ऱॊडु नॆडु तलै–घोर दांतों के साथ बड़े सिर; इट्ट कल्लॊटुम्–(वानर-) प्रेरित पत्थरों के साथ; वयिऱ्ऱिटै पुक–पेट में जा चुके, इसलिए; पल पकलुम्–अनेक दिनों से; वैकिय पयिऱ्ऱियरायितुम्–परिचित होने पर भी; तॆरिक्कुम् पण्पु इलार्–पहचानने का मार्ग न जानतीं; अ नलार्–वे स्त्रियां; तम् कणवर् अणुकि–अपने पतियों के पास जाकर; अयिर्प्पर्–शंकित रहतीं। २२८४

वानरों ने जो पत्थर फेंके वे राक्षसों के बेडौल दांतों वाले सिरों के साथ उनके पेट के अन्दर चले गये। वहाँ उनकी पत्नियाँ जो आयीं वे चिरपरिचित रहने पर भी अपने पतियों को पहचानने का मार्ग न पाकर संदेह करतीं (कि यह शरीर क्या मेरे पति का है?)। २२८४

तुमक् कण्णनु मनुमनु मॆंदिरॆविर् तॊडर्न्दार्
तामत् तङ्गवन् मार्पॆरुम् बक्कनॆत् तडुत्तार्
शेमत् तिण्शिलै मालियु नीलनुञ् जॆरुत्तार्
वामप् पोर्वयप् पिशाशनुम् बतशमु मलैन्दार् 2285

तूमम् कण्णतुम्–धूम्राक्ष और; अनुमतुम्–हनुमान; ऍतिर् ऍतिर् तॉटर्न्तार्–आमने-सामने (आपस में) लड़े; तामत्तु अङ्कतन्–(विजय-) मालाधारी अंगद; मा पॅरु पक्कतै तट्टुत्तान्–महापार्श्व के विरुद्ध लड़ा; चेमम्–सुरक्षित; तिण् चिलै–कठोर धनुर्धर; मालियुम्–माली और; नीलतुम्–नील; चॅरुत्तार्–रोष के साथ भिड़े; वामम् पोर् वयम्–सुन्दर योद्धा वीर; पिचाचतुम् पतचतुम्–पिशाच और पनश; मलैन्तार्–गुंथे। २२८५

धूम्राक्ष और हनुमान आमने-सामने लड़े। विजयमालाधारी अंगद ने महापार्श्व को रोका। रक्षक-कठोर-धनुर्धर माली और नील भिड़े। सुन्दर युद्ध करनेवाला पिशाच और पनश गुंथे। २२८५

शूरि यत्बॅरुम् बहैञनुञ् शूरियत् महनुम्
नेरॅ दिरन्दत्तर् नॅरुप्पुडै वेळ्वियित् पहैयुम्
आरि यत्रनित् तम्बियु मॅदिरॅदि रडर्न्दार्
वीर वच्चिरत् तॅयिर्ड्रनु मिडबनु मिडैन्दार् 2286

चूरियत् पॅरु पकैञतुम्–सूर्य का घोर शत्रु (भानुकोप) और; चूरियत् मकतुम्–सूर्यसुत; नेर् ऍतिर्न्तत्तर्–द्वन्द्वयुद्ध में लगे; आरियत्–आर्य श्रीराम के; तनि तम्पियुम्–अप्रतिम भाई और; नॅरुप्पु उटै–अग्नि के साथ किये जानेवाले; वेळ्वियित्–यज्ञ का; पकैयुम्–यज्ञहा; ऍतिर् ऍतिर् अटर्न्तार्–परस्पर लड़े; वीरम् वच्चिरत्तु ऍयिर्रतुम्–वीर वज्रदंष्ट्र; इटपतुम्–और ऋषभ; मिटैन्तार्–भिड़े। २२८६

भानु का वड़ा शत्रु भानुकोप और भानु का पुत्र सुग्रीव आमने-सामने लड़े। आर्य श्रीराम के अनुपम भाई लक्ष्मण और यज्ञहा दोनों ने आपस में युद्ध किया। वीर वज्रदंष्ट्र और ऋषभ लड़े। २२८६

वॅङ्गण् वॅळ्ळॅयिर् ड्रक्करिड् कविक्कुल वीरच्
चिङ्ग मन्नपोर् वीररिड् ड्लैवराय्त् तॅरिन्दार्
अङ्ग मर्क्कळत् तॊरुवरो डॊरुवर्शॅन् ड्रडैन्दार्
पॊङ्गु वॆञ्जॅरुत् तेवरु नडुक्कुड्रप् पॊरुदार् 2287

वॅम् कण्–भयंकर आँखों वाले; वॅळ् ऍयिऱु–और सफ़ेद दाँतों वाले; अरक्करिल्–राक्षसों में; कविकुलम्–वानरसमूह में; वीरम् चिङ्कम् अन्न–बहादुर सिंह-सम; पोर् वीररिल्–योद्धा-वीरों में; तलैवराय् तॅरिन्तार्–जो नायक दिखे वे; अङ्कु–वहाँ; अमर्क्कळत्तु–युद्ध के मैदान में; ऒरुवरोटु ऒरुवर्–परस्पर लड़ने; चॅन्ऱु अटैन्तार्–जा पहुँचे; तेवरुम् नटुक्कु उऱ–देवों को भी भयविकंपित करते हुए; पॊङ्कु वॆम् चॅरु पॊरुतार्–उत्साह-वर्धक घमासान युद्ध करने लगे। २२८७

क्रूर आँखों और श्वेत दाँतों के राक्षसों में जो नायक थे, वे; और वीर सिंहों के समान वानर योद्धाओं में जो नायक थे, उनके साथ लड़ते गये

और दोनों दलों ने सोत्साह ऐसा भयंकर युद्ध किया कि देवगण भी डर गये। २२८७

इऩ्ऩ कालैयि ईरैन्दु वॆळ्ळमुवन् देऱ्ऱु
मिऩ्ऩुम् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱरक्करदऩ् जेऩैयिल् वीरर्
अऩ्ऩ वॆञ्जमत् ताऱुवॆळ् ळत्तैयु मवित्तार्
शौऩ्ऩ नालैयु मिलक्कुवऩ् पहळियाऱ् ऱॊलैत्ताऩ् 2288

इऩ्ऩ कालैयिल्–इतने में; अऩ्ऩ वॆम् चमत्तु–उस घोर युद्ध में; वन्तु एऱ्ऱ–आकर जो युद्ध में लगे; ईरैन्तु वॆळ्ळम्–दस 'वॆळ्ळम्'; मिऩ्ऩुम्–चमकदार; वॆळ् ऎयिऱु–सफ़ेद दाँतों वाले; अरक्कर् तम् चेऩैयिल्–राक्षसों की सेना को; आऱु वॆळ्ळत्तैयुम्–छः 'वॆळ्ळम्' को; वीरर् अवित्तार्–वीरों ने मिटा दिया; चॊऩ्ऩ नालैयुम्–बाक़ी कहे चारों को; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण ने; पकळियाल्–अस्त्रों से; तॊलैत्ताऩ्–मिटा दिया। २२८८

तब ऐसे भयंकर युद्ध में दस 'वॆळ्ळम्' उज्ज्वल दाँतों वाले राक्षसों की सेना लड़ने आयी थी। उसमें छः 'वॆळ्ळम्' का वानर वीरों ने नाश कर दिया, बचे रहे चार 'वॆळ्ळम्' को लक्ष्मण ने अपने बाणों से मार मिटाया। २२८८

उप्पुडैक् कडल् मडुत्तत वुदिर नीरोदम्
अप्पॊ डॊत्तत कडुत्तिल वार्हलि मुळ्ळुदुम्
जॆप्पु रुक्कॆऩत् तॆरिन्ददु मीऩ्गुलम् जॆरुक्कित्
तुप्पॊ डॊत्तत मुत्तिनङ् गुऩ्ऱियिऱ् ऱोऩ्ऱ 2289

उप्पुटै–नमकीन; कटल् मटुत्तत–समुद्र में जो बहा; उतिरम् नीर् ओतम्–रक्तजल-प्रवाह; अप्पॊटु ऒत्तत कटुत्तल–जल से मिश्रित नहीं लगा; आर् कलि मुळ्ळुतुम्–शब्दपूर्ण सारा सागर; चॆप्पु उरुक्कु ऎऩ–पिघले ताम्र के समान; तॆरिन्ततु–दिखा; मुत्तु इऩम्–मुक्तागण; कुऩ्ऱियिल् तोऩ्ऱ–घुंघुचियों के समान दिखे; मीऩ् कुलम्–मछलियों के समूह; चॆरुक्कि–मस्ती के कारण; तुप्पॊटु ऒत्तत–प्रवाल के समान लगे। २२८९

नमकमिश्रित सागर में जो रक्त का प्रवाह जा मिला, वह जल से मिश्रित न लगा। सागर का जल सारा पिघले ताम्र के समान दिखा। उसके मोती घुंघुचियों के समान दिखे। झषकुल गर्व के साथ मूंगों के समान दिखा। २२८९

तत्तु नीर्क्कडऩ् मुळ्ळुवदुङ् गुरुदियाय्त् तयङ्गच्
चित्ति रक्कुलप् पऩ्ऩिऱ मणिहळुञ् जेऩ्ब
औत्तु वेऱुरुत् तॆरियल वुयर्मवत् तोङ्गल्
... ... तरळमम वळैशोरि मुत्तुम् 2290

तत्तु–(लहरें जिस पर) उछलती हैं; नीर्–उस जल के; कटल् मुऴुवतुम्–समुद्र भर में; कुरुतियाय् तयङ्क–रक्त ही रक्त दिख रहा था; चित्तिरम्–चित्र; कुलम्–समूहों में रहे; पल् निऱ मणिकळुम्–रंग-रंग के रत्न; चेन्त–लाल बने; मतम् उयर्–मदश्रेष्ठ; ओङ्कल्–पर्वतों (सम गजों) के; मत्तकत्तु–मस्तकों से; उकु–निकलनेवाले; तरळमुम्–मोती भी; वळैचोरि मुत्तुम् –और शंख निःसृत मोती; ओत्तु–समान (लाल) बनकर; वेऱु उरु तॆरियल–अलग रूप से नहीं दिखे। २२९०

सागर भर में, जिसके ऊपर जल उछल रहा था, रक्त ही अपनी शोभा दे रहा था। विविध विचित्र रत्न भी लाल हो गये। मस्ती में बढ़े हुए पर्वत-सम गजों के मस्तकों से गिरनेवाले मोती और शंखों से निर्गत मोती (दोनों लाल थे अतः) आपस में भेद नहीं दिखा सके। २२९०

अदिरुम् वॆञ्जॆरु वन्नदोत् ऱमैहित्त्ऱ वळविऱ्
कदिर वन्गोळुञ् जॆयोळिक् कऱ्ऱैयङ् गरत्ताल्
ऎदिरुम् वल्लिरुट् करियिरुत् तॆळुमुऱै मूळ्हि
उदिर वॆळ्ळत्तु ळॆऴुन्दव नामॆन वुदित्तान् 2291

अतिरुम्–बहुत ही जोरदार; वॆम् चॆरु अन्नतु ओन्ऱु–घोर युद्ध वह; अमैकिन्ऱ अळविल्–जब हो रहा था तब; कतिरवन्–सूर्य; अम् कोळु–सुन्दर पुष्ट; चेय् ऑळि कऱ्ऱै–लाल किरणों की लटों रूपी; करत्ताल्–करों से; ऎतिरुम्–सामने आये; वल् इरुळ्–घने अन्धकार रूपी; करि इरुत्तु–हाथी का नाश करके; ऎऴु–जब उठा तब; उतिर वॆळ्ळत्तु मूऴ्कि–रुधिर की बाढ़ में गोते लगाकर; ऎऴुन्तवन्ताम् ऎन–उठा हो जैसे; उतित्तान्–उगा। २२९१

जब जोरदार वह भयंकर युद्ध चल रहा था, तब सूर्य उदित हुआ। लाल वह सूर्य अपनी लालिमापूर्ण किरणों रूपी हाथों से सामने आये घने अंधकार रूपी हाथी को मारकर जब उठा, तब रक्तप्रवाह में मग्न हो उठा हो, ऐसा लगा। २२९१

अरक्क रॆन्नुऱुपे रिरुळिनै यिरामना मिरवि
तुरक्क वॆञ्जुडरक् कदिरवन् पुऱत्तिरुळ् तुरक्कप्
पुरक्कुम् वॆय्यव रिरुवरै युडैयन पोल
निरक्कु नल्लॊळि परन्दन वुलहॆला निमिर 2292

अरक्कर् ऎन्नुऱु–राक्षस नाम के; पेर् इरुळिनै–बड़े अन्धकार को; इरामन् आम् इरवि–श्रीराम रूपी रवि ने; तुरक्क–हटाया; वॆम् चुटर् कतिरवन्–गरम किरणमाली ने; पुऱत्तु इरुळ् तुरक्क–बाहरी अन्धकार को दूर किया; पुरक्कुम् वॆय्यवर् इरुवरै–पालक दो सूर्य; उटैयन पोल–हों जैसे; निरक्कुम् नल् ऒळि–बराबर की अच्छी ज्योति; उलकु ऎलाम्–सारे संसार में; निमिर परन्तन–भर-पूर फैली। २२९२

राक्षस रूपी घने अंधकार को श्रीराम दूर करते रहे। गरम

किरणमाली बाहरी अंधकार को दूर कर रहा था। अब संसार में मानो दो सूर्यों से लगातार प्रकाश उठकर व्याप्त हुआ। २२९२

निलैक्कोळ् पेरिरु णीङ्गलु निलत्तिडै निन्ऱ
मलैयुम् वेलैयुम् वरम्बिल वयित्तरीरुम् बरन्दु
तॊलैवि रुम्मैय तोन्ऱुव पोन्ऱन शोरि
अलैक्कोळ् वेलैयुम् मरुम्बिणक् कुन्ऱमु मणवि 2293

मिलै कोळ्–स्थायी; पेर् इरुळ्–घना अन्धकार; नीङ्कलुम्–जब दूर हुआ तभी; अलै कोळ्–तरंगसहित; चोरि वेलैयुम्–रक्तसागर और; अरु पिणम् कुन्ऱम्–अपूर्व (गज-) लाशों के पर्वत; अणवि–मिलकर; निलत्तिटै निन्ऱ–भूमि पर रहे; मलैयुम् वेलैयुम्–पर्वत और समुद्र; वरम्पु इल–असीम बनकर; वयिन् तोऱुम् परन्तु–सर्वत्र पाये जाकर; तॊलैविल् तन्मैय–अक्षय प्रकार के-से; तोन्ऱुव पोन्ऱन–दिखते-जैसे रहे। २२९३

अचल और विशाल अंधकार दूर हुआ। युद्धांगण में तरंगायमान रक्त-सागर और (गज) शवों के पहाड़ मिश्रित रहे। तब अपार पर्वत और सागर सर्वत्र लगातार फैले पड़े हों, ऐसा लगा। २२९३

निलन्द वादशॆन् नीरिडै विणक्कॊळ्ळ् जेऱ्ऱिल्
पुलर्न्द कालैयिऱ् पॊऱ्ऱिवरि यम्बॆन्नुन् दुम्बि
कलन्द तामरैप् पॆरुवनङ् गदिरवन् करत्ताल्
मलर्न्द दामॆनप् पॊलिन्दन वुलन्दवर् वदनम् 2294

पुलर्न्त कालैयिल्–सवेरे के समय में; निलम् तवात–भूमि से अपृथक्; चॆं नीर् इटै–रुधिर-मध्य; निणम् कॊळ् चेऱ्ऱिल्–चर्बी-भरी कीच में; पॊऱ्ऱि वरि–चित्तियों और लकीरों से भरे; अम्पु ऎन्नुम्–बाण रूपी; तुम्पि–भ्रमर; कलन्त–जिनपर मँड़राते थे (लगे रहते थे); उलन्तवर्–मृतकों के; वतनम्–आनन; तुम्पि कलन्त–भ्रमरावृत; तामरै पॆरुवनम्–बृहत् कमलवन; कतिरवन् करत्ताल्–सूर्य की किरणों से; मलर्न्ततु आम्–खिला हो; ऎन पॊलिन्तन–जैसे शोभित रहे। २२९४

प्रभात वेला में भूमि पर लगे रहे रक्त-प्रवाह में वसा की कीच में मृतकों के मुख, जिनके ऊपर लकीरों और बिंदियों से भरे बाण रूपी भ्रमर मँड़रा रहे थे, उन कमल-सुमनों के समान लगे, जिन पर भ्रमर रहते हों और जो सूर्यरश्मियों के कारण खिले हुए हों। २२९४

तेरुम् यानैयुम् पुरवियुम् विरविन तेवर्
ऊरु मानमु मेरुमु मुडुक्कळ्ळतम् मुलहुम्
पेरु मानवॆङ् गालत्तुक् काल्पॊरप् पिणङ्गिप्
पारिन् वीऴ्न्दन पोन्ऱन किडन्दन परन्दु 2295

तेरुम्–रथ और; यातैयुम्–हाथी; पुरवियुन्–अश्व; विरवित–मिश्रित पड़े जो रहे वे; पेरुम् आत–(संसार) जब मिट जाए उस; वॅम् कालत्तु–गरमी के समय; काल् पोर–झंझा के ज़ोर से; पिणङ्कि–विकृत होकर; तेवर् ऊरुम्–देवों का लोक और; मातमुम्–यान; मेकमुम्–मेघ; उडुक्कळ् तम् उलकुम्–और नक्षत्र-लोक; पारिन्–भूमि पर; वीऴ्न्तन पोन्रन–गिरे हों जैसे लगे। २२९५

युद्ध के मैदान में रथ, हाथी और घोड़े मिलकर पड़े रहे। वे अस्त-व्यस्त करनेवाले ग्रीष्म में हवा के झोंकों से दिशा बदलकर देवयान, मेघ और नक्षत्रमंडल जो भूमि पर गिरे हों, उनके समान दिखे। २२९५

ऑल्लि शुऱ्ऱिय मदिनिहर् मुहत्तिय रॅरिवीऴ्
अल्लि शुऱ्ऱिय कोदॅयर् कळम्बुहुन् दडॅन्दार्
पुल्लि मुऱ्ऱिय वुयिरिऩर् पॊरुन्दिऩर् किडन्दार्
वल्लि शुऱ्ऱिय मामर निहर्त्तनर् वयवर् 2296

ऑल्लि चुऱ्ऱिय–रात में सैर करनेवाले; मति निकर् मुकत्तियर्–चंद्र-सम मुखों की स्त्रियाँ; ऍरि वीऴ्–अग्नि-सदृश; अल्लि चुऱ्ऱिय–पंखुड़ियाँ (पुष्प) जिन पर चक्राकार गुंथी थीं, उन; कोतैयर्–केशों वालियाँ; कळम् पुकुन्तु–युद्ध के मैदान में जो आ; अटैन्तार्–पहुँचीं, उनसे; पुल्लि–आलिंगित होकर; मुऱ्ऱिय उयिरिनर्–जो मरे; पॊरुन्तिनर् किटन्तार्–भूमि से लगे पड़े रहे; वयवर्–वे राक्षस वीर; वल्लि चुऱ्ऱिय–लता से आवृत; मा मरम् निकर्त्तार्–बड़े वृक्षों के समान लगे। २२९६

रात में प्रगट चंद्र के समान मुखों वाली राक्षसियाँ रणांगण में आयीं। उनके केशों पर फूल की पंखुड़ियाँ लगी हुई थीं। उनके आलिंगन में पड़े रहे निर्जीव राक्षस लतालिप्त बड़े तरुओं के समान दिखे। २२९६

वणङ्गु नुणणिडै मलैमुलैच् चॅक्कर्वार् कून्दल्
अणङ्गु वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरक्कियर् कळत्तुवन् दडॅन्दार्
कुणङ्गॊ ळॊन्दुणैक् कणवर्तम् पशुन्दलै कॊडावु
पिणङ्गु पेय्हळैप् पिळन्दनर् तॊडर्न्दनर् पिडित्तार् 2297

वणङ्कुम् नुण् इटै–लोच-भरी पतली कमर; मलै मुलै–पर्वतोपम स्तन; चॅक्कर् वार्–लाल लम्बे; कून्तल्–केश; अणङ्कु–दुःखदायी; वॅळ् ऍयिऱु–सफ़ेद दाँत (इनसे युक्त); कळत्तु वन्तु अटैन्तार्–मैदान में आगत; अरक्कियर्–राक्षसियों ने; कुणम् कॊळ्ळुम्–प्रेम-गुण से भरे; तुणै–संगी; कणवर् तम्–पतियों के; पचुम् तलै कॊटातु–ताजे कटे सिरों को न देकर; पिणङ्कु–तकरार करनेवाले; पेय्कळै–भूतों को; तॊटर्न्तनर्–उनका पीछा करके; पिळन्तनर्–फोड़ा; पिटित्तार्–पकड़ा। २२९७

लचकती कमर, पर्वत-सम पयोधर, लाल लम्बे केश, दुःखनेवाले श्वेत दाँत—इनसे युक्त राक्षस-नारियाँ मैदान में आयीं। उन्होंने उन पिशाचों

का पीछा करके उनको पकड़कर तोड़ा, जो उनके प्यारे संगी पतियों के ताज़े कटे सिरों को न देकर विपरीत भाव के साथ भाग रहे थे। २२९७

शुडरुम् वॆळ्वळेत् तोळिदत् कॊळुननॆत् तॊडर्वाळ्
उडरु मङ्गमुङ् गण्ड्हॊण् डोरुवळ्ळि युय्प्पाळ्
कुडरु मीरलुङ् गण्णुमोर् कुरुनरि कॊळ्ळत्
तॊडर वाऱ्ऱल नॆडिदुयिर्त् तारुयिर् तुऱन्दाळ् 2298

चुटरुम्–ज्वलंत; वॆळ् वळै तोळि–श्वेत वलयधारी भुजाओं वाली एक राक्षसी; तत् कॊळुननॆ तॊटर्वाळ्–अपने पति का अनुगमन करके; उटरुम् अङ्कमुम् कण्टु–शरीर और अंग अलग-अलग देखकर; कॊण्टु–उनको लेकर; ओरु वळ्ळि उय्प्पाळ्–एक स्थान पर रखती; कुटरुम्–आँतों; ईरलुम्–यकृत; कण्णुम्–और आँखों को; ओर् कुरु नरि–एक लोमड़ी; कॊळ्ळ–ले गयी; तॊटर्–उसका पीछा करने में; आऱ्ऱलळ्–असमर्थ; नॆटितु उयिर्त्तु–दीर्घ निःश्वास छोड़कर; आर् उयिर् तुऱन्ताळ्–अपने प्यारे प्राण छोड़ दिये। २२९८

उज्ज्वल बाहुवलय वाली एक राक्षसी अपने पति की खोज में गयी। उसके शरीर और अंगों को अलग-अलग स्थानों में पड़ा पाया। दिल में पत्थर रखकर उन्हें एकत्रित किया। तब एक लोमड़ी उसकी आँत, यकृत और आँखों को लेकर भाग रही थी। राक्षसी ने उसका पीछा किया, पर पकड़ नहीं सकी और दीर्घ निःश्वास छोड़कर अपने अमूल्य प्राणों से हाथ धो लिये। २२९८

पॆरिय वाट्टडङ् गण्णियर् कणवर्तम् पॆरुन्दोळ्
नरिह्ळ् ळीर्त्तन वणङ्गवु मिणङ्गवु नल्हा
दुरियल् पोवन तॊडर्न्दय लिऩ्नपडै किडन्द
अरिय नोन्दिल रलत्तहच् चीऱडि यन्दो 2299

पॆरिय–बड़ी; वाळ् तट कण्णियर्–तलवार-सी विशाल आँखों वाली राक्षस-रमणियाँ; तम् कणवर्–अपने पतियों के; पॆरु तोळ्–बड़े कंधों को; ईर्त्तन नरिकळ्–जो छीन ले जा रहे थे, उन सियारों को; वणङ्कवुम्–नमन करने पर भी; इणङ्कवुम्–सम्मत होने की प्रार्थना करने पर भी; नल्का–बिना दिये; उरियल् पोवन–भागनेवाले (जो थे); तॊटर्न्तु–पीछा करके जाकर; अयल्–पास में; किटन्त–पड़े जो रहे; इनम् पटै–समूहों के हथियारों के; अरिय–काटने से; अलत्तकम् चीऱटि–लाक्षारस-चर्चित श्रेष्ठ पैरों में; नोन्तिलर्–दर्द का अनुभव नहीं किया। २२९९

लम्बी तलवार-सी विशाल आँखों वाली स्त्रियाँ अपने पतियों के उन्नत कंधों को लेकर, प्रार्थना और याचना करने पर भी न देकर भागनेवाले सियारों का पीछा करती गयीं। पास में पड़े रहे हथियारों के समूह ने उनके पैरों में चोट पहुँचायी, तो भी उनके लाक्षारसरंजित श्रेष्ठ चरण नहीं दुःखे। २२९९

नलङ्गॊ नॆञ्जितर् तन्दुणैक् कणवरै नाडि
विलङ्ग लन्नवान् पॆरुम्बिणक् कुप्पैयिन्‌ मेलोर्
अलङ्ग लोदिय ररुन्दुणै पिरिन्दुनिन् ऱयरुम्
पॊलङ्गॊण् मामयिल् वरैयिन्मेऱ् ऱिरिवन पोन्ऱार् 2300

तम् तुणै कणवरै नाटि–अपने संगी पतियों की खोज में; विलङ्कल् अन्न–पर्वत-सम; वान् पॆरु–ऊँची बड़ी; पिणम् कुप्पैयिन्–लाशों के ढेरों के; मेलोर्–ऊपर जो जा रही थीं; अलङ्कल् ओतियर–पुष्पमाला से अलंकृत केश वाली; नलम् कॊळ्–हितैषी; नॆञ्चितर्–मन वाली राक्षसरमणियाँ; अर तुणै–प्यारे जोड़े से; पिरिन्तु निन्ऱु अयरुम्–बिछुड़कर दुःखी रहनेवाले; पॊलम् कॊळ्–सुन्दर; मा मयिल्–बड़े मोर; वरैयिन् मेल्–पर्वत पर; तिरिवन–घूमते; पोन्ऱार्–जैसे दिखीं। २३००

अपने संगी पतियों की खोज में माला से अलंकृत केश वाली और भला चाहनेवाली स्त्रियाँ पर्वत-सम लाशों के ढेरों के ऊपर जो चलीं, वे अपनी संगिनी मोरनियों से बिछुड़कर शिथिल पड़नेवाले सुन्दर मोर पर्वतों पर घूम रहे जैसे लगीं। २३००

शिलवर् तम्बॆरुङ् गणवर्तम् जॆरुत्तॊऴिऱ् चिनत्तार्
पलरुम् वाय्मडित् तुयिर्तुरन् दार्कळैप् पार्त्तार्
अलैविल् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱालिदऴ् मऱैत्तुळ दयलाळ्
कलवि यिऱ्कुऱि काण्डुमॆन् ऱामॆनक् कनन्ऱार् 2301

चिलवर्–कुछ (स्त्रियों) ने; तम् पॆरु कणवर् पलरुम्–अपने गौरवपूर्ण पति अनेक; तम् चॆरु तॊऴिल् चिनत्तार्–अपने युद्ध के कार्य में उत्पन्न क्रोध के कारण; वाय् मटित्तु–ओंठ काटते हुए; उयिर् तुऱन्तार्कळै–मरे; पार्त्तार्–उसको देखा; अलैविल्–अचल; वॆळ् ऎयिऱ्ऱाल्–श्वेत दाँतों से; इतऴ् मऱैत्तु–अधर छिपाते जो; उळतु–है वह; अयलाळ्–अपर नायिका के; कलवियिल् कुऱि–संगम का चिह्न; काण्टुम्–देख लेगी (मेरी पत्नी); ऎन्ऱु आम्–इस विचार से शायद; ऎन–ऐसा सोचकर; कनन्ऱार्–रुष्ट हुईं। २३०१

कुछ स्त्रियों ने अपने गौरवपूर्ण पतियों को उनके युद्धकर्म-उत्पन्न क्रोध के कारण अधर मोड़कर मरा पड़ा देखा। उन्होंने सोचा कि अचल श्वेत दाँतों से इनके अधर छिपे हैं। शायद उनको डर है कि हम परस्त्री-संभोग के निशानों को देख लेंगे। इसीलिए उन्होंने अधरों को छिपाया है। उन्होंने अपने पतियों पर गुस्सा किया। २३०१

नवैशॆय् वन्ऱलै यिऴन्दन सडैवरै नणुहि
अवश मॆय्दिड मडन्दैय रुत्तरिन् दऴियार्
तुवश मन्ऱतङ् गुरुहिऱप् पॆरुङ्गुरि तोण्मेऱ्
कवश नीक्कितर् कण्डुकण् डाऴियिर् कऴित्तार् 2302

वल् तलै इऴन्त–कठोर सिर जिन्होंने खो दिये; नवै चॅय्–और जो अपराधी स्वभाव के थे; तम् अन्बरै–अपने पतियों को; उरु तॅरिन्तु अऱियार्–रूप पहचान जो नहीं सकीं; नणुकि–(व) पास जाकर; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; अवचम् ऍय्तिट–वश खोकर; कवचम् नीक्किनर्–कवच निकालकर; तोळ् मेल्–उनके कंधों पर; तुवचम् अन्न–ध्वजा के रूप में; तम् कूर् उकिर्–अपने तीक्ष्ण नखों के बने; पॅरु कुऴि–श्रेष्ठ नखक्षत; कण्टु कण्टु–देख-देखकर; आर् उयिर् कळित्तार्–अपने प्यारे प्राण छोड़ दिये। २३०२

कुछ स्त्रियाँ सबल सिरों से हीन अपने अपराधी पतियों के लाशों के पास गयीं। पूरा आकार न देख सकने के कारण अवश हुईं। उनके कवचों को निकालकर उनके वक्षों में अपने द्वारा किये गये बड़े नखक्षतों को देखा। देख-देखकर वे बेहाल हुईं और उनके प्राण छूट गये। २३०२

मारि याक्किय कण्णियर् कणवर्तम् वयिरप्
पोरि याक्कैह ळाडिय पॅारुहळम् बुहुन्दार्
पेरि याक्कैयिल् पिणप्पॅरुङ् गुन्ऱिडैप् पिऱन्द
शोरि यार्ऱिडै यऴुन्दिन रिन्नुयिर् तुऱन्दार् 2303

मारि आक्किय–बारिश बनानेवाली; कण्णियर्–आँखों की राक्षसियाँ; कणवर्तम्–पतियों के; वयिरम्–वज्र (दृढ़); पोर् याक्कैकळ्–युद्ध में हत शरीरों को; नाडि–खोजकर; अ–उस; पॅारु कळम्–युद्धांगन में; पुकुन्तार्–पहुँचीं; पिणम् पॅरु कुन्ऱु इटै–लाशों के बड़े पर्वतों के मध्य; पेर् याक्कैयिल्–बड़े शरीर से; पिऱन्त–निकले; चोरि आऱ्ऱिटै–रक्त-नदी में; अऴुन्तिनर्–मग्न होकर; इन् उयिर् तुऱन्तार्–प्यारे प्राण छोड़ दिये। २३०३

मेघ-सम अश्रु बहानेवाली आँखों की कुछ राक्षसियाँ युद्ध में पड़े रहे अपने पतियों के वज्रशरीरों की खोज में मैदान में गयीं। लाशों के बड़े पर्वतों के बीच उनके बड़े शरीरों से निकले हुए रक्त की नदी में मग्न हुईं और अपने प्यारे प्राणों से हाथ धो लिया। २३०३

वहैनिऱ्ऱुयर् ताळॅडु मारुदियुम्
पुहैयिन्पॅार कण्णव नुम्बॅारुवार्
मिहैशॅन्ऱिलर् पिन्ऱिलर् वॅन्ऱिलराल्
मिहैशॅन्नॅरु निरम्बिय तीयुमिऴ्वार् 2304

वकै निऱ्ऱु–युक्त रीति से जो थे; उयर् ताळ्–उन ऊँचे पैरों वाला; नॅटु–बड़ा; मारुतियुम्–मारुति और; पुकैयिन् पॅारु कण्णवनुम्–धुएँ से होड़ लगानेवाली आँखों का (धूम्राक्ष) राक्षस; पॅारुवार्–लड़े; मिकै चॅन्नॅरु निरम्बिय–ज्वालाओं से भरी; ती उमिऴ्वार्–आग उगलते हुए; मिकै चॅन्ऱिलर्–परस्पर आगे नहीं बढ़े; पिन्ऱिलर्–न हारे; वॅन्ऱिलर्–न जीते। २३०४

सुन्दर लम्बे पैरों वाला बड़ा मारुति और धूम्राक्ष आपस में लड़े। ज्वालामयी आग निकालते हुए वे न आगे बढ़े, न पीछे हटे। २३०४

ऐयमजलल् वाळि यळऱ्कॉडियोन्, मॅय्यञ्जत्तै कान्मुळै मेनियिन्मेल्
वैयञ्जिलै याऱु वळङ्गिनन्नाल्, मॉय्यञ्जत्त मेह मुनिन्दन्नैयान् 2305

अळल् कॉटियोन्–अग्निनिभ त्रासक ने; मॉय्–घना; अञ्चत्त मेकम्–काला मेघ; मुनिन्तु–नाराज हो; अन्नैयान्–जैसे; अळल्–जलनेवाले; ऐ अञ्चु वै वाळि–पचीस अस्त्र; मॅय् अञ्चत्तै–सत्यवादी, अञ्जना के; कान् मुळै–पुत्र के; मेनियिन् मेल्–शरीर पर; वै तान् अम् चिलै आऱु–अपने पास रहे सुन्दर धनु द्वारा; वळङ्किनान्–चलाया। २३०५

अग्नि के समान दुष्ट धूम्राक्ष ने क्रुद्ध मेघ-सम बनकर पचीस ज्वलंत शरों को सुन्दर धनु पर संधानकर सत्यवादी अंजनासुत पर चलाया। २३०५

पाळिप्पुय ममबुरु वप्पडलुम्, वीळिक्कनि पोऱ्पुनल् वीशवॅहुण्
डाळिप्पॅरुन् देरै यळित्तनन्नाल्, ऊळिप् पॅयर्कार्निह रॉण्डिऱलान् 2306

पाळि पुयम्–सबल भुजा में; अम्पु उरुव पटलुम्—अस्त्र निफर जाए, ऐसा लगा तो; वीळि कनि पोल्–'वीळि' के फल के समान; पुनल्–रुधिरजल के; वीच–निकलते; ऊळि पेयर् कार् निकर्–युगान्त में चलनेवाले मेघ के समान; ऑळ् तिऱलान्–श्रेष्ठ सामर्थ्यवान् (हनुमान) ने; वॅकुण्टु–क्रुद्ध होकर; आळि पॅरु तेरै–पहियोंदार बड़े रथ को; अळित्तनन्–मिटा दिया। २३०६

सबल भुजाओं पर बाण भेदते हुए जब लगे, तब "वीळि" के फल के समान लाल रुधिर बहने लगा। युगांत के मेघसदृश श्रेष्ठ बलवान हनुमान ने नाराज होकर उसके पहियेदार बड़े रथ को नष्ट कर दिया। २३०६

शिल्लिप्पॉरु तेर्शिदैयच् चिलैयो
डॅल्लिऱ्पॉलि विण्णिन् विशैत्तॅळुवान्
विल्लिऱ्ऱु दिलक्कुवन् वॅङ्गणैयाल्
पुल्लित्तरै यिट्टन नेर्पॉरुवान् 2307

चिल्लि–पहियों वाले; पॉरु तेर्–युद्ध-रथ के; चितैय–मिटने पर; चिलैयोटु–धनु के साथ; ऍल्लिल् पॉलि–सूर्य-सहित विद्यमान; विण्णिन्–आकाश में; विचैत्तु ऍळुवान्–उछल जो उठा, उसका; विल्–धनु; इलक्कुवन् वॅम् कणैयाल्–लक्ष्मण के कठोर अस्त्र से; इऱ्ऱु–टूटा; नेर् पॉरुवान्–सीधे लड़नेवाले; अनुमन् पुल्लि–हनुमान ने पाशबद्ध कर; तरै इट्टनन्–भूमि पर गिरा दिया। २३०७

जब सचक्र युद्ध योग्य रथ मिटा, तब वह अपने धनु के साथ सूर्य-सहित रहनेवाले आकाश में उछला, तब उसका धनु लक्ष्मण के कठोर बाण से टूट गया। हनुमान ने सीधे युद्ध में उसको लपेटकर नीचे गिरा दिया। २३०७

मलैयिऱ्पॅरि यान्डन् मण्जिडैयिट्, टुलऱ्क्कड राधिय काल्कॉडुवेत्
तलैयिऱ्ऱिरु हिप्पहु वायन्नल्काल्, तलैहैक्कॉ डॅऱिन्दु तणिन्दनन्नाल् 2308

मलैयिल् पॅरियात्–पर्वत से भी बड़े (धूम्राक्ष) का; उटल्–शरीर को; मण् इडै–भूमि में; इट्टु–डालकर; कटल् ताविय–समुद्रतरणकारी; काल् कॉट्टु–पैरों से; उलर्–प्राण सुखाते हुए (मारते हुए); उतैत्तु–लात मारकर; पकुवाय्–फटे-से मुख से; अतल् काल्–जो अनल वमन करता था, उस; तलै–सिर को; कै कॉटु तिरुकि–हाथ से नोच लेकर; अलैयिल् ॲरिन्तु–लहरों में फेंककर; तणिन्तनन्–शान्त हुआ। २३०८

हनुमान ने पर्वत से भी बड़े धूम्राक्ष के शरीर को भूमि पर गिराकर अपने समुद्रसंतरणकारी पैरों से लात मारी। ऐसी लात मारी कि उसके प्राण निकल गये। आग निकालनेवाले उसके फटे मुख-सहित सिर को हाथों से नोच लेकर समुद्र में फेंका और अपना कोप शांत कर लिया। २३०८

मापक्कनु मङ्गद नुम्मलैवार्, तीबत्ति नॅरिन्दॅऴु शॅङ्गणिनार्
कोबत्तिनर् कॉल्ल निनैन्दडर्वार्, तूबत्ति नुयिर्प्पर् तॉडर्न्दनराल् 2309

मलैवार्–लड़नेवाले; मा पक्कनुम्–महापार्श्व और; अङ्कतनुम्–अंगद; कोपत्तिनर्–रुष्ट; तीपत्तिन् ॲरिन्तु ॲऴु–दीप-से जल उठनेवाली; चॅम् कणिनार्–लाल आँखों वाले; तूपत्तिन् उयिर्प्पर्–धूप के समान श्वास छोड़नेवाले; कॉल्ल निनैन्तु–मारना चाहकर; अटर्वार्–भिड़े और; तॉटर्न्तार्–परस्पर अनुगमन करते थे। २३०९

उधर महापार्श्व और अंगद आपस में युद्ध करते रहे। गुस्सेवर उनकी आँखें दीप के समान लाल थीं। धूप के समान लम्बे निःश्वास छोड़ते हुए एक-दूसरे को मार डालने के निर्णय के साथ एक-दूसरे का पीछा करते रहे। २३०९

ऐम्बत्तॊरु वॅङ्गणै यङ्गदऩ्मा, मॊय्म्बिऱ्पुह वुय्त्तनन् मॊय्त्तॊऴिलान्
वॅम्बिक् कळियोडु विळित्तॅऴुदिण्, कम्बक्करि युण्डै कडायॆऩवे 2310

मॊय् तॊऴिलान्–गुंथकर लड़नेवाला महापार्श्व; वॅम्पि–उत्तेजित होकर; तिण् कळियोटु–मदमस्ती के साथ; विळित्तु ॲऴु–शोर के साथ उठनेवाले; तिण् कम्पम् करि–मजबूत खम्भे से बाँधने योग्य हाथी पर; उण्टै कटाय् ॲऩवे–गुलेल फेंका गया हो जैसे; ऐम्पत्तॊरु वॅम् कणै–इक्यावन अस्त्र; अङ्कतऩ्–अंगद के; मा मॊय्म्पिल्–बड़े कन्धों पर; पुक–गड़े ऐसा; उय्त्तनन्–चलाये। २३१०

पास से लड़नेवाले महापार्श्व ने नाराज होकर मस्ती के साथ चल निकलनेवाले खूंटे से बाँधने योग्य हाथी पर गुलेलें फेंकता जैसे इक्यावन कठोर बाणों को अंगद के बड़े कंधों पर चुभाते हुए चलाया। २३१०

ऊरोडु मडुत्तॊऴि योलैयुरुङ्, गारोडु निऱक्कद नाहमताऩ्
तेरोडु मॅडुत्तुयर् तिण्गैयिनाऱ्, पारोडु मडुत्तॆऱि पण्बिडैये 2311

ऊरोट्टु–रेंगने के काम में; मट्टुत्तु–लगकर; ऑळियोनै–किरणमाली को; उरुम्–निपटानेवाले; कारोटु–मेघ-सम; निरम्–रंग के; कत नाकम् अन्नान्–क्रुद्ध नाग (राहु, केतु) के समान (अंगद); उयर्–लम्बे; तिण् कैयिताल्–मजबूत हाथों से; तेरोटुम् ऍटुत्तु–रथ के साथ उठाकर; पारोटुम् मट्टुत्तु–भूमि पर पटककर; ऍऱि पण्पु इटैये–जब फेंका उस स्थिति में। २३११

रेंगते हुए सूर्य के पास जानेवाले मेघ के-से रंग से युक्त और क्रोध से भरे (राहु-केतु) सर्पों के समान अंगद ने अपने बड़े और कठोर हाथों से रथ के साथ उसे उठा लेकर भूमि पर जब पटका— । २३११

विल्लैच्चॅल वीशि विळुन्दळियुन्, ऍल्लिऱ्पॉलि तेरिडै निन्ऱिऴियाच्
चॉल्लिऱ्पिऴै यादवोर् शूलमवन्, मल्लिऱ्पॉलि मार्बिन् वऴङ्गिनन्नाल् 2312

विल्लै–धनु को; चॅल वीचि–दूर जाए, ऐसा फेंककर; ऍल्लिल् पॉलि–सूर्य के समान प्रकाशमय; विळुन्दु अळियुम्–गिरकर नष्ट होनेवाले; तेर् इटै निन्ऱु–रथ में से; इऴिया–कूदकर; चॉल्लिल्–(साधु के) शब्दों के समान; पिऴैयातत्तु–अचूक; ओर् चूलन्–एक शूल को; अवन्–उसके; मल्लिल् पॉलि–मल्लयुद्धाभ्यस्त; मार्पिन् वऴङ्कित्तन्–छाती पर फेंका। २३१२

तब महापार्श्व ने अपना धनु फेंक दिया। फिर टूटकर गिरनेवाले मिटते हुए रथ से नीचे उतरा। उसने मुनि-शाप के समान अचूक एक शूल को लेकर उसके (अंगद के) मल्लयुद्ध में बल दिखानेवाले वक्ष पर फेंका। २३१२

शूलम्मॅन्ऱि नन्ऱिदु तॊल्लैवरम्, कालम्मॅन वुन्नु करुत्तिननाय्
आलम्मुडै यानदु नामऱवोर्, आलम्मुडै यम्बि नऱुत्तननाल् 2313

आलम् उडैयान्–भुवनपति श्रीराम ने; इतु चूलम् ऍन्ऱिन्–यह शूल कहें तो; अन्ऱु–नहीं; तॊल्लै वरम् कालन्–अनादिकाल का नाशक पाश है; ऍन–ऐसा; उन्नुम् करुत्तिननाय्–सोचनेवाले चित्त के साथ; अतु–उसका; नाम् अऱ–नाम तक मिटाते हुए; ओर् आलम् उडै–एक विषाक्त; अम्पिन्–बाण से; अऱुत्तनन्–काट दिया। २३१३

लोकनाथ श्रीराम ने उसको देखकर सोचा— यह शूल तो नहीं है, यह प्राचीन कालपाश का रूप है। उन्होंने एक विषाक्त बाण से उसको काट दिया। २३१३

उळन्दा निनैयामुन् उलगुऴुवाय्, किळरन्दान् पिरण्ड किळुत्तुणैयाय्
पिळन्दा नुलहेऴिनॊ डॊडुपॆयरन्, वळन्दान् वलि नन्ऱॆन अङ्गदनुम् 2314

उलकु एऴिनॊटु एऴु–चौदहों भुवनों को; पॆयर्न्तु–चलकर; अळन्तान्–जिन्होंने नापा, उनका; वलि नन्ऱु–बल भी अच्छा है; ऍन–कहकर; अङ्कतन्–अंगद ने; उळम् निनैयात मुन्–मन में सोचे इसके पहले ही; उयत्तु–शूल चलाकर;

उकवा किळरन्तानै–इतरानेवाले महापार्श्व को; तुणं किळिया–दो भागों में; पिळन्तान्–चीर दिया। २३१४

"चौदह-भुवन-मापक राम का बल बड़ा सुन्दर है" —ऐसा कहकर, अंगद ने कुछ सोचने के समय के अन्दर ही, शूल फेंककर आनन्द मनानेवाले महापार्श्व को दो भागों में चीर दिया। २३१४

मामालियु नीलनुम् वानवर्तङ्, गोमानोडु दानवर् कोनिहले
आमाऱु मलैन्दनर् ऎन्ऱिमैयोर्, पूमारि पॊळिन्दु पुहळ्न्दनराल् 2315

मा मालियुम्–मान्य माली और; नीलनुम्–नील; वानवर् तन् कोमानोडु–सुरेन्द्र से; तानवर् कोन्–दानवेन्द्र के; इकले आर्–युद्ध ही सम; आम् आऱु–लगे ऐसा; मलैन्तनर्–लड़ते हैं; ऎन्ऱु–ऐसा (कहकर) इमैयोर्–देवों ने; पूमारि पॊळिन्तु–पुष्पवर्षा करके; पुकळ्न्तनर्–तारीफ़ की। २३१५

उधर महा माली और नील, देवेंद्र और दानवेंद्र दोनों जिसमें भिड़ते हों, ऐसे युद्ध के समान लड़ते हैं। ऐसा कहकर देवों ने पुष्प-वारिश करके प्रशंसा की। २३१५

कल्लॊन्ऱु कडाविय कालैयवन्, विल्लॊन्ऱिरु कूऱु विळैत्तिडलुम्
मल्लॊन्ऱिय तोळिनन् वाळिनोडुम्, निल्लॆन्ऱिडै चॆन्ऱु नॆरुक्किननाल् 2316

कल् ऒन्ऱु–गिरि एक को; कटाविय काले–(जब अंगद ने) चलाया तब; अवन्–उस माली के; विल् ऒन्ऱु–एक धनु को; इरु कूऱु विळैत्तिटलुम्–दो खण्ड करते ही; मल् ऒन्ऱिय–सबल; तोळिनन्–कन्धों वाला माली; वाळिनोटुम् वन्तु निल्–तलवार ले आओ; ऎन्ऱु–कहकर; इटै चॆन्ऱु–आड़े जाकर; नॆरुक्किनान्–युद्ध किया। २३१६

जब एक पत्थर फेंका गया, तब माली का धनु टूट गया। तब सबलस्कन्ध माली "तलवार लेकर आओ" कहकर उसके मार्ग में गया और लड़ने लगा। २३१६

अऱ्ऱत्तॊळि लॆय्दलु मक्कणनै, मऱ्ऱप्पुऱ निन्ऱवन् वन्दणुहा
कॊऱ्ऱक् कुमुदन्नॊरु कुन्ऱॆडुत्तु, ऎऱ्ऱप्पॊरु तेर्पॊडि यॆय्दियदाल् 2317

अऱ्ऱु–तब; अ तॊळिल् ऎय्तलुम्–जब वह काम हो रहा था; अ कणते–उसी क्षण; मऱ्ऱु पुऱम् निन्ऱवन्–किसी दूसरी ओर जो खड़ा रहा; कॊऱ्ऱम् कुमुतन्–विजयी कुमुद के; ऒरु कुन्ऱु कॊळा–एक पर्वत ले; वन्तु अणुका–पास आकर; ऎऱ्ऱ–पीटते; पॊरु–युद्ध योग्य; तेर्–रथ; पॊटि ऎय्तियतु–चूर हो गया। २३१७

जब यह काम चल रहा था, तब उसी क्षण में कहीं किसी ओर जो खड़ा था उस विजयी कुमुद ने एक गिरि को उठा लेकर, और पास आकर प्रहार किया तो माली का युद्ध-रथ चूर हो गया। २३१७

ताळार्मर नील नॅरिन्ददनै, वाळान् मडिवित्तु वलित्तडर्वान्
तोळाशड़ वाळि तुरन्दन्नाल्, मीळाविनै नूरुम् विडैक्किळैयान् 2318

नीलन् ऍरिन्त–नील ने फेंके; ताळ् आर् मरम् अततै–उस स्थूल तने के तरु को; वाळात् मटिवित्तु–तलवार से नष्ट करके; वलित्तु अटर्वान्–जोर से जो लड़ा; तोळ्–(उस माली के) कन्धों के; आचु अड़–जोड़ टूट जाएँ ऐसा; मीळा विनै नूरुम्–अवार्य कर्म के नाशक; विटैक्कु इळैयान्–ऋषभ (श्रीराम) के छोटे भाई ने; वाळि तुरन्ततन्–बाण चलाये। २३१८

नील ने एक वृक्ष फेंका। माली उसको तलवार से काटकर युद्ध करने लगा। तब अवार्य कर्म-नाशक श्रीराम के छोटे भाई ने उस माली के कंधों पर ऐसा शर चलाया कि उसके संधि-वन्द टूट गये। २३१८

मिन्बोन्मिळिर् वाळोडु तोळ्विळ्वुम्, तन्बोर् तविराद वनैच्चलिया
ऍन्बोलियर् पोरॅन्ति नन्ऱिदुवोर्, पुन्बोरॅन निन्ऱयल् पोयिनन्नाल् 2319

मिन् पोल्–बिजली के समान; मिळिर्–चमकनेवाले; वाळोटु–तलवार के साथ; तोळ् विळ्वुम्–भुजा के गिरते ही; तन् पोर् तविरा तवनै–जिसने अपना युद्ध नहीं रोका, उससे; ऍन् पोलियर्–मेरे जैसों का; पोर् ऍन्निन्–योग्य युद्ध कहो तो; अन्ऱु–नहीं; इतु ओर् पुल् पोर–यह एक क्षुद्र युद्ध है; ऍन–कहकर; चलिया–ऊबकर; निन्ऱु–वहाँ से; अयल् पोयिनन्–अलग चले गये। २३१९

बिजली के समान चमकनेवाली तलवार के साथ भुजा कटकर गिरी। तब भी माली लड़ रहा था। लक्ष्मण ने उससे कहा कि यह मुझ-जैसे लोगों के योग्य युद्ध नहीं। यह तुच्छ युद्ध है। फिर वे ऊबकर अन्यत्र चले गये। २३१९

नीर्वीरै यन्नानॅविर् नेर्वरलुम्, पेर्वीरनै वाशि पिडित्तवनै
यार्वीरदै यित्तन्शॅय् दार्हळॅनाप्, पोर्वीर रुवन्दु पुहळ्न्दन्नराल् 2320

नीर् वीर् अतान्–जलपूर्ण समुद्र-सदृश श्रीराम के; नेर् वरलुम्–सामने आने पर; पोर् वीरर्–सेना के वीरों ने; पेर् वीरनै–बड़े वीर को; वाचि पिटित्तवनै–बाण रखनेवाले (लक्ष्मण के सम्बन्ध में); यार्–किसने; इन्न वीरतै चॅय्तार्कळ्–यह वीरता की है; ऍन–ऐसा कहकर; उवन्तु–खुश होकर; पुकळ्न्ततर्–तारीफ़ की। २३२०

जलपूर्ण समुद्र के रंग के श्रीराम के सामने जब लक्ष्मण आये, तब योद्धा वीरों ने बाणहस्त बड़े वीर लक्ष्मण की प्रशंसा की कि किसने ऐसी वीरता (धर्मसम्मत लड़ाई) की है ?। २३२०

वेळ्विप् पहैयोडु वॅहुण्डडरुन्, दोळ्वित्तह नड्गोर् शुडर्क्कणैयाल्
वाळ्वित्तनै यन्नरवन् मार्वहलम्, पोळ्वित्तन नारुयिर् पोयिनन्नाल् 2321

वेळ्वि पकैयोटु–यज्ञशत्रु (यज्ञहा) से; वॅकुण्टु अटरुम्–रोष के साथ जो लड़ रहे थे; तोळ् वित्तकल्–भुजबल पराक्रमी; वाळ्वित्तसै–जिला दिया; ॲन्ऱु–कहकर; अङ्कु–वहाँ; ओर्–एक; चुटर् कणैयाल्–ज्वलंत शर से; अवन् मार्पु अकलम्–उसके वक्ष के विस्तार को; पोळ्वित्तान्–फाड़ दिया; आर् उयिर् पोयित्तु–उसने अपने प्यारे प्राण छोड़ दिये। २३२१

यज्ञशत्रु (यज्ञहा) से वैर के साथ लड़नेवाले भुजबल पराक्रमी लक्ष्मण ने यह कहते हुए कि "जिला दिया", एक ज्वलंत बाण से उसकी बड़ी छाती को फाड़ दिया और वह मर गया। २३२१

मल्लर्ऱड मार्बन् वडिक्कणैयाल्, ॲल्लुर्ऱुयर् वेळ्वि यिरुम्बहैजन्
विल्लर्ऱदु तोळोडु मेलिमिरुम्; कल्लर्ऱ कळुत्तोडु कालहळोडुम् 2322

मल्लल् तट मार्पन्–पुष्ट-विशाल-वक्ष लक्ष्मण के; वटि कणैयाल्–तीक्ष्ण शर से; ॲल् उर्ऱु–प्रकाशपूर्ण; उयर्–जलनेवाले; वेळ्वि–यज्ञ के; इरु पकैजन्–बड़े शत्रु का; विल् अर्ऱतु–धनु टूटा; तोळोटु–कन्धों के साथ; कळुत्तोटु काल्-कळोटुम्–गले और पैरों के साथ; मेल् निमिरुम्–ऊपर से (उसके द्वारा फेंके जाकर यज्ञों पर आनेवाले); कल् अर्ऱ–पत्थर भी नहीं हो गये (वही न रहा तो यज्ञनाशक पत्थर फेंके कौन)। २३२२

सबल-विशाल-वक्ष लक्ष्मण के बाण से प्रकाशमय अग्निकर्म, यज्ञ के शत्रु का धनु टूटा, कंधे कटे, गला और पैर इनके साथ यज्ञों में जो वह पत्थर फेंकता था वे भी रिक्त हो गये। (आगे यज्ञ में पत्थर नहीं गिरेंगे।)। २३२२

तन्दादैयै मुन्बु तडुत्तोरुनाळ्, वॅन्ऱानै विलङ्गलिन् मेनियनैप्
पिन्ऱाद वलत्तुयर् पॅर्ऱियनैक्, कॉन्ऱान् कवियिन्कुल माळुडैयान् 2323

तन् तातैयै–उसके पिता को; मुन्पु ओरु नाळ्–पहले एक दिन; तटुत्तु वॅन्ऱानै–जिसने रोककर हराया था; विलङ्कलिन्–जो पत्थर-से; मेनियनै–आकार का था; पिन्ऱात–जो कभी पीछे न हटता; वलत्तु उयर्–उस बल में बड़े; पॅर्ऱियनै–स्वभाव वाला था, उस भानुकोप को; कवियिन् कुलम् आळुटैयान्–कपि-कुलाधिपति (सुग्रीव) ने; कॉन्ऱान्–मार दिया। २३२३

उधर कपिकुलाधिप सुग्रीव ने उस सूर्यशत्रु भानुकोप को मार दिया; जिसने उसके पिता को कभी रोककर हराया था, जिसका शरीर पर्वत के समान था और जो दुर्धर्ष बलवान था। २३२३

इडबन्ऱनि वॅञ्जम मुर्ऱॅदिरुम्, विडवॅङ्ग णॅयिर्ऱवन् विण्णदिरक्
कडवुङ्गदळ् तेर्कड वाळितॉडुम्, पडवङ्गोरु कुन्ऱु पडर्त्तिननाल् 2324

इटपन्–ऋषभ ने; तनि–अनुपम; वॅम् चमम् उर्ऱु–घोर युद्ध में लगकर; ॲतिरुम्–सामना करनेवाला; विटम् वॅम् कण्–विषाक्त क्रूर आँखों वाला; ॲयिर्ऱवन्–

जो था, उस वज्रदंष्ट्र के; विण् अतिर–आकाश थर्रा उठे ऐसा; कटवुम्–चलाया जानेवाला; कतळ् तेर्–वेगवान रथ; कटवु आळिलोटुम्–जो चला रहा था, उस सारथी के साथ; पट–मारते हुए; ओरु कुन्ऱु–एक गिरि को; पटर्त्तिनन्–चलाया। २३२४

ऋषभ ने विषनेत्र वज्रदंष्ट्र पर, बहुत कठोर लड़ाई में, एक पर्वत लेकर फेंका, ताकि आकाश को कँपाते हुए चलनेवाला रथ, और उसका चलानेवाला सारथी मिट जाएँ। २३२४

तिण्डेरळि यच्चिलै विट्टोरुतन्, तण्डोडु मिऴिन्दु तलत्तिनताय्
उण्डोवुयि रेन्न उरुत्तुरुमो, डेण्डोळनु मुट्किड वेऱ्ऱिननाल् 2325

तिण् तेर् अळिय–मजबूत रथ के नष्ट होने पर; चिलै विट्टु–धनु को फेंककर (उसने) ओरु–एक; तन् तण्टोटुम्–अपनी गदा के साथ; इऴिन्तु–(रथ से) नीचे आकर; तलत्तिनताय्–भूमि पर का होकर; उरुमोटु–वज्रसम; एण् तोळनुम्–आठ कन्धों वाले (रुद्र-मूर्ति) को; उट्किट–भयभीत करते हुए; उरुत्तु–गुस्सा करके; उयिर् उण्टो–प्राण बचे हैं क्या; एन्न–ऐसी शंका पैदा करके; एऱ्ऱिनन्–प्रहार किया। २३२५

सबल रथ के नष्ट होते ही वज्रदंष्ट्र धनु को फेंककर एक श्रेष्ठ गदा के साथ नीचे उतर आया और ऐसा प्रहार किया कि वज्र और अष्टभुज शिव डर जाएँ और लोग यह डर खाएँ कि ऋषभ जीवित होगा क्या? । २३२५

अडियुण्डव नावि युलैन्दयर, इडियुण्ड मलैक्कुव डिऱ्ऱुपोल्
मुडियुमॅन्न् ऍल्लैयिन् मुन्दिनाल्, नॅडियन्कुऱि यन्नॅनु नोऱ्मैयिनान् 2326

अटि उण्टवन्–पिटकर; आवि उलैन्तु अयर–प्राणविह्वल होकर निर्बल हुआ; इटि उण्ट मलै–वज्राहत पर्वत के; कुवटु इऱ्ऱु पोल्–शिखर टूट गिरे जैसे; मुटियुम्–मिट जायगा; ऍन्नुम् ऍल्लैयिन्–ऐसी स्थिति में; नॅटियन् कुऱियन्–लम्बा भी, नाटा भी; ऍन्नुम् नोऱ्मैयिनान्–ऐसा रहनेवाला (हनुमान); मुन्तिनान्–आगे आया। २३२६

प्रहार पाकर जब ऋषभ क्षुब्ध-प्राण होकर इस स्थिति में रहा कि वज्राहत पर्वत-शिखर के समान यह मिट जाएगा, तब नाटा भी और लम्बा भी रहनेवाला हनुमान सामने आया। २३२६

किडॆत्तानिहन् मारुदि यैक्किळर्वान्, अडॆत्तानॆन मीदुय राक्कैयिनॆप्
पडॆत्तानॆ नॆडुम्बुहऴ् पॆङ्गळलान्, पुडॆत्तानवन् मार्बु पॊडिच्चिदऱ 2327

किटॆत्तान्–जो आ मिला; किळर् वान् अटॆत्तान् ऍन्न–उज्ज्वल आकाश को ढकता-सा; मीतु उयर्–लम्बे; आक्कैयिनॆ पटॆत्तानॆ–शरीरधारी; इकल् मारुति–उस युद्धदक्ष मारुति को; नॆटु पुकऴ्–बड़े यशस्वी; पॆम् कऴलान्–स्वर्ण-पायलधारी ने; अवन् मार्पु–उसकी छाती; पॊटि चितऱ–चूर हो जाए ऐसा; पुटॆत्तान्–पीटा। २३२७

जो आया उस उज्ज्वल आकाश को ढँकनेवाले उन्नत शरीर के युद्धचतुर हनुमान को बड़े यशस्वी और स्वर्णपायलधारी वज्रदंष्ट्र ने ऐसा पीटा कि उसके वक्ष से अंगारे छूटने लगे। २३२७

ऍऱ्ऱिप्पॅयर् वानै यिडक्कैयिनाल्, पऱ्ऱिक्किळर् तण्डु परित्तॅऱिया
वॅऱ्ऱिक्किळर् कैक्कॊडु मॅय्वलिपोय्, मुऱ्ऱत्तनिक् कुत्त मुडिन्दनाल् 2328

ऍऱ्ऱि पॅयर्वानै–पीटकर जो आ रहा था, उसे; इट कैयिताल् पऱ्ऱि–बाएँ हाथ से पकड़कर; किळर्–युद्धोत्साही; तण्डु परित्तु ऍऱिया–दण्ड (गदा) छीनकर फेंक दिया और; वॅऱ्ऱि किळर् कै यॊडु–विजय से शोभनेवाले हाथ से; मॅय् वलि पोय्–सारा शरीर बल जाकर; मुऱ्ऱ–एक स्थान पर से काम करे ऐसा; तनि कुत्तु कुत्त–एक अपूर्व घूँसा मारा तो; मुडिन्तनन्–(वह राक्षस वज्रदंष्ट्र) मर गया। २३२८

पीटकर जानेवाले उसको हनुमान ने अपने बायें हाथ से पकड़ लिया, युद्ध में उत्साह दिलानेवाली गदा को छीनकर फेंक दिया और विजयोत्साही अपने हाथ से सारा बल लगाकर एक अपूर्व घूँसा मारा तो वज्रदंष्ट्र हत हो गया। २३२८

कात्तोर्मरम् वीशुरु कैक्कदळुवन्, पोल्तोर्पुलि पोर्पन शत्पुरळक्
कोत्तोड नॅडुङ्गुरु दिप्पुनल्तिण्, मात्तोमर मार्विल् वळङ्गिननाल् 2329

कात्तु–अपनी रक्षा करते हुए; ओर् मरम् वीचुरु–एक तरु को फेंकने की; कै कतळ्–हस्तगति वाले; ओर् वल् पुलि पोत्तु पोल–एक मजबूत बाघ के समान; पतचन्–पनस; पुरळ–लोट जाए ऐसा; नॅडु कुरुति पुनल्–बहुत रुधिर-प्रवाह; कोत्तु ओट–मिलकर बहे ऐसा; तिण्–कठोर; मा तोमरम्–बड़ा तोमर; मार्पिन् वळङ्कितन्–(पनस की) छाती पर फेंका। २३२६

उधर पिशाच ने एक तोमर लेकर, अपनी रक्षा करते हुए उछालनेवाले बलवान बाघ के समान पनस की छाती पर फेंका, तो पनस गिरकर लोटने लगा और अधिक रक्त प्रवहित हुआ। २३२९

कार्मेलित्त नोकटन् मेलिततो, पार्मेलित नोपहन् मेलिततो
यार्मेलित नोजित्त वॅन्ऱद्रियोम्, पोर्मेलितन् वाशियॅन्तुम् जॊरियान् 2330

पोर् मेलितन्–युद्ध चाहकर जो आया था; वाचि ॲन्तुम् पॊऱियात्–अश्व-यन्त्र वाला (वह पिशाच); कार् मेलिततो–मेघ पर सवार है; कटल् मेलिततो–या समुद्र पर है; पकल् मेलिततो–सूर्य पर सवार है या; पार् मेलिततो–भूमि पर रहता है या; यार् मेलिततो–किस पर ही सवार है; इत–कौन सा; ॲन्ऱु अऱियोम्–यह हम नहीं जानते। २३३०

पिशाच युद्धोत्साही था और अश्व-यंत्र पर आरूढ़ था। तब वह मेघ पर रहा या समुद्र पर? सूर्य पर रहा या भूमि पर? यह किस पर रहा? —हम (कवि) यह न जान सके। २३३०

नूऱायिर कोडिकों लन्ऱुकौलॅन्, ऱाऱायिर वानव रुम्मऱिविल्
तेऱावहै नीन्ऱु तिरिन्दुळदाऱ्, पाऱाडु कळत्तोरु पाय्परिये 2331

आऱायिरम् वानवर्–छः हज़ार देव; नूऱायिरम् कोटि कौल्–सौ करोड़ सहस्र (अश्व) हैं क्या; अन्ऱु कौल्–या न; ऍन्ऱु–ऐसा; अऱिविल् तेऱा वकै–निश्चित रूप से नहीं समझें ऐसा; पाऱु आडु कळत्तु–बाज जिस पर मँड़राते हैं, उस युद्ध के मैदान में; ओरु पाय् परि–एक झपटनेवाला अश्व (-यन्त्र); तिरिन्तुळतु–घूमता था। २३३१

छः हज़ार देव नहीं जान सके कि क्या सौ हज़ार करोड़ घोड़े घूमते हैं ? नहीं न ? वे नहीं जान सकें, ऐसा उसका अश्वयंत्र उस युद्ध के मैदान में घूमता था, जिस पर बाज़ मँड़राते रहे। २३३१

कण्णिऱ्कडु हुम्मन तिऱ्कडुहुम्, विण्णिऱ्पडर् कालिऱ् मिहक्कडुहुम्
उण्णिऱ्कु मॅन्निऱ्पुऱ निऱ्कुमुलाय्, मण्णिऱ्ऱिरि याद वयप्परिये 2332

मण्णिल् तिरियात–भूमि पर जो नहीं चलता था; वयम् परि–वह (पिशाच का) अश्व; कण्णिन् कटुकुम्–दृष्टि की गति से भी तेज जाता; मनत्तिन्–मन से भी; कटुकुम्–तेज जाता; विण्णिल् पटर्–आकाश में व्याप्त; कालिन् मिक कटुकुम्–पवन से भी अधिक तेज जाता; उळ् निऱ्कुम् ऍन्निल्–अन्दर रहता है, कहते ही; उलाय्–चलकर; पुऱम् निऱ्कुम्–पार जाकर खड़ा रहता। २३३२

भूमि पर न चलनेवाला वह अश्व दृष्टि, मन, आकाश-व्यापी पवन —इन सभी से अधिक तेजी से भागता था। "अंदर ही है" ऐसा सोचने के पूर्व ही वह बाहर चला जाता। २३३२

मापपुण्डर वाशियिल् वट्टणेल्, आप्पुण्डव नौत्तव नारयिलाल्
पूप्पुण्डर वावि पुऱत्तहलक्, कोप्पुण्डन वानर वॅङ्गुलुवे 2333

मा पुण्टर–बड़े बाज के समान चलनेवाले; वाचियिन् वट्टणै सेल–अश्व की द्रुतगति में; आप्पु उण्टवन् ऑत्तवन्–उससे बाँधा गया हो, ऐसा लगनेवाले पिशाच के; अवमे अयिलाल्–अपूर्व भाले से; पू–भूदेवी; पुण् तर–व्रण-सहित हो गयी और; आवि–प्राणों के; पुऱत्तु अकल–एक ओर निष्फल जाते; वॅम् वानर कुळु–क्रूर वानर-समूह; कोप्पुण्टन–ढेर हुए। ३३३३

बड़े बाज़ के समान चलनेवाले उस अश्व की गति के कारण पिशाच के, जो उस पर बँधा-सा बैठा रहा, अपूर्व भाले से भूदेवी चोट खा गयी और क्रूर वानरसमूह प्राणहीन हुए और उनके शरीरों के ढेर बन गये। २३३३

नूऱम्मिरु नूऱुम् नौडिप्पळवित्, एऱन्नुदि वेलि निरैप्पौळुदिल्
शोऱ्ङ्गवि शेनै शिदैक्कुमॅना, आऱन्निऱ् लुम्बरु मञ्जिनराल् 2334

नौटिप्पु अळविल्–चुटकी बजाने की देर के; इऱैप्पौळुतिल्–कम समय में;

नूरुम् इरु नूरुम्–सौ, सौ और दो सौ में; चीऱुम् कवि चेतै–क्रोध के साथ जानेवाली वानर-सेना को; एऱुम् नुति वेलिऩ्–तीक्ष्ण नोकदार भाले से; चितैक्कुम्–मिटा रहा है तो; अँत्ता–ऐसा; आऱुम् तिऱल्–निर्बल हुए; उम्परुम्–देव भी; अञ्चिऩर्–डरे। २३३४

चुटकी बजाने की देर के अंदर सौ-सौ और दो सौ में चलनेवाले क्रुद्ध वानर-सेना को तीक्ष्ण भाले से यह नष्ट कर रहा है। —यह देखकर निर्बल हुए देवगण भयातुर हो गये। २३३४

तोऱ्ऱमुरु वॊऩ्ऱॆऩ वेतुणियाक्, कूऱ्ऱिऩ्गॊलै यालुऴल् कॊऴ्हैयऩै
एऱ्ऱुञ्जिलै याण्मै यिलक्कुवऩ्वॆङ्, काऱ्ऱिऩ्बडै कॊण्डु कडऩ्दऩताल् 2335

तोऱ्ऱम् उरु ऑऩ्ऱु–दिखनेवाला रूप तो एक ही है; ऎंऩ तुणिया–यह निश्चय करके; कूऱ्ऱिऩ्–यम के-से; कॊलैयाल्–प्राणहरण के काम के साथ; उऴल्–घूमने वाले; कॊऴ्कैयऩै–स्वभाव के पिशाच को; एऱ्ऱुम्–डोरा चढ़ाने के; चिलै–धनु की; आण्मै–(चलाने में) वीरता के; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण ने; वॆम् काऱ्ऱिऩ् पडै कॊण्डु–नाशक वायवास्त्र से; कटऩ्तऩऩ्–हराया। २३३५

यह युद्धरत एक ही व्यक्ति है, यह निश्चय करके डोरा-चढ़े धनु वाले वीर लक्ष्मण ने मृत्यु के-से घातक काम के साथ घूमनेवाले पिशाच को भयंकर वायवास्त्र से हरा दिया। २३३५

कुलैयप्पॊरु शूल तॆंडुङ्गॊलैयुम्, उलैवुऱ्ऱिल वुय्त्तलु मोय्विलऩॊण्
डलैयऱ्ऱह वुन्दरै युऱ्ऱिलताल्, इलैयप्परि मेऱ्कॊ ळिरुक्कैयिऩात् 2336

इलैयम् परि–ताल-लय के साथ चलनेवाले अश्व के; मेऱ्कॊळ्–ऊपर रहे; इरुक्कैयिऩाऩ्–आसनस्थ पिशाच; ऑळ् तलै अऱ्ऱु–प्रकाशमान सिर के कटकर; उकवुम्–गिरने पर भी; कुलैय–प्राण निकालते हुए; पॊरु चूलत्–लड़नेवाला शूलपाणी होकर; नॆडु कॊलैयुम्–अधिक मारने से; उलैवु उऱ्ऱिलत्–नहीं चूका; उय्त्तलुम्–अश्व चलाने से भी; ओय्विलत्–नहीं रुका; तरैयुऱ्ऱिलत्–भूमि पर भी नहीं गिरा। २३३६

ताललय के साथ चरण रखकर चलनेवाले घोड़े पर जो आसीन रहा वह पिशाच उसके प्रकाशमय सिर के कटकर नीचे गिरने के बाद भी शूल लेकर लड़ने, मारने और घोड़ा चलाने से विरत नहीं हुआ; न नीचे ही गिरा। २३३६

इऩ्ऱूदिय मुण्डॆऩ विऩ्ऩहैयाऱ्, शॆऩ्ऱूदिऩ तुम्बिहळ् तॆऩ्ऱिशैयात्
वऩ्ऱूदरु मॆय्दिऩर् वञ्जऩैयाऩ्, तऩ्ऱूदरु मॆय्दिऩर् मऩ्ऩहर्वाय् 2337

इऩ् नकै पाल्–मधुर दाँतों वाली सीता के पास; इऩ्ऱु–आज; ऊतियम् उण्टु–लाभ है; ऎंऩ–ऐसा कहने; तुम्पिकळ् चॆऩ्ऱु–भ्रमरों ने जाकर; ऊतिऩ–गुंजार की; तॆऩ् तिचैयाऩ्–दक्षिण दिग्पाल के; वल् तूतरुम्–सुदृढ़ दूत भी; तम् नकर्

वाय्–अपने नगर; ऍय्तिनर्–गये; वञ्चत्तैयान् तन्–वंचक रावण के; तूतरुम्–दूत भी; तम् नकर् वाय्–अपने नगर; ऍय्तिनर्–पहुँचे। २३३७

भ्रमरों ने मधुर दाँतों वाली सीता के पास जाकर अपनी गुंजार द्वारा यह समाचार दिया कि आज आपका लाभ हुआ है। दक्षिणदिग्पाल यम के बलवान दूत भी अपने नगर चले। वंचक रावण के दूत भी अपने नगर चले। २३३७

एहित्तनि मन्नन् इरुन्दुऴिपुक्, कोहैप्पोरु ळिन्ड्रॅन वुळ्ळऴिया
वेहत्तडल् वीरर् विळिन्दवॅलाम्, जोहत्तॊ डिरैञ्जिनर् शॊल्लिनराल् 2338

एकि–जाकर; तनि मन्नन्–अप्रतिम राजा; इरुन्तुऴि पुक्कु–जहाँ रहा, वहाँ जा पहुँचकर; इरैञ्चिनर्–विनय करके; ओकैप् पॊरुळ् इन्ऱु–सन्तोष-समाचार नहीं; ऍन–ऐसा; उळ् अऴिया–मन मारकर; वेकत्तु–वेगवान; अटल्–बलवान; वीरर्–वीरों ने; विळिन्त ऍलाम्–बीती सब; चोकत्तोटु–शोक के साथ; चॊल्लिनर्–बतायीं। २३३८

रावण के दूत जाकर वहाँ पहुँचे जहाँ उनका श्रेष्ठ राजा बैठा था। उनके मन में यह दुःख था कि सुनाने के लिए कुछ संतोष-समाचार नहीं है। उन्होंने उसकी वंदना करके शोक के साथ वेगवान वीरों की मृत्यु की सारी कहानी बता दी। २३३८

20. महरक्कणन् वदैप् पडलम् (मकराक्ष-वध पटल)

शॊन्नारवर् शॊर्सॅवि पाऱ्ऱॊऱुलोन्, इन्नाद मनत्ति निलङ्गै यर्कोन्
वॅन्नाह मुयिर्प्पिनन् विम्मिननाल्, अन्नानिलै कण्डय निन्ड्रवान् 2339

चॊन्नार् अवर्–कहनेवालों का; चॊल्–कथन; चॅवि पाल् तॊटर्वोन्–जिसके कानों में पड़ा; इलङ्कैयर्कोन्–लंका का राजा; इन्नात मनत्तिन्–दुःखीमन हो; वॅम् नाकम् उयिर्प्पिनन्–भयंकर सर्प के समान निःश्वास छोड़ते हुए; विम्मिनन्–रोया; अन्नान् निलै कण्टु–उसकी स्थिति देखकर; अयल् निन्ऱु–पास स्थित हो; अऱैवान्–मकराक्ष बोला। २३३९

उनका कहा जब कानों में पड़ा, तब रावण दुखते मन के साथ सर्प के समान फूत्कार छोड़ते हुए सिसकने लगा। उसकी स्थिति देखकर मकराक्ष पास आकर बोला। २३३९

मुन्देॅन तादैयै मॊय्यमर्वाय्, अन्दो वुयिरुण्डव नारुयिर्मेल्
उन्दा यॅनैयादु मुणर्न्दिलैयो, ऍन्वायॊरु नीयिडर् कूरुदियो 2340

मुन्ते–पहले ही; ऍन तातैयै–मेरे पिता को; मॊय् अमर्वाय्–सेना-बहुल युद्ध में; अन्तो–हाय; उयिर् उण्टवन्–मारनेवाले; आरुयिर् मेल्–(राम के) प्राणों पर; उन्ताय्–(आपने मुझे) नहीं भेजा; ऍनै–मुझे; यातुम् उणर्न्तिलैयो–कुछ

नहीं समझे क्या; ऑरु नी–अप्रतिम आप; इटर् कूरतियो–दुःखने अर्ह हैं क्या; ऍन्ताय्–मेरे पिता (-तुल्य)। २३४०

हाय ! मेरे पिताजी ! पहले ही जिसने मेरे पिता (खर) को युद्ध में सेनाओं के साथ मारा था, उसके प्राणों को हरने के लिए आपने मुझे अब तक नहीं भेजा। आप मुझे कुछ नहीं समझते क्या ? क्या अनुपम आप दुःख करने अर्ह हैं ? । २३४०

यानेॅल वॆण्णुव तॆय्दवण्, डान्नेर्वदु तीदॆन्नवे तणिवेन्
वानेनिल नॆमुदल् मर्रुम्ॆलाम्, कोनेॅयेॅन् वॆल्वदोर् कॊळ्हैयदो 2341

यान्–मैं स्वयं; अवण्–वहाँ; चॆल ऍण्णुवत्–जाना सोचता; तान् ऍय्त–स्वयं जाने का; नेर्वतु–सम्मत होना; तीतु–बुरा है; ऍन्ऱे–यह सोचकर ही; तणिवेन्–विचार रोक देता; कोने–राजा; वान्–आकाश; निलन् मुतल्–भूमि से लेकर; मर्रुम् ऍलाम्–अन्य सभी; ऍन् वॆल्वतु ऑरु कॊळ्कैयतो–मुझे जीतने के सामर्थ्यवान् हैं क्या। २३४१

मैं ही वहाँ जाने का विचार करता पर अपनी ओर से प्रार्थना करना ठीक नहीं लगा, इसलिए आतुरता को शांत किये रहा। हे राजा ! आकाश भूमि आदि और अन्य सभी मुझे जीतने की शक्ति रखते हैं क्या ? । २३४१

अरुन्दुयर्क् कडलु ळाऴु मम्मनै यऴुद कण्णळ्
पॆरुन्दिरुक् कऴित्तल लाऱ्ऱाळ् कणवनैक् कॊन्ऱ पेर्न्दोन्
करुन्दलैक् कलत्ति नल्लाऱ् कडनदु कऴिये नॆन्ऱाळ्
परुन्दिलुक् किनिय वेला यिन्नरुळ् पणित्ति यॆन्ऱान् 2342

ऍन् अम्मनै–मेरी माता; अऴुत कण्णळ्–रोती आँखों वाली; अरु तुयर् कटलुळ्–असह्य दुःख-सागर में; आऴुम्–मग्न है; कणवनै कॊन्ऱ पेर्न्तोन्–पति को जो मार गया; करु तलै कलत्तिन् अल्लाल्–उसके काले सिर रूपी पात्र के सिवा; कटन् अतु कऴियेन्–जल-तर्पण-क्रिया पूरा नहीं करूँगी; ऍन्ऱाळ्–कहती हुई; पॆरु तिरु–उत्कृष्ट मंगलसूत्र; कऴित्तल् आऱ्ऱाळ्–उतार नहीं सकती; परुन्तिलुक्कु इनिय वेलाय्–बाजों के प्रिय भालाधारी; इन् अरुळ् पणित्ति–मधुर कृपा की आज्ञा दीजिए; ऍन्ऱान्–कहा (मकराक्ष ने)। २३४२

मेरी माँ रोती आँखों के साथ दुःखमग्न हैं। वह कहती हैं कि मेरे पति के घातक के काले सिर रूपी पात्र के सिवा किसी से जल लेकर मृतक का तर्पण नहीं करूँगी। इसलिए उसने अपना श्रीमांगल्य भी नहीं उतारा है। हे बाजों के सुखकारी भालाधारी ! मुझे अच्छी कृपा के साथ आज्ञा दें। मकराक्ष ने यह विनती की। २३४२

अन्नवुरै नहरक् कण्ण नरॆदलु मरक्क नैय
ऑॆवविद ओरि शॆनरुन पळमुवहै तोर्त्ति यॆन्ऱान्

वॆव्वऴि यवनुम् वॆट्र विडैयिनन् ऱेऱ्मेऱ् कॊण्डान्
वव्विय विल्लन् पोनान् अमर्पॆऱ्ऱु वळर्न्द तोळान् 2343

अव् उरै–वह कथन; मकरक् कण्णन् अरैतलुम्–मकराक्ष के कहने पर; अरक्कन्–राक्षसराज; ऐय–तात; चॆव्वितु–अच्छा है; सेरि–चलो; चॆन्ऱु–जाकर; उन् पऴम् पकै–अपना पुराना वैर; तीर्त्ति–मिटा लो; ऎन्ऱान्–बोला; वॆम् वऴि अवनुम्–बुरा मार्गगामी वह भी; पॆट्र विडैयिनन्–विदा लेकर; अमर् पॆऱ्ऱु–युद्ध प्राप्त करके; वळर्न्त तोळान्–प्रवृद्ध कन्धों वाला होकर; वव्विय विल्लन्–गृहीत धनु वाला होकर; तेर् मेल् कॊण्टान्–रथारूढ़ हो; पोनान्–गया। २३४३

मकराक्ष के वह वचन कहते ही रावण ने कहा कि तात ! अच्छी बात है। जाओ और अपना पुराना वैर साध लो ! कुमार्गी वह भी विदा लेकर धनु हाथ में लिये रथारूढ़ हो चला। उसके कंधे युद्ध पाकर फूल उठे। २३४३

तन्नुडैच् चेनै कोडि यैन्दुडन् ऱऴुवत् तानै
मन्नुडैच् चेनै वॆळ्ळम् नालैन्दु मऴैयिऱ् पॊङ्गिप्
पिन्नुडैत् ताहप् पेरि कडलपडप् पॆयर्न्द तूऴि
पॊन्नुडै पुवनत् तुच्चिक् कुच्चियुम् बुदयप् पोनान् 2344

तन्नुटै चेनै–अपनी सेना; ऐन्तु कोटि–पाँच करोड़ के; उटन् तऴुव–साथ मिले आते; तानै मन्नुटै–सेना के स्वामी राजा की; नालैन्तु वॆळ्ळम्–(चार × पाँच) बीस 'वॆळ्ळम्' के; मऴैयिल् पॊङ्कि–बारिश के समान उमँगकर; पिन् उटैत्तु आक–पीछा करते आते; पेरि कटल् पट–भेरियों के समुद्र के समान गर्जन करते; पॆयर्न्त तूऴि–उठी धूल में; पुवनत्तु पॊन् उटै उच्चिक्कु उच्चियुम्–भुवन की कली की-सी चोटी की चोटी के भी; पुतैय–छिप जाते; पोनान्–गया। २३४४

उसकी पाँच करोड़ की सेना उसके साथ गयी। सेनाओं के स्वामी राजा (रावण) की बीस 'वॆळ्ळम्' की सेना बरसात के समान उमँगते हुए पीछे चली। तब जो धूल उठी, उससे भुवन की कली के अग्र भाग की चोटी भी ढँक गयी। मकराक्ष ऐसे साज़ के साथ गया। २३४४

शोणिदक् कण्ण तोडुञ् जिङ्गलुन् दुरहत् तिण्डेर्त्
ताण्मुदऱ् कावल् पूण्डु शॆल्हॆनत् तक्क वॆन्ना
आण्मुदऱ् ऱानै योडु मनैवरुम् तॊडरप् पोनान्
नाण्मुदऱ् ऱिङ्ग ळन्नैत् तऴुविय वनैय नण्वान् 2345

चोणितम् कण्णनोटुम्–शोणिताक्ष से; चिङ्कनुम्–सिंह; तुरकम् तिण्तेर्–घोड़े जिससे जुते थे, उस रथ के; ताळ् मुतल्–पहिये के पास; कावल् पूण्टु–पहरा अपनाकर; चॆल्क ऎन–जाओ कहने पर; तक्कतु–उचित ही है; ऎन्ना–कहकर; आळ् मुतल् तानैयोटुम्–पदाति वीर आदि चतुरंगिणी सेना के साथ; अनैवरुम्–सबके; तॊटर–अनुगमन करके आते; नाळ् मुतल्–नक्षत्रों आदि के; तिङ्कळ् तन्नै–चन्द्र को;

तळुविय अतैय पण्पाल्–मिले जैसे लगाव के साथ; मकरक्कण्णन् पोनान्–मकराक्ष गया। २३४५

शोणिताक्ष और सिंह दोनों घोड़ों के जुते सबल रथ के चक्रों के आगे रक्षण-काम में लगे हुए जाएँ। यह रावण की आज्ञा हुई तो मकराक्ष 'ठीक' कहकर अपने वीरों के आगे, नक्षत्रों में चन्द्र-सदृश, गया। २३४५

पल्वॅरुम् बदाहैप् पत्ति मीमिशैत् तॊडुत्त पन्दर्
शॅल्लवॅङ् गदिरॊण् कर्रै मुर्रवुम् दॅरिया वण्णम्
तॊल्वन यानै यङ्गै विलाळिनीर्त् तुवलै तूर्रच्
चॅल्वन कविधित् शेनै यमर्त्तॊळिऴ् चिरमम् वीयन्द 2346

पल् पॅरु–विविध और बड़ी; पताकै पत्ति–पताकाओं की पंक्तियों ने; मी मिचै तॊटुत्त पन्तर्–आकाश में जो पंडाल रचा उसके द्वारा; वॅम् कतिर् ऒळि कर्रै–गरम किरणमाली की किरणों का समूह; मुर्रवुम्–पूर्णरूपेण; तॆरिया वण्णम्–न दिखे ऐसा; चॅल्ल–(वह पताकापंक्तियाँ) जाती रहीं; तॊल्–प्राचीन; वन यानै–जंगली हाथियों की; अम् कै–सुन्दर सूंड़ से निकलनेवाला; विलाळि नीर् तुवलै–लार के जल की बूंदों को; तूर्र–गिराते; चॅल्वन–जो गयी उस राक्षस-सेना (पताकाओं और गजसूंड़जलकणों) के कारण; कविधिन् चेनै–वानर-सेना; अमर् तॊळिल् चिरमम् वीयन्त–युद्धकर्म से उत्पन्न श्रांति से छूट गयी। २३४६

अनेक बड़ी पताकाओं की पंक्तियों का आकाश में पंडाल-सा बन गया। इसलिए किरणमाली की गरम किरणें आँखों में नहीं पड़ती थीं। और जंगली हाथियों की सूँड़ों से जल की बूँदें निकलती थीं। (राक्षसों की सेनाओं की पताकाओं और गजों के कारण शीतलता हुई, इसलिए) वानर-सेना का युद्ध-परिश्रम दूर हुआ। २३४६

मुळङ्गिन यानै वाशि यॊलित्तन मुरशिन् पण्णै
तळङ्गिन वयव रार्त्ता रॆन्बदोर् मुरैमै तळ्ळ
वळङ्गिन पदलै यॊदै यण्डत्तित् वरम्बिन् काऱुम्
पुळुङ्गिन वुयिर्ह ळियावुङ् गाल्पुहप् पुरैयित् ऱाह 2347

मुळङ्किन यानै–हाथी चिंघाड़े; वाचि ऒलित्तन–घोड़े हिनहिनाये; मुरचिन् पण्णै–भेरियों का समूह; तळङ्किन–बज उठा; वयवर्–वीरों ने; आर्त्तार्–नर्दन किया; ऍन्पतु–ऐसा; ओर् मुरैमै तळ्ळ–एक क्रम छिप जाए ऐसा; वळङ्किन–शोर कर उठे; पतलै ओतै–'पदलै' नाम के ढोल; अण्टत्तिन् वरम्पिन् काऱुम्–अण्ड की सीमा तक; उयिर्कळ् यावुम्–सभी जीव; काल् पुक पुरै इन्रु आक–हवा के घुसने के स्थान के न होने से; पुळुङ्किन–स्वेद से भर गये। २३४७

हाथी चिंघाड़े। घोड़े हिनहिनाये। भेरियाँ ठनक उठी। वीरों ने नर्दन किया। इन सबको ढँकते हुए 'पदलै' नाम के ढोल का नाद अंड-

गोल की सीमा तक व्यापा। यह सुनकर सभी जीवराशियाँ गरमी से पसीने-पसीने हो गयीं। और हवा कुछ कर नहीं सकी। २३४७

वॆय्दिनि नुऱ्ऱ ताऩै मुऱैविडा नूऴिल् वॆम्बोर्
शॆय्दऩ शॆरुक्किच् चॆऩ्ऱु नॆरुक्किऩर् तलैवर् शेर्न्दु
कैयॊडु कैहळुऱ्ऱुक् कलन्दऩ कल्लुम् विल्लुम्
अयदऩ ऎॆऱिन्द यातै ईर्त्तऩ कोत्त शोरि 2348

वॆय्तितिल् उऱ्ऱ ताऩै–उग्रता के साथ मिली उस सेना ने; मुऱै विटा–लगातार; नूऴिल् वॆम्पोर् चॆय्तऩ–संहारक घमासान युद्ध किया; तलैवर्–सेनापति; चॆरुक्कि चॆऩ्ऱु–घमंड के साथ जाकर; चेर्न्तु–मिले और; नॆरुक्किऩर्–भिड़े; कैयॊटु कैकळ् उऱ्ऱु–हाथों से हाथ भिड़ाकर; कलन्तऩ–लड़े; कल्लुम्–पत्थर और; विल्लुम् अॆय्तऩ ऎॆऱिन्त–धनु (बाण) फेंके गये; कोत्त चोरि–बराबर बहनेवाला रक्त; यातै ईर्त्तऩ–हाथियों को खींचता ले चला। २३४८

उस प्रचण्ड सेना ने लगातार कठोर युद्ध किया, जिसमें मारकर ढेर लगाने का काम बराबर होता रहा। दोनों ओर के सेनानायक आपस में सगर्व भिड़े। हाथों से हाथ गुँथे। पत्थर और धनु (बाण) फेंके गये। लगातार रक्त बहा और वह हाथियों को भी बहाता ले चला। २३४८

वाऩर वीरर् विट्ट मलैहळै यरक्कर् वव्वि
मीऩॊडु मेहम् ज़िन्द विशैत्तऩर् मीण्डुम् वीशक्
काऩहम् इडियुण् डॆऩ्ऩक् कविक्कुलम् मडियुङ् गव्विप्
पोऩह नुहरुम् बेय्हळ् वाय्प्पुरम् बुडैप्पॊ डार्प्प 2349

वानर वीरर्–वानर वीरों; विट्ट–द्वारा फेंके गये; मलैकळै–पर्वतों को; अरक्कर्–राक्षसों ने; दव्वि–पकड़कर; मीऩॊटु मेकम् चिन्त–नक्षत्रों के साथ मेघों को चूने देते हुए; मीण्टुम्–लौटाकर; विचैत्तऩर् वीच–वेग के साथ जब फेंका तो; पोऩकम् कव्वि–भोजन के रूप में (लाशों को) ग्रस लेकर; नुकरुम्–खानेवाले; पेय्कळ्–भूतों के; वाय् पुरम्–गालों को; पुटैप्पॊटु आर्प्प–फुलाते हुए शोर मचाते; कविकुलम्–वानरगण; कातकम्–वन में; इटियुण्टु–अशनि से आहत हुए; ऎॆऩ्ऩ–जैसे; मटियुम्–मर जाते। २३४९

वानर वीरों ने जो पर्वत फेंके, उनको राक्षसों ने पकड़कर नक्षत्रों और मेघों को गिराते हुए वापस फेंका। उससे वानरगण वज्राहत हुए जैसे मरकर गिरे और शवभक्षक भूतगण (मुख में कौर के होने से) फूले हुए गालों के साथ आनंद-नाद कर उठे। २३४९

मैन्निऱ वरक्कर् वऩ्ऱै वयिरवाळ् वलियिऩ् वाङ्गि
मॆय्निऱत् तॆऱिन्दु कॊल्वर् वाऩर वीरर वीरर

कैनिरैत् तॅडुत्त कल्लु मरनॅन्दङ् गरत्तिन् वाङ्गि
मॅय्निरत् तॅरिव रॅर्रि मुरुक्कुव ररक्कर् मुन्बर् 2350

वानर वीरर्–वानर वीर; मैनिरम्–अंजनवर्ण; अरक्कर्–राक्षसों के; वन् कै–कठोर हाथों के; वयिरम् वाळ्–वज्र (कठिन) तलवार; वलियिन् वाङ्कि–बलात् लेकर; मॅय् निरत्तु–शरीर की छाती पर; ऍरिन्तु–चलाकर; कोल्वर्–मार देते; अरक्कर् मुन्पर्–अग्रगण्य वीर राक्षस; वीरर्–वानर वीरों के; कै निरैत्तु ऍटुत्त–हाथों से उठाये गये; कल्लुम् मरनुम्–पत्थरों और तरुओं को; तम् करत्तिन् वाङ्कि–अपने हाथों से छीनकर; मॅय् निरत्तु–सारयुक्त वक्ष पर; ऍरिवर्–फेंकते; ऍर्रि–ढकेलकर; मुरुक्कुवर्–नाश कर देते। २३५०

वानर वीरों ने अंजनवर्ण राक्षसों के कठोर हाथों से वज्र-करवाल को बलात् हरण कर उनकी छातियों पर चलाकर मार देते। सबल राक्षस वानर वीरों के हाथों में रहे पत्थरों और तरुओं को अपने हाथों से छीन लेकर उन्हीं वानरों की छातियों पर पीटते और उनसे टकराकर मार देते। २३५०

वण्डुला मलङ्गल् मार्बन् महरक्कण् मळैये रॅन्नत्
तिण्डिर लरक्कन् कॉर्रप् पॉर्रडञ् जिल्लित् तेरैत्
तण्डलै मरुद वैप्पिर् कङ्गैनीर् तळुवु नाट्टुक्
कॉण्डलन्मे लोट्टिच् चॅन्रान् कुरक्किनप् पडैयक् कॉन्रान् 2351

वण्टु उलाम्–जिस पर भ्रमर मँड़राते थे; अलङ्कल् मार्पन्–उस माला का धारक; मकरम् कण्–मकर की-सी आँखें; मळै एऱु ॲन्न–मेघमध्य अशनि के समान; तिण् तिरल्–बहुत बल रखनेवाला; कुरंक्कु इनम् पटैय कॊन्रान्–वानर-कुल की सेना का संहारक; अरक्कन्–राक्षस (मकराक्ष); कॉर्रम्–विजयी; पॉन्–स्वर्णनिर्मित; तट–बड़े; चिल्लि तेरै–पहियोंदार रथ को; तण्टलै मरुत वैप्पिन्–बागों से भरे 'मरुदम' प्रदेश के; कङ्कै नीर् तळुवु–गंगाजलसिंचित; नाट्टु–(कोसल) देश के; कॉण्टल् मेल्–(राजा) मेघश्याम की ओर; ओट्टि चॅन्रान्–चलाता चला। २३५१

जब ऐसा युद्ध चल रहा था, तब मकराक्ष, जिसका वक्ष भ्रमरावृत माला से अलंकृत था, जिसकी आँखें मकर की-सी थीं, जो अशनि के समान बड़ा बलवान था और जिसने वानर-सेना-समूहों का नाश किया था, अपने बड़े स्वर्णपहियों वाले रथ को मेघश्याम के आगे, जो "मरुद" प्रदेश के गंगाजल-सिंचित कोसल देश के राजा थे, चलाता हुआ गया। २३५१

इन्दिरन् पहैञ नेकॉ लॅन्बदो रच्च मॅय्दित्
तन्दिर मिरिन्दु शिन्दप् पडैप्पॅरुन् दलैवर् ताक्कि
ऑन्दिर मॅरिन्द वॅन्न वेवुण्डु पुरण्डा रॅय्दिच्
चुन्दरत् तोळि नाने नोक्किनिन् ररैय शॉन्नान् 2352

इन्तिरन् पकैअते कोल्–इन्द्र का शत्रु क्या; ऍन्पतु ओर् अच्चम्–ऐसा एक भय से; ऍय्ति–ग्रस्त होकर; तन्तिरम् इरिन्तु चिन्त–(वानर-) सेना के भाग खड़े होते; पटै पॅरु तलैवर्–सेना के बड़े नायक; ऍन्तिरम् ताक्कि–यन्त्र से ढकेला जाकर; ऍऱिन्त ऍन्न–दूर फेंके गये हों जैसे; ए उण्टु–अस्त्रों के लगने से; पुरण्टार्–लोटे; चुन्तरम् तोळिनातै–सुन्दरबाहु के; ऍय्ति–पास जाकर; नोक्कि निन्ऱु–देख, खड़े होकर; इतैय चोन्नान्–ये बातें कहीं, मकराक्ष ने। २३५२

वानर-सेना इस डर से कि शायद यह इन्द्रशत्रु (इन्द्रजित्) है, तितर-बितर होकर भाग गयी और वानर-सेनापति यंत्रों द्वारा उछाले गये जैसे बाणों से आहत होकर लोटने लगे। तब मकराक्ष ने सुन्दरबाहु श्रीराम से यों कहा। २३५२

ऍन्नुडैत् तादै तन्नै यिन्नुयि रुण्डा यॅन्ऱु
मुन्नुडैत् ताय तीय मुळुप्पहै मूवर्क् किन्ऱि
निन्निडत् ताय दन्ऱे यिन्ऱदु निमिर्व वॅन्ऱान्
पॊन्नुडैत् तादै वण्डु कुडैन्दुणुम् बॊलन्बोर् ऱारान् 2353

पोन् उटै तातै–स्वर्णचूर्ण-सम पराग को; वण्टु कुटैन्तु–(जिस पर बैठकर) भ्रमर कुरेदकर; उणुम्–खाता है; पॊलम् पोन् तारान्–बहुत सुन्दर मालाधारी ने; ऍन् उटै तातै तन्नै–मेरे पिता के; इन् उयिर् उण्टाय्–प्यारे प्राणों को खा लिया; ऍन्ऱु–इससे; मुन् उटैत्तु आय–पहले से ही रही; तीय मुळुप्पकै–बुरी और पूर्ण शत्रुता (मेरी); मूवर्क्कु इन्ऱि–(अब) त्रिदेवों से न रही; निन् इटत्तु आयतु अन्ऱे–तुमसे हो गयी न; अतु–वह; इन्ऱु निमिर्वतु–आज दिखाकर (प्रतीकार करके) सिर ऊँचा कर लूँगा; ऍन्ऱान्–बोला। २३५३

स्वर्णमय मकरंद चूर्ण को जिस माला पर बैठकर भ्रमर कुरेदकर खाते थे, उस सुन्दर माला से अलंकृत मकराक्ष ने श्रीराम से कहा कि मेरे पिता के प्यारे प्राण तुमने हर लिये थे। इसलिए मेरे मन में जो भयानक और पूर्ण वैर उठा उसके कारण त्रिदेवों के प्रति जो वैर था वह भी उनके प्रति नहीं रहा, लेकिन तुम्हारे प्रति हो गया। आज प्रतिशोध लूँगा और अपना सिर उन्नत कर लूँगा। २३५३

तीयवन् पहर्न्द माऱ्ऱम् जेवहन् ऱॆरियक् केट्टान्
नीकरन् पुदल्वन् कोल्लो नॆडुन्बहै निमिर वन्दाय्
आयदु कडने यन्ऱो वान्बिऱन् दमैन्दार्क् कैय
एयदु शोन्ना यॅन्ऱा निशैयिनुक् किशैन्द तोळान् 2354

इचैयिनुक्कु इचैन्त तोळान्–यशस्वी भुजवली; चेवकन्–और वीर ने; तीयवन्–दुष्ट का; पकर्न्त माऱ्ऱम्–कहा वचन; तॆरिय केट्टान्–सुनकर समझकर; नॆटु पकै निमिर वन्ताय्–दीर्घ शत्रुता चुकाने आगत; नी–तुम; करन् पुतल्वन् कोल्–खर के पुत्र हो; आण पिऱन्तु–पौरुषयुक्त जन्म लेकर; अमैन्तार्क्कु–जो रहते हैं

(उनका); आयतु–योग्य; कटन् अन्रो–कर्तव्य है न (बदला लेना); एयतु चोन्ताय्–बहुत ही उचित बात कही; ॲन्रान्–कहा। २३५४

यशोगान योग्य भुजबली श्रीवीरराघव ने उस दुष्ट का वचन सुनकर कहा कि हे दीर्घकाल के वैर चुकाने आगत वीर ! क्या तुम ही खर के पुत्र हो ? पुरुषोचित काम ही है न बदला लेना ? तुमने उचित ही कहा। २३५४

उरुमिडित् तॆन्न विन्ना णॊलिपडुत् तुन्नो डॆयन्द
शॆरुमुडित् तॆन्ग णिन्र शिनमुडित् तमैवॆ नॆन्राक्
करुमुडित् तमैन्द मेहङ् गाल्पिडित् तॆळुन्द कालम्
पॆरुमुडिक् किरियिऱ् पॆय्युन् दारैपोऱ् पहळि पॆय्दान् 2355

उरुम् इटित्तु अन्न–वज्रपात हुआ हो जैसे; विल् नाण् ऑलि–धनु की प्रत्यंचा का नाद; पटुत्तु–उठाकर; उन्नोटु एय्न्त–तुमसे हुए; चॆरु मुटित्तु–युद्ध पूरा करके; ॲन् कण् निन्र चिनम्–मुझमें जो है वह कोप; मुटित्तु–अन्त करके; अमैवॆन् (शांत) रहूँगा; ॲन्ना–कहकर; करु मुटित्तु अमैन्त मेकम्–जलगर्भा काला मेघ; ॲळुन्त कालम्–जब उठा तब; काल् पिटित्तु–हवा के झोंके में; पॆरुमुटि–उच्च शिखरों के; किरियिल्–गिरि पर; पॆय्युम्–जो गिराता; तारै पोल्–उन धारों के समान; पकळि पॆय्तान्–बाण चलाये। २३५५

मकराक्ष ने अशनि के समान ज्यास्वन निकाला। और कहा कि तुम्हारे साथ होने को हुए इस युद्ध को पूरा करके ही मैं अपना रोष शांत कर लूंगा। फिर उसने जलगर्भ काले मेघ-जैसे बड़े शिखरों वाले गिरि पर मोटी धाराएँ बरसाते हों वैसे अस्त्र चलाये। २३५५

अम्बुयक् कण्णन् कण्डत् तायिरम् बहळि नाट्टित्
तम्बिलन् कवश मीदे यिरट्टिच्चा यहङ्गळ् ताक्कि
वॆम्बिह लनुमन् मीदे वॆङ्गणै मारि वित्ति
उम्बर्त मुलह मुऱ्ऱुञ् जरङ्गळाय् मूडि युय्त्तान् 2356

अम्पुयम् कण्णन्–अम्बुजाक्ष के; कण्टत्तु–कण्ठ में; आयिरम् पकळि नाट्टि–सहस्र अस्त्र चलाकर; तम्पि तन्–लघुभाई (लक्ष्मण) के; कवचम् मीतु–कवच पर; इरट्टि चायकङ्कळ्–दुगुने सायक; ताक्कि–चलाकर; वॆम्पु–संतापक; इकल्–बल से युक्त; अनुमन् मीतु–हनुमान पर; वॆम् कणै मारि–क्रूर शरवर्षा; वित्ति–(बोकर) कराकर; उम्पर् तम् उलकम् मुऱ्ऱुम्–देवलोक सभी में; चरङ्कळाय् मूटि–शरों से आच्छादित करके; उय्त्तान्–चलाया। २३५६

मकराक्ष ने अंबुजाक्ष (श्रीराम) के कंठ पर हज़ार बाण चुभाये। उनके भाई के कवच पर दुगुने अस्त्र चलाये। परंतप हनुमान पर मानो अस्त्र-वर्षा ही करा दी। देवलोकों को भी आच्छादित कर दिया। २३५६

शॊरिन्दत पहळि यॆल्लाज् जुडर्क्कडुङ् गणैहळ् तूवि
अरिन्दत तहट्रि मट्रॆ याण्डहै यलङ्ग लाहत्
तॆरिन्दॊरु पहळि पाय वॆय्दत तिराम तेव
नॆरिन्दॆळु पुरुवत् तान्ट्रत् निट्रत्तुरुरु नित्ट्र दन्ट्रे 2357

चॊरिन्तत पकळि ऍल्लाम्–बरसाये गये सभी शरों को; चुटर्–ज्वलंत; कटु कणैकळ्–गरम बाण; तूवि–छितराकर; अरिन्ततन्–काटकर; अकट्रि–दूर करके; मट्रॆ–बाद; आण् तकै–योग्य वीर के; अलङ्कल् आकत्तु–मालायुक्त वक्ष पर; ऒरु पकळि–एक शर; ऍरिन्तु पाय–जलता जाकर लगे ऐसा; इरामन् ऍय्ततन्–श्रीराम ने चलाया; एव–चलाने पर; नॆरिन्तु ऍळु–कुंचित हो उठी; पुरुवत्तान् तन्–भौंहों वाले मकराक्ष के; निट्रत्तु उरुरु–वक्ष पर लगकर; नित्ट्रतु–स्थित हो गया। २३५७

श्रीराम ने उसके प्रेरित सभी अस्त्रों को ज्वलंत और संदाहक अपने शर चलाकर काटा और दूर किया। फिर नरपुंगव मकराक्ष के मालालंकृत वक्ष पर एक शर चलाया, जो जलता हुआ जाकर उसके वक्ष पर लगा। तब राक्षस की भौंहें तन गयीं। २३५७

एवुण्डु तुळक्क मॆय्दा विरत्तहप् परिदी यीन्ट्र
पूवुण्ड कण्णन् वायिर् पुहैयुण्ड दुमिळ्वान् पोल्वान्
तेवुण्ड कीर्त्ति यण्णल् तिरुवुण्ड कवशज् जेरत्
तूवुण्ड वयिर वाळि यायिरन् दूवि यार्त्तान् 2358

ए उण्टु–प्रेषित होकर; तुळक्कम् ऍय्ता–चंचल बनकर; इरत्तकम् परिति ईन्ट्र–रक्तवर्ण सूर्य के; पू उण्ट–(सूर्यकान्ति) फूल के समान; कण्णन्–आँखों के और; उण्टतु पुकै–पहले निगले धुएँ को; वायिल् उमिळ्वान् पोल्वान्–मुख से उगलता हो ऐसे मकराक्ष ने; ते उण्ट–दिव्य; कीर्त्ति–यशस्वी; अण्णल्–महिमावान श्रीराम के; तिरु उण्ट–श्रीभूषित; कवचम् चेर–कवच पर लगे ऐसा; तू उण्ट–मांसयुक्त; वयिरम् वाळि–वज्रशर; आयिरम्–हजार; तूवि–बरसाकर; आर्त्तान्–नर्दन किया। २३५८

श्रीराम के शर से मकराक्ष ने, जिसकी आँखें सूर्यकांति के फूल के समान थीं और जो पहले अन्दर लिये हुए धुएँ को वाहर उगल रहा हो, ऐसा लगता था, विचलित होकर एक हजार मांसलिप्त वाण दिव्य यशस्वी और महिमामय श्रीराम के कवच पर चलाये। चलाकर उसने नर्दन किया। २३५८

अत्तदु कण्ड वान्नो रदिशय मुट्रा राळि
मत्तनु मुरुवल् शॆय्दु वायम्बो राऱु वाङ्गिप्
पॊत्तॆडुन् दडन्देर् पूण्ड पुरवियिन् कुरङ्गळ् पोक्कि
विल्लिनडु वरुत्तुप् पाहन् तलैयॆयु निलत्तु वीऴ्त्तान् 2359

अत्तनु कण्ट–उसको देखकर; वानोर्–व्योमवासी; अतिचयम् उट्रार्–

विस्मित हुए; आऴि मत्तत्तुम्-(आज्ञा-) चक्रधर श्रीराजाराम ने भी; मुऱुवल् चॆय्तु-मुस्कुराकर; वाय् अमपु-तीक्ष्ण बाण; ओर् आऱु वाङ्कि-एक छः लेकर; पॊन्-सुन्दर; नॆटु तट-ऊँचे और विशाल रथ से जुते; पुरवियिन् कुरङ्कळ्-घोड़ों के खुरों को; पोक्कि-दूर करके; विल्-धनु को; नटु अऱुत्तु-बीच से काटकर; पाकन् तलैयैयुम्-सारथी के सिर को भी; निलत्तु वीऴ्त्तान्-ज़मीन पर गिरा दिया। २३५९

उसको देखकर देवगण विस्मित हुए। चक्रधर श्रीराम भी मुस्कुरा उठे। उन्होंने छः तेज़ बाण चलाकर बड़े रथ से जुते घोड़ों के खुरों को छेद दिया। फिर मकराक्ष के धनु को बीच से तोड़ा और सारथी के सिर को काटकर गिरा दिया। २३५९

मार्विडै निन्ऱ वाळि वायिडै वॆयिलिन् वारुञ्
जोरियन् विशुम्बि नूडो रिमैप्पिडैत् तोन्ऱा निन्ऱान्
कारुरु मेरुङ् गाऱ्ऱुङ् गनलियुङ् गडनाळ् वैयम्
पेर्वुऱु काल मॊन्नप् पॆरुक्किनन् ऱवत्तिऱ् पॆऱ्ऱान् 2360

तवत्तिल् पॆऱ्ऱान्-तपस्सिद्ध (मकराक्ष) के; मार्पिटै निन्ऱ वाळि-वक्ष में स्थित बाण के कारण; वायिटै-मुख से; वॆयिलिन-धूप के समान; वारुम् चोरियन्-बहनेवाले रक्त के साथ; ओर् इमैप्पु इटै-पल भर में; विचुम्पिन् ऊटु-आकाश में; तोन्ऱा निन्ऱान्-दिखायी दिया; कार् उऱुम् एऱुम्-मेघ की अशनि; काऱ्ऱुम्-पवन और; कनलियुम्-अग्नि को; कटै नाळ्-युगान्त में; वैयम् पेर्वुऱु कालम् ॲन्न-भूमि के अस्त-व्यस्त होते दिन के समान; पॆरुक्किनान्-अधिक परिमाण में पैदा किया। २३६०

तपस्सिद्ध मकराक्ष की छाती में लगे बाण के कारण उसके मुख से धूप के रंग का रक्त बहने लगा। तब वह एक पल में आकाश में गया और मेघमध्य अशनि, झंझा और अग्नि पैदा की, मानो भुवननाशक युगांत ही आ गया हो। २३६०

उरुमुऱै यनन्द कोडि युदिर्न्दन वूऴि नाळिन्
इरुमुऱै काऱ्ऱुच् चीऱि यॆऴुन्ददु विरिन्द वॆङ्गुम्
करुमुऱै निऱैन्द मेहङ् गाऱ्ऱन कल्लिन् मारि
पॊरुमुऱै मयङ्गिच् चुऱ्ऱु मिरियलिऱ् कविहळ् पोन 2361

अनन्त कोटि उरुम्-अनंत कोटि वज्र; मुऱै उतिर्न्तन-लगातार गिरे; ऊऴि नाळिन्-युगान्त के दिन में जैसे; मुऱै-क्रम से; इरु काऱ्ऱु-बड़ा झंझा; चीऱि ॲऴुन्ततु-फूत्कार कर उठा; ॲङ्कुम् विरिन्ततु-सर्वत्र बहा; करु मुऱै निऱैन्त मेकम्-मोटे जलकणों से भरे मेघों ने; कल्लिन् मारि-पत्थर-वर्षा; काऱ्ऱन-करायी; पॊरु मुऱै मयङ्कि-युद्धक्रम में भ्रमित होकर; चुऱ्ऱुम् इरियलिल् कविकळ्-वानर; पोन-चारों ओर तितर-बितर हो गये। २३६१

अनंत कोटि अशनियाँ धड़ाधड़ गिरीं। युगांत का-सा झंझावात

फूत्कार करते हुए निकलकर वहा। मोटे जलकणों से पूरित मेघों ने प्रस्तर-वर्षा की। वानर युद्धक्रम भूल गये और चारों ओर अस्त-व्यस्त होकर भागे। २३६१

पोयिन तिशैह ळॆङ्गुम् पुहैयॊडु नॆरुप्पुप् पोर्प्पत्
तीयिन ममैयच् चॆल्लु मायमा मारि शिन्द
आयिर कोडि मेलु मविन्दन कविह ळैयन्
मायमो वरमो वॆन्ऱान् वीडणन् वणङ्गिच् चॊल्वान् 2362

कविकळ्–वानर; **पोयिन तिचैकळ् ॲङ्कुम्**–जहाँ गये उन सभी दिशाओं में; **पुकैयॊटु**–धुएँ के साथ; **नॆरुप्पु पोर्प्प**–आग ढाँप गयी; **चॆल्लुम्**–मेघों ने भी; **ती इनम् अमैय**–अग्नि-राशि से मिलकर; **मायम् मा मारि चिन्त**–मायापूर्ण मूसलधार वर्षा की, इसलिए; **आयिरम् कोटि मेलुम्**–हजार कोटि से अधिक; **अविन्तन**–नष्ट हो गये; **ऐयन्**–प्रभु ने; **मायमो**–माया है क्या; **वरमो**–या वर का फल; **ॲन्ऱान्**–पूछा तो; **वीटणन्**–विभीषण ने; **वणङ्कि**–नमस्कार करके; **चॊल्वान्**–निवेदन किया। २३६२

जिन-जिन दिशाओं में वानर भागे, वहाँ धुएँ के साथ आग भरी रही। मेघ मायावी अग्नि-वर्षा करते रहे। इसलिए सहस्र कोटि से अधिक वानर मर गये। यह देखकर श्रीराम ने विभीषण से पूछा, क्या यह कोई माया है या राक्षस की तपस्या का फल है? विभीषण ने नमस्कार करके उत्तर दिया। २३६२

नोऱ्ऱुडैत् तवत्ति नोन्मै नोक्किनर् करुणै नोक्किक्
काऱ्ऱुडैच् चॆल्वन् ऱानु मऴैयुडैक् कडवु ळानुम्
माऱ्ऱल रीन्द दॆय्व वरत्तिनाल् वन्द दॆन्ऱान्
नूऱ्ऱिदऴ्क् कमलक् कण्ण नहर्रुवॆ नॊडियि नॆन्ऱान् 2363

काऱ्ऱुटै चॆल्वन् तानुम्–पवनदेवता और; **मऴै उटै कटवुळ् तानुम्**–वर्षा के (वरुण) देवता ने; **नोऱ्ऱु उटै**–इसके व्रतपालन के; **तवत्तिन् नोन्मै**–तप का बल; **नोक्कितर्**–विचार कर; **करुणै नोक्कि**–दयादृष्टि डालकर; **माऱ्ऱलर्**–इन्कार कर न सके, इसलिए; **ईन्त**–जो दिया; **तॆय्व वरत्तिनाल्**–दिव्य वर से; **वन्ततु**–यह हुआ है; **ॲन्ऱान्**–कहा; **नूऱु इतऴ् कमलम् कण्णन्**–शतदलकमलाक्ष ने; **नॊटियिन्**–चुटकी बजाने की देर में; **अकऱ्ऱुवॆन्**–निवार दूंगा; **ॲन्ऱान्**–कहा। २३६३

हवा के देवता वायु और वर्षा के देवता वरुण उसकी तपस्या के बल से प्रभावित होकर कुछ इन्कार नहीं कर सके। उन्होंने जो दिव्य वर दिये, उनके प्रताप से यह कार्य हुआ है। शतदल पुण्डरीकाक्ष श्रीराम ने कहा कि एक क्षण में निवार दूंगा। २३६३

कालवन् पडैयुन् दॆय्वक् कडलवन् पडैयुङ् गालक्
कोलवन् शिलैयिऱ् कोत्त कॊडुङ्गणै योडुङ् गूट्टि
मेलवन् ऱुरत्त लोडुम् विशुम्बि ऩिऩिरिन्दु वॆय्दिऩ्
मालिरुङ् गडलिऩ् वीऴ्न्दु मऱैन्दऩ मऴैयुङ् गाऱ्ऱुम् 2364

मेलवन्-सर्वश्रेष्ठ श्रीराम के; कालवन् पटैयुम्-वायवास्त्र और; तॆय्वम् कटलवन् पटैयुम्-दिव्य वरुणास्त्र को; काल-निकालते हुए; कोलम् वल् चिलैयिल्-सुन्दर कठोर धनु में; कोत्त कॊटु कणैयोटुम्-संधान किये हुए भयंकर बाणों के साथ; कूट्टि तुरत्तलोटुम्-मिलाकर छोड़ते ही; मऴैयुम् काऱ्ऱुम्-वर्षा और आँधी; विचुम्पिनिन्-आकाश से; वॆय्तिन् इऱिन्तु-शीघ्र भागकर; माल् इरु कटलिन्-बड़े काले सागर में; मऱैन्तन्-छिप गयीं। २३६४

सर्वश्रेष्ठ श्रीराम ने सुन्दर धनु झुकाकर सबल वायवास्त्र और दिव्य वरुणास्त्र संधानकर छोड़े तो वर्षा और वायु आकाश से नीचे आयीं और बड़े समुद्र के अन्दर छिप गयीं। २३६४

अत्तुणै यरक्कऩ् ऩोक्कि यन्दर वाऩ मॆल्लाम्
ऒत्तदऩ् ऩुरुवे याक्कित् ताऩ्मऱैत् तॊळित्तुच् चूलप्
पत्तिहळ् कोडि कोडि परप्पिऩ ऩदऩैप् पार्त्त
वित्तह ऩॊरुवऩ् शॆय्द विऩैयमॆऩ् ऩॆऩ्ऱु शॊऩ्ऩाऩ् 2365

अत्तुणै-उस हाल को; नोक्कि-देखकर; अरक्कन्-मकराक्ष (राक्षस); अन्तर वानम् ऎल्लाम्-अन्तरिक्ष भर में; ऒत्त तन् उरुवे आक्कि-समान रूप से अपने रूप बनाकर; तान् मऱैन्तु ऒळित्तु-(उनमें) स्वयं छिपकर; चूलम् पत्तिकळ्-शूलों की पंक्तियां; कोटि कोटि-करोड़ों की; परप्पिनन्-फैलायीं; अतनै पार्त्त-उसको देखकर; वित्तकन्-महाज्ञानी ने; ऒरुवन् चॆय्त विनैयम्-एक की की हुई करामात; ऎन्-कैसी; ऎन्ऱु-ऐसा; चॊन्नान्-कहा। २३६५

मकराक्ष ने वह हाल देखा तो आकाश भर को अपने ही-से रूपों से भर दिया। फिर उसने छिपा रहकर करोड़ों शूलों को पंक्तियों में चला रखा। उसको देखकर श्रेष्ठ विद्वान् श्रीराम ने उद्गार निकाला कि "हा ! एक ही (राक्षस) ने क्या ही करामात की है"। २३६५

मायत्ताल् वहुत्ता ऩियाण्डुम् वरम्बिला वुरुवत् ताऩॆऩ्
तेयत्ता ऩॆऩ्ऩा वण्णङ् गरन्दऩऩ् ऱॆरिन्दि लावाऩ्
कायत्ता लिऩैय ऩॆऩ्ऱु निऩैयलाङ् गरुत्त ऩल्लऩ्
तीयॊत्ताऩ् ऱिऱत्ति ऩॆऩ्ऩै शॆयलॆऩच् चिऩ्दै नॊन्दाऩ् 2366

मायत्ताल्-माया से; वरम्पिला उरुवत्तान्-बेशुमार रूपों को; याण्टुम् वकुत्तान्-सर्वत्र सृष्ट कर दिया; तान् ऎं तेयत्तान्-वह खुद कहाँ था; ऎन्ना वण्णम्-यह न जाना जाए ऐसा; करन्तनन्-छिपा रहा; तॆरिन्तिलावान्-दृष्टि में

निनैयलाम्–सोच लें ऐसे; कवत्तन् अल्लन्–शोच्य नहीं रहा; ती ऑत्तान्–अग्नि-सम उसके; तिऱत्तिल्–विषय में; चॅयल् ऍन्नै–करणीय क्या-क्या है; ऍन्न–ऐसा; चिन्तै नोन्तान्–श्रीराम ने चिंता की। २३६६

मकराक्ष ने माया से सर्वत्र अपने-से रूपों से भर दिया। वह कहाँ रहा, यह न जाना जा सके ऐसा छिप गया। वैसा वह आँखों से भी अदृश्य हो गया। उसकी स्थिति देखकर उसकी गति जानी जाय —यह भी असम्भव हो गया। श्रीराम ने सोचा कि उस अग्निसदृश मकराक्ष के सम्बन्ध में क्या किया जाय ? । २३६६

अम्बिन्वा याऱु शोरु मरक्कन्ऱ नरुळिल् याक्कै
उम्बरिऱ् परप्पित् ताऩ्वे ऱॊळित्तन नॅन्न वोर्वान्
शॅम्बुनऱ् चुवडु नोक्कि यदुनॅऱि शॅन्ऱु तेवर्
तम्बिरान् पहळि तूण्डत् तलैयऱुत् तलत्त नानान् 2367

अम्पिन्–बाण से; वाय्–मुख से; आऱु चोरुम्–(रुधिर-) नदी बहती; अरक्कन् तन्–वह राक्षस अपने; अरुळिल् याक्कै–करुणाहीन शरीर को; उम्परिल् परप्पि–आकाश में (अनेक सम रूपों में) फैलाकर; तान् वेऱु ऑळित्तनन्–खुद कहीं अलग छिप गया; ऍन्न ओर्वान्–इस भाँति सोचते; तेवर् तन्पिरान्–देवोत्तम के; चॅम् पुनल्–रक्त के; चुवटु नोक्कि–निशान को देखकर; अतु नॅऱि चॅन्ऱु–उसी मार्ग से जाए ऐसा; पकळि तूण्ट–अस्त्र चलाने पर; तलै अऱ्ऱु–सिर से हीन होकर; तलत्तन् आनान्–भूमि पर गिरा हो गया। २३६७

"मैंने जो अस्त्र चलाया उसके मुख से रक्त बहने लगा। उसी स्थिति में उसने अपनी निर्दय देह को आकाश में फैलाकर अपने को भी अलग छिपा लिया। अब क्या हो ?" देवाधिदेव श्रीराम ने ऐसा सोचकर देखा तो कहीं रक्त की बूँदें दिखायी दीं। उन्होंने ऐसा अस्त्र चलाया कि वह उसी रास्ते जाकर उस पर लग जाए। उससे उसका सिर कट गया और वह भूतलस्थ हो गया। २३६७

अयिल्पडैत् तुरुमिऱ् चॅल्लु मम्बॊडु मरक्कन् याक्कै
पुयल्वडक् कुरुदि वीशिप् पडियिडैप् पुरळ्द लोडुम्
वॅयिल्कॅडुत् तिरुळै यीट्टुङ् गालत्तिन् विळैवि नोडुम्
तुयिल्हॅडक् कनवु सायन्दा लॊत्तदु शूळ्न्द मायै 2368

अयिल् पटैत्तु–तेज (धार का) बनकर; उरुमिल् चॅल्लुम्–अशनि के समान चलनेवाले; अम्पॊटु–अस्त्र के साथ; अरक्कन् याक्कै–राक्षस का शरीर; पुयल् पट–आँधी-जैसे; कुरुति वीचि–रक्त निकालता हुआ; पटि इटै–भूमि पर; पुरळ्तलोटुम्–लोटने लगा तो; चूऴ्न्त–जो व्याप्त रही; मायै–माया; वॅयिल् कॅटुत्तु–धूप दूर करके; इरुळै ईट्टुम्–अन्धकार को बनाये रखनेवाली; कालत्तिन्

विळॅविन्नोट्टुम्–(रात के) काल के कार्य के साथ; तुयिलुम् कॅट–नींद के भी नष्ट होकर; कनवु मायन्ताल् ऑत्ततु–स्वप्न भी भंग हुआ हो ऐसा लगा। २३६८

मकराक्ष का शरीर तीक्ष्ण और अशनिगति के श्रीराम के शर के लगने से आँधी के समान रक्त बहाता हुआ भूमि पर आकर लोटा तो घेरती रही माया, धूप हटाकर और अन्धकार फैलाकर रही रात के निद्रा के सहित दूर होने पर स्वप्न जैसे दूर हो जाता है, वैसे ही निरस्त हो गयी। २३६८

कुरुदियित् कण्णन् वण्णक् कॉडिनॅडुन् देरन् कोडॅप्
परिदियि नडुवट् टोन्रुम् पशुम्जुडर् मेहप् पण्बन्
ऍरिहणै शिन्दिक् कालि नॅय्दिनान् ड्रन्नो डेट्रान्
विरिहडर् ड्रट्टान् कोल्लन् वॅम्जिनत् तच्चन् वॅय्योन् 2369

वण्णम् कॉटि–रंगीन ध्वजा से युक्त; नॅटु तेरन्–ऊँचे रथवाला; कोटै परितियिन् नटुवण् तोन्रुम्–ग्रीष्मकालीन सूर्य के मध्य दिखनेवाले; पशुम् चुटर् मेकम् पण्पन्–शीतल छटा से युक्त मेघ-जैसे स्वभाव का; ऍरि कणै चिन्ति–जलते बाण चलाते हुए; कालिन् ऍय्तिनान्–पवन के समान आया; तन्–उस; कुरुतियिन् कण्णन् ओटु–शोणिताक्ष से; विरि कटल् तट्टान्–विस्तृत सागर को बांधनेवाले; वॅम् चिनम् वॅय्योन्–कड़े क्रोध से भयंकर; तच्चन् कोल्लन्–शिल्पकार नल ने; एट्रान्–लड़ाई अपना ली। २३६९

रंगीन ध्वजाओं से अलंकृत रथारूढ़, ग्रीष्मकालीन सूर्य से लगे दिखने वाले मेघ-सम शोणिताक्ष अग्निवर्षक अस्त्र चलाता हुआ झंझा के समान आया। उसका सामना दीर्घ-सेतु-निर्माता बढ़ई का कर्मकार नील ने किया। २३६९

अन्रव नाम विल्ना णलङ्गरट्रो ळिलङ्ग वाङ्गि
ऑन्रल पहळि मारि यूळित्ती यॅन्न वुय्त्तान्
निन्रव नॅडिय वाङ्गोर् तरुविना लहल नीक्किच्
चॅन्रनन् करियिन् वारिक् कॅदिर्पडर् शीय मन्नान् 2370

अन्रु–उस दिन; अवन्–उस (राक्षस) ने; नामम् विल्–शत्रुभयकारी धनु के; नाण्–डोरे को; अलङ्कल् तोळ् इलङ्क–मालाधारी भुजा हो ऐसा; वाङ्कि–झुकाकर; ऑन्रु अल–एक नहीं; पकळि मारि–शरवर्षा; ऊळि ती ॲन–युगान्त की आग के समान; उय्त्तान्–प्रेरित की; आङ्कु निन्रवन्–वहाँ जो स्थित था वह नल; नॅटियतु ओर् तरुविनाल्–एक लम्बे तरु से; अकल नीक्कि–दूर हटाकर; करियिन् वारिक्कु–गजशाला; ऍतिर् पटर–की ओर जाते; चीयम् अन्नान्–सिंह-सदृश; चॅन्रनन्–गया। २३७०

तब उस राक्षस ने भीकर धनु के डोरे को माला के साथ भुजा के समान खींचकर, एक नहीं, पर अस्त्रों की वर्षा-सी युगांत की आग के सदृश

करा दी। वहाँ स्थित नल उन सबको एक लम्बे पेड़ से निवारकर बँधे हाथी के सामने जानेवाले केसरी के समान उसके सामने गया। २३७०

करत्तितिऩ्ऱ् ऱिरिया निऩ्ऱ मरत्तिऩैक् कण्ड माहच्
चरत्तितिऩ्ऱ् ऱुणित्तु वीऴ्न्द तऱुहणाऩ् ऱऩ्ऩै नोक्कि
उरत्तिऩैच् चुरुक्किप् पार्निऩ् ऱोङ्गिऩाऩ् ऱऩ्ऩै यौप्पाऩ्
शिरत्तितिऩ्ऱ् कुदित्ताऩ् ऱेवर् तिशैमुहङ् गिऴिय वार्त्तार् 2371

करत्तितिल् तिरिया निऩ्ऱ–हाथ में घूमनेवाले; **मरत्तिऩै**–तरु को; **कण्टमाक**–खण्ड-खण्ड हो ऐसा; **चरत्तितिल्**–शर से; **तुणित्तु वीऴ्त्त**–काटकर गिरानेवाले; **तवकणाऩ् तऩ्ऩै नोक्कि**–निडर राक्षस को देखकर; **तऩ्ऩै ऒप्पाऩ्**–स्वोपम नल; **उरत्तिऩै चुरुक्कि**–वक्ष को संकुचित करके; **पार् निऩ्ऱु**–भूमि से; **ओङ्किऩाऩ्**–उछलकर; **चिरत्तितिल् कुतित्ताऩ्**–सिर पर कूदा; **तेवर्**–देवगण; **तिचै मुकम् किऴिय**–दिशाएँ चिर जाएँ ऐसा; **आर्त्तार्**–चिल्ला उठे। २३७१

नल के हाथ में घूमनेवाले तरु को जिसने अपने अस्त्र से खण्डित कर दिया, उस शोणिताक्ष को नल ने ध्यान से देखा। फिर अपने वक्ष को संकुचित करके भूमि पर से उछला और उसके सिर पर कूदा। वह देखकर देवों ने इतने जोर से नाद किया कि दिगंत ही चिर गये। २३७१

ऎरियुम्वॆङ् गुऩ्ऱि ऩुम्ब रिऩ्दिर विल्लिट् टॆऩ्ऩप्
पॆरियवऩ् ऱलैमे ऩिऩ्ऱ पेरॆऴि लाळऩ् शोरि
शॊरियवऩ् कण्णिऩ् मूक्किऩ् चॆविहळिऩ् मूळै तूङ्ग
नॆरियवऩ् ऱलैयैक् काला लुदैत्तुमा निलत्ति लिट्टाऩ् 2372

ऎरियुम्–जलते; **वॆम् कुऩ्ऱिऩ्**–आतंककारी पर्वत पर; **उम्पर्**–आकाशलोक का; **इन्तिर विल् इट्टु ऎऩ्ऩ**–इन्द्रधनुष लगा हो जैसे; **पॆरियवऩ्**–बड़े आकार के उस राक्षस के; **तलै मेल् निऩ्ऱ**–सिर पर जो खड़ा रहा; **पेर् ऎऴिल् आळऩ्**–उस बड़े सुन्दर नल ने; **वऩ् कण्णिऩ्**–मजबूत आँखों से; **मूक्किऩ्**–नाक से; **चॆविकळिऩ्**–कानों से; **चोरि चॊरिय**–रक्त बहे; **मूळै तूङ्क**–मग़ज़ लटके; **वऩ् तलैयै**–(ऐसा) कठोर सिर को; **नॆरिय**–दलकाते हुए; **कालाल् उतैत्तु**–पैर से लात मारकर; **मा निलत्तिल् इट्टाऩ्**–बड़ी भूमि पर गिरा दिया। २३७२

जलनेवाले भयानक पहाड़ के ऊपर आकाश में इन्द्रधनुष बना हो जैसे दिखनेवाले बड़े आकार के उस राक्षस के सिर पर जो खड़ा रहा, उस मनोहर नल ने उसके सिर को लात मारकर चूर किया और भूमि पर डाल दिया। तब राक्षस की कठोर आँखों, नाक और कानों से रक्त निकल आया और मग़ज़ लटक गया। २३७२

अङ्गव ऩुलत्त लोडु मऴ्ऱ्कोऴुऩ् दोऴुहङ् गणणाऩ्
शिङ्गत्तॆङ् गणैयऩ् विल्लऩ् ऱारणि तेरिऩ् मेलाऩ्

अॅङ्गडा पोदि यन्ना वॅय्दिर्न् नॅदिरि लाद
पङ्गमिन् मेरु वाऱ्ऱऱ् पनशन्वन् दिडैयिऱ् पाय्न्दान् 2373

अङ्कु–तब; अवन्–उस राक्षस के; उलत्तलोट्टुम्–मरते ही; अळल् कॊळ्ळुनुतु–अग्निज्वालाएँ; ऑळ्कुम् कण्णान्–जिनसे निकलती थीं ऐसी आँखों वाला; चिङ्कन्–सिंह; वॅम् कणैयन्–संतापक बाण लिये हुए; विल्लन्–धनुर्हस्त; तार् अणि–दामालंकृत; तेरिन् मेलान्–रथ पर सवार; ॲङ्कटा पोति–जाता कहाँ रे; ॲन्ना–डाँटते हुए; ॲय्तिनन्–आया; पङ्कमिल्–निर्दोष; मेरु आऱ्ऱल्–मेरु-सा बली; ॲतिर् इलात–प्रतिद्वन्द्वी-रहित; पनचन्–पनश; इटैयिल् वन्तु पाय्न्तान्–बीच में आ कूदा। २३७३

जब वह मर गया तब अग्नि-ज्वालाएँ निकालनेवाली आँखों का, और क्रूर शर और धनु रखनेवाला सिंह, घुँघरुओं से अलंकृत रथ पर आरूढ़ हो डाँटते हुए आया कि 'कहाँ जाते हो रे' ? निर्दोष मेरु-सदृश मज़बूत और दुर्धर्ष वानर वीर पनश आड़े आया। २३७३

पाय्न्दवन् ऱोळिन् मार्बिन् पल्लङ्ग णल्ल पण्बो
डेय्न्दन वशनि पोल वैयिरण् डळ्न्द वॅय्दान्
काय्न्दनन् कनलि नॅय्याऱ् कान्ऱ्ऱु पोलक् कान्दि
एय्न्दॅळु तेरि नोडु मिमैप्पिडै यॅडुत्तुक् कॊण्डान् 2374

पाय्न्तवन्–जो झपट आया; तोळिन् मार्पिन्–उस पनश के कंधों और छाती पर; नल्ल पण्पोटु एय्न्तन–अच्छे प्रकार से बने; पल्लङ्कळ्–'भल्ल' नामक अस्त्र; ऐयिरण्टु–(पाँच × दो) दस को; अचनि पोल–अशनि के समान; अळुन्त–चुभ जाएँ ऐसा; ॲय्तान्–सिंह ने चलाया; काय्न्तनन्–रुष्ट पनश; कनलि–आग; नॅय्याऱ् कन्ऱ्ऱु पोल–आग से भभक उठी, जैसे; कान्ति–उबलकर; एय्न्तु ॲळ तेरिनोटम्–बराबर बढ़ आनेवाले रथ के साथ; इमैप्पु इटै–पल भर में; ॲटुत्तु कॊण्टान्–(अपने हाथ में उस राक्षस को) उठा लिया। २३७४

आड़े जो लपकता आया, उस पनश के कंधों और वक्ष पर सिंह ने सुगठित 'बल्लम' नाम के दस अस्त्रों को अशनि के समान चलाया। पनश रुष्ट हुआ। घृत पाकर अग्नि-जैसे कोपाग्नि से जल उठा। उसने ढंग से बढ़ते आनेवाले रथ के साथ पनश को अपने हाथ में उठा लिया। २३७४

तेरॊडु मॆडुत्त लोडु निलत्तिडैक् कुदित्त शॆङ्गण्
मेरुविऱ् ऱोऱ्ऱत् तान्ऱ तुच्चिमे लदनै वीशप्
पारिडै विळुद लोडुन् दानव तुम्बर् पायच्
चोरियु मुयिरुज् जोरत् तुहैत्तनन् वयिरत् तोळान् 2375

तेरोटुम् ॲटुत्तलोटुम्–रथ के साथ उठाते ही; निलत्तिटै कुतित्त–भूमि पर जो कूदा; चॆम् कण्–लाल आँखों और; मेरुविन् तोऱ्ऱत्तान् तन्–मेरु-जैसे आकार से युक्त

के; पारिटै विऴुतलोटुम्–भूमि पर गिरते ही; उम्पर् पाय–आकाश में झपटा; चोरियुम् उयिरुम् चोर–रक्त और प्राण निकल जाएँ ऐसा; वयिरम् तोळान्–वज्रस्कंध ने; तुकैत्ततन्–पैरों से रौंद दिया। २३७५

रथ के साथ उठा लेते ही, लाल आँखों और मेरु-सदृश आकार का वह सिंह भूमि पर कूदा। पनश ने उस रथ को उसी के सिर पर दे मारा तो वह दानव भूमि पर गिर गया। उसने गिरते-गिरते ऊपर उछलने का उपक्रम किया। पर रक्त और प्राण निकल गये तो वज्रस्कंध उसे पनश ने रौंद डाला। २३७५

तरादल वेन्दन् मैन्दर् शरत्तिनुङ् गवियिन् रानै
मरामर मलैयंन् ट्रिन्न वळङ्गवुम् वळैन्द तानै
परावरुङ् गोडि यैन्दुम् वॆळ्ळ नालैन्दुम् बट्ट
इरावणन् रूदर् पोनार् पडैक्कल मॆडुत्ति लादार् 2376

तरातल वेन्तन् मैन्तर्–धराधिपपुत्र श्रीराम और लक्ष्मण के; चरत्तिनुम्–शरों से; कवियिन् तानै–वानर-सेना के; मरामरम् मलै ॲन्ऱु–सालवृक्ष, पर्वत; इन्त वळङ्कयुम्–ऐसों को चलाने से; वळैन्त तानै–घेरे रहनेवाली राक्षस-सेना; परावु अरु–अकथनीय; ऐन्तु कोटियुम्–पाँचों करोड़; नालैन्तु वॆळ्ळमुम्–और बीस 'वॆळ्ळम्'; पट्ट–मर गये; पटैक्कलन्–हथियार; ॲटुत्तिलातार्–जिन्होंने हाथ में नहीं लिया था; इरावणन् तूतर्–रावणदूत; पोनार्–गये (रावण के पास समाचार कहने।)। २३७६

धराधिप के सुतों के अस्त्रचालन से और वानरों के तरु-गिरि-पात से घेरे आयी राक्षस-सेना के, अवर्णनीय पाँच करोड़ और बीस 'वॆळ्ळम्' वीर मर मिटे। हाथ में हथियार न लेने के कारण जो बचे, वे रावणदूत रावण के पास गये। २३७६

॥ युद्धकाण्ड पूर्वार्ध समाप्त ॥

तमिऴ

कम्ब रामायण

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध)

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

दिवंगत ब्रह्मर्षि आचार्य विनोबा भावे की पुण्यस्मृति में

समर्पण

भारत के द्वितीय शुकदेव ! भीष्म ने स्वार्थवश शरशय्या त्यागने में "उत्तरायण" की प्रतीक्षा की। आपने प्राणि-हित में, सन्निकट "उत्तरायण" की प्रतीक्षा किये विना, "दक्षिणायन" में ही दिव्यलोक को प्रयाण किया।

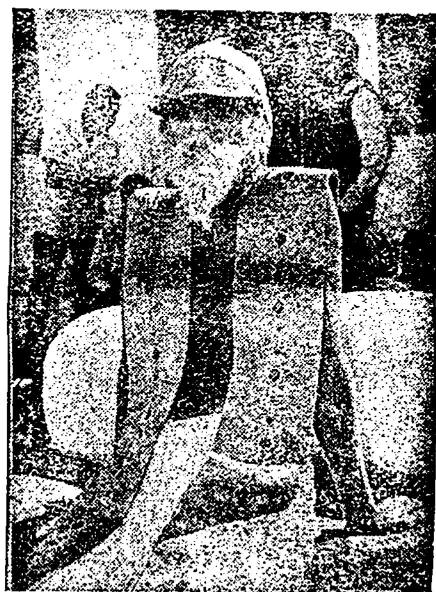

आपने, नागरी लिपि के माध्यम से विविध भाषाई क्षेत्रों के वाङ्मय को अखिल राष्ट्रव्यापी एवं विश्वतोमुख बनाने में अनुपम भूमिका प्रस्तुत की।

अकिञ्चन् ने सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण का कार्य सन् १९४७ ई० में अपनाया। सन् ६९ में तदर्थ "भुवन वाणी ट्रस्ट" की स्थापना की। आपसे अनेक बार शुभाशिष् एवं सतत सराहना प्राप्त कर हमारा श्रम सार्थक होता रहा। आपकी संस्तुति पर स्व० श्रीमन्जी ने "नागरी लिपि परिषद्" के पंजीकरण-आवेदन में आवश्यक सात बुनियादी सदस्यों में मुझको गौरव प्रदान किया।

मेरा परम सौभाग्य है कि "नागरी लिपि" के पुष्कल कार्य में, आज ७६ वर्ष की आयु में, सतत रत हूँ; और श्वासान्त तक ऐसा ही रत रह सकूँ, यह भगवान् से प्रार्थना है।

हमारे अनेकानेक सानुवाद लिप्यन्तरण-ग्रंथों में, तमिऴ का यह महाकाव्य "कम्ब रामायण" अति जटिल एवं विलक्षण सिद्ध हुआ। इसके पिछले चार खण्ड एवं हमारे सभी कार्यों का आपने अपनी सहज प्रसन्न मुद्रा में अवलोकन किया है। उन पर चर्चा की है।

आज यह शिरोमणि ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ। आपकी पुण्यस्मृति में यह भाषाई मंगल-कलश हम भगवदर्पण कर रहे हैं। "जय जगत्" आपका उद्घोष रहा है। "जय जगत्" कह कर ही हम आपको प्रणाम करते हैं।

१७ नवम्बर, १९८२ ई० —नन्दकुमार अवस्थी

श्री स्वामी चिन्मयानन्द

बाम्बे यज्ञशाला

१४-११-७६

श्री शेषाद्रि

मदुरै

धन्य ॐ

हरि: ओम्, हरि: ओम्, हरि: ओम्, प्रणाम ।

कम्बर रामायण के पूरे दस हज़ार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें ।

प्रेम प्रेम प्रेम

(प्रेमसहित)

ॐ चिन्मयानन्द

hri swami Chinmayananda

Zurich, Switzerland
23rd May, 1982

ri. T. Seshadri,
adurai, 625011

lessed Self,

ari Om ! Hari Om ! Hari Om !
alutations.

Truths are eternal. They don't change with times or places. ifferences in language cannot sully the chaste beauty of the permanent eternal. Masters have presented it in different ways, and in India is Spiritual Essence has been the theme for all artists, poets and erary men in their mighty compositions.

The Sanskrit Ramayan of Valmiki, considered to be the first great oetry in the languages of the World, has been an inspiration down the nturies for the entire past of our culture. No other book has fluenced literature and art as Ramayana has accomplished.

The spirit of Rama has given the Hindus, even in their material nd political life, their utopia, famously expressed as "Rama Rajya"— e reign of Rama.

Naturally, therefore, in all the well developed and important state nguages of India we find great poets compellingly inspired to trans- te and communicate these inevitable life of Rama. If in North India ulsi Ramayana is popular, in Tamil Nadu Kamban is equally famous nd universally accepted.

Kamban Ramayana is not a mechanical translation of the original almiki. The poet had his feet planted in his society of his times, and lthough his head soared above the clouds, in his stupendous vision, is hands wove a pattern of beauty, all his own, within the frame of 'almiki vision. In fact, in some of the situations, I feel Kamban has andled more dexterously and smoothed out the unpolished areas of 'almiki's collosal work of art.

Sri Seshadri is a fit person, graciously equipped for this subtle work f serving as a bridge between North and South with his translation of is Tamil Classic into chaste modern Hindi (with Nagri transliteration s well.)

It wasn't a pleasant job. Though inspired, amidst his domestic nd worldly pre-occupations, Prof Seshadri had to struggle now for ore than 4 years to accomplish this work. It has been brought out 5 volumes and here he is presenting the 5th and the last volume. I hall confess that I am awestricken at the plenitude of his ever expand- g mastery in language, and the torrential gush of appropriate telling xpressions employed to bring out even the suggestive imports of that 'amil Scholar's unerring diction and irresistible food of his images.

If I say that I congratulate Sri. Seshadri, it only means that I ave become silent at the benediction behind the frail professor as he its bent upon his translation work. Jai Jai Sri Ramachandra.

With prem and Om,
Thy Own Self

(हिन्दी अनुवाद)

श्री टी० शेषाद्रि,
मदुरै, 625011

पवित्र आत्मन्
हरि ओम् ! हरि ओम् ! हरि ओम् !
नमस्कार !

सत्य तथ्य सनातन हैं। वे देश या काल के साथ नहीं बदलते। भाषाओं की भिन्नता अमर या अनन्त रखनेवाली उस वस्तु की अव्यभिचारी सौंदर्य पर बट्टा नहीं लगा सकती। आचार्यों ने उसे भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रतिपादित किया है और भारत में यह आध्यात्मिक सार तत्त्व ही सभी कलाकारों, कवियों तथा साहित्यिकों का वर्ण्य-विषय रहता आता है।

वाल्मीकि की संस्कृत भाषा में रचित रामायण जो संसार की भाषाओं के काव्यों में सर्वप्रथम रचित काव्य ग्रंथ है, सदियों से हमारी भारतीय संस्कृति का प्रेरणास्रोत रही है। किसी भी अन्य ग्रंथ ने हमारे साहित्य और कला पर इतना प्रभाव नहीं डाला है जितना कि रामायण ने।

श्रीराम-तत्त्व ने हिन्दुओं को, उनके घोर भौतिक तथा सियासी जीवन में भी उनके यूरोपिया (कल्पित पर इच्छित स्वर्ग) का 'रामराज्य' की कल्पना का अश्वासन दिया है।

फिर, स्वाभाविक था कि भारत की सभी श्रेष्ठ तथा मँजी हुई प्रांतीय भाषाओं में हमें महान कवियों का साक्षात्कार मिले जिन्हें कि श्रीराम के जीवन के तत्त्वों के अनुवाद तथा प्रस्तुतीकरण की अदम्य प्रेरणा हुई। उत्तर में जहाँ गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण लोकप्रिय रहती है, वहाँ तमिळ्नाडु में कम्बन (का ग्रंथ) समान रूप से प्रसिद्ध तथा सर्वमान्य है।

कम्बन की रामायण मूल-वाल्मीकि-रामायण का यंत्रवत् उल्था नहीं है। कम्बन के चरण अपने समय के समाज की धरती में खूब जमे थे। और यद्यपि उनका सिर मेघमंडल के ऊपर उठा था अपने परमाद्भुत अवलोकन के फलस्वरूप, उनके हाथों ने वाल्मीकि को कल्पना के ढाँचे के अंतर्गत एक सौंदर्य की सृष्टि की जो एक दम उनकी अपनी थी। सच पूछा जाय, मेरी राय में, अनेक संदर्भों का, कम्बन ने अधिक चातुर्य से निर्वाह किया है और वाल्मीकि की बहुत विशद कलाकृति के कम प्रशस्त कच्चे स्थलों को चिकना व चमकदार बना दिया है।

श्री शेषाद्रि योग्य व्यक्ति है, जिसके पास तमिळ् महाकाव्य के आधुनिक तथा शुद्ध हिन्दी में अनुवाद द्वारा उत्तर व दक्षिण के बीच (आदान-प्रदान का) पुल बनाने के नाजुक कार्य के लिए आवश्यक ईश्वरदत्त साधन हैं।

यह कार्य कोई पूर्ण सुखद काम नहीं था। हाँ, वे अवश्य अंतःप्रेरणा से भरे थे; तो भी अपने घरेलू तथा सांसारिक कर्तव्यों के बीच श्री शेषाद्रि को इसे पूरा करने में चार-पाँच वर्षों से अधिक जूझना पड़ा। यह कृति पाँच जिल्दों (भागों) में पूर्ण हो रही है। अब पाँचवाँ भाग आपके सामने है। मैं स्वीकार करूँगा कि उनके वर्धनशील भाषा पर अधिकार का विस्तार, तथा उन तमिळ के विद्वान कम्बन की अचूक अभिव्यंजना शैली तथा उनके प्रतीकों तथा चित्रणों के अपार प्रवाह के अंतर्निहित तात्पर्यों का भी प्रगटन करने में उनके द्वारा प्रयुक्त प्रभावकारी तथा उचित शब्दों के प्रयोग में पाया जानेवाला प्रपात-सा-वेग —ये मुझे अभिभूत करते हैं।

जो मैं कहूँ कि मैं श्री शेषाद्रि को बधाई देता हूँ उसका तात्पर्य इतना है कि मैं उन कृशकार्य आचार्य के पीछे, जब वे अपने अनुवाद के पावन कार्य में झुके बैठे हैं, जो ईश्वरीय कृपा है उसके सामने अवाक् हो जाता हूँ।

जय जय श्रीरामचन्द्र !

जूरिच, स्विट्ज़लैंड
23 मई, 1982

प्रेम तथा ओम् सहित
आपका ही आत्मीय
ॐ चिन्मयानन्द

FOREWORD

Dr. V. Sp. Manickam, Ph.D., D.Litt.
Vice-Chancellor, Madurai Kamaraj University

Palkalai nagar
Madurai-625021

21-1-1982

Professor T. Seshadri has done a national service by his faithful translation in Hindi (along with Nagri transliteration) of the complete epic of Ramayanam in Tamil by the greatest poet Kamban. This valuable contribution by the learned professor to the wealth of Indian Literature will certainly open new vistas for tne comparative study of Ramayana from the Tamil point of view.

Dr. V. Sp. Manickam

It is traditionally stated that Kamban followed in the footsteps of Valmiki in composing his Tamil epic. This is only a general statement. On minute item-wise comparison in the narration of the story, in the arrangement of incidents, in the delineation of characters, in their conversational points, in the description of natural backgrounds, in the manifestation of culture, in the technique of niceties and subtlities and above all in the universal outlook of life, dissimilarities exceed and excel similarities in the epics of Valmiki and Kamban. Here we have to ponder over the reason for distinction and deviation of Kamban in his epic.

Many Indian scholars are not still aware of the fact that the ancient Tamil Cankam Literature has preserved several notable references to Rama and that according to Tamil version, Rama was a true historical personage. It will be thrilling to know that Valmiki was one of the Tamil poets of the Cankam period and his poem in Purananuru (358) philosophises on the renunciation of Raman. The devotional songs of the twelve Alwars have embedded innumerable new references about Rama

---

[डॉ० वी० एस्पी० माणिक्कम् तमिऴ के मूर्धन्य महाविद्वानों में एक हैं। अध्ययन के आधार पर मिली उपाधियों के अलावा साहित्यिक साधना के सम्मानार्थ शॅम्मल् (श्रेष्ठ पुरुष), मुदु पॅरुम् पुलवर् (उच्चकोटि के महाविद्वान), पॅरुन् तमिऴ्क् कावलर् (महान तमिऴरक्षक) आदि उपाधियों से भी विभूषित हैं। उनको शिक्षण के अलावा अन्वेषण के क्षेत्र में भी उत्तम अनुभव प्राप्त है। वे अण्णामलै विश्वविद्यालय के तमिऴ-विभाग के आचार्य तथा भारतीय-भाषा-विभाग के 'डीन' रहने के बाद कारैक्कुडी कालेज के प्रिंसिपल बने। वे तिरुवनंतपुरम् के अंतर्देशीय-द्रविड़भाषा-शास्त्र-पाठशाला के सीनियर फ़ेलो भी रहे हैं। सम्प्रति वे मदुरै के मदुरै-कामराज विश्वविद्यालय के उपकुलपति हैं। वे अंग्रेजी, संस्कृत, मलयाळम और हिन्दी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं। साहित्य तथा भाषा के अलावा शैव-सिद्धांत-संप्रदाय के क्षेत्र में भी उनकी बड़ी कीर्ति है। स्वाभाविक था कि उन्हें इस कृति के प्रति सम्मान का भाव हो और ट्रस्ट के कार्य से संतोष हो। ट्रस्ट तदर्थ गौरवान्वित है।] —ति० शेषाद्रि

raditionally handed down from generation to generation. Kamban who was well versed in these Tamil traditions developed the spirit of ndependence in the making and texture of his magnificient epic and stablished himself as an original poet. Kamban is a slave of Rama n his devotion and not a slave of Valmiki in his composition.

The abovs explanation will provs the incalculable value of this ranslation in Hindi by Professor Seshadri, a renowned scholar both in Hindi and Tamil at a time when we the Indians are trying our best to evelop the emotional integration in the minds of the youth. I am onvinced that only through a proper study and perfect under-standing f the value of the literary works in all Indian languages, integration y emotion and intelligence is possible. Thus Prof. Seshadri's ontribution to the world of Indian Muse will have a far reaching effect n the analytical and synthetic approach. To translate the complete pic of Kamban into Hindi with necessary explanations and expositions s no mean achievement in these days of disturbed atmosphere. teadfastness, patience, sincerity and national spirit which the Professor ossesses in abundance enabled him to take up this monumental roject and accomplish it in a few years.

I am happy to know that Bhuvan Vani Trust, Lucknow has ublished several volumes of translation by Prof. Seshadri and eminent cholars of all Indian languages. by investing heavy amouuts in this audable objective. But for the financial assistance of this Trust, o work of this nature will see the light of publication. Hence the ervice of this Trust is unique and exemplary. Both the author and he Trust deserve our appreciation and gratefulness.

Madurai.
21.1.82

V. Sp. Manickam

(हिन्दी अनुवाद)

कविश्रेष्ठ कम्बन के (रचित), ऐतिहासिक महाकाव्य, पूरी रामायण का हू-ब-हू हिन्दी अनुवाद (तथा नागरी लिपि में लेखन व उच्चारण —दोनों पद्धतियों पर लिप्यन्तरण) करके प्रोफ़ेसर शेषाद्रि ने राष्ट्र की अच्छी सेवा की है। भारतीय साहित्य-भण्डार को यह अति मूल्यवान देन है और इससे अवश्य ही तमिऴ के दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन के नये-नये क्षेत्र खुल आयेंगे।

परंपरागत जनश्रुति है कि कंबन ने इस ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना में वाल्मीकि के पदचिह्नों का अनुकरण किया है। यह तो मोटे तौर की साधारण उक्ति है। पर कथा-कथन के प्रकार में, घटना के विधान में, चरित्र-चित्रण में, वार्त्तालाप के विन्यास में, प्राकृतिक पृष्ठभूमि के वर्णनों में, संस्कृति के प्रकाशन में, बारीक और ललित युक्तियों (शैली) में और सबके ऊपर जीवन के विश्वव्यापी दर्शन में— बात-बात को लेकर सूक्ष्मता से देखा जाय तो ध्यान में आयगा कि वाल्मीकि और कम्बन में अंतर अधिक है और विशिष्ट भी, बजाए समानताओं के। यहाँ कंबन के ऐतिहासिक महाकाव्य में विशिष्टता के हेतुओं पर सोचना आवश्यक है।

अनेक तमिऴ के विद्वान अब भी इस बात से अनभिज्ञ हैं कि तमिऴ के प्राचीन संघ-साहित्य में राम संबंधी अनेक उल्लेखनीय संदर्भ सुरक्षित रखे पाये जाते हैं। और तमिऴ के कथांतरों के अनुसार राम एक सच्चा ऐतिहासिक पुरुष है। यह जानकर लोगों को रोमांच होगा कि 'वाल्मीकी' (बाल्मीकि ही का तमिऴ नाम) संघ काल के तमिऴ कवियों में एक थे और उनकी "पुरनानूरु" (चार सौ मुक्तक कविताओं के संग्रह) की एक कविता ने (सं० ३५८) राम के त्याग की दार्शनिक व्याख्या दी है। बारह आळ्वारों के भक्ति के पदों में अनेकानेक अनोखे व नये रामकथा संबंधी संदर्भ अंतर्निहित हैं, जो क्रम से पुरानी पीढ़ी से नयी पीढ़ी सुनती आ रही है। कंबन इस परंपरा में सने हुए थे और उसी के आधार पर उन्होंने अपने अत्युत्कृष्ट महाकाव्य की संरचना में एक स्वतन्त्रता की भावना का विकास कर लिया है। और इसी के बल अपने को एक मौलिक कवि के रूप में संस्थापित कर लिया है। कम्बन अपनी भक्ति में राम का ग़ुलाम थे पर अपनी रचना में वाल्मीकि के ग़ुलाम नहीं रहे।

यह सफ़ाई प्रो० शेषाद्रि के, जो हिन्दी और तमिऴ के विख्यात विद्वान हैं, इस हिन्दी अनुवाद के अतुल मूल्य को प्रमाणित कर देगी— विशेषकर ऐसे संदर्भ में जब हम भारतीय अपने युवकों के नम में भावात्मक एकता के विचार को बढ़ाने के कार्य में अधिक से अधिक प्रयत्न-तत्पर हैं। मेरा पक्का विश्वास है कि सभी भारतीय भाषाओं के उचित अध्ययन और उनके महत्त्व के पूर्ण ज्ञान द्वारा ही भावात्मक तथा बौद्धिक एकता लाना संभव है। इस भाँति भारतीय चिंतन के संसार को प्रो० शेषाद्रि की भेंट विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक अध्ययन-प्रवेश-द्वार (Approach) पर दूर-गामी प्रभाव डालेगी। कंबन के पूरे महाकाव्य को हिन्दी में आवश्यक व्याख्याओं और टीकाओं के साथ अनूदित करना साधारण साधना का काम नहीं— ख़ासकर विक्षुब्ध वातावरण के इन दिनों में। अचल लगन, सहनशीलता, ईमानदारी और राष्ट्रीय चेतना, इन सबने, जो शेषाद्रि में कसरत से हैं, उन्हें यह चिरस्मरणीय कार्य में हाथ लगाने और फिर कुछ ही वर्षों में संपन्न कराने की क्षमता दिलायी है।

भुवन वाणी ट्रस्ट ने प्रो० शेषाद्रि और अन्य भारतीय भाषाओं के विशिष्ट विद्वानों के कई ग्रंथों को इस प्रशंसनीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारी धन लगाकर प्रकाशित किया है —यह जानकर मुझे अत्यंत आनंद होता है। इस न्यास की आर्थिक सहायता के विना ऐसी कृतियां प्रकाशन के प्रकाश में आ ही नहीं सकेंगी। इस ट्रस्ट की सेवा विशिष्ट है तथा अनुकरणीय भी। लेखक तथा ट्रस्ट दोनों हमारी बधाई तथा धन्यवाद के पात्र हैं।

21.1.1982 (ह०) वी० एसपी० माणिक्कम्

विश्वनागरी लिपि

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ।।

प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक
संत की वाणी।
सम्पूर्ण विश्व में
घर-घर है पहुँचानी ।।

विश्व-वाङ्मय से निःसृत
अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट सबने
अब भूतल-भ्रमण विचारा ।।

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientific !

भारतीय लिपियों की विशेषता।

संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है। यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली, लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का

ध्वन्यात्मक होना। नियमित स्वरों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना ('अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरों का उस भाँति मूल आधार। सकल विश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार)। एक स्वर में एक ही भार (वजन) से प्रत्येक अक्षर को बोलना। एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। जैसा लिखना वैसा ही बोलना, वैसा ही अक्षर का एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे

अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अतः वे सब नागरी के समान ही 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोबेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से हिन्दी का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता और प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि अन्य लिपियों का उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरकरार रहना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से अलिप्यन्तरित हमारी समस्त ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली का वाङ्मय रह गया। हमारा प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे, तो वह हमारे ही

लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को भी अवश्य जानिए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। भुवन वाणी ट्रस्ट ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को नष्ट कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। पेट्रोल अरब का है, अतः हम उसको नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। वे काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज़ को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। यह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते

हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अल्बत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दुःख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अरबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यतः रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में उन विशिष्ट भाषाई व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अ़रबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अ़रबी' में केवल २८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "अ़िल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अ़रबी-पोशाक चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट,, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अ़रबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्तःस्फुट अक्षरों को भी अ़रबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा में जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने ऐसा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से किया है।

स्वर और प्रयत्न (लह्‌जा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ; उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिप्थांग) बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक हैं। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लह्‌जा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा

दिया जाय, प्रयोग में तो "एक ही रूप में" अपने निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का लेखानुरूप शुद्ध उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। उसी भाँति पंजाबी, बंगाली, मद्रासी के अंग्रेज़ी के उद्भट विद्वान् अंग्रेजी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेज़ी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार की वरीयता।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। उसकी रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे ज़रूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

भुवन वाणी ट्रस्ट ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी भाषाओं में प्रयुक्त एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ मात्राएँ हम प्रयोग में ला रहे हैं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल तक नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् माने। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तैसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है— (अई, अऊ)। किन्तु खड़ी बोली व उर्दू के ऐ, और औ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती है। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत

बँधा है। उनमें भी कुछ अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है। क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण तो ब्रह्म ही है। "बेस्ट् इज् द ग्रेटेस्ट् एनिमी ऑफ़् गुड्।" (Best is the greatest enemy of Good.) इसलिए शग़ल और शोब्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ, लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं?

आज क्या करना है?

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— (ही नहीं) बल्कि "भी" बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी (पद्मश्री)
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमरभारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिळ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा ॥

ग्रन्थ सम्पूर्ण

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी, लगभग ५००० पृष्ठ का यह वृहत् संस्करण सम्पूर्ण कर दिया। वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी वृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी। वर्ष ८१-८२ में युद्धकाण्ड की प्रथम जिल्द (पूर्वार्ध) १०१६ पृष्ठों में सम्पूर्ण होकर आपके सम्मुख आ चुकी है। और आज, युद्धकाण्ड की दूसरी जिल्द (उत्तरार्ध) भी आपके सामने प्रस्तुत है। लगभग ३-४ वर्षों में ही इस प्रकार कम्ब रामायण का महाकाव्य पाँच खण्डों में नागरी-जगत में सम्पूर्ण कलाओं-सहित अवतरित हो गया। इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम बारम्बार नमन करते हैं।

इस तमिळ-भागीरथी के भगीरथ ?

तमिळ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और ट्रस्ट के विद्वानों तथा शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति —इस बल पर ही हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं। इसलिए यह कथन उत्तरोत्तर चरितार्थ हो रहा है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये। श्री शेषाद्रि ही वे भगीरथ हैं, जिनकी विद्वत्ता, निष्ठा और अथक एवं अहर्निश श्रम की बदौलत अखिल भारत में आज यह नागरी-सलिला "तमिळगंगा" प्रवहमान है।

प्रो० ति० शेषाद्रि का परिचय

इन भगीरथ आचार्य प्रो० ति० शेषाद्रि का जन्म, तमिळनाडु में तंजाउर ज़िला, तहसील नागपट्टणम् के कोळैयूर ग्राम में १४-६-१९१६ ई० को हुआ। गाँव में कक्षा ५ तक शिक्षा प्राप्त कर, नागपट्टणम् में

नेशनल हाई स्कूल से सन् १९३३ ई० में एस्० एस्० एल्० सी०, पश्चात् प्रशिक्षित (ट्रेण्ड) होकर अध्यापन-कार्य में लगे। कुछ ही समय बाद, राष्ट्र के सौभाग्य से वे राष्ट्रभाषा की सेवा में लग गये। हिन्दी प्रचार सभा से प्रचारक कोर्स, और निजी तौर पर मद्रास विश्वविद्यालय से 'हिन्दी-विद्वान' की उपाधि प्राप्त की। बी० ओ० एल० करने के उपरांत एम० ए० में निष्णात होकर, अध्यापक एवं प्रधानाध्यापक रहकर शिक्षा, विशेष रूप से राष्ट्रभाषा की शिक्षा एवं प्रचार में रत रहे। सन् १९४७ ई० में मदुरै कालेज में प्राध्यापक एवं आचार्य पद को सुशोभित किया। १९७६ ई० तदनन्तर में सेवानिवृत्त होकर, ६० वर्ष की आयु से पूर्णरूपेण राष्ट्रभाषा के प्रचार हेतु अर्पित हो गये। १९७९-८० में हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र में प्राचार्य, और १९८१ से असेफ़ा प्रशिक्षण केन्द्र में प्रिंसिपल रूप में विद्यमान हैं।

मध्यम परिवार में संघर्षशील जीवन बिताते हुए, आंध्र, केरल तथा मद्रास की परीक्षाओं के परीक्षक, मद्रास विश्वविद्यालय की अकेडेमिक कौन्सिल के सदस्य, और सम्प्रति मदुरै कामराज वि० वि० की अकेडेमिक कौन्सिल के, महामहिम राज्यपाल द्वारा मनोनीत, सदस्य हैं।

गांधीदर्शन के सक्रिय विचारक एवं लेखक, स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज के परमभक्त एवं उनके कई ग्रन्थों के अनुवादक तथा अनगिनत कहानियों, पत्र-पत्रिकाओं में लेख— यह सब उनकी आजीवन की दिनचर्या है।

और सर्वोपरि, कम्ब रामायण का लगभग ५००० पृष्ठों का तमिळ ग्रन्थ— लेखन एवं उच्चारण पद्धति पर नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय, पदच्छेद और हिन्दी भावानुवाद ही वह भगीरथ-कार्य है, जिसके वे 'वर्तमान-भगीरथ' हैं। प्रो० शेषाद्रि "भुवन वाणी ट्रस्ट" के आजीवन न्यासी हैं। उनके स्वस्थ शतायु होने की कामना करता हूँ।

तमिळ का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिळ-जन तक सीमित नहीं है। वह अब न केवल तमिळ प्रदेश, वरन् संपूर्ण राष्ट्र तथा हिन्दी-जगत की सम्पत्ति बन चुका है। तमिळ की वर्णमाला, उनके लेखन-उच्चारण में भेद की जटिलता को प्रत्येक खण्ड में पाठकों की सुविधा के लिए दे दिया गया है। प्रथम चार खण्डों में, विद्वान अनुवादक ने व्याकरण का एक धारावाहिक प्रकरण दिया है। कम्ब रामायण के पाँचों खण्डों पर प्रकाशकीय वक्तव्यों एवं विद्वानों से उपलब्ध प्रशस्तियों का सार इस अन्तिम खण्ड में पुनः दे देना पाठकों को रुचिकर होगा:—

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई०

से अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का शृंगार; विशेष रूप से तमिऴ लिपि की जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिऴ ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक ही मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद, मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू नायडू; कम्बन्चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिऴनाडु के चीफ़् जस्टिस् श्री एम्० एम्० स्माइल; जस्टिस् श्री महाराजन; श्री के० सन्थानम् आदि के प्राक्कथन। और सर्वोपरि महर्षि कम्बर् का शोधपूर्ण जीवनचरित्र।

टी० के० सी०

※ कम्ब रामायण के अनेक पदों में, ※ यह चिह्न मुद्रित है। कम्ब रामायण का एक संस्करण टी० के० चिदम्बरनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। उनके मत से ये चिह्नित केवल १५१० पद मात्र ही कम्ब की मौलिक रचना हैं। शेष पद प्रक्षिप्त हैं, कम्बन द्वारा रचित नहीं। अधिकांश विद्वान उनके इस मत से सहमत नहीं हैं।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है। आवाज़ए ख़ल्क़, नक़्क़ारए ख़ुदा ! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रही हैं। जोश की एक लहर आई। विशेष रूप से तमिऴनाडु में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का स्थान-स्थान पर स्वागत एवं उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिऴनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन !

अयोध्या-अरण्यकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

श्री प्रभुदास बी० पटवारी तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों

के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत्-कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं यत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा।" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छवि को निखारा है। गांधीयुग से निरन्तर राष्ट्रसेवी, तमिळ्नाडु के जाने-माने महापुरुष श्री ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया भी दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिळ्नाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अयोध्या-अरण्यकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय खण्ड) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। २२ मार्च, सन् १९८१ के दिन, कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर, 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय बनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी के सम्बन्ध में यह भी कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने—का—के—की आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुगम नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर ग़ौर करना चाहिए। डॉ० शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुंजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी हैं। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिळ्-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको कितनी अधिक कठिनाई प्रतीत होगी ? इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें उदार होना चाहिए।

उसी प्रकार तमिळ्भाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की

वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है। तमिऴ में, वे एक ही अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है। जिसके फलस्वरूप तमिऴभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है। इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिऴ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया। अन्यथा आज के युग में वह, राष्ट्र की भाषा-समस्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती।

युद्धकाण्ड (पूर्वार्ध) में अनुवादकीय एवं प्रकाशकीय का सार

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिऴभाषा और तमिऴकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिऴ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। प्रथम तीन जिल्दों के तारतम्य में, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध में व्याकरण प्रकरण समाप्त हुआ है। विशेष ज्ञान के लिए जिज्ञासु पाठकों को व्याकरण का विशेष अध्ययन करना श्रेयस्कर है।

प्रस्तुत युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) में ग्रन्थ सम्पूर्ण

सर्वप्रथम स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज ने अपने योग्यतम शिष्य श्री शेषाद्रि के हाथों यह महत्-कार्य सम्पादित होने की भविष्यवाणी की थी। बालकाण्ड में उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ और अब इस अंतिम खण्ड में उन्होंने अपने शिष्य की सफल साधना के उपलक्ष में 'जयघोष' के साथ साधुवाद दिया है। यही नहीं, कम्बन-काव्य के नागरी-अवतरण की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए समग्र भारत के समस्रोत में प्रवाहित होने का निर्देश दिया है।

दूसरा उल्लेखनीय है मदुरै-कामराज विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर अपरिमित विद्वान डॉ० वी० एस्पी० माणिक्कम् का प्राक्कथन। उन्होंने न केवल उत्तर-दक्षिण, वरन् सभी भाषाई क्षेत्रों के भेद-विभेद के प्रपञ्च को त्यागकर राष्ट्रीय एकीकरण के लिए युवावर्ग का आह्वान किया है। कम्बन की अलौकिक प्रतिभा और उनके ग्रन्थ कम्ब रामायण की नाना दृष्टियों से मौलिकता पर विशद व्याख्या करते हुए, कल्पनातीत एक अद्भुत प्रसंग उपस्थित कर दिया है। अब तक महर्षि अगस्त्य उत्तर-दक्षिण के सेतु माने जाते थे। डॉ० माणिक्कम् ने तमिऴ के अति प्राचीत कवितासंग्रह "पुरनानूरु" का उद्धरण देते हुए साधार-सप्रमाण एक तथ्य को प्रकाश

दिया है कि "महर्षि वाल्मीकि" द्रविड़ देश के निवासी थे। फलस्वरूप उनकी मातृभूमि एवं उनकी रचना आदिकाव्य "वाल्मीकि रामायण" की सर्वव्यापकता, इन दोनों से उत्तर-दक्षिण का पुरातन का एकत्व एवं शोधकर्ता विद्वानों के लिए एक नवीन शोध-विषय की सृष्टि हुई है। डॉ० माणिक्कम् ने विद्वान शेषाद्रि के अथक श्रम और भुवन वाणी ट्रस्ट के विविध भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण के कार्य की भूरि-भूरि सराहना की है।

विश्वनगारी लिपि

इसी खण्ड में पृष्ठ ११-१६ में "विश्वनागरी लिपि" पर अकिञ्चन् द्वारा प्रस्तुत एक निबन्ध पठनीय है। उससे सहमत उदार विद्वानों तथा श्रीमानों से सहयोग एवं सहकार की हम अपेक्षा रखते हैं।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का ८४० पृष्ठों का युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) पञ्चम (अन्तिम) खण्ड है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान् और उत्तर प्रदेश शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत "समापन ग्रन्थ" के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ-रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने, और सभी भारतीय भाषाओं को सारे राष्ट्र में प्रसारित करने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। आशा है सम्पूर्ण जगत् हमारे इस उपक्रम को "गिलहरी का सेतुबन्धन" मानकर सहकार और अनुग्रह प्रदान करता रहेगा।

—नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

न्यायमूर्ति स्व० श्री एस्० महाराजन्

लोकप्रख्यात स्व० के० सन्थानम्

क्लेश का समाचार है कि ये शीर्षस्थ विद्वान आज हमारे बीच नहीं हैं। न्यायमूर्ति स्व० श्री एस० महाराजन्, स्व० श्री के० सन्थानम्; तथा स्व० श्री सा० गणेशन् कम्बन्-अडिप्पॉडि (कम्बन की चरणरेणु), जो "कम्बन् मणिमण्डपम्" के समीप ही कम्बन के चरणों में समाहित हो गये। बालकाण्ड में इनके वक्तव्य पठनीय हैं। उनकी परम शान्ति हेतु हम भगवान से प्रार्थना करते हैं।

—नन्दकुमार अवस्थी

कम्बन्-मणिमण्डपम्

तमिऴनाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशन-कोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन् द्वारा स्थापित "कम्बन् मणिमण्डपम् ।"

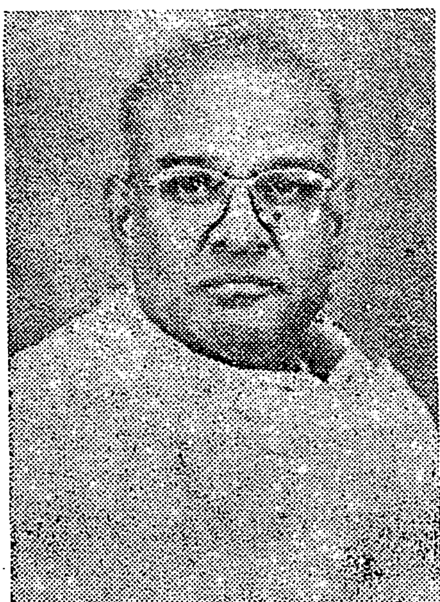

कम्बन्-चरणरेणु स्व० श्री सा० गणेशन्

सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

अनुवादक की अवतरणिका

(अन्तिम वक्तव्य)

सहृदय, साहित्यमर्मज्ञ, स्नेही तथा विज्ञ पाठकगण !

अब ग्रंथ समाप्त हो गया है। कार्य का अंजाम हो गया है। प्रभु की कृपा का क्या कहा जाय ?

अब स्वभावतः मेरा मन कार्यभार-निर्वाह की सफलता से उत्पन्न निर्वृति की राहत की साँस लेता है। इसमें न तो गर्वोत्कट आनंद है, न अतृप्ति का रञ्चमात्र क्लेश। जो है सो उनका है ! और उन्हीं को समर्पित है। उनकी सृष्टि में भी गुण-दोष-मय संसार पाया जाता है और वे उसी संसार में रमते हैं। वे चाहें तो मेरे अवगुणों को गुणों में परिवर्तित कर सकते हैं— कम से कम गुणधारा में छिपा दे सकते हैं। वे जो चाहें, करें; और भविष्य यह तमाशा देखे-- मैं कौन होता हूँ कि उनकी लीला में दखल देना चाहूँ या दे सकूँ ?

अब थोड़ा मुड़कर देखता हूँ। पाँच साल बीत गये हैं, मुझे इस शुभ कार्य में हाथ लगाये। इन पाँच सालों में मेरी मनोनौका किन-किन भाव-लहरों में चल चुकी है ? यह स्मरण करना एक ओर थकावट का बाईस बनता है, तो दूसरी ओर एक संयत आनंद के अनुभव का।

अब आभार मानूँ तो किन-किन का ? सबसे पहले महात्मा स्वामी चिन्मयानंद जी महाराज का स्मरण हो आता है, जिनकी निराकार, अप्रत्यक्ष तथा सूक्ष्म प्रेरणा इसकी नींव में है। उस प्रेरणा में यह साफ़ इंगित तो नहीं था कि कौन सा पवित्र कार्य मेरे ज़िम्मे आ रहा है, पर साफ़ संकेत था कि बीमार पड़ने का यह समय नहीं; कोई महान कार्य, महान सेवा करने को तैयार रहो ! उनकी कृपा का, आभार-प्रदर्शन के मेरे अल्प शब्दों में, कियत् ही अंश में ही सही, बदला चुकाया जा सकता है ? फिर आयी साकार प्रेरणा (या प्रत्यक्ष आज्ञा कहिए) हमारे वन्दनीय भाषा-तपस्वी श्रीवर नंदकुमार अवस्थी जी की। इन दोनों का प्रभु श्रीराम, और उनके भक्त कंबन की साभार कृपा लेकर अभिनंदन करता हूँ। इन दोनों के संबंध में अधिक बातें कहना मेरी श्रद्धा की पवित्रता को कलुषित करना होगा। अतः उन दोनों को प्रणाम करके आगे बढ़ता हूँ।

अगर काल का संकोच तथा पृष्ठों के अधिक हो जाने का डर नहीं

रहता तो निम्नलिखित सज्जनों में एक-एक का अनेक वाक्यों में आभार लिखना चाहूँगा। पर अब उन विभूतियों का एक साथ नाम लेता हूँ और अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ।

श्री प्रभुदास बी पटवारी

न्यायमूर्ति श्री एम्० एम्० इस्माइल

डॉ० वी० एस्० पी० माणिक्कम्

श्री ना० म० रा० सुब्बरामन

श्री अवधनंदन

डॉ० शंकरराजु नायुडु

श्री रा० शौरिराजन

श्री के० संतानम जी

जस्टिस महाराजन

कम्बनडिप्पॉडि शा० गणेशन

इन्होंने बड़ी कृपा करके अपने-अपने संस्तुति के वाक्यों से हमें गौरव दिलाया है।

(इधर शोक की बात है कि इनमें तीन— श्री संतानम जी, न्यायमूर्ति श्री महाराजन तथा कम्बन-अडिप्पॉडि नहीं रहे। इनके निधन से सारा साहित्य-संसार अनाथ-सा हो गया है।)

इनके अलावा विशेष रूप से मैं अपनी दो रिश्तेदारिन तरुणियों की चर्चा करना चाहता हूँ, जिसके लिए स्नेही पाठक मुझे क्षमा करें।

श्रीमती जया राजन्

इन्होंने जो सहायता दी उसके मूल्य का सही आँकन तभी हो सकता है जब मेरी स्वास्थ्य-स्थिति का साफ़ भान हो। ग्रंथ का काम चलते-चलते ऐसा समय आ गया जब दृष्टिरोग तथा गिरे हुए स्वास्थ्य ने इतनी भयंकर हालत पैदा कर दी कि मुझे डर लगने लगा कि यह काम मेरे हाथों पूरा नहीं होगा; और यह विश्वास हो गया कि भगवान

ने कोई दूसरा व्यक्ति तैयार कर रखा है और समय आने पर उसको मेरे स्थान पर बिठा देंगे।

उस स्थिति में मेरे मन की लाचारी से उत्पन्न बेचैनी का विचार, असफलता तथा असमर्थता की भावना से उत्पन्न टीस तथा पछतावे का अनुभव, हे सहृदय पाठक ! आप कर सकते हैं। तब इन दोनों ने पद्यों की नक़ल उतार के मेरी सहायता क्या की— ग्रंथ-समापन को संभव बना दिया।

श्रीमती ऊषा चंद्रू

पहली श्रीमती जया राजन् मेरी सौभाग्यवती कन्या है और दूसरी श्रीमती ऊषा चंद्रू मेरी साली की कन्या है। ये दोनों चिरायु तथा सौभाग्य-शालिनी रहें —भगवान से मेरी यह विनीत प्रार्थना है।

अन्ततः श्री अवस्थी जी के सुपुत्र श्री विनयकुमार अवस्थी, उनके परिवार के सदस्य, उनके प्रेस के कार्यकर्ता विद्वानों एवं शिल्पियों —सबको सस्नेह नमस्कार करता हूँ। सबके प्रति मेरी शुभकामनाएँ हैं।

अब मैं मौन हो जाता हूँ।

99, भारती रोड,
मदुरै— 62 011
25.७.1982

विनीत
ति० शेषाद्रि

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त
(तमिऴ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही को ग्रहण किया गया।

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिऴ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप ॆ ा ; ॆ ो हैं। देखिए पृष्ठ ३०-३२ पर।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ, ऴ	ள ळ
ற ऱ, ऱ	ன ऩ, ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

—नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

तमिळ-उच्चारण—कुछ तत्व

[तमिळ के व्यञ्जनों में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिळ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिळ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिळ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२ है। लब्धलिपि ह्रस्वः—अ इ उ ऍ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)—1मात्रा

दीर्घः—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
"आय्दम" (उपस्वर)—∴	—	$\frac{1}{2}$ मात्रा
अलब्धलिपि ह्रस्व—ऐ और औ	—	1 मात्रा
ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ	—	$\frac{1}{2}$ मात्रा
ह्रस्व—'आय्दम'	—	$\frac{1}{4}$ मात्रा

नोटः—आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ लें और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिळ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अतः बाद के पदों में ऐ कै···आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षर) मूल १८ हैं

लब्धलिपि वल्लॅळ्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
मॅल्लॅळ्तु—कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
इडैयॅळ्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ऴ ळ

अलब्धलिपि : ह, ग, ज, ड, द, ब। ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से वह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट—तमिळ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डु, पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम्— शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता। उदाहरण : अच्चु, पॉऱ्चटै, वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद—संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै।)
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्— मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन्, मोदल्।

— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉऱ्पु। अन्यत्र वह 'ब' के समान ध्वनित है।

शेष : न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्यम ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं; जैसे— अरङ्गन्, इरामन्, उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण: अरम्— रेती; अऱम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और ऩ के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे— निन्पॅरुज् को निन्बॅरुज् पढ़ना चाहिए, पर निन्पॅरुज् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर ज़ोर देने के अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी ग़लती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलाकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक़्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

विषय-सूची

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध)

22 सीता-युद्धस्थल-दर्शन पटल 137-150

रावण का नगर में समाचार फैलाने की आज्ञा देना; मरे हुए राक्षसों को समुद्र में डलवा देना; राक्षसियों का सीता को युद्धस्थल में ले जा दिखाना; सीताजी का विलाप करना; त्रिजटा का आश्वासन देना; सीताजी का धैर्य धारण करना।

23 ओषधि-पर्वत पटल 150-197

विभीषण का भोजन लेकर युद्धाजिर में आना; वानरों की स्थिति देखकर घबड़ाना; श्रीराम को बेहोश जानकर थोड़ा आश्वस्त होना; विभीषण को युद्धस्थल में घूमकर जीवित लोगों की खोज लगाना; हनुमान का होश में आना; जाम्बवान से जा मिलना; जाम्बवान का हनुमान से ओषधि पर्वत लाने को कहना; हनुमान का विराटरूप लेकर ओषधि लाने के लिए प्रस्थान करना; हनुमान के जाने का वर्णन; शिवजी का उमा से हनुमान की यात्रा का कारण बताना; हनुमान का त्रिदेवों की वन्दना करके आगे बढ़ना; ओषधि पर्वत को देखकर पालक देवताओं की अनुमति से उसे उखाड़ लेना; इधर श्रीराम का जागकर विभीषण से वृत्तांत पूछना; श्रीराम का फिर से विलापना और मरने की अपनी इच्छा बताना; जाम्बवान का धैर्य दिलाना; हनुमान का बड़े कोलाहल के साथ आ जाना; सबका जाग जाना; ब्रह्मास्त्र का श्रीराम की परिक्रमा करके यथास्थान चला जाना; श्रीराम का हनुमान को आलिंगन करना; जाम्बवान के कहने पर हनुमान का ओषधि पर्वत को यथास्थान पहुँचाना।

24 मद्यपान-केलि पटल 197-207

रावण का स्त्रियों की मस्त केलियों को देखना; अप्सराओं का नृत्य; मस्त स्त्रियों का वर्णन; उधर जागकर वानर-सेनाओं का नर्दन करना; नर्दन सुनकर स्त्रियों का डर से संकुचित होना; रावण का दूतों से समाचार जानकर मन्त्रणा-भवन में जाना।

25 मायासीता पटल 207-244

रावण का सबको समाचार देना; माल्यवान का उपदेश देना; रावण का डींग मारना; इन्द्रजित् का उत्तर देना; सुग्रीव का श्रीराम से लंका को जला डालने का उपाय बताना; रामबाण से गोपुर का गिरना; हनुमान का पश्चिमी द्वार पर इन्द्रजित् से मिलना; इन्द्रजित् का माया-सीता दिखाकर कहना कि मैं इसे मारनेवाला हूँ; हनुमान का इन्द्रजित् से प्रार्थना करना; इन्द्रजित् का माया-सीता का सिर काटकर अयोध्या की तरफ़ जाने की बात कहकर चला जाना; मारुति का मूर्च्छित हो जाना; इन्द्रजित् का निकुंभिला पहुँचना; हनुमान का जागकर रोना; हनुमान का श्रीराम से वृत्तांत बताना; श्रीराम का दुःख से मूर्च्छित हो जाना; विभीषण का संशय करना; श्रीराम को उपचार करके होश में लाना; लक्ष्मण का श्रीराम को सांत्वना देना; सुग्रीव का कथन; हनुमान का इन्द्रजित् का अयोध्या की तरफ़ जाने का संकल्प बताना और श्रीराम का दुःखी होना; उनका अयोध्या जाने का मंशा बताना और लक्ष्मण का रोकना; हनुमान का उन्हें ले जाने की बात कहना; विभीषण का अनुमान और कथन; विभीषण का भ्रमर के रूप में जाकर सीता का हाल जान आना।

30 मूल-बल-वध पटल 396-493

रावण का सेना-नायकों को राम-लक्ष्मण को मारने की हिदायत देकर भेजना। फिर मूलबल को पहले जाने की आज्ञा देना; चतुरंगिनी सेना-व्यूह का वर्णन; वानरों का भाग जाना; देवों का भय से शिवजी से प्रार्थना करना; शिवजी का सुरों को धैर्य दिलाना; श्रीराम के पूछने पर विभीषण का सेनाओं का वृत्तांत बताना; श्रीराम का अंगद से भागे हुए वानरों को बुला लाने को कहना; वानरयूथपों का अंगद से भागने का कारण बताना; अंगद का उन्हें समझाना; जाम्बवान का उत्तर; जाम्बवान की बात मानकर वानरयूथपों का लौट आना; श्रीराम का लक्ष्मण से मारुति के साथ रहकर वानरों की रक्षा करने की आज्ञा देना; श्रीराम का हनुमान को समझाना; विभीषण और सुग्रीव आदि का लक्ष्मण की सहायता में चलना; श्रीराम का युद्ध करना; श्रीराम के अस्त्र का कार्य; श्रीराम का अकेले ही सबका नाश कर देना; युद्धस्थल में रक्त, शवों आदि का वर्णन; वह्नि का श्रीराम की प्रशंसा करना; श्रीराम का सेना-नायकों के साथ युद्ध करना; देवों का शिवजी से प्रश्न करना और शिवजी का धैर्य दिलाना; श्रीराम के युद्ध का फिर वर्णन; उनका शरमंडप बनाना; वह्नि का राक्षसों से श्रीराम के साथ युद्ध करने को कहना; श्रीराम और बचे राक्षसों का युद्ध; मूलबल का नाश; आगत सेना के वीरों का आक्रमण; राक्षसों का नाश; आपस में लड़कर मरना; श्रीराम की धनुर्विद्या की महिमा; देवों का विस्मय; राक्षसों का नाश और भूमिदेवी की भारनिवृत्ति; देवों का स्तुति करना; श्रीराम का लक्ष्मण की ओर जाना; वानरों का धैर्य पाकर लौट आना।

31 शक्ति-धारण पटल 493-514

रावण का रथ पर आरोहण करके सेनाएँ लेकर जाना; वानरों का कोलाहल; वानर-राक्षस युद्ध; मरी सेना का वर्णन; मारुति और लक्ष्मण द्वारा राक्षसों का नाश; रावण का वानरों पर अस्त्र छोड़ना; लक्ष्मण-रावण युद्ध; रावण का विभीषण पर शक्ति छोड़ना; लक्ष्मण का अपने वक्ष पर उस शक्ति को झेल लेना; विभीषण का रावण के सारथी और अश्वों को मारना; रावण का लंका में चला जाना; विभीषण का आत्महत्या का प्रयत्न और जाम्बवान को रोकना; हनुमान का ओषधि लाकर लक्ष्मण को जिलाना; सबका श्रीराम के पास जाना; श्रीराम का लक्ष्मण की शरणागत-रक्षा के लिए प्रशंसा करना; श्रीराम का विश्रांति पाना।

32 वानर-युद्धभूमि-संदर्शन पटल 514-529

सुग्रीव और वानरों का श्रीराम के द्वारा मारे गये राक्षसों की बड़ाई देखकर विस्मय करना; श्रीराम का विभीषण को सुग्रीव के साथ युद्धक्षेत्र के संदर्शनार्थ भेजना; विभीषण का मरी हुई सेना का विवरण देना; वानरों का बीच में ही देखना छोड़कर श्रीराम के पास चला जाना।

33 रावण-युद्धक्षेत्र-संदर्शन पटल 529-540

लंका में रावण का संतोष के साथ रहना; सहायकों को दावत देने की आज्ञा देना; अप्सराओं का भोगवस्तुओं के साथ आना; राक्षसों का सुखभोग; दूतों का आकर मूल-बल-वध का समाचार देकर विलासिता को रोकना; रावण का विस्मय

का रथ को हटा के ले जाना; मूर्च्छा से जागकर रावण का सारथी पर गुस्सा करना; सारथी की सफाई; फिर से युद्ध; श्रीराम का ब्रह्मास्त्र चलाना; रावण का मर जाना; श्रीराम का मातलि को भेजकर रावण के पास जाना; श्रीराम का रावण की पीठ पर दिग्गजों के दाँतों के अंश देखकर दुःखी होना; विभीषण का सत्य बताकर दुःख को निरर्थक बनाना; श्रीराम का विभीषण से दाहकर्म करने की आज्ञा देना; विभीषण का विलाप करना; मंदोदरी का विलाप; मंदोदरी की मृत्यु; विभीषण का रावण के लिए दाहकर्म आदि करना; सभी मरे हुए राक्षसों का दाहकृत्य करना।

37 प्रत्यागमन पटल 665-804

श्रीराम का विभीषण को सांत्वना देना और लक्ष्मण से विभीषण का अभिषेक (मुकुट-धारण) करा आने को कहना; देवों का किरीट-धारण के लिए आवश्यक सहायता करना; विभीषण का मुकुट-धारण; देवों का बधाई देना; विभीषण का श्रीराम के पास आकर नमस्कार करना; श्रीराम का विभीषण को राजनीति का उपदेश देना; श्रीराम का हनुमान का सीताजी के पास समाचार कहने के लिए भेजना; हनुमान का सीताजी से 'शोभन' कहकर संदेश देना; सीताजी का आनंदमग्न होना; हनुमान का सीताजी से राक्षसियों को दण्ड देने की अनुमति माँगना; सीताजी का इन्कार करना तथा हनुमान को समझाना; श्रीराम का विभीषण से सीताजी को ले आने की आज्ञा देना; विभीषण का सीताजी से शृंगार कर लेने की प्रार्थना करना; सीताजी का इन्कार करना पर विभीषण का जोर देना; सीताजी का शृंगार; यान पर सीताजी का जाना; राक्षस आदि लोगों का भीड़ लगाना और विभीषण का पिटाई करके भगाना; श्रीराम का विभीषण को डाँटना; सीताजी का श्रीराम को नमस्कार करना; श्रीराम का कटुवचन कहना; सीताजी का दुःख और लक्ष्मण से आग बनाने को कहना; सीताजी का अग्निप्रवेश और अग्निदेव का उन्हें ले आकर श्रीराम के पास छोड़ना; अग्निदेव का श्रीराम को समझाना; ब्रह्मा आदि की स्तुति; दशरथ का आना और राम को वर देना; लक्ष्मण और सीताजी का आशीर्वाद देना; श्रीराम से सीता को अपना लेने की सलाह देना; श्रीराम का देवों से वर माँगना; देवों के वरदान से मरे हुए वानरों का जी उठना; श्रीराम की माँग और विभीषण का पुष्पक-विमान लाना; पुष्पक पर सबका चढ़ना; श्रीराम की इच्छा के अनुसार सबका मानवरूप धारण कर लेना; विमान का प्रयाण और श्रीराम का सीताजी को स्थानों को दिखाते जाना; सीता का वानरियों को भी साथ ले आने की अनुमति की प्रार्थना करना; वानरियों का सीताराम को नमस्कार करना; श्रीराम का भरद्वाजाश्रम में आना; भरद्वाज की दावत की तैयारी; श्रीराम का हनुमान को मुँदरी देकर अयोध्या में संदेश भेजना; भरत की स्थिति; भरत का आग में घुसने का प्रबंध; कौसल्या का उन्हें रोकने का प्रयास करना; हनुमान का आना और आग को बुझाना; उँगली दिखाकर हनुमान का संदेश देना; भरत का हनुमान की पहचान जान लेना; भरत का हनुमान को भेंट देना; नगर का अलंकार; श्रीराम की अगवानी के लिए सबका जाना; जाते-जाते हनुमान का श्रीराम-वृत्तांत बखानना; भरत का गंगा के किनारे पर आना; भरत का संदेह करना और हनुमान का समाधान देना; भरत का श्रीराम के पास पहुँच जाना; श्रीराम का संतोष; पुष्पक का भूमि पर उतरना; श्रीराम का सबसे मिलकर नमस्कार करना; सबका आपस में मिलना; भरत की सेना का पुष्पक पर चढ़ना; पुष्पक का नंदिग्राम में पहुँचना।

38 किरीट-धारण पटल 804-822

39 विदाई पटल 822-840

श्रीराम-पञ्चायतन

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

युद्धकाण्डम् (उत्तरार्ध)

21. पिरमात्तिरप् पडलम् (ब्रह्मास्त्र पटल)

करन्महन् पट्ट वाऱुङ् गुरुदियिन् गण्णन् कालिऩ्
चिरन्नॆरिन् दुक्क वाऱुञ् जिङ्गत्त दीऱुञ् जेऩैप्
परमिति युलहुक् काहा दॆन्बदुम् बहरक् केट्टान्
वरन्मुऱै तुऱन्दान् वल्लैत् तरुदिरॆन् महनै यॆन्ऱान् 2377

करन् मकन्–खर के पुत्र के; पट्ट आऱुम्–मरने का हाल; कुरुतियिन् कण्णन्–शोणिताक्ष के; कालिन्–(वानर के) पैरों से; चिरम् नॆरिन्तु–सिर दरार खाकर; उक्क आऱुम्–जो मरा वह प्रकार; चिङ्कत्तु ईऱुम्–सिंह का अंत और; चेनै परम्–सेना का भार; इति–आगे; उलकुक्कु आकातु–लोक में नहीं रहा; ऎन्पतुम्–यह समाचार; पकर–(दूतों को) कहते; केट्टान्–सुना; वरन् मुऱै तुऱन्तान्–क्रम का उल्लंघन करके; ऎन् मकनै–मेरे पुत्र को; वल्लै–तुरंत; तरुतिर्–लाओ; ऎन्ऱान्–(रावण ने) हुकुम दिया। २३७७

खर के पुत्र (मकराक्ष) के मरने का हाल, शोणिताक्ष का वानर-चरण से सिर के फटने से मरना, सिंह का अन्त और सेना-भार का इस संसार में न रहना आदि बातें रावण ने दूतों के मुख से सुनी तो घटना-क्रम से हटकर उसने आज्ञा दी कि मेरे पुत्र को तुरंत ला दो। २३७७

कूयिन नुन्दै यॆन्ऱार् कुन्ऱॆनक् कुविन्द तोळान्
पोयिन निरुद रियारुम् बॊन्ऱिनर् पोलु मॆन्ऱान्
एयिन पिन्नै मीळ्वार् नीयला दियावर् ऎन्ना
मेयदु शॊन्नार् तूदर् तादैपाल् विरैविन् वन्दान् 2378

उन्तै कूयितन्–आपके पिता ने बुलाया; ऎन्ऱार्–कहा (दूतों ने); कुन्ऱु ऎन–पर्वत हो जैसे; कुविन्त–पुष्ट; तोळान्–कंधों वाले (इन्द्रजित्) ने; पोयित निरुतर् यारुम्–जो गये वे सभी राक्षस; पॊन्ऱिनर् पोलुम्–मर गये शायद क्या; ऎन्ऱान्–पूछा; एयिन पिन्नै–प्रेषित होने के बाद; मीळ्वार्–लौटनेवाले; नी अलातु–आपके सिवा; यावर्–कौन हैं; ऎन्ना–कहकर; मेयतु–जो हुआ वह;

तूतर् चॊन्नार्–दूतों ने कहा; तातै पाल्–पिता के पास; विरैविन् वन्तान्–शीघ्र आया। २३७८

(इन्द्रजित् से दूतों ने जाकर कहा कि) आपके पिता ने आपको बुलाया है, तो इन्द्रजित् ने, जिसके कंधे पर्वत के समान पुष्ट थे, पूछा कि युद्ध में जो राक्षस गये थे क्या वे सब मर गये थे शायद ? दूतों ने उत्तर दिया कि युद्ध में जाने की आज्ञा से जो लोग जाते हैं, उनमें आपके सिवा लौट आनेवाले कौन हैं ? उन्होंने, जो हुआ वह सारा हाल बता दिया। इन्द्रजित् अपने पिता के पास शीघ्र आया। २३७८

वणङ्गिनी यॆय नॊय्दित् माण्डतर् मक्क ळॆन्न
उणङ्गलै यिन्रु काण्डि युलप्परु कुरङ्गै नीक्किप
पिणङ्गळिन् कुप्पै मर्रै नररुयिर् पिरिन्द याक्कै
कणङ्गुळैच् चीदै तानुममररुङ् गाण्ब रॆन्रान् 2379

वणङ्कि–पिता का नमस्कार करके; ऐय–तात; मक्कळ् नॊय्तिन् माण्टनर्–लोग आसानी से मर गये; ऎन्न–सोचकर; उणङ्कलै–दुःख मत करें; उलप्पु अऱु कुरङ्कै–अनंत संख्या के वानरों को; नीक्कि–मारकर; पिणङ्कळिन् कुप्पै–लाशों के ढेर; मऱ्ऱै–और; उयिर् पिरिन्त–प्राण-वियुक्त; नरर् याक्कै–मनुष्यों के शरीरों को; कणम् कुळै–भारी कुंडलों की; चीतै तानुम्–सीता और; अमररुम्–देव; काण्पर्–देखेंगे; इन्ऱु काण्टि–आज ही देख लें; ऎन्ऱान्–कहा (इन्द्रजित् ने)। २३७९

इन्द्रजित् ने पिता से नमस्कार करके कहा, पिताजी ! लोग यों मर गये, यह समझकर आप दुःखी नहीं हों। असंख्य वानरों की लाशों के ढेरों को और मरे हुए राम-लक्ष्मण के शरीरों को भारी कुंडलधारिणी सीता देखेगी और देव भी देखेंगे। आज ही आप उसे देखेंगे। २३७९

वलङ्गॊण्डु वणङ्गि वान्चॆ लायिर मडङ्गल् पूण्ड
पॊलङ्गॊडि नॆडुन्दे रेरिप् पॊर्प्पणै मुळङ्गप् पोनान्
अलङ्गल्वा ळरक्कर् तानै यरुबदु वॆळ्ळ मियानैक्
कुलङ्गळुन् देरु मावुङ् गुळाङ्गॊळक् कुळीइय वन्रे 2380

वलम् कॊण्टु–परिक्रमा करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; वान् चॆल्–आकाश में जा सकनेवाले; आयिरम् मटङ्कल् पूण्ट–एक हजार सिंहों से युक्त; पॊलम् कॊटि–और सुन्दर ध्वजा से अलंकृत; नॆटु तेर्–बड़े रथ पर; एऱि–चढ़कर; पोर् पणै–मारू बाजों के; मुळङ्क–बजते; पोनान्–गया; अलङ्कल् वाळ्–माला से अलंकृत तलवारधारी; अरक्कर् तानै–राक्षस-सेना; अऱुपतु वॆळ्ळम्–साठ वॆळ्ळम्; यानै कुलङ्कळुम्–हाथियों के झुंड; तेरुम्–और रथ; मावुम्–अश्व; कुळाम् कॊळ–झुंडों में; कुळीइय–जुड़ गये। २३८०

इन्द्रजित् रावण की परिक्रमा व नमस्कार करके एक रथ पर सवार होके गया, जिस आकाशचारी रथ से हजार सिंह जुते थे और जिस पर बहुत

सुन्दर ध्वजा फहरती थी। उसके साथ मारू बाजे बजते गये और माला से अलंकृत तलवार लिये हुए राक्षस वीर साठ 'वॆळ्ळम्' की संख्या में गये। इसके अलावा गजों, रथों और अश्वों के दल भी गये। २३८०

कुम्बिहै तिमिलै शॆण्डै कुरडुमाप् पेरि कॊट्टुम्
पम्बैदार् मुरशञ् जङ्गम् बाण्डिल्पोर्प् पणवन् दूरि
कम्बलि युरुमै तक्कै करडिहै दुडिवेय् कण्डै
यम्बलि कणुवै यूमै शहडैयो डार्त्त वन्ऱे 2381

कुम्पिकै–कुंबिकै; तिमिलै–तिमिलै; चॆण्टै–शॆण्डै; कुरटु–कुरडु; मा पेरि–बड़ी भेरी; कॊट्टुम् पम्पै–पिटनेवाला 'पंबै'; तार् मुरचम्–माला से अलंकृत नगाड़े; चङ्कम्–शंख; पाण्टिल्–पांडिल; पोर् पणवम्–युद्ध पणव; तूरि–तूर्य; कम्पलि–कंबलि; उरुमै तक्कै करटिकै–उरुमै, तक्कै, करडिहै; तुटि–डमरू; वेय्–मुरलियाँ; कण्टै–कण्डै; अम्पलि–अंबलि; कणुवै–कणुवै; ऊमै–ऊमै; चकटैयोटु–शकट आदि वाद्य; आर्त्त–नाद कर उठे। २३८१

निम्नलिखित बाजे बजते गये : "कुंबिकै", "तिमिलै", "शॆण्डै", "कुरडु", बड़ी भेरियाँ, 'पंबै', माला से अलंकृत नगाड़े, शंख, "पांडिल", मारू पणव, तुरही, "कंबली", "उरुमै", "तक्कै", "करडिकै", डमरू, वंशी, 'कण्डै', "अंबली", "कणुवै", "ऊमै" और "शकडै"। २३८१

यात्तैमेर् परैशा लीट्टत् तरैमणि यार्त्त दाऴि
मात्तमाप् पुरविप् पॊऱ्ऱार् माक्कॊडि कॊण्ड पण्णैच्
चेतैयोर् कऴलुन् दारुञ् जेडहप् पुळहच् चिल्लि
वात्तहत् तोडु माऴि यलैयॆत्त वळर्न्द वन्ऱे 2382

यात्तै मेल्–हाथियों पर के; परै–ढिंढोरों के; चाल् ईट्टत्तु–बड़े दलों के साथ; अरै मणि–बारी-बारी से बजनेवाली घंटियाँ; आऴि आर्त्ततु–समुद्र के समान नाद करती रहीं; मात्तम् मा पुरवि–शानदार बड़े अश्व के; पॊन् तार्–स्वर्ण-निर्मित घुंघुरू; मा कॊटि कॊण्ट–बड़ी ध्वजाएँ लिये हुए; पण्णै–बलवान; चेतैयोर्–सेना-वीरों की; कऴलुम्–पायलें; तारम्–माला; चेटकम् पुळकम् चिल्लि–शानदार व आईनों से सज्जित रथों के पहिये; वात्तकत्तोटु–आकाश तक; आऴि अलै ऒत्त–समुद्र की लहरों के समान; वळर्न्त–(सबकी ध्वनियाँ) बढ़ीं। २३८२

हाथियों पर रहनेवाले ढिंढोरों के बड़े दलों के साथ बारी-बारी से (बजनेवाली) हाथियों के दोनों बाजुओं में लटकनेवाली घंटियाँ समुद्र के समान नाद करती गयीं। शानदार घोड़ों के स्वर्ण की लड़ियाँ, बड़ी-बड़ी ध्वजाओं को लिये हुए चलनेवाले वीरों की पायलें, घूंघुरू और शालीन व शीशे-लगे रथों के पहिये —इनके द्वारा उत्पन्न नाद आकाश तक बढ़ी हुई समुद्र-तरंगों की ध्वनि के समान ऊपर उठे। २३८२

शङ्गॊलि वयिरि योशै याहुळि दळङ्गु काळम्
पॊङ्गॊलि वरिकण् बीलिप्पेरॊलि वेयिन् पॊम्मल्
शिङ्गत्तिन् मुळक्कम् वाशिच् चिरिप्पुत्ते रिडिप्पुत् तिण्कैम्
मङ्गुलि नदिर्वु वान मळैयॊडु मलैन्द दन्ऱे 2383

शङ्कु ऑलि–शंख की ध्वनि; वयिरित् ओशै–तुरही का नाद; आकुळि–आहुलि (नामक ढोल); तळङ्कु काळम्–बजनेवाले काहल का; पॊङ्कु ऑलि–गुंजायमान नाद; वरि कण् पीलि–मयूरपंख लगे 'पीली' नामक वाद्य का; पेरॊलि–बड़ा स्वर; वेयिन् पॊम्मल्–वंशी का स्वर; शिङ्कत्तिन् मुळक्कम्–सिंहों का गर्जन; वाचि चिरिप्पु–अश्वों की हँसी (हिनहिनाने की ध्वनि); तेर् इटिप्पु–रथों की गड़गड़ाहट; तिण् कै–मजबूत सूँड़ों वाले; मङ्कुलिन् अतिर्वु–मेघ-सम हाथियों की चिघाड़; वान मळै यॊटु–आकाश के मेघों के साथ; मलैन्तन–(सबने) होड़ लगायी। २३८३

शंखनाद, तुरहीस्वर, आकुली (नामक पटहे) का स्वर, स्वरित काहल का उभरा हुआ नाद, मयूर-पंखों से अलंकृत "पीली" की ध्वनि, वंशी की गुंजार, सिंह का गर्जन, घोड़ों का हिनहिनाना, रथों की गड़गड़ाहट और सशक्त सूँड़ों वाले मेघ-सम हाथियों की चिघाड़ —ये सब आकाश के मेघों से होड़ लगाते उठे। २३८३

विल्लॊलि वयवर् रार्क्कुम् विळियॊलि तॆळिप्पिन् नोङ्गुम्
ऑल्लॊलि वीरर् पेशु मुरैयॊलि युरप्पिर् ऱोन्ऱुम्
जॆल्लॊलि तिरडोळ् गॊट्टुम् जॆणॊलि निलत्तिर् चॆल्लुङ्
गल्लॊलि तुरप्प मर्ऱैक् कडलॊलि करन्द दन्ऱे 2384

बिल् ऑलि–धनु की टंकार; वयवर् आर्क्कुम्–वीरों का नर्दन; विळि ऑलि–आह्वान का स्वर; तॆळिप्पिन् ओङ्कुम्–जोर से बुलाने के कारण ऊँची; ओल् ऑलि–'ऑल्ल' की ध्वनि; वीरर् पेचुम् उरै ऑलि–वीरों की बोली का स्वर; उरप्पिल् तोन्ऱुम्–डाँटने पर हुआ; चॆल् ऑलि–अशनि-स्वर; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों को; कॊट्टुम्–ठोंकने का; चेण् ऑलि–बहुत ऊँचा नाद; निलत्तिल् चॆल्लुम्–भूमि पर चलते वक्त होनेवाले; कल् ऑलि–'गलल' की ध्वनि; तुरप्प–इनसे भगाये जाने के कारण; मर्ऱै–अन्य; कटल् ऑलि–समुद्र-गर्जन; करन्ततु–छिप गया। २३८४

धनु की टंकार, वीरों की नर्दनध्वनि, आह्वान से उठी हुई ऊँची 'ऑल्' की ध्वनि, वीरों की आपस में बोलने से उठनेवाली ध्वनि, डाँटने का अशनिस्वर, कंधे ठोंकने से उत्पन्न नाद, भूमि पर चलने से उठती "गल्" की ध्वनि —इन सबने मानो समुद्र के शोर को भगा दिया। इसलिए समुद्र-गर्जन थम गया। २३८४

नार्कड लनैय तानै नडन्दिडक् किडन्द पारिन्
मेरकडत तॆळनद तळि विशम्बिनमेर रॊडरनद वोश

मार्कडर् चेलै काणुम् वानवर् महळिर् मानप्
पार्कड लनैय वाट्कण् बनिक्कडल् पडुत्त दन्रे 2385

नाल् कटल् अनैय तानै–चार समुद्रों के समान सेना; नटन्लिट–चली, इसलिए; कटन्त पारिन्–पड़ी रहनेवाली धरती से; मेल्–ऊपर; कटूत्तु ॲळुन्त–जो सवेग उठी वह; तूणि–धूल; विचुम्पिन् मेल्–आकाश पर; तोटर्न्तु वीच–बराबर उठती रही, इसलिए; माल्–बड़ी; कटल् चेलै–सागर-सी सेना; काणुम्–देखने वाले; वानवर् मकळिर्–देवांगनाओं की; मान–शालीन; पाल् कटल् अनैय–क्षीरसागर-सम; वाळ् कण्–सुन्दर आँखों ने; पनि कटल्–शीतल सागर; पटुत्ततु–निर्मित किया। २३८५

चार समुद्र के समान चतुरंगिनि सेना चली, इसलिए विशाल भूमि से धूल वेग के साथ उठी और बराबर आकाश में फैली। इसलिए समुद्र-सदृश सेना के दर्शक देवांगनाओं की क्षीरसागर-सम श्रेष्ठ आँखों ने शीतल समुद्र का सृजन कर दिया। (यानी आँसू बरसाये)। २३८५

आयिर कोडित् तिण्डे रमरर्को नहर मॅन्न
मेयवर् शुऱ्ऱत् तानोर् कॉऱ्ऱप्पॉर् ऱेरिन् मेलान्
तूयपॉऱ् चुडर्ह ळॅल्लाञ् जुऱ्ऱुऱ नडुवट् टोन्ऱुम्
नायहप् परिदि पोन्ऱान् ऱेवरै नडुक्कड् गण्डान् 2386

अमरर् कोन् नकरम् ॲन्न–देवेन्द्रनगर के-से; आयिरम् कोटि–एक हजार करोड़; तिण् तेर् मेयवर्–मजबूत रथारूढ़ वीरों के; चुऱ्ऱ–घेरे रहते; तेवरै नटुक्कम् कण्टान्–देव-भयकारी (इन्द्रजित्); तान्–स्वयं; ओर् कॉऱ्ऱम् पॉन् तेरिन् मेलान्–एक विजयशील स्वर्ण-रथ पर आरूढ़; तूय पॉन् चुटर्कळ् ॲल्लाम्–पवित्र और सुन्दर ज्वलंत सारे ग्रहों के; चुऱ्ऱुऱ–घेरे रहते; नटुवण् तोन्ऱुम्–मध्य दिखनेवाले; नायकम् परिति–स्वामी सूर्य; पोन्ऱान्–के समान रहा। २३८६

देवेन्द्र के महल के वीरों के समान हजार करोड़ राक्षस वीर मजबूत रथों पर सवार होकर देवेन्द्र-भयंकर इन्द्रजित् को घेरे रहे। वह स्वयं एक विजयशील स्वर्ण-रथ पर सवार था। तब वह ऐसे नायक सूर्य के समान दिखा जो पवित्र, सुन्दर और उज्ज्वल ग्रहों के मध्य शोभता हो। २३८६

शॅन्ऱुवॅङ् गळत्तै यॅय्दिच् चिऱैयॉडु तुण्डञ् जॅङ्गण्
ऑन्ऱिय कळुत्तु मेनि कालुहिर् वालो डॉप्पप्
पिन्ऱलिल् वॅळ्ळत् तानै मुऱ्ऱपक्कप् परप्पिप् पेळ्वाय्
अन्ऱिलि तुरुव दाय वणिवहुत् तमैन्दु निन्ऱान् 2387

चॅन्ऱु–जाकर; वॅम् कळत्तै ॲय्ति–भयानक युद्ध-रंग में जाकर; चिऱैयॉटु तुण्टम्–पंखों के साथ चोंच और; चॅम् कण् ऑन्ऱिय–लाल आँखों-सहित; कळुत्तुम्–गले और; मेनि–शरीर; काल्–पैर; उकिर्–नाखून; वालोटु ऑप्प–पूंछ आदि के युक्त रीति से बनते; पिन्ऱल् इल्–जो कभी पिछड़ती नहीं; वॅळ्ळम् तानै–

'वॆळ्ळमों' की संख्या की सेना को; मुऱै पट-क्रम से; परप्पि-फैलाकर; पेऴ्वाय्-फटे मुख के; अऩ्ऱिलिऩ् उरुवतु आय-क्रौंच के रूप में बने; अणि वकुत्तु-व्यूह-रचना करके; असैन्तु निऩ्ऱाऩ्-उद्यत रहा। २३८७

इन्द्रजित् ने भयानक युद्धस्थल में जाकर सेना को क्रौंचव्यूह में व्यूहबद्ध किया; जिसके पंख, चोंच, लाल आँखें, ठीक डौल का गला, शरीर, पैर, नाख़ून, पूंछ और फटे मुख से यह व्यूहरचना मेल रखती थी। वह युद्धसन्नद्ध रहा। २३८७

पुरन्दरऩ् शॆरुविऱ् ऱन्दु पोयदु पुणरि येऴुम्
उरन्दविर्त् तूऴि पेरुङ् गालत्तु ळॊलिक्कु मोदै
करन्ददु वयिऱ्ऱुक् काल वलम्बुरि कैयिऩ् वाङ्गिच्
चिरम् बॊदिर्ऩ् दमर रञ्ज दूदिऩाऩ् ऱिशैयुञ् जिन्द 2388

पुरन्तरऩ्-पुरन्दर; चॆरुविल् तन्तु पोयतु-युद्ध में (जिसे) दे गया; एऴु पुणरियुम्-सातों समुद्र; उरम् तविर्त्तु-(सारी सृष्टि का) बल मिटाकर; ऊऴि पेरुम् कालत्तुळ्-युगपरिवर्तन के समय; ऑलिक्कुम् ओतै-जो नाद करते उसे; वयिऱ्ऱु करन्ततु-अपने पेट में जो छिपाए रहा; कालऩ्-यम-सम; वलम् पुरि-दक्षिणावर्त शंख; कैयिऩ् वाङ्कि-हाथ में लेकर; चिरम् पोतिर्न्तु-सिरों के हिलते; अमरर् अञ्च-देवों के डरते; तिचैयुम् चिन्त-दिशाओं को अस्त-व्यस्त करते हुए; ऊतिऩाऩ्-बजाया। २३८८

इन्द्रजित् ने बाद शंख बजाया। वह शंख इन्द्र को युद्ध में हराकर अपना लिया गया था। युगपरिवर्तन के समय सारी सृष्टि का बल मिटा कर सातों समुद्र उमड़कर जो भयंकर नाद उठाते हैं, वह स्वर मानो उसके पेट में समा गया हो, ऐसा नाद उठानेवाला था। काल के समान था और दक्षिणावर्त शंख था। शंखनाद सुनकर देवों के सिर काँपे और वे भयपीड़ित हो गये। दिशाएँ भी अस्त-व्यस्त हो गयीं। २३८८

शङ्गत्तिऩ् मुऴक्कङ् गेट्ट कविप्पॆरुन् दाऩै यानै
शिङ्गत्तिऩ् मुऴक्कङ् गेट्ट वॊत्तदु विरिन्दु शिन्दि
ऍङ्गुऱ्ऱ वॆन्ऩा वण्ण मिरिन्ददी दन्ऱि येऴै
पङ्गत्तऩ् मलैवि लॆन्ऩच् चिलैयॊलि परप्पि यार्त्ताऩ् 2389

चङ्कत्तिऩ् मुऴक्कम् केट्ट-शंखनाद जिसने सुना; कवि पॆरु ताऩै-वानरों की बड़ी सेना; चिङ्कत्तिऩ् मुऴक्कम् केट्टतु-सिंहगर्जन जिसने सुना उस; यानै ऑत्ततु-हाथी के समान बनी; विरिन्तु चिन्ति-तितर-बितर छितरकर; ऍङ्कुऱ्ऱ-कहाँ गयी; ऍन्ऩा वण्णम्-न जाना जाए, इस प्रकार; इरिन्ततु-भागी; ईतु अन्ऱि-इसके अलावा; एऴै पङ्कत्तऩ्-अर्धनारीश्वर के; मलै विल् ऍन्ऩ-मेरु-धनु-ध्वनि के समान; चिलै ऑलि-धनु-ध्वनि; परप्पि-फैलाकर; आर्त्ताऩ्-नर्दन किया। २३८९

शंख-ध्वनि-श्रोता वानर-सेना सिंह-ध्वनि-श्रोता गजों के समान भाग

ड़ी हुई। यह पता ही नहीं चलता था कि कहाँ भागी। यही नहीं द्रजित् ने अर्धनारीश्वर के मेरुधनुष के समान अपने धनु से नाद उठाकर वयं नर्दन किया। २३८९

कीण्डत्त शॅविह ऍञ्जङ् किळिन्दत्त किळर्न्दु शॅल्ला
मीण्डत्त काल्हळ् कैयिन् विळुन्दत्त मरनुम् वॅर्पुम्
पूण्डत्त नडुक्कम् वायहळ् पुलर्न्दत्त मयिरुम् बॉङ्ग
माण्डत्त मत्रो वॅन्र वानर मॅवॅयु मादो 2390

वानरम् ॲवैयुम्–सभी वानर के; चॅविकळ् कीण्टत्त–फटे कानों के हुए; चम् किळिन्तत्त–चिरे मन के हो गये; काल्कळ्–उनके पैर; किळर्न्तु चॅल्ला–साह के साथ आगे न जाकर; मीण्टत्त–मुड़ गये; कैयिन्–हाथों में; मरनुम् पुम्–पेड़ और पहाड़; विळुन्तत्त–नीचे गिर गये; नटुक्कम् पूण्टत्त–काँप गये; कळ् पुलर्न्तत्त–मुख सूख गये; मयिरुम् पौङ्क–रोमों के गिरते; माण्टत्तम् रो–हम मरे न; ॲन्र–ऐसा बोले। २३९०

सभी वानरों के कान फट गये; मन विदीर्ण हो गये। उनके पैर त्साह-हीन होकर मुड़ आये। उनके हाथों के पर्वत और पेड़ फिसलकर र गये। शरीर काँपे और मुख सूखे। वे यह कहने लगे कि हमारे ल कम हो गये और हम मर गये। २३९०

शॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् शेयुञ् जमीरणन् शिरुवन् रानुम्
अङ्गदप् पॅयरि तानु मण्णलु मिळैय कोवुम्
वॅङ्गदिर् मौलिच् चॅङ्गण् वीडणन् मुदलाम् वीरर्
इङ्गिवर् निन्रा रल्ल तिरिन्ददु शेनै यॅल्लाम् 2391

चॅम् कतिर् चॅल्वन्–लाल किरणमाली का; चेयुम्–पुत्र और; चमीरणन् रुवन् तानुम्–समीरण का सूनु; अङ्कतन् पॅयरित्तानुम्–अंगद नाम का बानरपति; णलुम्–महान् श्रीराम; इळैय कोवुम्–और लघुराज; वॅम् कतिर् मौलि–गरम रणें छिटकानेवाले मुकुटधारी; चॅम् कण् वीटणन् मुतलाम्–लाल आँखों वाला भीषण आदि; वीरर्–वीर; इवर्–ये; इङ्कु निन्रार्–यहाँ टिके रहे; अल्लतु–के सिवा; चेनै ॲल्लाम्–सारी सेना; इरिन्ततु–अस्त-व्यस्त हुई। २३९१

लाल किरणमाली का पुत्र सुग्रीव और समीरणसूनु, अंगद, महान् रीराम, लघुराज लक्ष्मण और गरम किरणें निकालनेवाले मुकुटधारी र अरुणाक्ष विभीषण आदि ये टिके रहे। अन्य सभी अस्त-व्यस्त होकर ग गये। २३९१

पडैप्पॅरुन् दलैवर् निर्कप् पल्बॅरुन् दानै वेलै
उडैप्पुरु पुनलि नोड वूळिना ळुवरि योवै

किडैत्तिड मुऴङ्गि यार्त्तुक् किळर्न्ददु निरुदर् शेनै
अडैत्तदु तिशैह ळॅल्ला मलुवव रहत्त रानार् 2392

पटै पॅरु तलैवर् निऱ्क–बड़े सेनापतियों के टिके रहते; पल् पॅरु तानै वेलै–विविध बड़ी सेना का सागर; उटैप्पु उऱु–तीर को तोड़कर जानेवाले; पुनलिन्–जल के समान; ओट–भाग गया; निरुतर् वेलै–राक्षस-सेना ने; ऊऴि नाळ् उवरि–युगांत-सागर के-से उठनेवाले; ओतै किटैत्तिट–नाद को पैदा करते हुए; मुऴङ्कि आर्त्तु–उमगकर नारे लगाकर; किळर्न्ततु–उत्साहपूर्ण रहने से; तिचैकळ् ऍल्लाम्–सारी दिशाओं में; अटैत्ततु–रोक लगा दी (या भर गयी); अन्नवर्–वे वानर; अकत्तर् आनार्–युद्ध के मैदान में रह गये। २३९२

बड़े-बड़े सेनानायक खड़े रहे और विविध और बड़ी-बड़ी वानर-सेनाएँ तीर तोड़कर बहनेवाले जल के समान भाग गयीं। तब राक्षस-सेना ने युगांतकालीन समुद्रगर्जन के समान नर्दन करते हुए उमंग के साथ सारी दिशाओं में रोक लगा दी तो वानर-सेना को मैदान में आना पड़ा। २३९२

मारुदि यलङ्गल् मालै मणियणि वयिरत् तोण्मेल्
वीरनुम् वालि शेय्दन् विऱल्हॅऴु शिहरत् तोण्मेल्
आरियर् किळैय गोवु मेऱिन रमरर् वाऴ्त्ति
वेरियम् बूविन् मारि शॊरिन्दन रिडैविडामै 2393

मारुति–मारुति के; अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली माला से; अणि–अलंकृत; मणि वयिरम् तोळ् मेल्–सुन्दर वज्रस्कंध पर; वीरनुम्–श्रीवीरराघव और; वालि चेय् तन्–वाली के पुत्र के; विऱल् कॅऴु–मजबूत; चिकरम् तोळ् मेल्–शिखर-सम कंधों पर; आरियर्कु–आर्य श्रीराम के; इळैय कोवुम्–छोटे राजकुमार भी; एऱिनार्–आरूढ़ हुए; अमरर् वाऴ्त्ति–देवों ने शुभ कामनाएँ प्रकट करके; वेरि–शहद-सहित; अम् पूविन् मारि–सुन्दर फूलों की वर्षा; इटैविटामै चॊरिन्तनर्–लगातार करायी। २३९३

मारुति के खिलनेवाली माला से अलंकृत मनोरम वज्रस्कंध पर श्रीवीरराघव और वाली के पुत्र के सशक्त, पर्वतशिखर-सम कंधों पर आर्य श्रीराम के छोटे भाई आरूढ़ हुए, तब देवों ने शुभ कामनाएँ प्रकट करके मधुयुक्त सुन्दर पुष्पवर्षा बराबर करायी। २३९३

विडैयिन्मेऱ् कलुऴन् ऱन्मेल् विल्लिनर् विळङ्गु हिन्ऱ
कडैयिन्मे लुयर्न्द काट्चि यिरुवरुङ् गडुत्तार् कण्णुऱ्
ऱडैयिन्मे रुवैयुञ् जाय्क्कु मनुमनङ् गदनॅन् ऱिन्नार्
तॊडैयिन्मेल् मलर्न्द तारर् तोळिन्मेऱ् ऱोन्ऱुम् वीरर् 2394

कण्णुऱ्ऱु अटैयिन्–दृष्टिपथ में आने पर; मेरुवैयुम्–मेरु (पर्वत) को; चाय्क्कुम्–नष्ट कर सकनेवाले; अनुमन् अङ्कतन्–हनुमान और अंगद; ऍन्ऱु–जो थे; इन्नार्–उनके; तोळिन्मेल् तोन्ऱुम्–कन्धे पर शोभायमान; मेल्–श्रेष्ठ; मलरन्त–विकसित पुष्प की; तॊटैयिन् तारर्–गुँथी मालाधारी; विल्लिनर्–धनुर्हस्त;

वीरर्–वीर (राम-लक्ष्मण); विटैयिन् मेल्–ऋषभ और; कलुळन् तन्मेल्–गरुड़ पर; विळङ्कुकिन्र–शोभायमान; कटैयिन् मेल् उयर्न्त–अपार महिमावाले; काट्चि–दर्शनीय; इरुवरुम्–दोनों (शिव, विष्णु); कट्टुत्तार–के समान लगते थे। २३६४

दृष्टिगोचर होने पर मेरु को भी गिरा सकनेवाले हनुमान और अंगद के कंधों पर दिखनेवाले शोभायमान और खिले पुष्पों की मालाधारी और धनुर्हस्त वीर (राम-लक्ष्मण) ऋषभ-गरुड़ पर शोभायमान उत्कृष्ट दर्शन के पात्र दोनों (शिव और विष्णु) के समान लगे। २३९४

नीलनै मुदला युळ्ळ नेडुम्बडैत् तलैवर् निन्ड्रार्
तालमु मलैयु मेन्दित् ताक्कुवान् शमैन्व वेलै
ञालमुम् विशुम्बुङ् गात्त नानिलक् किऴवन् मैन्दन्
मेलमर् विळैवै युन्नि विलक्किनन् विळम्ब लुट्रान् 2395

नीलनै मुतला उळळ–नील को आदि में लेकर जो रहे; नॆट्टु पटै तलैवर्–बड़े सेनापति; तालमुम् मलैयुम्–तालतरुओं और पर्वतों को; एन्ति–लेकर; नित्ड्रार्–खड़े रहे; ताक्कुवान्–आक्रमण करने; चमैन्त वेलै–जब उद्यत हुए तब; ञालमुम् विचुम्पुम् कात्त–भूमि और आकाश की रक्षा करनेवाले; नाल् निलम् किऴवन्–चतुर्विधा भूमि के पति के; मैन्तन्–पुत्र श्रीराम ने; मेल् विळैवु–आगे आनेवाले; अमरै उन्नि–युद्ध को सोचकर; विलक्किनन्–उन्हें रोककर; विळम्पल् उट्रान्–(और) कहने लगे। २३६५

नील आदि श्रेष्ठ सेनापति कालवृक्ष और गिरियों को उठाये हुए खड़े होकर जब आक्रमण करने लगे, तब आकाश और भूमि को बचानेवाले धराधिप दाशरथी ने आगे आनेवाले युद्ध की बात सोचकर उनको रोका। वे आगे बोले। २३९५

कडवुळर् बडैयै नुम्मेल् वॆय्यवन् ड्रुरन्द कालैत्
तडैयुळ वल्ल दाङ्गुन् दन्मैयि रल्लिर् ताक्किर्
किडैयुळ दॆम्बा नल्हिप् पिन्निरै निड्रि रीण्डिप्
पडैयुळ दनैयु मिन्ड्रॆम् विट्रॊऴिल् पार्त्ति रॆन्ड्रान् 2396

वॆय्यवन्–दुष्ट इन्द्रजित्; नुम् मेल्–तुम लोगों पर; कटवुळर् पटैयै–दिव्य अस्त्रों को; तुरन्त कालै–जब चलाएगा तब; तटै उळ अल्ल–वे अवार्य होंगे; ताङ्कुम् तन्मैयर् अल्लिर्–(तुम लोग) सहने की शक्ति नहीं रखते; ताक्किट्कु–आक्रमण करने का; इटै उळतु–जो स्थान है उसे; ऎम्पाल्–हमारे पास; नल्कि–देकर; पिन् निरै–पीछे की पंक्तियों में; निड्रिर्–खड़े रहो; ईण्टु–यहाँ; इ पटै उळ तनैयुम्–इस सेना के रहते तक; इन्ड्रु–आज; ऎम् विल् तॊऴिल्–हमारा धनुकर्म; पार्त्तिर्–देखो; ऎन्ड्रान्–कहा श्रीराम ने। २३६६

जब दुष्ट इन्द्रजित् तुम लोगों पर दिव्य अस्त्र चलाएगा, तब अवार्य

उनको आप बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। आक्रमण के लिए आगे का स्थान हमको देकर पीछे की पंक्तियों में खड़े रहो। यहाँ इस राक्षस-सेना के रहते तक हमारा धनुकर्म देख लो। २३९६

अरुण्मुऱै　यवरु　निऩ्ऱा　राण्डहै　वीर　राऴि
उरुण्मुऱै　तेरिऩ्　मावि　ऩोडैमाल्　वरैयि　ऩूऴि
इरुण्मुऱै　निरुदर्　तम्मे　लेविऩ　रिमैप्पि　लोरुम्
मरुण्मुऱै　यॆय्दिऱ्　ऱैऩ्बर्　शिलैवळुङ्　गशऩि　मारि 2397

अरुळ् मुऱै–कृपा की आज्ञा के अनुसार; अवरुम् निऩ्ऱार्–वे भी स्थित हुए; आण्डहै वीरर्–पौरुषपूर्ण वीर; आऴि उरुळ् मुऱै–पहियों के बल पर चलकर आनेवाले; तेरिऩ्–रथों पर; माविऩ्–घोड़े पर; ओटै–मुखपटालंकृत; माल् वरैयिऩ्–बड़े पर्वतों (-सम गजों) पर; ऊऴि इरुळ् मुऱै–और युगांतकालीन अन्धकार-सम; निरुतर् तम् मेल्–राक्षसों पर; चिलै वळङ्कु–धनु जिन्हें चलाता है; अचऩि मारि–उन (बाण रूपी) अशनियों की वर्षा; एविऩर्–प्रेषित की। २३९७

श्रीराम की करुणामय आज्ञा के अनुसार वानर वीर खड़े हो गये। पौरुषपूर्ण श्रीराम और लक्ष्मण ने पहियोंदार रथों, अश्वों और मुखपटालंकृत गजों और युगांत के अंधकार-सदृश राक्षसों पर, धनुनिर्गत आशनि-वर्षा करायी। इससे अपलक देवों को भी भ्रमित होने की नौबत आ गयी। २३९७

तेरिऩ्मेऱ्　चिलैयि　ऩिऩ्ऱ　विऩ्दिर　शित्तॆऩ्ऩ्　ऱोदुम्
वीररुळ्　वीरऩ्　कण्डाऩ्　विऴुन्दऩ　विऴुन्द　वॆऩ्ऩुम्
पारिऩ्मे　ऩोक्कि　ऩऩ्ऱेऱ्　पट्टऩर्　पट्टा　रॆऩ्ऩुम्
पोरिऩ्मे　ऩोक्कि　लाद　विरुवरुम्　बॊरुद　पूशल् 2398

विऴुन्तऩ विऴुन्त–गिरते ही रहे; ऎऩ्ऩुम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; पारिऩ् मेल् नोक्किल् अऩ्ऱेल्–भूमि पर (गिरती लाशों को) देखने के सिवा; पट्टऩर्–(कौन) हत हुए; पट्टार्–कौन मरे; ऎऩ्ऩुम्–यह निश्चित रूप से कहें ऐसा; पोरिऩ् मेल् नोक्कु इलात–युद्ध में ध्यान जो नहीं देते रहे; इरुवरुम्–दोनों; पॊरुत पूचल्–जो लड़ाई लड़े उसको; तेरिऩ् मेल्–रथ पर; चिलैयिऩ् निऩ्ऱ–धनु को टेककर जो खड़ा रहा (या पत्थर की तरह जो खड़ा रहा) उस; इन्तिरचित्तु ऎऩ्ऱु ओतुम्–इन्द्रजित् के नाम से शंसित; वीररुळ् वीरऩ्–वीरों में वीर ने; कण्टाऩ्–देखा। २३९८

श्रीराम और लक्ष्मण ऐसे युद्ध करते रहे कि लाशें गिरती ही रहीं और यह निश्चित रहा कि जिस पर शर लगा वह मर ही गया। इतना होने पर भी वे युद्ध पर विशेष ध्यान देकर लड़ते नहीं मालूम होते थे। इस युद्ध को रथ पर से इन्द्रजित् शंसित वीरों में वीर धनु को टेककर देखता ही रहा। ("शिलै" का अर्थ "धनु" भी है, "पत्थर" भी है। इसलिए प्रस्तरवत यानी अवाक् देखता रहा।)। २३९८

यानैपट् टनवो वॅन्ड्रा नॅिरदमिड् ड्रनवो वॅन्ड्रान्
मानमा वन्द वॅल्ला मरिन्दॉळिन् दनवो वॅन्ड्रान्
एनैवा ळरक्क रियारु मिल्लैयो वॅडुक्क वॅन्ड्रान्
वानुयर् बिणत्तिन् कुप्पै मरैत्तलिन् मयक्क मुड्रान् 2399

वान् उयर्–आकाश तक ऊँचे; पिणत्तिन् कुप्पै–लाशों के ढेर के; मरैत्तलिन्–छिपाने से; मयक्कम् उड्रान्–भ्रमित हुआ; यानै पट्टनवो–हाथी हत हो गये क्या; ॲन्ड्रान्–पूछा; इरतम् इड्रनवो ॲन्ड्रान्–रथ मिट गये क्या; वन्त–आगत; मानम्–शानदार; मा ॲल्लाम्–अश्व सारे; मरिन्तु ऑळिन्तनवो–मर मिटे क्या; ॲन्ड्रान्–पूछा; ॲटुक्क–(लाश को) लेने (हटाने); एनै वाळ् अरक्कर्–अन्य तलवारधारी राक्षस; यारुम् इल्लैयो–कोई नहीं है क्या; ॲन्ड्रान्–पूछा (नैराश्य प्रगट किया)। २३९९

गगनोन्नत लाशों के ढेर के छिपाने से इन्द्रजित् भ्रमित हुआ और उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी कि क्या हाथी हत हो गये ? रथ टूट गये ? युद्ध में आगत सभी शानदार अश्व शव हो गये ? मृतकों को उठाने के लिए अन्य तलवारधारी राक्षस वीर नहीं हैं क्या ? । २३९९

चॅय्हिन्ड्रा रिरुवर् वॅम्बोर् शिदैहिन्ड्र शेनै नोक्किन्
ऐयन्दा निल्ला वॅळ्ळ मरुबदु मविह वॅन्ड्रु
वैहिन्ड्रा रल्ल राह वरिशिलै वलत्तान् माळ
ऍय्हिन्ड्रा रल्ल रीदॅव् विन्दिर शाल मॅन्ड्रान् 2400

वॅम् पोर् चॅय्किन्ड्रार्–घमासान युद्ध करते थे; इरुवर्–दोनों ही; चितैकिन्ड्र चेनै–मिटनेवाली सेना को; नोक्किन्–देखने पर; ऐयम् तान् इल्ला–असंदिग्ध; अरुपतु वॅळ्ळम्–साठ 'वॅळ्ळम'; अविक–मिट जाए; ॲन्ड्रु–कहकर; वैकिन्ड्रार्–शाप देते (मार देते हैं); अल्लर् आक–नहीं तो; वरि चिलै वलत्तान् माळ–सबन्ध धनु के बल से मारने; ऍय्किन्ड्रारुम् अल्लर्–बाण छोड़नेवाले नहीं लगते; ईतु–यह काम; ॲव् इन्तिर चालमो–क्या इन्द्रजाल है; ॲन्ड्रान्–विस्मय-कथन किया। २४००

घमासान युद्ध करनेवाले ये दोनों, हत सेना की स्थिति देखने पर यही लगता था कि, असंदिग्ध रूप से साठ हजार 'वॅळ्ळम्' की सेना को "मरो" का शाप देकर मार रहे हैं। नहीं तो सबंध धनु की शक्ति से मारने के लिए शर नहीं छोड़ रहे (यानी बहुत ही अनायास रूप से लड़ रहे हैं)। यह क्या इन्द्रजाल है ? इन्द्रजित् ने ऐसा विस्मय किया। २४००

अम्बिन्मा मळैयै नोक्कु मुदिरत्ति नाड्रै नोक्कुम्
उम्बरि नळवुञ् जॅन्ड्र पिणक्कुन्ड्रि नुयर्वै नोक्कुम्
कॉम्बड्र वुदिर्न्द मुत्तिन् कुप्पैयै नोक्कुङ् गॉन्ड्र
तुम्बियै नोक्कुम् वीरर् शुन्दरत् तोळै नोक्कुम् 2401

अम्पिन् मा मळैयै नोक्कुम्–अस्त्रों की घनी वर्षा को देखता; उतिरत्तिन्–रुधिर की; आऱ्ऱै नोक्कुम्–नदी को देखता; उम्परिन् अळवुम्–आकाश तक; चॆन्ऱ–गयी; पिणम् कुन्ऱिन् उयर्वै–लाशों के पर्वत की ऊँचाई को; नोक्कुम्–देखता; कोम्पु अऱ–दाँतों के टूटने से; उतिरन्त–गिरे हुए; मुत्तिन् कुप्पैयै–मोतियों की राशियों को; नोक्कुम्–देखता; कॊन्ऱ तुम्पियै–हत हाथियों को; नोक्कुम्–देखता; वीरर् चुन्तरम् तोळै–वीरों की सुन्दर भुजाओं को; नोक्कुम्–देखता। २४०१

इन्द्रजित् विपुल शरवर्षा को देखता। रुधिर की नदी पर दृष्टि दौड़ाता। आकाश तक गयी हुई लाशों के ढेर की ऊँचाई पर ध्यान देता। हाथियों के दाँतों के कटने से गिरनेवाले मोतियों के ढेर को देखता। मारे गये हाथियों को देखता और वीरों की सुन्दर भुजाओं पर दृष्टि दौड़ाता। २४०१

मलैहळै नोक्कु मऱ्ऱु वानुऱक् कुविन्त वन्गण्
तलैहळै नोक्कुम् वीरर् शरङ्गळै नोक्कुम् ताक्कि
उलैहॊळ्वॆम् बॊरियि नुक्क पडैक्कलत् तॊळुक्कै नोक्कुम्
शिलैहळै नोक्कु नाणेऱ् ऱिडियिलैच् चॆवियि नेऱ्कुम् 2402

मलैकळै नोक्कुम्–पर्वतों को देखता; मऱ्ऱु–और; अव् वान् उऱ–उस आकाश तक लगे; कुविन्त–ढेर लगे; वन् कण्–क्रूर आँखों वाले; तलैकळै नोक्कुम्–सिरों को देखता; वीरर्–वीरों के; चरङ्कळै–शरों को; नोक्कुम्–देखता; ताक्कि–टकराकर; उलै कॊळ्–भट्ठी के-से; वॆम् पॊरियिन्–गरम अंगारों के साथ; उक्क–छितरे पड़े रहे; पटै कलत्तु ऑळुक्कै–हथियारों की पंक्तियों को; नोक्कुम्–देखता; चिलैकळै नोक्कुम्–धनुओं को देखता; नाण् एऱ्ऱु–डोरा टंकोरने से उत्पन्न; इटियिनै–अशनि-स्वर को; चॆवियिन् एऱ्कुम्–कानों पर (सुन) लेता। २४०२

वह पर्वतों को देखता और आकाश तक ढेर में रहे क्रूर आँखों के सिरों को देखता। वीरों (राम-लक्ष्मण) के शरों का बल सोचता। टकराने से गरम अंगारों के साथ गिरे पड़े रहे हथियारों की पंक्तियाँ देखता। उन वीरों के धनुओं को देखता और उनके डोरों से उत्पन्न अशनि-नाद श्रवण करता। २४०२

आयिरन् देरै याड लानैयै यलङ्गन् मावै
आयिरन् दलैयै याळिप् पडैहळै यऱुत्तु मप्पाऱ्
पोयिन बहळि वेहत् तन्मैयैप् पुरिन्दु नोक्कुम्
पायुमॆवॆम् बहळिक् कॊन्ऱुङ् गणक्किलाप् परप्पैप् पार्क्कुम् 2403

आयिरम् तेरै–हज़ार रथों को; आटल् आनैयै–मज़बूत हाथियों; अलङ्कल् मावै–नाचनेवाले घोड़ों को; आयिरम् तलैयै–हज़ार (वीरों के) सिरों को; आळि पटैकळै–और नाशकारी हथियारों को; अऱुत्तुम्–काटकर भी; अप्पाल् पोयिन पकळि–आगे जानेवाले अस्त्रों की; वेकत् तन्मैयै–वेग-गति को; पुरिन्तु नोक्कुम्–

चाव के साथ देखता; पायुम्–सवेग चलनेवाले; वॅम् पकळिक्कु–भयंकर शरों का; कणक्कु ऑन्ऱुम् इला–अमाप; परप्पॅ पार्क्कुम्–विस्तार देखता। २४०३

उसने देखा कि बाण हज़ार रथों, मज़बूत हाथियों, नाचनेवाले घोड़ों, वीरों के हज़ारों सिरों और नाशकारी हथियारों को काटकर भी नहीं रुकते। वह उनकी गति को चाव के साथ देखता और यह भी देखता कि त्वरित उनके सामने अपार विस्तार है। २४०३

अऱुबदु वॅळ्ळ माय वरक्करद्द माऱ्ऱ्ऱ् केऱ्ऱ
ऍऱिवन ऍय्व पॅय्व वॅऱ्ऱुरु पडैह ळियावुम्
पॊऱिवनम् वॅन्द पॊलच्च् चाम्बराय्प् पोय दल्लाऱ्
चॅऱिवन विल्ला वाऱ्ऱैच् चिन्दैयाऱ् ऱॆरिय नोक्कुम् 2404

अऱुपतु वॅळ्ळम् आय–साठ 'वॅळ्ळन्' के; अरक्कर् तम् आऱ्ऱऱ्कु एऱ्ऱ–राक्षसों के बल के योग्य; ऍऱिवन–फेंके जानेवाले; ऍय्व–चलाये जानेवाले; पॅय्व–बरसाये जानेवाले; ऍऱ्ऱु उरु–पीटनेवाले; पटैकळ् यावुम्–सारे हथियार; पॊऱि वतम् वॅन्त पोल–यन्त्रवन (कारखाना) जल गया हो, इस भाँति; चाम्पराय् पोयतु अल्लाल्–राख बनाना छोड़; चॅऱिवत इल्ला आऱ्ऱै–पास नहीं जाते यह हाल; चिन्तैयाल्–मन से; तॅरिय नोक्कुम्–सोचकर देखता। २४०४

साठ हज़ार वीरों ने कितने ही तरह के हथियार चलाये। फेंके जानेवाले, चलाये जानेवाले, पीटनेवाले, खोंसनेवाले, चुभोनेवाले, कितने ही हथियार थे पर वे सभी यंत्रवन के समान राख बनने के सिवा जाकर शत्रु पर नहीं लग सके। इन्द्रजित् इस बात को विस्मय के साथ सोचता। २४०४

वयिऱलैत् तोडि वन्दु कॊऴुनर्मेऱ् महळिर् माऴ्हिक्
कुयिऱलत् तुक्क वॅन्नक् कुऴैहिन्ऱ कुऴैवै नोक्कुम्
ऍयिऱलैत् तिडिक्कुम् बॆऴ्वायत् तलैयिला वाक्कै यीट्टम्
पयिऱलैप् परवै पारिऱ् पडिहिलाप् परप्पैप् पार्क्कुम् 2405

वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटती हुई; ओटि वन्तु–भागती आकर; कॊऴुनर् मेल्–पतियों के शरीरों पर; मकळिर् माऴ्कि–स्त्रियाँ दुःखी होकर; कुयिल् तलत्तु उक्क ऍन्त–कोयलें नीचे भूमि पर गिरी हों जैसे; कुऴैकिन्ऱ–व्यथित होनेवालियों की; कुऴैवै नोक्कुम्–व्यथा को देखते; ऍयिऱु अलैत्तु–दाँत पीसकर; इटिक्कुम्–शोर मचानेवाले; पेऴ्वाय्–फटे मुखों के; तलै इला आक्कै–सिरहीन शरीरों (कबन्धों) के; ईट्टम्–झुण्डों का; पयिल्तलै–नाच और; परवै–पक्षियों का; पारिल् पटिकिला–भूमि पर न आने का; पटियै पार्क्कुम्–हाल देखता। २४०५

इन्द्रजित् उन स्त्रियों की व्यग्रता देखता, जो पेट पीटती हुई आतीं और अपने पतियों पर रोती हुई गिरतीं और आहत हो भूमि पर गिरी कोकिलाओं के समान व्यग्र होतीं। दाँत पीसते हुए गर्जन करनेवाले फटे-

से मुखों के सिरों से हीन कबंध नाचते थे और उनसे डरकर पक्षी, भूमि पर उतर नहीं आते। इन्द्रजित् इसको भी देखता। २४०५

अङ्गद रतन्द कोडि युळरॆनु मनुम नॆन्बारक्
किङ्गिलि युलह मॆल्ला मिडमिलै पोलु मॆन्नुम्
ऍङ्गुमिम् मतिद रॆन्बा रिरुवरे कॊल्लॆन् ऱुन्नुज्
जिङ्गवे ऱुतैय वीरर् गडुमैयैत् तॆरिहि लादान् 2406

चिङ्गक एऱु अतैय–नर केसरी-सदृश; वीरर्–वीर (हनुमान और अंगद) के; कटुमैयै–वेग को; तॆरिकिलातान्–जो जान नहीं पाया वह इन्द्रजित्; अङ्कतर्–अंगद; अतन्त कोटि उळर्–अनंत कोटि हैं; ऍनुम्–कहता; अनुमन् ऍन्पार्क्कु–हनुमान के लिए; इलि–आगे; इङ्कु–यहाँ; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक में; इटम् इलै पोलुम्–स्थान नहीं है शायद; ऍन्नुम्–कहता; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; इ मतितर् ऍन्पार्–ये नर-कथित; इरुवर् कॊल्–दोनों ही हैं क्या; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नुम्–कहता। २४०६

केसरी-निभ वीर, हनुमान और अंगद की तेजी को इन्द्रजित् जान नहीं सका। इसलिए वह विस्मय के साथ कहता कि अनंत कोटि अंगद हैं और हनुमान के लिए दुनिया भर में गन्तव्य स्थान नहीं है। वह भी आश्चर्य किया कि क्या सर्वत्र राम और लक्ष्मण दो ही हैं? । २४०६

आर्क्किन्ऱ वमरर् दम्मै नोक्कुमाङ् गवर्ह ळळ्ळित्
तूर्क्किन्ऱ पूवै नोक्कुन् दुडिक्किन्ऱ विडत्तो णोक्कुम्
बार्क्किन्ऱ तिशैह ळॆङ्गुम् पडुम्बिणप् परप्पै पाक्कुम्
ईर्क्किन्ऱ कुरुदि यार्ऱिन् यानैयिन् पिणत्तै नोक्कुम् 2407

आर्क्किन्ऱ–आनंदरव करनेवाले; अमरर् तम्मै–देवों को; नोक्कुम्–देखता; आङ्कु–वहाँ; अवर्कळ्–वे; अळ्ळि तूर्क्किन्ऱ–जो उठाकर फेंकते; पूवै नोक्कुम्–उन फूलों को देखता; तुटिक्किन्ऱ–फड़कनेवाले; इट तोळ्–बायें कंधे को; नोक्कुम्–देखता; पार्क्किन्ऱ· तिचैकळ् ऍङ्कुम्–जहाँ देखता उन सभी दिशाओं में; पटुम्–दृष्टिगत होनेवाले; पिणम् परप्पै–लाशों के ढेरों को; पार्क्कुम्–देखता; कुरुति आऱ्ऱिन्–रक्त-नदी से; ईर्क्किन्ऱ–खींच लिये जानेवाले; यानैयिन् पिणत्तै नोक्कुम्–गजशवों को देखता। २४०७

वह आनंद-आरव करनेवाले देवों को देखता और उनके बरसाये हुए पुष्पों को देखता। फड़कनेवाली अपनी बायीं भुजा को देखता और लाशों के विस्तार को देखता, जो सभी दृष्टिगोचर दिशाओं में पाया जाता। उन गज-शवों को देखता, जो रुधिर-नदी में खींच लिये जाते। २४०७

आयिर कोडित् तेरु मरक्करु मॊळ्ळिय वल्लार्
मायिरुज् जेनै यॆल्ला मायन्दवा कण्डुम् वल्लॆ

पोयिऩ कुरक्कुत् तात पुहुन्दिल दऩ्ऱे पौऱ्ऱेरत्
तीयवऩ् ऱऩ्मे लुळ्ळ पयत्तिऩाऱ् कलक्कन् दीरा 2408

आयिरम् कोटि–हज़ार करोड़; तेरुम्–रथों; अरक्करुम्–और राक्षसों को; ऑऴिय–छोड़कर; अल्लार्–अन्यों की; मा इरु चेनै ऑल्लाम्–बहुत बड़ी सेनाएँ, सारी; माय्न्तवा कण्टुम्–मर गयीं देखकर; वल्लै–उतावली के साथ; पोयित–जो गयी; कुरक्कु तानै–वानर-सेना; पॊऩ् तेर्–स्वर्णरथारूढ़; तीयवन् तन् मेल् उळ्ळ–दुष्ट (इन्द्रजित्) से; पयत्तिनाल्–भय के कारण; कलक्कम् तीरा–भ्रम न दूर हुआ इसलिए; पुकुन्तिलतु–लौट नहीं आयी। २४०८

एक हज़ार करोड़ रथों और राक्षसों को छोड़कर अन्य सारी सेना मिट गयी। यह देखकर भी जो वानर-सेना भाग गयी थी, वह स्वर्ण-रथारूढ़ इन्द्रजित् से भय के कारण भ्रांति से न छूटकर लौट नहीं आयी। २४०८

तळप्पॆरुञ् जेनै वॆळ्ळ मरुबदुन् दलतत्त दाह
अळप्परुन् देरि नुळ्ळ दायिरक् कोडि याहत्
तुळक्कमि लाऱ्ऱल् वीरर् पौरुदपोर्त् तॊऴिलै नोक्कि
अळप्परुन् दोळैक् कॊट्टि यञ्जनै मदलै यार्त्तान् 2409

तळम् पॆरु चेनै वॆळ्ळम्–दल-बद्ध बड़ी सेना के 'वॆळ्ळम्'; अऱुपतुम्–साठों; तलत्ततु आक–धराशायी हो गये; अळप्परुम् तेरिन्–अनंत रथों के वीरों का; उळ्ळतु–जो बचा रहा वह; आयिरम् कोटि आक–हज़ार कोटि का ही रहा; तुळक्कम् इल्–अचंचल; आऱ्ऱल् वीरर्–बलवान वीर; पॊरुत पोर् तॊऴिलै–जो लड़े उस लड़ाई के कार्य को; नोक्कि–देखकर; अञ्चनै मतलै–अंजनासुत ने; अळप्पु अरु–अमाप; तोळै कॊट्टि–अपने कंधों को ठोंककर; आर्त्तान्–नाद उठाया। २४०९

दलबद्ध बड़ी राक्षस-सेना मिट्टी में मिल गयी। बेशुमार रथों की उस सेना के केवल एक हज़ार करोड़ ही बच सके। अचंचल मन के बलवान वीर राम और लक्ष्मण का यह अपूर्व युद्धकर्म देखकर अंजनासुत ने अपने अमाप कंधों को ठोंककर उच्च नर्दन किया। २४०९

आरिडै यनुम नार्त्त वार्प्पॊलि यशनि केळात्
तेरिडै निन्ऱु वीऴ्न्दार् शिलर्शिलर् पडैहल् शिन्दिप्
पारिडै यिरुन्दु वीऴ्न्दु पदैत्तनर पैम्बॊ निञ्जि
ऊरिडै निन्ऱु ळारु मुयिरिनो डुदिरङ् गाऩ्ऱार् 2410

अरुमै इटै–अगम युद्धस्थल में; अनुमन् आर्त्त–हनुमान द्वारा उठाया गया; आर्प्पु ऑलि–नर्दन-स्वर (रूपी); अचनि केळा–अशनिनाद सुनकर; चिलर्–कुछ राक्षस; तेर् इटै निन्ऱु वीऴ्न्तार्–रथ से नीचे गिरे; चिलर्–कुछ; पटैकळ् चिन्ति–हथियार गिराकर; पार् इटै इरुन्तु–भूमि पर से ही; वीऴ्न्तु–गिरकर; पतैत्तनर्–छटपटाये; पचुमै पॊन् इञ्चि–चोखे स्वर्ण के प्राचीरों के मध्य; ऊर् इटै

नित्ऱुळारुम्–नगर में जो खड़े रहे उन्होंने भी; **उयिरितोडु उतिरम् कालुरार्**–अपने प्राणों के साथ रक्त वमन किया। २४१०

कठोर युद्धस्थल में हनुमान ने जो नारे लगाये, उनकी ध्वनि रूपी अशनि को सुनकर कुछ राक्षस रथों पर से नीचे गिर गये। कुछ राक्षस जो भूमि पर ही रहे अपने हथियार गिराकर भूमि पर गिरे और छटपटाये। चोखे सोने के प्राचीरों के मध्य लंका नगर में रहनेवाले राक्षसों ने भी अपने प्राणों के साथ रक्त का वमन कर दिया। २४१०

अञ्जितीर् पोमिन् इन्ऱो आर्प्पॊलिक् कऴियर् पालिर्
वॆञ्जमम् विळैप्प ॲन्नो नीरुनिव् वीर रोडु
तुञ्जिनिर् पोलु मन्ऱो ॲन्ऱवर् चुळित्तु नोक्कि
मञ्जिनिर् करिय मॆय्या निरुवर्मे लॊरुवन् वन्दान् 2411

मञ्चितिल्–मेघ से अधिक; **करिय मॆय्यान्**–काले रंग के शरीर के इन्द्रजित् ने; **इन्ऱु**–अब; **ओर्**–एक; **आर्प्पु ऒलिक्कु**–नारे के स्वर के सामने; **अऴियख् पालिर्**–मरनेवाले; **अञ्चितीर्**–कायर; **पोमिन्**–(लौट के) चलो; **वॆञ् चमम्**–कठोर युद्ध; **विळैप्पतु ॲन्नो**–करो कहाँ; **नीरुम्**–तुम भी; **इव् वीररोडु**–इन (मृतक) वीरों के साथ; **तुञ्चितिर् पोलुम् अन्ऱो**–मर ही गये न; **ॲन्ऱु**–कहा और; **अवर् चुळित्तु नोक्कि**–उन पर कोपदृष्टि डालकर; **इरुवर् मेल्**–उन दोनों पर; **ऒरुवन्**–अकेले ही; **वन्तान्**–चढ़ आया। २४११

मेघ से भी काले रंग के इन्द्रजित् ने उनको डाँटा। एक ही नारे के सामने मरनेवाले, हे कायर लोगो! लौट चलो। कहाँ करोगे कठोर युद्ध? तुम भी इन (मृत) वीरों के साथ मर गये न। उन पर कोप-दृष्टि दौड़ाकर वह इन दोनों पर अकेले ही चढ़ आया। २४११

अक्कणत् तार्त्तु मण्डि यायिर कोडित् तेरुम्
पुक्कन नेमिप् पाट्टिऱ् किऴिन्दन पुवन मॆन्नत्
तिक्कणि निन्ऱ यानै शिरम्बॊदि यॆऱियप् पारिन्
उक्कन विशुम्बिन् मीन्ग ळुदिर्न्दिडत् तेव रुट्क 2412

अ कणत्तु–उसी क्षण; **तिक्कु अणि निन्ऱ यानै**–दिशाओं के शृंगाररूप स्थित गजों के; **चिरम् पॊतिर् ऎऱिय**–सिर काँप उठें और; **विचुम्पिन् मीन्कळ्**–आकाश के नक्षत्र; **पारिन्**–भूमि पर; **उक्कु अऩ**–टूटे-से; **उतिर्न्तिट**–गिरें और; **तेवर् उट्क**–देव डरें, ऐसा; **आयिरम् कोटि तेरुम्**–हजार करोड़ रथ; **आर्त्तु मण्टि**–बड़े शोर के साथ पास आये और; **नेमि पाट्टिल्**–चक्रों के चलने से; **पुवनम् किऴिन्तन ॲन्न**–भूमि चिर गयी हो ऐसा; **पुक्कन**–युद्धस्थल में पहुँचे। २४१२

तभी दिशाओं के शृंगार, दिग्गजों के सिर काँपने लगे। आकाश के नक्षत्र भूमि पर चू पड़े। देवगण भयातुर हुए। अपने चक्रों को, मानो भूमि को चीरते हुए चलाकर एक हज़ार रथ युद्ध के मैदान में आ पहुँचे। २४१२

मार्ऱमौन्̱ ऱिळैयवऩ् वळैविऱ् चङ्गरत्
तेऱ्ऱिलऩ् वणङ्गिनिऩ् ऱियम्बु वाऩिहल्
आऱ्ऱिल नरवुकौण् डशैप्प वारमर्
तोऱ्ऱनॆ नॆऩ्ऱुकौण् डुलहम् जौल्लुमाल् 2413

वळै विल्–वक्र धनु को; चॆम् करत्तु–लाल हाथ में; एऱ्ऱिऩऩ्–लिये हुए; वणङ्कि निऩ्ऱु–नमस्कार करके; इळैयवऩ्–छोटे (लक्ष्मण) ने; माऱ्ऱम् ऒऩ्ऱु–एक बात; इयम्पुवाऩ्–कही; इकल् आऱ्ऱिलऩ्–वैर दिखानेवाले इन्द्रजित् के; अरवु कॊण्टु अचैप्प–नागपाश से बाँधने से; अरुमै अमर्–अगम युद्ध में; तोऱ्ऱऩॆऩ्–हार गया; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उलकम् चॊल्लुम्–लोक (निंदा) कहेगा। २४१३

वक्र धनु को अपने लाल हाथ में लिये हुए लक्ष्मण ने नमस्कार करके श्रीराम से निवेदन किया कि वैरी इन्द्रजित् के नागपाश के बंधन से मैंने श्रेष्ठ युद्ध में हार खायी। इसको लेकर दुनिया मेरी निंदा करेगी। २४१३

काक्कवुङ् गिऱ्ऱिलऩ् काद लण्बरैप्
पोक्कवुङ् गिऱ्ऱिल नॊरुवऩ् पोय्प्पिणि
आक्कवुङ् गिऱ्ऱिलऩ् अमरि लारुयिर्
नीक्कवुङ् गिऱ्ऱिल नॆऩ्ऱु निऩ्ऱदाल् 2414

कातल् नण्परै–प्यारे मित्रों की; काक्कवुम्–रक्षा; किऱ्ऱिलऩ्–नहीं कर सका; पोक्कवुम् किऱ्ऱिलऩ्–(पाश को) हटा नहीं सका; ऒरुवऩ् पोय्–अकेले जाकर; पिणि आक्कवुम् किऱ्ऱिलऩ्–(इन्द्रजित् को) हानि भी नहीं कर सका; अमरिल्–युद्ध में; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राण; नीक्कवुम् किऱ्ऱिलऩ्–त्याग भी नहीं सका; ऎऩ्ऱु निऩ्ऱतु–ऐसी निंदा स्थिर हो गयी है। २४१४

"वह प्यारे मित्रों को बचा नहीं सका। पाश नहीं हटा सका। अकेले जाकर इन्द्रजित् को कोई क्लेश भी नहीं दे सका, युद्ध में अपने प्राण भी नहीं छोड़ सका" यह निंदा की बात टिक गयी है। २४१४

इन्दिरऩ् पहैयॆऩु मिवऩै यॆऩ्शरम्
अन्दरत् तरुन्दलै यरुक्क लावॆनिऩ्
वॆन्दौऴिऱ् चॆय्हैयऩ् विरुन्दु मायॆनु
मैन्दरिऱ् कडैयॆऩप् पडुवऩ् वाऴियाय् 2415

वाऴियाय्–आयुष्मान्; इन्तिरऩ् पकै ऎऩुम्–इन्द्रशत्रु-कथित; इवऩै–इसके; अरु तलै–अपूर्व सिर को; ऎऩ् चरम्–मेरा शर; अन्तरत्तु–आकाश में ही; अरुक्कलातु ऎऩिऩ्–नहीं काटेगा तो; वॆम् तॊऴिल् चॆय्कैयऩ्–नृशंसकारी (यम) का; विरुन्तुम् आय्–अतिथि बनूं और; मॆय्न्तरिल्–सम्मान्य लोगों में (गणना न पाकर); कटै–निकृष्ट; ऎऩ पटुवऩ्–कहा जाऊं। २४१५

आयुष्मान्! इन्द्रशत्रु-कथित इसके बहुमूल्य सिर को मेरा शर

अन्तरिक्ष में ही नहीं काटे तो क्रूरकर्म यम के मेहमान बनकर जो गौरव समन्वित हुए उनमें मेरी गिनती नहीं होगी और मैं अति निकृष्ट रहूँगा। २४१५

निऩ्ऩुडै मुऩ्ऩरियाऩ् नॅऱियि ऩीर्मैयाऩ्
तऩ्ऩुडैच् चिरत्तैयॆऩ् ऩरत्तिऩ् ऱळ्ळिऩाऱ्
पॊऩ्ऩुडै वऩैकऴऱ् पॊलम्बॊऩ् ऱोळिऩाय्
ऎऩ्ऩुडै यडिमैयु मिचैयिऩ् ऱामरो 2416

पॊऩ् उटै वऩै–स्वर्णनिर्मित; कऴल्–पायलधारी; पॊलम् पॊऩ् तोळिऩाय्–स्वर्ण (-आभरणों) से अलंकृत कंधोंवाले; निऩ् उटै मुऩ्ऩर्–आपके ही सामने; याऩ्–मैं; नॅऱि इल् नीर्मैयाऩ्–सन्मार्ग पर जाने का स्वभाव जिसका नहीं; तऩ्ऩुटै–उसके; चिरत्तै–सिर को; ऎऩ् चरत्तिल् तळ्ळिऩाल्–अपने बाण से काट गिराऊँ तभी; ऎऩ् उटै अटिमैयुम्–मेरी दासता भी; इचैयिऱ्ऱु आम्–यशस्विनी होगी। २४१६

स्वर्ण-निर्मित वीर पायलधारी और स्वर्णाभरणालंकृत कंधों वाले! आपकी ही आँखों के सामने उस सन्मार्गप्रवेश-हीन इन्द्रजित् का सिर काट डालूँ, तभी मेरी दासता यशस्विनी होगी। २४१६

कडिदिऩि लुलहॆलाङ् गण्डु निऱ्कवॆऩ्
ऩडुशर मिवऩ्ऱलै यऱुत्ति लादॆऩिऩ्
मुडियवॊऩ् ऱुणर्त्तुवॆ ऩुऩ्ऩक्कु नाऩ्मुयल्
अडिमैयिऩ् पयऩिहऩ् दऱुह आऴियाय् 2417

आऴियाय्–(आज्ञा-) चक्रधर; कटितिऩिल्–जल्दी; उलकु ऎलाम्–सारे संसार के; कण्टु निऱ्क–देखते रहते; ऎऩ्–मेरा; अटु चरम्–संहारक शर; इवऩ् तलै–इसके सिर को; अऱुत्तिलातु ऎऩिऩ्–नहीं काट दे तो; मुटिय–निश्चित रूप से; ऒऩ्ऱु उणर्त्तुवॆऩ्–एक बात बताऊँगा; उऩक्कु–आपकी; नाऩ् मुयल् अटिमैयिऩ्–मेरी प्रयत्नशील दासता का; पयऩ् इकन्तु अऱुक–फल मुझे छोड़ जाए। २४१७

(आज्ञा) चक्रधारी! वेग के साथ, दुनिया के देखते, अगर मेरा संहारक बाण इसका सिर नहीं काटेगा तो मैं निश्चित रूप से एक बात बताऊँगा। मेरी प्रयत्नशील दासता का फल मुझे नहीं मिले। २४१७

वल्लव ऩव्वुरै वऴङ्गु मेल्वैयिऩ्
अल्लनीङ् गिऩमॆऩ वमर रार्त्तऩर्
ऎल्लैयि लुलहमुम् यावु मार्त्तऩ
नल्लऱ मार्त्तदु नमऩु मार्त्तऩऩ् 2418

वल्लवऩ्–बलवान लक्ष्मण; अव् उरै–वह कथन; वऴङ्कुम्–जब कर रहे थे; एल्वैयिऩ्–उस समय; अमरर्–देवों ने; अल्लल् नीङ्किऩम्–

कष्ट से मुक्त हुए; ऍन्न–कहकर; आर्त्तनर्–आरव किया; ऍल्लै इल् उलकमुम् यावुम्–अनंत सभी लोकों ने, और अन्य सभी ने; आर्त्तन–हो-हल्ला मचाया; नल् अऱम् आर्त्ततु–श्रेष्ठ धर्मदेवता ने नर्दन किया; नमनुम् आर्त्तनन्–यम ने भी आनंदनाद उठाया। २४१८

जब समर्थ लक्ष्मण ने यह बात कही तो देवों ने आनंद के साथ, "संकट-मुक्त हो गये" कहकर हो-हल्ला मचाया। अन्य जीवों ने भी उच्च स्वर में नर्दन किया। श्रेष्ठ धर्मदेवता के साथ यम भी आनन्द मनाने लगा। २४१८

मुऱुवल्वाळ् मुहत्तिनन् मुळरिक् कण्णनुम्
अऱिवनी यडुवलॅन् ऱमैदि यामॅनिन्
इऱुदियुङ् गावलु मियऱ्ऱु मीशरुम्
वॅऱुवियर् वेऱिनि विळैवदि यादॅन्ऱान् 2419

मुळरि कण्णनुम्–कमलाक्ष भी; मुऱुवल्–मंदहास (से); वाळ् मुकत्तिनन्–शोभायमान श्रीमुख के होकर; अऱिव–बुद्धिमान; नी–तुम; अडुवल्–मारूँगा; ऍन्ऱु अमैति आम् ऍनिन्–ऐसा संकल्प कर लोगे तो; इऱुतियुम्–संहार और; कावलुम्–पालन के काम; इयऱ्ऱुम् ईचरुम्–करनेवाले (शिव और विष्णु) देवता भी; वॅऱुवियर्–कुछ नहीं होंगे; इनि–अब; विळैवतु–होनेवाला; वेऱु यातु–दूसरा क्या होगा। २४१६

कमलाक्ष श्रीराम ने मन्दहास की छटा से दीप्त मुख वाले होकर कहा कि ऐ बुद्धिमान्! अगर तुम किसी को मारने का संकल्प करो तो सृष्टि के पालक और संहारक दोनों (विष्णु और शिव तुम्हारे सामने) कुछ नहीं होंगे, फिर उसे छोड़ क्या होगा?। २४१९

शॊल्लदु केट्टडि तॊळुदु शुऱ्ऱिय
पल्पॆरुन् देरॊडु मरक्कर् पण्णैयैक्
कॊल्वॆनिङ् गन्नदु काण्डि कॊल्लॆन
ऒल्लॆयि लॆळुन्दन नुवहै युळ्ळत्तान् 2420

अतु चॊल् केट्टु–वह शब्द सुनकर; अटि तॊळुतु–चरणों में नमस्कार करके; चुऱ्ऱिय–घेरे रहे; पल्–अनेक; पॆरु तेरॊट्टम्–बड़े रथों और; अरक्कर् पण्णैयै–राक्षस-दलों को; इङ्कु कॊल्वॆन्–अभी मारूँगा; अन्नतु काण्टि–वह देखो; ऍन्न–ऐसा; उवकै उळ्ळत्तान्–उत्साहपूर्णमन हो; ऒल्लैयिल् ऍळुन्तनन्–झट उठा। २४२०

लक्ष्मण ने उनका कथन सुनकर उनकी चरण-वंदना करके दावे के साथ कहा कि इन्द्रजित् को घेरे रहनेवाले अनेक बड़े-बड़े रथों के साथ राक्षसों के विपुल दल को अभी मार दूँगा—वह देख लीजिए। यह कहकर वह आनन्दपूरित मन के साथ झट उठा। २४२०

अङ्गद नार्त्तन नशनि येर्रॅन, मङ्गुलिन् इदिर्न्दन वयवन् रेर्बुतै
शिङ्गमु नडुङ्गुरत् तिरुवि नायहन् शङ्गमोन् रॅालित्तदु कडलुन् दळ्ळुर 2421

वयवन् तेर्-वीर (इन्द्रजित् के) रथ से; पुतै-जुते; चिङ्कमुम्-सिंहों को भी; नटुङ्कुर-कँपाते हुए; मङ्कुल् निऴुरु-मेघ से; अतिर्न्तन-शोर करनेवाले; अचनि एरु ऍन-तुमुल अशनिश्रेष्ठ के समान; अङ्कतन् आर्त्तनन्-अंगद ने नारे उठाए; तिरुविन् नायकन् कटलुम् तळ्ळुर-समुद्र को भी पीछे ढकेलते हुए (गर्जन में); चङ्कम् ऒन्रु-लक्ष्मीवान (लक्ष्मण का) शंख एक; ऒलित्ततु-ध्वनित हुआ। २४२१

तब अंगद ने ऐसा नाद उठाया कि वीर इन्द्रजित् के रथों से जुते हुए सिंह काँप उठें और वह शब्द मेघ-से नाद करनेवाले वज्र के समान हो। (विजय-) लक्ष्मीवान लक्ष्मण का एक शंख भी बज उठा, जिसके कारण समुद्र-गर्जन पिछड़ गया। २४२१

ऍऴुमऴुच् चक्कर मिट्टि तोमरम्
मुऴुमुरट् टण्डुवेल् मुशुण्डि मूविलै
कऴुवयिर् कप्पणङ् गवण्गल् कत्तहम्
विऴुमऴैक् किरट्टिविट् टरक्कर् वीशिनार् 2422

ऍऴु-खंभे (के आकार के हथियार); मऴु-परशु; चक्करम्-चक्र; ईट्टि-भाले; तोमरम्-तोमर; मुऴु मुरण्-पूर्ण सारयुक्त; तण्टु-गदा; वेल्-साँग; मुचुण्टि-मुशुण्डी; मूविलै कऴु-त्रिशूल; अयिल्-धारदार; कप्पणम्-"कप्पण"; कवण् कल्-ढेलेबाँस; कत्तकम्-कर्णक; विऴु मऴैक्कु इरट्टि-वर्षा के दुगुने (परिमाण में); अरक्कर्-राक्षसों ने; विट्टु वीचिनार्-चलाये। २४२२

राक्षसों ने निम्नलिखित हथियार आकाश से गिरनेवाले वर्षा के दुगुने रूप में चलाये:— खम्भे, परशु, चक्र, भाले, तोमर, बहुत मजबूत गदाएँ, शक्ति, मुशुंडी, त्रिशूल, तीक्ष्ण साँग, ढेलाबाँस और कर्णक। २४२२

मीनॅलाम् विण्णिनिन् ऱॅारुङ्गु वीऴ्न्दॅन
वानॅला मण्णॅला मरैय वन्दन
कानॅलान् दुणिन्दुपोय्त् तहर्न्दु कान्दिन
वेनिला नन्नैयवन् बहळि वॅम्मैयाल् 2423

वेनिलान्-वसंतनाथ; अन्नैयवन्-जैसे (सुन्दर) के; पकऴि वॅम्मैयाल्-शरों की नाशक शक्ति से; मीन् ऍलाम्-सारे नक्षत्र; विण्णिन् निन्ऱु-आकाश से; ऒरुङ्कु वीऴ्न्ततु ऍन-एक साथ गिरे जैसे; वान् ऍलाम्-सारा आकाश; मण् ऍलाम्-और सारी पृथ्वी; मऱैय वन्तन-ढँकते जो आये; कान् ऍलाम्-हथियार सब; तुणिन्तु पोय्-भिन्न होकर; तकर्न्तु-चूर होकर; कान्तिन-प्रकाशहीन होते पड़ रहे। २४२३

वसंतदेवता के समान बड़े ही सुन्दर लक्ष्मण के बाणों की गर्मी से

सभी हथियार, जो आकाश के सारे नक्षत्र एक साथ नीचे गिरे जैसे आकाश और भूमि को ढकते हुए आ रहे थे, कटे, चूर हुए और कांति खो पड़े रहे। २४२३

आयिरन्	देरीरु	तोंडेयि	नच्चिरुम्
पाय्ब्परिक्	कुलम्बडुम्	बाहर्	पोत्रुवर्
नायहर्	नेंडुन्दले	तुमियु	नामरुत्
तीयॅळुम्	बुहैयॅळु	मुलहन्	दीयुमाल् 2424

औरु तोंदैयित्–एक खेप (बाण) से; आयिरम् तेर्–हज़ार रथ; अच्चु इरुम्–धुरी-फटे हो गिरते; पाय् परि कुलम्–सरपट भागनेवाले घोड़ों के दल; पटुम्–मरते; पाकर् पोत्रुवर्–सारथी मरते; नाम् अरु–भय दूर करते हुए; नायकर् नेंटु तले–नायकों के बड़े सिर; तुमियुम्–कट जाते; ती ॲळुम्–आग निकलती; पुकै ॲळुम्–धुआँ उठता; उलकम् तीयुम्–लोक जलते। २४२४

उनके एक बाण से हज़ार रथों की धुरियाँ टूट जातीं और वे गिर जाते। सरपट भागनेवाले अश्वदल धराशायी हो जाते। उनके सवार भी मर जाते। भय दूर करते हुए सेनापतियों के बड़े सिर कट कर गिरते। आग ऊपर उठती। धुआँ फैलता और लोक जल जाता। २४२४

अडियरुन्	देर्मुर	णाळि	यच्चिरुम्
वडिनॆडुञ्	जिलैयरुम्	वाशि	मार्बरुम्
कॊडियरुङ्	गुडेयरुङ्	गोट्टर	वीरर्दम्
मुडियरु	मुरशरु	मुहिलुम्	शिन्दुमाल् 2425

तेर्–रथ का; अटि–निचला भाग; अरुम्–टूट जाता; मुरण् आळि–मज़बूत पहियों का; अच्चु इरुम्–धुरी के साथ नाश हो जाता; वटि–चुना हुआ (श्रेष्ठ); नेंटु चिले–दीर्घ धनु; अरुम्–कट जाता; वाचि–अश्व; मार्पु अरुम्–चिरे वक्ष के हो जाते; कॊटि अरुम्–ध्वजा कट जाती; कुटै अरुम्–छत्र कट जाते; कोट्टरम् वीरर् तम्–विजयी वीरों के; मुटि अरुम्–सिर कट जाते; मुरचु अरुम्–नगाड़े फट जाते; मुकिलुम् चिन्तुम्–मेघ भी चू पड़ते। २४२५

रथ के निचले भाग दूर हो जाते। मज़बूत पहियों के साथ धुरी मिट जाती। चुने हुए दीर्घ धनुष कट जाते। अश्वों के वक्ष चिर जाते। ध्वजा कट जाती। छाता दूर हो जाता। विजयी वीरों के सिर चले जाते। नगाड़े का चमड़ा फट जाता। मेघ भी बिखरकर चूर हो जाते। २४२५

इन्नदो	वरुप्पिवै	यितय	तेर्परि
मन्नव	रिवरिवर्	पडैञर्	मर्रुळोर्

ऍऩ्ऩवोर् तऩ्मैयुन् दॅरिन्द दिल्लैयाल्
शिऩ्ऩबिऩ्ऩ तङ्गळाय् मयङ्गिच् चिन्दलाल् 2426

चिऩ्ऩ पिऩ्ऩङ्कळाय्–छिन्न-भिन्न हो; मयङ्कि चिन्तलाल्–मिश्रित और बिखरे रहने से; इऩ्ऩतु ओर् उऱुप्पु–यह यह अंग है; इवै इतॆय तेर्–ये अमुक रथ हैं; परि–अश्व; इवर् मऩ्ऩवर्–ये राजा; इवर् पटॆञर्–ये सैनिक हैं; मऱ्ऱुळोर्–अन्य है; ऍऩ्ऩ–ऐसा; ओर् तऩ्मैयुम्–कोई भेद; तॆरिन्ततु इल्लै–नहीं जाना गया। २४२६

छिन्न-भिन्न होकर सभी अंग छितर गये थे, इसलिए यह कौन सा अंग है ? ये कैसे रथ हैं या अश्व हैं ? ये ही राजा हैं। ये वीर हैं या ये अन्य हैं। —इस तरह का कोई विवेक नहीं हो सकता था। २४२६

तन्दैयर् तेरिडैत् तऩयर् वऩ्ऱलै
वन्दऩ तादैयर् वयिर वाऩ्शिरस्
शिन्दिऩ कादलर् तेरिऱ् चिऩ्ऩमाय्
अन्दरत् तम्बोडु मऱ्ऱॆ ऴुन्दऩ 2427

चिऩ्ऩमाय्–खण्डों के रूप में; अऱ्ऱु–कटकर; अम्पॊटु–बाणों के साथ; अन्तरत्तु ऍऴुन्तऩ–आकाश में जो गये वे; तऩयर् वल् तलै–पुत्रों के कठोर सिर; तन्तैयर् तेर् इटै–पिताओं के रथों में; वन्तऩ–आ गिरे; तातैयर–पिताओं के; वयिरम् वाऩ् चिरम्–वृहत् वज्र-सिर; कातलर् तेरिल्–पुत्रों के रथों में; चिन्तिऩ–गिरे। २४२७

पुत्रों के कठोर सिर छिन्न होकर अस्त्र के साथ जो आकाश में गये, वे उनके पिताओं के रथों के आगे आ गिरे। पिताओं के वृहत् वज्र-सिर पुत्रों के रथों में पाये गये। २४२७

शॆम्बॆरुङ् गुरुदियिऱ् ऱिहऴ्न्द शॆङ्गण्मीऩ्
कॊम्बॊडुम् बरवैयिऱ् ऱिरियुङ् गॊट्पॆऩत्
तुम्बैयन् दॊडैयलरत् तडक्कै तूणिवाङ्
गम्बॊडुन् दुणिन्दऩ निलैयॊ डऱ्ऱऩ 2428

तूणि–तूणीर से; वाङ्कु अम्पॊटुम्–जिसको निकालते रहे उस बाण के साथ; निलैयॊटु अऱ्ऱऩ–अपनी स्थिति से जो कट गये वे; तुम्पै अम् तॊटैयलर्–'तुंबै' (नामक युद्धद्योतक) फूलों की माला से अलंकृत राक्षसों के; तट कै–बड़े हाथ; चॆम् कण् मीऩ्–लाल आँखों के मत्स्य; कॊम्पॊटुम्–सींगों के साथ; परवैयिल् तिरियुम्–सागर में घूमते; कॊट्पु ऍऩ–जैसे, उसी प्रकार; चॆम्–लाल; पॆरु–बड़े; कुरुतियिल्–रक्त-प्रवाह में; तिकऴ्न्त–रहे। २४२८

तूणीर से कुछ राक्षस अस्त्र निकाल रहे थे, उसी स्थिति में उन "तुम्बै" मालाधारी राक्षसों के हाथ कट गये। वे रक्त के प्रवाह में उन

बड़े मत्स्यों के समान दिखे, जो समुद्र में लाल आँखों और बड़े सींग के साथ घूम रहे हों। २४२८

तडिवन कॊडुञ्जरन् दळ्ळत् तळ्ळुरु
मडिवन कॊडिहळुङ् गुडेयु मट्रवुम्
वॆडिपडु कडनिहर् कुरुदि वॆळ्ळत्तिर्
पडिवन वॊत्तन परवैप् पन्मैय 2429

तटिवन–काटने का काम करनेवाले; कॊटु चरम्–क्रूर शरों के; तळ्ळ तळ्ळुर–अधिक परिमाण में काटने से; मटिवन–जो नाश हुए; कॊटिकळुम् कुटैयुम्–वे ध्वजाएँ और छत्रियाँ; मट्रवुम्–और अन्य वस्तुएँ; वॆटि पटु–भयानक; कटल् निकर्–समुद्र-सम; कुरुति वॆळ्ळत्तिल्–रक्त के प्रवाह में; पटिवन–गिरनेवाले; पन्मैय–विविध और अनेक; परवै ऒत्तन–पक्षियों के सदृश रहे। २४२९

काटनेवाले भयंकर शरों ने सबको काट गिराया तो कटे छाते और कटी ध्वजाएँ और अन्य चीज़ें भयंकर समुद्र-सम रक्त-प्रवाह में गिरते हुए विविध पक्षियों के समान लगे। २४२९

शिन्दु रङ्गळिन् परुममुम् बहळियुन् देरुम्
कुन्दु वन्नॆडुञ् जिलैमुदर् पडैहळुङ् गॊडियुम्,
इन्द नङ्गळा यिरुन्दवर् विळिक्कन लिलङ्ग
वॆन्द वॆम्बिणम् विळुङ्गिन कळुदुहळ् विरुम्बि 2430

चिन्तुरङ्कळिन् परुममुम्–गजों के कण्ठों के गद्दे; पकळियुम्–बाण; तेरुम्–रथ और; कुन्तु–(बाण जिन पर) बैठते हैं, वे; वल् नॆटु चिलै–कठोर और दीर्घ चाप; मुतल्–आदि; पटैकळुम्–हथियार; कॊटियुम्–ध्वजाएँ; इन्तनङ्कळाय्–ईंधन बने; इरुन्तवर् विळि–मृतकों की आँखें; कनल् इलङ्क–आग बनीं; वॆन्त वॆम्पिणम्–जो पके उन (दुर्गन्धपूर्ण) घृणित लाशों को; कळुतुकळ्–भूतों ने; विरुम्पि–चाव के साथ; विळुङ्कित–निगल लिये। २४३०

(युद्ध के मैदान में लाशें पकीं। कैसे? सुनिए।) गजों पर के गद्दे, रथ, कठोर और बड़े धनु आदि हथियार और ध्वजाएँ —ये सब ईंधन बने और मृतकों की आँखें अग्नि बनीं। तब लाशें पकीं और उनसे दुर्गन्ध फैली। उन लाशों को भूतगण चाव से निगलने लगे। २४३०

शिल्लि यूडरच् चिदरिन शिलशिल कोत्त
वल्लि यूडर मरिन्दन पुरविहळ् मडियप्
पुल्लि मण्णिडैप् पुरण्डन शिलशिल पोराळ्
विल्लि शारदि यॊडुम्बडत् तिरिन्दन वॆरिय 2431

चिल–कुछ रथ; चिल्लि ऊटु अर–पहियों के बीच से टूट जाने से; चितरिन–छिन्न हुए; चिल–कुछ; कोत्त–बँधी हुई; वल्लि–(रास की) रस्सी के; ऊट

अऱ्‌–बीच में कट जाने से; मण् इटै मटिय–भूमि पर गिरकर मरें ऐसा; पुरविकळ्–अश्व; पुल्लि पुरण्टन–लगकर लोटे और; मडिन्तन–मर गये; चिल चिल–कुछ-कुछ; पोर् आळ्–योद्धा; विल्लि–धनुर्धर; चारतियोटुम्–सारथी के साथ; पट–मरे तो; वॆऱिय तिरिन्तन–खाली घूमते रहे थे। २४३१

कुछ रथ पहियों के बीच से टूटने से टूटे। कुछ रथों की रस्सियों के टूटने से घोड़े भूमि पर गिरे और लुढ़क गये। कुछ रथ, योद्धा और धनुर्धर सारथियों के मर जाने से खाली घूम रहे थे। २४३१

अलङ्गु पल्मणिक् कदिरन कुरुदियि ऩऴून्दि
विलङ्गु शॆम्जुडर् विडुवन वॆळियिऩ्ऱि मिडैन्द
कुलङ्गॊळ् वॆय्यवर् ऱमर्क्कळत् तीयिडैक् कुळित्त
इलङ्गै मानहर् माळिहै निहर्त्तन विरदम् 2432

अलङ्कु–रह-रहकर प्रकाश देनेवाले; पल्मणि कतिरन–विविध रत्नों की कांति से भरे; कुरुतियिन् अऴुन्ति–रक्त में मग्न होकर; विलङ्कु–दिखनेवाले; चॆम् चुटर् विटुवन–लाल रंग की ज्योति देनेवाले; वॆळि इन्ऱि–रिक्त स्थान न छोड़कर; मिटैन्त इरतम्–जो सटे रहे वे रथ; कुलम् कॊळ्–समूह में रहे; वॆय्यवर्–क्रूर राक्षसों के; अमर् कळम् ती इटै–युद्धस्थल की आग में; कुळित्त–मग्न हुए; इलङ्कै मा नकर–उस लंका महानगर के; माळिकै निकर्त्तन–महलों के समान दिखे। २४३२

रह-रहकर प्रकाश छिटकानेवाले अनेक रत्नों-सहित अनेक रथ रक्त में मग्न होकर लाल रोशनी फैला रहे थे। सटे हुए रहे वे उन लंका नगर के महलों के समान लगे, जो क्रूर राक्षसों के युद्ध के कारण उठी आग के मध्य रहते हों। २४३२

आऩ कालैयि ऩिरामऩु मयिऩ्मुहप् पहऴि
शोनै मारियिऩ् चॊरिन्दऩ ऩनुमनैत् तूण्डि
वाऩ मानङ्गण् मऱिन्दॆनत् तेरॆला मडियत्
तानुन् देरुमे यायिऩ ऩिरावणऩ् ऱऩयऩ् 2433

आन कालैयिन्–तब; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; अनुमनै–हनुमान को; तूण्टि–उकसाकर; अयिल् मुकम्–तीक्ष्णमुखी; पकऴि–शरों को; चोनै मारियिल्–लगातार वर्षा के समान; चॊरिन्तनन्–चलाया; वानम् मानङ्कळ्–आकाशचारी यान; मऱिन्तन–टूटकर गिरे जैसे; तेर् ऎलाम् मटिय–सारे रथ मिट गये तो; इरावणन् तनयन्–रावण का पुत्र; तानुम् तेरुमे आयिनन्–अकेले रथ का और अकेला हो गया। २४३३

तब श्रीराम ने मारुति को आगे चलाया और तीक्ष्णमुखी शरों को घनघोर वर्षा के समान चलाया। देवयान टूटकर गिरे-जैसे सभी रथ

मटियामेट हो गये। और रावणपुत्र अपने अकेले रथ के साथ अकेला हो गया। २४३३

पल्वि लङ्गोडु पुरविहळ् पूण्डलेर्प् परवै
वल्वि लङ्गल्पो लरक्क्कर्दङ् गुळात्तोडु मडिय
विल्वि लङ्गिय वीररै नोक्किनन् वॅकुण्डान्
शोल्वि लङ्गलन् शोल्लिन निरावणन् ट्रोन्ड्रल् 2434

पल् विलङ्कोटु–विविध पशुओं के साथ; पुरविकळ् पूण्ट–जिनसे अश्व जुते थे; तेर् परवै–उन रथों का विस्तार; वल्–कठोर; विलङ्कल् पोल्–पर्वतों के समान; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुळात्तोटु–दलों के साथ; मटिय–मिटे तो; विल् विलङ्किय–धनुष्कर्म में जो पिछड़ गये उन; वीररै–वीरों को; नोक्कितन्–देख; वॅकुण्टान्–क्रुद्ध होकर; इरावणन् तोन्ड्रल्–रावण के पुत्र ने; विलङ्कलन्–अपने स्थान से न हटकर; ओरु चोल्–एक बात; चोल्लिनन्–कही। २४३४

विविध पशुओं और अश्वों से युक्त रथों का समूह मज़बूत पर्वतों के समान राक्षसदलों के साथ मिट गये। तब इन्द्रजित् धनुर्विद्या-विदग्ध श्रीराम और लक्ष्मण को तरेरकर अपनी स्थिति से नहीं हटते हुए एक बात कही। २४३४

इरुवि रॅन्नोडु पॉरुदिरो वन्ड्रॅनि नेर्ट्र
ऑरुविर् वन्दुयिर् तरुदिरो वुम्बडै योडुम्
बॉरुदु पोन्ड्रदल् पुरिदिरो वुरुवदु पुहलुम्
तरुव निन्ड्रुमक् केर्ट्रुळ यानॅन्न चलित्तान् 2435

इरुविर् ॲन्नोटु पॉरुतिरो–दोनों मेरे साथ लड़ोगे; अन्ड्रु ॲनिन्–नहीं तो; एर्ट्र–योग्य; ओरुविर् वन्तु–एक आकर; उयिर् तरुतिरो–अपने प्राण दोगे; उम् पटैयोटुम्–अपनी सेना के साथ; पॉरुतु–युद्ध करके; पॉन्ड्रतल् पुरितिरो–मरने का काम करोगे; उरुवतु पुकलुम्–जो करोगे वह करो; यान्–मैं; इन्ड्रु–अब; उमक्कु एर्ट्रुळ–तुम्हारे योग्य बात; तरुवन्–करूँगा; ॲन्न–कहकर; चलित्तान्–झुंझलाया। २४३५

उसने पूछा— क्या तुम दोनों मेरे साथ लड़ोगे ? या योग्य एक आकर मरना चाहोगे या अपनी सेना-सहित लड़कर यम के मेहमान बनना चाहोगे ? अपना निर्णय कहो। जो माँगो वही दूँगा। इन्द्रजित् झुंझलाया। २४३५

वाळिर् ट्रिण्शिलैत् तोळिलिनिन् मल्लिनिन् मड्रै
आळुर् ट्रॅण्णिय पडैक्कल मॅवर्ट्रिनु ममरिल्
कोळुर् ट्रन्नोडु कुरित्तमर् शॅय्दुयिर् कॉळ्वान्
शूळुर् ट्रेनिवु शरदमन् ट्रिलक्कुवन् शोन्नान् 2436

वाळिल्–तलवार से; तिण् चिलै तॊऴिलितिल्–सुदृढ़ धनुकर्म से; मल्लितिल्–मल्लयुद्ध करके; मट्रै–अन्य; आळ् उट्रु–दक्ष होकर; ऍण्णिय–गण्य; पटै कलम् ऍवट्रितुम्–सभी हथियारों से; अमरिल्–युद्ध में; कोळ् उट्रु–बल दिखाकर; उन्तॊटु कुट्रितु–तुम्हारा सामना करके; अमर् चॆय्तु–युद्ध करके; उयिर् कॊळ्वान्–प्राण हरने को; चूळ् उट्रेन्–सौगंध खायी है; इतु चरतम्–यह निश्चित है; ऍन्ट्र–ऐसा; इलक्कुवन् चॊन्तान्–लक्ष्मण ने कहा। २४३६

तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि मैंने ही शपथ खायी है कि तलवार, धनु, मल्लयुद्ध में और अन्य हथियारों द्वारा तुम्हारा सामना करूँ और तुम्हारे प्राण हर लूँ। २४३६

मुन्पि रुन्दनिन् ट्रमैयनै मुट्रैतविर्त् तुनक्कुप्
पिन्पि रन्दव नाक्कुवॆन् पिन्पिरन् दोयै
मुन्पि रन्दव नाक्कुवॆ निदुमुडि येनेल्
ऍन्पि रन्दव नारपय निरावणर् कॆन्ट्रान् 2437

मुन् पिरन्त–पहले जनमे; निन् तमैयनै–तुम्हारे अग्रज को; मुट्रै तविर्त्तु–क्रम भंग करके; उनक्कु पिन्पु–तुम्हारे बाद; इरन्तवन् आक्कुवेन्–मरनेवाला बना दूंगा; पिन् पिरन्तोयै–अनुज को; मुन्पु इरन्तवन् आक्कुवॆन्–पहले मरनेवाला बनाऊँगा; इतु–यह; मुटियेनेल्–न कर चुकूँ तो; इरावणर्कु–रावण के पुत्र के रूप में; पिरन्ततताल् पयन् ऍन्–जनमने से क्या लाभ; ऍन्ट्रान्–कहा रावणि ने। २४३७

तब रावणि ने जवाब दिया कि अब मैं अग्रज अनुज का क्रम तोड़कर पहले तुमको मार दूँगा और अनुज को अग्रज (पहले जानेवाला) और अग्रज को अनुज बना दूँगा। अगर यह न करूँ तो रावण का पुत्र बनने से क्या लाभ हुआ ?। २४३७

इलक्कु वन्ऍनुम् बॆयरुनक् कियैवदे यॆन्न
इलक्कु वन्गणैक् काक्कुवॆ निदुपुहुन् दिडैये
विलक्कु वॆन्ऍन विडैयवन् विलक्किनुम् वीरम्
कलक्कु वॆन्निदु काणुमुन् ट्रमैयनुम् कण्णाल् 2438

इलक्कुवन्–'इलक्कुवन्' (लक्ष्मण का तमिऴ रूप); ऍनुम् पॆयर्–का नाम; उनक्कु इयैवते–तुम्हारे लिए युक्त है; ऍन्न–ऐसा; वन् कणैक्कु–कठोर शर का; इलक्कु आक्कुवॆन्–'इलक्कु' (लक्ष्य) बनाऊँगा; इतु–यहाँ; इटैये पुकुन्तु–बीच में घुसकर; विलक्कुवॆन्–रोक लूँगा; ऍन–कहकर; विटैयवन्–ऋषभवाहन; विलक्किनुम्–रोकेगा तो भी; वीरम् कलक्कुवॆन्–उसकी वीरता को बेकार कर दूँगा; इतु–यह; उन् तमैयनुम्–तुम्हारा बड़ा भाई भी; कण्णाल् काणुम्–अपनी आँखों से देख लेगा। २४३८

"इलक्कुवन्" के तुम्हारे नाम को सार्थक बनाकर मैं तुम्हें अपने

बाण का "इलक्कु" (लक्ष्य) बना दूँगा। ऋषभवाहन शिव भी क्यों आड़े आवें, उनकी वीरता को बेकार कर दूँगा। यह मेरी करामात तुम्हारा बड़ा भाई देखेगा। (इलक्कुवन् "लक्ष्मण" शब्द का तमिळ रूप है। उस शब्द के आधार पर कम्बन श्लेष का प्रयोग करते हैं।)। २४३८

अरुव दाहिय वॆळ्ळत्ति नरक्करै यम्बाल्
इरुव दाक्किय विरण्डुविल् लिनरुङ्गण् डिरङ्ग
मरुव दाक्किय वॆळुबदु वॆळ्ळमु माळ
वॆरुवि दाक्कुव नुलहितै कणत्तिऩोर् विल्लाल् 2439

अरुपतु वॆळ्ळत्तितर्–साठ 'वॆळ्ळम्'; आकिय–के जो थे; अरक्करै–उन राक्षसों को; अम्पाल्–बाणों से; इरुवतु आक्किय–जिन्होंने अन्त करा दिया उन; इरण्टु विल्लितरुम्–दोनों धनुर्धर; कण्टु इरङ्क–देखकर बेचैन हों ऐसा; मरुवतु आक्किय–(राक्षसों पर) जिन्होंने कलंक लगवा दिया; ऍळुपतु वॆळ्ळमुम्–वे सत्तर 'वॆळ्ळम्'; माळ–मर जाएँ ऐसा; ओर् कणत्तिनिल्–एक क्षण में; विल्लाल्–अपने धनु से; उलकिनै–संसार को; वॆरुवितु आक्कुवॆन्–खाली करा दूँगा। २४३९

तुम दोनों धनुर्धरों ने साठ 'वॆळ्ळम्' राक्षसों को अपने बाणों से निर्मूल कर दिया। अब तुम दोनों देखकर तरसो, इस तरह मैं राक्षस-कलंकदायक सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर-सेना को मिटा दूँगा और अपने धनु से संसार को रिक्त करा दूँगा। २४३९

कुम्बक नन्नॆन् ऱॊरुवनी रम्बिडैक् कुरैत्त
तम्बि यल्लना निरावणन् महनॊरु तमियेन्
ऍम्बि मारुक्कु मॆन्दिरु तादैक्कु मिरुविर्
शॆम्बु णीर्कॊडु कडन्गळिप् पेनॆन्ऱु तॆरित्तान् 2440

नीर् अम्पिटै कुरैत्त–तुम लोगों ने अपने बाणों से जिसको काटा; कुम्पकन्नन् ऎन्ऱु ऒरुवन्–वह कुंभकर्ण नाम का एक; तम्पि अल्लन् नान्–छोटा भाई नहीं हूँ मैं; इरावणन् मकन्–मैं तो रावण का पुत्र हूँ; ऒरु तमियेन्–अलग रूप से (श्रेष्ठ) हूँ मैं; ऎम्पिमारुक्कुम्–अपने छोटे भाइयों के लिए और; ऎन् तिरु तातैक्कुम्–अपने चाचा के लिए; इरुविर्–तुम दोनों के; चॆम् पुण् नीर् कॊटु–रुधिरजल से; कटन् कऴिप्पॆन्–तर्पण-क्रिया करूँगा; ऎन्ऱु–ऐसा; तॆरित्तान्–बताया (इन्द्रजित् ने)। २४४०

मैं रावण का भाई कुम्भकर्ण नहीं हूँ, जिसे तुमने अपने बाण से मारा था। मैं रावण का पुत्र हूँ। बल्कि (अन्य पुत्रों से) अलग हूँ। मैं तुम लोगों के रक्त से अपने छोटे भाइयों और चचा का तर्पण-कृत्य करूँगा। २४४०

अरक्क रॆन्बदोर् पॆयर्पडैत् तवर्क्कॆला मडुत्त
पुरक्कु नन्कडन् शॆयवळन् वीडणत् पोन्दान्

करक्कु तुन्दैक्कु नीशॅयक् कडवन कडत्गळ्
इरक्क मुड्डलक् कवळुशॅयु ऑन्नुरन ळिळैयोन् 2441

अरक्कर् ऑन्नपन्–राक्षस का; ओर् पॅयर् पटैत्तवर्कट्कु ऑल्लाम्–एक नाम जिनका है उन सभी के लिए; अटुत्त–अवश्यम्भावी; पुरक्कुम्–परलोक-क्षेमकारी; नल् कटन्–श्रेष्ठ अपर कर्मों को; चॅय–करने के लिए; वीटणन्–विभीषण; पोन्तान् उळन्–आया है; करक्कुम् तुन्तैक्कु–छिपनेवाले तुम्हारे पिता के लिए; नी चॅय कटवत कटन्कळ्–तुम्हारे कर्तव्य कर्मों को; इरक्कम् उरन्–दया करके; उनक्कु–तुम्हारे लिए; अवन् चॅयुम्–वह करेगा; ऑन्नुरतन् इळैयोन्–कहा छोटे ने। २४४१

तब लक्ष्मण ने यह उत्तर दिया। राक्षस नामधारी सभी लोगों का अवश्यम्भावी और शुभफलदायक तर्पणकृत्य करने के लिए विभीषण पहले ही इधर आकर तैयार है। तुम्हारे पिता का, जो तुम्हें करना है, वह कृत्य वह दया करके तुम्हारे लिए करेगा। २४४१

आन कालैयि नयिलॅयिर् इरक्कनॅञ् जळन्नुरान्
वानुम् वैयमुन् दिशैहळु मियावैयु मरैयप्
पानल् वेलैयैप् परुहुव शुडर्मुहप् पहळि
शोलै मारियि निरुमडि मुम्मडि शॅरिन्दान् 2442

आन कालैयिन्–तब; अयिन् ऑयिरु–तीक्ष्ण दाँतों वाले; अरक्कन्–राक्षस (इन्द्रजित्) ने; नॅञ्चु अळन्नुरान्–मन में तप्त होकर; वानुम्–आकाश; वैयमुम्–भूमि और; तिचैकळुम्–दिशाओं और; यावैयुम्–सभी को; मरैय–छिपाकर; नल् पाल् वेलैयै–श्रेष्ठ क्षीरसागर(-सम वानर-सेना) को; परुकुव–पीनेवाले; चुटर् मुकम्–प्रकाशमुख; पकळि बाणों को; चोलै मारियिन्–धारावाही वर्षा के; इरुमटि मुम्मटि–दुगुने, तिगुने; चॅरिन्तान्–बरसाए। २४४२

तब तीक्ष्ण दाँतों वाले इन्द्रजित् ने क्रुद्धमन होकर आकाश, भूमि और दिशाओं को छिपाते हुए क्षीरसागर-सम वानर-सेना को सोख सकनेवाले प्रकाश-मुख शरों को घनघोर वर्षा के दुगुने, तिगुने परिमाण में चलाया। २४४२

अङ्ग दन्नुरन्मे लायिर मवर्ट्रिनुक् किरट्टि
वॅङ्गण् मारुदि मेनिमेल् वेरुळ वीरच्
चिङ्ग मन्नव राक्कैमे लुलप्पिल शॅलुत्ति
ऑङ्गुम् वॅङ्गणै याक्किन निरावणन् शिरुवन् 2443

इरावणन् चिरुवन्–रावण के पुत्र ने; अङ्कतन् तन् मेल्–अंगद पर; आयिरम्–हजार; अवर्ट्रिनुक्कु इरट्टि–उनके दुगुने; वॅम् कण्–क्रोधारुणाक्ष; मारुति मेनि मेल्–मारुति के शरीर पर; वेरु उळ–अन्य जो थे; वीर चिङ्कम् अन्नवर्–वीर केसरी-सम वीरों के; आक्कै मेल्–शरीरों पर; उलप्पिल–अनगिनत (शर); चॅलुत्ति–चलाकर; ऑङ्कुम् वॅम् कणै आक्कितन्–सर्वत्र भयंकर शरों से भर दिया। २४४३

रावणपुत्र ने अंगद पर एक हज़ार, अरुणाक्ष हनुमान पर दुगुने (दो हज़ार) और अन्य वीरों पर वेशुमार वाण चलाये और सभी स्थानों को भयंकर शरों से भर दिया। २४४३

इळैय मैन्दन्मे लिरामन्मे लिरावणि यिहलि
विळैयुम् वन्दिरल् वानर वीरर्मेन् मॅय्युड्
ऱुळैयुम् वॅम्जरम् जॊरिन्दन नाळिहै यॊन्ऱु
वळैयु मण्डलप् पिऱैयॆन निन्ऱदव् वरिविल् 2444

इरावणि–रावणि; इळैय मैन्तन् मेल्–लघुराज पर; इरामन् मेल्–श्रीराम पर; इकलि विळैयुम्–विरोध में लगे; वल् तिऱल्–अति बलवान; वानर वीरर् मेल्–वानर वीरों पर; मॅय् उऱ्ऱु–शरीर में चुभकर; उळैयुम्–पीड़ा देनेवाले; वॅम् चरम्–क्रूर शरों को; चॊरिन्तनन्–बरसाया; वरि विल्–सवन्ध चाप; वळैयुम्–वक्र; मण्टलम् पिऱै ऍन–मंडल के अर्धचन्द्र-सम; नाळिकै ऒन्ऱु–एक घड़ी तक; निन्ऱतु–स्थिर रहा। २४४४

रावणि ने राम और लक्ष्मण पर और वैरी वानर वीरों पर जो शर चलाये, वे अतिक्रूर शर उनके शरीरों में घुसकर उनको बहुत दुःख देने लगे। इन्द्रजित् का टेढ़ा बना धनु अर्धचंद्र के समान लगा और एक घड़ी तक एक ही स्थिति में रहा (यानी लगातार एक घड़ी तक बाण चलाता रहा।)। २४४४

पच्चि मत्तिलु मुहत्तिलु मरुङ्गितुम् बहळि
उच्चि मुऱ्ऱिय वॅय्यवन् कदिरॆन वुमिळक्
कच्च मुऱ्ऱवन् गैत्तुणैक् कडुमैयैक् काणा
अच्च मुऱ्ऱनर् कण्पुदैत् तडङ्गिन रमरर् 2445

उच्चि मुऱ्ऱिय वॅय्यवन्–मध्याह्न-सूर्य की; कतिर् अन–किरणों के सदृश; पकळि–गरम बाणों को; पच्चिमत्तितुम्–पृष्ठ भागों में; मुकत्तितुम्–मुख में; मरुङ्कितुम्–पार्श्वों में; उमिळ–चलाते हुए; कच्चम् उऱ्ऱवन्–संकल्पबद्ध इन्द्रजित् के; तुणै कै कटुमैयै–हस्तद्वय की गति को; काणा–देखकर; अमरर्–देवगण; अच्चम् उऱ्ऱनर्–डर गये; कण् पुतैत्तु–आँखें मूंदकर; अटङ्कितर्–संकुचित हुए। २४४५

आकाश-मध्य आये हुए मध्याह्न-सूर्य की किरणों के समान शरों को संकल्पबद्ध इन्द्रजित् ने शत्रुओं के पृष्ठ भाग में, मुखों पर और पार्श्वों में चलाया। उसकी हस्तगति देखकर देवगणों ने भय से अपनी आँखें मूंद लीं और संकुचित रह गये। २४४५

मॅय्यिऱ् पट्टन पडप्पडा दन्वॆलाम् विलक्कित्
तॆय्वप् पोर्क्कणैक् कत्तुणैक् कत्तुणै शॆलुत्ति

ऐयर् काड्गिळङ् गोळरि यट्टिलिला तट्टेनुब
पॊय्यिर् पोक्बडि याक्किलन् कडिलिलिडु पुक्कान् 2446

आङ्कु–तब; ऐयर्कु इळ कोळरि–श्रीराम के छोटे भ्राता केसरी-सम लक्ष्मण; कटितितिल्–शीघ्रता के साथ; पुक्काऩ्–पहुँचे; मॆय्यिल् पट्टत–शरीर पर लगे; पट पटातत–और जो न लगे उन्हें; ऎलाम्–सभी को; विलक्कि–रोककर; अऱम् इलान्–अधर्मी के; अऱैन्त पॊय्यिल्–कहे असत्य की तरह; तॆय्वम् पोर् कणैक्कु–दिव्य और युद्ध में प्रयुक्त अस्त्रों को; अ तुणैक्कु अ तुणै चॆलुत्ति–उतनों के लिए उतने चलाकर; पोक्कटि आक्किनान्–मिटा दिया। २४४६

तब श्रीराम के छोटे भाई सिंह-सम लक्ष्मण सवेग युद्धस्थल में आये। उन्होंने अपने शरीर पर लगे हुए अस्त्रों को और तभी आ रहे अस्त्रों को दूर करके शत्रु के दिव्य अस्त्रों को वे ही अस्त्र चलाकर बेकार कर दिया। २४४६

पिऱहि निऩ्ऱनन् पॆरुन्दहै यिळवलैप् पिरियान्
अऱति दन्ऱॆन वरक्कन्मेल् चरन्दॊडुत् तरुळान्
इरुवु कण्डिल रिरुवरु मॊरुवरै यॊरुवर्
विरहिल् वॆन्दॆन विशुम्बिडैत् तॆरिन्दन विशिहम् 2447

पॆरुन्तकै–सम्मानित प्रभु ने; इतु अऱत् अऩ्ऱु–यह धर्म नहीं; ऎऩ–ऐसा; अरक्कन् मेल् चरम् तॊटुत्तु–राक्षस पर बाण चलाकर; अरुळान्–कृपा नहीं की; इळवलै पिरियान्–छोटे भाई से अलग नहीं हुए; पिऱकिल् निऩ्ऱनन्–पीछे खड़े रहे; इरुवरुम्–दोनों (लक्ष्मण और इन्द्रजित्) को; ऒरुवरै ऒरुवर्–एक-दूसरे पर; इरवु कण्टिलर्–हावी आते किसी ने नहीं देखा; विचिकम्–विशिख; विऱकिन् वॆन्तॆन–लकड़ी जली जैसे; विचुम्पु इटै–आकाश-मध्य; तॆरिन्तन–भर गये। २४४७

उदार प्रभु श्रीराम ने सोचा कि मेरा स्वयं बाण चलाना धर्म नहीं होगा, इसलिए उन्होंने स्वयं बाण चलाने की कृपा नहीं की। लेकिन वे अपने लघु सहोदर लक्ष्मण से अलग नहीं हुए। उनके पीछे पास ही रहे। लक्ष्मण और इन्द्रजित्, इनमें किसी को दूसरे पर हावी आते कोई देख नहीं सके। दोनों के विशिख लकड़ी के समान जलकर आकाश में भर गये। २४४७

माडॆ रिन्दॆलुन् दिरुवर्दङ् गणैहळुम् वळङ्गक्
काडॆ रिन्दन कनवरै यॆरिन्दन कनह
वीडॆ रिन्दन वेलैह ळॆरिन्दन मेहम्
ऊडॆ रिन्दन वूळियि ऩॆरिन्दन वुलहम् 2448

इरुवर्–दोनों ने; तम् कणैकळुम्–अपने-अपने अस्त्र; वऴङ्क–जो छोड़े; माटु–आसपास; ऎरिन्तु ऎऴुन्तु–जलते उठे तो; काटु ऎरिन्तन–जंगल जले;

कतम् वरै–बड़े पर्वत; ऍरिन्तत–जले; कतकम् वीटु–स्वर्णमहल; ऍरिन्तत–जले; वेलैकळ् ऍरिन्तत–समुद्र जले; मेकम् ऊटु ऍरिन्तत–मेघ के मध्य भाग जले; उलकम्–लोक; ऊऴियिन् ऍरिन्तत–युगान्त की अग्नि में जैसे जले। २४४८

जब दोनों ने बाण चलाये, तब वे बाण आसपास जलते हुए उठ चले। इसलिए आसपास के वन, बड़े-बड़े पहाड़, स्वर्णमय मकान, समुद्र, मेघों के अंदर के भाग और लोक युगांत की आग में जैसे जल उठे। २४४८

पडङ्गॊळ् पाम्बणै तुरन्दवर् किळैयवन् पहऴि
विडङ्गॊळ् वॆळ्ळत्तिन् मेलन वरुवन विलक्कि
इडङ्ग रेरन वॆरुळ्वलि यरक्कनुड़े रिळुक्कुम्
मडङ्ग लॆयिरु नूऱ्रॆयुङ् गूऱ्रिन्वाय् मडुत्तान् 2449

पटम् कॊळ्–फणयुक्त; पाम्पु अणै–शेष-शय्या; तुऱन्तवर्कु–जो छोड़ आये थे उनके; इळैयवन्–छोटे भाई; वॆळ्ळत्तिन् मेलन–"वॆळ्ळम्" से भी अधिक; वरुवन–आनेवाले; विटम् कॊळ् पकऴि–विषाक्त बाण; विलक्कि–रोककर; ऍऴुळ् वलि–अधिक मजबूत; अरक्कन् तेर्–राक्षस के रथ के साथ; इऴुक्कुम्–उसको खींचनेवाले; इटङ्कर् एऱु अन–नर मगर के समान; मटङ्कल्–सिंहों; ऐ इरु नूऱ्रॆयुम्–(पाँच × दो =) दस सौ को; कूऱ्रिन् वाय्–यम के मुख में; मटुत्तान्–पहुँचा दिया। २४४९

फणीशेष-शय्या को जो छोड़ आये थे, उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने 'वॆळ्ळम्' से भी अधिक संख्या में आनेवाले विषाक्त बाणों को रोका और बहुत मजबूत राक्षस के रथ के साथ उसको खींचनेवाले नर मगर के समान हजार सिंहों को मौत के घाट उतार दिया। २४४९

तेर ऴिन्दिडच् चेमत्तेर् पिऱिदिलन् शॆऱिन्द
ऊर ऴिन्दिडत् तनिनिन्ऱ कदिरव नॊत्तान्
पार ऴिन्दडु कुरङ्गॆनुम् बॆयरॆनप् पदैत्तार्
शूर ऴिन्दिडत् तुरन्दनन् शुडुशरञ् जॊरिन्दान् 2450

तेर् अऴिन्तिट–रथ के नष्ट होने पर; चेमम् तेर्–आरक्षित रथ; पिऱितु इलन्–दूसरा नहीं रहा उसके पास; चॆऱिन्त–घने; ऊर् अऴिन्तिट–परिवेश के मिटने पर; तनि निन्ऱ–अकेला दिखते; कतिरवन् ऑत्तान्–सूर्य के समान बना; चूर् अऴिन्तिट–वीर्य कम हो गया; तुरन्तनन्–रथ चलाया; कुरङ्कु ऍनुम् पॆयर्–वानर का नाम ही; पार् अऴिन्ततु–भूमि पर मिट गया; ऍन–ऐसा सोचकर; पतैत्तार्–सब काँप उठे। २४५०

इन्द्रजित् का रथ बेकार हो गया। दूसरा आरक्षित रथ नहीं मिल रहा, तब वह परिवेश-रहित सूर्य के समान दिख रहा था। तो भी वह गरम बाणों को छोड़ता हुआ गलते वीर्य के साथ रथ चलाता बढ़ा। वानर का नाम ही अब दुनिया में न रह गया, यह सोचकर सभी लोग काँप उठे। २४५०

अऱ्ऱ तेर्मिशै निन्ऱुपो रङ्गद नलङ्गऱ्
कॉऱ्ऱत् तोळिनु यिलक्कुवन् पुयत्तिनुङ् गुळित्तु
मुऱ्ऱ वॆण्णिला मुरट्कणै तूर्त्तनन् मुरट्पोर्
ऑऱ्ऱैच् चङ्गॆडुत् तूदिना नुलहैला मुलैय 2451

मुरण्पोर्–वैरीयुद्ध में; अऱ्ऱ तेर् मिचै निन्ऱु–भग्न रथ पर खड़े होकर; पोर् अङ्कतन्–योद्धा अंगद के; अलङ्कल्–माला पहने हुए; कॉऱ्ऱम् तोळितुम्–विजय-भूषित कंधों पर; इलक्कुवन् पुयत्तितुम्–लक्ष्मण की भुजाओं में; कुळित्तु मुऱ्ऱ–चुभकर मग्न हों ऐसा; वॆळ् निला–श्वेत अर्धचन्द्र-सम; मुरण् कणै–कठोर अस्त्र; तूर्त्ततन्–बहुत चलाये; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; ऑऱ्ऱै चङ्कु ॲट्त्तु–एक शंख लेकर; ऊतितान्–फूंका। २४५१

वैरप्रेरित उस युद्ध में अंगहीन रथ पर खड़े होकर उसने समर-समर्थ अंगद के मालाधारी और विजयी कंधों पर और लक्ष्मण की भुजाओं पर चुभोते हुए अर्धचन्द्र बाण छोड़े और साथ-साथ एक शंख लेकर बजाया जिससे सारा लोक हिल गया। २४५१

शङ्ग मूदिय तशमुहत् ऱलिमहत् ऱरित्त
कङ्ग मार्पॆरुङ् गवशमु मूट्टऱक् कळल
वॆङ्ग डुङ्गणै यैयिरण् डुरुमॆन वीशिच्
चिङ्गवे ऱन्न विलक्कुवन् शिलैयैना णॆऱिन्दान् 2452

चिङ्क एऱु अन्त इलक्कुवन्–नर केसरी-समान लक्ष्मण; चङ्कम् ऊतिय–शंख बजानेवाले; तचमुकन् तत्तिमकन्–दशमुख के श्रेष्ठ पुत्र के; तरित्त–पहने हुए; कङ्कम् आर् पॆरु कवचमुम्–स्वर्णमय बड़े कवच को; मूट्टु अऱ कळल–सन्धियाँ टूटकर अलग हो जाए ऐसा; वॆम् चुट्टु कणै–भयंकर और संदाहक बाण; ऐयिरण्टु–दस; उरुम् ॲन वीचि–अशनि के समान चलाकर; चिलैयै–धनु को; नाण् ॲऱिन्तान्–डोरा टंकोरकर ध्वनित किया। २४५२

नरकेसरी के समान लक्ष्मण ने दस संतापक अशनि-सम अस्त्र चलाकर शंख बजानेवाले दशमुख के श्रेष्ठ पुत्र के सोने के बड़े कवच की संधि काटकर गिरा दिया। उन्होंने शंखध्वनि के जवाब में धनु की ध्वनि निकाली। २४५२

कण्ड कार्मुहिल् वण्णनुङ् गमलक्कण् कलुळत्
तुण्ड वॆण्बिऱै निलवॆन मुरुवलुन् दोन्ऱ
अण्ड मुण्डतन् वायिना लार्त्तॆनन् ऱुरुळ
विण्ड तण्डमॆन् ऱुलैन्दिड वार्त्तनर् वीरर् 2453

कण्ट–देखकर; कार्मुकिल् वण्णनुम्–मेघश्याम ने भी; कमलम् कण् कलुळ–कमलनेत्र से आनंदाश्रु बहाकर; वॆळ् तुण्टम् पिऱै–श्वेत अर्धचन्द्र से; निलवु ॲन–

चाँदनी छूटती जैसे; मुऱुवलुम् तोन्ऱ–मंदहास प्रकट करके; अण्टम् उण्ट–अण्ड-भक्षक; तन् वायिताल्–अपने मुख से; आर्मित्–नारे लगाओ; ऍन्ऱ अरुळ–ऐसी कृपाज्ञा देने पर; वीरर्–वानर वीर; अण्टम् विण्टतु–अण्ड फट गया; ऍन्ऱ–ऐसा; उलैन्दिट–सब दहल उठें, ऐसा; आर्त्ततर्–नर्दन कर उठे। २४५३

उसको देखकर मेघश्याम श्रीराम के कमल-नेत्रों से आनंद के आँसू बह चले। एक मुस्कुराहट से अर्धचन्द्र की चाँदनी-सम प्रकाश फैला। उन्होंने अंडभक्षक अपने श्रीमुख से कहा कि नारे लगाओ। वानरों ने अंड को फाड़ते हुए और क्षोभ फैलाते हुए उच्च नर्दन किया। २४५३

कण्णि मैप्पदन् मुन्बुपोय् विशुम्बिडैक् करन्दान्
अण्णल् मऱ्ऱव नाक्कैकण् डरिहिल नाहिप्
पण्ण वऱ्किवन् पिळैक्कुमेऱ् पडैक्कुनम् बडैयै
ऍण्ण मऱ्ऱिलै ययन्पडै तॊडुप्पॆन्ऱ् ऱिशैत्तान् 2454

कण् इमैप्पतन् मुन्पु–पलक मारने से पहले; पोय्–जाकर; विचुम्पिटै–आकाश में; करन्ताऩ्–छिप गया (इन्द्रजित्); अण्णल्–महिमावान लक्ष्मण; अवन् आक्कै कण्टु अऱिकिलन् आकि–उसका शरीर न देख-समक्ष पाकर; इवन् पिळैक्कुमेल्–यह (जीवित) बचेगा तो; नम् पटैयै पटुक्कुम्–हमारी सेना का नाश करा देगा; मऱ्ऱ ऍण्णम् इलै–दूसरा विचार न हो; अयन् पटै–ब्रह्मास्त्र; तॊटुप्पॆन्–चलाऊँगा; ऍन्ऱ–ऐसा; पण्णवऱ्कु–श्रीराम से; इचैत्ताऩ्–कहा। २४५४

इन्द्रजित् (डरकर) आकाश में जाकर छिप गया। महिमामय सुमित्नानंदन ने उसको न देखकर श्रीराम से कहा कि अगर यह जीता बचेगा तो हमारी सेना का नाश करा देगा, इसलिए कोई दूसरी चिंता न करके उस पर ब्रह्मास्त्र चला दूँगा। २४५४

आन्ऱ वन्नदु पुहऱ्लु मऱनिलै वळादाय्
ईन्ऱ वन्दणन् पडैक्कलन् दॊडुक्किलिव् वुलहम्
मून्ऱै युञ्जुडु मॊरुवनान् मुडिहल दॆन्ऱान्
शान्ऱ वन्नदु तविर्न्दन नुणर्वुडैत् तम्बि 2455

आन्ऱवन्–श्रेष्ठ लक्ष्मण के; अतु पुकऱलुम्–वह कहते ही; अऱम् निलै वळाताय्–धर्माविमुख; उलकम् ईन्ऱ अन्तणन्–लोक-सर्जक ब्राह्मण ब्रह्मा का; पटैक्कलम्–अस्त्र; तॊटुक्किल्–चलाओ तो; इव् उलकम् मून्ऱैयुम्–इन तीनों लोकों को; चुटुम्–जला देगा; ऒरुवनाल् मुटिकलतु–किसी से भी रोका नहीं जा सकेगा; ऍन्ऱान्–कहा; उणर्वुटै तम्पि–प्राज्ञ छोटे भाई; चान्ऱवन्–साधू ने; अतु तविर्न्ततन्–उसे बचा लिया। २४५५

मनुष्यश्रेष्ठ लक्ष्मण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने उनसे कहा कि हे धर्माविमुख ! लोकस्रष्टा के अस्त्र को जो छोड़ोगे तो वह तीनों लोकों को

जला देगा। उसका कोई निवारण नहीं कर सकेगा। सद्विचारक साधू लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र चलाने का विचार छोड़ दिया। २४५५

मऱैन्तु पोय्निन्ऱ वञ्जनु मवरुडै मनत्तै
अऱिन्दु तॅय्ववान् पडैक्कलन् दॊडुप्पदऱ् कमैन्दान्
पिरिन्दु पोवदे करुममॆिप् पॊऴुदॆनप् पॅयर्न्दान्
शॅऱिन्द देवर्ह ळावलङ् गॊट्टिनर् शिरित्तार् 2456

मऱैन्तु पोय्–छिपे जाकर; निन्ऱ–जो रहा; वञ्चनुम्–वह वंचक भी; अवरुटैय मनत्तै–उनके विचार को; अऱिन्तु–जानकर; तॅय्वम्–दिव्य; वान्–उत्तम; पटैकलम्–अस्त्र; तॊटुप्पतऱ्कु अमैन्तान्–चलाने का संकल्प करके; इप्पॊऴुतु–अब; पिरिन्तु पोवते–अलग जाना ही; करुमम्–करणीय हैं; ऍन–सोचकर; पॅयर्न्तान्–वहाँ से हट गया; चॅऱिन्त तेवर्कळ्–जो भीड़ लगा रहे, उन देवों ने; आवलम् कॊट्टिनर्–ताल बजाये; चिरित्तार्–हँसे। २४५६

जो छिप गया उस इन्द्रजित् ने उनका मन जानकर खुद ब्रह्मास्त्र चलाने का संकल्प कर लिया। (उसकी कुछ पूर्वक्रियाएँ करने के लिए) "अब अलग जाना ही योग्य काम है" —यह सोचकर वह अलग चला गया। बड़ी भीड़ लगाये जो देव खड़े रहे वे हो-हल्ला मचाकर हँसे। २४५६

शॅञ्ज रत्तॊडु शेण्कदिर् विशुम्बिन्मेल् चॅल्ला
मञ्जिन् मामऴै पोयिन दामॅन मार
अञ्जि नान्मऱैन् दानहन् ऱानॅन वार्त्तार्
वॅञ्जि नन्दरु कळिप्पिनर् वानर वीरर् 2457

चॅम् चरत्तॊटु–लाल बाण के साथ; चेण्–बहुत दूर; कतिर्–सूर्य जहाँ संचार करता है; विचुम्पिन् मेल् चॅल्ला–उस आकाश में जाकर; मञ्चिन् मा मऴै–काला जलगर्भ मेघ; पोयिनतु आम् ऍन–चला जैसे; माऱ–(इन्द्रजित् के) चलने पर; वानर वीरर्–वानर वीरों ने; अञ्चिनान्–डर गया; मऱैन्तान्–छिप गया; अकन्ऱान्–हट गया; ऍन–कहकर; वॅञ्चिनम् तरु–क्रोध के साथ उत्पन्न; कळिप्पिनर्–आनंदित होकर; आर्त्तार्–नारे लगाये। २४५७

लाल रंग के बाण के साथ बहुत दूर आसमान में, जिसमें सूर्य संचार करता है, काले जल-भरे मेघ के समान चला गया। तब वानर वीरों ने धोखे में आकर यह समझ लिया कि इन्द्रजित् डर के कारण चला गया। उन्हें क्रूर कोप के साथ हँसी भी आयी। उन्होंने नारे लगाये। २४५७

उडैन्द वानरच् चेनैयु मोदनी रुवरि
अडैन्द दामॅन वन्दिरैत् तार्त्तॆऴुन् दाडित्
तॊडर्न्दु शॅन्ऱडु तोऱ्ऱवन् यावर्क्कुन् दोन्ऱाक्
कडैन्द वेलॅपॆरऱ् कलङ्गुरु मिलङ्गैयिऱ् करन्दान् 2458

उटैन्त–जो हार गये; वानर् चेतैयुम्–वह वानर-सेना; ओतम् नीर् उवरि–विपुल जल-सागर; अटैन्ततु आम् अँत–टूट पड़ा हो जैसे; वन्तु–आकर; इरैत्तु आर्त्तु–जोर के साथ शोर मचाकर; अँळन्तु–उठकर; आटि–नाचकर; तोटर्न्तु चॅन्रतु–लगातार गयी; तोर्रवन्–हारा हुआ इन्द्रजित्; यावर्क्कुम् तोन्रा–किसी का भी दृष्टिगोचर न होकर; कटैन्त वेलै पोल्–मथे समुद्र के समान; कलक्कुरुम्–व्यथित; इलङ्कैयिल्–लंका में; करन्तान्–छिप गया। २४५८

वानर-सेना, जो हारकर भागी थी, अधिक जल के सागर के समान ज़ोर-शोर के साथ वापस आयी और नाचते हुए बराबर गयी। हारने वाला इन्द्रजित् किसी की आँखों में न पड़कर मथे हुए सागर के समान क्षुब्ध लंका में आकर छिप गया। २४५८

अंर्कॉ णान्मुहन् पडैक्कल मिवरॅन्मेल् विडामुन्
मुर्कॉळ् वेन्नु मुयर्चियन् मर्रमुरै मौळिन्द
शॉर्कॉळ् वेळ्विपोय्त् तॉडङ्गुवा नमैन्दवन् रुणिवै
मर्कॉ डोळव रुणर्न्दिल रवन्रिर मरन्दार् 2459

मल्कॉळ् तोळवर्–भुजबली; अवन् तिरम् मरन्तार्–उसका सामर्थ्य भूल गये; अँल् कॉळ्–उज्ज्वल; नान् मुकन् पटै क्कलम्–ब्रह्मास्त्र; इवर्–ये; अँन् मेल् विटा मुन्–मुझ पर (न) चलाएँ इसके पहले ही; मुन् कॉळ्वेन्–मैं प्रथम हो जाऊँगा; अँन्नुम् मुयर्चियन्–इस प्रयत्न में; मर्रै मुरै मौळिन्त–वेदोक्त; चॉल् कॉळ्–मंत्र उच्चारण कर; वेळ्वि पोय् तॉटङ्कुवान्–यज्ञ जाकर आरम्भ करने के लिए; अमैन्तवन्–उद्यत जो हो गया; तुणिवै–उसका मनोबल; उणर्न्तिलर्–जान नहीं पाये। २४५९

भुजबली श्रीराम और लक्ष्मण इन्द्रजित् की शक्ति को भूल गये। इन्द्रजित् यह संकल्प लेकर गया था कि इनके मेरे ऊपर ब्रह्मास्त्र को चलाने से पहले मैं इन पर ब्रह्मास्त्र प्रेरित कर दूँगा। उसके लिए वेदोक्त कोई यज्ञ करना था, उसे संपन्न करने का उसका दृढ़ संकल्प इन्होंने नहीं जाना। २४५९

अनुम नङ्गदन् रोळिनिन् रिळिन्दन राहित्
तनुवुम् वॅङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गवशमुन् दडक्कैक्
कित्तिय कोदैयुन् दुरन्दन रिरुन्दन रिमैयोर्
पन्निम लर्त्तोहै पौळिन्दनर् वाळ्त्तोलि परप्पि 2460

अनुमन् अङ्कतन्–हनुमान और अंगद के; तोळितिन्र–कंधों से; इळिन्तनर् आकि–उतरकर; तनुवुम्–धनु; वॅम् कणै पुट्टिलुम्–भयानक बाणों के तूणीर; कवचमुम्–और कवच; तट कैक्कु–विशाल हस्तों के; इत्तिय कोतैयुम्–सुखद हस्तत्राण; तुरन्तनर्–छोड़कर; इरुन्तनर्–रहे; इमैयोर्–देवों ने; वाळ्त्तोलि परप्पि–बधाई के शब्द कहकर; पत्ति मलर्–शीतल पुष्प; तोकै पौळिन्तनर्–राशियाँ बरसायीं। २४६०

राम और लक्ष्मण, हनुमान और अंगद के कंधों से नीचे उतर आये। धनु, कठोर अस्त्रों के तूणीर, कवच, मधुर विशाल हस्तत्राण आदि उतार दिया। देवों ने स्तुति करके शीतल फूल बरसाये। २४६०

आर्त्त शेऩैयि ऩमलैपोय् विशुम्बिऩै यलैक्क
ईर्त्त तेरोडुङ् गडिदुशॆऩ् ऱाऩहऩ् ऱिरवि
तीर्त्तऩ् मेलवऩ् ऱिशैमुहऩ् पडैक्कलञ् जॆलुत्तप्
पार्क्कि लेऩ्मुऩ्दिप् पडुवदे नऩ्ऱॆऩप् पट्टाऩ् 2461

आर्त्त चेऩैयिऩ्–जिसने युद्धारव किये, उस सेना का; अमलै–शोर; पोय्–जाकर; विचुम्पिऩै अलैक्क–आकाश को झकझोरने लगा तो; ईर्त्त तेरॊटुम्–(अश्वों द्वारा) खींचे जानेवाले रथ के साथ; इरवि–सूर्य; अकऩ्ऱु–हटकर; कटितु चॆऩ्ऱाऩ्–तेजी से चला; तीर्त्तऩ् मेल्–पवित्र लक्ष्मण पर; अवऩ्–उस (इन्द्रजित्) का; तिचैमुकऩ् पटैक्कलऩ्–ब्रह्मास्त्र; चॆलुत्त पार्क्किलेऩ्–चलाना नहीं देख सकूँगा; मुऩ्ति पटुवते नऩ्ऱु–पहले अस्त होना ही अच्छा है; ऎऩ–सोचकर; पट्टाऩ्–अस्त हुआ। २४६१

नारे उठानेवाली सेना के शोर ने आकाश को हिला दिया। सूर्य अश्वों के खींचे हुए रथ के साथ शीघ्र (अस्ताचल की ओर) चला। वह अस्त हुआ, मानो यह सोचकर कि "पवित्र लक्ष्मण पर इन्द्रजित् जो ब्रह्मास्त्र चलाएगा उसे देख नहीं सकूँगा, इसलिए पहले ही डूब जाना अच्छा है"। २४६१

इरवु नऩ्पह लुम्बॆरु नॆडुञ्जॆरु वियऱ्ऱि
उरवु नम्बडै मॆलिन्दुळ दरुन्दुदऱ् कुणवु
वरवु ताऴ्त्तदु वीडण वल्लैयि ऩेहित्
तरवु वेण्डिऩ ऩॆऩ्ऱऩऩ् ऱामरैक् कण्णऩ् 2462

इरवुम्–रात; नऩ् पकलुम्–अच्छे दिन में; पॆरु–बड़ा; नॆटु–दीर्घ; चॆरु इयऱ्ऱि–युद्ध करके; उरवु नम् पटै–बलवान हमारी सेना; मॆलिन्तुळतु–निर्बल हुई है; अरुन्तुतऱ्कु–खाने के लिए; उणवु–भोजन का; वरवु–आना; ताऴ्त्ततु–विलंबित हो गया; वीटण–विभीषण; वल्लैयिऩ् एकि–जल्दी जाकर; तरवु वेण्टिऩॆऩ्–लाना यह चाहता हूँ; तामरै कण्णऩ्–कमलाक्ष ने; ऎऩ्ऱऩऩ्–कहा। २४६२

तब श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हमारी बड़ी सेना रात और दिन लम्बी लड़ाई करके निर्बल हो गयी है। भोजन के आने में विलम्ब हो रहा है। हे विभीषण! मैं चाहता हूँ कि जल्दी जाकर भोजन लाओ। अरुणाक्ष राम ने विभीषण से ऐसा कहा। २४६२

इऩ्ऩ देकडि दियऱ्ऱुवॆ ऩॆऩत्तॊऴु दॆऴुन्दाऩ्
पॊऩ्ऩिऩ् मौलियऩ् वीडणऩ् ऱमरॊडुम् बोऩाऩ्

कऩ्ऩ ऑऩ्ऱिलोर् कङ्गुलिऩ् वेलैयैक् कडऩ्दाऩ्
अऩ्ऩ वेलैयि ऩिरामऩी ऱिळैयवऱ् करैन्दाऩ् 2463

पॊऩ्ऩिऩ् मौलियऩ्–स्वर्णकिरीटी; इन्ऩते–यह काम; कटितु–शीघ्र; इयऱ्ऱुवेऩ्–करूँगा; ॲऩ्ऩ–कहकर; तॊऴुतु ॲऴुन्ताऩ्–नमस्कार कर उठा; तमरॊटुम् पोऩाऩ्–अपनों के साथ गया; कऩ्ऩल् ऑऩ्ऱिल्–एक घड़ी में; ओर् कङ्कुलिऩ् वेलैयै–एक रात के काम को; कटन्ताऩ्–पूरा किया; अऩ्ऩ वेलैयिल्–उस समय; इरामऩ्–श्रीराम; इळैयवऱ्कु–छोटे भाई से; ईतु अऱैन्ताऩ्–यों बोले। २४६३

स्वर्णकिरीटी, "अभी करूँगा" कहकर नमस्कार कर उठा। अपने लोगों को ले जाकर एक ही घड़ी में रात भर होनेवाले कार्य को कर दिया। तब श्रीराम ने अपने छोटे भाई से यों कहा—। २४६३

तॆय्व वाऩ्पॆरुम् पडैहट्कु वरऩ्मुऱै तिरुन्दु
मॆय्कॊळ् पूचऩै यियऱ्ऱिऩम् विडुतितु विदियाल्
ऐय नाऩिवै याऱ्ऱिऩम् वरुवदो रळवुम्
कैहॊळ् चेऩैयैक् कात्तॆऩप् पोर्क्कळङ् गडन्दाऩ् 2464

तॆय्वम्–दिव्य; वाऩ्–बहुत; पॆरुपडैकट्कु–श्रेष्ठ अस्त्रों की; वरऩ् मुऱै–यथाक्रम; तिरुन्तु–सुव्यवस्थित; मॆय् कॊळ्–यथार्थ; पूचऩै–पूजा; इयऱ्ऱिऩम्–करके; विटुम्–(तभी) प्रयोग करें; इतु विति–यही विधि है; ऐय–तात; नाऩ् इवै–मैं यह; आऱ्ऱिऩेऩ्–पूरा करूँ; वरुवतु ओर् अळवुम्–और वापस आऊँ, उस समय तक; कै कॊळ् चेऩैयै–व्यूहबद्ध सेना को; का–रक्षा करो; ॲऩ्ऩ–कहकर; पोर्क्कळम्–युद्ध के मैदान को; कटन्ताऩ्–पार करके गया। २४६४

श्रेष्ठ और दिव्य अस्त्रों की यथाक्रम उत्कृष्ट और सच्ची पूजा करना, बाद उनको चलना, यही उचित क्रम है। मैं जाकर वह पूजा कर आऊँ, तब तक उन व्यूहगत सेना की रक्षा करो। यह सुनाकर श्रीराम युद्धस्थल पार कर अन्यत्र चले गये। २४६४

तऩ्दै यैक्कण्डु पुहुन्दुळ तऩ्मैयुऩ् दऩ्मेल्
मुऩ्दै नाऩ्मुहऩ् पडैक्कलऩ् ऱॊडुक्कुऱ्ऱ मुऱैयुम्
चिन्दै युट्पुहच् चॆप्पिऩ ऩरक्कऩ् ऱिहैत्ताऩ्
ऎन्दै यॆऩ्ऩिऩिच् चॆयत्तक्क दिचैयॆऩ विचैत्ताऩ् 2465

तन्तैयै कण्टु–पिता को देखकर; पुकुन्तु उळ तऩ्मैयुम्–ओ हुआ वह; तऩ् मेल्–अपने ऊपर; मुन्तै–प्राचीन; नाऩ् मुकऩ् पडैक्कलम्–और ब्रह्मा का अस्त्र; तॊटुक्कुऱ्ऱ मुऱैयुम्–चलाने सम्बन्धी (शत्रु का) भाव; चिन्तै उट्पुक–मन में लग जाए ऐसा; चॆप्पिऩऩ्–कहा इन्द्रजित् ने; अरक्कऩ् तिकैत्ताऩ्–रावण ठिठक गया; ऎन्तै–पिताजी; इऩि चॆय तक्कतु ॲऩ्–अब करना क्या है; इचै–कहो; ॲऩ्ऩ इचैत्ताऩ्–ऐसा पूछा। २४६५

इन्द्रजित् ने अपने पिता से मिलकर घटी हुई बातें और ब्रह्मास्त्र-सम्बन्धी शत्रु का विचार बताया। रावण यह सुनकर ठिठक गया और उसने पुत्र से पूछा कि तात! अब क्या करना है? बताओ। २४६५

तत्तैक् कॊल्वदु तुणिवरेऱ् इन्नक्कदु तहुमेल्
मुन्तरक् कॊल्लिय मुयल्हवॆन् ऱॆऱिञरे मॊऴिन्दार्
अत्तप् पोरव ररिवुऱा वहैमऱैन् दयन्ऱन्
वॆन्तप् पोर्प्पडै विडुदले नलमिदु विदियाल् 2466

तत्तै कॊल्वतु तुणिवरेल्–अपने को कोई (किसी को) मारना ठान ले तो; ततक्कु अतु तकुमेल्–(मारे जाने को जो है) उसे वह संभव हो तो; मुन्तर् कॊल्लिय मुयल्क–वह पहले मारने का यत्न करे; ऍन्ऱु अऱिञरे मॊऴिन्तार्–ऐसा पंडितों ने ही कहा है; अत्त पोर्–उस तरह के युद्ध को; अवर्–वे (नर); अऱिवुऱा वकै–न जानें, इस प्रकार; मऱैन्तु–छिपे रहकर; अयन् तन्न वॆन्त पोर्प्पटै–ब्रह्मा के युद्धास्त्र का; विटुतले–प्रयोग करना ही; नलम्–भला है; इतु वितियाल्–यही विधि के अनुकूल होगा। २४६६

इन्द्रजित् ने बताया कि विद्वानों का कथन है कि जो किसी को मारने का संकल्प करे तो हो सके तो वह (जिसे मारने का उद्देश्य है) पहले ही उसको मारने का प्रयत्न करे। मैं यह युद्ध, वे जान नहीं पायें ऐसा छिपा रहकर करूँ और ब्रह्मास्त्र चलाऊँ, यही अच्छा है। यह उचित भी है। २४६६

तॊडुक्किन् ऱेनॆन्ब दुणर्वरे लप्पडै तॊडुत्ते
तडुप्पर् काण्बरेऱ् कॊल्लवुम् वलत्तरत् तवत्तोर्
इडुक्कॊन् ऱाहिलॆऱ् दिल्लैनल् वेळ्वियै यियऱ्ऱि
मुडिप्पॆं निन्ऱवर् वाऴ्वैयोर् कणत्तॆन मॊऴिन्दान् 2467

तॊटुक्किन्ऱेन्–चलानेवाला हूँ; ऍन्पतु–यह बात; उणर्वरेल्–जान लेंगे तो; अ पटै तॊटुत्ते–वही ब्रह्मास्त्र संधान कर; तटुप्पर्–रोक देंगे; काण्परेल्–(मुझे) देख लेंगे तो; अ तवत्तोर्–वे तपस्वी; कॊल्लवुम् वल्लर्–मार भी सकेंगे; इटुक्कु ऒन्ऱु–बीच में कुछ; आकिन्ऱतु इल्लै–होनेवाला नहीं है; नल् वेळ्वियै इयऱ्ऱि–अच्छा यज्ञ करके; अवर् वाऴ्वै–उनके जीवन को; इन्ऱु–आज ही; ओर् कणत्तु–एक क्षण में; मुटिप्पॆन्–समाप्त कर दूंगा; ऍन्–ऐसा; मॊऴिन्तान्–कहा (इन्द्रजित्) ने। २४६७

अगर उन्हें मालूम हो जाय तो वे वही अस्त्र चलाकर उसको रोक देंगे। वे तपस्वी मुझे देख लेंगे तो मार भी सकेंगे। बीच में कुछ नहीं होगा। यज्ञ ठीक तरह से करूँगा और आज ही एक क्षण में उनके जीवन का अन्त कर दूंगा। इन्द्रजित् ने यों कहा। २४६७

ऍऩ्ऩै यऩ्ऩवर् अऱिन्दिला वहैशॅय लियऱ्ऱत्
तुऩ्ऩु पोर्प्पडै मुडिविला दवर्वयिर् ऱूण्डिऩ्
पिऩ्ऩै निऩ्ऱदु पुरिवॆऩ्ऩ् ऱॆऩ्ऩवऩ् पेश
मऩ्ऩऩ् मुऩ्ऩिऩ्ऱ महोदरऱ् किम्मोऴि वऴङ्गुम् 2468

ऍऩ्ऩै–मुझे; अऩ्ऩवर्–वे; अऱिन्तिला वकै–न जानें इस प्रकार; चॅयल् इयऱ्ऱ–काम करूँ उसके लिए; तुऩ्ऩु–खूब घनी; पोर् पटै–व युद्ध करनेवाली सेना को; मुटिविलातु–अनंत रीति से; अवर् वयित्–उन पर; तूण्टिऩ्–भेजेंगे तो; पिऩ्ऩै–फिर; निऩ्ऱतु–जो है; पुरिवॆऩ्–करूँगा; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अऩ्ऩवऩ् पेच–इन्द्रजित् के कहने पर; मऩ्ऩऩ्–(लंका के) राजा ने; मुऩ् निऩ्ऱ–सामने स्थित; मकोतरऱ्कु–महोदर से; इ मॊऴि–यह बात; पकर्वाऩ्–कही। २४६८

ताकि मैं उनकी आँख बचाकर यह काम करूँ, इसलिए अच्छी तरह युद्ध कर सकनेवाली घनी सेनाओं को उन पर धावा करने के लिए प्रेरित कर भेज दीजिए। तब मैं जो करना चाहता हूँ, वह करूँगा। इन्द्रजित् का वह कथन सुनकर राक्षसराज ने अपने सामने स्थित महोदर से यह बात कही। २४६८

वॆळ्ळ नूऱुडै वॆञ्जिऩच् चेऩैयै वीर
अळ्ळि लैप्पडै यहम्बऩ् मुदलिय वरक्कर्
ऍळ्ळि लॆण्णिलर् तम्मॊडु विरैन्दऩै येहिक्
कॊळ्ळै वॆञ्जॆरु वियऱ्ऱुदि मऩिदरैक् कुऱुहि 2469

वीर–वीर; अळ् इलै–घने पत्र के; पटै–भाले के हथियार वाले; अकम्पऩ् मुतलिय अरक्कर्–अकंप आदि राक्षस; ऍळ्ळिल्–तिल के समान; ऍण् इलर् तम्मॊटु–असंख्यक लोगों के साथ; नूऱु वॆळ्ळम् उटै–सौ 'वॆळ्ळम्' के; वॆम् चिऩम्–कड़े क्रोध के; चेऩैयै–वीरों की सेना को लेकर; विरैन्तऩै एकि–शीघ्र जाकर; कॊळ्ळै–वीरों की जान लूटनेवाले; वॆम् चॆरु–कठोर युद्ध को; मऩितरै कुऱुकि–नरों से जाकर; इयऱ्ऱुति–करो। २४६९

वीर ! पत्र-सिर भालेधारी अकम्प आदि, तिल भी नीचे न गिरे, ऐसे अनगिनत वीरों के साथ सौ 'वॆळ्ळम्' की रोषपूर्ण सेना को लेकर शीघ्र जाओ और उन नरों से ऐसा घोर युद्ध करो जिसमें जीवों को अपार परिमाण में मारा जाय। २४६९

मायै यॆऩ्ऱऩ वल्लऩ यावैयुम् वऴङ्गित्
तोयि रुट्पॆरुम् बरप्पिऩैच् चॆऱिवुऱत् तिरुत्ति
नीयो रुत्तऩे युलहॊरु मूऩ्ऱैयु निमिर्वाय्
पोयु रुत्तव रुयिर्कुडित् तुदवॆऩप् पुहऩ्ऱाऩ् 2470

नी ऑरुत्तऩे–तुम्हीं एक; वल्लऩ–समर्थ; मायै ऍऩ्ऱऩ–"माया" कहलाने

इरुळ् पॆरुम् परप्पितै-
वाले; यावैयुम् वळङ्कि-सभी कार्य करके; ती-तुरे; चॆरिवुइ तिरळुति-घने रूप से पैदा करके; उलकु
अन्धकार के बड़े विस्तार को; निमिर्वाय्-विजयी होगे; पोय्-जाकर; उरुतवर्-
ओरु मूऩ्ऱैयुम्-तीनों लोकों में; उतवु-उपकार करो; ऎॅऩ्ऩ-ऐसा;
हमसे रुष्टों के; उयिर् कुटित्तु-प्राण पीकर;
पुकऩ्ऱाऩ्-कहा (रावण ने)। २४७०

तुम ही अकेले बहुत शक्ति की सभी मायाओं को रचने और भयानक घना अंधकार-विस्तार बनाने में समर्थ हो। तीनों लोकों को जीत कर शानदार रह सकते हो। जाओ हमसे रुष्ट उनके प्राणों को पीकर हमारी सहायता करो। २४७०

ऎॅऩ्ऱ कालैयिऩ् ऎॅवुवर्कॊ लॆवुग ऎॅऩ्ऱु
निऩ्ऱ वाळॆयिऱ् ऱरक्कऩ् ऱुवहैयि ऩिमिर्न्दाऩ्
शॆऩ्ऱु तेर्मिशै येऱिऩ ऩिराक्कदर् शॆऱिन्दार्
कुऩ्ऱु शुऱ्ऱिय मदकरिक् कुलमॆऩक् कुऱियार् 2471

ऎॅऩ्ऱ कालैयिऩ्-उसके कहने पर; एवुवतु ऎॅऩ्ऱु कॊल्-आज्ञा होगी कब;
ऎॅऩ्ऱु-कहकर (प्रतीक्षा में); निऩ्ऱ-जो रहा; वाळ् ऎयिऱ् अरक्कऩुम्-तलवार-
सदृश दाँतों वाला राक्षस भी; उवकैयिऩ् निमिर्न्ताऩ्-संतोष के साथ सिर ऊँचा
करके; चॆऩ्ऱु-जाकर; तेर्मिचै-रथ पर; एऱिऩऩ्-चढ़ा; कुऩ्ऱु सुऱ्ऱिय-पर्वत
को घेरे आनेवाले; मतम् करि कुलम् अऩ्ऩ-मत्त गजवृन्द के समान; कुऱियार्-
स्वभाव वाले; इराक्कतर् चॆऱिन्तार्-राक्षस बहुत आये। २४७१

जब लंकेश ने ऐसा कहा तो तलवार के समान दाँतों वाला महोदर, जो यही प्रतीक्षा कर रहा था कि कब मुझे आज्ञा मिलेगी, खुशी से फूल गया। सिर उठाकर गया और रथ पर आरूढ़ हो गया। पर्वत को घेरे रहनेवाले मत्त गजों के समान राक्षस सटे हुए मिल आये। २४७१

कोडि कोडिनू ऱायिर मायिरङ् गुऱित्त
आड लानैह ळणितॊऱु मणितॊऱु मनैन्द
ओडु तेर्क्कुल मुलप्पिल वोडिवन् दुऱ्ऱ
केडिल् वाम्बरि कणक्कॆयुङ् गडन्दन किळर्न्द 2472

कोटि कोटि नूऱु आयिरम्-करोड़-करोड़, दस हज़ार; आयिरम्-हज़ार; कुऱित्त-
गिने हुए; आटल् आऩैकळ्-बलवान हाथी; अणि तॊऱुम् अणि तॊऱुम् अमैन्त-हर दल
में रहे; ओटु तेर् कुलम्-त्वरितगामी रथवृन्द; उलप्पु इल-असंख्यक; ओटि वन्तु
उऱ्ऱ-दौड़ के आये; केटु इल्-निर्दोष; वाम्परि-लपक चलनेवाले घोड़े; कणक्कैयुम्
कटन्तऩ-गणित को पार कर (बेशुमार रीति से); किळर्न्त-उमग उठे। २४७२

हर पलटन में कोटि-कोटि और लक्ष-लक्ष मज़बूत हाथी रहे। त्वरितगामी रथसमूह बेशुमार थे। वे भी दौड़े आकर मिल गये। निष्कलंक वाजी गणना पार कर उमँग उठे। २४७२

पडॅक्क लङ्गळुम् बरुमणिप् पूणगळुम् बहुवाय्
इडॅक्क लन्दपे रॅयिर्रिळम् बिरॅहळु मॅरिप्पप्
पुडॅप्प रन्दत्र वॅयिल्हळु निलाक्कळुम् बुरळ
विडॅक्कु लङ्गळ्पो लिराक्कदप् पदादियु मिडॅन्द 2473

पटॅ कलङ्कळुम्–हथियार और; परु मणि पूण्कळुम्–और मोटे रत्नों के आभरण; पकुवाय् इटॅ–फटे-से मुखों के बीच से; कलन्त–जो मिले रहे; पेर् ऍयिरु–बड़े दाँतों रूपी; इळम् पिरॅकळुम्–बालचन्द्र; ऍरिप्प–प्रकाश देते रहे इसलिए; पुटॅ परन्तत्र–पार्श्वों में फैले; वॅयिल्कळुम्–धूप के समान प्रकाश; निलाक्कळुम्–और चाँदनी-सा प्रकाश; पुरळ–बारी-बारी से दिखायी दिया; विटॅ कुलङ्कळ् पोल्–बैलों के झुण्डों के समान; इराक्कतर पतातियुम्–राक्षस पदाति वीर; मिटॅन्त–सटे आये। २४७३

हथियारों, स्थूल रत्नाभरणों और फटे मुखों के अंदर के बड़े दाँत रूपी अर्धचन्द्रों से प्रकाश छूट रहा था। इसलिए धूप और चाँदनी (की-सी रोशनी) बारी-बारी से छूट रही थी। ऋषभवृन्दों के समान पदाति वीर सटे खड़े रहे। २४७३

कॉडिक्कु ळीइयित्र कॉळुन्दॅडुत् तॅळुन्दु मेऱ्कॉळ्ळ
इडिक्कु ळीइयॅळु मळैप्पॅरुङ् गुलङ्गळे यिरित्त
अडिक्कु ळीइयिडु मिडन्दॉरुम् अदिर्न्दॅळुन् दारुत्त
पॉडिक्कु ळीइयण्डम् बडॅत्तवत्र कण्णॅयुम् बुदॅत्त 2472

कुळीइयित्र कॉटि–मिली रही ध्वजाएँ; कॉळुन्तु–अपने अग्र भाग को; ऍटुत्तु ऍळुन्तु–ऊपर करके उठीं और; मेल् कॉळ्ळ–आकाश को व्याप गयीं तो; इटि–अशनियाँ; कुळीइ–मिलाकर; ऍळु–उठनेवाले; मळै पॅरु कुलङ्कळै–बड़े मेघवृन्दों को; इरित्त–अस्त-व्यस्त कर दिया (ध्वजाओं ने); अटि–पैर; कुळीइ–मिलकर; इटुम्–जहाँ रखे जाते हैं; इटम् तॉरुम्–उन स्थानों से; अतिर्न्तु ऍळुन्तु–शोर के साथ उठकर; आर्त्त पॉटि–जो भरी उस धूल से; कुळीइ–मिलकर; अण्टम् पटॅत्तवत्र–अण्डसर्जक; कण्णॅयुम्–(ब्रह्मा की) आँखों को भी; पुतॅत्त–मुँदवा लिया। २४७४

पताकाओं के ऊपर के भाग आकाश में बहुत ऊपर हिल रहे थे, इसलिए अशनियुक्त मेघों के समूह अस्त-व्यस्त हुए। इनके पदाघात से धूल शोर के साथ उठी और उसकी राशि ने लोक-सर्जक की आँखों को भी मुँदवा लिया। २४७४

आत्रै यॅन्नुमा मलैहळि त्रिळिमद वरुवि
वात्र यारुहळ् वाशियाय् नुरॅयॉडु मयङ्गिक्
कात्र मामरङ् गल्लॉडु मोर्त्तत्र कडिदिर्
पोत्र पोक्करुम् बॅरुमैय पुणरियुद् पुक्क 2475

आर्त अॅन्नुम्–गज रूपी; मा मलैकळिन्–बड़े पर्वतों से; इऴि–सरकनेवाली; मतम् अरुवि–मदनीर रूपी; वानम् याऱुकळ्–आकाशसरिताएँ; वाचि वाय्–घोड़ों के मुख के; नुरैयोटुम्–झाग के साथ; मयङ्कि–मिश्रित होकर; कानम् मा मरम्–जंगल के बड़े पेड़ों को; कल्लोटुम् ईर्त्तन–पत्थरों-सह खींच लेती हुई; कटितिन् पोय्–सवेग जाकर; पोक्क अरु पॅरुमैय–गुरुता-सह; पुणरियुळ् पुक्क–समुद्र में घुसीं। २४७५

हाथी रूपी पर्वतों से गिरनेवाली मदनीर की आकाश-नदियाँ घोड़ों के मुखों से निकलनेवाले झागों से मिलकर जंगल के बड़े-बड़े पेड़ों और पत्थरों को खींच ले गयीं और अगम शान के साथ समुद्र में घुस गयीं। २४७५

तडित्तु मिन्गुलम् विशुम्बिडैत् तयङ्गुव शलत्तिन्
मडित्त वायिनर् वाळॅयिऱ् ऱरक्करतम् वलत्तिऱ्
पिडित्त तिणपडै विदिर्त्तिड विदिर्त्तिडप् पिऱळ्न्दु
पॉडित्त वॅम्बॉऱि पुहैयॉडु पोवन पोल्व 2476

चलत्तिन्–कोप से; मटित्त वायितर्–ओंठ काटते हुए; वाळ् ॲयिरु अरक्कर्–तलवार-सम दाँतों वाले राक्षस; तम् वलत्तिल्–अपने दायें हाथों में; पिटित्त–पकड़े हुए; तिण पटै–कठोर हथियारों को; वितिर्त्तिट वितिर्त्तिट–ज्यों-ज्यों झटकाते; पिऱळ्न्तु पॉटित्त–बारी-बारी से निकले; वॅम् पॉऱि–गरम अंगारे; पुकैयोटु–धुएँ के साथ; पोवन–आगे गये; तटित्तु मिन्कुलम्–तडितों की राशि; विचुम्पिटै–आकाश में; तयक्कुव पोल्व–प्रकाश देतीं जैसे रहीं। २४७६

ज्यों-ज्यों क्रोध के कारण अधरों को दाँतों के मध्य दबाए रहनेवाले घोर दंतोरे राक्षस अपने दाहिने हाथों के पकड़े हुए हथियारों को हिलाते, त्यों-त्यों अंगारे उठे और धुएँ के साथ बढ़े और आकाश में तडित् के समान छविमान रहे। २४७६

शॉन्न नूऱुडै वॅळ्ळमन् ऱिरावणन् ऱुरन्द
अन्न शेनैयै वायिलू डुमिऴ्हिन्ऱ वमैदि
मुन्नम् वेलैयै मुऴुवदुङ् गुडित्तदु मुरैयी
दॅन्न मीट्टुमिऴ् तमिऴ्मुनि यॉत्तदव् विलङ्गै 2477

अन्ऱु–उस दिन; इरावणन् तुरन्त चॉन्न–रावण का भेजो जो कहा गया उसके अनुसार; नूऱु उटै वॅळ्ळम्–सौ 'वॅळ्ळम्' की; अन्त चेनैयै–उस सेना को; इलङ्कै–लंका; वायिल् ऊटु–मुख से; उमिऴ्किन्ऱ अमैति–उगल रही थी उस प्रकार से; मुन्नम्–पहले; वेलैयै–समुद्र को; मुऴुवतुम् कुटित्ततु–पूर्ण रूप से पीकर (उगल रहा); ईतु मुऱै ॲन्न–यही वह प्रकार है, ऐसा; मीट्टु उमिऴ्–उगलनेवाले; तमिऴ् मुनि–'तमिऴ्' के निर्माता मुनि; ऑत्ततु–के समान रहा। २४७७

उस दिन रावण ने (एक सौ 'वॅळ्ळम्' सेना) कही थी। लंका के नगर-द्वार से वह सेना बाहर निकली तो ऐसा लगा मानो पहले कभी

समुद्र पीकर अगस्त्य मुनि ने जैसे उसका वमन किया था, उसी प्रकार वह नगर सेना को वमन कर रहा हो। २४७७

शङ्गु पेरियुङ् गाळमुन् दाळमुन् दलैवर्
शिङ्ग नादमुन् जिलैयिन् णॉलिहळुम् जिन्माप्
पॉङ्गु मोदेयुम् बुरवियिन् नमलैयुम् बॉलन्देर्
वॅङ्ग णोलमु मालॅन्न विळुङ्गिय वुलहै 2478

चङ्कु–शंख; पेरियुम्–भेरियाँ; काळमुम्–काहल; ताळमुम्–ताल; तलैवर् चिङ्क नातमुम्–सेनानायकों का केसरी-गर्जन; चिलैयिन्–चापों के; नाण् ऑलिकळुम्–ज्यास्वन; चित्त मा–क्रोधी गजों की; पॉङ्कुम् ओतैयुम्–गुंजायमान चिघाड़; पुरवियिन्–घोड़ों के; अमलैयुम्–हिनहिनाने के स्वर; पॉलम्–सुन्दर; तेर्–रथों के; वॅम् कण् ओलमुम्–भयंकर चक्रस्थल की गड़गड़ाहट; माल् अॅन्न–श्रीविष्णु के समान; उलकै विळुङ्किय–संसार को ढाँप गये। २४७८

शंख, भेरियाँ, काहल, ताल, सिंहनाद, धनुष्टंकार, क्रोधी हाथियों की गुंजायमान चिंघाड़, घोड़ों का हिनहिनाना, स्वर्णरथों के पहियों की गड़गड़ाहट —इन सबने भुवनों को उदरस्थ करनेवाले विष्णु के समान इस संसार को अपने अन्दर समा लिया। २४७८

पुक्क दाऱ्पॆरुम् बोर्प्पडै पऱ्न्दलैप् पुऱत्तिल्
तॉक्क दानॆडु वानरत् तानैयुन् दुवन्ऱि
ऑक्क वार्त्तन वुरुक्किन तॆळित्तन वुरुमिन्
मिक्क वान्पडै विडुक्कणै मामलै विलक्कि 2479

पॆरुम् पोर् पटै–बड़ी युद्ध-सेना; परन्तलै–मिलकर; पुऱत्तिल् पुक्कतु–युद्ध-मैदान में घुसी; नॆटु वानरर् तानैयुम्–बड़ी वानर-सेना भी; तुवन्ऱि तॉक्कतु–मिलकर आयी; मिक्क–अधिक; वाल् पटै–परिमाण की राक्षस-सेना द्वारा; विट्टु कणै–प्रयुक्त बाणों को; मा मलै–बड़े पहाड़ों से; विलक्कि–रोककर; ऑक्क आर्त्तन–एक साथ शोर कर उठे (वानर); उरुक्किन–डाँटे; उरुमित्–अशनि के समान; तॆळित्तन–डपटे। २४७९

बड़े युद्ध के लिए तैयार वह सेना मिलकर मैदान में आयी। बड़ी वानर-सेना भी मिलकर आयी और लड़ाई शुरू हो गयी। राक्षसों ने बाण छोड़े, वानरों ने उनको बड़े-बड़े पर्वतों से रोका, नर्दन किया। वानर वीर डाँटे-डपटे। २४७९

कुन्ऱु कोडियुङ् गोडिमेर् कोडियुङ् गुऱित्त
वॆन्ऱि वानर वीरर्हण् मुहन्दॊरुम् विलङ्गल्
ऑन्ऱिल् माल्वरु मैवरु मिराक्कद रुलन्दार्
पॊन्ऱि वीळ्न्दन पॊरुकरि पाय्परि पॊलन्देर् 2480

मुकम् तोऱुम्–स्थान-स्थान पर; कोटियुम् कोटि मेल् कोटियुम्–कोटियों और उन पर कोटियों की संख्या में; कुऩ्ऱु–पर्वतों को; कुऱित्त–निशाना बाँधकर फेंकनेवाले; वॆऩ्ऱि वानर वीररकळ्–विजयी वानर वीरों के; विलङ्कल् ऒऩ्ऱिल्–एक-एक पर्वत से; नाल्वरुम् ऐवरुम्–चार-चार, पाँच-पाँच; इराक्कतर्–राक्षस; उलन्तार्–मरे; पोरु करि–लड़नेवाले हाथी; पाय् परि–लपकनेवाले घोड़े और; पॊलम् तेर्–स्वर्णमय रथ; पॊऩ्ऱि वीऴ्न्तत–नाश होकर गिरे। २४८०

विजयाभिलाषी वानर वीरों ने कोटियों पर कोटियों में पर्वत लेकर निशाना बाँधकर चलाये। हर पर्वत ने चार-पाँच राक्षसों का काम तमाम कर दिया। लड़ाकू हाथी, सरपट भागनेवाले घोड़े और स्वर्णमय रथ मर मिटे। २४८०

मऴुवुञ् जूलमुम् वलयमुम् नाञ्जिलुम् वाळुम्
ॲऴुवु मीट्टियुन् दोट्टियु मॆऴुमुलैत् तण्डुम्
तऴुवुम् वॆलॊडु कणैयमुम् बहऴियुन् दाक्कक्
कुऴुवि ऩोडुपट् टुरुण्डत वानरक् कुलङ्गळ् 2481

मऴुवुम्–परशु और; चूलमुम्–शूल; वलयमुम्–वलय और; नाञ्चिलुम्–'नांजिल' (हल ?); वाळुम्–तलवार; ॲऴुवुम्–और खम्भे; ईट्टियुम्–साँग; तोट्टियुम्–अंकुश; ॲऴुमुलै तण्टुम्–खम्भे-सदृश अग्रभाग वाले दण्ड; तऴुवुम्–लगनेवाले; वेलॊटु–भाले के साथ; कणैयमुम्–'कणयम्'; पकऴियुम्–और बाणों के; ताक्क–प्रहार से; वानरर् कुलङ्कळ्–वानरगण; कुऴुवित्तॊटु–झुण्ड के झुण्ड में; पट्टु–मरकर; उरुण्टत–लोट गये। २४८१

परशु, शूल, वलय, "नांञ्जिल" (हल?), तलवार, खम्भे, साँग, अंकुश, गदा और "वेल", "कणयम" और बाणों के लगने से वानरकुल झुण्डों में मरे। २४८१

मुऱ्क रङ्गळु मुशलमु मुशुण्डियु मुळैयुम्
शक्क रङ्गळुम् बिण्डिबा लत्तॊडु तण्डुम्
कप्प णङ्गळुम् वळैयमुङ् गवणुमिऴ् कल्लुम्
वॆऱ्पि ऩङ्गळै नुरुक्कित कविहळै वीऴ्त्त 2482

मुऱ्करङ्कळुम्–मुद्गर; मुचलमुम्–मूसल; मुचुण्टियुम्–मुशुण्डी; मुळैयुम्–बाँस; चक्करङ्कळुम्–चक्र; पिण्टिपालत्तॊटु–भिंडीपालों के साथ; तण्टुम्–गदा; कप्पणङ्कळुम्–'कप्पण'; वळैयमुम्–वलय; कवण् उमिऴ् कल्लुम्–ढेलेबाँस; वॆऱ्पितङ्कळै–(उन हथियारों ने) पर्वतसमूहों को; नुरुक्कित–चूर कर दिया; कविकळै–वानरों को; वीऴ्त्त–गिराया। २४८२

मुद्गर, मूसल, मुशुंडी, बाँस, चक्र, भिण्डीपाल, गदा, कप्पन, वलय, और ढेलेबाँस आदि ने पर्वतों को चूर-चूर कर दिया और वानरों को मार गिराया। २४८२

कदिर यिऱ्पडैक् कलम्वरन् मुऱैमुऱै कडाव
अदिर्पि णप्पॅरुङ् गुन्ऱुहळ् पडप्पड वळिन्द
उदिर मुऱ्ऱपे राऱुहळ् तिशैत्तिशै योड
ॲदिर्न डक्किल कुरक्किन मरक्करु मियङ्गार् 2483

कतिर्–उज्ज्वल; अयिल्–तीक्ष्ण; पटै कलम्–हथियारों को; वरन् मुऱै मुऱै कटाव–यथाक्रम चलाने से; कुरक्कितम्–वानर-समूह; ॲतिर् नटक्किल–सामने आ नहीं सके; अतिर् पिणम्–शोर के साथ गिरनेवाली लाशों के; पॅरु कुन्ऱुकळ्–बड़े-बड़े पर्वतों के; पट पट–उत्तरोत्तर गिरते रहने से; अळिन्त–उनसे अधिक परिमाण में निकलनेवाले; उतिरम् उऱ्ऱ पेर् आऱुकळ्–रुधिर की बनी बड़ी नदियों के; तिचै तिचै ओट–दिशा-दिशा में बहने से; अरक्करुम् इयक्कार्–राक्षस भी बढ़ नहीं सके। २४८३

राक्षसों के ज्वलंत हथियारों को यथाक्रम चलाने से वानरदल आगे नहीं बढ़ सके। शोर मचाते हुए गिरनेवाली लाशों के बड़े-बड़े पर्वतों से टकराना पड़ा और उनसे बहनेवाली बड़ी-बड़ी रक्त-नदियाँ सभी दिशाओं में बह रही थीं। इसलिए राक्षस भी नहीं चल-फिर सके। २४८३

याव राङ्गिहल् वानर रायिन रॅवरुम्
तेव रादलि नवरॊडुम् विशुम्बिडॅल् तिरिन्दार्
मेवु कादलिन् मॅलिवुरु मरम्बॅयर् विरुम्बि
आवि यॊन्ऱिडत् तळुविनर् पिरिवुनो यहन्ऱार् 2484

आङ्कु–वहाँ; यावर्–जो; इकल् वानरर् आयितर्–लड़नेवाले वानर थे; ॲवरुम्–वे सभी; तेवर् आतलिन्–(पूर्ववत्) देव बने, इसलिए; अवरॊटुम्–उनके साथ; विचुम्पिटै तिरिन्तार्–व्योमलोक में घूमती; मेवु कातलिन्–जाग्रत् प्रेम से; मॅलिवुरुम् अरम्पॅयर्–पतली बनी अप्सराओं ने; विरुम्पि–कामना-सह; आवि ऑन्ऱिट–प्राण एक करके; तळुवितर्–आलिंगन किया; पिरिव नोय्–विरह-रोग से; अकन्ऱार्–छूटीं। २४८४

उस युद्ध में जो मरे वे सभी वानर अपने यथार्थ में देव थे। अब वे फिर से देव बन गये और उनकी स्त्रियाँ आकाश में विरह के साथ थकी हुई घूम रही थीं। अब इनको एक-प्राण होकर गले लगाकर विरह-पीड़ा से मुक्त हुईं। २४८४

करक्कु मायमुम् वञ्जमुङ् गळवुमे कडना
इरक्क मेमुदल् तरुमत्ति नॅऱियॊन्ऱु मिल्ला
अरक्क रॅप्पॅरुन् देवरुह ळाक्किन वमलन्
शरत्तिन् वेरिनिप् पवित्तिर मुळदॆनत् तहुमो 2485

करक्कुम्–आँख बचाकर; मायमुम् वञ्चमुम्–माया और वंचना; कळवुमे–चोरी ही; कटता–अपना कर्तव्य बना लेकर; इरक्कमे मुतल्–दया आदि;

तरुमत्तिन् नॆऱि ऒन्ऱुम् इल्ला–कोई धर्म-मार्ग न अपनाकर जो रहे; अरक्करै–उन राक्षसों को; पॆरु तेवर्कळ्–बड़े-बड़े देवों में; आक्किन–बदल दिया; अमलन्–निर्मल लक्ष्मण के; चरत्तिन्–बाणों से बढ़कर; इनि–अब; पवित्तिरम्–पवित्र; वेऱु–अन्य कुछ; उळतु अॆन–है कहना; तकुमो–ठीक होगा क्या। २४८५

उधर राक्षस भी, जिनका स्वभाव माया, वंचकता, चोरी और निर्दयता का था, अमर बन गये। यह लक्ष्मण के बाणों की पवित्रता का फल था। फिर उनसे पवित्र कोई चीज है, यह कहा जा सकता है क्या? । २४८५

अन्द हन्पॆरुम् बडैक्कल मन्दिरित् तमैन्दान्
इन्दु वॆळ्ळॆयिऱ् ऱरक्करु मियानैयुन् देरुम्
वन्द वन्दन वानह मिडम्बॆऱा वण्णम्
शिन्दि नान्शर मिलक्कुवन् मुहन्दोऱुन् दिरिन्दान् 2486

इलक्कुवन्–लक्ष्मण; अन्तकन् पॆरु पटैक्कलम्–यम का बड़ा अस्त्र; मन्तिरित्तु अमैन्तान्–अभिमंत्रित कर लिये हुए; मुकम् तोऱुम्–हर युद्धाग्रस्थल में; तिरिन्तान्–जाते रहे और; इन्तु वॆळ् ऎयिऱु–चन्द्र-सम श्वेत दाँतों वाले; अरक्करुम्–राक्षस और; यानैयुम् तेरुम्–गज और रथ; वन्त वन्तन–जो भी आये उन्हें; वानकम्–आकाश-स्थल को; इटम् पॆऱा वण्णम्–स्थान न मिले ऐसा; चरम् चिन्तिनान्–शर (बहुत संख्या में) चलाते रहे। २४८६

लघुराज लक्ष्मण यमास्त्र को अभिमंत्रित कर हाथ में लिये हुए फिरे और उनके अस्त्रों से अर्धचन्द्र-सम दाँतोंवाले राक्षस हाथी और गज जो भी उनके सामने आये, मरकर आकाश में ऐसे भर गये कि कोई स्थान बाक़ी नहीं रहा। २४८६

कुम्ब कन्ननाण् डिट्टदु वयिरवान् कुन्ऱिन्
वॆम्बु वॆञ्जुडर् विरिप्पदु तेवरै मेनाळ्
तुम्बै यिन्ऱलैत् तुरन्ददु शुडर्मणित् तण्डोन्ऱ्
ऱिम्बर् आलत्तै नॆळिप्पदु मारुदि यॆडुत्तान् 2487

कुम्पकन्नन् आण्टु इट्टतु–कुंभकर्ण ने जिसे वहाँ छोड़ दिया था वह; वान् वयिरम् कुन्ऱिन्–बड़े वज्र-पर्वत के समान; वॆम्पु–तापक; वॆम् चुटर्–गरम दीप्ति को; विरिप्पतु–छिटकानेवाली; मेल् नाळ्–पुराने ज़माने में; तेवरै–देवों को; तुम्पैयिन् तलै–युद्ध में; तुरन्ततु–जिसने भगाया वह; इम्पर् आलत्तै–इहलोक को; नॆळिप्पतु–लचकानेवाली; चुटर् मणि–ज्वलन्त मणि-जड़ित; तण्टु ऒन्ऱु–एक गदा को; मारुति ऎटुत्तान्–मारुति ने लिया। २४८७

मारुति ने एक गदा हाथ में ली। वह गदा कुम्भकर्ण की थी, जो वहाँ छोड़ी गयी थी। बड़े वज्रपर्वत के समान थी और संतापक किरणों को

निकालती थी। उसने पुराने ज़माने में युद्ध के अवसर पर देवों को हराकर भगाया था। उसके सामने इहलोक भी लचक जाता था और उसमें कांति-पूर्ण मणियाँ जड़ी हुई थीं। २४८७

कार्रन्रिवु कतलत्तेंल् विमैयोरिडै काणा
वेर्रङ्गडु विशैयोडुयर् कॉलैनीडिय वियल्बाल्
शीर्रन्दत्ति युरुवायिडै तेरादवॊर् मार्राय्क्
कूर्रङ्गोड् मुतैवन्दॆतक् कॊन्रानिहल् निन्रान् 2488

इकल् निन्रान्–विरोध में जो खड़ा रहा वह हनुमान; एर्रम्–बढ़ती; कटुविचैयोटु–अधिक तेजी के साथ; उयर् कॉलै–बड़े हत्या-कार्य में लगा; नीटिय इयल्पाल्–उसके स्वाभाविक प्रकार से; इतु कार्रु अन्रु–यह पवन नहीं; इतु कनल् अन्रु–यह आग नहीं; ॲन्–कहकर; इमैयोर् इटै काणा–देव सच्ची स्थिति न जान सकें; कूर्रम् चीर्रम् तत्ति उरुवाय्–(ऐसा) यम का मूर्तिमान क्रोध; इटै तेरातवु–सत्य नहीं जाना जाए, इस रीति से; ओर् मार्राय्–अनुपम रीति से बदले हुए रूप में; कोटु मुतै–भयंकर युद्धक्षेत्र में; वन्तु ॲन–आया हो ऐसा; कॊन्रान्–हत्या करता रहा। २४८८

रोषपूर्ण हनुमान ने अत्यधिक वेग के साथ बहुत लोगों को लगातार मारते हुए गदा चलायी। देवों को यह लगा कि यह पवन नहीं है, न आग ही। वे सच्ची स्थिति जान नहीं सके। यम के क्रोध का रूप बनकर वह अशांत वैर के साथ क्रूर युद्धस्थल में आया हो, इस तरह हत्या-काम करने लगा। २४८८

वॆङ्गण्मद मलैमेल् विरै परिमेल् विडु तेर्मेल्
शङ्गन्दरु पडै वीरर्ह ळुडन्मे लवर् तलैमेल्
ऍङ्गुम्मुळ नीरुवन् नदिर्त् तिरुनान् मरै तॆरिक्कुञ्
जॆङ्गण्णव निवने यॆन्नत् तिरिन्दान् कलै तॆरिन्दान् 2489

कलै तॆरिन्तान्–कलाविद् हनुमान; वॆम् कण्–क्रूर आँखों और; मतम्–मद वाले; मलै मेल्–पर्वत (-सम) गजों पर; विरै परि मेल्–सवेग घोड़ों पर; विडु तेर् मेल्–चालित रथों पर; चङ्कम् तरु पटै वीरर्कळ्–झुण्डों के राक्षसों के; उटल् मेल्–शरीरों पर; अवर् तलै मेल्–उनके सिरों पर; इरु–श्रेष्ठ; नाल् मरै तॆरिक्कुम्–चतुर्वेद-प्रतिपादित; चॆङ्कण्णवन्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु; इवते–यही; ॲन–ऐसा; ऑरुवन् ऍङ्कुम् उळन् आकि–सर्वव्यापी बना; ॲतिर्त्तु तिरिन्तान्–प्रहार करता फिरा। २४८९

विविध कलाविद् हनुमान क्रूर आँखोंवाले मदमत्त पर्वत-सम गजों पर, तेज़ दौड़नेवाले घोड़ों पर और झुंडों के राक्षसों के शरीरों और सिरों पर प्रहार करता हुआ घूमा कि वह एक ही समय में सर्वत्र दिखायी दिया

और लोग कहने लगे कि वे प्रशंसित वेदप्रतिपादित अरुण कमलाक्ष यही हैं। २४८९

किळर्न्दारैयुङ् गिडैत्तारैयुङ् गिळित्तात्कनल् विळित्तात्
कळन्दातॊरु कुळम्बाम्वहै यरत्तानिरु करत्तात्
वळर्न्दानिलै युणर्न्दारुल हॊरुमून्रैयुम् वलत्ताल्
अळन्दान्मुन मिवनेयॆन विमैयोर्हळु मयिर्त्तार् 2490

किळर्न्तारैयुम्–उमँगकर बढ़ आनेवालों और; किटैत्तारैयुम्–उसके हाथों में जो फँस गये उन्हें; कनल् विळित्तान्–आग के समान दृष्टि डालकर; किळित्तान्–चीरा और; कळम्–भूमि; ओर् कुळम्पु आम् वकै–कीच बन जाए, ऐसा; इरु करत्तान्–दोनों हाथों से; अरैत्तान्–पीस डाला; वळर्न्तान् निलै–जो प्रवृद्ध हो गया उसकी स्थिति; उणर्न्तार्–स्थिति जानकर; इमैयोर्कळुम्–देवों ने भी; ओरु उलकु मून्रैयुम्–तीनों लोकों को; वलत्ताल्–बल से; मुनम्–पहले; अळन्तान् इवने–जिन्होंने मापा था वे यही हैं; ऎन–ऐसा; अयिर्त्तार्–संशय किया। २४९०

हनुमान ने उत्साह के साथ बढ़ आनेवालों और अपने हाथ में फँसे हुए राक्षसों को आग बरसाती आँखों से तरेरकर उनको चीरा और युद्धस्थल को कीच बनाते हुए अपने दोनों हाथों से पीस दिया। विश्व-रूप में उसका रूप देखकर देवों ने यह संदेह किया कि वही त्रिलोकमापक त्रिविक्रम देव है। २४९०

मत्तक्करि नॆडुमत्तहम् वहिर्प्पट्टुह मण्मेल्
मुत्तिर्पॊलि मुळुमेनियन् मुहिल्विण्डॊडु मॆय्यान्
ऒत्तक्कडै युहमुर्रुळि युरुकाल्पॊर वुडुमीन्
तॊत्तप्पॊलि कनहक्किरि वॆयिल्शुर्रिय वॊत्तान् 2491

मत्त करि–मत्त गजों के; नॆटु मत्तकम्–बड़े मस्तक; वकिर पट्टु–फूटे और; उक–(मोती) गिरे; मण् मेल्–इस भूमि पर; मुत्तिल् पॊलि–उन मोतियों के साथ शोभायमान; मुळु मेनियन्–पूर्ण शरीर वाला; मुकिल् विण्–मेघ-भरे आकाश को; तॊटु मॆय्यान्–छूनेवाले आकार का; ऒत्तु अ कटै उकम् उर्रुळि–सब मिलकर जब युगान्त में नष्ट होते हैं तब; उरु काल् पॊर–बड़ी प्रबल वायु के झोंके से; उटु मीन्–उडु-नक्षत्र; तॊत्त–लगे रहें; पॊलि–ऐसे दीप्तिमान; वॆयिल् चुर्रियतु–और सूर्य जिसकी परिक्रमा करता है उस; कनकम् किरि–कनकगिरि के; ऒत्तान्–समान रहा। २४९१

मत्त गजों के माथे फूटे और उनसे निकले मोतियों से उसका शरीर अलंकृत हो गया। मेघाश्रय आकाशव्याप्त-शरीरी हनुमान उस कनक-गिरि के समान लगा, जिस पर युगांतकालीन झंझा से नक्षत्र आकर लगे हुए लटकते हों और जिसकी सूर्य परिक्रमा करता हो। २४९१

इडित्तानिलम् विशुम्बोडन् विट्टानड्डि यॅळुन्दान्
पॉडित्तान्कडर् पॅरुम्जेनॅयॅप् पॉलन्दण्डुतन् वलत्ताल्
पिडित्तान्मद करितेर्मुदल् पिळम्बानवै कुळम्बा
अडित्तानुयिर् कुडित्तानॅडुत् तार्त्तान्पहै तीर्त्तान् 2492

पॉलम् तण्टु–सुन्दर गदायुध; तन् वलत्ताल्–अपने दाहिने हाथ से; पिटित्तान्–पकड़ लेकर; निलम्–भूमि और; विचुम्पोटु–आकाश को; इटित्तान्–तोड़ता; ॲन्–जैसे; अटि इट्टान्–पग धरता; ॲळुन्तान्–ऊँचा बना; कटल् पॅरु चेनॅयॅ–सागर-सी बड़ी सेना को; पॉटित्तान्–चर कर दिया; मतम् करि–मत्त गज; तेर् मुतल्–रथ आदि; पिळम्पु आनवै–जो रूपधारी पदार्थ थे, उन सबको; कुळम्पा–(सालन) कीच; अटित्तान्–बना दिया; उयिर् कुटित्तान्–प्राण पी लिये; पकै तीर्त्तान्–शत्रु मिटाकर; अॅटुत्तु आर्त्तान्–स्वर उन्नत कर नाद किया। २४९२

मारुति उज्ज्वल-दण्ड गदा को अपने दाहिने हाथ में पकड़कर आकाश और भूमि को अस्त-व्यस्त करता था। पग धरकर जो ऊँचा हुआ उसने सागर-सम बड़ी सेना को छिन्न-भिन्न किया। मत्त गजों, रथों और अन्य रूपधारी पदार्थों को रूपहीन कीच बनाया। प्राण पिये और उच्च स्वर नाद उठाया। २४९२

नूऱायिर मदमाल्करि यॉरुनाळिहै नुवल्पो
दाऱायॅनॅडुङ् कडुञ्जोरियि नळऱाम्वहै यरॅप्पान्
एऱायिर मॅन्नलायॅळु वयवीररै यिडऱित्
तेऱादुरु कॉलैमेविय तिशैयानॅयिऱ् ऱिरिन्दान् 2493

ऑरु नाळिकै नुवल् पोतु–एक घड़ी कहलानेवाले समय के अन्दर; आऱाय्–नदी बनकर बहनेवाले; नॅटु–बहुत; कटु–भयंकर; चोरियिन्–रक्त में; नूऱु आयिरम्–सौ हजार; मतम् माल् करि–मत्त, बड़े गजों को; अळऱु आम् वकै–कीच बनाकर; अरॅप्पान्–पीसता; आयिरम् एऱु ॲन्नलाय्–हजार सिंह मानो ऐसा; ॲळु–उठके आनेवाले; वयम् वीररै–बलवान वीरों को; इटऱि–पैर से ठुकराकर; तेऱातु उरु–मद में अपने को भूले हुए और; कॉलै मेविय–हत्या-प्रेमी; तिचै यानॅयिल्–दिग्गज के समान; तिरिन्तान्–घूमा। २४९३

एक घड़ी में नदियों के रूप में बहनेवाले अति भयानक रक्त में लाखों गजों को कीच बनाते हुए पीसा और वह हज़ारों की संख्या में नर केसरियों के समान चढ़ आनेवाले बलवान राक्षसों को पैर से ठुकराता हुआ मत्त और हत्या-प्रेमी दिग्गज के समान घूमता रहा। २४९३

तेरेऱिनर् परियेऱिनर् विडैयेऱिनर् शिनवॅङ्
गारेऱिनर् मळैयेऱिनर् कलैयेऱिनर् पलवॅम्
पोरेऱिनर् पुहऴेऱिनर् पुहुन्दार्पुडै वळैन्दार्
नेरेऱिनर् विशुम्बेऱिड नॅरित्तान्कदै तिरित्तान् 2494

विटै एऱितर्–ऋषभ-सम; तेर् एऱितर्–रथारूढ़; परि एऱितर्–अश्वारूढ़ चिनम् वॅम् कार्–क्रुद्ध भयंकरगजों पर; एऱितर्–सवार; मऴै एऱितर्–वर्षा करने वाले; कलै एऱितर्–युद्धविद्या में बढ़े-चढ़े; पल वॅम् पोर् एऱितर्–अनेक भयंकर युद्ध जो कर चुके; पुकऴ् ऐऱितर्–और बड़े कीर्तिमान हो गये; पुकुन्तार्–(वे सब) युद्धभूमि में पहुँचे; पुटै वळैन्तार्–चारों ओर से घेर आये; नेर् एऱितर्–सीधे युद्ध किया, उन सबको; कतै–गदा; तिरित्तान्–घुमाकर; विचुम्पु एऱिट–आकाश में चढ़ जाने को मजबूर करते हुए (मृत्युलोक में पहुँचाते हुए); नैरित्तान्–सटाकर मारा। २४९४

ऋषभ के समान राक्षस, रथारूढ़, अश्वारूढ़ और क्रूर क्रोधी गजों पर आरूढ़ हो आये। वे युद्धकलाज्ञानी, क्रूर युद्धों के अभ्यस्त और यशस्वी थे। वे युद्ध के मैदान में आये और उसको घेरकर आगे बढ़े। हनुमान ने गदा घुमाकर उनको सटाकर मारा और आकाश पर चढ़वा दिया। २४९४

अरिकुल मन्नन् नील तङ्गदन् कुमुदन् शाम्बन्
परुवलिप् पनश नॅन्ऱिप् पडैत्तलै वीरर् यारुम्
वॅरुशिनन् दिरुहि वॅऱ्ऱिप् पोर्क्कळ मरुङ्गिर् पुक्कार्
ऒरुवरै यॊरुवर् काणा वुयर्पडैक् कडलि नुळ्ळार् 2495

अरिकुलम् मन्नन्–वानरकुल का राजा; नीलन्–नील; अङ्कतन्–अंगद; कुमुतन्–कुमुद; चाम्पन्–जाम्बवान; परुवलि–अतिबली; पनचन्–पनश; ऎन्ऱु–वग़ैरः; इ पटै तलै वीरर् यारुम्–ये सभी सेनानायक वीर; वॅरु चिनम् तिरुकि–युद्धप्रेरक कोप में ऐंठकर; वॅऱ्ऱि पोर्क्कळन् मरुङ्किल्–विजयदायी युद्धमंच के पार्श्व में; पुक्कार्–घुसे; ऒरुवरै ऒरुवर् काणार्–एक-दूसरे को न देख सके; उयर्–बड़े; पटै कटलिन्–राक्षसों की सेना के सागर के मध्य; उळ्ळार्–रह गये। २४९५

वानरकुलराजा सुग्रीव, अंगद, कुमुद, जाम्बवान, अतिबलिष्ठ पनस आदि सभी वीर विजय-स्थल, युद्ध के मैदान के मध्य आये और एक-दूसरे से अदृश्य होकर राक्षस-सेना-सागर के अंदर रहनेवाले हो गये। २४९५

तॊहुम्बडै यरक्कर् वॅळ्ळन् दुऱैदुऱै यळ्ळित् तूवि
नहम्बडै याहक् कॊल्लु नरशिङ्ग नडन्द दॆन्न
मिहुम्बडैक् कडलुट् चॆल्लु मारुदि वीर वाळ्क्कै
अगम्बनैक् किडैत्तान् ऱण्डा लरक्करै यरैक्कुङ् गैयान् 2496

वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्' की गिनती में; तॊकुम् पटै अरक्कर्–दलगत सेना के राक्षसों को; तुऱै तुऱै–स्थान-स्थान में; अळ्ळि तूवि–उठा, छितराकर; नकम् पटै आक–नख को हथियार बनाकर; कॊल्लुम् नरचिङ्कम्–मारनेवाले नरसिंह; नटन्ततु ऎन्न–चले जैसे; मिकुम् पटै कटलुळ्–बहुत बड़ी सेना के सागर में; चॆल्लुम् मारुति–जो घुस चला वह मारुति; तण्टाल्–गदा से; अरक्करै अरैक्कुम् कैयान्–राक्षसों को पीसने वाले हाथ का बनकर; वीरम् वाळ्क्कै–वीरजीवी; अकम्पनै किटैत्तान्–अकंप को मिला। २४९६

'वॆळ्ळम्' की संख्या में इकट्ठी हुई राक्षस-सेना को यत्र-तत्र उठाकर फेंकता हुआ, नखायुध नरसिंह के समान बहुत अधिक राक्षस-सेना के मध्य हनुमान चला और गदा से राक्षसों को पीसते हुए हाथों वाला बनकर वीर-जीवी अकंप के सामने आया। २४९६

मलैप्पॆरुङ् गळुदै यॆऩ्ऩूऱ् ऱिरट्टियाऩ् मऩत्तिऱ् चॆल्लुऩ्
दलैत्तडऩ् देरऩ् विल्लऩ् ऱारुहऩॆऩ्ऩुऩ् दऩ्मैक्
कॊलैत्तॊऴि लवुणऩ् पिऩ्ऩै यिराक्कद वेडङ् गॊण्डाऩ्
शिलैत्तॊऴिऱ् कुमरऩ् कॊल्लत् तॊल्लॆनाट् चॆरुविऱ् ऱीर्न्दाऩ् 2497

मलै पॆरु–पर्वत-से बड़े; कळुतै–गधे; ऐऩ्ऩूऱु इरट्टियाऩ्–एक हज़ार से जुता रहा उससे; मऩत्तिल् चॆल्लुम्–मन की-सी गति पर जानेवाले; तलै तट तेरऩ्–नायक-विशाल-रथी; विल्लऩ्–धनुर्धर; तारुकऩ् ऎऩ्ऩुम्–दारुक नामक; कॊलैत्तॊऴिल् तऩ्मै–हत्या के कार्य में लगे चित्तवाला; अवुणऩ्–दानव; चिलै तॊऴिल्–धनुकार्य-समर्थ; कुमरऩ्–कुमार (षण्मुख) द्वारा; तॊल्लै नाळ्–पुराने ज़माने में; चॆरुविल् कॊल्ल तीरन्ताऩ्–युद्ध में मारा जाकर; पिऩ्ऩै–बाद; इराक्कत वेटम् कॊण्टाऩ्–इस राक्षस के रूप में आया। २४९७

धनुर्धर अकंप ऐसे रथ पर सवार था, जिससे एक हज़ार पर्वतोपम खच्चर जुते हुए थे और जो मन से भी अधिक तेज़ी से जा सकता था। वह हत्याकारी दारुक नामक दानव था, जो पहले धनुकर्म-चतुर कार्तिक कुमार द्वारा युद्ध में मारा गया और जो अब राक्षस-जन्म ले आया था। २४९७

पाहशा दऩऩु मऱ्ऱैप् पहैयडुऩ् दिहिरि पऱ्ऱुम्
एहशा दऩऩु मूऩ्ऱु पुरमुम्बण् डॆरित्तु ळोऩुम्
पोहता मॊरुवर् मऱ्ऱिक् कुरङ्गॊडु पॊरक्कऱ् ऱारे
आहकूऱ् ऱावि युण्ब दिदऩिऩ् मेऱ्ऱाहु मॆऩ्ऱाऩ् 2498

पाकचाततऩुम्–पाकशासन; मऱ्ऱै–और; पकै अटुम्–शत्रुहंता; तिकिरि–चक्र; पऱ्ऱुम्–धारी; एक चाततऩुऩ्–एकसाधन श्रीविष्णु; मूऩ्ऱु पुरमुम्–त्रिपुरों को; पण्टु–प्राचीन समय में; ऎरित्तुळोऩुम्–जिन्होंने जलाया वे शिव; पोक–जाएँ; ताम् ऒरुवर्–अकेले खुद कोई; इ कुरङ्कॊटु–इस वानर के साथ; पॊर कऱ्ऱारे आक–लड़ना भले ही सीख गया हो; कूऱ्ऱु–यम द्वारा; आवि उण्पतु–प्राण खाना; इततिऩ् मेऱ्ऱु आकुम्–इस वानर का काम होगा। २४९८

(अकंप ने हनुमान की प्रशंसा की।) उसने कहा, पाकशासन, शत्रुहंता चक्रधर, जिनका एक ही (चक्र) है, और त्रिपुरांतक चाहे उससे लड़ने जाएँ, या और कोई भी हो जिसने इससे लड़ना सीख लिया हो—इस वानर के पास ऐसा सामर्थ्य है कि वह यम को मजबूर करेगा कि वह उनकी जान निकलवा दे। २४९८

यातॖरडे तॆत्तिन् मट्रिव् वॆळुदिरै वळाह मॆन्ताम्
वातॖरडा दरक्क रॆन्तुम् बॆयरेयु माय्क्कु मॆन्ता
ऊतॖरडा नितॖर् वाळि मळैतुरन् दुरुत्तुच् चॆन्रान्
मीतॖरॊडा नितॖर् दिण्डो ळनुमनुम् विरैविन् वन्दान् 2499

यात् तटेत्–अगर मैं नहीं रोकूँ; ॲन्तिल्–तो; इव ॲळुतिरै वळाकम्–सप्त-समुद्रवलयित यह भूमंडल; ॲन् आम्–क्या होगा; वान्–आकाशवासी; तटातु–नहीं रोक सकेंगे; अरक्कर् ॲन्नुम् पॅयरेयुम्–राक्षस का नाम ही; माय्क्कुम्–मिटा देगा; ॲन्ना–कहकर; ऊन्–शरीरधारी जीवों को; तटा नितॖर्–रोकनेवाले; वाळि मळै–बाणों की वर्षा; तुरन्तु–छोड़ता हुआ; उरुत्तु–रोष दिखाकर; चॅन्रान्–गया; मीन् तॊटा नितॖर्–नक्षत्रस्पर्शी; तिण् तोळ्–कठोर कंधों वाला; अनुमनम्–हनुमान भी; विरैविन् वन्तान्–सवेग आया। २४९९

अगर मैं इसको नहीं रोकूँ तो इस सप्त-समुद्रवलयित भूमण्डल का क्या होगा? व्योमलोकवासी इसको रोक नहीं सकेंगे। यह राक्षसों का नाम तक मिटा देगा। यह कहते हुए वह सामने आनेवाले जीवों को रोककर शर-वर्षा करता हुआ सरोष बढ़ता चला। नक्षत्र-स्पर्शी सुदृढ़ कंधों वाला हनुमान भी सवेग आया। २४९९

तेरॊडु कळिरु मावु मरक्करु नॆरुङ्गित् तॆट्रक्
कारॊडु कनलुङ् गालुङ् गिळर्न्द दोर् कालमॆन्न
वारॊडुन् दॊडर्न्द पैम्बॊर् कळलितान् वरुद लोडुञ्
जूरॊडुन् दॊडर्न्द तण्डैच् चुळट्रिनान् वयिरत् तोळान् 2500

तेरॊटुम्–रथ के साथ; कळिरुम् मावुम्–हाथी और घोड़े; अरक्करुम्–राक्षस; नॆरुङ्कि–सटकर; तॆट्र–साथ आये तब; कारॊटु–मेघ के साथ; कनलुम् कालुम्–अनल और अनिल; किळर्न्तु ओर् कालम् ॲन्न–मिल आये ऐसे मान्य समय के समान; वारॊटुम् तॊटर्न्त–फ़ीतों से बद्ध; पचुम् पॊन् कळलितान्–चोखे स्वर्ण की पायलधारी; वरुतल् ओटुम्–जब आया (अकंप) तब; वयिरम् तोळान्–वज्रस्कंध; चूरॊटुम् तॊटर्न्त–शौर्य के साथ पकड़ी रही; तण्टै–गदा को; चुळट्रिनान्–(हनुमान ने) घुमाया। २५००

अकंप को चारों ओर से रथ, गज, तुरग, पदाति घेर आये। वह फ़ीते से बद्ध, स्वर्णपायलधारी युगांत के संमिश्रित उठे मेघ, अनल और अनिल के समान जब आया, तब वज्रस्कन्ध हनुमान ने शौर्य-प्रभावित दण्ड को घुमाया। २५००

ॲट्रिन वॆरिन्द वॆल्लै यॆय्दिन वॆय्द पॆय्व
मुट्रिन पडैह ळियावु मुरैमुरै मुरिन्दु शिन्दच्
चुट्रिन वयिरत् तण्डार् रुहैत्तन नमरर् तुळक्क्
कट्रिल नितॖरु कट्रान् कवैयिनाल् वदैयिन् कलुवि 2501

ॲऱ्ऱित-जिनसे पीटा गया; ॲऱिन्त-जो फेंके गये; ॲल्लै ॲय्तिऩ ॲय्त-निशाना लगाकर जो चलाये गये; पॅय्त-जो बरसाये गये; मुऱ्ऱित-पूर्ण; पटैक्कळ् यावुम्-वे सभी हथियार; मुऱै मुऱै मुऱिन्तु-क्रम से टूटकर; चिन्त-बिखर जाएँ ऐसा; चुऱ्ऱित-घुमायी गयी; वयिरम् तण्टाल्-वज्रदण्ड से; अमरर् तुळ्ळ-देवों को संतोष से उछलने देकर; तुकैत्तऩऩ्-कुचल डाला; कऱ्ऱिलऩ्-नहीं सीखा था; इऩ्ऱु-आज ही; कतैयिऩाल्-गदा से; वतैयिऩ् कल्वि-वध करने की विद्या; कऱ्ऱाऩ्-सीखी। २५०१

तब हनुमान ने राक्षसों से प्रेषित, प्रहरित, प्रेरित और वर्षित सभी सबल हथियारों को क्रम से तोड़कर छितरा दिया। देवगण इसको देखकर आनंद से उछल पड़े। हनुमान ने गदायुद्ध नहीं सीखा था, तो भी अब वह गदा द्वारा वध में दक्ष हो गया। २५०१

अहम्बऩङ् गाणक् काण वैयिरु कोडिक् कैम्मा
मुहम्बयिल् कलिऩप् पाय्मा मुऩैवयिऱ् ऱूण्डु मूरि
नुहम्बयि ऱेरि ऩोडु नुरुक्किऩ ऩूऴि ऱीर्त्ताऩ्
उहम्बॅय रूऴिक् काऱ्ऱि ऩुलैविला मेरु वॊप्पाऩ् 2502

उकम् पॅयर्-युगसन्धि में; ऊऴि काऱ्ऱिऩ्-युगान्त की हवा से; उलैवु इला-जो चंचल नहीं होता; मेरु ऑप्पाऩ्-उस मेरु के समान; अकम्पऩुम् काण काण-अकंप के भी देखते-देखते; ऐयिरु कोटि कैम् मा-दस करोड़ गजों को; मुकम् पयिल्-मुख में लगी; कलिऩम्-रास-युक्त; पाय् मा-अश्वों को; मुऩै वयिऩ्-युद्धस्थल में; तूण्टुम्-चालित; मूरि नुकम् पयिल्-सारयुक्त जुए के साथ रहनेवाले; तेरिऩोटुम्-रथों के साथ; नुरुक्किऩऩ्-चूर किया; नूऴिल् तीर्त्ताऩ्-मारकर ढेर लगाये। २५०२

युगांत के पवन के सामने भी चलित न होनेवाले मेरु के समान अकंप के देखते-देखते हनुमान ने दस करोड़ हाथियों, लगाम-लगे घोड़ों और युद्ध में चालित और सबल जुओं से युक्त रथों को तोड़-फोड़ ढेर लगा दिया। २५०२

इऩ्ऱिवऩ् ऱऩ्ऩै विण्णा डेऱ्ऱिवा ळिलङ्गै वेन्दै
वॆऩ्ऱिय ऩाक्कि मऱ्ऱै मऩिदरै वॆऱ्रिय राक्कि
निऩ्ऱुयर् नॆडिय तुऩ्ब ममरर्पा ऩिऱुप्पॆ ऩॆऩ्ऩाच्
चॆऩ्ऱऩ ऩरक्क ऩॆऩ्ऱु वरुहॆऩ वऩुमऩ् ऱेर्ऩ्दाऩ् 2503

इऩ्ऱु-आज; इवऩ् तऩ्ऩै-इसको; विण् नाटु-स्वर्गलोक में; एऱ्ऱि-पहुँचाकर; वाळ्-तलवारधारी; इलङ्कै वेन्तै-लंका के राजा को; वॆऩ्ऱियऩ् आक्कि-विजेता बनाकर; मऱ्ऱै-और; मऩितरै-नरों को; वॆऱ्रियराक्कि-हारे हुए बनाकर; अमरर् पाल्-देवों के पास; निऩ्ऱु उयर्-रहते बड़े; नॆटिय-गम्भीर; तुऩ्पम्-दुःख को; निऱुप्पॆऩ्-स्थायी बना दूंगा; ऍऩ्ऩा-कहकर; अरक्कऩ्-राक्षस; चॆऩ्ऱऩऩ्-

गया; नन्ऱु वरुक-अच्छा, आओ; अॅन्ऱ-कहकर; अनुमन् चेर्न्तान्-हनुमान भी आ मिला। २५०३

राक्षस ने यह दावे का वचन कहा कि आज मैं इसको स्वर्ग में चढ़ा दूँगा; तलवारधारी लंकाधिपति रावण को विजयी बना दूँगा; उन नरों को विजित बना दूँगा और देवों के गम्भीर दुःख को स्थायी बना दूँगा। हनुमान भी यह कहकर उससे आ मिला कि अच्छा है। आओ। २५०३

पडुकळप् परप्पै नोक्किप् पाऴिवाय् मडित्तु नूऴिऱ्
चुडुतऴऱ् पुहैवॅङ् गण्णिऱ् ऱोन्ऱिडक् कॊडित्तेर् तूण्डि
विडुकणैप् पडल मारि मऴैयिऩ् मुम्मै वीशि
मुडुहुरच् चॅन्ऱु कुन्ऱिऩ् मुट्टिताऩ् मुहिलि नार्प्पान् 2504

पटु कळम् परप्पै नोक्कि-युद्ध के मैदान का विस्तार देखकर; पाऴि वाय मटित्तु-गुहा-सम मुख को मोड़कर; नूऴिल्-मारकर ढेर लगाने के काम में; चुटु-जलनेवाली; तऴल्-आग के साथ; पुकै-उठनेवाले धुएँ के; वॅम् कण्णिल् तोन्ऱिट-क्रूर आंखों में दिखायी देते; कॊटि तेर्-ध्वजा से अलंकृत रथ को; तूण्टि-चलाते हुए; विट्टु कणै पटलम् मारि-प्रेषित बाणों की राशियों की वर्षा को; मऴैयिऩुम् मुम्मै-वर्षा से तिगुनी; वीचि-चलाकर; मुकिलिऩ् आर्प्पान्-मेघ के समान शब्द करता हुआ; मुटुकु उऱ-बहुत तेजी से; चॅन्ऱु-जाकर; कुन्ऱिऩ् मुट्टिताऩ्-पर्वत के समान टकराया। २५०४

अकंप ने मैदान का विस्तार देखा। ओंठ काटा। उसकी क्रूर आँखों में गरम आग और धुआँ प्रकट हुआ जो खुद शत्रुओं को मारकर ढेर लगा दे। वह ध्वजा से अलंकृत रथ चलाता हुआ और वर्षा से तिगुनी शर-वर्षा करता हुआ मेघ-सम नाद के साथ सवेग आया और पर्वत के समान हनुमान से टकराया। २५०४

शॊरिन्दऩ पहऴि मारि तोळिऩु मार्बिऩ् मेलुन्
दॅरिन्दऩ वशऩि पोल्व शॅऱिपॊऱि पिदिर्व तिक्किऩ्
वरिन्दऩ वॅरुवै मातच् चिऱैहळा लमरर् मार्बै
अरिन्दऩ वडिम्बु पॊऩ्कॊण् डणिन्दऩ वाहुङ् गण्ण 2505

अचऩि पोल्व-अशनि-सदृश; चॅऱि-घने; पॊऱि-अंगारों को; तिक्किऩ् पितिर्व-दिशाओं में छितरानेवाले; ॲरुवै-गीधों के; मातम् चिऱैकळाल्-बड़े पंखों से; वरिन्तऩ-बांधे गये; अमरर् मार्पै-देवों की छातियों को; अरिन्तऩ-जिन्होंने पहले खण्डित किया था; पॊऩ् कॊण्टु-स्वर्ण से; वटिम्पु अणिन्तऩ-जिनके अग्रभाग निर्मित थे; आकुम् कण्ण-जो बड़े चौड़े थे; चॊरिन्तऩ-बरसाये जो गये; पकऴि मारि-उन शरों की वर्षा; तोळिऩुम् मार्पिऩ् मेलुम्-कंधों और छाती पर; तॆरिन्तऩ-दिखायी दिये। २५०५

उसके अस्त्र अशनि-सम थे। घने रूप से दिशाओं में अंगारे बिखेरने

वाले थे। कंक-पक्षों से बद्ध थे। देववक्षभेदक थे। स्वर्णमुख थे और बड़े थे। वे हनुमान के कंधों और छाती पर लगे। २५०५

मार्बितुन् दोळित् मेलुम् वाळिवाय् मडुत्त वायिर्
चोर्पॅरुङ् गुरुदि शोरत् तुळङ्गुवान् ऱेऱा मुन्नन्
देरिरण् डरुहु पूण्ड कळुदैयु मच्चुम् जिन्दच्
चारदि पुरळ वीरत् तण्डिनार् कण्डञ् जॅय्दान् 2506

मार्पितुन् तोळित् मेलुम्–छाती और कंधों पर; वाळि वाय् मटुत्त–जहाँ शर भेद चले; वायिल्–वहाँ से; चोर्–बहनेवाला; पॅरु कुरुति–बड़ा रक्त-प्रवाह; चोर–बहता रहा; तुळङ्कुवान्–चंचल बना (हनुमान); तेऱा मुन्नम्–स्वस्थ बने, इसके पहले; तेर् इरण्टु अरुकु–रथ के दोनों बाजुओं में; पूण्ट–जुते हुए; कळुतैयुम्–(गधे या खच्चर); अच्चुम्–और धुरी के; चिन्त–नष्ट होने पर; चारति पुरळ–सारथी लोट गया ऐसा; वीरम् तण्टिताल्–वीरताप्रदर्शक दण्ड से; कण्टम् चॅय्तान्–खण्डित किया (हनुमान ने)। २५०६

हनुमान के वक्ष और कंधों पर जहाँ बाण चुभे थे, उन व्रणों से रक्त बहता रहा और हनुमान थोड़ा श्रांत हो गया। उसके स्वस्थ होने से पहले ही उसने गदा से रथ के दोनों बाज़ुओं में जुते खच्चरों को गिराया। धुरी को तोड़ दिया और सारथी को लुढ़का दिया। २५०६

विल्लिना लिवनै वॅल्ल लरिदॅन निरुदन् वॅय्य
मल्लिना लियन्ऱ तोळित् वलियिनाल् वानत् तच्चन्
कॉल्लिना लमैत्त दाण्डोर् कॉडुमुनैत् तण्डु कॉण्डान्
अल्लिनाल् वहुत्त दन्न मेनियान् कडलि नार्प्पान् 2507

इवनै–इसे; विल्लिताल्–धनु से; वॅल्लल् अरितु–हराना कठिन है; ॲन–ऐसा सोचकर; अल्लिताल् वकुत्ततु अन्न–अन्धकार का बनाया जैसा शरीर वाला; कटलिन् आर्प्पान्–समुद्र के समान शब्द करनेवाला; निरुतन्–राक्षस (अकंप); वॅय्य–कठोर; मल्लिताल् इयन्ऱ–सबल; तोळिन् वलियिताल्–भुजबल से; वानम् तच्चन्–देवशिल्पी के; कॉल्लिताल्–लुहार के कार्य से; अमैत्ततु–निर्मित; कॉटु मुनै–तीक्ष्ण नोकदार; ओर् तण्टु–एक गदा; आण्टु–तब; कॉण्टान्–हाथ में लिया। २५०७

अंधकार-निर्मित-से शरीर वाले ने, जो समुद्र-सम गरजनेवाला राक्षस था, यह सोचा कि इसको धनु के सहारे जीतना कठिन है। इसलिए उसने देवशिल्पी द्वारा निर्मित, तीक्ष्ण नुकीला एक दण्डायुध हाथ में लिया, जिसे वही अपने भुजबल से चला सकता था। २५०७

ताक्किना रिडत्तु मऱ्ऱुम् वलत्तितुन् दिरिन्दार् शारि
ओक्किना रूळि नार्प्पुक् कॉट्टिनार् किट्टि नार्कोळत्

तूक्कितार् शुळऱ्ऱि मेऩ्मेऱ् चुऱ्ऱिऩा ऱॅऱ्ऱि वॅऱ्ऱि
नोक्कितार् नॅरुक्कि ऩाऱ्मे तॅरुङ्गिऩार् नीङ्गि ऩाऱ्मेल् 2508

ताक्कितार्–परस्पर प्रहार किया; मऱ्ऱुम्–और; इटत्तुम् वलत्ततितुम्–बायाँ और दायाँ; चारि तिरिन्तार्–पैंतरे बदलकर घूमे; ऊऴित्–युगान्त के समान; आर्प्पु ओक्कितार्–उच्च घोष किया; कॊट्टितार्–(कंधे) ठोंके; कीऴ् किट्टितार्–नीचे से जाकर; तूक्कितार्–उठाया; चुळऱ्ऱि–लपेट लिया; मेऩ् मेल्–उत्तरोत्तर; चुऱ्ऱितार्–घुमाया; ऍऱ्ऱि–पीटकर; वॅऱ्ऱि नोक्कितार्–विजयी होने से रोका; नॅरुक्कितार्–कस लिया; मेल् नॅरुक्कितार्–पास गये और; मेल् नीङ्कितार्–दूर हटे। २५०८

अकंप और हनुमान टकराये; दायें-बायें पैंतरे बदले, प्रलयनाद उठाया, कंधे ठोंके; एक-दूसरे को नीचे से सिर लगाकर उठा लिया, घुमाया। परस्पर विजय से वंचित करने का प्रयास किया। लिपटे और अलग हुए। २५०८

तट्टिऩार् तऴुवि ऩाऱ्मेऱ् ऱावितार् तरैयि ऩोडुङ्
गिट्टिऩार् किडैत्तार् वीशिप् पुडैत्तवै; कीऴु मेलुङ्
गट्टिऩार् कात्ता रीऩ्ऱुङ् गाण्गिला रिऱवु कण्णुऱ्
ऱॊट्टिऩार् माऱ्ऱि वट्ट मोडिऩा रादि पोऩार् 2509

तट्टितार्–कंधे ठोंककर; तऴुवितार्–पाशबद्ध कर लिया; मेल् तावितार्–ऊपर उछले; तरैयिऩोटुम् किट्टिऩार्–धरती पर एक-दूसरे को बाँध लिया; किटैत्तार्–एक-दूसरे को मिल गये; वीचि पुटैत्तवै–जोर के साथ पीटा तो; कीऴुम् मेलुम् कट्टितार् कात्तार्–नीचे और ऊपर कसकर बचा लिया; इऱवु ऒऩ्ऱुम्–कोई बढ़ना; काण्किलार्–न देख सके; कण्णुऱ्ऱु–परस्पर देखकर; ओट्टिऩार्–ललकारा; वट्टम् ओटिऩार्–गोल-गोल घूमे; माऱ्ऱि–बदलकर; आति पोऩार्–सीधे गये। २५०९

दोनों ने कंधे ठोंककर परस्पर लपेट लिया। ऊपर उछले। भूमि पर आ भिड़े। प्रहार से बचे। दूसरे की बड़ाई न देख सके। ललकारा। कभी चक्राकार घूमे। कभी उसको छोड़ के सीधे गये। २५०९

मैयॊडुम् बहैत्तु निऩ्ऱ निऱत्तिऩात् वयिर मार्बिऱ्
पॊय्यॊडुम् बहैत्तु निऩ्ऱ कुणत्तिऩात् पुहुन्दु मोद
वॆय्यव ऩदऩैत् तण्डाल् विलक्किऩाऩ् विलक्क लोडुङ्
गैयॊडु मिऱ्ऱु मऱ्ऱक् कदैकळङ् गिडन्द दऩ्ऱे 2510

पॊय्यॊटुम्–असत्य से; पकैत्तु निऩ्ऱ–शत्रुता किये रहने के; कुणत्तिऩात्–गुण वाले हनुमान ने; मैयॊटुम् पकैत्तु निऩ्ऱ–काजल से होड़ लगाये रहनेवाले; निऱत्तिऩात्–रंग के अकंप से; वयिरम् मार्पिल्–वज्र-सम वक्ष पर; पुकुन्तु मोत–

(दण्ड) चलाकर प्रहार किया तो; वॅय्यवन्-क्रूर अकंपन ने; अतर्ते-उसे; तण्टाल् विलक्कितान्-दण्डायुध से निवारा; विलक्कलोट्टुम्-रोकने पर; अ कतै-वह गदा; कैयोट्टुम्-हाथ के साथ; इऱ्ऱु-कटकर; कळम्-युद्धभूमि पर; किटन्ततु-गिर गया। २५१०

असत्यशत्रु हनुमान ने अंजन से होड़ लगानेवाले रंग के अकंप के वज्रवक्ष पर दण्ड से प्रहार किया तो अकंप ने उसको अपने दण्ड से रोका। तब वह गदा उसके साथ के साथ कटकर युद्धभूमि में गिर गयी। २५१०

कैयोडु तण्डु नीङ्गक् कडलॅनक् कलक्कक मुऱ्ऱु
मॅय्योडु निन्ऱ वॅय्योन् मिडलुडै यिडक्कै वीशि
ऐयनै यलङ्ग लाहत् तडित्तन नडित्त लोडुम्
ऑय्यॅन वयिरक् कुन्ऱत् तुरुमिनॆ रिडित्त दॊत्त 2511

कैयोट्टु-हाथ के साथ; तण्टुम् नीङ्क-गदा के नष्ट होने पर; कटल् ॲन-समुद्र के समान; कलक्कम् उऱ्ऱु-अस्त-व्यस्त होकर; मॅय्यॊटु निन्ऱ-शरीर के साथ जो खड़ा रहा उस; वॅय्योन्-क्रूर राक्षस ने; मिटल् उटै-बलवान; इट कै वीचि-बायें हाथ को बढ़ाकर; ऐयतै-हनुमान को; अलङ्कल् आकत्तु-मालायुक्त वक्ष पर; अटित्तनन्-पीटा; अटित्तलोटुम्-पीटते ही; ऑय्यॅन-त्वरित गति से; वयिरम् कुन्ऱत्तु-वज्रगिरि पर; उरुमिन् एऱु-बहुत बड़ी अशनि; इटित्तत्तु ऑत्त-फूटी जैसे हो गया। २५११

हाथ और गदा खोकर समुद्र-सम क्षुब्ध क्रूर राक्षस ने सशक्त अपने बायें हाथ को चलाकर हनुमान के मालाधारी वक्ष पर प्रहार किया। वह प्रहार वज्रगिरि पर सवेग गिरनेवाले अशनिराज-सम था। २५११

अडित्तवन् ऱन्नै नोक्कि यशनिये ऱनैय तण्डु
पिडित्तुनिन् ऱेयु मॅऱ्ऱान् वॅऱुङ्गैयान् पिळैयिऱ् ऱॅन्ना
मडित्तुवा यिडत्तुक् कैयान् मार्बिडैक् कुत्त वायाऱ्
कुडित्तुनिन् ऱुमिळ्वा नॅन्नक् कक्किनन् कुरुदि वॅळ्ळम् 2512

अचनि एऱु-अशनिराज; अनैय तण्टु-के समान दण्ड; पिटित्तु निन्ऱेयुम्-पकड़े रहा तो भी; अटित्तवन् तन्नै नोक्कि-प्रहारक को देखकर; वॅऱुम् कैयान्-यह खाली हाथ है; पिळैयिऱ्ऱु-(इसको मारना) गलत होगा; ॲन्ना-ऐसा सोचकर; ॲऱ्ऱान्-पीटा नहीं; वाय् मटित्तु-ओंठ काटकर; इटत्तु कैयाल्-बायें हाथ से; मार्पिटै कुत्त-छाती में घूंसा मारा; कुरुति वॅळ्ळम्-रक्त-प्रवाह को; वायाल् कुटित्तु निन्ऱु-मुख से पहले पीकर; उमिळ्वान् ॲन्न-वमन करता जैसे; कक्किनान् अकंप ने वमन किया। २५१२

हनुमान के हाथ में अशनिराज-सी गदा थी। तो भी उसने सोचा कि यह खाली हाथ है। इसको गदा से मारना ग़लत है। ओंठ काटकर उसने

अपने बायें हाथ से उसकी छाती पर घूंसा मारा। तब उसके मुख से ऐसा रक्त निकला मानो वह पिया हुआ रक्त वमन कर रहा हो। २५१२

मीट्टुमक् कैयाल् वीशिच् चॅवित्तलत् तॅऱ्ऱि वीऴ्त्तात्
कूट्टिना तुयिरै विण्णोर् कुऴात्तिडै यरक्कर् कूट्टङ्
गाट्टिल्वाऴ् विलङ्गु माक्कळ् कोळरि कण्ड वॅन्न
ईट्टमुऱ् ऱॅदिर्न्द वॅल्ला मिरिन्दन तिशैह ळॅङ्गुम् 2513

मीट्टुम्–फिर; कैयाल् वीचि–(उसी) हाथ को चलाकर; चॅवि तलत्तु ऍऱ्ऱि–कानों पर प्रहार किया और; वीऴ्त्तात्–गिराया और; उयिरै–जीव को; विण्णोर् कुऴात्तु इटै–देवों के दलों में; कूट्टितात्–मिला दिया; ईट्टमुऱ्ऱु–दल बांधकर; ऍतिर्न्त–जो लड़े वे; अरक्कर् कूट्टम् ऍल्लाम्–राक्षसों का दल; कोळरि कण्ट–सिंह देखकर; काट्टिल् वाऴ्–वनवासी; विलङ्कु माक्कळ् ऍन्त–तिरछे बढ़नेवाले जानवर जैसे; तिचैकळ् ऍङ्कुम्–सभी दिशाओं में; इरिन्तत–भागे। २५१३

हनुमान ने फिर से उसकी कर्णपटी में हाथ से मारकर शरीर को नीचे गिराया और जीव को देवसमूह में मिला दिया। भीड़ में आये सभी राक्षस सिंह-दर्शक जंगल के जानवरों के समान सभी दिशाओं में अस्त-व्यस्त होकर भागे। २५१३

माण्डत तहम्बन् मण्मेल् मडिन्दन निरुदर् शेतै
मीण्डनर् कुरक्कु वीरर् विऴुन्दन शितक्कै वेऴम्
तूण्डित कॉडित्ते रऱ्ऱत् तुणिन्दत तॉडुत्त वाशि
आण्डहै यिळैय वीर तडुशिलै पॉऴियु मम्बाल् 2514

अकम्पत्–अकंप; मण् मेल् माण्टतत्–पृथ्वी पर मरकर गिर गया; निरुतर् चेतै मटिन्तत–राक्षस-सेनाएँ नाश हो गयीं; कुरक्कु वीरर्–वानर वीर; मीण्टतर्–बचे लौट आये; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; इळैय वीरत्–लघुवीर के; चिलै पॉऴियुम्–धनुनिर्गत; अटुम् अम्पाल्–संहारक बाणों से; चितम्–क्रुद्ध; कै वेऴम्–शुंडी गज; विऴुन्तत–गिरे; तूण्टित–चालित; कॉटि तेर्–ध्वजा-सहित रथ; अऱ्ऱ–टूटे तो; तॉटुत्त वाचि–जुते हुए घोड़े; तुणिन्तत–कट गये। २५१४

अकंप भूमि पर लोट गया। राक्षस-सेना धराशायी हो गयी। पुरुषश्रेष्ठ लघु वीर के धनु से निर्गत बाणों से क्रोधी करि मरकर गिरे। राक्षस द्वारा चालित ध्वजायुक्त रथ टूटे और उनसे जुते घोड़े कटे। २५१४

आर्क्कित्ऱ कुरलुङ् गेळा तिलक्कुव तशति येऱ्ऱेप्
पोर्क्कित्ऱ शिलैयि ताणित् पोरॊलि केळात् वीरर्
यार्क्कित्त लुऱ्ऱ दॅत्ब दुणर्न्दिल तिशैप्पो रिल्लैप्
पोर्क्कुत्ऱ मतैय तोळा ततैयदोर् पॊरुम् लुऱ्ऱात् 2515

आर्क्किनूर् कुरल्–गर्जन का स्वर; केळातुम्–हनुमान न सुन पाया; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; अचनि एऱ्ऱै–अशनिराज को; पोर्क्किनूर्–बेकार करनेवाली; चिलैयिन्–धनु की; नाणिन्–प्रत्यंचा की; पोर् ऑलि–युद्ध-ध्वनि; केळान्–न सुन पाया; वीरर् यार्क्कु–किस वीर की; इन्नतल् उऱ्ऱतु–हानि हुई; ॲन्पतु उणर्न्तिलन्–यह जो न जान पाया; इचैप्पोर् इल्लै–बतानेवाला कोई नहीं रहा; पोर् कुन्ऱम् अतैय–युद्धगिरि-सम; तोळान्–कन्धों वाला; अतैयतु ओर्–उसी (गिरि) सम; ओर् पॉरुमल् उऱ्ऱान्–एक खेद का अनुभव किया। २५१५

हनुमान ने वानरों का नाद नहीं सुना, लक्ष्मण के धनु के अशनिराज-सम ज्यास्वन नहीं सुना। उसे यह न मालूम हुआ कि किस वीर का क्या हाल हुआ। न वह किसी से सुन सका, क्योंकि आकर बतलानेवाला कोई नहीं था। इसलिए युद्धयोग्य पर्वत-सम कंधों वाला हनुमान शोकाकुल हुआ। २५१५

वीशिन निरुदर् शेनै वेलैयिर् ऱॆन्मेऱ् ऱिक्किन्
योशनै येऴु शॆन्ऱा नङ्गद नवनुक् कप्पाल्
आशैयि निरट्टि शॆन्ऱा नरिकुलत् तलैव नप्पाल्
ईशनुक् किळैय वीर निरट्टिक्कु मिरट्टि शॆन्ऱान् 2516

वीचिन–बहुत दूर तक फैली रही; निरुतर् चेनै–राक्षस-सेना; वेलैयिल्–सागर में; तॆन् मेल् तिक्किल्–दक्षिण-पश्चिम दिशा में; अङ्कतन्–अंगद; एऴु योचनै चॆन्ऱान्–सात योजन गया; अरि कुलम् तलैवन्–वानरकुलाधिपति; अवनुक्कु अप्पाल्–उससे भी आगे; आचैयिल्–दिशा में; इरट्टि चॆन्ऱान्–दुगुनी दूर गया; ईचनुक्कु–ईश्वर श्रीराम के; इळैय वीरन्–कनिष्ठ वीर; अप्पाल्–उससे भी आगे; इरट्टिक्कुम् इरट्टि चॆन्ऱान्–दुगुनी की दुगुनी दूर गया था। २५१६

बहुत दूर तक फैली रही राक्षस-सेना के सागर में दक्षिण-पश्चिम दिशा में अंगद सात योजन दूर चला गया था। उसके आगे वानर-कुलपति (सुग्रीव) दुगुनी दूर चला गया था। ईश्वर राम के छोटे भाई दुगुनी की दुगुनी दूर यानी छप्पन योजन चले गये थे। २५१६

मऱ्ऱैयोर् नालु मैन्दुम् योशनै मलैन्दु पुक्कार्
कॊऱ्ऱमा रुवियुम् वळ्ळ लिलक्कुव निन्ऱ शूऴल्
मुऱ्ऱिन निरण्डु मून्ऱु कावद मौऴियप् पिन्नुम्
शुऱ्ऱिय शेनै नीर्मेऱ् पाशिपोन् मिडैन्दु तुन्न 2517

मऱ्ऱैयोर्–अन्य वानर वीर; मलैन्तु–लड़कर; योचनै–योजन; नालुम् ऐन्तुम्–(चार और पाँच) नौ; पुक्कार्–गये; पिन्तुम् चुऱ्ऱिय चेनै–उसके ऊपर भी घेरे जो रही वह सेना; नीर् मेल् पाचि पोल्–जल पर काई के समान; मिटैन्तु तुन्न–घने रूप से मिली रही तो; कॊऱ्ऱम् मारुतियुम्–विजयी मारुति; वळ्ळल्

इलक्कुवन्–उदार प्रभु लक्ष्मण; नित्र चूऴल्–जहाँ रहे उस स्थान को; इरुण्टु मून्ऱु कावतम्–दो-तीन कोस; ऒऴिय–अंतर रखकर; मुट्रितन्–पहुँचा। २५१७

अन्य वानर वीर लड़ते-लड़ते नौ योजन दूर चले गये। उस पर घेरकर जो सेना रही, वह जल के ऊपर काई के समान फैली रही। मारुति उदार प्रभु लक्ष्मण के स्थान से दो-तीन कोश दूर पर आ गया। २५१७

इळैयव नित्र शूऴ लॆय्दुवॆन् विरैवि ऩॆन्ऱोर्
उळैवुवन् दुळ्ळन् दूण्ड वूऴिवॆङ् गालिऩ् चॆल्वान्
कळैवरुन् दुन्ब नीङ्गक् कण्डऩ ऩॆन्ब मऩ्ऩो
विळैवन शॆरुविऩ् पल्वे ऱायिऩ कुऱिहळ् मेय 2518

उळ्ळम्–मन में; ओर् उळैवु–एक व्यथा के; वन्तु तूण्ट–उठकर उकसाने से; इळैयवन् नित्र चूऴल्–लघु वीर जहाँ हैं उस स्थान को; विरैविन् ऎय्तुवॆन्–जल्दी चला जाऊँगा; ऎन्ऱु–कहकर; ऊऴि–युगांत के; वॆम् कालिन्–घनघोर पवन के समान; चॆल्वान्–जाता हुआ; कळैवु अरुम्–अवार्य; तुन्पम् नीङ्क–दुःख दूर करते हुए (घटनेवाले); चॆरुविल् विळैवत–युद्ध में जो हुए; पल् वेऱु आयित–विविध; कुऱिकळ्–आसार; मेय कण्टतन्–हुए, देखा। २५१८

हनुमान के मन में लक्ष्मण को न देखकर बेचैनी पैदा हो गयी। "उनके पास शीघ्र जाऊँगा"—यह कहकर प्रलयकालीन पवन के समान जल्दी जाने लगा। तब युद्ध के कुछ ऐसे आसरे मिले जिनसे अवार्य दुःख दूर हुआ। २५१८

आऩैयिऩ् कोडुम् बीलित् तळैहळु मारत् तोडु
मानमा मणियुम् बॊन्नु मुत्तमुङ् गॊऴित्तु वारि
मीऩॆऩ वङ्गु मिङ्गुम् बडक्कल मिऴिर वीशुम्
पेऩवॆण् गुडैय वाय कुरुदिप्पे राऱु कण्डान् 2519

आतैयिन् कोटुम्–हाथियों के दाँत; पीलि तळैकळुम्–'पीलि' नामक वाद्य; आरत्तोटु–हारों के साथ; मातम् मा मणियुम्–अनेक बड़े रत्न; पॊन्तुम् मुत्तमुम्–स्वर्ण और मोती; कॊऴित्तु–अलग करके ले जाते हुए; वारि मीन् ऎत–जल की मछलियों के समान; पटैक्कलम्–हथियारों के; अङ्कुम् इङ्कुम्–उधर और इधर; मिऴिर–चमकते; वीचुम् पेतम्–चलनेवाले फेन के समान; वॆण् कुटैय–श्वेतछत्र वाली; आय–जो बनी थीं; कुरुति पेर् आऱु–रक्त की बड़ी नदियाँ; कण्टान्–देखीं हनुमान ने। २५१९

गजदंत, "पीली" नाम के बाजे, हार के साथ अनेक रत्न, स्वर्ण और मोती इनको छाँट लेती हुई रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बह रही थीं; जिनमें जल में मछलियों के समान हथियार इधर-उधर चमक रहे थे और फेन के समान श्वेत छत्र तिर रहे थे। २५१९

आशैह् डोरुञ् जुऱ्ऱि मलैहिऩ्ऱ वरक्कर् तम्मेल्
वीशिऩ पहऴि यऱ्ऱ तलैयोडुम् विशुम्बै मुट्टि
ओशैयि ऩुलह मॅङ्गु मदिर्वुऱ वूऴि नाऴिऱ्
काशऱ कल्लिऩ् मारि पॊऴिवपोल् विऴुव कण्डाऩ् 2520

आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; चुऱ्ऱि मलैकिऩ्ऱ–घूमकर जो लड़े; अरक्कर् तम् मेल्–उन राक्षसों पर; वीचित्त पकऴि–चलाये गये बाण; अऱ्ऱ तलैयोटुम्–कटे सिरों के साथ; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; ओचैयिऩ्–उस शोर से; उलकम् ॲङ्कुम् अतिर्वु उऱ–सारे लोक थर्रा उठें, ऐसा; ऊऴि नाऴिल्–युगांत में; काचु अऱ–निर्दोष; कल्लिऩ् मारि–पत्थरों की वर्षा; पॊऴिव पोल्–हो रही जैसे; विऴुव कण्टाऩ्–गिर रहे, वह हनुमान ने देखा। २५२०

दिशा-दिशा में घेरकर जो राक्षस लड़ रहे थे, उन पर अस्त्र चलाये गये थे। वे अस्त्र कटे हुए सिरों के साथ आकाश से टकराकर, उस शब्द से सारे लोकों को कँपाते हुए प्रलयकालीन निर्दोष प्रस्तरवर्षा के समान नीचे गिरे। हनुमान ने उसको देखा। २५२०

माऩवे लरक्कर् विट्ट पडैक्कल वाऩ मारि
आऩवऩ् पहऴि शिऩ्दत् तिशैतोऱुम् बॊऱियो डऱ्ऱ
मीऩिऩम् विशुम्बि ऩिऩ्ऱु मिरुळुह विऴुव पोलक्
काऩहऩ् दॊडर्न्द तीयिऱ् चुडुवऩ पलवुङ् गण्डाऩ् 2521

आऩवऩ् पकऴि–(युद्ध-) योग्य लक्ष्मण के शरों के; चिऩ्त–अधिक परिमाण में लगने से; माऩम् वेल् अरक्कर्–शानदार भालों के धारक राक्षसों के; विट्ट–चलाये; पटैक्कलम्–हथियारों की; वाऩम् मारि–आकाश की वर्षा; तिचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; पॊऱियोटु अऱ्ऱ–अंगारों के साथ मिट गये; मीऩ् इऩम्–नक्षत्रसमूह; विचुम्पिऩ् निऩ्ऱुम्–आकाश से; इरुळ् उक–अंधकार मिटाते हुए; विऴुव पोल–गिरते जैसे; काऩकम् तॊटर्न्त–वन में लगी; तीयिल्–आग के समान; चुटुवऩ–जलनेवाले; पलवुम् कण्टाऩ्–अनेक देखे। २५२१

लक्ष्मण के शरों ने शानदार राक्षसों के हथियारों को काटकर छितराया। तो वे हर दिशा में अंगारों के साथ अपनी शक्ति खोकर आकाश से अँधेरा दूर करके गिरनेवाले नक्षत्रों के समान नीचे गिरे और जंगल की आग के समान जलते रहे। हनुमान ने ऐसे बहुत से हथियार देखे। २५२१

मरुळुडैक् कुरिशिल् वाऴि यऩ्दर मॅङ्गुन् दामाय्त्
तॆरुळुऱत् तॊडर्न्दु वीशिच् चॆल्वऩ तेवर् काण
इरुळिडैच् चुडलैयोडु मॆण्बुयत् तण्णल् वण्णच्
चरुळडैच् चडैयिऩ् कऱ्ऱैच् चुऱ्ऱॆऩच् चुडर्व कण्डाऩ् 2522

अरुळ् उटै–करुणावान; कुरिचिल्–प्रभु के; वाळि–बाण; अन्तरम् ॲङ्कुम् तामाय्–आकाश भर में स्वयं वे ही रहे; तॆरुळ् उऱ–प्रकाश देते हुए; तॊटर्न्तु वीचि चॆल्वन–लगातार बढ़ते चले; इरुळ् इटै–रात में; चुटलै–श्मशान में; तेवर् काण–देवों के देखते; आटुम्–नाचनेवाले; ॲण् पुयत्तु अण्णल्–अष्टभुज शिवजी की; वण्णम्–सुन्दर; चुरुळ् उटै कऱ्ऱै चटैयिन् चऱ्ऱु ॲन–घुँघराली जटा-जूट के समान; चुटर्व–प्रकाश देते थे, यह; कण्टान्–देखा (हनुमान ने)। २५२२

करुणामय प्रभु के शर आकाश भर में पूर्ण रूप से व्याप गये और आगे बढ़ते जाते हुए श्मशान में देवों के देखते नाचनेवाले अष्टभुज शिवजी की सुन्दर घुँघराली जटाजूट के समान प्रकाश दे रहे थे। हनुमान ने वह भी देखा। २५२२

नॆय्युऱक् कॊळुत्तप् पट्ट नॆरुप्पॆनप् पॊरुप्पि नोङ्गुम्
मॆय्युऱक् कुरुदित् तारै विशुम्बुऱ विळङ्गि निन्ऱ
वॆयतिक् कङ्गुत् मालै यरशॆन वरिन्दु कालङ्
गैविळक् कॆडुत्त वॆन्नक् कवन्दत्तिन् काडु कण्डान् 2523

नॆय् उऱ–घी भरकर; कॊळुत्तप् पट्ट–जो जलायी गयी हो; नॆरुप्पु ॲन–वैसी आग के समान; पॊरुप्पिन् ओङ्कुम्–पर्वत के समान ऊँचा रहनेवाले; मॆय् उऱ–शरीर से अधिक; कुरुति तारै–रक्त का प्रवाह; विचुम्पु उऱ–आकाश पर लगे; विळङ्कि निन्ऱतु–जो शोभता रहा वह; ऐयन्–सुन्दर कुमार लक्ष्मण (को); अरचु ॲन–राजा के रूप में; अऱिन्तु–जानकर; इ कङ्कुल् मालै कालम्–यह रात का समय; कै विळक्कु ॲटुत्ततु–हस्तदीप लिये हुए हो; ॲन्न–जैसा; कवन्तत्तिन् काटु कण्टान्–कबन्धों का जंगल देखा। २५२३

घी डालकर उभारी गयी आग के समान राक्षसों के पर्वतोपम शरीरों से रुधिर बहा और वह रक्त आकाश तक उछल रहा था। इस स्थिति में कबंध नाच रहे थे। वह रात के राजा लक्ष्मण के अभिनंदनार्थ हाथ में दीप लिये नाचने के समान था। हनुमान उन कबंधों का वह जंगल देखा। २५२३

आळॆला मळिन्द तेरु मानैयु माडन् मावुम्
नाळॆला मॆण्णि नालुन् दॊलैविला नाद रिन्ऱित्
ताळॆलाङ् गुलैय वोडित् तिरिवन ताङ्ग लाऱ्ऱुङ्
गोळिला मन्न नाट्टिऱ् कुडियॆनक् कुलैव कण्डान् 2524

आळ् ॲलाम्–वीर सभी; अळिन्त तेरुम्–जिनके मिट गये थे वे रथ; आनैयुम्–गज; आटल् मावुम्–नृत्यशील घोड़े; नाळ् ॲलाम्–दिन भर; ॲण्णिनालुम्–गिनो तो भी; तॊलैवु इला–जिनका अन्त नहीं हो सकता; नातर् इन्ऱि–अनाथ होकर; ताळ् ॲलाम् कुलैय–पैर थकाते हुए; ओटि तिरिवन–दौड़ते फिरनेवाले; ताङ्कल् आऱ्ऱुम्–पालनकर्म के; कोळ् इला–सिद्धान्त से हीन; मन्नन् नाट्टिल्–राजा के

राज्य में; कुटि अँत–प्रजा के समान; कुलैव–अस्त-व्यस्त थे, यह; कण्टात्–देखा। २५२४

हनुमान ने सारथी-रहित रथ, गज, घोड़े आदि देखे। वे अपने पैरों को बहुत दुःख देते हुए, सिद्धांतहीन राजा के राज्य की प्रजा के समान अस्त-व्यस्त हो भाग रहे थे। २५२४

मिडल्होळ्म् बहळि मारि वानिनु मुम्मै वीशि
मडल्होळु मलङ्गन् मार्बन् मलैन्दिड वुलैन्दु माण्डार्
उडल्हळु मुदिर नीरु मौळिर्बडैक् कलमु मुऱ्ऱ
कडल्हळु नॅडिय कानुङ् गार्तवळ् मलैयुङ् गण्डान् 2525

मटल् कौळुम्–दलसंकुल; अलङ्कल् मार्पन्–पुष्पमाला से अलंकृत वक्ष वाले लक्ष्मण ने; मिटल् कौळुम्–सारयुक्त; पकळि मारि–शर-वर्षा को; वानित्तुम्–आकाश की वर्षा से; मुम्मै वीचि–तिगुनी चलाते हुए; मलैन्तिट–युद्ध किया, इसलिए; उलन्तु माण्टार्–प्राण खोकर जो मरे उनके; उटल्कळुम्–शरीर और; उतिरम् नीरुम्–रक्तजल; औळिर् पटै कलमुम्–उज्ज्वल हथियार; उऱ्ऱ–जिनमें जा मिले थे उन; कटल्कळुम्–समुद्रों और; नॅटिय कानुम्–विशाल वन को; कार् तवळ्–मेघ जिन पर रेंगते हैं, ऐसे; मलैयुम्–पर्वत को; कण्टान्–देखा हनुमान ने। २५२५

दललसित पुष्पमालाधारी वक्ष वाले लक्ष्मण के सशक्त शर-वर्षा को मेघ-वर्षा से तिगुना चलाते हुए युद्ध करने से मरे हुए राक्षसों के शरीर-रक्त का प्रवाह और उज्ज्वल हथियार, इनसे युक्त सागरों, विशाल वनों और मेघावृत पर्वतों को हनुमान ने देखा। २५२५

शुळित्तॅरि यूळिक् कालिऱ् ऱुरुवितत् तोंडरुन् दोन्ऱल्
तळिक्कॊण्ड कुरुदि वेलै तावुवान् ऱनिप्पे रण्डङ्
गिळिन्ददु किळिन्द दॅन्नु नाणुरु मेरु केट्टान्
अळित्तोळि कालत् तार्क्कु मार्हलिक् किरट्टि यार्त्तान् 2526

चुळित्तु ऍरि–चक्करों में बहनेवाली; ऊळि कालिल्–युगान्त की हवा के समान; तुरुवितन्–टटोलकर; तोंटरुम्–बढ़नेवाला और; तळिक् कॊण्ट–उसे भग्न करनेवाले; कुरुति वेलै–रक्त-समुद्र को; तावुवान्–पार करनेवाला जो था; तोन्ऱल्–उस महिमावान हनुमान ने; तनि पेर् अण्टम्–अनोखा एक बड़ा अण्ड; किळिन्ततु किळिन्ततु–फटा, फटा; ऍन्नम्–जैसा; नाण् उरुम् एऱु–ज्यास्वन का अशनिराज; केट्टान्–सुना; अळित्तु ओळि–(लोक) नाशक; कालत्तु–युगान्तकालीन; आर्क्कुम्–गरजनेवाले; आर् कलिक्कु–समुद्र से; इरट्टि–दुगुना; आर्त्तान्–(आनन्द-) नाद उठाया। २५२६

हनुमान युगांत के बवंडर के समान ढूँढ़ता हुआ बढ़ रहा था और रक्त के समुद्रों को पार करता हुआ जा रहा था। तब उसने डोरा

खीचने का अशनि-सम शब्द सुना, जिससे यह विलक्षण बड़ा अंड फट गया, ऐसी स्थिति हो गयी। उसको सुनकर हनुमान ने सर्वनाशक युगांत के समुद्र-गर्जन का दुगुना नाद उठाया। २५२६

आर्त्तपे रमलै केळा वणुहिऩ ऩऩुम ऩॆल्लार्
वार्त्तैयुङ् गेट्क लाहु मॆऩ्ऱह महिऴ्न्दु वळ्ळल्
पार्प्पदऩ् मुऩ्ऩम् वन्दु पणिन्दऩऩ् विशयप् पावै
तूर्त्तऩै यिळैय वीरऩ् ऱऴुविऩ ऩिऩैय शॊऩ्ऩाऩ् 2527

आर्त्त पेर् अमलै–उठा उच्च ज्यास्वन; केळा–सुनकर; अनुमऩ्–हनुमान; अणुकिऩऩ्–पास जाकर; ऍल्लार् वार्त्तैयुम्–सभी का समाचार; केट्कलाकुम्–सुन सकूँगे; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अकम् मकिऴ्नतु–संतोष करके; वळ्ळल्–उदार प्रभु; पार्प्पतऩ् मुऩ्ऩम्–देख लें, इसके पहले; वन्तु पणिन्तऩऩ्–आकर नत हुआ; विचय पावै तूर्त्तऩै–विजयलक्ष्मी के कामुक हनुमान को; इळैय वीरऩ्–लघुवीर ने; तऴुविऩऩ्–आलिंगन कर लिया और; इऩैय चॊऩ्ऩाऩ्–ये बातें कहीं। २५२७

हनुमान ने लक्ष्मण के धनुष की टंकार सुनकर सोचा कि लक्ष्मण पास ही हैं। सारा समाचार सुन सकूँगा। उत्साह के साथ वह, लक्ष्मण उसको देखें इसके पहिले ही, सामने आकर झुका। विजयश्री के कामुक हनुमान को लघुराज ने गले लगाकर उससे ये बाते पूछीं। २५२७

अरिकुल वीर रैय याण्डैय ररुक्कऩ् मैन्दऩ्
पिरिवुत्तैच् चॆय्द दॆव्वा ऱङ्गदऩ् पॆयर्न्द दॆङ्गे
विरियुरुट् परवैच् चेऩै वॆळ्ळत्तु विळैन्द वॊऩ्ऱुन्
दॆरिहिल तुरैत्ति यॆऩ्ऱाऩ् चॆऩ्ऩिमेऱ् कैयऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 2528

ऐय–तात; अरिकुल वीरर्–वानरकुल के वीर; याण्टैयर्–कहाँ हैं; अरुक्कऩ् मैन्तऩ्–सूर्यसूनु ने; उऩ्ऩै–आपको; पिरिवु चॆय्ततु–अलग किया; ऍव्वाऱु–कैसा; अङ्कतऩ् पॆयर्न्ततु–अंगद अलग गया; ऍङ्के–कहाँ; विरि इरुळ्–विशाल अंधकार के; परवै–सागर में मिली; चेऩै वॆळ्ळत्तु–सेना के सागर में; विळैन्ततु–जो हुआ; ऒऩ्ऱुम् तॆरिकिलेऩ्–एक समाचार भी नहीं जानता; उरैत्ति–कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–लक्ष्मण ने पूछा; चॆऩ्ऩिमेल् कैयऩ्–सिर पर धृत हाथों वाले ने; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। २५२८

तात! वानरकुल वीर कहाँ हैं? अर्कपुत्र तुमसे अलग हुआ कैसे? अंगद गया कहाँ? विशाल अंधकार में सेना का प्रवाह छिप गया और मुझे कुछ भी विदित नहीं हो रहा है। बताओ। हनुमान ने जुड़े हाथ सिर पर रख लिये और यों कहा। २५२८

पोयिऩार् पोय वाऱुम् बोयिऩ दऩ्ऱिप् पोरिल्
आयिऩा राय वॊऩ्ऱु मऱिन्दिल ऩैय याऩुम्

मेयिऩार् मेय पोदै तॆरियलाम् विळैन्द वॆऩ्ऱाऩ्
तायिऩाऩ् वेलै योडु मयिन्दिरप् परवै तऩ्ऩै 2529

वेलैयोटुम्–समुद्र और; ऐन्तिरम् परवै तऩ्ऩै–ऐंद्रव्याकरण-सागर को; तायिऩाऩ्–जिसने पार किया था; ऐय–(उस हनुमान ने) प्रभु; पोयिऩार् पोय आऱुम्–जो गये उनके जाने का हाल; पोयिऩतु अऩ्ऱि–जाने के अलावा; पोरिल् आयिऩार्–युद्धरत जो रहे; आयतु ऒऩ्ऱुम्–उनका क्या हुआ, यह कुछ; अऱिन्तिलऩ्–नहीं जाना; यारुम्–किसी के बारे में; मेयिऩार् मेय पोते–जो गये हैं उनके आने पर ही; विळैन्त–जो हुआ वह; तॆरियलाम्–जाना जा सकता है; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २५२९

समुद्र और ऐंद्र (व्याकरण) के पारंगत हनुमान ने निवेदन किया कि प्रभु ! जो गये उनकी बातें या जो लड़े उनकी स्थिति मैं नहीं जानता। उनके लौटने पर ही बातें मालूम हो सकती हैं। २५२९

मन्दिर मुळदा लैय वुणर्वुरु मालैत् तः(ह्)दुन्
चिन्दैयि लुणर्न्दु शॆय्यर् पाऱ्ऱिऩिच् चॆय्दि तॆव्वर्
तन्दिर मिदऩैत् तॆय्वप् पडैयिऩाऱ् चमैक्कि ऩल्लाल्
ऎन्दैनिऩ् ऩडियर् यारु मॆय्दलर् निऩ्ऩै यॆऩ्ऱाऩ् 2530

ऐय–प्रभु; उणर्वु उऱु–प्रज्ञा पाने की; मालैत्तु–शक्तिदायक; मन्तिरम् उळ्ळतु–मंत्र है; अ:तु–वह; उऩ् चिन्तैयिऩ् उणर्न्तु–आपके चित्त में ध्यान करके; चॆय्यल् पाऱ्ऱु–करने अर्ह है; इऩि–अब; चॆय्ति–कीजिए; तॆव्वर्–शत्रुओं की; तन्तिरम्–साज़िश से हुए; इततै–इस (भ्रम) को; तॆय्व पटैयिऩाल्–दिव्यास्त्र से; चमैक्किऩ् अल्लाल्–हटाये बग़ैर; ऎन्तै–पिताजी; निऩ् अटियर् यारुम्–आपका भक्त कोई; निऩ्ऩै ऎय्तिलर्–आपको नहीं मिलेंगे; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा, हनुमान ने। २५३०

हनुमान ने आगे कहा कि प्रभु ! मोह दूर करके प्रज्ञा दिलानेवाला एक मंत्र है। आप उस मंत्र का मन लगाकर प्रयोग करें। शत्रु की माया से यह भ्रांति उत्पन्न है, दिव्यास्त्र छोड़कर इसको दूर किये विना, हे धाता ! आपके दास कोई आपके पास नहीं आयेंगे। २५३०

अऩ्ऩदु पुरिवॆ ऩॆऩ्ऩा वायिर नामत् तण्णल्
तऩ्ऩैये वणङ्गि वाळ्त्तिच् चरङ्गळैत् तॆरिन्दु वाङ्गिप्
पॊऩ्मलै विल्लि ऩाऩ्ऱऩ् पडैक्कलम् बॊरुन्द वॆन्दि
मिऩ्ऩॆयिऱ् ऱरक्कर् तम्मेल् वीशिऩाऩ् विल्लिऩ् शॆल्वऩ् 2531

विल्लिऩ् चॆल्वऩ्–धनुर्धनी लक्ष्मण ने; अऩ्ऩतु पुरिवॆऩ्–वही करूँगा; ऎऩ्ऩा–कहकर; आयिरम् नामत्तु–सहस्रनामी; अण्णल् तऩ्ऩैये–प्रभु श्रीराम का; वणङ्कि वाळ्त्ति–नमन और स्तुति करके; चरङ्कळै–बाणों को; तॆरिन्तु वाङ्कि–चुन लेकर; पॊऩ् मलै विल्लिऩाऩ् तऩ्–स्वर्णमेरुधन्वा के; पटै कलम्–अस्त्र को

(पाशुपतास्त्र को); पौरुन्त एन्ति–युक्त रीति से संधानकर; मिन् ऍयिरु–बिजली के समान दाँतों वाले; अरक्कर् तम् मेल्–राक्षसों पर; वीचिनान्–चलाया। २५३१

धनुर्धनी लक्ष्मण ने हनुमान की वह बात सुनकर उत्तर दिया कि मैं वही करूँगा। फिर उन्होंने सहस्रनामी श्रीराम को नमस्कार करके स्वर्णमेरुधन्वा शिवजी का पाशुपतास्त्र चुनकर उठाया और बिजली-सम दाँतोंवाले राक्षसों पर चलाया। २५३१

मुक्कणान् पडैयै मूट्टि विडुदलु मूङ्गिर् काट्टिर्
पुक्कदो रूळित् तीयिर् पुड़त्तिनो रुरुवुम् बोहा
दक्कणत् तॅरिन्दु वीळ्न्द दरक्करदज् जेनै याळि
तिक्कॅला मिरुळुन् दीर्न्द तेवरु मयक्कन् दीर्न्दार् 2532

मुक्कणान् पटैयै–त्रिनेत्र शिवजी के अस्त्र को; मूट्टि विटुतलुम्–संधान कर छोड़ते ही; मूङ्किल् काट्टिल्–बाँस के वन में; पुक्कतु–लगी; ओर् ऊऴि तीयिल्–युगांत की आग के समान; पुऱत्तिन्–उस तरफ़; ओर् उरुवुम् पोकातु–एक पदार्थ भी न हट जाए ऐसा; अरक्कर् चेनै आऴि–राक्षस-सेना-सागर; अक्कणत्तु–उसी क्षण में; ऍरिन्तु वीऴ्न्ततु–जलकर गिरा (नष्ट हुआ); तिक्कु ऍलाम्–सभी दिशाओं में; इरुळुम् तीर्न्ततु–अन्धकार मिट गया; तेवरुम्–देव भी; मयक्कम् तीर्न्तार्–भ्रममुक्त हुए। २५३२

त्रिनेत्र शिवजी के अस्त्र को जब लक्ष्मण ने छोड़ा, तब उससे बाँस के वन में फैली युगांत की अग्नि के समान आग जल उठी और राक्षस-सेना उसी क्षण जलकर मिट गयी। कोई भी जीव इधर-उधर नहीं जा सका। सारी दिशाओं का अंधकार मिट गया। देवों को भी होश आया। २५३२

तेवर्दम् बडैयै विट्टा नॅन्बदु चिन्दै शॅय्या
माबॅरु मायै नीङ्ग महोदरन् मरैयप् पोनान्
यावरु मिरिन्दा रॅल्ला मित्तमळै कळिय वार्त्तुक्
कोविळङ् गळिऱ्ऱै वन्दु कूडिना राडल् कॊण्डार् 2533

तेवर् तम् पटैयै–ईश्वर का पाशुपतास्त्र; विट्टान् ऍन्पतु–यह बात; चिन्तै चॅय्या–सोचकर; मा पॅरु मायै नीङ्क–बहुत बड़ी माया के दूर होने पर; मकोतरन् मऱैय पोनान्–महोदर छिपकर चला गया; इरिन्तार् यावरुम्–तितर-बितर जो गये वे सभी; इत्तम् मऴै ऍल्लाम्–इकट्ठे हुए सारे मेघ; कऴिय–पिछड़ जाएँ ऐसा; आर्त्तु–शब्द करते हुए; इळम् कळिऱ्ऱै–कलभ-सम लक्ष्मण के पास; वन्तु कूटिनार्–आ जमा हुए; ऍल्लाम् आटल् कॊण्टार्–सब नाचने लगे। २५३३

महोदर ने जान लिया कि लक्ष्मण ने पाशुपतास्त्र का प्रयोग किया है, तो वह छिपकर चला गया। जो भागे थे वे सभी वानर मेघों के गर्जन-

नाद को भी हरानेवाले शोर के साथ लौट आये और कलभ-सम लक्ष्मण से आ मिले और नाचने लग गये। २५३३

यावर्क्कुन् दीदि लामै कण्डुकण् डुवहै येरत्
तेवर्क्कुन् देवन् इम्बि तिरुमत्त् तैयन् दीर्न्दान्
कावर्पोर्क् कुरक्कुच् चेनै कल्लॅनक् कलन्दु पुल्लप्
पूवर्क्क मिमैयोर् डूवप् पॊलिन्दनन् तूदर् पोनार् 2534

तेवर्क्कुम् तेवन् तम्पि–देवाधिदेव के छोटे भाई ने; यावर्क्कुम्–सभी (किसी) को; तीतु इलामै कण्टु–हानि-रहित देखकर; कण्टु–देखकर; उवकै एर–आनंद के बढ़ने से; तिरुमनत्तु–श्रीमन में से; ऐयम् तीर्न्तान्–संदेह दूर कर दिया; कावल्–रक्षण में; पोर् कुरक्कु चेनै–युद्ध-योग्य वानर-सेना के; कल् ॲॅन कलन्तु पुल्ल–'गल्ल्' शब्द के साथ आकर मिलने पर; इमैयोर्–देवों के; पू वर्क्कम् तूव–पुष्पराशि बरसाते; पॊलिन्तनन्–शोभित रहा; तूतर् पोनार्–दूत (रावण के पास) गये। २५३४

देवादिदेव लक्ष्मण को यह देखकर सन्तोष हुआ कि किसी की कुछ हानि नहीं हुई है। उनके मन का संशय दूर हो गया। उनके रक्षण में लड़ने के लिए वानर-सेना 'गल्ल' शब्द के साथ आ जुट गयी। देवों ने पुष्पवर्षा की। इस स्थिति में लक्ष्मण शोभायमान रहे। रावण के दूत यह देखकर रावण के पास समाचार देने चले। २५३४

इलङ्गैयर् कोनै यॅय्दि यॅय्दिय दुरैत्तार् नीविर्
विलङ्गिनिर् पोलुम् वॅळ्ळ नूर्रैयोर् विल्लिन् वेळक्
कुलङ्गळि नोडुङ् गॊल्लक् कूडुमो वॅन्नक् कॊन्रै
अलङ्गलान् पडैयि नॅन्रा रन्नदे लाहु मॅन्रान् 2535

इलङ्कैयर् कोनै ॲय्ति–लंकाधिपति के पास जाकर; ॲय्तियतु उरैत्तार्–जो हुआ वह बताया; नीविर्–तुम लोग; विलङ्किनिर् पोलुम्–डर से अलग हट गये शायद क्या; वेळम् कुलङ्कळिनोटुम्–गजवृन्दों के साथ; वॅळ्ळम् नूर्रै–सौ 'वॅळ्ळम्' सेना को; ओर् विल्लिन्–एक धनु से; कॊल्ल कूटुमो–मारा जा सकता है क्या; ॲन्न–पूछने पर; कॊन्रै–अमलतास पुष्प की; अलङ्कलान्–मालाधारी शिव के; पटैयिन्–(पाशुपत-) अस्त्र से; ॲन्रार्–कहा; अन्नतेल् आकुम्–वह बात हो तो हो सकता है; ॲन्रान्–मान लिया (रावण ने)। २५३५

दूतों ने लंकेश के पास जाकर बीती बात कही। रावण ने पूछा। तुम लोग डर के मारे दूर ही रहे शायद क्या? सौ 'वॅळ्ळम्' सेना को हाथियों-सहित एक ही धनु द्वारा मारा जा सकता है क्या? दूतों ने उत्तर दिया कि अमलतास के फूलों की मालाधारी शिवजी के (पाशुपत-) अस्त्र से ऐसा काम हुआ, तो रावण ने माना कि वही हो तो संभव है! । २५३५

तोडवि ऴलङ्ग लॅन्शेय्क् कुणर्त्तुमि नॅन्नच् चॊन्नान्
ओडिनार् शारर् वल्लै युणर्त्तिनर् तुणुक्क मॆय्दा
आडवर् तिलहन् याण्डै यानिह लनुम लेनोर्
वीडणन् याङ्ग णुळ्ळा रुणर्त्तुमिन् विरैवि नॅन्ड्रान् 2536

तोट्टु अविऴ्–विकसितदल; अलङ्कल्–मालाधारी; ॲन् चेय्क्कु–मेरे पुत्र को; उणर्त्तुमिन्–बताओ; ॲन्न–ऐसा; चॊन्नान्–कहा; चारर्–दूत; वल्लै–शीघ्र; ओटिनार्–दौड़े; उणर्त्तिनर्–समझाया; तुणुक्कम् ॲय्ता–डरकर; आटवर् तिलकन्–पुरुषतिलक; याण्टैयान्–कहाँ (रहता है); इकल् अनुमन्–वीर हनुमान; एनोर्–अन्य वानर; याङ्कण् उळ्ळार्–कहाँ हैं; विरैविन् उणर्त्तुमिन्–जल्दी कहो; ॲन्ड्रान्–पूछा (इन्द्रजित् ने)। २५३६

रावण ने कहा कि तुम लोग जाओ और विकसित दलों वाले पुष्पों की मालाधारी मेरे पुत्र को यह समाचार सुनाओ। चर शीघ्र भागे। इन्द्रजित् को समझाया। इन्द्रजित् काँप उठा। पुरुषतिलक श्रीराम कहाँ है? बलवान हनुमान कहाँ? अन्य वानर कहाँ? तुरन्त बताओ। —इन्द्रजित् ने पूछा। २५३६

वन्दिल निरामन् वेरोर् मलैयुळा नुन्द मायन्
दन्वन तॅरिवा नुन्दै पोना नुण्बन ताऴ्क्कल् ताऴा
ॲन्दैती दियन्ड्र ॲन्न सहोदर नियाण्डै यॅन्न
अन्दरत् तिडैय नॅन्न विरावणि यऴहिदॅन्ड्रान् 2537

इरामन् वन्तिलन्–राम नहीं आया; वेरोर् मलै उळान्–अन्य किसी पहाड़ पर है; मायम् तन्ततन्–माया जो की जाती है उसे; तॅरिवान् उन्तै–उसे जाननेवाले तुम्हारे पिता (चाचा); उण्पन ताऴ्क्क–रसद के आने में देरी होने से; पोनान्–गये; ताऴा ॲन्तै–विलंब न करनेवाले मेरे पिता (तुल्य); तीतु इयन्ड्रतु–हानि हो गयी है; ॲन्न–(दूतों के ऐसा) कहने पर; सकोतरन् याण्टै–महोदर कहाँ; ॲन्न–पूछने पर; अन्तरत्तु इटैयन्–आकाशमध्य; ॲन्न–कहने पर; इरावणि–रावणि ने; अऴकितु–सुन्दर है यह; ॲन्ड्रान्–कहा। २५३७

राम आया नहीं। वह कहीं दूसरे पर्वत पर है। माया पहचान सकनेवाले आपके चाचा रसद आने में विलम्ब हुआ तो रसद लाने गये। अविलम्ब कार्य करनेवाले तात! नुक़सान हो गया। दूतों ने यह कहा, तो इन्द्रजित् ने प्रश्न किया कि महोदर कहाँ है? 'आकाश में' —जवाब मिलने पर रावणि ने कहा कि यह भी सुन्दर रहा। २५३७

काल मीदॅन्नक् करुदिय विरावणन् कादल्
आल मामर मॊन्ड्रिनै विरैविनि नडैन्दान्
मूल वेळ्विक्कु वेण्डव कलप्पैहण् मुरैयार्
कल नीङ्गिय विराक्कदप् पुशुरर् कॊणर्न्दार् 2538

ईतु–यही; कालम्–युक्त समय है; ॲन्न करुतिय–ऐसा सोचा; इरावणन् कातल्–रावणनंदन; मा आल मरम् ऑनुऱिनै–बड़े वटवृक्ष के पास; विरैविनिन्–जल्दी; अटैन्तान्–पहुँचा; फूलम् नीङ्गिय–अतिक्रमी; इराक्कतर् पूचुरर्–राक्षस-ब्राह्मण; मूलम् वेळ्विक्कु वेण्टुव–प्रधान यज्ञ के लिए आवश्यक; कलप्पैकळ्–सामग्रियाँ; मुऱैयाल् कॉणर्न्तार्–क्रम से लाये। २५३८

रावणनन्दन ने सोचा कि ब्रह्मास्त्र चलाने का यही समय है। वह एक बड़े बरगद के पेड़ के पास शीघ्र गया। अमर्यादित कर्मकाण्डी राक्षस-ब्राह्मण यागसामग्रियाँ यथारीति लाये। २५३८

अम्बि नार्पॅरुञ् जमिदैह ळमैन्दन्न न्नलिल्
तुम्बै मामलर् तूविनन् कारियॅट् चॊरिन्दान्
कॊम्बु पल्लॊडु करियवॅळ् ळाट्टिरुङ् गुरुदि
वॅम्बु वॅन्दशै मुऱैयिनिट् टॅण्मैयाल् वेट्टान् 2539

अम्पिनाल्–बाणों से; पॅरुम् चमितैकळ्–बड़ी समिधाएँ; अमैत्तनन्–बनायीं; अनलिल्–आग में; तुम्पै मा मलर्–'तुंबै' के बड़े पुष्पों को; तूविनन्–डाला; कारि ॲळ्–काले तिल को; चॊरिन्तान्–होम किया; कॊम्पु पल्लॊटु–सींग और दाँतों-सह; करिय वॅळ् आटु–बकरी का; इरु कुरुति–अधिक रक्त; वॅम्पु–पके जाने योग्य; वॅम् तचै–कठिन मांस; मुऱैयिन् इट्टु–क्रम से डालकर; ॲण् नॅयाल्–मुख्य-मान्य घी से; वेट्टान्–यज्ञ सम्पन्न किया। २५३९

इन्द्रजित् ने अस्त्रों की समिधा बनायी। आग में 'तुंबै' के बड़े फूलों को डाला। काला तिल होम किया। सींगों और दाँतों के साथ बकरी का रक्त और मांस डालकर श्रेष्ठ घी से होमकार्य सम्पन्न किया। २५३९

वलञ्जु ऴित्तुवन् दॅऴुन्दॅरि नऱुवॅऱि वयङ्गि
नलञ्जु रन्दन पॅरुङ्गुऱि मुऱैमैयि नल्हक्
कुलञ्जु रन्दॅऴ् कॊडुमैयान् मुऱैयिनिऱ् कॊण्डे
निलञ्जु रन्दॆऴु वॅन्ऱियॅन् ऱुम्बरि निमिर्न्दान् 2540

ॲरि–यागाग्नि; नऱु वॅऱि वयङ्कि–सुगंधिसंमिश्रित; वलम् चुऴित्तु वन्तु–दायीं ओर से घूमकर; ॲऴुन्तु–उठी और; नलम् चुरन्तन–शुभकारी; पॅरु कुऱि–बड़े शकुन; मुऱैमैयिन् नल्क–यथेच्छित दिखाये तो; कुलम् चुरन्तु ॲऴु–कुल भर में होनेवाली; कॊटुमैयान्–दुष्टता का आगार; वॅन्ऱि–विजय; निलम् चुरन्तु ॲऴुम्–युद्धभूमि से मिलेगी ऐसा; मुऱैयिनिल् कॊण्टे–यथारीति मन में मानकर; उम्परिन् निमिर्न्तान्–आकाश में ऊँचा खड़ा रहा। २५४०

यागाग्नि सुगन्ध के साथ दायीं तरफ़ घूम उठी। अच्छे शकुन प्रकट हुए। सारे राक्षसकुल की सम्पूर्ण क्रूरता का मूर्तिमान इन्द्रजित् यह विश्वास लेकर आकाश में उठा कि युद्धभूमि से हित अवश्य होगा। २५४०

विशुम्बु पोयितन् मायैयिन् पॆरुमैयाल् मेलैप्
पशुम्बों नाट्टवर् नाट्टमु मुळ्ळमुम् बडरा
वशुम्बु विण्णिडै यडङ्गितन् मुनिवरुम् मऱियार्
तशुम्बु नुण्णंडुङ् गोळोंडु कालमुञ् जार 2541

मायैयिन् पॆरुमैयाल्–माया के प्रभाव से; विचुम्पु पोयितन्–आकाश में जाकर; तचुम्पु–कुम्भराशि के; नुण् नॆटु कोळोटु–शनि ग्रह के साथ; नॆटुकोळोटु–लंबे (केतु) ग्रह के साथ; कालमुम् चार–काल के मिलने से; मेलै–ऊपर; पचुम् पॊन् नाट्टवर्–स्वर्णनगरी के वासियों के; नाट्टमुम् उळ्ळमुम्–नेत्र और मन; पटरा–जहाँ नहीं पहुँच पाते; अचुम्पु विण् इटै–मैले जलकणों के साथ रहे आकाश में; अटङ्कितन्–दबा रहा; मुनिवरुम् अऱियार्–ऋषि भी जान नहीं पाये। २५४१

माया के बल से वह आकाश में चला। कुंभ राशि का देवता शनि लक्ष्मण के नक्षत्र की चन्द्रराशि में केतु के साथ आ गया था। इन्द्रजित् आकाश में ऐसे स्थान पर जा छिपा रहा, जहाँ ऊपर के स्वर्गलोक के वासी देवों की आँखें क्या उनका मन भी नहीं पहुँच सकता था। २५४१

अनैय नितृरन नब्वळि महोदर नऱिन्दोर्
वितैय मॆण्णिन तिन्दिर वेडत्तै मेवित्
तुनैव लत्तयि रावदक् कळिऱ्ऱिन्मेर् ऱोन्ऱि
मुनैवर् वानव रवरॊडुम् बोर्शॆय मूण्डान् 2542

अनैयन्–वह रावणि; नितृरतन्–खड़ा रहा; अव् वळि–तब; मकोतरन्–महोदर ने; अऱिन्तु–जान-बूझकर; ओर् वितैयम्–एक उपाय; ऍण्णितन्–सोचा; इन्तिर वेटत्तै मेवि–इन्द्र का वेश धरकर; तुनै वलत्तु–तेज गति और बल से युक्त; अयिरापतम् कळिऱ्ऱिन् मेल् तोन्ऱि–ऐरावत गज पर प्रकट हो; मुनैवर् वानवर् अवरॊटुम्–मुनियों और देवों के साथ; पोर् चॆय्–युद्ध करने को; मूण्टान्–उद्यत हुआ। २५४२

रावणि जब वहाँ खड़ा रहा, तब महोदर ने खूब सोचकर एक माया रची। उसने इन्द्र का वेश धर लिया। उसने बलवान और वेगवान गज ऐरावत पर आरूढ़ होकर देवों-मुनियों को साथ लाकर युद्ध छेड़ा। २५४२

अरक्कर् मानिडर् कुरङ्गॆनु मवैयॆला मल्ल
उरुक्कळि यावुळ वुयिरिनि युलहत्ति नुळ्ळव
तरुक्कु पोर्क्कुडन् वन्दुळ वामॆनच् चमैत्तान्
वॆरुक्की ळप्पॆरुङ् गविप्पडै कुलैन्ददु विलङ्गि 2543

अरक्कर् मानिटर्–राक्षस, मनुष्य और; कुरङ्कु ऍन्नुम्–वानर आदि; अवै ऍलाम् अल्ल–वे सब नहीं; इप्पोतु–अब; उलकत्तिन् उळ्ळव–संसार में चलने-फिरनेवाले; उरुक्कळ् उयिर्–रूपधारी जीव; इनि या उळ–अब जो हैं; अवै ऍलाम्–वे सभी; तरुक्कु–सगर्व; पोर्क्कु–युद्ध के लिए; उटन् वन्तन आम्–

साथ आये हैं क्या; ॲऩ् चमैत्तुतान्–(ऐसा मान्य रीति से) माया रची; पॅरु कवि पटै–बड़ी वानर-सेना; वॅरु कॊळ–डर गयी; विलक्कि कुलैन्ततु–हटी और तितर-बितर हो गयी। २५४३

राक्षस, मानव और वानर क्या ? लोक में शरीरधारी जीव जितने हैं, वे सब युद्ध में आये हों,—ऐसी भ्रमोत्पादक माया रची महोदर ने। उसको देखकर वानर-सेना भय खाकर पीछे हटी और अस्त-व्यस्त हो गयी। २५४३

कोडु नाऩ्गुडैप् पालिऩ्ऱक् कुऩ्ऱमेर् कॊण्डाऩ्
आड लिऩ्दिर ऩल्लव रियावरु ममरर्
शेडर् शिन्दऩै मुऩिवर्ह ळमर्बोरच् चीऱ्ऱि
ऊडु वन्दुऱ्ऱ दॆऩ्गॊलो निबमॆऩ वुलैन्दार् 2544

नाऩ्कु कोटु उटै–चार दाँतों वाले; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; कुऩ्ऱम् मेल् कॊण्टाऩ्–पर्वत (-सम) दिग्गज ऐरावत पर जो सवार था; आटल् इऩ्तिरऩ्–बलशाली इन्द्र हैं; अल्लवर् अमरर्–अन्य सभी देव हैं; चेटर्–बाक़ी सब; चिन्तऩै मुऩिवर्कळ्–ध्यामरत मुनिगण हैं; पोर–(ये सब) युद्ध करने; चीऱ्ऱि–रोष के साथ; ऊटु–मध्य; वन्तु उऱ्ऱतु–आ गये इसका; निपम् ॲऩ् कॊलो–कारण क्या ही होगा; ॲऩ उलैन्तार्–ऐसा शंकित और क्षुब्ध हुए (असली देव)। २५४४

"चार दाँतों वाले क्षीरवर्ण पर्वत (गज) पर आरूढ़ जो है, वह इन्द्र है। उसके परिवार देव हैं। अन्य ईश्वरध्यानमग्न ऋषि हैं। वे सभी इस युद्ध में क्रोध के साथ लड़ने आये हैं, किस कारण से ?" यह सोचकर सभी क्षुब्ध हुए। २५४४

अऩुमऩ् वाणमुह नोक्किऩ ऩाऴियै यहऱ्ऱित्
तऩुव लङ्गॊण्ड तामरैक् कण्णवऩ् ऱम्बि
मुऩिवर् वाऩवर् मुऩिन्दुवन् दॆय्दया मुयऩ्ऱ
तुऩिह ळॆऩ्गॊलो शॊल्लुदि विरैन्दॆऩच् चॊऩ्ऩाऩ् 2545

आऴियै अकऱ्ऱि–चक्रायुध चलाकर; तऩुवलम् कॊण्ट–धनु को दायें हाथ में लिये हुए; तामरैक् कण्णवऩ् तम्पि–कमलाक्ष के भाई (लक्ष्मण) ने; अनुमऩ् वाळ् मुकम्–हनुमान के उज्ज्वल मुख को; नोक्किऩऩ्–देखकर; मुऩिवर् वाऩवर्–मुनि और देव; मुऩिन्तु वन्तु ॲय्त–कोप करके आएँ इसके लिए; याम् मुयऩ्ऱ–हमारे यत्न से किये; तुऩिकळ् ॲऩ् कॊलो–बुरे कृत्य क्या हैं; विरैन्तु चॊल्लुति–जल्दी बोलो; ॲऩ चॊऩ्ऩाऩ्–ऐसा पूछा। २५४५

चक्रायुध त्यागकर जिन्होंने कोदण्ड हाथ में लिया था, उन कमलाक्ष श्रीराम के भाई ने हनुमान का तेजोमय मुख निहारा और पूछा कि मुनिगण और देव भी हमारे विरुद्ध लड़ने आएँ, ऐसा हमारे यत्न से क्या बुराई हो गयी ? शीघ्र बताओ। २५४५

इत्तन् कालैयि तिलक्कुवत् मेतिमे लॆय्दान्
मुत्तै नान्मुहत् पडैक्कल मिमैप्पदन् मुन्नम्
बॊन्निन् माल्वरैक् कुरीइयिन मॊय्प्पन बोलप्
पत्तन लान्दर मल्लन शुडर्क्कणै पाय्न्द 2546

इत्तत कालैयिन्–इसी समय; मुत्तै–प्राचीन; नान्मुकन् पटै कलम्–चतुर्मुख के अस्त्र को; इमैप्पतन् मुन्नम्–पलक मारने के समय के अंदर; इलक्कुवन् मेति मेल्–लक्ष्मण के शरीर पर; ऎय्तान्–चलाया; पॊन्निन् माल् वरै–स्वर्ण-पर्वत (मेरु) पर; कुरीइ इनम्–चिड़ियों के दल; मॊय्प्पत पोल–बैठे हों ऐसा; पत्तलाम् तरम् अल्लन्–विवरण योग्य नहीं, ऐसे; चुटर् कणै–ज्वलंत शर; पाय्न्त–(लक्ष्मण के शरीर पर) चुभे। २५४६

जितने में यह सब हो रहा था उतने में ही इन्द्रजित् ने पलक झपने के अन्दर प्राचीन ब्रह्मास्त्र को लक्ष्मण के शरीर पर चला दिया। उनके सारे शरीर पर अवर्ण्य रीति से ज्वलंत अस्त्र ऐसे जा चुभ गये जैसे बड़े स्वर्ण-पर्वत पर चिड़ियों के दल आ बैठे हों। २५४६

कोडि कोडिनू ऱायिरङ् गॊडुङ्गणैक् कुळाङ्गळ्
मूडि मेनियै मुऱ्ऱुरच् चुऱ्ऱिन मूऴ्ह
ऊडु शॆय्वदॊन् ऱुणर्न्दिल नुणर्वुपुक् कॊडुङ्ग
आडल् माकरि शॆवह मनैन्दॆन वयर्न्दान् 2547

कोटि कोटि–करोड़ों; नूऱायिरम्–लाख; कॊटु कणै–कठोर बाण; कुळाङ्कळ्–समूह; मेतियै–शरीर को; मुऱ्ऱु मूटि–पूर्ण रूप से आवृत कर; चुऱ्ऱित–ढँककर; मूऴ्क–अन्दर घुसे; ऊटु–इतने में; चॆय्वतु–करना; ऒन्ऱु–कुछ; उणर्न्तिलन्–नहीं जाना; उणर्वु–प्रज्ञा; पुक्कु–जाकर; ऒटुङ्क–क्षीण हुई तो; आटल् मा करि–सशक्त बड़ा गज; चेवकम् अमैन्तु–अपने निद्रास्थल में चूर पड़ा हो; ऎन–ऐसा; अयर्न्तान्–दब गये। २५४७

करोड़ों और लाखों संदाहक शरों के समूह उनके सारे शरीर को पूर्ण रूप से ढँककर अन्दर घुस गये। लक्ष्मण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। सुध-बुध खोकर वे निर्बल हुए बड़े सबल गज के अपने निद्रास्थल में जैसे दबे पड़े रह गये। २५४७

अनुम निन्दिरन् वन्दव नॆन्गॊली दमैन्दान्
इनिय नॆऱ्ऱुवन् कळिऱ्ऱिनो डॊडुत्तॆन वॆळ्न्दान्
तनुवि नायिरङ् गोडिवॆङ् गडुङ्गणै तॆक्क
निनैवुज् जॆय्हैयु मऱन्दुपोय् नॆडुनिलज् जेर्न्दान् 2548

अनुमन्–हनुमान; इनियन् इन्तिरन्–हमारा प्रिय मित्र इन्द्र; वन्तवन्–जो आया; ईतु ऎन् कॊल् अमैन्तान्–इस काम में क्यों लगा; कळिऱ्ऱिनोटु ऎटुत्तु–हाथी

के साथ उठाकर; ऍऱ्ऱुवॅन्–पटक दूँगा; ॲन ॲळुन्दान्–कहकर उठा; तनुविल्–शरीर में; आयिरम् कोटि–हज़ार करोड़; वॅम् कटु कणै–सालनेवाले कठोर शर; तैक्क–चुभे, इसलिए; निनैवुम् चॅय्कैयुम्–स्मरण और कर्म; मऱन्तु पोय्–भूलकर; नॅट्टु निलम् चार्न्तान्–विशाल भूमि पर गिर गया। २५४८

हनुमान को भी संशय रहा कि हमारा मित्र इन्द्र यह क्या करने आया है? तो भी उसने संकल्प किया कि जो हो इसको हाथी के साथ उठाकर पटक दूँगा। ज्योंही वह उठने लगा, त्योंही उसके शरीर पर हज़ार करोड़ भयंकर शर आ चुभ गये। वह सोचना और करना भूल गया और धराशायी हो गया। २५४८

अरुक्कन् मामह नाडहक् कुन्ऱमॊन्ऱु ऱलर्न्द
मुरुक्किन् कानह मासॆनक् कुरुदिनीर् मुडुहत्
तरुक्कि वॅञ्जरन् दलैत्तलै मयङ्गिन तैक्क
उरुक्कु चॆम्बन कण्णिन नॆडुनिल मुऱ्ऱान् 2549

अरुक्कन् मा मकन्–सूर्य का उत्तम पुत्र; आटकम् कुन्ऱम् ऑन्ऱु–एक स्वर्ण-पर्वत पर; अलर्न्त–विकसित; मुरुक्किन् कानकम् आम् ॲन–कँटीले पलाश के पुष्पवन के समान; कुरुतिनीर्–रक्त के; मुटुक–तुरंत निकल बहते; तरुक्कि–तनकर; वॅम् चरम्–वेदनादायी शरों के; तलै तलै–स्थान-स्थान पर; मयङ्किन तैक्क–मिश्रित होकर चुभते; उरुक्कु–पिघले; चॅम्पु अन–ताम्र के समान; कण्णिनन्–नेत्रों वाला बनकर; नॅटु निलम् उऱ्ऱान्–विशाल धराशायी हो रहा। २५४९

सूर्य के महान पुत्र सुग्रीव के शरीर पर रक्त इतना बहा कि वह स्वर्णपर्वत के समान लगा, जिस पर कँटीले पलाशवन के अति लाल फूल तभी खिले हों। भयंकर शर शरीर के सभी भागों पर चुभे तो पिघले ताम्र के समान आँखों का होकर वह धराशायी बन गया। २५४९

अङ्ग दन्पदि नायिर मयिर्कणै यळुन्दच्
चिङ्ग वेरिडि युण्डॆन नॆडुनिलञ् जेर्न्दान्
शङ्ग मेरिय पॆरुम्बुहळ्च् चाम्बनुञ् जायन्दान्
तुङ्ग मार्बैयुन् दोळैयुम् तडिक्कणै तुळैक्क 2550

अङ्कतन्–अंगद; पतिनायिरम्–दस हज़ार; अयिल् कणै–तीक्ष्ण शरों के; अळुन्त–चुभने से; चिङ्क एऱु–पुरुष सिंह; इटि उण्टॆन–वज्राहत हो गया ऐसे; नॅटु निलम् चेर्न्तान्–विशाल धरती पर गिर गया; चङ्कम् एऱिय–वीरसंघ में प्रशंसित; पॆरु पुकळ्–बड़ा यशस्वी; चाम्पनुम्–जाम्बवान भी; तुङ्कम् मार्पैयुम्–तुंग वक्ष और; तोळैयुम्–कंधों को; तटि कणै–मोटे शरों ने; तुळैक्क–भेदा, इसलिए; चाय्न्तान्–गिर गया। २५५०

अंगद का क्या हाल था? उसके शरीर पर दस हज़ार तीक्ष्ण शर धँसे। वह वज्राहत सिंह के समान भूमि पर गिर गया। वीरों के समूह में अग्रगण्य

जाम्बवान भी, उसके तुंग वक्ष और कंधों को स्थूल शरों के भेदने से, भूमि पर गिर गया । २५५०

नील तायिरम् वडिक्कणै निऱम्बुक्कु नॅरुङ्गक्
काल तार्मुहङ् गण्डन निडबन्विण् कलन्दान्
आल मेयनन पहळियाऱ् पनशनु मयर्न्दान्
कोलिन् मेविय कूऱ्ऱिनाऱ् कुमुदनुङ् गुलैन्दान् 2551

नीलन्–नील ने; आयिरम्–हज़ार; वटि कणै–तीक्ष्ण शरों के; निऱम् पुक्कु–वक्ष में घुसकर; नॅरुङ्क–त्रस्त करने से; कालनार् मुकम् कण्टनन्–यम का मुख देखा (प्राण छोड़ दिये); इटपन् विण् कलन्तान्–ऋषभ स्वर्ग चला गया; पनचनुम्–पनश भी; आलमे अनन–हलाहल ही सम; पकळियाल्–अस्त्र से; अयर्न्तान्–निर्जीव पड़ गया; कुमुतनुम्–कुमुद भी; कोलिन् मेविय–अस्त्र पर स्थित; कूऱ्ऱिनाल्–यम से; कुलैन्तान्–ढेर हो गया । २५५१

नील के वक्ष में हज़ार तीक्ष्ण बाण घुसकर सालने लगे तो उसने यम का मुख देख लिया (मृत्यु पा ली) । ऋषभ यम का मेहमान बन गया । हलाहल के समान शर लगा तो पनस का भी काम तमाम हो गया । कुमुद भी बाण पर स्वेच्छा से स्थित यमदेव से प्राणहीन कर दिया गया । २५५१

वेलै तट्टव तायिरम् बहळियाल् वीऴ्न्दान्
वालि नेर्वलि मैन्दनुन् दम्बियु मडिन्दार्
काल वॅन्दोऴिऱ् कवयनुम् वानहङ् गण्डान्
मालै वाळियिऱ् केशरि मण्णिडै मरैन्दान् 2552

वेलै तट्टवन्–समुद्र पर सेतु जिसने बनाया था वह नल; आयिरम् पकळियाल्–हज़ार अस्त्रों से; वीऴ्न्तान्–गिरा (मरा); वालि नेर् वलि–वाली का समबली; मयिन्तनुम्–मैंद और; तम्पियुम्–उसका छोटा भाई द्विविद; मटिन्तार्–मर गये; कालन् वॅम् तॊऴिल्–यम के समान क्रूर कार्यकारी; कवयनुम्–गवय भी; वानकम् कण्टान्–आकाश का दर्शक बना (मरा); केचरि–केसरी; मालै वाळियिल्–अस्त्रमाला से; मण् इटै मरैन्तान्–धरती में अदृश्य हो गया । २५५२

समुद्रसेतु-निर्माता नील हज़ार बाणों का शिकार होकर यम का मेहमान बन गया । वाली के सदृश बलवान मैंद और उसका भाई द्विविद हत हुए । कालदेवता-सा क्रूर-कर्म गवय भी स्वर्गवासी हो गया । केसरी पर बाण-माला-सी आ लगी और वह धरती में लोट गया और 'अब नहीं' हो गया । २५५२

विन्द मन्नदोट् चदवलि शुशेडणन् विनदन्
कॅन्द मादन निडुम्बन्वन् ऱदिमुहन् किळर

उन्दु वार्कणै कोडिदम् मुडलमुऱ् ऱौळिप्पत्
तन्द नल्लुणर् वीड्ङ्गितर् मण्णुऱच् चायन्दार् 2553

विन्तम् अत्त तोळ्–विंध्यपर्वत-सम कंधों वाला; चतवलि–शतबली और; चुषेटणन्–सुषेण; विनतन्–विनत; कन्तमातनन्–गंधमादन और; इटुम्पतुम्–हिडिब; वल् ततिमुकतुम्–बलवान दधिमुख; किळर्–ऊपर उठ जायँ ऐसा; उन्तुवार्–प्रेषित; कोटि कणै–करोड़ अस्त्र; तम् उटलम् उऱ–उनके शरीरों में लगकर; ऑळिप्प–छिपे तो; तम् तम् नल् उणर्वु–अपनी-अपनी सुधि; वीटुङ्कितर्–खो दी; मण् उऱ चायन्तार्–और धराशायी हो गये । २५५३

विंध्यस्कंध शतबली, सुषेण, विनत, गंधमादन, हिडिब, बलवान दधिमुख, इन सभी पर ऊपर उठकर बढ़ें, ऐसे प्रेरित करोड़ों अस्त्र घुसे और छिप गये तो वे सुध-बुध खोकर धराशायी हो गये । २५५३

मऱ्ऱै वीरर्ह ळियावरुम् वडिक्कणै मळैयाल्
मुऱ्ऱुम् वीन्दनर् मुळङ्गुपे रुदिरत्तिन् मुन्नीर्
ऍऱ्ऱु वान्ऱिरैक् कडलोडुम् बॊरुदुशॆन् ऱेऱ
ऑऱ्ऱै वान्कणै यायिरङ् गुरङ्गिनै युरुट्ट 2554

मुळङ्कु–शब्दायमान; पेर्–बड़ा; उतिरत्तिन् मुन्नीर्–रुधिर-सागर; ऍऱ्ऱु–जिनको उछालता है; वान् तिरै कटलोटुम्–उन आकाश-स्पर्शी तरंगों से युक्त सागर; पॊरुतु चॆन्ऱु एऱ–टकराने के लिए जा चढ़े ऐसा; ऑऱ्ऱै–अनुपम; वान् कणै आयिरम्–श्रेष्ठ हज़ार बाण; कुरङ्किनै उरुट्ट–वानरों को लुढ़का रहे थे, इसलिए; मऱ्ऱै वीरर्कळ्–अन्य वीर; यावरुम्–सभी; वटि कणै मळैयाल्–तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से; मुऱ्ऱुम् वीन्तनर्–बिलकुल प्राणहीन हो गये । २५५४

शब्दायमान रक्त-सागर उत्तुंग तरंगों वाले समुद्र से होड़ लगाकर बहे, ऐसा हज़ारों अनुपम शरों ने वानरों को लुढ़का दिया, इसलिए अन्य वानर वीर भी तीक्ष्ण-शर-वर्षा से बिलकुल मिट गये । २५५४

तळैत्तु वैत्तदु शदुमुहन् पॆरुम्बड तळ्ळि
ऑळिक्क मऱ्ऱोरु पुहलिड मुणर्हिल रुरुमिन्
वळैत्तु वित्तिय वाळियान् मण्णोडु तिण्णम्
मुळैप्पु डैत्तन वीत्तन वानर मुडिन्द 2555

चतुमुकन् पॆरु पटै–ब्रह्मा के बड़े अस्त्र ने; तळ्ळि–गिराकर; तळैत्तु वैत्ततु–बाँध-सा लिया; ऑळिक्क–उससे बचकर छिपने के लिए; मऱ्ऱु ऑरु पुकल् इटम्–कोई दूसरा आश्रय-स्थान; उणर्किलर्–जान नहीं पाये; वळैत्तु वित्तिय–घेरकर बोया हो ऐसा प्रेषित; उरुमित्–अशनि-सदृश; वाळियात्–(इन्द्रजित् के) बाणों से; मण्णोटु–धरती के साथ; तिण्णम्–अटल; मुळै पुटैत्तत–अंकुर उगे हों, ऐसे; वानरम् मुटिन्त–वानर हत हुए । २५५५

श्रेष्ठ ब्रह्मास्त्र ने वीरों को पछाड़कर बाँध-सा दिया। उससे बचने का वानरों के पास कोई मार्ग नहीं था। बाणों के साथ वे प्राणहीन वानर अंकुरों के समान लगे जो बोये गये-से अस्त्रों से उग आये हों। २५५५

कुवळेक् कण्णियर् वाऩवर् मडन्दैयर् कोट्टित्
तुवळप् पारिडैक् किडन्दऩर् कुरुदिनीर् शुऱ्ऱित्
तिवळक् कीऴ्ॾु मेल्पुडै परन्दिडै शॆऱियप्
पवळक् काडुडैप् पाऱ्कड लॊत्तदप् परवै 2556

कुवळै कण्णियर्–कुवलयाक्षी; वाऩवर् मटन्तैयर्–सुरांगनाएँ; कोट्टि तुवळ–सिर झुकाकर मुरझा जाएँ ऐसा; पार् इटै–(लक्ष्मण और वानर) भूमि पर; किटन्तऩर्–पड़े रहे; कुरुति नीर् चुऱ्ऱि–रक्त चारों ओर बहकर; कीऴ्ॾु मेल् पुटै–नीचे और ऊपर; परन्तु–फैलकर; इटै तिवळ चॆऱिय–सभी जगह आँखों में खूब घेर आया; अ परवै–तो वह (वानर-सेना-) सागर; पवळम् काटु उटै–प्रवालवन-सहित; पाल् कटल् ऒत्ततु–क्षीर-सागर-सम लगा। २५५६

कुवलयाक्षी सुरबालाएँ इनको देखकर दुःख से सिर झुका लें, ऐसा वे भूमि पर पड़े रहे। रक्त का सागर ऊपर, नीचे और चारों ओर सर्वत्र दिखायी दे रहा था। तब वह सेना-सागर प्रवाल-वन-सहित क्षीरसागर के समान लगा। २५५६

विण्णिऱ् चॆन्ऱदु कविक्कुलप् पॆरुम्बडै वॆळ्ळङ्
गण्णिऱ् कण्डऩर् वाऩवर् विरुन्दॆऩक् कलन्दार्
उण्णिऱ् कुम्बॆरुङ् गळिप्पिऩ रळवळा युवन्दार्
मण्णिऱ् चॆल्लुदि रिक्कणत् तॆऩ्ऩ वलिन्दार् 2557

कविकुलम्–वानरों का; पॆरु पटै वॆळ्ळम्–बड़ा सेना-प्रवाह; विण्णिल् चॆऩ्ऱतु–आकाश में गया; वाऩवर् कण्णिल् कण्टऩर्–देवों ने समक्ष देखा; विरुन्तु ऎऩ कलन्तार्–अतिथि के रूप में स्वागत करके; उळ् निऱ्कुम्–अंतस्थ; पॆरु कळिप्पिऩर्–बहुत सुख से प्रभावित होकर; अळवळाय्–दिल दे बातें करके; उवन्तार्–आनंदित हुए; इ कणत्ते–इसी क्षण; मण्णिल् चॆल्लुतिर्–पृथ्वी पर (राक्षसों का नाश करने) जाओ; ऎऩ्ऩ वलिन्तार्–कहकर जबरदस्त किया। २५५७

वानरों की बड़ी सेना का सागर स्वर्गलोक चला गया। सुरों ने इसे देखा। वानरों का अतिथि के रूप में स्वागत किया। आनंद से भरकर आपस में बातचीत करके मुदित हुए, फिर तक़ाज़ा किया कि अभी भूलोक चले जाओ। २५५७

पाऱ्प डैत्तवऩ् पडैक्कॊरु पूशलै पडैत्तीर्
नीर् पडक्कड वीरलीर् वरिशिलै नॆडियोऩ्

पेऱ्प उैत्तवऱ् कडियवऱ्क् कडियरुम् बॅरुवार्
वेऱ्प डैत्तवॅम् बिऱवियाऱ् ऱुवक्कुणा वीडु 2558

पार् पटैत्तवन्–लोकस्रष्टा के; पटैक्कु–हथियार की; ऑरु पूचनै पटैत्तीर्–एक पूजा की; नीर् पट कटवीर् अलीर–तुम लोग मरने अर्ह नहीं हो; वरि चिलै–सबन्ध धनुर्धर; नॅटियोन् पेर् पटैत्त वऱ्कु–त्रिविक्रम नामधारी (श्रीराम) के; अटियवऱ्कु अटियरुम्–दासों के दास भी; वेर् पटैत्त–समूल; वॅम् पिऱवियाल्–दुःखदायी जन्म के कारण होनेवाले; तुवक्कु ओणा–बन्धन से रहित; वीटु पॅरुवार्–मोक्ष पा जाते हैं। २५५८

तुम लोगों ने लोकस्रष्टा के ब्रह्मास्त्र का आदर किया। नहीं तो तुम मरनेवाले नहीं थे। सबंध धनुर्धर त्रिविक्रम नामधारी श्रीराम के दास के दास भी बद्धमूल व भयानक भवरोग से अछूते होकर मोक्ष पाने के हक़दार होते हैं। २५५८

नङ्गळ् कारिय मियऱ्ऱुवा तुलहिडै नडन्दीर्
उङ्ग ळारुयि रॅम्मुयि रुडल्पिरि दुऱ्ऱीर्
शॅङ्ग णायहऱ् काहवॅङ् गळत्तिडैत् तोऱ्न्दीर्
ऑङ्ग णायहर् नीङ्गळॅन् ऱिमैयव रिशॅत्तार् 2559

नङ्कळ्–हमारा; कारियम् इयऱ्ऱुवान्–कार्य पूरा करने के निमित्त; उलकिटै नटन्तीर्–पृथ्वी में गये थे; उङ्कळ् अरुमै उयिर्–आपके बहुमूल्य प्राण; ऍम् उयिर्–हमारे प्राण हैं; उटल् पिरितु उऱ्ऱीर्–केवल शरीर पृथक् पा गये; चॅम् कण् नायकऱ्कु–अरुणाक्ष जगन्नाथ; आक–के लिए; वॅम् कळत्तिटै–भयंकर युद्धाजिर में; तोऱ्न्तीर्–मरे; नीङ्कळ् ऍङ्कळ् नायकर्–तुम लोग हमारे नायक हो; ऍन्ऱु–ऐसा; इमैयवर्–देवों ने; इचैत्तार्–कहा। २५५९

हमारे हितार्थ तुम लोग पृथ्वी पर गये थे। तुम्हारे प्राण हमारे प्राण हैं। केवल शरीर से भिन्न हो। अरुणाक्ष श्रीराम के निमित्त तुम लोगों ने युद्धक्षेत्र में प्राण छोड़े। तुम लोग हमारे नायक हैं। देव यों बोले। २५५९

वॅङ्गण् वानरक् कुळुवॊडु मिळैयवन् विळिन्दान्
इङ्गु वन्दिल नहन्ऱन तिरामनॅन् ऱिहळ्न्दान्
शङ्ग मूदिनन् ऱादैयै वल्लैयिऱ् चार्न्दान्
पॊङ्गु पोरिडॆप् पुहुन्दुळ पॊरुळॆलाम् बुहन्ऱान् 2560

वॅम् कण्–भयानक आँखों के; वानरर् कुळुवॊटु–वानरगणों के साथ; इळैयवन्–छोटे राजा; विळिन्तान्–मरे; इरामन्–श्रीराम; इङ्कु–यहाँ; वन्तिलन्–न आकर; अकन्ऱनन्–दूर हट गया; ऍन्ऱु–ऐसा; इकळ्न्तान्–निंदा की (इन्द्रजित् ने); चङ्कम् ऊतिनन्–विजयशंख बजाया; तातैयै–पिता के पास; वल्लैयिल्–

शीघ्र; चार्न्तात्–पहुँचा; पोंरुकु पोर् इटै–उत्साहवर्धक युद्ध में; पुकुन्तुळ पोरुळ् ॲलाम्–जो हुए वे सभी; पुकन्ऱात्–कह सुनाया। २५६०

इन्द्रजित् ने ताना मारा कि क्रूर आँखों वाले वानरवृन्दों के साथ छोटा भाई मर गया। राम तो इधर आया ही नहीं! कहीं दूर चलकर है! फिर विजयशंख बजाकर पिता के पास सवेग गया। जाकर उसने रावण से उत्साह के साथ जो लड़ाई की गयी, उसमें घटी बातें बतायीं। २५६०

इऱन्दि लन्कॉलव् विरामनॅन् ऱिरावण निशैत्तान्
दुऱन्दु नीङ्गिन तल्लनेऱ् ऱम्बियैत् तॉलैत्तुच्
चिऱन्द नण्बरैक् कॉन्ऱुतन् शेनैयैच् चिदैक्क
मऱन्दु निऱ्कुमो मऱ्ऱवन् ऱिऱनॅन्ऱान् मदलै 2561

अव् इरामन्–वह राम; इऱन्तिलन् कॉल्–मरा नहीं क्या; ॲन्ऱु–ऐसा; इरावणन् इचैत्तान्–रावण ने पूछा; मतलै–पुत्र ने; तुऱन्तु नीङ्कितन्–(सबको भय के कारण) छोड़ गया; अल्लतेल्–नहीं जाता तो; तम्पियै तॉलैत्तु–छोटे भाई को मरवाकर; चिऱन्त नण्परै कॉन्ऱु–श्रेष्ठ मित्रों को मरवाकर; तन् चेनैयै चितैक्क–अपनी सेना के मिटते तक; मऱ्ऱवन्–वह अपना; तिऱम् मऱन्तु–बल भूलकर; निऱ्कुमो–चुप खड़ा रहता क्या; ॲन्ऱान्–कहा। २५६१

रावण ने पूछा कि क्या वह राम मरा नहीं है? पुत्र ने उत्तर दिया, मैदान छोड़ गया न! नहीं जाता तो क्या वह अपने भाई को, मित्रों को और अपनी सेना को मिटते देखकर भी अपना बल भूलकर चुप रहता?। २५६१

अन्न देयॆन वरक्कनु मादरित् तमैन्दान्
शॊन्न मैन्दनुन् दन्पॆरुङ् गोयिलैत् तॊडर्न्दान्
मन्न नेवलिन् महोदरन् पोयिनन् वन्दान्
ॲन्नै याळुडै नायहन् वेऱिडत् तिरुन्दान् 2562

अरक्कनुम्–राक्षसराज ने भी; अन्नते–वही हुआ होगा; ॲन्ऱु–कहकर; आतरित्तु अमैन्तान्–स्वीकार कर लिया; चॊन्न मैन्तनुम्–ऐसा जो कहा वह कुमार भी; तन् पॆरु कोयिलै–अपने बड़े मंदिर की तरफ़; तॊटर्न्तान्–बढ़ चला; मन्नन् एवलिन् वन्तान्–राजाज्ञा से जो आया था वह; महोतरन्–महोदर भी; पोयिनन्–अपने स्थान चला गया; वेऱु इटत्तु इरुन्तान्–दूसरे स्थान में जो रहे; ॲन्नै आळुटै नायकन्–मेरे मालिक। २५६२

रावण ने सकारा— हाँ वही हुआ होगा! यह कहकर इन्द्रजित् अपने बड़े महल की तरफ़ रवाना हो गया। महोदर भी, जो राजाज्ञा से आया था, चला गया। उधर मुझ दास (कवि) के नायक प्रभु —। २५६२

शय्य तामर नाण्मलर्क् कैत्तलञ् जेप्पत्
तुय्य तेवर्दम् बडैक्कॅलाम् वरन्मुऱ्रै तुरक्कुम्
मॅय्हॊळ् पूशनै विदिमुऱ्रै यियऱ्ऱिमेल् वीरन्
मॊय्हॊळ् पोर्क्कळत् तॅय्दुवा मिन्नियॅन्न मुयन्ऱान् 2563

वीरन्–वीर; चॅय्य–लाल; तामरै नाळ् मलर्–कमल के ताजे फूल के समान; कै तलम्–हाथ को; चेप्प–और भी लाल बनाते हुए; तुय्य–पवित्र; तेवर् तम् पटैक्कु ऍलाम्–देवों के सभी अस्त्रों की; वरन्मुऱै तुरक्कुम्–यथारीति की जानेवाली; मॅय्कॊळ् पूचनै–यथार्थ पूजा; विति मुऱै इयऱ्ऱि–विधिवत् करके; मेल्–फिर; इनि–आगे; मॊय् कॊळ्–बलवान वीरों के; पोर् कळत्तु–युद्ध के स्थल में; ऍय्तुवाम्–जाएँगे; ऍन्न–कहकर; मुयन्ऱान्–यत्न करने लगे। २५६३

• श्रीवीरराघव ने अपने कमलारुण हाथों को और भी लाल करते हुए पवित्र दिव्यास्त्रों की यथारीति विधिवत् पूजा करके वीरों के पास युद्धक्षेत्र में जाने का उपक्रम किया। २५६३

कॊळ्ळि यिऱ्चुड रन्निलिदन् पहळिकैक् कॊण्डान्
अळ्ळि नुङ्गला मारिरुट् पिळम्बिनै यळित्तान्
वॅळ्ळ वॅङ्गळप् परप्पिनैप् पॊरुक्कॅन विळित्तान्
तळ्ळि ऱामरैच् चेवडि नुडङ्गुऱ्च् चार्न्दान् 2564

कॊळ्ळियिल्–अधजली लकड़ी के समान; चुटरुम्–प्रकाश देनेवाले; अन्नलि तन्–अग्नि के; पकळि–अस्त्र को; कै कॊण्टान्–हाथ में लेकर; अळ्ळि नुकलाम्–उठाकर पी सकें, ऐसे; अरुमै–अपार; इरुळ् पिळम्पितै–अंधकार-पुंज को; अळित्तान्–मिटा दिया; तळ्ळिल् तामरै चेवटि–उत्कृष्ट कमल-चरण; नुटङ्कुऱ–चंचल करते हुए; चार्न्तान्–जाकर; वॅळ्ळम्–सेनाप्रवाह-युक्त; वॅम् कळम् परप्पितै–भयंकर युद्धस्थल के विस्तार को; पॊरुक्कॅन–झटिति; विळित्तान्–देखा। २५६४

उन्होंने अधजली लकड़ी के समान आग्नेयास्त्र हाथ में लिया। उससे पेय-से रहनेवाला पुंजीभूत अंधकार दूर हो गया। अनिंद्य अपने कमल-चरणों (पर बल देते) हुए वे युद्धक्षेत्र में गये और वानरसेना-सागर-युक्त उस भूमि को ठिठककर देखा। २५६४

नोक्कि नात्परुन् दिशैतॊऱु मुऱैमुऱै नोक्कि
ऊक्कि नात्ऱडन् दामरैत् तिरुमुहत् तुदिरम्
पोक्कि नान्निणप् पऱन्दलै यळुवत्तुट् पुक्कान्
ताक्कुम् वन्ऱुणैत् तलैवरैत् तनित्तनिक् कण्डान् 2565

पॅरु तिचै तॊऱुम्–बड़ी दिशाओं में; नोक्कितान्–दृष्टि दौड़ायी; ऊक्कितान्–यत्न के साथ; मुऱै मुऱै नोक्कि–लगातार देखकर; तट तामरै तिरुमुकत्तु–विशाल मुखकमल पर; उतिरम् पोक्कितान्–रक्त फैलने दिया; निणम्–मांस-भरे;
[illegible]

कारो; वल् तुणै तलैवरै–सहायक वानरपतियों को; तत्ति तत्ति कण्टान्–एक-एक करके देखा। २५६५

दिशा-दिशा में उन्होंने दृष्टि दौड़ायी। रह-रहकर यत्न से देखा। तब उनका विशाल श्रीमुख अकस्मात् रक्त के तेज़ दौरे से लाल हो उठा। फिर मांससंकुल मैदान में आगे बढ़े। शत्रुओं से टकरानेवाले नायक वीरों को अलग-अलग देखा। २५६५

शुक्कि रीवऩ नोक्कित्तऩ् ऱामरैत् तुणैक्कण्
उक्क नीर्त्तिर ळॉऴुहिड नॆडिदुनिऩ् ऱुयिर्त्ताऩ्
तक्क दोविदु नितक्कॆऩ्ऱु तऩ्मऩऩ् दळर्न्दाऩ्
पक्क नोक्किऩऩ् मारुदि तऩ्मैयैप् पार्त्ताऩ् 2566

शुक्किरीवऩै नोक्कि–सुग्रीव की ओर मुख करके; तऩ् तामरै तुणै कण्–अपनी कमल-सी आँखों के जोड़े से; उक्क नीर् तिरळ्–निकलनेवाले अश्रुप्रवाह को; ऑऴुकिट–बहने देते हुए; निऩ्ऱु–खड़े रहकर; नॆटितु उयिर्त्ताऩ्–लम्बी आहें भरीं; इतु–यह; नितक्कु तक्कतो–तुम्हारे लिए योग्य है क्या; ऎऩ्ऱु–कहकर; तऩ् मऩम् तळर्न्ताऩ्–अपने मन को जर्जर कर दिया; पक्कम् नोक्किऩऩ्–पास देखा; मारुति तऩ्मैयै पार्त्ताऩ्–मारुति की स्थिति को जाना। २५६६

सुग्रीव को देखा तो कमल-नेत्रों से आँसू बहने लगा और बहता ही रहा। बहुत देर तक अवाक् खड़े रहे। फिर लम्बी आह भरकर उद्‌गार निकाली कि क्या यह (ऐसा पड़ा रहना) तुमको सोहता है? उनका मन क्षुब्ध हुआ। उस तरफ़ फिरकर देखा तो मारुति की स्थिति नज़र लगी। २५६६

कडल् कडन्दुपुक् करक्करैक् करुमुदऱ् कलक्कि
इडर् कडन्दुना ऩिरुक्कनी नल्हिय दिदऱ्को
उडल् कडन्दऩ वोवुऩै यरक्कऩ्विल् लुदैत्त
अडल् कडन्दपोर् वाळियॆऩ् ऱाहुलित् तळुदाऩ् 2567

कटल् कटन्तु–समुद्र पार करके; पुक्कु–लंका में प्रवेश करके; अरक्करै–राक्षसों को; करु मुतल् कलक्कि–गर्भस्थित शिशु से लेकर कष्ट देकर; नाऩ् इटर् कटन्तु इरुक्क–मैं दुःख पार कर रहूँ, इस वास्ते; नी नल्कियतु–तुम्हारा अच्छा कार्य करना; इतऱ्को–इस वास्ते क्या; अरक्कऩ् विल् उतैत्त–राक्षस के धनु ने जिसे लात मारकर निकाला; कटन्त अटल्–वह अति कठोर; पोर् वाळि–युद्धास्त्र; उऩै–तुम्हारे; उटल् कटन्तऩवो–शरीर पार कर गया क्या; ऎऩ्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; आकुलित्तु–व्याकुल होकर; अऴुताऩ्–रोये। २५६७

हाय! हनुमान! मेरे हितार्थ तुमने समुद्र लाँघा और राक्षसों को गर्भस्थ शिशु से लेकर क्षुब्ध किया। क्या ऐसे उपकार का कार्य इसी अन्त के लिए

था ? राक्षस-धनु-प्रेषित शर तुम्हारे शरीरों को भी भेद सके क्या ? ऐसा विलाप करके श्रीराम व्याकुल हुए। २५६७

मुन्नैत् तेवर्दम् वरङ्गळु मुनिवर्दम् मॊळियुम्
बिन्नैच् चानहि युदवियुम् बिळैत्तन पिऱन्द
पुन्मैच् चॆय्दॊळि लॆन्विनैक् कॊडुमैयाऱ् पुहळोय्
ॲन्नैप् पोल्बव राऱुळ रॊरुवरॆन् ऱिशैत्तान् 2568

पुकळोय्–यशस्वी; पिऱन्त–सहज; पुन्मै चॆय् तॊळिल्–नीचकर्मकारी; ॲन् विनै कॊटुमैयाल्–मेरे प्रारब्ध की क्रूरता से; मुन्नै–पहले; तेवर्तम् वरङ्कळुम्–देवों के दिये वर; मुनिवर् तम् मॊळियुम्–और मुनियों के आशीर्वचन; पिन्नै–बाद; चानकि उतवियुम्–जानकी का उपकार; पिळैत्तन–असफल हो गये; ॲन्नै पोल्पवर्–मेरे समान; ऒरुवर्–कोई; आर् उळर्–कौन है; ॲन्ऱु–ऐसा; इचैत्तान्–कहा। २५६८

यशस्वी ! सहजात नीच कर्मकारी मेरे प्रारब्ध के बल से पहले देवों द्वारा दिये गये वर, मुनियों के आशीर्वचन, बाद जानकी का उपकार सब बेकार हो गया। हाय ! मेरे समान और कौन होगा ? श्रीराम ने ऐसा विलाप किया। २५६८

पुन्ऱॊ ळिऱ्पुलै यरशिनै वॆः(ह्)हिनेन् पूण्डन्
कॊन्ऱॊ रुक्किनेन् ॲन्दैयैच् चडायुवैक् कुऱैत्तेन्
इन्ऱॊ रुक्किनेन् नित्तनै वीररै यिरुन्देन्
वन्ऱॊ ळिऱ्कॊरु वरम्बुमुण् डायवर वऱ्ऱो 2569

पुन् तॊळिल्–क्षुद्रकार्य के; पुलै अरचिनै–नीचराज्य को; वॆः.किनेन् पूण्टेन्–चाहकर मैंने अपनाया; ॲन्तैयै कॊन्ऱु–अपने पिता को मरवाकर; ऒरुक्किनेन्–मिटा दिया; ॲन्तैयै चटायुवै–पितातुल्य जटायु को; कुऱैत्तेन्–आयुहीन कर दिया; इन्ऱु–आज; इत्तनै वीररै–इतने वीरों को; ऒरुक्किनेन्–प्राणहीन कर दिया; इरुन्तेन्–मैं रह गया; वन् तॊळिऱ्कु–मेरे कठोर कर्म की; ऒरु वरम्पुम् उण्टाय् वर वऱ्ऱो–कोई सीमा हो सकेगी क्या। २५६९

मैंने क्षुद्रकर्म नीच शासन की इच्छा की और लिया। उसके परिणाम में मेरे पिता स्वर्गवासी हुए। पितृहंता हुआ। फिर पितातुल्य जटायु की आयु क्षीण करा दी। आज इतने वीरों का काम तमाम करवाकर सुख से रह रहा हूं ! मेरे बेरहम कार्यों की भी सीमा है क्या ? । २५६९

तमैय नैक्कॊन्ऱु तम्बिक्कु वानरत् तलैमै
अमैय नल्हिन्न ऩडङ्गलु मविप्पदऱ् कमैन्देन्
कमैबि डित्तुनित् ऱुङ्गळै यित्तुणै कण्डेन्
शमैय 2570

तमैयत्तै कॉन्ऱु–ज्येष्ठ भ्राता को मारकर; तम्पिक्कु–छोटे भाई को; वानरत् तलैमै–वानरपतित्व; अमैय नल्किन्ऱेन्–ठीक रूप से देकर; अटङ्कलुम् अविप्पतऱ्कु–सबका नाश करने का; अमैन्तेन्–यत्न करनेवाला बन गया; कमै पिटित्तु निन्ऱु–क्षमा अपनाकर; उङ्कळ्ै इ तुणै कण्टेन्–तुम लोगों पर इतना सारा दुःख ढा दिया; चुमै–भूभार-रूप; उटल् पॊऱै–शरीर-भार; चुमक्क वन्तनन्–ढोने पैदा हुआ हूँ; अॅन्–ऐसा; चॊन्नान्–दुःखी होकर कहा। २५७०

मैंने बड़े भाई (वाली) को मारकर छोटे भाई को नायकत्व देकर क्या ही उपकार किया! सारे वानरों पर मृत्यु ला दी। क्षमाशील बनकर मैंने तुम्हें अपार कष्ट दिया है। यह शरीर बड़ा भार है और उसे ढोने के लिए ही पैदा हुआ हूँ। ऐसा कहकर श्रीराम रोये। २५७०

विडैक्कु लङ्गळि नडुवणोर् विडैकिडन्दॅन्नक्
कडैक्कण् डीयुह वङ्गदक् कळिऱ्ऱिनैक् कण्डान्
पडैक्क लङ्गळैच् चुमक्किन्ऱ पदहनेन् पळिपार्त्
तडैक्क लप्पॊरुळ् कात्तवा ऱळहिदॆन् ऱळुदान् 2571

विटै कुलङ्कळित् नटुवण्–ऋषभवृन्द में; ओर्–अनुपम; विटै–ऋषभ एक; किटन्तु अॅन्न–रहता हो जैसे; अङ्कतन् कळिऱ्ऱै–अंगद रूपी गज को; कण्टान्–देखा; कण् कटै–आँखों के कोरों से; ती उक–आग निकालते हुए; पटै कलङ्कळै चुमक्किन्ऱ–हथियार धारण करनेवाला; पतकनेन्–पापी मैं; पळि पार्त्तु–निंदा देखकर; अटैक्कलम् पॊरुळ् कात्त आऱु–धरोहर के पालन का प्रकार; अळकितु–बड़ा सुन्दर है यह; अॅन्ऱु–कहकर; अळुतान्–रोये। २५७१

श्रीराम ने मामूली बैलों के मध्य पड़े हुए ऋषभराज के समान अंगद रूपी गज को पड़ा देखा। तब उनकी आँखों के कोर से आग-सी निकल पड़ी। "हथियारधारी पापी हूँ मैं! कलंक लगवा लेते हुए मेरा अपने धरोहर के (आश्रित) लोगों की रक्षा करने का यह प्रकार भी बड़ा सुन्दर रहा" —यह कहते हुए वे रोने लगे। २५७१

उडलि डैत्तॊडर् पहळियि नॊळिर्हदिर् कऱ्ऱैच्
चुडरु डैप्पॆरुङ् गुरुदियिऱ् पाम्बॆनच् चुमन्द
मिडलु डैप्पण मीमिसैत् तान्पण्डै वॆळ्ळक्
कडलि डैत्तुयिल् वानन्न तम्बियैक् कण्डान् 2572

उटल् इटै तॊटर्–शरीर पर लगातार लगे; पकळियिन्–बाणों के; ऑळिर् कतिर् कऱ्ऱै–ज्वलन्त प्रकाश की लटों से; चुटर् उटै–प्रकाशमान; पॆरु कुरुतियिल्–बड़े रक्तप्रवाह में; पाम्पु अॅन्न–सर्प के समान; चुमन्त–ढोए हुए; मिटल् उटै–सबल; पणम् मी मिचै–फन के ऊपर; पण्टै–प्राचीन; वॆळ्ळम् कटल् इटै–प्रवाहमय समुद्र पर; तुयिल्वान् तान् अन्न–सोनेवाले-से; तम्पियै–छोटे भाई को; कण्टान्–श्रीराम ने देखा। २५७२

श्रीराम ने लघुसहोदर को देखा। वे रक्त के मध्य पड़े रहे, जिस पर उनके ही शरीर पर बराबर आ लगे शरों का प्रकाश पड़ रहा था। वे प्राचीन क्षीरसागरमध्य सबल सर्पफनों पर योगनिद्रारत रहनेवाले विष्णु के ही समान सर्प की भाँति पड़े रहे। २५७२

पॊरुमि नाऩहम् बॊङ्गिऩा नुयिर्मुऱ्ऱुम् बुहैन्दाऩ्
कुरुम णित्तिरु मेऩियु मऩमॆऩक् कुलैन्दाऩ्
तरुम निऩ्ऱुतऩ् कणपुडैत् तलम्वरच् चाय्न्दाऩ्
उरुमि ऩालिडि युण्डदोर् मरामर मॊत्ताऩ् 2573

अकम् पॊरुमिताऩ्–उत्तप्त-मन हुए; पॊङ्कित्ताऩ्–क्रुद्ध हुए; उयिर् मुऱ्ऱुम्–श्वास सब; पुकैन्ताऩ्–धुएँ के हो गये; कुरु मणि–नीली मणि-सम; तिरुमेऩियुम्–श्रीशरीर; मऩम् ऎऩ कुलैन्ताऩ्–मन के ही समान जर्जर हुआ; तरुमम्–धर्म-देवता; निऩ्ऱु–खड़े होकर; तऩ् कण् पुडैत्तु–अपनी आँखें पीटकर; अलम् वर–दुःखी हो ऐसा; उरुमिऩाल् इटि उण्टतु–वज्राहत; ओर् मरामरम् ऒत्ताऩ्–एक सालवृक्ष-सदृश हो गये। २५७३

श्रीराम का मन बहुत दुखा। उन्हें क्रोध आया। श्वास ही धुएँ बनकर निकले। उनका नीलमणि-सा शरीर मन के समान निस्तेज हुआ। तब वे वज्राहत सालवृक्ष के समान लगे, जिन्हें देखकर धर्मदेवता अपनी आँखें पीटकर व्याकुल हुआ। २५७३

उयिर्त्ति लऩ्ऩॊरु नाऴिहै युणर्न्दिल ऩॊन्ऱुम्
वियर्त्ति लऩ्नुडल् विऴित्तिलऩ् कण्णिणै विण्णोर्
अयर्त्त ऩऩ्गॊलॆऩ् ऱञ्जिऩ रङ्गैयुऩ् दाऴुम्
बॆयर्त्ति लऩ्ऩुयिर् पिरिन्दिलऩ् करुणैयाऱ् पिऱन्दाऩ् 2574

करुणैयाल्–भूतदया के कारण; पिऱन्ताऩ्–अवतरित श्रीराम; ऒरु नाऴिकै–एक घड़ी; उयिर्त्तिलऩ्–श्वासहीन रहे; ऒऩ्ऱुम् उणर्न्तिलऩ्–किसी की सुध नहीं की; वियर्त्तिलऩ्–स्वेद नहीं निकाला; कण् इणै–अक्षद्वय; विऴित्तिलऩ्–नहीं खोला; अम् कैयुम् ताऴुम्–सुन्दर हाथों और पैरों को; पॆयर्त्तिलऩ्–नहीं हिलाया; उयिर् पिरिन्तिलऩ्–प्राणहीन न हुए यही ग़नीमत थी; विण्णोर्–देव; अयर्त्तऩऩ् कॊल्–प्राणहीन हो गये क्या; ऎऩ्ऱु अञ्चिऩर्–ऐसा डरे। २५७४

जीवों पर दया के कारण अवतरित श्रीराम एक घड़ी बेहोश रह गये। श्वास नहीं निकाले; कुछ सुधि नहीं रह गयी। शरीर पर स्वेद झलक नहीं आया। आँखें नहीं खुलीं। हाथ या पैर नहीं हिले। केवल प्राण छूटे नहीं। देव यह संशय करने लगे कि क्या ये प्राणहीन हो गये ? । २५७४

ताङ्गु वारिलैत् तम्बियैत् तऴीइक्कॊण्ड तडक्कै
वाङ्गु वारिलै वाक्किताल् तॆऱुट्टुवा रिलै

पाङ्ग रायुळ्ळो रियावरुम् बट्टनर् पट्ट
तीङ्गु दानिदु तमियनै यार्तुयर् तीर्प्पार् 2575

पाङ्कराय् उळ्ळोर्–मित्र जो रहे वे; यावरुम् पट्टनर्–सभी मर गये; ताङ्कुवार् इल्लै–सँभालनेवाले नहीं थे; तम्पियै तऴीइ कोण्ट–भाई का आलिंगन करते जो पड़े रहे उन; तट कै–(श्रीराम के) बड़े हाथों को; वाङ्कुवार् इल्लै–हटानेवाले नहीं; वाक्किनाल्–शब्दों से; तेरुट्टुवार् इल्लै–सांत्वना देनेवाले नहीं; पट्ट तीङ्कु इतु–उनका भोगा दुःख ऐसा था; तमियनै–एकाकी को; तुयर् तीर्प्पार् पार्–दुःखमुक्त करे कौन। २५७५

उनके मित्र सभी मर गये। सँभालनेवाला कोई नहीं रहा। लघुभ्राता से लगकर पड़े रहे उनके विशाल हाथ को हटानेवाला कोई नहीं था। सान्त्वना के शब्द कहनेवाला कोई नहीं। उनकी बुरी स्थिति ऐसी हो गयी। एकाकी जो हो गये थे, उनका दुःख दूर करे कौन ? । २५७५

कवन्द पन्दमुङ् गळ्दुन्दङ् गणवरैक् काणाच्
चिवन्द कण्णियर् तेडित्तर् तिरिबवर् तिरळुम्
उवन्द शादहत् तीट्टमुम् ओरियि नौळ्क्कुम्
निवन्द वल्लदु पिऱविल्लैक् कडत्तिडै निन्ऱ 2576

कवन्त पन्तमुम्–कबन्धवृन्द; कळुतुम्–और भूत; तम् कणवरै काणार्–अपने पतियों का पता न पाकर; चिवन्त कण्णियर्–लाल हुई आँखों वाली; तेटित्तर् तिरिपवर्–खोजती फिरनेवालियों के; तिरळुम्–समूह; उवन्त–नन्दित; चातकत्तु ईट्टमुम्–पिशाचों का (भद्रकाली देवी के भृत्यों का) झुण्ड; ओरियिन् ओळुक्कुम्–और सियारों की पंक्तियाँ; निवन्त–हावी रहे; अल्लाल्–उन्हें छोड़कर; कटत्तिटै निन्ऱ–जंगल में जो जीवित रहे; पिऱ इल्लै–अन्य कुछ नहीं रहे। २५७६

वहाँ तब कबंधवृन्द, भूत, पति की खोज में लगी लाल आँखों वाली स्त्रियों के झुंड, भद्रकालिका देवी के मुदित भृत्य, भूतों के समूह, सियारों की पंक्तियाँ —ये सब भरे रहे। फिर वहाँ क्या रहा ? । २५७६

वान नाडियर् वयिऱलैत् तळुदकण् मळैनीर्
शोनै मारियिऱ् चोरिन्दन तेवरुञ् जोरिन्दार्
एनै निऱ्पवुन् दिरिबवु मिरङ्गिन वैवैयुम्
ञान नायह नुरुवमे यादला नडुङ्गि 2577

वान नाटियर्–देवलोकदयिताएँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; अळुत कण् मळै नीर्–जो रोयीं तब निकली अश्रुवर्षा; चोनै मारियिल्–अविरत वर्षा के समान; चोरिन्तन–बरसी; तेवरुम् चोरिन्तार्–देवों ने भी बरसायी; ऍवैयुम्–सभी; ञान नायकन् उरुवमे–ज्ञाननायक (श्रीराम) के ही रूप हैं; आतलान्–इसलिए; नटुङ्कि–काँपकर; एनै निऱ्पवुम्–अन्य अचर और; तिरिपवुम्–चर; इरङ्किन–शोकाकुल हुए। २५७७

देवलोकदयिताएँ पेट पीटती रोयीं और उनका अश्रुजल वर्षा के समान गिरा। देव भी रोये। प्रपंच के सभी जीवधारी ज्ञाननायक श्रीराम के ही रूप के सिवा कुछ नहीं। इसलिए चराचर सब काँपे और दुःखपीड़ित हुए। २५७७

मुहैयि नाण्मलर्क् किळवर्कु मुक्कणान् रतक्कुम्
तहैयि नीङ्गिय तिरुमुहङ् गरुणैयि नलिन्द
तॉहैयि निन्रवर्क् कुळळदु शॉल्लियॅन् तॉडर्न्द
पहैयुम् बार्क्किन्र पावमुङ् गलुळ्न्दन परिवाल् 2578

मुकै इल्–जो कली नहीं; नाण् मलर्–सद्यविकसित कमल के; किळवर्कुम्–वासी ब्रह्मा के; मुक्कणान् तनक्कुम्–त्रिनेत्र शिवजी के; तकैयिन् नीङ्किय–स्वभाव-विपरीत; तिरुमुकम्–श्रीमुख; करुणैयिन् नलिन्त–सहानुभूति के कारण निष्प्रभ हुए; तॉकैयिन् निन्रवर्क्कु–एक ही समूह के जो रहते हैं उनका; उळ्ळतु–जो हाल होता है; चॉल्लि ऎन्–वह क्या कहें; तॉटर्न्त पकैयुम्–लगी हुई शत्रुता ने और; पार्क्किन्र–उसको देखनेवाले; पावमुम्–पाप ने भी; परिवाल् कलुळ्न्तन–सहानुभूति से अश्रु बहाये। २५७८

कली जो नहीं रहा पर जो ताज़ा खिल गया, उस पद्म के प्रभु ब्रह्मा का श्रीमुख और त्रिनेत्र शिवजी का श्रीमुख स्वभाव के विपरीत सहानुभूति-जनित करुणा के कारण मलिन हो गये। एक ही समूह के हैं —उनके दुःख का क्या कहा जाय? शत्रुता और पाप ने भी अश्रु बहाये! । २५७८

अण्ण लुम्जिरि दुणर्वित्तो डयर्वुयिर्प् पणुहिक्
कण्वि ळित्तनन् तम्बियेत् तॅरिवुर्क् कण्डान्
विण्णे युर्रनन् मीळ्हिल नॅन्रहम् वॅदुम्बप्
पुण्णि नुर्रदो रॅरियन्न तुयरिनन् पुलम्बुम् 2579

अण्णलुम्–महिमावान श्रीराम ने भी; चिऱितु उणर्वित्तोटु–कुछ प्रज्ञा के साथ; अयर्वु–थकावट; उयिर्प्पु–और लम्बे श्वासों के साथ; अणुकि–लगकर; कण् विळित्तनन्–आँखें खोलीं; तम्पियै–अपने भाई को; तॅरिवुर कण्टान्–साफ़-साफ़ देखा; विण्णै उर्रनन्–स्वर्ग पहुँच गया; मीळ्किलन्–लौट नहीं आयेगा; ऎन्रु–यह कहकर; अकम् वॅतुम्प–चित्त के तप्त होते; पुण्णिन्–व्रण में; ओर् ऎरि–एक आग; उर्रतु अन्न–घुसी जैसे; तुयरिनन्–दुःखी हो; पुलम्पुम्–विलाप करने लगे। २५७९

महिमामय श्रीराम थोड़ा आश्वस्त हुए। लम्बी आह के साथ सुधि आयी। आँखें खोलकर उन्होंने भाई को खूब देखा। 'यह स्वर्गवासी हो गया। लौटेगा नहीं!' यह सोचकर उनका मन तप्त हुआ। व्रण में आग लगी हो जैसे वे वेदना के साथ यों विलाप करने लगे। २५७९

अॅन्दै यिऱन्दा तॅन्ऱु मिरुन्दे नुलहॅल्लान्
दन्दन तॅन्नुङ् गोळ्है तविर्न्देन् ऱुनियल्लेन्
उयन्दु मिरुन्दाय् नीयॅन निन्ऱे नुरैकाणेन्
वन्दन नैया वन्दन नैया विनिवाळेन् 2580

अॅन्तै इऱन्तान् अॅन्ऱुम्–मेरे पिता मर गये, यह सुनकर भी; इरुन्तेन्–मैं जीवित रहा; उलकु अॅल्लाम् तन्ततन् अॅन्तुम्–सभी लोकों को भरत का कर दिया यह; कोळ्कै तविर्न्तेन्–धारणा भी झुठला दी; तनि अल्लेन्–(मुझे) एकाकी न बनाते हुए; नी उयन्तुम् इरुन्ताय्–तुम जीवित रहे; निन्ऱेन्–इसी विचार से (सुखी) रहा; उरै काणेन्–तुम्हारा बोलना नहीं देखता; इनि वाळेन्–अब न जीऊँगा; ऐया–तात; वन्ततन्–आ गया; ऐया–तात; वन्ततन्–आ गया तुम्हारे पास। २५८०

अपने पिता की मृत्यु सुनकर भी मैं जीवित रहा। भरत को राज्य दे दिया —यह दावा भी छोड़ा। तब तुम साथ थे; मैं अकेला नहीं था। उसी से मैं जीवित रहा। अब तुम्हारी वाणी नहीं सुन पाता। मैं नहीं जीऊँगा तात ! आ गया ! तात ! आ गया तुम्हारे पास। २५८०

तायो नीये तन्दैयु नीये तवनीये
शेयो नीये तम्बियु नीये तिरुनीये
पोयो निन्ऱा यॅन्नै यिहन्दाय् पुहळ्पाराय्
नीयो याऩो निन्ऩिनु नॅञ्जम् वलियेनाल् 2581

तायो नीये–माता भी तुम हो; तन्तैयुम् नीये–पिता भी तुम्हीं; तवम् नीये–तप (का फल) भी तुम्हीं; चेयो नीये–पुत्र भी तुम्हीं; तम्पियुम् नीये–लघु सहोदर भी तुम्हीं; तिरु नीये–संपत्ति भी तुम्हीं; नीयो–तुम तो; पुकळ् पाराय्–यश न चाहकर; अॅन्तै इकन्ताय्–मेरी उपेक्षा करके; पोयो निन्ऱाय्–जा ही गये; यानो–मैं तो; निन्निनुम्–तुमसे बढ़कर; नॅञ्चम् वलियेन्–चित्त का कठोर हूँ। २५८१

माता, पिता, तप, पुत्र, लघुभ्राता सभी तुम्हीं हो ! मेरी सारी श्री तुम्हीं हो ! पर तुम तो यश की अवहेलना करके मुझे छोड़ गये ! मैं (जो अब भी जीवित हूँ) तुमसे भी कठोर दिल का हूँ। २५८१

ऊऱाय् निन्ऱ पुण्णुडै यायुपा लुयिर्काणेन्
आऱा निन्ऱे नावि शुमन्दे यळुहिन्ऱेन्
एऱे यिन्नु मुय्यिनु मुय्वे निरुकूऱाक्
कीऱा नॅञ्जम् बॅऱ्ऱुन नन्ऱो कॅडुवेने 2582

ऊऱाय् निन्ऱ–दुःखकारी; पुण् उटैयाय् पाल्–व्रणों से भरे शरीर में; उयिर् काणेन्–प्राण नहीं देखता; आऱा निन्ऱेन्–सँभलकर; आवि चुमन्ते–प्राण ढोते हुए; अळुकिन्ऱेन्–रोता हूँ; एऱे–सिंह; कॅटुवेन्–मिट जाऊँगा; इरु कूऱा–दो भागों में; कीऱा नॅञ्चम्–जो नहीं फटता ऐसा मन; पॅऱ्ऱनन् अन्ऱो–मैंने पाया है न; इन्नुम्–और भी; उय्यिनम् उय्वेन्–जीता तो रहूँगा; अन्ऱो–न। २५८२

तुम्हारे बहते व्रणों के शरीर में प्राणों का निशान नहीं। तुम साँसें नहीं छोड़ते। शांत होकर प्राण ढोता हुआ रो रहा हूँ। हे नरकेसरी! मैं मिटा! मेरे ऐसा कठोर दिल है जो दो भागों में फटता नहीं! फिर भी जीवित रह जाऊँगा (तो आश्चर्य नहीं)! । २५८२

पयिलुङ् गालम् बत्तोंडु नालुम् बङर्कानत्
तयिल्हिन् ङ्रेनुक् कावन्न नल्हि ययिलादाय्
वॅयिलॅन् ऱुन्नाय् नित्रु तळर्न्दे मॅलिवॅय्दित्
तुयिल्हिन्‍ ङायो विन्रिव् वुरक्कन् दुङ्वायो 2583

पटर् कानत्तु–विशाल कानन में; पयिलुम् कालम् पत्तोंटु नालुम्–मिले अब रहे उन चौदहों सालों में; अयिल्किन्ड्रेनुक्कु–खानेवाले मुझे; आवन नल्कि–भोग्य वस्तुएँ देकर; अयिलाताय्–हे स्वयं कुछ न खानेवाले; वॅयिल् ऍन्ड्र उन्नाय्–धूप की परवाह नहीं करते; तळर्न्तु निन्ड्रे–श्लथ रहकर; मॅलिवु ऍय्ति–निर्बल होकर; इन्ड्र तुयिल्किन्ड्रायो–आज सोते हो क्या; इव् उरक्कम्–यह निद्रा; तुड्वायो–न छोड़ोगे क्या। २५८३

विशाल कानन में चौदह साल हम एक साथ रहे। तुमने मेरा खाने का प्रबन्ध मेरी इच्छा के अनुसार कराया। पर तुम विना खाए ही रह जाते थे। धूप नहीं देखते। शरीर को कृश बना लिया। आज क्या मन के भी शिथिल पड़ जाने से सोये पड़े हो? क्या यह निद्रा नहीं त्यागोगे? । २५८३

अयिरा नॅञ्जु मावियु मौन्ड्रे यॅन्नुमच्चौल्
पयिरा वॅल्लैप् पादह नॆर्कुम् बरिवुण्डो
शॅयिरो विल्ला वुन्नै यिळन्दुन् दिरिहिन्ड्रेन्
उयिरो नानो वारिनि युन्नो डुड्वेया 2584

अयिरा–संशय न करके; नॆञ्चुम् आवियुम्–मन और प्राण; ऒन्ड्रे–एक ही; ऍन्नुम् अ चौल्–वैसा वह कथन; पयिरा ऍल्लै–जब निरर्थक हो गया; पातकतॆर्कुम्–पापी मुझमें; परिवु उण्टो–करुणा होगी क्या; चॅयिर् इल्ला–निर्दोष; उन्नै इळन्तुम्–तुमको खोकर भी; तिरिकिन्ड्रेन्–सप्राण घूमता हूँ; ऐया–तात; इनि–अब; उन्नोटु उड्वु–तुम्हारे साथ रिश्ता; उयिरो–मेरे प्राण; नानो–या मैं; आर्–कौन। २५८४

हम परस्पर विश्वासी एक-मन एक-प्राण हैं —ऐसा लोग कहते थे। वह कथन अब निरर्थक हो गया है। तब मुझ पातक में अनुताप रहता है क्या? निर्दोष तुम्हें खोकर भी मैं घूमता फिरता हूँ। तात! अब तुम्हारे साथ नाता निबाहें मेरे प्राण? या निबाहूँ मैं? कौन? । २५८४

वेळ्विक् केहि विल्लु मिरुत्तोर् विडमम्मा
वाळ्विक् कममॅन रॅणणितन्न मनत्ते वरुवित्तेन्

शूळ्वित् तॆत्तैच् चुऱ्ऱित् रोडुम् जुडुवित्तेन्
ताळ्वित् तेन्ो वित्तनै केडुन् दरुवित्तेन् 2585

वेळ्विक्कु एकि–(जनक के) यज्ञ में जाकर; विल्लुम् इऱुत्तु–धनु भी तोड़कर; ओर् विटम्–एक विष (सीता); वाळ्विक्कुम्–हमको जिलायगा; ऍन्ऱु ऍण्णितेन्–सोचा मैंने; मुत्ते वरुवित्तेन्–सामने लाया; चूळ्वित्तु–वंचना करके; ऍन्ऱुम् चुऱ्ऱितरोटुम्–अपने सभी बन्धु-बान्धवों को; चुटुवित्तेन्–जलवा दिया; ताळ्वित्तेनो–पीछे हटा क्या; इत्तनै केटुम् तरुवित्तेन्–इतने कष्ट ला दिये; अम्मा–माँ री। २५८५

जनक के धनुर्यज्ञ में गया, शिवधनुष तोड़ा और सोचा कि सीता रूपी विष हमको जिलाएगा (सुखमय जीवन दिलाएगा)। उसे सामने ले आने दिया। सबको वंचना करके रिश्तेदारों के साथ जला दिया! कुछ भी संकोच किया क्या मैंने? ओह! कितनी ही हानियाँ करा दीं! । २५८५

मण्मेल् वैत्त कादलिन् मादा मुदलोर्क्कुप्
पुण्मेल् वैत्त तीनिहर् तुन्बम् बुहुवित्तेन्
पॆण्मेल् वैत्त कादलि न्ऩिप्पे रुहळ्पॆऱ्ऱेन्
ऍण्मेल् वैत्त वॆन्पुहळ् नन्ऱा लॆळियनो 2586

मण् मेल् वैत्त कातलिन्–धरती पर हुई इच्छा से; माता मुतलोर्क्कु–माता (कैकेयी) आदि लोगों को; पुण् मेल् वैत्त–व्रण में रखी; ती निकर्–आग के समान; तुन्पम् पुकुवित्तेन्–दुःख दिलाया; पॆण् मेल् वैत्त कातलिन्–स्त्री पर रखे प्रेम से; इ पेऱुकळ् पॆऱ्ऱेन्–ये लाभ पाये; ऍण् मेल् वैत्त–मान्य; ऍन् पुकळ्–मेरा यश भी; नन्ऱु–खूब रहा; ऍळियेनो–दीन (सहानुभूति योग्य) हूँ क्या। २५८६

मैंने राज्यलिप्सा के कारण माता (कैकेयी) आदियों को व्रण पर रखी आग के समान दुःख पहुँचाया। स्त्रीलिप्सा के कारण ये सब लाभ पाये। मान्य मेरा यश भी बड़ा अच्छा रहा! क्या मैं दीन (सहानुभूति योग्य) हूँ? । २५८६

माण्डाय् नीयो यानॊरु पोदु मुयिर्वाळेन्
आण्डा नल्ल नानिल मन्दो परदन्ऱान्
पूण्डा रॆल्लाम् बोन्ऱुवर् तुन्बम् बोऱ्ऱियाऱ्ऱार्
वेण्डा वोना नल्लऱ मञ्जि मॆलिवुऱ्ऱाल् 2587

नीयो माण्टाय्–तुम तो मर गये; यान्–मैं; ऒरु पोतुम् उयिर् वाळेन्–मैं कदापि नहीं जीवित रहूँगा; परतन्–(तब) भरत; नानिलम् आण्टान् अल्लन्–चतुर्विधा भूमि का शासन नहीं करेगा; अन्तो–हन्त; तुन्पम् पोऱ्ऱ आऱ्ऱार्–दुःखभार वहन न कर सककर; पूण्टार् ऍल्लाम्–रिश्तेदार सभी; पोन्ऱुवर्–मर जाएँगे; यान्–मैं; नल् अऱम् अञ्चि–श्रेष्ठधर्म-भीरु होकर; मॆलिवुऱ्ऱाल्–निर्बल रहा तो; वेण्टावो–ये सब न होने चाहिए क्या। २५८७

तुम तो चल बसे ! मैं एक पल भर भी प्राणधारण नहीं करूँगा। (उस स्थिति में) भरत भूमि का पालन नहीं करेगा। हन्त ! दुःख-भार न सह सककर सभी नातेदार मर जाएँगे। अच्छे धर्म से डरकर मैं निर्बल रह गया न ? इतना काफ़ी है क्या मुझे ? । २५८७

अऱन्दाय् तन्दै शुऱ्ऱमु मऱ्ऱु मॅन्तैयल्लाल्
तुऱन्दा यॅन्नुरु मॅन्तै मऱादाय् तुणैवन्दु
पिऱन्दा यॅन्नैप् पिन्बु तॉडर्न्दाय् पिरिवाऱ्ऱाय्
इऱन्दा युन्नैक् कण्डु मिरुन्दे नॅळियेनो 2588

अऱम्–धर्म; ताय् तन्तै–माता-पिता; चुऱ्ऱमुम्–और रिश्तेदार; मऱ्ऱुम्–अन्य सभी को; ॲन्तै अल्लाल्–मुझे छोड़; तुऱन्ताय्–छोड़ चलनेवाले; ॲन्नुम् ॲन्तै मऱाताय्–कभी मुझे न भूलनेवाले; तुणै वन्तु पिऱन्ताय्–साथी भाई के रूप में जनमे; पिरिवु आऱ्ऱाय्–वियोग न सह सकनेवाले; ॲन्नै–मेरा; पिन्पु तॉटर्न्ताय्–पीछा कर आये; इऱन्ताय्–मर गये; उन्नै कण्टुम्–तुम्हें देखकर भी; इरुन्तेन्–जीवित रहता हूँ; ॲळियेनो–दीन हूँ क्या। २५८८

तुमने धर्म, माँ, बाप, रिश्तेदार सभी को त्यागा, केवल मेरे वास्ते ! हे मुझे कभी न भूलनेवाले; मेरे सहोदर के रूप में जनमे मेरे भाई ! वियोग सह नहीं सककर, मेरे पीछे जंगल आनेवाले ! तुम मर गये तो भी देखता रह रहा हूँ मैं ! क्या मैं दीन हूँ ? । २५८८

शान्ऱोर् मादैत् तक्क वरक्कन् शिऱै तट्टाल्
आन्ऱोर् शॉल्लु नल्लऱ मन्नान् वयमानाल्
मून्ऱाय् निन्ऱ पेरुल हॊन्ऱाय् मुडिया वेल्
तोन्ऱा वोवॆन् विल्वलि दीरत् तॊळिलम्मा 2589

चान्ऱोर् मातै–सुयोग्य पुरुष की पुत्री को; तक्क अरक्कन्–बलवान राक्षस; चिऱै तट्टाल्–कारा में बाँध रखे तो; आन्ऱोर् चॉल्लुम् नल् अऱम्–साधुशंसित श्रेष्ठ धर्मदेवता; अन्नान् वयम्–उसके वश में; आताल्–हो जाय तो; मून्ऱाय् निन्ऱ पेर् उलकु–त्रिविध बड़े लोक; ऑन्ऱाय् मुटियावेल्–एक साथ न मिटें तो; ॲन् विल् वलि–मेरे धनु का बल; तीरम् तॊळिल्–और पराक्रम; तोन्ऱावो–प्रकट नहीं होगा क्या। २५८९

बहुत ही सुयोग्य (जनक) की दुहिता को बली राक्षस ने कारा में बंद रखा है। तो धनु को उसका नाश करा देना चाहिए। पर श्रेष्ठ धर्मदेवता उसके वश में रह गया। तो तीनों लोकों को एक साथ मिट जाना चाहिए। वह भी न हुआ तो क्या मेरा धनु का वीर कार्य प्रकट नहीं हो ? मैया, यह क्या आश्चर्य है ? । २५८९

वेलैप् पळ्ळक् कुण्डह ळिक्कुम् विरादऱ्कुङ्
गालिऱ् चॅल्लुङ् गाह मणिक्कुङ् गरनुक्कुम्
मूलप् पॉत्तऱ् चॅत्त मरत्तेळ् मुदलुक्कुम्
वालिक् कुम्मे यायित वाऱॅत् वलियम्मा 2590

वेलै-सागर-कथित; पळ्ळम् कुण्ड अकळिक्कुम्-गड्ढे रूपी लंका की गहरी खाई के विषय में; विरातऱ्कुम्-विराध; कालिल् चॅल्लुम्-पवनगतिगामी; काकम्-काकासुर की; मणिक्कुम्-आँख के तारे; करनुक्कुम्-खर; मूलम् पॉत्तल्-जड़ में छेद के साथ; चॅत्त-सत्त्वहीन; मरत्तु एळ् मुतलुक्कुम्-सात सालवृक्ष आदि के विषय में और; वालिक्कुम् ए-वाली के विषय में ही; ऍन् वलि-मेरा बल; आयित वाऱु ऍन्-कारगर रहा, यह हाल कैसा। २५९०

लंका की सागर की ही परिखा, विराध, पवनगति काग की आँख की पुतली, खर, खोखली जड़ के सत्त्वहीन सात सालवृक्ष और वाली —इनके ही विषय में मेरा बल कारगर रहा! यह क्या हाल है? । २५९०

इरुन्दे ताता लिन्दिर शित्ते मुदलाय
पॅरुन्दे रारैक् कॉन्ऱु पिळैक्कप् पॅऱुवेनो
वरुन्दे नीये वॅल्लुदि यॅन्नुम् वलिकॉण्डेन्
पॉरुन्दे नानिप् पॉय्प्पिऱ् विक्कुम् बॉऱैयल्लेन् 2591

वरुन्तेन्-(यत्न) कष्ट नहीं करूँगा; नीये वॅल्लुति-तुम्हीं जीतोगे (रावणि को); ऍन्नुम् वलि कॉण्टेन्-यह कहने का जो साहस करता था; इरुन्तेन् आतताल्-वह मैं इधर रहता तो; इन्तिरचित्ते मुतल् आय-इन्द्रजित् आदि; पॅरु तेरारै-महारथियों को; कॉन्ऱु-मारकर; पिळैक्क पॅऱुवेनो-बच सकता क्या; नान् पॉरुन्तेन्-मैं (तुम्हारा सहोदर होने) योग्य नहीं हूँ; इति-अब; पॉय् पिऱविक्कुम्-वृथा जन्म का; पॉऱै अल्लेन्-भार ढोने भी योग्य नहीं। २५९१

'मैं कष्ट न करूँगा, तुम्हीं जीतोगे (इन्द्रजित्) को' यह कहने का धैर्य मुझमें रहा। ऐसा मैं यहीं रहता तो इन्द्रजित् आदि महारथियों को मारकर बचता क्या? मैं तुम्हारा सहोदर होने योग्य ही नहीं! यह सारहीन जीवन ढोने की शक्ति भी नहीं रखता। (सब तरह से असमर्थ साबित हो गया हूँ।) । २५९१

मादा वुम्नञ् जुऱ्ऱमु नाडु मऱैयोरुम्
एदा नारो वॅन्ऱु तळर्न्दे यिरुवारॅत्
तादाय् काणच् चाल नितैन्देन् ऱळर्हिन्ऱेन्
पोदा यॅया पॉन्मुडि यॅन्नैप् पुनैविप्पान् 2592

मातावुम्-माता और; नम् चुऱ्ऱमुम्-हमारे रिश्तेदार; नाटुम्-और हमारे देशवासी; मऱैयोरुम्-ब्राह्मण लोग; एतातारो-क्या हो गये; ऍन्ऱु तळर्न्तु-ऐसा

सोचकर शिथिल पड़कर; इऱुवारै–जो क्षीण होंगे उनको; ताताय्–तात; काण–देखने की इच्छा; चाल निऩ्ऩॆऩ्तेऩ्–खूब की; तळर्किऩ्ऱेऩ्–घुलता हूँ; ऐया–बाबा; ऍऩ्ऩै–मुझे; पॊऩ् मुटि पुऩैविप्पाऩ्–स्वर्णकिरीट पहनाने के लिए; पोताय्–उठ आओ। २५९२

हे तात ! मैं बहुत चाहता था कि जाऊँ और माताओं, बन्धु-बान्धवों और ब्राह्मणों को, जो मेरी स्थिति के सम्बन्ध में संशय करते हुए मलिन होते होंगे, देखूँ। मैं इसी विचार से निर्बल होता रहता हूँ। तात ! उठो ! मुझे स्वर्णकिरीट पहनाने के लिए ही सही आओ। २५९२

पाशमु मुऱ्ऱच् चुऱ्ऱिय पोदुम् बहैयाले
नाशमु उऱ्ऱिप् पोदु नडन्दे नुडनल्लेन्
नेशमु मऱ्ऱार् शॆय्वन शॆय्दे निलैनिऩ्ऱेन्
तेशमु मुऱ्ऱॆन् कॊऱ्ऱ नलत्तैच् चिरियारो 2593

पाचमुम्–नागपाश; मुऱ्ऱ चुऱ्ऱिय पोतुम्–जब पूर्ण रूप से लिपटा रहा तब भी; पकैयाले–शत्रु द्वारा; नाचम् उऱ्ऱु–नाश को प्राप्त होने के; इप्पोतु–इस समय में भी; उटऩ् अल्लेऩ्–साथ नहीं रहा; नटन्तेऩ्–दूर चला गया; नेचमुम् अऱ्ऱार्–स्नेहहीन; चॆय्वऩ–जो करेंगे वही; चॆय्ते–करके; निलै निऩ्ऱेऩ्–अचल रहता हूँ; तेचमुम्–देशवासी; उऱ्ऱु–लगकर; ऍऩ् कॊऱ्ऱम् नलत्तै–मेरी विजय की श्रेष्ठता को; चिरियारो–हँसी नहीं उड़ायेंगे क्या। २५९३

मैं तब भी तुम्हारे पास नहीं रहा, जब नागपाश तुम पर लिपट गया था। मैं अबकी बार भी न रहा, जब शत्रु के हाथ तुम्हारा मरण हो गया। दोनों बार दूर चला गया था। स्नेहहीन का-सा काम करके अचल रहता हूँ। देशवासी क्या, युक्त ही रीति से, मेरी विजयश्रेष्ठता की हँसी नहीं करेंगे ? । २५९३

कॊडुत्तेन् नन्ऱे वीडण नुक्कुक् कुलमाळ
मुडित्तोर् शॆल्व मियान्मुडि यादे मुडिहिन्ऱेन्
पडित्तेन् नॆन्ऱे पॊय्म्मै कुडिक्कुप् पळिपॆय्ऱेन्
ऒडित्तेन् नन्ऱे यॆन्बुहळ् नाने युणर्वऱ्ऱेन् 2594

वीटणऩुक्कु–विभीषण को; कुलम् आळ–कुल का शासन करने हेतु; मुटित्तु–मुकुट पहनाकर; ओर् चॆल्वम् कॊटुत्तेऩ्–एक सम्पत्ति दिलायी मैंने; अऩ्ऱे–दिया न; मुटियाते–उसको सम्पन्न किये विना; याऩ् मुटिकिऩ्ऱेऩ्–मरनेवाला हूँ; पॊय्म्मै पटित्तेऩ्–असत्य सीख लिया; ऍऩ्ऱे–ऐसा ही; कुटिक्कु–(इक्ष्वाकु) वंश को; पळि पॆय्ऱेऩ्–कलंक दिला दिया; उणर्वु अऱ्ऱेऩ्–बुद्धिहीन हूँ; ऍऩ् पुकऴ्–अपने यश को; नाते ऒटित्तेऩ्–मैंने स्वयं तोड़ (नष्ट कर) दिया। २५९४

मैंने विभीषण को राक्षसकुलाधिपत्य देकर किरीट पहनाया।

पहनाकर राज्यश्री दिलायी न ! अब उसे पूरा किये विना ही मैं अंत होने वाला हूँ। असत्यवादी बनकर इक्ष्वाकुकुल पर कलंक सम्पादित कर लगवा दिया। दुर्बुद्धि मैंने अपना यश स्वयं ही नष्ट कर लिया। २५९४

ऍन्ऱॆन्ऱ्‌ रेङ्गा विम्मु मुयिर्क्कु मिडैयः(ह्)किच्
चॅन्ऱोन्‌ ऱॊन्ऱो डिन्दिय मॅल्लाम्‌ जिरैयॅय्दप्‌
पॊन्ऱुम्‌ मॅन्नुन्‌ दम्बियै मार्वत्‌ तोडुपुल्लि
ऒन्ऱुम्‌ बेशात्‌ ऱन्नै मऱन्दान्‌ तुयिल्वुऱ्ऱान्‌ 2595

ऍन्ऱॆन्ऱु–ऐसा-ऐसा; एङ्का–विलाप करके; विम्मुम्–सिसकते; उयिर्क्कुम्–लम्बी आहें छोड़ते; इटै–बीच में; अः.कि चॆन्ऱु–क्षीण पड़कर; ऒन्ऱोटु–एक इन्द्रिय (मन) के साथ; इन्तियम् ऍल्लाम्–सारी इन्द्रियाँ; ऒन्ऱु–मिलतीं और; चिरै ऍय्त–बद्ध हो जातीं और; पॊन्ऱुम् ऍन्नुम्–मृतक बने; तम्पियै–लघु सहोदर को; मार्वत्तोटु पुल्लि–छाती से लगाकर; ऒन्ऱुम् पेचात्–कुछ नहीं बोलते; तन्नै मऱन्तान्–अपने को भूल जाते और; तुयिल्वुऱ्ऱान्–निद्रामग्न हो गये। २५६५

ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए श्रीराम सिसके; रोये। लम्बी आहें भरीं। क्षीण हुए। उनकी सारी इन्द्रियाँ मन के साथ निष्क्रिय हुईं। और वे मृतक-से पड़े रहे छोटे भाई को गले से लगा लेते हुए अवाक् होकर निद्रामग्न हो गये। २५९५

कण्डार्‌ विण्णोर्‌ कण्गळ्‌ पुडैत्तार्‌ कलुऴ्हिन्ऱार्‌
कॊण्डार्‌ तुन्ब मॅन्मुडि वॅन्नक्‌ कुलैहिन्ऱार्‌
अण्डा वेया वॅङ्गळ्‌ पॊरुट्टा लयर्हिन्ऱाय्‌
उण्डो वुन्बाऱ्‌ ऱुन्बॅन वन्बा लुरैशॅय्दार्‌ 2596

विण्णोर्–देवों ने; कण्टार्–देखा; कण्कळ् पुटैत्तार्–आँखें पीट लीं; कलुऴ्किन्ऱार्–रोये; तुन्पम् कॊण्टार्–दुःखी हुए; मुटिवु ऍन्न–परिणाम क्या होगा; ऍन्–कहकर; कुलैकिन्ऱार्–अधीर होते हैं; अण्टा–देव; ऐया–प्रभु; ऍङ्कळ् पॊरुट्टाल्–हमारे वास्ते; अयर्किन्ऱाय्–कष्ट उठाते हैं; उन् पाल् तुन्पु उण्टो–आपके पास दुःख भी भटकेगा क्या; ऍन्न–ऐसा; अन्पाल्–भक्ति के कारण; उरै चॆय्तार्–कहा। २५६६

देवों ने यह देखा तो आँखें पीट लीं और रोये। दुःखी हुए और परिणाम के सम्बन्ध में संशय करते हुए काँप उठे। वे भक्ति के साथ बोले कि अंडनायक ! हमारे वास्ते आप दुःख सह रहे हैं। नहीं तो आपके पास दुःख भटक भी सकता है क्या ? । २५९६

उन्नै युळ्ळ पडियऱियो मुलह मुळ्ळ तिऱमुळ्ळोम्‌
बिन्नै यऱियो मुन्नऱियो मिडैयु मऱियोम्‌ पिऱऴामल्‌

निऩ्ऩै वणङ्गि नीवहुत्त नॆऱियि ऩिऱ्कु मदुवल्लाल्
ऎऩ्ऩै यडियेऴ् जॆयर्पाल विऩ्ब दुऩ्ब मिल्लोऩे 2597

इऩ्प तुऩ्पम् इल्लोते—सुख-दुःख-विमुक्त; उऩ्ऩै उळ्ळपटि अऱियोम्—आपको यथार्थ से नहीं जानते; उलकम्—लोक; उळ्ळ तिऱम्—जैसे (आपके अन्दर) रहते हैं, वह प्रकार; उळ्ळोम—न जानते; पिऩ्ऩै अऱियोम्—आगे का नहीं जानते; मुऩ् अऱियोम्—पीछे का नहीं जानते; इटैयुम् अऱियोम्—मध्य भी मालूम नहीं; पिऱ्ळामल्—क्रम भंग किये बग़ैर; अऱियोम्—बातें नहीं जानते; निऩ्ऩै वणङ्कि—आपकी पूजा करके; नी वकुत्त नॆऱियिऩ्—आपके निर्दिष्ट मार्ग में; निऱ्कुम् अतु अल्लाल्—रहने की वह बात छोड़कर; अटियेम् चॆयर्पाल—हम दासों के कृत्य; ऎऩ्ऩै—क्या हैं। २५९७

(देव आगे बोले :) हे सुख-दुःख-रहित ! हम आप की यथार्थ स्थिति नहीं जानते। लोकस्थिति भी न जानते। न आगे की बात जानते, न पीछे की, न मध्य की ही। यथाक्रम बातें जानना भी हमें आता नहीं ! आपकी स्तुति करें, और आपके निर्दिष्ट मार्ग पर स्थित हों, इसके सिवा हमारा कृत्य क्या होगा ?। २५९७

अरक्कर् कुलत्तै वेरऱुत्तॆम् मल्ल नीक्कि यरुळायॆऩ्
ऱिरक्क वॆम्मेऱ् करुणैयिऩा लिशैया वुरुव मिवैयॆय्दिप्
पुरक्कु मऩ्ऩर् कुडिप्पिऱन्दु पोन्दा यऱत्तॆप् पॊऱैतीर्प्पाऩ्
करक्क निऩ्ऱे नॆडुमाय मॆमक्कुङ् गाट्टक् कडवायो 2598

अरक्कर् कुलत्तै—राक्षसकुल को; वेरऱुत्तु—मूल से काटकर; ऎम् अल्लल् नीक्कि—हमारे कष्ट को दूर करके; अरुळाय्—कृपा दरसाएँ; ऎऩ्ऱु—कहकर; इरक्क—हमने याचना की तो; ऎम् मेल्—हम पर; करुणैयिताल्—करुणा से; इचैया उरुवम् इवै—अयोग्य ये रूप; ऎय्ति—लेकर; पुरक्कुम् मऩ्ऩर्—देशपालक राजा के; कुडि पिऱन्तु—गृह में जन्म लेकर; पोन्ताय्—प्रकट होनेवाले; अऱत्तै पॊऱै तीर्प्पाऩ्—धर्म का भार दूर करने; करक्क निऩ्ऱे—छिपे ही रहकर; मायम्—जो माया रचते हैं उसको; ऎमक्कुम्—हमें भी; काट्ट कटवायो—नहीं दरसा सकोगे क्या। २५९८

हमने प्रार्थना की थी कि राक्षसकुल को निर्मूल करें और हमारा संकट हरके हम पर दया बरतें। हम पर कृपा करके आपने अपने लिए बिलकुल न सोहनेवाला रूप धर लिया। लोकपालक राजकुल में अवतरित हे देव ! धर्मदेवता का संकट-भार हटाने के लिए छिपे रहते हैं। क्या उसी रूप में आप अपनी माया का रहस्य हमें नहीं दरसाएँगे। २५९८

ईऩ्ऱॆम् मिडुक्कण् डडैत्तळिप्पा ऩिरङ्गि यरश रिऱ्पिऱन्दाय्
मूऩ्ऱा मुलहन् दुयर्दीर्त्ति यॆऩ्ऩु माशै मुयल्हिऩ्ऱोम्
एऩ्ऱु मरन्दो मवऩल्लऩ् मऩिद ऩॆऩ्ऱे यिदुमायम्
पोऩ्ऱ दिल्लै याळुडैयाय् पॊय्युम् बुहलप् पुक्कायो 2599

ईन्र् ऍम्–आपसे सृष्ट हमारे; इडुक्कण् तुटैत्तु–संकट पोंछकर; अळिप्पात् इरक्कि–पालने की दया के भाव लेकर; अरचर् इल् पिऱन्ताय्–हे राजगृह में अवतरित; मून्ऱाम् उलकम्–त्रिविध लोकों का; तुयर् तीर्त्ति–दुःख दूर करेंगे; ऍन्नुम् आचै–इस आशा से; मुयल्किन्ऱोम्–यत्नशील हैं; एन्ऱु–आपकी स्थिति को सच्चा मानकर; अवन् अल्लन्–वे (परमपुरुष) नहीं; मनितन्–मानव ही; ऍन्ऱु–मानकर; मऱन्तोम्–(आपका यथार्थ) भूल गये; इतु मायै पोन्ऱतु–ऐसी माया का-सा कार्य दूसरा; इल्लै–नहीं; आळ् उटैयाय्–हम दासों के मालिक; पॊय्युम्–असत्य भी; पुकल–कहने; पुक्कायो–लगे क्या। २५९९

आपके सृष्ट हमारे संकट दूर करके हमारी रक्षा करने के निमित्त दया से राजकुल में अवतरित, हे देव ! त्रिलोक का संकट भी दूर करेंगे, इस आशा में हम यत्नवान हैं। आपकी अब की स्थिति को सच्चा मानकर हम आपके यथार्थ परत्व को भूल गये। ऐसी माया भी कहीं होती है ? हे हमारा दासत्व ग्रहण करनेवाले हमारे स्वामी ! आप असत्य-वादन भी आरम्भ कर चुके क्या ? । २५९९

अण्डम् बलवु मनैत्तुयिरु महत्तुम् बुऱत्तु मुळवाक्कि
उण्डु मुमिऴ्न्दु मळन्दिडन्दु मुळ्ळुम् बुऱत्तु मुळैयाहिक्
कॊण्डु शिलम्बि तन्वायिऱ् कूऱ्नूलियैयक् कूडियऱ्ऱिप्
पण्डु मिन्ऱु मशैक्किन्ऱ पडियै यॊऴिवाय् परमेट्टि 2600

परमेट्टि–परमेष्ठि; अण्टम् पलवुम्–अनेक अण्ड; अनैत्तुयिरुम्–सभी जीव; उण्टुम्–निगलकर; उमिऴ्न्तुम्–उगलकर; अकत्तुम् पुऱत्तुम् उळ आक्कि–अन्दर और बाहर के बनाकर; अळन्तुम् इटन्तुम्–मापकर और भाग बनाकर; उळ्ळुम् पुऱत्तुम्–भीतर और बाहर; उळैयाकि–रहनेवाले बने; चिलम्पि–मकड़ा; तन् वायिल्–अपने मुख में; कूर् नूल् इयैय–महीन सूत्र के निकलते; कॊण्टु–उससे; कूटु इयऱ्ऱि–जाला बनाकर; पण्टुम्–पहले और; इन्ऱुम्–आज भी; अमैक्किन्ऱ पटियै–जो करता रहता है, उस प्रकार से; ऒऴिवाय्–नहीं हटते। २६००

परमेष्टि ! आप सारे अंडों व सारे जीवों को निगलते और उगलते; उदरस्थ भी रखते और बाहर भी रखते। मापते और भाग करते ! भीतर भी रहते और बाहर भी रहते। जैसे मकड़ा अपने मुख के महीन सूत से जाला बुनता है, उसी प्रकार आप तब भी करते रहे और अब भी करते रहते हैं। उसे आप छोड़ेंगे नहीं ! । २६००

तुन्ब विळैयाट् टिदुवेयु मुन्नैत् तुन्बन् दॊडर्विन्मै
इन्ब विळैयाट् टार्मॆन्नु मरिया देमुक् किडरुऱ्ऱाल्
अन्बु विळैयु मरुळ्विळैयु मऱिवु विळैयु मवैयॆल्लाम्
मुन्बु पिन्बु नडुविल्लाय् मुडित्ता लन्ऱि मुडियावे 2601

मुन्पु पिन्पु नटु इल्लाय्–आद्यन्तमध्य-हीन; उन्नै–आपको; तुन्पम् तॊटर्पु

इन्मै–दुःख नहीं लगता इसलिए; इतु तुन्प विळैयाट्टाम्–यह दुःख का खेल भी; इन्प विळैयाट्टाम्–सुख का खेल ही है; ऎन्तिनुम्–तो भी; अऱियातेमुक्कु–जो नहीं जानते उन हमारे लिए; इटर् उऱ्ऱाल्–आप पर संकट आये तो; अन्पु विळैयुम्–प्रेम होगा; अरुळ् विळैयुम्–कृपा होगी; अऱिवु विळैयुम्–ज्ञान होगा; अवै ऎल्लाम्–वे सभी; मुटित्ताल् अन्ऱि–आप न हटाएँ तो; मुटियावे–न हटेंगे। २६०१

आदि-मध्य-अन्त-रहित ! आपको दुःख छू नहीं सकता। अतः यह दुःख की लीला रचते हैं, क्योंकि यह सुख की लीला है ! तो भी हम अज्ञ हैं। अतः प्रेम, करुणा, दया आदि लेकर हम दुःखी होते हैं। आप उसका अंत करें तभी दुःख का अन्त हो। २६०१

वरुवाय्पोल वारादाय् वन्दा यॆन्ऱु मनङ् गळिप्प
वॆरुवा दिरुन्दो नीयिडैये तुन्बम् विळैक्क मॆलिहिन्ऱोम्
करुवा यळिक्कुम् कळैकण्णे नीये यिदलैक् कळैयायेल्
तिरुवाळ् मार्ब निन्मायै यॆम्माल् ऱीर्क्कत् तीरुमो 2602

वरुवाय् पोल–गोचर होनेवाले के समान; वाराताय्–पर न होनेवाले; वन्ताय्–अवतरित हुए (दुष्ट-निग्रह शिष्ट-परिपालनार्थ); ऎन्ऱु–सोचकर; मनम् कळिप्प–मन में आनन्द के साथ; वॆरुवातु इरुन्तोम्–निडर रहे; तुन्पम् विळैक्क–दुःख होने पर; मॆलिकिन्ऱोम्–क्षीण होते हैं; करुवाय्–गर्भवासी होकर; अळिक्कुम्–हमारे रक्षक बने; कळैकण्णे–हमारे आश्रय; नीये–आप ही; इतनै कळैयायेल्–इस संकट को दूर न करें तो; तिरुवाळ् मार्प–श्रीनिवासवक्ष; निन् मायै–आपकी माया; ऎम्माल् तीर्क्क–हमसे हटाए; तीरुमो–दूर होगी क्या। २६०२

हे गोचर-अगोचर ! हमारे वास्ते आपने अवतार लिया है—उसी विचार में हम भयरहित हो खुश रहे। आप दुःख में पड़ते हैं तो हम निर्बल हो जाते हैं। गर्भवास करके हमारा संकट हरनेवाले हे हमारे आश्रय ! हे श्रीवक्ष ! अगर आप यह दुःख दूर नहीं करेंगे तो हमसे निवारे निवारण हो सकता है क्या ? । २६०२

अम्ब रीडर् करुळियदु मयन्नार् महनुक् कळित्तदुवुम्
ऎम्बि राने यॆमक्कित्ऱु पयन्दा यॆन्ऱे येमुऱ्ऱोम्
वॆम्बु तुयर नीयुळक्क वॆळिका णादु मॆलिहिन्ऱोम्
तम्बि तुणैवा नीयिदनैत् तविर्त्तॆम् मुणर्वैत् तारायो 2603

ऎम्पिराते–हमारे प्रभु; अम्परीटऱ्कु अरुळियतुम्–अम्बरीष पर कृपा जो की; अयतार् मकनुक्कु–अजसुत रुद्र को; अरुळियतुम्–जो कृपा-दान किया वह; ऎमक्कु–हमें; इन्ऱु–आज; पयन्ताय्–दिया; ऎन्ऱे–उसी विचार से; एमुऱ्ऱोम्–आपके रक्षण की प्रतीक्षा में सुरक्षित हैं; वॆम्पु तुयरम्–सन्ताप देनेवाले दुःख से; नी उळक्क–आप संकट उठावें; वॆळि काणातु–छूटने का उपाय न जानकर; मॆलिकिन्ऱोम्–क्षीण हो रहे हैं; तम्पि तुणैवा–लघु सहोदर के साथी; इतनै तविर्त्तु–यह दुःख दूर करके; ऎम उणर्वै–हमें बुद्धि को; तारायो–नहीं देंगे क्या। २६०३

हमारे प्रभु ! "आपने जैसे अंबरीष पर कृपा की, ब्रह्मा-पुत्र रुद्र का उपकार किया, वैसे ही हम पर दया दिखाएँगे" —यही सोचकर हम आपके रक्षण की आशा लिये रहते हैं। पर आपको दुःख में मग्न देखकर कोई उपाय न देखकर हाथ मले रह जाते हैं। सहोदर के उपकारी साथी! यह संकट दूर कीजिए। [राजा अंबरीष एकादशी के दिन अनशन व्रत रखते थे और द्वादशी के दिन भोजन करके उसका पारायण करने का नियम पालते थे। एक द्वादशी के सवेरे दुर्वासा आये और स्नान आदि करके लौटने की बात कहकर जलाशय में चले गये। उनको समय पर आता न देख राजा ने भगवान का चरणामृत भोग कर व्रतभंग होने से अपने को बचा लिया। तो भी भोजन नहीं किया। फिर भी दुर्वासा ने गुस्सा करके अपने बल से एक भूत को पैदा करके राजा पर भेजा। तब श्रीविष्णु का चक्र आकर मुनि को भगाने लगा। दुर्वासा आखिर श्रीविष्णु की शरण आये तभी जाकर वे बच सके। रुद्र के बचने की कहानी भस्मासुर-वध की कहानी है। भस्मासुर ने शिवजी से यह वर प्राप्त कर लिया कि वह जिस किसी के भी सिर पर हाथ रखे तो वह भस्म हो जाय। उसने शिवजी के ही सिर पर हाथ रखकर वर की शक्ति की परीक्षा लेना चाहा। शिव डर से भागे। श्रीविष्णु मोहनी के रूप में असुर के सामने आये और काम-मुग्ध उससे उसके सिर पर स्वयं हाथ रखवा दिया। वह भस्म हो गया। शिवजी बचे। पर उनका मोहनी पर प्रेम हो गया। उस प्रेम के फल-स्वरूप जो पुत्र पैदा हुआ वही दक्षिण में शास्ता या हरिहरपुत्र या अय्यनार् के रूप में पूजा जाता है। 'शबरीमलै' (दक्षिण में एक पर्वत) पर जो शास्ता का मन्दिर है वह अतिविख्यात है और लाखों लोग हर साल वहाँ निश्चित दिन (जैसे मकरसंक्रांति के दिन) आकर दर्शन कर जीवन सार्थक बना लेते हैं। मन्दिर में जाने के पहले कठिन उपवास और अन्य व्रतों का पालन करना पड़ता है। रास्ता पैदल ही तय करना पड़ता है और जंगली रास्ता बड़ा भयानक होता है। भक्ति की महिमा है लोग सकुशल यात्रा तथा दर्शन सम्पन्न कर लेते हैं।]। २६०३

अॆऩ्ऩब पलवु मॆंडुत्तियम्बि यिमैया दोरुमिड रुळऩ्दार्
अऩ्बु मिहुदि यालॆय ऩावि युळ्ळे यडङ्गिऩाऩ्
तुऩ्ब मऩिदर् करुममे पुणर मुऩ्बु तुणिन्दमैयार्
पुत्तग णिरुदर् पॆरुन्दूदर् पोना ररक्क ऩिडम्बुक्कार् 2604

अॆऩ्ऩ-ऐसे; पलवुम्-अनेक; अॆंडुत्तु इयम्पि-ले कहकर; इमैयोरुम्-देव भी; इडर् उळऩ्ऩार्-दुःखपीड़ित हुए; तुऩ्पम् मऩितर्-दुःखपात्र मानव का; तॊऴिले-चरित्र ही; पुणर-मिला रहे ऐसा; मुऩ्पु-(अवतार लेने से) पहले ही; तुणिन्तमैयाल्-संकल्प कर लेने से; अऩ्पु मिकुतियाल्-वात्सल्याधिक्य से; ऐयऩ्-प्रभु

ने; आवि उळ्ळे अटक्कितान्–प्राण अन्दर खींच लिये; पुन् कण् निरुतर्–क्षुद्र-स्वभाव राक्षस के; पॅरु तूतर्–बड़े दूत; पोतार्–गये; अरक्कतिटम् पुक्कार्–राक्षस (रावण) के पास पहुँचे। २६०४

देवों ने दुःखपीड़ित होकर ऐसी बहुत सी बातें कहीं। श्रीराम तो जान-बूझकर ही दुःखालय मानव का अवतार लिया था। इसलिए वात्सल्य-अतिरेक से उन्होंने अपने प्राणों को अन्दर खींच लिया था। यह देखकर क्षुद्र राक्षसकुल के बड़े दूत रावण के पास गये। २६०४

ॲन्वन् दवुनी रॅन्ऱरक्करक् किऱैव नियम्ब वॅरिशॅरुविल्
नित्मैन् दत्ऱन् ॅडुञ्जरत्ताऱ् ऱुणैव रॅल्ला निलञ्जेरप्
पित्वन् दवनु मुयिरिऴन्द पिऴैयै नोक्किप् पॅरुन्दुयराल्
मुत्वन् दवनु मुडिन्दानुन् पहैपोय् मुडिन्द दॅन्मॊऴिन्दार् 2605

अरक्कर्क्कु इऱैवन्–राक्षसराज के; नीर् वन्ततु–तुम्हारा आना; ॲन्–क्या (लेकर); ॲन्ऱु इयम्प–ऐसा पूछने पर; ॲरि चॅरुविल्–(परस्पर) टकराने के युद्ध में; नित् मैन्तन् तन्–तुम्हारे पुत्र के; नॅटु चरत्ताल्–बड़े बाण से; तुणैवर् ॲल्लाम् निलम् चेर–मित्रों के धराशायी होने पर; पिन् वन्तवनुम्–और अनुज के भी; उयिर् इऴन्त–प्राण खोने का; पिऴैयै नोक्कि–बुरा कार्य देख; पॅरु तुयराल्–गम्भीर दुःख से; मुन् वन्तवनुम्–अग्रज (श्रीराम) भी; मुडिन्तान्–अन्त हो गया; उन् पकै–आपका शत्रुत्व; पोय् मुटिन्ततु–आखिर चलकर शुष्क हो गया; ॲन मॊऴिन्तार्–ऐसा कहा। २६०५

राक्षसराज ने उनके आने का कारण पूछा तो वे बोले, "आपसी आक्रमण के युद्ध में आपके पुत्र इन्द्रजित् के बड़े शरों के लगने से राम के सभी मित्र भूशायी हो गये। राम का अनुज भी प्राणहीन हो गया। यह आफ़त देखकर उसके अग्रज ने भी दुःख से अभिभूत होकर प्राण छोड़ दिये। अब आपके शत्रु का अन्त हो गया।"। २६०५

22. पिराट्टि कळङ्गाण् पडलम् (देवी-युद्धस्थल-दर्शन पटल)

पॊय्यार् तूद रॅन्बदनाऱ् पॊङ्गि यॅऴुन्द वुवहैयिनान्
मॅय्यार् निदियम् पॅरुवॆंऱुक्कै वॆंऱुक्क वीशि विळैन्दपडि
कैयार् वरैमेन् मुरशेऱ्ऱिच् चाऱ्ऱि नहरङ् गळिशिऱप्प
नॅय्या राडल् कॊळ्हॆन्ऱु निहऴ्त्तु हॆन्ऱा नॆऱियिल्लान् 2606

नॅऱि इल्लान्–सन्मार्ग-रहित रावण; तूतर् पॊय्यार्–दूत असत्य नहीं कहेंगे, ऐसा; ॲन्पतनाल्–होने से; पॊङ्कि ॲऴुन्त–जो उमंग उठा उस; उवकैयिनान्–आनन्द के साथ; मॅय् आर्–(शंख, पद्म आदि रूप में) एकत्रित; पॅरु वॆऱुक्कै नितियम्–बहुत बड़ी निधि को; वॆऱुक्क–(दान लेनेवाले) ऊब जाएँ इतना; वीचि–लुटाकर; विळैन्त पटि–जैसा (युद्ध का हाल) हुआ वैसा; कै आर्–सूँड़-सहित;

वरै मेल्-पर्वत (गज) पर; मुरचु एऱ्ऱि-नगाड़ा चढ़ाकर; चाऱ्ऱि-घोषणा करके; नकरम्-नगर; कळि चिऱप्प-आनन्द में पगकर; नॆय्यार् आटल्-घी मलकर स्नान; कॊळ्क-करे; ऍऩ्ऱु-ऐसा; निकळ्त्तुक-मुनादी करा दो; ऍऩ्ऱाऩ्-आज्ञा सुनायी। २६०६

कुमार्गी रावण का विश्वास था कि दूत झूठ नहीं बोले। उसका आनन्द उमग आया। उसने बहुत बड़ी निधि दान में लुटाई कि स्वयं दान लेनेवाले अघा गये। फिर उसने आज्ञा दिलायी कि हाथी पर नगाड़ा चढ़ाओ और युद्ध में हुई बात की घोषणा कर दो। साथ-साथ यह भी मुनादी पिटवा दो कि लंकानगर-वासी घी मलकर स्नान करके आनंद मनाएँ और बढ़ा लें। २६०६

अऩ्ऩ नॆऱियै यवर्चॆय्य वरक्कऩ् मरुत्तऩ् ऱऩैक्कूवि
मुऩ्ऩ नीपो यरक्करुडल् मुळ्ळुदुङ् गडलिल् मुडुक्किडुनिऩ्
शिऩ्ऩै यॊळ्ळियप् पिऱररियिऱ् चिरमुम् वरमुञ् जिऩ्दुवॆऩ्ऩॆ
ऱुऩ्ऩ ववऩ्बो यरक्करुडल् मुळ्ळुदुङ् गडलि ऩुळ्ळिट्टाऩ् 2607

अऩ्ऩ नॆऱियै-वह काम; अवर् चॆय्य-उन्होंने (भृत्यों ने) किया तब; अरक्कऩ्-रावण; मरुत्तऩ् तऩै कूवि-मरुत को बुलाकर; मुऩ्ऩ नी पोय्-पहले तुम जाकर; अरक्कर् उटल् मुळ्ळुम्-सारे राक्षसों के शरीरों को; कटलिल् मुटुक्किटु-समुद्र में डाल दो; निऩ् चिन्तै ऑळ्ळिय-तुम्हारे अपने मन के सिवा; पिऱर् अऱियिल्-दूसरे जान लें तो; चिरमुम्-तुम्हारा सिर और; वरमुम्-वर (सुविधाएँ); चिन्तुवॆऩ्-हर लूंगा; ऍऩ्ऱु-कहकर; उन्ऩ-भेज दिया तो; अवऩ्-उसने; पोय्-जाकर; अरक्कर् उटल् मुळ्ळुम्-सारे राक्षसों के शरीरों को; कटलिऩ् उळ्-समुद्र के अन्दर; इट्टाऩ्-डाल दिया। २६०७

मुनादी पीटनेवाले वह काम करने चले गये। रावण ने मरुत को बुला भेजा और उससे कहा कि तुरंत जाओ और सारे राक्षसों के शरीरों को समुद्र में डुबो दो। यह बात केवल तुम्हारा मन जाने; और कोई जान पाया तो समझ लो कि मैं तुम्हारा सिर और वर (दी गयी सुविधाएँ) हरण कर लूँगा। मरुत ने वैसे ही सारी राक्षस-लाशों को समुद्र में डाल दिया। २६०७

तॆय्व विमाऩत् तिडैयेऱ्ऱि मऩित्तरक् कुऱ्ऱ चॆयलॆल्लाम्
तैयल् काणक् काट्टुमिऩ्गळ् कण्डा लऩ्ऱित् तऩ्ऩुळ्ळत्
तैय नीङ्गा ळॆऩ्ऱुरैक्क वरक्कर् महळि रिरैत्तोण्डि
उय्यु मुणर्वु नीत्ताळै नॆडुम्बोर्क् कळत्तिऩ् मिशैयुय्त्तार् 2608

तॆय्व विमाऩत्तु इटै एऱ्ऱि-दिव्य (पुष्पक) यान पर चढ़ाकर; मऩितर्क्कु-नरों पर; उऱ्ऱ चॆयल् ऍल्लाम्-जो बीता वह कृत्य सब; तैयल् काण-स्त्री (देवी) देख ले; काट्टु मिऩ्कळ्-दिखा दो; कण्टाल् अऩ्ऱि-देखे बिना; तऩ् उळ्ळत्तु ऐयम्-अपने

मन का संदेह; नीङ्काळ्–दूर नहीं करेगी; अॅन्ऱु उरॅक्क–ऐसा करने पर; अरक्कर् मकळिर्–राक्षस-स्त्रियाँ; इरॅत्तु ईण्टि–हो-हल्ला मचाती हुई जमा होकर; उय्युम्–हम बचीं; उणर्वु नीत्ताळे–यह सुध जो खोकर रहती है; नॅट्टु पोर्क्कळत्तिन् मिचै–विशाल युद्धमैदान में; उय्त्तार्–पहुँचाया। २६०८

(फिर रावण ने सीता के पास जो पहरे पर बैठी थीं, उनको आज्ञा सुनायी—) दिव्य पुष्पक यान पर सीता को बैठाकर युद्धक्षेत्र में ले जाओ और उसे दिखा दो कि नरों का क्या हाल हुआ है? वह अपनी आँखों नहीं देखे तो अपना संशय दूर नहीं कर सकेगी। यह सुनकर राक्षस-नारियाँ शोर मचाती हुई मिल आयीं और बचने की आशा छोड़ जो बैठी थीं उन सीता जी को विशाल युद्धभूमि पर ले गयीं। २६०८

कण्डाळ् कण्णाऱ् कणवनुरु वन्ऱि यॊन्ऱुङ् गाणादाळ्
उण्डाळ् विडत्तै यॆनवुडलु मुणर्वु मुयिर्प्पु मुडनोय्न्दाळ्
तण्डा मरैप्पू नॆरुप्पुऱ्ऱ तन्मै युऱ्ऱा डरियादाळ्
पॆण्डा नुऱ्ऱ वॆरुम्बीळै युलहुक् कॆल्लाम् बॆरिदन्ऱो 2609

कणवन् उरु अन्ऱि–पति के रूप के सिवा; ऑन्ऱुम् काणाळ्–और कोई न देखनेवाली सीतादेवी ने; कण्णाळ्–अपनी आँखों से; कण्टाळ्–देखा (श्रीराम को); तरियाताळ्–सह नहीं सकीं; विटत्तै उण्टाळ् ॲन्न–विष खाया हो ऐसा; उटलुम् उणर्वुम्–शरीर और मन तथा; उयिर्प्पुम्–श्वास को; उटन् ओय्न्ताळ्–एक साथ शिथिल पाकर; तण् तामरै पू–शीतल कमलपुष्प; नॅरुप्पु उऱ्ऱ तन्मै–आग से ग्रस्त हो ऐसी स्थिति; उऱ्ऱाळ्–पा गयीं; पॅण् उऱ्ऱ पॅरु पीळै–एक रमणी की वेदना; उलकुक्कु ॲल्लाम्–सारे लोक की आँखों में; पॅरितु अन्ऱो–बहुत बड़ा है न। २६०९

सीताजी श्रीराम के रूप के सिवा किसी भी रूप का ध्यान नहीं करती थीं। उन्होंने जब श्रीराम को बेहोशी की स्थिति में देखा तो वे सह नहीं सकीं। विष खा चुकी हों ऐसे उनकी सुध-बुध और श्वास-शक्ति सब चली गयीं। अग्नितप्त कमलपुष्प की-सी स्थिति में पड़ गयीं। स्त्री का दुःख! सारी दुनिया को वह बहुत बड़ा (असह्य) लगेगा न? । २६०९

मङ्गै यळुदाळ् वानाट्टु मयिल्ह ळळुदार् मळविडैयोन्
पङ्गि नुऱैयुङ् गुयिलळुदाळ् पदुमत् तिरुन्द मादळुदाळ्
गङ्गै यळुदा णामडन्दै यळुदाळ् कमलत् तडङ्गण्णन्
तङ्गै यळुदा ळिरङ्गाद वरक्कि मारुन् दळर्न्दळुदार् 2610

मङ्कै अळुताळ्–देवी रोयीं; वान् नाट्टु–आकाशलोक की; मयिल्कळ्–मयूरनिभ स्त्रियाँ; अळुतार्–रोयीं; मळ विटैयोन्–तरुण-वृषभारूढ़ शिवजी के; पङ्किन् उऱैयुम्–(बायें) अंग में रहनेवाली; कुयिल् अळुताळ्–कोकिला (-सी भाषिणी) रोयीं; पतुमत्तु इरुन्त मातु–पद्मासनस्था (लक्ष्मी) देवी; अळुताळ्–

रोयीं; कङ्कै अळुताळ्—गंगामाता रोयीं; नामटन्तै—वाणीदेवी; अळुताळ्—रोयीं; तङ्कै अळुताळ्—लघु सहोदरा (देवी दुर्गा) रोयीं; कमलम् तट कण्णन—कमल-विशालाक्ष (श्रीविष्णु) की; इरक्कात अरक्कि मारुम्—निर्दय राक्षस-स्त्रियाँ भी; तळर्न्तु अळुतार्—शिथिल पड़कर रोयीं। २६१०

सीताजी रोयीं तो आकाश-देश की कलापी-सी रमणियाँ रोयीं। तरुण ऋषभ पर सवार शिव के आधे अंग की रहनेवाली कोकिला-सी देवी पार्वती रोयीं। पद्मासनस्था श्रीदेवी रोयीं। भागीरथी गंगा माता रोयीं। वाग्देवी सरस्वती रोयीं। कमलपत्रविशाला श्रीविष्णु की भगिनी देवी दुर्गा रोयीं। निर्मम राक्षसियाँ शिथिल पड़कर रोयीं। २६१०

पॊत्ऱाळ् कुऴैया डत्तैयीन्ऱ पूमा मडन्दै पुरिन्दऴुदाळ्
कुत्ऱा मऱैयुन् दरुममुमॆय् कुऴैन्दु कुऴैन्दु तळर्न्दऴुद
पित्ऱा दुडऱ्ऱुम् बॆरुम्बाव मऴुद पिऱ्ऱॆन् बिऱर्चॆय्है
नित्ऱार् नित्ऱ पडियऴुदार् नित्तैप्पु मुयिर्प्पु नीत्तिट्टाळ् 2611

पॊत् ताळ्—स्वर्णमय; कुऴैयाळ् तत्तै—कुंडलधारिणी को; ईन्ऱ—जिसने जन्म दिया था वह; पू मा मटन्तै—भूदेवी; पुरिन्तु अऴुताळ्—समझकर रोयीं; कुत्ऱा मऱैयुम्—अक्षय वेद; तरुममुम्—और धर्मदेवता; मॆय् कुऴैन्तु कुऴैन्तु—शरीर लचका-लचकाकर; तळर्न्तु अऴुत—शिथिल पड़कर रोये; पित्ऱातु—विना पिछड़े; उटऱ्ऱुम्—दुःख देनेवाला; पॆरुम् पावम् अऴुत—बड़ा पाप भी रोया; पिऱर् चॆय्कै—दूसरों का काम; पित् ऎन्—फिर क्या कहा जाय; नित्ऱार्—जो जहाँ थे वे वहीं; नित्ऱपटि—खड़े-खड़े; अऴुतार्—रोये; नित्तैप्पुम् उयिर्प्पुम्—स्मरण और श्वास लेना; नीत्तिट्टाळ्—देवी ने छोड़ा। २६११

स्वर्णकुण्डलधारिणी सीताजी की जननी, भूदेवी सहानुभूति करके रोयीं। अक्षय वेद और धर्मदेवता जर्जर हो गये। अचूक रीति से संकट देनेवाला पाप भी रोया, तो अन्यों की बात क्या कही जाए? जो जहाँ रहे वे वहीं खड़े-खड़े रोने लगे। तब देवी की सुध-बुध तथा श्वास भी खो गया। २६११

नित्तैप्पु मुयिर्प्पु नीत्ताळै नीराऱ् ऱॆळित्तु नॆडुम्बॊऴुदिन्
इनत्ति नरक्कर् मडवार्ह ळॆडुत्ता रुयिर्वन् देङ्गिताळ्
कनत्ति निऱत्तान् ऱनैप्पॆयर्त्तुङ् गण्डाळ् कयलैक् कमलत्ताऱ्
चिनत्ति नलैप्पा ळॆनक्कण्णैच् चिवैयक् कैयान् मोदिनाळ् 2612

अरक्कर् इनत्तिन्—राक्षसकुल की; मटवार्कळ्—स्त्रियों ने; नित्तैप्पुम् उयिर्प्पुम् नीत्ताळै—प्रज्ञा और श्वास जो त्याग चुकीं उन्हें; नीराल् तॆळित्तु—जल छिड़ककर; ऎटुत्तार्—सँभाल लिया; नॆटुम् पॊऴुतिन्—लम्बी देर के बाद; उयिर् वन्तु—होश में आकर; एङ्किताळ्—दुखने लगीं; कनत्तिन् निऱत्तान् तनै—मेघश्याम को; पॆयर्त्तुम् कण्टाळ्—फिर से देखा; चिनत्तिन्—कोप से; कयलै—कयल

मछली को; कमलत्ताल्–कमल-पुष्प से; अलैप्पाळ् अँत–पीटती जैसे; कण्णै–अपनी आँखों को; चितैय–बेहाल करते हुए; कैयाल्–हाथों से; मोतित्ताळ्–पीटा। २६१२

राक्षसकुल की उन स्त्रियों ने मूर्च्छित सीतादेवी पर जल छिड़का। अपने हाथों पर उठाया। बहुत देर के बाद सीताजी जाग पड़ीं। फिर मेघश्याम को देखकर उन्होंने रुष्ट होकर कमल-पुष्प से कयल मछली को मारती-सी अपनी आँखों को बेहाल करते हुए अपने हाथों से पीट लिया। २६१२

अडित्ताण् मुलैमेल् वयिरलैत्ता ळळुदा डौळुदा ळन्नल्वीळ्न्द
कौडित्ता नॆन्न मॆय्शुरुण्डाळ् कौदित्ताळ् पदैत्ताळ् कुलैवुऱ्ऱाळ्
तुडित्ताण् मिन्बो लुयिर्हरप्पच् चोर्न्दाळ् शुळन्ऱा डुळ्ळिनाळ्
कुडित्ता डुयरै युयिरोडुङ् गुळैत्ता ळळैत्ताळ् कुयिलन्नाळ् 2613

कुयिल् अन्ताळ्–कोयल-सी देवी ने; मुलै मेल् अटित्ताळ्–(स्तनों पर) छाती पीट ली; वयिऱु अलैत्ताळ्–पेट पीटा; अळुताळ्–रोयीं; तॊळुताळ्–नमस्कार किया; अनल् वीळ्न्त–आग में पड़ी; कॊटितान् ॲन्न–लता-सी ही; मॆय् चुरुण्टाळ्–शुष्क शरीर हो गयीं; कॊतित्ताळ्–खौल उठीं; पतैत्ताळ्–बेचैन हुईं; कुलैवु उऱ्ऱाळ्–विकृत हुईं; मिन् पोल्–बिजली के समान; तुटित्ताळ्–छटपटायीं; उयिर् करप्प–श्वास छिप गये; चोर्न्ताळ्–निर्बल हुईं; चुळन्ऱाळ्–मन भ्रान्त हो गया; तुळ्ळिनाळ्–उछल पड़ीं; तुयरै कुटित्ताळ्–दुःख पी लिया; उयिरोटुम् कूट्टि कुळैत्ताळ्–प्राणों से (उस दुःख को) घोला; उळैत्ताळ्–अत्यन्त वेदना से ग्रस्त रहीं। २६१३

कोकिला-सी सीताजी ने अपनी छाती पीट ली। पेट पीट लिया। रोयीं। नमस्कार किया। आग में पड़ी लता के समान मुरझायीं। तप्त हुईं। बेचैन हुईं। जर्जर हुईं। मछली के समान छटपटायीं। श्वास रुक-सा गया। लचक गयीं। उनका मन भ्रमित हुआ। वे उछलीं। उन्होंने दुःख पीकर और प्राणों से मिलाकर घोल दिया। इस भाँति वे बहुत दुःखी हुईं। २६१३

विळुन्दाळ् पुरण्डा ळुडन्मुळुदुम् वियर्त्ता ळुयिर्त्ताळ् वॆदुम्बिनाळ्
ॲळुन्दा ळिरुन्दाण् मलर्क्करत्तै नॆरित्ताळ् शिरित्ता ळॆङ्गिनाळ्
कॊळुन्दा वॆन्ऱा ळयोत्तियर्दङ् गोवे यॆन्ऱा ळॆव्वुलहुन्
दॊळुन्दा ळरशे योवॆन्ऱाळ् शोर्न्दा ळरऱ्ऱत् तॊडङ्गिनाळ् 2614

विळन्ताळ्–गिरीं; पुरण्टाळ्–लोटीं; उटल् मुळुतुम्–सारे शरीर में; वियर्त्ताळ्–स्वेदित हुईं; उयिर्त्ताळ्–दीर्घ निःश्वास छोड़े; वॆतुम्पिनाळ्–तप्तमन हुईं; ॲळुन्तु इरुन्ताळ्–उठ बैठीं; मलर् करत्तै–कमल-हस्त को; नॆरित्ताळ्–चटकाया; चिरित्ताळ्–हँसीं; एङ्किनाळ्–तरसीं; कॊळुन्ता–पति; ॲन्ऱाळ्–

कहकर बुलाया; अयोत्तियर् तम्–अयोध्यावासियों के; कोवे–राजा; ॲन्ऱाळ्–कहा; ॲव् उलकुम् तोऴुम्–सर्वलोकवंद्य; ताळ् अरचेयो–चरणों वाले राजा; ॲन्ऱाळ्–बुलाया; अरऱ्ऱ तोटङ्कि्ताळ्–विलाप करने लगीं। २६१४

देवी विमान में ही गिर गयीं। शरीर भर में स्वेदयुक्त हुई। लम्बी आहें भरीं। तप्तचित्त हुई। उठ बैठीं। कमलहस्त चटकाया। हँसीं। तरसीं। 'हे मेरे पति' कहकर बुलाया। "अयोध्याधिपति! सर्वलोकवंद्य-चरण प्रभु!" आदि संबोधन किये। जर्जर हुई। फिर वे विलाप करने लगीं। २६१४

उऱमे वियहा दलुनक् कुडैयार्, पुऱमे दुमिला रॊडुपू णहिलाय्
मऱमे पुरिवार् वशमा यितैयो, अऱमे कॊडिया यिदुवो वरुडान् 2615

अऱमे–धर्मदेवता; उऩक्कु–तुम्हारे प्रति; उऱ मेविय–खूब लगे; कातल्–प्रेम से; उटैयार्–युक्त; पुऱम्–अन्य; एतुम् इलारॊटु–किसी से कोई सम्बन्ध न रखनेवाले (मेरे पति) से; पूणकिलाय्–मित्रता न रखकर; मऱमे–पाप ही; पुरिवार्–करनेवाले; वचम् आयितैयो–वश में हो चुके हो क्या; कॊटियोय्–निर्मम; अरुळ् तान् इतुवो–क्या यही कृपा है। २६१५

हे धर्मदेवता! तुम पर मेरे पति अपार प्रेम रखते थे और धर्मेतर बातों से उनका लगाव नहीं था। उनसे तुमने मित्रता नहीं रखी। क्या तुम पापियों के वश में आ गये? हे क्रूर! यही तुम्हारी करुणा है?। २६१५

मुदिया रुणर्वेद मॊऴिन् दवलार्, कदिये तुमिलार् दुयर्का णुदियो
मदियेन् मदिये तुनैवाय् मैयिला, विदिये कॊडियाय् विळैया डुदियो 2616

वाय्मै इला–नेकी विना रहनेवाले; वितिये–विधिदेवता; मुतियार्–ज्ञानवृद्धों के; उणर् वेतम्–ज्ञात वेदों के; मॊऴिन्त वलाल्–कहे प्रकार के सिवा; कति एतुम् इलार्–अन्य गति जिनकी नहीं; तुयर् काणुतियो–उनका दुःख देखना चाहते हो क्या; उनै मतियेन्–तुमको कुछ गिन नहीं सकूँगी; कॊटियाय्–क्रूर; विळैयाटुतियो–खेल है तुम्हारा क्या। २६१६

आर्जव-हीन विधि! ज्ञानवृद्धों द्वारा ज्ञेय वेदोक्त मार्ग को छोड़ हम इतर मार्ग पर जानेवाले नहीं हैं। ऐसे हमारा दुःख देखने की इच्छा करोगे क्या तुम! तुमको मैं कुछ नहीं मानती। हे क्रूर! तुम खिलवाड़ करते हो क्या?। २६१६

कॊडिये निवैकाण् गिलनॆन् तुयिर्हॊळ्, मुडिया नमने मुऱैयो मुऱैयो
विडिया विरुळ्वा यॆनैवी शिनैये, अडिये नुयिरे यरुणा यहने 2617

कॊटियेन्–मैं क्रूर हूँ; इवै–यह; काण्किलेन्–देख सह नहीं सकती; ॲन् उयिर् कॊळ्–मेरे प्राण ले; मुटियात नमने–मेरा अन्त न करनेवाले, हे यम; मुऱैयो–(उनका अन्त करना) क्रम है क्या; मुऱैयो–क्रम है क्या; अटियेन् उयिरे–मेरे प्राण; अरुळ्

नायकने–दयामय नाथ; विटिया इरुळ्वाय्–अमिट अन्धकार में; ऑन्ने वीचितैयो–मुझे डाल दिया क्या। २६१७

मैं बड़ी क्रूर हूँ। मैं यह दृश्य सह नहीं सकती। मेरे प्राण न ले सकनेवाले यम! तुम्हारा यह (उनके प्राण-हरण का) काम क्रमसंगत है क्या? क्रमसंगत है? हे मेरे प्राण! करुणानाथ! क्या मुझे अमिट अन्धकार में आपने फेंक दिया है? । २६१७

ऑण्णा वुयिरो डुमिरुन् ददुनिन्, पुण्णा हियमे निपॉरुन् दिडवो
मण्णो रुयिरे यिमैयोर् वलिये, कण्णे यमुदे करुणा हरने 2618

मण्णोर् उयिरे–पृथ्वीवासियों के प्राण; इमैयोर् वलिये–देवों के बल; कण्णे–मेरी आँख; अमुते–अमृत; करुणा करने–करुणाकर; ऑण्णा–(दुःखों की) परवाह न करके; उयिरोटुम् इरुन्ततु–सप्राण रही; निन्–आपके; पुण्णाकिय मेनि–व्रणसहित शरीर से; पॉरुन्तिटवो–लगने के लिए क्या। २६१८

पृथ्वीवासियों के प्राण (हे राम)! देवों के बल! मेरे नेत्र! अमृत! करुणाकर! अपने दुःखों की परवाह न करके मेरा अब तक प्राणधारण क्या आपके व्रण-सहित शरीर को देखने के अर्थ था? । २६१८

मेविक् कनन्मुन् मिदिलैत् तलैयॅन्, पाविक् कैपिडित् तदुपण् णवनिन्
आविक् कॉरुकोळ् वरवो वलर्वाळ्, देविक् कमुदे मऱैयिन् ऱॅळिवे 2619

अलर् वाळ् तेविक्कु–कमलनिवासिनी देवी के; अमुते–अमृत; मऱैयिन् ऱॅळिवे–वेदों के निर्धारित अर्थ; पण्णव–ईश्वर; मितिलै तलै–मिथिला में; कनल् मुन् मेवि–अग्नि-सम्मुख विराजकर; पावि–पापिनी; ऍन् कै पिटित्ततु–मेरा पाणिग्रहण करना; निन् आविक्कु–आपके प्राणों पर; ऑरु कोळ् वरवो–बन आये इस वास्ते क्या। २६१९

हे कमला के अमृत! वेदों के साफ़ अर्थ! ईश्वर! मिथिला में आपका मेरा पाणिग्रहण करना क्या आपके प्राणों पर बन आये, इस वास्ते था? । २६१९

उय्या ळुयर्हो शलैतन् नुयिरो, डैया विळैयो रुयिर्वाळ् हिलराल्
मॅय्या विनैयॅण् णिविडुत् तकॊडुङ्, गैहे यिहरुत् तिदुवो कळिऱे 2620

कळिऱे–कलभ (निभ); उयर् कोचलै–मानार्ह कौसल्या; तन् उयिरोटु उय्याळ्–अपने प्राण ले जीवित नहीं रहेंगी; मॅय्या–सत्यसन्ध; ऐया–प्रभु; इळैयोर् उयिर् वाळ्किलर्–छोटे भी जीवित नहीं रहेंगे; विनै ऍण्णि–(संभाव्य) हानि का विचार करके; विटुत्त–(जिन्होंने वन) भेजा; कॊटु कैकेयि–उन क्रूर कैकेयी का; करुत्तु–भाव; इतुवो–यही था क्या। २६२०

हे गज-सम! मानार्ह कौसल्यादेवी जीवित नहीं रहेंगी! हे सत्यसंध!

आपसे छोटे लोग भी जीवन धारण नहीं करेंगे। बुराई सोचकर क्रूर कैकेयी ने जो हमें वन भिजवाया, उनका भाव यही था क्या ? । २६२०

तहैवा णहर्नी तविर्वा यॅन्तवुम्, वहैया दुतोंडर्न् दोंरुमान् मुदलाप्
पुहैया डियका डुपुहुन् दुडन्ते, पहैया डियवा परिवे दुमिलेन् 2621

तर्क–सुसंपन्न; वाळ् नकर्–प्रकाशमय नगर (अयोध्या) में; नी–तुम; तविर्वाय्–ठहरो; ॲंतवुम्–ऐसा (मुझसे आपके) कहने पर; नान् वर्कयानु–मैं उसमें न आकर; तोंटर्न्तु–आपका पीछा करके; पुकै आटिय काट्टु–धुएँ जिसमें उठते थे, उस जंगल में; पुकुन्तु–पहुँची, तब; उटन्ते–तुरन्त; ओरु मान् मुतल–(स्वर्ण-) मृग से लेकर; पर्क–शत्रुओं को; आटिय नेर्न्त–मारने की स्थिति जो आयी; आ–वह प्रकार भी कैसा; परिवु–प्रेम; एतुम् इलेन्–कुछ भी नहीं मुझमें। २६२१

"सर्वसमृद्ध अयोध्या में ही रह जाओ" —यह आपने मुझसे कहा। मैं उसको अनसुना करके आपके पीछे आग और धुएँ से भरे जंगल में आयी। तुरन्त आपको एक विलक्षण मृग से लेकर शत्रुओं को मारना जो पड़ा, वह भी कितना विचित्र हाल है ! मैं भी कितनी निर्दय हूँ ! । २६२१

इन्ऱ्री हिलैये लिऱविव् विडैमान्, अन्ऱ्री यॅन्तवुम् बरिवो डडियेन्
निन्ऱ्री वदुनित् तैनॅडुञ् जॅरुविऱ्, कोंन्ऱ्री वदोर् होंळ्है कुरित्तलिनो 2622

इन्ऱु–आज ही; इव् इटै–यहाँ; मान् ईकिलैयेल्–हिरन (पकड़कर) न दोगे तो; इऱवु–मृत्यु; ई–दो; ॲंतवुम्–कहते ही; परिवोटु–दुःख के साथ; निन्ऱीवदु–मेरा असहाय रह जाना; नॅटु चॅरुविल्–दीर्घ सागर में; कोंन्ऱु ईवतु–मार देने की; ओरु कोळ्कै कुरित्तलिनो–एक धारणा लेकर क्या। २६२२

"अभी आप मृग पकड़कर नहीं देंगे तो मेरा मरण निश्चित है ! अतः आप पकड़ दें।" मैंने यह प्रार्थना की ! दुःख के साथ मेरा अकेला रह जाना क्या लम्बे युद्ध में आपको मरवाने की योजना के कारण था ? । २६२२

मेवा विळैयोय् विदियार् विळैवाऱ्, पोदा नॅऱियॅम् मोंडुपो वुरुनाळ्
मूदा तवन्मुन् नमुडिन् दिडॅनुम्, मादा वुरैयिन् वळिनिन् ऱनैयो 2623

वितियार् विळैवाल्–प्रारब्ध के फल से; पोता नॅऱि–दुर्गम मार्ग में; ॲम्मोटु–हमारे साथ; पोतुरु नाळ्–जब जाने लगे तब; इळैयोय्–छोटे भैया; मेता–मेधावि; मूतान्तवन्–ज्येष्ठ; मुन्तम् मुटिन्तिटु–(के) पहले मर जाओ; ॲंनुम्–यह आज्ञा देनेवाली; माता उरैयिन् वळि–माँ के कहे मार्ग में; निन्ऱनैयो–रहे क्या (रहकर मरे क्या)। २६२३

प्रारब्धवश हो जब हम अगम जंगल के मार्ग पर जाने लगे, तभी लक्ष्मण से उनकी माँ ने कहा कि अपने बड़े भाई के पहले तुम मर जाओ (उन पर कुछ होने की नौबत आये तो)। हे लक्ष्मण ! क्या तुम अपनी माता की आज्ञा के पालन के मार्ग में रह गये ? । २६२३

पूवुन् दळिरुन् दोंहुपोंङ् गणंमेर्, कोविन् तुयिलेत् तविर्वाय् कोंडियार्
एविन् ऱलैवन् दविरुङ् गणेयिन्, मेवुम् कुळिर्मॅल् लणंमे विन्नैयो 2624

पूवुम् तळिरुम्–पुष्प और पत्र; तोंकु–जिस पर एकत्रित थे; पोंक्कु अणं मेल्–उस उत्साहवर्द्धक शय्या में; कोविन् तुयिलै–राजोचित नींद के; तविर्वाय्–हे त्यागी; कोंटियार्–क्रूरों (राक्षसों) के; एवित् तलै वन्त–धनु से निर्गत; इरु कणैयिन्–बड़े शरों से; मेवुम्–बने; कुळिर्मॅल् अणं–शीतल नरम शय्या (शर-तल्प); मेविनैयो–चाह ली क्या। २६२४

राजोचित पुष्प-पल्लव-संयुक्त व उल्लासमय शय्या में निद्रा को त्यागनेवाले! क्या आपने क्रूर राक्षसधनु-निर्गत बड़े शरों की बनी शय्या चाह ली? । २६२४

नॅय्यार् अळल्वेळ् विनिरप् पिनॅडुञ्, जॅय्यार् पुनना डुदिरुत् तुदियाल्
मॅय्या हियवा शहमुम् विदियुम्, बोय्या नवंन्मे तिऱोरुन् दुदलाल् 2625

नॅय् आर् अळल् वेळ्वि–घी डालकर अग्नि में किये जानेवाले यज्ञ; निरप्पि–सम्पन्न करके; नॅटु चॅय् आर्–बड़े खेतों से भरे; पुनल् नाट–जलसम्पन्न कोसल देश को; तिरुत्तुति–सुव्यवस्थित करते रह गये होते; ॲन् मेनि पोरुन्तुतलाल्–मेरे शरीर का स्पर्श किया, इसलिए; मॅय्याकिय वाचकमुम्–आपके सत्यवचन; वितियुम्–और अच्छे कर्मफल; पोय्यात–झूठे हो गये हैं। २६२५

सब ठीक रहा तो आप आग में घी देकर किये जानेवाले यागों को संपन्न करते हुए लम्बे खेतों से भरी अयोध्या में देश को सुव्यवस्थित रखते रह जाते! पर मेरे शरीर के स्पर्श से आपके सत्यवचन और अच्छा प्रारब्ध भी झूठा हो गया। २६२५

मळुवाळ् वरिनुम् बिळवा मननुण्, डळुवे ळिनियॅन् निडरा रिडयान्
विळुवे नवन्मे त्तियिन् मीदिलॅना, ॲळुवा ळैविलक् कियियम् बिनळाल् 2626

मळु–परशु; वाळ्–और तलवार; वरिनुम्–आ लगें तो भी; पिळवा–जो नहीं कटता; मनन् उण्टु–वैसा मेरा मन है; अळुवेन्–मैं रोती हूँ; इनि–अब; ॲन् इटर् आऱ्रिट–अपना दुःख दूर करने; अवन् मेनियिन् मीतिल्–उनके शरीर पर; विळुवेन्–गिरूँगी; ॲना–कहकर; ॲळुवाळै–जो उठीं उनको; विलक्कि–रोककर; इयम्पित्तळाल्–कहने लगी (त्रिजटा)। २६२६

परशु, तलवार आदि के प्रहार से भी अभेद्य है मेरा मन! रोती मैं उनके शरीर पर गिरकर मरूँगी और अपना दुःख मेटूँगी। यह कहकर देवी उठीं तो त्रिजटा ने उन्हें रोका और कहा। २६२६

माडुर वळैनवु निनुर वळैयॅयिर् ऱरक्कि मारप्
पाडुर वहऱ्रि नोक्किप् पावैयॆत् तळुविप् पऱ्रिक्

कूडित ळत्त नित्रु शॅवियिडैक् कुरुहिच् चॊन्नाळ्
तेडिय तवमे यत्त तिरिशडै मरुक्कन् दीर्प्पाळ् 2627

तेटिय तवमे अत्त–(पिछले जन्म में) सुरक्षित तप के फल के समान; तिरिचटै–त्रिजटा; मरुक्कम् तीर्प्पाळ्–भ्रम दूर करते हुए; माटुर् वळैन्तु नित्र–पास घेरे रहनेवाली; वळै ऎयिऱु अरक्किमारै–वक्रदन्तोरी राक्षसियों को; पाटु उऱ–दूर जाएँ, ऐसा; अकऱ्रि–हटाकर; पावैयै नोक्कि–प्रतिमा (-सी सीता) को देखकर; कुऱुकि–पास जाकर; पऱ्रि तऴुवि–पकड़कर आलिंगन कर; कूटितऴ् ऎन्त–समागत हो गयी हो ऐसा; नित्रु–खड़ी होकर; चॅवि इटै–कान में; चॊन्ताळ्–कहने लगी। २६२७

त्रिजटा, जो सीताजी के पूर्व-जन्म-सुकृत के फल के रूप में मिली थी, उनका दुःख दूर करने के इरादे से घेरी खड़ी रही राक्षसियों को अलग करके सीताजी के पास गयी। प्रतिमा-सी उन्हें आलिंगन करके 'शरीर एक हो गये हों' —ऐसा रहकर उनके कान में कहने लगी। २६२७

मायमान् विडुत्त वारुम् जनहनै वहुत्त वारुम्
पोयनाळ् नाह पाशम् बिणित्तदु पोन वारुम्
नीयमा निनैयाय् माळ निनैदियो नॅऱियि लाराल्
आयमा माय मोन्रु मञ्जलै यन्न मन्नाय् 2628

अन्तम् अन्नाय्–हंस-समाना; पोय नाळ्–बीते दिनों में; मायमान् विटुत्त आऱुम्–मायामृग जो भेजा था, वह हाल; चतकनै वकुत्त आऱुम्–जनक का निर्माण जो हुआ था, वह हाल; नाक पाचम् पिणित्ततु–जो नागपाश-बन्धन हुआ था, उसके; पोन आऱुम्–निरसन का हाल; अम्मा–माते; नी–तुम; निनैयाय्–नहीं सोचतीं; माळ निनैतियो–मरना सोचोगी; नॅऱियिलाराल्–कुमार्गी लोगों से; आय–रची; मा मायम्–बड़ी माया से; ऒन्ऱुम् अञ्चिलै–कुछ भी मत डरो। २६२८

हे हंसिनी-सी माते! पहले जो-जो हुए थे तुम जानती हो। मायामृग भेजा गया था। माया-जनक रचा गया था। नागपाश का बंधन और मुक्ति हुई थी। हे माते! तुम यह सब नहीं सोचकर मरने का विचार करती हो! कुमार्गी और दुष्ट राक्षसों की बड़ी से बड़ी माया से भी मत डरो। २६२८

कण्डन कनवुम् बॅऱ्ऱ निमित्तमु नित्वु कऱ्पुन्
दण्डह मुऱैयु नाळिल् चॅय्हैयुन् दरुमन् दाङ्गुम्
अण्डर्ना यहनुऱत् वीरत् तन्मैयु मयरेर् चॅङ्गट्
पुण्डरी हऱ्कु मुण्डो विरुदियिप् पुल्लर् हैयाल् 2629

कण्टन कनवुम्–देखे गये स्वप्न; पॅऱ्ऱ निमित्तमुम्–और जो मिले वे शकुन; नित्तु कऱ्पुम्–और तुम्हारा पातिव्रत्य; तण्टकम् उऱैयुम् नाळिल्–दंडक वनवास के समय में; चय्कैयुम्–जो हुई थीं, वे घटनाएँ; तरुमम् ताङ्कुम्–धर्म-संस्थापनार्थ

अवतरित; अण्टर् नायकन् तन्–अण्डनायक का; वीरम् तन्मैयुम्–वीर स्वभाव; अयरेल्–मत भूलो; पुण्टरीकम् इ चॅङ्कण्णर्कुम्–इन अरुण कमलाक्ष का भी; पुल्लर् कैयाल्–क्षुद्र लोगों के हाथों; इऱुति उण्टो–अन्त होगा क्या। २६२९

मेरे देखे स्वप्न, हुए शकुन, तुम्हारा पातिव्रत्य, दण्डक वन में घटी घटनाएँ, अंडनायक श्रीराम की वीरता —इन सबको भूलो मत। अरुण-पुण्डरीकाक्ष श्रीराम की मृत्यु क्षुद्रों के हाथों होगी भी क्या ? । २६२९

आऴिया नाक्कै ताक्कि यम्बॊन्ऱु मरुक्कि लामै
एऴैनी काण्डि यन्ऱे यिळैयवन् वदन मिन्नुम्
ऊऴिना ळिरवि यॆन्न वॊळिर्हिन्ऱु दुयिरुक् किन्नल्
वाऴियार् किल्लै वाळा मयङ्गलै मण्णिल् वन्दाय् 2630

एऴै–वराकी; आऴियान्–चक्रधारी श्रीराम के; आक्कै–श्रीशरीर में; ऑन्ऱु अम्पुम् ताक्कि–एक अस्त्र का भी लगकर; अऱुक्किलामै–न भेदना; नी काण्टि–तुम देखो; मण्णिल् वन्ताय्–भूमिजा; इळैयवन् वदनम्–छोटे (लक्ष्मण) का वदन; इन्नुम्–अब भी; ऊऴिनाळ् इरवि ऍन्न–युगान्त के सूर्य के समान; ऑळिर्किन्ऱतु–छवि बिखेरता है; वाऴियार्क्कु–आयुष्मान् के; उयिरुक्कु इन्नल् इल्लै–प्राणों की हानि नहीं; वाळा मयङ्कलै–बेकार मोह में मत पड़ो। २६३०

हे वराकी ! तुम साफ़ देखो— चक्रधारी श्रीराम के शरीर पर कोई भी शर लगकर नहीं भेद सका है ! हे भूमिजा ! छोटे लक्ष्मण का मुख देखो। उनका वदन युगांत के रवि के समान छविमय रहता है ! अतः साफ़ है कि उनकी कोई हानि नहीं हुई। तुम व्यर्थ भ्रमित नहीं हो। २६३०

वीय्न्दुळ निराम नॆन्नि नुलहमो रेऴु मेऴुन्
दीर्न्दरु मिरवि पिन्नुन् दिरियुमे यॆय्व मॆन्नाम्
वीय्न्दुरुम् विरिञ्जन् मुन्ना वुयिरॆलाम् वॆरुव लन्नै
आय्न्दवै युळ्ळ पोदे यवरुळ ररमु मुण्डाल् 2631

इरामन् वीय्न्तुळन्–श्रीराम मरे होते; ऍन्निन्–तो; उलकम् ओर् एऴुम् एऴुम्–चौदहों लोक; तीर्न्तु अऱुम्–मटियामेट हो जाते; पिन्नुम्–और भी; इरवि तिरियुमे–सूर्य संचार करता (क्या); तॆय्वम् ऍन्नाम्–ईश्वर क्या हो; विरिञ्चन् मुन्ना–विरंचि से लेकर; उयिर् ऎलाम्–सारे जीव; वीय्न्तुरुम्–नष्ट हो जाते; आय्न्तवै–कथित ये; उळ्ळ पोते–जब रहते हैं तब; अवर् उळर्–वे भी जीवित हैं; अऱमुम् उण्टु–धर्म भी चालू है; अन्नै–माते; वॆरुवल्–मत डरो। २६३१

-अगर श्रीराम मरे होते तो चौदहों भुवन मिट जाते ! उस हालत में रवि भी संचार करता क्या ? फिर दैव का क्या अर्थ होगा ? विरंचि से लेकर सारे जीव मिट जाते। उक्त सभी चीज़ें जब यथाप्रकार हैं, तो उसका अर्थ है कि वे जीवित ही हैं। धर्म भी स्थायी है। हे माते ! डरो मत। २६३१

मारुदिक् किल्लै यत्ऱे मङ्गैनिन् वरत्ति ऩाले
आरुयिर् नीङ्गल् निन्बाऱ् कऱ्पुक्कु मळिवुण् डामे
शोरिय दन्ऱि दौन्ऱुन् दिशैमुहत्त् पडैयिन् शॅय्है
पेरुमिप् पौऴ्दे तेव रॅण्णमुम् बिळैप्प दुण्डो 2632

मङ्कै–देवी; निन् वरत्तिऩाले–तुम्हारे वर से; मारुतिक्कु–मारुति के; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राण; नीङ्कल् इल्लै–छूटे नहीं; अत्ऱे–न; निन् पाल् कऱ्पुक्कुम्–(अगर वह मरता तो) तुम्हारे पातिव्रत्य पर भी; अळिवुणटाम्–संकट आ जायगा; इतु–ऐसा सोचना; ऑन्ऱुम् चीरियतु अन्ऱु–किसी विध श्लाघ्य नहीं; तिचैमुकत्तन् पटैयिन् चॅय्कै–(चतुर्मख के) ब्रह्मास्त्र का कार्य; इप्पौऴुते पेरुम्–अभी दूर हो जायगा; तेवर् ऍण्णमुम्–देवों का विचार; पिळैप्पतु उण्टो–व्यर्थ होगा क्या। २६३२

देवी ! आपके दिये गये वर से मारुति के प्यारे प्राण छूटे नहीं हैं ! नहीं न ! अगर वह मर जाता तो आपके पातिव्रत्य की भी हानि हो जायगी। यह विचार भी श्लाघ्य नहीं होगा ! ब्रह्मास्त्र के फलस्वरूप जो हुआ है, वह अभी दूर हो जाएगा। देवों का विचार भी झूठा हो सकता है क्या ? । २६३२

तेवरैक् कण्डेन् पैम्बौऩ् चॅङ्गरञ् जिरत्तिऱ् चेर्त्ति
मूवरैक् कणडा लॅन्न विरुवरै मुऱैयि ऩोक्कि
आवलिप् पॅय्दु हिन्ऱा रयर्त्तिल रञ्ज लन्नै
कूवलिऱ् पुक्कु वेलै कोट्पडु मॅन्ऱु कौऴ्ळेल् 2633

तेवरै कण्टेन्–देवों को देखती हूँ; मू वरै कण्टाल् ऍन्न–त्रिमूर्ति को देखते हों जैसे; इरुवरै मुऱैयिन् नोक्कि–इन दोनों को आदर के साथ देखकर; पचुम् पौन्–चोखे स्वर्ण के बने आभरणों के; चॅम् करम्–लाल हाथों को; चिरत्तिल् चेर्त्ति–सिर पर धारण करके; आवलिप्पु ऍय्तुकिन्ऱार्–सोत्साह हैं; अयर्त्तिलर्–संशय-पीड़ित नहीं; वेलै–समुद्र; कूवलिल् पुक्कु–कुएँ में प्रवेश करके; कोट्पटुम्–उसको अपने अंदर समा लेगा; ऍन्ऱु–ऐसा; कौऴ्ळेल्–मत समझो। २६३३

मैं देवों को देखती हूँ। वे इन दोनों को त्रिमूर्तिवत् देखते हैं। चोखे स्वर्णभूषणभूषित लाल हाथों को अपने सिर पर रखे बड़े उत्साह के साथ रहते हैं। वे कुछ भी क्षुब्ध नहीं दिखते। इसलिए, हे माते ! मत डरो। समुद्र कुएँ के अन्दर घुसकर उसमें समा जाएगा —ऐसा मत सोचो। २६३३

मङ्गल नोङ्गि ऩारै यारुयिर् वाङ्गि ऩारै
नङ्गैयिक् कडवुण् माऩन् दाङ्गुरु नवैयिऱ् ऱन्ऱाल्
इङ्गिवै यळवै याह विडर्क्कडल् कडत्ति यॅन्ऱाळ्
शङ्गैय ळाय तैयल् शिऱ्ऱिवुयिर् दरिप्प दाऩाळ् 2634

नङ्कै–देवी; मङ्कलम् नीङ्कितारै–सधवापन से रहित स्त्रियों; आरुयिर् वाङ्कितारै–और प्यारे प्राणों से हीन लोगों को; इ कटवुळ् मातम्–यह दिव्य यान; ताङ्कुरुम् नवैयिऱ्ऱु अन्ऱु–धारण करने का दोषयुक्त नहीं; इङ्कु इवै–अब ये; अळवै–प्रमाण हैं; आक–इसलिए; इटर् कटल् कटत्ति–दुःख-सागर तर लो; ऍन्ऱाळ्–कहा; चङ्कैयळ् आय तैयल्–शंकित जो रहीं वे देवी; चिऱितु उयिर् तरिप्पताळ्–थोड़ा प्राणधारण करने लगीं (सँभलीं)। २६३४

हे देवी ! यह दिव्य यान विधवाओं और मृतकों को धारण करने का अपराध नहीं करता। इन सब प्रमाणों के आधार पर दुःख-सागर तर जाओ। त्रिजटा ने यह सब कहा तो देवी सीता, जिसके मन में शंका थी, अब थोड़ा आश्वस्त हुई ! और प्राणधारण करने लगीं। २६३४

अन्नैनी युरैत्त दॊन्ऱु मऴिन्दिल दाद लाने
उन्नैये दॆय्व माक्कॊण् डित्तनै काल मुयन्देन्
इन्नमिव् विरवु मुऱ्ऱु मिरुक्किन्ऱे निऱत्त लॆन्बाल्
मुन्नमे मुडिन्द दन्ऱे यॆन्ऱनळ् मुळरि नीत्ताळ् 2635

मुळरि नीत्ताळ्–कमलवासत्यागिनी ने; अन्नै–माते; नी उरैत्तत्तु ऒन्ऱुम्–तुम्हारा कहना कुछ; अऴिन्तिलतु–वृथा नहीं गया है; आतलान्–इसलिए; उन्नैये तॆय्वमा कॊण्टु–तुमको ही देव मानकर; इत्तुणै कालम्–इतने दिन; उयन्तेन्–जीवित रही; इन्नम्–और भी; इव् इरवु मुऱ्ऱुम्–इस रात भर में; इरुक्किन्ऱेन्–जीवन रखूँगी; इऱत्तल्–मरना तो; ऍन्पाल्–मेरी ओर से; मुन्नमे मुटिन्ततु अन्ऱे–पहले ही हो गया न; ऍन्ऱनळ्–कहा। २६३५

कमलवासत्यागिनी सीता ने कहा कि हे माते ! तुम्हारा कहा कुछ भी व्यर्थ नहीं गया है ! इसीलिए मैं तुम्हें देव मानकर अब तक जीवन धारण कर रही हूँ। और भी आज रात तक जीवित रहूँगी। मरना तो, जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, पहले ही निश्चित हो गया है न ! । २६३५

नाणॆलान् दुऱन्दे निल्लि नन्मैयि नल्लार्क् केय्न्द
पूणॆलान् दुऱन्दे नॆन्ऱन् पॊरुशिलै मेहन् दन्नैक्
काणला मॆन्नु माशै तडुक्कवॆन् नावि कात्तेन्
एणिला वुडल नीक्क लॆळिदॆनक् कॆन्नवुञ् जॊन्नाळ् 2636

नाण् ऍलाम् तुऱन्तेन्–लज्जा सब छोड़ चुकी हूँ; इल्लिन्–गृहस्थी योग्य; नन्मैयिन्–श्रेष्ठ और; नल्लार्क्कु एय्न्त–उत्तम स्त्रियों के लिए आवश्यक; पूण् ऍलाम्–आभरण-मान्य गुण सभी को; तुऱन्तेन्–छोड़ चुकी; ऍन् तन्–मेरे; पॊरु चिलै–युद्ध धनुर्धर; मेकम् तन्नै–मेघ (-श्याम) को; काणलाम् ऍन्नुम् आचै–देखने की इच्छा ने; तडुक्क–रोका, इसलिए; ऍन् आवि कात्तेन्–अपने प्राणों का रक्षण कर लिया; एण् इला–गौरवहीन; उटलम् नीक्कल्–शरीर का त्याग; ऍनक्कु ऎळितु–मेरे लिए सुलभ है; ऍन्नवुम्–ऐसा भी; चॊन्नाळ्–कहा देवी ने। २६३६

देवी ने और भी कहा कि मैं लज्जा त्याग चुकी। और गृहिणी के लिए मंगल देनेवाले और उत्तम स्त्रियों के लिए आवश्यक आभरण-से गुणों से भी हाथ धो चुकी। तो भी अपने युद्धधनुर्धर मेघश्याम के दर्शन की लालसा के रोकने से मैं अपने प्राणों को सुरक्षित रख रही हूँ। नहीं तो क्षुद्र इस शरीर का त्याग कोई कठिन बात नहीं! । २६३६

तैयलै यिरामऩ् मेऩि तैत्तवेऱ् ऱडङ्ग णाळक्
कैहळिऱ् पऱ्ऱिक् कॊण्डार् विमाऩत्तैक् कडावु हिऩ्ऱार्
मॆय्युयि रुलहत् ताह विदियैयुम् वलित्तु विण्मेल्
पॊय्युडल् कॊण्डु शॆल्लु नमऩुडैत् तूदर् पोऩ्ऱार् 2637

इरामऩ् मेऩि तैत्त–श्रीराम के शरीर पर लगी; वेल् तटम् कणाळै–भाले-सी विशाल आँखों वाली; तैयल्–देवी को; कैकळिल् पऱ्ऱि कॊण्टार्–हाथों से पकड़ लेकर; विमाऩत्तै कटावुकिऩ्ऱार्–दिव्य यान को चलानेवाली राक्षसियाँ; मॆय् उयिर् उलकत्तु आक–सच्चे जीव को (जीवात्मा को) यहीं इस लोक में छोड़कर; वितियैयुम् वलित्तु–विधि के बल से; विण्मेल्–आकाशमार्ग में; पॊय् उटल् कॊण्टु–झूठा शरीर ले; चॆल्लुम्–जानेवाले; नमऩ् उटै–यम के; तूतर् पोऩ्ऱार्–दूत के समान रहीं। २६३७

राक्षसियाँ सीता को, जिसकी भाले-सी आँखों की दृष्टि श्रीराम के शरीर पर गड़ी थी, अपने हाथों से पकड़ लेकर दिव्य यान को चलाती गयीं। तब वे उन यमदूतों के समान थीं, जो विधि के बल से सच्चे जीव (-आत्मा) को भूमि पर छोड़कर आकाश-मार्ग से मिथ्या शरीर को ले जाते हैं। २६३७

23. मरुत्तुमलैप् पडलम् (ओषधि-पर्वत पटल)

पोयिऩ डैय लिप्पाऱ् पुरिहॆऩप् पुलवर् कोमाऩ्
एयिऩ करुम नोक्कि येहिय विलङ्गै वेन्दऩ्
मेयिऩ वुणवु कॊण्डु मीण्डवै युऱैयुळ् विट्ट
आयिऩ वाक्कित् ताऩ्वन् दमर्प्पॆरुङ् गळत्त ऩाऩाऩ् 2638

तैयल् पोयिऩळ्–देवी गयीं; इप्पाल्–इधर; पुरिक ऎऩ–(भोजन लाने का काम) करो यह; पुलवर् कोमाऩ्–देवपति के द्वारा; एयिऩ करुमम्–आज्ञापित कार्य को; नोक्कि–उद्देश्य करके; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंकाधिपति विभीषण; मेयिऩ उणवु कॊण्टु–उचित भोजन लेकर; मीण्टु–लौटा; अवै–उन्हें; उऱैयुळ् विट्ट आयिऩ आक्कि–पड़ावों के अन्दर रखा बनाकर; ताऩ् वन्तु–स्वयं आकर; अमर् पॆरुकळत्तऩ् आऩाऩ्–बड़े युद्धस्थल का बना (में पहुँचा।)। २६३८

सीतादेवी गयीं। उधर लंकाधिपति विभीषण, जो श्रीराम की आज्ञा

से भोजन लाने गया था, उचित भोजनसामग्रियाँ ले लौटा। फिर उन्हें डेरों के अन्दर रखकर युद्ध के क्षेत्र में आया। २६३८

नोक्किनान् कण्डान् पण्डिव् वुलहङ्गळ् पडैक्क नोऱ्ऱान्
वाक्किनाऱ् माण्डा रॆन्न वानर वीरर् मुऱ्ऱुम्
ताक्किना रॆल्लाम् बट्ट तन्मैये विडत्तैत् ताने
तेक्किना नॆन्न निन्ऱु तियङ्गिना नुणर्वु तीर्न्दान् 2639

पण्डु–पहले; इव् उलकङ्कळ्–इन लोकों को; पटैक्क–रचने के लिए; नोऱ्ऱान्–जिसने व्रत पाला था, उस ब्रह्मा के; वाक्किनाल्–शाप-वचन से; माण्टार् ऎन्न–जो मरते हैं, उनके समान; वानर वीरर्–वानर वीर; मुऱ्ऱुम् ताक्किनार्–पूर्ण रूप से आघात पाकर; ऎल्लाम् पट्ट तन्मैयै–सब मरे पड़े थे वहहाल; नोक्कितान्–देखा; कण्टान्–समझा; विटत्तै ताने तेक्कितान् ऎन्न–विष स्वयं पी लिया हो ऐसा; निन्ऱु–(भ्रान्त) खड़े होकर; उणर्वु तीर्न्तान्–मूच्छित हुआ। २६३९

उधर उसने देखा कि सभी वानर वीर ब्रह्मास्त्र से शाप पाकर मरे हुओं के समान पड़े रहते हैं। यह देखकर अधिक विष को अकेला खा चुका जैसे भ्रमित खड़ा रहा; फिर मूर्च्छित हो गया। २६३९

विळैन्दवा ऱुणर्न्दि लादा नेङ्गिनान् वॆदुम्बि नान्मेल्
उळैन्दुळैन् दुयिर्त्ता नावि युण्डिलै यॆन्न वोय्न्दान्
वळैन्दपेय्क् कणमु नायु नरिहळु मिरिय वन्दान्
इळङ्गिळै योडुम् जायन्द विरामनै यॆय्दिक् कण्डान् 2640

विळैन्त आऱु–जो हुआ है, उसका प्रकार; उणर्न्तिलातान्–जो नहीं जानता था, वह विभीषण; एङ्कितान्–तरसकर; वॆतुम्पितान्–तप्त हुआ; मेल्–और; उळैन्तु–व्यग्र होकर; उळैन्तु–लटकर; उयिर्त्तान्–निःश्वास छोड़ा; आवि उण्टु इलै ऎन्न–प्राण हैं या नहीं यह संशय हो, ऐसा; ओय्न्तान्–निर्जीव हुआ; वळैन्त पेय् कणमुम्–भूत-गण जो घेरे रहे; नायुम् नरिकळुम्–और कुत्ते और सियार; इरिय–अस्त-व्यस्त भागें ऐसा; वन्तान्–आया; इळ किळैयोटुम्–लक्ष्मण के साथ; चाय्न्तु–गिरे पड़े रहे; इरामनै ऎय्ति–श्रीराम के पास पहुँचकर; कण्टान्–देखा। २६४०

उसे मालूम नहीं था कि क्या हुआ? वह तरसा, तप्त हुआ और क्षुब्ध हुआ। उसने लम्बी आहें भरीं। ऐसी स्थिति में आया कि यह संशय हो कि वह जीवित है या मरा हुआ। वह घेरे रहनेवाले भूतगणों, कुत्तों, और सियारों को अस्त-व्यस्त भागने देते हुए वहाँ आया, जहाँ अपने छोटे भाई के साथ श्रीराम पड़े थे। वहाँ आकर उसने उनको देखा। २६४०

ऎन्बॆन्ब दियाक्कै यॆन्ब दुयिरॆन्ब दिवैह ळॆल्लाम्
वित्बॆन्ब वल्ल वेनुन् दम्मुडै निलैयिऱ् पेरा

मुन्बॅन्ब वुळदॅन् ड्रालु मुळ्वदुन् दॅरिन्द वाऱ्ऱाल्
अन्बॅन्ब दोन्ऱिन् ड्रन्मै यमररु मऱिन्द दन्ऱाल् 2641

ॲन्पु ॲन्पतु–हड्डियाँ कहना; याक्कै ॲन्पतु–संघात (शरीर) कहना; उयिर् ॲन्पतु–जीव (या प्राण) कहना; इवैकळ् ॲल्लाम्–ये सब; पिन्पु ॲन्प–बाद के कहते हैं; अल्ल–नहीं; ऎनुम्–तो भी; तम्मुटै निलैयिल् पेरा–अपनी स्थिति से अविचलित; मुळ्वतुम् तॆरिन्त आऱ्ऱाल्–पूर्ण रूप से विश्लेषण करने पर; अन्पु ॲन्पतु–प्रेम नाम के; ऒन्ऱिऩ् तन्मै–एक तत्त्व का स्वभाव; अमररुम् अऱिन्ततु अन्ऱु–देव भी जानते हों ऐसा एक नहीं। २६४१

शरीर, प्राण, हड्डियाँ आदि प्रेम के पीछे की नहीं हैं। यानी उनके बाद ही प्रेम की गणना है। तो भी उस अटल प्रेम का रहस्य पूर्ण रूप से विवेचना करने पर, देवों को भी मालूम नहीं। २६४१

आयिन् मिवरुक् किल्लै यळिवॆन् ऩदना लावि
पोयिन दिल्लै वायाऱ् पुलम्बिलन् पॊरुमिप् पॊङ्गित्
तीयिन् मॅरियु नॆञ्जिन् वॅरुवलन् ड्रॆरिय नोक्कि
नायहन् मेनिक् किल्लै वडुवॆन नडुक्कन् दोऱ्ऩदान् 2642

आयितुम्–तो भी; इवरुक्कु अळिवु इल्लै–इनका अन्त नहीं होगा; ॲनुम्–ऐसे; अततनाल्–उस विचार से; आवि पोयितु इल्लै–प्राण छूटे नहीं; वायाल् पुलम्पिलन्–मुख खोलकर विलाप न करके; पॊरुमि पॊङ्कि–दुःख से भरकर; तीयिनुम् ॲरियुम्–आग से भी अधिक जलनेवाले; नॆञ्चिन्–मन से; वॆरुवलन्–निडरता से; तॆरिय नोक्कि–सोचकर, देखकर; नायकन् मेनिक्कु–नायक के शरीर पर; वटु इल्लै–व्रण नहीं; ॲन–सोचकर; नटुक्कम् तीर्न्तान्–(भय-) विकंपित होना छोड़ दिया। २६४२

वैसे प्रेमी विभीषण ने विचार किया। इन श्रीराम का अन्त नहीं हो सकता। अतः उनके प्राण छूटे नहीं। उसने मुख खोलकर विलाप करता हुआ, अग्नि से भी अधिक तपते मन के साथ निडर होकर देखा कि श्रीराम के शरीर पर कोई व्रण नहीं। इसलिए उसने भयकंपन छोड़ दिया। २६४२

अन्दणन् पडैयाल् वन्द दॅन्बदु माऱ्ऱल् शान्ऱ
इन्दिर शित्ते यॆय्दा नॆन्बदु मिळ वऱ्काह
नोन्दन निराम नॆन्नु मुण्मैयु नोय्दु नोक्किच्
चिन्दैयि नॆण्णि यॆण्णित् तीर्वदो रुबायन् दॆर्वान् 2643

अन्तणन् पटैयाल्–ब्राह्मण-श्रेष्ठ (ब्रह्मा) के अस्त्र से; वन्ततु–आया; ॲन्पतुम्–यह बात और; आऱ्ऱल् चान्ऱ–बलसंयुक्त; इन्तिर चित्ते ॲय्तान्–और इन्द्रजित् ने ही चलाया; ॲन्पतुम्–यह बात; इळवऱ्काक–छोटे भाई के लिए; इरामन्–श्रीराम; नोन्तनन्–दुःखी हुए; ॲन्नुम् उण्मैयुम्–यह तथ्य भी; नोय्तु नोक्कि–

शीघ्र जानकर; चिन्तैयित् ऍण्णि–मन में विवेचना करके; ऍण्णि–विवेचना करके; तोर्वतु ओर् उपायम्–इस संकट से मुक्त होने का एक उपाय; तेर्वान्–सोचने लगा। २६४३

उसने अनुमान कर लिया कि यह ब्रह्मास्त्र की करतूत है। उसे बलवान इन्द्रजित् ने चलाया। श्रीराम लक्ष्मण का हाल देखकर दुःख से बेसुध हो गये हैं। उसने बहुत सोचा कि इस स्थिति के निवारण का मार्ग क्या हो ? । २६४३

उळ्ळुरु तुन्ब मून्ऱ वुऱ्ऱ नुऱक्क मन्ऱो
तॆळ्ळिदि लुणर्न्द पिन्नैच् चिन्दनै तॆरिव दन्ऱे
वळ्ळलो तम्बि माय वाऴ्हिलन् माय वाऴ्क्कैक्
कळ्वरो वॆन्ऱा रॆन्ना मऴैयॆनक् कलुऴुङ् गण्णान् 2644

उळ् उऱु तुन्पम्–अन्दर का दुःख; ऊन्ऱ–गड़ा (गम्भीर) रहा इसलिए; उऱक्कम् उऱ्ऱनन् अन्ऱो–मूर्च्छित हो गये न; तॆळ्ळितिन् उणर्न्त पिन्नै–साफ़ समझने के बाद; चिन्तनै तॆरिवतु–उनका विचार जान लेना है; वळ्ळलो–प्रभु तो; तम्पि माय–छोटे भाई के मरने पर; वाऴ्किलन्–नहीं मरेगा; माय वाऴ्क्कै–वंचकजीवी; कळ्वरो–चोर; वॆन्ऱार्–विजयी हो जाएँगे;. ऍन्ना–ऐसा सोचकर; मऴै ऍन–बारिश के समान; कलुऴुम् कण्णान्–रोनेवाली आँखों का बनकर (विभीषण)। २६४४

"भीतरी दुःख के गंभीर रूप से कष्ट देने से श्रीराम मूर्च्छित हो गये न ? निश्चित रूप से जानने के बाद उनका मन जान लेना होगा। क्योंकि प्रभु, भाई मर गये तो जीवन धारण नहीं करेंगे। तब मायाजीवी वंचकों की जीत होगी।" यह सोचकर वह बारिश के समान बहनेवाले अश्रु की आँखों का हो गया। २६४४

पाशम्बो यिऱ्ऱाऱ् पोलप् पदुमत्तोन् पडैयु मिन्ऱे
नाशम्बो यॆय्दु नम्बि तम्बिक्कु नाश मिल्लै
वीशुम्बोर्क् कळत्तु वीऴ्न्द शेनैयु मीळुम् वॆय्य
नीशन्बोर् वॆल्व दुण्डो वॆन्ऱह नितैन्दु निन्ऱान् 2645

पाचम् पोय् इऱ्ऱाल् पोल–पाश टूटा जैसे; पतुमत्तोन् पटैयुम्–कमलासन का अस्त्र भी; इन्ऱे नाचम् पोय् ऍय्तुम्–आज ही नाश हो जायगा; नम्पि तम्पिक्कुम्–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के भाई का; नाचम् इल्लै–नाश नहीं होगा; वीचुम्–जहाँ हथियार चलाये जाते हैं उस; पोर् कळत्तु–युद्धस्थल में; वीऴ्न्त चेनैयुम्–मरी सेना भी; मीळुम्–जीवित हो जाएगी; वॆय्य नीचन्–क्रूर नीच रावण भी; पोर् वॆल्वतु उण्टो क्या–युद्ध जीते क्या; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; अकम्–मन में; नितैन्तु निन्ऱान्–सोचते हुए खड़ा रहा। २६४५

पाश का बन्धन जैसे टूटा था वैसे ही ब्रह्मास्त्र (का असर) भी

आज नाश को प्राप्त हो जायगा। जगन्नाथ के भाई की भी कोई हानि नहीं होगी। हथियार जिसमें खूब चलाये जाते हैं, उस युद्ध में मरे वानर वीर भी जी उठेंगे। क्या क्रूर व नीच रावण को जीत मिल सकेगी ? ऐसा सोचता हुआ वह खड़ा रहा। २६४५

उणर्वदऩ् मुऩ्ऩ मिऩ्ऩे मुऱ्ऱुळि युदवऱ् कॊऩ्ऩ
तुणैवर्हळ् इऩ्ज लिल्ला रुळरॆनिऱ् ऱुरुवित् तेडिक्
कॊणर्हुवॆऩ् विरैवि ऩॆऩ्ऩाक् कॊळ्ळियॊऩ् ऱङ्गै कॊण्डाऩ्
पुणरियिऩ् ऱुदिर वॆळ्ळत् तॊरुदऩि विरैविऱ् पोऩाऩ् 2646

उणर्वतऩ् मुऩ्ऩम्–(श्रीराम के) होश में आने के पहले; इऩ्ऩे–अभी; उऱ्ऱुऴि उतवऱ्कु ऒऩ्ऩ–संकट के समय में सहायता देने योग्य; तुणैवर्कळ्–साथी; तुञ्चल् इल्लार्–कोई जीवित; उळर् ऎऩिल्–हो तो; तुरुवि तेटि–टटोलकर-ढूँढ़कर; विरैविल् कॊणर्कुवॆऩ्–जल्दी लाऊँगा; ऎऩ्ऩा–कहकर; कॊळ्ळि ऒऩ्ऱु–आधी जली लकड़ी एक; अम् कै कॊण्टाऩ्–सुन्दर हाथ में लिया; उतिरम् पुणरियिऩ् वॆळ्ळत्तु–रक्त-सागर के प्रवाह में; ऒरु तऩि–अकेला; विरैविल् पोऩाऩ्–जल्दी-जल्दी गया। २६४६

"श्रीराम को मूर्च्छा से जागने के पूर्व मैं जाकर ढूंढूँगा यह देखने के लिए कि आफ़त के समय में सहायता देनेवाले कोई साथी जीवित हैं। अगर मिलें तो ले आऊँगा।" यह सोचकर वह एक लूक (अधजली लकड़ी हाथ में लेकर रक्त-प्रवाह के मध्य अकेले सवेग गया। २६४६

वाय्मडित् तिरण्डु कैयु मुरुक्कित्तऩ् ऩयिरच् चॆङ्गण्
तीयुहक् कऩहक् कुऩ्ऱिऱ् ऱिरण्डदोण् मऴैयैत् तीण्ड
आयिर कोडि याऩैप् पॆरुम्बिणत् तमळि मेलाऩ्
काय्शिऩत् तऩुम ऩॆऩ्ऩुङ् गडल्हिडन् दाऩैक् कण्डाऩ् 2647

वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; इरण्टु कैयुम् मुरुक्कि–दोनों हाथों को ऐंठकर; तऩ् वयिरम् चॆं कण्–अपनी वैरयुक्त लाल आँखों से; ती उक–अंगारे छोड़ते हुए; कऩकम् कुऩ्ऱिल्–कनकगिरि (मेरु) सम; तिरण्ट तोळ् मऴैयै तीण्ट–पुष्ट कन्धों के मेघों का स्पर्श करते; आयिरम् कोटि याऩै–हज़ार करोड़ हाथियों की; पॆरुम् पिणत्तु–अनेक लाशों की; अमळि मेलाऩ्–शय्या पर पड़े रहनेवाले; काय् चिऩत्तु अनुमऩ् ऎऩ्ऩुम्–जलानेवाले क्रोध से अभिभूत हनुमान जो; कटल् किटन्ताऩै–सागर-सम पड़ा था उसे; कण्टाऩ्–देखा। २६४७

उसने हनुमान को देखा। हनुमान के अधर मुड़े हुए थे, हाथ ऐंठे थे। वैरप्रदर्शक लाल आँखों से आग-सी निकल रही थी। कनकपर्वत (मेरु) सम कंधे आकाश को छू रहे थे। हज़ार करोड़ हाथियों की लाशों पर वह क्रुद्ध पड़ा रहा। समुद्र के समान पड़े रहे उसको विभीषण ने देखा। २६४७

कण्डुतन् कण्ग ळ्डु मळैयॆतक् कलुळि काल
उण्डुयि रॆन्ब दुन्नि युडऱ्कणं यॊन्ऱॊन् ऱाह
विण्डनीर्प् पुण्णि निन्ऱु मॆल्लॆन विरहिन् वाङ्गिक्
कॊण्डनीर् कॊणर्न्दु कोल मुहत्तिनैक् कुळिरच् चॆय्दान् 2648

कण्टु–देखकर; तन् कण्कळ् ऊटु–अपनी आँखों से होकर; मळै ॲत–बारिश के समान; कलुळि काल–अश्रु निकालते हुए; उयिर् उण्टु–जीव है; ॲन्पतु उन्नि–यह अनुमान लगाकर; विण्ट पुण्णिन्–खुले व्रण के; नीर् निन्ऱु–रक्त से; मॆल्ल–धीरे-धीरे; उटल् कणै–शरीर पर लगे बाणों को; ऑन्ऱु ऑन्ऱु आक–एक-एक करके; विरकिन् वाङ्कि–कुशलता से निकालकर; कॊण्टल् नीर्–मेघ का जल; कॊणर्न्तु–लाकर; कोल मुकत्तिनै–मनोरम मुख को; कुळिर चॆय्तान्–शीतल बनाया। २६४८

विभीषण ने हनुमान को देखा तो उसकी आँखों से अश्रु-वर्षा-सी होने लगी। उसने अनुमान कर लिया कि वह जीवित है। उसने रक्तमय व्रणों में उसके शरीर पर लगे अस्त्रों को धीरे-धीरे दक्षता के साथ एक-एक करके निकाला। फिर मेघ से जल ले आकर उसके मनोरम मुख को शीतल किया। २६४८

उयिर्प्पुमुन् तुदित्त पिन्न रुरोमङ्गळ् शिलिर्प्प वूडु
वियर्प्पुळ दाहक् कण्गळ् विळित्तन मेनि मॆल्लप्
पॆयर्त्तुवाय् पुनल्वन् दूऱ विक्कलुम् बिऱन्द दाह
अयर्त्तिल निराम नामम् वाळ्त्तिन नमर रार्त्तार् 2649

उयिर्प्पु–श्वास; मुन् उतित्त पिन्नर्–पहले निकला उसके बाद; उरोमङ्कळ् चिलिर्प्प–रोम पुलकित हुए; ऊटु–शरीर पर; वियर्प्पु उळतु आक–पसीना निकला तो; कण्कळ् विळित्तन–आँखें खुलीं; मेनि–शरीर को; मॆल्ल पॆयर्त्तु–धीरे-धीरे मुद्रा बदलकर; वाय्–मुख में; पुनल् वन्तु ऊऱ–जल के स्रवते; विक्कलुम् पिऱन्ततु आक–हिचकी बँधी; अयर्त्तिलन्–प्रज्ञा न खोकर; इरामनामम् वाळ्त्तिनन्–श्रीराम के नाम की स्तुति की (हनुमान ने); अमरर्–देवगण; आर्त्तार्–चिल्ला उठे। २६४९

हनुमान ने साँसें छोड़ना आरंभ किया। फिर रोम पुलकित हुए। शरीर स्वेदित हुआ। आँखें खुलीं। तब उसने धीरे-धीरे अपने शरीर की मुद्रा को बदला। मुख में जल स्रवने लगा। हिचकी बँधी। उस स्थिति में भी अप्रमत्त रूप से उसने श्रीराम-नाम की दुहाई दी। देवों ने यह सुनकर आनंद-आरव किया। २६४९

अळुहैयो डुवहै युऱ्ऱ वीडण नार्वङ् गूरत्
तळुविन नवनैत् तानु मन्नवॊडु तळुवित् तक्कोय्
वळुविल नन्ऱॆ वळ्ळ लॆन्ऱनन् वलिय नॆन्ऱान्
तॊळुदन तुलह मून्ऱुन् नुलैयिन्मेऱ् कॊळ्ळन् दूयान् 2650

अळुकैयोटु–रुलाई के साथ; उवकै उऱ्ऱ–आनंदित जो हुआ उस; वीटणन्–विभीषण ने; आर्वम् कूर–प्रेम के बढ़ने से; अवनै–उसे; तऴुवितन्–आलिंगन में लिया; तानुम्–हनुमान ने भी; अन्पोटु तऴुवि–प्रेम के साथ आलिंगन करके; तक्कोय्–सुयोग्य; वळ्ळल्–प्रभु; वऴुविलन् अन्ऱे–आँच-रहित हैं न; ऍन्ऱनन्–पूछा; वलियन्–कुशल से हैं; ऍन्ऱान्–कहा; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोक; तलैयिल् मेल् कॊळ्ळुम्–जिसको सिर पर धारण करते हैं; तूयान्–और जो पवित्र है, उस हनुमान ने; तॊऴुतनन्–नमस्कार किया। २६५०

एक साथ रोते-हँसते विभीषण का प्रेम बढ़ आया। उसने हनुमान का आलिंगन कर लिया। हनुमान ने भी उसे गले से लगा लिया। पूछा कि सुयोग्य! प्रभु श्रीराम पर कोई आँच तो नहीं आयी न? विभीषण ने उत्तर दिया कि हाँ "स्वस्थ हैं"। यह सुनकर त्रिलोकवंद्य हनुमान ने श्रीराम को वहीं से नमन किया। २६५०

अन्बुदन् ऱम्बि मेलात् तऱिविनै मयक्क वैयन्
तुन्बोडुन् दुयिल नाता नुणर्विनित् तॊडर्न्द पिन्ने
ऍन्बुहुन् दॆय्दु मॆन्ब दऱिहिलॆ मॆन्ऱ लोडुन्
दन्बॆरुन् दन्मैक् कॊत्त शाम्बनॆत् तलैय नॆन्ऱान् 2651

अन्पु तन् तम्पि मेल् आतलु–प्यार अपने भाई पर रखने से; अऱिविनै मयक्क–सुधि को भ्रष्ट करने से; ऐयन्–प्रभु; तुन्पुटन्–दुःख के साथ; तुयिलन् आतान्–मूच्छित हैं; इति–अब; उणर्वु तॊटर्न्त पिन्ने–होश के आने के बाद; ऍन् पुकुन्तु ऍय्तुम्–क्या आ मिलेगा; ऍन्पतु अऱिकिलॆम्–यह नहीं जानते; ऍन्ऱलोटुम्–यह (विभीषण के) कहने पर; तन् पॆरु तन्मैक्कु ऒत्त–अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण स्वोपम; चाम्पन्–जाम्बवान; ऍ तलैयन्–कहाँ हैं; ऍन्ऱान्–पूछा मारुति ने। २६५१

विभीषण ने कहा— भाई पर प्रेम के आधिक्य से श्रीराम की बुद्धि भ्रमित हो गयी और वे दुःख के साथ मूच्छित हैं। सुध आने के बाद क्या होगा? —नहीं जानते! हनुमान ने पूछा कि स्वोपम गुणश्रेष्ठ जाम्बवान कहाँ हैं? । २६५१

अऱिन्दिल नवनै याण्डुङ् गण्डिल नावि याक्कै
पिऱिन्दुळ दिलदॆन् ऱॊन्ऱुन् दॆरिन्दिलॆन् पॆयर्न्दे नॆन्ऱु
शॆऱिन्दतार् निरुदर् वेन्द नुरैशॆयक् कालिन् शॆम्मल्
इऱन्दिऱ मवनुक् किन्ऱा नाडुदु मेहि यॆन्ऱान् 2652

अवनै अऱिन्तिलन्–उसके बारे में नहीं जानता; याण्टुम् कण्टिलन्–कहीं नहीं देखा; याक्कै आवि पिरिन्तुळतु–(क्या) शरीर प्राण छोड़ चुका है या; इलतु–नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; ऒन्ऱुम् तॆरिन्तिलॆन्–नहीं जानता; पॆयर्न्तेन्–उसी स्थिति में आ गया हूँ; ऍन्ऱु–ऐसा; चॆऱिन्त तार्–घनी मालाधारी; निरुतर् वेन्तन्–राक्षसराज के; उरै चॆय–उत्तर कहने पर; कालिन् चॆम्मल्–वायुनंदन ने; अवनुक्कु

इरुम् तिरम् इन्ऱु—उसका मरना नहीं है; एकि—जाकर; नाट्टुतुम्—ढूँढ़ेंगे; ॲन्ऱान्—कहा। २६५२

उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। शरीर से प्राण छूट गये या नहीं —मैं नहीं जानता। उसी स्थिति में मैं इधर आया। घनी माला-धारी राक्षसराज के यह कहने पर वायुकुमार ने कहा कि वे तो मरनेवाले नहीं। चलो जाकर ढूँढ़ लें। २६५२

अन्नवन् ऱन्नैक् कण्डा लाणैये यरक्करक् कॅल्लाम्
मन्नव नम्मै मीट्टु वाऴ्विक्कु मुबायम् वल्लन्
ॲन्नलु मुय्न्दो मैय वेहुदुम् विरैवि नॅन्ना
मिन्निऱ वॊळियिऱ् चॆन्ऱार् शाम्बनै विरैविऱ् चेर्न्दार् 2653

अरक्करक्कु ॲल्लाम् मन्नव—सर्वराक्षसपति; अन्नवन् तन्नै—उसको; कण्टाल्—देख लें तो; नम्मै—हमें; मीट्टुम्—पुनः; वाऴ्विक्कुम् उपायम्—जिलाने का उपाय; वल्लन्—कह सकेंगे; आणैये—यह ध्रुव है; ॲन्नलुम्—कहने पर; ऐय—प्रभु; उय्न्तोम्—हम बच गये; विरैविन् एकुतुम्—जल्दी जायँ; ॲन्ना—(विभीषण के) यह कहने पर; मिन् निऱ ऑळियिल्—बिजली के श्वेत प्रकाश में; चाम्पनै विरैविल् चेर्न्तार्—जल्दी जाम्बवान के पास गये। २६५३

सर्वराक्षसपति! उसको पा लेंगे तो वे बचने का उपाय बता सकेंगे। यह निश्चित है! —हनुमान ने ऐसा कहा। "तब तो हम बचे। चलो जल्दी चलें।" यह कहकर विभीषण चलने लगा। दोनों बिजली के प्रकाश का सहारा लेकर गये और जाम्बवान के पास पहुँच गये। २६५३

ॲरिहिन्ऱ मूप्पि नालु मेवुण्ड नोवि नालुम्
अरिक्किन्ऱ तुन्बत् तालु मारुयिर्प् पडङ्गि यॊन्ऱुन्
दॆरिहिन्ऱ दिल्ला मम्मर्च् चिन्दैय नॆन्निनुम् वीरर्
वरुहिन्ऱ शुवट्टै योर्न्दान् शॆविहळाल् वयिरत् तोळान् 2654

ॲरिकिन्ऱ—संतापक; मूप्पिन्नालुम्—बुढ़ापे से और; एवुण्ट नोविन्नालुम्—शर के लगने से होनेवाली वेदना से; अरिक्किन्ऱ—जर्जर करनेवाले; तुन्पत्तालुम्—मानसिक चिन्ता से; अरुमै उयिर्प्पु अटङ्कि—अच्छे श्वास के बन्द होते; ऑन्ऱुम् तॆरिकिन्ऱतु इल्ला—कुछ न जान सकनेवाले; मम्मर् चिन्तैयन् ॲनिनुम्—अस्पष्ट मन वाला रहा तो भी; वयिरम् तोळान्—वज्र-सम कन्धों वाले ने; वरुकिन्ऱ सुवट्टै—उनके आने की आहट; चॆविकळाल्—कानों से; ओर्न्तान्—सुन ली। २६५४

जाम्बवान संतापक बुढ़ापा, शरदत्त पीड़ा, अंदर ही अंदर छेदनेवाला दुःख —इनके प्रभाव से क्षीणश्वास रहे और उनका मन कुछ जानने की दशा में नहीं था और अस्पष्ट था। तो भी उसने लोगों के आने की आहट सुन ली। २६५४

अरक्कतो वॆंत्तै याळु मणणलो वतुमन् रातो
इरक्कमुर् उरुळ वन्द तेवरो मुनिव रेयो
वरक्कड वार्ह ळॆल्लिल् माट्रलर् मलैन्दु पोतार्
पुरक्कवॢळ् ळारे यॆन्न निनैन्दनन् पॊरुम तीर्न्दान् 2655

अरक्कतो–विभीषण क्या; ऎंत्तै आळुन्–मेरे शासक; अणणलो–प्रभु क्या; अनुमन् तातो–या हनुमान ही; इरक्कम् उरुकु–दया करके; अरुळ वन्त–उपकार करने के लिए आगत; तेवरो–देव लोग हैं; मुनिवरेयो–या मुनि ही; ऎल्लिल्–निशा में; माट्रलर्–शत्रु; मलैन्तु पोतार्–विजय पाकर लौट गये; पुरक्क उळ्ळारे–सहायता करनेवाले ही; वर कटवार्कळ्–आ गये होंगे; ऎंत्त–ऐसा; निनैन्ततन्–सोचकर; पॊरुमल् तीर्न्तान्–दुःख से मुक्त हुआ। २६५५

उसने सोचा— आनेवाले कौन ? राक्षस विभीषण ? या मेरे शासक प्रभु श्रीराम ? या मारुति ही आ रहा है क्या ? या मुझ पर दया करके उपकारार्थ देव आ रहे हैं ? या मुनि लोग ? रात को शत्रु लड़ाई में विजय पाकर लौट जा चुके थे। अतः अब आनेवाले हमारे रक्षक ही होंगे। तब उसका मन आश्वस्त हुआ। २६५५

वन्दय निन्रु कुन्रिन् वार्न्तुवी ळरुवि मानच्
चिन्दिय कण्णि नीर रेङ्गुवार् तम्मैत् तेट्रि
अन्दमिल् कुणत्ति रियावि रणुहिलि रॆन्रा नैय
उयन्दत मुयन्दो मॆन्र वीडण नुरैयैक् केट्टान् 2656

वन्तु–आकर; अयल् निन्रु–पास खड़े होकर; कुन्रिल्–पर्वत से; वार्न्तु–वीऴ्–गिरनेवाली; अरुवि मान–सरिता के समान; चिन्तिय–बहनेवाले; कण्णिन् नीरर्–अश्रु वाले; एङ्कुवार् तम्मै–व्याकुल रहनेवाले उन्हें; तेट्रि–ढाढ़स दिलाकर; अन्तम् इल् कुणत्तिर्–अनंतगुणी; अणुकिनिर् याविर्–पास आये कौन हो; ऎन्रान्–पूछा (जाम्बवान ने); ऐया–बाबा; उयन्ततम्–जी गये; उयन्तोम्–सकुशल हो गये; ऎन्र–ऐसा जिसने कहा उस; वीटणन् उरैयै–विभीषण के वचन को; केट्टान्–सुना। २६५६

वे उसके पास आये। उनकी आँखों से पर्वत से झरनेवाली सरिता के समान अश्रुधारा बह रही थी। व्याकुल उन्हें आश्वस्त करके जाम्बवान ने पूछा कि हे अनन्त सुगुणी ! पास आये हुए कौन हो ? विभीषण आनन्द से चिल्लाया कि हम जी गये; जी गये। जाम्बवान ने वह सुना और स्वर पहचाना। २६५६

मट्रय निन्रा नियाव नॆन्नमा रुदियुम् वाऴि
कॊट्रव वनुम निन्रेन् रॊळुदन नॆन्रु कूर
इट्रिल मैय वॆल्लो मॆळुन्दन मॆळुन्दो मॆन्ना
उट्रपे रुवहै याले योङ्गिना तूट्र मुट्रान् 2657

मऱ्ऱु–फिर; अयल् निऱ्ऱान्–पास खड़ा है; यावन्–कौन; ऍन्ऩ–पूछने पर; मारुतियुम्–हनुमान ने भी; कोऱ्ऱव–विजयी वीर; वाऴि–जय हो; अनुमन् निन्ऱेन्–हनुमान खड़ा हूँ; तॉऴुतनन्–प्रणाम करता हूँ; ऍन्ऱु कूऱ–ऐसा कहा तो; इऱ्ऱिलम्–नष्ट नहीं हुए; ऐय–तात; ऍल्लोम ऍऴुन्ततम्–हम सब उठ गये; ऍऴुन्तोम्–उठ गये; ऍन्ऩा–कहकर; उऱ्ऱ पेर् उवकैयाले–हुए बहुत आनन्द से; ओङ्कितान्–फूल गया। २६५७

फिर जाम्बवान ने पूछा— पास खड़ा कौन है ? मारुति ने उत्तर दिया कि विजयी वीर ! जय हो। मैं हनुमान खड़ा हूँ ! नमस्कार करता हूँ। प्रतापी जाम्बवान ने उत्साह के साथ कहा कि अब हम मरेंगे नहीं। सब जीवित हो जाएँगे। तात ! हम सब जी जायँगे। वह फूला नहीं समाया। २६५७

विरिञ्जन् वॅम् बडैयॅन्ऱालुम् वेदत्ति लुट्पङ् गूरुम्
अरिन्दमन् ऱऩ्ऩै यॊन्ऱु माऱ्ऱल वॅन्ऩ माऱ्ऱल्
तॅरिन्दनन् मुन्ऩे यन्ऩान् शॅय्ददॆन् ऱॅरित्ति यॆन्ऱान्
पॆरुन्दहै तुन्ब वॆळ्ळत् तुयिलुळान् पॆरुम वॆन्ऱान् 2658

विरिञ्चन् वॅम्पडै ऍन्ऱालुम्–भयानक ब्रह्मास्त्र ही क्यों न हो; वेतत्तिन् नुट्पम् कूरुम्–वेदों के सूक्ष्म अर्थतत्त्व; अरिन्तमन् तन्ऩै–अरिंदम श्रीराम को; ऒन्ऱुम् आऱ्ऱलतु–कुछ नहीं कर सकता; ऍन्ऩुम् आऱ्ऱल्–यह शक्तिदायक बात; तॅरिन्तनन्–जानता हूँ; अन्ऩान् चॅय्ततु ऍन्–उन्होंने क्या किया; मुन्ऩे तॅरित्ति–पहले बताओ; ऍन्ऱान्–पूछा (जाम्बवान ने); पॆरुम्–आदरणीय; पॆरुन्तकै–सम्मान्य श्रीराम; तुन्प वॆळ्ळम्–दुःख की बहुलता से; तुयिलुळान्–निद्रित (मूर्च्छित) हैं; ऍन्ऱान्–कहा। २६५८

"ब्रह्मास्त्र भी वेदसूक्ष्मतत्त्व अरिंदम श्रीराम का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह बलवर्धक बात मुझे मालूम है। उन्होंने क्या किया ? वह बताओ पहले।" —जाम्बवान ने पूछा। विभीषण ने उत्तर में कहा कि श्रीराम दुःखप्रवाह में निद्रित (मूर्च्छित) हैं। २६५८

अन्ऩवन् ऱन्ऩैक् कण्डा लाऱ्ऱुमो वाक्कै वेऱे
इन्ऩुयि रॊन्ऱे मूलत् तिरुवरु मॊरुव रेयाल्
इन्ऩदु किडप्पत् ताऴा विङ्गिनि यिमैप्पिन् मुन्ऩर्क्
कॊन्ऩियल् वयिरत् तोळाय् मरुन्दुबोय्क् कॊणर्दि यॆन्ऱान् 2659

अन्ऩवन् तन्ऩै कण्टाल्–उस (लक्ष्मण) को देखकर; आऱ्ऱुमो–धैर्य धारण कर सकते हैं क्या; मूलत्तु–मूल बात को देखने पर; इरुवरुम् ऒरुवरे–दोनों एक हैं; आक्कै वेऱु–शरीर भिन्न हैं; इन् उयिर् ऒन्ऱे–प्यारे प्राण एक ही हैं; कॊन् इयल्–भयानक; वयिरम् तोळाय्–सुदृढ़ कन्धों वाले; इन्ऩतु किटप्प–बात जब ऐसी रहती है; इनि–अब; इङ्कु ताऴा–इधर विलम्ब न करके; इमैप्पिन् मुन्ऩर्–पलक

मारने से पहले; पोय्–जाकर; मरुन्तु कॊणर्ति–ओषधि लाओ; ऍन्ड्रान्–कहा (जाम्बवान ने)। २६५८

जाम्बवान ने कहा— भाई की हालत देखकर वे कैसे धीरज धर सकेंगे ? मूल में दोनों एक ही हैं। शरीर दो पर प्राण एक हैं उनके। हे शत्रुत्रासक कंधोंवाले ! जब हालत ऐसी है तो तुम यहाँ विलम्ब मत करो। जाओ पल भर में ओषधि (संजीवनी अमृत) लाओ। २६५९

ऍऴबदु वॆळ्ळत् तोरु मिरामनु मिळैय कोवुम्
मुऴुदुमिव् वुलह मून्ड्रु नल्लऱ मूर्त्ति तानुम्
वऴुवलिन् मऱैयु मुन्नाल् वाऴ्न्दन वाहु मैन्द
पॊऴुदिऱै ताऴा दॆन्शॊन् नॆऱिदरक् कडिदु पोदि 2660

मैन्त–पुत्र; ऍऴुपतु वॆळ्ळत्तोरुम्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' सव; इरामनुम्–श्रीराम; इळैय कोवुम्–और छोटे राजा; मुऴुतुम् इ उलकम् मुन्ऱुम्–सम्पूर्ण ये तीनों लोक; नल् अऱम् मूर्त्ति तानुम्–श्रेष्ठ धर्मदेवता; वऴुवल् इल् मऱैयुम्–अमोघ वेद; उन्ताल्–तुम्हारे कृत्य से; वाऴ्न्तन आकुम्–जी आएँगे; इऱै पॊऴुतु ताऴातु–कुछ भी समय विलम्ब न करके; ऍन् चॊल् नॆऱि तर–मेरे वचन के मार्ग निर्दिष्ट करते; कटितु पोति–झट जाओ। २६६०

"पुत्र ! तुम मेरे कहे अनुसार मार्ग तय करके जाओ और अमृत लाओ, तो सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर-सेना, श्रीराम, छोटे राजा, पूर्ण रूप से ये तीनों लोक, अच्छे धर्मदेवता, अमोघ वेद —सब तुम्हारे कार्य से जीवित हो जायँगे। जल्दी चलो। २६६०

पिन्बुळदिक् कडलॅन्नप् पॅयर्न्द दऱ्‌पिन् योशनैहळ् पेशनिन्ड्र
ऑन्बदिना यिरङ्गडन्दा लिमयमॅनुङ् गुलवरैयै युऱुदि युऱ्‌ऱाल्
तन्बॆरुमै योरिरण्डा यिरमुळो शनैयदुपिन् ऱविरप् पोनाल्
मुन्बुळयो शनैयॅल्ला मुऱ्‌ऱिनैपोऱ् कूडञ्जॆन् ड्रुऱुदि मॊय्म्ब 2661

मॊय्म्प–विक्रमी; इ कटल्–इस सागर को; पिन्पु उळतु ऍन्न–पीछे रहता छोड़; पॅयर्न्ततन् पिन्–आगे जाने के बाद; पेच निन्ऱ योचनैकळ्–कथनीय योजन; ऑन्पतिनायिरम्–नौ हज़ार; कटन्ताल्–पार करोगे तो; इमयम् ऍनुम् कुलवरैयै–हिमवान नामक कुलगिरि को; उऱुति–पहुँचोगे; उऱ्‌ऱाल्–पहुँचने पर; तन् पॆरुमै–उसकी चौड़ाई; ओर् इरण्टु आयिरम् उळ–दो हज़ार योजन है; पिन् तविर–उसे पीछे छोड़; मुन्पु उळ–आगे रहे; योचनै ऍल्लाम् मुऱ्‌ऱिनै–सभी योजनों को पूरी पार करके; पॊन् कूटम् चॆन्ऱु उऱुति–हेमकूट जा पहुँचो। २६६१

बलवान ! इस समुद्र को पार कर नौ हज़ार योजन जाओ तो हिमालय नामक कुलगिरि मिलेगी। उसकी चौड़ाई दो हज़ार योजन है। उसे पार करके नौ हज़ार योजन जाओ तो हेमकूट पर जाओगे। २६६१

इम्मलैक्कु मौन्बदिना यिरमुळदा लियोशनैयि निडद मॅन्नुम्
जॅम्मलैक्कु मुळवाय वत्तनैयो शनैकडन्दार् चॅन्रु काण्डि
ॲम्मलैक्कुम् वॅरिदाय वडमलैयै यम्मलैयि नहल मॅण्णिन्
मॉय्म्मलैन्द तिण्डोळाय् मुप्पत्ती रायिरमियो शनैयिन् मुर्रुम् 2662

इ मलैक्कुम्–इस (हेमकूट) पर्वत से; ऑन्पतितायिरम् योचनैयिल्–नौ हजार योजन पर; निटतम् ॲन्नुम् चॅम्मलै उळ्ळतु–निषध नामक लाल पर्वत है; अम्मलैक्कुम्–उस गिरि से; उळवाय् अत्तनै योचनै कटन्ताल्–जो है उतने योजन की दूरी पार करो तो; ॲ मलैक्कुम् वॅरितु आय–सभी पर्वतों से बड़े; वट मलैयै चॅन्रु काण्टि–(मेरु) उत्तर गिरि को जा देखोगे; अ मलैयिन् अकलम् ॲण्णिन्–उस गिरि की चौड़ाई सोचो तो; मॉय् मलैन्त तिण् तोळाय्–सबल और युद्धचतुर सुदृढ़ कंधों वाले; मुप्पत्तीरायिरम् योचनैयिन् मुर्रुम्–बत्तीस हजार योजन की होगी। २६६२

हेमकूट से नौ हजार योजन पर श्रेष्ठ निषध पहाड़ है। फिर नौ हजार योजन चलो तो सबसे बड़े 'मेरु पर्वत पर पहुँचोगे। हे सबल तथा युद्धसमर्थ कंधोंवाले! उसकी चौड़ाई बत्तीस हजार योजन में समाप्त होगी। २६६२

मेरुविनैक् कडन्दप्पा लौन्बदिना यिरमुळवो शनैयै विट्टाल्
नेरणुहु नीलगिरि तानिरण्डा यिरमुळयो शनैयि निर्कुम्
मारुदिमर् रुदर्कप्पा लियोशनैना लायिरत्तिन् मरुन्दु वैहुङ्
गार्वरैयैक् काणुदिमर् रुदुकाण वित्तुयर्क्कुक् करैयुङ् गाण्डि 2663

मेरुविनै कटनतु–मेरु को पार करके; अप्पाल्–आगे; ऑन्पतितायिरम् उळ योचनैयै विट्टाल्–नौ हजार योजन पार करो तो; नेर् अणुकुम्–सामने मिलनेवाली; नील किरि तान्–नीलगिरि ही है; इरण्टायिरम् उळ योचनैयिन् निर्कुम्–दो हजार योजन (की चौड़ाई) ले खड़ी है; मारुति–मारुति; मर्रु–फिर; अतर्कु अप्पाल्–उसके उस पार; नालायिरम् योचनैयिल्–चार हजार योजन पर; मरुन्तु वैकुम्–जिसमें ओषधि रहती हैं; कार् वरैयै–उस काले पर्वत को; काणुति–देखोगे; काण–देखो तो; इ तुयर्क्कु–इस दुःख का; करैयुम् काण्टि–कूल भी देख लोगे। २६६३

मेरु के बाद नौ हजार योजन पार करो तो सामने नीलगिरि ही होगी। मारुति! उससे चार हजार योजन पर वह काला पर्वत है, जिसमें ये ओषधियाँ हैं। उसको देख लो तो समझो कि दुःख के पार पहुँच गये। २६६३

माण्डारै युय्विक्कु मरुन्दौन्रु मॅय्वेरु वहिर्हुळाहक्
कोण्डालुम् बौरुन्दु विप्पदौरुमरुन्दुम् बडैक्कलङ्गळ् किळर्प्पदौन्रुम्
मीण्डेयुन् दम्मुरुवे यरुळुवदोर् मॅय्म्मरुन्दु मुळनीवीर
आण्डेहिक् कौणर्दियॅन वडैयाळत् तौडुमुरैत्ता नडिविन्मिक्कान् 2664

माण्टारै–मरे हुओं को; उय्क्किकुम्–जिलाने की; मरुन्तु ऑन्ऱु–एक ओषधि और; मॅय्–शरीर; वेऱु वकिर्कळ् आक–अलग-अलग भागों में; कीण्टालुम्–चिर जाए तो भी; पॉरुन्तुविप्पतु–मिलानेवाली; ऑरु मरुन्तुम्–एक ओषधि; पटॅकलङ्कळ्–हथियारों को; किळर्प्पतु ऑन्ऱुम्–(शरीर से) निकालनेवाली एक ओषधि और; मीण्टेयुम्–फिर से; तम् उरुवे–(विकृत मूल) रूप को; अरुळ्वतु–दिलानेवाली; ओर् मॅय् मरुन्तुम्–एक सच्ची ओषधि; उळ–हैं; वीर–वीर; आण्टु एकि–वहाँ जाकर; कॊणर्ति–लाओ; ऍन्न–ऐसा; अटॅयाळत्तॊटुम्–उनके लक्षणों के साथ; उरैत्तान्–कहा; अऱिविन् मिक्कान्–मतिश्रेष्ठ (जाम्बवान) ने। २६६४

मतिश्रेष्ठ जाम्बवान ने कहा— मृतक को जिलाने की ओषधि एक; छिन्न शरीरों को एक करानेवाली एक; शरीर पर लगे हथियारों को निकालनेवाली एक और विकार-प्राप्त आकार को मूल रूप दिलानेवाली एक— (आदि) चार कारगर ओषधियाँ हैं। वीर! तुम वहाँ जाकर उन्हें लाओ। साथ-साथ जाम्बवान ने उनके लक्षण भी बताये। २६६४

इन्नमरुन् दॊरुनान्गुम् बयोददियैक् कलक्कियञान् ऱॅळुन्द तेवर्
मुन्नियमैत् तनर्मरैक्कु मॅट्टाद परञ्जुडरिव् वुलह मून्ऱुम्
तन्निरुता ळुळ्ळडक्किप् पॊलि पॊळ्दिन् यान्मुरशञ् जाऱ्ऱुम्वेलै
अन्नवैकण् डुयावुदलुन् दॊन्मुनिव रवर्ऱियलॅऱ् कऱिवित् ताराल् 2665

इन्न मरुन्तु–ये ओषधियाँ; ऑरु नान्कुम्–चारों; तेवर्–देवों के; पयोततियै कलक्किय ञान्ऱु–पयोधि को मथते दिन; ऍळुन्त–प्रकट हुईं; मुन्नि–(उनका प्रभाव) सोचकर; अमैत्तनर्–सुरक्षित रखा है; मऱैक्कुम् ऍट्टात–वेद के लिए भी अग्राह्य; परम् चुटर्–परमज्योतिस्वरूप (त्रिविक्रम); इव् उलकम् मून्ऱुम्–इन तीनों लोकों को; तन् इरु ताळ् उळ् अटक्कि–अपने दोनों चरणों के अन्तर्गत करके; पॊलि पॊऴ्तिन्–जब शोभे तब; यान् मुरचम् चाऱ्ऱुम् वेलै–मैं जब ढिंढोरा पीटता गया; अन्नवै कण्टु–उनको देखकर; उयावुतलुम्–प्रश्न करने पर; तॊल् मुनिवर्–प्राचीन मुनियों ने; अवर्ऱु इयल्–उनके गुणों को; ऍऩ्क्कु अऱिवित्तार्–मुझे बताया। २६६५

ये सब उस दिन प्रकट हुई थीं, जिस दिन देवों ने पयोदधि को मथा था। उनकी शक्ति जानकर उन्हें गोपनीय रखा है। जब वेदों के लिए भी अग्राह्य परमज्योतिस्वरूप त्रिविक्रम अपने दोनों चरणों के दायरे में इन लोकों को मापकर शोभायमान रहे, तब मैंने मुनादी पीटी थी। उस अवसर पर इन्हें देखकर विवरण पूछा, तो प्राचीन मुनियों ने उनके गुण बताये थे। २६६५

इम्मरुन्दु कात्तुरैव वॅण्णिलवार् ऱॅय्वङ्ग ळिरङ्गा यारक्कुम्
मॅय्म्मरुङ्गु पडरहिल्ला नॅडुनेमिप् पडॅयुमवर् ऱुडने निऱ्कुम्

पॉय्म्मरुङ्गि निल्लादाय् पुरिहिन्ऱ कारियत्तिन् पॉरुळै नोक्किक्
कैम्मरुङ्गुण् डानित्तैक् कायावा मप्पुऱम्बोय्क् करक्कु मॆन्ऱान् 2666

इ मरुन्तु–इन ओषधियों को; कात्तु उऱैव–जो रक्षित करते रहते हैं; तय्वक्कळ् ऍण्णिल–वे देवता असंख्यक हैं; यार्क्कुम् इरक्का–किसी पर दया नहीं करते; नॅय्–धृतरंजित; मरुङ्कु पटरकिल्ला–पास भटकने न देनेवाले; नॅटु नेमि पटॆयुम्–बड़ा चक्रायुध भी; अवऱ्ऱटत्ते निऱ्कुम्–उनका सहायक रहता है; पॉय् मरुङ्कित् निल्लाताय्–असत्य के पास भी न जानेवाले; पुरिकिन्ऱ कारियत्तिन् पॉरुळै नोक्कि–तुम जो करनेवाले हो उस कार्य को देखकर; कै मरुङ्कु उण्टाम्–वे तुम्हारे हाथ में आ जाएँगी; नित्तै कायावाम्–वे देवता भी तुमसे रुष्ट नहीं होंगे; अप्पुऱम् पोय् करक्कुम्–दूसरी ओर जाकर छिप जायेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। २६६६

असंख्य देव इन ओषधियों की रक्षा करते रहते हैं। वे किसी पर रहम नहीं करेंगे। धृतरंजित और अगम चक्रायुध भी इनकी सहायता में रहता है। हे असत्य के पास भी न जानेवाले! तुम्हारे कार्य का हेतु समझकर वे औषध तुम्हारे हाथ लग जाएँगी। वे देव भी तुम पर कोप नहीं करेंगे। वे स्वयं अलग छिप जाएँगे। जाम्बवान ने बताया। २६६६

ईङ्गिदुवे पणियाहि निऱन्दारुम् बिऱन्दारे यॅङ्गोक् कियादुन्
तीङ्गिडॆयू ऱॅय्दामऱ् ऱॆरुट्टिडुदिर्बो यॆन्नच्चॊल्लि यवरॆत् तीर्न्दान्
ओङ्गिन्नवा नॆडुमुहट्टै युऱ्ऱन्नपॊर् ऱोळिरण्डुन् दिशैयो डॊक्क
वोङ्गिनवा हाशत्तै विळुङ्गिन्नने यॆन्नवळर्न्दान् वेदम् बॊल्वान् 2667

ईङ्कु–यहाँ; इतुवे–यही; पणियाकिन्–आज्ञा हो; इऱन्तारुम्–मृतक भी; पिऱन्तारे–जन्म ले चुके; ऍम् कोक्कु–हमारे राजा को; यातुम्–कोई भी; तीङ्कु–हानि; इटॆयूऱु–बाधा; ऍय्तामल्–न हो ऐसा; पोय्–जाकर; तॆरुट्टिटुतिर्–समझाओ; ऍन्न चॊल्लि–ऐसा कहकर; अवरै तीर्न्तान्–उनसे हटा (हनुमान); वेतम् पोल्वान्–वेद-सम; ओङ्कितन्–ऊँचा बढ़कर; वान् नॆटु मुकट्टै–आकाश की चोटी को; उऱ्ऱतन्–पहुँचा; पॊन् तोळ् इरण्टुम्–सुन्दर दोनों कन्धे; तिचैयोटु ऑक्क–दिशाओं से एक-सम; वीङ्कितन्–फूले; आकाचत्तै विळुङ्कितन्ने ऍन्न–आकाश को निगल लिया (समा लिया) जैसे; वळर्न्तान्–विवर्धित हुआ। २६६७

हनुमान ने उत्साह के साथ कहा कि इतना ही हुक्म है तो सभी मरे हुए लोग जी उठे। देखो हमारे प्रभु पर कोई आँच न आये —इसकी सावधानी रखो! वह उन्हें छोड़ अलग हुआ। वेदसदृश आकाश की चोटी को छूते हुए बढ़ा। उसके दोनों सुन्दर कंधे दिशाओं के समान वर्द्धित हुए। आकाश को निगल लिया हो, ऐसा वह फूल गया। २६६७

कोळोडु तारहैहळ् कोत्तमैत्त मणियारक् कोवै पोन्ऱ
तोळोडु तोळहल मायिरमियो शत्तैयॅन्नवुन् जॊल्ल वॊण्णा

ताळोडु ताळ्पॅयर्क्क विडमिलदा हियदिलङ्गै तडक्कै वीश
नीळोडु तिशैपोदा विशैत्तॅळुवा नुरुवत्ति निलैयि दम्मा 2668

कोळोडु–ग्रहों के साथ; तारकैकळ्–नक्षत्र; कोत्तु अमैत्त–गूँथकर रचित; मणि आरम्–रत्नहारों के; कोवै पोत्र–समूह-से लगे; तोळोडु तोळ्–कन्धे से कन्धा; अकलम्–चौड़ाई में; आयिरम् योचनै ॲतवुम्–हज़ार योजन ही; चोल्ल ऑण्णा–कह नहीं सकते; ताळोटु ताळ् पॅयर्क्क–पैर बदलने के लिए; इलङ्कै–लंका; इडम् इलतु आकियतु–खाली स्थान से हीन हो गयी; तट कै वीच–विशाल हाथों को हिलाने; नीळ् ओटु तिचै–लम्बी-चौड़ी दिशाएँ; पोता–पर्याप्त नहीं रहीं; विचैत्तु ॲळुवान्–झटका देकर जो उठा, उसके; उरुवत्तिन् निलै इतु–आकार की यह स्थिति थी। २६६८

तब ग्रह और तारे गुँथे हुए रत्नहारों के समान लगे। कंधे से कंधा हज़ार योजन से भी दूर पड़ता था। पैर बदलकर रखने के लिए लंका में स्थान नहीं रह गया। विशाल हाथों को हिलाने के लिए दिशाएँ कम पड़ गयीं। झटके के साथ जो उठा, उस हनुमान के आकार की स्थिति यह थी। २६६८

वाल्वळैत्तुक् कैन्निमिर्त्तु वायित्तैयुञ् जिरिद्हल मडित्तु मानक्
कालिलत्ति निडैयूत्रि युरम्विरित्तुक् कळुत्तित्तैयुञ् जुरुक्किक् काट्टित्
तोन्मयिर्क्कुन् दळञ्जिलिर्प्प विशैत्तॅळुन्दा नव्विलङ्गै तुळङ्गिच् चूळ्न्द
वेलैयिर्पुक् कळुन्दियदोर् मरक्कलम्बोर् ररिन्दयर विशयत् तोळान् 2669

विचयम् तोळान्–विजय-स्कन्ध; वाल् वळैत्तु–पूँछ टेढ़ी करके; कै निमिर्त्तु–हाथ को ऊँचा उठाकर; वायित्तैयुम्–मुख को; चिऱितु अकल–थोड़ा चौड़ा; मटित्तु–मुड़ाकर; मानम् काल्–बड़ पैरों को; निलत्तिन् इटै–भूमि में; ऊन्रि–स्थिर रखकर; उरम् विरित्तु–छाती फुलाकर; कळुत्तित्तैयुम्–गले को; चुरुक्कि काट्टि–सँकरा कर दर्शित करके; तोल्–चर्म पर के; मयिर् कुन्तळम् चिलिर्प्प–बालों को पुलकित करके; तुळन्ति–अस्त-व्यस्त हो; चूळ्न्त–आवरण के; वेलैयिल् पुक्कु–समुद्र में घुसकर; अळुन्तियतु–जो डूब गया उस; ओर् मरक्कलम् पोल्–एक पोत के समान; अव् इलङ्कै–उस लंका के; तिरिन्तु अयर–घूमकर अस्त-व्यस्त हो ऐसा; विचैत्तु ॲळुन्तान्–जोर लगाकर उछला। २६६९

विजयस्कंध हनुमान ने पूँछ टेढ़ी की; हाथ उठाये; मुख को थोड़ा चौड़ा मुड़ाया; प्रशंसा योग्य पैर भूमि पर गड़ाये; छाती फुलायी और कंठ को संकुचित कर लिया। उसके शरीर पर के रोम पुलकित हुए। वह ससंभ्रम ज़ोर से उठा तो लंका नगरी समुद्रमध्य पोत के समान हिल उठी और कंपित हुई। २६६९

किळिन्दवन्मा मळैक्कुलङ्गळ् कोण्डवुनोण् डहलुवेलै किळक्कु मेर्कुम्
वीळिन्दन मीन्वीडर्न्वॅळ्न्द पोरुप्पिन्मुन् तरुक्कुलमुम् बिऱवुम् वीङ्गि

अळिन्दनवा ऩवर्माऩ माहायत् तिडैयिलिऱ्पे रशऩि यॆऩ्ऩ
निऴुन्दननीर्क् कडलऴुन्द वेरिऩमेर् कीऱिऩपोय्त् तिशैह ळॆल्लाम् 2670

मा मऴै कुलङ्कळ्–बड़े मेघवृन्द; किऴिन्तन–चिर गये; नीण्टु अकल्–लम्बा-चौड़ा; वेलै–सागर; कीण्टतु–चिर गया; किऴक्कुम् मेऱ्कुम्–पूर्व और पश्चिम में; मीन् पोऴिन्तन–नक्षत्र चू पड़े; पॊरुप्पु इतमुम्–पर्वत-श्रेणियाँ और; तरु कुलमुम्–तरुवृन्द; पिऱवुम्–और अन्य; पोङ्कि–उठे और; तॊटर्न्तु ऍऴुन्त–साथ लगे ऊपर गये; वाऩवर् मातम्–देवों के यान; आकायत्तु इटैयितिल्–आकाश के मध्य; पेर् अचनि ॲन्ऩ–बड़े वज्रों के समान; नीर् कटल्–उदधि में; अऴुन्त–डूबते हुए; विऴुन्तन–गिरे; तिचैकळ् ॲल्लाम् पोय्–सारी दिशाओं को जाकर; कीऱिऩ–फाड़ डाला (जल ने)। २६७०

और बड़े मेघसमूह चिरे। लंबा-चौड़ा सागर फटा। पूरब और पश्चिम में नक्षत्र चू गये। पर्वतसमूह और तरुकुल साथ उठ चले। देवयान आकाश-मध्य अशनि के समान समुद्र में गिरे और डूबे। समुद्रजल दिशाओं को फाड़ गया। २६७०

पायन्दनङ् गप्पोऴुदे परुवरैह ळॆनैप्पलवुम् वडपा हत्तुच्
चायन्दनपे रुडऱ्पिऱन्द शण्डमा रुदम्वीशत् तादै शाल
ओयन्दनॆन् ऱुरैशॆय्य विशुम्बूडु पडर्हिऩ्ऱा ऩुरुवे हत्ताऱ्
कायन्दनवे लैकण्मेहङ् गरिन्दनवॆन् दॆरिन्दबॆरुङ् गाऩ मॆल्लाम् 2671

अप्पोऴुते–तभी; अङ्कु पायन्तन–वहाँ उछला; परुवरैकळ्–बड़े-बड़े पर्वत; एनै पलवुम्–अन्य अनेक; पेर् उटल्–बृहदाकार शरीर से; पिऱन्त–निकले; चण्टम् मारुतम् वीच–चण्डमारुत के बहने से; वट पाकत्तु चायन्तन–उत्तर में गिरे; तातै–पिता (पवनदेव); चाल ओयन्तनन्–निपट थक गया; ॲन्ऱु उरै चॆय्य–कहा जाय ऐसा; विचुम्पु ऊटु–आकाश-मार्ग से; पटर्किन्ऱान्–जो जा रहा था उसके; उरु वेकत्ताल्–ग़ज़ब के वेग से; वेलैकळ् कायन्तन–समुद्र सूखे; मेकम् करिन्तन–मेघ झुलसे; पॆरु कानम् ॲल्लाम्–बड़े-बड़े कानन सब; वॆन्तु ॲरिन्त–जल-भुन गये। २६७१

तभी वह उधर झपटा। उसके बड़े शरीर से पवन चालित हुआ और उससे बड़े-बड़े पर्वत उत्तर की तरफ़ झुक गये। हनुमान इतने वेग से आकाश में उड़ता चला कि लोग कहने लगे कि उसका पिता बहुत थक गया। उसके शरीर के वेग की गति से समुद्र सूख गये और मेघ झुलस गये। सभी बड़े कानन जल-भुन गये। २६७१

कडल्पिऩ्ऩे निमिर्न्दोडक् काऩ्मुऩ्ऩे कडिदोडक् कालिऱ् चॆल्वाऩ्
उडल्मुऩ्ऩे शॆलवळ्ळङ् गडैकुळैयाच् चॆलच्चॆल्वा ऩुरुवे नोक्कि
अडऩ्मुऩ्ऩे तॊडङ्गियना ळाऴ्हडलशू ऴिलङ्गैयॆऩ्ऩु मरक्कर् वाऴुन्
दिडर्मुऩ्नी रिडैप्पडुत्तुप् पऱित्तनऩ् दुयरॆऩ्ऩार् तेव रॆल्लाम् 2672

कटल्–सागर; पिऩ्ऩे–पीछे-पीछे; निमिर्न्दु ओट–तनकर चला और; काल्–पवन; मुऩ्ऩे–आगे-आगे; कटितु ओट–तेज़ी से चला; कालिऩ् चॆल्वाऩ्–पवनगति से चलनेवाला; उटल् मुऩ्ऩे चॆल–शरीर को आगे चलाकर; उळ्ळम्–मन को; कटै कुऴैया चॆल–पीछे चलाता हुआ; चॆल्वाऩ्–जो जा रहा था उसके; उरुवै नोक्कि–आकार को देखकर; तेवर् ॲल्लाम्–सभी देवों ने; मुऩ्ऩे–पहले; अटल् तॊटङ्किय नाळ्–बलप्रदर्शन आरम्भ करने के दिन; आऴ् कटल् चूऴ्–गहरे सागर से आवृत; इलङ्कै ॲऩुम्–लंका नाम का; अरक्कर् वाऴुम् तिटर्–राक्षसावास द्वीप को; मुन्नीर् इटै पटुत्तु–(दुःख-) सागर में डुबोकर; नम् तुयर् पऱित्तऩऩ्–हमारे दुःख को दूर कर दिया; ॲऩ्ऱार्–कहा। २६७२

समुद्र उठकर पीछे-पीछे चला। पवन आगे भागा। पवनगति में जानेवाले हनुमान का शरीर आगे गया और मन पीछे। उसका रूप देखकर देवों ने कहा कि जब इसने अपना पराक्रम-प्रदर्शन आरम्भ किया, तभी समुद्र-वलयित लंका का टीला दुःख-सागर में डूब गया और उसने हमारे दुःख को दूर कर दिया। २६७२

मेहत्तिऩ् पदङ्गडन्दु वॆङ्गदिरुन् दणगदिरुम् विरैविऱ् चॆल्लुम्
माहत्ति नॆऱिक्कप्पाल् वाऩमीऩ् कुलम्वऴङ्गुम् वरैप्पु नीङ्गिप्
पोहत्तिऩ् कुऱितॊडर्न्दार् पुहलिडङ्गळ् पिऱ्पडप्पोय्प् पूविऩ् वन्द
एहत्तऩ् दणनिरुक्कै यिनिच्चेय्त्तऩ् ऱामॆऩ्ऩ वॆऴुन्दु शॆऩ्ऱाऩ् 2673

मेकत्तिऩ् पतम् कटन्तु–मेघों का स्थान पार करके; वॆम् कतिरुम्–गरम किरणमाली; तण् कतिरुम्–शीतल-किरण चन्द्र; विरैविल् चॆल्लुम्–जहाँ सवेग चलते हैं; माकत्तिऩ् नॆऱिक्कु अप्पाल्–उस आकाश-मार्ग के उस पार; वाऩ मीऩ् कुलम्–आकाश के नक्षत्रगण; वऴङ्कुम्–जहाँ संचार करते हैं; वरैप्पु नीक्कि–उस सीमा को भी पार करके; पोकत्तिऩ् कुऱि तॊटर्न्तार्–(स्वर्ग-) भोग को उद्देश्य करके जिन्होंने यागादि कर्म किये हैं; पुकल् इटङ्कळ्–उन लोगों के गम्य-स्थान स्वर्ग आदि स्थानों को; पिऩ् पट पोय्–पीछे छोड़ जाकर; पूविऩ् वन्त–(श्रीविष्णु के नाभी-) कमल पर प्रगट; एकत्तु अऩ्तणऩ्–अद्वितीय ब्राह्मण (ब्रह्मा) का; इरुक्कै–लोक; इऩि–अब; चेय्त्तु अऩ्ऱु आम्–दूर नहीं है; ॲऩ्ऩ–ऐसा कहने योग्य स्थिति पर; ॲऴुन्तु चॆऩ्ऱाऩ्–उड़ चला। २६७३

उसने मेघों का स्थान, गरमकिरणमाली सूर्य और शीतलकिरण चन्द्र का आकाश-मार्ग आदि के उस पार नक्षत्रमंडल की सीमा पार की। भोगप्रसक्त लोग यागादि करके जहाँ पहुँचते हैं, उन स्वर्गादि लोकों को भी पीछे छोड़ वह आगे चला। अब 'श्रीविष्णु के नाभीकमल से उत्पन्न ब्रह्मा का लोक दूर नहीं' जहाँ कहा जा सकता था उस स्थान पर पहुँचा। २६७३

वाऩनाट् टरैहिऩ्ऱार् वयक्कलुऴऩ् वल्विशैयाऩ् मायऩ् वैहुन्
दाऩनाट् टुऱुहिऩ्ऱा नॆऩ्ऱुरैत्तार् शिलर्शिलर्हळ् विरिञ्जऩ् ऱाऩ्ऱऩ्

एतैनाट् टळुहितृरा तैन्तुरैत्तार् शिलर्शिलर्ह ळीश नल्लार्
पोत्नाट् टिडैपोह वल्लत्तो विवत्मुक्कट् पुनिद तैन्त्रार् 2674

वातम् नाट्टु उरैकिन्ट्रार् चिलर्–आकाशलोकवासी कुछ; ययम् कलुळन्–बलवान गरुड़; वल् विचैयान्–बहुत जोर के साथ; मायन् वैकुम्–जहाँ मायावी (श्रीविष्णु) रहते हैं; तातम् नाट्टु उरुकिन्ट्रान्–उस स्थान (लोक) को जा रहा है; ऐन्ड्र उरैत्तार्–ऐसा बोले; चिलर्कळ्–कुछ; विरिञ्चन् तान्–विरंचि ही; तन्–अपने; एतै नाट्टु–अन्य लोक को; ऐळुकिन्ट्रान्–जाता है; ऐन्ड्र–ऐसा; उरैत्तार्–बोले; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ईचन् अल्लाल्–ईश्वर नहीं तो; पोत नाट्टु इटै–बहुत ऊँचे लोक में; पोक वल्लतो–जा सकता है क्या वह; इवन् मुक्कण् पुनितन्–यह त्रिनेत्र पवित्र परमेश्वर ही है; ऐन्ट्रार्–ऐसा बोले। २६७४

कुछ व्योमलोकवासियों ने कहा कि बलवान गरुड़ अधिक तेज़ी से श्रीविष्णु के वासस्थान को जा रहा है! कुछ ने कहा कि विरंचि अपने दूसरे लोक (ब्रह्मलोक) को जा रहा है! कुछ-कुछ ने कहा कि ईश्वर को छोड़ कोई इतने ऊपर के लोक में जा सकेगा क्या? अतः यह त्रिनेत्र पवित्र परमेश्वर ही हैं! । २६७४

वेण्डुरुवङ् गौण्डुवन्दु विळैयाडु हिन्ट्रान्मैय् वेद नान्गुन्
दीण्डुरुव नल्लाद तिरुमाले यिवनैन्ट्रार् तैरिय नोक्किक्
काण्डुमैन विमैप्पदन्मुन् कट्पुलत्तैक् कडन्दहलु मिन्नुङ् गाण्मिन्
मीण्डुवरुन् दरमल्ला वीट्टुलहम् बुहुमैन्ट्रार् मैन्मे लुळ्ळार् 2675

मैन् मेल् उळ्ळार्–ऊपर और ऊपर रहनेवाले; वेण्टुरुवम् कोण्टु वन्तु–मनचाहा रूप ले आकर; विळैयाटुकिन्ट्रान्–खेलता; मैय्–सचमुच; वेतम् नान्कुम्–चारों वेदों के; तीण्टु उरुवन् अल्लात–अस्पृश्य रूप वाला; तिरुमाले इवन्–श्रीविष्णु ही है; ऐन्ट्रार्–ऐसा बोले; तैरिय नोक्कि–खूब ध्यान देकर; काण्टुम्–देखें; ऐन–सोचकर; इमैप्पतन् मुन्–पलक मारने से पहले; कण् पुलत्तै कटन्तु–दृष्टि की भूमि को पार कर; अकलुम्–दूर जानेवाला है; इन्नुम् काण्मिन्–और देखो; मीण्टु वरुम् तरम् अल्ला–जहाँ से लौटने का मार्ग नहीं होता उस; वीटु उलकम् पुकुम्–मोक्षलोक में जाएगा; ऐन्ट्रार्–कहा। २६७५

ऊपर और ऊपर रहनेवालों ने अनुमान किया कि ये चतुर्वेद-अग्राह्य विष्णु ही होंगे। मनचाहा रूप ले आया है और लीला रच रहा है! ध्यान लगाकर देखें कहकर देखा और कहा कि पलक झपने के समय के अन्दर दृष्टिपथ पार कर लेता है! और देखो। वह उस मोक्षलोक पहुँच जायगा, जहाँ से लौटना नहीं होता। २६७५

उरुवैन्ट्रार् शिलर्शिलर्ह ळीळियैन्ट्रार् शिलर्शिलर्ह ळीळिरु मेनि
अरुवैन्ट्रार् शिलर्शिलर्ह ळण्डत्तुक् कप्पुरनिन् ट्रुलहुं माक्कुङ्
गरुवैन्ट्रार् शिलर्शिलर्हळ् काट्रैन्ट्रार् शिलर्शिलर्हळ् कडलैत् ताविच्
चैरुवैन्ट्रा तिलैयौन्ड्रुन् दैरियहिला रुलहनैत्तुन् दैरियच् चैल्वान् 2676

उलकु अत्तैत्तुम्–सारे लोकों को; तॅरियुम् चॅल्वम्–जाननेवाले (ज्ञान के) धनी; कटलै तावि–सागर लाँघकर; चॅरु वॅन्ऱान्–युद्ध जिसने जीता था उसकी; निलै ऑन्ऱुम् तॅरियकिलार्–स्थिति कुछ नहीं जान सके; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ऑळिरुम् मेत्ति–शोभायमान शरीर; उरु–(साकार) रूप है; ॲन्ऱार्–कहते; ऑळि–ज्योति है; ॲन्ऱार्–कहते; पिन्नुम् चिलर् चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; चिलर्–और कोई-कोई; काऱ्ऱु ॲन्ऱार्–वायु कहते; चिलर् चिलर्–अन्य कोई-कोई; अरु ॲन्ऱार्–निराकार कहते; मऱ्ऱुम् चिलर् चिलर्–अन्य कुछ-कुछ; अण्टत्तुक्कु अप्पुरम् निन्ऱु–अण्ड के उस पार से; उलकम् आक्कुम्–लोक सृष्ट करनेवाला; करु–निमित्त कारण (ईश्वर) है; ॲन्ऱार्–कहते। २६७६

सर्वलोकज्ञानधनी भी समझ नहीं सके कि समुद्र लाँघकर युद्ध जिसने जीता था, उस हनुमान की स्थिति क्या है! कुछ लोगों ने कहा कि छविमय शरीर साकार है। कुछ लोगों ने केवल ज्योति माना। और कुछ लोगों ने पवन का अनुमान लगाया। कुछ लोगों ने कहा कि यह अरूप है! कुछ लोगों का अनुमान था कि वह अण्ड पार रहनेवाला लोकसृष्टि का निमित्त कारण है। २६७६

वाशनाण् मलरोन्ऱ नुलहळवु निमिर्न्दत्तमेल् वान माना
काशमा यिनवॅल्लाङ् गरन्ददन दुरुविडैये कनहत् तोळ्हळ्
वीशवान् मुहडुरिज्ज विशैत्तॅळुवा नुडऱ्पिऱन्द मुळ्क्कम् विम्म
आशैका वलर्तलैहळ् पॊदिरॅरिन्दार् विदिरॅरिन्द दण्ड कोळम् 2677

वाचम् नाळ् मलरोन् तन्–सुगन्धित नवविकसित कमलासन के; उलकु अळवुम्–सत्यलोक तक; निमिर्न्तत–ऊँचे; मेल् वानम् आन–ऊपर के आकाश जो हैं; काचम् आयिन ॲल्लाम्–उन सारे आकाशों को; करन्त–छिपानेवाले; तनतु उरु इटैये–अपने शरीर के; कनकम् तोळ्कळ्–मनोरम कन्धे; वीच–आगे-पीछे गये, इसलिए; वान् मुकटु उरिञ्च–आकाश की चोटी को स्पर्श करते हुए; विचैत्तु ॲळुवान्–ज़ोर से उठ चलनेवाले हनुमान के; उटल् पिऱन्त–शरीर से निकला; मुळक्कम्–शब्द; विम्म–स्फीत हो उठा तो; आचै कावलर्–दिग्पालक; तलैकळ् पॊतिर् ॲऱिन्तार्–काँपते सिर के हो गये; अण्टकोळम् वितिर् ॲऱिन्ततु–अण्डगोल थर्रा उठा। २६७७

उसके रूप के अन्दर सुगंधित तथा नितनवविकसित कमल के देव ब्रह्मा के सत्यलोक तक फैला आकाश सब छिप सकता था। अपने स्वर्ण-कंधों को हिलाते हुए जब वह आकाश को स्पर्श करता उठा, तब उसके शरीर से ज़ोर का शोर उठा। उसके बढ़ने से दिग्पालों के सिर काँप गये और अण्डगोल थर्रा उठा। २६७७

तॊडुत्तनाण् मालै वानोर् मुनिवरे मुदल तोल्लोर्
अडुत्तनान् मरैहु ळोदि वाळ्त्तला लवुणर् वेम्दन्

कोडुत्तना ळळन्दु हौण्ड कुऱळनार् कुरिय पादम्
ॲडुत्तना ळीत्त दण्ण लॅळ्ळन्दना ळुलहुक् कॅल्लाम् 2678

अण्णल् ॲळुन्त नाळ–महिमावान जिस दिन ऊँचा उठा वह दिन; उलकुक्कु ॲल्लाम्–सारे लोकों के लिए; तॊट्टुत्त नाळ् मालै–गुंथी हुई नव-विकसित पुष्पों की मालाधारी; वानोर्–देव; मुनिवर् मुतल–मुनि आदि; तॊल्लोर्–प्राचीन लोग; अडुत्त–उचित; नान् मऱैकळ् ओति–चतुर्वेदोच्चारण करके; वाऴ्त्तलाल्–मंगल-वचन करते रहे इसलिए; अवुणर् वेन्तत्–दानवराजा महाबली ने; कॊट्टुत्त नाळ्–जिस दिन उदक ढालकर दान किया तब; अळन्तु कॊण्ट–भूमि को चरणों से जिन्होंने नाप लिया उन; कुऱळनार्–वामन-मूर्ति ने; कुऱिय पातम्–अपने छोटे चरण को; ॲडुत्त नाळ्–उठाया, उस दिन; ऒत्ततु–के समान रहा। २६७८

महान हनुमान के ऊपर उठ जाने का वह दिन उस दिन के समान था, जिस दिन नवविकसित पुष्पमालाधारी देवों और मुनियों द्वारा वेदों के उच्चारण के साथ स्तुति का पात्र बनकर महाबली ने उदक ढालकर दान किया था और वामन (त्रिविक्रम) देवता ने, जिन्होंने दो ही चरणों में सारे लोकों को नाप लिया, अपने छोटे चरण को उठाया था। २६७८

तेवरु मुनिवर् तामुञ् जित्तरुन् दॅरिवै मारुम्
मूवहै युलहि लुळ्ळा रुवहैयाल् तॊडर्न्दु मॊय्त्तार्
तूवित मणियुञ् जान्दुञ् जुण्णमु मलरुन् दॊत्तप्
पूवुडै यमरर् दॆय्वत् तरुवॆन विशुम्बिऱ् पोनान् 2679

मूवकै उलकिन् उळ्ळार्–त्रिलोकवासी; तेवरुम् मुनिवर् तामुम्–देवों और मुनियों; चित्तरुम् तॆरिवै मारुम्–सिद्धों और उन सबकी देवियों ने; उवकैयाल्–मोद से; तॊटर्न्तु मॊय्त्तार्–पीछे लगी भीड़ में; तूवित–जो बिखेरे; मणियुम्–वे रत्न और; चान्तुम् चुण्णमुम्–चन्दन और चूर्ण; मलरुम् तॊत्त–उसके शरीर पर लगे लटके; पू उटै–पुष्प-भरे; अमरर् तॆय्वम् तरु ॲन–देवों के कल्पतरु के समान; विचुम्पिन् पोनान्–आकाश-मार्ग में गया। २६७९

त्रिलोकवासी, देव, मुनिगण, सिद्ध लोग और उन सभी की पत्नियाँ आनंद से आकर भीड़ बना गयीं। उन्होंने जो रत्न, चन्दन, सुगंधचूर्ण आदि उस पर डाले उनके साथ हनुमान पुष्पित दिव्य कल्पतरु के समान आकाश में उड़ता चला। २६७९

इमयमाल् वरैयै युऱ्ऱा नङ्गुळ विमैप्पि लोरुङ्
गमैयुडै मुनिवर् मऱ्ऱु मऱ्ऱॆरि कलन्दो रॆल्लाम्
अमैहनिन् करुम मॆन्ऱु वाऴ्त्तिन रदनुक् कप्पाल्
उमैयॊरु पाहन् वॆहुङ् गयिलैहण् डुवहै युऱ्ऱान् 2680

इमयम् माल् वरैयै उऱ्ऱान्–हिमालय के बड़े पर्वत पर पहुँचा; अङ्कु उळ–वहाँ रहनेवाले; इमैप्पिलोरुम्–अपलक और; कमै उटै मुनिवर्–क्षमाशील मुनि,

मऱुम्–और; अऱम् नॆऱि–धर्म-मार्ग पर; कलन्तोर् ऎल्लाम्–जानेवाले सभी ने; ऎन्ऱु वाऴ्त्तिनर्–ऐसी शुभ कामना प्रगट की; निन् करुमम् अमैक–तुम्हारा कार्य सफल हो; अतत्तुक्कु अप्पाल्–उसके बाद; उमै ओरु पाकन्–उमादेवी को एक अंग में रखनेवाले शिवजी; वैकुम्–जहाँ रहते हैं; कयिलै कण्टु–उस कैलास को देखकर; उवकै उऱ्ऱान्–मुदित हुआ। २६८०

हनुमान बड़े हिमालय पर्वत पर गया। वहाँ के अपलक और क्षमाशील मुनियों और धर्मपथगामी साधुओं ने शुभकामना प्रकट की कि तुम्हारा कार्य सफल हो। उसके बाद वह कैलास को, जिस पर देवी उमा को अपने आधे अंग में स्थान दिये रहनेवाले शिवजी वास करते थे, देखकर मुदित हुआ। २६८०

वडकुण तिशैयिऱ् ऱोन्ऱु मऴुवला ऩाण्डु वैहुन्
दडवरै यदऩै नोक्कित् तामरैच् चॆङ्गै गूप्पिप्
पडर्हुवात् ऱऩ्ऩै यन्ऩ परमनुम् बरिविऱ् पार्त्तुत्
तडमुलै युमैक्कुक् काट्टि वायुविऩ् ऱऩय ऩॆन्ऱाऩ् 2681

वटकुणम् तिचैयिल्–उत्तर-पूर्व दिशा में; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; मऴुवलाऩ्–परशुधर; आण्टु वैकुम्–जहाँ शासन करते हुए विद्यमान हैं; तट वरै अतऩै–विशाल पर्वत उसको; नोक्कि–देखकर; तामरै चॆम् कै कूप्पि–कमल-विशाल हस्त जोड़कर; पटर्कुवात् तऩ्ऩै–जानेवाले उस हनुमान को; अन्ऩ परमऩुम्–उन परमेश्वर ने; परिविऩ् पार्त्तु–प्रेम से देखकर; तटमुलै–पीनस्तनी; उमैक्कु काट्टि–उमा को दिखाकर; वायुविऩ् तऩयऩ्–वायु का पुत्र; ऎन्ऱाऩ्–कहा। २६८१

उत्तर पूरब में दर्शन देनेवाले परशुधर परमेश्वर के शासन-निवासस्थान उस विशाल कैलास पर्वत को देखकर हनुमान ने अरुणपद्महस्त जोड़कर नमस्कार किया। उन परमेश्वर ने भी उस पर स्नेहार्द्र दृष्टि डाली और पीनस्तनी उमा को दिखाकर कहा कि यह वायुपुत्र हनुमान है। २६८१

ऎन्ऩिव ऩॆऴुन्द तन्मै यॆन्ऱुल हीन्ऱाळ् केट्प
मन्ऩव ऩिरामऩ् ऱूदऩ् मरुन्दिऩ्मेल् वन्दाऩ् वञ्जर्
ऱॆऩ्ऩह रिलङ्गैत् तीमै तीर्वदु तिण्णम् जेर्न्दु
नऩ्ऩुद ऩामुम् वॆम्बोर् काणुदु नाळै यॆन्ऱाऩ् 2682

इवऩ् ऎऴुन्त तन्मै ऎऩ्–इसके जाने का कारण क्या; ऎन्ऱु–ऐसा; उलकु ईन्ऱाळ् केट्प–जगज्जननी के पूछने पर; मन्ऩवऩ्–राजा; इरामऩ् तूतऩ्–राम का दूत; मरुन्तिऩ् मेल् वन्ताऩ्–ओषधि लेने आया है; वञ्चर्–वंचक राक्षसों की; तॆऩ् नकर् इलङ्कै–दक्षिण में स्थित लंका की; तीमै–बुराई; तीर्वतु तिण्णम्–दूर होगी यह निश्चित है; नऩ् नुतल्–सुन्दर भाल वाली; नामुम्–हम भी; चेर्न्तु–मिलकर; नाळै–कल; वॆम् पोर्–घमासान लड़ाई; काणुतुम्–देखेंगे; ऎन्ऱाऩ्–कहा। २६८२

जगज्जननी ने पूछा कि इसके जाने का कारण क्या है? परमेश्वर ने

कहा कि यह श्रीराजाराम का दूत है, ओषधि लाने जा रहा है। अब राक्षसों की दक्षिण में स्थित लंका की बुराई का अन्त निश्चित है। हे सुन्दर भालवाली भामिनी ! कल हम भी देवों के साथ मिलकर घमासान युद्ध देखें। २६८२

नामयो शत्तैहळ् कॉण्ड दायिर नडुवु नीङ्गि
एमकूडत्ति नुम्ब रॅय्दिन्न निरुदि यिल्लाक्
काममे नुहरुञ् जॅल्वक् कडवुळ रीट्टङ् गण्डान्
नेमियिन् विशैयिर् चॅल्वा निडदत्ति नॅऱ्ऱि युऱ्ऱान् 2683

नेमियिन् विचैयिल्–चक्रायुधगति में; चॅल्वान्–जानेवाला; नामम् आयिरम् योचनैकळ् कॉण्टतु–नामी हज़ार योजन की; नटुवु नीङ्कि–दूरी पार करके; एमकूटत्तिन् उम्पर्–हेमकूट के ऊपर; ऍय्तितन्–पहुँचा; इऱुति इल्ला–अनंत; काममे नुकरुम्–भोगवादी; चॅल्वम् कटवुळर्–ऐश्वर्ययुक्त देवों की; ईट्टम्–भीड़; कण्टान्–देखी; निटतत्तिन् नॅऱ्ऱि उऱ्ऱान्–निषध की चोटी पर पहुँचा। २६८३

चक्रायुधगति में जानेवाला हनुमान एक हज़ार योजन का अन्तर पार करके हेमकूट के ऊपर आया। वहाँ अनन्त भोगमग्न देवों का जमघट देखा। फिर वह निषधपर्वत के ऊपर गया। २६८३

ऍण्णुक्कु मळवि लाद वऱिवितो रिरुन्दु नोक्कुङ्
गण्णुक्कुङ् गरुदुन् दॅय्व मनत्तिऱ्कुङ् गडिय नान्
मण्णुक्कुन् दिशैहळ् वॅन्द वरम्बिऱ्कु मलरोन् वैहुम्
विण्णुक्कु मळवै याय मेरुविन् मीदु शॅन्ऱान् 2684

ऍण्णुक्कुम्–सोचकर; अळवु इलात–मापने में असाध्य; अऱिवितोर्–बुद्धिमान; इरुन्तु नोक्कुम्–बैठकर जिससे देखते हैं; कण्णुक्कुम्–उस ज्ञानचक्षु के लिए और; करुतुम्–ध्यान लगा सकनेवाले; तॅय्वम् मनत्तिऱ्कुम्–दिव्य मन के लिए भी; कटियन् आनान्–न गोचर हो सके इतना वेगवान बना; मण्णुक्कुम्–पृथ्वी का; तिचैकळ् वॅन्त वरम्पिऱ्कुम्–और दिगन्त का; मलरोन् वैकुम्–कमलासन का वासस्थान; विण्णुक्कुम्–सत्यलोक का; अळवै आय–जो मानदण्ड-सा रहा; मेरुविन् मीतु चॅन्ऱान्–उस मेरु पर से गया। २६८४

अचिंत्य अपार ज्ञानियों के ज्ञानचक्षु और दिव्य ध्यान-क्षम मन के लिए भी अज्ञेय तीव्रता से हनुमान जा रहा था। फिर वह मेरु पर गया जो भूमि, दिगंत और कमलासन का सत्यलोक —इन सबका मानदंड-सा है। २६८४

यावदु निलैमैत् तन्मै यिन्नदॅन् ऱिमैया नाट्टत्
तेवरुन् दॅरिन्दि लाद वडमलैक् कुम्बरुच् चॅन्ऱान्
नावलम् बॅरुन्दी वॅन्ता नळिर्हडल् वळाह वॅप्पिर्
कावन्मूत् तुलह मोदुङ् गडवुण्मा मरत्तैक् कण्डान् 2685

इमैया नाट्टम्–अपलकचक्षु; तेवरुम्–देवों ने भी; निलैमै तन्मै इन्नतु ॲन्ऱु–गतिविधि क्या है ऐसा; यावतुम्–कुछ भी (जिसके बारे में); [illegible]–नहीं जाना; वट मलैक्कु–उस उत्तरी (मेरु) पर्वत के; उम्पर् चॆन्ऱान्–ऊपर गया; नळिर् कटल् वळाक वैयकत्तिल्–शीतल सागरावृत पृथ्वी पर; पॆरु–सम्मान्य; नावलम् तीवु ॲन्ऩा–जम्बूद्वीप; कावल् मून्ऱु उलकम् ओतुम्–(जिसके नाम पर) सुरक्षित तीनों लोक कहते हैं उस; कटवुळ् मा मरत्तै–दिव्य बड़े तरु को; कण्टान्–देखा। २६८५

अपलक देव भी जिसकी सच्ची स्थिति नहीं जान सके, उस उत्तरी मेरु पर्वत के ऊपर हनुमान गया। वहाँ उस जामुन के दिव्य पेड़ को देखा, जिसके कारण पृथ्वी का त्रिलोकशंसित जम्बूद्वीप नाम पड़ा था। २६८५

अन्नमा मलैयि नुम्ब रुलहॆला मसैत्त वण्णल्
नन्नह रदनै नोक्कि यदनडु नाप्प णामप्
पॊन्मलर्प् पीडन् दन्मे नान्मुहन् पॊलियत् तोन्ऱुन्
दन्मैयुङ् गण्डु कैयाल् वणङ्गिनान् ऱरुमम् बोल्वान् 2686

तरुमम् पोल्वान्–धर्ममूर्ति; अन्न मा मलैयिन् उम्पर्–उस बड़े पर्वत के ऊपर; उलकु ॲलाम्–सारे प्रपंच को; अमैत्त अण्णल्–सृष्टि करनेवाले प्रभु ब्रह्मा के; नन्नकर् अतनै नोक्कि–श्रेष्ठ लोक को देखकर; अतन् नटु नाप्पण्–उसके ठीक मध्य में; नामम्–प्रसिद्ध; पॊन् मलर् पीटम् तन् मेल्–स्वर्णसुमन के पीठ पर; नान् मुकन्–चतुर्मुख; पॊलिय तोन्ऱुम् तन्मैयुम्–शोभा के साथ विराजमान थे वह हाल; कण्टु–देखकर; कैयाल् वणङ्कितान्–हाथ जोड़कर नमस्कार किया। २६८६

धर्ममूर्ति ने उस पर्वत पर लोकस्रष्टा ब्रह्मा का लोक देखा। उसके बीचोबीच स्वर्ण-कमल-पीठ पर चतुर्मुख विराज रहे थे। उस शोभा को देखकर उसने हाथ जोड़े। २६८६

तरुवन मॊन्ऱि वानोर् तलैत्तलै मयङ्गित् ताळप्
पॊरुवरु मुनिवर् वेदम् पुहऴ्न्दुरै योदै बॊङ्ग
मरुविरि तुळब मौलि मानिलक् किळत्ति योडुन्
दिरुवॊडु मिरुन्द मूलत् तेवैयुम् वणक्कञ् जॆय्दान् 2687

तरु वनम् ऑन्ऱि–तरुलसित वन के साथ; वानोर्–व्योमवासी; तलै तलै–स्थान-स्थान पर; मयङ्कि ताळ–भक्तिमुग्ध हो जहाँ सिर झुकाते हैं; पॊरु अरु मुनिवर्–अनुपम मुनि; वेतम् पुकऴ्न्तु–वेदों से स्तुति करके; उरै–जो कह रहे थे वह; ओतै पॊङ्क–शब्द जहाँ फैल रहा था वहाँ; मा निलम् किळत्तियोटुम्–श्रेष्ठ भूदेवी के साथ; तिरुवॊटुम्–श्री (लक्ष्मी) देवी के साथ; मरु विरि तुळपम् मौलि–सुगन्ध-भरी तुलसी से अलंकृत मुकुटधारी; मूलम् तेवैयुम्–आदिकारण श्रीमन्नारायण को भी; वणक्कम् चॆय्तान्–नमस्कार किया। २६८७

फिर उस स्थान में भूदेवी व श्रीदेवी-सहित तुलसीमाला-किरीटालंकृत श्रीमन्नारायण के दर्शन किये, जहाँ तरुसंकुल वन था, जहाँ स्थान-स्थान पर

देव भक्तिमुग्ध होकर सिर नवा रहे थे और जहाँ से मुनियों की वेदस्तुति का पावन शब्द सब जगह फैल रहा था। २६८७

आयदन् वडहीळ् पाहत् तायिर मरुक्क रान्ऱ
कायहदिर् परप्पि यञ्जु कदिर्मुहक् कमलङ् गाट्टित्
तूयपे रुलह मूत्रुन् दूविय मलरिर् चूळ्न्द
शेयिळै पाहत् तॆण्डो ळॊरुवनै वणक्कज् जॆय्दान् 2688

आयतन् वट कीळ् पाकत्तु–उसके उत्तर-पूर्व भाग में; आन्ऱ–उत्कृष्ट; आयिरम् अरुक्कर्–सहस्र सूर्य-सम; काय् कतिर्–(अन्धकार) निवारक किरणों के साथ; परप्पि–फैलाकर; अञ्चु कतिर् मुकम् कमलम् काट्टि–पाँच उज्ज्वल मुखकमल दिखाते हुए; तूय–पवित्र; पेर् उलकम् मून्ऱम्–तीनों बड़े लोकों के वासी द्वारा; तूविय–अर्पित; मलरिल् चूळ्न्त–पुष्पों से आवृत; चॆम्मै इळै–लाल स्वर्णाभरणभूषित पार्वतीदेवी को; पाकत्तु–अपने अंग में रखनेवाले; ऍण् तोळ् ऑरुवर्तै–अष्टभुज देवता (रुद्र) को; वणक्कम् चॆय्तान्–नमस्कार किया। २६८८

उसके उत्तर-पूर्व में उसने अष्टभुज रुद्र के दर्शन किये, जो हज़ार सूर्यों की सम्मिलित प्रभा के समान ज्योतिर्मय थे; पाँच मुखकमल दरसा रहे थे; और जो पवित्र त्रिलोकवासियों द्वारा पूजा में अर्पित पुष्पों से आवृत थे। उनके बायें अर्धांग में लाल स्वर्ण से निर्मित आभरणभूषिता पार्वतीदेवी थीं। उसने उनको नमस्कार किया। २६८८

शन्दिर नतैय कोऱ्ऱत् तनिक्कुडै तलैयिऱ् ऱाहच्
चुन्दर महळि रङ्गैच् चामरै तॆन्ऱ रूव
अन्दर वात नाड रडिदॊळ मुरश मार्प्प
इन्दिर निरुन्द तन्मै कण्डुवन् दिऱैञ्जिप् पोनान् 2689

चन्तिरन् अतैय–चन्द्र-सम; कोऱ्ऱम् तनि कुटै–अप्रतिम विजयछत्र; तलैयिऱ् आक–सिर के ऊपर था; चुन्तरम् मकळिर्–सुन्दर स्त्रियाँ; अकम् कै चामरै–जो अपने हाथ में लिये थीं वे चामर; तॆन्ऱल् तूव–मलयपवन (सी हवा) कर रहे थे; अन्तरम् वातम्–अन्तरिक्ष आकाश के; नाटर्–लोकवासी; अटि तॊळ–चरणवन्दना कर रहे थे; मुरचम् आर्प्प–भेरी बज रही थी; इन्तिरन् इरुन्त–(इस सन्निवेश में) इन्द्र जो विराजमान रहा वह; तन्मै कण्टु–शान देखकर; उवन्तु–खुश होकर; इऱैञ्चि–नमन करके; पोनान्–गया। २६८९

फिर उसने इन्द्र के दर्शन किये। इन्द्र के ऊपर चंद्र-सम विजयछत्र शोभ रहा था। सुन्दर अप्सराएँ चामर डुलाकर मलयपवन-सी वायु संचरित करा रही थीं। व्योमलोकवासी देव चरणों में नमन कर रहे थे। भेरियाँ बज रही थीं। यह वैभव देखकर हनुमान हुलसित हुआ और नमस्कार करके आगे गया। २६८९

पूवलर् मरत्तैप् पोर्प्पप् पॉऱ्पहम् विरिन्दु पॊङ्गित्
तेवर्द मिरुक्कै यात् मेरुवित् शिहरच् चेर्पित्
मूवहै युलहुम् जळ्न्द मुरट्टिशै मुऱैयिर् ऱाङ्गुङ्
गावल रॆण्मर् नित्ऱ तन्मैयुन् दॆरियक् कण्डान् 2690

पू अलर्–विकसित पुष्पयुक्त; मरत्तै पोर्प्प–कल्पतरु को घेरे; पॉऱ्पु–छटा; अकम् विरिन्तु पॊङ्कि–जिससे निकलकर बढ़ी; तेवर् तम् इरुक्कै आत्–जो देवों का वासस्थान था; मेरुवित् चिकरम् चेर्प्पिल्–मेरु के शिखर-स्थल में; मू वकै उलकुम् चूळ्न्त–त्रिविध लोकों में फैली; मुरण् तिचै–परस्पर विपरीत दिशाओं को; मुऱैयिल् ताङ्कुम्–यथोचित रीति से धारण करनेवाले; ऍण्मर् कावलर्–अष्ट दिग्पालकों के; नित्ऱ तन्मैयुम्–स्थित रहने का हाल भी; तॆरिय कण्टान्–खूब देखा। २६६०

मेरुशिखर पर, जो पुष्पित कल्पक वृक्ष के समान शोभा का आगार अतः देवों का वासस्थान बना था, उसने आठों दिक्पालों को देखा जो विपरीतवर्ती दिशाओं को सँभालते थे। २६९०

अत्तडङ् गिरियै नीङ्गि यत्तलै यडैन्द वळ्ळल्
उत्तर कुरुवै युऱ्ऱा नॊळियवन् कदिर्ह ळूत्ऱिच्
चॆऱ्ऱिय विरुळिन् ऱाक्कि विळङ्गिय शॆयलै नोक्कि
वित्तहन् विटिन्द दॆन्ना मुडिन्ददॆन् वेह मॆन्ऱान् 2691

अ तट किरियै–उस बड़े पर्वत को; नीङ्कि–छोड़कर; अ तलै–उस पार; अटैन्त वळ्ळल्–जो गया वह उदार प्रभु; उत्तर कुरुवै उऱ्ऱान्–उत्तरकुरु में गया; ऑळियवन् कतिर्कळ् ऊत्ऱि–सूर्य की किरणें स्थायी रहीं; चॆऱ्ऱिय–घने; इरुळ् इन्ऱु आक्कि–अँधेरे का अभाव बनाकर; विळङ्किय चॆयलै नोक्कि–शोभ रहा था उस (जादू के) काम को देखकर; वित्तकन्–विदग्ध ने; विटिन्ततु–प्रभात हो गया; ऍन्ना–कहकर; ऍन् वेकम् मुटिन्ततु–मेरा वेग भी बन्द हो गया; ऍन्ऱान्–कहा। २६६१

प्रभु हनुमान ने उस बड़े पर्वत को पार किया। उस तरफ़ उत्तर कुरु प्रदेश में आया। वहाँ देखा कि किरणमाली की किरणें खूब फैली हैं और अंधेरे का अभाव हो गया है। विदग्ध हनुमान ने सोचा कि प्रभात हो गया और मेरा वेग (बल भी) समाप्ति पर है। (उसे दुःख हुआ)। २६९१

आदिया नुणरा मुन्न मरुमरुन् दुदवि यल्लिर्
पादिया लनैय तुन्ब महऱ्ऱुवान् बावित् तेर्कुच्
चोदिया नुदयञ् जॆय्दा नुऱ्ऱदोर् तुणिद लाऱ्ऱेत्
एदियान् शॆय्व दॆन्ना विडरुऱ्ऱा निणैयि लादान् 2692

इणैयिलातान्–अनुपम हनुमान; आतियान् उणरा मुन्नम्–आदिपुरुष श्रीराम के होश में आने से पहले; अरु मरुन्त उतवि–श्रेष्ठ औषध को देकर; अल्लिल्

पातियाल्–अर्धरात्रि के अन्दर; अतैय तुन्पम् अकर्र्रुवात्–उनका वैसा दुःख दूर करने का; पावित्तेर्कु–विचार रखनेवाले मुझे (निराश करने); चोतियान् उतयम् चॅय्तान्–किरणमाली उदित हो गया; उर्र्रतु–हानि हो गयी; ओर् तुणितल् आर्र्रेन्–कोई निर्णय नहीं कर पाता; यान् चॅय्वतु ॲनु–अब मेरा करणीय कृत्य क्या है; ॲन्ना–ऐसा सोचकर; इटर् उर्र्रान्–दुःखी हुआ। २६९२

अनुपम हनुमान ने आप ही आप चिंता के साथ कहा— पुरुष पुरातन श्रीराम के जागने से पहले औषध देकर आधी रात के अंदर क्लेश दूर करने की बात मैंने सोची थी। पर अब ज्योतिष्मान सूर्य उग आया। बस! मेरी इच्छा असफल हो गयी और मुझे कष्ट मिल गया। अब कोई निर्णय नहीं कर पा रहा। अब मुझे कर्तव्य क्या है? । २६९२

कार्र्रिशै शुरुङ्गच् चॅल्लुङ् गडुमैयान् कदिरिन् शॅल्वन्
मेर्र्रिशै यळुवा नल्लन् विडिन्ददु मन्रु मेरु
मार्र्रिनान् वडपार् रोन्रु मॅन्बदु मरैहळ् वल्लोर्
शार्र्रिना रॅन्नत् तुन्बन् दणिन्दनन् र्रवत्तु मिक्कान् 2693

तवत्तु मिक्कान्–तपोश्रेष्ठ; काल् तिचै चुरुक्क–पवन दिशा में मन्द चले, ऐसा; चॅल्लुम्–चलनेवाला; कटुमैयान्–वेगवान हनुमान; कतिरिन् चॅल्वन्–किरणधनी; मेर्र् चिल–पश्चिम दिशा में; ॲळुवान् अल्लन्–उगनेवाला नहीं; विटिन्ततुम् अन्रु–प्रभात हुआ भी नहीं; मेरु–मेरु पर; मार्र्रिनान्–अपनी दिशा बदलकर; वटपाल् तोन्रुम् ॲन्पतु–उत्तर में; तोन्रुम्–पश्चिम में दिखायी देगा (सूर्य); ॲन्पतु–यह बात; मरैकळ् वल्लोर्–वेदपारंगतों ने; चार्र्रिनार्–कहा है; ॲन्न–ऐसा सोचकर; तुन्पम् तणिन्तनन्–दुःख शान्त कर लिया। २६९३

तपोश्रेष्ठ तथा पवन-गति-गामी हनुमान ने देखा कि सूर्य अपनी बायीं तरफ़ उगा है। उसने मुड़कर देखा तो सूर्य को दायीं ओर देखा। तब सोचने लगा कि किरणमाली पश्चिम दिशा में उगनेवाला नहीं। इसलिए प्रभात भी नहीं हुआ है। वेदज्ञों का कहना है कि (यह पुराणों का मत है कि मेरु के) उत्तर भाग में सूर्य के उदय की दिशा पश्चिम है। इसलिए उसने दुःख छोड़ दिया। २६९३

इरुवरे तोन्रि यॅन्रु मीर्र्रिला वायु ळॅय्दि
ऑरुवरो डॊरुव रुळ्ळ मुयिरॊडु मॊन्रे याहिप्
पॊरुवरु मिन्बन् दुय्त्तुप् पुण्णियम् बुरिन्दोर् वैहुन्
दिरुवुर्रे कमल मन्न नाट्टैयुन् दॅरियक् कण्डान् 2694

इरुवरे तोन्रि–(स्त्री-पुरुष) दो ही पैदा होकर; ॲन्रुम् ईर्र् इला–कभी अन्त न होनेवाली; आयुळ् ॲय्ति–आयु पाकर; ऑरुवरोटु ऑरुवर्–परस्पर; उळ्ळम् उयिरॊटु–मन और प्राण के; ऑन्रे आकि–एक होकर; पॊरुवरुम् इन्पम् तुय्त्तु–अनुपम सुख भोगकर; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्–पुण्यकृत जहाँ रहते थे; तिरु उर्रे

कमलम् अमृत-श्री जिस पर रहती हैं, उस कमल के समान; नाट्टैयुम् तॆरियक् कण्टान्-उत्तरकुरु प्रदेश को देखा (हनुमान ने)। २६९४

उस उत्तर कुरु देश में वे ही लोग रहते थे जो विना जन्म बदले, स्त्री और पुरुष का जन्म लेकर, एक-प्राण-मन हो अपार सुख-भोग में सर्वदा लीन थे। वे ऐसा पुण्य कर चुके थे। वह और भी श्रीलक्ष्मी के वास के कमल के समान था। हनुमान ने उस देश को खूब देखा। २६९४

वन्निनाट् टियपॊन् मौलि वानवन् मलरिन् मेलान्
कन्निनाट् टिरुवच् चेर्न्द कण्णनु माळुङ् गाणिच्
चॆन्निनाट् टॆरियल् वीरन् ऱियाहमा विनोदन् ऱॆय्वप्
पॊन्निनाट् टुवमै वैप्पप् पुलन्गॊळ नोक्किप् पोनान् 2695

वन्नि नाट्टिय-वह्नि पुष्पधारी; पॊन् मौलि-स्वर्णकिरीटी; वानवन्-देव शिवजी और; मलरिन् मेलान्-कमलासन; नाळ् नाळ्-नित्ययौवना, नित्यसुन्दरी; कन्नि तिरुवै चेर्न्त-कन्या श्री को अपने वक्ष में रखे हुए; कण्णनुम्-पद्मपत्र-विशालाक्ष; आळुम् काणि-(उनके द्वारा) शासित भूमि; चॆन्नि-सिर पर; नाळ् तॆरियल्-उसी दिन खिले पुष्पों की मालाधारी; वीरन्-वीर; तियाकमा विनोतन्-त्याग ही जिसका विनोद था उस चोळ राजा के; तॆय्वम् पॊन्नि नाटु उवमै-दिव्य कावेरी प्रदेश के समान; वैप्पै-भूभागों को; पुलन् कॊळ नोक्कि-चक्षुरिंद्रिय खूब जमाकर देखते हुए; पोनान्-गया। २६९५

वहाँ 'वह्नि' पुष्पधारी स्वर्णकिरीटी शिवजी, कमलासन ब्रह्मा और नित्यसुन्दरी नित्ययौवना श्री का वासस्थान जिनका वक्ष है, वे पद्माक्ष शासन करते थे। वहाँ के भूभाग उस 'त्याग-विनोद' चोळ राजा के दिव्य कावेरी प्रदेश के समान उर्वर थे, जो ताज़े फूलों की माला सिर पर धारण करता था। हनुमान उनको आँख भर देखता गया। (एक चोळ राजा का विरुद 'त्यागविनोद' पड़ा था। यह कुलोत्तुंग चोळ ही था, यह एक धारणा है। अन्य लोगों का कहना है कि यह विरुद और कुछ राजाओं को भी मिला था। अतः इसके आधार पर कम्बन का काल-निर्णय करना उचित नहीं माना जाता।)। २६९५

विरियवान् मेरु वॆन्नुम् वॆऱ्पिनिन् मीदु शॆल्लुम्
पॆरियव नयनार् शॆल्वम् बॆऱ्ऱवन् पिऱप्पिऱ् पेर्न्दान्
अरियवा नुलह मॆल्ला मळन्दनाळ् वळर्न्दु तोन्ऱुङ्
गरियव नॆन्न निन्ऱ नीलमाल् वरैयैक् कण्डान् 2696

वान् विरिय-आकाश चीरते हुए; मेरु ऎन्नुम् वॆऱ्पितिन् मीतु-मेरु कथित पर्वत के ऊपर; चॆल्लुम्-जानेवाले; पॆरियवन्-महान; अयनार् चॆल्वम् पॆऱ्ऱवन्-ब्रह्मापद के लिए नामज़द; पिऱप्पिल् पेर्न्तान्-आगे जिसका जन्म नहीं, उस हनुमान ने; उलकम् ऎल्लाम् अळन्त नाळ्-त्रिलोक मापने के उस दिन; वळर्न्तु तोन्ऱुम्-जो बढ़ते दिखे;

अरियवन् करियवन् ॲन्न्-हरि-नाम के श्यामल देव के समान; निन्ऱ-जो खड़ा था उस; नीलम् माल् वरैयै कण्टान्-नीले बड़े पर्वत को देखा। २६९६

महान हनुमान ने, जो आकाश को चीरते हुए मेरु के पर्वत के ऊपर से जा रहा था, जो ब्रह्मा के पद के लिए नामज़द हो चुका था, जो आगे जन्म नहीं लेनेवाला था, नीले पर्वत को देखा जो त्रिलोक मापने के उस दिन बढ़े रहे त्रिविक्रमदेव के समान ऊँचा बढ़ा था। २६९६

अऱ्कुन्ऱ वलङ्गु शोदि यम्मलै यहलप् पोनान्
पॊऱ्कुन्ऱ मत्तैय तोळा नोक्किनान् पुलवन् शॊन्न
नऱ्कुन्ऱ मदनैक् कण्डा नुणर्न्दन नाह मुऱ्ऱ
अॅऱ्कुन्ऱ वॅऱियुन् दॅय्व मरुन्दडै याळ मॅन्न 2697

अल् कुन्ऱ-अन्धकार को भी संकोच में डालते हुए; अलङ्कु चोति-रहनेवाली छटा से युक्त; अ मलै-वह पर्वत; अकल-दूर हो ऐसा; पोनान्-आगे गया; पॊन् कुन्ऱम् अत्तैय-स्वर्णपर्वत-सदृश; तोळान्-कन्धों वाले ने; नोक्किनान्-दृष्टि दौड़ाकर; पुलवन् चॊन्न-विद्वान (जाम्बवान) से कथित; नल् कुन्ऱम् अतत्ै-श्रेष्ठ पर्वत को; कण्टान्-देखा; तॅय्वम् मरुन्तु अटैयाळम्-दिव्य ओषधि का लक्षण; नाकम् मुऱ्ऱ-स्वर्ग भर में; ॲल् कुन्ऱ-सूर्य को फीका करते हुए; ॲऱियुम्-प्रकाश छिटकाना; ॲन्न-ऐसा अनुमान करके; उणर्न्ततन्-जान लिया। २६९७

वह पर्वत अँधेरे को भी संकोच में डालते हुए शोभ रहा था। पर्वतोपम कंधों वाला उसको पीछे छोड़ आगे गया। उसने जाम्बवान से निर्दिष्ट ओषधि-पर्वत को देखा। दिव्य ओषधि का लक्षण आकाशलोक भर में सूर्य के प्रकाश को निष्प्रभ बनाते हुए प्रकाश देना है। इस तर्क के आधार पर उसने अनुमान कर लिया कि यह वही पर्वत है। २६९७

पाय्न्दनन् पाय्द लोडु मम्मलै पाद लत्तुच्
चाय्न्ददु काक्कुन् दॅय्वञ् जलित्तन तडुत्तु वन्दु
काय्न्दन नीदा नियावन् करुत्तॅन्नॆॊल् कळ्ळॆ हॅन्न
आय्न्दव नुऱ्ऱ दॅल्ला मवर्ऱिनुक् कऱियच् चॊन्नान् 2698

पाय्न्ततन्-झपटा; पाय्तलोटुम्-झपटने पर; अम् मलै-वह पर्वत; पातलत्तु चाय्न्ततु-पाताल में चला गया; काक्कुम् तॅय्वम्-रक्षक देवता; चलित्तन-विचलित हुए; तटुत्तु वन्त-(बाद) रोकते हुए आये; काय्न्तन-गुस्सा दिखाकर; नी तान् यावन्-तुम हो कौन; करुत्तु ॲन्-अभिप्राय क्या है; कळ्ळक-बताओ; ॲन्न-(उनके) पूछने पर; आय्न्तवन्-विवेकी (हनुमान) ने; उऱ्ऱतु ॲल्लाम्-जो हुआ वह सब; अवर्ऱिनुक्कु-उन्हें; अऱिय-समझाकर; चॊन्नान्-कहा। २६९८

हनुमान उस पर झपटा। तो वह पर्वत पाताल तक धँस गया। पालक देवता विचलित हुए। फिर गुस्सा करके आये और रोकते हुए

पूछा कि तू है कौन ? तेरा अभिप्राय भी क्या है ? तब विवेकशील हनुमान ने अपने आने का सारा हाल बताया। २६९८

केट्टवै यॆय वेण्डिर् रियर्ट्रिप्पिन् कॆडाम लॆम्बार्
काट्टॆन वुणर्त्ति वाळ्त्तिक् करन्दन कमलक् कण्णन्
वाट्टलै नेमि तोन्ट्रि मरैन्ददु मण्णि निन्ड्रुन्
दोट्टन नुमन् मर्रक् कुन्ट्रिनै वयिरत् तोळाल् 2699

केट्टवै–श्रोता देवता; ऐय–बाबा; वेण्टिरु इयर्ट्रि–जो चाहते हो वह काम पूरा करके; पिन्–फिर; कॆटामल्–हानि किये बिना; ऎम्पाल् काट्टु–हमारे पास ला दिखाओ; ऎन–ऐसा; उणर्त्ति वाळ्त्ति–समझाकर आशीर्वाद देकर; करन्तन–छिप गये; कमलम् कण्णन्–कमलाक्ष श्रीविष्ण का; वाळ् तलै–तीक्ष्ण धारदार; नेमि–चक्र; तोन्ट्रि–प्रगट होकर; मरैन्ततु–छिप गया; वयिरम् तोळाल्–वज्र-दृढ़ हाथों से; अनुमन्–हनुमान ने; मर्रु–बाद; अ कुन्ट्रिनै–उस पर्वत को; मण्णिन् निन्ड्रुम्–पृथ्वी से; तोट्टनन्–जड़ से खोद लिया। २६९९

हनुमान का कहा सुनकर उन देवताओं ने कहा कि बाबा ! ले जाओ अपना काम पूरा करो और बाद उन्हें बिना हानि के हमारे पास लौटाकर दिखा दो। फिर उसे आशीर्वाद देकर वे ओझल हो गये। तब कमलाक्ष श्रीविष्णु के चक्र ने भी आ दर्शन दिये और अपने को छिपा लिया। वज्रदृढ़ कंधों वाले हनुमान ने उस पर्वत को भूमि से मूल के साथ उखाड़ लिया। २६९९

इङ्गुनिन् ड्रिन्नन मरुन्दॆन् ड्रॆण्णिनार्
चिङ्गुमार् कालमॆन् ड्रुणर्न्द शिन्दैयान्
अङ्गदु वेरॊडु मङ्गै ताङ्गिनान्
पॊङ्गिय विशुम्बिडैक् कडिदु पोहुवान् 2700

इङ्कु निन्ड्रु–यहाँ रहकर; इन्नन मरुन्तु–यह औषध है; ऎन्ड्रु ऎण्णिनाल्–ऐसा सोचते रहें तो; कालम् चिङ्कुम्–काल व्यर्थ जायगा; ऎन्ड्रु–ऐसा; उणर्न्त चिन्तैयान्–समझकर सोचनेवाला; अङ्कु–तब; अतु–उस पर्वत को; वेरॊटुम्–मूल के साथ; अम् कै ताङ्कितान्–अपने सुन्दर हाथों में उठा लेकर; पॊङ्किय विसुम्पु इटै–विशाल आकाश में; कटितु पोकुवान्–तेजी से (उड़ता) चला। २७००

हनुमान ने सोचा कि यहीं रहकर ओषधि के सम्बन्ध में सोचता रहूँ, तो समय व्यर्थ बीत जायगा। वह पर्वत को अपने लाल हाथ में उठाये झट विशाल आकाश में उड़ चला। २७००

आयिर मियोशनै यहल मीदुयर्न्
दायिर मियोशनै याळ्न्द दम्मलै

एयॅनु मात्तिरत् तॊरुहै येन्दिनान्
तायिन नुलहॅलान् दवळ्न्द शीर्त्तियान् 2701

उलकु ऍलाम्-संसार भर में; तवळ्न्त चीर्त्तिवान्-जिसकी कीर्ति फैली थी; आयिरम् योचनै दूरम् अकलम्-हज़ार योजन दूर; मर्पुरत्तु उयर्न्तु-ऊपर उठकर; आयिरम् योचनै-हज़ार योजन; आळ्न्त्तु-जिसकी जड़ गयी थी, जो भूमि के अंदर; अ मलै-उस पर्वत को; ए ऍन्नुम् मात्तिरत्तु-'ए' कहने की देरी के अन्दर; ऒरुकै एन्तिनान्-एक हाथ में उठा लिया (उस हनुमान ने)। २७०१

हनुमान ने, जिसका यश सभी लोकों में व्याप्त था, हज़ार योजन ऊँचे और हज़ार योजन गहरे उस पर्वत को 'ऐ' कहने के समय के अन्दर उठा लिया। वह उसे अपने एक हाथ में उठा लिये लपक चला। २७०१

अत्तलै यत्नव नन्नय नायिनान्, इत्तलै यिरुवरुम् विरैवि नॅय्दिनार्
कैत्तलत् तालडि वरुडुङ् गालैयिल्, उत्तमर् कुर्रदै युणर्त्तु वामरो 2702

अ तलै अन्नवन्-वहाँ वह; अन्नैयन् आयिनान्-वैसा हुआ; इ तलै-यहाँ; इरुवरुम्-दोनों (जाम्बवान और विभीषण); विरैविन्-शीघ्र; ऍय्तिनार्-पहुँचे (श्रीराम के पास); कै तलत्ताल्-हाथों से; अटि वरुटुम् कालैयिल्-पैर सहलाते समय; उत्तमर्कु-पुरुषोत्तम का; उर्रतै-जो हुआ; उणर्त्तुवाम्-वह कहेंगे। २७०२

उधर उसकी स्थिति वह रही। इधर जाम्बवान और विभीषण दोनों शीघ्र श्रीराम के पास जा पहुँचे। उन्होंने जब श्रीराम के पैर सहलाये, तब श्रीराम का क्या हाल हुआ वह अब हम (कवि) बताएँगे। २७०२

वण्डॅन मडन्दैयर् मानत्तै वेरीडुङ्
गण्डन कॊळवरुङ् गरुणै तामॅनक्
कॊण्डन कॊडुप्पन वरङ्गळ् कोळिलाप्
पुण्डरी हत्तुणै तरुमम् बूत्तन 2703

वण्टु ऍन्न-भ्रमरों के समान; मटन्तैयर् मनत्तै-रमणियों के मनों को; वेरॊटुम् कण्टन-मूल के साथ जिन्होंने अपना बना लिया था; कॊळ वरुम्-सब उड़ेल ले, ऐसी; करुणै ताम् ऍन्न-करुणा यही है; कॊण्टन-ऐसे गुण अपने में रखनेवाली; वरङ्कळ् कॊटुप्पन-वरदायी जो हैं; कोळ् इला-विषमता-रहित; पुण्टरीकम् तुणै-आँखों का कमलद्वय; तरुमम् पूत्तन-धर्म के समान खिल उठे। २७०३

उनकी कमल-सम आँखें, जो भ्रमरों के समान रमणियों के मनों को मूल के साथ अपना बना ले सकती थीं, जो सब जीवों के ग्रहण योग्य करुणा-रूप थीं और जो वरदायिनी थीं, धीरे-धीरे धर्म के समान विकसित हुईं। २७०३

नोक्कित्तन् करडिहट् करशु नोन्बुहळ्
आक्किय निरुदन मळद कणणिनार्

तूक्किय तलैयितर् तॉऴुद कैयितर्
एक्कमुऱ् इरुहिरुन् दिरङ्गु वार्हळ 2704

अऴुत कण्णितार्–रोती आँखों वाले; तूक्किय तलैयितर्–उठाए हुए सिर वाले; तॉऴुत कैयितर्–नमस्कार की मुद्रा में धरे हुए हाथों वाले; एक्कमुऱ्ऱु–तरसकर; अरुकु इरुन्तु–पास रहकर; इरङ्कुवार्कळ–जो दुःख से पीड़ित हो रहे थे उन; करटिकट्कु अरचु–रीछों के राजा को; नोन् पुकऴ् आक्किय–और यश को बढ़ा लेनेवाले; निरुततुम्–राक्षस (विभीषण) को; नोक्कितन्–श्रीराम ने देखा। २७०४

श्रीराम ने आँखों को खोलकर रीछों के राजा जाम्बवान और बड़े यशस्वी राक्षसराजा विभीषण पर अपनी दृष्टि डाली। वे आँसू बहाते हुए अंजलिबद्ध हो पास खड़े, दुःख से रो रहे थे। २७०४

एविय कारिय मियऱ्ऱि यय्दिऩै
नोविलै कॉल्लॆऩ नोक्कि वीडणऩ्
तावरुम् बॆरुम्बुहऴ्च् चाम्बऩ् ऱऩ्ऩैयुम्
आविवऩ् दऩैकॉलॆऩ् ऱरुळि ऩाऩरो 2705

वीटणन् नोक्कि–विभीषण को देखकर; एविय कारियम्–आज्ञापित कार्य; इयऱ्ऱि ॲय्तिनै–पूरा करके आये क्या; नोवु इलै कॉल्–कोई कष्ट नहीं है क्या; ॲन–ऐसा और; ता अरु–निर्दोष; पॆरु पुकऴ्–बड़े यशस्वी; चाम्पन् तन्नैयुम्–और जाम्बवान को देखकर; आवि वन्ततै कॉल्–जीवंत हो गये क्या; ॲन्ऱु–ऐसा; अरुळिनान्–पूछने की कृपा की। २७०५

श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि क्या तुम मेरी आज्ञा का काम पूरा कर आये? कोई कष्ट तो नहीं है न? फिर निर्दोष यशस्वी जाम्बवान से पूछने की कृपा की कि तुम जीवित हो गये? । २७०५

ऐयऩ्मीर् नमक्कुऱ्ऱ वऴिवि दाबलिऩ्
शॆय्वहै पिऴैदिला वुयिरिऱ् ऱीर्ऩ्दवर्
उय्हिल रिऩिच्चॆय्यऱ् कुरिय वुण्डॆऩिऱ्
पॊय्यिलीर् पुहलुदिर् पुलमै युळ्ळत्तीर् 2706

ऐयन्मीर्–जी; पिऴैतु चॆय्वकै इला–प्रत्यवायहीन रीति से; उयिरिल् तीर्न्तवर्–जो प्राणहीन हो गये; उय्किलर्–नहीं जीवित हुए; नमक्कु उऱ्ऱ–हमें प्राप्त; अऴिवु इतु–नष्ट यह; आतलिन्–इसलिए; इनि–अब; चॆयऱ्कु उरियतु उण्टु–करने योग्य काम कुछ है; ॲनिल्–तो; पुलमै उळ्ळत्तीर्–ज्ञानी मन वाले; पॊय्यिलीर्–असत्य न बोलनेवाले; पुकलुतिर्–कहो। २७०६

मित्रो! प्रत्यवायहीन रीति से जो मरे हैं वे मर ही चुके हैं। हमारी बड़ी हानि है यह। अब हमें करने को कुछ हो, हे बुद्धिमान लोगो! बताओ। २७०६

शीदैयॆऩ् ऱॊरुत्तिया लुळ्ळन् दॆम्बिय
पेदैयेऩ् शिऱुमैया लुऱ्ऱ पॆऱ्ऱियै
यादॆऩ वुणर्त्तुहे ऩुलहो डिव्वुराक्
कादैवऩ् बऴियॊडुन् दिरुत्तिक् काट्टिऩेऩ् 2707

चीतै ऍऩ्ऱ ऑरुत्तियाल्–सीता नाम की एक स्त्री के कारण; उळ्ळम् तेम्पिय–चित्तभ्रमित; पेतैयेऩ्–अज्ञ मुझे; चिऱुमैयाल्–अल्पता के कारण; उऱ्ऱ पॆऱ्ऱियै–जो मिली वह उपलब्धि; यातु ऍऩ–क्या; उणर्त्तुकेऩ्–बताऊँगा; इव् उलकोटु उऱा–इस लोक से असंबद्ध; कातै–अपनी गाथा को; वऩ् पऴियॊटुम्–क्रूर निंदा के साथ; निऱुत्ति–लगवाकर; काट्टिऩेऩ्–दिखाया। २७०७

सीता नाम की स्त्री के कारण बुद्धिहीन मेरा मन विकृत हो गया था। क्षुद्र बुद्धि से मुझ पर क्या आया है—इसका क्या बताऊँ? मेरी गाथा संसार की रीति से बिलकुल अलग रह गयी और मैंने उसे निंद्य बना छोड़ा है। २७०७

मायैयिऩ् माऩॆऩ वॆम्बि वाय्मैयाल्
तूयऩ वुरुदिहळ् शॊऩ्ऩ शॊऱ्कॊळेऩ्
पोयिऩऩ् पॆण्णुरै मऱादु पोऩदाल्
आयदिप् पऴियुडै याऩि यऩ्बिऩीर् 2708

अऩ्पिऩीर्–प्यारे; मायैयिऩ् माऩ्–माया का मृग; ऍऩ–ऐसा; ऍम्पि–मेरे लघु सहोदर के; वाय्मैयाल्–सच्चे रूप से; तूयऩ उऱुतिकळ् चॊऩ्ऩ–पवित्र हित में कहे; चॊल् केळेऩ्–वचन मैंने नहीं सुने; पोयिऩऩ्–(पकड़ने) गया; पॆण् उरै मऱातु–स्त्री का कहा इन्कार न करके; पोऩताल्–गया इसलिए; इ पऴि उटै–यह निन्दा-सहित; आऩि आयतु–हानि हो गयी। २७०८

प्यारो! मेरे भाई ने मायामृग के सम्बन्ध में सचेत किया था। पर उसके पवित्र और हितकारी वचनों पर मैंने ध्यान नहीं दिया। हिरन पकड़ने गया। स्त्री के वचन से न मुकरने का फल यह हुआ कि निन्दा भी आ गयी है और बड़ी हानि भी हो गयी है। २७०८

कण्डऩ ऩिरावणऩ् ऱऩ्ऩैक् कण्गळाल्
मण्डमर् पुरिन्दऩऩ् वलियि ऩारुयिर्
कॊण्डिल ऩुऱवॆलाङ् गॊडुत्तु माळनान्
पण्डुडैत् तीविऩै पयन्द पण्बिऩाल् 2709

इरावणऩ् तऩ्ऩै–रावण को; कण्कळाल् कण्टऩऩ्–आँखों से देखा; वलियिऩ्–जोर के साथ; मण्टु अमर् पुरिन्तऩऩ्–घोर युद्ध किया (मैंने); नाऩ् पण्टु उटै–मेरा पूर्वजन्मकृत; तीविऩै–बुरा कर्म; पयन्त–फल देने लग गया; पण्पिऩाल्–उसके फलस्वरूप; उऱवु ऍलाम् माळ–सब नातेदारों को मरने; कॊटुत्तु–देकर; वलियिऩ्–जबरदस्ती; आरुयिर् कॊण्टिलऩ्–उसके प्राण न हर लिये मैंने। २७०९

रावण को मैंने अपनी आँखों देखा और उससे घमासान लड़ाई भी

की थी। पर पूर्वजन्मों के पापों का फल था कि मैंने उसके प्यारे प्राण नहीं हरे और मेरे सभी बन्धु-मित्र भी मर गये। २७०९

तेवर्दम्	बडैक्कलन्	दॊडुत्तुत्	तीयवन्
शावदु	काण्डुमॆन्	रिळवल्	शाऱ्ऱवुम्
आवदं	यिशैन्दिल	नळिव	वॆन्नवयिन्
मेवुद	लुरुवदोर्	विदियिन्	वॆम्मैयाल् 2710

इळवल्–मेरा छोटा भाई; तेवर् तम् पटैकलम्–ब्रह्मा (देव) का अस्त्र; तॊदुत्तु–चलाकर; तीयवन् चावतु काण्टुम्–खल (इन्द्रजित्) का मरना देख लें; ऍन्ऱु–ऐसा; चाऱ्ऱवुम्–जब बोला तब; अळिवतु–नाश का समय; ऍन् वयिन् मेवुतल् उरुवतु–मेरे पास आ जाने के; ओर् वितियिन् वॆम्मैयाल्–प्रारब्ध की क्रूरता से; आवतं–हितकारी उससे; इचैन्तिलन्–सहमत नहीं हुआ। २७१०

मेरे छोटे भैया ने मुझसे सुझाया कि ब्रह्मास्त्र चलाकर खल मेघनाद का वध करा दूँगा। पर "विनाशकाल आ जाए मेरा" —यह क्रूर विधि का भयंकर विधान था और मैंने उसे अनुमति नहीं दी। २७१०

निन्ऱिल	नुडॆरि	पडैक्कु	नीदियाल्
ऑन्ऱिय	पूशनै	यियऱ्ऱ	वुन्नितेन्
पॊन्ऱिनर्	तमरॆला	मिळवल्	पोयिनान्
वॆन्ऱिल	नरक्कनै	विदियिन्	वॆम्मैयाल् 2711

निन्ऱिलन्–(भाई के साथ युद्धस्थल में) न खड़ा रहकर; ऍरि पटैक्कु–चलाये जानेवाले अस्त्र-शस्त्रों की; नीतियाल्–उचित क्रम से; ऑन्ऱिय–युक्त; पूचनै इयऱ्ऱ–पूजा करने को; उन्नितेन्–सोचा था; वितियिन् वॆम्मैयाल्–विधि के क्रूर विधान से; तमर् ऍलाम् पॊन्ऱिनर्–अपने सभी लोग मर गये; इळवल्–मेरा छोटा भाई; अरक्कनै वॆन्ऱिलन्–राक्षस को न हराकर; पोयिनान्–चल बसा। २७११

मैं अपने भाई के साथ न रहा। मैंने यथोचित रीति से युद्ध में प्रयुक्त होनेवाले अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करनी चाही। विधि की क्रूरता थी कि मेरे अपने सभी हत हो गये। मेरा भाई भी राक्षस को न हराने का दुःख लेकर मर गया। २७११

ईण्डिव	णिरुन्दवै	यियम्बु	मेळैमै
वेण्डुव	दन्ऱिति	यमरित्	वीडिय
आण्डहै	यन्बरै	यमरर्	नाट्टिडैक्
काण्डले	नलम्बिऱ	कण्ड	दिल्लैयाल् 2712

इण्टु–अब; इवण् इरुन्तु–यहाँ रहकर; इवै–ये बातें; इयम्पुम्–कहने की; एळैमै–बुद्धिहीनता; वेण्टुवतु अन्ऱु–नहीं चाहिए; इत्ति–अब; अमरिन् वीटिय–युद्ध में हत; आण् तकै अन्परै–वीर मित्रों को; अमरर् नाट्टु इटै–स्वर्गलोक में; काण्टले नलम्–देखना ही भला है; पिऱ कण्टतु इल्लै–दूसरा उपाय नहीं है। २७१२

अब यहाँ रहकर ऐसी दीन बातें करते रहने की बुद्धिहीनता की आवश्यकता नहीं। पर जो युद्ध में प्राण त्याग चुके, उन प्यारे वीरों को स्वर्ग में (देखने) पहुँचाने का कार्य करना ही भला होगा। फिर कोई रास्ता नहीं दीखता उन्हें यहाँ रख लेने का। २७१२

ॲम्बियैत् तुणैवरै यिळ्न्दप् पालिनि
वॅम्बुपो ररक्करै मुरुक्कि वेरुत्
तम्बिनि निरावण नावि पाळ्पडुत्
तुम्बरुक् कुदविमे लुरुव दॅन्नरो 2713

ॲम्पियै–अपने लघु सहोदर को; तुणै वरै–और मित्रों को; इळन्तु–खोकर; अप्पाल्–बाद; इनि–आगे; वॅम्पु अरक्करै–नृशंसकारी राक्षसों को; पोर्–युद्ध में; मुरुक्कि–मारकर; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल बनाकर; अम्पिनिल्–अपने शर से; इरावणन् आवि पाळ् पटुत्तु–रावण के प्राण छुड़ाकर; उम्परुक्कु उतवि–देवों का उपकार करके; मेल् उरुवतु ॲन्–बाद पाऊँ, ऐसा क्या है। २७१३

प्यारे भाई और मित्रों को मरने देने के बाद नृशंसकारी राक्षसों को युद्ध में हराऊँ, निर्मूल करूँ और अपने अस्त्र से रावण के प्राणों का अन्त करके देवों की सहायता करूँ भी तो लाभ क्या होगा ?। २७१३

इळैयव निऱन्दपिन् नॅवरु मॅन्नॅन्नक्
कळवरु शीर्त्तियॅन् नऱनॅन् नाण्मैयॅन्
गिळैयुरु शुट्रमॅन् नरशॅन् गेण्मैयॅन्
विळैवुदा नॅन्मरै विदियॅन् मॅय्म्मैयॅन् 2714

इळैयवन् इऱन्त पिन्–लघुसहोदर के मरने के बाद; ॲनक्कु ॲवरुम् ॲन्–मेरे लिए कोई क्या है; अळवु अऱु कीर्त्ति ॲन्–अपार कीर्ति से क्या; अऱन् ॲन्–धर्म क्या; आण्मै ॲन्–पौरुष (वीरता) से क्या है; किळै उऱु–शाखायुक्त; चुट्रम् ॲन्–बन्धुओं से क्या; केण्मै ॲन्–मित्रों से क्या; अरचु ॲन्–राज्य से क्या; विळैवु तान् ॲन्–अन्य नतीजों से क्या; नान् मऱै विति ॲन्–चतुर्वेदविहित विधियों से क्या; मॅय्म्मै ॲन्–सत्य से क्या। २७१४

अपने छोटे भाई को खो देने के बाद किससे क्या वास्ता ? अपार यश का भी क्या होगा ? धर्मपालन, वीरता, शाखा-सम बन्धु-बान्धव, मित्र, राज्य या अन्य कोई लाभ —किससे क्या मतलब ? चतुर्वेदविहित चरित्र-पालन या सत्यनिष्ठा से भी क्या होगा ?। २७१४

इरक्कमुम् बाळ्पड वॅम्बि योरुकण्
डरक्करै वॅन्रुनिन् ऱाण्मै याळ्वॅनॅल्
मरक्कणवन् कळवनॅन् वज्ज नेतिनिक्
करक्कुम दल्लदोर् कडनुण् डाहुमो 2715

इरक्कमुम् पाऴ्पट-दया को व्यर्थ बनाते हुए; ऍम्पि ईरु कण्टु-अपने छोटे भाई की मृत्यु देखकर; अरक्करै वॆन्ऱु-राक्षसों को जीतकर; निमृरु-रह कर; आण्मै आळ्वॆतेल्-वीरता दिखाऊँ तो; मरम् कण्-काठ की आँखों का; वल् कळ्वतेन्-चोर रहूँगा; वञ्चतेन्-वंचक भी रहूँगा; इति-अब; करक्कुम् अतु अल्लतु-जीवन अन्त करने के सिवा; ओर्-एक; कटन् उण्टाकुमो-कर्तव्य रहेगा क्या। २७१५

मेरी दया व्यर्थ गयी। मेरा भाई मर गया। अब मैं राक्षसों को जीतकर वीरता दिखाने चलूँ, तो मेरी आँखें काठ की होंगी और मैं चोर रह जाऊँगा ! अब प्राणत्याग छोड़ कोई कर्तव्य है क्या ? । २७१५

तादैयै इऴन्दपिन् शडायु विऱ्ऱपिन्
कादलिन् ऱुणैवरु मुडियक् कात्तुळल्
कोदरु तम्बियुम् विळियक् कोळिलन्
शीदैयै युवन्दुळा नॆन्बर् शोरियोर् 2716

तातैयै इऴन्त पिन्-पिता को खोने के बाद; चटायु इऱ्ऱपिन्-जटायु के मरने के बाद; कातलिन् तुणैवरुम्-सभी प्यारों के; मुटिय-अन्त होने पर; कात्तु उऴल्-मेरे रक्षण में कष्ट जो उठाता रहा; कोतु अऱु तम्पियुम्-अनिंद्य भाई के भी; विळिय-मरने के बाद; चीतैयै उवन्तुळान्-सीता को चाहता है; कोळ् इलन्-सिद्धान्तरहित है; ऍन्पर्-कहेंगे; चीरियोर्-साधू लोग। २७१६

उत्तम साधू लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे ? राम ने पिता को खोया, जटायु को खोया। प्यारे मित्र चल बसे। उसके रक्षण में संकट उठाता जो रहा, वह प्यारा सहोदर मर गया। तो भी सीता के प्रेम के कारण प्राण रख रहा है। उसका कोई अच्छा सिद्धांत नहीं है ! । २७१६

वॆन्ऱन्ऱ नरक्करै वेरुम् वीय्न्दऱक्
कॊन्ऱन्ऱ नयोत्तियैक् कुऱुहिनेन् कुणत्
तिन्ऱुणैत् तम्बियै यिन्ऱि यानुळेन्
नन्ऱर शाळुमो शाल नन्ऱरो 2717

वॆन्ऱन्ऱ्-जीतकर; अरक्करै वेरुम् वीय्न्तु अऱ-राक्षसों का उन्मूलन करके; कॊन्ऱन्ऱ्-मारकर; अयोत्तियै कुऱुकिनेन्-अयोध्या जाकर; कुणत्तु-गुणी; इन् तुणै-अच्छे साथी; तम्पियै-छोटे भाई के; इन्ऱि-विना; यान् उळेन्-मैं रहूँगा (तो); अरचु आळुमा-राज्य करना; नन्ऱु-अच्छा होगा; चाल नन्ऱु-बहुत अच्छा होगा। २७१७

विजय पाऊँ, राक्षस को निर्मूल करूँ, फिर अयोध्या जाऊँ तो भी प्रिय साथी सहोदर को मरने देने के बाद राज्य का शासन करने लगूँ तो अच्छा होगा ! बड़ा अच्छा होगा ! । २७१७

पडियिऩ्ऩ दादलि ऩियादुम् बाऱ्क्किलऩ्
मुडिहुव ऩुडऩ्ऩ मुडुक्किक् कूऱलुम्
अडियिणै वणङ्गियच् चाम्ब ऩाऴियाय्
नॊडिहुव दुळदॆऩ नुवल्व दायिऩाऩ् 2718

पटियिऩ्ऩतु आतलिऩ्–मेरी स्थिति यह है, इसलिए; यातुम् पाऱ्क्किलऩ्–कुछ भी नहीं सोचूँगा; उवऩ् मुटिकुवऩ्–झट मर जाऊँगा; ऎऩ्ऩ–ऐसा; मुट्क्कि कूऱलुम्–त्वरा से कहते ही; अ चाम्पऩ्–उस जाम्बवान ने; अटि इणै वणक्कि–चरणद्वय में नमन करके; आऴियाय्–चक्रधारी; नॊटिकुवतु उळतु–कहने के लिए कुछ है; ऎऩ–कहकर; नुवल्वतु आयिऩाऩ्–कहने लगा। २७१८

मेरी स्थिति यह है। फिर क्या सोचूँ ? न आगे देखूँगा, न पीछे; पर अपने प्राण त्याग दूँगा। श्रीराम ने जब ऐसा ज़ोर के साथ कहा, तब जाम्बवान ने उनके चरणद्वय में नमस्कार करके निवेदन किया कि हे चक्रधारी! एक बात कहनी है। सुनने की कृपा करें। जाम्बवान बताने लगा। २७१८

उऩ्ऩैनी युणर्हिलै यडिय ऩेऩुऩै
मुऩ्ऩमे युणर्हुवऩ् मॊऴिद ड़ीददु
ऎऩ्ऩॆऩि लिमैयव रॆण्णुक् कीऩमाम्
पिऩ्ऩरे तॆरिहुदि तरिविल् पॆऱ्ऱियाय् 2719

तॆरिविल् पॆऱ्ऱियाय्–अग्राह्य गुण वाले; उऩ्ऩै नी उणर्किलै–आपने अपने को नहीं पहचाना; अटियऩेऩ्–दास मैं; उऩै–आपको; मुऩ्ऩमे–पहले ही से; उणर्कुवऩ्–जानता हूँ; अतु मॊऴितल्–उसको कहना; तीतु–ग़लत है; ऎऩ् ऎऩिऩ्–क्योंकि; इमैयवर् ऎण्णुक्कु–देवों के विचार की; ईऩम् आम्–हानि होगी; पिऩ्ऩरे तॆरिकुति–बाद आप ही जान लेंगे। २७१९

हे अज्ञेय! आप (अज्ञेय होकर भी) अपना ज्ञान नहीं रखते! मैं आपको पहले से ही पहचानता हूँ। पर उसको प्रगट करना ग़लत होगा। क्योंकि देवों की बात बिगड़ जायगी। पीछे आप स्वयं पहचान लेंगे। २७१९

अम्बुयत् तवऩ्पडै याव ड़ॆऱ्ऱिऩऩ्
उम्बियै युलप्परु मुरुवै मूऩ्ड़िड
वॆम्बुवॆङ् गळत्तिडै विळ्त्त वॆऩ्ऱियाऩ्
ऎम्बॆरुन् दलैववी दॆण्ण मुण्मैयाऩ् 2720

ऎम् पॆरुम् तलैव–हमारे श्रेष्ठ स्वामी; वॆम्पु–वीरों को संताप देनेवाले; वॆम् कळत्तु इटै–भयानक युद्ध के मैदान में; उम्पियै–आपके छोटे भाई को; उलप्पु अरु–अवध्य; उरुवै–वानरों के शरीर में; ऊऩ्ड़िट–खूब धँसकर; विळ्त्त–जो मरवाया;

वॆन्ऱियान्–ऐसी विजय वाला था, अतः; **अम्पुयत्तवन् पटै आतल्**–कमलासन का शर है यह; **तेरिन्तन्**–जाना मैंने; **ईतु**–यह; **उण्मै**–सच है। २७२०

हमारे महान स्वामी ! वीरों को संतप्त करनेवाले भयंकर युद्धस्थल में आपके भाई को और अप्रतिहत वानरों के शरीरों में लगकर उनको इन्द्रजित् का अस्त्र मारने में सफल हो सका। तभी मैंने समझ लिया कि वह अंबुजासन का अस्त्र है। यह बात सच है। २७२०

अन्नवन् पडैक्कल ममरर् तानवर्
तन्नैयुम् विडिनुयिर् कुडिक्कुन् दऱ्पर
उन्नैयॊन् ऱिऴैत्तिल दॊऴिन्दु नीङ्गियदु
इन्नमु मुवमैयॊन् ऱॆण्ण वेण्डुमो 2721

अन्नवन् पटै कलम्–उनका अस्त्र; **विटिन्**–प्रेरित हो तो; **अमरर् तानवर् तन्नैयुम्**–देवों और दानवों को; **उयिर् कुटिक्कुम्**–प्राणहीन कर देगा; **तऱ्पर**–परात्पर; **उन्नै ऑन्ऱु इऴैत्तिलतु**–आपका कुछ (अहित) नहीं किया; **ऑऴिन्तु नीङ्कियतु**–छोड़कर अलग हो गया; **इन्नमुम्**–और भी; **उवमै ऑन्ऱु**–कोई उपमा; **ऍण्ण वेण्टुमो**–सोचना चाहिए क्या। २७२१

ब्रह्मास्त्र देवों और दानवों का भी अंत कर देगा। परात्पर ! उसने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा। वह छोड़कर अलग चला गया। फिर क्या प्रमाण चाहिए ? । २७२१

पॆरुन्दिऱ लनुमनीण् डुणर्व पॆऱ्ऱुतान्
अरुन्दुयर् मुडिक्कुऱ मळवि लाऱ्ऱलान्
मरुन्दिऱैप् पॊऴुदिनिऱ् कॊणर्हु वायॆनप्
पॊरुन्दिनन् वडतिशैक् कडिदु पोयिनान् 2722

पॆरु तिऱल् अनुमन्–महाबली हनुमान; **ईण्टु**–अब; **उणर्वु पॆऱ्ऱु**–प्रज्ञा पाकर; **अरु तुयर्**–अवार्य दुःख को; **मुटिक्कुऱम्**–निवारण करने की; **अळवु इल् आऱ्ऱलान्**–अपार शक्ति रखनेवाले (उस) से; **यान्**–मैंने; **मरुन्तु**–संजीवनी औषध को; **इऱै पॊऴुतिनिल्**–बहुत कम समय में; **कॊणर्कुवाय्**–लाओ; **ऍन**–कहा तो; **पॊरुन्तिनन्**–सम्मत होकर; **तान्**–वह; **वट तिचै**–उत्तर दिशा में; **कटितु पोयिनन्**–तुरन्त गया। २७२२

महावीर हनुमान होश में आ गया। उस अपार बली को यह संकट दूर करने के निमित्त मैंने संजीवनी को एक पल में लाने भेजा। वह भी सम्मत हो उत्तर में गया है। २७२२

पनिवरै कडन्दनन् परुप्प दङ्गळिन्
तनियर शिऩ्पुऱन् दविरच चारन्दुळन्

इऩियॊरु कणत्तिऩ्वन् दॆय्दु मीण्डुरुन्
दुऩिवरु तुऩ्बनी तुऱत्ति तॊल्लैयोय् 2723

पऩि वरै कटन्तऩन्–हिमगिरि पार कर; परुप्पतङ्कळित्–पर्वतों के; तऩि अरचिन् पुऱम् तविर–अकेले राजा (मेरु पर्वत) को पीछे छोड़; चार्न्तुळन्–गया है; ईण्टु–यहाँ; ऒरु कणत्तिन्–एक पल में; वन्तु ऎय्तुम्–आ जायगा; तॊल्लैयोय्–पुरुष पुरातन; उऱुम्–होनेवाला; तुऩि वरु–चित्तविलोडनकारी; तुऩ्पम्–दुःख; नी–आप; तुऱत्ति–छोड़ दें। २७२३

वह हिमालय के उस पार, गिरिराज मेरु के भी आगे गया है। अभी एक पल में आ जायगा। पुरुष पुरातन! चित्ताक्रांतकारी दुःख को छोड़ दीजिएगा। २७२३

याऩला लॆऩ्दैया युलहै यीऩ्ऱुळाऩ्
दाऩलाऱ् चिवऩला ऩेमि ताङ्गिय
कोऩला लियावरु मुणरुङ् गोळिलर्
वेऩिलाऩ् मेऩिया मरुन्दै मॆय्युऱ 2724

वेऩिलाऩ् मेऩिया–वसंतराज मन्मथ (निभ); याऩ् अलाल्–मेरे सिवा; ऎऩ्तैयाय्–मेरे पिता जो; उलकै ईऩ्ऱुळाऩ्–लोकजनक; ताऩ् अलाल्–(ब्रह्मा) के सिवा; चिवऩ् अलाल्–शिव के सिवा; नेमि ताङ्किय–चक्रधर; कोऩ् अलाल्–अधिपति श्रीविष्णु के सिवा; यावरुम्–कोई भी; मरुन्तै–उस औषध को; मॆय् उऱ उणरुम्–यथार्थ रूप से जानने की; कोळ् इलर्–बुद्धि नहीं रखते। २७२४

वसंतऋतु के देवता मन्मथ के जैसे मनोरम रूपवाले! मुझे, मेरे पिता ब्रह्मा को, शिव और चक्रधारी को छोड़ अन्य उस संजीवनी औषधों के सम्बन्ध में यथार्थ नहीं जानते। २७२४

आर्हलि कडैन्दना ळमिर्दिऩ् वन्दऩ
कार्निऱत् तण्णऱ् ऩेमि काप्पऩ
मेरुवि ऩुत्तर कुरुविऩ् मेलुळ
यारुमुऱ् ऱुणर्हिला वरण मॆय्दिऩ 2725

आर् कलि–समुद्र को; कटैन्त नाळ्–जिस दिन मथा गया; अमिर्तिऩ् वन्तऩ–अमृत के साथ प्रकट हुए; कार् निऱत्तु अण्णल् तऩ्–मेघश्याम के; नेमि–चक्र द्वारा; काप्पऩ–रक्षित हैं; मेरुविऩ्–मेरु के उस तरफ़; उत्तर कुरुविऩ् मेल् उळ–उत्तर कुरु प्रदेश में हैं; यारुम्–कोई भी; उऱ्ऱु उणर्किला–पास जा समझ न सकें; अरणम् ऎय्तिऩ–ऐसी सुरक्षा-प्रबन्ध के अन्दर हैं। २७२५

वे ओषधियाँ समुद्रमथन के दिन अमृत के साथ प्रगट हुई थीं। मेघश्याम श्रीविष्णु के चक्र के संरक्षण में हैं। मेरु के उत्तर के उत्तर-कुरुप्रदेश के उस पार हैं। उनका सुरक्षाप्रबन्ध ऐसा है कि कोई उनके पास पहुँच उन्हें जान न सके। २७२५

तोन्ऱिय नाण्मुद लियारुन् दीट्टिल
आन्ऱपे रण्णले यवऱ्ऱि नाऱ्ऱल्हेळ्
मून्ऱॆन् वोन्ऱिय वुलह मुन्नैनाळ्
ईन्ऱव निऱप्पिनु मावि यीयुमाल् 2726

तोन्ऱिय नाळ् मुतल्–जन्म से लेकर; यारुम् तीण्टिल–(ये) किसी से छुई नहीं गयीं; आन्ऱ पेर् अण्णले–बड़े यशस्वी प्रभु; अवऱ्ऱिन् आऱ्ऱल् केळ्–उनकी शक्ति सुनिए; मून्ऱु ऎन ओन्ऱिय–तीन का समूह; उलकम्–जो है उन लोकों को; मुन्नै नाळ्–प्राचीन दिन में; ईन्ऱवन्–जिन्होंने बनाया वे ब्रह्मा; इऱप्पिनुम्–मर जायें तो भी; आवि ईयुम्–उन्हें जिला देंगे। २७२६

प्रगट होने के दिन से आज तक वे किसी से भी छुई नहीं गयीं। महान यशस्वी! उनकी शक्ति सुनिए। त्रिलोकसर्जक ब्रह्मा भी मर जायँ उनको भी वे प्राणवंत कर सकती हैं। २७२६

शल्लिय महऱ्ऱुव दोन्ऱु शन्दुहळ्
पुल्लुऱप् पॊरुत्तुव दोन्ऱु पोयिन
नल्लुयिर् नल्हुव दोन्ऱु नन्निऱन्
दोल्लैय दाक्कुव दोन्ऱु तोल्लैयोय् 2727

तोल्लैयोय्–पुरुष पुरातन; ओन्ऱु–एक; चल्लियम् अकऱ्ऱुवतु–शल्य-निवारक है; ओन्ऱु–एक; चन्तुकळ्–जोड़ों को; पुल् उऱ–खूब; पॊरुत्तुवतु–जोड़नेवाला है; ओन्ऱु–एक; पोयिन नल् उयिर्–गये हुए अच्छे प्राणों को; नलकुवतु–लौटानेवाला है; ओन्ऱु–और एक; नल् निऱम्–श्रेष्ठ शरीर को; तोल्लैयतु आक्कुवतु–पुराना रूप देनेवाला है। २७२७

पुरुष पुरातन! उनमें एक शल्य-निवारक है। दूसरी टूटे जोड़ों को जोड़नेवाली है। तीसरी प्राण दिलाने में समर्थ है। चौथी विकृत शरीर को यथावत् रूप दिला सकती है। (वाल्मीकी में इनके नाम विशल्यकरणी, संतानकरणी, मृतसंजीवनी और सावर्ण्यकरणी दिये गये हैं।)। २७२७

वरुवदु तिण्णनी वरुन्दन् मारुदि
तरुनॆऱि तरुममे काट्टत् ताऴ्हलन्
अरुमैय दन्ऱॆना वडिव णङ्गिनान्
इरुमैयुन् दुडैप्पव नेम्ब लॆय्दिनान् 2728

वरुवतु तिण्णम्–(औषध का) आना निश्चित है; नी वरुन्तल्–आप दुःख न करें; मारुति–मारुति; तरुममे–धर्मदेवता के ही; तरु नॆऱि काट्ट–आने का मार्ग दिखाते; ताऴ्कलन्–विलम्ब न करके (आ जायगा); अरुमैयतु अन्ऱु–दुस्साध्य नहीं; ऎना–कहकर; अटि वणङ्किनान्–चरणों में नमन किया; इरुमैयुम् तुटैप्पवन्–कर्मद्वयमेटक; एम्पल् ऎय्तिनान्–खुश हुए। २७२८

वह आ जायगा, यह निश्चित है। मारुति धर्मदेवता के ही

पथप्रदर्शन में अविलम्ब ले आ जायगा। उसके लिए कोई असाध्य नहीं। यह कहकर जाम्बवान ने उनके चरणों में नमस्कार किया। यह सुनकर कर्मद्वयमेटक श्रीराम मुदित हुए। २७२८

पॊन्मलै मीदुपोय्प् पोह् बूमियिन्
नन्मरुन् दुदवुमॆन् ऱुरॆत्त नल्लुरैक्
कन्वय मिल्लैयॆन् ऱयिर्क्किन् ऱेन्लेन्
ऎन्ऩलुम् वडदिशै यॆऴुन्द दङ्गॊलि 2729

पॊन् मलै मीतु पोय्–स्वर्ण-पर्वत पर जाकर; पोकम् पूमियिन्–भोगभूमि से; नल् मरुन्तु–श्रेष्ठ संजीवनी औषध; उतवुम्–(लाकर) उपकार करेगा; ऎन्ऱु–ऐसा; उरॆत्त नल् उरैक्कु–जो (शब्द) कहे (तुमने) उन शब्दों के लिए; अन्वयम् इल्लै–अर्थ नहीं; ऎन्ऱु–ऐसा; अयिर्क्किन्ऱेन् अलेन्–सन्देह नहीं करता; ऎन्ऩलुम्–(ऐसा श्रीराम के) कहते-कहते; अङ्कु–वहाँ; वट तिचै–उत्तर दिशा में; ऒलि–शब्द; ऎऴुन्ततु–उठा। २७२९

उन्होंने कहा कि तुमने जो कहा कि हनुमान स्वर्णगिरि के भी उस पार भोग (स्वर्ग) भूमि भी पार कर श्रेष्ठ संजीवनी औषधों को ला देगा, उसमें मैं संशय ही नहीं करता। ज्योंही उन्होंने यह कहा, त्योंही उत्तर में कोई शब्द सुनायी दिया। २७२९

कडल्हिळर्न् दॆऴुन्दुमेर् पडरक् कार्वरै
इडैयिडै परिन्दुविण् णेर् विर्रिडै
तडैयिला दुडर्रुरु चण्ड मारुदम्
वडदिशै तोन्रिय मरुक्क मुर्रदाल् 2730

कटल्–समुद्र; किळर्न्तु ऎऴुन्तु–उमँग उठकर; मेल् पटर–तीरों पर बहा; कार् वरै–मेघाश्रित पर्वत; इटै इटै परिन्तु–बीच-बीच में टूटकर; विण् एर–आकाश में गये; इटै इऱु–बीच में टूटकर; तटै इलातु–अबाध रूप से; उटर्रुरु–बहने वाला; चण्ट मारुतम्–प्रचंड मारुत; वट तिचै तोन्रिय–उत्तर दिशा में जो प्रकट हुआ वह; मरुक्कम् उऱ्ऱ–अस्त-व्यस्त हुआ। २७३०

समुद्र उमग उठा और तीर पर बहा। मेघाश्रित पर्वत टूटकर आकाश में उछल उठे। उत्तर से अबाध तथा निरंतर बहनेवाले प्रचण्ड-मारुत से सब स्थानों में अव्यवस्था हुई। २७३०

मीन्गुलङ् गुलैन्दुह वॆयिलिन् मण्डिलन्
दान्गुलैन् दुयर्मदि तळुवत् तन्नुळै
मान्गुलम् वॆरुक्कॊळ मयङ्गि मण्डिवान्
तेन्गुलङ् गलङ्गिय नर्विर् चॆन्र्वाल् 2731

मीन् कुलम्–उडुगण; कुलैन्तु उक–अव्यवस्थित होकर च गये; वॆयिलिन्

मण्टिलम्तात्–सूर्यमण्डल; कुलैन्तु–लटकर; उयर् मति तऴुय–ऊपर चन्द्र से लग गया; तन् उळै–(चन्द्र के) अपने मध्य रहनेवाले मृग से; मान् कुलम् वॆरु कॊळ–मृगकुल भयभीत हुए; तेन् कुलम् कलङ्किय–भ्रमरकुल तितर-बितर हुए जैसे; वान् मेकम् मण्टि–आकाश के मेघ मिले और; मयङ्कि चॆन्ऱ–मिश्रित होकर चले। २७३१

उडुगण अस्त-व्यस्त हो गिर गये। सूर्यमण्डल गड़बड़ाकर चन्द्र से मिल गया। चन्द्र के मध्य जो हिरन था, उससे मृगकुल डरे। आकाश के मेघ छत्ते पर भ्रमरकुल अस्त-व्यस्त हो गये हों जैसे आपस में मिल मिश्रित हो संचार करने लगे। २७३१

वेर्त्तुणर् तूरॊडु विशुम्बै मीच्चॆलप्
पोर्त्तन मलैयॊडु मरनु मुन्बुपोल्
तूर्त्तन वेलैयक् कालिन् ड्रोन्ऱलुम्
आर्त्तन नन्यव ररन्द यारुवान् 2732

वेर् तुणर् तूरॊटु–जड़, गुच्छों और शाखाओं के साथ; मी चॆल–आकाश में गये, इसलिए; पोर्त्तन–ढाँपकर; मलै यॊटु मरनुम्–पर्वत और तरु; मुन्पु पोल्–पहले (सेतुबन्धन के समय में) जैसे; वेलैयै तूर्त्तन–समुद्र को सुखा गये; कालिन् तोन्ऱलुम्–वायुपुत्र ने भी; अनैयवर् अरनुतै आऱ्ऱुवान्–उनके दुःख को दूर करता हुआ; आर्त्तनन–उच्च घोष किया। २७३२

पर्वत और तरु अपने मूलों, गुच्छों और शाखाओं के साथ ऊपर जाकर आच्छादित करते हुए समुद्र पर गिरे और उन्होंने पहले बने सेतु के समान समुद्र को जलहीन कर दिया। मारुति ने भी श्रीराम आदि के दुःख को दूर करने के विचार से बड़ा नाद उठाया। २७३२

मऴैहळुङ् गडल्हळु मऱ्ऱु मुऱ्ऱुमण्
णुळैयवुम् विशुम्बवु मॊलित्तऱ् कॊत्तुळ
कुऴीइयिन् कुमुऱ्ऱिन कॊळ्है कॊण्डवाल्
उऴुवैयिन् शिनत्तव नार्त्त वोशैये 2733

उऴुवैयिन् चिनत्तवन्–व्याघ्र की तरह क्रुद्ध हनुमान का; आर्त्त ओचै–उठाया हुआ नाद; मण् उळैयवुम्–पृथ्वीवासी; विचुम्पवुम्–आकाशवासी; ऑलित्तऱ्कु ऒत्तु उळ–शब्द कर सकनेवाले; मऴैकळुम् कटल्कळुम्–मेघ और सागर; मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱुम्–अन्य सभी; कुऴीइयन्–इकट्ठे होकर; कुमुऱ्ऱिन कॊळ्कै कॊण्ट–शब्द करें तो जो होगा वही रहा। २७३३

व्याघ्र के समान रोषपूर्ण हनुमान का नाद भूलोक और आकाश के गर्जन करने के स्वभाव वाले मेघों, सागरों और अन्य सभी चीज़ों के सम्मिलित नाद के समान था। २७३३

ऍऱ्ऱितिरैप् पॅरुङ्गडल् कडैय वॆऱ्ऱनाळ्
शॆऱ्ऱिशुडर् मन्दरन् दरुदि शॆन्ऱॆन्न
वॆऱ्ऱिदुहॊ लॆन्क्कॊडु विशुम्बिन् मीच्चॆलुम्
उरुवलिक् कलुळने यॊत्तुत् तोन्ऱिनान् 2734

ऍऱ्ऱि तिरै–उछलती तरंगों के; पॅरु कटल्–बड़े (क्षीर-) सागर को; कटैय–मथने के लिए; एऱ्ऱ नाळ्–(जिस दिन देव और असुर) सम्मत हुए उस दिन; चॆऱ्ऱि चुटर्–घने प्रकाश वाले; मन्तरम् चॆन्ऱु तरुति–मन्दर पर्वत लाकर दो; ऍन्न–कहने पर; वॆऱ्ऱितु कोल्–(हमेशा यह स्थान) रिक्त ही रहा क्या; ऍन्न–ऐसा लोग कहें इस रीति से; कॊंटु–लेकर; विचुम्पिन् मी चॆलुम्–आकाश में ऊपर चलनेवाले; उरु वलि–महाबली; कलुळने ऑत्तु तोन्ऱिनान्–गरुड़ के समान ही दिखा। २७३४

जब उछलती तरंगों के क्षीरसागर को मथने के काम में देव और दानव प्रवृत्त हुए, तब गरुड़ से कहा गया कि घने प्रकाश से शोभनेवाले मन्दर पर्वत को ला दो। गरुड़ ने उसके स्थान को रिक्त करते हुए उस पर्वत को उखाड़ा। तब महाबली वह गरुड़ आकाश में जाते हुए जैसे लग रहा था, वैसे ही हनुमान अब लगा। २७३४

पूवलत् तरवॊडु मलैन्दु पोननाळ्, ओदिय वॆन्ऱिय नुडऱ्ऱु मूऱ्ऱत्तन्
एदमि लिलङ्गैयङ् गिरिहॊ डॆय्दिय, तादैयु मॊत्तनन् नुवमै तऱ्किलान् 2735

पूतलत्तु–भूलोक में; अरवॊटु मलैन्तु पोन नाळ्–जब आदिशेष नाग से युद्ध करने गया उस दिन; ओतिय वॆन्ऱियन्–प्रशंसित विजयी; उटऱ्ऱुम् ऊऱ्ऱत्तन्–बहने की शक्ति रखनेवाले; एतम् इल् इलङ्कै–निर्दोष लंका में; अम् किरि कॊंटु–और जो सुन्दर त्रिकूट पर्वत को ले; ऍय्तिय–आया था; तातैयुम् ऑत्तनन्–उस अपने पिता के समान भी रहा; उवमै तऱ्कु इलान्–अपनी सानी न रखनेवाला हनुमान। २७३५

आदिशेष का एक दिन वायु से टक्कर हो गया था। उस दिन वायुदेव प्रकीर्तित विजयी हो गया। वायु समरसमर्थ बली भी था। वही निर्दोष लका में त्रिकूट पर्वत लाया था। अप्रतिम हनुमान अपने पिता, उसी वायुदेव के समान लगा। २७३५

तोन्ऱिन नॆन्नुमच् चॊल्लिन् मुन्नम्वन्
दून्ऱिन निलत्तडि कडवु ळोङ्गल्ान्
वान्ऱनि निन्ऱदु वञ्ज रूर्वर
एन्ऱिल दादलि नन्नम नॆय्दिनन् 2736

तोन्ऱिनन्–आ गया; ऍन्नुम्–ऐसे; अ चॊल्लिन्–उस शब्द के; मुन्नम् वन्तु–पहले ही आकर; निलत्तु अटि ऊन्ऱिनन्–भूमि पर पैर रखा; अनुमन् ऍय्तिनन्–हनुमान आ गया; वञ्चर् ऊर् वर–वंचकों की बस्ती में आना; एन्ऱिलतु आतलिन्–पसंद नहीं था, इसलिए; कटवुळ् ओङ्कल्–दिव्य (ओषधि-) पर्वत; वान् तनिल–आकाश में; निन्ऱतु–खड़ा रह गया। २७३६

'आ गया' —जाम्बवान के यह शब्द कह चुकने से पूर्व ही हनुमान ने ज़मीन पर पैर रख लिया। वह ओषधिपर्वत वंचकों के नगर में आना पसन्द न करके ऊपर आकाश में ही रह गया। २७३६

कार्ऱुवन् दशैत्तलुङ् गडवु णाट्टवर्
पोर्ऱिनर् विरुन्दुवन् दिरुन्द पुण्णियर्
एर्ऱमुम् बॅरुवलि यळहॉ डॅय्दिनार्
कूर्ऱितै वॅन्ऱुद मुरुवुङ् गूडिनार् 2737

कटवुळ् नाट्टवर्–देवलोकवासियों से; पोर्ऱिनर्–शंसित; विरुन्तु वन्तिरुन्त–अतिथि के रूप में आगत; पुण्णियर्–पुण्यात्मा; कार्ऱु वन्तु–पवन के आकर; अचैत्तलुम्–हिलाते ही; एर्ऱमुम्–उत्कृष्टता और; पॅरु वलि–बड़ा बल और; अऴकॊटु–सुन्दरता इनको; ऍय्तिनार्–प्राप्त करके; कूर्ऱितै वॅन्ऱु–मृत्यु को जीतकर; तम् उरुवुम् कूटिनार्–अपने शरीरों से मिल गये। २७३७

देवलोक में उनसे प्रशंसित मेहमान होकर जो गये थे, वे सुकृत वानर पवन के हिलाते ही यम को हराकर उत्कृष्टता और सुन्दरता के साथ अपने पूर्व रूप में जाग पड़े। २७३७

अरक्कर्द माक्कैह ळऴिवि लाऴियिऩ्
करक्कमर् ऱॊऴिन्दन वॊऴियक् कण्डन
मरक्कल मुदलवु मुय्न्दु वाऴ्न्दन
कुरक्किन मुय्न्दवु कूऱ वेण्डुमो 2738

अरक्कर् तम् आक्कैकळ्–राक्षसों के शरीर; अऴिविल् आऴियिल्–अक्षय समुद्र में; करक्क–छिपे रहे (इसलिए); ऑऴिन्तन–मिट गये; ऑऴिय कण्टन–उनके सिवा दिखनेवाले; मरक्कलम् मुतलवुम्–नावें आदि भी; उय्न्तु वाऴ्न्तन–बचकर जीवित हुए; कुरङ्कु इनम्–वानरगण; उय्न्ततु–जीवित हो गये; कूऱ वेण्टुमो–कहना भी है क्या। २७३८

राक्षसों के शरीर अक्षय सागर में छिपे पड़े थे। इसलिए वे प्राणवंत नहीं हो सके। उधर रहे काठ के पोत भी जीवित हो गये; तो यह भी कहना चाहिए कि वानरों का दल जीवित हो गया ? । २७३८

कऴन्ऱऩ नॆडुङ्गणै कऴन्ऱ पुण्गडुत्
तऴन्ऱऩ कुळिर्न्दन वङ्गत् चॆङ्गणगळ्
शुऴन्ऱन वुलहॆलान् दॊऴुद तॊङ्गलित्
कुऴन्ऱॆऴुङ् गुञ्जिया नुणर्वु कूडिनान् 2739

नॆटुकणै कऴन्ऱत–(लक्ष्मण के शरीर से) लम्बे अस्त्र निकल आये; कऴन्ऱ–निकलने से; पुण्कळ्–व्रण; कटुत्तु अऴन्ऱत–जो जोर से जलन देते रहे; कुळिर्न्तत–शीतल हो गये; अङ्कम्–शरीर में; चॆम कणकळ्–लाल आँखें; चुऴन्ऱत–घूमने

लगीं; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों ने; तॉळुत–स्तुति की; तॉड्कलित्–माला के समान; कुळ्नूरु ॲळुम्–घूर्णन के साथ दिखनेवाले; कुञ्चियान्–केश से शोभायमान लक्ष्मण; उणर्वु कूटिनन्–होश में आये। २७३९

लक्ष्मण के शरीर से लम्बे शर स्वतः निकल आये। व्रण, जो अपार दर्द दे रहे थे, अब शीतल बन गये। लाल आँखें घूमने लगीं। सारे लोकों ने उनकी स्तुति की। माला के समान घूर्णन-सहित केश वाले लक्ष्मण प्रज्ञासहित हो गये। २७३९

यावरु मॅळुन्दन रार्त्त वेळ्हडल्
ताळ्वरुम् बेरॉलि शॅवियिर् चार्वलुम्
तेवर्हळ् वाळ्त्तॉलि केट्ट शॅङ्गणान्
एवनीङ् गितन्न विळव लोङ्गिनान् 2740

एळ् कटल्–सातों समुद्रों को; ताळ् वरुम्–अपने सामने नीचा दिखानेवाले; यावरुम्–सभी (वानर वीर); ॲळुन्तनर्–जाग उठे; आर्त्त पेर् ऑलि–उन्होंने जो नर्दन किया वह बड़ा शोर; चॅवियिल् चार्तलुम्–कानों में पड़ा तो तुरन्त; तेवर्कळ् वाळ्त्तॉलि–देवों का जयघोष; केट्ट–जिन्होंने सुना वे; चॅम् कणान्–अरुणाक्ष श्रीराम; एवम् नीङ्कितन् ॲन–दुःख से मुक्त हो गये, यह सम्भव करते हुए; इळवल् ओङ्कितान्–लघुराज उठे। २७४०

सभी वानर जाग उठे। उन्होंने जो जय-घोष किया, उसके सामने सागर-गर्जन भी हार गया। उनका स्वर सुनकर देवों ने भी घोष किया। इसको सुनकर अरुणाक्ष श्रीराम को दुःखविमुक्त करते हुए लक्ष्मण उठे। २७४०

ओङ्गिय तम्बियै युयिर्वन् दुळ्ळुर
वीङ्गिय तोळ्हळाऱ् रुळ्वि वॅन्दुयर्
नीङ्गिन निरामनु मुलहि निन्ड्रिल
तीङ्गुळ तेवरु मरुक्कम् जिन्दिनार् 2741

उयिर् वन्तु उळ् उऱ–प्राणों के अन्दर आ लगने से; ओङ्किय तम्पियै–जो उठ खड़े हुए उन अपने लघु सहोदर को; वीङ्किय–फूली; तोळ्कळाल्–भुजाओं से; तळुवि–आलिंगन करके; इरामनुम्–श्रीराम भी; वॅन्तुयर् नीङ्कितन्–संतापक दुःख से छूटे; उळ तेवरुम्–अमर देवताओं ने भी; मरुक्कम् चिन्तितर्–व्यथा छोड़ी; तीङ्कु–बुराइयाँ; उलकिल् नित्ड्रिल–लोक में न रहे। २७४१

श्रीराम ने प्राणवान हुए अपने लघु सहोदर को अपनी फूली हुई भुजाओं से बाँध लिया। उनका कठोर दुःख दूर हो गया। अमर देवों की बेचैनी भी दूर हुई। संसार भर में कहीं बुराई नहीं ठहरी। २७४१

अरम्बैय राडिन रमुद वेळ्ळिशै, नरम्बियल् किन्नर मुदल नन्मैये
[illegible] परमबिन मुनिवरर वेदम बाडिनार 2742

अरम्पैयर् आटिनर्–अप्सराएँ नाच उठीं; **नरम्पु इयल्**–तन्त्रियों से युक्त; **किन्नरम् मुतल**–'किन्नर' आदि वाद्य; **नन्मैये**–सुखद; **अमुतम्**–अमृत के समान; **एऴु इचै निरम्पिन**–सप्त स्वरों से भर गये; **उलकु अँलाम्**–लोक भर में; **उवकै**–आनन्द-प्रदर्शक; **नॅय्विऴा**–घी के स्नान का उत्सव; **परन्पिन**–फैला; **मुनिवरर्**–मुनिवरों ने; **वेतम् पाटिनार्**–वेदगान किये। २७४२

अप्सराएँ नाचीं। तंत्री-वाद्य, किन्नर आदि से सुखद अमृत-सम सप्तस्वर आने लगे। सारे लोक में आनन्द के कारण घृत-स्नान का उत्सव मनाया जाने लगा। मुनिवरों ने वेद गाये। २७४२

वेदनिन् ऱार्त्तन वेद वेदियर्, पोदनिन् ऱार्त्तन पुहऴ् मार्त्तन
ओदनिन् ऱार्त्तन वोद वेलैयिऱ्, चीदनिन् ऱार्त्तन तेवर् शिन्दनै 2743

वेतम्–वेदों ने; **निन्ऱु आर्त्तन**–स्थायी रहकर उद्घोष किया; **वेतम् वेतियर्**–वेदपाठी विप्रों के; **पोतम् निन्ऱु आर्त्तन**–ज्ञान ने स्थिर रहकर घोष किया; **पुकऴुम् आर्त्तन**–यश ने भी नाद उठाया; **ओतम् निन्ऱु आर्त्तन**–समुद्रों ने उच्च गर्जन किया; **तेवर् चिन्तनै**–देवों का मन भी; **ओतम् वेलैयिल्**–जलसागर के समान; **चीतम् निन्ऱु आर्त्तन**–शीतल (खुश) रहकर कुतूहल से भर गया। २७४३

चारों वेदों ने जयघोष किया। वेदविप्रों का ज्ञान शब्द कर उठा। सागर उमग उठे और गरजने लगे। देवों का मन भी सागर के समान शीतलता (सुख) से भरकर नाद कर उठा। २७४३

उन्दिन पिन्गोलै यॊऴिवि लुण्मैयुम्
दन्दनै नीयदु निनक्कुच् चान्ऱॆऩाच्
चुन्दर विल्लियैत् तॊऴुदु शूऴ्वन्
दन्दणन् पडैयुनिन् ऱहन्ऱु पोनदाल् 2744

कोलै उन्तिन पिन्–मरण से छूटने पर; **अन्तणन् पटैयुम्**–ब्रह्मास्त्र भी; **चुन्तरम् विल्लियै**–सुन्दर कोदण्डपाणी को; **चूऴ वन्तु तॊऴुतु**–परिक्रमा करके नमस्कार करके; **निन्ऱु**–सामने सविनय खड़ा रहकर; **नी**–आपने; **ऒऴिविल्**–अमर; **उण्मैयैयुम् तन्तनै**–सत्य को भी दिया; **अतु**–वह; **निनक्कु चान्ऱु**–आपका गौरव है; **अँना**–कहकर; **अकन्ऱु पोनतु**–दूर चला गया। २७४४

सबके मृत्यु से छूटने के बाद ब्रह्मास्त्र ने सुंदर कोदंडपाणी की परिक्रमा तथा विनय की। सामने खड़े होकर निवेदन किया कि आपने अमर सत्य संस्थापित कर दिया। यह आपका गौरव है! फिर वह हट गया। २७४४

❀आय कालैयि नमर ऱार्त्तॆऴुत्, तायि नन्बनैत् तऴुवि नान्ऱनि
नाय हन्ऱॆरुन् दुयर नामऱत्, तूय कादनीर् तुळङ्गु कण्णिनान् 2745

आय कालैयिन्–उस समय; **तनि नायकन्**–अद्वितीय जगन्नायक ने; **पॆरु तुयरम् नाम् अऱ**–बड़े दुःख के नाम के मिटते; **तूय कातल्**–पवित्र प्रेम से; **नीर् तुळङ्कु कण्णिनान्**–अश्रुशोभित आँखों वाले हो; ... अधिक प्यारे

हनुमान को; अमरर् आर्त्तु अँळ–देव घोष कर उठें ऐसा; तळुवितान्–गले से लगा लिया। २७४५

तब अद्वितीय नायक श्रीराम का अपार दुःख नाम-निशान-हीन हो गया। प्रेम से अश्रु-बहाती आँखों के साथ उन्होंने माता से भी प्यारे मारुति को गले लगा लिया जिस पर देव लोग नर्दन कर उठे। २७४५

❀ मॅळुतु कुङ्गुमत् तिरुवि तॅन्दुको, डुळ्ुद मार्बिना नुरुहि युळ्ळुरत्
तळुवि निऱ्ऱलुन् दाळ्न्दु ताळुरत्, तॊळुद मारुदिक् किनैय शॊल्लुवान् 2746

अँळुतु–चित्रकारी के रूप में लगे; कुङ्कुमम्–कुंकुमलेप से अलंकृत; तिरुवित्–देवी सीता के; एन्तु कोटु–और उन्नत स्तनों के अग्रभाग से; उळुत मार्पितान्–जोते वक्षवाले श्रीराम के; उळ् उऱ उरुकि–अन्दर से द्रवीभूत होकर; तळुवि निऱ्ऱलुम्–खूब आलिंगन करते; ताळ् उऱ–चरणों से लगकर; तॊळुत–जिसने नमन किया उस; मारुतिक्कु–हनुमान से; इनैय चॊल्लुवान्–ये बातें कहीं (श्रीराम ने)। २७४६

श्रीराम, जिनका श्रीवक्ष सीताजी के कुंकुम की चित्रकारी से अलंकृत मनोरम स्तनाग्रों से दबाया गया था, स्नेहार्द्र होकर जब हनुमान का आलिंगन कर रहे थे, तब हनुमान ने उनके चरणों में विनत हो नमस्कार किया। श्रीराम उससे यों बोले। २७४६

❀ मुन्निऱ् ऱोन्ऱि नोर् मुऱैयि नीङ्गला
दॆन्निऱ् ऱोन्ऱिय तुयरि नीऱुशेर्
मन्निऱ् ऱोन्ऱिनो मुन्न माण्डुळोम्
निन्निऱ् ऱोन्ऱिनो नॆऱियिऱ् ऱोन्ऱिनाय् 2747

मुन्तिल् तोन्ऱितोर्–(मेरे कुल में) जो पहले पैदा हुए वे; मुऱैयिन् नीङ्कलातु–नीति से न हटकर (जो पालन करते थे उन); अँन्निल् तोन्ऱिय–मेरे कारण उत्पन्न; तुयरिन्–दुःख से; ईऱु चेर्–मृत्यु को प्राप्त; मन्निन् तोन्ऱितोम्–राजा से जनमे; मुन्नम् माण्डुळोम्–हम पहले (ब्रह्मास्त्र से) मर गये; नॆऱियिल् तोन्ऱिताय्–नयरत; निन्निन् तोन्ऱितोम्–तुमसे हम प्रगट हुए (तुम्हारे उपकार से हम जी उठे)। २७४७

अपने पूर्वजों के निर्दिष्ट मार्ग में पालन जो करते रहे उन दशरथ के, जो मेरे कारण उत्पन्न दुःख से स्वर्गवासी हो गये थे, पुत्र हम पहले मर गये। फिर, सन्मार्गगामी हनुमान! तुमसे हम फिर से उद्भूत हुए!। २७४७

अळियुङ् गाऱ्ऱुरु मुदवि यैयने
मॊळियुङ् गाऱ्ऱुरु मुयिरिन् मुऱ्ऱुमे
पळियुङ् गात्तरुम् बहैयुङ् गात्तॆमै
वळियुङ् गात्तनै मऱयुङ् गात्तनै 2748

ऐयने–बाबा; मोऴियुम् काल्–कहना हो तो; अळियुम् काल् तरुम् उतवि–मरने समय का उपकार; तरुम् उयिरिन्–जो प्राण देता है उससे; मुऱ्ऱुमे–प्रतिकार करने योग्य है क्या; पऴियुम् कात्तु–हमको निंदा से बचाकर; अरुम् पकैयुम्–कठोर शत्रु को; कात्तु–दबाकर; ॲमै वऴियुम् कात्ततै–हमको कुलसहित बचा दिया; मऱैयुम् कात्ततै–वेदों को भी रक्षित कर दिया। २७४८

तात ! सोचा जाय तो मरण के अवसर पर तुमने उपकार किया और हमें जीवन मिला। उसके बदले में कुछ देकर ऋण चुकाया जा सकेगा क्या ? तुमने हमें लोकनिन्दा से बचाया। शत्रुओं को दबोच दिया और हमको हमारे कुल के साथ बचाया। वेदों का भी संरक्षण हो गया। २७४८

ताऴ्वु मीङ्गिरैप् पॊऴुदु तक्कदे
वाऴि ॲम्बिमे लन्बु माट्टलाल्
एऴुम् वीयुमॆन् पहर्व ॲल्लैवाय्
ऊऴि काणुनी युदवि नायरो 2749

ॲम्पिमेल्–मेरे सहोदर पर; अन्पु माट्टलाल्–प्रेम को स्थिर करने से; ईङ्कु–अब; इरैप्पॊऴुतु–कुछ देर; ताऴ्वुम्–संकटग्रस्त रहना भी; तक्कते–चाहिए था; वाऴि–जीते रहो; ऊऴि काणुम् नी–युगान्त भी देखनेवाले तुमने; ॲल्लै वाय्–ऐन मौक़े पर; उतवित्ताय्–उपकार किया; ॲन् पकर्वतु–(नहीं तो) क्या कहना; एऴुम् वीयुम्–सातों लोक नष्ट हो जाते। २७४९

अब जो कुछ संकट हुआ वह भी चाहिए था, क्योंकि तभी मेरा भायपा स्थिरीकृत हुआ ! तुम जुग-जुग जिओ ! हे चिरंजीव ! तुमने ऐन मौक़े पर उपकार किया। नहीं तो क्या कहा जाय ! सातों लोक मिट गये होते। २७४९

इन्ऱु वीहला वॆवरु मॆम्मुडन्, निन्ऱु वाऴ्मा नॆडिदु नल्हिनाय्
ऑन्ऱु मिन्ननो युऱुहि लावुनी, ॲन्ऱुम् वाऴ्दिया लिनिदॆ नेवलाल् 2750

इन्ऱु–आज; वीकलातु–बिना मरे; ॲम्मुटन् निन्ऱु–हमारे साथ रहकर; नॆटितु वाऴ्मा नल्कित्ताय्–बहुत समय के जीवन का दान किया; नी–तुम; इन्नल् नोय् ऑन्ऱुम् उऱुकिलातु–कोई संकट या रोग का शिकार मत बनो; इनितु–सुख से; ॲन् एवलाल्–मेरी आज्ञा से; ॲन्ऱुम् वाऴ्ति–सदा रहो। २७५०

आज (जब मेघनाद ने अस्त्र चलाया) तुम जीवित हुए, हमारे साथ रहे और हमें लम्बी आयु दिला दी ! ऐसे उपकारी तुम मेरी आज्ञा से रोग, दुःख आदि से छूटकर सदा सुखी रहो। २७५०

मऱ्ऱै योर्हळु मनुमन् वण्मैयाल्, पॆऱ्ऱ वायुळार् पिऱन्द कादलार्
शुऱ्ऱ मेयिनार् तॊऴुदु वाऴ्त्तिनार्, उऱ्ऱ वाऱॆला मुणरक् कूऱिनान् 2751

मऱ्ऱैयोर्कळुम्–अन्य भी; अनुमन् वण्मैयाल्–हनुमान की उदारता से; पॆऱ्ऱ

आयुळार–जीवंत होकर; पिरन्त कातलार्–हनुमान पर उत्पन्न प्रेम के हो; चुऱ्ऱम् मेयिनार्–उसे घेर गये; तॉळुतु वाळ्त्तिनार्–नमस्कार किया, स्तुति की; उऱ्ऱ आऱु ॲलाम्–जो हुआ वह सब; उणर कूऱिनान्–(हनुमान ने) समझाकर कहा। २७५१

अन्य भी, जो हनुमान की उदारता से जीवित हुए, हनुमान पर उत्पन्न स्नेह के साथ उसे घेर आये। उसको नमस्कार किया। उसकी स्तुति की। हनुमान ने उनसे बीता हाल सारा बताया। २७५१

उय्त्त मामरुन् दुदव वॉन्नलार्, पॉय्त्त शिन्दैया रिऱुदल् पॉय्क्कुमाल्
मॉय्त्त कुन्ऱैयम् मूल मूळ्वाय्, वैत्तु मीडियाल् वरम्बि लाऱ्ऱलाय् 2752

वरम्पिल् आऱ्ऱलाय–अपार शक्तिमंत; मा मरुन्तु–श्रेष्ठ ओषधि के; उतव–उपकार से; पॉय्त्त चिन्तैयार्–वंचकमन राक्षस; ऑन्नलार्–शत्रुओं का; इऱुतल्–मरना; पॉय्क्कुम्–असत्य हो जायगा (अगर यह पर्वत यहाँ रहे तो); मॉय्त्त कुन्ऱै–ओषधिपूर्ण इस पर्वत को; मूल मूळै वाय्–उसके मूल स्थान में; वैत्तु मीटि–रखकर आओ (यह जाम्बवान ने कहा)। २७५२

जाम्बवान ने कहा— हे अपार बलवान हनुमान! तुम जो ओषधि लाये हो, वह राक्षसों का भी उपकार कर देगी और उन शत्रुओं की मृत्यु झूठी हो जायगी। इसलिए इस ओषधि-पर्वत को ले जाकर अपने यथास्थान में रख आओ। २७५२

ॲन्ऱु शाम्बव नियम्ब वीदरो, नन्ऱु शालवॅन् ऱॉन्ऱु नाळिहैच्
चॅन्ऱु मोळ्वॅनॅन् ऱुणर्न्दु वॅय्वमाक्, कुन्ऱु ताङ्गियक् कुरिशिल् पोयिनान् 2753

ॲन्ऱु चाम्पवन् इयम्प–ऐसा जाम्बवान के कहने पर; ईतु चाल नन्ऱु–यह बहुत ही अच्छा है; ॲन्ऱु–कहकर; ऑन्ऱु नाळिकै–एक घड़ी में; चॅन्ऱु मोळ्वन्–हो आऊँगा; ॲन्ऱु उणर्न्तु–ऐसा समझकर; मा–बड़े; तॅय्वम् कुन्ऱु तङ्कि–दैवी पर्वत उठाकर; अ कुरिचिल्–वह महावीर; पोयिनान्–गया। २७५३

जाम्बवान के यों कहने पर हनुमान ने भी सोचा कि यह बहुत अच्छा है। एक घड़ी में हो आऊँगा। वह महापुरुष उस दिव्य पर्वत को उठा ले चला। २७५३

24. कळियाट्टुप् पडलम् (विनोद-उत्सव पटल)

इन्नदित् तलैय दाह विरावण नॅळुन्दु पॉङ्गित्
तन्नैयुङ् गडन्दु नीण्ड वुवहैयन् शमैत्त कोदक्
गिन्नरर् मुदलोर् पाड मुहत्तिडैक् किडन्द कॅण्डैक्
कन्निनन् मयिलन् नारै नॅडुङ्गळि याट्टङ् गण्डान् 2754

इ तलै–यहाँ; इन्नतु आक–ऐसा जब रहा; इरावणन्–(उधर) रावण ने; पॉङ्कि ॲळुन्तु–उमंग से उठकर; तन्नैयुम् कटन्तु–अपने को भी पार कर जो;

नीण्ट–बढ़ा था वैसे; उवकैयन्–मोदवाला बनकर; चमैतुत कीतम्–सुगठित गीत; किन्नरर् मुतलोर् पाट–किन्नर आदि लोगों के गाते; सुकत्तिटै किटन्त–सुख में रहो; कॅण्टै–"कॅण्डै" मछली के समान आँखों वाली; कन्नि–तरुणी; नल् मयिल् अन्नारै–श्रेष्ठ कलापी-सी स्त्रियों को; मैंदु कळि आट्टम्–जोरदार मदिरा से मस्त केलि को; कण्टान्–देखा। २७५४

इधर यह सब होता रहा। उधर रावण मोद के साथ उमँग उठा। उसका उमंग अपार था (कवि कहता है कि वह आप से भी बढ़ा था)। उसने 'कॅण्डै' नामक मछली-सी आँखों वाली तरुण और कलापी-सी सुन्दर स्त्रियों की अठखेलियाँ देखीं। जब वह देखने गया, तब किन्नर लोग संगीत-व्याकरण-सम्मत गीत गाते गये। २७५४

अरम्बैयर् विज्जै माद ररक्कियर् रवुण मादर्
कुरुम्बैयङ् गोङ्गै नाहर् कोदैय रियक्कर् कोदिल्
करुम्बिनु मिनिय शॊल्लार् शित्तरवङ् गन्नि मार्हळ्
वरम्बरु शुम्मै योर्हण् मयिर्कुल मरुळ वन्दार् 2755

अरम्पैयर्–अप्सराएँ और; विज्चैमातर्–विद्याधरियाँ; अरक्कियर्–और राक्षस-नारियाँ; अवुणर् मातर्–दानवदयिताएँ; कुरुम्पै अम् कोङ्कै–कच्चे नारियल के समान स्तनों वाली; नाकर् कोतैयर्–नागकन्याएँ; इयक्कर् कोतैयर्–यक्षसुन्दरियाँ; कोतु इल्–निर्दोष; करुम्पिनुम् इनिय चॊल्लार्–इक्षु से भी मधुर वाणी वाली; चित्तर् कन्निमार्कळ्–सिद्धिनियाँ; वरम्पु अरु–(आदि स्त्रियाँ) अपार; चुम्मैयोर्कळ्–भीड़ में; मयिल् कुलम्–मयूरवृन्द को; मरुळ–भ्रम में डालते हुए; वन्तार्–आयीं। २७५५

अप्सराएँ, विद्याधररियाँ, राक्षसरमणियाँ, दानवदयिताएँ और कच्चे नारियल के बाल फलों-जैसे स्तनों की नागकन्याएँ, यक्षवालाएँ, अमल इक्षुरस से भी मधुर वाणी की सिद्धस्त्रियाँ —आदि बड़े-बड़े समूहों में मयूरवृन्दों को भी लजाती हुई आयीं। २७५५

मेनहै यिलङ्गु वाट्कट् टिलोत्तमै यरम्बै मॅल्लॅन्
तेनहु मळलै यिन्शॊ लुरुप्पशि मुदल दॆय्व
वानह महळिर् वन्दार् शिल्लरिच् चदङ्गै पम्ब
आनह मुरशञ् जङ्ग मुरुट्टोडु मिरट्ट वाडि 2756

मेनकै–मेनका; इलङ्कु–शोभायमान; वाळ् कण्–तलवार-सम आँखों की; तिलोत्तमै–तिलोत्तमा; अरम्पै–रम्भा; तेन् नकु–मधु-सम; मॆन् ऎन्–मृदु; मळलै इन् चॊल्–तोतली-सी मधुरभाषिणी; उरुप्पचि–उर्वशी; मुतल–आदि; तॆय्वम् वान् अकम्–दिव्य व्योमलोक की; मकळिर्–अंगनाएँ; आनकम् मुरचम् चङ्कम्–आनकों, भेरियों और शंखों के साथ; मुरुट्टॊटुम्–'मुरुडु' नाम के ढोल के; इरट्ट–बजते रहते; चिल् अरि–छोटी गुरियों से भरे; चतङ्कै पम्प–घुंघुरुओं के क्वणित होते; आटि वन्तनर्–नाचती आयीं। २७५६

मेनका, सुन्दर तलवार-सी आँखों वाली तिलोत्तमा, रम्भा, अस्पष्ट-मधु-मधुर-मृदुभाषिणी उर्वशी आदि देवलोक की अप्सराएँ नाचती आयीं। भेरियाँ, शंख, मुरुडु नामक वाजे और पटहे साथ-साथ वजते आये और उनस्त्रियों की झाँझरें भी कंकड़ियों के कारण क्वणित हो रही थीं। २७५६

तोडुण्ड शुरुळुन् दूङ्गुङ् गुऴहळुन् जुरुळिऱ् ऱोन्ऱुम्
एडुण्ड पशुम्बोऩ् पूवुन् दिलदमु मिलवच् चॅव्वाय्
मूडुण्ड मुऱुवन् मुत्तु मुळ्ळुण्ड मुळरिच् चॅङ्गट्
काडुण्ड पुहुन्द वॆन्न मुनिन्ददु कऱ्ऱॆण् डिङ्गळ् 2757

तोटुण्ट–ताड़ के घुमावदार पत्ते के समान; चुरुळुम्–स्वर्ण-निर्मित 'शुरुळ्' नामक जेवर; तूङ्कुम्–लटकनेवाले; कुऴैकळुम्–कुण्डल और; चुरुळिल् तोन्ऱुम्–घुमाकर बँधे केश में दिखनेवाले; एट उण्ट–दल-सहित; पचु पोन् पूवम्–चोखे स्वर्ण के फूल और; तिलतमुम्–तिलक; इलवम् चॅव्वाय्–सेमर-से लाल अधर; मूटुण्ट–आच्छादित; मुऱुवल्–मंदहासयुक्त; मुत्तुम्–मोती के समान दाँत; मुळ् उण्ट–कोमल काँटों-सहित; मुळरि चॆम् कण्–कमल-सी आँखें; काट–इनके वन को; उण्टु पुकुन्ततु ऎन्न–खाकर प्रवेश किया हो, ऐसा मानकर; कऱ्ऱै वॆण् तिङ्कळ्–कलंक-युक्त श्वेत चन्द्र; मुनिन्ततु–नाराज हुआ। २७५७

ताड़ के पत्ते के वने जैसे स्वर्ण के शुरुळ नामक कर्णाभूषण, लटकते कुंडल, केशालंकार विशेष में शोभनेवाले स्वर्णनिर्मित सदल पुष्प, तिलक, सेमर-जैसे लाल अधर; मुस्कुराते मोती-जैसे दाँत, मृदु काँटों-सहित कमल के समान लाल आँखें —इनका वन मुझे छिपाने आ घुसा है —यह सोचकर सकलंक श्वेतचन्द्र नाराज़ हुआ। २७५७

मुळैक्कोऴुङ् गदिरिऩ् कऱ्ऱै मुऱुवल्वॆण् णिलवु मूरि
ऑळिप्पिऴम् बॊऴ्हुम् बूणि ऩुमिऴिळ वॆयिलु मॊण्बोऩ्
विळक्कैयुम् विळक्कु मेऩि मिळिर्हदिर्प् परप्पुम् वीश
वळैत्तपे रिरुळुम् गण्डो ररिवॆऩ मरुळु मादो 2758

मुळै–उगनेवाली; कॊऴु कतिरिन् कऱ्ऱै–पुष्ट किरणों की लटों का; मुऱुवल्–हँसी रूपी; वॆळ् निलवुम्–श्वेत चन्द्र और; मूरि–अधिक; ऑळि पिऴम्पु ऒऴुकुम्–ज्योति निकालनेवाले; पूणिन्–आभरणों से; उमिऴ्–निःसृत; इळ वॆयिलुम्–बाल धूप; ऑण् पोन्–प्रकाशमय स्वर्ण के समान; विळक्कैयुम् विळक्कुम्–दीप को भी दीप्त करनेवाले; मेनि–शरीर से; मिळिर् कतिर्–निकलकर फैलनेवाली छवि-किरणों के; परप्पुम् वीच–विस्तार के फैलते; वळैत्त पेर् इरुळुम्–घेर आनेवाला बड़ा अन्धकार; कण्टोर् अऱिवु ऎन्न–दर्शकों की बुद्धि के समान; मरुळुम्–घुल-मिल जाते (भ्रमित करते) हैं। २७५८

मुस्कुराहट की पुष्कल रोशनी वाली चाँदनी छिटक रही थी। अधिक छविमान आभरणों से वाल धूप निकल रही थी। उज्ज्वल स्वर्ण के समान

दीप को भी दीप्ति देनेवाली देहों की कांति की किरणें छूट रही थीं। चारों ओर अन्धकार घेरे था। यह दृश्य देखनेवाले का मन जैसे चक्रित होता था, वैसे ही वह विविध रोशनियाँ भी मिश्रित हो रही थीं। २७५८

नऱ्पॅरुङ् गल्विच् चॅल्व नवैयऱ नॅऱियै नण्णि
मुऱ्पय नुणर्न्द तूयोर् मॊऴियॊडुम् बऴहि मुऱ्ऱिप्
पिऱ्पय नुणर्द ऱेऱ्ऱाप् पेदैपाल् वञ्जन् शॅय्द
कऱ्पनै यॅन्न वोडिक् कलन्ददु कळ्ळिन् वेहम् 2759

नल् पॅरु कल्वि चॅल्वम्–श्रेष्ठ बड़े विद्या-धन से; नवै अऱ–दोषहीन; नॅऱियै नण्णि–मार्ग में जाकर; मुन् पयन् उणर्न्त–आगे का नतीजा जो जानते ; तूयोर् मॊऴियोडुम्–पवित्र लोगों के (उपदेश) वचनों के साथ; पऴकि–अभ्यस्त हो; मुऱ्ऱि–पक्व होकर; पिन् पयन्–पीछे का फल; उणर्तल् तेऱ्ऱा–जो न जान सके; पेतै पाल्–उस जड़मति के प्रति; वञ्चन् चॅय्त–वंचककृत; कऱ्पनै अॅन्न–कल्पित कार्य के समान; कळ्ळिन् वेकम् कलन्ततु–ताड़ी का उग्र प्रभाव मिल गया। २७५९

श्रेष्ठ विद्याश्री से प्राप्त निर्दोष न्यायमार्ग पर जो चलते हैं और जिन्हें भावी का फलकार्य विदित है, ऐसे पवित्र साधुओं के उपदेश-वचनों से अभ्यस्त रहना आवश्यक है। पर इसके विपरीत जो अज्ञ हैं, उनके पास वचक की कल्पना मिली हो—ऐसा उन स्त्रियों में ताड़ी का नशा मिल गया था। २७५९

पलपड मुऱुवल् वन्दु परन्दन पनित्त मॅय्वेर्
इलविदऴ् तुडित्त मुल्लै यॅयिऱुवॅण् णिलवै योन्ऱ
कॊलैपयि नयन वेलिन् कॊऴुङ्गडै शिवन्द कोऱ्ऱय्
चिलैनहर् पुरुव नॅऱ्ऱिक् कुनित्तन विळर्त्त शॅव्वाय् 2760

मुऱुवल्–मंदहास; पल पड–विविध प्रकार का; वन्तु–आकर; परन्तन–फैला; मॅय् वेर् पनित्त–शरीर पर स्वेदकण झलक आये; इलवु इतऴ्–सेमर (सम लाल) अधर; तुटित्त–फड़के; मुल्लै अॅयिऱु–'मुल्लै' कली-से दाँतों ने; वॅण् निलवै ईन्ऱ–श्वेत चाँदनी को जन्म दिया; कॊलै पयिल्–मारक काम में अभ्यस्त; नयनम् वेलिन्–नयन रूपी भालों के; कॊऴु कटैकळ्–मनोरम कोरों में; चिवन्त–लाली उठी; चिलै निकर्–धनु-सी; पुरुवम्–भौंहें; नॅऱ्ऱि कुनित्तन–ललाट में कुंचित हुई; चॅव्वाय्–लाल अधर; विळर्त्तन–पांडुर हो गये। २७६०

तरह-तरह के मंदहास उदित हुए और फैले। शरीर पर स्वेदकण उग आये। सेमर के फूलों-से अधर फड़के। 'मुल्लै' नाम के (श्वेत) फूल के समान दाँतों ने श्वेत प्रकाश छिटकाया। संहारदक्ष आँखों रूपी भालाओं के पुष्ट कोरों में लाली उदित हो आयी। धनु-सी भौंहें भाल

कून्दलम् बारक् कट्रैक् कौन्दळक् कोलक् कौण्डल्
एन्दह लल्हुट् ट्रेरै यिहन्दुपो यिरङ्ग याणर्प्
पून्दुहि लोडुम् बूशल् मेहलै शिलम्बु पूण्ड
मान्दळि रॅय्द नोय्दिन् मयङ्गिनर् मळलैच् चौल्लार् 2761

कून्तल् अम्पारम् कट्रै—केश की लटों के संभार रूपी; कौन्तळम् कोलम् कौण्टल्—चक्रों के आकार में रहे मनोरम मेघ; एन्तु अकल्—उन्नत विशाल; अल्कुल् तेरै—जघन-रथ को; इकन्तु पोय्—पारकर जाकर; इरङ्क—लटके रहे; याणर्—नये; पून्तुकिलोटुम्—महीन वस्त्रों के साथ; पूचल्—क्वणनशील; मेकलै—मेखला; चिलम्पु पूण्ट—नूपुर से अलंकृत; मान्तळिर् अॅयत—आम्रपल्लव से जाकर लगी थी; मळलैच् चौल्लार्—(मनोरम) अस्पष्ट-वाणी स्त्रियाँ; नोय्तिन्—आसानी से; मयङ्कितर्—(कौन पैर को छूता है ? यह सोच) भ्रमित होती हैं। २७६१

अंबार के केशों की लटें रूपी घुमावदार व सुन्दर मेघ उन्नत और चौड़े नितंब प्रदेश को पार कर नीचे लटक रहे थे। नये और क्वणनशील मेखला के साथ शोभ रहे वस्त्र नूपुर से अलंकृत आम्रपल्लव-से पैरों से जा लग रहे थे। तो तुतलाती मधुर बोली वाली स्त्रियाँ ("कौन है पैरों पर पड़ा" —ऐसा) संशय-विचलित हो रहीं। २७६१

कोत्तमे हलैयि नोडुन् दुहिन्मणिक् कुरङ्गैक् कूडक्
कात्तन कून्दर् कट्रै यट्रमत् तन्मै कण्डु
वेत्तवै कीळ् ळोर्हळ् कीळ्मैये विळैत्तार् मेलाञ्
जीर्त्तवर् शॅय्यत् तक्क करुममे शॅय्दा रॅन्न 2762

वेन्तु अवै—राजसभा में; कीळ् उळोर्कळ्—नीची श्रेणी में काम करनेवालों ने; कीळ्मैये विळैत्तार्—अल्प काम ही किये; मेलाम् चीर्त्तवर्—उच्च श्रेष्ठ लोगों ने; चॅय्यत्तक्क करुममे चॅय्तार्—करने योग्य कार्य ही किये; अॅन्न—जैसे; कोत्त मेकलैयिनोटुम्—गुँथी मेखला के साथ; तुकिल्—वस्त्र के; मणि कुरङ्कै कूट—(कमर छोड़) सुन्दर ऊरु से जा लगने पर (जो लज्जाजनक काम हो गया तब); अ तन्मै कण्टु—वह प्रकार देख; कून्तल् कट्रै—केशराशि ने; अट्रम् कात्तन—लाज रखी। २७६२

राजसभा के क्षुद्र सभासद नीच काम ही करते हैं और उच्च सभासद उत्कृष्ट काम। वैसे ही मेखला के साथ वस्त्र खिसक गये और ऊरु तक पहुँच गये। तब उसे देखकर केशों की लटों ने नितंब प्रदेश पर फैलकर लाज बचा ली। २७६२

पाणियिर् ट्रळ्ळिक् काल मात्तिरैप् पडावु पट्ट
नाणियिन् मुट्रैयिर् कूडा दौरुवळि नडैयिर् चॅल्लुम्
आणियि नळिन्द पाड लोत्तरन् रतङ्ग बेडन्
तूणियि नडैत्त वम्बिर् कौडुन्दौळि ठ्ट्रन्द कण्णार् 2763

बन्द रखे शरों के समान; कॊट्टु तॊऴिल् तुऱन्त–क्रूर-कर्म-त्यक्त; कण्णार्–आँखों वाली स्त्रियों ने; पाणियिऩ् तळ्ळि–तालय छोड़कर; कालम् मात्तिरै–काल की मात्रा से; पट्टातु–बद्ध न रहकर; पट्ट नाणियिऩ्–वाद्य में की तन्त्री के; मुऱैयिल् कूटातु–बजने के क्रम से अबद्ध; ऒरु वऴि नटैयिल्–अपने अलग मार्ग में; चॆल्लुन्–जानेवाले; आणियिऩ् अऴिन्त पाटल–क्रम-भग्न गीत; ईऩ्ऱनर्–पैदा किये (गाये)। २७६३

मन्मथ के तूणीर में सुरक्षित शरों के समान उनकी आँखें घातक काम से निवृत्त थीं। वे गाना गाती थीं, जिनका ताल-मेल कुछ ठीक नहीं बैठता था; न उनका तंत्रियों से उठे स्वर से कोई लय मिलता था; न उनका काल-प्रमाण से कोई बन्धन दिखता था। २७६३

वङ्गियम् वहुत्त काऩ मारुहॊण् मऴलै वायर्
शङ्गैयिल् पॆरुम्ब णुऱ्ऱ निऱत्तुऱै निरम्बित् तळ्ळच्
चिङ्गलि नमुदि ऩोडुम् बुळियळान् देऱ लॆऩ्ऩ
वॆङ्गुर लॆडुत्त पाडल् विळित्तऩर् मयक्कम् वीङ्ग 2764

वङ्कियम् वकुत्त काऩम्–'नादस्वर' के संगीत से; मारुकॊळ–विपरीत; मऴलै वायर्–अस्पष्ट मीठी वाणी की स्त्रियों ने; मयक्कम् वीङ्क–(मद्य-) मस्ती के बढ़ने से; चङ्कै इल्–निर्दोष; पॆरु पण् उऱ्ऱ–श्रेष्ठ तान में बने; निऱम् तुऱै–पूर्ण प्रकार से; निरम्पि तळ्ळ–बिलकुल अलग हुए; चिङ्कल् इल्–अभय; अमुतिऩोटुम्–अमृत के साथ; पुळि अळाम्–खटाई से युक्त; तेऱल् ऎऩ्ऩ–मद्य के समान; वॆम् कुरल् ऎटुत्त पाटल्–कठोर कर्कश स्वर में गीत; विळित्तऩर्–गाये। २७६४

'नागस्वर' (शहनाई-सा वाद्य) से जो संगीत होता है, उसकी टक्कर की मधुरता से युक्त अस्पष्ट वोली वाली स्त्रियों का ताड़ी का नशा अत्यधिक चढ़ गया था। तब वे जो गाती थीं, वह अमृत से मिली खट्टी ताड़ी के समान लगी। उनका स्वर बड़ा कर्कश और कठोर था और तानें ठीक नहीं बन पाती थीं। २७६४

एऩैय पिऱवुङ् गण्डार्क् किन्दिर शाल मॆऩ्ऩत्
ताऩवै युरुविऱ् ऱोऩ्ऱुम् बावनैत् तहैमै शाऩ्ऱोर्
माऩमर् नोक्कि ऩारै मैन्दरैक् काट्टि वायाल्
आऩैयै विळम्बित् तेरै यबिनयत् तियऱ्ऱि युऱ्ऱार् 2765

अवै–अनुभाव; उरुविल् तोऩ्ऱुम्–उनके शरीर पर दिखनेवाली; पावऩै तकैमै चाऩ्ऱोर्–नृत्य की मुद्राओं में अभ्यस्त; एऩैय पिऱवुम्–अन्य अभिनय; कण्टार्क्कु–देखनेवालों को; इन्तिर चालम् ऎऩ्ऩ–इन्द्रजाल के समान लगे; माऩ् अमर् नोक्किऩारै–मृगनयनाओं के लिए; मैन्तरै–तरुण पुरुषों को; काट्टि–दिखाकर; वायिऩाल्–मुख से; आऩैयै विळम्पि–गजों को कहकर; अपिनयत्तु–अभिनय में; तेरै इयऱ्ऱि उऱ्ऱार–वादरों को दिखातीं। २७६५

अभिनय की कला में दक्ष वे स्त्रियाँ साधरण रूप से जब किसी पात्र का अभिनय करतीं, तब वे ही मानो इन्द्रजाल-सा रच देतीं और दर्शकों के सामने अभिनय के पात्र मानो जीवित हो उठते। पर अब वे मृगनयना स्त्रियाँ इशारे से पुरुषों को दिखातीं और कहतीं 'गज' और दादुर के रूप का अभिनय करतीं। २७६५

अऴुहुवार् नहुवार् पाडि याडुवा रयलिन् ऱारॆत्
तॊऴुहुवार् तुयिल्वार् तुळ्ळित् तूङ्गुवार् तुवर्वा यित्ऱेत्
ऒऴुहुवा रॊल्हि यॊल्हि यॊरुवर्मे लॊरुवर् पुक्कु
मुऴुहुवार् कुरुदि वाट्कण् मुहिऴ्त्तिड मूरि पोवार् 2766

अऴुकुवार्–(कुछ) रोतीं; नकुवार्–हँसतीं; पाटि आटुवार्–गातीं-नाचतीं; अयल् निन्ऱारै–पास जो खड़े थे उन्हें; तॊऴुकुवार्–प्रणाम करतीं; तुयिल्वार्–सोतीं; तुळ्ळि–उछल-उछलकर; तूङ्कुवार्–थकित हो जातीं; तुवर् वाय्–प्रवालाधरों से; इन् तेन्–मधुर मधु को; ऒऴुकुवार्–गिरातीं; ऒल्कि ऒल्कि–लचक-लचककर; ऒरुवर् मेल् ऒरुवर्–एक-दूसरे पर; पुक्कु मुऴुकुवार्–लगकर चिपक जातीं; कुरुति वाळ् कण्–रक्तरंजित तलवार-सी आँखों को; मुकिऴ्त्तिट–बन्द करके; मूरि पोवार्–अँगड़ाई लेतीं। २७६६

(मस्ती के कारण) वे रोतीं, हँसतीं और नाचती-गाती थीं। कुछ स्त्रियाँ प्रणाम करतीं; कुछ सो जातीं। कुछ स्त्रियाँ उछल-कूद मचाकर थक जातीं। प्रवालाधरों से कुछ के मुख में मद्य टपकता। कुछ लचक-लचक जातीं और एक-दूसरे से लिपटकर गाढ़ालिंगन में डूब जातीं। रक्तवर्ण तथा तलवार-सम आँखें मूँदकर वे अँगड़ाई लेतीं। २७६६

उयिर्प्पुऱत् तुऱ्ऱ तन्मै युणर्त्तिना रुळ्ळत् तुळ्ळ
दयिर्प्पिलि लऱिदि रॆन्ऱे यदुकळि याट्ट माहच्
चॆयिर्प्पऱु दॆय्वच् चिन्दैत् तिरुमऱै मुनिवर्क् केयुम्
मयिर्प्पुऱन् दोरुम् वन्दु पॊडित्तन मदन वाळि 2767

उळ्ळत्तु उळ्ळतु–मेरे मन की रहनी (बात); अयिर्प्पिलिल्–विना सन्देह के; अऱितिर्–जान लेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा; उयिर् पुऱत्तु उऱ्ऱ–जान से लगा (आंतरिक); तन्मै उणर्त्तिनार्–हाल बतलाया (स्त्रियों ने); अतु कळियाट्टम् आक–जब वह केलि होती रही; चॆयिर्प्पु अऱु–त्रुटिहीन; तॆय्वम् चिन्तै–देवलग्न चित्त वाले; तिरु मऱै मुनिवर्क्केयुम्–श्रीवेदों के ज्ञाता विप्रों के लिए भी; मतनन् वाळि–मदनशर; मयिर् पुऱम् तोऱुम्–रोमकूपों में; वन्तु पॊटित्तन–आ भर गये। २७६७

उन नारियों ने अपने मन का भाव विना संशय को मौक़ा दिये ही जता दिया। उनके हावभाव तथा लीला को देखनेवाले चाहे निर्दोष देव-चिंतन में लगे उत्कृष्ट वेदज्ञ विप्र ही क्यों न हों, उनके भी रोमकूपों में मन्मथ-शर आ भरे। २७६७

मापिपरऴ् नोक्कि तार्तम् मणिनॅडुङ् गुवळै वाट्कण्
चेप्पुर् वरत्तच् चॅव्वायच् चॅङ्गिडै वॅण्मै शेरक्
काप्पुरु पडैक्कॅक् कळ्व निरुदर्क्को रिरुदि काट्टिप्
पूप्पिरऴ्न् दुरुवम् वेरायप् पॉलिन्ददोर् तन्मै पोन्र 2768

मा पिरऴ् नोक्कितार् तम्–हरिण के समान चंचल दृष्टि वाली (राक्षस) रमणियों की; मणि नॅट्ट–सुंदर आयत; कुवळै–नीलोत्पल-सम; वाळ् कण्–प्रकाशमय आँखें; चेप्पु उऱ्–लाल बनीं; चॅम् किटै–लाल 'किडै' (खुखरी) नाम की लता तथा; अरत्तम्–लाल कमल-से; चॅव्वाय्–लाल अधरों पर; वॅण्मै चेर–पांडुरता के छा जाते; उरु–वलय-सह; काप्पु उरु पटै कॅ–रक्षण-कार्य के योग्य हथियारों से लैस हाथों वाले; कळ्व निरुतर्क्कु–चोर राक्षसों को; ओर् इऱुति काट्टि–एक अन्त दिखाकर; पू पिरऴ्न्तु–फूल अपना स्वभाव बदलकर; उरुवम् वेराय् पॉलिन्ततु ओर् तन्मै–दूसरा बन गया है ऐसी स्थिति; पोन्ऱ–से हो गये, (ऐसा) लगा। २७६८

मृगनयनी राक्षस-रमणियों के सुंदर उत्पल-सी (नीली) तेज़ आँखें लाल हो गयीं। रक्तकुमुद-से अधर श्वेत हो गये। यह (फूलों का रंग बदलना) दुश्शकुन था और बाहुवलय तथा रक्षक हथियारधारी राक्षसों के अन्त को सूचित करता-सा लगा। २७६८

कयल्वरु कालन् वैवेर् कामवेळ् कणैयॅन् ऱालुम्
इयल्वरु हिऱ्कि लाद नॅडुङ्गणा रिणैमॅन् कॉङ्गैत्
तुयल्वरु कनह नाणुङ् गाञ्जियुन् दुहिलुम् वाङ्गिप्
पुयल्वरु कून्दर् पारक् कऱ्ऱैयिर् पुनैय लुऱ्ऱार् 2769

कयल्–मछली; वरु कालन्–आगंतुक यम का; वै वेल्–तीक्ष्ण भाला; कामन् वेळ् कणै–मनोज का शर; ॲन्ऱालुम्–आदि उपमान कहें तो भी; इयल् वरुकिऱ्किलात–उपमा नहीं बनेगी ऐसी; नॅट्ट कणार्–आयत आँखों वाली राक्षस-रमणियों ने; इणै मॅल् कॉङ्कै–जोड़े के मृदुल स्तनों पर; तुयल् वरु–लोटनेवाले; कनकम् नाणुम्–कनक-दाम को; काञ्चियुम्–और मेखला को; तुकिलुम्–वस्त्र को; वाङ्कि–हाथ में लेकर; पुयल् वरु–मेघ-सम; कून्तल् पारम् कऱ्ऱैयिल्–केशभार-राशि पर; पुनैयल् उऱ्ऱार्–पहनने लगीं। २७६९

राक्षस-नारियों के नेत्र ऐसे थे कि मछली, प्राणहर यम के हाथ का भाला, या कामशर उनके उपमान नहीं बन सकें। वे अब मस्ती में थीं। उन्होंने पीन स्तनद्वय पर लोटनेवाले कनक-दाम को, मेखला को और वस्त्र को उतारकर उनसे अपने केश का शृंगार करने लगीं। २७६९

मुत्तन्मै मौळ्ळिय लाहा मुहिऴ्ळिन् मुरुव नल्लार्
इत्तन्मै यॅय्द नोक्कि यरशुवीर् ऱिरुन्द वॅल्लै
यत्तन्मै यरियिन् शेनै यार्हलि यार्त्त वोशै
अत्तन्मैय् मयङ्ग वन्दु शॅवितोऱ्ऱ मडुत्त दन्ऱे 2770

मुत्तु अन्मै–मोती नहीं ऐसा; मोऴियल् आका–जो नहीं कहा जा सकता; मुकिऴ् इळ मुरुवल्–ऐसे मंदहास से; नल्लार्–शोभनेवाली स्त्रियाँ; इ तन्मै ॲय्तल्–इस (नशे की) स्थिति में पहुँची हैं, यह हालत; नोक्कि–देखकर; अरचु–राजा (रावण); वीऱ्रिरुन्त ॲल्लै–जब विराजमान रहा तब; अ तन्मै–उधर जीवित स्थिति में आये; अरियिन् चेतै आर्कलि–वानर-सेना-सागर का; आर्त्त ओचै–घोषित नाद; अत्तन्–उसके; मॅय् मयक्क–शरीर को थकाते हुए; चॅवि तोऱुम् वन्तु अट्तततु–(रावण के) कान-कान में आ लगा। २७७०

मोती ही सम मृदु हास वाली स्त्रियाँ ऐसी स्थिति में आ रही थीं। राक्षसराज यह देखते हुए आनंद के साथ विराज रहा था। तभी वानर-सेना-सागर ने उच्च नाद उठाया। वह उसके शरीर को थकाते हुए हर कान में जा पहुँचा। २७७०

आडलुङ् गळिप्पिन् वन्द वमलैयुममुदि नान्ऱ
पाडलु मुळवित् ॾॅय्वप् पाणियुम् बवळ वायार्
ऊडलुङ् गडैक्कण् णोक्कु मळ्ळैवॅव् वुरैयु मॅल्लाम्
वाडनॅन् मलरे यॊत्त वार्प्पॊलि वरुद लोडुम् 2771

पवळ वायार्–मूंगे के समान मुख वाली राक्षसियों के; आटलुम्–नाच और; कळिप्पिन् वन्त–मत्तता से उठे; अमलैयुम्–शोर और; अमुतिन् आन्ऱ–अमृत से भी श्रेष्ठ; पाटलुम्–गान और; मुळविन्–मृदंग आदि वाद्यों के; तॅय्वम् पाणियुम्–दिव्य ताल-स्वर; ऊटलुम्–रूठन; कटै कण् नोक्कुम्–कटाक्ष; मळ्ळै–तोतली; वॅम्मै उरैयुम्–प्यारी बोलियाँ; ॲल्लाम्–सब; आर्प्पु ऒलि–मर्दन का स्वर; वरुतलोटुम्–ज्योंही आया, त्योंही; वाटल्–मुरझाये; मॅल् मलरे ऒत्त–मृदु फूल के ही समान हो गये। २७७१

प्रवालमुखी राक्षसियों के नाच और मद्यमस्ती में उत्पन्न शोर अमृत के समान गान और मृदंग आदि बाजों के दैवी नाद और ताल, रूठन, कटाक्ष, तुतली प्यारी बोलियाँ—सभी वानर-सेना के नर्दन के उठते ही मुरझाये मृदु सुमन-से हो गये। २७७१

तऱिपॊरु कळिनल् यानै शेवहन् दळ्ळि येङ्गत्
तुरुशुवर् पुरवि तूङ्गित् तुणुक्कुऱ वरक्क रुट्कच्
चॅऱिहळ् लिरुवर् दॅय्वच् चिलैयॊलि पिऱन्द दन्ऱे
ॲऱिकडल् कडैन्द मेनाळ् ळॅऴुन्द पेराशै यॆन्न 2772

चॅऱि कऴल् इरुवर्–ठोस पायलधारी दोनों (राम-लक्ष्मण) के; तॅय्वम् चिलै ऒलि–दैवी धनु की टंकार; तऱि पॊरु–खूंटे से टकरानेवाले; कळि नल् यानै–मद-मत्त तथा श्रेष्ठ गज; चेवकम् तळ्ळि एङ्क–अपने सोने के स्थान में पड़े म्लान हुए; तुऱु चुवल् पुरवि–घने अयालवाले अश्व; तूङ्कि–कांपकर; तुणुक्कु उऱ–भयभीत हुए; अरक्कर् उट्क–राक्षस डरे (ऐसा); ॲऱि–तरंग फेंकते; कटल् कटैन्त–सागर को (जिस दिन) मथा गया; मेनाळ्–उस प्राचीन दिन में; ॲऴुन्त पेर् ओचै–जो बड़ा शोर उठा; ॲन्न–उसके समान; पिऱन्ततु–उठी। २७७२

घनी-वीर-पायल-धारी श्रीराम और लक्ष्मण के धनु की टंकार उठी, तो मदमत्त हाथी अपने सोने के स्थानों में पड़े म्लान हो गये। घने अयालवाले अश्व भय-चकित हो गये। राक्षस डर गये। और वह ध्वनि उस दिन तरंगविक्षुब्ध समुद्रमथन के अवसर पर उठे नादके समान थी। २७७२

मुत्तम्वा णहैक्कुत् तोऱ्कु मुहत्तियर् मुळुक्कण् वेलाऱ्
कुत्तुवार् कूट्ट मॅल्लाम् वानरक् कुळुविऱ् ऱोत्ऱ
मत्तुवाळ् कडलि नुळ्ळ मरुहुऱ वदन मॅन्तुम्
पत्तुवाण् मदिक्कु मन्नाट् पहलॊत्त दिरवु पण्बाल् 2773

मुळु कण् वेलाल्–पूर्ण आँख रूपी शक्ति को; कुत्तुवार्–भोंकती; मुत्तम्–मोती; वाळ् नकैक्कु–जिनके प्रकाशमय हास के सामने; तोऱ्कुम्–हार जाते ऐसे; मुकत्तियर्–मुख वाली नारियाँ; ॲल्लाम्–सभी; वानरम् कुळुविल् तोन्ऱ–वानर-समूह-सी लगीं; मत्तु वाळ् कटलिन्–तब मथानी-सहित समुद्र के समान; उळ्ळम् मरुकुऱ–चित्त के व्यग्र होते; अ नाळ्–उस दिन; इरवु–रात; पण्पाल्–अपनी स्थिति से; वतनम् ॲन्तुम्–वदन रूपी; वाळ्–प्रकाशमय; पत्तु मतिक्कुम्–दसों चन्द्रों के लिए; पकल् ऑत्ततु–दिन-सा लगा। २७७३

अपनी पूर्ण बड़ी आँखों के साँग से सालनेवाली, मोतियों को हराने वाले हँसी के मुखों की रमणियाँ अब रावण को वानर-सेना-सी (अप्रिय) लगीं। उसका मन मन्दर-मथानी से विलोडित क्षीरसागर-सा विक्षुब्ध हो गया। उस रात की स्थिति ही बदल गयी। इसलिए वह रात उसके चंद्र-सम दसों मुखों के लिए दिन बन गयी। २७७३

ईदिडै याह वन्दा रलङ्गन्मी देऱि नाऱ्पोय्
ऊदिनार् वेय्हळ् वण्डि नुरुविना रुऱ्ऱ वॅल्लान्
तीदिलर् पहैञ रॅन्नत् तिक्कॅन्ऱ मनत्तन् ऱॅय्वम्
पोदुहु पन्दर् निन्ऱु मन्दिरत् तिरुक्कै पुक्कान् 2774

ईतु इडैयाक–एतन्मध्य; वन्तार् वेय्कळ्–आगत चर; वण्टिन् उरुविनार्–भ्रमर-रूप-धारी बन; अलङ्कल् मीतु–माला पर; पोय् एऱिनार्–जा चढ़े; ऊतिनार्–(कान में) फूंके; उऱ्ऱ ॲल्लाम्–जो बीता वह सब; इरावणन् पकैञर्–रावणशत्रु; तीतिलर्–हानि-रहित हैं; ॲन्न–जानकर; तिक् ॲन्ऱ मनत्तन्–ठिठक-भरे मन का होकर; तॅय्वम् पोतु उकु–दैवी पुष्प जहाँ चूते थे उस; पन्तर् निन्ऱु–मण्डप को छोड़कर; मन्तिरत्तु–मंत्रणा-मण्डप में; पुक्कान्–पहुँचा। २७७४

जब यह हो रहा था तब चर आये। भ्रमरों के रूप में रावण की माला पर से चढ़कर उन्होंने बीता सारा हाल रावण के कानों में फूंका। रावण ने जब जाना कि उसके शत्रुओं पर कोई आँच नहीं आयी है, तो उसके मन में ठिठक भर गयी। वह उस मण्डप से, जिसमें

दैवी फूल (कलप-सुमन) चू रहे थे, निकलकर अपने मन्त्रणागृह में पहुँच गया। २७७४

25. माया शीदैप् पडलम् (माया-सीता पटल)

मैन्दनु मऱ्ऱु ळोरु महोदरन् मुदलो राय
तन्दिरत् तलैमै योरु मुदियरुन् दळ्वत् तक्क
मन्दिर रॅवरुम् वन्दु मरुङ्गुऱप् पडर्न्दार् पट्ट
अन्दर मुळ्ळुदुन् दाने यत्तैयवर्क् करियच् चौन्नान् 2775

मैन्तनुम्–पुत्र (इन्द्रजित्) और; मऱ्ऱुळोरुम्–अन्य; मकोतरन् मुतलोराय–महोदर आदि; तन्तिरम् तलैवरुम्–सेनापति; मुतियरुम्–वृद्ध लोग और; तळ्व तक्क–मंत्रणा-समर्थ; मन्तिरर् ॲवरुम्–सभी मन्त्री; वन्तु–आये; मरुङ्कु उऱ–पार्श्वस्थ हो; पटर्न्तार्–घेरकर बैठे; पट्ट–आप बीता; अन्तरम् मुळ्ळुतुम्–दुःख का सारा हाल; अत्तैयवर्क्कु–उनसे; ताने–खुद; अरिय–समझाकर; चौन्नान्–(रावण ने) कहा। २७७५

मंत्रणागृह में उसका पुत्र इन्द्रजित्, महोदर आदि सेनापति, वयोवृद्ध लोग और मंत्रणा देने की योग्यता रखनेवाले नेता लोग आये और घेरकर बैठ गये। तब रावण ने अपना सारा दुःख अपने ही मुख से पूर्ण रूप से कह सुनाया। २७७५

इलङ्गैयि निन्ऱु मेरुप् पिऱ्पड विमैप्पिऱ् पायन्दु
वलङ्गिळर् मरुन्दु निन्ऱ मलैयोडुङ् गौणर वल्लान्
अलङ्गलन् दडन्दो ळण्ण लनुमने यादल् वेण्डुम्
कलङ्गलि लुलहुक् कॅल्लाङ् गारणङ् गण्ड वाऱ्ऱाल् 2776

(माल्यवान) उलकुक्कु ॲल्लाम्–सारे लोकों के; कलङ्कलिल्–अप्रमत्त; कारणम्–कारण को; कण्ट आऱ्ऱल्–देखा है उस शक्ति से; इलङ्कैयिन् निन्ऱु–लंका से; इमैप्पिन्–एक पल में; मेरु पिऱ्पट–मेरु को पीछे छोड़कर; पायन्तु–लपक चलकर; वलम् किळर् मरुन्तु–प्रभावमय 'मृतसंजीवनी' औषध को; निन्ऱ मलैयोटुम्–वह जिसमें रहा उस पर्वत के साथ; कॊणर वल्लान्–ला सकनेवाला; अलङ्कल्–माला से अलंकृत; अम् तटम् तोळ्–सुन्दर विशाल कन्धों वाला; अण्णल्–महिमावान; अनुमने आतल् वेण्टुम्–हनुमान ही होगा। २७७६

(तब माल्यवान ने कहना आरम्भ किया—) जो अशेष तथा अचल लोककारण का ज्ञान रखता है और जिसे अपूर्व बल प्राप्त है; जो लंका से निकलकर मेरु के भी आगे एक पल में गया और शक्तिसंयुक्त औषधों को उनके पर्वत के साथ ला सका, वह सुंदर माला से अलंकृत विशाल कंधों वाला महावीर हनुमान ही हो सकता है। २७७६

नीरितैक् कडक्क वाङ्गि यिलङ्गैया नित्र कुन्रैप्
पारितिऱ् किऴिय वीशि नारुळर् पिऴैक्कर् पालार्
पोरितिप् पौरुव दॆङ्गे पोयिन वनुमन् पौन्मा
मेरुवैक् कौणरन्दिव् वूर्मे लिडुमॆनित् विलक्क लामो 2777

इलङ्कैया नित्र–लंका के रूप में स्थित; कुन्रै–पर्वत को; नीरितै कटक्क–जल से अलग करके; वाङ्कि–उठाकर; पारितिल्–भूमि पर; किऴिय वीचित्–चीरते हुए कोई पटके तो; पिऴैक्कल् पालार्–बच सकनेवाले; यार् उळर्–कौन हैं; पोयित अनुमन्–जो गया वह हनुमान; पौन् मा मेरुवै–स्वर्ण के बड़े मेरु को; कौणर्न्तु–लाकर; इ ऊर् मेल्–इस नगर पर; इटुम् ऎतिन्–डाले तो; विलक्कल् आमो–रोका जा सकेगा क्या; इति–अब; पोर् पौरुवतु ऎङ्के–लड़ना कहाँ। २७७७

लंका के पर्वत को समुद्र से अलग करके उठाकर कोई भूमि पर उसको चीरते हुए डाल दे तो बचनेवाला कौन होगा ? ओषधि-पर्वत जो लाने गया, वह स्वर्ण-मंदर पर्वत को लाकर इस नगर पर डाल गया होता तो कोई उसे रोक सकता था क्या ? इस हालत में युद्ध कहाँ होगा ? । २७७७

मुरैहॆड वॆन्रु वेण्डिन् नितैत्तदे मुडिप्पन् मुन्बिन्
कुरैविलाक् कुणङ्गट् काङ्गोर् कोदिलर् वेदङ् गूरुम्
इरैवर्कण् मूव रॆन्ब दॆण्णिला रॆण्ण मेदान्
अरैहऴ् लनुम नोडुम् नाल्वरे मुदल्व रम्मा 2778

मुरै कॆट–(सृष्टि-) क्रम बदलूं; ऎन्रु वेण्टिन्–ऐसा इच्छा करे तो; नितैत्तते–सोचा ही; मुन्पिन्–बल से; मुटिप्पन्–पूरा कर देगा; कुरैवु–त्रुटि; इला–हीन; कुणङ्कट्कु–गुणकथन के लिए; ओर् कोतिलर्–कोई दोष जो नहीं रखते; वेतम् कूरुम्–वेदशंसित; इरैवर्कळ्–देवता; मुवर्–तीन; ऎन्पतु–कहना; ऎण्णिलार्–विवेकहीनों का; ऎण्णमे तान्–विचार है; मुतल्वर्–प्रथम; अरै कऴल् अनुमनोटुम्–क्वणनशील पायलधारी हनुमान को मिलाकर; नाल्वरे–चार ही हैं; अम्मा–आश्चर्य री मैया। २७७८

अगर हनुमान चाहे कि 'उलट-फेर मचा दूँगा' तो वह अपने बल से वह काम पूरा कर सकेगा। 'निर्दोष गुणपूर्ण आदिदेव तीन हैं'—यह अविवेकियों का विचार है। असल में आदिदेव क्वणनशील पायलधारी हनुमान को मिलाकर चार हैं ! यह विस्मयकारी बात है, री मैया ! । २७७८

नङ्गिळै युलन्द वॆल्ला मुयन्दिड नणुहु मन्रे
वॆङ्गौडुन् दीमै तन्ताल् वेलैयि निट्टि लोमेल्
इङ्गुळ वॆल्ला माडर् किनिवरु मिडैयू रिल्लै
पङ्गयत् तण्णन् मीळाप् पडैपऴु दुर्र पण्बाल् 2779

उलन्ततु–जो मरे; नम किळै ऎल्लाम्–उन हमारे सारे बांधवों को; वॆम्

कॉटुम् तीमै तन्नाल्–भयंकर नाशकारी बुराई से; वेलैयिन्–समुद्र में; इट्टिलोमेल्–नहीं डालते तो; उय्न्तिट नणुकुम् अन्ड्रे–बच सकते न; पङ्कयत्तु अण्णल्–कमलासन भगवान का; मीळा पटै–अवार्य अस्त्र; पळुतु उट्र–असफल हुआ उस; पण्पाल्–हालत में; इनि–अब; इङ्कु उळ ॲल्लाम्–यहाँ का सभी; माळ्तर्कु–मिट जाय इसमें; वरुम्–होनेवाली; इटैयूरु इल्लै–कोई बाधा नहीं। २७७६

हमारे लोग जितने मरे हैं, उन सबको अगर क्रूरता के साथ समुद्र में तुम न डाल गये होते तो उनके बचने का मौक़ा होता न? कमलासन भगवान ब्रह्मा का अस्त्र, जो कभी असफल नहीं होता, अब व्यर्थ हो गया है। इस स्थिति में अब यहाँ के लोगों के मरने में कोई बाधा नहीं होगी। २७७९

इड्रन्दव रिड्रन्दु तीर विनियीरु पिड्रवि वन्दु
पिड्रन्दन माहि युळ्ळो मुय्न्दनम् पिळैक्कुम् बॅट्रि
मड्रन्दन मॅनिनु मिन्नज् जनहियै मरबि नीन्दे
अड्रन्दरु शिन्दै योरै यडैक्कलम् बुहुदु मैय 2780

ऐय–तात; इड्रन्तवर् इड्रन्तु तीर–मरे सो मरे, उन्हें छोड़ो; इनि–अब; ऑरु पिड्रवि वन्तु–और एक जन्म प्राप्त कर; पिड्रन्ततम् आकि–जनमे; उळ्ळोम्–जो हैं वे हम; उय्न्ततम्–बचे; पिळैक्कुम् पॅट्रि–जीवित रहने का उपाय; मड्रन्ततम्–भूल गये; ऍनिनुम्–तो भी; इन्नुम्–अब ही सही; चनकियै–जानकी को; मरपिन् ईन्ते–आदरपूर्वक दे देकर; अड्रम् तरु चिन्तैयोरै–धर्ममन (राम और लक्ष्मण) को; अटैक्कलम् पुकुतुम्–शरण में जायें। २७८०

तात! जो मरे, वे मरे। हम जो बचे हैं, हमें मानो नया जन्म ही बख्शा गया है। जीवित रहने का मार्ग भी हम भूल गये हैं। तो भी हम देवी जानकी को आदर के साथ लौटा दें और धर्मचित्त श्रीराम और लक्ष्मण की शरण पड़ें। २७८०

वालियै वाळि यॊन्ड्राल् वानिडै वैत्तु वारि
वेलैयै वॅन्ड्रु कुम्ब करुणनै वीट्टि नानै
आलियिन् मॊक्कु ळन्न वरक्करो वमरित् वॅल्वार्
शूलियैप् पॊरुप्पि नोडुन् दूक्किय विशयत् तोळाय् 2781

चूलियै–शूली को; पॊरुप्पिनोटुम्–पर्वत के साथ; तूक्किय–उठानेवाले; विचय–विजयी; तोळाय्–कंधों वाले; वाळि ऑन्ड्राल्–एक बाण से; वालियै–बाली को; वानिटै वैत्तु–आकाश में पहुँचाकर; वारि वेलैयै–जल-सागर को; वॅन्ड्रु–अधीन करके; कुम्पकरुणनै–कुंभकर्ण को; वीट्टिनानै–जिसने मारा उसे; आलियिन् मॊक्कुळ् अन्न–ओले के बुलबुले के समान; अरक्करो–राक्षस क्या; अमरिन्–युद्ध में; वॅल्वार्–मारेंगे। २७८१

शूली शिव को कैलास पर्वत के साथ उठानेवाले विजयस्कन्ध! जिसने एक ही बाण से बाली को मारा, समुद्र को अधीन कर लिया और

कुम्भकर्ण को भी मारा, क्या उसे जल के बुलबुले के समान राक्षस युद्ध में हरा सकेंगे ? । २७८१

मरिकडल् कुडित्तु वानै मण्णोडुम् बरिक्क वल्ल
ऑरिपडै यरक्क रैल्ला मिऱन्दन रिलङ्गै यूरुम्
जिरुवनु नीयु मल्लाल् यारुळ रोरुवर् तीर्न्दार्
वॅऱ्ऱिदुनम् वॅन्ऱि यॅन्ऱान् मालिमेल् विळैव दोर्वान् 2782

मेल् विळैवतु–भविष्य में जो होगा उसे; ओर्वान्–सोचनेवाले; मालि–माली ने; मरि कटल् कुडित्तु–उमगते सागर को पीकर; वानै–आकाश को; मण्णोटुम् परिक्क वल्ल–भूमि के साथ उखाड़ सकनेवाले; ऍरि पटै–फेंके जा सकें, ऐसे हथियारों वाले; अरक्कर् ऍल्लाम्–सारे राक्षस; इऱन्ततर्–मर ही गये; तीर्न्तार्–(मरने से) जो रहे; इलङ्कै ऊरुम्–लंका नगर और; चिऱुवतुम्–पुत्र; नीयुम् अल्लाम्–और तुम्हें छोड़; ऒरुवर् यार् उळर्–और कोई क्या है; नम् वॅन्ऱि–हमारी विजय; वॅऱ्ऱितु–व्यर्थ है; ऍन्ऱान्–कहा । २७८२

भविष्यवेत्ता मालयवान ने आगे कहा कि उमँगनेवाले समुद्र को पीकर, आकाश और भूमि को उखाड़ सकनेवाले सारे वीर मर गये । बचे तो तुम हो और तुम्हारा पुत्र बचा है ! लंकानगर है । और कौन है ? विजयकामना व्यर्थ है । २७८२

कट्टुरै यदनैक् केळाक् कण्णॆरि कदुव नोक्किप्
पट्टन ररक्क रॅन्ऩिऱ् पडैक्कलम् बडैत्त वॅल्लाङ्
गॆट्टन वॅनिनुम् वाळ्क्क कॅडादुनऱ् किळिय नाळै
विट्टिड वॅण्णि योनान् पिडित्तदु वेट्कै वीय 2783

कट्टुरै अतनै–निर्णय के उन वचनों को; केळा–सुनकर; कण् ऍरि–आँख की आग; कतुव–(माल्यवान को) जला दे ऐसा; नोक्कि–देखकर; अरक्कर् पट्टतर् ऍऩ्ऩिन्–राक्षस हत हो गये तो भी; पटैत्त–प्राप्त; पटैक्कलम् ऍल्लाम्–हथियार सभी; कॅट्टऩ ऍनिनुम्–बेकार गये तो भी; नल् किळि अनाळै–सुन्दर शुक-सदृश सीता को; नान् पिटित्ततु–जो मैं पकड़ लाया वह; वेट्कै वीय–इच्छा को नष्ट करके; वाळ्क्कै कॅटातु–जीवन नष्ट न करके; विट्टिट ऍण्णियो–छोड़ना सोचकर क्या । २७८३

रावण की आँखों से यह सुनकर अंगारे फूट निकले और माल्यवान पर लगे । रावण ने कहा कि क्या हुआ अगर वीर मरे और हथियार व्यर्थ हो गये ? शुक-समाना सीता को क्या मैं इसलिए पकड़ लाया कि जीवन व्यर्थ किये विना अपनी कामना और उसे त्याग दूं ? । २७८३

मैन्दनैन् मऱ्ऱै योरै नज्जिनिऱ् वाळ्क्कै वेट्टोर्
उयन्दुनोर् पोवीर् नाळै यूळिवॅन् दीयि नोङ्गिच्

चिन्दिन्नॅन् मनिद रोडु कुरङ्गिनैत् तीर्प्पॅ नॅन्ऱान्
वॅन्दिऱ लरक्कर् वेन्दन् महनिवै विळम्ब लुऱ्ऱान् 2784

वॅम् तिऱल्–कठोर बली; अरक्कर् वेन्तन्–राक्षसराज; मैन्तन् ॲन्–पुत्र क्या; मऱ्ऱैयोर् ॲन्–अन्यों से क्या; अञ्चितिर्–तुम सब डर गये; वाऴ्क्कै वेट्टीर्–जीवन का मोह करते हो; नीर्–तुम लोग; उयन्तु पोवीर्–बच जाओ; माळे–कल ही; ऊऴि वॅम् तीयित्–युगान्त की भयंकर आग के समान; ओङ्कि–उठकर; मनितरोटु–नरों के साथ; कुरङ्कितै–वानरों को; चिन्तितॅत्–तितर-बितर करके; तीर्प्पॅन्–मिटा दूंगा; ॲन्ऱान्–बोला; मकन्–पुत्र; इवै–ये; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। २७८४

क्रूर बली राक्षसराज (रावण) ने सभासदों से निष्ठुरता से कहा कि अब मेरे पुत्र से क्या होगा? अन्यों से भी क्या फ़ायदा? तुम सब डर गये हो। जीवन के मोह में पड़े हो! चलो सब! जान बचाते चले जाओ। कल ही मैं युगांत की अग्नि के समान उठूँगा और नरों और वानरों का खातमा कर दूँगा। तब पुत्र इन्द्रजित् ने निम्नोक्त बातें कहीं। २७८४

उळदुना नुणर्त्तऱ् पाल वुणर्न्दनै कोड लुण्डेल्
तळमलर् किळ्वन् ऱन्द पडैक्कलन् दळ्ळिऱ् चेर्त्ति
अळविल दमैय विट्ट दिरामनै नीक्कि यन्ऱाल्
विळैविल दनैयन् मेनि तीण्डिन्ऱि मीण्ड दम्मा 2785

उणर्न्तनै–समझकर; कोटल् उण्टेल्–लेना होगा तो; नान् उणर्त्तल् पाल–मेरे समझाने योग्य; उळतु–(वचन) हैं; तळम् मलर् किळ्वन्–सदल कमल का भगवान; तन्त–(ब्रह्मा द्वारा) दत्त; पटैक्कलम्–अस्त्र; तऴलिर् चेर्त्ति–अग्नि में रखकर; अळविलतु–(शक्ति में) अपार बनाकर; अमैय–ठीक बने, ऐसा; विट्टतु–मुझसे चलाया गया वह; इरामनै नीक्कि अन्ऱु–राम को छोड़कर नहीं; विळैविलतु–बेकार हो; अनैयन् मेनि–उसके शरीर को; तीण्टिन्ऱि–स्पर्श किये बिना ही; मीण्टतु–वापस आ गया; अम्मा–क्या ही आश्चर्य माँ। २७८५

अगर आप समझ लेने के लिए तैयार हों तो कुछ कहने को मेरे पास है। सदल कमल-भव के अस्त्र को मैंने अग्नि में रखकर जो चलाया था, वह राम को अलग करके नहीं। पर वह अस्त्र बेकार हो गया। उसके शरीर को स्पर्श किये विना ही लौट आ गया। यह आश्चर्य है माँ! । २७८५

मानिड नल्लन् ऱॊल्लै वानव नल्लन् मऱ्ऱुम्
मेनिवर् मुनिव नल्लन् वीडणन् मॅय्यिर् चॊन्न
यानॆत्त दंण्ण ऱीर्न्दा रॅण्णुरु मॊरुव नॆन्ऱे
तेनहु तॅरियन् मन्ना शेहऱत् तॅरिन्द दन्ऱे 2786

तेन् नकु–शहद-भरी; तॅरियल् मन्ता–मालाधारी राजा; मातिटम् अल्लन्–(वह) नर नहीं; तॉल्लै–पुरातन; वानवन् अल्लन्–देव नहीं; मऱ्ऱुम्–और; मेल् निवर्–उत्कृष्ट; मुनिवन् अल्लन्–मुनि नहीं; वीटणन्–विभीषण ने; मॅय्यिल्–सच ही; चॉन्त–जिसके बारे में कहा वह; यान् ऍनतु ऍण्णल् तीर्न्तार्–अहंकार, ममकार-रहित लोग; ऍण्णुम्–जिसका स्मरण करते हैं; ऑरुवन् ऍन्ऱे–अद्वितीय है यही; चेकु अऱ–विना संशय के; तॅरिन्ततु–जाना गया। २७८६

मधुमिश्रित सुमनमालाधारी राजा ! अब निस्संदेह समझ में आ गया कि वह नर नहीं; पुरातन देवता नहीं; और उत्कृष्ट मुनि भी नहीं। पर विभीषण ने सच जो कहा है, उसके अनुसार वह अहंकार, ममकार-रहित साधुओं का आराध्य देव परमेश्वर है। २७८६

अतैयदु वेऱु निऱ्क वन्नदु पहर्दल् लाण्मै
वितैयॅलि नन्ऱु निन्ऱु वीऴ्न्ददु वीऴ्ह वीर
इतैयती मूण्डि यान्बोय् निहुम्बिलै विरैवि लॅय्दित्
तुतियऱु वेळ्वि वल्लै यियर्ऱिनान् मुडियुन् दुन्बम् 2787

अतैयतु–वह तथ्य; वेऱु–अलग एक ओर; निऱ्क–रहे; अन्नतु पकर्तल्–वह कहना; आण्मै वितै–वीर कार्य है; ऍतिल्–तो; अन्ऱु–नहीं; निन्ऱु–रहकर; वीऴ्न्ततु वीऴ्क–जो नष्ट हुआ वह हो गया रहे; वीर–वीर; नी इळैयल्–आप म्लान मत हों; यान्–मैं; विरैविन्–जल्दी; निकुम्पिलै मूण्टु पोय्–निकुंभिला (लंका के बाहर एक मन्दिर का स्थान) में त्वरा से जा; ऍय्ति–पहुँचकर; वल्लै–शीघ्र; तुति अऱु–दोषहीन; वेळ्वि–यज्ञ; इयर्ऱिताल्–संपन्न करूँ तो; तुन्पम् मुटियुम्–दुःखों का अन्त हो जायगा। २७८७

वह तथ्य रहे एक ओर। उसको मानना वीरता का लक्षण नहीं होगा। जो मिट गया सो मिट गया। वीर ! आप दुःखी मत हों। मैं निकुंभिला जाऊँगा, शीघ्र विधिवत यज्ञ करूँगा। वह संपन्न हो जायगा तो सारे दुःख दूर हो जायँगे। २७८७

अन्नदु नल्ल देया लमैत्तियॅन् ऱरक्कन् शॊन्नान्
नन्मह तुम्बि कूऱ नण्णलार् कण्डु नण्णि
मुन्निय वेळ्वि मुऱ्ऱा वहैशॅरु मुयल्व रॅन्ना
अॅन्नव रॅय्दा वण्ण मियर्ऱला मुरुदि यॅन्ऱान् 2788

अरक्कन्–राक्षस (रावण) ने; अन्नतु नल्लते–वही अच्छा है; अमैत्ति–करो; ऍन्ऱु चॊन्नान्–ऐसा कहा; नन् मकन्–अच्छे लड़के के; उम्पि कूऱ–आपके छोटे भाई के कथन से; नण्णलार्–शत्रु; कण्टु–जानकर; नण्णि–मेरे पास आकर; मुन्निय–आरब्ध; वेळ्वि–याग; मुऱ्ऱा वकै–पूरा न हो ऐसा; चॅरु मुयल्वर्–युद्ध का प्रयत्न करेंगे; ऍन्ना–ऐसा कहने पर; अवर् ऍय्ता वण्णम्–वे न आएँ उस प्रकार; ऍन् उऱुति–कौन सा उपाय; इयर्ऱलाम्–कर सकते हैं; ऍन्ऱान्–पूछा (रावण ने)। २७८८

राक्षस ने कहा कि ठीक है वही करो। तब सुपुत्र ने प्रश्न किया कि अगर आपके भाई के बतलाने पर शत्रु लोग आकर मेरे यज्ञ को पूरा न होने देते हुए युद्ध करें तो ? रावण ने पूछा, वे न आएँ, इसका क्या उपाय किया जाय ? । २७८८

शात्तहि युरुव माहच् चमैत्तव डत्तमै कण्ड
वानुय रनुमन् मुन्ने वाळिनाऱ् कॊन्ऱु माऱ्ऱि
यानॆडुञ् जेनै योडु मयोत्तिमे लॆळुन्दे नॆन्नप्
पोनबिन् पुरिव दॊन्ऱुन् दॆरिहिलर् तुन्बम् बूण्बार् 2789

चातकि उरुवमाक–जानकी के रूप में; चमैत्तु–कोई (प्रतिमा) बनाकर; अवळ् तन्मै कण्ट–उसके स्वभाव के ज्ञाता; वान् उयर् अनुमन् मुन्ने–आकाश तक चढ़े यश वाले हनुमान के सामने; वाळिनाल् कॊन्ऱु–तलवार से काटकर; माऱ्ऱि–जान लेकर; यान्–मैं; नॆटुम् चेनैयोटुम्–बड़ी सेना के साथ; अयोत्ति मेल् ऎॆळुन्तेन् ऎन्न–अयोध्या पर चढ़ने गया जैसा (भ्रम पैदा करके); पोन पिन्–जाऊँगा, उसके बाद; तुन्पम् पूण्पार्–(राम-लक्ष्मण) दुःखी होंगे; पुरिवतु ऒन्ऱुम् तॆरिकिलर्–क्या करना यह नहीं जानेंगे। २७८९

इन्द्रजित् ने कहा कि स्वर्ण की माया-सीता रचूँगा। उसको खूब जानता है वह श्रेष्ठ हनुमान। उसके सामने अपनी तलवार से उसकी जान ले लूँगा। फिर अयोध्या पर अपनी सेना के साथ चढ़ जाने का भ्रम पैदा करके चला जाऊँगा। बाद वे दुःखी होंगे और नहीं जानेंगे कि क्या करना है ? । २७८९

इत्तलैच् चीदै माण्डाळ् पयनिव णिल्ल यॆन्बार्
अत्तलैत् तम्बि मारुन् दायरु मडुत्तु ळोरुम्
उत्तम नहरु माळु मॆन्बदो रच्च मून्ऱप्
पॊत्तिय तुन्बत् तोडुञ् जेनैयुन् दामुम् बोवार् 2790

इ तलै–यहाँ; चीतै माण्टाळ्–सीता मर गयी; इवण् पयन् इल्लै–अब यहाँ कोई काम नहीं; ऎन्पार्–कहकर; अ तलै–वहाँ; तम्पिमारुम्–भाई लोग और; तायरुम्–माता लोग और; अटुत्तुळोरुम्–रिश्तेदार लोग; उत्तम नकरुम्–और उत्तम नगर (अयोध्या); माळुम्–मिट जायँगे; ऎन्पतु ओर् अच्चम्–ऐसा एक भय; ऊन्ऱ–स्थिर हो जाय तो; पॊत्तिय तुन्पत्तोटुम्–भरपूर दुःख के साथ; चेनैयुम् तामुम्–सेना और वे; पोवार्–लौट चलेंगे। २७९०

इधर सीता मर गयी। अब यहाँ कोई काम नहीं। वहाँ तो भाई, माताएँ और अन्य परिवार के लोग मर जायँगे। नगर का भी नाश होगा। यह भय उनके मन में घर कर लेगा। तो वे दुःख से भरकर सेना-सहित लौट जायँगे। २७९०

पोहिल रॅन्ऱ पोदु मनुमतै याण्डुप् पोक्कि
आहिय दऱिन्दा लन्ऱि यरुन्दुय राऱ्ऱ लाऱ्ऱार्
एहिय करुम मुऱ्ऱिया निवण् विरैवि नॅय्दि
वेहवॅम् बडैयिर् कॉन्ऱु तरुहुवन् वॅन्ऱि यॅन्ऱान् 2791

पोकिलर् अॅन्ऱ पोतुम्–न जाएँ तब भी; अनुमतै आण्टु पोक्कि–हनुमान को वहाँ भिजवाकर; आकियतु–(वहाँ) जो हुआ वह; अरिन्ताल् अन्ऱि–बिना जाने; अरुम् तुयर्–अपार दुःख; आऱ्ऱल् आऱ्ऱार्–नहीं सह सकेंगे; यान्–मैं; एकिय करुमम्–जिस पर गया वह कर्म; मुऱ्ऱि–पूरा करके; इवण्–यहाँ; विरैविन् अॅय्ति–जल्दी आकर; वेक–तेज; वॅम् पटैयिल्–भयंकर हथियारों से; कॉन्ऱु–उन्हें हत करके; वॅन्ऱि तरुकुवन्–विजय दिला दूँगा; अॅन्ऱान्–कहा। २७९१

अगर वे नहीं जाएँ तो भी वे हनुमान को उधर भिजवाकर समाचार जान लेंगे। नहीं तो उनको कल नहीं पड़ेगी; अपार दुःख झेल नहीं सकेंगे। इतने में तब मैं अपना काम संपन्न करके शीघ्र लौटूँगा। लौट कर तेज तथा घातक अस्त्रों से उन्हें मार दूँगा और आपको विजय दिला दूँगा। २७९१

अन्नदु पुरिद नन्ऱॅन् ऱरक्कनु ममैय वञ्जप्
पॊन्नुरु वमैक्कु माय मियऱ्ऱुवान् मैन्दन् पोनान्
इन्नदित् तलैय दाह विरामनुक् किरवि शॅम्मल्
तॊन्नह रदनै वल्लैक् कडिहॅडच् चुडुदु मॅन्ऱान् 2792

अन्नतु पुरितल्–वैसा करना; नन्ऱु अॅन्ऱु–ठीक कहकर; अरक्कनुम् अमैय–राक्षस (रावण) के सम्मत होते; मैन्तन्–कुमार; पॊन् उरु अमैक्कुम्–स्वर्ण-प्रतिमा बनाने का; वञ्च मायम् इयऱ्ऱुवान्–वंचक मायाकार्य करने; पोनान्–गया; इ तलै–यहाँ; इन्नतु आक–यह होता रहा, तब; इरामनुक्कु–श्रीराम से; इरवि शॅम्मल्–रवि के पुत्र सुग्रीव ने; तॊल् नकर् अततै–प्राचीन नगर को; कटि कॅट–रक्षण-शून्य करके; वल्लै–शीघ्र; चुटुतुम्–जला देंगे; अॅन्ऱान्–ऐसा कहा। २७९२

रावण ने भी सम्मति दी कि वही अच्छा काम है। तब कुँअर इन्द्रजित् स्वर्ण-प्रतिमा का मायारूप निर्मित कराने चला गया। इधर जब यह हो रहा था, तब रविपुत्र ने श्रीराम को सुझाया कि हम पुरातन लंका नगरी को अरक्षित कर जला दें और मिटा दें। २७९२

अत्तॊऴिल् पुरिद नन्ऱॅन् ऱण्णलु मऱैय वॅण्णित्
तत्तिन निलङ्गै मूदूर्क् कोबुरत् तुम्बर्च् चार्न्दान्
पत्तुडै येऴ शान्ऱ वानर कुऴुवुम् बऱ्ऱिक्
कैत्तलत् तोरोर् कॊळ्ळि यॅडुत्तदॅव् वुलहुङ गाण 2793

अण्णलुम्–प्रभु श्रीराम ने भी; अ तॊऴिल् पुरितल्–वह काम करना; नन्ऱु–अच्छा है; अॅन्ऱु–ऐसा; अऱैय–कहा तो; अॅण्णि–(सुग्रीव) सोचकर; तत्तिनन्–लपककर; इलङ्कै मूतूर्–पुरातन लंका नगर के; कोपुरत्तु उम्पर्–गोपुर के ऊपर;

चार्न्तात्-पहुँचा; पत्तु उटै एळु चातुर्-दस के सात (सत्तर) संख्या के वृहत्; वातर कुळुवुम्-वानरदल ने; ऍ उलकुम् काण-सारे लोक देखें ऐसा; कै तलत्तु-अपने-अपने हाथ में; ओरोर् कॉळ्ळि-एक-एक जलती लकड़ी; पर्रि ऍट्टुत्ततु-पकड़कर उठायी। २७९३

प्रभु श्रीराम ने कहा कि वह कार्य उचित ही है। सुग्रीव लपक कर लंका के गोपुर के ऊपर पहुँचा। सत्तर 'वॅळ्ळम्' वानर वीरों ने भी हाथ में जलती लकड़ियाँ ले लीं। दुनिया इसे देख रही थी। २७९३

ऍण्णिल कोडिप् पल्हवि यावुम्, मण्णुरु कावर् रिण्मदिल् तावि
वॅण्णिर् मेह मिन्निनै वीशि, नण्णिन पोल्व तॊन्नहर् नाण 2794

ऍण् इल-असंख्य; पल् कोटि-अनेक करोड़; कवि यावुम्-सभी वानर; मण् उरु-मिट्टी के बने; कावल्-सुरक्षित; तिण् मतिल्-सुदृढ़ प्राचीर; तावि-लाँघकर; तॊल् नकर् नाण-प्राचीन नगर लजा जाए ऐसा; वॅण्णिर् मेकम्-सफ़ेद मेघ; मिन्निनै वीचि-बिजली फेंकते हुए; नण्णित पोल्व-आये जैसे रहे। २७९४

सारे असंख्यक अनेक करोड़ वानर मिट्टी के बने, सुदृढ़ और सुरक्षित प्राचीर पर चढ़े। लंका नगर ही लजा गया। मेघ बिजली फेंकते आते हों —ऐसे वे वानर दिखायी दिये। २७९४

आशैह डोरु मळ्ळिन कॊळ्ळि, माशरु तानै मर्क्कड वॅळ्ळम्
नाशमिव् वूरुक् कुण्डॅन नळ्ळिन्, वीशिन वानिन् मीन्विळ लॅन्न 2795

वॅळ्ळम्-'वॅळ्ळम्' की संख्या के; मर्क्कट-मरकटों की; माचु अरु तानै-निर्दोष सेना ने; आचैकळ् तोरुम्-दिशा-दिशा में; कॊळ्ळि अळ्ळित-जलती लकड़ियाँ उठाकर; नळ्ळित्-अर्धरात्रि में; इ ऊरक्कु नाचम् उण्टु-इस नगर का नाश होगा; ऍत-यह संकेत देते हुए; वातिन् मीन्-आकाश के नक्षत्र; विळल् ऍन्त-गिरे जैसे; वीचित-(जलती लकड़ियाँ) फेंकीं। २७९५

'वॅळ्ळमों' की अनिंद्य वानर-सेना ने जलती लकड़ियाँ ले फेंकीं और वह ऐसा लगा, मानो आकाश के नक्षत्र लंका के नाश का संकेत देते हुए गिर रहे हों। २७९५

वञ्जनै मन्नन् वाळु मिलङ्गैक्, कुञ्जर मन्नार् वीशिय कॊळ्ळि
अञ्जन वण्ण नाळियि लेवुञ्, जॅञ्जर मॅन्नच् चॅन्रुदु मेन्मेल् 2796

कुञ्चरम् अन्तार्-हाथी-सरीखे वानरों ने; वञ्चनै मन्नन्-वंचक राजा; वाळुम्-जहाँ रहता था उस; इलङ्कै-लंका में; वीचिय-जो फेंकीं; कॊळ्ळि-जलती लकड़ियाँ; अञ्चन वण्णन्-अंजनवर्ण श्रीराम के; आळियिल्-समुद्र में; एवुम्-प्रेरित; वॅम् चरम् ऍन्त-भयंकर शर के समान; मेल् मेल् चॅन्रतु-उत्तरोत्तर चलीं। २७९६

गजनिभ वानरों द्वारा वंचक राजा रावण के वासस्थान लंका नगर

पर फेंकी गयी जलती लकड़ियाँ अंजनवर्ण श्रीराम द्वारा समुद्र पर चलाये गये अस्त्र के समान उत्तरोत्तर बढ़ती गयीं। २७९६

कॆयह लिञ्जिक् कावल् कलङ्गच्, चॆय्य कॊऴुन्दीच् चॆन्ऱु नॆरुङ्ग
ऐय नॆडुङ्गा राऴियै यम्बाल्, अॆय्य वॆरिन्दा लॊत्त दिलङ्गै 2797

कै अकल्–सुविशाल; इञ्चि–प्राचीर के; कावल्–रक्षकों को; कलङ्क–भयभीत करते हुए; चॆय्य–लाल; कॊऴु ती–घनी आग; चॆन्ऱु नॆरुङ्क–जा लगी; इलङ्कै–लंका; ऐयन्–प्रभु के; नॆटु कार् आऴियै–लम्बे काले सागर पर; अम्पाल् अॆय्य–अस्त्र चलाने पर; अॆरिन्ताल् ऑत्ततु–(समुद्र) जल गया जैसे लगी। २७९७

लाल घनी आग जब लंका में लगी, तब विशाल प्राचीरों के रक्षक दहल उठे। तब का दृश्य उस समय के समुद्र का-सा था, जब श्रीराम ने काले लंम्बे सागर पर अस्त्र चलाया और वह जल उठा। २७९७

परऱ्ऱुऱु पल्पऴु वत्तॆरि पऱ्ऱ, निरऱ्ऱुऱु पल्पऱ वैक्कुलम् यावुम्
उरऱ्ऱित विण्णि नॊलित्तॆऴुम् वण्णम्, अरऱ्ऱि यॆऴुन्द दडङ्ग विलङ्गै 2798

परल् तुऱु–कंकड़ों से भरे; पल् पऴुवत्तु–अनेक जंगलों में; अॆरि पऱ्ऱ–आग लगने पर; निरल् तुऱु–समूहों में रहनेवाले; पल् पऱवै कुलम्–अनेक पक्षीगण; यावुम् अऱ्ऱित्त–सभी चहचहा उठे; विण्णिल्–आकाश में; ऑलित्तु ऍऴुम् वण्णम्–शोर करते उठे, वैसे ही; इलङ्कै–लंकावासी; अटङ्क–सभी; अरऱ्ऱि–चिल्लाते हुए; ऍऴुन्त–उठे। २७९८

अनेक कंकड़ीले जंगलों में जब आग लग जाती है, तब पेड़ों पर रहनेवाले पक्षी चीखते-चिल्लाते आकाश में उड़ते हैं। उसी तरह सभी लंका-वासी हो-हल्ला मचाते हुए उठे और चले। २७९८

मूवुल हत्तव रुम्मुद लोरुम्, एवल् वलत्तॊऴिल् वीर निरामन्
दीव मॆनच्चिल वाऴि शॆलुत्तक्, कोवुर मुऱ्ऱुम् विऴुन्दद्दु कुन्ऱिन् 2799

मू उलकत्तवरुम्–तीनों लोकों के लोगों को; मुतलोरुम्–आदिदेवों को; एवल्–आज्ञा दे सकनेवाले; वल तॊऴिल्–सबल कार्यकारी; वीरन् इरामन्–वीर श्रीराम के; तीवम् अॆन–दीप के समान; चिल वाऴि चॆलुत्त–कुछ बाण चलाते; कोवुरम् मुऱ्ऱुम्–सारे गोपुर; कुन्ऱिन् विऴुन्ततु–(टूटकर) पर्वत पर गिरे। २७९९

तब श्रीराम ने, त्रिलोकवासी तथा त्रिदेव जिनकी आज्ञा के बल के अधीन हैं, दीप के समान अस्त्र चलाये और उनसे आहत होकर सारे गोपुर (मीनारें) पर्वत पर गिर गये। २७९९

इत्तलै यित्न निहऴ्न्दिडु मॆल्लैक्, कैत्तलै यिऱ्कॊडु कालि नॆऴुन्दान्
उय्त्त पॆरुङ्गिरि मेरुवि नुप्पाल्, वैत्त नॆडुन्दहै मारुदि वन्दान् 2800

इ तलै–यहाँ; इत्त–ऐसे कार्य; निकऴ्नतिटुम् अॆल्लै–जब हो रहे थे तब;

उयत्त पॅरुम् किरि–लाये गये बड़े पर्वत को; कै तलैयिन् कोंडु–हाथ में ले; कालिन्–पवन के समान; ॲळुन्तान्–जो उठा था और; मेरुविन् उप्पाल्–मेरु के उस पार; वैत्त–रख आया था; नॅट्टु तर्क मारुति–वह सुयोग्य मारुति; वन्तान्–लौट आया। २८००

इधर यह सब हो रहा था। तभी सुयोग्य हनुमान, जो आनीत ओषधि-पर्वत को उसके स्थान पर छोड़ने गया था, मेरु के भी आगे उसे स्थापित करके लौट आया। २८००

अरैयर वक्कळन् मारुदि यार्त्तान्, उरैयर वञ्जिरै युर्रुळ दव्वूर्
शिरैयर वक्कलु ळन्गोंडु शीरुम्, इरैयर वक्कुल मॊत्त विलङ्गै 2801

अरै अरवम्–शब्द करनेवाली; कळल् मारुति–पायलधारी मारुति ने; आर्त्तान्–उत्साह का नाद उठाया; अ ऊर्–उस नगर ने; उरै अरवम्–घने नर्दन को; चिरै उर्रुळतु–अपने में समा लिया; इलङ्कै–लंका; चिरै–अपने पंखों से; अरवम् कलुळन्–शब्द करनेवाले गरुड़ द्वारा; कोंटु–पकड़ा जाकर; चीरुम्–जो फूत्कार करता है उस; इरै–अस्त-व्यस्त; अरवम् कुलम् ऑत्ततु–सर्पवृन्द के समान लगी। २८०१

शब्द करनेवाली पायलधारी मारुति ने लंका के पास आते ही ज़ोर से नर्दन किया। लंका ने उस शब्द को अपने में समा लिया। तब लंका नगरी पंखों से शब्द उठानेवाले गरुड़ से पकड़े जाकर फूत्कार करते हुए अस्त-व्यस्त रहनेवाले सर्प-वृंद के समान थी। २८०१

मेर्रिशै वायिलै मेविय वॅङ्गट्, कार्रिन् महन्रनै वन्दु कलन्दान्
मार्रलिन् मायै वहुक्कुम् वलत्तान्, कूर्रैयुम् वॅन्रुयर् वट्टणै कॊण्डान् 2802

मेल् तिचै वायिलै–पश्चिमी द्वार पर; मेविय–जो आया; कार्रिन् मकन् तनै–उस वायुपुत्र को; मार्रल् इल्–दुर्धर्ष; मायै वकुक्कुम् वलत्तान्–मायाकार्य-समर्थ; कूर्रैयुम् वॅन्रु–यम को भी जीतकर; उयर् वट्टणै कॊण्टान्–ऊँचा जो घूम आया वह इन्द्रजित्; वन्तु कलन्तान्–आ मिला। २८०२

वायुपुत्र पश्चिमी द्वार पर आया। तब दुर्धर्ष माया-समर्थ इन्द्रजित् आकर मिला, जो यम को भी जीतकर घूम आया था। २८०२

शानहि याम्वहै कॊण्डु शमैत्तोर्, माननै याळै वडिक्कुळल् पर्रा
ऊनहु वाळॊरु कैक्कॊ डुरुत्तान्, आनव नन्निलै यित्तन दरैन्दान् 2803

चानकि आम् वकै कॊण्टु–जानकी बने ऐसा एक प्रकार बनाकर; चमैत्तु–निर्मित कर; ओर् मान् अनैयाळै–अपूर्व उस हरिणी-सी स्त्री को; वटि कुळल् पर्रा–शहद चूनेवाले केश से पकड़कर; ऊन् नकु–मांसलिप्त; वाळ्–तलवार; ऒरु कै कॊटु–एक हाथ में लेकर; उरुत्तान् आनवन्–क्रुद्ध उसने; अ निलै–उस स्थिति में; इत्ततु–यह; अरैन्तान्–कहा। २८०३

इन्द्रजित् ने माया से जानकी का-सा रूप रखनेवाली एक स्त्री का

निर्माण किया था। एक हाथ से मृगी-सी उसके केश को पकड़कर दूसरे हाथ में मांसलिप्त तलवार लिये हुए वह क्रोधी बनकर यों बोला। २८०३

वन्दिवळ् कारण माह मलैन्दीर्, ऎन्दै यिहऴ्न्दन नियानिव ळावि
शिन्दुव ऩॆन्ऱु शॆऱ्ऱुरै शॆय्दान्, अन्दमिल् मारुदि यञ्जि ययर्न्दान् 2804

इवळ् कारणमाक–इसके कारण; **वन्तु**–यहाँ आकर; **मलैन्तीर्**–युद्ध किया (तुम लोगों ने); **ऎन्तै इकऴ्न्तनन्**–मेरे पिता असावधान रह गये; **इवळ् आवि**–इसके प्राण; **यान् चिन्तुवन्**–मैं निकाल दूंगा; **ऎन्ऱु**–ऐसा; **चॆऱ्ऱु**–क्रोध करके; **उरै चॆय्तान्**–वचन कहा; **अन्तम् इल् मारुति**–अमर मारुति; **अञ्चि**–डरकर; **अयर्न्तान्**–निर्बल हो गया। २८०४

(उसने हनुमान से कहा—) इसी के निमित्त तुम लोग आये और लड़े। मेरे पिता उदासीन रह गये। मैं इसके प्राण निकाल दूँगा। यह इन्द्रजित् का क्रुद्ध वचन सुनकर चिरंजीव हनुमान दहल गया, निर्बल हो गया। २८०४

कण्डव ळेयिव ळॆन्बदु कण्डान्, विण्डदु पोलुनम् वाऴ्वॆन वॆन्दान्
कॊण्डिडल् तीर्वदोर् कोळऱि हिल्लान्, उण्डु यिरोवॆन वायु मुलर्न्दान् 2805

इवळ्–यह; **कण्टवळे**–वही है जिसे मैंने पहले देखा था; **ऎन्पतु कण्टान्**–यह जाना; **नम् वाऴ्वु**–हमारा जीवन; **विण्टतु पोलुम्**–अन्त को आ गया शायद; **ऎन**–सोचकर; **वॆन्तान्**–उत्पन्न हो गया; **इटै कॊण्टु तीर्वतु**–यह मध्य में आयी बाधा ले चलने का; **ओर् कोळ्**–कोई उपाय; **अऱिकिल्लान्**–न जान सका; **उयिर् उण्टो ऎन**–जान भी है क्या ऐसा संशय पैदा हुआ और; **वायुम् उलर्न्तान्**–मुख-सूखा हो गया। २८०५

हनुमान ने यह सोच लिया कि यही सीता हैं, जिनसे मैं अशोक वन में मिला था। उसे अपार दुःख हुआ कि हमारे जीवन का अंत हो गया। इस बाधा का कैसे निवारण हो? कोई उपाय नहीं सूझा। उमका मुख सूख गया। यह संशय भी हो गया कि क्या वह जीवित है? । २८०५

यादु मिनिच्चॆयल् वेऱिलै यन्नाल्, नीदि युरैप्पदु नेरॆन वोराक्
कोदिल् कुलत्तोरु नीकुण मिक्काय्, मादै यॊऱुत्तल् वशैत्तिऱ मन्ऱो 2806

इति–अब; **ऎन्ताल् चॆयल्**–मुझसे काम; **वेऱु यातुम् इल्लै**–दूसरा कोई नहीं; **नीति उरैप्पतु**–न्याय-वाद करना; **नेर्**–उचित है; **ऎन**–ऐसा; **ओरा**–विवेक करके; **कोतु इल् कुलत्तु**–अकलंक कुल के; **ऒरु नी**–अनुपम तुम; **कुणम् मिक्काय्**–गुण में बढ़े हो; **मातै ऒऱुत्तल्**–स्त्री की हत्या करना; **वचै तिऱम् अन्ऱो**–निंद्य होगा नहीं क्या। २८०६

(हनुमान ने सोचा—) अब मुझसे हो, ऐसा कोई कार्य नहीं। उसे न्याय समझाऊँगा। यह सोचकर उसने इन्द्रजित् से कहा कि तुम अकलंक

ब्राह्मण-कुल में जनमे हो ! उत्तम हो ! गुणी हो ! स्त्री-वध क्या पाप नहीं होगा ? । २८०६

नान्मुह तुक्कोरु नाल्वरिन् वन्दाय्, नून्मुह मुऱ्ऱु नुणङ्ग वुणर्न्दाय्
पान्मुह मुऱ्ऱ पॆरुम्बळि यन्ऱो, मान्मुह मुऱ्ऱोरु मादै वदैत्ताल् 2807

नान् मुकत्तुक्कु–चतुर्मुख के; ओरु नाल्वरिल् वन्ताय्–चौथी पीढ़ी में आये हो; नूल्मुकम् मुऱ्ऱुम्–शास्त्र-विशेष सब; नुणुक्क उणर्न्ताय्–सूक्ष्म रीति से जानते हो; मान् मुकम् उऱ्ऱ–मृगमुखी (नयना); ओरु मातै–एक स्त्री को; वतैत्ताल्–मारो तो; पाल् मुकम् उऱ्ऱ–बुरी श्रेणी में रखे; पॆरुम् पळि अन्ऱो–बड़े कलंकों में एक नहीं होगा क्या । २८०७

चतुर्मुख से चौथी पीढ़ी में हो । श्रेष्ठ शास्त्रों के प्रमुख अंशों के सूक्ष्म ज्ञाता हो ! मृगनयना को मारो तो बुरे से बुरे पापों में बड़ा पाप लगेगा नहीं क्या ? । २८०७

ऍन्वयि नल्हिनै येहिनै यॆन्ऱाल्, निन्वय मामुल हियावैयु नीनिन्
अन्वय मेदु मऱिन्दिलै यैया, पुन्मै तॊडङ्गल् पुहऴ्क्कऴि वॆन्ऱान् 2808

ऐया–बाबा; ऍन् वयिन् नल्किनै–मेरे पास देकर; एकिनै ऍन्ऱाल्–जाओ तो; उलकु यावैयुम्–सारे लोक; निन् वयम् आम्–तुम्हारे वश में हो जायँगे; नी–तुम; निन् अन्वयम्–अपना वंशक्रम; एतुम् अऱिन्तिलै–कुछ नहीं जानते; पुन्मै तॊटक्कल्–क्षुद्रता आरम्भ करना; पुकऴ्क्कु अऴिवु–यश का नाश है; ऍन्ऱान्–कहा (हनुमान ने) । २८०८

बाबा ! मेरे पास दो और चले जाओ, तो सारे लोक तुम्हारे अधीन हो जायँगे । तुम अपने वंश का गौरव नहीं समझते ! यह क्षुद्र काम का आरम्भ करो तो अपने यश को मिटाना होगा । हनुमान यों बोला । २८०८

मण्गुलै हिन्ऱदु वान नडुङ्गिक्, कण्गुलै हिन्ऱदु काणुदि कण्णाल्
ऍण्गुलै हिन्ऱ दिरङ्ग ऱुरन्दाय्, पॆण्गॊलै सॆय्दल् पॆरुम्बऴि यन्ऱो 2809

मण् कुलैकिन्ऱतु–पृथ्वी काँपती है; वानम्–देवलोक; नटुङ्कि–दहलकर; कण् कुलैकिन्ऱतु–आँखें फड़काता है; कण्णाल्–अपनी आँखों से; काणुति–देख लो; ऍण्–मेरा चिन्तन भी; कुलैकिन्ऱतु–काँपता है; इरक्कल् तुऱन्ताय्–दया छोड़ चुके हो; पॆण् कॊलै सॆय्तल्–स्त्री-हत्या करना; पॆरु पळि अन्ऱो–बड़ा पाप होगा न । २८०९

(वह आगे बोला—) पृथ्वी काँपती है । व्योमलोकवासी डरते हैं और उनकी आँखें भयचंचल हैं । देखो अपनी आँखों से । मेरा भी मन काँपता है । दया छोड़ चुके हो । स्त्री-हत्या परम पाप नहीं है क्या ? । २८०९

ऍन्दैयु मिन्द विलङ्गैयु ळोरुम्, उय्न्दिड वानव रियावरु मोडच्
चिन्दुवॆन् वाऴिनि लॆन्ऱु शॆयिर्त्तान्, इन्दिर शित्तव नित्तुल विशैत्तान् 2810

इन्तिरचित्तु अवन्–इन्द्रजित् ने; ऍन्तैयुम्–मेरे पिता और; इन्त इलङ्कै युळोरुम्–और यह लंकावासी; उय्न्तिट–पनपें; वानवर् यावरुम्–सभी देव; ओट–भाग जायें; वाळितिल्–ऐसा अपनी तलवार से; चिन्तुवॆन्–मार डालूँगा; ऍन्ऱ–कहकर; चॆयिर्त्तान्–कोप करके; इन्न इचैत्तान्–ये बातें कहीं। २८१०

इन्द्रजित् ने उत्तर यों दिया— अपने पिता तथा लंकावासियों को सुखी जीवन दिलाने और देवों को भगाने के लिए मैं तलवार से इसका वध करूँगा ही। क्रुद्ध हो वह आगे यों बोला। २८१०

पोमि नडाविवळ् पोयिनळ् पोलाम्, आमॆनि निन्नु मयोत्तियै यण्मिक्
कामिन दिन्ऱु कनल्करि याह, वेमदु शॆय्दिनि मीळ्हुवॆ नॆन्ऱान् 2811

अटा–रे बन्दरो; इवळ् पोयिनळ् पोलाम्–यह मरी ही समझो; आम् ऍनिल्–हो सके तो; इन्नुम्–अब भी; अयोत्तियै अण्मि–अयोध्या में जाकर; कामिन्–रक्षा कर लो; अदु–वह; इन्ऱु–आज; कनल् करि आक–जलकर राख बने ऐसा; वेम् अदु–जलाने का काम; चॆय्तु–करके; इनि–अभी; मीळ्कुवॆन्–लौट आऊँगा; ऍन्ऱान्–कहा। २८११

इन्द्रजित् ने वानरों से कहा कि रे वानरो! इसे मरा ही समझो! हो सके तो जाकर अयोध्या की रक्षा का प्रयत्न करो। मैं अभी जाकर उसे जलाकर राख बना आनेवाला हूँ। २८११

तम्बियर् तम्मॊडु तायरु मायोर्, उम्बर् विलक्किडु मुम्मिनि युय्यार्
वॆम्बु शुडुङ्गनल् वीशिडु मॆन्ऱन्, अम्बुह ळोडु मविन्दन रम्मा 2812

तम्पियर् तम्मॊटु–छोटे भाइयों के साथ; तायरुम् आयोर्–और माताएँ जो हैं; उम्पर् विलक्किटिनुम्–देवता लोग रोकें तो भी; इनि–अब; उय्यार्–जीवित नहीं बचेंगे; वॆम्पु चुटु कनल्–भयंकर, जलानेवाली आग को; वीचिटुम्–फेंकनेवाले; ऍन् कै अम्पुकळोटुम्–मेरे हाथ के शरों से; अविन्तनर्–मरे जान लो। २८१२

राम के छोटे भाई, उसकी माताएँ, इनमें कोई भी देवों के दखल देने पर भी जीवित नहीं रहेगा। वे मेरे हाथ के संतापक क्रूर अग्निवर्षक बाणों से निश्चय मरेंगे। २८१२

इप्पॊऴ्दु देकडि देहुव नियानिप्, पुट्पह मान मदिऱ्पुह निन्ऱेन्
तप्पुव रेयवर् तामिनि यॆन्ऱन्, वॆप्पुरु वाळिह ळिन्ऱु विरैन्दाल् 2813

इप्पॊऴुते–अभी; यान्–मैं; इ पुट्पक मानम् अतिल्–इस पुष्पकयान में; पुक निन्ऱेन्–चढ़ने को तैयार हूँ; कटितु–जल्दी; एकुवन्–चलूँगा; ऍन् कै–मेरे हाथ से; वॆप्पु उरु वाळिकळ्–गरम बाण; इन्ऱु विरैन्ताल्–आज तेज जायेंगे तो; इनि–फिर; अवर् ताम्–वे क्या; तप्पुवरे–बचेंगे क्या। २८१३

इसी क्षण मैं इस पुष्पक यान पर सवार होनेवाला हूँ। जल्दी

जाऊँगा। मेरे हाथ से जब गरम बाण उनकी ओर शीघ्र जायँगे, तो वे क्या बच सकेंगे ? । २८१३

आळुडै यायरु ळायरु ळायॅन्, ऍळै यळङ्गुरु शॊल्लि निरङ्गान्
वाळि नॆरिन्दनन् माहडल् पोलुम्, नीळुरु शेनैयि नोडु निमिर्न्दान् 2814

आळुडैयाय्–स्वामीत्व रखनेवाले (स्वामी); अरुळाय्–दया करो; ऍन्ऱु–ऐसा; एळै–अबला; वळङ्कु उरु–जो कह रही थी; चॊल्लिन्–उन शब्दों से भी; इरङ्कान्–आर्द्र न हुआ; वाळिन्–तलवार से; ऍऱिन्तनन्–वार करके; मा कटल् पोलुम्–बड़े समुद्र के समान; नीळ् उरु चेनैयिनोटुम्–बड़ी सेना के साथ; निमिर्न्तान्–यान पर चढ़ गया। २८१४

तब अबला (माया-) सीता ने विलापा। मेरे स्वामी ! मुझ पर दया करो। पर उसने सीता के विलापवचन पर दया न दिखाकर तलवार से उसे काट दिया। फिर वह काले सागर-सम अपनी विशाल सेना के साथ यान पर चढ़ गया। २८१४

तॆन्ऱिशै निन्ऱु वडाडु तिशैक्कण्, पॊन्ऱिहळ् पुट्पह मेल्कॊडु पोनान्
ऒन्ऱु मुणर्न्दिलन् मारुदि युक्कान्, वॆन्ऱि नॆडुङ्गिरि पोल विळुन्दान् 2815

तॆन् तिचै निन्ऱु–दक्षिणी दिशा से; वटातु तिचैक्कण्–उत्तरी दिशा की ओर; पॊन् तिकळ्–स्वर्णशोभित; पुट्पकम् मेल् कॊटु–पुष्पकयान पर सवार होकर; पोतान्–गया; मारुति–मारुति; ऒन्ऱुम् उणर्न्तिलन्–कुछ समझ नहीं सका; उक्कान्–घुलकर; वॆन्ऱि नॆटु किरि पोल्–विजय की बड़ी गिरि के समान; विळुन्तान्–गिरा। २८१५

स्वर्णशोभित वह यान दक्षिण से उत्तर की ओर चलने लग गया, तो मारुति कुछ नहीं समझ सका। वह जर्जर हो गया। बड़ी विजयगिरि के समान नीचे गिर गया। २८१५

पोयवन् मारि निहुम्बिलै पुक्कान्, तूयव नॆञ्जु तुयर्न्दु शुरुण्डान्
ओय्वॊडु नॆञ्ज मॊडुङ्ग वुलर्न्दान्, आयिन निन्नन पन्नि यळिन्दान् 2816

पोयवन्–जो गया; मारि–बदलकर; निकुम्पिलै पुक्कान्–निकुंभिला गया; तूयवन्–पवित्रमन; नॆञ्चु तुयर्न्तु–चिन्ताग्रस्त हो; चुरुण्टान्–विगत-बल हो गया; नॆञ्चम्–मन; ओय्वॊटु ऒटुङ्क–थक गया, क्षीण हो गया; उलर्न्तान् आयितन्–सूख-सा गया; इन्नन–(निम्नोक्त) ऐसा-ऐसा; पन्नि–कहकर; अळिन्तान्–श्लथ हुआ। २८१६

उधर इन्द्रजित् मार्ग बदलकर निकुंभिला गया। इधर पवित्रमन हनुमान चिन्ताग्रस्त होकर श्लथ हो गया। मन थकित हुआ, संकुचित हुआ और वह सूख-सा गया। तब वह ऐसा-ऐसा कहकर विलाप करने लगा। २८१६

अन्नमे यॅन्तुम् बॅण्णि तरुङ्गुलक् कलमे यॅन्तुम्
ॲन्नमे यॅन्तुन् दॅय्व मिल्लैयो यादु मॅन्तुम्
शिन्नमे शॅय्यक् कण्डुन् दीविनै नॅञ्ज मावि
पिन्नमे याव दिल्लै यॅन्नुम्बे रार्द्रल् पेर्न्दान् 2817

पेर् आर्द्रल्–बड़ा धैर्य; पेर्न्तान्–खोकर जो रहा वह हनुमान; अन्नमे–हंस; ॲन्नम्–पुकारता; ॲन् अम्मे–मेरी माता; ॲन्नुम्–बुलाता; पॅण्णिन् अरु कुल कलमे–स्त्री-जाति के हे अमूल्य आभरण; ॲन्नुम्–कहता; तॅय्वम्–देव; यातुम् इल्लैयो–कोई नहीं है क्या; ॲन्नुम्–कहता; चिन्नमे चॅय्य कण्टुम्–छिन्न करते देखकर भी; तीविनै नॅञ्चम्–पापी (मेरा) मन; आवि–और प्राण; पिन्नमे आयतु इल्लै–टूटे ही नहीं; ॲन्नुम्–कहता। २८१७

अपना गंभीर धैर्य खो चुका हनुमान कभी 'हे हंस !' सम्बोधित करता; कभी 'मेरी माँ' चिल्लाता। हे स्त्रीकुलभूषण ! पुकारता। क्या कोई देव नहीं रहा ? हाय मैंने आपको छिन्न होते देखा, तो भी पापी मेरा मन और मेरे प्राण टूटे नहीं। ऐसा शोक-वचन कहता। २८१७

ॲऴुन्दवन् मेले पाय वॅण्णुम्बे रिडरिर् रळ्ळि
विऴुन्दुवॅय् दुयिर्त्तु विम्मि वीङ्गुम्बोय् मॅलियुम् वॅन्दीक्
कॉऴुन्दुह वुयिर्क्कु मियाक्कै कुलैवुरुन् दलैये कॉण्डुर्
रुऴुन्दरै तन्नैप् पिन्नु मिनैयन वुरैप्प दानान् 2818

अवन्–वह; ॲऴुन्तु–उठकर; मेले पाय–ऊपर झपटने को; ॲण्णुम्–सोचता; पेर् इटरिल्–बड़े संकट में; तळ्ळि–ढकेला जाकर; विऴुन्तु–गिरकर; वॅय्तु उयिर्त्तु–गरम निःश्वास छोड़कर; विम्मि–सिसकता; वीङ्कुम्–फूल जाता; पोय् मॅलियुम्–जाकर कृश बनता; वॅम् ती कॉऴुन्तु–गरम अग्नि-ज्वाला; उक–निकले ऐसा; उयिर्क्कुम्–साँसें छोड़ता; याक्कै–शरीर; कुलैवु उरुम्–कंपायमान होता; तरै तन्नै–भूमि को; तलैये कॉण्टु–अपने सिर से ही; उऴुम्–जोत देता; पिन्नुम्–फिर; इनैयन–ये वचन; उरैप्पतानान्–कहने लगा। २८१८

वह उठकर ऊपर झपटना चाहता ! बड़े ही दुःख के साथ गिरकर गरम साँसें छोड़ता। सिसकता, फूलता, कृश होता। श्वास छोड़ता तो आग की ज्वाला भभकती। उसका शरीर काँप गया। भूमि को अपने सिर से जोतता। और यों कहता : । २८१८

मुडिन्ददु नन्द मॅण्ण मूवुल हिर्कुङ् गङ्गुल्
विडिन्ददॅन् रिरुन्दॅन् मीळ वॅन्दुय रिरुळिन् वॅळ्ळम्
पडिन्ददु विनैयच् चॅय्है पयन्ददु पावि वाळाल्
तडिन्ददन् रिरुवै यन्दो तविर्न्ददु तरुम मम्मा 2819

नम्तम् ॲण्णम्–हमारा मंशा; मुटिन्ततु–पूरा हुआ; मूवुलकिर्कुम्–तीनों लोकों के लिए; कङ्कुल्–रात; विटिन्ततु–प्रभात में आ गयी; ॲन्रु इरुन्तेन्–

ऐसा सोचता रहा; वॅम् तुयर्-कठोर दुःख के; इरुळिन् वॅळ्ळम्-अन्धकार की बाढ़; मीळ पटिन्ततु-फिर छा गयी; वितैय चॅय्कै-मायाकृत्य; पयन्ततु-सफल हो गया; अन्तो-हाय; पावि-पापी इन्द्रजित्ने ; तिरुवै-लक्ष्मी को; वाळाल्-अपनी तलवार से; तटिन्ततत्-काट दिया; तरुमम् तविर्न्ततु-धर्म च्युत हो गया; अम्मा-आश्चर्य । २८१९

मैंने सोचा था कि मंशा सफल हो गयी और लोकों को प्रभात हो गया। पर गरम दुःख का अंधकार फिर छा गया। माया सफल हो गयी। हाय ! पापी ने लक्ष्मी को अपनी तलवार से काट दिया। धर्म टल गया। आश्चर्य माँ ! । २८१९

पॅरुञ्जिरैक् करुपि ताळेप् पॅण्णिनैक् कण्मुन् कॊल्ल
इरुञ्जिर हर्र पुट्पो लियादुमोन् रियर्र लार्रेन्
परुञ्जिरै यळुन्दु हिन्रे नॅम्बिरान् रेवि पट्ट
अरुञ्जिरै मीट्ट वण्ण मळ्हिदु पोलु मम्मा 2820

पॅरु चिरै करुपिताळै-आत्मरक्षा के बड़े साधन रूपी पातिव्रत्यशीला को; पॅण्णितै-स्त्रीलक्षणवती को; कण् मुन्-मेरी आँखों के सामने; कॊल्ल-मारते; इरु चिरकु अर्र-दोनों पक्षों से रहित; पुट् पोल्-पक्षी की तरह; यातुम् ऑन्रुम्-कोई एक (काम) भी; इयर्रल् आर्रेन्-कर नहीं सका; परु चिरै-कठोर कारा में; अळुन्तुकिन्रेन्-फँस रहा हूँ; ऍम्पिरान् तेवि-हमारे प्रभु की पत्नी; पट्ट-जिसमें फँसीं; अरु चिरै-उस बन्दीगृह से; मीट्ट वण्णम्-छुड़ाने का यह प्रकार भी; अळकितु पोलुम्-सुन्दर रहा शायद; अम्मा-माँ, आश्चर्य । २८२०

वह अपने पातिव्रत्य के पहरे में बन्द थीं। वह स्त्रियोचित गुण रखती थीं। इन्द्रजित् ने उन्हें मेरे ही समक्ष मारा और मै पक्षहीन पक्षी के समान कुछ करने में असमर्थ रह गया। यही हमारे प्रभु की देवी को कठोर कारा से मुक्त कराने की सुन्दर रीति है शायद ! । २८२०

पादह वरक्कन् रॅय्वप् पत्तिनि तवत्तु ळाळेप्
पेदैयेक् कुलत्तिन् वन्द पिळ्ळेप्पिला दाळेप् पॅण्णेच्
चीदैयैत् तिरुवैत् तीण्डिच् चिरैवैत्त तीयोन् शेये
कादवुङ् गण्डु निन्र करुममे करुणैत् तम्मा 2821

तॅय्व पत्तिनि-दिव्य पत्नी; तवत्तुळाळै-(पातिव्रत्य-) तपस्विनी को; पेतैयै-अबोध को; कुलत्तिन् वन्त-उच्चकुलजाता; पिळ्ळैप्पु इलाताळै-अनिद्या को; पॅण्णै-नारी को; चीतैयै-सीता को; तिरुवै-श्रीलक्ष्मी को; तीण्टि-स्पर्श करके; चिरै वैत्त-बन्दीगृह में जिसने रखा था; तीयोन्-उस खल के; पातक अरक्कन्-पातक राक्षस के; चेये-पुत्र को ही; कातवुम्-मारते; कण्टु-देखकर; निन्र-जो चुप खड़ा रहा; करुममे-वही कार्य; करुणैत्तु-करुणायोग्य है; अम्मा-आश्चर्य । २८२१

दिव्यपत्नी, पातिव्रत्य तपस्या में रत, अबोध देवी, उच्चकुलजाता अनिंद्य सीताजी को, श्रीलक्ष्मी को पकड़कर जिसने बंदीगृह में रखा था, उस पातक क्रूर राक्षस के पुत्र ने उन्हें मारा। मैं देखता ही रह गया। वह भी बड़ा करुणाप्रदर्शक कार्य रहा! री मैया! । २८२१

कल्विक्कु निमिर्न्द कीर्त्तिक् काहुत्तन् रूद ताहिच्
चॉल्विक्क वन्दु पोते नोय्विलित् तुयर्शॅय् दारै
वॅल्विक्क वन्रु निन्नै मीट्पिक्क वन्रु वॅय्दिऱ्
कॉल्विक्क वन्दे नन्रे कॉडुम्बऴि कूट्टिक् कॉण्डेन् 2822

कल्विक्कु निमिर्न्त–(सभी) विद्याओं से परे; कीर्त्ति–यशस्वी; काकुत्तन् तूतताकि–काकुत्स्थ का दूत बनकर; चॉल्विक्क–वैसा कहलाने के लिए; वन्तु पोतेन्–आया था; ओय्विल्–निरन्तर; इ तुयर् चॅय्तारै–यह दुःख जिन्होंने दिया है; वॅल्विक्क अन्रु–हराने नहीं; निन्नै–आपको; मीट्पिक्क अन्रु–छुड़ाने के लिए भी नहीं; वॅय्तिन्–क्रूरता से; कॉल्विक्क वन्तेन् अन्रे–मरवाने आया था न; कॉटुम् पऴि–भयंकर अपयश; कूट्टिक् कॉण्टेन्–अपने लिए बना लिया मैंने। २८२२

सभी विद्याओं से अज्ञेय काकुत्स्थ का दूत कहा गया—यही मेरे इधर आ जाने का प्रयोजन रहा। अब अमिट दुःखदायी राक्षस को जिताने नहीं; आपको (सीताजी को) छुड़ाने नहीं; पर अब बहुत ही निर्मम रूप से आपको मरवाने आया न! बड़ा अपयश कमा लिया। २८२२

वञ्जियै यॅङ्गुङ् गाणा तुयरिनै मऱन्दा नॅन्नच्
चॅञ्जिलै युरवोन् तेडित् तिरिहिन्ऱा नुळ्ळन् देऱ
अञ्जॊला ळिरुन्दाळ् कण्डे नॅन्ऱया नरक्कन् कॊल्लत्
तुञ्जिना ळॅन्ऱुञ् जॊल्लत् तोन्ऱिनेन् ऱोऱ्ऱ मीदाल् 2823

चॅम् चिलै उरवोन्–श्रेष्ठ धनुर्धर वीर; वञ्चियै–'वञ्जि' लता-सी आपको; ऍङ्कुम् काणातु–कहीं नहीं देखकर; उयिरिनै मऱन्तान् ऍन्न–प्राणों को ही भूल गये जैसे; तेटि तिरिकिन्ऱान्–जो खोजते फिरते थे; उळ्ळम् तेऱ–उनके मन को धैर्य देते हुए; अम् चॊलाळ्–मधुरभाषिणी; इरुन्ताळ्–थीं; कण्टेन्–देखा; ऍन्ऱ यान्–जो कहा था वही मैं; अरक्कन् कॊल्ल–राक्षस के मारने से; तुञ्चिनाळ्–मर गयीं; ऍन्ऱुम् चॊल्ल–यह भी कहूं उसके लिए; तोन्ऱिनेन्–पैदा हुआ हूँ; तोऱ्ऱम् ईतु–जन्म (का फल) यह है। २८२३

श्रेष्ठ विक्रमी कोदंडपाणी श्रीराम 'वंजी' लता-सी आपको कहीं न देख पाकर अपने ही प्राणों को मानो खोकर खोजते रहे। उनको धीरज देते हुए मैंने कहा था कि देवी जीवित हैं। मैंने अपनी आँखों देखा था। उसी मुझे अब जाकर उनसे कहना पड़ गया कि इन्द्रजित् के मारे वे मर गयीं। इसी को मेरा जन्म हुआ था क्या? । २८२३

अरुङ्गडल् कडन्दिव् वूर यळ्ळॅरि मडुत्तु वॆळ्ळक्
करुङ्गडल् कट्टि मेरुक् कडन्दीरु मरुन्दु काट्टि
कुरङ्गिति युन्तो डॊप्पा रिल्लॆनक् कळिप्पुक् कॊण्डेन्
पॆरुङ्गडऱ् कोट्टत् तेय्वॆ यॊत्तदॆन् तडिमैप् पॆऱ्ऱि 2824

अरु कटल कटन्तु–अगम सागर पार करके; इ ऊरै–इस नगर में; अळ् ऍरि–घनी आग; मट्टुत्तु–लगाकर; वॆळ्ळ–जल-भरे; करु कटल्–काले सागर को; कट्टि–(सेतु) बाँधकर; मेरु कटन्तु–मेरु पर्वत पार करके; ऑरु मरुन्तु काट्टि–अपूर्व औषध दिखाकर; उन्तोटु ऑप्पार्–तुम्हारी समानता करनेवाले; कुरङ्कु इत्ति इल्–वानर अब नहीं है; ऍन–ऐसा लोग कहें, ऐसा; कळिप्पु कॊण्टेन्–मुदित हुआ; ऍन् अटिमै पॆऱ्ऱि–मेरी दासता का गौरव; पॆरु कटल–बड़े सागर में; कोट्टम् तेय्वॆ ऑत्ततु–'कोष्ट' (सुगन्ध पदार्थ) घिसना जैसा हो गया। २८२४

मैंने अलंघ्य सागर लाँघा; इस नगर में आग लगायी। गहरे सागर पर सेतुबंधन करने में सहायता दिलायी। संजीवनी ओषधि लाया। लोगों ने कहा कि तुम-सा कोई दूसरा बंदर नहीं है। मैं उसको सुनकर इतराया। अब स्थिति ऐसी आ गयी कि मेरी दासता का महत्त्व सागर में घिसे 'कोष्ट' (सुगन्ध द्रव्य) की महक के समान हो गया। २८२४

विण्डुनिन् ऱाक्कै शिन्दप् पुल्लुयिर् विट्टि लादेन्
कॊण्डुनिन् ऱानैक् कॊल्लक् कूशिने नॆदिरे कॊल्लक्
कण्डुनिन् ऱेन्मऱ् ऱिन्नुङ् गैहळाऱ् कनिहळ् वॆव्वे
ऱुण्डुनिन् ऱुय्य वल्ले नॆळियनो वॊरुव नुळ्ळेन् 2825

विण्टु निन्ऱु–शत्रुता करके; आक्कै उटलै–(देवी के) शरीर को; चिन्त–काटते; पुल् उयिर्–(देखकर) अल्प प्राण; विट्टिलातेन्–जो नहीं छोड़ा वह मैं; कॊण्टु निन्ऱान्–उन्हें जो पकड़े रहा उसे; कॊल्ल कूचिनेन्–मारने से संकोच करता रह गया; ऍतिरे कॊल्ल कण्टुम्–समक्ष मारते देखकर भी; निन्ऱेन्–चुप खड़ा रहा; इन्नुम्–अब भी; कैकळाल्–हाथों से; वॆव् वेऱु कनिकळ् उण्टु–विविध फल (तोड़) खाकर; निन्ऱु–(चिरंजीव) रहकर; उय्य वल्लेन्–जीवित रहनेवाला; ऑरुवन् उळ्ळेन्–एक रहूँगा; ऍळियनो–मैं दीन हूँ क्या। २८२५

शत्रुता दिखाकर इन्द्रजित् ने देवी के शरीर को काटा और मैं देखता रहा। मैंने अपने क्षुद्र प्राणों को छोड़ा नहीं। उन्हें पकड़े जो खड़ा रहा, उसे मारने से भी संकोच करता रहा। मेरे ही समक्ष उसने उन्हें मारा। देखता चुप खड़ा रहा मैं। अब मैं जीवित रहता हूँ। इन अपने हाथों से विविध फल तोड़ खाऊँ और खुशी से बहुत दिन रहूँ! फिर मैं दीन हूँ क्या? । २८२५

ऍन्ननिन् ऱिरङ्गिक् कळ्व नयोत्तिमे लॆळुवॆ नॆन्ऱु
शॊन्नदु मुण्डु पोन शुवडुण्डु तॊडर्न्दु शॆल्लिन्

मत्त्तिङ् गुर्र् दत्तै युणर्हिलत् वरुव दोरेत्
पित्तिलि मुडिप्प दियादॆत् रिरङ्गिता तुणर्वु पॆर्रात् 2826

ऍन्न-कहकर; नित्रु इरङ्कि-खड़ा हो दुःखी; कळ्वन्-चोर ने; अयोत्ति मेल् ऍऴुवन्-अयोध्या पर चढ़ूँगा; ऍन्रु-कहकर; चॊन्नतुम् उण्टु-कहा भी था; पोत चुवटु उण्टु-जाने का आसरा भी है; तॊटर्न्तु चॆल्लिन्-पीछा कर जाऊँ तो; इङ्कु उर्र तन्मै-यहाँ हुए हाल; मन्नन् उणर्किलत्-राजाराम नहीं जानेंगे; वरुवतु ऒरेन्-भविष्य न जान पाता; इति-अब; मुटिप्पतु यातु-करना क्या; ऍन्रु ऍण्णि-ऐसा सोचकर; इरङ्कितान्-दुःखी हुआ; पिन्-बाद; उणर्वु पॆर्रान्-सुधि पायी। २८२६

हनुमान ऐसी बातें कहते हुए दुःखी हो रहा था। "चोर इन्द्रजित् ने 'यह कहा था कि अयोध्या पर चढ़ जाऊँगा'। फिर गया भी; उसका सबूत है। अगर मैं उसका पीछा करके जाऊँ तो यहाँ की घटना को श्रीराजाराम जान नहीं पायेंगे। अब क्या होगा —यह नहीं समझ पाता। और मैं क्या करूँ ?" यह सोचकर वह अधिक क्षुब्ध हुआ। फिर धैर्य का अवलम्बन किया। २८२६

उर्रदै युणर्त्तिप् पित्तै युलहुडै यॊरुव तोडुम्
इर्रुदि लिर्रु माळ्व तल्लॆति तॆण्ण मॆण्णिच्
चॊर्रदु शॆय्वन् वेरॊर् पिरिदिलॆन् रुणिवि दॆन्ताप्
पॊर्रडत् दोळात् वीरत् पॊन्नडि मरुङ्गिर् पोतात् 2827

पॊन् तटम् तोळान्-विशाल-स्वर्ण-स्कन्ध; उर्रतै-जो हुआ उसे; उलकुटै ऒरुवत्तोटुम्-लोकों के स्वामी एक नायक से; उणर्त्ति-कहकर; पिन्तै-बाद; यानुम्-मैं भी; इर्ऱुरिन्-मर सकूँ तो; इर्रु माळ्वन्-प्राणों का अन्त करके मरूँगा; अन्रु ऍनिन्-नहीं तो; ऍण्णम् ऍण्णि-सोचकर; ऒरु करुत्तै करुति-जो एक बात सोचकर; चॊर्रतु-कहें उसे; चॆय्वन्-करूँगा; वेरु ओर् पिरितु इल्-कोई दूसरा करना नहीं; ऍन् तुणिवु इतु-मेरा निश्चय यह है; ऍन्ना-निश्चय करके; वीरन्-वीर (श्रीराम) के; पॊन्नटि मरुङ्किन्-श्रीचरण के पास; पोनान्-गया। २८२७

स्वर्ण-विशाल-स्कंध मारुति ने यह सोचा कि मैं लोकस्वामी श्रीराम के पास जाकर यहाँ जो हुई वह बात बता दूँगा। फिर मर सकूँगा तो मर जाऊँगा। नहीं तो वे कुछ सोचकर आज्ञा दें तो उसको बजा लाऊँगा। इसके सिवा कुछ नहीं करने को है। यही मेरा निर्णय है। यही संकल्प लेकर वह वीर श्रीराम की शरण में गया। २८२७

शिङ्गवे रनैय वीरत् शॆरिहळर् पादम् जेर्न्दात्
अङ्गमु मतमुङ् गण्णु मावियु मलक्क णुर्रात्
पॊङ्गिय पॊरुमल् वीङ्गि युयिर्प्पॊडु पुरत्तैप् पोर्प्प
वॆङ्गणी रुवि शोर मालवरॆ यॆन्न वीळ्न्दात् 2828

चिङ्क एऱु अनैय–नर केसरी-तुल्य; वीरन्–वीर के; कऴल् चेरि–पायल से अलंकृत; पातम् चेर्न्तान्–चरणों में जाकर; अङ्कमुम् मनमुम्–अंग, मन; कण्णुम् आवियुम्–आँखें और प्राण; अलक्कण् उऱ्ऱान्–विह्वल होकर; पोङ्किय पोरुमल्–उमगते दुःख के; उयिर्प्पोटु–निःश्वास के साथ; वीङ्कि–बढ़कर; पुरत्तै– शरीर को; पोर्प्प–वश में कर लेते; वॆम् कण् नीर् अरुवि–गरम अश्रुनदी के; चोर–बहते; माल् वरै अॆन्न–बड़े पर्वत के समान; वीऴ्न्तान्–गिरा। २८२८

नरसिंह-तुल्य श्रीवीरराघव के पायलधारी चरणों पर जाकर मारुति बड़े पर्वत के समान गिरा। उसके अंग-अंग, मन, आँखें और प्राण सभी दुःख से भरे रहे। उमगता दुःख निःश्वास के साथ बढ़ता गया, और सारे शरीर को आक्रांत कर गया। उसकी आँखों से गरम अश्रुनदी बह रही थी। २८२८

वीऴ्न्दवन् ऱन्नै वीरन् विळैन्ददु विळम्बु ऎन्ऩात्
ताऴ्न्दिरु दडक्कै पऱ्ऱि यॆडुक्कवुन् दरिक्क लादान्
आऴ्न्दॆऴु दुन्बत् ताळै यरक्कन्ऱे यथिल्कोळ् वाळाल्
पोऴ्न्दन नॆन्नक् कूऱिप् पुरण्डनन् पोरुमु हिन्ऱान् 2829

वीरन्–वीर श्रीराम ने; ताऴ्न्तु–झुककर; वीऴ्न्तवन् तन्नै–गिरे हुए हनुमान को; इरु तट कै पऱ्ऱि–दोनों बड़े हाथों को पकड़कर; विळैन्ततु विळम्पुक–जो हुआ वह कहो; अॆन्ऩा–पूछा तो; अॆडुक्कवुम्–उठाने पर; तरिक्कलातान्–अधीर (हनुमान); आऴ्न्तु अॆऴु–गहरे हो उठे; तुन्पत्ताळै–दुःख में मग्न सीताजी को; अरक्कन् चेय्–राक्षसपुत्र ने; अयिल् कोळ् वाळाल्–धारदार तलवार से; पोऴ्न्तनन्–काट दिया; अॆन्न–ऐसा; कूऱि–कहकर; पुरण्टनन्–लोटने लगा; पोरुमुकिन्ऱान्–बिलखता रहा। २८२९

श्रीराम ने झुककर भूमि पर पड़े रहे उसके दोनों हाथ पकड़कर पूछा कि क्या हुआ ? बतलाओ। उठाने पर असह्य वेदना से पीड़ित हनुमान ने निवेदन किया कि गम्भीर-दुःख-मग्न देवी को रावण-पुत्र ने तीक्ष्ण तलवार से काट दिया। यह कहकर वह भूमि पर दुःख से विह्वल होकर लोटा। २८२९

तुडित्तिल नुयिर्प्पु मिल्ल निमैत्तिलन् ऱुळ्ळिक् कण्णीर्
पॊडित्तिल नियादु मॊन्ऱुम् बुहन्ऱिलन् पॊरुमि युळ्ळम्
वॆडित्तिलन् विम्मिप् पारिन् वीऴ्न्दिलन् वियर्त्ता नल्लन्
अडत्तुळ तुन्ब मियावु मरिन्दिल रमर रेयुम् 2830

तुटित्तिलन्–(श्रीराम) छटपटाये नहीं; उयिर्प्पुम् इल्लन्–श्वासहीन हो गये; इमैत्तिलन्–पलक न मारी; कण्णीर् तुळ्ळि पॊटित्तिलन्–आँसू की बूंदें न निकालीं; यातुम् ऒन्ऱुम्–कुछ भी; पुकन्ऱिलन्–नहीं बोले; उळ्ळम् पॊरुमि–मन दुःख से भरकर; वॆटित्तिलन्–फूटे नहीं; विम्मि–सिसककर; पारिन् वीऴ्न्तिलन्–भूमि पर गिरे नहीं; वियर्त्तान् अल्लन्–स्वेदयुक्त हुए नहीं; अटत्तु उळ तुन्पम् यावुम्–

उन पर जो बीते वे सारे दुःख; अमररेयुम्–देव भी; अऱिन्दिलर्–नहीं जान पाये। २८३०

यह सुनते ही श्रीराम की विचित्र हालत हो गयी। वे नहीं छटपटाये। साँस बन्द-सी हो गयी। पलकें नहीं गिरीं। अश्रु झलक नहीं आये। बोल नहीं फूटे। मन दुःख से भरकर फूटा नहीं। सिसक कर भूमि पर नहीं गिरे। शरीर पर पसीना भी नहीं आया। उनके दुःख को पूर्ण रूप से देव भी नहीं जान सके। २८३०

शीऱ्ऱदु केट्ट लोडुन् दुणुक्कुऱ् वुणर्वु शोर
नऱ्पॆरु वाडै युऱ्ऱ मरङ्गळि नडुक्क मॆय्दाक्
कऱ्पह मनैय वळ्ळल् करुङ्गळऱ् कमलक् काऩ्मेल्
वॆऱ्पिन मॆऩ्न वीऴ्न्दार् वानर वीर रॆल्लाम् 2831

वानर वीरर् ॲल्लाम्–सभी वानर वीर; चीऱ्ऱतु–कहा; केट्टलोटुम्–सुनते ही; तुणुक्कु उऱ्–ठिठक गये; उणर्वु चोर–सुधि खो गयी; नल् पॆरु वाटै उऱ्ऱ–अच्छी उग्र उदीची हवा के झोंके में; मरङ्कळिन्–तरुओं की तरह; नटुक्कम् ॲय्ता–कंपन पाकर; कऱ्पकम् अनैय वळ्ळल्–कल्पतरु के समान उदार प्रभु के; करु कऴल्–सुदृढ़ पायलधारी; कमल काल् मेल्–कमल-चरणों में; वॆऱ्पु इनम् ॲन्न–पर्वत-समूह के समान; वीऴ्न्तार्–गिरे। २८३१

वानर वीरों ने ज्योंही श्रीराम से कही हुई बात सुनी, त्योंही वे भौचक हो गये। उनकी सुधि खो गयी। प्रबल उदीची हवा के झोंकों से जैसे तरु हिल जाते हैं, वैसे ही वे भी काँप उठे और सुदृढ़ पायलधारी श्रीराम के कमल-चरण में पर्वतसमूहवत् गिरे। २८३१

चित्तिरत् तन्मै युऱ्ऱ शेवह नुणर्वु तीर्न्दान्
वित्तहर् वदन नोक्का निळैयवन् विनव पेशान्
पित्तरु मिऱ्ऱॆपो ऱाद पेरबि मान मॆन्नुम्
शत्तिर मार्बिर् ऱैक्क वुयिरिल नॆन्नच् चाय्न्दान् 2832

चित्तिरम् तन्मै उऱ्ऱ–चित्र की-सी (निस्पन्द) हालत में जो आये; चेवकन्–वे वीर श्रीराम; उणर्वु तीर्न्तान्–बेहोश हुए; वित्तकर्–बुद्धिमानों का; वतनम् नोक्कान्–मुख नहीं देखते; इळैयवन् विनव–छोटे भाई के पूछने पर; पेचान्–कुछ नहीं बोलते; पित्तरुम्–पागल भी; इऱ्ऱॆ–थोड़ा ही सही; पॊऱात–जो सह नहीं सकें; पेर् अपिमानम् ॲन्नुम्–बड़ा ममत्व रूपी; चत्तिरम्–अस्त्र; मार्पिल् तैक्क–छाती में लगा इसलिए; उयिरिलन् ॲन्न–निष्प्राण हुए जैसे; चाय्न्तान्–गिर गये। २८३२

तब श्रीराम निस्पन्द तथा प्रज्ञाहीन हुए। विद्वान मित्रों का वदन नहीं देखते; लक्ष्मण के पूछने पर भी उत्तर नहीं देते। पागल भी जिसे

कुछ देर भी नहीं सह सकते, वैसा मान का अस्त्र उनकी छाती में गड़ गया था। अतः प्राणहीन के समान गिरे थे। २८३२

नायहन् रत्नमै कण्डुन् दमक्कुर्र नाणम् बार्त्तुम्
आयिन करुम मीळ वळिवुर्र वदनैप् पार्त्तुम्
वायॊडु मनमुङ् गण्णु मियाक्कैयु मयर्न्दु शाम्बित्
तायिनै यिळन्द कन्रिड़ रुम्बियुन् दलत्त नानात् 2833

तम्पियुम्–छोटे भाई भी; नायकन् तनूमै कण्टुम्–नायक का हाल देखकर और; तमक्कु उर्र–अपने पर लगी; नाणम् पार्त्तुम्–लज्जा का हाल देखकर; आयित करुमम्–जो अच्छा होने को आया था वह काम; मीळ–फिर; अळिवुर्र–बिगड़ गया; अतनै पार्त्तुम्–वह हाल देखकर; वायॊटु–मुख और; मतमुम्–मन और; कण्णुम्–आँखें; याक्कैयुम्–और शरीर; अयर्न्तु–थक गये; चाम्पि–मुरझा गये; तायितै इळन्त कन्रिन्–माता को जिसने खो दिया उस बछड़े के समान; तलत्तन् आतान्–भूमि पर गिरे हो गये। २८३३

छोटे भाई पर भी नायक के हाल का प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने पर जो शरमाने की हालत आ गयी उसको सोचा। सिद्ध होता-सा रहा कार्य फिर से बिगड़ गया था। इन सबके प्रभाव से उनका मुख, मन, आँखें और शरीर सभी जर्जर हो गये। वे भी धैर्य खोकर मृत माता गाय के बछड़े के समान भूमि पर पड़े रह गये। २८३३

तॊल्लैय दुणरत् तक्क वीडणन् रुळक्क मुर्रात्
ऍल्लैयि रुन्ब मून्र विडैयॊन्रुन् दॆरिहि लादान्
वॆल्लवु मरिदु नाश मिवडन्नाल् विळैन्द वॆन्नाक्
कॊल्वदु मडुक्कु मॆन्रु मनत्तिनो रैयङ् गॊण्डान् 2834

तॊल्लैयतु–दूर तक; उणर तक्क–जान सकनेवाले; वीटणन्–विभीषण तुळक्कम् उर्रान्–दहल उठा; ऍल्लै इल्–अपार; तुन्पम् ऊन्र–दुःख के होते; इटै ऒन्रुम्–कारण कुछ; तॆरिकिलातान्–जो न जानता था; वॆल्लवुम् अरितु–जीतना भी असाध्य है; इवळ् तन्नाल्–इस (सीता) से; नाचम् विळैन्ततु–नाश हुआ; ऍन्ना–सोचकर; कॊल्वतुम्–(सीता को) मारना भी; अटुक्कुम्–सम्भव भी था; ऍन्रु–ऐसा सोचकर; मनत्तिन्–मन में; ओर् ऐयम् कॊण्टान्–एक संशय-ग्रस्त हुआ। २८३४

तब दूरदर्शी विभीषण व्यग्र हो उठा। अपार दुःख ने उसके मन को आक्रांत किया। कोई कारण नहीं जान सका। उसके मन में एक संशय उठा कि सीताजी को, इस बात पर झल्लाकर कि श्रीराम-लक्ष्मण को हराना दुस्साध्य है और इसी के कारण राक्षसकुल का नाश हो गया, राक्षस ने मारा हो —यह सम्भव है। २८३४

शीदनीर् मुहत्ति नप्पिच् चेवहन् मेनि तोण्डिप्
पोदम्वन् दॆय्दर् पाल यावयुम् बुरिन्दु पॊऩ्पूम्
बादमुङ् गैयु मॆय्युम् बऱ्ऱित्तु वरुड लोडुम्
वेदमुङ् गाणा वळ्ळल् विऴित्तनन् कण्णै मॆल्ल 2835

चेवकन् मुकत्तिन्-पराक्रमी (श्रीराम) के मुख पर; चीत नीर् अप्पि-शीतल जल डालकर; मेनि तोण्टि-शरीर स्पर्श करके; पोतम् वन्तु ऎय्तल् पाल-सुध आये इसके लिए आवश्यक; यावैयुम् पुरिन्तु-सभी (उपचार) करके; पॊऩ्-मनोरम; पूम् पातमुम्-मृदु चरणों; कैयुम् मॆय्युम्-हाथ और शरीर; पऱ्ऱित्तु-दबाकर; वरुटलोटुम्-सहलाया तो; वेतमुम् काणा वळ्ळल्-वेदों के लिए भी अगम्य प्रभु ने; कण्णै-आँखों को; मॆल्ल-धीरे-धीरे; विऴित्तनन्--खोला। २८३५

विभीषण ने विक्रमी श्रीराम के मुख पर शीतल जल छिड़का। शरीर को स्पर्श करके होश लाने के लिए आवश्यक तथा योग्य उपचार किये। सुन्दर मृदु श्रीचरणों, हाथों और शरीर को सहलाया। तो तुरन्त वेदों के लिए भी अगम्य प्रभु सचेत हुए और उन्होंने धीरे से आँखें खोलीं। २८३५

ऊऱ्ऱुवार् कण्णी रोडु मुळ्ळऴिन् दुऱ्ऱ दॆण्णि
आऱ्ऱुवा नल्ल नाहि ययर्हिन्ऱा नॆनिनु मैयन्
माऱ्ऱुवा नल्लन् मान मुयिरुह वरुन्दु मॆन्नात्
तेऱ्ऱुवा निनैन्दु तम्बि यिवैयिवै यॆप्प लुऱ्ऱान् 2836

ऊऱ्ऱु-बहनेवाली; वार्-लंबी; कण्णीरोटुम्-अश्रुधारा के साथ; उळ् अऴिन्तु-मन नष्ट करके; उऱ्ऱतु ऎण्णि--जो हो गया उसे सोचकर; आऱ्ऱुवान् अल्लन् आकि-धीरज न धर सककर; अयर्किन्ऱान्-(लक्ष्मण) शिथिल रहे; ऎऩिनुम्--तो भी; ऐयन्-श्रीराम; मानम् माऱ्ऱुवान् अल्लन्-अपना मान नहीं छोड़ेंगे; उयिर् उक-प्राण निकल जायँ ऐसा; वरुन्तुम्-दुःखी होंगे; ऎन्ना-सोचकर; तेऱ्ऱुवान् निऩैन्तु-धीरज बँधाना चाहकर; तम्पि-लघु भ्राता; इवै इवै-ऐसे-ऐसे (वचन); चॆप्पल् उऱ्ऱान्-कहने लगे। २८३६

लक्ष्मण की स्थिति भी विकट थी। उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। बीती बातें सोचकर उन्हें असह्य दुःख हो रहा था। वे स्वयं शिथिल थे तो भी उन्होंने सोचा कि प्रभु अपना मान नहीं छोड़ेंगे। रोते-रोते प्राण छोड़ देंगे। उन्होंने उन्हें सांत्वना देना चाहा। इसलिए लघुभ्राता ने निम्नोक्त बातें कहीं। २८३६

मुडियुनाट् टाने वन्दु मुऱ्ऱिनाऱ् ऱुम्ब मुन्नीर्
पडियुमाऱ् जिऱियोर् तन्मै निऩक्किदु पऴियिऱ् ऱामाल्
कुडियुमा शुण्ड दॆन्नि नऱत्तोडु मुलहैक् कॊन्ऱु
कडियुमा ऱन्ऱिच् चोर्न्दु कऴिदियो करुत्ति लार्बोल् 2837

मुडियुम् नाळ्-बिनाशकाल; ताने वन्तु मुऱ्ऱिनाल्-स्वयं आकर पक्व होता है;

तुन्नपम् मुन्नीर् पटियुमाम्–तो दुःख (रूपी) सागर में मग्न हो जाना; चिरियोर् तन्मै–छोटों का स्वभाव है; इतु–यह; नितक्कु पळियिरुरु आम्–आपके लिए अपयश है; कुडियुम्–कुल भी; माचु उण्टतु–कलंकित हो गया; ऎन्तिन्–तो; अऱत्तोडुम् उलकै–धर्म और संसार को; कोन्ऱु कटियुमाऱु अन्ऱि–नाश कर मिटाने के सिवा; करुत्तिलार् पोल्–विवेकहीनों के समान; चोर्न्तु कळितियो–थके रह जायेंगे क्या। २८३७

अंत (कष्ट) काल स्वयं आ जाए तो दुःख-सागर में मग्न रहना छोटों का स्वभाव है। पर आपके लिए यह अपयश होगा। कुल पर भी जब धब्बा लग गया, तब धर्म के साथ संसार का भी नाश करना छोड़कर विचार-हीन के समान शिथिल पड़े समय काटेंगे क्या? । २८३७

तैयलैत् तुणैयि लाळैत् तवत्तियैत् तरुमक् कऱ्पित्
तैय्वदन् दन्नै मऱ्ऱुन् ऱेवियैत् तिरुवैत् तीण्डि
वैय्यवन् कोन्ऱा नॆन्ऱाल् वेदनै युळप्प दिन्नम्
उय्यवो करुणै यालो तरुमत्तो डुऱवु मुण्डो 2838

तैयलै–अबला को; तुणै इलाळै–निस्सहाय रही देवी को; तवत्तियै–तपस्विनी को; तरुम कऱ्पिन्–पतिव्रता-धर्म की; तॆय्वतम् तन्नै–देवी को; मऱ्ऱु–और; उन् तेवियै–आपकी पत्नी को; तिरुवै–लक्ष्मीदेवी को; तीण्टि–छूकर; वैय्यवन्–दुष्ट ने; कोन्ऱान् ऎन्ऱाल्–मारा तो; वेतनै उळप्पतु–(यह सुनकर) दुःख में यंत्रणा पाना; इन्नम् उय्यवो–आगे भी जीने के लिए क्या; करुणैयालो–दया के कारण; तरुमत्तोटु–धर्म से; उऱवु उण्टो–अब भी नाता होगा; क्या। २८३८

दुष्ट, क्रूर राक्षस ने एक अबला को, निस्सहाय स्त्री को, तपस्विनी को, धार्मिक पतिव्रता देवी को, और आपकी देवी को, श्री को हाथ से स्पर्श करके मार डाला। यह सुनकर रोते रहें—यह और जीवित रहने के निमित्त है क्या? या दया के कारण? या धर्म से अब भी नाता है? । २८३८

अरक्करॆन् नमरर् तामॆ नन्दणर् तामॆ नन्वक्
कुरुक्कळॆन् मुनिवर् तामॆन् वेदत्तिन् कोळ्है तानॆन्
शॆरुक्किनर् वलिय राहि नॆऱ्ऱिनिन्ऱार् शिदैव राहिन्
इरुक्कुमि दॆन्ना मिम्मून् ऱुलहैयु मॆरिम डादे 2839

अरक्कर् ऎन्–राक्षस हुए तो क्या; अमरर् ताम् ऎन्–देव हों तो भी क्या; अन्तणर् ताम् ऎन्–ब्राह्मण हुए तो क्या; अन्त कुरुक्कळ्–वे (मान्य) गुरु; ऎन्–क्या; मुनिवर् ताम् ऎन्–मुनि लोग भी क्या; वेतत्तिन् कोळ्कै तान् ऎन्–वेद-सिद्धान्त क्या; चॆरुक्किनर्–दंभी; वलियर् आकि–बल-प्रदर्शक बने; नॆऱ्ऱि निन्ऱार्–और धर्मावलम्बी; चितैवार् आकिल्–विनाश पायें तो; इ मून्ऱु उलकैयुम्–इन तीनों लोकों को; ऎरि मटाते–आग लगाये बिना; इरुक्कुम् इतु–रहने की यह प्रवृत्ति; ऎन् आम्–क्या होगी। २८३९

राक्षस क्या, देव भी क्या ? ब्राह्मण क्या, मान्य गुरु लोग हों तो क्या ? वेदशासन भी रहा तो क्या ? शत्रु दम्भी होकर बल पाकर रहें और फलस्वरूप धर्मावलंबी संकटग्रस्त हों तो इन तीनों लोकों में आग लगाए विना चुप रहना क्या है ? । २८३९

मुळ्वदे ऴूलह मितुन मुरैमुरै शॅय्है मेन्मूण्
डॅळुवदे यमर रितुन भिरुप्पदे यरमुण् डॅन्रु
तॊळुवदे मेह मारि शॊरिवदे शोर्न्दु नाम्वीळ्न्
दळुवदे नन्रु नन्दम् विऱ्ऱॊळि लाऱ्ऱ लम्मा 2840

एऴ् उलकम् मुळुवतुम्–सातों लोक सारे; इन्नुम्–अब भी; मुरै मुरै–क्रम से; चॅयकै मेल्–अपने-अपने कृत्य पर; मीण्टुम्–फिर; ऍऴुवते–उठें (शाश्वत रहें); इन्नम् अमरर् इरुप्पते–अब भी देव रहें; अरम् उण्टु ऍन्रु–धर्म है यह सोचकर; तॊऴुवते–वंदना हो; मेकम् मारि चॊरिवते–मेघ-वर्षा हो; नाम्–हम; चोर्न्तु–निर्बल हो; वीऴ्न्तु अऴुवते–गिरकर रोयें; नम् तम्–हमारे; विल् तॊऴिल् आऱ्ऱल्–धनु-कर्म का बल; नन्रु–बड़ा अच्छा रहा; अम्मा–शाबाश । २८४०

क्या ये सातों लोक अब भी अपने-अपने यथाक्रम कार्य करते रहें ? देवों को भी जीने दिया जाय ? धर्म का अस्तित्व मानकर उसकी वन्दना हो ? मेघ भी वर्षा करते रहें ? और हम निर्बल होकर गिरें और रोते रहें? अहा! हमारे धनुकर्म का प्रभाव भी बड़ा अच्छा रहा! मैया । २८४०

पुक्किव्वू रिमैप्पिन् मुन्नम् बॊडिपडुत् तरक्कन् पोन
तिक्कॅलाञ् जुट्टु वानो रुलहॅलान् दीय्त्तुत् तीर्क्कत्
तक्कनाङ् गण्णो राऱ्ऱित् तलैशुमन् दिरुकै नाऱ्ऱित्
तुक्कमे युळप्प मॅन्राऱ् चिरुमैयाय्त् तोन्रु मन्रे 2841

इ ऊर् पुक्कु–इस (लंका) नगर में घुसकर; इमैप्पिन् मुन्नम्–पलक भर की देरी के अन्दर; पॊटि पटुत्तु–खाक बनाकर; अरक्कन् पोन–जिनमें राक्षस गया; तिक्कु ऍलाम्–उन सारी दिशाओं को; चुट्टु–जलाकर; वानोर् उलकॅलाम्–देवों के सभी लोकों को; तीय्त्तु–जलाकर; तीर्क्कत् तक्क–समाप्त करने में शक्य हम; कण्णीर् आऱ्ऱि–आँसू बहाकर; इरु कै–दोनों हाथों को; तलै चुमन्तु–सिर पर ढोकर; नाऱ्ऱि–(सिर) लटकाकर; तुक्कमे उऴप्पम्–दुःख ही भोगेंगे; ऍन्राल्–तो; चिरुमैयाय् तोन्रुम् अन्रे–लघुता न दिखेगी । २८४१

इस नगर में प्रवेश करके पल भर में खाक बना देंगे। इन्द्रजित् जिन दिशाओं में गया हो उन सभी दिशाओं को जला देंगे। देवलोकों को राख बना देंगे। ऐसा कर सकनेवाले हम आँसू बहाते हुए सिर पर हाथ धरकर सिर को लटकाते हुए दुःख भोगते रहें तो छुटपन नहीं होगा क्या ? । २८४१

अङ्गुमिव् वरमे नोक्कि यरशिळन् दङवि यॅय्दि
मङ्गैयै वञ्जन् पऱ्ऱ वरम्बळि यादु वाळ्न्देम्

इङ्गुमित् तुन्ब मॆय्दि यिरुत्तुमे लॆळिमै नोक्किप्
पॊङ्गुवन् ऱळैयिऱ् पूट्टि याट्चॆयप् पुहल्व रन्ऱे 2842

अङ्कुम्–वहाँ (अयोध्या में) भी; इ अऱमे नोक्कि–यही धर्म देखकर; अरचु इऴन्तु–राज्य खोकर; अटवि ऎय्ति–अटवी आकर; मङ्कैये–देवी को; वञ्चन्–वंचक; पऱ्ऱ–पकड़ ले गया और; वरम्पु अऴियातु–धर्म का उल्लंघन किये विना; वाऴ्न्तेम्–रहे; इङ्कुम्–यहाँ भी; इ तुन्पम् ऎय्ति–यह दुःख पाकर; इरुत्तुमेल्–रह जायँगे तो; ऎळिमै नोक्कि–दैन्य देखकर; पॊङ्कु वन् तळैयिल्–साफ़ दिखनेवाली कठोर हथकड़ियों से; पूट्टि–बाँधकर; आळ् चॆय–दासता करने को; पुकल्वर् अन्ऱे–कहेंगे न। २८४२

अयोध्या में क्या हुआ? इसी धर्म का विचार करके राज्य खोया। जंगल गये। रावण देवी को ग्रस ले गया। पर हम धर्म का उल्लंघन किये विना रहते रहे! यहाँ भी वही बात! दुःख भोगते रहें तो हमारी दीनता देखकर शत्रु लोग हथकड़ी-बेड़ी बनाकर हमें गुलाम नहीं बना लेंगे क्या? । २८४२

मत्ऱलङ् गोदै याळैत् तम्मॆदिर् कॊणर्न्दु वाळिन्
कॊन्ऱवर् तम्मैक् कॊल्लुङ् गोळिला नाणङ् गूरप्
पॊन्ऱिन रॆन्ब रावि पोक्किनाऱ् पॊदुमै पार्क्किन्
अन्ऱिदु करुम मॆन्नी ययर्हिन्ऱ दऱिवि लार्पोल् 2843

आवि पोक्किताल्–प्राण छोड़ दें तो; मत्ऱल् अम् कोतैयाळै–सुगन्धपूर्ण केश वाली को; तम् ऎतिर् कॊणर्न्तु–उनके ही समक्ष लाकर; वाळिऩ् कॊन्ऱवर् तम्मै–तलवार से काटनेवालों को; कॊल्लुम् कोळ् इला–मारने की शक्ति उनमें जो नहीं थी; नाणम्–उस शरम के; कूर–बढ़ने से; पॊन्ऱितर्–मरे; ऎन्पर्–ऐसा लोक कहेंगे; पॊतुमै पार्क्किन्–साधारण धर्म देखें तो; इतु करुमम् अन्ऱु–यह करणीय नहीं; अऱिविलार् पोल्–बुद्धिहीनों के समान; नी–आप; अयर्किन्ऱतु–श्लथ पड़ते हैं; ऎन्–क्यों। २८४३

समझिए कि मर गये। तो लोग क्या कहेंगे? सुगन्धपूर्ण केश वाली पत्नी को उनके ही सामने लाकर जिसने तलवार से काटकर मारा, उस राक्षस के मारने की शक्ति नहीं थी। शरम बढ़ गयी; इसलिए वे मर गये। यही कहेंगे। साधारण रीति से देखें तो यह करणीय नहीं! बुद्धिहीनों के समान आप दुःख-शिथिल क्यों होते हैं? । २८४३

अनैयन विळवल् कूऱ वरुक्कनृशे ययर्हिन् ऱानोर्
कनवॊकण् डनन्ने यॆन्नक् कदुमॆन वॆऴुन्दु काणुम्
विनैयिनि युण्डे वल्लै विळक्किन्वोऴ् विट्टि लॆन्न
मनैयिडै यरक्कन् मार्बिऱ् कुदित्तुमनाम् वम्मि नॆन्ऱान् 2844

इळवल्–लघुराज के; अन्नैयत–वैसी बातें; कूऱ–कहने पर; अयर्किन्ऱान्–जो शिथिल था; अरुक्कन् चेय्–अर्कपुत्र; ओर् कनवु–एक स्वप्न; कण्टवर् ऎन्न–देखनेवाले के ही समान; कतुम् ऎन–झटिति; ऎऴुन्तु–उठकर; वल्लै–जल्दी; विळक्किन् वीऴ्–दीप में गिरे; विट्टिल् ऎन्न–पतंग के समान; मत्तै–पत्नी देवी को; इट्टै–त्रास देनेवाले; अरक्कन्–राक्षस (रावण के); मार्पिल्–वक्ष में; नाम् कुतित्तुम्–हम कूदेंगे; वम्मिन्–आओ; काणुम् वित्ते–सोचने का कार्य; इनि उण्टो–अब होगा क्या; ऎन्ऱान्–बोला। २८४४

लक्ष्मण की बातों को सुग्रीव ने, जो अशक्त हो पड़ा हुआ था, सुना। तो स्वप्न से जागनेवाले के समान वह झट उठा और बोला। दीप में पतंग के समान हम राक्षस की छाती पर कूदेंगे जिसने हमारे प्रभु की पत्नी को संकट दिया है! आओ सब। फिर कोई अन्य काम है जो हम करें? । २८४४

इलङ्गैयै यिडन्दु वॆङ्ग णिराक्कद रॆन्गिन् ऱारैप्
पॊलङ्गुऴै महळि रोडुम् बानुहर् पुदल्व रोडुम्
कुलङ्गळो डडङ्गक् कॊन्ऱु कॊडुन्दॊऴिल् कुऱित्तु नम्मेल्
विलङ्गुवा रॆन्निऱ् ऱेवर् विण्णैयु निलत्तु वीऴ्त्तुम् 2845

इलङ्कैयै इटन्तु–लंका को उखाड़ लेकर; वॆम् कण्–क्रूर आँखों वाले; इराक्कतर् ऎन्किन्ऱार्–राक्षस नामधारी सभी को; पॊलम् कुऴै–सुन्दर कुंडलधारिणी; मकळिरोटुम्–स्त्रियों के साथ; पाल् नुकर्–दूध-पीते; पुतल्वरोटुम्–बच्चों के साथ; कुलङ्कळोटु–कुल के साथ; अटङ्क कॊन्ऱु–पूरा मारकर; कॊटु तॊऴिल् कुऱित्तु–हमारा क्रूर काम देख; नम् मेल्–हमारे; तेवर् विलङ्कुवार् ऎन्निल्–आड़े आयेंगे तो; विण्णैयुम्–आकाश को भी; निलत्तु–भूमि पर; वीऴ्त्तुम्–गिरा देंगे। २८४५

वह आगे बोला— लंका को उखाड़ देंगे। क्रूराक्ष राक्षसों को, उनकी सुन्दर कुंडलधारिणी स्त्रियों को और उनके दूध-पीते बच्चों को कुल-सहित मार डालेंगे। हमारा यह क्रूर काम देखकर देवलोग आड़े आयेंगे तो उनके लोकों को भी भूमि पर गिरा देंगे। २८४५

अऱङ्गॆडच् चॆय्दु मॆन्ऩ दमैन्दन माहि नैय
पुऱङ्गिडन् दुऴप्प दॆन्ऩे पॊरुदिनिप् पुवन मून्ऱुम्
कऱङ्गॆनत् तिरिन्दु तेवर् कुलङ्गळैक् कट्टु मॆन्ऩा
मऱङ्गिळर् वयिरत् तोळा ऩिलङ्गॆमेल् वाव लुऱ्ऱान् 2846

मऱम् किळर्–वीरता-दर्शक; वयिरम् तोळान्–वज्र-सम कंधों वाले; ऐय–प्रभु; अऱम् कॆट–धर्म बिगाड़ने (का काम); चॆय्तुम् ऎन्पतु–करना जो है उसमें; अमैन्ततम् आकिन्–लग जायँ तो; पुऱम् किटन्तु–(लंका के) बाहर रहकर; उऴप्पतु ऎन्ने–दुःख क्यों करते रहें; इनि–आगे; पुवतम् मून्ऱुम् पॊरुतु–तीनों भुवनों

से लड़कर; कडड़कु अॅन्न–पतंग के समान; तिरिन्तु–घूमकर; तेवर् कुलङ्कळै–देववर्गों को; कट्टुम्–छिन्न-भिन्न कर देंगे; अॅन्ना–कहते हुए; इलङ्कै मेल्–लंका पर; वावल् उऱ्ऱान्–झपटने लगा। २८४६

विक्रम-शोभित वज्रस्कंध सुग्रीव ने श्रीराम से कहा कि प्रभु! धर्म बिगाड़ने पर तुले ही हैं तो (लंका के) बाहर पड़े रहकर क्षुब्ध रहें क्यों? अभी तीनों लोकों पर आक्रमण करेंगे, पतंग के समान घूमेंगे और देव वर्गों को मिटा-हटा देंगे। यह कहते हुए वह लंका पर झपटने लगा। २८४६

मऱ्ऱैय वीर रॅल्ला मन्नविन् मुन्नन् दावि
अॅऱ्ऱुदु मरक्कर् तम्मै यिल्लोडु मडुत्तॅन् ऱेहल्
उऱ्ऱन रुऱ्द लोडु मुणर्त्तुव दुळदॅन् ऱुन्नाच्
चॊऱ्ऱन ननुमन् वञ्ज नयोत्तिमेऱ् पोन शूळ्च्चि 2847

मऱ्ऱैय–अन्य; वीरर् अॅल्लाम्–सभी वीर; मन्नविन् मुन्नम् तावि–राजा के पहले लपककर; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; इल्लॊटुम् अॅटुत्तु–घरों के साथ उठाकर; अॅऱ्ऱुतुम्–फेंक देंगे; अॅन्ऱु–कहते हुए; एकल् उऱ्ऱतर्–चलने लगे; उऱ्ऱलोटुम्–जब चलने लगे तब; अनुमन्–हनुमान (ने); उणर्त्तुवतु उळतु–समझाने को है; अॅन्ऱु उन्ना–ऐसा सोचकर; वञ्चन्–वंचक का; अयोत्ति मेल्–अयोध्या की ओर; पोन चूळ्च्चि–जाने की दुष्ट योजना; चॊऱ्ऱनन्–बताया। २८४७

तब अन्य वीर भी यह कहते हुए उछलने लगे कि हम अपने राजा के पूर्व ही झपटेंगे और राक्षसों को उनके घरों के साथ उठाकर फेंक देंगे। जब वे झपटने लगे तब हनुमान ने कहा कि अब समझने की एक बात है। उसने वंचक इन्द्रजित् के अयोध्या की ओर जाने का बुरा संकल्प बताया। २८४७

तायरुन् दम्बि मारुन् दवम्बुरि नहरञ् जारप्
पोयिन नॅन्ऱ माऱ्ऱञ् जॅवित्तुळै पुहुद लोडुम्
मेयिन वडुवि निन्ऱ वेदनै कनैय वॅन्न
तीयिडैत् तणिन्द दॅन्नच् चीदैपाऱ् ऱुयरन् दीर्न्दान् 2848

तायरुम् तम्पि मारुम्–माताएँ और भाई लोग; तवम् पुरि–जहाँ तपस्या करते हैं; नकरम्–उस नगर की ओर; चार–जाने (की इच्छा से); पोयिनन्–गया; अॅन्ऱ माऱ्ऱम्–इस कथन के; चॅवि तुळै पुकुतलोटुम्–कर्णरन्ध्र में घुसते ही; मेयिन वटुविन् निन्ऱ–हुए व्रण के कारण रही; वेतनै–पीड़ा; कनैय वॅन्न–बहुत ही तपी; तीयिटै–आग में; तणिन्ततु–शान्त हो गयी; अॅन्न–जैसे; चीतै पाल्–सीता के कारण उठे; तुयरम् तीर्न्तान्–दुःख से निवृत्त हुए। २८४८

"माताएँ, भाई आदि जहाँ तपस्या कर रहे हैं, उस नगर की ओर गया है इन्द्रजित्" —यह कथन ज्योंही श्रीराम के कर्णरंध्र में घुसा, त्योंही उनका सीता-सम्बन्धी दुःख इस प्रकार उन्हें छोड़ गया जैसे व्रण की पीड़ा गम्भीर आग की पीड़ा में अदृश्य हो जाती है! । २८४८

अऴन्दिय पालिन् वॅळ्ळत् ताऴिनित् ऱतन्दर् नीङ्गि
ॲऴन्दत्त नॆत्नत् तुत्बक् कडलिनित् ऱेऱि याऱाक्
कॊऴुन्दुरु कोबत् तोयु नडुक्कमु मत्तत्तैक् कूड
उऴुन्दुरुळ् पॊऴुदुन् दाऴा विरॅवितान् मरुक्क मुऱ्ऱात् 2849

पालित् अऴुन्तिय–क्षीर के बने गह्वरे; वॅळ्ळत्तु–जल के; आऴि नित्रु–समुद्र से; असनृतर् नीङ्कि–निद्रा त्यागकर; ॲऴुन्ततत् ॲंतृत–(श्रीविष्णु) उठे, वैसे; तुत्पक् कटलित् नित्रु एऱि–दुःख-सागर से ऊपर चढ़कर; आऱा–अदम्य; कॊऴुन्तु उरु–ज्वालायुक्त; कोपम् तीयुम्–कोपाग्नि और; नटुक्कमुम्–कंपन; मत्तत्ते कूट–मन में मिल उठे, इसलिए; उऴुन्तु उरुळ् पॊऴुतुम्–उड़द के लुढ़कने की देर भी; ताऴा विरॅवितान्–विलम्ब न करके वेगवान श्रीराम; मरुक्कम् उऱ्ऱात्–क्षुब्ध हुए। २८४९

श्रीराम ऐसे ही दुःख-सागर से बाहर आये जैसे क्षीरसागरशय्या से श्रीविष्णु निद्रा त्यागकर आते हों। उनमें अदम्य ज्वालासहित कोपाग्नि उठी और कंपन हुआ। उड़द की लुढ़कती जितनी देर भी विलंब न करने-वाले गतिमान श्रीराम दुःखभ्रमित हो गये। २८४९

तीरुमिच् चीदै योडु मॆत्गिल दॆत्ऱन् ऱीमै
वेरोडु मुडिपप् दाह विळैन्ददु वेऱु मित्तुम्
आरोडुन् दॊडरु मॆत्ब दऱिहिले त्तिदत्ते येय
पेरिड ववदि युण्डो वॆम्बियर् पिऴैक्कित् ऱारो 2850

ऐय–बाबा; ॲत्ऱत् तीमै–मेरा पाप; इ चीतैयोटु–इस सीता के साथ; तीरुम् ॲत्किलतु–रह जायगा नहीं दिखता; वेरॊटुम् मुटिप्पताक–निर्मूल कर देगा; विळैन्ततु–ऐसा बना है; इत्तम्–और; वेऱु यारॊटु–अन्य किसको लेकर; तॊटरुम्–आगे बढ़ेगा; ॲत्पतु–यह; अऱिकिलेत्–नहीं जानता; इतत्ते पेरिट–इसको दूर करने को; अवति उण्टो–अवधि है क्या; ॲम्पियर्–मेरे छोटे भाई; पिऴैक्कित्ऱारो–जी सकेंगे क्या। २८५०

उन्होंने विभीषण से कहा कि बाबा ! मेरा पाप इस सीता को लेकर पूरा होता नहीं दीखता, मुझे निर्मूल करने पर तुला लगता है। और किस पर लगा आयगा ? —यह नहीं जानता। क्या इस आफ़त को दूर करने के लिए अवधि भी बची है ? मेरे भाई लोग बच सकेंगे ? । २८५०

नितैवदन् मुन्नम् जॆल्लु मात्तत्ति नॆडिदु पोत्तान्
वितैयोरु कणत्तित् मुऱ्ऱि मीळहित्ऱात् विनैयेन् वन्द
मत्तैपोडि पट्ट दङ्गु माण्डवु तार मोण्डुम्
ॲत्तैयत्त तॊडरु हित्ऱ दुणर्हिले त्तिऱप्पुङ् गाणेन् 2851

नित्तैवतन् मुन्नम्–(मन की गति से भी अधिक वेग से) सोचने के पहले ही; नॆटितु चल्लुम्–वेग से जानेवाले; मात्तत्तित्–यान पर; पोत्तान्–जो गया वह;

और कणत्तिन्–एक क्षण में; वित्तै मुड़्ड्रि–कार्य साधकर; मीळ्किन्ड्रान्–लौट आता है; अङ्कु–वहाँ; वित्तैयेन्–पापी मैं; वन्त–जिसमें पैदा हुआ वह; मतै–घर; पोटि पट्टतु–धूल बना; ईण्टुम्–यहाँ भी; तारम्–पत्नी; माण्टतु–मर गयी; अंतैयत–क्या-क्या; तोटरुकिन्ड्र–लगे आयेंगे; उणर्किलेन्–जान नहीं पाता; इड्रप्पुम् काणेन्–मृत्यु भी नहीं देखता। २८५१

इन्द्रजित् चित्त की तेज़ी से भी अधिक तेज़ी से जानेवाले यान पर गया है। वह क्षण में अपना कार्य साधकर लौट आयगा। वहाँ अयोध्या में मुझ पापी का जन्म का घर खाक बन गया। यहाँ भी सीता मर गयी। आगे क्या-क्या लगे आयँगे ? —यह मैं नहीं जानता। मरण भी तो आता नहीं दिखता। २८५१

तादैक्कुञ् जडायु वान् तन्दैक्कुन् दमिय ळाय
शीदैक्कुङ् गूड्ड्रङ् गाट्टित् तीर्न्दिल दौरुवन् ड्रीमै
पेदैप्पॆण् पिड्न्दु पॆड्ड् तायर्क्कुम् बिळ्ळैप्पिल् लाद
कादड्रम् बियर्क्कु मूर्क्कु नाट्टिड्कुङ् गाट्टिड् ड्रन्ड्रे 2852

ओरुवत् तीमै–अप्रतिम एक मेरा पाप; तातैक्कुम्–मेरे पिता का और; चटायुवान् तन्तैक्कुम्–पिता-सम जटायु का; तमियळाय–अकेली रही; चीतैक्कुम्–सीता का; कूड्ड्रम् काट्टि–यम बनकर; तीर्न्तिलतु–विरत नहीं हुआ; पेतैप् पॆण् पिड्न्तु–अबोध स्त्री के रूप में प्रकट होकर; पॆड्ड् तायर्क्कुम्–जननी माताओं का; पिळ्ळैप्पु इल्लात–दोषहीन; कातल् तम्पियर्क्कुम्–प्यारे भाइयों का; ऊर्क्कुम्–नगर का; नाट्टिड्कुम्–और देश का भी; काट्टिड्ड्–(यम दिखा) गया। २८५२

अपूर्व मेरे पाप ने मेरे पिताजी को, मेरे पिता-तुल्य जटायु को और निस्सहाय सीता को मृत्यु दिलायी। वहाँ तक वह नहीं रुका। स्त्री के रूप में प्रगट होकर वह मेरी जननी माताओं को, अनिंद्य प्यारे लघु सहोदरों को और मेरे नगर पर मौत ला चुका है। २८५२

उड्ड्रदौन् ड्रुणर हिल्ला रुणर्न्दुवन् दुरुत्ता रेनुम्
वॆड्ड्रिवॆम् बाशम् वीशि विशित्तवन् कौन्ड्रु वीळ्त्ताल्
मड्ड्रॆवॆम् बुळ्ळिन् वेन्दत् वरुहिलन् मरुत्तु नल्हक्
कौड्ड्रमा रुदियङ् गिल्लै यारुयिर् कॊडुक्कर् पालार् 2853

उड्ड्रतु ऑन्ड्रु–जो हुआ वह कुछ; उणरकिल्लार्–जो नहीं समझ सके वे (भरत-शत्रुघ्न); उणर्न्तु वन्तु–समझकर आकर; उरुत्तारेनुम्–(इन्द्रजित् पर) क्रोध करें तो भी; अवत्–वह; वॆड्ड्रि–विजयदायी; वॆम्–भयंकर; पाचम्–पाश (नागास्त्र) को; वीचि–फेंककर; विचित्तु–बाँधकर; कौन्ड्रु–मारकर; वीळ्त्ताल्–गिरा दे तब; वॆम् पुळ्ळिन् वेन्तन्–भयंकर पक्षीराज (गरुड़); वरुकिलन्–न आयगा; मरुन्तु नल्क–औषध देने; कौड्ड्र मारुति–विजयी मारुति; अङ्कु इल्लै–वहाँ नहीं; उयिर् कॊटुक्कर् पालार्–उन्हें जीवन दिला देंगे; यार्–कौन। २८५३

बीती बातें जो न जानते हैं वे भरत और शत्रुघ्न बातें अब जान लें और आकर लड़ें भी, तो वह इन्द्रजित् विजयदायी नागपाश चलाकर मार गिरा देगा। उस हालत में परंतप पक्षीराज गरुड़ नहीं आयगा ! न मारुति ही वहाँ है जो ओषधि ला दे। उन्हें जीवन दिलाएगा कौन ? । २८५३

आहमा नहरज् जार वल्लैयित् वयिरत् तोळाय्
एहुवा तुबाय मुण्डे लियम्बुदि नित्र वॅल्लाम्
शाहमर् रिलङ्गैप् पोरुन् दविर्हवच् चळक्कन् कण्गळ्
काहमुण् डदर्पिन् मोण्डु मुडिप्पनॅन् करुत्तॅ यॅन्रान् 2854

वयिरम् तोळाय्–वज्रस्कंध; माक मा–बहुत बड़े; नकरम्–नगर (अयोध्या) को; वल्लैयित् चार–जल्दी पहुँचने के लिए; एकुवात्–जाने का; उपायम् उण्टेल्–उपाय हो तो; इयम्पुति–कहो; नित्र अॅल्लाम्–बाक़ी जो है वह सब; चाक–मिट जाय; इलङ्कै पोरुम्–लंका का युद्ध भी; तविर्क–रुक जाय; अ चळक्कन्–उस दुष्ट को; कण्कळ्–आँखों को; काकम् उण्टतर् पिन्–कौओं के खाने के बाद; मीण्टु–लौट आकर; अॅन् करुत्तै अॅल्लाम्–अपना सारा सोचा; मुटिप्पन्–पूरा कर दूंगा। २८५४

वज्रस्कंध ! उस बड़े नगर अयोध्या जल्दी जाने का कोई उपाय हो तो कहो। इधर जो बचा है वह मर जाय तो जाय ! लंका का युद्ध भी टले ! वहाँ उस दुष्ट की आँखों को कौए खा जायँ, फिर इधर लौट आऊँगा और अपना मनोरथ पूरा कर दूंगा। २८५४

अव्विडत् तिळव लैय परदनै यमरिर् राक्क
अॅव्विडर् कुरियात् पोन विन्दिर शित्ते यन्रु
तॅव्विडत् तमैयित् मुम्मै युलहमुन् दीन्द रावो
वॅव्विडर्क् कडलित् वेहल् केळॅन विळम्ब लुर्रान् 2855

अव् विटत्तु–तब; इळवल्–लक्ष्मण; ऐय–स्वामी; परतनै अमरिल् ताक्क–भरत का युद्ध में सामना करने; पोन इन्तिरचित्तु–जो गया वह इन्द्रजित्; अॅव्विटर्कु–बाण चलाने के लिए; उरियान् अन्रु–योग्य (समर्थ) है ही नहीं; तॅव् इटत्तु–(वह भारत) लड़ने में; अमैयित्–लग जाय तो; मुम्मै उलकमुम्–तीनों विध लोक; तीन्तु–जलकर; अरावो–मिटेंगे नहीं क्या; वॅम्मै–संतापक; इटर् कटलिल् वेकल्–संकट-सागर में मत पड़ें; केळ्–सुनें; अॅन–कहकर; विळम्पल् उर्रान्–कहने लगे। २८५५

तब लघुराज ने श्रीराम से कहा कि प्रभु ! भरत को मारने जो अयोध्या गया है, वह उन पर बाण चलाने योग्य है ही नहीं। भरत लड़ने लगें तो क्या तीनों लोक जलकर नहीं मिटेंगे ? आप कठोर दुःख-सागर में मग्न न हों। मेरी बातें सुनिए। वह आगे यों बोला। २८५५

तीक्कॊण्ड वञ्जन् वीशत् तिशैमुहत् पाशन् दीण्डि
वीक्कुण्डु वीऴ यानो परदनम् वॆय्य कूऱ्ऱैक्
कूय्क्कॊण्डु कुत्तुण् डवनान् कुलत्तोडु निलत्त नादल्
पोय्क्कण्डु कोडि यन्ऱे यॆन्ऱनन् पुऴुङ्गु हिन्ऱान् 2856

पुऴुङ्कुकिन्ऱान्–विक्षुब्ध (लक्ष्मण) ने; ती कॊण्ट–बुराई से भरे; वञ्चन्–वंचक के; तिचै मुकन् पाचम्–ब्रह्मास्त्र (पाश); वीच–चलाने पर; तीण्टि–मुझे ग्रसकर; वीक्कुण्टु वीऴ–बाँधने पर गिरने के लिए; परततुम् यानो–क्या भरत भी मैं (लक्ष्मण) हैं; वॆय्य कूऱ्ऱै–भयंकर मृत्यु को; कूय्क्कॊण्टु–बुला लेकर; कुत्तुण्टु–उससे आहत होकर; अन्नान्–वह (इन्द्रजित्); कुलत्तोटु–परिवार के साथ; निलत्तन् आतल्–धराशायी बना रहेगा वह; पोय्–आप ही जाकर; कण्टु कोटि–देख लें; ऎन्ऱनन्–कहा। २८५६

व्याकुलमन लक्ष्मण ने कहा कि क्या भरत भी 'मैं' (लक्ष्मण) हैं कि नृशंस वंचक राक्षस ब्रह्मास्त्र चलाए और वे बद्ध होकर गिर जायँ ? इसके विपरीत उनसे आहत होकर इन्द्रजित् यम की दुहाई देता हुआ अपने परिवारों के साथ धराशायी होगा और आप स्वयं जाकर उसे देखेंगे। २८५६

अक्कणत् तनुम निन्ऱा नैयवॆन् ऱोळि नाहक्
कैत्तुणैत् तलत्ते याह वेऱुदिर् काऱ्ऱुन् दाऴ
विक्कणत् तयोत्तिमूदू रॆयदुवॆ निडमुण् डॆन्निल्
तिक्कनैत् तिनिलुञ्जॆल्वॆ नियाने पोय्प् पहैयुन् दोर्वॆन् 2857

अ कणत्तु–उस क्षण; निन्ऱान्–वहाँ स्थित; अनुमन्–हनुमान; ऐय–स्वामी; ऎन् तोळिन् आक–मेरे कंधे पर या; कै तलत्तिन् आक–करतल पर; एऱुतिर्–चढ़ जायें; काऱ्ऱुम् ताऴ–पवन भी पिछड़ जाय ऐसा; अयोत्ति मूतूर्–अयोध्या की पुरानी नगरी; इ कणत्तु–इसी क्षण में; ऎय्तुवॆन्–पहुँचूंगा; इटम् उण्टु ऎन्निल्–मौका रहा तो; तिक्कु अनैत्तिनिलुम्–सारी दिशाओं में; चॆल्वॆन्–जाऊँगा; याने पोय्–मैं खुद जाकर; पकैयुम् तोर्वॆन्–शत्रु को मिटा दूंगा। २८५७

तब हनुमान ने, जो वहाँ खड़ा रहा, कहा कि प्रभु ! आप दोनों चाहें तो मेरे दोनों कंधों पर या करतलों पर चढ़ बैठिए। मैं पवन से भी तेजी से इसी क्षण अयोध्या ले चलूंगा। आवश्यकता पड़े तो सारी दिशाओं में जाऊँगा। मैं अकेले जाकर शत्रु का संहार कर मिटा दूंगा। २८५७

कॊल्लवन् दानै नीदि कूऱिनॆन् विलक्किक् कोळवान्
शॊल्लवुञ् जॊल्लि निन्ऱेन् कॊन्ऱपिन् ऱुन्ब मॆन्नै
वॆल्लवुन् दरैयिन् वीऴवुर् ऱुणर्न्दिलॆन् विरैन्दु पोनान्
इल्लैयॆन् ऱुळदेर् ऱीयोन् पिऴैक्कुमो विऴुक्क मुऱ्ऱेन् 2858

कॊल्ल वन्तानै–मारने आये उसे; विलक्कि–रोककर; कोळवान्–अपने पक्ष

में करने के लिए; नीति कूऱितेन्–न्याय-वाद किया; चॉल्लवुम्–कहने योग्य बातें; चॉल्लि निन्ऱेन्–कहता रहा; कॉन्ऱपिन्–उसके मारने के बाद; तुन्पम् ॲन्नुं वॅल्लवुम्–संताप के मुझे अपने वश में कर लेने से; तरैयिल् वीऴ्वुऱ्ऱु–धरती पर गिरकर; उणर्न्तिलॅन्–कुछ समझ नहीं पाया; विरैन्तु पोतान्–सवेग चला गया; इऴुक्कम् उऱ्ऱेन्–चूक गया; इल्लै ॲन्ऱु उळतेल्–ऐसा नहीं रहा तो; तीयोन् पिऴैक्कुमो–दुष्ट जिएगा क्या। २८५८

मैंने सीताजी का वध करने जो आया उसे अपनी ओर कर लेने के विचार से उसे नीति की बातें बतायीं। हितोपदेश करता खड़ा रह गया। सीताजी के वध के बाद मैं दुःख से अभिभूत हो गया और भूमि पर गिरकर बेसुध हो गया। तब तक वह तेज़ चला गया। मैं चूक गया। नहीं तो दुष्ट बच पायगा क्या ? । २८५८

मनत्तिन्मुन् शॅल्लु मानम् बोयदु वऴिय दाह
निनैप्पिन्मु नयोत्यि यॅय्दि वरुनॅऱि पार्त्तु निऱ्पॅन्
इनिच्चिल ताऴ्प्प दॅन्ने येऱुदि रिरण्डु तोळुम्
बुनत्तुळाय् मालै मार्बीर् पुट्पहम् बोदन् मुन्नन् 2859

पुनम् तुळाय्–बाग़ में उत्पन्न तुलसी की; मालै मार्पीर्–माला से अलंकृत वक्ष वाले; मनत्तिन् मुन्–मन से भी तीव्रगति से; चॅल्लुम् मानम्–जानेवाले पुष्पकयान के; पोयतु–जाने के; वऴियतु आक–मार्ग से; निनैप्पिन् मुन्–सोचने के पहले; अयोत्ति अय्ति–अयोध्या पहुँचकर; वरुम् नॅऱि–उसके आने की राह; पार्त्तु–देखता; निऱ्पॅन्–खड़ा रहूँगा; इनि–अब; चिल–कुछ; ताऴ्प्पतु ॲन्ने–बिलम्ब करना क्यों; पुट्पकम् पोतल् मुन्नम्–पुष्पक के जाने से पहले; इरण्टु तोळुम्–दोनों कंधों पर (दोनों); एऱुतिर्–चढ़ जायें। २८५९

बाग़ में उत्पन्न तुलसी की माला-धारी ! मैं उसी मार्ग में सोचने के पहले ही अयोध्या जाऊँगा, जिससे मन की गति से भी तेज़ पुष्पक में इन्द्रजित् गया है और उसके ताक में खड़ा रहूँ। फिर कुछ विलम्ब क्यों ? पुष्पक के जाने से पहले (जाने हेतु) आप दोनों मेरे कंधों पर चढ़ जाइए। २८५९

एऱुदि रॅन्न वीर रॅऴुदलु मिऱैञ्जि योण्डुक्
कूऱुव दुळदु तुन्बङ् गोळुऱक् कुलुङ्गि युळ्ळम्
तेऱुव दरिदु शॅय्है मयङ्गितन् ऱिहैत्तु निन्ऱेन्
आऱ्ऱ नदनै येय मायमॅन् ऱुयिर्क्किन् ऱेनाल् 2860

एऱुतिर् ॲन्न–सवार हों, कहने पर; वीरर् ॲऴुतलुम्–जब (दोनों) वीर उठे तब; इऱैञ्चि–विनय करके; ईण्टु–अब; कूऱुवतु उळतु–कहना है; तुन्पम् कोळ् उऱ–दुःख के ग्रसने से; कुलुङ्कि–व्यथित होकर; उळ्ळम् तेऱुवतु–सुलझना; अरितु–कठिन है; चॅय्कै मयङ्कितन्–कर्तव्यविमूढ़ हो; तिकैत्तु निन्ऱेन्–भ्रमित खड़ा

रह गया; ऐय–नाथ; अततै आट्रितत्–उस स्थिति से शान्त हुआ; मायम् ऍन्ड्र–माया कहकर; अयिर्क्किन्ड्रेन्–संशय करता हूँ। २८६०

जब हनुमान ने कहा कि चढ़िए, तो दोनों तैयार हो गये। तब विभीषण ने विनय के साथ निवेदन किया कि यहाँ कुछ कहना है! दुःख हावी आ गया था। उसके बुरे प्रभाव में सुलझा विचार रखना कठिन हो गया इसलिए भ्रमित खड़ा रह गया। अब उस स्थिति से स्वस्थिति में आ गया हूँ। अब मुझे संशय हो रहा है कि इन्द्रजित् का वह काम माया है। २८६०

पत्तिनि तन्नैत् तीण्डिप् पादहन् पडुत्त पोदु
मुत्तिरत् तुलहुम् वॅन्दु शाम्बराय् मुडियु मन्ड्रे
अत्तिऱ मान देनु मयोत्तिमेऱ् पोन तन्मै
शित्तिर मिदनै यॅल्लान् दॅरियलाञ् जिड्रिदु पोऴ्दिन् 2861

पत्तिनि तन्नै–पतिव्रता पत्नी को; तीण्टि–(हाथ से) स्पर्श करके; पातकन्–पापी इन्द्रजित् ने; पटुत्त पोतु–जब मारा तब; मु तिऱत्तु उलकुम्–तीनों विध लोक; वॅन्तु चाम्पराय् मुटियुम् अन्ड्रे–जलकर राख बन जायेंगे न; अ तिऱम् आततेनुम्–अगर वही हुआ तो भी; अयोत्ति मेल् पोन तन्मै–अयोध्या पर जाने का हाल; चित्तिरम्–चित्र (कल्पना, झूठ) है; इततै ऍल्लाम्–यह सब; चिड्रितु पोऴ्तिन्–कुछ ही देर में; तॅरियल् आम्–जानना हो सकेगा। २८६१

सीताजी पतिव्रता पत्नी हैं। उनको पातक इन्द्रजित् मारता तो तीनों लोक जलकर राख बनता। उसे संभव भी माना जाय पर अयोध्या जाने की बात बिलकुल माया है! यह सब हम कुछ ही देर में परखकर जान लेंगे। २८६१

इमैयिडै याह यान्पो येन्दिऴै यिरुक्कै यॅय्दि
अमैवुऱ नोक्कि युड्र दड्रिन्दुवन् दड्रैन्द पिन्नर्च्
चमैवदु शॅय्व दॅन्ऱु वीडणन् विळम्बत् तक्क
दमैहवॅन् ड्रिरामन् शॅान्ना नन्दरत् तवनुम् शॅन्ड्रान् 2862

इमै इटै आक–क्षण भर में; यान्–मैं; एन्तिऴै–उत्कृष्ट आभरणधारिणी (सीता) के; इरुक्कै पोय् ऍय्ति–स्थान जा पहुँचकर; अमैवु उऱ–सावधानी से; नोक्कि–देखकर; उड्रतु–घटी बात; अड्रिन्तु वन्तु–जान आकर; अड्रैन्त पिन्नर्–कहने के बाद; चमैवतु–उचित जो होगा वह; चॅय्वतु ऍन्ड्र–करें, ऐसा; वीटणन् विळम्प–विभीषण के कहने पर; इरामन्–श्रीराम ने; तक्कतु–योग्य है; अमैक–करो; ऍन्ड्रान्–कहा; अवनुम्–वह भी; अन्तरत्तु चॅन्ड्रान्–आकाश में गया। २८६२

क्षण भर में मैं उत्कृष्ट आभरणालंकृता सीताजी के स्थान पर जाकर सावधानी से देख-परख आऊँगा। मेरे लौटने के बाद निर्णय हो कि क्या

करना है। विभीषण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने कहा कि ठीक है; वही हो। विभीषण अंतरिक्ष में उठकर चला। २८६२

वण्डिऩ् दुरुवङ् गॊण्डाऩ् मातवऩ् मऩत्तिऩ् पोऩाऩ्
तण्डलै यिरुक्कै तऩ्ऩैप् पॊरुक्कॆऩच् चाऱ्ऩदु ताऩे
कण्डऩ ऩॆऩ्ब मऩ्ऩो कण्गळाऱ् करुत्ता लावि
उण्डिलै यॆऩ्ऩच् चॆय्द वोविय मॊक्किऩ् ऱाळै 2863

वण्टित्तु उरुवम् कॊण्टाऩ्–भ्रमर का रूप लिया; मातवऩ्–सम्मानित श्रीराम के; मऩत्तिऩ्–मन की भाँति; पोऩाऩ्–गया; तण्टलै–अशोक वन में; इरुक्कै तऩ्ऩै–(सीताजी के) रहने के स्थान को; पॊरुक्कॆऩ–झट; चाऱ्ऩ्तु–पहुँचकर; आवि उण्टु–प्राण हैं; इलै ऎऩ्ऩ–नहीं ऐसा; चॆय्त–रचित; ओवियम् ऒक्किऩ्ऱाळै–चित्र-सम रहनेवाली को; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; करुत्ताल्–मन से भी; ताऩे–स्वयं; कण्टऩऩ्–देखा; ऎऩ्प–कहते हैं। २८६३

भ्रमर के रूप में विभीषण श्रीराम के मन की उतनी तेज़ गति से अशोक वन में झट गया। उसने अपनी आँखों से सीताजी को देखा जिनकी स्थिति यह संशय पैदा कर रही थी कि वह जीवित हैं या प्राण नहीं हैं? और मन से भी परखा। ऐसा विद्वान कहते हैं। २८६३

तीर्प्पदु तुऩ्बम् याऩॆऩ् ऩुयिरॊडॆऩ् ऱुणर्न्द शिन्दै
पेर्प्पऩ विऩ्शॊ लाळत् तिरिशडै पेशप् पेर्न्दाळ्
कार्प्पॆरु मेहम् वन्दु कडैयुहङ् गलन्द दऩ्ऩ
आर्प्पॊलि यमुद माह वारुयि राऱ्ऱि ऩाळै 2864

याऩ्–मेरा; ऎऩ् तुऩ्पम् तीर्प्पतु–अपना दुःख मिटाना; उयिरॊटु–अपनी जान के साथ ही; ऎऩ्ऱु उणर्न्त–ऐसा समझनेवाले; चिन्तै–मन को; पेर्प्पऩ–बदल सकनेवाले; इऩ् चॊलाळ्–मधुर वचन की भाषिणी; अ तिरिचटै–उस त्रिजटा के; पेच–कहने से; पेर्न्ताळ्–अपना दुःख छोड़कर; कटै युकम्–युगान्त में; कार् पॆरु मेकम् वन्तु–काला बड़ा मेघ आकर; कलन्तततु अऩ्ऩ–मिल गया हो ऐसा; आर्प्पु ऒलि–नर्दन-स्वर के; अमुतमाक–अमृत बनते; आरुयिर् आऱ्ऱिऩाळै–अपने प्राणों को शांति देनेवाली को (देखा विभीषण ने)। २८६४

वे यही सोचकर दुःखी हो रही थीं कि मैं अपने दुःख से निवृत्ति अपनी मृत्यु के साथ ही पाऊँगी। उनके दुःख को मधुरभाषिणी त्रिजटा ने अपने हित-वचनों से बदल दिया। जब सीताजी उनके वचन से आश्वासन पाकर थोड़ा संभलीं तो युगांतकालीन बड़े मेघों के गर्जन के समान वानरों का घोष सुना। वह नर्दन उन्हें अमृत ही-सा बना। तभी वह अपने मन को शांत कर पायीं। उन्हें उस स्थिति में विभीषण ने देखा। २८६४

वञ्जनै यॆन्ब दुन्नि वानुय रुवहै वैहुम्
नॆञ्जित्त ताहि युळ्ळन् दळ्ळुर् लॊळिन्दु निन्ड्रान्
वॆञ्जिलै मैन्दन् पोना निहुम्बिलै वेळ्वि यानॆन्
ऱॆञ्जलि लरक्कर् शेनै यॆळुन्दॆळुन् देहक् कण्डान् 2865

वॆम् चिलै मैन्तन्–भयंकर धनुर्धर वीर इन्द्रजित्; निकुम्पिलै वेळ्वियान्–निकुंभिला यज्ञ-कार्य पर; पोतान्–गया; ऎन्ऱु–ऐसा अनुमान कर; ऎञ्चल् इल् अरक्कर् चेनै–अक्षय राक्षस-सेना; ऎळुन्तु ऎळुन्तु–उठ-उठकर; एक–जाती; कण्टान्–देखा; वञ्चनै ऎन्पतु–वंचक काम ऐसा; उन्नि–सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुरल्–चित्त का डांवा-डोल होना; ऒऴिन्तु–त्यागकर; वान् उयर्–आकाश तक ऊँचा; उवकै–आनन्द; वैकुम्–पूरित; नॆञ्चितन् आकि–मन वाला बनकर; निन्ऱान्–खड़ा रहा। २८६५

विभीषण ताड़ गया कि भयंकर धनुर्धर इन्द्रजित् निकुंभिला में याग करने गया है। (निकुंभिला एक पवित्र स्थान है। जहाँ एक मंदिर भी था।) उसने देखा कि अक्षय सेना के भाग भी उस तरफ़ जा रहे हैं। तब निश्चय हो गया कि सब माया था। उसका मन संशयरहित हो गया और "आकाश-जितने ऊँचे" संतोष से भर गया। वह उसी मुदित स्थिति में खड़ा रहा। २८६५

वेळ्विक्कु वेण्डर् पाल कलप्पैयुम् विऱहु नॆय्युम्
आळ्विक्कुन् दाळ्वि लॆन्नुम् वानवर् मरुक्कङ् गण्डान्
शूळ्वित्त वण्ण मीदो नन्ऱॆनत् तुणिवु कॊण्डान्
दाळ्वित्त मुडियन् वीरन् ऱामरैच् चरणन् दाळ्न्दान् 2866

वेळ्विक्कु–यज्ञ के लिए; वेण्टल् पाल–आवश्यक सामग्री; कलप्पैयुम्–हल; विऱकु–ईंधन; नॆय्युम्–और घी; ताऴ्विल्–हमको दुर्गति में; आऴ्विक्कुम्–डालेगी; ऎन्नुम्–कहनेवाले; वानवर्–देवों की; मरुक्कम्–बेचैनी; कण्टान्–(विभीषण ने) देखी; चूऴ्वित्त–वंचना से सम्पन्न; वण्णम्–हाल; ईतो–यही; नन्ऱु–अच्छा; ऎन–ऐसा; तुणिवु कॊण्टान्–मन में निर्णय कर लिया; वीरन्–श्रीवीरराघव के; तामरै चरणम्–कमल-चरणों में; ताऴ्वित्त–झुके; मुटियन्–सिरवाला होकर; ताऴ्न्तान्–प्रणाम किया। २८६६

देवलोग यह कहते हुए अति व्याकुलता दिखा रहे थे कि ये याग के लिए आवश्यक हल, ईंधन, घी आदि सामग्रियाँ हमें गर्त में मग्न करा देंगी। विभीषण ने आप ही आप कहा कि इन्द्रजित् की माया का हाल बड़ा अच्छा रहा। वह मन में कोई निर्णय करके वीर श्रीराम के चरण-कमलों में जाकर विनत हुआ। २८६६

इरुन्दन डेवि यानॆ यॆदिर्न्दन नॆन्ग णार
अरुन्ददि करपि नाळक् कळिवुण्डो वरक्क नम्मै

वरुन्दिड मायञ् जॆय्दु निहुम्बिलै मरुङ्गु पुक्कात्
मुरुङ्गळल् वेळ्वि मुट्रि मुदलऱ मुडिक्क मूण्डान् 2867

तेवि इरुन्ततळ्–देवी विद्यमान थीं; याने–मैंने ही; ऍन् कण् आर–अपनी आँखों से भरपूर; ऍतिर्न्ततन्–देखा; अरुन्तति–अरुन्धती-सी; कट्पिताळुक्कु–पातिव्रत्य वाली को; अळिवु उण्टो–नाश होगा क्या; अरक्कन्–राक्षस; नम्मै वरुन्तिट–हमें दुःखी करने; मायम् सॆय्तु–वंचना करके; मुरुक्कु अळल्–घनी आग में; वेळ्वि मुट्रि–यज्ञ सम्पन्न करके; मुतल् अऱ मुटिक्क–हमें समूल समाप्त करने पर; मूण्टान्–तुला है; निकुम्पिलै मरुङ्कु–निकुंभिला के पास; पुक्कान्–गया। २८६७

विभीषण ने श्रीराम से निवेदन किया कि मैंने अपनी आँखों को भरपूर तृप्ति देते हुए देख लिया कि देवी हैं। अरुन्धती-सी पतिव्रता का भी अंत हो सकता है क्या ? राक्षस इन्द्रजित् माया में हमें दुःखी बनाकर पक्की आग में याग संपन्न करके हमें निर्मूल करने का निर्णय लेकर निकुंभिला के पास गया है। २८६७

ऍन्ऱलु मुलह मेळु मेळ्मात् तीवु मॆल्लै
ऑन्ऱिय कडलह ळेळु मॊरुङ्गॊळुन् दार्क् कुमोवै
अन्ऱॆन वाहु मॆन्न वमररु मयिर्क्क वार्त्तुक्
कुन्ऱिन मिडियत् तुळ्ळि याडिन कुरक्किन् कूट्टम् 2868

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; कुरक्किन् कूट्टम्–वानर-दल; उलकम् एळुम्–सातों लोक; एळु मा तीवुम्–सातों बड़े द्वीप; ऍल्लै ऑन्ऱिय–जिनकी सीमाएँ एक-दूसरी से मिली हैं वे; कटल्कळ् एळुम्–सातों समुद्र; ऑरुङ्कु ऍळुन्तु–एक साथ उठकर; आर्क्कुम्–जो शोर मचाये; अन्ऱु आकुम् ऍन्न–उस दिन का है, यह कहकर; अमररुम् अयिर्क्क–देव भी भ्रम करें ऐसा; आर्त्तु–घोष उठाकर; कुन्ऱु इनम्–पर्वतकुल; इटिय–टूट जायें ऐसा; तुळ्ळि आटिन–उछले, कूदे और नाचे। २८६८

विभीषण के यह कहते ही वानरों ने ऐसा नर्दन किया कि देव भी यह संशय करने लगे कि सातों लोक, सातों द्वीप और सातों समुद्र, जिनकी सीमाएँ परस्पर मिली हुई थीं, एक साथ मिल उठकर जब गर्जन करते हैं, उस दिन का यह शोर है! वे शोर मचाते हुए उछले-कूदे और नाचे जिससे पर्वत-कुल ही टूट गये। २८६८

26. निहुम्बिलै याहप् पडलम् (निकुंभिला-याग पटल)

वीरनु मैयन् दीर्न्दान् वीडणन् ऱन्नै मॆय्यो
डार्वमु मुयिरु मॊन्ऱ वळुन्दुऱत् तळुवि यॆय
तीर्वदु पॊरुळो तुन्बम् नीयुळै तॆय्व मुण्डु
मारदि युळताञ् जॆय्द तवमुण्डु वलियु मुण्डाल् 2869

वीरतुम्–वीर श्रीराघव भी; ऐयम् तीर्न्तान्–संशयमुक्त हुए; वीटणन् तन्नै–विभीषण को; मॆय्योटु–अपने शरीर के साथ; आर्वमुम् उयिरुम् ऒन्ऱ–प्रेम और प्राण मिल जायँ, ऐसा; अऴुन्तुऱ तऴुवि–गाढ़ालिंगन करके; ऐय–पुरुष-श्रेष्ठ; नी उळ–तुम हो; तॆय्वम् उण्टु–ईश्वर है; मारुति उळन्–मारुति है; नाम् चॆय्त–हमारा किया हुआ; तवम् उण्टु–तप है; वलियुम् उण्टु–और बल भी है; तुन्पम् तीर्वतु–दुःख निवारना; पॊरुळो–कोई (कठिन) चीज़ है क्या। २८६६

पराक्रमी श्रीराम संशयमुक्त हुए। विभीषण को अपने शरीर के साथ प्रेम और प्राणों को एक करते हुए गाढ़ालिंगन करके श्रीराम ने कहा कि हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुम हो; ईश्वर हैं। मारुति है और हमारी की हुई तपस्या है। फिर दुःख का दूर होना कोई बड़ी चीज़ है क्या ? । २८६९

ऎन्ऱलु मिरॆञ्जि याह मुडियुमे लियारुम् वॆल्लार्
वॆन्ऱियु मरक्कर् माडे विडैयरु ळिळव लोडुम्
शॆन्ऱव नावियुण्डु वेळ्वियुञ् जिदैप्पॆ नॆन्ऱान्
नन्ऱदु पुरिदि यॆन्ऱु नायहन् नविल्व दानान् 2870

ऎन्ऱलुम्–कहने पर; इरॆञ्चि–विनय करके; याकम् मुटियुमेल्–याग पूरा होगा तो; यारुम्–और कोई भी; वॆल्लार्–नहीं जीतेंगे; अरक्कर् माटे–राक्षसों के पक्ष में ही; वॆन्ऱियुम्–विजय होगी; इळवलोटुम् चॆन्ऱु–लघुराज के साथ जाकर; अवन् आवि उण्टु–उसके प्राण हरकर; वेळ्वियुम् चितैप्पॆन्–यज्ञ का भी नाश करा दूंगा; विटै अरुळ्–आज्ञा दें; ऎन्ऱान्–निवेदन किया; नायकन्–नायक ने भी; नन्ऱु–अच्छा; अतु पुरितिर्–वह करो; ऎन्ऱु–ऐसा; नविल्वतु आनान्–कहा। २८७०

श्रीराम का वचन सुनकर विभीषण ने निवेदन किया कि अगर इन्द्रजित् यज्ञ पूरा कर देगा तो कोई भी उसे जीत नहीं सकेंगे। फिर विजय राक्षसों की ही होगी। इसलिए लघुराज को लेकर जाऊँ; उसके प्राण निकाल दूं और उसके यज्ञ को नष्ट कर दूं। आज्ञा दें। नायक ने कृपा-वचन कहा कि अच्छा है। जाओ वही कर आओ। २८७०

तम्बियैत् तऴुवि यैयन् तामरैत् तविशिन् मेलान्
वॆम्बडै तॊडुक्कु मायिन् विलक्कुम दन्ऱि वीर
अम्बुनी तुरप्पा यल्लै यनैयदु तुरन्द काले
उम्बरु मुलहु मॆल्लाम् विळियुमः(ह्) दॊऴिदि यॆन्ऱान् 2871

ऐयन्–आर्य श्रीराम ने; तम्पियै तऴुवि–छोटे भाई का आलिंगन करके; वीर–वीर; तामरै तविचिन् मेलान्–कमलासन ब्रह्मा का; वॆम् पटै–भयंकर अस्त्र; तॊटुक्कुमायिन्–अगर वह चलायगा तो; विलक्कुम् अतु अन्ऱि–निवारण करना, उसको छोड़; अम्पु–वह अस्त्र; नी–तुम; तुरप्पाय् अल्लै–मत छोड़ो; अनैयतु–वह अस्त्र; तुरन्त काले–छोड़ते समय; उम्परुम्–देव; उलकुम् ऎल्लाम्–और

सारे लोक; विळियुम्–विनष्ट हो जायेंगे; अ.'.तु–वह काम; ऑऴिति–छोड़ दो (मत करो)। २८७१

फिर श्रीराम ने अपने भाई को गले लगाकर समझाया कि हे वीर ! कमलासन ब्रह्मा का अस्त्र बहुत ही प्रतापी अस्त्र है। वह छोड़े तो उसको रोकने के अर्थ तुम चलाओ। नहीं तो तुम स्वयं मत चलाओ। क्योंकि वह छूटेगा तो देव, लोक सभी मिट जायँगे। वह कार्य रहने दो। २८७१

मुक्कणात् पडैयु माऴि मुदलवन् पडैयु मुन्निन्
ऱॊक्कवे विडुमे विट्टा लवऱ्ऱैयुम् मवऱ्ऱि नोयत्
तक्कवा ऱियऱ्ऱि मऱ्ऱुन् शिलैवलित् तरुक्कि नाले
पुक्कव नावि कॊण्डु पोदुदि पुहऴिन् मिक्कोय् 2872

पुकऴिन् मिक्कोय्–यशश्रेष्ठ; मुक्कणान् पटैयुम्–त्रिनेत्र का पाशुपतास्त्र भी; आऴि मुतलवन्–चक्रधारी आदिदेव; पटैयुम्–नारायण का अस्त्र भी; मुन् नितु–तुम्हारे सामने खड़ा होकर; ऑक्कवे विटुमे–एक साथ चलायगा; विट्टाल्–चलाए तो; अवऱ्ऱैयुम्–उन्हें भी; ओय तक्कवाऱु–शान्त करने; अवऱ्ऱिन् इयऱ्ऱि–उनका प्रयोग करो; मऱ्ऱु–और; उन् चिलै वलि–तुम्हारे धनु के बल के; तरुक्कित्ताले–गौरव से; पुक्कु–(युद्ध में) प्रवेश करके; अवन् आवि कॊण्टु–उसके प्राण (हर) लेकर; पोतुति–लौट आओ। २८७२

वह त्रिनेत्र-पाशुपतास्त्र और चक्रधारी-नारायणास्त्र एक साथ छोड़ेगा। तब तुम भी उन्हें विफल करने के लिए उन्हें चलाओ। फिर भी तुम भी अपना बल-पराक्रम दिखाकर युद्ध करो और उसको मारकर लौट आओ। २८७२

वल्लन माय विञ्जै वहुत्तन वऱिन्दु माळक्
कल्लुदि तरुम मॆन्नुङ् गणहन् करुत्तैक् कण्डु
पल्पॆरुम् बोरुञ् जॆय्दु वरुन्दिन वऱ्ऱम् बार्त्तुक्
कॊल्लुदि यमरर् तङ्गळ् कूऱ्ऱिनैक् कूऱ्ऱ मॊप्पाय् 2873

कूऱ्ऱम् ऑप्पाय्–यम-तुल्य; अमरर् तङ्कळ्–देवों के; कूऱ्ऱिनै–यम (रूपी इन्द्रजित्) को; माय विञ्चै वल्लन वकुत्तन–उसके माया के बल से रचित; अऱिन्तु–(कार्य) जानकर; माळ–उन्हें मिटाने के लिए; कल्लुति–उन्हें उखाड़ दो; तरुमम् ऍन्नुम्–धर्म के; कण् अकन्–विशाल (गम्भीर); करुत्तै कण्टु–तथ्यों को जानकर; पल् पॆरुम् पोरुम्–अनेक बड़े युद्ध भी; चॆय्तु–करके; वरुन्तिन–अऱ्ऱम्–जब वह थका है, वह मौक़ा; पार्त्तु–देखकर; कॊल्लुति–मार दो। २८७३

हे यमतुल्य वीर ! देवमारक इन्द्रजित् माया के बल से कृत कार्यों के प्रति सावधानी से व्यवहार करो। उनको मिटाते हुए उखाड़ दो। धर्म

विस्तृत क्षेत्र को ध्यान में रखो और तदनुसार अनेक विविध बड़े युद्ध करो। जब वह थका हो रहता है, तब मौक़ा पाकर उसका हनन कर दो। २८७३

पवैत्तवन् वॅम्मै योडिप् पल्पॅरुम् बह्ळि मारि
विदैप्पत्त विदैया निन्रु विलक्किनु मॅलिवु मिक्काल्
उदैप्पत्त शिलैयिन् वाळि मरुमत्तैक् करुदि योट्टि
वदैत्तोळिल् पुरिदि शाब नूॅरि मऱप्पि लादाय् 2874

चापनूल् नॅरि–धनुशास्त्र-मार्ग; मऱप्पिलाताय्–अविस्मरणकारी; अवन्–उसके; पतैत्तु–उतावली करके; वॅम्मै ओटि–क्रोध में बढ़कर; पल् पॅरुम्–अनेक अधिक; पकळि मारि–शर-वर्षा; वितैप्पत्त–जो प्रेरित होंगे उन्हें; वितैया–तुम्हारे ऊपर न लगे, ऐसा; निन्रु विलक्किनुम्–रहकर निवारण करोगे तो भी; मॅलिवु मिक्काल्–निर्बलता अधिक हो तो; चिलैयिन् उतैप्पत्त–तुम्हारे धनु (जिनको) निकालें; वाळि–उन शरों को; मरुमत्तै करुति–मर्मस्थल देखकर; ओट्टि–चलाकर; वतै तोळिल् पुरिति–वध-कार्य करो। २८७४

हे धनुशास्त्र के अविस्मरणकारी! इन्द्रजित् गड़बड़ाकर व क्रुद्ध होकर तुम्हारे चलाये शरों की वर्षा से बचने का प्रयास करेगा। तो भी मौक़े की ताक में रहो और जब उसकी थकावट अधिक हो रहती हो, तब तुम अपने अस्त्रों को उसके मर्म में चलाओ और वधकार्य करो। २८७४

तॉडुप्पदन् मुन्नम् वाळि तॉडुत्तवै तुरैह ळोरुम्
तडुप्पन तडुत्ति यॅण्णङ् गुऱिप्पिना लुणर्न्दु तक्क
कडुप्पिनु मळवि लाद कदियिनुङ् गणेहळ् कार्रिन्
विडुप्पन ववऱ्ऱै नोक्कि विडुदियाल् विरहिन् मिक्काय् 2875

विरकिन् मिक्काय्–उपायचतुर; वाळि तॉटुप्पतन् मुन्नम्–(उसके) शर लगाने से पहले; तॉटुत्तु–संधान करके; अवै–उन्हें; तुऱैकळ् तोऱुम्–हर मार्ग से; तटुप्पन तटुत्ति–रोकना रोक दो; अळविलात कटुप्पिनुम्–अपार वेग के साथ; काऱ्ऱिन् कतियिनुम्–पवनगति से; विटुप्पन कणैकळ्–प्रेरित शरों को; ऍण्णम् कुऱिप्पिनाल्–चित्त-संकेत से; उणर्न्तु–जानकर; अवऱ्ऱै नोक्कि–उन्हें देखकर; तक्क–योग्य शर; विटुति–चलाओ। २८७५

हे उपायचतुर! वह संधान करे, उसके पूर्व ही तुम अपने धनु पर शर संधान करके उसके शरों को आवश्यक सभी मार्गों में रोक दो। वह अपार वेग के साथ पवन से भी तेज़ गति में शर चलायगा। उनको उसके मन का भाव ताड़कर देख लो और उनको रोकते हुए अपने शर प्रेरित करो। २८७५

अॅन्बन मुदलु बाय मियावैयु मियम्बि येऱ्ऱ
मुन्बन्नै नोक्कि यॅय मुवहै युलहन् वानायत

तत्पॅरुन् दत्मै तानु मऱिहिला वॊरुवत् ताङ्गुम्
वत्पॅरुञ् जिलैयो दाहुम् वाङ्गुदि वलमुङ् गॊळ्वाय् 2876

ॲत्पत मुतल्–ऐसे अन्य; उपायम् यावैयुम्–सभी उपाय; इयम्पि–बतलाकर; ऐय–एऱ्ऱ–जिन्होंने स्वीकारा उन; मुत्पत्तै–बलशाली को; नोक्कि–देखकर; तन् तात; ईतु–यह (धनु); मूवकै उलकुम् तानाय्–स्वयं तीनों लोक बनकर; तानुम् अऱिकिला–स्वयं जो नहीं जानते; पॅरुम् तन्मै–अपने बड़प्पन का हाल; ताङ्कुम्–जिसे धारण करते हैं; वन् पॅरुम् ऑरुवन्–वे अनुपम; तिरुमाल्–विष्णु; वाङ्कुति–पकड़ो; वलमुम् कॊळ्वाय्–विजय भी पा लो। २८७६ चिलै आकुम्–कठोर और बड़ा धनु है;

श्रीराम ने ऐसे उपाय आदि कहे। लक्ष्मण ने उन्हें हृदयस्थ कर लिया। फिर बलवान लक्ष्मण से उन्होंने कहा कि तात! देखो यह वह बड़ा और सारयुक्त धनु है, जो विष्णु स्वयं अपने हाथ में धारण करते थे, वे विष्णु जो स्वयं तीन लोक बने रहते हैं और जो स्वयं अपना बड़प्पन नहीं जानते। लो इसे तुम। जाओ और विजयी बनकर आओ। २८७६

इच्चिलै यियऱ्कै मेन्नाळ् तमिळ्मुति यियम्बिऱ् ऱॆल्लाम्
अच्चॆंतक् केट्टा यन्ऱे यायिर मौलि यण्णल्
मॆय्च्चिलै विरिञ्जत् मूट्टुम् वेळ्वियित् वेट्टुप् पॆऱ्ऱ
कैच्चिलै यॆन्ऱु ताने कॊडुत्ततन् कवशत् तोडुम् 2877

इ चिलै इयऱ्कै–इस धनु का गुण; मेल् नाळ्–पहले; तमिळ् मुति–'तमिळ-मुनि' (अगस्त्य) ने; इयम्पिऱ्ऱु ॲल्लाम्–जो विवरण दिया था वह सब; अच्चु ॲंत–सच ही; केट्टाय्–तुमने सुना; अन्ऱे–न; आयिरम् मौलि अण्णल्–सहस्रशीर्ष भगवान का; मॆय् चिलै–सच्चा धनु है; विरिञ्चन् मूट्टुम् वेळ्वियिन्–ब्रह्मा द्वारा कृत यज्ञ में; वेट्टु–होम आदि करके; पॆऱ्ऱ–प्राप्त; कै चिलै–हस्तयोग्य धनु है; ॲन्ऱु–कहकर; कवचत्तोटुम्–कवच के साथ; ताने कॊटुत्ततन्–खुद दिया। २८७७

इस धनु के सम्बन्ध में 'तमिळ ऋषि' अगस्त्य ने पहले जब सारा विवरण दिया था, तब तुमने भी सुना था न? यह सहस्रशीर्ष श्रीविष्णु का सच्चा धनु है। यह विरंचि-रचित यज्ञ में उत्पन्न हुआ, हस्त-धारण-योग्य धनु है। यह बताकर श्रीराम ने अपने हाथ से वह धनु देकर कवच भी दिया। २८७७

आणियिव् वुलहुक कान वाळियात् पुऱत्ति नाऱ्ऱ
तूणियुङ् गॊडुत्तु मऱ्ऱु मुरुदिहळ् पलवुञ् जॊल्लित्
ताणुवित् ऱोऱ्ऱत् तानेत् तळुवितन् तळुव लोडुम्
शेणुयर् विशुम्बिऱ् ऱेवर् तीरन्ददॆञ् जिऱुमै यॆन्ऱार् 2878

इव् उलकुक्कु आणि आन–इस संसार की धुरी की कील के रूप में जो हैं;

आऴियान्–चक्रधारी; पुऱत्तिल् आर्त्त–पीठ पर बँधा; तूणियुम् कॊडुत्तु–तूणीर भी देकर; मऱ्ऱुम्–और; उऱुतिकळ् पलवुम्–अनेक हितकारी उपदेश; चॊल्लि–कहकर; ताणुविन् तोऱ्ऱत्तानै–स्थाणु-सदृश रूपवान को; तऴुवितन्–गले लगा लिया; तऴुवलोडुम्–आलिंगन करते ही; चेण् उयर्–बहुत ऊँचे; विसुम्पिल्–आकाश में; तेवर्–देव; ऎम् चिऱुमै–हमारी हीनता; तीर्न्ततु–दूर हुई; ऎन्ऱार्–बोले। २८७८

फिर संसार की धुरी की कील के समान विद्यमान चक्रधारी (के अवतार) श्रीराम ने अपनी पीठ से तूणीर उतारकर उसे भी दिया। फिर अनेक हितोपदेश देकर उन्होंने स्थाणुसदृश आकार वाले लक्ष्मण को गले से लगा लिया। उनको आलिंगन करता देखकर देवों ने कह लिया कि हमारी लघुता दूर हो गयी। २८७८

मङ्गलन् देवर् कूऱ वानव महळिर् वाऴ्त्तिप्
पङ्गमि लाशि कूऱिप् पलाण्डिशै परवप् पाहत्
तिङ्गळिन् मौलि यण्ण ऱिरिबुरन् दीक्कच् चीऱिप्
पॊङ्गिन नॆन्नत् तोन्ऱिप् पॊलिन्दनन् पोर्मेऱ् पोवान् 2879

पोर् मेल् पोवान्–युद्ध पर जानेवाले; तेवर् मङ्कलम् कूऱ–देवों के मंगल-वचन कहते; वानव मकळिर्–देवस्त्रियों के; पङ्कम् इल्–निर्दोष; आचि–आशीर्वचन; कूऱि वाऴ्त्ति–कहकर विजयकामना करके; पलाण्टियै परव–'जुग-जुग जिओ' का गान गाते; पाक तिङ्कळिन् मौलि–अर्धचन्द्रशेखर; अण्णल्–भगवान शिव; तिरपुरम् तीक्क–त्रिपुर मिटाने; चीऱि–क्रोध करके; पॊङ्किनन् ऎन्न–तेजी से उठे जैसे; तोन्ऱि–झाँकी देकर; पॊलिन्तनन्–शोभे। २८७९

युद्ध पर लक्ष्मण जाने लगे। देवों ने मंगल-शब्द कहे। देवस्त्रियों ने अमोघ आशीर्वाद के वचन कहकर 'जुग-जुग जिओ' का गान किया। तब लक्ष्मण अर्धचन्द्रशेखर शिवजी के समान शोभे जो त्रिपुरदहन के लिए ससंभ्रम उठे हों। २८७९

मारुदि मुदल्व राय वानरत् तलैव रोडुम्
वीरनी शेऱि यॆन्ऱु विडैहॊडुत् तरुळुम् वेलै
आरियन् कमल पाद महत्तिनुम् बुऱत्तु माहच्
चीरिय शॆन्नि शेर्त्तुच् चॆन्ऱनन् तरुमच् चॆल्वन् 2880

वीर–वीर; मारुति मुतल्वर् आय–मारुति आदि; वानर तलैवरोडुम्–वानर-यूथपों के साथ; नी चेऱि–तुम चलकर पहुँचो; ऎन्ऱु–ऐसा कहकर; विडै कॊडुत्तु–विदा देने की; अरुळुम् वेलै–जब कृपा की तब; तरुमच् चॆल्वन्–धर्मधनी; आरियन् कमल पातम्–आर्य के कमल-चरणों में; अकत्तिनुम् पुऱत्तुमाक–भीतर-बाहर दोनों (चरणों) से; चीरिय चॆन्नि–श्रेष्ठ सिर; चेर्त्तु–लगाकर (बाद); चॆन्ऱनन्–निकले। २८८०

जब श्रीराम ने कृपा की आज्ञा सुनायी कि तुम मारुति आदि वानरयूथपों को साथ ले युद्धभूमि की ओर कूच करो, तब धर्मधनी लक्ष्मण ने मन और शरीर से आर्य श्रीराम के कमल-चरणों में सिर नवाया। फिर रवाना हो गये। २८८०

पॉलङ्गॉण्ड लन्नैय मेनिप् पुरवलन् पॉरुमिक् कण्णीर्
निलङ्गॉण्डु पडर निन्ऱु नॅञ्जळि वान्नैत् तम्बि
वलङ्गॉण्डु वयिर वल्वि लिडङ्गॉण्डु वञ्जन् मेले
शलङ्गॉण्डु कडिदु शॅन्ऱान् ऱलैहॉण्डु वरुवॅ नॅन्ऱे 2881

पॉलम् कॉण्टल् अन्नैय–सुन्दर मेघ-सम; मेनि पुरवलन्–शरीर वाले प्रभु श्रीराम; पॉरुमि–दुःख से भरकर; कण्णीर्–आँसू को; निलम् कॉण्टु पटर–भूमि पर लगे फैलने देते हुए; निन्ऱु–खड़े रहे और; नॅञ्चु अळिवान्नै–जो मन को घोल रहे थे, उनको; तम्पि–छोटे भाई; वलम् कॉण्टु–परिक्रमा करके; वयिर वल् विल्–वज्र-कठोर धनु; इटम् कॉण्टु–बायें हाथ में लेकर; वञ्चन मेले–वंचक इन्द्रजित् पर; चलम् कॉण्टु–गुस्सा ले; तलै कॉण्टु वरुवॅन्–सिर काट लाऊँगा; ॲन्ऱु–कहकर; कटितु–शीघ्र; चॅन्ऱान्–गये। २८८१

सुन्दर श्याम-मेघ-वर्ण श्रीराम ने विदा तो दे दी। पर वियोगपीड़ा को सह नहीं सके। उनकी आँखों से आँसू बह निकला और भूमि पर गिरकर फैला। घुलते हुए खड़े रहनेवाले उनकी छोटे भाई ने परिक्रमा की। वज्रधनु को बायें हाथ में धर लिया। वंचक पर क्रोध ले वे यह सोगंद करके निकले कि मैं उसका सिर काट लाऊँगा। २८८१

तान्पिरि हिन्ऱि लाद तम्बिवॅङ् गडुप्पिर् चॅल्ला
ऊन्पिरि हिन्ऱि लाद वुयिरॅन्न मऱैद लोडुम्
वान्पॅरु वेळ्वि काक्क वळर्हिन्ऱ परुव नाळिल्
तान्पिरिन् देहक् कण्ड तयरदन् ऱन्नै यॉत्तान् 2882

तान् पिरिकिन्ऱिलात–अपने से जो कभी अलग नहीं हुआ; तम्पि–वह भाई; ऊन् पिरिकिन्ऱिलात–शरीर से अवियुक्त; उयिर् ॲन्न–प्राणों के समान; वॅम् कटुप्पिन्–अति वेग के साथ; चॅल्ला–जाकर; मऱैतलोटुम्–ओझल हो गया तो; वळर्किन्ऱ परुव नाळिल्–जब वे बढ़ रहे थे उन दिनों; वान् पॅरु वेळ्वि–बहुत बड़ा यज्ञ; काक्क–रक्षित करने; तान् पिरिन्तु एक–स्वयं जब बिछुड़ गये; कण्ट–उसका अनुभव जिन्होंने किया; तयरतन् तन्नै–उन दशरथ के; ऑत्तान्–समान हुए। २८८२

श्रीराम से लक्ष्मण कभी अलग नहीं हुए थे। अब शरीर से अवियुक्त रहनेवाले प्राणों के समान जो रहे वे तेजी से अलग हो रहे हैं और ओझल हो गये। तब श्रीराम दशरथ की स्थिति में रहे, जिनसे

श्रीराम स्वयं अपनी बढ़ती आयु के पर्व में याग संरक्षणार्थ अलग गये थे। २८८२

शेऩापदि येमुवल् शेवहर्ताम्, आऩार्निमिर् कॊळ्ळिहो ळङ्गैयिऩार्
काऩार्नॆऱि युम्मलै युङ्गळियप्, पोऩार्ह णिहुम्बिलै पुक्कऩराल् 2883

चेऩापतिये मुतल् चेवकर्–सेनापति (नील) आदि वीर; ताम्–खुद; निमिर् कॊळ्ळि–अधिक जलनेवाली उल्का; कोळ्–रखनेवाली; अङ्कैयिऩार् आयिऩार्–हथेली वाले बने; काऩ् आर्–जंगल-भरे; नॆऱियुम्–मार्ग; मलैयुम्–और पर्वत; कळिय–पीछे छोड़कर; पोऩार्कळ्–जाकर; निकुम्पिलै पुक्कऩर्–निकुंभिला पहुँचे। २८८३

सेनापति नील आदि वीरों ने हाथ में उल्काएँ ले लीं। वे उस मार्ग से गये जिसमें जंगल और पर्वत भरे थे और निकुंभिला पहुँचे। २८८३

उण्डायदोॆ रालुल हुळ्ळॊरुवऩ्, कॊण्डाऩुऱै हिऩ्ऱदु पोऱ्कुलवि
विण्डाऩुम् विळुङ्ग विरिन्ददऩैक्, कण्डार वरक्कर् करुङ्गडलै 2884

उलकु–लोक को; ऒरुवऩ्–अद्वितीय श्रीमन्नारायण; उळ् कॊण्टाऩ्–अपना उदरस्थ करके; उऱैकिऩ्ऱतु पोल्–जैसे रहते हैं; ओर् आल् उण्टु आयतु–वैसे वहाँ एक बरगद का पेड़ था; अ अरक्कर् करुम् कटल्–उन राक्षसों का काला-सागर; कुलवि–शोभकर; विण् ताऩुम् विळुङ्क–आकाश को निगलते हुए; विरिन्ततऩै–विस्तृत रहा उसे; कण्टार्–देखा। २८८४

वहाँ एक बरगद का पेड़, सारे लोकों को उदरस्थ करके रहनेवाले विष्णु-सम रहा। वानरों ने वहाँ राक्षसों का काला सेना-सागर देखा, जो इतना विस्तृत था कि आकाश भी उसके अन्दर छिप जाए। २८८४

नेमिप्पॆयर् यूह निरैत्तुनॆडुञ्, जेमत्तदु निऩ्ऱदु तीविऩैयोऩ्
ओमत्तऩल् वॆव्वड वैक्कुडऩे, पामक्कड लिऩ्ऱदोर् पाऩ्मैयदे 2885

नेमि पॆयर् यूकम् निरैत्तु–चक्रव्यूह रचकर; नॆटुम् चेमत्तु–दीर्घ रक्षण-कार्य में; अतु निऩ्ऱतु–वह (सेना) जो खड़ी रही वह; ती विऩैयोऩ्–पापी की; ओमत्तु अऩल्–होमाग्नि; वॆव् वटवैक्कुटऩ्–भयंकर बड़वा के साथ; पाम कटल्–विशाल सागर; निऩ्ऱतोर् पाऩ्मैयतै–जैसे रहता हो उस प्रकार को। २८८५

चक्रव्यूह में उसका दृश्य बड़े सागर का-सा था, जो नृशंसकारी की यागाग्नि रूपी बड़वा के साथ रहे। २८८५

कारायिऩ कायहरि तेर्परिमाऩ्, तारायिर कोडि तळीइयदुदाऩ्
नीराळियॊ डाळि निऱैइयबुपोल्, ओरायिर मियोशऩै युळ्ळवत्ते 2886

कार् आयिऩ–मेघ-सम; काय्–क्रोधी स्वभाव के; करि–हाथी और; तेर्–रथ; परिमा–अश्व; तार्–पदाति वीर; आयिर कोटि तळीइयतु–हजार करोड़

जो (खड़े) थे वह रीति; नीर् आऴियॊटु–जल-समुद्रों के साथ; आऴि निरैइयतु पोल्–अन्य समुद्र मिले रहते हों जैसे; ओरायिरम् योचनै–एक हज़ार योजन; उळ्ळतनै–विस्तार जो था उसको (लक्ष्मण आदि ने देखा)। २८८६

हज़ार करोड़ मेघ-सम क्रोधशील हाथी, रथ, अश्व और पदातिक मिले खड़े थे। वह दृश्य जल-समुद्र के साथ अन्य समुद्र भी मिलकर एक हज़ार योजन तक फैले पड़े हों —यह भ्रम पैदा करता था। २८८६

पॊऱ्ऱेर्परि माकरि मार्पॊरुतार्, अॆऱ्ऱेपडै वीररै यॆण्णिलमाल्
उऱ्ऱेविय यूह मुलोहमुडैच्, चुऱ्ऱायिर मूडु शुलायदनै 2887

पॊरु तार्–युद्ध करनेवाली आगे की सेना में; पॊन् तेर्–स्वर्ण-रथ और; परिमा–अश्व; करि मा–हाथी; अॆऱ्ऱे–कितने ही; पडै वीररै–सेना के वीरों को; अॆण्णिलम्–गिना नहीं; उऱ्ऱु–रचित होने; एविय यूकम्–इन्द्रजित् ने जिसकी आज्ञा दी थी वह व्यूह; उलोकम् चुऱ्ऱु उडै–पृथ्वी को वलयित रहनेवाले; आयिरम् ऊडु–समुद्रों से; चुलायतनै–मिश्रित थे (उन्हें देखा)। २८८७

युद्धसन्नद्ध सेना के अगले भाग में कितने ही रथ थे? कितने ही अश्व और कितने ही हाथी थे? पदाति वीरों को तो हमने गिना ही नहीं। इन्द्रजित् द्वारा की हुई इनकी व्यूह-रचना लोक और उसको वलयित कर रहनेवाले समुद्रों की स्थिति का स्मरण दिला रही थी। २८८७

वण्णक्करु मेऩियिऩ् मेऩ्मऴैवाऴ्, विण्णॆत्तॊडु शॆम्मयिर् वीशुदलाल्
अण्णऱ्करि यालऩ लम्बडैवॆम्, बण्णक्कडल् पोल्वदोर् पाऩ्मैयदै 2888

करु वण्ण–नीलवर्ण; मेऩियिऩ् मेल्–शरीरों पर; मऴै वाऴ्–मेघावास; विण्णै तॊटु–आकाशस्पर्शी; चॆम्मयिर् वीचुतलाल्–लाल बाल हिलते, इसलिए; करियाऩ् अण्णल्–श्यामल भगवान द्वारा प्रेषित; अऩल् अम् पडै–आग्नेयास्त्र-दग्ध; वॆम् पण्णै कटल् पोल्वतु–भयंकर और राशिकृत समुद्र के समान रहने की; ओर् पाऩ्मैयतै–एक रीति को (देखा)। २८८८

नीलवर्ण राक्षसों के शरीरों पर मेघाश्रय-आकाशस्पर्शी लाल केश हिल रहे थे। तब वह दृश्य तब की भयानक समुद्र-राशि के दृश्य के समान लगता था, जब श्यामवर्ण श्रीराम ने आग्नेयास्त्र को उस पर छोड़ा था। २८८८

वऴङ्गाशिलै नाणॊलि वाऩिल्वरुम्, बऴङ्गार्मुह मॊत्त पणैक्कुलमुम्
तऴङ्गाकडल् वाऴ्वऩ पोलुतहैशाल्, मुऴङ्गामुहि लॊत्तऩ मामुरशे 2889

चिलै–(राक्षसों के) धनुष; नाण् ऒलि–डोरे का स्वन; वऴङ्का–नहीं उठाते; वाऩिल् वरुम्–और आकाश में आनेवाले; पऴम् कार्मुकम्–प्राचीन (इन्द्र-) धनुष; ऒत्त–के समान रहते; पणै कुलमुम्–वाद्यवृन्द भी; कटल् वाऴ्वऩ पोल्–समुद्रमग्न रहे-से; तऴङ्का–नहीं बजते; तकै चाल्–सुयोग्य; मा मुरचु–बड़ी भेरियाँ; मुऴङ्का मुकिल् ऒत्तऩ–न गरजते मेघ के समान रहीं। २८८९

राक्षसों के हाथों के धनु ज्यास्वन नहीं निकालकर आकाश में प्रकट होनेवाले पुरातन इन्द्रधनुष के समान लगे। 'पणै' नामक बाजे भी समुद्रमग्न-से चुप रहे। सुघड़ भेरियाँ भी मौन मेघों के समान चुप रहीं। २८८९

वलियात्त विराहवन् वाय्मॊऴियाल्, शलियाद नॆडुङ्गडल् तान्ऎनलाय्
ऒलियादुरु शेनैयै युऱ्ऱॊरुनाळ्, मॆलियादव रार्त्तनर् विण्गिऴिय 2890

वलियात्त–बलवान; इराकवन् वाय् मॊऴियाल्–श्रीराघव की आज्ञा से; चलियात–अचंचल; नॆटुम् कटल् तान् ऎन्तल् आय्–बड़े समुद्र के ही समान जो रहे; ऒरु नाळ् मॆलियातवर्–और जो एक दिन भी निर्बल नहीं हुए वे वानर वीर; ऒलियातु–विना किसी शब्द के; उऱु चेतैयै–जो थी उस राक्षस-सेना के; उऱ्ऱु–पास जाकर; विण् किऴिय–आकाश को फाड़ते हुए; आर्त्ततर्–शोर मचा उठे। २८९०

श्रीराम की आज्ञा पाकर जो अचंचल रहा उस लम्बे समुद्र के ही समान जो रही, उस वानर-सेना के अथक वीरों ने मौन रही राक्षस-सेना के पास पहुँचकर आकाश को फाड़ते-से उच्च नाद किया। २८९०

आर्त्तारॆदि रार्त्त वरक्कर्कुलम्, पोर्त्तार् मुरशङ्गळ् पुडैत्तपुहत्
तूर्त्तारिवर् कऱ्पडै शूऩ्मुहिलिन्, नीर्त्तारैयि ऩम्बवर् नीट्टिनराल् 2891

आर्त्तार्–(वानर वीरों ने) घोष किया; अरक्कर् कुलम्–राक्षस-वर्गों ने; ऎतिर् आर्त्तत–बदले में नर्दन किया; तार् पोर् मुरचङ्कळ्–मालाओं से अलंकृत भेरियाँ; पुटैत्त–ठनक उठीं; इवर्–ये; कल् पटै–पत्थरों रूपी हथियारों को; पुक–(राक्षस-सेना-मध्य) चलें ऐसा; तूर्त्तार्–फेंककर भर दिया; अवर्–उन्होंने; चूल्–जल-गर्भ; मुकिलिन्–मेघों की; नीर् तारैयिन्–जल-वर्षा के समान; अम्पु नीट्टितर्–बाण चलाये। २८९१

वानर वीरों का घोष सुनकर राक्षस-सेनाओं ने भी नर्दन किया। माला से अलंकृत भेरियाँ ठनक उठीं। वानरों ने पत्थरों को सेना के मध्य खूब फेंका। उधर राक्षसों ने जलगर्भित मेघ की धाराओं के समान अस्त्र चलाये। २८९१

मिऩ्ऩुम्बडै वीशलिन् वॆम्बडैमेल्, पऩ्ऩुङ्गवि शेऩै पडिन्दुळदाल्
तुऩ्ऩुन्दुऱै नीर्निऱै वावितॊडर्न्, दऩ्ऩङ्गळ् पडिन्दऩ वामॆऩलाय् 2892

वॆम् पटै–(राक्षसों की) क्रूर सेना के; मिऩ्ऩुम्–चमकदार; पटै–हथियारों को; वीचलिन्–फेंकने से; पऩ्ऩुम्–कथित; कवि चेऩै मेल्–वानर-सेना पर; तुऩ्ऩुम्–पास-पास रहे; तुऱै–घाटों के; नीर् निऱै वावि–जल-भरे तडाग में; तॊटर्न्तु–लगातार; अऩ्ऩङ्कळ् पटिन्तऩ आम्–हंस ठहरे हैं, ऐसा कहने की रीति से; पटिन्तुळतु–लगे रहे। २८९२

भयंकर राक्षस-सेना ने चमकदार हथियार फेंके तो वे वानर वीरों पर

जा लगे और उन हंसों के समान दिखायी दिये, जो पास-पास के घाटों वाले जलाशय में आ ठहरे हों। २८९२

विल्लुम्मऴु वुम्अॅऴु वुम्मिडलोर्, पल्लुन्दलै युम्मुड लुम्बडियिल्
शॅल्लुम्बडि शिन्दिन शॅन्ऱननवाल्, कल्लुम्मर मुङ्गर मुङ्गदुव 2893

कल्लुम् मरमुम्–(वानर-प्रेषित) पत्थर और तरु; करमुम्–और उनके हाथ; कतुव चॅन्ऱन–राक्षसों पर लगते गये; मिटलोर्–बलवान राक्षसों के; विल्लुम् मऴुवुम् अॅऴुवुम्–धनु, फरसे और वक्रदण्ड; पल्लुम्–दाँत; तलैयुम्–सिर और; उटलुम्–शरीर; पटियिल् चॅल्लुम्पटि–भूमि पर गिरें ऐसा; चिन्तिन–गिरे। २८९३

वानरों के हाथों द्वारा चलाये गये पत्थर और तरु ही नहीं, उनके हाथ भी राक्षसों को पकड़ने गये और उन्होंने सबल राक्षसों के धनु, फरसे और वक्रदंड आदि हथियारों को ही नहीं, बल्कि उनके दाँतों, सिरों और शरीरों को भी भूमि पर गिरा दिया। २८९३

वालुन्दलै युम्मुड लुम्वयिऱुम्, कालुङ्गर मुन्दरै कण्डनवाल्
कोलुम्मऴु वुम्अॅऴु वुङ्गॉऴुवुम्, वेलुङ्गणै युम्वळै युम्विशिऱ 2894

कोलुम्–दण्डायुध; मऴुवुम्–और फरसे; अॅऴुवुम्–वक्रदण्ड; कॉऴुवुम्–'कॉऴु' नाम के हथियार; वेलुम्–साँग; कणैयुम्–बाण; वळैयुम्–वलय; विचिऱ–(इनको) चलाने से; वालुम्–(वानरों की) पूँछें; तलैयुम्–सिर; उटलुम्–और शरीर; वयिऱुम्–पेट; कालुम्–पैर; करमुम्–और हाथ; तरै कण्टन–भूमि पर गिरे। २८९४

राक्षसों ने दंडों, फरसों, वक्रदंडों, 'कॉऴु' नाम के हथियारों, शरों और वलयों का प्रयोग किया, तो वानरों की पूँछें, सिर, शरीर, पेट, पैर और हाथ अलग-अलग होकर भूमि पर गिरे। २८९४

वॅन्ऱिप्पडै वीरनै वीडणन्नी, निन्ऱिक्कडै ताऴ्दल् नीदियदो
शॅन्ऱिक्कडि वेळ्वि शिदैत्तिलैयेल्, ॲन्ऱिक्कडल् वॅल्हुदु मियामॆन्ऩलुम् 2895

वीटणन्–विभीषण के; वॅन्ऱि पटै वीरनै–विजयवाहिनी के स्वामी लक्ष्मण से; इ कटै–यहाँ; नी–आप; निन्ऱु ताऴ्तल्–खड़े रहकर विलंब करें यह; नीतियतो–नीति होगा क्या; कटि–रक्षण में चलनेवाले; इ वेळ्वि–इस यज्ञ को; चॅन्ऱु–जाकर; चितैत्तिलैयेल्–नष्ट न करियेगा तो; याम्–हम; ॲन्ऱु–कब; इ कटल्–इस सागर- (सी सेना) को; वॅल्कुतुम्–जीतेंगे; ॲन्ऩलुम्–ऐसा कहने पर। २८९५

तब विभीषण ने विजयवाहिनी के स्वामी लक्ष्मण से कहा कि यहाँ आप खड़े-खड़े देरी लगा दें —क्या यह नीतिसम्मत होगा? रक्षण में चलने वाले याग को आप नष्ट नहीं करेंगे तो हम कब इस सेना-सागर को जीत सकेंगे?। २८९५

तेवादिय रुन्विशै नान्मुहनुम्, मूवामुद लीशनु मूवुलहिन्
कोवाहिय कोऱ्ऱव नुम्मुदलोर्, मेवादव रिल्लै विशुम्बुरैवोर् 2896

तेवातियरुम्–देवादि (१८ वर्ग के) सुर लोग; नाल् तिचै मुकनुम्–चतुर्दिशामुख; मूवा मुतल् ईचनुम्–जो वृद्ध नहीं होते वे परमेश्वर; मू उलकिन् कोवाकिय–त्रिलोकाधिपति; कोऱ्ऱवनुम्–विजयी श्रीमन्नारायण; मुतलोर्–आदि; विसुम्पु उऱैवोर्–आकाशवासी; मेवातवर् इल्लै–जो नहीं आये वे कोई नहीं थे। २८९६

अठारह वर्गों के देव, चतुर्दिशामुख ब्रह्मा, शिव, त्रिलोकीनाथ श्रीविष्णु, जो अजर हैं आदि आकाशवासियों में कोई नहीं बचे थे, जो उधर आकर एकत्र नहीं हुए हों। २८९६

पल्लार्पडै निन्ऱदु पल्लणियाय्, पल्लार्पडै निन्ऱदु पल्पिऱैवॆण्
पल्लार्पडै निन्ऱदु पल्लियमुम्, बल्लार्पडै निन्ऱदु पल्पडैये 2897

पल्लार् पटै–अनेकों की (वानर-) सेना; निन्ऱतु–सन्नद्ध खड़ी रही; वॆण् पिऱै पल्–अर्धचन्द्र-सम; पल्लार् पटै–दंतोरों की सेना; निन्ऱतु–खड़ी रही; पल्लार् पटै–अनेकों की सेना के; पल्लियमुम् निन्ऱतु–अनेक (मारू) बाजे भी तैयार थे; पल् पटैये–अनेक (वानरों) की सेना; पल् आर् पटै–जिसके हथियार दांत ही थे; निन्ऱतु–खड़ी रही। २८९७

संख्या में अनेक वीरों की वानर-सेना युद्धसन्नद्ध खड़ी थी। श्वेत अर्धचन्द्र-सम दाँतों वाले राक्षसों की सेना भी तैयार खड़ी थी। अनेक राक्षसों की सेनाओं के मारू बाजे भी बज रहे थे। उनके आगे अनेक भागों में बँटी वानर-सेना दाँतों को ही हथियार मानकर खड़ी थी। (इसमें यमकालंकार है।)। २८९७

अक्काले यिलक्कुव नप्पडैयुळ्, पुक्कानयि लम्बु पॊळिन्दननाल्
उक्कार वरक्करत मूरॊळियप्, पुक्कार्नम नारुरै तॆन्पुलमे 2898

अक्काले–उस समय; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; अ पटैयुळ् पुक्कान्–उस सेना में घुसे; अयिल् अम्पु पॊळिन्तनन्–तीक्ष्ण शर छोड़े; अव् अरक्कर् उक्कार्–वे राक्षस मरे; तम् ऊर् ऒळिय–अपना गाँव छोड़कर; नमनार् उऱै–यम का वासस्थान; तॆन् पुलम्–दक्षिणी लोक; पुक्कार्–पहुँचे। २८९८

तब लक्ष्मण ने उस सेना में प्रवेश किया और तीक्ष्ण शर चलाये। तब उन राक्षसों के प्राण निकल (गिर) गये। वे अपना स्थान, लंका छोड़कर यम के दक्षिणी लोक में पहुँचे। २८९८

तेऱामद माकरि तेर्परिमा, नूऱायिर कोडियिन् नूऴिल्पडच्
चेऱार्कुरु दिक्कड लिल्तिडरिल्, कूऱायुह वावि कुऱैत्तननाल् 2899

तेऱा–नशे से जो बाहर नहीं आये; मतम् मा करि–(वे) मदमत्त बड़े गज; तेर्–

रथ; परि मा–घोड़े; नूऱायिर कोटियिऩ्–सौ सहस्र करोड़ों की संख्या में; नूऴिल् पट–हुत होकर ढेर लगाये गये; चेऱु आर्–पंक-भरे; कुरुति कटलिल्–रक्त-समुद्र में; तिटरिल् कूऱाय् उक–टीलों के समान खण्डों के हो गिरें ऐसा; आवि–राक्षसों के प्राणों को; कुऱैत्तऩऩ्–नष्ट किया। २८९९

नशे में चूर बड़े मदमत्त हाथी, रथ, अश्व आदि सौ हज़ार करोड़ की संख्या में मारे जाकर ढेर बन गये। पंकसहित रक्त-सागर में टीलों के समान राक्षसों के शरीरों के टूकड़े गिरें —ऐसा लक्ष्मण ने राक्षसों का हनन किया। २८९९

वामक्करि ताळऴि वार्कुऴिवऩ्, तीमॊय्त्त वरक्कर्हळ् शॆम्मयिरिऩ्
तामत्तलै पुक्क तऴङ्गॆरियिऩ्, ओमत्तै निहर्त्त वुलप्पिलवाल् 2900

वामम्–मनोहर; करि–गजों ने; ताळ्–अगले पैरों से; अऴि–जो खोदा; वार्–(उन) लम्बे; कुऴि–गड्ढों में; वऩ्–सुदृढ़; अरक्कर्कळ्–राक्षसों के; तीमॊय्त्त–आग के समान आवृत कर रहनेवाले; चॆम् मयिरिऩ्–लाल केशों के; उलप्पु इल–असंख्य; ताम–माला से अलंकृत; तलै–सिर; पुक्क–घुसे वे; तऴङ्कु ऎरियिऩ्–जलती आग के; ओमत्तै निकर्त्त–होमकुण्ड के समान लगे। २९००

मनोहर गजों ने अपने अगले पैरों से जो गड्ढे बनाये, उनमें बलवान राक्षसों के अग्नि-सम लाल केशों से आवृत व माला से अलंकृत असंख्यक सिर गिरे। तब वे गड्ढे प्रज्वलित अग्नि-सहित होमकुंडों के समान लगे। २९००

शिलैयिऩ्कणै यूडु तिऱन्दऩतिण्, गॊलैवॆङ् गळिमाल्हरि शॆम्बुऩल्हॊण्
डुलैविऩ्ऱु किडन्दऩ वॊत्तुळवाल्, मलैयुञ्जुनै युम्वयि ऱुम्मुडलुम् 2901

चिलैयिऩ् कणै–कमान के तीरों के; तिण्–कठोर; कॊलै–संहारक; वॆम्–क्रूर; कळि–मत्त; माल् करि–बड़े हाथियों को; ऊटु तिऱन्तऩ–बीच से फाड़ने से; चॆम् पुऩल् कॊण्टु–लाल रक्त बहाते हुए; उलैविऩ्ऱु–विना हिले; किटन्तऩ–पड़े रहे; उटलुम् वयिऱुम्–शरीर और पेट; मलैयुम् चुऩैयुम्–(क्रमशः) गिरि और स्रोत के; ऒत्तुळ–समान दिखे। २९०१

लक्ष्मण के शरों से कठोर, खूनी, भयंकर रूप से मस्त व बड़े-बड़े हाथी विद्ध हुए और खून बह निकला। वे हाथी ढेर बने हिले-डुले विना पड़े रहे। उनके शरीर और पेट क्रमशः पर्वतों और स्रोतों के समान लगे। २९०१

विऱ्ऱॊत्तिय वॆङ्गणै यॆण्गिऩ्वियऩ्, पऱ्ऱॊत्तिय पोऱ्पडि यप्पलवुम्
मुऱ्ऱच्चुडर् मिऩ्मिऩि मॊय्त्तुळवऩ्, पुऱ्ऱॊत्त मुडित्तलै पूऴियऩ 2902

पूऴियऩ–धलि में पड़े रहे; मुटि तलै–किरीट-मंडित सिर; विल् तॊत्तिय–(लक्ष्मण-) धनु से निकले; वॆम् कणै पलवुम्–क्रूर अस्त्र अनेक; ऎण्किऩ्–रीछ के;

वियन्-बड़े; पल् तोत्तिय पोल्-दाँत गड़े हों जैसे; पटिय-लगे इसलिए; चुटर् मित्मिति-चमकदार खद्योतों के; मुट्र-पूर्ण रूप से; मोय्त्तु उळ-जिस पर मँड़राते हों उस; वन् पुरुरु-बड़े (सर्प-) बिल के समान; ओत्त-लगे। २९०२

राक्षसों के किरीटमंडित सिर धूल में पड़े रहे और उनमें लक्ष्मण के धनुप्रेषित कठोर शर रीछों के बड़े दाँतों के समान गड़े रहे। तो वे उन सर्प-बिलों के समान दिखे, जिन पर पूर्ण रूप से खद्योत मँड़रा रहे हों। २९०२

पडुमारि नॆडुङ्गणै पाय्दलिन्दाल्, विडुमारुदि रप्पुनल् वीऴ्वन्नवाल्
तडुमारुनॆ डुङ्गोडि ताऴ्हडल्वाय्, नॆडुमामुहिल् वीऴ्व निहर्त्तन्नवाल् 2903

नॆटुम् कणै-लक्ष्मण के बड़े शरों की; पटु मारि-बरसनेवाली वर्षा; पाय्तलिन्ताल्-चली, इसलिए; विटुम्-बहनेवाले; उतिरम् पुनल्-रक्तवारि की; आरु-नदियाँ; वीऴ्वन-(भूमि पर) गिरीं; तटुमारुम् नॆटु कोटि-डगमगानेवाली पताकाएं; ताऴ् कटल् वाय्-गहरे समुद्र में; नॆटु मा मुकिल् वीऴ्व-बड़े काले मेघ गिरते; निकर्त्तन-जैसे लगे। २९०३

लक्ष्मण के शर वर्षा की लम्बी धारों के समान उनके शरीरों में घुसे। तो उनके शरीरों से रक्त नदियों के रूप में बह निकला। उसमें पताकाएँ लड़खड़ाने लगीं और जाकर बड़े मेघों के समान गंभीर समुद्र में मग्न हो गयीं। २९०३

मिन्नार्कणै ताळऱ वीशविऴुन्, दन्नारुदि रत्तु ळऴुन्दुवदाल्
ऒन्नार्मुऴ् वॆण्गुडै यॊत्तनवाल्, शॆन्नाहम् विऴुङ्गिय तिङ्गळिनै 2904

मिन् आर् कणै-चमकदार (लक्ष्मण-) शर; वीच-लगे; ऒन्नार्-शत्रुओं के; मुऴु वॆण् कुटै-पूर्ण श्वेत छत्र; ताळ् अऱ-कटकर; विऴुन्तु-गिरे; अन्नार्-उनके; उतिरत्तुळ्-रक्त में; अऴुन्तुवताल्-मग्न हो गये, इसलिए; चॆम् नाकम्-लाल (केतु) सर्प द्वारा; विऴुङ्किय-निगले गये; तिङ्कळिन् ऒत्तन-चन्द्र के समान रहे। २९०४

(लक्ष्मण के) ज्वलंत शर चले तो शत्रुओं के पूर्ण-श्वेत-छत्रों के मूठ कटे और छत्र गिरे और उनके रक्त के प्रवाह में धँसे। तब वे लाल (केतु) सर्प-ग्रस्त चन्द्र के समान लगे। २९०४

कॊडुनीळ्करि कैयॊडु ताळ्कुऱैयप्, पडुनीळ्कुरु दिप्पडर् हिन्ऱनवाल्
अडुनीळुयि रिन्मैयि नाऴ्हिलवाल्, नॆडुनीरिडै वड्गम् निहर्त्तनवाल् 2905

कॊटु-क्रूर; नीळ्-लम्बे; करि-गज; कैयॊटु ताळ् कुऱैय-सूँड़ों और पैरों के कट जाने से; पटु नीळ् कुरुति-निकलनेवाले अधिक रुधिर के बहाव में; पटर्किन्ऱन-जो जाते हैं; अटु-मारने; नीळ् उयिर्-प्राण; इन्मैयित्-नहीं रहे, इसलिए;

आऴ्किल-डूबे नहीं; नॆट्टु नीर् इटै-बड़े जल (समुद्र) में; वङ्कम्-पोतों को; निकर्त्तन-समानता करते थे। २६०५

क्रूर और बड़े हाथियों के पैर और सूँड़ें कटीं। वे रक्त के प्रवाह में तिर चले। उनमें प्राण नहीं थे, इस कारण वे डूबे नहीं और विशाल समुद्र के ऊपर पोतों के समान लगे। २९०५

करियुण्ड कळत्तिडै युऱ्ऱनकान्, नरियुण्डि युहप्पन नट्टनवाल्
इरियुण्डव रित्तिय मिट्टिडलाल्, मरियुण्ड वुडऱ्पोरै मानिनवाल् 2906

करि उण्ट-राख जो बने; कळत्तिटै-(युद्ध के) आँगन में; कान नरि-जंगली सियार; उण्टि उकप्पन-आहार चाहकर; उऱ्ऱन-आकर; नट्टन-बीच में खड़े रहे; इरि उण्टवर्-जो भागे उनके; इत्तियम्-अपने मधुर बाजों को; इट्टिटलाल्-नीचे गिराने से; मरि उण्ट-मृत; उटऱ्पोरै-शरीर-भार को; मानिन-(वे बाजे) समानता करते थे। २६०६

जंगली सियार युद्ध के मैदान के मध्यस्थान में आ गये, जो राख बना पड़ा था। भागनेवाले मधुर बाजों को गिराते हुए भागे और वे लाशों के समान दिखे। २९०६

वायिऱ्कनल् वॆङ्गडु वाळियिनम्, पायप्परु मक्कुलम् वेवनवाल्
वेयुऱ्ऱ नॆडुङ्गिरि मोवॆयिलाम्, दीयुऱ्ऱन पोऩ्ऱ शिनक्करिये 2907

वायिल्-मुख में; वॆम् कटु कनल्-अति क्रूर अग्नि रखनेवाले; वाळि इनम्-(आग्नेय) अस्त्र-समूह; चिन करि-क्रुद्ध हाथियों पर; पाय-चले तो; परुमम् कुलम्-(हाथियों के हौदों के) गद्दों का समूह; वेवन-जले; वेय् उऱ्ऱ-बाँस-सहित; नॆट्टु किरि मी-बड़ी गिरि पर; वॆयिल् आम् ती-गरम आग की लपटें; उऱ्ऱन-लगी हों; पोऩ्ऱ-जैसे दिखे। २६०७

निपट क्रूर अग्निमुखी आग्नेयास्त्रसमूह क्रुद्ध गजों पर चले। तो उनके गलों के गद्दे, जो जले, वंशवनसंयुक्त गिरि पर लगी गरम आग के समाम लगे। २९०७

अलैवेल यरक्करै यॆण्गिनुहिर्, तलैमेन्मुडि येत्तरै तळ्ळुदलाल्
मलैमेलुयर् पुऱ्ऱिनै वळ्ळुहिराल्, निलैपेर मऱिप्प निहर्त्तनवाल् 2908

अलै वेलै अरक्करै-तरंगसहित समुद्र के समान राक्षसों के; तलै मेल् मुटियै-सिरों पर के किरीटों को; ऍण्किन् उकिर्-रीछों के नाखून; तरै तळ्ळुतलाल्-नोचकर नीचे गिराते हैं इसलिए; मलै मेल् उयर्-पर्वतों पर ऊँचे; पुऱ्ऱिनै-बिलों को; वळ् उकिराल्-कठोर नखों से; निलै पेर-स्थिति बदलते हुए; मऱिप्पु-उखाड़ते; निकर्त्तन-जैसे लगे। २६०८

तरंगसंकुल सागर-सम (सेना के) राक्षसों के सिरों पर से किरीटों को रीछों के नखों ने नोचकर नीचे गिरा दिया। तब ऐसा लगा मानो

रीछ पर्वतों पर उगे हुए सर्प-बिलों को अपने नखों से नोचकर उखाड़ रहे हों। २९०८

मावाळिहण् मामळै पोल्वरलाल् मावाळिहळ् पोर्तॅरु मामरवोर्
मावाळिहळ् वन्रलै यिन्रलैवाळ् मावाळिह ळोडु मरिन्दनराल् 2909

मा वाळिकळ्–बड़े शरों के; मा मळै पोल्–काले मेघों के समान; वरलाल्–आने से; मा–बड़े; आळिकळ्–याळियों (शरभों) को; पोर्–युद्ध में; तॅरुम्–मारनेवाले; मा–श्रेष्ठ; मरवोर्–(राक्षस) वीर; मा आळिकळ्–बड़े जानवरों (हाथियों व अश्वों) को चलानेवालों के; वन् तलैयिन् तलै वाळ्–कठोर सिरों पर रहने वाले; मा–काले; अळिकळोटु–भ्रमरों के साथ; मरिन्तनर्–मर गये। २९०९

बड़े-बड़े शर काले मेघों के समान आये। तो बड़े-बड़े 'याळि' यों (शरभों) को युद्ध में मारनेवाले वीर और बड़े जानवरों (हाथियों और अश्वों) को चलानेवाले वीर मरे और उनके साथ उनके कठोर सिरों पर मँड़रानेवाले भ्रमर भी मर मिटे। (यमकालंकार का पद्य है। अतः भाव की विशेषता नगण्य है, यद्यपि अर्थ सुन्दर है।)। २९०९

अङ्गङ्गिळि यत्तुणि पट्टदनाल्, अङ्गङ्गिळि कुऱ्ऱ वमर्त्तलैवर्
अङ्गङ्गिळि शॅम्बुनल् पम्बवलैन्, दङ्गङ्ग णिरम्बि यलम्बियवाल् 2910

अङ्कु अङ्कु–वहाँ-वहाँ; इळि कुऱ्ऱ–जो हारे थे वे; अमर् तलैवर्–युद्ध-नायक; अङ्कम्–अंगों के; किळिय–चिर जायँ, ऐसा; तुणि पट्टतनाल्–कट जाने से; अम् कङ्कु–सुन्दर कंकों ने; इळि चॅम्पुतल्–बहनेवाले रक्त को; पम्प–(सब जगह) फैलाते हुए; अलैन्तु–घूमकर; कम् कळ् निरम्पि–अपने सिरों में मलकर; अलम्पिय–धो लिया (अपने शरीरों को)। २९१०

यहाँ-वहाँ जो यूथप हारे उनके अंग विद्ध हुए और कट गये। तब सुन्दर कंक पक्षी रक्त को इधर-उधर फैलाते हुए घूमे और अपने सिरों पर खूब मलकर अपने को धो लिया। २९१०

वन्रानैयै वार्कणै मारियिनाल्, मुन्रादैयोर् तेर्कॊडु मॊय्पलतेर्प्
पिन्रावॅदिर् तानवर् पेरणियैक्, कॊन्रानॅन वॅय्दु कुऱैत्तननाल् 2911

तातै–पिता दशरथ ने; मुन्–प्राचीनकाल में; ओर् तेर् कॊटु–एक रथ ले जाकर; मॊय् पल तेर्–घने रूप से रहे अनेक रथों को ले; पिन्ऱा ऎतिर्–बिना पैर उखड़े रहे; तानवर् पेरणियै–उन राक्षसों की बड़ी सेना को; कॊन्ऱान् ऎन–मारा था, उसी प्रकार; वन् तानैयै–कठोर सेना को; वार् कणै मारियिनाल्–लम्बे शरों की वर्षा से; ऎय्तु–चलाकर; कुऱैत्तनन्–नष्ट किया। २९११

लक्ष्मण वैसे ही कठोर शर चलाकर राक्षसों की सशक्त सेना का

क्षय कर रहे थे, जैसे उनके पिता दशरथ ने, एक रथ पर जाकर अनेक रथों में आये दुर्धर्ष दानवों की सेनाओं को मारा था। २९११

मलैहळु मऴैहळुम् वात मीन्गळुम्, अलैयवॅङ् गाल्पॉर वऴिन्द वामॆंत
उलैयवॆङ् गतल्पॉदि योम मुट्रवाल्, तलैहळु मुडल्हळुञ् जरङ्ग डावित्त 2912

वॅम् काल् पॉर–प्रचण्ड पवन के झोंके से; मलैकळुम्–पर्वत और; मऴैकळुम्–मेघ और; वात मीन्कळुम्–आकाश के नक्षत्र; अलैय–अपने स्थान से हटकर; अऴिन्तवाम् अॅंत–जैसे नष्ट हो जाते हों वैसे; चरङ्कळ् तावित्त–जिन पर (लक्ष्मण-) शर चलकर आये; तलैकळुम् उटल्कळुम्–सिर और शरीर; उलैय–कष्ट पाने; वॅम् कतल् पॉति–भयंकर अग्नि-भरे; ओमम् उट्र–होमकुंड में गये (जा गिरे)। २९१२

(युगक्षय के अवसर पर बहनेवाले) प्रचंड पवन के झोंकों से जैसे पर्वत, मेघ और नक्षत्र विस्थापित होते हैं और विनष्ट होते हैं, वैसे ही शरों के चलने से राक्षसों के शरीर भयंकर आग से भरे होमकुंड में झुलसने के लिए पहुँचे। २९१२

वारण मत्तैयवन् रुणिपप वान्पडर्
तारणि मुडिप्पॅरुन् दलैह डाक्कलाल्
आरण मन्दिर ममैय वोदिय
पूरण मणिक्कुड मुडैन्दु पोयदाल् 2913

वारणम् अत्तैयवन्–गज (सदृश लक्षमण) के; तुणिप्प–काटने से; वान् पटर्–आकाश में उड़नेवाले; तार् अणि–माला पहने हुए; मुटि पॅरुम् तलैकळ्–किरीट-मंडित बड़े सिर; ताक्कलाल्–जा टकराये इसलिए; आरण मन्तिरम् अमैय ओतिय–वेद-मन्त्र जहाँ युक्त रीति से पठन होता रहा; मणि पूरण कुटम्–रत्नमय पूर्ण कुम्भ; उटैन्तु पोयतु–टूट गया। २९१३

कुंजरसन्निभ कुँअर सुमित्रापुत्र ने जिन सिरों को काटा वे माला से अलंकृत किरीट-मंडित सिर आकाश में उड़े। उनके जाकर टकराने से पूर्णकुंभ, जो युक्त वेदमंत्राभिमंत्रित था, टूट गया। २९१३

तारुकॉण् मदकरि शुमन्दु तामरै
शोड़िय मुहत्तलै युरुट्टिच् चॅन्निऱत्
तूरुहळ् शॉरिन्दपे रुदिरत् तोङ्गलै
यारुहळ् मुरुङ्गत लवियच् चॅन्ऱवाल् 2914

ताऱु कॉळ्–अंकुश का प्रहार पाकर; मत करि–मत्त गज; चुमन्तु–ढोकर और; तामरै चोड़िय–कमल से बिगड़े; मुकम् तलै–मुखों और सिरों को; उरुट्टि–लुढ़काते हुए; ऊरुकळ् चॉरिन्त–व्रणों से बहनेवाले; चॅम् निऱत्तु–लाल रंग के; उतिरत्तु–रक्त की; ओङ्कु अलै–उन्नत लहरों वाली; पेर् आऱुकळ्–बड़ी नदियाँ; मुरुक्कु–खूब जलती हुई; अतल् अविय–आग को बुझाते हुए; चॅन्ऱ–गयीं। २९१४

अंकुश से उकसाये गये गजों और कमल-वैरी (असुंदर) मुखों को और सिरों को वहा ले जानेवाली व्रणनि:सृत तथा तरंगपूर्ण रक्त की बड़ी नदियाँ होमकुण्ड की सर्वभक्षी आग को बुझाती हुई चलीं। २९१४

तॅरिहणै विशुम्बिडैत् तुमिप्पच् चॅम्मयिर्
वरिहऴ् लरक्करदन् दडक्कै वाळॊडुम्
उरुमॅन्न वीऴ्दलु मनलुक् कोक्किय
ॲरुमैहण् मरिन्दन मरियु मीरन्दवाल् 2915

तॅरि कणै-(लक्ष्मण के) चुने हुए बाणों के; विचुम्पु इटै-आकाश में; चॅम्मयिर् वरि चुऴल्-लाल केशों और बँधी पायलों वाले; अरक्कर् तम्-राक्षसों के; तम् तटक्कै-विशाल हाथों को; वाळॊटुम्-तलवारों के साथ; तुमिप्प-काटने से; उरुम् ॲन्न-(वे हाथ) अशनि के समान; वीऴ्तलुम्-गिरे तो; अनलुक्कु ओक्किय-अग्नि (में बलि) के लिए तैयार रखे हुए; ॲरुमैकळ् मरिन्तन-भैंसे मरे; मरियुम् ईरन्त-अज भी मरे। २९१५

लक्ष्मण द्वारा चुनकर प्रेरित अस्त्र आकाश-मार्ग में लाल केशों और बँधी पायलों वाले राक्षसों के विशाल हाथों को काट दिया तो वे अशनि के समान गिरे जिससे वलि के लिए निश्चित भैंसे मर गये और अज भी विद्ध हो गये। २९१५

अङ्गडङ् गऴिन्दपे रुरुविक् कुन्ऱिनिन्
अङ्गडङ् गिऴिन्दुह वऴिन्द वाडवर्
अङ्गडङ् गलुम्बडर् हुरुदि याऴियिन्
अङ्गडङ् गिनर्तॊडर् पहऴि यञ्जिनार् 2916

अम्-मुन्दर; कटम्-गंडस्थलों से; कऴिन्त-निकल बहनेवाली; पेर् अरुविक्-बड़ी सरिताओं वाले; कुन्ऱिनिन्-पर्वतों (गजों) के समान; अऴिन्त आटवर्-हतोत्साह वीर; अम् कटम्-उनके गालों को भी; किऴिन्तु उक-चिरकर गिरने देकर; तॊटर् पकऴि-लगे आनेवाले शरों से; अञ्चिनार्-डरकर; अङ्कु अटङ्कलुम्-उस मैदान भर में; पटर् कुरुति आऴियिन्-फैले रहे रक्त-सागर में; अङ्कण्-वहीं; तङ्किनर्-ठहरे। २९१६

सुन्दर गंडस्थलों से निकल बहनेवाले रक्त की नदियों के साथ रहने वाले पर्वत-से गजों के समान जो वीर थे, वे अब शिथिलमन रहे। उनके गाल भी चिरकर गिर गये। वे अपने पीछे आनेवाले शरों से डरकर युद्ध के मैदान में फैले रहे रक्त-सागर में घुसकर वहीं छिपे बैठे रहे। २९१६

काऱ्लैक् करत्तॊडुन् दुणियक् कायहदिर्क्
कोऱ्लैत् तलैयुऱ् मरुक्कङ् गूडिनार्

वेरुलत् तूनुरितार् तुळङ्गु मॅय्यितार्
नारुलैक् कुडलितर् पलरु नण्णितार् 2917

काय् कतिर् कोल्–जलानेवाले प्रकाशमय शर; तलै तलै उरु–सिर-सिर पर धँसे; काल्–पैर; तलै–सिर; करत्तोटुम्–हाथों के साथ; तुणिय–कटे; मरुक्कम् कटितार्–(इसलिए) मूच्छित होकर; वेल् तलत्तु ऊन्रितार्–साँगों को भूमि पर टेककर; तुळङ्कुम् मॅय्यितार्–काँपते शरीर वाले बनकर; नारु अलै कुटलितर्–लटककर हिलनेवाली आँतों के होकर; पलरुम्–अनेक; नण्णितार्–(एक ओर) एकत्रित हुए। २६१७

जलानेवाले उज्ज्वल शर राक्षसों के सिर-सिर पर आ चुभे। इसलिए पैर, सिर और हाथ कटे। राक्षसों पर बेहोशी-सी छा गयी। वे साँगों को भूमि पर टेककर, काँपते शरीरों और बाहर लटककर हिलनेवाली आँतों को लेकर आये और एकत्रित हुए। २९१७

पॉङ्गुडर् रुणिन्दतम् बुदल्वर्प् पोक्किलार्
तोङ्गुडर् रोण्मिशै यिरुन्दु शोर्वुरु
अङ्गुडर् रुम्बियैत् तळुवि यण्मितार्
तङ्गुडर् मुदुहिडैच् चरियत् तळ्ळुवार् 2918

पॉङ्कु उटल् तुणिन्त–मोटे शरीर जिनके कट गये उन; तम् पुतल्वर्–अपने पुत्रों को; पोक्किलार्–जो नहीं छोड़ सके वे राक्षस; तोळ् मिचै–कंधों पर; तौङ्कु उटल् इरुन्तु–लटकनेवाले शरीरों के रहकर; चोर्वु उरु–लटते; तम् कुटर्–अपनी आँतों के; मुतुकिटै चरिय–पीठ की तरफ़ गिरते; तळ्ळुवार्–उनको (भीतर) धकेलते हुए; अङ्कु–वहाँ; उडल्–लड़नेवाले; तम्पियै अण्मि–छोटे भाई लक्ष्मण के पास जाकर; तळुवितार्–घेर गये। २६१८

पिता वहाँ थे, जिनके पुत्रों के मोटे शरीर कट गये। वे उन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए कंधों पर उठाये जाने लगे, तो वे लाशें कंधों पर से लटकती रहीं। स्वयं वे पिता थक गये और उनकी आँतें बाहर निकली थीं। उनको भीतर धकेलते हुए वे गये और श्रीराम के लघुभ्राता को घेरकर खड़े हो गये। २९१८

मूडिय नॅय्यॊडु नरव मुरुरिय
शाडिहळ् पॉरियॊडु तहर्न्दु तळ्ळुरक्
कोडिहळ् पलपल कुळाङ्गु ळाङ्गळाय्
आडिन वरुहुरै यरक्क राक्कंये 2919

नॅय्यॊटु–घी के साथ; नरवम्–ताड़ी; पॉरियॊटु–लाजे से; मुरुरिय–भरे; मूटिय–आच्छादनयुक्त; चाटिकळ्–घड़े; तकर्न्तु तळ्ळुर–टूटकर गिरें ऐसा; अरु अरक्कर्–कटनेवाले राक्षसों के; कुरै आक्कै–कबन्ध; पल पल कोटिकळ्–अनेक कोटि संख्या में; कुळाम् कुळाङ्कळाय्–दल बाँधकर; आटिन–नाचे। २६१६

घी, ताड़ी, लाजे आदि के भरे, आच्छादनयुक्त घड़ों को तोड़ गिराते हुए शरविद्ध राक्षसों के कोटि-कोटि कबन्ध दल बाँधकर नाचे। २९१९

कालॅन्तक् कडुवॅन्तक् कलिङ्गक् कम्मियर्
नूलॅन्त वुडऱ्पोऱ्ऱै तॊडर्न्द नोयॅन्तप्
पालुऱु पिरैयॅन्तक् कलन्दु पन्मुऱै
मेलुऱु शेनैयैत् तुणित्तु वीऴ्त्तिनान् 2920

काल् अॅन्त–पवन के समान और; कटु अॅन्त–विष के समान; कलिङ्कम् कम्मियर्–साड़ियाँ बुननेवाले बुनकरों के; नूल् अॅन्त–सूत के समान; उटल् पोर्रै तॊटर्न्त–शरीर में लगे; नोय् अॅन्त–रोग के समान; पाल् उरु पिरै अॅन्त–दूध में पड़े जामन के समान; पन् मुऱै–बार-बार; मेल् उरु–अपने पर चढ़ आनेवाली; चेनैयै–सेना को; कलन्तु–उसमें घुसकर; तुणित्तु वीऴ्त्तिनान्–काट गिराया (लक्ष्मण ने)। २९२०

लक्ष्मण ने (इस भाँति) पवन, विष, बुनकर के सूत, शरीर के रोग और दूध के जामन के समान अपने पर बार-बार चढ़ आनेवाली सेना में घुसकर वीरों को काट गिराया। २९२०

कण्डनन् ऱिशैतॊऱुम् नोक्किक् कण्णहन्
मण्डल मऱिकड लन्न मापडै
विण्डॅरि काल्पॊर मऱिन्दु वीऱ्ऱुऱुम्
तण्डलै यामॅन्तक् किडन्द तन्मैयै 2921

तिचै तॊऱुम्–हर दिशा में; नोक्कि–दृष्टि दौड़ाकर; कण् अकन्–विशाल; मण् तलम्–पृथ्वीतल में; मऱि कटल् अन्न–मुड़-मुड़कर चलनेवाली लहरों के समुद्र के समान; मा पटै–बड़ी सेना (के); विण्टु ॲरि–शत्रुता करके जलनेवाली; काल् पॊर–हवा के प्रचंड झोंकों से; मऱिन्तु वीऱ्ऱु उऱुम्–ऊपर-नीचे कटकर उजड़नेवाले; तण्टलै आम् अॅन्त–शीतल बगीचे के समान; किटन्त तन्मैयै–पड़े रहने का हाल; कण्टनन्–देखा। २९२१

इन्द्रजित् ने देखा कि विशाल पृथ्वीतल में, मुड़-मुड़कर आनेवाली तरंगों से भरे सागर-सम उसकी सेना के वीर छिन्न-भिन्न हो गिर गये हैं और मैदान प्रचंड प्रभंजन के झोंकों से उजड़े शीतल उपवन का-सा दृश्य उपस्थित कर रहा है। २९२१

मिडलिन्वॅङ् गडहरिप् पिणत्तिन् विण्डॊडुम्
तिडलुम्वॅम् बुरवियुन् देरुज् जिन्दिय
उडलुम्वन् ऱलैहळु मुदिरत् तोङ्गलैक्
कडलुमल् लादिडै यॊन्ऱुङ् गण्डिलन् 2922

मिटलित्–बलवान; कटम् वॅम् करि–मत्त भयंकर हाथियों की; पिणत्तिन्–लाशों के; विण् तोंटुम्–गगनस्पर्शी; तिटलुम्–टीले; वॅम् पुरवियुम्–और भयंकर अश्व; तेरुम्–और रथ; चिन्तिय उटलुम्–छितरे बड़े शरीर; वन् तलैकळुम्–और कठोर सिर; ओङ्कु अलै–उन्नत लहरों के; उतिरत्तु कटलुम् अल्लातु–रक्त-सागर (इन) के अलावा; इटै–मैदान में; ऑन्ऱुम् कण्टिलन्–कुछ नहीं देखा (इन्द्रजित् ने)। २६२२

उसने, सबल, मत्त और संतापक रीति से क्रुद्ध गजों की लाशों के गगन-स्पर्शी ढेरों, भीमकाय अश्वों, रथों, कटे शरीरों और कठोर सिरों तथा चलायमान लहरों के रुधिर-सागरों के अलावा कुछ नहीं देखा। २९२२

नूऱुनू ऱायिर कोडि नोऩ्गऴल्
माऱुपो ररक्करै यौरुवन् वाट्कणै
कूऱुकू ऱाक्किय कुवैयुञ् जोरियिन्
आऱुमे यन्ऱियो राक्कै कण्डिलन् 2923

नूऱु नूऱु आयिर कोटि–सौ-सौ हज़ार करोड़ (अत्यधिक संख्या में); नोन् कऴल्–कठिन पायलधारी; माऱु पोर्–वैरी लड़ाकू; अरक्करै–राक्षसों को; ऑरुवन्–अद्वितीय लक्ष्मण के; वाळ् कणै–तीक्ष्ण शरों ने; कूऱु कूऱु आक्किय–जो छिन्न-भिन्न कर दिया वे; कुवैयुम्–उन ढेरों के; चोरियिन् आऱुमे अन्ऱि–और रक्त की नदियों के अलावा; ओर् याक्कै कण्टिलन्–एक शरीर को भी नहीं देखा। २६२३

उसने सहस्र-सहस्र कोटि के कठिन पायल-धारी तथा योद्धा राक्षस वीरों को अनुपम लक्ष्मण के शरों से क्षत-विक्षत होकर टुकड़ों के ढेरों में पड़ा हुआ ही देखा; एक शरीर को भी पूर्ण रूप में नहीं देखा। २९२३

नञ्जिनुम् वॅय्यवर् नडुङ्गि नावुलर्न्
दञ्जिनर् शिलर्शिल रडैहिन् ऱार्शिलर्
वॅञ्जिन वीरर्हळ् मीण्डि लादवर्
तुञ्जिनर् तुणैयिल रॅन्ऩत्तु ळङ्गिनार् 2924

चिलर्–कुछ लोग; नञ्चिनुम् वॅय्यवर्–विष से भी क्रूर; नटुङ्कि–डर से कांपकर; ना उलर्न्तु–जीभ सूखकर; अञ्चितर्–डरे; चिलर्–और कुछ; अटैकिन्ऱार्–इन्द्रजित् के पास पहुँचे; चिलर् वॅञ्चित्त वीरर्कळ्–कुछ भयंकर क्रोधशील वीर; मीण्टिलातवर्–जो लौट नहीं सके; तुणै इलर् ऍन–असहाय हो गये यह सोचकर; तुळङ्किनार्–दहले; तुञ्चितर्–मरे। २६२४

उसने देखा कि कुछ विष से भी क्रूर वीर लक्ष्मण के सामने भयातुर हो काँप रहे हैं। उनकी जीभ सूख गयी है। कुछ हैं, जो इन्द्रजित् की छाया में पनाह पाने दौड़े आते हैं। कुछ क्रुद्ध वीर देखे गये जो अपने

स्थान से लौट नहीं आ पाये और केवल भय के कारण वहीं प्राण छोड़ चुके हैं। २९२४

ओमवॅङ् गत़लविन् वुळ्ळैक्क लप्पैयुम्
कामर्वण् डरुप्पैयुम् बिऱ्वुङ् गट्टऱ्
नाममन् विरत्तॊऴिऩ् मऱन्दु नन्दुरु
तूमवॅङ् गत़लॅत़प् पौलिन्दु तोऩ्ऱिऩाऩ् 2925

ओम–होमकुण्ड को; वॅम् कत्तल्–क्रूर आग; अविन्तु–बुझी; उळ्ळै–पास की; कलप्पैयुम्–सामग्रियाँ; कामर्–सुन्दर; वण् तरुप्पैयुम्–समृद्ध वर्भ; पिऱवुम्–और अन्य; कट्टु अऱ–अस्थिर हुए; नामम्–भयदायी; मन्तिरत् तॊऴिल्–मंत्रोच्चारण का कार्य; मऱन्तु–भूलकर; नन्तु उऱु–वर्धनशील; तूम–धूम्रसहित; वॅम् कत्तल् ॲॅत–गरम आग के समान; पौलिन्तु–शोभा के साथ; तोऩ्ऱिऩाऩ्–दिखा। २९२५

(याग की स्थिति देखिए।) होमकुंड की संदाहक आग बुझ गयी। पास की सामग्रियाँ, पनपे कुश सब अस्त-व्यस्त हो छितर गये। मंत्रोच्चारण का काम भूलने से रुक गया। यह देखकर स्वयं इन्द्रजित् तपती व धूम्रसहित आग के समान शोभा। २९२५

अक्कणत् तडुहळत् तप्पु मारियाल्
उक्कव रॊऴितर वुयिरु ळॊरॅलाम्
तॊक्कत़ ररक्कतैच् चूऴ्न्दु शुऱ्ऱुऱप्
पुक्कदु कविप्पॅरुऩ् जेऩैप् पोर्क्कडल् 2926

अ कणत्तु–उस क्षण; अट्कळत्तु–मैदान-जंग में; अम्पु मारियाल्–शर-वर्षा से; उक्कवर् ऑॊऴि तर–मरे हुओं को छोड़कर; उयिर् उळोर् ॲॅलाम्–जीवित रहे सभी; अरक्कतै चुऱ्ऱुऱ–राक्षस (इन्द्रजित्) को चारों ओर से; चूऴ्न्तु तॊक्कत़र्–घेरकर एकत्रित हुए; कवि–वानरों की; पोर्–युद्धरत; पॅरुम् चेऩै कटल्–बड़ी सेना का सागर; पुक्कतु–घुस आया। २९२६

तब युद्ध के मैदान में शर-वर्षा से जो मरे उनको छोड़ अन्य जो जीवित रहे, वे सब इन्द्रजित् को चारों ओर से घेर गये। इसको देखकर वानर-सेना का बड़ा सागर युद्ध करने मैदान में घुस गया। २९२६

आयिर कोडियि तळवि लप्पडै
एयॅनु मात्तिरत् तिऱ्ऱ दॆन्बदुम्
तूयवत् शिलैवलित् तॊऴिलुन् दुन्बमुम्
मेयित़ वॅहुळियुङ् गिळर वॅम्बिऩाऩ् 2927

आयिरम् कोटियित्–सहस्र कोटि; अळविल्–संख्या की; अप् पटै–वह सेना; ए ॲॅतुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की वेरी में; इऱ्ऱत ॲॅत्पतुम्–नष्ट हो गयी, यह

बात; तूयवन् चिलै वलि तॊऴिलुम्–पवित्र (श्रीलक्ष्मण) का धनुर्बलपराक्रम (दोनों) ने; तुन्पमुम्–दुःख और; एयिल–उचित; वॆकुळियुम्–कोप; किळर–उकसाये; वॆम्पित्तान्–तो वह संतप्त हुआ। २६२७

हज़ार करोड़ की संख्या की थी इन्द्रजित् की सेना। वह 'ए' कहने की देरी के अंदर मिट गयी। इस बात ने और पवित्र लक्ष्मण के धनुर्युद्ध-समर्थ कार्य ने इन्द्रजित् के मन में दुःख और उचित ही कोप को पैदा किया तो वह संतप्त हुआ। २९२७

मॆय्हुलैन् दिरुनिल मडन्दै विम्मुरच्
चॆय्हॊलैत् तॊऴिलैयुञ् जॆन्ऱ तीयवर्
मॊय्हुलत् तिरुदियु मुनिवर् कण्डवर्
कैहुलक् किन्ऱदुङ् गण्णि नोक्कितान् 2928

इरु निल मडन्तै–बड़ी पृथ्वीदेवी; मॆय् कुलैन्तु–शरीर-स्थिति बिगड़कर; विम्मुर–दुःखी हो ऐसा; कॊलै चॆय् तॊऴिलैयुम्–वध-कार्यों को; चॆन्ऱ–जो गये थे; तीयवर्–उन खलों के; मॊय् कुलत्तु–भरपूर कुलों का; इऱुतियुम्–नाश; कण्टवर् मुनिवर्–(जिन्होंने) देखा वे मुनि; कै कुलैक्किन्ऱतुम्–हाथों को हिलाते हैं, उसे; कण्णिन्–अपनी आंखों से; नोक्कितान्–देखा (इन्द्रजित् ने)। २६२८

लक्ष्मण उत्तम पृथ्वीमाता को विक्षत और दुःखी करते हुए राक्षस-हनन का काम करते थे। युद्ध में गये खल लोग अपने भरपूर कुल-सहित मर गये। दोनों बातों को देखकर मुनि लोगों के हाथ हिल उठे। इसको इन्द्रजित् ने देखा। २९२८

मानमुम् बाऴ्बड वहुत्त वेळ्वियिन्
मोनमुम् बाऴ्बड मुडिवि लामुरण्
शेनैयुम् बाऴ्बडच् चिऱन्द मन्दिरत्
तेनैयुम् बाऴ्बड विनैय शॆप्पिनान् 2929

मानमुम् पाऴ् पट–मान नष्ट हुआ; वकुत्त–प्रबन्ध जिसका हुआ उस; वेळ्वियिल्–यज्ञ में; मोनमुम्–मौनव्रत; पाऴ् पट–भंग हुआ; मुरण् मुटिविला–बल में असीम; चेनैयुम्–सेना भी; पाऴ् पट–नष्ट हुई; चिऱन्त मन्तिरत्तु–श्रेष्ठ योजना के; एनैयुम् पाऴ् पट–सबके नष्ट होते (देखकर); इनैय चॆप्पिनान्–ये बातें कहीं (इन्द्रजित् ने)। २६२६

अब इन्द्रजित् का गौरव, यज्ञ का आवश्यक मौनव्रत, असीम बलवान सेना और चिंतित अन्य सभी कार्य —सभी नष्ट हो गये तो वह यों कहने लगा। २९२९

वॆळ्ळमै येन्दुडन् विरिन्द शेनैयिन्
उळ्ळदक् कुरोणियी रैन्दॊ डोयुमाल्

अॅळ्ळरुम् वेळ्वियिऩ् ऱिऩिदि यऱ्ऱुदल्
पिळ्ळैमै यत्तैयदु शिदैन्दु पेऱ्ऩददाल् 2930

ऐ ऐन्तु वॅळ्ळम् उटऩ्–पचीस 'वॅळ्ळम्' की संख्या में; विरिन्त–विस्तृत; चेत्तैयिऩ्–सेना में; उळ्ळतु–बची रही; ईरैन्तु अक्कुरोणि ओटु ओयुम्–दस अक्षौहिणी तक ही है; अॅळ् अरुम् वेळ्वि–अनिंद्य यज्ञ; चितैन्तु पोन्ततु–टूट गया; इऩ्ऱु–आज; इतितु–तृप्तिदायक रीति से; इयऱ्ऱुतल्–करना (सोचना); पिळ्ळैमै–बचकाना; अत्तैयतु–सा होगा। २६३०

"पचीस 'वॅळ्ळम्' की संख्या की सेना में अब बची केवल दस अक्षौहिणियों की ही! अनिंद्य यज्ञ बीच में ही नष्ट हो गया। अब इस यज्ञ को अच्छी रीति से संपन्न करने का प्रयास बचकाना-सा होगा।"। २९३०

तॊडङ्गिय वेळ्वियिऩ् ऱूम वॅङ्गऩल्
अडङ्गिय दविन्दुळ दमैयु मामऩ्ऱे
इडङ्गॊडु वॅञ्जॆरु वॆऩ्ऱि यिऩ्ऱॆऩक्
कडङ्गिय दॆऩ्बदऱ् केदु वाहुमाल् 2931

तॊटङ्किय–आरब्ध; वेळ्वियिऩ्–यज्ञ में; तूम वॅम् कऩल्–धूम्रसहित भयंकर आग; अटङ्कियतु–थम गयी; अविन्तुळतु–बुझ गयी; अमैयुम् आम्–यह बात निश्चित हो गयी; अऩ्ऱे–न; इटङ्कॊटु–विस्तृत; वॆम् चॆरु–भयंकर युद्ध में; वॆऩ्ऱि–विजय; ऍतक्कु इऩ्ऱु अटङ्कियतु–मेरी आज अंत हो गयी; ऍऩ्पतऱ्कु–इसका; एतु आकुम्–हेतु है। २६३१

"आरब्ध यज्ञ की धुआँ-सह कठोर अग्नि थक गयी, बुझ गयी। यह निश्चित हो गया न? अब यह इसी बात का द्योतक है कि बड़े युद्ध में विजय अब अंत हो गयी; मेरी न रहेगी।"। २९३१

आङ्गदु किडक्कनाऩ् मऩिशरक् काऱ्ऱलॆऩ्
नीङ्गिऩॆ ऩॆऩ्बदो रिऴिवु नेरुऱ
वीङ्गुनिऩ् ऱियावरु मियम्ब वॆऩ्गुलत्
तोङ्गुपे राऱ्ऱलु मॊळियु मॊल्हुमाल् 2932

आङ्कु अतु किटक्क–वहाँ वह रहे; नाऩ्–मैं; मऩिचरक्कु–नरों से; आऱ्ऱलॆऩ्–लड़ नहीं सका; नीङ्किऩॆऩ्–इसलिए भागा; ऍऩ्पतु–ऐसा; ओर्–एक; इऴिवु नेर् उऱ–अपयश हो गया; यावरुम्–ऐसा सभी; ईङ्कु निऩ्ऱु इयम्प–यहाँ रहकर कहते हैं; ऍऩ् कुलत्तु–मेरे कुल का; ओङ्कु–ऊँचा; पेर् आऱ्ऱलुम्–बड़ा बल और; ऒळियुम्–प्रकाश (यश); ऒल्कुम्–मंद पड़ जायगा। २६३२

"वह वहाँ रहे। अब सब यही कहेंगे कि मैं नरों के सामने ठहर नहीं सका और इसलिए भाग आया। यह अपयश मुझ पर लग गया है। मेरे कुल का बल और यश भी मंद पड़ जायगा।"। २९३२

मन्दिर वेळ्विपोय् मडिन्द दामॆनच्
चिन्दॆयि तिनॆन्दुनोन् दिरुन्दु तेय्वुरल्
अन्दरत् तमरर्दा मतिदर्क् काऱ्ऱलत्
इन्दिरर्क् कॆयिवन् वलियॆन् ऱेशवो 2933

मन्तिर वेळ्वि–मन्त्रयुक्त यज्ञ; पोय् मटिन्तत्तु आम्–मिट गया है; ॲंत–ऐसा; चिन्तॆयिन् निनॆन्तु–मन में सोचकर; नोन्तु–दुःख करके; इरुन्तु–रहकर; तेय्वु उरल्–क्षीण होना; अन्तरत्तु अमरर् ताम्–व्योम के देवों के; इवन् मतितर्क्कु आऱ्ऱलन्–यह नरों के आगे ठहर नहीं सकता; इवन् वलि–इसका बल; इन्तिरर्क्के–इन्द्र के सम्बन्ध में ही (कारगर) है; ॲन्ऱु–ऐसा; एचवो–निन्दा करने के लिए ही है क्या। २६३३

"यह सोचकर कि मंत्रपुष्ट यज्ञ मिट गया, रोता-घुलता बैठा रहना क्यों? इसलिए कि देव मेरी यह निंदा करें कि यह नर का सामना नहीं कर सकता। इसका बल क्या इन्द्र को हराने में ही समर्थ है?"। २९३३

ॲन्ऱवन् पहर्हिन्ऱ वॆल्लै यिन्निरुम्
कुन्ऱॊडु मरङ्गळुम् पिणत्तिन् कूट्टमुम्
पॊन्ऱिन करिहळुङ् गविहळ् पोक्किन
शॆन्ऱन पॆरुम्बड यिरिन्दु शिन्दिन 2934

ॲन्ऱु–ऐसा; अवन्–उसके; पकर्किन्ऱ ॲल्लॆयिल्–कहने के अवसर पर; कविकळ्–वानरों ने; इरुम् कुन्ऱॊटु–बड़े पर्वतों को और; मरङ्कळुम्–तरुओं; पिणत्तिन् कूट्टमुम्–लाशों के ढेरों और; पॊन्ऱिन करिकळुम्–मरे हाथियों को; पोक्किन–उठा फेंका; पॆरुम् पटै–राक्षसों की बड़ी सेना; इरिन्तु–हटकर; चिन्तिन–बिखर गयी। २६३४

जब इन्द्रजित् ऐसा सोचकर दुःख कर रहा था, तब वानरों ने बड़े पर्वतों, तरुओं, लाशों के ढेरों और मरे हुए गजों को राक्षसों पर फेंका। इससे राक्षस-सेना अस्त-व्यस्त हुई और बिखर गयी। २९३४

ऒदुङ्गिन रॊरुवर्ही ळॊरुवर् पुक्कुऱप्
पदुङ्गिनर् नडुङ्गिनर् पहळि पाय्दलिन्
पिदुङ्गिनर् कुडरुडल् पिळवु पट्टनर्
मदम्बुलर् कळिऱॆनच् चीऱ्ऱ माऱ्ऱिनार् 2935

ऒरुवर् कीऴ्–एक के नीचे; ऒरुवर्–दूसरा; ऒतुङ्किनर्–छिपा; पुक्कुऱ पतुङ्किनर्–अपने को छिपाकर दुबके; पकळि पाय्तलिन्–शरों के आने से; नटुङ्किनर्–डरे; कुटर् पितुङ्किनर्–बाहर निकली आँतों वाले हो गये; उटल् पिळवु पट्टनर्–छिन्न-शरीर हो गये; मतम् पुलर्–मदहीन; कळिऱु ॲन–गज के समान; चीऱ्ऱम् माऱ्ऱिनार्–शान्तक्रोध हो गये। २६३५

कुछ राक्षस एक-दूसरे के नीचे छिपे दुबके रहे। कुछ चलते आते

लक्ष्मण-शरों से भयविकंपित हुए। कुछ लोगों की आँतें बाहर निकल आयीं। मदशुष्क हाथियों के समान राक्षस शांतकोप हो रहे। २९३५

वीरन्वॆङ् गणैयॊडुङ् गविहळ् वीशिय
कार्वरै यरक्करदङ् गडलिन् वीऴ्न्दन
पोर्नॆडुङ् गाल्पॊरप् पॊऴियु मामळैत्
तारयु मेहमुम् पडिन्द तन्मैय 2936

वीरन्–वीर लक्ष्मण के; वॆम् कणैयॊटुम्–क्रूर शरों के साथ; कविकळ्–वानरों ने; वीचिय–जो फेंके; कार् वरै–वे काले पर्वत; अरक्कर् तम् कटलिल्–राक्षस-सागर में; वीऴ्न्तन–जो गिरे; पोर् नॆटुम्–ढकेलनेवाले उग्र; काल् पॊर–पवन के झोंके में; पॊऴियुम्–बरसनेवाले; मा मळै तारैयुम्–काली मेघ की धारें; मेकमुम्–और मेघ; पटिन्त तन्मैय–(सागर में) गिरे पड़े हों, उस प्रकार दिखे। २९३६

वीर लक्ष्मण के शर और वानर-प्रेषित काले पर्वत, जो राक्षससेना-सागर-मध्य गिरे, वे प्रचंड प्रभंजन के झोंकों से समुद्र में मग्न होती काली वर्षा की धारों और मग्न होते पर्वतों के समान लगे। २९३६

तिरैक्कडऱ् पॆरुम्बडै यिरिन्दु शिन्दिड
मरत्तिनिऱ् पुडैत्तडर्त् तुरुत्त मारुदि
अरक्कनुक् कणित्तॆन वणुहि यत्तवन्
उरक्कदञ् जिऱप्पन माऱ्ऱङ् गूऱुवान् 2937

तिरै कटल् पॆरुम् पटै–तरंगाकीर्ण सागर-तुल्य बड़ी सेना; इरिन्तु चिन्तिट–अस्त-व्यस्त हो भाग गयी; मरत्तिनिल्–पेड़ों से; पुटैत्तु–पीटकर; अटर्त्तु–त्रस्त करके; उरुत्त मारुति–जो बड़ा क्रुद्ध हुआ उस मारुति ने; अरक्कन्तुक्कु अणित्तु ऎत–राक्षस के समीप; अणुकि–जाकर; अत्तवन्–उसके; उरम् कतम्–सबल क्रोध; चिऱप्पत–बढ़ानेवाले; माऱ्ऱम् कूऱुवात्–शब्द कहे। २९३७

तब तरंगपूर्ण सागर-सदृश राक्षस-सेना को अस्त-व्यस्त हो भगाते हुए हनुमान ने तरुओं से पीटा। क्रुद्ध हनुमान फिर इन्द्रजित् के पास गया और उसके क्रोध को उभाड़नेवाले ये वचन कहे। २९३७

तडन्दिरैप् परवै यन्न शक्कर यूहम् बुक्कुक्
किडन्ददु कण्ड दुण्डे नाणॊलि केट्टि लायो
तॊडर्न्दुपो ययोत्ति तन्नैक् किळॆयॊडुन् दुणिय नूऱि
नडन्दवॆप् पॊऴुदु वेळ्वि मुडिन्ददे करुम नन्ऱे 2938

तटम्–विशाल; तिरै–तरंग-सहित; परवै अत्त–समुद्र के समान; चक्कर यूकम्–चक्रव्यूह में; पुक्कु किटन्ततु–(तुम्हारा) प्रवेश कर (छिपा) रहना; कण्टतु उण्टे–हमने देख लिया; नाण् ऒलि–डोरे का नाद; केट्टिलायो–सुना नहीं क्या;

तॊटर्न्तु पोय्–लगा जाकर; अयोत्ति तन्नै–अयोध्या को; किळैयोटुम्–परिवार के साथ; तुणिय–काटकर; नूरि–मिटाकर; नटन्ततु–वापस आना; ऍप्पोऴुतु–कब; वेळ्वि करुमम्–यज्ञकर्म; नन्रे मुटिन्तते–अच्छा पूरा हुआ न। २९३८

अब हमने तुम्हारा विशाल तरंग-सहित सागर-सदृश चक्रव्यूह के मध्य छिपा रहना देख लिया न ? तुमने धनुष की टंकार नहीं सुनी ? तुम तभी अयोध्या में जाकर श्रीरामजी के परिवार को मार आने की बात कहते थे ! वह काम करके तुम लौटे कब ? क्या यज्ञकर्म सुसम्पन्न हो गया ? । २९३८

एन्दहत् ञाल मॆल्ला मिन्रिरुन्दु इवरत् ताङ्गुम्
वान्दळिर् पॆरिय तिण्डोट् परदनैप् पळियिऱ् ऱीरन्द
वेन्दनैक् कण्डु नीनिन् विल्वलङ् गाट्टि मीण्डु
पोन्ददो वुयिरुङ् गॊण्डे पोनवै पॊरुन्दिऱ् ऱम्मा 2939

इतितु उऱैन्तु–सुख से रहकर; एन्तु अकल् ञालम् ऍल्लाम्–बहुत विस्तृत सारी भूमि को; इवर–ठीक; ताङ्कुम्–धारण करनेवाले; पान्तळिन्–(आदिशेष-) नाग से अधिक; पॆरिय–बड़े; तिण् तोळ्–व सुदृढ़ कन्धों वाले; परतनै–भरत को; पऴियिन् तीर्न्त–अपयशविमुक्त; वेन्तनै–राजा को; नी कण्टु–तुम देखकर; निन्–अपना; विल् वलम्–धनु का बल; काट्टि–प्रदर्शन करके; मीण्टु–फिर; उयिरुम् कॊण्टे–प्राण बचाकर; पोन्ततो–आये क्या; पोनवै–जाना; पॊरुन्तिऱ्ऱु–उचित रहा; अम्मा–आश्चर्य। २९३९

सुदृढ़ तथा सुस्थिर रूप से भूभार वहन करनेवाले आदिशेषनाग के फन से भी बड़े तथा कठोर कंधों के स्वामी, अपयश-विमुक्त भरत को देखो, उन्हें अपना धनुबल दिखाओ; फिर जीवित लौट आओ —क्या यह सम्भव रहा ? क्या ही खूब रहा तुम्हारा यह कहना कि मैं उधर जा रहा हूँ ? । २९३९

अम्बरत् तमैन्द वल्विऱ् चम्बर नावि वाङ्गि
उम्बरुक् कुदवि शॆय्द वॊरुवनुक् कुदयञ् जॆय्द
नम्बियर् मुदल्व रान मूवर्क्कु नाल्व नान
तम्बियैक् कण्डु निन्रन्न् ऱनुवलङ् गाट्टिऱ् ऱुण्डो 2940

अम्परत्तु अमैन्त–आकाश में जो लड़ाई में लगा उस; वल् विल् चम्परन्–सबल धनुर्धर शंबर के; आवि–प्राणों को; वाङ्कि–दूर कर; उम्परुक्कु–देवों को; उतवि चॆय्त–सहायता जिन्होंने की; ऒरुवनुक्कु–उन अनुपम दशरथ के; उतयम् चॆय्त–पुत्रों के रूप में उदित; नम्पियर्–गुणपूर्ण; मुतल्वरान्–अग्रज; मूवर्क्कु–तीन के बाद; नाल्वतान–चतुर्थ; तम्पियै–लघु सहोदर को; कण्टु–देखकर; निन्तन्–तुमने अपना; तनु वलम्–धनु का बल; काट्टिऱ्ऱु उण्टो–दिखाया क्या। २९४०

सबल धनुर्वीर शंबरासुर को मारकर जिन्होंने देवों की सहायता की थी, उन अनुपम दशरथ जी के पुत्रों के रूप में अवतरित चार भाइयों में जो चौथे हैं, उन शत्रुघ्न से भी भेंट की थी क्या तुमने? उन्हें अपना धनुसामर्थ्य-प्रदर्शन किया था क्या ? । २९४०

तीयॊत्त वयिर वाळि युडलुऱच् चिवन्द शोरि
कायत्तिन् शॆविथि नूडुम् वायिनुङ् गणग ळूडुम्
पायप्पो यिलङ्गै बुक्कु वञ्जनै परप्पच् चॆय्युम्
मायप्पो राऱ्ऱ लॆल्ला मिन्ऱॊडु माळु मन्ऱे 2941

ती ऒत्त–अग्नि-सदृश; वयिर वाळि–वज्र-बाण; उटल् उऱ–तुम्हारे शरीर पर लगें; कायत्तिन्–(तज्जनित) व्रणों के; चिवन्त चोरि–लाल रक्त; चॆविथिन् ऊटुम्–कानों से और; वायिनुम्–मुख से; कण्कळ् ऊटुम्–और आँखों से होकर; पाय–बहे; इलङ्कै पोय् पुक्कु–इस स्थिति में लंका में प्रवेश करके; वञ्चनै परप्प–माया फैलाने के निमित्त; चॆय्युम् माय–जो तुम करोगे उस; पोर् आऱ्ऱल् ऎल्लाम्–युद्ध का सारा सामर्थ्य; इन्ऱॊटु माळुम्–आज के साथ समाप्त हो जायगा। २९४१

लक्ष्मणजी के अग्नि-सम वज्रनिभ बाण तुम्हारे शरीर में लगेंगे; व्रण होंगे; लाल रक्त तुम्हारे कानों, मुख और आँखों से होकर बाहर निकलेंगे। इसलिए लंका में जा घुसकर माया रचने का तुम्हारा सारा सामर्थ्य आज ही समाप्त हो जायगा। २९४१

पाशमो मलरित् मेलात् पॆरुम्बडैक् कलमो पण्डै
ईशतार् पडैयो मायो नेमियो यादो विन्नुम्
वोशनोर् विरुम्बु हिन्ऱी रदऱ्कुनाम् वॆरुविच् चालक्
कूशितेम् बोदुम् नुम्मै कूऱ्ऱितार् कुऱुह वन्दार् 2942

पाचमो–नागपाश; मलरित् मेलात्–कमलासन का; पॆरुम् पटै कलमो–बड़ा अस्त्र; ईचतार् पण्टै पटैयो–परमेश्वर का पुराना अस्त्र; मायोन्–मायावी श्रीविष्णु का; नेमियो–चक्र; इन्नुम्–और; नीर्–तुम; यातो वीच विरुम्पुकिन्ऱीर्–हम पर क्या चलाना चाहते हो; अतऱ्कु–उससे; नाम्–हम; चाल वॆरुवि–बहुत डरकर; कूचितेम्–संकोच करते हैं; पोतुम्–बस; नुम्मै–तुम्हारे; कूऱ्ऱितार्–यम; कुऱुक वन्तार्–पास आया है। २९४२

अब तुम क्या अस्त्र चलाओगे ? नागपाश, कमलासन ब्रह्मा का अस्त्र ? परमेश्वर का पाशुपतास्त्र ? या मायावी नारायण का चक्र ? या दूसरा कौन सा अस्त्र ? ओह ! हम बहुत भयभीत हैं ! (व्यंग्य)। बस ! (तुम्हारा माया-जाल अब कुछ नहीं रहा।) तुम सबको मारने के लिए यम आ चुका है। २९४२

वरङ्गणो रुडैय वाऱु मायङ्गळ् वल्ल वाऱुम्
बरङ्गॊळ्वा नवरिऱ् ऱॆय्वप् पडैक्कलम् बडैत्त वाऱुम्
उरङ्गळु निन्ऱ वन्ऱे युम्मैना मुयिरि नोडुञ्
जिरङ्गॊळत् तुणिन्द दन्न दुण्डदु तिऱम्बि नोमो 2943

नीर् वरङ्कळ् उटैय आऱुम्–तुम वर पा चुके हो, वह स्थिति और; मायङ्कळ्–मायाओं में; वल्ल आऱुम्–समर्थ हो वह बात; परम् कॊळ्–श्रेष्ठता रखनेवाले; वानवरिल्–देवों से; तॆय्व पटै कलम्–दिव्यास्त्र; पटैत्त आऱुम्–तुम्हारे ग्रहण किये रहने का भाव; उरङ्कळुम्–तुम्हारे बल; निन्ऱ अन्ऱे–स्थिर रहनेवाले हैं न; नाम्–हमने; उम्मै–तुमको; उयिरितोटुम्–प्राणों के साथ; चिरम् कॊळ–सिर ले लेना; तुणिन्तदु अन्ततु–ठाना था वह निश्चय; उण्टतु–था; अतु तिऱम्पितोमो–उससे चूके क्या। २९४३

तुम्हारे प्राप्त वरों की महिमा, माया का बल, श्रेष्ठ देवों से प्राप्त हथियारों की स्थिति, तुम्हारे सामर्थ्य —यह सभी स्थायी हैं न ? तो भी हमने तुम्हारे प्राणों के साथ (या प्राणों के रहते) सिरों को चुन लेने का निश्चय किया था ! क्या हम उसमें चूके ? । २९४३

विडन्दुडिक् किन्ऱ कण्डत् तण्णलुम् विरिञ्जन् ऱानुम्
पडन्दुडिक् किन्ऱ नाहप् पाऱ्कडऱ् पळ्ळि यानुञ्
जडन्दुडिक् किलराय् वन्दु ताङ्गिनुञ् जाद ऱिण्णम्
इडन्दुडिक् किन्ऱ दुण्डे यिरुत्तिरो वियम्बु वीरे 2944

विटम् तुटिक्किन्ऱ–जिसमें विष शोभता है ऐसे; कण्टत्तु अण्णलुम्–कण्ठ के प्रभु और; विरिञ्चन् तानुम्–विरंचि और; पाल् कटल्–क्षीरसागर में; पटम् तुटिक्किन्ऱ–फन फैलाये; नाक–सर्प की; पळ्ळियानुम्–शय्याशायी; चटम् तुटिक्किलराय्–शरीर को कंपित न होने देते हुए; वन्तु ताङ्किनुम्–आकर सहायता दें तो भी; चातल् तिण्णम्–मरना ध्रुव है; इटम् तुटिक्किन्ऱतु–बायाँ (अंग) फड़कता; उण्टे–है न; इरुत्तिरो–(जीवित) रहोगे क्या; इयम्पुवीर्–कहो । २९४४

चाहे विषशोभित कंठवाले शिवजी, विरंचि, क्षीरसागर-फणी-शेषशायी नारायण आदि बिना किसी शरीरकंपन के आकर तुम्हें अवलंब दें— पर तुम्हारी मृत्यु ध्रुव है । तुम्हारे बायें अंग फड़कते हैं कि नहीं । क्या तुम जीवित रहोगे ? बताओ ! । २९४४

कॊल्वनॆन् ऱुन्नैत् ताने कुऱित्तोरु शूळुङ् गॊण्ड
विल्लिवन् दरुहु शार्न्दुन् , शेनैये मुळुदुम् वीट्टि
वल्लैनी पॊरुवा यॆन्ऱु विळिक्किन्ऱान् वरिवि नाणित्
ऒल्लॊलि यॆय शॆय्यु मोमत्तुक् कुरुप्पॊन् ऱामो 2945

कुऱित्तु–तुम्हारे सम्बन्ध में; उन्नै ताने कॊल्वन्–तुम्हें मैं स्वयं मारूँगा;

ऍन्ऱ्-ऐसी; ओर चूळुम् कोण्ट-एक प्रतिज्ञा जिन्होंने की; विल्लि-वे धनुर्धर; वन्तु-आकर; अरुकु चाऱ्ऱु-निपटाकर; उन् चेतैयै मुळुतुम् वीट्टि-तुम्हारी सारी सेना को मिटाकर; वल्लै नी-प्रतापी तुम; पोरुवाय्-युद्ध करो; ऍन्ऱ्-ऐसा; विळिक्किन्ऱान्-बुलाते हैं; ऐय-इन्द्रजित्; विल् नाणिन्-धनु के डोरे की; ओल् ओलि-'ओल' की ध्वनि; चॅय्युम् ओमत्तुम्-जो करते हो उस याग का; उऱुप्पु ऒन्ऱ् आमो-एक अंग बन सकेगी क्या। २९४५

तुम्हारे सम्बन्ध में लक्ष्मण ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं ही उसका वध करूँगा। वे धनुर्धर यहाँ आकर तुम्हारी सारी सेना को मिटा चुके। अब ललकार रहे हैं कि 'आओ लड़ने' बाबा! उनके धनु की टंकार-ध्वनि भी तुम्हारे यज्ञहोम का एक अंग है क्या? । २९४५

मूवहै युलहुङ् गाक्कु मुदलवन् तम्बि पूशल्
तेवर्हण् मुनिवर् मऱ्ऱुम् दिऱत्तिऱत् तुलहत्त् जेर्न्दार्
यावरुङ् गाण निन्ऱा रिनियिऱै ताळ्प्प वॅन्नो
शावदु शरद मन्ऱो वॅन्ऱनन् ऱरुमङ् गाप्पान् 2946

तरुमम् काप्पान्-धर्मसंरक्षक हनुमान; मूवकै उलकुम् काक्कुम्-त्रिलोकपालन-कर्ता; मुतलवन्-आदिनाथ के; तम्पि-छोटे भाई; पूचल् काण-जो युद्ध (करेंगे) उसको देखने; तेवर्कळ-सुर; मुनिवर्-मुनि; मऱ्ऱुम्-अन्य; तिऱत्तिऱत्तु-विध विध; उलकम् चेर्न्तार्-लोकवासी; यावरुम्-सभी; निन्ऱार्-आ खड़े हैं; इनि-अब; इऱै-थोड़ा भी; ताळ्प्पतु-विलंब करना; ऍन्नो-क्यों; चावतु-मरना; चरतम् अन्ऱो-ध्रुव है न; ऍन्ऱनन्-कहा। २९४६

धर्मसंरक्षक हनुमान ने आगे जारी किया— त्रिलोकपालक आदिभगवान के भाई के युद्ध को देखने के निमित्त देव, मुनि और अन्य सभी लोकों के सभी वासी आ जुटे हैं। अब थोड़ा भी विलंब क्यों? मरना तो निश्चित है न? । २९४६

अन्नवा शहङ्गळ् केळा वनलुयिर्त् तलङ्गर् ऱोळान्
मिन्नहु पहुवा यूडु वॅयिलुह नहैपोय् वीङ्ग
मुन्नरे वन्दिम् माऱ्ऱ माऱ्ऱलिन् मौळिन्द वाऱे
दॅन्नदो नीयिरॅन्नै यिहळ्न्ददॅन् ऱिनैय शॊन्नान् 2947

अलङ्कल् तोळान्-मालाभुज; अन्न वाचकङ्कळ-वे वचन; केळा-सुनकर; अनल् उयिर्त्तु-अग्नि की साँस निकालकर; मिन् नकु-बिजली के-से प्रकाश वाले; पकु वाय् ऊटु-फटे मुँह से; वॅयिल् उक-धूप-सा निकालते हुए; नकै-हँसी के; पोय् वीङ्क-उठकर वर्धित होते; मुन्नर् वन्तु-सामने आकर; इ माऱ्ऱम्-ये वचन; आऱ्ऱलिन् मौळिन्त-जोर के साथ बोलने का; आऱु एतु-हेतु क्या है; नीयिर्-तुम्हारा; ऍन्नै इकळ्न्ततु-मेरा अपमान करना; ऍन्नतो-क्यों; ऍन्ऱ्-कहकर; इनैय चॊन्नान्-यह बोला। २९४७

मालाधारी कंधों वाले इन्द्रजित् ने उन वचनों को सुना तो उसे अपार क्रोध हुआ। साँसें आग-सी गरम निकलीं। बिजली का-सा प्रकाश छिटकानेवाले फटे-से मुख के अन्दर से भी लू-सा हवा निकली। हँसी उठी जो अट्टहास में बदली। उसने हनुमान से पूछा कि तुम्हारे मेरे सामने आकर ऐसी बातें कहने के साहस का आधार क्या है? मेरा उपहास कैसे करते हो। उसने आगे कहा। २९४७

मूण्डपोर् तोरुम् बट्टु मुडिन्दनीर् मुरैयिर् ड़ीरन्दु
मीण्डपो ददनै यॅल्लाम् मरत्तिरो विळिदल् वेण्डि
ईण्डवा वॅन्ना निन्ड्री रित्तन पेरुम् बट्टु
माण्डपो दुयिर्तन् दीयु मरुन्दु वैत्तनिरो मान 2948

मूण्ट पोर् तोरुम्–जो हुए उन सभी युद्धों में; पट्टु मुटिन्त नीर्–मरे सो तुम; मुरैयिल् तीर्न्तु–स्वाभाविक रीति के विपरीत; मीण्ट पोतु–जीवित जब हुए तब; अततै ॲल्लाम्–उस सबको; मरत्तिरो–भूल गये क्या; इत्तनै पेरुम्–इतने सारे; पट्टु–आहत होकर; माण्ट पोतु–जब मरे तब; उयिर् तन्तु ईयुम्–जीवन प्रदान करनेवाली; मरुन्तु–ओषधि; वैत्तनिर् मान–जैसे रखते थे वैसे; विळितल् वेण्टि–मरना चाहकर; ईण्ट वा–नियरा आओ; ॲन्ता निन्ड्रीर्–कहते खड़े हो। २९४८

जितने भी युद्ध हुए उन सब में तुम मरे थे। पर प्रकृति के नियमों के प्रतिकूल प्राण पा गये! क्या वह सब भूल गये? जब इतने वानर मेरे प्रहार पाकर मरे तब उन्हें जिलाने की ओषधि तुम रखते थे। वैसे ही अब उन्हें मौत के पास भिजवाने की ओषधि ढूँढ़ते हुए मेरे पास आ गये क्या? । २९४८

इलक्कुव नाह मर्ड्रै यिरामन याह वीण्डु
विलक्कुव रॅल्लाम् वन्दु विलक्कुह कुरङ्गु वॅळ्ळम्
गुलक्कुल माह माळुङ् गोड्ड्रमु मनिदर् कॉळ्ळुम्
अलक्कणु मुनिवर् तामु ममरुङ् गाण्ब रन्ड्रे 2949

इलक्कुवन् आक–लक्ष्मण हो; मर्ड्रै–चाहे; इरामने आक–स्वयं राम हो; ईण्टु–यहाँ; विलक्कुवर् ॲल्लाम्–रोकनेवाले सभी; वन्तु–आकर; विलक्कुक–रोकें; कुलम् कुलमाक–दल बाँधकर; कुरङ्कु वॅळ्ळम्–वानर की बाढ़; माळम्–मर मिटें इसमें; कोर्ड्रमुम्–मेरी वीरता और; मनितर् कॉळ्ळुम्–नरों का जो मिलेगा वह; अलक्कणुम्–दुःख भी; अमररुम्–देव और; मुनिवर् तामुम्–मुनि; काण्पर्–देखेंगे। २९४९

चाहे लक्ष्मण हो चाहे स्वयं राम! सब यहाँ आकर मुझे रोकने का प्रयास भले ही करें। पर यह वानरों की बाढ़ झुण्ड के झुण्ड मर जायगी। उसको साधनेवाली मेरी वीरता को और इससे होनेवाले नर के दुःख को देव और मुनिवृन्द देखेंगे न? । २९४९

यानुडै विल्लु मॅन्बोर् ट्रोळ्हळु मिरुक्क वित्तुम्
ऊनुडै युयिर्ह ळियावु मुय्युमो वॊळिप्पि लामल्
कूनुडैक् कुरङ्गि तोडु मनिदरैक् कॊन्रु शॆन्रव्
वानिडैत् तॊडर्न्दुङ् गॊल्वॆन् मरुन्दिन् मुय्य माट्टीर् 2950

यानुटै विल्लुम्–मेरा धनुष और; ॲन् पॊन् तोळ्कळुम्–मेरे मनोरम कन्धे; इन्नुम् इरुक्क–अब भी रहते हैं इस हालत में; ऊन् उटै उयिर्कळ् यावुम्–शरीरधारी सभी जीव; ऒळिप्पु इलामल्–विना मिटे; उय्युमो–बचेंगे क्या; कून् उटै कुरङ्कितोटु–कुबड़े वानरों के साथ; मनितरै–नरों को; कॊन्रु–मारकर; अ वानिटै चॆन्रुम्–उस व्योमलोक में (जायें तब भी) जाकर; तॊटर्न्तुम्–पीछा करके भी; कॊल्वॆन्–मारूंगा; मरुन्तिनुम्–ओषधि से भी; उय्य माट्टीर्–बचोगे नहीं। २९५०

जहाँ मेरा धनु और मेरे मनोरम कंधे हैं, वहाँ शरीरधारी सभी जीव विना मरे जीते रहेंगे क्या? इन कुबड़े वानरों को और नरों को, वे देव बनकर स्वर्ग जायँ तो भी पीछा करके मार दूँगा। ओषधि से ही बचाये नहीं जा सकोगे। २९५०

वेट्किन्र वेळ्वि यिन्रु पिऴैत्तदु वन्रो मॆन्रु
केट्किन्र वीर मॆल्लाङ् गिळत्तुवीर् किळत्तल् वेण्डा
ताऴ्क्किन्र दिल्लै युम्मैत् तनित्तनित् तलैहळ् पाऱ्च्
चूऴ्क्किन्र वीर मॆन्गैच् चरङ्गळायत् तोन्रु मन्रे 2951

इन्रु–आज; वेट्किन्र वेळ्वि–किया जानेवाला यज्ञ; पिऴैत्ततु–व्यर्थ हो गया; वॆन्रोम्–हम जीत गये; ॲन्रु–ऐसा; केट्किन्र–सुनायी देनेवाले; वीरम् ॲल्लाम्–वीरता की सब बातें; किळत्तुवीर्–कह रहे हो; किळत्तल् वेण्टा–मत कहो; उम्मै–तुम्हें; तनि तनि–अलग-अलग; तलैकळ् पाऱ–सिर आधारहीन करने; चूऴ्क्किन्र वीरम्–जो सोच रहा हूँ वह वीरता का काम; ॲन् कै चरङ्कळाय्–मेरे हाथ के बाणों के रूप में; तोन्रुम्–प्रगट होगा; ताऴ्क्किन्रतु इल्लै–अब विलंब करना नहीं। २९५१

तुम लोग जो वीरता के वचन कह रहे हो कि आज इसका किया गया यज्ञ बेकार हो गया और हम जीत गये, उसको बन्द करो। तुम वैसा बोलना छोड़ दो। मेरी वीरता, जो तुम्हारे- हर एक के सिर को अलग-अलग तोड़ देने को सोच रही है, मेरे हाथों के शरों के रूप में प्रकट होगी। अब कोई विलंब नहीं होगा। २९५१

मऱ्ऱॆला नुम्मैप् पोल वायिनार् चॊल्ल माट्टेन्
वॆऱ्ऱिदान् मुन्नन् दन्दीर् विरैवदु वॆल्लर् कॊल्ला
उऱ्ऱुना नुरुत्त कालत् तॊरुमुऱै यॆदिरे निऱ्कक्
किऱ्ऱिरो वित्नु माण्डु किडत्तिरो नडत्ति रोदान् 2952

नुम्मै पोल–तुम्हारी भाँति; अॅलाम्–सब; वायिताल्–मुख खोलकर; चॉल्ल माट्टेन्–नहीं कहूँगा; मुन्नुम्–पूर्व भी; वॅऱ्ऱि तान् तन्तीर्–मुझे विजय ही दिलायी थी; विरैवतु–जल्दी करना; वॅल्लऱ्कु ओल्ला–जीतने के लिए उपयोगी नहीं होगा; नान् उरुत्त ओर मुऱै–मैंने खूब एक बार; उरुत्त कालत्तु–गुस्सा किया, उस समय; ॲतिरे निऱ्क किऱ्ऱिरो–सामने खड़े रह सको क्या; इन्नुम् माण्टु किटत्तिरो–फिर एक बार मरा पड़ा रहना चाहोगे; नटत्तिरो–या चले जाओगे। २९५२

तुम्हारी भाँति मैं बातों में शेखी न बघारूँगा। पहले भी तुमने विजय ही दिला दी थी। किसी बात में उतावली विजय नहीं दिलाती। एक बार मैं लाल आँखें दिखाऊँ तो तुम ठहर भी सकोगे क्या? अब फिर मरकर पड़ा रहना चाहते हो या बचकर चलोगे? । २९५२

निन्मिन्ग णिन्मि ॲन्ना नॅरुप्पॅळ विळित्तु नीण्ड
विन्मिन्गॊळ् कवश मिट्टान् वीक्किनान् ऱूणि वीरप्
पॊन्मिन्गॊळ् कोदै कैयिर् पूट्टिनान् पॊरुत्तान् पोर्विल्
ॲन्मिन्गॊळ् वयिरत् तिण्डे रेऱिना नॅऱिन्दा नाणि 2953

निन्मिन्कळ्–खड़े रहो; निन्मिन्–खड़े रहो; ॲन्ना–कहकर; नॅरुप्पु ॲळ–आग-सी निकालते हुए; विळित्तु–तरेरकर; नीण्ट–बहुत; विल् मिन् कॊळ्–चमकदार; कवचम् इट्टान्–कवच पहन लिया; तूणि वीक्किनान्–तूणीर बाँध लिया; वीर–वीरतायुक्त; पॊन् मिन् कॊळ्–मनोरम और उज्ज्वल; कोतै–अंगुलित्राण; कैयिल् पूट्टिनान्–उँगलियों में पहने; पोर् विल्–युद्ध-धनु; पॊरुत्तान्–धारण करके; ॲल्–सूर्य के; मिन् कॊळ्–(समान) प्रकाश-युक्त; वयिरम् तिण्–वज्रवद्; तेर् एऱिनान्–रथ पर चढ़ा; नाणि ॲऱिन्तान्–डोरा टंकोरा। २९५३

इन्द्रजित् ने आगे जारी रखा। ठहरो, ठहरो। फिर आग-सी उगलती आँखों से तरेरा। बहुत उज्ज्वल कवच पहना। तूणीर बाँध लिया। फिर वीरता-द्योतक मनोहर तथा उज्ज्वल अंगुलित्राण पहन लिये। अन्त में युद्ध-चाप हाथ में ले रथ पर आरूढ़ हुआ और डोरा टंकोरा। २९५३

ऊदिनान् शङ्गम् वानत् तॊण्डोडि महळि रॊण्गण
मोदिनार् कणत्तिन् मुन्ने मुळुवदु मुरुक्कि मुऱ्ऱक्
कादिना नॅन्न वानोर् कलङ्गिनार् कयिलै यानुम्
पोदिनान् ऱानु मिन्ऱु पुहुन्ददु पॅरुम्बो रॅन्ऱार् 2954

चङ्कम् ऊतिनान्–शंख बजाया; वानत्तु–देवलोक की; ऒण् तॊटि मकळिर्–उज्ज्वल कंकणधारिणी स्त्रियों ने; ऒण् कण–उज्ज्वल आँखों को; मोतिनार्–पीट लिया; वानोर्–देव; कणत्तिन् मुन्ने–एक क्षण (बीतने) के पहले; मुळुवतुम् मुरुक्कि–सबको मिटाकर; मुऱ्ऱ कातिनान्–पूर्ण रूप से मार दिया; ॲन्न–ऐसा समझकर; कलङ्किनार्–बेचैन हुए; कयिलैयानुम्–कैलासपति; पोतिनान् तानुम्–और कमलासन; इन्ऱु–आज; पॅरुम् पोर् पुकुन्ततु–बड़ा युद्ध हो गया; ॲन्ऱार्–बोले। २९५४

इन्द्रजित् ने शंख ले बजाया। उसका नाद सुनकर देवलोक की छविमय कंकणधारिणी अंगनाओं ने अपनी आँखें पीट लीं। देवों ने सोच लिया कि ग़ज़ब हो गया। एक क्षण बीतने के पहले ही सारी वस्तुओं को वह अवश्य तहस-नहस कर देगा। वे बहुत उद्विग्न हुए। स्वयं कैलासपति और कमलासन ने भी कहा कि आज बड़ा युद्ध आरंभ हो गया है। २९५४

इळैत्तपे रियाहन् दाले याज्जॅय्द तवत्तिन् नाले
पिळैत्तदु पिळैत्त लाले यिवनिनिप् पिळैक्क लाड्डान्
अळैत्तदु विदियें याहु मिलक्कुव नम्बि नाले
उळैत्तदु काण्गिन् ड्रोमॅन् ड्रोङ्गिना रुम्ब रॅल्लाम् 2955

उम्पर् ऍल्लाम्–सभी देव; याम् चॅय्त तवत्तिनाले–हमारी की हुई तपस्या से; इळैत्त–(इन्द्रजित्) कृत; पेर् याकम्–बड़ा यज्ञ; पिळैत्ततु–अधूरा रह गया; पिळैत्तलाले–उस चूक से; इनि–अब; इवन्–वह; पिळैक्कल् आऱ्ऱान्–नहीं बच सकेगा; अळैत्ततु–(लक्ष्मण को) बुला लाया; वितिये आकुम्–प्रारब्ध ही; इलक्कुवन् अम्पिनाले–लक्ष्मण के शर से; उळैत्ततु–दुःखी होगा; काण्किन्ऱोम्–देखनेवाले हैं; ऍन्ऱु–ऐसा; ओङ्कितार्–सन्तोष में बढ़े। २९५५

सभी देवों ने आपस में कहा कि हमारी की हुई तपस्या का फल था कि इन्द्रजित्-कृत बड़ा यज्ञ निरर्थक हो गया। चूँकि यज्ञ में दोष आ गया, अब वह जीवित रह नहीं सकेगा। इसका प्रारब्ध ही लक्ष्मण को इधर बुला लाया है। अब यह लक्ष्मण के अस्त्रों से त्रस्त होगा —हम देखेंगे। इस विचार से उनके मोद का पारा चढ़ा। २९५५

नाण्डोळि लोशै वीशिच् चॅविदोरु नडत्त लोडुम्
आण्डोळिन् मऱन्दु कैयि नडुक्किय मरनुङ् गल्लुम्
मीण्डन मरिन्दु शोर विळुन्दन विळुन्द मॅय्ये
माण्डन मॅन्ड्रे युन्नि यिरिन्दन कुरङ्गिन् माले 2956

नाण् तॊळिल् ओचै–डोरे के (टंकार के) काम से उठी ध्वनि; वीचि–फैलकर; चॅवि तोऱुम्–काम-कान में; नटत्तलोटुम्–ज्योंही लगी त्योंही; कुरङ्किन् मालै–वानर-पंक्तियाँ; आण तॊळिल् मऱन्तु–पौरुष-कृत्य भूलकर; कैयिन् अटुक्किय–हाथ में रखे हुए; मरनुम् कल्लुम्–तरुओं और पर्वतों को; मीण्डन–फिर से; मरिन्तु चोर–(भूमि की ओर) लौट के गिरने देते हुए; विळुन्तन–खूब गिर गयीं; विळुन्त–जो ऐसे गिरे उन्होंने; मॅय्ये माण्टतम्–हम सचमुच मर गये; ऍन्ऱे उन्नि–वही समझकर; इरिन्तन–उठ भागे। २९५६

ज्योंही धनुष की टंकार-ध्वनि वानरों के कानों में पड़ी, त्योंही दल-दल के वानर अपना पौरुष ही भूल गये। उनके हाथ में रहे पर्वत और तरु नीचे खिसक गये और वे स्वयं भी गिर गये। वे यही समझ गये कि हम सचमुच मरे हैं। फिर किसी विध उठकर भागे। २९५६

पडेप्पॅरुन् दलैवर् निन्ड्रा रल्लव रिरुदि पर्रुम्
अडेप्परुङ् गालक् कार्ड्रा लाड्रल दाहिक् कीरिप्
पुडेत्तिरिन् दोडुम् वेलेप् पुनलॅन विरिय लुर्ड्रार्
किडेत्तपे रनुम नाण्डोर् नेडुङ्गिरि किळित्तुक् कॉण्डान् 2957

पॅरुम्पडै तलैवर् निन्ड्रार्–बड़े-बड़े सेनापति खड़े रहे; अल्लवर्–इतर; इरुति पर्रुम्–अन्तकारी; अटॅप्पु अरुम्–अवार्य; काल कार्ड्राल्–युगांत के पवन से; आर्ड्रलतु आकि–निर्बल बनकर; कारि–चीरते हुए; पुटैत्तु–टकराते हुए; इरिन्तु ओटम्–अस्त-व्यस्त बहनेवाले; वेलै पुनल् ॲन–समुद्र-जल के समान; इरियलुर्ड्रार्–अस्त-व्यस्त हुए; किटैत्त–पास जो रहा; पेर् अनुमन्–बड़े हनुमान ने; आण्टु–तब; ओर् नॅटु किरि–एक बड़े पर्वत को; किळित्तु कॉण्टान्–उखाड़ लिया। २६५७

बड़े-बड़े वानर सेनापति खड़े रहे; पर अन्य वानर लोकांतकारी तथा अप्रतिहर युगपवन के कारण चीरते, टकराते हुए बहनेवाले समुद्र-प्रवाह के समान अस्त-व्यस्त हो भागे। तब पास जो रहा उस बड़े हनुमान ने एक बड़े पर्वत को उखाड़कर हाथ में ले लिया। २९५७

निल्लडा निल्लु निल्लु नीयडा वाशि पेशिक्
कल्लॅडा निन्ड्र दॅन्न्ने पोर्क्कळत् तमरर् काणक्
कॉल्लला मॅन्ड्रो नन्ड्रु कुरङ्गॅन्ड्रार् कूडु मन्ड्रे
नल्लैपोर् वावा वॅन्ड्रान् नमनुक्कुम् नमनाय् निन्ड्रान् 2958

नमनुक्कुम् नमनाय् निन्ड्रान्–यम का भी जो यम बना रहा उस इन्द्रजित् ने; निल्लटा निल्लु निल्लु–खड़ा रह रे, खड़ा रह, खड़ा रह; अटा–रे; नी वाचि पेचि–तुम खूब बोलकर; कल् ॲटा निन्ड्रतु–पत्थर उठा के खड़े हो; ॲन्न्ने–यह क्या; पोर् कळत्तु–युद्धस्थल में; अमरर् काण–देवों के देखते; कॉल्ललाम् ॲन्ड्रो–(मुझे) मारना चाहकर क्या; नन्ड्रु–अच्छा-अच्छा; कुरङ्कु ॲन्ड्राल्–बन्दर कहना तो; कूटुम् अन्ड्रे–हो सकता है न; पोर् नल्लै–युद्ध में अच्छे हो; वा वा–आओ, आओ; ॲन्ड्रान्–कहा। २६५८

उसे देखकर यम के भी यम इन्द्रजित् ने कहा— रे रुको! रुको! बातें खूब करके तुमने पर्वत उठा लिया, क्यों? देवों के देखते मुझे मारने का विचार है क्या? शाबाश! तुम सचमुच वानर कहने योग्य हो! युद्ध में भी चतुर हो! आ, आ!। २९५८

विल्लॅडुत् तुरुत्तु निन्ड्र वीररुळ् वीरन् नेरे
कल्लॅडुत् तॅरिय निन्ड्र वनुमनैक् कणॅणि नोक्कि
मल्लॅडुत् तुयरन्द तोळार् कॅल्गॅलाम् वरुव दॅन्नाच्
चॉल्लॅडुत् तमरर् शॊन्नार् तादैयुन् दुणुक्क मुर्ड्रान् 2959

विल् ॲटुत्तु–धनु लेकर; उरुत्तु निन्ड्र–जो क्रुद्ध खड़ा रहा; वीररुळ् वीरन्–

उस वीरों में वीर के; नेरे–सामने; कल् ऍट्टुत्तु–पत्थर उठाये; ऍऱिय निन्ऱ–फेंकने के विचार से जो खड़ा रहा; अनुमर्त–उस हनुमान को; अमरर्–देवों ने; कण्णिन् नोक्कि–आँखों से देखकर; मल् ऍट्टुत्तु–बलसंयुक्त; उयर्न्त तोळाऱ्कु–उन्नत कन्धों वाले पर; अँन् कॊल् वरुवतु आम्–क्या ही बीतेगा; ऍन्ऩा–ऐसा; चॊल् ऍट्टुत्तु–शब्दों में ले; चॊन्ऩार्–कहा; तातैयुम्–(हनुमान का) पिता भी; तुणुक्कम् उऱ्ऱान्–भयकातर हुआ। २६५६

वीरों में श्रेष्ठ वीर इन्द्रजित् के सामने उस पर फेंकने के लिए पर्वत उठाए हुए खड़े रहनेवाले हनुमान को देवों ने अपनी आँखों से देखकर भय का अनुभव किया और कहा कि अति बलवान तथा उन्नतभुज हनुमान पर क्या ही बीतेगा ? हनुमान के पिता वायु भी दहल उठे। २९५९

वीशिनन् वयिरक् कुन्ऱम् वॆम्बॊऱिक् कुलङ्गळ् विण्णिन्
आशैयि निमिर्न्दु शॆल्ल वायिर मुरुमॊन् ऱाहप्
पूशिन पिळम्बि दॆन्ना वरुमदन् पुरिवै नोक्किक्
कूशिन वुलह मॆल्लाङ् गुलैन्ददव् वरक्कर् कूट्टम् 2960

विण्णिन्–आकाश में और; आचैयिन्–दिशाओं में; वॆम् पॊऱि कुलङ्कळ्–गरम अंगारों की राशियाँ; निमिर्न्तु चॆल्ल–उठकर जायें ऐसा; वयिरम् कुन्ऱम्–वज्र गिरि को; वीचिनन्–फेंका; आयिरम् उरुम्–हजार वज्रों का; ऒन्ऱाक–एक साथ; पूचिन–मिलकर बना; पिळम्पु इतु–पुंज यह; ऍन्ऩा–ऐसा कहने योग्य रीति से; वरुम् अतन् पुरिवै नोक्कि–आते उसका कृत्य देखकर; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; कूचिन–संकुचित हुए; अरक्कर् कूट्टम्–राक्षसों की भीड़ भी; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हुई। २६६०

तब हनुमान ने वज्रदृढ़ पर्वत को फेंक दिया और वह आकाश और दिशाओं में अंगारे छितराते हुए चला। सहस्रवज्रों के सम्मिलित पिंड के समान आते हुए उसकी गति को देखकर सारे लोक ठिठुर गये। राक्षस-सेना भी तितर-बितर हो गयी। २९६०

कुण्डल नॆडुविल् वीश मेरुविऱ् कुविन्द तोळान्
अण्डमुङ् गुलुङ्ग वार्त्तु मारुदि यशनि यञ्ज
विण्डलत् तॆऱिन्द कुन्ऱम् वॆरुन्दुह ळाहि वीळक्
कण्डन नॆय्द तन्मै कण्डिल रिमैप्पिल् कण्णार् 2961

मारुति–मारुति ने; अचनि अञ्च–अशनि को भयभीत करते हुए; विण् तलत्तु–आकाश में; ऍऱिन्त कुन्ऱम्–जो पर्वत फेंका, उस पर्वत को; मेरुविन्–मेरु से अधिक; कुविन्त तोळान्–पुष्ट कन्धों वाले इन्द्रजित् ने; कुण्टलम्–कुण्डलों के; नॆटु विल् वीच–लम्बी रोशनी को बिखेरते; अण्टमुम् कुलुङ्क–अण्डों को कँपाते हुए; आर्त्तु–बड़ा शोर मचाकर; वॆऱुम् तुकळाकि–केवल धूल बनकर; वीळ कण्टनन्–गिरते देखा (गिराया); इमैप्पिल् कण्णार्–अपलकनेत्र देवों ने; ऍय्त तन्मै–उसके बाण चलाने की बात; कण्टिलर्–नहीं देखी। २६६१

मेरु-तुल्य पुष्ट कंधों वाले इन्द्रजित् ने मारुति द्वारा आकाश में फेंके गये वज्र-भीकर पर्वत को, अपने कुंडलों को हिलाते हुए और अंडों को कँपाते हुए गर्जन करके धूलि में बदलकर गिरा दिया। अपलक देव उसका अस्त्र चलाना नहीं देख पाये। (देवों ने गर्जन सुना, कुंडलों का हिलना देखा और पर्वत को चूर होकर गिरते देखा पर अस्त्र चलाना उनकी दृष्टि में नहीं पड़ा।)। २९६१

मार्‌ऱॊरु कुन्‌ऱम् वाङ्गि मरुहुवान् मार्‌बिऱ् ऱोळिल्
काऱ्‌ऱु कालिऱ् कैयिऱ् कळुत्तिऩि नुदलिऱ् कण्णिऩ्
एरिऩ वॆन्‌ब मऩ्‌ऩो वॆरिमुहक् कडवुळ् वॆम्मै
शीऱिय पहळि मारि तोय्‌क्कडु विडत्तिऱ् ऱोयन्‌द 2962

मार्‌ ऒरु–दूसरे एक; कुन्‌ऱम्–गिरि को; वाङ्कि–लेकर; मरुकुवान्–घूमते हुए मारुति के; मार्‌पिल् तोळिल्–वक्ष और कन्धों पर; काल् तरु कालिल्–पवन को चालित करनेवाले पैरों पर; कैयिल्–हाथ में; कळुत्तिऩिल्–कंठ में; नुतलिल्–भाल पर; कण्णिऩ्–आँखों पर; ती कटु विटत्तिल्–अग्नि के समान क्रूर विष में; तोय्‌न्त–सने; मुक–जिनके मुख में; ऎरि कटवुळ्–जलानेवाले अग्नि देवता की; वॆम्मै–गर्मी; चीऱिय–फूत्कार रही थी; पकळि मारि–वैसे शरों की वर्षा; एरित–चढ़ी; ऎऩ्‌प–लोग कहते हैं। २९६२

मारुति ने दूसरा पर्वत लिया और उसे फेंकने में जोर लगाने के विचार से घूम रहा था। तभी उसके अंग-अंग पर, कंधों, पवन-जनक पैरों, हाथों, कंठ, भाल और आँखों पर अग्नि-सम विष में सने और अग्नि की-सी गरमी वेग से छुड़ानेवाले शरों की वर्षा-सी हो गयी। ऐसा लोग कहते हैं। २९६२

वॆदिरॊत्त शिहरक् कुन्‌ऱिऩ् मरुङ्गुऱ विळङ्ग लाऩुम्
ऎदिरॊत्त विरुळैच् चीऱि यॆऴुहिऩ्‌ऱ वियऱ्‌कै याऩुम्
कदिरॊत्त पहळिक् कऱ्‌ऱै कदिरॊळि काट्ट लाऩुम्
उदिरत्तिऩ् शॆम्मै याऩ् मुदिक्किऩ्‌ऱ कदिरो ऩॊत्ताऩ् 2963

वॆतिर्–बांस के वन; ऒत्त–जिसमें सम रूप से उगे थे, उस; चिकर कुऩ्‌ऱिऩ्–शिखर-सहित पर्वत को; मरुङ्कु उऱ–पास में ले; विळङ्कलाऩुम्–रहता है इसलिए; ऎतिर् ऒत्त इरुळै–आगे के अन्धकार (राक्षसबल) पर; चीऱि ऎऴुकिऩ्‌ऱ–गुस्सा करके उठता है; इयऱ्‌कैयाऩुम्–उस भाव से; कतिर् ऒत्त–किरणों के समान; पकळि कऱ्‌ऱै–शरों का समूह; कतिर् ऒळि–सूर्य प्रकाश-सा; काट्टलाऩुम्–दिखा रहा है, इसलिए; उतिरत्तिऩ् चॆम्मैयाऩुम्–बहते रक्त की लालिमा से; उतिक्किऩ्‌ऱ कतिरोऩ् ऒत्ताऩ्–उदीयमान सूर्य की समानता करता था (हनुमान)। २९६३

तब हनुमान निम्नलिखित साम्यों के कारण उदीयमान सूर्य के समान दिखा। पास शिखरयुक्त पर्वत था। सामने अंधकार-सम राक्षसों का वैरी बना खड़ा था। शरों की राशियाँ धूप के समान प्रकाश दे रही थीं। बहनेवाले रक्त की लाली सूर्य की लाली का साम्य कर रही थी। २९६३

आयव नयर्व लोडु मङ्गदन् मुदल्व रानोर्
काय्शितन् दिरुहि वन्दु कलन्दुळार् तम्मैक् काणा
नीयिर्हळ् नित्मिन् नित्मि तिरुमुरै नॅडिय वानिल्
पोयव नॅङ्गे नित्ड्रा नॆन्ड्रनन् पौरुट् चॆयादान् 2964

आयवन्–वैसा हनुमान; अयर्तलोटुम्–जब शिथिल हुआ तभी; अङ्कतन् मुतल्वरानोर्–अंगदादि; काय् चितम्–जला सकने वाले क्रोध के; तिरुक्कि–ऐंठते; वन्तु कलन्तुळार् तम्मै–जो (लड़ने) आ मिले थे उन्हें; काणा–देखकर; पौरुळ् चॆयातान्–जो लापरवाह रहा, उस इन्द्रजित् ने; नीयिर्कळ्–तुम लोग; नित्मित्–खड़े रहो; नित्मित्–खड़े रहो; इरुमुरै–दो बार; नॆटिय वानिल् पोयवन्–दूर स्वर्गलोक जो गया था; ऎङ्के नित्ड्रान्–वह लक्ष्मण कहाँ खड़ा है; ऎन्ड्रनन्–पूछा। २९६४

जब ऐसी स्थिति में हनुमान निर्बल हो गया, तब अंगदादि वीर जला सकनेवाले क्रोध के ऐंठते सामने आये। अपने से लड़ने के लिए मिलने आये उनको देखकर इन्द्रजित् ने कोई परवाह नहीं की। उसने उनसे कहा कि तुम खड़े रहो, खड़े रहो। और पूछा कि वह कहाँ है, जो दो बार मेरे अस्त्रों से लम्बे आकाश में (स्वर्ग में) पहुँचा था ? । २९६४

वॆम्बिनर् पिन्नु मेन्मेर् चेरलुम् वॆहुण्डु शीयम्
तुम्बियैत् तॊडर्व वल्लार् कुरङ्गिनैत् तॊडर्व दुण्डो
अम्बिनै माट्टि यॆन्ने शिऱिदुपो राट्र वल्लात्
तम्बियैक् काट्टित् तारीर् शादिरो शलत्ति नॆन्ड्रात् 2965

वॆम्पिनर्–और गरम होकर अंगदादि वानरों के; पिन्नुम्–और भी; मेन् मेल् चेरलुम्–उत्तरोत्तर बढ़ने पर; वॆकुण्टु–गुस्सा करके (इन्द्रजित् ने); चीयम्–सिंह का; तुम्पियै तॊटर्वतु अल्लाल्–गज का पीछा (सामना) करना छोड़कर; कुरङ्किनै तॊटर्वतु उण्टो–वानर का पीछा करना होता है क्या; अम्पिनै–(तुम लोगों पर) शरों को; माट्टि ऎन्ने–लगाने से क्या होगा; चलत्तिल्–गुस्से में; चातिरो–मरोगे क्या; चिऱितु–थोड़ा ही सही; पोर् आट्र वल्लान्–युद्ध कर सकनेवाले के; तम्पियै–छोटे भाई को; काट्टि तारीर्–दिखा दो; ऎन्ड्रान्–कहा। २९६५

यह अपमानद्योतक वचन सुनकर अंगद आदि वीरों के क्रोध का पारा और चढ़ा। वे और भी पास जाने लगे। उसने गुस्से के साथ कहा कि

सिंह लड़ने के लिए हाथी के पीछे पड़ेगा न कि वानरों के। तुम लोगों का निशाना बनाकर अस्त्र संधानने से क्या लाभ ? तुम क्या कोप के वश में होकर मरना चाहते हो ? थोड़ा ही सही युद्ध कर सकनेवाला एक ही है। उस राम के भाई को मुझे दिखा दो। इन्द्रजित् ने यों कहा। २९६५

अनुमनैक् कण्डि लीरो ववनिलुम् वलियि रोॅन्
ततवुळ दन्ऱो तोळि नव्वलि तविर्न्द दुण्डो
इनिमुन् नीर लीरो वॅव्वलि योट्टि वन्दीर्
मनिदरंक् काट्टि नुनृ मलैतोऱुम् वळिक्कॉ ळीरे 2966

अनुमनै कण्टिलीरो–हनुमान को देखते नहीं क्या; अवसिलुम् वलियिरो–उससे बलवान हो क्या; ॲन् तनु–मेरा धनु; उळतु अन्ऱो–नहीं है क्या; तोळिन् अ वलि–कन्धों का वह बल; तविर्न्ततु उण्टो–हट गया क्या; इनि–अब; नीर्–तुम; मुन्नै नीर् अलिरो–पहले के तुम नहीं हो; ॲ वलि–कौन सा बल; ईट्टि वन्तीर्–बटोर लाये हो; मनितरै काट्टि–नरों को दिखाकर; नुम् तम्–अपने-अपने; मलै तोऱम्–पर्वतों का; वळि कॉळीर्–रास्ता लो। २९६६

(उसने आगे पूछा—) क्या तुम (मूर्च्छित) हनुमान को नहीं देखते ? क्या तुम उससे अधिक बलवान हो ? क्या अब मेरा धनु मेरे पास नहीं रहा ? या मेरा भुजबल चला गया ? या तुम लोग पुराने तुम नहीं हो ? क्या नया बल कमा लाये हो ? चलो। उन नरों को दिखा देकर तुम अपने-अपने पर्वत-स्थान की राह लो। २९६६

ॲन्ऱव निळव रन्मे लॅऴुहिन्ऱ वियर्कै नोक्किक्
कुन्ऱमु मरमुम् वीशिक् कुऱुहिनार् कुऴाङ्ग डोऱुम्
शॅन्ऱन पहऴि मारि मेरुवै युरुवित् तीर्व
ऑन्ऱल कोडि कोडि युळैन्दनर् वलियु मोय्न्दार् 2967

ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; अवन्–उसका; इळवल् तन् मेल्–लघुराज पर; ॲऴुकिन्ऱ–आक्रमण करने का; इयर्कै–हाल; नोक्कि–देखकर; कुन्ऱमुम् मरमुम्–पर्वतों और पेड़ों को; वीचि–फेंकते हुए; कुऱुकिनार्–जो नियराये; कुऴाङ्कळ् तोऱुम्–उन वृन्दों में; मेरुवै उरुवि तीर्व–मेरु को भेदकर जा सकनेवाले; पकऴि मारि–वर्षा के रूप में शर; ऑन्ऱु अल–एक नहीं; कोटि कोटि–करोड़ों; ॲन्ऱन–गये; उळैन्तनर्–थके; वलियुम् ओय्न्तार्–निर्बल हुए। २९६७

इन्द्रजित् यह कहते हुए लघुराज लक्ष्मण पर आक्रमण करने जो गया वह हालत देखकर अंगदादि वीर पत्थरों और तरुओं को फेंकते हुए उसके पास गये। झुण्ड के झुण्ड आनेवाले उन पर इन्द्रजित् ने मेरुभेदक शरों की वर्षा-सी करा दी। शर, एक-दो नहीं कोटि-कोटि, उन पर लगे। वे बेचारे पीड़ित हुए और निर्बल हो गये। २९६७

पडुहिन्ऱ दन्ऱो वुन्ऱन् पॆरुम्बडै पहळि मारि
विडुहिन्ऱ दन्ऱो वॆन्ऱि यरक्कनाङ् गाळ मेहम्
इडुहिन्ऱ वेळ्वि माण्ड दिन्तियिवन् पिळैप्पु ऱामे
मुडुहॆन्ऱ्रा नरक्कन् तम्बि नम्बियुञ् जॆन्ऱु मूण्डान् 2968

अरक्कन् तम्पि–राक्षस (रावण) के भाई (ने); उन् तन् पॆरुम् पटै–आपकी बड़ी सेना; पटुकिन्ऱतु अन्ऱो–मिटती है न; वॆन्ऱि अरक्कन् आम्–विजयी राक्षस रूपी; काळ मेकम्–काला मेघ; पकळि मारि विटुकिन्ऱतु–शरवर्षा करता है; अन्ऱो–न; इटुकिन्ऱ वेळ्वि–किया जानेवाला यज्ञ; माण्टतु–मिट गया; इति–अब; इवन् पिळैप्पु उऱामे–यह जीवित न रहे ऐसा; मुटुकु–संकट दें; ऎन्ऱान्–कहा; नम्पियुम्–पुरुषश्रेष्ठ भी; चॆन्ऱु–जाकर; मूण्टान्–लग गये। २९६८

यह हालत देखकर राक्षस (रावण) के भाई विभीषण ने लक्ष्मणजी से कहा कि हे लक्ष्मणजी, आपकी सेना मिटती है। विजयी इन्द्रजित् के रूप में मानो काला मेघ ही शर-वर्षा कर रहा है! उसका आरब्ध यज्ञ आधे में ही बेकार हो गया। अब उसको जीवित छोड़े बिना त्रस्त करें। पुरुषश्रेष्ठ भी युद्ध में लगे। २९६८

वन्दानॆडुन् दहैमारुदि मयङ्गामुह मलर्न्दान्
ऎन्दायॆकडि देऱायॆन दिरुतोण्मिशै यॆन्ऱान्
अन्दाहवॆन् ऱुवन्दैयनु ममैवायिन निमैयोर्
शिन्दाकुलङ् गळैन्दारवन् नॆडुञ्जारिहै तिरिन्दान् 2969

नॆटु तकै मारुति–सुयोग्य मारुति; मयङ्का मुकम–चकित मुख; मलर्न्तान्–प्रफुल्लित करके; वन्तान्–आया; ऎन्ताय्–तात; ऎन्तु–मेरे; इरु तोळ् मिचै–दोनों कन्धों पर; कटितु एऱाय्–शीघ्र सवार हो; ऎन्ऱान्–बोला; ऐयनुम् प्रभु ने भी; अन्ताक–वही हो; ऎन्ऱु–कहा और; उवन्तु–खुश होकर; अमैवु आयिनन्–स्वीकार किया; इमैयोर्–देवों ने; चिन्ताकुलम्–चित्त की व्याकुलता; कळैन्तार्–छोड़ी; अवन्–हनुमान; नॆटुम् चारिकै तिरिन्तान्–लंबा संचार करने लगा। २९६९

तब सुयोग्य मारुति, जो पहले मूर्च्छित हो गया था, अब हरा और प्रसन्नमुख होकर लक्ष्मणजी के पास आया और बोला कि तात! मेरे कंधों पर शीघ्र चढ़ जाइए। लक्ष्मण ने भी 'वैसा ही हो' कहकर स्वीकार कर लिया। तब देवताओं की चित्त की आकुलता दूर हुई। वह हनुमान लक्ष्मण को धारण करते हुए खूब सब जगह संचार करने लगा। २९६९

कारायिर मुडन्नाहिय वॆत्तलाहिय करियोन्
ओरायिरम् बरिपूण्डदो रुयर्तेर्मिशै युयर्न्दान्

नेरायिन रिरुवोर्हळु नॅडुमारुदि निमिर्न्दान्
पेरायिर मुडॅयानॅतत् तिशॅयॅङ्गणुम् बॅयर्न्दान् 2970

आयिरम् कार् उठन् आकियतु–हज़ार मेघ एकत्रित हुए; ॲतल् आकिय–जैसे बना; करियोन्–काला इन्द्रजित्; ओर् आयिरम् परि–एक हज़ार अश्वों के; पूण्टतु–जुते; ओर् उयर् तेर् मिचै–एक ऊँचे रथ पर; उयर्न्तान्–चढ़ा; इरुवोर्कळुम्–दोनों; नेर् आयिनर्–आमने-सामने हो गये; नॆटु मारुति–ऊँचा मारुति; निमिर्न्तान्–तनकर खड़ा हुआ; आयिरम् पेर् उटैयान् ॲत–सहस्रनामी (त्रिविक्रम) के समान; तिचै ॲङ्कणुम्–सारी दिशाओं में; पॅयर्न्तान्–संचार किया। २९७०

एकत्रित सहस्र घन-सम काला इन्द्रजित् सहस्र अश्वों के जुते रथ पर चढ़ा। दोनों समान हो गये। आमने-सामने हुए लम्बे क़द का मारुति और तनकर खड़ा हो गया और सहस्रनामी त्रिविक्रम के समान सर्व सभी दिशाओं में डग भरने लगा। २९७०

तीयॊप्पन वुरुमॊप्पन वुयिर्वेट्टन तिरियुम्
पेयॊप्पन पशियॊप्पन पिणियॊप्पन पिऴैया
मायक्कॊडु वित्तॆयॊप्पन मऴुवॊप्पन कऴुदिन्
तायॊप्पन शिलवाळिहळ् तुरन्दान्रुयिल् तुरन्दान् 2971

तुयिल् तुरन्तान्–निद्रात्यागी ने; ती ऒप्पन–अग्नि-सम; उरुम् ऒप्पन–अशनि-सम; उयिर् वेट्टन–जीवों को चाहकर; तिरियुम्–घूमनेवाले; पेय् ऒप्पन–पिशाचों से तुल्य; पचि ऒप्पन–भूख के समान; पिणि ऒप्पन–रोग-सरीखे; पिऴैया–अचूक; कॊटु–क्रूर; माय वित्तै–माया-कार्य के; ऒप्पन–समान रहनेवाले; मऴु ऒप्पन–परशु-सम; कऴुतिन् ताय्–'कऴुतु' जाति के भूतों की माता के; ऒप्पन–समान रहनेवाले; चिल वाळिकळ्–कुछ शर; तुरन्तान्–चलाये। २९७१

निद्रात्यागी सुमित्रानन्दन ने इन्द्रजित् पर कुछ ऐसे शर चलाये जो अग्नि, अशनि, जीव-लालची पिशाच, भूख, रोग, अचूक माया-कृत्य, परशु और "कऴुतु" भूत की माता के समान गुण वाले थे। २९७१

अव्वम्बिनै यव्वम्बिनि नरुत्तानिह लरक्कन्
ॲव्वम्बिनि युलहत्तुळ दॅन्नुम्बडि यॅय्दान्
ॲव्वम्बर मॅव्वॅण्डिशै यॅव्वेलैहळ् पिऱवुम्
वव्वुङ्गडॆ युहमामऴॆ पॊऴिहिन्ऱदु मान 2972

इकल् अरक्कन्–बलवान राक्षस ने; अ अम्पितै–उस-उस अस्त्र को; अ अम्पितिल्–उसी (के योग्य) अस्त्र से; अऱुत्तान्–काट गिराया; ॲ अम्परम्–सारे आकाश को; ॲ ॲण्तिचै–सारी आठों दिशाओं को; ॲ वेलैकळ्–सारे समुद्रों को; पिऱवुम्–और अन्यों को; वव्वुम्–ग्रसकर मिटानेवाली; कटै युकम्–

युगांत की; मा मुळै–प्रचण्ड वर्षा; पोंळिकिन्ड्रतु–बरसती; मात्त–जैसे; उलकत्तु–संसार में; ऍ अम्पु–कौन सा अस्त्र; इति उळतु–अब (इससे बढ़कर) है; ऍन्नुम् पटि–ऐसा कहने योग्य प्रकार से; ऍय्तान्–चलाया। २६७२

इन्द्रजित् ने उस-उस अस्त्र को उसके योग्य शर से काट गिराया। सारे आकाश, सभी दिशाओं और समुद्रों को ग्रस लेनेवाले युगक्षय के मेघ धारें गिरा रहे हों, ऐसा उसने शर चलाये। यही नहीं लोग यह कहें कि संसार में इनके समान कौन सा अस्त्र है? —ऐसे अस्त्र चलाये। २९७२

आयोन्ँडुङ् गुरुविक्कुल मॅन्नुञ्जिल वम्बाल्
पोयोडिडत् तुरन्दानवै पॊरियोवॅन मरियत्
तूयोनुमत् तुणैवाळिहळ् तॊडुत्तानवै तडुत्तान्
तीयोनुमक् कणत्तायिरम् नॅडुञ्जारिहै तिरिन्दान् 2973

आयोन्–उस (इन्द्रजित्) ने; कुरुविक्कुलम् ऍन्नुम्–'पक्षीदल' नाम के; चिल नॅटु अम्पाल्–कुछ लंबे शरों को; पोय् ओटिट–जाकर लगें ऐसा; तुरन्तान्–चलाया; अवै–उन्हें; तूयोनुम्–पवित्र मूर्ति ने भी; पॊरियो ऍन्न–चूर्ण हैं क्या ऐसा; मरिय–काटने के लिए; अ–श्रेष्ठ; तुणै वाळिकळ्–शरद्वय; तॊटुत्तान्–चलाकर; अवै तटुत्तान्–उन्हें रोका; तीयोनुम्–दुष्ट भी; अ कणत्तु–उस क्षण में; आयिरम्–हज़ार; नॅटुम् चारिकै–लंबा संचार; तिरिन्तान्–घूमा। २६७३

और भी उसने 'पक्षीवृन्द' समझने योग्य अनेक अस्त्र लक्ष्मण पर छोड़े। उन्हें पवित्रमूर्ति ने 'पहले ही चूर्ण थे क्या?' —यह संदेह उत्पन्न करते हुए श्रेष्ठ दो अस्त्र चलाकर बेकार कर दिया। दुष्ट इन्द्रजित् भी तब हज़ारों तरह से घूम गया। २९७३

कल्लुन्नॅडु मलैयुम्बल मरमुङ् गडॅहाणम्
पुल्लुञ्जिरु कॊडियुम् मिडैतॅरिया वहैपुरियच्
चॅल्लुन्नॅरि तॊरुञ्जॅन्ड्रन तॅरुङ्गाल्पुरै मरुवोन्
शिल्लिन्मुदिर् तेरुञ्जिन वयमारुदि ताळुम् 2974

तॅरुम्–मारक; काल् पुरै–(चण्ड-) मारुत-सम; मरुवोन्–वीर; मुतिर् चिल्लिन्–पक्के पहियों का; तेरुम्–रथ और; चिन–क्रोधी; वयम्–विजयी; मारुति ताळुम्–मारुति के पैर; कल्लुम्–चट्टानों; नॅटु मलैयुम्–बड़े पर्वतों को; पल मरमुम्–अनेक तरु; कटै काणुम् पुल्लुम्–जीव-धारियों में सबसे नीचे रहनेवाली घास को; चिरु कॊटियुम्–छोटी लताओं को; इटै तॅरिया वकै–अन्तर न दिखे ऐसा; पुरिय–नष्ट करते हुए; चॅल्लुम् नॅरि तॊरुम्–गम्य सभी स्थलों में; चॅन्ड्रन–गये। २६७४

प्राणघातक चंडमारुत-तुल्य वीर रावणि के पक्के पहियों का रथ और क्रोध-भरे और विजयी वीर हनुमान के पैर चट्टानों, पर्वतों, तरुओं,

जीवकोटि में अंतिम घासों और छोटी लताओं में कोई भेद न करते हुए, सबको एक-सम मिटाते हुए, गम्य सभी मार्गों में गये। २९७४

इरुवीररु मिवनित्तव निवनित्तव नॆत्तच्
चॆरुवीररु मरियावहै तिरिन्दार्कणे शॊरिन्दार्
ऒरुवीररु मिवरॊक्किल रॆनवानव रुवन्दार्
पॊरुवीरॆयुम् बॊरुवीरॆयुम् बॊरुदालॆनप् पोरुदार् 2975

इरु वीररुम्–दोनों वीर; इवन् इन्नवन्–यह अमुक है; इवन् इन्नवन्–यह अमुक है; ऎन्न–पहचान कर कहना; चॆरु वीररुम्–(पास रहे) युद्धवीर भी; अरिया वकै–न जान पाएँ ऐसा; तिरिन्तार्–घूमे; कणै चॊरिन्तार्–शर बरसाये; पॊरु वीरॆयुम्–लड़ाकू समुद्र और; पॊरु वीरॆयुम्–लड़ाकू समुद्र; पॊरुताल् ऎन्न–लड़ते हों वैसे; पॊरुतार्–टकराये; वानवरुम्–देवों ने भी; ऒरु वीररुम्–कोई भी वीर; इवर् ऒक्कु इलर्–इनके समान नहीं; ऎन्न–कहकर; उवन्तार्–मोद पाया। २९७५

पास रहनेवाले वीर भी पहचान नहीं सके कि यह इन्द्रजित् है या लक्ष्मण ? इस भाँति वे घूमे। एक-दूसरे पर शर बरसाये। युद्ध-रत दो सागर टकराते हों, ऐसा दोनों लड़े। देव भी यह कहते हुए आनंद कर रहे थे कि ऐसे वीर संसार में कोई और नहीं हैं। २९७५

विण्शॆल्हिल शॆल्हिन्ऱन विशिहङ्गळॆन्न विमैयोर्
कण्शॆल्हिल मनम्शॆल्हिल कणिदमुरु मॆन्निनोर्
ऒण्शॆल्हिल नॆडुङ्गालवन् इडैशॆल्हिल् उडल्मेल्
पुण्शॆय्वन अल्लालॊरु पॊरुळ्शॆय्वन तॆरिया 2976

विचिकम्–विशिख; चॆल्किन्ऱन–जो चलते हैं; विण् चॆल्किल–आकाश में नहीं जाते; ऎन्न–कहकर; इमैयोर्–देवों की; कण् चॆल्किल–दृष्टि नहीं जाती; मनम् चॆल्किल–मन नहीं जाता; कणित मुऱुम् ऎन्निन्–गिनती में लाना चाहो तो; ऒरु ऎण् चॆल्किल्–कोई संख्या नहीं; इटै–उनके मध्य; नॆटुम् कालवन्–लंबा वायुदेव भी; चॆल्किलन्–जा नहीं सका; उटल् मेल्–शरीर पर; पुण् चॆय्वन–अल्लाल्–व्रण बनाना छोड़कर; ऒरु पॊरुळ् चॆय्वन–कोई दूसरा काम करते; तॆरिया–न जाने जाते। २९७६

उनके द्वारा प्रेरित शर इतनी तेज़ी से गये कि देवों की दृष्टि या मन नहीं समझ सके। वे तो यह कहने लगे कि वे शर आकाश में नहीं चले। वे किसी गिनती में न आये। उनके मध्य पवन भी चल नहीं सका। शरीरों पर व्रण लगाते थे, इसको छोड़ उनकी और कोई प्रवृत्ति दृष्टि में पड़ती ही नहीं थी। २९७६

ऍरिन्देऱ्िऩ तिशैयावैयुम् मिडियामॆऩप् पॊडियाय्
नॆरिन्देऱ्िऩ नॆडुनाणॊलि पडर्वाऩिऱ् युरुमिऩ्
शॊरिन्देऱ्िऩ शुडुवॆङ्गणै तॊडुन्दारहै मुळ्ळुदुम्
करिन्देऱ्िऩ वलहियावैयुङ् गऩल्वॆम्बुहै कदुव 2977

नॆट्टु–लंबे; नाण् ऑलि–डोरों की टंकार-ध्वनि; इटि आम् ॲन–वज्र के समान थी; तिचै यावैयुम्–सभी दिशाएँ; पॊटियाय् नॆरिन्तु–चूर्ण के रूप में; एऱ्िऩ–बनीं; ऍरिन्तु एऱ्िऩ–जल गयीं; चुट्टु–तापक; वॆम् कणै–गरम अस्त्र; पटर् वान्–विशाल आकाश में; निरै उरुमिन्–भरे वज्र के समान; चॊरिन्तु एऱ्िऩ–गिरे और फटे; उलकु यावैयुम–सारे लोकों को; कऩल्–आग का; वॆम् पुकै–गरम धुआँ; कतुव–ढक गया; तॊटुम् तारकै–पास-पास रहे सभी तारे; मुळ्ळुतुम् करिन्तु एऱ्िऩ–सब जल गये। २९७७

लम्बे डोरों की ध्वनि अशनि के समान हुई तो सारी दिशाएँ चूर-चूर होकर जल गयीं। अग्निमय क्रूर बाण विशाल आकाश-मध्य अशनि के समान सर्वत्र गिरे। सारे संसार में आग का धुआँ फैल गया और संकुलित रहे तारे सारे झुलस गये। [तमिऴ में संयुक्त क्रिया के रूप में 'पो' का प्रयोग होता है जैसे हिन्दी में 'जा'। इधर "एऱ्िऩ" (चढ़े) उसी 'जा' के अतितीव्र अर्थ में प्रयुक्त है।]। २९७७

वॆडिक्किऩ्ऱऩ तिशैयावैयुम् विळुहिऩ्ऱॆऩ विडिवऩ्
दिडिक्किऩ्ऱऩ शिलैनाणॊलि यिरुवाय्हळ् मॆदिराक्
कडिक्किऩ्ऱऩ कऩल्वॆङ्गणै कलिवाऩुऱ् विशैमेल्
पॊडिक्किऩ्ऱऩ पॊऱ्िवॆङ्गऩ लिवैहण्डऩर् पुलवोर् 2978

इटि वन्तु विळुकिऩ्ऱॆऩ–वज्र आकर गिरते जैसे; चिलै नाण् ऑलि–धनुष के डोरों की ध्वनि; इटिक्किऩ्ऱऩ–कड़कती है; तिचै यावैयुम्–सारी दिशाएँ; वॆटिक्किऩ्ऱऩ–फटती हैं; इरु वाय्कळुम्–दोनों के (अस्त्रों के) मुख; ऍतिरा–आमने-सामने रहकर; कटिक्किऩ्ऱऩ–काटते हैं; कऩल् वॆम् कणै–अग्निसम गरम अस्त्र; कलिवान् उऱ–बड़े आकाश में जाते हैं; विचै मेल्–तेजी के कारण; वॆम्कऩल् पॊऱ्ि–गरम अंगारे; पॊटिक्किऩ्ऱऩ–बिखरते हैं; इवै–इनको; पुलवोर्–देवों ने; कण्टऩर्–देखा। २९७८

डोरों के टंकार अशनि-सम कानों में गिरते हैं (इससे) दिशाएँ फटती हैं। दोनों के बाणों के मुख (अग्रभाग) आपस में काटते हैं (टकराते है)। अग्निवर्षी बाण आकाश में चढ़ते हैं और उनकी तेजी से भयानक अंगारे बिखरते हैं। देवों ने यह सब देखा। २९७८

कडल्वऱ्िऩ मलैयुक्कऩ परुदिक्कऩल् कदुवुऱ्
ऱुडल्पऱ्िऩ मरमुऱ्ऱऩ कऩल्पऱ्िऩ वुदिरम्

शुडर्पर्रित्त शुरुमिक्कदु तुणिपट्टुदिर् कणैयिन्
तिडर्पट्टदु परवैक्कुळि तिरियुर्रदु पुवनम् 2979

कडल् वर्रित्त–समुद्र सूखे; मलै उक्कत्त–पर्वत टूटे; परुति उडल्–सूर्य का शरीर; कनल् कवुवुर्रु–आग लगकर; पर्रित्त–जला; कनल् पर्रित्त–आग लगे; मरम् उर्रत्त–तरु जले; उतिरम्–रक्त; चुटर् पर्रित्त–दमक के साथ; चुडु मिक्कदु–जलने की गन्ध अधिक देने लगा; तुणि पट्टु–कटकर; उतिर्–नीचे गिरनेवाले; कणैयित्–शरों से; परवै कुळि–समुद्र का गड्ढा; तिटर् पट्टतु–टीला बना; पुवनम्–भुवन; तिरियुर्रतु–हिल गया। २९७९

इन बाणों के कारण समुद्र सूखे। सूर्य के शरीर आग लगकर जले। आग लगकर तरु झुलसे। रक्त चमका और आग में जलने की गन्ध अधिक हो गयी। कटे बाणों के गिरने से समुद्र का गड्ढा टीला बन गया। भूमि हिल गयी (या विकृत हो गयी)। २९७९

ऍरिहित्र्रन वयिल्वॆङ्गणै यिरुशेनैयु मिरियत्
तिरिहित्र्रन पुडैनित्रिल तिशैशॆन्र्रन शिदरिक्
करिपॊन्रित्त परिमङ्गित्त कविशिन्दित्त कडल्पोल्
शॊरिहित्र्रन पॊरुशॆम्बुनल् तॊलैहित्र्रन कॊलैयाल् 2980

ऍरिकिन्र्रन–आग बिखेरनेवाले; अयिल्–तीक्ष्ण; वॆम् कणै–गरम अस्त्रों से; इरु चेनैयुम् इरिय–दोनों सेनाएँ हटीं; तिरिकिन्र्रन–और घूमती हैं; पुटै नित्रिल–पास खड़ी भी नहीं रहतीं; चितरि–बिखरकर; तिचै चॆन्र्रन–दिशा-दिशा में चली जाती हैं; करि पॊन्रित्त–हाथी मरे; परि मङ्कित्त–अश्व मिटे; कवि–वानर; चिन्तित्त–भागे; पॊरु–युद्ध के कारण निकलनेवाला; चॆम् पुनल्–लाल रक्त; कडल् पोल्–समुद्र के समान; चॊरिकिन्र्रन–गिरता है; कॊलैयाल्–वध होकर; तॊलैकिन्र्रनर्–मिटते हैं। २९८०

आग-सी बिखेरनेवाले तीक्षण तापक शरों के कारण दोनों सेनाएँ अस्त-व्यस्त हो घूमती हैं। वे पास ही नहीं भटकतीं। बिखरकर दिशा-दिशा में भाग गयीं। हाथी मरे। अश्व मिटे। वानर भागे। युद्ध के फलस्वरूप निकला रक्त समुद्र के समान गिरता है। वधकार्य से जीव मटियामेट हो जाते हैं। २९८०

पुरिन्दोडित्त पुहैन्दोडित्त पॊरिन्दोडित्त पुहैपोय्
ऍरिन्दोडित्त करिन्दोडित्त इडमोडित्त वलमे
तिरिन्दोडित्त शॊरिन्दोडित्त विरिन्दोडित्त तिशैमेल्
शरिन्दोडित्त करुङ्गोळरिक् किळैयान्विडु शरमे 2981

करुम् कोळरिक्कु–श्यामवर्ण केसरी श्रीराम के; इळैयान्–कनिष्ठ सहोदर द्वारा; विडु चरम्–प्रेरित शरों में; पुरिन्तु ओटित्त–(कुछ) ऐंठते चले; पुकैन्तु ओटित्त–धुआँ फैलाते चले; पॊरिन्तु ओटित्त–अंगारे छितराते चले; पुकै पोय्–धुआँ-रहित;

ऍरिन्तु ओटिन–जलते चले; करिन्तु ओटिन–कोयला बनकर चले; इडम् ओटिन–बायें चले; वलमे तिरिन्तु ओटिन–दायें घूम चले; चॆरिन्तु ओटिन–सटे चले; पिरिन्तु ओटिन–अलग-अलग चले; तिचै मेल्–दिशा पर; चरिन्तु ओटिन–तिरछे चले। २६८१

श्यामकेसरी श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण ने जो शर चलाये, वे कुछ ऐंठते चले; कुछ धुआँ उगलते हुए चले। कुछ अंगारे छितराते हुए चले। कुछ धूम्ररहित होकर धधकती ज्वाला के साथ गये। कुछ कोयला बनकर गये। कुछ बायें गये। कुछ दायें गये। कुछ सटे हुए चले और कुछ अलग-अलग चले। कुछ दिशाओं में तिरछे चले। २९८१

नीरोत्तन नॆरुप्पोत्तन पॊरुप्पोत्तन निमिरुम्
कारोत्तन वुरुमोत्तन कडलोत्तन कदिरोन्
तेरोत्तन विडैमेलवन् शिरमोत्तन वुलहिन्
वेरोत्तन शॆरुवोत्तिह लरक्कन्विडु विशिहम् 2982

इकल् अरक्कन्–सशक्त राक्षस; चॆरु ऒत्तु–युद्ध में सम रहकर; विडु विशिकम्–जो विशिख छोड़ता था वे; नीर् ऒत्तन–प्रवाह-सम लगे; नॆरुप्पु ऒत्तन–अग्नि-सम थे; पॊरुप्पु ऒत्तन–पर्वत-सरीखे थे; निमिरुम् कार् ऒत्तन–उठकर चलते मेघों के सदृश थे; उरुम् ऒत्तन–वज्रतुल्य थे; कडल् ऒत्तन–समुद्र-सम थे; कतिरोन्–किरणमाली के; तेर् ऒत्तन–रथ के समान थे; विडै मेलवन्–ऋषभारूढ़ (शिव) के; शिरम् ऒत्तन–सिर के समान थे; उलकिन् वेर् ऒत्तन–लोक की जड़ (मेरु) के समान थे। २६८२

बलवान इंद्रजित् ने भी लक्ष्मण के सम रहकर विशिख चलाये। उनमें कुछ जलप्रलय के समान रहे; कुछ युगांत की अग्नि के समान रहे। कुछ पर्वतों के समान रहे। कुछ आकाश में उठे चलनेवाले मेघों के समान रहे। कुछ वज्र के समान रहे। कुछ समुद्र के समान रहे। कुछ किरणमाली के रथ के समान रहे। कुछ ऋषभवाहन के (पाँच) सिरों के समान रहे। कुछ लोकमूल मेरु के समान रहे। २९८२

एमत्तडङ् गवशत्तिह लहलत्तन विरुवोर्
वामप्पॆरुन् बोण्मेलन वदनत्तन वयिरत्
तामत्तुणै कुरङ्गोडिरु शरणत्तन ततम्
कामक्कुल मडमङ्गैयर् कडैक्कण्णॆनक् कणैहळ् 2983

काम–काम्य; कुल मट मङ्कैयर्–कुलीन बाललननाओं की; कटैक्कण् ऎन–तिरछी नजर के समान (भेद चलनेवाले); तम् तम् कणैकळ्–उन-उनके अस्त्र; एमम्–रक्षणार्थ; तटम् कवचत्तु–विशाल कवच-रक्षित; इकल् अकलत्तन–कठोर वक्ष में लगे; वामम्–मनोहर; पॆरुम् तोळ् मेलन–कंधों पर के हुए; वतनत्तन–

वदन पर लगे; वयिरम्–वज्र-दृढ़; ताम्–सुन्दर; तुणै कुरङ्कोट्टु–ऊरुद्वय और; चरणत्तत–पैरों पर लगे। २६८३

परस्पर जो बाण उन दोनों ने चलाये वे काम्य बाल-ललनाओं की तिरछी दृष्टि के समान भेद चले और दोनों के रक्षणार्थ पहने कवचावृत वक्षों में लगे। मनोरम व विशाल भुजाओं में लगे। उनके वदनों पर लगे। वज्र-सम मनोहारी ऊरुद्वयों और पैरों में चुभे। २९८३

ऎन्नाळिऩ्ऩि नॆत्तेवर्ह ळॆत्तानव रॆवरे
अन्नार्शरु वॊत्तारॆन्न विमैयोरॆडुत् तार्त्तार्
पॊन्नार्शिलै यिरुकाल्हळु मॊरुकाल्पॊऱै युयिरा
मुन्नाळिऩ्ऩि लिरण्डाम्बिऱै मुळैत्तालॆन्न वळैत्तार् 2984

पॊन् आर् चिलै–स्वर्णमय धनुओं को; पॊऱै उयिरा–भार दूर करने; मुन्नाळिऩ्ऩिल्–कृष्णपक्ष के; इरण्टाम् पिऱै–दूज का चांद; मुळैत्ताल् ऎन्न–उगा हो जैसे; इरु काल्कळुम्–दोनों (धनुषों के) छोरों को; ऒरु काल्–एक ही समय में; वळैत्तार्–(दोनों ने) झुकाया; इमैयोर्–देव; ऎ नाळिऩ्ऩिल्–किस दिन; ऎ तेवर्कळ्–कौन से देवों; ऎ तानवर्–कौन दानवों ने; ऎवरे–किसने; अन्नार् चॆरु–उनके युद्ध के; ऒत्तार्–समान युद्ध किया था; ऎन्न–ऐसा; ऎट्टुत्तु उरैत्तार्–खोलकर बोले। २९८४

दोनों ने स्वर्णिम चापों को भार-निवारणार्थ दोनों छोरों को झुकाया और वे पूर्वपक्ष के दूज के चाँद के समान बने। देवों ने मुख खोल कर विस्मय किया कि ऐसा युद्ध कहाँ, कब और किन देवों ने या दानवों ने या और किन्होंने किया था? । २९८४

वेहिन्ऱन वुलहिङ्गिवर् विडुहिन्ऱ विशिहम्
बोहिन्ऱन कडल्वॆन्दन विमैयोर्हळुम् बुलर्न्दार्
आहिन्ऱदॊ रळिहालमि दामॆन्ऱॆन वयिर्त्तार्
नोहिन्ऱन तिशैयानैहळ् शॆविनाणॊलि नुळैय 2985

इङ्कु–यहाँ (इस युद्ध में); इवर्–ये (दोनों); विटुकिन्ऱ–(जो) छोड़ते हैं; विचिकम्–विशिख; पोकिन्ऱन–चलते हैं; उलकु वेकिन्ऱन–लोक पक जाते हैं; कटल् वॆन्तन–समुद्र झुलसे; इमैयोर्कळुम्–देव भी; पुलर्न्तार्–(मुख में) सूख गये; अन्ऱु–तब; ओर् अळिकालम्–एक अपूर्व नाशकाल; इतु आकिन्ऱतु–यह आ गया; आम् ऎन्न–है, ऐसा; अयिर्त्तार्–भ्रमित हो गये; नाण् ऒलि–ज्यास्वन; चॆवि नुळैय–कान में घुसा; तिचै यानैकळ्–दिग्गज; नोकिन्ऱन–वेदना का अनुभव करते हैं। २९८५

अब इनके प्रेरित शर चलते हैं तो लोक जलते हैं। समुद्र झुलसते हैं। देवों के मुख सूख जाते हैं। तब सब संशय करने लगे कि यह

नाशकाल हो रहा है! ज्यास्वन कानों में घुसा तो दिग्गज पीड़ित हुए। २९८५

मीनुक्कदु नॆडुवानहम् वॆयिलुक्कदु शुडरुम्
मानुक्कदु मुळ्वॆण्मदि मळैयुक्कदु वानम्
तानुक्कदु कुलमाल्वरै तरैयुक्कदु तहैशाल्
ऊनुक्कवॆव् वुलहत्तिनु मुळदाहिय वुयिरे 2986

नॆटु वानकम्–विशाल आकाशतल ने; मीन्–नक्षत्रों को; उक्कतु–चुवा दिया; चुटरुम्–किरणदेव भी; वॆयिल् उक्कतु–धूप गिरा गया; वॆण्–श्वेत; मुळु मति–पूर्णचन्द्र ने भी; मान् उक्कतु–हिरण को खो दिया; वानम्–आकाश ने; मळै उक्कतु–मेघों को डाल दिया; कुल माल् वरै–श्रेष्ठ बड़ा पर्वत (मेरु); तान् उक्कतु–स्वयं चूर-चूर हो गया; तकै चाल् तरै–मान्य भूमि; उक्कतु–बिखर गयी; अॆ उलकत्तिनुम्–सभी लोकों में; उळताकिय–रहनेवाले; उयिरे–जीवों ने; ऊन् उक्कतु–शरीर त्याग दिये। २९८६

इनके अस्त्रों से त्रस्त होकर दीर्घ आकाश ने नक्षत्रों को चुवा दिया। सूरज ने गर्मी त्याग दी। श्वेत पूर्णचन्द्र ने अपना 'हिरण' त्याग दिया। आकाश ने मेघ गिरा दिये। श्रेष्ठ मेरु पर्वत स्वयं चूर-चूर हो गया। माननीय भूमि बिखर गयी। सभी लोकों के सारे जीवों ने अपने शरीर डाल दिये। २९८६

अक्कालैयि नयिल्वॆङ्गणै यैयैन्दुबुक् कळुन्दत्
तिक्काशर वॆन्ऱान्मह निळङ्गोवुडर् चॆरित्तान्
गैक्कार्मुहम् वळैयच्चिल कनल्वॆङ्गणै कवशम्
बुक्काहमुङ् गळन्ऱोडिड विळङ्गोळरि पॊळिन्दान् 2987

अक्कालैयिल्–तब; तिक्कु–(आठों) दिशाओं को; आचु अऱ–विना कसूर के; वॆन्ऱान्–जिसने जीता था उस (रावण) के; मकन्–पुत्र ने; अयिल्–तीक्ष्ण; ऐ ऐन्तु वॆम् कणै–पचीस भयंकर अस्त्रों को; इळङ्को–लघुराज के; उटल् पुक्कु–शरीर में घुसकर; अळुन्त–धँस जायँ ऐसा; चॆरित्तान्–लगवा दिया; इळम् कोळरि–बालकेसरी (लक्ष्मण) ने भी; आकमुम् पुक्कु–शरीर में घुसकर; कवचम् कळन्ऱु–कवच भी खुलकर; ओटिट–चला जाय ऐसा; कै कार् मुकम् वळैय–हाथ के चाप को झुकाकर; चिल–कुछ; कनल्–आग के समान; वॆम् कणै–भयंकर अस्त्र; पॊळिन्तान्–लगातार छोड़े। २९८७

तब अष्टदिग्विजयी रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने पचीस तीक्ष्ण और गरम अस्त्र चलाये जो लघुराज लक्ष्मण के शरीर के अंदर चले गये। लघुराज ने भी अपने हाथ के धनु को झुकाकर कुछ आग्नेय अस्त्र चलाये और वे इन्द्रजित् के शरीर में घुसे और कवच भी खुलकर अलग हो गया। २९८७

तॅरिन्दाऩ्शिल शुडर्वॅङ्गणै तेवेन्दिरऩ् शिऩमा
इरिन्दोडिडत् तुरन्दोडिऩ विमैयोरैयु मुऩ्ऩाळ्
अरिन्दोडिऩ वॅरिन्दोडिऩ यवैहोत्तड लरक्कऩ्
शॊरिन्दाऩुयर् नॆडुमारुदि तोण्मेलिलिऩ् ऱोऩ्ऱ 2988

अटल् अरक्कऩ्–बलवान राक्षस ने; मुऩ् नाळ्–पहले किसी दिन; तेवेन्तिरऩ्–देवेन्द्र के; चिऩमा–क्रुद्ध गज को; इरिन्तु ओटिट–अस्त-व्यस्त भागने को मजबूर करके; तुरन्तु–(चाप) छोड़कर; ओटिऩ–जो गये और; इमैयोरैयुम्–देवों को; अरिन्तु–काटकर; ओटिऩ–जो गये और; ऍरिन्तु ओटिऩ–जो आग उगलते गये; चिल–(ऐसे) कुछ; चुटर्–तेजोमय; वॆम्–भयंकर; कणै अवै–शरों को; कोत्तु लगाकर; उयर्–ऊँचे क़द के; नॆटु–बड़े; मारुति तोळ् मेलितिल्–मारुति के कंधों पर; तोऩ्ऱ–वे शोभे ऐसा; तॆरिन्तान्–जान-बूझकर; चॊरिन्तान्–चलाये। २९८८

सबल इन्द्रजित् ने ऊँचे क़द के बड़े मारुति के कन्धे पर जान-बूझकर वे उज्ज्वल तथा भयंकर अस्त्र चलाये, जिनके लगने से देवेंद्र का क्रोधी गज ऐरावत अस्त-व्यस्त भागा, जो देवों को काट चले थे और जो आग उगलते चले थे। वे जाकर हनुमान के कंधों पर शोभे। २९८८

कुरुदिपुऩल् शॊरियुम्मुयर् कुऩ्ऱॆऩ्ऩ वनुमऩ्
परुदित्तिऱ निऱमोत्त यिळङ्गोळरि पार्त्ताऩ्
ऒरुतिक्किऩुम् बॆयरावहै यवऩ्ऱेरिऩै युदिर्त्ताऩ्
वॊरुदिक्कणम् वॆऩ्ऱेऩ्ऩच् चरमारिहळ् पॊऴिन्दाऩ् 2989

कुरुति पुऩल् चॊरियुम्–रक्त बहानेवाले; उयर्–ऊँचे; कुऩ्ऱु–पर्वत; ऍऩ्ऩुम्–के समान; अ अनुमऩ्–उस हनुमान के; निऱम्–रंग के; परुति ऑत्त–सूर्य के समान रहने का; तिऱम्–ढंग; इळम्–लघुराज ने; पार्त्ताऩ्–देखा; अवऩ् तेरिऩै–उस (इन्द्रजित्) के रथ को; ऒरु तिक्किऩुम् पॆयरा वकै–किसी भी दिशा में न जाने देकर; उतिर्त्तान्–गिराकर; इ कणम्–इसी क्षण; पॊरुतु–लड़कर; वॆऩ्ऱेऩ्–जीत लिया; ऍऩ्ऩ–कहते हुए; चरमारिकळ्–शरवर्षाएँ; पॊऴिन्तान्–कीं। २९८९

रक्तस्रावी उन्नत पर्वत-सम हनुमान का शरीर बाल-सूर्य के समान लाल रंग का हो गया। बालकेसरी लक्ष्मण ने उसकी स्थिति देखी। उन्होंने उसके रथ को किसी दिशा में जाने न देकर गिरा दिया और यह कहते हुए शर-वर्षा करायी कि अभी, इसी क्षण में युद्ध करके उसे हरा दूंगा। २९८९

अत्तेरऴिन् ददुनोक्किय विमैयोरॆडुत् तार्त्तार्
मुत्तेवरु मुवन्दारव नुरुमेऱॆऩ मुऩिन्दाऩ्
तत्तावॊरु तडन्देरिऩैत् तॊडर्न्दाऩ्शरन् दलैमेल्
पत्तेविऩ नवपाय्दलि ऩिळङ्गोळरि पवॆत्ताऩ् 2990

अ तेर्-उस रथ का; अळिन्ततु-नष्ट होना; नोक्किय-देखनेवाले; इमैयोर्-देवों ने; अॅट्टुतु आर्त्तार्-स्वर ऊँचा करके हर्षनाद किया; मु तेवरुम्-त्रिदेव; उवन्तार्-खुश हुए; अवन्-वह (इन्द्रजित्); उरुम् एरु अॅन-अशनिराज के समान; मुनिन्तान्-गुस्सा करके; ओरु तटम् तेरितॅ-एक विशाल रथ पर; तत्ता तॊटर्न्तान्-छलाँग मारकर चढ़ा और गया; तलै मेल्-(लक्ष्मण के) सिर पर; पत्तु चरम्-दस शर; एवितन्-चलाये; अवै-उनके; पाय्तलित्-लगने से; इळङ्कोळरि-बालकेसरी (लक्ष्मण); पतैत्तान्-छटपटाये। २९९०

उसके रथ को नष्ट हुआ देख देवों ने ज़ोर से हर्षनाद किया। त्रिदेव भी मुदित हुए। यह देखकर इन्द्रजित् अशनि के समान क्रोध से कड़क उठा। एक बड़े रथ पर उछलकर चढ़ा। लक्ष्मण का पीछा करके गया और उनके सिर पर दस शर चलाये। उनके लगने पर बालकेसरी-से लक्ष्मण छटपटाये। २९९०

पदैत्तानुड निलैत्तान्शिल पहुवाययिड् पहळि
विदैत्तानवै विलक्कादमुन् विडैमेल्वरु विमलन्
मदत्तालॅदिर् वरुहालनै यॊरुहालुरु मरुमत्
तुदैत्तानॅनत् तनित्तोर्कणै यवन्मार्बिनि लुदैत्तान् 2991

उटल् पतैत्तान्-जिनका शरीर कंपित हुआ वे; निलैत्तान्-स्थिर हुए; पकुवाय्-फटे मुख के; अयिल्-तीक्ष्ण; चिल पकळि-कुछ अस्त्र; वितैत्तान्-बो दिये; अवै विलक्कात मुन्-उनको रोकने से पहले; विटैमेल्-ऋषभ पर; वरु विमलन्-आनेवाले विमल मूर्ति ने; मतत्ताल्-मद से; ऍतिर् वरु कालनै-सामना करके आनेवाले यम को; ओरु काल्-एक पैर से; मरुमत्तु उरु-मर्म पर लगाकर; उतैत्तान् ऍन-जैसे लात मारी वैसे; अवन् मार्पितिल्-उस (इन्द्रजित्) के वक्ष पर; तनित्तु ओर् कणै-अलग एक अस्त्र; उतैत्तान्-छोड़ा। २९९१

अधीर जो हुए वे लक्ष्मण थोड़ी देर के बाद स्थिर हुए। और उन्होंने कुछ फटे मुँह वाले व तीक्ष्ण शर बो-से दिये। उनको इन्द्रजित् रोके उसके पहले ही उन्होंने इन्द्रजित् के वक्ष पर एक शर चलाया, जो ऋषभवाहन की दम्भी यम की छाती पर लगायी गयी लात के समान लगा। २९९१

कवशत्तैयुम् नॆडुमार्बैयुङ् गडन्दक्कणै कळिय
अवशत्तॊळि लडैन्दानदङ् किमैयोरॅडत् तार्त्तार्
तिवशत्तॆळु कदिरोनॅनत् तॆरिहिन्ऱदोर् कणैयाल्
तुवशत्तैयुम् तुणित्तेयवन् मणित्तोळैयुन् दुळैत्तान् 2992

अ कणै-वह अस्त्र; कवचत्तैयुम्-कवच को और; नॆटु मार्पैयुम्-विशाल वक्ष को; कटन्तु कळिय-भेदकर निकल गया तो; अवच तॊळिल् अटैन्तान्-अवश स्थिति को प्राप्त हुआ; अतऱ्कु-उसको लेकर; इमैयोर्-देवों ने; अॅट्टुतु-ज़ोर से; आर्त्तार्-हर्षघोष किया; तिवचत्तु ऍळु-दिन (मध्याह्न) में उठे; कतिरोन्

अँत–किरणमाली के समान; तॅरिकिन्ऱतु–दिखनेवाले; ओर्–एक; कणैयाल्–शर से; अवन् तुवचत्तैयुम्–उसकी ध्वजा को; तुणित्तु–काटकर; मणि तोळैयुम्–मनोरम कंधों को भी; तुळैत्तान्–छिन्न कर दिया। २६६२

वह शर इन्द्रजित् के कवच तथा विशाल वक्ष को भेदकर निकल गया। वह अवश हो गया। तब देवों ने आनंद-रव किया। लक्ष्मण ने मध्याह्न के सूर्य के समान एक प्रखर वाण चलाकर उसकी ध्वजा को काट गिराया और उसके नीलवर्ण रत्न-सम कंधों को भी छिन्न कर दिया। २९९२

उळ्ळाडिय वुदिरप्पुनल् कॉळ्नॅन्दीयॆन वॊळुहत्
तळ्ळाडिय वडमेरुविऩ् चलित्तानुड ऱरित्तान्
पुळ्ळाडिय कडुम्बोर्क्कणै तुरन्दानवै शुडर्पोय्
विळ्ळानॆडुङ् गवशत्तिडै नुळैयादुह वॆहुण्डान् 2993

(इन्द्रजित् के) उळ् आटिय–अन्दर वहता रहा; उतिरम् पुनल्–रुधिर-जल; कॉळ् ती अँत–पुष्ट आग के समान; ओळुक–स्रवित हुआ; तळ्ळाटिय–लड़खड़ाने वाले; वट मेरुविऩ्–उत्तरी मेरु के समान; उटल् चलित्तान्–थकित-शरीर हुआ; तरित्तान्–फिर सँभला; पुळ् आटिय–(मांसखोजी) पक्षी के समान; कटुम्–तेज; पोर् कणै–युद्ध शर; तुरन्तान्–छोड़े; अवै–वे; चुटर् पोय् विळ्ळा–प्रकाश-किरणों से अवियुक्त; नॆटु कवचत्तु इटै–(लक्ष्मण के) बड़े कवच के मध्य; नुळैयातु–प्रवेश न कर सके; उक–गिरे; वॆकुण्टाऩ्–क्रुद्ध हुआ। २६६३

इन्द्रजित् के अंदर वहता रहा रक्त पुष्ट आग के समान बहने लगा। वह चल मेरु के समान चलित हो गया। फिर थोड़ा सँभलकर उसने आहार खोजनेवाले पक्षियों के समान अस्त्र चलाये। वे लक्ष्मण के अमुक्त छवि कवच-मध्य प्रवेश नहीं कर सके और गिर गये। तब इन्द्रजित् बहुत क्रुद्ध हुआ। २९९३

मऱित्तायिरम् वडिवॆङ्गणै मरुमत्तिनै मदियाक्
कुऱित्तायिरम् बरित्तेरवन् विडुत्तानवै कुऱिपार्त्
तिऱुत्तानॆडुञ् जरत्तालॊरु तनिनायहर् किळैयोन्
शॆऱित्तानुडल् शिलपॊऱ्कणै शिलैनाणऱत् तॆरित्तान् 2994

आयिरम् परि–सहस्र अश्वों के; तेरवन्–रथवाला; मऱित्तु–फिर; मतिया–सोचकर; आयिरम्–हजार; वटि वॆम् कणै–तीक्ष्ण और भयंकर अस्त्र; मरुमत्तिन् कुऱित्तु–मर्मस्थल देखकर; विटुत्तान्–चलाये; तनि नायकर्कु–अकेले नायक के; इळैयोन्–लघुभ्राता ने; अवै–उनका; कुऱि पार्त्तु–निशाना लगाकर; ओरु नॆटुम् चरत्ताल्–एक लम्बे अस्त्र से; इऱुत्तान्–कटवा दिया; चिलै नाण् अऱ–धनुष का डोरा काटा; पॊन्–स्वर्ण-सम; चिल–कुछ; कणै–अस्त्रों को; तॆरित्तान्–चुन लेकर; उटल् चॆऱित्तान्–उसके शरीर में चुभो दिया। २६६४

सहस्र अश्वयुक्त रथ पर आरूढ़ होकर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के मर्म पर हज़ार तीक्ष्ण संदाहक शर चलाये। अप्रतिम नायक श्रीराम के कनिष्ठ ने निशाना साधकर एक लंबे शर से उनको काटा, कुछ स्वर्ण-सम शर चलाकर उसके धनु का डोरा भी तोड़ दिया। फिर कुछ अस्त्र शरीरों पर गड़ा दिये। २९९४

विल्लिङ्गिदु नॆंडुमाल्शिव नॆन्नुमेलवर् तन्नुवे
कॊल्लॆन्रुहॊण् डयिर्त्तानॆडुङ् गवशत्तैयुङ् गुलैयाच्
चॆल्लुङ्गॊड्ङ् गणैयावैयुञ् जिदैयामैयुन् दॆरिन्दान्
वॆल्लुन्दर मिल्लामैयु मरिन्दान्ह मॆलिन्दान् 2995

इङ्कु इतु विल्–यहाँ यह (लक्ष्मण का) धनुष; नॆट्टु माल् चिवन् ऎन्नुम्–श्रीविष्णु, शिव आदि; मेलवर्–श्रेष्ठ देवों का; तन्नुवे कॊल्–धनु ही है क्या; ऎन्नु कॊण्टु–ऐसा सोच करके; अयिर्त्तान्–संशयचित्त हुआ; नॆटुम् कवचत्तैयुम्–और बड़े कवच को भी; कुलैया–छिन्न-भिन्न करके; चॆल्लुम्–जो आगे जाते हैं; कॊटुम् कणै यावैयुम्–क्रूर सभी शरों के; चितैयामैयुम्–छिन्न न होने की बात; तॆरिन्तान्–जान ली; वॆल्लुम् तरम् इल्लामैयुम्–अपनी जीत की कोई संभावना न रहना; अरिन्तान्–जान लिया; अकम् मॆलिन्तान्–मन में खिन्न हुआ। २९९५

इन्द्रजित् को संशय हो गया कि क्या लक्ष्मण के हाथ का वह धनुष श्रीविष्णु, शिव आदि अतिश्रेष्ठ देवों का चाप है। और उसने देखा कि उसके शर अपने कवच को छिन्न करते हुए जानेवाले लक्ष्मण के शरों का कुछ नहीं कर पा रहे हैं। उसे इसका भी भान हुआ कि वह जीत नहीं सकेगा। इसलिए वह बहुत खिन्नमन हो गया। २९९५

अत्तन्मैयै यरिन्दानवन् शिरुतादैयु मणुहा
मुत्तन्मुह नोक्कावोरु मॊऴिकेळॆन मॊऴिवान्
ऎत्तन्मैयु मिमैयोर्हळै वॆन्ड्रानिहल् वॆन्ड्राय्
पित्तनमहन् ड्ळर्न्दानिनिप् पिऴैयानॆनप् पहर्न्दान् 2996

अवन्–उसके; चिरु तातैयुम्–चाचा ने भी; अ तन्मैयै–उस स्थिति को; अरिन्तु–जानकर; मुत्तन्–मुक्त लक्ष्मण; अणुका–के पास जाकर; मुकम् नोक्का–उनका मुख देखकर; ऒरु मॊऴि कॆळ्–एक बात सुनो; ऎन–कहकर; मॊऴिवान्–बोलने लगा; ऎ तन्मैयुम्–सभी प्रकार के; इमैयोर्कळै–देवों को; वॆन्ड्रान्–जिसने जीता था उसे; इकल्–युद्ध में; वॆन्ड्राय्–जीत लिया; पित्तन् मकन्–दीवाने (रावण) का पुत्र यह; तळर्न्तान्–शिथिल पड़ गया; इनि–अब; पिऴैयान्–जीता नहीं रहेगा; ऎन–ऐसा; पकर्न्तान्–कहा। २९९६

उस इन्द्रजित् के चाचा विभीषण ने इन्द्रजित् की क्षीण हालत देखी तो मोक्षदाता लक्ष्मण के पास जाकर उनका मुख देखा और कहा कि एक बात सुनें। आपने सब प्रकार के देवों के विजेता इसको युद्ध में हराया

है। (प्रेम-) पागल रावण का पुत्र यह बहुत जर्जर हो गया है। जीवित बचेगा नहीं। २९९६

कूऱ्ऱित्पडि कोंदिक्कित्ऱवक् कोलैवाळॆयिर् ऱरक्कन्
एऱ्ऱुञ्जिलै नॆडुनाणोलि युलहेऴिनु मॆय्दच्
चीऱ्ऱन्दलैत् तलैशॆन्ऱुऱ विदुतीरॆळत् तॆरियाक्
काऱ्ऱित्पड तॊडुत्तानव नदुवेकॊडु कात्तान् 2997

कूऱ्ऱित् पटि–यम के समान; कोंतिक्कित्ऱ–खौलनेवाला; अ–वह; वाळ् ऍयिऱ्–तीक्ष्ण (घोर) दांतों वाला; कोलै अरक्कन्–वधकारी राक्षस; चिलै–अपने चाप पर; एऱ्ऱुम्–जो चढ़ाया; नॆट् नाण् ओलि–लम्बे डोरे की ध्वनि; एऴ् उलकिनुम् ऍय्त–सातों लोकों में पहुँची तो; चीऱ्ऱम्–कोप; तलै तलै चॆन्ऱु उऱ–सिर पर जा लगा; इतु तीर्–इसको बुझाओ; ऍन–कहकर; काऱ्ऱिन् पटै–वायवास्त्र को; तॆरिया–चुन लेकर; तॊटुत्तान्–लगाकर चलाया; अवन्–उस (लक्ष्मण) ने; अतुवे कॊटु–उसी अस्त्र से; कात्तान्–उसे रोका। २६६७

यम-तुल्य, खौलनेवाले, तीक्ष्ण दंतोरे व घातक इन्द्रजित् ने धनु के डोरे को टंकृत किया। वह ज्यास्वन सातों लोकों में जाकर भरा। क्रोध उसके सिर पर चढ़ गया। उसने वायवास्त्र डोरे से लगाया और कहा कि इसे मिटाओ (तो देखें)। उसने उसे चलाया तो लक्ष्मण ने उसी अस्त्र से उसको रोक दिया। २९९७

अनलित्पडै तॊडुत्तानव नदुवेकॊडु तडुत्तान्
पुनलित्पडै तॊडुत्तानव नदुवेकॊडु पोऱुत्तान्
कनवॆङ्गदि रवन्वॆम्बडै तुरन्दान् मनङ्गरियान्
शिनवॆन्दिऱ विळङ्गोळरि यदुवेकॊडु तीर्त्तान् 2998

अवन्–उस (इन्द्रजित्) ने; अनलिन् पटै–आग्नेयास्त्र; तॊटुत्तान्–चलाया; अतुवे कॊटु तटुत्तान्–उसी से रोका (लक्ष्मण ने); अवन्–उसने; पुनलिन् पटै–वरुणास्त्र; तॊटुत्तान्–चलाया; अतुवे कॊटु–उसी से; पोऱुत्तान्–रोका; मनम् करियान्–काले मन वाले ने; कन वॆम् कतिरवन्–अधिक गरम किरणमाली का; वॆम् पटै–प्रखर अस्त्र; तुरन्तान्–छोड़ा; चिन–क्रुद्ध; वॆम् तिऱल्–बहुत सबल; इळम् कोळरि–बालकेसरी ने; अतुवे कॊटु–उसी से; तीर्त्तान्–उसे मिटाया। २६६८

फिर उसने आग्नेयास्त्र छोड़ा। लक्ष्मण ने आग्नेयास्त्र ही से उसे रोक दिया। उसने वरुणास्त्र छोड़ा। लक्ष्मण ने वरुणास्त्र से ही उसे निवार दिया। काले मन वाले इन्द्रजित् ने बहुत गरम तथा कठोर सूर्यास्त्र छोड़ा। क्रुद्ध और सबल लक्ष्मण ने सूर्यास्त्र चलाकर उसे विफल कर दिया। २९९८

इदुकात्तिहीं लॅन्ऩ्ऩावॅडुत् तिशिहप्पडै यॅय्दाऩ्
अदुकाप्पदऱ् कदुवेयळ वॆऩ्ऩात्तॊडुत् तमैन्दाऩ्
शॆंदुहाप्पडै तॊडुप्पेऩॆऩ निऩैन्दाऩ् तिशैमुहत्ताऩ्
मुदुमाप्पडै तुरन्देऩिऩि मुडिन्दायॆऩ मॊऴिन्दाऩ् 2999

इतु कात्ति कॊल्–इसे रोक भी सकते हो; ॲऩ्ऩा–कहकर; इचिकप्पटै–इषीकास्त्र; ॲटुत्तु ॲय्ताऩ्–ले छोड़ा; अतु काप्पतऱ्कु–उसके निवारण के लिए; अतुवे अळवु–वही पर्याप्त है; ॲऩ्ऩा–सोचकर; अम्पिल् तॊटत्तु–अस्त्र चलाकर; अमैन्ताऩ्–रहे; चॆंतुका पटै–अचूक अस्त्र; तॊटुप्पेऩ्–चलाऊँगा; ॲऩ–ऐसा; निऩैन्ताऩ्–सोचकर; तिचै मुकत्ताऩ्–दिशामुख ब्रह्मा का; मुतु मा पटै–पुराना बड़ा अस्त्र; तुरन्तेऩ्–चलाया है; इऩि मुटिन्ताय्–अब मिटे; ॲऩ मॊऴिन्ताऩ्–ऐसा कहा। २८९९

"इसको भी रोक सकोगे शायद!" यह कहते हुए इन्द्रजित् ने इषीकास्त्र चलाया। लक्ष्मण ने सोचा कि वही अस्त्र उसे रोकने के लिए पर्याप्त है। वे इषीकास्त्र चलाकर शांत रहे। फिर इन्द्रजित् ने निश्चय किया कि अचूक अस्त्र कोई प्रयोग करूँगा। उसने बड़े ब्रह्मास्त्र को छोड़ा और कहा कि अब तुम गये। २९९९

वाऩित्तलै निलैनिऩ्ऱवर् मऴुवाळियुम् मलरोऩ्
ताऩुम्मुऩि वरऩुम्बिऱ तवत्तोर्हळु मऱत्तोर्
कोऩुम्बिऱ पिऱतेवर्हळ् कुऴुवुम्मतम् गुलैन्दार्
ऊऩम्मिऩि यिलदाहुह विळङ्गोक्कॆऩ वुरैत्तार् 3000

वाऩिऩ् तलै–आकाश में; निलै निऩ्ऱवर्–जो स्थायी हैं; मऴु आळियुम्–परशु के धारक शिव; मलरोऩ् ताऩुम्–और कमलभव; मुऩिवरऩुम्–और मुनिवर; पिऱ तवत्तोर्कळुम्–अन्य तपस्वीगण; अऱत्तोर् कोऩुम्–धर्मश्रेष्ठों के राजा देवेन्द्र; पिऱ पिऱ–अलग-अलग; तेवर्कळ् कुऴुवुम्–देववृन्द; मतम् कुलैन्तार्–चिन्ताक्रांत हुए; इळम् कोक्कु–युवराज को; इऩि–अब; ऊऩम् इलतु–हानि नहीं; आकुक–हो; ॲऩ–ऐसा; उरैत्तार्–मंगलकामना कही। ३०००

इसको देखकर व्योमलोक के स्थिर वासी देवगण, परशुधर शिव, कमलभव ब्रह्मा, मुनिवर, अन्य तपस्वी, धर्मावलम्बियों के राजा देवेंद्र और अन्य देववृन्द सभी व्यग्र हुए। मंगल-कामना की कि लघुराज पर कोई आँच न आवे। ३०००

ऊऴिक्कडै यिऱुमत्तलै युलहियावैयु मुण्णुम्
आऴिप्पॆरुङ् गऩऱ्ऩॊरु शुडरॆऩ्ऩवु माहाप्
पाऴिच्चिहै परप्पित्तऩि पडर्हिऩ्ऱदु पारत्ताऩ्
आऴित्तऩि मुदऩायहऩ् किळैयाऩदु मदित्ताऩ् 3001

कटै ऊऴि–अन्तिम युग; इऱुम् अ तलै–जब अन्त होगा तब; उलकु यावैयुम् उण्णुम्–सारे लोकों के भक्षक; आऴि पॅरुम् कतल्–समुद्र-मध्य की बड़ी आग; तन् ऑरु चुटर्–उस अस्त्र की एक किरण है; ॲन्नवुम्–ऐसा कहने भी योग्य; आका–नहीं ऐसा (तेजोमय); पाऴि चिकै–अपनी बड़ी ज्वालाओं को; परप्पि–फैलाते हुए; तनि–अनुपम; पटर्किन्ऱतु–आता है उसे; अऴि–चक्रधारी; तनि–अद्वितीय; मुतल्–आदि; नायकऱ्कु–नायक के; इळैयान्–छोटे भाई ने; पार्त्तान्–देखा; अतु मतित्तान्–उसका महत्त्व जाना। ३००१

युगक्षय के दिन सारे लोकों को उदरस्थ कर लेनेवाली समुद्र की वड़ी बड़वाग्नि उसकी एक किरण के भी समान नहीं होगी —इतने अधिक तेज के साथ अपनी विपुल ज्वालाओं को निःसृत करता हुआ, निपट अनुपम रीति से वह अस्त्र आता रहा और चक्रधर परमदेव जगन्नायक के भाई लक्ष्मण ने उसे देखा और उसकी शक्ति पहचान ली। ३००१

माट्टातिवन् मलरोन्पडै मुदऱ्पोदुतन् वलत्ताल्
मीट्टानलन् दडुत्तानलन् मुडिन्दानॅन विट्टान्
काट्टादिनिक् करन्दालदु करुमम्मल दॅन्नात्
ताट्टामरै मलरोन्बडै तॊडुप्पेनॅनच् चमैन्दान् 3002

इवन् मलरोन् पटै माट्टान्–यह ब्रह्मास्त्र झेल नहीं सकेगा; मुतऱ्पोतु–पहली बार; तन् वलत्ताल्–अपने वल से; मीट्टान् अलन्–न लौटा सका; तटुत्तान् अलन्–रोक भी नहीं सका; मुटिन्तान्–अव गया; ॲन–सोचकर; विट्टान्–छोड़ा (इन्द्रजित् ने); काट्टातु–बल-प्रदर्शन किये विना; इनि करन्ताल्–अब उसे छिपाये रखें तो; अतु करुमम् अलतु–वह (उचित) कार्य नहीं होगा; ॲन्ना–सोचकर; ताळ् तामरै मलरोन्–लम्बे नाल के कमल के स्वामी (ब्रह्मा) के; पटै–अस्त्र को; तॊटुप्पेन्–लगाकर चलाऊँगा; ॲन चमैन्तान्–ऐसा निश्चय किया। ३००२

"यह ब्रह्मास्त्र के सामने नहीं ठहर सकेगा। पहली बार हमने जब चलाया था उसने इसको अपनी शक्ति से न फिराया, न रोक पाया। अबकी बार यह, वस, गया।" ऐसा सोचकर इन्द्रजित् ने वह अस्त्र चलाया। लक्ष्मण ने सोचा, अव हम अपना बलप्रदर्शन न करके छिपाये रहें, तो वह बुद्धिमानी का काम नहीं होगा। मैं अभी कमलासनास्त्र ही छोड़ूँगा। लक्ष्मण ने ऐसा निर्णय किया। ३००२

नन्ऱाहुह वुलहुक्कॅन मुदलोन्मॊऴि नविन्ऱान्
पिन्ऱादव नुयिर्मेऱ्चॅल वॊऴिहॅन्बदु पिडित्तान्
ऒन्ऱादविम् मलरोन्पडै तन्मायक्कवॆन् ऱुरैत्तान्
निन्ऱानदु तुरन्दानवन् नलम्वानवर् निनैन्दार् 3003

उलकुक्कु नन्ऱाकुक–लोक का क्षेम हो; ॲन–कहकर; मुतलोन् मॊऴि–भगवान के शब्द (वेद); नविन्ऱान्–कहे; पिन्ऱातवन्–जो कभी पीछे नहीं हटता;

उयिर् मेल्–उसके प्राणों पर; चॅलवु ऑळिक–जाना भी न रहे; ऍन्पतु पिटित्तुतान्–यह संकल्प भी किया; ऑन्ऱ्रात–(लोक-कल्याण के लिए) अनुचित; इ मलरोन् पटै तत्ते–उस ब्रह्मास्त्र को; मायक्क–मिटा दे; ऍन्ऱु उरॅत्तान्–ऐसा (अपने ब्रह्मास्त्र से) कहा; निन्ऱान्–खड़े होकर; अतु तुरन्तान्–उसको छोड़ा; वानवर्–देवों ने; अवन् नलम्–उनका सद्भाव; निनॅन्तार्–स्मरण किया। ३००३

लक्ष्मण ने लोकक्षेम का मंगल चाहकर आदिभगवान विष्णु के स्वर वेदों के मंत्र कहे। फिर "जो कभी पीछे नहीं हटता है, उस इन्द्रजित् के प्राणों पर नहीं चले" यह विचार करके लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र को आज्ञा दी कि केवल वही अस्त्र मिटाओ। फिर खड़े होकर उन्होंने वह अस्त्र छुड़ाया। देव उनके सद्गुण पर मुदित हुए। ३००३

तान्विट्टदु मलरोन्पडै यॅनिन्मऱ्ऱिडै तरुमो
वान्विट्टदु मण्विट्टदु मऱ्वोनुड लिरुमो
तेन्विट्टहु मलरोन्पडै तोर्प्पायॅनत् तोर्न्दान्
ऊन्विट्टव नऱम्विट्टिल नॅनवानव रुवन्दार् 3004

तेन् विट्टु उकु–मधु निकालकर गिरानेवाले; मलरोन् पटै–कमल के स्वामी ब्रह्मा का अस्त्र; तोर्प्पाय्–मेटो; ऍन–कहकर; तोर्न्तान् तान्–जिसने छोड़ा उस लक्ष्मण का; विट्टतुम्–प्रेरित; मलरोन् पटै–ब्रह्मास्त्र; ऍनिन्–है तो; इटै तरुमो–पीछे हटेगा क्या; वान् विट्टतुम्–आकाश छोड़कर भी; मण् विट्टतुम्–पृथ्वी छोड़कर भी; मऱ्वोन् उटल्–दुष्ट के शरीर को; इऱुमो–मिटा देगा क्या; ऊन् विट्टवन्–जिसने नीच कर्म छोड़ दिया है वह; अऱम् विट्टिलन्–धर्म नहीं छोड़ चुका है; ऍन–ऐसा; वानवर् उवन्तार्–देव मुदित हुए। ३००४

देवों ने यह कहकर मोद जताया कि मधुस्रावी कमल के देवता ब्रह्मास्त्र को केवल इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र को मिटाने की आज्ञा देकर लक्ष्मण ने छुड़ाया है। वह भी ब्रह्मास्त्र ही है तो भी वह क्या आज्ञा से पीछे हटेगा? (नहीं।) क्या वह, जिसने व्योमलोक को और भूलोक को अछूता छोड़ दिया है, क्रूर इन्द्रजित् के शरीर का नाश करेगा? लक्ष्मण नीच भावों से विमुक्त हैं। उन्होंने धर्म नहीं छोड़ा है। ३००४

उरुमेरुवन् दॅदिर्त्तालद नॅदिरेनॅरुप् पुय्त्ताल्
वरुमाङ्गदु तविर्न्दालॅन मऱ्वोन्पडै मायत्
तिरुमाल्तनक् किळॅयान्पडै युलहेळॅयुन् दीय्क्कुम्
अरुमाहन लॅननिन्ऱदु विशुम्बॅङ्गणु माहि 3005

उरुम् एऱु–अशनिश्रेष्ठ; वन्तु ऍतिर्न्ताल्–आकर आक्रमण करे तब; अतन् ऍतिरे–उसके आगे; नॅरुप्पु उय्त्ताल्–आग चला दे; आङ्कु वरुम्–वहाँ आता; अतु–वह वज्र; तविर्न्ताल् ऍन–दूर हो गया हो; ऍन–जैसे; मऱ्वोन् पटै–(इन्द्रजित्) दुष्ट का अस्त्र; माय–मिट गया; तिरुमाल् तनक्कु इळैयान्–श्रीविष्णु

के छोटे भाई का; पटै–अस्त्र; विचुम्पु अँङ्कणुम् आकि–आकाश भर में व्यापकर; उलकु एऴैयुम् तीय्क्कुम्–सातों लोकों को जला देगा; अरु मा कतल्–अपूर्व बड़ी आग; अॅन्न–ऐसा; निन्ऱतु–रहा। ३००५

अशनि के सामने कोई आग आयी हो और उससे वज्र हट गया हो, ऐसा दुष्ट इन्द्रजित् का ब्रह्मास्त्र मिट गया। श्रीविष्णु के भाई का अस्त्र आकाश भर में व्याप गया और सातों लोकों की नाशकारी बड़े अग्निपुंज के समान स्थिर रहता रहा। ३००५

पडैयङ्गदु पडरावहै पहलोन्कुल मरुमान्
इडैयॊन्ऱदु तडुक्कुम्बडि शॆन्दीयुह वॆय्दान्
तॊडैयॊन्ऱिनैक् कणमीमिशैत् तुरुवायिनि यॆन्ऱान्
विडमॊन्ऱुहॊण् डॊन्ऱीर्न्ददु पोऱ्ऱीर्न्ददु वेहम् 3006

पकलोन् कुल मरुमान्–सूर्य (कुल) वंशज ने; अङ्कु–वहाँ; अतु पटै–वह अस्त्र; पटरा वकै–(आगे) न बढ़े ऐसा; तॊटै ऑन्ऱिनै–और एक अस्त्र को; कणॆ मी मिचै–आकाश में अस्त्र पर; इनि–अब; तुरुवाय्–हावी आओ; अॅन्ऱान्–कहा; अतु ऑन्ऱु–उस पहले को; इटै तटुक्कुम्पटि–बीच में रोकने; चॅम् ती उक–लाल आग निकालते हुए; अॅय्तान्–चलाया; ऑन्ऱु विटम् कॊण्टु–एक विष से; ऑन्ऱु ईर्न्ततु पोल्–दूसरा हर दिया जैसे; वेकम् तीर्न्ततु–वेग-विमुक्त हुआ। ३००६

दिनकुलभूत लक्ष्मण ने उसे बढ़ने से रोकने के विचार से दूसरे अस्त्र को यह कहकर छोड़ा कि जाकर उसे दबा दो। वह लाल अग्नि उगलता गया। उससे एक विष से दूसरा विष हर गया हो, ऐसा पहले अस्त्र की शक्ति क्षीण हो गयी। ३००६

विण्णोरदु कण्डार्वय वीरर्क्किनि मेन्मेल्
ऑण्णादन वुळवोवॆन मनन्देऱिन रुवन्दार्
कण्णार्नुदर् पॅरुमानिवर्क् करिदोवॆनक् कडैपार्त्
तॆण्णादिवै पहर्न्दीर्पॊरुळ् केळीरॆन विशैत्तान् 3007

अतु–उसे; विण्णोर् कण्टार्–देवों ने देखा; वय वीरर्क्कु–विजयी वीर (लक्ष्मण) के लिए; इनि–अब; मेल् मेल्–उत्तरोत्तर; ऑण्णातन–आ मिलनेवाले (हित, सामर्थ्य आदि); उळवो–हैं क्या; अॅन–सोचकर; मनम् तेऱिनर्–मन में धैर्य धरकर; उवन्तार्–खुश हुए; नुतल् कण् आर्–जिनके भाल में नेत्र है वे; पॅरुमान्–भगवान; इवर्क्कु अरितो अॅन–इनके लिए कठिन क्या ऐसा; कटै पार्त्तु अॅण्णातु–अन्त तक आजमाये बग़ैर; इवै पकर्न्तीर्–ये वचन कहे; पॊरुळ् केळीर्–तथ्य सुनिए; अॅन–कहकर; इचैत्तान्–आगे बोले। ३००७

उसको देवों ने देखा। "विजयी वीर श्रीराम और लक्ष्मण के लिए अब उत्तरोत्तर आ नहीं लगें ऐसे कुछ हैं क्या ?" यह सोचकर देव धीर

और बहुत आनंदित हुए। भालनेत्र शिवजी ने कहा कि तुम लोगों ने जो कहा है, वह उनका सारा पराक्रम और रहस्य आद्योपांत न जानकर कहा है। यथार्थ सुनो। ३००७

नारायण नररॅन्ऱिव रुळरायुनमक् कॅल्लाम्
वेरायुमुळु मुदर्कारणप् पॉरुळाय्वित्तै कडन्दोर्
आरायिनुन् दॅरियाददोर् नॅडुमायैयि नहत्तार्
पारायण मऱैनान्गैयुङ् गडन्दारिवर् पळैयोर् 3008

इवर्–ये; नारायण नरर् ॲन्ऱु–नारायण और नर ऐसे; उळराय्–नामधारी रहकर; नमक्कु ॲल्लाम्–हम सबके; वेराय्–मूल हैं; मुळु मुतल् कारण पॉरुळाय्–अशेष, सर्व आदि कारण तत्त्व हैं; वित्तै कटन्तोर्–कर्मपारण; आरायिनुम्–जो भी हों उन सभी के लिए भी; तॅरियाततु ओर्–अज्ञात एक; नॅटु मायैयिन् अकत्तार्–गम्भीर माया-मध्य हैं; पारायण–अध्ययन के; मऱै नान्कैयुम्–चारों वेदों के; कटन्तार्–पार हैं; इवर् पळैयोर्–ये प्राचीनतम हैं। ३००८

ये नरनारायण हैं। हमारे मूल हैं। अशेष आदिकारण हैं। कर्ममुक्तों के लिए भी अज्ञात हैं और बड़ी माया के मध्य हैं। पारायण के चतुर्वेद के भी परे हैं। वे पुरातन पुरुष हैं। ३००८

अऱत्ताऱळि वुळदामॅन मऱिवुन्दॊडरुन् दणुहाप्
पुऱत्तार्पुहुन् दहत्तारॅनप् पिऱन्दन्नदु पुरप्पार्
मऱत्तार्कुल मुदल्वेरऱ मायप्पानिवण् वन्दार्
तिऱत्तालदु तॅरिन्दियावरुन् दॅरियावहै तिरिवार् 3009

अऱिवुम् तॊटर्न्तु अणुका–ज्ञान भी जिनको पीछे जाकर छू नहीं सकता; पुऱत्तार्–ऐसे दूर के हैं; अऱत्तु आऱु–धर्ममार्ग; अळिवु उळतु आम् ॲन–नष्ट हो रहा है, सोचकर; पुकुन्तु–संसार में प्रवेश करके; अकत्तार् ॲन–संसार-बद्ध के समान; पिऱन्तु–जन्म लेकर; अन्नतु–उस धर्म के; पुरप्पार्–संरक्षक बने; मऱत्तार्–पापियों का; कुलम्–समूह; मुतल् वेर् अऱ–निर्मूल; मायप्पान्–करके नाश करने; इवण्–इस लोक में; वन्तार्–आये हैं; यावरुम्–सभी; तिऱत्ताल्–अपने बुद्धिबल से; अतु–वह रहस्य; तॅरिन्तु तॅरिया वकै–जानकर भी न जानें इस तरह; तिरिवार्–संचार करते हैं। ३००९

बुद्धि इनका अन्वेषण करके पा नहीं सकती। धर्म की ग्लानि होती जानकर वे मानो इस जगत के अन्तर्गत हों, ऐसा अवतार लेकर उस धर्म का संरक्षण करनेवाले हैं। दुष्टों को निर्मूल करने यहाँ, इस भूमि में वे आये हैं। कोई यह रहस्य अपनी बुद्धि के सामर्थ्य से अनुमान करके भी जान नहीं पायें, इस प्रकार वे व्यवहार करते फिरते हैं। ३००९

उयिर्दोरुमुर् रुळन्दोत्तिरत् तोरुवन्नॅन वुरैक्कुम्
अयिरानिलै युडैयानिव नवत्तिव्वुल हनैत्तुम्
तयिर्दोय्पिरै यॅन्नलाम्वहै कलन्देरिय् तलैवन्
पयिरादद्दोर् पोरुळिन्नॅन् रुणर्वीरिदु परमाल् 3010

इवन्–यह; उयिर् तोरुम्–जीव-जीव में; उरुरु–लगकर; उळन्–रहते हैं; तोत्तिरत्तु ओरुवन्–स्तुत्य हैं; अॅन–ऐसा; उरैक्कुम्–कथित; अयिरा निलै–असंदिग्ध स्थिति; उटैयान्–के हैं; अवन्–वे; तयिर् तोय्–दही जमानेवाले; पिरै अॅनल् आम् वकै–जामन के समान मान्य प्रकार से; इ उलकु अनैत्तुम्–इस सारे लोक में; कलन्तु एरिय–मिले रहनेवाले हैं; तलैवन्–नाथ है; इन्नतु इतु–कैसा क्या; पयिरातु–अविमर्शनीय; ओर् पोरुळ्–एक तत्त्व है; अॅन्रु उणर्वीर्–ऐसा जान लीजिए; इतु परम्–यह परतत्त्व है। ३०१०

ये सभी जीवों के अन्तर्यामी हैं। स्तुत्य हैं, अद्वितीय हैं। वे ऐसे मान्य असंदिग्ध स्थिति के हैं। वे दही जमानेवाले जामन के समान सारे लोकों में मिश्रित रहते हैं। वे ऐसे तत्त्व हैं, जिसे यह कहकर निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता कि यह अमुक है! यह तुम लोग जान लो। ये परमतत्त्व हैं। ३०१०

नॅडुम्बार्कडर् किडन्दारुम्बण् डिवर्नोर्हुरै नेर
विडुम्बाक्किय मुडैयार्हळैक् कुलत्तोडर् वीट्टि
इडुम्बाक्कियत् तरङ्गाप्पदर् कियन्दारॅन विदैलाम्
अडुम्बाक्किय दोडॅच्चॅञ्जडै मुदलोन् पणित्तमैत्तात् 3011

पण्टु–पहले; नीर् कुरै नेर–आप अपने कष्ट-निवेदन (जिनसे) करें; नॅटुम् पाल् कटल् किटन्तारुम्–विशाल क्षीरसागर में शयन करते रहनेवाले भी; इवर्–ये ही; विटुम् पाक्कियम् उटैयार्कळै–त्यक्त-भाग्य राक्षसों को; कुलत्तोटु–कुल के साथ; अरु वीट्टि–मिटाते हुए मारकर; पाक्कियम् इटुम्–सौभाग्यदायी; अरम्–धर्म को; काप्पतर्कु–रक्षित करने के लिए; इयैन्तार्–सम्मत हुए; अॅन–ऐसा; अटुम्पु आक्किय–'अडुंबु' नाम के फूलों की गुंथी; तोटै–माला को; चॅम् चटै मुतलोन्–जो अपनी लाल जटा पर पहनते हैं, उन उत्तम देव ने; इतु अॅलाम् पणित्तु–यह सब कहके; अमैत्तान्–समाप्त किया। ३०११

प्राचीन काल में तुम लोग रक्षा की प्रार्थना करने क्षीरसागर जब गये थे, तब उस विशाल क्षीरसागर में शयनमुद्रा में तुम लोगों का निवेदन जिन्होंने सुना था, वे ये ही हैं। भाग्यमुक्त पापियों को कुल के साथ मिटाकर भाग्यदायी धर्म के संरक्षण के लिए ये सम्मत हुए हैं। —ऐसा कहकर 'अडुम्बु' नाम की लता के फूलों की मालाधारी, लाल जटायुक्त शिवजी ने अपनी बात समाप्त की। ३०११

अऱिन्देयिरुन् दऱियेमव नॆडुमायैयि ऩयर्न्देम्
पिऱिन्देमिऩि मुळ्ळैयमुम् बॆरुमाऩुरै पिडित्तेम्
ॲऱिन्देम्बहै मुळ्ळुम्मिऩि दिरुन्देमिडर् कडन्देम्
शॆऱिन्दोर्विऩप् पहैवावॆऩत् तॊळुदार्नॆडुन् देवर् 3012

नॆडु तेवर्–बड़े देवों ने; विऩै चॆऱिन्तोर् पकैवा–नीचकर्मों के शत्रु; अऱिन्ते इरुन्तु–जानते हुए भी; नॆटु मायैयिऩ्–दीर्घ माया से; अऱियेम्–अज्ञानी बनकर; अयर्न्तेम्–थकित हुए; इऩि–आगे; मुळ्ळु ऐयमुम्–संशय पूरा; पिऱिन्तेम्–छोड़ दिया; पॆरुमाऩ् उरै–भगवान आपका वचन; पिटित्तेम्–ग्रहण किया; पकै मुळ्ळुम्–सारी शत्रुता; ऎऱिन्तेम्–दूर की; इऩितु इरुन्तेम्–सुख से रहे; इटर् कटन्तेम्–संकट पार किया; ऎऩ–कहकर; तॊळुतार्–प्रणाम किया। ३०१२

शिवजी की बात सुनकर श्रेष्ठ देवों ने उत्तर में कहा कि हे दुष्कृतों के शत्रु! हम यह जानते हुए भी गम्भीर माया के वश होकर भूल-से गये थे और भ्रमित हो गये थे। अब हमारा सारा संदेह दूर हो गया। आपकी बातों को स्थिर रूप से ग्रहण कर चुके। हमें विश्वास हो गया कि हम शत्रु-हीन हो गये। अब सुख से रहे और संकट को पार कर गये। यह कहकर उन्होंने शिवजी की पूजा की। ३०१२

मायोऩॆडुम् बडैवाङ्गिय वळैवाळॆयिऱ् ऱरक्कऩ्
नीयेयिदु तडुप्पायॆऩि ऩिऩक्कारॆदिर् निऱ्पार्
पोयेविशुम् बडैवायिदु पिऴैयादॆऩप् पुहलात्
तूयोऩ्मिशै युलहियावैयुन् दडुमाऱिडत् तुरन्दाऩ् 3013

मायोऩ् नॆटुम् पटै–श्रीविष्णु का बड़ा अस्त्र; वाङ्किय–लेकर; वळै–वक्र; वाळ् ऎयिऱ्–उज्ज्वल दाँतों के; अरक्कऩ्–राक्षस ने; नीये–तुम ही; इतु–यह; तटुप्पाय् ऎऩिऩ्–रोकोगे तो; निऩक्कु ऎतिर् निऱ्पार् आर्–तुम्हारे सामने कौन टिका रह सकेगा; विचुम्पु पोये अटैवाय्–आकाश जा पहुँचोगे; इतु पिऴैयातु–यह नहीं चूकेगा; ऎऩ पुकला–ऐसा कहकर; उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; तटुमाऱिट–अस्त-व्यस्त करते हुए; तूयोऩ् मिचै–पवित्रमूर्ति पर; तुरन्ताऩ्–चलाया। ३०१३

नारायणास्त्र हाथ में लेकर वक्रतीक्ष्णदंतुले, इन्द्रजित् ने लक्ष्मण से कहा कि अगर तुम इसे रोक सकोगे तो तुम्हारा सामना करनेवाला कौन होगा? (कोई नहीं हो सकेगा)। पर निश्चित है कि तुम आकाश (स्वर्ग) पहुँच जाओ। यह अस्त्र चूकेगा नहीं। फिर उसने पवित्रमूर्ति पर सारे लोकों को अस्त-व्यस्त करते हुए उस अस्त्र को प्रेरित कर दिया। ३०१३

शेमित्तऩ रिमैयोर्तमैच् चिरत्तेन्दिय करत्तार्
आमित्तॊऴिल् पिऱरियावरु मडैन्दार्पळु दडैयाक्

कामिप्पदु मुडिविप्पदु पडर्हिन्रदु कण्डान्
नेमित्तनि यरिदार्तन नितैन्दार्तदिर् नडन्दान् 3014

इमैयोर्–अपलक देवों ने; चिरत्तु–सिर पर; एन्तिय करत्तार्–उठाये हुए हाथों वाले; तमै चेमित्तनर्–अपने को बचा लिया; पिरर् यावरुम्–अन्य सभी ने; आम् इ तोंळिल्–कारगर यह कार्य; अटैन्तार्–करके बचा लिया; पळुतु अटैया–अमोघ; कामिप्पतु मुटिविप्पतु–इच्छा को पूरा करनेवाला वह अस्त्र; पटर्किन्रतु–बढ़ता आता; कण्टान्–(लक्ष्मण ने) देखा; नेमि–चक्रधर; तनि अरि तान्–अप्रतिम हरि ही है; अँत–ऐसा; निनैन्तान्–सोचा; अँतिर् नटन्तान्–सामने चले। ३०१४

देवों ने अपने सिरों पर हाथ रखकर अपने को बचा लिया। अन्य लोगों ने भी उसी कार्य को सफल जानकर वही अंजलि का काम करके अपने को बचा लिया। अचूक तथा इच्छित कार्य सिद्ध करनेवाले उस अस्त्र को बढ़ता आता देख लक्ष्मण अपने को चक्रधर विष्णु मानकर उसके सामने चले। ३०१४

तीक्कुमिनि युलहेळैयु मेंतच्चेरलुन् दॅरिन्दान्
नीक्कुन्दर मल्लामुळु मुदर्रार्तन निनैन्दान्
मीच्चॅन्रिल दयल्शॅन्रदु विलङ्गावलङ् गोंडुमेल्
पोय्त्तङ्गदु कनन्माण्डदु पुहैवीयन्ददु पोंदुवे 3015

इनि–अब; उलकु एळैयुम्–सातों लोकों को; तीक्कुम्–जला दे; अँत–ऐसा; चेर्लुम्–उसका आना भी; तॅरिन्तान्–जान लिया; तान्–मैं; नीक्कुम्–दूर करूँ; तरम् अल्ला–ऐसी जिनकी गति नहीं; मुळु मुतर्रान्–वह आदितत्त्व हैं; अँत–ऐसा; निनैन्तान्–ध्यान किया; मी चॅन्रिलतु–उन पर नहीं गया; विलङ्का–हटकर; अयल् चॅन्रतु–दूर गया; अङ्कु–वहाँ; अतु–वह बाण; वलम् कोंटु–दायें घूमकर; मेल् पोय्त्तु–ऊपर चला गया; पोंतुवे–समान रूप से (हित करके); कनल् माण्टतु–अग्नि शान्त हुई; पुकै वीयन्ततु–धुआँ भी हट गया। ३०१५

उन्होंने जान लिया कि वह सातों लोकों को जलाता-सा आ रहा है। उन्होंने अपने को अमर तथा अप्रतिहत आदिदेव के रूप में ध्यान कर लिया। तब वह उन पर न चला, पर हटकर दायीं ओर घूमकर ऊपर चला गया। सबका समान रूप से हित करते हुए उसकी आग बुझ गयी। धुआँ भी दूर हो गया। ३०१५

एत्ताडिन रिमैयोर्हळुम् कवियिन्कुल मॅल्लाम्
कूत्ताडिन ररमङ्गैयर् कुनिन्दाडिनर् तवत्तोर्
कात्तायुल कनैत्तुमॅनक् कळित्ताडिनर् कमलम्
पूत्तानुमम् मळवाळियुम् मुळुवाय्होंडु पुहळ्न्दार् 3016

इमैयोर्कळुम्–अपलक देव भी; एत्ताटिनर्–स्तुति करते हुए नाचे; कवियिन् कुलम् मॅल्लाम्–और वानरवर्ग सभी; कूत्ताटिनर्–नाचे; अर मङ्कैयर्–देवांगनाएँ;

कुऩिन्तु आटिऩर्—झुकीं और नाचीं; तवत्तोर्—तपस्वी ऋषियों ने; उलकु अऩैत्तुम्—सारे लोकों को; कात्ताय्—रक्षित किया; ऍऩ—कहकर; कळित्तु—मुदित होकर; आटिऩर्—नृत्य किया; कमलम् पूत्ताऩुम्—कमलभव और; अम् मऴु आळियुम्—परशुधर शिव दोनों ने; मुऴु वाय् कॊंटु—अपने मुख भर (भूरि-भूरि); पुकऴ्न्ताऩ्—प्रशंसा की। ३०१६

यह देखकर देवों ने उनकी स्तुति की और नृत्य किया। वानर सब नाचे। देवांगनाएँ झुक-झुककर नाचीं। मुनिगण मुदित हुए और लक्ष्मण से कहा कि आपने सारे लोकों को बचा दिया और नाचे। कमलभव और परशुधर ने जी खोलकर तारीफ़ की। ३०१६

अवऩन्तदु कण्डाऩिव ऩारोवॆऩ वयिर्त्ताऩ्
इवऩन्तदु मुदलेयुडै यिऱैयोवॆऩ वियवा
ऍवऩॆऩ्ऩिऩ् नऩ्ऱाहुह विऩियॆण्णल ऩॆऩ्ऩाच्
चिवऩिऩ्पडै तॊडुत्तारुयिर् मुडिप्पॆऩॆऩत् तॆरिन्दाऩ् 3017

अवऩ्—वह (इन्द्रजित्); अन्तदु कण्टाऩ्—को देखकर; इवऩ् आरो—यह कौन है; ऍऩ—ऐसा; अयिर्त्ताऩ्—संशय करने लगा; इवऩ्—यह; अन्तदु—उस अस्त्र के; मुतलै उटै इऱैयोऩ्—मूलस्वामी भगवान नारायण है क्या; ऍऩ वियवा—ऐसा विस्मय करके; ऍवऩ् ऍऩ्ऩिऩुम्—कोई भी हो; नऩ्ऱु आकुक—भले ही हो; इति—अब; ऍण्णलऩ्—विमर्श नहीं करूँगा; ऍऩ्ऩा—कहकर; चिवऩिऩ् पटै—पाशुपतास्त्र; तॊट्टु—चलाकर; आर् उयिर्—उसके प्यारे प्राण; मुटिप्पेऩ्—समाप्त करूँगा; ऍऩ तॆरिन्ताऩ्—ऐसा सोचा। ३०१७

इन्द्रजित् ने नारायणास्त्र को विफल होते देखा तो उसे संशय हो गया कि क्या यह नारायणस्त्र का मूलदेवता स्वयं नारायण तो नहीं! फिर विचारा कि जो भी हो उसका विचार अब नहीं करूँगा। और निर्णय किया कि पाशुपतास्त्र चलाकर उसके प्यारे प्राणों का अंत कर दूँगा। ३०१७

पार्प्पाऩ्तरु मुलहियावैयु मोरुनाळोरु पहले
तीर्प्पाऩ्पडै तॊडुप्पॆऩॆऩत् तॆरिन्दाऩदु तॆरिया
मीप्पाविय विमैयोर्हुलम् वॆरुवुऱ्ऱदिप् पॊऴुदे
माय्प्पाऩॆऩ वुलहियावैयु मरुहुऱ्ऱऩ मयङ्गा 3018

पार्प्पाऩ् तरुम्—ब्राह्मण ब्रह्मा द्वारा रचित; उलकु यावैयुम्—सभी लोकों को; ओरु नाळ् ओरु पकले—अहर्निश के एक अह्न में; तीर्प्पाऩ्—संहार करनेवाले शिव का; पटै—अस्त्र; तॊटुप्पेऩ्—प्रयोग करूँगा; ऍऩ तॆरिन्ताऩ्—ऐसा विचारा; अतु तॆरिया—वह जानकर; मी पाविय—ऊपर एकत्रित रहे; इमैयोर् कुलम्—देववर्ग; वॆरुवुऱ्ऱु—डर गये; उलकु यावैयुम्—सारे लोकों को; इप्पॊऴुते माय्प्पाऩ्—अभी मिटा देगा; ऍऩ—ऐसा सोचकर; मयङ्का—भ्रमित हो; मरुकुऱ्ऱऩ—व्यथित हुए। ३०१८

ब्रह्मा-रचित सारे लोकों के अहर्निश के एक अह्न में नाश करनेवाले

शिवजी का अस्त्र चलाना जब इन्द्रजित् ने ठाना, तब वह जानकर आकाश में भरे रहे देववर्ग डर गये। 'सारे लोकों को अभी मिटा देग'ा —यह सोचकर वे भ्रमित हुए और व्यथित हुए। ३०१८

तातॆशिवऩ् तरप्पॆऱ्ऱदु तवनाळ्पल वुळऩ्दॆऩ्
नातॆपिऱ रऱियाददु तऩ्दॆऩॆऩ नविऩ्ऱाऩ्
आऩालिव ऩुयिर्होडलुक् कैयमिलै यॆऩ्ऩा
ऎऩाळुमि दाऩालॆदिर् तडॆयिल्लदै यॆडुत्ताऩ् 3019

चिवऩ् तातॆ तरप् पॆऱ्ऱतु–शिव द्वारा स्वयं दिया गया; पल नाळ्–अनेक दिन; तवम् उळऩ्तेऩ्–तपस्या की; पिऱर् अऱियाततु–दूसरों द्वारा न जाना गया; नातॆ तऩ्तेऩ्–मैं ही देता हूँ; ऎऩ–ऐसा; नविऩ्ऱाऩ्–(शिवजी) बोले; आऩाल्–तो; इवऩ् उयिर् कोटलुक्कु–इसके प्राण हर लेगा उसमें; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; ऎऩ्ऩा–कहकर; एल् नाळुम्–योग्य दिन भी; इतु आऩाल्–यह है इसलिए; ऎतिर् तटै इल्लतै–दुर्धर्ष उसे; ऎटुत्ताऩ्–अपने हाथ में लिया। ३०१९

इन्द्रजित् ने सोचा— 'यह अस्त्र स्वयं शिवजी का दिया हुआ है। बहुत समय तपस्या की। तभी शिवजी ने यह कहकर मुझे दिया कि इसकी महत्ता और लोग नहीं जानते। मैं अपनी ओर से स्वयं दे रहा हूँ। तब तो इसके प्राणों का अंत होना असंदिग्ध है। और दिन भी आज अनुकूल बना है।' इतना सोचकर उसने उस दुर्दम अस्त्र को हाथ में लिया। ३०१९

मऩत्ताऩ्मलर् पुऩल्शाऩ्दमॊ डविदूबमुम् वहुत्ताऩ्
निऩैत्ताऩिव ऩुयिर्हॊण्डिव णिमिर्वायॆऩ निमिर्त्ताऩ्
शिऩत्ताऩॆडुत् जिलैनाण्डडन् दोण्मेलुऱच् चॆलुत्ता
ऎऩैत्तायदॊर् पॊरुळालिडै तडैयिल्लदै विट्टाऩ् 3020

मलर्–पुष्प; पुऩल्–जल; चाऩ्तमॊटु–चन्दन के साथ; आवि–हवि; तूपमुम्–धूप; मऩत्ताल् निऩैत्ताऩ् वकुत्ताऩ्–मानसिक रूप से रचा; इवऩ् उयिर् कॊण्टु–इसके प्राण लेकर; इवण् निमिर्वाय्–यहाँ लौट आओ; ऎऩ–कहकर; निमिर्त्ताऩ्–सीधा पकड़कर; नॆटु चिलै नाण्–बड़े धनु की प्रत्यंचा को; चिऩत्ताल्–क्रोध के साथ; तटम् तोळ् मेल्–विशाल कंधे पर; उऱ चॆलुत्ता–खूब लगाकर; ऎऩैत्तु आयतु ओर् पॊरुळाल्–किसी की बनी किसी भी वस्तु से; इटै तटै इल्लतै–बीच में जो रोका नहीं जा सके उसको; विट्टाऩ्–छोड़ा। ३०२०

फिर उसने मानसिक रीति से पुष्प, जल, चन्दन, हवि, धूप आदि से उसकी पूजा की। 'जाओ, इसके प्राण हर ले आओ' कहकर उसे सीधा किया। फिर डोरे से लगाकर अपने कंधे तक खींचा और किसी भी वस्तु से अवार्य उस अस्त्र को छुड़ाया। ३०२०

शूल्ङ्गळु मळुवुञ्जुडु कणैयुङ्गतर् चुडरुम्
आलङ्गळु मरवङ्गळु मशनिक्कुल मॅवैयुम्
कालन्रन दुरुवङ्गळुङ् गरुम्बूदमुम् बॅरुम्बेय्च्
चालङ्गळुम् निमिर्हिन्रन वुलहॅङ्गणुन् दामाय् 3021

उलकु ऍङ्कणम्–लोकों में सर्वत्र; चूलङ्कळुम्–अनेक शूल; मळुवुम्–परशु; चुट्टु कणैयुम्–संदाहक अस्त्र; कतल् चुटरुम्–अग्निज्वालाएँ; आलङ्कळुम्–और विष; अरवङ्कळुम्–सर्प; अचनि कुलम् ऍवैयुम्–सारे अशनिकुल; कालन् तनतु उरुवङ्कळुम्–यम के रूप; करुम् पूतमुम्–काले भूत; पॅरु पेय् चालङ्कळुम्–बड़े-बड़े पिशाचगण; ताम् आय्–खुद प्रकट होकर; निमिर्किन्रन–बढ़ते हैं। ३०२१

वह अनेक शूल, परशु, दाहक अस्त्र, आग और विष, सर्प, अशनिकुल, यम के अनेक रूप, काले भूत और बड़े पिशाचवृन्द सभी बना। वे बढ़ते आये। ३०२१

ऊळिक्कन लोरुपालद नुडनॅतोडर्न् दुडर्रुम्
शूळिक्कोडुङ् गडुङ्गार्रद नुडनॅवरत् तूर्क्कुम्
एळिर्कुमप् पुरत्तायुळ पॅरुम्बोर्क्कड लिळिन्दाङ्
गाळित्तलैक् किडन्दालॅन नॅडुनदुङ्गिरु ळडैय 3022

ऒरु पाल्–एक ओर; ऊळि कतल्–युगान्त की अग्नि; उटनॅ तॊटर्न्तु–साथ लगे; उटर्रुम्–दुःख देगी; एळिर्कुम् अप्पुरत्ताय्–सातों (समुद्रों) के उस पार; उळ–जो हैं; पॅरुम् पोर् कटल्–टकरानेवाला बड़ा सागर; इळिन्त आङ्कु–गिरा हो जैसे; आळि तलै–समुद्र के तीर पर; किटन्ताल् ऍन–पड़ा हो ऐसा जो रहा; नॅटु तूङ्कु इरुळ्–विशाल तथा लटकनेवाला अन्धकार; अटैय–रहे ऐसा; चूळि कॊटुम् कटुम् कार्रु–भयंकर तेज बवण्डर; अतन् उटनॅ वर–उसके साथ आयगा; तूर्क्कुम्–(इस भाँति आकर वह) नाश करेगा। ३०२२

एक ओर युगांत की अग्नि उसके साथ-साथ लगी आती और लोक को त्रस्त करती। दूसरी ओर घना और लटकता-सा अंधकार रहता जो सातों समुद्रों के उस पार रहनेवाले प्रहारशील समुद्र के समान रहा और जो समुद्र तीर पर पड़ा रहता हो। तीसरी ओर बवण्डर उसके साथ आता और लोकों को त्रस्त करता। ३०२२

इरिन्दार्कुल नॅडुन्देवर्ह ळिरुडिक्कुलत् तॅवरुम्
परिन्दारिदु पळुदाहिल दिरुवानॅनुम् बयत्ताल्
नॅरिन्दाङ्गळि कुरङ्गुर्रदु पहरुन्दुणै नॅडिदे
तिरिन्दारिरु शुडरोडुल हॊरुमूनुरुडन् तिरिय 3023

इतु–यह; पळुतु आकिलतु–व्यर्थ नहीं होगा; इरुवान्–(लक्ष्मण) नष्ट होगा; ऍनुम् पयत्ताल्–इस डर से; कुलम् नॅटु तेवर्कळ्–श्रेष्ठ कुल के देव; इरिन्तार्–

भाग गये; इरुटि कुलत्तु–ऋषिकुल के; अॅवरुम्–सभी; परिम्तार्–दुःखी हुए; कुरङ्कु–मरकट; आङ्कु–वहाँ; नॅरिन्तु–सटकर; अळ्ि उऱ्रतु–जो निर्बल हुए वह; पकरुम् तुणे नॅटितु–कहने योग्य से बड़ा है; इरु चुटरोटु–दो तेजपुंजों (सूर्य-चन्द्र) के साथ; ऑरु मून्रु उलकु–तीनों लोक; उटन् तिरिय–साथ-साथ घूमे; तिरिन्तार्–सब भटके। ३०२३

श्रेष्ठ कुलों के देवों ने सोच लिया कि यह अचूक है और लक्ष्मण नहीं बचेगा। वे भागे। सभी ऋषि, मुनि दुःखी हुए। एकत्र वानरों की जो बदहालत हुई उसका वर्णन कथा-शक्ति से बड़ा है। दोनों तेजपुंज सूर्य-चन्द्र और पृथ्वी घूम गयी। लोकवासी भी भटकने लगे। ३०२३

पार्त्तानॅडुन् दहैवीडण नुयिर्हालुऱप् पयत्ताल्
वेर्त्तानिदु विलक्कुन्दर मुळदोमुदल् वीरा
तीर्त्तावॅन वळैत्तानदर् किळङ्गोळरि शिरित्तान्
पोर्त्तारडर् कविवीररु मवन्दाणिळल् पुहुन्दार् 3024

नॅटु तकै वीटणन्–सुयोग्य विभीषण ने; पार्त्तान्–देखा; पयत्ताल्–डर से; उयिर् काल् उऱ–निःश्वास छोड़ते हुए; वेर्त्तान्–पसीने से भर गया; मुतल् वीरा–आदितत्त्व वीर; तीर्त्ता–पवित्रमूर्ति; इतु–यह; विलक्कुम् तरम् उळतो–रोका जाय ऐसा है क्या; अॅन–ऐसा; अळैत्तान्–(लक्ष्मण को) बुलाया (प्रश्न किया); अतऱ्कु–उसके उत्तर में; इळम् कोळरि–बालकेसरी; चिरित्तान्–हँसा; पोर्तार्–युद्ध-चिह्न के रूप में मालाओं के धारक; अटर्–भीड़ के; कवि वीररुम्–वानर वीर; अवन्–उनके; ताळ् निळल्–चरण की छाया में; पुकुन्तार्–प्रविष्ट हुए। ३०२४

सुयोग्य विभीषण की भी बुरी स्थिति हो गयी। डर से निःश्वास छोड़े। पसीना-पसीना हो गया। उसने लक्ष्मण से पूछा कि मूलभूत तत्त्व! वीर! क्या इसको रोकने का उपाय भी है? बालकेसरी यह सुनकर हँसा। युद्धचिह्न के रूप में माला से अंलकृत वानर वीर उनकी चरण-छाया में आ गये। ३०२४

अवयम्मुनक् कवयम्मॅनु मनैवोरैयु मञ्जल्
कवयम्मुमक् कॅन्ऱोळिणै यॅनक्कैत्तलङ् गवित्तान्
उवयम्मुरु मुलहिन्पय मुणर्न्देनिति यॊळियेन्
शिवनैम्मुह मुडैयान्पडै तीडुप्पेन्नॅनत् तॅळिन्दान् 3025

उनक्कु अवयम् अवयम्–आपके अभयशरण हैं, आपका ही अभय है; अॅनुम्–कहनेवाले; अनैवोरैयुम्–सभी को; अञ्चल्–मत डरो; उमक्कु–तुम लोगों के लिए; अॅन् तोळ् इणै–मेरे दो कंधों का जोड़ा; कवयम्–कवच है; अॅन–कहकर; तलम् कवित्तान्–(अभयमुद्रा में) हाथ औंधा किया; उवयम् उरुम्–दो बनकर; उलकिन्–लोकों के; पयम्–भय को; उणर्न्तेन्–जाना; इति ऑळियेन्–

अब पीछे नहीं हटूँगा; ऐ मुकम् उटैयान्–पंचमुख; चिवन् पटै–शिव का अस्त्र; तॊटुप्पेन्–लगाऊँगा; ॲन्न तॆळिन्तान्–ऐसा निर्णय किया। ३०२५

'आपका अभय है, अभय-दान करें' —यह कहनेवाले सभी को लक्ष्मण ने धीरज दिलाया और कहा कि मत डरो। मेरे दोनों कंधों का जोड़ा तुम्हारा कवच बनेगा। उन्होंने अभय-मुद्रा में हथेली औंधी की। "आकाश तथा भूतल दो रहे लोकों के वासियों का भय मैं जानता हूँ। अब पीछे नहीं हटूँगा। पंचमुख शिव का अस्त्र चलाऊँगा।" यह लक्ष्मण ने साफ़ रूप से निर्णय किया। ३०२५

अप्पॊऱ्पडै मनत्ताल्निनैन् दर्च्चित्तदै यळिप्पाय्
इप्पॊऱ्पडै तनैमऱ्ऱॊरु तॊळिल्शॆय्हिलै यॆन्नात्
तुप्पॊप्दॊर् कणैकूट्टिनन् ऱुरन्दानिडै तॊडरा
ॲप्पॊऱ्पॆरुम् बडैयुम्बुह विळुङ्गुऱ्ऱदॊ रिमैप्पिन् 3026

अ पॊन् पटै–उस ज्वलन्त अस्त्र को; मनत्ताल् निनैन्तु–मन से स्मरण करके; अर्च्चित्तु–पूजा करके; अतै अळिप्पाय्–उसे मिटाओ; मऱ्ऱु ऒरु तॊळिल्–दूसरा कोई काम; चॆय्किलै–मत करो; ॲन्ना–कहकर; इ पॊन् पटै तनै–इस ज्वलन्त (पाशुपत-) अस्त्र को; तुप्पु ऒप्पतु–(शत्रु के अस्त्र की) समानता करनेवाले; ओर् कणै कूट्टिनन्–एक अस्त्र से लगाकर; तुरन्तान्–छोड़ा; इटै–(इन्द्रजित् का अस्त्र जहाँ रहा उस) स्थान में; तॊटरा–जाकर; ॲ पॆरुम् पॊन् पटैयुम्–किसी भी बड़े ज्वलन्त अस्त्र को; पुक–अपने में समा लेने की स्थिति में रहकर; ओर् इमैप्पिन्–एक पल में; विळुङ्कुऱ्ऱतु–निगल लिया। ३०२६

लक्ष्मण ने उस स्वर्ण-प्रकाशमय अस्त्र की मानसिक पूजा की। उसे हिदायत दी कि (इन्द्रजित् के) उस अस्त्र का नाश करो। पर आगे कोई कार्य मत करो। फिर उस उज्ज्वल अस्त्र को उसी के समान महत्त्व के और एक अस्त्र के साथ मिलाकर छोड़ा। वह उस अस्त्र के पास गया। किसी भी उज्ज्वल अस्त्र को आत्मसात् करने की शक्ति के साथ उसने पल भर में उस अस्त्र को निगल लिया। ३०२६

विण्णार्त्तदु मण्णार्त्तदु मेलोर्मणि मुरशिन्
कण्णार्त्तदु कडलार्त्तदु मळैयार्त्तदु कलैयोर्
ॲण्णार्त्तदु मऱैयार्त्तदु विशयम्मॆन वियम्बुम्
पॆण्णार्त्तन ळऱमार्त्तदु पिऱरार्त्तदु पॆरिदो 3027

विण् आर्त्ततु–व्योमलोक घहर उठा; मण् आर्त्ततु–पृथ्वी ने हो-हल्ला मचाया; मेलोर्–देवों की; मणि–सुन्दर; मुरचिन्–दुन्दुभी की; कण् आर्त्ततु–'आँख' ठनक उठी; कटल् आर्त्ततु–समुद्र गरजे; मळै आर्त्ततु–मेघगर्जन हुआ; कलैयोर् ॲण्–ज्योतिषियों की संख्याएँ; आर्त्ततु–आनन्दरव करने लगीं; मऱै आर्त्ततु–वेदों ने नर्दन किया; विचयम् ॲन इयम्पुम् पॆण्–विजय कहलानेवाली देवी

ने; आर्त्ततळ्-शोर मचाया; अऱम् आर्त्ततु-धर्मदेवता ने मोदशब्द किया; पिऱर् आर्त्ततु-अन्यों ने नर्दन किया; पॅरितो-बड़ी बात है क्या। ३०२७

इन्द्रजित् के अस्त्र को विफल हुआ देखकर देवों और भूलोकवासियों ने जयघोष किया। देवों की दुन्दुभी बजायी गयी। समुद्र गरजे। मेघ-गर्जन हुआ। ज्योतिषी की गिनतियों ने आनंद मनाया। चारों वेदों और विजयश्री ने जयघोष किया। स्वयं धर्मदेवता ने नर्दन किया, तो दूसरों का नर्दन करना कौन सी बड़ी बात है? । ३८२७

इऱुकालैयि नुलहियावैयु मविप्पानिहऱ् पडैयै
मऱुहावहै पुरिन्दानदु वाङ्गुम्बडि वल्लान्
तॅऱुकालतिऱ् कॊडियोनुमऱ् ऱदुहण्डहन् दिहैत्तान्
अऱुहावयक् कविवीररु मरियॅन्बदै यऱिन्दार् 3028

इऱु कालैयिन्-युगक्षय के समय; उलकु यावैयुम्-सभी लोकों को; अविप्पान्-मिटानेवाले शिवजी के; इकल् पटैयै-सशक्त अस्त्र को; वल्लान्-बलवान लक्ष्मण ने; अतु वाङ्कुम्पटि-उसको मिटाने का; मऱुका वकै-अप्रमत्त उपाय; पुरिन्तान्-किया; अतु कण्टु-उसको देखकर; तॅऱु-संहारक; कालतिन्-यम से भी; कॊटियोनुम्-क्रूर इन्द्रजित्; अकम् तिकैत्तान्-मन में भ्रांत हुआ; अऱुका-अक्षय; वय कवि वीररुम्-विजयशील वानर वीर; अरि ॲन्पतै-हरि होने की बात; अऱिन्तार्-जान गये। ३०२८

युगक्षय के सर्वलोकसंहारक शिव के बलवान अस्त्र का हरण लक्ष्मण ने अप्रमत्त रीति से करा दिया। वह देखकर यमराज से भी क्रूर इन्द्रजित् भ्रमित हो गया। अक्षय वानर वीरों ने भी जान लिया कि लक्ष्मण हरि (का अंश) है। ३०२८

तॅय्वप्पडै पऴुदुऱ्ऱदु वॅनक्कूशुदल् शिदैवाल्
ॲय्वित्तह मुळदन्नदु पिऴैयादॅन विशैयाक्
कैवित्तह मदनाऱ्चिल कणैवित्तन नवैयुम्
मॊय्वित्तहन् तडन्दोळिनुम् नुदऱ्चूट्टिनु मूऴ्ह 3029

तॅय्वप् पटै-दिव्य अस्त्र (पाशुपतास्त्र); पऴुतुऱ्ऱतु-व्यर्थ गया; ॲन-कहकर; कूचुतल्-हिचकना; चितैवु-हीनता है; ॲय्-शर चलाने की; वित्तकम्-विद्या; उळतु-मेरे पास है; अन्नतु-वह ज्ञान; पिऴैयातु-चूकेगा नहीं; ॲन इचैया-ऐसा कहकर; कै वित्तकम् अतताल्-हस्तलाघव से; चिल कणै-कुछ शर; वित्तितन्-चलाये; अवैयुम्-वे भी; मॊय् वित्तकन्-गम्भीर ज्ञानी के; तटम् तोळिनुम्-विशाल कंधों पर और; नुतल् चूट्टिनुम्-भालपट्ट पर; मूऴ्क-चुभे तब। ३०२९

इन्द्रजित् ने विचारा— दिव्यास्त्र व्यर्थ हुआ। इस पर हिचकता रहना हीनता होगा। मेरे पास अस्त्रचालन की विद्या है। वह अचूक है।

ऐसा सोचकर उसने हस्तलाघव के साथ कुछ शर चलाये। वे भी बड़े ज्ञानी लक्ष्मण के विशाल कंधों और भाल के पट्ट पर चुभे। ३०२९

वॆय्योऩ्मकऩ् मुदलाहिय विऱलोर्मिहु तिऱलोर्
कैयोय्विलर् मलैमारियि निरुदक्कडल् कडप्पार्
उय्यारॆऩ वडिवाळिहळ् शदकोडिह ळुय्त्ताऩ्
शॆय्योऩयल् तऩिनिऩ्ऱदऩ् शिऱ्ऱादैयैच् चॆऱ्ऱाऩ् 3030

वॆय्योऩ् मकऩ्—सूर्यपुत्र; मुतलाकिय—आदि; विऱलोर्—वीर; मिकु तिऱलोर्—अति बलवान; कै ओय्विलर्—हाथ को रोके बिना; मलै—पर्वतों को; मारियिऩ्—वर्षा के समान (फेंककर); निरुत कटल्—राक्षस-सागर को; कटप्पार्—पार करने लगे; उय्यार् ऎऩ—नहीं बचेंगे कहकर; चत कोटिकळ्—शत कोटि; वाळिकळ्—बाण; उय्त्ताऩ्—चलाकर; चॆय्योऩ्—गोरे वर्ण के लक्ष्मण के; अयल्—पार्श्व में; तऩि निऩ्ऱ—अलग जो खड़ा रहा; तऩ् चिऱ्ऱातैयै—अपने चाचा को; चॆऱ्ऱाऩ्—घृणा से देखा (इन्द्रजित् ने)। ३०३०

सूर्यपुत्र सुग्रीव आदि वानर वीर बल में बढ़कर, हाथ रोके बिना पर्वतों की वर्षा-सी करते हुए राक्षस-सेना-सागर पार कर रहे थे। वे बचें नहीं, ऐसा संकल्प करके इन्द्रजित् ने सौ-सौ करोड़ों की संख्या में तीक्ष्ण शर चलाये। फिर गोरे रंग के लक्ष्मण के पास जो खड़ा रहा, उस विभीषण को देखकर उसने (शब्दों द्वारा) घृणा दिखायी। ३०३०

मुरट्टडन् दण्डु मेन्दि मऩिदरै मुऱैमै कुऩ्ऱप्
पिरट्टरिर् पुहऴ्न्दु पेदै यडियरिऱ् ऱॊऴुदु पिऩ्शॆऩ्
ऱिरट्टुरु मुरश मॆऩ्ऩ विशैत्तदे यिशैक्किऩ् ऱायैप्
पुरट्टुवऩ् तलैयै यिऩ्ऱु पऴियॆऩ वौऴिवऩ् बोलाम् 3031

मुरण्—कठिन; तटम् तण्टुम्—बड़ा दण्ड; एन्ति—लेकर; मुऱैमै कुऩ्ऱ—योग्यता खोकर; पिरट्टरिऩ्—धोखेबाज के समान; मऩितरै पुकऴ्न्तु—नरों की स्तुति करके; पेतै अटियरिऩ्—जड़मति ग़ुलामों के समान; तॊऴुतु—वंदना करके; पिऩ् चॆऩ्ऱु—अनुगमन करके; इरट्टुरुम्—बारी-बारी से बजायी जानेवाली; मुरचम् ऎऩ्ऩ—भेरी के समान; इचैत्तते—जो कहते हो; इचैक्किऩ्ऱायै—उसी को दुहरानेवाले तुम्हें; तलैयै इऩ्ऱु पुरट्टुवऩ्—तुम्हारे सिर को लुढ़का दूंगा; पऴि ऎऩ—पर यह कलंक है, ऐसा सोचकर; ऒऴिवऩ्—त्याग देता हूँ। ३०३१

(इन्द्रजित् ने कहा—) आप सशक्त दंड हाथ में लिये हुए फिरते हैं। अपनी योग्यता को गिराकर मार्गच्युत लोगों के समान नरों की तारीफ़ करते हैं। फिर मूर्ख दासों के समान उनकी दासता करते हैं। बारी-बारी से कही हुई बात को भेरीनाद के समान दुहराते रहते हैं। ऐसे आपका

सिर कटवाकर मैं भूमि पर लुढ़का दूँगा। पर उससे अपयश होगा। इसी विचार से मैं पीछे हटता हूँ। ३०३१

विऴिपड मुदल्व ॅल्लाम् वॅदुम्बिन ऱॉदुङ्गि वोऴ्न्दु
वऴिपड वुलह मून्ऱु मडिप्पड वन्द देनुम्
अऴिपडै ताङ्ग लाऱ्ऱु माडव रियाण्डुम् वॅ:(ह्)हाप्
पऴिपड वन्द वाऴ्वै यावरे नयक्कर् पालार् 3032

मुतल्वर् ॲल्लाम्–सभी प्रमुख देव; विऴि पट–दृष्टि के पड़ने पर; वॆतुम्पितर्–तप्तचित्त हुए; ऑतुङ्कि–हटकर; वीऴ्न्तु–गिरे; वऴि पट–वंदना की; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोक; अटिप्पट–चरणतल में रहें; वन्ततेनुम्–ऐसी स्थिति आने पर भी; याण्टुम्–कहीं भी; वॆ:का–अनिच्छित; पऴि पट–कलंकसहित; वन्त वाऴ्वै–रहते जीवन को; अऴि पटै–मिटाने आनेवाली सेना का; ताङ्कल्–सामना करने की; आऱ्ऱुम्–शक्ति रखनेवाले; आटवर् यावर्–कौन पुरुष; नयक्कल् पालार्–चाहेंगे। ३०३२

प्रमुख देव दृष्टि पड़ते ही थर्रायें; हटकर चलें, फिर चरणों पर गिर कर वंदना करें। तीनों लोक नमन करें। ऐसा ऐश्वर्य मिले तो भी अपयश के साथ मिले वैभव को, जिसकी कोई साधारण मनुष्य भी इच्छा नहीं कर सकता, कौन ऐसा पुरुष चाहेगा जो घातक सेना का सामना करने की ताक़त रखते हैं। ३०३२

नीरुळ दत्तैयु मुळ्ळ मीॅन्न निरुद ॅल्लाम्
वेरुळ दत्तैयुम् वीव रिरावण त्तोडु मीळार्
ऊरुळ दॉरुव निन्ऱाय् नीयुळै युरैय निन्नो
डारुळ ररक्कर् निऱ्पा ररशुवीऱ् ऱिरुक्क वैया 3033

नीर् उळ तत्तैयुम्–जब तक जल है तब तक; मीन् उळ्ळ–मछलियां रहती हैं; ॲन्न–ऐसा; निरुतर् ॲल्लाम्–सभी राक्षस; वेर् उळ तत्तैयुम्–मूल (रावण) के रहते तक (रहेंगे); इरावणत्तोटु–रावण के साथ; वीवर्–मरेंगे; मीळार्–बाद नहीं रहेंगे; ऐया–तात; ऊर् उळतु–नगर है; उऱैय–रहने के लिए; नी उळै–तुम हो; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क–राजा बनने; ऑरुवन् निन्ऱाय्–अकेले तुम रहते हो; निन्नोटु–तुम्हारे साथ; निऱ्पार्–रहें ऐसे; अरक्कर्–राक्षस; आर् उळर्–कौन हैं। ३०३३

जब तक जल रहेगा, तब तक ही मछलियाँ जीवित रहेंगी। वैसे ही जब तक मूल पुरुष रावण रहेंगे, तब तक राक्षस रहेंगे। और रावण मरें तो ये भी मर जायँगे। बचेंगे नहीं। तो हे तात! लंका रहेगी इसी पर राज्य करने के लिए आप बचे हैं। आपका साथ देने कौन (क्या) रहेगा? । ३०३३

मुन्देना ऌुलहन् वन्द मूत्तवा नोर्हट् कॅल्लाम्
तन्दैयार् तन्दै यारैच् चॅरुविडैच् चायत् तळ्ळिक्
कन्दतार् तन्दै यारैक् कयिलैयो डोरुहैक् कॉण्ड
ॲन्दैया ररशु शॅय्व दिप्पॅरुम् बलङ्गॉण् डेयो 3034

मुन्तैनाळ्-प्राचीन काल में; उलकम् तनृत-विश्व जिन्होंने रचा; मूतुत-वृद्ध; वात्तोर्कट्कु ॲल्लाम्-सभी देवों के; तन्तैयार्-पिता के; तन्तैयारै-पिता (विष्णु) को; चॅरुविटै-युद्ध में; चाय तळ्ळि-हराकर; कन्तत्तार् तन्तैयारै-स्कंद के पिता को; कयिलैयोटु-कैलास के साथ; ऑरु कै कॉण्ट-एक हाथ में जिन्होंने उठा लिया था; ॲन्तैयार्-वे मेरे पिता; अरचु चॅय्वतु-राज्य करते हैं; इ पॅरु पलम् कॉण्टेयो-क्या इस (नरों की सहायता) का बल लेकर ही क्या। ३०३४

जिन्होंने पुरातन प्रपंचकर्ता, देवों के पिता वयोवृद्ध ब्रह्मा के पिता श्रीविष्णु को युद्ध में हराया था; जिन्होंने स्कंददेव के पिता शिवजी को कैलास के साथ हाथ में उठा लिया था, वे मेरे पिता अब राज करते हैं —क्या इनके बड़े बल की सहायता से ? । ३०३४

पनिमलर्त् तविशिन् मेलोन् पार्प्पनक् कुलत्तुक् कॅल्लाम्
तनिमुदल् तलैव नात्र वुत्तैवन् दमरर् ताळ्वार्
मनिदरुक् कडिमै याय्नी यिरावणन् शॅल्व माळ्वाय्
इनियुनक् कॅन्नो मान मॅङ्गळो डडङ्गिट् ट्रत्रे 3035

पनि मलर् तविचित् मेलोन्-शीतल कमलासनस्थ ब्रह्मा के; पार्प्पन कुलत्तुक्कु ॲल्लाम्-सारे ब्राह्मण-कुल के; तनि-अकेले; मुतल्-प्रथम; तलैवनान उत्तै-नायक आपके सामने; अमरर् वन्तु-देव आकर; ताळ्वार्-सिर नवाते; नी-आप; मनितरुक्कु अटिमैयाय्-नरों का दास बनकर; इरावणन् चॅल्वम्-रावण का राज; आळ्वाय्-शासन करेंगे; इनि-आगे; उनक्कु मानम् ॲन्नो-आपका मान क्या रहा; ॲङ्कळोटु अटङ्किट्टु-हमारे साथ बह चला गया; अन्रे-न। ३०३५

(आप हमारे साथ ही रहते तो) शीतल कमल पर आसीन ब्रह्मा के सारे ब्राह्मण कुलों के अकेले आदिपुरुष आपकी देवता लोग स्तुति करते। पर आप नरों के दास बनकर रावण की संपत्ति पर शासन करेंगे ! अब आपका क्या मान रहा ? कुलगौरव हमारे साथ नष्ट हो गया न ? । ३०३५

शॉल्वित्तुम् बळित्तु नुङ्गै मूक्कितैत् तुणित्तो राले
वॅल्वित्तुम् बडैक्कै युङ्ग डमैयतै यॅङ्ग ळोडुम्
कॉल्वित्तुन् दोट्रु निन्ट्र कूट्रितार् कुलत्तै यॅल्लाम्
वॅल्वित्तुम् वाळुम् वाळ्वित् वॅरुमैये विळुमि दन्ट्रे 3036

नुङ्कै-आपकी छोटी बहिन की; मूक्कितै-नाक को; तुणित्तोराले-काटनेवालों से; चॉल्वित्तुम्-कहलाकर; पळित्तुम्-निंदा कराकर; वॅल्वित्तुम्-हराकर;

उङ्कळ्–आप लोगों के; पटैक्कै–अस्त्र-हस्त; तमैयतै–ज्येष्ठ भ्राता (कुंभकर्ण) को; ऍङ्कळोडु कोल्वित्तुम्–हमारे लोगों के साथ मरवाकर; तोऱ्ऱु निऩ्ऱ–हमारे हाथ जो हारे रहे उन; कूऱ्ऱितार् कुलत्तै ऍल्लाम्–यम के कुल के सारे लोगों को; वॆल्वित्तुम्–जिताकर; वाऴुम् वाऴ्विऩ्–जीने के जीवन से; वॆऱुमैये–अभाव ही; विऴुमितऩ्ऱे–श्रेष्ठ है न। ३०३६

आपने अपनी ही बहिन की नाक को काटनेवालों द्वारा हमारे प्रति कठोर शब्द कहलवाये; अपमान करवाया, हराया और हथियारधारी अपने बड़े भाई कुंभकर्ण को हमारे लोगों के साथ मरवा भी दिया। यम हमारे हाथ हारा था। उसके वर्ग के सभी लोगों को आपने जिता दिया। छि: ऐसे जीवन से अभाव में रहना श्रेष्ठ होगा न ? । ३०३६

ऍऴुदिये रणिन्द दिण्डो ळिरावण ऩिराम ऩम्बाल्
पुऴुदिये पाय लाहप् पुरण्डनाळ् पुरण्ड् मेल्वीऴ्न्
दऴुदियो नीयुङ् गूड वार्त्तियो यवनै वाऴ्त्तित्
तॊऴुदियो वॆऩ्ऩो शॆय्यत् तुणिन्दनै विशयत् तोळाय् 3037

विचय तोळाय्–विजयी भुजावाले; ऍऴुति–चित्रकारी से युक्त; एर् अणिन्त–सुन्दर बने; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कंधों के; इरावणऩ्–रावण; इरामऩ् अम्पाल्–राम-बाण से; पुऴुतिये–धूल को ही; पायलाक–शय्या बनाकर; पुरण्ट नाळ्–जिस दिन लोटेंगे उस दिन; मेल् वीऴ्न्तु–उन पर गिरकर; पुरण्टु अऴुतियो–लोट कर रोयेंगे क्या; नीयुम् कूट–आप भी साथ; आर्त्तियो–चिल्लायेंगे; अवऩै–उन (श्रीराम) को; वाऴ्त्ति–तारीफ़ करके; तॊऴुतियो–पूजा करेंगे; ऍऩ्ऩो–क्या ही; चॆय्य तुणिन्तऩै–करना ठाना है। ३०३७

विजयस्कंध ! जिस दिन चित्रकारी के साथ शोभित भुजावाले रावण राम के बाण से हत होकर धूलि पर लोटेंगे, क्या आप उन पर गिरकर रोयेंगे ? उनके साथ चिल्लायेंगे ? या राम की स्तुति करके उसके आगे नमन करेंगे ? क्या करने का निश्चय किया है ? । ३०३७

ऊऩुडै युडम्बि ऩीङ्गि मरुन्दिऩा लुयिर्वन् दॆय्दुम्
माऩिड रिलङ्गै वेन्दैक् कॊल्वरे नीयु मऩ्ऩाऩ्
ताऩुडैच् चॆल्वन् दुय्क्कत् तहुदिये शरत्ति ऩोडुम्
वाऩिडैप् पुहुदि यऩ्ऱे याऩ्पऴि मऱक्कि लेऩाल् 3038

याऩ्–मैं; पऴि–अपयश; मऱक्किलेऩ्–भूला नहीं हूँ; ऊऩ् उटै उटम्पिऩ्–मांसल शरीर से; उयिर् नीङ्कि–प्राण दूर होने पर; मरुन्तिऩाल्–(संजीवनी) ओषधि से; वन्तु ऍय्तुम्–जीवन-प्राप्त; माऩिटर्–नर; इलङ्कै वेन्तै–लंका के राजा को; कॊल्वरे–मार सकेंगे क्या; अऩ्ऩाऩ् ताऩ् उटै–उनकी; चॆल्वम् तुय्क्क–संपत्ति भोगने; नीयुम् तकुतिये–आप भी योग्य हैं क्या; चरत्तिऩोटुम्–(अंदर घुसे) बाणों के साथ; वाऩ् इटै–आकाश में; पुकुति अऩ्ऱे–चलेंगे न; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा इन्द्रजित् ने। ३०३८

मैं आपके कारण कुल पर लगे बड़े कलंक को भूल नहीं पाता। मांसल शरीर से जिनके प्राण चले गये थे और जो संजीवनी औषध से पुनः जीवन पा गये वे नर क्या रावण को मार सकेंगे? रावण की संपत्ति भोगने की योग्यता भी आपमें है क्या? मेरे बाण के साथ स्वर्ग न चले जायँगे? । ३०३८

अव्वुरै यमैयक् केट्ट वीडण नलङ्गल् मौलि
शॅव्विदिल् तुळक्कित् तन्पाल् मुरुवलुन् दॅरिव दाक्कि
वॅव्विदु पावत् जालत् तरुममे विळुमि दैय
इव्वुरै केट्टि यॅन्ना विनैयन विळम्ब लुऱ्ऱान् 3039

अ उरै–वह कथन; अमैय–मन में लगे ऐसा; केट्ट–जिसने सुना वह; बीटणन्–विभीषण; अलङ्कल् मौलि–माला से अलंकृत सिर को; चॅव्वितिन् तुळक्कि–खूब हिलाकर; तन् पाल्–अपने पास; मुरुवलुम्–मंदहास भी; तॅरिवुतु आक्कि–प्रगट कराकर; ऐय–तात; पावम्–पाप; वॅव्जितु–हानिकारक है; तरुममे–धर्म ही; चाल–बहुत; विळुमितु–श्रेष्ठ है; इ उरै केट्टि–यह वचन सुनो; ऍन्ना–कहकर; इनैयन–ऐसा; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ३०३९

विभीषण ने ये वचन सुनकर हारालंकृत अपना सिर खूब हिलाया और मुस्कुराते हुए कहा कि तात! पाप नाशक है! धर्म ही बहुत श्रेष्ठ है। सुनो यह। वह आगे यों बोला। ३०३९

अऱन्दुणै याव दल्ला लरुनर हमैय नल्हुम्
मऱन्दुणै याह मायाप् पळियॊडुम् वाळ माट्टेन्
तुऱन्दिलेन् मॅय्म्मै येदुम् बॊय्म्मैये तुऱप्प दल्लाल्
पिऱन्दिले निलङ्गै वेन्दन् पिन्नवन् पिळैत्त पोदे 3040

अऱम्–धर्म ही; तुणै आवतु अल्लाल्–सहायक होगा उसे छोड़कर; अरु नरकु–असह्य नरक; अमैय नल्कुम्–मुझे जो अवश्य दिला देगा; मऱम्–पाप को; तुणै आक–सहायक बनाकर; माया–अमिट; पळियॊटुम्–कलंक के साथ; वाळ माट्टेन्–जीवन धारण नहीं करूंगा; पॊय्म्मैये तुऱप्पतु अल्लाल्–असत्य त्यागूंगा उसे छोड़; मॅय्म्मै एतुम्–कोई सत्यमार्ग; तुऱन्तिलेन्–नहीं छोड़ा; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा; पिळैत्त पोतु–जब अपचार करते थे; पिन्नवन्–कनिष्ठ मैं; पिऱन्तिलेन्–जनमा नहीं हो गया। ३०४०

धर्म को सहायक न बनाकर नरक पहुँचानेवाले पाप के साथ, अमिट कलंक लेकर मैं जीना नहीं चाहूँगा। असत्य को त्यागूँगा। उसके सिवा सत्य को छोड़ूंगा नहीं। ज्योंही रावण ने वह अपराध किया, त्योंही मेरा उसके भ्राता के रूप में जन्म "नहीं" हो गया। ३०४०

उण्डिल नऱवम् बॊय्म्मै युरैत्तिलन् वलिया लॊन्ऱुम्
कॊण्डिलन् माय वञ्जङ् गुऱित्तिल तियारुङ् गुऱ्ऱम्

कण्डिल रॆत्बा लुण्डे नीयिरुङ् गाण्डि रन्ऱे
पॆण्डिरिऱ् ऱिऱम्बि तारॆत् तुऱन्ददु पिऴैयिऱ् ऱामो 3041

नऱवम्–मद्य; उण्टिलन्–पान नहीं करता; पॊय्मै उरॆत्तिलन्–असत्य नहीं बोलता; वलियाल्–बलात्कार से; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; कॊण्टिलन्–ग्रहण नहीं करता; माय वञ्चम्–माया तथा वंचक कार्य; कुऱित्तिलन्–नहीं सोचता; ऎन् पाल्–मेरे सम्बन्ध में; यारुम् कुऱ्ऱम् कण्टिलर्–किसी ने कुछ अपराध नहीं देखा है; उण्टे–है क्या; नीयिरुम्–तुम लोगों ने भी; काण्टिर् अन्ऱे–देखा है न; पॆण्टिरिन्–स्त्री को लेकर; तिऱम्पितारॆ–जो अनुचित कार्य करता है उसे; तुऱन्ततु–छोड़ना; पिऴैयिऱ्ऱु आमो–अपराध होगा क्या। ३०४१

मैं ताड़ी नहीं पीता, झूठ नहीं बोलता। ज़ोर-ज़बरदस्ती कुछ नहीं छीन लेता। माया, वंचना आदि से दूर रहता हूँ। कोई मुझमें कुछ दोष नहीं देखता। है क्या ? तुम लोगों ने यह जाना है न ? स्त्री के प्रति अपराधी को छोड़ आना अपराध होगा क्या ?। ३०४१

मूवहै युलहु मेत्तु मुदलव नॆवर्क्कु मूत्त
तेवर्दन् देवन् ऱेवि कऱ्पिनिऱ् चिऱन्दु ळाळै
नोवन शॆय्दल् तीदॆन् ऱुरैप्पनुन् ऱादै शीऱिप्
पोवॆन वुरॆक्कप् पोन्दे नरहदिऱ् पॊरुन्दु वेनो 3042

मूवकै उलकुम्–(ऊपर, मध्य, नीचे) तीनों विध लोक; एत्तुम्–जिनकी स्तुति करते हैं; मुतलवन्–वे आदिदेवता; ऎवर्क्कुम्–सभी; मूत्त–वृद्ध; तेवर् तम् तेवन्–देवाधिदेव श्रीराम की; तेवि–पत्नी; कऱ्पिनिल्–पातिव्रत्य में; चिऱन्तुळाळै–श्रेष्ठ देवी को; नोवन चॆय्तल्–दुःख देना; तीतु–बुरा है; ऎन्ऱु–ऐसा; उरैप्प–कहने पर; नुन् तातै–तुम्हारे पिता के; चीऱि–गुस्सा करके; पो–जाओ; ऎन–ऐसा; उरॆक्क–कहने पर; पोन्तेन्–मैं चला आया; नरकु अतिल्–नरक में; पॊरुन्तुवेनो–जाऊँगा क्या। ३०४२

"सभी त्रिलोकवासियों द्वारा स्तुत, आदिदेव, सबसे पुरातन तथा देवाधिदेव श्रीराम की पत्नी, पातिव्रत्य में श्रेष्ठ देवी सीताजी को दुःख देना बुरा है।" मैंने यही कहा। उस पर तुम्हारे पिता ने क्रुद्ध होकर मुझसे कहा कि 'चलो, हटो।' मैं आ गया। फिर नरक में जाऊँ (क्या) ?। ३०४२

वॆम्मैयिऱ् ऱरुम नोक्का वेट्टदे वेट्टु वीयुम्
उम्मैये पुहऴ्म् बूण तुऱक्कमु मुमक्के याह
शॆम्मैयिऱ् पॊरुन्दि मेलो रॊऴुक्कितो डऱत्तॆत् तेरुम्
ऎम्मये पऴियुम् बूण नरहमु मॆमक् याहके 3043

वॆम्मैयिल्–(तुम लोगों के) क्रूरता (के कार्यों) से; तरुम नोक्का–धर्म का विचार न करके; वेट्टते वेट्टु–मनमाना चाहकर; वीयुम्–मरनेवाले; उम्मैये–

तुम्हें ही; पुकऴुम् पूण–यश प्राप्त हो; तुरक्कमुम्–स्वर्ग भी; उमक्के आक–तुम्हें प्राप्त हो; चॅम्मैयिन् पोरुनृति–उत्तम गुणों में रहकर; मेलोर् ऑऴुक्किलोट्–साधुओं के योग्य चरित्र के साथ; अऱत्तै–धर्म को; तेऱुम्–जो मानकर चलता है; ॲम्मैये–मुझ जैसे लोगों पर; पऴियुम् पूण–कलंक लगे; ॲमक्के–हमें ही; नरकममु आक–नरक मिले। ३०४३

यश मिले तुम्हीं को जो नृशंस हो, धर्म नहीं देखते, मनमाना करते हो और मर जाओगे ! सद्‌गुणी रहकर साधुचरित्र तथा धर्म पर विश्वास रखनेवाले हमें अपयश मिले ! नरक भी हमें ही मिले ! । ३०४३

अऱत्तितैप् पावम् वॅल्ला दॅन्नुम दऱिन्दु नाते
तिऱत्तितु मुरुमॅन् ऱॅण्णित् तेवर्क्कुन् देवंच् चेर्न्देत्
पुऱत्तितिर् पुहऴे याह पऴियोडुम् बुणर्ह पोदच्
चिऱप्पितिप् पॅऱुह तोर्ह वॅन्ऱनन् शीऱ्ऱ मिल्लात् 3044

चीऱ्ऱम् इल्लात्–जो क्रोध नहीं करता था, उस विभीषण ने; अऱत्तितै–धर्म को; पावम् वॅल्लातु–पाप जीत नहीं सकेगा; ॲन्नुम्–जो है; अतु–वह; अऱिन्तु–जानकर भी; तिऱत्तितुम् उरुम्–सिधाई से सम्बद्ध है; ॲन्ऱु ॲण्णि–ऐसा सोचकर; तेवर्क्कुम् तेवै–देवाधिदेव से; नाते चेर्न्तेत्–मैं ही जा मिला; पुऱत्तितिल्–बाहर (लोक में); पुकऴे आक–यश मिले; पऴियोटुम् पुणर्क–(या) अपयश ही मिले; इति–अब; पोत चिऱप्पु–अधिक श्रेष्ठता; पॅऱुक–मिले; तोर्क–या मिटे; ॲन्ऱनत्–कहा। ३०४४

विभीषण ने आगे कहा कि मैं यह जानकर कि धर्म को पाप जीत नहीं सकता, और यह सोचकर कि यही सीधा कार्य है, देवाधिदेव श्रीराम के पक्ष में स्वयं आया। यह चाहे संसार में यश लाये या अपयश ! इससे मुझे गौरव अधिक मिले या नष्ट हो। ३०४४

पॅऱुञ्जिऱप् पॅल्ला मॅन्गेप् पिऱैमुहप् पहऴि पॅऱ्ऱाल्
इऱुञ्जिऱप् पल्ला लप्पा लॅङ्गिनिप् पोव दॅन्नात्
तॅऱुञ्जिरैक् कलुऴ नन्न वॅरुहणै तॅरिन्दु शॅम्बोन्
उरुञ्जुडर्क् कऴुत्तै नोक्कि नूक्किता तुरुमिन् वॅय्योन् 3045

उरुमिन् वॅय्योन्–वज्र से भी कठोर इन्द्रजित्; पॅऱुम् चिऱप्पु ॲल्लाम्–मिलने वाले गौरव सब; ॲन् कै–मेरे हाथ के; पिऱैमुक–अर्धचन्द्र से नोक वाले; पकऴि–बाण; पॅऱ्ऱाल्–पाओगे तो; चिऱप्पु इऱुम्–गौरव नष्ट होंगे; अल्लाल्–नहीं तो; इति–अब; अप्पाल्–दूर; ॲङ्कु पोवतु–कहाँ जाओ; ॲन्ना–कहकर; चॅम् पोन् उरुम्–लाल स्वर्ण-सम; चुटर् कऴुत्तै–शोभते गले का; नोक्कि–निशाना बनाकर; तॅऱुम्–घातक; चिऱै कलुऴत् अन्न–पक्षी गरुड़ के समान; ऒरु कणै–एक अस्त्र को; तॅरिन्तु–चुन लेकर; नूक्कितात्–चलाया। ३०४५

यह सुनकर अशनि से भी दारुण इन्द्रजित् ने विभीषण से कहा कि आपको जो गौरव मिलेगा, वह मेरे हाथों के अर्धचन्द्र बाणों का लगना ही

होगा। आपको जब वह मिले तब आपके सारे गौरव मिट जायँगे। नहीं तो आप जायँगे कहाँ ? यह कहकर उसने विभीषण के लाल स्वर्ण-सम कंठ का निशाना बनाकर गरुड़ पक्षी के समान रहनेवाले एक दाहक बाण चुनकर चलाया। ३०४५

अक्कणै यशनि यॆन्न वन्नलॆन्न वाल मुण्ड
मुक्कणान् शूल मॆन्न मुडुहिय तिऱत्तै नोक्कि
इक्कणत् तिऱ्ऱा निऱ्ऱा नॆन्गिनॊर् विमैयोर् काणक्
कैक्कणै यॊन्ऱाल् वळ्ळ लक्कणै कण्डङ् गण्डान् 3046

अ कणै–वह बाण; अचनि ऍन्न–वज्र के समान; अनल् ऍन्न–आग के समान; आलम् उणट–विप जिन्होंने खाया उन; मुक्कणान्–त्रिनेत्र शिवजी के; चूलम् ऍन्न–त्रिशूल के समान; मुटुकिय–वेग से जो आया; तिऱत्तै नोक्कि–उस वेग को देखकर; इ कणत्तिल् तान्–इसी क्षण; इऱ्ऱान्–(विभीषण) मर गया; ऍन्किन्ऱ–ऐसा जो कहते रहे; इमैयोर् काण–उन देवों के देखते; वळ्ळल्–उदार प्रभु लक्ष्मण ने; कै कणै ऑन्ऱाल्–हाथ के एक अस्त्र से; अ कणै–उस अस्त्र को; कण्टम् कण्टान्–खण्डित कर दिया। ३०४६

वह शर अशनि, आग और हलाहलभोगी त्रिनेत्र शिव के त्रिशूल के समान आ रहा था। उसकी गतिविधि देखकर जो देव यह कह रहे थे कि विभीषण मर गया, उनके ही समक्ष उदार प्रभु लक्ष्मण ने अपने हाथ के एक अस्त्र से उसे खण्ड-खण्ड कर दिया। ३०४६

कोलॊन्ऱु तुणिद लोडुङ् गूऱ्ऱुक्कुङ् गूऱ्ऱ मन्नान्
वेलॊन्ऱु वाङ्गि विट्टान् वॆयिलॊन्ऱु विऴुव दॆन्न
नालॊन्ऱु मून्ऱु मान पुवनङ्गळ् नडुङ्ग लोडुम्
नूलॊन्ऱु वरिवि लानु मदनैयुम् नुऱुक्कि वीऴ्त्तान् 3047

ऑन्ऱु कोल्–अतिश्रेष्ठ उसका बाण; तुणितलोटुम्–खंडित हुआ तो; कूऱ्ऱुक्कुम्–यम का भी; कूऱ्ऱम् अन्नान्–यम जो था उस (इन्द्रजित्) ने; वेल् ऑन्ऱु–एक शक्ति; वाङ्कि–ले; विट्टान्–चलाया; वॆयिल् ऑन्ऱु–एक सूर्य; विऴुवतु ऍन्न–गिरता जैसे (गिरा तो); नाल् ऑन्ऱुम्–चार और; मून्ऱुम्–तीन; आन–जो हैं वे सात; पुवनङ्कळ्–भुवन; नटुङ्कलोटुम्–कांपे और; नूल् ऑन्ऱु–धनुष-शास्त्रोक्त रीति से बने; वरि–सबन्ध; विलानुम्–धनु रखनेवाले (लक्ष्मण) ने; अतनैयुम्–उसको भी; नुऱुक्कि–चूर करके; वीऴ्त्तान्–गिरा दिया। ३०४७

अपने श्रेष्ठ बाण को खण्डित हुआ देखकर यम के यम इन्द्रजित् ने विभीषण पर एक शक्ति ले चलायी। वह सूर्य के समान गिर रही थी और सातों भुवन काँप रहे थे। तब धनुषशास्त्रोक्त रीति से बने, सबन्ध धनु के धारक वीर लक्ष्मण ने उसे भी चूर्ण कर गिरा दिया। ३०४७

वेल्कोड् नम्मे लॅय्दा नॅन्ट्रोरु वॅहुळि पॊङ्गक्
काल्होडु कालिर् कूडिक् कॅतोडर् कनहत् तण्डाल्
कोल्होळु मोरुव नोडुङ् गॉडितत्तडन् देरिर् पूण्ड
पाल्होळुम् बुरवि यॅल्लाम् बडुत्तिनात् पडियिन् मेले 3048

नम्मै–हम पर; वेल् कोट्–शक्ति का; ऎय्तान्–प्रहार किया; ऎन्ड्र–ऐसा; ओद वॅकुळि पॊङ्क–क्रोध के उभरते; काल् कोट्–पैर से; कालित्–पवन के समान; कूटि–उसके पास जाकर; कै तॊटर्–हाथ में रहे; कतक तण्टाल्–कनक-दण्ड से; कोटि–ध्वजा से अलंकृत; तटम् तेरिल्–विशाल रथ पर; कोल् कोळुम्–वेत्रपाणी; ऒरुवतोटुम्–एक सारथी के साथ; पूण्ट–रथ से जुते; पाल् कोळुम्–दुग्धश्वेत; पुरवि ऎल्लाम्–सभी अश्वों को; पटियिन् मेले–भूमि पर; पटुत्तितान्–गिरा दिया (विभीषण ने)। ३०४८

विभीषण इस पर नाराज हुआ कि इन्द्रजित् ने उस पर शक्ति का प्रयोग किया। इसलिए वह कनक-दण्ड लेकर पवन-गति में पैदल इन्द्रजित् के पास गया। उसने ध्वजासहित रथ पर रहनेवाले वेत्रधारी सारथी को और रथ से जुते अश्वों को मार भूमि पर गिरा दिया। ३०४८

अळिन्ददेर् मीदु निन्ड्रा नायिर कोडि यम्बु
पॊळिन्दवन् ड्रोळिन् मेलु मिलक्कुवन् पुयत्तिन् मेलुम्
ऒळिन्दव रुरत्तिन् मेलु मुदिरनीर् वारि याह
अळिन्दिळिन् दोड नोक्कि यण्डमु मिरिय वार्त्तान् 3049

अळिन्त तेर् मीतु–टूटे रथ पर; निन्रान्–खड़ा रहकर; आयिर कोटि अम्पु–सहस्र कोटि शर; पॊळिन्तु–चलाकर; अवन् तोळिन् मेलुम्–उस (विभीषण) के कन्धों पर और; इलक्कुवन् पुयत्तिन् मेलुम्–लक्ष्मण की भुजाओं पर; ऒळिन्तवर्–अन्यों के; उरत्तिन् मेलुम्–वक्षों पर; उतिर नीर्–रक्तजल; वारियाक–समुद्र के रूप में; अळिन्तु–निकलकर; इळिन्तु–गिरकर; ओट–बहा; नोक्कि–देखकर; अण्टमुम् इरिय–अण्ड फाड़ते हुए; आर्त्तान्–नर्दन किया (इन्द्रजित् ने)। ३०४९

टूटे रथ पर रहते हुए इन्द्रजित् ने सहस्र कोटि शरों की वर्षा-सी करा दी। वे विभीषण के कंधों, लक्ष्मण की भुजाओं और अन्यों के वक्षों पर जा लगे। सबके शरीरों से रक्त-वारि सागर के समान बह निकला। यह देखकर इन्द्रजित् ने ऐसा भीषण नाद किया कि अंड ही फट जाय। ३०४९

आर्त्तव नॅय पोदि नळिविलात् तेर्होण् डन्ड्रिप्
पोर्त्तोळिल् पुरिय लाहा दॅन्बदोर् पॊरुळे युन्निप्
पार्त्तव रिमैया मुन्नम् विशुम्बिडेप् पायन्दा नॅन्नुम्
वार्त्तैयै निरुत्तिप् पोना निरावणन् मरुङ्गु शॅन्ड्रान् 3050

आर्त्तवत्–जिसने नाद उठाया वह इन्द्रजित्; अतय पोतिन्–तब; अळिविला–नाशहीन; तेर् कोण्टल्ऱि–रथ लिये विना; पोर् तोळिल्–युद्धकार्य; पुरियल् आकातु–कर नहीं सकते; ॲन्पतु ओर् पोरुळे–ऐसी एक बात; उन्ऩि–सोचकर; पार्त्तवर्–दर्शक; इमैया मुत्ऩम्–पलक मारें इसके पूर्व ही; विसुम्पु इडै पाय्न्तात्–आकाश में उछला; ॲन्तुम् वार्त्तै निऱुत्ति–यही कथन पीछे छोड़कर; पोतान्–गया; इरावणन् मरुङ्कु–रावण के पास; चॅन्ऱान्–पहुँचा। ३०५०

गर्जन करने के बाद इन्द्रजित् ने सोचा कि ऐसे रथ के विना, जो नहीं टूटे, युद्धकार्य असंभव है। यह विचार करके वह एक दम आकाश में इतनी तेज़ी से उछल गया कि देखनेवाले पलक न झप पायें। उछलने का समाचार सर्वत्र रह गया पर वह कहीं दिखायी नहीं दिया। वह सीधे रावण के पास जा पहुँचा। ३०५०

27. इन्दिरशित्तु वदैप् पडलम् (इन्द्रजित्-वध पटल)

विण्णिडैक् करन्दा ऩॆन्बार् वञ्जनै विळैक्कु मॆन्बार्
कण्णिडैक् कलक्क नोक्कि यॆयुऱ वुळक्कुङ् गालै
पुण्णुडै याक्कैच् चॆन्नी रिळिदरप् पुक्कु निन्ऱ
ऍण्णुडै महनै नोक्कि यिरावण निनैय शॊन्नान् 3051

विण् इडै–आकाश में; करन्तान्–अदृश्य हो गया; ॲन्पार्–जो कहते; वञ्चनै विळैक्कुम्–वंचना करेगा; ॲन्पार्–जो कहते; कण्णिडै–आँखों में; कलक्कम्–भ्रांति दिखाकर; नोक्कि–देखते हुए; ऐयुऱवु कोण्टु–संशय करते हुए; उळक्कुम् काले–जब व्याकुल हो रहे थे; पुण् उडै याक्कै–व्रण-सहित शरीर से; चॆन् नीर् इऴि तर–लाल रक्त के बहते; पुक्कु निन्ऱ–प्रवेश कर जो खड़ा रहा; ऍण् उडै मकनै–चिन्ताकुल पुत्र को; नोक्कि–देखकर; इनैय–ये बातें; इरावणन्–रावण ने; चॊन्नान्–कहीं। ३०५१

कुछ वानरों ने कहा कि आकाश में ओझल हो गया इन्द्रजित्। कुछ अन्य वानरों का विचार था कि वह अवश्य वंचक कार्य करेगा। सभी वानरों की आँखों में भ्रांति थी। संशयग्रस्त हो वे संकट उठा रहे थे। तब शरीर से बहते लाल रक्त के साथ प्रवेश कर खड़े रहे चिंताकुल अपने पुत्र को देखकर रावण ने यों कहा। ३०५१

तॊडङ्गिय वेळ्वि मुऱ्ऱुप् पॆऱ्ऱिलात् तॊऴिल् निन्ऱोण्मेल्
अडङ्गिय वम्बे यॆन्ऩै यऱिवित्त दळिवि लियाक्कै
नडुङ्गिनै पोलच् चालत् तळर्न्दनै कलुळ ऩण्णप्
पडङ्गुऱै यरव मॊत्ता युऱ्ऱदु पहर्दि यॆन्ऱान् 3052

तॊटङ्किय वेळ्वि–आरब्ध यज्ञ; मुऱ्ऱप् पॆऱ्ऱिला तॊऴिल्–पूरा नहीं हुआ सो काम; निन् तोळ् मेल्–तुम्हारे कंधे पर; अटङ्किय अम्पे–चुभे अस्त्रों ही ने;

अँन्तै अऱिवित्ततु-मुझे समझा दिया; नटुङ्कित्तै पोल-भयातुर-से; अऴिवु इल् याक्कै-अमर तुम्हारा शरीर; चाल तळर्न्तत्तै-खूब थका है; कलुऴन् नणुण-गरुड़ के पास आने पर; पटम् कुऱै-झुके फन वाले; अरवम् ऑत्ताय्-सर्पतुल्य हो; उऱ्ऱतु-जो हुआ; पकर्ति-बताओ; ऍन्ऱान्-कहा। ३०५२

तुम्हारे कंधों में चुभे रहे अस्त्र देखता हूँ और जान लेता हूँ कि आरब्ध यज्ञ पूरा नहीं हुआ है। तुम बहुत काँप गये —यह तुम्हारे अमिट शरीर की शिथिल स्थिति से जान पड़ता है! गरुड़ के पास आने पर फन संकुचित कर रहनेवाले साँप के समान दिखते हो। जो हुआ सो बतलाओ। ३०५२

शूऴ्वित्तै माय मॆल्ला मुम्बिये तुडैक्कच् चुऱ्ऱि
वेळ्वियैच् चिदैय नूऱ् वॆहुळिया लॆऴुन्दु पॊङ्गि
आळ्वित्तै याऱ्ऱ ऱन्ना लमर्त्तॊऴि ऱॊडङ्गि यानुम्
दाळ्विलाप् पडैहण् मून्ऱुन् दॊडुत्तत्तैन् ऱडुत्तु विट्टान् 3053

चूऴ्-साजिश के; मायम् वित्तै ॲल्लाम्-मायापूर्ण सभी कृत्यों को; उम्पिये-आपके कनिष्ठ भ्राता ने ही; तुटैक्क-मिटा दिया और; चुऱ्ऱि-घेराव डालकर; वेळ्वियै-यज्ञ को; चितैय नूऱ्-(लक्ष्मण के) व्यर्थ करके मिटाने पर; यानुम्-मैंने भी; वॆकुळियाल्-क्रोध से; ऍऴुन्तु-उठकर; पॊङ्कि-उफनकर; आळ्वित्तै आऱ्ऱल् तन्ताल्-पौरुषपूर्ण अपनी शक्ति से; अमर् तॊऴिल् तॊटङ्कि-युद्धकार्य आरम्भ करके; ताऴ्वु इला-जो कम नहीं उन; पटैकळ् मून्ऱुम्-(त्रिदेवों के) तीनों अस्त्र; तॊटुत्ततॆन्-छोड़े; तटुत्तु विट्टान्-लक्ष्मण ने उन्हें विफल कर दिया। ३०५३

इन्द्रजित् ने उत्तर दिया— साजिश में भ्रम पैदा करने के लिए मैंने जो भी कार्य किये, उन सबको आपके छोटे भाई ने बेकार कर दिया। लक्ष्मण ने घेरा डालकर यज्ञ को तहस-नहस कर दिया। मैं कोप करके उठा और अपने पौरुषयुक्त बल दिखाकर युद्ध करने लगा। जो किसी विध कम नहीं, उन तीनों दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया। पर लक्ष्मण ने उन (पाशुपत, ब्रह्मास्त्र और नारायणास्त्र) तीनों को रोक दिया। ३०५३

निलञ्जॆय्दु विशुम्बुञ् जॆय्द नॆडियवन् पडैनिन् ऱात्तै
वलञ्जॆय्दु पोयिऱ् ऱॆन्ऱाल् मऱ्ऱिति वलिय दुण्डो
कुलञ्जॆय्द पावत् ताले कॊडुम्बहै तेडिक् कॊण्डाय्
शलञ्जॆयि नुलह मून्ऱु मिलक्कुवन् मुडिप्पन् ऱात्ते 3054

निलम् चॆय्तु-भूलोक रचकर; विचुम्पुम् चॆय्त-जिसने आकाश भी रचा; नॆटियवन् पटै-उस लम्बोतरे (श्रीविष्णु) का अस्त्र; निन्ऱात्तै-स्थित उसको; वलम् चॆयतु-परिक्रमा करके; पोयिऱ्ऱु ऍन्ऱाल्-गया कहो तो; इति-इससे बढ़कर; वलियतु-बलवान; मऱ्ऱु उण्टो-अन्य है क्या; कुलम् चॆयत-हमारे कुल ने जो

किया; पावत्ताले–उस पाप से; कोट्टुम् पकै–भयंकर शत्रु; तेडि कोण्टाय्–आपने ढूंढ लिया है; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; चलम् चॅयिन्–क्रोध करे तो; तानें–अकेले ही; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों का; मुटिप्पन्–अन्त करा देगा। ३०५४

पृथ्वी और आकाश के रचयिता त्रिविक्रम नारायण का अस्त्र उस लक्ष्मण की परिक्रमा करके हट गया —कहें तो इससे बढ़कर पुष्टता क्या चाहिए ? कुल का प्रभूत पाप है— आपने बहुत ही दारुण शत्रु ढूंढ़ लिया है ! लक्ष्मण क्रोध करेगा तो अकेले ही तीनों लोकों का अंत कर देगा। ३०५४

मुट्टिय शॅरुविन् मुन्न मुदलवन् पडैयै यॅन्मेल्
विट्टिल नुलहै यञ्जि यादलाल् वॅन्ऱु मीण्डेन्
किट्टिय पोदुङ् गात्ता निन्नमुङ् गिळर वल्लान्
शुट्टिय वलियि नाले कोड्लैन् तुणिन्दु निन्ड्रान् 3055

मुन्नम्–पहले; मुट्टिय चॅरुविल्–घमासान युद्ध में; मुतलवन् पडैयै–ब्रह्मास्त्र को; उलकै अञ्चि–लोक (-नाश) से डरकर; ॲन् मेल्–मुझ पर; विट्टिलन्–नहीं चलाया था; आतलाल्–तभी तो; वॅन्ऱु मीण्टेन्–जीतकर लौटा; किट्टिय पोतुम्–(अबकी बार जब वह) उसके पास गया; कात्तान्–अपने को बचा भर लिया; इन्नमुम् किळर वल्लान्–और भी खिल सकता है; चुट्टिय वलियिनाले–लोकशंसित बल से; कोड्लै–मारना; तुणिन्तु निन्ड्रान्–निश्चय करके खड़ा है। ३०५५

पहले जो घोर युद्ध चला उसमें उन्होंने लोकनाश से डरकर मुझ पर ब्रह्मास्त्र प्रयुक्त नहीं किया था। उसी कारण मैं विजय पाकर लौट सका। फिर अब जब ब्रह्मास्त्र उसके सामने गया, उसने अपने को बचा भर लिया। वह और भी अपने बल में खिल सकेगा। प्रकीर्तित बल के आधार पर वह मेरी हत्या ठानकर स्थित है। ३०५५

*आदला लञ्जि नैनॆन् इरुळलै याशै तानच्
चीवॅबाल् विडुदि यायि नन्नैयवर् शीऱ्ऱन् दीर्वर्
पोदलुम् बुरिवर् शॅय्द तीमैयुम् बॊरुप्प रुन्मेड्
कादला लुरैत्ते नॆन्ड्रा नुलहॆलाङ् गलक्कि वॆन्ड्रान् 3056

उलकॆलाम् कलक्कि–सभी लोकों को क्षुब्ध करके; वॆन्ड्रान्–जिसने जीता था उस (इन्द्रजित्) ने; आतलाल्–इसलिए; अ चीतै पाल्–उस सीता पर; आचै विटुति आयिन्–मोह को छोड़ दें तो; अन्नैयवर्–वे; चीऱ्ऱम् तीर्वर्–क्रोध छोड़ देंगे; पोतलुम् पुरिवर्–पुनर्गमन भी करेंगे; चॅय्त तीमैयुम्–हमने जो की वह बुराई भी; पॊरुप्पर्–क्षमा कर देंगे; अञ्चिनेन् ॲन्ऱु–डर गया ऐसा; इरुळल्–सोचने की कृपा न करें; कातलाल्–प्रेम के कारण; उरैत्तेन्–कहा; ॲन्ड्रान्–कहा (इन्द्रजित् ने)। ३०५६

लोकों को विक्षुब्ध करनेवाले इन्द्रजित् ने रावण से कहा कि इसलिए

आप सीता पर मोह को छोड़ दें तो वे कोप शांत कर लेंगे। लौट जायँगे भी। हमारे दुष्कृत्यों को भी माफ़ कर देंगे। यह मत सोचिए कि मैं भय खा गया। आप पर स्नेह के कारण ही मैं यह बता रहा हूँ। ३०५६

इयम्बलु मिलङ्गै वेन्द नॅयिऱ्ऱिळ निलवु तोन्ऱप्
पुयङ्गळुङ् गुलुङ्ग नक्कुप् पोर्क्किनि यॊळिदि पोलाम्
मयङ्गिनै मनमु मञ्जि वरुन्दिनै वरुन्द लैय
शयङ्गॊडु तरुवॆ निन्ऱे मनिदरैत् तनुवॊन् ऱाले 3057

इयम्पलुम्–कहने पर; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा ने; ऍयिऱ्ऱु इळ निलवु–दाँतों की बालचन्द्रिका को; तोन्ऱ–प्रकट करते; पुयङ्कळुम् कुलुङ्क–भुजाओं को हिलाते हुए; नक्कु–हँसकर; इनि पोर्क्कु–अब युद्ध से; ऑळिति पोल् आम्–हट जाओगे शायद क्या; मनमुम् मयङ्किनै–भ्रमितमन हो गये; अञ्चि वरुन्तिनै–डरे तथा दुःखी हो; ऐय–तात; वरुन्तल्–दुःखी मत हो; मनितरै–नरों को; तनु ऑन्ऱाले–एक धनु से; इन्ऱे–आज ही; चयम् कॊटु–विजय लाकर; तरुवॆन्–दूँगा। ३०५७

इन्द्रजित् के ऐसा कहने पर लंका के राजा ने दाँतों से बालचंद्रिका-सा प्रकाश छिटकाते हुए और भुजाओं को हिलाते हुए मुस्कुराकर कहा कि तुमने अब युद्ध में जाने का विचार छोड़ दिया है क्या? तुम्हारा मन भ्रमित है। डरते और संकट पाते हो! तात! तुम दुःखी न हो। उन नरों पर मैं आज ही अपने अकेले धनु से तुम्हें विजय दिलाऊँगा। ३०५७

❀ मुन्नैयो रिऱन्दो रॆल्ला मिप्पहै मुडिप्प रॆन्ऱुम्
पिन्नैयोर् निन्ऱो रॆल्लाम् वॆन्ऱवर्प् पॆयर्व रॆन्ऱुम्
उन्नैनी यवरै वॆन्ऱु तरुदियॆन् ऱुणर्न्दु मन्ऱाल्
ऍन्नैये नोक्कि यानिन् नॆडुम्बहै तेडिक् कॊण्डेन् 3058

मुन्नैयोर्–पहले के; इऱन्तोर् ऍल्लाम्–जो मरे वे सभी; इ पकै मुटिप्पर्–इस शत्रु का नाश करेंगे; ऍन्ऱुम्–ऐसा और; पिन्नैयोर्–बाद के; निन्ऱोर् ऍल्लाम्–जो बचे हैं वे सब; अवर् वॆन्ऱु–उनको जीतकर; पॆयर्वर् ऍन्ऱुम्–लौटेंगे ऐसा; उन्नै–तुम्हें; नी–तुम; अवरै वॆन्ऱु तरुति–उन्हें जीतकर (विजय) दिलाओगे; ऍन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तुम् अन्ऱु–समझकर नहीं; ऍन्नैये नोक्कि–अपने को ही देखकर; इ–इन; नॆटु पकै–बड़े शत्रुओं को; तेटिक् कॊण्टेन्–ढूँढ़कर बना लिया। ३०५८

"जो पहले मर गये वे इन शत्रुओं को मारेंगे; या जो अभी बचे हैं, वे इन्हें हराकर लौटेंगे; या तुम उन्हें हराकर विजय दिलाओगे।" —ऐसा सोचकर नहीं; पर अपने को देखकर ही मैंने यह बड़ी शत्रुता बना ली थी। ३०५८

❀ पेदैमै युरैत्ताय् पिळ्ळा युलहॆलाम् बॆयरप् पेराक्
कादॆयॆन् पुहऴि तोडु निलॆपॆऱ वमरर् काण
मोदॆळु मॊक्कु ळन्न याक्कैयै विडुव दल्लाल्
शीदैयै विडुव दुण्डो विरुपदु तिण्डो ळुण्डाल् 3059

पिळ्ळाय्–पुत्र; पेतैमै उरैत्ताय्–अज्ञान की बातें कहीं; उलकॆलाम् पॆयर–सारे लोकों के नष्ट होते भी; ऎन् पुकऴितोटु–मेरे यश के साथ; पेरा कातै–मेरी अमर गाथा; निलै पॆऱ–स्थिर हो ऐसा; अमरर् काण–देवों के देखते; मीतु ऎऴु–(जल) पर उठनेवाले; मॊक्कुळ् अन्न–बुलबुले के समान; याक्कैयै–शरीर को; विटुवतु अल्लाल्–त्यागना छोड़कर; इरुपतु तोळ् उण्टु–बीस कंधों के रहते; चीतैयै विटुवतु–सीता को त्यागना; उण्टो–होगा क्या। ३०५९

पुत्र! तुमने अज्ञानता की बात कही। जब लोक अपनी स्थिति से बिगड़ जायँगे, तब भी मैं अपने यश और अपनी अमर गाथा को देवों के देखते स्थिर बनाकर अपना जल के बुलबुले के समान शरीर छोड़ूँगा। उसके सिवा बीसों भुजाओं के रहते सीता को छोड़ना भी कहीं होगा क्या। ३०५९

❀ वॆन्ड्रिलॆ नॆन्ड्र पोदुम् वेदमुळ ळळवु मियानुम्
निन्ड्रुळॆ नन्ड्रो मड्रव् विरामन्पेर् निड्कु मायिन्
पॊन्ड्रुद लॊरुहा लन्दुल् तविरुमो पॊदुमैत् तन्ड्रो
इन्ड्रुळार् नाळै माळ्वर् पुहळ्क्कु मिरुदि युण्डो 3060

वॆन्ड्रिलॆन् ऎन्ड्र पोतुम्–न जीतूंगा तो भी; वेतम् उळ्ळळवुम्–जब तक वेद रहेंगे, तब तक; इरामन् पेर् निऱ्कुम् आयिन्–राम का नाम रहेगा तो; यानुम्–मैं भी; निन्ड्रुळॆन् अन्ड्रो–रह गया न; ऒरु कालत्तु–कभी एक बार; पॊन्ड्रुतल्–मरना; तविरुमो–चूक सकता है क्या; पॊतुमैत्तु अन्ड्रो–(मरना) सर्वसामान्य बात है न; इन्ड्रु उळार्–आज के जीवित; नाळै माळ्वर्–कल मर जायेंगे; पुकळ्क्कुम्–(पर) यश का भी; इऱुति उण्टो–अंत होता है क्या। ३०६०

मैं जीतूं नहीं तो भी वेदों के रहते तक राम का नाम रहेगा तो मैं भी रह गया न? आखिर एक न एक दिन मरना अवार्य है क्या? मरण सर्वसामान्य है न! आज के रहनेवाले कल मरनेवाले ही हैं? लेकिन यश का अंत होगा क्या? । ३०६०

❀ विट्टनॆन् शनहि तन्नै यॆन्ड्रलुम् विण्णोर् नण्णिक्
कट्टुव दल्ला लॆन्नैप् पॊरुळॆनक् करुदु वारो
पट्टनॆ नॆन्ड्र पोदु मॆळिमैयिड् पडुहि लेन्यान्
ऎट्टिनो डिरण्डु मान तिशैहळै यॆऱिन्दु वॆन्ड्रेन् 3061

चनकि तन्नै–जानकी को; विट्टनॆन् ऎन्ड्रलुम्–छोड़ दिया, यह सुनते ही; विण्णोर्–देव; नण्णि–मेरे पास आकर; ऎन्नै कट्टुवतु अल्लाल्–मुझे बाँधना

छोड़कर; पॉरुळ् ॲल-कोई पदार्थ; करुतुवारो-सोचेंगे क्या; यान् पट्टतॅत्-मैं मर गया; ॲन्र् पोतुम्-ऐसे समय में भी; ॲळिमैयिऱ् पट्टुकिलेन्-आसानी से नहीं मरूंगा; ॲट्टिनोटु इरण्टुन् आन-आठ और दो से बनी; तिचैकळ्-दिशाओं को; ॲऱ्रिनतु वॅन्ऱेन्-मिटाकर जीतूंगा। ३०६१

जानकी को छोड़ दूँ तो देव आकर मुझे बाँध देंगे। मुझे अपदार्थ मानेंगे। इसके सिवा कुछ गौरव देंगे क्या? मरना ही पड़े तो भी आसानी से नहीं मरूंगा; दसों दिशाओं को मिटाकर विजयी बनूंगा। ३०६१

❀ शॉल्लियॅन् पलवुम् नीनिन् निरुक्कैयॅत् तॉडर्न्दु तोळिल्
पुल्लिय पहऴि वाङ्गिप् पोर्त्तॉऴिऱ् चिरमम् बोक्कि
ॲल्लियुङ् गऴित्ति यॅन्ना वॅऴुन्दन नॅऴुन्दु पेऴ्वाय्
वल्लिय मुनिन्दा लन्नान् वरुहतेर् विरैवि नॅन्ऱान् 3062

पलवुम् चॉल्लि ॲन्-किंबहुना कथनेन; नी-तुम; निन्-अपने; इरुक्कैये-वासस्थान को; तॉटर्न्तु-जाकर; तोळिल् पुल्लिय-कंधों पर चुभे; पकऴि-शरों को; वाङ्कि-निकालकर; पोर् तॉऴिल्-युद्ध-कृत्य से उत्पन्न; चिरमम् पोक्कि-श्रम दूर करके; ॲल्लियुम्-रात को भी; कऴित्ति-बिताओ; ॲन्ना-कहकर; ॲऴुन्तनन्-उठा; ॲऴुन्तु-उठकर; पेऴ् वाय्-फटे-से मुँह वाला; वल्लियम्-व्याघ्र; मुनिन्ताल्-कुपित हुआ; अन्नान्-जैसा उसने; वरुक तेर्-आये रथ; विरैविल्-जल्दी; ॲन्ऱान्-कहा। ३०६२

बहुत सी बातें कहने से क्या लाभ? तुम जाओ। अपने महल में जाकर कंधों पर चुभे अस्त्रों को निकाल दो। युद्ध-श्रम का परिहार कर लो और रात को आराम से काट दो। रावण यह कहकर उठा और विवृत मुख व्याघ्र कुपित हुआ जैसे क्रोध करके बोला कि आये मेरा रथ शीघ्र। ३०६२

ॲऴुन्दवन् ऱनन्नै नोक्कि यिणैयडि यिऱैञ्जि यॅन्दाय्
ऑऴिन्दरुळ् शीऱ्ऱम् शॊन्न वुरुदियैप् पॊऱुत्ति यान्पोय्क्
कऴिन्दनॅ नॅन्ऱ पिन्नर् नल्लवा काण्डि यॅन्ना
मॊऴिन्दनन् दॅय्वत् तेर्मे लेऱिनन् मुडिय लुऱ्ऱान् 3063

ॲऴुन्तवन् तनन्नै-जो उठा उसे; मुटियलुऱ्ऱान्-अन्त को जो आ गया था उस इन्द्रजित् ने; नोक्कि-देखकर; इणै अटि-चरणद्वय की; इऱैञ्चि-वंदना करके; ॲन्ताय्-मेरे पिता; चीऱ्ऱम्-कोप; ऑऴिन्तु अरुळ्-दूर करने की कृपा करें; चॊन्न उरुतियै-मेरा कहा हित-वचन; पॊऱुत्ति-क्षमा कर लें; यान् पोय्-मैं जाकर; कऴिन्तनॅन्-मरा; ॲन्ऱ पिन्नर्-यह होने के बाद; नल्लवा काण्टि-अच्छा देखेंगे; ॲन्ना मॊऴिन्तनन्-ऐसा कहा; तॅय्व तेर् मेल्-दिव्य रथ पर; एऱिनन्-सवार हुआ। ३०६३

आसन्न-मृत्यु इन्द्रजित् ने उठे अपने पिता से नमस्कार करके विनय की। मेरे पिताजी ! आप क्रोध छोड़ देने की कृपा करें। मैंने जो हितवचन कहा उसके लिए क्षमा कर दें। मेरी युद्ध में मृत्यु होने के बाद आप सत्य को अच्छी तरह से देख लेंगे। यह कहकर वह दिव्य रथ पर सवार हुआ। ३०६३

पडैक्कल विज्जै मर्रुम् पडैत्तत्त पलवुन् दन्बाल्
अडैक्कल माहत् तेव रळित्तत्त वॆल्लाम् वाङ्गिक्
कॊडैत्तॊळिल् वेट्टोर्क् कॆल्लाङ् गॊडुत्तनन् कॊडियोन् इन्नैक्
कडैक्कणाल् नोक्कि नोक्कि यिरुहणीर् कलुळप् पोनान् 3064

तेवर्–देवों ने; तन् पाल्–उसके पास; अटैक्कलमाक–धरोहर के रूप में; अळित्तत्त–जो दे रखी थी; पटैक्कल विज्चै–अस्त्रविद्या को; मर्रुम्–और अन्य; पटैत्तत्त पलवुम्–रचित अनेक; ऍल्लाम् वाङ्कि–सब लेकर; कॊटै तॊळिल्–दान-कर्म में; वेट्टोर्क्कॆल्लाम्–सभी माँगनेवालों को; कॊटुत्तनन्–दान किया; कॊटियोत् तन्तै–क्रूर रावण को; कटै कण्णाल्–आँखों की कोर से; नोक्कि नोक्कि–बार-बार देखकर; इरु कण्–दोनों आँखों से; नीर्–आँसू; कलुळ–बहने देकर; पोनान्–गया। ३०६४

उसने देवों के धरोहर के रूप में अपने पास रखे हुए अस्त्र-शस्त्रों की विद्या और हथियार सब ले लिये। बाद याचकों को उनको तृप्त करते हुए खूब दान किया। अपने पिता को आँखों के कोर से बार-बार देखते हुए और आँखों से आँसू बहाते हुए चला। ३०६४

इलङ्गैयि निरुद रॆल्ला मॆळुन्दनर् विरैवि नॆय्दि
विलङ्गलन् दोळ निन्नैप् पिरिहलम् विळिदु मॆन्न
वलङ्गॊडु तॊडर्न्दार् दम्मै मन्नतैक् कामिन् यादुम्
कलङ्गलि रिन्ड्रे शॆन्रु मनिदरैक् कडप्प लॆन्ड्रान् 3065

इलङ्कैयिन् निरुतर् ऍल्लाम्–लंकावासी सभी राक्षस; ऍळुन्तनर्–उठे; विरैविल् ऍय्ति–जल्दी जाकर; विलङ्कल् अम् तोळ–पर्वतोपम मनोरम कन्धों वाले; निन्नै पिरिकलम्–आपसे अलग नहीं होंगे; विळितुम्–मरेंगे; ऍन्न–कहते हुए; वलङ्कॊटु–दायीं ओर से; तॊटर्न्तार् तम्मै–जो पीछा करते थे उनसे; मन्नतै कामिन्–राजा की रक्षा करें; यातुम् कलङ्कलिर्–कुछ क्षुब्ध न हों; इन्ड्रे चॆन्ड्रु–आज ही जाकर; मतितरै कटप्पल्–नरों को जीतूँगा; ऍन्ड्रान्–कहा। ३०६५

तब लंका के सारे राक्षस जल्दी आ जुट गये। उन्होंने कहा कि हे पर्वतस्कंध ! आपसे अलग नहीं रह सकेंगे। हम भी आपके साथ मरेंगे। वे प्रदक्षिणा करके उसके साथ-साथ जाने लगे। इन्द्रजित् ने उनसे कहा कि आप अपने राजा की सेवा करें। कुछ व्यग्र न हों। अभी जाकर मैं उन नरों को जीत लूंगा। ३०६५

वणङ्गुवार् वाऴ्त्तु वार्हळ् वडिवित्तै नोक्कित् तम्वाय्
उणङ्गुवा रुयिर्प्पा रुळ्ळ मुरुहुवार् वॆरुव लुर्रु
कणङ्गुऴै महळि रीण्डि यिरैत्तवर् कडैक्क णॆन्नुम्
अणङ्गुरै नॆडुवेल् पायु ममर्हडन् दरिदिर् पोऩान् 3066

वॆरुवल् उर्रु–भयभीत; कणम् कुऴै–पृथुल कुंडलधारिणी; मकळिर्–स्त्रियाँ; ईण्टि–एकत्रित होकर; इरैत्तवर्–हो-हल्ला मचाती हुई; वणङ्कुवार्–नमन करतीं; वाऴ्त्तुवार्कळ्–(कुछ स्त्रियाँ) आशीर्वाद करतीं; वटिवित्तै नोक्कि–(उसका) रूप देखकर; तम् वाय् उणङ्कुवार्–कुछ के मुख सूख जाते; उयिर्प्पार्–निःश्वास छोड़ती; उळ्ळम् उरुकुवार्–कुछ का दिल पिघल जाता; कटैक्कण् ऎन्नुम्–तिरछी नजर रूपी; अणङ्कु उरै–भयकारी व; पायुम्–वेग से जानेवाले; नॆटु वेल्–लम्बे भालों से; अमर् कटन्तु–युद्ध करके विजय पाकर; अरितिल्–कठिनता से; पोऩान्–गया। ३०६६

भयातुर पृथुलकुंडलधारिणी राक्षस-नारियाँ शोर मचाते हुए एकत्र हो गयीं। कुछ स्त्रियों ने नमस्कार किया। कुछ ने शुभकामना प्रगट की। उसका रूप देखकर कुछ स्त्रियों का मुख सूख गया। कुछ लोगों ने लम्बे निःश्वास छोड़े। कुछ का मन पिघल गया। इस भाँति रही स्त्रियों की तिरछी नज़र रूपी धमकी-भरी तथा चुभनेवाली लम्बी शक्तियों से टक्कर लेते हुए इन्द्रजित् कठिनाई से आगे जा पाया। ३०६६

एयिऩ निऩ्ऩ ताह विलक्कुव नॆडुत्त विल्लान्
शेयिरु विशुम्बै नोक्कि वीडणा तीयो ऩप्पाल्
पोयिऩ नादल् वेण्डुम् पुरिन्दिल नॊन्रु मॆऩ्बान्
आयिरम् पुरवि पूण्ड तेरिऩ्पे ररवङ् गेट्टान् 3067

इत्तन्–ऐसा; एयितऩ् आक–गया तो; ऎटुत्त विल्लान्–उठे हुए धनुर्धर; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण ने; चेय्–दूर तक; इरु–बड़े; विचुम्पै नोक्कि–आकाश को देखकर; वीटणा–विभीषण; तीयोन्–दुष्ट ने; ऒन्रुम् पुरिन्तिलऩ्–कुछ नहीं किया है; अप्पाल् पोयिऩऩ्–अलग गया; आतल् वेण्टुम्–होना चाहिए; ऎऩ्पान्–कहा तो; आयिरम् पुरवि पूण्ट–हज़ार घोड़ों के जुते; तेरिऩ्–रथ की; पेर् अरवम्–उच्च ध्वनि; केट्टान्–सुनी। ३०६७

वह इस भाँति आ रहा था। उधर सन्नद्धधनु लक्ष्मण ने आकाश को देखकर विभीषण से कहा कि विभीषण ! दुष्ट इन्द्रजित् ने कुछ नहीं किया। उस तरफ़ चला गया होना चाहिए। तभी उन्हें हज़ार अश्वों के जुते रथ का उच्च नाद सुनायी दिया। ३०६७

कुन्रिडै नॆरिदर वडवरैयिऩ् कुवडुरुळ हुवदॆऩ मुडुहुतॊरुम्
पॊन्रिणि कॊडियिऩ दिडियुरुमि ऩदिर्हुरऩ मुरल्वदु पुऩैमणियिऩ्
मिन्रिरळ शुडरदु कडल्परुहुम् वडवऩल् वॆळियुर वरुवदॆऩच्
चॆन्रदु तिशैतिशै युलहिरियत् तिरिबुव ऩमुमुरु तऩियिरदम् 3068

तिरि पुवत्तमुम्–तीनों भुवनों में; उऱु–जा सकनेवाला; तनि इरतम्–विशिष्ट रथ; इटै–मार्गमध्यस्थित; कुन्ऱु–पर्वतों को; नेरि तर–चूर करते हुए; पोन् तिणि–स्वर्णपूर्ण; कॊटियिनतु–ध्वजा वाला; वटवरैयिन् कुवटु–उत्तरी (मेरु) पर्वत का शिखर; उरुळ्कुवतॆन्न–लुढ़कता आता जैसे; मुटुकु तोऱुम्–जल्दी जाते हर समय; इटि उरुमिन्–घोर अशनि का; अतिर्कुरल्–थर्रानेवाला नाद; मुरल्वतु–उठाता; पुतै मणियिन्–अलंकृतकारी रत्नों की; मिन् तिरळ्–विजली-समूह की-सी; चुटरतु–कांति बिखेरनेवाला; उलकु इरिय–संसार को अस्त-व्यस्त करते हुए; तिचै तिचै–दिशा-दिशा में; कटल् परुकुम्–समुद्र को पीनेवाली; वट अनल्–बड़वाग्नि; वॆळियुऱ–बाहर निकलकर; वरुवतु अॆन्न–आती हो जैसे; चॆन्ऱतु–गया। ३०६८

वह रथ तीनों लोकों में जा सकता था। मार्ग के पर्वतों को चूर करता हुआ वह स्वर्णपूर्ण ध्वजाओं से अलंकृत रथ उत्तरी मेरु लुढ़कता हो ऐसा लुढ़कता हुआ आ रहा था। जब वह सवेग जाता तब वज्र का-सा नाद उठता था। जड़े हुए रत्नों के समूह से कांति छूटती थी। बड़वानल आता हो, ऐसा वह सारे लोकों को भय से तितर-बितर भगाते हुए आ रहा था। ३०६८

कडन्मरु हिडवुल हुलैयनॆडुङ् गदिरिरि दरवॆदिर् कविकुलमुम्
कुडर्मरु हिडमलै कुलैयनिलङ् गुऴियॊडु किऴिपड वऴिपडरुम्
इडमरु हियपॊडि मुडुहिडलु मिरुळुळ वॆन्नवॆऴु मिहलरविन्
पडमरु हिडवॆदिर् विरवियदव् विरुळ्पह लुऱवरु पहैयिरदम् 3069

कटल्–समुद्र; मरुकिट–घूम उठें; उलकु उलैय–लोक अस्त-व्यस्त हों; नॆटुम् कतिर्–बड़े तेजपुंज, सूर्य और चन्द्र; इरि तर–स्थान बदलकर भागें; अॆतिर्–सामने रहे; कवि कुलमुम्–कपिकुल की; कुटर् मरुकिट–आँतें छिन्न हों; मलै कुलैय–कुलगिरियाँ अस्थिर हों; निलम्–पृथ्वी; कुऴियॊटु–गड्ढों-सहित; किऴि पट–फट जाय ऐसा; वऴि पटरुम्–मार्ग में जहाँ रथ जाता रहा; इटम्–उन स्थानों में; मरुकिय पॊटि–घूमनेवाली धूल; मुटुकिटलुम्–जल्दी गयी (और) उन गड्ढों को भरती रही; इरुळ् उळतु–अँधेरा है; अॆन्न–ऐसा; अॆऴुम्–उठनेवाले; इकल् अरविन्–शत्रु सर्प का; पटम् मरुकिट–फन पिस जाय ऐसा; अ इरुळ्–वह अंधकार; पकल् उऱ–दिन बन जाय ऐसा; वरु–आनेवाला; पकै इरतम्–वैरी रथ; अॆतिर् विरवियतु–सामने आया। ३०६९

समुद्र क्षुब्ध हुए। लोक काँपे। बड़े तेजपुंज सूर्य और चन्द्र स्थिति बदल गये। वानरों की आँतें छिन्न हुईं। भूमि गड्ढों-सहित फट गयी। उसके मार्ग में उठी धूल ने गड्ढों को भर दिया। अंधकार को आया समझकर जो साँप भूमि के ऊपर आये उनके फनों को कुचलता हुआ, उस अंधकार को दिन में बदलता हुआ वह वैरी-रथ सामने प्रकट हुआ। ३०६९

आर्त्तवु निरुदर्व मनिहमुड नमररुम् वॆरुविनर् कविकुलमुम्
वेर्त्तवु वॆरुवलॊ डलम्वरलाल् विडुहणै शिदरिन नडुतॊऴिलोन्

तीर्त्तन् मवनॆदिर् मुडुहिनॆडुन् दिशॆशॆवि ऎड्रितर विशॆहॆळ्तिण्
पोर्त्तॊळिल् पुरिदलु मुलहुकडुम् बुहैयॊडु शिहैयनल् पॊदुळियदाल् 3070

निरुतर् तम् अतिकम्–राक्षसों की सेना ने; उटन् आर्त्ततु–एक साथ घोष किया; अमररुम् वॆरुवितर्–देव डरे; कवि कुलमुम्–वानर-यूथ; वॆरुवलॊडु–डर के साथ; अलम् वरलाल्–मन दुःखी होने से; वेर्त्ततु–स्वेद से भर गये; अट्टु तॊळिलोन्–युद्धकर्मा (इन्द्रजित्) ने; विट्ट कणै–धनु से निकले शरों को; चितरित्तन्–सर्वत्र चलाया; तीरत्तनुम्–पवित्रमूर्ति; अवन् ऎतिर्–उसके सामने; मुटुकि–जल्दी जाकर; नॆटु तिचै–लम्बी दिशाएँ; चॆविटु ऎरितर–उच्च नाद से पीड़ित हुई; विचै कॊळ्–जोरदार; तिण् पोर् तॊळिल्–कठोर युद्ध-कार्य; पुरितलुम्–करते समय; उलकु–लोक भर में; कटुम् पुकैयॊटु–घने धुएँ के साथ; चिकै अतल्–अग्नि-ज्वालाएँ; पॊतुळियतु–भर उठीं। ३०७०

राक्षस-सेना ने एकदम बड़ा नर्दन किया। देव डरे। कपिकुल भी डर और भ्रम से पसीने से तर हो गये। युयुत्सु इन्द्रजित् ने अपने धनु से बाण छोड़े। पवित्रमूर्ति ने भी उसके सामने तेज़ी से जाकर तीव्र तथा प्रचंड युद्ध किया, जिससे लम्बी दिशाएँ काँप गयीं। धुएँ और ज्वालाओं के साथ आग सर्वत्र फैली। ३०७०

वीडण नमलनै विड्रलॆहॆळ्पोर् विडलैयै यिनियिडै विडलुळदेल्
शूडलै तुरुमलर् वाहैयॆनत् तॊळुदन नवळवि लळहनुमक्
कोडणै वरिशिलै युलहुलैयक् कुलवरै पिदिर्पड निलवरैयिल्
शेडनुम् वॆरुवुड़ वुरुमुड़ळ्तिण् तॆरुकणै मुरैमुरै शिवड्रिननाल् 3071

वीटणन्–विभीषण ने; पोर्–युद्ध में; विरल् कॊळ्–विजयशील; विटलैयै–छोकरे को; इति–अब; इटै विटल्–मध्य में छोड़ना; उळतेल्–होगा तो; तुरु–घने; वाकै मलर्–'वाहै' पुष्प की माला (जयमाला); चूटलै–नहीं पहनेंगे; ऎन–ऐसा कहकर; अमलनै–पवित्रमूर्ति को; तॊळुतनन्–नमस्कार किया; अ अळविल्–तब; अळकनुम्–सुन्दरमूर्ति ने भी; अ–उस; कोटणै–घोषयुक्त; वरि चिलैयै–सबन्ध धनु पर; उलकु उलैय–लोकों को विक्षुब्ध करते हुए; कुलवरै–कुलगिरियों को; पितिर् पट–चूर करके; निलवरैयिल्–पृथ्वी में; चेटनुम् वॆरुवुऱ–आदिशेषनाग को भय से भरकर; उरुम् उऱळ्–वज्र-सम; तिण् तॆऱु–शत्रुहंता; कणै–शर; मुरै मुरै–बारी-बारी से; चितरित्तन्–लगातार चलाये। ३०७१

विभीषण ने लक्ष्मण को समझाया कि युद्धविजयी वीर छोकरे को अबकी बार बचने देंगे तो 'वाहै' (जय-) माला पहन नहीं पायेंगे। यह कहकर विभीषण ने पवित्रमूर्ति को नमस्कार किया। तब सुन्दरमूर्ति लक्ष्मण ने भी शोर करनेवाले सबन्ध धनु से वज्र-सम कठोर निपातक शर संधानकर लोकों को क्षुब्ध करते हुए, कुलगिरियों को चूर करते हुए और भूमि ढोनेवाले शेषनाग को भय में डालते हुए छोड़े। ३०७१

आयिर वळवित्त वयित्रुमुहवा यडुहणै यवत्विड विवत्विडवत्
तीयित्तु मॅरिवत्त वुयिर्परुहच् चिदरित्त कविहळो डित्तनिरुदर्
पोयित्त पोयित्त तिशैनिरैयप् पुरळ्बवर् मुडिविलर् पॉरुतिरलोर्
एयित्त रॉरुवरै यॉरुवर्कुरित् तॅरिहणै यिरुमळै पॉऴिवत्तपोल् 3072

आयिरम् अळवित्त–हज़ार के परिमाण के; अयिल् मुक–तीक्ष्णमुखी; वाय् अटु कणै–घातक अस्त्र; अवत् विट–इन्द्रजित् के चलाने पर; इवत् विट–इनके भी छोड़ने पर; अ तीयितुम्–(युगान्त की) उस अग्नि से भी; ॲरिवत्त–अधिक जलने वाले; उयिर् परुक–प्राण पीने लगे; कविकळ्–वानर; चितऱित्त–बिखरकर; ओटित्त–भागे; निरुतर्–राक्षस; पोयित्त पोयित्त तिचै–जहाँ-जहाँ भागे उस दिशाओं में; निऱैय–भरकर; पुरळ्पवर्–जो लोटे; मुटिविलर्–उनकी संख्या का अन्त नहीं; पॊरु तिऱलोर्–युद्धवीर (दोनों) ने; ऑरुवरै ऑरुवर् कुऱित्तु–एक-दूसरे का निशाना बनाकर; इरु मऴै–दो मेघ; पॊऴिवत्त पोल्–बरसते जैसे; ॲरि कणै–ज्वालायुक्त शरों को; एयित्तर्–चलाया। ३०७२

सहस्र की संख्या के तीक्ष्णमुखी व संहारक शर इन्द्रजित् ने चलाये और लक्ष्मण ने भी प्रयोग किये। युगांत की अग्नि से भी दाहक वे दोनों ओर रहनेवाले वानरों के प्राणों को पीने (हरने) लगे तो वे बिखरकर भागे। राक्षस भी जहाँ गये, उस दिशा में भर गये। जो आग में फँसकर लोटे, वे असंख्यक थे। युद्धसमर्थ दोनों ने परस्पर लक्ष्य बनाकर बड़ी वर्षा के समान अपने ज्वाला-सहित शरों को चलाया। ३०७२

अऱ्ऱत्त वत्तल्विऴि निरुदत्वळङ् गडुहणै यिडैयिडै यडलरियित्
कॉऱ्ऱवन् विडुहणै मुडुहियव नुडल्पॊदि कुरुदिहळ् परुहित्तकॊण्
डुऱ्ऱत्त वॊऴिकिळर् कवशनुऴैन् दुरुहिल तॅरुहिल वनुमनुडल्
पुऱ्ऱिडै यरवॆत्त नुऴैयनॆडुम् बॊरुशर मवत्तवै युणर्हिलत्ताल् 3073

अत्तल् विऴि–अग्नि बरसानेवाली आँखों का; निरुतत्–राक्षस; वळङ्कु–जो चला रहा था; अटु कणै–वे घातक बाण; इटै इटै–बीच-बीच में; अऱ्ऱत्त–कट गये; अटल् अरियित्–ताक़तवर सिंह-सदृश; कॊऱ्ऱवन्–विजयी; विटु कणै–जो शर चला रहे थे वे; मुटुकि–तेज़ जाकर; अवत् उटल् पॊति–उसके शरीर में भरे रहे; कुरुतिकळ् परुकि–रक्त पीकर; कॊण्टु उऱ्ऱत्त–पीते घुसे रहे; नॆटुम्–लम्बे; पॊरु चरम्–युद्ध-शर; ऑऴि किळर्–कांतियुत; कवचम् नुऴैन्तु–(लक्ष्मण के) कवच में प्रवेश करके; उरुकिल–कुछ घुसे नहीं; तॆरुकिल–हानि नहीं की; अनुमत् उटल्–हनुमान के शरीर में; पुऱ्ऱिटै अरवु ॲत्त–बाँबी में सर्प के समान; नुऴैय–घुसे; अवत्–वह; अवै उणर्किलत्–उन्हें अनुभव ही नहीं करता था। ३०७३

अग्नि-दृष्टि इन्द्रजित् द्वारा प्रेरित संहारक शर बीच-बीच में कट गये। बलवान केसरी-तुल्य लक्ष्मण के शर तेज़ जाकर इन्द्रजित् के शरीर पर रक्त को पीते हुए लगे रहे। इन्द्रजित् के लम्बे युद्धशर उज्ज्वल कवच में घुसकर कुछ हानि नहीं कर सके। न उनके शरीर को छेद सके। पर

हनुमान के शरीर पर बिल में साँप जैसे घुसे; तो भी हनुमान ने कुछ अनुभव ही नहीं किया कि शर चुभे हैं। ३०७३

आयिडै यिळैयवन् विडमनैया नवनिडु कवशमु मळिवुपडत्
तूयिन नयिन्मुह विशिहनॆडुन् दुळैपड विळिकनल् शॊरियमुनिन्
देयिन निरुदन तॆरिहणैता मिडनिल पडुवन विडैयिडैवन्
दोयवुरु वनलदु तॆरिवुरला लुरऴिन रिमैयव रुवहैयिनाल् 3074

आयिटै–तब; इळैयवन्–लघुराज ने; विटम् अनैयात् अवन्–विषतुल्य उस (इन्द्रजित्) के; इट्टु कवचमुम्–पहने कवच को; अळिवु पट–नष्ट करके; अयिन् मुक विचिकम्–तीक्ष्णमुखी बाण; नॆटु तुळै पट–बड़े छेद बनाते हुए; वीचितन्–चलाये; विऴि–आँखों से; कनल् चॊरिय–आग उगलते हुए; मुनिन्तु–गुस्सा करके; निरुतन्–राक्षस के; तॆरि कणै–चुने बाण; एयिननताम्–जो चलाये गये वे; इटत्तु पटुवन इल–निशाने के स्थानों पर नहीं लगते; वन्तु–आकर; इटै इटै–बीच-बीच में; ओय्वु उरुवन–रुक जाते; अतु–वह; तॆरिवुरलाल्–जानकर; इमैयवर्–देवों ने; उवकैयिनाल्–संतोष से; उरऴिनर्–नारे लगाये। ३०७४

तब लघुराज लक्ष्मण ने तीक्ष्णमुखी शर चलाकर इन्द्रजित् का कवच भेदकर उसके शरीर में छेद भी बना दिये। इन्द्रजित् नाराज हुआ, जिससे उसकी आँखों से आग-सी निकली। उसने सावधानी से चुनकर अस्त्र प्रयुक्त किये, पर वे निशाने पर नहीं लगे; बल्कि बीच ही बीच रुक गये। यह देखकर देव लोग आनंदातिरेक से चिल्ला उठे। ३०७४

विल्लिनिन् वलितर लरिदॆननलाल् वॆयिलिनु मनलुमि ऴयिल्विरैविल्
शॆल्लॆन मिडल्कॊडु कडविननमर् रदुतिशै मुहन्महन् तुदवियदाल्
अल्लिनुम् वॆळिपड वॆदिर्वदुहण् डिळैयव नॆळुवहै मुनिवरर्दम्
शॊल्लिनुम् वलियदॊर् शुडुहणैयाल् नडुविरु तुणिपड वुडऴिननाल् 3075

विल्लिनिन्–धनुष से; वलि तरल्–जीतना; अरितु ऎन्नलाल्–कठिन है, इसलिए; वॆयिलिनुम्–धूप से; अनल् उमिऴ्–आग निकालनेवाले; अयिल्–शक्ति को; विरैविल् चॆल्–जल्दी चल; ऎन–कहकर; मिटल् कॊण्टु–जोर से; कटविनन्–चलाया; अतु–वह; तिचैमुकन् मकन्–ब्रह्मा का पुत्र (पुलस्त्य) द्वारा; उतवियताल्–दिया गया था, इसलिए; अल्लिनुम्–सूर्य से; वॆळि पट–प्रकाश देते हुए; ऎतिर्वतु–जो सामने आ रहा था उसे; इळैयवन् कण्टु–कनिष्ठ ने देखकर; ऎळु वकै मुनिवरर् तम्–सप्तविध ऋषियों के; चॊल्लिनुम्–शाप-वचन से भी; वलियतु–असरदार; ओर् चुटु कणैयाल्–एक दाहक शर को; नट–बीच में; इरु तुणि पट–दो भागों में तोड़ते हुए; उटऴिनन्–चलाया। ३०७५

इन्द्रजित् ने सोचा कि धनु के बल से लक्ष्मण को परास्त करना असंभव है। अतः उसने धूप से भी अधिक ज्वलंत एक शूल लिया और उसे 'चलो जल्दी' कहकर ज़ोर के साथ चलाया। वह चतुर्मुखपुत्र पुलस्त्य का दिया हुआ था। वह सूर्य से भी अधिक प्रकाश छिटकाता हुआ आ

रहा था। लक्ष्मण ने देखा और सप्तऋषियों के शाप से भी अचूक एक अस्त्र चलाकर उसे बीच से काट दिया। ३०७५

आणियि ऩिळैयवऩ् विशिहनुळ्ळैऩ् दायिर मुडलुह वळिपडुशॆम्
शोणिद निलमुऱ वुलरिडवुऩ् दॊडुहणै विडुवऩ मिडलुहॆळ्ळुतिण्
पाणिहळ् कडुहिऩ मुडुहिडलुम् पहलवऩ् मरुमह ऩडुकणैयिऩ्
तूणियै युरुमुरुळ् पहळिहळाल् तुणिपड मुऱैमुऱै शिदरिऩऩाल् 3076

आणियिऩ्–प्रपंच की धुरी के समान श्रीराम के; इळैयवऩ्–कनिष्ठ के; आयिरम् विचिकम्–हज़ार शर; उटल्–(इन्द्रजित् के) शरीर में; नुळ्ळैऩ्तु पुक–अन्दर घुसे; वळि पट–निकल बहनेवाला; चॆम् चोणितम्–लाल रक्त; निलम् उऱ–भूमि पर गिरा; उलर्ऱिटवुम्–उनका शरीर सूख-सा गया; तॊटु कणै–लगाये गये शर; विटुवऩ–छोड़नेवाले; मिटल् कॊळ्ळु–बलसंयुक्त; तिण् पाणिकळ्–कठोर हाथ; विटुवऩ–छोड़नेवाले; मिटल् कॊळ्ळु–बलसंयुक्त; तिण् पाणिकळ्–कठोर हाथ; मुटुकिटलुम्–ज़ोर लगाते रहे तो; उरुम् उऱळ्–अशनि-सम; कटुकिऩ–तीव्रगामी; पकळिकळाल्–शरों को; पकलवऩ् मरुमकऩ्–सूर्यवंशोद्भव लक्ष्मण के; अटु कणैयिऩ्–घातक शरों के; तूणियै–तूणीर को; तुणि पट–छिन्न करते हुए; मुऱै मुऱै–कई बार; चितर्ऱिऩऩ्–छितरा दिया (निरंतर, अधिक संख्या में चलाया)। ३०७६

लोक की धुरी से तुल्य श्रीराम के भाई ने सहस्र विशिख चलाये, जो राक्षस के शरीर के अन्दर घुसे। उससे लाल रक्त बहा और भूमि पर गिरा। इन्द्रजित् का शरीर सूख गया। उसके अस्त्रप्रेरक हाथ त्वरा से काम करने लगे तो उसने अशनि-सम तेज़ अस्त्रों को सूर्यवंशज के घातक अस्त्रों वालेतूणीर को बार-बार काटते हुए मानो छितरा दिया। ३०७६

तेरुळ वॆऩ्ऩिवऩ् वलितॊलैया दॆऩ्ऩुमदु तॆरिवुऱ वुणरुरुवाऩ्
पोरुऱु पुरविहळ् पडुहिलवाल् पुऩैपिणि तुणिहिल पॊरुहणैयाल्
शोरिदु वॆरिदिद ऩिलैमैयॆऩत् तॆरिबव ऩॊरुशुडु तॆऱुकणैयाल्
शारदि मलैपुरै तलैयॆऩॆडुऩ् दरैयिडै यिडुदलुम् निलैतिरिय 3077

तेर् उळतु ऎऩ्ऩिऩ्–रथ रहेगा तो; इवऩ् वलि तॊलैयातु–यह निर्बल नहीं होगा; ऎऩ्ऩुम् अतु–जो था वह (तथ्य); तॆरिवुऱ–साफ़; उणर्वु उऱुवाऩ्–समझनेवाले (लक्ष्मण) के; पॊरु कणैयाल्–युद्ध-शर से; पोर् उऱु–युद्धरत; पुरविकळ्–अश्व; पटुकिल–नहीं मरते; पुऩै–बद्ध; पिणि–बंधन; तुणिकिल–नहीं कटते; इतु चोरितु–यह विशेष बात है; इतऩ् निलैमै वॆरितु–इसकी स्थिति गुरु है; ऎऩ तॆरिपवऩ्–यह जानकर; चुटु–जलानेवाले; ऒरु तॆऱु कणैयाल्–एक घातक अस्त्र से; चारति–सारथी के; मलै पुरै तलैयै–पर्वतोपम सिर को; निलै तिरिय–स्थिति बदलते हुए; नॆटुम् तरैयिटै–लम्बी पृथ्वी पर; इटुतलुम्–गिराते समय। ३०७७

इन्द्रजित् का रथ जब तक रहेगा तब तक वह निर्बल नहीं होगा। यह बात लक्ष्मण ने समझ ली। "मेरे अस्त्रों से इसके अश्व नहीं मरते; बल्कि उसके ऊपर बँधी रस्सियाँ आदि कटती भी नहीं। यह विशेष बात

लगती है। इसका अर्थ भी बड़ा गंभीर है।" उन्होंने ऐसा सोचकर एक बहुत ही प्रभावशाली अस्त्र से सारथी के पर्वत-सम सिर को अपने स्थान से अलग करके लम्बी भूमि पर गिरा दिया। ३०७७

उय्वित्तै यॉरुवन् तूण्डा दुलत्तलिऱ् ऱवत्तै नण्णि
ऐवित्तै नलिय नेवा ऩऱिविऱ्कु मुवमै याहि
मॅय्वित्तै यमैन्द कामम् विऱ्किन्ऱ विरहिऱ् ऱोराम्
पॉय्वित्तै महळिर् कऱ्पुम् बोन्ऱदप् पॊलम्बॊऱ् ऱिण्तेर् 3078

अ पॊलम् पॊऩ् तिण् तेर्—वह सुन्दर स्वर्ण-रथ; तवत्तै नण्णि—तपस्या में लगकर; ऐवित्तै नलिय—पंचेंद्रिय-कर्म के क्षय होने को; उय्वित्तै—उचित कर्म करवानेवाले (आचार्य); ऒरुवन्—एक के; तूण्टातु—प्रेरित न करते; उलत्तलित्—मर जाने पर; अऱिविऱ्कुम्—बुद्धि के लिए; उवमै आकि—दृष्टान्त बनकर; मॅय्वित्तै अमैन्त कामम्—शरीर-कर्म पर अवलंबित काम को; विऱ्कितऱ्—बेचने का; विरकिऱ्ऱोर् आम्—उपाय जिनके पास है उन; पॉय्वित्तै मकळिर्—झूठे काम करनेवाली स्त्रियों के; कऱ्पुम् पोऩ्ऱतु—चरित्र के समान रहा। ३०७८

तब वह सुदृढ़ स्वर्ण-रथ उस शिष्य की बुद्धि की-सी स्थिति में आ गया, जिसके गुरु तपस्या करके पंचेंद्रिय-निग्रह करने के मार्ग में चलाये विना मर गये हों। और भी शरीर पर अवलंबित काम को बेचने के उपाय को अपनाकर असत्य कार्य करनेवाली वेश्या की-सी स्थिति उसकी रह गयी। ३०७८

तुळ्ळुपाय् पुरवित् तेरुम् मुऱैमुऱै ताऩे तूण्डि
अळ्ळिनन् पऱिक्कुन् दऩ्बे राहमे याव माह
वळ्ळऩ्मे लनुमन् ऱऩ्मेऱ् मऱ्ऱैयोर् मऱ्ऱिण् डोण्मेल्
उळ्ळुऱप् पहळि तूवि यार्त्तऩ ऩॅवरु मुट्क 3079

तुळ्ळु—छलाँग मारकर; पाय्—सरपट दौड़नेवाले; पुरवि—अश्वों से जुते; तेरुम्—रथ को; ताऩे—स्वयं; मुऱै मुऱै तूण्टि—बारी-बारी से प्रेरित करके; तऩ् पेर् आकमे—अपने बड़े शरीर को ही; अळ्ळिनऩ्—उठाकर; पऱिक्कुम्—नोच जिससे अस्त्र लिये जाते हैं; आवमाक—तूणीर बनाकर; ऍवरुम् उट्क—सबको भयभीत करते हुए; वळ्ळल् मेल्—उदार प्रभु पर और; अनुमऩ् तऩ् मेल्—हनुमान पर; मऱ्ऱै योर्—अन्यों के; मल् तिण् तोळ् मेल्—सशक्त कठोर कंधों पर; उळ् उऱ—अन्दर घुस भी जायें ऐसा; पकळि तूवि—शर चलाकर; आर्त्तऩऩ्—उच्च घोष किया। ३०७९

इन्द्रजित् ने स्वयं उस रथ को, जिसे छलाँग मारनेवाले और सरपट दौड़नेवाले अश्व खींच रहे थे, बार-बार प्रेरित करता और अपने ही शरीर को तूणीर बनाकर उससे उठाकर शरों को चलाता हुआ प्रभु लक्ष्मण पर, हनुमान पर और अन्य वीरों के कंधों पर शर चलाये। वे उनके शरीर में घुसे। सभी इसे देखकर भयभीत हुए। तब इन्द्रजित् ने उच्च हर्ष-नाद किया। ३०७९

वीररॆंन् बार्हट् कॆल्लाम् मुन्निर्कुम् वीरर् वीरन्
पेररॆंन् बार्ह ळाहुम् बॆंर्रियिऱ् पॆंर्रित् तामे
शूररॆंन् उरॆक्कर् पालार् तुञ्जुम्बो दुणर्विर् चोरात्
तीररॆंन् ऱमरर् पेशिच् चिन्दिनर् बॆंय्वप् पोंऱ्पू 3080

वीरन् ऍन्पार्कटकु ऍल्लाम्–वीर कहलानेवाले सभी लोगों में; मुन् निऱ्कुम् वीरर् वीरन्–अग्रस्थ वीर; पेरर् ऍन्पार्कळ्–नामी कहलानेवालों के; आकुम् पॆंऱ्ऱियिल्–पास जो है उस रीति के; पॆंऱ्ऱित्तु आमो–गुण का है क्या; तुञ्चुम् पोतु–मरते समय भी; उणर्विल् चोरा–वीरता के भाव में अप्रमत्त; तीरर्–धीर; चूरर्–शूर; ऍन्ऱु–ऐसा; उरॆक्कऱ्पालर्–कहलाने योग्य हैं; ऍन्ऱु–ऐसा; अमरर् पेचि–देवों ने बोलते हुए; तॆय्वम् पॊन् पू–दिव्य स्वर्ण-सुमन; चिन्तितार्–बरसाये। ३०८०

"वीरों में अग्रगण्य वीर है। नामी वीरों की वीरता भी इसकी वीरता (सी) हो सकती है क्या? मरते दम भी वीरता में न घटनेवाला धीर और शूर है।" ऐसा बोलते हुए देवों ने उस पर दिव्य तथा स्वर्णपुष्प बरसाये। ३०८०

ऍय्दवन् पहळि यॆल्लाम् बऱ्ऱित्तिव नॆन्मे लॆय्युम्
कॆतडु माऱा दुळ्ळ मुयिरिनुङ् गलङ्गा दियाक्कै
मॊय्हणै कोडि कोडि मॊय्क्कव मिळैप्पॊन् ऱिल्लान्
ऐयनु मिवनो डॆञ्जु माण्डॊळि लाऱ्ऱ लॆन्ऱान् 3081

ऐयनुम्–प्रभु लक्ष्मण ने भी; ऍय्त–मैंने जो चलाये; वन् पकळि ऍल्लाम्–उन सारे कठोर शरों को; इवन्–यह; पऱ्ऱित्तु–खींच लेकर; ऍन् मेल्–मुझ पर; ऍय्युम्–प्रयोग करता है; कै तटुमाऱातु–हाथ नहीं लड़खड़ाता; उळ्ळम्–मन; उयिरिनुम्–जीव के ही समान; कलङ्कातु–व्यग्र नहीं होता; याक्कै–शरीर पर; मॊय् कणै–भरे शर; कोटि कोटि–कोटि-कोटि; मॊय्क्कवुम्–चुभे रहते हैं; इळैप्पु ऒन्ऱु इल्लान्–थकावट नाम की भी नहीं रखता; आण् तॊळिल्–पौरुष की; आऱ्ऱल्–वीरता; इवनोटु ऍञ्चुम्–इसके साथ समाप्त हो जायगी; ऍन्ऱान्–कहा। ३०८१

प्रभु लक्ष्मण को विस्मय हुआ। "मैं जो कठोर अस्त्र चलाता हूँ, उन्हीं को अपने शरीर से छीन लेकर यह मुझ पर चला देता है। उसके हाथ विचलित नहीं होते; मन में बेचैनी नहीं। जीव में अस्थिरता नहीं। शरीर पर कोटि-कोटि अस्त्र चभे हुए लगे रहते हैं। तो भी थकावट का नाम नहीं। पुरुषोचित वीरता की हस्ती आज इसके साथ समाप्त हो जायगी।"। ३०८१

तेरिनैक् कडावि विण्मेर् चॆल्लिननुन् जॆल्लुञ् जॆय्युम्
वोरितैक् कडनवु मायम् पुणर्क्किनम् बुणर्क्कुम् बोयक्

कारिऩैक् कडन्दु वञ्जङ् गरुदिनुङ् गरुदुम् गाण्डि
वीरमॆय्प् पहलि ऩल्लाल् विळिहिल तिरुळित् वॆय्योऩ् 3082

वीर–वीर; तेरिऩै कटावि–रथ को चलाकर; विण् मेल्–आकाश में; चॆल्लिऩुम्–जाए भी; चॆल्लुम्–जायगा; चॆय्युम् पोरिऩै–जो कर रहा है उस युद्ध को; कटन्तु–छोड़कर; मायम् पुणर्क्किऩुम्–माया-कार्य करे तो; पोय् पुणर्क्कुम्–जाकर कर सकता है; अ कारिऩै कटन्तु–उन मेघों को पार कर; वञ्चम् करुतिऩुम्–वंचना करने का विचार करे तो; करुतुम्–विचार कर सकता है; काण्टि–देखें; वॆय्योऩ्–क्रूर; पकलिऩ् अल्लाल्–दिन में नहीं तो; इरुळिऩ्–अन्धकार में; विळिकिलऩ्–नहीं मरेगा; मॆय्–यह सच है। ३०८२

विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि हे वीर ! रथ को प्रेरित करके यह आकाश में चला भी जायगा, या युद्ध छोड़कर माया में लग भी सकता है। मेघों के पार जाकर वंचना करने की भी संभावना है। देखें। क्रूर वह दिन में ही मारा जा सकता है। अन्धकार में वह नहीं मरेगा। यह सत्य है। ३०८२

ऎऩ्ऱुरैत् तिलङ्गै वेन्द ऩिळैयवर्क् कियम्ब विऩ्ऱे
पोऩ्ऱुव दल्ला लप्पा लिऩियोरु पोक्कु मुण्डो
शॆऩ्ऱुऴिच् चॆल्लु मऩ्ऱे ऩॆरुकणै वलियिल् तीरऩ्दाऩ्
वॆऩ्ऱियिप् पोदे कोडुङ् गाणॆऩ विळम्बु मॆल्लै 3083

इलङ्कै वेन्तऩ्–लंका के राजा विभीषण के; इळैयवर्कु–लघुराज के पास; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उरैत्तु इयम्प–समझा कर कहने पर; इऩ्ऱे–आज ही; पोऩ्ऱुवतु अल्लाल्–मरना छोड़; अप्पाल्–बाद; इऩि ओरु पोक्कुम् उण्टो–अब कोई गति है क्या; ऎऩ् करुकणै–संहारक शर; वलियिल् तीरऩ्ताऩ्–कमजोर(हुआ)इन्द्रजित्; चॆऩ्ऱुऴि–जहाँ-जहाँ जाय वहाँ; चॆल्लुम् अऩ्ऱे–जायगा न; इप्पोते–अभी; वॆऩ्ऱि कोटुम्–विजय पायेंगे; काण्–देखो; ऎऩ–ऐसा; विळम्पुम् ऎल्लै–जब कहा तब। ३०८३

लंका के राजा विभीषण के लघुराज लक्ष्मण से यह कहने पर लक्ष्मण ने आश्वासन दिया "कि आज ही मरेगा। उसे छोड़ दूसरी कोई गति नहीं। मेरा संहारक बाण, वह जहाँ भी जाए, वहाँ जायगा न ? आज ही हम जीत पायेंगे। देख लो।" वे यह कह ही रहे थे कि— । ३०८३

शॆम्बुनर् चोरिच् चॆक्कर् तिशैयुरच् चेर लालुम्
अम्बॆऩ वुर्र कॊर्रत् तायिरङ् गदिर्ह ळालुम्
वॆम्बुपोर् प्पेरिर् रोऩ्ऱुञ् जिरुप्पिऩ् मरक्कऩ् वॆय्योऩ्
उम्बरिर् चॆऩ्ऱा ऩोडोत् तुवित्तऩ ऩरुक्क ऩुप्पाल् 3084

उप्पाल्–उधर; अरुक्कऩ्–सूर्य; चॆम् पुतल् चोरि–लाल रक्त के समान; चॆक्कर् तिचै उर–लाल गगन में; चेरलालुम्–गया, इसलिए और; अम्पॆऩ उर्र–शर-समान बने; कॊर्रम्–विजयी; आयिरम् कतिर्कळालुम्–हजार किरणों से;

वॅम्पु-तपते; पोत् तेरिल्-स्वर्ण-रथ पर; तोन्ऱुम् चिऱप्पिनुम्-प्रगट होने की विशिष्टता से; अरक्कन् वॅय्योन्-राक्षस दुष्ट; उम्परिन् चॅन्ऱातोटु ऒत्तु-आकाश में जो गया उससे तुल्य होकर; उतित्तनन्-उदित हुआ। ३०८४

उधर सूर्य इन्द्रजित् के शरीर से निकल बहनेवाले लाल रक्त की तरह लाली-सी भरे (पूर्वी) आकाश में निम्नोक्त समानता से दुष्ट इन्द्रजित् के ही समान उदित हुआ। उसकी हर किरण इन्द्रजित् पर लगे अस्त्र की समानता करती थी। इन्द्रजित् स्वर्णरथ पर सवार था और सूर्य भी गरम अपने रथ पर सवार था। ३०८४

विडिन्ददु पॊऴुदुम् वॅय्योन् विळङ्गिन उलह मीदा
विडुञ्जुडर् विळक्क मॅन्न वरक्करि तिरुळुम् वीयक्
कॊडुञ्जिन सायच् चॅय्है वलियॊडुङ् गुऱैन्दु कुन्ऱ
मुडिन्दन ररक्क रॅन्ना मुऴङ्गिन रुम्बर् मुऱ्ऱुम् 3085

उम्पर् मुऱ्ऱुम्-सभी देव; पॊऴुतुम् विटिन्ततु-सवेरा हो गया; चुटर् विटुम् विळक्कम् ऎन्न-प्रकाश देनेवाले दीप के समान; अरक्करित् इरुळुम्-राक्षस रूपी अन्धकार को भी; वीय-मिटाने; वॅय्योन्-उष्णकिरण; उलकम् मीता-संसार के ऊपर; विळङ्कितन्-शोभता है; कॊटुञ् चिन-निर्मम क्रोध से बनी; माय चॅय्कै-माया के कृत्य; वलियॊटुम्-उनके बल के साथ; कुऱैन्तु कुन्ऱ-कम होकर छीज जायँगे; अरक्कर्-और राक्षस; मुटिन्तनर्-मिटे; ऎन्ना-ऐसा; मुऴङ्कितर्-उच्च स्वर में बोले। ३०८५

आकाश भर में देव मुदित हो गये। "सवेरा हो गया। प्रकाश-प्रसारक दीप के समान, राक्षस रूपी अन्धकार को दूर करने के निमित्त उष्ण-किरण पृथ्वी के ऊपर प्रकट हुआ है। अत्यन्त क्रोधी मायाकारी राक्षसों के मायाकृत्य उनके ही बल के साथ छीज जायँगे। राक्षस भी मर गये, समझो।" यह कहकर उन्होंने आनंदनाद किया। ३०८५

आरऴि याद शूलत् तण्णलुदन् नरुळि नीन्द
तेरऴि याद पोदुञ् जिलैकरत् तिरुन्द पोदुम्
पोरऴि यानिव् वॅय्योन् पुहऴऴि याद पोर्ऱोळ्
वीरवि दाणै यॅन्ऱान् वीडणन् विळैव दोर्वान् 3086

पुकऴ् अऴियात-अयशमुक्त; पोत् तोळ् वीर-मनोरम भुजा वाले वीर; इ वॅय्योन्-यह निर्मम; आर् अऴियात-जिसके नोक की तीक्ष्णता कभी दूर नहीं हो; चूलत्तु अण्णल्-उस शूल के रखनेवाले भगवान ने; तन् अरुळिन् ईन्त-अपनी कृपा से जो दिया; तेर्-वह रथ; अऴियात पोतुम्-जब नष्ट न होगा तब; करत्तु-हाथ में; चिलै-धनु; इरुन्त पोतुम्-जब रहता तब; पोर् अऴियान्-युद्ध में नहीं मरेगा; इतु आणै-यह विधि है; विळैवतु ओर्वान्-भावी को समझनेवाले; वीटणन्-विभीषण ने; ऎन्ऱान्-कहा। ३०८६

तब भविष्यदर्शी विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि अक्षय यश के मनोरम भुजावाले वीर ! इन्द्रजित् का रथ अमिट तीक्ष्णता से युक्त शूल के धारक शिवजी का कृपा के साथ दिया हुआ है। जब तक वह नहीं टटता और जब तक इसके हाथ में धनु है, तब तक युद्ध में वह नहीं मरेगा। यह विधि है ! । ३०८६

पच्चैवॆम् बुरवि वीया पल्लियच् चिल्लि पारित्
निच्चय मऱ्ऱु नीङ्गा वॆऩ्बदु निऩैन्दु विल्लिऩ्
विच्चैयिऩ् कणव ऩाऩाऩ् विऩ्मैयाल् वयिर मिट्ट
अच्चिऩो डाऴि वॆव्वे ऱाक्किऩा ऩाणि नीक्कि 3087

विल्लिऩ् विच्चैयिऩ्–धनुर्विद्या के; कणवऩाऩाऩ्–जो नायक थे वे; पच्चै–हरे; वॆम् पुरवि–क्रूर अश्व; वीया–नहीं मरेंगे; पल्लियच् चिल्लि–अनेक विध शब्द करनेवाले चक्र; पारिऩ्–भूमि पर; अऱ्ऱु–मिटकर; निच्चयम् नीङ्का–जरूर ही दूर नहीं होंगे; ऍऩ्पतु निऩैन्तु–यह सोचकर; विऩ्मैयाल्–धनुसामर्थ्य से; आणि नीक्कि–कीलों को अलग करके; वयिरम् इट्ट–हीरे वाले काठ की बनी; अच्चिऩोटु–धुरी के साथ; आऴि–चक्रों को; वॆव्वेऱु आक्किऩाऩ्–अलग-अलग कर दिया। ३०८७

धनुर्विद्या के नायक लक्ष्मण ने विचार किया। इसके रथ के हरे रंग के भयानक अश्व नहीं मरेंगे। विविध स्वरकारी पहिये भूमि पर निश्चय ही नहीं मिटेंगे। इसलिए उन्होंने अपनी धनुर्विद्याविदग्धता से कीलों को अलग किया। फिर हीरे के (बहुत पक्के) काठ की बनी धुरी से पहियों को अलग कर दिया। ३०८७

मणिनॆडुन् देरिऩ् गट्टु विट्टदु मऱिव लोडुम्
अणिनॆडुम् बुरवि यॆल्ला माऱ्ऱल वाऩ वऩ्ऱे
तिणिनॆडु मरमॊऩ् ऱाऴि वाण्मऴुत् ताक्कच् चिऩ्दिप्
पणैनॆडु मुदलु नीङ्गप् पाङ्गुरुम् बऱवै पोल 3088

मणि–रत्नजड़ित; नॆटु तेरिऩ्–ऊँचे रथ के; कट्टु विट्टु–सन्धि-बन्धन टूटे; अतु–वह; मऱितलोटुम्–ऊपर-नीचा हो गया; अणि नॆटुम्–सुन्दर बड़े; पुरवि–अश्व; ऍल्लाम्–सारे; तिणि–सारयुक्त; नॆटुम् मरम् ऒऩ्ऱु–लम्बा एक पेड़; आऴि–चक्र; वाळ्–तलवार; मऴु–परशु; ताक्क–(इनके) प्रहार से; चिन्ति–टूटकर; नॆटु पणै–लम्बी शाखाएँ; मुतलुम्–तना; नीङ्क–अलग-अलग हो जाने पर; पाङ्कु उऱुम्–बाहर जानेवाले; पऱवै पोल–पक्षियों के समान; आऱ्ऱल आऩ–शक्तिहीन बन गये। ३०८८

रत्नजड़ित रथ के संधिबंधन टूट गये। वह औंधा गिर गया। उससे जुते मनोहर अश्व उन पक्षियों के समान बलहीन हो गये जो किसी पेड़ के चक्र-सम तीक्ष्ण परशु के द्वारा तने और लम्बी शाखाओं के काटे जाने पर इधर-उधर उड़ जाते हैं। ३०८८

अऴिन्दतेर्त् तट्टि लितृरु मङ्गुळ्ळ पडैह ळळिप्
पॉऴिन्ददत निळैय वीरन् कणैहळाल् तुणित्तुप् पोक्क
मॉऴिन्ददो रळविन् विण्णै मुट्टिना नुलह मूनुरुम्
किऴिन्ददत वन्न वार्त्तान् कण्डिल रोशै केट्टार् 3089

अऴिन्त तेर्–टूटे रथ के; तट्टितितृरुम्–पीठ से; अङ्कु उळ्ळ पटैकळ्–वहाँ रहे हथियारों को; अळिि–उठाकर; पॉऴिन्ततत्–बरसाया; इळैय वीरन्–छोटे वीर ने; कणैकळाल्–अपने शरों से; तुणित्तु पोक्क–काटकर मिटाया; मॉऴिन्ततु–कहने भर की; ओर् अळविल्–देरी में; विण्णै मुट्टितान्–(इन्द्रजित्) आकाश को पहुँच गया; उलकम् मूनुरुम्–तीनों लोक; किऴिन्तत अन्न–दरार खा गये हों, ऐसा; आर्त्तान्–नाद उठाया; कण्टिलर्–कोई देख नहीं पाये; ओचै केट्टार्–ध्वनि सुनी। ३०८९

टूटे रथ के आसन पर ही से इन्द्रजित् ने वहाँ रहे सभी हथियारों को लेकर प्रेरित किया। लघुराज लक्ष्मण ने उन्हें काटकर दूर कर दिया। तब एक शब्द कहने की देर के अंदर इन्द्रजित् आकाश में उड़ गया। वहाँ से ऐसा उच्च नाद किया, जिससे मानो तीनों लोक चिर गये। किसी ने यह नहीं देखा कि वह था कहाँ ? पर सबने उसका स्वन सुना। ३०८९

मल्लिन्मा मारि यन्न तोळिनान् मळैयिन् वायन्द
कल्लिन्मा मारि पॅट्रु वरत्तिनाड् चॉरियुङ् गालैच्
चॅल्लुवान् रिशैह ळोरार् शिरत्तिनो डुडल्हळ् शिन्दप्
पुल्लिनार् निलत्तै निन्ड्र वानर वीरर् पोहार् 3090

मा मारि अन्न–काले मेघ के समान; मल्लिन् तोळिनान्–सशक्त कंधों वाले ने; पॅट्र वरत्तिनाल्–प्राप्त वर से; मळैयित् वाय्न्त–वर्षा के समान बनी; कल्लिन् मा मारि–पत्थर की वर्षा; चॉरियुम् काले–जब करायी तब; निन्ऱ वानर वीरर्–जो खड़े रहे वे वानर वीर; पोकार्–नहीं हटे; चॅल्लुवान्–भागने के विचार से; तिचैकळ् ओरार्–दिशाएँ नहीं जानते; चिरत्तिनोटु–सिरों के साथ; उटल्कळ् चिन्त–शरीरों के छिन्न होते; निलत्तै पुल्लिनार्–भूमि से लगे। ३०९०

बड़े काले मेघ के समान सशक्त भुजा वाले इन्द्रजित् ने वरमहिमा से पत्थर की महा वर्षा करा दी। तब वानर कहीं भाग नहीं पाये। भागने को दिशा की ओर देख भी नहीं सके। उनके सिर और शरीर कटे और वे भूमि के क्रोड में आ गये। ३०९०

काण्गिलन् कल्लिन् मारि यल्लदु काळै वीरन्
शेण्गलन् दॉळित्तु निन्ड्र शॅयलिनैत् तॅळिन्दु नोक्कि
माण्गलन् दळन्द मायन् वडिवॅन मुळुदुन् दीव
एण्गलन् दमैन्द वाळि येविना निडै विडामल् 3091

काळै वीरन्–ऋषभ-सम वीर; कल्लिन् मारि अल्लतु–प्रस्तर-वर्षा के अलावा;

काण्किलतृ–नहीं देखते; चेण् कलनतु–आकाश में मिलकर; ऑळितु निन्ड्र–ओझल रहने का; चॅयलिनै–काम; तॅळिन्तु नोक्कि–साफ़ देखकर; माण् कलनतु–गौरव के साथ; अळन्त मायन्–अनंत मायावी (विष्णु) के; वटिवु ऍन्न–श्रीशरीर के समान; मुळुतुम् वीव–प्रपञ्च भर को ग्रसने; ऑण् कलनतु–बल से युक्त; अमैन्त वाळि–वने बाणों को; इटै विटामल्–निरन्तर; एविनान्–चलाया। ३०९१

ऋषभ-सम वीर लक्ष्मण ने प्रस्तरवर्षा देखी और कुछ नहीं देखा। आकाश में इन्द्रजित् छिपा रहता है, वह बात उन्हें विदित थी। तब महान त्रिविक्रम भगवान के शरीर के समान प्रपंच भर को ग्रस सकनेवाले सशक्त शरों को लक्ष्मण निरंतर चलाने लगे। ३०९१

मरैन्दन तिशैह ळॅङ्गुम् मायप्पोय् मलैयु माऱ्ऱल्
कुरैन्दन निरुण्ड मेहक् कुळात्तिडैक् कुरुदिक् कॊण्मू
उरैन्दुळ दॆन्न निन्ऱा नुरुविनै युलह मॆल्लाम्
निरैन्दवन् कण्डान् काणा विनैयदोर् निनैव दानान् 3092

तिचैकळ् ऍङ्कुम्–सारी दिशाएँ; मरैन्तन–छिप गयीं; मायम् पोय्–माया में जाकर; मलैयुम् आऱ्ऱल्–(छिपकर) लड़ने की शक्ति में; कुरैन्ततन्–कम हो गया; इरुण्ट मेकम् कुळात्तिटै–काले मेघसमूहमध्य; कुरुतिक् कॊण्मू–एक रक्त का मेघ; उरैन्तुळतु ऍन्न–रहता हो जैसे; निन्ऱान्–जो रहा उस (इन्द्रजित्) को; उलकम् ऍल्लाम् निरैन्तवन्–लोकव्यापी लक्ष्मण ने; उरुविनै कण्टान्–उसके रूप को देखा; काणा–देखकर; इनैयतु–यों; ओर् निनैवतु आनान्–एक (बात) सोचने लगे। ३०९२

उन शरों से सारी दिशाएँ छिप गयीं। मायागुप्त इन्द्रजित् की युद्ध-शक्ति क्षीण हुई। वह काले मेघसमूहमध्य रक्त के मेघ के समान खड़ा रहा। उसे सर्वव्यापी भगवान (के रूप) लक्ष्मण ने देखकर यों सोचा। ३०९२

शिलैयऱा दॆनिनु मऱ्ऱत् तिण्णियोन् ऱिरण्ड तोळाम्
मलैयऱा दॊळिया दॆन्ना वरिशिलै यॊन्ऱु वाङ्गिक्
कलैयऱात् तिङ्ग ळन्न वाळियाऱ् कैयैक् कॊय्दान्
विलैयऱा मणिपूण् णोडुम् विल्लॊडुम् निलत्तु वीळ 3093

चिलै अऱातु ऍनितुम्–धनु कटेगा नहीं तो भी; अ तिण्णियोऩ्–उस बलशाली के; तिरण्ट तोळ् आम् मलै–पुष्ट कंधों रूपी पर्वत; अऱातु ऑळियातु–विना टूटे नहीं बचेंगे; ऍन्ना–सोचकर; वरि चिलै–सबन्ध धनु; ऑन्ऱु–अनुपम; वाङ्कि–झुकाकर; कलै अऱा–कला जिसकी नहीं कटी हो उस; तिङ्कळ् अन्न–अर्ध-चन्द्र-सम; वाळियाल्–अस्त्र से; विलै अऱा–अमूल्य; मणि पूणोटुम्–रत्नाभरणों के साथ; विल्लॊटुम्–धनु के साथ; निलत्तु वीळ–भूमि पर गिराकर; कैयै कॊय्तान्–हाथ को काट दिया। ३०९३

धनु कटे नहीं तो भी इन्द्रजित् के पुष्ट कंधे विना कटे नहीं रहेंगे।

यह कहते हुए उन्होंने अपने अनुपम धनु को झुकाकर अर्धचन्द्र अस्त्र चलाया और अनमोल रत्ना भरणों और धनु के साथ हाथ को काटकर गिरा दिया। ३०९३

पाहवात् पिऱैपोल् वॆव्वाय्च् चुडुहणै पडुद लोडुम्
वेहवान् कडुङ्गा लॆऱ्ऱ मुऱ्ऱुम्बोय् विळिन्द नाळिल्
माहवात् ऱडक्कै मण्मेल् विळुन्ददु मणिप्पूण् मिन्न
मेहमा हायत् तिट्ट विल्लॊडुम् वीळ्न्द दॆन्न 3094

मुऱ्ऱुम्-लोक सभी; पोय् विळिन्त नाळिल्-जब मिट जावें उस दिन; वान्-आकाश में; वेकम्-सवेग; कटुम् काल्-प्रचण्ड पवन के; ऎऱ्ऱ-झोंके देने पर; मेकम्-एक मेघ; आकायत्तु इट्ट-आकाश में बने; विल्लॊटुम्-(इन्द्र-) धनुष के साथ; वीळ्न्ततु ऎन्न-गिरा हो जैसे; वान्-गौरवपूर्ण; पाक-अर्ध; पिऱै पोल्-चन्द्र के समान; वॆम् वाय्-क्रूर नोक से; चुटु कणै-संतापक बाण; पटतलॊटुम्-लगा तो तुरंत; माकम्-आकाश से; वान्-बड़ा; तटम् कै-विशाल हाथ; मणि पूण् मिन्न-रत्नाभरणों की चमक के साथ; मण् मेल्-भूमि पर; विळुन्ततु-गिरा। ३०९४

युगांतकालीन प्रखर प्रभंजन के झोंके से मेघ इन्द्रधनुष के साथ कटकर गिरता हो जैसे इन्द्रजित् का हाथ मान्य तथा दाहक अर्धचन्द्र बाण के लगने से आकाश से रत्नाभरणों की चमक के साथ धरती पर गिर गया। ३०९४

पडित्तलम् जुमन्द नाहम् पाहवान् पिऱैयैप् पऱ्ऱिक्
कडित्तदु पोलक् कोल विरल्हळा लिऱुहक् कट्टिप्
पिडित्तवॆञ् जिलैयि लॊडुम् पेरॆळिल् वीरन् पॊऱ्ऱोळ्
तुडित्तदु मरमुङ् गल्लुन् दुहळ्पडक् कुरङ्गुन् दुञ्ज 3095

पटि तलम्-भूतल को; चुमन्त नाकम्-ढोनेवाले नाग ने; वान्-आकाश के; पाक-अर्ध; पिऱैयै पऱ्ऱि-चन्द्र को पकड़कर; कटित्तु पोल-काटा हो जैसे; कोल विरल्कळाल्-सुन्दर हाथों से; इऱुक कट्टिप् पिटित्त-खूब कसकर पकड़े गये; वॆम् चिलैयितॊटुम्-भयंकर धनु के साथ; पेर् ऎळिल् वीरन्-बहुत ही सुन्दर वीर; पॊन् तोळ्-मनोरम कंधे; मरमुम् कल्लुम्-तरुओं और पत्थरों को; तुकळ् पट-चूर करते हुए; कुरङ्कुम् तुञ्च-वानरों को भी मारते हुए; तुटित्ततु-तड़पे। ३०९५

भूभारवाही नाग अर्धचंद्र को ग्रस रहा हो, ऐसा इन्द्रजित् का हाथ अपनी सुन्दर उँगलियों से जिस भयंकर धनु को पकड़ रहा था, उसके साथ नीचे गिरा और तड़पने लगा, तो तरु और पत्थर चूर हुए और वानर मरे। ३०९५

अन्दर मदनि निन्ऱ वानव रुक्कल् वीळ्च्
चन्दिरन् वीळ मेरु माल्वरै तहर्न्दु वीळ

इन्दिर शित्तिन् पॊऱ्ऱो ळिऱ्ऱिडै विळुन्द वॆन्ऱाल्
ॲन्दिर मनैय वाळ्क्क यिनिच्चिल रुहन्दॆ नॆन्ऱार् 3096

अन्तरम् अततित् नित्र–आकाश में स्थित; वानवर्–व्योमलोकवासी; अरुक्कन् वीळ–सूर्य गिरे; चन्तिरन् वीळ–चन्द्र गिरे; मेरु माल् वरै–मेरु का बड़ा पर्वत; तकर्न्तु वीळ–टूटकर गिरे; इन्तिरचित्तिन्–(ऐसा) इन्द्रजित् की; पोन् तोळ–सुन्दर भुजा; इटै इऱ्ऱु–बीच से कटकर; विळुन्तनु ऎन्ऱाल्–गिर गया तो; इनि–अब; चिलर्–कुछ लोग; ऎन्तिरम् अनैय वाळ्क्कै–यन्त्र-सम जीवन; उकन्ततु–चाहें; ऎन्–क्यों; ऎन्ऱार्–कहा। ३०९६

आकाश में स्थित व्योमवासियों ने कहा कि सूर्य, चन्द्र व मेरुपर्वत को भी गिराते हुए इन्द्रजित् की मनोरम भुजा बीच से कटकर गिर गयी! इसके वाद भी कुछ लोग यंत्रचालित-सा जीवन जीना चाहें क्यों ? । ३०९६

मॊय्यऱ मूर्त्ति यन्न मॊय्म्बिना नम्बि नालप्
पॊय्यऱच् चिरिदॆन् ऱॆण्णुम् बॆरुमैयाल् पुदल्वन् पूत्त
मैयऱक् करिदॆन् ऱॆण्ण मनत्तिनान् वयिर मन्न
कैयऱत् तलैयऱ् ऱार्पोऱ् कलङ्गिनार् निरुदर् कण्डार् 3097

मॊय्–साकार; अऱमूर्त्ति अन्न–धर्मदेवता-सम; मॊय्म्पिनान्–बलवान (लक्ष्मण) के; अम्पिनाल्–अस्त्र से; पॊय्–असत्य को; अऱ चिऱितु–अतिनिर्बल; ऎन्ऱु ऎण्णुम्–ऐसा समझनेवाले; अ पॆरुमैयान् पुतल्वन्–उस महिमावान का पुत्र; पूत्त–सुन्दर; मै–अंजन; अऱ करितु–बहुत कम काला है; ऎन्ऱु ऎण्णुम्–ऐसा सोचने देनेवाले काले; मनत्तिनान्–मन वाला; वयिरम् अन्न–वज्र-सम; कै अऱ–कटे हाथ का हुआ तो; कण्टार् निरुतर्–देखा तो राक्षस; तलै अऱ्ऱार् पोल्–स्वयं कटे सिर के हो गये हों, ऐसा; कलङ्किनार्–व्याकुल हुए। ३०९७

साकार धर्मदेवता के समान बलवान लक्ष्मण के अस्त्र से असत्य को क्षुद्र बली समझनेवाले महिमावान रावण के पुत्र, अंजन को भी रंग में हरानेवाले काले मन के इन्द्रजित् की वज्र-सम भुजा कटी तो राक्षस देखकर ऐसा क्षुब्ध हुए मानो उनके सिर ही कट गये हों। ३०९७

अन्नदु निहळुम् वेलै यार्त्तॆळुन् दरियिन् वॆळ्ळम्
मिन्नॆयिऱ् ऱरक्कर् शेनै यावरुम् मीळा वण्णम्
कॊन्नहक् करत्ताऱ् पल्लाऱ् मरङ्गळाऱ् माऩक् कुन्ऱाल्
पॊन्नॆडु नाट्टै यॆल्लाम् पुदुक्कुडि येऱ्ऱिऱ् ऱन्ऱे 3098

अन्नतु निकळुम् वेलै–जब यह हो रहा था; अरियिन् वॆळ्ळम्–तब वानरों के प्रवाह ने; आर्त्तु ऎळुन्तु–शोर मचा उठकर; मिन् ऎयिऱु–चमकदार दाँतों की; अरक्कर् चेनै यावरुम्–राक्षस-सेना के सभी; मीळा वण्णम्–लौट न जायें ऐसा; कॊल् नकम्–घातक नाखूनों के; करत्ताल्–हाथों से और; पल्लाल्–दाँतों से; मरङ्कळाल्–पेड़ों से; मान–बड़े; कुन्ऱाल्–पर्वतों से; नॆटु–विशाल; पॊन् नाट्टै–स्वर्ण-नगरी

(व्योमपुरी); ऍल्लाम्-भर में; पुतु कुटि एऱ्ऱिऱ्ऱु-नये वासियों को बसा दिया। ३०९८

इतने में वानर-सेना ने घोष के साथ चमकदार दंतोरे राक्षसों को नगर में लौटने से रोककर उन्हें घातक नखों, दाँतों, तरुओं और बड़े पर्वतों से व्योमस्वर्णनगरी में नये वासियों के रूप में बसा दिया। ३०९८

कालङ् गॊण्डॆ ऴुन्द मेहक् करुमैयान् शॆम्मै काट्टुम्
आलङ्गॊण् डिरुण्ड कण्डत् तमरर्हो नरुळिर् पॆऱ्ऱ
शूलङ्गॊण् डॆऱिव लॆन्नात् तोऩ्ऱिनान् पहैयिर् ऱोऩ्ऱ
मूलङ्गॊण् डुणरा निऩ्ऩै मुडित्तल्लाल् मुडियॆ ऩॆऩ्ऱान् 3099

कालम् कॊण्टु-पर्वकाल में; ऍऴुन्त-उठे; मेक करुमैयान्-मेघ-सम (काला इन्द्रजित्); चॆम्मै काट्टुम्-लाल दिखनेवाले; आलम् कॊण्टु-विष खाकर; इरुण्ट-काला बने; कण्टत्तु-कण्ठ वाले; अमरर् कोन्-देवों के पति परमेश्वर की; अरुळिर् पॆऱ्ऱ-कृपा से प्राप्त; चूलम् कॊण्टु-शूल को लेकर; ऍऱिवल्-चलाऊँगा; ऍऩ्ऩा-कहकर; तोऩ्ऱिनान्-प्रगट हुआ; पकैयिन् तोऩ्ऱ-शत्रुता के साथ प्रकट हो; मूलम् कॊण्टु उणरा-हेतु नहीं जान पाता ऐसे; निऩ्ऩै-तुम्हें; मुटित्तल्लाल्-विना मारे; मुटियेन्-नहीं मरूँगा; ऍऩ्ऱान्-ऐसा बोला। ३०९९

पर्वतकालीन मेघ के समान काले इन्द्रजित् ने सोचा कि रक्तवर्ण विषकंठ देवदेव शिवजी द्वारा कृपादत्त शूल फेंकूँ। उसने प्रकट होकर लक्ष्मण से कहा कि शत्रुता ले आये हो। हेतु नहीं जानता। ऐसे तुम्हारा अंत किये विना मैं नहीं मरूँगा। ३०९९

काऱ्ऱॆऩ वुरुमे ऱॆऩ्ऩक् कनलॆऩक् कडैना ळुऱ्ऱ
कूऱ्ऱमोर् शूलङ् गॊण्डु कुऱुहिय दॆऩ्ऩक् कॊल्वान्
तोऱ्ऱिना नदनैक् काणा विनित्तलै तुणिक्कुङ् गालम्
एऱ्ऱदॆऩ् ऱयोत्ति वेन्दर् किळैयव निदनैच् चॆय्दान् 3100

कटै नाळ् उऱ्ऱ-युगान्त में उठे; काऱ्ऱु ऍऩ-बवंडर के समान; उरुम् एऱु ऍऩ्ऩ-अशनिराज के समान; कनल् ऍऩ-आग के समान और; कूऱ्ऱम्-मृत्यु; ओर् चूलम् कॊण्टु-एक शूल लेकर; कॊल्वान्-हनन करने; कुऱुकियतु-पास आती हो; ऍऩ्ऩ-ऐसा; तोऱ्ऱिनन्-अपने को प्रकट करा लिया (इन्द्रजित् ने); अतनै-उसे; अयोत्ति वेन्तर्कु-अयोध्याधिपति के; इळैयवन्-कनिष्ठ ने; काणा-देखकर; इनि-अब; तलै तुणिक्कुम्-सिर कटवा देने का; कालम् एऱ्ऱतु-काल आ गया; ऍऩ्ऱु-यह सोचकर; इततै चॆय्तान्-यह कार्य किया। ३१००

उसने युगक्षय के बवण्डर के समान, अशनिराज के समान, आग के समान और लक्ष्मण को मारने हेतु पास आनेवाले मृत्युदेव के समान अपने को प्रकट करा लिया। अयोध्याधिपति के अनुज ने उसे देखकर निश्चय मान लिया कि अब इसके सिर को काटने का समय आ गया। उन्होंने (निम्नोक्त) यह कार्य किया। ३१००

मऱैहळे तेऱत् तक्क वेदियर् वणङ्गर् पाल
इऱैयव निराम नॆन्नु नल्लर मूर्त्ति यॆन्निल्
पिऱैयॆयिऱ् ऱिवनैक् कोऱि यॆन्ऱोरु पिऱैवाय् वाळि
निऱैयुर वाङ्गि विट्टा नुलहॆला निरुत्ति निन्ऱान् 3101

इरामन् ऍन्नुम्–श्रीराम नाम के; नल् अऱ मूर्त्ति–श्रेष्ठ धर्मविग्रह; मऱैकळे तेऱ तक्क–वेदों से ही प्रतिपाद्य; वेतियर् वणङ्कऱ्पाल–विप्रपूज्य; इऱैयवन् ऍन्निल्–भगवान हैं तो; पिऱै ऍयिऱ्ऱु इवनै–अर्धचन्द्रदन्त इसे; कोऱि–निहत कर दे; ऍन्ऱु–कहकर; निऱैयुर वाङ्कि–पूर्णरूप से खींचकर; ओर पिऱै वाय् वाळि–एक अर्धचन्द्रमुखी बाण को; विट्टान्–चलाया; उलकॆलाम् निरुत्ति–सारे लोकों की संस्थापना करके; निन्ऱान्–जो सदा रहते हैं (उन शेषावतार लक्ष्मण ने)। ३१०१

अगर यह सत्य है कि धर्मविग्रह श्रीराम वेदप्रतिपाद्य विप्रवंद्य परमेश्वर हैं, तो हे अस्त्र! तू इस वक्रदंतुले का हनन कर दे। यह कहकर लक्ष्मण ने खूब डोरा खींचकर एक अर्धचंद्रमुखी अस्त्र को चलाया। उसी के फलस्वरूप सारे लोक सुस्थिर हुए और उनका नाम भी स्थायी रह गया। ३१०१

नेमियुङ् गुलिश वेलुम् नॆऱ्ऱियि नॆरुप्पुक् कण्णान्
नामवे लानु मऱ्ऱै नान्मुहन् पडैयु नाणत्
तीमुहङ् गदुव वोडिच् चॆन्ऱवन् शिरत्तैत् तळ्ळिप्
पूमळै वानोर् शिन्दप् पॊलिन्ददप् पहळिप् पुत्तेळ् 3102

अ पकळि पुत्तेळ्–वह शर रूपी देवता; नेमियुम्–(विष्णु-) चक्र; कुलिश वेलुम्–(इन्द्र का) कुलिश; नॆऱ्ऱियिन्–भाल के; नॆरुप्पु कण्णान्–आग्नेय नेत्र वाले; नाम वेल् तानुम्–(शिवजी का) भयानक त्रिशूल; मऱ्ऱै–और; नान्मुकन् पटैयुम्–चतुर्मुख का अस्त्र; नाण–शरम खाने देते हुए; ती मुकम्–उसका अग्निमुख; कतुव–पकड़ ले ऐसा; ओटि चॆन्ऱु–दौड़ जाकर; अवन् चिरत्तै तळ्ळि–उसके सिर को काट गिराकर; वानोर् पू मळै चिन्त–देवों के फूलों की वर्षा करते; पॊलिन्ततु–शोभता रहा। ३१०२

वह अग्निमुखी अस्त्र रूपी देवता श्रीविष्णु-चक्र, इन्द्र-कुलिश, भालाग्निनेत्र शिव का भयानक शूल और ब्रह्मास्त्र —इन सबको शरम में डालते हुए शत्रु को ग्रसने के लिए तेज़ी से गया और इन्द्रजित् के सिर को काटकर गिरा दिया। देवों ने पुष्पवर्षा की और वह शोभायमान रहा। ३१०२

अऱ्ऱवन् ऱलैमी दोङ्गि यण्डमुऱ् ऱणुहा मुन्नम्
पऱ्ऱिय शूलत् तोडु मुडलुऱै पहळि योडुम्
ऍऱ्ऱिय कालक् काऱ्ऱान् मिन्नॊडु मिडियि नोडुम्
इऱ्ऱॊरु काळ मेहम् वीळ्न्दॆन वीळ्न्द दियाक्कै 3103

अवन् तलै–उसका सिर; अऱ्ऱु–अलग कटकर; मीतु ओङ्कि–ऊपर जाकर;

अण्टम् उर्रु–भूमि पर आकर; अणुका मुन्नम्–पहुँचे इसके पहले; याक्कै–शरीर; पर्रिय चूलत्तोटुम्–गृहीत शूल के साथ; उटल् उरै–शरीर पर चुभे; पकळियोटुम्–शरों के साथ; ऍर्रिय–बहनेवाले; काल कार्रान्–युगांतपवन से; ओरु काळ मेकम्–एक काला मेघ; मिन्नोटुम् इटियिनोटुम्–बिजली और वज्र के साथ; इर्रु वीऴ्न्तु ऍन्न–कटकर गिरा-जैसे; वीऴ्न्ततु–गिरा। ३१०३

इसके पहले कि इन्द्रजित् का सिर कटकर ऊपर उछलकर भूमि पर जा लगे, उसका शरीर हाथ में पकड़े हुए शूल, और शरीर पर चुभे वाणों के साथ युगांत के चण्डमारुत के झोंके से काला मेघ विद्युत् और वज्र-सहित कटकर गिरा जैसे भूमि पर गिरा। ३१०२

विण्डलत् तिलङ्गु तिङ्ग ळिरण्डॊडु मिन्नु वीशुङ्
गुण्डलत् तुणैह ळोडुङ् गॊन्दळक् कुञ्जिच् चॆङ्गेऴ्च्
चण्डवॆङ् गदिरोन् शॆक्करुत् तऴलोडु मरुवित् ताम
मण्डलम् विऴुन्द दॆन्न विऴुन्दतु तलैयुम् मण्मेल् 3104

विण् तलत्तु–आकाशतल में; इलङ्कु–विद्यमान; तिङ्कळ् इरण्टोटु–चन्द्रद्वय-समान; मिन्नु वीचुम्–प्रकाश छिटकानेवाले; कुण्टलम् तुणैकळोटुम्–कुंडलों के जोड़े के साथ; कॊन्तळ कुञ्चि–घुँघराले वाल के; चॆन् केऴ्–लाल रंग की; चण्ट वॆम्–प्रखर, गरम; चॆक्कर् तऴलोटुम्–लाल आग के साथ; मरुवि–मिलकर; कतिरोन् ताम मण्टलम्–सूर्य का प्रकाशमण्डल; मण् मेल्–भूमि पर; विऴुन्ततु ऍन्न–गिरा हो जैसे; तलैयुम्–इन्द्रजित् का सिर भी; विऴुन्ततु–गिरा। ३१०४

आकाश में रहनेवाले चन्द्रद्वय के समान प्रमाशमान कुंडलों के जोड़े और घुंघराले वालों की प्रचंड अग्नि के साथ इन्द्रजित् का सिर सूर्यमंडल अग्नि के साथ नीचे गिरा हो जैसे भूमि पर गिरा। ३१०४

उयिर्पुरत् तुर्र कालै युळ्निन्र वुणर्वि नोडुम्
शॆयिररु पॊरियु मन्दक् करणमुञ् जिन्दु मापोल्
अयिलॆयिर् रक्क रुळ्ळा रार्रल राहि यान्र
ऍयिलुडै यिलङ्गै नोक्कि यिरिन्दनर् पडैयुम् विट्टार् 3105

उयिर्–जीव (प्राण); पुरत्तु उर्र कालै–जव बाहर निकल जाते हैं तब; उळ् निन्र–भीतर स्थित; उणर्वितोटुम्–प्रज्ञा के साथ; चॆयिर् अरु–निर्दोष; पॊरियुम्–इंद्रिय और; अन्तक्करणमुम्–अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि); चिन्तुमा पोल्–जैसे अलग हो जाते हैं वैसे; अयिल् ऍयिऱु अरक्कर् तीक्ष्णदंतुले राक्षस; उळ्ळार्–जो थे वे; आर्रलर् आकि–निर्वल होकर; पटैयुम् विट्टार्–हथियार डालकर; आन्र ऍयिल् उटै–विशाल प्राचीरों के अन्दर रहनेवाली; इलङ्कै नोक्कि–लंका की तरफ़; इरिन्तनर्–भागे। ३१०५

प्राणवियोग के अवसर पर जैसे प्रज्ञा, इन्द्रिय और अन्तःकरण अलग हो जाते हैं, वैसे ही इन्द्रजित के मरने पर तीक्ष्ण दंतुले राक्षस शक्तिहीन

हुए अपने हथियारों को नीचे डालकर बड़े प्राचीरों की लंका की तरफ़ भाग गये। ३१०५

विल्लाळ रात्तार्क् कॅल्ला मेलवन् विळिय लोडुम्
शॅल्लादव् विलङ्गै वेन्दर् करशॅन्नक् कळित्त तेवर्
ॲल्लारुन् दूशु वीशि येट्रिड वार्त्त पोदु
कॊल्लाद विरदत् तार्दङ् गडवुळर् कूट्ट मॊत्तार् 3106

विल्लाळर् आत्तार्क्कु ॲल्लाम्–धनुष पर शासन करनेवाले सभी लोगों में; मेलवन्–श्रेष्ठ इन्द्रजित् के; विळितलोट्टुम्–मरते ही; अ–उस; इलङ्कै वेन्तर्कु–लंकाधिपति का; अरचु चॅल्लातु–राज्य नहीं चलेगा; ॲन्त–ऐसा; कळित्त–मुदित; तेवर् ॲल्लारुन्–सभी देवों ने; तूचु वीचि–वस्त्र उछालकर; एट्रिट–बहुत; आर्त्त पोतु–जब नारे लगाये; कॊल्लात विरतत्तार्तम्–श्रमणों के; कटवुळर् कूट्टम् मॊत्तार्–देवताओं के समूह के समान दिखे। ३१०६

धनुवीरों में सर्वश्रेष्ठ जो था उस इन्द्रजित् के मरते ही देव बहुत आनंदित हुए और यह कहते हुए कि 'आगे लंकाधिपति का राज्य नहीं चलेगा', अपने वस्त्र उतारकर उछालने लगे। तब वे श्रमण देवताओं के समान (अवस्त्र) दिखायी दिये। ३१०६

वरन्दरु मुदल्वन् मऱ्ऱै मान्मऱिक् करत्तु वळ्ळल्
पुरन्दरन् मुदल्व राय वान्मरैप् पुलवर् पारिल्
निरन्दरम् दोन्ऱि निन्ऱा रुळिना निरैन्द नॆञ्जर्
करन्दिल रवरै याक्कै कण्डन कुरङ्गुङ् गण्णाल् 3107

वरम् तरु–वरदायी; मुतल्वन्–आदिदेव (विष्णु); मान् मऱि करत्तु–बालहिरणहस्त; वळ्ळल्–भगवान शिव; पुरन्तरन्–इन्द्र; मुतल्वराय–जिनके प्रमुख हैं; वान् मऱै–उन चतुर्वेदज्ञ; पुलवर्–देव; पारिल्–भूमि पर; निरन्तरम्–लगातार; तोन्ऱि निन्ऱार–प्रकट खड़े रहे; अरुळिताल् निऱैन्त नॆञ्चर्–करुणा-भरे मन वाले; करन्तिलर्–अपने को छिपाया नहीं; अवरै–उनके; कुरङ्कुम्–वानरों ने भी; कण्णाल्–अपनी आँखों से; याक्कै कण्टनर्–शरीरों को देखा। ३१०७

वरद श्रीविष्णु, बालहिरणहस्त शिव, पुरंदर आदि जिनके प्रमुख हैं, वे चतुर्वेदज्ञ देव आकर भीड़ लगाये प्रगट रूप से खड़े हो गये। और विना अपना रूप छिपाये खड़े रहे। दयापूर्ण, उन्हें वानरों ने अपने पार्थिव आँखों से देखा। ३१०७

अऱन्दलै निऩ्ऱार्क् किल्लै यळिवॆन्ऩ मऱिञर् वार्त्तै
शिऱन्दवु शरङ्गळ् पायच् चिन्दिय शिरत्त वाहिप्
पऱन्दलै यदनिऩ् मऱ्ऱप् पावह परक्कन् कॊल्ल

चरक्कळ् पाय–बाणों के लगने से; कविकळ् ॲल्लाम्–सारे कपि; चिन्दिय विरत्त आकि–कटे सिरों के होकर; परन्तलै अतनिल्–युद्धभूमि पर; अ पातक अरक्कत्–उस पातक राक्षस के; कॊल्ल–मारने से; इरन्तत–जो मरे, वे; इमैयोर् एत्त–देवों के प्रशंसा करते; ॲऴुन्तत–जी उठे; अरम् तलै निन्ऱार्क्कु–धर्म में स्थिर रहनेवालों का; अऴिवु इल्लै–नाश नहीं; ॲतुम्–यह; अऱिञर् वाय्त्तै–पंडितों का वचन; चिऱन्ततु–अर्थ-भरा हो गया। ३१०८

वे वानर जो उस पातक के बाणों के लगने से सिरों के कटने पर युद्ध-स्थल में मरे गिरे थे, अब देवों के आशीर्वाद से जी उठे। इससे यह विद्वानों का कथन अर्थवान हो गया कि धर्मवान का नाश नहीं होता। ३१०८

आक्कैयि निन्ऱु वीऴ्न्द वरक्कन्ऱन् तलैयै यङ्गै
तूक्कितन् तुळ्ळुङ् गूत्तन् वालिशेय् तूशु शॆल्ल
मेक्कुयर्न् दमरर् वॆळ्ळ मळ्ळिये तॊडर्न्दु वीशुम्
पूक्किळर् पन्दर् नीऴ लनुमन्मे लिळवल् पोनान् 3109

आक्कैयिनिन्ऱु–शरीर से; वीऴ्न्त–(कटकर) जो गिरा था; अरक्कत्तन् तलैयै–उस राक्षस-सिर को; तुळ्ळुम् कूत्तन्–उछल-कूद मचाते हुए; वालि सेय्–वालीपुत्र ने; अङ्कै तूक्कितन्–अपने सुन्दर हाथों से उठाया; तूचु चॆल्ल–आगे की पंक्ति में गया; मेक्कु उयर्न्तु–उच्च स्थान में रहकर; अमरर् वॆळ्ळम्–देवों की भीड़ ने; अळ्ळिये–उठाकर; तॊटर्न्तु वीचुम्–जो निरंतर बरसाये; पू किळर्–उन फूलों के बने; पन्तर् नीऴल्–उस वितान की छाँह में; अनुमन् मेल्–हनुमान पर; इळवल्–लघुराज; पोनान्–गये। ३१०९

इन्द्रजित् के शरीर से अलग होकर जो सिर गिरा उसको वालीपुत्र ने आनंद-नृत्य के साथ सुन्दर हाथ में उठा लिया। वह आगे की पंक्ति में जाने लगा। पीछे देवों के द्वारा बरसाये गये फूलों के वितान की छाँह में, हनुमान के कंधों पर आरूढ़ होकर लक्ष्मण गये। ३१०९

वीङ्गिय तोळन् तेय्न्दु मॆलिहिन्ऱ पऴियन् मीदुर्
ओङ्गिय मुडियन् तिङ्ग ळॊळिपॆरु मुहत्त नुळ्ळाल्
वाङ्गिय तुयरन् मीप्पोय् वळर्हिन्ऱ पुहऴन् वन्दुर्
ओङ्गिय वुवहै याळ निन्दिर निनैय शॊल्वान् 3110

इन्तिरन्–इन्द्र; वीङ्किय तोळन्–फूले हुए कंधों वाला; तेय्न्तु–घिसकर; मॆलिकिन्ऱ–क्षीण होनेवाले; पऴियन्–अपयश का; मीतुऱु ओङ्किय–उन्नत; मुटियन्–सिर वाला; तिङ्कळ् ऒळि–चन्द्रप्रभा; पॆरु मुकत्तन्–भरे मुख वाला; उळ्ळाल् वाङ्किय–अन्दर दबे; तुयरन्–दुःख वाला; मी पोय्–ऊँचा बने; वळर्किन्ऱ पुकऴन्–यश वाला; वन्तुऱु–आकर; ओङ्किय–बढ़े हुए; उवकैयाळन्–मोदवाला; इनैय–ऐसी बातें; चॊल्वान्–कहने लगा। ३११०

गये। अपयश क्षीण हो गया। उन्नत-सिर बने उसका मुख चंद्रप्रभा-से खिल गया। दुःख अन्दर ही अन्दर दब गया। यश बढ़ गया। उसने बढ़ते उत्साह के साथ आकर ये बातें कहीं। ३११०

ऍल्लिवान् मदियि नुऱ्ऱ करैयॆन्न याण्डु मॆन्ऱोळ्
पुल्लिय वडुवुम् बोहा दॆन्ऱहम् बुळुङ्गि नॆन्देन्
विल्लियर् तिलहन् वन्दु तुडैत्तुर वॆम्मै तीर्न्देन्
शॆल्वमुम् वेऱुदर् कुण्डो कुऱैयिनिच् चिऱुमै यादो 3111

ऍल्लि–रात में; वान् मतियिन्–आकाश के चन्द्र में; उऱ्ऱ–लगे; कऱ्ऱै अॅन–कलंक के समान; याण्टुम्–हमेशा; अॅन् तोळ् पुल्लिय–मेरे कंधों पर लगे; वटुवुम्–दाग; पोकातु–दूर नहीं होगा; अॅन्ऱु–ऐसा सोचकर; अकम् पुळुङ्कि–भीतर से क्षुब्ध होकर; नॆन्तेन्–घुल रहा था; विल्लियर् तिलकन्–धनुर्धरतिलक के; वन्तु–आकर; तुटैत्तुर–पोंछने से; वॆम्मै तीर्न्तेन्–गरम दुःख से छूटा; चॆल्वमुम्–धन; वेऱुतऱ्कु उण्टो–पाने (दूसरा) है क्या; इनि–आगे; कुऱै चिऱुमै–अभाव की क्षुद्रता; यातु–क्या। ३१११

'मेरे कंधों में रात में प्रकट चंद्र के कलंक के समान दाग़ जो लगे थे, वे नहीं मिटेंगे' —यह सोचकर मैं घुल रहा था। धनुर्धरतिलक लक्ष्मण ने उसे पोंछ दिया। अब मेरा संताप दूर हो गया। आगे पाने के लिए कौन सा श्रेष्ठ धन है? अब कौन दीनता व अल्पता है?। ३१११

तॆन्ऱलै याऴि तोट्टोन् शेयरुळ् शिऱुवन् शॆम्मल्
वॆन्ऱलैत् तॆन्नै यार्त्तुप् पोर्त्तॊऴिल् कडन्द वॆय्योन्
तन्ऱलै यॆडुप्पक् कण्डु तानवर् तलैहळ् शाय
अॆन्ऱलै यॆडुक्क लाने निनिक्कुडै यॆडुप्पे नॆन्ऱान् 3112

ॲन्नै वॆन्ऱु–मुझे जीतकर; अलैत्तु–त्रस्त करके; आर्त्तु–नारे लगाकर; पोर्त्तॊऴिल् कटन्त–युद्ध में जो जीता; वॆय्योन् तन्–उस क्रूर के; तलै–सिर को; तॆन् तलै–मनोरम तल वाले; आऴि–समुद्र को; तोट्टोन् चेय्–जिन्होंने खोदा, उन सगरपुत्रों के वंशज; अरुळ्–उन श्रीराम की कृपा-प्राप्त; चिऱुवन्–युवा; चॆम्मल्–उत्कृष्ट गुणों वाला (अंगद); ऍटुप्प–उठाये रखा है, यह; कण्टु–देखकर; तानवर् तलैकळ्–दानवों के सिरों के; चाय–झुके होते; ॲन् तलै–अपने सिर को; ऍटुक्कलानेन्–उठाने लगा; इनि–आगे; कुटै ऍटुप्पेन्–विजयछत्र तान लूंगा। ३११२

"उसने मुझे परास्त किया और बहुत सताया। कोलाहल मचाकर युद्ध में जो जीता उस क्रूर के सिर को मनोहर तल वाले समुद्र के खननकारी सगरपुत्रवंशज श्रीराम की कृपा के पात्र युवा, श्रेष्ठ अंगद हाथ में ले आ रहा है। उसे देखकर दानवों के सिर अवनत होते हैं। मेरा सिर उन्नत हो रहा है। आगे विजयछत्र भी तान लूंगा।" देवेन्द्र यों बोला। ३११२

वरदऩ्पोय् मरुहा निऩ्ऱ मऩत्तिऩऩ् मायत् तोनैच्
चरदप्पोर् वॆऩ्ऱु मीळुऩ् दरुममे ताङ्ग वॆऩ्बाऩ्
विरदम्बूण् डुयिरि ऩोडुन् दऩ्ऩुडै मीट्चि नोक्कुम्
बरदऩ्बोऩ् ऱिरुन्दाऩ् ऱम्बि वरुहिऩ्ऱ परिशैप् पार्त्ताऩ् 3113

वरतऩ्–वरद (लक्ष्मण) के; पोय्–जाने के बाद; मरुका निऩ्ऱ–दुःखी रहे; मऩत्तिऩऩ्–मन वाले; तरुममे ताङ्क–धर्म के धारण करने से; चरतम्–निश्चय; मायत्तोऩै–मायावी को; पोर् वॆऩ्ऱु–युद्ध में जीतकर; मीळुम्–लौटेगा; ऎऩ्पाऩ्–कहते हुए जो रहे; विरतम् पूण्टु–(वे श्रीराम) व्रत पालन करते हुए; उयिरिऩोटुम्–जीवन धारण करके; तऩ्ऩुटैय–उनके; मीट्चि–(नगर-) प्रत्यागमन की; नोक्कुम्–प्रतीक्षा करनेवाले; परतऩ् पोऩ्ऱु–भरत के समान; इरुन्ताऩ्–रहे; तम्पि–अनुज के; वरुकिऩ्ऱ परिचै–लौट आने का हाल; पार्त्ताऩ्–देखा। ३११३

इधर वरद लक्ष्मण के युद्ध में जाने के बाद श्रीराम बहुत व्याकुलमन हो गये थे। 'धर्म के बल से लक्ष्मण अवश्य मायावी इन्द्रजित् को मारकर लौट आयगा' —ऐसा कहते हुए व्रतरत होकर श्रीराम किसी विध जीवन धारण कर उनके प्रत्यागमन की प्रतीक्षा में, अयोध्या में रहनेवाले भरत की-सी स्थिति में रह रहे थे। अब उन्होंने अपने भाई को विजयी होकर लौटते हुए देखा। ३११३

वऩ्बुलङ् गडन्दु मीळुन् दम्बिमेल् वैत्त मालैत्
तऩ्बुल नयऩ मॆऩ्ऩुन् दामरै शॊरियुन् दारै
अऩ्बुहॊ लळुह णीर्हॊ लाऩन्द वारि येहॊल्
ऎऩ्बुह ळुरुहिच् चोरुङ् गरुणैहॊ लियार दोर्वार् 3114

वऩ् पुलम्–शत्रुस्थान में; कटन्तु–जीतकर; मीळुम्–लौट आनेवाले; तम्पि मेल्–अनुज पर; वैत्त–रखे; तऩ् पुलऩ्–अपने इन्द्रिय; नयऩम् ऎऩ्ऩुम् तामरै–नेत्र-कमल; मालै चॊरियुम् तारै–माला के रूप में जो धारें बहा रहे थे; अऩ्पु कॊल्–वे प्रेम (के प्रतीक) हैं; अऴु कणीर् कॊल्–रुदनाश्रु हैं; आऩन्त वारिये–आनंद-वाष्प हों; कॊल्–क्या; ऎऩ्पुकळ्–हड्डियाँ; उरुकि–पिघलकर; चोरुम्–तब जो बहती है; करुणै कॊल्–वह करुणा है क्या; अतु–वह; यार् ओर्वार्–कौन जाने। ३११४

अब युद्धस्थल में विजय पाकर जो लौट रहे थे, उन अपने अनुज पर रखे प्रेम के कारण उनके नेत्रकमलों से माला के रूप में अश्रुधारा बहने लगी। वह क्या प्रेम का ही फल थी? या वे रुदन के आँसू हैं? या आनन्दबाष्प ही हैं? या करुणा है जो हड्डियों को पिघलाकर बह रही है? वह कौन जाने?। ३११४

विळुन्दळि कण्णि नीरु मुवहैयुङ् गळिप्पुम् वीङ्ग
अॆळुन्दॆदिर् वन्द वीर ऩिणैयडि मुऩ्ऩर् ऱिट्टाऩ्
कॊळुन्दॆळुज् जॆक्कर्क् कर्ऱै वॆयिल्विड वॆयिर्ऱिऩ् कूट्टम्
अळुन्दुरक् कडित्त पेळ्वायत् तलैयडि युर्रॊऩ् ऱाह 3115

विऴुम्तु अऴि–गिरकर बहनेवाले; कण्णिन् नीरुम्–नेत्राश्रु व; उवकैयुम्–और आनन्द; कळिप्पुम्–उत्साह; वीङ्क–के बढ़ते; ऍऴुन्तु–उठकर; ऍतिर्वन्त वीरन्–सामने (जो) आये (उन) वीर के; इणै अटि मुन्नर्–चरणद्वय के सामने; कोऴुन्तु ऍऴुम्–ज्वाला जिनसे उठती हो, उन; चॅक्कर् कऱ्ऱै–लाल लटों के; वॅयिल् विट–धूप-से छिटकाते; ऍयिऱ्ऱिन् कूट्टम्–दंतपंक्ति; अऴुन्तुर कटित्त–जिसमें गहरे काट रही थी; पेऴ् वाय्–उस विवृत मुख वाले; तलै–सिर को; अटियुऱै ऒत्तु आक–चरण में भेंट के रूप में; इट्टान्–(अंगद ने) समर्पित किया। ३११५

बहते अश्रुजल बढ़े; आनंद बढ़ा और उत्साह प्रवृद्ध हुआ। श्रीराम उठे और भाई के समक्ष आये। उनके दोनों चरणों के सामने अंगद ने इन्द्रजित् के सिर को चरण-भेंट के रूप में समर्पित किया। उस सिर के लाल केश की लटें अग्नि-ज्वालाओं के समान लाल प्रकाश छोड़ रही थीं। दाँत खूब सटे हुए थे मानो काट रहे हों। मुख विवृत था। ३११५

तलैयिनै नोक्कुन् दम्बि कॊऱ्ऱवै तऴीइय पॊऱ्ऱोळ्
मलैयिनै नोक्कुम् निऩ्ऱ मारुदि वलियै नोक्कुम्
शिलैयिनै नोक्कुन् देवर् शॅय्हैयै नोक्कुम् शॅय्द
कॊलैयिनै नोक्कु मॊन्ऱु मुरैत्तिलन् कळिप्पुक् कॊण्डान् 3116

तलैयिनै नोक्कुम्–सिर को देखते; तम्पि–अनुज के; कॊऱ्ऱवै तऴीइय–विजयश्री से आलिंगित; पॊन् तोळ् मलैयिनै–सुन्दर कंधों रूपी पर्वत को; नोक्कुम्–निहारते; निन्ऱ–सामने स्थित; मारुति–हनुमान के; वलियै–शरीर-बल को; नोक्कुम्–देखते; शिलैयिनै नोक्कुम्–(लक्ष्मण के) धनु पर दृष्टि डालते; तेवर् चॅय्कैयै नोक्कुम्–देवों के कार्य पर नजर चलाते; चॅय्त कॊलैयिनै–कृत वधकार्य पर; नोक्कुम्–सोचते; ऒन्ऱुम् उरैत्तिलन्–कुछ नहीं बोले; कळिप्पु कॊण्टान्–मुदित हुए। ३११६

(श्रीराम भावविमग्न हो गये।) इन्द्रजित् के सिर को देखते और अपने अनुज के विजयश्री से आलिंगित कंधों के पर्वतों को देखते। सामने स्थित मारुति के सुघटित शरीर को देखते; फिर लक्ष्मण के धनु को देखते। देवों के कार्यों के बारे में सोचते और लक्ष्मण के वध-कार्य पर विचार करते। पर वे कुछ नहीं बोले और बहुत ही मुदित रहे। ३११६

काळमे हत्तैच् चॅक्कर् कलन्दॆनक् करिय कुन्ऱम्
नाळवॆयिऱ् परन्द दॆन्न नम्बितन् तम्बि मार्बिल्
तोळिन्मे लुदिरच् चॆङ्गेऴुच् चुडुवदन् ऩुऱविल् तोन्ऱत्
ताळिन्मेल् वणङ्गि नानैत् तऴुविनन् तनित्तॊन् ऱिल्लान् 3117

तनित्तु ऒन्ऱु–(लक्ष्मण के अलावा) अलग कुछ; इल्लान्–जिनके कुछ नहीं था;' नम्पि–उन भगवान ने; काळ मेकत्तै–काले मेघ से; चॅक्कर् कलन्तॆन–लाल गगन मिला जैसे; करिय कुन्ऱम्–काले पर्वत पर; नाळ् वॅयिल्–उदयकालीन धूप; परन्ततु–फैली जैसे; तन् तम्पि–अपने अनुज के; मार्पिलुम्–वक्ष पर;

तोळित् मेल्–और कंधों पर के; उतिर–रुधिर-सह; चॅम् केळ्–लाल व्रणों के; बुबदु–विह्न; तन् उरुविल् तोतूऱ–अपने शरीर पर लगवाते हुए; ताळिन् मेल् वणङ्किनात्तै–अपने चरणों में नमस्कार करनेवाले को; तळुविनन्–गले लगा लिया। ३११७

तब लक्ष्मण ने श्रीराम के चरणों में नमस्कार किया और लक्ष्मण के अनन्यप्रेमी भगवान श्रीराम ने अपने अनुज का आलिंगन कर लिया। वह दृश्य कैसा था ? काले मेघ से लाल गगन मिला हो ऐसा था; काले पर्वत पर उदयकालीन धूप फैली हो, ऐसा था। आलिंगन से श्रीराम के वक्ष पर और कंधों पर लक्ष्मण के रुधिर-सहित व्रण के निशान लग गये। ३११७

तूक्किय तूणि वाङ्गित् तोळोडु मार्बैच् चुऱ्ऱि
वीक्किय कवश पाश मौळित्तदु विरॅवि नीक्कित्
ताक्किय पहळिक् कूर्वाय् तडिन्दपुण् तळुम्बु मिन्ऱिप्
पोक्कितन् तळुविप् पल्हाल् पॊऱ्ऱडन् दोळि नॊऱ्ऱि 3118

तूक्किय–जो धारण कर रहे थे; तूणि वाङ्कि–उस तूणीर को हटाकर; तोळोटु मार्पै–गले और वक्ष को; चुऱ्ऱि वीक्किय–लपेटकर जो बाँधा गया था उस; कवच पाचम् ऑळित्तु–कवच-पाश को खोलकर; अतु–उस कवच को; विरैविन् मीक्कि–जल्दी-जल्दी हटाकर; ताक्किय–शरीर पर लगे; पकळि–बाणों के; कूर् वाय्–तीक्ष्ण नोकों ने; तटिन्त–जो बनाये थे; पुण् तळुम्पुम् इन्ऱि–व्रणों के निशान को भी दूर करते हुए; पल् काल् तळुवि–अनेक बार आलिंगन करके; पॊन् तटम् तोळिन्–मनोरम विशाल भुजाओं से; ऑऱ्ऱि–सेंककर; पोक्कितन्–दूर किया। ३११८

फिर उन्होंने अपने भाई के शरीर से उनसे धृत तूणीर को उतारा। कंधों पर और छाती पर लपेटकर बाँधे गये कवच के बंधन खोलकर कवच को अलग किया। शरीर पर लगे अस्त्रों की नोकों से बने व्रणों के दाग़ भी दूर करते हुए बार-बार आलिंगन क्या किया, मानो अपने विशाल मनोरम भुजाओं से सेंककर व्रण और दर्द को दूर किया। ३११९

आडवर् तिलह नित्ना लन्ऱिह लनुम नॅन्नुम्
शेडन्ना लन्ऱु वेऱोर् दॅय्वत्तिन् शिऱप्पु मन्ऱ
वीडणन् तन्द वॅन्ऱि यीदॅन विळम्बि मॅय्म्मै
एडवि ळलङ्गल् मार्ब निरुन्दन निनिदि निप्पाल् 3119

एटु अविळ्–जिसमें पुष्पदल विकसित हैं; मार्पन्–ऐसे वक्ष वाले श्रीराम ने; आटवर् तिलक–पुरुषतिलक; नित्ताल् अन्ऱु–तुम्हारे कारण नहीं; इकल्–पराक्रमी; अनुमन् ऎन्नुम्–हनुमान नाम के; चेटताल् अन्ऱु–श्रेष्ठ से भी नहीं; वेऱु ओर्–अन्य किसी; तॅय्वत्तिन् चिऱप्पुम् अन्ऱु–देवता की विशेषता से नहीं; ईतु–यह; वीटणन् मॅय्म्मै–विभीषण की ईमानदारी की; तन्त वॅन्ऱि–दी हुई विजय है; ऎन

विळम्पि–ऐसा कहकर; इरुंतिन् इरुन्ततन्–सुख से रहा; इप्पाल्–इधर यह हालत रही। ३११६

श्रीराम ने विभीषण की यों प्रशंसा की। लक्ष्मण! हे पुरुषतिलक! इस विजय का गौरव तुम्हें नहीं मिलेगा। बलवान हनुमान नामक उत्तम व्यक्ति का भी इसमें भाग नहीं। किसी और देवता की विशेषता भी इसका हेतु नहीं रह सकती। असल में यह विभीषण की ईमानदारी के कारण मिली विजय है। श्रीराम बड़े सुखी रहे। इधर का यह वृत्तांत है। ३११९

28. इरावणन् शोहप् पडलम् (रावण-शोक पटल)

ओद रोदन वेलै कडन्दुळार्, पूद रोदरम् बुक्कॅनप् पोर्त्तिळि
शीद रोदक् कुरुदित् तिरैयोरीइत्, तूद रोडित्तर् तादैयिड् चॉल्लुवान् 3120

तूतर्–(रावण के) दूत; तातैयिन्–धाता के पास; चॉल्लुवान्–कहने हेतु; ओत–समुद्रगर्जन-सम; रोतन वेलै–रुदन-सागर को; कटन्तुळार्–पार कर; पोर्त्तु–आवृत करके; इऴि–बहनेवाले; चीत–शीतल; रोतम्–तीरों वाले; कुरुति तिरै–रक्त की लहरों को; ओरीइ–लाँघकर; पूतर् उतरम्–भूधर (मेरु) के उदर में; पुक्कॅन–घुसे जैसे; ओटित्तर्–लंका के अंदर दौड़े। ३१२०

उधर रावण के दूत अपने धाता से वृत्तांत कहने के वास्ते समुद्रगर्जन-सदृश रुदनस्वर-सागर, और भूमि को आवृत रहनेवाले शीतल अवरोधन-सहित रहे रक्त-सागर को पार कर भूधर मेरु के उदर में घुसते-से गोद्वार में घुसकर लंका में भागे। ३१२०

अन्ऱिल् लङ्गरुम् बेडैह ळामॅन, मुन्ऱि लॅङ्गु मरक्कियर् मॉय्त्तळ
इन्ऱि लङ्गै यळिन्ददॅन् ऱेङ्गुवार्, शॅन्ऱि लङ्गैयिर् ऱादयैच् चेर्न्दुळार् 3121

अरक्कियर्–राक्षसरमणियाँ; अन्ऱिल्–'अन्ऱिल्' नाम के पक्षी की; अम्–सुन्दर; करुम् पेटैकळ् आम् ॲन–काली मादाओं के समान; मुन्ऱिल् ॲङ्कुम्–सभी आँगनों में; मॉय्त्तु–भीड़ लगाकर; अऴ–रोयीं; इन्ऱु–आज; इलङ्कै अऴिन्ततु–लंका मिट गयी; ॲन्ऱु ऐङ्कुवार्–ऐसा जो दुःखी हुए वे दूत; अयिल् इलङ्कु–शक्ति जिसके हाथ में थी उस; तातै–धाता रावण के पास; चॅन्ऱु चेर्न्तुळार्–जा पहुँचे। ३१२१

राक्षसियाँ 'अन्ऱिल्' की काली मादा पक्षियों की तरह यत्र-तत्र आँगनों में भीड़ लगाकर बैठीं और रुदन करने लगीं, तो दूत दुःखी हो गये कि आज लंका मिटेगी। वे शक्तिधारी धाता रावण के पास जा पहुँचे। ३१२१

पल्लुम् वायु मतमुन्दम् बादमुम्, नल्लु यिर्प्पॉरै योडु नडुङ्गुवार्

पयम् चुर्र्-डर के घरे; तुळङ्कुवार्-काँपते हुए; तम् पल्लुम्-अपने दाँतों;
युम्-मुख; मतमुम्-मन; पातमुम्-पैरों के; नल्-अच्छे; उयिर्प्पोरैयोडु-
ीवधारी शरीरों के साथ; नटुङ्कुवार्-काँपनेवाले दूतों ने; इन्ऱु-आज; उन्
कन् इल्लै-आपका पुत्र (जीवित) नहीं है; अँत-ऐसा; चोल्लितार्-कहा। ३१२२

वे पूर्णरूप से भयावृत थे। उनके दाँत, मन, पैर और शरीर सब
काँप रहे थे। उन्होंने रावण से जाकर निवेदन किया कि आज आपका
पुत्र नहीं रह गया है। ३१२२

ाडि रुन्दवर् वानवर् मादरार्, आडल् नुण्णिडै यार्मर्रु मियावरुम्
ोडु मिन्रिव् वुलहॆन विम्मुवार्, ओडि यॆङ्गणुञ् जिन्दि यॊळित्तनर् 3123

माटिरुन्तवर्-पास जो रहीं; वानवर् मातरार्-उन देवस्त्रियों ने; आटल्
नुण्णिटैयार्-नाचनेवाली क्षीण कमर वालियों ने; मर्रुम् यावरुम्-अन्य सभी ने;
इ उलकु-इस लोक को; इन्ऱु वीटुम्-आज छोड़ देंगे; ॲन-सोचकर; विम्मुवार्-
सिसककर; ॲङ्कणुम् ओटि-सर्वत्र दौड़कर; चिन्ति-तितर-बितर हो; ऑळित्तनर्-
अपने को छिपा लिया। ३१२३

(उसके कोप से संभाव्य नतीजे से डरकर) पतली कमर वाली नर्तकी अप्सराओं और अन्यों ने भी 'आज जीवन त्यागना पड़ेगा' इस विचार से सिसकते हुए सर्वत्र तितर-बितर भागकर अपने को छिपा लिया। ३१२३

ुडर्क्कॊ ळुम्बुहै तीविळि तूण्डिडत्, तडर्रु वाळुरु वित्तरु तूदरै
िडर्रु वीश लुराविळुन् दानरो, कडर्पॆ रुन्दिरै पोर्करञ् जोरवे 3124

विळि-आँखों ने; चुटर्-प्रकाश के साथ; कॊळुम् पुकै-घने धुएँ के साथ;
ती-आग; तूण्टिट-निकाली; वाळ्-तलवार; तटरु-म्यान से; उरुवि-
निकालकर; तरु तूतरै-समाचार देने आये दूतों को; कटल् पॊरु-समुद्र में टकराने
वाली; तिरै पोल्-तरंगों के समान; करम् चोरवे-हाथों के थकित होते; मिटर्रु-
उनके कण्ठों पर; वीचल् उऱा-वार कर; विऴुन्तान्-(स्वयं नीचे) गिरा। ३१२४

रावण की आँखों से धुएँ के साथ आग निकल आयी। उसने म्यान से तलवार निकाली। दूतों के गले काट दिये। उसके समुद्रतरंगों के समान हाथ थक गये और वह नीचे गिर गया। ३१२४

वाय्प्पि रन्दु मुयिर्प्पिन् वळर्न्दुम्बान्
काय्प्पु रुन्दीरुङ् गण्णिडैक् कान्दियुम्
पोय्प् पिर्रङ्गिव् वुलहैप् पॊदियुमॆन्
दीप्पि डन्दुळ दिमर्रॆनच् चॆय्ददाल् 3125

पिऱङ्कु-विद्यमान; इ उलकै-इस लोक को; पॊतियुम्-ग्रसनेवाली; वॆम्
ती-दारुण अग्नि; वाय् पिऱन्तुम्-मुख में पैदा हुई; उयिर्प्पिन्-और श्वास से;

इदै–आँखों में; कान्तियुम्–धधकीं; इन्ऱु पोय् पिऱन्तुळतु–आग जाकर पैदा हुई; अॅन–ऐसा; चॅय्ततु–(उसने) कार्य किया। ३१२५

लोकग्राही क्रूर आग उसके मुख से पैदा हुई, श्वास में पली घृणा के प्रकट होते-होते आँखों में बढ़ी और इस तरह आज ही जन्म ले चुकी हो, ऐसा काम करने लगी। ३१२५

पडम्बि ऱङ्गिय पान्दळुम् बारुम्बेऱ्ऱ्
दिडम्बि ऱङ्गि वलम्बॅयऱ्ऱ् दीडुऱ
उडम्बि ऱङ्गिक् किडन्दुळैत् तोङ्गुती
विडम्बि ऱन्द कडलॅन वॅम्बिनान् 3126

पटम् पिऱङ्किय–फनों से शोभित; पान्तळुम्–आदिशेषनाग और; पारुम्–भूमि; पेऱ्ऱ्तु–विस्थापित हो; इटम् पॅयऱ्ऱ्तु–बायीं तरफ़ बिगड़कर; वलम् पॅयऱ्ऱ्तु–बायीं तरफ़ अस्त-व्यस्त होकर; ईटु उऱ–संकट में पड़े; उटम्पु–शरीर भी; इऱङ्कि–आसन से नीचे खिसककर; किटन्तु–पड़ा रहकर; उळैन्तु–कष्ट सह कर; ओङ्कु ती–बढ़ती आग-सा; विटम् पिऱन्त–विष का जन्मस्थान; कटल् अॅन–समुद्र के समान; वॅम्पितान्–उत्पन्न हुआ। ३१२६

फनों से शोभित अनंतनाग तथा भूमि की भी स्थिति बिगड़ी। भूमि की बायीं ओर बिगड़ी; फिर दायीं ओर बिगड़ी। वह संकटमें पड़ गयी। रावण भी आसन से नीचे खिसका, भूमि पर गिरा और कष्ट पाने लगा। तब वह वर्धनशील अग्नि-तुल्य विष के जन्मस्थान समुद्र के समान संतप्त हुआ। ३१२६

तिरुहु वॅञ्जिनत् तीनिहर् शीऱ्ऱमुम्
पॅरुहु कादलुन् दुन्पुम् बिऱङ्गिड
इरुब दॅन्नु मॅरिपुरै कण्गळुम्
उरुहु शॅम्बॅन वोडिय दूऱुनीर् 3127

तिरुकु वॅम् चितम्–ऐंठे हुए और तापक क्रोध रूपी; ती निकर्–अग्नितुल्य; चीऱ्ऱमुम्–कोप और; पॅरुकु कातलुम्–(पुत्र पर) बढ़नेवाला स्नेह; तुन्पुम्–(उसकी मृत्यु से उत्पन्न) दुःख, इनके; पिऱङ्किट–बढ़ने से; इरुपतु–बीस; अॅन्तुम्–कहलानेवाले; अॅरि पुरै–आग के समान; कण्कळुम्–नेत्रों से; उरुकु चॅम्पु अॅन–पिघलते ताँबे के समान; ऊऱु नीर्–स्रवनेवाला जल; ओटियतु–बहा। ३१२७

तब उसके मन में आग-सम क्रोध ऐंठ उठा। साथ-साथ पुत्र का प्रेम, और पुत्रवियोगजनित दुःख भी भर उठे। इसलिए बीसों अग्नि-सदृश नेत्रों से पिघले ताँबे के समान आँसू निकलकर बहा। ३१२७

कडित्त परुकुलङ् गऱ्कुलङ् गण्णऱ
इडित्त कालत् तुरुमॅन वॅङ्गणुम्

अडित्त कैत्तलत् ताऱ्ऱरै याऴिनीर्
वॅडित्त वाय्दोऱुम् पॊङ्गिन मीच्चॅल 3128

कऱ्कुलम्–पर्वतराशियों को; कण् अऱ–गाँठें तोड़ते हुए; इटित्त–जो फटता; कालत्तु उरुम् ॲन्न–उस वर्षाकाल के वज्रों के समान; पऱ्कुलम्–दाँतों की पंक्तियाँ; कटित्त–काटी गयीं; तरै अटित्त–धरती पर पीटते; कै तलत्ताल्–करतलों से; ऎङ्कणुम् वॅटित्त–सर्वत्र हो उठे; वाय् तोऱुम्–गड्ढों में; आऴि नीर्–समुद्रजल; मी चॅल–ऊपर जाय ऐसा; पॊङ्किन–उभर उठा। ३१२८

उसने दाँत पीसे तो पर्वतकुलों को चूर करते हुए गिरनेवाले वर्षा-काल के वज्रों के समान शब्द हुआ। धरती को उसने अपने हाथों से पीटा, जिससे सर्वत्र गड्ढे बन गये और उनसे समुद्रजल उभर आया। ३१२८

❀ मैन्द वोवॅन्नुम् मामह नॅयॅन्नुम्, ॲन्दै योवॅन्नु मॅन्नुयि रेयॅन्नुम्
उन्दि नेन्नै नान्नुळॅ नॅयॅन्नुम्, वॅन्द पुण्णिडै वेल्पट्ट वॅम्मैयान् 3129

वॅन्त पुण्णिटै–पके व्रण में; वेल् पट्ट–भाला घुसा जैसे; वॅम्मैयान्–दुःख में रहनेवाले ने; मैन्त वो–हे पुत्र; ॲन्नुम्–चिल्लाया; मा मकते–महान पुत्र; ॲन्नुम्–पुकारता; ॲन्तैयो ॲन्नुम्–मेरे तात कहता; ॲन् उयिरे ॲन्नुम्–मेरे प्राण चिल्लाता; उन्नै–तुम्हें; उन्तिनेन्–भेजकर; नान् उळॅन्–मैं रह गया ओफ़; ॲन्नुम्–कहता। ३१२९

पके व्रण में भाला घुसे तो जैसी स्थिति होगी, उस स्थिति में रहा रावण चिल्लाने लगा। वह पुकारता— हे मेरे पुत्र! महान पुत्र! मेरे तात! मेरे प्राण! तुम्हें भिजवाकर मैं रह गया, हाय! वह रो उठा। ३१२९

अरन्दै वानव रार्त्तन रोवॅन्नुम्, पुरन्द रन्पहै पोयिऱ्ऱन् ऱोवॅन्नुम्
करन्दै शूडियुम् पाऱ्कडर् कळ्वन्नुम्, निरन्द रम्बहै नीङ्गिन रोवॅन्नुम् 3130

अरन्तै वानवर्–दुःखी देव; आर्त्तनरो–अब आनन्द मनाते हैं क्या; ॲन्नुम्–कहता; पुरन्तरन्–पुरंदर का; पकै–शत्रु; पोयिऱ्ऱु अन्ऱो–दूर हो गया न; ॲन्नुम्–कहता; करन्तै चूटियुम्–'करंदे' (नामक) पुष्पधारी (शिव) भी; पाल् कटल्–क्षीरसागरवासी; कळ्वन्नुम्–चोर (श्रीविष्णु) भी; निरन्तरम्–सदा के लिए; पकै नीङ्किनरो–शत्रुविहीन हो गये न; ॲन्नुम्–कहता। ३१३०

रावण आगे विलाप करने लगा। दुःखी जो रहे वे देव अब आनंद का शोर करते हैं न? पुरंदर का शत्रु चला गया न! 'करंदै' पुष्पधारी शिव और क्षीरसागरवासी चोर विष्णु अरि-विमुक्त हो गये न?। ३१३०

नीऱु पूशियुम् नेमियुम् नीङ्गिनार्, माऱ्िल् कुन्ऱोडु वेलै मऱैन्दुळार्
ऊऱु नीङ्गिन रायुव णत्तिनो, डेऱु मेऱ्ि युलावुव रॅन्नुमाल् 3131

नीऱु पूचियुम्–भभूतधारी और; नेमियुम्–चक्रधारी; माऱ्ऱिल्–अचल; कुन्ऱोटु–पर्वत और; वेलै–समुद्र में; मऱैन्तुळार्–छिपे हैं; नीङ्किनार्–दूर रहे; ऊऱु

नीङ्कितराय्–(अब) संकट से मुक्त होकर; एड्रम्–ऋषभ पर और; उवणत्तित्तोट्–गरुड़ पर; एरि उलावुवार्–सवार हो सैर करेंगे; अॅन्तुम्–यह कहता। ३१३१

"भस्मधारी (शिव) और चक्रधर (विष्णु) क्रमशः अचल कैलास पर्वत और (क्षीर-) सागर में छिपे रहे। अब संकट से मुक्त होकर वे क्रमशः ऋषभ और गरुड़ पर सवार होकर बेधड़क सैर करेंगे न!" रावण ऐसा कहता। ३१३१

वान मानमुम् वानव रीट्टमुम्, पोन पोन तिशैयिडम् बुक्कन
तान मानवै शार्हिल शार्हुव, ऊन मानिडर वॅन्रिकोण् डोॅवॅनुम् 3132

वान मानमुम्–आकाशचारी यान और; वानवर् ईट्टमुम्–देवों के समूह; पोन पोन तिचैयिटम्–जहाँ-जहाँ गये उन दिशाओं में; पुक्कन–घुसे; तानम् आनवै–अपने-अपने स्थान जो हैं उनमें; चार्किल–न पहुँचे; ऊनम्–हीन-दीन; मानिटर्–नर; वॅन्रि कॉण्टोम् अॅन–विजय पा गये, कहकर; चार्कुव–अपने-अपने स्थान पहुँचनेवाले बन गये। ३१३२

हे इन्द्रजित्! तुमसे डरकर जो आकाशचारी यानों और देवों के समूह जहाँ कहीं दिशाओं में भागे और अब तक अपने स्थानों में जा नहीं पाये। पर अब स्थिति यह हो गयी है कि नर विजयगाथा लेकर अपने स्थानों में पहुँच जायँगे! । ३१३२

कॅट्ट तूदर् किळत्तिन वारोरु, कट्ट मानिडन् कोल्लवॅन् कादलन्
पट्टॉ ळिन्दन तॅयॅनुम् बन्मुरै, विट्ट ळैक्कु मुळैक्कुम् बॅदुम्बुमाल् 3133

कॅट्ट तूतर्–इन बुरे दूतों ने; किळत्तिनवारु–जो बतलाया, उसके अनुसार; कट्ट–कष्टदायी; ओरु मानिटन् कोल्ल–एक नर के मारे; अॅन् कातलन्–मेरा प्यारा पुत्र; पट्टु ओळिन्ततन्ते–मर मिटा, हे; अॅनुम्–कहता; पल् मुरै–बार-बार; विट्टु–मुख खोलकर; अळैक्कुम्–नाम लेकर पुकारता; उळैक्कुम्–वेदना का अनुभव करता; वॅतुम्पुम्–संतप्त होता। ३१३३

दूतों के कथन के अनुसार कष्टदायी नर के मारे मेरा प्यारा पुत्र मर गया— हाय! रावण यों कहता और बार-बार नाम ले पुकारता! पीड़ा का अनुभव करता और संतप्त होता। ३१३३

***अॅळमि रुक्कुम् नडक्कु मिरक्कमुर्**
रळुम रर्रु मयर्क्कुम् वियर्क्कुम्बोय्
विळुम्वि ळिक्कु मुहिळ्क्कुनदन् मेनियाल्
उळुनि लत्तै पुरुळुन् बुरळुमाल् 3134

अॅळुम्–उठता; इरुक्कुम्–(धरती पर) बैठता; नटक्कुम्–चलता; इरक्कम् उर्रु–तरसकर; अळुम्–रोता; अरर्रुम्–विलाप करता; अयर्क्कुम्–थक जाता; वियर्क्कुम्–स्वेद निकलता; पोय् विळुम्–जाकर गिरता; विळिक्कुम्–आँखें

खोलता; मुकिऴ्क्कुम्–बन्द करता; तन् मेऩियाल्–अपने शरीर से; निलत्तै उऴुम्–भूमि को जोतता; उरुळुम्–लोटता; पुरळुम्–लुढ़कता। ३१३४

रावण कभी उठता, फिर बैठ जाता। कुछ दूर चलता और तरस कर रोता। विलाप करता और थक जाता। कुछ दूर चलकर नीचे भूमि पर गिर जाता। कभी आँखों को खोलता, कभी उन्हें बन्द कर लेता। अपने शरीर को ऐसा पटकता कि लगता कि वह भूमि को जोत रहा हो! लोटता और लुढ़कता। ३१३४

ऐय नॆय्ऩ्तु मोर्शिरम् याऩिऩ्ऩम्
शॆय्व ऩेयर शॆऩ्ऩुमङ् गोर्शिरम्
कैयते ऩुऩ्ऩैक् काट्टिक् कॊडुत्तनाऩ्
उय्व ऩेयॆऩ् ऱुरेक्कुमङ् गोर्शिरम् 3135

ओर् चिरम्–एक सिर; ऐयऩे ऎऩ्ऩुम्–तात पुकारता; अङ्कु–वहाँ; ओर् चिरम्–एक सिर; याऩ् इऩ्ऩम्–मैं अब भी; अरचु चॆय्वऩे–राज्य करूँगा क्या; ऎऩ्ऩुम्–कहता; अङ्कु ओर् चिरम्–वहाँ एक सिर; कैयतेऩ्–नीच; उऩ्ऩै काट्टि कॊडुत्त–(जिसने) तुम्हें (शत्रु को) दिखा दिया; नाऩ्–वह मैं; उय्वऩे–बचूँगा क्या; ऎऩ्ऱु उरैक्कुम्–ऐसा वेदना के साथ कहता। ३१३५

रावण के दस सिरों में एक सिर 'तात!' बुलाता। वहाँ दूसरा सिर यह कहकर रोता कि क्या मैं अब भी राज करूँगा? तीसरा सिर कलपता कि मैं नीच हूँ! तुम्हें शत्रु को मारने के लिए दिखा दिया। क्या मैं बच सकूँगा? । ३१३५

ऎऴुविऩ् कोल मॆऴुदिय तोळ्हळाल्
तऴुविक् कॊळ्हलै यॆऩ्ऩुमङ् गोर्तलै
उऴुवैप् पोत्तै युळैयुयि रुण्बदे
शॆऴुविऱ् चेवह नॆय्ऩ्तु मोर्शिरम् 3136

अङ्कु–वहाँ; ओर् तलै–एक सिर; कोलम् ऎऴुतिय–चित्रकारी-सहित ऎऴुविऩ्–खंभे के समान; तोळ्कळाल्–भुजाओं से; तऴुवि कॊळ्कलै–आलिंगन नहीं करते; ऎऩ्ऩुम्–कहता; ओर् चिरम्–अन्य एक सिर; उऴुवै पोत्तै–व्याघ्र-शिशु को (या पुरुष व्याघ्र को); उळै–हरिण; उयिर् उण्पते–जीवन खा ले क्या; चॆऴु विल्–सबल धनुर्धर; चेवकऩे–वीर; ऎऩ्ऩुम्–कहता। ३१३६

उधर एक सिर पछताता कि चित्रकारीयुक्त लोहे के खंभे के समान अपनी भुजाओं से तुम मेरा आलिंगन नहीं करते! और एक सिर कहता— पुरुष व्याघ्र के प्राणों को क्या एक हरिण खा ले? हे सबल धनुर्धर वीर! यह क्या अन्याय है? । ३१३६

नीलङ् गाट्टिय कण्डनुम् नेमियुम्
एलुङ् गाट्टि यॅरिन्द पडैक्कॅलाम्
तोलुङ् गाट्टित् तुरन्दनै मीण्डुनिन्
ओलङ् गाट्टिलै योवॅनु मोर्शिरम् 3137

ओर् चिरम्–एक सिर; नीलम् काट्टिय–नील रंग दिखानेवाले; कण्टनुम्–कंठ वाले शिव और; नेमियुम्–चक्रधर विष्णु; एलुम्–जहाँ युद्ध हुए; काट्टिल्–उन जंगलों में; ॲरिन्त पटैक्कु ॲलाम्–तुम पर चलाये गये अस्त्रों को; मीण्टुम्–बार-बार; तोलुम् काट्टि–हार दिखाकर; तुरन्तनै–(अस्त्र) चलाये; निन् ओलम्–अपना वीरगर्जन (अब); काट्टिलैयो–तुमने सुनाया नहीं क्या; ॲनुम्–कहता। ३१३७

फिर एक सिर कलपता कि पहले नीलकंठ और चक्रधर के विरुद्ध जंगलों में हुए युद्धों में तुमने उनके चलाये सारे हथियारों को परास्त करते हुए अपने अस्त्र चलाये थे, अब क्या तुमने वीर-गर्जन की शक्ति दिखायी नहीं ? । ३१३७

तुञ्जि नाय्हॊल् तुणैपिरिन् देनॆनुम्, वञ्ज मोवॆनुम् वारलै योवॆनुम्
नॆञ्जु नोव नॆडुनन्दनि येकिडन्दु, अञ्जि नेनॆन् ऱरट्रुमङ् गोर्दलै 3138

अङ्कु–वहाँ; ओर् तलै–एक सिर; तुञ्चिनाय् कॊल्–क्या मर गये; तुणै पिरिन्तेन्–सहायक से अलग हो गया; वञ्चमो–क्या यह वंचना है; ॲनुम्–कहता; वारलैयो–तुम नहीं आओगे क्या; नॆञ्चु नोव–मन व्याकुल करके; नॆटुम् तनिये किटन्तु–बहुत दिन अकेले रहकर; अञ्चिनेन्–डर जाता हूँ; ॲन्ऱु अरट्रुम्–ऐसा कलपता। ३१३८

उधर एक सिर संशय के साथ पूछता कि तुम क्या सचमुच मर गये ? हाय ! अपने सहायक से छूट गया मैं। क्या यह छल है ? पूछता कि क्या तुम नहीं आओगे ? मेरा मन व्याकुल है ! बहुत देर से अकेले रहकर भयातुर हो गया। ३१३८

काह माडु कळत्तिडैक् काण्बनो, पाह शादन् मौलियॊ डुम्बऱित्
तोहै मेवुऱ वैत्तवुन् नुच्चियिल्, वाहै नाण्मल रॆन्नुमऱ् ऱोर्दलै 3139

मऱ्ऱोर् तलै–और एक सिर; मौलियॊटुम् पऱित्तु–जिसके किरीट को अलग करके; ओकै मेवुऱ–संतोष के बढ़ते; उन् उच्चियिल् वैत्त–तुमने अपने सिर पर रखा था उस; पाकचातन्–पाकशासन पर (विजयचिह्न रूपी); नाण् वाकै मलर्–ताजे 'वाहै' फूलों की माला को; काकम् आटु–कौए जहाँ खेलते हैं उस; कळत्तिटै–समराजिर में; काण्पेनो–देखूंगा क्या; ॲन्नुम्–कहता। ३१३६

और एक सिर रोता कि तुमने इन्द्र के किरीट को छीन लेकर बढ़ते आनंद के साथ अपने सिर पर रख लिया था। पाकशासन पर

विजय पाने पर जो तुमने ताज़े "वाहै" के फूलों की माला पहनी थी, उसे आज उस युद्धांगन में देखूँ जहाँ कौए क्रीड़ा करते हैं ? । ३१३९

शेलि यऱ्क णियक्कर् तन्देविमार्, मेलि नित्तविर् हिऱ्पर्होल् वीरनित्
कोल विऱ्कुरल् केट्टुक् कुलुङ्गित्तम्, तालि येल्तोंड लॅन्नुमर् ऱोर्दलै 3140

मऱ्ऱु ओर् तलै–अन्य एक सिर; वीर–वीर; नित्–तुम्हारे; कोल–सुन्दर; विल् कुरल्–धनु का स्वर; केट्टु–सुनकर; कुलुङ्कि–काँपकर; तम् तालियै तॊटल्–अपने (अहिवात के) मंगलसूत्र को छूने का काम; इयक्कर् तम्–यक्षों की; शेल् इयल्कण्–'शेल' मछली-सी आँखों वाली; तेविमार–पत्नियाँ; इनि मेल्–आगे; तविर्किऱ्पर् कोल्–छोड़ देंगी न; ऍन्नुम्–कहता । ३१४०

और एक सिर पछताता कि हे पुत्र ! तुम्हारे धनु की टंकार सुन कर यक्षस्त्रियाँ अपने मंगल-सूत्रों का स्पर्श (इस प्रार्थना के साथ कि मेरा अहिवात न जाए) कर रही थीं। अब शेल मछली-सी चंचल आँखों वाली वे यह (बार-बार मंगलसूत्र स्पर्श करने का) काम छोड़ देंगी न ? । ३१४०

कूऱ्ऱु मुन्नॅदिर् वन्दुयिर् कॊळ्वदोर्, ऊऱ्ऱन् दानुडैत् तन्ऱॅन्नै युम्मोळित्
तेऱ्ऱ वॅव्वुल हुऱ्ऱनै यॅल्लैयिल्, आऱ्ऱ लायॅन् ऱुरैक्कुमङ् गोर्दलै 3141

ऍल्लैयिल् आऱ्ऱलाय्–निस्सीम बलशाली; कूऱ्ऱम्–यम; उन् ऍतिर् वन्तु–तुम्हारे सामने आकर; उयिर् कॊळ्वतु–जान लेने का; ओर् ऊऱ्ऱम् तान्–एक साहस; उटैत्तन्ऱु–नहीं रखता; ऍन्नैयुम् ऒळित्तु–मुझसे छिपकर; एऱ्ऱ–योग्य; ऍ उलकु–किस लोक में; उऱ्ऱनै–गये; ऍन्ऱु–ऐसा; अङ्कु–उधर; ओर् तलै उरैक्कुम्–एक सिर कहता । ३१४१

हे अपार बलवान ! यम में इतना साहस नहीं कि वह तुम्हारे समक्ष आकर तुम्हारे प्राण हर ले। (इसलिए साफ़ है, तुम यमलोक नहीं गये।) फिर मेरी भी आँख बचाकर अपने योग्य तुमने किस लोक को चुन लिया है ? । ३१४१

इन्न वाऱळैत् तेङ्गुहिन् ऱानॅळुन्, दुन्नु मात्तिरत् तोडिन नूळिनाळ्
पॊन्निन् वानन्न पोर्क्कळम् बुक्कनन्, नन्म हन्ऱन दाक्कैये नाडुवान् 3142

इन्नवाऱु–इस भाँति; अऴैत्तु–पुकारकर; एङ्कुकिन्ऱान्–शोक करता रावण; ऍऴुन्तु–उठा; नन् मकन् तनतु–अपने अच्छे पुत्र के; आक्कैये–शरीर को; नाटवान्–खोजने के लिए; ऊऴि नाळ्–युगक्षय के काल के; पॊन्निन् वान् अन्न–स्वर्ण-देव-नगर के समान जो रही; पोर्क्कळम्–उस युद्धभूमि में; उन्नुम् मात्तिरत्तु–सोचने की देरी के अंदर; ओटिनन् पुक्कनन्–दौड़ पहुँचा । ३१४२

रावण इस भाँति विलापता रहा। फिर उठा। अपने अच्छे पुत्र की लाश को ढूँढ़ लेने के विचार से वह दौड़ कर युगांतकालीन स्वर्णदेवनगरी के समान रहे समरांगन में सोचने मात्र की देरी के अन्दर पहुँचा । ३१४२

तेव रेमुद लाहिय शेवहर्, एव रुमुमुड नेतॊडर्न् देहिन्नार्
मूव हैप्पे रुलहनि मुरैमैयुम्, याव दाहुमिन् रॆन्न विरङ्गुवार् 3143

तेवरे मुतलाकिय-देव ही आदि; चेवकर् एवरुम्-वीर सभी; मूवकै पेरु लकिन्-त्रिविध लोकों का; मुर्रैमैयुम्-क्रम; इन्रु-आज; यावतु आकुम्-क्या होगा; ऍन्न-ऐसा; इरङ्कुवार्-शोक करते; उटने-तभी; तॊटर्न्तु-उसका पीछा करके; एकिनार्-गये। ३१४३

देव आदि सभी वर्गों के वीरों को भय हो गया कि अब इन तीनों लोकों के क्रम में क्या ही परिवर्तन होनेवाला होगा ? वे भी अनुताप करके उसका पीछा करके गये। ३१४३

अऴुद वार्चिल वन्बिन पोन्रडि
तॊऴुद वार्चिल तूङ्गिन वार्चिल
उऴद यानैप् पिणम्बुक् कॊळित्तवाल्
कऴुदुम् बुळ्ळु मरक्कनैक् काण्डलुम् 3144

कऴुतुम् पुळ्ळुम्-पिशाच और पक्षी; अरक्कनै काण्टलुम्-राक्षस को देखते ही; चिल अऴुत-कुछ रोये; चिल-कुछ; अन्पिन् पोन्रु-कुछ सौहार्द्र दिखाकर; अटि तॊऴुत-चरणों में झुके; चिल-कुछ; तूङ्किन-सोते (-से) रहे; उऴुत-(जिन्होंने युद्ध में प्रयत्न के साथ लड़कर) प्राण दिये थे; यानै पिणम् पुक्कु-उन हाथियों की लाशों में घुसकर; ऑळित्त-छिपे। ३१४४

जब रावण युद्धस्थल में पहुँचा तो भूत-पिशाच आदि और पक्षीगण हड़बड़ा गये। कुछ रोये। कुछ स्नेह का प्रदर्शन करते हुए उसके चरणों में झुके। कुछ सोते (-से) रहे। और कुछ खूब लड़कर मरे हाथियों की लाशों के मध्य जा छिपे। ३१४४

कोडि कोडिक् कुदिरैयिन् कूट्टमुम्
आडल् वॆन्रि यरक्करद माक्कैयुम्
ओडै यानैयुन् देरु मुळक्किनान्
नाडि नान्रन् महनुडल् नाळॆलाम् 3145

तन् मकन् उटल्-अपने पुत्र के शरीर को; नाळ् ऎलाम्-दिन भर; नाटिनान्-खोजा; कोटि कोटि-कोटि-कोटि; कुतिरैयिन् कूट्टमुम्-अश्वों की भीड़ों; आटल्-युद्ध में; वॆन्रि-विजयी; अरक्कर् तम्-राक्षसों के; आक्कैयुम्-शरीरों को; ओटै यानैयुम्-मुखपट्ट से अलंकृत हाथियों को; तेरुम्-और रथों को; उळक्किनान्-रौंदकर कीच बना दी। ३१४५

रावण ने दिन भर अपने पुत्र के शरीर को ढूँढ़ा। उसके पैरों-तले कोटि-कोटि अश्व, युद्धविजयी राक्षस वीरों के शरीर, मुखपट्ट से अलंकृत हाथियों की लाशें, रथ —ये सब रौंदकर कीच बने। ३१४५

पॉय्हि डन्द विऴिवऴि नीरुह, नॅय्हि डन्द कन्नल्पुरै नॅञ्जिनान्
मॉय्हि डन्द शिलैयॉडु मूरिमाक्, कैहि डन्ददु कण्डनन् कण्गळाल् 3146

नॅय् किटन्त–घी-मिश्रित; कनल् पुरै–आग के समान; नॅञ्चितान्–मन वाले ने; पॉय् किटन्त विऴि वऴि–असत्य जिनमें वास करता था, उन आँखों से; नीर् उक–आँसू बहाते हुए; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; मूरि–बलवान; मा–बड़े; कै–(इन्द्रजित् के) हाथ को; मॉय् किटन्त–सुदृढ़ता से युक्त; चिलैयॉटु–धनु के साथ; किटन्ततु–पड़ा; कण्टनन्–देखा। ३१४६

उसका मन घी के साथ जलती आग के समान था। उसने अपनी असत्य-भरी आँखों से इन्द्रजित् के बलयुक्त हाथ को बड़े और सशक्त धनु को पकड़ा हुआ पड़ा देखा। ३१४६

पॉङ्गु तोळ्वळै युङ्गणैप् पुट्टिलो
डङ्ग दङ्गळु मम्बु मिलङ्गिड
वॅङ्ग णाह मॅनप्पॉलि हिन्ऱदैच्
चॅङ्गै यालॅडुत् तान्शिरञ् जेर्त्तिनान् 3147

पॉङ्कु–फूले हुए; तोळ्–बाहुओं के; वळैयुम्–वलय और; कणै पुट्टिलॉटु–तूणीर; अङ्कतङ्कळुम्–बाजूबंद; अम्पुम्–शर; इलङ्किट–शोभते रहे; वॅम् कण् नाकम्–भीषण आँखों वाले नाग; अॅन–के समान; पॉलिकिन्ऱतै–शोभनेवाले (हाथ) को; चॅम् कैयाल्–पुष्ट हाथ से; अॅटुत्तान्–उठाकर; चिरम् चेर्त्तितान्–सिर पर रख लिया। ३१४७

पुष्ट कंधों पर लगे कंकण, तूणीर, बाजूबंद, शर —ये सब शोभ रहे थे। रावण ने इनके साथ शोभित और क्रूर आँखों वाले सर्प के समान पड़े रहे हाथ को अपने पुष्ट हाथ में लेकर अपने सिर पर धारण कर लिया। ३१४७

कऱ्ऱिण् मार्बिऱ् ऱऴुवुङ् गळुत्तिनिल्
शुऱ्ऱुञ् जॅन्निियिऱ् चूट्टुञ् जुळल्कणो
डॉऱ्ऱुम् मोन्दिट् टुरुह मुळैक्कुमाल्
मुऱ्ऱु नाळिन् विडुनॅडु मूच्चिनान् 3148

मुऱ्ऱुम् नाळिन्–आयु के अन्त के समय में; विटुम्–छोड़े जानेवाले-से; नॅटु मूच्चितान्–लम्बे निःश्वास वाला; कल् तिण् मार्पिल्–चट्टान के समान कठोर वक्ष से; तऴुवुम्–लगा लेता; कळुत्तिनिल्–कण्ठ में; चुऱ्ऱुम्–लपेट लेता; चॅन्नियिल् चूट्टुम्–सिर पर धारण कर लेता; चुळल् कणोटु–चंचल आँखों पर; ऑऱ्ऱुम्–रख लेता; मोन्तिट्टु–सूंघकर; उरुकुम्–द्रवीभूत होता; उळैक्कुम्–दुःखी होता। ३१४८

वह ऐसा निःश्वास छोड़ने लगा, मानो आयु के अंतिम समय की साँस हो! वह उस हाथ को ले अपने चट्टान-सम कठोर छाती से लगा लेता। फिर कंठ में लपेट लेता। सिर पर रख लेता। चंचल आँखों पर रख

लेता। सूँघता और द्रवीभूत हो जाता। बहुत ही शोकातुर बन गया। ३१४८

कैहण् डात्पिन् करुङ्गडल् कण्डॅन्न
मॅय्हण् डान्वन् मेल्विळुन् दान्रो
पॅय्हण् डारै यरुविप् पॅरुन्दिरै
मॉय्हण् डार्दिरै वेलैयै मूडवे 3149

कै कण्टान्–(पहले) हाथ को देखा; पिन्–बाद; करुङ् कटल्–काला सागर; कण्टु अॅन्न–देखा जैसे; मॅय् कण्टान्–शरीर को देखा; कण् पॅय्–आँखों से बहनेवाली; तारै–धाराओं की; पॅरु अरुवि तिरै–बड़ी नदी की तरंगों को; मॉय् कण्टार्–बलवान वीरों के; तिरै वेलैयै–तरंगपूर्ण सागर को; मूटवे–आवृत करने देते हुए; अतन् मेल् विळुन्तान्–उस (शरीर) पर गिरा। ३१४९

उसने पहले इन्द्रजित् के हाथ को देखा। फिर शरीर को देखा, जो काले सागर के समान पड़ा हुआ था। उसकी आँखों से इतनी अश्रुधारा बही कि लगा उस नदी की तरंगें सशक्त राक्षस वीरों के तरंगपूर्ण सागर को डुबा दे! ऐसा रोते हुए वह उस शरीर पर धड़ाम से गिरा। ३१४९

अप्पु मारि यळुन्दिय मार्बैत्तन्
अप्पु मारि यळुदिळि याक्कैयिन्
अप्पु मारि तणैक्कुम् मरर्ङुमाल्
अप्पु मानुर्र दियावरुर् ड्राररो 3150

अम्पु–शरों की; मारि–बर्षा; अळुन्तिय मार्पै–जिसमें घुसी थी उस छाती को; अळुतु–रोकर; तन्–अपने; अप्पु मारि–अश्रु की वर्षा; इळि याक्कैयिन्–जिस पर गिरती थी उस शरीर को; अप्पुम्–मल लेता; मारिन्–अपनी छाती से; अणैक्कुम्–लगा लेता; अरर्रुम्–कलपता; अ पुमान्–उस श्रेष्ठ पुरुष का; उर्र्तु–जो हाल हुआ; यावर् उर्रार्–किसका हुआ। ३१५०

उसने शरविद्ध पुत्र-वक्ष पर आँसू बहाये और उस शरीर को ले अपने शरीर से लगा लिया। छाती से लगा लिया। फिर वह विलाप करने लगा। तब उसका जो हाल हुआ, वह किसे हुआ था? । ३१५०

पर्रिक्कु मार्बिर् पहळियैप् पन्मुरै
मुरिक्कुम् मूर्च्चिक्कुम् मोक्कु मुयङ्गुमाल्
अॅरिक्कुम् वॅङ्गदि रोडुल हेळैयुम्
करिक्कुम् वायिलिट् टिन्रैक्क् कानुमाल् 3151

मार्पिल्–छाती में से; पकळियै–शरों को; पल् मुरै पर्रिक्कुम्–अनेक बार छीन लेता; मुरिक्कुम्–तोड़ देता; मूर्च्चिक्कुम्–मूर्च्छित होता; मोक्कुम्–सूँघता;

मुयङ्कुम्–आलिंगन कर लेता; ॲरिक्कुम्–धूप बिखेरनेवाले; वॆम् कतिरोडु–भीषण सूर्य को और; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; इन्ऱु–आज; वायिल् इट्टु–अपने मुख में डालकर; करिक्कुम्–खा लूँगा; ॲन–कहकर; कान्ऱुम्–कोप दिखाता। ३१५१

रावण इन्द्रजित् की छाती में चुभे शरों को निकालता और उन्हें तोड़ता। वह बेहोश हो जाता। उठकर सूँघता। "आज धूप फैलानेवाले क्रूर सूर्य और सातों लोकों को मुख में डालकर खा लूँगा" कहकर वह अपनी नाराज़गी दिखाता। ३१५१

तेव रोडु मुनिवरुञ् जीरियोर्, एव रोडु मुडन्ऱिरि हिन्ऱिलर्
मूव रोडु मुलहॊरु मून्ऱुडन्, पोव देहॊन् ऱुनिवॆनुम् बॊम्मलान् 3152

मुनिवु–कोप; मूवरोडुम्–तीनों (त्रिदेवों) के साथ; उलकु ऑरु मून्ऱुटन्–त्रिलोक के साथ; पोवते कॊल्–पूरा होगा क्या; ॲनुम् पॊम्मलान्–ऐसे भय से; तेवरोटु मुनिवरुम्–देव और मुनिवर; चीरियोर् ॲवरोटुम्–शिष्ट सभी; उटन् तिरिकिन्ऱिलर्–साथ (प्रकट) नहीं घूमते। ३१५२

देवों और मुनियों ने रावण का गुस्सा देखा तो डरने लगे कि क्या इसका कोप त्रिलोक, त्रिदेवों का अंत करने के बाद भी रुकेगा? वे और अन्य कोई भी शिष्ट साथ-साथ खुले रूप से नहीं घूमे (सब छिप गये)। ३१५२

कण्डि लन्ऱलै कान्दिय मान्िडन्
कॊण्डि ऱन्दन नॆन्बदु कॊण्डवन्
पुण्डि ऱन्दन नॆञ्जन् पॊरुमलन्
विण्डि ऱन्दिड विम्मि यरऱ्ऱिनान् 3153

तलै कण्टिलन्–सिर नहीं देखा; कान्ति–जल-भुनकर; अ–वह; मानिटन् कॊण्टु इऱन्तनन्–नर ले गया; ॲन्पतु–यह; कॊण्टवन्–धारणा करके; पुण् तिऱन्तन–व्रण (जिसके) ताज़े खुल गये; नॆञ्चन्–ऐसे मन वाला; पॊरुमलन्–दुःख से भरकर; विम्मि–सिसककर; विण् तिऱन्तिट–आकाश को फाड़ते हुए; अरऱ्ऱिनान्–चिल्लाया। ३१५३

रावण ने इन्द्रजित् का सिर नहीं देखा। उसने जल-भुनकर समझ लिया कि वही नर इसके सिर को ले गया है। उसके मन के व्रण ताज़े खुल गये। दुःख से भरकर सिसकते हुए वह इतने ज़ोर से चिल्लाया कि आकाश भी फट जाय!। ३१५३

निलैयुमा दिरत्तु निन्ऱ यानैयुम् नॆऱ्ऱिक् कण्णन्
मलैयुमे वॆळ्ळिये वोनान् परित्तऱ्कु मरुविन् मैन्दन्
तलैयुमा रुयिरुङ् गॊण्डा रवरुड लोडुन् दङ्गप्
पुलैयने निन्नु माविि शुमक्किन्ऱेन् पोलुम् बोलुम् 3154

निलैयुम् मातिरत्तु–अचल दिशाओं में; निन्ऱ यानैयुम्–स्थित गज और; नॅऱ्ऱि कण्णन्–भालनेत्र शिव का; मलैयुमे–पर्वत ही; नान् पऱित्तऱ्कु–मेरे द्वारा उखाड़ने के लिए; ॲळियवो–सुलभ रहे क्या; मऱु इल् मैन्तन्–निर्दोष पुत्र के; तलैयुम्–सिर और; आर् उयिरुम्–प्यारे प्राण; कॊण्टार्–ले लिये हाय; अवर्–वे; उडलोटुम् तङ्क–सशरीर रहते; पुलैयनेन्–चांडाल मैं; इन्नुम्–अब भी; आवि चुमक्किन्ऱेन्–प्राण ढो रहा हूँ। ३१५४

(वह विलापा—) स्थायी दिग्गज और भालनेत्र शिव का कैलास पर्वत —क्या ये ही मेरे तोड़ने के लिए सुलभ रह गये ? वे नर, जिन्होंने मेरे निर्दोष पुत्र का सिर और उसके प्यारे प्राण हर लिये, सशरीर रहते हैं। उनको देखता हुआ चाण्डाल मैं अब भी प्राण ढो रहा हूँ ! हाय ! कैसी दुर्गति ! । ३१५४

ॲरियुण वळहै मूदू रिन्दिर ऩिरुक्कै यॆल्लाम्
पॊरियुण वुलह मून्ऱुम् बॊदुवऱप् पुरन्देन् पोलाम्
अरियुणु मलङ्गन् मौलि यिऴन्दवॆन् मदलै याक्कै
नरियुणक् कण्डे नूणि नायुणु मुणवु नन्ऱाल् 3155

अळकै मूतूर्–अलकापुरी का प्राचीन नगर; इन्तिरन् इरुक्कै–इन्द्र का वासस्थान (अमरावती); ॲल्लाम्–(आदि) सभी नगरों को; ॲरि उण–आग जला दें; पॊरि उण–अंगारे जला दें; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों का; पॊतु अऱ–साझे के विना; पुरन्तेन्–पालन करता रहा; अरि–भ्रमरों से; उणुम्–भोग्य; अलङ्कल् मौलि–पुष्पों से अलंकृत सिर को; इऴन्त–खोकर जो है; ॲन् मतलै–ऐसे मेरे पुत्र के; याक्कै–शरीर को; नरि उण–सियारों को खाता; कण्टेन्–देखा; ऊणिन्–अपने भोजन से; नाय् उणवुम् उणवु–कुत्ते का (जूठा) खाना; नन्ऱु–बेहतर; पोल् आम्–हो गया, शायद वही सच है। ३१५५

अलकापुरी, अमरावती आदि नगरों को अग्निदग्ध कराकर मैंने त्रिभुवन का असपत्न रूप से पालन किया था। पर आज देख रहा हूँ कि अलिकुलभोग्य पुष्पालंकृत सिर से हीन मेरे पुत्र के शरीर को सियार खा रहे हैं ! मेरे भोजन से कुत्ते का भोजन श्रेष्ठ होगा शायद ! । ३१५५

पूण्डॊरु पहैमेऱ् कॊण्डॆन् पुत्तिर ऩोडुम् बोनार्
मीण्डिलर् विऴिन्दु वीऴ्न्दार् विरदिय रिरुव रोडुम्
आण्डुळ कुरङ्गु मॊन्ऱु ममर्क्कळत् तारु मिन्नुम्
माण्डिल रिनिवे ऱुण्डो विरावणन् वीर वाऴ्क्कै 3156

ऒरु पकै मेल् कॊण्टु–एक शत्रु पर आक्रमण करके; ॲन् पुत्तिरनोटुम्–मेरे पुत्र के साथ; पोनार्–जो गये वे; मीण्टिलर्–नहीं लौटे; विऴिन्तु वीऴ्न्तार्–मरकर गिरे; आण्टु उळ–वहाँ रहते; विरतियर्–व्रती (तपस्वी); इरुवरोटुम्–दोनों के साथ; कुरङ्कुम्–वानर; आरुम् ऒन्ऱुम्–कोई एक; इन्नुम् माण्टिलर्–अभी

नहीं मरे; इरावणन् वीर वाऴ्क्कै–रावण का वीर का जीवन; इत्ति वेरु उण्टो–अब कुछ अन्य है क्या। ३१५६

वैर साधकर जो मेरे पुत्र के साथ गये वे सभी विना लौटे मर मिट गये। वहाँ तपस्वी, वानर इनमें कोई भी नहीं मरा! रावण का वीरता के जीवन का और कुछ प्रमाण चाहिए क्या? । ३१५६

कन्दर्प्प रियक्कर् शित्त ररक्कर्दङ् गन्नि मार्हळ्
शॅन्दोक्कुञ् जॊल्लिन्ना रुन् तेवियर् तिरुवि नल्लार्
वन्दुर्रॆङ् गणवन् र्रन्नैक् काट्टॆन्रु मरुङ्गिल् वीऴ्न्दाल्
अन्दोक्क वरर्र वोनान् कूर्रैयु माडल् कॊण्डेन् 3157

कन्तर्प्पर–गन्धर्व; इयक्कर्–यक्ष; चित्तर्–सिद्ध; अरक्कर्–राक्षस; तम्–इनकी; कन्तिमारकळ्–कन्याएँ; चॆन्तु ऒक्कुम्–'सिंदु' नाम के तान के समान; चॊल्लितार्–बोली वालियाँ; उन् तेवियर्–तुम्हारी पत्नियाँ; तिरुवित् नल्लार्–लक्ष्मी से भी सुन्दर; वन्तु उर्रु–आ पहुँचकर; ऎम् कणवन् तन्नै–हमारे पति को; काट्टु–दिखाओ; ऎन्रु–कहकर; मरुङ्किल्–पास में; वीऴ्न्ताल्–गिरें तो; कर्रैयुम् आटल् कॊण्टेन्–यमविजेता मैं; ऒक्क अरर्रवो–एक साथ कलपूं; अन्त–हन्त। ३१५७

गंधर्व, यक्ष, सिद्ध और राक्षसनारियाँ, 'सिंदु' तान की-सी मधुरभाषिणी लक्ष्मी से भी सुन्दरी तुम्हारी पत्नियाँ, आ पहुँचकर मुझसे यह माँग करते हुए कि हमारे पति को दरसा दो, मेरे पार्श्व में गिरें, तो यमविजेता मैं क्या साथ मिलकर (अपने दसों मुखों से) कलपूँ? हाय! । ३१५७

शिनत्तॊडुङ् गॊर्र मुर्र विन्दिरन् शॅल्वम् मेव
निनैत्तदु मुडित्तु निन्र्रेन् नेरिऴै यॊरुत्ति तन्नाल्
ऎनक्कुनी शॆय्यत् तक्क कडनॆला मिरङ्गि येङ्गि
उनक्कुनान् शॆय्व दानेन् नॆन्निन्या रुलहत् तुळ्ळार् 3158

चित्तत्तॊटुम्–कोप के साथ; कॊर्रम्–विजय; मुर्र–जब बढ़ी तब; इन्तिरन् चॆल्वम् मेव–इन्द्रसंपत्ति मेरे पास आयी; निनैत्ततु–जो सोचा वह; मुटित्तु निन्र्रेन्–पूरा किये रहा; नेरिऴै ऒरुत्ति तन्नाल्–सीधी आभरणभूषिता एक के कारण; ऎनक्कु–मेरे प्रति; नी चॆय्यत्तक्क–तुम्हारे द्वारा कर्तव्य; कटनॆलाम्–अपर कर्म आदि; इरङ्कि–शोक के साथ; एङ्कि–रोकर; नान्–मैं; उनक्कु चॆय्वतु आनेन्–करनेवाला बन गया; ऎन्निन् यार्–मुझसे बढ़कर (हीन) कौन; उलकत्तु उळ्ळार्–लोक में है। ३१५८

मेरा क्रोध, मेरी विजयशीलता सब वर्धनशील थे। इन्द्र की संपत्ति मेरे वश में आयी। जो मैं सोचता वह पूरा कर लेता था। पर एक सीधी और आभरणभूषिता के कारण मैं तुमको वह सारा अपर कर्म

रोते-कलपते करनेवाला हो गया, जो तुम्हारे द्वारा मेरे प्रति कर्तव्य है। मुझसे अन्य ऐसा कौन है इस दुनिया में ? । ३१५८

ॲऩ्बऩ पलवुम् बऩ्ऩि यॆडुत्तळैत् तिरङ्गि येङ्गि
अऩ्बिऩाल् महऩैत् ताङ्गि यरक्किय ररऱ्ऱि वीळप्
पॊऩ्बुऩै नहरम् बुक्काऩ् कण्डवर् पुलम्बुम् बूशल्
ऑऩ्बदु तिक्कु मऱ्ऱै यॊरुतिक्कु मुऱ्ऱ दऩ्ऱे 3159

ॲऩ्पऩ-सो; पलवुम्-अनेक बातें; पऩ्ऩि-कहकर; ॲटुत्तु अळैत्तु-स्वर उठा पुकारकर; इरङ्कि एङ्कि-शोक करके व्याकुल होकर; अऩ्पिऩाल्-स्नेह के साथ; मकऩै ताङ्कि-पुत्र को ढोकर; अरक्कियर्-राक्षसियों के; अरऱ्ऱि वीळ-कलपकर गिरते; पॊऩ् पुऩै नकरम्-स्वर्णनिर्मित नगर में; पुक्काऩ्-घुसा; कण्टवर्-दर्शक; पुलम्पुम् पूचल्-जो रोते-कलपते थे वह शोर; ऑऩ्पतु तिक्कुम्-नवों दिशाओं में; मऱ्ऱै-और; ऑरु तिक्कुम्-एक दिशा में; उऱ्ऱतु-पहुँचा। ३१५९

रावण ऐसी अनेक बातें कहकर विलाप करता, उच्च स्वर में पुत्र का नाम ले पुकारता, शोकाकुल और संतप्त होकर प्रेम के साथ अपने पुत्र (के शरीर) को उठा लेता हुआ अपने स्वर्णनिर्मित नगर में पहुँचा। उसको देखकर राक्षसियाँ रोती-कलपती भूमि पर गिर पड़ीं। उसको देखकर लोगों ने जो विलाप के स्वर निकाले वे दसों दिशाओं में जा व्याप्त हुए। ३१५९

कण्गळैच् चूल्हिऩ् ऱारुङ् कळुत्तिऩैत् तडिहिऩ् ऱारुम्
पुण्गॊळत् तिऱन्दु मार्बि ऩीरुळैप् पोक्कु वारुम्
पण्गळ्पुक् कलम्बु नावै युयिरॊडु परिक्किऩ् ऱारुम्
ॲण्गळिऱ् पॆरिय रिऩ्द विरुन्दुयर् पॊऱुक्क लाऱ्ऱार् 3160

कण्कळै-आँखों को; चूल्किऩ्ऱारुम्-नोचनेवालियाँ और; कळुत्तिऩै-गलों को; तटिकिऩ्ऱारुम्-काट लेनेवालियाँ; मार्पिऩ्-छातियों को; पुण् कॊळ-व्रण बनाते हुए; तिऱन्तु-खोलकर; ईरुळै-फेफड़ों को; पोक्कुवारुम्-दूर फेंकनेवालियाँ और; पण्कळ् पुक्कु-(संगीत के) राग जिनमें घुसकर; अलम्पुम्-पवित्र करते थे; नावै-उन जीभों को; उयिरॊटु-प्राणों के साथ; परिक्किऩ्ऱारुम्-खींच लेनेवालियाँ; इन्त-यह; इरुम् तुयर्-घोर दुःख; पॊऱुक्कल् आऱ्ऱार्-न सह सकनेवालियाँ; ॲण्कळिल् पॆरियर्-संख्या में बड़ी हैं। ३१६०

इन्द्रजित् की लाश को देखकर स्त्रियों ने विविध रूप से अपना असह्य दुःख प्रदर्शन किया। जिन्होंने अपनी आँखें खुद नोच लीं; जिन्होंने अपना कण्ठ काट लिया; जिन्होंने अपनी छाती चीरकर फेफड़े निकाल लिये, जिन्होंने अपनी संगीत-धौत जीभों को प्राणों के साथ निकाल लिया

—ऐसी स्त्रियों की संख्या, जो अपना घोर दुःख सह नहीं सकीं, अधिक होती गयी। ३१६०

मादिरङ् गडन्द तिण्डोळ् मैन्दन्ट्रन् महुडच् चॆन्नि
पोदलैप् पुरिन्द याक्कै पॊरुत्तनन् पुहुदक् कण्डार्
ओदनीर् वेलै यन्न कण्गळा लुहुत्त वॆळ्ळक्
कादलनी रोडि याडर् करुङ्गडन् मडुत्त दन्ड्रे 3161

मातिरम् कटन्त–दिग्विजयी; तिण् तोळ्–सबलस्कन्ध; मैन्तन् तन्–(अपने) पुत्र के; मकुटम् चॆन्नि–मुकुटमंडित सिर से; पोतलै पुरिन्त याक्कै–हीन शरीर को; पॊरुत्तनन्–ढोता हुआ; पुकुत कण्टार्–(रावण) आ रहा था उसे देखा (जिन्होंने); ओतम् नीर् वेलै अन्न–(उन्होंने) शब्दित सागर के समान; कण्कळाल् उकुत्त–अपनी आँखों से जो बरसाया; कातल् नीर् वॆळ्ळम्–स्नेह-जल की बाढ़; ओटि–बहकर; आटल्–लहराते; करुम् कटल्–काले-सागर में; मट्टुत्ततु–पहुँची। ३१६१

उन लोगों के, जिन्होंने रावण को दिग्विजयी सबल-स्कन्ध पुत्र इन्द्रजित् के मुकुट-मंडित सिर से हीन शरीर को ढोते हुए जाता देखा, शब्दायमान सागर-सम निःसृत स्नेहाश्रु की बाढ़ जाकर दोलायमान व काले सागर में मिली। ३१६१

आविषि लिनिय काद लरक्कियर् मुदल्व राय
तेवियर् कुऴाङ्गळ् शुट्रच् चिरत्तिन्मेल् तळिर्क्कै शेर्त्ति
ओविय मऴुदु वीऴ्न्दु पुरळ्वन वॊप्प वॊल्लैक्
कोवियल् कोयिड् पुक्कान् कुरुदिनीर्क् कुमिऴिक् कण्णान् 3162

ओवियम्–चित्र; चिरत्तिन् मेल्–सिरों पर; तळिर् कै चेर्त्ति–पल्लवहस्त रखकर; अऴुतु–रोते; वीऴ्न्तु पुरळ्वन–गिरते लोटते; ऒप्प–जैसे; आवियिन् इनिय कातल्–प्राणों से मधुर प्रेम की; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मुतल्वराय तेवियर्–आदि पत्नियों के; कुऴाङ्कळ्–झुंडों के; चुट्र–घेरे आते; कुरुति नीर् कुमुऴि–रक्ताश्रुओं के बुलबुले जिनसे निकलते थे; कण्णान्–ऐसी आँखों वाला; ऒल्लै–शीघ्र; को इयल्–राजयोग्य; कोयिल्–महल में; पुक्कान्–घुसा। ३१६२

उसे इन्द्रजित् की प्राणप्यारी राक्षसादि पत्नियाँ घेरे आ रही थीं। वे सिरधृतपल्लव-हस्त व उन चित्रों के समान थीं, जो रोते-कलपते, गिरते-लोटते रहते हों। उसकी आँखों से मानो रक्त के बुलबुले उठ रहे थे। वह जल्दी-जल्दी अपने राज-महल में प्रविष्ट हुआ। ३१६२

करुङ्गुऴऱ् कट्रैप् पारङ् गाल्तीण्डक् कमलप् पूवाल्
कुरुम्बैयैप् पुडैक्किन् ड्राळ्पोऱ् कैक्कळाल् मुलैमेऱ् कॊट्टि

अरुङ्गलच् चुम्मै ताङ्ग वहलल्हु लल्लिच् चर्र्रे
मरुङ्गुलु मुण्डो वॅन्न मयन्महळ् मरुहि वन्दाळ् 3163

मयन् मकळ्–मयसुता; करुङ्कुळल् पारम् कर्र्रे–काले केशभार की लटों को; काल् तोंट–पैरों को छूने देते हुए; कमल पूवाल्–कमल के फूल से; कुरुम्पैयै–छोटे कच्चे नारियल को; पुटैक्किन्राळ् पोल्–पीटती-जैसे; कैकळाल्–हाथों से; मुलै मेल् कोंट्टि–स्तनों पर पीटती हुई; अरुम् फलम् चुम्मै–श्रेष्ठ आभरणों का भार; ताङ्क–ढोने; अकल् अल्कुल् अन्रि–विशाल भग के सिवा; चर्र्रे–थोड़ा; मरुङ्कुलुम्–कमर भी; उण्टो–है क्या; अॅन्न–लोग कहें ऐसा; मरुकि–शोकसंतप्त होकर; वन्ताळ्–आयी। ३१६३

तब मयसुता मंदोदरी भी उधर आयी। उसके काले केशभार की लटें उसके पैरों को स्पर्श कर रही थीं। वह अपने छोटे कच्चे नारियल-जैसे स्तनों पर कमल-सम हस्तों से पीटती आयी। 'क्या उसके आभरणभार को धारण करने के लिए भग के अलावा थोड़ा कमर भी है?' ऐसा लोग कहें, इस भाँति वह चक्ति हो आयी। ३१६३

तलैयिन्मेर् चुमन्द कैयळ् तळलिन्मेल् मिदिक्किन् ड्राळ्पोल्
निलैयिन्मेन् मिदिक्कुन् दाळा ळेक्कत्ताल् निऱैन्द नॅञ्जाळ्
कॉलैयिन्मेर् कुरित्त वेडन् कूर्ङ्गणै युयिरैक् कॉळ्ळ
मलैयिन्मेन् मयिल्वीळ्न् दॅन्न मैन्दन्मेन् मरुहि वीळ्न्दाळ् 3164

तलैयिन् मेल्–सिर पर; चुमन्त कैयाळ्–धृत हाथों वाली; तळलिन् मेल्–आग पर; मितिक्किन्राळ् पोल्–पग धरती जैसे; निलैयिन् मेल्–भूमि पर; मितिक्कुम् ताळाळ्–डग भरनेवाले पैरों की; एक्कत्ताल्–शोक से; निऱैन्त नॅञ्याळ्–भरे मन वाली; कॉलैयिन् मेल् कुरित्त–हत्या पर तुले; वेटन्–व्याध के; कूर् कणै–तीक्ष्ण बाण के; उयिरै कॉळ्ळ–प्राण हरने पर; मयिल–एक मोर; मलैयिन् मेल् वीळ्न्तॅन्न–पर्वत पर गिरा जैसे; मैन्तन् मेल्–पुत्र पर; मरुकि वीळ्न्ताळ्–चक्कर खाकर गिरी। ३१६४

उसके हाथ सिर पर धरे थे। वह भूमि पर ऐसा डग भरती मानो अंगारों पर पैर रख रही हो। दुःखपूरितमना वह अपने उत्कृष्ट पुत्र की लाश पर उस मोर के समान गिरी, जो वधोद्यत व्याध का शर खाकर प्राण खो पर्वत पर गिरा हो। ३१६४

उयिर्त्तिल ळुणर्वु मिल्लळ् उयिरिलळ् कॉल्लो वॅन्नप्
पॅयर्त्तिल ळियाक्कै यॉन्रुम् बेशलळ् विम्मि यादुम्
वियर्त्तिलळ् नॅडिदु पोदु विम्मलळ् मॅल्ल मॅल्ल
अयर्त्तिलळ् अरिदिर् रेऱ्रि वाय्तिऱन् दरर्र्र लुर्राळ् 3165

उयिर्त्तिलळ्–सांसें नहीं छोड़तीं; उणर्वुम् इल्लळ्–प्रज्ञाहीन है; उयिरिलळ् कॉल्लो–प्राणहीन है क्या; अॅन्न–यह संशय पैदा करते हुए; याक्कै–शरीर को;

यिरत्तिलळ्–नहीं हिलाती; विम्मि–सिसकती; यातुम् ऑन्ऱुम् पेचलळ्–कुछ भी, एक भी नहीं कहती; नॅटितु पोतु–लम्बी देर तक; वियरत्तिलळ्–स्वेद नहीं निकालती; मयरत्तिलळ्–भूली-बिसरी भी नहीं; मॅल्ल मॅल्ल–धीरे-धीरे; अरितिल्–कष्ट से; तेऱ्रि–सँभलकर; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्रल् उऱ्राळ्–विलाप करने लगी। ३१६५

वह श्वास-हीन, प्रज्ञा-हीन रही। शरीर निस्पंद रहकर यह संशय पैदा कर रहा था कि क्या वह जीवित भी है? वह सिसकी पर कुछ नहीं बोली। लंबी देर तक शरीर पर स्वेद भी नहीं झलका। पर वह कुछ भूली नहीं थी। फिर धीरे-धीरे कष्ट के साथ स्वस्थ हुई और मुख खोलकर विलाप करने लगी। ३१६५

कलैयिनाल् तिङ्गळ् पोल वळर्हिन्ऱ कालत् तेयुन्
शिलैयिना लरियै वॅल्लक् काण्बदोर् तवमुन् शॅय्देन्
तलैयिला वाक्कै काण वॅत्तवञ् जॅय्दे नन्दो
निलैयिला वाळ्वै यिन्नुम् निनैवनो निनैवि लादेन् 3166

कलैयिनाल्–कला में; तिङ्कळ् पोल–चन्द्र के समान; वळर्किन्ऱ कालत्ते–जब बढ़ते थे तब; उन् चिलैयिनाल्–अपने धनु से; अरियै–इन्द्र को; वॅल्ल काण्पतु–जीतना देखने का; ओर् तवम्–एक तप; मुन् चॅय्तेन्–पहले किया था; अन्तो–हाय; तलै इला–सिर-रहित; आक्कै काण–शरीर देखने को; ऍ तवम् चॅय्तेन्–कौन-सी तपस्या की थी; निनैवु इलातेन्–स्मरणशक्ति से हीन मैं; निलैयिला वाळ्वै–मर्त्य जीवन को; इन्नुम्–अब भी; निनैवनो–परवाह करूँगी क्या। ३१६६

जब कलाधर चन्द्र के समान कला पर कला के साथ तुम बढ़ रहे थे, तब मेरा भाग्य रहा कि मैंने तुम्हें अपने धनु से इन्द्र को हराता देखा। पर हाय! अब मस्तकहीन तुम्हारे शरीर को देखने के लिए मैंने क्या ही तपस्या की है? स्मरणहीन होकर क्या मैं अब भी मर्त्य जीवन को चाहूँगी?। ३१६६

ऐयने यळह नॅंन् नरुम्बॅऱ लमिळ्दे याळिक्
कैयने मळुव नॅन्न ऱिवर्वलि कडन्द काल
मॅय्यने मुळरि यन्न निन्मुहङ् गण्डि लादेन्
उय्वनो उलह मून्ऱुक् कॊरुवने शॅरुव लोने 3167

ऐयने–तात; अळकने–सुन्दर; ऍन्–मेरे; पॅऱल् अरुम्–अप्राप्य; अमिळ्दे–अमृत; आळिक् कैयने–चक्रहस्त और; मळुवने–परशुधर (शिव); ऍन्ऱ इवर्–आदि इनके; वलि कटन्त–बल-परास्त-कारी; कालम् मॅय्यने–यम के समान पराक्रमी; उलकम् मून्ऱुक्कु ऒरुवने–तीनों लोकों में अद्वितीय; चॅरु वलोने–युद्ध-दक्ष; मुळरि अन्न–कमल-सम; निन् मुकम् कण्टिलातेन्–तुम्हारा मुख न देखती; उय्वनो–जीवित रहूँगी क्या। ३१६७

मेरे तात! सुन्दर! दुष्प्राप्य अमृत! चक्रधर-व-परशुधर-बल-परास्तकारी यम-सम पराक्रमी! तीनों लोकों में अद्वितीय! युद्ध-दक्ष! कमलमुख तुम्हारा मुख नहीं देखती हुई मैं जीवित रहूँगी क्या?। ३१६७

ताळरिच् चदङ्गै यार्प्पत् तवऴ्हिन्ऱ परुवन् दन्निल्
कोळरि यिरण्डु पर्ऱिक् कोणर्न्दने कोणर्न्दु कोबम्
मूळुऱप् पोरुत्ति माड मुन्ऱिलिन् मुऱैयि नोडु
मीळरु विळैयाट् टिन्नङ् गाण्बने विदियि लादेन् 3168

ताळ्-तुम्हारे पैरों में; अरि चतङ्कै-कंकड़-भरी पैंजनियाँ; आर्प्प-क्वणन जब करें; तवऴ्कित्ऱ-घुटनों चलने की उस; परुवम् तन्निल्-वय में; इरण्डु कोळरि-दो सिंहों को; पर्ऱि-पकड़कर; कोणर्न्तने-लाये; कोणर्न्तु-लाकर; कोपम् मूळुऱ-कुपित हों, ऐसा; पोरुत्ति-युद्ध में लगवाकर; माट मुन्ऱिलिन्-माढ़े के आँगन में; मुऱैयिनोडु-योग्य रीति से; मीळ अरुम् विळैयाट्टु-फिर न देखी जाय ऐसी क्रीडा को; वितियिलातेन्-भाग्यहीना मैं; इन्नम् काण्पने-और कभी देखूँगी क्या। ३१६८

जब तुम पैरों की कंकड़ियों से भरी पैंजनियों को क्वणित कराते हुए घुटनों के बल चलते थे, उस वय में तुम दो सिंहों को पकड़ लाये थे। दोनों में युद्ध छिड़वाया। माढ़े के आँगन में अपने योग्य यह खेल, जो फिर से नहीं हो सकता, खेलते रहे। अब भाग्यहीना मैं फिर एक बार देख सकूँगी क्या?। ३१६८

अम्बुलि यम्म वावॆन् ऱऴैत्तलु मविर्वॆण् डिङ्गळ्
इम्बर्वन् दानै यञ्ज लॆन्नविरु करत्ति नेन्दि
वम्बुरु मऱुवैप् पर्ऱि मुयलॆन्न वाङ्गुम् वण्णम्
ऍम्बॆरुङ् गळिऱे काण वेशर्ऱे नॆऴुन्दि राये 3169

ऍम्-हमारे; पॆरुम् कळिऱे-बड़े (महत्त्व के) गज; अम्पुलि-चन्द्र को; अम्म वा-माँ आ; ऍन्ऱु-कहकर; अऴैत्तलुम्-बुलाने पर; अविर्-छविपूर्ण; वॆण् तिङ्कळ्-श्वेतचन्द्र; इम्पर् उलकुक्कु-इस लोक में; वन्तानै-जो आया उसे; अञ्चल् ऍन्न-मत डरो कहकर; इरु करत्तिन् एन्ति-दोनों हाथों में उठाकर; वम्पु उऱु-विशिष्ट; मऱुवै-कलंक को; पर्ऱि-पकड़कर; मुयल् ऍन्न-खरगोश कहकर; वाङ्कुम् वण्णम्-पोंछ लेने की लीला; काण एचर्ऱेन्-देखना चाहती; ऍऴुन्तिराय् ए-उठोगे नहीं क्या। ३१६९

हमारे बहुमूल्य गज! तुमने चाँद को माँ! आ, कह बुलाया और वह छविमय श्वेत चाँद इस भूमि पर उतर आया। तुमने उसे दोनों हाथों में लिया और 'मत डरो' का आश्वासन दिया। फिर उसके विशिष्ट कलंक को खरगोश कहकर पोंछने लगा। वह लीला फिर से देखना चाहती हूँ! क्या नहीं उठोगे तुम?। ३१६९

इयक्किय ररक्कि मार्हळ् विञ्जैय रेळै मार्हळ्
मुयरुकरु पयिलात् तिङ्गण् मुहत्तियर् मुळ्दु नित्तै
मयक्किय मुयक्कन् दत्ताल् मलरण यमळि मीदे
अयर्त्तनै युरङ्गु वायो वमर्पोरु दलशि त्तायो 3170

इयक्कियर्–यक्षियाँ; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; विञ्चैयर एळैमार्कळ्–विद्याधरवनिताएँ; मुयल् करै पयिला–शशांकहीन; तिङ्कळ् मुकत्तियर्–चन्द्रमुखियाँ; नित्तै–तुम्हें; मुळुतुम्–पूर्ण रूप से; मयक्किय–बेहोश करा दें, ऐसे; मुयक्कम् तत्ताल्–आलिंगन से; मलर् अणै अमळि मीतु–पुष्पों के तकियों-सह शय्या पर; अयर्त्तनै–थके; उरङ्कुवायो–सोते हो क्या; अमर् पोरुतु–युद्ध करके; अलचित्तायो–थक गये क्या। ३१७०

क्या तुम यक्ष, राक्षस, विद्याधर आदि शशांकहीन मुखवाली रमणियों के मूर्च्छाकारी आलिंगन से पुष्प-शय्या पर थके सो रहे हो ? या युद्ध से शिथिल पड़ गये ? । ३१७०

मुक्कणान् मुदलि नोरै युलहोरु मूत्रि तोडुम्
पुक्कपो रॆल्लाम् वॆन्रु नित्रवॆन् पुदल्वन् पोलाम्
मक्कळि लोरुवन् कोल्ल माळ्बवन् वान मेरु
उक्कमॆन् कालाल् वेरो डोडिवदु मुळदे यम्मा 3171

मुक्कणान्–त्रिनेत्र; मुतलितोरै–आदि (त्रिदेवों) के साथ; उलकु ओरु मूत्रितोटुम्–त्रिभुवन के साथ; पुक्क–छिड़े; पोर् ऍल्लाम्–सभी युद्ध; वॆन्रु नित्र–जीतकर जो खड़ा था; ऍन् पुतल्वन्–मेरा पुत्र; मक्कळिल् ओरुवन्–मानवों में एक के; कोल्ल माळ्पवन्–मारते मर जानेवाला बन गया; अम्मा–आश्चर्य; वान मेरु–बड़ा मेरु पर्वत; उक्कम् मॆन् कालाल्–पंखे के नरम पवन से; वेरोटु–जड़ के साथ; ओटिवतुम् उळते–टूटे वह भी हो; पोल् आम्–जैसे है। ३१७१

तुमने त्रिनेत्र आदि त्रिदेवों और .त्रिभुवनों के विरुद्ध हुए सारे युद्ध जीते थे। अब नरों में एक के मारे मर गये ! क्या आश्चर्य ! यह ऐसा है जैसा पंखे के नरम पवन से बड़ा मेरु हरहराकर जड़ से खुदकर गिर जाय ! । ३१७१

पञ्जॆरि युर्र दॆन्न वरक्कर्दम् बरवै यॆल्लाम्
वॆञ्जिन मनिदर् कोल्ल विळिन्ददे मोण्ड दिल्लै
अञ्जिनै नञ्जिनैच् चीदयॆन् ऱमिळ्दिर् ऱोय्त्त
नञ्जिना लिलङ्गै वेन्दन् नाळैयित् तहैय न्नऱो 3172

पञ्चु ऍरि उऱ्ऱतु ऍन्न–रूई जल गयी जैसे; अरक्कर् तम्–राक्षसों का; ऍल्लाम् परवै–सारा सागर; वॆम् चित मनितर्–दारुण क्रोधयुक्त मनुष्यों के; कोल्ल–मारने से; विळिन्तते–मर गये तो; मीण्टतिल्लै–लौटे नहीं; अ चीतै ऍन्नुम्–उस सीता नाम के; अमिळ्तिल् तोय्त्त–अमृत में सने; नञ्चिताल्–विष से; नाळै–

कल; इलङ्कै वेन्तन्–लंका का राजा; इ तकैयन् अन्ऱो–इस स्थिति का नहीं होगा क्या; अञ्चित्तेन्–डरी; अञ्चित्तेन्–डरी। ३१७२

रूई जल गयी जैसे राक्षस-सेना-सागर सब दारुण क्रोधी नरों के मारे मर मिटा, हाय ! लौटा नहीं। अमृत-सना विष जो है वैसी सीता के कारण कल लंकाधिपति की स्थिति भी यही हो रहेगी न ! हाय ! बड़ा भय लगता है ! डरती हूँ। ३१७२

ऍन्ऱऴैत् तिरङ्गि येङ्ग वित्तुय रॅमर्हट् कॅल्लाम्
पॊन्ऱळैत् तनैय वल्हुर् चीदॅयाल् पुहुन्द दॅन्न
वन्ऱळैक् कल्लिन् नॅञ्जिन् वञ्जहत् ताळै वाळाल्
कॊन्ऱिळैत् तिडुवॅ नॅन्ना वोडिन् नरक्कर् कोमान् 3173

ऍन्ऱु–ऐसा; अऴैत्तु–आह्वान करके; इरङ्कि–व्यग्र होकर; एङ्क–तरसी तब; ऍमर्कट्कु ऍल्लाम्–सारे हमें; इ तुयर्–यह दुःख; पॊन् तळैत्त अनैय–स्वर्णबहुल-से; अल्कुल् चीतैयाल्–नितंब वाली सीता से; पुकुन्ततु–आया; ऍन्न–सोचकर; वन् तळै–बहुत कठोर; कल्लिन् नॅञ्चिन्–प्रस्तरमन; वञ्चकत्ताळै–वंचकी को; वाळाल् कॊन्ऱु–तलवार से हत करके; इऴैत्तिटुवॅन्–काम तमाम कर दूंगा; ऍन्ना–कहते हुए; अरक्कर् कोमान्–राक्षसराज; ओटिनान्–दौड़ा। ३१७३

ऐसी करुणा के वचन कहते हुए मंदोदरी रोती-बिललाती, व्यग्र होती रही। तब रावण ने सोचा कि हमारा यह हाल स्वर्णसुन्दर नितंबों वाली सीता के कारण ही हुआ ! 'उस प्रस्तरमना वंचकी को अपनी तलवार से मारकर काम तमाम कर दूंगा।' यह कहते हुए राक्षसराज दौड़ने लगा। ३१७३

ओडुहिन् ऱानै नोक्कि युयर्पॅरुम् बऴियै युच्चिच्
चूडुहिन् ऱानॅन् ऱञ्जि महोदरन् तुणिन्द नॅञ्जन्
माडुशॅन् ऱडियिल् वीऴ्न्दु वणङ्गिनिन् पुहऴ्क्कु मन्ना
केडुवन् दडुत्त दॅन्ना विनैयन किळत्तल् लुऱ्ऱान् 3174

ओटुकिन्ऱानै–दौड़नेवाले को; नोक्कि–देखकर; तुणिन्त नॅञ्चन्–धीरमन; मकोतरन्–महोदर; उयर् पॅरुम् पऴियै–बहुत बड़ी और गहरी निन्दा को; उच्चि–सिर पर; चूटुकिन्ऱान्–धारण करने चलता है; ऍन्ऱु अञ्चि–ऐसा डरकर; माटु चॅन्ऱु–पास जाकर; अटियिन् वीऴ्न्तु–चरणों पर गिरकर; वणङ्कि–नमन करके; मन्ना–राजा; निन् पुकऴ्क्कु–तुम्हारे यश पर; केटु वन्तु अटुत्ततु–हानि आ लगी है; ऍन्ना–कहकर; इत्तैयन–ऐसी बातें; किळत्तल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ३१७४

दौड़ते उसे धीरमन महोदर ने देखा। 'बहुत बड़े प्रचंड कलंक को सिर पर धारण करने जा रहा है।' इस डर से वह रावण के पास जाकर उसके चरणों में गिरा। नमन करके उसने कहा— राजा !

तुम्हारे यश की हानि हो जायगी ! ऐसा आरंभ करके उसने आगे निम्नोक्त बातें कहीं। ३१७४

मङ्गैयैक् कुलत्तु ळाळैत् तवत्तियै मुनिन्दु वाळाल्
शङ्गै यौन्ड्रिन्ड्रिक् कॊल्राड् कुलत्तुक्के तक्का तॆन्ड्र
कङ्गैयञ् जॆंत्ति यातुङ् गण्णनुङ् गमलत् तोनुम्
शॆङ्गैयुङ् गॊट्टि युन्नैच् चिरिप्पराल् शिड्रिय तॆन्ना 3175

मङ्कैयै–स्त्री को; कुलत्तुळाळै–कुलीना को; तवत्तियै–तपस्विनी को; मुनिन्तु–क्रोध करके; चङ्कै ऑन्ड्रु इन्ड्रि–बिना किसी हिचक के; वाळाल् कॊन्ड्राल्–तलवार से मारोगे तो; कङ्कै अम् चॆंन्नियातुम्–गंगा को अपने सुन्दर सिर पर धारण करनेवाला और; कण्णनुम्–श्रीविष्णु; कमलत्तोनुम्–कमलासन भी; कुलत्तुक्के तक्कान्–(यह राक्षस) कुल के ही योग्य है; ऍन्ड्रुम्–ऐसा और; चिड्रियतु–क्षुद्र; ऍन्ना–ऐसा कहकर; चॆम् कैयुम् कॊट्टि–लाल हाथ पीटकर; उन्नै चिरिप्पर्–तुम पर हँसेंगे। ३१७५

एक स्त्री को, कुलीना, तपस्विनी, साध्वी को गुस्सा करके विना हिचक के तलवार से काट दो तो क्या सिर पर गंगा को धारण करनेवाला शिव, विष्णु और कमलासन तुम्हारी हँसी नहीं करेंगे ? "यह अवश्य राक्षसकुल योग्य है, अल्प है" कहते हुए तालियाँ न पीटेंगे ? । ३१७५

❀ नीरुळ दनैयुञ् जूळ्न्द नॆरुप्पुळ दनैयुम् नीण्ड
पारुळ दनैयुल् वानप् परप्पुळ दनैयुम् कालिऱ्
पेरुळ दनैयुम् बेराप् पॆरुम्बऴि पिडित्ति पोलाम्
पोरुळ दनैयुम् वॆन्ड्रु पुहऴुळ दनैयु मुळ्ळाय् 3176

पोर् उळ तनैयुम् वॆन्ड्रु–युद्ध जब तक थे तब तक; वॆन्ड्रु–जीतकर; पुकऴ् उळ तनैयुम् उळ्ळाय्–यशजितने हैं सभी के पात्र; नीर् उळ तनैयुम्–जल के रहते तक; चूऴ्न्त नॆरुप्पु उळ तनैयुम्–आवृत करनेवाली आग के रहते तक; नीण्ट पार् उळ तनैयुम्–विशाल भूमि के रहते तक; वानम् परप्पु उळ तनैयुम्–आकाश के विस्तार के रहते तक; कालिन् पेर्–पवन का नाम; उळ तनैयुम्–जब तक चलन में रहेगा तब तक; पेरा–अचल; पॆरुम् पऴि–बड़ा अपयश; पिटित्ति पोल् आम्–पकड़ लोगे शायद। ३१७६

युद्ध जितने थे सबमें तुमने जीत पायी। यश जो भी है उस सबके स्वामी ! जल, अनल, विशाल पृथ्वी, आकाश का विस्तार, पवन का नाम —ये जब तक होंगे, तब तक अक्षय रहनेवाली बड़ी निंदा को ग्रहण करोगे शायद ! । ३१७६

तॊळ्ळरुङ् काल केयर् शिरत्तॊडुन् दिशैक्कण् यानै
वॆळ्ळिय मरुप्पुच् चिन्द वीशिय विशयत् तॊळ्वाळ

वळ्ळिय मरुङ्गुल् शॆव्वाय् मादर्मेल् वॆत्त पोदु
कॊळ्ळुमो दानव् वावि नाणत्ताऱ् कुऱैव दल्लाल् 3177

तॆळ् अरु–परखने में असाध्य; काल केयर् चिरत्तॊट्टुम्–कालकेयों के सिरों के साथ; तिचैक् कण् यानै–दिशाओं में स्थित गजों के; वॆळ्ळिय–श्वेत; मरुप्पु–दाँतों को; चिन्त–बिखेरते हुए; वीचिय–जो तुमने चलायी; विजयत्तु–विजयदायिनी; ऑळ् वाळ्–प्रकाशमय तलवार को; वळ्ळि–लता-सी; अम्–सुन्दर; मरुङ्कुल्–कमर; चॆय्य वाय्–लाल अधरों वाली; मातर् मेल्–स्त्रियों पर; वॆत्त पोतु–जब चलाओगे तब; नाणत्ताल्–लाज से; कुऱैवतु अल्लाल्–हीन बनने के सिवा; तान्–वह; अ आवि–उन (स्त्रियों) की जानों को; कॊळ्ळुमो–हर लेगी क्या। ३१७७

तुम्हारी विजयदायी तलवार की वार से परखने में कठिन कालकेयों के सिर और दिग्गजों के श्वेत दाँत टूटकर बिखरे थे। अब उसी को तुम लता-सी सुन्दर कमर और लाल अधरों वाली स्त्री पर चलाओ तो वह शरम से अपने काम में हीन होना (चूकना) छोड़कर क्या उस स्त्री की जान हरेगी ? । ३१७७

निलत्तियल् बन्ऱु वानिन् नॆऱियन्ऱु नीदि यन्ऱु
तलत्तियल् पन्ऱु मेलोर् तरुममे लदुवु मन्ऱु
पुलत्तियन् मरबिन् वन्दु पुण्णिय मरबु पूण्डाय्
बलत्तियल् पन्ऱु मायाप् पळिहॊडु मरुहु वायो 3178

निलत्तु इयल्पु अन्ऱु–भूमि का स्वभाव नहीं; वानिन् नॆऱि अन्ऱु–स्वर्गधर्म भी नहीं; नीति अन्ऱु–नीति-सम्मत नहीं; तलत्तु–(लंका के) प्रदेश के योग्य; इयल्पु अन्ऱु–स्वभाव नहीं; मेलोर् तरुममेल्–शिष्टों का धर्म कहो तो; अतुवुम् अन्ऱु–वह भी नहीं; पुलत्तियन् मरपिन् वन्तु–पुलस्त्य-कुल में जन्म ले; पुण्णिय मरपु पूण्टाय्–पुण्य-मार्ग अवलंबन किया; बलत्तु इयल्पु अन्ऱु–पराक्रम की पहचान नहीं; माया–अक्षय; पळि कॊट्टु–अपयश ग्रहण कर; मरुकुवायो–शोकसंतप्त रहोगे क्या। ३१७८

ऐसा काम न पृथ्वीवासी के योग्य स्वभाव का है, न व्योमलोकवासी के शिष्टों का धर्म मानो तो वह भी नहीं। पुलस्त्यकुल में जन्म लेकर पुण्य मार्ग का अवलंबन तुमने किया है। यह बलवान के लिए योग्य काम नहीं। अमिट अपयश लेकर सदा बेचैन रहोगे क्या ? । ३१७८

इन्ऱुनी यिवळै वाळा लॆऱिन्दुपो यिरामन् ऱन्नै
वॆन्ऱुमीण् डिलङ्गै सूऴ्न्द रॆय्दिनै वॆंदुम्बु वायो
पॊन्ऱिनळ् शीदै यॆन्ऱे पोवर्ह ळवर्दा मल्लाल्
वॆन्ऱिड मुडिया दॆन्नुम् वीरमो विळम्ब लॆन्ऱान् 3179

नी–तुम; इन्ऱु–आज; इवळै वाळाल् ऍऱिन्तु–तलवार से काटकर; पोय्–

(युद्धरंग) जाकर; इरामन् तन्नै वॆन्ऱु–श्रीराम को परास्त करके; इलङ्कै मूतूर–लंका की प्राचीन नगरी; मीण्टुम् ऍय्तितै–लौट आकर; चीतै पोन्ऱितळ् ऍन्ऱे–सीता मर गयी कहकर; वॆंतुम्पुवायो–संतप्तमन रहोगे; ताम् पोवर्–वे खुद चले जायँगे; अवर्–वे; वॆन्ऱिट मुटियातु–जीत नहीं सकेंगे; ऍन्नुम् वीरमो–ऐसा वीरता का उपाय है क्या; विळम्पल्–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ३१७९

तुम सीता को तलवार से काटो; फिर युद्ध में जाकर राम को जीतकर लंका आओ तो क्या करोगे ? 'सीता मर गयी' इसी विचार को लेकर चिंताकुल रहोगे ? या यह विचार करते हो कि सीता को मारने पर राम-लक्ष्मण स्वयं वापस चले जायँगे। नहीं तो उनको परास्त करना असंभव है ! क्या यह भी वीरोचित मार्ग है ? बताओ तो। महोदर ने इतना कहा। ३१७९

ऍन्नलु मॆड्त्त कूर्वा ळिरुनिलत् तिट्टु मीण्डु
मन्नवन् मैन्दन् ऱन्नै माऱ्ऱलर् वलिदिऱ् कॊण्ड
शिन्नमु मवर्हळ् तङ्गळ् शिरमुङ् गॊण्डन्ऱिच् चेर्हेन्
तॊन्नॆऱित् तयिलत् तोणि वळर्त्तुमि ऩॆन्नच् चॊन्नान् 3180

ऍन्नलुम्–कहते ही; मन्नवन्–राजा ने; ऍट्टत्त कूर् वाळ्–ली हुई तलवार को; इरु निलत्तु इट्टु–विपुला पृथ्वी पर डालकर; मैन्तन् तन्नै–मेरे पुत्र को (मार); माऱ्ऱलर्–शत्रुओं के; वलितिऱ् कॊण्ट–बलात् प्राप्त; चिन्नमुम्–विजयचिह्न (उसके सिर) को; अवर्कळ् तङ्कळ् चिरमुम्–और उनके सिरों को; कॊण्टु अन्ऱि–विना हरण किये; मीण्टुम् चेर्केन्–वापस नहीं आऊँगा; तॊल् नॆऱि–प्राचीन प्रथा के अनुसार; तयिलत् तोणि वळर्त्तुमिन्–तैल पात्र में रखो; ऍन्न–ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ३१८०

महोदर के यों कहने पर राजा रावण ने हाथ की ली हुई तलवार को नीचे पटक दिया। मेरे पुत्र का वध कर विजय के चिह्न के रूप में उसका सिर बलात् ले अपने पास रखते हैं शत्रु। उसको और उनके सिरों को लेकर वापस आऊँगा तो आऊँगा। नहीं तो लौट नहीं आऊँगा। इस लाश को पुरानी प्रथा के अनुसार तैलद्रोण में डाल रखो। ३१८०

29. पडैक् काट्चिप् पडलम् (सेना-संदर्शन पटल)

अत्तॊऴि लवरुञ् जॆय्दा रायिडै यनैत्तुत् तिक्कुम्
पोत्तिय निरुदर् ताऩै कॊणरिय पोय तूदर्
ऒत्तन रणुहि वन्दु वणङ्गिन रिलङ्गै युन्नूर्प्
पत्तियि ऩमैन्द ताऩैक् किडमिलै पणियॆन् ऱॆन्ऱार् 3181

अ तॊऴिल–वह काम; अवरुम् चॆय्तार–जिन्होंने किया थी; अव इटै–तब;

अनैत्तु तिक्कुम्–सभी दिशाओं में; पोत्तिय–भरी रही; निरुतर् तानै–राक्षस-सेना; कोणरिय पोय तूतर्–लाने जो गये थे, उन दूतों ने; ओत्ततर् अणुकि वन्तु–एक साथ पास आकर; वणङ्कितर्–नमस्कार करके; इलङ्कै उन् ऊर्–तुम्हारी लंका नगरी में; पत्तियिन्–श्रेणियों में; अमैन्त–रचित; तानैक्कु इटम् इलै–सेना के लिए स्थान नहीं; अन् पणि यातु–हमारी सेवा क्या है; ऍन्ऱार्–पूछा। ३१८१

उन्होंने (नौकरों ने) वह काम किया। तब वे दूत एक साथ आये, जो सभी दिशाओं में भरी रही सेना को लाने गये थे। नमस्कार करके उन्होंने निवेदन किया कि आपकी लंका नगरी में श्रेणी-बद्ध रूप में जो सेना खड़ी है, उसके लिए स्थान ही पर्याप्त नहीं। अब हमारे लिए क्या आज्ञा है? । ३१८१

एम्बलुऱ् ऍऴुन्द मन्न्न ऍव्वऴि यॆय्दिऱ् ऍन्ऱान्
कूम्बलुऱ् ऱुयर्न्द कैय रॊरुवऴि कूऱ् लामो
वाम्बुनऱ् परवै येऴु मिऱुदियिन् वळर्न्द वॆन्नात्
ताम्बॊडित् तॆऴुन्द तानैक् कुलहिड मिल्लै यॆन्ऱार् 3182

एम्पल् उऱ्ऱु–मुदित होकर; ऍऴुन्त–जो उठा; मन्नन्–उस राजा ने; ऍव्वऴि ऍय्तिऱ्ऱु–कहाँ रहती है; ऍन्ऱान्–पूछा; कूम्पल् उऱ्ऱु–जुड़कर; उयर्न्त कैयर्–जो उठे वैसे हाथों वालों ने; ओरु वऴि कूऱल् आमो–एक स्थान निर्धारित किया जा सकता है क्या; वाम् पुनल्–लहरें जिस पर लपक चलती है उस जल के; परवै एऴुम्–सातों समुद्र; इऱुतियिन्–युगांत में; वळर्न्ततु–उमँग उठे; ऍन्ना–जैसे; ऍऴुन्त तानैक्कु–जो सेना उठ आयी है, उसके लिए; उलकु इटम् इल्लै–लोक में स्थान नहीं; ऍन्ऱार्–कहा। ३१८२

मुदित हो राजा उठा। उसने पूछा कि कहाँ आयी है सेना? हाथ जोड़े सिर पर धरकर दूतों ने कहा, कैसे कहा जाय कि अमुक एक स्थान में है? तरंगें जिस पर लपकती चलतीं ऐसे जल के सातों सागर युगांत में एक साथ उमँग आये हों; ऐसा निकल आयी इस सेना के लिए इस भू पर स्थान पर्याप्त नहीं है। ३१८२

मण्णुऱ नडन्द तानै वळर्न्दमात् तूऴि मण्ड
विण्णुऱ नडक्किन् ऱारु मिदित्तन्न रेह मेन्मेऱ्
कण्णुऱ लरुमै काणाक् कऱ्पत्तिन् मुडिविऱ् कार्बोल्
ऍण्णुऱ लरिय शेनै यॆय्दिय दिलङ्गै नोक्कि 3183

मण् उऱ–भूमि पर लगी; नटन्त तानै–जो चली उस सेना से; वळर्न्त–उठकर फैली; मा तूऴि मण्ट–बड़ा धूलि-पटल भरा, इसलिए; विण् उऱ नटक्किन्ऱारुम्–आकाशचारी भी; मितित्तनर्–पैर टेककर; एक–चले; कऱ्पत्तिन् मुटिविल्–कल्पांत के; कार् पोल्–(सात) मेघों के समान; ऍण्णुऱल् अरिय–गिनने

में असंभव; चेनै–वह सेना; कण् उरुल् अरुमै काणा–कठिनाई से देखी जाकर; इलङ्कै नोक्कि–लंका की तरफ़; मेल् मेल् ॲय्तियतु–उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। ३१८३

भूमि पर पैर रखकर चली वह सेना। पर उससे जो धूलि उठी, वह धूलि-राशियाँ आकाश में भी व्याप्त हो गयीं, तो वहाँ चलनेवालों को भी पैर टेककर चलना पड़ा। कल्पांतकाल के मेघों के समान अपार वह सेना आँखों से देखी न जा सकी। इस स्थिति में वह लंका की तरफ़ उत्तरोत्तर बढ़ती आयी। ३१८३

वाट्टनिन् वयङ्ग मिन्ना मऴैयदि मिरुळ माट्टा
ईट्टिय मुरशि नार्प्पै यिडिपॅदिर् मुऴङ्ग माट्टा
मीट्टिनि युवमै यिल्लै वेलैमीच् चॅन्ऱ वॅन्निल्
तीट्टिय पडैयु मावु मियानैयुन् देरुम् जॅल्ल 3184

वाळ् तनिन्–तलवार के समान; वयङ्क–शोभने; मऴै मिन्ना–मेघों के विद्युत् नहीं; ईट्टिय–एकत्रित; मुरचिन् आर्प्पै–भेरियों के नाद के; इडिप्पु–अशनि; ॲतिर् मुऴङ्क माट्टा–मुक़ाबले में शब्द नहीं करती; अतिन्–उसके समान; मऴै–मेघ; इरुळ माट्टा–काले नहीं रहते; तीट्टिय–पैनाये गये हथियारों वाले; पटैयुम्–पदाति वीर; मावुम्–और अश्व; यानैयुम्–गज; तेरुम्–रथ; चॅल्ल–चलने; वेलै मी चॅन्ऱ ॲन्निल्–समुद्र पर चले तो; इनि मीट्टु उवमै इल्लै–अब कोई और उपमा नहीं। ३१८४

वीरों की तलवारें चमक उठीं। उसके मुक़ाबले में मेघों की बिजलियाँ कुछ नहीं रह गयीं। एकत्रित भेरियों के नर्दन के आगे वज्र फट नहीं सके। मेघ भी उनके समान काले नहीं रह सके। तीक्ष्ण हथियारों के साथ पदाति वीर अश्व, गज, रथ सभी समुद्र पर चलते आये तो (सेना-सागर की उपमा क्या दी जाय?) अन्य कोई उपमा कहाँ मिले? । ३१८४

उलहिनुक् कुलहु पोय्प्पो यॊन्ऱिनॊन् ऱॊदुङ्ग लुऱ्ऱ
तॊलैवरुन् दानै मेन्मे लॆऴुन्ददु तॊडर्न्दु शुऱ्ऱ
निलविनुक् किऱैयु मीनु नीङ्गिन निमिर्न्दु निन्ऱान्
अलरियु मुन्दु शॆल्लु माऱुनीत् तञ्जि यप्पाल् 3185

तॊलैव् अरु–अनगिनत; तानै–(वीरों की) सेना के; मेल् मेल् ॲऴुन्तु–उत्तरोत्तर बढ़कर; तॊटर्न्तु चुऱ्ऱ–साथ लगे घेरे आते; उलकिनुक्कु उलकु पोय्–लोक से लोक जा; ऒन्ऱिन् ऒन्ऱु–एक में एक; ऒतुङ्कल् उऱ्ऱ–जा छिप गया; निलविनुक्कु इऱैयुम्–राकापति व; मीनुम्–नक्षत्र; निमिर्न्तु–ऊपर उठकर; नीङ्किन–हट गये; अलरियुम्–सूर्य भी; अञ्चि–डरकर; मुन्तु चॆल्लुम्–आगे बढ़ने का; आऱु नीत्तु–मार्ग छोड़कर; अप्पाल् निन्ऱान्–दूर खड़ा रहा। ३१८५

वह अपार सेना उत्तरोत्तर बढ़ती आयी तो एक के ऊपर एक रहने वाले लोक भय से अपना-अपना स्थान छोड़कर दूसरे में छिपने लगे। राकापति और नक्षत्र भी ऊपर चलकर दूर हुए। सूर्य भी भय खाकर अपने मार्ग में आगे जाना छोड़कर एक ओर हट गया। ३१८५

मेऱ्पड विशुम्बै मुट्टि मेरुवित्त् विळङ्गि विण्ड
नाऱ्पॅरु वायि लूडु मिलङ्गैयूर् नडक्कुन् दानै
कार्क्करुङ् गडलै मऱ्ऱोर् कडत्तिडैक् कालन् ऱाने
शोर्प्पदु पोन्ऱदि याण्डुज् जुमैपॉरा दुलह मॅन्न 3186

मेल् पट–ऊपर छूते हुए; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; मेरुवित् विळङ्कि–मेरु के समान रहकर; विण्ट–खुले; नाल्–चारों; पॅरु वायिल् ऊटुम्–बड़े द्वारों से; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर की तरफ़; नटक्कुम् तानै–चलती वह सेना; कालन् ताने–यम स्वयं; कार् करु कटलै–काले बड़े सागर को; उलकम् याण्टुम्–लोक कहीं भी; चुमै पॉऱातु–भार वहन नहीं कर सकता; ॲन्न–इस कारण से; मऱ्ऱोर् कटत्तिटै–दूसरे एक घड़े में; चोर्प्पतु–ढाल रहा हो; पोन्ऱतु–ऐसा लगा। ३१८६

ऊपर आकाश को स्पर्श करनेवाले और मेरुसदृश रहनेवाले चारों खुले द्वारों से लंका की तरफ़ जब सेना आयी, तब ऐसा लगा मानो यम काले बड़े सागर को, लोक की कहीं रख लेने में असमर्थता जानकर दूसरे घड़े में उड़ेल रहा हो। ३१८६

नॅरुक्कुडै वायि लूडु पुहुमॅनि ऩॆडिदु कालम्
इरुक्कुमित् तन्मै यॅन्ना मदिलिनुक् कुम्ब रॅय्दि
अरक्कन्न दिलङ्गै युऱ्ऱ वण्डङ्ग ळनैत्ति नुळ्ळ
करुक्कुल मेह मॅल्ला मोरुवऴिक् कलन्द दॅन्न 3187

नॅरुक्कु उटै–सँकरे; वायिल् ऊटु–द्वार से; पुकुम् ॲतिल्–घुसेंगे कहें तो; इ तन्मै–यह कार्य; नॅटितु कालम् इरुक्कुम्–बहुत काल तक होगा; ॲन्ना–सोचकर; अण्टङ्कळ् अनैत्तिन् उळ्ळ–सारे अण्डों में रहनेवाले; करुमेकन् कुलम् ॲल्लाम्–काले मेघकुल सभी; ओरु वऴि कलन्ततु ॲन्न–एक स्थान पर एकत्र हों ऐसा; मतिलिनुक्कु–प्राचीर के; उम्पर् ॲय्ति–ऊपर जाकर; अरक्कनतु–राक्षस की; इलङ्कै उऱ्ऱ–लंका में पहुँचे। ३१८७

सँकरे द्वार से घुस जाने में बहुत समय लगेगा —ऐसा सोचकर वह सेना सारे अंडों के सभी काले मेघ एकत्र हुए हों, ऐसा प्राचीरों के ऊपर से राक्षस की लंका में पहुँची। ३१८७

अदुपॊऴु दरक्कर् कोनु मणिहॊळ्को बुरत्ति नॆय्दिप्
पोदुवुऱ नोक्क लुऱ्ऱा नॊरुनॆऱि पोहप् पोह

विदिमुऱ्ै काण्बॅ ऩॅऩ्ऩुम् वेट्कैयाल् वेलै येऴुङ्
गदुमॅत वॊरुङ्गु नोक्कुम् पेदैयिऩ् कादल् कॊण्डान् 3188

अतु पॊऴुतु–उस समय; अरक्कर् कोऩुम्–राक्षसराज भी; अणिकॊळ्–सौंदर्य-युक्त; कोपुरत्तिऩ् ॲय्ति–गोपुर (मीनार) पर जाकर; वेलै एऴुम्–सातों समुद्रों को; ऒरुङ्कु–एक साथ; कतुमॅत–शीघ्र; नोक्कुम्–देखना चाहनेवाले; पेतैयिऩ्–मूर्ख के समान; कातल् कॊण्टाऩ्–इच्छा करके; पॊतु उऱ–आम रीति से; नोक्कल् उऱ्ऱाऩ्–देखने लगा; ऒरु नॅऱि–(दृष्टि) एक मार्ग में; पोक पोक–ज्यों-ज्यों गयी; विति मुऱै–यथाक्रम; काण्पॅऩ्–देखूंगा; ॲऩ्ऩुम्–ऐसी; वेट्कैयाऩ्–इच्छा करने लगा। ३१८८

तब राक्षसराज भी गोपुर (मीनार) के ऊपर गया। उसने सातों समुद्रों को एक साथ जल्दी देखना चाहनेवाले मूर्ख के समान सबको एक साथ देखना चाहा। आम तौर से आँख दौड़ाई। जब दृष्टि एक मार्ग से जा रही थी, तब उसने इच्छा की कि क्रम से देख लूँ। ३१८८

मादिर मॊऩ्ऱि निऩ्ऱु मारॊरु तिशैमेल् मण्डि
ओदनीर् शॅल्व दऩ्ऩ तानैये युणर्वु कूड
वेदवे दान्दङ् गूऱुम् पॊरुळिऩै विरिक्किऩ् ऱार्बोल्
तूदुव रणिह डोऱुम् वरऩ्मुऱै काट्टिच् चॊऩ्ऩार् 3189

मातिरम् ऒऩ्ऱिल् निऩ्ऱु–एक दिशा से; माऱु ऒरु तिचै मेल्–दूसरी एक दिशा में; मण्टि–बहुलता से; ओतम् नीर्–समुद्रजल; चॅल्वतु अऩ्ऩ–जाता जैसी; तानैयै–सेना को; तूतुवर्–दूतों ने; अणिकळ् तोऱुम्–हर श्रेणी में; उणर्वु कूट–रावण की समझ में आये ऐसा; काट्टि–दिखाकर; वेतम्–वेद; वेतान्तम्–और वेदांत (उपनिषद्); कूऱुम् पॊरुळिऩै–(जिस तत्त्व का) प्रतिपादन करते हैं उस तत्त्व को; विरिक्किऩ्ऱार् पोल–विवृत करते जैसे; वरऩ् मुऱै–यथाक्रम; चॊऩ्ऩार्–कहा। ३१८९

बहते समुद्रजल के समान एक दिशा से दूसरी दिशा को जा रही उस सेना को दूतों ने श्रेणी-श्रेणी रावण को दिखाकर खूब समझाया। वेद-वेदांत-प्रतिपादित तत्त्व का विवरण देते जैसे उन्होंने विस्तार से विवृत किया। ३१८९

शाहत् तीविऩि नुऱैबवर् तानवर् शमैत्त
याहत् तिऱ्पिऱन् दियैन्दवर् तेवरै यॅल्लाम्
मोहत् तिऱ्पड मुडित्तवर् मायैयिल् मुदल्वर्
मेहत् तैत्तॊडु मॅय्यिऩ रिवरॅऩ विरित्तार् 3190

इवर्–ये; चाकत् तीविऩिल्–शाकद्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले हैं; तानवर् चमैत्त–दानव-रचित; याकत्तिल् पिऱन्तु–यज्ञ में जन्म लेकर; इयैन्तवर्–बने हैं; तेवरै ॲल्लाम्–सारे देवों को; मोकत्तिल् पट–मोहवश कराकर; मुटित्तवर्–

समाप्त करनेवाले; मायैयिन् वुतल्वर्–माया में अगुए हैं; मेकत्तै तोट्टु–मेघस्पर्शी; मॅय्यिनर्–शरीर वाले; ॲन–ऐसा; विरित्तार्–विस्तार किया। ३१९०

"ये शाकद्वीपवासी हैं। दानवकृत यज्ञ से उत्पन्न इन्होंने सभी देवों को मोहमग्न करके उनका नाश किया था। माया रचने में अव्वल हैं। मेघस्पर्शी शरीर वाले हैं।" ऐसा उन्होंने एक पलटन को दिखाकर विवृत किया। ३१९०

कुशैयित् ड़ोविति नुरैबवर् कूर्ऱुक्कुम् विदिक्कुम्
वशैयुम् वन्मैयुम् वळर्प्पवर् वाननाट् टुरैवार्
इशैयुञ् जॅल्वमु मिरुक्कैयु मिळन्ददिङ् गिवराल्
विशैयन् दामॅन निरुप्पव रिवर्नॅडु विऱलोय् 3191

नॅटु विऱलोय्–अति बलवान; इवर्–ये; कुचैयिन् तीविनिन्–कुशद्वीप में; उरैपवर्–रहनेवाले; कूर्ऱुक्कुम् वितिक्कुम्–यम और विधि के; वचैयुम् वन्मैयुम्–अपमान और बल को (क्रमशः); वळर्प्पवर्–बढ़ानेवाले; विचयम् ताम् ॲन–विजय की मूर्ति जैसे; निरुप्पवर्–रहनेवाले; इवराल्–इनसे ही; वानम् नाट्टु उरैवार्–व्योमलोकवासी (देव); इचैयुम्–यश; चॅल्वमुम्-संपत्ति और; इरुक्कैयुम्–वासस्थान; इङ्कु–यहाँ; इऴन्ततु–खो चुके। ३१९१

हे अतिबली! ये कुशद्वीपवासी हैं। ये यम का अपयश और विधि का बल बढ़ानेवाले हैं। साक्षात् विजयमूर्ति हैं। इन्हीं के कारण व्योमलोकवासी देवों के यश, धन और वासस्थान उनसे दूर हुए। ३१९१

इलवत् तीविनि नुरैबव रिवर्हळ् पण्डिमैयाप्
पुलवर्क् किन्दिरन् पॉन्नह रऴिदरप् पॉरुदार्
निलवैच् चॅञ्जडै वैत्तवन् वरन्दर निमिर्न्दार्
उलवैक् काडुरु तीयॅन वॅहुळिपॅर् ऱुडयार् 3192

इवर्कळ्–ये; इलवम् तीविनिल्–शाल्मली द्वीप के; उरैपवर्–वासी; इमैया–अपलक; पुलवर्क्कु इन्तिरन्–देवों के राजा की; पॉन् नकर्–स्वर्णनगरी (अमरावती) को; अऴितर–नष्ट करके; पण्टु–पहले; पॉरुतार्–लड़े; निलवै–कलाचन्द्र को; चॅन् चटै–लाल जटा में; वैत्तवन्–जिन्होंने रखा है; वरम् तर–उन शिव के वर देने से; निमिर्न्तार्–उन्नतसिर हुए; उलवै काट्टु–सूखे तरुओं के जंगल में; उरु–लगी; ती ॲन–आग के समान; वॅकुळि पॅर्ऱु उटैयार्–क्रोध बहुत रखनेवाले। ३१९२

ये शाल्मली द्वीप के हैं। अपलक देवों के राजा की अमरावती को युद्ध में इन्होंने मिटाया था। चंद्रशेखर शिवजी के दिये वरों से उन्नत-सिर हैं। वे सूखे तरुओं के जंगल में लगी आग के समान दारुण कोप करनेवाले हैं। ३१९२

अन्ऱिर् ड़ीविनि नुरैबव रिवर् पण्डै यमरर्क्
कॅन्ऱॅक् कुम्मिरुन् दुरैविड माम्वड मेरुक्

कुन्रॅक् कोण्डु पोय्क् कुरॅकड लिडवरॅक् कुलैन्दोर्
शॅन्रित् तन्मैयॅत् तविरु मॅन् रिरन्दिडत् तीर्न्दोर् 3193

इवर्–ये; अन्रिल् तीवितिल्–क्रौंच द्वीप में; उरॅपवर्–रहनेवाले; पण्टै अमरर्क्कु–प्राचीन देवों का; ऍन्रॅक्कुम् इरुन्तु–हमेशा से; उरॅविटम् आम्–जो वासस्थान है; वट मेरु कुन्रॅ–उस उत्तरी मेरु पर्वत को; कोण्टु पोय्–ले जाकर; कुरॅ कटल्–शब्दायमान सागर में; इट–डालने लगे तो; अर कुलैन्तोर्–बहुत अस्त-व्यस्त हो; चॅन्रु–जाकर; इ तन्मैयै–इस कार्य को; तविरुम्–दूर करें; ऍन्रु–ऐसा; इरन्तिट–प्रार्थना करने पर; तीर्न्तोर्–उसे छोड़ गये। ३१९३

ये क्रौंचद्वीपवासी हैं। प्राचीन देवों के सदा के वासस्थान, उत्तरी मेरु पर्वत को वे उखाड़ लेकर शब्दायमान समुद्र में डालने का उपक्रम कर चुके थे। तब देवों ने अस्त-व्यस्त होकर इनसे प्रार्थना की कि यह कार्य छोड़ दीजिए—तभी जाकर उन्होंने वह कार्य छोड़ा। ३१९३

पवळक् कुन्रिनि नुरॅववर् वॅळ्ळिपण् बळिन्दोर्
कुवळॅक् कणणियङ् गिराक्कदक् कन्नियॅक् कूड
अवळिर् रोन्रिन रैयिरु कोडियर् नोय्दिन्
तिवळप् पार्कडल् वरळ्पडत् तेक्किनर् शिलनाळ् 3194

पवळ कुन्रिनिल्–प्रवालपर्वत पर; उरॅपवर्–वास करनेवाले; वॅळ्ळि–शुक्र ने; पण्पु अळिन्तु–गुण खोकर (कामुक बनकर); ओर्–एक; कुवळै कणणि–उत्पलाक्षी; इराक्कतर् कन्नियै–राक्षस-कन्या से; अक्कु कूट–वहाँ संगम किया; अवळिल् तोन्रिनर्–तब उससे उत्पन्न; ऐयिरु कोटियर्–दस करोड़ के; तिवळ्–दोलायमान; अ पाल् कटल्–उस क्षीरसागर को; वरळ पट–सुखाकर; नोय्तिन्–आसानी से; चिल नाळ् तेक्किनर्–कुछ दिनों में पी चुके। ३१९४

ये प्रवालपर्वतवासी हैं। शुक्र ने अपना चरित्र खोकर एक राक्षस-कन्या से संगम किया। तब उस स्त्री से ये जनमे। वे दस करोड़ की संख्या के हैं। उन्होंने कुछ ही दिनों में लहरानेवाले क्षीरसागर को पीकर सोख दिया था। ३१९४

कन्द मादन मॅन्बदिक् करुङ्गडर् कप्पान्
मन्द मारुद मूर्वदोर् गिरियदिल् वाळ्वोर्
अन्दहा रत्तोडुम् आलहा लत्तोडुम् विरन्दोर्
इन्द वाळॅयिर् ररक्करॅण् णरिन्दिल मिरॅव 3195

इरॅव–राजा; इन्त–ये; वाळ् ऍयिरु–तीक्ष्ण-दंतुले; अरक्कर्–राक्षस; इ करु कटर्कु अप्पाल्–इस काले सागर के उस पार; कन्त मातनम् ऍन्पतु–गंधमादन नामक; मन्त मारुतम्–मन्द-मारुत; ऊर्वतु–जिस पर बहता है; ओर् गिरि अतिल् वाळ्वार्–उस गिरि पर रहनेवाले; अन्तकारत्तोटुम्–अन्धकार और;

आलकालत्तोटुम्–हलाहल (के रंग) के साथ; पिरन्तोर्–पैदा हुए; ॲण् अरिन्तिलम्–(कितने हैं) संख्या हम नहीं जानते। ३१९५

हे राजन् ! ये खड्गदंत राक्षस सातों काले समुद्रों के उस पार के मंदमारुत (मलयपवन) युक्त गंधमादन पर्वत पर वास करनेवाले हैं। उनके रंग की दृष्टि से वे अन्धकार व हलाहल के सहोदर हैं। उनकी संख्या हम नहीं जानते। ३१९५

मलय मॆन्बदु पॊदियमा मलैयदिल् मऱवोर्
निलय मन्नदु शाहरत् तीविडै निऱ्कुङ्
गुलैयु मिव्वुल हॆन्नक्कोण्डु नान्मुहन् कूऱि
उलैवि लीरिदि लुऱैयुमॆन् ऱिरन्दिड वुऱैन्दार् 3196

मलैयम् ॲन्पतु–मलय जो है वह; पॊतिय मा मलै–'पॊदिय' का बड़ा पर्वत है; अतिल्–उस पर के; मऱवोर्–वीर; निलयम्–(इनका) वासस्थान; अन्नतु–वह; चाकरम् तीवु इटै निऱ्कुम्–सागर-मध्य द्वीपों में रहता है; इव् उलकु–यह लोक; कुलैयुम्–मिट जायगा; ॲन्न कॊण्टु–ऐसा सोचकर; नान्मुकन्–चतुर्मुख ने; उलैवु इलीर्–अमर लोगो; इतिल् उऱैयुम्–इसमें रहो; ॲन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; इरन्तिट–प्रार्थना की; उऱैन्तार्–वे वहाँ रहने लगे। ३१९६

इन वीरों का जो 'पॊदिय' नाम के मलयपर्वत में पैदा हुए थे, वासस्थान सागरमध्य द्वीप है। 'इनके वास से भूमि नष्ट हो जायगी', ऐसा सोचकर ब्रह्मा ने उनसे प्रार्थना की थी कि हे अमर लोगो ! तुम यहाँ रहो। उनकी प्रार्थना मानकर ये वहाँ रहने लगे थे। ३१९६

मुऱ्क रक्कैयर् मूविलै वेलिन्नर् मुशुण्डि
शक्क रत्तिन्नर् शाबत्त रॆन्निन्ऱ तलैवर्
नक्क रक्कड नालॊरु मून्ऱुक्कु नादर्
पुक्क रप्पॆरुन् दीविडै युऱैबवर् पुहऴोय् 3197

पुकऴोय्–यशस्वी; मुऱ्करम् कैयर्–मुद्गरहस्त हैं; मू इलै वेलिन्नर्–त्रिशूली हैं; मुचुण्टि चक्करत्तिन्नर्–'मुशुण्डी' और चक्र रखनेवाले हैं; चापत्तर्–धनु के धारक हैं; ॲन्न निन्ऱ–ऐसे जो हैं; तलैवर्–सरदार हैं; नक्करम् कटल्–नक्र जिनमें रहते हैं ऐसे समुद्र; नाल् ऒरु मून्ऱुक्कु–चार और तीन (सात) के; नातर्–स्वामी हैं; पुक्करम् पॆरुम् तीवु–पुष्कर नामक द्वीप में; इटै उऱैपवर्–वास करने वाले। ३१९७

हे यशस्वी ! ये मुद्गरहस्त हैं ! त्रिशूलधारी हैं। 'मुशुंडी' और चक्र के रखनेवाले हैं। धनुर्हस्त हैं। नक्रों के वासस्थान सातों सागरों के स्वामी हैं। पुष्करद्वीपवासी हैं। ३१९७

मऱलि यॆप्पण्डु तम्बॆरुन् दाय्शॊल वलियार्
पुऱनि लैप्पॆरुञ् जक्कर माल्वरैप् पॊरुप्पिन्

विऱलुहॅ उच्चिरॅ यिट्टय लिरन्दिड विट्टोर्
इऱलि यप्पॅरुन् दोविडै युऱॅबव रिवर्हळ् 3198

इवर्कळ्–ये; इऱलि अ पॅरु तीविट्–'इऱलि' नामक उस बड़े द्वीप में; उऱॅपवर्–रहनेवाले हैं; पण्टु–पहले; तम्–अपनी; पॅरु ताय् चॊल–आदरणीय माता के कहने से; पुऱम् निलै–(सातों लोकों के) उस पार रहनेवाली; पॅरु चक्करम् माल् वरॅ पॊइप्पित्–बड़ी चक्रवालगिरि पर; वलियाल्–बल से; मऱलियै–यम को; विऱल् कॆट–निर्बल बनाकर; चिऱॅ इट्टु–कारा में बन्द करके; अयन् इरन्तिट–ब्रह्मा के प्रार्थना करने पर; विट्टोर्–छोड़नेवाले हैं ये। ३१९८

ये 'इऱलि' (प्लक्ष!) नाम के बड़े द्वीप के वासी हैं। पहले अपनी मान्य माता की आज्ञा से इन्होंने यम को निर्बल बनाकर लोकों के उस पार के चक्रवाल पर्वत पर बंदी बनाकर रखा था। फिर ब्रह्मा के याचना करने पर उसे छुटकारा दिया। ३१९८

वेदा ळक्करत् तिवर्पण्डु पुवियिडम् विरिवु
पोदा दुन्दमक् कॆऴुवहै यायनिलॆ पुवनम्
पादा ळत्तुऱॅ वीरॆन नान्मुहन् पणिप्प
नादा पुक्किरुन् दुनक्कन्बि नालिव णडैन्दार् 3199

नाता–नाथ; वेताळम् करत्तु–'वेताल', पिशाच के-से हाथों वाले; इवर्–ये; पण्टु–पहले; पुवि इटम्–भूलोक; उन् तमक्कु विरिव पोतातु–तुम्हारे (रहने के) लिए विस्तार में पर्याप्त नहीं; एऴु वकैयाय् निलॆ पुवनम्–सप्तविध (अधो) लोकों में एक; पाताळत्तु उऱॅवीर्–पाताल में रहो; ॲन–ऐसा; नान्मुकन्–चतुर्मुख के; पणिप्प–आज्ञा देने पर; पुक्किरुन्तु–प्रवेश करके; उनक्कु अन्पिनाल्–आप पर प्रेम के कारण; इवण् नटन्तार्–यहाँ चलकर आये हैं। ३१९९

ये, जिनके हाथ वेताल, पिशाच के हाथों के समान हैं, पाताल में रहनेवाले हैं। वहाँ वे इसलिए रहते हैं कि ब्रह्मा ने उनसे कहा था कि तुम लोग सातों (अधो-)लोकों में एक पाताल में रहो, क्योंकि उन्हें डर था कि यह भूमि उनके रहने योग्य विस्तार नहीं रखती। अब वे आपके प्रति प्रेम के कारण यहाँ चलकर आये हैं। ३१९९

निरुदि तन्कुलप् पुदल्वर्निन् कुलत्तुक्कु नेरे
परुदि तेवर्हट् कॅन्नत्तक्क पण्बिनर् पानक्
कुरुदि पॅऱ्ऱिल रेऱ्कड लेऴॅयुङ् गुडिप्पार्
इरुणि रत्तव रॊरुत्तरेऴ् मलैयैयु मॆडुप्पार् 3200

निरुति तन् कुलम् पुतल्वर्–(ये) 'निर्ऋति' के कुल में आयी संतान हैं; निन् कुलत्तुक्कु नेर्–तुम्हारे कुल के मुक़ाबले के हैं; तेवर्कट्कु–देवों में; परुति ॲन्न तक्क–सूर्य कहने योग्य; पण्पित्तर्–गुण वाले हैं; पानम्–पेय; कुरुति–रक्त; पॅऱ्ऱिलरेल्–न पा सकें तो; कटल् एऴैयुम्–सातों समुद्रों को; कुटिप्पार्–पी लेंगे;

इरुळ् निऱत्तवर्–अन्धकारवर्ण हैं; ओरुत्तर्–एक ही; एळ् मलैयैयुम्–सातों पर्वतों को; अॅट्प्पार्–उठा देगा। ३२००

ये निर्ऋति के वंश में उत्पन्न वीर हैं। वे आपके कुल का मुक़ाबला करनेवाले हैं। देवों में सूर्य जैसे गुणों वाले हैं। पीने योग्य रक्त न मिले तो सातों समुद्रों को पी लेंगे। काले रंग के इनमें एक एक सात गिरियों को उठा सकेंगे ३२००

पार णैत्तवॅम् बन्ऱियै यन्बिनाल् पार्त्त
कार णत्तिनि नादियान् पयन्दपैङ् गळलोर्
पूर णत्तडन् दिशैतोऱु मिन्दिरन् पुलरा
वार णत्तिनै निऱुत्तिये शूडिनर् वाहै 3201

पार् अणैत्त–भूमि को जिन्होंने गले लगा लिया था उन; वॅम् पन्ऱियै–आकर्षक वराह को; अन्पिनाल्–प्रेम से; पार्त्त कारणत्तिनिन्–(भूदेवी ने) देखा, उस कारण से; आतियान् पयन्त–आदिदेव से जनित; पचुमै कळलोर्–चोखे स्वर्ण की बनी पायलधारी हैं; पूरणम्–पूर्ण; तटम् तिचै तोऱुम्–विशाल दिशाओं में; पुलरा–मद जिनका सूखा नहीं है (ताजा है); वारणत्तिनै–अपने उन गजों को; निऱुत्ति–रोककर; वाकै चूटिनर्–विजयमाला पहन लेनेवाले; इन्तिरन् वाकै चूटिनर्–इन्द्र को भी जीतकर विजयमाला पहन ली थी। ३२०१

श्रीमन्नारायण ने वराहावतार लेकर भूदेवी का रक्षण किया था। तब उन्होंने देवी का आलिंगन किया। भूदेवी ने उस सुन्दर रूप को प्रेम की दृष्टि से देखा। उसके फलस्वरूप ये वीर पैदा हुए। इन वीर घंटे-धारी वीरों ने सारी विशाल दिशाओं को जीता था, वहाँ अपने सदा वहनेवाले मदनीरयुक्त गजों को स्थापित किया था और इन्द्र को भी जीत कर 'वाहै' (जयमाला) पहन ली थी। ३२०१

मऱक्कण् वॅञ्जिन मलैयॅन्न विन्निन्ऱ वयवर्
इऱक्कङ् गीऴिलाप् पादलत् तुऱैहिन्ऱ विहलोर्
अऱक्कण् तुञ्जिल नायिरम् बणन्दलै यनन्दन्
उऱक्कन् दीर्न्दन नुऱैहिन्ऱ दिवर्नडन् दोऱुक्क 3202

मऱम् कण्–क्रूर आंखों और; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध के साथ; मलै अॅन्न निन्ऱ–पर्वत के समान जो रहते हैं; इ वयवर्–ये वीर; इऱक्कम् कीऴ् इला–जिससे नीचे कुछ नहीं ऐसे; पातलत्तु उऱैकिन्ऱ–पाताल में रहनेवाले; इकलोर्–वैरी हैं; इवर्–ये; उऱैकिन्ऱतु–जहाँ रहते हैं वहाँ; नटन्तु ओऱुक्क–चल-फिर कर कष्ट देते हैं, इसलिए; आयिरम् पणम् तलै–सहस्रफणी; अनन्तन्–अनंतनाग को; उऱक्कम् तीर्न्तनन्–निद्रा छोड़नी पड़ी; अऱ–बिलकुल; कण् तुञ्चिलन्–आँखें मूंदी ही नहीं। ३२०२

ये, जो खड़े हैं, क्रूर आँखों और भयानक क्रोध के साथ पर्वतों के समान, पाताल में रहनेवाले द्वेषपूर्ण वीर हैं। इनके आने-जाने से सहस्रफणी

अनंत को निद्रा त्यागना पड़ा और उसकी आँखें बिलकुल झपती ही नहीं। ३२०२

काळि यैप्पण्डु कण्णुदल् काट्टिय कालै
मूळ मुट्ट्रिय शितक्कोंडुत् दीयिडै मुळैत्तोर्
कूळि हट्कुनल् लुडन्पिरन् दार्पॆरुङ् गुळुवाय्
वाळि मैक्कवुम् वाळॆयि ट्रिमैक्कवुम् वरुवार् 3203

पण्टु–पहले; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी ने; काळियै–कालीदेवी को; काट्टिय कालै–(ऊर्ध्व-तांडव नृत्य) दिखाया तब; मूळ मुट्ट्रिय–उठाकर जो बढ़ा; चितम्–उस क्रोध रूपी; कोंटु ती इटै–भयानक अग्नि से; मुळैत्तोर्–आविर्भूत हुए; कूळिकट्कु–पिशाचों के; नल्–अच्छे; उटन् पिरन्तार्–सहोदर (-सम) हैं; वाळ् इमैक्कवुम्–तलवार चमकाते हुए; वाळ् ऍयिरु–खड्गदंत; इमैक्कवुम्–चमकाते हुए; पॆरुकुळुवाय्–बड़ी भीड़ में; वरुवार्–आनेवाले हैं। ३२०३

एक बार भालनेत्र शिवजी ने कालिकादेवी को अपने ऊर्ध्वतांडव-नृत्य दिखाया था। तब उनकी प्रवृद्ध क्रोधाग्नि से उत्पन्न थे ये वीर ! पिशाचों के सहोदर ! तलवारें और अपने खड्ग-सम वक्र दाँत चमकाते हुए वे बड़ी भीड़ बाँधकर आनेवाले हैं। ३२०३

पावन् दोन्ट्रिय कालमे तोन्ट्रिय पळैयोर्
तीवन् दोन्ट्रिय मुळैत्तुणै यॆन्नत्तॆरु कण्णर्
कोवन् दोन्ट्रिडिल् तायैयु मुयिरुणुङ् गॊडियोर्
शावन् दोन्ट्रिड वडतिशै मेल्वन्दु शार्वार् 3204

चावम् तोन्ट्रिट–चाप का प्रदर्शन करते हुए; वट तिचै मेल् वन्तु–उत्तरी दिशा में आकर; चार्वार्–जो रहते हैं ये; पावम् तोन्ट्रिय कालमे–पाप के जन्म के काल में ही; तोन्ट्रिय–उदित; पळैयोर्–प्राचीन लोग हैं; तीवम् तोन्ट्रिय–दीप जिनमें दिखें; तुणै मुळै ॲन्न–ऐसी गुहा के जोड़े के समान; तॆरु कण्णर्–भयोत्पादक आँखों वाले हैं; कोवम् तोन्ट्रिटिल्–कोप आया तो; तायैयुम् उयिर् उणुम्–माँ के भी प्राण अशन करनेवाले; कॊटियोर्–क्रूर लोग हैं। ३२०४

ये जो चापहस्त वीर उत्तर दिशा में आ ठहरे हैं, तभी पैदा हुए प्राचीन लोग हैं जब पाप पैदा हुआ था। आँखें देखिए, दीपसहित गुफाओं के जोड़े के समान लगती हैं। कोप उठा तो माता के भी प्राण पीनेवाले निर्दय हैं ये वीर ! । ३२०४

शीट्ट्र माहिय वॆम्मुह नुलहॆलान् दीप्पान्
एट्ट्र मानुदल् विळियिडैत् तोन्ट्रित्त रिवराल्
कूट्ट्र माहिय कॊम्बिनम् बालुडैक् कॊडुमै
ऊट्ट्र माहप्पण् डुदित्तव रॆन्बव रुत्तराल् 3205

इवर्–ये; चीऱ्ऱम् आकिय–क्रुद्ध; ऐमुकन्–पंचमुख शिव की; उलकु अँलाम् तीप्पान्–तीनों लोकों को जलाने हेतु; एऱ्ऱ–अपनायी; मा नुतल् विऴि इटै–बड़ी, भाल की आँख से; तोऩ्ऱितर्–उदित हैं; उवर्–उधर जो हैं; ऐम्पाल् उदै–केश वाली; कूऱ्ऱम् आकिय–यम-सी; कोम्पिन्–एक स्त्री से; कोटुमै कऱ्ऱम् आक–निर्दयता की (आधार) लकड़ी के रूप में; पण्टु उतित्तवर्–पहले पैदा हुए; अँऩ्पवर्–कहे जाते हैं। ३२०५

ये, जो इधर हैं, पंचमुख शिवजी की भाल की बड़ी आँख से प्रगट हुए जिसको कि उन्होंने त्रिपुर जलाने के लिए क्रुद्ध होकर रच लिया था। उधर वे एक ऐसी स्त्री के उदर से पैदा हुए जो केशवाले यम-सी थी। ३२०५

कालन् मार्बुळैच् चिवन्कऴल् पडवनुरु कान्ऱ
वेलै येयन्न कुरुदियिल् तोन्ऱिय वीरर्
शूल मेन्दिमुन् निऩ्ऱव रिन्निन्ऱ तोहैयार्
आल कालत्ति नमिऴ्दिन्मुन् पिऱन्दपो ररक्कर् 3206

शूलम् एन्ति–शूल ले; मुन् निन्ऱवर्–सामने जो खड़े हैं वे; कालन् मार्पु उऴै–यम की छाती पर; चिवन् कऴल् पट–शिव के चरण के प्रहार करते वक़्त; अन्ऱु–तब; कान्ऱ–(उस छाती ने) जो वमन किया; वेलै अन्न–उस समुद्र के समान; कुरुतियिल्–रक्त में; तोन्ऱिय वीरर्–उदित वीर हैं; इ निन्ऱ तोकैयार्–यहाँ जो खड़े हैं वह समूह; आल कालत्तिन्–हलाहल से; अमिऴ्तिन् मुन्–और अमृत से पहले; पिऱन्त–जनमे; पोर् अरक्कर्–योद्धा राक्षस हैं। ३२०६

उधर जो शूल लिये खड़े हैं, वे यम के उस समुद्र-सम रक्त से पैदा हुए जो उसने तब वमन किया था, जब शिवजी ने मार्कण्डेय को बचाने के लिए उसके वक्ष पर लात मारी थी। इधर जो बड़ी भीड़ बाँधे खड़े हैं, वे हलाहल और अमृत से पहले पैदा हुए योद्धा राक्षस हैं। ३२०६

वडवैत् तीयिनिल् वाशुहि कान्ऱमा कडुवै
इडवत् तीयिडै यॆऴुन्दव रिवर्हण् मऴैयैत्
तडवत् तीयॆन निमिर्न्दकुञ् जियरुवर् तनित्तेर्
कडवत् तीन्दवॆम् बुरत्तिडैत् तोन्ऱिय कऴलोर् 3207

इवर्–ये; वाचुकि कान्ऱ–वासुकी ने जो उगला; मा कटुवै–उस भीषण विष को; वटवै तीयितिल् इट–बड़वाग्नि में डाला गया तब; अ ती इटै–उस अग्नि में; ऍऴुन्तवर्–प्रकट हुए; कणम् मऴैयै–समूहगत मेघों को; तटव–स्पर्श करते हुए; ती ॲन–अग्नि के समान; निमिर्न्त–उन्नत; कुञ्चियर्–केश वाले; उवर्–वे; तनि तेर्–अनुपम रथ को; कटव–(ब्रह्मा के सारथी के रूप में) चलाते; तीन्त–(शिव द्वारा) जलाये गये; वॆम् पुरत्तिटै–भयंकर त्रिपुर में; तोन्ऱिय–प्रगट; कऴलोर्–पायलधारी हैं। ३२०७

ज़ब समुद्रमंथन हुआ तब वासुकी ने बड़ा भयंकर विष वमन किया

था न ! उसको जब वड़वाग्नि में डाला गया, तब जो उस विष से पैदा हुए वे हैं ये ! जब शिवजी ने ब्रह्मा द्वारा चालित रथ पर जाकर त्रिपुर जलाया, तब उस जलते त्रिपुर से जो पैदा हुए वे मेघस्पर्शी केशों वाले वीर उधर खड़े हैं, देखें। ३२०७

इत्तैय रिन्नवर् रॆन्नदो रळविल रय
नित्तैय वुडनुरित् तुरैक्कवु मरिदिवर् निरैन्नद
वित्तैय मुमुवॆरु वरङ्गळुम् दवङ्गळुम् विळम्बिन्
अत्तैय पेरुह मायिरत् तळविनु मडङ्गा 3208

ऐय–प्रभु; इत्तैयवर्–इतने; इन्नवर्–कौन; ऍन्नपतु ओर् अळवु इलर्–कहें इसकी कोई गिनती नहीं; इवर्–इनके सम्बन्ध में; नित्तैयवुम्–सोचना; कुरित्तु उरैक्कवुम्–और स्पष्ट कहना; अरितु–कठिन है; इवर्–इनमें; निरैन्नत वित्तैयमुम्–भरी वंचनाएँ; वॆरु वरङ्कळुम्–महान वर और; तवङ्कळुम्–तप; विळम्पिन्–कहना हो तो; अत्तैय–वैसे; पेर् उकम् आयिरत्तु–हजार बड़े युगों के; अळवित्तुम्–परिमाण में भी; अटङ्का–पूरा नहीं हो सकेंगे। ३२०८

प्रभु ! ऐसे वीर कितने, कैसे, कौन —इन सबका कोई हिसाब ही नहीं ! इनके संबंध में सोचना या स्पष्ट विवरण देना कठिन है। इनकी वंचनाएँ, इनसे प्राप्त महान वर, इनके तप आदि कहना चाहें तो हजार बड़े युग भी पर्याप्त नहीं हो सकेंगे। ३२०८

ऒरुवरे शॆन्रव् वुरुदिरर् कुरङ्गैयु मुरवोर्
इरुव रॆन्रवर् दम्मैयु मॊरुहैक्कॊण् डॆरुरि
वरुवर् मर्रिनिप् पहर्वदॆन् वानवर्क् करिय
तिरुव वॆन्रनर् तूदुव रिरावणन् शॆप्पुम् 3209

वानवर्क्कु अरिय–देवदुर्लभ; तिरुव–श्रीमान; ऒरुवरे–एक ही; चॆन्रु–जाकर; अव्–उस; उरु तिरल् कुरङ्कैयुम्–अति शक्तिमान वानर को और; उरवोर् ऍन्रवर्–प्रतापी कहलानेवाले; इरुवर् तम्मैयुम्–दोनों को; ऒरु कै कॊण्टु–एक हाथ में पकड़कर; ऍर्रि वरुवर्–पीटता आयगा; मर्रु इनि–और कुछ; पकर्वतु–कहना; ऍन्–क्या; ऍन्रनर् तूतुवर्–कहा दूतों ने; इरावणन् चॆप्पुम्–रावण कहने लगा। ३२०९

हे देवदुर्लभ श्री के स्वामी ! इस सेना में एक, एक ऐसे हैं, जो अकेले जाकर उस अति वलवान वानर को और प्रतापी मान्य दोनों नरों को एक हाथ से पकड़कर पीटते हुए ले आ सकता है ! फिर क्या कहना ? दूतों ने यह कहा। तव रावण कहने लगा। ३२०९

अत्ति रत्तिदर् कॊण्णॆनत् तॊहैवहुत् तियन्र
अत्ति रत्तिनै यरैदिरॆन् रुरैशॆय्व् ववर्हळ्

ऑत्त वॆळ्ळमो रायिर मुळदॆन वुरैत्तार्
पित्तर् इप्पडैक् कॆण्शिरि दॆन्ऱनर् पॆयर्न्दार् 3210

इतर्कु–इस सेना की; ऍण् ॲत्तिरत्तु–संख्या कितनी; ॲत–ऐसा; तॊकै वकुत्तु इयत्ऱ–संग्रह करके; अ तिऱत्तिनै–उस संख्या को; अऱैतिर्–कहो; ऍन्ऱु–ऐसा; उरै चॆय–कहने पर; अवर्कळ्–उन दूतों ने; ऑत्त वॆळ्ळम्–बराबर 'वॆळ्ळम्'; ओर् आयिरम् उळतु–एक हज़ार की है; ॲत उरैत्तार्–ऐसा कहनेवाले; पित्तर्–पागल हैं; इ पटैक्कु–इस सेना के लिए; ऍण् चिऱितु–संख्या की उच्चतम गिनती जो अब है वह छोटी है; ऍन्ऱनर्–कहकर; पॆयर्न्तार्–हटकर खड़े हो गये। ३२१०

रावण ने पूछा कि इस सेना की संख्या को संग्रह करके कहो। दूतों ने कहा कि पूरे 'वॆळ्ळम्' के हज़ार हैं, ऐसा कहनेवाले पागल समझे जायँगे, क्योंकि संख्या में उच्चतम गिनती जो है वह इसके लिए कम है, अपर्याप्त है। कहकर वे अलग जा खड़े हुए। ३२१०

पडैप्पॆ रुङ्गुलत् तलैवरैक् कॊणरुदि रॆन्बाल्
किडैत्तु नानवर्क् कुऱ्ऱुळ पॊरुळॆलाङ् गिळत्ति
अडैत्त नल्लुरै विळम्बिल मळवळा यमैवुऱ्
ऱुडैत्त पूशनै वरन्मुऱै यियऱ्ऱुवॆन् ऱुरैत्तान् 3211

नान् किटैत्तु–मैं पास रहकर; अवर्क्कु उऱ्ऱु उळ–उन्हें मिले; पॊरुळ् ऍलाम्–विषय सब; किळत्ति–बताकर; अटैत्त–युक्त; नल् उरै–शिष्ट वचन; विळम्पित्तु–कहकर; अमैवुऱ्ऱु–निश्चितता के साथ; अळवळाय्–संभाषण करके; उटैत्त पूचनै–योग्य सत्कार; वरन् मुऱै इयऱ्ऱ–यथाक्रम करने; पटै पॆरु कुलम् तलैवरै–बड़ी संख्या में रहनेवाले सेनापतियों को; ऍन् पाल्–मेरे पास; कॊणरुतिर्–लाओ; ऍन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा कहा। ३२११

रावण ने उनसे कहा। मैं उन्हें अपने पास रखकर उनको होनेवाली सभी बातें बताना चाहता हूँ। निश्चितता के साथ शिष्ट वचन कहकर उनसे संभाषण करने की मेरी इच्छा होती है। और भी यथोचित सत्कार यथाक्रम करने की कामना रखता हूँ। इसलिए तुम लोग जाकर बड़े सेनानायकों के समूह को मेरे पास ले आओ। ३२११

तूदर् कूऱिडत् तिशैतॊऱुन् दिशैतॊऱुन् दॊडर्न्दार्
ओद वेलैयि नायक रॆवरुमुवन् दुऱ्ऱार्
पोदु तूविनर् वणङ्गिन रिरावणन् पॊलन्ऱाळ्
मोदु मोलियिन् पॆरॊलि वानिनै मुट्ट 3212

तूतर्–दूतों के; कूऱिट–कहने पर; ओतम् वेलैयिन्–उमगते सागर-सम विशाल; नायकर् ऍवरुम्–सेनानायक सभी; तिचै तॊऱुम् तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; तॊटर्न्तार्–श्रेणीबद्ध हो; वन्तु उऱ्ऱार्–आ पहुँचे; इरावणन् पॊलम् ताळ्–रावण के मनोरम चरणों पर; पोतु तूविनर्–पुष्प बिखेरकर; मोतुम् मोलियिन्–टकराने

वाले किरीटों का; पेर् ऑलि–बड़ा शब्द; वानितै मुट्ट–आकाश से टकराए, ऐसा; वणङ्कितर्–विनत हुए। ३२१२

दूतों ने जाकर सेनानायकों से रावण की इच्छा बतायी। उमगते सागर के समान विशाल सेनानायकों के समूह पंक्तियों में सभी दिशाओं से आये और रावण के पास पहुँचे। उन्होंने रावण के आकर्षक चरणों में पुष्प बरसाये और नमस्कार किया। तब मुकुटों की टकराहट से जो बड़ी ध्वनि उठी, वह आकाश से जा टकरायी। ३२१२

अनैय रियावरु मरुहुसॅन् ऱडिमुऱै वणङ्गि
विनैय मेविन रितिदितङ् गिरुन्दोर् वेलै
नितैयुम् नल्वर वाहनुम् वरवॅन निरम्बि
मनैयु मक्कळुम् वलियरे यॅन्ऱनन् मऱवोन् 3213

अनैयर् यावरुम्–वे सभी; अरुकु चॅन्ऱु–पास जाकर; अटि मुऱै वणङ्कि–चरणों में अपनी-अपनी बारी में नमस्कार करके; विनैयम् मेविनर्–विनय के साथ रहकर; अङ्कु–वहाँ; इतितिन् इरुन्ततु–सुख से रहे; ओर् वेलै–तब; मऱवोन्–पराक्रमी रावण ने; नुम् वरवु–तुम्हारा आगमन; नितैयुम्–मेरा हित सोचनेवाला; नल् वरवु आक–शुभ आगमन हो; ऍन–कहकर; निरम्पि–मन तृप्ति से भरकर; मनैयुम् मक्कळुम्–पत्नियाँ और संतानें; वलियरे–सकुशल हैं क्या; ऍन्ऱनन्–पूछा। ३२१३

वे सब जब रावण के पास जाकर चरणों में एक-एक करके क्रम से नमस्कार करके सुख से रहे, तब रावण ने स्वागत के वचन कहे। हे वीरो! मेरे हितैषी तुम लोगों का आगमन शुभ हो! फिर सच्चे तृप्त मन के साथ प्रश्न किया कि क्या तुम लोगों की पत्नियाँ और संतानें स्वस्थ हैं?। ३२१३

पॅरिय तिण्बुय नीयुळै तववरम् बॅरिदाल्
उरिय वेण्डिय पॉरुळॅला मुडिप्पदऱ् कीन्ऱो
इरियल् तेवरैक् कण्डतम् बहैपिऱि दिल्लै
अरिय वॅन्नॅमक् कॅन्ऱन रवन्करुत् तऱिवार् 3214

अवन् करुत्तु–उसका आशय; अऱिवार्–समझनेवाले उन्होंने; पॅरिय–बड़े; तिण् पुयन्–सुदृढ़ कन्धों वाले आप; उळै–हैं; तवम् वरम्–तपस्या से प्राप्त वर; पॅरितु–बड़े हैं; उरिय–युक्त; वेण्टिय पॉरुळ् ऍलाम्–इच्छित मनोरथ सभी; मुटिप्पतऱ्कु–पूरा कर लेना; ऑन्ऱो–कोई (कठिन) बात है क्या; तेवरै–देवों को; इरियल् कण्टनम्–भागते देखा; पकै पिऱितु इल्लै–शत्रु दूसरा नहीं; ऍमक्कु अरियतु ऍन्–हमारे लिए कठिन क्या है; ऍन्ऱनर्–कहा। ३२१४

उसका सच्चा आशय जानकर उन्होंने उत्तर में कहा कि बड़े तथा सशक्त कंधोंवाले आप हैं! आपके तपप्राप्त महान वर हैं! फिर युक्त

और इच्छित मनोरथ पूरा कर लेना कोई कठिन काम है क्या ? हमने देवों को भागते देखा है। फिर शत्रु कोई नहीं है। हमारे लिए असाध्य क्या है ? । ३२१४

मादर् रार्हळु मैन्दरु निन्मरुङ् गिरुन्दार्
पेदु रादव रिल्लैनी वरुन्दिनै पॅरिदुम्
यादु कारण मरुळॅन वनैयव रिशैत्तार्
शीदै कादलिर् पिरन्दुळ परिशॅलान् दॅरित्तान् 3215

निन् मरुङ्कु इरुन्तार्–आपके पास रही; मातरार्कळुम्–स्त्रियाँ और; मैन्तरुम्–पुत्र; पेतुरातवर् इल्लै–व्यग्र न होनेवाले नहीं हैं; नी–आप; पॅरितुम्–बहुत ही; वरुन्तिनै–दुःखी हुए; कारणम् यातु–कौन-सा कारण है; अरुळ्–कहने की कृपा करें; ॲन–ऐसा; अनैयवर् इचैत्तार्–उन्होंने कहा; चीतै कातलिल्–सीता के प्रेम के कारण; पिरन्तुळ परिचु ॲलाम्–जो बीता वह सब हाल; तॅरित्तान्–बताया (रावण ने)। ३२१५

हम देखते हैं, आपके पास रही स्त्रियों और पुरुषों (पुत्र आदि) में कोई नहीं दिखता जो अशान्त नहीं हो ! आप भी बेचैन हैं ! क्या कारण है ? बताने की कृपा करें। —उन्होंने ऐसा पूछा। तब रावण ने सीता-प्रेम के फलस्वरूप जो हुआ था वह सारा हाल बता दिया। ३२१५

कुम्ब कन्ननो डिन्दिर शित्तैयुङ् गुलत्तिन्
वॅम्बु वॅञ्जिनत् तरक्कर्दङ् कुळुवैयुम् वॅन्रार्
अम्बि नाऱ्चिरु मनिदरे नन्ऱुनम् माऱ्ऱल्
नम्ब शेनैयुम् वानर मेयॅन नक्कार् 3216

नम्प–नायक; कुम्पकन्ननोटु–कुंभकर्ण के साथ; इन्तिरचित्तैयुम्–इन्द्रजित् को; कुलत्तिन्–वीरों के कुल में जनमे; वॅम्पुम्–जलनेवाले; वॅम् चिनत्तु अरक्कर् तम्–अति क्रुद्ध राक्षसों के; कुळुवैयुम्–दलों को; अम्पिनाल् वॅन्ऱार्–बाणों से जीतनेवाले; चिऱु मनितरे–छोटे मानव हैं क्या; नम् आऱ्ऱल् नन्ऱु–हमारा बल भी अच्छा है; चेनैयुम् वानरमो–सेना भी वानर की है क्या; ॲन नक्कार्–कहकर हँसे। ३२१६

तब वे हँसने लगे। नायक ! कुम्भकर्ण, इन्द्रजित् और राक्षसकुल के श्रेष्ठतम भयानक क्रोधी वीर —इन सबको बाणों से मारनेवाले क्या अल्प नर ही हैं ? हमारा बल भी खूब रहा ! सेना भी वानरों की है क्या ? उन्होंने हँसी की। ३२१६

उलहैच् चेडन्ऱु नुच्चिनिन् ऱॅडुक्कवन् ऱोरेळ्
मलैयै वेरोडुम् वाङ्गवन् ऱुङ्गैयाल् वारि
अलैहोळ् वेलैयैक् कुडित्तवन् ऱळैत्तदु मलरो
डिलैहळ् कोदुमक् कुरङ्गिन्मे लेवक्कॊ लॅम्मै 3217

अळैत्ततु–हमें बुलाना; उलकै–पृथ्वी को; चेटत् तन्–शेषनाग के; उच्चि निन्ऱु–सिर पर से; ऍट्टुक्क अन्ऱु–निकालने के लिए नहीं; ओर्–अनुपम; एळ् मलैयै–सप्तगिरि को; अकम् कैयाल्–हथेली से; वेरोटुम् वाङ्क अन्ऱु–जड़ से उखाड़ लेने नहीं; अलै कोळ्–तरंग-सहित; वेलैयै–सागर को; वारि कुटिक्क–उठाकर पीने के लिए; अन्ऱु–नहीं; मलरोटु इलैकळ्–पुष्प और पत्र; कोटुम्–खानेवाले; अ–उन; कुरङ्कित् मेल्–वानरों पर; ऍम्मै–हमें; एवक् कोल्–भेजने के लिए क्या। ३२१७

उन्होंने आगे पूछा कि क्या आपने इसलिए नहीं बुलाया कि हम पृथ्वी को आदिशेषनाग के सिर से उठा फेंकें? इसलिए नहीं कि हम अपनी हथेलियों से सप्तगिरि को उखाड़ लें? इसलिए भी नहीं कि हम समुद्र के जल को चुल्लू में भरकर पी लें? पर क्या इसीलिए बुलाया है कि पुष्पपत्राहारी वानरों पर चढ़ जाने को प्रेरित करें? । ३२१७

ऍन्ऱक्　　कैयॅरिन्　　दिडियुरु　　मेरॅल　　नक्कु
मिन्नुम्　　वॅळ्ळॅयिर्　　ऱरक्करै　　यङ्गैयाल्　　विलक्कि
वन्ऩि　　यॅन्बवन्　　पुट्करत्　　तीवुक्कु　　मन्ऩन्
अन्न　　मानिडर्　　तम्वलि　　यादॅन　　वरैन्दान् 3218

ऍन्ऩ–कहकर; कै ऍरिन्तु–ताली पीटकर; इटि उरुम् एरु ऍन–अशनिराज के समान; नक्कु–हँसकर; पुट्करम् तीवुक्कु मन्ऩन्–पुष्कर द्वीप के राजा; वन्ऩि ऍन्पवन्–वह्नि नाम के (राजा) ने; मिन्नुम्–चमकनेवाले; वॅळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों वाले; अरक्करै–राक्षसों को; अम् कैयाल्–सुन्दर हाथों (के इशारे) से; विलक्कि–चुप कराके; अन्न–वैसे; मानिटर् तम् वलि–नरों का प्रताप; यातु–कैसा; ऍन अरैन्तान्–ऐसा पूछा। ३२१८

ऐसा कहकर ताली पीटकर वे ठठाकर हँसने लगे, तो पुष्कर द्वीप के राजा 'वह्नि' ने उन श्वेतदंतुले राक्षसों को अपने सुन्दर हाथों के इशारे से रोका और रावण से पूछा कि ऐसे उन नरों का बल ही कैसा है?। ३२१८

मऱ्ऱ　　वाशहङ्　　गेट्टलुम्　　मालिय　　वान्वन्
दुऱ्ऱ　　तन्मैयुम्　　मनिदर　　दूऱ्ऱमु　　मुडनाम्
कोऱ्ऱ　　वानरत्　　तलैवर्दम्　　दहैमैयुम्　　कूऱक्
किऱ्ऱुम्　　केट्टिरा　　लॅन्ऱवन्　　किळत्तुवान्　　किळरन्दान् 3219

मऱ्ऱु–फिर; अ वाचकम् वेट्टलुम्–वह कथन सुनते ही; मालियवान्–माल्यवान; वन्तु–आकर; उऱ्ऱ तन्मैयुम्–हुआ हाल और; मनितरतु–नरों का; ऊऱ्ऱमुम्–साहस; उटन् आम्–साथ रहनेवाले; कोऱ्ऱम्–विजयी; वानरर् तलैवर्तम्–वानर नायकों की; तकैमैयुम्–योग्यता; कूऱकिऱ्ऱुम्–बता सकते हैं; केट्टिर्–सुनिए; ऍन्ऱु–कहकर; अवन्–वह; किळर्त्तुवान्–कहने के लिए; किळर्न्तान्–उठा। ३२१९

उसका प्रश्न सुनकर माल्यवान आगे आया। उसने कहा कि हम यहाँ घटा वृत्तांत, नरों का पराक्रम, साथ रहती वानर-सेना के विजयी नायकों की योग्यता आदि समझा सकेंगे। यह कहकर वह विस्तार से कहने के लिए तैयार हो उठा। ३२१९

परिय तोळुडै विरादन्ना रीशनुम् बट्टार्
करिय माल्वरै निहर्कर तूडणर् कदिर्वेल्
तिरिशि रावबर् तिरेक्कड लनपेरुञ् जेनै
ऑरुवि लालोरु नाळिहैप् पॊळुदिनि नुलन्दार् 3220

ऑरु विलाल्—एक ही धनु से; परिय—स्थूल; तोळ् उटै—कन्धों वाले; विरातन् मारीचनुम्—विराध और मारीच; पट्टार्—मरे; करिय—काले; माल् वरै—बड़े पर्वत; निकर्—के समान; कर तूटणर्—खर और दूषण; कतिर् वेल्—तेजोमय भाले के धारक; तिरिचिरा अवर्—त्रिशिरा नामक वे; तिरै कटल—तरंग-सहित सागर; अन—के सदृश; पॆरु चेनै—बड़ी सेना; ऑरु नाळिकै पॊळुतिनिल्—एक घड़ी के समय में; उलर्न्तार्—मिटे। ३२२०

राम के एक ही धनु के प्रताप से स्थूलस्कन्ध विराध और मारीच मरे। काले पर्वत के समान खर और दूषण और तेजोमय भालाधारी त्रिशिरा— वे और तरंगसंकुल सागर-सम अपनी सेना के साथ एक ही घड़ी की देर में मर मिटे। ३२२०

आळि यन्ननी रऱितिरन् ऱेकड लनैत्तुम्
ऊळिक् कालॆनक् कडप्पवन् वालियॆन् बोनै
एळ् कुन्ऱमु मॆडुक्कुरु मिडुक्कनै यिन्नाळ्
पाळि मार्बहम् बिळन्दुयिर् कुडित्तदोर् पहळि 3221

आळि अन्न—समुद्र के समान विशाल; नीर्—तुम लोग; कटल् अनैत्तुम्—सारे सागरों को; ऊळि काल् ॲन—युगांत पवन के समान; कटप्पवन्—लाँघनेवाले; वालि ॲन्पोनै—वाली जो था उसे; अऱितिर् अन्ऱे—जानते न; एळु कुन्ऱमुम्—सातों गिरियों को; ॲटुक्कुरुम्—उठा ले सकनेवाला था; मिटुक्कनै—ऐसे उस बलवान को; इनाळ्—इस समय; ओर् पकळि—एक बाण ने; पाळि मार्पुअकम्—कठोर वक्ष प्रदेश को; पिळन्तु—चीरकर; उयिर् कुटित्ततु—प्राण पी लिये। ३२२१

तुम लोग, जिनका समूह सागर-सम बड़ा विशाल है, वाली को जानते ही हो, जो सातों समुद्रों को युगांतपवन के समान लाँघ सकता था। सातों गिरियों को उत्पाटित करने की शक्ति रखनेवाले उसके वक्ष को राम के एक बाण ने विदीर्ण करके उसके प्राण पी लिये। यह हाल का समाचार है। ३२२१

इङ्गु वन्दुनीर् विनायदॆ नॆऱितिरैप् परवै
अङ्गु वॆन्दिल दोशिऱि दऱिन्ददु मिलिरो

कङ्गै शूडितन् कडुञ्जिलै यौडितृतवक् कालम्
उङ्गळ् वान्शॅवि पुहुन्दिल दोमुळङ् गोदै 3222

नीर्-तुम लोग; इङ्कु वन्तु-यहाँ आकर; विनायतु एन्-पूछते क्यों; तिरै ऍरि-जिस पर तरंगे टकराती चलती हैं वह; परवै-समुद्र; अङ्कु वॅन्तिलतो-वहाँ (रामबाण से) जल नहीं उठा क्या; चिरितु अरिमृततुम् इलिरो-कुछ जाना नहीं क्या; कङ्कै चूटि तन्-गंगाधर के; कटु चिलै-भीषण धनु को; ऑटित्त अ कालम्-(जिस दिन) तोड़ा गया उस दिन; मुळङ्कु ओतै-जो उठा वह शोर; उङ्कळ् वान् चॅवि-तुम्हारे बड़े कानों में; पुकुन्तिलतो-घुसा नहीं था क्या। ३२२२

तुम लोग इधर आकर क्या पूछते हो ? राम ने अपने बाण से समुद्र को जलाया था। तब क्या वहाँ भी समुद्र नहीं जला ? या तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया था ? गंगाधर के धनु को जिस दिन उसने तोड़ा था, उस दिन जो तुमुल ध्वनि उठी, वह तुम्हारे बड़े कानों में नहीं घुसी क्या ? । ३२२२

आयि रम्बॅरु वॅळ्ळमुण् डिलङ्गैयि नळविल्
तीयिन् वॅय्यपो ररक्कर्दञ् जेनैअच् चेनै
पोय दन्दहन् पुरम्बुह निरैन्ददु पोलाम्
एयु मुम्मैनूल् मार्बिन रॅय्दविल् लिरण्डाल् 3223

इलङ्कैयिन् अळविल्-लंका की सीमा में; तीयिन् वॅय्य-अग्नि के समान दारुण; पोर् अरक्कर् तम्-योद्धा राक्षसों की; चेनै-सेना; आयिरम् पॅरु वॅळ्ळम्-हज़ार बड़े 'वॅळ्ळम्' की; उण्टु-रही; अ चेनै-वह सेना; एयुम्-योग्य; मुम्मै नूल् मार्पिनर्-त्रिसूत्री यज्ञोपवीतवक्ष (राम और लक्ष्मण) द्वारा; ऍय्त-बाण चलाने के लिये प्रयुक्त; इरण्टु विल्लाल्-दो चापों से; अन्तकन् पुरम्-यमपुर; पुक पोयतु-घुस चली; निरैन्ततु पोलाम्-वहीं भर गयी शायद। ३२२३

लंका की सीमा पर अग्नि से भी भीषण योद्धा राक्षसों की सेना, एक हज़ार 'वॅळ्ळम्' की, रहती थी। वह बड़ी सेना त्रिसूत्री यज्ञोपवीतधारी राम और लक्ष्मण के शरप्रेरक दो धनुओ के प्रताप से यमपुर में गयी और वहीं समा गयी शायद ! । ३२२३

कॉर्र्र वॅञ्जिलैक् कुम्बहन् ननुनुङ्गळ् कोमान्
पॅर्र्र मक्कळुम् बिरहत्तन् मुदलिय पिर्रुम्
मर्र्रै वीररु मिन्दिर शित्तॉडु मडिन्दार्
इर्र्रै नाळ्वरै यान्मर् ड्रिवरुमे यिरुन्दोम् 3224

कॉर्र्रम्-विजयी; वॅम् चिलै-भयंकर धनुर्धर; कुम्पकन्ततुम्-कुंभकर्ण और; नुङ्कळ् कोमान्-तुम लोगों के राजा के; पॅर्र्र मक्कळुम्-जनित पुत्र (अतिकाय आदि) और; पिरकत्तन् मुतलिय पिर्रुम्-प्रहस्त आदि अन्य; मर्र्रै वीररुम्-अन्य

वीर; इन्तिर चित्तोंटुम्-इन्द्रजित् के साथ; मटिन्तार्-मर गये; इऱ्ऱै नाळ् वरै-आज दिन तक; यानुम् इरु वरुमे-मैं और दो ही; इरुन्तोम्-रह गये हैं। ३२२४

विजयी व भयंकर धनु रखनेवाला कुंभकर्ण, तुम्हारे राजा के पुत्र (अतिकाय आदि), प्रहस्त आदि, और अन्य वीर सभी इन्द्रजित् के साथ मर गये। आज तक मैं और अन्य दो ही बचे रहे हैं। ३२२४

मूलत् तानैयॅन् ऱुण्डदु मुम्मैनू ऱमैन्द
कलच् चेनैयिन् वॅळ्ळम्मर् ऱदऱ्किनुऱ् कुऱित्त
कालच् चॅय्हैयाल् नीर्वन्दु ळोरिनित् तक्क
शीलच् चेनैयुज् जेनैयिन् शॅय्हैयुन् दॅरिक्किल् 3225

मूलम् तानै-मूलबल; ऑन्ऱु उण्टु-ऐसा एक है; अतु-वह; मुम्मै नूऱु अमैन्त-तीन सौ के; कूलम् चेनैयित्-समूहों की सेना; वॅळ्ळम्-का विस्तार है; अतऱ्कु-उस सेना के लिए; इन्ऱु-आज; कुऱित्त-(युद्ध करना) निर्णीत था; कालम् चॅय्कैयाल्-काल के प्रभाव से; नीर् वन्तुळोर्-तुम लोग आये हो; इनि-अब; तक्क चीलम् चेनैयुम्-योग्य वीरस्वभाव की सेना और; चेनैयित् चॅय्कैयुम्-सेना का कार्य; तॅरिक्किल्-कहना हो। ३२२५

मूलबल की सेना है जिसकी संख्या तीन सौ समूहों के 'वॅळ्ळम्' की है। आज का दिन उसके युद्ध के लिए नियत था। समय का कृत्य है कि तुम लोग आ गये हो। अब योग्य वीरों की (शत्रु) सेना तथा उसका कार्य बताना हो— । ३२२५

ऑरुकु रङ्गुवन् दिलङ्गैयै मलङ्गॅरि यूट्टित्
तिरुहु वॅञ्जिनत् तक्कनै निलत्तोडुन् देय्त्तुप्
पॉरुदु तूदुरैत् तेहिय दरक्कियर् पुलम्बक्
करुदु शेनैयाङ् गडलुमाक् कडलैयुङ् गडन्दु 3226

ऑरु कुरङ्कु वन्तु-एक वानर आकर; इलङ्कैयै-लंका को; मलङ्कु ॲरि ऊट्टि-क्षुब्ध करनेवाली आग लगाकर; अरक्कियर् पुलम्प-राक्षसियों के रोते-कलपते; तिरुकु-ऐंठे; वॅम्-भयंकर; चित्ततु-क्रोध के; अक्कनै-अक्षयकुमार को; निलत्तोटुम्-भूमि से; तेय्त्तु-रौंदकर; पॉरुतु-युद्ध करके; करुतु-गण्य; चेनै आम् कटलुम्-सेना रूपी सागर को (मिटाकर); तूतु उरैत्तु-संदेश का समाचार देकर; मा कटलैयुम्-बड़े सागर को भी; कटन्तु एकियतु-लाँघ कर चला गया। ३२२६

तो एक वानर लंका में आया। लंका को क्षुब्ध करते हुए आग लगायी। राक्षसियों को रुलाया। बहुत ही क्रोधी अक्षकुमार को भूमि पर डालकर रौंदा। युद्ध किया। गण्य सेना-सागर को नष्ट किया, फिर बड़े समुद्र को लाँघकर चला गया। ३२२६

कण्डिलीर् कॊलाङ् गडलिनै मलैहॊण्डु कट्टि
मण्डु पोर्शॆय वानर रियऱ्ऱिय माऱ्क्कम्
उण्डु वॆळ्ळमो रॆऴुबदु मरुन्दोरु नॊडियिऱ्
कॊण्डु वन्ददु मेरुविर् कप्पुरङ् गुदित्तु 3227

कटलिनै–समुद्र को; मलै कॊण्टु–पर्वतों से; कट्टि–(सेतु) बाँधकर; मण्टु पोर् चॆय्य–बड़ा युद्ध करने; वानरर् इयऱ्ऱिय–वानरों द्वारा बनाया गया; माऱ्क्कम् कण्टिलीर् कॊलाम्–मार्ग (सेतु) नहीं देखा क्या तुमने शायद; वॆळ्ळम् ओर् ऎऴुपतु–सत्तर 'वॆळ्ळम्' सेना; उण्टु–उधर है; मेरुविऱ्कु अप्पुऱम्–मेरु के उस तरफ़; कुतित्तु–झपटकर; ओरु नॊटियिल्–एक चुटकी की देर में; मरुन्तु–औषध; कॊण्टु वन्ततु–लाया था। ३२२७

क्या तुमने उस सेतु को नहीं देखा, जिसे बड़ा युद्ध करने के लिए वानरों ने पर्वत रखकर बनाया है? उनके पास सत्तर 'वॆळ्ळम्' की सेना है। एक वानर मेरु के उस तरफ़ उछल गया और एक चुटकी की देर में ओषधि लाया। ३२२७

इदुवि यऱ्कैयोर् शीदैयॆन् ऱिरुन्दवत् तियैन्दाळ्
पॊदुवि यऱ्कैदीर् कऱ्पुडैप् पत्तिनिप् पॊरुट्टाल्
विदिवि ळैत्तदव् विल्लियर् वॆल्हनीर् वॆल्ह
मुदुमॊ ऴिप्पदञ् जॊल्लिनॆ ऩॆऩ्ऱुरै मुडित्तान् 3228

इतु–इस युद्ध का; इयऱ्कै–होना; ओर् चीतै ऎऩ्ऱु–अनुपम सीता नाम की; इरु तवत्तु इयैन्ताळ्–बड़ी तपस्या में लीन रही; पॊतु इयऱ्कै तीर्–असाधारण; कऱ्पुटै–पातिव्रत्यशीला; पत्तिनि–सती; पॊरुट्टाल्–के निमित्त; विति विळैत्ततु–विधि ने रचा है; अ विल्लियर् वॆल्क–(चाहे) वे धनुर्हस्त वीर जीतें; नीर् वॆल्क–(चाहे) तुम जीतो; मुतु मॊऴि–वृद्ध की भाषा में; पतम् चॊल्लिनॆऩ्–जो हुआ वह बताया मैंने; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उरै मुटित्ताऩ्–अपनी बात समाप्त की (माल्यवान ने)। ३२२८

यह युद्ध क्योंकर हुआ? सीता नाम की बड़ी तपस्विनी, असाधारण पतिव्रता सती है। उसी को लेकर विधि ने यह युद्ध रच दिया है! चाहे वे धनुर्धर जीतें या तुम लोग ही जीतो! यह है असली हाल जिसका मैं, वृद्ध ने अपनी वाणी में वर्णन किया है! । ३२२८

वऩ्ऩि मत्तऩै नोक्किनी यिवरॆला मडिय
ऎऩ्ऩ कारण मिहल्शॆया दिरुन्ददॆऩ् ऱिशैत्ताऩ्
पुऩ्मै नोक्किऩऩ् नाणिऩार् पॊरुदिले ऩॆऩ्ऱाऩ्
अऩ्ऩ देलिऩि यमैयुमॆङ् गडऩः(ह्) दॆऩ्ऱाऩ् 3229

वऩ्ऩि–वह्नि ने; मत्तऩै नोक्कि–राजा को देखकर; नी–आप; इवर्

ऍलाम् मटिय–इन सबके मरते; इकल् चॅयातु–विना युद्ध किये; इरुन्ततु–रहे; ऍन्त कारणम्–क्या कारण है; ऍन्ऱु–ऐसा; इचैत्तान्–पूछा; पुन्मै नोक्कित्तन्–अल्पता का विचार किया; नाणित्ताल्–शरम से; पोरुतिलेन्–युद्ध नहीं किया; ऍन्ऱान्–कहा रावण ने; अन्ततेल्–वैसा है तो; इनि–अब; ऍम् कटन्–हमारा कर्तव्य; अ.ं.तु अमैयुम्–वह युद्ध होगा; ऍन्ऱान्–कहा। ३२२९

यह सुनकर वह्नि ने रावण से पूछा कि इतने लोग मर गये हैं। यह देखते हुए आपके विना युद्ध किये चुप रह जाने का कारण क्या है? रावण ने उत्तर दिया कि शत्रु की क्षुद्रता देखी और लड़ाई की बात सोचते शरम लगी। इसलिए युद्ध करने नहीं गया। तब वह्नि ने कहा कि बात वैसी है तो अब लड़ना हमारा कर्तव्य है! । ३२२९

मूदु णरन्द विम् मुदुमहन् कूऱिय मुयऱ्चि
शीदै यॆन्बवळ् दन्नैविट्टम् मन्दिरैच् चेर्दल्
आदि यिन्ऱले शॆय्दक्क दिनिच्चॆय लिऴिवाल्
काद लिन्दिर शित्तैया मियाण्डिनिक् काण्डुम् 3230

मूतुणरन्त–पुरानी बातों के ज्ञाता; इ मुतु मकन्–इस वृद्ध पुरुष से; कूऱिय मुयऱ्चि–इंगित प्रयत्न; चीतै ऍन्पवळ् तन्नै–सीता जो है उसको; विट्टु–छुड़ाकर; अ मन्तिरै–उन नरों से; चेर्तल्–मिलना; आतियिन् तलै–प्रारंभ में; चॅय् तक्कतु–करणीय था; इनि–अब; चॅयल्–करना; इऴिवु–अपमानजनक होगा; कातल् इन्तिरचित्तै–प्रेम के पात्र इन्द्रजित् को; याम्–हम; याण्टु–कहाँ; इनि–आगे; काण्टुम्–देख सकेंगे। ३२३०

पुराने वृत्तांत के ज्ञाता इस वृद्ध के कहे अनुसार प्रयत्न यह होना चाहिए था कि सीता को छुड़ाकर उन नरों से संधि की जाय। पर यह आदि में ही होना चाहिए था। अब करना अपमानजनक होगा। अब हमें इंद्रजित् देखने को कहाँ मिलेगा? । ३२३०

विट्ट मायिनु मादिन्नै वॆञ्जमम् विरुम्बिप्
पट्ट वीररैप् पॆऱुहिलम् बॆऱुवदु पऴियाल्
मुट्टि मऱ्ऱवर् कुलत्तोडु मुडिक्कुव दल्लाल्
कट्ट मत्तॊऴिल् शॆरुत्तॊऴि लिनिच्चॆयुङ् गडमै 3231

मातिनै–स्त्री को; विट्टम् आयिनुम्–छोड़ भी देंगे तो; वॆम् चमम्–तुमुल युद्ध; विरुम्पि–चाहकर; पट्ट वीररै–जो मरे उन वीरों को; पॆऱुकिलम्–फिर प्राप्त नहीं करेंगे; पॆऱुवतु पऴि–मिलेगा अपयश; मुट्टि–प्रयत्न करके; मऱ्ऱवर्–शत्रुओं को; कुलत्तोटु–सकुल; मुटिक्कुवतु अल्लाल्–समाप्त करने के सिवा; अ तॊऴिल्–(संधि का) वह काम; कट्टम्–कठिन है; इनि चॆयुम् कटमै–अब करने का कर्तव्य काम; चॆरु तॊऴिल्–युद्ध का काम है। ३२३१

अब उस स्त्री को छोड़ भी दें तो चाव से युद्ध करके जो मरे उन

वीरों को हम पुनः पा नहीं सकेंगे। जो पायँगे वह अनावश्यक अपयश ही होगा। हाँ कुछ यत्न करें और शत्रुओं को सकुल समाप्त कर दें। इसको छोड़कर संधि करना कठिन काम है। अब कर्तव्य कार्य युद्ध करना ही है! । ३२३१

ऎन्ऱॆ ऴुन्दन रिराक्कद रिरुक्कनी यामे
शॆन्ऱु मऱ्ऱवर् शिल्लुडर् कुरुदिनीर् तेक्कि
वॆन्ऱु मीळुदुम् वॆळ्हुदु मेन्मिड लिल्लाप्
पुन्ऱॊ ऴिर्कुल मादुमॆऩ् ऱुरैत्तनर् पोनार् 3232

ऎन्ऱु ऎऴुन्तनन्–कहकर उठा; इराक्कतर्–राक्षस (जो साथ रहे); इ इरुक्क–यहीं रहिए; यामे चॆन्ऱु–हमीं जाकर; मऱ्ऱवर्–उन नरों के; चिल् उटल्–छोटे शरीरों के; कुरुति नीर् तेक्कि–रक्तजल पीकर; वॆन्ऱु–जीतकर; मीळुतुम्–लौट आयेंगे; वॆळ्कुतुमेल्–लज्जा करके पीछा दिखायेंगे तो; मिटल् इल्ला–बलहीनता का; पुन् तॊऴिल्–अल्प काम करनेवाले; कुलम् आतुम्–कुल के माने जायेंगे; ऎन्ऱु उरैत्तनर्–ऐसा कहकर; पोनार्–गये। ३२३२

ऐसा कहकर वह्नि उठा। साथ रहे राक्षसों ने उससे कहा कि रहिए आप! हम जायँगे। शत्रु नरों के छोटे शरीरों का रक्त पीकर विजय के साथ वापस आयँगे। अब शरम करके लौटेंगे तो क्षुद्रकर्मी कुल के जात माने जायँगे। ऐसा कहकर वे चले गये। ३२३२

30. मूलबल वदैप् पडलम् (मूलबल-वध पटल)

वान रप्पॆरुञ् जेनैयै यानॊरु वऴिशॆन्
ऱून ऱक्कुरैत् तुयिरुण्बॆ नीयिर्पो यॊरुङ्गे
आन मऱ्ऱव रिरुवरक् कोऱ्ऱिरॆन् ऱुरैन्दान्
तान वप्पॆरुङ् गरिहळै वाट्कॊण्डु तडिन्दान् 3233

तानवर् पॆरु करिकळै–दानव रूपी बड़े गजों को; वाळ् कॊण्टु तटिन्तान्–तलवार से जिसने काटा था उस रावण ने; यान् ऒरु वऴि चॆन्ऱु–मैं एक मार्ग से जाकर; पॆरु–बड़ी; वानरर् चेनैयै–वानरों की सेना को; ऊन् अऱ कुरैत्तु–शरीर काटकर; उयिर् उण्पॆन्–प्राण खा लूंगा; नीयिर्–तुम लोग; ऒरुङ्के पोय्–मिल जाकर; मऱ्ऱवर् आन–शत्रु जो हैं; इरुवरै–उन दोनों को; कोऱ्ऱिर्–मारो; ऎन्ऱु उरैन्तान्–ऐसा कहा। ३२३३

दानव रूपी हाथियों का तलवार से विध्वंस जो कर चुका था, उस रावण ने सेनानायकों से कहा कि मैं एक मार्ग से जाकर बड़ी वानर-सेना के शरीर काटकर प्राण पी लूँगा। तुम एक साथ जाओ और दोनों शत्रु नरों को मार दो। ३२३३

अॅन्तवु रैत्तलु मॅळ्ळुन्दुतम् मिरदमे लेऱिक्
कन्तैदि रैक्कडऱ् चेन्तैयैक् कलन्ददु काणा
विऩैय मऱ्ऱिलै मूलमात् तान्तैयै विरैवो
डिन्तैयर् मुऩ्चॅल वेवुहॅऩ् ऱिरावण ऩिशैत्ताऩ् 3234

ॲन्त उरैत्तलुम्–ऐसा कहते ही; ॲळ्ळुन्तु–(सेना नायक) उठे और; तम् इरतम् मेल् एऱि–अपने-अपने रथों पर सवार होकर; कत्तै तिरै–शब्दायमान तरंगोंवाले; कटल् चेन्तैयै–सागर-सी सेना को; कलन्ततु काणा–एकत्रित देखकर; मऱ्ऱु विऩैयम् इलै–अन्य कार्य नहीं; मा मूलम् तान्तैयै–बड़े मूल-बल की सेना को; विरैवोटु–शीघ्र; इन्तैयर्–इनके; मुन् चॅल्–आगे जाय ऐसा; एवुक–कहो; ॲन्ऱु–ऐसा; इचैत्ताऩ्–कहा (रावण ने)। ३२३४

लंकेश के ऐसा कहते ही वे उठे और अपने-अपने रथ पर बैठे। शब्द-तरंग-संकुल सागर-सम सेना को एकत्रित देखकर रावण ने कहा कि अब और कोई काम नहीं। हमारे मूल-बल की बड़ी सेना को इनके आगे जाने को कहो। ३२३४

एवि यप्पॅरुन् दान्तैयैत् तानुम्वॅट् टॅळ्ळुन्दाऩ्
तेवर् मॅय्प्पुहऴ् तेय्त्तवन् शिल्लियन् देर्मेऱ्
कावल् मूवहै युलहमु मुनिवरुङ् गलङ्गप्
पूवै वण्णत्तन् शेन्तैमे लॉरुपुऱम् बोताऩ् 3235

तेवर्–देवों के; मॅय् पुकऴ्–सच्चे यश का; तेय्त्तवन्–मेटक; अ पॅरु तान्तैयै–उस बड़ी सेना को; एवि–भिजवाकर; तानुम्–खुद; वेट्टु–(युद्ध) चाहकर; ॲळ्ळुन्ताऩ्–उठा; कावल्–अपनी रक्षा के अन्तर्गत रहनेवाले; मूवक उलकमुम्–त्रिविध लोकों और; मुनिवरुम्–मुनियों के; कलङ्क–डरते; चिल्लि–पहियोंदार; अम् तेर् मेल्–सुन्दर रथ पर (चढ़कर); पूवै वण्णत्तन्–(अतसि-) पुष्पवर्ण श्रीराम की; चेन्तै मेल्–सेना पर; ऑरु पुऱम्–एक तरफ़ से; पोताऩ्–(आक्रमण करने) गया। ३२३५

देवयशमेटक रावण मूलबल को भिजवाकर स्वयं युद्ध की कामना करके उठा और सुंदर पहियोंदार रथ पर आरूढ़ होकर वानर-सेना पर आक्रमण करने गया। तब उसकी रक्षा में रहे तीनों लोक और मुनिगण भयविकंपित हुए। ३२३५

ॲळ्ळह शेन्तैयॅन् ऱियान्तैमेल् मणिमुर शॅऱ्ऱि
वळ्ळिवल् वळ्ळुवर् तुरैतॊऱुम् विळित्तलुम् वल्लैक्
कुळ्ळुवि योण्डिय दॅन्बराऱ् कुवलय मुळ्ळुदुन्
वळ्ळुवि विण्णैयुन् दिशैयैयुन् दडवुमात् तान्तै 3236

वळ्ळिविल्–वटिहीन; वळ्ळुवर्–'वळ्ळुवर्' (ढिंढोरा पीटनेवाली जाती के)

लोगों ने; चेतें अॅळ्क–सेना उठे; अॅन्ड्र–कहकर; यातें मेल्–हाथी पर; मणि मुरचु–सुन्दर ढिंढोरा; अॅर्ड्रि–पीटकर; तुर्इ तोरुम्–सभी स्थानों में; विळित्तलुम्–संदेश फैलाया तब; वल्लें–शीघ्र; कुवलयम् मुळुतुम्–संसार भर; तळ्ळुवि–फैलकर; विण्णेयुम्–आकाश को; तिचैयेयुम्–दिशाओं को; तटवुम्–स्पर्श करते हुए जानेवाली; मा तानें–बड़ी सेना; कुळुवि ईण्टियतु–भीड़ लगाकर एकत्रित हुई; अॅन्पर्–लोग कहते थे। ३२३६

ढिंढोरा पीटनेवाली जाती के निर्दोष कार्यपटु वळ्ळुवर् लोगों ने हाथी पर ढिंढोरा चढ़ाया और 'सेना उठ चले' का संदेशा सर्वत्र फैला दिया। वह सुनकर बड़ी सेना भूमि भर व्याप्त होती हुई आकाश और दिगन्तों से लगती हुई एकत्रित हुई। ऐसा लोग कहते थे। ३२३६

अडङ्गुम् वेलैह ळण्डत्ति नहत्तहन् मलैयुम्
अडङ्गु मन्नुयि रनैत्तुमव् वरैप्पिडै यवैबोल्
अडङ्गुमे मर्रुप् पॅरुम्बडै यरक्करद मियाक्कै
अडङ्गु मायवन् कुरळुरुत् तन्मैयि नल्लाल् 3237

अटङ्कुम्–अंतर्निहित; वेलैकळ्–समुद्रों-सह; अण्टत्तिन् अकत्तु–इस अण्ड के अन्दर; अकन् मलैयुम्–विशाल पर्वत और; मन्नुयिर् अनैत्तुम्–सभी नित्य जीव; अटङ्कुम्–समाये रहते हैं; मर्रुम्–और तो; अवै पोल्–उनके समान; अ वरैप्पु इटै–उस प्राचीरवलयित लंका में; पॅरुम् पटै–बड़ी सेना के; अरक्कर् तम् याक्कै–राक्षसों के शरीर; अटङ्कुम्–(तीनों लोक) जिसके अन्दर समाये रहते हैं उस; मायवन् कुरळ् उरु–श्रीविष्णु के वामन रूप के; तन्मैयिल् अल्लाल्–प्रकार से नहीं तो; अटङ्कुमे–समाये रह सकेंगे क्या। ३२३७

समुद्र-समाविष्ट ब्रह्मांड के अंदर सभी विशाल पर्वत और नित्यजीव भी समाये रहते हैं। उसी प्रकार उस लंका के अंदर बड़ी राक्षस-सेना के सारे राक्षसों के शरीर समाये रहे! उस छोटी लंका में यह कैसे साध्य हुआ? वह विष्णु के वामन-रूप के अंदर सारे अण्ड के समाविष्ट रहने के प्रकार से हुआ होगा —नहीं तो कैसे?। ३२३७

अर्रत्तैत् तिन्र्रुरुङ् गरुणैयेप् परुहिवे र्रमैन्द
मर्रत्तैप् पूण्डवॅम् बावत्तै मणम्बुणर् मणाळर्
निर्रत्तुक् कारनृन नॅञ्जिनर् नॅरुप्पुक्कु नॅरुप्पाय्प्
पुर्रत्तुम् बॉङ्गिय पङ्गियर् कालनुम् बुहळ्वार् 3238

अर्रत्तै–धर्म को; तिन्रु–भोजन बनाकर; अरु करुणैयै–उत्कृष्ट करुणा को; पहकि–पीकर; वेरु अमैन्त–(धर्म के) विरोध में रहनेवाली; मर्रत्तै–क्रूरता को; पूण्टु–(आभरण के रूप में) धारण करके; वॅम् पावत्तै–भयानक पाप से; मणम् पुणर् मणाळर्–विवाह करनेवाले बरपुरुष हैं; कार् अन्न–मेघ के समान; निर्रत्तु–रंग के; नॅञ्चिनर्–मन वाले; नॅरुप्पुक्कु नॅरुप्पाय्–आग को आग बनकर;

पुरत्तुम् पोङ्किय–जो बाहर भी उभर आयी हो; पङ्कियर्–ऐसे केशवाले; कालनुम् पुकळ्वार्–यम से भी प्रशंसित (क्रूर) हैं। ३२३८

उस सेना के वीर धर्म के भक्षण करनेवाले श्रेष्ठ थे, करुणा का पान करनेवाले थे। धर्मविरोधी क्रूरता के आभरण से भूषित, वे नृशंस पाप से विवाहित वर थे! काले मेघ-सम काले मनवाले थे। आग की आग बाहर भी प्रकट हो ऐसे केश वाले थे। स्वयं यम भी उसकी प्रशंसा करे, ऐसे (खूनी) थे। ३२३८

नीण्ड तोळ्हळाल् वेलैयैप् पुरञ्जॆल नीक्कि
वेण्डु मीनॊडु महरङ्गळ् वायिट्टु विळुङ्गित्
तूण्डु वानुरु मेऱ्ऱिनैच् चॆविदोरुन् दूक्कि
मूण्ड वान्मळै युरित्तुडुत् तुलावरु मूर्क्कर् 3239

नीण्ड तोळ्कळाल्–लम्बे हाथों से; वेलैयै–समुद्र को; पुरम् चॆल–दूर जाय, ऐसा; नीक्कि–हटाकर; वेण्टुम् मीनॊटु–चाही हुई मछलियों के साथ; मकरङ्कळ् मकरों को; वाय् इट्टु–मुख में डालकर; विळुङ्कि–निगलकर; तूण्टु–(मेघ द्वारा) प्रेरित; वान्–आकाश के; उरुम् एऱ्ऱिनै–अशनिराज को; चॆवि तोऱुम्–कानों में; तूक्कि–(आभरण के रूप में) लटकाकर; वान् मूण्ट–आकाश में उठे; मळै उरित्तु–मेघों को उधेड़कर; उटुत्तु–वस्त्र के रूप में पहनकर; उला वरुम्–सैर करनेवाले; मूर्क्कर्–मूर्ख हैं। ३२३९

वे मूर्ख अपने लंबे हाथों से समुद्र को हटाकर इच्छा भर मछलियों के साथ मकरों को मुख में डालकर निगल लेते। मेघ से निकले अशनिराज को कर्णभूषण के रूप में लटकाकर आकाश के मेघों को उधेड़कर वस्त्र के रूप में पहनकर सैर करनेवाले क्रूर थे। ३२३९

मालव रैक्कुलम् बरलॆन्न मळैक्कुलञ् जिलम्बाक्
कालव रैप्पॆरुम् बाम्बुहॊण् डशैत्तपैङ् गळ्ळार्
मेलव रैप्पडर् कलुळन्वन् काऱ्ऱॆनुम् विशैयोर्
नालव रैक्कॊणरन् दुडन्बिणित् तालन्न नडैयार् 3240

माल् कुलम् वरै–बड़े कुलपर्वत; परल् अॆन्न–कंकड़ों के सदृश; मळै कुलम्–मेघसमूह; चिलम्पा–पायल-सम; काल् वरै–पर्वतों के निचले प्रदेश में रहनेवाले; पॆरु पाम्पु कॊण्टु–बड़े सर्पों से; अचैत्त–बंधी हुई; पचुमै कळ्ळार्–विचित्र पायल-धारी हैं; मेल् वरै–आकाश की सीमा में; पटर्–उड़नेवाले; कलुळन्–गरुड़ और; वल् काऱ्ऱु–सशक्त पवन; अॆनुम्–कहने योग्य; विचैयोर्–वेगवान हैं; नाल् वरै–लटकनेवाले पर्वत को; कॊणर्न्तु–लाकर; उटन् पिणित्ताल् अन्न–साथ बाँधा गया हो; अन्न नटैयार्–ऐसी चाल वाले हैं। ३२४०

उनकी पायलें बड़े कुलपर्वतों को कंकड़ों के रूप में अंदर रखकर मेघकुल के बने हुए नूपुर हैं, जो पर्वतों के निचले प्रदेश में रहनेवाले सर्पों

को रस्सी बनाकर बँधे हुए हैं। उनका वेग गरुड़ और सशक्त पवन का-सा कहा जा सकता है। लटकते मुख वाले पर्वतों के समान गजों को साथ बाँधा गया हो, ऐसी (गंभीर गज की-सी) चाल वाले हैं। ३२४०

उण्णुन् दत्मैय वूऩ्मुऱै तप्पिडि तुडऩे
पण्णि निऩ्ऱमा लियाऩैयै वायिडुम् बशियार्
तण्णि नीर्मुऱै तप्पिडिऱ् ऱडक्कैयाऱ् ऱडवि
विण्णिऩ् मेहत्तै वारिवायप् पिऴिन्दिडुम् विडायर् 3241

उण्णुम् तक्मैय–खाने योग्य; ऊऩ्–मांसाहार; मुऱै तप्पिटिऩ्–समय पर नहीं मिला तो; उटऩे–तुरन्त; पण्णिऩ् निऩ्ऱ–सजे-सजाये जो खड़े हैं; मालि याऩैय–बड़े-बड़े हाथियों को; वाय् इटुम्–मुख में डाल लें; पचियार्–ऐसी भूख वाले हैं; तण् इऩ् नीर्–शीतल मधुर जल; मुऱै तप्पिटिऩ्–(मिलने का) समय चूक गया तो; तट कैयाल्–विशाल हाथ से; तटवि–टटोलकर; विण्णिऩ् मेकत्तै–आकाश के मेघों को; वारि–उठाकर; वाय् पिऴिन्तिटुम्–अपने मुखों में निचोड़ लें; विटायर्–ऐसी प्यास वाले हैं। ३२४१

और भी वे ऐसी भूख वाले हैं, जो समय पर मांस न मिलने पर सजे-सजाये खड़े रहनेवाले हाथियों को ही खा लेते; ऐसे प्यासे कि अगर समय पर शीतल तथा मधुर जल नहीं मिले तो हाथों से बड़े मेघों को पकड़कर अपने मुख में निचोड़ लेते। ३२४१

उऱैन्द मन्दर मुदलिय किरिहळै युरुव
वॆऱिन्दु वेऩ्निलै काण्बव रिन्दुवा लियाक्कै
शॊऱिन्दु तीर्वुऱु तिनविनर् मलैहळैच् चुऴऱ्ऱि
अऱैन्दु कऱ्ऱमात् तण्डिनर् रशऩियि नार्प्पार् 3242

उऱैन्त–(भूमि पर) स्थिर रहनेवाले; मन्तरम् मुतलिय–मंदर आदि; किरिकळै–गिरियों को; उरुव ऍऱिन्तु–भेदकर चलें ऐसा चलाकर; वेल् निलै–भालों की (तीक्षणता की) स्थिति को; काण्पवर्–परखनेवाले हैं; इन्तुवाल्–चन्द्र से; याक्कै–शरीर को; चॊऱिन्तु–खुजलाकर; तीर्वुऱु तिऩविनर्–खुजलाहट शांत करनेवाले हैं; मलैकळै–पर्वतों पर; चुऴऱ्ऱि अऱैन्तु–घुमा-पटकाकर; कऱ्ऱ–जो सीखी गयी; मा तण्टिनर्–ऐसी गदा विद्या वाले हैं; अचऩियिऩ् आर्प्पार्–अशनि के समान गरजनेवाले। ३२४२

वे अपने भालों की तीक्षणता को भूधरों को भेदकर चले, ऐसा फेंककर परखनेवाले हैं। खुजलाहट हो तो चंद्र द्वारा खुजलाकर उसे शांत कर लेते। गदा का अभ्यास घुमाकर पर्वतों पर पीटकर करनेवाले हैं। ३२४२

शूलम् वाङ्गिडिऱ् चुडर्मऴु वॆऱिल्दिडिऱ् चुडर्वाळ्
कोल वॆञ्जिलै पिडित्तिडिऱ् कॊऱ्ऱवेल् कॊळ्ळिन्

शाल वान्‌तण्डु तरित्तिडिऱ् चक्करन् दाङ्गिन्
कालन् माल्शिवन् कुमरनॅन् ऱिवरॅयुङ् गडुप्पार् 3243

शूलम् वाङ्किटिल्–शूल हाथ में लें; चुटर् मऴु–(चाहे) प्रकाशमय परशु; ऑरिन्तिटिल्–चलायें; चुटर् वाऴ्–या चमचमाती तलवार; कोलम्–आकर्षक; वॅम् विलॅ–भयंकर धनु; पिटित्तिटिल्–धारण करें; कोऱ्ऱम् वेल् कोळ्ळिन्–या विजयी भाला लें; चालवान्–बहुत बड़ा; तण्टु तरित्तिटिल्–दण्ड लें; चक्करम् ताङ्किन्–या चक्रायुध को धारण करें; कालन्–यम; माल्–श्रीविष्णु; चिवन्–शिव; कुमरन्–कार्तिकेय (मुरुगन); ऍन्ऱ् इवरॅयुम्–आदि इनको भी; कट्प्पार्–समानता करेंगे। ३२४३

वे चाहे शूल को लें, या तेजोमय परशु; चाहे चमचमाती तलवार लें या सुन्दर भयंकर धनु का व्यवहार; विजयी भाला धारण करें या बड़ी गदा; या चाहे चक्रायुध हाथ में लें —तब वे यम, विष्णु, शिव और मुरुगन (षण्मुख या कार्तिकेय का तमिऴ नाम) की भी बराबरी कर सकेंगे। ३२४३

ऑरुव रेवल्ल रोरुल हत्तिनॅ वॅल्ल
इरुवर् वेण्डुव रेऴुल हत्तॅयु मिरुक्कत्
तिरिव रेलुडन् तिरितरु नॅडुनिलञ् जव्वे
वरुव रेलुडन् कडल्हळुन् दॊडर्न्दुपिन् वरुमाल् 3244

ओर् उलकत्तिनॅ–एक लोक को; वॅल्ल–जीतने; ऑरुवरे वल्लर्–(उनमें) एक (एक) ही समर्थ हैं; एऴ् उलकत्तॅयुम्–सातों लोकों को; इरुक्क–मिटाने के लिए; इरुवर् वेण्टुवर्–दो ही पर्याप्त हैं; तिरिवरेल्–घूमें तो; नॅटु निलम्–बड़ी भूमि; उटन् तिरि तरुम्–उनके साथ घूमेगी; चॅव्वे वरुवरेल्–सीधे आयें तो; उटन्–साथ; कटल्कळुम्–समुद्र भी; तॊटर्न्तु–साथ लगे; पिन्वरुम्–पीछा करते आयेंगे। ३२४४

एक लोक को जीतने के लिए एक ही पर्याप्त है। सातों लोकों को मिटाना हो तो दो ही चाहिए ! वे जब घूमते हैं, तब विशाल भूमि भी घूम जाय ! सीधे आवें तो समुद्र साथ लगे पीछा करके आयें। ३२४४

मेह मॅत्तनॅ विरिञ्जनऱ् ऱण्डत्तु विरिन्द
नाह मॅत्तनॅ यत्तनॅ नळिर्मणित् तेर्हळ
पोह मॅत्तनॅ यत्तनॅ पुरवियि नीट्टम्
आह मॅत्तनॅ यत्तनॅ यवन्पडॅ यवदि 3245

विरिञ्चन् तन्–विरंचि के; अण्टत्तु–अण्ड में; विरिन्त मेकम् ऍत्तनॅ–विवृत मेघ जितने; अत्तनॅ नाकम्–उतने हाथी; अत्तनॅ–उतने; नळिर् मणि–शब्द करनेवाली घंटियों वाले; तेर्कळुम्–रथ; पोकम् ऍत्तनॅ–भोग जितने प्रकार के; अत्तनॅ–उतने; पुरवियित् ईट्टम्–अश्वों के झुण्ड; आकम्–शरीर; ऍत्तनॅ–जितने; अत्तनॅ–उतना; अवन् पटॅ अवति–उसके पदाति वीरों का परिमाण। ३२४५

विशाल ब्रह्माण्ड में फैले हुए जितने मेघ हैं उतने हाथी थे। उतने ही क्वणनशील घंटियों-सहित रथ थे। जितने भोग के प्रकार हैं, उतने अश्व थे। शरीर जितने है, उतने पदातिक वीरों का परिमाण था। ३२४५

इऩ्ऩ तऩ्मैय यात्तै तेर् इवुळि यैंदिऩ् इवऱ्ऱिऩ्
पऩ्ऩु पल्लणम् बरुममऱ् ऱुरुप्पोट्टु पलवुम्
पोऩ्ऩु नऩ्ऩॆट्टु मणियुङ्गॊण् डल्लदु पुऩैन्द
शिऩ्ऩ मुळ्ळऩ विल्लऩ मॆय्म्मुऱुम् दॆरिऩ्दाल् 3246

इऩ्ऩ तऩ्मैय–ऐसे; यात्तै–हाथी; तेर्–रथ; इवुळि–अश्व; ऎंऩुम् इवऱ्ऱिऩ्–आदि इनके; मॆय् मुऱ्ऱुम् तॆरिऩ्ताल्–शरीरों को पूर्ण रूप से जानना चाहें तो; पऩ्ऩुम्–उल्लेखनीय; पल्लणम्–ऊपर के आसन; पल उरुप्पोट्टु–अनेक अंगों के साथ; मर्मम्–मर्मस्थान; पोऩ्ऩुम्–स्वर्ण और; नल् नॆट्टु मणियुम् कॊण्टु–श्रेष्ठ और बड़े-बड़े नगों को; अल्लतु–छोड़; चिऩ्ऩम् उळ्ळऩ इल्लऩ–चिन्न-चिह्नों के सहित नहीं थे। ३२४६

ऐसे गजों, रथों और अश्वों के शरीरों पर खूब दृष्टि डालेंगे तो आसन क्या, अन्य अंग क्या और मर्मस्थान क्या— सर्वत्र स्वर्ण और रत्नों का अलंकार था। उससे हीन कोई भाग नहीं दिखायी दिया। ३२४६

इप्पॆ रुम्बडै यॆऴुन्दिरैत् तॆऴुमे लॆऴुन्द
तुप्पु नीर्त्तऩ तूळियिऩ् पडलमोत् तूर्प्पत्
तप्पिल् कार्निऱन् दविर्न्ददु करिमदन् दऴुव
उप्पु नीङ्गिय दोङ्गुनीर् वीङ्गॊलि युवरि 3247

इ पॆरु पडै–यह विशाल सेना; ऎऴुन्तु इरैत्तु–उठकर शोर मचाती हुई; एक–गयी तो; ऎऴुन्त–जो उठी; तुप्पु नीर्त्तऩ–प्रवाल-सी; तूळियिऩ्–लाल धूलि का; पटलम्–पटल; मी तूर्प्प–ऊपर ढँक गया, इसलिए; तप्पु इल्–अमोघ; कार्–मेघ भी; निऱम् तविर्न्ततु–अपना रंग खो गये; करि–हाथियों के; मतम् तऴुव–मदनीर के फैलने से; ओङ्कु नीर्–अधिक जल-पूर्ण; वीङ्कु ऒलि–और अधिक ध्वनियुक्त; उवरि–समुद्र; उप्पु नीङ्कियतु–नमक से हीन हो गया। ३२४७

इस सेना के कोलाहल के साथ उठकर चलने पर प्रवालवर्ण धूल उठी। उसका पटल सबको ढँक गया। इसलिए अमोघ काले मेघों का असली रंग दूर हो गया। गजों का मदनीर समुद्र में भर गया। इसलिए अधिक जल और शब्द से युक्त समुद्र नमकीन नहीं रह गया। ३२४७

मलैयुम् वेलैयु मऱुळ पोरुळ्हळुम् वाऩोर्
निलैयु मप्पुऱत् तुलहङ्गळ् यावैयु निरम्ब

उलैवु ऱावहै युण्डुपण् डुमिऴ्न्दपे रोरुमैत्
तलैवन् वायोत्त विलङ्गैयिन् वायिल्हळ् तरुव 3248

तरुव-(मूलबल) निकालनेवाले; इलङ्कैयिन् वायिल्कळ्-लंका के द्वार; मलैयुम्-पर्वत और; वेलैयुम्-समुद्र और; मऱ्ऱु उळ पोरुळ्कळुम्-अन्य जो हैं वे पदार्थ; वानोर् निलैयुम्-देवों का वासस्थान और; अप्पुऱत्तु उलकङ्कळ्-दूर रहनेवाले लोक; यावैयुम्-सभी; उलैवु उऱा वकै-नष्ट न हो जायँ, ऐसे; निरम्प-अपने पेट में भरकर; पण्डु उण्टु-पहले निगल लेकर; उमिऴ्न्त-बाद जो उगले; पेर्-बड़े; ओरुमै तलैवन्-अद्वितीय भगवान के; वाय् ओत्त-मुख के समान रहे। ३२४८

जिससे यह सेना निकल आती वह लंका का द्वार उन अद्वितीय ईश्वर के मुख के समान था, जिन्होंने पर्वत, समुद्र, अन्य पदार्थ, देवों का वास-स्थान, दूर के लोक —इन सभी को अक्षय रखने के विचार से पहले निगलकर बाद को उगला था। ३२४८

कडम्बॊ ऱामदक् कळिऱुतेर् परिमिडै कालाळ्
पडम्बॊ ऱामैयि नतन्दलै यनन्दनुम् बदैत्तान्
विडम्बॊ ऱादिरि यमरर्पोऱ् कुरङ्गिन मिदिक्कुम्
इडम्बॊ ऱामैयुऱ् ऱिरिन्दुपोय् वडकरै यिरुत्त 3249

कटम् पोऱा-गालों से न रुककर निरन्तर बहनेवाले; मतम्-मदनीर-स्रावी; कळिऱु-हाथी; तेर्-रथ; परि-(और) अश्व; मिटै-सटे हुए; कालाळ्-पदाति वीर (इनका भार); नतम् तलै-बड़े सिर का; अनन्तनुम्-अनन्त-नाग भी; पटम् पोऱामैयिन्-फनों पर वहन न कर सकने के कारण; पतैत्तान्-छटपटाया; विटम् पोऱातु-विष न सह सककर; इरि-भागनेवाले; अमरर् पोल्-देवों के समान; कुरङ्कु इनम्-वानर-सेना; मितिक्कुम् इटम्-पैर जहाँ रखे खड़े थे, वहाँ; पोऱामै उऱ्ऱु-वहाँ खड़ा न रह सककर; इरिन्तु पोय्-अलग जाकर; वट करै इरुत्त-उत्तरी किनारे पर ठहर गये। ३२४९

अनवरुद्ध मदनीरस्रावी गज, रथ, अश्व, सटे रहे पदातिक वीर —इन सबके भार को अनन्तनाग अपने बड़े सिरों के फनों पर ढो नहीं सका; अतः छटपटाया। हलाहल को (देखना भी) न सह सककर जैसे देव उस दिन भागे थे, वैसे ही वानर वीरों की भीड़ अपने-अपने स्थान में स्थिर खड़ी नहीं रह सकी। वे भागे और समुद्र के उत्तरी किनारे पर जा रह गये। ३२४९

आऴि माल्वरै वेलिशुऱ् ऱिडवहुत् तमैत्त
एऴु वेलैयु मिडुवलै यरक्करे यिन्मा
वाऴि कालनुम् विदियुमॆव् वितैयुमे मळ्ळर
तोऴ मामदि लिलङ्गैमाल् वेट्टमेऱ् ऱोडर्न्दार् 3250

आऴि माल् वरै–चक्रवालगिरियाँ; वेलि चुट्रिट–चहारदीवारी के समान घेरे रहें; वकुत्तु अमैत्त–ऐसे बने; एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्रों में; वलै इटु–जाल डालने का स्थान है; अरक्करे इनम् मा–राक्षस ही समूहों में प्राणी हैं; कालनुम् वितियुम्–यम और विधि; वेम्मै वितियुम्–निर्दय प्रारब्ध; मळ्ळर्–आखेटक वीर हैं; मा मतिल् तोळम्–ऊँचे प्राचीरों के अन्दर रहे (लंका के) बाड़े में; मेल् वेट्टम् तोटर्न्तार्–उत्कृष्ट शिकार का काम करते थे। ३२५०

चक्रवाल-गिरियों की चहारदीवारी के अन्दर बने सातों समुद्र ही जाल डालने का स्थान हैं। राक्षस ही शिकार के प्राणी हैं। यम, विधि और भयंकर प्रारब्ध ही आखेटक हैं। इन्होंने ऊँची दीवारों से घिरी लंका के बाड़े के अन्दर शिकार का कार्य बराबर किया। ३२५०

आर्त्त वोशैयो वलङ्गुते राऴियि नदिर्प्पो
कार्त्तिण् माल्करि मुळ्क्कमो वाशियिन् कलिप्पो
पोर्त्त पल्लियत् तरवमो नॆरुक्कितार् पुळ्ङ्गि
वेर्त्त वण्डत्तै वॆडित्तिडप् पॊलिन्ददु मेन्मेल् 3251

नॆरुक्किनाल्–भीड़ के कारण; पुळुङ्कि–जलन का अनुभव करके; वेर्त्त–पसीने से तर होनेवाले; अण्टत्तै वॆटित्तिट–अण्डगोल को फाड़ते हुए; मेल् मेल् पॊलिन्ततु–उत्तरोत्तर बढ़ा; आर्त्त ओचैयो–(वीरों की) गर्जन ध्वनि क्या; अलङ्कु–हिल-डलकर चलनेवाले; तेर् आऴियित्–रथों के चक्रों की; अतिर्प्पो–गड़गड़ाहट क्या; कार्–काले; तिण्–तगड़े; माल् करि–बड़े गजों की; मुळक्कमो–चिंघाड़ थी क्या; वाचियित्–अश्वों की; कलिप्पो–हिनहिनाहट क्या; पोर्त्त–इन सबको दबाकर निकला; पल् इयत्तु–विविध बाजों का; अरवमो–शब्द था क्या। ३२५१

भीड़ में तपकर स्वेद से भरकर अंड फट जाय, ऐसा मजबूर किया पदातिकों के उत्तरोत्तर बढ़नेवाले गर्जन ने ? या हिल-डुलकर चलनेवाले रथों के पहियों की गड़गड़ाहट की ध्वनि ने ? या काले तगड़े बड़े गजों की चिंघाड़ ने ? या अश्वों की हिनहिनाहट ने ? या इन सब शब्दों को दबाकर जो उठा, उस विविध वाद्यों के सम्मिलित स्वर ने ? । ३२५१

वळ्ङ्गु पल्पडै मीन्दु मदकरि महरम्
मुळ्ङ्गु हिन्ट्रदु मुरितिरैप् परियदु मुरशम्
तळ्ङ्गु पेरॊलि कलिपपदु तरुकण्मा निरुदप्
पुळ्ङ्गु वॆञ्जिनच् चुरवदु निरैपुडैप् पुणरि 3252

निरैपु उटै–भरपूर; पुणरि–वह सेना-सागर; वळङ्कु–प्रयोग योग्य; पल् पटै मीनतु–विविध हथियार रूपी मीनों का था; मत करि–मत्त गजों के; मकरम् मुळङ्कु किन्ट्रतु–मकरों की ध्वनि का; मुरि–टूटनेवाली; तिरै परियतु–तरंगों रूपी अश्वों का; मुरचम् तळङ्कु–भेरियाँ जो उठाती हैं; पेर् ऑलि–वह तुमुल स्वर; कलिप्पतु–स्वरित करनेवाला है; तरुकण्–निडर; मा निरुतर्–बड़े राक्षसों के;

पुळ्ङ्कुम् वॆम्चितम्–संतापक कठोर क्रोध रूपी; चुऱावतु–'शुऱा' नामक बड़े प्राणियों का है। ३२५२

भरपूर उस सेना-सागर की मछलियाँ विविध हथियार थीं, जो प्रयोग योग्य थे। मत्तगज मकर थे, जो शब्द कर रहे थे। तीर से टकराकर टूटनेवाली लहरें ही अश्व थीं। भेरियों की ध्वनि उसका गर्जन था। बड़े निडर राक्षस वीरों का कुढ़न-सहित क्रोध ही 'शुऱा' नामक (खूनी) मछलियों का समूह था। ३२५२

तशुम्बिऱ् पॊङ्गिय तिरळ्पुयत् तरक्करुदन् दानै
पशुम्बुऱ् ऱण्डल मिदित्तलिऱ् करिपडु मदत्तिन्
अशुम्बिऱ् चेऱुपट् टळऱुपट् टमिळुमा लडङ्ग
विशुम्बिऱ् चेऱलिऱ् किडन्ददव् विलङ्गत्मे लिलङ्गै 3253

अव् विलङ्कल् मेल् इलङ्कै–उस (त्रिकोण) पर्वत पर रही लंका; पशुम् पुल्–हरी घास की; तण् तलम्–शीतल भूमि को; तचुम्पिल् पॊङ्किय–घड़ों के समान खिले; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धोंवाले; अरक्कर् तम् तानै–राक्षसों की सेना; मितित्तलिऩ्–पैरों से रौंदती है, इसलिए और; करि पटु–गजों से बह निकलते; मतत्तिऩ्–मदनीर से; अचुम्पिऩ् चॆऱु पट्टु–फिसलती भूमि की मिट्टी के समान; अळऱु पट्टु–पंक बनकर; अटङ्क अमिऴुम्–सभी को डुबो देती है; विचुम्पिल्–आकाश में; चेऱलिऩ्–चले गये, इसलिए; किटन्ततु–यों पड़ी रही। ३२५३

उस त्रिकोण पर्वत की लंका के हरी घासों से भरे शीतल स्थानों को घड़ों के समान पुष्ट कंधोंवाले राक्षस अपने पैरों से रौंद रहे थे। उस पर गजों का मदनीर बह रहा था। अतः वहाँ इतना पंक बन गया कि सारी लंका एक साथ मग्न हो जाय। पर सब आकाश में पहुँच गये थे, अतः वह सुरक्षित रह गयी। ३२५३

पडियैप् पार्त्तनर् परवैयैप् पार्त्तनर् पडर्वान्
मुडियैप् पार्त्तनर् पार्त्तनर् नॆडुन्दिशै मुळुदुम्
विडियैप् पार्प्पदोर् वॆळ्ळिडै कण्डिलर् मिडैन्द
कॊडियैप् पार्त्तनर् वेर्त्तनर् वानवर् कुलैन्दार् 3254

वानवर्–देवों ने; पटियै पार्त्तनर्–भूमि को देखा; परवैयै पार्त्तनर्–समुद्र को देखा; पटर्–विस्तृत; वान् मुटियै–आकाश की चोटी को; पार्त्तनर्–देखा; नॆटु तिचै मुऴुतुम्–लम्बी सारी दिशाओं को; पार्त्तनर्–देखा; मिटैन्त–सटी रहनेवाली; कॊटियै पार्त्तनर्–ध्वजाओं को देखा; विटिय पार्प्पतु–सेना से हीन देखने योग्य; ओर् वॆळ् इटै–एक खाली स्थान; कण्टिलर्–नहीं देखा; वेर्त्तनर्–पसीने से भर गये; कुलैन्तार्–काँप गये। ३२५४

देवों ने वहाँ दृष्टि डाली। भूमि, सेना, विस्तृत आकाश की चोटी,

लम्बी दिशाएँ, सटी रहनेवाली ध्वजाएँ —सभी पर दृष्टिपात किया। सब जगह सेना ही सेना थी। कोई सेना से रिक्त स्थान नहीं देख सके। ३२५४

उलहित् नामला वुरुवॆला मिराक्कद वुरुवा
अलहिल् पल्पडॆ पिडित्तमर्क् कॆळुन्दवो अऩ्ऱेल्
विलहु नीर्त्तिरै वेलॆयो रेळुम्बोय् विदियाल्
अलहिल् पल्लुरुप् पडॆत्तऩ वोवॆऩ वयिर्त्तार् 3255

उलकित्–संसार में; नाम् अला–हमारे अलावा; उरु ऍलाम्–रूप सब; इराक्कतर् उरुवा–राक्षस बनकर; अलकु इल्–असंख्य; पल् पटै पिटित्तु–विविध हथियार धारण करके; अमर्क्कु ऍळुन्तवो–युद्धसन्नद्ध हो उठे क्या; अऩ्ऱेल्–नहीं तो; बिलकुम्–हटनेवाले; नीर् तिरै बेलै–जलतरंगसागर; ओर् एळुम् पोय्–सातों जाकर; वितियाल्–क्रम से; अलकु इल्–अपार; पल् उरु–विविध रूप; पटैत्तऩवो–धर गये क्या; ऍऩ–ऐसा; अयिर्त्तार्–संशय में पड़ गये। ३२५५

इन्हें यह संशय हो गया कि क्या हमारे सिवा सभी जीव राक्षस बनकर अपार और विविध हथियार लेकर लड़ने आ गये? या नहीं तो क्या विच्छिन्न होनेवाले स्वभाव के जल और लहरों से भरे सातों समुद्र एक साथ क्रम से अनेक रूप धर गये? । ३२५५

नडुङ्गि नञ्जडॆ कण्डतॆ वाऩवर् नम्ब
ऑडुङ्गि याङ्गरन् दुऱैविड मऱिहिल मुयिरॆप्
पिडुङ्गि युणगुव रियारिवर् पॆरुमैपण् डऱिन्दार्
मुडिन्द दॆम्वलि यॆऩ्ऱऩ रोडुवात् मुयल्वार् 3256

वाऩवर्–देवता लोग; नञ्चु अटै कण्टतै–विषकंठ से; नटुङ्कि–भय से काँपकर; नम्प–नायक; याम्–हम; ऑटुङ्कि–दबकर; करन्तु–छिपकर; उऱैवु इटम्–रहने का स्थान; अऱिकिलम्–नहीं जानते; उयिरै पिटुङ्कि–प्राण हथिया लेकर; उण्कुवर्–खा लेंगे; इवर् पॆरुमै–इनका बड़प्पन; पण्टु–पहले से; अऱिन्तार् यार्–कौन जानता है; ऍम् वलि–हमारी शक्ति; मुटिन्तत्तु–समाप्त हो गयी; ऍऩ्ऱऩर्–कहते हुए; ओटुवात् मुयल्वार्–भागने का यत्न करने लगे। ३२५६

देव डर गये। उन्होंने विषकंठ के पास जाकर निवेदन किया कि हे नाथ! हम डर से जा छिपे रहें, ऐसा स्थान भी कहीं नहीं दिखता। वे हमारे प्राण नोचकर खा लेंगे। इनका बड़ा बल पहले से कौन जानता है? हमारी शक्ति समाप्त हो गयी। यह कहते हुए वे भागने भी लग गये। ३२५६

ऑरुव रैक्कॊल्ल वायिर मिरामर्वन् दॊरुङ्गे
इरुब दिऱ्ऱिरण् डाण्डुनित् ऱमर्शॆय्दा लॆऩ्ऩाम्
निरुद रैक्कॊल्व दिडम्बॆऱ्ऱो रिडॆयिनित् ऱऩ्ऱो
पॊरुव दिप्पडॆ कण्डतम् मुयिर्पॊऱुत् तऩ्ऱो 3257

ऑरुवर् कॊल्ल्-(इनमें) एक को मारना हो; आयिरम् इरामर्-एक सहस्र राम; ऑरुङ्के वन्तु—एक साथ आकर; इरु पतिऩ्रु इरण्डु आण्टु—चौबीस साल; निऩ्ऱु-रहकर; अमर् सॆय्ताल्-युद्ध करें तो भी; ऎऩ् आम्-क्या होगा; निरुतरै कॊल्वतु-राक्षसों को मारना हो; इटम् पॆऱ्ऱु-स्थान पाकर; ओर् इटैयिऩ्-एक ओर; निऩ्ऱु अऩ्ऱो-खड़ा रहकर न; पॊरुवतु-युद्ध करना; इ पटै कण्टु-यह बड़ी सेना देखकर; तम् उयिर्-अपने प्राण; पॊऱुत्तऩ्ऱो-रखने पर न। ३२५७

उन्होंने आगे कहा— हजार राम आयें और चौबीस वर्ष युद्ध करें तो भी क्या कर सकेंगे ? इनमें एक को भी मार सकेंगे क्या ? हम निशाचरों को मारने की बात सोचें भी तो खड़ा रहने के लिए स्थान मिले तभी न सोचा जा सके ? स्थान भी मिल जाय तो भी इतनी बड़ी सेना को देखने के बाद प्राण स्थिर रखने की शक्ति हो तभी न युद्ध किया जाय ? । ३२५७

ऎऩ्ऱि रैञ्जलु मणिमिडऱ् ऱिऱैवऩु मिऩ्ऩिनीर्
ऒऩ्ऱु मञ्जलिर् वञ्जनै यरक्करै यॊरुङ्गे
कॊऩ्ऱु नीक्कुमक् कॊऱ्ऱव ऩिक्कुल मॆल्लाम्
पॊऩ्ऱु विप्पदोर् विदितन्द दामॆऩप् पुहऩ्ऱाऩ् 3258

ऎऩ्ऱु इऱैञ्चलुम्-ऐसा (निवेदन करके) विनय दिखाने पर; मणि मिटऱु-रत्नकण्ठ; इऱैवऩुम्-ईश्वर ने भी; इऩि-आगे; नीर् ऒऩ्ऱुम् अञ्चलिर्-तुम लोग कुछ मत डरो; अ कॊऱ्ऱवऩ्-वह विजय वीर; वञ्चनै अरक्करै-वंचक राक्षसों को; ऒरुङ्के-एक साथ; कॊऩ्ऱु नीक्कुम्-मारकर मिटा देंगे; इ कुलम् ऎल्लाम्-इस सारे कुल को; पॊऩ्ऱुविप्पतु-मरवाने; ओर् विति-एक विधि का; तन्ततु आम्-इधर लाने का विधान था; ऎऩ पुकऩ्ऱाऩ्-ऐसा कहा। ३२५८

इस भाँति जब उन्होंने कहकर विनय की, तब नीलमणिकंठ ने आश्वासन दिया। तुम लोग आगे कुछ मत डरो ! वह विजय वीर इन वंचक राक्षसों को एक ही क़िस्त में मार देंगे। राक्षसकुल के सारे लोगों को विधि ने ही एक दम मरवाने के लिए इधर एकत्रित लाकर छोड़ा है ! । ३२५८

पुऱ्ऱि ऩिऩ्ऱुवल् लरविऩम् बुऱप्पडप् पॊरुमि
इऱ्ऱ दॆम्वलि यॆऩविरैन् दिरिदरु मॆलिपोल्
मऱ्ऱै वाऩरप् पॆरुङ्गडल् पयङ्गॊण्डु मऱुहिक्
कॊऱ्ऱै वीररैप् पार्त्तिल दिरिन्ददु कुलैवाल् 3259

पुऱ्ऱिऩ् निऩ्ऱु-बिल से; वल् अरवु इनम्-सबल सर्पों का झुण्ड; पुऱप्पट-जब निकला तब; पॊरुमि-व्यग्र होकर; ऎम् वलि इऱ्ऱतु-हमारी शक्ति छूट गयी; ऎऩ-कहकर; विरैन्तु-शीघ्र; इरि तरुम्-अस्त-व्यस्त भागनेवाले; ऎलि पोल्-चूहों के समान; मऱ्ऱै वानरम्-अन्य वानरों का; पॆरु कटल्-बड़ा सागर; पयम् कॊण्टु-भय खाकर; मऱुकि-भ्रमित होकर; कॊऱ्ऱम् वीररै-विजयी वीरों (श्रीराम-लक्ष्मण)

की; पार्त्तिलवु–परवाह न करके; कुलैबाल्–भयकम्पन के साथ; इरिन्ततु–भाग गया। ३२५८

जब बिल से सर्पकुल निकलते हैं, तब चूहों के दल भय से व्यग्र होकर यह सोचते हुए जल्दी भाग जाते हैं कि अब हमारा बल छूट गया। उसी भाँति वानरों की वह बड़ी सेना भयातुर और विक्षुब्ध होकर विजयी वीर श्रीराम और लक्ष्मण की हस्ती का खयाल भी किये विना अस्त-व्यस्त हो भाग गयी। ३२५९

अणैयिन् मेऱ्चॅन्ऱ शिलशिल वाळियै नीन्दप्
पुणैहळ् तेडिन शिलशिल नीन्दिन पोन
तुणैह ळोडुमुबुक् कळुन्दिन शिलशिल तोन्ऱाप्
पणैह ळेऱिन मलैमुळैप् पुक्कन पलवाल् 3260

चिल–कुछ; अणैयिन् मेल्–सेतु के ऊपर; चॅन्ऱ–गये; चिल–कुछ; आळियै नीन्त–समुद्र तरने; पुणैकळ् तेटिन–डोंगी खोजने लगे; चिल चिल–कुछ-कुछ; नीन्तिन पोन–तैरते गये; चिल–कुछ; तुणैकळोटुम्–साथियों के साथ; पुक्कु अळुन्तिन–घुसकर डूब गये; चिल–कुछ; तोन्ऱा–अदृश्य; पणैकळ् एऱिन–डालियों पर चढ़ गये; पल–अनेक; मलै मुळै–पर्वत की गुफाओं में; पुक्क–घुसे। ३२६०

कुछ वानर वीर सेतु पर भागे। कुछ समुद्र पार करने डोंगी खोजने लगे। कुछ-कुछ तैरते गये। कुछ साथियों के साथ डूब गये। कुछ छिपे-छिपे शाखाओं पर चढ़ बैठे। अनेक वानर पर्वत-गुहाओं में घुस गये। ३२६०

अडैत्त पेरणै यळित्तदु नमक्कुयि रडैय
उडैत्तुप् पोदुमा लवर्तोड रामलॅन् ऱुरैत्त
पुडैत्तुच् चॅल्हुवर् विशुम्बिनु मॅन्ऱन पोदोन्
पडैत्त तिक्कॅलाम् बरन्दन रॅन्ऱन पयत्ताल् 3261

अटैत्त पेर् अणै–समुद्र बाँधने के लिए रचे गये बड़े सेतु ने; नमक्कु उयिर् अळित्ततु–हमें प्राण दिये; अवर् तॉटरामल्–वे (राक्षस) पीछा न कर पायें ऐसा; अटैय उटैत्तु–पूरा तोड़कर; पोतुम्–जायँगे; ॲन्ऱु उरैत्त–ऐसा कुछ वानरों ने कहा; विचुम्पितुम्–आकाश में; पुटैत्तु चॅल्कुवर्–पीटकर जायँगे; ॲन्ऱन–ऐसा कहा; पोतोन् पटैत्त–ब्रह्मा-सर्जित; तिक्कु ॲलाम्–सभी दिशाओं में; परन्ततर्–राक्षस फैले हैं; ॲन्ऱन–कहा कुछ वानरों ने। ३२६१

"हमने जो रचा था, उस बड़े सेतु ने हमें प्राण दिलाये, इस पर से राक्षस हमारा पीछा करने आ सकते हैं। इसलिए हम इसे पूर्ण रूप से तोड़ दें।" ऐसा कुछ मर्कटों ने कहा। कुछ वानर डरे कि वे हमें आकाश में भी पीट चलेंगे। कुछ रोये कि ब्रह्मा-रचित सभी दिशाओं में राक्षस

अरियित् वेन्दनु मतुमनु मङ्गद नवनुम्
पिरिय हिड्रिल रिडैवनै नितुड्रनर् पितुड्रार्
इरिय लुड्ड्रनर् मड्रैयो रियावरु मॅड्रिनीर्
विरियुम् वेलैयुङ् गडनदनु नोक्कितन् वीरन् 3262

अरियित् वेन्तनुम्–वानराधिपति; अनुमतुम्–और हनुमान; अङ्कतन् अवनुम्–और अंगद; इरैवनै–भगवान श्रीराम से; पिरियकिड्रिलर्–अलग नहीं हुए; पितुड्रार् नितुड्रतर्–विना छोड़ जाए खड़े रहे; मड्रैयोर् यावरुम्–अन्य सभी; इरियल् उड्ड्रनर्–तितर-बितर हो गये; ऍड्रि नीर्–तरंग फेंकनेवाला जल; विरियुम् वेलैयुम्–जिसमें भरा था वह समुद्र भी; कटन्ततु–विस्थापित हुआ; वीरन् नोक्कितन्–वीर श्रीराम ने देखा। ३२६२

वानरराज सुग्रीव, हनुमान और अंगद श्रीराम से अलग नहीं हुए। विना पीठ दिखाकर भागे वे स्थित थे। अन्य सभी तितर-बितर हो गये। तरंगताडित जल का समुद्र भी अपनी स्थिति में अस्थिर हुआ। श्रीराम ने यह सब देखा। ३२६२

इक्कौ डुम्बडै यॅङ्गुळ दियम्बुदि यॅन्ड्रान्
मॅय्क्कौ डुन्दिरल् वीडणन् विळम्बुवान् वीर
तिक्क नैत्तिनु मेळ्मात् तीविनुन् दीयोर्
पुक्क ळैत्तिडप् पुहुन्दुळ दिराक्कदप् पुणरि 3263

इ कौटुम् पटै–यह भीषण सेना; ऍङ्कु उळतु–(अब तक) कहाँ रही; इयम्पुति–कहो; ऍन्ड्रान्–पूछा श्रीराम ने; मॅय्–सच्चा; कौटुम् तिड्रल्–भयंकर बली; वीटणन्–विभीषण; विळम्पुवान्–बोला; वीर–वीर; तिक्कु अनैत्तिनम्–सारी दिशाओं में; एळु मा तीविनुम्–सातों द्वीपों में; तीयोर्–दुष्ट; पुक्कु अळैत्तिट–प्रवेश कर बुला लाये; इराक्कतर् पुणरि–राक्षस-सेना-सागर; पुकुन्तु उळतु–आ पहुँचा है। ३२६३

श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि विभीषण! यह सेना रही कहाँ? बताओ। तब सच्चे और क्रूर बलवान ने कहा कि हे वीर! दुष्ट राक्षस सभी दिशाओं और सात द्वीपों में जाकर इस सेना-सागर को बुला लाये हैं। ३२६३

एळॆ नप्पडुङ् गीळुळ तलत्तिनिन् ड्रेड्रि
ऊळि मुड्रिय कडलैनप् पुहुन्दनु मुळदाल्
वाळि मड्रवन् मूलमात् तानैयुन् वरुव
आळि वेड्रिनि यप्पुरत् तिल्लैवा ळरक्कर् 3264

एळु ऍन पटुम्–सात कहलानेवाले; कीळ् उळ–नीचे के; तलत्तिनिन्ड्रु–(पाताल) तल से; एड्रि–ऊपर आकर; ऊळि मुड्रिय–युगान्त के; कडल ऍन–

समुद्र के समान; पुकुन्ततुम्–जो प्रवेश कर गयी, वह सेना भी; उळतु–इसमें मिली है; मुन् वरुव–सामने आती हुई (सेना); मऱ्ऱवत्–और उसको; मूलम् मा तानै–मूलबल की बड़ी सेना है; वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षसों की; आऴि–सागर-सी सेना; इति–अब; अ पुऱत्तु–उधर; वेऱु इल्लै–कुछ अन्य (बाक़ी) नहीं है; वाऴि–जय हो। ३२६४

इसमें नीचे के सात लोकों में पाताल से युगांत के समुद्र के समान जो सेना आयी है, वह भी शामिल है। सामने जो आती है, वह लंकेश की मूलबल की सेना है! क्रूर राक्षसों की, सागर-सी इस सेना के अलावा उधर कुछ बाक़ी नहीं है। जयजीव! । ३२६४

ईण्डिव् वण्डत्ति लिराक्कद रॅन्नुम्बेय रॅल्लाम्
मूण्डु वन्ददु तीविनै मुन्निन्ऱु मुडुक्क
माण्डु वीऴ्मिन् रॅन्निगिन्ऱ दॅन्मदि वलियूऴ्
तूण्डु हिन्ऱदॅन् ऱडिमलर् तॊऴुदवन् शॊन्नान् 3265

तीविनै–बुरे कर्म (-फल) के; निन्ऱु–स्थित रहकर; मुन् मुडुक्क–आगे ठेलने से; इव् अण्टत्तिल–इस अण्डगोल में; इराक्कतर् ॲन्नुम्–राक्षस के; पॅयर् ॲल्लाम्–नामधारी सभी; ईण्टु मूण्टु वन्ततु–यहाँ मिल आये हैं; वलि ऊऴ्–प्रतापी प्रारब्ध; तूण्टुकिन्ऱतु–प्रेरित करता है; इन्ऱु–(इसलिए) अभी; माण्टु वीऴ्म्–मर जायेंगे; ॲन्किन्ऱतु–ऐसा कहता है; ॲन् मति–मेरा मन; ॲन्ऱु–कहकर; अटि मलर् तॊऴुतु–चरण-कमल की वंदना करके; अवन्–उस विभीषण ने; चॊन्नान्–कहा। ३२६५

बुरे कर्मफल के स्थित होकर आगे ठेलने से इस अंडगोल में रहनेवाले राक्षसनामधारी सभी यहाँ मिलकर उत्साह के साथ उठ आये हैं। प्रतापी प्रारब्ध प्रेरित करता है। इसलिए वीरों की यह सेना मर मिटेगी। ऐसा मेरा मन कहता है। विभीषण ने श्रीराम के चरण-कमलों की वन्दना करके यों कहा। ३२६५

केट्ट वण्णलु मुऱुवलुञ् जीऱ्ऱमुङ् गिळरक्
काट्टु हिन्ऱनन् काणुदि यॊरुकणत् तॅन्ना
ओट्टिन् मेऱ्कॊण्ड तानैयैप् पयन्दुडैत् तुरवोय्
मीट्टि कॊल्लॅन वङ्गद नोडिनन् विरैन्दान् 3266

केट्ट अण्णलुम्–यह सुनकर महिमामय श्रीराम के; मुऱुवलुम्–मंदहास और चीऱ्ऱमुम्–क्रोध; किळर–प्रकट करके; ऒरु कणत्तु–एक ही क्षण में; काट्टुकिन्ऱनन्–दिखा दूंगा; काणुति–देखो; ॲन्ना–कहकर; उरवोय्–ताक़तवर; ओट्टिन् मेल् कॊण्ट–भगदड़ पर उतारू; तानैयै–सेना को; पयम् तुटैत्तु–भय दूर करके; मीट्टि कॊल्–लौटा लाओ; ॲन–कहने पर; अङ्कतन् विरैन्तान्–अंगद शीघ्र; ओटिनन्–दौड़ा। ३२६६

महिमावान श्रीराम ने जो यह सुना तो उनका एक ओर मंदहास

प्रगट हुआ और दूसरी ओर क्रोध उठा। उन्होंने कहा कि खैर ! एक क्षण में इसकी स्थिति जो होगी दिखा दूंगा। देखोगे। फिर अंगद को आज्ञा दी कि हे बलवान ! जो भागने पर उतारू है उस सेना को भय दूर करके लौटा लाओ। अंगद शीघ्र दौड़ा। ३२६६

शॅन्ऱु शेनैयै युऱ्ऱनन् शिऱैशिऱै कॅडुवीर्
निन्ऱु केट्टपि नोड्गुमि नॅनच्चॉल्लि नेर्वान्
ऑन्ऱुङ् गेट्किल मॅन्ऱदक् कुरक्किन मुरैयाल्
वॅन्ऱि वॅन्दिऱऱ् पडैप्पॅरुन् दलैवर्हळ् मीण्डार् 3267

चॅन्ऱु–जाकर; चेनैयै उऱ्ऱनन्–सेना के पास पहुँचा; चिऱै चिऱै–इधर-उधर; कॅटुवीर्–धैर्य खोकर भागनेवाले; निन्ऱु केट्ट पिन्–स्थिल होकर सुनने के बाद; नीङ्कुमिन्–(भागना हो तो) भागो; ॲन चॉल्लि–ऐसा कहकर; नेर्वान्–आगे भी वोला; अ कुरक्किनम्–उस वानरदल ने; ऑन्ऱुम् केट्किलम्–कुछ नहीं सुनेंगे; ॲन्ऱतु–कहा; उरैयाल्–वचनकुशलता से; वॅन्ऱि–विजय और; वॅम् तिऱल्–अधिक बल के साथ रहे; पटै पॅरुम् तलैवर्कळ्–बड़े सेनानायक; मीण्टार्–लौट आये। ३२६७

अंगद ने सेना के पास जाकर कहा कि हे अधीर होकर इधर-उधर भागनेवाले ! सुनो मेरी बात ! वाद भागना हो तो भागो ! उसने धैर्य के वचन कहे। पर वानर-सेना ने साफ़ कह दिया कि हम कुछ न सुनने के। पर अंगद ने अपनी वचनपटुता का प्रयोग किया तो बड़े विजयी या ताक़तवर सेनानायक उसके साथ लौट आये। ३२६७

मीण्डु वेलैयिन् वडहरै याण्डॉरु वॅऱ्पिन्
ईण्डि नार्हळै यॅन्कुऱित् तिरिवुऱ्ऱ दॅन्ऱान्
आण्ड नायह कण्डिलै पोलुनी यवरै
माण्डु शॅय्वदॅ नॅन्ऱुरै कूऱिनर् मऱुप्पार् 3268

मीण्टु–लौटकर; वेलैयिन्–समुद्र के; वट करै–उत्तरी कूल पर; आण्टु–वहाँ; ऑरु वॅऱ्पिल्–एक पर्वत पर; ईण्टितार्कळै–जो एकत्र हुए उनसे; ॲन् कुऱित्तु–किस निमित्त; इरिवु उऱ्ऱतु–भागना हुआ; ॲन्ऱान्–पूछा (अंगद ने); आण्ट नायक–शासक नाथ; नी–आपने; अवरै कण्टिलै पोलुम्–उन्हें नहीं देखा शायद; माण्टु चॅय्वतु ॲन्–मरकर करना क्या होगा; ॲन्ऱु–कहकर; मऱुप्पार्–इन्कार करके; उरै कूऱित्तर्–वचन कहे (वानरों ने)। ३२६८

लौटकर वे समुद्र के उत्तरी किनारे पर एक स्थान में एकत्रित हुए। उनसे अंगद ने पूछा कि यह भगदड़ क्यों ? उन्होंने उत्तर में कहा कि हे हमारे शासक राजा ! क्या आपने उन राक्षसों को देखा नहीं था ? व्यर्थ मरने से होगा क्या ? वे युद्ध में जाने से इन्कार करके आगे बोले। ३२६८

औरुव तिन्दिर शित्तॅत्त वुळ्ळव तुळनाळ्
शॅरुवि तुऱ्ऱवै कॊऱ्ऱव मऱत्तियो तॅरियिऱ्
पॊरुवित् मऱ्ऱव रिऱ्ऱिल रियारॊडुम् बॊरुवार्
इरुवर् विऱ्पिडित् तियावरॅत् तडुत्तुनिन् ऱॆय्वार् 3269

इन्तिरचित्तु ॲंत–इन्द्रजित् नाम का; उळ्ळवत्–जो था; औरुवन् उळ नाळ्–जब रहा तब; चॅरुवित् उऱ्ऱवै–युद्ध में जो हुआ; कॊऱ्ऱव–विजयी वीर; मऱत्तियो–भूल गये क्या; तॅरियिल्–विचारें तो; पॊरुवु इल्–अनुपम; मऱ्ऱवर्–वे शत्रु (राक्षस); इऱ्ऱिलर्–विना हारे; यारॊटुम् पॊरुवार्–किसी से भी लड़ेंगे; इरुवर्–दो; विल् पिटित्तु–धनु धारण कर; यावरॅ–किसको; तटुत्तु निन्ऱु–रोककर; ॲय्वार्–चला सकनेवाले; आवर्–हों। ३२६९

विजयी वीर ! इन्द्रजित् जब जीता रहा तब युद्ध में जो हुआ वह आपने भुला दिया क्या ? विचारें तो ये अप्रतिम वीर इन्द्रजित् से कम नहीं होंगे और किसी से भी लड़ेंगे। फिर ये दोनों श्रीराम और लक्षमण धनु लेकर किसको रोकेंगे और क्या वाण चलायेंगे ? । ३२६९

पुरङ्ग डन्दवप् पुत्तिदत्ते मुदलिय पुलवोर्
वरङ्गळ् तन्दुल हळिप्पव रियावरु माट्टार्
करन्द डङ्गित्त रित्तिमऱ्ऱव् वरक्करॅक् कडप्पार्
कुरङ्गु कॊण्डुवन् दमर्शॅयु मानुडर् कॊल्लाम् 3270

वरङ्कळ् तन्तु–वर देकर; उलकु अळिप्पवर्–लोक का पालन करनेवाले; पुरम् कटन्त–त्रिपुरांतक; अ पुत्तितत्ते–वे पवित्र ईश्वर; मुतलिय–आदि; पुलवोर्–देव; यावरुम्–सभी; माट्टार्–न सककर; करन्तु अटङ्कित्तर्–छिप दब गये; इत्ति–फिर; अव् अरक्करॅ–उन राक्षसों को; कटप्पार्–परास्त करनेवाले; कुरङ्कु कॊण्टु वन्तु–वानर लाकर; अमर् चॅय्युम्–युद्ध करनेवाले; मानुटर् कॊल् आम्–मनुष्य होंगे क्या। ३२७०

वरदायी व लोकपालक त्रिपुरांतक पवित्र परमशिव आदि देवता भी इनसे भिड़ नहीं सके और छिपे तथा दुबके पड़े हैं। फिर इनको परास्त कर सके कौन ? वानरों को सहायक बना लाकर जो युद्ध करना चाहते हैं, क्या ये मानव वीर परास्त कर सकेंगे ? । ३२७०

ऊऴि यायिर कोडिनित् ऱुरुत्तिर त्तोडुम्
आऴि यानुमऱ् ऱयत्तोडु पुरन्दर त्तवत्तुम्
शूऴ् वोडित्त रॊरुवत्तैक् कॊत्तुरुत्तन् दोळाल्
वोऴु माशॅय्य वल्लरेल् वॅत्तिरियि तत्ऱे 3271

उरुत्तिरत्तोटुम्–रुद्र के साथ; आऴियानुम्–क्षीर-सागरशायी और; मऱ्ऱुम्–अन्य; अयत्तोटु–ब्रह्मा के साथ; पुरन्तरन्–पुरन्दर; अवत्तुम्–वह; आयिरम् कोटि ऊऴि–हजार करोड़ युग; नित्ऱु–सामने खड़े होकर; चूऴ् ओटित्तर्–चारों ओर

दौड़कर; ऑरुवर्त्त–एक को; तम् तोळाल्–अपने भुज (-बल) से; कॉन्ड्रु–मारकर; वॅन्ऱियिन्–विजय के साथ; वीऴ्मा–गिरा; चॅय्य वल्लरेल्–वे सकेंगे तो; नन्ऱे–अच्छा होगा। ३२७१

रुद्र, सागरशायी, ब्रह्मा और पुरंदर ये सब मिलकर हज़ार करोड़ युग तक समक्ष रहकर, चारों ओर दौड़कर अपना भुजबल दिखा दें तो भी वे इनमें एक को गिरा सकें और विजय पा सकें तो अच्छा होगा! । ३२७१

ऍन्नप् पामऱ्ऱिव् वॅऴुबदु वॅळ्ळमु मॊरुवन्
तिन्नप् पोदुमो तेवरिन् वलियमो शिऱियेम्
मुन्निप् पारॆलाम् बडैत्तव नाळॆला मुऱैनिन्
ऱुन्निप् पार्त्तुनिन् ऱुऱैयिडक् कुऱैयुमो यूहम् 3272

ऍन् अप्पा–क्या, बाप रे बाप; इव् ऍऴुपतु वॅळ्ळमुम्–यह सत्तर 'वॅळ्ळम्'; ऑरुवन् तिन्न–एक के खाने के लिए; पोतुमो–पर्याप्त होगा क्या; चिऱियेम्–अल्प हैं हम; तेवरिन् वलियमो–देवों से बलवान हैं क्या; यूकम्–यह सेना; मुऱै निन्ऱु–क्रम से; मुन्नि–सोचकर; इ पार् ऍलाम्–इन लोकों को; मुन् पटैत्तवन्–जिन्होंने रचा वे; नाळ् ऍलाम्–अनेक दिन; पार्त्तु निन्ऱु–देखकर; उऱै इट–'उऱै' रखें (गिनें) उतनी; कुऱैयुमो–कम रहेगी क्या। ३२७२

बाप रे बाप! यह (हमारी) सत्तर हज़ार 'वॅळ्ळम्' की सेना क्या उस सेना के एक वीर के खाने के लिए पर्याप्त होगी? हम देवों से बलवान हैं क्या? हम अल्पबल हैं! विधिवत् जिसने सोच-सोचकर इन सारे लोकों को रचा, वह ब्रह्मा दिन भर ध्यान से गिन ले और 'उऱै' रखे इतनी कम है क्या (राक्षसों की) वह सेना? (उऱै— उस प्रतिनिधि संख्या को कहते हैं जो जब अत्यंत बड़ी संख्या के पदार्थों को गिनना पड़ता है, तब 'हज़ार' के लिए या सौ के लिए एक-एक के हिसाब से लगायी जाती है।) । ३२७२

नाय कन्तलै पत्तुळ कैयुना लैन्वॅन्
ऱोयु नॅञ्जिन मॊरुवन्मऱ् ऱिवण्वन् दिङ्गुऱ्ऱार्
आयि रन्दलै यदऱ्किरट् टिक्कैय रैया
पायुम् वेलैयिऱ् कूलत्तु मणलिन्नम् बलराल् 3273

नायकन् ऑरुवन्–नायक एक के; तलै पत्तु उळ–दस सिर हैं; कैयुम् नालैन्तु–हाथ भी बीस; ऍन्ऱु–वह सोचकर ही; ओयुम् नॅञ्चिनम्–शिथिलमन हैं; इङ्कु–यहाँ; इवण् वन्तु उऱ्ऱार्–अब जो आ पहुँचे हैं; आयिरम् तलै–हजार सिरों; अतऱ्कु इरट्टि–उनके दुगुने; कैयर्–हाथों वाले हैं; ऐया–स्वामी; पायुम्–(जिस पर तरंगें) उछलती हैं उस; वेलैयिन्–समुद्र के; कूलत्तु मणलिनम्–तल के बालुओं से; पलर्–अनेक हैं। ३२७३

एक नायक है जिसके दस सिर और बीस हाथ हैं! उसको सोचकर ही हम अधीर हुए हैं! अब ये जो आये हैं वे हजार हाथों और दो हज़ार

सिरों वाले हैं ! और वे, हे स्वामी ! तरंगसंचरित समुद्र के तल के बालुओं से भी संख्या में अधिक हैं । ३२७३

कुम्ब कत्तॅत् तुळत्नर्ड्रिड् गॊरुवत्कैक् कॊण्ड
अम्बु ताङ्गवु मिडुक्किल मवत्ॅशॅय्द वरिदि
उम्ब रत्रियॆ युगर्वुडै यार्पिर् रुळरो
नम्बि नीयुनुत् तत्तमैयॆ यरित्दिलै नडन्दाय् 3274

कुम्पकत्तत् ॲत्ऩु–कुंभकर्ण नाम का; इङ्कु उळत् ऑरुवत्–जो यहाँ था एक; कै कॊण्ट–उसने हाथ में जो लिया था; अम्पु–उस बाण को; ताङ्कवुम्–झेलने की; मिटुक्कु इलम्–हमारे पास शक्ति नहीं थी; अवत् सॆय्तवु–उसने जो किया; अरिति–आप जानते हैं; उम्पर् अत्रियॆ–देवों के बिना; उगर्वु उटैयार् पिरर्–साहस का भाव रखनेवाले अन्य कोई; उळरो- हैं क्या; नम्पि–नायक; अरिन्तिलै–आप अबोध हैं; नीयुम् तत्तिमैयॆ–आप अकेले; मुत् नटन्ताय्–चलकर आये । ३२७४

हम कुंभकर्ण के हाथ का बाण झेलने में भी असमर्थ थे । उसका कृत्य आप जान चुके हैं । देवों के सिवा साहस का भाव रखनेवाले कौन हैं ! (वे भी तो भयभीत हैं।) नाथ ! आप अबोध हैं । और अकेले चलकर आये हैं । ३२७४

अनुम नाऱ्ऱलु मरशन दाऱ्ऱलु मिरुवर्
तनुवि नाऱ्ऱलुम् दमुयिर् ताङ्गवुञ् जाला
कतियुङ् गाय्हळु मुणवुळ मुळैयुळ करक्क
मनिद राळिलॆ निराक्कद राळिलॆन् वैयम् 3275

अनुमत् आऱ्ऱलुम्–हनुमान का पराक्रम; अरचततु आऱ्ऱलुम्–राजा (सुग्रीव) का बल; इरुवर्–और दोनों के; तनुवित् आऱ्ऱलुम्–धनुओं का प्रताप; तम् उयिर् ताङ्कवुम्–उनके प्राणों को सुरक्षित रखने के लिए; चाला–पर्याप्त नहीं; कतियुम् काय्कळुम्–फल और तरकारी के; उणवु उळ–भोजन हैं; करक्क मुळै उळ–छिपने के लिए गुहाएँ हैं; वैयम्–भूमि पर; मतितर् आळित् ॲत्–मानव राज करें तो क्या; इराक्कतर् आळित् ॲत्–राक्षस राज करें तो क्या । ३२७५

हनुमान का पराक्रम, राजा सुग्रीव का भुजबल, दोनों वीरों का धनुर्बल स्वयं उनके प्राणों की रक्षा करने में अपर्याप्त हैं । देखिए । हमारे भोजन के लिए फल और तरकारियाँ हैं । अन्य खाद्य पदार्थ हैं । छिपे रहने के लिए पर्वतकंदराएँ हैं । फिर संसार पर मानव राज करें तो क्या, राक्षस करें तो क्या ? । ३२७५

तामुळा रत्रे पुहऴिनैल् तिरुवीडुन् दरिप्पार्
यामु ळोमॆनि नॆङ्गिळे युळ्ळदॆम् बॆरुम

पोमि तीरॆन्ऱु विडैदरत् तक्कतॆ पुरप्पोय्
शामि तीरॆन्ऱल् तरुममन् ऱॆन्ऱनर् तळर्न्दार् 3276

ताम् उळार् अन्ऱे–खुद जीवित रहें तभी न कोई; पुकळिनै–यश को; तिरुवॊडुम् तरिप्पार्–श्री के साथ धारण कर सकेंगे; याम् उळोम् ऎनिन्–हम जीवित रहें तभी; ऎम् पॆरुम्–हमारे नाथ; ऎम् किळै उळ्ळतु–हमारे परिवार रहेंगे; पुरप्पोय्–पालक; नीर् पोमिन्–तुम जाओ; ऎन्ऱु–ऐसा; विडै तर तक्कतै–विदा देने अर्ह हैं; नीर् चामिन्–तुम मरो; ऎन्ऱल्–कहना; तरुमम् अन्ऱु–धर्म नहीं होगा; ऎन्ऱनर्–कहा; तळर्न्दार्–साहसहीन हो रहे। ३२७६

कोई ज़िन्दा रहें तभी न उसके यश और श्री के धारण करने की बात उठेगी! हे नाथ! हम बचे रहें तभी न हमारे परिवार रह सकेंगे। हे रक्षक! आपको यही कहना और विदा देना शोभा देगा कि 'तुम लोग चले जाओ!' पर 'तुम मरो' कहना धर्मसम्मत बात नहीं है! यह कहकर वे धैर्य खोये रहे। ३२७६

शाम्बनै वदन नोक्कि वालिशे यऱिवु शान्ऱोय्
पाम्बणै यमल नेमर् ऱिरामनॆन् ऱॆमक्कुप् पण्डे
एम्बल् वन् दॆय्दच् चॊल्लित् तेऱ्ऱिना यल्लैयोनी
आम्बलम् बहैअन् ऱन्नो डयिन्दिर मऱैन्दो नन्नाय् 3277

वालि चेय्–वाली के पुत्र ने; चाम्पनै–जाम्बवान से; वतनम् नोक्कि–उसका वदन देखकर; अऱिवु चान्ऱोय्–हे बुद्धिमान और योग्य; अन्–सुन्दर; आम्पल् पकैजन् तन्नोटु–कुवलय-शत्रु से; अयिन्तिरम् अमैन्तोन्–ऐंद्र-व्याकरण जिसने सीखा उस; अन्नाय्–हनुमान के सदृश रहनेवाले; नी–आपने; पाम्पु अणै अमलनै–शेषशायी पवित्र भगवान ही; इरामन् ऎन्ऱु–श्रीराम हैं, ऐसा; ऎमक्कु–हमें; पण्टे–पहले ही; एम्पल् वन्तु ऎय्त–संतोष दिलाकर; चॊल्लि–कहकर; तेऱ्ऱिनाय् अल्लैयो–आश्वासन दिलाया न। ३२७७

तब वाली के पुत्र ने जाम्बवान से बात की। बुद्धिमान और श्रेष्ठ पुरुष! हे उस हनुमान के तुल्य, जिसने कुवलय-शत्रु (सूर्य) से ऐंद्र-व्याकरण का अध्ययन किया था! आप ही ने हमें समझाया था कि श्रीराम स्वयं क्षीरसागरशायी पवित्रमूर्ति श्रीविष्णु हैं। आपने क्या हमें धीरज नहीं दिलाया था? । ३२७७

तेऱुवाय् तॆरिन्द शॊल्लाऱ् ऱॆरुट्टियित् तॆरुळि लोरै
आऱुवा यल्लै नीपु मञ्जिनै पोलु मावि
पोऱुवा यॆन्ऱ पोदु पुहळॆन्नाम् बुलमै यॆन्नाम्
गूऱ्ऱिन्वा युऱ्ऱाल् वीरङ् गुऱैवरे यिऱैमै कॊण्डार् 3278

तॆरिन्त–चुने हुए; चॊल्लाल्–शब्दों से; इ तॆरुळ् इलोरै–इन अज्ञ वानरों को;

आऱ्ऱुवाय् अल्लै–अधीर बन गये; अञ्चित्तै पोलुम्–डर गये शायद; आवि पोऱ्ऱुवाय्–प्राणों की रक्षा करो; ॲन्ऱ पोतु–ऐसा हो गये तो; पुकऴ् ॲन्ऩताम्–यश का क्या (अर्थ); पुलमै ॲन्ऩताम्–विद्वत्ता का क्या अर्थ; इऱैमै कॊण्टार्–नेतृत्व रखनेवाले; कूऱ्ऱिऩ् वाय् उऱ्ऱाल्–यम के मुख में पड़ जायँ तो भी; वीरम् कुऱैवरो–वीरता छोड़ देंगे क्या। ३२७८

आप इस योग्य हैं कि श्रमित इन्हें चुने हुए और अर्थपूर्ण वचनों से समझायें और धीरज दिलायें। पर आप स्वयं साहस खोकर भय खा गये! प्राणों का ही रक्षक बन जाय कोई तो यश, विद्वत्ता आदि का क्या अर्थ होगा? नेता लोग, यम के मुख में जाना पड़े तो भी क्या अपने साहस को क्षीण होने दे सकेंगे? । ३२७८

अञ्जिनाम् बऴियुम् बूण्डा मम्बुवि याण्डु मावि
तुञ्जुमा ऱतॖऱि वाऴ् वोंणुमो नाण्मेल् ऱोन्ऱिन्
नञ्जुवा यिट्टा लन्न वमुदत्ऱो नम्मै यम्मा
तञ्जमॆन् ऱणैन्द वीरर् तऩिमैयिर् चादल् नन्ऱे 3279

अञ्चिताम्–डर गये (हम); अम् पुवि–सुन्दर भूमि पर; पऴियुम् पूण्टाम्–अपयश अर्जित कर लिया; याण्टुम्–कहीं भी; नाऴ् मेल् तोन्ऱिन्–आयु पर यम दिखायी देगा तो; आवि तुञ्चम् आऱु अतॖऱि–जीव चला जायगा, उसके सिवा; वाऴ् ऒण्णुमो–जीते रह सकते क्या; नञ्चु वाय् इट्टाल् अन्न–विष मुख में लिये रहे; अमुतु अन्ऱो–अमृत (-से) रहेंगे न; तञ्चम् ॲन्ऱु–अभय चाहकर; अणैन्त वीरर्–आये वीरों को; तनिमैयिल्–अकेले छोड़ने से; चातल् नन्ऱु–मरना बेहतर है। ३२७९

हम कायर हो गये। अपयश अर्जन कर गये! जहाँ भी जायँ आयु क्षीण होकर मृत्यु आयगी, तो प्राण छोड़ने के सिवा जीवित भी रह सकेंगे क्या? फिर विषमिलित अमृत के समान न हो जायँगे? हमारी सहायता चाहकर जो आये हैं, उनको अकेले छोड़ जाने से मरना अधिक श्लाघ्य है! हाँ, भैया! । ३२७९

तानव रोडु मऱ्ऱैच् चक्करत् तलैव नोडुम्
वानवर् कडैय माट्टा मऱिकडल् कडैन्द वालि
यानव नम्बॊन् ऱाले ययर्न्दमै ययर्त्त दॆन्ऩो
मीनलर् वेलै पट्ट वुणर्न्दिलै पोलु मेलोय् 3280

तानवरोटुम्–दानवों और; मऱ्ऱै–और; चक्करम् तलैवनोटुम्–और चक्रधर नायक (श्रीविष्णु) और; वानवर् कटैय माट्टा–देव जिसे मथ नहीं सके; मऱि कटल्–(तीर से टकराकर) मुड़नेवाली (तरंगों वाले) समुद्र को; कटैन्त वालि आनवन्–जिसने मथा वह वाली जो था वह; अम्पु ऒन्ऱाले–एक बाण से; अयर्न्तमै–शिथिल पड़ गया, उसे; नी अयर्त्ततु ॲन्–आप भूले क्यों; मेलोय्–श्रेष्ठ; मीन अलर् वेलै–मछलियों से शोभित समुद्र; पट्टतु–जिस गति को पहुँचा

दानव, चक्रधारी श्रीविष्णु और देव भी जिस सागर को मथ नहीं सके उसे वाली ने मथा था। वह वाली एक ही बाण से निष्क्रिय हो गया! उस बात को आप भूले क्यों? हे श्रेष्ठ पुरुष! मछलियों से शोभित इस समुद्र का जो हाल हुआ वह आप नहीं सोचते शायद! । ३२८०

ऍत्तनै यरक्क रेनुन् दरुममाण् डिल्लै यन्ऱे
अत्तनै यऱत्तै वॆल्लुम् बावमॆन् ऱऱिन्द दुण्डो
पित्तरैप् पोल नीयु मिवरुडन् पॆयर्न्ब तन्मै
ऑत्तिल दॆन्नच् चॊन्ना नवनिवै युरैप्प दानान् 3281

अरक्कर् ऍत्तनै एनुम्–राक्षस कितने भी क्यों न हों; तरुमम्–धर्म; आण्टु–वहाँ; इल्लै अन्ऱे–नहीं है न; अत्तनै–उतने (अधिक); अऱत्तै–धर्म को; वॆल्लुम् पावम्–पाप परास्त करेगा; ऍन्ऱु–ऐसा; अऱिन्ततु उण्टो–कहीं जाना है क्या; पित्तरै पोल–पागलों के समान; नीयुम्–तुम भी; इवरुटन्–इन वीरों के साथ; पॆयर्न्त तन्मै–जो भाग आये वह कार्य; ऑत्तिलतु–युक्त नहीं लगता; ऍन्न–ऐसा; चॊन्नान्–कहा; अवन्–वह (जाम्बवान); इवै–यह; उरैप्पतु आनान्–कहने लगा। ३२८१

राक्षसों की संख्या चाहे जितनी हो, वहाँ धर्म नहीं है न? अधिक धर्म को पाप परास्त करे—यह आपने कहीं जाना है? पागलों के समान इनके साथ मिलकर आपका भी भागना युक्त नहीं लगता! अंगद ने यह सब कहा, तो जाम्बवान उत्तर में यों कहने लगा। ३२८१

नाणत्ताऱ् चिऱिदु पोदु नलङ्गिन् ऱिरुन्दु पिन्नर्
तूणॊत्त तिरळ्तोळ् वीर तोन्ऱिय वरक्कर् तोऱ्ऱम्
काणत्ता निऱ्कत् तानक् कऱ्ऱमिडऱ् ऱवर्क्कु मामे
कोणऱ्पू वुण्णुम् वाळ्क्कैक् कुरङ्गिन्मेऱ् कुऱ्ऱ मुण्डो 3282

नाणत्ताल्–लज्जा से; चिऱितु पोतु–कुछ देर; नलङ्कितल्–क्षुब्ध रहा; इरुन्तु–रहकर; पिन्नर्–बाद; तूण् ऑत्त–स्तंभ-सम; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों वाले; वीर–वीर; तोन्ऱिय–जो आ गये उन; अरक्कर् तोऱ्ऱम्–राक्षसों का दृश्य; काण तान्–देखना सही; निऱ्क तान्–या सामना करना ही हो; कऱ्ऱ मिटऱ्ऱु अवर्क्कुम्–विषकण्ठ शिव के लिए भी; आमे–साध्य है क्या; कोणल्–वक्र; पू उण्णुम् वाळ्क्कै–पुष्प खानेवाला जीवन बितानेवाले; कुरङ्किन् मेल्–वानरों पर; कुऱ्ऱम् उण्टो–(जब वे भागते हैं तब) दोष लगेगा क्या। ३२८२

जाम्बवान लज्जा से कुछ देर क्षुब्ध रहा। बाद बोला। स्तंभ-सम कंधों वाले वीर! अब जो राक्षस आये हैं उनको देखना या उनके सामने खड़ा रहना विषकंठ के लिए भी साध्य है क्या? फिर वक्रशरीरी पुष्पजीवी वानर भागें तो उन पर दोष भी लगेगा क्या? । ३२८२

तेवरु मवुणर् तामुञ् जॆरुप्पण्डु शॆय्द कालम्
एवरे यॆऩ्ऩाड् काणप् पट्टिल रिरुक्कै यात्
मूवहै युलहि नुळ्ळा रिवर्तुणै याऱ्ऱऩ् मुऱ्ऱुम्
पावह रुळरे कूऱ्ऱु मिवरुडऩ् पहैक्क वऱ्ऱो 3283

तेवरुम्–देवों और; अवुणर् तामुम्–दानवों ने; पण्डु–पहले; चॆरु चॆय्त–जब युद्ध किया; कालम्–तब; ऍऩ्ऩाल्–मुझसे; काणप्पट्टु इलर्–जो नहीं देखे गये; एवर्–कौन हैं; इरुक्कैयात–वास योग्य; मूवकै उलकिऩ् उळ्ळार्–त्रिलोक में रहनेवालों में; इवर् तुणै–इनके जितने; आऱ्ऱल् मुऱ्ऱुम्–बल में बढ़े हुए; पावकर्–पातक; उळरे–हैं क्या; कूऱ्ऱुम्–यम भी; इवर् उटऩ्–इनसे; पकैक्कवऱ्ऱो–शत्रुता कर सकेगा क्या। ३२८३

जब देवों और दानवों ने पहले आपस में युद्ध किया था, तब कौन ऐसा था जिसको मैंने नहीं देखा हो ? वासयोग्य इन तीनों लोकों में इनके जितने बलशाली पातक हैं भी क्या ? यम भी इनसे वैर ठान सकेगा क्या ? । ३२८३

मालियैक् कण्डेऩ् पिऩ्ऩै मालिय वाऩैक् कण्डेऩ्
कालने मियैयुङ् गण्डे ऩिरणियऩ् ऱऩैयुङ् गण्डेऩ्
आलमा विडमुङ् गण्डेऩ् मदुविऩै यऩुश ऩोडुम्
वेलैयैक् कलक्कक् कण्डे ऩिवर्क्कुळ मिडुक्कु मुण्डो 3284

मालियै कण्टेऩ्–माली को देखा (मैंने); पिऩ्ऩै–बाद; मालियवाऩै कण्टेऩ्–माल्यवान को देखा; काल नेमियैयुम् कण्टेऩ्–कालनेमी को भी देखा; इरणियऩ् तऩैयुम् कण्टेऩ्–हिरण्य को भी देखा; आलम् मा विटमुम्–हलाहल विष को भी; कण्टेऩ्–देखा; अऩुचऩोटुम्–छोटे भाई (कैटभ) के साथ; मतुविऩै–मधु को; वेलैयै कलक्क–समुद्र को क्षुब्ध करता; कण्टेऩ्–देखा; इवर्क्कु उळ–(उनका) इनका-सा; मिटुक्कुम् उण्टो–बल है क्या। ३२८४

मैंने माली को देखा है; माल्यवान को देखा है। कालनेमी और हिरण्य को देखा है। हलाहल भी मेरा देखा हुआ है ! लघुसहोदर कैटभ सहित मधु को सागर को विलोडित करता देखा था। क्या उनमें इनका-सा बल था ? । ३२८४

वलियिदऩ् मेले पॆऱ्ऱ वरत्तिऩर् मायम् वल्लोर्
ऑलिकडऩ् मणलिऩ् मिक्क कणक्किऩ रुळ्ळ ऩोक्किर्
कलियिऩुङ् गॊडियर् कऱ्ऱ पडैक्कलक् करत्त रॆऩ्ऱाल्
मॆलिहुव दऩ्ऱि युण्डो विण्णवर् वॆरुवल् कण्डाल् 3285

वलि इतऩ् मेले–बल है तिस पर; पॆऱ्ऱ वरत्तिऩर्–प्राप्त वर वाले हैं; मायम् वल्लोर्–माया में चतुर हैं; ऑलि कटल्–शब्दायमान समुद्र के; मणलिऩ् मिक्क–बालुओं से अधिक; कणक्किऩर्–संख्या के हैं; उळ्ळम् नोक्किल–इनका मन देखो

तो; कलियितुम् कॉटियर्–कलिपुरुष से भी निर्मम हैं; पटैक्कलम् कऱ्ऱ–हथियारों से अभ्यस्त; करत्तर्–हाथों वाले हैं; ॲन्ऱाल्–तो; विण्णोर्–देव भी; वॅरुवल् कण्टाल्–भयातुर हैं, इसे देखें तो; मॅलिकुवतु अन्ऱि–हमारे अशक्त होने के सिवा; उण्टो–कुछ कर सकते हैं क्या। ३२८५

ये इतने बलवान हैं ही! तिस पर उन्हें अपार वर प्राप्त हैं! वे माया में भी दक्ष हैं। उनकी संख्या गर्जनशील समुद्र के बालुओं से अधिक है! इनके मन के बारे में सोचें तो वे कलिपुरुष से भी क्रूर हैं। ये विविध हथियारों से अभ्यस्त हाथों वाले हैं। व्योमवासी देव भी इन्हें देखकर डर जाते हैं। इस स्थिति में वानर अधीर हो शिथिल पड़ जाने के सिवा क्या कर सकेंगे? । ३२८५

आहितु मैयम् वेण्डा वऴहिदऩ्ऱमरि ऩञ्जिच्
चाहितुम् बॅयर्न्द तऩ्मै पऴितरु नरहिऱ्ऱऴ्ऴुम्
एहुदु मीऴ विऩ्ऩु मियम्बुव दुळदा लैय
मेहमे यतैयान् कण्णिऩ् ऱॅङ्ङऩम् विऴित्तु निऱ्ऱुम् 3286

आकितुम्–तो भी; चाकितुम्–मरना पड़े तो भी; अमरिन् अञ्चि–युद्ध से डरकर; पॅयर्न्त तऩ्मै–भागने का कार्य; अऴकितु अन्ऱु–सुन्दर काम नहीं; पऴि तरुम्–अपयश दिला देगा; नरकिल् तऴ्ऴुम्–नरक में गिरा देगा; ऐयम् वेण्टा–संशय न हो; मीऴ एकुतुम्–लौट जायँगे; ऐय–तात; इन्तुम्–और भी; इयम्पुवतु उळतु–कहना है; मेकमे अतैयान्–मेघ-सदृश; कण्णिन्–(श्रीराम के) समक्ष; ॲङ्ङऩम्–कैसे; विऴित्तु निऱ्ऱुम्–आँखें खोले खड़े रहें। ३२८६

इतना होने पर भी, मरने की नौबत आ जाय तो भी, युद्ध से डरकर भाग आना सुन्दर काम नहीं था! यह अवश्य अपयश दिलायगा। और नरक में डाल देगा। इसमें संशय नहीं! लौट जायँगे। तात! और एक बात है जो कहनी है। अब हम मेघश्याम श्रीराम के समक्ष आकर अपनी आँखों से उनका श्रीमुख कैसे देख सकेंगे? । ३२८६

ॲन्ऱॅडुत् तॅण्गिन् ऱाऩैक् किऱैयव ऩियम्ब लोडुम्
वन्ऱिऱऱ् कुलिश मोच्चि वरैशिऱ हरिन्दु वॅळ्ळिक्
कुन्ऱिडै नीलक् कॊण्मू वमर्न्दॅन मदत्तिण् कुन्ऱिऩ्
निऩ्ऱव ऩळित्त मैन्दऩ् महऩिवै निहळ्त्त लुऱ्ऱाऩ् 3287

ॲन्ऱु–ऐसा; ॲण्किन् ताऩैक्कु–रीछों की सेना के; इऱैयवऩ्–नायक के; ॲटुत्तु इयम्पलोटुम्–कहने पर; वल् तिऱल्–अतिशय शक्तिसंपन्न; कुलिचम् ओच्चि–वज्र को उठाकर; वरै चिऱकु–पर्वतों के पक्षों को; अरिन्तु–काटकर; वॅळ्ळि कुन्ऱु इटै–श्वेत पर्वत पर; नीलम् कॊण्मू–नीला मेघ; अमर्न्तॅऩ–रहता हो जैसे; मतम्–मदयुक्त; तिण्–कठोर; कुन्ऱिऩ्–पर्वत (गज) पर; निऩ्ऱवन्–जो रहा उस इन्द्र का; अळित्त मैन्तऩ्–जनाया पुत्र; मकऩ्–उसके पुत्र ने; इवै निकऴ्त्तल् उऱ्ऱाऩ्–ये बातें कहना आरम्भ किया। ३२८७

ऐसा जब रीछों के राजा जाम्बवान ने दिल खोलकर कहा तब उस इन्द्र के, जिसने अतिशय शक्तिवाले वज्रायुध का प्रयोग करके पर्वतों के पक्ष काटे थे और जो श्वेत पर्वत पर विलसनेवाले नीले मेघ के समान मदमत्त पर्वत-सम ऐरावत पर आरूढ़ है, पुत्र (वाली) का पुत्र (अंगद) निम्नोक्त बातें कहने लगा। ३२८७

ऍडुत्तलुञ् जाय्दल् तानु मॅदिर्त्तलु मॅदिर्न्दोर् तम्मैप्
पडुत्तलुम् वीर वाऴ्क्कै पर्रिनर्क् कुर्र मेताऴ्
अडुत्तदे यः(ह्)दु निर्क वन्रियु मोन्रु कूरर्
कॅडुत्तदु केट्टोर् नीरुङ् गरुत्तुळोर् एदु नोक्किन् 3288

ऍट्टुत्तलुम्-(शत्रुओं पर) हावी आना; चाय्तल् तानुम्-और (उनसे) परास्त होना; ऍतिर्त्तलुम्-सामना करना; ऍतिर्न्तोर् तम्मै-सामना करनेवालों को; पट्टुत्तलुम्-मारना; वीरम् वाऴ्क्कै-वीरों का जीवन; पर्रितर्क्कु-जो अपना चुके उनके लिए; मेताळ् उर्र-प्राचीन काल से; अट्टुत्तते-सहज ही है; अ॰॰तु निर्क-वह एक ओर रहे; अन्रियुम्-अलावा; ऑन्रु करर्कु-एक कहने के लिए; ऍट्टुत्ततु-जो उचित है; केट्टोर्-उसको सुना; नोक्किन्-विचार करने पर; नीरुम्-आप भी; करुत्तुळोर्-विवेकी हैं। ३२८८

शत्रुओं पर विजय पाना या उनसे हार जाना, शत्रु का सामना करना या उसे मारना —यह सब वीर-जीवियों के लिए प्राचीन दिनों से सहज ही बना है! और भी एक बात है। आपने मेरी बात सुनी जिसको मैंने सुनाना उचित समझा। आप विवेकी हैं। ३२८८

ऑन्रु नीरञ्ज लैय यामॅला मोरुङ्गे शॅन्रु
निन्रुमोन् रियर्रर लार्रेम् नेमियान् राने नेर्न्दु
कोन्रुपोर् कडक्कु मायिर् कॉळ्ळुदुम् वॅन्रि यन्रेल्
पोन्रुदु मवनो डॅन्रान् पोदले यळहिर् रॅन्रान् 3289

ऐय-तात; नीर् ऑन्रुम् अञ्चल्-आप कुछ न डरें; याम् ऍलाम्-हम सब; ऑरुङ्के चॅन्रु-एक साथ जाकर; निन्रुम्-खड़े रहें तो भी; ऑन्रु इयर्रल्-कुछ करने में; आर्रेम्-समर्थ नहीं रह सकेंगे; नेमियान् ताने-चक्रधारी श्रीराम स्वयं; नेर्न्तु-लड़कर; कोन्रु-मारकर; पोर् कटक्कुम् आयिन्-युद्ध जीतेंगे तो; वॅन्रि कॊळ्ळुतुम्-विजय प्राप्त करेंगे; अन्रेल्-नहीं तो; अवनोटु-उनके साथ; पॊन्रुतुम्-मरेंगे; ऍन्रान्-कहा और; पोतले-क्या भागना; अळकिर्रु-सुन्दर (श्लाघनीय) होगा; ऍन्रान्-कहा (अपनी बात समाप्त की)। ३२८९

तात! आप कुछ न डरें। हम सब मिलकर जायँ और डटे रहें तो भी कुछ नहीं होगा। पर अगर चक्रधारी विष्णु के अवतार श्रीराम स्वयं शत्रु से युद्ध करके उनका संहार करके युद्ध समाप्त करें तो हम

विजयी बनेंगे। नहीं तो उनके साथ प्राण त्याग देंगे। इसे छोड़कर भाग जाना अच्छा होगा क्या ? । ३२८९

ईण्डिय तानै नीङ्ग निऱ्पदॅन् यामे शॅन्ऱु
पूण्डवॅम् पऴियि ऩोडुम् बोन्दनम् बोदु मॅन्ऩा
मीण्डनर् तलैव रॅल्ला मङ्गद ऩोडुम् वीरन्
मूण्डवॅम् बडैयै नोक्कित् तम्बिक्कु मॉऴिव दानान् 3290

ईण्टिय तानै–एकत्रित सेना; नीङ्क निऱ्पतु–भाग खड़ी हुई; ॲन्–सो क्या बात; यामे–हम खुद; चॅन्ऱु–जाकर; पूण्ट–मिले; वॅम् पऴियिऩोटुम्–दुःखदायी अपयश के साथ; पोन्तनम्–लौट आये हैं; पोतुम्–चलें; ॲन्ऩा–कहने पर; तलैवर् ॲल्लाम्–सारे यूथप; अङ्कतऩोटुम् मीण्टनर्–अंगद के साथ लौटे; वीरन्–वीर श्रीराम; मूण्ट–क्रुद्ध; वॅम्–भयानक; पडैयै नोक्कि–सेना को देखकर; तम्पिक्कु–कनिष्ठ भ्राता से; मॉऴिवतु आनान्–कहने लगे। ३२९०

एकत्रित वानर-सेना के भाग खड़ा होने के सम्बन्ध में क्या कहा जाय ? स्वयं हम मैदान छोड़कर भागे और अपयश लेकर लौटे हैं ! छोड़ो। हम सब जायँ ! इस पर सभी वानरयूथप अंगद के साथ-साथ लौट आये। उधर श्रीवीरराघव ने क्रुद्ध राक्षस-सेना को देखा और वे अपने छोटे भाई से यों कहने लगे। ३२९०

अत्तनी युणर्दि यन्ऱे यरक्करदा नवुण रेदान्
ॲत्तनै युळरॅन् ऱालु मियान्शिलै यॅडुत्त पोदु
तीत्तुरु कनलिन् वीऴ्न्द पञ्जॅनत् तीलैयुन् दन्मै
ऑत्तदो रिडैयू ऱुण्डॅन् ऱुणर्विडै युदिप्प दन्ऱाल् 3291

अत्त–तात; अरक्कर् तान्–राक्षस हों या; अवुणरे तान्–दानव ही क्यों न हों; ॲत्तनै उळर् ॲन्ऱालुम्–कितने भी क्यों न हों; यान्–मैं; चिलै ॲटुत्त पोतु–धनु उठा लूं तो; तीत्तु उरु–पुंजीकृत; कनलिल्–आग में; वीऴ्न्त पञ्चु ॲन–पड़ी रूई के समान; तीलैयुम् तन्मै–(सभी) मिट जायेंगे वह गति; नी उणर्ति अन्ऱे–तुम जानते हो न; ऑत्ततु–(मेरे बल के) योग्य; ओर् इटैयूऱु–एक बाधा; उण्टु ॲन्ऱु–है, ऐसा; ॲन् उणर्वु इटै–मेरी समझ में; उतिप्पतु–जो आयगा; अन्ऱु–वह कुछ नहीं है। ३२९१

तात ! दानव हों चाहे राक्षस ! वे कितने ही क्यों न हों। तुम जानते हो कि मेरे धनुष धारण करने पर वे सब किस प्रकार अग्निपुंज में पड़ी रूई के समान मिट जायँगे ! मेरी शक्ति के सदृश कोई बाधा भी हो सकती है, ऐसा मेरी बुद्धि नहीं मानती। ३२९१

काक्कुन रिन्मै कण्ड कलक्कत्ताऱ् कवियिन् शेनै
पोक्करप् पोहित् तत्त मुऱैविडम् बुहुद लुण्डाल्

ताक्कियिप् पडयै मुऱ्ऱुन् दलैतुमिप् पळवुन् दाङ्गि
नीक्कुदि निरुद राङ्गु नॆरुङ्गुवार् नॆरुक्का वण्णम् 3292

काक्कुनर्–रक्षक का; इन्मै कण्ट–अभाव देखकर; कलक्कत्ताल्–उस भ्रांति से; कवियिन् चेनै–कपि-सेना; पोक्कु अऱ–युद्ध में जाना छोड़कर; पोकि–भाग जाकर; तम् तम् उऱैवु इटम्–अपने-अपने रहने के स्थान में; पुकुतल् उण्टु–घुस जाते हैं; आल्–इसलिए; इ पटैयै ताक्कि–इस सेना पर आक्रमण करके; मुऱ्ऱुम्–पूरा; तलै तुमिप्पु अळवुम्–सिर काट न लूँ तब तक; ताङ्कि–तुम सेना को सँभालकर; आङ्कु–वहाँ; नॆरुङ्कुवार्–नियरानेवाले; निरुतर्–राक्षस; नॆरुङ्का वण्णम्–पास न जायँ ऐसा; नीक्कुति–रोको। ३२९२

कपि-सेना अपने रक्षक का अभाव समझकर युद्ध पर जाना छोड़कर भाग गयी है और अपने-अपने आश्रय-स्थान में घुसे हुए हैं। इसलिए जब तक मैं इस सेना पर आक्रमण करके पूर्ण रूप से इन वीरों के सिर नहीं काट डालूँ, तब तक तुम इस वानर-सेना का रक्षण करो। उसकी तरफ़ राक्षस जायँगे तो उनको वहाँ जाने से रोक दो। ३२९२

इप्पुऱत् तिनैय शेनै येवियाण् डिरुन्द तीयोन्
अप्पुऱत् तमैन्द शूळ्च्चि यऱिन्दव नयले वन्दु
तप्पऱक् कॊन्ऱु नीक्कि लवनैयार् तडुक्क वल्लार्
वॆप्पुऱ् ऱिन्ऱ वुळ्ळम् वीरनी यन्ऱि विल्लोर् 3293

इ पुऱत्तु–इस तरफ़; इत्तैय चेनै–इस तरह की सेना को; एवि–भिजवाकर; आण्टु इरुन्त–वहाँ जो रहा; तीयोन्–दुष्ट; अमैन्त चूळ्च्चि–युक्त तन्त्र का; अऱिन्तवन्–ज्ञाता रावण; अ पुऱत्तु–उस तरफ़; अयले वन्तु–पास आकर; तप्पु अऱ–अचूक रीति से; कॊन्ऱु नीक्किल्–मार मिटाये तो; वीर–वीर; अवनै–उसे; नी अन्ऱि–तुम्हारे सिवा; तटुक्क वल्लोर्–रोक सकनेवाले; विल्लोर्–धनुर्धर; यार्–कौन हैं; उळ्ळम्–(यह सोचने पर) मन; वॆप्पु उऱुकिन्ऱतु–तप्त होता है। ३२९३

इस तरफ़ ऐसी सेना को भेजकर दुष्ट तथा तंत्रज्ञ रावण उस तरफ़ आकर वानरों का खातमा करना सोचेगा तो हे वीर! तुम्हारे सिवा उसे रोक सकनेवाले धनुर्धर कौन हैं? यह सोचकर मेरा मन संतप्त होता है। ३२९३

मारुदि योडु नीयुम् वानरक् कोनुम् वल्ले
पेरुदिर् शेनै काक्क वॆन्नुडैत् तनिमै पेणिच्
चोरुदि रॆन्निन् वॆम्बोर् तोऱ्ऱुना मॆन्नच् चॊन्नान्
वीरनुमर् ऱदनैक् केट्ट विळैयवन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 3294

मारुतियोटु–मारुति के साथ; नीयुम्–तुम भी; वानरर् कोनुम्–वानरेश भी; वॊल्ले–शीघ्र; चेनै काक्क–सेना की रक्षा करने; पेरुतिर्–चलो; ॲन् उटै तनिमै–

मेरी तन्हाई; पेणि–सोचकर; च्चोरतिर् ॲनुतिन्–निर्बल हो जाओ तो; नाम्–हम; वॅम् पोर्–इस भयंकर युद्ध में; तोऱ्ऱुम्–हार जायेंगे; अतत्तै केट्ट–(जिन्होंने) उसे सुना वे; इळैयवन्–कनिष्ठ लक्ष्मण; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ३२९४

मारुति, वानरेश और तुम शीघ्र जाओ सेना का संरक्षण करने। मेरी तन्हाई सोचकर अगर तुम मन मारे रह जाओगे तो हम इस भयंकर युद्ध में हार जायँगे। —श्रीराघव ने कहा। यह सुनकर लघुराज बोलने लगे। ३२९४

अन्नदे करुम मैय वन्ऱियु मरुहे निन्ऱाल्
ॲन्नुनक् कुदवि शॅय्व दिदुपडै यॅन्ऱ पोदु
शॅन्नियिऱ् चुमन्द कैयर् तेवरे पोल यामुम्
वॊन्नडै वरिवि लाऱ्ऱल् पुऱनिन्ऱु काण्डल् पोक्कि 3295

ऐय–प्रभु; अन्नते करुमम्–वही करणीय है; अन्ऱियुम्–और भी; पटै–राक्षस-सेना; इतु ॲन्ऱ पोतु–ऐसा जब है; तेवरे पोल–देवों के ही समान; यामुम्–हम भी; चॅन्नियिल्–सिर पर; चुमन्त–धृत; कैयर्–हाथों वाले होकर; पॊन् उटै–स्वर्णनिर्मित; वरि विल्–सबन्ध धनु के; आऱ्ऱल्–बल को; पुऱन् निन्ऱु–अलग खड़े रहकर; काण्टल् पोक्कि–देखना छोड़कर; अरुके निन्ऱाल्–पास खड़े रहने से; उनक्कु चॅय्वतु–आपके प्रति किया गया; उतवि ॲन्–उपकार क्या है। ३२९५

लक्ष्मण ने श्रीराम से उत्तर में कहा कि प्रभु! वही करणीय काम है! और भी जब राक्षस-सेना का ऐसा बल है, तब मैं भी अगर देवों के समान सिर पर हाथ रखके और अलग रहकर विना स्वर्णनिर्मित धनु के बल का प्रयोग किये आपके पास खड़ा रहूँ तो आपका क्या उपकार होगा ?। ३२९५

ॲन्ऱव नेह लुऱ्ऱ कालैयि ननुम नॅन्दाय्
पुन्ऱॊळिऱ् कुरङ्गॆ नादॆन् ऱोळिन्मे लेऱिप् पुक्काल्
नन्ऱॆनक् करुदा निन्ऱेन् अल्लदु नायि नेनुन्
पिन्ऱनि निन्ऱ पोदु मडिमैयिऱ् पिळैप्पि लॆन्ऱान् 3296

ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; अवन्–उनके; एकल् उऱ्ऱ कालैयिल्–जाने का उपक्रम करते समय; अनुमन्–मारुति ने; ॲन्ताय्–मेरे प्रभु; पुन् तॊऴिल्–क्षुद्रकर्म; कुरङ्कु–वानर; ॲन्नातु–न मानकर (ऐसी उपेक्षा न करके); ॲन् तोळिन् मेल् एऱि–मेरे कन्धों पर चढ़कर; पुक्काल्–(युद्ध में) प्रवेश करें तो; नन्ऱु–भला होगा; ॲन–ऐसा; करुता निन्ऱेन्–सोचता हूँ; अल्लतु–नहीं तो; नायिनेन्–कुत्ते से नीच मैं; उन् पिन्–आपके बाद; तनि निन्ऱ पोतुम्–अकेला रह जाऊँ तो भी; अटिमैयिल् पिळैप्पिल्–दासता में कमी नहीं रहेगी; ॲन्ऱान्–कहा। ३२९६

लक्ष्मण यह कहकर जब जाने लगे, तब हनुमान ने निवेदन किया कि

हे हमारे प्रभु ! मेरी अल्पकर्म वानर कहकर उपेक्षा किये विना मेरे कंधे पर चढ़कर लघुराज युद्धभूमि में प्रवेश करें तो अच्छा होगा। मैं ऐसा ही सोचता हूँ। और कुत्ते से भी नीच मैं आपके पास रह पाऊँ, तब मुझे यह तृप्ति होगी कि दासता में कमी नहीं रही। ३२९६

ऐयनिऱ् कियला दुण्डो विरावण नयले वनुदुऱ्
ऍय्युम्विल् करत्तु वीर निलक्कुवन् ऱन्नो डॆऱ्ऱाल्
मॊय्यमर्क् कळत्ति नुन्नैत् तुणैपॆऱा दॆन्निन् मुऩ्ब
शॆय्युमा वॆऱ्ऱि युण्डो शेनैयुञ् जिदैयु मन्ऱे 3297

ऐय–तात; निऱ्कु–तुम्हें; इयलातु–असाध्य; उण्टो–कुछ है क्या; इरावणन्–रावण; अयले वनुतु उऱ्ऱु–पास ही में आ पहुँचकर; ऍय्युम्–(बाण) चलानेवाले; विल् करत्तु वीरन्–धनुर्हस्त वीर; इलक्कुवन् तन्तोडु–लक्ष्मण के साथ; एऱ्ऱाल्–युद्ध आरम्भ करे तो; मॊय् अमर् कळत्तिल्–व्यस्त उस युद्ध के मैदान में; उन्नै तुणै पॆऱान् ऍन्निल्–तुम्हें सहायक के रूप में न प्राप्त करे तो; मुन्प–बली; चेय्युमा वॆऱ्ऱि उण्टो–की जाय ऐसी विजय-प्राप्ति भी होगी क्या; चेनैयुम्–सेना भी; चितैयुम् अन्ऱे–छितर जायगी न। ३२९७

श्रीराम ने हनुमान से कहा— तात ! तुम्हारे लिए असाध्य कुछ है क्या ? जब रावण पास आकर धनुर्हस्त लक्ष्मण से युद्ध करेगा, तब उस व्यस्त युद्धभूमि में लक्ष्मण के साथ साथी के रूप में नहीं रहोगे, तो हे बली ! विजय मिल सकेगी क्या ? और सेना भी छितर जायगी। ३२९७

एरैक्कॊण् डमैन्द कुञ्जि यिन्दिर शित्तॆन् बान्ऱन्
पोरैक्कॊण् डिरुन्द मुन्ना ळिळैयवन् ऱन्नैप् पोक्किऱ्
ऱारैक्कॊण् डुन्ना लन्ऱे वॆन्ऱदङ् गवनै यॆन्नम्
वीरर्क्कुम् वीर निन्नैप् पिरिहलन् वॆल्लु मॆन्बेन् 3298

एरै कॊण्टु–सौंदर्य ले; अमैन्त कुञ्चि–जिसका केश बना था उस; इन्तिरचित्तु ऍन्पान् तन्–इन्द्रजित् नाम का वह; पोरै कॊण्टु–युद्ध में लगा; इरुन्त मुन्नाळ्–जब रहा उस पूर्व के दिन में; इळैयवन् तन्नै–लघुभ्राता को; पोक्किऱ्ऱु–भेजा था (मैंने); आरै कॊण्टु–किसको मानकर; अङ्कु–वहाँ; अवनै वॆन्ऱतु–उसको जीतना; उन्नाल् अन्ऱे–तुम्हारे निमित्त नहीं क्या; वीरर्क्कुम् वीर–वीरों में श्रेष्ठ वीर; निन्नै पिरिकलन्–तुमसे अलग न होकर; वॆल्लुम्–जीतेगा; ऍन् पेन्–यही सोचता हूँ। ३२९८

जिस दिन सुन्दरकेशी इन्द्रजित् से युद्ध करना था, तब मैंने लघुराज को भेजा था किसकी सहायता के बल पर ? वहाँ लक्ष्मण से विजय पायी भी तुम्हारी सहायता से न ? हे वीरों में श्रेष्ठ ! लक्ष्मण तुमसे अलग नहीं हो तभी वह जीतेगा। यही मैं कहूँगा। ३२९८

शेत्तैयेक् कात्तॆत् बिन्ने तिरुनहर् तीर्न्दु पोन्द
यात्तैयेक् कात्तु मर्रै यिरैवत्तैक् कात्तॆण् तीर्न्द
वात्तैयित् तलत्ति नोडु मरैयोडुम् वळर्त्ति यॆन्ड्रात्
एत्तैमरु रुरैक्कि लादा निळवल्पिन् नॆळुन्वु शॆन्ड्रात् 3299

चेत्तैयै कात्तु–सेना का पालन करके; ऎत् पिन्ने–मेरे पीछे; तिरु नकर् तीर्न्तु पोन्त–श्रीनगर (अयोध्या) छोड़कर जो आया; यात्तैयै–उस गज (लक्ष्मण) को; कात्तु–रक्षित करके; मर्रै–और; इरैवत्तै कात्तु–राजा सुग्रीव की रक्षा करके; ऎण् तीर्न्त–संख्या या विचार को पार कर रहे; वात्तै–आकाश को; इ तलत्तिनोटुम्–इस भूमि के साथ; मरैयोटुम्–और वेदों के साथ; वळर्त्ति–पनपने दो; ऎन्ड्रान्–कहा; एत्त मरुरु–उत्तर में कुछ; उरैक्किलातान्–न कह सककर; इळवल् पिन्–लघुराज के पीछे; ऎळुन्तु चॆन्ड्रान्–उठ चला (हनुमान)। ३२९९

तुम जाओ। सेना की, मेरे साथ श्रीसंपन्न अयोध्या छोड़कर जो आया है उस हाथी-सम लक्ष्मण की, तुम्हारे वानरेश सुग्रीव की रक्षा करो और कल्पना से परे देवलोक के साथ इस भूतल को और वेदों को पनपने दो। हनुमान क्या उत्तर दे? विना कुछ कहे लक्ष्मण के पीछे उठ चला। ३२९९

वीडण नीयु मर्रुन् तम्बियो डेहि वॆम्मै
कूडिनर् शॆय्यु मायन् दॆरिन्दत्तै कूरिक् कॊर्र्रम्
नीडुरु तात्तै तन्नैत् ताङ्गित्तै निल्ला यॆन्निल्
केडुळ दाहु मॆन्ड्रा नवत्तदु केट्प दानान् 3300

वीटण–विभीषण; नीयुम्–तुम भी; उन् तम्पियोटु–तुम्हारे छोटे भाई के साथ; एकि–जाकर; वॆम्मै कूटिनर्–बुरे गुणों के साथ रहनेवाले राक्षस; चॆय्युम् मायम्–जो माया रचेंगे; तॆरिन्तत्तै–वह जानकर; कूरि–कहकर; कॊर्र्रम् नीटु उरु–विजय लम्बी करनेवाली; तात्तै तन्नै–सेना को; ताङ्कित्तै–आधार देकर; निल्लाय्–न रहोगे; ऎन्निल्–तो; केटु उळतु आकुम्–हानि हो रहेगी; ऎन्ड्रान्–बोले (श्रीराम); अवन्–विभीषण; अतु केट्पतु आनान्–उसको मानने लगा। ३३००

श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हे विभीषण! तुम भी अपने भाई लक्ष्मण के साथ जाओ। क्रूर राक्षस जो भी माया करें उसको पहले ही जानकर लक्ष्मण को सावधान करो। अगर तुम विजय के लिए बहुत समय लड़नेवाली सेना का रक्षक बनकर नहीं रहोगे, तो हानि होने की संभावना है! विभीषण वह बात मानकर तदनुसार चलने लगा। ३३००

शूरियन् शेयुन् जॆल्वन् शॊर्र्रदे यॆण्णुन् जॊल्लन्
आरियन् पिन्बु पोन्ना नवरु मवुवे नल्ल
कारिय मॆन्तक् कॊण्डार् कडर्पडै कात्तु निन्ड्रार्
वीरियन् बित्तरच् चॆय्द शॆयलॆलाम् विरिक्क लुर्राम् 3301

चूरियन् चेयुम्–सूर्य का पुत्र भी; चॅल्वत्–धनी श्रीराम का; चॉऱ्ऱते–कहना; ऑण्णुम् चॉल्लन्–मानकर बात करनेवाले; आरियन् पिन्पु–आर्य लक्ष्मण के पीछे-पीछे; पोतान्–गया; अतॅवरुम्–सभी; अतुवे नल्ल कारियम्–वही अच्छा कार्य है; ॲन्नुत कॉण्टार्–ऐसा मानकर; कटल् पटॅ–सागर (विशाल) सेना का; कात्तु नित्ऱार्–रक्षा करते रहे; वीरियन्–वीर श्रीराम ने; पिन्तर्–बाद; चॅय्त चॅयल् ॲल्लाम्–जो किया वह काम सारा; विळम्पल् उऱ्ऱाम्–कहने लगे (हम, कवि)। ३३०१

सूर्यसूनु सुग्रीव भी लक्ष्मण के पीछे जाने लगा जो कि धनी श्रीराम की बात समझकर बोलनेवाले हैं। सभी उसी को उत्तम कार्य मानकर सागर (विशाल) सेना की रक्षा में लगे रहे। अब हम आगे श्रीवीरराघवकृत कार्य का वर्णन करेंगे। ३३०१

विल्लितॅत् तॉऴुदु वाङ्गि येऱ्ऱितान् विन्नाण् मेरुक्
कल्लॅन्नच् चिऱन्द देयुङ् गरुणॅयङ् गडले यन्न
ॲल्लॉऴि मार्बिल् वीरक् कवशमिट् टिऴॅया वेदच्
चॉल्लॅन्नत् तॉलॅया वाऴित् तूणियुम् बुऱत्तुत् तूक्कि 3302

अम् करुणॅ कटले–सुन्दर करुणा-सागर श्रीराम ने ही; तॉऴुतु–नमन करके; विल्लितॅ वाङ्कि–धनु को लेकर; विल् नाण् एऱ्ऱितान्–धनु की प्रत्यंचा चढ़ायी; मेरु कल् ॲन्न–मेरु पर्वत के समान; चिऱन्ततेयुम्–श्रेष्ठ हो तो भी; अन्न–वैसे; ॲल् ऑऴि मार्पिल्–प्रकाशमय वक्ष में; वीरम् कवचम् इट्टु–वीर कवच धारण करके; इऴॅया वेतम् चॉल्–अपौरुषेय वेद-वचन; ॲन्न–के समान; तॉलॅया–अक्षय; वाऴि–बाणों-सह; तूणियुम्–तूणीर; पुऱत्तु तूक्कि–पीठ से बाँधकर। ३३०२

मनोरम करुणासागर श्रीराम ने नमन करके धनु को हाथ में लिया और प्रत्यंचा चढ़ायी। फिर मेरुपर्वत-समान श्रेष्ठ अपने छविमय वक्ष में कवच पहन लिया और अपौरुषेय वेदवाक्यों के समान अक्षय तूणीर पीठ से बाँध लिया। ३३०२

ओशनॅ नूऱ्ऱिन् वट्ट मिडॅविडा दुऱॅन्द शेनॅत्
तूशिवन् दण्णल् दन्नॅप् पोक्कऱ वळॅन्दु शुऱ्ऱि
वीशिन पडॅयु मम्बु मिडॅदलुम् विण्णो राक्कॅ
कूशिन पॉडिया लॅङ्गुङ् गुमिऴ्त्तन वियोम कूडम् 3303

नूऱ्ऱित् ओचनॅ वट्टम्–हज़ार योजन तक वर्तुलाकार फैली; इटॅ विटातु–निरन्तर; उऱॅन्त–जो रही; चेनॅ–उस (शत्रु) सेना का; तूचि वन्तु–अग्र भाग आकर; अण्णल् तन्नॅ–प्रभु को; पोक्कु अऱ–जाने का मार्ग न छोड़कर; वळॅन्तु–चारों ओर आकर; चुऱ्ऱि–घेरकर; वीचित पटॅयुम्–जो फेंकता रहा वे हथियार और; अम्पुम्–बाण; मिटॅतलुम्–पास आये तो; विण्णोर् आक्कॅ–देवों के शरीर; कूचित–संकुचित हुए; पॉटियाल्–धूल से; वियोम कूटम् ॲङ्कुम्–व्योम-

सौ योजन दूर तक गोलाकार राक्षस-सेना खचाखच भरी थी। उसका अग्रभाग आकर श्रीराम को ऐसा घेर गया कि निकलने का कोई मार्ग नहीं रहा। फिर उन्होंने जो चलाये वे युद्ध के आयुध और बाण विपुल परिमाण में आने लगे तो देवों के भी शरीर संकुचित हो गये। तब जो धूलि उठी उससे व्योमलोक में सब स्थान भरकर फूल गये। ३३०३

कण्णत्ते यॅळियॆ यिट्ट कवशमे कडले यत्त्न
वण्णत्ते यऱत्तित् वाऴ्वे मऱैयवर् वलियॆ माऱा
दॊण्णुमे नीय लादो रॊरुवर्क्किप् पडैमे लूऱ्ऱ
ऎण्णमे मुडित्ति यॆन्ऩा वेत्तिन रिमैयो रॆल्लाम् 3304

इमैयोर् ऎल्लाम्–सभी देव; कण्णत्ते–दयादृष्टि रखनेवाले; ऎळियेम् इट्ट–हम दीनों के पहने; कवचमे–कवच; कटले अन्न–समुद्र के समान; वण्णत्ते–वर्ण वाले; अऱत्तिन् वाऴ्वे–धर्म के जीवन; मऱैयवर् वलिये–वेदज्ञों के बल; नी अलातोर्–आपके सिवा; ऒरुवर्क्कु–किसी के लिए भी; माऱातु–विना पीछे आये; इ पटै मेल् ऊन्ऱ–इस सेना पर आक्रमण करने की; ऒण्णुमे–शक्ति रहेगी क्या; ऎण्णमे मुटित्ति–हमारा मंशा पूरा करें; ऎन्ना–कहकर; एत्तिनर्–स्तुति की। ३३०४

तब सभी देवों ने श्रीराम से प्रार्थना की, हे दयादृष्टि रखनेवाले! हमारे रक्षक कवच! सागरश्याम! धर्म के आश्रय! वेदज्ञ विप्रों के बल! आपको छोड़ कौन इस सेना का सामना कर सकता है? आप हमारी इच्छा पूरी करें (यानी इनका नाश कर दें)। ३३०४

मुनिवरे मुदल्व राय वऱत्तुऱै मुऱ्ऱि न्नोर्हळ्
तनिमैयु मरक्कर् तानैप् पॆरुमैयुन् दरिक्क लादार्
पनिवरु कण्णर् विम्मिप् पदैक्किन्ऱ नॆञ्जर् पावत्
तनैवरुन् दोऱ्क वण्णल् वॆल्हवॆन् ऱाशि शॊन्नार् 3305

मुनिवरे मुतल्वर् आय–मुनि आदि; अऱम् तुऱै मुऱ्ऱितोर्कळ्–धर्ममार्गनिष्ठ; तनिमैयुम्–श्रीराम का एकाकीपन और; अरक्कर् तानै–राक्षसों की सेना की; पॆरुमैयुम्–बड़ाई; तरिक्कलातार्–देखकर अधीर जो बने; पनि वरुकण्णर्–अश्रु-भरे नेत्रों वाले; विम्मि–दुःखी हो; पतैक्किन्ऱ–धड़कनेवाले; नॆञ्चर्–मनों के; पावत्तु अनैवरुम्–सभी पापी; तोऱ्क–हार जायें; अण्णल् वॆल्क–महान श्रीराम जीतें; ऎन्ऱु आचि चॊन्नार्–ऐसे आशीर्वचन बोले। ३३०५

मुनि और धर्मनिष्ठ लोगों ने श्रीराम की तन्हाई देखी और राक्षस-सेना की बड़ाई तो वे अधीर हो गये। उनकी आखें अश्रुपूर्ण हो गयीं और उनका हृदय दुःख से धड़कने लगा। उन्होंने शुभकामना प्रगट की कि पापी सब हार जायँ। महान् श्रीराम जीतें। ३३०५

मऱ्ऱुम् वेऱ् ऱत्तुळ् नित्ऱ वान नाड नैत्तुळोर्
कॊऱ्ऱ विल्लि वॆल्ह वञ्ज मायर् वीह कुवलयत्
तुऱ्ऱ तीमै तीर्ह विन्ऱॊ ऍन्ऱु कूऱि नार्निलम्
तुऱ्ऱ वॆम्ब डक्कै नीश रिन्न विन्न शॊल्लिनार् 3306

मऱ्ऱुम्–और भी; वेऱु अऱत्तुळ् नित्ऱ–अलग धर्मरत; वानम् नाटु–व्योम-लोक के; अनैत्तुळोर्–सब स्थानों के वासी देवों ने; कॊऱ्ऱम् विल्लि–विजयकोदण्ड-पाणी; वॆल्क–जीतें; वञ्चम् मायर्–वंचक मायावी; वीक–मरें; कुवलयत्तु उऱ्ऱ तीमै–भूमि पर आया संकट; इन्ऱोटु तीर्क–आज से मिट जाय; ऍन्ऱु कूऱिनार्–ऐसा मंगल-कामना की; निलम् तुऱ्ऱ–भूमि में जो भरे रहे; वॆम् पटै कै–भयंकर हथियारों को धारण करनेवाले हाथों के; नीचर्–नीच; इन्न इन्न–ऐसी-ऐसी बातें; चॊल्लिनार्–बोले। ३३०६

और भी इनसे अलग सभी व्योमवासियों ने शुभकामना की कि विजय-कोदंडपाणी विजयी हों! भूमि पर आया संकट आज ही (के साथ) समाप्त हो! तब भूमि पर जो भरे आये उन भयंकर आयुधहस्त राक्षसों ने ये (निम्नोक्त) बातें कहीं। ३३०६

इरिन्द शेनै शिन्दि यारु मिन्ऱि येह नित्ऱनम्
विरिन्द शेनै कण्डि यादु मञ्ज लिन्ऱि वॆञ्जरम्
तॆरिन्दु शेव हन्ऱि ऱम्ब लिन्ऱि यॆय्दु शॆय्हैयान्
पुरिन्द तन्मै वॆऱ्ऱि मेलु नन्ऱु मालि पॊय्क्कुमो 3307

नम्–हमारी; विरिन्त चेनै कण्टु–विस्तृत सेना देखकर; इरिन्त चेनै–जो भागी थी वह सेना; चिन्ति–अस्त-व्यस्त होकर; यारुम् इन्ऱि एक–कोई भी बाक़ी न छोड़कर चली गयी तो भी; यातुम् अञ्चल् इन्ऱि–बिना किसी डर के; नित्ऱु–स्थित रहकर; वॆम् चरम्–भयंकर अस्त्र; तॆरिन्तु–चुन लेकर; चेवकन्–वीर; तिऱम्पल् इन्ऱि–बिना किसी विकार के; ऍय्तु–बाण चलाने के; चॆय्कैयान्–कार्य में; पुरिन्त तन्मै–जो दिखाता है वह गुण; वॆऱ्ऱि मेलुम् नन्ऱु–विजय से भी बढ़कर (श्लाघ्य) है; माली पॊय्क्कुमो–माल्यवान झूठ कहेगा क्या। ३३०७

हमारी बड़ी सेना को देखकर वानर-सेना अस्त-व्यस्त हो अलग-अलग भाग गयी और कोई भी वहाँ नहीं रहा। तो भी बिना किसी डर के राम खड़ा रहता है, भयंकर अस्त्र चुन-चुनकर अप्रमत्त रूप से चलाता है। उसका यह कार्य विजय से भी अधिक प्रशंसनीय है! हाँ माल्यवान ने सच ही कहा था! उसका कथन झूठा हो सकता है क्या? । ३३०७

पुरङ्ग ळॆय्द पुङ्ग वऱ्कु मुण्डु तेर्पॊ रुन्दिनार्
परन्द तेवर् माय नम्मै वेर ऱुत्त पण्डैनाळ्
विरैन्दु पुळ्ळिन् मीदु विण्णु ळोर्ह ळोडु मेविनान्
करनदि लनत नितलॊ रुतत नेरुम वनद कालिनान 3308

पुरङ्कळ् ऍय्त-त्रिपुर पर बाण चलाया जिसने; पुङ्कवऱ्कुम्-उस पुंगव के पास भी; तेर् उण्टु-रथ (भूमि रूपी) है; परन्त तेवर्-बड़ी संख्या में आये देव; पोरुन्तिनार्-साथ लगे रहे; मायन्-विष्णु ने; नम्मै-हमें; वेर् अऱुत्त-(जिस दिन) निर्मूल किया था; पण्टै नाळ्-उस पुराने दिन में; पुळ्ळिन् मीतु-पक्षी (राज गरुड़) पर; विरैन्तु-सवेग; विण्णुळोर्कळोटुम्-देवों के साथ; मेवितान्-आया; तनित्तु ऑरुत्तन्-अकेला एक; करन्तिलन्-नहीं छिपता; कालितान्-पैदल ही; वन्तु-आकर; नेरुम्-युद्ध करता है। ३३०८

त्रिपुरारी (भूमि को) रथ के रूप में ले आया, उसके साथ भी देव बड़ी संख्या में आये थे। विष्णु ने जिस दिन हमें निर्मूल किया, उस समय वह भी पक्षीराज गरुड़ पर देवों को साथ लेकर ही आया था। पर इसे देखो! यह अकेला है, छिपता नहीं! और पैदल आया युद्ध करता है! । ३३०८

तेरु मावु मियानै योडु शीय मियाळि यादिया
मेरु मानु मॅय्यर् निन्ऱ वेलै येऴिन् मेलवाल्
वारुम् वारु मॅन्ऱ ऴैक्कु मानि डऱ्किम् मण्णिडैप्
पेरु माऱु नम्मि डॅप्पि ऴैक्कु माऱु मॅङ्ङने 3309

तेरुम्-रथ और; मावुम्-अश्व; यानैयोटु-हाथी और; चीयम्-सिंह; याळि-शरभ; आतिया-आदि; मेरु मानुम्-मेरु-तुल्य; मॅय्यर्-शरीर वाले; एऴिन् वेलै मेल् निन्ऱ-सातों समुद्रों से भी अधिक हैं; वारुम् वारुम्-आओ, आओ; ऍन्ऱु-ऐसा; अऴैक्कुम्-आमंत्रित करनेवाले; मानिटऱ्कु-मानव के लिए; इ मण् इटै-इस भूमि में; पेरुम् आऱुम्-बचकर जाने का प्रकार; नम् इटै-हमारे पक्ष में रहनेवालों के; पिऴैक्कुम् आऱुम्-बचने का मार्ग; ऍङ्ङने-कैसा। ३३०९

इधर रथ, अश्व, हाथी, सिंह, शरभ आदि सेना के वीरों के साथ मेरु-सदृश शरीर वाले हैं— सब मिलकर सातों समुद्रों से भी अधिक विस्तार में हैं। तो भी वह मानव 'आओ-आओ' कहकर आमंत्रित कर रहा है! अब भूमि में इसके बचने का मार्ग कहाँ और हम भी बचें कैसे? । ३३०९

ऍन्ऱु शॅन्ऱि रैत्तॅ ऴुन्दोर् शीय वेऱ डर्त्तदॅक्
कुन्ऱु शूऴ्व ळैत्त पोऱ्ऱी डऱ्न्द शेनै कूडलुम्
नन्ऱि दॅन्ऱु आल मेऴु नाह मेऴु मानन्दन्
वॅन्ऱि विल्लै वेद नाद नाणॅ ऱिन्द वेलैवाय् 3310

ऍन्ऱु-ऐसा कहते हुए; चॅन्ऱु-(राक्षस) जाकर; इरैत्तु ऍऴुन्तु-आरव मचा उठकर; ओर् चीयम् एऱु-एक नर केसरी को; अटर्त्तत-जिसने आक्रमण किया; कुन्ऱु-पर्वत (हाथी); चूऴ् वळैत्त पोल्-चारों ओर से घेर गये जैसे; तॉटर्न्त चेनै-पीछे लगी सेना के; कूटलुम्-मिलते ही; वेतम् नातन्-वेदनाथ ने; इत नन्ऱु-यह अच्छा है; ऍन्ऱु-कहकर; आलम् एऴुम्-(ऊपर के) सातों लोक;

माकम् एऴुम्–नीचे के सातों लोक; मातुम्–सदृश; तन् वॅन्ऱि विल्लै–अपने विजयी धनु का; नाण् ऍऱिन्त–जब ज्यास्वन निकाला; वेलै वाय्–उस समय। ३३१०

ऐसा कहते हुए राक्षस लोग नारों के साथ श्रीराम को चारों ओर से ऐसा घेर गये जैसे एक नर केसरी को पर्वतोपम हाथी घेर लेते हों। तब वेदनायक श्रीराम ने ऊपर के और नीचे के चौदहों भुवन-सदृश अपने विजयकोदंड के डोरे को टंकृत किया। तब। ३३१०

कदम्बु लऱ्न्द शिन्दै वन्द कावल् यानै मालॊडु
मदम्बु लऱ्न्द नित्ऱ वीरर् वाय्पु लऱ्न्द मावॆलाम्
पदम्बु लऱ्न्द वेह माह वाळ रक्कर् पण्बुशाल्
विदम्बु लऱ्न्द दॆन्निन् वॆन्ऱ वॆन्ऱि शॊल्ल वेण्डुमो 3311

कावल् वन्त यानै–रक्षा देने आये हाथी; मालॊटु–नशे के साथ; मतम् पुलर्न्त–मद से हीन हो गये; चिन्तै वन्त–मन में उठे; कतम् पुलर्न्त–कोप से हीन हो गये; नित्ऱ वीरर् वाय्–वहाँ जो रहे उन वीरों के मुख; पुलर्न्त–सूख गये; मा ऍलाम्–सभी अश्व; पतम् वेकम्–पैरों के वेग में; पुलर्न्त–कम हो गये; माकम्–आकाश के समान विस्तृत; वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षसों के; पण्पु–सामर्थ्य की; चाल् वितम्–उच्च स्थिति; पुलर्न्ततु–बिगड़ गयी; ऍन्निन्–तो; वॆन्ऱ–(श्रीराम ने) जो विजय पायी; वॆन्ऱि–उस विजय का हाल; चॊल्ल वेण्डुमो–कहना चाहिए क्या। ३३११

सेना की रक्षा के लिए जो हाथी आये उनका नशा दूर हुआ। मद भी सूख गया। उनके मन में उठा क्रोध भी ग़ायब हो गया। वहाँ जो स्थित रहे उन वीरों का मुख सूख गया। अश्वों की पदगति कम हो गयी। आकाश के समान विस्तृत सेना के क्रूर राक्षसों का युद्धसामर्थ्य भी कम हो गया। तो श्रीराम की विजय का हाल कहना भी है क्या? । ३३११

वॆऱित्ति रिन्द वाशि योडु शीय मावु मीळियुम्
शॆऱित्त मैन्द शिल्लि यॆन्नु माऴि कूडु तेरॆलाम्
मुऱित्तॆ ऱिन्दु मुन्द यानै वीशु मूशु पाहरैप्
पिऱित्ति रिन्दु शिन्द वन्दॊ राहु लम्बि ऱन्ददाल् 3312

चीयम् मावुम्–सिंह जानवर और; मीळियुम्–पिशाच; वॆऱित्तु–पागल बनकर; इरिन्त वाचियोटु–भागते अश्वों के साथ; चॆऱित्तु अमैन्त–जिनसे बाँधे गये थे; चिल्लि ऍन्नुम्–'चक्री' कहलानेवाले; आऴिकूटु–पहियोंदार; तेर् ऍलाम्–सभी रथों को; मुऱित्तु ऍऱिन्तु मुन्त–तोड़ डालकर आगे बढ़े; यानै–और हाथी; वीचुम्–(अंकुश का) प्रयोग करनेवाले; मूचु पाकरै–मिले रहे पीलवानों को; पिऱित्तु–प्राणों से अलग करके; इरिन्तु चिन्त–तितर-बितर भागे; ओर् आकुलम्–एक हलचल; वन्तु पिऱन्ततु–मच गयी। ३३१२

सिंह और पिशाच भ्रांत हो गये और अश्व भड़क उठे। सबने पहियोंदार रथों को तोड़ा और आगे भागे। हाथी भी अंकुशप्रयोक्ता महावतों को मारकर तितर-बितर हो गये। तब राक्षसों की सेना में एक भारी हलचल पैदा हो गयी। ३३१२

इन्नि मित्त मिप्प डैक्कि डैन्दु वन्द डुत्तदोर्
तुन्नि मित्त मॆन्ऱु कॊण्डु वानु ळोर्ह डुळ्ळिनार्
अन्नि मित्त मुऱ्ऱ पोद रक्कर् कण्ण रङ्गमेल्
मिन्नि मिर्त्त वन्न वाळि वेद नादन् वीशिनान् 3313

इ निमित्तम्–ये शकुन; इ पटैक्कु–इस सेना पर; इटैन्तु वन्तु–कष्ट आकर; अट्टुत्ततु–पहुँचा है, ऐसा; ओर्–अपूर्व; तुन् निमित्तम्–दुश्शकुन हैं; ऍन्ऱु कॊण्टु–ऐसा मानकर; वानुळोर्कळ्–व्योमवासी; तुळ्ळिनार्–उछले; अ निमित्तम्–वे शकुन; उऱ्ऱ पोतु–जब हुए तब; अरक्कर् कण् अरङ्क–राक्षस व्यग्र हुए और; मेल्–उन पर; मिन् निमिर्त्त अन्न–उस बिजली के समान जो कि सीधी बनायी गयी हो; वाळि–शरों को; वेतनातन् वीचिनान्–श्रीराम ने चलाये। ३३१३

देवों ने सोचा कि ये सब शकुन राक्षस-सेना पर आनेवाले बड़े संकट के सूचक दुश्शकुन हैं। इसलिए वे संतोष से उछले। तब राक्षसों को बेचैन करते हुए वेदनायक श्रीराम ने उन पर अवक्र विद्युत्-तुल्य बाण चलाये। ३३१३

आळि मेलु माळिन् मेलु मानै मेलु माडन्मा
मोळि मेलुम् वीरर् मेलुम् वीरर् तेरिन् मीदिनुम्
वाळि मेलुम् विल्लिन् मेलु मण्णिन् मेलव ळर्न्दमात्
तूळि मेलु मेऱ वेऱ वीरन् वाळि तूविनान् 3314

वीरन्–श्रीवीरराघव; मण्णिन् मेल्–भूमि पर; वळर्न्त मा तूळि–जो उठ बढ़ी वह धूल; मेलुम् एऱ एऱ–और ऊपर-ऊपर चढ़ी तो; आळि मेलुम्–शरभों पर; आळिन् मेलुम्–सारथियों पर; आनै मेलुम्–गजों पर; आटल् मा–ताक़तवर अश्वों पर; मोळि मेलुम्–पिशाचों पर; वीरर् मेलुम्–वीरों पर; वीरर् तेरिन् मीतिनुम्–वीरों के रथों पर; वाळि मेलुम्–उनके प्रेरित शरों पर; विल्लिन् मेलुम्–चापों पर; वाळि तूविनान्–बाण बरसाये। ३३१४

भूमि पर उठी धूलि उत्तरोतर बढ़ी और ऊपर चली। तब श्रीराम के बाणों की, रथ के शरभों, सारथियों, गजों, सशक्त अश्वों, भूतों और वीरों, वीरों के रथों, उनसे प्रेरित शरों और उनके हाथ के धनुओं पर विपुल वर्षा-सी हुई। ३३१४

मलैवि ळुन्व वावि ळुन्द मान यानै मळ्ळर्शॆन्

शिलैवि ळुन्द वावि ळुन्द तिण्ब दाहै तिङ्गळिन्
कलैवि ळन्द वावि ळुन्द वॆळ्ळै यिऱ्ऱु काडॆलाम् 3315

मातम् यातै–श्रेष्ठ गज; मलै विळुन्तवा–पर्वत गिरे जैसे; विळुन्त–गिरे; ताय वाचि–लपक चलनेवाले घोड़े; मळ्ळर् चॆम् तलै–वीरों के लाल सिर; विळुन्तवा–जैसे गिरे वैसे; विळुन्त–गिरे; ताळ् अऱुम् चिलै–जिनके बाज़ू कटे वे धनु; विळुन्तवा–जैसे गिरे वैसे; तिण् पताकै–सुदृढ़ पताकाएँ; विळुन्त–कटकर गिरीं; वॆळ् ऍयिऱ काटु ऍलाम्–श्वेत दाँतों के सभी समूह; तिङ्कळिन् कलै–चन्द्रकलाएँ; विळुन्तवा–जैसे गिरे; विळुन्त–वैसे गिरीं। ३३१५

श्रीराम के बाणों से आहत होकर शानदार हाथी गिरते पर्वतों के समान गिरे। लपक चलनेवाले अश्व कटकर गिरते राक्षसों के लाल सिरों के समान गिरे। धनु बाज़ू कटकर ऐसे गिरे जैसे सुदृढ़ पताकाएँ कटकर गिरीं। राक्षसों के सफ़ेद वक्र दाँतों के समूह चन्द्र की कलाओं के समान गिरे। ३३१५

वाडै नालु पालुम् वीश माह मेह मालैवॆङ्
गोडै मारि पोल वाळि कूड वोडै यानैयुम्
आडन् मावुम् वीरर् तेरु माळु माळ्व दानवाल्
पाडु पेरु माऱु कण्डु कण्शॆल् पण्बु मिल्लैयाल् 3316

नालु पालुम्–चारों तरफ़; वाटै वीच–जब उदीची हवा बहती है; माकम्–तब आकाश की; मेकम् मालै–मेघमालाएँ; वॆम् कोटै मारि पोल–जो बरसाती हैं उस गरम ग्रीष्मकालीन वर्षा के समान; वाळि कूट–बाणों के मिलने से; ओटै यातैयुम्–मुखपट्ट से अलंकृत हाथी और; आटल् मावुम्–ताक़तवर अश्व; वीरर् तेरुम्–वीरों के रथ और; आळुम्–पदातिक वीर; माळ्वतान–मरते बने; आल्–इसलिए; पाटु–पास; पेरुम्–बहनेवाली; आऱु कण्टु–रक्त-नदी को देखकर; कण्–दृष्टि का; चॆल् पण्पुम्–दौड़ने का गुण; इल्लैयाल्–नहीं रहा। ३३१६

चारों ओर उदीची हवा के बहते वक़्त आकाश की मेघमाला से निकलनेवाली ग्रीष्मकालीन वर्षा के समान श्रीराम की शर-वर्षा होने लगी। तो मुखपट्ट से अलंकृत हाथी, ताक़तवर घोड़े, वीरों के रथ और पदाति वीर मिटे। तब पार्श्व में जो रक्त की नदी बही वह आँखों की दृष्टि के गुण को बेकार करती बही (यानी दृष्टि उसका अंत नहीं देख सकी)। ३३१६

विळित्त कण्गळ् कैहण् मॆय्हळ् वेऱ लेक्क ळुत्तिनिल्
तॆळित्त वाय्हळ् शॆल्ल लुऱ्ऱ ताळ्ह डोळ्हळ् शॆल्लिनैप्
पळित्त वाळि शिन्द नित्ऱु पट्ट वत्ऱि विट्टकोल्
[illegible] कणडदे 3317

चॅल्लित्तै पळितुत्–मेघ की निंदा करनेवाले; वाळि–शरों को; चिन्त–श्रीराम ने चलाया तो; विळितत कण्कळ्–खुली आँखें; कैकळ्–हाथ; मॅय्कळ्–और शरीर; कळुत्तितिल्–कण्ठ पर से; वॅल्तलै–जीतने की; तॅळितत वाय्कळ्–निंदा करनेवाले मुख; चॅल्लल् उड्ड–गमनशील; ताळ्कळ्–पैर और; तोळ्कळ्–कंधे; मित्र पट्ट अन्ड्रि–बेकार रहे इसके अलावा; विट्ट कोल्–(राक्षसों से) प्रयुक्त शरों और; कळितत आयुतक्कळ्– (म्यानों से) बाहर निकाले गये हथियारों को; ऑन्ड्र चॅय्तलु–श्रीराम की कुछ हानि करता; कण्टतु इल्लै–नहीं देखा गया। ३३१७

श्रीराम ने मेघों की वर्षा से भी अधिक शर चलाये। तब राक्षसों की खुली आँखें, हाथ, शरीर, कंठ पर रहकर डींग मारते रहे मुख, गमनशील पैर और कंधे सब बेकार रहे! इसको छोड़कर राक्षसों से प्रेरित बाणों और उठाये गये हथियारों ने श्रीराम का कुछ नहीं बिगाड़ा। ३३१७

तॊडुत्त वाळि योडु विड्रु णिन्दु वीळु मुत्रुणिन्
वॆडुत्त वाळ्ह ळोडु तोळ्ह ळिड्रु वीळ् मड्रुडन्
कडुत्त ताळ्हळ् कण्ड माहु मॆङ्ङ नेह लन्बुनेर्
तडुत्तु वीरर् तामु मॊन्ड्रु शॆय्यु माश लत्तिनाल् 3318

तॊट्टुत–चलाये गये; वाळियोटु–(राक्षसों के) शरों के साथ; विल्–धनुओं के; तुणिन्तु वीळुम् मुत्–कटकर गिरने से पहले; तुणिन्तु ॲट्टुत–साहस के साथ ली गयी; वाळ्कळोटु–तलवारों के साथ; तोळ्कळ्–कंधे; इड्र वीळुम्–कटकर गिर जाते; मड्र–और भी; उटन्–तुरन्त; कट्टुत ताळ्कळ्–वेगवान पैर; कण्टम् आकुम्–टुकड़े बनते; वीरर्–(राक्षस) वीर; नेर् कलन्तु–सीधे सामना करके; तट्टुतु–(श्रीराम के शरों को) रोककर; तामुम्–स्वयं; चलत्तिसाल्–कोप से; ऑन्ड्र चॅय्युमा–कुछ कर सकें, यह बात; ॲङ्ङने–हो कैसे। ३३१८

राक्षसों के चलाये गये शर धनुषों के साथ कटकर गिरें, इसके पहले ही साहस के साथ जो तलवारें उन्होंने लीं उनके साथ उनके कंधे कटकर गिर जाते। और साथ-साथ गतिशील पैर छिन्न-भिन्न हो जाते। फिर वीर सामने आकर श्रीराम के शरों को रोकें और कोप दिखाकर कुछ करें सो कैसे हो सकता था? । ३३१८

कुरन्दु णिन्दु कण्शि दैन्दु पल्ल णङ्गु लैन्दुपेर्
उरन्दु णिन्दु वीळ्व दन्ड्रि यावि योड वॊण्णुमो
शरन्दु णिन्द वॊन्ड्रै नूरु शॆन्ड्रु शॆन्ड्रु तळ्ळलाल्
वरन्दु णिन्द वीरर् पोरिल् मुन्द वुन्दु वाशिये 3319

तुणिन्त ऑन्ड्रै–(श्रीराम ने जिसका निशाना बनाने का) निश्चय किया उस पर; चरम्–चलाया गया शर; नूड चॅन्ड्र–सौ बनकर जाता; तळ्ळलाल्–और गिराता, इसलिए; वरम्–वर-बल से; तुणिन्त वीरर्–साहस करनेवाले वीर; पोरिल्–युद्ध में; मुन्त–आगे; उन्तु–जिन्हें चलाते हैं वे; वाचि–अश्व; कुरम् तुणिन्तु–खुर कटवाकर; कण चितैन्त–आँखें नष्ट करा लेकर; पल्–दाँतों के साथ; अणम्

कुलैन्तु–ओंठ खोकर; पेर् उरम् तुणिन्तु–बड़ी छाती कटवाकर; वीऴ्वतु अन्ऱि–गिरना छोड़कर; आवि–प्राणों के साथ; ओट ओणुमो–दौड़ सकेंगे क्या। ३३१९

श्रीराम जिसका निशाना बाँधते उस पर उनके शर एक के सौ-सौ बनकर जाते और मार गिराते। इसलिए वर के बल से साहस के साथ जिन अश्वों को राक्षसों ने युद्ध में आगे भेजा उनके खुर कटे, आँखें छिन्न हुईं। दाँतो के साथ मुख का ऊपरी भाग कुचल गया। और बड़ी छातियाँ कट गयीं। और वे मरकर गिरे। इसके सिवा बेचारे क्या प्राण बचाकर भाग सकते थे ? । ३३१९

ऊर वुत्तित् मुन्बु पट्टु यरन्द वॅम्बि णङ्गळाल्
पेर वॊल्व दन्ऱु पेरि तायि रम्बॅ रुञ्जरम्
तूर वॊन्ऱु नूऱु कूऱु पट्टु हुन्दु यक्कलाल्
तेर्ह ळॅन्ऱु वन्द पावि यॆन्न शॆय्है शॆय्युमे 3320

ऊर उत्तित्–(रथ) धीरे-धीरे चलना आरम्भ करें तो; मुन्पु पट्टु–पहले युद्ध में मरकर; उयरन्त–उससे संख्या में बढ़ी; वॅम् पिणङ्कळाल्–गरम लाशों के कारण; पेर ओल्वतु अन्ऱु–चल सकनेवाले नहीं हैं; पेरित्–चलते तो; आयिरम्–हज़ार; पॅरु चरम्–बड़े शर; तूर–लग जाते हैं, इसलिए; ओन्ऱु–एक-एक के; नूऱु कूऱुपट्टु–सौ-सौ टुकड़े बनकर; उकुम्–चू जाते; तुयक्कु अलाल्–बेकार होने के सिवा; परवि–बड़े विस्तार में; तेर्कळ् ऍन्ऱु वन्त–रथों का नाम ले आये वे; ऍन्त चॅय्युम्–क्या करते। ३३२०

रथ जाने लगते तो सामने पहले मरे वीरों की लाशों के ढेरों के रहने के कारण वे जा नहीं पाते। कुछ चलते भी तो श्रीराम के हज़ारों शर उन पर लगते और वे सौ-सौ खण्डों में कटकर चू जाते। इसलिए रह बेकार जाने के अलावा रथ का नाम धारण करके आये वे क्या काम करते ? । ३३२०

ऍट्टु वन्ऱि शॆक्क णिन्ऱ यावुम् वल्ल यावरुम्
किट्टि नुय्न्दु पोहि लार्ह ळॆन्न निन्ऱ केळ्वियाल्
मुट्टुम् वॆङ्गण् मान यानै यम्बु राय मुन्नमे
पट्टु वन्द पोल्वि ऴुन्द वॆन्न तन्मै पण्णुमे 3321

मुट्टुम्–चुभनेवाली; वॅम् कण्–भयंकर आँखें; मानम्–और अभिमान रखने वाले; यानै–हाथी; अम्पु उराय्–शरों के लगने से; मुन्नमे–पहले ही; पट्टु वन्त पोल्–मरे आये के समान; विऴुन्त–गिरे; ऍन्न तन्मै पण्णुमे–क्या काम कर सकते; वल् तिचै–सुदृढ़ दिशाओं; ऍट्टुक् कण् निन्ऱ–आठों में जो खड़े रहे; यावुम्–सभी (सेना-विभाग); वल्ल यावरुम्–सभी बलवान वीर; किट्टिन्–पास जायें तो; उय्न्तु पोकिलार्कळ्–बचकर नहीं जा सकेंगे; ऍन्न–इसलिए; केळ्वियाल् निन्ऱ–प्रश्न के साथ खड़े रहे। ३३२१

चुभती-सी आँखों वाले और शानदार गज शरों के लगने से ऐसे गिरते मानो वे पहले ही मरकर किसी विध चल आये हों। फिर वे क्या करते ? वे इतना ही कर सकते थे कि लोगों के मन में यह प्रश्न उठा दें कि सबल आठों दिशाओं में रही सब सेनाएँ और वीर समर्थ वीर श्रीराम के पास जायँ तो बचकर जा नहीं सकेंगे। अत: क्या करें ? । ३३२१

वावि कॉण्ड पुण्ड रोह मन्न कण्णन् वाळियॉन्
ड्रेवि तुण्ड नूरु कोडि कॉल्लु मॅन्न वॅण्णुवान्
पूवि नण्डर् कोनु मॅण्म यङ्गु मन्न पोरिन्वन्
दावि कॉण्ड काल नारह डुप्पु मॅन्न दाहुमे 3322

वावि कॉण्ट–सरोवर में उगे; पुण्टरीकम् अन्न–कमलों के समान; कण्णन्–नेत्रोंवाले; वाळि ऑन्ऱु एवित्–शर एक चलावें तो; उण्टे–वह मिट्टी का गोला; नूऱु कोटि कॉल्लुम्–शतकोटि का हनन करता; ॲन्न–इस कारण से; ॲण्णुवान्–(मृतकों की) गिनती रखनेवाला; पूविन्–कमलवासी; अण्टर् कोनुम्–देवपति भी; ॲण् मयङ्कुम्–गिनती में भ्रमित हो जाता; अन्न पोरिल्–उस तरह के युद्ध में; वन्तु–आकर; आवि कॉण्ट–जिसने जीवों का ग्रहण किया; कालनार्–उस यमदेव का; कटुप्पुम्–कार्य-वेग भी; ॲन्नतु आकुम्–कैसा होगा। ३३२२

सरसिजाक्ष श्रीराम जब एक बाण चलावें वह मिट्टी का गोला (शर) शतकोटि का संहार करता। इसलिए कमलवासी अजदेव जो मृतकों की गिनती रखते थे, अब गिनती मे चूक गये। तो, वैसे के युद्ध में जीवग्राही यमदेव की कार्य-गति का क्या होगा ? । ३३२२

कॉडिक्कु लङ्गळ् तेरिन् मेल यानै मेल कोडैनाळ्
इडिक्कु लङ्गळ् वीऴ वॅन्द काडु पोलॅ रिन्दवाल्
मुडिक्कु लङ्गळ् कोडि कोडि शिन्द वेह मुऱ्ऱुरा
वडिक्कु लङ्गळ् वाळि योड वायि नूडु तीयिनाल् 3323

वटि वाळि कुलङ्कळ्–तीक्ष्ण बाणों के समूह; कोटि कोटि–कोटि-कोटि; मुटि कुलङ्कळ्–सिरों के ढेरों को; चिन्त–छिन्न करते हुए; वेकम् मुऱ्ऱु उऱा–पूर्ण वेगवान बनकर; ओट–दौड़े तो; वायिन् ऊटु–उनके मुख पर की; तीयिनाल्–आग के कारण; तेरिन् मेल–रथ पर के और; यानै मेल–गजों पर के; कॉटि कुलङ्कळ्–झण्डों के समूह; कोटै नाळ्–ग्रीष्मकाल में; इटि कुलङ्कळ् वीऴ–वज्र-बन्दों के गिरने से; वॅन्त–जलनेवाले; काटु पोल्–जंगल के समान; ॲरिन्त–जले। ३३२३

तीक्ष्ण बाणों की पक्तियाँ कोटि-कोटि राक्षस-सिरों को छिन्न करते हुए पूर्ण वेगवान बनकर चले। तब उनके फलों में रही आग रथों पर और हाथियों पर रही पताकाओं में लगी। वे ग्रीष्मवज्र-दग्ध जंगल के समान जल उठीं। ३३२३

अऱ्ऱ वेलुम् वाळु मादि यायु दङ्गळ् मोॅऴुन्
तुऱ्ऱ वेह मुन्द वोडि योद वेलै यूडुरत्
तुऱ्ऱ वॅम्मै कॅम्मि हच्चु रुक्कॉ ळच्चु वैत्तदाल्
मऱ्ऱ नीरव रुन्दु मीत्म रिन्दु मणॅ रिन्दवाल् 3324

अऱ्ऱ–रामबाण-छिन्न; वेलुम् वाळुम् आति–भाले, तलवारें आदि; आयुतङ्कळ्–हथियार; उऱ्ऱ वेकम्–लगाये गये ज़ोर के; उन्त–उकसाने से; मीतु ॲऴुन्तु–ऊपर उठकर; ओतम् वेलै ऊटु–जल-सागर में; उऱ–लगे तो; तुऱ्ऱ–बड़ी; वॅम्मै कॅ मिक–गर्मी के अधिक हो जाने से; चुरु कॉळ–"शुरु" शब्द के साथ; चुवैत्तताल्–पीने (सोखने) लगे, इसलिए; अ नीर्–वह जल; वऱन्तु–सूखकर; मीन्–मछलियाँ; मरिन्तु–मरकर; मण् चॅरिन्त–मिट्टी में ठस भर गयीं। ३३२४

भाले और तलवारें कट तो गयीं पर जो ज़ोर उनको चलाते समय उनमें लगाया गया था वह बाक़ी रहा। अतः वे ऊपर उठे और जलसागर पर वेग के साथ गिरे। तब गर्मी अधिक हुई और वे जल को 'शुरु' शब्द के साथ पीने लगे। जल सूख गया और मछलियाँ मिट्टी में घने रूप से दब गयीं। ३३२४

पोर रिन्द मन्रु रन्द पुङ्ग वाळि पॉङ्गित्तार्
ऊरॅ रिन्द नाट्टु रन्द वॅन्न मिन्नि योडलाल्
नीरॅ रिन्द वण्ण मेनॅ रुप्पॅ रिन्द नीणॅडुम्
तेरॅ रिन्द वीरर् तञ्जि रम्बॉ डिन्दु शिन्दवे 3325

पोर् अरिन्तमन्–युद्धारिंदम्; तुरन्त–(द्वारा) प्रेरित; पुङ्कम् वाळि–तीक्ष्ण बाण; पॉङ्कितार्–क्रुद्ध राक्षसों के; ऊर् ॲरिन्त नाळ्–त्रिपुर जब जले; तुरन्ततु–(शिव द्वारा) प्रेरित शर; ॲन्न–के समान; मिन्नि–चमकते; ओटलाल्–चले इसलिए; नीर् ॲरिन्त वण्णमे–जैसे पहले जल जला वैसे ही; वीरर् तम् चिरम्–वीरों के सिर; पॉटिन्तु चिन्त–चूर होकर चुए, ऐसा; नॅरुप्पु ॲरिन्त–आग जली; नीळ् नॅटु–बहुत ऊँचे; तेर् ॲरिन्त–रथ जले। ३३२५

युद्धारिंदम श्रीराम-प्रेरित शर त्रिपुरदाहक शिव के शर के समान चमक के साथ गये। तब वीरों के सिरों को चूर कर चुआते हुए आग वैसे ही जली जैसे पहले समुद्र-जल जलाते समय जली थी। तब ऊँचे-ऊँचे रथ भी जल गये। ३३२५

पिडित्त वाळ्हळ् वेल्ह ळोडु तोळ्हळ् पेर रावॅन्नत्
तुडित्त याने मीदि रुन्दु पोर्दॉ डङ्गु शूररतम्
मडित्त वायच्चॅ ऴुन्द लेक्कु लम्बु रण्ड वानिन्मिन्
इडित्त वायि लिऱ्ऱ माम लैक्कु लङ्ग ळॅन्नवे 3326

यानै मीतु इरुन्तु–हाथियों पर रहकर; पोर् तॉटङ्कु–युद्ध आरम्भ करनेवाले; चूरर् तम् तोळ्कळ्–शूरों के कन्धे; पिटित्त–पकड़े; वाळ्कळ्–तलवारों और;

वेल्कळोटु–बर्छियों के साथ; पेर् अरा–बड़े सर्पों; ॲन्न–के समान; तुटित्तन–तड़पे; मटित्त वाय्–मुड़े हुए अधरों के; पॅरुु तले कुलम्–बड़े सिरों के दल; वानिन् मिन्–आकाश की बिजली; इटित्त वायिन्–जहाँ गिरी वहाँ; इऱ्ऱ–टूटे; मा मले कुलङ्कळ् ॲन्न–बड़े पर्वतदलों के समान; पुरण्ट–लोटे। ३३२६

हाथी पर सवार होकर जिन सूरों ने लड़ना आरम्भ किया था, उनकी भुजाएँ अपनी गृहीत तलवारों और बर्छियों-सहित बड़े सर्पों के समान तड़पे। मुड़े हुए अधरों के साथ बड़े सिरों के दल वज्राहत पर्वत जैसे उस स्थान पर टूटकर लोटते हैं वैसे टूटकर लोटे। ३३२६

कोर वाळि शीय मीळि कूळि योडु ञाळियुम्
पोर वाळि तोडु तेर्हळ् नूरु होडि पॊन्ऱुमाल्
नार वाळि ञाल वाळि ञान वाळि नान्दहप्
पार वाळि वीर वाळि वेह वाळि पायवे 3327

नारम् आळि–जीवों के शासक; ञालम् आळि–भूमि के शासक; ञानम् आळि–ज्ञान के स्वामी; नान्तकम् पारम् आळि–'नन्दक' नाम की तलवार के रखनेवाले; वीरम् आळि–वीरता के स्वामी श्रीराम के; वेकम् वाळि–तेज शर; पाय–चले, इसलिए; कोरम् आळि–भयंकर शरभ; चीयम्–और सिंह; मीळि कूळियोडु–बलवान भूतों के साथ; ञाळियुम्–भेड़िये; आळित्तोटु–सारथियों-सहित; पोर–मरे तो; नूरु कोटि तेर्कळ्–सौ करोड़ रथ; पॊन्ऱुम्–मिट जाते। ३३२७

जीवों, भूमि, ज्ञान, नंदक तलवार, और वीरता के स्वामी श्रीराम के वेगवान बाण चले तो घोर शरभ, सिंह, बलवान भूत, और सारथी सब मिट गये। फलस्वरूप उनके शतकोटि स्यंदन भी नाश को प्राप्त हो गये। ३३२७

आऴि पॅऱ्ऱ तेर ऴुन्दु माळ ऴुन्दु माळोडच्
चूऴि पॅऱ्ऱ माव ऴुन्दुम् वाशि युञ्जु रिक्कुमाल्
पूऴि पॅऱ्ऱ वॅङ्ग ळङ्गु ऴिप्प डप्पॊ ऴिन्दबेर्
ऊऴि पॅऱ्ऱ वाऴि यॅन्न शोरि नीरि नुळ्ळरो 3328

पूऴि पॅऱ्ऱ–धूल-भरा; वॅम् कळम्–घोर युद्धभूमि; कुऴि पट–गड्ढे से भर जाय ऐसा; पॊऴिन्त–बरसात से पूरित; पेर् ऊऴि पॅऱ्ऱ–महायुगान्त में प्रगट; आऴि ॲन्न–समुद्र के समान; चोरि नीरिन् उळ्–रक्त-जल में; आऴि पॅऱ्ऱ तेर्–पहियों-सहित रथ; अऴुन्तुम्–मग्न हो जाते; आळ् अऴुन्तुम्–पदातिक धँस जाते; आळोटु–महावतों के साथ; अ–वे; चूऴि पॅऱ्ऱ–मुखपट्टयुक्त; मा–गज; अऴुन्तुम्–मग्न हो जाते; वाचियुम्–अश्व भी; चुरियुम्–डूब जाते। ३३२८

भयंकर युद्धभूमि धूलि से भरी थी। वह महायुगसंधि के समुद्र के समान लगी, जिसमें कि मेघ ऐसे बरसे हों कि गड्ढे बन जायँ! उस रक्त-प्रवाह में पहियोंदार रथ डूब जाते; पदातिक मग्न हो जाते।

महावतों के साथ मुखपट्ट-सहित गज ग़र्क़ हो जाते। घोड़े भी डूब जाते। ३३२८

अऱ्ऱु मेलॅ ळुन्द वन्शि रङ्गळ् तम्मै यणमिमेल्
ऑऱ्ऱु मॅन्न वङ्गु मिङ्गुम् विण्णु ळोरॊ दुङ्गुवार्
शुऱ्ऱुम् वीऴ्द लैक्कु लङ्गळ् शॊल्लु कल्लिन् मारिपोल्
ऍऱ्ऱु मॅन्नु पारु ळोरु मॆङ्गु वारि रङ्गुवार् 3329

अऱ्ऱु–कटकर; मेल् ऍऴुन्त–ऊपर उठे; वल् चिरङ्कळ्–मोटे सिर; तम्मै अणमि–हमारे पास आकर; मेल् ऑऱ्ऱुम्–हम पर आघात करेंगे; ऍन्न–सोचकर; विण् उळोर्–व्योमवासी; अङ्कुम् इङ्कुम्–उधर और इधर; ऑतुङ्कुवार्–हट जाते; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; वीऴ्–गिरनेवाले; तलै कुलङ्कळ्–सिरों के समूह; चॊल्लु–कथित; कल् मारि पोल्–प्रस्तर-वर्षा के समान; ऍऱ्ऱुम्–ज़ोर से लगेंगे; ऍन्नु–सोचकर; पार् उळोरुम्–भूलोकवासी भी; एङ्कुवार्–भय खाकर; इरङ्कुवार्–दुःखी होते। ३३२९

'जो सिर कटकर ऊपर उठे हैं वे हम पर आकर आघात करेंगे।' ऐसा डरकर व्योमलोकवासी इधर-उधर हट गये। 'चारों ओर से गिरनेवाले ये सिरों के दल कथित प्रस्तरवर्षा के समान हमको पीट देंगे।' ऐसा सोचकर भूलोकवासी भी डरे और अधीर हुए। ३३२९

मऴैत्त मेहम् वीऴ्व वॅन्न वान मानम् वाडैयिल्
कऴित्तु वन्दु वीऴ्व वॅन्न मण्णिन् मीदु तुन्नुमाल्
अऴित्तॊ डुङ्गु काल मारि यन्न वाळि योळियाल्
विऴित्तॆ ऴुन्दु वानि नूडु मॊय्त्त पॊय्यर् मॅय्यॅलाम् 3330

अऴित्तु–नाश करने से; ऑटुङ्कु–लोक जिससे मिट जाते हैं; कालम् मारि अन्न–उस युगांत की वर्षा के समान; वाळि ओळियाल्–बाणों की पंक्तियों से; विऴित्तु ऍऴुन्तु–विस्फारित आँखों के साथ ऊपर उठकर; वानिन् ऊटु–आकाश में; मॊय्त्तुल–जो ठस भरे; पॊय्यर् मॅय् ऍलाम्–वे सभी वंचकों के शरीर; मऴैत्त मेकम्–वर्षण योग्य मेघ; वीऴ्व ऍन्न–गिरते जैसे और; वानम् मानम्–आकाशचारी यान; वाटैयिल्–उदीची हवा से; चुऴित्तु वन्तु–घूमते आकर; वीऴ्व ऍन्न–गिरते जैसे; मण्णिन् मीतु–धरती पर; वन्तु तुन्नुम्–आ लगते। ३३३०

पृथ्वी के नाशक युगांतकालीन वर्षा के समान जो चलती रही, उस (श्रीराम की) बाण-वर्षा से वंचक राक्षसों के शरीर ऊपर जा भर गये और जो शरीर खुली आँखों से युक्त थे। वे वर्षाकालीन मेघों और उदीची हवा से प्रताड़ित आकाशचारी यानों के समान पृथ्वी पर गिरे। ३३३०

तॅय्वनॅङ्गुम् बडैक्कलङ्गळ् विडुवर्शिलर् शुडुकणैहळ् शिलैयिऱ् कोलि
ऍय्वर्शिल रॅऱिवर्शिल रॅड्डुवर्शुर् ऱुवर्मलैहळ् पलवु मॅन्दिप

पॅय्वर्शिलर् पिडित्तुमॅन्क् कडुत्तुरुवर् पडैक्कलङ्गळ् पॅरादु वायाल्
वैवर्शिलर् तॅव्ळिप्पर्शिलर् वरुवर्शिलर् तिरिवर्शिलर् वयवर् मन्नो 3331

चिलर्–कुछ वीर; तॅय्वम्–दिव्य; नॅट्टम् पटै कलङ्कळ्–लम्बे हथियारों को चलाते; चिलर्–कुछ; चुट्टु कणैकळ्–जलानेवाले शरों को; चिलैयिल् कोलि–धनु पर संधान कर; अॅय्वर्–चलाते; चिलर्–कुछ वीर; मलैकळ् पलवुम्–अनेक पर्वतों को; एन्ति–उठाकर; चुऱ्ऱुवर्–दायें और बायें घूमकर; पॅय्वर्–चलाकर; अॅऱ्ऱुवर्–प्रहार करते; पिटित्तुम् अॅन्ऩ–पकड़ेंगे कहकर; कटुत्तु–सवेग; उऱुवर्–आते; चिलर्–कुछ; पटै कलङ्कळ् पॅऱातु–हथियार न पाकर; वायाल्–मुख से; वैवर्–गाली देते; चिलर् तॅव्ळिप्पर्–कुछ डाँटते; चिलर्–कुछ वीर; वरुवर्–आते; तिरिवर्–घूमते। ३३३१

कुछ वीर दिव्य और लम्बे हथियारों को ले फेंकते। कुछ धनुष से लगाकर जलानेवाले शरों को चलाते। कुछ लोग ऐसे हथियारों का प्रयोग करते जिनको दूर से फेंकना पड़ता है। कुछ वीर अनेक पर्वतों को उठाते हुए दायें-बायें पैंतरे बदलते और पीटते। कुछ यह कहते शीघ्र झपटते कि पकड़ लेंगे। कुछ हथियार न पाकर मुख से गाली देते। कुछ वीर डाँटते। कुछ जवान आते और कुछ वीर घूमते थे। ३३३१

आर्प्पर्पल रडर्प्पर्पल रडुत्तडुत्ते पडैक्कलङ्ग ळळ्ळि थळ्ळित्
तूर्प्पर्पलर् मूविलैवेल् तुरप्पर्पलर् करप्पर्पलर् शुडुदीत् तोन्ऱप्
पार्प्पर्पलर् नॅडुवरैयैप् पऱिप्पर्पलर् पहलोनैप् पऱ्ऱिच् चुऱ्ऱुम्
कार्प्परुव मेहमॅन्न वेहनॅडुम् बडैयरक्कर् कणिप्पि लादार् 3332

पकलोनै–दिनकर को; पऱ्ऱि चुऱ्ऱुकिन्ऱ–घेरकर घूमनेवाले; कार् पऱुवम्–वर्षाकालीन; मेकम् अॅन्ऩ–मेघ के समान; वेकम् नॅट्टम् पटै–वेगवान लम्बे हथियारों वाले; कणिप्पिला–अनगिनत; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेक; आर्प्पर्–नारे उठाते; पलर्–अनेक; अटर्प्पर्–भिड़ते; पलर्–अनेक; अटुत्तु अटुत्तु–लगातार; पटै कलङ्कळ्–हथियार; अळ्ळि अळ्ळि–उठा-उठाकर; तूर्प्पर्–बरसाते; पलर्–अनेक; मू इलै वेल्–त्रिपत्री शक्तियाँ; तुरप्पर्–छोड़ते; पलर्–अनेक; करप्पर्–छिप जाते; पलर्–अनेक; चुट्टु ती–गरम आग; तोन्ऱ–प्रगट करते हुए; पार्प्पर्–तरेरते; पलर्–अनेक; नॅटुवरैयै–बड़े पर्वतों को; पऱिप्पर्–उखाड़ लेते। ३३३२

दिनकर को घेरकर घूमनेवाले मेघों के समान जोरदार हथियारों के चलानेवाले अनगिनत राक्षसों में अनेकों ने बड़ा कोलाहल मचाया। अनेक भिड़े। अनेकों ने हथियार निरंतर और बड़े परिमाण में चलाये। अनेकों ने शक्तियाँ (त्रिशूल) चलायीं। अनेक छिप गये। अनेक आग-भरी आँखों से तरेर रहे थे। अनेकों ने बड़े पर्वतों को उखाड़ लिया। ३३३२

अॅऱिन्दनवु मॅय्दनवु मॅडुत्तनवुम् विडित्तनवुम् बडैह ळॅल्लाम्
मुऱिन्दनवॆङ् गणैहळपड मऱरिनशर रिन्तेरु मरि मावम्

नॆऱिन्वत्कुज् जिह्ळोडु नॆडुन्दलैह ळुरुण्डनपे रिरुळि नीङ्गिप्
पिऱिन्दनवॆय् यवनॆन्नप् पॆयर्न्दनन्मी दुयर्न्दतडम् बॆरिय तोळान् 3333

ऎऱिन्ततवुम्–जो फेंके गये वे; ऎय्ततवुम्–जो चलाये गये वे; ऎदुत्ततवुम्–और जो उठाये गये वे; पिटित्ततवुम्–जो पकड़े गये वे; पटैकळ् ऎल्लाम्–सारे हथियार; वॆम् कणैकळ्–भीषण अस्त्रों के; पट–लगने से; मुऱिन्तत–टूट गये; चुऱ्ऱित–जो (श्रीराम के) चारों ओर घेरे रहे; तेरुम्–रथ; मुऱ्ऱित–समाप्ति पर आये; मूरि मावुम्–बलवान गजों के भी; नॆऱिन्तत कुज्चिकळोटु–कुंचित बालों के साथ; नॆटु तलैकळ् उरुण्टत–बड़े सिर लोट गये; मीतु उयर्न्त–ऊपर की तरफ़ उन्नत; तट पॆरिय तोळान्–विशाल बड़े कंधों वाले श्रीराम; पेर् इरुळिन् नीङ्कि–बड़े अन्धकार से छूटकर; पिऱिन्तु अत–मुक्त; वॆय्यवन् ऎन्त–सूर्य के समान; पॆयर्न्ततन्–बाहर आ प्रगट हुए। ३३३३

राक्षसों ने जो चलाये, फेंके या प्रेरित किये वे सब, श्रीराम के घातक शरों के लगने से टूट गये। श्रीराम को जो घेरे थे वे रथ मिटे। गजों एवं बलवानों के सिर अपने कुंचित बालों के साथ कटकर लोटे। तब उन्नत कंधों वाले श्रीराम अंधकार-विमुक्त दिनकर के समान बाहर प्रगट हुए। ३३३३

शॊल्लरुक्कुम् वलियरक्कर् तॊडुकवशन् दुहळ्पडुक्कुन् दुणिक्कुम् याक्कै
विल्लरुक्कुन् दलैयरुक्कु मिडलरुक्कु मडलरुक्कु मेन्मेल् वीशुम्
कल्लरुक्कु मरमरुक्कुङ् गैयरुक्कुज् जॆय्यमळ्ळर् कमलत् तोडु
नॆल्लरुक्कुन् दिरुनाड नॆडुञ्जरमॆन् ड्रालॆवर्क्कु निऱ्क लामो 3334

चॆय्य मळ्ळर्–खेतों में कृषक; नॆल्लोटु–धान के साथ; कमलम् अरुक्कुम्–कमल काटते हैं जहाँ; तिरु नाटन्–उस श्रीसंपन्न देश के श्रीराम; नॆटु चरम्–लम्बे शर; चॊल् अरुक्कुम्–(विवरण) वचन काट (पंगु कर) देंगे; वलि अरक्कर्–बलवान राक्षस; तॊटु कवचम्–जो पहनते हैं उन कवचों को; तुकळ् पटुक्कुम्–चूर-चूर कर देंगे; याक्कै तुणिक्कुम्–शरीरों को छिन्न करते; विल् अरुक्कुम्–धनु काट देंगे; तलै अरुक्कुम्–सिर काट देंगे; मिटल् अरुक्कुम्–बल मिटा देंगे; मटल् अरुक्कुम्–युद्धकौशल को मिटा देंगे; मेल् मेल् वीचुम्–बराबर जो फेंकते हैं; कल् अरुक्कुम्–उन गिरियों को फोड़ देते; मरम् अरुक्कुम्–तरुओं को काट देते; कै अरुक्कुम्–हाथों को काटते; ऎन्ऱाल्–तो; ऎवर्क्कुम्–किसी के लिए भी; निऱ्कलामो–सामने खड़ा रहना संभव होगा क्या। ३३३४

जिस देश के कृषक लोग खेतों में धानों के साथ कमल को भी काटते थे, उस देश के वासी श्रीराम के लम्बे बाण, वर्णन-शक्ति को बेकार करते; बली राक्षसों के पहने कवचों को चूर करते। शरीरों, धनुषों, सिरों, बल, युद्धकौशल, निरंतर फेंके जानेवाले पर्वतों, तरुओं और हाथों को नष्ट कर मिटा देते। तो अब उनके सामने कौन टिक सकते हैं? । ३३३४

कालिऴन्दुम् वालिऴन्दुङ् गैयिऴन्दुङ् गळुत्तिऴन्दुम् बरुमक् कट्टिन्
मेलिऴन्दु मरुप्पिऴन्दुम् यिऴन्दनवॆन् गुरनल्लाल् वेलै यन्न
मालिऴन्दु मऴैयनैय मदमिऴन्दु कदमिऴन्दु मलैपोल् वन्द
तोलिऴन्द तॊऴिलोन्ऱुञ् जॊन्नारह ळिल्लॆनॆडुञ् जुररह ळॆल्लाम् 3335

नॆट्टु चुरर्कळ् ऍल्लाम्–मान्य सभी देव; काल् इऴन्तुम्–पैर खोकर और; वाल् इऴन्तुम्–दुम खोकर; कै इऴन्तुम्–हाथ खोकर; कळुत्तु इऴन्तुम्–कण्ठ खोकर; परुमम् कट्टिन्–पीठ पर बँधे; मेल् इऴन्तुम्–हौदे खोकर; मरुप्पु–दाँत; इऴन्तुम्–खोकर; मलै पोल्–पर्वत के समान; वन्त तोल्–आये हाथी; विऴुन्तन–गिरे; ऍन्कुतर् अल्लाल्–यह कहने के सिवा; वेलै अन्न–सागर के समान विस्तृत (वे हाथी); माल् इऴन्तुम्–(विजय की) चाह खोकर; मऴै अनैय–बरसात के समान (बहनेवाला); मतम् इऴन्तुम्–मदनीर खोकर; कतम् इऴन्तुम्–क्रोध खोकर; इऴन्त–खोये; तॊऴिल् ऑन्ऱुम्–किसी कार्य की; चॊन्नार्कळ् इल्लै–चर्चा नहीं की। ३३३५

मान्य देवों ने यह कहा कि पैर, दुम, सूँड़, कंठ, पीठ के हौदे और दाँत, इनको खोकर आये पर्वतोपम हाथी गिरे। पर वे नहीं कहते थे कि सागर-समान विस्तृत घेरे में आये बड़ी संख्या के हाथी अपने युद्ध को चाहने की, मेघ के समान मदनीर बहने की, और कोप करने की क्रियाएँ भी खो चुके थे (क्यों कि— उन्होंने देखा नहीं)। ३३३५

वेल्शॆल्वन शदकोडिहळ् विण्मेनिमिर् विशिहक्
कोल्शॆल्वन शदकोडिहळ् कॊलैशॆय्वन मलैपोल्
तोल्शॆल्वन शदकोडिहळ् तुरहन्दॊड रिरदक्
काल्शॆल्वन शदकोडिह ळॊरुवन्नवै कडिवान् 3336

चॆल्वन वेल्–जानेवाली शक्तियाँ; चत कोटि कळ्–सौ करोड़; विण् मेल्–आकाश में; चॆल्वन–जानेवाले; निमिर् विचिकम् कोल्–सीधे विशिख नाम के अस्त्र; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; कॊलै चॆय्वन–वधिक; मलै पोल् चॆल्वन–पर्वत के समान जानेवाले; तोल्–हाथी; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; तुरकम् तॊटर् इरतम्–अश्व-जुते रथ; काल् चॆल्वन–पहियों से चलनेवाले; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; अवै कटिवान्–उनको गुस्सा करके मेटते; ऒरुवन्–एकाकी श्रीराम। ३३३६

श्रीराम की ओर जानेवाले सौ करोड़ शक्तियाँ, सीधे जानेवाले विशिख, घातक व गमनशील पर्वत के समान हाथी, और अश्व-जुते पहियोंदार रथ सौ-सौ करोड़ थे। पर उनके मेटक थे एकाकी श्रीराम। ३३३६

ऑरुविल्लियै यॊरुकालैयि नुलहेऴैयु मुडङ्गम्
पॆरुविल्लिहण् मुडिविल्लवर् शरमामऴै पॆय्वार्
पॊरुविल्लवर् कणमारिहळ् पॊडियामवहै पॊऴियत्
तिरुविल्लिहळ् तलैपोय्नॆडु मलैपोलुडल् शिदैवार् 3337

उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; उटऱ्ऱुम्–त्रस्त करनेवाले; पॅरु विल्लिकल्–बड़े धनुर्धरों ने; मुटिवु इल्लवर्–असंख्यक; ऒरु विल्लियै–एक धनुर्वीर पर; ऒरु कालैयिल्–एक साथ; मा चर मऴै–बड़ी शर-वर्षा; पॅय्वार्–करते बने; पॊरु इल्लवर्–अनुपम उनके; कणै मारिकळ्–शरों की वर्षा; पॊटियाम् वकै–चूर्ण बने ऐसा; पॊऴिय–श्रीराम बाण चलाते हैं, इसलिए; तिरु इल्लिकळ्–भाग्यहीन वे; तलै पोय्–सिर खोकर; नॅडु मलै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उटल् चितैवार्–छिन्न-शरीर हो गये। ३३३७

सप्तभुवन-त्रासक असंख्यक राक्षस एकाकी धनुर्धर पर बड़ी शरवर्षा करते। श्रीराम अनुपम उनके शरों को चूर्ण करते हुए बाणों की वर्षा करते। तो भाग्यहीनों के सिर कट जाते और शरीर छिन्न हो जाते। ३३३७

नूऱायिर मदयानैयिऩ् वलियोरॆऩ नुवल्वोर्
माऱायिऩ रॊरुकोल्पड मलैपोलुडऩ् मऴिवार्
आऱायिर मुळवाहुद लऴिशॆम्बुऩ लवैपुक्
केऱादॆरि कडल्पाय्वऩ शिऩमाल्करि यिऩमाल् 3338

नूऱु आयिरम्–लाख; मतम् यानैयिऩ्–मत्त गजों के-से; वलियोर् ऎऩ–बल से युक्त ऐसा; नुवल्वोर्–प्रशंसित राक्षस; ऒरु कोल् पट–एक बाण के लगते ही; माऱु आयिऩर्–बदल गये; मलै पोल् उटल्–पर्वतोपम शरीर; मऴिवार्–मिट जाते; अऴि–मिटने से उत्पन्न; चॆम् पुऩल्–रक्त की; आयिरम् आऱु उळ आकुतल्–हज़ार नदियाँ उत्पन्न हुईं, इसलिए; अवै पुक्कु–उनमें घुसकर; एऱातु–किनारे पर न चढ़ (सक) कर; चिऩम् माल् करि इऩम्–क्रुद्ध तथा मत्तगज; ऎऱि कटल् पाय्वऩ–तरंग-सागर में चले गये। ३३३८

लाख हाथियों के-से बल से युक्त कहलानेवाले वे, श्रीराम के एक बाण के लगते ही उस प्रशंसा के अयोग्य बनकर छिन्न-शरीर हो गये। उनके शरीरों से जो रक्त निकला, उसकी हज़ार नदियाँ बनीं। उनमें फँस गये हाथी। वे तीर पर चढ़ नहीं सके। क्रुद्ध और मत्त उन हाथियों के समूह तरंगसागर में तेज़ी से जा डूबे। ३३३८

मऴुवऱ्ऱुहु मलैयऱ्ऱुहुम् वळैयऱ्ऱुहुम् वयिरत्
तॆऴुवऱ्ऱुहु मॆयिऱ्ऱुहु मिलैयऱ्ऱुहु मॆऴुवेल्
पऴुवऱ्ऱुहु मदवॆङ्गरि परियऱ्ऱुहु मिरदक्
कुऴुवऱ्ऱुहु मॊरुवॆङ्गणै तॊडैपॆऱ्ऱदॊर् कुऱियाल् 3339

ऒरु वॆम् कणै–एक दारुण अस्त्र; तॊटै पॆऱ्ऱतु–संधान करते समय लगाये गये; ओर् कुऱियाल्–एक निशाने से; मऴु–परशु; अऱ्ऱु उकुम्–कटकर गिर जाते; मलै–पर्वत; अऱ्ऱु उकुम्–चूर होकर गिरते; वळै अऱ्ऱु उकुम्–'वळै' नाम के हथियार टूटकर गिरते; वयिरत्तु ऎऴु–कठिन 'ऎऴु' नाम के हथियार; अऱ्ऱु उकुम्–कटकर गिरते; ऎऴु वेल्–ऊपर उठी शक्ति का; इलै अऱ्ऱु उकुम्–फल

कटकर गिरते; ॲयिऱु अऱ्ऱु उकुम्–दाँत अलग होकर चू जाते; मतम् वॅम्किर–मत्त और खूनी गजों की; पळु–पसलियाँ; अऱ्ऱु उकुम्–टूटकर गिरतीं; परि–अश्व; अऱ्ऱु–कटकर; उकुम्–गिरते; इरतम्–रथों के; कुळु–दल; अऱ्ऱु उकुम्–छिन्न होकर गिर जाते। ३३३९

खूब निशाना साधकर चलाये गये थे इसलिए श्रीराम के भीषण अस्त्रों से शत्रुओं के परशु सुदृढ़ 'वलय' और 'अॅळु' नाम के हथियार, पर्वत, ऊपर उठी शक्तियाँ, उनके दाँत, मत्त गजों की पसलियाँ, अश्व और रथों के समूह —सभी टूट-फूटकर गिर जाते और मिट जाते। ३३३९

ऑरुहालैयि नुलहत्तुरु मुयिर्यावैयु मुण्णुम्
वरुहालनु मवन्दूदरु नमन्दानुमव् वरॅप्पित्
इरुहालुडै यवरियावरुन् दिरिन्दारिळैत् तिरुन्दार्
अरुहायिर मुयिर्कॉण्डुद मारेहल रयर्त्तार् 3340

ऑरु कालैयिन्–एक ही समय; उलकत्तु उऱुम्–संसार भर में रहनेवाले; उयिर् यावैयुम्–सभी जीवों को; उण्णुम्–खा सकनेवाले; अव् वरॅप्पिन्–उस आँगन में; वरु कालनुम्–जो आया वह यम और; अवन् तूतरुम्–उसके दूत; नमन् तानुम्–(यम का नायब) नम; यावरुम्–सभी; इरु काल् उटैयवर्–दो पैरों वाले थे; तिरिन्ताय्–घूम-फिरकर; इळैत्तु इरुन्तार्–थकित रहकर; अरुकु–पास के; आयिरम् उयिर् कॉण्टु–हजारों जीवों को लेकर; तम् आऱु–अपना मार्ग; एकलर्–गये नहीं; अयर्त्तार्–भ्रांत रह गये। ३३४०

एक साथ लोक के सारे जीवों के खाने के लिए उस युद्धभूमि में यम, उसके दूत, उसका नायब (जिसका नाम था) 'नम', आदि सभी आये थे। बेचारे उनके दो-दो ही पैर थे। अतः वे थककर बैठ गये। और पास से ही मिले हज़ारों जीवों को लेकर अपने मार्ग पर जा नहीं सके, भ्रांत रह गये। ३३४०

अडुक्कुऱ्ऱन मदयानैयु मळितेर्हळुम् बरियुम्
तॉडुक्कुऱ्ऱन विशुम्बूडुऱच् चुमन्दोङ्गिन वॅन्निनुम्
मिडुक्कुऱ्ऱन कवन्दक्कुल मॅळुन्दाडलि नॅल्लाम्
नडुक्कुऱ्ऱन पिणक्कुन्ऱुह ळुयिर्नण्णिन वॅन्न 3341

अटुक्कु उऱ्ऱन–पंक्तियों में रहे; अळि मत–मदस्रावी; यानैयुम्–गज और; तेर्कळुम् परियुम्–रथ और अश्व; तॉटुक्कुऱ्ऱन–एक पर एक चुन गये; विसुम्पु ऊटु उऱ–आकाश तक पहुँचे, ऐसा; चुमन्तु ओङ्किन–ऊँचे हुए; ॲन्निनुम्–तो भी; मिटुक्कु उऱ्ऱन–बलयुक्त; कवन्तम् कुलम्–कबन्धवृन्द; ॲळुन्तु आटलिन्–उठकर नाचे इसलिए; पिणम् कुन्ऱुकळ्–लाशों की गिरियाँ; उयिर् नण्णिन ॲन्न–जीवित हो गयीं समझकर; ॲल्लाम् नटुक्कुऱ्ऱन–सभी भयभीत हो गये। ३३४१

मत्तगज, रथ और अश्व जो पंक्तियों में रहे अब एक के ऊपर एक

चुन गये, और उनकी बनी यह अनोखी दीवार आकाश को छू गयी। तो भी सशक्त कबंधवृन्द उठकर नाचने लगे तो लोगों ने सोचा कि लाशें जीवित हो गयीं। अत: वे भय से काँपे। ३३४१

पट्टारुडर् पडुशॆम्बुनल् तिरुमेनियिऱ् पडलाल्
कट्टार्शिलैक् करुआयिरु पुरैवान्गडै युहनाळ्
शुट्टाशरुत् तुलहुण्णुमच् चुडरोनॆनप् पॊलिन्दान्
ऒट्टारुडर् कुरुदिक्कुळित् तॆऴुन्दानैयु मॊत्तान् 3342

पट्टार्–मृतों के; उटल् पट्–शरीरों से निकले; चॆम् पुनल्–रक्त (के); तिरु मेनियिल् पटलाल्–श्रीशरीर पर लगने से; कट्टु आर् चिलै–बन्धनयुक्त धनु के धारक; करु आयिरु पुरैवान्–काले सूर्य-सम श्रीराम; युकम् कटै नाळ्–युगान्त के दिन; उलकु–लोकों को; चुट्टु–जलाकर; आचऱुत्तु–पूर्ण रूप से मिटाकर; उण्णुम्–खानेवाले; अ चुटरोन् ऎन–उस किरणमाली के समान; पॊलिन्तान्–शोभे; ऒट्टार् उटल्–शत्रुओं की शरीरों के; कुरुति कुळित्तु–रक्त में स्नान करके; ऎऴुन्तानैयुम्–उठे; ऒत्तान्–जैसे भी लगे। ३३४२

मरे हुए राक्षसों के शरीरों से निकला रक्त श्रीराम के श्रीशरीर पर खूब लग गया। उस स्थिति में सबंध धनुर्धर तथा असित सूर्य-सम श्रीराम युगांत के सर्वनाशक किरणमाली के समान दिखे। और ऐसा भी लगे मानो शत्रुरक्त में स्नान कर उठे हों। ३३४२

तीयॊत्तन वुरुमॊत्तन शरज्जिन्दिडच् चिरम्बोय्
मायत्तमर् मडिहिन्ऱनर् ऎन्वुम्मरड् गुऱैया
कायत्तिडै युयिरुण्डिड वुडन्मॊय्त्तॆऴ कळियाल्
ईयॊत्तन निरुदक्कुल नऱवॊत्तन निऱैवन् 3343

ती ऒत्तन–अग्नि-सम; उरुम् ऒत्तन–वज्र-सम; चरम्–बाणों को; चिन्तिट–अधिक संख्या में लगातार चलाने से; चिरम् पोय्–सिर गये; मायम् तमर्–मायावी हमारे लोग; मटिकिन्ऱनर्–मरते हैं; ऎन्वुम्–इसलिए और; मऱम् कुऱैया–वीरता में कम न होकर; कायत्तु इटै–शरीर में; उयिर्–प्राणों को; उण्टिट–(बाण) खायें ऐसा; कळियाल्–मस्ती के साथ; उटन् मॊय्त्तु ऎऴु–साथ लगे जो उठे; निरुतर् कुलम्–उन राक्षसों के दल; ई ऒत्तन–मक्खियों के समान लगे; इऱैवन्–भगवान श्रीराम; नऱवु ऒत्तनन्–मधु के समान रहे। ३३४३

'श्रीराम ने जो शर चलाये वे अग्नि और वज्र के समान हैं। उनके लगने से हमारे लोगों के सिर कट जाते हैं और वे मर जाते हैं' यह देखकर भी वीरता में न घटकर अपने प्राणों को भी उन शरों को जीने देने के लिए जो राक्षस उन्हें घेरे थे, वे मधुमक्खियों के समान लगे और श्रीराम मधु रहे। ३३४३

मोय्त्तारैयो रिमैप्पित्रलै मुडुहत्तोडु शिलैयाल्
तॆत्तानवर् कळ्ळ्रिणपशुङ् गायॊत्तनर् शरत्ताल्
कॆत्तार्कडु कळिरुङ्गतत् तेरुङ्गॊळित् तळ्न्दक्
कुत्तानळि कुळम्बाम्वहै वळुवाच्चरक् कुळुवाल् 3344

मोय्त्तार–ऐसे जो मँड़राये उन राक्षसों को; ओर् इमैप्पिन् तलै–एक बार पलक मारते देर के अन्दर; मुडुक–तेज़ी से; तोटु चिलैयाल्–जिससे बाण चलाये जाते हैं उस धनु से; तॆत्तात्–ढँक दिया; अवर्–वे; चरत्ताल्–(आवृत) शरों से; तिण् पचुमै–सारयुक्त व ताज़े; कळ्ळ् काय्–'कळ्ळ' नामक लता के फलों के; ऑत्तनर्–सदृश हो गये; कॆत्तार्–शत्रुओं के; कटु कळिरुम्–तेज हाथियों; कतम् तेरुम्–और बड़े रथों को; वळुवा चरम् कुळुवाल्–अचूक शरों की पंक्तियों से; अळि–द्रवणशील; कुळम्पाम् वकै–पंक बनाकर; कळत्तु अळुन्त–मैदान में डूब जायें, ऐसा; कुत्तात्–मसल दिया। ३३४४

उस भाँति जो मँड़राये उन राक्षसों को श्रीराम ने पल भर में अपने शरों से आवृत कर दिया। वे शरों के अन्दर 'कळ्ळ्' लता के सारयुक्त तथा ताज़े फलों के समान लगे। श्रीराम ने शत्रुओं के वेगवान हाथियों, और पक्के रथों को अपने अचूक शरों से द्रवणशील पंक बना दिया। ३३४४

पिरिन्दार्पल रिरिन्दार्पलर् पिळैत्तार्पल रुळैन्दार्
पुरिन्दार्पलर् नॆरिन्दार्पलर् पुरण्डार्पल रुरुण्डार्
ऎरिन्दार्पलर् करिन्दार्पल रॆळुन्दार्पलर् विळुन्दार्
शॊरिन्दार्कुडल् तुरन्दार्दलै तॊलैन्दारॆदिर् तॊडर्न्दार् 3345

पिरिन्तार् पलर्–अनेक प्राणहीन हुए; इरिन्तार् पलर्–अस्त-व्यस्त भागे कई; पिळैत्तार् पलर्–बचा गये कई; उळैत्तार् पलर्–त्रस्त हुए अनेक; पुरिन्तार् पलर्–लड़े कई; नॆरिन्तार् पलर्–पिचके कई; पुरण्टार् पलर्–लोटे अनेक; पलर् उरुण्टार्–अनेक लुढ़के; ऎरिन्तार् पलर्–जले अनेक; करिन्तार् पलर्–राख हुए कई; पलर् ऎळुन्तार्–कई उठे; पलर् विळुन्तार्–कई गिरे; कुटल् तुरन्तार्–आँतें जिनके बाहर निकल आयीं ऐसे बहुत से थे; चॊरिन्तार्–उन्हें बाहर निकाल दिया; ऎतिर् तॊटर्न्तार्–सामने जाकर; तलै तॊलैन्तार्–सिरों से हीन हुए। ३३४५

उस युद्ध में अनेकों के प्राण छूट गये। कई अस्त-व्यस्त हो भाग गये। कई बचा गये। अनेक त्रस्त हुए। अनेकों ने चाव के साथ युद्ध किया। कइयों के शरीर पिचक गये। कई लोटे, कई लुढ़के। अनेक राख हो गये। कई उठे, कई गिरे। कइयों को आँतें भी कटीं और बाहर निकल आयीं। कइयों ने आगे जाकर अपने सिरों को कटवा लिया। ३३४५

मणिकुण्डलम् वलयङ्गुळै महरज्जुडर् महुडम्
अणिहण्डिहै कवशङ्गळल् तिलहम्मुद लहलम्

तुणियुण्डव रुडल्शिन्दिन तॉडर्हिन्ऱन शुडरुम्
तिणिहॉण्डलि तिडैमिन्गुल मिळिर्हिन्ऱन शिवण 3346

तिणि–घने; कॊण्टलिन् इटै–मेघमध्य; मिन् कुलम्–बिजली की पंक्तियाँ; मिळिर्किन्ऱत–चमकतीं; चिवण–जैसे; तुणि उण्टवर्–छिन्न होकर जो मरे उनके; उटल्–शरीरों पर; तॊटर्किन्ऱत–लगातार; चुटरुम्–चमकनेवाले; मणि कुण्टलम्–रत्नकुंडल; वलयम्–बाहुवलय; मकरम् कुऴै–मकरकुंडल; चुटर् मकुटम्–प्रकाशमय मुकुट; अणि कण्टिकै–सुन्दर कण्ठमाला; कवचम्–कवच; कऴल्–पायलें; तिलकम्–तिलक; मुतल–आदि; कलम्–आभरण; चिन्तिन–अलग होकर छितरे। ३३४६

काली घटा के मध्य चमकती बिजली की पंक्तियों के समान छिन्न हुए राक्षसों के शरीरों पर रहे प्रकाशमय रत्नकुंडल, बाहुवलय, मकरकुंडल कांतिमय मुकुट, सुन्दर कंठहार, कवच, पैरों के कड़े, तिलक आदि आभरण अलग हो बिखर गये। ३३४६

मुन्नेयुळन् पिन्नेयुळन् मुहत्तेयुळ नहत्तिन्
तन्नेयुळन् मरुङ्गेयुळन् दलैमेलुळन् मलैमेल्
कॊन्नेयुळ निलत्तेयुळन् विशुम्बेयुळन् गॊडियोर्
ऍन्नेयोरु कडुप्पॅन्ऱिड विरुञ्जारिहै तिरिन्दान् 3347

कॊन्ऩे–भय भरते हुए; मुन्ऩे उळन्–सामने स्थित है; पिन्ऩे उळन्–पीछे है; मुकत्ते उळन्–सेना के अग्र भाग में है; अकत्तिन् तन्ऩे उळन्–मध्य भाग में है; मरुङ्के उळन्–पार्श्व में है; तलै मेल् उळन्–सिर पर है; मलै मेल् उळन्–पर्वत पर रहता है; निलत्ते उळन्–भूमि पर है; विचुम्पे उळन्–आकाश में है; ऒरु कटुप्पु ऍन्ऩे–यह अद्वितीय वेग भी कैसा; ऍन्ऱु–कहकर; कॊटियोर्–दुष्टों के; इट–कहते; इरु चारिकै तिरिन्तान्–बड़े चक्कर लगाये श्रीराम ने। ३३४७

श्रीराम (क्षण इधर, क्षण उधर) ऐसा चक्कर लगाते कि दुष्ट राक्षस लोग विस्मय के साथ कहते कि भय उत्पन्न करते हुए वह हमारे सामने है, नहीं पीछे है। सेना के अग्रभाग में है, नहीं मध्य भाग में! दोनों बाज़ुओं में, सिर पर, गिरि पर, भूमि पर, नहीं आकाश में है! उसका असाधारण वेग भी कैसा ?। ३३४७

ऍन्नेरिन ऍन्नेरिन ऍन्ऱियावरु मॅण्णप्
पॊन्नेर्वरु वरिविऱ्करत् तॊरुकोळरि पोल्वान्
ऒन्नार्पॅरुम् बडॆप्पोर्क्कड लुडैक्किन्ऱन ऍनितुम्
अन्नेरल रुडलेतिरि निळलेयॅन लानान् 3348

यावरुम्–सभी; ऍन् नेरिनन्–मेरे सामने है; ऍन् नेरिनन्–मेरे समक्ष है; ऍन्ऱु ऍण्ण–ऐसा सोचने देते हुए; पॊन् नेर् वरु–स्वर्ण-सम; वरि विल् करत्तु–सबन्ध धनु के धारण करनेवाले हाथ वाले; ऒरु–असाधारण; कोळ् अरि पोल्वान्–

बलवान सिंह के समान जो रहे वे श्रीराम; ऑन्ऩार्-शत्रुओं को; पॅरुम् पटै-बड़ी सेना रूपी; पोर्-आवरणकारी; कटल्-सागर को; उटैक्कित्ऱत्त् ॲन्ऩितुम्-तोड़ते तो भी; अल्-अन्धकार-सम; नेरलर् उटऩे-शत्रुओं के साथ; तिरिकिन्ऱ-घूमनेवाली; निऴले ॲनल् आनान्-(अग्राह्य) छाया ही सम रहे। ३३४८

सेना में एक-एक यही कहता कि राम मेरे ही समक्ष है, मेरे ही समक्ष है! इस भाँति चक्कर काटते हुए स्वर्ण-सम और सबंध धनु के धारण करनेवाले श्रीराम शत्रुओं के बड़ी सेना रूपी सागर को, जो उन्हें आवृत कर रहा था, तोड़ रहे थे। तो भी वे अंधकार-वर्ण राक्षसों की छाया की तरह (उनसे अग्राह्य हो) रहे। ३३४८

पऴ्ऴम्बडु कडलेऴिनुम् बडियेऴिनुम् बहैयिन्
वॅऴ्ऴम्बल वुळवॅन्ऩिनुम् विनैयम्बल तॅरियाक्
कळ्ळम्बडर् पॅरुमायैयिर् करन्दारुरुप् पिऱन्दार्
उळ्ळन्ऱियुम् बुऱत्तेयुमुऱ् ऱुळनामॅन वुऱ्ऱान् 3349

पऴ्ऴम् पटु-गहरे; कटल् एऴिनुम्-सातों समुद्रों में; पटि एऴिनुम्-सातों लोकों में; पकैयिन्-शत्रुओं के; पल वॅऴ्ऴम् उळ-अनेक 'वॅऴ्ऴम्' थे; ॲन्ऩितुम्-तो भी; पल विनैयम्-अनेक वंचक काम; तॅरिया-जानकर; कळ्ळम् पटर्-धोखे से भरी; पॅरु मायैयिल्-बड़ी माया में; उरु करन्तार्-रूप छिपाये हुए; पिऱन्तार्-जो जनमे थे उन राक्षसों के; उळ् अन्ऱियुम्-अन्दर के अलावा; पुऱत्तेयुम्-बाहर भी; उऱ्ऱु उळन्-लगे रहनेवाले; आम्-हैं; ॲन-इस भाँति सोचा जाय ऐसा; उऱ्ऱान्-लगे रहे। ३३४९

गहरे सप्तसमुद्रों और सप्तलोकों में अनेक 'वॅऴ्ऴम्' (राक्षस) शत्रु थे। तो भी श्रीराम ऐसे युद्ध में लगे थे कि सब यही कहें कि वंचक कार्य करने वाले माया में दबे और जन्म से ही रूप छिपाकर रहनेवाले उनके अंदर ही नहीं बाहर भी विद्यमान थे। ३३४९

नानाविदप् पॅरुञ्जारिहै तिरिहिन्ऱदु नविलार्
पोनानिडै पुहुन्दानॅनप् पुलन्गॊळ्हिलर् मऱन्दार्
तानावदु मुणर्न्दानुणर्न् दुलहॅङ्गणुन् दाने
आनान्विनै तुऱन्दानॅन विमैयोर्हळ् मयिर्त्तार् 3350

पोनान्-गया; इटै पुकुन्तान्-मध्य घुस गया; ॲन-यह; पुलन् कॊळ्किलर्-समझ में न लाकर; नाना वितम्-नाना रूप से; पॅरु चारिकै-बड़े चक्करों में; तिरिकिन्ऱतु-घूमना जो था उसे; नविलार्-नहीं कहते; मऱन्तार्-भूल गये; उणर्न्तु-भावना रूप में; उलकु ॲङ्कणुम्-लोक में सर्वत्र; ताने आनान्-स्वयं जो हैं; तान् आवतुम्-वे स्वयं खुद हैं; उणर्न्तान्-यह समझकर; विनै-कार्य को; तविर्न्तान् पोलुम्-छोड़ गये शायद; ॲन-ऐसा; इमैयोर्कळुम् अयिर्त्तार्-देव भी संदेह में पड़ गये। ३३५०

श्रीराम इस तरह बायें और दायें बड़े वेग से चक्कर काट रहे थे। कि यह किसी की समझ में नहीं आता था कि वे चले गये या आ गये। देव भी यह संशय करने लगे कि ये अपने को भावना रूप में सब जीवों के मन में रहनेवाले सर्वान्तर्यामी समझ गये। अतः अपना राक्षस-संहार का काम छोड़ बैठे हैं। ३३५०

शण्डक्कडु नॅडुङ्गार्‌ऱिडै तुणिन्दॅऱ्‌ऱिडत् तरैमेल्
कण्डप्पडु मलैपोलॅडु मरम्बोर्‌कडुन् दॉळ्ळिलोर्
तुण्डप्पडक् कडुञ्जारिहै तिरिन्दान्‌शरञ् जॉरिन्दान्
अण्डत्तिनै यळन्दानॅनक् किळर्न्दानिमिर्न् दहन्ऱान् 3351

चण्टम् कटु नॅटु कार्‌ऱु–प्रचंड, तेज और प्रबल प्रभंजन; इटै तुणिन्तु ऍऱ्‌ऱिट–बीच में काटता-सा ज़ोर से लगता है, इसलिए; तरै मेल्–धरती पर; कण्टम् पटुम्–खण्ड बनते; मलै पोल्–पर्वत की तरह और; नॅटु मरम् पोल्–ऊँचे पेड़ के समान; कटुम् तॉळ्ळिलोर्–क्रूरकर्मी (राक्षस); तुण्टम् पट–खण्ड-खण्ड हो जायँ, ऐसा; कटुम् चारिकै तिरिन्तान्–बहुत वेग से चक्कर काटते हुए; निमिर्न्तु अकन्ऱान्–ऊँचे और बड़े बनकर; अण्टत्तिनै अळन्तान् ऍन–(जिन त्रिविक्रम ने) अण्डों को मापा था उनके समान; किळर्न्तान्–उमँगकर; चरम् चॉरिन्तान्–(श्रीराम ने) शर-वर्षा की। ३३५१

प्रचंड, प्रखर तथा प्रबल प्रभंजन के काटते हुए ज़ोर से बहने पर जैसे भूमि पर पर्वत और तरु टूटकर गिरते हैं, वैसे ही क्रूरकर्मी राक्षस छिन्न हो जायँ, ऐसा श्रीराम चक्कर काटते हुए फिरे। त्रिलोकनायक श्रीत्रिविक्रम के समान श्रीराम ने बढ़कर शर-वर्षा की। ३३५१

कळियानैयु नॅडुन्देर्‌हळुङ् गडुम्बायबरिक् कणनुम्
तॅळियाळियु मुरट्चीयमुञ् जिनवीरर्‌दन् तिऱमुम्
वॅळिवानह मिलदाम्वहै विळुन्दोङ्गिय पिळम्बाल्
नळिमामलै मलैताविन नडन्दान्‌कडर् किडन्दान् 3352

कटल् किटन्तान्–सागरशायी; कळि यानैयुम्–मत्तगज और; नॅटु तेर्‌कळुम्–ऊँचे रथ; कटुम् पाय् परि–सवेग दौड़नेवाले अश्वों के; कणनुम्–समूह; तॅळि याळियुम्–उत्कृष्ट बलयुक्त शरभ; मुरण् चीयमुम्–सशक्त सिंह; चिनम्–क्रुद्ध; वीरर् तम्–वीरों की; तिऱमुम्–पलटनें; विळुन्तु–नीचे गिरकर; वान् अकम्–आकाश में भी; वॅळि इलताम् वकै–रिक्तस्थान नहीं रहे ऐसा; ओङ्किय–ऊँचे; पिळम्पाल्–ढेरों के कारण; नळि मा मलै–बड़े पर्वत से; मलै ताविनन्–अन्य पर्वत पर उछलकर; नटन्तान्–चले (श्रीराम)। ३३५२

मत्तगज, ऊँचे रथ, वेगवान अश्वगण, साफ़ ताक़तवर शरभ, सशक्त केसरी, क्रुद्ध पदातिकों के दल आदि गिर पड़े थे और उनके अलग-अलग ढेर पड़े थे आकाश को भी पूर्ण रूप से भर कर। तब श्रीराम

उन पर ज्योतिपुंज के समान एक पर्वत से जैसे दूसरे पर्वत पर उछलते हों वैसे एक से एक पर उछलते हुए गये। ३३५२

अम्ब रङ्गळ् तोंड्ङ्गोडि याडैयुम्
अम्ब रङ्ग ळोंड्ङ्गळि यानैयुम्
अम्ब रङ्ग वळुन्दिन शोरियिन्
अम्ब रङ्ग मरुङ्गल माळुन्दन 3353

अम्परम् कम्–समुद्र-जल में; अरु कलम् आळ्न्तु अन्न–श्रेष्ठ पोत डूबे जैसे; अम्पु–शर; अरङ्क–घुसे इसलिए; अम्परङ्कळ् तोटु–आकाश छूनेवाली; कोटि आटैयुम्–ध्वजा-वस्त्र; अम्परङ्कळोटुम्–और हौदों के साथ; कळि यानैयुम्–मत्त गज; चोरियिन्–रक्त (प्रवाह) में; अळुन्तिन–ग़र्क़ हुए। (इसमें यमकालंकार है।)। ३३५३

श्रीराम के शरों के लगने से मत्तगज आकाशस्पर्शी ध्वजा-वस्त्रों के साथ रक्त-प्रवाह में जो डूबे वह समुद्र-जल में पोतों के मग्न होने का दृश्य उपस्थित कर रहा था। ३३५३

तम्म नत्तिर् चलत्तर् मलैत्तलै
वॅम्मै युर्रॅळुन् देरुव मीळुव
तॅम्मु नैच्चॅरु मङ्गैदन् शॅङ्गैयाल्
अम्म नैक्कुल माडुव पोन्रवे 3354

तम् मनत्तिल्–अपने मन में; चलत्तर्–वंचना रखनेवाले राक्षसों के; मलै तलै–पर्वतोपम सिर; वॅम्मै उरुरु–(शरों के) घातक कर्म के निशाने बनकर (कटकर); ॲळुन्तु एरुव–जो ऊपर उठे; मीळुव–और लौटे; तॅव् मुनै–युद्ध के मैदान में; चॅरु मङ्कै–युद्ध रूपी स्त्री; तन् चॅम् कैयाल्–अपने लाल हाथों से; आटुव–जो खेलती है; अम्मनै कुलम्–'अम्मानै' के समूह ले; आटुव–खेलती; पोन्र–जैसी लगी। ३३५४

कपटमन राक्षसों के पर्वतोपम शिर श्रीरामबाण के नाशक कर्म के पात्र बने और कटकर ऊपर गये। फिर वे जब लौटकर गिरे तब वे 'अम्मानै'यों (काठ की गेंदें जो स्त्रियाँ अपने हाथों में लेकर उछालती हैं —यह एक खेल है) की तरह दिखे जिन्हें मानो युद्धभूमि रूपी रमणी अपने लाल हाथों से उछाल रही हो। ३३५४

केड हङ्गण वङ्गैयो डुङ्गिळर्
केड हङ्गळ् तुणिन्दु किडन्दन
केड हङ्गिळर् हिन्रक ळत्तनन्
केड हङ्गळ् मरिन्दु किडन्दवे 3355

केटकम्–आखेट के योग्य; कङ्कणम् अम् कैयोटुम्–सुन्दर कंकण-हस्तों के साथ; किळर्–प्रकाशमय; केटकङ्कळ्–ढालें; तुणिन्तु किटन्तत–छिन्न होकर पड़ी थीं; केटु–बुराई; अकम् किळर्किऩ्ऱ–जिनके मन में खिली रहती हैं; कळत्तु–मैदान में पड़े रहनेवाले; नऩ्कु एट–श्रेष्ठ दलों वाले (तुम्बै) फूलों की माला से अलंकृत; कम्कळ्–सिर; मऱिन्तु किटन्त–लुढ़कते पड़े रहे। ३३५५

आखेटक योग्य ढालों के रखनेवाले कंकणधारी हाथों के साथ छविमय ढालें भी छिन्न होकर गिरी पड़ी थीं। और युद्ध के मैदान में वंचक मन वाले और सुन्दर पंखुडियों के 'तुम्बै' के फूलों की माला धारण किये रहनेवाले (राक्षसों के) सिर नीचे लुढ़के पड़े थे। ३३५५

अङ्ग दङ्गळत् तऱ्ऱ्ऴि तारोडुम्
अङ्ग दङ्गळत् तऱ्ऱ्ऴि वुऱ्ऱ्वाल्
पुङ्ग वऩ्कणैप् पुट्टिल् पोरुन्दिय
पुङ्ग वऩ्कणैप् पुऱ्ऱ्र वम्बोर 3356

पुङ्कवन्–नरपुंगव के; कणै पुट्टिल्–तूणीर में; पोरुन्तिय–रहे; पुङ्कम्–तीक्ष्णमुखी; वल् कणै–कठोर बाण रूपी; पुऱ्ऱु अरवम्–बिल के सर्प के; पोर–प्रहार से; अङ्कतम्–बाहुवलय; कळत्तु अऱ्ऱु–कंठ के समान (कटे) रहे; अऴि तारोटुम्–मधु बहानेवाली मालाओं के साथ; अम् कतम्–सुन्दर क्रोध भी; कळत्तु–(युद्ध के) मैदान में; अऱ्ऱु अऴिवु उऱ्ऱ–मिटकर नाश को प्राप्त हो गये। ३३५६

नरपुंगव श्रीराम के तूणीरों के तीक्ष्ण बाण बिल के सर्पों के समान जाकर लगे तो राक्षसों के बाहुवलयों की भी स्थिति कंठों की-सी हो गयी। (यानी दोनों कट गये।) साथ-साथ मधु-भरी सुन्दर मालाएँ और क्रोध भी मिट गया। ३३५६

कयिऱु शेर्हळऴ् कार्निऱक् कण्डहर्
ऎयिऱु वाळि पडत्तुणिन् दियाऩैयिऩ्
वयिऱु तोऱु मऱैवऩ वाऩिडैप्
पुयल्दो ऱुम्बुहु वॆण्बिऱै पोऩ्ऱवे 3357

कयिऱु चेर्–रस्सी से बँधी; कऴल्–पायलधारी; कार् निऱम् कण्टकर्–काले रंग के लोककंटकों के; ऎयिऱु–दाँत; वाळि पट–शरों के लगने से; तुणिन्तु–छिन्न होकर; यानैयिन् वयिऱु तोऱुम्–हाथियों के पेटों में; मऱैवन–जो छिपे; वान् इटै–आकाश में; पुयल् तोऱुम्–मेघों में; पुकु–घुसनेवाले; वॆण् पिऱै–श्वेत चन्द्र-कला; पोन्ऱ–के समान रहे। ३३५७

रस्सी से बँधी पायलोंवाले नीलवर्ण राक्षसों के वक्र दाँत श्रीराम के शरों के काटने से अलग होकर गजों के पेटों में भिदकर जो ओझल हो गये वे आकाश में मेघ-मध्य घुसनेवाले श्वेत बालचन्द्र के समान लगे। ३३५७

वॆऩ्ऱि वीर रॆयिऱुम् विडामदक्
कुऩ्ऱिऩ् वॆळ्ळ मरुप्पुङ् गुविऩ्दऩ
ऑऩ्ऱु मॆऩ्ऱु मॆळुन्द विळम्बिऱै
ऑऩ्ऱि मानिलत् तुक्कवु मॊत्तवाल् 3358

वॆऩ्ऱि वीरर्–विजयी वीरों के; ऎयिऱुम्–(वक्र) दांत और; विटा मतम्–निरंतर मद बहानेवाले; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वतों (गजों) के; वॆळ्ळै मरुप्पुम्–सफ़ेद दांत; कुविन्तत–ढेर बने; ऎऩ्ऱुम् ऎऩ्ऱुम्–अनेक दिनों में; ऎळुन्त–उगे; इळम्पिऱै–बालचन्द्र; ऒऩ्ऱि–इकट्ठे होकर; मा निलत्तु–बड़ी भूमि पर; उक्कवुम् ऒत्त–गिरे हों ऐसे लगे। ३३५८

विजयी राक्षस वीरों के श्वेत वक्र दाँतों और पर्वत-सम हाथियों के श्वेत दाँतों के ढेर जो बने थे, वे अनेक दिनों के उदित बालचन्द्र मिलकर मानो भूमि पर गिरे पड़े हों ऐसे लगे। ३३५८

ओवि लारुड लुन्दुदि रप्पुनल्
पावि वेलै युलहु परत्तलाल्
तीवु दोऱु मिन्दिदुऱै शॆय्हैयर्
ईवि लाद नॆडुमलै येऱिऩार् 3359

ओविलार्–लगातार जो पड़े रहे; उटल्–उन राक्षसों के शरीर; उन्तु–जो निकालते रहे; उतिरम् पुनल्–रक्त-जल; पावि–फैलकर; वेलै उलकु–समुद्रावृत भूमि पर; परत्तलाल्–व्याप्त हुआ, इसलिए; तीवु तोऱुम्–सभी द्वीपों में; इऩितु उऱै–सुख से रहने के; चॆय्कैयर्–स्वभाव वाले; ईवु इलात–अमिट; नॆटु मलै एऱिऩार्–ऊँचे पर्वत पर चढ़े। ३३५९

राक्षस के सिर भूमि पर बराबर पड़े हुए थे। उनसे निकला रक्त संसार भर में व्याप्त हुआ। समुद्र में भी बहा तो सुखमय द्वीपवासी ऊँचे पर्वतों पर चढ़ गये ताकि बढ़ते जल में डूब न जायँ। ३३५९

विण्णि ऱैन्दऩ मॆय्युयिर् वेलैयुम्
पुण्णि ऱैन्द पुऩलि ऩिऱैन्दऩ
मण्णि ऱैन्दऩ पेरुडल् वाऩवर्
कण्णि ऱैन्दऩ विऱ्ऱॊऴिऱ् कल्वियै 3360

मॆय् उयिर्–शरीर के जीवों से; विण् निऱैन्तऩ–आकाश भर गया; वेलैयुम्–समुद्र भी; पुण् निऱैन्त–व्रण से निकलकर बहे; पुऩलिऩ् निऱैन्तऩ–रक्त से भर गया; मण्–भूमि; पेर् उटल्–भर गयी; विल् तॊऴिल् कल्वि–धनुकर्मविद्या से; वाऩवर् कण्–देवों की आँखें; निऱैन्तऩ–भर गयीं। ३३६०

शरीरों के अन्दर के जीवों से आकाश भर गया। समुद्र भी व्रणनिर्गत रक्त से भर गया। भूमि बेहद लाशों से भर गयी। देवों की आँखें धनुर्विद्या (प्रदर्शन) से भर (खुश हो) गयीं। ३३६०

शॅरुत्त वीरर् पॅरुम्बडै शिन्दिन
पॉरुत्त शोरि पुहक्कडल् पुक्कन
इरुत्त नीरिड् चॅरिन्दन वॅङ्गणुम्
अरुत्तु मीन मुलन्द वनन्दमे 3361

चॅरुत्त वीरर्–क्रुद्ध वीरों के; पॅरु पटै–बड़े-बड़े हथियार; चिन्तिन–बिखर गये; पॉरुत्त चोरि–उन्हें धारण करते हुए रक्त; पुक–समुद्र में बहा इसलिए वे भी; कटल् पुक्कन–समुद्र में प्रविष्ट हो गये; इरुत्त नीरिल्–वहाँ रहते जल में; चॅरिन्तन–संकुलित होकर; ॲङ्कणुम्–सब ओर; अरुत्तु–काटने लगे तो; उलन्त–उससे भरी; मीनम्–मछलियाँ; अनन्तमे–अनंत थीं। ३३६१

क्रोधी वीरों के हथियार बिखरे, रक्त में तिरकर उसके साथ समुद्र में पहुँच गये। संकुलित रहे उनके काटने से सर्वत्र जो (जलचर) मछलियाँ मरीं वे अनंत थीं। ३३६१

ऑल्व देयिव् वॉरुवनिव् वूहत्तैक्
कॉल्व देनिन्रु कुन्रन यामॅलाम्
वॅल्व देदु मिलामैयिन् वॅण्बलै
मॅल्व देयॅन वन्नि विळम्बिनान् 3362

इव् ऑरुवन्–यह एकाकी का; इव् ऊकत्तै–इस (राक्षस-) सेना का; निन्रु–सामना करके; कॉल्वतु–मारना; ऑल्वते–साध्य है क्या; कुन्रन–पर्वत-सम; याम् ॲलाम्–हम सब; वॅल्वतु–जीत इसका; एतुम् इलामैयिन्–कुछ संकेत नहीं मिलता, इसलिए; वॅळ् पलै–श्वेत दाँतों को; मॅल्वते–चबाते रहें; ॲन–ऐसा; वन्नि विळम्पिनान्–वह्नि ने पूछा। ३३६२

वह्नि ने यह देखकर पूछा कि क्या एकाकी ही यह इस राक्षस-सेना का सामना करके बिलकुल नाश कर देगा? उसके हाथों यह साध्य हो जायगा क्या? पर्वतोपम हमारे जीतने का कोई आसरा नहीं दीखता। फिर क्या अपने सफ़ेद दाँतों को चबाते रह जायँ? । ३३६२

कोल्वि ळुन्दळुन् दामुतङ् गूडियाम्
मेल्वि ळुन्दिडि नुम्मिवन् वीयुमाल्
काल्वि ळुन्द मळैयनन् काट्चियोर्
माल्वि ळन्दुळिर् पोलु मयङ्गिनोर् 3363

कोल्–(राम का या रावण का) शर; विळुन्तु–गिरकर; अळुन्ता मुतम्–(हम पर) धँसे इसके पहले; याम् कूटि–हम मिलकर; मेल् विळुन्तिटिनुम्–उस पर गिरें उस हालत ही में; इवन् वीयुम्–यह मरेगा; काल् विळुन्त–बरसती; मळै अनन–धारदार मेघ के समान; काट्चियोर्–दृश्यमान; नीर् मयङ्कि–तुम [illegible] ३३६३

उसने आगे कहा— रावण का (या राम का) शर हम पर गिरकर धँस जाय इसके पहले हम उन पर एक साथ गिर जायँ, इतना काफ़ी है, वह मर जायगा। हे जलवर्षी मेघ-वर्ण वीरो! तुम क्या भ्रांत हो मोह में फँस गये शायद? । ३३६३

आयि रम्बॆरु वॆळ्ळ मरैपडत्, तेय निऱ्पदु पित्तिनि यॆन्शॆयप्
पायु मुऱ्ऱुड तॆय्यॆनप् पऩ्ऩिऩाऩ्, नाय हऱ्कॊ रुदवियै नल्हुवान् 3364

आयिरम् पॆरु वॆळ्ळम्–हज़ार महा 'वॆळ्ळम्' की सेना; अरै पट–पिस जाती है; तेय निऱ्पदु–मिटने की दशा में है; इत्ति पित्–अब आगे; ऍन् चॆय–क्या करना रहेगा; उटऩे–तुरंत; उऱ्ऱु–धैर्य करके; पायुम्–(श्रीराम पर) झपटो; ऍन–ऐसा; नायकऱ्कु–अपने राजा को; ओर् उतवियै–एक सहायता; नल्कुवान् करने के लिए; पऩ्ऩिऩाऩ्–कहा (वह्नि ने)। ३३६४

हज़ार महा वॆळ्ळम् की सेना पिसती जाती है। लगता है एक दम मिटने की दशा में है! उसके मिटने के बाद करने के लिए क्या रह जायगा? इसलिए तुरंत धैर्य अपनाकर राम पर झपट पड़ो। —ऐसा अपने राजा की सेवा करना चाहकर उसने कहा। ३३६४

उऱ्ऱु रुत्तॆळु वॆळ्ळ मुडऩ्ऱॆऴाच्, चुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम् वळैन्दऩ तूविऩ
ऑऱ्ऱै माल्वरै मेलुयर् तारैहळ्, पऱ्ऱि मेहम् बॊऴिन्दॆऩप् पल्पडै 3365

उऱ्ऱु–उत्तप्त होकर; उरुत्तु ऍळु–रुष्ट हो उठी; वॆळ्ळम्–बड़ी सेना; उटऩ्ऱु ऍऴा–भड़क उठ; चुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम्–चारों ओर से बिलकुल; वळैन्तऩ–घेर गये; ऑऱ्ऱै माल् वरै मेल्–एकाकी बड़े पर्वत पर; मेकम् पऱ्ऱि–मेघ उमड़कर; उयर् तारैकळ्–लम्बी धारें; पॊऴिन्तऩ–बरसाते जैसे; पल् पटै–अनेक हथियार; तूविऩ–बरसाये। ३३६५

बड़ी सेना रुष्ट होकर उठी। सारे वीर भड़ककर उठे और श्रीराम को घेर गये। फिर वे एकाकी पर्वत पर उमड़कर धार गिराते काले मेघों के समान अपने हथियारों को बरसाने लगे। ३३६५

कुऱित्तॆ ऱिन्दऩ वॆय्दऩ कूऱुऱत्
तऱित्तुत् तेरुङ् गळिऱुन् दरैप्पड
मऱित्त वाशि तुणित्तवर् माप्पडै
तॆऱित्तुच् चिन्दच् चरमऴै शिन्दिऩाऩ् 3366

कुऱित्तु–निशाना बाँधकर; ऍऱिन्तऩ–फेंके जो गये उन्हें; ऍय्तऩ–जो चलाये गये उन्हें; कूऱु उऱ–कई टुकड़ों में; तऱित्तु–छेदकर; तेरुम् कळिऱुम्–रथों और हाथियों को; तरै पट–धराशायी करते हुए; मऱित्त–रोके हुए; वाचि–अश्वों को; तुणित्तु–छेदकर; अवर् मा पटै–उनकी अश्व-सेना को; तॆऱित्तु चिन्त–तोड़-छितराकर; चर मऴै–शर-वर्षा; चिन्तिऩाऩ्–श्रीराम ने की। ३३६६

राक्षसों ने जो निशाना बाँधकर हथियार चलाये उन्हें, और जो चलाये गये उन हथियारों को श्रीराम ने खण्डित करके हटा दिया। रथों और गजों को धराशायी कर दिया। रुके हुए अश्वों को छिन्न कर दिया। और अश्वारोही वीरों को छितरा दिया। ऐसा श्रीराम ने शरवर्षा की। ३३६६

वाय्वि ळित्तॆळु पः(ह्)रलै वाळियिल्
पोय्वि ळित्त कुरुदिहळ् पॊङ्गुव
पेय्क ळिप्प नाडिप्पत्त पॆट्पुरुम्
तीवि ळित्तिडु तीब निहर्त्तवाल् 3367

वाय् विळित्तु–मुख से शब्द करते हुए; ऍळु–झपटनेवाले; पल् तलै वाळियिल्–अनेक सिरों वाले बाणों के कारण; विळित्त–बड़े शोर के साथ मरनेवालों का; कुरुतिकळ्–रक्त; पॊङ्कुव–उफ़न उठा; पेय् कळिप्प–भूत जो अवित होकर; नटिप्पत्त–नाचते (उनको); विळित्तिटुम् ती–निमन्त्रण देनेवाली (मुख की) आग; पॆट्पु उरुम्–उपयोगी; तीपम् निकर्त्त–समुद्रकूल के दीपस्तम्भ के दीप के समान रही। ३३६७

मुखरित हो चलनेवाले वहुसिर शरों के लगने से राक्षस मरे। उनसे शब्द करते हुए रक्त के अनेक प्रवाह उफन उठे। उनके किनारों पर अग्निमुख भूत आनंद के साथ नाचे। वे अपने मुख की आग के कारण समुद्र के किनारे रहकर यात्रियों को सहायता देनेवाले दीपस्तम्भ के समान दिखे। ३३६७

नॆय्हॊळ् शोरि निरैन्द नॆडुङ्गडल्
शॆय्य वाडैय ळन्नशॆञ्
जान्दिन्नळ्
वॆय मङ्गै पॊलिन्दनण् मङ्गलच्
चॆय्य कोलम् बुनैन्दनन्न शॆय्हैयाळ् 3368

नॆय् कॊळ्–चर्बी से युक्त; चोरि–रक्त से; निरैन्त–भरे; नॆटु कटल्–बड़े समुद्र रूपी; चॆय्य आटैयळ्–रक्त (वर्ण) वसना (स्त्री); अन्न–उसी रंग के; चॆम् चान्तिन्नळ्–लाल चन्दन से चर्चित; वैयम् मङ्कै–भूदेवी; मङ्कलम् चॆय्य–शुभ कार्य करने; कोलम् पुनैन्तन्न–वेष धारण कर चुकी हो; चॆय्कैयाळ्–ऐसा कार्य करनेवाली के रूप में; पॊलिन्तनळ्–शोभी। ३३६८

चर्बी-सहित रक्त से भर गया समुद्र। अतः भूमि रक्त (-वर्ण-) वसना हो गयी। उसी रंग के चंदन से भी चर्चित हुई भी लगी। तब वह उस स्त्री के समान लगी जो शुभ कार्य के अवसर पर लाल रंग के अलंकार के कार्य में लगी हो। ३३६८

उप्पुत् तॆन्नॆय् यॊण्डयिर् पाल्करुम्
वप्पुत् तानॆन्न रुरैत्तन्न वाळिहळ्

तुप्पुप् पोऱ्कुरु दिप्पुनल् शुऱ्ऱलाल्
तप्पिऱ् ऱव्वुरै यिन्ऱॊर् तनुविनाल् 3369

उप्पु–लवण; तेन्–मधु; नेय्–घृत; ऑण तयिर–श्वेत दधि; पाल्–दुग्ध; करुम्पु–इक्षु; अप्पु–शुद्ध जल के; ॲन्ऱु उरैत्तत आऴिकळ्–ऐसे कहे जानेवाले समुद्र; तुप्पु पोल् कुरुति–प्रवालवर्ण रक्त का; पुनल्–जल; चुऱ्ऱलाल्–घेरने से; इन्ऱु–आज; और तनुविनाल्–एक धनु के कारण; अव् उरै–(सप्त-समुद्र के) उस नाम से; तप्पिऱ्ऱु–वंचित हो गये। ३३६९

समुद्र सात हैं। वे लवण, घृत, दधि, मधु, दुग्ध, इक्षु और शुद्धजल के हैं। अब सभी में रक्त भर गया। इसलिए एक धनु के कारण सप्त (-पदार्थ-) समुद्र का नाम गुम हो गया! । ३३६९

ऑन्ऱु मेतॊडै कोलॊरु कोडिहळ्
शॆन्ऱु पाय्वन तिङ्ग ळिळम्बिऱै
अन्ऱु पोलॆन लाहिय दच्चिलै
ऑन्ऱु माळ्व रॆदिर्त्त विराक्कदर् 3370

तॊटै ऑन्ऱुमे–संधानकर चलाना एक ही बार; कोल्–बाण तो; ओरु कोटिकळ्–एक करोड़; चॆन्ऱु पाय्वत–जा लगते हैं; अ चिलै–वह धनु; अन्ऱु पोल्–उसी दिन के; इळम् पिऱै तिङ्कळ् ॲन–बालचन्द्र के समान; आकियतु–(वक्र) है; ॲतिर्त्त–सामना करनेवाले; इराक्कतर्–राक्षस; ॲन्ऱु माळ्वर्–कब तक मरेंगे। ३३७०

एक ही खेप में करोड़ों अस्त्र चलते थे। वह धनु भी चन्द्रकला के समान श्रीराम के झुकाने से वक्र हो गया था। तो भी न जाने लड़नेवाले राक्षस कब तक समाप्त होंगे? । ३३७०

ऍडुत्तव रिरैत्तव रॆऱिन्दवर् शॆऱिन्दवर् मऱङ्गॊ डॆदिरे
तडुत्तवर् शलित्तवर् शरिन्दवर् पिरिन्दवर् तनिक्क ळिऱुपोल्
कडुत्तवर् कलित्तवर् कऱुत्तवर् शॆऱुत्तवर् कलन्दु शरमेल्
तॊडुत्तवर् तुणिन्दवर् तॊडर्न्दनर् किडन्दनर् तुरन्द कणैयाल् 3371

ऍटुत्तवर्–जिन्होंने हथियार उठाये वे; इरैत्तवर्–और नारे लगानेवाले; चॆऱिन्तवर्–(श्रीराम के) बहुत पास आये; ॲऱिन्तवर्–हथियार चलानेवाले; मऱम् कॊटु–वीरता के साथ; ॲतिरे–सामने से; तटुत्तवर्–(श्रीरामास्त्र को) रोकनेवाले; चलित्तवर्–ऊबे हुए; चरिन्तवर् पिरिन्तवर्–हारकर अलग हुए; तति कळिऱु पोल्–और अकेले हाथी के समान; कटुत्तवर्–जोर लगानेवाले; कलित्तवर्–घमंडी; कऱुत्तवर्–क्रुद्ध; चॆऱुत्तवर्–फूत्कार करनेवाले; कलन्तु–मिल आकर; चरम् मेल् तॊटुत्तवर्–शर प्रेरित करनेवाले सभी; तुरन्त कणैयाल्–श्रीराम के प्रेरित अस्त्रों से; तुणिन्तवर्–छिन्न होकर; तॊटर्न्तनर् किटन्तनर्–बराबर पड़े रहे। ३३७१

हथियार उठानेवाले, नारे लगानेवाले, श्रीराम के पास आये हुए, हथियार फेंकनेवाले, वीरता दिखाकर श्रीराम के अस्त्र को रोकनेवाले, ऊबे हुए वीर, हारकर भागनेवाले अकेले मदमत्त के समान जोर लगानेवाले, घमंडी, क्रुद्ध, फूत्कार करनेवाले और पास आकर श्रीराम पर बाण चलाने वाले सभी श्रीराम के चलाये गये अस्त्रों से छिन्न होकर बराबर मरे और भूमि पर गिरे पड़े रहे। ३३७१

तॊडुप्पदु शुडर्प्पहळि यायिर निरैत्तवै तुरन्द तुरैपोय्प्
पडुप्पदु वयप्पहळि यायिररै यन्ऱुपदि नायि रवरैक्
कडुप्पदु करुत्तुमदु कट्पुलन् मनङ्गरुदल् कल्वि यिलवेल्
ऎडुप्पदु पडप्पॊरुव दन्ऱियिवर् शॆय्वदॊरु नन्ऱि युळदो 3372

तॊट्टप्पतु–चलाये गये; चुटर् पकळि–तेजोमय शर; आयिरम्–हज़ार; निरैत्तवै–पंक्तियों में जाते वे; तुरन्त तुरै पोय्–प्रेरित मार्ग में जाकर; पट्टुप्पतु–मारते; वयप्पकळि–विजयदायी शरों वाले; आयिररै अन्ऱु–हज़ार को नहीं; पतितायिरवरै–दसों हज़ार वीरों को; अतु कट्टप्पु–वही तीव्रता (उनकी) थी; अतु करुत्तुम्–वही (प्रेरक का) मनोरथ भी; कण् पुलन् मनम्–आँख की इन्द्रिय और मन; करुतल् कल्वि–सोचने (जानने) की शक्ति से युक्त; इल–नहीं; वेल् ऍट्टुप्पतु–शक्ति उठाना (राक्षसों का); पट पॊरुवतु अन्ऱि–मरने के लिए लड़ना छोड़; इवर् चॆय्वतु–इनका कार्य; ऑरु नन्ऱि उळतो–एक अच्छा काम भी है क्या। ३३७२

श्रीराम चलाते एक ही हजार अस्त्र, पर वे पंक्तियों में जाकर मारते केवल एक हज़ार विजयशरधारक वीरों को नहीं! पर मारते दस हज़ार वीरों को! वह उनकी तेज़ी है और श्रीराम का मनोरथ भी। उन्हें आँखें या मन देख जान ही नहीं सकता! राक्षस शक्तियाँ उठाते अवश्य थे, पर वह मरने के लिए ही! उसे छोड़ वे क्या उपयोगी अच्छा कार्य कर सकते थे? । ३३७२

तूशियॊडु नॆऱ्ऱियिरु कैयित्तॊडु पेरणि कडैक्कुळै तॊहुत्तु
ऊशिनुळै यावहै शरत्तणि वहुक्कुमवै युणणु मुयिरै
आशैहळै युऱ्ऱुरुवु मप्पुऱमु मोडुम दनिप्पु ऱमुळार्
ईशनॆदि रुऱ्ऱुहव दल्लदिहन् मुऱ्ऱुवदॊर् कोऱ्ऱ मॆवनो 3373

तूचियोट्टु नॆऱ्ऱि–अग्रभाग तथा भाल का भाग; इरु कैयित्तोट्टु–दोनों बाज़ुओं के साथ; पेर् अणि–प्रधान भाग और; कटै कुळै–अंतिम भाग; तॊकुत्तु–इनको मिलाकर; ऊचि नुळैया वकै–सूई भी न घुस पाये ऐसा; चरत्तु अणि–शरपंक्ति; वकुक्कुम्–रचनेवाले बने श्रीराम; अवै–वे; उयिरै उण्णुम्–राक्षसों की जान खा लेते; आचैकळै उऱ्ऱु–दिशाओं में जाकर; उरुवुम्–भेद जाते; अप्पुऱमुम् ओटुम्–उन्हें पार कर भी आगे जाते; अतन्–निशाने के; इ पुऱम् उळार्–इस तरफ़ रहनेवाले; ईचन्–भगवान के; ऍतिर् उऱ्ऱु–समक्ष जाकर; उकुवतु अल्लतु–मर जाने के

सिवा; इकल् मुरुवतु–वीरता की चरम सीमा की; ओर् कोट्रम्–विजय पाना; अॅवन्–कहाँ। ३३७३

श्रीराम ने ऐसे अस्त्र चलाये कि राक्षस-सेना के अग्रभाग, उसके पीछे का (भाल का) भाग, प्रधान अंश, पीछे का भाग, दोनों बाज़ू-सब ऐसे मिल गये कि सूई के घुसने का स्थान भी नहीं मिल सका। वे शर राक्षसों के प्राणों को खाते। दिशाओं में जाकर उन्हें भेदते। दिगंत के पार भी चलते। उनके निशाने के इस तरफ़ जो राक्षस थे उनका श्रीराम के सम्मुख जाकर प्राण छोड़ने के सिवा वीरता की सीमा में मिलनेवाली विजय पाना कैसे हो सकता था? । ३३७३

ऊऩहु वडिक्कणैह ळूऴियिऩ् ऩॊत्तऩ वुलन्द वुलवैक्
काऩह निहर्त्तऩ ररक्कर्मलै यॊत्तऩ कळित्त मदमा
माऩवऩ् वयप्पहऴि वीशुवलै यॊत्तऩ वळैप्पुऩ लुळ्वाऴ्
मीऩहु लमॊत्तऩ कडर्पडै यिऩत्तॊडुम् विळिन्दु ऱुदलाल् 3374

ऊऩ् नकु–मांस के साथ शोभनेवाले; वटि कणैकळ्–तीक्ष्ण शर; ऊऴि अऩल् ऒत्तऩ–युगान्त की अग्नि के समान हैं; अरक्कर्–राक्षस; उलन्त–सूखे; उलवै काऩकम्–ठूंठों के जंगल; निकर्त्तऩर्–के समान थे; कळित्त मत मा–मदमत्त हाथी; मलै ऒत्तऩ–पर्वतों की समानता करते थे; माऩवऩ्–मनुकुल-पुत्र श्रीराम के; वयम् पकऴि–बलवान शर; वीचु वलै ऒत्तऩ–फेंके जानेवाले जाल के समान थे; कटल पटै–सागर-सी सेना; इऩत्तॊटुम्–समूहों के साथ; विळिन्तुऱतलाल्–मिट गयी, इसलिए; वळै पुऩलुळ्–(धरती के) आवरणकारी समुद्र में; वाऴ्–वास करनेवाले; मीऩम् कुलम् ऒत्तऩ–मत्स्यकुल के समाम थी। ३३७४

मांस के साथ शोभनेवाले तीक्ष्ण शर युगांत की अग्नि के समान लगे; तो राक्षस सूखे ठूँठों के जंगल के सदृश रहे और मदमत्त हाथी पर्वतों के समान। मनुकुलपुत्र श्रीराम के बाण मछुए के जाल के समान लगे। सागर-सी सेना स-समूह मिटती, इसलिए राक्षसदल पृथ्वी के आवरणकारी समुद्र के अन्दर रहनेवाला मत्स्यकुल बना। ३३७४

ऊऴियिऱु दिक्कडुहु मारुदमु मॊत्तऩ ऩिराम ऩुडऩे
पूऴियॆऩ वुक्कुदिरु माल्वरैह ळॊत्तऩ ररक्कर् पॊरुवार्
एऴुलहु मुऱ्ऱुयिर्हळ् यावैयु मुरुक्कियिऱु दिक्क णिऩ्वरुम्
आऴियैयु मॊत्तऩऩम् मऩ्ऩुयिरु मॊत्तऩ रलैक्कु निरुदर् 3375

इरामऩ्–श्रीराम; ऊऴि इऱुति–युगान्त में; कटुकु मारुतमुम्–प्रचण्ड बहनेवाले मारुत; ऒत्तऩऩ्–के समान रहे; उटऩे–तुरंत; पूऴि ॲऩ–धूल के समान; उक्कु उतिरुम्–टूटकर गिरनेवाले; माल् वरैकळ् ऒत्तऩर्–बड़े पर्वतों के सदृश थे; पॊरुवार् अरक्कर्–लड़नेवाले राक्षस; एऴ् उलकुम् उऱ्ऱु–सातों लोकों में जाकर; उयिर्कळ् यावैयुम्–सभी जीवों को; मुरुक्कि–मारकर; इऱुतिकणिऩ्–आखिरकार;

वरुम्–उमगनेवाले; आऴियैयुम् ऒत्ततन्–समुद्र के समान भी रहे (श्रीराम); अलैक्कुम् निरुतर्–त्रस्त राक्षस; अ मन् उयिरुम्–उन नित्यजीवों; ऒत्ततर्–के सदृश भी रहे। ३३७५

श्रीराम युगांत के प्रचंड मारुत-सम थे। लड़नेवाले राक्षस तुरन्त धूल बनकर गिरनेवाले पर्वतों के सदृश रहे। श्रीराम युगांत में उमड़ आनेवाले सागर के समान थे जो कि सातों लोकों में पहुँचकर जीवों का अंत कर देता। त्रस्त राक्षस उन नित्यजीवों से तुल्य रहे। ३३७५

मूलमुद लायिडैयु मायिरुदि यायॆवैयु मुऱ्ऱु मुयलुङ्
गालमॆन लायिननि रामनव्व ररक्करक्कडै नाऴिल् विऴियुङ्
गूलमिल् शराशर मनैत्तिनैयु मॊत्ततर् कुरैह डलॆऴुम्
आलमॆन लायिननि रामनवर् मीनमॆन लायि नर्हळाल् 3376

इरामन्–श्रीराम; मूलम् मुतलाय्–मूल कारण बनकर; इटैयुमाय्–और मध्य रहकर और; इऱुति आय्–अन्त रहकर; ऍवैयुम्–सभी प्रपंच के; मुऱ्ऱुम्–लीन होने का स्थान बनकर; मुयलुम्–यत्नशील; कालम् ऍऩल् आयिनन्–युगान्तकाल के सदृश बने; अव् अरक्कर्–वे राक्षस; कटै नाऴिल्–युगान्त में; विऴियुम्–मरनेवाले; कूलम् इल्–असीम; चर अचरम्–चराचर; अनैत्तिनैयुम् ऒत्ततर्–सभी के समान बने; कुरै कटल् ऍऴुम्–गर्जनशील सागर से उदित; आलम् ऍऩल् आयिनन् इरामन्–हलाहल-सम रहे श्रीराम; अवर्–वे; मीनम् ऍऩल् आयिनर्–मछलियों के सदृश रहे। ३३७६

श्रीराम आदि, मध्य और अंत में रहनेवाले और सब प्रपंच के लय के आश्रय, यत्नशील काल के समान रहे। तो राक्षस युगांत में विनष्ट होनेवाले चराचर सबके सदृश रहे। गर्जनशील समुद्र से उत्पन्न हलाहल के सदृश रहे श्रीराम, तो वे राक्षस (उसमें जल) मरनेवाली मछलियों के समान रहे। ३३७६

वञ्जवित्तै शॆय्दुनॆड् मन्ऱिल्वऴ मुण्डुहरि पॊय्क्कु मऱमार्
नॆञ्जमुडै योर्हळ्कुल मॊत्तनर रक्करऱ मॊक्कु नॆडियोन्
नञ्जनॆडु नीरिनैयु मॊत्तन नडुत्तदनै नक्कि नरैयुम्
वञ्जमुऱु नाऴिल्वरि योर्हळैयु मॊत्तन ररक्कर् पडुवार् 3377

वञ्चम् वित्तै–वंचक कार्य; चॆय्तु–करके; नॆटु मन्ऱिल्–न्यायसभा में; वऴम् उण्टु–अधार्मिक रीति से धन लेकर (घूँस पाकर); करि पॊय्क्कुम्–झूठी गवाही देनेवाले; मऱम् आर्–पापपूर्ण; नॆञ्चम् उटैयोर्कळ्–मन वालों के; कुलम् ऒत्ततर्–कुल के समान थे; अरक्कर्–राक्षस; नॆटियोन्–महिमामय श्रीराम; अऱम् ऒक्कुम्–(उस कुल के नाशक) धर्मदेवता के समान थे; नञ्चम्–विषमिश्रित; नॆटु नीरिनैयुम्–अधिक जल के भी; ऒत्ततन्–सदृश रहे श्रीराम; अतनै अटुत्तु–उसके पास जाकर; नक्कितरैयुम्–चाटनेवालों के; पञ्चम् उऱु नाऴिल्–अकाल के

समय के; वऴ्रियोर्कळैयुम्–दरिद्रों के भी; ऑत्तनर् अरक्कर्–समान रहे निशाचर; पट्टार्–मिटते । ३३७७

छल-फ़रेब करके घूँस लेकर जो न्यायसभा में झूठी गवाही देता है, उस पाप-मन पुरुष के कुल के समान राक्षस बने। तो महिमावान श्रीराम धर्मदेवता के समान रहे, जोकि उस कुल का नाश कर देता है। श्रीराम विषमिश्रित जल के समान रहे तो वे राक्षस उसे चाटनेवालों के समान बने। और भी अकाल में दरिद्रों के समान भी लगे। और वे मरे। ३३७७

वॆळ्ळमीरु नूऱुपडुम् वेलैयिन्नव् वेलैयुमि लङ्गै वॆळियुम्
पळ्ळमॊडु मेडुतॆरि यादवहै शोर्कुरुदि पम्बि यॆऴुलुम्
उळ्ळुमदि लुम्बुऱमु मॊन्ऱुमऱि यादलऱि योडि नर्हळार्
कळ्ळनॆडु मान्विऴिय रक्कियर्क लक्कमॊडु काल्हळ् कुलैवार् 3378

वॆळ्ळम् ओर नूऱु–एक सौ 'वॆळ्ळम्'; पट्टु वेलैयिन्–जब सेना मरती तब; अ वेलैयुम्–वह सागर; इलङ्कै वॆळियुम्–और लंका का खाली स्थान; पळ्ळमॊटु मेट्टु–नीची भूमि और ऊँची भूमि; तॆरियात वकै–न जानी जायँ ऐसा; चोर् कुरुति–बहनेवाला रक्त; पम्पि ऎऴुलुम्–फैल उठा तो; कळ्ळम् नॆट्टु–वंचकता-भरी; मान् विऴि–हरिणाक्षी; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मतिल्–प्राचीरों के; उळ्ळुम् पुऱमुम्–अन्दर और बाहर; ऑन्ऱुम् अऱियातु–बिना कुछ जाने ही; काल्कळ् कुलैवार्–पैरों की शक्ति खोकर; कलक्कमॊटु–क्षोभ के साथ; अलऱि ओटिनर्–चिल्लाती भागीं। ३३७८

एक सौ वॆळ्ळम् की सेना जब हत हुई तब जो रक्त बहा वह ऐसा फैला कि समुद्र में और लंका के रिक्त स्थानों में यह पहचाना नहीं जा सकता था कि ऊँची भूमि कहाँ है और नीची भूमि कहाँ। तब वंचकता से भरी तथा हरिणाक्षी राक्षसियाँ कुछ जाने बिना ही प्राचीरों के अन्दर और बाहर लड़खड़ाते और क्षीणशक्ति हुए पैरों के बल चिल्लाती हुई भागीं। ३३७८

नीङ्गिनर् नॆरुङ्गिनर् मुरुङ्गिन रुलैन्दुलहि नीळु मलैपोल्
वीङ्गिन पॆरुम्बिणम् विशुम्बुऱ वशुम्बुपडु शोरि विरिवुऱ्
ऱोङ्गिन नॆडुम्बरवै यॊत्तुयर वॆत्तिशैयु मुऱ्ऱॆ दिरुऱत्
ताङ्गिनर् पडैत्तलैवर् नूऱुशद कोडियर् तडुत्त लरियार् 3379

नॆरुङ्किनर्–पास जाकर लड़ाई करते; मुरुङ्किनर्–मिटकर; उलैन्तु–विकृत होकर; नीङ्किनर्–दुनिया से कूच कर गये; उलकिल्–संसार में; नीळुम् मलै पोल्–लम्बे बनते बड़े पर्वत के समान; पॆरुम् पिणम्–शवों के बड़े ढेर; विचुम्पु उऱ–आकाश स्पर्श करते हुए; वीङ्किन–ऊँचे बने; अचुम्पु पट्टु चोरि–बहनेवाला रक्त; विरिवुऱ्ऱु–विस्तृत बना; नॆट्टु परवै ऑत्तु–विशाल सागर के समान बनकर; उयर–उभरने; ऎ तिचैयुम् उऱ्ऱु–सभी दिशाओं में जाकर; ऎतिर् उऱ–सामने जाने; ओङ्किन–बढ़ा; तट्टुत्तल् अरियार्–दुर्निवार; नूऱु चत कोटियर्–सौ शतकोटि के;

राक्षस वीरों ने पास रहकर युद्ध किया। वे मरे, विकृत-रूप हुए और दुनिया से कूच कर गये। इसलिए भूमि पर लम्बी पर्वतश्रेणी के समान लाशों के ढेर बने और आकाश को छूते हुए ऊँचे बने रहे। उन लाशों से रक्त जो बह निकला वह सागर के समान सब दिशाओं में बहा और अपने में टकराकर ऊँचा बढ़ा। तब सौ शतकोटि के दुर्निवार वीर सेनापति श्रीराम को रोके खड़े रहे। ३३७९

तेरुमद मावुम्वरै याळियॊडु वाशिमिहु शीय मुदला
ऊरुमवै यावैयु नडायिऩरुह डायिऩर् हळुन्दि ऩरहळार्
कारुमुरु मेरुमॆरि येरुनिहर् वॆम्बडयॊ डम्बु कडिदिऩ्
तूरुम्वहै तूयिऩर् तुरन्दऩरुह ळॆय्दऩर् तॊडर्न्द ऩर्हळाल् 3380

तेरुम्-रथ और; मतम् मावुम्-मत्तगज; वरै-पर्वतीय; याळियॊटु-शरभों के साथ; वाचि-अश्व; मिकु चीयम्-बलवान सिंह; मुतला-आदि; ऊरुम्-वाहन; अवै यावैयुम्-उन सभी को; कटायिऩर्-चलाते हुए; नटायिऩर्-चले; कारुम्-मेघ; उरुम् एरुम्-और अशनिराज; ऍरि एरुम्-बड़ा अनल; निकर्-सदृश; वॆम् पटैयॊटु-भयंकर हथियारों के साथ; कटितिऩ्- तेज; तूरुम् वकै तूयिऩर्-(युद्ध का मैदान) पट जाय ऐसा बरसाये; तुरन्तऩर्कळ्-शीघ्र; ऍय्तऩर्-छोड़ते हुए; तॊटर्न्तऩर्कळ्-पीछा किया। ३३८०

वे लोग रथ, मत्तगज, पार्वत्य शरभ, वाजी, सशक्त सिंह आदि वाहनों को चलाते हुए आये और उन्होंने मेघ, अशनिराज और वृहत् अनल —इनके समान भयानक हथियारों को मैदान को पाटते हुए बरसाया। बरसाते हुए वे पीछा करने लगे। ३३८०

वम्मिऩड वम्मिऩॆदिर् वन्दुनुम वारुयिर् वरङ्गळ् पिऱवुन्
दम्मिऩॆऩ विऩ्ऩमॊऴि तन्दॆदिर् पॊऴिन्दऩ तडुप्प रियवाम्
वॆम्मिऩॆऩ वॆम्बहऴि वेलैयॆऩ वेयिऩऩव् वॆय्य विऩैयोर्
तम्मिऩ मऩैत्तैयु मुऩैन्दॆदिर् तडुत्तऩर् तऩित्तऩियरो 3381

वम्मिऩ्-आओ; अट वम्मिऩ्-मैं मारूँ तदर्थ आओ; ऍतिर् वन्तु-सीधे आकर; नुमतु अरुमै उयिर्-अपने प्यारे प्राणों; वरङ्कळ्-और वरों; पिऱवुम्-और अन्य सभी को; तम्मिऩ्-दे दो; ऍऩ-यह और; इऩ्ऩ मॊऴि तन्तु-ऐसी बातें कहते हुए; ऍतिर् पॊऴिन्तऩ-सामने से चलाये गये और; तटुप्पु अरिय आम्-दुर्निवार; वॆम् पकऴि-भीषण अस्त्रों को; वॆम् मिऩ् ऍऩ-भयंकर बिजली के समान और; वेलै ऍऩ-समुद्र के समान; एयिऩऩ्-(अस्त्र) छोड़े; अ वॆय्य विऩैयोर्-उन क्रूर-कर्म राक्षसों ने; तऩि तऩि-अलग-अलग; ऍतिर्-समक्ष रहकर; तम् इऩम् अऩैत्तैयुम्-सभी शरसमूह को; मुऩैन्तु तटुत्तऩर्-अधिक प्रयत्न के साथ रोका। ३३८१

श्रीराम ने उनको आमंत्रित किया— आओ; मेरे हाथों मरने के लिए आओ! सीधे आओ और अपने प्यारे प्राणों और वरों को और अन्य जो

भी हैं तुम लोगों के पास उन सभी को दे दो ! यह कहते हुए उन्होंने सीधे जानेवाले दुद्धर्ष और भीषण विद्युत्-से शरों को सागर के समान चलाया। उन क्रूरकर्म राक्षसों ने भी अलग-अलग रहकर बड़े प्रयत्न के साथ उन बाणों को रोका। ३३८१

अक्कणैयै यक्कण मऱुत्तनर् शॆऱुत्तिह लरक्क रडैयप्
पुक्कणैय लुऱ्ऱनर् मऱैत्तनर् पुयऱ्कदिहम् वाळि पॊऴिवार्
तिक्कणै वहुत्तन रॆनच्चल नॆरुक्किनर् शॆरुक्किन् मिहैयाल्
मुक्कणनै युऱ्ऱडि वणङ्गियिमै योरिवै मॊऴिन्द नऱ्हळाल् 3382

इकल् अरक्कर् अटैय–सभी वैरी राक्षसों ने; पुक्कु–घुसकर; अणैयल् उऱ्ऱनर्–मिले; अ कणैयै–उन शरों को; चॆऱुत्तु–रोष दिखाकर; अ कणम्–उसी क्षण में; अऱुत्तनर्–काट देकर; पुयऱ्कु अतिकम्–मेघ से अधिक; वाळि–अस्त्रों को; पॊऴिवार्–बरसाकर; मऱैत्तनर्–(श्रीराम को) ओझल कर दिया; तिक्कु–दिशाओं के लिए; अणै वकुत्तनर्–सेतु (या पुल) बना दिया; ऎन–जैसे; मिकै चॆरुक्किनाल्–अधिक अभिमान के साथ; चॆल नॆरुक्किनर्–बहुत पास से त्रस्त किया; इमैयोर्–देवों ने; मुक्कणनै–त्रिनेत्र के; उऱ्ऱु–पास जाकर; अटि वणङ्कि–चरणों में नमस्कार करके; इवै मॊऴिन्तनर्कळ्–ये वचन कहे। ३३८२

वैरी राक्षसों ने बहुत पास जाकर उन शरों को उसी क्षण काट दिया। फिर वे खुद मेघों से भी अधिक परिमाण में शर बरसाते हुए श्रीराम को ओझल करके घेर गये। दिशाओं पर पुल बाँध दिया हो, ऐसा वे दर्प के साथ घेरकर खड़े हो गये। तब देवों ने त्रिनेत्र शिवजी के पास जाकर उनके चरणों पर नमस्कार किया। फिर वे यों कहने लगे। ३३८२

पडैत्तलैव रुऱ्ऱॊरुवर् मुम्मडि यिरावण नॆनुम्ब डिमैयोर्
किडैत्तन रवर्क्कॊरु कणक्किलै वळैत्तनर् किळर्न्दु लहॆलाम्
अडैत्तनर् तॆऴित्तन रऴित्तनर् तनित्तुळ निराम नवरो
तुडैत्तनरॆम् वॆऱ्ऱियॆन वुऱ्ऱन रिनिच्चॆयल् पणित्ति शुडरोय् 3383

पटै तलैवर् उऱ्ऱु–सेनानायकों में रहे; ऒरुवर्–एक-एक; मुम्मटि इरावणन्–तिगुना रावण; ऎनुम् पटिमैयोर्–कह सकते हैं, ऐसे हैं; किटैत्तनर्–(युद्ध में) आये; अवर्क्कु–उनका; ऒरु कणक्कु इलै–कोई हिसाब नहीं; वळैत्तनर्–घेरकर; किळर्न्तु–उमगकर; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों में; अटैत्तनर्–व्यापकर; तॆऴित्तनर्–डाँटते हुए; अऴित्तनर्–नष्ट करने लगे; इरामन्–श्रीराम; तनित्तु उळन्–अकेला है; अवरो–व (वानर) तो; ऎम् वॆऱ्ऱि तुटैत्तनर्–हमारी विजय को पोंछ दिया; ऎन–मानो यह सोचकर; उऱ्ऱनर्–चुप रहे; चुटरोय्–अनलवर्ण; इनि–अब; चॆयल्–कार्य; पणित्ति– कहने की करें। ३३८३

जो लड़ने आये हैं उनमें एक-एक 'तिगुना रावण' कहने योग्य हैं।

उनकी संख्या का कोई हिसाब नहीं। वे श्रीराम को घेर गये हैं। उमँग कर वे सारे लोकों पर छा गये हैं। डाँटते-डपटते नाश करने लगे हैं। श्रीराम एकाकी रह गये। वानरों ने सोच लिया कि हमारी विजय को राक्षसों ने पोंछ दिया है। इसलिए वे चुप रह गये। अनलवर्ण ! कहिए क्या होना है ? । ३३८३

ऍय्दकणै यॅय्दुवदऩ् मुऩ्बिडै यऱुत्तिवर्ह ळॆऴ् लहमुम्
मॊय्हॊळ्कणै मामुहि लॆऩुम्बडि वळैत्तऩर् मुऩिन्द नर्हळाल्
वैदुहॊलि ऩल्लदु मऱप्पडै कॊडिप्पडै कडक्कुम् वलिताऩ्
शॆय्यतिरु मालिऩॊ डुऩक्कुमरि दॆऩ्ऱऩर् तिहैत्तु विऴुवार् 3384

ऍय्त कणै-(श्रीराम द्वारा) प्रेषित शर; ऍय्तुवतऩ् मुऩ्पु-आ लगे उसके पहले ही; इटै-बीच में ही; अऱुत्तु-उसे काटकर; इवर्कळ्-ये राक्षस; एऴ् उलकमुम्-सातों लोकों पर; मॊय् कॊळ्-मँड़रानेवाले; कणै-एकत्रित; मा मुकिल् ऍऩुम् पटि-बड़े मेघों के समान; वळैत्तऩर्-घेरकर; मुऩिन्तऩर्कळ्-क्रुद्ध हैं; वैतु कॊलिऩ् अल्लतु-शाप देकर मारने के सिवा; मऱम् पटै-वीरतायुक्त; कॊटि पटै-पदातिक वीरों की सेना लेकर; कटक्कुम् वलि-हराने का बलवान कार्य; चॆय्य तिरुमालिऩॊटु-श्रेष्ठ श्रीविष्णु के साथ; उऩक्कुम् अरितु-आप के लिए भी कठिन है; ऍऩ्ऱऩर्-कहकर; तिकैत्तु विऴुवार्-भयातुर हो गिर पड़े। ३३८४

श्रीराम जो शर चलाते हैं, वे आ लगें, इसके पहले ही उन्होंने उन्हें काट दिया है। सातों लोकों को आच्छादित करनेवाले एकत्रित मेघों के समान वे घेरे रहते हैं और बहुत ही रुष्ट रहते हैं ! शाप देकर मारा जाय तभी मरेंगे। नहीं तो वीरों की सहायता उन्हें जीतने का बलापेक्षी कार्य श्रेष्ठ श्रीविष्णु के साथ आपके लिए भी असाध्य है ! यों कहते हुए वे भयभ्रांत होकर गिरने लग गये। ३३८४

अञ्जलिऩि याङ्गवर्ह ळॆत्तऩैव रायिडिऩु मत्त ऩैवरुम्
पञ्जियॆरि युऱ्ऱदॆऩ वॆन्दऴिव रिऩ्दवुरै पण्डु मुळदाल्
नञ्जममिऴ् दत्तैऩऩि वॆऩ्ऱिडिऩु नल्लऱ नडक्कु मदऩै
वञ्जविऩै पॊय्क्करुमम् वॆल्लिऩुमि रामऩैयम् मायर् कडवार् 3385

इति अञ्चल्-अब मत डरो; अवर्कळ्-वे; आङ्कु-वहाँ; ऍत्तऩैवर् आयिटिऩुम्-कितने ही क्यों न हों; अत्तऩैवरुम्-वे सभी; पञ्चि ऍरि उऱ्ऱतु ऍऩ-रुई में आग लगी हो जैसे; वॆन्तु अऴिवर्-जलकर मरेंगे; इन्त उरै-यह कथन; पण्टुम् उळतु-पहले से है; नञ्चम्-विष; अमिऴ्तत्तै-अमृत को; वॆऩ्ऱिटिऩुम्-जीते तो भी; नटक्कुम् नल् अऱम् अतऩै-वर्तमान श्रेष्ठ धर्म को; वञ्चम् विऩै-वंचक कर्म; पॊय् करुमम्-असत्य कार्य; वॆल्लिऩुम्-जीत जाय तो भी; अम् मायर्-वे मायावी राक्षस; इरामऩै-श्रीराम को; कटवार्-जीत नहीं सकेंगे। ३३८५

तब शिवजी ने आश्वासन दिया। देवो ! अब डरना छोड़ दो। वे,

कितने ही क्यों न हों, सभी आग-लगी रूई के समान जलकर मिट जायेंगे। यह बात पहले ही से स्थिर है! चाहे अमृत को विष खूब हरा दे; माया तथा झूठा कार्य चाहे वर्तमान धर्म को परास्त कर दे, पर वे मायावी राक्षस श्रीराम को जीत नहीं सकेंगे। ३३८५

अरक्करुळ रार्शिलरव् वीडण नलादुलहि नावि युडैयार्
इरक्कमुळ दाहिलदु नल्लर मॅळुन्दुवळर् हिन्ऱ दितिनीर्
करक्कमुळे तेडियुळल् हिन्ऱिलिर्ह ळिन्ऱोरु कडुमब हलिले
कुरक्किनमुद नायहनै याळुडैय कोळुळुवै कॉल्लु मिवरै 3386

अ वीडणन् अलातु–उस विभीषण के सिवा; उलकिन्–पृथ्वी में; आवि उटैयार्–जीवंत; अरक्कर्–राक्षसों में; यार् चिलर् उळर्–कौन (जो हैं वे भी) कम हैं; इरक्कम् उळतु आकिन्–दया हो तो; अतु–उससे; नल् अऱम्–अच्छा धर्म; ऍळुन्तु वळर्किन्ऱतु–उठकर बढ़ता है; इनि–अब; नीर्–तुम लोग; करक्क–छिपने के लिए; मुळै तेटि–गुहाएँ खोजते; उळल्किन्ऱिलिर्कळ्–मत फिरो; इन्ऱु–आज; ओरु–एक; कटुम पकलिले–मध्याह्न में; कुरक्किन मुतल् नायकनै–वानरों के राजा को; आळुटैय–जो सेवक के रूप में रखते हैं वे; कोळ्–सबल; उळुवै–व्याघ्र- (श्रीराम); इवरै कॉल्लुम्–इन्हें अन्त कर देंगे। ३३८६

उस विभीषण को छोड़कर जीवंत राक्षसों में कितने रहते हैं? बहुत कम ही रहते हैं। संसार में करुणा रहे तो धर्म बढ़ता है। अब तुम लोगों को छिपने के लिए गुहाओं की खोज में कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा। आज मध्याह्न के अन्दर वानरेंद्र के स्वामी बलवान व्याघ्र श्रीराम उन सबका अंत कर देंगे। ३३८६

ऍन्ऱुपर मन्बहर नान्मुहनु मन्नपॊरु ळेयि शैदलुम्
निन्ऱुनिलै यारिनर्हळ् वानवरु मानवनु नेमि यॅनलाम्
तुन्ऱुनॆडु वाळिमळै मारियिनु मेलन तुरन्दु विरैविन्
कॊन्ऱुकुल माल्वरैहण् मानुदलै मामलैहु वित्त ननरो 3387

ऍन्ऱु–ऐसा; परमन् पकर–परमेश्वर के कहने पर; नान्मुकनुम्–चतुर्मुख के भी; अन्न पॊरुळे–उसी बात से; इचैतलुम्–सम्मत होने पर; वानवरुम्–देव भी; निन्ऱु–स्थिर होकर; निलै आरिनर्कळ्–धीर हुए; मानवनुम्–श्रीराम ने भी; नेमि ऍनलाम्–चक्रायुध-सम भयंकर; तुन्ऱु–घनी; नॆटु वाळि मळै–लम्बी शर-वर्षा; मारियिनुम् मेलन–वर्षा से अधिक; तुरन्तु–छुड़ा के; विरैविन् कॊन्ऱु–शीघ्र हत करके; कुल माल् वरैकळ् मानुम्–बड़ी कुलगिरियों-सदृश; मा तलै मलै–बड़े सिरों के पर्वतों के; कुवित्तनन्–ढेर बना दिये। ३३८७

परमेश्वर ने ऐसा कहा। तब चतुर्मुख ने भी उसी को सही बताया। उससे देव आश्वस्त हो धीर बने। श्रीराम ने चक्रायुध-सम अस्त्रों की,

मेघों से अधिक परिमाण में वर्षा करायी और शीघ्र राक्षसों को निहत करके कुल-गिरियों के-से बड़े सिरों के ढेर लगा दिये। ३३८७

महर मऱिकडलित् वळैयुम् वयनिरुदर्
शिहर मतैयवुडल् शिदऱि इऱुवरुयिर्
पहर वरियपदम् विरव वमरर्पळ
नहर मिडमरुह नवैयर् नलिवुपड 3388

मकरम्–मकर-भरे; मऱि–टकरानेवाली लहरों से भरे; कटलित्–समुद्र के समान; वळैयुम्–(श्रीराम को) घेरे रहनेवाले; वयम्–बलवान; नवैयर् निरुतर्–दोषपूर्ण राक्षसों की; उयिर्–आत्माएँ; पकर अरिय–अवर्ण्य; पतम्–स्वर्ग-पद को; विरव–पहुँचीं; अमरर्–देवों का; पळ नकरम्–प्राचीन नगर में; इटम् अरुक–स्थान नहीं रह गया; चिकरम् अतैय उटल्–(पर्वत-) शिखर-सम शरीर; चितऱि–छिन्न-भिन्न हो; नलिवु पट–संकटग्रस्त हो गये, इस रीति से; इऱुवर्–मिटे। ३३८८

मकरों और प्रत्यावर्तनशील तरंगों से युक्त समुद्र के समान जो दोषपूर्ण राक्षस श्रीराम को घेर गये थे उनकी आत्माएँ अवर्णनीय स्वर्ग में पहुँच गयीं और देवों का प्राचीन नगर ठस भर गया जिससे कि कहीं रिक्त स्थान ही प्राप्त नहीं रहा। उनके पर्वतशिखर-सम शरीर छिन्न-भिन्न हो गये। तड़पकर वे राक्षस मर मिटे। ३३८८

उहळ मिवुळितलै तुमिय वुरुकळल्हळ्
अहळि यऱ्वलिय तलैह ळुडलैवर्
तुहळि नुडल्हळ्विळ वुयिर्हळ् शुररुलहिन्
महळिर् वनमुलैहळ् तळुवि यहमहिळ 3389

उरु कळल्कळ्–सारयुक्त पैरों से; अकळि अऱ–परिखा पटी; तलैकळ् अऱ–सिर-कटे; तलैवर् उटल्कळ्–नायकों के शरीर; तुकळिन् विळ–धूल बनकर गिरे; उयिर्कळ्–उनके जीव; चुरर् उलकिन्–देवलोक की; मकळिर्–स्त्रियों के; वनम् मुलैकळ् तळुवि–सुन्दर स्तनों (छातियों) का आलिंगन करके; अकम् मकिळ–आनंदित-मन हुए; इवुळि–उनके अश्व; तलै तुमिय–सिर के कट जाने से; उकळुम्–तड़पकर गिरते। ३३८९

राक्षसों के ताक़तवर पैरों से परिखा पटी। सबल सिरों से हीन नायकों के शरीर धूल बनकर भूमि पर गिरे। उनके जीवात्माओं ने सुरलोकबालाओं के स्तनों का आलिंगन करके आनंद लूटा। उनके अश्व सिरों के कट जाने से तड़पकर गिरे। ३३८९

मलैयु मऱिकडलुम् वनमु मरुनिलमुम्
उलैवि लमररुऱै युलहु मुयिर्हळोडु

तलैयु मुडलुमिडै तळुव तवळ्हुरुदि
अलैयु मरियदोरु तिशैयु मिलदणुह 3390

मलैयुम्–पर्वतों; मरि कटलुम्–और तीर से टकराती मुड़ आती तरंगों वाले सागरों; वनमुम्–पर्वतों; मरु निलमुम्–खेतों; उलैवु इल–अविनाशी; अमरर् उरै उलकुम्–देवों के वास के लोक में; तलैयुम् उटलुम्–सिरों और शरीरों को; इटै तळुवम्–मध्य में लेकर; तवळ् कुरुति–फैलनेवाली रक्त की; अलैयुम्–लहरें; उयिर्कळोटुम्–और जीव; अरियतु–जहाँ नहीं रहें; ओरु तिचैयुम्–ऐसी एक दिशा; अणुक इलतु–पास जाने योग्य कोई नहीं रही। ३३९०

पर्वतों में, या तीर से मुड़कर टकराती तरंगों वाले सागर में; चाहे वनों में या खेतों की भूमि में; चाहे अमर देवों के लोक में कहीं भी शरीर तथा सिरों को अपने मध्य लिये रहनेवाले रक्त-सागर और जीवों से हीन कोई भी दिशा नहीं रही जहाँ पहुँचा जा सके। ३३९०

इन्नैय शॅरुनिहळु मळवि नॅदिर्पॊरुव
विन्नैय मुडैमुदल्व रॅवरु मुडन्विळिय
अन्नैय पडैनॅळिय वमरर् शॊरिमलर्हळ्
नन्नैय विशैयिनॅळु तुवलै मळैहलिय 3391

इन्नैय–ऐसा; चॅरु निकळुम् अळविन्–युद्ध जब चला तब; ऍतिर् पॊरुत–सामने जो लड़े; विन्नैयम् उटै–षड्यन्त्र-समर्थ; मुतल्वर् ऍवरुम्–सभी नायक; उटन् विळिय–एक साथ मरे; अन्नैय पटै–वैसी सेना; नॅळिय–छटपटायी तो; अमरर् चॊरि–देवों द्वारा बरसाये गये; मलर्कळ्–फूलों की; नन्नैव–कलियों से; विचैयिन् ऍळु–जोर से जो उठे; तुवलै–उन मधुकणों की; मळै–वर्षा; कलिय–(जन्न) बढ़ी। ३३९१

ऐसा युद्ध चला और षड्यंतकारी सभी राक्षससेनापति एक साथ मर गये। उनकी सेना छटपटायी। तब देवों ने इतने फूल बरसा दिये कि कलियों से मधु की वर्षा खूब हुई। ३३९१

इरिय लुरुपडैयै निरुद रिडैविलहि
ऍरिहळ् शॊरियुनॅडु विळिय रिळुदैयर्हळ्
तिरिह तिरिहवॅन वुरुरु तॆळिकुरलर्
करिह ळरिहळ्परि कडिदि नॅदिर्कडव 3392

निरुतर्–राक्षस; इटै विलकि–बीच में अलग जाकर; इरियल् उरु–अस्त-व्यस्त भागनेवाली; पटैयै–सेना को; ऍरिकळ् चॊरियुम्–आग निकालती; नॆटु विळियर्–लम्बी आँखों वाले और; इळुतैयर्कळ्–मूर्खो; तिरिक तिरिक–लौटो, लौटो; ऍन–ऐसा; उरुरु–डाँटनेवाले; तॆळि कुरलर्–कर्कश स्वर वाले (वीरों की सेना); करिकळ्–गजों; अरिकळ्–सिंहों; परि–और अश्वों को; कटितिन्–सत्वर; ऍतिर् कटव–समक्ष चलाते। ३३९२

जो राक्षस वीर अस्त-व्यस्त हो भागे थे वे अब आपस में 'मूर्खो,

लौटो' कहते हुए, आँखों से आग निकालते और डाँटते कर्कश-स्वर वाले बनकर गजों, सिंहों और अश्वों को श्रीराम पर प्रेरित करते हुए (लौट आये)। ३३९२

उलहु शॅविडुपड मळॅह ळुदिरवुयर्
अलहिन् मलैकुलैय वमरर् तलैयदिर
इलहु तॉडुपडैह ळिडियॉ डुरुमनैय
विलहि यदुतिमिरम् वळैयुम् वहैविळैय 3393

उलकु चॅविटु पट–लोक को बहरा बनाकर; मळैकळ्–मेघों को; उतिर–नीचे गिराते; उयर्–ऊँचे; अलकु इल्–अमाप; मलै कुलैय–पर्वतों को अस्थिर करते; अमरर्–देवों के; तलै अतिर–सिरों को कँपाते हुए; इलकु–प्रकाश देनेवाले; तॉटु पटैकळ्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियारों को; इटियॉटु–वज्र के साथ; उरुम् अनैय–बिजली के समान; तिमिरम् वळैयुम् वकै–तिमिरावृत हो, ऐसा; विळैय–कार्य करके; विलकियतु–लौट आयी। ३३९३

वे इतने धूमधाम से लौटे कि लोक बहरा हो गया; मेघ चू पड़े। ऊँचे अपार पर्वत ढह गये। देवों के सिर काँप उठे। जो हथियार हाथ में ले चलाते थे वे बिजली और वज्र के समान लगे। अंधकार घेरता हो, ऐसा वे आकर श्रीराम को घेर गये। ३३९३

अळहि दळहिदॅन वळह नुवहैयॉडु
पळहु मतिदियरै यॅदिर्हॉळ् परिशुपड
विळैवि तॅदिरवदि रॅरिकॉळ् विरिपहळि
मळैहळ् मुरैशॉरिय वमरर् मलर्शॉरिय 3394

अळकन्–सुन्दरमूर्ति; अळकितु अळकितु–सुन्दर है, सुन्दर; ॲन–ऐसा; उवकैयॉटु–आनंद के साथ; पळकुम् अतितियरै–परिचित अतिथियों को; ॲतिर् कॉळ् परिचु–अगवानी करने की-सी रीति; पट–वरत कर; विळैवुटन्–चाव के साथ; ॲतिर अतिर्–अगवानी के लिए शब्द करनेवाले; ॲरि कॉळ्–अग्निमुखी; विरि पकळि–विस्तृत शरों की; मळैकळ्–वर्षाएँ; मुरै चॉरिय–लगातार बरसायीं तो; अमरर्–देवों के; मलर् चॉरिय–फूलों को बरसाते। ३३९४

सुन्दरमूर्ति श्रीराम ने भी विस्तृत रूप से शरों की वर्षा की। वे शर सुन्दर-सुन्दर कहते हुए परिचित अतिथियों के समान उनकी अगवानी में शब्द करते चलनेवाले अग्निमुखी बाण थे। तब देवों ने पुष्प बरसाये। ३३९४

तिनह रनैयणवु कॉडिहळ् तिशैयडैव
शिनवु पॉरुपरिहळ शॅरिव वणहवयर

अऩह तोँडुममरिऩ् मुडुहि यॆदिरवॆऴ्
कऩह वरैपॊरुव कदिर्हॊऴ् मणियिरदम् 3395

तिनकरतं–दिनकर को; अणवु–छूनेवाली; कॊडिकळ्–ध्वजाओं के; तिचं अटैय–दिशाओं में जा पहुँचते; चिनवु पोरु–क्रुद्ध, युद्धरत; परिकळ्–अश्वों के; अणुक चॆरिव–पास आकर लड़ते; कतिर् कॊळ्–छविमय; मणि इरतम्–रत्नजड़ित रथों ने; उयर् अनकतॊटु–उत्कृष्ट अनघ श्रीराम के साथ; अमरिऩ्–युद्ध में; मुटुकि–तेज़ी से; ऍतिर ऍळ्–भिड़ते उठे हुए; कतकम् वरै–कनकगिरियों की; पोरुव–समता की। ३३९५

तब दिनकरस्पर्शी ध्वजाएँ दिशाओं में व्यापीं। क्रुद्ध व युद्धरत अश्व युद्ध करने पास आये। दीप्तिमान व रत्नजड़ित रथ उन कनकगिरियों के समान चढ़ आये जो कि उत्कृष्ट अनघ श्रीराम से भिड़ने शीघ्र उठ आये हों। ३३९५

पाऱु पडुशिऱहु कऴुहु पहऴिपड, नीऱु पडुमिरद निरैयि ऩुडल्दऴुवि
वेऱु पडरपडर विर्वि शुडर्वलैयम्, माऱु पडवुलह निरैह ळऴऱुपड 3396

पाऱु–बाज और; पटु–सुघड़ित; चिऱकु कऴुकु–पक्षों के गीध; पकऴि पट–अस्त्रों के लगने से; नीऱु पटु–चूर हो गिरनेवाले; इरतम् निरैयिऩ्–रथ पंक्तियों में रहे; उटल् तऴुवि–शरीरों को लेकर; वेऱु पटर् पटर–दूसरी दिशा में जाने; विरवि–लगे; चुटर् वलैयम्–सूर्य का प्रकाशवलय; माऱु पट–बदला; उलकम् निरैकळ्–लोकपंक्तियाँ; अळऱु पट–कीच बन गयीं। (ऐसा)। ३३९६

श्रीराम-बाणों से रथों की पंक्तियाँ चूर हो जाती थीं। बाज़ और सुघड़ पंखोंवाले गीध उनसे राक्षस-शरीरों को ले उड़ जाते थे। उनकी तेज़ गति के कारण सूर्य का प्रकाशमंडल निष्प्रभ हो गया। लोकपंक्तियाँ कीच बन गयीं। ३३९६

अरुहु कडल्तिरिय वलहिऩ् मलैकुलैय, उरुहु शुडर्हऴिडै तिरिय वुरऩुडैय
इरुहै यॊरुकळिऱु तिरिय विडुहुयवर्, तिरिहै यॆऩवुलहु मुऴ्दु मुऱैतिरिय 3397

इरु कै–दो हाथों के; ऒरु–अनोखे; उरन् उटैय–सशक्त; कळिऱु–गज (श्रीराम) के; तिरिय–घूमने से; अरुकु कटल्–पास रहा सागर; तिरिय–विलोडित हुआ; अलकु इल्–अनगिनत; मलै–पर्वत; कुलैय–ढहे; उरुकु–पिघलानेवाले; इरु चुटर्कळ्–दो प्रकाशपुंज; इटै तिरिय–आकाश में मार्ग बदले; इटु कुयवर्–मिट्टी के काम करनेवाले कुम्हारों के; तिरिकै ऍन–चक्र के समान; उलकु मुऴुतुम्–सारा लोक; मुऱै तिरिय–क्रम बदला, ऐसा। ३३९७

अनोखे द्विहस्त सबल गज (श्रीराम) के घूमने से पास का समुद्र क्षुब्ध हो गया। अनगिनत पर्वत ढह गये। पिघलानेवाले दो तेजपुंज स्थान बदल गये। कुम्हार के चाक के समान सारा लोक विचलित हुआ। ३३९७

शिवनु मयनुमॆळ्ळु तिहिरि यमररुपदि, यवनु ममररुकुल मॆवरु मुनिवरोडु
कवत मुरुकरण मिडुवर् कळ्ळिनमुम्, नमनुम् वरिशिलैयु मऱनु नडलविल 3398

कळ्ळु इननुम्–भूतगण भी; नमनुम्–और यम; वरि चिलैयुम्–(श्रीराम के) सबंध धनु और; अऱनुम्–धर्मदेवता के; नटम् नविल–आनन्दनृत्य करते; चिवनुम् अयनुम्–शिव और ब्रह्मा और; ऍळ–युद्धसन्नद्ध; तिकिरि–चक्र वाले; अमरर् पति–देवपति; अवनुम्–विष्णु और; अमरर् कुलम् ऍवरुम्–सारे देवगण; मुनिवरोडु–मुनियों के साथ; कवनम् उऱु–(आनंदाधिक्य से) सत्वर; करणम् इटुवर्–सिर औंधा भूमि पर रखकर शरीर को चक्राकार करके पीठ की तरफ़ घुमाने और खड़ा हो जाने की क्रिया करने लगे। ३३६८

तब भूतगण, यम, श्रीराम का सबन्ध धनु और धर्मदेवता— इन सबने आनंदनृत्य किया। शिव, अज, चक्रधर देवदेव विष्णु, सभी देवगण और मुनि आनंदाधिक्य से जल्दी-जल्दी 'करण' करने लगे। ३३९८

तेवर् तिरिबुवन निलैयर् शॆरुविदनै, एव रऱिवुरुव रिरुदि पुदलऱिविन्
मूवर् तलैहळ्पॊदि रॆऱिव ररमुदलव, पूवै निऱववॆन वेद मुऱैपुहळ् 3399

तिरिपुवनम् निलैयर्–तीनों भुवनों में वास करनेवाले; तेवर्–देवों में; यावर्–कौन; चॆरु इतनै–इस युद्ध का; इऱुति–अंत (क्या होगा, यह); अऱिवु उऱुवर्–जान सकते; मुतल् अऱिविन् मूवर्–आदि ज्ञेय तीन; तलैकळ् पॊतिर् ऍऱिवर्–सिर हिला देते; अऱम् मुतलव–धर्म के नाथ; पुवै निऱव–अतसि-पुष्पवर्ण; ऍन–ऐसा; वेतम् मुऱै पुकळ्–वेदों ने यथाक्रम स्तुति की (ऐसा)। ३३६६

वेदपुरुष ने स्तुति की! हे धर्म के आदि आश्रय! अतसीवर्ण! तीनों भुवनों में रहनेवाले देवों में कौन ही यह जाने कि इस युद्ध का अंत कब होगा, क्या होगा? श्रेष्ठ ज्ञानी त्रिदेव भी सिर हिला देते हैं!। ३३९९

ऎय्यु मोरुपहळि येळु कडलुमिड, वॆय्य कळिऱुपरि याळो डिरदम्विळ
ऒय्य वॊरुहदियि नोड वुणरमरर्, कय्ह ळॆनववुणर् काल्हळ् कदिहुलैव 3400

ऎय्युम्–(श्रीराम से) प्रेषित; ओरु पकळि–अनुपम अस्त्र से; एळ् कटलुम्–सातों समुद्रों में; इटु–अलंकृत; वॆय्य कळिऱु–भीषण हाथी; परि–अश्व; आळोटु इरतम्–वीरों के साथ रथ की चतुरंगिनी सेना; वीळ–जा गिरी; ऒय्य–वेग के साथ; ओरु कतियिन्–एक गति में; ओटु अवुणर्–जो दौड़े उन दानवों और; अमरर्–देवों के; कैकळ् ऍन–हाथों के समान; अवुणर् काल्कळ्–दानवों के पैर; कति कुलैव–क्षीणगति हुए। ३४०

श्रीराम-प्रेरित एक शर अलंकृत व भीषण गजों, अश्वों, वीरों और रथों की चतुरंगिनी सेना को सातों समुद्रों में गिरा देता! राक्षसों के पैर उन देवों और दानवों के हाथों के समान क्षीणबल पड़ गये जो एक तेज़ गति के साथ (क्षीरसागर मथने) दौड़े थे। ३४००

अण्णल् विडुपहळि यानै यिरदमयल्, पण्णु पुरविपडै वीरर् तॊहुपहुदि
पुण्णि नीडकुऱिहळ् पळलियॆन विरैविन, ... 3401

अण्णल्–महिमामय श्रीराम से; विट्टु पकळि–छोड़े गये शर; अयल्–पास में रहे; यानै–गज; इरतम्–रथ; पण्णु पुरवि–कोतल घोड़े; पटै वीरर्–पदातिक वीर; तोकु पकुति–ये जहाँ रहे उन भागों में; पुण्णितोट्टु–व्रणों के साथ; कुरिकळ्–दाग़; पुळ्ळि ॲत–बिंदियों के समान दिखे; विरैविन् ॲण्णुवन अतैय–शीघ्र गिनते से; ॲल्लै इल–अपार संख्या के; नुळैव–घुसे। ३४०१

महिमावान श्रीराम के शरों के लगने से पास रहे गजों, रथों, सज्जित घोड़ों और पदाति वीरों पर व्रण और दाग़ लगे थे। वे व्रण और दाग़ गिनते वक़्त स्मरण के लिए लगायी गयी बिंदियों के समान लगे और असंख्यक शर जल्दी-जल्दी गिनते हुए चलते जैसे लगे। ३४०१

शुरुक्कमुऱ्ऱु ऱदुपडै शुरुक्कल् तालिनिक्
करक्कुमुऱ्ऱु ऱोरुपुऱत् तॅऩ्ऩुङ् गण्णिताल्
अरक्करुक् कत्तुरुशॅल् वरिय दाम्वहै
शरक्कोंडु नॅडुमदिल् शमैत्तिट् टानरो 3402

पटै–सेना; चुरुक्कम् उऱ्ऱतु–घट गयी; चुरुक्कत्ताल्–घटने से; इऩि–अब आगे; ओरु पुऱत्तु–एक तरफ़; उऱ्ऱु–जाकर; करक्कुम्–छिपेंगे; ॲऩ्ऩुम् कण्णिताल्–ऐसे विचार से; अत्तु–तब; अरक्करुक्कु–राक्षसों को; चॅलवु अरियतु आम् वकै–जाना कठिन हो जाय ऐसा; चरम् कोंटु–अस्त्रों से; नॅटु मतिल्–लम्बी चहारदीवारी; चमैत्तिट्टान्–रच ली। ३४०२

राक्षस-सेना घट गयी। "इस तरह घटती रहे तो राक्षस वीर एक ओर जाकर छिप जायँगे" यह सोचकर श्रीराम ने शरों की एक लम्बी चहारदीवारी रच ली ताकि उनका निकल जाना कठिन हो जाय। ३४०२

मालियै मालिय वाऩै माल्वरै
पोलुयर् कयिडनै मवुवैप् पोऩ्ऱुळार्
शालिहै याक्कैयर् तणिप्पिल् वॅञ्जर
वेलियैक् कडन्दिल रुलहै वॅऩ्ऱुळार् 3303

उलकै वॅऩ्ऱुळार्–लोकविजयी; मालियै–माली और; मालियवाऩै–माल्यवान के और; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उयर्–ऊँचे; कयिटनै–कैटभ के; मतुवै–मधु के; पोऩ्ऱु उळार्–सदृश रहनेवाले; चालिकै याक्कैयर्–कवचरक्षित शरीर वाले; तणिप्पु इल–निरंतर चलनेवाले; वॅम् चरम्–भीषण शरों की; वेलियै–चहारदीवारी को; कटन्तिलर्–लाँघ नहीं सके। ३ ०३

लोकविजयी और माली, माल्यवान, पर्वतोन्नत कैटभ, मधु आदि राक्षसों के सदृश और कवचरक्षित शरीरवाले वे निरंतर चलते बाणों की बनी उस प्राचीर को लाँघ नहीं जा सके। ३४०३

माण्डवर् माण्डतर् मऱ्ऱु ळोरॅलाम्
मीण्डत रीरुतिशै येळ वेलैयुम्

मूण्डरु　　मुरुक्किय　　वूळिक्　　कालत्तिल्
तूण्डुरु　　शुडर्शुडच्　　चुरुङ्गित्　　तोक्कपोल् 3404

माण्टवर् माण्डतर्–जो मरे सो मरे; मरुळोर् ॲलाम्–बचे जो रहे वे सभी; तूण्टुरु–उकसाये जाकर; चुटर्–प्रकाशमान बड़वाग्नि; मूणटु–जल उठकर; अरु–बिलकुल; मुरुक्किय–जब नाश करती है; ऊळि कालत्तिल्–उस युगांत के समय में; चुट–जलाने से; एळु वेलैयुम्–सातों समुद्र; चुरुङ्कि–घटकर; तोक्क पोल्–छोटे हो मिल जायें जैसे; ऑरु तिचै–एक दिशा में; मीण्टतर्–लौट चले। ३४०४

जो मरे वे मरे। पर जो बचे वे भी युगांत की सर्वनाशक बड़वाग्निदग्ध सप्तसमुद्र जैसे सूखकर छोटे बनते हैं, वैसे घटकर एक ओर जाने लगे। ३४०४

पुरञ्जुडु　　कडवुळुम्　　बुळ्ळित्　　पाहत्तुम्
अरञ्जुडु　　कुलिशवे　　लमरर्　　वेन्दनुम्
उरञ्जुडु　　हिर्किल　　रोरुव　　नामुडै
वरञ्जुडुम्　　वलिशुडुम्　　वाळु　　नाळ्शुडुम् 3405

पुरम् चुटु कटवुळुम्–त्रिपुरदाहक परमेश्वर और; पुळ्ळित् पाकत्तुम्–गरुड़वाहन बिष्णु; अरम् चुटु–तपाकर रेती से पैनाये गये; कुलिचम् वेल्–कुलिश भाला; अमर् अमरर् वेन्ततुम्–(रखनेवाला) देवेंद्र; उरम् चुटुकिर्किलर्–हमारा बल तोड़ नहीं सके; ऑरुवन्–एकाकी; नाम् उटै–हमारे; बरम्–वर; चुटुम्–मिटाता है; वलि चुटुम्–बल का नाश करता है; वाळ् नाळ् चुटुम्–आयु का अंत कर देता है। ३४०५

(राक्षसों ने आपस में कहा—) त्रिपुरदाहक, गरुड़वाहन, रेती से तेज़ किये हुए कुलिश के स्वामी देवेंद्र आदि भी हमारा बल नहीं तोड़ सकते थे। पर अब यह एकाकी राम, लगता है, हमारे वर, बल और आयु —इन सबका नाश कर देगा। ३४०५

आयिर वॆळ्ळमुण् डॊरुव राळिशूळ्, मायिरु ञालत्तै मरिक्कुम् वन्मैयोर्
एयित पॆरुम्बडै यिदनै योर्विलाल्, एयॆन्नु मात्तिरत् तॆय्दु कॊन्ऱनन् 3406

ऑरुवर्–एक ही; आळि चूळ्–सागरावृत; मा इरु ञालत्तै–बड़े विशाल संसार को; मरिक्कुम्–रोक सकनेवाली; वन्मैयोर्–शक्ति से संपन्न है ऐसे; आयिरम् वॆळ्ळम् उण्टु–हजार 'वॆळ्ळम्' हैं; एयित–ऐसों से युक्त; पॆरुम् पटै इततै–बड़ी सेना इसे; ओर् विलाल्–एक चाप लेकर; ए ऎन्नुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की देर में; ऎय्तु कॊन्ऱनन्–शर चलाकर निहत करा दिया (राम ने)। ३४०६

हमारी सेना में हज़ार 'वॆळ्ळम्' ऐसे वीर थे जिनमें एक-एक समुद्रावृत विपुला पृथ्वी को रोककर युद्ध कर सकता था। ऐसे वीरों से युक्त इस

सेना को राम ने एक ही चाप की सहायता से 'ए' कहने की देर में नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। ३४०६

इडैपडुम् बडादन् विमैप्पि लोर्पडै
पुडैपड वलङ्गॊडु विलङ्गिप् पोहुमाल्
पडैपडु कोडियर् पहळि यारुपळिक्
कडैपडु मरक्कर्दम् बिऱवि कट्टमाल् 3407

इमैप्पु इलोर्–अपलक देवों की; पटै–सेना भी; इटै पटुम्–(इस राक्षस-सेना के सामने) हारकर मर जाती; पटातन–जो नहीं मरती; पुटै पट–पिट जाती; वलम् कोंटु–(राक्षस-सेना) विजय पाकर; विलङ्कि पोकुम्–हट जाती; पटै पटु–ऐसी सेना में लगे रहनेवाले; कोटियोर्–करोड़ों वीर; पकळियाल्–राम के एक ही शर से; कटै पटुम् पळि–बहुत ही निकृष्ट अपमान पाकर; अरक्कर् तम् पिऱवि–राक्षस-जन्म; कट्टम्–कष्टदायक हो गया। ३४०७

अपलक देवों की सेना भी हमारी सेना के हाथ मर जाती। नहीं मरती तो भी खूब पिट जाती और हमारी सेना विजय पाकर हट जाती। ऐसी इस सेना के करोड़ वीर राम के शर से नष्ट हो जायँ —यह बहुत ही निकृष्ट अपमान जिसे मिल गया है, वह राक्षस-जन्म अवश्य कष्टदायक है! । ३४०७

पण्डुल हुय्त्तव नोडुम् बण्णमै
कुण्डैयिन् पाहनुम् बिऱरुङ् गूडिनार्
अण्डर्हळ् विशुम्बिनिन् ऱार्क्किन् ऱारुळैक्
कण्डिल मिवनॊडु मायक् कळ्वनाल् 3408

पण्टु–पहले; उलकु उय्त्तवनोटुम्–लोक की सृष्टि जिन्होंने की उन (ब्रह्मा) के साथ; पण् अमै–ज़ीन से युक्त; कुण्टैयिन् पाकनुम्–ऋषभ चलानेवाले; पिऱरुम्–और अन्य; कूटिनार्–मिले और; विसुम्पिन् निन्ऱु–आकाश में खड़े होकर; आर्क्किन्ऱार्–आनन्दारव जो करते हैं; अण्टर्कळ् उळै–उन देवों के मध्य; कण्टिलम्–(श्रीविष्णु को) नहीं देखते; इवन्–यह; नॆटु मायम्–वही बड़ा मायावी; कळ्वन्–चोर होगा। ३४०८

पुरातन लोकसर्जक के साथ ज़ीन-कसे ऋषभ पर आरूढ़ शिव और अन्य देवता आकाश में एकत्रित रहकर आनन्द का कोलाहल मचा रहे हैं। पर उनमें हम (विष्णु को) नहीं देख पाते। अतः यही राम वह बड़ा मायावी चोर विष्णु होगा। ३४०८

कोत्ऱन निनियोरु कोडि कोडिमेर्
ऱनुऱैनिऱ् पवुममेर् ऱाहिल् वॆळ्ळमाय्

निऩ्ऱदु निऩ्ऱिऩि निऩैव वॆऩ्पिऱ
ऑऩ्ऱॆऩ वुणरॆऩ वऩ्ऩि योदिऩाऩ् 3409

इऩि–अब; ऑरु कोटि कोटि मेऱ्ऱु–एक करोड़ करोड़ से अधिक; अऩ्ऱु ऎऩिल्–नहीं तो; पतुमम् मेऱ्ऱु–पद्म से अधिक; कॊऩ्ऱऩऩ्–मारा है (इसने); आकिल्–इसलिए; वॆळ्ळमाय्–'वॆळ्ळम्' की संख्या में; निऩ्ऱतु–जो रही; पिऱ–अन्य किसी को; ऑऩ्ऱु ऎऩ–कोई चीज; इऩि निऩ्ऱु–अब खड़े होकर; निऩैवतु–मानना; ऎऩ्–क्या अर्थ (रखेगा); उणर्क–कहो; ऎऩ–ऐसा; वऩ्ऩि–वह्नि; ओतिऩाऩ्–बोला। ३४०९

अब एक करोड़ के ऊपर, न, पद्म के अधिक लोगों को श्रीराम ने मार दिया है ! इसलिए हमारी सेना केवल वॆळ्ळमों की संख्या में आकर रह गयी है। अब फिर हमें कोई चीज़ मानने का क्या क्या अर्थ ? विचार करो। (यों कहनेवाले राक्षसों का) वह्नि ने उत्तर दिया। ३४०९

विऴित्तुमो विरावणऩ् मुहत्तु मीण्डियाम्
पऴित्तुमो नम्मैनाम् बडव दञ्जिऩाल्
अऴित्तुमोर् पिऱप्पुऱा नॆऱिशॆऩ् ऱुण्मयाम्
कऴित्तुमिव् वाक्कैयैप् पुहऴ्क् कण्णुऱ 3410

नाम् पटुवतु अञ्चिऩाल्–हम मरने से डरेंगे तो; याम्–हम; मीण्टु–लौट जाकर; इरावणऩ् मुकत्तु–रावण के मुख पर; विऴित्तुमो–दृष्टि डाल सकेंगे क्या; नम्मै नाम्–हम अपनी; पऴित्तुमो–निंदा करते रहें क्या; पुकऴ्क् कण् उऱ–यश देखें; अऴित्तुम्–अपने को मरवाकर भी; ओर् पिऱप्पु उऱा–दूसरा जन्म न लें, ऐसा; नॆऱि–मार्ग; याम् चॆऩ्ऱु चेर–हम जा पहुँचें; इव् याक्कैयै–(तदर्थ) इस शरीर को; कऴित्तुम्–त्याग दें। ३४१०

मरने से डरकर हम रावण को मुँह दिखा सकेंगे क्या ? हम अपनी ही निंदा करवा लें ? नहीं। यशार्जनार्थ हम अपना नाश कराके ही सही पुनर्जन्म न हो, ऐसा मार्ग चुनें और अपने शरीर की बलि दे दें। ३४१०

इडुक्किऩिप् पॆयर्न्दुऱै यॆण्णु वेमॆऩिऩ्
अडुत्तकूर् वाळियि ऩरण नीङ्गलोम्
अडुत्तॊरु मुहत्तिऩा लॆय्दि यामिऩिक्
कॊडुत्तुनम् मुयिरॆऩ वॊरुमै कूऱिऩाऩ् 3411

इ इटुक्किऩ्–इस नाजुक हालत में; पॆयर्न्तु उऱै–हटकर रहने की बात; ऎण्णुवेम् ऎऩिऩ्–सोचें तो; अटुत्त–पास रहती; कूर् वाळियिऩ्–तीक्ष्ण शरों की; अरणम्–चहारदीवारी से बाहर; नीङ्कलोम्–नहीं जा सकेंगे; याम् इऩि–हम अभी ही सही; ओरु मुकत्तिऩाल् ऎय्ति–एक साथ जाकर; अटुत्तु–युद्ध आरम्भ करके; नम् उयिर् कॊटुत्तुम्–अपने प्राणों की बलि दे दें। ३४११

इस नाजुक स्थिति से बचकर अलग जा रहने की बात सोचें तो वह

भी साध्य नहीं है, क्योंकि हम तीक्ष्ण शरों की बनी चहारदीवारी से बाहर न जा पायेंगे। इसलिए एक साथ युद्ध आरम्भ करके प्राणों की बलि दे दें। वह्नि ने निश्चित एक बात कही। ३४११

इळक्करु नॆडुवरै यीर्क्कु माऱॆलाम्
अळक्करिऱ् पायन्दॆऩप् पदङ्ग मारळल्
विळक्किऩिल् वीऴ्न्दॆऩ विदिहॊ डुन्दलाल्
वळैत्तिरैत् तडर्त्तऩर् मलैयिऩ् मेऩियार् 3412

इळक्क अरु–कठोर; नॆटु वरै–लम्बे पर्वत को; ईर्क्कुम्–खींच ले जानेवाली; आऱु ऎलाम्–सभी नदियाँ; अळक्करिल् पायन्तु ॲऩ–समुद्र में जा गिरी हों ऐसे; पतङ्कम्–पतंग; आर् अऴल्–अच्छी ज्वाला से युक्त; विळक्किऩिल् वीऴ्न्तु ॲऩ–दीप में गिरे जैसे; विति कॊट्टु उन्तलाल्–विधि के उकसाने से; मलैयिऩ् मेऩियार्–पर्वत (या मेघ) के समान आकार वाले या रंग वाले; वळैत्तु–घेरकर; इरैत्तु–शब्द करते हुए; अटर्त्तऩर्–आक्रमण करने लगे। ३४१२

कठोर पर्वतों को भी खींच ले जानेवाली नदियाँ जैसे समुद्र में जा मिलती हैं; पतंग जैसे ज्वालायुक्त दीप में गिरते हैं, वैसे ही विधि के उकसाने से पर्वतोपम (या मेघसदृश) शरीरी वे राक्षस हो-हल्ला मचाते हुए घेरकर लड़ने लगे। ३४१२

मऴुवॆऴुन् दण्डुकोल् वलयम् नाञ्जिल्वाळ्
ॲऴुवयिऱ् कुन्दवे लीट्टि तोमरम्
कऴुविहऱ् कप्पण मुदल कैप्पडै
तॊऴुविऩिऱ् पुलियऩा नुडलिऱ् रूविऩार् 3413

मऴुवम्–परशु; ॲऴुम्–प्रयोग में आनेवाले; तण्टु–दण्ड; कोल्–और शर; वलयम्–वलय; नाञ्चिल्–हल; वाळ्–तलवार; ॲऴु–'ॲऴु' नामक हथियार; अयिल्–तीक्ष्ण; कुन्तम्–कुंत; वेल्–'वेल्'; ईट्टि–प्रास; तोमरम्–तोमर; कऴु–'कऴु' नामक हथियार; इकल्–कठोर; कप्पणम्–काँटेदार गदा; मुतल–आदि; कै पटै–हथियारों को; तॊऴु विऩिल्–बाड़े के अंदर; पुलि अऩाऩ्–व्याघ्र-सम श्रीराम के; उटलिल्–शरीर पर; तूविऩार्–बरसाये। ३४१३

बाड़े में रहे व्याघ्र के जैसे श्रीराम पर उन लोगों ने परशु, युद्धयोग्य दण्ड, बाण, वलय, हल, तलवार, ॲऴु, तीक्ष्ण कुंत, 'वेल्', प्रास, तोमर, 'कऴु', काँटेदार गदा आदि हथियारों को अधिकता से फेंका। ३४१३

कान्दरुप् पम्मॆऩ्तुङ् गडवुण् माप्पडै
वेन्दरुक् करशऩुम् विल्लि नूक्किऩाऩ्
पान्दळुक् करशॊऩप् पऱवैक् केऱ्ऱप्
[illegible] [illegible] पतैय पोरक्कणै 3414

कान्तरुप्पम् ॲनुम्–गांधर्व नाम के; कटवुळ् मा पटै–दिव्य महान अस्त्र; वेन्तरुक्कु अरचतुम्–राजाओं के राजा ने भी; विल्लिन् ऊक्कितान्–धनु से छोड़ा; पोर् नॅरुप्पु अनैय–युद्धाग्नि-सम; कणै–वह शर; पान्तळुक्कु अरचु ॲन–सर्प-राज के समान; परवैक्कु एऱु ॲनवुम्–पक्षीराज (गरुड़) के समान; पोयतु–गया और; उरुत्ततु–क्रुद्ध हुआ। ३४१४

तब राजाधिराज श्रीराम ने गांधर्व नाम के महान व दिव्य अस्त्र को धनु से निकाला। युद्धाग्नि के समान वह शर सर्पराज आदिशेष (के समान फूत्कार के साथ) और पक्षीराज गरुड़ के समान (तेज़ी से) निकल चला। वह बड़ा क्रोधी (भीषण) बना रहा। ३४१४

मून्ऱुकण् णमैन्दन मुहमैन् दुळ्ळन, आन्ऱमॅय् तळलन पुनलु माडुव
वान्तॊड निमिर्वन वाळि मामळै, तोन्ऱिन पुरञ्जुडु मॊरुवन् तोऱ्ऱत 3415

मून्ऱु कण् अमैन्तन–तीन नेत्रों से युक्त; मुकम् ऐन्तु उळ्ळन–और पाँच मुखों वाले; आन्ऱ मॅय्–ऊँचे शरीर जिनके; तळल् अन–अनल-सम थे; पुनलुम् आटुव–जल में गोते लगानेवाले; वान् तॊट–आकाश को छूते; निमिर्वन–ऊँचे बने; वाळि मा मळै–उस शर से निकले वर्षा-समान शर; पुरम् चुटुम् ऑरुवन्–त्रिपुरदाहक एक ईश्वर के-से; तोऱ्ऱत–दृश्य के साथ; तोन्ऱिन–दिखे। ३४१५

उससे कितने शर निकले ! त्रिनेत्र, पंचमुखी, अनलाकार, जलमग्न, गगनस्पर्शी —उन शरों का विपुल समूह बना और वे त्रिपुरदाहक अनुपम शिव के समान दृश्यमान हो चले। ३४१५

ऐयिरु कोडिय रक्कर् वेन्दर्हळ्, मॊय्वलि वीरर्ह ळॊळिय मुऱ्ऱुऱ
ॲय्यॅन् मात्तिरत् तविन्द वॅन्बराल्, शॅय्दवत् तिरावणन् मूलच् चेनैये 3416

ऐयिरु कोटियर्–दस करोड़ के; अरक्कर् वेन्तर्कळ्–राक्षसराजा; मॊय्वलि–तगड़े शरीर वाले; वीरर्कळ्–वीर; मुऱ्ऱुऱ ऑळिय–बिलकुल मिट जायें ऐसा; चॅय्तवत्तु–पूर्वकृत तपस्या वाले; इरावणन् मूलम् चेनै–रावण के मूलबल की सेना; ॲ ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–'ॲ' कहने की देरी में; अविन्ततु–खाक में मिल गयी; ॲन्पर्–कहते हैं। ३४१६

दस करोड़ राक्षसराजा, जो अतिशय तगड़े वीर थे, 'ॲ' कहने की देर में निश्शेष समाप्त हो गये। वे रावण के मूलबल के वीर थे, जिसे रावण ने तपस्या करके प्राप्त किया था। ३४१६

माप्पॅरुन् दीवुह ळेळु मादिरम्, पाप्परुम् बादलत् तुळ्ळुम् बल्वहैक्
काप्परु मलैहळुम् बिऱवुङ् गाप्पवर्, याप्पुऱु कादल रिराव णर्कवर् 3417

मा पॅरु–बहुत बड़े; तीवुकळ् एळुम्–सातों द्वीप; मातिरम्–(आठों) दिशाओं में; पाप्पु–नागों के; अरु–अपूर्व; पातलत्तु उळ्ळुम्–पाताल में; पल् वकै–विविध; काप्पु अरु–रक्षित करने में कठिन; मलैकळुम्–पर्वतों में; ...

स्थानों में; काप्पवर्–रक्षण-कार्य में लगे; इरावणऱ्कु–रावण के; यापपु उरु–सुदृढ़; कातलर्–भक्त हैं; अवर्–वे। ३४१७

फिर और वीर आये। वे विपुल सप्तद्वीप, आठों दिशाओं, नागलोक, पाताल और अरक्षित पर्वतों और अन्य प्रदेशों से आये। वे रावण पर अकाट्य प्रेम रखनेवाले थे। ३४१७

मात्तड मेरुवै वळैन्द वाऩ्शुडर्, कोत्तहऩ् मार्बिडै यणियुङ् गॉळ्हैयार्
पूत्तवि शुहऩ्दवऩ् पुहऩ्ऱ पॉय्यरु, नात्तळुम् बेड्रिय वरत्तर् नण्णिऩार् 3418

मा तट मेरुवै–बहुत विशाल मेरु को; वळैन्त–घूम आनेवाले; वाऩ् चुटर्–दो बड़े तेजपुंजों को; कोत्तु–गूँथकर; अकल् मार्पिटै–विशाल वक्षःस्थल में; अणियुम् कॉळ्कैयार्–पहनने की प्रकृतिवाले; पू तविचु–कमल के आसन के; उकन्तवऩ्–प्रेमी ब्रह्मा के; पुकऩ्ऱ–कहे हुए; पॉय् अरु–जो झूठे नहीं हो सकते ऐसे और; मा तळुम्पु एऱिय–मन्त्रजाप से जीभ में गट्ठे पड़ गये, ऐसा जपकर प्राप्त; वरत्तर्–वरों वाले; नण्णिऩार्–आये। ३४१८

महामेरु की परिक्रमा करनेवाले दोनों तेजपुंजों, सूर्य और चन्द्र को गूँथकर विशाल वक्ष पर पहनने के स्वभाव वाले थे वे। मंत्र का जप ऐसा करके कि जिह्वा में घट्ठा पड़ जाय, ब्रह्मा से उन्होंने बड़े-बड़े वर प्राप्त किये थे। वे आये। ३४१८

नम्मुळीण् डॉरुवऩै वॅल्लु नऩ्ऱॅऩिऩ्, वॅम्मुऩै यिरावणऩ् तऩैयुम् वॅल्लुमाल्
इम्मॅऩ वुडऩॅडुत् तॅळुन्दु शेरुमो, शॅम्मैयिल् तऩित्तऩिच् चॅय्दु मोशॅरु 3419

ईण्टु–अब; नम्मुळ्–हममें; ऑरुवऩै–एक को; नऩ्कु वॅल्लुम् ऎऩिऩ्–खूब जीतेगा तो; वॅम् मुऩै–दारुण युद्ध-भूमि में; इरावणऩ् तऩैयुम्–रावण को भी; वॅल्लुम्–जीतेगा; इम्मॅऩ–'इम्' कहने की देर में; उटऩ् ऎळुन्तु–एक साथ उठकर; ऎट्टुत्तु चेरुमो–लड़ने जायँ क्या; चॅम्मैयिल्–योग्य रीति से; तऩि तऩि–एक-एक जाकर; चॅरु चॅय्तुमो–लड़ें क्या (पूछा उन लोगों ने वह्नि से)। ३४१९

उन्होंने वह्नि से पूछा कि हममें अब एक को राम जीते तो वह भयंकर युद्धभूमि में रावण को भी जीत लेगा। 'इम्' कहने की देरी में हम सब जाकर लड़ें? या उचित रीति से एक-एक करके लड़ें?। ३४१९

ऎल्लो मॅल्लो मिऩ्ऱु वळैन्दिऩ् नॅडियोऩै
वल्ले वल्ल पोर्वलि कॉण्डु मलैयोमेल्
वॅल्लोम् वॅल्लो मॅऩ्ऱऩऩ् वऩ्ऩि मिडलोरुम्
तॉल्लोऩ् शॊल्ले नऩ्ऱॆऩ वः(ह्)दे तुणिवुऱ्ऱार् 3420

ऎल्लोम्–सभी; ऎल्लोम्–सारे; इऩ्ऱु वळैन्तु–आज घेरकर; इ नॅटियोऩै–इस लम्बोतरे को; वल्ले–शीघ्र; वल्ल–कठोर; पोर् वलि कॉण्टु–युद्ध-बल से; मलैयोमेल्–नहीं लड़ेंगे तो; वॅल्लोम् वॅल्लोम्–नहीं जीतेंगे, नहीं जीतेंगे; ऎऩ्ऱऩऩ् वऩ्ऩि–

कहा वह्नि ने; मिटलोरुम्–बलवान राक्षसों ने भी; तॊल्लोन् चॊल्ले–वृद्ध का कथन हो; नन्ऱु–अच्छा है; ॲन–कहकर; अ.'.ते तुणिवुर्रार्–वही निश्चय किया। ३४२०

वह्नि ने कहा कि अगर हम सभी एक साथ मिलकर इस लंबोतरे को घेरकर अपना सारा युद्ध-बल लगाकर आक्रमण नहीं करेंगे, तो हम नहीं जीतेंगे, नहीं जीतेंगे। सबने सम्मत होकर कहा कि इस वृद्ध का कहना ही ठीक है! और उसी के अनुसार करने का निश्चय कर लिया। ३४२०

अन्नार् तामु मार्हलि येऴु मॆन्नवार्त्तार्
मिन्नार् वान मिर्ऱुरु मॆन्ऱे विळिशङ्गम्
कॊन्ने यूदित् तोळ्पुडै कॊट्टिक् कॊडुशार्न्दार्
ॲन्नाम् वैय मॆन्नबडु मालित् तिशैयेताम् 3421

अन्नार् तामुम्–उन्होंने भी; आर् कलि एऴुम् ॲन–सातों समुद्रों के समान; आर्त्तार्–नर्दन किया; मिन् आर् वानम्–बिजली-सहित आकाश; इर्रु उरुम्–फटकर गिरेगा; ॲन्ऱे–ऐसा; विळि चङ्कम्–शब्द करनेवाले शंख को; कॊन्ने ऊति–भय से भरते हुए फूँककर; तोळ् पुटै कॊट्टि–कंधों को ठोंककर; चार्न्तार्–आ पहुँचे; वैयम् ॲन् आम्–दुनिया का क्या हो; इ तिचै ताम्–इन दिशाओं का भी; ॲन् पटुम्–क्या हाल हो। ३४२१

उन्होंने सातों समुद्रों के समान नर्दन किया। सबने मन में भय भरकर शंख लेकर बजाया, जिससे यह भय व्याप्त हुआ कि विद्युत्-सहित आकाश फटकर गिर जाय! कंधे ठोंककर वे आ नियराये। इस दुनिया का क्या हाल हो? इन दिशाओं की भी क्या दशा होगी? । ३४२१

आर्त्ता रन्ना रन्न कणत्ते यवराऱ्ऱल्
तीर्त्ता नुन्दन् वॆञ्जिलै नाणैत् तॆऱिवुर्रान्
बेर्त्तान् बेर्त्तान् मुऱ्ऱु मळन्दान् पिरळ्शङ्गम्
आर्त्ता लॊत्त दव्वॊलि यॆल्ला वुलहुक्कुम् 3422

अन्नार्–उन्होंने; आर्त्तार्–घोष किया; अन्न कणत्ते–उसी क्षण में; अवर् आऱ्ऱल्–उनके बल को; तीर्त्तानुम्–मिटानेवाले (श्रीराम) भी; तन्–अपने; वॆम् चिलै–भयंकर कोदण्ड के; नाणै तॆऱिवुर्रान्–डोरे को टंकोरा; अव् ऒलि–वह ध्वनि; पेर्त्तान् पेर्त्तान्–डग भर-भरकर; मुऱ्ऱुम्–सारे लोकों को; अळन्तान्–जिन्होंने मापा था उनके; पिरळ् चङ्कम्–विशिष्ट (सुदर्शन) शंख के; ॲल्ला उलकुक्कुम्–सारे लोकों में; आर्त्तल्–नाद; ऒत्ततु–के समान रहा। ३४२२

उन राक्षसों ने नारे लगाये। उसी क्षण राक्षस-बल-नाशक श्रीराम ने अपने उग्र कोदंड के डोरे को टंकोरा। वह शब्द लोकों भर में डग भरकर मापनेवाले त्रिविक्रमदेव के विशिष्ट शंख की ध्वनि के समान सारे लोकों में व्याप्त हुआ। ३४२२

पल्लायिर कोडियर् पलहलैनूल्, वल्लारवर् मॆय्म्मै वळङ्गवलार्
ऍल्लावुल हङ्गळु मेऱियपोर्, विल्लाळ ररक्करिऩ् मेदहैयार् 3423

पल् आयिरम् कोटियर्–अनेक हज़ार कोटियों के; पल् कलै–अनेक कलाओं के; नूल वल्लार्–शास्त्र-निपुण; अवर्–वे; मॆय्म्मै–सत्य-मार्ग में; वळङ्क वलार्–हथियार चलाने में निपुण; ऍल्ला उलकङ्कळुम्–सारे लोकों में; एऱिय–अधिक प्रशंसा-प्राप्त; पोर् विल्लाळर्–युद्धधनुर्दक्ष; अरक्करिऩ् मेतकैयार्–राक्षसों में श्रेष्ठ। ३४२३

वे अनेक हज़ार करोड़ों की संख्या के थे। अनेक कलाओं के शास्त्रों में निपुण थे। सीधे मार्ग पर हथियार चलानेवाले, सर्वलोक-शंसित, युद्धधनुनिपुण और राक्षसों में श्रेष्ठ। ३४२३

वॆऩ्ऱारुल हङ्गळै विण्णवरो, डॊऩ्ऱावुयर् तानव रोदमॆलाम्
कॊऩ्ऱार्निमिर् कूऱ्ऱॆऩ वॆव्वुयिरुम्, तिऩ्ऱारॆदिर् शॆऩ्ऱु शॆऱिन्दनराल् 3424

उलकङ्कळै–लोकों को; वॆऩ्ऱार्–जीतनेवाले; विण्णवरोटु–देवों के साथ; ऒऩ्ऱा–एक साथ; उयर् तातवर्–बल में उत्कृष्ट दानवों के; ओतम् ऎलाम्–सागर-सम विशाल दलों को; कॊऩ्ऱार्–मारनेवाले; निमिर् कूऱ्ऱु ऎऩ–उद्यत यम के समान; ऎव् उयिरुम्–सभी जीवों को; तिऩ्ऱार–खानेवाले; चॆऩ्ऱु–जाकर; ऎतिर् चॆऱिन्तऩर्–सामने पहुँचे। ३४२४

लोकविजयी, देवों और बलविशिष्ट दानवों के संहारक और उद्योगशील यम के समान सर्वजीवभक्षक —वे राक्षस समक्ष जाकर जुटे। ३४२४

वळैत्तार् मदयाऩैयै वऩ्ऱॊऴुविऱ्, ऱळैत्ता रॆऩवन्दु तऩित्तऩिये
उळैत्ता रुरुमॆऩ्ऱॆऩ वॊऩ्ऱलपोर्, विळैत्ता रिमैयोर्हळ् वॆदुम्बिऩराल् 3425

वन्तु–आकर; मत याऩैयै–मत्त हाथी को; वल् तॊऴुविल्–सुनिर्मित गजशाला में; तळैत्तार् ऎऩ–बाँध दिया हो जैसे; वळैत्तार्–घेर गये; तऩि तऩिये–अलग-अलग; उरुम् ऎऩ्ऱु ऎऩ–भयंकर अशनि के समान; उळैत्तार्–नर्दन किया; ऒऩ्ऱु अल–एक तरह का नहीं; पोर् विळैत्तार्–युद्ध किया; इमैयोर्कळ्–देव; वॆतुम्पिऩर्–संतप्त हुए। ३४२५

उन्होंने मत्तगज को गजशाला के अन्दर करके (आलान से) बाँधनेवालों के समान श्रीराम को घेर लिया। अलग-अलग अशनिराज के समान नर्दन करते हुए अनेक प्रकार से युद्ध किया। यह देव संतप्तमन हो गये। ३४२५

विट्टीय वळङ्गिय वॆम्बडैयिऩ्, चुट्टीय निमिर्न्द शुडर्च्चुडरुम्
कट्टीयु मॊरुङ्गु कलऩ्वॆळ्ळाल्, उट्टीयुऱ वॆन्दऩ वॆळ्ळहुम् 3426

विण् तीय–आकाश जल जाय ऐसा; वळङ्किय–(राक्षसों से) प्रयुक्त; वॆम्

पट्टैयिल्–भीषण हथियारों में; चुट्टीय निमिर्न्त–जलाती उठी; चुटर्–ज्वालामय; चुटरुम्–आग; कण् तीयुम्–और आँखों की आग; ऑरुङ्कु कलन्तु–एक साथ मिलकर; ऍऴलाल्–उठी, इसलिए; एऴु उलकुम्–सातों लोक; ती उळ् उऴ्–आग में हो; वॅन्तत–झुलसे। ३४२६

स्वर्ण को भी जलानेवाले भीषण हथियारों से दाहक ज्वालामय अग्नि निकली। उनकी आँखों से कोपाग्नि छूटी। दोनों के मिलकर उठने से सातों लोक आग में फँसकर झुलसे। ३४२६

तेराऱ्प्पॉलि	वीरर्	तॅऴिप्पॉलियुम्
ताराऱ्प्पॉलि	युङ्गळल्	ताक्कॉलियुम्
पोरार्शिलै	नाणि	पुडैप्पॉलियुम्
काराऱ्पॉलि	युङ्गळि	ऱाऱ्प्पॉलियुम् 3427

तेर् आऱ्प्पु ऑलि–रथों की घरघराहट की ध्वनि; वीरर्–और वीरों के; तॅऴिप्पु ऑलियुम्–डाँटने का शब्द; तार्–दामों की; आऱ्प्पु ऑलियुम्–बजने की ध्वनि और; कऴल् ताक्कु ऑलियुम्–कड़ों के टकराने की ध्वनि; पोर् आर् चिलै–युद्ध योग्य धनुओं के; नाणि पडैप्पु ऑलियुम्–डोरे से उठनेवाला शब्द; काराल् पॉलियुम्–मेघ-सम शोभित; कळिऱु आऱ्प्पु ऑलियुम्–गजों के चिंघाड़ने की ध्वनि। ३४२७

रथों की घरघराहट की ध्वनि, वीरों के डाँटने का शब्द, दामों की घंटियों का नाद, कड़ों के टकराने की ध्वनि, युद्ध योग्य धनुओं के डोरों की टंकार, मेघवर्ण हाथियों के चिंघाड़ने का स्वर (सब सुनायी दिये)। ३४२७

ऍल्लारु मिरावण नॅयनैयार्, वॅल्लावुल हिल्लवर् मॅय्वलियार्
तॉल्लार् पडैवन्दु तोंडर्न्ददेना, नल्लानु मुरुत्तॅदिर् नण्णिनन्नाल् 3428

ऍल्लारुम्–सभी; इरावणनै अनैयार्–रावण ही सम; वॅल्ला उलकु–अजित लोक; इल्लवर्–नहीं, ऐसे हैं; मॅय् वलियार्–सच्चे वली हैं; तॉल्लार् पडै–प्राचीनों की सेना; वन्तु तॉटर्न्ततु–आ गयी; ऍना–सोचकर; नल्लानुम्–उत्तम श्रीराम भी; उरुत्तु–रोष करके; ऍतिर् नण्णिनन्–सामने गया। ३४२८

सभी राक्षस रावण ही सम थे। कोई लोक नहीं था जिसे उन्होंने नहीं जीता हो। सच्चे ताक़तवर थे। श्रीराम समझ गये कि प्राचीन राक्षसों की सेना आ पहुँची है। वे सामने आये। ३४२८

ऊऴिक्कनल् पोल्बव रुन्दिनपोर्, आऴिप्पडै यम्बॊडु मऱ्ऱहलप्
पाऴिक्कडै नाळ्विडु पन्मळैपोल्, वाऴिच्चुडर् वाळि वळङ्गिनन्नाल् 3429

ऊऴि कनल् पोल्पवर्–युगान्त की अग्नि के समान हैं; उन्तिन–उनसे प्रेषित; पोर्–युद्ध के; आऴि पडै–चक्रायुध; अम्पॊटुम्–बाणों के साथ; अऱ्ऱ अकल–

टूटकर दूर हो जायँ, ऐसा; पाळि–सशक्त; कटै नाळ् बिटु–युगान्त में बरसनेवाली; पल् मळै पोल्–विपुल वर्षा के समान; चुटर् वाळि–प्रकाशमय शर; वळङ्कितम्–श्रीराम ने छोड़े। ३४२९

प्रलयाग्नि-सम उन राक्षसों ने जो युद्धयोग्य चक्रायुध, अस्त्र आदि चलाये उनको काटकर हटाने के निमित्त श्रीराम ने युगांत की वर्षा के समान प्रकाशमय बाणों को छोड़ा। ३४२९

शूरोडु तॊडर्न्द शुडर्क्कणैदान्, तारो डहलङ्गळ् तडिन्दिडलुम्
तेरोडु मडिन्दलर् शॆङ्गदिरोन्, ऊरोडु मडिन्दन वीत्तुरवोर् 3430

चुरोटु तॊटर्न्त–बलसंयुक्त; चुटर्–तेजोमय; कणै ताम्–बाणों के; तार् ओटु–विजयमाला-सहित; अकलङ्कळ्–विशाल वक्षों को; तटिन्तिटलुम्–भेदते ही; चॆम् कतिरोन्–लाल किरणमाली; ऊरोटुम्–परिवेश के साथ; मटिन्तनन् ऒत्तु–गिर गया जैसे; उरवोर्–बलवान वे; तेरोटुम्–रथों के साथ; मटिन्तनर्–मिट गये। ३४३०

बल-प्रकाश-संयुक्त श्रीराम-शरों के विजयमाला से अलंकृत राक्षसों के विशाल वक्षों पर लगते ही वे परिवेश के साथ गिरते किरणमाली के समान रथों के साथ गिरे और मिटे। ३४३०

कॊल्लोडु शुडर्क्कणै कूर्रिनिणप्, पल्लोडु तॊडर्न्दन पायवलिनाल्
शॆल्लोडॆळु मामुहिल् शिन्दिनपोल्, विल्लोडुम् विळुन्द मिडर्करमे 3431

कॊल् ओटु–संहारक; चुटर् कणै–प्रकाशमय शर; कूर्रिन्–यम के-से; निणम्–चर्बी-लगे; पल्लोटु–दाँतों से; तॊटर्न्तन–अनुसृत; पाय्तलिनाल्–चलने से; विल्लोटुम्–चाप के साथ; विळुन्त मिटल् करम्–नीचे गिरे कठोर हाथ; चॆल्लोटु ऎळु–बिजली के साथ उठे; मा मुकिल्–बड़े मेघ; चिन्तिन पोल्–झर पड़े जैसे (दिखे)। ३४३१

श्रीराम के घातक, प्रकाशमय और मांसयुक्त यमदंत-से दाँतों से युक्त पिछले भाग के शर उनको काट चले तो राक्षसों के हाथ धनुओं के साथ कटकर गिरे, तब वे विद्युत्-सह झरते मेघों के समान लगे। ३४३१

शॆम्बो डुदिरत्तिरै शिन्दुविन्वाय्, वॆम्बो डरवक्कुल मेलनिमिरुम्
कॊम्बोडुम् विळुन्दन वीत्तकुऱैन्, दम्बोडु विळुन्द वडर्करमे 3432

कुऱैन्तु–छिन्न होकर; अम्पोटु–बाण के साथ; चॆम्पोटु–लालीयुक्त; उतिरम् तिरै–रक्त-तरंग के; चिन्तुविन् वाय्–समुद्र में; विळुन्त–जो गिरे; अटल् करम्–वे तगड़े हाथ; वॆम्पु ओटु–भय खाकर भागनेवाले; अरवम् कुलम्–सर्पदल; मेल् निमिरुम्–ऊपर उठी; कॊम्पोटुम्–शाखाओं के साथ; विळुन्तन ऒत्त–गिरे-जैसे लगे। ३४३२

कटकर बाणों के साथ लाल रंग की रक्त-लहरों से भरे समुद्र में

गिरने जब वे तगड़े हाथ चले, तब वे डर से अपने वासाश्रय की उन्नत तरुशाखाओं के साथ भागकर गिरते सर्पदलों के समान लगे। ३४३२

मुन्नो डुदिरप्पुनल् मूदुलहैप्, पिन्नोडि वळैन्द पॅरुङ्गडल्वाय्
मिन्नोडुम् विळुन्दन मेहमॅन्नप्, पॊन्नोडै नॅडुङ्गरि पुक्कनवाल् 3433

पॊन् ओटै–स्वर्णपट से अलंकृत; नॅटु करि–ऊँचे हाथी; मुन् ओटु–सामने बहने वाले; उतिरम् पुनल्–रक्तजल का; पिन् ओटि–पीछा करके दौड़कर; मुतुमै उलकै–प्राचीन दुनिया को; वळैन्त–जो घेरे रहता है, उस; पॅरु कटल् वाय्–बड़े समुद्र में; मिन्नोटुम्–बिजली के साथ; विळुन्तन–जो गिरे हों; मेकम् अॅन–उन मेघों के समान; पुक्कन–घुसे। ३४३३

स्वर्णमुखपट्ट से अलंकृत गज सामने बहनेवाले रक्त का पीछा करते पुरातन पृथ्वी को घेरे रहनेवाले बड़े समुद्र में, विद्युत्सह गिरते बड़े मेघों के समान घुसे। ३४३३

मऱवॅऱ्ऱि यरक्कर् वलक्कैयोडुम्, नऱवक्कुरु दिक्कडल् वीऴ्नहैवाळ्
शुऱवॊत्तन मीदु तुडित्तॆऴलाल्, इऱवॊत्तन वावु मिनप्परिये 3434

नऱवम्–गंधयुक्त; कुरुति कटल्–रक्त-सागर में; मऱम् वॅऱ्ऱि–वीर और विजयी; अरक्कर्–राक्षसों के; वलम् कैयोटुम्–दायें हाथों के साथ; वीऴ्–गिरे; नकै वाळ्–छविमय खड्ग; मीतु–ऊपर; तुटित्तु–तड़पकर; अॅऴलाल्–उठे इसलिए; चुऱवु ऒत्तन–'शुऱा' (समुद्र में रहनेवाला मत्स्यकुल का एक भयंकर प्राणी) के समान लगे; वावुम् इनम्–सरपट चलनेवाले परिवार के; परि–अश्व; इऱवु–'इऱव' मत्स्य; ऒत्तन–के समान लगे। ३४३४

गंधयुक्त रक्त-सागर में वीरतापूर्ण तथा विजयी राक्षसों के दायें हाथों के साथ जो तेजोमय तलवारें गिरीं, वे तड़पकर ऊपर उठीं। तब वे 'शुऱा' मत्स्य के समान लगीं; और सरपट दौड़नेवाले अश्व 'इऱा' मत्स्य के समान दिखे। ३४३४

तामच्चुडर् वाळि तडिन्दहलप्, पामक्कुरु दिप्पडि हिन्ऱपडैच्
चेमप्पडर् केडह माल्हडल्शेर्, आमैक्कुल मॅत्तनै यत्तनैयाल् 3435

तामम् चुटर् वाळि–अत्युज्ज्वल बाणों से; तटिन्तु अकल–छिन्न होकर गिरने से; पाम्–फैले; अ कुरुति–उस रक्त में; पटिकिन्ऱ–जो पड़े रहे; पटै पटर्–सेना के वीरों की; चेमम् केटकम्–रक्षा में प्रयुक्त ढालें; माल् कटल् चेर्–बड़े समुद्र के; आमै कुलम्–कछुओं के समूह; अॅत्तनै–जितने; अत्तनै–उतनी। ३४३५

अत्युज्वल शरों से कटकर राक्षसों की रक्षक ढालें उस विस्तृत रक्त-प्रवाह में गिरी थीं। उनकी संख्या बड़े समुद्र में रहे कच्छप दलों की उतनी थी। ३४३५

काम्बोडु पदाहैहळ् कारुदिरप्, पाम्बोडु कडऱ्पडि वुऱ्ऱनवाल्
वाम्बोर्नॅडु वाडै मलैन्दहलक्, कूम्बोडुयर् पाय्हळ् कुऱैन्दनपोल् 3436

वाम् पोर्–उछल-उछलकर किये जानेवाले युद्ध में; नॅटु वाटै–प्रखर उदीची हवा से; मलैन्त–चालित; कलम् उयर्–पोतों में के ऊँचे; पाय्कळ्–पाल; कूम्पोटु–मस्तूलों के साथ; मूळ्कियत पोल्–डूबे जैसे; काम्पोटु–(बाँस के) मूठों के साथ; पताकैकळ्–पताकाएँ; कार् निऱम्–काले रंग के; उतिरम् पाम्पु–रक्त के विस्तार के; ओटु–हिलते; कटल्–समुद्र में; पटिवुऱ्ऱत–डूबीं। ३४३६

उछल-उछलकर किये जानेवाले उस युद्ध में काले रंग से युक्त रक्त से मिले, हिलनेवाले सागर में बाँस की मूठों-सहित पताकाएँ डूबीं। वे प्रचंड उदीची हवा से चालित पोतों के मस्तूलों के साथ डूबनेवाले पालों के समान लगीं। ३४३६

मण्डप्पडु शोरियिन् वारियिन्वीऴ्, कण्डत्त करत्तॊहै कव्वियदाल्
मुण्डक्किळर् तण्डत्त मुट्टॊहुवन्, तुण्डच्चुऱ वीत्त तुडित्तनवाल् 3437

मण्टप्पटु–बहुत बहनेवाले; चोरियिन् वारियिन्–रक्त-प्रवाह में; वीऴ्–गिरे; कण्टत्तु–छिन्न; करम् तॊकै–हाथों के समूहों को; कव्वियताल्–बाण ग्रसते रहे अतः; मुण्टम् किळर्–कमल से शोभित; तण्टु अत–नाल के समान; मुळ् तॊकुवत–काँटों से युक्त; तुण्टम्–'सूँड़' के; चुऱवु ऒत्त–'शुऱा' मत्स्य के समान; तुटित्तत–तड़पे। ३४३७

अत्यधिक विस्तार के रक्त-प्रवाह में छिन्न होकर गिरे राक्षसों के हाथों को शर ग्रस रहे थे। तब वे कमलनाल के समान काँटेदार 'सूँड़' से युक्त 'शुऱा' मत्स्य के समान तड़प रहे थे। ३४३७

तॅळिवुऱ्ऱ पळिङ्गुरु शिल्लिहॊळ्तेर्, विळिवुऱ्ऱुऱु वेऱुर वीऴ्वनताम्
अळिमुऱ्ऱिय शोरिय वाऴियिलाऴ्, ऒळिमुऱ्ऱिय तिङ्गळै यॊत्तुळवाल् 3438

तॅळिवु उऱ्ऱ–शुद्ध; पळिङ्कु उरु–स्फटिक के; चिल्लि कॊळ् तेर्–पहियोंदार रथ; विळिवु उऱ्ऱु उऱु–मिटे जब; वेऱु उऱ–अलग होकर; वीऴ्वत ताम्–गिरने वाले वे (पहिये); अळि मुऱ्ऱिय–बाणों के कारण खूब प्रगट; चोरिय–रक्त से मिलकर; आऴियिल् आऴ्–समुद्र में डूबनेवाले; ऒळि मुऱ्ऱिय–पूर्ण-प्रकाश; तिङ्कळै–चन्द्र के; ऒत्तुळ–समान दिखे। ३४३८

पारदर्शी स्फटिक के बने पहियोंदार रथ मिटे तो वे पहिये अलग हो गिरे। श्रीराम-बाणों के हत्याकार्य से उत्पन्न रक्त में मिलकर समुद्र में जाकर डूबे। तब वे पूर्णप्रकाश चंद्र के समान दिखे। ३४३८

निलै कोडलिल् वॅन्ऱि यरक्करनेर्, कॊलै कोडलिन् मन्गुऱि कोळुऱुमेल्
शिलै कोडिय तोऱु शिरत्तिरळ्वत्, मलै कोडियिन् मेलु मरिन्दिडुमाल् 3439

निलै कोटल् इल्–सद्धर्म के अग्राही; वॅन्ऱि अरक्करै–(अब तक जो) विजयी

(रहे) उन राक्षसों को; नेर् कॊल्लै कोटलिन्–सीधे हत करने को; मन्–श्रीराम ने; कुऱि कॊळ्–लक्ष्य बनाना; उरुमेल्–चाहा, इसलिए; चिलै–धनुष; कोटिय तोऱुम्–जब-जब झुका; चिरम् तिरळ्–सिरों के समूह; वल् मलै–कठोर पर्वत; कोटियिन्–मेलुम्–करोड़ों से भी ऊपर; मरिन्तिट्टुम्–मरते बन गये। ३४३९

अब तक जो विजयी रहे उन अधर्मी राक्षसों को मारने का श्रीराम ने दृढ़ संकल्प कर लिया था। इसलिए जब-जब उनका धनु झुका (उन्होंने चाप झुकाकर शर छोड़े), तब कटे सिरों के करोड़ों कठोर पर्वतों से अधिक (ढेर) बन गये। ३४३९

तिण्मार्बिन् मिशैच्चॆंऱि शालिहैयिन्, कण्वाळि कडैच्चॆंऱि कान्नुळैन्
ऎंण्वायुऱ मॊय्त्तन विन्नऱैयु, रुण्वाय्वरि वण्डिन मॊत्ततवाल् 3440

तिण् मार्पिन् मिचै–सुदृढ़ छाती पर; चॆंऱि–सटे लगे; चालिकैयिन् कण्–कवच में; वाळि–बाणों के; कटै–अन्तिम भाग के (नोक के); चॆंऱि कानम्–घने समूह; नुळैन्तु–घुसकर; ऎंण् वाय् उऱ–गिने जाने योग्य रीति से; मॊय्त्तन–जो रहे; इन् नऱै उऱु–मधुर मधु से भरकर; उण् वाय्–खानेवाले मुखों के; वरि वण्टिन्–धारीदार भ्रमरों के; इनम् ऒत्तन–समूहों के समान लगे। ३४४०

सुदृढ़ वक्ष पर कसकर बँधे कवच पर शरों के अग्र भाग चुभे थे। गिनने योग्य रीति से चुभे रहे उनके समूह मधुर मधु पीनेवाले धारीदार भ्रमरों के झुंडों के समान लगते थे। ३४४०

पाऱाडु कळत्तॊरु वन्पहलिन्, कूऱाहिय नालिलोर् कूऱिडैये
नूऱायिन योशनै नूळिल्हळ्शाल्, माऱादुळल् शारिहै वन्दननाल् 3441

पाऱु आटु–बाज़ जहाँ संचार करते हैं; नूऱु योचनै आयिन–सौ योजन के; कळत्तु–युद्ध के मैदान में; ऒरुवन्–एकाकी ने; पकलिन्–अह्न के; नालिल् ओर् कूऱु–चौथांश के; आकिय कूऱिटैये–समय-भाग में; नूळिल्कळ् चाल्–संहारक कार्य-योग्य; माऱातु उळल्–निरन्तर घूमते हुए; चारिकै वन्तनन्–चक्कर काटे। ३४४१

बाज जहाँ संचार करते थे, उस सौ योजन विस्तार की युद्धभूमि में श्रीराम अकेले रहकर अह्न के चौथांश के समय के अन्दर सभी राक्षसों को मारते हुए चक्कर काट रहे थे। ३४४१

निन्ऱारुड निन्ऱु निमिर्न्दयले, शॆन्ऱारॆंदिर् शॆन्ऱु तिरिन्दिडलाल्
तन्दादैयै योर्वुऱु तन्महनेर्, हॊन्ऱानव नेयिव नॆन्ऱुकॊळ्वार् 3442

निन्ऱार् उटन् निन्ऱुम्–जो खड़े रहे उनके साथ खड़े रहकर; अयले–पास ही; निमिर्न्तु–पैर उठाकर; चॆन्ऱार्–गये तो; ऎतिर् चॆन्ऱुम्–सामने जाकर; तिरिन्तिटलाल्–घूमते रहे इसलिए; ओर्वु उऱु–विवेकशील; तन् मकन् नेर्–उसके ही पुत्र के समक्ष; तन् तातैयै–उसके पिता को; कॊन्ऱान्–जिन्होंने मारा था; अवने–वे ही भगवान नरसिंह; इवन्–ये हैं; ऎन्ऱु कॊळ्वार्–ऐसा मानते हैं। ३४४२

वे स्थित लोगों के सामने खड़े रहते; पैर बढ़ाकर जानेवालों के सामने जाते; इस तरह घूमते रहे। अतः लोग यही कहने लगे कि ये राम वे ही नरसिंह-मूर्ति हैं, जिन्होंने उसके ही विवेकी पुत्र के सामने हिरण्य को मारा था। ३४४२

इङ्गेयुळ तिङ्गुळ तिङ्गुळतॆत्, र्इङ्गेयुणर् हित्र वलन्दलैवाय्
वॆङ्गोब नॆडुम्बडै वॆञ्जरम्बिट्, टॆङ्गेतुम् वळङ्गुव रेहुवराल् 3443

इङ्कु उळतु–यहाँ है; इङ्के उळत्–यहीं रहता है; इङ्कु उळतु–यहाँ है; ऎन्रु–ऐसा; अङ्के–वहाँ; उणर्कित्र–सोचने की; अलम् तलैवाय्–भ्रान्त दशा में; वॆम् कोपम्–बहुत क्रोध के साथ; नॆटु पटै–लम्बे धनु से; वॆम् चरम्–भीषण बाणों को; विट्टु–चलाकर; ऎङ्केतुम् वळङ्कुवर्–कहीं भेज देते; एकुवार्–और स्वयं हत हो जाते। ३४४३

श्रीराम सर्वत्र दिखायी देते थे। अतः लोगों ने कहा कि यहीं है, यहीं है, यहीं है। इस तरह भ्रांत दशा में राक्षसों ने क्रुद्ध होकर भीषण शर चलाये तो वे शर श्रीराम के पास न जाकर अन्यत्र चले जाते थे। पर वे राक्षस हत हो जाते थे। ३४४३

ऒरुवन्नॆत्त वुन्नमु णर्च्चियिलार्, इरवन्रिदु वोर्पह लॆन्बर्हळाल्
करवन्रि दिरामर् कणक्किलराल्, परवैमण लिर्पल रॆन्बर्हळाल् 3444

इतु इरवु अन्रु–यह रात का समय नहीं; ओर् पकल्–एक अह्न है; ऎन्पर्कळ्–कहते; ऒरुवन्–अकेला एक; ऎन्न–ऐसा; उन्नुम्–सोच; उणर्च्चि इलार्–समझ नहीं; इतु करवु अन्रु–यह धोखा नहीं; इरामर्–राम; परवै मणलिल्–समुद्र के बालुओं के समान; पलर्–अनेक; कणक्किलर्–अनगिनत; ऎन्पर्कळ्–कहते। ३४४४

(श्रीराम के शरों से तेज प्रकाश फैला रहता। अतः) राक्षस कहते कि यह रात नहीं। दिन है! वे राम को एकाकी समझ नहीं सके। इसलिए विश्वास के साथ कहते कि यह धोखा नहीं; असल में रामों की संख्या सागर के बालुओं की संख्या से अधिक है। ३४४४

ऒरुवन्नॊरु वन्मलै पोलुयर्वोन्, ऒरुवन्पडै वॆळ्ळमॊ रायिरमे
ऒरुवन्नॊरु वन्नुयि रुण्डव्लाल्, ऒरुवन्नुयि रुण्डदु मुळ्ळदुवो 3445

ऒरुवन् ऒरुवन्–हर एक; मलै पोल् उयर्वोन्–पर्वत के समान ऊँचा; ऒरु वल् पटै–अनुपम बलवान सेना; ओरायिरम् वॆळ्ळम्–एक हजार 'वॆळ्ळम्' की; ऒरुवन् ऒरुवन्–एक-दूसरे की; उयिर् उण्टतु अलाल्–जान पी गया, नहीं तो; ऒरुवन्–अद्वितीय श्रीराम ने; उयिर् उण्टतुवुम् उळ्ळतुवो–जान पी थी क्या। ३४४५

इस सेना का हर वीर पर्वत के समान बहुत ऊँचा था। ऐसे एक हजार वॆळ्ळम वीरों की सेना थी वह। श्रीराम के धोखे में परस्पर मार

लेने से सब मरे। वही सच्ची बात थी। नहीं तो श्रीराम के द्वारा हत जीव भी थे क्या ? । ३४४५

तेर्मेलुळर् मावोडु शॅन्दरुहट्, कार्मेलुळर् माकडन् मेलुळरिप्
पार्मेलुळ रुम्बर् परन्दुळराल्, पोर्मेल विरामर् पुहुन्दिडुवार् 3446

पोर् मेल–युद्ध अपनाकर; पुकुन्तिटुवार्–घुसकर संहार करनेवाले; इरामर्–श्रीराम; तेर् मेल् उळर्–रथ पर हैं; मावोटु–अश्व के साथ; तरु–घातक; चॅम् कण्–लाल आँखों के; कार् मेल्–मेघ (हाथी) पर; उळर्–हैं; मा कटल् मेल्–बड़े सागर पर; उळर्–हैं; इ पार् मेल् उळर्–इस भूमि पर हैं; उम्पर्–आकाश में; परन्तु उळर्–व्याप्त हैं। ३४४६

युद्धोद्यत हो घुसकर संहार करनेवाले श्रीराम के सम्बन्ध में राक्षस कहने लगे कि वे रथ पर हैं; अश्व पर हैं। घातक लाल आँखों वाले मेघ-सम मातंग पर हैं। वे इस भूमि पर हैं; नहीं, आकाश में व्याप्त हैं! । ३४४६

ॲन्नुम्बडि यॅङ्गणु मॅङ्गणुमायत्, तुन्नुञ्जुळ् लुन्दिरि युञ्जुडरुम्
बिन्नुम्मरु हुम्मुड लुम्बिरियात्, मन्नन्महन् वञ्जर् मयङ्गिनराल् 3447

ॲन्नुम् पटि–ऐसा कहा जाय ऐसा; मन्नन् मकन्–राजा के पुत्र; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; ॲङ्कणुमाय्–सर्वव्यापी बन; पिन्नुम्–पीछे; अरुकुम्–समीप; उटलुम्–शरीर से; पिरियात्–अलग न होकर; तुन्नुम्–सट जाते; चुळलुम्–घूमते; तिरियुम्–इधर-उधर भटकते; चुटरुम्–तेजोमय रहते; वञ्चर्–वंचक (राक्षस); मयङ्किनर्–भ्रांत हुए। ३४४७

इस तरह उन्हें भ्रम में डालते हुए राजा के पुत्र श्रीराम सर्वत्र रहे। पीछे रहे। पास रहे। शरीर से भी अलग न होकर सटे रहे! घूमते, फिरते और तेजोमय स्थित रहते। ३४४७

पडुमद करिपरि शिन्दिन पत्तिवरै यिरदम विन्दन
विडुतिशै शॅविडुपि ळन्दन विरिहड लळरॅ ळुन्दन
अडुपुलि यवुणर्द मङ्गैय रलर्विऴि यरुविहळ् शिन्दिन
कडुमणि नॅडियवॅ नुञ्जिलै कणकण कणक णॅनुन्दोरुम् 3448

नॅटिय ॲनुम् चिलै–दीर्घ कथित धनु की; कटुमणि–कड़ी ध्वनिवाली घंटियाँ; कण कण कणकम्–क्वणन क्वणन क्वणन की; ॲनुम् तोरुम्–जब-जब ध्वनि निकालती थीं; मतम् पटु करि–मदनीरसहित मातंग; परि–अश्व; चिन्तिन–हत हुए; पत्ति वरै–हिमालय से; इरतम् अविन्तन–रथ नष्ट हुए; विटु तिचै–विशाल दिशाएँ; चॅविटु पिळन्तन–बहरी हुईं; विरि कटल्–विस्तृत सागर; अळरु अतु ॲळुन्तन–पंकिल बने; अटु पुलि–खूनी व्याघ्र-सम; अवुणर् तम्–राक्षसों की; मङ्कैयर्–स्त्रियों की; अलर् विऴि–बड़ी आँखों से; अरुविकळ् चिन्तिन–अश्रु-नदियाँ बह निकलीं। ३४४८

उनके दीर्घ धनु की कठोर ध्वनिवाली घंटियों के क्वणन-क्वणन-क्वणन के स्वर के निकलते हर बार मदस्रावी मातंग मरे। अश्व मिटे! हिमालय-से रथ नष्ट हुए। विस्तृत दिशाएँ बहरी हुईं। विस्तृत सागर पंकिल बन गया। घातक व्याघ्र-सम दानवों की दयिताओं के विशाल नेत्रों से अश्रु-नदी उठकर बही। ३४४८

ऊनेरु पडैक्कै वीर रॅदिरॅदि रुरुवन् दोरुम्
कूनेरु शिलैयुन् दानुङ् गुदिक्किन्ऱ कडुप्पिन् कॉट्पाल्
वानेऱि नार्हळ् तेरु मलैहिन्ऱ वयवर् तेरुम्
तानेऱि वन्द तेरे याक्किनान् तनियै रुन्नान् 3449

तनि एरु अन्नान्—अप्रतिम केसरी-तुल्य श्रीराम; ऊन् एरु—मांसल; पटै कै वीरर्—आयुध-हस्त वीरों के; ऍतिर् ऍतिर्—आमने-सामने; उरुवम् तोरुम्—हर एक के रूप में; कून् एरु—झुके हुए; चिलैयुम्—धनु को; तानुम्—ले स्वयं; कुतिक्किन्ऱ—कूद पड़ते उस; कटुप्पिन्—तेजी के; कॉट्पाल्—प्रकार से; वान् एऱिनार्कळ् तेरुम्—स्वर्गारोही वीरों के रथ; मलैकिन्ऱ—युद्ध करनेवाले; वयवर् तेरुम्—वीरों के रथों को; तान् एऱि वन्त—जिस पर वे स्वयं चढ़ आये थे; तेर् आक्किनान्—उस रथ में बदल दिया (यानी मिट्टी बना दिया)। ३४४९

नर केसरी-सम श्रीराम मांसलिप्त हथियार रखनेवाले राक्षसों में एक-एक के सामने उस-उसके आकार के अनुसार अपने झुके धनुष के साथ इस तेज़ी से कूदे कि स्वर्गारोही वीरों के रथ और युद्ध करनेवालों के रथ सारे वह रथ बन गये जिस पर वे स्वयं आये थे (यानी मिट्टी हो गये थे)। ३४४९

कायिरुञ् जिलैयॊन्ऱे तुङ् गणैप्पुट्टि लॊन्ऱे तेनुम्
तूयॆळु पहळि मारि मळैत्तुळित् तॊहैयिन् मेल
आयिरङ् गैहळ् शॆय्द शॆय्दन वमलन् शॆङ्गै
आयिरङ् गैयुङ् गूडि यिरण्डुकै याय वाऱे 3450

काय्—शत्रु-दाहक; इरु चिलै—बड़ा धनुष; ऑन्ऱे ऍनिनुम्—एक ही था तो भी; कणै पुट्टिल्—तूणीर; ऑन्ऱतेनुम्—एक रहा तो भी; तूय् ऍळु—उनसे चलाये जाकर जो उठी; पकळि मारि—शरों की वर्षा; मळै तुळि तॊकैयिन्—वर्षा की बूँदों की संख्या से; मेल—अधिक हैं; अमलन्—विमल श्रीराम के; चॆम् कै—दो लाल हाथों ने; आयिरम् कैकळ् चॆय्त—जिसे हज़ार हाथों ने किया; चॆय्तन—वह किया; आयिरम् कैयुम् कूटि—हज़ार हाथ मिलकर; इरण्टु कै आय आऱु—दो हाथ बने, यह (विचित्र) बात। ३४५०

शत्रुतापक धनु एक ही था, तूणीर एक ही था। तो भी शर जो निकले वे वर्षा की बूँदों से भी अधिक संख्या के थे। अमल भगवान श्रीराम के दो लाल हाथों ने उतना काम किया जितना कि हज़ार हाथों ने किया। हज़ार हाथ कैसे दो हाथ हुए? । ३४५०

पॉय्यॉरु मुहत्त ताहि मत्तिदत्ताम् बुणर्प्पि दन्राल्
मॅय्युऱ्‌ वुणर्न्दोम् वॅळ्ळ मायिर मिडैन्द शेतै
शॅय्युरु वित्तैय मॅल्ला मॉरुमुहन् दॅरिव दुण्डे
ऐयिरु नूरु मल्ल वनन्दमा मुहङ्ग ळम्मा 3451

ऑरु मुकत्तन् आकि–इकानन बनकर; मत्तितत्ताम् पुणर्प्पु–मानव के रूप में रहने का; इतु–यह दृश्य; अन्ऱु–(सच) नहीं; पॉय्–झूठा है; मॅय् उऱ उणर्न्तोम्–सत्य ही जान लिया है हमने; आयिरम् वॅळ्ळम्–हजार 'वॅळ्ळम्' की; मिटैन्त चेतै–घनी सेना; चॅय्युऱु–जो करती रही; वित्तैयम् ऑल्लाम्–वह युद्धकार्य सब; ऑरु मुकम्–एक मुख; तॅरिवतु उण्टे–जान ले, यह संभव है क्या; ऐयिरु नूरुम् अल्ल–पांच के दो के सौ भी नहीं; मुकङ्कळ् अनन्तम् आम्–अनंत मुख हैं। ३४५१

इकानन मानव का यह दृश्य सच नहीं है। झूठा ही है। हमने सचमुच जान लिया। हजार वॅळ्ळम् की सेना जो युद्ध-कार्य करती रही, उस सबको एक मुख से जाना कैसे जा सकता है? इनके एक हजार मुख ही नहीं, अनंत मुख हैं। ३४५१

कण्णुदर् परमन् तानु नान्मुहक् कडवुळ् तानुम्
ऑण्णुदुन् दॉडर वॅय्द कोलॅन वॅण्ण लुऱ्‌ऱार्
पण्णैयाल् वहुक्क माट्टार् तत्तित्तनिप् पार्क्क लुऱ्‌ऱार्
ऑण्णुमो कणिक्क वॅन्बा रुवहैयि नुयर्न्द तोळार् 3452

कण्णुतल् परमन् तानुम्–भालनेत्र परमेश्वर और; नाल् मुकम्–चतुर्मुख; कटवुळ् तानुम्–भगवान और; ऍय्त कोल्–(श्रीराम द्वारा) चलाये गये अस्त्रों को; तॊटर ऍण्णुतुम्–बराबर गिन लेंगे; ऍन–कहकर; तत्ति तत्ति–अलग-अलग; पार्क्कल् उऱ्‌ऱार्–देखते; ऍण्णल् उऱ्‌ऱार्–गिनने लगे; पण्णैयाल्–समूह की विपुलता के कारण; वकुक्क माट्टार्–न गिन सके; उवकैयिन्–आनन्द से; उयर्न्त तोळार्–उन्नत कन्धों वाले बनकर; कणिक्क ऑण्णुमो–गिना जा सकता है क्या; ऍन्पार्–बोले। ३४५२

भालनेत्र परमेश्वर और चतुर्मुख देवता ने कहा कि हम श्रीराम-प्रेरित शरों को बराबर गिनकर संख्या बता देंगे। अलग-अलग रहकर खूब ध्यान लगाकर गिनने लगे। पर शरों की संख्या इतनी विपुल थी कि वे गिन नहीं सके। उनके कंधे आनंद से फूल उठे और उन्होंने गर्व के साथ कहा कि गिना भी जा सकता है? (नहीं)। ३४५२

वॅळ्ळ मीरैन्दु नूऱे विडुहण यवर्ऱिन् मॅय्ये
उळ्ळवा ऱुळदा मॅन्ऱो ऱरैकणक् कुरैत्तु मेनुम्
कॊळ्ळैयो रुरुवे नूरु कॊण्डन पलवाऱ् कॊऱ्‌ऱ
वळ्ळले वळ्ळङ्गि तानो वॅन्ऱनर् मऱ्‌ऱै वानोर् 3453

वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्'; ईरैन्तु नूऱे–हजार ही; अवर्ऱिन्–उन पर; विटु–

चलाये गये; कणै–शर; उळळ आरु–सेना जितनी थी उतने; उळवाम्–थे; ॲन्नुरु–ऐसा; ओर् उरै–कथन के लिए; उरैत्तु मेनुम्–कहें तो भी; मॅय्ये–वह सत्य होगा क्या; कॉळ्ळे–युद्ध में हत; ओर् उरुवै–एक शरीर के; नूरु कोण्टत–सौ (खण्ड) किये; पल–अनेकों ने; कोर्रम्–विजयी; वळ्ळल्–उदार प्रभु ने ही; वळ्ङ्कितातो–(उन्हें) चलाया क्या; ॲन्नुरतर्–कहा; मर्रै वातोर्–अन्य देवों ने। ३४५३

राक्षस वीरों की संख्या एक हज़ार वॅळ्ळम् की ही थी। पर उन पर चलाये गये शरों की संख्या भी उतनी —ऐसा कहने के लिए कहा जाय तो वह क्या सच हो सकता है ? नहीं। क्यों ? युद्ध में अपार रीति से जो लड़ते रहे उनमें एक-एक शरीर के सौ-सौ टुकड़े बनानेवाले शर अवश्य अधिक रहे हैं ! क्या विजयी व उदार प्रभु ने ही वे सारे शर चलाये थे ? आश्चर्य ! । ३४५३

कुडैक्कॅलाङ् गॉडिहट् कॅल्लाङ् गॉण्डल कुविन्द कोर्रप्
पडैक्कॅलाम् बहळिक् कॅल्लाम् यानैदेर् परिमा वादिक्
कडैक्कॅलान् दुरन्द वाळि कणित्तदर् कळवै काट्टि
अडैक्कला मरिञर् यारे यॅन्नुरतर् मुनिव रप्पाल् 3454

अप्पाल्–दूसरी तरफ़; मुनिवर्–मननशील मुनियों ने; कुटैक्कु ॲलाम्–सारे छत्रों; कॉटिकट्कु ॲल्लाम्–सारे झंडों; कॊण्टल–युद्धभूमि में फैले; कुविन्त–एकत्रित; कोर्रम् पटैक्कु ॲल्लाम्–विजयदायी सारे हथियारों; पकळिक्कु ॲल्लाम्–सारे बाणों; यानै–हाथी; तेर्–रथ; परि–अश्व से लेकर; कटैक्कु ॲलाम्–पदातिक वीरों तक के (मारने के) लिए; तुरन्त वाळि–श्रीराम ने जितने शर छोड़े उनको; कणित्तु–गिनकर; अतर्कु अळवै काट्टि–उसके लिए एक संख्या कहकर; अटैक्कलाम् अरिञर्–निर्धारित करनेवाले विद्वान्; यारे–कौन हो; ॲन्नुरतर्–कहा। ३४५४

उधर मननशील मुनियों ने कह दिया कि छत्र, ध्वजाएँ, युद्धभूमि में इकट्ठे पाये गये शर, गज, रथ, अश्व, पदाति वीर जितने थे उन सभी पर श्रीराम ने जितने शर छोड़े उनकी संख्या निर्धारित कर बतानेवाले विद्वान् भी कौन हैं ? (कोई नहीं)। ३४५४

कण्डत्तुङ् गळुत्तु मीदायक् कबालत्तुङ् गडक्क लुर्रु
शण्डप्पो ररक्कर् तम्मैत् तॉडर्न्दुकॉन् रमैन्द तन्मै
पिण्डत्तिर् करुवान् दन्बे ररुक्कळेप् पिरमन् दन्द
अण्डत्तै निरैयप् पॅय्दु कुलुक्किय दनैय दान 3455

चण्टम् पोर्–प्रचंड युद्ध करते रहे; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; तॉटर्न्तु–पीछा करके; कण्टत्तुम्–कंठ में; कळुत्तु–गले में; मीताय्–ऊपर; कपालत्तुम्–कपाल में; कटक्कल् उर्रु–भेद जो चले उन शरों का; कॊन्रु अमैन्त तन्मै–मार डालने का प्रकार; पिण्टत्तिल् करुवाम्–गर्भाशय में रहे; तन् पेर् उरुक्कळै–बड़े

(अंगों के) रूपों को; पिरमन् तन्त–ब्रह्मा द्वारा रचित; अण्टत्तै–अण्ड में; निऱैय पॆय्तु–भरकर; कुलुक्कियतु अतैय–हिला दिया जैसे; आऩ–रहे। ३४५५

प्रचंड उस युद्ध में श्रीराम के शर राक्षसों का पीछा करके उनके कंठों, गलों, कपालों को भेद चले। वे राक्षस मरे पड़े थे। वह दृश्य ऐसा लगा मानो ब्रह्मा-रचित गर्भस्थ सभी अंगों को अंड में डालकर हिला दिया गया हो! । ३४५५

कोडियै यिरण्डु तॊक्क पडैक्कल मळ्ळर् कूवि
ओडियोर् पक्क माह् वुयिरिऴन् दुलत्त लोडुम्
वीडिनिऩ् ऱऴिव दॆन्ऩे विण्णवर् पडैहळ् वीशि
मूडुदु मिवऩै यॆऩ्ऱि यावरु मुडुहि मॊय्त्तार् 3456

ऐयिरण्टु कोटि तॊक्क–दस करोड़ के बने; पटैक्कलम् मळ्ळर्–अस्त्रधारी वीर; कूवि–प्रलाप करते हुए; ओर् पक्कमाक ओटि–एक ओर भागे; उयिर् इऴन्तु–प्राण खोकर; उलत्तलोटुम्–मर गये तो; वीटि निऩ्ऱु–हत होकर; अऴिवतु ऎऩ्ऩे–मिटना क्यों; विण्णवर् पटैकळ् वीचि–देवताओं के अस्त्र चलाकर; इवऩै मूटुतुम्–इसको ढँक दें; ऎऩ्ऱु–सोचकर; यावरुम्–सभी; मुटुकि–जल्दी; मॊय्त्तार्–सटे। ३४५६

दस करोड़ अस्त्रधारी वीर एक ओर प्रलाप करते हुए भागे, मरे और मिटे। तब दूसरों ने सोचा कि साधारण हथियार चलाकर क्या लाभ? मरेंगे, इतना ही! अत: देवों के अस्त्र चलाकर इसके शरीर को एक दम ढँक दें। यह कहते हुए वे सब चढ़ आये। ३४५६

विण्डुविऩ् पडैये यादि मेवयऩ् पडैयी ऱाहक्
कॊण्डॊरुङ् गुडऩे विट्टार् कुलुङ्गिय दमरर् कूट्टम्
अण्डमुङ् गीऴ मेला वाहिय ददऩै यण्णल्
कण्डॊरु मुऱुवल् काट्टि यवर्ऱिऩै यवर्ऱाऱ् कात्ताऩ् 3457

विण्टुविऩ् पटैये आति–विष्णु के अस्त्र आदि; मेवु–श्रेष्ठ; अयऩ् पटै ईऱाक–ब्रह्मास्त्र तक; कॊण्टु–लेकर; उटऩे–तुरन्त; ऒरुङ्कु विट्टार्–एक साथ छोड़े; अमरर् कूट्टम्–देववृन्द; कुलुङ्कियतु–काँपे; अण्टमुम्–अंड भी; कीऴ मेला आकियतु–निचला ऊपर का हो गया; अतऩै–उसको; अण्णल्–प्रभु; कण्टु–देखकर; ऒरु मुऱुवल् काट्टि–एक हँसी प्रगट करके; अवर्ऱै–उनको; अवर्ऱाल्–उनसे; कात्ताऩ्–रोका। ३४५७

नारायणास्त्र से लेकर ब्रह्मास्त्र तक के सभी अस्त्रों को लेकर राक्षसों ने तुरंत एक साथ छोड़ा। उसे देख देवगण काँप उठे। अंड का नीचे का भाग ऊपर का हो गया और ऊपर का नीचा! प्रभु श्रीराम ने उसे देखा। एक हँसी उनके अधरों पर दिखायी दी। उनको उन्हीं से रोका। ३४५७

तातवै तोडुत्त पोदु तडुप्परि दुलहन् दात
पूनति वडवैत् तीयिड् पुक्कंतप् पोरिन्दु पोमेन्
ड्रातदु तेरिन्द वळ्ळ लळप्परुङ् गोडि यम्बाल्
एतैयर् तलैह ळॅल्ला मिडियुण्ड मलैयि निट्टान् 3458

तान्–उन्होंने; अवै–उन्हें; तोट्टुत्त पोतु–जब छोड़ा तब; तटुप्परितु–उनको रोकना कठिन है; पू उलकम् तातै–भूलोक खुद; वटवै तीयिल्–बड़वाग्नि में; नति पुक्कु ॲॅन–खूब घुस गया हो ऐसा; पोरिन्तु पोम्–भुन जायगा; ॲन्ऱु–ऐसा; आततु तेरिन्त–जो था उसको जानते थे; वळ्ळल्–उन प्रभु ने; अळप्पु अरुम्–अपार; कोटि अम्पाल्–कोटि अस्त्रों से; एतैयर् तलैकळ् ॲल्लाम्–सभी राक्षसों के सिरों को; इटि उण्ट मलैयिन्–वज्र के शिकार बने पर्वतों के समान; इट्टान्–भूमि पर गिरा दिया। ३४५८

अगर वे वही अस्त्र चलाते तो सारी पृथ्वी बड़वाग्नि में घुसी-सी भुन जाती। यह सोचकर प्रभु ने अनगिनत अन्य साधारण अस्त्र चलाकर उनके सिरों को वज्राहत पर्वत के समान काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३४५८

आयिर वॅळ्ळत् तोरु मडुहळत् तविन्दु वीऴ्न्दार्
माथिरु ञालत् ताळ्दन् वन्बोरैप् पार नीङ्गि
मीयुयर्न् दॅऴुन्दा ळन्रे वीङ्गोलि वेलै निन्ऱुम्
पोयॊरुङ् गण्डत् तोडुङ् गोडियो शनैहळ् पॊङ्गि 3459

आयिरम् वॅळ्ळत्तोरुम्–हजार 'वॅळ्ळम्' के सभी; अटुकळत्तु–समरांगन में; अविन्तु वीऴ्न्तार्–मरकर गिरे; मा इरु ञालत्ताळ्–मान्या भूदेवी; तन्–अपना; वल् पोरै पारम्–कठोर भारी बोझ से; नीङ्कि–मुक्त होकर; वीङ्कु ऑलि–वर्धनशील गर्जन के; वेलै निन्ऱुम्–समुद्र से; ऑरुङ्कु पोय्–एक साथ जाकर; अण्टत्तोटुम्–अंड के साथ; कोटि योचनैकळ्–करोड़ योजन; पॊङ्कि–उफनकर; मी उयर्न्तु–ऊपर बढ़; ॲऴुन्ताळ्–उठी। ३४५९

हजार वॅळ्ळम् के सभी वीर भुनकर मर गये! मान्या भूदेवी कठोर भार से मुक्त हुई। वर्धनशील गर्जन के सागर के और ब्रह्माण्ड के साथ फूली और करोड़ योजन ऊपर की ओर बढ़ उठी। ३४५९

आनै यायिरन् देर्पदि नायिर मडर्परि यीरुकोडि
शेनै कावल रायिरम् बेर्बडिर् कवन्दमोन् ऱॅऴुन्दाडुम्
कान मायिरङ् गवन्दनिन् ड्राडिडिर् कविन्मणि कणिलॅन्नुम्
एनै यम्मणि येळरै नाऴिहै याडिय दिनिदन्ऱे 3460

आनै आयिरम्–हजार हाथी; तेर् पतिनायिरम्–दस हजार रथ; अटर् परि–आक्रामक अश्व; ऑरु कोटि–एक करोड़; चेनै कावलर्–सेनारक्षक; आयिरम् पेर्–हजार; पटिन्–मर जायँ तो; कवन्तम् ऑन्ऱु–एक कबंध; ॲऴुन्तु आटुम्–

उठकर नाचे; कातम्–जंगल के समान; आयिरम् कवन्तम्–हज़ार कबन्ध; निऩ्ऱु आटिटिल्–उठकर नाचे तो; कविऩ् मणि–(श्रीराम के कोदण्ड की) एक घंटी; कणिल् ऍऩ्ऩुम्–'कवण' की ध्वनि उठायगी; एऩ्–और; अ मणि–वह घण्टी; इऩितु–आराम से; एऴरै नाऴिकै–साढ़े सात घड़ियों; आटियतु–हिलती रही। ३४६०

जब हज़ार हाथी, दस हज़ार रथ, करोड़ आक्रामक अश्व और हज़ार सेनारक्षक वीर नष्ट हों, तब एक कबंध उठ नाचे। जंगल के समान विपुल संख्या में हज़ार कबंध नाचे, तब एक बार श्रीराम के कोदंड की घंटी बजे। अब वह घंटी साढ़े सात घड़ियाँ हिलती (बजती) रही। ३४६०

निऩैन्दऩ मुडित्ते मॆन्ऩा वाऩवर् तुयर नीत्तार्
पुऩैन्दऩॆऩ् वाहै यॆऩ्ऩा विन्दिर ऩुवहै पूत्ताऩ्
वऩैन्दऩ वल्ला वेदम् वाऴ्वुपॆऱ् ऱुयर्न्द मादो
अऩन्दऩुन् दलैह ळेन्दि ययर्वुयिर्त् तवलन् दीर्न्दान् 3461

वाऩवर्–देवगण ने; निऩैन्तऩ–जो सोचा; मुटित्तेम्–हमने पूरा हुआ देख लिया; ऍऩ्ऩा–जानकर; तुयरम् नीत्तार्–दुःख छोड़ दिया; वाकै पुऩैन्तऩॆऩ्–जयमाला पहन ली; ऍऩ्ऩा–सोचकर; इन्तिरऩ्–इन्द्र; उवकै पूत्ताऩ्–खुश हुआ; वऩैन्तऩ अल्ला–अपौरुषेय (जो किसी से न रचे गये); वेतम्–वे वेद; वाऴ्वु पॆऱ्ऱु–(सुरक्षित) जीवन पाकर; उयर्न्त–फूल उठे; अऩन्तऩुम्–आदि-शेषनाग भी; तलैकळ् एन्ति–(भारनिवृत्ति से) सिर उठाकर; अयर्वु उयिर्त्तु–साँसें छोड़ते हुए; अवलम् तीर्न्ताऩ्–कष्ट से मुक्त हुआ। ३४६१

देवों को यह आनन्द हो गया कि जो उन्होंने चाहा था वह पूरा हो गया। देवेंद्र ने 'जयमाला पहन ली' कहकर आनंद मनाया। अपौरुषेय वेद सुरक्षितता पाकर फूल उठे। आदिशेष ने भी सिर उन्नत करके दुःखनिवृत्ति की सुखद साँस ली। ३४६१

तायवडैत् तुडैय शॆल्व मीहॆऩत् तम्बिक् कीन्दु
वेय्बडैत् तुडैय कातम् विण्णवर् तवत्ताऩ् मेवित्
तोय्बडैत् तॊऴिलाल् यार्क्कुन् दुयर्तुडैत् ताऩै नोक्कि
वाय्बडैत् तुडैया रॆल्लाम् वाऴ्त्तिऩार् वणक्कञ् जॆय्दार् 3462

ताय्–माता के; पटैत्तु उटैय–प्राप्त; चॆल्वम्–राजधन को; ईक–वे दो; ऍऩ–कहने पर; तम्पिक्कु ईन्तु–छोटे भाई को देकर; वेय् पटैत्तुटैय–बाँसों से पूरित; कातम्–वन में; विण्णवर् तवत्ताऩ्–देवों की तपस्या के कारण; मेवि–आकर; तोय्–मन लगाकर; पटै तॊऴिलाल्–अस्त्र के कार्य से; यार्क्कुम्–सभी का; तुयर् तुटैत्ताऩै–दुःख मिटानेवाले को; नोक्कि–देखकर; वाय् पटैत्तु उटैयार् ऍल्लाम्–सभी ने जिनके मुख थे; वाऴ्त्तिऩार्–साधुवाद दिया; वणक्कम् चॆयतार्–स्तुति की। ३४६२

माता कैकेयी ने आज्ञा दी कि अपने प्राप्त राजधन को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दो। श्रीराम ने दे दिया; देवों के तप के कारण जंगल आये। अब मन लगाकर अस्त्र-कौशल दिखाकर सभी का कष्ट पोंछ दिया। ऐसे श्रीराम को, उन सभी जीवों ने जिनके मुख थे, साधुवाद दिया और उनकी स्तुति की। ३४६२

तीमॉय्त्त वत्तैय शॅङ्ग णरक्करै मुळ्दुम् जिन्निप्
पूमॉय्त्त करत्त राहि विण्णवर् पोऱ्ऱ निन्ऱान्
पेय्मॉय्त्तु नरिह ळीण्डिप् पॅरुम्बिणम् बिऱङ्गित् तोन्ऱुम्
ईमत्तुळ् तमिय निन्ऱ कऱ्‌मिडऱ् ऱिऱैव नॉत्तान् 3463

ती मॉय्त्त अत्तैय–आग मिली; अत्तैय–जैसे; चॅम् कण्–लाल नेत्रों वाले; अरक्करै–राक्षस; मुळ्दुम् चिन्ति–सभी का नाश करके; पू मॉय्त्त–पुष्प-भरे; करत्तर् आकि–हाथों वाले बनकर; विण्णवर् पोऱ्ऱ–देवों के साधुवाद देते (उसका पात्र बनकर); निन्ऱान्–जो रहे श्रीराम; पेय् मॉय्त्तु–भूतगणों से आवृत; नरिकळ् ईण्टि–सियारों की भीड़ के साथ; पॅरुम् पिणम्–बड़ी लाशें; पिऱङ्कि–अधिक संख्या में; तोन्ऱुम्–जहाँ दिखीं; ईमत्तुळ्–उस श्मशान में; तमियन् निन्ऱ–अकेले जो खड़े रहते; कऱै मिटऱ्ऱु–गले में कलंक वाले; इऱैवन्–(नीलकंठ) ईश्वर; ऑत्तान्–के समान रहे। ३४६३

आग जलती-जैसे नेत्रों वाले सभी राक्षसों को श्रीराम ने निहत कर दिया। तो देवों ने हाथों में पुष्प भर लेकर उनकी स्तुति की। तब युद्ध-भूमि में खड़े रहे वे उस श्मशान में स्थित नीलकंठ देव के समान लगे, जहाँ भूतगण भरे रहते, सियारों का जमघट होता और बड़ी लाशें अधिक संख्या में विद्यमान रहतीं। ३४६३

अण्डमाक् कळमुम् वीन्द वरक्करे वुयिरु माहक्
कॉण्डदो रुरुवन् दन्ना लिरुदिनाळ् वन्दु कूड
मण्डुनाण् मरित्तुङ् गाट्ट मन्नुयि रत्तैतुम् वारि
उण्डवन् ताने यान दन्नॉरु मूर्त्ति यॉत्तान् 3464

मा कळ–बड़ा समरांगन; अण्टमुम्–अण्ड हो और; वीन्त–मरे; अरक्करे–राक्षस ही; उयिरुम् आक–जीव बने; कॉण्टतु ओर् उरुवम् तन्ताल्–लिये हुए रूप से; इऱुति नाळ् वन्तु कूट–युगांत के दिन के आने पर; मण्टुम् नाळ्–सृष्टि के दिन में; मऱित्तुम्–फिर; काट्ट–सृष्ट करने के निमित्त; मन् उयिर्–नित्य जीव; अत्तैत्तुम् वारि–सबको उठाकर; उण्टवन् तानेयान–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया; तन् ऑरु मूर्त्ति ऑत्तान्–स्वयं उनके समान (श्रीराम) लगे। ३४६४

युगांत में महाविष्णु अंडों के सभी जीवों को उदरस्थ कर लेते हैं, फिर सृष्टिकाल में बाहर निकाल देते हैं। अब श्रीराम (अपने ही रूप के) उन विष्णु के समान रहे। युद्धस्थल अण्ड के समान था और मरे

वीर जीवों के समान। उन पर प्रलय आ गया और श्रीराम प्रलयमूर्ति बने रहे। ३४६४

आहुलन् दुरन्द तेव रळ्ळित्तर् शोरिन्द वॅळ्ळच्
चेहरु मलरुम् जान्दुम् जॅरुत्तॊळिल् वरुत्तन् दीर्क्क
माहोलै शॅय्द वळ्ळल् वाळमर्क् कळत्तैक् कैविट्
टेहित्त निळव लोडु मिरावण नॅड्र कॅम्मेल् 3465

आकुलम् तुरन्त तेवर्–व्याकुलता से मुक्त देवों ने; अळ्ळित्तर्–उठाकर; चौरिन्त–जो बरसाये; वॅळ्ळम्–विपुल परिमाण के; चेरु अरु मलरुम्–अनिंद्य फूलों के; चान्तुम्–और चंदन; चॅरु तॊळिल् वरुत्तम्–युद्धकार्य में उत्पन्न श्रम को; तीर्क्क–दूर करते; मा कोलै–बड़ा संहार-कार्य; चॅय्त–जिन्होंने किया वे; वळ्ळल्–करुणामय प्रभु; वाळ् अमर् कळत्तै–तलवार से युद्ध जहाँ किया जाता है, उस समरांगन को; विट्टु–छोड़कर; इळवलोटुम्–कनिष्ठ के साथ; इरावणन् एट्र–जिस भाग पर रावण लड़ता रहा; कै मेल्–उस भाग में; एकित्तल्–गये। ३४६५

देवों ने व्याकुलता से मुक्त होकर आनन्द से प्रेरित होकर अपने दोनों हाथों में अनिंद्य फूल उठा-उठाकर श्रीराम पर बरसाये, जिससे उनका युद्धपरिश्रम दूर हुआ। तब बड़े संहार-कार्य में जो लगे रहे, वे समरांगण के उस भाग की तरफ़ गये जहाँ लघुराज लक्ष्मण से रावण ने युद्ध छेड़ा था। ३४६५

इव्वळि यियन्ड्र वल्ला मियम्बिता मिरिन्दु पोत्त
तॅव्वळि यार्ड्रल् वॅड्रिच् चेत्तैयिल् शॅयलुम् जॅन्ड्र
वॅव्वळि यरक्कर् कोमान् शॅय्हैयु मिळैय वीरत्
अॅव्वमि लार्ड्रर् पोरु मुड्रुना मियम्ब लुड्राम् 3466

इ वळि–यहाँ; इयन्ड्र अॅल्लाम्–जो हुआ, वह सब; इयम्पिताम्–वर्णन किया हमने; इरिन्तु पोत्त–अस्त-व्यस्त जो भागे; तॅव् अळि–शत्रु को मिटाने में; आड्रल्–शक्त; वॅड्रि चेत्तै–विजयवाहिनी का; चॅयलुम्–कृत्य और; चॅन्ड्र–सामने गये; वॅम्मै वळि–नृशंस मार्गावलंबी; अरक्कर् कोमान्–राक्षसराज का; चॅय्कैयुम्–कृत्य; इळैय वीरत्–लघुराज वीर (लक्ष्मण के); अॅव्वम् इल्–निर्दोष; आड्रल् पोरुम्–घमासान युद्ध; मुड्रुम्–पूरा; नाम्–हम; इयम्पल् उड्रोम्–कहने लगते हैं। ३४६६

अब तक (कवि) हमने यहाँ का हाल बताया। अब हम अस्त-व्यस्त भागे वानरविजयवाहिनी के कृत्य, नृशंसमार्गावलंबी रावण का कार्य और लघुराज का अनिंद्य वलप्रदर्शक युद्ध —इनका बखान करने लगते हैं। ३४६६

पॅरुम्बडैत् तलैवर् यारुम् बॅयर्न्दिलर् पॅयर्न्दु पोय्नाम्
विरुम्बितम् वाळ्क्कै यॅन्ड्राल् यारिडै विलक्कर् पालार्

वरुम्बऴि तुडैत्तुम् माण्डु वैहुदुम् वानि नॆन्ऩा
इरुङ्गडल् पॆयर्न्द वॆन्ऩत् तानैयु मीण्ड दिप्पाल् 3467

पॆरुम् पटै तलैवर् यारुम्–बड़े सेनानायक सभी; पॆयर्न्तिलर्–युद्धस्थल से न जाकर; पॆयर्न्तु पोय्–हट जाकर; नाम्–हम; वाऴ्क्क विरुम्पिऩम् ॲऩ्ऱाल्–जीना चाहें तो; इटै विलक्कल् पालार्–बीच में रोकनेवाले; यार्–कौन हैं; आयिनुम्–तो भी; वरुम् पऴि तुटैत्तुम्–होनेवाली निन्दा को दूर करेंगे; माण्टु–मर कर; वाऩिल् वैकुतुम्–(वीर-) स्वर्ग में जायँ; ॲऩ्ऩा–कहकर; इरु कटल्–बड़ा सागर; पॆयर्न्ततु–स्थान छोड़कर गया; ॲऩ्ऩ–ऐसा; तानैयुम्–सेना भी; इप्पाल् मीणटतु–इस ओर आयी। ३४६७

बड़े वानरसेना-नायकों ने, भागने से लौटते हुए आपस में धीरज के वचन कहे। "हम भाग जाकर जीना चाहें तो रोकनेवाला कौन है? पर निंदा होगी। उस अपयश से बचने के लिए हम जायँ; और लड़ाई में मरें तो हम भी वीर-स्वर्ग में स्थान पा लेंगे।" वे लौट आये, तब उस दल का आना सागर के स्थान बदलकर आने के समान लगा। ३४६७

31. वेलेर्र् पडलम् (शक्ति-सहन पटल)

शिल्लि यायिरञ् जिल्लुळैप् परियॊडुञ् जेर्न्द
ॲल्ल वन्ऩगदिर् मण्डिल माऱुकॊण् डिमैक्कुम्
जॆल्लुन् देर्मिशैच् चॆन्ऱऩऩ् तेवरैत् तॊलैत्त
विल्लुम् वॆङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गॊऱ्ऱमुम् विळङ्ग 3468

आयिरम् चिल्लि–हज़ार पहियों के साथ; चिल् उळै–छोटे अयालों वाले; आयिरम् परियॊटुम् चेर्न्त–हज़ार अश्वों के साथ जुता; ॲल्लवऩ्–सूर्य के; कतिर्मण्टिलम्–प्रभामण्डल से; माऱु कॊण्टु–होड़ लगाकर; इमैक्कुम्–जो प्रकाशमय हो; चॆल्लुम् तेर् मिचै–चलता था, उस रथ पर; तेवर् तॊलैत्त–देवमेटक; विल्लुम्–धनु के और; वॆम् कणै–भीषण शरों के; पुट्टिलुम्–तूणीर के; कॊऱ्ऱमुम्–और विजयश्री के; विळङ्क–विलसते; चॆऩ्ऱऩऩ्–गया (रावण)। ३४६८

रावण सहस्रचक्र, छोटे अयाल वाले हज़ार अश्वों से युक्त तथा सूर्य के प्रभामंडल से होड़ लगानेवाले रथ पर देवसंहारक धनुष को और भीषण शरों के तूणीर को साथ लेकर युद्धभूमि में गया। ३४६८

नूऱु कोडित्तेर् नॊऱ्ऱिल्परि नूऱ्ऱिरु कोडि
याऱु पोऩ्मद माहरि यॆयिरु कोडि
एऱु कोळुऱु पदादियु मिवऱ्ऱिवर् ऱिरट्टि
शीऱु कोळरि येऱ्ऩा नुडऩ्ऩुऱु शॆऩ्ऱ 3469

नूऱु कोटि तेर्–सौ करोड़ रथ और; नॊऱ्ऱिल्–तीव्रगति; नूऱु इरु कोटि–दो सौ करोड़; परि–अश्व; याऱु पोल्–नदी के समान; मतम्–मद बहानेवाले; ऐयिरु

कोटि मा करि–दस करोड़ बड़े गज; इवर्रु इवर्रु इरट्टि–इन इनका दुगुना; एरु कोळ् उरु–नर केसरी के समान बल से युक्त; पतातियुम्–पदाति; चीरु–कोपिष्ठ; कोळ् अरि एरु अनान्–बलवान, राजसिंह के समान; उटन्–(रावण) के साथ; अन्रु–उस दिन; चॆन्रार्–गये। ३४६९

सौ करोड़ रथ, दो सौ करोड़ तीव्रगामी अश्व, नदी-सम मदस्रावी दस करोड़ बड़े-बड़े गज, इनके दुगुने नर केसरी-सम पदाति वीर आदि सशक्त राजसिंह के समान रावण के साथ गये। ३४६९

मून्रु वैप्पितु मप्पुरत् तुलहितु मुन्नैयितु
एन्रु कोळुरुम् वीरर्हळ् वम्मितन् रिशैक्कुम्
आन्र पेरियु मदिर्हुरर् चङ्गमु मशति
ईन्र काळमु मेळॊडे ळुलहमु मिशैप्प 3470

मून्रु वैप्पितुम्–तीनों लोकों में; अ पुरत्तु उलकितुम्–उनके बाहर के लोक में; मुन्नैयितु–युद्धभूमि में; एन्रु–सामना करके; कोळ् उरुम्–प्राणहरण करनेवाले; वीरर्कळ्–राक्षस वीर; वम्मितु ॲन्रु–'आओ' ऐसा; इचैक्कुम्–शब्द करनेवाली; आन्र पेरियुम्–उत्कृष्ट भेरियाँ; अतिर् कुरल्–उच्चनाद करनेवाले; चङ्कमुम्–शंख और; अचति ईन्र–अशनि-से स्वर का जनक; काळमुम्–काहल; एळॊटु एळु उलकमुम्–चौदहों भुवनों में; इचैप्प–स्वर फैलाते गये। ३४७०

तीनों लोकों और बाह्यलोक में भी युद्ध में शत्रु-प्राणहारी राक्षस वीर साथ गये। 'आओ'-सी ध्वनि निकालनेवाली बड़ी भेरियाँ, उच्चनादी शंख, अशनि-सा स्वर निकालनेवाले काहल —ये सब बजते गये और उनका स्वर चौदहों भुवनों में गूँजता रहा। ३४७०

अन्नैय राहिय वरक्कर्क्कु मरक्कनै यवुणर्
विन्नैय वानवर् वॆव्विनैप् पयत्तिनै वीरर्
निन्नैयु नॆञ्जितैच् चुडुमदोर् नॆरुप्पिनै निमिर्न्दु
कन्नैयु मॆण्णयुड् गडप्पदोर् कडलिनैक् कण्डार् 3471

अवुणर् वित्रैयम्–दानवों की वंचना में; वानवर्–फँसे देवों के; वॆम् वित्रैप्पयत्तिनै–दारुण दुर्भाग्य के समान; वीरर्–वीरों के; नित्रैयुम् नॆञ्चितै–स्मरणकारी मन को; चुटुमतु–जलानेवाली; ओर् नॆरुप्पिनै–एक आग-सा जो था; अन्नैयर् आकिय–वैसे ही स्वभाव के; अरक्कर्क्कुम् अरक्कनै–राक्षसों में बड़े राक्षस (रावण) को; ऍण्णैयुम्–गिनती के भी; कटप्पतु ओर्–पार रहनेवाले; ओर्–एक; निमिर्न्तु कन्नैयुम्–ऊँचे शोर मचानेवाले; कटलिनै–(सेना-) सागर को; कण्टार्–(वानरों ने) देखा। ३४७१

वानरों ने दानवाक्रांत देवों के दुर्भाग्य-सम, वीरों के स्मरण-शक्ति-निलय मन को जलाती आग, और वैसे स्वभाव वाले राक्षसों में प्रबल राक्षस

रावण को और उसके साथ ऊँची आवाज में नर्दन करती आनेवाली अपार सेना को देखा। ३४७१

क्कणड्ड कॅहळो डणिवहुत् तुरुवुरळ् करकळ्
कौण्ड्ड कूड्र्रमु नडुक्कुरत् तोळ्पुडै कॉट्टि
अणड कोळङ्ग ळडुक्कळिन् दुलैवुर् वार्त्तार्
मण्ड्ड पोरिडै मडिवदे नलमॅन मदित्तार् 3472

कॅकळोटु कण्टु–पार्श्व के व्यूहों के साथ देखकर; अणि वकुत्तु–खुब व्यूहों में बँटकर; मण्टु पोरिटै–घोर युद्ध में; मटिवते–जान देना ही; नलम् ॲन–अच्छा, ऐसा; मतित्तार्–निश्चय करके; कूड्र्रमुम् नडुक्कु उर–यम को भी कँपाते हुए; तोळ् पुटै–कन्धों को; कॉट्टि–ठोंककर; उरुम् उरळ्–अशनि-सम; करकळ् कॉण्टु–पर्वतों को उठा लेकर; अण्टम् कोळङ्कळ्–अण्डगोल; अटुक्कु अळिन्तु–तटों का क्रम खोकर; उलैवु उर–थर्रा जायँ, ऐसा; आर्त्तार्–गरज उठे। ३४७२

पार्श्व के व्यूहों के साथ आते राक्षस तथा उसकी सेना को देखकर वानर वीरों ने अपने में व्यूह रचा। घोर युद्ध में मरना ही उत्तम समझनेवाले उन्होंने यम को भयभीत करते हुए कंधे ठोंके; और अशनि-सम पर्वतों को हाथ में उठा लेते हुए ऐसा तुमुल नाद उठाया कि अंडों के तहों के क्रम में परिवर्तन हो गया और खलवली मच गयी। ३४७२

अरक्कन् शेनैयु मारुयिर् वळङ्गुवा नमैन्द
कुरक्कु वेलैयु मोन्ड्रोडोन् ड्रॅदिरॅदिर् कोत्तु
नॅरुक्कि नेर्न्दन नॅरुप्पिमैप् पोडित्तन नॅरुप्पिन्
उरुक्कु शॅम्बॅन वम्बरत् तोडिन दुदिरम् 3473

अरक्कन् चेनैयुम्–राक्षस (राज) की सेना और; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राणों की; वळङ्कुवान्–बलि देने; अमैन्त कुरक्कु वेलैयुम्–जो प्रस्तुत हुए थे, उन वानरों का सागर; ऑन्ड्रोटु ऑन्ड्रु–एक दूसरे के; ॲतिर् ॲतिर् कोत्तु–आमने-सामने आकर; नॅरुक्कि नेर्न्तन–भिड़कर लड़े; इमै–आँखों में; नॅरुप्पु पॉटित्तन–आग उठी; नॅरुप्पिन्–आग में; उरुक्कु चॅम्पु ॲन–पिघले ताम्र के समान; उतिरम्–रक्त; अम्परत्तु–समुद्र की तरफ़; ओटिन्तु–बहा। ३४७३

राक्षस-सेना और प्यारे प्राणों की बलि देने को उद्यत वानर-सेना आमने-सामने आकर गुँथ गयी। उनकी आँखों में आग उठी और पिघले ताम्र के समान रक्त बहा और समुद्र की तरफ़ गया। ३४७३

अड्र वत्ड्रलै यरुकुरै यॅळुन्दॅळुन् दण्डत्
तॉड्र वानह मुदयमण् डिलमॅन वॉळिरच्
चुड्रु मेहत्तैत् तोत्तिय कुरुदिनीर् तुळिप्प
मुड्रुम् वैयहम् बोर्क्कळ मामॅन मुयन्ड्र 3474

अऱ्ऱुवत् तलै–कटे हुए कठोर सिर; **अऱु कुऱै**–कटे रुंडों से; **ऍऴुन्तु ऍऴुन्तु**–उछल-उछलकर; **अण्टत्तु**–आकाश से; **ऒऱ्ऱ**–लगे; **वान् अकम्**–(और) आकाश में; **उतयम् मण्टिलम् ऍन्न**–उदयमण्डल के समान; **ऒळिर**–प्रकाशमय रहे; **चुऱ्ऱुम् मेकत्तै**–चारों ओर रहे मेघों में; **तोऩ्ऱिय**–उनसे लटकनेवाले; **कुरुति नीर्**–रक्त-जल को; **तुळिप्प**–बूँदें टपकीं; **वैयकम् मुऱ्ऱुम्**–भू भर में; **पोर् कळम् ऍन्न**–युद्धभूमि बनाने की; **मुयन्ऱ**–कोशिश करती-सी; **आम्**–लगीं। ३४७४

कटे शरीर से अलग जो सिर चले वे उछल-उछलकर आकाश में जा लगे। वहाँ वे उदयमंडल के समान लगे। चारों ओर रहे मेघों में उनसे रक्त की बूँदें जा भर गयीं। वे बूँदें भूमंडल पर गिरीं तो ऐसा लगा कि वे बूँदें सारे भूमंडल को युद्धभूमि बनाने का प्रयास कर रही हों। ३४७४

तूवि यम्बॆंड यरियिन सरिदरच् चूळि
तूवि यम्बॆंडे शोर्न्दन शौरियुडङ् चुरिप्प
मेवि यम्बडै पडप्पडक् कुरुदियिन् वीऴ्न्द
मेवि यम्बडैक् कडलिडैक् कुडरोडु मिदन्द 3475

अम्–मनोहर; **पटै कटल् इटै**–सेना-सागर-मध्य; **मेवि**–रहकर; **अम्पु ऍटै**–शर निकालते समय (लक्ष्मण के); **तूवि**–कोमल परों की; **अम् पॆटै अरि इनम्**–सुन्दर भ्रमरियों-सह भ्रमरों का वृन्द; **मरि तर**–जब लौटे; **चूळि**–मुखपट्ट को; **तूवि**–फेंककर; **चोर्न्तन**–थककर; **वियम्मे**–मान्य; **पटै**–(लक्ष्मण के) अस्त्र; **पट पट**–ज्यों-ज्यों लगे; **कुरुतियिन्**–रक्त में; **चौरि उटल्**–खून सने शरीरों को; **चुरिप्प**–खूब मग्न करके; **वीऴ्न्त**–गिरकर; **कुटरोटुम्**–आँतों के साथ; **मितन्त**–तिरे। ३४७५

उस सेना-सागर-मध्य रहकर लक्ष्मण गजों पर बाण चला रहे थे। गजों पर जब वे बाण लगे, तब उनका मदनीर पीने कोमल परोंवाली भ्रमरियों के साथ जो आये थे वे भ्रमर हट गये। गज मुखपट्ट को फेंक कर थक गये। ज्यों-ज्यों लक्ष्मण के मान्य शर उन पर लगते, त्यों-त्यों उनके शरीर रक्त के प्रवाह में डूब जाते और वे आँतों के साथ तिरते। ३४७५

कण्डि ऱन्दनर् णवर्तम् मुहत्तवा मुऱुवल्
कण्डि ऱन्दनर् मडन्दैय रुयिरोडुङ् गलन्दार्
पण्डि ऱन्दन पऴम्बुणर् वहम्बुहप् पन्निप्
पण्डि ऱन्दन पुलम्बोलि शिलम्बोलि पन्निप्प 3476

मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; **कण् तिऱन्तनर्**–खुली आँखों वाले; **कणवर् तम्**–पतियों के; **मुकत्त आम्**–मुख पर प्रगट; **मुऱुवल्**–मुस्कुराहट को; **कण्टु**–देखकर; **पण्टु इऱन्तन**–पहले बीते; **पऴम् पुणर्वु**–पुराने संगम-स्मरण के; **अकम् पुक**–मन में

उठने पर; पन्ऱि–कहकर; पण् तिऱनुतु–श्रेष्ठ रागों में; अत्त–(गाती) सी; पुलम्पु–प्रलाप के; ऑलि–स्वर के साथ; चिलम्पु–नूपुर की ध्वनि के; पऴिप्प–उठते; इऱन्ततर्–मरीं; उयिरोटुम् कलन्तार्–(पतियों की) आत्माओं के साथ (स्वर्ग में जा) मिल गयीं। ३४७६

राक्षसियों ने अपने पतियों के मुखों पर, जिनकी आँखें थोड़ी देर के लिए खुलीं, हास देखा तो उन्हें पुराने संगम के स्मरण ताज़ा हुए। वे उनकी चर्चा करते हुए रोयीं और उनका प्रलाप सुन्दर रागों के गाने के समान रहा। अपने नूपुरों को क्वणित करते हुए वे दुःख के आधिक्य से मरीं और स्वर्ग में जाकर अपने पतियों की आत्माओं से मिल गयीं। ३४७६

एऴु मेऴुमॆन् ऱिचैक्किऩ्ऱ वुलहङ्गळ् यावुम्
ऊऴि पोवदे यॊप्पदो रुलैवुऱ वुडऱ्ऱुम्
नूऴिल् वॆञ्जम नोक्कियव् विरावण नुवन्ऱान्
दाऴि लॆन्बडै तरुक्करु मॆन्बदोर् तन्मै 3477

एऴुम् एऴुम्–सात और सात; ऍन्ऱु इचैक्किन्ऱ–ऐसा कथित; उलकङ्कळ् यावुम्–सभी लोक; ऊऴि–युगांत में; पोवते ऑप्पतु–मिट जाते ही जैसे; ओर्–एक; उलैवु–नाश को; उऱ–लाते हुए; उटऱ्ऱुम्–जो किया जाता है; नूऴिल्–जहाँ मारने का काम होता है; वॆम् चमम्–वह भयानक समरांगन; नोक्कि–देखकर; अव् इरावणन्–उस रावण ने; ताऴ् इल्–जो निर्बल नहीं; ऍन् पटै–उस मेरी सेना का; तरुक्कु अऱुम्–गर्व चूर होगा; ऍन्पतु ओर् तन्मै–ऐसा एक विचार; नुवन्ऱान्–प्रगट किया। ३४७७

रावण ने देखा कि चौदहों भुवनों के नाशक युगांतकाल के नाशकार्य के समान इस युद्धभूमि में संहारक काम हो रहा है! उसने यह विचार प्रकट किया कि अब मेरी सेना का घमंड चूर हो जायगा। ३४२७

मरमुङ् गल्लुमे विल्लॊडु वाण्मऴुच् चूलम्
अरमुङ् गल्लुम्वेल् मुदलिय वयिऱ्पडै यडक्किच्
चिरमुङ् गल्लॆन्नच् चिन्दलिऱ् चिदैन्द शेनै
उरमुङ् गल्वियु मुडयवन् शॆरुनिन्ऱ वॊरुबाल् 3478

मरमुम् कल्लुमे–तरुओं और पत्थरों ने ही; विल्लॊटु–धनु और; वाळ्–तलवारें; मऴु–परशु; चूलम्–शूल; अरमुम्–आरा; कल्लुम्–और पत्थर; वेल्–शक्ति; मुतलिय–आदि; अयिल् पटै–तीक्ष्ण हथियारों को; अटक्कि–बेकार करके; चिरमुम्–(राक्षसों के) सिरों को; कल् ऍन्न–'गल्' शब्द के साथ; चिन्तलिल्–गिरा दिया इसलिए; अ चेनै–वह सेना; चितैन्ततु–छिन्न-भिन्न हो गयी; उरमुम्–शारीरिक बल; कल्वियुम्–युद्धविद्या (का ज्ञान); उटैयवन्–जिनके पास थे; चॆरु–उन (लक्ष्मण का) युद्ध; ओरु पाल्–एक ओर; निन्ऱतु–चलता रहा। ३४७८

वानर केवल तरुओं और पत्थरों को फेंक रहे थे और उनसे राक्षसों के धनुष, तलवारें, परशु, शूल, आरे, शक्तियाँ आदि तीक्ष्ण हथियार बेकार हो जाते थे और राक्षसों के सिर 'गल्' की ध्वनि के साथ गिर जाते थे; और वह सेना तहस-नहस हो गयी। उधर लक्ष्मण का, जो शरीर-बल और युद्ध-विद्या दोनों के स्वामी थे, युद्ध भी चल रहा था। ३४७८

अऴलुङ् गट्कळिऱ् ऱणियॊडु तुणिपडु मावि
कऴलुम् बल्परित् तेरॊड् पुरवियुञ् जुऱ्ऱच्
चुऴलुञ् जोरिनी राऱ्ऱॊडुङ् गडलिडैक् कलक्कुम्
कुऴलु नूलुम्बो लनुमनुन् दानुमक् कुमरन् 3479

अनुमनुम्–मारुति; अ कुमरन् तानुम्–और वह कुँअर; कुऴलुम् नूलुम् पोल्–नाली और सूत के समान; अऴलुम्–आग निकालती; कण्–आँखों के; कळिऱु अणियॊटु–गजों की श्रेणियों से; तुणि पडुम्–कट जाने से; आवि चुऴलुम्–जिनके प्राण झूलते थे; पल् परि–अनेक अश्वों और; तेरॊटु–रथों के साथ; पुरवियुम्–अकेले अश्व; कऴलुम्–बहते; चोरि नीर् आऱ्ऱॊटुम्–रक्त की नदी के साथ; कटल् इटै कलक्कुम्–समुद्र में जा मिलते। ३४७९

हनुमान और वे कुँअर लक्ष्मण नाली और सूत्र के समान अपृथक् रूप से घूमते थे। और फलस्वरूप आग निकालती आँखों वाले गजों की श्रेणियाँ, कटकर जिनके प्राण झूलते थे, ऐसे रथों के जुते अश्व और अकेले अश्व सभी बहते रक्त-प्रवाह के साथ समुद्र में जा मिले। ३४७९

विल्लुङ् गूऱ्ऱुवऱ् कुण्डॆनत् तिरिहिन्ऱ वीरन्
कॊल्लुङ् गूऱ्ऱॆनक् कुऱैक्कुमिन् निऱैपॆरुङ् गुऴुवै
ऒल्लुङ् गोळरि युरुमन्न कुरङ्गिन दुहिरुम्
पल्लुङ् गूर्क्किन्ऱ कूर्क्किला वरक्करदम् बडैहळ् 3480

कूऱ्ऱुवऱ्कु–यम के (हाथ में); विल्लुम् उण्टु ऎन्न–धनु भी है ऐसा; तिरिकिन्ऱ–जो घूमते हैं; वीरन्–वे वीर लक्ष्मण; इ निऱै–इस पूर्ण; पॆरु कुऴुवै–बड़ी सेना का; कॊल्लुम् कूऱ्ऱु ऎन्न–संहार करनेवाले यम के समान; कुऱैक्कुम्–मिटा देंगे; ऒल्लुम्–खूनी; कोळ् अरि–सशक्त सिंह की; उरुम्–अशनि की; अन्न–समानता करनेवाले; कुरङ्किनतु–वानर के; उकिरुम् पल्लुम्–नख और दाँत; कूर्क्किन्ऱ–बढ़ते हैं; अरक्कर् तम् पटैकळ्–राक्षसों के हथियार; कूर्क्किला–नहीं बढ़ते। ३४८०

क्या यम हाथ में भी धनु है ? ऐसा संदेह पैदा करते हुए लक्ष्मण घूम रहे थे। वे अवश्य इस पूर्ण तथा बड़ी सेना को संहारक यम के समान मारकर मिटा देंगे। खूनी सिंह-सम तथा अशनि के समान वानर हनुमान के नख और दाँत बढ़ते हैं। पर राक्षसों के हथियार कहाँ बढ़ते ! नहीं बढ़ते। ३४८०

कण्डु निन्ऱिरैप् पॊऴुदिनिक् कालत्तैक् कऴिप्पिन्
उण्डु कैविडुङ् गूऱ्ऱुव निरुदर्बे रुयिरै
मण्डु वॆञ्जॆरु नानॊरु कणत्तिडै मडित्ते
कॊण्डु मीळ्हुवॆन् कॊऱ्ऱमॆन् ऱिरावणन् कॊदित्तान् 3481

इऱै पॊऴुतिन्–कुछ देर; कण्टु निन्ऱु–देखता खड़ा रहा; इति–अब; कालत्तै कऴिप्पिन्–समय काट दें तो; कूऱ्ऱुवन्–यम; निरुतर् पेर् उयिरै–राक्षसों के बड़े प्राणों को; उण्टु–खाकर; कै विटुम्–त्याग देगा; मण्टु वॆम् चॆरु–घमासान भयंकर युद्ध में; ऑरु कणत्तिटै–एक क्षण में; नान्–मैं; मटित्तु–(शत्रुओं को) मारकर; कॊऱ्ऱम् कॊण्टु–विजय लेकर; मीळ्कुवॆन्–लौटूँगा; ॲन्ऱु–यह विचार कर; इरावणन् कॊतित्तान्–रावण उबल पड़ा। ३४८१

रावण कुछ देर यह हाल देखता हुआ खड़ा रहा। फिर विचार किया कि अब समय बर्बाद करूँ तो यम सारे राक्षसों के प्राण लेकर युद्धभूमि छोड़ जायगा। इसलिए इस घोर युद्ध में मैं एक ही क्षण के अंदर शत्रुओं का संहार करूँगा और विजय लेकर लौटूँगा। रावण खौल उठा। ३४८१

ऊदै पोल्वन वुरुमुरऴ् तिऱलन वुरुविप्
पूद रङ्गळैप् पिळप्पन वण्डत्तैप् पॊदुप्प
मादि रङ्गळै यळप्पन माऱ्ऱरुङ् गूऱ्ऱिन्
दूदु पोल्वन शुडुहणै मुऱैमुऱै तुरन्दान् 3482

ऊतै पोल्वन–पवन-तुल्य; उरुम् उरऴ्–अशनि से होड़ लगाने की; तिऱलन–शक्ति रखनेवाले; पूतरङ्कळै–भूधरों को; उरुवि–भेदकर; पिळप्पन–फाड़नेवाले; अण्टत्तै–अण्ड में; पॊतुप्प–छेद लगानेवाले; मातिरङ्कळै अळप्पन–दिशाओं को नापनेवाले; माऱ्ऱरुम्–अवार्य; कूऱ्ऱिन्–यम के; तूतु पोल्वन–दूतों के समान रहनेवाले; चुटु कणै–तापक बाणों को; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तुरन्तान्–(रावण ने) चलाये। ३४८२

उसने बारी-बारी से पवन-सम तेज़, अशनि से होड़ लगानेवाले बलवान, भूधरभेदी, अण्डछेदक, दिशाओं के मापक और अवार्य यम के दूतों के समान अस्त्रों को छोड़ा। ३४८२

आळि पोन्ऱुळ नॆदिरन्दपो दमर्क्कळत् तडैन्द
जाळि पोन्ऱुळ नॆन्बदॆ नळ्ळिरु ळडैन्द
काळि पोन्ऱन निरावणन् वॆळ्ळिडैक् करन्द
पूळै पोन्ऱदप् पॊरुशिनत् तरिहळ्दम् बुणरि 3483

आळि पोन्ऱु उळन्–सिंह (या शरभ) तुल्य जो था; ॲतिरन्त पोतु–(वह रावण) जब लड़ा तब; अमर् कळत्तु–युद्धाजिर में; अटैन्त–आये (वानर); जाळि पोन्ऱु–कुत्तों के समान; उळ ॲन्पतु–रहे, यह कहना; ॲन्–क्या; नळ् इरुळ्–

अर्धरात्रि में; अटैनृत–आयी; काळि पोनृरतत्–हवा के समान रहा; इरावणत्–रावण; वॆळ् इटै–खाली आकाश में; करनृत–छिपे; पूळै पोनृरतु–'पूळै' (नामक) पौधों के समान रहा; अ–वह; पोरु चितत्तु–युद्ध क्रोध का; अरिकळ् तम् पुणरि–वानरों का सेना-सागर। ३४८३

रावण लड़ाई करते समय सिंह (या शरभ) रहा और युद्धभूमि में आये वानर कुत्ते —ऐसा कहना क्या ? अर्धरात्रि में प्रचंड पवन-सा रहा रावण और क्रुद्ध वानर-सागर उसके सामने उड़कर छिपनेवाले 'पूळै' नाम के पौधों के फूलों के समान रहा। ('पूळै' के फूल बहुत छोटे और हलके होते हैं।)। ३४८३

इरियल् पोहिनृऱ शेनैयै यिलक्कुवन् विलक्कि
अरिह ळञ्जनृमि नञ्जनृमि यॆनृऱरुळ् वळङ्गित्
तिरियु मारुदि तोळॆनुन् देर्मिशैच् चॆनृऱान्
ॲरियुम् वॆञ्जिनत् तिरावण नॆदिर्पुहुन् देऱ्ऱान् 3484

इलक्कुवन्–लक्ष्मण; इरियल् पोकिनृऱ–अव्यवस्थित रूप से भागनेवाली; चेतैयै–सेना को; विलक्कि–रोककर; अरिकळ्–वानरो; अञ्चनृमिन् अञ्चनृमिन्–मत डरो, मत डरो; ऍनृऱु अरुळ् वळङ्कि–ऐसा कृपावचन कहकर; तिरियुम् मारुति–संचार करनेवाले मारुति के; तोळ् ऍनुम्–कंधों रूपी; तेर् मिचै–रथ पर; चॆनृऱान्–गये; ऍरियुम्–जलनेवाले; वॆम् चितत्तु–दारुण क्रोध के; इरावणत्–रावण ते; ऍतिर् पुकुनृतु–समक्ष जाकर; एऱ्ऱान्–(और लक्ष्मण ने) रोका। ३४८४

लक्ष्मण ने अस्त-व्यस्त भागते वानरों को यह कृपा-वचन कहकर रोका कि हे वानरो ! मत डरो। मत डरो। फिर वे संचार करनेवाले मारुति के कंधों रूपी रथ पर बैठे रावण के समक्ष आये और उसका सामना करने लगे। ३४८४

एऱ्ऱुक् कोडलु मिरावण नॆरिमुहप् पहळि
नूऱ्ऱुक् कोडियिन् मेर्चॆलच् चिलैकोडु नूक्कक्
काऱ्ऱुक् कोडिय पञ्जॆनत् तिशैतोऱुङ् गरक्क
वेऱ्ऱुक् कोल्हॊडु विलक्किन निलक्कुवन् विशैयाल् 3485

एऱ्ऱु कोटलुम्–सामना करके लड़े जब; इरावणत्–रावण के; ऍरिमुकम्–अग्निमुखी; पकळि–शरों को; नूऱ्ऱु कोटियित् मेल् चॆल–सौ करोड़ से अधिक; चिलै कोटु–धनु से; नूक्क–चलाने पर; काऱ्ऱुक्कु–हवा के आगे; ओटिय–उड़ी; पञ्चु ऍत–रूई के समान; तिचै तोऱुम् करक्क–दिशा-दिशा में जा छिपें, ऐसा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण ने; विचैयाल्–तेजी के साथ; वेऱु कोल् कॊटु–अन्य बाणों से; विलक्कितत्–निवार दिया। ३४८५

जब लक्ष्मण ने युद्ध ठाना तब रावण ने सौ करोड़ से भी अधिक अग्निमुखी बाण चलाये। लक्ष्मण ने अन्य बाणों को छोड़कर उनको रोका,

तो वे पवन-चालित रूई के समान उड़ गये और दिशा-दिशा में जाकर अदृश्य हो गये। ३४८५

विलक्कि लानुदडन् दोळिनु मार्बिनुम् विशिहम्
उलक्क वुय्त्तन निरावण नैन्दोडेन् दुरुवक्
कलक्क मुर्रिल निळवलु मुळ्ळत्तिऱ् कनत्रान्
अलक्क णॅय्दुवित् तानड लरक्कनै यम्बाल् 3486

विलक्कितान्–जिन्होंने रोका उनके; तट तोळिनुम्–विशाल कंधों पर; मार्पिनुम्–वक्ष में; विचिकम्–विशिखों को; इरावणन्–रावण ने; उलक्क–चुभें ऐसा; उय्त्तनन्–चलाया; ऐन्तोटु ऐन्तु उरुव–दस शर भेद चले; कलक्कम् उऱ्ऱिलन्–(तो भी) शिथिल न पड़े; इळवलुम्–लघुराज ने; उळ्ळत्तिल् कनत्रान्–मन में गुस्सा करके; अटल् अरक्कनै–ताक़तवर राक्षस को; अम्पाल्–बाण से; अलक्कण् ऍय्तुवित्तान्–त्रस्त कर दिया। ३४८६

अस्त्रनिवारक सुमित्रासुत के विशाल कंधों और वक्ष में रावण ने चुभाते हुए अस्त्र चलाये। दस अस्त्र भेद निकले भी। तो भी लक्ष्मण शिथिल नहीं हुए और क्रोध करके अपने अस्त्रों से रावण को खूब त्रस्त कर दिया। ३४८६

काक्क लाहलाक् कडुप्पिनिऱ् रॉडुप्पन कणैहळ्
नूक्कि नानुगणै नुरुक्किना नरक्कनु नूळिल्
आक्कुम् वॅञ्जमत् तरिदिवत् ऱनैवॅल्व दम्मा
नीक्कि यॅन्निनिच् चॅय्वदॅन् ऱिरावण निनैन्दान् 3487

काक्कल् आकला–रोका न जा सके ऐसी; कटुप्पितिल्–तेज़ी से; तॊटुप्पन–चलाये गये; कणैकळ्–शरों को; नुरुक्कितान्–जिसने चूर किया; अरक्कनुम्–राक्षस। इरावणन्–रावण ने; नूळिल् आक्कुम्–शत्रु-संहार के; वॅम् चमत्तु–भयंकर युद्ध में; इवन् तनै–इसको; वॅल्वतु–जीतना; अरितु–कठिन है; नीक्कि–इसे छोड़कर; इति–अब; चॅय्वतु ऍन्–करना क्या है; ऍन्ऱु–ऐसा; इरावणन् निनैन्तान्–रावण ने विचार किया (अम्मा–आश्चर्य)। ३४८७

दुर्वार वेग से आनेवाले उन शरों को रावण ने चूर कर दिया। उसने एक बात सोची : संहारक युद्ध में इसको परास्त करना दुर्लभ है ! अब इसके लिए क्या किया जाय, री मैया ? । ३४८७

कडवुण् माप्पडै तॉडुक्किन्मऱ् ऱवैमुर्रुङ् गडक्क
विडवु मार्रवुम् वल्लनत्तरि यारैयुम् वॅल्लुम्
तडवु मार्रलेक् कूर्रैयुन् दमैयनैप् पोलच्
चुडवु मार्रुमॅव् वुलहैयु मॅवनुक्कुन् दोलान् 3488

कटवुळ् मा पटै–देवताओं के नामधारी बड़े अस्त्रों को; तॊटुक्किऩ्–चलायें तो; अवै मुऱ्ऱुम्–उन सबको; कटक्क विटवुम्–भेद जाने देने में और; आऱ्ऱवुम्–सहने में; वल्लऩ् अऩ्ऱि–समर्थ है इसके अलावा; यारैयुम् वॆल्लुम्–सबको जीतेगा; कूऱ्ऱैयुम्–यम का भी; आऱ्ऱलै तटवुम्–बल परास्त कर देगा; तमैयऩै पोल–बड़े भाई की तरह; ऎव् उलकैयुम्–किसी भी लोक को; चुटवुम् आऱ्ऱुम्–जला भी सकता है; ऎवऩुक्कुम्–किसी से भी; तोलाऩ्–नहीं हारेगा। ३४८८

देवों के नामधारी अस्त्र छोड़ता हूँ, तो वे भेद जाते हैं, पर यह उससे प्रभावित नहीं होता। यह उनको झेलने में भी समर्थ रहता है। यह सबको जीतेगा। यम के बल को भी बेकार कर देगा। अपने ज्येष्ठ भ्राता के समान यह किसी भी लोक को जला सकता है! यह किसी से हारेगा भी नहीं। ३४८८

मोह मॊऩ्ऱुण्ड मुदलवऩ् वहुत्तदु मुऩ्ऩा
ऴाह मऱ्ऱदु कॊऱ्ऱमुज् जिवऩ्दऩै यऴिप्प
देह मुऱ्ऱिय विज्जैयै यिवऩ्वयि ऩेविक्
काह मुऱ्ऱुऴल् कळत्तिऩिऱ् किडत्तुवॆऩ् कडिदिऩ् 3489

मोकम् ऒऩ्ऱु उण्टु–मोहनास्त्र एक है; मुऩ्ऩाळ्–प्राचीन काल में; मुतल्वऩ् वकुत्ततु–आदिभगवान का रचित; आकम् अऱ्ऱतु–दृश्य रूप का नहीं; चिवऩ् तऩै–शिव की भी; कॊऱ्ऱमुम् अऴिप्पतु–विजय को हरनेवाला; एकम्–अद्वितीय; विज्चैयै मुऱ्ऱिय–मंत्र-भरा; इवऩ् वयिऩ् एवि–(वह अस्त्र) इस पर चलाकर; काकम् उऱ्ऱु उऴल्–जहाँ कौए आकर मँड़राते; कळत्तितिल्–इस युद्धभूमि में; कटितिऩ्–शीघ्र; किटत्तुवॆऩ्–लिटा दूंगा। ३४८९

आदिभगवान का प्राचीन काल में रचित मोहनास्त्र एक है! वह अरूप है। शिव की विजय को भी हर लेनेवाला है! मंत्रपूरित अद्वितीय उसे इस पर चलाऊँगा और उस समरांगन में जल्दी लिटा दूंगा, जिस पर कि कौए मँड़राते हैं। ३४८९

ऎऩ्ब दुऩ्ऩियव् विज्जैयै मऩत्तिडै यॆण्णि
मुऩ्बऩ् मेल्वरत् तुरऩ्दऩ ऩदुहण्डु मुडुहि
अऩ्बिऩ् वीडण ऩाऴियाऩ् पडैयिऩि ऩऱुत्ति
ऎऩ्ब वोदिऩ ऩिलक्कुव ऩदुतॊडुत् तॆय्दाऩ् 3490

ऎऩ्पतु उऩ्ऩि–यह सोचकर; अव् विज्चैयै–उस मोहन मन्त्र को; मऩत्तिटै ऎण्णि–मन में स्मरण करके; मुऩ्पऩ् मेल् वर–बलवान लक्ष्मण पर चलने; तुरन्तऩऩ्–छोड़ा; अतु कण्टु–उसको देखकर; वीटणऩ्–विभीषण ने; अऩ्पिऩ्–प्रेम के कारण; मुटुकि–जल्दी आकर; आऴियाऩ् पटैयिऩ्–चक्रधारी के अस्त्र से; अऱुत्ति–काटो; ऎऩ्पतु–ऐसा; ओतिऩऩ्–कहा; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण ने भी; अतु तॊटुत्तु–वह लगाकर; ऎय्तास्–चलाया। ३४९०

ऐसा सोचकर रावण ने उस मोहनास्त्र का स्मरण किया और बलवान लक्ष्मण पर प्रेरित किया। विभीषण ने यह देखा तो प्रेम से प्रेरित हो लक्ष्मण के पास जल्दी जाकर समझाया कि इसे चक्रधारी के विष्णु-अस्त्र चलाकर काटिए। लक्ष्मण ने वही चलाया। ३४९०

वीड णत्शौल विण्डुविन् पडक्कलम् विट्टात्
मूडु वॅञ्जिन मोहत्तै नीक्कलु मुत्तिन्दात्
माडु नित्रव नुबायङ्गण् मदित्तिड वन्द
केडु नन्दमक् कॅन्बदु मतङ्गॉण्डु किळर्न्दात् 3491

वीटणन् चॉल–विभीषण के कहने पर; विण्टुवित्–विष्णु के; पटै कलम्–अस्त्र को; विट्टात्–चलाकर; मूटुम्–आच्छादक; वॅम् चितम्–कठोर क्रोधी; मोकत्तै–मोहनास्त्र को; नीक्कलुम्–दूर करते ही; मुतिन्तात्–क्रुद्ध होकर (रावण); माटु नितृवत्–पार्श्वस्थित (विभीषण) के; उपायङ्कळ् मतित्तिट–उपाय सोचने से; नन्तमक्कु वन्त केटु–हम पर आया उपद्रव; ॲन्पतु–यह; मतम् कॉण्टु–मन में लाकर; किळर्न्तात्–उग्र हो उठा। ३४९१

विभीषण के कहने से लक्ष्मण ने श्रीविष्णु का अस्त्र छोड़ा। उसने आच्छादक तथा क्रोध-भरे मोहनास्त्र को हटा दिया। तब क्रुद्ध रावण यह सोचकर उग्र हो गया कि पार्श्वस्थित मेरे भाई के सोचकर बताने से यह हानि हमारी हो गयी। ३४९१

मयन्गॉ डुत्तदु महळॉडु वयङ्गनल् वेळ्वि
अयन् पडैत्तुळ दाळियुङ् गुलिशमु मनैय
दुयर्न्द कॉट्रमु मूळियुङ् गडन्दुळ दुरुमिऱ्
चयन्द नैप्पॉरुन् दम्बियै युयिर्हॉळच् चमैन्दात् 3492

मयन् मकळॉटु कॉटुत्ततुम्–जिसे मय ने अपनी सुता के साथ दिया था; वयङ्कु–तेजोमय; अनल् वेळ्वि–अग्नि के यज्ञ में; अयन् पटैत्तुळतु–ब्रह्मा द्वारा रचित; आळियुम्–चक्र; कुलिचमुम्–और कुलिश; अनैयतु–के सदृश; उयर्न्त कॉट्रमुम् उन्नत विजय को; ऊळियुम्–और युगांत की अग्नि को; कटन्तुळतु–पीछे छोड़ चुका (जो) उस शक्ति से; उरुविल्–रूप में; चयन्तनै–जयंत के; पॉरुवुम्–सदृश रहनेवाले; तम्पियै–छोटे भाई के; उयिर् कॉळ–प्राणों को हरने पर; चमैन्तात्–तुल गया। ३४९२

तब उसने उस शक्ति को चलाकर जयंत-सदृश अपने रूप वाले भाई का प्राणांत कर देने का विचार किया, जिसे मय ने सुता के विवाह के अवसर पर रावण को दिया था; जो ब्रह्मा द्वारा यज्ञ में रची गयी थी; जो चक्र और कुलिश से तुल्य थी; और जो किसी की भी विजय को और युगांत की अग्नि को भी परास्त कर चुकी थी। ३४९२

विट्ट पोदिनि नीरुवन वीट्टिये मीळुम्
पट्ट पोदव नान्मुह नायिनुम् बडुक्कुम्
वट्ट वेलदु वलङ्गोडु वाङ्गिनन् वणङ्गि
ऍट्ट निऱ्कलात् तम्बिमेल् वल्विशैत् तॆऱिन्दान् 3493

विट्ट पोतिनिल्–जब उसे छोड़ा; ऑरुवर्त–वह किसी को भी; वीट्टिये–मारकर ही; मीळुम्–लौटता; पट्ट पोतु–जब लगता; अवन्–वह; नान् मुकन् आयितुम्–चतुर्मुख ही तो भी; पट्क्कुम्–उसे मार देता; अतु वेल्–उस तरह की शक्ति को; वट्टम् वलन् कोंटु–परिक्रमा करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाङ्कितन्–ग्रहण कर; ऍट्ट निऱ्कला–जो दूर नहीं खड़ा रहा उस; तम्पि मेल्–छोटे भाई पर; वल् विचैत्तु–खूब जोर लगाकर; ऍऱिन्तान्–प्रेरित किया। ३४९३

वह ऐसा आयुध था जो जब छोड़ा गया तो मारकर ही लौटता। चाहे पात्र चतुर्मुख ही क्यों न हो! उस शक्ति की परिक्रमा करके रावण ने उसको नमस्कार किया और जो दूर नहीं खड़ा था उस अपने छोटे भाई पर ज़ोर देकर चला दिया। ३४९३

अऱिन्द कालैयिल् वीडण नदनिलै यॆल्लाम्
अऱिन्द शिन्दैय नैयवी दॆन्नुयि रऴिक्कुम्
पिऱिन्दु शॆय्यलाम् बॊरुळिलै यॆन्ऱलुम् बॆरियोन्
अऱिन्दु पोक्कुव लञ्जलॆन् ऱॆन्ऱिडै यणैन्दान् 3494

ऍऱिन्त कालैयिल्–जब चलाया तब; अतन् निलै ऍल्लाम्–उसकी सारी गति-विधि; अऱिन्त चिन्तैयन् वीटणन्–जो जानता था उस मन के विभीषण ने; ऐय–प्रभु; ईतु–यह; ऍन् उयिर्–मेरे प्राणों का; अऴिक्कुम्–नाश कर देगा; पिऱिन्तु–रोकने के अर्थ; चॆय्यलाम् पॊरुळ्–करने का कार्य; पिऱितु इलै–अन्य कुछ नहीं; ऍन्ऱलुम्–कहा तो; पॆरियोन्–मान्य लक्ष्मण; अऱिन्तु–सोचकर; पोक्कुवल्–दूर करूँगा; नी अञ्चल्–तुम मत डरो; ऍन्ऱु–कहकर; इटै अणैन्तान्–उस स्थल पर गया। ३४९४

जब उसने उसे चलाया तब विभीषण ने, जिसे उसके सम्बन्ध में सारी बातें मालूम थीं, लक्ष्मण से कहा कि प्रभु! यह मेरे प्राण लेकर ही छोड़ेगा। निवारण का कोई रास्ता नहीं। तव मान्य लक्ष्मण 'उपाय सोचकर निवारूँगा। तुम मत डरो' —कहते हुए उसके स्थान पर गया। ३४९४

ऍय्द वाळियु मेयिन पडैक्कलम् यावुम्
शॆय्द मादवत् तॊरुवनैच् चिऱुतॊऴि ऱीयोन्
वॆद वॆविनि लॊऴिन्दन वीडणन् माण्डान्
उय्द लिल्लैयॆन् ऱुम्बरुम् बॆरुमन मुलैन्दार् 3495

ऍय्त वाळियुम्–प्रेरित शर और; एयिन पटै कलम्–चलाये गये हथियार; यावुम्–सभी; चॆय्त मातवत्तु–तपस्वी; ऑरुवनै–किसी को; चिऱु तॊऴिल्–

क्षुद्र कर्म करनेवाले; तीयोन्-बुरे मनुष्य के; वैत वैविविनिल्-दिये गये शाप-वचनों के समान; ऑळिनृतत-बेकार हुए; उम्परुम्-देव भी; वीटणन् माण्टान्-विभीषण मर गया; उय्तल् इल्लै-बचाव नहीं; ऍन्रु-कहकर; पॅरु मतम् उलैन्ताद्-बहुत व्यग्र हुए। ३४६५

लक्ष्मण ने उसके विरुद्ध अनेक अस्त्र प्रेरित किये। हथियार फेंके। पर वे सभी तपस्वी के प्रति नीच कर्म करनेवाले बुरे आदमी के दिये गये शाप के समान निरर्थक हो गये। तब देव यह सोचकर बहुत दुःखी हुए कि अब विभीषण मर गया! कोई बचाव का मार्ग नहीं। ३४९५

तोऱ्प ऍऩ्ऩिनुम् बुहळ्निऱ्कुन् दरुममुन् दॊडरुम्
आऱ्पपर् नल्लव रडैक्कलम् बुहुन्दव नळियप्
पाऱ्प्प दॆन्नॆडुम् बळिवन्दु ऎडर्वदन् मुन्नम्
एऱ्प ऍन्नतनि मार्बिनॆन् ऱिलक्कुव नॆदिर्न्दान् 3496

तोऱ्पन् ऍऩिऩुम्-(प्राण) हार जाऊँ तो भी; पुकळ् निऱ्कुम्-यश रहेगा; तरुममुम् तॊटरुम्-धर्म लगा रहेगा; नल्लवर् आऱ्पपर्-सज्जन हल्ला मचा देंगे; अटैक्कलम् पुकुन्तवन्-शरणागत को; अळिय पाऱ्प्पतु-नष्ट होता देखना; ऍन्-कैसा; नॆटु पळि-लम्बा अपयश आकर; तॊटर्वतन् मुन्नम्-लग जाय, इसके पूर्व; ऍन् तनि मार्पिन्-अपने अनुपम वक्ष पर; एऱ्पन्-झेल लूंगा; ऍन्ऱु-कहकर; इलक्कुवन्-लक्ष्मण; ऍतिर्न्तान्-सामने गये। ३४९६

लक्ष्मण ने निश्चय किया कि प्राण हारना पड़े तो भी यश स्थायी रहेगा। धर्म लगा रहेगा। सज्जन खूब प्रशंसा करेंगे। शरणागत को मरता देखता रहना क्या बात है? दीर्घ कलंक आ लगे इसके पूर्व ही अपने अनुपम वक्ष में यह झेल लूँगा। वे 'वेल्' के समक्ष गये। ३४९६

इलक्कु वऱ्कुमुन् वीडणन् पुहुमिरु वरैयुम्
विलक्कि यङ्गदन् मेऱ्चॆलु मवनैयुम् विलक्किक्
कलक्कुम् वानरक् कावल नऩुमनुमुन् कडुहुम्
अलक्क णन्नदे यिन्नदॆन् ऱुरैशॆय लामो 3497

इलक्कुवऱ्कु मुन्-लक्ष्मण के आगे; वीटणन् पुकुम्-विभीषण गया; इरुवरैयुम् विलक्कि-दोनों को रोककर; अङ्कतन् मेल् चॆलुम्-अंगद आगे गया; अवनैयुम् विलक्कि-उसे भी हटाकर; वानरर् कावलन्-वानर राजा; कलक्कुम्-मिल गया; अनुमन्-हनुमान; मुन् कटुकुम्-आगे जल्दी गया; अन्नतु अलक्कण्-वैसे दुःख का; इन्नतु ऍन्ऱु-कैसा यह; उरै चॆयल् आमो-कहा जा सकता है क्या। ३४९७

तब विभीषण उनके आगे गया। दोनों को रोककर अंगद गया। अंगद को पीछे छोड़कर वानरराज आगे गया। हनुमान उसके भी आगे जा

चुका ! तब जो दुःखपूर्ण वातावरण पैदा हुआ वह कैसा था ? क्या कहा जा सकता है ? । ३४९७

मुऩ्ऩिऩ् ड्रारॅलाम् बिऩ्ऩुरुक् कालिऩिऩ् मुडुहि
निऩ्मिऩ् यानिदु विलक्कुवॅ ऩॅऩ्ऱुरै नेरा
मिऩ्ऩुम् वेलिऩै विण्णवर् कण्पुडैत् तिरङ्ग
पॊऩ्ऩिऩ् मार्बिडै येऱ्ऱऩऩ् मुदुहिडैप् पोह 3498

मुन् निऩ्ड्रार् ऍलाम्–सामने स्थित सभी को; पिऩ् उरु–पीछे छोड़कर; कालिनिऩ्–पवन के समान; मुटुकि–जल्दी जाकर; निऩ्मिऩ्–खड़े रहो; याऩ्–मैं; इतु विलक्कुवऩ्–इसे रोक दूंगा; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उरै नेरा–वचन कहकर; विण्णवर्–देवों को; कण् पुटैत्तु–आँख पीटकर; इरङ्क–रोने देकर; मुतुकिटै पोक–पीठ से होकर निकल जाय ऐसा; मिऩ्ऩुम् वेलिऩै–चमकती शक्ति को; पॊऩ्ऩिऩ् मार्पिटै एऱ्ऱऩऩ्–स्वर्ण-सम वक्ष पर झेल लिया । ३४९८

अपने सामने जो थे उन सभी के आगे पवनगति में लक्ष्मण जा पहुँचे । उनसे कहा कि रह जाओ ! मैं इसे रोक दूंगा । उन्होंने उस शक्ति को अपने वक्ष में घुसने दिया और वह पीठ से बाहर चली गयी । देव इसको देखकर अपनी आँखें पीटते हुए रोये । ३४९८

ऍङ्गु नीङ्गुदि नीयॅऩ वीडण ऩॅऴुन्दाऩ्
शिङ्ग वेरॅऩ्ऩ शीऱ्ऱत्ता ऩिरावणऩ् तेरिल्
पॊङ्गु पाय्परि शारदि यॊडुम्बडप् पुडैत्ताऩ्
शङ्ग वाऩवर् तलैयॆडुत् तिडनॆडुन् दण्डाल् 3499

वीटणऩ्–विभीषण ने; नी ऍङ्कु नीङ्कुति–तुम कहाँ जाओ; ऍऩ–कहते हुए; ऍऴुन्ताऩ्–उठा; चिङ्क एरु अऩ्ऩ–नर केसरी के समान; चीऱ्ऱत्ताऩ्–क्रुद्ध; इरावणऩ्–रावण के; तेरिल्–रथ के; पॊङ्कु पाय् परि–उमगकर लपकनेवाले अश्व; चारति यॊटुम्–सारथी के साथ; पट–मरकर गिरें ऐसा; चङ्कम् वाऩवर्–दलबद्ध देव; तलै ऍटुत्तिट–सिर उन्नत कर लें, यह सम्भव करते हुए; नॆटु तण्टाल्–लंबे दण्ड से; पुटैत्ताऩ्–पीटा । ३४९९

विभीषण ने रावण को ललकारा— तुम कहाँ जाओगे ? नर केसरी के समान कुपित होकर उसने अपनी लंबी गदा से पीटा । तब रावण के रथ के लपकते चलनेवाले अश्व और सारथी मरकर गिर गये । ३४९९

शेय्वि शुम्बिऩि ऩिमिर्न्दुनिऩ् ड्रिरावणऩ् शीऱ्ऱिप्
पायह डुङ्गणैप् पत्तव ऩुडल्पुहप् पाय्च्चि
आयि रञ्जर मऩ्मऩुऱ् ऱुडलिऩि ऩळ्त्तिप्
पोयि ऩऩ्शॅरु मुडिऩ्दवॅऩ् ड्रिलङ्गैयूर् पुहुवाऩ् 3500

इरावणऩ्–रावण; चेय् विचुम्पिऩिल्–दूर आकाश में; निमिर्न्तु निऩ्ऱु–

जा खड़े होकर; चीऱ्ऱि–गुस्सा करके; पाय्–लपक चलनेवाले; पत्तु कट्टम् कर्ण–वस कठोर शरों को; अवन् उटल पुक–उसके शरीर को भेदते हुए; पाय्चचि–चलाकर; अनुमत् तन् उटलितिल्–हनुमान के शरीर में; आयिरम् चरम् अळुत्ति–हज़ार शर धंसाकर; चॅरु मुटिन्ततु–युद्ध पूरा हो गया; ऍन्ऱ–कहता हुआ; इलङ्कै ऊर् पुकुवान्–लंका नगर में प्रविष्ट होने के लिए; पोयिनन्–गया। ३५००

रावण आकाश में दूर गया। वहाँ से उसने विभीषण पर दस वेगवान बाण चलाये और वे उसके शरीर में चुभ गये। फिर हनुमान के शरीर में हज़ार शर चुभा दिये। 'बस! युद्ध का अंत हो गया।' कहते हुए वह लंका में प्रवेश करने चला गया। ३५००

तेडिच् चेर्न्तवर्क्न् पॊरुट्टिना तुलहुडैच् चल्वन्
वाडिप् पोयिन नीयिनि वञ्जनै मदियाल्
ओडिप् पोहुव दॆङ्गडा वुन्नॊडु मुडनॆ
वीडिप् पोवनॆन् ऱरक्कन्मेल् वीडणन् वॆहुण्डान् 3501

तेटि चेर्न्त–शरण माँगकर आये; ऍन् पॊरुट्टिताल्–मेरे ही निमित्त; उलकुटै चॅल्वन्–लोक के स्वामी; वाटि पोयिनन्–मुरझा गये; इनि–अब; नी–तुम; वञ्चनै मतियाल्–वंचक मन ले; ऍङ्कु अटा–कहाँ रे; ओटि पोकुवतु–जा पहुँचो; उन्नॊटुम् उटनॆ–तुम्हारे ही साथ; वीटि पोवन्–मर जाऊँगा; ऍन्ऱु–कहकर; अरक्कन् मेल्–राक्षस से; वीटणन् वॆकुण्टान्–विभीषण कुपित हुआ। ३५०१

"शरणागत मेरे कारण लोकस्वामी लक्ष्मण मुरझा गये हैं। अब वंचकमति तुम कहाँ जाओगे रे? तुम्हें मार दूँगा और तुम्हारे साथ मैं भी मरूँगा" —यह कहते हुए विभीषण ने गुस्सा दिखाया। ३५०१

वॆन्ऱि यॆन्वय मानदु वीडणप् पशुवॆक्
कॊन्ऱि निप्पय मिल्लॆयॆन् ऱिरावणन् कॊण्डान्
निन्ऱि लन्नॊन्ऱु नोक्किलन् मुनिवॆला नीत्तान्
पॊन् तिणिन्वन मदिलुडै यिलङ्गैयूर् पुक्कान् 3502

वॆन्ऱि–विजय; ऍन् वयम् आततु–मेरे वश की हो गयी; वीटणन् पचुवै–विभीषण रूपी गाय को; इनि–अब; कॊन्ऱु–मारकर; पयम् इल्लै–कोई) फल नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; इरावणन् कॊण्टान्–रावण विचार करके; निन्ऱिलन्–खड़ा नहीं रहा; ऒन्ऱुम् नोक्किलन्–कुछ देखा नहीं; मुनिवु ऍलाम्–सारा क्रोध; नीत्तान्–छोड़कर; पॊन् तिणिन्त–स्वर्णमय; मतिल् उटै–प्राचीरों-सहित; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ। ३५०२

रावण को संतोष हो गया कि विजय मेरी होकर रह गयी है! फिर यह विभीषण गऊ है! उसको मारने से क्या लाभ? इसलिए रावण डटा नहीं रहा; न ही उसने उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखा। सारा

कोप त्यागकर वह स्वर्णप्राचीर-वलयित लंका नगर में प्रविष्ट हो गया। ३५०२

अरक्क नेहिलन् वीडणन् वाय्दिऱन् दरऱ्ऱि
इरक्कन् दाऩॆन विलक्कुव ऩिणैयडित् तलत्तिल्
करक्क लाहलाक् कादलन् वीऴ्न्दनन् कलुऴ्न्दान्
कुरक्कु वॆळ्ळमुन् दलैवरुन् दुयरिडैक् कुळित्तार् 3503

अरक्कन् एकितन्–रावण चला गया; वीटणन्–विभीषण; करक्कल् आकला–जिसको छिपाया नहीं जा सकता, वैसे; कातलन्–प्रेम से अभिभूत हो; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱि–प्रलाप करके; इरक्कम् तान् ऎन–करुणा की साक्षात् मूर्ति-मान्य होकर; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; इणै अटि तलत्तिल्–चरणद्वय-तल में; वीऴ्न्ततन्–गिरकर; कलुऴ्न्ताऩ्–रोया; कुरक्कु वॆळ्ळमुम्–वॆळ्ळम् की संख्या के वानर; तलैवरुम्–और नायक; तुयरिटै–दुःख में; कुळित्तार्–डूबे। ३५०३

राक्षस राजा चला गया। विभीषण अपने उमड़ते स्नेह को दबा नहीं सका। मुख खोलकर प्रलाप करके मूर्तिमान करुणा की तरह वह लक्ष्मण के चरणद्वय-तल पर गिरा और खूब रोया। विशाल वानरदल और वानर-यूथप भी दुःखमग्न हुए। ३५०३

पॊन्ऩि रुम्बुरु तार्प्पुयप् पॊरुप्पिऩान् पॊन्ऱ
ऎन्ऩि रुन्दुना ऩिऱप्पॆऩिक् कणत्तॆनै याळुम्
मन्ऩि रुन्दिनि वाऴ्हिल ऩॆन्ऱनन् मऱुह
निन्ऩि लॆन्ऱनन् शाम्बव नुरैयॊन्ऱु निहऴ्त्तुम् 3504

पॊन् इरुम्पु–काले स्वर्ण लोहे के समान; उरुम्–(सुदृढ़) रहनेवाले; तार्–माला से अलंकृत; पुयम् पॊरुप्पिनान्–भुजा रूपी कन्धोंवाले; पॊन्ऱ–जब मर गये तब; नान् इरुन्तु–मैं जीवित रहूँ उससे; ऎन्–क्या फ़ायदा; इ कणत्तु–इसी क्षण; इऱप्पॆन्–मरूँगा; इनि–अब; ऎनै आळुम्–मेरे शासक; मन्–राजा राम; इरुन्तु–(जीवित) रहकर; इनि वाऴ्किलन्–आगे नहीं जियेंगे; ऎन्ऱनन्–कहकर; मऱुक–क्षुब्ध हुआ; निल् निल्–बस, बस; ऎन्ऱनन्–कहकर; चाम्पवन्–जाम्बवान ने; उरै ऒन्ऱु–एक वचन; निकऴ्त्तुम्–कहा। ३५०४

स्वर्ण-लोहे की तरह सुदृढ़ तथा माला से अलंकृत कंधोंवाले चल बसे। फिर मेरे जीवित रहने से क्या लाभ ? मैं भी इसी क्षण मरूँगा। और मेरे शासक श्री राजा राम भी जीवित नहीं रहेंगे। यह कहकर वह क्षुब्ध हुआ। तब जाम्बवान ने उसे रोका कि 'ठहरो, ठहरो।' जाम्बवान आगे बोला। ३५०४

अऩुम निऱ्कना मारुयिऱ् किरङ्गुव दऱिवो
निऩैयु मत्तुणं मात्तिरत् तुलहॆला निमिर्वाऩ्
विऩैयि ऩऩ्मरुन् दळिक्किऩ्ऱा ऩुयिर्क्किऩ्ऱाऩ् वीरऩ्
तिऩैयु मल्ललुऱ् ऱळुङ्गऩ्मि ऩॆऩ्ऱिडर् तीर्त्ताऩ् 3505

निऩैयुम् अ तुणं मात्तिरत्तु—स्मरण करने मात्र की देरी में; उलकु ऎलाम्—सारे लोक में; निमिर्वाऩ्—सिर ऊँचा करके चलनेवाला; विऩैयिऩ्—यत्न से; नल् मरुन्तु—अच्छी ओषधि; अळिक्किऩ्ऱाऩ्—ला देनेवाला; अनुमऩ् निऱ्क—हनुमान जब है तब; नाम—हमारा; आर् उयिर्क्कु—प्यारे प्राणों के लिए; इरङ्कुवतु—दुःखी होना; अऱिवो—बुद्धिमत्ता है क्या; वीरऩ्—वीर (लक्ष्मण); उयिर्क्किऩ्ऱाऩ्—साँसें ले रहे हैं; तिऩैयुम्—ज़रा भी; अल्लल् उऱ्ऱु—दुःखी होकर; अळुङ्कऩ्मिऩ्—मत लटो; ऎऩ्ऱु—कहकर; इटर् तीर्त्ताऩ्—संकट दूर किया। ३५०५

विभीषण ! स्मरण-मात्र से सारे लोकों में सिर उन्नत करके घूमकर आनेवाला हनुमान है। प्रयत्न करके औषध ला दे सकनेवाला है ! तब हम प्यारे (लक्ष्मण के) प्राणों के लिए रोयें क्यों ? यह बुद्धिमत्ता नहीं होगा। और भी देखो ! लक्ष्मण साँस ले रहे हैं ! रंच भी दुःखी होकर मत लटो। जाम्बवान ने उनका दुःख दूर किया। ३५०५

मरुत्तिऩ् कादलऩ् मार्बिडै यम्बॆलाम् वाङ्गि
इरुत्ति योकडि देहलै यिळवलै यिऩ्ऩम्
वरुत्तङ् गाणुमो मऩ्ऩव ऩॆऩ्ऩलु मऩ्ऩाऩ्
गरुत्तै युऩ्ऩियम् मारुदि युलहॆलाङ् गडन्दाऩ् 3506

मरुत्तिऩ् कातलऩ्—मरुतनन्दन के; मार्पिटै अम्पु ऎलाम्—वक्ष के सारे अस्त्र; वाङ्कि—निकालकर; इळवलै—लक्ष्मण को; इऩ्ऩम् वरुत्तम्—संकट में पड़ा; मऩ्ऩवऩ्—श्रीराजाराम; काणुमो—देख (सह) सकेंगे क्या; कटितु एकलै—जल्दी न जाते; इरुत्तियो—यहीं रहोगे क्या; ऎऩ्ऩलुम्—कहने पर; अऩ्ऩाऩ् करुत्तै—उसका आशय; उऩ्ऩि—सोचकर; अ मारुति—वह मारुति; उलकु ऎलाम्—सारे लोक को; कटन्ताऩ्—पार कर गया। ३५०६

जाम्बवान ने हनुमान की छाती से चुभे रहे सारे बाण निकाल दिये और कहा कि श्रीराम अपने छोटे भाई को इस संकट की स्थिति में देखकर सह नहीं सकेंगे। इसलिए तुम शीघ्र नहीं जाओगे क्या ? विलंब करते रह जाओगे ? हनुमान जाम्बवान का आशय समझा और तुरन्त लोक के सारे प्रदेशों को पार कर जाने लगा। ३५०६

उय्त्तॊरु तिशैमे लोडि युलहॆलाङ् गडक्कप् पाय्न्दु
मॆय्त्तहु मरुन्दु तऩ्ऩै वॆऱ्पॊडुङ् गॊणर्न्द वीरऩ्
पॊय्त्तलिल् कुऱिहळ् ताऩे पॊदुवऱ नोक्किप् पॊऩ्बोल्
वैत्तदु वाङ्गिक् कॊण्ड वरुदलिल् वरुत्त मुण्डो 3507

उय्त्तु–मन (ओषध पर) लगाकर; ऑरु तिचै मेल् ओटि–विशिष्ट उत्तर दिशा में भागकर; उलकु ॲलाम् कटक्क–सारे लोक को पार करते; पाय्न्तु–लपककर; मॅय् तरु–सच्ची शक्ति से पूर्ण; मरुन्तु तन्तै–ओषध को; वॅऱ्पोटुम्–पर्वत के साथ; कॉणर्न्त–जो पहले लाया था वह; वीरन्–वीर; पॊय्त्तल् इल्–अचूक; कुऱिकळ्–निशानों को; ताते–स्वयं; पोतु अऱ–असाधारण रीति से; नोक्कि–देखकर; पॊन् पोल्–स्वर्ण के समान; वैत्ततु–(जिसको) सुरक्षित रखा था; वाङ्कि कॊण्टु–लेकर; वरुतलिल्–आने में; वरुत्तम् उण्टो–कष्ट है क्या। ३५०७

पहले वह उत्तम उत्तर दिशा में सारे प्रदेशों को पार कर उड़ चला था और अमोघ शक्तिशाली उस ओषधि को पर्वत-सहित लाया था। वे सब निशान मालूम थे जो झूठे नहीं हो सकते थे। वह गुप्तधन के समान उसे रख आया था। फिर उसे लाने में कष्ट हो सकता था क्या ? । ३५०७

तन्दतन् मरुन्दु तन्तैत् ताक्कुदन् मुन्ने योहम्
वन्ददु माण्डार्क् कॅल्ला मुयिर्तरुम् वलत्त दॅन्ऱाल्
नॊन्दवर् नोय्वु तोर्क्कच् चिऱिवन्ऱो नॊडित्तन् मुन्ने
इन्दिर नुलह मार्क्क वॅऴुन्दन निळैय वीरन् 3508

मरुन्तु–ओषधि-पर्वत को; तन्ततन्–ला दिया; तन्तै ताक्कुतल् मुन्ने–अपने पर लगने से पहले; योकम् वन्ततु–जागरण आ गया; माण्टार्क्कु ॲल्लाम्–सभी मृतकों को; उयिर् तरुम् वलत्ततु–प्राण देने की शक्ति रखनेवाला था; ॲन्ऱाल्–तो; नॊन्तवर्–पीड़ित की; नोय्वु तीर्क्क–वेदना दूर करने में; चिऱिवु अन्ऱो–अल्पता थी न; नॊटित्तल् मुन्ने–चुटकी बजाने की देर में; इन्तिरन् उलकम्–देवेंद्र के लोक के; आर्क्क–आनन्दनाद करते; इळैय वीरन्–छोटे वीर; ॲऴुन्तनन्–उठ गये। ३५०८

वह ओषधिपर्वत लाया। उसकी गंध के भूमि पर लगने से पहले ही जागरण आ गया। मृतकों को जीवन दे सकती थी वह ओषधि ! फिर केवल पीड़ितों की पीड़ा का निवारण उसके लिए सुगम काम था न ? चुटकी बजाने की देर में वीर लक्ष्मण इन्द्रलोक के देवों को आनन्दनाद उठाने देते हुए जाग उठे। ३५०८

ऍऴुन्दुनिन् ऱनुमन् ऱन्नै यिरुहैयार् ऱऴुवि यॅन्दाय्
विऴुन्दिल नन्ऱो मऱ्ऱव् वीडण नॅन्ऱु विम्मित्
तॊऴुन्दुणै यवनै नोक्कित् तुणुक्कमुन् बुयरु नीक्किक्
कॊऴुन्दियु मीण्डाळ् पट्टा नरक्कनॅन् ऱुवहै कॊण्डान् 3509

ऍऴुन्तु निन्ऱु–उठ खड़े होकर; अनुमन् तन्नै–हनुमान को; इरु कैयाल्–दोनों हाथों से; तऴुवि–आलिंगन करके; ऍन्ताय्–मेरे पिता (तुल्य); अव् वीटणन्–वह विभीषण; विऴुन्तिलन् अन्ऱो–नहीं गिरा न; ऍन्ऱु–पूछकर जानकर; विम्मि–सिसककर; तॊऴुम्–नमस्कार करते; तुणैयवनै–भाई (विभीषण) को;

नोक्कि–देखकर; तुणुक्कमुम्–भय और; तुयरुम्–दुःख; नीक्कि–त्यागकर; कोळ्ळुन्तियुम्–भाभी भी; मीण्डाळ्–पुनः मिल गयीं; अरक्कन् पट्टान्–राक्षस मर गया; ॲन्ऱु–ऐसा; उवकै कोण्टान्–संतुष्ट हुए। ३५०९

लक्ष्मण ने उठकर हनुमान को दोनों हाथों से आलिंगन में लिया और पूछा कि विभीषण नहीं मरा है न! पास में विभीषण सिसकता खड़ा था। अपने बड़े भाई-सदृश उसे देखकर लक्ष्मण ने अपना भय और दुःख छोड़ दिया। उन्हें विश्वास हो गया कि अब भाभी के लौट आने में कोई संशय नहीं। राक्षस मर गया! वे बहुत मुदित हुए। ३५०९

तरुममॆन् ऱऱिञर् शॊल्लुन् दनिप्पॊरुळ् तन्नै यिन्ऩे
करुममॆन् ऱनुम ऩाक्किक् काट्टिय तन्मै कण्डाल्
अरुमैयॆन् ऩिरामर् कम्मा वऱम्वॆल्लुम् बावन् दोऱ्कुम्
इरुमैयु नोक्कि ऩॆन्ऩा विरामन्बा लॆऴुन्दु शॆन्ऱार् 3510

तरुमम्–(विग्रहवान) धर्म; ॲन्ऱु–ऐसा; अऱिञर्–विद्वान् लोग; चॊल्लुम्–जिसे कहते; तनि पॊरुळ् तन्नै–उस पर वस्तु को; इन्ऩ–अभी; करुमम् ॲन्ऱु–कर्तव्य कहकर; अनुमन् आक्कि काट्टिय–हनुमान ने जो बना के दिखाया; तन्मै कण्टाल्–उस कार्य-रीति को देखें तो; इरामऱ्कु–श्रीराम के लिए; अरुमै ॲन्–कठिन क्या है; इरुमैयुम् नोक्किन्–दोनों (इह, पर) को देखते समय; अऱम् वॆल्लुम्–धर्म जीतेगा; पावम् तोऱ्कुम्–पाप हारेगा; ॲन्ऩा–कहकर; इरामन् पाल्–श्रीराम के पास; ॲऴुन्तु–उठ; चॆन्ऱार्–चले। ३५१०

पंडित लोग श्रीराम को (विग्रहवान) धर्म ही मानते हैं। ऐसे उनके प्रति धर्म समझकर कर्तव्य का निश्चय करके हनुमान ने जो कर दिखाया, उसको लेकर सोचा जाय तो श्रीराम के लिए कठिन क्या रहेगा? इह-पर की बात लेकर विचार करें तो धर्म विजयी होगा और पाप हार जायगा। यह कहते हुए सब उठे और श्रीराम के पास चले। ३५१०

ऒन्ऱल पलवॆन् ऱोङ्गु मुयर्पिणत् तुम्ब रॊन्ऱु
कुन्ऱुहळ् पलवुञ् जोरिक् कुरॆहड लनैत्तुन् दाविच्
चॆन्ऱडॆन् दिरामन् तन्ऩॆन् तिरुवडि वणक्कञ् जॆय्दार्
वॆन्ऱियिन् तलैवर् कण्ड विरामनॆन् विणॆन्द वॆन्ऱान् 3511

ऒन्ऱु अल–एक नहीं; पल ॲन्ऱु–अनेक मान्य; ओङ्कुम् उयर्–बहुत ऊँचे; पिणत्तु–लाशों के; उम्पर् ऒन्ऱु–आकाश छूते हुए; कुन्ऱुकळ् पलवुम्–पर्वत अनेक; चोरि–रक्त के; कुरै कटल्–गरजते सागर; अनैत्तुम्–सारे; तावि चॆन्ऱु–लाँघ जा; अटन्तु–पहुँचकर; इरामन् तन्नै–श्रीराम के; तिरुवटि–चरणों में; वणक्कम् चॆय्तार्–नमस्कार किया; कण्ड वॆन्ऱियिन् तलैवर्–विजयी वीरों ने; इरामन्–देखकर श्रीराम ने; विळैन्तது ॲन्–हुआ क्या; ॲन्ऱान्–ऐसा पूछा। ३५११

लाशों के ऊँचे गगनस्पर्शी पर्वतों और रक्त के गरजते सागरों को लाँघकर वे श्रीराम के पास पहुँचे। और वीरराघव के चरणों में नमस्कार किया। उनको देखकर श्रीराम ने पूछा कि क्या हुआ ? । ३५११

उऱ्ऱदु मुळ्ळदु नोक्कि यॊऴिविऱ् वुणर्वु ळूऱच्
चॊऱ्ऱनऩ् शाम्बऩ् वीर ऩऩुमऩैत् तॊडरप् पुल्लिप्
पॆऱ्ऱऩै तुऩ्ऩै यॆऩ्ऩै पॆऱादऩ पॆरियो यॊऩ्ऱुम्
मऱ्ऱिडै यूऱु शॆल्ला वायुळै यादि यॆऩ्ऱाऩ् 3512

उऱ्ऱतु मुळ्ळुम्–बीता सारा; नोक्कि–मन में स्मरण करके; ऒऴिवु अऱ्–विना कुछ छोड़े; उणर्वु उळ् ऊऱ–समझ में आवे ऐसा; चाम्पऩ् चॊऱ्ऱनऩ्–जाम्बवान ने कहा; वीरऩ्–श्रीवीरराघव भी; अऩुमऩै तॊटर पुल्लि–हनुमान का लगातार आलिंगन करके; उऩ्ऩै पॆऱ्ऱॆऩ्–तुमको पाया है; पॆरियोय्–बड़े; पॆरातऩ–न पाया; ऎऩ्ऩै–क्या ही; मऱ्ऱु–फिर; ऒऩ्ऱुम्–कुछ भी; इटैयूऱु चॆल्ला–बाधा जिसमें न हो; आयुळै–जीवन वाले; आति–बने रहो; ऎऩ्ऱाऩ्–आशीर्वाद दिया। ३५१२

जाम्बवान ने सारी बीती बातें क़ायदे से सोचकर बिना किसी बात को छोड़े खूब समझाते हुए बतलायीं। तब श्रीवीरराघव ने हनुमान का लगातार आलिंगन किया और कहा कि सम्मान्य मारुति ! तुमको पाकर अब मुझे मिला क्या नहीं ? (सब प्राप्त हो गये।) फिर से कहता हूँ तुम अबाध जीवन के चिरंजीव बनो ! श्रीराम ने आशीर्वाद दिया। ३५१२

पुयल्पॊऴि यरुविक् कण्णऩ् पॊरुमलऩ् बॊङ्गु हिऩ्ऱाऩ्
उयिर्पुऱत् तॊऴिय निऩ्ऱ वुडलऩ्ऩ वुरुवत् तम्बि
तुयर्तमक् कुदवि मीळात् तुऱक्कम्बोय् वन्द तॊल्लैत्
तयरदऩ् कण्डा लॊत्ताऩ् तम्मुऩैत् तॊऴुदु शार्वाऩ् 3513

पुयल् पॊऴि–मेघ-समान बरसानेवाली; अरुवि कण्णऩ्–अश्रुसरिता की आँखों वाले; पॊरुमलऩ्–भावातिरेक में जो रहे; पॊङ्कुकिऩ्ऱाऩ्–उमंग में आये हुए; उयिर् पुऱत्तु ऒऴिय–प्राणों के अलग रहते; निऩ्ऱ–अलग खड़े रहे; उटल् अऩ्ऩ–शरीर-सम जो रहे; उरुवम्–वे सुन्दर; तम्पि–कनिष्ठ भ्राता; तुयर्–दुःख; तमक्कु उतवि–उन्हें देकर; मीळा तुऱक्कम् पोय्–स्वर्ग जाकर; वन्त–जो लौटे; तॊल्लै–वृद्ध; तयरतऩ् कण्टाल्–दशरथ को देखा हो; ऒत्ताऩ्–जैसे बने; तम् मुऩै–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; तॊऴुतु–नमस्कार करके; चार्वाऩ्–पास गये। ३५१३

सुन्दर लघु भ्राता लक्ष्मण की आँखों से मेघों-से जैसे अश्रुधारा बह रही थी। आनन्द-विभोर थे और उमंग-भरे थे। प्राणों से पृथक् रहे शरीर के समान रहे वे श्रीराम को पास देखकर ऐसा आनंदित हुए मानो

उन्हें दुःख देकर जो स्वर्ग सिधार गये थे, उन दशरथ को देख चुके हों। उन्होंने भाई के चरणों में नमस्कार किया। ३५१३

इळवलैत् तळुवि यैय विरवितन् कुलत्तुक् केट्र
वळवित्त मडैन्‌ दोर्क्काहि मन्नुयिर् कोडुत्त वण्मैत्
तुळवियल् तोङ्ग लायनी यत्तनु तुणिन्दा यॅन्‌राल्
अळविय लन्‌रु शॅय्दर् कडुप्पदे याहु मन्‌रे 3514

इळवलै–छोटे भाई को; तळुवि–गले से लगाकर; ऐय–तात; अटैन्तोर्क्कु आकि–शरणागत के लिए; मन् उयिर्–स्थायी जीव को; कोडुत्त–दया उस; वण्मै–उदारता के कारण; इरवि तन्–रवि के; कुलत्तुक्कु–कुल के; एट्र–योग्य; वळवितम्–उदार-चरित्र बन गये; तुळवु इयल्–तुलसी की; तोङ्कलाय्–माला-धारी; नी–तुमने; अत्तनु–वह कार्य; तुणिन्ताय्–दृढ़चित्त से किया; ॲन्राल्–तो; अळवियल्–बड़ा काम; अन्रु–नहीं; चॅय्तर्कु अडुप्पते–करने के लिए आवश्यक; आकुम्–था। ३५१४

श्रीराम ने उन्हें गले से लगा लिया और कहा कि तात! शरणागत के लिए अपनी जान दी, इस उदार-कार्य से हम रविकुल के योग्य गुण वाले साबित हो गये! हे तुलसीमालाधारी! तुमने वह कार्य दृढ़ चित्त से किया तो इसको बड़ा अपार गौरव मत मानो! यह अवश्य कर्तव्य-काम ही था। ३५१४

पुरवीन्‌द्रिन् पोरुट्टा याक्कै पुण्णुर वरिन्द पुत्तेळ्
अरवन् मैय नित्तै निहर्क्किल नप्पाल् नित्तर
पिरवित्तै युरैप्प देत्ते पेररु ळाळ रॅन्बार्
करवेयुङ् गन्‌रु मोप्पार् तमर्क्किडर् हाणि लॅन्‌रान् 3515

ओन्ड्र–एक; पुरवित् पोरुट्टा–कबूतर के निमित्त; याक्कै–शरीर को; पुण् उर–व्रण करते हुए; अरिन्त–जिन्होंने काटा; पुत्तेळ् अरवनुम्–धर्मात्मा (शिवि) और; ऐय–तात; निन्नै–तुम्हारी; निकर्क्किलन्–समता नहीं करेंगे; अप्पाल् नित्तर–परे जो हैं; पिरवित्ते उरैप्पतु–अन्य कार्यों का कहना; ॲन्नते–काहे के लिए; पेर् अरुळाळर् ॲन्पार्–कृपालु जो कहे जाते हैं; तमर्क्कु–अपने मनुष्यों का; इटर काण्किल्–दुःख देखें तो; करवेयुम् कन्रुम्–गाय और बछड़; ओप्पार्–के समान बन जायेंगे; ॲन्‌रान्–बोले। ३५१५

तो भी एक कबूतर की जान बचाने के लिए जिन शिवि ने अपने शरीर को व्रणपूर्ण करते हुए काटके दिया था, वे भी तुम्हारी समानता नहीं कर सकेंगे। फिर उससे किसी अन्य कार्य की बात क्यों उठायी जाय? बड़े कृपालु कहलानेवाले लोग जब अपनों पर कोई संकट आया देखते हैं तब बछड़े की माता गाय के समान बन जाते हैं। ३५१५

शालिहै मुदल वात्त पोर्प्परन् वाङ्गिर् रॅल्लाम्
नीलनिर नायि रत्तन नॅडियवन् मुरैयि नीक्किक्

कोल्शोरि तनुवुङ् गोड्ड़ अनुमन्कै कोडुत्तुक् कोण्डल्
मेल्निऱ्‍ कुन्ऱ मोन्ड्रिल् मेय्श्रमेलि वाऱ्‍ऱ लुऱ्‍ऱान् 3516

वालिकै मुतल आत्त–कवच आदि; पोर्–युद्ध के लिए; परम् ताङ्किऱ्‍ऱ नलाम्–जो भार ढोते रहे उन सबको; मुऱ्‍यिन् नीक्कि–क्रम से उतारकर; ल निऱ्‍ नायिऱ्‍ अन्नत–नीलवर्ण के सूर्य के समान; नेटियवन्–श्रीराम; कोल् रि–शरवर्षी; तनुवुम्–कोदण्ड को; कोऱ्‍ऱम्–और विजयी; अनुमन् कै दुत्तु–हनुमान के हाथ में देकर; कोण्टल् मेल्–मेघ जिस पर; निऱ्‍–आश्रय पा ा था; कुन्ऱम् ओन्ड्रिल्–एक पर्वत पर; मेय् मेलिवु–शरीर का श्रम; ाऱ्‍ऱल उऱ्‍ऱान्–दूर करने लगे। ३५१६

फिर श्रीराम ने कवच आदि युद्ध-भार-वस्तुएँ क्रम से उतारीं। ीलवर्ण सूर्य-सम उन्होंने शरवर्षी कोदण्ड को विजयी हनुमान के हाथ ं दिया। फिर एक पर्वत पर विश्राम करने गये, जो मेघों का आश्रय ना रहता था। ३५१६

32. वानरर् कळङ्गाण् पडलम् (वानर-समरांगण-दर्शन पटल)

आयपिन् कवितन् वेन्दु मळप्परुन् दानै योडु
मेयिन इरामन् पादम् विदिमुऱ्‍ वणङ्गि वीन्द
तीयवर् पॆरुमै नोक्कि नडुक्कमुन् दिहैप्पु मुऱ्‍ऱार्
ओय्वुऱ्‍ मनत्ता रोन्ऱु मुणर्न्दिलर् नाण मुऱ्‍ऱार् 3517

आयपिन्–इस घटना के बाद; कवि तन् वेन्तुम्–कपिराज भी; अळप्पु अरु– अपार; तानैयोटुम्–सेना के साथ; इरामन् पातम्–श्रीराम के चरणों में; विति मुऱ्‍–यथाविधि; वणङ्कि–प्रणमन करके; मेयितन्–पास आया; वीन्त– जो मरे उन; तीयवर् पॆरुमै–दुष्टों का गौरव; नोक्कि–देखकर; नटक्कमुम्– भय; तिकैप्पुम्–और चकितता; उऱ्‍ऱार्–पा गये; ओय्वु उऱ्‍ मनत्तार् ओन्ऱुम् उणर्न्तिलर्–कुछ सोच नहीं सके; नाणम् उऱ्‍ऱार्–शर्मिन्दा हुए। ३५१७

इसके बाद कपिराज अपनी अपार सेना लेकर श्रीराम के पास आया और उनके चरणों में यथाविधि प्रणमन किया। मरे हुए दुष्ट राक्षसों की विपुलता देखकर उन्हें भय और विस्मय हुआ। शिथिलमन होकर वे लज्जित हुए। ३५१७

मूण्डॆऴु शेनै वॆळ्ळ मुलहॊरु मून्ऱु मुऱ्‍ऱि
नीण्डुळ वदनै यॆय वॆङ्गत्त निमिर्न्द वॆन्ऱान्
तूण्डिरण् डनैय दिण्डोट् चूरियन् शिऱुवन् शॊल्लक्
काण्डिनी यरक्कर् वेन्दन् ऱन्नॊडुङ् गळत्तै यॆन्ऱान् 3518

तूण् तिरण्टनैय–खम्भे के समान पृथुल; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कंधों वाले; चूरियन् चिऱुवन्–सूर्य के पुत्र ने; मूण्टु ऎऴु–तत्पर हो उठा; चेनै वॆळ्ळम्–सेना का प्रवाह; उलकु ओर् मून्ऱुम् तीनों लोकों में; मुऱ्‍ऱि–भरकर; नीण्टु उळ–उनसे

भी आगे फैला है; ऐय–प्रभु; अतर्त–उसके; ॲङ्ङतम्–कैसे; निमिर्न्दतु–पार हुए; ॲन्ऱान्–पूछा; चॉल्ल–पूछने पर; अरक्कर् वेन्दत् तन्नॉटुम्–राक्षस राजा के साथ; नी कळत्तै काण्टि–तुम मैदान का संदर्शन करो; ॲन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ३५१८

खम्भे के समान पुष्ट स्थूल कंधों वाले सूर्यसूनु ने श्रीराम से पूछा कि हे प्रभु! युद्धतत्पर राक्षस-सेना तीनों लोकों में व्याप्त होकर बाहर भी चली थी। आपने उसे पार पाया सो कैसे? तब श्रीराम ने कहा कि चलो! राक्षसराज को साथ लेकर युद्धस्थल को देख आओ। ३५१८

तॊऴुदनर् तलैव रॆल्लान् दोन्ऱिय काद रूण्ड
ॲऴुहॆन विरैविर् चॆन्ऱा रिरावणऱ् किळव लोडुङ्
कऴुहॊडु परुन्दुम् बाऱुम् बेय्हळुङ् गणङ्गण् मऱ्ऱुङ्
गुऴुविय कळत्तैक् कण्णि नोक्किनर् दुणुक्कङ् गॊण्डार् 3519

तलैवर् ॲल्लाम्–सभी यूथपों ने; तॊऴुततर्–वन्दना की; तोन्ऱिय कातल्–उठी इच्छा की; तूण्ट–प्रेरणा से; इरावणऱ्कु इळवलोटुम्–रावण के कनिष्ठ भ्राता के साथ; ॲऴुक ॲन्–उठो कहकर; विरैविल्–जल्दी; चॆन्ऱार्–गये; कऴुकॊटु–गीधों के साथ; परुन्तुम्–बाज और; पाऱुम्–चील; पेय्कळुम्–और भूत; मऱ्ऱुम्–और अन्य; कणङ्कळुम्–गण; कुऴुविय कळत्तै–जहाँ भीड़ों में थे उस युद्धस्थल को; कण्णिऩ्–नोक्कितर्–आँखों से देखकर; तुणुक्कम् कॊण्टार्–भयभीत हुए। ३५१६

यूथपों ने श्रीराम का नमस्कार किया। इच्छा उकसाती रही तो उठो कहकर उठे और रावण के छोटे भाई विभीषण के साथ उस युद्धस्थल को जाकर देखा, जहाँ बाज, गीध, चील, भूत और अन्य जीव भीड़ लगाये घूम रहे थे। उन्हें भय लगा। ३५१९

एङ्गिनार् नडुक्क मुऱ्ऱा रिरैत्तिरैत् तुळ्ळ मेऱ
वीङ्गिनार् वॆरुव लुऱ्ऱार् विम्मिना रुळ्ळम् वॆम्ब
ओङ्गिनार् मॆळ्ळ मॆळ्ळ वुयिर्निलैत् तुवहै यूऩ्ऱ
आङ्गव रुऱ्ऱ तन्मै यार्हॊलो पहरऱ् पालार् 3520

एङ्कितार्–व्यग्र हुए; नटुक्कमुऱ्ऱाम्–कांपे; इरैत्तु इरैत्तु–लगातार हल्ला मचाकर; उळ्ळम् एऱ–मन में भय के बढ़ने से; वीङ्कितार्–फूले; वॆरुवल् उऱ्ऱार्–(भय प्रकट करनेवाले शब्द) बकने लगे; उळ्ळम् वॆम्प–मन तप्त हुआ तो; विम्मितार्–सिसके; मॆळ्ळ मॆळ्ळ–धीरे-धीरे; उयिर् निलैत्तु–प्राण स्थिर हुए; उवकै ऊऩ्ऱ–संतोष स्थिर हुआ; ओङ्कितार्–सिर ऊँचा किया; आङ्कु–तब; अवर् उऱ्ऱ तन्मै–उनका जो हाल हुआ; यार् कॊलो–वह कौन हो; पकरल् पालार्–वर्णन कर सकेंगे। ३५२०

उनका विचित्र हाल हुआ। पहले व्यग्र हुए, काँपे। निरंतर

हल्ला मचाया। भय अधिक बढ़ा तो फूल गये। बकने लगे। मन तप्त हुआ तो सिसके। फिर धीरे-धीरे प्राण स्थिर हुए तो आनन्द उमँग आया। तब वे सिर उन्नत किये खड़े रहे। तब उनकी जो स्थिति हुई रही उसका वर्णन कौन ही कर सकता है ? (कोई नहीं।)। ३५२०

आयिरम् परुवङ् गण्डुङ् गाट्चिक्कोर् करैयिऱ् ऱन्ऱाल्
मेयिन तुऱैह डोरुम् विम्मिताऱ् निऱ्प दल्लाल्
पाय्दिरैप् परवै येळुङ् गाणगुरुम् बदह रैन्न
नीयिरुन् दुरैत्ति यॆन्ऱार् वीडण नॆऱियिऱ् चॊल्वान् 3521

पाय् तिरै–झपटनेवाली तरंगों के; परवै एळुम् अॆन्न–सात समुद्रों के समान; काणकुरुम्–दिखनेवाले; पतकर्–पातक; मेयित–जहाँ-जहाँ रहे उन; तुऱैकळ् तोरुम्–सभी स्थलों में; विम्मिताऱ्–सिसकते; निऱ्पतु अल्लाल्–खड़े रहने के सिवा; आयिरम् परुवम् कण्टुम्–हजार साल देखें तो भी; काट्चिक्कु–देखने के लिए; ओर् करैयिऱ्ऱु अन्ऱु–कोई सीमा वाला नहीं; नी–तुम; इरुन्तु–सावधानी से; उरैत्ति–कहो; अॆन्ऱार्–कहा वानरों ने; वीटणन्–विभीषण ने; नॆऱियिल् चॊल्वान्–क्रम से बखाना। ३५२१

उछलकर चलनेवाली तरंगों से पूर्ण सातों समुद्र सम्मिलित हों, ऐसे दिखनेवाले पातक राक्षस जहाँ-जहाँ रहे उन स्थलों को देखने पर वानर सिसककर खड़े रह जाने के सिवाय पूर्ण रूप से देख लें, यह हजार साल में भी सम्भव नहीं लगता था। अतः वानरों ने विभीषण से कहा कि तुम ही इसका विवरण बता दो। विभीषण ने क्रम से कहना शुरू किया। ३५२१

काहप् पन्दर्च् चॆङ्गळ मॆङ्गुज् जॆऱिकाल
वेहत् तम्बिऱ् पॊन्ऱिन वेनु मुडलॊन्ऱि
मेहच् चङ्गन् दॊक्कन वीळुम् वॆळियिन्ऱि
नाहक् कुन्ऱम् निन्ऱन काण्मिन् नमरङ्गाळ 3522

नमरङ्काळ्–हे हमारे लोगो; काकम् पन्तर्–कौओं के वितान के नीचे; चॆं कळम् मॆङ्कुम्–(रक्त से) लाल समरांगन में; चॆऱि–घने; कालम् वेकत्तु अम्पिल्–यम-सम वेगवान अस्त्र से; पॊन्ऱिन एनुम्–मरे पड़े हैं तो भी; उटल् ऒन्ऱि–शरीरों के मिले रहने से; मेकम् चङ्कम्–मेघसमूह; तॊक्कन वीळुम्–मिलकर जहाँ रहते हैं; नाकम् कुन्ऱम्–हाथियों से भरे पर्वत; वॆळियिन्ऱि–बिना खाली स्थान के; निन्ऱन काण्मिन्–खड़े हैं, देखो। ३५२२

हे हमारे लोगो! कौओं के वितान के नीचे रक्त के कारण लाल दिखनेवाले युद्धस्थल में श्रीराम के यम के समान अस्त्रों से आहत होकर हाथी मरे पड़े हैं। उनके शरीर सटे रहते हैं। वे उन पर्वतों के समान दिखते हैं जिन पर मेघ आश्रय पाते हैं। देखो। ३५२२

वॅऩ्ऱिच् चॅङ्गण् वॅम्मै यरक्कर् विशैयूर्व
ऑऩ्ऱिऱ् कॊऩ्ऱुऱ् ऱम्बु तलैप्पट् टुयिर्नुङ्गप्
पॊऩ्ऱिच् चिङ्ग नाह वड्क्कल् पॊलिहिऩ्ऱ
कुऩ्ऱिऱ् ऱुञ्जुन् दऩ्मै निहर्क्कुङ् गऱिकाणीर् 3523

वॅऩ्ऱि–(पहले) विजयी; चॅ कण्–लाल आँखों वाले; वॅम्मै अरक्कर्–क्रूर राक्षस; विचै ऊर्व–सवेग जानेवाले; ऑऩ्ऱिऱ्कु ऑऩ्ऱु उऱ्ऱु–परस्पर आगे जानेवाले; अम्पु–रामबाणों ने; तलैप्पट्टु–उन पर लगकर; उयिर् नुङ्क–प्राण खाये, इसलिए; पॊऩ्ऱि–मरकर; नाकम् अट्क्कल्–सर्प-समेत पास की उपगिरियों के साथ; पॊलिकिऩ्ऱ–जो शोभायमान है; कुऩ्ऱिल्–उस पर्वत में; तुञ्चुम्–जो सोता है; चिङ्कम् तऩ्मै–उस सिंह के स्वभाव से तुल्य; निकर्क्कुम् कुऱि काणीर–स्वभाव देखो। ३५२३

उन अरुणाक्ष क्रूर राक्षसों को देखो जो पहले विजयी ही रहे हैं। श्रीराम के परस्पर होड़ लगाकर आगे चलनेवाले वेगवान अस्त्रों के उनके प्राणों को सोख देने से वे मरे पड़े हैं। वे ऐसे सोते हुए शेरों के समान दिखते हैं, जो नागों से पूर्ण उपगिरियों के साथ रहनेवाले पर्वत में सोते हों। वैसे लक्षणों से युक्त उन्हें देखो। ३५२३

अळियिऩ् पॊङ्गु मङ्गण ऩेवु मयिल्वाळिक्
कळियिऩ् पट्टार् वाण्मुह मिऩ्ऩुङ् गरैयिल्लाप्
पुळिऩत् तिट्टिऩ् कण्णहऩ् वारिक् कडल्पूत्त
नळिऩक् काडे यॊप्पऩ काण्मिऩ् ऩमरङ्गाळ् 3524

नमरङ्काळ्–हमारे लोगो; अळियिल् पॊङ्कुम्–दया-भरे; अम् कणऩ्–सुन्दराक्ष; एवुम्–द्वारा प्रेरित; अयिल् वाळि–तीक्ष्ण शर; कळियिल् पट्टार्–खुशी से जो मरे उनके; वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुख; मिऩ्ऩुम्–जहाँ चमकते हैं; करै इल्ला–उन अपार; पुळिऩम् तिट्टिऩ्–बालू के टीलों से युक्त; कण् अकल्–विशाल; वारि–जल के; कटल् पूत्त–समुद्र में खिले; नळिऩम् काटे ऑप्पऩ–कमलवन ही के समान दिखते; काण्मिऩ्–देखो। ३५२४

हे बंधुजनो! दयालु श्रीराम द्वारा प्रेरित अस्त्रों से आहत होकर भी जो खुशी से मरे उनके उज्ज्वल मुख अपार चमकीले पुलिनों से युक्त जल-सागर पर खिले कमलों के समान दिखते हैं। देखो। ३५२४

पूवाय् वाळिच् चॅल्लॅऱि कालैप् परिपॊऩ्ऱक्
कोवार् विण्वाय् वॅण्गॊडि तिण्पा यॊडुकूड
मावार् तिण्डेर् मण्डुव लाऩोर् मऱिवेलै
नावाय् माऩच् चॅल्वऩ काण्मिऩ् ऩमरङ्गाळ् 3525

नमरङ्काळ्–बंधुजनो; को आर्–अतिश्रेष्ठ; विण्वाय्–गगनस्पर्शी; वॅळ् कॊटि–श्वेत ध्वजा वाले; मा आर्–अश्व-जुते; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; पू

वाय्–तीक्षणमुखी; वाळि–शर रूपी; चॅल् ऑरि काले–अशनि जब फटी; परि पॉन्रु–(रस्सी से बँधे) अश्व मर गिरे; मण्टुतलाल्–विपुल परिमाण में चले; नीर् मरि वेले–(अतः) जलतरंगें जहाँ टकराकर मुड़ती हैं उस समुद्र में; तिण् पायॉट् कूट–मजबूत पाल के साथ; नावाय् मान–नौकाओं के समान; चॅल्वन–जाते; काण्मिन्–देखो। ३५२५

हे बंधुओ ! जब श्रेष्ठ, गगनस्पर्शी ध्वजाओं से अलंकृत व अश्वों से जुते रथों पर रामबाण अशनियों के समान गिरे, तब अश्व मरे। वे रथ रक्त में बहकर समुद्र में गये हैं। वे टकराती तरंगों के सागर पर पालों-सहित नौकाओं के समान दिखते हैं। देखो। ३५२५

ऑऴुहिप् पायु मुम्मद वेऴ मुयिरोडुम्
ॲऴुहिर् किल्लाच् चॅम्बुनल् वॅळ्ळत् तिडैयिर्रु
पऴहिर् रल्लाप् प:(ह्)रिरै तूङ्गुम् बडर्वेलै
मुऴुहित् तोन्रु मीनर शॉक्कुम् मुरैनोक्कीर् 3526

ऑऴुकि पायुम्–स्रव कर बहनेवाले; मुम्मतम् वेऴम्–त्रिमद के हाथी; उयिरोटुम्–जीवंत हैं तो भी; ॲऴुकिर्किल्ला–उठ नहीं पाते; चॅम् पुनल् वॅळ्ळत्तु इटै–लाल जल (रक्त) के प्रवाह-मध्य; इर्र्–फँसकर मरे; पऴकिर्र अल्ला–अपरिचित; पल् तिरै तूङ्कुम्–अनेक तरंगें जिस पर उठती-गिरती उस; पटर् वेले–विशाल सागर में; मुऴुकि तोन्रुम्–डूबते-उतराते; मीन् अरचु–मत्स्यराज के; ऑक्कुम् मुरै–समान दिखने का प्रकार; नोक्कीर्–देखो। ३५२६

त्रिविध (कपाल, गाल और बीज का) मद बहानेवाले हाथी शिथिल पड़े, जीवित रहने पर भी उठ नहीं पाये। इसलिए रक्त-प्रवाह में फँस गये। वे अपरिचित, टकराती-मुड़ती तरंगों वाले विशाल सागर में डूबते-उतराते मत्स्यराज के समान लगते हैं। देखो। ३५२६

कडक्का रॅन्नप् पॉङ्गु कवन्दत् तॉडुकैहळ्
तॉडक्का निर्कुम् बेयिल यत्तिन् रॉऴिल्पण्णि
मडक्को विल्ला वार्कडि मक्कूत् तमैविप्पान्
नडक्काल् हाट्टुङ् गण्णुळ रॉक्कुन् नमरङ्गाळ् 3527

नमरङ्काळ्–बंधुजनो; कटम् कार् ॲन्न–शरीर मेघ के समान हैं; पॉङ्कु–उमंग के साथ उठनेवाले; कवन्तत्तॉटु–कवंधों के साथ; कैकळ्–हाथ; तॉडक्का निर्कुम्–लगाये जो रहे; पेय्–वे भूत; इलयत्तिन् तॉऴिल् पण्णि–लयकार्य करके मटक्कु ओव् इल्ला–बिना मोड़ के; वार् पटिमम् कूत्तु–लम्बी प्रतिमा-नाच को; अमैविप्पान्–रचने को; नटम् काल् नाट्टुम्–नृत्य-चरण-मुद्रा बनानेवाले; कण्णुळर् ऑक्कुम्–नृत्याचार्य के समान दिखते। ३५२७

हे हमजनो ! मेघ-सम शरीरों के साथ कबंध उठते हैं। भूत उन पर हाथ डाले लयसहित नृत्य-मुद्रा में खड़े हैं। वे नृत्याचार्य के समान

लगते हैं, जो अपने शिष्यों को अभंग प्रतिमा नृत्य की मुद्रा दिखाने के लिए चरणभंगिमा दिखाते हों। ३५२७

मऴुविऱ् कूऱ्वाय् वन्ब लिडुक्किन् वयवीरर्
कुऴुविऱ् कॉण्डार् नाडि तॉडक्कप् पॊऱिकूट्टत्
तऴुविक् कॊऴ्ऴक् कळ्ळ मनप्पे यवैतऴ्ऴि
नऴुविच् चॆल्लु मियल्बिन काण्मिन् नमरङ्गाळ् 3528

नमरङ्काळ्–बंधुजनो; वाय्–मुख में; मऴुविल् कूर् वन्–परशु से भी तीक्ष्ण; पल्–दांतों के और; इटुक्कु इल्–सुदृढ़; वयम् वीरर्–विजयी वीर; कुऴुविल् कॊण्टार्–दलबद्ध (उनको); नाटि—नसें; तॊटक्कम्–बांधनेवाले; पॊऱि–यन्त्र के समान; कूट्ट–फँसाकर; तऴुवि कॊऴ्ळ–लपेटे रहे तो; कळ्ळम् मनम् पेय्–वंचक-मन भूत; अवै तऴ्ऴि–उनको दूर ढकेलकर; नऴुवि चॆल्लुम्–फिसल जाने के; इयल्पित–स्वभाव वाले को; काण्मिन्–देखो। ३५२८

बंधुजनो! उन विजयी वीरों को देखो, जिनके मुख में परशु के जैसे तीक्ष्ण दाँत हैं! भीड़ में पड़े रहते उनकी नसें निकली हैं और यंत्र के समान फँसाने के प्रयास में भूतों को लपेट लेती हैं। पर वे वंचक मन वाले भूत उनको हटाकर किसी विध पकड़ से फिसल जाते हैं। देखो। ३५२८

पॊन्निन् ओडै मिन्पिऱऴ् नॆऱ्ऱिप् पुहर्वेऴम्
पिन्नुम् मुन्नुम् माऱिन वीऴ्विऱ् पिणैयुऱ्ऱ
तन्निन् नेरा मॆय्यिरु पालुन् दलैपॆऱ्ऱ्
ऎन्नुन् दन्मैक् केय्वन पल्वे ऱिवैकाणीर् 3529

पॊन्निन् ओटै–स्वर्णमुखपट्ट की; मिन् पिऱऴ्–छवि से शोभित; नॆऱ्ऱि–भाल पर; पुकर्–लाल बिंदियों से युक्त; वेऴम्–वो हाथी; वीऴ्विल्–जब (मरकर) गिरे; पिन्नुम् मुन्नुम् माऱिन–आगे-पीछे मुड़कर; पिणै उऱ्ऱ–बद्ध हो गये; तन्निल् नेरा–परस्पर सम; मॆय् इरु पालुम्–शरीर के दोनों तरफ़; तलै पॆऱ्ऱ–सिर प्राप्त (विचित्र जानवर); ऎन्नुम् तन्मैक्कु–कहलाने योग्य; ऐय्वन–जो रहते हैं; पल्वेऱु–विविध; इवै काणीर्–इनको देखो। ३५२९

मुखपट्टशोभित भाल पर लाल बिंदिया लिये हाथी जब गिरे तब आपस में गुँथकर बेतरह गिरे हैं। ऐसी विचित्र दशा में गिरे हैं कि लगता है शरीर के दोनों तरफ़ सिर लगे हों। ऐसे अनेक पड़े हैं। देखो। ३५२९

नामत् तिण्पोर् मुऱ्ऱिय कोबन् नहैनाऱुम्
पामत् तॊन्नी रन्न निऱत्तोर् पहुवायहळ्
तूमत् तोडुम् वॆङ्गन लिन्नुञ् जुडर्हिन्ऱ
ओमक् कुण्ड मॊप्पन पल्वे ऱिवैकाणीर् 3530

नामम्–डरावने; तिण् पोर्–कठोर युद्ध में; मुऱ्ऱिय कोपम्–बढ़ा-चढ़ा कोप; नक्कै नाऱम्–हँसी में प्रकट; पाम्–विस्तृत; अ–उस; तौल् नीर् अऩ्ऩ–प्राचीन जल-भरे समुद्र के समान; निऱत्तु–रंग वाले; ओर्–अपूर्व; पकु वाय्कळ्–विभक्त मुख; तूमत्तोटुम्–धुएँ के साथ; वॆम् कऩल्–भयंकर आग; इऩ्ऩुम् चुटर्किऩ्ऱ–जिनमें अब भी जलती है उन; ओमम् कुण्टम् ऒप्पऩ–होमकुंडों के समान हैं; पल् वेऱु–विविध अनेक; इवै काणीर्–ये देखो। ३५३०

अतिभयंकर व कठोर युद्ध में निपट क्रोध और हास से भरे, पुरातन जलपूर्ण सागर के समान रंग के और फटे से खुले राक्षसों के मुखों को देखो जो धुएँ और जलती दारुण अग्नि के साथ रहते होमुकुंडों के समान दिखते हैं। ३५३०

मिऩ्ऩुम्　　मोडै　　याडल्　　वयप्पोर्　　मिडल्वेऴक्
कऩ्ऩम्　　मूलत्　　तऱ्ऱऩ　　वॆण्चा　　मरैकाणीर्
मऩ्ऩुम्　　मानीर्त्　　तामरै　　मातुम्　　वदऩत्त
अऩ्ऩम्　　मॆल्लत्　　तुञ्जुव　　वॊक्कुम्　　मवैहाणीर् 3531

मिऩ्ऩुम्–ज्वलन्त; ओटै–मुखपट्ट; आटल्–और नृत्यशील; वयम् पोर्–विजयी युद्ध में; मिटल्–बल दिखाते जो रहे; वेऴम्–हाथियों के; कऩ्ऩम् मूलत्तु–कर्णमूल से; अऱ्ऱऩ–निकले दिखनेवाले; वॆण् चामरै–श्वेत चँवर; काणीर्–देखो; मऩ्ऩुम्–नित्य; मा नीर्–बहुत जल में; तामरै मातुम्–कमलपुष्प-सदृश; वतऩत्तु–वदनों पर लगे; अवै–वे चँवर; अऩ्ऩम्–हंस; मॆल्ल–धीरे से; तुञ्चुव ऒक्कुम्–सोते जैसे लगते हैं। ३५३१

चमकदार मुखपट्ट से अलंकृत, नृत्यशील उन हाथियों के, जिन्होंने कठोर युद्ध में अपना बल दिखाया था, कनपटी से गिरे हुए चामरों को देखो। श्रेष्ठ जल में के खिले कमलों के समान लगनेवाले वीरों के मुखों पर पड़े रहते वे चामर धीरे से सोते हंसों के समान लगते हैं, देखो। ३५३१

ओऴिऩ्　　मुऱ्ऱा　　दुऱ्ऱुयर्　　वेऴत्　　तॊऴिर्वॆणगो
डाऴिऩ्　　मुऱ्ऱाच्　　चॆम्बुऩल्　　वॆळ्ळत्　　तवैहाणीर्
कोऴित्　　मुऱ्ऱाच्　　चॆक्करित्　　मेहक्　　कुऴुविऩ्गण्
नाऴिऩ्　　मुऱ्ऱा　　वॆण्बिऱै　　पोलुऩ्　　नमरङ्गाळ् 3532

नमरक्काळ्–साथियो; ओऴिऩ्–श्रेणियों में; मुऱ्ऱातु–बिना घेरे; उऱ्ऱु उयर्–(अलग-अलग) आक्रमण करके जो बढ़े; वेऴत्तु–उन गजों के; ऒऴिर् वॆण् कोटु–सुन्दर श्वेत दाँत; आऴिऩ् मुऱ्ऱा–वीरों से न भरे; चॆम् पुऩल् वॆळ्ळत्तवै–रक्त-प्रवाह में जो देखे गये; कोऴित्–जल से; मुऱ्ऱा–न भरा; चॆक्करित्–लाल रंग के; मेकम् कुऴुविऩ् कण्–मेघ-समूह-मध्य; नाऴिऩ् मुऱ्ऱा–जिसके दिन नहीं बढ़े थे; वॆण् पिऱै पोलुम्–उस बालचन्द्र के समान थे। ३५३२

ऍन्ऱु काणिनुङ् गाट्टिनु मीदिऱैक्, कुन्ऱु काणिनुङ् गोळिल दादलाल्
निन्ऱु काणुदु नेमियि न्नानुळैच्, चॅन्ऱु काण्डुमॅन्ऱ् ऱेहिनर् शॅव्वियोर् 3551

ऍन्ऱु–ऐसा; काणिनुम्–हम स्वयं देखें या; काट्टिनुम्–तुम दिखाओ तो भी; ईदु–यह (मूलबल); कुन्ऱु इऱै–नगाधिराज (हिमालय) की; काणिनुम्–देखा जा सकता है; कोळ् इलतु–(देखने में) आ जाय ऐसा नहीं; आतलाल्–इसलिए; निन्ऱु काणुतुम्–रुककर (पीछे) देख लेंगे; नेमियिनान् उळै–चक्रधारी के पास; चॅन्ऱु–जाकर; काण्टुम्–उनके दर्शन कर लें; ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; चॅव्वियोर्–सीधे-सादे वानर; एकिनर्–गये। ३५५१

वानरों ने कहा कि चाहे हम ही स्वयं देख लें या तुम्हारे दिखाते, नगाधिराज को देखा जा सके तो देखा जाय, पर, यह मूलबल पूर्ण रूप से देखा जाय ऐसा नहीं लगता। इसलिए पीछे सावधानी से देख लें। अब चक्रधर श्रीराम के पास जाकर उनसे मिलें। वे सीधे-सादे वीर चले। ३५५१

आरि यऱ्ऱॊळु दाङ्गवन् बाङ्गरुम् पोरि यऱ्कै निनैन्दॅळ् पॊम्मलार्
पेरु यिर्प्पॊ डिरुन्दनर् पिन्बुरु, कारि यत्ति निलैमै करुदुवार् 3552

आरियन्–आर्य श्रीराम को; तॊळुतु–वंदना करके; आङ्कु–वहाँ; अवन् पाङ्कु–उनके (पास); अरु–श्रेष्ठ; पोर् इयऱ्कै–युद्धतन्त्र; निनैन्तु–जानकर; ऍळु पॊम्मलार्–उठते अनुतापवाले; पेर् उयिर्प्पॊटु–बड़े निःश्वास छोड़ते; इरुन्तनर्–रहे; पिन्पु उरु–आगे होनेवाले; कारियत्तिन् निलैमै–कार्य की गति; करुतुवार्–सोचने लगे। ३५५२

वे आर्य श्रीराम के पास गये। उनको, श्रीराम के युद्ध-परिश्रम का खयाल करके अपार दुःख हुआ। बड़े निःश्वास छोड़ते हुए आगे के कार्य की गतिविधि सोचते रहे। ३५५२

33. इरावणन् कळङ्गाण् पडलम् (रावण-युद्धस्थल-संदर्शन पटल)

अलक्क णॆय्दि यमर रळिन्दिड, उलक्क वानर वीररै योट्टियव्
विलक्कु वन्ऱनै वोट्टि यिरावणन्, तुलक्क मॆय्दिनन् दोमिल् कळिप्पिनै 3553

अमरर्–देवों को; अलक्कण् ऍय्ति–दुःखी होकर; अळिन्तिट–क्षीण बनाकर; वानर वीररै–वानर वीरों को; उलक्क–निर्बल हो; ओट्टि–भाग जाने को मजबूर करके; अव् इलक्कुवन् तनै–उन लक्ष्मण को; वीट्टि–मारकर; तोम् इल्–अनिद्य; कळिप्पिनै–आनन्द से; इरावणन्–रावण; तुलक्कम् ऍय्तिनन्–प्रसन्नचित्त रहा। ३५५३

रावण देवों को दुःखी और अस्त-व्यस्त करके वानरों को बलहीन बनाकर भगा चुका था। फिर लक्ष्मण को मार चुका था। स्वाभाविक था कि वह एक अनिद्य आनन्द से भर गया और वह प्रसन्नचित्त रहा। ३५५३

पॉरुनदु पोर्प्पॅरुङ् गोलत्तिऱ् पोर्त्तॊऴिल्
वरुन्दि नऱ्कुत्त मन्बिनिऩ् वन्दवर्
अरुन्दु दऱ्कमै वायिन वाक्कुवान्
विरुन्द मैक्क मिहुहिन्ऱ वेट्कैयान् 3554

तम् अन्पिनिऩ् वन्तवर्क्कु—उस पर प्रेम के कारण आकर; पॊरुन्तु—युक्त; पॆरुम् पोर् कोलत्तिल्—बड़े युद्धवेश में; पोर् तॊऴिल्—युद्ध-कार्य में; वरुन्तिनर्क्कु—जो दुःखी हुए थे उन्हें; अरुन्तुतऱ्कु अमैवु आयिन—भोज देने योग्य; आक्कुवान्—(पदार्थ) बनाकर; विरुन्तु अमैक्क—दावत देने की; मिकुकिन्ऱ—बढ़ती; वेट्कैयान्—इच्छा का हुआ। ३५५४

उसके मन में तीव्र इच्छा पैदा हुई कि मैं अपने प्रति प्रेम के कारण युक्त योद्धावेश में जो आये थे और लड़ाई में संकट भोग चुके थे उन्हें एक दावत दूं और भोग्य पदार्थ खिलाऊँ। ३५५४

वान नाट्टै वरुहॅन वल्विरैन्
देनै नाट्टव रोडुम्वन् दॅय्दिनार्
आन नाट्टन्द पोह ममैत्तीर्मऱ्
ऱून नाट्टि ऩिऴत्ति रुयिरॅन्ऱान् 3555

वानम् नाट्टै—व्योमलोकवासियों को; वल् विरैन्तु—बहुत शीघ्र; वरुक ऎन—आओ कहने पर; एनै नाट्टवरोटुम्—अन्य लोकों के जनों के साथ; वन्तु ऎय्तिनार्—आ पहुँचे; अन्त नाट्टु आन पोकम्—उस लोक का भोज; अमैत्तीर्—बना लो; मऱ्ऱु—विपरीत; ऊनम् नाट्टिन्—कमी दिखाओ तो; उयिर् इऴत्तिर्—प्राण गँवाओगे; ऎन्ऱान्—कहा (रावण ने)। ३५५५

उसने देवलोकवासियों को 'आओ जल्दी' कहकर बुलाया। वे अन्य लोकों के लोगों के साथ आये। रावण ने आज्ञा दी कि आपके लोक में जैसा भोज बनता है, वैसा यहाँ भी प्रबंध करा दो। उसने चेतावनी दी कि अगर कुछ दोष रह गया तो सिर गँवाओगे। ३५५५

नऱवु मूनु नवैयऱ नल्लन, पिऱवु माडैयुञ् जान्दमुम् बॅय्म्मलर्त्
तिऱमु नानप् पुनलॊडु शेक्कैयुम्, पुऱमु मुऴ्ळुम् निऱैयप् पुहुन्दवाल् 3556

नल्लन—अच्छे; नऱवुम् ऊनुम्—मद्य और मांस; पिऱवुम्—और अन्य; आटैयुम्—और वस्त्र; चान्तमुम्—चंदन; पॆय् मलर् तिऱमुम्—बरसाये गये फूलों के प्रकार; नानम् पुनलॊटु—और स्नान योग्य जल के साथ; चेक्कैयुम्—शय्या सब; पुऱमुम् उऴ्ळुम्—बाहर और भीतर; निऱैय—भरपूर; नवैयऱ—बिना किसी त्रुटि के; पुकुन्त—आ पहुँचे। ३५५६

श्रेष्ठ मांस, मद्य, अन्य खाद्य पदार्थ, वस्त्र, चंदन, बरसाने की तरह तरह के फूल, स्नान योग्य जल, शय्या —सारे पदार्थ बाहर और भीतर, सर्वत्र भरपूर आ गये और कहीं कोई कमी नहीं पायी गयी। ३५५६

नाऩ नॆय्न्नऩ् गुरैत्तु नऱुम्बुऩल्, आऩ कोदऱ वाट्टि यमुदॊडुम्
बाऩ मूट्टिच् चयऩम् बरप्पवुम्, वाऩ नाडिय रियावरुम् वन्दऩर् 3557

नानम् नॆय्–स्नान-तेल को; नऩ्कु उरैत्तु–खूब मलकर; नऱुम् पुऩल्–सुवासित जल से; आऩ–शरीर पर लगे; कोतु अऱ–मैल को दूर करके; आट्टि–नहलाकर; अमुतॊटुम्–भोज-पदार्थों के साथ; पाऩम् ऊट्टि–पान कराकर; चयऩम् परप्पवुम्–शय्या बिछाने; वाऩ नाटियर् यावरुम्–व्योमवासिनियाँ, सभी; वन्तऩर्–आयीं। ३५५७

फिर व्योमवासिनी अप्सरायें आयीं— स्नान-तेल खूब मलकर सुवासित जल में शरीर के मैल को दूर करते हुए स्नान कराने, खाने के साथ पान कराने, और शय्या बिछाने के निमित्त। ३५५७

पाडु वार्हळ् पयिल्नडम् बावहत्, ताडु वार्ह ळमळियि लऩ्बुऱक्
कूडु वार्हण् मुदलुङ् गुऱैवऱऩ्, देडि ऩारॆऩप् पण्णैयिऱ् चेर्न्दवाल् 3558

पाट्टुवार्कळ्–गातीं; पयिल् नटम्–अभ्यस्त नृत्य; पावकत्तु आटुवार्कळ्–भावप्रदर्शन के साथ दिखातीं; अमळियिल्–पलंग पर; अऩ्पु उऱ–राग के साथ; कूटुवार्कळ्–संगम करतीं; मुतलुम् कुऱैवु अऱ–पूँजी भी कम न हो ऐसा; तेटिऩार् ऎऩ–संपत्ति जिन्होंने अर्जन की थी, उनको जैसे; पण्णैयिल्–उस रमणीवृन्द में; चेर्न्त–अनेक भोग मिले। ३५५८

कुछ अप्सरायें गातीं! कुछ अभ्यस्त नृत्य भावप्रदर्शन के साथ खूब करतीं। कुछ पलंग में राग के साथ संगम करतीं। उस रमणी-वृन्द में उन वीरों को वैसे भोग मिले, जो उन लोगों को मिलता है जिनके पास उतनी पूँजी जमा हो जितनी के लाभ से ही सारा भोग मिल सकता है और पूँजी को छूने की आवश्यकता नहीं पड़ती। (यानी बड़े भाग्यवानों को जो मिलता है वह आनंदभोग मिला)। ३५५८

अरश रादि यडियव रन्दमा, वरैशॆय् मेऩि यिराक्कदर् वन्दुळार्
विरैवि ऩिन्दिर पोहम् विळैवुऱक्, करैयि लाद पॆरुवळङ् गण्णिऩार् 3559

अरचर् आति–राजा से लेकर; अटियवर् अन्तमा–दासों तक; वन्तुळार्–जो आये थे; वरै चॆय् मेऩि–वे पर्वतोपम शरीरी; इराक्कतर्–राक्षस; विरैविऩ्–अति शीघ्र; इन्तिर पोकम्–इन्द्रभोग; विळैवु उऱ–प्राप्त होने से; करै इलात–अपार; पॆरु वळम्–उस बड़े भोग में; कण्णिऩार्–दत्तचित्त रहे। ३५५९

राजा से लेकर दास तक जितने आये थे, उन पर्वतोपम शरीरी राक्षसों को इन्द्रभोग बहुत शीघ्र प्राप्त हो गया और वे अपार रूप से खूब भोग में लग गये। ३५५९

इन्ऩ तऩ्मै यमैन्त विराक्कदर्
मऩ्ऩऩ् माडुवन् वॆय्दि वणङ्गिऩार्

अन्न शेनै कळप्पट्ट वाऍलाम्
तुन्नु तूदर् शॅवियिडेच् चॊल्लुवार् 3560

इन्न तन्मै अमैत्त–इस प्रकार जिसने प्रबन्ध कराया था, उस; इराक्कतर् मन्नन् माट्टु–राक्षस राजा के पास; वन्तु ॲय्ति–आ पहुँचकर; वणङ्कितार्–विनत होकर; अन्न चेनै–वह सेना; कळप्पट्ट आऱु ॲलाम्–खेत जैसे रही वह सारा हाल; चॅवि इटै–उसके कानों में; तुन्नु तूतर्–अंगरक्षक दूतों ने; चॊल्लुवार्–कहना आरम्भ किया। ३५६०

इस भाँति जिसने अच्छा प्रबंध कराया था, उस रावण के पास अंगरक्षक दूत आ पहुँचे और उन्होंने उसके कानों में मूलबल के पूर्ण रूप से खेत रहने का सारा हाल बताया। ३५६०

नडुङ्गु हिन्ऱ वुडलिनर् नावुलर्न्
दॊडुङ्गु हिन्ऱ वुयिर्प्पिन रुळ्ळऴिन्
दिडुङ्गु हिन्ऱ विऴियिन रेङ्गिनार्
पिडुङ्गु हिन्ऱ वुरैयिनर् पेशुवार् 3561

नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपते; उटलिनर्–शरीर वाले; ना उलर्न्तु–जीभ सूखकर; ऒटुङ्कुकिन्ऱ–क्षीण होनेवाली; उयिर्प्पिनर्–साँसों वाले; उळ् अऴिन्तु–मन के क्षय से; इटुङ्कुकिन्ऱ–सँकरी होती; विऴियिनर्–आँखों वाले; पिटुङ्कुकिन्ऱ–कष्ट के साथ जिन्हें खींच-से लेते; उरैयिनर्–ऐसे शब्दों के वक्ता; एङ्कितार्–तरसते हुए; पेचुवार्–कहने लगे। ३५६१

उनके शरीर काँप रहे थे। जीभ सूख गयी। श्वास क्षीण हो रहे थे। मन क्षीण था, जिसके फलस्वरूप आँखें सँकरी हो रही थीं। बहुत कठिनता से बात करते थे कि लगता था कि वे शब्दों को जबरदस्ती खींच ला रहे हों। वे तरस के साथ बोले। ३५६१

इन्ऱियार् विरुन्दिङ् गुण्बा रिहन्मुहत् तिमैयोर् नन्द
वॆन्ऱिया येवच् चॆन्ऱ वायिर वॆळ्ळच् चेनै
निन्ऱुळार् पुऱत्ता राह विरामन्ऱ्कै निमिर्न्द शाबम्
ओन्ऱिनाल् नालुगु मून्ऱु कडिहैयि नुलन्द वॆन्ऱार् 3562

इकल् मुकत्तु–युद्ध में; इमैयोर् तन्त–देवों द्वारा दत्त; वॆन्ऱियाय्–विजयी; एव चॆन्ऱ–आपकी प्रेरणा से जो गयी; आयिरम् वॆळ्ळम् चेनै–वह हजार 'वॆळ्ळम्' की सेना; पुऱत्तार् आक–युद्ध-स्थल में रही; इरामऱ्कु कै–श्रीराम के हाथ के; निमिर्न्त चापम् ऒन्ऱिनाल्–एक उन्नत चाप से; नाऩ्कु मून्ऱु–चार और तीन (सात); कटिकैयिल्–घड़ियों में; उलन्ततु–मिट गयी; इन्ऱु–आज; इङ्कु विरुन्तु उण्पार्–दावत खानेवाले; यार्–जो हैं; निन्ऱुळार्–वे ही बचे हैं; ॲन्ऱार्–ऐसा कहा (दूतों ने)। ३५६२

युद्ध में देवों की दी हुई विजय के स्वामी ! आपकी आज्ञा ले जो

सेना गयी, वह युद्धस्थल में खड़ी ही हुई थी कि राम के एक ऊँचे चाप से सात घड़ियों में मिट गयी। अब इधर जो दावत खाते हैं वे ही बचे हैं। ३५६२

वलिक्कडन् वान्‌ ळोरक् कॉण्डुनी वहुत्त पोहम्
कलिक्कड लळिप्प नॅन्ऱु निरुदर्क्कुक् करुदि नायेल्
पलिक्कड नळिक्कर् पालै यल्लवुन् कुलत्तिन् पालोर्
ऑलिक्कड लुलहत् तिल्लै यूरुळा रुळरे युळ्ळार् 3563

वलि कटन्–वल के क्रम से; वानुळोरॅ–व्योमवासियों को; कॉण्टु–काम में नियुक्त करके; वकुत्त पोकम्–विविध प्रकार के बने भोगों को; निरुतर्क्कु–राक्षसों को; कलि कटन्–संतोष का कर्तव्य मानकर; अळिप्पन्–दूंगा; ऍन्ऱु–ऐसा; नी करुतितायेल्–आप विचार करें तो; ऊर् उळार्–नगर में जो हैं; उळरे उळ्ळार्–वे ही रहे हैं; अल्लतु–उनके सिवा; उन्कुलत्तिन् पालोर्–आपके कुल के; ऑलि कटल्–शब्दायमान सागर-वलयित; उलकत्तु इल्लै–संसार में (कोई) नहीं हैं; पलि कटन्–बलि का कर्तव्य; अळिक्कल् पालै–बेने अर्ह हैं। ३५६३

आप सोचते हैं कि अपने पराक्रम से व्योमवासियों के द्वारा इन राक्षसों को प्रीतिभोज का इंतिज़ाम करा दूं! तो इस नगर में जो रह गये हैं वे ही बाक़ी हैं। उनके अलावा आपके कुल का कोई भी इस ध्वनियुक्त समुद्रवलयित भू में कहीं नहीं रहता। अतः मृतबलि का प्रबंध कर सकते हैं (न कि भोज!)। ३५६३

ईट्टरु मुवहै यीट्टि यिरुन्दव निशॅत्त माऱ्ऱम्
केट्टलुम् वॅहुळि योडु तुणुक्कमु मिळवुङ् गिट्टि
ऊट्टरक् कुण्ड शॅङ्गण् नॅरुप्पुह वुयिर्प्पु वीङ्गत्
तीट्टिय पडिव मॅन्नत् तोऱ्ऱिनन् तिहैत्त नॅञ्जत् 3564

ईट्ट अवन्–सम्पादन-दुर्लभ; उवकै–संतोष; ईट्टियिरुन्तवन्–जिसने पा लिया था; इचॅत्त माऱ्ऱम्–(उस रावण के) दूतों के कहे वचनों को सुनते ही; वॅकुळियोटु–क्रोध के साथ; तुणुक्कमुम्–भय और; इळवुम्–खोने का दुःख भी; किट्टि–पाकर; ऊट्टु अरक्कु–लगायी गयी लाख से; उण्ट चॅम् कण्–भरी-सी लाल आँखें; नॅरुप्पु उक–आग निकालने लगीं; उयिर्प्पु वीङ्क–श्वास बढ़ा; तिकैत्त नॅञ्चत्–(इन विभावों के साथ) ठिठके मनवाला बन; तीट्टिय पटिवम् ऍन्न–लिखित चित्र के समान; तोऱ्ऱिनन्–दिखा। ३५६४

रावण संपादन-दुर्लभ संतोष में इतरा रहा था। इसे सुनते ही उसे अपार क्रोध, भय और दुःख हुए। लाख के समान लाल आँखों से आग बरसने लगी। श्वास फूले। मन ठिठका। और वह लिखित चित्र के समान दिखा। ३५६४

ॲऩ्ऩिऩुम् वलिय राऩ विराक्कव रियारुम् वीयार्
उऩ्ऩिऩु मुलप्पि लाद्रा रुवरियिऩ् मणलि ऩीऴ्वार्
पिऩ्ऩॊरु पॆयरु मिऩ्ऱि माण्डऩ रॆऩ्ऱु शॊऩ्ऩ
इन्निले यिदुवो पॊय्म्मै विळम्बिऩॊर् पोलु मॆऩ्ऱाऩ् 3565

ॲऩ्ऩिऩुम् बलियर् आऩ–मुझसे भी बलवान रहे; इराक्कतर् यारुम्–उन राक्षसों में कोई; वीयार्–नहीं मरेंगे; उऩ्ऩिऩुम्–अनुमान लगाने पर भी; उलप्पु इलातार्–जो गिने नहीं जा सके; उवरियिऩ् मणलिऩ् नीऴ्वार्–ऐसा, समुद्र के बालुओं से भी अधिक रहे; पिऩ् ऑरु पॆयरुम् इऩ्ऱि–फिर कोई एक न रहा ऐसा; माण्टऩर्–सब मरे; ॲऩ्ऱु चॊऩ्ऩ–ऐसा जो कहा जाता है; इ निलै इतुवो–यह स्थिति यहां है क्या; पॊय्म्मै–असत्य; विळम्पिऩॊर् पोलुम्–बोले शायद; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा रावण ने। ३५६५

"मूलबल वीर मुझसे बलवान थे! वे नहीं मरेंगे। हिसाब, प्रयत्न करने पर भी नहीं लगाया जाय, ऐसा समुद्र के बालुओं से भी अधिक संख्या के थे। फिर कहते हो कि एक भी बचा नहीं; सभी हत हो गये! (यह) स्थिति सचमुच यही है? या शायद झूठ कह गये?" रावण ने पूछा। ३५६५

केट्टय लिरुन्द मालि यीदॊरु कोऴ्मैत् तामो
ओट्टुरु तूदर् पॊय्ये युरैप्परो वुलहम् यावुम्
वीट्टुव दिमैप्पि ऩऩ्ऱे वीङ्गॆरि विरिन्द वॆल्लाम्
माट्टुव ऩॊरुव ऩऩ्ऱे यिरुदियिऩ् मऩत्ता लॆऩ्ऱाऩ् 3566

केट्टु–सुनकर; अयल् इरुन्त मालि–पास जो रहा उस माल्यवान ने; ईतु–यह समाचार; कोऴ्मैत्तु आमो–अविश्वास योग्य होगा क्या; ओट्टुरु तूतर्–भागे जो आये वे दूत; पॊय्ये उरैप्परो–झूठ ही कहेंगे क्या; उलकम् यावुम्–सभी लोकों में; बिरिन्त ॲलाम्–विस्तृत रूप से रहनेवाले सभी को; इरुतियिऩ्–युगांत में; मऩत्ताल्–संकल्प मात्र से; माट्टुवऩ्–मिटानेवाला; ऑरुवऩ् अऩ्ऱे–अद्वितीय अकेले ही न; वीङ्कु ॲरि–अधिक जलनेवाली आग द्वारा; इमैप्पिऩ्–पल भर में; अऩ्ऱे वीट्टुवतु–मिटा देता है; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ३५६६

यह सुनता हुआ माल्यवान पास में रहा। उसने रावण को यों समझाया। क्या यह समाचार अविश्वास योग्य है? भागे हुए जो आये हैं वे भी असत्य बोलेंगे क्या? युगांत के विस्तृत-लोकसंहारक (रुद्र) तो अकेले ही युगांत की आग की सहायता से संकल्प मात्र से सारे लोकों को पल भर में मिटा देता है। ३५६६

अळप्परु मुलहम् यावु मळित्तुक्कात् तळिक्किऩ् ऱाऩ्तऩ्
उळप्पॆरुन् दहैमै तऩ्ऩा लॊरुवऩॆऩ् ऱुणर्मै वेदम्
किळप्पदु केट्टु मऩ्ऱे यरविऩ्मेर् किडन्दु मेऩाळ्
मुळैत्तपे रिराम ऩॆऩ्ऱु वीडणऩ् मॊऴिपॊय्त् तामो 3567

तन् उळम्–अपने मन के; पॆरु तकैमै तन्नाल्–बड़े (संकल्प-) बल से; अळप्परुम् उलकम् यावुम्–सभी अगणित लोकों को; अळित्तु–सृष्ट करके; कात्तु–रक्षण कर; अळिक्किन्ऱान्–संहार करता है; ऑरुवन्–अद्वितीय है; ऎन्ऱु–ऐसा; वेतम्–वेद; उण्मै–सत्य; किळप्पतु–बताते हैं यह; केट्टुम् अन्ऱे–सुनते हैं न; मेनाळ्–प्राचीन दिनों में; अरविन् मेल् किटन्तु–सर्प पर लेटकर; मुळैत्त–अब यहाँ जो प्रगट हुआ है; पेर् इरामन्–वह मान्य राम; ऎन्ऱ–ऐसा जिसने बताया; वीटणन् मॊऴि–विभीषण का वचन; पॊय्त्तु आमो–झूठा बनेगा क्या। ३५६७

सत्यवाक् वेद यह बताते हैं कि अपने मन के संकल्प के अपार बल से अद्वितीय एक (भगवान) ही अपार लोकों की सृष्टि करके उनको पालता है और उनका संहार करता है। क्या यह हमने नहीं सुना है ? वही देवदेव क्षीरसागर का शेषशायी अब श्रीराम के रूप में प्रकट मान्य श्रीराम है —यह जो विभीषण कह रहा था, झूठा हो सकता है क्या ? । ३५६७

ऑन्ऱिडि नदनै युण्णु मुलहत्ति नुयिर्क्कॊन् ऱाव
निन्ऱन वॆल्लाम् बॆय्दा लुडनुङ्गु नॆरुप्पुङ् गाण्डुम्
कुन्ऱॊडु मरनुम् बुल्लुम् बल्लुयिर्क् कुऴुवुङ् गॊल्लुम्
वन्ऱिऱर् काऱ्ऱुङ् गाण्डुम् वलिक्कॊरु वरम्बु मुण्डो 3568

ऑन्ऱु इटिन्–एक पदार्थ (मुख में) डाल दो तो; अतनै उण्णुम्–उसे खानेवाले; उलकत्तिन् उयिर्क्कु–लोक के जीवों को; ऑन्ऱात–जो उचित नहीं; निन्ऱन–रहते; ऎल्लाम्–उन सभी को; पॆय्ताल्–डाला जाय तो; उटन् नुङ्कुम्–एक साथ कवलित करनेवाली; नॆरुप्पुम् काण्टुम्–आग हमने देखी है; कुन्ऱॊटु–पर्वत के साथ; मरनुम् पुल्लुम्–तरु, घास और; पल् उयिर् कुऴुवुम्–अनेक जीवों के झुण्डों को; कॊल्लुम्–मारनेवाले; वल् तिऱल्–बहुत प्रबल; काऱ्ऱुम् काण्टुम्–पवन भी हमने देखा है; वलिक्कु–बल की; ऑरु वरम्पु उण्टो–कोई सीमा भी है क्या। ३५६८

जीव अपने योग्य आहार मिलने पर ही उसे खाते हैं। किन्तु, अग्नि ऐसी होती है, जो अखाद्य को भी डालें तो उसको भस्म कर देती है। उसे हमने देखा है। युगांत का पवन है, जो पर्वत, तरु, घास और विविध जीवों का नाश कर देता है। वैसा प्रबल पवन हमने देखा है। फिर बल की कोई सीमा भी है ? । ३५६८

पट्टदु मुण्डे युन्नै यिन्दिरच् चॆल्वम् बऱ्ऱु
विट्टदु मॆय्म्मै यॆय मीण्डॊरु विनैयु मिल्लैक्
कॆट्ट दुन् पॊरुट्टिनाले निन्मुडैक् केळि रॆल्लाम्
चिट्टदु शॆय्दि यॆन्ऱा नदऱ्कवन् शीऱ्ऱञ् जॆय्दान् 3569

उन्नै–तुम्हारे साथ; इन्तिर चॆल्वम्–इन्द्रनिधि; पट्टतुम् उण्टु–लगी रही यह सही है; पऱ्ऱु विट्टतु–अब नाता तोड़ दिया (उसने); मॆय्म्मै–सच; ऐय–मान; मीण्टु–फिर अब; ऑरु विनैयुम् इल्लै–एक भी काम न रहा; उन्

पोरुट्टिताले–अपने ही कारण; निन् उर्ट–तुम्हारे; केळिर् ॲल्लाम्–बांधव सभी; कॅट्टतु–मिट गये; चिट्टतु–शिष्ट काम; चॅय्ति–करो; ॲन्ऱान्–कहा (माल्यवान ने); अतऱ्कु–उससे; अवन्–रावण ने; चीऱ्ऱम् चॅय्तान्–क्रोध किया। ३५६९

तुम्हारे साथ इन्द्रनिधि लगी थी। अब उसने नाता तोड़ लिया। हे तात! अब करणीय काम कुछ नहीं रहा। तुम्हारे ही कारण तुम्हारे सब बंधु-बांधव मिट गये। अब ही सही शिष्ट काम करो। माल्यवान ने यह कहा तो रावण ने गुस्सा किया। ३५६९

इलक्कुवन् तन्नै वेला लॅऱिन्दुयिर् कूऱ्ऱुक् कीन्देन्
अलक्कणिऱ् ऱलैव रॅल्ला मळून्दिन रदनैक् कण्डाल्
उलक्कुमा लिरामन् पिन्न रुयिर्प्पॉऱै युहवा नुऱ्ऱ
मलक्कमुण् डाहि नाह वाहैयॆन् वयत्त दॆन्ऱान् 3570

इलक्कुवन् तन्नै–लक्ष्मण को; वेलाल् ॲऱिन्तु–शक्ति से मारकर; उयिर्–उसके प्राणों को; कूऱ्ऱुक्कु ईन्तेन्–यम को दे दिया था; तलैवर् ॲल्लाम्–सभी वानरयूथप; अलक्कणिल्–दुःख में; अळुन्तिनर्–डूबे; अतनै कण्टाल्–उसको देखे तो; पिन्नर् उयिर् पॉऱै–प्राणभार-वहन; उकवान्–न चाहकर; इरामन् उलक्कुम्–राम मरेगा; उऱ्ऱ–(मूलबलहत्या के कारण) मुझे प्राप्त; मलक्कम्–संकट; उण्टु आकिल्–हो तो; आक–हो; वाकै–विजय तो; ॲन् वयत्ततु–मेरी रही; ॲन्ऱान्–कहा रावण ने। ३५७०

रावण ने कहा। मैंने लक्ष्मण पर शक्ति चलाकर उसको मौत का मेहमान बना दिया था। वानरयूथप सभी दुःख में मग्न हुए। उसे देखकर राम प्राणभार-वहन करना नहीं चाहेगा और आत्महत्या कर लेगा। फिर क्या मूलबल के नाश का दुःख अवश्य होगा पर जीत तो मेरी ही रही। ३५७०

आण्डवु कण्डु निन्ऱ तूदुव रैय मॆय्ये
मीण्डदव् वळवि नावि मारुदि मरुन्दु मॆय्यिल्
तीण्डवुन् दाळ्त्त दिल्लै यारुमच् चॆङ्ग णानैप्
पूण्डनर् तळुविप् पुक्कार् काणुदि पोदि यॆन्ऱार् 3571

आण्टु–वहाँ; अतु–(लक्ष्मण का जी उठना) वह; कण्टु निन्ऱ–देखते जो रहे; तूतुवर्–उन दूतों ने; ऐय–स्वामी; मारुति–मारुति; मरुन्तु–(जो लाया था वह) संजीवनी; मॆय्यिल् तीण्टवुम्–शरीर पर लगे तब तक भी; ताळ्त्ततु इल्लै–विलम्ब नहीं हुआ; अव् अळविल्–उतने में ही; आवि मीण्टतु–जीवन लौट गया; मॆय्ये–सच; यारुम्–सभी; अ चॆम् कणानै–उस अरुणाक्ष को; पूण्टनर्–घेरकर; तळुवि–मिलकर; पुक्कार्–जा पहुँचे हैं; काणुति–देखें; पोति–जायें; ॲन्ऱार्–कहा। ३५७१

तब दूत, जो कि तब वहाँ की घटना को देखते रहे थे, बोले।

हे हमारे लोगो ! हाथी पंक्तियों में न घेरकर अलग-अलग लड़ते रहे। उनके श्वेत दाँत उस रक्त-प्रवाह में तिरते हैं, जिसमें वीरों की लाशें नहीं हैं। वे जल से हीन व लाल रंग के मेघसमूह-मध्य बालचन्द्र के समान दिखते हैं, देखो। ३५३२

कॉडियुम् विल्लुङ् गोलॊडु वेलुङ् गुवितेरुन्
दुडियिन् पादक् कुन्ऱिन् मिशैत्तोल् विशियित्तगट्
टॊडियुम् वॆय्योर् कण्णॆरि शॆल्ल वुडन्वॆन्द
तडियुण् डाडिक् कूळि तडिक्किन् ऱनकाणीर् 3533

कॉटियुम्–ध्वजा और; विल्लुम्–धनु; कोलॊटु–और शर; वेलुम्–'वेल्'; कुवि–जिसमें भरपूर थे; तेरुम्–उस रथ में; तुटियिन् पातम्–'तुडि' नामक भेरी के समान चरण भाग वाले; कुन्ऱिन् मिचै–पर्वतों (गजों) पर; तोल् विचियित्त कट्टु–चमड़े के बने हौदे पर; ओटियुम्–(रामबाण से आहत हो) मरे; वॆय्योर्–दुष्टों (राक्षसों) की; कण् ऎरि–आँख से निकली अग्नि; चॆल्ल–लगी इसलिए; उटन् वॆन्त–जो एक साथ पक्का; तटि उण्टु–मांस खाकर; कूळि–भूत; आटि–नाचकर; तटिक्किन्ऱन–मोटे बनते हैं; काणीर्–देखो। ३५३३

ध्वजा, धनु, शर, शक्तियाँ —ये जिसमें भरी हैं, उस रथ पर और 'तुडि' नामक भेरी के समान पैरोंवाले गजों के चमड़े के बने हौदों पर रहकर जो राम-बाण से मरे, उन वीरों की आँखों से निकली आग से मांस एक साथ पका और उस मांस को खाकर भूतगण नाचते हैं ! वह हाल देखो। ३५३३

शहरम् मुन्नीर्च् चॆम्बुनल् वॆळ्ळन् दडुमाऱ
महरन् नन्मीन् वन्दन कण्डु मनमुट्किच्
चिहरम् मन्न यावैहॊ लॆन्नच् चिलनाणि
नहरम् नोक्किच् चॆल्वन काण्मिन् नमरङ्गाळ् 3534

नमरङ्काळ्–हमराहो; चकरम् मुन्नीर्–सगरपुत्रखनित सागर में; चॆम्पुनल् वॆळ्ळम्–रक्त का प्रवाह; तटुमाऱ–डोलायमान है, इसलिए; चिल मकरम्–कुछ मकर; नन् मीन्–और अच्छे मत्स्य; वन्तन–जो आये; कण्टु–उन्हें देखकर; चिकरम् अन्न–शिखर-सम; यावै कॊल्–ये कौन हैं; ऎन्न–सोचकर; नाणि–शरमाकर; नकरम् नोक्कि–मनम् उट्कि–मन में भय का अनुभव करके; नगर की तरफ़; चॆल्वन–जाते हैं (गज); काण्मिन्–देखो। ३५३४

हे बंधुओ ! सागर में रक्त-प्रवाह जाकर टकराता है और दोलायमान रहता है। उसमें लौटती धारा के साथ कुछ मकर और मत्स्य आ जाते हैं। उन्हें देखकर गज सोचते हैं कि ये शिखर-सम प्राणी क्या हैं ? उनसे डरते हैं और शरमाकर वे नगर की ओर जाते हैं। उनको देखो। ३५३४

विण्णिऱ् पट्टार् वॆऱ्पुरळ् कायम् बलमॆऩ्मेल्
मण्णिऱ् चॆल्वार् मेऩियिऩ् वीऴ मडिवुऱ्ऱार्
ऑण्णिऱ् ऱीरा वत्तवै तीरु मिडलिल्लाक्
कण्णिऱ् ऱीयार् विम्मि युळैक्कुम् बडिकाणीर् 3535

विण्णिल् पट्टार्–आकाश में जो मरे उनके; **वॆऱ्पु उरळ्**–पर्वतोपम; **कायम्**–शरीर; **पल**–अनेक; **मॆऩ् मेल्**–उत्तरोत्तर; **मण्णिल् चॆल्वार्**–भूमि पर जानेवाले लोकों के; **मेऩियिऩ् वीऴ**–शरीरों पर गिरते, इसलिए; **मडिवुऱ्ऱार्**–मर जाते हैं; **ऑण्णिल् तीरा**–गिनती में नहीं आ सकते; **अत्तवै**–उनसे; **तीरुम् मिडल् इल्ला**–हटने की शक्ति न होने से; **कण्णिल् तीयार्**–आँखों में अग्नि के साथ; **विम्मि**–रोते हुए; **उळैक्कुम्पडि**–दुःखी होते हैं वह हाल; **काणीर्**–देखो। ३५३५

आकाश में जो मरे उनके शरीर लगातार ऊपर से नीचे गिरते रहते हैं। तब नीचे भूमि पर जानेवाले वीरों पर वे गिरते हैं तो वे मर जाते हैं। उनकी संख्या गिनती में नहीं आती। और उन गिरती लाशों के नीचे दबकर अलग न हट सकने के कारण लोग आँखों में अंगारे भरकर रोते-सिसकते दुःखी होते हैं। उनका हाल देखो। ३५३५

अच्चिऱ् ऱिण्डे रात्तैयिऩ् मामे लहऩ्वाऩिऩ्
मॊय्च्चुच् चॆऩ्ऱार् मॊय्हुरु दित्ता रैहळ्मुट्ट
उच्चिच् चॆऩ्ऱा ऩायिऩुम् वॆय्यो ऩुदयत्तिऩ्
कुच्चिच् चॆऩ्ऱा ऩॊत्तुळ ऩाहुङ् गुऱिकाणीर् 3536

अच्चिऩ् तिण् तेर्–धुरी-सहित सुदृढ़ रथ पर और; **आत्तैयिऩ्**–हाथियों पर; **मा मेल्**–अश्वों पर; **अकल् वाऩिऩ्**–विशाल आकाश में; **मॊय्च्चु**–भीड़ लगाकर; **चॆऩ्ऱार्**–जो गये उनके; **मॊय् कुरुति तारैकळ्**–पुष्ट रक्त की धाराएँ; **मुट्ट**–उस पर बहीं इससे; **वॆय्योऩ्**–किरणमाली; **उच्चि**–(आकाश-मध्य) ऊँचे स्थान में; **चॆऩ्ऱाऩ् आयिऩुम्**–पहुँच गया तो भी; **उतयत्तिऩ् कुच्चि**–उदयाचल की चोटी पर; **चॆऩ्ऱाऩ् ऑत्तु**–गया जैसा; **उळऩ्**–रहता है; **आकुम् कुऱि काणीर्**–वह दृश्य देखो। ३५३६

धुरी-सहित सुदृढ़ रथों पर और गजों और अश्वों पर जो वीर थे और जो आकाश में चलते थे वे मरे और उनका पुष्ट रक्त-प्रवाह सूर्य पर लगा तो किरणमाली मध्याह्न में आकाश की चोटी पर रहते हुए भी उदयाचलस्थ के समान लगता है। वह लक्षण देखो। ३५३६

काऱ्ऱोय् मेऩिक् कण्डहर् कण्डप् पडुकालै
आऱ्ऱो वॆऩ्ऩ विण्पडर् शॊऩ्जो रियदाहि
वेऱ्ऱोर् निऩ्ऱ वॆण्मदि शॆङ्गेळ् निऱम्विम्मि
माऱ्ऱोर् वॆय्योऩ् मण्डिल मॊक्किऩ् ऱदुहाणीर् 3537

काल् तोय्–पवनगति वाले; **मेऩि**–शरीरों वाले; **कण्टकर्**–कंटक; **कण्टम्**

पट्ट कालै—जब खण्डित हुए तब; विण् पटर्—आकाश में जो व्यापा; चॅ चोरि अतु—वह लाल रक्त; आऱ्ऱॊ ॲन्न आकि—नदी क्या, ऐसा बना, इससे; वेऱु निन्ऱ—अलग जो रहा वह; ओर् वॅळ् मति—विशिष्ट श्वेत चन्द्र; चॅम् केळ् निऱम्—लाल रंग से; विम्मि—खूब भरकर; माऱु—उससे भिन्न; ओर् वॅय्योन् मण्टिलम्—एक सूर्यमण्डल के; ऑक्किन्ऱतु—के समान; काणीर्—देखो। ३५३७

पवनगति कंटक जब छिन्न हुए तब रक्त आकाश में व्यापा। वह नदी का भ्रम पैदा करते हुए बह चला। तब वहाँ रहा चन्द्र रक्त में भीगकर लाल रंग से अधिक रंजित होकर विरुद्ध सूर्यमंडल के समान दिखता है, देखो। ३५३७

वाननैय मण्णनैय वळऱ्न्दॅऴुन्द पॅरुङ्गुरुदि महर वेलै
ताननैय वुऱ्ऱॆऴुम्बा रवैतॆळित्त पुदुमऴैयिन् ऱुळ्ळि ताङ्गि
मीननैय नऱुम्बोदुम् विरैयरुन्दुञ् जिऱैवण्डु निऱम्वे ऱॆय्दिक्
कानहमुङ् गडिपॊऴिलु मुऱियीन्ऱ पोन्ऱॊळिर्व काण्मिन् काण्मिन् 3538

वान् ननैय—आकाश भिगोते हुए; मण् ननैय—भूमि भिगोते हुए; वळर्न्तु ॲऴुन्त—भर जो उठा; पॅरु कुरुति—उस विपुल रक्त से; मकर वेलै तान्—मकरालय को भी; ननैय—भिगोते हुए; उऱ्ऱु ॲऴुम्—लाशों से निकले; तॆळित्त—छिड़के हुए; पुतु मऴैयिन् तुळ्ळि—नवीन वर्षा के कणों को; पारवै—भूमि के थल; ताङ्कि—धारण करते इसलिए; मीन् अनैय—नक्षत्र-सम; नऱु पोतुम्—सुगंधित फूल; विरै अरुन्तुम्—मधुपायी; चिऱै वण्टुम्—पंखों से युक्त भ्रमर; निऱम् वेऱु ॲय्ति—दूसरा रंग पा जाते हैं; कानकमुम्—वनस्थल; कटि पॊऴिलुम्—सुगन्ध-भरे उपवन; मुऱि ईन्ऱ पोन्ऱु—कोपलें निकालते-से; ऑळिर्व—शोभायमान हैं; काण्मिन् काण्मिन्—देखो, देखो। ३५३८

आकाश और भूमि को भिगोते हुए रक्त उमड़ा और उसने समुद्र को भी रंजित कर दिया। लाशों के नव मेघों से छिड़की बूंदों को भूमि धारण करती रही। तब नक्षत्र-सम फूल, और फूलों का मधु पीनेवाले सपंख भ्रमर रंग बदल गये। तो वन और उपवन नयी कोंपलें निकालते-से लगते हैं, देखो। ३५३८

वरैबॊरुद मदयान वळैमरुप्पुङ् गिळर्मुत्तु मणियुम् वारित्
तिरैपॊरुदु पुरङ्गुविप्पत् तिरङ्गॊळ्पणै मरमुरुट्टिच् चिऱैप्पुळ् ळार्प्प
तुरैक्कॊडियुम् वॆण्कुडैयुञ् जामरैयु मॆन्नच्चुमन्दु पिणत्तिन् तोन्मैक्
करैपॊरुन्दुङ् गडन्मडुक्कुङ् गडुङ्गुरुदिप् पेराऱु काण्मिन् काण्मिन् 3539

वरै पॊरुत—पर्वतों से लड़ आये; मतम् यानै—मत्त हाथी के; वळै मरुप्पुम्—वक्र दांत और; किळर् मुत्तुम्—छिटके हुए मोती; मणियुम्—रत्न; वारि—खींच लेकर; तिरै—तरंगें; पॊरुतु—टकराकर; पुरम् कुविप्प—एक ओर ढेरों में लगा देती हैं; तिऱम् कॊळ्—विभक्त; पणै—डालों-सहित; मरम्—तरु को; उरुट्टि—लुढ़काती हैं;

चिर् पुळ् आर्प्प–(इसलिए) पक्षी कलरव करते; कॉटियुम्–ध्वजा; वॅण् कुटैयुम्–और श्वेत छत्र; चामरैयुम्–चामर इनको; नुरै अॅत–फेनों के समान; चुमन्तु–धारण कर; पिणत्तिन्–लाशों के; नोन्मै–सुदृढ़; करै पोरुन्तुम्–किनारों के अंदर (बहकर); कडल् मडुक्कुम्–समुद्र में जो पहुँचाती हैं; कडु कुरुति पेर् आऱु–वेगवान रक्त की बड़ी नदी; काण्मिन् काण्मिन्–देखो, देखो। ३५३९

लहरें टकराती हैं और पर्वत से टकरानेवाले मत्त गजों के वक्र दाँतों, कांतिमय मुक्ताओं और रत्नों को बहा ले जाकर उनकी राशियाँ लगा रही हैं। टूटे और डालों-सहित पेड़ों को लुढ़काती हैं और पक्षीगण शोर मचाते हैं। रक्त की तरंग-सहित नदियाँ ध्वजाओं-श्वेतछत्रों और चामरों को फेनों के समान ले जा रही हैं। उनकी लाशों के सुदृढ़ किनारे बने हैं। वे वेग से जाकर समुद्र में मिलती हैं। उन बड़ी-बड़ी नदियों को देखो। ३५३९

कैक्कुन्ऱप् पॅरुङ्गरैय निरुदर्पुयक् कऱ्चॅऱिन्द कदलिक् कानम्
मॉय्क्किन्ऱ परित्तिरैय मुरट्करिक्कैक् कोण्माव मुळरिक् कानिन्
नॅय्क्किन्ऱ वाण्मुहत्त विऴुङ्गुडरिन् पाशडैय निणमेऱ् चेऱ्ऱ
उय्क्किन्ऱ वुदिरनिऱक् कळङ्गुळङ्ग ळुलप्पिऱन्द वुवैयुङ् गाण्मिन् 3540

कै–हाथ (सूंड) वाले; कुन्ऱम्–पर्वतों (गजों) को; पॅरु करैय–बड़े किनारों के रूप में जो पाये हुए हैं; निरुतर् पुयम्–राक्षसों के हाथों के; कल् चॅऱिन्त–उपल-भरे; कतलि कानम् मॉय्क्किन्ऱ–ध्वजा-समूह-युक्त; परि तिरैय–अश्व-तरंग भरे; मुरण्–परस्पर विरुद्ध; करि कै–गज सूंड़ के; कोळ् माव–नक्रों से भरे; मुळरि कानित्–कमल-वन के समान; नॅय्क्किन्ऱ–स्निग्धता-भरे; वाळ् मुकत्त–उज्ज्वल-मुखी; विऴुम्–ढलती; कुटरिन्–आँतों के रूप में; पचुमै अटैय–सेवार से युक्त; निणम् मेल् चेऱ्ऱ–मज्जा रूपी तल के कीचड़ से भरे; उय्क्किन्ऱ–अन्दर खींच लेने वाले; निऱम्–लाल रंग के; कळम्–स्थलों रूपी; उतिरम् कुळङ्कळ्–रक्त के तालाब; उलप्पु इऱन्त–अनगिनत हैं; उवैयुम् काण्मिन्–उनको भी देखो। ३५४०

इस युद्धभूमि के विविध थलों में विचित्र रक्त तालाब बने हैं, देखो। सूंड़वाले पर्वताकार गज उनके किनारे बने हैं। राक्षसों की भुजाएँ उपल हैं जिनसे वे भरे हैं। ध्वजासहित अश्व तरंगें हैं। हाथी की सूंड़ें बलवान नक्र हैं। कमल वन के समान, चिकने उज्ज्वल और ढलनेवाली आँतें सेवार हैं। मज्जा ही तल का कीचड़ है! ऐसे, उनमें गिरनेवाले लोगों को अपने अंदर डुबो लेनेवाले तालाबों को देखो। ३५४०

नॅडुम्बडैवा णाळ्जिलुळ् निणच्चेऱ्ऱि नुदिरनीर् निऱैन्द काप्पिऱ्
कडुम्बहडु पडितोय्न्द कडुम्बरम्बि त्तिऩ्मळ्ळर् कलन्द कैयिऱ्
पडुङ्गमल मलर्नाऱ मुडिपरन्द पॅरुङ्गिडक्कैप् परन्द पण्णैत्
तडम्बणैयि नरुम्बळ्ळन् दळ्वियदे यॅऩप्पोलियुन् दहैयुङ् गाण्मिन् 3541

नॆट्टु वाळ् पटै–लम्बी तलवार हथियार रूपी; नाञ्चिल्–हल से; उळु–जोती जानेवाली; निणम् चेट्रिन्–मज्जा रूपी पंक में; उतिरम् नीर्–रक्त-जल के; निरैन्त काप्पिन्–भरे जलाशय और; कटु–तेज; पकटु–गज रूपी भैंसे; पटि–मग्न होकर; तोयुन्त–जिसमें रहते हैं; परन्त–व्यापनेवाले; इनम् मळ्ळर्–समूहबद्ध वीर रूपी; कटुम् परम्पिन्–कठिन 'हेंगा' चलानेवाले; पण्णै–कृषकों का समूह; कलन्त–फैले रहे; कैयिल्–दोनों पार्श्वों में; पटुम्–प्रगट; कमलम् मलर्–कमल-पुष्प के; नाऱुम्–सुबास से मिले; मुटि–सिर रूपी अंकुरों की गाँठें; परन्त–जहाँ फैली रहीं; पॆरु किटक्कै–वह बड़ा युद्धस्थल; परन्त पण्णै–विशाल स्त्रीसमूह से भरे; तटम् पणैयिन्–बड़े खेतों की; नरु पळतम्–सुरभित मरुदम प्रदेश की प्रकृति को; तळुवियते अन्त–प्राप्त कर चुका गया, ऐसा (संशय पैदा करते हुए); पोलियुम् तकैयुम्–विद्यमान रहता है वह हाल भी; काण्मिन्–देखो। ३५४१

यह युद्धभूमि बड़े-बड़े खेतों से भरी 'मरुदम्' भूप्रदेश के समान है, देखो। (खेतों में हल चलाये जाते हैं, पंकिल जलाशय हैं, भैंसे या बैल पाये जाते हैं। हेंगा चलाया जाता है। अंकुरों की गाँठें पायी जाती हैं, जिनसे पौधे लेकर कृषक-स्त्रियाँ रोपती हैं। इधर—) लम्बी तलवार रूपी हल चलाये गये हैं। मज्जे रूपी पंकिल भूमि में रक्तजल के गड्ढे पाये जाते हैं, जिनमें वेगवान गज रूपी भैंसे पड़े हैं। दलबद्ध वीर ही समूहगत कृषक हैं, जिन्होंने हेंगा चलाया है। दोनों ओर सुबासित कमल के समान राक्षस वीरों के सिर रूपी अंकुर की गाँठें पड़ी रहती हैं। यह विचित्र 'मरुदम्' की भूमि को देखो। ३५४१

वॆळिट्रीर्त्त वरैपुरैयु मिडलरक्क रुडल्विळवुम् वीरन् विल्लिन्
ऒळिट्रीर्त्त मुळुनॆडुना णुरुमेऱु पलपडवु मुलहङ् गीण्डु
नळिट्रीर्त्त नाहपुरम् बुक्किळिन्द पहळिवळि नदियि नोडिक्
कळिट्रीर्त्तुप् पुहमण्डुङ् गरुङ्गुरुदित् तडञ्जुळिहळ् काण्मिन् काण्मिन् 3542

वॆळिल्–खूँटे को; तीर्त्त–जिसने तोड़ा उस; वरै पुरैयुम्–पर्वत (हाथी) सदृश; मिटल् अरक्कर्–बलवान राक्षसों के; उटल्–शरीर के; विळवुम्–गिरते ही; वीरन्–श्रीवीरराघव के; ऒळिरु ईर्त्त–शोभायमान और कान तक खींचे हुए; विल्लिन्–धनु के; मुळु नॆटु नाण्–पूर्ण दीर्घ डोरे से; पल–अनेक; उरुम् एऱु–वज्रराजों के; पटवुम्–(स्वन) निकलते ही; उलकम् कीण्टु–संसार को चीरकर; नळिल्–मध्य में; तीर्त्त–फटे; नाकपुरम्–पाताल में; पुक्कु इळिन्त–जो चला; पकळि वळि–उस बाण से बने मार्ग से; नतियिन् ओटि–नदी के समान बहकर; कळिरु ईर्त्तु–गजों को खींचता हुआ; पुक मण्टुम्–अधिक जो बनीं; करु कुरुति तट चुळिकळ्–काले रक्त की बड़ी भौंरियों को; काण्मिन् काण्मिन्–देखो, देखो। ३५४२

आलान तोड़नेवाले मत्तगज-सदृश बलवान राक्षसों के शरीरों को गिराते हुए श्रीराम ने शर चलाये हैं। श्रीवीरराघव ने अपने कान तक कोदंड के लम्बे पूरे डोरे को खींचकर स्वन निकाले थे, जो अशनिराज

के समान फटे ! वे पृथ्वी को चीरकर विद्ध पाताल में पहुँचे थे। जिस रास्ते से उनका शर चला था, उस रास्ते से रक्त नदी के रूप में बहता है। उसमें गज तिरते हैं और उसमें काले रक्त की भौंरियाँ उठती हैं। उन्हें देखो। ३५४२

कैत्तलमुङ् गाल्तिरमुङ् गरुङ्गळत्तु नॅडुम्बुयमु मुरमुङ् गण्डित्
तॅय्त्तिलपोय्त् तिशैहडोऱु मिरुनिलत्तॅक् किळित्तिळिन्द दॅन्नि नल्लाल्
मत्तकरि वयमावित् वाणिरुदर् पॅरुङ्गडलिन् मट्रॆव् वाळि
तैत्तुळदाय् निन्ऱदॅन्न वॊन्ऱेयुङ् गाण्बरिय तहैयुङ् गाण्मिन् 3543

कैतलमुम्–हाथों को; कात्तिरमुम्–अगले पैरों को; करु कळुत्तुम्–काले कण्ठों को; नॅटु पुयमुम्–लम्बी भुजाओं को; उ मुम्–और छातियों को; कण्टित्तु–छिन्न करके; ऍय्त्तिल–बाज न आकर; तिचैकळ् तोऱुम् पोय्–सारी दिशाओं में जाकर; इरु निलत्तै–बड़ी भूमि को; किळित्तु–फाड़कर; इळिन्ततु–नीचे चले; ऍन्तिन् अल्लाल्–ऐसा कहा जाय तो कहा जा सकता है नहीं तो; मत्त करि–मत्त गजों के; वयम् मावित्–विजयी अश्वों में; वाळ् निरुतर्–असिधारी राक्षसों के; पॅरु कटलित्–बड़े सागर में; इ वाळि ऑन्ऱेयुम्–यह शर एक ही; तैत्तु उळताय्–चुभा; निन्ऱतु–रहा; ऍन्न–ऐसा; काण्परिय तकैयुम्–अदृष्टपूर्व हाल; काण्मिन्–देखो। ३५४३

श्रीराम-वाण हाथों, अगले पैरों, काले कंठों और लम्बी भुजाओं को छेदकर भी बाज नहीं आये। फिर बड़ी भूमि को छेदकर चला। यही सच है। कहने का विषय रहा। इसे छोड़ यह नहीं कह पायँगे कि कोई शर मत्त गजों, विजयी अश्वों या असिधारी राक्षस वीरों के बड़े सागर में किसी में चुभा और वहीं रह गया ! ऐसा दृश्य अदृश्य है, देखो। ३५४३

कुमुद नाऱु मदत्तन कूट्रन्न, शमुद रोडु मडिन्दन शार्दरुम्
तिमिर मावन्न शॅय्हैय वित्तिऱम्, अमिर्दिन् वन्दन वैयिरु कोडियाल् 3544

कुमुतम् नाऱुम्–कुमुद-से गंधवाले; मतत्तन–मदनीर से युक्त; कूट्रन–यम-सदृश; चमुतरोटु मटिन्तन–महावतों के साथ मरे हुए; चार् तरुम्–ढँकते आनेवाले; तिमिरम् मा–अंधकारवर्ण सुअर के; अन्न चॅय्कैय–सदृश काम करनेवाले; इ तिऱम्–इस प्रकार के; ऐयिरु कोटि–दस करोड़ (हाथी); अमिर्तिन् वन्तन–अमृत के साथ आये। ३५४४

उन दस करोड़ गजों को देखो। उनका मदनीर कुमुद-सुमन का-सा गंध लिये है। वे यम के समान हैं। वे अपने महावतों के साथ ही मर गये हैं। वे अंधकारवर्ण सुअरों का-सा कर्म करनेवाले हैं। ऐसे उन गजों पर दृष्टि डालो। ३५४४

एरु नाऩ्मुहऩ् वेळ्वि यॆऴुन्दत्त
ऊरु मारियु मोङ्गलै योदमुम्
मारु माथिऩु मामद मायवरुम्
आरु मारिल वारिरु कोडियाल् 3545

ऊरुम्–स्रोत बनानेवाली; मारियुम्–वर्षा और; ओङ्कु अलै–उन्नत तरंगों का; ओतमुम्–सागर; मारुम् आयितुम्–बदल (जलहीन हो) जाय तो भी; मा मतमाय् वारुम्–मदनीर के रूप में आनेवाली; आरु मारिल–नदियां बदल नहीं सकतीं, ऐसी नदियों के; आरिरु कोटि–बारह करोड़ हाथी; एरुम्–उत्कृष्ट; नाऩ्मुकऩ् वेळ्वि–चतुर्मुख के यज्ञ में से; ऍऴुन्तत–प्रकट हुए। ३५४५

उन बारह करोड़ हाथियों को देखो। चाहे सदापूर्ण मेघ सूख जायँ, चाहे बढ़ती तरंगों वाला सागर! पर इनका मदनीर, जो नदी के रूप में बहता रहता है, कभी नहीं सूखता —ऐसे ये चतुर्मुखमखोत्पन्न गज हैं! । ३५४५

उयिर्व रुन्दु मुदिरम् वरुन्दुतम्
मयर्व रुन्दु मदमरु वादत्त
पुयल वत्तिशैप् पोर्मद वातैयिऩ्
इयल्प रम्बरै येऴिरु कोडियाल् 3546

एऴिरु कोटि–चौदह करोड़ (हाथी); उयिर् वरुन्तुम्–प्राण सूख जायँ तो भी; उतिरम् वरुन्तुम्–रक्त सूख जाय तो भी; तम् मयर् वरुन्तुम्–मस्ती सूख जाय तो भी; मतम् अरवातत–मदनीर उनका नहीं सूखता; पुयलवऩ्–मेघपति (इन्द्र) की; तिचै–दिशा में; पोर्–योद्धा; मतम्–मत्त; यातैयिऩ् इयल्–गज की-सी प्रकृति वाली; परम्परै–परंपरा के हैं। ३५४६

(इधर देखो) चौदह करोड़ गज! प्राण, रक्त या मस्ती भी चाहे सूख जाय, मदनीर उनका नहीं सूखता। देवेंद्र की (पूर्व) दिशा के मत्त योद्धा गज की-सी प्रकृति वाली परंपरा के हैं। ३५४६

कॊडादु निऱ्ऱलिऱ् कॊऱ्ऱ नॆडुन्दिशै
ॲडादु निऱ्पत्त नाट्ट मिमैप्पिल
वडादु तिक्किऩ् मदवरै यिऩ्वऴिक्
कडामु हत्त मुऴरिक् कणक्कवाल् 3547

कॊटातु निऱ्ऱलिल्–(जिम्मा) नहीं दिया गया, इसीलिए; कॊऱ्ऱम् नॆटु तिचै–विजयी लम्बी दिशाओं को; ॲटातु निऱ्पत–नहीं ढोते रहते; नाट्टम् इमैप्पु इल–पलकें नहीं झपकते; वटातु तिक्किऩ्–उत्तरी दिशा के; मतम् वरैयिऩ् वऴि–मत्त पर्वत (गज-सार्वभौम) के वंश के; कटाम् मुकत्त–मदनीरयुक्त मुख वाले; मुऴरि कणक्क–'पद्म' की संख्या के हैं। ३५४७

(उधर देखो—) पद्म की संख्या में जो गज हैं वे दिशाओं को इसलिए

नहीं ढो रहे कि उन्हें वह काम सौंपा नहीं गया था ! अपलक व मदनीर-मुखी वे उत्तरी दिशा के सार्वभौम नाम के गज के वंश के हैं । ३५४७

वात्त वर्क्किऱै वन्ऱिऱै तन्दन
आत्त वर्क्कमो रायिर कोडियुन्
दात्त वर्क्किऱै वन्ऱिऱै तन्दत्त
एत्त वर्क्कङ् गणक्किल विव्वॅलाम् 3548

वात्तवर्क्कु इऱैवन्–देवेंद्र (द्वारा); तिऱै तन्तत्त–कर के रूप में दिये; आत्त–जो गये हैं; वर्क्कम्–गजवर्ग हैं; ओरायिरम् कोटि–एक हजार करोड़ हैं; इव् ॲलामुम्–ये सभी; तात्तवर्क्कु इऱैवन्–दानव राजा द्वारा; तिऱै तन्तत्त–कर के रूप में जो दिये गये; एत्त वर्क्कम्–गजवृन्द हैं; कणक्किल–असंख्यक हैं । ३५४८

ये (इधर) देवेंद्र द्वारा कर के रूप में दिये गये थे। ये एक हजार करोड़ हैं। उधर जो हैं, वे दानवेंद्र द्वारा कर के रूप में दिये गये थे। वे असंख्य हैं। ३५४८

पाऱ्क डऱ्पण् डमिऴ्दम् बयन्दनाळ्, आर्त्तॆ ऴुन्दत्त वायिर मायिरम्
माऱ्क णप्परि यिङ्गिवै माऱुवै, मेऱ्किन् वेलै वरुणनै वॆन्ऱ्रवाल् 3549

पण्टु–पहले; पाल् कटल्–क्षीरसागर ने; अमिऴ्तम् पयन्त नाळ्–(जिस दिन) अमृत दिया था, उस दिन; आर्त्तु ॲऴुन्तत–घोष के साथ जो प्रगट हुए; आयिरम् आयिरम्–हजार-हजार; माल् कणप् परि–बड़े-बड़े झुण्डों के अश्व; इङ्कु इवै–इधर ये हैं; माऱु उवै–सामने वे; मेऱ्किन् वेलै–पश्चिमी सागर के; वरुणनै वॆन्ऱ–वरुण को जीतकर पाये गये । ३५४९

उन हजार-हजार झुंडों में रहते अश्वों को देखो। वे उस दिन घोष के साथ प्रगट हुए थे, जिस दिन क्षीरसागर ने अमृत निकाला था। ये जो उनके सामने हैं, पश्चिमी सागर में वरुण को युद्ध में हराकर प्राप्त किये हुए हैं। ३५४९

इरुनि दिक्किऴ वन्ऩिऴन् देहित्त, अरिय वप्परि यायिर मायिरम्
विरिशि नत्तिहल् विज्जैयर् वेन्दनैप्, पॊरुदु पऱ्ऱिय तामरै पोलुमाल् 3550

इरुनिति किऴवन्–बड़ी निधि के देवता; इऴन्तु–जिनसे हाथ धोकर; एकित्त–चला गया; अरिय–अपूर्व; अ परि–वे अश्व; आयिरम् आयिरम्–हजारों हैं; विरि–विस्तृत; चिनत्तु–क्रोध के साथ; इकल्–वीरता रखनेवाले; विज्चैयर् वेन्तनै–विद्याधर राजा को; पॊरुतु–लड़ाई में हराकर; पऱ्ऱिय–ग्रहण किये गये; तामरै पोलुम्–पद्मों की संख्या में हैं शायद । ३५५०

वे हजारों-हजारों अश्व निधिनाथ कुबेर ने हारकर छोड़ दिये थे ! वे क्रोधी तथा बहादुर विद्याधर राजा को हराकर हथिया लिये गये थे और उनकी संख्या पद्मों की होगी अवश्य ! । ३५५०

स्वामी ! हनुमान की लायी संजीवनी की शरीर पर लगने की देर तक का भी विलंब नहीं हुआ। उतने में ही लक्ष्मण के गये प्राण लौट आये। यह सत्य बात है। सभी वीर लक्ष्मण को घेर उसे लेकर चले गये। आप देखें जाकर। ३५७१

तेऱ्रिल नाद लाऩे मऱुहुऱु शिन्दै तेऱ
एऱ्रिऩन् कनहत् तारैक् कोबुरत् तुम्ब रय्दि
ऊऱ्रिन शेऩै वॅळ्ळ मुलन्दपे रुण्मै यॅल्लाम्
काऱ्रिन वुळ्ळ नोवक् कण्गळाऱ् ऱॅरियक् कण्डान् 3572

तेऱ्रिलन्–विश्वास न कर सका; आतलाले–इसीलिए; मऱुकुऱु चिन्तै–घबड़ाया दिल; तेऱ–सँभले, इसलिए; कनकम् तारै–स्वर्णिम छटा बिखेरनेवाले; कोपुरत्तु उम्पर् ऍय्ति–गोपुर (मीनार) के पास जा; एऱ्रिऩन्–उस पर चढ़ा; ऊऱ्रिन–उत्तरोत्तर बढ़ आनेवाली; चेऩै वॅळ्ळम्–सेना के प्रवाह के; उलन्त–सूखने का; पेर् उण्मै ऍल्लाम्–सच्चा वृत्त सारा; काऱ्रिन उळ्ळम्–वैरी मन को; नोव–वेदना देते हुए; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; तॅरिय कण्टान्–खूब देख लिया। ३५७२

रावण विश्वास नहीं कर सका। दिल घबड़ाया हुआ था। उसे धीरज देने के विचार से वह स्वर्णछटावाले गोपुर (मीनार) पर चढ़ा। उसने वहाँ से देखा कि उत्तरोत्तर प्रवाह के समान बढ़ आनेवाली सेना मरकर पड़ी है। उसका वरी मन पीड़ा से भर गया। उसने संदेह दूर करते हुए खूब देख लिया। ३५७२

कॊय्दलैप् पूशऱ् पट्टोर् कुलततियर् कुवळै तोऱ्ऱु
नॅय्दलै वॅऩ्ऱ वाट्कण् कुमुदत्ति नीर्मै हाट्टक्
कैतलै वैत्त पूशल् कडलोड् निमिरुङ् गालैच्
चॆय्दलै युऱ्ऱ वोशैच् चॆयलवुञ् जॅवियिऱ् केट्टान् 3573

कॊय् तलै–भिन्नशीर्ष हो; पूचल् पट्टोर्–युद्ध में मरे वीरों की; कुलत्तियर्–बाल गृहिणियाँ; कुवळै तोऱ्ऱु–कुवलय हराकर; नॅय्तलै वॅऩ्ऱ–उत्पलविजयी; वाळ् कण्–तलवार-सम आँखों में; कुमुतत्तिऩ् नीर्मै काट्ट–कुमुद की-सी लालिमा दिखाते हुए; कै तलै वैत्त–हाथों को सिर पर रखकर; पूचल्–(जो मचा रही थी) वह चिल्लाहट; कडलोटु निमिरुम् कालै–जब समुद्र से होड़ लगा रही थी; चॆय्तलै उऱ्ऱ ओचै–उनके वैसा करने से निकले नाद का; चॆयलतुम्–कृत्य भी; चॅवियिल् केट्टान्–कानों से सुना। ३५७३

वीरों के सिर कटे थे। उनकी गृहिणियाँ वहाँ आकर कुवलय-उत्पल विजयी अपनी तलवार-सी आँखों को रोने के कारण कुमुद (लाल) बनाते हुए, सिर पर हाथ रखे रोती कलपती रहती थीं। वह शोर समुद्र से होड़ लगा रहा था। रावण ने वह स्वर और उनके स्वर निकालने का वह काम देखा। ३५७३

ऍण्णुनीर् कडन्द यानॅप् पॅरुम्बिण मॆन्दि याणर्
मण्णिनॊ रळवुङ् गल्लि नॆडुमलै पऱित्तु मण्डुम्
पुण्णिनी राऱुम् बल्पेय् पुदुप्पुन लाडुम् बॊम्मल्
कण्णिनी राऱु माऱाक् करुङ्गडल् मडुप्पक् कण्डान् 3574

ऍण्णुम् नीर्–सोचने की शक्ति; कटन्त यानै–खोकर रहे गजों को; पॆरुम् पिणम् एन्ति–बड़ी लाशों को धारण करके; मण्णिन्–पृथ्वी के; नीर् अळवुम् कल्लि–जल के रहते भाग तक खोदकर; नॆटु मलै परित्तु–बड़े पहाड़ों को उखाड़ लेते हुए; मण्टुम्–विपुल परिमाण में बहनेवाले; याणर् पुण्णिन् नीर्–व्रणों के ताज़े रक्त की; आऱुम्–नदियों को; पल् पेय्–अनेक प्रेत; पुतु पुतल् आटुम्–ताज़े (रक्त-) जल में स्नान करते उनके; पॊम्मल्–समूहों को; कण्णिन्–आँखों से; माऱा–निरन्तर बहनेवाली; नीर् आऱु–अश्रुजल की नदी को; करुङ्कटल् मटुप्प–काले सागर में पहुँचने देते हुए; कण्टान्–देखा। ३५७४

उसने यह भी देखा कि संज्ञाहीन गजों की लाशों को बहा लेती हुई, भूमि के भीगे भागों को निकालती हुई और पर्वतों को उखाड़ लेती हुई व्रणों के ताज़े रक्त की नदी बह रही है। अनेक प्रेत ताज़े (रक्त-) जल में स्नान कर रहे हैं। यह सब देखा तो उसकी आँखों से अश्रु की धारा बह चली और समुद्र से जा मिली। ३५७४

मुऱ्ऱियर् चिलैव लाळन् मॊय्क्कणै तुमिप्प वावि
पॆऱ्ऱियल् पॆऱ्ऱि पॆऱ्ऱा मॆन्नवा ळरक्कर् याक्कै
शिऱ्ऱियर् कुरुङ्गा लोरिक् कुरल्हॊळै यिशैयाप् पल्बेय्
कऱ्ऱियल् पाणि कॊट्टक् कळिनडम् बयिलक् कण्डान् 3575

चिऱु इयल्–छोटी बनावट और; कुऱु काल्–नाटे पैर वाले; ओरि कुरल्–सियार का स्वर; कॊळै इचैया–गाने का राग बना; पल् पेय्–अनेक प्रेतों के; कऱ्ऱु इयल्–अपनी शिक्षा के अनुसार; पाणि कॊट्ट–करताल लगाते; मुऱ्ऱु इयल्–पूर्णता-प्राप्त; चिलै वलाळन्–धनुर्विद्यादक्ष श्रीराम के; मॊय् कणै–घने बाणों के; तुमिप्प–काटने से; आवि पॆऱ्ऱु–जीवन पाकर; इयल्–हिलाने की; पॆऱ्ऱि पॆऱ्ऱाम्–स्थिति पा गये; ऍन्न–कहकर; वाळ् अरक्कर् याक्कै–क्रूर राक्षसों के कंड; कळि नटम्–मस्ती से नृत्य; पयिल–कर रहे थे; कण्टान्–देखा। ३५७५

रावण ने देखा कि छोटे आकार और नाटे पैरों के सियारों के स्वर को गाना मानकर विविध प्रेतों के करताल के लय में राक्षस कबंध इस आनन्द के साथ नाच रहे हैं कि पूर्ण धनुकुशल श्रीराजाराम के अपूर्व धनु से कटने के कारण हम में यह नाचने की शक्ति आयी ! । ३५७५

विण्गळिर् चॆम्ऱ वन्ऱोट् कणवरै यलहै वॆय्य
पुण्गळिर् कॆहळ नीट्टिप् पुदुनिणङ् गवर्व नोक्कि

मण्गळिऱ् ऱीडरन्दु वाळिऱ् पिडित्तु वळ्ळुहिरिऩ् मातक्
कण्गळैच् चूऩ्ऱु नीक्कु मरक्कियर् हुळामुङ् गण्डाऩ् 3576

विण्कळिऱ् चॆऩ्ऱ–स्वर्गलोकों में जो गये; वल् तोळ् कणवर्–बलवान कन्धों वाले पतियों को; अलकै–प्रेत; वॆय्य पुण्कळिल्–कठोर व्रणों में; कैकळ् नीट्टि–हाथ डालकर; पुतु मिणम्–ताजे मज्जे; कवर्व–ले रहे हैं, उसे; नोक्कि–देखकर; मण्कळिल् तोटर्न्तु–भूमि पर पीछा करके; वाळिल्–तलवार से; वळ् उकिरिऩ्–और तेज़ नाखून से; पिटित्तु–पकड़कर; मातम् कण्कळै–बड़ी आँखों को; चूऩ्ऱु नीक्कुम्–खोद लेनेवाली; अरक्कियर् कुळामुम्–राक्षसियों के समूहों को भी; कण्टाऩ्–देखा रावण ने। ३५७६

राक्षस वीरों के जीव स्वर्ग चले गये। इधर युद्धभूमि पर पड़े उनके शरीर के ताज़े व्रणों में प्रेत हाथ डालकर मज्जे निकालने लगे। इसको उन वीरों की पत्नियों ने देखा तो उन्हें असह्य लगा। वे भूमि पर दौड़ती गयीं और अपनी-अपनी तलवारों से या अपने तेज़ नाखूनों से अपनी बड़ी आँखें नोच लेने लगीं। रावण ने ऐसी राक्षसियों के समूहों को देखा। ३५७६

कुमिळिनी रोडुञ् जोरिक् कऩलॊडुङ् गॊळिक्कुङ् गण्णाऩ्
तमिळ्नॆऱि वळ्ळ्किऩ् मऩ्ऩऩ् दऩिच्चिलै वळ्ङ्गच् चायन्दार्
अमिळ्बॆरुङ् गुरुदि वॆळ्ळ मारुवाय् मुहत्तिऱ् ऱॆक्कि
उमिळ्वदे यॊक्कुम् वेलै योदमुवन् दुडर्रक् कण्डाऩ् 3577

कुमिळि नीरोटुम्–भंवरों-सह (अश्रु-) जल के साथ; कऩलॊटु–आग और; चोरि–रक्त; कॊळिक्कुम्–से भरी; कण्णाऩ्–आँखों वाले रावण ने; तमिळ् नॆऱि वळ्क्किल्–तमिळ-संप्रदाय के अनुसार; मऩ्ऩऩ् तऩि चिलै–श्री राजाराम के अतिशय धनु के कारण; वळ्ळ्क चायन्तार्–जो मरे; अमिळ्–उनके डुबानेवाले; पॆरु–बड़े; कुरुति वॆळ्ळम्–रक्त के प्रवाह को; तॆक्कि–पीकर; आऱुवाय् मुकत्तिल्–नदी के मुख-द्वार से; उमिळ्वते ऑक्कुम्–उगल रहा हो ऐसा दिखनेवाले; वेलै ओतम्–समुद्र के प्रवाह को; वन्तु उटर्र्–आकर लहराता; कण्टाऩ्–देखा। ३५७७

रावण की आँखें भँवर-सहित अश्रुजल, अनल और रक्त से भर गयीं। उसने देखा कि तमिळवासियों की उदारता के समान श्रीराजाराम के अत्यंत उदारता के साथ प्रेरित शरों से आहत होकर जो मरे, उनका रक्त-प्रवाह इतना गहरा था कि वह किसी को भी अपने अन्दर मग्न कर ले सकता था। समुद्र ऐसा लहराता था मानो वह इस रक्त को पीकर नदीमुखद्वार के ज़रिए उगल रहा हो। ३५७७

विण्पिळन् दॊल्ह वार्त्त वाऩरर् वीक्कङ् गण्डाऩ्
मण्पिळन् वळ्न्द वाडुङ् गवन्दत्तिऩ् वरुक्कङ् गण्डाऩ्
कण्पिळन् दॊक्क वार्क्कुम् वाऩ्मुऩि कणङ्गळ् कण्डाऩ् 3578
पुण्पिळन् दनैय नॆञ्जऩ् कोबुरत् तिळिन्दु पोन्दाऩ्

विण् पिळन्तु–आकाश फटकर; ऑल्क–हिल जाय ऐसा; आर्त्त–नाद उठानेवाले; वानरर् वीक्कम्–वानरों की भीड़; कण्टान्–देखी; मण् पिळन्तु–भूमि फटकर; अळुन्त–नीचे जाय ऐसा; आटुम्–नाचनेवाले; कवन्तत्तिन् वरक्कम्–कबन्ध का वर्ग; कण्टान्–देखा; कण् पिळन्तु–आँखें फाड़कर; ऑक्क आर्क्कुम्–एक साथ आनन्दरव मचानेवाले; वान् मुनि कणङ्कळ्–श्रेष्ठ मुनियों के वृन्दों को; कण्टान्–देखा; पुण् पिळन्तनैय नॅञ्चन्–खुले व्रण के समान मनवाला रावण; कोपुरत्तु–गोपुर से; इळिन्तु पोन्तान्–उतरकर चला। ३५७८

उसने आकाश फाड़ते हुए चिल्लानेवाले वानर-झुंड देखे। भूमि को फाड़कर पाताल में पहुँचाते हुए नाचनेवाले कबंधवृन्दों को देखा। आँखें फाड़कर देखते हुए आनंदरव उठानेवाले श्रेष्ठ मुनियों के समूह देखे। उसका मन खुले व्रण के जैसा हो गया। वह गोपुर से उतरकर चला। ३५७८

नहैपिऱक् किन्ऱ वायन् नाक्कॊडु कडैवाय् नक्कप्
पुहैपिऱक् किन्ऱ मूक्कन् पॊऱिपिऱक् किन्ऱ कण्णन्
मिहैपिऱक् किन्ऱ नॅञ्जन् वॅञ्जिनत् तीमेल् वीङ्गिच्
चिहैपिऱक् किन्ऱ शॊल्ल नरशिय लिरुक्कै शेर्न्दान् 3579

नकै पिऱक्किन्ऱ वायन्–हासमुख; ना कॊटु–जीभ से; कटैवाय् नक्क–मुख के कोनों को चाटते हुए; पुकै पिऱक्किन्ऱ–धुआँ जिससे निकले; मूक्कन्–ऐसी नाक वाला; पॊऱि पिऱक्किन्ऱ–अंगारे जिससे निकलें; कण्णन्–ऐसी आँखों वाला; मिकै पिऱक्किन्ऱत–अतिक्रमजनक; नॅञ्चन्–चित्त वाला; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध को; ती–अग्नि; मेल् वीङ्कि–ऊँची बढ़कर; चिकै पिऱक्किन्ऱ–ज्वालाएँ पैदा करे ऐसा; चॊल्लन्–बचन वाला; अरचियल् इरुक्कै–राज्यासन (मण्डप); चेर्न्तान्–पहुँचा। ३५७९

उसका मुख क्रोध की हँसी से युक्त हुआ। जीभ मुख के कोनों को चाट रही थी। नाक से धुआँ निकला और आँखों से अंगारे छूटे। मन में अतिक्रम के भाव उठ रहे थे। शब्द ऐसे लगे मानो कोपाग्नि के बढ़ने से उठी ज्वालायें हों। वह इस स्थिति में मंत्रणा-मण्डप में गया और राजासन पर बैठा। ३५७९

34. इरावणन् तेरेऱु पडलम् (रावण-रथारोहण पटल)

पूदर मनैय मेनिप् पुहैनिऱप् पुरुवच् चॅङ्गण्
मोदर नॅन्नु नामत् तॊरुवनै मुरैयि नोक्कि
एडुळ दिऱन्वि लाद दिलङ्गैयू रिरुन्द शेनै
यादैयु मॆळुहॆन् ऱान्ऱा यणिमुर शेऱ्ऱु हॆन्ऱान् 3580

पूतरम् अनैय मेनि–भूधर-सा शरीर; पुकै निऱ–धुएँ के-से रंग की; पुरुव–भौंहें; चॅम् कण्–लाल आँखें; मोतरन् ऍन्नुम् नामत्तु–(जिसकी थीं उस) महोदर नाम के;

ऑवबत्तै–एक राक्षस को; मुऱ्ऱैयिन् नोक्कि–क्रम से देखकर; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर में; इऱ्ऱुतिलाततु इरुन्त–जो मरी नहीं हैं; चेनै–सेनाएँ; एतु उळतु–जितनी हैं; यातैयुम्–उन सभी को; ॲळुक ॲन्ऱु–कूच करो ऐसा; आनै–हाथी पर; अणि मुरचु–सुन्दर भेरी; एऱ्ऱुक–चढ़ाओ; ॲन्ऱान्–कहा। ३५८०

रावण ने महोदर पर जो भूधर के-से आकार का था, जिसकी भौंहें धुएँ के रंग की थीं और जिसकी आँखें लाल थीं, ठीक प्रकार से देखकर आज्ञा सुनायी कि जो भी सेनाएँ बची हैं, वे सब युद्ध में जाएँ। हाथी पर नगाड़ा चढ़ाओ और बजाकर यह संदेश फैला दो। ३५८०

ॲऱ्ऱित मुरशि नोडु मेळिरु नूऱु कोडि
कॊऱ्ऱवा णिरुदर् शेनै कुळीइयदु कोडित्तिण् डेरुज्
जुऱ्ऱुरु तुळैक्कै मावुन् दुरहमुम् बिऱवुन् दोक्क
वऱ्ऱित वेलै यॆन्न विलङ्गैयूर् वऱळिर् ऱाह 3581

मुरचु ॲऱ्ऱित ओदम्–नगाड़े के बजते ही; एळ् इरु नूऱु कोटि–सात के दो (चौदह) सौ करोड़; कॊऱ्ऱम् वाळ् निरुतर् चेनै–विजयी तलवारधारी वीरों की सेना; कुळीइयतु–एकत्र हुई; वऱ्ऱित वेलै ॲन्न–शुष्क सागर के समान; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर; वऱळिर्ऱु आक–खाली करते हुए; कोटि तिण् तेरुम्–ध्वजायुक्त सबल रथ; चुऱ्ऱुरु–उनको घेरकर; तुळै कै मावुम्–रंध्रसहित सूँड़ वाले हाथी; तुरकमुम्–तुरग; पिऱवुम्–और अन्य; तॊक्क–जमा हुए। ३५८१

मुनादी के पिटने पर चौदह सौ करोड़ विजयभूषित, तलवारधारी वीरों की राक्षस पदाति सेना इकट्ठी हुई। लंकानगर जलशुष्क सागर के समान रिक्त हो जाए, ऐसा ध्वजा से अलंकृत सुदृढ़ रथों के साथ नली से युक्त सूँड़वाले हाथी, घोड़े और अन्य इकट्ठे हुए। ३५८१

ईशनै यिमैया मुक्क णिऱैवनै यिरुमैक् केऱ्ऱ
पूशनै मुऱैयिऱ् चॆय्दु तिरुमऱै पुहऩ्ऱ दानम्
वीशित्त तियऱ्ऱि मऱ्ऱुम् वेट्टन वेट्टोर्क् कॆल्लाम्
आशऱ नल्हि यॊल्हाप् पोर्त्तॊळिर् कमैव दानान् 3582

ईचनै–ईश्वर; इमैया–अपलक; मुक्कण् इऱैवनै–त्रिनेत्र देव को; इरुमैक्कु एऱ्ऱ–इह-पर के योग्य; पूचनै–पूजा को; मुऱैयिन् चॆय्तु–यथाक्रम करके; तिरुमऱै पुकऩ्ऱ–उत्तम वेदोक्त; तानम्–दानों को; वीचित्त इयऱ्ऱि–लुटाते हुए करके; वेट्टन–उनको चाह की वस्तुओं को; मऱ्ऱुम्–और; वेट्टोर्क्कु ॲल्लाम्–सभी चाहनेवालों को; आचु अऱ–निर्दोष रीति से; नल्कि–देकर; ऒल्का–अक्षय (दीर्घ); पोर् तॊळिऱ्कु–युद्धकृत्य के लिए; अमैवतु आनान्–तैयार हुआ। ३५८२

रावण ने अपलक त्रिनेत्र शिव की इह-पर-हितार्थ आवश्यक पूजा की। वेदोक्त दान उदारता के साथ दिए। और भी जिन्होंने जो जो चाहा।

उन्हें वह सभी दिया। फिर वह दीर्घ युद्ध के लिए तैयारी करने लगा। ३५८२

अरुवि यञ्जनक् कुन्ऱिडै यायिर मरुक्कर्
उरुवि तोडुम्वन् दुदित्तन राभैन वौळिरक्
करुवि नान्मुहन् वेळ्वियिऱ् पडैत्तदुङ् गट्टिच्
चॅरुवि लिन्दिरन् ऱन्दपॊऱ् कवशमुञ् जेर्त्तान् 3583

अरुवि–नदियों-सहित; अञ्चन कुन्ऱिटै–काले पर्वत में; आयिरम् अरुक्कर्–सहस्र सूर्य; उरुवित्तोडुम्–अपने उज्ज्वल रूप में; वन्तु उतित्तनर् आम्–आ उदित हों; अॅन–जैसे; ऑळिर–प्रकाश फैलाकर; नान्मुकन्–चतुर्मुख; वेळ्वियिल्–यज्ञ में; पटैत्ततु–कृत; करुवि उम्–कवच; कट्टि–बाँधकर; चॅरुविल्–युद्ध में; इन्तिरन् तन्त–इन्द्रदत्त; पॊन् कवचमुम्–स्वर्ण-कवच भी; चेर्त्तान्–लगाकर बाँध लिया। ३५८३

स्वकृत यज्ञ में चतुर्मुख द्वारा सृष्ट एक कवच पहन लिया। वह कवच अपने उत्कृष्ट रूप में नदियों-सहित पर्वत पर उदित सहस्र सूर्यों का-सा प्रकाश छिटका रहा था। उस पर वह स्वर्ण कवच भी बाँध लिया जो कि (विजित) इन्द्र-दत्त था। ३५८३

वाळ्व लम्बड मन्दरञ् जूऴ्न्दमा शुणत्तिन्
ताळ्व लन्वौळिर् दमनियक् कच्चॊडुञ् जार्त्तिक्
कोळ्व लन्दन कुविन्दन वामॅनुङ् गौळ्है
मीळ्विल् किम्बुरि मणिक्कडि शूत्तिरम् वीक्कि 3584

मन्तरम् चूऴ्न्त–मंदर पर लिपटे; माचुणत्तिन्–(वासुकी) नाग के समान; ताळ्–रस्सी से; वलन्तु–लपेट बाँधकर; ऑळिर्–प्रकाश छिटकानेवाली; तमनियम् कच्चॊटुम्–स्वर्ण के कमरबन्द के साथ; वाळ्–तलवार को; वलम् पट–दाहिनी तरफ़; चार्त्ति–लगा लेकर; कोळ्–ग्रह; कुविन्तन–एकत्र हों; वलन्तन–चारों ओर लगे रहे; आम् अॅनुम् कोळ्कै–ऐसा मान्य रीति से; मीळ्वु इल्–अमिट; किम्पुरि–किंपुरी नामक आभरण और; मणि कटि चूत्तिरम्–रत्ननिर्मित कटि-सूत्र भी; वीक्कि–बाँधकर। ३५८४

फिर स्वर्ण का कमरबन्द पहन लिया, जो मंदरपर्वत को लपेटकर बाँधे गये वासुकी नाग के समान रस्सी से खूब बाँधा गया था। दायीं तरफ़ तलवार लटका ली। सभी ग्रह चारों तरफ़ से एकत्रित हों—ऐसा 'किंपुरी' नामक आभरण पहन लिया। उसके ऊपर कटिसूत्र बाँध लिया। ३५८४

मडैवि रित्तॆन्न वाडुरु मानमाक् कलुऴन्
शिऱैवि रित्तॆन कॊय्शह मरुङ्गुरुच् चेर्त्ति

मुरॆवि रित्तॆन्न मुरुक्किय कोशिह मरुङ्गिऱ्
पिऱॆवि रित्तन्न वॆळ्ळॆयिऱ् ऱरवमुम् बिणित्तु 3585

मऱॆ विरित्तु अॆन्न–वेद को फैलाकर रखा हो जैसे; आडु उऱु–हिलनेवाले; मान मा कलुळन्–गुरु महा गरुड़ के; चिऱॆ विरित्तॆन्न–पंख फैले हों जैसे; कॊय्चकम्–शिकनों को; मरुङ्कु उऱु–वस्त्र में पार्श्व में हों ऐसे; चेर्त्ति–पहनकर; मुऱॆ विरित्तॆन्न–क्रम माने गये हों जैसे; मऱुक्किय–ऐंठन लगे; कोचिकम्–कौशेय को; मरुङ्किल्–कमर में (लपेटकर); पिऱॆ विरित्तॆन्न–अर्धचन्द्र फैला हो जैसे; वॆळ् ऎयिऱु अरवम्–सफ़ेद दाँतों वाले सर्प को; पिणित्तु–लपेटकर। ३५८५

वेदविस्तार के समान (पक्ष फैलाकर) नाचनेवाले शालीन गरुड़ के पक्ष फैले हों, ऐसी वस्त्र की शिकनों से लगी नीवि को उचित रीति से बाँध लिया। क्रमबद्ध-रूप से ऐंठे हुए कौशेय वस्त्र को अनेक बार कमर से लपेट लिया। उसके ऊपर अर्द्धचंद्रों का फैलाव हो जैसा सफ़ेद दाँतोंवाले सर्प को बाँध लिया। ३५८५

मळॆक्कु लत्तिडॆ वदियुमिन् निनङ्गळॆ वारि
इळॆत्तॆ डुत्तॆन्न वन्नदिडु मुडॆमणि यिशैत्तु
मुळॆक्कि डन्दपल् लरियिन मुळङ्गु पोरार्प्पिऱ्
ऱळॆक्कु मिन्नॊळिप् पॊन्मणिच् चदङ्गैयुञ् जात्ति 3586

मळॆ कुलत्तिडै–मेघसमूहमध्य; वतियुम्–रहनेवाली; मिन् इनङ्कळै–बिजलियों के समूहों को; वारि–एक साथ मिलाकर; इळैत्तु अॆडुत्तु अॆन्न–बनाया गया हो जैसे; वन्तितुम्–निर्मित; उडै मणि–'कमरघण्टी'; इचैत्तु–बाँधकर; मुळै किडन्त–कंदराओं में पड़े रहे; पल् अरि इनम्–अनेक सिंहवृन्द; मुळङ्कु पोर् आर्प्पिन्–एक साथ गरज रहे हों, ऐसा उठे नाद से; तळैक्कुम् मिन् ऒळि–समृद्ध बिजली के-से प्रकाशवाले; पॊन् मणि चतङ्कैयुम्–स्वर्णघुंघुरुओं की लड़ियाँ; चात्ति–साथ बाँधकर। ३५८६

मेघसमूहमध्य चमकनेवाली बिजली-समूहों को एक साथ मिलाकर बनायी गयी हो —ऐसी "वस्त्रघंटी" पहन ली। उस पर कंदरा-स्थित अनेक सिंहों के गर्जन के समान शब्द उठानेवाली और पुष्कल प्रकाशमय घुँघुरुओं की लड़ी पहन ली। ३५८६

उरुमि डित्तपो दरवुरु मरुक्कमुवा नुलहिऩ्
इरुनि लत्तिडॆ यॆव्वुल हत्तिडॆ यारुम्
पुरिद रप्पडुम् पॊलङ्गळॆ लिलङ्गुरुप् पूट्टिच्
चरियु डॆच्चुडर् शाय्नलञ् जार्वुरुच् चात्ति 3587

उरुम् इडित्तत पोतु–वज्र जब टूटता हो; अरवु उरु मरुक्कम्–तब सर्प जो बेचैनी पाता है वह; वान् उलकिन्–व्योमलोक में; इरु निलत्तिडै–और बड़े भूलोक में; ऎव् उलकत्तिडै–किसी भी लोक में; यारुम्–सभी; पुरि तर–(व्याकुलता)

पा जाएँ ऐसा; पोलम् कळल्–स्वर्ण-कड़ों को; इलङ्कु उरु–शोभा दें, ऐसा; पूट्टि–पहनकर; चरि उटै–ढीले अधोवस्त्र की; चूटर्–छटा; चाय्–(पायल की) छवि के; नलन्–प्रभाव से; चार्वु उरु–संयुक्त रहे ऐसा; चातुति–बाँधकर। ३५८७

फिर उसने स्वर्ण-पायल पहन ली। वह ऐसी थी, जिसका नाद आकाश-लोक, भूलोक क्या सभी लोकों के वासियों को ऐसा त्रास दे सकता, जो वज्रनाद-सर्प को देता है! उसकी छवि अधोवस्त्र की छटा से मेल खाकर खूब रही थी। ३५८७

नालज् जाहिय करङ्गळि ततन्दलै यतन्दन्
आलज् जार्मिडर् ररुङ्गरै किडन्दॅन विलङ्गुम्
कोलज् जार्नॅडुङ् गोदैयुम् बुट्टिलुङ् गट्टित्
तालज् जार्न्दमा शुणमॅनक् कङ्गणन् दळुव 3588

नाल् अञ्चु आकिय–(४ × ५) बीस; करङ्कळिल्–हाथों में; मत तलै–बड़ सिरों के; अतम्तन्–आदिशेषनाग के; आलम् चार्–विष के स्थान; मिटरु–गले का; अरुम् करै–अपूर्व कलंक; किटमतु ॲन–रहता जैसा; इलङ्कुम्–विद्यमान; कोलम् चार्–सुन्दर; नॅटु कोतैयुम्–लम्बे चमड़े के हस्तत्राण; पुट्टिलुम्–और अंगुलीत्राण; कट्टि–लगा लेकर; तालम्–तालवृक्ष पर; चार्न्त–लिपटे; माचुणम् ॲन–सर्प के समान; कङ्कणम्–कंकण; तळुव–वलयित रहे ऐसा। ३५८८

बीसों हाथों में चमड़े के हस्तत्राण लगा लिये। वे मोटे आदिशेषनाग के कंठ के विष के धब्बे के समान लगते थे। फिर अंगुलित्राण भी लगा लिये। ताल-तरु से लिपटे सर्प के समान कंकण भी पहन लिये। ३५८८

कटलॅ् डॅन्दमाल् वरैयिनैच् चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिन्
अडलॅ् डन्ददो ळलङ्गुपोर् वलयङ्ग ळिलङ्ग
उडलॅ् डॅन्दना ळॊळियव नुदिर्न्दपोऱ् कदिरिन्
ऱुडरॅ् दयङ्गुरक् कुण्डलञ् जॅविथिडैत् तूक्कि 3589

कटल् कटैन्त–समुद्रमथनकारी; माल् वरैयिनै–बड़े पर्वत को; चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिन्–जो लिपटा रहा उस (वासुकी) नेति के; अटल् कटन्त–बल से अधिक बलवान; तोळ्–कंधों पर; अलङ्कु–हिलनेवाले; पोर् वलयङ्कळ्–युद्ध के समय पहने जानेवाले बाहुवलय; इलङ्क–शोभित रहे; उटल् कटैन्त नाळ्–(सूर्य का) शरीर जब मथा गया तब; ऒळियवन्–किरणमाली ने; उतिर्न्त–जो गिरायीं; पोन् कतिरिन्–स्वर्णमय किरणों का-सा; चुटर्–प्रकाश; तयङ्कुर–आता रहे ऐसा; चॅवियिटै–कानों में; कुण्टलम् तूक्कि–कुंडल लटकाकर। ३५८९

भुजाओं पर बाहुवलय पहने जो समुद्रमथनकारी मंदर पर्वत के चारों ओर लिपटे वासुकी-नेति के समान लगे। कानों में कुंडल पहन लिये जिनसे उसी भाँति स्वर्णमय रोशनी छूटती थी जिस भाँति सूर्य से तब किरणें

छूटीं जब उसके शरीर को मथा (तराशा) गया था। [यह एक विचित्र कहानी है। उसका उल्लेख स्कंदपुराण, वेळूर् पुराण आदि में है। कहानी यों है। एक सुंदर मुनिपत्नी थी जिसके अति प्यारे पति जब कभी बाहर उसे छोड़कर जाते तब उसके प्राण अलग करके अपने साथ ले जाया करते थे। एक दिन इन्द्र और सूर्य उससे संभोग की कामना करके उसके पास आये और इंद्र उसका प्राण हुआ और सूर्य ने उसे भोग लिया। मुनि ने आकर समाचार जाना तो शाप दिया कि सूर्य प्रकाशहीन हो जाए। फिर विश्वकर्मा ने सूर्य को मथकर (तराशकर) प्रकाशमय बना दिया।]। ३५८९

उदयक् कुन्ड्रत्तो डत्तत्ति नुलावुरु कदिरिन्
तुदंयुङ् गुङ्गुमत् तोळोडु तोळिडेत् तोडरप्
पुदंयि रुट्पहैक् कुण्डलम् जॅविदोरुम् वॊलियच्
चिवेवि ट्रिङ्गळु मोलुम्बोल् मुत्तितन् दिहळ 3590

कुङ्कुमम् तोळोडु तोळिडै—कुंकुमचर्चित कंधों में; तोडर—लगातार; पुतै इरुळ् पकै—संसार को ढँकनेवाले अन्धकार का शत्रु; कुण्डलम्—कुंडल; उतय कुन्ड्रत्तोडु—उदयाचल से; अत्तत्तिन्—अस्ताचल तक; उलावुरु—घूमनेवाले; कतिरिन्—सूर्य के समान; तुतैयुम्—घने घने; चॅवि तोरुम्—हर कान में; पॊलिय—शोभायमान रहे; चितैव इल्—अक्षय; तिङ्कळुम्—चन्द्र और; मीनुम् पोल्—नक्षत्र के समान; मुत्तु इतम्—मुक्ताहारों के; तिकळ—शोभायमान रहते। ३५९०

कुंकुमचर्चित कंधों पर उदयाचल और अस्ताचल के मध्य घूमने वाले किरणमाली के समान लोकाच्छादक अन्धकार के शत्रु लगे हिलने वाले कुंडल कान-कान में शोभ रहे थे। फिर मुक्ताहार पहन लिये जिनके मोती अक्षयदीप्तिराशि सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की-सी छटा से युक्त थे। ३५९०

वेलै वाय्वन्दु वॆय्यव रनैवरुम् विडियुङ्
गालै युट्रन रामॆनक् कदिर्मुडि कालुम्
मालै पत्तित्मेल् मदियमु ताळिडेप् पलवाय्
एल मुट्रिय वनैयमुत् तक्कुडै यिमैप्प 3591

वॆय्यवर् अनैवरुम्—सभी सूर्य; विटियुम् कालै—प्रातःकाल में; वेलै वाय् वन्तु उट्रतर्—सागर में आ पहुँचे; आम् ॲॆन—हों जैसे; कतिर् कालुम्—किरणजाल निःसृत करनेवाले; मालै मुटि पत्तिन् मेल्—पंक्ति में रहे दसों किरीटों पर; मुत् ताळ् इटै—पूर्व (शुक्ल) पक्ष-मध्य; पल आय्—विविध जो कलाएँ हैं उनके; एल—साथ; मुट्रिय मतियम्—पूर्णचन्द्र; अनैय—के समान; मुत्त कुटै—मोतियों के झालरों के साथ; इमैप्प—शोभायमान रहा (उसके ऐसा रहते)। ३५९१

उसके माला से अलंकृत दसों किरीटों से ऐसा प्रकाश छूट रहा था,

पा जाएँ ऐसा; पॊलम् कऴल्-स्वर्ण-कड़ों को; इलङ्कु उऱ-शोभा दें, ऐसा; पूट्टि-पहनकर; चरि उटै-ढीले अधोवस्त्र की; चुटर्-छटा; चाय्-(पायल की) छवि के; नलन्-प्रभाव से; चार्वु उऱ-संयुक्त रहे ऐसा; चात्ति-बाँधकर। ३५८७

फिर उसने स्वर्ण-पायल पहन ली। वह ऐसी थी, जिसका नाद आकाश-लोक, भूलोक क्या सभी लोकों के वासियों को ऐसा त्रास दे सकता, जो वज्रनाद-सर्प को देता है! उसकी छवि अधोवस्त्र की छटा से मेल खाकर खूब रही थी। ३५८७

नालञ् जाहिय करङ्गळि ल्तन्दलै यत्तन्दत्
आलञ् जार्मिडऱ् ऱरुङ्गऱै किडन्दॆन्त विलङ्गुम्
कोलञ् जार्नॆडुङ् गोदैयुम् बुट्टिलुङ् गट्टित्
तालञ् जार्न्दमा शुणमॆन्नक् कङ्गणन् दळुव 3588

नाल् अञ्चु आकिय-(४×५) बीस; करङ्कळिल्-हाथों में; मत तलै-बड़ सिरों के; अत्तन्तन्-आदिशेषनाग के; आलम् चार्-विष के स्थान; मिटऱु-गले का; अरुम् कऱै-अपूर्व कलंक; किटन्तु ॲन्न-रहता जैसा; इलङ्कुम्-विद्यमान; कोलम् चार्-सुन्दर; नॆटु कोतैयुम्-लम्बे चमड़े के हस्तत्राण; पुट्टिलुम्-और अंगुलीत्राण; कट्टि-लगा लेकर; तालम्-तालवृक्ष पर; चार्न्त-लिपटे; माचुणम् ॲन्न-सर्प के समान; कङ्कणम्-कंकण; तऴुव-वलयित रहे ऐसा। ३५८८

बीसों हाथों में चमड़े के हस्तत्राण लगा लिये। वे मोटे आदिशेषनाग के कंठ के विष के धब्बे के समान लगते थे। फिर अंगुलित्राण भी लगा लिये। ताल-तरु से लिपटे सर्प के समान कंकण भी पहन लिये। ३५८८

कटलुह डैन्दमाल् वरैयिनैच् चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिन्
अडलुह डन्ददो ळलङ्गुपोर् वलयङ्ग ळिलङ्ग
उडलुह डॆन्दना ळॊळियव नुदिर्न्दपोर् कदिरिन्
शुडर्द यङ्गुऱक् कुण्डलञ् जॆविविडैत् तूक्कि 3589

कटल् कटैन्त-समुद्रमथनकारी; माल् वरैयिनै-बड़े पर्वत को; चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिन्-जो लिपटा रहा उस (वासुकी) नेति के; अटल् कटन्त-बल से अधिक बलधाम; तोळ्-कंधों पर; अलङ्कु-हिलनेवाले; पोर् वलयङ्कळ्-युद्ध के समय पहने जानेवाले बाहुवलय; इलङ्क-शोभित रहे; उटल् कटैन्त नाळ्-(सूर्य का) शरीर जब मथा गया तब; ऒळियवन्-किरणमाली ने; उतिर्न्त-जो गिरायीं; पॊन् कतिरिन्-स्वर्णमय किरणों का-सा; चुटर्-प्रकाश; तयङ्कुऱ-आता रहे ऐसा; चॆविइटै-कानों में; कुण्टलम् तूक्कि-कुंडल लटकाकर। ३५८९

भुजाओं पर बाहुवलय पहने जो समुद्रमथनकारी मंदर पर्वत के चारों ओर लिपटे वासुकी-नेति के समान लगे। कानों में कुंडल पहन लिये जिनसे उसी भाँति स्वर्णमय रोशनी छूटती थी जिस भाँति सूर्य से तब किरणें

छूटीं जब उसके शरीर को मथा (तराशा) गया था। [यह एक विचित्र कहानी है। उसका उल्लेख स्कंदपुराण, वेळूर् पुराण आदि में है। कहानी यों है। एक सुंदर मुनिपत्नी थी जिसके अति प्यारे पति जब कभी बाहर उसे छोड़कर जाते तब उसके प्राण अलग करके अपने साथ ले जाया करते थे। एक दिन इन्द्र और सूर्य उससे संभोग की कामना करके उसके पास आये और इंद्र उसका प्राण हुआ और सूर्य ने उसे भोग लिया। मुनि ने आकर समाचार जाना तो शाप दिया कि सूर्य प्रकाशहीन हो जाए। फिर विश्वकर्मा ने सूर्य को मथकर (तराशकर) प्रकाशमय बना दिया।]। ३५८९

उदयक् कुन्ऱत्तो डत्तत्ति नुलावुऱ कदिरिन्
तुदंयुङ् गुङ्गुमत् तोळोडु तोळिडंत् तोंडरप्
पुदंयि रुट्पहैक् कुण्डलम् जेंविदोऱुम् पोलियच्
चिदंवि ऱिङ्गळु मीनुम्बोन् मुत्तिलन् दिहळ 3590

कुङ्कुमम् तोळोडु तोळिटै–कुंकुमचर्चित कंधों में; तोंटर–लगातार; पुतै इरुळ् पकै–संसार को ढँकनेवाले अन्धकार का शत्रु; कुण्डलम्–कुंडल; उतय कुन्ऱत्तोटु–उदयाचल से; अत्तत्तिन्–अस्ताचल तक; उलावुऱ–घूमनेवाले; कतिरिन्–सूर्य के समान; तुतैयुम्–घने घने; चॅवि तोऱुम्–हर कान में; पॉलिय–शोभायमान रहे; चितैवु इल्–अक्षय; तिङ्कळुम्–चन्द्र और; मीनुम् पोल्–नक्षत्र के समान; मुत्तु इलम्–मुक्ताहारों के; तिकऴ–शोभायमान रहते। ३५९०

कुंकुमचर्चित कंधों पर उदयाचल और अस्ताचल के मध्य घूमने वाले किरणमाली के समान लोकाच्छादक अन्धकार के शत्रु लगे हिलने वाले कुंडल कान-कान में शोभ रहे थे। फिर मुक्ताहार पहन लिये जिनके मोती अक्षयदीप्तिराशि सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की-सी छटा से युक्त थे। ३५९०

वेलै वाय्वन्दु वॅय्यव रत्तैवरुम् विडियुङ्
गालै युऱ्ऱन रामॅनक् कदिर्मुडि कालुम्
मालै पत्तिन्मेल् मदियमु नाळिडैप् पलवाय्
एल मुऱ्ऱिय वत्तैयमुत् तक्कुडै यिमैप्प 3591

वॅय्यवर् अत्तैवरुम्–सभी सूर्य; विटियुम् कालै–प्रातःकाल में; वेलै वाय् वन्तु उऱ्ऱतर्–सागर में आ पहुँचे; आम् ॲंत–हों जैसे; कतिर् कालुम्–किरणजाल निःसृत करनेवाले; मालै मुटि पत्तिन् मेल्–पंक्ति में रहे दसों किरीटों पर; मुन् नाळ् इटै–पूर्व (शुक्ल) पक्ष-मध्य; पल आय्–विविध जो कलाएँ हैं उनके; एल–साथ; मुऱ्ऱिय मतियम्–पूर्णचन्द्र; अत्तैय–के समान; मुत्त कुटै–मोतियों के झालरों के साथ; इमैप्प–शोभायमान रहा (उसके ऐसा रहते)। ३५९१

उसके माला से अलंकृत दसों किरीटों से ऐसा प्रकाश छूट रहा था,

ानो सभी सूर्य एक साथ समुद्र पर उदित होकर किरणजाल फैला रहे
ों। उनके ऊपर सभी कलाओं से युक्त पूर्णचंद्र जैसे मोतियों के झालरों
ं साथ श्वेत छत्र शोभायमान था। ३५९१

पहुत्त पल्वळक् कुन्ऱिनिन् मुळैयत्तन पहुवाय्
वहुत्त वान्कडत् तिशैतोरुम् वळैयॅयिऱ् ऱीट्टम्
मिहुत्त नीलवान् मेहज्जूळ् विशुम्बिडैत् तशुम्बू
डुहुत्त शॅक्करिऱ् पिऱैक्कुल मुळैत्तन्न वॊक्क 3592

पल् वळम् पकुत्त–विविध श्रेणियों में विभक्त; कुन्ऱितिन्–पर्वत में; मुळै
यत्त–कन्दराओं के समान; वकुत्त पकुवाय्–अलग-अलग फटे से मुँह के; वान्–बड़े;
कडै–कोरों में; तिचै तोरुम्–दिशा-दिशा में दिखनेवाले; वळै ऍयिऱु ईट्टम्–समूह के
वक्र दाँत; मिकुत्त नीलम्–अति नीले; वान् मेकम् चूळ्–जल-भरे मेघों से
आवृत; विचुम्पु इडै–आकाश में; तचुम्पु ऊटु उकुत्त चॅक्करिल्–एक घड़ा द्वारा
ढाले गये लाल गगन में; पिऱै कुलम्–तीज के चाँद; मुळैत्तन ऑक्क–उग आये
जैसे लगे (उनके ऐसा लगते)। ३५९२

उसके फटे-से मुख विविध श्रेणीबद्ध पर्वतों में की कंदराओं के समान थे। उनके कोनों में जो वक्रदाँत लगे थे वे सभी दिशाओं में फैले थे और वे ऐसे लगे मानो नीले रंग के मेघावृत आकाश में एक घड़े से ढाली गयी लाली के मध्य तीज के चाँदों की राशि उगी हो। ३५९२

ऑत्त तन्मैयि नॊळिर्वन तरळत्ति नॊक्कत्
तत्तु हिन्ऱन वीरपट् टत्तोहै तयङ्ग
मुत्त वोडैयिन् मुरट्टिशै मुम्मद यानै
पत्तु नॅऱ्ऱियुज् जुऱ्ऱिय पेरॅळिल् पडैप्प 3593

पत्तु नॅऱ्ऱियुम्–दसों भालों पर; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बाँधी हुई; ऑत्त
तन्मैयिन् ऑळिर्वन–और एक-सम छविमय; तरळत्तिन्–मोतियों की बनी; ऑक्क
तयक्कि तत्तुकिन्ऱन–एक साथ प्रकाश निःसृत करनेवाली; वीर पट्ट तोकै–वीर-
पट्टियों की राशि; मुरण्–विलक्षण; मुम्मत–त्रिमद; तिचै यानै–दिग्गजों के;
मुत्त ओडैयिन्–मोतियों के पट्टों की-सी; पेरॅळिल् पडैप्प–बड़ी छवि बरसाते रहे
(ऐसे रहते)। ३५९३

उसके भालों पर पट्टियाँ बँधी थीं जो एक-सम चमक रही थीं। वे एक-सम उज्ज्वल मोतियों से निर्मित थीं। उनकी छवि विलक्षण और त्रिविध-मद बहानेवाले दिग्गजों के मुक्तामय वीरपट्टों की-सी थी। ३५९३

पुलवि मङ्गैयर् पून्जिलम् बरऱ्ऱडि पोक्कित्
तलैमै कण्णिन्ऱत् ताळ्हिला मणिमुडित् तलङ्गळ्

उलह मौत्ऱिऱै विळक्कुरुङ् गदिरिऩै योट्टि
अलहि लॅव्वुल हत्तितुम् वयङ्गिरु ळहऱ्ऱ 3594

पुलवि–रूठी; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; पूम्–सुन्दर; चिलम्पु–नूपुर; अरऱ्ऱु–जिनमें रहकर क्वणित होते हैं उन; अटि–चरणों को; पोक्कि–छोड़कर; तलैमै कण्णिऩर्–(अन्य) बड़ाई के अभिलाषी किसी के भी सामने; ताळ्किला–न झुकने वाले; मणि मुटि तलङ्कळ्–रत्नकिरीटों के स्थान; उलकम् ऑत्ऱिऩै–एक लोक को; विळक्कुरुम्–प्रकाश देनेवाले; कतिरिऩै–सूर्य को; ओट्टि–भगाकर; अलकु इल्–अनगिनत; ॲ उलकत्तितुम्–सभी लोकों में; वयङ्कु–रहनेवाले; इरुळ्–अन्धकार को; अकऱ्ऱ–हटाते रहे (हटाते)। ३५९४

उसके रत्न-किरीटाश्रय-स्थल (माथे) रूठी हुई स्त्रियों के चरणों के अलावा किसी भी बड़ाई चाहनेवाले के सामने झुके नहीं थे। वे केवल एक लोक को प्रकाश देनेवाले सूर्य को भगाकर अनंत सभी लोकों के अन्धकार को दूर कर रहे थे। ३५९४

नाह नातिल नात्मुह नाडॅऩ नयन्द
पाह मूत्ऱैयुम् वॅन्ऱुकॊण् डमरर्मुऩ् पणिन्द
वाहै मालैयित् मरुङ्गुऱ वरिवण्डॊ डळवित्
तोहै यऩ्ऩवर् विऴितॊडर् तुम्बैयुञ् जूट्टि 3595

नाकम्–नागलोक; नातिलम्–चतुर्विधा भूमि का भूलोक; नात्मुकत् नाटु–ब्रह्मा का (सत्य-) लोक; ॲत–आदि; नयन्त–इच्छित; पाकम्–भाग; मूऩ्ऱैयुम्–तीनों को; वॅऩ्ऱु कॊण्टु–जीत लेकर; मुऩ्पु–प्राचीनकाल में; अमरर् अणिन्त–देवों द्वारा पहनायी गयी; वाकै मालैयिऩ्–विजयमाला के; मरुङ्कु उऱ–पास लगी रहे ऐसा; वरि वण्टॊटु–लकीरों-सह भ्रमरों के साथ; तोकै अऩ्ऩवर्–कलापी-सी स्त्रियों की; अळावि–मिश्रित होकर; विऴि तॊटर्–दृष्टियाँ जिसका पीछा करती हैं; तुम्पैयुम्–उस 'तुंबै' की माला को; चूट्टि–पहने हुए। ३५९५

नागलोक, चतुर्विधा भू-लोक और चतुर्मुखलोक आदि प्राप्ति की इच्छा के योग्य त्रिविध लोकों को जीतकर रावण ने देवों से दी गयी 'वाहै' की विजयमाला पहनी थी। उसके बग़ल में अब "तुंबै" (फूलों) की विजयमाला (जो युद्ध में जाने के चिह्न के रूप में पहनी जाती है) पहन ली, जिसका लकीरों से युक्त भ्रमर और कलापी-सी स्त्रियों के आतुर नेत्र पीछा कर रहे थे। (दोनों उस पर मँड़राते जाते थे।) ३५९५

अहऴम् वेलैयि ऩहलत्तै यळक्करुणु मणलै
निहऴ् मातिल विज्जैयै नितैप्पदे निऩ्ऱ
इहऴ्विल् पूदङ्ग ळिऱ्प्पित्तु मिरुदिशैल् लात्तऩ्
पुहऴॊ तच्चरन् वीलैविलात् तूणियुम् बूट्टि 3596

ो; तुण् मणलै–महीन बालुकाओं को; मा निलम् निकळ्ळुम्–बड़ी भूमि में प्रचलित; नूलूंवै–विद्याओं को; निनैप्पतु एन्–स्मरण करना क्यों; निलूर–स्थायी; कळ्वु इल्–अनिद्य; पूतङ्कळ्–(पाँचों) भूत; इऱप्पिनुम्–मिट जाएँ तो भी; रुति चेल्ला–जो अन्त को प्राप्त नहीं हों; तन् पुकळ् ऒत्त–उसके ही यश के समान; चरम्–उन शरों के; तोलै इला–अक्षय; तूणियुम्–तूणीर को; पूट्टि–बाँध कर। ३५९६

(सगरपुत्र-)खनित सागर के विस्तार को या उसकी महीन वालुकाओं को या विपुला पृथ्वी पर प्रचलित विद्याओं का स्मरण करना क्यों ? स्थायी रहनेवाले पाँचों भूतों का विनाश ही हो क्यों न जाए; पर रावण का यश अक्षुण्ण था और उसी प्रकार उसका तूणीर था जिसके शर अक्षय थे। ऐसे तूणीर को उसने धारण कर लिया। ३५९६

तरुह तेरॆन वन्ददु वैयमुम् वानुम्
उरह तेयमुम् ऒरुङ्गुड नेऱिनुम् मुच्चिच्
चौरुहु पूवनृत चुमैयदु तुरहमिन्ऱ्
ऱॆनिनुम्
निरुदर् कोमह निनैन्दुळिच् चॆल्वदो रिमैप्पिल् 3597

तेर् वरुक–रथ आये; ऎन–आज्ञा देने पर; वैयमुम्–भूलोक; वानुम्–व्योमलोक और; उरक तेयमुम्–उरगलोक; ऒरुङ्कु–एक साथ; उडन् एऱिनुम्–एक साथ सवार हों तो भी; उच्चि चौरुकु पू अनृत–चोटी में खोंसे जानेवाले फूल को जैसे; चुमैयतु–भारवाही; तुरकम् इन्ऱु ऎनिनुम्–घोड़े (जुते) न हों तो भी; निरुतर् को मकन्–राक्षसराज के; निनैन्तुळि–विचार करने पर; ओर् इमैप्पिल्–एक क्षण में; चॆल्वतु–जा सकता था (वह रथ); वन्ततु–आ गया। ३५९७

ऐसा सजकर रावण ने आज्ञा दी कि रथ आये। वह ऐसा रथ था जिसके लिए नाकलोक, भूलोक और नागलोक का सम्मिलित भार भी चूडा-पुष्प जैसा हलका लगे; विना घोड़ों के ही वह रावण की इच्छा के अनुसार पल भर में जा पहुँच सकता था। वह आया। ३५९७

आयि रम्बरि यमुदोडु वन्दवु मरुक्कन्
पाय्व यप्पशुङ् गुदिरैयिन् वळियवुम् बडर्नीर्
वाय् मडुक्कुमा वडवैयिन् वयिऱ्ऱिनुवन् काऱ्ऱिन्
नाय हऱ्कुवन् दुदित्तवुम् बूण्डदु नलत्तिन् 3598

नलत्तिन्–सुन्दरता के साथ; अमुतोटु–अमृत के साथ; वन्तवुम्–जो प्रगट हुए और; अरुक्कन्–सूर्य के; पाय्–चौकड़ी भरनेवाले; वयप्–विजयदायी; पचुम् कुतिरैयिन्–हरे घोड़ों के; वळियवुम्–वंशज; पटर्–फैले रहे; नीर्–समुद्र-जल को; वाय् मटुक्कुम्–अपने मुख से पी लेनेवाले; मा–बड़े; वटवैयिन्–वडवा के अश्व की; वयिऱ्ऱिन्–कोख में; वल्–बलवान; काऱ्ऱिन् नायकऱ्कु–पवनदेव के द्वारा; वन्तु उतित्तवुम्–जो जनमे थे; आयिरम् परि–वे हजार घोड़े; पूण्टतु–जुते थे। ३५९८

उससे हजार घोड़े जुते थे। सूर्य के रथ से जुते रहे, समुद्र अमृत

के साथ जनमे, सरपट दौड़नेवाले और विजयदायी अश्वों के वंशज थे। और वे समुद्रजलपायी वडवा के अश्व के पेट में वायु के वीर्य से पैदा हुए थे। ३५९८

पारिर् चॅल्वदु विशुम्बिडैच् चॅल्वदु परन्द
नीरिर् चॅल्वदु नॅरुप्पिनुम् जॅल्वदु निमिर्न्द
पोरिर् चॅल्वदु पोय्नॅडु मुहट्टिडै विरिञ्जत्
ऊरिर् चॅल्वदॅव् वुलहिनुम् जॅल्वदो रिमैप्पित् 3599

ओर् इमैप्पिन्–पल भर में; पारिल् चॅल्वतु–भूमि पर जानेवाले; विचुम्पिटै चॅल्वतु–आकाश में जानेवाले; परन्त नीरिल्–विस्तृत (सागर-) जल पर; चॅल्वतु–जानेवाले; नॅरुप्पिनुम् चॅल्वतु–आग में जानेवाले; निमिर्न्त–बड़े; पोरिल् चॅल्वतु–युद्ध में जानेवाले; पोय्–जाकर; नॅटु मुकटु इटै–आकाश की लम्बी चोटी में; विरिञ्चन् ऊरिल्–विरंचि के नगर में; चॅल्वतु–जानेवाले; ॲ उलकिनुम्–किसी भी लोक में; चॅल्वतु–जानेवाले। ३५९९

उनमें एक-एक एक पल में भूमि पर, आकाश में, विशाल सागर पर, आग पर और घोर युद्ध में, क्यों ऊँचे विरंचि-लोक में कहीं भी किसी लोक में भी जा सकता था। ३५९९

ॲण्डि शैप्पॅरुङ् गळिर्ट्रिडै मणियॅन्न विशैक्कुम्
कण्डै यायिर कोडियिन् ट्रॊहैयदु कदिरोन्
मण्डि लङ्गळै मेरुविर् कुवित्तॅन्न वयङ्गुम्
अण्डम् विर्कुनन् काशिनङ् गुयिर्ट्रिय दडङ्ग 3600

ॲण् तिचै पॅरुम् कळिरु इटै–बड़े अष्ट दिग्गजों की; मणि ॲन्न–घंटियों के समान; इचैक्कुम्–बजनेवाली; कण्टै–बड़ी घंटियाँ; आयिर कोटियिन् तॊकैयतु–हजार करोड़ की राशि की थीं; कतिरोन् मण्टिलङ्कळै–सूर्यमण्डलों को; मेरुविल् कुवित्तु ॲन्न–मेरु पर जमा किया गया हो ऐसा; वयङ्कुम्–शोभायमान; अटक्क–सारे; अण्टम् विर्कुम्–अण्डों को अपना मूल्य बनानेवाले; नल्–श्रेष्ठ; काचु इनम्–रत्नराशियाँ; कुयिर्ट्रियतु–(जिसमें) जड़ित थीं (वैसा रथ था वह)। ३६००

उसमें हजार करोड़ घंटियाँ बँधी थीं। वे बड़े दिग्गजों की बड़ी घंटियों के समान शब्द करनेवाली थीं। ऐसे रत्नों से सजे थे जो मेरु पर सूर्यमंडलों को एकत्रित किया गया हो ऐसा शोभित थे और उनका मूल्य सारा अंड भी भर नहीं सकता था। ३६००

मुन्नैवर् वान्वर् मुदलिन रण्डत्तु मुदल्वर्
ॲन्नैव रोन्दवु मिहलिनि लिट्टवु मियम्बा
वित्तैयिन् वॅय्यन पडैक्कलम् बेलैयॅन् ट्रिशैक्कुञ्
... 3601

मुत्तॆवर्–मुनि; वानवर्–देव; मुतलितर्–आदि; अण्टत्तु मुतल्वर्–अण्ड के नायक त्रिदेव; ॲंतॆवर्–सभी के; ईन्ततवुम्–दिये गये; इकलिलिल्–युद्ध में; इट्टवुम्–(हारकर) छोड़े गये; वित्तॆयित्–कर्म में; इयम्पा–अकथनीय; वॆय्यत–कठोर; पटॆक्कलम्–हथियारों को; वेलै अंतुरु इचैक्कुम्–सागर-कथित; चुत्तॆयिल्–जलाशय में; नुण् मणल् तॊकॆयत–महीन बालुकाओं-सी राशियों वाले (असंख्यक); तॊक्कु चुमन्ततु–एक साथ ढोता रहा (वह रथ)। ३६०१

उस पर अपार अस्त्र-शस्त्र लदे थे। मुनियों, देवों और आदिदेव त्रिदेवों द्वारा वर के रूप में दिये गये; युद्ध में शत्रुओं से छीने गये, सब मिलकर अकथनीय रीति से संतापक वे अस्त्र समुद्र की बालुकाओं से भी अधिक संख्या में थे। ३६०१

कण्ण नेमियुङ् गण्णुदल् कणिच्चियुङ् गमलत्
तण्णल् कुण्डिहैक् कलशमु मऴियिनु मऴियात्
तिण्मै शात्ऱदु तेवरु मुणर्वरुञ् जॆय्है
उण्मै यामॆंनप् पॆरियदु वॆंऩ्ऱियि नुऱैयुळ् 3602

वॆऩ्ऱियित् उऱैयुळ्–विजय का आगार (वह); कण्णन् नेमियुम्–विष्णु का चक्र; कण्णुतल् कणिच्चियुम्–भालनेत्र शिवजी का परशु; कमलत्तु अण्णल्–कमलासन देव का; कुण्टिकै कलचमुम्–कमंडल-जैसा जलपात्र; अऴियिनुम्–नाश को प्राप्त हों तो भी; अऴिया–(यह) न नष्ट हो ऐसा; तिण्मै चात्ऱतु–सुदृढ़ है; तेवरुम् उणर्वु अरु–देव भी जान न सकें; चॆय्कै–ऐसी कारीगरी; उण्मै आम् ॲंन–है, ऐसा कहने योग्य; पॆरियतु–अतिश्रेष्ठ है। ३६०२

वह विजय का आगर था। विष्णु का चक्र, त्रिनेत्र का परशु और कमलासन का कुण्डल आदि का नाश भले ही हो जाय, किन्तु यह अबिनश्वर था और सुदृढ़ था। उसकी कारीगरी ऐसी थी कि देवता लोग भी जान नहीं पाएँ। ३६०२

अन्नॆय तेरिनै यरुच्चन वरन्मुऱै याऱ्ऱि
इन्नॆय रॆन्बदोर् कणक्किला मऱैयव रॆवर्क्कुम्
वित्तॆयि नल्लिदि मुदलिय वळप्परुम् वॆरुक्कै
नित्तॆयि नीण्डदोर् पॆरुङ्गॊडै यरुङ्गड नेर्न्दान् 3603

अन्नॆय तेरिनै–उस रथ को; वरन्मुऱै–क्रमागत रीति से; अरुच्चनै आऱ्ऱि–अर्चना (पूजा) करके; इन्नॆयर्–'इतने'; ॲन्पतु ओर् कणक्किला–ऐसी कोई संख्या जिसकी नहीं; मऱैयवर् ॲवर्क्कुम्–ब्राह्मण रहे सभी को; वित्तॆयिन्–योग्य अनुष्ठान के साथ; नल् निति–श्रेष्ठ पदार्थ; मुतलिय–आदि; अळप्परुम् वॆरुक्कै–अपार संपत्तियाँ; नित्तॆयित् नीण्टतु–कल्पना से भी अधिक; ओर् पॆरु कॊटै–बड़े दान का; अरु कटन्–उत्तम कर्तव्य; नेर्न्तान्–पूरा किया। ३६०३

रावण ने उस रथ की यथावत पूजा की। बेशुमार सभी लोगों

को विना कोई भेद किये बहुमूल्य पदार्थों का कल्पनातीत दानकर्म अदा किया। ३६०३

मन्ऱ्ऱ लङ्गुळऱ् चतहितन् मलर्क्कैयाल् वयिऱु
कॊन्ऱ्ऱ लन्दलैक् कॊडुनॆडुन् दुयरिडैक् कुळित्तल्
अन्ऱि यॆन्ऱिडिन् मयन्मह ळत्तॊळि लुरुदल्
इन्ऱि रण्डिनॊन् ऱाक्कुवन् ऱलैप्पडि नॆन्ऱ्ऱान् 3604

मन्ऱ्ऱल् अम् कुळल्–सुगंधित व सुन्दर-केशिनी; चतकि–जानकी का; तन् मलर् कैयाल्–अपने कमलहस्त से; वयिऱु कॊन्ऱ्ऱ–पेट को कष्ट देकर; अलम्–दुःख को; तलै कॊडु–सिर पर लेकर; नॆडु तुयरिडै–दीर्घ दुःख में; कुळित्तल्–मग्न रहना; इतु अन्ऱु ॲन्ऱिडिन्–यह नहीं होता हो तो; मयन् मकळ्–मयसुता मंदोदरी का; अ तॊळिल् उऱुतल्–वह काम करना; इन्ऱु तलैप्पडिन्–आज युद्ध में लग जाऊँ तो; इरण्टिल् ऒन्ऱु–इन दो में एक; आक्कुवन्–करा दूंगा; ऎन्ऱान्–कहा। ३६०४

तब उसने यह सौगंद खायी। आज मैं युद्ध करने जाता हूँ। तो सुगंधित सुकेशिनी जानकी अपना पेट पीटती हुई, दुःख में आमस्तक डूबेगी या मयसुता मंदोदरी उसी स्थिति को प्राप्त हो जायगी। इन दो में एक करा दूंगा। यह निश्चित है। ३६०४

एऱि नान्ऱॊळु दिन्दिरन् मुदलिय विमैयोर्
तेऱि नार्हळुन् दियङ्गिनार् मयङ्गिनार् तिहैत्तार्
वेऱु ताज्जॆयुम् विनैयिलै मॆय्यिनैम् पुलनुम्
आऱि नार्कळु मज्जिना रुलहॆला मनुङ्ग 3605

तॊळुतु–रथ को नमस्कार करके; एऱिनान्–सवार हुआ; तेऱिनार्कळुम्–जो डर से छूट गये थे वे; इन्तिरन् मुतलिय–इन्द्र आदि; इमैयोर्–देव भी; तियङ्किनार्–निर्बल हुए; मयङ्किनार्–सुधिहीन हुए; तिकैत्तार्–भ्रान्त हुए; उलकॆलाम्–सभी लोकों के सारे जीव; अनुङ्क–दुःखी हुए; मॆय्यिन्–शरीर की; ऐम् पुलनुम्–पंचेंद्रिय को; आऱिनार्कळुम्–जिन्होंने शान्त किया था वे (ऋषि) भी; अञ्चिनार्कळ्–डर गये; ताम्–उन्हें स्वयं; चॆय्युम् विनै–करने का काम; वेऱु इलै–और कुछ नहीं था। ३६०५

यह प्रतिज्ञा करके रावण रथ पर सवार हुआ। तो देव, जो पहले थोड़ा आश्वस्त हुए थे, अब फिर से चिंतित हुए, निर्बल हुए, क्षुब्ध हुए और भ्रांत हुए। सारे लोक दुःखी हुए; पंचेंद्रिय-निग्रही ऋषि, मुनि आदि भी डर गये। उनके पास कर्तव्य और कोई कार्य नहीं रहा। ३६०५

पलह ळन्दलै मौलियो डिलङ्गलिऱ् पः(ह्)ऱॊळ्
अलह ळन्वऱि यानॆडुम् वडॆहळो डलङ्ग
विलह ळन्वरु कडऱ्ऱरै विशुम्बोडु वियप्प
उलह ळन्दवन् वळरन्दवन् ऱामॆन वुयर्न्दान् 3606

पल कळम्–अनेक कण्ठों पर; तलै–सिर; मौलियोटु–किरीटों के साथ; इलङ्कलिन्–प्रकाशमान रहे और; पल् तोळ्–अनेक हाथ; अलकु अळन्तु अरिया–जिनका माप मापना कठिन है उन; नॅटु–लम्बे; पटैक्कळोटु–हथियारों के साथ; अलङ्क–हिलते रहे; विलकु–अलग रहे; अळम्–लोनारों को (नमक के खेतों को); तव–अपने पास रहनेवाले; कटल्–समुद्र से; चूळ्न्त–वलयित; तरै–भूमि के वासी; विचुम्पोटु–आकाश (वासियों) के साथ; वियप्प–आश्चर्य करते; उलकु अळन्तवन्–लोकमापक (त्रिविक्रम); वळर्न्तनन् आम् ॲन्न–प्रवृद्ध हुआ जैसे; उयर्न्तान्–(रथ पर) ऊँचा हुआ (दिखा)। ३६०६

रावण के कंधों के ऊपर के दसों सिर किरीटों के साथ शोभे। बीसों हाथ अमाप हथियार लिये हिल रहे थे। अपने तीर पर लोनारों के साथ रहनेवाले समुद्र से आवृत भूलोक के वासी और आकाशवासी विस्मित हो रहे थे। ऐसी स्थिति में रावण लोकमापक श्रीत्रिविक्रमदेव के समान रथ पर ऊँचा प्रगट हुआ। ३६०६

विशुम्बु विण्डिरु कूरुरक् कऱ्कुलम् वॅडिप्पप्
पशुम्बुण् विण्डॅन्नप् पुविपडप् पहलवन् पशुम्बोन्
तशुम्बि निन्ऱिडैन् दिरिन्दिड मदितहै यमिळ्दिन्
अशुम्बु शिन्दिनीन् दुलैवुऱल् तोळ्पुडैत् तार्त्तान् 3607

विचुम्पु–आकाश; विण्टु–फटा; इरु कूरु उऱ–और उसके दो भाग हो गये; कल् कुलम्–पर्वतसमूह; वॅटिप्प–टूटे; पुवि–भूमि; पचुम् पुण्–ताजा व्रण; विण्टु ॲन्न–खुला जैसे; पट–हो गयी; पकलवन्–दिनकर; पचुम् पोन् तचुम्पिन् निन्ऱु–चोखे स्वर्ण के घड़े से (रथ से); इटैन्तु इरिन्तिट–श्लथ हो इधर-उधर भागा; मति–चाँद; तकै–स्वाभाविक; अमिळ्तिन् अचुम्पु–अमृत की बूँदें; चिन्ति–निकालकर; नॊन्तु–दुःखी हो; उलैवु उऱ–क्षुब्ध हुआ, ऐसा बनाते हुए; तोळ् पुटैत्तु–अपने कंधे ठोंककर; आर्त्तान्–घोष किया (रावण ने)। ३६०७

उसने कंधे ठोंकते हुए उच्च नाद किया तो मानो आकाश फटकर दो खण्ड हुआ। पर्वतकुल टूटे। भूमि का व्रण खुल गया। दिनकर अपने चोखे स्वर्ण के घड़े से (रथ से) निकलकर अस्त-व्यस्त भाग खड़ा हुआ। और चाँद अपने स्वाभाविक अमृत की बूँदें निकालते हुए शिथिल और दुःखी हुआ। ३६०७

नणित्तु वॅञ्जम मॅन्बदो रुवहैयि नलत्ताल्
तिणित्त डङ्गिरि वॅडित्तुहच् चिलैयैना णॅरिन्दान्
मणिक्कॊ डुङ्गुळै वानवर् तानवर् महळिर्
तुणुक्क मॅय्दिनर् मङ्गल नाण्गळैत् तॊट्टार् 3608

वॅम् चमम्–भयंकर युद्ध; नणित्तु–पास है; ॲन्पतु ओर्–ऐसे एक; उवकैयिन्–आनन्द के; नलत्ताल्–भले से; तिणि तट–कठोर और विशाल; किरि वॅटित्तु–गिरि फट; उक–गिर जाए ऐसा; चिलैयै–धनु के; नाण् ॲऱिन्तान्–डोरा टंकोरा।

मणि–रत्नमय; कोट्–गोल; कुळै–कुंडलों से अलंकृत; वानवर् तानवर् मकळिर्–देव-दानव-दयिताएँ; तुणुक्कम् ॲय्तिनर्–वहुल उठीं; मङ्कल नाण्कळै–और मंगलसूत्रों को; तोट्टार्–स्पर्श (करके मंगल की प्रार्थना) करने लगीं। ३६०८

रावण ने पास आये युद्ध के विचार से फूलकर अपने धनु का डोरा टंकोरा तो कठोर और बड़ी-बड़ी गिरियाँ मानो टूटकर चूर हो गयीं। रत्न-वक्र-कुंडल-धारिणी देव-दानव-दयिताओं ने अपने मंगलसूत्र स्पर्श किए और प्रार्थना की कि ये अहिवात न टूटें। ३६०८

शुरिक्कु मण्डलन् दूङ्गुनीर्च् चुरिप्पुर वीङ्ग
इरैक्कुम् बल्लुयि रियावैयु नडुक्कमुर् ऱिरियप्
परित्ति लन्पुवि पडर्शुडर् मणित्तलै पलवुम्
विरित्तॅ ळुन्दन नन्नदन्मी दॅन्नबदोर् मॅय्यान् 3609

तूङ्कु नीर्–हिलनेवाला (लहरानेवाला) समुद्रजल; चुरिप्पु उऱ–घूम जाए, ऐसा; चुरिक्कुम् मण्टलम्–उसको आवृत कर रहनेवाला भूमंडल; वीङ्क–अधिक हो जाए; इरैक्कुम्–शब्द करनेवाले; पल् उयिर् यावैयुम्–अनेक जीव सभी; नटुक्कमुऱ्ऱु–डरकर; इरिय–भाग जायँ ऐसा; अनन्तन्–आदिशेषनाग; पुवि परित्तिलन्–भू का वहन न करके; पटर्–विशाल; चुटर्–उज्ज्वल; मणि तलै–रत्नसहित सिर; पलवुम्–अनेक; विरित्तु–फैलाकर; मीतु–ऊपर; ॲळुन्तनन्–उठा हो; ॲन्पतु ओर् मॅय्यान्–वैसा दिखनेवाले शरीर का (रावण)। ३६०९

रावण के रथ के चलने से लहरायमान समुद्र का विस्तार कम हो गया। भूमि बढ़ी। सभी जीव डर से शब्द करते हुए भागे। आदिशेष भू का भार वहन न करके अपने फनों को फैलाकर ऊपर आ खड़ा हो ऐसा दिख रहा था रावण। ३६०९

तोन्ऱि नान्वन्दु शुरर्हळो डशुररे तॉडङ्गि
मून्ऱु नाट्टिनु मुळ्ळव रियावरु मुडिय
ऊन्ऱि नान्शॅरु वॅन्ऱुयि रुमिळ्दर वुदिरङ्
गान्ऱु नाट्टङ्गळ् वडवनर् किरुमडि कनल 3610

चुरर्कळोटु–देवों के साथ; अचुररे तॉटक्कि–असुर आदि; मून्ऱु नाट्टिनुम् उळ्ळवर्–त्रिलोकवासी; यावरुम् मुटिय–सभी तक; चॅरु ऊन्ऱिनान् ॲन्ऱु–युद्ध में दृढ़ रूप से लग गया, कहकर; उयिर् उमिळ्तर–प्राणों के बाहर निकलते; उतिरम् कान्ऱु–रक्त वमन करके; नाट्टङ्कळ्–आँखों के; वट अनलुक्कु–बड़वाग्नि को; इरु मटि–दुगुनी; कनल–आग निकालती; वन्तु तोन्ऱिनान्–आ प्रगट हुआ रावण। ३६१०

रावण निश्चित रूप से रण में लग गया —यह जानकर सभी देवों, दानवों और सभी त्रिलोकवासियों के प्राण मानो निकलने को हुए

और रक्त बह आया। रावण अपनी आँखों से बड़वा की तिगुनी आग उगलता हुआ-सा दिखायी दिया। ३६१०

उलहिऱ् ऱोत्ऱिय मरुक्कमु मिमैप्पिल रुलैवुम्
मलैयुम् वानमुम् वैयमु मरुहुरु मरुक्कुम्
अलैहॊळ् वेलैह ळञ्जित्त शलिक्कित्ऱ वयर्वुम्
तलैव नेमुदर् ऱण्डलि लोरॆलाङ् गण्डार् 3611

उलकिल्–संसार में; तोऩ्ऱिय–प्रकट; मरुक्कमुम्–अशांति और; इमैप्पिलर् उलैवुम्–अपलक (देवों) की बुरी स्थिति; मलैयुम्–पर्वत; वानमुम्–आकाश और; वैयमुम्–भूमि; मरुकुरुम् मरुक्कुम्–इनकी जो बुरी दशा हुई वह दुर्दशा; अलै कॊळ् वेलैकळ्–तरंग-भरे सागर; अञ्चित्त–डरें और; चलिक्कित्ऱ अयर्वुम्––और उनकी विचलित थकान; तलैवत्ते मुतल्–नायक सुग्रीव से लेकर; तण्टल् इलोर् ऎलाम्–विषमता-रहित सभी तक ने; कण्टतर्–देखी। ३६११

इससे संसार में एक खलबली मच गयी। देवों में बेचैनी फैली। पर्वत, आकाश और पृथ्वी काँप गयी। तरंगाकीर्ण सागर डरे, विचलित हुए और निर्बल हुए। यह सब वानरपति सुग्रीव से लेकर सारे वानर वीरों ने समान रूप से देखा। ३६११

पीऱिऱ्ऱा मण्ड मॆन्बदो राहुलम् बिऱक्क
वेऱिट् टोर्पॆरुङ् गम्बलै पम्बिमेल् वीङ्ग
माऱिप् पल्पॊरुळ् माय्वुरुङ् गालत्तुण् मरुक्कम्
एऱिऱ् ऱुऱ्ऱुळ दॆन्नॆहॊ लॆन्न वॆळुन्दार् 3612

अण्टम् पीऱिऱ्ऱु आम्–अण्डगोल फट गया हो; ऎन्पतु ओर्–ऐसा एक; आकुलम् पिऱक्क–अस्त-व्यस्तता पैदा हो गयी तो; वेऱिट्टु–विलक्षण; ओर्–एक; पॆरुम् कम्पलै–बड़ा शोर; पम्पि मेल् वीङ्क–पैदा हुआ, ऊपर उठा और स्फीत हुआ; पल् पॊरुळ्–विविध पदार्थ; माऱि–विकार पाकर; माय्वुरुम् कालत्तुळ्–जब मिट जाते हैं तब; उऱ्ऱुळतु–जो होता है वह; मरुक्कम्–अव्यवस्था; एऱिऱ्ऱु–उठ बढ़ी; ऎन्ने कॊलो–क्या कारण है; ऎन्न–पूछते हुए; ऎऴुन्तार्–(वे वानर) उठे। ३६१२

"अण्ड फट गया जैसे एक आकुलता उंठी और बड़ा हलचल मच गया। वह विलक्षण शोर पैदा हुआ, उठा और स्फीत हुआ। प्रपञ्च के विविध पदार्थों के नाश होते समय जो खलबली मचेगी, ऐसी अव्यवस्था उठी है। यह क्यों?" ऐसा कहते हुए वे सब उठे। ३६१२

कडलुह ळियावैयुङ् गन्मलैक् कुलङ्गळुङ् गारुन्
दिडल हॊणमेरुवम् [illegible]

अडल्हॊळ् शेनैयु मरक्कनुन् देरुम्वन् दार्क्कुङ्
गडल्हॊळ् पेरॊलिक् कम्बले यॆन्बदुङ् गण्डार् 3613

कटल्कळ् यावैयुम्–सागर सभी; कल् मलै कुलङ्कळुम्–और प्रस्तरपर्वतकुल; कारुम्–मेघ; तिटल् कॊळ् मेरुवम्–ऊबड़-खाबड़ मेरु और; विचुम्पिटै चॆल्वत चिवण–आकाश में चलनेवाले जैसे; अटल् कॊळ् चेनैयुम्–बलसंयुक्त सेना और; अरक्कनुम्–रावण; तेरुम्–और उसका रथ; वन्तु आर्क्कुम्–जो आकर मचाते हैं, वह शोर; कटल् कॊळ्–समुद्र में उत्पन्न; पेर् ऑलि कम्पलै–उच्च गर्जन का शोर (जैसा नाद); ऍन्पतुम्–है यह; कण्टार्–देखा (वानर वीरों ने जाना)। ३६१३

सारे समुद्र, प्रस्तर-पर्वत-कुल, मेघ, ऊबड़-खाबड़ मेरु, आकाशगामी-सी सेनाएँ, रावण और उसका रथ —इन सबमें सुग्रीव को तुमुलनादी समुद्र का भान हुआ (उन्होंने वैसा दृश्य देखा और नाद सुना)। ३६१३

एळुन्दु वन्दन निरावण निराक्कदत् तानैक्
कॊळुन्दु मुन्दुवन् दुऱ्ऱदु कॊऱ्ऱव कुलुङ्गुऱ्
ऱळुन्दु हिन्ऱदु नम्बल समरुरु मञ्जि
विळुन्दु शिन्दिन रॆन्ऱनन् वीडणन् विरैवान् 3614

वीटणन्–विभीषण; कॊऱ्ऱव–विजयी राजा; इरावणन् ऍळुन्तु वन्तनन्–रावण उठ आया है; इराक्कतत् तानै कॊळुन्तु–राक्षस-सेना का किसलय (अग्रभाग); मुन्तु वन्तु उऱ्ऱतु–पहले आ गया है; नम् पलम्–हमारी सेना; कुलुङ्कुऱ्ऱु–विकंपित हो गयी; अळुन्तुकिन्ऱतु–हतोत्साह होती है; अमररुम्–देव भी; अञ्चि विळुन्तु–डरकर गिरकर; चिन्तिनर्–बिखर गये; विरैवान्–तेजी से जाकर; ऍन्ऱनन्–बोला। ३६१४

तब विभीषण ने झट आकर श्रीराम से निवेदन किया कि विजयी राजा! रावण उठ आया है। राक्षस-सेना का अग्रभाग पहले आ गया है। हमारी सेना कंपित हो रही है। निर्बल हो रही है। देव भी डर के मारे इधर-उधर भागते हैं। ३६१४

35. इरामपिरान् तेरेरु पडलम् (श्रीराम-रथारोहण पटल)

तॊळुङ्गैयॊडु वाय्कुळऱि मॆय्मुऱै तुळङ्ग
विळुन्दुकवि शेनैयिडु पूशल्मिह विण्णोर्
अळुन्दवर वत्तमळि यञ्जलॆन वननाळ्
ऍळुन्दपडि येकडि दॆळुन्दन निरामन् 3615

कवि चेनै–कपि-सेनाएँ; तॊळुम् कैयॊटु–अंजलिबद्ध हाथों के साथ; वाय् कुळऱि–वाणी के लड़खड़ाते; मॆय्–शरीरों के; मुऱै तुळङ्क–बारी-बारी से काँपते; विळुन्त–भूमि पर गिरकर; इटु पूचल्–जो होहल्ला मचाते हैं उसके; मिक–बढ़ते;

रामत्–श्रीराम; अन्नाळ्–उस दिन; विण्णोर् अऴुन्त–देवों के शिथिल पड़ते; अंचल् ऍन्त–मत डरो कहते हुए; अरवत्तु अमळि–शेष-शय्या से; ऍऴुन्त पटियॆ–जैसे उठे ठीक उसी प्रकार; कटितु ऍऴुन्ततन्–झट उठे। ३६१५

कपिसेना अंजलिबद्धहस्त हो, जीभ के लड़खड़ाते, शरीरों के थर्राते नीचे गिरी और चीखने-चिल्लाने लगी। वह तुमुलनाद बढ़ उठा तो श्रीराम झट उस दिन जैसे उठे वैसे उठे जिस दिन वे दुःखी देवों को 'मत डरो का अभयदान' करते हुए शेष-शय्या पर से उठे थे। ३६१५

कडक्कळि ऱॆन्नत्तहैय कण्णनॊरु कालन्
विडक्कयि ऱॆन्नप्पिऱऴुम् वाळ्वलन् विशित्तान्
मडक्कॊडि तुयर्क्कुमॆन्ड वानिनुरै वोर्दम्
इटर्क्कड लिन्रुक्कुमुडि विन्ऱॆन्न विशॆत्तान् 3616

कट कळिऱु ऍन्न तकैय–मदमत्तगज-मान्य; कण्णन्–सर्वनेत्र श्रीविष्णु; ऒरु–अप्रतिम; कालन्–यम का; विट कयिऱु ऍन्न–विषपाश के समान; पिऱऴुम्–शोभायमान; वाळ्–तलवार को; वलन्–दायीं ओर; विचित्तान्–बाँधकर; मटक्कॊटि–क्रीड़ायुक्त लतासमाना सीताजी के; तुयर्क्कुम्–दुःख का और; मॆंटु–लम्बे; वानिन् उऱैवोर्–आकाश के वासी; तम्–(देवों) के; इटर् कटलिन्क्कुम्–दुःख-सागर का; इन्ऱु मुटिवु–आज अंत है; ऍन्न–ऐसा; इचैत्तान्–बोले। ३६१६

मत्तगज-सम सर्वनेत्र श्रीराम ने अद्वितीय यम के विषपाश-सी शोभायमान तलवार को कमर में दायीं ओर बाँध लिया। कहा कि आज का दिन बाला लता सीताजी के दुःख का और आकाशवासी देवों के दुःख-सागर का अन्तिम दिन होगा। ३६१६

तन्नह वशत्तुलहु तङ्गवॊरु तन्निऱ्
पिन्नह वशत्तपॊरु ळिल्लैपॆरि योनै
मन्नह वशत्तुऱ वरिन्ददॆनिन् मादो
इन्नह वशत्तैयुमी रीशनॆन लामाल् 3617

उलकु–सारे लोकों के; तन्न–उनके अपने में; कवचत्तु–कवच (रक्षण) में; तङ्क–रहते; ऒरु तन्निल्–अप्रतिम उनको छोड़; पिन्नक वचत्त–भिन्न पोषी (नियामक); पॊरुळ् इल्लै–परमतत्त्व नहीं; पॆरियोनै–त्रिविक्रम को; मन्–दृढ़ रूप से; अक वचत्तु उऱ–अपने पूर्ण वश में रखकर; वरिन्ततु–बाँध लिया; ऍनिल्–तो; इन्न कवचत्तैयुम्–इस तरह के कवच को भी; ओर् ईचन्–एक ईश्वर; ऍनल् आम्–कह सकते हैं। ३६१७

सारे लोकों के वे कवच हैं यानी पूर्णरक्षक हैं। उनके अलावा दूसरे परमतत्त्व नहीं हैं। ऐसे उनको कवच ने अपने अन्दर बाँध लिया तो उसे भी ईश्वर कह सकते हैं। (श्रीराम ने कवच धारण कर लिया)। ३६१७

पुट्टिलॊडु कोदैहळ् पुळुङ्गियॆरि कूऱ्ऱिऩ्
अट्टिलॆऩ यायमल रङ्गैयि ऩडङ्गक्
कट्टियुल हिऱ्पॊरु ळॆऩक्करैयिल् वाळि
वट्टिल्पुऱल् वॆत्तयल् वयङ्गुऱ वरिन्दाऩ् 3618

कूऱ्ऱिऩ्–यम के; पुळुङ्कि ऍरि–पक्की रीति से जलनेवाली; अट्टिल् ऍऩल् आय–अँगीठी कहने योग्य; मलर् अङ्कैयिल्–कमल-हस्त में; पुट्टिलॊटु–अंगुलित्राणों और; कोतैकळ्–हस्तत्राण; अटङ्क–खूब; कट्टि–पहन लेकर; उलकिल् पॊरुळ् ऍऩ–लोक के सारे पदार्थ समा जाएँ ऐसा; करैयिल्–अक्षय; वाळि–बाणों का; वट्टिल्–तूणीर; पुऱम् अयल्–पीठ पर; वयङ्कुऱ वॆत्तु–ठीक तरह से रखकर; वरिन्ताऩ्–बाँध लिया (श्रीराम ने)। ३६१८

श्रीराम ने यम को जलती अँगीठी-सम अपने हस्तों में अंगुलित्राण और हस्तत्राण पहने। अपनी पीठ से लगाकर अपना अक्षय बाणों का इतना भरा तूणीर बाँध लिया कि जिसमें के संसार सारे विविध पदार्थ समा सकें। ३६१८

इत्तहैय ऩाहियिहल् शॆय्दिवऩै यित्ते
कॊत्तुमुडि कॊय्वऩॆऩ निऩ्ऱॆदिर् कुऱित्तु
तत्तमुऱु वऱ्चॆय ऱविर्न्ददॆऩ वाऩिल्
शित्तर्हण् मुऩित्तलैवर् शिन्दैमहिऴ् वुऱ्ऱार् 3619

चित्तर्कळ्म्–सिद्ध; मुऩि तलैवर्–और मुनि श्रेष्ठ; इ तकैयऩ् आकि–इस भाँति बने; इकल् चॆय्तु–युद्ध करके; इऩ्ऩे–अभी; इवऩै–इस (रावण) के; कॊत्तु मुटि–गुच्छे के सिरों को; कॊय्वऩ्–तोड़ लेंगे; ऍऩ–ऐसा और; तत्तम्–अपना-अपना; उऱुवल् चॆयल्–दुखने का काम; तविर्न्ततु–छूट गया; ऍऩ–ऐसा; वाऩिल् ऍतिर् निऩ्ऱु–आकाश में समक्ष खड़े होकर; कुऱित्तु–(अपना मंतव्य) प्रगट करके; चिन्तै–मन में; मकिऴ्वुऱ्ऱार्–आनंद से भर गये। ३६१९

सिद्ध और मुनिश्रेष्ठों ने यह साज देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि इस भाँति तो अवश्य वे रावण के शीषगुच्छे को काट गिरा देंगे। हमारा दुःख का काम समाप्त हो गया। आकाश में वे आमने-सामने खड़े होकर यह आनंदभाव प्रगट करते हुए उदित हुए। ३६१९

मूण्डशॆरु वित्ऱळवित् मुऱ्ऱुमिऩि वॆऱ्ऱि
आण्डहैय दुण्मैयिऩि यच्चमहल् वुऱ्ऱीर्
पूण्डमणि याऴियय मानिमिर् पॊलन्देर्
ईण्डविडु वीरमर रीरॆऩ्ऱय त्तिशैत्ताऩ् 3620

अयऩ्–अज; अमररीर्–हे अमरगण; मूण्ट चॆरु–छिड़ा युद्ध; इऩ्ऱु अळविऩ्–आज तक में; मुऱ्ऱुम्–पूरा हो जायगा; इऩि–आगे; वॆऱ्ऱि–विजय; उण्मैयिऩ्–

ए; मणि पूण्ट-घंटियों को पहने हुए; वयम् मा-बलवान अश्वों से जुते; आऴि-
हिये; निमिर्-जिसके उत्तम हैं; पॊलम् तेर्-उस सुन्दर रथ को; ईण्ट-जल्दी;
विडुवीर्-भिजवाओ; ऍन्ऱु इचैत्तान्-ऐसा बोले। ३६२०

तब (चतुर्मुख) अजदेव ने देवों से कहा कि हे देवो! यह युद्ध जो छिड़ा है आज एक दिन में समाप्त हो जायगा— और विजय पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम की होगी। भय छोड़ दो। और घंटियों से अलंकृत अश्वों के जुते और श्रेष्ठ पहियोंदार स्वर्णरथ को शीघ्र श्रीराम के पास भिजवाओ। ३६२०

तेवरदु हेट्टिदु शॆयऱ्‌कुरिय दॆन्ड्रार्
एवल्पुरि मादलियै डिन्दिर नॆशैत्तान्
मूवुलहु मङ्गोरु कणत्तिऩ्मिशै मुऱ्‌ऱिक्
कावल्पुरि तेर्कडिदु नीकॊणर्दि यॆन्ऱे 3621

अदु-उसे; तेवर् केट्टु-देवों ने सुनकर; इतु चॆयऱ्‌कु अरियतु-यह करणीय है;
ऍन्ऱार्-कहा; इन्तिरन्-देवेंद्र ने; एवल् पुरि-आज्ञाकारी; मातलियोटु-मातलि
से; ओरु कणत्तिन् मिचै-एक क्षण में; मूवुलकुम् मुऱ्‌ऱि-तीनों लोकों में घूमकर;
अङ्कु-वहाँ; कावल् पुरि-पहरा देते रहे; तेर्-रथ को; नी कटितु कॊणर्ति-तुम
जल्दी लाओ; ऍन्ऱु इचैत्तान्-ऐसा कहा। ३६२१

वह वचन सुनकर देवों ने कहा कि यह करणीय है! देवेंद्र ने अपने सारथी मातलि से कहा कि तीनों लोकों में घूमकर पहरा देनेवाले रथ को जल्दी लाओ। ३६२१

मादलि कॊणर्न्दनन् महोददि वळावुम्
पूदल मॆऴुन्दुपडर् तन्मैय पॊलन्देर्
शीदमदि मण्डलमु मेन्नैयुळ वुन्दत्
पादमॆन निन्ऱदु पडिन्ददु विशुम्बिल् 3622

महोतति वळावुम् पूतलम्-महोदधि-वलयित भूतल; ऍऴुन्तु-उठकर; पटर्
तन्मैय-उसमें फैल जाए इस रीति के; पॊलम् तेर्-स्वर्णरथ को; मातलि
कॊणर्न्तनन्-मातलि लाया; चीतम् मति मण्टलमुम्-शीतल चन्द्रमण्डल; एनै
उळवुम्-और अन्य जो हैं वे; तन् पातम् ऍन-उसके चरण बनें ऐसा; निन्ऱतु-खड़ा
रहा (वह रथ); विचुम्पिल् पटिन्ततु-आकाश को छूता रहा। ३६२२

बड़े समुद्र से घिरी भूमि से उठकर सर्वत्र चल सकनेवाले स्वर्णरथ को मातलि ले आया। शीतल चंद्रमंडल और अन्य व्योम के मंडल उनके पैरों के तल में रहें, ऐसा वह आकाश में स्थित था। ३६२२

कुलक्किरिह ळॆऴिन्वलि कॊण्डयर् कॊडिञ्जुम्

कलक्कर वहुत्तदु कदत्तरव मॆट्टुम्
वलक्कयिरु कट्टियदु मुट्टियदु वात्तै 3623

कुल किरिकळ् एळिऩ्–सातों कुलगिरियों का; वलि कॊण्डु–बल लेकर; उयर्–ऊँचा जो रहा; कॊटिञ्चुम्–वह 'कॊडिञ्जु' (नामक कमल के आकार का हाथ रखने का अंग) और; उयर् पारिऩ्–उन्नत भूमि का; वलि अलक्कुम्–बल मिटानेवाले; आळियिऩिऩ्–चक्रों की; अच्चुम्–धुरी और; कलक्कु अऱ–न हिलें ऐसा; वकुत्ततु–बनाये गये थे ऐसा रथ था; कतत्तु अरवम् ऍट्टुम्–क्रोधी स्वभाव के आठों सर्पों को; वल कयिऱु–कठोर रस्सी के रूप में; कट्टियतु–बांधा गया था, ऐसा रथ; वात्तै–आकाश से; मुट्टियतु–टकरानेवाला। ३६२३

उसके 'कॉडिञ्जु' नामक (विश्रांति के लिए या हिलकर गिरने से बचाने के लिए जिस पर रथी अपना हाथ रख लेते हैं उस कली-से) भाग में सातों कुलगिरियों का-सा बल था। उन्नत भूमि के बल को तोड़ने की शक्ति रखते थे उसके पहिये और धुरी सुस्थिर बनी थी; उसकी रस्सियाँ क्रोधी अष्ट महानाग थीं। वह आकाश से टकराता था। (सात कुलगिरियाँ : कैलास, हिमालय, मन्दर, विंध्य, निषध, हेमकूट और नील। अष्ट महानाग : वासुकी, अनंत, दक्ष, शंखपाल, गुलिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक)। ३६२३

आण्डिऩॊडु नाळिरुदु तिङ्गळिव यॆऩ्ऱु
मीण्डतवु मेलतवुम् विट्टुविरि तट्टिऩ्
पूण्डुळदु तारहै मणिप्पॊरुविल् कोवै
नीण्डपुऩै तारिऩदु निऩ्ऱुळदु कुऩ्ऱिऩ् 3624

आण्टिऩॊटु–वर्षों और; नाळ्–दिन; इरुतु–ऋतुएँ; तिङ्कळ्–मास; इवै–ये कालांश; मीण्टतवुम्–भूत; मेलतवुम्–भविष्य; विट्टु–इनको; विरि–विस्तार के; तट्टिऩ्–पीठ में; पूण्टुळतु–उसके अंगों के रूप में रखकर निर्मित था वह रथ; तारकै–नक्षत्रों को; पॊरुवु इल्–अनुपमेय; मणि कोवै–रत्नहारों की तरह; पुऩै–रखनेवाले; नीण्ट तारिऩतु–लम्बे दामों से अलंकृत था; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वत के समान; निऩ्ऱुळतु–आ खड़ा हुआ। ३६२४

उसके पीठ के वर्ष, दिन, मास, भूत भविष्य आदि अंग थे। नक्षत्रों रूपी रत्नों के बने दाम उसको अलंकृत कर रहे थे। वह पर्वत के समान इन्द्र के सामने आ खड़ा हुआ। ३६२४

मादिर मऩैत्तैयु मणिच्चुवर्ह ळाहक्
कोदऱ वहुत्तदु मळैक्कुलवै यॆल्लाम्
मोवुरु पदाहैयॆऩ वीशियवु मॆय्म्मैप्
पूदमवै यॆऩ्दिऩ्वलि यिऱ्पॊलिव दम्मा 3625

मातिरम् अऩैत्तैयुम्–सभी दिशाओं को; मणि–मणिमय; चुवर्कळाक–

कुळुवं मॅल्लाम्-सारे मेघकुलों को; मीतु उऱु-ऊपर रहनेवाली; पताकै ॲस-पताकाओं के रूप में; वीचियतु-हिलानेवाला; पूतम् ऐन्तिऩ्-पाँचों भूतों के; मॅय्म्मै वलियिऩ्-सच्चे बल के साथ; पॊलिवतु-विद्यमान; अम्मा-आश्चर्य री माँ। ३६२५

उसकी मणिमय भित्तियाँ दिशाओं से सुनिर्मित थीं। वह मेघों को अपनी पताकाओं के समान हिलाता था। वह पाँचों भूतों के यथार्थ बल-से बल के साथ शोभता था। ३६२५

मरत्तोॅडु　　मरुन्दुलहिल्　　यावुमुळ　　वारित्
तरत्तोॅडु　　तॊडुत्तकॊडि　　तङ्गियदु　　शङ्गक्
करत्तोॅडु　　तॊडुत्तकडऩ्　　मीदुनिमिर्　　कालत्तु
उरत्तोॅडु　　कडुत्तकद　　ळॊदैयद　　ऩोदै 3626

उलकिल् उळ-संसार में प्राप्य; मरुन्तु यावुम्-सभी ओषधियाँ; वारि-उठाकर; मरत्तोॅटु-खंभों पर; तरत्तोॅटु-श्रेणीबद्ध रीति से; तॊटुत्त-बाँधी गयी; कॊटि-लताओं से; तङ्कियतु-संयुत था; चङ्क-शंख लानेवाले; करत्तोॅटु-हाथों (लहरों) से; तॊटुत्त-युक्त; कटल्-समुद्र; मीतु निमिर् कालत्तु-जब (लोकनाश करते हुए) बढ़ आता है उस समय; उरत्तोॅटु-ज़ोर के साथ; कटुत्त-तेज़ी के साथ उठनेवाले; कतळ्-उग्र; ओतै-शब्द; अतऩ् ओतै-उसकी ध्वनि है। ३६२६

उसके खंभों से संसार की ओषधि-मान्य सभी लताएँ ठीक तरह से बँधी थीं। उसकी गड़गड़ ध्वनि युगांत में हाथों रूपी शंखवाही लहरों के साथ उठकर प्रचण्ड रूप से बढ़नेवाले समुद्र के गर्जन के समान थी। ३६२६

पण्डरिव　　तुन्दिययऩ्　　वन्दपळ　　मुन्वॅप्
पुण्डरिह　　मॊट्टनैय　　मॊट्टिऩदु　　पूदम्
उण्डुतऩ्　　वयिर्ऱिडै　　यॊडुक्कि　　युमिळ्हिर्पोऩ्
अण्डशऩ्　　मणिच्चयऩ　　मॊप्प　　दहलत्तिऩ् 3627

पण्टु-प्राचीन समय में; अरि-हरि; तऩ् उन्ति-अपनी नाभी में; अयऩ् वन्त-ब्रह्मा के प्रगट होने के समय; पळ मुन्तै-बहुत प्राचीनकाल में प्रकट; पुण्टरिक मॊट्टु अनैय-कमल-कोरक के समान; मॊट्टिऩतु-'मुकुल' नाम के अंग का है; अकलत्तिऩ्-चौड़ाई में; पूतम् उण्टु-(पंच-) भूतों (तथा भौतिक पदार्थों) को खाकर; तऩ् वयिऱ्ऱिटै ऒटुक्कि-उदर में समा लेकर; उमिळ्किऱ्पोऩ्-फिर बाहर निगलने वाले (प्रकट करानेवाले) श्रीविष्णु के; अण्टचऩ्-अण्डज आदिशेष रूपी; मणि-सुन्दर; चयऩम् ऒप्पतु-शय्या के समान है। ३६२७

उसका मुकुल नामक अंग ब्रह्मोद्भव के समय की श्रीविष्णु के नाभिकमल की कली के आकार का था। अपने विस्तार में वह श्रीविष्णु की दिव्य शय्या आदिशेष के सदृश था, जो (विष्णु) प्रपञ्च के सारे भूत और

भौतिक जीवों और पदार्थों को अपने उदर में समाहित करके सृष्टिकाल में प्रगट करा देते हैं। ३६२७

वेदमॊरु नालुनिऱ्ऱ वेळ्विहळुम् वॆव्वे
ऱोदमवे येळुमलै येळुमुल हेळुम्
पूदमवै यैन्दुमॆरि मून्ऱुनत्ति पॊय्दीर्
मादवमु मावुदियु मैम्बुलनु मऱ्ऱुम् 3628

वेतम् ऑरु नालुम्—चारों वेद; निऱ्ऱ वेळ्विकळुम्—और पूर्ण याग; वॆव्वेऱु—अलग-अलग; ओतम् एळुम्—समुद्र सात और; मलै एळुम्—सातों गिरियाँ; उलकु एळुम्—सातों लोक; पूतम् ऐन्तुम्—पाँचों भूत; ऎरि मून्ऱुम्—तीन अग्नियाँ; नत्ति—सब; पॊय् तीर्—निर्दोष; मा तवमुम्—दीर्घ तपस्या; आवुतियुम्—और आहुतियाँ; ऐम्पुलनुम्—पाँचों इंद्रियाँ; मऱ्ऱुम्—और अन्य। ३६२८

चार वेद, पूर्ण यज्ञ, अलग-अलग सातों (क्षीर, दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा और लवण के) समुद्र, सातों पर्वत, पाँचों भूत, तीन अग्नियाँ, निष्कलंक दीर्घ तप, आहुतियाँ, पाँच इन्द्रियाँ आदि—। ३६२८

अरुङ्गरण मैन्दुशुड रैन्दुतिशै नालुम्
ऑरुङ्गुकुण मून्ऱुमुळल् वायुवॊरु पत्तुम्
बॆरुम्बहलु नीळिरवु मॆन्ऱिवै पिणिक्कुम्
पॊरुम्बरिह ळाहनत्ति पूण्डदु पॊलन्देर् 3629

पॊलम् तेर्—स्वर्ण-रथ; अरुमै करणम् ऐन्तुम्—श्रेष्ठ पाँचों करण; चुटर् ऐन्तुम्—पाँचों ज्वालाएँ; तिचै नालुम्—और चारों दिशाएँ; ऑरुङ्कु कुणम् मून्ऱुम्—एकत्रित तीनों गुण; उळल्—संचरणशील; वायु ऑरु पत्तुम्—दसों पवन; पॆरुम् पकलुम्—बड़ा अह्न और; नीळ् इरवु—लम्बी रात्रि; ऎन्ऱु इवै—आदि इनको; पिणिक्कुम्—जुते; पॊरुम् परिकळाक—युद्ध करनेवाले अश्वों के रूप में; नत्ति—खूब; पूण्टतु—बाँध लिये रहता है। ३६२९

उस स्वर्णरथ के योद्धा अश्व थे:— पाँच अन्तःकरण, पाँच ज्वालाएँ (या पंचाग्नि), चार दिशाएँ, तीन गुण, संचरणशील दस पवन, लम्बा दिन और लम्बी रात। ३६२९

वन्ददऩै वाऩवर् वणङ्गि वलियोय्नी
ॲन्देतर वन्दनै यॆमक्कुदवु हिऱ्पाय्
तन्दरुळ्वै वॆन्ऱियॆऩ निऩ्ऱुतहै मॆन्बूच्
चिन्दिऩर्हळ् मादलि कडाविनत्ति शॆऩ्ऱात् 3630

वन्ततऩै—आये उसे; वानवर्—देवों ने; वणङ्कि—प्रणाम करके; वलियोय्—शक्तिमान; नी—तुम; ॲम् तै तर—हमारे पिता तुल्य (इन्द्र) के बुलाने पर; वन्ततै—आये; ऎमक्कु—हमें; उतवुकिऱ्पाय्—सहायता दो; वॆन्ऱि तन्तरुळ्वै—विजय

दिलाओ; अॅत–कहकर; निऩ्ऱु–पास रहकर; तर्क मॅन् पू–श्रेष्ठ कोमल फूल; चिन्तित्तर्कळ–समर्पित किये; मातलि–मातलि; नति कटावि–उसे अच्छी तरह चलाता; चॅन्ऱान्–गया। ३६३०

इस तरह आये रथ को देखकर देवों ने नमस्कार किया और प्रार्थना सुनायी कि हे शक्तिमान् रथ ! तुम हमारे स्वामी इन्द्र के कहने से आये हो। हमारा उपकार करो। विजय दिलाओ। उन्होंने पुष्पों से अर्चना की। मातलि उसे चलाता गया। ३६३०

विनैप्पहै मिशैक्कॉडु विशुम्बुरैवि माऩम्
मऩत्तिऩ्विशै पॅऱ्ऱुळदु वन्ददॅन्न वाऩो
डनैत्तुलह मुन्दॉळ वडैन्द दमलऩ्पाल्
निनैप्पुमिडै पिऱ्पड निमिर्न्ददु नॅडुन्देर् 3631

विचुम्पु उऱै विमातम्–आकाशवासी विमान; विनै मिचै–बुरे कर्म पर; पकै कॊटु–शत्रुता ले; मऩत्तिऩ् विचै पॅऱ्ऱुळतु–मनोगति पाकर; वन्ततु ॲन्न–आया जैसे; नॅटु तेर्–वह ऊंचा रथ; वाऩोटु–व्योमलोक और; अनैत्तु उलकमुम्–सारे लोकों से; तॊऴ–स्तुत हो; अमलन् पाल्–विमल श्रीराम के पास; निनैप्पुम्–चिंतन भी; इटै पिऱ्पट–स्थान में पीछे छोड़कर; अटैन्ततु–पहुंचा; निमिर्न्ततु–ऊंचा खड़ा रहा। ३६३१

आकाशवासी दिव्य विमान, कोई पापों पर गुस्सा करके मन की गति-सी गति में आया हो जैसे वह बड़ा रथ व्योमलोक और अन्य लोकों की स्तुति का पात्र बनकर, सोचने की तेजी को भी कम करता हुआ विमल श्रीराम के पास आया और ऊंचा खड़ा रहा। ३६३१

अलरितनि याऴिपुनै तेरिदॅनि लन्ऱाल्
उलहिन्मुडि विऱ्पॅरिय वूऴॊळि यिदन्ऱाल्
निलैहॊणॅडु मेरुकिरि यन्ऱुनॅडि दम्मा
तलैवरॊरु मूवर्तनि मानमिदु तानो 3632

अलरि–सूर्य का; तनि आऴि–एक चक्र से; पुनै तेर् इतु–युक्त रथ है यह; ॲनिन्–कहें तो; अन्ऱु–नहीं; उलकिन् मुटिविल्–संसार के प्रलयकाल में; ऊऴ् पॅरिय ऒळि–होनेवाली बड़ी युगज्योति; इतु अन्ऱु–यह नहीं; निलै कॊळ्–सुस्थापित; नॅटु–बड़ा; मेरु किरि अन्ऱु–मेरुपर्वत नहीं; नॅटितु–बहुत ऊंचा है; अम्मा–आश्चर्य री माँ; ऒरु मूवर्–सर्वोत्तम तीन; तलैवर्–देवनायकों का; तनि मानम्–अनुपम यान; इतु तानो–क्या यही होगा। ३६३२

श्रीराम ने सोचा— क्या इसे सूर्य का अनुपम एकचक्र रथ माना जाय ? नहीं ! युगांत की ज्योति है ? नहीं ! चिरस्थायी मेरु गिरि भी नहीं ! कितना ऊँचा है ! मैया री ! त्रिदेवों का विमान यही होगा क्या ? । ३६३२

ऍन्ऩैयिदु नम्मैयिडै येय्दलॆऩ्ऩ वॆण्णा
मऩ्ऩवर्द मऩ्ऩऩ्महऩ् मादलियै वऩ्दाय्
पॊऩ्ऩिऩॊळिर् तेरिदुकॊ डार्पुहल वॆऩ्ऱाऩ्
अऩ्ऩवऩु मऩ्ऩदऩै याहवुरै शॆय्दाऩ् 3633

मऩ्ऩवर् तम् मऩ्ऩऩ् मकऩ्–राजाधिराज (दशरथ) के पुत्र ने; नम्मै इटै ऍय्तल्–हमारे पास आनेवाला; ऍऩ्ऩै इतु–यह क्या है; ऍऩ ऍण्णा–ऐसा सोचकर; मातलियै–मातलि से; पॊऩ्ऩिऩ् ऒळिर्–स्वर्णप्रकाश के; इतु तेर् कॊटु–इस रथ को लेकर; आर् पुकल–किसके कहने से; वऩ्ताय्–आये; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा; अऩ्ऩवऩुम्–उसने भी; अऩ्ऩतऩै–वह कारण; आक–ठीक-ठीक; उरै चॆय्तान्–बतलाया। ३६३३

चक्रवर्तीसुत ने यह सोचकर कि हमारे पास आया यह रथ कौन सा है ? मातलि से प्रश्न किया कि यह स्वर्णमय रथ लेकर किसके कहने से आये हो ? मातलि ने हेतु बताया। ३६३३

मुप्पुर मॆरित्तवऩु नाऩ्मुहऩु मुऩ्ऩाळ्
अप्पह लियऱ्ऱियुळ दायिर मरुक्कर्क्
कॊप्पुडैय दूळितिरि कालुमुलै विल्ला
इप्पॊरुवि ऱेर्वरुव दिऩ्दिरऩि लॆऩ्दाय् 3634

ऍन्ताय्–हमारे पालक; मुऩ् नाळ्–प्राचीन समय में; अ पकल्–उस अह्न में; मुप् पुरम् ऍरित्तवऩुम्–त्रिपुरदहन और; नाऩ्मुकऩुम्–चतुर्मुख के द्वारा; इयऱ्ऱियुळतु–निर्मित; आयिरम् अरुक्कर्कु–सहस्र सूर्यों के; ऒप्पुटैयतु–समान (प्रकाशमान) है; ऊळि–युग; तिरि कालुम्–परिवर्तन के समय में भी; उलैवु इल्ला–न मिटनेवाला; पॊरुविल्–अप्रतिम; इ तेर्–यह रथ; इन्तिरऩिल् वरुवतु–इन्द्र से आता है। ३६३४

मेरे पितातुल्य देव ! यह प्राचीन काल में त्रिपुरदहन और ब्रह्मा के द्वारा निर्मित था। सहस्रार्क-सम प्रकाशमान यह रथ जो युगपरिवर्तन के अवसर पर भी नहीं मिटेगा, इन्द्र की आज्ञा पर आया है। ३६३४

अण्डमिदु पोल्वऩ वळप्पिल वडुक्किक्
कॊण्डुपॆय रुङ्गुरुहु नीळुमवै कॊळुऱ्
ऱुण्डवऩ् वयिऱ्ऱिऩैयु मॊक्कु मुवमैक्कुप्
पुण्डरिह निऩ्ऩ्शर मॆऩक्कडिदु पोमाल् 3635

पुण्टरिक–पुण्डरीक; इतु पोल्वऩ–इस (अण्ड) के समान; अण्टम्–अण्डों को; अळप्पिल् अटुक्कि–असंख्यक रीति से चुनकर; कॊण्टु–उन्हें ढो लेकर; पॆयरुम्–स्थान से स्थान जा सकता है; कुऱुकुम् नीळुम्–(आवश्यकतानुसार) घट सकता है, बढ़ सकता है; अवै–उन (अण्डों) को; कॊळुऱ्ऱु–लेकर; उण्टवऩ्–जिन्होंने समा लिया था उनके; वयिऱ्ऱिऩैयुम् उवमैक्कु ऒक्कुम्–उदर के समान भी होगा; निऩ् चरम् ऍऩ–आपके बाण के समान; कटितु पोम्–तेज जा सकता है। ३६३५

हे पुण्डरीक ! यह इस अण्ड के समान अनेक अण्डों को एक साथ चुन रखकर ढो ले जानेवाला है ! यह आवश्यकतानुसार चौड़ा या छोटा हो सकता है ! इसकी तुलना भुवनभोक्ता श्रीविष्णु के उदर से की जा सकती है। यह आपके शर की ही भाँति तेज़ी से जा सकता है। ३६३५

कण्णुमत्न मुड्गडिय कालुमिवै कण्डाल्
उण्णुम्विशै यालुणर्वु पिऩ्पडर वोडुम्
विण्णुनिल नुम्मॆत्त विशेडमिल दः(ह्)दे
ऎण्णुनॆडु नीरिनु नॆरुप्पिडैयु मॆन्दाय् 3636

कण्णुम् मतमुम्–आँखों और मन; कटिय कालुम्–तेज़ हवा आदि; इवै कण्टाल्–इनको देखे तो; विचैयाल् उण्णुम्–अपनी गति से (उनकी गति को) खा लेगा (उनसे आगे बढ़ जायगा); उणर्वु–भावना भी; पिऩ् पटर–पीछे दौड़े, ऐसा; ओडुम्–खूब आगे निकल जायगा; ऎन्ताय्–पिता (सम); विण्णुम् निलतुम् ऒत्त–आकाश या भूमि ऐसी; विचैटम् इलतु–फ़र्क़ नहीं है; ऎण्णुम्–सोचने योग्य; नॆटु नीरितुम्–लम्बे समुद्र में; नॆरुप्पिटैयुम्–और आग में; अ.·.ते–उसी भाँति। ३६३६

दृष्टि, मन, तेज़ हवा —इनको भी अपनी तेज़ी से खा (हरा) सकता है। भावना भी उससे पिछड़ जायगी; यह आगे निकल जायगा। मेरे विधाता ! इसके सामने आकाश, भूतल का कोई विशेष भेद नहीं रहता। यह गण्य सागर में भी जा सकेगा, और आग में भी। ३६३६

नीरुमुळ वेयवैयॊ रेऴुनिमिर् हिऩ्कुम्
पारुमुळ वेयदि ऩिरट्टियवै पण्बिऩ्
पेरुमॊरु कालैयॊरु कालुमिडै पेरात्
तेरुमुळ देयिदु वलालुलहु शॆय्दोय् 3637

उलकु चॆय्तोय्–लोकनिर्माता; ओर् एऴु नीरुम् उळवे–सप्त सागर हैं न; अतिऩ् इरट्टि–उसके दुगुने; निमिर्किऩ्कुम्–उठे रहनेवाले; पारुम् उळवे–भुवन हैं न; अवै–वे; ऒरु कालै–कभी; पण्पिल्–अपनी रचना में; पेरुम्–बदल सकते हैं; ऒरु कालुम् इटै पेरा–कभी न बदलनेवाला; तेरुम्–रथ; इतु अलाल्–इसको छोड़कर; उळते–(अन्य) है क्या। ३६३७

हे लोकनिर्माता ! सात समुद्र हैं और चौदह भुवन ! वे भी कभी अपनी रचना में परिवर्तित (विघटित) हो जाते हैं। पर कभी भी न बदलने वाला इस रथ के सिवा कोई है क्या ? । ३६३७

तेवरु मुऩित्तलैव रुऩ्जिवऩु मेताऴ्
मूवुलहळित्त ववऩुम् मुदल्व मुऩ्ऩित्
तॆविऩर् शुरर्क्किऱैव तीन्दुळदि वॆन्ना
माविऩ्मऩ मॊप्पवुणर् मादलि वलित्ताम् 3638

मुतल्व–सरदार; तेवरुम्–देव; मुनि तलैवरुम्–मुनिवर; चिवनुम्–शिव; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; मूवुलकु अळितृत अवनुम्–त्रिलोक की सृष्टि जिन्होंने की वे (ब्रह्मा); मुन्निन्ऱु एवितर्–(इन्होंने) सामने स्थित होकर प्रेरित किया; इतु–इसे; चुरर्क्कु इऱैवन्–सुरेन्द्र ने; ईन्तुळतु–जिसे भेजा वह यह है; ॲन्ऩा–ऐसा; मावित् मतम्–अश्वों के मन को; ओप्प उणर्–सम रूप से जाननेवाले; मातलि–मातलि ने; वलित्तान्–कहा। ३६३८

नाथ! देवों, मुनिवरों, शिव और पुरातन त्रिलोकसर्जक ब्रह्मा ने सामने आकर प्रेरित किया। तब सुरेंद्र ने इसे आपके पास भेजा है। अश्वों का मन जाननेवाले मातलि ये बातें कहीं। ३६३८

ऐयनिदु केट्टिह लरक्कनदु मायच्
चॅय्हैहॉ लॅन्ऩच्चिऱिदु शिन्दॅयि निनैन्दान्
मॅय्यव नुरैत्तदॆन देयिरद मेवुम्
मॉय्युळै वयप्परि मॉऴिन्दमुदु वेदम् 3639

ऐयन्–स्वामी ने; इतु केट्टु–यह सुनकर; इकल् अरक्कततु–शत्रु राक्षस की; माय चॅय्कै कॉल्–माया का कार्य है क्या; ॲन–ऐसा; चिन्तैयिन्–मन में; चिऱितु निनैन्तान्–थोड़ा विचारा; अवन् उरैत्ततु–उसका कहना; मॅय् ॲनवे–सच ही है ऐसा; इरतम् मेवुम्–रथ से युक्त; मॉय् उळै–घने अयालों के साथ रहे; वय परि–विजयी अश्वों ने; मुतु वेतम्–प्राचीन वेदों को; मॉऴिन्त–स्वरित किया। ३६३९

श्रीराम ने यह सुना और थोड़ा मन में संशय किया कि क्या यह शत्रुता बरतनेवाले राक्षस का मायाकार्य तो नहीं है! तब रथ के जुते अश्वों ने पुरातन-वेदघोष करके मातलि के वचन को सच्चा प्रमाणित किया। ३६३९

इल्लैयिनि यॆयमॆन वॆण्णिय विरामन्
नल्लवनै नीयुनदु नामनविल् ॲन्न
वल्लिदनै यूर्वदोरु मादलि यॆनप्पेर्
शॊल्लुव रॆनत्तॊऴुदि ऱैञ्जियिवै शॊन्नान् 3640

इनि ऐयम् इल्लै–अब संशय नहीं; ॲन ॲण्णिय–ऐसा जिन्होंने सोचा; इरामन्–श्रीराम के; नल्लवनै–भलेमानुस से; नी–तुम; उनतु नामम्–अपना नाम; नविल्क–बताओ; ॲन्न–कहने पर; वल्लि तलै–जुए के सिर पर; ऊर्वतु–बैठकर (रथ) चलानेवाला; ओरु मातलि–एक (सारथी) मातलि; ॲन–ऐसा; पेर् चॊल्लुवर्–नाम बताते हैं (लोग); ॲन–कहकर; तॊऴुतु इऱैञ्चि–स्तुति तथा विनय करके; इवै चॊन्नान्–यों बोला। ३६४०

श्रीराम को लगा कि अब कोई संशय नहीं है। उन्होंने भलेमानुस मातलि से पूछा कि तुम अपना नाम बतलाओ। मातलि ने निवेदन किया

कि मुझे 'सारथी मातलि' कहते हैं। नमस्कार करके वह (श्रीराम से) यों बोला। ३६४०

मारुदियै नोक्किियिळ वाळरियै नोक्कि
नीर्हरुदु हिन्ऱदे निहळ्त्तुमॆन्न नित्ऱान्
आरियन्व णङ्गियव रॆयमिलै यॆया
तेरिदु पुरन्दरत्त दॆन्ऱनर् तॆळिन्दार् 3641

मारुतियै नोक्कि–मारुति को देखकर; इळ वाळ् अरियै–बाल और क्रूर सिंह (सदृश लक्ष्मण) को; नोक्कि–देखकर; नीर् करुतुकिन्ऱतै–तुम जो सोचते हो वह; निकळ्त्तुम् ॲन–कहो ऐसा पूछकर; नित्ऱात्–स्थित रहे; तॆळिन्तार् अवर्–अपने मन में निर्णय करनेवाले उन्होंने; आरियत् वणङ्कि–आर्य श्रीराम को नमस्कार करके; ऐया–स्वामी; ऐयम् इलै–संदेह नहीं; इतु तेर्–यह रथ; पुरन्तरततु–पुरन्दर का है; ॲन्ऱतर्–कहा। ३६४१

(फिर भी) श्रीराम ने मारुति और क्रूर बालकेसरी (-सदृश लक्ष्मण) से पूछा कि तुम्हारी राय क्या है ? बताओ। तब उन दोनों ने खूब सोचकर निर्णय के साथ आर्य को नमस्कार करके उत्तर दिया कि प्रभु ! इसमें संशय की गुंजाइश नहीं है। ३६४१

विऴुन्दुपुर डीविनै निलत्तॊडु वॆदुम्बत्
तॊऴुन्दहैय नल्विनै कळिप्पित्तॊडु तुळ्ळ
अऴुन्दुतुय रत्तमर रन्दणर्कै मुन्दुऱ्
ऱॆऴुन्दुतलै येऱ्विनि देऱित्त निरामन् 3642

विऴुन्तु पुरळ्–गिरकर लोटनेवाले; ती वित्तै–पापों के; निलत्तॊटु–भूमि के साथ; वॆंतुम्प–जल जाते; तॊऴुम् तकैय–स्तुत्य; नल् वित्तै–पुण्यकर्मों के; कळिप्पित्तॊटु–आनन्द के साथ; तुळ्ळ–उछलते; अऴुन्तु तुयरत्तु–मग्नकारी दुःख से पीड़ित; अमरर्–देवों के; अन्तणर्–विप्रों के; कै–हाथों के; मुन्तु उऱ–आगे बढ़कर; ॲऴुन्तु–उठकर; तलै एऱ–सिर पर चढ़ते; इरामन्–श्रीराम; इतितु एऱित्तन्–सुख से (रथ पर) चढ़े (सवार हुए)। ३६४२

श्रीराम रथ पर इत्मीनान के साथ सवार हुए तो पाप नीचे भूमि पर गिरकर भूमि के साथ जल गये; पुण्य मोद के साथ नाचने लगा। दुःख-मग्न देवों और विप्रों के हाथ स्वतः आगे बढ़े और जुड़कर सिर पर (नमस्कार करने) चढ़े। ३६४२

36. इरावणन् वदैप् पडलम् (रावण-वध पटल)

आऴियन् दडन्देर् वीर ऩॆऱलु मलङ्गल् शिल्लिप्
पूऴियिर् चुरित्त तन्मै नोक्किय पुलव रॆल्लाम्

ऊऴिवॅङ् गाऱ्ऱिऩ् वॅय्य कलुऴऩ यौऩ्ऱुञ् जॊल्लार्
वाऴिय वऩुमऩ् तोळै येत्तिऩार् मलर्हळ् तूवि 3643

वीरऩ्–श्रीवीरराघव; आऴि–पहियेवार; अम्–मनोहर; तटम् तेर्–बड़े रथ पर; एऱलुम्–चढ़े त्योंही; अलङ्कल् ञिल्लि–प्रकाशमय पहिये; पूऴियिल्–धूलि में; चुरित्त–जो धँस गये; तऩ्मै–वह हाल; नोक्किय–जिन्होंने देखा; पुलवर् ॲल्लाम्–उन सारे देवों ने; ऊऴि वॅम् काऱ्ऱिऩ–युगान्त के गरम पवन से भी; वॅय्य कलुऴऩै–आतंककारी गरुड़ को; ऑऩ्ऱुम् चॊल्लार्–कुछ न कहकर; अनुमन् तोळै–हनुमान के कंधों पर; मलर्कळ् तूवि–फूल डालकर; एत्तिऩार्–उनकी प्रशंसा की। ३६४३

देवों ने श्रीराम के उस पहियोंदार विशाल और मजबूत रथ पर चढ़ते ही रथ का धूलि में धँसने का प्रकार देखा तो उन्हें गरुड़ और हनुमान की शक्ति का खयाल आया। उन्होंने गरुड़ के बल का कुछ नहीं कहा पर हनुमान के कंधों पर फूल डालकर उनकी सराहना की। ३६४३

ॲऴुहतेर् शुमक्क वॅल्लोम् वलियुम्बुक् किऩ्ऱे यॊऩ्ऱि
यिऴुहपो ररक्कऩ् वॅलुह वेऩ्दर्क्कु वेऩ्दऩ् विम्मि
अऴुहपो ररक्कि मारॆऩ् ऱार्त्तऩ रमर राऴि
मुऴुहिमी दॆऴुन्द दॆऩ्ऩच् चॆऩ्ऱदु मूरित् तिण्डेर् 3644

तेर् ॲऴुक–रथ बढ़े; इऩ्ऱे–आज ही; ॲल्लोम् वलियुम्–(हमारे) सभी का बल; पुक्कु–इसमें समाहित हो; ऑऩ्ऱि–जमकर; चुमक्क–धारण करे; पोर् अरक्कऩ्–युद्धप्रिय राक्षस; विऴुक–मिट जाए; पोर् अरक्किमार्–युद्धप्रिय राक्षसियाँ; विम्मि अऴुक–सिसक-सिसक रोयें; ॲऩ्ऱु–ऐसा; अमरर् आर्त्तऩर्–देवों ने नाद किया; मूरि–शक्तिमान; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; आऴि–समुद्र में; मुऴुकि–डुबकी लगाकर; मीतु ॲऴुन्ततु ॲऩ्ऩ–ऊपर उठा हो जैसे; चॆऩ्ऱतु–(धूलि-समुद्र चीरकर) गया। ३६४४

देवों ने ज़ोर के साथ कहा कि रथ उठे। हमारा सारा बल उसमें प्रविष्ट हो जाए। युद्धप्रिय राक्षस का नाश हो। युद्ध चाहनेवाली राक्षसियाँ दुःख से भरकर रोएँ। तब बलवान सुदृढ़ वह रथ समुद्र में मग्न हो फिर उठकर चलता हो जैसे (धूलि-सागर को चीरकर) चलने लगा। ३६४४

अऩ्ऩदु कण्णिऩ् कण्ड वरक्कऩु ममर रीऩ्वार्
मऩ्ऩॆडुन् देरॆऩ् ऱुऩ्ऩि वाय्मडित् तॆयिऱु तिऩ्ऱाऩ्
पिऩ्ऩदु किडक्क वॆऩ्ऩात् तऩ्ऩुडैप् पॆरुन्दिण् डेरे
मिऩ्ऩिवर् वरिविऱ् चॆङ्गै यिरामऩ्मेल् विडुदि यॆऩ्ऱाऩ् 3645

अऩ्ऩतु–उसे; कण्णिऩ् कण्ट–अपनी आँखों से देखकर; अरक्कऩुम्–राक्षस रावण ने भी; मऩ्–सुदृढ़; नॆटुम् तेर्–ऊँचा रथ; अमरर् ईऩ्ऱार्–देवों ने दिया है; ...

दाँत काटे; पिन्–बाद; अतु किटक्क–वह रहे; ऍन्ऩा–कहकर; तन् उटै–मेरे; पॅरुम् तिण् तेरै–बड़े कठोर रथ को; मिन् इवर्–रोशनदार; वरिविल्–सबन्ध धनुर्धर; चॅम् कै इरामन् मेल्–लाल हाथवाले राम पर; विटुति–चलाओ; ऍन्ड्रान्–कहा (सारथी से) रावण ने। ३६४५

राक्षस रावण ने उसे अपनी आँखों से देखा। मालूम हो गया कि यह उन्नत रथ देवों का दिया हुआ है। दाँत पीसे। फिर कहा कि रहे वह! अपने सारथी से कहा कि मेरे मज़बूत व बड़े रथ को विद्युत्प्रकाश सबंध धनुर्हस्त श्रीराम की तरफ़ चलाओ। ३६४५

इरिन्दवान् कविह ळॅल्ला मिमैयव रिरद मीन्दार्
अरिन्दमन् वॅल्लु मॅन्ड्रर् कैयुर विल्लॅन् ड्रञ्जार्
तिरिन्दनर् मरमुङ् गल्लुञ् जिन्दिनर् तिशैयो डण्डम्
पिरिन्दन होल्लॅन् ड्रॅण्णप् पिड्रन्दडु मुळक्किन् पॅड्रि 3646

इरिन्त–जो अस्त-व्यस्त भागे थे वे; वान् कविकळ् ऍल्लाम्–वानर सभी; इमैयवर्–देवों ने; इरतम् ईन्तार्–रथ दिया है; अरिन्तमन् वॅल्लुम्–अरिंदम जीतेंगे; ऍन्ड्रर्कु–ऐसा कहने को; ऐयुरवु इल्–संशय नहीं; ऍन्ड्रु–ऐसा सोचकर; अञ्चार्–निडर हो; तिरिन्तनर्–घूमे-फिरे; मरमुम् कल्लुम् चिन्तिनर्–तरु और पत्थर चलाये; तिशैयोटु–दिशाओं के साथ; अण्टम्–अण्ड; पिरिन्तन कॉल्–क्या अस्त-व्यस्त हो गये; ऍण्ण–ऐसा सोचने योग्य रीति से; मुळक्किन् पॅड्रि–उनके शोर का हाल; पिड्रन्ततु–दिखा। ३६४६

जो पहले भागे थे वे सब वानर यह जानकर लौट गये कि देवों ने रथ दिया है और अरिंदम श्रीराम की विजय निश्चित है। निडर होकर इधर-उधर घूमे और पर्वत और तरु फेंके। ऐसा नर्दन किया कि यह संशय हो कि दिशाओं के साथ अंड फट गया क्या?। ३६४६

वार्प्पॉलि मुरशि नोदै वायप्पुडै वयव रोदै
पोर्त्तॉळ्िर् कळत्तै मुड्रुञ् जुड्रिय पॉम्म लोदै
आर्त्तलि नियारुम् बार्वीळ्न् दडङ्गिन रिरुव राडल्
तेर्क्कुर लोदै पॉङ्गच् चॅविमुड्रुञ् जॅविडु शॅय्य 3647

वार् पॉलि–फ़ीतों से बद्ध छीवमय; मुरचिन् ओतै–भेरियों का नाद; वाय् पुडै–मुखर; वयवर् ओतै–वीरों का शब्द; पोर् तॉळिल् कळत्तै–युद्धकार्य के मैदान को; मुड्रुम् चुड्रिय–घेरे रही सेनाओं का; पॉम्मल ओतै–हर्षनाद; इरुवर्–दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; आटल् तेर्–युद्ध करने को सवार रथ के; कुरल् ओतै–गड़गड़ाहट का शब्द; चॅवि मुड्रुम्–कानों को पूर्णरूप से; चॅविटु चॅय्य–बहरा बनाते हुए; आर्त्तलिन्–उठ रहे थे इसलिए; यावरुम्–सभी; पार् विळुन्तु–भूमि पर गिरकर; अटङ्किनर्–संज्ञाशून्य पड़े रहे। ३६४७

फ़ीतों के बंधन से युक्त भेरियों की ठनक, मुखर वीरों का नाद, युद्ध-मैदान में सर्वत्र रही सेनाओं की हर्षध्वनि, और श्रीराम और लक्ष्मण के

रथों की गड़गड़ाहट —आदि सभी ध्वनियाँ बहरा करते हुए उठीं तो वहाँ रहे सभी गिरे और संज्ञाहीन हो रहे। ३६४७

मादलि वदऩ नोक्कि मामऱै यमलऩ् माऱाक्
कादलोय् करुम मॊऩ्ऱु केट्टियाऱ् कळित्त शिन्दै
एदलऩ् मिहुदि यॆल्ला मियऱ्ऱिय पिऩ्ऱै यॆऩ्ऱऩ्
शोदऩै नोक्किच् चॆय्दि तुडिप्पिलै यॆऩ्ऩच् चॊऩ्ऩाऩ् 3648

मा मऱै अमलऩ्–उत्कृष्ट वेदपुरुष विमल श्रीराम ने; मातलि वदनम् नोक्कि–मातलि का वदन देखकर; माऱा कातलोय्–अचल स्नेही; करुमम् ऑन्ऱुम्–कार्य एक; केट्टि–सुनो; कळित्त चिन्तै–मुदितमन; एतलन्–शत्रु (रावण); मिकुति ऍल्लाम्–सभी बुराइयाँ; इयऱ्ऱिय पिऩ्ऱै–करने के बाद; ऍन् तन् चोतनै नोक्कि–मेरा संकेत देखकर; चॆय्ति–अपना काम करो; तुटिप्पु इलै–त्वरा मत करो; ऍन्ऩ चॊऩ्ऩाऩ्–ऐसा कहा। ३६४८

तब उत्तमवेदपुरुष विमल श्रीराम ने मातलि का वदन देखकर उससे कहा हे अचल स्नेही ! एक कार्य सुन लो। मोदपूर्ण शत्रु रावण सभी बुरे कृत्य कर ले, उसके बाद मेरा संकेत देखकर तुम कार्य करो। जल्दी न करो। ३६४८

वळ्ळलिऩ् करुत्तु माविऩ् शिन्दैयु माऱ्ऱ लार्दम्
उळ्ळमु मिहैयु मुऱ्ऱ कुऱ्ऱमु मुरुदि तानुम्
कळ्ळमिल् कालप् पाडुङ् गरुममुङ् गरुदे ऩाहिल्
तॆळ्ळिदॆऩ् विञ्जै यॆऩ्ऱा ऩमलऩुञ् जोरि दॆऩ्ऱाऩ् 3649

वळ्ळल्–उदार प्रभु; निन् करुत्तुम्–आपका विचार और; माविऩ्–अश्वों के; चिन्तैयुम्–मन; माऱ्ऱलार् तम् उळ्ळमुम्–शत्रुओं के अभिप्राय; मिकैयुम्–उनकी विशेषताएँ; उऱ्ऱ–उनसे होनेवाले; कुऱ्ऱमुम्–अपराध (संकट); उऱुति तानुम्–और निश्चय; कळ्ळम् इल्–वंचना-रहित; कालप्पाडुम्–काल की बात; करुममुम्–कार्य; करुतेऩाकिल्–सोचूँ नहीं तो; ऍन् विञ्जै–मेरी (सारथ्य-) विद्या; तॆळ्ळितु–साफ़ होगी; ऍन्ऱाऩ्–कहा (मातलि ने); अमलनुम्–विमल देव ने भी; चीरितु–उत्तम बात है; ऍन्ऱाऩ्–कहा। ३६४९

मातलि ने उत्तर में निवेदन किया— हे उदार प्रभु ! आपका अभिप्राय, अश्वों का रुख, शत्रुओं का मन, उनकी ज़्यादती, उसका बुरा फल, सभी का दृढ़ संकल्प, काल की ऋजुस्थिति, अपना कार्य —यह सब न सोचूँ तो मेरी सारथिविद्या भी ठीक होगी न ! (नहीं।) विमल देव ने भी कहा कि अच्छा, उत्तम है। ३६४९

तोऩ्ऱिऩ ऩिराप सीदाऱ् पुरन्दरऩ् तुरहत् तेर्मेल्
एऩ्ऱिरु वीरक्कुम् वॆम्बो रॆय्दिय दिडैये यानोर्

शात्रॅत निऱ्ऱल् कुऱ्ऱन् दरुदियाल् विडॅयीण् ॲन्ऱान्
वान्तोडर् कुन्ऱ मन्न महोदर निलङ्गै मन्नै 3650

वान् तोटर् कुन्ऱम् अन्न–आकाशस्पर्शी पर्वत के समान; मकोतरन्–महोदर ; इलङ्कै मन्नै–लंकेश से; ईतु–यह; पुरन्तरन्–इन्द्र के; तुरकम् तेर् मेल्–अश्वों के (चालित) रथ पर; इरामन् तोन्ऱिनन्–राम प्रकट हुआ; एन्ऱ–सामना करने; इरुवीर्क्कुम्–आप दोनों में; वॅम् पोर्–कठोर युद्ध; ॲय्तियतु–आ गया है। इटैये–बीच में; यान् ओर् चान्ऱु ॲन–मैं एक साक्षी के रूप में; निऱ्ऱल्–(चुप) खड़ा रहना; कुऱ्ऱम्–ग़लती होगा; ईण्टु–अब; विटै–आज्ञा (लड़ने को); तरुति–दें; ॲन्ऱान्–कहा। ३६५०

उधर आकाशस्पर्शी पर्वत-सदृश महोदर ने लंकेश रावण को समझाया। देखिए! राम देवेंद्र के रथ पर प्रगट हो गया। आप दोनों में घमासान युद्ध होने को है। केवल साक्षीवत् मैं खड़ा रहूँ —यह अपराध होगा। मैं युद्ध करूँ, इसकी आज्ञा दें। ३६५०

अम्बुय मन्नैय कण्णन् तन्नैया नरियि नेऱु
तुम्बियॅत् तोलैत्त दॅन्नत् तोलैक्कुवॅन् तोडर्न्दु निन्ऱ
तम्बियॅत् तडत्ति यायिऱ् ऱन्दनै कोऱ्ऱ मॅन्ऱान्
वॅम्बिय लरक्क न:(ह्)दे शॅय्वॅन्ऱ् ऱयलिन् मीण्डान् 3651

अम्पुयम् अन्नैय कण्णन् तन्नै–कमल-सी आँखोंवाले को; यान्–मैं; अरियिन् एऱु–नर केसरी ने; तुम्पियै तोलैत्ततु ॲन्न–मर्दन किया हो जैसे; तोलैक्कुवॅन्–मिटा दूँगा; तोटर्न्तु निन्ऱ–पास लगे जो खड़ा है; तम्पियै–उसके छोटे भाई को; तटुत्तियायिन्–रोक सको तो; कोऱ्ऱम् तन्ततै–विजय (तुमने) दिलवा दी; ॲन्ऱान्–कहा रावण ने; वॅम्पु इयल् अरक्कन्–क्रोधतप्त स्वभाव का राक्षस; अ:ते चॅय्वॅन्–वही करूँगा; ॲन्ऱु–कहकर; अयलिन्–एक तरफ़; मीण्टान्–लौटा। ३६५१

रावण ने कहा कि पंकजाक्ष का नाश मैं गज को सिंह-जैसे कर लूँगा! उसके पीछे आनेवाले उसके छोटे भाई को तुम रोक लो तो तुम मुझे विजय दिलवा दोगे। क्रोधतप्त राक्षस महोदर ने कहा कि मैं वही करूँगा। वह एक ओर मुड़ चला। ३६५१

मीण्डव निऴवल् निन्ऱ पाणियिन् विलङ्गा मुन्नम्
आण्डहै तॅय्वत् तिण्डे रणुहिय दणुहुङ् गाले
मूण्डॅऴु वॅहुळि योडु महोदरन् मुन्निन्दु मुट्टत्
तूण्डुदि तेरै यॅन्ऱान् शारदि तोऴुदु शान्ऱान् 3652

मीण्टवन्–जो मुड़ चला वह; इळवल्–लघुराज; निन्ऱ पाणियिन्–जहाँ खड़े रहे उस तरफ़; विलङ्का मुन्नम्–आए इसके पहले ही; आण्टकै–वीर श्रीराम

का; तॆय्वम् तिण् तेर्–दिव्य सुदृढ़ रथ; अणुकियतु—पास आया; अणुकुम् कालै–पास आते समय; मकोतरऩ्–महोदर ने; मूण्टु ॲऴु–उभर उठते; वॆंकुऴियोटु–क्रोध के साथ; मुऩिन्तु–डाँटकर; तेरै–अपने रथ को; मुट्ट तूण्टुति–टकराने को चलाओ; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा; चारति–सारथी ने; तॊऴुतु–नमस्कार करके; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ३६५२

रावण से हटकर वह लघुराज लक्ष्मण की तरफ़ जाए, इसके पहले ही श्रीवीरराघव का मजबूत व दिव्य रथ उसके पास आ गया। यह देख महोदर ने ग़ुस्से के साथ सारथी से कहा कि तुम हमारे रथ को ऐसा चलाओ कि वह उसके रथ को ठोकर लगा दे। सारथी ने विनय के साथ यों कहा। ३६५२

ऎॅण्णरुङ् गोडि वॆॅङ्ग णिरावण रेयु मिऩ्ऱु
नण्णिय पॊॅऴुदु मीण्डु नडप्परो किडप्प दल्लाल्
अण्णरऩ् ऱोर्ऱङ् गण्डा लैयनी कमल मऩ्ऩ
कण्णऩै यॊऴिय विप्पार् चॆॅल्वदे करुम मॆॅऩ्ऱाऩ् 3653

ऐय–स्वामी; अण्णल् तऩ्–महिमावान (श्रीराम) का; तोऱ्ऱम्–(मनोहर) रूप; कण्टाल्–देख लें तो; ऎॅण् अरुम्–असंख्य; कोटि–करोड़; वॆॅम् कण् इरावणरेयुम्–क्रूर आँखों के रावण भी; इऩ्ऱु नण्णिय पॊॅऴुतु–अब पास जाएँ तो; किटप्पतु अल्लाल्–मरकर गिर जाने के सिवा; मीण्टु नटप्परो–बचकर आगे बढ़ सकेंगे क्या; नी–आप; कमलम् अऩ्ऩ कण्णऩै–कमलाक्ष को; इ पाल् ऒऴिय–इस ओर छोड़कर; चॆॅल्वते–चले, यही; करुमम्–करने योग्य कार्य होगा; ऎॅऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६५३

स्वामी ! महिमावान श्रीराम का रूप देख लें तो (एक रावण क्या) असंख्य करोड़ों की संख्या के क्रूर आँखों वाले रावण भी, पास जाने पर तो मरकर गिर जायँगे। उसको छोड़कर क्या वे बच निकल सकेंगे ? इसलिए आप पंकजाक्ष को यहीं छोड़कर दूसरी तरफ़ निकल जाइए। ३६५३

ऎॅऩ्ऱलु मॆॅयिऱ्ऱुप् पेऴ्वाय् मडित्तॆॅडा वॆॅडुत्तु निऩ्ऩैत्
तिऩ्ऱऩॆॅ ऩॆॅऩितु मुण्डाम् वऴियॆॅऩच् चीऱ्ऱज् जिऩ्दुम्
कुऩ्ऱऩ दोऱ्ऱत् ताऩ्ऱऩ् कॊॅडिनॆॅडुन् दॆॅरि ऩेरे
चॆॅऩ्ऱदव् विरामऩ् तिण्तेर् विळैन्ददु तिमिलत् तिण्पोर् 3654

ऎॅऩ्ऱलुम् (सारथी के) यों कहने पर; ऎॅयिऱु पेऴ्वाय् मटित्तु–घोर दाँतों के अपने मुख को मोड़कर; ऎॅटा–रे; निऩ्ऩै–तुझे; ऎॅटुत्तु–उठाकर; तिऩ्ऱऩॆॅऩ्–खा लूं; ऎॅऩितुम्–तो; पऴि उण्टाम्–निंदा होगी; ऎॅऩ–ऐसा; चीऱ्ऱम्–कोप को; चिन्तुम्–गिरनेवाले; कुऩ्ऱऩ तोऱ्ऱत्ताऩ् तऩ्–पर्वताकार उसके; कॊॅटि नॆॅटु तेरिऩ् नेरे–ध्वजायुक्त बड़े रथ के सामने; अ इरामऩ् तिण् तेर्–उन श्रीराम का सुदृढ़ रथ; चॆॅऩ्ऱतु–गया; तिमिलम् तिण् पोर्–तुमुल और कठोर युद्ध; विळैन्ततु–चल गया। ३६५४

सारथी के ऐसा कहते पर महोदर ने ओंठ काटते हुए कहा कि रे! तुमको उठाकर खा लूं तो निंदा होगी! ऐसा कहते हुए जो अपना अपार कोप दिखा रहा था, उस पर्वताकार महोदर के ध्वजा से अलंकृत रथ के सामने श्रीराम का मजबूत रथ आ गया। युद्ध छिड़ गया। ३६५४

पॊऱ्ऱडन् देरु मावुम् बूट्कैयुम् बुलवु वाट्कॆक्
कऱ्ऱडन् दिरडो ळाळु नॆरुङ्गिय कडलह ळॆल्लाम्
वऱ्ऱिय विरामन् वाळि वडवनल् परुह वन्ना
ळुऱ्ऱवन् तडन्दे रोट्टि महोदर नॊरुवन् शॆन्ऱान् 3655

पॊन् तटम् तेरुम्—बड़े-बड़े स्वर्णरथ और; मावुम्—अश्व; पूट्कैयुम्—और हाथी; पुलवु वाळ् कै—मांसगंध तलवारधारी हाथों के; कल् तटम् तिरळ् तोळ्—और पत्थर-सम बड़े और पुष्ट कंधोंवाले; आळुम्—(पदाति) वीर; नॆरुङ्किय—जिनमें भरे थे; कटल्कळ् ऎल्लाम्—वे सारे सेना-सागर; अ नाळ्—उस दिन; इरामन् वाळि—राम-बाण रूपी; वट वनल् परुक—बड़वानल के पीने से; वऱ्ऱिय—शुष्क हो गये; मकोतरन्—महोदर; उऱ्ऱ—अपना जो बना था; वन्—कठोर; तटम्—विशाल; तेर्—रथ; ओट्टि—चलाता हुआ; ऒरुवन्—अकेला; चॆन्ऱान्—(श्रीराम के पास) गया। ३६५५

(फल क्या हुआ?) स्वर्ण-निर्मित रथ, अश्व, गज, मांसगंध-हथियार-धारी, प्रस्तर-सम पुष्ट विशाल भुजा वाले पदाति वीर —इनकी भरी चतुरंगिनी सेनाओं रूपी सारे सागर श्रीराम के शर रूपी बड़वा के सोखने से सूख गये। केवल महोदर बचा रहा। वह अपने मज़बूत रथ को चलाता हुआ अकेले आगे बढ़ आया। ३६५५

अशनिये ऱिरुन्द कॊऱ्ऱक् कॊडियिन्मे लरवत् तेर्मेऱ्
कुशैयुरु पाहन् तन्मेऱ् कॊऱ्ऱवन् कुलवुत् तोण्मेल्
विशैयुरु पहळि मारि वित्तिनान् विण्णि नोडु
तिशैहळुङ् गिळिय वार्त्तान् तोर्त्तनु मुऱुवल् शॆय्दान् 3656

अचनि एऱु इरुन्त—अशनि-अंकित; कॊऱ्ऱ कॊटियिन् मेल्—विजयी ध्वजा पर; अरवम् तेर् मेल्—शब्दायमान रथ पर; कुचै उऱु—लगाम पकड़नेवाले; पाकन् तन् मेल्—सारथी पर; कॊऱ्ऱवन्—विजयी राजा राम के; कुलवु—मनोरम; तोळ् मेल् कंधों पर; विचै उऱु—वेगवान; पकळि मारि—शरों की वर्षा; वित्तिनान्—बीज बोला-सा बरसा दी; विण्णिनोटु—आकाश के साथ; तिचैकळुम्—दिशाओं को; किळिय—फाड़ते हुए; आर्त्तान्—घोष किया; तीर्त्तनुम्—तीर्थ श्रीराम भी; मुऱुवल् चॆय्तान्—मुस्कुराये। ३६५६

महोदर ने अशनि-अंकित ध्वजा पर, ध्वनि करनेवाले रथ पर, लगाम रखनेवाले सारथी पर और विजयराघव के शोभायमान कंधों पर बाणों की वर्षा-सी करा दी। फिर ऐसा नर्दन किया कि आकाश और दिशाएँ फट जायँ। तीर्थ श्रीराम मुस्कराये। ३६५६

विल्लॊन्ऱार् कवश मॊन्ऱाल् विऱलुडैक् करमो रॊन्ऱाऱ्
कल्लॊन्ऱु तोळु मॊन्ऱाऱ् कळुत्तॊन्ऱाऱ् कडिदिन् वाङ्गि
शॆल्लॊन्ऱु कणैह ळेयन् शिन्दित्तान् शॆप्पि वन्द
शॊल्लॊन्ऱाय्च् चॆय्है यॊन्ऱाय्त् तुणिन्दन ऩरक्कन् तुञ्जि 3657

ऐयन्–प्रभु ने; ऑन्ऱाल्–एक (शर) से; विल्–(महोदर के) धनु को; ऑन्ऱाल् कवचम्–एक से कवच; ओर् ऑन्ऱाल्–एक-एक से; विऱल् उटै–विजयी; करम–हाथ को; ऑन्ऱाल्–एक से; कल् ऑन्ऱु–प्रस्तर-सम; तोळुम् कंधों–को; ऑन्ऱाल्–एक से; कळुत्तु–कंठ; चॆल् ऑन्ऱु–गतिशील; कणैकळ्–शरों को; कटितिन् वाङ्कि–शीघ्र लेकर; चिन्तित्तान्–चलाया; अरक्कन्–राक्षस (महोदर); चॆप्पि वन्त चॊल्–जो कह आया वह वचन; ऑन्ऱाय्–एक हो और; चॆय्कै ऑन्ऱाय्–(जो हुआ वह) काम दूसरा हो, ऐसा; तुञ्चि–मरा; तुणिन्तनन्–खण्डित हुआ। ३६५७

प्रभु श्रीराम ने सवेग अस्त्रों को चलाया और एक-एक से क्रम से उसके धनु, कवच, हाथों, पर्वतस्कंध, और गले को काट गिराया। महोदर जो कह आया वह एक रहा पर यहाँ जो हुआ वह दूसरा बन गया। वह मरा और उसका शरीर कट गया। ३६५७

मोदरन् मुडिन्द वण्ण मूवहै युलहत् तोडु
मादिर मॆवैयुम् वॆन्ऱ वन्तॊऴि लरक्कन् कण्डान्
शेदत्तै युण्णक् कण्डान् शॆलविडु शॆलवि डॆन्ऱान्
शूदनु मुडुहित् तूण्डच् चॆन्ऱदु तुरहत् तिण्डेर् 3658

मू वकै उलकत् तोटुम्–त्रिविध लोकों के साथ; मातिरम् ऎवैयुम्–सारी दिशाओं को; वॆन्ऱ–जिसने जीता था उस; वन् तॊऴिल् अरक्कन्–क्रूरकर्म रावण ने; मोतरन् मुटिन्त वण्णम्–महोदर के मरने का हाल; कण्टान्–देखा; चेतत्तै उण्ण कण्टान्–छिन्न हुआ रहना भी देखा; चॆलविटु चॆलविटु–चलाओ, चलाओ; ऎन्ऱान्–कहा; तुरक तिण् तेर्–अश्वसहित मजबूत रथ; चूततुम् मुटुकि तूण्ट–सूत के जल्दी उकसाने से; चॆन्ऱतु–चला। ३६५८

त्रिलोक तथा दिग्जयी रावण ने महोदर का छिन्न होना और मरना देखा। उसने सारथी से कहा कि 'बढ़ाओ, बढ़ाओ।' साश्व सबल रथ के सारथी ने उकसाया और रथ आगे चला। ३६५८

पऩिप्पडा निन्ऱ वॆन्नप् परक्किन्ऱ शेनै पाऱित्
तऩिप्पडा नाहि निन्ऩन् दाऴिहल् तॆन्तुन् दऩ्मै
नुऩिप्पडा निन्ऱ वीर नवतॊऩ्ऱु नोक्का वण्णम्
कुऩिप्पडा निन्ऱ विल्ला लॊल्लॆयि नूऱिक् कॊन्ऱान् 3659

पऩि पटर निन्ऱतु ऎन्न–ओस फैली रही जैसे; परक्किन्ऱ– व्याप्त; चेनै–सेना; पाऱि–बिखर जाय; तऩिप्पटत्ताऩ् आकिऩ्–(रावण) अकेला रह जाय;

इऩ्ऩम् ताऴ्किलऩ्—तब तक और नहीं झुकेगा; ऍऩ्ऩुम् तऩ्मै—वह तथ्य; नुतिप्पटा नितऩ्ऱ—जिन्होंने विवेक करके जाना उन; वीरऩ्—श्रीवीरराघव ने; अवऩ् ऒऩ्ऱुम् नोक्का वण्णम्—वह कुछ देख न पाये ऐसा; कुतिप्पटा नितऩ्ऱ विल्लाल्—झुके धनुष से; ऒल्लैयिल्—सवेग; नूऴि कॊऩ्ऱाऩ्—छिन्न-भिन्न करके मार दिया। ३६५९

श्रीराम ने सोचकर विचार किया कि ओस-सम फैली इसकी सेनाएँ मिटें और यह अकेला हो जाय ! नहीं तो यह नहीं झुकेगा। उन्होंने अपने झुकाये गये धनुष से सेनाओं को इस भाँति मार मिटाया कि रावण देख भी न सके। ३६५९

अडल्वलि यरक्कऱ् कप्पोऴ्‌ तण्डङ्ग ळऴुन्द मण्डुम्
कडल्हळुम् वऱ्ऱ वॆऱ्ऱिक् काल्हिळर्न्‌ दुडऱ्ऱुङ् गालै
वडवरै मुदल वाऩ मलैक्कुलज् जलिप्प माऩ
शुडर्मणि वलयज् जिन्दत् तुडित्तऩ विडत्त पॊऱ्ऱोळ् 3660

अ पोऴ्तु—उस समय; अटल् वलि अरक्कऱ्कु—बहुत बलवान राक्षस को; अण्टङ्कळ् अऴुन्त—अंडों को धँसाते हुए; मण्टुम् कटल्कळुम् वऱ्ऱ—सभी सागर सूख जायें ऐसा; वॆऱ्ऱि काल्—विजयी पवन; किळर्न्तु—उमग उठकर; उटऱ्ऱुम् कालै—जब हिला देता है, तब; वटवरै मुतल आऩ—उत्तरी मेरु आदि; मलैक् कुलम्—पर्वतगण; चलिप्प माऩ—जैसे काँप जाते हैं वैसे; चुटर् मणि—तेजोमय रत्नों के; वलयम् चिन्त—बाहुवलय आदि गिर जायें ऐसा; इटत्त—बायीं; पॊऩ् तोळ्—सुंदर भुजाएँ; तुटित्तऩ—फड़कीं। ३६६०

तब अंडों को धँसाते हुए, उमगते सागरों को सुखाते हुए सर्वजयी युगांतपवन से त्रस्त होकर चलित होनेवाले उत्तरी दिशा के मेरु आदि पर्वतकुल के समान रावण की मनोरम वाम भुजाएँ फड़क उठीं जिससे प्रकाशमय रत्नखचित बाहुवलय आदि गिर गये। ३६६०

उदिर मारि शॊरिन्द दुलहॆलाम्, अदिर वाऩ मिडित्त दरुवरै
पिदिर वीऴ्न्द दशऩि यॊळिपॆऱ्ऱाक्, कदिर वऩ्ऱऩै यूरुङ् गलन्ददाल् 3661

उलकु ऍलाम्—सारे लोक में; उतिर मारि—रुधिर-वर्षा; चॊरिन्ततु—हुई; वाऩम्—मेघ; अतिर—कँपाते हुए; इटित्ततु—कड़के; अचऩि—अशनि; अरु वरै पितिर—गौरवमय पर्वतों को तोड़ते हुए; वीऴ्न्ततु—गिरी; ऒळि पॆऱा—प्रभाहीन; कतिरवऩ् तऩ्ऩै—सूर्य को; ऊरुम्—परिवेश भी; कलन्ततु—मिल गया। ३६६१

सारे लोक में रुधिर-वर्षा हुई। मेघ थर्राते हुए कड़के। अशनि गिरी और पर्वत टूटे। निष्प्रभ सूर्य को परिवेश मिल गया। ३६६१

वावुम् वाशिह डुङ्गिऩ वाङ्गलिल्, एवुम् वॆञ्जिलै नाणिडै यिऱ्ऱऩ
नावुम् वायु मुलर्न्दऩ नाण्मलर्प्, पूविऩ् मालै पुलाल्वॆऱि पूत्तवाल् 3662

वावुम्—लपकनेवाले; वाचिकळ्—अश्व; तुङ्किऩ—सोये; एवुम्—शर-प्रेषक;

वॆम् चिलै–कठोर धनु; वाङ्कलिऩ्–(डोरा खींचने) झुकाने पर; नाण्–डोरे; इटै–बीच में; इऱ्ऱ–कट गये; नावुम् वायुम्–उसकी जीभें और उसके मुख; उलर्न्तत–सूखे; नाळ् मलर्–तद्दिनविकसित फूलों की; पूविऩ् मालै–पुष्प-माला; पुलाल् वॆरि पूत्त–मांसगंध देती रही। ३६६२

रावण के गतिमान अश्व सोये। धनु के डोरे खींचते समय बीच में टूट गये। उनकी जीभें और मुख सूख गये। ताज़े फूलों की मालाओं से मांसगंध निकली। ३६६२

ऎऴुदु वीणैकॊ डेन्दु पदाहैमेल्, कऴुहुङ् गाहमु मॊय्त्तत कण्गणीर्
ऒऴुहि ऩ्ऱ वोडिह लाडऩ्मात्, तॊऴुविल् निऩ्ऱऩ पोऩ्ऱऩ शूऴिमा 3663

ऎऴुतु वीणै कॊटु—लिखित वीणा के साथ; एन्तु—उसको उठाये रहनेवाली; पताकै मेल्–पताका पर; कऴुकुम् काकमुम्–गीध और कौए; मॊय्त्तत–बैठे; ओटु–दौड़नेवाले; इकल्–युद्धोपयोगी; आटल् मा–घोड़ों की; कण्कळ्–आँखों से; नार–(अश्रु-) जल; ऒऴुकुकिऩ्ऱत–स्रवता है; शूऴि मा–मुखपट्टों से अलंकृत हाथी; तॊऴुविल्–पिंजरों में बद्ध; निऩ्ऱत पोऩ्ऱत–खड़े हों जैसे थे। ३६६३

वीणा से अंकित पताका पर गीध और काग बैठे। दौड़नेवाले युद्ध-योग्य अश्वों की आँखों से अश्रु बह निकला। मुखपट्टालंकृत हाथी पिंजरे में बद्ध जैसे श्रांत खड़े रहे। ३६६३

इऩ्ऩ वाहि यिमैयवर्क् किऩ्बञ्जॆय्
तुऩ्नि मित्तङ्गळ् तोऩ्ऱित तोऩ्ऱवुम्
अऩ्ऩ दॊऩ्ऱु निनैन्दिल ऩार्ऱुमो
ऎऩ्ऩै वॆल्ल मतित्ततॆऩ् ऱॆण्णुवाऩ् 3664

इमैयवर्क्कु–देवों को; इऩ्पम् चॆय्–सुख देनेवाले; तुऩ् निमित्तङ्कळ्–बुरे शकुन; इऩ्ऩ आकि—ऐसे बने; तोऩ्ऱित–दिखे; तोऩ्ऱवुम्–प्रकट हुए तो; ऎऩ्ऩै वॆल्ल–मुझे जीतने में; मतित्तऩ् आऱ्ऱुमो—नर समर्थ होगा क्या; ऎऩ्ऱु ऎण्णुवाऩ्—ऐसा सोचता; अऩ्ऩतु ऒऩ्ऱुम्–उनमें किसी एक पर भी; निनैन्तिलऩ्–मन नहीं लगाया। ३६६४

रावण के ये दुःशकुन हुए जो देवों को आनंद देनेवाले थे। पर रावण के ध्यान में कुछ नहीं आया, क्योंकि उसका विचार था कि क्या नर में मुझे जीतने का सामर्थ्य है ? । ३६६४

वीङ्गु तेर्शॆलुम् वेहत्तु वेलैनीर्, ओङ्गु नाळि तॊदुङ्गु मुलहुपोल्
ताङ्ग लाऱ्ऱ हिलार्तङ्ग मारित्ताम्, नीङ्गि नारिरु पालु नॆरुङ्गिऩार् 3665

वेलै नीर्–सागर-जल के; ओङ्कु नाळिल्–बढ़ते आते (युगांत के) दिन; ऒतुङ्कुम्—हटनेवाली; उलकु पोल्–पृथ्वी के समान; इरु पालुम् नॆरुङ्किऩार्–दोनों ओर से सटकर मिले लोग; वीङ्कु–तेर्–(रावण के) तेज रथ के; चॆलुम् वेकत्तु–

जाने के वेग को; ताङ्कल् आऱ्ऱकिलार्-सह नहीं सके; तट्माऱ्ि-अस्तव्यस्त हो; नीङ्किनार्-हट गये। ३६६५

जब युगांत में समुद्र बढ़ आता है तब जैसे भूमि दोनों ओर हट चलती है, वैसे ही दोनों ओर खड़े रहे लोग रावण के रथ की तेज़ी से हड़बड़ाकर दोनों ओर दूर हट गये। ३६६५

करुम मुड्गडैक् काण्गुरु ञानमुम्
अरुमै शेरु मविञ्जैयुम् विञ्जैयुम्
बॅरुमै शाल्कोंडुम् बावमुम् बेर्हलात्
तरुम मुम्मॅनच् चॅन्ऱॅदिर् ताक्किनार् 3666

करुममुम्-कर्म; कटै-(और साधना के) अंत में; काण्कुरु-प्रगट होनेवाले; ञान्मुम्-ज्ञान की तरह; अरुमै चेरुम्--अभाव-मिलित; अविञ्चैयुम्-अविद्या; विञ्चैयुम्-और विद्या की तरह; पॅरुमै चाल्-बड़ा; कोंटुम्-हानिकारक; पावमुम्-पाप; पेर्कला-अचल; तरुमुम्-धर्म; ॲन-इनकी भांति; ॲतिर् चॅन्ऱु-आमने-सामने जाकर; ताक्किनार्-टकराये। ३६६६

श्रीराम और रावण कर्म और साधना के पूर्ण होने पर मिलनेवाला ज्ञान; अभाव पर आधारित अविद्या और विद्या; और बड़ा पाप और अचल धर्म— ये जोड़े टकराए-जैसे आपस में लड़े। ३६६६

शिरमों रायिरन् दाङ्गिय शेडनुम्, उरवु तोऱ्ऱत् तुवणत् तरशनुम्
पोरवॅ दिर्न्दनर् पोलप् पॉलिन्दनर्, इरवु नण्बह लॅन्नवु मायिनर् 3667

ओरायिरम् चिरम् ताङ्किय-एक सहस्रशीर्ष; चेटनुम्-शेषनाग; उरवु तोऱ्ऱत्तु-और भारी आकार का; उवणत्तु अरचनुम्-गरुड़राज; पोर-लड़ने; ॲतिर्न्त पोल-सामना करते जैसे; पॉलिन्तनर्-शोभे; इरवुम् नण् पकल् ॲन्नवुम्-रात और मध्याह्न जैसे भी लगे। ३६६७

वे सहस्रशीर्ष आदिशेष और बलवान भीमाकार के गरुड़ परस्पर भिड़ने आये हों जैसे भी लगे। और भी रात और मध्याह्न के समान भी दिखे। ३६६७

वॅन्ऱि यन्दिशै यानै वॅहुण्डुड, नॊन्ऱॆ यॊन्ऱु मुनिन्दवु मीत्तनर्
अन्ऱि युन्दर शिङ्गमु माडहक्, कुन्ऱ मन्नव नुम्बॊरुड् गॊळ्हैयार् 3668

वॅन्ऱि-विजयी; अम्-सुन्दर; तिचै यानै-दिग्गज; ऑन्ऱै ऑन्ऱु-एक-दूसरे से; वॅकुण्टु-कोप करके; उटन् मुनिन्तवुम्-परस्पर रोष दिखाते; ऑत्तनर्-बैसे रहे; अन्ऱियुम्-और भी; आटकम् कुन्ऱम् अन्नवनुम्-स्वर्णगिरि-सा हिरण्य और; नरचिङ्कमुम्-नरसिंह; पोरुम् कोळ्कैयार्-जैसे भिड़े उस प्रकार के बने (ये दोनों)। ३६६८

विजयी और सुन्दर दिग्गज आपस में क्रोध, रोष और वैर के साथ

गुंथने खड़े हों, वैसे भी रहे। और भी स्वर्ण-पर्वताकार हिरण्य और नृसिंहदेव युद्ध ठानकर खड़े हों वैसे भी लगे। ३६६८

तुवन्न विल्लिन् बॊरुट्टॊरु तॊल्लैनाळ्
ऎवन्न विल्वलित् तॆन्ड्रिमै योर्तॊळप्
पुवन्न मून्ड्रुम् बॊलङ्गळ् लाट्ड्रॊडुम्
अवन् मच्चिव नम्मॆन लायिनार् 3669

तॊल्लै–प्राचीन काल में; ऒरु नाळ्–एक दिन; तुवन्न–ध्वनिपूर्ण; बिल्लिन् पॊरुट्टु–(दो) धनुओं के निमित्त; इमैयोर्–व्योमवासियों के; ऎवन्न विल्–किसका धनु; वलित्तु–अधिक बलवान है; ऎन्ड्रु–पूछकर; तॊळ–नमस्कार करने पर; पुवन्न मून्ड्रुम्–तीनों भुवनों को; पॊलन् कळलाल्–स्वर्णपायलधारी श्रीचरणों से; तॊट्टुम्–जिन्होंने स्पर्श किया (नापा); अवनुम्–उन (त्रिविक्रम) और; अ चिवनुम् ऎनल्–उन शिवजी के समान; आयिनार्–बने। ३६६९

पहले कभी देवों ने ज़ोरदार दो धनुओं में 'कौन सा धनु अधिक बलवान है?' यह जानना चाहा। उन्होंने शिव और विष्णु से विनय की। तब, जिन्होंने तीनों लोकों को अपने स्वर्ण-पायलधारी श्रीचरण से मापा था, उन विष्णु और शिव में घमासान युद्ध छिड़ गया। तब के दोनों देवों के समान भी वे दिखे। ३६६९

कण्ड शङ्गर नान्मुहर् कैत्तलम्
विण्ड शङ्गत् तॊल्लण्डम् वॆडित्तिड
अण्ड शङ्गत् तमरर्द मार्प्पॊलाम्
उण्ड शङ्ग मिरावण नूदिनान् 3670

कण्ट–देखते हुए; चङ्कर् नान्मुकर्–शंकरजी और ब्रह्माजी; कैत्तलम्–हाथ; विण्टु–अलग हों; अचङ्क–काँपें ऐसा; तॊल् अण्टम्–प्राचीन ब्रह्माण्ड में; वॆटि–फटने का शब्द; पट–हो ऐसा; अण्टम्–व्योमलोक में; चङ्कत्तु अमरर्तम्–देवसमूह का; आर्प्पॊलाम्–आनंद का सारा आरव; उण्ट–जिसने निगल लिया; चङ्कम्–उस शंख को; इरावणन् ऊतिनान्–रावण ने बजाया। ३६७०

तब रावण ने व्योमलोक-मोद के शब्द को दबानेवाले शंख को ले बजाया तो दर्शक शंकर और ब्रह्मा के हाथ हिलकर काँपे और ब्रह्माण्ड से फूटने का शब्द निकला। ३६७०

शॊन्न शङ्गित दॊशै तुळक्कुर
ऎन्न शङ्गॆन् ड्रिमैयव रेङ्गिड
अन्न शङ्गॊप् पॊराम यिन्नालरि
दन्न वॆण्शङ्गम् दानु मुळङ्गिट्ड्राल् 3671

अत्त चङ्कै–उस शंख को; पॊऱामैयिताल्–ईर्ष्या से (न सहकर); चॊत्त–उक्त; चङ्कितु ओचै–शंख की ध्वनि; तुळक्कुऱ–काँप जाए ऐसा; इमैयवर्–देव; ऎत्त चङ्कु ऎन्ऱु–यह कैसा शंख है ऐसा; एङ्किट–संशय करें ऐसा; अरि तन्न–हरि का; वॆण् चङ्कम् तानुम्–श्वेत (पांचजन्य) शंख भी; मुऴक्किऱ्ऱु–स्वतः बज उठा। ३६७१

यह शंखनाद सुनकर श्रीविष्णु का पांचजन्य नामक शंख जल उठा। वह उस शंखनाद को ही कँपाते हुए स्वरित हो उठा, जिसे सुनकर स्वयं देव पूछ बैठे कि यह कैसा शंख है ? । ३६७१

ऐय नैम्बडै तामु मडित्तॊऴिल्, शॆय्य वन्दयल् निन्ऱन तेवरिन्
मॆय्य नन्नवै कण्डिलन् वेदङ्गळ्, पॊय्यि इन्नैप् पुलन्ऱॆरि यामैपोल् 3672

ऐयन्–प्रभु के; ऐम् पटै तामुम्–पाँचों (प्रकार के : चक्र, शंख, गदा, असि और धनु) अस्त्र; अटि तॊऴिल् चॆय्य–चरण-सेवा करने; वन्तु–आकर; अयल्–पास में; निन्ऱन–खड़े रहे; वेतङ्कळ्–वेद; पॊय्यिल् तन्नै–सच्चे उनको; पुलन् तॆरियामै पोल्–नहीं जान पाते जैसे; अन्नवै–उन्हें; तेवरिन् मॆय्यन्–देवों के सत्यतत्त्व ने; कण्टिलन्–नहीं देखा। ३६७२

तब प्रभु श्रीराम (श्रीविष्णु) के (शंख, चक्र, दण्ड, खड्ग और कोदण्ड) पाँचों आयुध चरणसेवार्थ पास आये रहे। पर वेद जैसे उस सत्यतत्त्व को पहचान नहीं पाये वैसे ही देवों की सच्ची वस्तु, वे परम पुरुष उन्हें देख नहीं पाये। ३६७२

आशै युम्विशुम् बुम्मलै याऴियुम्
तेश मुम्मलै युन्नॆडुन् देवरुम्
कूश वण्डङ् गुलुङ्गक् कुलङ्गॊळ्तार्
वाश वन्शङ्ग मादलि वाय्वैत्तान् 3673

आचैयुम्–दिशाएँ; विचुम्पुम्–और आकाश; अलै आऴियुम्–और तरंग-सहित सागर; तेचमुम्–देश; मलैयुम्–पर्वत; नॆटु तेवरुम्–और महान देव; कूच–संकुचित हुए; अण्टम् कुलुङ्क–अण्ड हिल उठे; कुलम् कॊळ् तार्–राशियों में रहे फूलों की माला के; वाचवन् चङ्कै–वासव के शंख को; मातलि–मातलि ने; वाय् वैत्तान्–अपने मुख पर रखकर बजाया। ३६७३

तब मातलि ने पुष्पबहुल मालाधारी वासव के शंख ले फूंका, जिसकी ध्वनि सुनकर दिशाएँ, आकाश, तरंगपूर्ण समुद्र, देश, पर्वत और उत्कृष्ट देव –सारे सकुचा गये। और अण्ड भी अस्त-व्यस्त हो गया। ३६७३

शॆन्ऱ तेरॊ रिरण्डॊडुञ् जेर्त्तिय, कुन्ऱि वॆङ्गट् कुदिरै कुदिप्पन
ऒन्ऱॊ डॊन्ऱुऱ ऎरियुह नोक्किन, तिन्ऱु तोऱ्ऱवन पोलुञ् जिनत्तन 3674

शॆन्ऱ–जो गये उन; तेर् ओर् इरण्टॊटुम्–दो अपने रथों के साथ; चेर्त्तिय–

जुते; कुन्ऱि-घुँघुचियों के समान (लाल); वॅम् कण् कुतिरै-भयोत्पादक आँखों वाले अश्व; कुतिप्पत्त-उछलने-कूदनेवाले; ऑन्ऱै ऑन्ऱु उऱ्ऱु-परस्पर पास आकर; ॲरि उक-आग उगलते हुए; नोक्किन-देखनेवाले; तिन्ऱु तीर्वन पोलुम्-खा जायँगे ऐसा; चिनत्तन-क्रोधी (बने)। ३६७४

दोनों रथों के जुते घुँघुची-सम लाल तथा भयोत्पादक आँखों वाले अश्व उछलकर परस्पर पास गये। आँखों से आग उगलते हुए ऐसा क्रोध दिखाया मानो वे एक दूसरे को खा डालेंगे। ३६७४

कॊडियिन् मेलुऱै वोणैयुङ् गॊऱ्ऱमा, इडियु नेऱु मुऱैयि निडित्तन
पडियुम् विण्णुम् बरवयुम् बन्मुऱै, मुडियु मॆन्बदोर् मूरि मुऴक्किनाल् 3675

कॊटियिन् मेल् उऱै-ध्वजा में रहनेवाली; वीणै-वीणा और; कॊऱ्ऱम्-विजयी; मा इटियिन् एऱुम्-बड़ा अशनिराज; पटियुम्-पृथ्वी; विण्णुम्-और आकाश; परवैयुम्-समुद्र; मुटियुम्-मिट जायँगे; ॲन्पतु-ऐसा संशय उत्पन्न करनेवाले; ओर् मूरि मुऴक्किनाल्-भारी शब्द के साथ; मुऱैयिन्-बारी-बारी से; पन्मुऱै इटित्तन-अनेक बार टकराये। ३६७५

दोनों ध्वजाओं की वीणा और विजयी अशनिराज भी भयंकर शोर के साथ अनेक बार आपस में ऐसा टकराए कि लगा कि पृथ्वी, आकाश और समुद्र नष्ट हो जायँ। ३६७५

एऴु वेलैयु मार्प्पॆडुत् तॆन्नलाम्, वीऴि वॆङ्ग णिरावणन् विल्लॊलि
आऴि नादन् शिलैयॊलि यण्डम्विण्, डूऴि पेर्वुऴि मामऴै यॊत्तदाल् 3676

वीऴि-'वीऴी' के फल के समान (लाल); वॅम् कण्-भयोत्पादक आंखोंवाले; इरावणन्-रावण के; विल् ऑलि-धनु की ध्वनि; एऴु वेलैयुम्-सातों समुद्र; आर्प्पु ॲटुत्त-गरजे; ॲन्नलाम्-ऐसा कही जा सकती है; आऴिनातन्-चक्रधारी नाथ श्रीराम के; चिलै ऑलि-धनु की ध्वनि; अण्टम् विण्टु-अंड फाड़कर; ऊऴि पेर्वु उऴि-युगांत के समय के; मा मऴै ऑत्ततु-बड़े मेघों के गर्जन के समान थी। ३३७६

'वीऴी' के फल के समान लाल और क्रूर आँखों वाले रावण के धनु की ध्वनि सातों समुद्रों के गर्जन के समान थी। चक्रधारी श्रीराम के धनु का शब्द अंडविदारक युगांतकालीन मेघों के गर्जन का-सा रहा। ३६७६

आङ्गु निन्ऱ वनुमत्तै यादियाम्, वीङ्गु वॆञ्जिन वीरर् विऴुन्दनर्
एङ्गि निन्ऱ दलालॊन् ऱिऴैत्तिलर्, वाङ्गु शिन्दैयर् शॆय्है मऱन्दुळार् 3677

आङ्कु निन्ऱ-वहाँ जो खड़ा रहा; अनुमत्तै आतियाम्-हनुमान आदि; वीङ्कु-स्फीत; वॅम्-भयानक; चिन वीरर्-क्रोध के वीर; वाङ्कु चिन्तैयर्-भ्रांतमन होकर; एङ्कि निन्ऱतु अलाल्-तरसते खड़े रहे, उसके सिवा; चॅय्कै

मऱन्तुळार्-कार्य भूले; ऑऩ्ऱु इऴैत्तिलर्-कुछ न करके; विऴुन्ततर्-गिर पड़े। ३६७७

इनका शब्द सुनकर हनुमान आदि वर्धनशील क्रोध से अभिभूत वानरवीर भी श्रांतमन हो गये। उनका मन म्लान हो गया। किंकर्तव्यविमूढ और निष्क्रिय होकर गिर गये। ३६७७

आव तॆऩ्तेहो लामॆऩ् ऱऱिहिलार्, एवर् वॆल्वरॆऩ् ऱॆण्णल रेङ्गुवार्
पोवर् मीऴ्वर् पदैप्पर् पॊरुमलाल्, तेव रुन्दङ्गऴ् शॆय्है मऱन्दनर् 3678

तेवरुम्-देव भी; ऎऩ्ऩ कोल् आवतु आम्-क्या ही होगा; ऎऩ्ऱु-यह; अऱिकिलार्-न जान सके; ऎवर् वॆल्वर्-कौन जीतेंगे; ऎऩ्ऱु ऎण्णलर्-यह सोच नहीं सके; एङ्कुवार्-म्लान रहे; तम्कऴ् चॆय्कै मऱन्ततर्-अपना कृत्य भूल गये; पॊरुमलाल्-(मन में) दुःख के भरने से; पोवर्-जाते; मीऴ्वर्-लौटते और; पतैप्पर्-बेचैन होते थे। ३६७८

देव भी यह नहीं जान सके कि क्या होगा ? यह नहीं सोच सके कि किसकी जीत होगी ? स्थित होकर म्लान हो रहे, अपनी क्रियाएँ भूल गये। दुःख से भरकर जाते-आते और बेचैनी दिखाते थे। ३६७८

नीण्ड मिऩ्ऩॊडु वाऩॆडु नीलविल्
पूण्डि रण्डॆदिर् निऩ्ऱुवुम् बोऩ्ऱऩ
आण्ड विल्लितऩ् विल्लु मरक्कऩ्ऱऩ्
तोण्ड वल्लव रिल्लाच् चिलैयुमे 3679

आण्ट-लोकरक्षक; विल्लि तऩ्-कोदण्डपाणी का; विल्लुम्-धनुष और; अरक्कऩ् तऩ्-राक्षस (राज) का; तीण्ट वल्लवर् इल्लाचिलैयुम्-ऐसा चाप जिसे अन्य कोई छू भी नहीं सके; नील वाऩ्-नीले गगन में; इरण्टु नॆटु विल्-दो लंबे इन्द्रधनुष; नीण्ड मिऩ्ऩॊडु पूण्टु-लंबी विद्युत् (प्रत्यंचा) से युक्त होकर; ऎतिर् निऩ्ऱवुम्-आमने-सामने रहते हों; पोऩ्ऱऩ-जैसे भी रहे। ३६७९

लोकरक्षक श्रीराम का कोदण्ड और राक्षसराज का चाप, जिसे कोई स्पर्श भी नहीं कर सकता था, दोनों नीले आकाश में आमने-सामने प्रकट दो बड़े इंद्रधनुषों के समान, जिनसे विद्युत् के डोरे बँधे हों, दिखे। ३६७९

अरक्क ऩऩ्ऱॆडुत् तार्त्तत वार्प्पुमोर्
शिरिप्पु माविऱ् ऱॊऴिप्पुमुण् डेहॊलाम्
कुरैक्कुम् वेलैयु मेहक् कुऴाङ्गऴुम्
इरैत् तिडिक्किऩ्ऱ वितऩ्ऱुमो रीऱिल 3680

कुरैक्कुम् वेलैयुम्-गरजते सागर और; मेक कुऴाङ्कऴुम्-मेघसमूह; इऩ्ऱुम्-आज भी; ओर् ईऱु इल-बिना अंत के; इरैत्तु-गरजकर; इटिक्किऩ्ऱ-

कड़कते हैं; अन्ऱु–उस दिन; अरक्कन्–राक्षस ने; ॲडुत्तु आर्त्तत्त–जो उठाकर शब्द किया; आर्प्पुम्–वह घोष; ओर् चिरिप्पुम्–और एक अट्टहास; विल् तॆऴिप्पुम्–और धनु का शोर; उण्टे कॊल् आम्–आज होंगे क्या। ३६८०

गरजते सागर और मेघसमूह आज भी गरजते रहते हैं। पर उस दिन रावण का नर्दन, अट्टहास और उसके चाप का शब्द जो उठे वे आज प्राप्य हैं क्या ? । ३६८०

मण्णिऱ् काट्टुव वान्िडि येऱ्ऱित्तम्
ऍण्णिऱ् चूऩ्मऴै यल्ल विरावणऩ्
कण्णिऱ् चिन्दिय तीक्कडु वॆम्बॊऱि
विण्णिऱ् चॆल्वऩ विण्णिऩ्ऱु वीऴ्वऩ 3681

वान् इटि एऱ्ऱु इत्तम्–आकाश के अशनिराज-समूहों का; मण्णिल् काट्टुवत–भूमि पर प्रगट होना; ऍण्णिन्–सोचें तो; चूल् मऴै अल्ल–जलगर्भ-मेघ (जनित) नहीं; इरावणन्–(पर) रावण ने; कण्णिन् चिन्तिय–आँखों से जो गिराये; ती कटु वॆम् पॊऱि–वे अग्नि-सम भयानक अंगारे; विण्णिल् चॆल्वत–जो आकाश में जाते रहे और; विण् निन्ऱु–आकाश से; वीऴ्वत–गिरते रहे। ३६८१

"अशनियाँ तो आकाश में होती हैं। अब भूमि पर भी दिखाई देती क्यों ?" यह अन्वेषण करें तो मालूम होगा कि वे वज्र जलगर्भ मेघ-जनित नहीं। पर वे रावण की आँखों से निकले गरम अंगारे हैं, जो आकाश में जाते तथा नीचे आते रहे। ३६८१

इक्क णत्तु मॆऱिप्प तडित्तॆऩ
चॆक्कर् मेहत् तुदिक्कुम् नॆरुप्पॆऩप्
पक्कम् वीशुम् वडेच्चुडर् पः(ह्)ऱिशै
पुक्कुप् पोहप् पॊडिप्पऩ पोक्किल 3682

पक्कम्–पार्श्वों में; वीचुम्–प्रकाश निकालनेवाले; पटै–हथियारों के; चुटर्–प्रकाश-कण; पल् तिचै पुक्कु पोक–अनेक दिशाओं में घुस चले तो; पॊटिप्पत–वहाँ के पदार्थों को भस्म कर गये; पोक्किल–वे मिटे नहीं; इ कणत्तुम्–अब भी; चॆक्कर् मेकत्तु–लाल मेघ में से; उतिक्कुम्–जनित; नॆरुप्पु ॲत–आग के समान; तटित्तु ॲत–तड़ित के समान; ऍऱिप्प–चलते रहते हैं। ३६८२

रावण के पार्श्वों में रहे हथियारों के प्रकाशकण सभी दिशाओं में चले और वहाँ के पदार्थों को भस्म कर गये। पर वे स्वयं नहीं मिटे। आज भी वे ही लाल मेघजन्य आग (बिजली) और तडित् के रूप में चलते रहते हैं। ३६८२

मालक लङ्गलिल् शिन्दॆयिन् मादिरम्
नालक लङ्ग नहुन्दॊरु नावॊडु

कालक लङ्गुवर् तेवर् कणमळैच्
चूलक लङ्गु विलङ्गल् तुलङ्गुमाल् 3683

कलङ्कलिल् चिन्तैयिल्–अचंचलमन; माल्–श्रीविष्णु के समान रहनेवाली; नाल् मातिरम् कलङ्क–चारों दिशाओं को कँपाते हुए; नकुम् तोरुम्–(रावण के) हँसते हर समय; तेवर्–देव; नावोटु–जीभों के साथ; काल्–पैर में; कलङ्कुवर्–लड़खड़ाते; चूल्–(जल-) गर्भ; कण मळै–मेघसमूह; कलङ्कुम्–डर जाते; विलङ्कल्–(त्रिकूट) पर्वत; तुलङ्कुम्–काँप जाता। ३६८३

श्रीविष्णु के मन के समान रहनेवाली अचल दिशाओं को भी चलित करते हुए जब-जब रावण हँसा, तब देवों की जीभें और पैर लड़खड़ाये। जलगर्भ मेघसमूह अस्त-व्यस्त हुए; और त्रिकूट पर्वत भी चलित हुआ। ३६८३

कुऱ्ऱम् विऱ्कॊडु कॊल्लुदल् कोळिलाच्
चिऱ्ऱै याळनैत् तेवर्दन् ऱेरॊडुम्
पऱ्ऱि वानिऱ् चुळऱ्ऱिप् पडियिन्मेल्
ऍऱ्ऱु वॆनॆन् ऱुरैक्कु मिरैक्कुमाल् 3684

कोळ् इला–निर्बल; चिऱ्ऱै याळनै–छोकरे को; विऱ्कॊटु–धनु लेकर; कॊल्लुतल्–मारना; कुऱ्ऱम्–गलत है; तेवर् तम् तेरॊटुम्–देव-रथ के साथ; पऱ्ऱि–पकड़कर; वानिल् चुळऱ्ऱि–आकाश में घुमाकर; पटियिन् मेल्–भूमि पर; ऍऱ्ऱुवेन्–पटक दूंगा; ऍन्ऱु उरैक्कुम्–यह कहता (रावण); इरैक्कुम्–चिल्लाता। ३६८४

'निर्बल छोकरे पर धनु का प्रयोग करके उसे मारना हीनता है। इसलिए मैं उसे देवरथ के साथ पकड़कर आकाश में घुमाकर भूमि पर पटक दूँगा' —ऐसा रावण चिल्लाकर कहता। ३६८४

तडित्तु वैत्तनन वॆङ्गणै ताक्कुऱ
वडित्तु वैत्तदु मानुडऱ् कोवलि
ऒडित्तुत् तेरै युदिर्त्तोरु विल्लॊडुम्
बिडित्तुक् कॊळ्वन् शिरैयॆनप् पेशुमाल् 3685

तटित्तु–गाज को; वैत्त अन्न–रखकर निर्मित किया हो ऐसे; वॆम् कणै–भयानक शरों के; ताक्कुऱ–जोर से लगने पर; वलि–(सहने की) शक्ति; मानुटऱ्को–क्या मानव को; वटित्तु वैत्ततु–बनी रखी है; ऒटित्तु–तोड़कर; तेरै उतिर्त्तु–रथ को चूर कर; ऒरु–श्रेष्ठ; विल्लॊटुम्–धनु के साथ; चिऱै पिटित्तु कॊळ्वन्–बंदी बना लूंगा; ऍन पेचुम्–यह कहता। ३६८५

"वज्रनिर्मित-से कठोर अस्त्रों को झेलने की शक्ति क्या मानव को

मिली है ? उसे तोड़ दूंगा; रथ को चूर कर दूंगा; उसे उसके श्रेष्ठ कोदण्ड के साथ पकड़कर बंदी बना लूंगा।" —रावण ऐसा कहता। ३६८५

पदैक्किन्रदोर् मनमुम्मळल् पडर्हिन्रदोर् शिनमुम्
विदैक्किन्रन पॊरिपॊङ्गिन विळियुम्मुडै वॆय्योन्
कुदैक्कुन्रॆन निमिर्वॆञ्जिलै कुळैयक्कडुङ् गोडुङ्गाऱ्
रुदैक्किन्रन शुडुवॆङ्गणै युरुमॆन्न वॆय्दान् 3686

पतैक्किन्ऱतु–विकंपित; ओर् मनमुम्–एक मन; अळल् पटर्किन्ऱतु–आग-फैलते; ओर् चिनमुम्–एक क्रोध; वितैक्किन्ऱन–(सभी दिशाओं में) बिखरते; पॊरि–अंगारों से भरी; विऴियुम्–आँखें; उटै–जिसकी थीं; वॆय्योन्–उस क्रूर रावण ने; कुतै–'कुदै' सहित; कुन्ऱु अॆन–पर्वत-सम; निमिर्–तनकर रहे; वॆम् चिलै–भयंकर धनुष; कुऴैय–झुकाकर; कटु कॊटुम् काऱ्ऱु–तेज भयंकर पवन द्वारा; उतैक्किन्ऱन–चालित; उरुम् एऱु अॆन–अशनिराज के समान; चुटु वॆम् कणै–गरम क्रूर शर; अॆय्तान्–चलाये। ३६८६

अशांतमन, अग्नि-सम फैलता क्रोध, और अंगारे छितरनेवाली आँखें —इनसे युक्त क्रूर रावण ने कुदै- (बाण रखने का डोरे पर स्थान) सहित पर्वत के समान तने रहे धनु को झुकाया और प्रचंड पवनचालित अशनिराजों के समान जलानेवाले भयावह बाणों को छोड़ा। ३६८६

उरुमॊप्पन कनलॊप्पन वूऱ्ऱन्दरु कूऱ्ऱिन्
मरुमत्तिनुळ् नुळैहिऱ्पन मळैयॊप्पन वानोर्
निरुमित्तन पडैपऱ्ऱन निमिर्वुऱ्ऱऩ वमिऴ्दप्
पॆरुमत्तिनै मुऱ्ऱिय पॆरुम्बाम्बिनुम् बॆरिय 3687

उरुम् ऒप्पन–वज्र-सम थे; कनल् ऒप्पन–अग्नि-सरीखे; ऊऱ्ऱम् तरु–हानिकारक; कूऱ्ऱिन्–यम के भी; मरुमत्तिनुम्–मर्म (वक्ष) में; नुऴैकिऱ्पन–घुस सकनेवाले; मऴै ऒप्पन–वर्षा-सम; वानोर् निरुमित्तन–देव-रचित; पटै–(शत्रु के) हथियारों को; पऱ्ऱु अऱ–तोड़ते हुए; निमिर्वु उऱ्ऱन–सिर तानकर चलनेवाले; अमिऴ्तम् पॆऱ मत्तितै–अमृत निकालने में लगायी गयी; मत्तितै–मथानी (मेरु) को; मुऱ्ऱु–ठीक प्रकार से; चुऱ्ऱिय–जो लिपटा रहा; पॆरुम् पाम्पिनुम्–उस बड़े नाग (वासुकी) से भी; पॆरिय–बड़े थे। ३६८७

रावण-प्रेरित शर वज्र-सम थे। आग-से थे। घातक यम के मर्म को भेद सकनेवाले थे। मेघ-सम थे। देवनिर्मित थे। शत्रुओं के हथियारों को निर्मूल करते हुए शान के साथ चलनेवाले थे। अमृत निकालने को लगायी गयी मथानी (मेरु) पर जो लिपटा रहा, उस मोटे बड़े सर्प वासुकी के समान स्थूल और बड़े थे। ३६८७

तुण्डप्पड नॆडुमेरुवैत् तॊळैत्तुळ्ळुरै तॊङ्गा
तण्डत्तैयुम् बॊदुत्तेहुमॆन्ऱ् रिमैयोर्हळु मयिर्त्तार्
कण्डत्तॆरु कणमारियै करुणैक्कडल् कत्तहच्
चण्डच्चिलैच् चरङ्गॊण्डवै यिडैयेयऱ्ऱ् तडुत्तान् 3688

नॆडु मेरुवै–लंबे मेरु को; **तुण्टप्पट**–खण्ड-खण्ड बनाते हुए; **तॊळैत्तु**–छेदकर; **इऱै**–कुछ देर भी; **उळ् तॊङ्कातु**–अंदर न रहकर; **अण्टत्तैयुम्**–अंड को भी; **पॊतुत्तु**–भेदकर; **एकुम् ऎन्ऱु**–जायँगे (रावण के बाण) ऐसा; **इमैयोर्कळुम्**–देव भी; **अयिर्त्तार्**–भ्रमित हुए; **करुणै क्कटल्**–करुणासागर; **अ तॆरु कणै मारियै**–उस गरम शरवर्षा को; **कण्टु**–देखकर; **चण्टम्**–प्रचंड; **कनकम् चिलै**–स्वर्ण-धनुष से; **चरम् कॊण्टु**–शर चलाकर; **अवै इटैये अऱ**–उनको बीच में काट कर; **तटुत्तान्**–रोक दिया। ३६८८

उन्हें देखकर देवगण भी भ्रमित हुए कि ये बड़े मेरु को भी छेदकर विना कुछ देर भी ठहरे निकल जायँगे; अण्ड को भी भेदकर निकल जायँगे। तब करुणासागर श्रीराम ने अपने प्रचंड कनक-चाप से शर चलाये और उन गरम वर्षा के-से शरों को वीच में ही काटकर रोक दिया। ३६८८

उडैमान्मुयन्ऱु ऱुकारियम् ऱुरुतीविनै युडऱ्ऱ्
इडैयूऱुरच् चिदैन्दाङ्गॆनच् चरज्जिन्दिन विऱ्लुम्
तॊडैयूऱिय कणैमारिहळ् तॊहैतीर्न्दन तुरन्दान्
कडैनाळुरु कणमामळै काल्वीऴ्न्दॆनक् कडियान् 3689

उटैयान्–कोई स्वामी; **मुयन्ऱु उऱु**–जो प्रयत्न करके साधता है वे; **कारियम्**–कार्य; **उऱु तीविनै**–(उसे) मिले पापों के; **उटऱ्ऱ**–नष्ट करने पर; **इटैयूऱु उऱ**–जब बाधाएँ पड़ती हैं; **चितैन्त ऎन्न**–जैसे (वे कार्य) असफल हो जाते हैं वैसे; **चरम्**–(रावण के) शर; **विऱलुम् चिन्तिन**–अपनी शक्ति खो गये; **कटियान्**–निर्मम रावण ने; **तॊटै उऱिय**–चलाने से बल-प्राप्त; **तॊकै तीर्न्तन**–असंख्यक; **कणै मारिकळ्**–शरों की वर्षाओं को; **कटै नाळ् उऱु**–युगांत में चलनेवाली; **कण मा मऴै**–बड़े मेघों के समूह; **काल् वीऴ्न्तु ऎन्न**–नीचे उतरे हों जैसे; **तुरन्तान्**–छोड़ा। ३६८९

मानो कि कोई प्रयत्नवान खूब यत्न करके कार्य साधता है और बहुत क्रूर प्रारब्ध आकर बाधा देता है तो वे कार्य मिट जाते हैं। वैसे ही क्रूर रावण के शर व्यर्थ बने। रावण के चलाने से बलवान हुए वे असंख्यक शर बल खोकर युगांत के मेघ नीचे गिरे जैसे नीचे गिर गये। ३६८९

विण्पोर्त्तन तिशैपोर्त्तन मलैपोर्त्तन विमैयोर्
कण्पोर्त्तन कडल्पोर्त्तन पडिपोर्त्तन कलैयोर्

ऍण्पोर्त्तत्त वॅरिपोर्त्तत्त विरुळ्पोर्त्तत्त वॅन्ऩे
तिण्पोर्त्तॊॊळि लॅन्ऩ्रानॆयि ऩुरिपोर्त्तवन् तिहैत्तान् 3690

आतैयित् उरि पोर्त्तवन्—गजचर्मांबरधारी (शिव) ने; विण्—आकाश; पोर्त्तत्त—आच्छादित कर गये (रावण-शर); तिचै पोर्त्तत्त—दिशाओं को ढँक गये; मलै पोर्त्तत्त—पर्वतों को ढाँप दिया; इमैयोर् कण् पोर्त्तत्त—देवों की आँखों पर छा गये; कटल् पोर्त्तत्त—समुद्रों को ढँक दिया; पटि पोर्त्तत्त—भूमि को ढाँप दिया; कलैयोर्—कलाविदों के; ऍण्—संख्याज्ञान को; पोर्त्तत्त—बेकार कर दिया; ऍरि पोर्त्तत्त—अग्नि को ढाँप दिया; इरुळ् पोर्त्तत्त—अन्धकार पर छा गये; तिण्—कठोर; पोर् तॊॊळिल् इतु—युद्धकर्म यह; ऍन्ऩ्रो—कौन-सा है; ऍन्ऱान्—पूछा (आश्चर्य से)। ३६९०

गजचर्मांबरधारी शिवजी ने यह आश्चर्य देखा कि उन शरों ने आकाश को, दिशाओं को, पर्वतों, देवों की आँखों, समुद्रों और भूमि सबको ढाँप दिया। गणितज्ञों के संख्याज्ञान को भी उन्होंने आच्छादित कर दिया! आग व अधिकार भी ढँक गया। शिव चक्कित हुए कि ऐसा कठोर युद्धकर्म है कैसा ? । ३६९०

अल्लानॆडु पॅरुन्देवरु मऱैवाणरु मञ्जि
ऍल्लार्हळुङ् गरङ्गॊण्डिरु विऴिपॊत्तिऩ रिरिन्दनर्
शॆल्लायिरम् विऴुङ्गालुहम् विलङ्गॊत्तदु शेऩै
विल्लाळऩु मदुहण्डवै विलक्कुम्बडि विरैन्दान् 3691

अल्ला—(शिवजी से) अन्य; नॆट्टु पॅरु तेवरुम्—बहुत श्रेष्ठ देव और; मऱै वाणरुम्—वेदविप्र; ऍल्लार्कळुम्—सभी; अञ्चि—डरकर; करम् कॊण्टु—हाथों से; इरु विऴि—दोनों आँखों को; पॊत्तितर्—मूँदकर; इरिन्तनर्—भाग गये; चेऩ—सेना (वानरों की); आयिरम् चॆल्—हजार वज्र; विऴुम् काल्—जब गिरें तब; उकुम्—चूर होनेवाले; विलङ्कु—पर्वत; ऑत्तदु—के समान बन गयी; अतु कण्टु—उसको देखकर; विल्लाळऩुम्—धनुर्धर श्रीराम भी; अवै—उन्हें; विलक्कुम्पटि—रोकने को; विरैन्तान्—आतुर हुए। ३६९१

शिव के अतिरिक्त अन्य देवता लोग, ब्राह्मण लोग आदि सभी भयातुर होकर अपनी आँखों को अपने हाथों से मूँदते हुए इधर-उधर भाग गये। वानर-सेना भी सहस्र वज्राहत गिरि के समान छिन्न-भिन्न हो गयी। धनु के स्वामी श्रीराम ने यह हालत देखी तो उनमें उन बाणों को रोकने की आतुरता पैदा हो गयी। ३६९१

शॆन्वीवित्ते मऱैवाणऩुक् कॊरुवऩ्शिरु विलैनाळ्
मुन्दीन्ददॊ रुणवित्पय ऩॆत्तलायिऩ मुदल्वऩ्
वन्दीन्दऩ वडिवॆङ्गणै यऩैयाऩ्वहुत् तमैत्त
वॆन्वीवित्तैप् पयऩ्तॊत्तऩ वरक्कऩ्शॊरि विशिहम् 3692

मुतल्वऩ्–आदिनाथ श्रीराम ने; वन्तु–आकर; ईऩ्तत–जो चलाये; वटि वॆम् कणै–तीक्ष्ण तापक शर; ऒरुवऩ्–किसी (दाता) के; मुऩ्तु–पहले किसी दिन; वॆम् ती वित्तै–लाल तीनों "अग्नि" पालनेवाले; मऱै वाणर्क्कु–वेदविप्र को; चिऱु विलै नाळ्–अकाल में; ओर् उणविऩ्–एक भोजन; ईऩ्ततु–देने का; पयऩ् अॆऩ्ऩल्–फल जैसा; आयिऩ–बढ़ गये; अरक्कऩ् चोरि विचिकम्–राक्षसप्रेरित विशिख; अतैयात्–उसके; वकुत्तु अमैत्त–संकलित; वॆम् तीविऩै–कठोर पापों के; पयऩ् ऒत्तऩ–फल के समान हुए। ३६६२

श्रीराम ने मैदान में आकर तीक्ष्ण और दाहक जो अस्त्र चलाये, वे अकाल के समय किमी दाता द्वारा याजी ब्राह्मण को दिये गये भोजन के फल के समान बढ़ गये। उधर रावण के प्रेषित बाण उसके ही रचित पापों के फल के समान (क्षीण) हो रहे। ३६९२

नूऱायिरम् वडिवॆङ्गणै नॊडियॊऩ्ऱिऩिल् विडुवाऩ्
आऱाविऱल् मऱवोऩवै तऩिनायहऩ् ऱऱुप्पाऩ्
कूऱायिऩ कऩल्शिऩ्दिऩ कुडिक्कप्पुऩल् कुऱुहिच्
चेऱायिऩ पॊडियायिऩ तिडरायिऩ कडलुम् 3693

आऱा विऱल्–अक्षुण्ण विजय के; मऱवोऩ्–वीर रावण; नॊटि ऒऩ्ऱिऩिल्–चुटकी बजाने की देर में; नूऱायिरम्–एक लाख; वटि वॆम् कणै–तीक्ष्ण तापक शर; विटुवाऩ्–छोड़ता; अवै–उन्हें; तऩि नायकऩ्–बेजोड़ सरदार श्रीराम; अऱुप्पाऩ्–काट देते; कूऱायिऩ–छिन्न हुए वे; कऩल् चिन्तिऩ–आग छोड़ते हुए; कुऱुकि–आकर; पुऩल्–जल को; कुटिक्क–पी (सोख) लेते तो; कटलुम्–समुद्र; चेऱु आयिऩ–पंक बनते फिर; पॊटि आयिऩ–धूलि बनते और; तिटर् आयिऩ–टीले बनते। ३६९३

अक्षुण्ण विजयी रावण एक क्षण में सहस्र तीक्ष्ण कठोर शर चलाता। अप्रतिम नायक श्रीराम उन्हें काट देते। कटे वे आग उगलते हुए जाकर जल को सोख लेते तो समुद्र पंक बनते, फिर धूलि बनते और फिर टीले बन जाते। ३६९३

विल्लाऱ्चरऩ् दुरक्किऩ्ऱवऩ् कुडऩ्ऱेमिडल् वॆम्बोर्
वल्लाऩॆळु मळुत्तोमर मणित्तण्डिरुप् पुलक्कै
तॊल्लार्मिडल् वळैशक्करञ् जूलम्मिवै तॊडक्कत्
तॆल्लानॆङ्ग् गरत्तालॆडुत् तॆऱिन्दाऩ्शॆरु वऱिन्दाऩ् 3694

विल्लाल्–धनु से; चरम्–बाणों को; तुरक्किऩ्ऱवऱ्कु–जो चलाते थे उन (श्रीराम) पर; चॆरु अऱिन्ताऩ्–युद्धतंत्रज्ञ; मिटल् वॆम् पोर् वल्लाऩ्–और भयंकर क्रूर युद्ध-समर्थ रावण ने; उटऩे–तुरंत; ऎळु मऴु तोमरम्–लोहस्तंभ, परसे और तोमर; मणित्तण्टु इरुम्पु उलक्कै–मणिदंड, और लोहे के मूसल; तॊल् आर्–प्राचीन; मिटल्–मजबूत; वळै–शंख; चक्करम्–चक्र; चूलम् इवै तॊटक्कत्तु–शूल

आवि; ऍल्लाम्–सभी; नॅट्टम् करत्ताल्–लंबे हाथों से; ऍट्टुत्तु ऍरिन्दान्–ले चलाये। ३६९४

रावण युद्धतंत्रज्ञ था और घोर युद्धसमर्थ भी। उसने शरप्रेषक श्रीराम पर अस्त्र चलाने के साथ-साथ लौहस्तंभ, परसे, दंड, तोमर प्राचीन व शक्तिमान शंख, चक्र, शूल आदि भी अपने लंबे हाथों से चलाये। ३६९४

वेलायिर मळुवायिर मॅळुवायिरम् विशिहक्
कोलायिरम् पिऱवायिर मॊरुकोल्पडक् कुऱैव
कालायिन कनलायिन वुरुमायिन कदिय
शूलायिन मळैयन्नवन् तॊडॆपल्वहै तॊडुक्क 3695

चूलायिन मळै अन्नवन्–घनश्याम के; काल् आयिन–पवन-सम; कनल् आयिन–अग्नि-सम; उरुम् आयिन–वज्र-सम; कदिय–तेज; पल् वहै–विविध प्रकार के; तॊडै तॊडुक्क–अस्त्र के चलाते; ऒरु कोल् पट–उनमें एक बाण के लगने पर; आयिरम् वेल्–हजार शक्तियाँ; आयिरम् मळु–हजार परसे; आयिरम् ऍळु–हजार "ऍळु"; आयिरम् विचिकम् कोल्–हजार विशिख शर; आयिरम् पिऱ–और हजार अन्य (हथियार); कुऱैव–मिट जाते। ३६९५

घनश्याम ने पवन, अग्नि और वज्र—इनके समान और तेज चलनेवाले बाण चलाये। उनमें एक-एक ने सहस्र-सहस्र भालों, परसों, लौहदंडों, विशिखों को और अन्य हथियारों को हीन करा दिया। ३६९५

ऒत्तुच्चॆरु विळैक्किन्ऱदॆ रळविन्ऱलै युडनॆ
पत्तुच्चिलै यॆडुत्तान्कणै तॊडुत्तान्पल मुहिल्काल्
तॊत्तुप्पडु नॆडुन्दारैहळ् शॊरिन्दालॆनत् तुरन्दान्
कुत्तुक्कोडु नॆडुङ्गोल्पडु कळिऱामॆनक् कॊदित्तान् 3696

ऒत्तु–समता के साथ; चॆरु विळैक्किन्ऱतु ओर् अळविन् तलै–युद्ध जब करते तब; नॆट्टम् कुत्तु कोल् कोटु–लंबी (लोहे की नोकवाली) चुभीली छड़ी से; पटु–आहत; कळिऱु आम् ऍन–हाथी के समान; कॊतित्तान्–जो खौल उठा उस (रावण) ने; उटने–तत्काल; पत्तु चिलै ऍटुत्तान्–दस धनु लिये; कणै तॊटुत्तान्–उन बाणों को चलाया; पल मुकिल्–अनेक मेघों से; काल्–निकलने वाली; तॊत्तु पटु–राशीकृत; नॆटु तारैकळ्–लंबी धारें; चॊरिन्ताल् ऍन–गिरतीं जैसे; तुरन्तान्–(अस्त्र) बरसाये। ३६९६

रावण यह देखकर कि श्रीराम लड़ाई में उसकी समता कर रहे हैं, ऐसा खौल उठा जैसे चुभीले काँटेदार छड़ी के काँटे की चुभन पाकर हाथी बौखला जाता है। उसने तुरन्त दस धनु लेकर ऐसी शरवर्षा करा

दी जैसे अनेक मेघ मिलकर अत्यधिक घनी राशियों में धारें गिराते हों। ३६९६

ईशन्विडु शरमारियु मॆरिशिन्दुरु तरुकण्
नीशन्विडु शरमारियु मिडैयॆङ्गणु नॆरुङ्गत्
तेशम्मुद लैम्बूदमुन् दिडुक्कुड्डरल तिहैत्तुक्
कूशुम्बडि युडल्वानवर् कुलैन्दार्मन मुलैन्दार् 3697

ईचन् विट्टु–ईश्वर (श्रीराम) के चलाये; चर मारियुम्–शरों की वर्षा और; ऍरि–आग; चिनुतुरु–निकालनेवाली; तरु कण्–क्रूर आँखों के; नीचन्–नीच राक्षस की; विट्टु चर मारियुम्–प्रेषित शर-वर्षा; इटै ऍङ्कणुम्–सभी स्थानों में; नॆरुङ्क–भर गयी तो; तेचम्–भूमि; मुतल् ऐम् पूतमुम्–आदि पाँचों भूत; तिकैत्तु–भ्रमित हो; तिटुक्कुट्रत–भयभीत हो गये; वानवर्–देव; उटल् कूचुम्पटि–शरीर को संकुचित करते हुए; मनम् कुलैन्तार्–व्यग्रमन हो गये; उलैन्तार्–बेचैन हुए। ३६९७

श्रीरामेश्वर द्वारा प्रेषित शर और जो शर आग निकालती आँखों वाले नीच राक्षस छोड़ रहा था, वे दोनों मिलकर सब जगह भर गये। तो भूमि आदि पाँचों भूत भ्रमित व चकित हुए। देव संकुचित शरीर वाले और व्यग्र मन वाले होकर विचलित हुए। ३६९७

मन्दरक् किरियॆन्न मरुन्दु मारुदि
तन्दवप् पोरुप्पॆन्नप् पुरङ्ग डामॆन्नक्
कन्दरुप् पन्नहर् विशुम्बिऱ् कण्डॆन्न
अन्दरत् तॆऴुन्ददव् वरक्कन् तेररो 3698

अ अरक्कन् तेर्–उस राक्षस का रथ; विचुम्पिल् कण्ट–आकाश में दृष्ट; मन्तर किरि ऍन्न–मंदर पर्वत के समान; मारुति तन्त–मारुति द्वारा जो लाया गया; अ मरुन्तु पोरुप्पु ऍन्न–उस ओषधि–पर्वत के समान; पुरङ्कळ् ताम् ऍन्न–त्रिपुर के समान; कन्तरुप्प नकर् ऍन्न–गंधर्व नगर के समान; अन्तरत्तु ऍऴुन्ततु–आकाश में उठ चला। ३६९८

तब रावण का रथ आकाश में चढ़कर आकाशस्थित मंदरगिरि के समान, मारुति द्वारा लायी गयी ओषधिगिरि के समान, त्रिपुरों में एक-एक के समान और गंधर्वनगर के समान भी लग रहा था। ३६९८

ऍऴुन्दुयर् तेर्मिशै यिलङ्गै कावलन्
पॊऴिन्दन शरमऴै युरुविप् पोदलाल्
ऒऴिन्ददु मॊऴिहिल वॆन्न वोल्लॆनक्
कऴिन्ददु कविक्कुल मिरामन् काणवे 3699

इलङ्कै कावलन्–लंकापति (के); उयर् तेर् मिचै–ऊँचे रथ पर; ऍऴुन्त–

(आकाश में) उठकर; पॉऴिन्तत–जो बरसायी; चर मऴै–वह शर-वर्षा; उरुवि–(वानरों को) भेदकर; पोतलाल्–चली, इसलिए; ऑल्लॅत्त–शीघ्र; ऑऴिकिलतु–क्षीण न होनेवाला; ऑऴिन्ततु–क्षीण हो गया जैसा; कविक्कुलम्–वानरगण; इरामन् काणवे–श्रीराम के देखते ही ; कऴिन्ततु–छीजे। ३६९९

लंकेश ने वहाँ से शरों की वर्षा करा दी। वे वानरों के शरीरों को भेद चले तो 'अमिट भी मिट गया' की स्थिति पैदा करते हुए कपिकुल नष्ट हुआ। यह श्रीराम के देखते ही हुआ। ३६९९

मुऴविडु	तोळीडु	मुडियुम्	ब:(ह्)ड़लै
विऴविडु	वेन्निनि	विशुम्बिर्	चेममा
मऴविडै	यहैयनम्	बडैञर्	माण्डनर्
ॲऴविड	तेरॅयॅन्	ड्रिरामन्	कूट्रिनान् 3700

इरामन्–श्रीराम ने; मऴ–तरुण; विटै अनैय–ऋषभ-सम; नम् पटैञर्–हमारी सेना के वीर; माण्टनर्–मर गये; मुऴवु इटु तोळोटु–मर्दल-सम कंधों के साथ; मुटियुम्–किरीट और; पल् तलै–अनेक सिरों को; विऴ–गिराते हुए; इनि विटुवेन्–अब चलाऊँगा (शर); तेरै–रथ को; चेममा–सुरक्षित रूप से; विचुम्पिल् ऎऴ विटु–आकाश में चलने दो; ऎन्ऱु कूट्रिनान्–ऐसा कहा। ३७००

यह देखकर श्रीराम ने मातलि से कहा कि देखो! हमारे तरुण ऋषभ-से सैनिक मर गये। अब मैं अपने बाण रावण के मर्दल-सम कंधों, किरीटों और अनेक सिरों को काटने के लिए ही चलाऊँगा। तुम सुरक्षित रूप से रथ को ऊपर आकाश में उठ जाने दो। ३७००

अन्दुशॅय्	हुवॅनॅन	वऱिन्द	मादलि
उन्दिनन्	तेरॅनु	मूऴिक्	काट्रिनै
इन्दुमण्	डिलत्तिन्मे	लिरवि	मण्डिलम्
वन्दॅन	वन्ददम्	मानत्	तेररो 3701

अऱिन्त मातलि–समझकर मातलि; अन्तु चॅय्कुवॅन्–वही करूँगा; ऎन्ऱु–कहकर; तेर् ऎन्नुम् ऊऴि काट्रिनै–रथ रूपी युगांतपवन को; उन्तिनन्–ऊपर चलाया; अ मान तेर्–वह बड़ा रथ भी; इरवि मण्टलत्तिन् मेल्–सूर्यमंडल के ऊपर; इन्तु मण्टिलम्–चंद्रमंडल; वन्तॅन–आया जैसे; वन्ततु–आया। ३७०१

श्रीराम का मन जानकर मातलि ने 'वैसा ही करूँगा' कहकर रथ रूपी युगांत पवन को ऊपर चलाया। वह बड़ा रथ भी सूर्यमंडल के ऊपर चंद्रमंडल आया हो, ऐसा आ गया। (अन्तु —तमिऴ का शब्द नहीं। शायद तॅलुगु का शब्द है! उसका अर्थ 'वैसा' है। इधर रविमंडल के ऊपर चंद्रमंडल अर्थ लगाया गया है। यद्यपि पद्य में "चंद्रमंडल के ऊपर

रवि-मंडल" की बात ही है। यह उ-वे-सु स्वामीनाथय्यर जी का संशोधन है, जो अन्य तमिऴ-ग्रंथों के आधार पर किया गया है।) । ३७०१

इरिन्दत्त मळैक्कुल मिऴ्हित् तिक्कॅलाम्
उरिन्दत्त वुडक्कुल मुदिर्न्दु शिन्दिन्न
नॅरिन्दत्त नॅडुवरैक् कुडुमि नेर्मुरै
तिरिन्दत्त शारिहै तेरुन् देरुमे 3702

तेरुम् तेरुम्–(श्रीराम का) रथ और (रावण का) रथ; नेर् मुरै–ठीक-ठीक; चारिकै तिरिन्तत–चक्कर काटने लगे; मळै कुलम्–मेघवृन्द; तिक्कु ॲलाम्–सारी दिशाओं में; इऴिकि–सरककर; इरिन्तत–अस्त-व्यस्त हुए; उडु कुलम्–तारागण; उरिन्तत उतिर्न्तु चिन्तिन–चूर होकर चू गये; नॅटु वरै–ऊँचे पर्वतों के; कुटुमि–शिखर; नॅरिन्तत–फटे। ३७०२

जब वे दोनों (राम और रावण के) रथ चक्कर काटते रहे, तब मेघवृन्द सारी दिशाओं में तितर-बितर होकर बिखर गये। उडुगण-समूह चूर-चूर होकर चू गये। और ऊँचे पर्वतों के शिखर फट गये। ३७०२

वलम्वरु मिडम्वरु मरुहि वात्तॊडु
निलम्वरु मिडम्वल निमिरुम् वेलैयुम्
अलम्वरुङ् गुलवरै यन्नैत्तु मण्डमुम्
शलम्वरुङ् गुयमहल् तिहिरित् तन्मैपोल् 3703

वलम् वरुम्–एक-दूसरे को कभी दायीं ओर से घूम आता; इटम् वरुम्–कभी बायीं ओर से घूम आता; मरुकि–संचरण कर; वात्तॊडु निलम् वरुम्–आकाश से भूमि पर आ जाता; इटम् वलम् निमिरुम्–बायीं या दायीं और ऊपर उठता; वेलैयुम्–पर्वत; कुलवरै अन्नैत्तुम्–सारी कुलगिरियाँ और; अण्टमुम्–यह अंड; चलम् वरुम्–घूमनेवाले; कुयमकल् तिकिरि तन्मै पोल्–कुलाल के चक्र के स्वभाव के समान; अलम् वरुम्–घूमते और; चलम् वरुम्–काँप उठते। ३७०३

वे दोनों रथ एक दूसरे की 'कभी' दायीं तरफ़ से आते तो कभी बायीं तरफ़ से, कभी आकाश में रहते, कभी भूमि को स्पर्श कर आते। कभी बायें उठते, कभी दायें उठते। इससे समुद्र, कुलपर्वत और अंड कुलालचक्र के समान घूमते और हिल जाते। ३७०३

ॲऴम्बुह ऴिरैवन्ते ररक्कन् तेरिदॆत्
रुऴन्दुरुळ् पॊऴुदिनॆव् वुलहुञ् जेर्वत्त
तऴम्बिय तेवरुन् दॆरिव तन्दिलर्
पिऴम्बिन्न तिरिवत्त वॆत्तुम् बॆड्रियार् 3704

उऴन्तु उरुळ् पॊऴुतिन्–उड़व की लुढ़कती वेर में; ॲ उलकुम् चेर्वत्त–किसी

भी लोक में पहुँच सकनेवाले (रथों के संबंध में); तळ्मृपिय तेवरुम्–अभ्यस्त देव भी; पिळम्पित्–पिंडाकार हैं; तिरिवत्–घूम रहे हैं; ऍन्रुम्–(इतना ही) कहने की; पॆरुट्रियार्–स्थिति में थे; ऍळुम्–उपर उठनेवाला; इतु–यह रथ; पुकळ् इरैवन् तेर्–प्रशंसा योग्य श्रीराम का रथ है; अरक्कन् तेर् इतु–यह राक्षस का रथ है; ऍन्ऱु तॆरिवु तन्तिलर्–ऐसा पहचान नहीं सके। ३७०४

उड़द की लुढ़कती देर में वे रथ किसी भी लोक में पहुँच जाते। अभ्यस्त देव भी यही समझने की स्थिति में रहे कि 'हाँ कुछ पिण्डवत् आकार हैं, घूमते हैं'। पर यह पहचान नहीं पाते कि उत्तरोत्तर बढ़ता यह रथ प्रकीर्तित श्रीराम का है या राक्षसराज का। ३७०४

उक्किला वुडुक्कळु मुरुळ्हळ् ताक्कलिन्
नॅक्किला मलैहळु नॅरुप्पुच् चिन्दलिन्
वक्किलात् तिशैहळु मुदिरम् वाय्वळिक्
कक्किला वुयिर्हळु मिल्लै काण्बन् 3705

उरुळ्कळ्–पहियों के; ताक्कलिन्–टकराने से; उक्किला–जो नहीं गिरे; उडुक्कळुम्–वे तारे भी; नॅरुप्पु चिन्तलिन्–आग निकालते इसलिए; नॅक्कु इला मलैकळुम्–जो टूटे नहीं थे वे पर्वत भी; वक्कु इला तिशैकळुम्–जो जली नहीं थीं वे दिशाएँ भी; उतिरम् वाय् वळि–रुधिर मुख से; कक्किला–वमन जो न करते वे; उयिर्कळुम्–जीव भी; काण्पत–दिखें; इल्लै–नहीं। ३७०५

पहिये टकराये। इसलिए ऐसे नक्षत्र नहीं रहे जो नहीं गिरे हों। आग के फैलने से ऐसे पर्वत नहीं रह गये जो चूर नहीं हुए; ऐसी दिशा नहीं रही जो नहीं जली। ऐसे जीव नहीं रहे जो अपने मुख से रक्त वमन नहीं करते हों। ३७०५

इन्दिर नुलहत्ता रॅन्ब रॅन्रुरवर्
चन्दिर नुलहत्ता रॅन्बर् तामरै
यन्दण नुलहत्ता रॅन्ब रल्लराल्
मन्दर मलैयिता रॅन्बर् वान्वर् 3706

वानवर्–व्योमवासी; इन्तिरन् उलकत्तार् ऍन्पर्–इंद्रलोक के हैं कहते; ऍन्रुरवर्–ऐसा कहनेवाले; चन्तिरन् उलकत्तार् ऍन्पर्–चंद्रलोक में हैं कहते; ऍन्पर्–ऐसा कहनेवाले ही; तामरै अन्तणन्–कमलदेव ब्राह्मण के; उलकत्तार् ऍन्पर्–लोक में हैं कहते; अल्लर्–अन्य; मन्तर मलैयितार् ऍन्पर्–मंदर पर्वत पर हैं कहते। ३७०६

देवगण कभी कहते कि वे इंद्रलोकस्थ हैं। तुरंत बदलते और कहते कि नहीं, वे चंद्रलोक में हैं। फिर कहते कि कमलदेव ब्रह्मा के लोक में हैं। ऐसों से अन्य लोग कहते कि वे मंदर पर्वत में रहते हैं। ३७०६

पाऱ्कडल् नडुवणो रॅऩ्बर् पल्वहै
माऱ्कड लिऩुक्कुमव् वरम्बिऩा रॅऩ्बर्
मेऱ्कड लारॅऩ्बर् किऴक्कुळा रॅऩ्बर्
आऱ्पुडै यिदुवॅऩ्ब रऱियुन् देवरुम् 3707

अऱियुम् तेवरुम्–दूरदृष्टि रखनेवाले देव भी; पाऱ्कटल् नटुविणोर् (वे दोनों) क्षीरसागर-मध्य हैं; ॲऩ्पर्–कहते; पल् वकै–(कभी) अनेक; माल् कटलि ऩुक्कुम् अ वरम्पिऩार् ॲऩ्पर्–बड़े वाह्य सागरों के उस पार हैं कहते; मेल् कटलार् ॲऩ्पर्–पश्चिमी सागर पर के बतलाते; किऴक्कु उळार् ॲऩ्पर्–पूर्वी सागरस्थ हैं कहते; आर्प्पु उटै इतु–उनकी ध्वनि है यह; ॲऩ्पर्–कहते। ३७०७

दूरदर्शी देव भी यह कहते कि दोनों क्षीरसागर-मध्य हैं। फिर कहते कि बाह्य सागरों के उस पार हैं। कभी कहते कि पश्चिमी सागर के तीर पर हैं। तुरंत कहते कि 'देखा पूर्वी सागर पर हैं। रथों की ध्वनि यह सुनो'। ३७०७

मीण्डऩ वोवॅऩ्बर् विशुम्बु विण्डुहक्
कीण्डऩ वोवॅऩ्बर् कीऴ्‌ वोवॅऩ्बर्
पूण्डऩ पुरवियो पुदिय काऱ्ऱॅऩ्बर्
माण्डऩ वुलहमॅऩ् ऱणङ्गुम् वायिऩार् 3708

उलकम् माण्टऩ–(इन रथों के घूमने से) लोक ध्वंस हुए; ॲऩ्ऱु–सोचकर; अणङ्कुम् वायिऩार्–रोते मुख वाले; मीण्टऩवो–(भूमि को) लौट गये क्या; ॲऩ्पर्–कहते; विचुम्पु–आकाश; विण्टु उक–कटकर चू जाए ऐसा; कीण्टऩवो–चिर गया क्या; ॲऩ्पर्–संशय करते; कीऴ्वो–नीचे चले गये क्या; ॲऩ्पर्–कहते; पूण्टऩ–रथ में जो जुते हैं वे; पुरवियो–अश्व हैं; पुतिय–या अपूर्व; काऱ्ऱु–पवन; ॲऩ्पर्–बतलाते। ३७०८

"इनके चक्करों से लोक ध्वंस हो गये" —ऐसा सोचकर दुःखी हुए देवों ने बारी-बारी से कहा कि क्या ये भूमि को लौट गये? आकाश चिर कर खण्ड हो गया क्या? नीचे उतर गये क्या? इनसे जुते अश्व अश्व हैं क्या? नहीं ये कोई अनोखे अपूर्व पवन ही हैं! ३७०८

एऴुहैक् कडलिऩुन् दीवॉ रेऴिऩुम्
एऴुहै मलैयिऩु मुलहो रेऴिऩुम्
शूऴुहै यण्डत्तिऩ् शुवर्ह ळॅल्लैया
ऊऴियिऩ् काऱ्ऱॅऩत् तिरिन्द वोविल 3709

एऴुहै कटलिऩुम्–सातों समुद्रों से; तीवु ओर् एऴिऩुम्–सातों द्वीपों से; एऴुहै मलैयिऩुम्–पर्वत सप्तक से; उलकु ओर् एऴिऩुम्–(वो) सात लोकों से; चूऴुहै–विस्तृत बने; अण्टत्तिऩ्–अंड को; चुवर्कळ् ॲल्लैया–भित्तियों तक;

ऊळ्ळिय कारॢ अँत–युगांतपवन के समान; ओवु इल–निरंतर; तिरिमृत–घूमे। ३७०९

सप्त समुद्र, सप्त द्वीप, सप्त पर्वत, सप्त लोक —इनके मिले अंड की भित्तियों तक पवन के समान वे रथ निरंतर घूमे। ३७०९

उडैक्कड लेळ्ळिनु मुलह मेळ्ळिनुम्
इडैप्पडु तोविनु मलैयो रेळ्ळिनुम्
अडैक्कलप् पोरुळॆन वरक्कन् वोशिय
पडैक्कल मळ्पडु तुळियिन् पान्मैय 3710

कटल् एळ्ळिनुम्–सातों समुद्रों में; उडै उलकम् एळ्ळिनुम्–उनको वस्त्र के रूप में प्राप्त सातों पृथ्वी भागों में; इटै पटु तोविनुम्–मध्यस्थ द्वीपों में; मलै ओर् एळ्ळिनुम्–सातों पर्वतों पर; अटैक्कलम् पोरुळ् अँत–(रावण के रखे) धरोहर-पदार्थों के समान; अरक्कन् वीचिय–राक्षस-प्रेरित; पटै कलम्–हथियार; मळै पटु–मेघ से निकली; तुळियिन् पान्मैय–बूंदों के समान हो रहे। ३७१०

सप्त समुद्र, समुद्रवसन सप्त भूखंड, सप्त पर्वत और मध्य-मध्य रहे द्वीप —इन सभी पर रावण ने जो अपने धरोहर के समान हथियार छोड़े वे मेघों की वर्षा की बूंदों के समान गिरे। ३७१०

उरुत्तुल हनैत्तैयु मुळ्ळुम् बोरिडै
इरुत्तिह लिरावण नॆंड्रिन्व वॆय्दन
अरुत्तदुन् दडुत्तदु मन्ऱि यारियन्
शॆरुत्तोरु तॊळ्ळिलिडैच् चॆय्द विल्लैयाल् 3711

उलकु अनैत्तैयुम्–सभी लोकों पर; उरुत्तु–गुस्सा करके; उळ्ळुम् पोर् इडै–होनेवाले युद्ध में; इकल् इरावणन्–बलवान रावण द्वारा; इरुत्तु ॲंड्रिनन–जोर लगाकर फेंके गये; ॲय्तन–चलाये गये हथियारों को; आरियन्–आर्य श्रीराम ने; अरुत्ततुम् तटुत्ततुम् अन्ऱि–काटा और रोका इसके अलावा; इडै–बीच में; चॆरुत्तु–गुस्सा करके; ओर तॊळ्ळिल्–दूसरा काम; चॆय्ततु इल्लै–नहीं किया। ३७११

सारे लोकों से वैर करके रावण लड़ रहा था। पराक्रमी उसने अस्त्र चलाये और हथियार फेंके। आर्य राम ने उन्हें काटा और रोका। इसके अलावा उन्होंने गुस्सा करके कुछ दूसरा काम नहीं किया। ३७११

विलङ्गलुम् वेलैयु मेलुङ् गीळुरुम्
अलङ्गॊळि तिरितरु मुलह सैत्तैयुम्
कलङ्गुरत् तिरिन्ददो रूळ्ळिक् कालक्कार्
इलङ्गैये यॆय्विन विमैप्पिन् वन्दरो 3712

विलङ्कलुम्–पर्वतों को; वेलैयुम्–समुद्रों को; मेलुम्–ऊपर के लोकों;

कीऴरुम्–नीचे के लोकों; अलङ्कु ऑळि–किरणमाली; तिरि तरुम्–जहाँ घूमता है; उलकु अतैत्तुंयुम्–उन सारे लोकों को; कलङ्कुर–हिलाते हुए; तिरिन्ततु–जो चला; ओर् ऊळि काल काऱ्ऱु–उस युगांतपवन (रूपी रथों का जोड़ा); इमैप्पिन् वन्तु–पल भर में आकर; इलङ्कैयै अॅय्तिततु–लंका पहुँचा। ३७१२

दोनों के रथों के अश्व रूपी युगांत पवन पर्वतों, समुद्रों, ऊपर के भुवनों, नीचे के लोकों और सूर्य के घूमने के दायरे के अंदर रहनेवाले सारे प्रदेशों को हिलाकर एक पल भर में लंका पहुँच गया। ३७१२

उय्त्तुल हत्तैत्तिनु मुऴन्ऱ शारिहै
मॊय्त्तुयर् कडलिडै मणलिन् मुम्मैय
वित्तहर् कडविय विशयत् तेर्प्परि
अॅय्त्तिल वियर्त्तिल विरण्डु पालवुम् 3713

मॊय्त्तु–सटकर; उयर् बढ़नेवाले; कटलिटै मणलिन्–समुद्र के बालुओं से; मुम्मैय–तिगुने; उलकु अतैत्तितुम्–सारे लोकों में; उय्त्तु–चलाये जाकर; उऴन्ऱ–जो चले; चारिकै–चक्कर काटे; वित्तकर्–रथसारथ्य-विद्या में निपुणों द्वारा; कटविय–चलाये गये; इरण्टु पालवुम्–दोनों पक्षों के; विचय तेर् परि–विजयी रथों के अश्व; अॅय्त्तिल–थके नहीं; वियर्त्तिल–स्वेद-भरे भी नहीं हुए। ३७१३

घने रूप से भरे और अधिक परिमाण के होते जानेवाले समुद्र के बालुओं के तिगुने प्रदेशों में घूमते चक्कर काटते रहने के बाद भी दोनों विजयी पक्षों के सारथ्य-विशारदों से चालित अश्व नहीं थके; न उनके शरीर में स्वेद ही झलक आया। ३७१३

इन्दिरन् तेरिन्मे लुयर्न्द वॅन्दॊऴिल्
उन्दरुम् वॅरुवलि युरुमि नेऱ्ऱिनैच्
चन्दिर नत्तैयदोर् शरत्ति नाऱ्ऱरैच्
चिन्दिन निरावण नॅरियुञ् जॅङ्गणान् 3714

ऍरियुम्–जलती; चॅम् कणान् इरावणन्–लाल आँखों वाले रावण ने; इन्तिरन् तेरिन् मेल्–इंद्र के रथ के ऊपर; उयर्न्तु–ऊँचे रहे; वॅम् तॊऴिल्–त्रासक काम करनेवाले; उन्त अरुम् वॅरुम् वलि–अप्रतिहत शक्तिशाली; उरुमिन् एऱ्ऱिनै–अशनिराज को; चन्तिरन् अत्तैयतु–चंद्राकार; ओर् चरत्तिनाल्–एक अस्त्र से; तरै–भूमि पर; चिन्तिनन्–काटकर गिरा दिया। ३७१४

जलती लाल आँखों वाले रावण ने इन्द्र के रथ के ऊपर की संतापक व काटने में दुस्साध्य वज्र-ध्वजा को चंद्राकार बाण से काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३७१४

शायन्दवल् लुरुमुपो यरवत् ताळ्हडल्
पायन्दवॆङ् गनलॆन्न मुळङ्गिप् पायदलुम्
कायन्दपे रिरुम्बिन्वन् कट्टि कायवरत्
तोयन्दनी रामॆन्नच् चुरुङ्गिरृ राळियॆ 3715

चायन्त-गिरो; वल्-कठोर; उरुमु-वज्रध्वजा; पोय्-जाकर; अरवत्तु-गरजते; आळ् कटल्-गहरे समुद्र में; पायन्तु-उछलकर गिरो; वॆम् कतल् ऍत-गरम आग के समान; मुळङ्कि-शब्द करते हुए; पायतलुम्-झपटी तो; कायन्त-तप्त; पेर् इरुम्पित् वन् कट्टि-बड़ा लौहपिंड; कायवु अऱ-गरमी छोड़ने के लिए; तोयन्त नीर् आम् ऍत-मग्न जिसमें हुआ उस जल के समान; आळि-समुद्र; चुरुङ्किरृरु-सूख चला। ३७१५

वह भयंकर वज्र कटकर चला और गरजते गहरे सागर में झपटकर क्रूर गरम आग के समान शोर के साथ गिरकर डूब गया। तब तप्त लोहे के डूबकर शांत होने पर जल जैसे सूख जाता है वैसे ही सागर सूख गया। ३७१५

अंळुत्तॆन्नच् चिदैविला विरामन् तेर्प्परिक्
कुळुत्तनै कूर्ङ्गणैक् कुप्पै याक्किनेर्
वळुत्तरु मादलि वयिर मार्बिडै
अळुत्तिनन् कॊडुञ्जर मारी डाररो 3716

ऍळुत्तु ऍत-अक्षर के समान; चितैवु इला-अक्षय; इरामन्-श्रीराम के; तेर् परि कुळु तत्तै-रथ के अश्वसमूह को; कूर् कणै कुप्पै आक्कि-तीक्ष्ण शरों की राशि बनाकर; नेर्-सीधे; वळुत्त अरु-अस्तुत्य; मातलि-मातलि के; वयिरम् मार्पु इटै-वज्रवक्ष में; कॊटु चरम्-घातक शर; आऱोटु आऱु-छः और छः (बारह को); अळुत्तितत्-गड़ा दिया। ३७१६

अक्षर (ॐ, वेद) के समान अक्षयपुरुष श्रीराम के रथ के अश्व तीक्ष्ण शरों के समूह के समान दिखे। रावण ने ऐसा उनको शरों से ढककर प्रत्यक्ष स्तुति के परे रहनेवाले मातलि के वज्र-सम वक्ष पर बारह शर गड़ा दिये। ३७१६

नील्निऱ् निरुदर्को नॆय्द नोदियिन्
शाल्बुडै मादलि मार्बिऱ् ऱॆत्तन
कोलिन् मिलक्कुवन् कोल मार्बिन्वीळ्
वेलिनुम् वॆम्मैये विळैन्द वीरर्कु 3717

नील् निऱ-काले रंग के; निरुतर् कोत्-राक्षसराज ने; ऍय्त-जो चलाया; इलक्कुवत् कोल मार्पित्-लक्ष्मण के सुन्दर वक्ष पर; वीळ्-और जो गिरा; वेलितुम्-उस साँग के समान; नीतियित् चाल्पु उटै-नीति में भरे; मातलि मार्पिल्

तॆत्तत–मातलि की छाती में लगे; कोलित्तुम्–शरों ने भी; वीरऩ्ऩुकु–श्रीवीरराघव को; वॆम्मैये विळैन्त–ताप दिया। ३७१७

तब श्रीराम के मन को उन रावण-प्रेरित और मातलि पर लगे शरों ने लक्ष्मण के सुन्दर वक्ष पर लगे रावण के साँग से भी अधिक साल दिया। ३७१७

मण्डिल् वरिशिलै वाऩ विल्लॊडु
तुण्डवॆण् पिऱैयॆऩत् तोऩ्ऱत् तूविय
उण्डैवॆङ् गडुङ्गणै यॊरुङ्गु मूडलाल्
कण्डिल रिरामऩै यिमैप्पिल् कण्णिऩार् 3718

मण्टिल वरि चिलै–मंडलाकार व सबंध धनु; वाऩ विल्लॊटु–इंद्रधनुष और; तुण्ट–चिरे; वॆण् पिऱै अॆऩ–श्वेत चंद्र के समान; तोऩ्ऱ–दिखकर; तूविय–जो चलाए गये; उण्टै–राशि के; वॆम् कटुग् कणै–भयंकर व तेज वाणों के; ऑरुङ्कु–एक साथ; मूटलाल्–आच्छादित करने से; इमैप्पिल् कण्णिऩार्–अपलक देवों ने; कण्टिलर्–उन्हें देखा नहीं। ३७१८

रावण ने धनु को मंडलाकार और अर्धचंद्र-सम झुकाकर धड़ाधड़ जो शर चलाये, उन तापक व तीक्ष्ण शरों की राशियों ने श्रीराम को आच्छादित कर दिया तो अपलक देव भी उन्हें देख नहीं सके। ३७१८

तोऱ्ऱऩ ऩॆयिऩि यॆऩ्ऩुम् दोऱ्ऱत्ताल्
आऱ्ऱल्शा लमररु मच्च मॆय्दिऩार्
वेऱ्ऱव रार्त्तऩर् मेलुङ् गीऴुमायक्
काऱ्ऱियक् कऱ्ऱदु कलङ्गिऱ् ऱण्डमे 3719

आऱ्ऱल् चाल्–बलसंयुक्त; अमररुम्–देव; इऩि–अब; तोऱ्ऱऩऩ्–हार गये तो; ऍऩ्ऩुम् तोऱ्ऱत्ताल्–ऐसे दृश्य से; अच्चम् ऍय्तिऩार्–डर गये; वेऱ्ऱवर्–शत्रुओं ने; आर्त्तऩर्–नर्दन किया; काऱ्ऱु–पवन; मेलुम् कीऴुमाय्–ऊपर और नीचे; इयक्कु अऱ्ऱतु–चलना बंद हुआ; अण्टम्–अण्ड; कलङ्किऱ्ऱु–क्षुब्ध हो गया। ३७१९

देव भी यह सोचकर डर गये कि श्रीराम अब हारे! शत्रुओं ने आनंद-नर्दन किया। पर पवन अचल हुआ और अण्ड अस्त-व्यस्त हुआ। ३७१९

अङ्गियुन् दऩ्ऩॊळि यडङ्गिऱ् ऱार्हलि
पॊङ्गिल तिमिरत्तऩ विशुम्बिऱ् पोक्किल
वॆङ्गदिर् तण्कदिर् विलङ्गि मीण्डऩ
मङ्गलम् नॆडुमऴै वऱऩ ... 3720

अक्कियुम्–अग्नि भी; तन् ऑळि–अपनी ज्योति से; अटक्किरुरु–हीन हुई; आर् कलि–समुद्र; पोंक्किल–नहीं उमँगे; तिमिर्तुतन–भ्रमित रहे; वॅम् कतिर्–गरम सूर्य भी; तण् कतिर्–शीतल-किरण (चंद्र) भी; विचुम्पिल् पोक्किल–आकाश में संचरण खोकर; विलक्कि–हटे और; मीण्टन–लौटे; मक्कुलुम्–मेघ भी; नॅटु मळै–अधिक वर्षा से; वरनृतु पोय्–सूखकर; चाय्न्ततु–शुष्क हो गये। ३७२०

अग्नि कांतिहीन हो गयी। समुद्र नीरव होकर भ्रमित रहे। उष्ण-किरण तथा शीतल-किरण दोनों मार्ग से हटे और लौटे। मेघ भी जलशुष्क हो रहे। ३७२०

तिशैनिलै	कडहरि	शॅरुक्कुच्	चिन्दिन
अशैविल	वेलैह	ळार्क्क	वञ्जिन
विशैहॊडु	विशाहत्तै	नॅरुक्कि	येरिनन्
कुशनॅन	मेरुवुङ्	गुलुक्क	मुऱ्ऱदे 3721

कुचन्–अंगारक; विचै कॊटु–तेजी के साथ; विचाकत्तै नॅरुक्कि–विशाखा नक्षत्र पर आक्रमण करके; एरिनन्–चढ़ गया; अॅन–इसलिए; तिचै निलै–दिशाओं में स्थित; कट करि–मत्त गजों ने; चॅरुक्कु चिन्तिन–दंभ छोड़ दिया; वेलैकळ्–समुद्र; अचैवु इल–न हिले; आर्क्क अञ्चिन–गरजने से डरे; मेरुवुम्–मेरु भी; कुलुक्कम् उऱ्ऱतु–कंपन पा गया। ३७२१

('आक्रम्य अंगारक: तस्थौ विशाखामंबरे') अंगारक विशाखा पर आक्रमण करके उस पर चढ़ गया। दिग्गज सत्त्वहीन हो गये। समुद्र हिलना छोड़कर गरजने से डरे। अचल मेरु भी चंचल हो गया। ३७२१

वानरत्	तलैवत्तु	मिळैय	मैन्दनुम्
एनैयत्	तलैवनैक्	काण्गि	लेमॅनक्
कानहक्	करियॅनक्	कलङ्गि	नार्कडल्
मीनॅनक्	कलङ्गिनार्	वीरर्	वेऱुळार् 3722

वानरर् तलैवनुम्–वानरपति और; इळैय मैन्तनुम्–लघुवीर; एनै–और अन्य; अ तलैवनै–उन नायक (श्रीराम) को; काण्किलेम्–देख नहीं सके; अॅन–कहकर; कानकम् करि अॅन–जंगली हाथी के समान; कलङ्कितार्–व्यग्र हुए; वेऱुळार् वीरर्–अन्य वीर; मीन् अॅन–(सेतुबंधन के समय की) मछलियों के समान; कलङ्कितार्–क्षुब्ध हुए। ३७२२

वानरपति, लघुराज और अन्य वीर श्रीराम को न देख सककर जंगली हाथी के समान काँप उठे। अन्य वीर (सेतुबंधन के अवसर पर जैसी) मछलियों के समान छटपटाये। ३७२२

ऐय्दन	शरमॅला	मिमैप्पित्	मुन्दुरक्
कॊयदन	नवररिवॅड	गोलिन	कोवैयाल

नॉय्दॅन	वरक्कत्तै	नॅरुङ्ग	नॉन्दन
शॅय्दत	तिराहवन्	तेवर्	तेरि्नार् 3723

ॲय्तत्त–(रावण-) प्रेरित; चरम् ॲलाम्–सभी बाणों को; इमैप्पिल् मुन्नुर–पल भर के समय के अंदर ही; वॅम् कोलित् कोवैयाल्–तापक शरराशि से; कॉय्ततन् अकर्रि–काटकर दूर करके; इराकवन्–श्रीराघव ने; नॉय्तॅन अरक्कत्तै–(लंकेश) राक्षस को; नॅरुङ्क–लगकर; नॉन्तन चॅय्ततन्–दुःख दे ऐसा कर दिया; तेवर्–देव; तेरि्नार्–आश्वस्त हुए। ३७२३

श्रीराम ने सभी रावणप्रेरित कठोर शरों को काटकर दूर कर दिया। और लंकेश को क्षुब्ध करा दिया। ३७२३

तूणुडै	निरैपुरै	करमवै	तॉरुमक्
कोणुडै	मलैनिहर्	शिलैयिडै	कुरैयच्
चेणुडै	निहर्कणै	शिदरि्न	नुणर्वॉ
डूणुडै	युयिर्तॉरु	मुरैवुरु	मॉरुवन् 3724

उणर्वॉट्–ज्ञान के साथ; ऊण् उटै–उनको (ज्ञान) भोग का विषय माननेवाले; उयिर् तॉरुम्–ज्ञानी जीवों में; उरैवुरुम्–जो "आत्मा ही" बनकर रहते हैं; ऑरुवन्–उन अप्रतिम श्रीराम ने; तूण् उटै निरै पुरै–खंभों की पंक्ति के समान; करम् अवै तॉरुम्–हाथ-हाथ में; अ–वह; कोण् उटै–वक्र सिरवाले; मलै निकर् चिलै–पर्वत-सम धनु; इटै कुरैय–बीच से टूट जाए ऐसा; चेण् उटै–दूरगामी; निकर् कणै–उज्ज्वल अस्त्रों को; चितरि्नन्–बिखेर (-सा) दिया। ३७२४

ज्ञान भोग्य (ज्ञानगम्य) श्रीराम ने दूरगामी उज्ज्वल अस्त्र छोड़े और रावण के खंभों-सम हाथों में धृत वक्रशीर्ष तथा पर्वतोपम धनु बीच से कट गये। ३७२४

पडैयुह	विमैयवर्	परुवरल्	कॅडवन्
दिडैयुरु	तिशैतिशै	यिरुकुर	विरैवन्
अडैयुरु	कॉडिमिशै	यणुहि्न	नळविल्
कडैयुह	मुडिकॅळु	कडल्पुरै	कलुळन् 3725

युकम् कटै–युगांत में; मुटि कॅळु–उमँगकर बढ़नेवाले; अळविल् कटल् पुरै–अपार समुद्र-सम; कलुळन्–गरुड़; पटै उक–(रावण के) हथियारों (धनुओं) के कटते; इमैयवर् परुवरल् कॅट–देवों का दुःख दूर करते हुए; वन्तु–आकर; इटै उरु–विशाल; तिचै तिचै इरुकुर–दिशाओं को स्थिर करते हुए; इरैवन्–ईश्वर श्रीराम को; अटै उरु–(रथ पर) बनी; कॉटि मिचै–ध्वजा पर; अणुकिनन्–आ बैठ गया। ३७२५

जब उसके धनु कटे तब युगांत के उमग आते समुद्र के समान

जिससे देवों का दुःख दूर हो गया और सारी दिशाएँ स्थिरता को प्राप्त हुईं। ३७२५

कयिल्विरि वऱ्वरु कवशमु मुरुविप्
पयिल्विरि कुरुदिहळ् परुहिड वॅयिलॉ
डयिल्विरि शुडुहणै कडवित्र ऱिविन्
तुयिल्वुळि युणर्दरु शुडरॉळि यॊरुवन् 3726

तुयिल्वुळि–(योग-) निद्रा करते-करते; अऱिविन्–अपने ज्ञान द्वारा; उणर् तरु–(सब) समझनेवाले; चुटर् ऑळि–उज्ज्वल ज्योति; ऑरुवन्–अद्वितीय श्रीराम ने; कयिल् विरिवु अऱ् वरु–संधियाँ जिसकी टूटी नहीं है उस; कवचमुम्–कवच को; उरुवि–भेदकर; पयिल् विरि कुरुतिकळ्–(शरीर में) व्याप्त अधिक रक्त को; परुकिट–पीनेवाले; वॅयिलोटु–प्रकाश के साथ; अयिल् विरि–तीक्ष्णता जिनमें खूब थी; चुटु कणै–जलानेवाले शरों को; कटवितन्–चलाया। ३७२६

योगनिद्रा में रहते हुए सारी बातों को जाननेवाले श्रीराम ने ऐसे प्रकाशमय और तीक्ष्ण शर चलाये जो सुदृढ़ संधिबद्ध कवच को भेदकर शरीर में पुष्कल रूप से व्याप्त रक्त पी सकें। ३७२६

तिशैयुऱु तुहिलदु शॅऱिमळै शिदऱुम्
विशैयुऱु मुहिळदु विरितरु शिरत्तॊ
डिशैयुऱु करुविथि तिनिदुऱै कॊडियैत्
तशैयुऱु कणैकॊडु तरैयुऱ विडलुम् 3727

तिचै उऱु–दिशा में लगे; तुकिलतु–वस्त्र वाले; चॅऱि–घने; मळै चितऱुम्–वर्षा को बिखेरनेवाले; विचै उऱु–सवेग; मुकिळतु–कली-से अंगवाले; विरि तरु–विशाल; चिरत्तॊटु–सिर के साथ; इचै उऱु करुवियिन्–संगीतोत्पादक बाजा (वीणा); इतितु उऱै–जिसमें मनोरम रूप से रहती है; कॊटियै–उस ध्वजा को; तचै उऱु–मांसयुक्त; कणै कॊटु–शर से; तरै उऱ विटलुम्–धरा में जब गिराया तब। ३७२७

श्रीराम ने रावण की पताका को मांसलिप्त शर चलाकर काटा और भूमि पर गिरा दिया; जिस पताका में वह संगीतोत्पादक वीणा थी, जो दिग्वसना थी, जिसका कली-सा भाग वर्षा-सा बिखेरनेवाला था और जिसका सिर बड़ा था। ३७२७

पण्णव तुयर्कॊडि यॆत्रवॊरु परवैक्
कण्णह नुलहिनै वलम्वरु कलुळत्
नण्णलु मिमैयवर् नमबुऱ करुमम्
ऍण्णल मुनिवित्र निवऱिन नॆत्रवॆ 3728

ओरु–अनुपम; परवै–समुद्रवसना; कण्णकल् उलकिनै–विशाल पृथ्वी को;

वलम् वरु कलुऴत्–दायीं ओर से घूम आनेवाला गरुड़; पण्णवन्–भगवान श्रीराम की; उयर् कोटि ॲन–उत्कृष्ट ध्वजा को चाहकर; नण्णलुम्–आया तब; इमैयवर्–देव; नमतु उरु करुमम्–हमारा करने योग्य काम; इति ॲण्णलम्–अब नहीं सोचेंगे; मुनिविलन्–(गरुड़) क्रुद्ध होकर; इवर्न्दनन्–चढ़ गया (ध्वजा पर); ॲन–बोले तब। ३७२८

और समुद्र-मेखला पृथ्वी की परिक्रमा करके आनेवाला गरुड़ भगवान की पताका को उत्तम समझकर उस पर आकर बैठा। तब देवों ने विश्वास कर लिया कि अब हम, क्या करना है, यह नहीं सोचेंगे (क्योंकि आवश्यकता नहीं है)। क्योंकि गरुड़ क्रुद्ध होकर श्रीराम के रथ पर चढ़ बैठा है। ३७२८

आयदो रमैदियि लऱिविनि लऱिवान्
नायह नोरुवनै नलिहिल दुणर्वान्
एयिन निरुळुरु शरमऴै यॅनुमत्
तीविनै तरुपडै तॅरुतॊऴिन् मऱवोन् 3729

आयतु ओर् अमैतियिन्–वैसे एक समय में; तॅरु तॊऴिल् मऱवोन्–संहारक कार्य की चाह करके पाप करनेवाला रावण; अऱिविनिन् अऱिवान्–ज्ञानगम्य; ऒरुवनै–अद्वितीय; नायकन्–जगन्नाथ श्रीराम का; नलिकिलतु–अपने शर का कुछ कर न सकना; उणर्वान्–जानकर; इरुळ् उरु–अंधकारकारी; चरम् मऴै ॲनुम्–शर-वर्षा के; अ तीविनै तरु पटै–उस हानिकारक अस्त्र को; एयिनन्–प्रेषित किया। ३७२९

उस समय मारक कार्य पर तुले पापी रावण ने देखा कि मेरे बाण ज्ञानगम्य आदिदेव का कुछ अहित नहीं करते। तो उसने तामसास्त्र नामक अस्त्र प्रेरित किया जो शर-वर्षा-सी करके बड़े घातक कार्य करनेवाला था। ३७२९

तीमुह मुडैयन शिलमुह मुदिरन्, दोय्मुह मुडैयन शुरर्मुह मुडैय
पेय्मुह मुडैय पिलमुह नुऴैयुम्, वाय्मुहम् वरियर वनैयन वरुव 3730

चिल मुकम्–कुछ के मुख (फल); ती मुकम्–अग्नि के मुखों के; उडैयन–रखनेवाले; उतिरम् तोय्–रक्तरंजित; मुकम् उडैयन्–मुखोंवाले (कुछ); चुरर् मुकम् उडैय–देवों के मुखों के; पेय् मुकम् उडैयन–पिशाचमुखी; पिलम् मुकम्–बिल के द्वार पर; नुऴैयुम्–घुसनेवाले; वाय् मुखम्–मुख के साथ के आननों के साथ; वरि अरवु–लकीरों वार सर्पों; अनैयन–के समान; वरुवन–आनेवाले। ३७३०

उससे उत्पन्न हो जो बढ़े उनमें अग्निमुखी, रक्तमुखी, देवमुखी, पिशाचमुखी और बिल-प्रवेशक-सर्पमुखी थे। वे बढ़ते गये। ३७३०

ऒरुतिशै मुदल्कडै यॊरुतिशै यळवुम्
इरुतिशै यॆयिऱुर वरुवन वॆरिय

करुदिय करुदिय पुरिवन कत्तलुम्
परुदियै मदियोडु परुहुव पहळि 3731

पकळि–वे शर; ओरु तिचै मुतल्–एक दिशा से; कडै ओरु तिचै अळवुम्–विपरीत दिशा के अंत तक; इरु तिचै–दोनों दिशाओं में; ऍयिऱु उऱ–दाँतों को गड़ाकर; वरुवन–आनेवाले हैं; पॅरिय–बहुत बड़े हैं; करुतिय करुतिय पुरिवन–(प्रेरक) जो चाहता वही करनेवाले हैं; कत्तलुम्–जलानेवाले; परुतियै–सूर्य को; मतियोटु–चंद्र के साथ; परुकुव–पी सकनेवाले। ३७३१

वे एक दिशा से दूसरे दिगंत तक दोनों बाजुओं की दिशाओं में अपने विषदंतों को लगाते हुए आ रहे थे। बहुत बड़े-बड़े थे। रावण के सोचे कार्य को पूर्ण करनेवाले थे। जलानेवाले सूर्य और चंद्र को पी सकनेवाले थे। ३७३१

इरुळोरु तिशैयोरु तिशैवॅयिल् विरियुम्
शुरुळोरु तिशैयोरु तिशैमळै तॊडरुम्
उरुळोरु तिशैयोरु तिशैयुरु मुरलुम्
मरुळोरु तिशैयोरु तिशैशिलै वरुडम् 3732

ओरु तिचै इरुळ्–एक दिशा में अंधकार; ओरु तिचै–दूसरी दिशा में; वॅयिल् विरियुम्–धूप फैलती; ओरु तिचै चुरुळ्–एक दिशा में बवंडर; ओरु तिचै मळै तॊडरुम्–दूसरी दिशा में वर्षा होती; ओरु तिचै उरुळ्–एक दिशा में चक्र; ओरु तिचै–एक दूसरी दिशा में वज्र; मुरलुम्–नाद करता; ओरु तिचै मरुळ्–एक दिशा में भ्रम; ओरु तिचै–दूसरी दिशा में; शिलै वरुटम्–पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

और भी वे एक दिशा में अंधकार और दूसरी दिशा में धूप फैला सकनेवाले; एक दिशा में बवंडर और दूसरी दिशा में वर्षा करनेवाले थे। उनके कारण एक ओर चक्र चलते और दूसरी ओर वज्र गिरते। एक दिशा में माया फैलती और दूसरी दिशा में पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

इनैयन निहळ्वुऱ ऍळुवहै युलहुम्
कनैयिरुळ् कदुविड वमरर्हळ् कदऱ
विनैयुऱु तॊळिलिडै विरवलुम् विमलन्
निनैवुऱु तहैमैयि नॆऱियुऱु मुऱैयिन् 3733

इनैयन–ऐसी बातें; निकळ्वु उऱ–जब होती रहीं; कनै इरुळ्–घने अंधकार के; ऍळुवकै उलकुम्–सातों प्रकार के लोकों को; कतुविट–आच्छादित करते; अमरर्कळ् कतऱ–देवों के बिलखाते; विनै उऱु–पाप से उत्पन्न-से; तॊळिल् इटै–कार्य में; विरवलुम्–संसार का फँसना; विमलन्–विमल श्रीराम के; नॆऱि उऱु मुऱैयिन्–सीधे मार्ग में; निनैवुऱुम् तकैमैयिन्–सोचने के अच्छे गुण के कारण। ३७३३

जब ये सब होते रहे, और घना अंधकार सातों लोकों को आच्छादित कर गया, देव चिल्ला उठे और भुवन पापकर्म में फँस गया जैसा रहा, तब विमलमूर्ति श्रीराम ने, जो सद्धर्मचित्त थे, । ३७३३

कण्णुद लोरुवन् दडुपडै करुदिप्
पण्णवन् विडुदलु मदुनन्ति परुह
ऍण्णुरु कनविर्त्तो डुणर्वॅन विमैयिल्
तुण्णॆनु निलैयिनि नॆरिपडै तॊलैय 3734

कण्णुतल् ऑरुवततु–ललाटनेत्र उत्तम भगवान के; अटुपडै–संहारक अस्त्र को; करुति–परख लेकर; पण्णवन्–भगवान श्रीराम के; विटुतलुम्–छोड़ते ही; अतु–उस शर ने; नति परुक–(अंधकारकारी तामसास्त्र को) खूब पी लिया; ऍण्णुरु–चिन्त्य; कनविरोटु उणर्वु अॅन–स्वप्न के साथ-साथ जागरण के समान; इमैयिल्–पल भर में; तुण्णॆनु निलैयिनिल्–सभी को भयभीत दिशा में; ऍरि पटै तॊलैय–प्रेरित (तामस-) अस्त्र के मिटते । ३७३४

सोचकर भालनेत्र शिव का पाशुपतास्त्र छोड़ा। तो उसने तामसास्त्र को सोख दिया। रावण ने देखा कि उसका चलाया अस्त्र एक क्षण में जागने पर स्वप्न जैसे मिट जाता है वैसे सबको भय में डालते हुए नष्ट हो गया। ३७३४

विरिन्द तन्पडै मॆय्कण्ड पॊय्यॆन वीयन्द
ऍरिन्द कण्णिन नॆयिऱ्ऱिडै मडित्तवा यिनन्दन्
तॆरिन्द वॆङ्गणै कङ्गवॆञ् जिऱैयन्न तिरत्तात्
अरिन्द मन्तिरु मेनिमे लळुत्तिनिन् ऱार्त्तात् 3735

विरिन्त–विस्तृत; तन् पटै–उसका तामसास्त्र; मॆय् कण्ट–सत्य देखकर; पॊय् अॅन–असत्य के समान; वीय्न्त–मिटा तो; ऍरिन्त कण्णिनन्–जलती आँखों वाले; ऍयिऱु इटै–दाँतों के मध्य; मटित्त वायिनन्–दबाये हुए अधरों वाले ने; वॆम् कङ्कम्–भयंकर बाज के; चिऱै अन्न–पँख से; तॆरिन्त–चुने हुए; तन्–अपने; वॆम् कणै–क्रूर अस्त्रों को; तिऱत्ताल्–जोर से; अरिन्तमन्–अरिंदम (श्रीराम) के; तिरु मेनि मेल्–श्रीशरीर में; अळुत्ति निन्ऱु–गड़ाकर; आर्त्तान्–गर्जन किया। ३७३५

अपने अस्त्र को सत्य के सामने की मिथ्या के समान मिटते देखकर अग्निवर्षक आँखों वाले रावण ने दाँतों के मध्य अधरों को दबाते हुए चुने हुए, कंकपक्ष अस्त्रों को जोर से अरिंदम श्रीराम के श्रीशरीर में गड़ा दिया। ३७३५

आर्त्तु वॆञ्जिनत् ताशुरप् पडैक्कल ममरर्
वार्त्तै युण्डवित् तुयिर्हळान् मऱलितन् वयिऱ्ऱॆ

तूर्त्त दिन्दिरन् तुणुक्कुरु तॊऴिलदु तॊड्डत्तुत्
तोर्त्तत्तन् मेल्वरत् तुरन्दत्त तुलहॆलान् दॆरिय 3736

आर्त्तु–भीमनाद करके; अमरर् वार्त्तै उण्टतु–देवों के यश को जिसने खा लिया था; इन् उयिर्कळाल्–मधुर जीवों से; मऱलि तन् वयिऱ्ऱै–यम के पेट को; तूर्त्ततु–जिसने भरा था; इन्तिरन्–इंद्र को; तुणुक्कुरु–ठिठकानेवाला; तॊऴिलतु–कार्य जो करता था; वॆम् चिनत्तु–(उस) भयंकर क्रोधी; आचुरर् पटैक्कलम्–असुरास्त्र को; उलकु ॲलाम् तॆरिय–सभी लोकों की दृष्टि के सामने; तोर्त्तन् मेल् वर–तीर्थ श्रीराम पर लगे ऐसा; तुरन्तनन्–चलाया। ३७३६

फिर रावण ने बड़े हुंकार के साथ तीर्थ श्रीराम पर बहुत प्रचंड आसुरास्त्र छोड़ा जो देवयशभक्षी था, जिसने यम के पेट को जीवों से भर दिया था और जिसने देवेंद्र को भयातुर कर दिया था। ३७३६

आशु रप्पॆरुम् बडैक्कल ममररै यमरिन्
एशु विप्पदॆव् वुलहमु मॆवरैयुम् वॆन्रु
वीशु वॆऱ्पिऱत् तुरन्दवॆङ् गणैयदु विशैयिन्
पूशु रर्क्कोरु कडवुण्मेऱ् चॆन्ऱदु पोलाम् 3737

अमररै–देवों को; अमरिन्–युद्ध में; एचुविप्पतु–अपयश दिलानेवाला; ॲ उलकमुम्–सभी लोकों में; ॲवरैयुम् वॆन्ऱु–चाहे कोई हो उसे जीतकर; वीचु–फेंके गये; वॆऱ्पु–पर्वतों को; इऱ–तोड़ते हुए; तुरन्त–चलाया गया; विचैयिन्–वेगवान; वॆम्–भयंकर; कणैयतु–अस्त्र; आचुरर् पॆरुम् पटैक्कलम्–आसुरास्त्र; पूचुरर्क्कु–भूसुरों के; ओरु–अकेले; कटवुळ् मेल्–(आराध्य-) देवता पर; चॆन्ऱतु–गया। ३७३७

देवनिंदाक्षयी, सर्वलोकविजयी वह शर उस पर फेंके गये सभी पर्वतों को भेदता हुआ आ रहा था। उसके कई भयंकर उपास्त्र थे। वह बड़ा भयंकर अस्त्र भूसुरों के पूज्य अद्वितीय भगवान श्रीराम पर जा रहा था। ३७३७

तुङ्गु हिन्ऱदिव् वुलहैयोर् नॊडिवर यॆन्न
ॲङ्गु निन्ऱुनिन् ऱलमरु ममरर्हण् डिरैप्प
मङ्गुल् वल्लुरु मेऱ्ऱिन्मे लॆरिमडुत् तॆन्न
अङ्गि तन्तॆडुम् बडैतॊडुत् तिराहव नऱुत्तान् 3738

इ उलकै–इस लोक को; ओर् नॊटि वरै–एक पल में; तुङ्कुकिन्ऱतु ॲन्न–निगलता है ऐसा कहकर; ॲङ्कुम्–सब ओर; निन्ऱु निन्ऱु–खड़े-खड़े रहकर; अलमरुम्–भ्रांत; अमरर्–देवों के; कण्टु–देखकर; इरैप्प–आमंदरव उठाते; मङ्कुल–मेघमध्य; वल्–कठोर; उरुम् एऱ्ऱिन् मेल्–अशनिराज पर; ॲरि मटुत्तॆन्न–आग लगा दी गयी हो ऐसा; अङ्कि तन्–अग्नि के; नॆटु–लंबे; पटै तॊटुत्तु–अस्त्र चलाकर; इराकवन् अऱुत्तान्–श्रीराघव ने काट दिया। ३७३८

उसको देखकर देववृन्द सब ओर खड़े होकर इस डर से चिल्लाने लगे थे कि देखो यह लोक को एक पल में खा डालता है। तब श्रीराघव ने, मेघ के अशनिराज पर अग्नि डाल दी गयी हो ऐसा उस पर आग्नेयास्त्र चलाकर उसे विफल कर दिया। अब देवों ने खुश होकर उच्चनाद किया। ३७३८

कूऱ्ऱुक् कोडिनुङ् गोडल कडलॅलाङ् गुडिप्प
नीऱ्ऱुक् कुप्पैयिऩ् मेरुवै नूऱुव नॅडिय
काऱ्ऱुप् पिऩ्शॅलच् चल्वऩ वुलहॅलाङ् गडप्प
नूऱ्ऱुक् कोडियम् बॅय्दऩ ऩिरावण नॊडियिल् 3739

कूऱ्ऱु–यम (चाहे); कोटिऩुम्–डिग जाए; कोटल–जो चूकते नहीं; कटल् ऍलाम् कुटिप्प–जो सारे समुद्रों को पी सकें; मेरुवै–मेरु पर्वत को; नीऱु कुप्पैयिऩ्–धूलिराशि में; नूऱुव–तोड़कर बदलनेवाले; नॅटिय–लंबे; काऱ्ऱु पिऩ् चॅल–हवा को पीछे आने देकर; चॅल्वऩ–आगे जानेवाले; उलकॅलाम् कटप्प–सारे लोकों को लाँघनेवाले; नूऱु कोटि अम्पु–सहस्र कोटि शर; इरावणऩ्–रावण ने; नॊटियिल्–एक चुटकी की देर में; ऍय्तऩऩ्–चलाये। ३७३९

तब रावण ने एक पल में सौ करोड़ ऐसे बाण चलाये जो यम के चूक जाने की दशा में भी चूकते नहीं थे; जो सारे सागर-जल को सोख सकते थे; जो मेरु को चूर-चूर कर सकते थे; जो लंबे थे; जो पवन से भी तेज जाते और जो सारे लोकों को लाँघ सकते थे। ३७३९

ऍऩ्ऩ कैक्कडुप् पोऍऩ्बर् शिलर्शिल रिवैयुम्
अऩ्ऩ मायमे यम्बल वॅऩ्बरव् वम्बुक्
किऩ्ऩ मुण्डुहॊ लिडमॅऩ्बर् शिलर्शिल रिहऱ्पोर्
मुऩ्ऩ मित्तऩै मुयऩ्ऱिल ऩामॅऩ्बर् मुऩिवर् 3740

मुऩिवर् चिलर्–कुछ मुनिगण; ऍऩ्ऩ कै कटुप्पो–क्या ही हस्त-लाघव; ऍऩ्पर्–कहते; चिलर्–कुछ; इवैयुम्–ये भी; अऩ्ऩ मायमे–वैसी ही माया है; अम्पु अल–बाण नहीं; ऍऩ्पर्–कहते; चिलर्–कुछ; अव् अम्पुकट्कु–उन शरों के लिए; इऩ्ऩम् इटम्–और स्थान; उण्टु कॊल्–है क्या; ऍऩ्पर्–कहते; चिलर्–कुछ लोग; मुऩ्ऩम्–पहले; इकल् पोर्–विरोध के किसी युद्ध में; इत्तऩै–इतना; मुयऩ्ऱिलऩ् आम्–प्रयत्न नहीं किया है; ऍऩ्पर्–कहते। ३७४०

यह रावण-शर की तेजी देखकर कुछ मुनिवरों ने विस्मय किया कि यह क्या हस्तलाघव है? कुछ मुनियों ने विश्वास के साथ कहा कि ये माया हैं अस्त्र ही नहीं! कुछ लोगों ने प्रश्न किया कि क्या आज भी ऐसे अस्त्रों के लिए स्थान है? कुछ लोगों ने विचार व्यक्त किया कि इसके पूर्व रावण ने किसी भी युद्ध में इतना प्रयत्न नहीं किया था। ३७४०

मऱैमु दऱ्ऱनि नायहन् वानिनै मऱैत्त
शिऱैयु डैक्कोडुञ् जरमॆला मिमैप्पॊऴ्दिऱ् ट्रिरियप्
पॊऱैशि हैप्पॆरुन् दलैनिन्ऱुम् पुङ्गत्ति नळवुम्
पिऱैमु हक्कडु वॆञ्जर मवैहॊण्डु पिळन्दान् 3741

मऱै मुतल्–वेदादि; तनि नायकन्–अद्वितीय स्वामी ने; वानिनै मऱैत्त–आकाश को ढँकनेवाले; चिऱै उटै–पक्षसहित; कॊटु चरम् ऎलाम्–क्रूर सभी शरों को; इमैप्पु ऒऴुदिल्–एक पल में; तिरिय–विकृत करते हुए; पिऱैमुकम्–अर्धचन्द्र के; कटु–वेगवान; वॆम् चरम् अवै–भयंकर शरों को; कॊण्टु–लेकर; पॊऱै–भारी; चिकै पॆरु तलै निन्ऱुम्–चोटी-सह बड़े सिर से लेकर; पुङ्कत्तिन् अळवुम्–पुंख तक; पिळन्तान्–चीर दिया। ३७४१

वेदहेतु आदिनायक श्रीराम ने आकाशगोपक पक्षों वाले सभी भयानक शरों को एक ही पल में कठोर अर्धचंद्र बाण छोड़कर सिर से पुंख तक चीरकर विफल कर दिया। ३७४१

अयऩ्प डैत्तपे रण्डत्ति ऩरुन्दव माऱ्ऱिप्
पयऩ्प डैत्तव रियारिनुम् बडैत्तवन् पल्पोर्
वियऩ्प डैक्कलन् दॊडुप्पॆना विरैन्दान्
मयऩ्प डैक्कलन् दुरन्दनन् तयरदन् महन्मेल् 3742

अयन् पटैत्त–अज-सृष्ट; पेर् अण्टत्तिन्–बड़े अण्ड में; अरु तवम् आऱ्ऱि–असाध्य तपस्या करके; पयन् पटैत्तवर्–जिन्होंने सुफल पाया; यारिनुम्–उनमें किसी से भी; पटैत्तवन्–अधिक फल जिसने पाया था उस रावण ने; इनि–अब; वियन् पटै कलम्–गौरवमय अस्त्र को; नान् पल् पोर्–अनेक युद्धों में प्रयुक्त; तॊटुप्पॆन्–मैं चलाऊँगा; ऎन–कहकर; विरैन्तान्–जल्दी करके; तयरतन् मकन् मेल्–दशरथ के पुत्र पर; मयन् पटै कलम्–मयास्त्र को; तुरन्तनन्–चलाया। ३७४२

ब्रह्मरचित अंड भर में जिन लोगों ने तपस्या करके फल प्राप्त किया था, उनमें रावण ने सबसे अधिक फल प्राप्त किया था। उस रावण ने निश्चय किया कि अब अनेक युद्धों में प्रयुक्त बड़े ही गौरवमय बाण का प्रयोग करूँगा। उसने शीघ्रता से दशरथ-सुत पर मयास्त्र चलाया। (यहाँ दशरथ की याद करना इसलिए कि वैसे प्रतापी तथा लोकस्वामी के पुत्र की आज यह दयनीय स्थिति हो गयी। उस ओर संकेत किया जाय)। ३७४२

विट्ट तन्विड् पडैक्कलम् वेरॊडु मुलहैच्
चुट्ट नन्नॆनत् तुणुक्कमुर् ऱमररुञ् जुरुण्डार्
कॊट्ट तम्मॆन वानरत् तलैवरुङ् गिळिन्दार्
शिट्टर् तन्दनित् तेवनु मदनिलै तॆरिन्दान् 3743

विट्टतन्–प्रेरक के; विदु–प्रेरित; पटै कलम्–अस्त्र से; उलकै–लोक को; वेरोंटु चुट्टतन्–जड़ के साथ जला दिया; अँत–ऐसा; अमररुम्–देव भी; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–भयभीत होकर; चुरुण्टार्–लोटे; कॅट्टनम्–मिटे हम; अँत–ऐसा डरकर; वानरर् तलैवरुम्–वानरयूथप भी; किळिन्तार्–अस्त-व्यस्त हो भागे; चिट्टर् तम्–शिष्ट लोगों के; तनि तेवतुम्–अकेले देवता श्रीराम ने भी; अतन् निलै–उसका स्वभाव; तॅरिन्तान्–जान लिया। ३७४३

'रावण-प्रेरित उस अस्त्र से उसने सारे लोकों को जला दिया।' देव यह सोचकर लोट गये। वानर वीर भी 'मरे हम' कहते हुए अस्त-व्यस्त भाग गये। शिष्टों के अद्वितीय देव श्रियःपति सीताराम जी ने उसका स्वभाव जान लिया। ३७४३

पान्दट् प:(ह्)ऱलैप् परन्दहन् पुवियिडैप् पयिलुम्
मान्दरक् किल्लैयाल् वाळ्वॅन वरुहिन्ऱ वदनैक्
कान्दर्प् पम्मॅनुङ् गडुङ्गोडुङ् गणैयिनाऱ् कडन्दान्
एन्दर् पन्मणि यॅरुळ्वलित् तिरळ्पुयत् तिरामन् 3744

पान्तळ्–(आदिशेष-) नाग के; पल् तलै–अनेक सिरों पर; परन्तु–फैलकर; अकल्–विस्तृत रहती; पुवि इटै–भूमि पर; पयिलुम्–रहनेवाले; मान्तरक्कु–जीवों का; वाळ्वु इल्लै–जीवन नहीं होगा; अँत–ऐसा; वरुकिन्ऱ–जो आता था; अततै–उस मयास्त्र को; एन्तल्––पर्वतोपम; पल् मणि––बहुरत्न; ॲरुळ्वलि–कठोर बलसंयुक्त; तिरळ्–पुष्ट; पुयत्तु इरामन्–भुजाओं वाले श्रीराम ने; कान्तर्प्पम् अँतुम्–गांधर्वास्त्र नाम के; कटु–वेगवान; कॊटु–क्रूर; कणैयिनाल्–अस्त्र से; कटन्तान्–बेकार किया। ३७४४

'आदिशेषनाग के अनेक सिरों पर फैली भूमि में रहनेवाले जीवों (तथा श्रीराम) का जीवन अब समाप्त हो गया।' ऐसा लोगों के मन में भय उत्पन्न करते हुए आनेवाले उस शर को पर्वतोपम बहुरत्नाभरणभूषण-योग्य तथा पुष्ट कंधोंवाले श्रीराम ने गंधर्वास्त्र नाम के कठोर और तेज बाण चलाकर नष्ट कर दिया। ३७४४

पण्डु नान्मुहन् पडैत्तदु कनहनिप् पारैत्
तॊण्डु कॊण्डदु मदुवॅनु मवुणन्मुन् तॊट्ट
दुण्डिङ् गॅन्वयि नदुतुरन् दुयिरुणवॅ नॅन्नात्
तण्डु कॊण्डॅरिन् दानन्दो डॅन्दुडैत् तलैयान् 3745

पण्टु–पहले; नान्मुकन् पटैत्ततु–जो चतुर्मुख ब्रह्मा द्वारा रचा गया; कनकन्–हिरण्य ने; इ पारै–इस भूमि को; तॊण्टु कॊण्टतु–(जिससे) दास बना लिया था; मतु अँतुम् अवुणन्–मधु नाम का राक्षस; मुन् तॊट्टतु–पहले जिसका प्रयोग करता था; इङ्कु–यहाँ; अँन् वयिन्–मेरे पास; उण्टु–(एक दंड) है; अतु तुरन्तु–उसको चलाकर; उयिर् उण्पॅन्–इसके प्राण खा (हर) लूंगा; अँन्ना–

कहकर; ऐन्तॉट्ट ऐन्तुट्ट–पाँच और पाँच; तलैयान्–सिरों वाले (रावण) ने; तण्टु कॊण्टु–दंड लेकर; ऍऱिन्तान्–चलाया। ३७४५

रावण ने विचारा। 'मेरे पास वह चतुर्मुखसृष्ट गदा है जो हिरण्य के भूमि के वशीकरण में बड़ी सहायता दे चुकी थी और जो मधु द्वारा प्रयुक्त रहती थी। उसको चलाकर मैं श्रीराम के प्राणों को निकाल दूंगा।' ऐसा सोचकर दशग्रीव ने वह गदा चलायी। ३७४५

तारु	हन्पण्डु	तेवरैत्	तहर्त्तदु	तनिमा
मेरु	मन्दरम्	पुरैवदु	वॅयिलन्न	वॉळिय
दोरु	हन्दनि	नुलहनित्तु	रुरुट्टिनु	मुरुळाच्
चीरु	हन्वदु	मुहन्ददु	वानवर्	शिरङ्गळ् 3746

पण्टु पहले; तारुकन्–दारुक के; तेवरै तकर्त्ततु–देवों के हराने में सहायक जो रहा; तनि–अनुपम; मा–बड़े; मेरु मन्तरम् पुरैवतु–मेरु और मंदर पर्वत के समान जो रहता है; वॅयिल् अन्न–सूर्य के समान; ऑळियतु–प्रकाशमान; ओर् उकम् ततिल्–एक युग तक; उलकम् नित्तु–सारे लोक मिलकर; उरुट्टिनुम्–लुढ़का दें तो भी; उरुळा–जो लुढ़क नहीं सकता; चीर् उकन्ततु–श्रेष्ठता के कारण प्रशंसित; वानवर्–देवों के; चिरङ्कळ्–सिरों को; मुकन्ततु–उठा लेनेवाला। ३७४६

वह गदा ऐसी थी जिससे दारुक ने देवों को त्रस्त किया था, जो मेरु या मंदर पर्वत के समान थी; सूर्य के समान उज्ज्वल थी और जो ऐसी शक्तिसंपन्न थी कि उसे सारे लोकों के मिलकर लुढ़काने का प्रयत्न करने पर भी वह लुढ़के नहीं। वह श्रेष्ठता के कारण प्रशंसित गदा देवों के सिरों के भी ग्राहक रही थी। ३७४६

पशुम्बु	नड्पॅरुम्	बरवैपण्	डुण्डदु	पनिप्पुर्
रशुम्बु	पाय्हिन्र	दरुक्कनि	नॉळिर्हिन्र	दण्डम्
तशुम्बु	पोलुडैन्	दॉळ्ळियुमॅन्	रुनैवरुन्	दळर
विशुम्बु	पाळ्पड	वन्वदु	मन्दरम्	वॅरुव 3747

पचु पुतल्–हरे जल के; पॅरु परवै–बड़े सागर को; पण्टु उण्टतु–पहले जिसने सोख लिया था; पनिप्पु उऱ्ऱु–शीतलता-सहित; अचुम्पु पाय्किन्ऱतु–नमी से युक्त; अरुक्कनिन्–सूर्य से भी अधिक; ऑळिर्किन्ऱतु–प्रकाश छिड़काने वाला वह दण्ड; अण्टम्–यह अंड; तचुम्पु पोल्–जलघट के समान; उटैन्तु ऑळ्ळियुम्–टूटकर मिटेगा; ऍन्ऱु–ऐसा; अनैवरुम् तळर–सब अशक्त हो जायें ऐसा; विचुम्पु–आकाश; पाळ् पट–उजड़ जाय ऐसा; मन्तरम् वॅरुव–मंदर भी दहल उठे ऐसा; वन्ततु–आया। ३७४७

उसने कभी हरे (ताज़े) जल के समुद्र को सोख लिया था। उसमें नमी और शीतलता थी। सूर्य से भी उज्ज्वल थी। वह गदा इस प्रकार

मंदर पर्वत को भी भयभीत करते हुए आयी कि लोगों ने विचारा कि अब यह अंड जलघट के समान टूट जानेवाला है। ३७४७

कण्ड तामरैक् कण्णऩ्क् कडवुण्माक् कदैदाऩ्
अण्डर् नायह ऩायिरङ् गण्णिऩु मडङ्गाप्
पुण्ड रीहत्तिऩ् मुहैयऩ्ऩ पुहर्मुहम् विट्टाऩ्
उण्डै नूरुडै नूरुपट् टुळदॆऩ वुदिर्त्ताऩ् 3748

कण्ट–उसको देखकर; तामरै कण्णऩ्–कमलाक्ष ने; अ–उस; कटवुळ् मा कतै–उस दिव्य बड़ी गदा को; अण्टर् नायकऩ्–अण्डनायक इंद्र के; आयिरम् कण्णिऩुम् अटङ्का–हजारों नेत्रों में भी न समानेवाले; नूऱु उण्टै उटै–सौ गोलों के साथ रहनेवाले; पुण्टरीकत्तिऩ् मुकै अऩ्ऩ–कमल-कली-तुल्य; पुकर् मुकम्–तेजोमुख; विट्टाऩ्–(अस्त्र) चलाकर; नूऱु पट्टु उळतु–सौ टुकड़े (पहले ही) हो गये थे; ऎऩ–ऐसा; उतिर्त्ताऩ्–चूर कर दिया। ३७४८

कमलाक्ष ने उसे देखा। उन्होंने देवेंद्र की हजार दृष्टियों में भी न समा सकनेवाले हजार मृद्गोलों से जुड़ा हुआ कमल-कली-सा उज्ज्वल-मुख अस्त्र छोड़ा और उस दंडायुध को ऐसा चूर कर दिया कि लोगों को यह भ्रम पैदा हुआ कि क्या यह 'घड़ा' पहले ही सौ खंडों में फूटा था? । ३७४८

तेय निऩ्ऱवऩ् शिलैवलङ् गाट्टिऩाऩ् तीराप्
पेयै यॆऩ्पल तुरप्पदिङ् गिवऩ्पिऴै यामल्
आय तऩ्पॆरुम् बडैयॊडु मडुहळत् तविय
मायै यिऩ्पडै तॊडुप्पऩॆऩ् ऱिरावणऩ् मदित्ताऩ् 3749

तेय निऩ्ऱवऩ्–क्षय होने को जो था (उसने); चिलै वलम् काट्टिऩाऩ्–धनुबल दिखाया है; तीरा–अवार्य; पेयै–पिशाच-सम; पल–अनेक अस्त्रों को; तुरप्पतु ऎऩ्–छोड़ने से क्या लाभ; इङ्कु–यहाँ; इवऩ्–यह; पिऴैयामल् आय–अचूक बने; तऩ् पॆरु पटैकलत्तॊटुम्–अपने बड़े अस्त्रों के साथ; अटुकळत्तु–युद्ध के मैदान में; अविय–बुझ जाय ऐसा; मायैयिऩ् पटै–माया का अस्त्र; तॊटुप्पऩ्–चलाऊँगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; इरावणऩ् मतित्ताऩ्–रावण ने ठाना। ३७४९

क्षयोन्मुख रावण ने विचारा— असाधारण धनु-दक्षता दिखानेवाले इस पर पिशाच-सम अनेक अस्त्रों को चलाने से क्या लाभ है जो इसे मार नहीं सकें। यह इसके अपने अमोघ अस्त्र-शस्त्रों के साथ इस युद्ध के मैदान में मिट जाय —ऐसा मैं अपना माया-अस्त्र छोड़ूँगा। ३७४९

पूशऩैत्तॊऴिल् पुरिन्दुताऩ् मुऩ्मैयिऱ् पॊऱ्ऱुम्
ईशऩैत्तॊऴु दिरुडियुञ् जऩ्दमु मॆण्णि
आशै पत्तिऩु मऩ्दरप् परप्पिऩु मडङ्गा
वीशितऩ्ऱॊल विल्लिडैत् तॊडैहॊडु विट्टाऩ् 3750

पूचत्तै तॉळिल्–पूजा-कर्म; पुरिन्दु–संपन्न करके; तान्–स्वयं; मुऱैमैयिल्–यथारीति; पोऱ्ऱुम्–जिनकी स्तुति करता था; ईचत्तै–ईश्वर की; तॉऴुदु–वंदना करके; इरुटियुम् चन्दमुम् ऍण्णि–मंत्र के ऋषि और छंद का स्मरण करके; आर्वै पत्तितन्–वसों दिशाओं में; अन्तरम् परप्पिनुम्–अंतरिक्ष के विसतर में; अटक्का–समा नहीं सके ऐसा; चॅल–चलने; विल् इट्टु तॉटै कॉण्डु–धनु में संधान कर; वीचित्तन् विट्टान्–जोर से चलाया। ३७५०

उसने ऐसा निश्चय करके वह अस्त्र लिया। उसकी यथावत् पूजा की। फिर अपने इष्टदेव परमेश्वर की स्तुति की और उसके योग्य मंत्र के निर्माता ऋषि और उसके छंद का स्मरण कर धनु में संधान करके उसे चलाया जो ऐसा व्याप्त होकर चला कि लगता था कि दसों दिशाओं और आकाश के विस्तार में भी वह समा नहीं सके। ३७५०

माये पॉत्तिय वयप्पडै विडुदलुम् वरम्बिल्
काय मॅत्तनै युळॅनैडुङ् गायङ्गळ् कदुव
आय मुऱ्ऱॆळुन् दारॆन वाऱ्ऱतन रमरिल्
तूय कॉऱ्ऱवर् शुडुशरत् तान्मुन्बु तुणिन्दार् 3751

मायै पॉत्तिय–मायापूर्ण; वयम् पडै–विजयदायी अस्त्र; विडुतलुम्–छोड़ने पर; तूय–पवित्र; कॉऱ्ऱवर्–प्रतापी श्रीराम और लक्ष्मण के; चुडु चरत्तान्–दाहक अस्त्रों से; मुन्पु–पहले; अमरिल्–युद्ध में; तुणिन्दार्–जो कट मरे उनके; वरम्पिल् कायम्–असंख्य शरीर; ऍत्तनै उळ–जितने हैं; नॅडु कायङ्कळ् कदुव–(वे सब) उसी आसमान को छूते हुए; आयम् उऱ्ऱु–(जीव) लाभ पाकर; ऍऴुन्दार् ऍन–उठे कहकर; आर्त्तनर्–शोर मचा उठे। ३७५१

माया-भरे विजयदायी अस्त्र को चलाने पर विजयी वीर, श्रीराम और लक्ष्मण द्वारा पहले युद्ध में हत होकर जितने वीरों के शव पड़े थे, वे सभी जीवित होकर आकाश स्पर्श करते हुए मानो जी उठे। यह देखकर सबने यह कहते हुए आनंदनर्दन किया कि सब जी उठे। ३७५१

इन्दि रऱ्कॉरु पहैञनु मवऱ्किळै योरुम्
तन्दि रप्पॆरुन् दलैवरुन् दलैत्तलै योरुम्
मन्दि रच्चुऱ्ऱत् तवर्हळुम् वरम्बिलर् पिऱरुम्
अन्द रत्तिनै मऱैत्तनर् मळैयुह वार्प्पार् 3752

इन्तिरऱ्कु–इंद्र का; ऒरु–एक; पकैञन्–शत्रु (इंद्रजित्) और; अवऱ्कु इळैयोरुम्–छोटे भाई; पॆरुम्–बड़े; तन्तिर तलैवरुम्–सेनापति; तलै तलैयोरुम्–अन्य मुखिये; मन्तिरम् चुऱ्ऱत्तवर्कळुम्–मंत्रीमंडल के लोग; वरम्पु इलर् पिऱरुम्–और अगणित अन्य सभी; अन्तरत्तिनै–आकाश को; मऱैत्तनर्–छिपाते हुए; मळै उक–मेघों को भी चुआते हुए; आर्प्पार्–घोष उठाने लगे। ३७५२

इन्द्रशत्रु इन्द्रजित्, उसके भाई अतिकाय, कुंभ, निकुंभ आदि बड़े-बड़े

सेनापति, अन्य मुखिये, मंत्री लोग और अन्य असंख्य राक्षस आकाश को छिपाते हुए ऐसे शोर मचा उठे कि मेघ भी छितर गये। ३७५२

कुडप्पॅ रुऩ्जॅविक् कुऩ्ऱमु मऱ्ऱुळ कुळ्ळुवुम्
पडॅत्त मूलमात् तानॅयु मुदलिय पट्ट
विडॅत्तॅ ळुऩ्दऩ यानॅतेर् परिमुदल् वॅव्वे
ऱडॅत्त वूर्दिह ळऩॅत्तुम्वन् दव्वळि यडॅय 3753

कुटम् पॅरु चॅवि–कुंभ के समान बड़े कानोंवाले; कुऩ्ऱमुम्–पर्वत (सम कुंभकर्ण और); मऱ्ऱुळ कुळुवुम्–अन्य दल; पटॅत्त–जो उसका हो रहता था वह; मूल मा तानॅयुम्–मूलबल की सेना; मुतलिय पट्ट–आदि जो मर चुके; यानॅ तेर् परि–हाथी, रथ और अश्व; मुतल्–आदि; वेऱु वेऱु अटॅत्त ऊर्तिकळ्–और और बहुत वाहन; अनॅत्तुम् वन्तु–सब आकर; अ वळि अटॅय–जब वहाँ पहुँचे; विटॅत्तु ॲळुन्तन–क्रोध के साथ उठे। ३७५३

कुंभ-सम बड़े कानों वाला कुंभकर्ण और अन्य वीर, और मूलबल के वीर, गज, तुरग, रथादि सभी वाहन उठे और वहाँ आकर इकट्ठे हुए। और क्रोध दिखाने लगे। ३७५३

आयि रम्बॅरु वॅळ्ळमॅऩ् ऱऱिञरे यऱॅन्द
कायशि ऩप्पॅरुङ् गडऱ्पडॅ कळप्पट्ट वॅल्लाम्
ईश ऩिऱ्पॅऱ्ऱ वरत्तिऩा लॅय्दिय वॅऩ्ऩत्
तेश मुऱ्ऱवुञ् जॅऱिन्दऩ तिशॅहळुन् दिहैक्क 3754

पॅरु आयिरम् वॅळ्ळम् ॲऩ्ऱु–बड़ा सहस्र वॅळ्ळम्, ऐसा; अऱिञरे अऱॅन्त–शास्त्रज्ञ-गणित; कळम् पट्ट–मैदान में जो मरे पड़े थे; काय् चिऩम्–संतापक क्रोधी; पॅरु कटल्–बड़े सागर-सम; पटॅ ॲल्लाम्–सारी सेना; ईचऩिल् पॅऱ्ऱ वरत्तिऩाल्–परमेश्वर से प्राप्त वर से; ॲय्तिय ॲऩ्ऩ–जीव लाभ पाये, ऐसा; तिचॅकळुम् तिकैक्क–दिशाओं के लोगों को चकित करते हुए; तेच मुऱ्ऱवुम्–देश भर में; चॅऱिन्तऩ–ठस भर गये। ३७५४

गणितज्ञों द्वारा बड़ा हजार वॅळ्ळम् गणित मृतक शरीर, सभी क्रुद्ध वीरों की सेना का सागर मानो परमेश्वर से प्राप्त वर के बल से जीवंत हों ऐसे उठकर देश भर में व्याप गये जिसको देखकर सारी दिशाएँ चकित हो गयीं। ३७५४

शॅऩ्ऱ वॅङ्गणऩ् देवरु मुऩिवरुञ् जिऩ्द
वॅऩ्ऱ वॅङ्गळॅप् पोलुम्याम् विळिवदु मुळदे
इऩ्ऱु काट्टुदु मॅय्दुमि ऩॅय्दुमि ऩॅऩ्ऩाक्
कॉऩ्ऱ कॉऱ्ऱवर् तम्बॅयर् कुऱित्तऩर् कवि 3755

वॆन्ऱ्ठु–जीता; ऎङ्कळैपोलुम्–हमें क्या; याम्–हम; विळिवतुम् उळते–मरेंगे भी क्या; इन्ऱु काट्टुतुम्–आज दिखा देंगे; ऎय्तुमिन् ऎय्तुमिन्–आओ-आओ; ऎन्ऩा–कहकर; कॊन्ऱ–जिन्होंने मारा; कॊऱ्ऱवर्तम्–उन वीरों के; पॆयर् कुऱित्तु–नाम साफ़ कहते हुए; अर्ऱ कूवि–ललकार करके; तेवरुम् मुनिवरुम् चिन्त–देवों और मुनियों को भागने देते हुए; ऎङ्कणुम् चॆन्ऱ–(वे जीवित हुई सेनाएँ) सर्वत्र गयीं। ३७५५

वे वीर अपने-अपने घातकों से यह ललकार करते हुए सर्वत्र बढ़े आये कि क्या हम पर जीत पाये? क्या हम भी यों मर जायँगे? अब आओ, आओ। इससे देव और मुनिगण तितर-बितर हो गये। ३७५५

पारि डन्दुकॊण् डॆळुन्दन पाम्बॆनुम् बडिय
पारि डन्दुतॆन् वॆळुन्दन मलॆयनुन् पडिय
पेरि डङ्गवु वरिदिनि विशुम्बॆनप् पिऱन्द
पेरि डङ्गरिन् कॊडुङ्गुळै यणिन्दन पेय्हळ् 3756

पाम्पु (वासुकी) आदि नाग; पार् इटन्तु कॊण्टु–भूमि को भेदते हुए; ऎळुन्तन–निकले; ऎनुम् पटिय–ऐसे और; पेर् इटम्–बड़ी पृथ्वी; कतुवरितु–रहने के लिए पर्याप्त नहीं; इति–अब; विचुम्पु–आकाश ही; ऎन–मानो ऐसा; मलै अनुन पटिय–पर्वतों के समान; पारिटम्–भूत; तुऱॆनतु–जल्दी; ऎळुन्तन–ऊपर उठे; पेर् इटङ्करिन्–बड़े ग्राहों के समान; कॊटु कुळै–वक्रकुंडल; अणिन्तन–जिन्होंने पहन रखे थे वे; पेय्कळ्–पिशाच; पिऱन्त–उदित हुए। ३७५६

भूत शीघ्र उठ आये और वे वासुकी आदि सर्पों के समान लगे जो भूमि को फाड़कर बाहर निकले हों। उनके शरीर पर्वतों के समान थे जिसको देखकर ऐसा लगता था कि अब भूमि में स्थान नहीं, आकाश में ही रहना होगा। फिर पिशाच भी आये जो कि बड़े ग्राहों के समान थे और जो कि वक्र कुंडल पहने हुए थे। ३७५६

ताम शत्तिनिऱ् पिऱन्दव ऱऱन्दॆऱुन् दहैयर्
ताम शत्तिनिऱ् चॆल्हिलाच् चदुमुहत् तवर्क्कुत्
ताम शत्तिरज् जॆय्बवर् परिन्दनर् तळरत्
ताम शत्तिरज् जित्तिरम् बॊरुन्दिनर् तयङ्ग 3757

तामचत्तिनिल् पिऱन्तवर्–तामसास्त्र से उद्भूत; अऱम् तॆऱुम् तकैयर्–धर्मनाशक गुण वाले; ताम्–स्वयं; अचत्तितिल्–बुरे मार्ग पर; चॆल्किला–जो न जाते; चतु मुकत्तवर्क्कु–चतुर्मुख ब्रह्मा के लिए; उत्तामम्–उत्तम; चत्तिरम्–यज्ञ; चॆय्पवर्–जो करते हैं वे मुनि; परिन्ततर्–व्यग्र होकर; तळर–निर्बल पड़ें ऐसा; उत्तमम्–उत्तम; चत्तिरम्–हथियारों को; तयङ्क–चमकाते हुए; चित्तिरम्–विचित्र; पॊरुन्तिनर्–दिखे। ३७५७

मायास्त्र से उद्भूत, धर्मनाशक शक्तियुक्त, ये लोग उज्ज्वल अस्त्र-

शस्त्रों के साथ अनोखे रूप से आतंकमय लगे और बुरे मार्ग पर न जाने वाले, चतुर्मुख की तृप्त्यर्थ उत्तम यज्ञ करनेवाले मुनिगण उद्विग्न होकर निर्बल पड़ गये। ३७५७

ताम विन्दुमी दॅळुन्दवर्क् किरट्टियिन् तहैयर्
ताम विन्दुविन् पिळवॅन्त् तयङ्गुवा ळॅयिऱ्ऱर्
ताम विन्जैयर् कडऱ्पॅरुन् दहैयिनर् तरळत्
ताम विन्जैयर् तुवन्ऱिनर् तिशैतॊऱुन् दरुक्कि 3758

ताम् अविन्तु–खुद मरकर; मीतु–फिर; ॲळुन्तवर्क्कु–जो जीवित हो गये उनके; इरट्टियिन् तकैयर्–दुगुने; तामम्–उज्ज्वल; विन्तुविन्–चंद्र के; पिळवु ॲन्त–टुकड़े के समान; तयङ्कुम्–शोभनेवाले; वाळ् ॲयिर्र्रर्–दाँतों से युक्त; ताम्–लांघनेवाली; अविन्चॅयर्–माया करने में समर्थ; कटल्–समुद्र के समान; पॅरु तकैयितर्–बड़े परिणाम के (असुर); तरळम् तामम्–मोती-माला-धारी; विन्चैयर्–विद्याधर; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; तरुक्कि–सदंभ; तुवन्ऱितर्–भीड़ लगाकर आये। ३७५८

इनके अलावा सागर-सम बड़ी संख्या में सुर भी आये। वे मरकर जी उठे राक्षसों के दुगुने बल रखते थे। अर्धचंद्र-सम उज्ज्वल दाँतों वाले थे और छलाँग मारने की मायाशक्ति रखनेवाले थे। फिर मुक्तमाला-मंडित विधाधर आये। सभी सदंभ सारी दिशाओं में भीड़ लगाते हुए आये। ३७५८

ताम डङ्गलु मुडङ्गुळै याळियुन् दहुवार्
ताम डङ्गलु नॅडुन्दिशै युलहॊडुन् दहैवार्
ताम डङ्गलुङ् गडलुमॊत् तार्दरुन् दहैयार्
ताम डङ्गलुङ् गॊडुञ्जुडर्प् पडैहळुन् दरित्तार् 3759

ताम्–छलाँग मारनेवाले; मटङ्कलुम्–सिंह की; मुटङ्कु उळै–और वक्र अयालवाले; याळियुम्–शरभों को; तकुवार्–समानता करनेवाले और; ताम् अटङ्कलुम्–आप सारा; नॅटु तिचै–लंबी दिशाओं को; उलकॊटुम्–पृथ्वी के साथ; तकैवार्–रोक सकनेवाले; ता–सशक्त; मटङ्कलुम्–युगांत की अग्नि की; कटलुम्–और समुद्र की; ऑतु–समानता करके; आर् तरुम्–सर्वत्र भर के; तकैयार्–योग्य रहनेवाले वे; ताम्–उज्ज्वल; मटङ्कलुम्–वज्रों और; कॊटु–क्रूर; चुटर्–ज्वलंत; पटैकळुम्–हथियारों को; तरित्तार्–धारण किये रहे। ३७५९

वे सभी छलाँग मारनेवाले सिंहों के और वक्र अयालवाले शरभों के सदृश थे। वे सभी दिशाओं को पृथ्वी के साथ मेटने की शक्ति रखते थे। युगांत की अग्नि तथा सागर के समान थे और समरभूमि भर में

व्याप सकनेवाले थे। वे ज्वलंत अशनि और क्रूर उज्ज्वल हथियार धारण किये हुए थे। ३७५९

इत्तैय तन्मैयै नोक्किय विन्दिरै कोळ्ळुनन्
वित्तैय मट्ट्रिवु मायमो विदियदु विळैवो
वत्तैयुम् वत्कळ लरक्करतम् वरत्तिनो मट्ट्रो
नित्तैदि यामॅत्तिऱ् पहर्त्त मादलि निहळ्ळत्तुम् 3760

इत्तैय–ऐसी; तन्मैयै–स्थिति को; नोक्किय–देखकर; इन्दिरै कोळ्ळुनन्–इन्दिरापति ने; इतु–यह; वित्तैयम् मायमो–मायाकार्य है क्या; वितियतु विळैवो–विधि का विधान; वत्तैयुम्–धृत; वल् कळल्–कठोर पायलधारी; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; वरत्तित्तो–वर से; मट्ट्रो–अन्य क्या; नित्तैतियाम् ऍत्तिल्–जानते हो तो; पकर्–बताओ; ऍत्त–पूछा तो; मातलि निकळ्त्तुम्–मातलि बोले। ३७६०

इस बात को देखकर इन्दिरापति श्रीराम ने अपने सारथी मातलि से पूछा कि यह माया का कृत्य है? या विधि की लीला? या धृत पायल-धारी राक्षसों के वर का फल है? या कोई अन्य हेतु है? अगर तुम जानो तो बताओ। तब मातलि बोला। ३७६०

इरुप्पुक् कम्मियर्क् किळैनुळै यूशियॊन् ट्रियट्रि
विरुप्पिऱ् कोडियाल् विलैक्कॅनुम् बदडियित् विट्टात्
करुप्पुक् कार्मळै वण्णवक् कडुन्दिशैक् कळिट्रित्
मरुप्पुक् कल्लिय तोळवन् मोळरु मायम् 3761

करुप्पु–अकाल में उठ आये; कार् मळै–काले मेघ-सम; वण्ण–रंग वाले; इरुम्पु कम्मियर्कु–लुहार के लिए; इळै नुळै–सूत्र जिससे निकलता है; ऊचि ऒन्ऱु–ऐसी एक सूई; इयट्रि–बनाकर; विरुप्पित्–चाव के साथ; विलैक्कु कोटियाल्–खरीद लो; ऍन्नुम्–कहनेवाले; पतटियित्–मूर्ख के समान; अ–उन; कट्–कठिन मन; तिचै कळिट्रित्–दिग्गजों के; मरुप्पु–दाँतों से; कल्लिय–जो नोचे गये; तोळवन्–वैसे कंधोंवाले रावण ने; मोळ्वरुम्–अप्रतिहत; मायम्–मायास्त्र; विट्टान्–प्रेरित किया। ३७६१

अकाल में उठ आये मेघ के समान वर्णवाले! (अत्यंत आनंद-दायक मेघश्याम!) लुहार के पास जाकर जो कहे कि यह तागा घुसने देने वाली सूई क्रय कर लो उस वेवकूफ़ के समान इस रावण ने, जिसके कंधे कठोर दिग्गजों के दाँतों से नोच लिया गया था, यह मायास्त्र छोड़ा है। उसका निवारण साधारण रूप से दुस्साध्य है ही। ३७६१

वीक्कु वायियल् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱुरवित्तॅव् विडत्तै
माय्क्कु मानॅडु मन्दिरन् वन्दवोर् वलियित्

नोय्क्कु नोय्तरु विनैक्कुनित् पॅरुम्बॅयर् नौडियिन्
नीक्कु वायुलै नितैक्कुवार् पिड़प्पॅल नीङ्गुम् 3762

नोय्क्कुम्–भवरोग (-निवारण) के लिए; नोय् तरु विनैक्कुम्–उस रोग को देनेवाले कर्मों को दूर करने के लिए; नित् पॅरुम् पॅयर्–आपके श्रेष्ठ नाम का; नौटियिन्–उच्चारण करें तो; नीक्कुवाय्–उनको दूर करनेवाले; वाय्–मुख में; अयिल्–तीक्ष्ण; वॅळ् ॲयिरु–श्वेत दाँत (जिसके हैं); अरविन्–सर्प के; बोक्कुम् वॅव्विटत्तै–मारक भयंकर विष को; माय्क्कुम्–विफल करनेवाले; मॅट् मन्तिरम्–उत्तम मंत्र द्वारा; तनृतुतु–दत्त; ओर् वलियित्–एक बल के समान; उतै नितैक्कुवार्–आपके स्मरण करनेवाले के; पिड़प्पु ॲत–जन्मके समान; नीङ्कुम्–हट जाएगा (ऐसा मातलि ने कहा)। ३७६२

भवरोग तथा भवरोग के हेतु कर्म के भी, नाम-स्मरण मात्र से नाशक हे नाथ! तीक्ष्ण श्वेत दाँतों के सर्प के विष को विफल करनेवाले श्रेष्ठ मंत्रदत्त बल के समान आपके अस्त्र के प्रभाव से यह मायास्त्र आपके स्मरणकर्ता के जन्म के समान दूर हो जायगा। ३७६२

वरत्ति ऩायिनु मायैयि ऩायिनुम् वलियोत्
उरत्ति ऩायिनु मुण्मैयि ऩायिलु मोडत्
तुरत्ति यालॅत्त ञात्माक् कडुङ्गणै तुरन्दान्
शिरत्तिऩान् मऱै यिऱैञ्जवुन् देडवुञ् जेयोन् 3763

नान् मऱै–चतुर्वेदों के; चिरत्तिन्–शीर्ष (उपनिषदों) से; इऱैञ्चवम्–स्तुति करने और; तेटवुम्–अन्वेषण के लिए; चेयोन्–दूर के श्रीराम ने; वलि योन्–बलवान जो है उसको; वरत्तिन् आयितुम्–वर से सही या; मायैयिन् आयितुम्–माया से ही सही; उरत्तिन् आयिनुम्–या अपने शरीर-बल से ही; उण्मैयिन् आयितुम्–या सत्य से; ओट–भागे ऐसा; तुरत्ति–भगा दो; ॲत्त–कहकर; मा–बड़े; कटु–तेज जानेवाले; ञातम् कणै–ज्ञानास्त्र; तुरन्तान्–चलाया। ३७६३

तब चतुर्वेदशीर्ष, उपनिषदों के भी अन्वेषण तथा स्तुति के परे रहने वाले श्रीराम ने बहुत बड़े तथा तीक्ष्ण ज्ञानास्त्र को छोड़ा और संकल्प किया कि वर से हुई हो, चाहे माया से; शरीर-बल से चाहे सत्य से, इस माया को भगा दो। ३७६३

तुऱत्त लाऱ्ऱुरु ञात्माक् कडुङ्गणै तॊडर
अऱत्त लादुशॆल् लादुनल् लऱिवुवन् दणुहप्
पिऱत्त लाऱ्ऱुरुम् बॆढमै पिणिप्पुऱत् तम्मै
मऱत्त लाऱ्ऱुन्द मायैयित् माय्न्दडु मायम् 3764

तुऱत्तलाल्–छोड़ने से; तुरु–घना; कटु–तेज; मा–बड़े; ञातम् कणै–ज्ञानास्त्र के; तॊटर–पीछा करने से; अऱत्तुतु अलातु–अधार्मिक रीति से; चॆल्लातु–न जाकर; नल् अऱिवु वन्तु अणक–अच्छे ज्ञान के आने पर; पिऱत्तलाल्–

जन्म से; तुङ्म्–गंभीर; पेतैमै–अज्ञान के; पिणिप्पु उऱ–बंधन के होने से; तम्मै मऱ्तुललाल्–आत्म-विस्मृति से; तन्त–उद्भूत; मायैयिन्–माया (जाने) के समान; मायम् माय्न्ततु–माया हट गयी । ३७६४

श्रीराम से प्रेरित होकर वह कठोर ज्ञानास्त्र चला तो अधार्मिक मार्ग पर जाने से रोकते हुए जब ज्ञान आ जाता है तब जैसे अविद्या-जनित आत्म-विस्मृति-दत्त माया छिप जाती है, वैसे माया दूर हट गयी । ३७६४

नीलङ् गॉण्डार् कण्डत्तु नेमिप् पडैयोनुम्
मूलङ् गॉण्डार् कण्डह् रावि मुडिविप्पान्
कालङ् गॉण्डार् कण्डन्न मुन्ने कळिविप्पान्
शूलङ् गॉण्डा तण्डरै यॅल्लान् दॉळिल् कॉण्डान् 3765

नीलम् कॊण्टु आर्–नीले रंग के; कण्टत्तुम्–कंठ वाले शिव और; नेमि पडैयोनुम्–चक्रायुधधर श्रीविष्णु; मूलम् कॊण्टार्–नाभी कमलोत्पन्न ब्रह्मा; कण्टकर् आवि मुटिप्पान्–कंटकों के प्राणहरणार्थ; कालम् कॊण्टार्–काल-निर्णय कर चुके; अण्टरै ॲल्लाम्–सभी देवों को; तॊळिल् कॊण्टान्–जिसने अपना कर्मचारी बना लिया था उसने; मुन्ने कण्टन–सामने दृष्ट (सब) को; कळिविप्पान्–मिटाने हेतु; शूलम् कॊण्डान्–शूल लिया । ३७६५

नीलकंठ शिव, चक्रधर विष्णु और उनके नाभिकमलोत्पन्न ब्रह्मा—इन तीनों ने कंटकों के नाश का काल निर्णय कर दिया है ! इसलिए देवों को अपने दास बना रखनेवाले रावण ने अपने सामने रहे सभी जीवों का नाश कर देने के विचार से शूल को अपने हाथ में ले लिया । ३७६५

कण्डा हुलमुऱ् ऱायिर मार्क्किन् ऱदुकण्णिऱ्
कण्डा हुलमुऱ् ऱुम्ब रयिर्क्किन् ऱवुवीरर्
कण्डा हुलमुऱ् ऱुञ्जुडु मॅन्ऱ्क्कळल् वॅय्योन्
कण्डा हुदन्मुन् शॅल्लवि शॆत्तुळ् ळदुकण्डान् 3766

आयिरम् कण्ट आकुलम्–हजार घंटियों का समूह; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; आर्क्किन्ऱतु–स्वरित हों ऐसा; उम्पर्–व्योमवासी; कण्टु–(जिसको) देखकर; आकुलम् उऱ्ऱु–व्याकुल होकर; अयिर्क्किन्ऱतु–भ्रांत होते हों; वीरर् कण्–वीरों के; ता–बल को; कुलम्–और कुल को; मुऱ्ऱुम् चुटुम्–एक बम जला देगा; ॲन्ऱु–ऐसा; अ कळल् वॅय्योन्–उस पायलधारी क्रूर लंकाधिप ने; कण् ताकुतल् मुन्–आँखों से देखने के पहले ही; चॆल्ल–जाने के लिए; विचैत्तु उळ्ळतु–जोर से जिसको चलाया था उस शूल को; कण्टान्–श्रीराम ने देखा । ३७६६

उस शूल में हजार घंटियाँ बँधी थीं जो क्वणित हो रही थीं। देवगण उसे देखकर व्यग्र हुए और संशयमिश्रित भय करने लगे कि क्या होनेवाला है ? उसे लंकाधिपति ने यह संकल्प करके छोड़ा कि सामने के

वीरों का सारा बल और कुल जला दो। दृष्टि लगने से पूर्व ही रावण से प्रेरित उस शूल को श्रीराम ने देखा। ३७६६

ऍरिया निऱ्कुम् ब:(ह्)ट्रलै मूनृरु मॆरियञ्जत्
तिरिया निऱ्कत् तेवर्ह ळोडत् तिरळोड
इरिया निऱ्कु मॆव्वुल हुनदन् नॊळियेयाय्
विरिया निऱ्कु निऱ्किल दार्क्कुम् विळिशॆल्ला 3767

ऍरिया निऱ्कुम्–जो जलता है वह; पः तलै–वह त्रिशूल; ऍरि मूनृम् मञ्च–तीनों अग्नियों को भयभीत करते हुए; तिरिया निऱ्क–घूमता आया, तब; तेवर्कळ् ओट–देव भागे ओर; तिरळ् ओट–वानरयूथ भागे; इरिया निऱ्कुम्–अस्त-व्यस्त; ऍव् उलकुम्–सभी लोकों में; तन् ऑळियेयाय्–अपनी ही ज्योति को; विरिया निऱ्कुम्–फैलाये जो रहा; आर्क्कुम्–(वह) किसी को भी; विळि चॆल्ला निऱ्किलतु–दृष्टि में ठहरे विना जाता रहा। ३७६७

वह त्रिशूल जलता हुआ, तीनों अग्नियों को भी भयभीत करता हुआ और घूमता हुआ आ रहा था। उसको देखकर देव भागे। वानरयूथ भागे। अस्त-व्यस्त सभी लोकों को प्रकाश से भरते हुए स्वयं तेज ही बनकर वह कहीं रुका नहीं और लोक में किसी की दृष्टि उस पर पड़ ही नहीं सकती थी। ३७६७

शॊल्वा यॆन्नच् चॆल्ल विडुत्ता तिदुतीर्त्तऱ्
कॊल्वाय् नीये वेऱॊरु वर्क्कुम् मुडैयादाल्
वल्वाय् वॆङ्गट् चूल मॆनुङ्गा लनैवळ्ळाल्
वॆल्वाय् वॆल्वा यॆन्ऱनर् वानोर् मॆलिहिन्ऱार् 3768

वानोर्–देव; मॆलिकिन्ऱार्–म्लान होते हैं; चॆल्वाय्–चलो; ऍन्न–कहकर; चॆल्ल विट्टतातु–चलाया; इतु तीर्त्तऱ्कु–इसे मिटाने के लिए; नीये ऑल्वाय्–आप ही योग्य हैं; वेऱु ऑरुवर्क्कुम् उटैयातु–और किसी से नहीं छूटेगा; वल् वाय्–कठोरमुख; वॆम् कण्–सर्वनाशक; चूलम् ऍनुम् कालनै–शूल रूपी काल को; वळ्ळाल्–करुणामय (प्रभु); नीये वॆल्वाय्–आप ही जीतें; ऍन्ऱनर्–ऐसी प्रार्थना की। ३७६८

देवगणों को म्लान होने देते हुए रावण ने उसे 'चलो' कहकर छोड़ दिया। देवों ने श्रीराम से विनय की कि आप ही इसे दूर कर सकते हैं। यह किसी से तोड़े नहीं टूटेगा। हे करुणामय प्रभु! कठोर-मुख, भयानक इस शूल-यम को आप ही जीतें। ३७६८

तुन्नॆयुम् वेहत् तालुरु मेरुन् दुण्णॆन्न

नितैयु ञातक् कण्णुडै यार्मेल् नितैयादार्
वितैयम् बोलच् चिन्दित वीरत् शरम्वॆय्य 3769

तुतैयुम् वेकत्ताल्–जाने की गति से; उरुम् एरु–अशनिराज भी; तुण् ॲन्त–दहल उठे ऐसा; वतैयुम्–घूमनेवाले; काल् ॲन्त–वात के समान; चॆल्वत–जानेवाले; वॆय्य चरम्–(श्रीराम के) कठोर शर; तत्त मरुवाते नितैयुम्–बिना भूले स्मरण करनेवाले; ञासम् कण् उडैयार् मेल्–ज्ञानचक्षुओं पर; नितैयातार्–ईश्वर-स्मरण न करनेवालों के; वितैयम्–षड्यंत्र; पोल–के समान; चिन्तित–गिरे। ३७६९

अतिवेग के साथ अशनिराज को भी भय में डालते हुए चक्रवात के समान जानेवाले श्रीराम के शर ईश्वरस्मरण-कर्ता ज्ञानियों पर ईश्वर-विमुख बुरे लोगों के षड्यंत्र जैसे कुछ असर नहीं कर पाते वैसे ही शूल पर गिरे और व्यर्थ हुए। ३७६९

ऑय्यु मॆय्युन् देव रुडैत्तिण् पडै यॆल्लाम्
पॊय्युन् दुय्यु मौत्तवै शिन्दुम् बुवि तन्दात्
वॆयुज् जाब मौप्पॆत् वॆप्पित् वलि कण्डात्
ऐय निन्ड्रात् शॆय्वहै यॊन्ऱु मरि हिल्लात् 3770

पुवि तन्तात्–भूपाल श्रीराम ने; तेवर् उडै–देवों के; तिण् पडै ऎल्लाम्–सभी सशक्त अस्त्रों को; ऑय्युम् मॆय्युम्–बिना छोड़े चलाया; अवै–वे; पॊय्युम् तुय्युम् ऑत्तु–असत्य और रूई के समान; चिन्तुम्–गिर गये; ऐयन्–प्रभु ने; वॆयुम् चापम् ऑप्पु ॲन–गाली के शाप के समान; वॆप्पित्–गरम उस शूल का; वलि कण्टान्–बल देखा; चॆय् वकै ऑन्ऱुम्–करने योग्य प्रकार कुछ; अऱिकिल्लान्–नहीं सोच सके; निन्ऱान्–खड़े रहे। ३७७०

भूपाल श्रीराम ने सारे दिव्यास्त्र लगातार छोड़े। पर वे असत्य और रूई के समान बिखर गये। श्रीराम ने देखा कि शाप के समान वह शूल अमोघ रूप से नाशकारी है। उसका बल जानकर वे किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े रहे। ३७७०

मऱन्दात् शॆय्है मार्ऱॆदिर् शॆय्युम् वहैयॆल्लाम्
तुऱन्दा तॆन्ना वुम्बर् तुणुक्कन् दॊडरुऱ्ऱार्
अऱन्दा नञ्जिक् काल्कुलै यत्ता तऱियादे
पिऱन्दात् निन्ऱात् वन्दवु शूलम् बिऱरञ्ज 3771

चॆय्कै मऱन्तात्–कुछ करना भूलकर; माऱु–विपरीत; ऎतिर् चॆय्युम् वकै ऎल्लाम्–सामना करने के सारे प्रकारों को; तुऱन्तात्–छोड़ गये; ॲन्ना–कहकर; उम्पर्–देवगण; तुणुक्कम् तॊटरुऱ्ऱार्–भयग्रस्त हुए; अऱम् अञ्चि–धर्म डरा; काल् कुलैय–उसके पैर कंपित हुए; पिऱन्तात्–(मनुष्य-रूप में) अवतरित जो हुए थे वे; अऱियाते निन्ऱान्–बिना जाने खड़े रहे; शूलम् पिऱर् अञ्च–शूल, अन्य (सबों) को भय में डालते हुए; वन्ततु–आया। ३७७१

देवगण यह कहते हुए भयग्रस्त हुए कि श्रीराम कुछ करना भूल गये। उसके आगे उसके विपरीत किये जायँ ऐसे सभी उपायों को उन्होंने छोड़ दिया है। धर्म भी डर गया और उसके पैर काँपने लग गये। मनुष्य के रूप में प्रकट श्रीराम विना (अपना परत्व) जाने खड़े रह गये। शूल सबको भयभीत करता हुआ आया। ३७७१

शङ्गा रत्तार् कण्डै यॊलिप्पत् तऴल्शिन्दप्
पॊङ्गा रत्तात् मार्बॆदि रोडिप् पुहलोडुम्
वॆङ्गा रॊत्तान् मुऱ्ऱु मुतिऩ्दाऩ् वॆहुळिप्पेर्
उङ्गा रत्ता लुक्कदु पत्नू ऱुदिराहि 3772

चङ्कारत्ताल्—संहार-कार्य से; कण्टै ऑलिप्प—घंटियों के बजते; तऴल् चिन्त–आग के गिरते; पॊङ्कु कारत्तात्–उभरनेवाले क्रोध के साथ; मार्पु ऍतिर् ओटि–वक्ष के सामने जाकर; पुकलोटुम्–जब घुसा तभी; वॆम् कार् ऑत्तात्–क्रूर मेघ-सम; मुऱ्ऱुम् मुतिऩ्ताऩ्–बिलकुल नाराज हुए; वॆकुळि–क्रोध से उत्पन्न; पेर् उङ्कारत्ताल्–हुंकार से; पल् नूऱु–अनेक सौ; उतिर् आकि–खंड होकर; उक्कतु–गिर गया। ३७७२

संहारकार्य पर घंटियों के स्वर के साथ आग छितराते हुए वह उभरते क्रोध के श्रीराम के वक्ष के सामने आया और ज्योंही वह उनके वक्ष में घुसा, त्योंही घनश्याम ने क्रोध के साथ 'हुंकार' किया। उसकी ध्वनि से वह शूल अनेक सौ खण्डों में टूटकर चू गया। ३७७२

आर्प्पा राऩा रच्चमुमऱ्ऱा रलर्मारि
तूर्प्पा राऩार् तुळ्ळल् पुरिन्दार् तॊऴ्हिऩ्ऱार्
तीर्प्पाय् नीये तीयॆऩ वेऱाय् वरुतीमै
पेर्प्पाय् पोला मॆऩ्ऱनर् वाऩो रुयिर्पॆऱ्ऱार् 3773

वानोर्–व्योमवासियों की; उयिर् पॆऱ्ऱार्–जान में जान आयी; आर्प्पार् आऩार्–शब्द कर उठे; अच्चमुम् अऱ्ऱार्–भयविमुक्त हुए; अलर् मारि–पुष्प-वर्षा; तूर्प्पार् आऩार्–करनेवाले बने; तुळ्ळल् पुरिन्तार्––उछल-कूद मचायी; तॊऴुकिऩ्ऱार्–विनय करते; तीर्प्पाय् नीये–मेटनहार आप ही; ती ऍऩ–अग्नि के समान; वेऱाय् वरु तीमै–अलग आनेवाले संकट; पेर्प्पाय् पोलाम्–दूर करनेवाले बनोगे; ऍऩ्ऱऩर्– । ३७७३

यह देखकर देवों की जान में जान आयी। उन्होंने आनंदनर्दन किया। भयविमुक्त होकर पुष्पवर्षा करायी। उछल-कूद मचाकर स्तुति की कि शूलहर्ता आप ही और आनेवाले सभी अग्नि-सम संकटों को दूर करनेवाले बन गये। ३७७३

वॆऩ्ऱा ऩॆऩ्ऱे पुळ्ळम् वॆयर्त्ताऩ् विडुशूलम्
वीतऱ्रा नॅननिर पोहल

ऑन्ड्रा मुङ्गा रत्तिडै युक्को डुदल्काणा
निन्ड्रा नन्नाळ् वीडण नार्शॊल् निनैवुऱ्ड्रान् 3774

विट्ट चूलम्–जो शूल में छोड़ता; पोत्ड्रान् ॲन्तिल् पोकलतु–नहीं मरेगा तो दूर नहीं होगा; ॲन्नुम् पोरुळ्–यह सिद्धांत; कोण्डान्–जो मन में रखता था; ऑन्ड्र आम्–एक अपूर्व; उङ्कारत्तिटै–हुंकार से; उक्कु ओट्टतल्–टूटकर चला यह बात; काणा नित्ड्रान्–देखकर स्तब्ध रहकर; वॆन्ड्रान्–हम पर यह विजय पा चुका; ॲन्ड्रे–सोचकर; उळ्ळम्–मन में; वॆयर्त्तान् (डर से) स्वेद से युक्त हो गया; अन् नाळ्–उस दिन का; वीटणतार् चॊल्–विभीषण का कथन; निनैवुऱ्ड्रान्–स्मरण किया। ३७७४

रावण ने यही सिद्धांत बना लिया था कि मेरी शक्ति राम का अंत किये विना हटेगी नहीं। पर उसने देखा कि एक ही हुंकार में वह टूटकर छिन्न-भिन्न हो गयी। सन्न बनकर उसने ताड़ लिया कि अब वह मुझे हरा देगा। तब उसका शरीर पसीने से भर गया। उसे उस दिन विभीषण ने जो कहा था वह कथन स्मरण हो आया। ३७७४

शिवनो वल्लन् नान्मुह नल्लन् तिरुमालाम्
अवनो वल्लन् मॆय्वर मॆल्ला मडुहित्ड्रान्
तवनो वॆन्निड् चॆय्दु मुडिक्कुन् दरनल्लन्
इवनो तानव् वेद मुदऱ्का रणनॆन्ड्रान् 3775

मॆय् वरम् ॲल्लाम्–सच्चे सभी वरों को; अट्टकिऱ्ड्रान्–मटियामेट करता है; चिवनो अल्लन्–यह शिव नहीं; नान् मुकन् अल्लन्–चतुर्मुख नहीं; तिरुमालाम् अवनो अल्लन्–श्रीविष्णु नहीं; तवनो ॲन्निल्–बड़े तपस्वियों में एक है क्या; चॆय्तु मुटिक्कुम् तरन् अल्लन्–कर चुकने योग्य नहीं लगता; इवन्–यह; अ वेतम् मुतल् कारणनो–क्या वह वेदमूल भगवान है; ॲन्ड्रान्–(ऐसा संशयवचन) कहा। ३७७५

'यह मेरे सभी सच्चे वरों को एक दम बेकार कर रहा है। यह क्या शिव है? नहीं। चतुर्मुख भी नहीं। श्रीविष्णु नहीं। बड़ा तपस्वी भी होने योग्य नहीं दिखता।' यह तर्क करके रावण ने संशय किया कि क्या यह वेदमूल नारायण तो नही? । ३७७५

यारे नुन्दा नाहुक यानॆन् तनियाण्मै
पेरे न्निन्ड्रे वॆन्ड्रि मुडिप्पॆन् पॆयर्हिल्लेन्
नेरे शॆल्वन् कोल्लॆ नरक्क निमिर्वॆय्दि
वेरे निऱ्कु मीळ्हिलॆ नॆन्ना विडलुऱ्ड्रान् 3776

यारेनुम् तान् आकुक–कोई भी हो; यान्–मैं; ॲन्–अपना; तनि आण्मै पेरेन्–अपनी निजी वीरता से नहीं हटूंगा; निन्ड्रे–स्थिर रहकर; वॆन्ड्रि मुटिप्पॆन्–विजय पूरा करूंगा; पॆयर्किल्लेन्–पीछे नहीं हटूंगा; कोल्ल–मारे जाने के लिए (हो तो भी); नेरे चॆल्वन् –सीधे जाऊंगा; ॲन् अरक्कन्–कहनेवाले रावण ने;

निमिरवु अँय्ति–तनकर; वेर् निऱ्कुम्–(विजय की) जड़ मेरे पास स्थिर रहेगी; मीळ्किलॅंन्–नहीं लौटूंगा; अॅन्ऩा–कहकर; विटल् उऱ्ऱान्–शर छोड़ने लगा। ३७७६

(उसे तामस बुद्धि ने घेर लिया :) 'कोई भी हो ! मैं अपनी वीरता को नहीं छोड़ूंगा। विजयी बनूंगा। हटूंगा नहीं। मारे जाने के लिए भी हो तो समक्ष जाऊँगा।' ऐसा सोचकर रावण नयी उमंग से भर गया। उसने कहा, विजय की जड़ मेरे पक्ष में जमेगी। नहीं तो लौटूंगा नहीं। रावण उत्तरोत्तर बाण चलाने लगा। ३७७६

निरुदित् तिक्कि निऩ्ऱवऩ् वॅन्ऱिप् पडैनॅञ्जिल्
करुदित् तऩ्बाल् वन्द दवऩ्गैक् कॊंडुकालऩ्
विरुदैच् चिन्दुम् विल्लिऩ् वलित्तुच् चॅलविट्टाऩ्
कुरुदिच् चॅङ्गण् तीयुह ञालङ् गुलैवॅय्द 3777

निरुति तिक्किल्–नैर्ऋत (दक्षिण-पूर्व) दिशा में; निऩ्ऱवऩ्–स्थित (दिग्पाल) के; वॅन्ऱि पडै–विजयदायी हथियार को; नॅञ्चिल् करुति–स्मृत करके; तऩ्पाल् वन्ततु–अपने पास आये उसको; अवऩ्–रावण ने; कै कॊण्टु–हाथ में लेकर; कालऩ् विरुतै चिन्तुम्–कालदेव के विरुदों को बिखेरनेवाले; विल्लिल् वलित्तु–धनु में रखकर खींचकर; कुरुति चॅम् कण्–रक्त-सम लाल आँखों से; ती उक–आग के निकलते; ञालम् कुलैवु अॅय्त–संसार के जर्जर होते; चॅल विट्टाऩ्–चलाया। ३७७७

उसने नैर्ऋत (दक्षिणी पूर्व) दिग्पाल का स्मरण किया। उसका विजयदायी अस्त्र आया। उसने उसे हाथ में ग्रहण किया। यमविरुद-भक्षक अपने धनु पर चढ़ाया और प्रेरित किया। तब उसकी रक्तवर्ण आँखों से आग-सी निकल रही थी और संसार कंपायमान हो उठा। ३७७७

वैयन् दुऩ्ऩुम् वऩ्पिडर् नाह मऩमञ्जप्
पैयुङ् गोडिप् पः(ह)ऱले योडु मळविल्ला
मॅय्युम् वायुम् बॅऱ्ऱऩ मेरुक् किरिशाल
नॊय्दॆऩ् ऱोदुन् दऩ्मैय वाह नुळैहिऩ्ऱ 3778

वैयम् तुऩ्ऩुम्–संसार जिस पर स्थिर रहता है; वल् पिटर् नाकम्–कठोर फनों का नाग; मऩम् अञ्च–मन में भय का अनुभव करे; कोटि–पंक्तिबद्ध; पल् तलैयोटुम्–अनेक सिरों के साथ; पैयुम्–फन; अळवु इल्ला मॅय्युम्–अपार बड़ा शरीर; वायुम् पॅऱ्ऱऩ–और मुख जिसके हों; मेरु किरि–वह मेरु पर्वत भी; चाल नॊय्तु अॅऩ्ऱु–बहुत ही छोटा है ऐसा; ओतुम् तऩ्मैय आक–कहने योग्य रीति के; नुळै किऩ्ऱ–बनकर आये। ३७७८

(उस अस्त्र के अनेकानेक सर्प बने। वे कैसे थे ?) एक एक को देखकर धरावाहक बड़े फनों वाला आदिशेषनाग भी मन में भय का अनुभव करे, ऐसे। अनेक सिरों, फनों से युक्त भीमकाय थे। मेरु भी उनके सामने हलका लगे, ऐसा बनके आ रहे थे। ३७७८

वाय्वाय् तोऱु माकडल् पोलुम् विडवारि
पोय्वार् हिन्ऱ पॉङ्गतल् कण्णिऱ् पॊऴिहिन्ऱ
मीवा यॅङ्गुम् वॅळ्ळिडै यिन्ऱि मिडैहिन्ऱ
पेय्वा यॅन्ऩ वॅळ्ळॅयि ऱॅङ्गुम् बिऱऴ्हिन्ऱ 3779

वाय् वाय् तोऱुम्–हर मुख में; मा कडल् पोलुम्–बड़े समुद्र के समान; विडम् वारि–विष-जल; पोय् वार्किन्ऱ–बहता है; पॊङ्कु अतल्–धधकती आग; कण्णिल्–आँखों से; पॊऴि किन्ऱ–बहुत निकालनेवाले; मी वाय् ऍङ्कुम्–ऊपर कहीं; वॅळ् इडै इन्ऱि–रिक्त स्थान न हो ऐसा; मिटैकिन्ऱ–सटे हुए आनेवाले; पेय् वाय् ऍन्ऩ–पिशाचों के मुखों के समान; ऍङ्कुम्–सब ओर; वॅळ् ऍयिऱु–सफ़ेद दाँत; पिऱऴ्किन्ऱ–छवि के साथ प्रकट करनेवाले। ३७७९

हर सर्प के हर मुख में समुद्र के समान विषजल स्रव रहा था। आँखों से धधकती आग निकल रही थी। वे इतनी भीड़ लगाकर आ रहे थे कि ऊपर कहीं कुछ रिक्त स्थान न दिखायी दिया। पिशाच के मुख के समान उनके मुख में सब ओर सफ़ेद दाँत विलस रहे थे। ३७७९

कडित्ते तीरुङ् गण्णहन् ञालङ् गडलोडुम्
कुडित्ते तीरु मॅन्ऱुल हॅल्लाङ् गुलैहिन्ऱ
मुडित्ता नन्ऱो वॅङ्ग णरक्कन् मुऴुमुऱ्ऱुम्
बॊडित्ता ताहु मिप्पॊऴु दॅन्ऩप् पुहैहिन्ऱ 3780

कडित्ते तीरुम्–काटकर ही छोड़ेगा; कण् अकल् ञालम्–विशाल संसार को; कडलोडुम्–समुद्र के साथ; कुडित्ते तीरुम्–पीकर ही छोड़ेगा; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; उलकु ऍल्लाम्–सारे लोक; कुलैकिन्ऱ–काँपे उसके कारण बनकर; वॅम् कण्–दारुणाक्ष; अरक्कन्–राक्षस रावण; मुऴु मुऱ्ऱुम् मुटित्तान्–पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया; इप्पॊऴुतु–इसी समय; पॊटित्तान् आकुम्–चूर कर दिया रहेगा; अन्ऱो–न; ऍन्ऩ पुकैकिन्ऱ–ऐसा धधकनेवाले। ३७८०

वे ऐसे भयंकर थे कि लोगों के मन में यह त्रास पैदा हो गया कि यह श्रीराम को काटे विना नहीं छोड़ेगा। विशाल पृथ्वी को समुद्र के साथ पिये विना नहीं रहेगा। 'भीषण आँखों वाला राक्षस इसी क्षण दुनिया को चूर करके तहस-नहस करनेवाला है' —ऐसा प्रभाव पैदा करके वे गुंगुआते हुए आये। ३७८०

अव्वा ऱुऱ्ऱ वाडर वङ्गा लहल्वायाल्
कव्वा निन्ऱ माल्वरै मुऱ्ऱु मवैकण्डान्
ऍव्वाय् तोऱु मॅय्दिन वॅन्ऩा वॅविरॅय्दान्
तव्वा वुण्मैक् कारुड मॅन्ऩुम् बडैतन्ऩाल् 3781

अव्वाऱु उऱ्ऱ–वैसे बने; आटु अरवम्–फन फैलाकर नाचनेवाले नाग; काल्–

विष वमन करनेवाले; अकल् वायाल्–चौड़े मुखों से; कव्वा नित्र्–ग्रस्त; माल् वरै अवै–विशाल सीमा वाले स्थानों को; मुऱ्ऱुम्–पूरा; कण्टान्–जिन्होंने देखा उन श्रीराम ने; ॲव्वाय् तोऱुम् ॲय्तिऩ–सभी स्थानों में आ गये; ॲऩ्ऩा–सोचकर; तव्वा–अचूक; उण्मै–सत्यनिष्ठ; कारुटम् ॲऩ्ऩुम् पटै तऩ्ऩाल्–'गारुड़' नामक अस्त्र से; ॲतिर् चॅय्तान्–विरोध किया। ३७८१

श्रीराम ने देखा कि फन फैलाकर नाचनेवाले, विष वमन करनेवाले उन सर्पों के विशाल मुखों से बहुत विस्तृत पृथ्वी और आकाश का भाग ग्रस्त है! 'ओह! ये सब ओर आ जुड़े हैं!' यह सोचकर श्रीराम ने उसके विरोध में अमोघ और सच्चे गरुड़ास्त्र को प्रेरित किया। ३७८१

ॲवणॅत् तऩ्मैत् तेहिऩ नाहत् तिऩ्मॅऩ्ऩप्
पवणत् तऩ्ऩ वॅञ्जिऱै वेहत् तऴिल्पम्बच्
चुवणक् कोलत् तुण्ड नहत्तॉल् शिऱैवॅल्पोर्
उवणप् पुळ्ळे यायिऩ वाऩो रुलहॅल्लाम् 3782

नाकत्तु इऩम्–नागसमूह; ॲवण्–कहाँ; ॲ तऩ्मैत्तु एकिऩ–जैसे गये; ॲऩ्ऩ–वैसे ही; पवणत्तु अऩ्ऩ–पवन के समान; वॅम् चिऱै–भीषण पक्षों के; वेकम् तॊऴिल् पम्प–वेग के कार्य के बढ़ते; चुवणम् कोलम्–स्वर्णवर्ण और; तुण्टम्–चोंच और; नकम्–नख और; तॊल् चिऱै–प्राचीन पंख (इनके) साथ; पोर् वॅल्–युद्धविजय-कारी; उवणम् पुळ्ळे–गरुड़ पक्षी-मय; वाऩोर् उलकु ॲल्लाम्–सब स्वर्गलोक; आयिऩ–बन गये। ३७८२

तब देवलोक ही गरुड़ों से भर गये। (वे गरुड़ कैसे निकले?) बिलकुल उन नागों के ही सम, उनके पहुँचे स्थानों में सर्वत्र वे आये। उनके पक्षों से पवन निकालने का काम प्रचंड रीति से चल रहा था। स्वर्ण-वर्ण शरीर और उसी रंग की चोंच से और प्राचीन पक्षों के साथ एक-एक शोभता था। वे युद्धविजयी स्वभाव के थे। ३७८२

अळक्करुम् बुळ्ळिऩ मडैय वारऴल्
तुळक्करुम् वाय्तॊऱु मॅरियत् तॊट्टऩ
इळक्करु मिलङ्गैत्ती यिडुवु मीण्डॅऩ
विळक्किऩ मॅडुत्तऩ पोऩ्ऱ विण्णॅलाम् 3783

अळक्क अरुम्–असंख्य; पुळ्ळिऩम् अटैय–पक्षी सब; तुळक्क अरुम्–अचल; वाय् तॊऱुम्–मुख-मुख पर; आर् अऴल्–भरी आग; ॲरिय तॊट्टऩ–जलती रखने वाले; इळक्क अरु–पिघलाने में कठिन; इलङ्कै–लंका में; ईण्टु–तेजी से; ती इटुतुम्–आग लगा देंगे; ॲऩ–ऐसा; विण् ॲलाम्–सभी व्योमलोकवासी; विळक्कु इऩम्–दीप-समूह को; ॲटुत्तऩ पोऩ्ऱ–ले रहे जैसे लगे। ३७८३

असंख्यक गरुड़ पक्षी-समूह मिलकर आये। हर गरुड़ के अचल मुख में

विपुल आग विद्यमान थी। वे देवों के लिये हुए दीपों के समान लगे जिनको देवों ने यह सोचकर उठाया हो कि लंका में, जिसको साधारण प्रकार से पिघलाना कठिन है, एक साथ अनेक दीपों से पिघला देंगे। ३७८३

कुयिऩ्ऱऩ शुडर्मणि कऩलिऩ् कुप्पैयिऱ्
पयिऩ्ऱऩ शुडर्तरप् पदुम नाळङ्गळ्
वयिऩ्ऱॊऱुङ् गवर्न्दॆऩत् तुण्ड वाळ्हळाल्
अयिऩ्ऱऩ पुळ्ळिऩ मुहिरि नळ्ळिऩ 3784

कुयिऩ्ऱऩ–जड़ित; चुडर् मणि–उज्ज्वल रत्न; कऩलिऩ् कुप्पैयिऩ्–अग्निपुंजों के समान; पयिऩ्ऱऩ–लगे; चुडर् तर–प्रकाश देते रहे; पुळ् इऩम्–पक्षीगण; पतुमम् नाळक्कळ्–कमल-नालों को; वयिऩ् तॊऱुम्–स्थान-स्थान में; कवर्न्तॆऩ–पसे हों जैसे; उकिरिऩ् अळ्ळिऩ–नाखूनों से ग्रहण करके; तुण्टम् वाळ्कळाल्–चोंच रूपी तलवारों से; अयिऩ्ऱऩ–छेदकर खाया। ३७८४

गरुड़ पक्षीगणों ने उन सिरों पर जड़ित रत्नों के प्रकाश के साथ रहे सर्पों को यत्र-तत्र कमलनालों के समान अपने नखों से उठाकर अपने असि-सम चोंचों से नोच खाया। ३७८४

आयिडै यरक्कऩु मळऩ्ऱ नॆञ्जिऩऩ्
तीयिडैप् पॊडिऩ्दॆऴु मुयिर्प्पऩ् शीऱ्ऱत्तऩ्
मायिरु ञालमुम् विशुम्बुम् वॆप्पऱत्
तूयिऩऩ् शुडुशर मुरुमिऩ् तोऱ्ऱत्त 3785

मायिटै–तब; अरक्कऩुम्–राक्षस ने भी; अऴऩ्ऱ नॆञ्चिऩऩ्–तपते मन का; ती–आग; इटैये–मध्य-मध्य; पॊटिऩ्तु ऍऴुम्–अंगारे बन छितरे ऐसा; उयिर्प्पऩ्–साँसें छोड़नेवाला; चीऱ्ऱत्तऩ्–क्रोधी; मा इरु ञालमुम्–बहुत बड़ी पृथ्वी और; विचुम्पुम्–आकाश; वॆप्पु अऱ–बिना खाली स्थान के; उरुमिऩ् तोऱ्ऱत्त–वज्र के आकार के; चुटु चरम्–गरम शरों को; तूयिऩऩ्–बहुत संख्या में चलाया। ३७८५

तब राक्षस का मन खौल उठा, साँसें आग के साथ छूटीं। बहुत ही क्रुद्ध होकर उसने बड़ी भूमि और आकाश को कहीं अंतर न देकर वज्र के आकार के जलानेवाले शर छोड़े। ३७८५

अङ्गवॆङ् गडुङ्गण यियिलिऩ् वाय्तॊऱुम्
वॆङ्गणै पडप्पड विशैयिऩ् वीऴ्न्दऩ
पुङ्गमे तलयॆत्तप् पुक्क पोलुमाल्
तुङ्गवा ळरक्कऩ तुरत्तिड् ड्रोऱ्ऱल 3786

अङ्कु–वहाँ; अ–वे; वॆम्–दारुण; कटु कणै–वेगवान शर; अयिलिऩ् वाय् तॊऱुम्–अपने तीक्ष्ण मुखों में; वॆम् कणै पट–ज्यों-ज्यों श्रीराम के संहारक

शर लगते; विर्चयित्-त्यों-त्यों शीघ्र; वीळ्न्तत-गिरे; तुङ्कम्-ऊँचे; वाळ्अरक्कतनु उरत्तिल्-भयानक राक्षस की छाती में; पुङ्कमे तले अंत-पुंख ही सिर हों ऐसे; पुक्क-घुसे; तोऱ्ऱल-दिखायी नहीं दिये। ३७८६

वे गरम और वेगवान शर, ज्यों-ज्यों उनके तीक्ष्ण मुखों पर श्रीराम के भयानक शर लगे, त्यों-ज्यों वेग के साथ ऊपर से नीचे आये और पुंख ही सिर को बनाकर उन्नत रावण के वक्ष में घुसे और अदृश्य हो रहे। ३७८६

ऑक्कनिन्	ऍदिरम	रुडऱुङ्	गालैयिन्
मुक्कणान्	तडवरै	यॅडुत्त	मोय्म्बऱ्कु
नॅक्कन	विञ्जैहळ्	निलैयिऩ्	ऱीऱ्ऩ्दन
मिक्कन	विरामऱ्कु	वलियुम्	वीरमुम् 3787

ऑक्क नित्ऱु-समान रूप से स्थित होकर; ऍतिर्-विरोध में; अमर् उटऱ्ऱुम् कालैयिन्-युद्ध करते समय; मुक्कणान्-त्रिनेत्र शिव के; तट वरै-विशाल पर्वत को; ऍटुत्त-जिसने उठाया उस; मोय्म्पऱ्कु-उस भुजबली की; विञ्चैकळ्-(माया की) विद्याएँ; नॅक्कन-च्युत होकर; निलैयिल् तीर्न्तन-अपनी स्थिति से हट गयीं; इरामऱ्कु-श्रीराम के; वलियुम् वीरमुम्-बल और वीरता; मिक्कन-बढ़ी। ३७८७

श्रीराम के विरुद्ध समानता के साथ जब रावण लड़ रहा था, तब त्रिनेत्र शिव के कैलासहारी भुजबली रावण की सीखी हुई माया की विद्याएँ भूल गयीं और अपनी स्थिति से हट गयीं (बेकार हो गयीं)। पर श्रीराम का बल और साहस बढ़ चला। ३७८७

वेदियर्	वेदत्तु	मॅय्यन्	वॅय्यवर्क्
कादिय	ऩणुहिय	वऱ्ऱु	नोक्कितान्
शादियि	ऩिमिर्न्ददोर्	तलैयैत्	तळ्ळिऩान्
पादियिन्	मदिमुहप्	पहळि	यॊऩ्ऱिऩाल् 3788

वेतियर् वेतत्तु मॅय्यन्-वेदविदों के वेदसत्यतत्त्व श्रीराम ने; वॅय्यवर्क्कु-लोकत्रासकों के; आतियन्-आदि राक्षस के; अणुकिय अऱ्ऱम्-पास आने का समय; नोक्किनान्-देखकर; चातियिल्-वृन्द में; निमिर्न्ततु-उन्नत रहे; ओर् तलैयै-एक सिर को; पातियिन् मति-अर्धचंद्र; मुकम्-मुखी; पकळि ऑन्ऱिनाल्-एक अस्त्र से; तळ्ळिनान्-काट दिया। ३७८८

वेदविदों के वेदसत्य श्रीराम ने राक्षसाधिपति के पास आने का संदर्भ देखा तो अपने वृन्द में उन्नत रहे एक सिर को एक अर्धचंद्र बाण चलाकर काट गिराया। ३७८८

मेरुवित्	कॊडुमुडि	वीशु	कालॆऱि

आरियन् शरम्बड वरक्कन् वन्दले
नीरिडै विळुन्दवु नॅरुप्पो डन्रुपोय् 3789

वीचु काल्–बहनेवाले पवनदेव के साथ; ऑरि–टकराते; पोर् इडै–युद्ध में; मेरुविन् कोट्टुमुडि–मेरु का शिखर; ओटिन्तु पोय्–टूट गया और; पुणरि पुक्कॅन्त–समुद्र में घुसा जैसे; आरियन् चरम् पड–श्रीराम-शर के लगने से; अरक्कन् वल् तलै–राक्षस का कठोर सिर; नॅरुप्पोटु–आग के साथ; अन्रु–उस दिन; पोय्–जाकर; नीरिटै वीळ्न्ततु–समुद्र में गिरा। ३७८९

जब बहनेवाले पवनदेव और आदिशेष के बीच घोर युद्ध हुआ, तब मेरु का शिखर टूटकर समुद्र में जा गिरा। उसके समान आर्य श्रीराम के शर के आघात से राक्षस का कठोर सिर आग के साथ उस दिन जाकर समुद्र-जल में गिरा। ३७८९

कुदित्तनर् पारिडैक् कुन्रु कूट्टर्
मिदित्तनर् वडमुहन् दुहिलुम् वीशिनार्
तुदित्तनर् पाडिनर् राडित् तुळ्ळिनार्
मदित्तनर् रिरामनै वानु ळोरॅलाम् 3790

वान् उळोर् ऍलाम्–आकाशवासी सभी (देव); कुतित्तनर्–कूदे; पार् इटै–भूमि पर; कुन्रु–(त्रिकूट) पर्वत; कूट्टु अरु–संधियों को तोड़ते; मितित्तनर्–रौंदे; वटकमुम् तूचुम्–उत्तरीय और वस्त्र को; वीचितार्–फेंका; तुतित्तनर्–स्तुति की; पाटितर्–गाये; आटि–नाचे; तुळ्ळितार्–उछले; इरामनै–श्रीराम का; मतित्तनर्–आदर किया। ३७९०

यह देखकर आकाशवासी भूमि पर त्रिकूट पर्वत पर कूदकर उसके संधिबंधों को तोड़ते हुए रौंद दिया। अपने उत्तरीय को और वस्त्र को उठाकर उछाला। श्रीराम की स्तुति की, नाचे, उछले। श्रीराम का मान किया। ३७९०

इरन्ददो रुयिरुडन् करुमत् तोट्टितार्
पिरन्दुळ दामॅनप् पॅयर्त्तु मत्तलै
मरन्दिल वॅळुन्दवु मडित्त वायवु
शिरन्ददु तवमलार् चॅयलुण् डाहुमो 3791

इरन्ततु–मृत; ओर् उयिर–एक जीव; करुमत्तु ईट्टिताल्–कर्मभाग्य-संग्रह से; उटन्–तुरंत; पिरन्तुळतु आम्–जन्म ले चुका; ऍत–जैसे; पॅयर्त्तुम्–फिर; मरन्तिलतु–बिना भूले; मटित्त वामतु–मुड़े अधर के साथ; अ तलै–वह सिर; ऍळुन्ततु–उठा; चिरन्ततु–श्रेष्ठ; तवम् अलाल्–तपस्या के बिना; चॅयल्–ऐसा कार्य; उण्टाकुमो–साध्य होगा क्या। ३७९१

मृत जीव ने कर्मभाग्यसंग्रह से फिर जन्म लिया हो, ऐसा वह सिर

मुड़े हुए अधर के साथ फिर प्रगट हुआ। बड़ी उत्तम तपस्या के विना यह कार्य सफल कैसे हो ? । ३७९१

कॉय्दद्दु कॉय्दिल दॅन्नुङ् गॊळ्हैयिऩ्
अॅय्दवऩ् दक्कणत् तॅऴुन्द दोर्शिरम्
शॅय्दवॅञ् जिनत्तुडऩ् शिरक्कुञ् जॅल्वनै
वैदद्दु तॅऴित्तद्दु मळैयि ऩार्प्पिऩाल् 3792

कॉय्ततु–तोड़ा जाकर भी; कॉय्तिलतु–न तोड़ा गया हो; ऑन्नुम् कॉळ्कैयिऩ्–विचार पैदा करते हुए; अॅय्त अ क्कणत्तु–प्रेरित उसी क्षण में; अॅऴुन्ततु ओर् चिरम्–प्रगट हुआ एक सिर; चॅय्त वॅम् चिऩत्तुटऩ्–उठे बहुत क्रोध के साथ; चिरक्कुम् चॅल्वऩै–श्रेष्ठ धनी श्रीराम को; मळैयिल् आर्प्पिऩाल्–मेघ-गर्जन-से शोर के साथ; वैततु तॅऴित्ततु–गाली देकर डाँटा। ३७९२

यद्यपि सिर तोड़ा गया था तो भी तोड़ा ही नहीं गया हो, ऐसा भ्रम पैदा करते हुए उसी क्षण में, जब काटा गया था, वह सिर उग आया। वह बहुत प्रचंड कोप दिखाते हुए मेघगर्जन के-से स्वर में श्रीराम को डाँटा-डपटा। ३७९२

इडन्दद्दु किरिक्कुव डॅन्न वॅङ्गणुम्
पडर्न्दद्दु कुरैकडल् पर्हुम् पण्बद्दु
विडन्दरु विऴियद्दु मुड्हि वेलैयिल्
किडन्दद्दु मार्त्तद्दु मळैयिऩ् केळ्दु 3793

विटम् तरु–विषवर्षक; विऴियतु–आँखों का होकर; मुट्कि–शीघ्र; वेलैयिल् किटन्ततुम्–जो समुद्र में रहा वह भी; किरि कुवटु–गिरिशिखर; इटन्ततु ऑन्न–अलग तोड़ लिया गया हो, ऐसा रहकर; अॅङ्कणुम् पटर्न्ततु–सर्वत्र जाकर; मळैयिऩ् केळ्तु–मेघ-सम; कुरै कटल्–शब्दायमान समुद्र के जल को; परुकुम् पण्पतु–पीने का स्वभाव पाकर; आर्त्ततु–शोर मचा उठा। ३७९३

उधर कटे पर्वत-शिखर के समान जो समुद्र में गिरा था, वह सिर विषवमन करनेवाली आँखों के साथ सर्वत्र गया और मेघ के समान समुद्रजल को पीता हुआ शोर मचाने लगा। ३७९३

विऴुत्तिऩऩ् शिरमॅनुम् वॅहुळि मीक्कॊळ
वऴुत्तिऩ तुयिर्हळिऩ् मुदलिऩ् वॅत्तवोर्
अॅऴुत्तिऩऩ् तोळ्हळि नॅळी डॅळुहोल्
अऴुत्तिन लशनियै उयिर्क्कु मार्प्पिऩात् 3794

अचनि एऱु–अशनिराज को; अयिर्क्कुम् आर्प्पिऩाऩ्–डराते गर्जन वाले का; चिरम्–शिर; विऴुत्तिऩऩ् अॅऩुम्–गिरा दिया यह; वॅकुळि–क्रोध; मीकॊळ–बढ़ा तो; वऴुत्तिऩ्–प्रशंसित; उयिर्कळिऩ् मुतलिऩ्–स्वरों के आदि में; वैत्त–रखे

हुए; ओर्–एक; अॅळुत्तिनन्–(अकार) अक्षर रूप के; तोळ्कळिन्–कंधों पर; एळोट्ट एळु कोल्–चौदह शर; अळुत्तिलन्–गड़वाये। ३७९४

वज्र-भीकर गर्जनकारी रावण का क्रोध उत्तरोत्तर बढ़ता गया, क्योंकि उसके सिर को श्रीराम ने काट गिराया। उसने सर्वलोकशंसित, आदि अक्षर ओंकार वाच्य उनके कंधों पर चौदह शर गड़वा दिये। ३७९४

तलैयऱिऱ् ऱुरुवदोर् तवमु मुण्डॆन
निलैयुरु नेमियान् ऱऱिन्दु नीशनैक्
कलैयुरु तिङ्गळिन् वडिवु काट्टिय
शिलैयुरु कैयॆयुम् दलत्तिड् चॆर्त्तिनान् 3795

तलै अऱिऱ्–सिर कटे तो; तरुवतु–दिलानेवाला; ओर् तवमुम्–अपार तप; उण्टु–है; ॲन अऱिन्तु–यह जानकर; निलै उरुम्–शाश्वत; नेमियान्–चक्रधारी ने; नीचनै–नीच रावण को; कलै उरु–कलादार; तिङ्कळिन्–चंद्र का; वटिवु काट्टिय–रूप रखनेवाले; चिलै उरु–धनुयुक्त; कैयॆयुम्–हाथ को भी; तलत्तिल्–भूमि पर; चॆर्त्तिनान्–गिराया। ३७९५

"रावण के पास कटे सिर को पुनः पाने की तपश्शक्ति है।" यह जानकर शाश्वत चक्रधारी श्रीराम ने उस नीच के अर्धचंद्राकार बने और धनुर्धर हाथ को काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३७९५

कॊऱ्ऱवॆञ् जरम्बडक् कुऱैन्दु पोनकै
पऱ्ऱिय किडन्ददु शिलैयॆप् पाङ्गुऱ
मऱ्ऱोर्है पिडित्तदु पोल वव्विय
दऱ्ऱकै पिऱन्ददै यार ऱिन्दुळार् 3796

कॊऱ्ऱम्–विजयी; वॆम् चरम् पट–शर के लगने से; कुऱैन्तु पोत कै–कटा हाथ; पऱ्ऱिय किटन्तत‌ु चिलैयै–जिसको पकड़े रहा उस धनु को; पाङ्कु उऱ–मनोहर रीति से; मऱ्ऱु ओर् कै–दूसरे एक हाथ ने; पिटित्तत‌ु पोल–पकड़ा हो जैसे; वव्वियतु–पकड़ा (नये प्रकट) हाथ ने; अऱ्ऱ कै–कटा हाथ; पिऱन्ततै–फिर जनमा; अऱिन्तुळार् यार्–किसने जाना। ३७९६

श्रीराम के विजयशर के लगने से जो हाथ कटकर गिरा उस कर की पकड़ में रहे धनुष को नये पैदा हुए हाथ ने इतने कम समय में पकड़ लिया मानो किसी दूसरे हाथ ने पकड़ा हो! कटा हाथ कब फिर लगा? —यह किसने जाना। ३७९६

पॊन्कयिऱ् ऱूर्दियान् वलियॆप् पोक्कुवान्
मुन्कॆयिऱ् ऱुरुयिर् मुळ्ळिऱ् ऱुळ्ळुऱ
मिन्कॆयिऱ् कॊण्डॆन विल्लै विट्टिला
वन्कैयेत् तन्कैयित् वलियित् वाङ्गिनान् 3797

पोत् कयिऱु ऊर्तियान्–आकर्षक बागडोर पकड़, रथ चलानेवाले मातलि के; वलियै पोक्कुवान्–बल को तोड़ने के लिए; मुन् कैयिल्–हाथ के अगले भाग में; तुऱुम् मयिर्–घने बालों के; मुळ्ळिल् तुळ्ळुऱ–कांटों के समान फड़कते; मिन्–बिजली। कैयिल् कोण्टॅन्–हाथ में लिये रहते जैसे; विल्लै–धनु को; विट्टिला–जो नहीं चला रहा था; वल् कैयै–उस सबल हाथ को; तन् कैयिन्–अपने हाथ से; वलियिन् वाङ्किनान्–बलात् उठा फेंका। ३७९७

रावण ने सोचा कि मनोहारी बागडोर के सहारे जो रथ को चला रहा था उस मातलि को बलहीन कर देना चाहिए। उसने उस कठोर हाथ को उठाकर, जिसके अगले भाग में बाल कांटों के समान फड़क रहे थे और जो धनु को चला नहीं रहा था, मातलि पर ज़ोर से फेंका। ३७९७

विळङ्गॊळि वयिरवा ळरक्कन् वीशिय
तळङ्गिळर् तडक्कैतन् मार्बिऱ् ऱाक्कलुम्
उळङ्गिळर् पॆरुवलि युलैविल् मादलि
तुळङ्गिनन् वाय्वऴि युदिरन् दूवुवान् 3798

विळङ्कु ऒळि–ज्वलंत शोभा वाली; वयिरम् वाळ् अरक्कन्–वज्र-तलवार के राक्षस के; वीचिय–फेंके गये; तळन् किलर्–मोटे और प्रफुल्ल; तड कै–विशाल हाथ के; तन् मार्पिल्–अपने वक्ष पर; ताक्कलुम्–लगते ही; उळम् किळर्–मन में उठा; पॆरु वलि–बड़ा दर्द; उलैविल् मातलि–अक्षय मातलि; वाय् वऴि–मुख से; उतिरम् तूवुवान् तुळङ्किनन्–रक्त बहाता हुआ अस्थिर हुआ। ३७९८

ज्वलंत प्रकाशमय वज्र-असि-धारी रावण का फेंका वह मोटा हाथ उसकी छाती पर जा टकराया तो अचल मातलि अपने मुख से रक्त वमन करता हुआ चलित हो गया। ३७९८

मामरत् तार्कैयाल् वरुन्दु वानॆयोर्
तोमरत् तालुयिर् तॊलैप्पत् तूण्डिनन्
तामरत् ताऱ्पॊरात् तहैहॊळ् वाट्पडै
कामरत् ताऱ्चिवन् करत्तु वाङ्गिनान् 3799

अरत्ताल् पॊरा–रेती से जो पैनाया नहीं गया; तकै कॊळ्–वैसे प्रकार का। वाळ्पडै–तलवार के हथियार को; कामरत्ताल्–'श्रीकामर' राग से; चिवन् करत्तु–शिवजी के हाथ से; वाङ्किनान्–जिसने पाया था; मा मरत्तु आर्–बड़े तरु के समान; कैयाल् वरुन्तुवानै–हाथ (के लगने) से दुःखते को; ओर् तोमरत्ताल्–एक तोमर से (को); उयिर् तॊलैप्प–प्राण लेने; तूण्टिनन्–प्रेरित किया। (ताम्–पूरक ध्वनि)। ३७९९

जिस तलवार को रेत से पैनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, उस तलवार को रावण ने 'श्रीकामर' राग गाकर शिवजी से प्राप्त किया था।

उस रावण ने उस मातलि पर मारने के उद्देश्य से एक तोमर को चलाया, जो बड़े तरु के समान रावण के हाथ के प्रहार से छटपटा रहा था। ३७९९

माण्ड विन्ऱीड्ड मादलि वाळ्वॆन
मूण्ड वॆन्दळल् शिन्द मुडुक्कलुम्
आण्ड विल्लियो रॆम्मुह वॆङ्गणै
तूण्डि नान्तुह ळान्दु तोमरम् 3800

मातलि वाळ्वु–मातलि की आयु; इन्ऱीट्टु माण्टतु–आज समाप्त; ॲॅन–ऐसा; मूण्ट वॆम् तळल् चिन्त–प्रज्वलित उग्र अनल निकालते हुए; मुडुक्कलुम्–जब प्रेरित किया तब; आण्ट विल्लि–स्वामी कोदंडपाणी ने; ओर्–एक; ऐ मुकम् वॆम् कणै–भयंकर पंचमुख बाण को; तूण्टितात्–चलाया; तोमरम् तुकळ् आनतु–तोमर चूर हुआ। ३८००

'मातलि की आयु आज हो गयी समाप्त!' ऐसी स्थिति की संभावना पैदा करते हुए रावण ने कोपाग्नि निकालते हुए जब तोमर चलाया तब सर्वशेषी कोदंडपाणी श्रीराम ने एक अप्रतिम पंचमुखी शर छोड़ा। उससे तोमर चूर हो गया। ३८००

ओय्व हन्ऱ दॊरुतलै नूऱुऱप्, पोय हन्ऱु पुरळप् पॊरुकणै
आयि रन्दॊडुत् तानऱि विन्ऱनि, नाय हन्कैक् कडुमै नडत्तुवान् 3801

अऱिविन् तनि नायकन्–ज्ञानैकनायक ने; कै कडुमै–हाथ का जोर; नडत्तुवान्–लगाकर; ओय्वु अकन्ऱु–निरंतर; ओरु तलै नूऱु उऱ–एक सिर के सौ होने पर भी; अकन्ऱु पोय्–वे हट दूर जायें; पुरळ–और लोटें, ऐसा; पॊरुकणै–घातक बाण; आयिरम् तॊटुत्तान्–हजार चलाये। ३८०१

ज्ञानैकनाथ ने बड़ा हस्तलाघव का प्रदर्शन करके सहस्र युद्धकारी शर चलाये, जिन्होंने एक-एक के सौ के रूप में उगनेवाले सिरों को काटकर भूमि पर गिराया, और वे सिर लोटने लगे। ३८०१

नीर्त्त रङ्गळ् तोऱु निलन्दॊऱुम्
शीर्त्त माल्वरै तोऱुन् दिशैतॊऱुम्
पार्त्त पार्त्त विडन्दॊऱुम् पः(ह)ऱलै
आर्त्तु वीऴ्न्द वशनिहळ् वीऴ्न्दॆन 3802

पल् तलै–अनेक सिर; नीर् तरङ्गङ्कळ् तोऱुम्–सागर की तरंग पर; निलम् तोऱुम्–भूमियों पर; चीर्त्त–उत्कृष्ट; माल् वरै तोऱुम्–बड़े-बड़े पर्वतों पर; तिचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; पार्त्त पार्त्त इटन्तोऱुम्–देखी जगह-जगह में; अचनिकळ् वीऴ्न्तॆन–वज्र गिरे हों जैसे; आर्त्तु वीऴ्न्त–शोर करते हुए गिरे। ३८०२

ऐसे कटे सिर सागरतरंगों, भूमि के भागों, बड़े-बड़े पर्वतों, दिशाओं और प्रगट सभी स्थानों पर वज्र के समान बड़े शब्द के साथ गिरे। ३८०२

तहर्न्दु मालवरै शायवुड्त् ताक्किऩ
मिहुन्द वाऩ्मिशै मीऩ मलैन्दऩ
पुहुन्द मामह रक्कुलम् बोक्कऱ
मुहन्द वायिल् पुऩलिऩै मुऱ्ऱुऱ 3803

तकर्न्तु–फटकर; माल् वरै–बड़े पर्वतों को; चायम्‌ उऱ ताक्किऩ–गिराते टकराये; मिकुन्त वाऩ् मिचै–विशाल आकाश पर; मीऩम् मलैन्तऩ–नक्षत्रों से टकराये; पुकुन्त–सागर में घुसकर; मा–बड़े; मकरम् कुलम्–मकरकुलों को; पोक्कु अऱ–गन्तव्यस्थान रिक्त कर; पुऩलिऩै–जल को; मुऱ्ऱुऱ–पूर्ण रूप से; वायिल् मुकन्त–मुख में पी लिया। ३८०३

वे सिर फटकर पर्वतों से टकराये और वे पर्वत गिर गये। आकाश में जा नक्षत्रों से टकराये। और भी उन्होंने समुद्र में घुसकर सारे जल को निगल लिया और मकरकुल कहीं जा नहीं पाये। ३८०३

पॊऴुदु नीट्टिय पुण्णियम् पोऩपिऩ्
पऴुदु शॆल्लुमऩ् ऱॆमऱ्ऱुप् पण्बॆलाम्
तॊऴुदु शूऴ्वऩ शूऴ्ऱिऩुऱ् तोऩ्ऱवे
कऴुदु शूऩ्ऱ इरावणऩ् कण्णॆलाम् 3804

पॊऴुतु नीट्टिय–लंबे काल तक (भुक्त); पुण्णियम् पोऩ पिऩ्–पुण्य क्षय होने के बाद; मऱ्ऱु पण्पु ऍलाम्–अन्य यश आदि सभी गुण; पऴुतु चॆल्लुम् अऩ्ऱे–व्यर्थ हो जाते हैं न; तॊऴुतु चूऴ्वऩ कऴुतु–नमन करते परिक्रमा करनेवाले पिशाचों ने; मुऩ् निऩ्ऱु–सामने रहकर; तोऩ्ऱ–खुले रूप से; इरावणऩ् कण् ऍलाम्–रावण की सभी आँखों को; चूऩ्ऱ–नोच लिया। ३८०४

दीर्घकाल तक फल जो देता रहा वह पुण्य भुक्त हो चुकने के बाद जब क्षीण हो जाता है, तब यश आदि सारी अच्छी बातें व्यय हो जाती हैं न ? वैसे ही वे पिशाच, जो रावण की परिक्रमा, स्तुति आदि करते थे, अब आमने-सामने खड़े रहकर प्रगट रूप से रावण की आँखों को नोचते रहे। ३८०४

वाळुम् वेलु मुलक्कैयुम् वच्चिरक्
कोळुन् दण्डु मऴुवॆनुङ् गूऱ्ऱमुम्
तोळिऩ् पत्तिहळ् तोऱुञ् जुमन्दऩ
मीळि मीयम्ब तुरुमॆऩ वीशिऩाऩ् 3805

मीळि मीय्म्पऩ्–महाबली रावण ने; तोळिऩ् पत्तिकळ् तोऱुम्–कंधों की पंक्तियों पर; चुमन्तऩ–जिन्हें धारण करता रहा; वाळुम् वेलुम् उलक्कैयुम्–तलवारें, भाले

और मूसल; वच्चिरम् कोळुम्-सशक्त वज्र; तण्डु-गदाएँ; मळु ॲतुम् कूट्रमुम्-परशु नामक यम; उरुम् ॲत वीचितान्-(इनको) अशनि के समान फेंका। ३८०५

अतिबली रावण ने, अपने कंधों की पंक्तियाँ पर जो हथियार थे, तलवारें, भाले, मूसल, सशक्त वज्र, गदाएँ, परशु नामक मौत आदि, उनको वज्र के समान उठाकर फेंका। ३८०५

अतैय शिन्दिड वाण्डहै वीरनुम्, वितैय मॅन्निनि यादुहोल् वॅल्लुमो
नित्तॅवॅ नॅन्न निशशरन् मेनियैप्, पुनैवन् वाळियि नालॅनप् पोङ्गिनान् 3806

अतैय-वैसे हथियारों को; चिन्तिट-जब उसने फेंका, तब; आण् तकै वीरनुम्-पुरुषश्रेष्ठ वीर श्रीराम भी; इति वितैयम् ॲन्-अब करना क्या है; वॅल्लुमा यातु कोल्-जीतने का उपाय क्या; निलॅवॅन्-खोजूँगा; ॲन्न-कहकर; निचाचरन्-राक्षस के; मेनियै-शरीर को; वाळियिताल् पुनैवन्-शरों से अलंकृत करूँगा; ॲन पोङ्कितान्-ऐसा विचार कर भड़क उठे। ३८०६

रावण के वैसे चलाने पर पुरुषश्रेष्ठ वीर श्रीराम ने मन में विचारा कि अब क्या करना चाहिए? विजय का उपाय क्या होगा? फिर निश्चय किया कि निशाचर के शरीर को अस्त्रों से सजा दूंगा। वे उबल पड़े। ३८०६

मञ्ज रङ्गिय मार्बिनुन् दोळिनुम्, नञ्ज रङ्गिय कण्णिनु नाविनुम्
वञ्जन् मेनियै वार्कणै यट्टिय, पञ्ज रम्मॅन लाम्वहै पण्णिनान् 3807

मञ्चु अरङ्किय-मेघपरास्तकारी (काले) रंग के; मार्पितुम् तोळितुम्-वक्ष पर और कंधों पर; नञ्चु अरङ्किय-विषपरास्तकारी; कण्णितुम् नावितुम्-आँखों और जीभों पर; वञ्चन् मेतियै-वंचक के शरीर को; वार्कणै-लंबे शरों के; अट्टिए-रहने योग्य; पञ्चरम् ॲतलाम् वकै पण्णितान्-पंजर कहने की स्थिति दिखायी। ३८०७

मेघपरास्तकारी काले रंग के उसकी छाती और कंधों पर, विष-परास्तकारी नेत्रों और जीभों में अस्त्र चलाकर उन्होंने वंचक रावण के शरीर को लंबे शरों का पिंजरा-सा बना डाला। ३८०७

वाय्नि रैन्दन कण्गळ् मरैन्नवन, मोनि रुङ्गळि तॅङ्गु मिडैन्नवन
तोय्वु रुङ्गणै शॅम्बुनल् तोय्न्दिल, पोय्नि रैन्दन वण्डप् पुरमॅलाम् 3808

वाय् निरैन्तत-मुखों में भरे; कण्कळ् मरैन्तत-आँखों को छिपानेवाले; सी-श्रेष्ठ; निरङ्कळित् ॲङ्कुम्-वक्ष पर सर्वत्र; मिडैन्तत-जो सटे रहे; तोय्वु उरुम् कणै-गड़े हुए शर; चॅम् पुतल् तोय्न्तिल-रुधिर में न सनकर (उसके शरीर से निकलकर); अण्टम् पुरम् ॲलाम्-अण्ड और बाहर सर्वत्र; पोय् निरैन्तत-जा भर गये। ३८०८

मुखों में भरकर, आँखों को ढँककर, उन्नत वक्ष में सर्वत्र जो घने रूप से शस्त्र गिरे वे विना रक्त के सने ही निफरे और अंड तथा बाहर सब स्थानों में जा भर गये। ३८०८

मयिरित् कारोरुम् वार्हणै मारिपुक्
कुयिरुन् दोर वुरुवित्त वोडलुम्
शॅयिरुञ् जीऱ्ऱमु निऱ्कत् तिऱल्तिरिन्
दयर्वु तोऩ्ऱत् तुळङ्गि यळुङ्गिनान् 3809

मयिरित् काल् तोरुम्–हर रोम-कूप में; वार् कणै मारि–लंबे शरों की वर्षा; पुक्कु–घुसकर; उयिरुम् तोर–श्वास को रोकते हुए; ऊटुरुवित्त–निफर गये; ओटलुम्–आगे दौड़े; चॅयिरुम्–वैर और; चीऱ्ऱमुम्–क्रोध; निऱ्क–रहे; तिऱल् तिरिन्तु–बल नष्ट हुआ; अयर्वु तोऩ्ऱ–थकावट आयी; तुळङ्कि अळुङ्कितान्–थर-थर काँपकर लटा। ३८०९

सारे रोमकूपों में भी शर-वर्षा जा घुसी तो रावण दम भी भर नहीं सका। वे भेदकर चले। रावण का वैर और क्रोध रह गये पर थकावट के कारण काँपते हुए रावण बहुत जर्जर हो गया। ३८०९

वारि मीर्नित् रॅदिर्मह रम्बडच्, चोरि शोर वुणर्वु तुळङ्गिनात्
तेरित् मेलिरुन् दान्पण्डु तेवर्दम्, ऊरित् मेलुम् बवनि युलावुवात् 3810

पण्डु–पहले; तेवर् तम् ऊरिन् मेलुम्–देवलोक में भी; पवनि उलावुवात्–विजय यात्रा जो करता था वह; वारि नीर् नितृऱ–समुद्र-जल से; ॲतिर्–सामने जो आये उन; मकरम् पट–मकरों को मारते हुए; चोरि चोर–रक्त के बहते; उणर्व तुळङ्कितात्–प्रज्ञा खोयी; तेरित् मेल् इरुन्तान्–रथ पर स्थिर रहा। ३८१०

देवलोकविजययात्री रावण के शरीर से रक्त ऐसा उग्र रूप से बहा कि समुद्रजल के मकर भी मर गये जो उससे टकरा गये। वह संज्ञाहीन हो रथ पर लेट गया। ३८१०

आर्त्तुक् कॊण्डॆळुन् बुम्बर्ह ळाडिनार्
वेर्त्तुत् तीविनै वॆम्बि विळुन्ददु
पोर्त्तुप् पोयन्दत्त नॆत्ऱु पॊलङ्गॊळ्तेर्
पेर्त्तुच् चारदि पोयिनन् पिन्ऱुवान् 3811

आर्त्तु कॊण्टु–कोलाहल मचाकर; ॲळुन्तु–उठकर; उम्पर्कळ् आटितार्–देव नाचे; तीवितै वॅम्पि–पाप संतप्त होकर; वेर्त्तु विळुन्ततु–स्वेद से भरकर गिरा; चारति–(रावण का) सारथी; पोर्तुप्पु ओयन्ततन्–युद्ध करने की शक्ति खो दी; ॲन्ऱु–कहकर; पिन्ऱुवान्–पीछे हटकर; पॊलम् कॊळ् तेर्–मनोरम रथ को; पेर्त्तु–पोयिनान्–हटा ले गया। ३८११

देव यह देख कोलाहल मचाकर नाच उठे। पाप भी संतप्त हो गिर गया। रावण का सारथी रावण को युद्ध करने की क्षमता से शून्य पाकर स्वर्णमय रथ को पीछे की ओर हटा ले गया। ३८११

कैतु ऱन्द पडैयिनन् कण्णहन्, मॅय्तु ऱन्द वुणर्विनन् वीऴ्दलुम्
ॲय्दि ऱुन्दविर्न् दानिमै योर्हळै, उय्दि ऱन्दुणिन् दानऱ मुन्नुवान् 3812

इमैयोर्कळै–देवों को; उय्तिऱम् तुणिन्तान्–उत्थान के मार्ग में चलने में सहायता देने के विचार वाले ने; कै तुऱन्त पडैयिनन्–अस्त्र-रिक्त हाथोंवाला; कण् अकन्–विशाल; मॅय् तुऱन्त उणर्विनन्–प्रज्ञाहीन शरीरवाला बनकर; वीऴ्तलुम्–नीचे ज्यों ही गिरा; अऱम् उन्नुवान्–धर्म की बात सोचकर; ऍय्तिऱम् तविर्न्तान्–अस्त्र चलाना रोक लिया। ३८१२

देवों को उत्थान में सहायता देने का निश्चय जिन्होंने किया था उन श्रीराम ने रावण को हस्तच्युत हथियारवाला और संज्ञाहीन बड़े शरीर वाला बना गिरा देखते ही धर्ममार्ग का विचार कर अस्त्र चलाने का काम रोक लिया। ३८१२

तेरि नार्पिन्नै यादुञ् जॅयर्करि, दूरु तानुऱ्ऱ पोदे युयर्तवन्
नूऱु वायॅन मादलि नूक्किनान्, एऱु शेवह नुम्मि वियम्बिनान् 3813

मातलि–मातलि ने (श्रीराम से); उयर् तवन्–उत्कृष्ट तपस्वी रावण; तेरिनान्–होश में आया; पिन्नै यातुम्–फिर कुछ भी; चॅयर्कु अरितु–करना दुर्वार होगा; ऊऱु उऱ्ऱपोते–संकटग्रस्त है, तभी; नूऱुवाय्–मार दें; ऍन–कहकर; नूक्किनान्–उकसाया; एऱु चेवकनुम्–सिंह-सम वीर ने; इतु इयम्पिनान्–यह बात कही। ३८१३

मातलि ने श्रीराम को समझाया कि रावण उत्कृष्ट तपस्वी है। होश में आयगा तो कुछ (हानि) करना असंभव हो जायगा। जब वह कष्ट में है तभी उसे मिटा दें। उसने उन्हें उकसाया। पर वर्धन-शील बलवान श्रीराम ने यों उत्तर दिया। ३८१३

पडैतु ऱन्दु मयङ्गिय पण्बिना, निडैतॆ ऱुम्बडि पार्त्तिहल् नीदियिन्
नडैतु ऱन्दुयिर् कोडलु नन्मैयो, कडैतु ऱन्दकु पोरॆन् करुत्तॆनुऱान् 3814

पडै तुऱन्तु–निरस्त्र; मयङ्किय पण्पिनान् इडै–संज्ञा-हीन स्थिति में रहनेवाले के प्रति; तॆऱुम्पडि पार्त्तु–मिटाने का मौक़ा देख; इकल् नीतियिन्–युद्धनीति का; नडै तुऱन्तु–मार्ग छोड़कर; उयिर् कोडलुम्–प्राण हर लेना; नन्मैयो–भला होगा क्या; ऍन् करुत्तु–मेरा विचार; पोर्–युद्ध को; कडै तुऱन्ततु–पूर्ण रूप से छोड़ गया; ऍन्ऱान्–कहा। ३८१४

निरस्त्र और बेहोश रावण को मिटाने की स्थिति में पाकर उसका

युद्धधर्मविरुद्ध रीति से प्राणनाश करना श्लाघ्य होगा क्या ? अब मेरा अभिप्राय बिलकुल युद्ध से दूर चला गया है। ३८१४

कूवि रञ्जॆऱ्ऱि पॊऱ्कॊडित् तेरॊडुम्, पोव रञ्जित रन्नदोर् पोऴ्दिनिन्
एव रञ्जलि यादव रॆण्णुडॆत्, तेव रञ्ज विरावणन् तॆऱ्ऱिनान् 3815

कूविरम् चॆऱ्ऱि–कूबर से युक्त; पॊन् कॊडि तेरॊटुम्–स्वर्ण-ध्वजावाले रथों पर; पोवर्–भागनेवाले राक्षस; अञ्चितर्–डर गये; अन्नतु ओर् पोऴ्तितिन्–उस समय; एवर् अञ्चलियातवर्–कौन थे, जिन्होंने श्रीराम का नमन नहीं किया हो; ऍण् उटॆ–आदर करनेवाले; तेवर् अञ्च–देवों को भय में डालते हुए; इरावणन् तॆऱ्ऱिनान्–रावण होश में आ गया। ३८१५

उनका व्यवहार देखकर जो राक्षस अपने कूबर-सहित, स्वर्णध्वजा से अलंकृत अपने रथों में भय से भाग रहे थे उनमें कौन थे जिन्होंने उन्हें नमस्कार नहीं किया हो ? तब रावण देवों को भय में डालते हुए जाग उठा। ३८१५

उऱक्क नीङ्गि युणर्च्चियुऱ् ऱानॆन
मऱक्कण् वञ्ज निरामनॆ वान्ऱिशॆच्
चिऱक्कुन् देरॊडुङ् गण्डिलन् शीऱ्ऱत्तीप्
पिऱक्क नोक्किनन् पिन्नुऱ नोक्किनान् 3816

मऱम् कण् वञ्चन्–क्रूराक्ष, वंचक रावण ने; उऱक्कम् नीङ्कि–मूर्च्छा से जागकर; उणर्च्चि उऱ्ऱान् ॲन–होश में आया तो; वान् तिचॆ–उन्नत दिशाओं में; चिऱक्कुम् तेरॊटुम्–श्रेष्ठ रथ के साथ; इरामनॆ कण्टिलन्–श्रीराम को देख नहीं पाया; पिन् उऱ नोक्किनान्–पीछे की ओर देखकर; चीऱ्ऱम् ती पिऱक्क–कोपाग्नि जलाते हुए; नोक्किनान्–दृष्टि डाली (अपने सारथी पर)। ३८१६

क्रूर आँखोंवाला रावण मूर्च्छा से जाग संज्ञा प्राप्त ही कर रहा था कि उसने श्रेष्ठ रथ के साथ श्रीराम को देख न पाकर पीछे की तरफ़ देखा और सारथी को कोपाग्नि पैदा करते हुए तरेरा। ३८१६

तेर्ति रित्तनॆ तेवरुङ् गाणवे, वीर विऱ्कॆ यिरामऱ्कु वॆण्णहै
पेर वुय्त्तनॆ येपिऴैत् तायॆनाच्, चार दिप्पॆय रोनॆच् चलिप्पुऱा 3817

तेवरुम् काण–देवों के देखते; तेर् तिरित्तनॆ–रथ लौटाया; वीरम् विल्कै इरामऱ्कु–वीर धनुर्हस्त (कोवंडपाणी) राम को; वॆंळ् नकै–श्वेत मुस्कुराहट के; पेर उय्त्तनॆ–आने का मौक़ा दिलाया; पिऴैत्ताय्–अपराध किया; ॲना–कहकर; चारति पॆय्रोनॆ–सारथी पदवीधारी से; चलिप्पु उऱा–झल्लाकर। ३८१७

'देवों के देखते मेरे रथ को फिरा दिया। तुमने वीर कोदंडपाणी श्रीराम को श्वेत मुस्कुराहट (हँसी) दिखाने का मौक़ा दिला दिया। तुमने घोर

अपराध किया है !' कहते हुए रावण सारथीपदविभूषित उस पर झल्लाहट दिखायी। ३८१७

तञ्ज नानुनंत् तेऱ्ऱत् तरिक्किला, वञ्ज नीपॅरुञ् जॅल्वत्तु वेहिनै
अञ्जि नेनैच् चॅय्दनै यादलाल्, उञ्जु पोदिहों लामॅन् ऱुरुत्तॅऴ़ा 3818

तरिक्किला वञ्च–अक्षम्य वंचक; तञ्चम्–शरण देकर; नान् उनै तेऱ्ऱ–मैं तुम्हें पालता रहा और; नी पॅरुम् चॅल्वत्तु–तुम बड़े वैभव के साथ; वंकितै–जीते रहे; अञ्चितेन् अंत चॅय्तनै–कायर बना दिया मुझे; आतलाल्–इसलिए। उञ्चु पोति कॉल्–बचोगे क्या; ॲनुऱु–कहकर; उरुत्तु ॲऴ़ा–कोप करके उठा। ३८१८

'अक्षम्य वंचक हो। मैंने तुम्हें शरण दिलायी और तुम बड़े वैभव भोग कर रहे थे। मुझे कायर का नाम दिला दिया। अब तुम बचोगे क्या ?' यह कहकर वह क्रोध के साथ उठा। ३८१८

वाळ्क डैक्कणित् तोच्चलुम् वन्दवन्, ताळ्क डैक्कणि यात्तलै ताळ्वुऱा
मूळ्क डैक्कडुन् दीयिन् मुनिवॉऴ़ि, कोळ्क डैक्कणित् तॅन्ऱवन् कूऱुवान् 3819

वाळ् कटै कणित्तु–तलवार को तिरछी नजर से देख; ओच्चलुम्–उसे ऊपर उठाया तो; अवन्–उसने; वन्तु–पास आकर; ताळ्कटै कणिया–चरणों को देखकर; तलै ताळ्वु उऱा–सिर झुकाकर; कोळ् कटै कणित्तु–मेरा अभिप्राय जानकर; कटै–युगांत की; कडु तीयिन्–प्रचंड आग के समान; मूळ्–उठते; मुनिवु–क्रोध को; ऑऴ़ि–दूर करें; ॲन्ऱवन्–कहा और; कूऱुवान्–आगे बोला। ३८१९

रावण ने ज्योंही तलवार पर कटाक्षपात करके ऊपर उठाया, त्योंही सारथी ने आकर चरणों पर दृष्टि डाले सिर झुकाकर निवेदन किया कि मेरा अभिप्राय जानने की कृपा करें। और युगांत की अग्नि के समान भभक उठनेवाले अपने कोप को शांत कर लीजिए। ३८१९

आण्डॉ ऴिऱ्ऱुणि वोय्न्दनै याण्डिऱै
ईण्ड निऱ्ऱिडि नैयनै निन्नुयिर्
माण्ड दक्कण मॅन्ऱिडर् माऱ्ऱुवान्
मीण्ड दित्तॊऴि लॅम्विनै मॅय्म्मैयाल् 3820

ऐयनै–प्रभु; आण् तॊऴिल्–वीरकृत्य के; तुणिवु ओय्न्तनै–धैर्य खो गये थे; आण्टु–वहाँ; इऱै–थोड़ी देर; ईण्ट निऱ्ऱिटितु–पास खड़े रहें तो; निन् उयिर्–आपके प्राण; अक्कणम् माण्टतु–तभी अंत हो जायेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; इटर् माऱ्ऱुवान्–संकट दूर करने के लिए; मीण्टतु इ तॊऴिल्–लौटाने का यह काम; ॲम् विनै–हमारा कर्तव्य; मॅय्म्मै–सच। ३८२०

प्रभु ! आप वीरता के कार्य से विरत हो गये थे। वहाँ एक क्षण भी रहते तो आपके प्राण चले जाते। अतः आपको कष्टमुक्ति दिलाने के विचार से आपको फिरा ले आना हमारा कर्तव्य हो गया। ३८२०

ओय्वु मूड्रमु नोक्कि युयिर्प्पोरैच्
चाय्वु नीक्कुदल् शारदि तन्मैत्ताल्
माय्वु निच्चयम् वन्दुळि वाळिनाड्
काय्वु तक्कदन् ड्राड्कडै काण्डियाल् 3821

चारति तन्मैत्तु–सारथी का स्वाभाविक कार्य; ओय्वुम्–थकावट और; ऊड्रमुम्–बल को; नोक्कि–देखकर; माय्वु–मृत्यु; निच्चयम् वन्दुळि–निश्चित आयी तो; उयिर् पोरै–प्राणभार का; चाय्वु नीक्कुतल्–हलका होना (मरना) दूर करना; वाळिनाल् काय्वु–तलवार से मारना; तक्कतु अन्ड्रु–योग्य काम नहीं; कडै काण्टियाल्–अंत में जानेंगे । ३८२१

सारथी का धर्म है स्वामी की थकावट, उनका बल आदि पर निगाह रखना; और मौत की संभावना आयी तो उनके शरीर को दुःख पहुँचाए विना अलग ले जाना। इसलिए यह काम इस योग्य नहीं कि आप तलवार से मेरा काम तमाम कर दें। आप अंत में सत्य जान लेंगे। ३८२१

ऍन्ड्रि ड्रैञ्जलु मॆण्णि यिरङ्गिनान्, वॆन्ड्रि यन्दडन् देरिनै मीट्कॆनच्
चॆन्ड्रॆ दिरन्वदु तेरुमत् तेर्मिशै, निन्ड्र वञ्ज निरामनै नेर्वुड्रा 3822

ऍन्ड्रु–ऐसा कहकर; इरैञ्चलुम्–याचना करते ही; ऍण्णि–सोचकर; इरङ्कितान्–दया करके; वॆन्ड्रि–विजयदायी; अम् तट–सुन्दर, विशाल; तेरिनै मीट्क–रथ को फिरा चलाओ; ऍन–ऐसा कहा तो; तेरुम्–रथ भी; चॆन्ड्रु ऍतिर्नृततु–जाकर (श्रीराम के) सामने हुआ; अ तेर् मिचै निन्ड्र–उस रथ पर स्थित; वञ्चन्–वंचक रावण ने; इरामनै नेर्वु उड्रा–श्रीराम का सामना करके। ३८२२

सारथी के इतना कहकर विनय दरसाने पर रावण ने रहम खाकर आज्ञा सुनायी कि रथ फिराकर चलाओ। रावण का रथ श्रीराम के सामने आया। उस रथ पर स्थित वंचक रावण ने श्रीराम के प्रति—। ३८२२

कूड्रिन् वॆङ्गणै कोडियिन् कोडिहळ्,
तूड्रि नान्वलि मुम्मडि तोड्रिनान्
वेड्रोर् वाळरक् कन्नॆन वॆम्मैयाल्
आड्रि नानॊरुक् कण्डव रञ्जिनार् 3823

कूड्रिनु–यम से भी; वॆम् कणै–भयानक शर; कोटियिन् कोटिकळ्–कोटि-कोटि; तूड्रिनान्–बरसाये; वेड्रु ओर् वाळ् अरक्कन्–अन्य एक क्रूर राक्षस है क्या; ऍन–ऐसा; मुम्मटि वलि तोड्रिनान्–तिगुने बल के साथ दिखा; वॆम्मैयाल्–उग्र रूप से; ऒरु आड्रिनान्–युद्ध किया; कण्टवर् अञ्चिनार्–दर्शक सहम गये। ३८२३

मौत से भी दारुण कोटि-कोटि बाण चलाये। उसका बल तिगुना

हुआ था कि संशय होने लगा कि यह कोई दूसरा राक्षस है ! उसने बहुत उग्र रूप से युद्ध किया। दर्शक लोग सहम गये। ३८२३

ऍल्लुण् डाहि नॅरुप्पुण् डॅत्तुमिदोर्, शॉल्लुण् डायदु पोलवन् तोळिडै
विल्लुण् डाहित् वॅलऱ्करि दामॅन्नाच्, चॅल्लुण् डालन्नदोर्हणै शिन्दिनान् 3824

ॲल् उण्टाकिल्–धुआं हो तो; नॅरुप्पु उण्डु–आग होगी; ॲन्नुम्–ऐसा; इतु ओर् चॉल्–यह एक मसल; उण्टायतु पोल्–जैसे है वैसा; अवन्–उसके; तोळ् इटै–कंधों पर; विल् उण्टु आकिल्–धनु हो तो; वॅलऱ्करितु आम्–जीतना असंभव है; ॲन्ना–सोचकर; चॅल् उण्टाल् अन्नतु–वज्रगर्भ-सा; ओर् कणै चिन्तितान्–एक बाण चलाया। ३८२४

पुराना मसल हो गया कि धुआँ होगा तो वहाँ अग्नि का भी अस्तित्व होगा। वैसे ही रावण के कंधे पर जब तक धनु होगा तब तक उसको जीतना असंभव होगा ! यह सोचकर श्रीराम ने वज्रगर्भ-सा एक अस्त्र प्रेरित किया। ३८२४

नार णन्पडै नायह नुय्प्पुराप्, पार णङ्गिनैत् ताङ्गुरुम् बल्वहै
वार णङ्गळै वॅन्ऱवन् वार्शिलै, आर णङ्गै यिरुतुणि याक्किनान् 3825

नारणन् नायकन्–श्रीमन्नारायण नायक; पटै उय्प्पु उरा–हथियार चलाकर; पार् अणङ्किनै–भूदेवी के; ताङ्कुरुम्–धारण करनेवाले; पल्वकै–विविध; वारणङ्कळै वॅन्ऱवन्–हाथियों के विजेता के; वार् चिलै–लम्बे धनु को; आर् अणङ्कै–भयकारी पदार्थ को; इरु तुणि आक्कितान्–दो भागों में खण्डित किया। ३८२५

श्रीराम ने अस्त्र चलाकर भूभारवाही गजों के विजेता रावण के लंबे धनु रूपी डरावनी चीज के दो टुकड़े कर दिये। ३८२५

अयन्प डैत्तविल् लायिरम् बेरिनान्
वियन्प डैक्कलत् तालऱ्ऱु वीऴ्दलुम्
उयर्न्दु यर्न्दु कुदित्तन रुम्बराल्
पयन्प डैत्तनम् ब:(ह्) ऱवत् तालॅन्ऱार् 3826

अयन् पटैत्त विल्–ब्रह्मारचित धनु; आयिरम् पेरितान्–सहस्रनामी के; वियन् पटैक्कलत्ताल्–विशिष्ट हथियार से; अऱ्ऱु वीऴ्तलुम्–कट गिरा तो; उम्पर्–देव; उयर्न्तु उयर्न्तु कुतित्तनर्–उछल-उछल कूदे; पल् तवत्ताल्–विविध तपस्या से; पयन्–फल; पटैत्तनम्–प्राप्त किया; ॲन्ऱार्–कहा देवों ने। ३८२६

ब्रह्मा-रचित धनुष सहस्रनामी के बड़े अस्त्र से कटकर गिरा तो देव ऊँचे-ऊँचे उछले। कहने लगे कि 'हमारे विविध तप का फल मिला'। ३८२६

माऱ्ऱि माऱि वरिशिलै वाङ्गिनान्, नूऱु नूऱितै डैयिरु नूऱवै
वेऱु वेऱु तिशैयुऱ वॅङ्गणै, नूऱि नूऱि यिराम नुरुक्किनान् 3827

सारि मारि–बारी-बारी से; वरिचिलै वाङ्कितान्–सबन्ध धनु लिये रहा; इरामन्–श्रीराम ने; नूऱु नूऱितोटु–सौ-सौ के; ऐयिऱु नूऱु अवै–दस (करोड़) को; वेऱु वेऱु तिचै उऱ–अलग-अलग दिशा में भेजते हुए; वॅम् कणै–दारुण अस्त्रों से; नूऱि नूऱि–काट-काट करके; नुऱुक्कितान्–चूर करा दिया। ३८२७

रावण बारी-बारी से नया धनुष लेता रहा। श्रीराम ने उन करोड़ धनुओं को भीषण अस्त्रों से चूर किया और दिशा-दिशा में उड़ा दिया। ३८२७

इरुप्पु लक्कैवेल् तण्डुको लीट्टिवाळ्, नॅरुप्पु लक्क वरुनॅडुङ् गप्पणम्
तिरुप्पु लक्कवुय्त् तान्तिशै यानैयित्, मरुप्पु लक्कु वळङ्गिय मार्बितान् 3828

तिचै यानैयिन्–दिग्गजों के; मरुप्पु उलक्क–दाँतों को तोड़ते हुए; वळङ्किय–जो ताना था; मार्पितान्–वैसे वक्ष वाला रावण; तिरु–श्रीराम की श्री; पुलक्क–रूठ चला जाय ऐसा; इरुम्पु उलक्कै–लोहे का मूसल; वेल्–शक्ति; तण्टु–दण्ड; कोल्–साँग; ईट्टि–भाला; वाळ्–तलवार; नॅरुप्पु–आग आदि; उलक्क–जलाने; वरु–आनेवाली; नॅटु–लम्बी; कप्पणम्–काँटेदार गदा; उय्त्तान्–आदि फेंका। ३८२८

दिग्गज-दन्त-भंजक-वक्ष रावण ने (वक्षःस्थलनिवासिनी) श्री को श्रीराम के वक्ष से गुस्साकर भागने को लाचार करते हुए लोहे का मूसल, दंड, साँग, भाला आदि की गरमी कम करते हुए जानेवाले लंबे 'कप्पण' (काँटेदार गदा ?) नामक अस्त्र को चलाया। ३८२८

अवैय नैत्तु मऱुत्तहन् वेलैयिऱ्, कुवैय नैत्तु मॅनक्कुवित् तान्कुऱित्
तिवैय नैत्तु मिवनैवॅल् लावॅना, नवैय नैत्तुन् दुऱन्दव नाडिनान् 3829

अवै अनैत्तुम्–उन सभी को; अऱुत्तु–काटकर; अनैत्तुम्–उन सभी को; अकल् वेलैयिल्–बड़े समुद्र में; कुवै अॅन कुवित्तान्–ढेर के समान ढेर लगा दिया; नवै अनैत्तुम्–सभी दोषों से; तुऱन्तवन्–विमुक्त श्रीराम; इवै अनैत्तुम्–ये सब; इवनै वॅल्ला–इसे जीत नहीं सकेंगे; अॅना–ऐसा; कुऱित्तु–मन में निर्णय करके; नाटिनान्–(उपाय) खोजने लगा। ३८२९

श्रीराम ने उन सबको रोककर काट दिया और सागर में उनके ढेर बना दिये। अनिंद्य अर्कवंशज ने यह सोच लिया कि ये सब अस्त्र इसे नहीं मार सकते। फिर उन्होंने तर्क किया कि क्या किया जाय ?। ३८२९

कण्णि नुण्मणि यूडु कळिन्दन, ऑण्णि नुण्मण लिऱ्पल वॅङ्गणै
पुण्णि नुण्णुळैन् दोडिय पुन्दियोर्, ऑण्णि नुण्णिय वॅन्शॅयऱ् पाऱ्ऱैना 3830

ऑण्णिन्–विचार करें तो; नुण् मणलिल् पल–बारीक बालुओं से अधिक; पुन्तियोर्–पण्डितों के; ऑण्णित् नुण्णिय–ज्ञान से सूक्ष्म; वॅम् कणै–क्रूर शर;

कण्णित् उळ् मणि ऊटु कऴिन्तन–आँख की पुतली को भेद चले; पुण्णित् उळ् नुऴैन्तु ओटिय–व्रणों में घुसकर चले; ऍन् चॅयल् पाऱ्ऱु–क्या कहना उचित है; ऍन्ता–ऐसा सोचकर। ३८३०

विचारो तो बारीक बालुओं से संख्या में अधिक और ज्ञानी के विवेक से भी अधिक सूक्ष्म भीषण शर आँखों की पुतलियों में घुसकर चले थे। व्रणों में घुसकर चले थे! उन्होंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था। इसलिए उन्हें सोचना पड़ा कि क्या किया जाय। ३८३०

नार णन्तिरु वुन्दियि नान्मुहन्, पार वॅम्बडै वाङ्गियिप् पादहन्
मारि नॅय्वॅनॅन् ऱॅण्णि वलित्तनन्, आरि यन्तव नावि यहऱ्ऱुवान् 3831

आरियन्–आर्य श्रीराम; अवन् आवि अकऱ्ऱुवान्–उसके प्राणों का नाश करने; नारणन्–श्रीमन्नारायण की; तिरु उन्तियिल् नान्मुकन्–श्रीनाभि में उदित चतुर्मुख का; पारम् वॅम्पडै वाङ्कि–भारी भयंकर अस्त्र लेकर; इ पातकन्–इस पातक के; मारिन् ऍय्वॅन्–वक्ष पर चलाऊँगा; ऍन्ऱु ऍण्णि वलित्तनन्–ऐसा सोचकर मन में ठान लिया। ३८३१

आर्य श्रीराम ने उसके प्राणों का अंत करने के विचार से श्रीमन्नारायण की श्रीनाभी से उदित ब्रह्मा का भारी व भीषण अस्त्र लेकर ठाना कि इस पातक के वक्ष पर यह अस्त्र चलाऊँगा। ३८३१

मुन्दि वन्दुल हीन्ऱ मुदऱ्पॅयर्, अन्द णन्पडै वाङ्गि यरुच्चियाच्
चुन्द रन्शिलै नाणिऱ् ऱॅाडुप्पुऱा, मन्द रम्बुरै तोळुऱ वाङ्गिनान् 3832

मुन्ति वन्तु–पहले प्रगट होकर; उलकु ईन्ऱ–जिसने लोक रचा उस; मुतल–आदि; पॅयर्–नामी; अन्तणन्–ब्राह्मण ब्रह्मा के; पडै वाङ्कि–हथियार लेकर; अरुच्चिया–अर्चना (पूजा) करके; चिलै नाणिल्–धनु के डोरे पर; तॅाडुप्पु उऱा–संधान करके; चुन्तरन्–सुन्दरराज; मन्तरम् पुरै–मन्दरतुल्य; तोळ् उऱ–कंधे तक; वाङ्किनान्–खींचा (डोरा)। ३८३२

आदि-सृष्टि, लोकसर्जक ब्राह्मण ब्रह्मा का अस्त्र लेकर श्रीराम ने उसकी यथावत् पूजा की। डोरे पर संधाना और मंदरतुल्य अपने कंधे तक डोरा खींचा। ३८३२

पुरञ्जु डप्पण् डमैत्तदु पॅाऱ्पणै, मरन्दु ळैत्तदु वालियै मायत्तुळ
दरञ्जु डच्चुडर् नॅञ्ज नरकक्र्होन्, उरञ्जु डच्चुड रोन्मह नुन्दिनान् 3833

पुरम् चुट–त्रिपुर जलाने हेतु; पण्टु अमैत्ततु–पहले रचित; पॅाऩ् पणै मरम् तुळैत्ततु–सुन्दर डालों वाले सालवृक्ष को जिसने भेदा था; वालियै मायत्ततु–बाली को जिसने मारा, उसे; अरम् चुट–(हथियार की) रेती से जलाने पर; चुटर्–ज्वलंत बननेवाला; नॅञ्चन्–मन से युक्त; अरक्कर् कोन्–राक्षसराजा के; उरम् चुट–वक्ष पर लगने; चुटरोन् मकन् उन्तिनान्–सूर्यवंश के पुत्र ने चलाया। ३८३३

त्रिपुरदहन के लिए पूर्व में रचित, सुंदर डालोंदार सालवृक्ष का भेदक और वाली का हननकारी जो था उस अस्त्र को सूर्यवंशज श्रीराम ने राक्षसराजा रावण के वक्ष से टकराये, ऐसा छोड़ा। रावण का वक्ष ऐसा था, जो ज्यों-ज्यों अस्त्र लगते त्यों-त्यों शोभा में बढ़ता। ३८३३

कालुम् वॅङ्गत्त लुङ्गडै काण्गिला, मालुङ् गॉण्ड वडिक्कणै मामुहम्
नालुङ् गॉण्डु नडन्ददु नात्मुहत्, मूल मन्दिरन् .दत्तोंडु मूट्टलाल् 3834

मालुम्–श्रीविष्णु ने; कॉण्ट–जो हाथ में लिया; कालुम्–पवन और; वॅम्कतलुम्–भयंकर आग; कटै काण्किला–जिसकी गति न देख सकें; वटि कणै–वह तीक्ष्ण बाण; नात् मुकत्–चतुर्मुख के; मूलम् मन्तिरम् तत्तोंटु मूट्टलाल्–बीज-मंत्र से अभिमंत्रित कर भेजने से; मा मुकम् नालुम् कॉण्टु–चारों बड़े मुखों को लेकर; नटन्ततु–चला। ३८३४

श्रीमन्नारायण के हाथ में लिया गया वह तीक्ष्ण अस्त्र इतना वेगवान था कि पवन और आग भी उसका सिरा न देख सकें। वह चतुर्मुख-मंत्र से अभिमंत्रित था। तो वह चार मुखों को अपनाकर चला। ३८३४

आऴि माल्वरैक् कप्पुरत् तप्पुरुम्, वाऴि माक्कड लुम्वॅळिप् पायन्ददाल्
ऊऴि ञायिरु मित्मिनि यॉप्पुर, वाऴि वॅञ्जुडर् पेरिरुळ् वारवे 3835

वॅम् चुटर्–आतंकमयी प्रकाश से; पेर् इरुळ् वार–बड़े अंधकार को दूर करने में; ऊऴि ञायिरुम्–युगांत का सूर्य भी; मिन्मिनि ऑप्पुर–खद्योत-सम बन गया, ऐसे; माल् आऴि वरै–बड़ी चक्रवालगिरि के; अप्पुरत्तु–उस पार; अप्पु उरुम्–जल से भरे; पाऴि मा कटलुम्–बहुत बड़ा समुद्र भी; वॅळि पायन्ततु–बाहर निकल बहने लगा। ३८३५

जब वह अपने भीषण प्रकाश से अंधकार को दूर कर रहा था, तब वह युगांत के सूर्य को इतना निष्प्रभ बना रहा था कि सूर्य उसके सामने केवल खद्योत-सम लगे। और चक्रवाल गिरि के उस पार का सागर भी बाहर निकल बहा। ३८३५

अक्क णत्ति नयन्पडै याण्डहै, चक्क रप्पडै योडुन् दळीइच्चॅन्रु
पुक्क दक्कॉडि योनुरम् बूमियुम्, तिक्क नैत्तुम् विशुम्बुन् दिरिन्दवे 3836

अक्कणत्तिन्–उस समय; अयन् पटै–ब्रह्मास्त्र; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ के; चक्करम् पटैयोटुम्–चक्रास्त्र के साथ; तळीइ चॅन्रु–मिलकर गया; अ कॉटियोन्–उस क्रूर की; उरम् पुक्कतु–छाती में घुसा; पूमियुम्–भूमि और; अनैत्तु तिक्कुम्–सारी दिशाएं; विचुम्पुम्–और आकाश; तिरिन्त–विचलित हुए। ३८३६

उस समय ब्रह्मास्त्र पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के चक्रास्त्र के साथ मिल चला और उस नृशंस के वक्ष में घुसा। तब भूमि, आकाश और सभी दिशाएँ विचलित हो घूमने लगीं। ३८३६

मुक्कोडि वाणाळु मुयन्ऱुडैय पॅरुन्दवमु मुदलॊवन् मुन्नाळ्
ऍक्कोडि यॅवरालुम् वॅलप्पडा यॅनक्कॊडुत्त वरमु मेनत्
तिक्कोडु मुलहनैत्तुत् जॅरुक्कडन्द पुयवलियुन् दिन्ऱु मार्बिऱ्
पुक्कोडि युयिर्परुहिप् पुऱम्बोयिऱ् ऱिराहवन्ऱन् पुनिद वाळि 3837

इराकवन् तन्–श्रीराघव का; पुनित वाळि–पवित्र अस्त्र; मुक्कोटि वाळ्नाळुम्–तीन करोड़ (वर्ष) की आयु और; मुयन्ऱु उटैय–परिश्रम-प्राप्त; पॅरु तवमुम्–बड़ी तपस्या-फल; मुतल्वन्–आदि ब्रह्मा के; मुन् नाळ्–पहले; ऍक्कोटि ऍवरालुम्–कितने ही करोड़ के किसी से; वॅलप्पटाय्–न हराये जाओगे; ऍन कॊटुत्त वरमुम्–कहकर दिये गये वर; एनै–अन्य; तिक्कु ओटुम्–दिशाओं के साथ; अनैत्तु–सभी; उलकुम्–लोकों को; चॅरु कटन्त–युद्ध में परास्त करनेवाला; पुयम् वलियुम्–भुजबल और; तिन्ऱु–हड़पकर; मार्पिल् पुक्कु–छाती में घुसकर; ओटि–जाकर; उयिर् परुकि–प्राण पीकर; पुऱम् पोयिऱ्ऱु–बाहर चला गया। ३८३७

श्रीराम का पवित्र अस्त्र रावण की तीन करोड़ (वर्ष) की आयु, परिश्रम से प्राप्त तप-फल, आदिदेव का यह कहकर दिया गया वर कि किसी भी देव-जाती के किसी से मारे नहीं जाओगे, और दिग्-लोक-विजयी भुजबल —इन सबको मिटाकर उसके शरीर में सर्वत्र घुस चला और प्राण लेकर निफर गया। ३८३७

आर्क्किन्ऱ वानवरु मन्दणरु मुनिवर्हळु माशि कूऱित्
तूर्क्किन्ऱ मलर्मारि तॊडरप्पोय्प् पार्कडलिऱ् ऱूय्नी राडित्
तेर्क्कुन्ऱ विरावणन्ऱन् शॅळुङ्गुरुदिप् पॅरुम्बरवैत् तिरैमेऱ् चॅन्ऱु
कार्क्कुन्ऱ मनैयान्ऱन् कडुङ्गणैप्पुट् टिलिन्नडुवट् करन्द दम्मा 3838

आर्क्किन्ऱ वानवरुम्–हो-हल्ला मचानेवाले देव और; अन्तणरुम्–ब्राह्मण; मुनिवर्कळुम्–और मुनिगण; आचि कूऱि–आशीर्वाद कहकर; तूर्क्किन्ऱ–जो बरसाने लगे; मलर् मारि–वह पुष्पवर्षा; तॊटर पोय्–पीछा करे ऐसे जाकर; पाल् कटलिल्–क्षीरसागर में; तूय् नीराटि–पवित्र स्नान करके; कुन्ऱम् तेर्–पर्वत-सम रथ के; इरावणन् तन्–रावण के; चॅळु कुरुति–पुष्ट रथ के; पॅरु परवै–बड़े समुद्र की; तिरै मेल् चॅन्ऱु–तरंगों पर जाकर; कार् कुन्ऱम्–काले पर्वत के; अनैयान् तन्–समान रहनेवाले श्रीराम के; कटु कणै–वेगवान अस्त्रों के; पुट्टिलिन् नटुवण्–तूणीर-मध्य; करन्ततु–छिप गया। ३८३८

वह अस्त्र कोलाहलकारी देवों के और ब्राह्मणों के आशीर्वाद के साथ डाले गये फूलों के आगे-आगे चला। क्षीरसागर में पवित्र स्नान करके, पर्वतोपम रथ के स्वामी रावण के पुष्ट रक्त से भरे समुद्र की तरंगों के ऊपर से होकर नीलगिरि-तुल्य श्रीराम के वेगवान बाणों के तूणीर के अंदर जा छिप गया। ३८३८

कार्निन्ऱ मळैनिन्ऱु मुरुमुदिर्व वॅनत्तिणितोट् काट्टि तिन्ऱुम्
तारनिन्ऱ मळैनिन्ऱम वणिक्कलम मणिक्कलमन दहरन्द शिनवप

पोर्नित्त्र् विळिनित्रुम् बोंङ्गिनित्रु पुहैयोडुङ् गुरुदि पॊङ्गत्
तेर्नित्रु नॆडुनिलत्तुच् चिरमुहङ्गीऴ्प् पडविळुन्दान् शिहरम् बोल्वान् 3839

चिकरम् पोल्वान्–शिखर-तुल्य रावण; कार् नित्रु–काले रंग के; मळै नित्रुम्–मेघ से; उरुम् उतिर्व अॆंत–गाज गिरती जैसे; तिणि–बलवान; तोळ् काट्टित् नित्रुम्–कन्धों के वन से; तार् नित्रु–माला से अलंकृत; मलै नित्रुम्–पर्वत से भी; पणि कुलमुम्–रत्नकुल और; मणि कुलमुम्–आभरणराशियाँ; तकर्न्तु चिन्त–टूटकर गिरीं; पोर् नित्रु–युद्ध पर लगी; विळि नित्रुम्–दृष्टि से; पोङ्गि नित्रु–अंगारे निकलकर; पुकैयोटुम्–धुएँ के साथ; कुरुति पोङ्क–रुधिर उमग आया; तेर् नित्रु–रथ से; नॆट्टु निलत्तु–बड़ी भूमि पर; चिरम् मुकम्–सिर और मुख; कीऴ् पट–नीचे की ओर रहें ऐसा; विऴुन्तात्–गिरा। ३८३९

राक्षसवंश रूपी पर्वत के शिखर के समान रावण के कंधों के वन से और हारालंकृत वक्ष से मेघों से गिरते वज्रों के समान रत्नों और आभरणों की राशियाँ टूटकर गिरीं। आँखों से अंगारे निकले और धुएँ के साथ रक्त उमँग आया। इस स्थिति में वह रथ से विस्तृत भूमि पर सिर और मुख को नीचा किये औंधा गिर गया। ३८३९

वॆम्मडङ्गल् वॆहुण्डतैय शित्तमडङ्ग मत्तमडङ्ग वित्तैयम् वीयत्
तॆम्मडङ्गप् पॊरुतडक्कैच् चॆयलडङ्ग मयलडङ्ग वाऱ्ऱल् तेयत्
तम्मडङ्गु मुत्तिवरैयुन् दलैयडङ्ण निलैयडङ्गच् चायत्त नाळित्
मुम्मडङ्गु पॊलिन्दत्तवम् मुऱ्ऱुतुऱन्दा नुयिर्त्तुऱन्द मुहङ्ग ळन्मा 3840

वॆम् मटङ्कल्–भीषण सिंह; वॆकुण्टतैय–क्रुद्ध हुआ जैसे; चित्तम् अटङ्क–क्रोध के थमते; मत्तम् अटङ्क–मन के थमते; वित्तैयम् वीय–कार्यों के रुक जाते; तॆम् मटङ्क–शत्रु मिटाकर; पॊरु तट कै–युद्ध करनेवाले विशाल हाथों के; चॆयल् अटङ्क–निष्क्रिय होते; मयल् अटङ्क–कामांधता के मिटते; आऱ्ऱल् तेय–शक्ति खोकर; उयिर् तुऱन्त–जिसने प्राण छोड़े; अम् मुऱ्ऱु तुऱन्तान्–उस अतिक्रमी के; मुकङ्कळ्–दसों मुख; तम् अटङ्कु–अपने अधीनस्थ; मुत्तिवरैयुम्–मुनियों को; तलै अटङ्क–सिर झुकाकर; निलै अटङ्क–स्थिति बिगाड़कर; चायत्त–जिस दिन परास्त किया था; नाळित्–उस दिन से; मुम्मटङ्कु–तिगुने; पॊलिन्तत–शोभे। ३८४०

भीषण सिंह क्रुद्ध हो उठा हो वैसा क्रुद्ध जो था उसका क्रोध थम गया। मन रुक गया। कार्य-शक्ति खो गयी। शत्रुत्रासक योद्धा और विशाल हाथों का काम रुक गया। सीता पर प्रेम दूर हो गया। बल मिट गया। इस तरह जो मर गया उस अधर्मी रावण के मुख अब उस दिन से तिगुने छविमय रहे, जिस दिन उन्होंने अपने अधीनस्थ मुनियों का सिर नवाया था और गौरव बिगाड़ा था। ३८४०

पूदलत्ति नाक्कुवाय् नीविडुमिप् पॊलन्देरें यॆन्त्रु पोदित्

मीदलत्त परुन्दारै विशुम्बळप्पक् किडन्दात्तन् मेनि मुऱ्ऱुङ्
गादलित्त वुरुवाहि यऱम्वळर्क्कुङ् गण्णाळन् तॅरियक् कण्डान् 3841

नी विट्टुम्–तुम जो चलाते हो; इ पॉलम् तेरै–इस सुन्दर रथ को; पूतलत्तिन्–भूमि पर; आक्कुवाय्–लगाते चलाओ; ऍन्ऱ पोतिन्–जब श्रीराम ने कहा; मातलि पेरवन्–तब मातलि श्रेष्ठ के; कटव–चलाने से; मण्टलत्तिन्–भूमंडल में; अप्पॉळुते–तभी; वरुतलोट्टुम्–आया तो; तन् मेनि मुऱ्ऱुम्–जिनका सारा शरीर; कातलित्त उरुवाळि–प्रेम का पात्र बना रहा; अऱम् वळर्क्कुम्–धर्मसंवर्धक; कण्णाळन्–दयालु ने; मीतु अलैत्त–ऊपर जो लहरें मारता रहा; पॅरु तारै–वह रक्त की बड़ी धारा; विचुम्पु अळप्प–आकाश तक गया; किटन्तान्–ऐसा जो पड़ा रहा; तॅरिय कण्टान्–उसे खूब देखा। ३८४१

श्रीराम ने मातलि को हिदायत दी कि तुम जो रथ चला रहे हो उसे भूमि पर लगे चलाओ। मातलि भूतल पर आया। तब रावण के शरीर से रक्त उछलकर धर्मसंवर्धक, दयालु, सर्व-काम्य-विग्रह श्रीराम पर लगता हुआ आकाश तक गया और वह शरीर नीचे पड़ा रहा। श्रीराम ने उसे खूब देखा। ३८४१

तेरित्तैनी कॉडुविशुम्बिऱ् चॅल्हॅन्ऩ मादलियैच् चॅलुत्तिप् पित्तर्प्
पारिडमी दित्तिणुहित् तम्बियॉडुम् बडॅत्तलैव रॅवरुञ् जुऱ्ऱप्
पोरिडॅमीण् डोरुवरुक्कुम् बुऱङ्गाडाप् पोर्वीरत् पॉरुदु वीऴ्न्द
शीरित्तैये मतमुवप्प वुरुमुऱ्ऱुन् दिरुवाळत् तॅरियक् कण्डान् 3842

नी तेरित्तै कॉट्टु–तुम रथ लेकर; विचुम्पिल् चॅल्क–स्वर्गलोक चले जाओ; ऍन्ऩ–कहकर; मातलियै–मातलि को; चॅलुत्ति–बिदा देकर; पित्तर्–बाद; पार् इटम् मीतितिन्–भूमि पर; अणुकि–पास आकर; तिरुवाळन्–श्रीनाथ; तम्पियॉट्टुम्–अपने भाई के साथ; पटै तलैवर्–सेनापति; ऍवरुम् चुऱ्ऱ–सभी के घेरे आते; पोर् इटै मीण्टु–युद्ध से हटकर; ऑरुवर्क्कुम् पुऱम् कॉटा–किसी को भी पीठ न दिखानेवाले; पोर् वीरन्–योद्धा वीर; पॉरुतु वीऴ्न्त–जो लड़कर गिरा था; चीरित्तैये–उसकी श्रेष्ठता को; मतम् उवप्प–मन में आनन्द के साथ; उरु मुऱ्ऱुम्–सारे शरीर पर; तॅरिय कण्टान्–खूब दृष्टि डालकर देखा। ३८४२

फिर श्रीराम ने मातलि को आज्ञा दी कि रथ को स्वर्ग में ले चलो। बाद श्रीनाथ श्रीराम भूमि पर आये। भाई लक्ष्मण और घेरे आये सेनापतियों के साथ वे और पास आये और उस महावीर रावण के युद्ध करके गिरे रहने का शान मोद के साथ देखा जो अब तक कभी युद्धस्थल से पीठ दिखाकर नहीं लौटा था। उन्होंने उसके शरीर के अंग-अंग को पूर्ण रूप से निहारा। ३८४२

अलैमेवुङ् गडलुपुडैशू ऴुवत्तियॅलाङ् गात्तळिक्कु मडऱ्कै वीरन्
शिलैमेवुङ् गुडुङ्गणैयाऱ् पडुहळत्ते मतत्तोमै शिदैन्वु वीऴ्न्दोत्

तलैमेलुन् दोण्मेलुन् दडमुदुहिऱ् पडर्पुयत्तुन् दावि येऱि
मलैमेनिन् ड्राडुवपो लाडिनवाल् वानरङ्गळ् वरम्बि लाद 3843

अलै मेवुम्–तरंगाकीर्ण; कटल् पुटै चूऴ्–समुद्र की घिरी; अवत्ति ॲलाम्–सारी भूमि का; कात्तु अळिक्कुम्–रक्षक व सहायक; अटल् कै वीरन्–सबल भुजा वाले के; चिलै मेवुम्–धनु में लगे; कटुकणैयाल्–वेगवान अस्त्र से; पटु कळत्ते–युद्ध के मैदान में; मनम् तीमै चितैन्तु–मन की बुराई मिटाकर; वीऴ्न्ततोन्–जो गिरा रहा उसके; तलै मेलुम्–सिरों पर; तोळ् मेलुम्–और कंधों पर; तट मुतुकिल्–विशाल पीठ में; पटर् पुयत्तुम्–विशाल हाथों पर; तावि एऱि–उछल, चढ़कर; वरम्पु इलात–असीम; वानरङ्कळ्–वानर; मलै मेल् निन्ऱु–पर्वत पर रहते; आटुव पोल्–नाचते जैसे; आटिन–नाचे। ३८४३

तरंगाकीर्ण-समुद्रावृत लोकों के पालक और सहायक सबल भुजाओं के स्वामी श्रीराम के धनु पर से निकले क्रूर अस्त्र से हत होकर रावण युद्धस्थल में पड़ा रहा। उसके मन की बुराई नष्ट हो गयी थी। वानर उसके सिरों, कंधों, विशाल पीठ और विस्तृत भुजाओं पर उछल-उछल चढ़े। और वे असंख्यक वानर पर्वत पर नाचते जैसे नाचे। ३८४३

तोडुळ्ळुद नऱुन्दॉडैयर् ऱॉहैयुळ्ळुद किळैवण्डिन् शुळियत् तॉङ्गऱ्
पाडुळ्ळुद पडर्वॅरिनिन् पणियुळ्ळुद वणिनिहर्प्पप् पणैक्कै यानैक्
कोडुळ्ळुद नॅडुन्दऴुम्बिन् कुवैतऴुवि यॅऴुमेहक् कुऴुविन् कोवैक्
काडुळ्ळुद कॉऴुम्बिऱैयिर् करैकऴन्ऱु किडन्ददनपोर् किडक्कक् कण्डान् 3844

तोटु उळ्ळुत–पंखुड़ियों-सह; नऱु तॊटैयल–सुगंधित पुष्पमाला की; तॊकै उळ्ळुत–पुष्पराशियों पर रहे; किळै–शाखाओं-सहित; वण्टिन्–भ्रमरावृत; चुळियल् तॊङ्कल्–'वक्र' मालाएँ; पाटुळ्ळुत–पार्श्व में पड़ी रहीं; पटर्–विशाल; वॅरिन्–पीठ; इन् पणि उळ्ळुत–अच्छी कारीगरी से युक्त; अणि निकर्प्प–आभरण के समान रही; पणै कै–मोटी सूंड़ों के; यानै कोटु उळ्ळुत–गजों के दाँतों के छेदने से बने; नॅटु तऴुम्पिन्–बड़े दागों की; कुवै तऴुवि–राशियों से युक्त; ॲऴुम् मेकम् कुऴुविन्–उठते मेघसमूहों की; कोवै–पंक्तियों का; काटु–वन; उळ्ळुत–जिसमें रहा; कॊऴुम् पिऱैयिल्–उस पुष्ट कलाचन्द्र के साथ; करै कऴन्ऱु–कलंक-रहित; किटन्तत पोल्–पड़ा रहा जैसे; किटक्क कण्टान्–पड़ा रहा रावण, उसको देखा श्रीराम ने। ३८४४

श्रीराम ने रावण की पीठ देखी। आसपास पंखुड़ियों-सहित सुन्दर फूलों की मालाएँ बिखरी पड़ी थीं और उन पर भ्रमर बैठे कुरेद रहे थे। उसकी पीठ पर दिग्गजों के भेदने से दाग़ लगे हुए थे। वे लंबे-चौड़े दाग़ उठते मेघ-मध्य शोभित पुष्ट तथा कलंक-हीन कलाचंद्र के समान आभरण-सा भास देते हुए पड़े हुए थे। श्रीराम ने उन निशानों को निहारा। ३८४४

तळिरियल् पॉरुट्टिऩ् वन्द शीऱ्ऱमुन् दरुक्कि तोऩ्ऱऩ्
किळरिय लुरुवि ऩोडुङ् गिळिप्पुऱक् किळर्न्दु तोऩ्ऱुम्
वळरियल् वडुविऱ् चॅम्मैत् तऩ्मैयु मरुव निऩ्ऱ
मुळरियङ् गणणऩ् मूरल् मुरुवलऩ् मॊळिवदाऩाऩ् 3845

मरुव निऩ्ऱ्-पास स्थित; मुळरि अम् कणणऩ्-पंकजाक्ष; तळिर् इयल्-पल्लव-सम सीता के; पॉरुट्टिऩ् वन्त-कारण उत्पन्न; चीऱ्ऱमुम्-क्रोधी और; तरुक्कित्तोऩ्तऩ्-गर्वीले रावण के; किळरियल्-शोभित; उरुविऩोडुम्-आकार के साथ; किळिप्पु उऱ्-चिर, मिट गया; किळर्न्तु तोऩ्ऱुम्-प्रफुल्लित दिखनेवाले; वळर् इयल्-वर्धनशील; वटुविल्-दाग़ से; चॅम्मैत्तु अऩ्मैयुम्-श्रेष्ठता से रहितता जान; मूरल् मुरुवलऩ्-मंदहासयुक्त हो; मॊळिवतु आऩाऩ्-(श्रीराम) कहने लगे। ३८४५

रावण के बहुत समीप खड़े थे पंकजाक्ष श्रीराम। पल्लव-तुल्य सीतादेवी के कारण रावण क्रोधी और घमंडी बना था। अब उसका सुंदर शरीर चिरकर विकृत हो गया था। उस पर विलसनेवाला दाग़ वर्धित होता लगता था। श्रीराम ने सोचा कि इस दाग़ ने उनकी वीरता को श्रेष्ठता से रहित बना दिया। अतः वे मुस्कुराते हुए बोले। ३८४५

वॆऩ्ऱिया ऩुलह मूऩ्ऱु मॆय्म्मै याऩ्मेवि ऩालुम्
पॊऩ्ऱिऩा ऩॅऩ्ऱु तोळैप् पॊदुवऱ नोक्कुम् बोऱ्पुम्
कुऩ्ऱिया शुऱ्ऱ दऩ्ऱे यिवनॅदिर् कुऱित्त पोरिऱ्
पिऩ्ऱियाऩ् मुदुहिऱ् पट्ट पिळम्बुळ तळुम्बि ऩम्मा 3846

उलकम् मूऩ्ऱुम्-तीनों लोकों को; मॆय्म्मैयाऩ्-सच्चे रूप से; वॆऩ्ऱियाल्-जीतकर; मेविऩालुम्-बड़ा बना रहा तो भी; पॊऩ्ऱिऩाऩ्-मर गया; ऎऩ्ऱु-कहकर; तोळै-भुजबल को; पॊतु अऱ नोक्कुम्-विशेष रीति से दिखनेवाला; पोऱ्पुम्-गौरव; इवऩ्-यह; ऎतिर् कुऱित्त पोरिल्-सामने की लड़ाई में; पिऩ्ऱियाऩ्-पीछे मुड़ने से; मुतुकिऱ् पट्ट-पीठ पर लगे; तळुम्पिऩ् उळ-दाग़ के रूप में रहते; पिळम्पु-गोल से; कुऩ्ऱि-घटकर; आचु-कलंक से; उऱ्ऱतु-लगा हो गया; अऩ्ऱे-न। ३८४६

रावण सच ही त्रिलोक-विजय-प्रतापी था। तो भी वह मर गया। उससे मेरे भुजबल को गौरव प्राप्त हुआ। पर समक्ष चले उस युद्ध में पीठ दिखाने की वजह से उसकी पीठ पर दाग़ लग गया। रे! उस दाग़ के पुंज ने मेरे गौरव को कलंकित कर दिया न ? । ३८४६

कार्त्तवी रियऩॅऩ् बाताऱ् कट्टुण्डा ऩॅऩ्ऩक् कऱ्कुम्
वार्त्तैयुण् डदऩैक् केट्ट नाणुऱ मऩत्ति ऩॆऱ्कुप
पोर्त्तलैप् पुऱहिट् टेऱ्ऱ पुण्णुडैत् तळुम्बुम् बोलाम्
नेर्त्तवुङ् गाण लुऱ्ऱ वीशऩा रिरुक्कै निऱ्क 3847

कार्त्त वीरियऩ्-कार्तवीर्य; ऎऩ्पाताल्-जो था उससे; कट्टुण्टाऩ्-बद्ध

हुआ; ऍन्ऱ करुकुम्–ऐसा कहा; वार्त्तै उण्टु–वृत्तांत है; अतनै केट्टु–उसे सुनकर; नाण् उऱु–लज्जायुक्त; मनत्तिनेऱ्कु–मन वाले मुझे; पोर्तलै–युद्ध में; पुऱक्किट्टु–पीठ दिखाकर; एय्त–प्राप्त; पुण् उटै तऴुम्पुम्–व्रण का दाग भी; नेर्त्ततुम्–हुआ; काणल् उऱ्ऱ–देखना हो गया; ईच्चतार् इरुक्कै निऱ्क–परमेश्वर का स्थान रहे। ३८४७

कार्तवीर्य द्वारा यह बद्ध हुआ था —यह एक वृत्तांत मैंने सुना था। उसी से मैं लज्जित हुआ था। तिस पर युद्ध में पीठ पर व्रण का निशान लग गया है। इसको मिलाकर देखता हूँ तो हालत और भी बिगड़ जाती है। (अपने से हीन व्यक्ति के साथ मुझे युद्ध में जीत मिली। यह कोई शालीनता नहीं!) ईश्वर का वासस्थान कैलास भी रहा एक ओर ही। ३८४७

माण्डॊऴिन् दुलहि तिऱ्कुम् वयङ्गिशै मुयङ्ग माट्टा
दूण्डॊऴि लुहन्दु तॆव्वर् मुऱुवलॆन् पुहऴै युण्णप्
पूण्डॊऴि लुडैय मार्बा पोर्प्पुऱङ् गॊडुत्तोर्प् पोन्ऱ
आण्डॊऴि लोरिऱ् पॆऱ्ऱ वॆऱ्ऱियु मवत्त मॆन्ऱान् 3848

पूण् तॊऴिल्–आभरणभरणकार्य; उटैय मार्पा–के वक्षवाले; ऊण् तॊऴिल् उकन्तु–खाने का कार्य चाहकर; तॆव्वर् मुऱुवल्–शत्रु के हास के; ऍन् पुकऴै–मेरे यश को; उण्ण–चाट लेते; पोर्–युद्ध में; पुऱम् कॊटुत्तोर्–पीठ दिखानेवाले; पोन्ऱ–के समान; आण् तॊऴिलोरिन्–पौरुष के कार्य के इस; पॆऱ्ऱ वॆऱ्ऱियुम्–की प्राप्त विजय; अवत्तम्–अ (गौरव) युक्त है; माण्टु ऒऴिन्ततु–मर गया इसलिए; उलकिल् तिऱ्कुम्–लोक में स्थापित; वयङ्कु इचै–विशेष यश; मुयङ्क माट्टातु–मेरे पास नहीं आयगा; ऍन्ऱान्–कहा श्रीराम ने। ३८४८

आभरणधारणकारी वक्षवाले विभीषण! भोग की कामना करके शत्रु की मुस्कुराहट ने मेरे यश को पोंछ दिया। युद्ध में पीठ दिखायी हो, ऐसा रावण की पीठ पर दाग़ लग गया है! इस वीर रावण पर जो जीत हुई है वह निपट अबद्ध है! रावण का मरण स्थायी रहेगा। और यश भी मेरे पास नहीं आ रहेगा। श्रीराम ने यों श्रीवचन उच्चारण किया। ३८४८

अव्वुरै युरैप्पक् केट्ट वीडण नरुविक् कण्णन्
वॆव्वुयिर्प् पोडु नीण्ड विम्मलन् वॆदुम्बु नॆञ्जन्
शॆव्वियिर् ऱॊडरन्द वल्ल शॆप्पलै शॆलुव वॆन्ना
ऍव्वुयिर्प् पोरैयु नीङ्गि विरङ्गिनिन् ऱिनैय शॊन्नान् 3849

अव् उरै–वह कथन; उरैप्प–कहते; केट्ट–जिसने सुना; वीटणन्–वह विभीषण; अरुवि कण्णन्–सरिता-सी आँखों वाला; वॆम्मै नीण्ट–अधिक गर्मी से युक्त; उयिर्प्पोटु–निःश्वास के साथ; विम्मलन्–सिसकता; वॆतुम्पुम् नॆञ्चन्–

उत्तप्तमन; वॅल्व-धनी; वॅव्वियिल् तीटरन्त अल्ल-श्रेष्ठता से असंबद्ध; वॅप्पलॅ-मत बोलें; ऍन्ऩा-कहकर; ऍव् उयिर् पॉर्युम्-किसी भी जन्मभार से; नीङ्कि निन्ऱु-हटकर जो खड़ा था; इरङ्कि-(उस चिरंजीव ने) करुणार्द्र होकर; इतैय चोन्ऩान्-ये बातें कहीं। ३८४९

वह कथन सुनकर विभीषण की आँखों से सरिता के समान अश्रु-धारा बहने लग गयी। गरम लंबी साँसें छोड़ते हुए क्षोभ के साथ उसने कहा कि धनी! आप ऐसी बातें मत कहें जो सीधी नहीं। फिर चिरंजीव विभीषण ने निम्नोक्त बातें कहीं। ३८४९

आयिरन् दोळि ऩानुम् वालियु मरिदि नैय
मेयिऩ वॅन्ऱि विण्णोर् शाबत्तिन् विळैन्द मॅय्म्मै
तायिनुन् दॉळत्तक् काण्मेऱ् ऱङ्गिय कादऱ् ऱन्मै
नोयुनिन् मुनिवु मल्लाल् वॅल्वरो नुवलऱ् पालार् 3850

ऐय-प्रभु; आयिरम् तोळिऩानुम्-सहस्रभुज कार्तवीर्य और; वालियुम्-वाली को; अरितिन् मेय-कष्ट के साथ मिलो; वॅन्ऱि-विजय; विण्णोर् चापत्तित्-देवों के शाप के कारण; विळैन्त-मिली थी; मॅय्म्मै-सच; तायिनुम्-माता से भी; तॉळ तक्काळ मेल्-पूजनीया पर; तङ्किय-ठहरा; कातल् तन्मै नोयुम्-प्रेम-रोग; निन् मुनिवुम् अल्लाल्-और आपका कोप, इनके बिना; नुवलल् पालार्-गण्य कोई; वॅल्वरो-जीत सकेंगे क्या। ३८५०

हे प्रभु! सहस्रबाहु (कार्तवीर्य) और वाली ने इस पर जो परिश्रम से विजय पायी थी वह देवों के शाप का फल था। माता से भी वंदनीया सीता पर इसने जो प्रेम रखा था उसका रोग, और आपका बाण, ये दोनों नहीं रहे तो गण्य कोई भी इसको परास्त करनेवाला है क्या ? । ३८५०

नाडुळ दनयु मोडि नण्णलार् काण्गि लामर्
पीडुळ कुन्ऱम् बोलुम् बॅरुन्दिश यॅल्लै यानैक्
कोडुळ दनैयुम् बुक्कुक् कॉडुम्बुऱत् तळुन्दु पुण्णित्
पाडुळ दन्ऱित् तॅव्वर् पडैक्कलम् बट्टॅन् शॅय्युम् 3851

नाट्ुळ तनैयुम् ओटि-लोक-सीमा तक दौड़कर; नण्णलार् काण्किलामल्-शत्रुओं को न पाकर; पीटु उळ कुन्ऱम् पोलुम्-शानदार पर्वत के समान; पॅरु तिशै ऍल्लै यानै-बड़े दिग्गजों से (लड़ने पर); कोटु-उनके दाँत; उळततैयुम्-जितने लम्बे थे उतने; पुक्कु-घुसकर; कॉटु-वक्र; पुऱत्तु-पीठ के पीछे; अऴुन्तु-घुसे इसलिए; पुण्णित्-व्रण-द्वारा; पाटु उळतु-पीठ पर है; अन्ऱि-नहीं तो; तॅव्वर्-शत्रुओं के; पटै कलम् पट्टु-हथियार लगकर; ऍत् चॅय्युम्-क्या कर सकते होंगे। ३८५१

यह जहाँ तक स्थल रहा वहाँ तक दौड़ा। फिर वहाँ कोई शत्रु न मिले। तब शानदार पर्वतोपम दिग्गजों से जा टकराया। उनके दाँत

जितने लंबे थे उतने सारे इसके वक्ष में घुस गये, और पीठ तक आ गये। वही दाग़ इसकी पीठ पर हैं। नहीं तो शत्रु का हथियार इसका क्या कर सकेगा ? । ३८५१

अप्पणै यत्तत्तु मार्बुक् कणियॆत्तक् किडन्द वीरक्
कैप्पणै मुऴ्ङ्ग मेन्ना ळमरिडैक् किडैत्त कालत्
तुप्पिणै वयिर वाळि विशैयिनुङ् गालित् तोऩ्ऱल्
वॆप्पणै कुत्ति ताऩुम् वॆरिनिडैप् पोय वऩ्ऱे 3852

अ पणै अत्तत्तुम्–वे सभी दांत; मार्पुक्कु–छाती के; अणि ऎत्त किटन्त–आभरण के समान रहे; मेन्नाळ्–प्राचीन दिन में; वीरम्–वीरता के प्रदर्शन में; कै पणै मुऴङ्क–हाथ के शंख के बजते; अमर् इटै–युद्ध में; किटैत्त–जो आया; कालत्–उस काल के; तुप्पु इणै–बलसंयुक्त; वयिरम् वाळि–वज्र बाणों के; विशैयिनुम्–वेग से और; कालित् तोऩ्ऱल्–वायुपुत्र के; वॆम् पणै–संतापक; कुत्तित्तालुम्–घूंसे से; वॆरिन् इटै पोय–पीठ में भेद चले। ३८५२

वे सब दाँत इसके वक्ष के शृंगार के रूप में रहे। फिर प्राचीन दिन में वीरता प्रदर्शित करते हुए, शंख बजाते हुए इसने जब यम से युद्ध किया, तब यम के सबल शरों ने और बाद वायुपुत्र के भीषण घूँसों से ये दाँत पीठ में जाकर रह गये। ३८५२

अव्वडु वऩ्ऱि यिन्द वण्डत्तुम् बुऱत्तु माऩ्ऱ
तॆव्वडु पडैह ळञ्जा दिवऩ्वयिऱ् चॆल्लिऱ् ऱेव
वॆव्विड मीशऩ् तऩ्ऩै विऴुङ्गिनुम् बऱवै वेन्दै
अव्विड नाह मॆल्ला मणुहिनु मणुह लाऱ्ऱा 3853

तेव–देव; चॆल्लिल्–विचार करें तो; अ वटु अऩ्ऱि–उस दाग़ के अलावा; वॆव्विटम्–दारुण विष; ईचऩ् तऩ्ऩै–परमेश्वर को; विऴुङ्किनालुम्–निगल जाय तो भी; पऱवै वेन्तै–पक्षी-राज को; अव्विटम् नाकम् ऎल्लाम्–सभी आशी-विष; अणुकिनुम्–पास जायँ तो भी; इन्त अण्टत्तुम्–इस अण्ड में और; पुऱत्तुम्–बाहर; आऩ्ऱ–उत्कृष्ट; तॆव् अटु–शत्रुघातक; पटैकळ्–हथियार; अञ्चातु–बेखटके; इवऩ् वयिऩ्–इसके पास; अणुकल् आऱ्ऱा–भटक नहीं सकते। ३८५३

देव ! विचार करें तो वह वही दाग़ है; नहीं तो हलाहल ही परमेश्वर को क्यों न निगल जाय, गरुड़ को चाहे सारे आशीविष सता दें, पर इस अंड में या बाहर उत्कृष्ट शत्रुघातक युद्ध के हथियार इसे कुछ कष्ट देने पास भी न भटक सकेंगे ! । ३८५३

वॆऩ्ऱियाय् पिऱिवु मुण्डो वेलैशूऴ् ञाल माण्डोर्
पऩ्ऱिया यॆयिऱ्ऱुक् कॊण्ड परम्बरऩ् मुवल पल्लोर्
ऒऩ्ऱिया मिडुक्कण् डोर्व दॆऩ्गिऱ्ऱा रिवऩिऩ् ऱुऩ्ऱाल्
पॊऩ्ऱिऩ्ऩा तॆऩ्ऱु पोरुम् तलपपडार पोयकॊ लॆऩ्बार 3854

वॅन्ऱियाय्–विजयी; पिऱितुम् उणटो–अन्य है क्या; वेलै चूऴ् ञालम्–समुद्रावृत भूमि को; आण्टु–पालन करके; ओर्–अनुपम; पन्ऱियाय्–वाराह बनकर; ॲयिऱ्ऱु कॊण्ट–दाँतों पर लेनेवाले; परम्परन् मुतल–परात्पर विष्णु आदि; पल्लोर्–अनेक; याम् इटुक्कण–हम दुःख से; तीर्वतु ॲन्ऱु–छूटें किस दिन; ॲन्ऱु किन्ऱार्–ऐसा कहते; उन्ताल् इवन्–आपसे यह; इन्ऱु पॊन्ऱितान्–आज मरा; ॲन्ऱु पोतुम्–कहने पर भी; पॊय् कॊल्–झूठ है क्या; ॲन्पार्–कहनेवाले; पुलप्पटार्–अदृश्य (कई) रहते हैं। ३८५४

विजयी! और कोई बात है क्या? उस परात्पर भगवान विष्णु से लेकर, जिन्होंने उस दिन समुद्रावृत भूमि को वाराहावतार लेकर अपने वक्र दाँतों पर उठाया था, अनेक सारे देव यही पूछते रहते हैं कि हमारा संकट दूर होगा किस दिन? 'आपसे यह आज मर गया।' यह सुनने पर भी जो संशय करते हैं कि क्या यह झूठ तो नहीं, वे कितने ही लोग अदृश्य रहते हैं। ३८५४

अन्ऩदो वॅन्ऩा वीश नैयमु (नाणु नीङ्गित्
तन्ऩदो ळिणैयै नोक्कि वीडणा तक्क दन्ऱाल्
ॲन्ऩदो विऱन्दु ळान्मेल् वयिर्त्तलनी यिवऩुक् कीण्डच्
चॊन्ऩदोर् विदियि ऩाले कडऩ्शॅयत् तुणिदि यॅन्ऱान् 3855

अन्ततो–वैसा क्या; ॲन्ऩा–कहकर; ईचन्–भगवान; ऐयमुम् नाणुम्–संदेह व लज्जा; नीक्कि–त्यागकर; तन्ऩ–अपने; तोळ् इणैयै–भुजद्वय को; नोक्कि–देखकर; वीटणा–विभीषण; इऱन्तुळान् मेल्–मृतक पर; वयिर्त्तल् ॲन्ऩतो–वैर करना क्या है; तक्कतु अन्ऱु–योग्य नहीं; नी–तुम; इवऩुक्कु–इसके प्रति; ईण्ट–जल्दी; चॊन्ऩतोर्–शास्त्रोक्त; वितियिऩाले–प्रकार से; कटऩ् चॅय्य–अपर कर्म करने; तुणिति–तैयार हो जाओ; ॲन्ऱान्–कहा। ३८५५

भगवान श्रीराम ने कहा कि क्या ऐसी बात है? उनका संशय और उनकी शरम दूर हुई। अपने कंधों के जोड़े पर दृष्टि डालते हुए (मन में प्रफुल्लित होकर) श्रीराम ने कहा कि विभीषण! जो मर गया उस पर वैर दिखाना क्या काम है? वह उचित नहीं। तुम शीघ्र शास्त्रोक्त रीति से रावण का दाहकर्मादि करने को तैयार हो जाओ। ३८५५

अव्वहै यरुळि वळ्ळ लनैत्तुल हङ्ग ळोडुम्
ॲव्वहै युळ्ळ तेव रियावरु मिरैत्तुप् पॊङ्गिक्
कव्वैयिऱ् ऱीर्न्दार् वन्दु वीऴ्हिन्ऱार् तम्मैक् काणच्
चॅव्वैयि तवर्मुऱ् चॅन्ऱान् वीडण ऩिदऩैच् चॅय्दान् 3856

वळ्ळल्–प्रभु; अव्वकै अरुळि–उस तरह आज्ञा करके; इरैत्तु पॊङ्कि–कोलाहल व उत्साह करके; कव्वैयिल्–दुःख से; तीर्न्तार्–छूटे लोग; वन्तु वीऴ्किन्ऱार्–जो आकर नमस्कार करते; अनैत्तु उलकङ्कळोटुम्–सभी लोकवासियों के साथ; ॲव्वकै उळ्ळ तेवर्–सभी प्रकार के देव; यावरु तम्मैयुम्–सभी लोगों

के; काण–देखते; चॅव्वैयिऩ्–सीधे; अवर् मुऩ्–उनके सामने; चॅऩ्ऱाऩ्–आये; वीटणऩ् इततै चॅय्ताऩ्–विभीषण ने यह किया। ३८५६

श्रीराम उसे वह आज्ञा सुनाकर उन देवों और अन्य लोगों के सामने सीधे ढंग से गये, जो संकटविमुक्त होकर कोलाहल और उत्साह के साथ आकर उनके चरणों में नमस्कार करने आये थे। तब विभीषण ने निम्नोक्त काम किया। ३८५६

पोऴ्न्दॅऩ वरक्कऩ् शॅय्द पुऩ्ऱॊऴिल् पॊऱैयिऱ् ऱामाल्
वाऴ्न्दनी यिवऩुक् केऱ्ऱ वरऩ्मुऱै वहुत्ति यॅऩ्ऩत्
ताऴ्न्ददोर् करुणै तऩ्ऩाऱ् ऱलैमह ऩरुळत् तळ्ळि
वीऴ्न्दऩ ऩवऩ्मेल् वीऴ्न्द मलैयिऩ्मेल् मलैवीऴ्न् दॅऩ्ऩ 3857

पोऴ्न्तॅऩ–चीर दिया जैसे; अरक्कऩ् चॅय्त–राक्षसकृत; पुऩ् तॊऴिल्–क्षुद्र काम; पॊऱैयिऱ्ऱु आम्–क्षम्य नहीं; वाऴ्न्त नी–जयजीव तुम; इवऩुक्कु एऱ्ऱ–इसके योग्य दाहकर्मादि; वरऩ् मुऱै–उचित क्रम से; वकुत्ति–करो; ॲऩ्ऩ–ऐसा; ताऴ्न्ततु–पक्व; ओर करुणै तऩ्ऩाल्–एक करुणा से; तलै मकऩ्–नायक श्रीराम के; अरुळ–कृपा-वचन कहने पर; वीऴ्न्त मलैयिऩ् मेल्–गिरे पड़े रहे पर्वत पर; मलै वीऴ्न्तॅऩ्ऩ–पर्वत गिरा जैसे; तळ्ळि–दुःखचालित हो; अवऩ् मेल्–उस पर; वीऴ्न्तऩऩ्–गिरा। ३८५७

'हृदय को चीरता-सा राक्षस रावण ने जो काम किया वह अक्षम्य है! पर तुम उत्कृष्ट जीवन बितानेवाले हो। तुम दाहकर्म उचित क्रम से संपन्न करो।' श्रीराम ने दयापूर्ण करुणा से यह आज्ञा जब सुनायी तब विभीषण दुःख से उकसाया जाकर गिरे पड़े रहे पर्वत पर दूसरा पर्वत गिरता हो ऐसा रावण पर गिरा। ३८५७

ओवरु मुलहत् तॅल्ला वुयिर्हळु मिरङ्गि येङ्गत्
तेवरु मुऩिवर् तामुञ् जिऩ्दैयि ऩिरक्कञ् जेरत्
तावरुम् पॊऱैयि ऩाऩ्ऱ ऩऱिविऩैत् तहैन्दु निऱ्कुम्
आवलुम् तुयरुन् दीर वरऱ्ऱिऩाऩ् पहुवा यार 3858

ओवु अरुम्–अक्षय; उलकत्तु–लोकों के; ॲल्ला उयिर्कळुम्–सारे जीव; इरङ्कि एङ्क–दुःखी और शोकाकुल हुए; तेवरुम्–देव और; मुऩिवर् तामुम्–मुनि भी; चिऩ्तैयिऩ्–मन में; इरक्कम् चेर–दया करने लगे; ता अरुम्–अमिट; पॊऱैयिऩाऩ्–क्षमाशील विभीषण; तऩ् अऱिविऩै–अपनी बुद्धि को; तकैन्तु निऱ्कुम्–रोकते रहनेवाली; आवलुम्–इच्छा और; तुयरुम्–दुःख को; तीर–छोड़ने; पकुवाय् आर–खुले मुख-भर; अरऱ्ऱिऩाऩ्–रोया। ३८५८

अक्षय क्षमाशील विभीषण ने अपनी संज्ञा को रोकते रहनेवाले प्रेम और दुःख को दूर करते हुए विलाप करने लगा, जिसको देखकर अक्षय लोकों के सारे जीव दुःख और शोक से भर गये। देव और मुनि भी दयार्द्र हुए। ३८५८

उण्णादे युयिरुण्णा दोरुनञ्जु शत्तहियॅनुम् बॅरुनञ् जुन्नैक्
कण्णाले नोक्कवे पोक्कियदे युयिर्नीयुङ् गळप्पट् टाये
ऑण्णादे नॅण्णियशो लिन्ऱिनित्ता नॅण्णुदियो वॅण्णि लाऱ्ऱल्
अण्णावो वण्णावो वशुरर्हळ्तम् बिरळयमे यमरर् कूऱ्ऱे 3859

ऑण् इल् आऱ्ऱल्–अपार बलशाली; अण्णावो अण्णावो–हे ज्येष्ठ भाई, भ्राता; अचुरर्कळ् तम्–असुरों के; पिरळयमे–प्रलय-तुल्य; अमरर् कूऱ्ऱे–देवों के यम; ओरु नञ्चुम्–कोई भी विष; उण्णाते–विना खाये; उयिर् उण्णातु–जान नहीं खाता; चत्तकि ऍतुम्–जानकी रूपी; पॅरु नञ्चु–घोर विष; कण्णाले–आँख से; नोक्कवे–देखते ही; उन्नैं–तुम्हें; उयिर् पोक्कियते–प्राणहीन कर चुका तो; नीयुम्–तुम भी; कळप्पट्टाये–युद्ध में मर गये; ऑण्णातेन्–(भाई का) मान न करके; ऑन्नुडैय–(जो गया) उस मेरे; ऍण्णिय चोल्–विवेक-वचन पर; इन्ऱु इत्ति तान्–आज अभी सही; ऍण्णुतियो–ध्यान दोगे क्या। ३८५९

अपार बलशाली हे मेरे ज्येष्ठ भ्राता! बड़े भैया! असुरों के प्रलय-रूप! देवों के यम! कोई भी विष बिना खाये किसी को नहीं मारता! पर जानकी बहुत घोर विष है! उसने आँख से देखते ही तुम्हारा काम तमाम कर दिया! हाय! तुम भी युद्ध के मैदान में मर गये! तुम्हें न मानकर मैं चला गया था। क्या अब ही सही मेरी बात पर ध्यान दोगे? । ३८५९

ओरादे यॉरुवन्ऱ नुयिराशै कुलमहण्मे लुऱ्ऱ कादल्
तीराद वशैयॅन्ऱे नॅनै मुनिन्द मुनिवाऱित् तेऱि नायो
पोराशैप पट्टॅळुन्द कुलमुऱ्ऱुम् बोन्ऱ वन्दान् पोङ्गि निन्ऱ
पेराशै पॅयर्न्ददो पॅयर्न्दाशैक् करियिरियप् पुरुवम् बेर्त्ताय 3860

आचै करि–दिग्गज; पॅयर्न्तु इरिय–अस्थिर हो भागें ऐसा; पुरुवम् पेर्त्ताय्–भौंहें तानेनवाले; ओराते–विना सोचे; ओरुवन् तन्–अन्य की; उयिर् आचै–प्राणप्यारी; कुलमकळ् मेल्–कुलीन स्त्री पर; उऱ्ऱ कातल्–रखा प्रेम; तीरात–अमिट; वचै–कलंक; ऍन्ऱेन्–बताया; ऍनै मुनिन्त–मुझपर जो किया; मुनिवु आऱि–वह कोप शांत कर; तेऱितायो–बात समझे क्या; पोर्–युद्ध में; आचै पट्टु–चाह करके; ऍळुन्त–उठा; कुलम् मुऱ्ऱुम्–सारा कुल; पोन्ऱवन्–मिट गया तब; पोङ्कि निन्ऱ–उमँगती रही; पेर् आचै–लालसा; पॅयर्न्ततो–दूर हुई क्या। ३८६०

दिग्गजों को अस्त-व्यस्त करते भौंहें तानेनवाले! विना विचारे दूसरे की प्राणप्यारी पत्नी, कुलीन स्त्री पर मोह रखना मैंने अमिट कलंक बताया। तुमने मुझ पर गुस्सा किया। क्या वह कोप शांत हुआ और तुम्हें बात ठीक लगी? युद्ध की चाह कर जो कुल उठा उस कुल का संपूर्ण नाश हो गया। क्या अब तुम्हारी उत्तरोत्तर बढ़ती लालसा शांत हुई? । ३८६०

अन्ऱॆरियिल् विळ्वेद वदियिवळ्का णुलहुक्को रन्नै यॆन्ऱु
कुन्ऱनैय नॆडुन्दोळाय् कूऱिने नदुमनत्तुट् कॊळ्ळा दॆपोय्
उन्ऱनदु कुलमडङ्ग वुरुत्तमरिऱ् पडक्कण्डु मुऱवा हादे
पॊन्ऱिनैये यिराहवनार् पुयवलियै यिन्ऱरिन्दु पोयि नाये 3861

अन्ऱु–उस दिन; ऎरियिल्–अग्नि में; विळ्–जो प्रविष्ट हुई; वेतवति–वह वेगवती; उलकुक्कु ओर् अन्नै–संसार की अप्रतिम माता; इवळ् काण्–यह है, देखो; ऎन्ऱु–ऐसा; कुन्ऱु अनैय–पर्वतोपम; नॆटु तोळाय्–उन्नत कंधों वाले; कूऱिनेन्–मैंने कहा; अतु–वह; मनत्तुळ्–मन में; कॊळ्ळाते पोय्– न ले जाकर; उन् तनतु–तुम्हारे; कुलम् अटङ्क–सारे कुल नष्ट होकर; अमरिल् उरुत्तु–युद्ध में गुस्साकर; पट कण्टुम्–मिट गये, देखकर भी; उऱवु आकाते–नाता न जोड़कर; पॊन्ऱिनैये–मरे तो; इराकवनार्–श्रीराघव के; पुयम् वलियै–भुजबल को; इन्ऱु–आज; अऱिन्तु पोयिनाये–जानकर गये हो। ३८६१

"हे पर्वतोपम उन्नत कंधोंवाले ! उस दिन जो (तुमको शाप देकर) अग्नि में प्रवेश कर गयीं वे ही संसार की अप्रतिम जननी यह हैं जानो।" मैंने कहा। पर तुमने नहीं माना। पर क्रुद्ध हो लड़ने गये। तुम्हारा सारा कुल युद्ध में मिटा। यह देखकर भी तुमने श्रीराम से मित्रता नहीं की और मौत बुला ली ! पर अच्छा हुआ कि श्रीराम का पराक्रम प्रत्यक्ष जान पाये तभी मरे। ३८६१

मन्ऱन्मा मलरोनुम् वडिमळुवाट् पडैयोनुम् वरङ्ग ळीन्द
ऒन्ऱला दनवुडैय मुडियोडुम् बॊडियाहि युदिर्न्दु पोन
अन्ऱुना नुणर्न्दिलैये यानालुम् वानाट्टै यणुहा निन्ऱ
इन्ऱुना नुणर्न्दनैये यिरामना रियावरुक्कु मिऱैव नादल् 3862

मन्ऱल्–सुगंधित; मा मलरोनुम्–बड़े कमल का वासी; वटि–और तीक्ष्ण; मळुवाळ्–परशु नाम के; पटैयोनुम्–हथियार के धारक; ईन्त–द्वारा दत्त; वरङ्कळ्–वर; ऒन्ऱु अलातन उटैय–एक नहीं अनेक (दस); मुटियोटुम्–सिरों के साथ; पॊटि आकि–चूर हुए; उतिर्न्तु पोन–चू गये; अन्ऱु नान्–उस दिन; उणर्न्तिलैये–नहीं समझे; आनालुम्–तो भी; वान् नाट्टै–स्वर्गलोक को; अणुका निन्ऱ–पहुँच जो गये; इन्ऱु नान्–आज ही; इरामनार्–श्रीराम का; यावरुक्कुम्–सभी का; इऱैवन् आतल्–ईश्वर रहना; उणर्न्तनैये–समझे तो। ३८६२

सुगंध-कमल-वासी और तीक्ष्ण परशुधर शिव के द्वारा दत्त वर, दस सिर —सभी चूर हुए और बिखर गये। पहले तुमने नहीं जाना था सही ! क्या कम से कम आज, जब तुम वीरस्वर्ग पहुँच गये हो, समझ पाये कि श्रीराम सर्वेश्वर हैं ? । ३८६२

वीरना डुऱ्ऱायो विरिञ्जनाम् यावरुक्कु मेला मुन्ऱन्
पेरना डुऱ्ऱायो पिऱैशूडुम् बिञ्जहन्ऱन् पुरम् बॊऱ्ऱायो

आरणा वुत्तुयिरै यञ्जादे कॉण्डहन्ऱा रदॅला निऱ्क
मारत्तार् वलियाट्टन् दविऱ्न्दारो कुळिर्न्दात्तो मदिय मॅन्बान् 3863

वीरर् नाट्टु–वीरों के (स्वर्ग) लोक; उऱ्ऱायो–पहुँचे क्या; विरिञ्चन् भाम्–विरंचि; यावरुक्कुम् मेलाम्–सर्वश्रेष्ठ; उत्ऱत्–तुम्हारे; पेरन् नाट्टु–दादा के लोक; उऱ्ऱायो–पहुँचे; पिऱै चूट्टम्–चन्द्रधर; पिञ्ञकत् तन्–शिव के; पुरम् पॅऱ्ऱायो–लोक पहुँचे; अणा–बड़े भैया; उन् उयिरै–तुम्हारे प्राणों को; अञ्चाते–बेखटके; कॉण्ट्टु अकन्ऱार्–ले जो गया; आऱ्–वह कौन है; अतु ॲलाम्–वह सब; निऱ्क–एक ओर रहे; मारत्तार्–मारदेव; वलि आट्टम्–अपने बल का नाच; तविऱ्न्तारो–छोड़ गये क्या; मतियम् ॲन्पात्–चन्द्र जो है वह; कुळिर्न्तात्तो–शीतल बना क्या। ३८६३

क्या तुम वीरस्वर्ग चले हो ? या अपने दादा विरंचि के लोक पहुँचे हो ? या चंद्रकलाधर शिवजी के स्थान को ? हे मेरे बड़े भैया ! तुम्हारे प्राणों को, बेखटके ले जानेवाला कौन है ? वह रहे ! क्या मारदेव ने अपने पराक्रम का नाच (प्रदर्शन) अभी छोड़ दिया ? चाँद भी शीतल हो गया क्या ? । ३८६३

कॉल्लाद मैत्तुनन्नैक् कॉन्ऱायॅन् ऱुकुऱित्तुक् कॉडुमै शूळ्न्दु
पल्लाले यिदळदुक्कुङ् गॉडुम्बावि नॅड्डुम्बारिऱ् पळितीर्न् दाळो
नल्लारुन् दीयारु नरहत्तार् शॊर्क्कतार् नम्बि नम्मो
डॅल्लारुम् बहैञरे यार्मुहत्ते विळिक्कित्ऱा यॅळियै यानाय् 3864

कॉल्लात–न मारने योग्य; मैत्तुनन्–बहनोई को; कॉन्ऱाय्–तुमने मारा; ॲन्ऱु कुऱित्तु–यह सोचकर; कॉट्मै चूळ्न्तु–वैर साधकर; पल्लाले–दाँतों से; इतळ् अतुक्कुम्–अधर काटनेवाली; कॉट्टु पावि–क्रूर पापिनी ने; नॅट्टु पारिल्–बड़ी भूमि पर; पळि तीर्न्ताळो–बदला चुकाया क्या; नम्पि–हे पुरुषश्रेष्ठ; नरकत्तार्–नरकवासी और; चॊर्क्कत्तार्–स्वर्गवासी; तीयारुम्–बुरे लोग; नल्लारुम्–अच्छे लोग; ॲल्लारुम्–सभी; नम्मोट्टु–हमारे विरोधी; पकैञरे–शत्रु ही हैं; यार् मुकत्ते–किसके मुख पर; विळिक्कित्ऱाय्–दृष्टि डालते हो; ॲळिमै आताय्–हलके बन गये। ३८६४

तुमने अपने बहनोई (विद्युज्जिह्वा) को, जिसे मारना उचित नहीं था, मार दिया था। उससे पापिनी बहिन शूर्पणखा खफ़ा हुई और क्या उसने अधर दाँतों से काटते हुए तुमसे इस विशाल भूमि पर बदला ले लिया ? हे पुरुषश्रेष्ठ ! नरकवासी क्या, स्वर्गवासी; बुरे लोग क्या, अच्छे लोग —सभी तुमसे शत्रुता करनेवाले ही हैं ! फिर अब किसके मुख पर दृष्टि डालोगे ? तुम हलके हो गये ! । ३८६४

पोर्महळैक् कलैमहळैप् पुहळ्महळैत् तळुवियकै पॊऱामै कूरच्
चीर्महळैत् तिरुमहळैत् तेवर्क्कुम् दॅरिवरिय दॅय्वक् कऱ्पिन्

पेर्महळैत् तऴ्वुवा नुयिर्होंडुत्तुप् पऴिहॊण्ड पित्ता पिन्नैप्
पार्महळैत् तऴ्विनैयो तिशैयानै मरुप्पिरुत्त पणैत्त मार्बाल् 3865

पोर् मकळै–विजयश्री को; कलै मकळै–सरस्वती को; पुकऴ्मकळै–यशश्री को; तऴ्विय कै–आलिंगन करनेवाले हाथ; पॊरामै कूर–ईर्ष्या में बढ़कर; चीर्मकळै–श्रेष्ठ देवी; तिरुमकळै–श्री को; तेवर्क्कुम्–देवों से भी; तॆरिवु अरिय–अज्ञेय; तॆय्वम् कर्पिऩ्–दिव्य पातिव्रत्य की; पेर्मकळै–बड़ी देवी को; तऴुवुवान्–गले लगाने हेतु; उयिर् कॊटुत्तु–प्राण देकर; पऴि कॊण्ट–कलंक लेकर; पित्ता–हे उन्मत्त; तिचै यानै–दिग्गजों के; मरुप्पु इरुत्त–दाँत तोड़नेवाले; पणैत्त मार्पाल्–स्थूल वक्ष से; पिन्नै–फिर; पार्मकळै–भूदेवी को; तऴुविनैयो–लगा लिया क्या। ३८६५

तुम्हारे हाथों ने विजयश्री को, सरस्वती को और यश की देवी को आलिंगन किया था। पर उन्हें ईर्ष्यावश कराके श्रेष्ठ देवी, श्रीलक्ष्मी, देवों से भी अज्ञेय पातिव्रत्य की देवी सीता का आलिंगन करना चाहने लगे। पर जान देकर निंदा कमा लेनेवाले हे उन्मत्त! फिर दिग्गज-दंत-भंजक मोटी छाती से भूदेवी का आलिंगन करके पड़े रहते हो क्या? । ३८६५

ऎन्ऱेङ्गि यरऱुवान् तऩैयॆडुत्तुच् चाम्बवना मॆण्गिन् वेन्दन्
कुन्ऱोङ्गु नॆडुन्दोळाय् विदिनिलैयै मदियाद कॊळ्हैत् ताहिच्
चॆन्ऱोङ्गु मुणर्विनैयो तेऱादे यऴुन्दुदियो वॆन्नत् तेऱि
निन्ऱानप् पुऱत्तरक्क निलैकेट्टाळ् मयन्पयन्द नॆडुङ्गट् पावै 3866

ऎन्ऱु एङ्कि–ऐसा दुःख करके; अरऱुवान् तऩै–विलापनेवाले उसे; ऎटुत्तु–उठाकर; चाम्पवताम्–जाम्बवान; ऎण्किन् वेन्तन्–ऋक्षराज ने; कुन्ऱु ओङ्कु–पर्वतोन्नत; नॆटु तोळाय्–विशाल भुजावाले; विति निलैयै–विधि का विधान; मतियात–न मानने के; कॊळ्कैत्तु आकि–सिद्धान्त वाला बनकर; चॆन्ऱु ओङ्कुम्–जाकर बढ़नेवाले; उणर्विनैयो–भाव के हो गये क्या; तेऱाते–न संभलकर; अऴुन्तितियो–मग्न हो जाओगे; ऎन्न–ऐसा कहा तब; तेऱि–सँभलकर; अ पुऱत्तु–एक ओर; निन्ऱान्–खड़ा हो गया; मयन् पयन्त–मय-दुहिता; नॆटु कण् पावै–आयताक्षी प्रतिमा-सी मंदोदरी ने; अरक्कन् निलै–राक्षस का हाल; केट्टाळ्–सुना। ३८६६

दुःख से विभीषण विलाप करता रो रहा था। ऋक्षराज जाम्बवान ने उसे उठाया और धीरज दिलाया। हे पर्वतोन्नत कंधोंवाले! विधि की गति को न मानने का सिद्धांत अपना लेकर अपनी इच्छानुसार चलनेवाले विचार-भाव के हो गये हो क्या? सँभलोगे नहीं और दुःख में मग्न हो रहोगे क्या? तब विभीषण सँभला और एक ओर खड़ा रह गया। तब मयसुता, आयताक्षी प्रतिमा-सी सुंदरी मंदोदरी ने रावण का हाल सुना। ३८६६

अऩन्दऩ् ऱायिर मरक्कर् मङ्गैमार्
पुऩैन्दपूङ् गुळल्विरित् तरऱ्ऱुम् बूशलार्
इऩन्दोडर्न् दुडऩ्वर वेहिऩा ळॆऩ्ब
निऩैन्ददु मऱन्ददु मिलाद नॆञ्जिऩाळ् 3867

अऩन्तम् नूऱु आयिरम्–अनंत लाख; अरक्कर् मङ्कैमार्–राक्षसस्त्रियाँ; पुऩैन्त–अलंकृत; पू कुळल्–नरम केश; विरित्तु अरऱ्ऱुम्–खोलकर विलाप करते; पूचलार्–शोर के साथ; इऩम् तॊटर्न्तु–भीड़ में पीछा करके; उटऩ् वर–साथ आयीं ऐसा; निऩैन्ततुम् मऱन्ततुम्–स्मरण, विस्मरण; इलात नॆञ्चिऩाळ्–से रहित मनवाली (मंदोदरी); एकिऩाळ्–आयी। ३८६७

वह स्मरण या विस्मरण से रहित मनवाली बनकर आयी और उसके चारों ओर अनंत लाख राक्षसियाँ अलंकृत अपने नरम केश खोल बिखेरकर रोती-कलपती हुई, उसे घेरे साथ आयीं। ३८६७

इरक्कमुन् दरुममुन् दुणैक्कॊण् डिऩ्ऩुयिर्
पुरक्कुनल् कुलत्तुवन् दॊरुवऩ् पूण्डदोर्
परक्कळि यामॆऩप् परन्दु नीण्डदाल्
अरक्कियर् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱु मोदैये 3868

इरक्कमुम्–अनुताप; तरुममुम्–और धर्म को; तुणै कॊण्टु–साथी बनाकर; इऩ् उयिर्–प्यारे प्राणों का; पुरक्कुम्–पालन करनेवाले; नल् कुलत्तु–श्रेष्ठ कुल में; वन्त ऒरुवऩ्–उदित एक ने; पूण्टतु ओर्–जो अर्जन किया; परक्कळि–उस अपयश; आम् ऎऩ–के समान; अरक्कियर्–राक्षसियों का; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱुम् ओतै–क्रंदन करने का स्वर; परन्तु नीण्टतु–फैला और बढ़ा। ३८६८

दया, धर्म आदि को अपना साथी बनाकर जीवरक्षण में अपना जीवन बितानेवाले सत्कुल-जात किसी के द्वारा अर्जित कलंक के समान राक्षसियों का खुले मुख से निर्गत विलाप का स्वर खूब फैला और वर्धित हुआ। ३८६८

नूबुरम् बुलम्बिडच् चिलम्बु नॊन्दळक्
कोबुरन् दोऱुम्बुऱङ् गुऱुहि ऩार्शिलर्
आबुरन् दरऩ्पहै यऱ्ऱ दामॆऩा
माबुरन् दविर्न्दुविण् वळिच्चॆऩ् ऱार्शिलर् 3869

नूपुरम् पुलम्पिट–नूपुर बोले; चिलम्पु–पायलें; नॊन्तु अळ–दुःखी हो रोयीं; कोपुरम् तोऱुम्–गोपुर-गोपुर से; पुऱम्–बाहर; चिलर् कुऱुकिऩार्–कुछ आयीं; चिलर्–कुछ; पुरन्तरऩ्–पुरंदर; पकै–शत्रु से; अऱ्ऱतु आम्–रहित हो गया; ऎऩा–ऐसा कहकर; मा पुरम्–अपने शरीर; तविर्न्तु–छोड़कर; विण्वळि–आकाश-मार्ग में; चॆऩ्ऱार्–गयीं। ३८६९

उनके नूपुर रुदन-स्वर निकाल रहे थे। पायलें विलाप करती थीं।

गोद्वारों से कुछ आयीं; अन्य कुछ राक्षसियाँ 'पुरन्दर शत्रुहीन हो गया, हाय !' कहते हुए अपने बहुत तगड़े शरीरों को छोड़कर स्वर्ग के मार्ग में चली गयीं। ३८६९

अऴैप्पॊलि मुऴक्कॆऴ वऴहु मिऩ्ऩिडक्
कुऴैप्पॊलि नल्लणिक् कुलङ्गळ् विल्लिड
उऴैप्पॊलि वुण्गणीर्त् तारै मीदुह
मऴैप्पॆरुङ् गुलमॆऩ वाऩ्वऩ् दार्शिलर् 3870

अऴैप्पु ऑलि–पुकार का स्वर; मुऴक्कु ऍऴ–वज्र के समान उठा; मऴकु मिऩ्ऩिट–सुन्दरता बिजली-सी चमकी; कुऴै–कुंडल; पॊलि–छविमय; नल् अणि–श्रेष्ठ आभरण; कुलक्कळ्–समूह; विल् इट–धनु के समान विलसे; उऴै पॊलि–हरिण-सम; उण् कण्–काजल-लगी आँखें; नीर् तारै–अश्रुधारा; मीतु उक–शरीर पर गिरि; मऴै पॆरु–बड़ी वर्षा के; कुलम् ऍऩ–समूहों के समान; चिलर्–कुछ; वाऩ् वऩ्तार्–आकाश-मार्ग से आयीं। ३८७०

कुछ पुकार मचाती आयीं। उनका स्वर वज्र के समान सुनायी दे रहा था। सुंदरता चमक रही थी। छविमय कुंडल आदि आभरणों का समूह प्रकाश का धनु छिटका रहे थे। हरिणों की-सी काजल-लगी आँखों से अश्रुधारा निकलकर उनके शरीर पर गिर रही थी। इस स्थिति में वर्षा के बड़े समूहों के समान कुछ राक्षसियाँ आकाश के मार्ग से आयीं। ३८७०

तलैमिशैत् ताङ्गिय करत्तर् तारैनीर्
मुलैमिशैत् तूङ्गिय मुहत्तर् मॊय्त्तुवऩ्
वलैमिशैक् कडलिऩ्वी ऴऩ्ऩम् बोलवऩ्
मलैमिशैत् तोळ्हळ्मेल् वीऴ्न्दु माऴ्हिऩार् 3871

तलै मिचै–सिरों पर; ताङ्किय–धृत; करत्तर्–हाथोंवालियाँ; तारै नीर्–धारा के अश्रु; मुलै मिचै–स्तनों पर; तूङ्किय–गिरें ऐसा; मुकत्तर्–(विनत) वदन वालियाँ; मॊय्त्तु वऩ्तु–भीड़ लगाती आकर; कटलिऩ्–समुद्र की; अलै मिचै–तरंगों पर; वीऴ्–गिरते; अऩ्ऩम् पोल्–हंसों के समान; अवऩ्–उस रावण के; मलै मिचै–पर्वत से भी उन्नत; तोळ्कळ् मेल्–कन्धों पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; माऴ्किऩार्–मूर्च्छित हुईं। ३८७१

वे स्त्रियाँ, जिनके हाथ सिर पर रखे हुए थे और जिनके मुख अवनत थे, जिसके कारण उनके अश्रु की धाराएँ स्तनों के अग्र भाग पर गिर रही थीं, समुद्र की तरंगों पर गिरनेवाले हंसों के समान रावण के पर्वतोन्नत कंधों पर गिरीं और मूर्छित हुईं। ३८७१

तऴ्विऩर् तऴुविऩर् तलैयुऩ् वाळ्हळुम्

कुळुवित्तर् मुऱैमुऱै कूऱु कूऱुकॊण्
डळुदत्त रयर्त्तत्त ररक्कि मार्हळे 3872

अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; कुळुवित्तर्–भीड़ में; तलैयुम्–सिरों; ताळ्कळुम्–पैरों; ऍळु–लोहस्तंभ के समान; उयर्–उन्नत; पुयक्कळुम्–भुजाओं को; मार्पु–छाती; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; कूऱु कूऱु कॊण्टु–अलग-अलग भाग बनाकर; तळुवित्तर् तळुवित्तर्–अपने से लगा-लगाकर; अळुतत्तर्–रोयीं; अयर्त्तत्तर्–जर्जर हुईं। ३८७२

राक्षसियाँ भीड़ लगाकर आयीं। रावण के सिरों, पैरों, स्तंभ-सम कंधों और छाती आदि अंगों का बारी-बारी से उन पर अपना हक़ निश्चित करके गले लगा-लगाकर रोयीं और जर्जर हुईं। ३८७२

वरुत्तमे दॆन्तिनु पुलवि यॆहलुम्
वीरुत्तमे वाळ्वॆनप् पॊळुदु पोक्कित्तार्
ऑरुत्तर्मे लॊरुत्तर्वीळ्न् दुयिरिऱ् पुल्लित्तार्
तिरुत्तमे यत्तैयवन् शिहरत् तोळ्हळ्मेल् 3873

वरुत्तम् एतु–दुःख क्या; ऍन्तिन्–पूछो तो; अतु पुलवि–वह रूठन भी; यॆकलुम्–रूठन के समय में भी; वाळ्वु–जीवन; पॊरुत्तमे–योग्य ही है; ऍन–मानकर; पॊळुतु पोक्कित्तार्–समय बिता रही थीं; तिरुत्तमे अत्तैयवन्–(वीरता के) घाट के समान उसके; चिकरम् तोळ्कळ् मेल्–शिखरोपम कंधों पर; ऑरुत्तर् मेल्–एक के ऊपर; ऑरुत्तर् वीळ्न्तु–एक गिरकर; उयिरिल् पुल्लित्तार्–प्राणों के समान कस लिया। ३८७३

उनके दुःख का हेतु क्या था? वह उनकी रूठन था। रूठते हुए भी वे जीवन को जीने योग्य मानती थीं इस अभिमान से कि हम रावण की प्रेमिकाएँ हैं। वीरता के घाट के समान रहे रावण के शिखरोपम कंधों पर एक-एक करके वे गिरीं औरअपने प्राणों को जैसे कसकर पकड़ा। ३८७३

इयक्किय ररक्किय दरह रेळैयर्
मयक्कमिल् शित्तियर् विज्जै मङ्गैयर्
मुयक्कियन् मुऱैकॆड मुयङ्गि तार्हळ्तम्
तुयक्किला वन्बुमूण् डॆवरुञ् जोरवे 3874

इयक्कियर्–यक्षस्त्रियाँ; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; उरकर् एळैयर्–उरग-कन्याएँ; मयक्कम् इल्–अभ्रांत; चित्तियर्–सिद्धस्त्रियाँ; विज्जै मङ्कैयर्–विद्याधर-महिलाएँ; ऍवरुम्–सभी; तम्–अपने; तुयक्कु इला–अक्षय; अन्पु मूण्टु–प्रेमाधिक्य से; चोर–जर्जर बनकर; मुयक्कियल्–आलिंगन का; मुऱै कॆट–क्रम भंग करके; मुयङ्कितार्कळ्–आलिंगन करतीं। ३८७४

यक्षबालाएँ, राक्षसियाँ, उरगकन्याएँ, अभ्रांत सिद्धस्त्रियाँ, विद्याधर-

रमणियाँ —सभी अपने अक्षय प्रेम की प्रेरणा से मृत रावण को देखकर शिथिल हुईं और (आलिंगन का) क्रम भंग करके आलिंगन करके रोयीं। ३८७४

अऱन्दोलै वुऱमतत् तडैत्त शीदैयै
मऱन्दिलै योविनु मॅमक्कुन् वाय्मलर्
तिऱन्दिलै विऴित्तिलै यरुळुञ् जॅय्हिलै
इऱन्दनै योवॅन विरङ्गि येङ्गिनार् 3875

अऱम्–धर्म का; तोलैत्तु उऱ–नाश करके; मनत्तु–मन में; अटैत्त–बंद की हुई; चीतैयै–सीता को; इन्नुम्–अब भी; मऱन्तिलैयो–भूले नहीं क्या; ऍमक्कु–हमें; उन् वाय् मलर्–अपने मुख का फूल; अळित्तिलै–(वचन) नहीं देते; विऴित्तिलै–आँखें नहीं खोलते; अरुळुम् चॅय्किलै–दया नहीं करते; इऱन्तनैयो–मर गये क्या; ऍन्न–ऐसा; इरङ्कि–दुःख करके; एङ्किनार्–रोयीं। ३८७५

वे मुख खोलकर कलपने लगीं ! धर्म का क्रम नष्ट करके तुमने अपने मन में सीता को बंद कर रखा था ? क्या अब भी तुम उसे नहीं भूले ? हमें अपने मुख का (वाणी रूपी) फूल नहीं देते ! आँख खोलकर नहीं देखते ! दया नहीं करते ! क्या तुम सचमुच मर गये ? । ३८७५

तरङ्गनीर् वेलैयिऱ् ऱडित्तु वीऴ्न्दॅन
उरङ्गिळर् मदुहैया नुरत्ति नुऱ्ऱनळ्
मरङ्गळु मलैहळु मुरुह वाय्तिऱन्
दिरङ्गिनळ् मयन्महळ् ळिनैय पन्निनाळ् 3876

मयन् मकळ्–मय-सुता मंदोदरी ने; उरम् किळर्–दृढ़चित्त; मतुकैयान्–बलवान रावण के; उरत्तिन्–वक्ष पर; तरङ्कम् नीर्–तरंग-सहित जल के; वेलैयिल्–सागर पर; तडित्तु वीऴ्न्तॅन–बिजली गिरी जैसे; उऱ्ऱनळ्–लगकर; मरङ्कळुम्–तरु और; मलैकळुम्–पर्वत; उरुक–पिघल जायं ऐसा; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; इरङ्किनळ्–व्याकुलता के साथ; इनैय पन्निनाळ्–ये बातें कहीं। ३८७६

मयतनया मंदोदरी शरीर व मनोबल युक्त रावण की छाती पर तरंग-संकुल समुद्र पर गिरती तड़ित् के समान गिरी और मुख खोलकर निम्नोक्त प्रकार से विलाप करती रोयीं जिसे सुनकर तरु और पर्वत भी पिघलने लगे। ३८७६

अन्नैयो वन्नैयो वाक्कॊडियेर् फडुत्तवा ऱरक्कर् वेन्दन्
पिन्नैयो विऱप्पदुमुन् पिडित्तिरुन्द करुत्तदुवुम् बिडित्ति लेनो
मुन्नैयो विळ्न्वदुवु मुडित्तलैयो पडित्तलैय मुहङ्गळ् तानो
अन्नैयो वन्नैयो विरावणनार् मुडिन्दपरि शिदुवो पावम् 3877

अन्नैयो अन्नैयो–हाय, हाय; कॉटियेऩ्कु–कठोर मुझे; अट्टुत्तवारु आ–क्या ही हो गया; अरक्कर् वेन्तऩ्–राक्षसराजा के; पिन्नैयो इऱप्पतु–बाद ही क्या मुझे मरना था; मुऩ्–पहले से; पिटित्तिरुन्त–जो (विचार) रखती थी; करुत्तुवुम्–वह विचार; पिटित्तिलेत्तो–दृढ़ता से नहीं रखती थी क्या; मुन्नैयो–सामने; विऴुन्ततुवुम्–गिरे जो पड़े हैं; मुटि तलैयो–वे क्या (रावण के) मुकुट-मंडित सिर हैं; पटि तलैय–भूमि पर दिखनेवाले; मुकङ्कळ् तातो–उनके मुख हैं क्या; इरावणऩार्–रावण के; मुटिन्त परिचु–अंत का प्रकार; इतुवो–क्या यही; ऍन्नैयो ऍन्नैयो–क्या ही, क्या ही। ३८७७

हाय, हाय ! मैं क्रूरा हूँ ! मुझे जो हुआ वह हाल भी कैसा (संकट-मय) है ! राक्षसराज के मरने के बाद ही मेरी मृत्यु का होना था क्या ? पहले से जो विचार (एक साथ मरने का) रखती थी उसको बीच में मैंने छोड़ दिया था क्या ? हाय ! मेरे समक्ष जो पड़े रहते हैं क्या वे सचमुच मुकुटमंडित सिर हैं ? भूमि पर जो पड़े दिखते क्या वे मेरे प्राणनाथ के मुख हैं ? रावण का अंत भी ऐसा हुआ ? क्या ही अनर्थ हो गया ? कैसी (बात है), कैसा (विपरीत) है ? । ३८७७

वॆळ्ळॆरुक्कञ् जडैमुडियान् वॆऱ्पॆडुत्त तिरुमेऩि मेलुङ् गीऴुम्
ऍळ्ळिरुक्कु मिडमिन्ऱि युयिरुक्कु मिडनाडि यिऴैत्त वाऱो
कळ्ळिरुक्कु मलर्क्कून्दऱ् चाऩहियै मऩच्चिऱैयिर् करन्द कादल्
उळ्ळिरुक्कु मॆऩक्करुदि युडल्पुहुन्दु तडवियदो वॊरुवऩ् वाळि 3878

ऑरुवन् वाळि–अप्रतिम श्रीराम का शर; वॆळ्–सफ़ेद; ऍरुक्कम्–अर्क-भूषित; चडै मुटियान्–जटाधारी सिर के शिव के; वॆऱ्पु–(कैलास) पर्वत को; ऍटुत्त–जिन्होंने उठाया; तिरुमेऩि–उनके शरीर को; मेलुम् कीऴुम्–ऊपर और नीचे; ऍळ् इरुक्कुम्–तिल रखने का; इटम् इन्ऱि–स्थान न छोड़कर; उयिर् इरुक्कुम्–प्राणों के रहने का; इटम् नाटि–स्थान खोजकर; इऴैत्त आऱो–करने का प्रकार क्या; कळ् इरुक्कुम्–मधु जिसमें रहता है; मलर् कून्तल्–ऐसे फूलों के केशवाली; चाऩकियै–जानकी को; मऩम् चिऱैयिल्–मन की कारा में; करन्त कातल्–जिसने छिपा रखा था वह प्रेम; उळ् इरुक्कुम्–अंदर रहेगा; ऍऩ करुति–ऐसा सोचकर; उटल् पुकुन्तु–शरीर में घुसकर; तटवियतो–टटोला क्या। ३८७८

श्वेत मदार के पुष्पों से शोभायमान जटा के धारक श्रीशिवजी के कैलास पर्वत को जिन्होंने उठाया था उन रावण के श्रीशरीर के अंदर और बाहर, ऊपर और नीचे तिल भर का स्थान न छोड़कर क्या अप्रतिम नायक श्रीराम का शर प्राणों का स्थान खोजता फिरा ? यह हाल उसी सिलसिले में हुआ था क्या ? या उस शर ने यह सोचकर टटोला था कि मधुपूरित सुमनमंडित केशवाली सीता को मन की कारा में बंद रखनेवाला प्रेम इसी शरीर के अंदर तो कहीं छिपा रहेगा ! ३८७८

आरम्बोर् तिरुमार्बै यहत्मुळैह ळॆनत्तिऱन्दिव् वुलहुक् कप्पाल्
तूरम्बो यिनवीरुवन् शिलैतुरन्द शडङ्गळे पोरिऱ् ऱोऱ्ऱुम्
वीरम्बो युरङ्गुऱैन्दु वरङ्गुऱैन्दु विळुन्दनैये वेऱे कॆट्टेन्
ओरम्बो युयिर्परुहिऱ् ऱिरावणने मानुडव नूऱ्ऱ मीदो 3879

ऑरुवन् चिलै–अद्वितीय श्रीराम का धनु; तुरन्त चरङ्कळ्–जो निकालता था वे शर; आरम् पोर्–हारालंकृत; तिरुमार्पै–श्रीवक्ष को; अकल् मुळैकळ्–खुली गुहाओं; अॅन–के समान; तिऱन्तु–खोलकर; इव् उलक्ककु–इस लोक के; अप्पाल्–बाहर; तूरम् पोयिन–बहुत दूर चले गये; पोरिल् तोऱ्ऱुम्–युद्ध में दिखं; वीरम् पोय्–वीरता गयी; उरम् कुऱैन्तु–शक्ति क्षीण हुई; वरम् कुऱैन्तु–वर क्षीण हुए; एऱे–केसरी; विळुन्ततैये–मर गये तो; ओरम् पोय्–पक्षपात छोड़कर; इरावणने–रावण के; उयिर् परुकिऱ्ऱु–प्राण पी गये; मानुटवन्–मनुष्य का; ऊऱ्ऱम्–साहस; ईतो–क्या यही है। ३८७९

अद्वितीय श्रीराम के शर हारशोभित श्रीवक्ष को खुली गुहाओं के समान विदीर्ण करके इस लोक के बाहर दूर चले गये। युद्ध में जो दिखाते थे वह वीरता खोकर साहस से हाथ धोकर और वर भी गँवाकर, हे केशरी-सम पतिदेव ! तुम चल बसे ! श्रीराम के शरों ने निष्पक्ष होकर तुम्हारे प्राण पी लिये ! क्या मनुष्य का भी इतना बल होगा ? (अब तक जानती ही नहीं थी)। ३८७९

कान्दैयरुक् कणियनैय शानहियार् पेरळहु मवर्दङ् गऱ्पुम्
एन्दुपुयत् तिरावणनार् कादलुमच् चूर्प्पणहै यिळन्द मूक्कुम्
वेन्दर्पिरान् तयरदनार् पणियिनाल् वॆङ्गानिल् विरदम् बूण्डु
पोन्ददुवुङ् गडमुऱैये पुरन्दरनार् पॆरुन्दवमाय्प् पोयिऱ् ऱम्मा 3880

कान्तैयरुक्कु–स्त्रियों के; अणि अनैय–शृंगार-रूप; चानकियार्–जानकी की; पेर अऴकुम्–बड़ी सुन्दरता; अवर् तम् कऱ्पुम्–और उनका पातिव्रत्य; एन्तु पुयत्तु–और उन्नत भुजावाले; इरावणनार् कातलुम्–रावण का प्रेम; अ चूर्प्पणकै–उस शूर्पणखा की; इऴन्त मूक्कुम्–खोयी नाक; वेन्तर् पिरान्–और राजाधिराज के; तयरतनार्–दशरथ के; पणियिनाल्–हुक्म से; वॆम् कानिल्–भयंकर वन में; विरतम् पूण्टु–व्रत धारण कर; पोन्ततुवुम्–आना और; कटै मुऱैये–आखिरकार; पुरन्तरनार्–पुरंदर का; पॆरुन्तवमाय्–बड़ा तप; पोयिऱ्ऱु–बन गये। ३८८०

स्त्रियों का शृंगार रूप जो हैं उन सीता की अपार सुन्दरता, उनका पातिव्रत्य, उन्नत भुजाओंवाले रावण का प्रेम, शूर्पणखा की खोयी नाक, राजाधिराज दशरथ की आज्ञा से भयंकर जंगल में कठोर व्रत धारण करके राम का आना —यह सब आखिर पुरंदर की तपस्या के फल हो गया। ३८८०

तेवर्क्कुन् दिशैक्करिक्कुञ् जिवनार्क्कु मयनार्क्कुञ् जॆङ्गण् माऱ्कुम्
एवर्क्कुम् वलियातुक् कॊन्ऱुण्डा मिऴुदियॆन वेमाप् पुऱ्ऱेन्

आवऱ्क णीयुळऩ्ऩ् वरुन्दवत्तिऩ् पॆरुङ्गडऱ्कुम् वरमॆऩ् ऱाऩ्ऱ
कावऱ्कुम् वलियाऩोर् माऩुडव ऩुळऩॆऩ्ऩक् करुदि ऩेऩो 3881

तेवर्क्कुम्–देवों का; तिचै करिक्कुम्–दिग्गजों का; चिवऩार्क्कुम्–शिव का; अयऩार्क्कुम्–ब्रह्मा का; चॆम् कण्–अरुणाक्ष; माऱ्कुम्–श्रीविष्णु का; एवर्क्कुम्–अन्यों का; वलियाऩुक्कु–बलवान का; इऱुति ऎऩ्ऱु–अंत कहाँ; उण्टाम्–होगा (होगा नहीं); ऎऩ–ऐसा; एमाप्पु–गर्व; उऱ्ऱेऩ्–करती रही; नी आवल् कण्–तुम उत्साह के साथ; उऴऩ्ऱु–कष्ट करके; अरु–कठिन; पॆरु कटल्–बड़े सागर; तवत्तिऱ्कुम्–(के समान) तपस्या का और; वरम् ऎऩ्ऱु–वर रूपी; आऩ्ऱ कावऱ्कुम्–श्रेष्ठ रक्षा का (अंत); ओर्–अनुपम; वलियाऩ्–बलवान; माऩुटवऩ्–मनुष्य; उळऩ् ऎऩ्ऩ–है ऐसा; करुतिऩेऩो–सोचा था क्या (मैंने)। ३८८१

देवों, दिग्गजों, शिव, अज, अरुणाक्ष श्रीमन्नारायण और सबसे बलवान रावण का अंत होगा कब (होगा ही नहीं) ? ऐसा मैं गर्व के साथ सोचती रही। तुमने बहुत क्लेश उठाकर सागर-सा विशाल तप किया था और अनेक वर पाये थे। उन सबका अंतक एक मानव है, मैंने ऐसा सोचा था क्या ? । ३८८१

अरैकडैयिट् टमैवुऱ्ऱ मुक्कोडि यायुवुम्बे रऱिञर्क् कॆयुम्
उरैकडैयिट् टळप्परिय पेराऱ्ऱऱ् ऱोळाऱ्ऱऱ् कुलप्पो विल्लै
तिरैकडैयिट् टळप्परिय वरमॆऩ्ऩुम् बाऱ्कडलैच् चीदै यॆऩ्ऩुम्
पिरैकडैयिट् टऴिप्पदऩै यऱिन्देऩो तवप्पयऩिऩ् पॆरुमै पाऱ्प्पेऩ् 3882

अरै कटैयिट्टु–आधे को मिलाकर; अमैवुऱ्ऱ–जो रहती है; मुक्कोटि आयुवुम्–तीन करोड़ आयु; पेर् अऱिञर्क्कॆयुम्–बड़े पण्डितों के लिए भी; उरै–शब्दों से; कटै इट्टु–अन्त लगाकर; अळप्पु अरिय–आँकने में कठिन; पेर् आऱ्ऱल्–बड़े बली; तोळ् आऱ्ऱऱ्कु–कंधों के प्रताप का; उलप्पु इल्लै–अंत नहीं; तवम् पयऩिऩ्–तपस्या के फल की; पॆरुमै पाऱ्प्पेऩ्–महिमा सोचती रही; तिरै कटै इट्टु–तरंगों का अंत बताकर; अळप्पु अरिय–अमाप; वरम् ऎऩ्ऩुम्–वर रूपी; पाल् कटलै–क्षीर-सागर को; चीतै ऎऩ्ऩुम्–सीता नाम का; पिरै–जामन; कटै इट्टु–अंत में डालकर; अऴिप्पतऩै–मिटाना; अऱिन्तेऩो–क्या मैंने जाना था। ३८८२

साढ़े तीन करोड़ की आयु का और बड़े-बड़े ज्ञानी विद्वानों के कथनों से भी अमाप तुम्हारे भुजबल का नाश कभी नहीं होगा ! ऐसा सोचती रही मैं। तुम्हारी तपस्या पर इतराती रही। पर तुम्हारे वर रूपी अनंत तरंगों से पूर्ण क्षीरसागर को सीता रूपी जामन आखिर नष्ट कर देगा— यह मैं जान ही नहीं सकी थी। ३८८२

आरता रुलहियऱ्कै यऱितक्का रवैयेऴु मेऴु मऩ्ऩुम्
वीरता रडलत्तुरऩुडु विण्पुक्कार् कण्पुक्क वेळ विल्लाल्

नारनाण् मलर्क्कणैयाल् नाळॅल्लान् दोळॅल्ला नैय वॅय्युम्
मारत्तार् तनियिलक्कै मनित्तना रळित्तनरे वरत्तिनाले 3883

उलकु इयर्कै–लोक की गति; अरितक्कार्–जानने की क्षमता; अत्तार्–रखनेवाले; आर्–कौन हैं; अवै–उन; एळुम् एळुम्–चौदहों भुवनों के; अच्चुम्–भय का पात्र; वीरत्तार्–वीर भी; उडल् तुरन्तु–शरीर छोड़कर; विण् पुक्कार्–स्वर्ग पहुँच गये; कण् पुकक–गाँठों-सहित; वेळाम् विल्लाल्–ईख के धनु से; नारम्–(भ्रमरों के) डोरे के; नाण् मलर्–ताज़े फूलों के; कणैयाल्–शरों से; नाळ् ऍल्लाम्–सदा; तोळ् ऍल्लाम्–कंधे सारे; नैय–म्लान हों ऐसा; ऍय्युम्–जो चला रहे थे; मारत्तार्–कामदेव के; तनि इलक्कै–अकेले निशाने को; मनित्तनार्–मनुष्यों ने; वरत्तिनाल्–उत्कृष्ट वर से; अळित्तनरे–मिटा दिया न। ३८८३

लोक-गति के जानने की क्षमता रखनेवाले कौन हैं ? चौदहों भुवन जिनसे डरते थे वे वीर भी मरकर स्वर्ग पहुँच गये। आख़िर एक मानव ने अपने वर के बल से मारदेव के उस निशाने को मिटा तो दिया जिस पर मन्मथ सदा गाँठों-सहित ईख के धनु के भ्रमरों के डोरे पर पुष्पशर संधान कर चलाता रहा और सदा सताता रहा ! । ३८८३

आरा वमुदा यलैहडलिर् कण्वळरुम्
नारा यणनॅन् ऱिरुप्पे निरामनैनान्
ओरादे कॊण्डहन्ऱा युत्तमनार् तेवित्तैप्
पारायो निन्तुडैय मार्बहलम् बट्टवॅल्लाम् 3884

नान्–मैं; इरामनै–श्रीराम को; आरा अमुताय्–न उबारनेवाला अमृत; अलै कडलिल्–तरंग-सागर पर; कण् वळरुम्–निद्रामग्न; नारायणन्–श्रीनारायण; ऍन्ऱु इरुप्पेन्–ऐसा सोचती रहती; ओराते–विना विचारे; उत्तमनार् तेवि तनै–उन उत्तम की पत्नी को; कॊण्टु–हर ले; अकन्ऱाय्–दूर आये; निन्तुडैय–तुम्हारे; मार्पु अकलम् पट्ट–वक्ष के विस्तार पर लगे; ऍल्लाम् पारायो–(कष्ट) सब नहीं देखोगे। ३८८४

श्रीराम ऐसा अमृत है जिससे कोई कभी नहीं अघाता। हिलते रहनेवाले क्षीरसागर पर सोनेवाले श्रीमन्नारायण है ! ऐसा मानकर रही मैं। विना विचारे उन उत्तम देव की पत्नी को तुम हर लेकर बहुत दूर आ गये। पर तुम्हारी चौड़ी छाती के विशाल प्रदेश का क्या हाल हो गया ! देखते नहीं। ३८८४

ऍन्ऱ ळैत्तन ळेङ्गि यॅळुन्दवन्, पॊन्ऱ ळैत्त पॊरुवरु मार्बिनैत्
तन्ऱ ळैक्कैह ळाऱ्ऱळ्ळु वित्तनि, निन्ऱ ळैत्तुयिर्त् ताळ्यर् नीङ्गिनाळ् 3885

ऍन्ऱु अळैत्तनळ्–ऐसा विलापती; एङ्कि–रोकर; ऍळुन्तु–उठी; अवन्–उसके; पॊन् तळैत्त–स्वर्णबहुल; पॊरु अरु–अनुपम; मार्पिनै–वक्ष को; तन्–अपने; तळै कैकळाल्–पुष्ट हाथों से; तळुवि–आलिंगन करके; तनि निन्ऱु–

अकेली खड़ी हो; अऴैत्तु–पुकारकर; उयिर्त्ताळ्–लम्बी सांसें छोड़ती; उयिर नीङ्किनाळ्–प्राण त्याग दिये। ३८८५

मंदोदरी ने इस भाँति विलाप किया। शोकाक्रांत हुई। रावण के स्वर्णालंकृत अनुपम वक्ष को अपने पुष्ट हाथों से लपेटकर आलिंगन किया। अकेली खड़ी रहकर नाम ले पुकारा। फिर निःश्वास छोड़कर वह प्राण-हीन हो गयी। ३८८५

वाऩ मङ्गैयर् विज्जैयर् मऱ्ऱुमत्, ताऩ मङ्गैय रुन्दवप् पालवर्
आऩ मङ्गैय रुम्मरुङ् गऱ्पुडै, माऩ मङ्गैयर् तामुम् वऴुत्तिऩार् 3886

वानम् मङ्कैयर्–व्योमलोक की स्त्रियाँ; विज्चैयर्–और विद्याधरियाँ; मऱ्ऱुम्–और; अ–वे; ताऩ मङ्कैयरुम्–दानवस्त्रियाँ; तवम् पालवर्–तपस्या के पक्ष में; आऩ–रहनेवाली; मङ्कैयर्–(मुनि-) स्त्रियाँ; अरु कऱ्पुटै–श्रेष्ठ पतिव्रता; मानम् मङ्कैयर् तामुम्–मानव-स्त्रियों ने; वऴुत्तिताऱ्–प्रशंसा की। ३८८६

व्योमवासिनी देवांगनाओं ने, विद्याधरियों ने, दानवस्त्रियों ने, तपस्विनी ऋषि-पत्नियों ने और पतिव्रता मानवस्त्रियों ने उसकी प्रशंसा और स्तुति की। ३८८६

पिऩ्ऩर् वीडणऩ् पेरॅऴिऱ् ऱुम्मुऩै, वऩ्ऩि कूवि वरऩ्मुऱै याऩ्मऱै
शॊऩ्ऩ वीम विदिमुऱै याऱ्ऱॊहुत्, तिऩ्ऩ नॆञ्जिनॊ डिन्दऩत् तेऩाऱ्ऱिऩ् 3887

पिऩ्ऩर्–बाद; वीटणऩ्–विभीषण; वाऩ्मुऱैयाऩ्–यथाक्रम; वऩ्ऩि कवि–अग्नि को निमंत्रण दे; मऱै चॊऩ्ऩ–वेदोक्त; ईम विति मुऱैयाल्–अपरकर्मा के क्रम में; तॊकुत्तु–पूरा करके; इऩ्ऩल् नॆञ्चित्तॊटु–दुःखपूरित मन के साथ; पेर ऍऴिल्–वीरता के सौंदर्य में बढ़े; तम् मुऩै–अपने ज्येष्ठ को; इन्तऩत्तु–इंधन पर; एऱ्ऱिऩाऩ्–चढ़ाया। ३८८७

बाद विभीषण ने यथाविधि अग्नि का आवाहन किया। वेदोक्त क्रम से दाहसंस्कार संपन्न किये। दुःखपूरित मन के साथ उसने वीरता के सौंदर्य में बढ़े अपने ज्येष्ठ भाई को चिता पर चढ़ाया। ३८८७

इन्द नत्तहिल् शन्दन मिट्टुमेल्, अन्द माऩत् तऴहुऱत् ताऩमैत्
तॆन्द वोशैयुङ् गीऴुऱ वाऱ्त्तिडै, मुन्दु शङ्गॊलि यॆङ्गु मुऴङ्गिड 3888

इन्तऩत्तु–इंधन पर; अकिल् चन्तनम् इट्टु–अगर और चंदन डालकर; मेल्–ऊपर; अन्त मानत्तु–उस विमान पर; अऴकु उऱ–सुन्दर रीति से; ताऩ् अमैत्तु–उस पर रखकर; ऍन्त ओचैयुम्–सभी शब्दों को; कीऴ् उऱ–नीचे दबाकर; इटै आर्त्तु–रह-रहकर बजने; मुन्तुम्–उठनेवाले; चङ्कु ऒलि–शंखध्वनि; ऍङ्कुम् मुऴङ्किट–सर्वत्र शब्द करे ऐसा। ३८८८

चिता में अगर और चंदन की लकड़ियाँ रखीं। उस यान के रूप

में सजी चिता पर रावण के पार्थिव शरीर को रखा। रह-रहकर शंख बजाया, जिसकी ध्वनि इतनी ऊँची थी कि सभी अन्य शब्द उसमें दब गये। ३८८८

कॊऱ्ऱ वॆण्कुडै योडु कॊडिमिडैन्, दुऱ्ऱ वीम विदियि नुडम्बडोइच्
चऱ्ऱ मादर् तॊडर्न्दुडन् शूऴ्वर, मऱ्ऱ वीरन् विदियिन् वऴङ्गिनान् 3889

कॊऱ्ऱम् वॆण्–विजयी श्वेत; कुडै ओडु–छत्र के साथ; कॊटि मिटैन्तु उऱ्ऱ–ध्वजा मिली रही; ईमम् वितियिन्–दाहकर्म के; उटम्पटी इ–अनुसार; चुऱ्ऱम्–रिश्तेदार; मातर्–और स्त्रियाँ; तॊटर्न्तु–पीछा करके; उटन्–साथ; चूऴ्न्तु वर–घेरे आयीं; मऱ्ऱु–और; अ वीरन्–उस वीर ने; वितियिन्–विधिवत्; वऴङ्कितान्–दाहसंस्कार कराया। ३८८९

विजयी श्वेत छत्र ताना गया था। ध्वजाएँ फहर रही थीं। सभी बंधु-बांधव एकत्रित थे। स्त्रियाँ भी एकत्रित हुईं। विभीषण ने विधिवत् चिता में आग लगवाकर दाहसंस्कार कराया। ३८८९

कडन्गळ् शॆय्दु मुडित्तुक् कणवनो
डुडैन्दु पोन मयन्मह ळोडुडन्
अडङ्ग वॆङ्गन लुक्कवि याक्किनान्
कुडङ्गॊळ् नीरिनुङ् गण्शोर् कुमिऴियान् 3890

कुटम् कॊळ्–घड़ों भर के; नीरिनुम्–जल से अधिक; कुमिऴियान्–बुलबुलों के साथ; कण् चोर्–अश्रु बहाते; कटन्कळ् चॆय्तु–(विभीषण ने) कृत्य करके; मुटित्तु–पूरा करके; कणवनोटु–पति के साथ; उटैन्तु पोन–जो मर गयी उस; मयन् मकळोटु उटन्–मयसुता भी; अटङ्क–राख बने ऐसा; वॆम् कनलुक्कु–गरम अग्नि का; आवि आक्कितान्–हवि बना दिया (विभीषण ने)। ३८९०

विभीषण की आँखों से घड़ों के माप का अश्रुजल बुलबुलों के साथ निकल बहता था। उसने जल-क्रिया समाप्त की। पति के साथ-साथ जो मरी उस मयसुता मंदोदरी के शरीर को भी राख बनाते हुए उसने अग्नि का हवि बना दिया। ३८९०

मऱ्ऱै योर्क्कुम् वरन्मुऱै याल्वहुत्, तुऱ्ऱ तीक्कॊडुत् तुणगुरु नीरुहुत्
तॆऱ्ऱै योर्क्कु मिवनल दिल्लॆना, वॆऱ्ऱि वीरन् कुरैकऴन् मेविनान् 3891

मऱ्ऱैयोर्क्कुम्–अन्यों का भी; वरन् मुऱैयाल्–विधिवत्; वकुत्तु–कर्म करके; उऱ्ऱ–युक्त रीति से; ती कॊटुत्तु–अग्नि-कर्म करके; उणकुरु–ग्राह्य; नीर् उकुत्तु–जलतर्पण करके; ऍऱ्ऱैयोर्क्कुम्–सबके लिए; इवन् अलतु–इसके सिवा; इल् ऍना–कोई नहीं ऐसा; वॆऱ्ऱि वीरन्–विजयी वीर; कुरै कऴल्–ध्वनित पायलधारी श्रीराम के; मेवितान्–(चरणों में) आकर विनत हुआ। ३८९१

अन्य मरे हुए वीरों के लिए भी विभीषण ने अग्निसंस्कार, जलसंस्कार

मन में जो अति गंभीर आनंद हुआ वह मधु की मधुरिमा में भी प्राप्य हो सकेगा क्या ? । ३९१५

ततैय ळाहि यनुमतै नोक्किनाळ्, इन्नैय दिन्त दियम्बुव दॆन्बदोर्
नितैवि लादु नॆडिदिरुन् दाळ्नॆडु, मतैयिन् माशु तुडैत्त मनत्तिनाळ् 3916

मॆट्टु मतैयिन्–गौरवमय गृहस्थी के; माचु तुडैत्त–कलंक दूर करके; मनत्तिनाळ्–(निश्चित हुए) मनवाली ने; अतैयळ् आळि–उस स्थिति में आकर; अनुमतै–हनुमान पर; नोक्कितााळ्–दृष्टि डाली; इत्तैयतु–ऐसी; इन्ततु–अमुक बातें; इयम्पुवतु ऍन्पतु–कहना, यह; ओर् नितैवु–एक विचार; इलातु–न रहा, ऐसा; नॆटितु इरुन्ताळ्–बहुत देर चुप रहीं। ३९१६

गौरवपूर्ण गृहस्थी पर लगा-सा रहा कलंक दूर हो गया। इस आनंद में आयी सीता ने मन और शरीर से फूलकर हनुमान पर दृष्टि डाली। क्या कहना ? कैसे कहना ? कुछ निश्चय नहीं कर सकीं। अतः वे लंबी देर तक चुप रहीं। ३९१६

याहि दर्कोन् ऱियम्बुव लॆन्बदु
मीदु यरन्द वुवहैयिन् विम्मलो
तूदु पॊय्क्कुमॆन् ऱॊवॆनच् चॊल्लिनाळ्
नीदि वित्तह नङ्गै निहऴ्त्तिनाळ् 3917

नीति वित्तकन्–नयज्ञ (हनुमान); मीतु उयर्न्त–अपार; उवकैयिन् विम्मल्–आनंद के आधिक्य से; इतऱ्कु–इसका; यातु ऒन्ऱु–क्या कुछ उत्तर; इयम्पुवल्–कह देगी; ऍन्पतु–यह कारण क्या; तूतु पॊय्क्कुम्–दूत का वचन झूठा हो; ऍन्ऱो–ऐसा सोचकर क्या; ऍन–ऐसा; चॊल्लिनान्–पूछा; नङ्कै निकऴ्त्तिताळ्–देवी बोलीं। ३९१७

नयज्ञ हनुमान ने यह प्रश्न किया कि अपार हर्ष के आधिक्य के कारण योग्य उत्तर नहीं सूझता ! इसलिए वे चुप हैं ? या दूत का वचन झूठा हो —इस संशय के कारण देवी अवाक् हैं ? देवी ने उत्तर में (यों) कहा। ३९१७

मेक्कु नोक्किय वॆळ्ळ वुवहैयाल्, एक्क मुऱ्ऱोन् ऱियम्बुव दियादॆन
नोक्कि नोक्कि यरिदॆन नोन्दुळेन्, पाक्कि यम्बॆरुम् बित्तुम् बयक्कुमो 3918

मेक्कु नोक्किय–जिसके ऊपर कुछ नहीं; वॆळ्ळ उवकैयाल्–बाढ़ के मोद से; एक्कम् उऱ्ऱु–स्तब्ध होकर; इयम्पुवतु–कहना; ऒन्ऱु यातु–कुछ क्या; ऍन–ऐसा; नोक्कि नोक्कि–विचार कर करके; अरितु–दुस्साध्य; ऍन–ऐसा; नोन्तुळेन्–चिंतित हूँ; पाक्कियम्–सौभाग्य; पॆरुम् पित्तुम्–बड़ा पागलपन; पयक्कुमो–दिला देगा क्या। ३९१८

उन्होंने न कहने योग्य वचन कहे थे। जल्दी दौड़कर आपके ऊपर गिरी थीं और धमकी दी थीं कि 'तुझे निगल लेंगी'। ऐसे उनके पर्वतोपम शरीर को अपने तेज़ नाखून से चीरना चाहूँगा; और यम को भोज दिलाना चाहूँगा। ३९२४

कुडल्कु ड्रैत्तुक् कुरुदि कुडित्तिवर्, उडलुमु रुक्किंयिट् टण्गुवॆ ऩ्ऩुरैलुम्
अडल रक्किय रत्तैनित् पादमे, विडल मॆय्च्चर णॆन्ऱु वॆरुवलुम् 3925

इवर्–इनकी; कुटल् कुरैत्तु–आँतें नोच लेकर; कुरुति कुटित्तु–रक्त पीकर; उटल्–शरीर को; मुरुक्कि इट्टु–ऐंठकर छिन्न कर; उण्कुवॆन्–खा लूंगा; ऎऩ्ऱुरैलुम्–कहते ही; अटल् अरक्कियर्–सशक्त राक्षसियाँ; अन्तै–माताजी; नित् पातमे–तुम्हारे चरणों में ही; मॆय् चरण्–हमारा सच्चा आश्रय है; विटलम्–नहीं छोड़ेंगी; ऎन्ऱु–ऐसा; वॆरुवलुम्–डरते ही। ३९२५

इनकी आँतें निकाल दूँ; रक्त पी लूँ; शरीर ऐंठकर छिन्न-भिन्न करा दूँ और खा जाऊँ। जब हनुमान ने इस भाँति अपनी इच्छा प्रकट की तो तगड़ी राक्षसियाँ यह कहते हुए सीता की शरण में गयीं कि हे अंब! आपके चरण ही हमारे लिए सच्चा आश्रय हैं। हम उन्हें न छोड़ेंगी। वे भयातुर थीं। ३९२५

अन्तै यञ्जन्मि नञ्जन्मिन् नीरेनो, मन्नु मारुदि मामुह नोक्किवे
रॆन्न तीमै यिदरिळैत् तारवन्, शॊन्न शॊल्लिन वल्लदु तूयमैयोय् 3926

अन्तै–जगज्जननी; नीर्–तुम लोग; अञ्चन्मिन्–मत डरो; अञ्चन्मिन्–मत डरो; मन्नुम् मारुति–चिरंजीव मारुति का; मामुकम् नोक्कि–बड़ा मुख देखकर; तूयमैयोय्–पवित्र पुरुष; इवर्–इन्होंने; अवन् चॊन्न–उसकी कही; चॊल्लिन–आज्ञा; अल्लतु–के सिवा; वेऱु–और; ऎन्न–कौन; तीमै इऴैत्तार्–बुराई की। ३९२६

जगज्जननी ने उन्हें यह कहकर आश्वस्त किया कि डरो मत! तुम लोग डरो नहीं। फिर चिरंजीव मारुति के बड़े मुख पर दृष्टि डालकर कहा कि पवित्र पुरुष! इन लोगों ने रावण की आज्ञा के अनुसार काम करने के सिवा कौन सी अन्य बुराई की थी?। ३९२६

यान् ळैत्त विनैयिनि निव्विडर्, तान डुत्तदु तायिनु मन्बिनोय्
कूनि यिऱ्कॊडि यारल रेयिवर्, पोन वप्पॊरुळ् पोऱ्ऱले पुन्दियोय् 3927

तायिनुम्–माता से भी; अन्पिनोय्–प्रेम करनेवाले; यान्–मैंने; इऴैत्त–जो किया; विनैयिनिन्–उस बुरे कर्म से; इव् इटर्–यह संकट; अटुत्तनु–आया; इवर्–ये; कूनियिन्–कुब्जा से; कॊटियार् अलर्–क्रूर नहीं; पुन्तियोय्–बुद्धिमान; पोन–जो बीत गया; अ पॊरुळ्–वह कार्य; पोऱ्ऱले–मानो मत। ३९२७

माता से भी अधिक प्रेम कर सकनेवाले! यह संकट मेरे कुकर्म के

फलस्वरूप आया था। ये बेचारी राक्षसियाँ कुब्जा (मंथरा)-सी क्रूर नहीं ! हे बुद्धिमान ! बीती बातों की परवाह मत करो। ३९२७

ऍन्नक्कु नोयरु ळिव्वरन् दोविन्नै, तन्नक्कु वाळ्विड माय शळ्क्कियर्
मन्नक्कु नोय्शॆय लॆन्ड्रनळ् मामदि, तन्नक्कु मामरुत् तन्द मुहत्तिनाळ् 3928

ती विन्नै-बुराई; तनक्कु-के लिए; वाळ्विटम् आय-आगार जो है; चळ्क्कियर्-इन राक्षसियों के; मनक्कु-मन को; नोय् चॆयल्-दुःख मत दो; नी ऍनक्कु-तुम मुझे; इव् वरम्-यह वर; अरुळ्-देने की कृपा करो; ऍन्ड्रनळ्-कहा; मामति तनक्कु-श्रेष्ठ चन्द्र को; मामरु-बड़ा कलंक; तन्त मुकत्तिनाळ्-जिसने दिया वैसे मुख वाली ने। ३९२८

पापागार इन राक्षसियों का मन मत दुखाओ। मुझे यह वर दो ! ऐसा कहा मान्य चंद्र को भी (कम सौंदर्य का) कलंक जिन्होंने दिलाया था उन सुंदर मुखवाली ने ! । ३९२८

ऍन्ड्र पोदि निरैञ्जिन नॆम्बिरान्, तन्ड्रु णैप्पॆरुन् देवि तयावॆन्ना
निन्ड्र काले नॆडियवन् वीडण, शॆन्ड्रु तानम तेवियैच् चीरॊडुम् 3929

ऍन्ड्र पोतिल्-कहने पर; ऍम्पिरान् तन्-मेरे नाथ की; तुणै पॆरु-संगिनी बड़ी; तेवि-देवी की; तया-दया; ऍन्ना-कहकर; इरैञ्चितन्-विनय करके; निन्ड्र काले-जब खड़ा रहा, तब; नॆटियवन्-त्रिविक्रम ने; वीटण-विभीषण; चॆन्ड्रु-जाकर; नम् तेवियै-मेरी देवी को; चीरॊटुम् ता-श्रृंगार के साथ लाओ। ३९२९

जब उन्होंने ऐसा कहा तब मारुति ने कहा कि मेरे भगवान श्रीराम की संगिनी आदरणीय देवी की दया (जैसी हो वही हो)। जब यह कह कर हनुमान विनय के साथ इधर खड़ा रहा, तब उधर त्रिविक्रम के अवतार श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हे विभीषण ! जाओ हमारी देवी को श्रृंगार करके लिवा लाओ। ३९२९

ऍन्तुङ् गाले यिरुळुम् वॆयिलुङ्गार्, मिन्नुङ् गाले यियर्कैय वीडणन्
उन्नुङ्गालेक् कॊणर्दियॆन् ड्रोदुमप्, पॊन्निन् काड्रळिर् शूडिनन् पोन्दुळान् 3930

ऍन्तुम् काले-जब कहा तब; इरुळुम् वॆयिलुम्-अंधकार और धूप; कार् मिन्नुम्-मेघ में बिजली; काल्-निकालनेवाले; ऐ इयर्कैय-सुन्दर स्वभाव वाले; वीटणन्-विभीषण ने; पोन्तुळान्-आकर; उन्नुम् काले-सोचने की देर में; कॊणर्ति-लाओ; ऍन्ड्र-ऐसा; ओतुम्-जिसके सम्बन्ध में कहा गया; अ पॊन्निन्-उन लक्ष्मी के; काल् तळिर्-चरणपल्लव को; चूटिनन्-अपने सिर पर लगा लिया। ३९३०

उनके यों कहने पर अंधकार, धूप और मेघमध्य बिजली (क्रमशः शरीर, आभरणों और किरीट से) निकालनेवाले आकार-सौंदर्य का विभीषण अशोक वन में गया ; और जिनके संबंध में श्रीराम ने कहा था उन

ीलक्ष्मी के चरणपल्लवों पर गिरकर उन्हें अपने सिर पर धारण कर लिया (दंडवत् की)। ३९३०

वेण्डिऱ्ऱु मुडिन्द दन्ऱे वेदियर् वेद तिन्तैक्
काण्डऱ्कु विरुम्बु हिन्ऱा नुम्बरुङ् गाण निन्ऱार्
पूण्डहक् कोलम् वल्लै पुनैन्दलै वरुत्तम् बोक्कि
ईण्डुक् कोण् डणैदि यॆन्ऱा नॆळ्न्दरु ळिऱैवियॆन्ऱान् 3931

इऱैवि–भगवती; वेण्टिऱ्ऱु–चाही हुई (जीत); मुटिन्ततु–मिल गयी; वेतियर् ततन्–वेदवेद्य; नित्तैक् काण्टऱ्कु–आपसे मिलना; विरुम्पुकिन्ऱान्–चाहते हैं; म्परुम्–देव भी; काण निन्ऱार्–दर्शनार्थ खड़े हैं; ईण्टु–यहाँ; कोण्टु अणैति– े आओ; ॲन्ऱान्–कहा है; वरुत्तम् पोक्कि–दुःख छोड़कर; वल्लै–शीघ्र; ूण्टक कोलम्–आभरणों से युक्त श्रृंगार; पुनैन्तलै–करा लें; ॲळुन्तरुळ्–पधारें; ॲन्ऱान्–कहा (विभीषण ने)। ३९३१

विभीषण ने निवेदन किया। भगवती! मनोकामना पूरी हो गयी। वेदवेद्य श्रीराम आपसे मिलना चाहते हैं। देवगण भी आपके दर्शन की चाह लेकर खड़े हैं। श्रीराम ने आज्ञा दी है कि उन्हें लिवा ले आओ। आप दुःख दूर करके शीघ्र श्रृंगार कर लें और पधारें। ३९३१

यानिव णिरुन्द वण्णम् यिमैयवर् कुऴुवु मॆङ्गळ्
कोनुमम् मुनिवर् तङ्गळ् कूट्टमुङ् गुलत्तुक् केऱ्ऱ
वानुयर् कऱ्पिन् माद रीट्टमुङ् गाण्डल् माट्चि
मेनिनै कोलङ् गोडल् विऴुमिय दन्ऱु वीर 3932

वीर–वीर; यान्–मैं; इवण्–इधर; इरुन्त वण्णम्–जैसी रही उसी प्रकार; इमैयवर् कुऴुवुम्–देवगण और; ॲङ्कळ् कोनुम्–हमारे राजा; अ मुनिवर् तङ्कळ्– उन मुनियों के; कूट्टमुम्–समूह; कुलत्तुक्कु एऱ्ऱ–कुल के योग्य; कऱ्पिन्– पातिव्रत्यशीला; मातर्–स्त्रियों की; ईट्टमुम्–जमात; काण्टल–देखें यही; माट्चि–गौरव है; मेल्–फिर; निनै कोलम्–तुम जैसे सोचते वैसा श्रृंगार; कोटल्–करना; विऴुमियतु अन्ऱु–श्लाघ्य नहीं। ३९३२

(देवी ने कहा—) हे वीर! मैं जैसे रहती हूँ उसी स्थिति में सुर लोग, हमारे ईश्वर, मुनिवृन्द और कुलोचित पातिवृत्य-शीला नारियाँ देखें —यही गौरव-दायी है! इतना होने के बाद जैसे तुम सोचते हो, वैसा श्रृंगार कर लेना श्लाघ्य नहीं। ३९३२

ॲन्ऱत ऴिऱैवि केट्ट विराक्कदरक् किऱैव नीलक्
कुन्ऱत तोळि तान्ऱन् पणियिनिऱ् कुऱिप्पि वॆन्ऱान्
नन्ऱॆन नङ्गै नेर्न्दाळ् नायहक् कोलङ् गॊळ्ळच्
चॆन्ऱतर वान नाटटर ...

अत्र्रतळ्–कहा; इरैवि–भगवती ने; केट्ट–सुनकर; इराक्कतर्क्कु–राक्षसों के; इरैवन्–राजा ने; नीलम् कुत्रु–नील-पर्वत; अत–के समान; तोळितान् तत्–कन्धोंवाले की; पणियितिल्–आज्ञा का; कुरिप्पु इतु–संकेत यही; ॲत्रात्–कहा; नङ्कै–देवी ने; नत्रु–अच्छा; ॲत–ऐसा कहकर; नेर्न्ताळ्–सम्मति दिलायी; नायकम्–अतिश्रेष्ठ; कोलम् कॊळ्ळ–शृंगार कर लें, इस वास्ते; वात नाट्टु–व्योमलोक की; तिलोत्तमै मुतलोर्–तिलोत्तमा आदि; चेर वॅन्द्रतर्–मिलकर आयीं। ३६३३

देवी के ऐसा कहने पर राक्षसाधिपति ने निवेदन किया कि नील-पर्वतोपम कंधों वाले श्रीराम की आज्ञा का संकेत यही है ! तब देवी 'ठीक है' कहकर सम्मत हुईं। उन्हें उत्कृष्ट रीति से शृंगार किया जाय, इस वास्ते व्योमलोक की तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ एक साथ मिलकर आयीं। ३९३३

मेतहै यरम्बै मर्र युरुप्पशि वेरु मुळ्ळ
वातह नाट्टू मादर् यारुमज् जनत्तुक् केर्र
नातनॅय् यूट्टप् पट्ट नवैयिलाक् कलवै ताङ्गिप्
पोतहन् दुरन्द तेयल् मरुङ्गुर नॅरुङ्गिप् पुक्कार् 3934

मेतकै–मेनका; अरम्पै–रंभा; मर्रु उरुप्पचि–और उर्वशी; वेरुम् उळ्ळ–अन्य जो थीं; वातकम् नाट्टु–व्योमलोक की; मातर् यारुम्–सभी स्त्रियाँ; मञ्चतत्तुक्कु एर्र–स्नान योग्य; नातम् नॅय्–कस्तूरी का; ऊट्टप्पट्ट–मिलाया गया; नवै इला–अनिंद्य; कलवै ताङ्कि–लेप धरकर; पोतकम् तुरन्त–आहार जो नहीं करती थीं; तेयल्–उन देवी के; मरुङ्कु उर–पास; नॅरुङ्कि पुक्कार्–सटकर आयीं। ३६३४

मेनका, रंभा, उर्वशी और अन्य व्योमवासिनियाँ स्नान योग्य कस्तूरी आदि का अनिंद्य लेप आदि लेकर उन देवी के पास आयीं जो कि दस महीनों से आहार त्याग कर रही थीं। ३९३४

काणियैप् पॆण्मैक् कॆल्लाङ् गर्पिनुक् कणियैप् पॊर्पित्
आणियै यमिळ्दित् वन्द वमिळ्दिनै यरत्तित् तायैच्
चेणुयर् मरैयॆ यॆल्ला मुरैशॆय्द शॆल्व नॆन्न
वेणियै यरम्बै मॆल्ल वरन्मुरै शुहिर्त्तु विट्टाळ् 3935

पॆण्मैक्कु ॲल्लाम्–सभी स्त्री के लक्षणों की; काणियै–जनक-भूमि को; कर्पितुक्कु–पातिव्रत्य के; अणियै–शृंगार को; पॊर्पित् आणियै–सौंदर्य की कसौटी को; अमिळ्तिन् वन्त–अमृत के साथ आयी; अमिळ्तितै–अमृत को; अर्त्तिन् तायै–धर्म की माता को; वेणियै–(उनके) केश को; चेण् उयर् मरैयै–बहुत उत्कृष्ट वेदों; ॲल्लाम्–सभी के; मुरै चॆय्त–व्यवस्थाकारी; चॆल्वन् ॲन्न–धनी श्रीविष्णु के समान; अरम्पै–रम्भा ने; मॆल्ल–धीरे से; वरन् मुरै–यथाक्रम; चुकिर्त्तु विट्टाळ्–सँवार दिया। ३६३५

रंभा ने पहले उन स्त्रियों के लक्षणों की जनक-भूमि, पातिव्रत्य के श्रृंगार, अमृत के साथ निकले अमृत, और धर्म की जननी सीता का केश सँवारा, उसी प्रकार जिस प्रकार श्रीविष्णु ने सारे वेदों को क्रमबद्ध किया था। ३९३५

पाहडर्न् दमुदु पिल्हुम् बवळवाय्त् तरळप् पत्ति
शेहरु विळक्कि नात्तन् दीट्टिमण् शेर्न्द काशै
वेहडज् जॅय्यु मापोल् मज्जन विदियिन् वेदत्
तोहैमङ् गलङ्गळ् पाड वाट्टिन रुम्बर् मादर् 3936

उम्पर् मातर्–देवललनाओं ने; पाकु अटर्न्तु–मधुरता से भरकर; अमुतु पिल्कुम्–अमृतमय वाणी कहनेवाले; पवळम्–प्रवाल-सम; वाय्–मुखों के; तरळम् पत्ति–मुक्ता-सम दंतावली को; चेक्कु अऱ–मैल छुड़ाते हुए; विळक्कि–माँजकर; नात्तम्–सुवासित तेल; तीट्टि–(सिर पर) मलकर; मण् चेर्न्त–मैले; काचै–रत्न को; वेकटम् चॅय्युमापोल्–तराशा जाय जैसे; वेतत्तु–वेदविहित प्रकार से; मज्चतम् वितियिन्–स्नान-सन्ध्या विधिवत; ओकै–आनंद के साथ; मङ्कलङ्कळ् पाट–मंगलगीतों को गाते हुए; आट्टिनर्–स्नान कराया। ३९३६

देवललनाओं ने अमृतभाषी प्रवालाधरों के मुख की मुक्ता-सम दंत-पंक्ति को मैल दूर करते हुए माँज दिया। फिर सुगंधित तेल को सिर पर मलकर मैले रत्न को तराशा जाता हो ऐसा वेदोक्त रीति से मज्जन कराया। तब मगल-गीत गाये जा रहे थे। ३९३६

उरुविळै पवळ वल्लि पानुरै युण्ड दॅन्न
मरुविळै कलवै यूट्टिक् कुङ्गुम मुलैयिन् माट्टिक्
करुविलै मलरिन् काट्चिक् काशऱु तूशु कामन्
तिरुविळै यल्हुर् केऱ्प मेहलै तळुवच् चॅय्दार् 3937

उरुविळै–बहुत सुन्दर; पवळ वल्लि–प्रवाल-लता; पाल् नुरै–दुग्धफेन से; उण्टतु ॲन्न–ढका हो जैसे; मरुविळै–सुगंधित; कलवै ऊट्टि–चोवा मलकर; कुङ्कुमम्–कुंकुम-चेप को; मुलैयिन् माट्टि–स्तनों पर चर्चित कर; करुविळै मलरिन्–नीलोत्पल-सम; काट्चि–दृश्यमान; काचु अऱु–निर्दोष; तूचु–रेशमी वस्त्र; कामन् तिरुविळै–मन्मथ-भोगश्री से; अल्कुर्क्कु–युक्त भग-प्रदेश के; एऱ्प–योग्य; मेकलै–मेखला को; तऴुव चॅय्तार्–युक्त रीति से पहनाया। ३९३७

उन्होंने देवी के श्रीशरीर पर चंदन-चर्चा की तब वे दुग्धफेन से आच्छादित प्रवाल-लता के समान लगीं। स्तनों पर कुंकुम लेप लगाया। नीलोत्पल-सम पवित्र वस्त्र पहनाया तथा काम-भोग-योग्य वरांग को अलंकृत करते हुए मेखला पहनायी। ३९३७

चन्दिरन् तेवि मारिड् इहैयुरु तरळप् पैम्बूण्
इन्दिरै तेविक् केऱ्प वियैवन पुट्टि याणरच

चिन्तुरप् पवळच् चॅव्वायत् तेम्बशुम् बाहु तीऱ्ऱि
मन्दिरत् तयिन्ति नीराल् वलञ्जॅय्दु काप्पु मिट्टार् 3938

इन्तिरै तेविक्कु–देवी इंदिरा (सीता) के; एऱ्ऱ–योग्य; इयैवन–युक्त; चन्तिरन्–चन्द्र की; तेविमारिल्–पत्नियों के समान; तकै उरु–सुन्दर; तरळम्–मोती के और; पॅम् पूण्–चोखे स्वर्ण के आभरण; पूट्टि–पहनाकर; याणर्–ताजे; चिन्तुरम्–सिंदूर के समान; पवळम्–प्रवाल-सम; चॅव्वाय्–लाल अधरों पर; तेम्–मधुर; पशुम्–नवीन; पाकु–तांबूलरस; तीऱ्ऱि–लगाकर; मन्तिरत्तु–मंत्रोच्चारण के साथ; अयिन्ति नीराल्–अन्नमिश्रित जल को; वलम् चॅय्तु–दायीं ओर से घुमाकर; काप्पुम् इट्टार्–रक्षा-बन्धन किया। ३९३८

श्रीदेवी सीता के योग्य, चंद्रपत्नी नक्षत्रिकाओं के समान मुक्ताओं की तथा स्वर्णनिर्मित आभरण पहनाये। नये, सिंदूर तथा प्रवाल-सम अधरों पर मधुर तथा नवीन 'तांबूल सार' लगाया। फिर मंत्रोच्चारण के साथ अन्नमिश्रित जल की थाली घुमायी और उसी जल से भाल पर 'दृष्टिदोष' से रक्षित करने के लिए बिंदी लगायी। ३९३८

मण्डल मदियि नाप्पण् मानिरुन् दॅन्न मानम्
कॉण्डन रेऱ्ऱि वान मडन्दैयर् तॉडर्न्दु कूड
मण्डिवा नररु मोड वरक्करुम् बुऱञ्जूऴ्न् दोड
अण्डर्ना यहन्पा लण्णल् वीडण नरुळिऱ् चॅन्ऱान् 3939

मतियिन्–चन्द्र; मण्टलम् नाप्पण्–मंडलमध्य; मान् इरुन्तॅन्न–हरिण रहता जैसे; मानम्–यान पर; कॉण्टनर् एऱ्ऱि–ले रखकर; वानम् मटन्तैयर्–देव-ललनाएँ; तॉटर्न्तु कूट–साथ गयीं; वानररुम्–वानर भी; मण्टि ओट–एकत्र, साथ आये; अरक्करुम्–राक्षस भी; पुऱम्–बाजू में; चूऴ्न्तु ओट–घेरकर दौड़े आये; अण्टर्–देवों के; नायकन् पाल्–नायक के पास; अण्णल् वीटणन्–महिमावान विभीषण; अरुळिल् चॅन्ऱान्–श्रीरामाज्ञा के अनुसार गया। ३९३९

चंद्रमंडल के मध्य जैसे हरिण रहता हो वैसे उन्होंने सीताजी को यान पर चढ़ाया। देवस्त्रियाँ साथ रहीं। विभीषण उन्हें अंडनायक श्रीराम के पास उनकी आज्ञा के अनुसार ले चलने लगा। तब वानर वीर पास रहते गये और राक्षस लोग चारों ओर भीड़ लगाकर तेज चलने लगे। ३९३९

इप्पुऱत् तिमैयवर् मुनिव रेऴैयर्
तुप्पुऱच् चिवन्दवाय् विञ्जैत् तोहैयर्
मुप्पुऱत् तुलहिनु मॉण्णित् मुऱ्ऱिनोर्
ऑप्पुऱक् कुविन्दन रोहै कूऱुवार् 3940

इ पुऱत्तु–इधर; इमैयवर्–देव; मुनिवर्–ऋषि; एऴैयर्–पत्नियाँ; तुप्पुऱ–प्रवाल-सम; चिवनत–लाल; वाय्–अधरों वाली; विञ्चै तोकैयर्–विद्याधारियाँ;

मु पुरत्तु–विविध; उलकित्तुम्–लोकों के; अॅण्णिल्–गिनती में; मुऱ्ऱिलोर्–बढ़ी (स्त्रियाँ); ओर्क कूऱुवार्–संतोष-समाचार कहते हुए; ओप्पुर्–एक साथ; कुविन्ततर्–आकर भीड़ में मिले। ३९४०

इधर देव, ऋषि, उनकी पत्नियाँ, प्रवाल-सम अधर वाली विद्याधर-वनिताएँ और त्रिलोकवासिनी असंख्यक रमणियाँ आपस में संतोष समाचार कहते हुए एक साथ आकर जुटीं। ३९४०

अरुङ्गुलक् कऱ्पितुक् कणियै यण्मितार्
मरुङ्गुपिन् मुऩ्ऩॅल वऴियिऩ् ऱॆऩ्ऩलाय्
नॆरुङ्गिऩर् नॆरुङ्गुऴि निरुद रोच्चलाल्
करुङ्गडल् मुऴक्कॆऩप् पिऱन्द कम्बलै 3941

अरु कुलम्–श्रेष्ठकुल-जाता; कऱ्पितुक्कु–पातिव्रत्य के; अणियै–शृंगार को; अण्मितार्–पास आकर; मरुङ्कु–पास में; पिऩ् मुऩ्–पीछे और आगे; चॅल–हटने; वऴि इऩ्ऱु–मार्ग नहीं; ऍऩ्ऩलाय्–ऐसी रीति से; नॅरुङ्किऩर्–सटे; नॅरुङ्कु उऴि–सटते समय; निरुतर् ओच्चलाल्–राक्षसों के वेत्र उठाकर भगाने से; करु कटल्–काले सागर के; मुऴक्कु ऍऩ–गर्जन के समान; कम्पलै पिऱन्त–हो-हल्ला मचा। ३९४१

इस भाँति सभी लोग पातिव्रत्य के शृंगार, कुलीना सीताजी को चारों ओर से पास से घेरकर आगे, पीछे, पार्श्वों में सर्वत्र जाने लगे और इधर-उधर हटने के लिए स्थान नहीं रहा। तब भीड़ को रोकने के लिए राक्षसों ने छड़ी घुमायी तो काले सागर के गर्जन के समान बड़ा हल्ला मच गया। ३९४१

अववऴि यिरामऩु मलर्न्द तामरैच्
चॆव्विवाण् मुहङ्गॊडु चॆयिर्त्तु नोक्कुऱा
इव्वॊलि यावदॆऩ् ऱियम्ब विऱ्ऱॆऩाक्
कव्वॆयिऩ् मुऩिवरर् कऴऱि नाररो 3942

अव्वऴि–तब; इरामऩुम्–श्रीराम ने भी; अलर्न्त–प्रफुल्लित; तामरै–कमल-सम; चॅव्वि–अच्छे; वाळ् मुकम् कॊटु–प्रकाशमय मुख पर; चॅयिर्त्तु–क्रोध का भाव लाकर; नोक्कुऱा–देखकर; इव् ऑलि–यह शोर; यावतु–क्या; ऍऩ्ऱु इयम्प–ऐसा पूछा; कव्वॆयिऩ्–उच्च स्वर में; मुऩिवरर्–मुनिवरों ने; इऱ्ऱु ऍऩा–यही है; कऴऱिऩार्–ऐसी बात बतायी। ३९४२

तब श्रीराम का अरुण कमल के समान सुन्दर श्रीमुख पर कोप का भाव आया। कोप के साथ देखकर श्रीराम ने पूछा कि यह शोर काहे का ? तब उच्च आवाज में मुनिवरों ने 'उसका कारण अमुक है' बताया। ३९४२

मुतिवरर् वाशहङ् गेट्पु ड्रादमुन्
नतियिदळ् तुडित्तिड नहैत्तु वीडणन्
तनैयॆळ् नोक्किनी तहाद शॆय्दियो
पुनिदनूल् कऱ्ऱुणर् पुन्दि योयॆन्ड्रान् 3943

मुनिवार्–मुनिवरों के; वाचकम्–वचनों को; केट्पुद्रात मुन्–सुनने के पूर्व ही; इतळ्–अधरों के; नति–खूब; तुटित्तिट–फड़कते; नकैत्तु–हँसकर; बीटणन् तनै–विभीषण को; ऍळ नोक्कि–मुख उठा देख; पुनित नूल्–पवित्र ग्रंथ; कऱ्ऱु उणर्–पढ़कर ज्ञानमय; पुन्तियोय्–बुद्धिवाले; नी–तुम; तकात–अनुचित कार्य; चॆय्तियो–करो क्या; ऍन्ड्रान्–पूछा। ३९४३

मुनिवरों का उत्तर सुनते ही श्रीरामजी क्रोध की हँसी हँसे, तब उनके सुंदर अधर खूब फड़के। विभीषण से पूछा कि हे पवित्र शास्त्रज्ञ बुद्धिमान! तुम भी अनुचित कार्य करोगे क्या? । ३९४३

कडुन्दिऱ लमरक्कळङ् गाणु माशैयाल्
नॆडुन्दिशैत् तेवरु नित्तऱ यावरुम्
अडैन्दन रुवहैयि नडैहित् ड्रार्हळैक्
कडिन्दिड यार्शॊन्नार् करुदु नूल्वलाय् 3944

करुतुम्–अन्वेषण योग्य; नूल् वलाय्–ग्रंथों में चतुर; कटु तिऱल्–कठोर बल-प्रदर्शन के; अमर् कळम्–युद्धाजिर को; काणुम्–देखने की; आचैयाल्–इच्छा से; उवकैयिल्–उत्साह के साथ; अटैकित्ड्रार्कळै–आनेवालों को; नॆटु तिचै–लम्बी दिशाओं में; तेवरुम्–रहनेवाले देवों को; नित्तऱ यावरुम्–अन्य स्थित लोगों को; कटिन्तिट–डाँटने को; चॊन्नार्–कहनेवाला; यार्–कौन था। ३९४४

अन्वेषण योग्य शास्त्रनिपुण हे विभीषण! बहुत क्रूरता के साथ जहाँ युद्ध किया गया था उस युद्धभूमि को देखने की उत्कट इच्छा से, उत्साह ले जो आ रहे हैं, उन लंबी दिशाओं के देवों और अन्य लोगों को डाँट-डपटकर दूर करने की आज्ञा किसने दी? । ३९४४

परशुडैक् कडवुळ् नेमिप् पण्णवन् पदुमत् तण्णल्
अरशुडैत् तॆरिवै मारै यित्ड्रियॆ यमैव दुण्डो
करैशॆयऱ् करिय तेव रेतैयोर् कलन्दु काण्बान्
विरशुरित् विलक्कु वारो वेऱुळार्क् कॆन्गोल् वीर 3945

वीर–वीर; परचु उटै–परशुधर; कटवुळ्–ईश्वर; नेमि–चक्रायुध; पण्णवन्–के धारक; पतुमत्तु अण्णल्–पद्मासन देव; अरचु उटै–ऐश्वर्यमयी; तॆरिवै मारै–अपनी-अपनी स्त्रियों के; इत्ड्रि–बिना; अमैवतु–रहें; उण्टो–ऐसा होगा क्या; वेऱुळार्क्कॆन् कोल्–फिर अन्यों की बात क्या; करै चॆयऱ्कु–सीमा जानने में; अरिय–कठिन; तेवर्–देवता; एतैयोर्–और अन्य; कलन्तु–मिलकर; काण्पान्–देखने; विरचुरिन्–पास आयें तो; विलक्कुवारो–हटायेंगे क्या। ३९४५

हे वीर ! परशुधर शिव, चक्रधर विष्णु और पद्मासन ब्रह्मा बिना अपनी पत्नियों को साथ लिये रहते हैं क्या ? फिर अन्यों की बात क्या ? (स्त्रियाँ साथ आयेंगी ही !) अपार देव और अन्य मुनिगण आदि मिलकर देखने के लिए आयें तो उन्हें कोई हटायेगे क्या ? । ३९४५

आदला नरक्कर् कोवे यडुप्पदन् रुनक्कु मिन्ने
शादुहै मान्दर् तम्मैत् तडुप्पदन् इरुळिच् चॅङ्गण्
वेदना यहन्नुरा निऱ्प वॅय्दुयिर्त् तलक्क णॅय्दिक्
कोदिला मनन् मॅय्युङ् गुलैन्दतन् कुणङ्गळ् तूयोन् 3946

आतलाल्–इसलिए; अरक्कर् कोवे–राक्षसराज; इन्ने–अभी; चातु कै–साधु-प्रकृति के; मान्तर् तम्मै–लोगों को; तटुप्पतु–रोकना; उनक्कु–तुम्हारे लिए; अटुप्पतु–उचित; अन्ऱु–नहीं; ॲन्ऱु अरुळि–ऐसा कहकर; चॅम् कण्–अरुणाक्ष; वेत नायकन्–वेदनायक के; निऱ्प–स्थित होते; कुणक्कळ्–गुणों में; तूयोन्–पवित्र; अलक्कण्–दुःख; ॲय्ति–पाकर; वॅय्तुयिर्त्तु–निःश्वास छोड़कर; कोतिला–निर्दोष; मनत्तुम्–मन और; मॅय्युम्–शरीर से; कुलैन्तनन्–काँपने लगा। ३९४६

इसलिए हे राक्षसराज ! उन साधु-व्यवहार लोगों को रोकना तुम्हारे लिए उचित काम नहीं। अभी आने दो। —इस तरह अरुणाक्ष वेदनायक श्रीराम ने कृपा से आज्ञा सुनायी। पवित्र गुणों वाला विभीषण दुःखी हुआ ! लम्बी साँसें छोड़ता हुआ काँपने लगा यद्यपि शरीर और मन से वह अनिंद्य था। ३९४६

अरुन्ददि यनैय नङ्गै यमरक्कळ मणुहि याडर्
परुन्दोडु कळुहुम् बेयुम् पशिप्पिणि तीरु माऱु
विरुन्दिडु विल्लिन् शॅल्वन् विळावणि विरुम्बि नोक्किक्
करुन्दडङ् गण्णु नॅञ्जुङ् गळित्तिड विनैय शॊन्नाळ् 3947

अरुन्तति–अरुन्धती; अनैय–समाना; नङ्कै–देवी ने; अमर् कळम्–युद्धाजिर; अणुकि–के पास आ; आटल्–सशक्त; परुन्तॊटु–बाजों के साथ; कळुकुम्–गीधों और; पेयुम्–भूतों के; पचि पिणि–भूख का रोग; तीरुमाऱु–निवारण हो ऐसा; विरुन्तिटु–दावत जिन्होंने दी; विल्लिन् चॅल्वन्–उन कोदंडपाणी के; अणि विळा–सुन्दर उत्सव को; विरुम्पि—चाह के साथ; नोक्कि–देखकर; करु–काली; तट–विशाल; कण्णुम्–आँखों और; नॅञ्चुम्–मन के; कळित्तिट–मुदित होते; इनैय–ये वचन; चॊन्नाळ्–कहे। ३९४७

अरुंधती-सी सीताजी युद्धभूमि के पास आयीं। बाजों, गीधों और भूतों की भूख मिटाते हुए जिन्होंने उन्हें अच्छी दावत का प्रबंध कराया था, उन कोदण्डपाणी के युद्धोत्सव-दृश्य का चाव के साथ संदर्शन किया। फिर

मन में आनंद के साथ, जो उनकी काली और बड़ी आँखों में भी प्रगट हो रहा था, उन्होंने ये (निम्नोक्त) बातें (आप ही आप) कहीं। ३९४७

शीलमुङ् गाट्टियॆन् कणवन् शेवहक्
कोलमुङ् गाट्टियॆन् कुलमुङ् गाट्टियिञ्
ञालमुङ् गाट्टिय कविक्कु नाळराक्
कालमुङ् गाट्टुङ्गॊ लॆन्ऱन् कऱ्पॆन्ऱाळ् 3948

चीलमुम्—मेरी सुशीलता; काट्टि—साबित करके; ऍन् कणवन्—मेरे पति के; चेवकम्—वीरता के; कोलमुम्—दृश्य को; काट्टि—दिखाकर; ऍन् कुलमुम्—मेरे कुल को; काट्टि—दिखाकर; इञ्ञालमुम्—इस लोक को भी; काट्टिय—जिसने दिखाया; कविक्कु—उस वानर को; ऍन् तन्—मेरा; कऱ्पु—पातिव्रत्य; नाळ् अऱा—निरंतर; कालमुम्—काल तक जीना; काट्टुम् कॊल्—दिखा देगा क्या। ३९४८

इस हनुमान ने मेरे शील को साबित किया। मेरे पति की वीरता के दृश्य को लोकों के जानने में सहायता की। मेरे कुल की महिमा को प्रगट कराया। इस संसार को भी स्थिति दिलायी। इस वानर को क्या मेरा पातिव्रत्य चिरंजीवता दिला सकेगा? (इस पद्य में 'काट्टु'— दिखाना या प्रगट करना —शब्द विविध अर्थों में प्रयुक्त किया गया है।) । ३९४८

ऍच्चिलॆन् नुडलुयि रेहिऱ् ऱॆयिनि
नच्चिलै यॆन्बदोर् नवैयि लाळॆदिर्
पच्चिलै वण्णमुम् पवळ वायुमाय्क्
कैच्चिलै येन्दिनिन् ऱदनैक् कण्णुऱ्ऱाळ् 3949

ऍन् उटल्—मेरा शरीर; ऍच्चिल्—अपवित्र बन गया; उयिर्—प्राण; एकिऱ्ऱे—गये ही (समझो); इनि—अब; नच्चु—कोई इच्छा; इलै—नहीं; ऍन्पदु ओर्—ऐसे विचार की; नवै इलाळ्—पवित्र देवी; ऍतिर्—सामने; पच्चु इलै—तमाल; वण्णमुम्—वर्ण; पवळ वायुम् आय्—प्रवालाधर बन; कै चिलै एन्दि—हाथ में धनु लेकर; निन्ऱतनै—जो स्थित थे उन्हें; कण्णुऱ्ऱाळ्—देखा। ३९४९

मेरा शरीर (राक्षस की कारा में रहने से) जूठा (अपवित्र) हो गया है! प्राण ही गये हैं! अब मेरी कोई अभिलाषा न रही। निर्दोष सीताजी ने ऐसा एक भाव लेकर अपने सामने तमालवर्ण, प्रवालाधरयुक्त कोदंडपाणी के दर्शन किये। उन्हें अपनी आँखों से देखा। ३९४९

मान्मी दरम्बैयर् शूळ वन्बुळाळ्
पोन्पे रुयिरिनैक् कण्ड पॊय्युडल्
तान्दु कवर्वकुन् वन्मैत् तामॆन
आनन्ङ् गाट्टुऱ ववनि यॆय्दिनाळ् 3950

अरम्पैयर्–अप्सराओं के; सूऴ–घेरे आते; मानम् मीतु–यान पर; वन्तुळाळ्–जो आयीं वे; पोन–छूटकर गये; पेर् उयिरिनै–बड़े प्राणों को; कण्ट–फिर देखकर; पोय्युडल्–भंगुर शरीर; तान्–स्वयं; अतु–उन प्राणों को; कवर्वुरुम्–फिर से अपना ले; तन्मैत्तु–ऐसी रीति; आम्–हो; अॅन–मानो; आननम्–आनन; काट्टुर–दिखाने; अवनि–भूमि पर; अॅय्तिनाळ्–उतरीं। ३६५०

अप्सराओं से आवृत, यान पर जो आयी थीं वे अपने आनन से ऐसा भाव दिखाते हुए यान से उतरीं जिसमें पहले छूटे प्राणों को फिर से देखकर जड़ शरीर उन्हें अपना लेने की त्वरा दिखा रहा हो ! । ३९५०

पिऱप्पिनुन् दुणैवनैप् पिऱविप् पेरिडर्
तुऱप्पितुन् दुणैवनैत् तॊऴुदु नाऩ्ऩिऩि
मऱप्पिनु नऩ्ऱिदु माऱु वेऱुवीऴ्न्
दिऱप्पिनु नऩ्ऱॆन वेक्क नीङ्गिनाळ् 3951

पिऱप्पिनुम्—(किसी भी) जन्म में; तुणैवनै–संगी जो होंगे उन्हें; पेर् पिऱवि–बड़ी, जन्म की; इटर् तुऱप्पितुम्–बाधा छूटे तब भी; तुणैवनै–सहायक को; नान्–मैं; तॊऴुतु–नमस्कार करती; इति–आगे; मऱप्पिनुम्–भूल जाऊँ तो भी; नन्ऱु–अच्छा है; इतु माऱु–इसके विपरीत; वेऱु–अन्य रीति से; वीऴ्न्तु–गिरकर; इऱप्पितुम्–मर जाऊँ तो भी; नन्ऱु–अच्छा ही होगा; अॅन–ऐसा सोचकर; एक्कम्–दुःख; नीङ्किताळ्–छोड़ दिया। ३६५१

देवी ने सोचा कि मैं इनके दर्शन कर चुकी जो कि मेरे किसी भी भावी जन्म में जीवनसंगी रहेंगे और जन्म के कठोर दुःख के अंत होने के बाद भी मेरे संगी होंगे ! इनकी पूजा करने के बाद उन्हें भूल जाऊँ तो भी भला समझूंगी; या मरकर गिर जाऊँ तो भी अच्छा ! वे दुःख से छूट गयीं। ३९५१

कऱ्पिनुक् करशियैप् पॆण्मैक् काप्पिनैप्
पॊऱ्पिनुक् कऴ्हिनैप् पुहऴिन् वाऴ्क्कैयैत्
तऱ्पिरिन् दरुळ्पुरि तरुमम् पोलियै
अऱ्पिनत् तलैवनु ममैय नोक्किनान् 3952

तलैवनुम्–नायक श्रीराम ने; कऱ्पिनुक्कु–पातिव्रत्य की; अरचियै–रानी को; पॆण्मै–स्त्रीगुणों के; काप्पिनै–रक्षण को; पॊऱ्पिनुक्कु–सुन्दरता के; अऴकिनै–सौन्दर्य को; पुकऴिन्–यश की; वाऴ्क्कैयै–जीवनधात्री को; तन् पिरिन्तु–अपने से अलग; अरुळ् पुरि–कृपा करनेवाली; तरुमम्–धर्म के; पोलियै–समान रहने वाली को; अऩ्पिन्–प्रेम से; अमैय–खूब; नोक्किनान्–देखा। ३६५२

नायक श्रीराम ने भी सीताजी को प्रेम के साथ खूब निहारा, जो कि पातिव्रत्य की रानी थीं, स्त्रीगुणों की रक्षक थीं, सुंदरता की सुंदरता थीं,

यश की जीवनदायिनी थीं और जो उनसे अलग रहकर कृपा करते रहे धर्म समान थीं। ३९५२

शुणङ्गुरु तुणैमुलै मुनॢिरॢ् रूङ्गिय
अणङ्गुरु नॆडुङ्गणी राऱु पाय्दर
वणङ्गियल् मयिलिनै माशिल् कऱ्पिनै
पणङ्गिळ ररवॆन वॆळुनॖदु पाऱ्पुरा 3953

चुणङ्कु उरु—पांडुरता से युक्त; तुणै मुलै—स्तनद्वय के; मुनॢिरिल्—अग्रभाग पर; तूङ्किय—गिरे हुए; अणङ्कु उरु—दुःख-प्रदर्शक; नॆडु कणीर्—लम्बी अश्रु-धारा की; आऱु पाय् तर—नदी के बहते; वणङ्कु—विनत; इयल्—छटा में; मयिलिनै—कलापी-सी सीता को; माचिल् कऱ्पिनै—अनिंद्य पतिव्रता को; पणम् किळर्—फन फैलाये; अरवु ॲॆन—सर्प के समान; ॲॆळुनॖतु—कोप के साथ; पाऱ्पुरा—देखकर। ३९५३

पांडुरता से भरे सुंदर स्तनद्वय के अग्रभाग पर आँखों से अश्रु की नदी-सी बहाते हुए छटा में कलापी-सी रहनेवाली सीताजी नमस्कार कर रही थीं,। उन अनिंद्य पतिव्रता को फन फैलाकर उठनेवाले सर्प के के समान सिर उठाकर श्रीराम ने देखा और। ३९५३

ऊण्डिऱ मुवन्दनै यॊळुक्कम् बाळ्पड
माण्डिलै मुऱैतिऱम् बरक्कन् मानहर्
आण्डुऱैन् दडङ्गिनै यच्चन् दीर्न्दिवण्
मीण्डदॆन् निनैवनै विरुम्बु मॆन्बदो 3954

मुऱै तिऱम्पु—अक्रमी; अरक्कन्—राक्षस के; मा नकर्—बड़े नगर में; आण्टु—वहाँ; उऱैन्तु—वास करके; अटङ्किनै—अधीन रहीं; ऊण् तिऱम्—भोजन; उवन्तनै—भोगा; ऒऴुक्कम्—चरित्र के; पाऴ् पट—बिगड़ने पर भी; माण्टिलै—मरीं नहीं; अच्चम्—डर; तीर्न्तु—छोड़कर; इवण्—यहाँ; मीण्टतु—फिर आयीं जो; ॲॆन् निनैवु—वह क्या सोचकर; ॲॆनै—मुझे; विरुम्पुम्—चाहेगा; ॲॆन्पतो—यह विचार क्या। ३९५४

निष्ठुरता के साथ कहा कि अनीतिमान राक्षस के लंका नगर में बहुत दिन वास करती अधीन रहीं। यहाँ का भोजन तुम्हें भोग्य रहा। चरित्र नष्ट हो गया तो भी मरीं नहीं! सारा भय छोड़कर तुम मेरे पास लौटीं क्या सोचकर? तुमने सोच लिया कि राम मुझे चाहेगा?। ३९५४

उत्तमैमोट् पान्पॊरुट् टुवरि तूर्त्तॊळिर्
मित्तमैमोट् टुऱुपडै यरक्कर् वेरऱप्
पित्तमैमोट् टुऱुपहै कडन्दि लेन्पिळै
ॲत्तमैमोट् पान्पॊरुट् टिलङ्गै येय्दिनेन् 3955

उन्नै-तुम्हें; मीट्पान्-छुड़ाने; पोरुट्टु-के लिए; उवरि-सागर; तूर्त्तु-
ाटकर; ओळिर्-उज्ज्वल; मिन्नै-बिजली को; मोट्टुरु-भगानेवाले; पटै-
थियारों के; अरक्कर्-राक्षसों को; वेर् अऱ्-मूल से काटकर; पिन्नै-फिर भी;
ोट्टु-आगे भी; उऱु पकै-बने शत्रु को; कटन्तिलेन्-मारा नहीं; पिऴै-अपराध
े; ॲन्नै-मुझे; मीट्पान् पोरुट्टु-छुड़ा लेने के लिए; इलङ्कै-लंका में;
ॲय्तिनेन्-आया। ३९५५

मैंने सागर पाटा; विद्युत्प्रहासी हथियार वाले राक्षसों को निर्मूल किया। उत्तरोत्तर युद्ध करके शत्रुसंहार किया —यह सब किया, तुम्हें छुड़ाने के वास्ते नहीं! पर मुझे अपने को (पत्नी के अपहारी को न मारने के) दोष से छुड़ा लेना था। उसी के निमित्त मैं लंका आया। ३९५५

मरुन्दिनु मिनियमन् नुयिरिन् वान्ऱशै, अरुन्दिनै येलऱ् वमैय वुण्डिये
इरुन्दनै येयिनि यॅमक्कु मेऱ्पन, विरुन्दुळ वोवुरै वॅम्मै नीङ्गिनाय् 3956

वॅम्मै-प्यार; नीङ्कितनाय्-छोड़ चुकी; मन् उयिरिन्-नित्य जीवों के;
वान् तचै-श्रेष्ठ मांस को; मरुन्तिनुम्-अमृत से भी; इनिय-मधुर मानकर;
अरुन्तिनैये-खाया न; नऱवु-मद्य; अमैय-खूब; उण्टिये-पिया; इरुन्तनैये-
इस तरह रहीं; इनि—अब; ॲमक्कुम्-हमारे भी; एऱ्पन-योग्य; विरुन्तु-
भोज; उळवो-हैं क्या; उरै-कहो। ३९५६

मुझ पर प्रेम को हे छोड़ चुकनेवाली! जीवंत जीवों के श्रेष्ठ मांस को अमृत से भी मधुर मानकर खाती रहीं! मद्य खूब दिल अघाकर पीती रहीं! इस भाँति मजे में रहीं न! फिर क्या हमारे लिए भी योग्य भोज का इंतिज़ाम होगा? बताओ। ३९५६

कलत्तिनिऱ् पिऱन्दमा मणियिऱ् कान्दुऱु
नलत्तिनिऱ् पिऱन्दन नडन्द नन्मैशाल्
कुलत्तिनिऱ् पिऱन्दिलै कोळिल् कीडम्बोल्
निलत्तिनिऱ् पिऱन्दमै निरप्पि नायरो 3957

कलत्तिनिल्-आभरणों में; पिऱन्त-जड़ित होनेवाले; मामणियिल्-मूल्यवान
रत्नों के समान; कान्तुऱु-कांतिमय; नलत्तिनिल्-श्रेष्ठता के साथ; पिऱन्तन-
उत्पन्न; नटन्त-चले; नन्मै चाल्-उत्तम; कुलत्तिनिल्-कुल में; पिऱन्तिलै-
जनमी न हो ऐसे; कोळ इल्-दुर्बल; कीटम् पोल्-कीड़े की तरह; निलत्तिनिल्-
भूमि में; पिऱन्ततै-जनमने का गुण; निरप्पिनाय्-दिखा दिया। ३९५७

आभरण-मध्य जड़ित होनेवाले रत्नों के समान उज्ज्वल तथा श्रेष्ठता के लिए रचित अच्छे गुण तुम्हें छोड़ गये हैं! तुम भूमि से उत्पन्न हुई और श्रेष्ठ कुल में पैदा न होकर धरती में उपजे निर्बल कीड़े के समान उसका-सा गुण दिखा दिया!। ३९५७

पण्मैयुम् बॅरुमैयुम् बिऱप्पुङ् गऱ्पॅनुम्
तिण्मैयु मॉळुक्कमुन् दॅळिवुञ् जीर्मैयुम्
उण्मैयु नीयॅनु मॉरुत्ति तोन्ऱलाल्
वण्मैयिन् मन्नवन् पुहऴिन् माय्न्ददाल् 3958

पॅण्मैयुम्–स्त्रियोचित गुण; पॅरुमैयुम्–गौरव; पिऱप्पुम्–जन्म; कऱ्पॅनुम्–पातिव्रत्य; तिण्मैयुम्–की दृढ़ता; ऑळुक्कम्–शील; तॅळिवुम्–निर्णय; चीर्मैयुम्–यश और; उण्मैयुम्–सत्य; नी ऍनुम्–तुम जो; ऑरुत्ति–एक; तोन्ऱलाल्–पैदा हुई तो; वण्मैयिल्–अनुदार; मन्नवन्–राजा के; पुकऴिन्–यश के समान; माय्न्ततु–मिट गये। ३९५८

(शरम, अबोधता, भय आदि) स्त्री के लिए उचित सारे गुण-गौरव, कुलीनता, पातिव्रत्यदृढ़ता, सच्चरित्र मन की निर्णयशीलता, यश, सत्य —ये सब तुम एक के जन्म के कारण अनुदार राजा के यश के समान मिट गये। ३९५८

अडॅप्परॅम् बुलन्गळै यॉळुक्क माणियाच्
चडॅप्परन् दहैन्ददोर् तहैविन् मातवम्
बडॅप्परॅवन् विडॅयॊरु पऴिवन् दालवु
तुडॅप्पर् तम्मुयिरॊडुङ् गुलत्तिऱ् ऱोहैमार् 3959

कुलत्तिल्–कुलीन; तोकैमार्–रमणियाँ; ऐम् पुलन्कळै–पंचेंद्रिय को; अटॅप्पर्–रोकती हैं; ऑळुक्कम्–चरित्र को; आणिया–दृढ़ता से; चटै परम्–जटा-भार; तकैन्ततु–बनाकर; ओर् तकविन्–एक सुयोग्य; मातवम्–महान तप; पटॅप्पर्–करती है; इटै–बीच में; ऑरु–एक; पऴि वन्ताल्–निंदा लगे तो; उयिरॊटुम्–प्राण त्याग; वन्तु–के साथ आ; अतु–वह; तुटॅप्पर्–पोंछ देंगी। ३९५९

कुलीन कलापीनिभ रमणियाँ वियोगावस्था में पंचेंद्रिय दमन करतीं, शील का सुदृढ़ पालन करके केश को जटाभार बनाके रखतीं और महान तपस्या में लीन रहतीं। बीच में कोई निंदा लगती तो प्राणों से उसको पोंछ लेतीं। (ये गुण तुम्हारे पास तो रहे ही नहीं।)। ३९५९

यादिया नियम्बुव दुणर्वै योडऱच्
चेदिया निन्ऱदुन् ऱॊळुक्कञ् जॅय्वदु
शादिया लन्ऱॆनिऱ् ऱक्क दोर्नॅऱि
पोदिया लॅन्ऱतन् पुलवर् पुन्दियान् 3960

पुलवर्–ज्ञानियों के; पुन्तियान्–ज्ञान रूपी श्रीराम; यान्–मैं; इयम्पुवतु–कहूँ; यातु–कौन सा है; उन् ऑळुक्कम्–तुम्हारा चरित्र; उणर्वै–तुम्हारी बुद्धि को; ईटु अऱ–निर्बल बनाकर; चेतिया निन्ऱतु–छिन्न करता है; चॅय्वतु–करना (यही); चाति–मरो; अन्ऱु ऍनिल्–नहीं तो; तक्कतु–अपने योग्य; ओर् नॅऱि–किसी मार्ग में; पोति–जाओ। ३९६०

ज्ञानियों के ज्ञानदेव ने आगे जारी रखा— अब आगे कहने के लिए मेरे पास क्या है ? तुम्हारा अनुचित चरित्र मेरे (या तुम्हारे) मन को काटता है ! अब तुम्हारे लिए करना यही है कि मरो। वह नहीं हो सकेगा तो अपने योग्य किसी स्थान में चली जाओ। ३९६०

मुत्तवरु ममररु मऱ्ऱु मुऱ्ऱिय, नित्तवरु महळिरु निरुद रॅन्ऱुळार्
ॲत्तवरुम् वानरत् तॅवरुम् वेऱुळार्, अत्तवरुम् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱि नाररो 3961

मुत्तवरुम्–मुनिवर और; अमररुम्–देव; मऱ्ऱुम्–और अन्य; मुऱ्ऱिय–पूर्ण-पक्व; नित्तवु अरु–ज्ञान से भी अगम; मकळिरुम्–स्त्रियाँ; निरुतर्–राक्षस; ॲन्ऱु–जो; उळार्–हैं; ॲत्तवरुम्–सभी; वानरत्तु–वानर के; ॲवरुम्–सभी; वेऱु उळार्–अन्य; अत्तवरुम्–सभी; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱितार्–रोने लगे। ३९६१

यह सुनकर मुनिवर, देव, अननुभित स्त्रियाँ, राक्षस जो थे वे, वानर जो थे वे और अन्य जाम्बवान आदि सभी असहनीय वेदना से तड़पते मुख खोलकर रोये। ३९६१

कण्णिणै युदिरमुम् बुनलुम् कान्ऱुह
मण्णित्तै नोक्किय मलरित् वैहुवाळ्
पुण्णित्तैक् कोलुऱुत् तत्तय पॉम्मलाळ्
उण्णित्तैप् पोविनित् ऱुयिर्प्पु वीङ्गिनाळ् 3962

मण्णित्तै नोक्किय–भूमि पर दृष्टि डाले; मलरित् वैकुवाळ्–कमलासना; पुण्णित्तै–व्रण में; कोल्–छड़ी; उऱुत्तु–घसी; अत्तय–जैसे; पॉम्मलाळ्–दुःख से; कण्णिणै–अक्षद्वय से; उतिरमुम्–रक्त; पुनलुम्–और जल; कान्ऱु उक–अधिक गिराते हुए; उळ नित्तप्पु–प्रज्ञा; ओवि निऩ्ऱु–खोकर; उयिर्प्पु वीङ्किताळ्–लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। ३९६२

कमलासना सीताजी ने भूमि पर दृष्टि दिये, व्रण में छड़ी घुस गयी हो —ऐसी वेदना के साथ, अपनी आँखों से रक्त और आँसुओं को अधिक परिमाण में बहाते हुए संज्ञाहीन स्थिति में लंबी साँसें लीं। ३९६२

परुन्दडर् शुरत्तिडैप् परुहु नीर्नशै
वरुन्दरुन् दुयरिनान् माळ लुऱ्ऱमान्
इरुन्दडङ् गण्डदि नॅय्दु ऱावहैप्
पॅरुन्दडै युऱ्ऱॅनप् पेदुऱ् ऱाळरो 3963

परुन्तु अटर्–बाजों से भरे; चुरत्तु इटै–मरु प्रदेश में; नीर् परुकुम्–जल पीने की; नचै–इच्छा से; वरुन्तु–पीड़ा के; अरु–कठोर; तुयरिनाल्–दुःख से; माळल्–मरणोन्मुख दशा को; उऱ्ऱ मान्–प्राप्त हरिण; इरु तटम्–विशाल तट; कण्टु–देखकर; अतिन्–उसके पास; ॲय्तुऱा वकै–न जा सके ऐसी; पॅरु तटै–बड़ी बाधा; उऱ्ऱु–पा गया; ॲन–जैसे; पेतुऱ्ऱाळ–भ्रांत हुई। ३९६३

बाजों से भरे मरु प्रदेश में पिपासा से मरणोन्मुख मृग किसी विशाल तट को पा जाय पर उसे वहाँ जाने से रोकते हुए कोई बाधा उपस्थित हो जाय —उस हरिण की-सी स्थिति में आकर देवी भ्रांत हुईं। ३९६३

उऱ्ऱुनिन् ऱुलहित्तै नोक्कि योडरि, मुऱ्ऱुऱु नॆडुङ्गणी रालि मॊय्त्तुह
इऱ्ऱदु पोलुम्या निरुन्दु पॆऱ्ऱपे, ऱुऱ्ऱदा लॆन्ऱव मिन्ऱॆन् ऱोदुवाळ् 3964

उऱ्ऱु निन्ऱु–भ्रांत रहकर; ओट्टु–चंचल; अरि मुऱ्ऱुऱुम्–डोरे से युक्त; नॆट्टुक्कण्–लम्बी आँख से; नीर् आलि–अश्रुधारा; मॊय्त्तु उळ–घने रूप से गिराते हुए; उलकित्तै नोक्कि–संसार को देखकर; यान्–मैं; इरुन्तु–(अच्छी) रहकर; पॆऱ्ऱ पेऱु–जो पायी उसका फल; इऱ्ऱतु–व्यर्थ गया; ऍन् तवम्–मेरी तपस्या; इन्ऱु–आज; उऱ्ऱतु–गयी; ऍन्ऱु–कहकर; ओतुवाळ्–बोलीं। ३९६४

इस तरह भ्रांतचित्त होकर, लाल डोरे के साथ शोभती आँखों से अश्रुकणों को निरंतर ढलकाते हुए आम रूप से लोकों को व्यथा जतायी कि जीवित रहकर पाया यही फल! मेरी तपस्या आज गयी! फिर श्रीराम से बोलीं। ३९६४

मारुदि वन्दॆन्नैक् कण्डु वळ्ळलनी
शारुदि यीण्डॆनच् चमैयच् चॊल्लिनान्
यारिनु मॆय्म्मैया निशत्त दिल्लैयो
शोरुमॆन् निलैयवन् तूदु मल्लनो 3965

वळ्ळल्–उदार प्रभु; मारुति–मारुति ने; वन्तु–आकर; ऍन्नै कण्टु–मुझे देख; नी–तुम; ईण्टु–इधर; चारुति–आओ; ऍन–ऐसा; चमैय–धीरज देकर; चॊल्लिनान्–कहा; यारिनुम्–सबों में; मॆय्म्मैयान्–श्रेष्ठ उसने; चोरुम्–घुलती; ऍन् निलै–मेरी दशा; इचॆत्ततु–बतायी; इल्लैयो–नहीं क्या; तूतुम्–क्या वह दूत; अल्लनो–नहीं था। ३९६५

हे वदान्य! मारुति ने आकर मुझसे धैर्य के साथ कहा कि तुम इधर आओ। सर्वश्रेष्ठ उसने मेरी दीन-हीन स्थिति आपसे नहीं बतायी क्या? क्या वह उत्तम दूत नहीं था शायद? । ३९६५

ऍत्तव मॆन्नल मॆन्न करपुनान्
इत्तनै कालमु मुळन्द वॆल्लाम्
पित्तॆन लायवम् बिळैत्त वालन्ऱे
उत्तम नीमनत् तुणर्न्दि लामैयाल् 3966

उत्तम–पुरुषोत्तम; इत्तनै कालमुम्–इतना समय; नान् उळन्त–मैंने कष्ट उठाकर जो किया; ऍत्तवम्–वह सारा तप; ऍ नलम्–वह सारा सुकृत्य; ऍन्न करपुम्–मेरा श्रेष्ठ चरित्र; ईतु ऍल्लाम्–यह सब; नी मनत्तु–आपने मन में; उणर्न्तिलामैयाल्–नहीं जाना, इसलिए; पित्तु–पागल; ऍतल्–कहने योग्य जो; आय–रहा उसका; वम्पु–निरर्थक काम; इळैत्ततु–किया जैसा रहा। ३९६६

हे पुरुषोत्तम ! मैं अब तक जो साधना करती रही वह कितना बड़ा तप, कितना बड़ा शील, कितना उत्तम पातिव्रत्य वह सब आप समझ नहीं सके। इसलिए वह सारा किया कराया पागलों के कार्य के समान उपेक्षणीय हो गया। ३९६६

पार्क्कॅलाम् बत्तिनि पदुमत् तानुक्कुम्,
पेर्क्कलाग् जिन्दैय ळल्लळ् पेदैयेन्
आर्क्कलाङ् गण्णव नन्ऱॅन् ऱालदु
तीर्क्कलान् दहैयदु तॆय्वन् देरुमो 3967

पेतैयेन्–बेचारी मैं; पार्क्कु ऍलाम्–सारे लोक में; पत्तिनि–पतिव्रता; पतुमत्तानुक्कुम्–पद्मासन के लिए भी; पेर्क्कलाम्–बदल जाय ऐसे; चिन्तैयळ्–मनवाली; अल्लळ्–नहीं हूँ; पार्क्कॅलाम्–सारे लोकवाली; आर्क्कलाम्–बाह-वाही दे, ऐसी; कण्णवन्–दयालु आँख वाले श्रीराम; अन्ऱु ऍन्ऱाल्–'नहीं' कहें तो; अतु–वह राय; तीर्क्कलाम्–दूर किये जाने; तकैयतु–योग्य होगी क्या; तॆय्वम्–देव भी; तेरुमो–समझेगा क्या। ३९६७

वराकी मुझे सारा संसार पतिव्रता मानता है ! पद्मासन भी मुझे डिगा नहीं सकते। तो भी सभी लोकों द्वारा साधुवाद के उच्च स्वर में प्रशंसित श्रीराम मानें कि वह सच नहीं तो उस राय को कोई देव भी दूर कर सकेगा क्या ? । ३९६७

पङ्गयत् तॊरुवनुम् बशुविन् पाहनुम्
शङ्गुकैत् ताङ्गिय तरुम मूर्त्तियुम्
अङ्गैयि नॆल्लिपो लनैत्तु नोक्किनुम्
मङ्गैयर् मननिलै युणर वल्लरो 3968

पङ्कयत्तु–पंकज के; ऑरुवनुम्–अनुपम देव और; पचुविन् पाकनुम्–ऋषभवाहन; चङ्कु–शंख; कै–हाथ में; ताङ्किय–धरनेवाले; तरुम मूर्त्तियुम्–धर्ममूर्ति; अङ्कैयिन्–करतल के; नॆल्लि पोल्–आँवले के समान; अनैत्तुम्–सबको; नोक्किनुम्–देख सकें तो भी; मङ्कैयर्–स्त्रियों को; मन निलै–चित्त-स्थिति; उणर वल्लरो–समझ सकेंगे क्या। ३९६८

पंकजासन, ऋषभवाहन पशुपति, शंखधर धर्ममूर्ति विष्णु —ये सब किसी भी वस्तु को करतलामलकवत् देख सकते हैं। पर वे भी क्या स्त्रियों की चित्तस्थिति को समझ सकेंगे ? । ३९६८

आदलिऱ् पुऱत्तिनि यारुक् काहवॆत्
कोदऱ तवत्तिनैक् कूऱिक् काट्टुहेन्
शादलिऱ् चिऱन्दवॊन् ऱिल्लै तक्कदे
वेदनिन् पणियदु विदियु मॆन्ऱनळ् 3969

वेत–वेदपुरुष; आतलाल्–इसलिए; इति–अब; अॅन् कोतु अरु–मेरे अनिंद्य; तवत्तितै–तप को; पुरत्तु–बाहर; यारक्कु आक–किसके लिए; कूरि–कह; काट्टुकेन्–दिखाऊँ; चातलिल्–मरने से; चिरन्ततु–श्लाघनीय; ओन्रु–कुछ; इल्लै–नहीं है; निन् पणि–आपकी आज्ञा; तक्कते–उचित ही है; वितियुम् अतु–मेरी विधि वही; अॅन्रनळ्–कहा (देवी ने)। ३६६६

वेदपुरुष ! इस स्थिति में अपने अनिंद्य पातिव्रत्य की तपस्या की, पवित्रता को अन्य किसको कह सुनाऊँगी ? इसलिए मरने से श्लाघ्य कुछ नहीं ! आपकी आज्ञा बिलकुल उचित है ! मेरा प्रारब्ध भी वही है शायद ! देवी ने ऐसा कहा। ३९६९

इळैयवत् इतैयळैत् तिडुदि तीयॅत
वळैयॉलि मुन्गैयाळ् वायिन् कूरलुम्
उळैवुरु मनत्तव तुलहम् यावुक्कुम्
कळैकणैत् तॊळववत् कण्णिन् कूरिनान् 3970

वळै ऑलि–क्वणित कंकणों वाले; मुन् कैयाळ्–अग्रहस्त वाली के; इळैयवत् तनै–लघु भ्राता को; अळैत्तु–बुलाकर; ती–आग; इडुति–जलाओ; अॅत–ऐसा; वायिल्–मुख से; कूरलुम्–कहने पर; उळैवु–दुःख से; उरु–पीड़ित; मनत्तवन्–मन वाले ने; उलकम्–लोकों; यावुक्कुम्–सारे के; कळै कणै–आश्रय को; तॊळ–वन्दना करने पर; अवत्–उन्होंने; कण्णिल्–आँखों के इशारे से; कूरितान्–जताया। ३६७०

फिर क्वणित-कंकण-हस्ता ने लघुराज को बुलाया और खुल्लम-खुल्ला कहा कि आग रचो। उसे सुनकर व्यग्रमन लक्ष्मण ने लोकाश्रय श्रीराम के चरणों में नमस्कार किया (और उनकी आज्ञा जाननी चाही)। श्रीराम ने भी आँखों के इशारे से अपना अभिप्राय जता दिया। ३९७०

एङ्गिय पॊरुमलि निळिहु णीरितन्, वाङ्गिय वुयिरित तनैय मैन्दतुम्
आङ्गॅरि विदिमुरै यमैवित् तानदन्, पाङ्गुर नडन्दनळ् पदुमप् पोदिताळ् 3971

वाङ्किय उयिरितन्–हृत-प्राणों वाले के; अनैय मैन्ततुम्–समान हुए कुँअर ने; एङ्किय पॊरुमलिन्–व्यग्रता के दुःख के कारण; इळि कणीरितन्–बहनेवाले अश्रु के हो; आङ्कु–वहाँ; अॅरि–आग को; विति मुरै–यथाविधि; अमैवित्तान्–रच दी; पतुमम् पोतिताळ्–कमलासना; अतन् पाङ्कु उर–उसके पास लगी; नटन्ततळ्–चलीं। ३६७१

लक्ष्मण हतप्राण-से हो गये। दुःखतप्तमन से आँखों से आँसू बहाते हुए उन्होंने यथाविधि आग का प्रबंध करा दिया। कमलासना देवी उसके पास गयीं। ३९७१

तीयिडै यरुहुरच् चत्रु तेवर्क्कुम्
तायतनिक् कुरुहलुन् दरिक्कि लामैयाल्

वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिन मरैहळ् नान्गोडुम्
ओय्विनल् लऱमुमऱ् ऱुयिर्हळ् यावैयुम् 3972

तेवर्क्कुम्–देवों की; ताय–अंबा के; तनि–अकेले; ती इटै–आग के; मक्कु उऱ–बहुत पास; चॆन्ऱु–जा; कुऱुकलुम्–पहुँचते ही; तरिक्किलामैयाल्–सह न सकने से; नान्कु मऱैकळोडुम्–चारों वेदों के साथ; ओय्विल्–अक्षय; नल् अऱमुम्–धर्म; मऱ्ऱु–और; उयिर्कळ् यावुम्–सभी जीव; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिन–आहत स्वर में चिल्लाये। ३९७२

देवों की भी अंबा अकेली आग के पास गयीं तो चारों वेद, अक्षय धर्म और सभी जीव यह सह नहीं सके और मुख खोलकर प्रलाप करने लगे। ३९७२

वलम्वरु मळवैयिन् मरुहि वान्मुदल्
उलहमु मुयिर्हळु मोल मिट्टन
अलम्वर लुऱ्ऱन वलऱि यैयविच्
चलमिदु तक्किल वॆन्नच् चाऱ्ऱिन 3973

वलम् वरुम्—दायें घूमते; अळवैयिन्—समय में; वान् मुतल्–स्वर्ग आदि; उलकमुम्–लोक; उयिर्कळुम्–और जीव; मरुकि–घुलकर; अलम् वरल् उऱ्ऱन–अस्त-व्यस्त घूमकर; ओलमिट्टन–चिल्लाये; अलऱि–चिल्लाकर; ऐय–प्रभु; इ चलम् इतु–यह कोप; तक्किलतु–उचित नहीं; ऎन्न–ऐसा; चाऱ्ऱिन–कहा। ३९७३

जब वे अग्नि की परिक्रमा करने लगीं, तब स्वर्गादि लोक और उनके सभी जीव क्षुब्ध हुए, अस्त-व्यस्त हुए और उच्च स्वर में चिल्लाये। बिलाप करते हुए उन्होंने श्रीराम से विनय की कि हे प्रभु! यह कोप उचित नहीं। ३९७३

इन्दिरन् तेवियर् मुदल वॆळ्ळैयर्
अन्वर वानिनिन् ऱरऱु हिन्ऱवर्
शॆन्दळिर्क् कैहळार् चॆय रिप्परुञ्
जुन्दरक् कण्गळै यॆऱ्ऱित् तुळ्ळिनार् 3974

इन्तिरन्–इन्द्र की; तेवियर्–पत्नियाँ; मुतल एळैयर्–आदि स्त्रियाँ; अन्तरम्–अंतरिक्ष के; वानिनिन् निन्ऱु–आकाश में खड़ी होकर; अरऱुकिन्ऱवर्–बिलाप करतीं; चॆ तळिर् कैकळाल्–लाल पल्लवहस्तों से; चॆम्मै अरि–लाल डोरों-सह; पॆरु–बड़ी; चुन्तरम्–सुन्दर; कण्कळै–आँखों पर; ऎऱ्ऱि–पीटकर; तुळ्ळिनार्–तड़पीं। ३९७४

इंद्राणी आदि देवियाँ आकाश में खड़ी रहकर रोयीं और अरुण-पल्लव हाथों से अपनी सुंदर बड़ी आँखों को पीटकर तड़पीं। ३९७४

नडुङ्गित्तर् नान्मुहन् मुदल नायहर्
पडङ्गुरुन् दद्रुपडि शुमन्द पाम्बुवाय्
विडम्बरन् दुळदंन वॆंदुम्बिर् रालुल
हिडन्दिरिन् दतशुडर् कडलह ळेड्गिन 3975

नान्मुकन्–चतुर्मुख; मुतल–आदि; नायकर्—मुख्य देव; नटुङ्कित्तर्–काँपे; पटि चुमन्त–भूमि को ढोनेवाला; पाम्पु–साँप; पटम्–फन; कुरुन्ततु–समेटकर; उलकु इटम्–भूतल में; वाय्–मुख से; विटम् परन्तु उळतु–निकला विष फैला हो; अॅन–ऐसा; वॆंतुम्पिर्रु–तप्त हुआ; चुटर्–तेजपुंज; इटम्–स्थान; तिरिन्तन–बदले; कटल्कळ्–सागर; एङ्कित–रोये। ३९७५

चतुर्मुख आदि प्रमुख देवता काँपे। धरणीधर शेषनाग का फन संकुचित हो गया। भूतल सारा उसके मुख से निःसृत विष से ढँका जैसा तप्त हो गया। सूर्य आदि ज्योतिमंडल स्थान बदल गये। समुद्र तरस उठे। ३९७५

कनत्तिनार् कडैन्दपूण् मुलैय कैवळै
मनत्तिनाल् वाक्किनाल् मरुवुर् रेनॆनिन्
शिनत्तिनार् चुडुदियार् रीच्चॆल् वावॆन्राळ्
पुनत्तुळाय्क् कणवर्कुम् वणक्कम् बोक्किनाळ् 3976

कनत्तिनाल्–स्वर्ण से; कटैन्त पूण्–तराशकर बनाये गये आभरण-भूषित; मुलैय–स्तनों वाली; कैवळै–कंकणहस्ता सीता ने; ती चॆल्वा–अग्निदेव; मनत्तिनाल्–मन से; वाक्किनाल्–वाक् से; मरु उर्रेन्–कलंकित हो गयी; अॅनिन्–तो; चिनत्तिनाल्–कोप के साथ; चुटुति–जला दो; अॅन्राळ्–कहा; पुनम् तुळाय्—वन-तुलसीधारी; कणवर्कुम्–पति को भी; वणक्कम् पोक्किनाळ्–नमस्कार किया। ३९७६

तराशे हुए स्वर्ण से निर्मित आभरणधारिणी कंकणहस्ता सीता ने अग्नि से निवेदन किया कि हे अग्निदेव ! मन से कलंकित हो रही तो तुम मुझे कोप के साथ जला दो। फिर वनतुलसीमालाधारी श्रीराम की भी वन्दना की। ३९७६

नीन्दरुम् बुनलिडै निवम्ब तामरै
एयन्ददन् कोयिलै यॆय्दु वाळॆनप्
पाय्न्दनळ् पाय्दलुम् बालिन् पञ्जॆनत्
तीन्ददव् वॆरियवळ् कर्पिन् तीयिनाल् 3977

नीन्त अरु–असरणशक्य; पुनल् इटै–जलाशय में; निवन्त–ऊँचे उठे; तामरै–कमल रूपी; एय्न्त–योग्य; तन् कोयिलै–अपने मंदिर में; अॅय्तुवाळ् अॅन–जाती जैसे; पाय्न्तनळ्–वेग से कूदीं; पाय्तलुम्–कूदते ही; अव् अॅरि–वह अग्नि;

अवळ् कऱ्पिन्–उनके पातिव्रत्य की; तीयिनाल्–आग से; पालिन् पञ्चु अँत–शुद्ध रूई के समान; तीन्ततु–जली। ३९७७

फिर वे शीघ्र अग्नि में कूदीं मानो वे अपने ही अतरणयोग्य जल में ऊँचे उठे कमल रूपी मंदिर में पहुँच रही हों! उनके उसमें कूदते ही अग्नि उनके पातिव्रत्य की आग में दुग्ध-धवल रूई के समान जल गया। ३९७७

अऴुन्दिनळ् नङ्गैमर् रङ्गै यार्चुमन्
वॆऴुन्दन नङ्गिवॆन् दॆरियु मेनियान्
तॊऴुङ्गरत् तुणैयिनन् शुरुदि ञाननतिन्
कॊऴुन्दिनैप् पूशलिट् टरऱ्ऱुङ् गॊळ्हैयान् 3978

अऴुन्तिनळ्–दुःखिनी; नङ्कै–देवी की (पातिव्रत्य की); अङ्कि–आग में; वॆन्तु–झुलसकर; ऎरियुम् मेनियान्–जलती देह वाला अग्नि; चुरुति ञाननत्तिन्–वेदज्ञान के; कॊऴुन्तिनै–शिखर को; पूचल इट्टु–उच्च स्वर में बुलाकर; अरऱ्ऱुम्–रोने के; कॊळ्कैयान्–कार्य में लगा; तॊऴुम्–नमस्कार में जुड़े; करम् तुणैयिनन्–हस्तद्वय वाला; अङ्कैयाल्–अपने हाथों में; चुमन्तु–धारण करके; ऎऴुन्तनन्–उठा। ३९७८

दुःखिनी सीता के पातिव्रत्य के ताप से जल-भुनकर जलते शरीर के साथ अग्नि श्रुतिज्ञान के शिखर भाग श्रीराम की दुहाई में उच्च स्वर में रोते-चिल्लाते हुए अंजलिबद्ध अपने सुंदर हाथों में देवी को ले प्रगट हुआ। ३९७८

ऊडिन शीऱ्ऱत्ता लुदित्त वेर्हळुम्
वाडिन विल्लैया लुणर्त्तु माऱुण्डो
पाडिय वण्डॊडुम् बनित्त तेनॊडुम्
शूडिन मलर्हणीर् तोय्त्त पोऱ्ऱवाल् 3979

ऊटित–झुंझलाहट से; चीऱ्ऱत्ताल्–(पति के) उत्पन्न क्रोध से दुःखी होने के कारण; उतित्त–झलक आये; वेर्कळुम्–स्वेदकण; वाटिन इल्लै–सूखे नहीं; उणर्त्तुम्–समझाने के वास्ते; माऱु–कोई प्रमाण; उण्टो–चाहिए क्या; चूटित–भूत; मलर्कळ्–पुष्प; पाटिय–गाते; वण्टॊटुम्–भ्रमरों के साथ; पनित्त–रसते; तेनॊटुम्–मधु के साथ; नीर्–जल में; तोय्त्त पोऱ्ऱु–भिगोये-से लगे। ३९७९

सीतादेवी के शरीर पर श्रीराम के रुष्ट कोप के कारण उठे स्वेदकण भी न सूखे थे। फिर समझाने को क्या है? तो भी कहूँ। उन्होंने जो फूल धारण किये थे, वे उन पर गुंजार करते रहे भ्रमरों और उनसे झरते मधु के साथ वैसे ही नवीन रहे मानो वे जल में भिगोये गये हों। ३९७९

तिरिन्दन वुलहमुञ् जॅव्व तिऩ्ऱन, परिन्दव उयिरॅलाम् बयनद विरन्दन
अरुन्ददि मुदलिय महळि राडुदल्, पुरिन्दनर् नाणमुम् बॊऱ्ऱैयु नीङ्गिनार् 3980

तिरिन्तन-अस्त-व्यस्त; उलकमुम्-लोक; चॅव्वन्-अब ठीक; निऩ्ऱन-स्थित हुए; परिन्तवर्-रोनेवाले; उयिर् ऍलाम्-जीव सभी; पयम्-भय; तविर्न्तन-छोड़ चुके; अरुन्तति-अरुन्धती; मुतलिय-आदि; मकळिर्-देवियाँ; आटुतल्-नृत्य; पुरिन्ततर्-करने लगीं; नाणमुम्-शरम और; पॊऱ्ऱैयुम्-संयम भी; नीक्कितार्-छोड़ दिया। ३९८०

जो लोक अस्त-व्यस्त हुए थे वे सब अब स्थिर हो गये। दुःखी हुए जीव सभी भयविमुक्त हुए। अरुन्धती आदि शीलवतियाँ आनंद के कारण शरम और संयम त्यागकर नाच उठीं। ३९८०

कऩिन्दुयर् कऱ्पॅनुङ् गडवुट् टीयिनाल्, निनैन्दिलै यॅन्वलि नीक्कि नायॅन
अनिन्दनै यङ्गिनी ययर्वि लॅन्नैयुम्, मुनिन्दनै यामॅन मुऱ्ऱैयिट् टानरो 3981

नी-आप; निनैन्तिलै-विना सोचे; कऩिन्तु-पक्व हो; उयर्-उठे; कऱ्पॅनुम्-पातिव्रत्य रूपी; कटवुळ्-दिव्य; तीयिनाल्-आग से; ऍन्-मेरा; वलि-बल; नीक्किनाय्-हटा दिया; अ निन्तनै-अपचार कर; अयर्विल्-जो बुरा न किया; ऍन्नैयुम्-उस मुझसे भी; मुनिन्तनै-कोप किया; आम्-हाँ; ऍन-ऐसा; मुऱ्ऱैयिट्टान्-निवेदन किया; अङ्कि-अग्नि ने। ३९८१

अग्नि ने श्रीराम से शिकायत की। आपने विना सोचे ही पातिव्रत्य रूपी दिव्य घने ताप से मुझे निर्बल बना दिया। मैंने तुम्हारे प्रति कोई अपराध नहीं किया था। आदर करने में स्थिर हूँ। तो भी आपने मुझ पर क्रोध दिखाया शायद ! । ३९८१

इन्नदोर् कालैयि निरामन् यारैनी
ऍन्नैनी यियम्बिय वॅरियुळ् तोन्ऱियिप्
पुन्मैशा लॊरुत्तियैच् चुडावु पोऱ्ऱिनाय्
अन्नदार् शॊल्लवी दऱैदि यालॅन्ऱान् 3982

इन्ततोर्-ऐसे; कालैयिल्-समय में; इरामन्-श्रीराम ने; नी यारै-तुम कौन हो; नी-तुम; ऍरियुळ्-आग में; तोन्ऱि-प्रकट होकर; इयम्पियतु-कहते; ऍन्नै-क्या हो; इ-इस; पुन्मैयाल्-नीचता को; ऒरुत्तियै-एक स्त्री को; चुटातु-न जलाकर; पोऱ्ऱिनाय्-रक्षित किया; अन्ततु-वह; आर् चॊल्ल-किसके कहने से; ईतु अऱैति-यह कहो; ऍन्ऱान्-कहा। ३९८२

जब अग्नि ने ऐसा आर्त वचन कहा तब श्रीराम ने प्रश्न किया कि तुम हो कौन ? अग्नि से बाहर निकल आकर कहते क्या हो ? इस नीचता-युक्त स्त्री को न जलने देकर रक्षित किया —वह किसके कहने से ? यह बताओ। ३९८२

अङ्गिया तॆन्तैयिव् वन्तै करॢपॆन्नुम्
पॊङ्गुवॆन् दीच्चुडप् पॊरुक्कि लामैयाल्
इङ्गणॆन् देनुरु मियरॢकै नोक्कियुम्
शङ्गिया निरॢरियो वॆवरक्कुम् जानॢरुळाय् 3983

यान्–मैं; अङ्कि–अग्नि हूँ; ऎन्तै–मुझे; इव् अन्तै–इन लोकमाता के; करॢपु ऎन्नुम्–पातिव्रत्य रूपी; पॊङ्कु–भभकनेवाली; वॆम् ती–गरम आग ने; चट–जलाया; पॊरुक्किलामैयाल्–सह नहीं सका, इसलिए; इङ्कु–यहाँ; अणैन्तेन्–आयी; ऎवरक्कुम्–सबके; चान्ॢरुळाय्–साक्षी-रूप; उरुम्–मुझ पर आया; इयरॢकै–यह हाल; नोक्कियुम्–देखकर भी; चङ्किया–शंका करते; निरॢरियो–रहेंगे क्या। ३६८३

अग्नि ने निवेदन किया कि मैं अग्नि हूँ ! लोकमाता इनके पातिव्रत्य की आग ने मुझे जला दिया। मैं सह नहीं सका और इधर आया। हे सर्वसाक्षी ! मुझ पर बीती स्थिति देखकर भी आप शंका करेंगे क्या ? । ३९८३

वेट्पदु मङ्गैयर् विलङ्गि नारॆनिल्
केट्पदुम् बल्पॊरुट् कैयङ् गेडरॢ
मीट्पदु मॆन्वयि नॆन्नु मॆय्प्पॊरुळ्
वाट्पॆरुन् दोळिनाय् मरॢहळ् शॊल्लुमाल् 3984

वाळ्–तलवार चलाने में; पॆरु तोळिनाय्–अभ्यस्त उन्नत कंधों वाले; वेट्पतुम्–विवाह करना; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; विलङ्कितार्–(गृहस्थ-धर्म से) अलग हुई; ऎनिल्–तो; केट्पतुम्–पूछना; पल् पॊरुट्कु–अनेक बातों के संबंध में; ऐयम् केट्–संदेह और अन्याय; अरॢ–दूर करके; मीट्पतुम्–शंका दूर करना; ऎन् वयिन्–मेरे समक्ष होते; ऎन्नुम्–ऐसा; मॆय् पॊरुळ्–सत्य तथ्य; मरॢकळ्–वेद; चॊल्लुम्–कहते हैं। ३६८४

असिविद्याप्रवीण कंधोंवाले ! स्त्रियों का विवाह, स्त्रियों के डिगने पर विचारना, अनेक बातों में संदेह और अपराध से मुक्ति दिलाना —ये सब मेरे सान्निध्य में ही होते हैं। यह तथ्य वेदों द्वारा कहा जाता है। ३९८४

ऐयुरु पॊरुळ्हळै याशिन् माशॊरीइक्, कैयुरु नॆल्लियिन् कनियिर् काट्टुमॆन्
मॆय्युरु कट्टुरै केट्टु मीट्टियो, पॊय्युरा मारुदि युरैयुम् बोरॢरलाय् 3985

पॊय् उरा–जो असत्य नहीं बोलता; मारुति–उस मारुति का; उरैयुम्–कथन; पोरॢरलाय्–आपने नहीं माना; ऐयुरु–संदेहास्पद; पॊरुळ्कळै–विषयों को; आचिल्–शीघ्र; माचु–मैल; ऒरीइ–दूर करके; कै उरु–कर में रखे; नॆल्लियिन् कनियिन्–आमलक फल के समान; काट्टुम्–दिखानेवाले; ऎन्–मेरा; मॆय् उरु–

सत्य के; कट्टुरै–वचन को; केट्टुम्–सुनकर ही; मीट्टियो–देवी को अपना लेंगे (न)। ३९८५

आपने असत्य के अभाषी मारुति के कथन को नहीं माना! मैली वस्तुओं को शीघ्र मैल से छुड़ाकर करतलामलकवत् दिखाने की प्रकृति वाले मेरे सत्यवचन को सुनकर (ही सही) आप देवी को अपना लेंगे ?। ३९८५

तेवरु मुनिवरु तिरिव निऱ्पवुम्, मूवहै युलहमुङ् गण्गण् मोदिनिन्
ऱावॆन्ऱल् केट्किलै यऱत्तै नीक्किवे, ऱॆवमॆन् ऱॊरुपॊरुळ् याण्डुक् कॊण्डियो 3986

तेवरुम्–देव और; मुनिवरुम्–मुनिगण; तिरिव निऱ्पवुम्–चराचर; मूवकै उलकमुम्–तीनों लोकों के वासी; कण्कण्–आँखें; मोति निन्ऱु–पीटते हुए; आ ॲन्तल्–'हाय' कहके रोते हैं; केट्किलै–नहीं सुनते; अऱत्तै नीक्कि–धर्ममार्ग छोड़कर; वेऱु–विपरीत; एवम् ऍन्ऱु–पाप नाम के; ऑरु पॊरुळ्–एक तथ्य को; याण्टु–कहाँ से; कॊण्टियो–अपनाया। ३९८६

देखिए— देव, मुनि, चराचर प्रपंच सभी आँखें पीटकर 'हाय' कहते रो रहे हैं —यह नहीं सुनते क्या ? धर्म छोड़कर धर्मेतर, पाप, के मार्ग को कहाँ से अपनाया आपने ?। ३९८६

पॆय्युमे मळैपुवि पिळप्प दन्ऱियें, शॆय्युमे पॊऱैयऱम् नॆऱियिऱ् चॆल्लुमे
उय्युमे युलहिव ळुणर्वु शीऱिनाल्, वॆयुमेल् मलर्मिशै ययत्तु मायुमे 3987

इवळ्–ये; उणर्वु चीऱिनाल्–मन में गुस्सा करें; मळै पॆय्युमे–तो बरसात होगी क्या; पुवि–भूमि; पिळप्पतु–फटेगी; अन्ऱि–उसके सिवा; पॊऱै–भार वहन; चॆय्युमे–करेगी क्या; अऱम् नॆऱियिल्–धर्म अपने मार्ग में; चॆल्लुमे–चलेगा क्या; उलकु उय्युमे–संसार जीवित रहेगा क्या; वैयुमेल्–ये शाप दें तो; मलर् मिचै–कमल पर रहनेवाले; अयनुम्–अजदेव भी; मायुमे–मर जायगा न। ३९८७

ये देवी मन से रुष्ट हों तो क्या बारिश हो सकती है ? भूमि फट जायगी न, नहीं तो भारवहन करेगी क्या ? धर्म सही मार्ग पर जा सकेगा क्या ? पृथ्वी बचेगी ? ये शाप देंगी तो कमलभव भी मिट जायगा न !। ३९८७

पाडुरु पन्मॊऴि यिनैय पन्निनिन्, ऱाडुरु तेवरो डुलह मार्त्तॆऴच्
चूडुरु मेनिय वलरि तोहैयै, माडुरक् कॊणर्न्दनन् वळ्ळल् कूऱुवान् 3988

चटु उऱु–गरमीयुक्त; मेनि–शरीर वाला; अव् अलरि–वह अग्नि; इनैय–ऐसे; पाटु उऱु–गौरवपूर्ण; पल् मॊऴि–अनेक वचन; पन्नि निन्ऱु–कहकर; उलकम्–लोकों के; आर्त्तु ऍऴ–आनन्दरव कर उठते; आटुऱु–नाचनेवाले; तेवरोटु–देवों के साथ; तोकैयै–कलापीनिभ देवी को; माटु उऱ–पास लगाकर; कॊणर्न्तनन्–लाया; वळ्ळल्–उदार प्रभु; कूऱुवान्–बोले। ३९८८

तापदग्धशरीरी अग्नि ऐसे गुरु और अनेक कथन कहकर कलापी-निभ देवी को श्रीराम के पास सौंपने ले आया। तब देव नर्तन कर उठे और सारे लोक नर्दन कर उठे। उदार प्रभु यों बोले। ३९८८

अऴिप्पिल शान्ऱुनी युलहुक् कावलाल्
इऴिप्पिल शॊल्लिनी यिवळै यादुमोर्
पऴिप्पिल ळॆन्ऱनै पऴियु मिन्ऱिनिक्
कऴिप्पिल ळॆन्ऱनन् करुणै युळ्ळत्तान् 3989

करुणै उळ्ळत्तान्–करुणहृदय ने; नी उलकुक्कु–तुम लोकों के; अऴिप्पिल–अक्षय; चान्ऱु–साक्षी हो; आतलाल्–इसलिए; इऴिप्पु इल–अनिंद्य; चॊल्लि–कहकर; नी–तुमने; इवळै–इसे; यातुम् ओर्–किसी भी; पऴिप्पिलळ्–निंदा से रहित; ऍन्ऱनै–बताया; पऴियुम्–कलंक भी; इन्ऱु–नहीं; इनि–अब; कऴिप्पिलळ्–निवारणीय नहीं; ऍन्ऱनन्–कहा। ३९८९

करुणहृदय श्रीराम ने कहा कि हे अग्नि! तुम लोकों के अक्षय साक्षी हो! वैसे तुमने अनिंद्य वचन कहकर इसे अकलंक बता दिया। इसलिए इसमें कोई अपराध नहीं है (यह साबित है)। अब वह अत्याज्या हो गयी। ३९८९

उणर्त्तु वायुण्मै यॊळिवित् ऱ्ऱु कालम्वन् दुळ्ळदाल्
पुणर्त्तु मायैयिऱ् पॊदुवुऱ् निन्ऱवै युणरा
इणर्त्तु ळाय्त्तॊङ्ग लिरामऱ्कॆन् ऱिमैयव रिशैप्पत्
तणप्पिल् तामरैच् चदुमुह नुरैशॆयच् चमैन्दाल् 3990

पुणर्तुम्–अपनी ही रची; मायैयिल्–माया में; पॊतु उऱ् निन्ऱु–सामान्य रहकर; अवै–इन बातों को; उणरा–नहीं जानते जैसे; इणर् तुळाय्–गुच्छों की तुलसी; तॊङ्कल्–मालाधारी; इरामऱ्कु–श्रीराम के लिए; कालम् वन्तुळ्ळताल्–उचित समय आ गया, अतः; उण्मै–सत्य; ऒळिवित्ऱु–बिना छिपाये; उणर्त्तुवाय्–बता दें; ऍन्ऱु–ऐसा; इमैयवर्–देवों के; इचैप्प–कहने पर; तणप्पिल्–बिना हटे; तामरै–कमल पर रहनेवाले; चतुमुकन्–चतुर्मुख; उरै चॆय–बताने में; चमैन्तान्–लग गये। ३९९०

तब देवों ने ब्रह्मा से कहा कि समय आ गया जब स्वरचित माया के चक्कर में सामान्य जीवों के समान बरत कर, उन्हें न जानते से रहनेवाले गुच्छों-सहित तुलसीमाला के धारणकर्ता श्रीराम का रहस्य प्रकट किया जा सके। अतः सच्ची स्थिति को विना दुराव के बताइए। यह सुनकर नाभीकमल को कभी न छोड़नेवाले चतुर्मुख ब्रह्मा श्रीराम के सच्चे रूपों के कथन में प्रवृत्त हुए। ३९९०

मन्नर् तोल्हुलत् तवरित्त् तुणैयोरु मनिदन्
अन्न वुन्नलै युन्नैनी यिरामके ळिदत्तच्
चोन्न नाल्मरै मुडिविनिर् रुणिन्दमेय्त् तुणिवु
निन्न लादिल्लै निन्निन्वे रुळदिलै नेडियोय् 3991

इराम्–श्रीराम; नेटियोय्–महान (त्रिविक्रम); उन्नै–अपने को; तोल् कुलत्तवर्–प्राचीन कुल के; मन्नर् इनम् तुणै–राजवंश में उत्पन्न; ओर मनितन्–एक मानव हैं; अन्न–ऐसा; उन्नलै–नहीं समझें; नी–आप; इतनै–यह; केळ्–सुनिए; चोन्न–प्रशंसित; नाल् मरै–चारों वेदों के; मुडिविनिल्–अंत में (वेदान्त में); तुणिन्त मेय्–निर्णीत तत्त्व; तुणिवु–निर्णय; निन् अलातु–आपको छोड़कर; इल्लै–कुछ नहीं; निन्निन् वेरु–आपसे अलग; उळतु इलै–रहनेवाली वस्तु कुछ नहीं। ३९९१

हे श्रीराम! महान पुरुष (त्रिविक्रमदेव)! आप अपने को एक पुरातन सूर्यवंश के राजकुल में उत्पन्न केवल एक मानव नहीं मान लें। आप ये बातें सुनिएगा। प्रकीर्तित वेदों के शीर्षस्थ वेदांत द्वारा निर्णीत परतत्त्व आपके सिवा अन्य कोई नहीं। आपसे परे कोई तत्त्व भी नहीं। ३९९१

पहुदि येन्रुळ दियादिनुम् बळैयदु पयन्द
विहुदि याल्वन्द विळैवुमर् रुदर्कुमेल् निन्र
पुहुदि यावर्क्कु मरियवप् पुरुडनु नीयिम्
मिहुदि युन्पेरु मायैयि नाल्वन्द वीक्कम् 3992

यातिनुम् पळैयतु–सबसे पुरातन; पकुति अन्रु–प्रकृति नाम का; उळतु–(तत्त्व) है; पयन्र–उससे निकली; विकुतियाल् वन्त–विकृति से आये; विळैवुम्–कार्य-तत्त्व; मर्रु–और; अतर्कु मेल् निन्र–उन तत्त्वों से परे जो हैं; यावर्क्कुम्–सबके लिए; पुकुति अरिय–अज्ञेय; अ पुरुटनुम्–वे पुरुष; नी–आप ही; इम् मिकुति–यह प्रपंच; उन्–आपकी; पेरु मायैयिनाल्–बड़ी माया से; वन्त वीक्कम्–निकला विस्तार है। ३९९२

सबसे पुरातन तत्त्व मूलप्रकृति है! उसके विकार के कार्यरूप तत्त्व और उनसे परे सबके लिए अवेद्य वह पुरुष भी आप ही हैं! यह चराचर प्रपंच आपकी महान माया का विस्तार ही है। ३९९२

मुन्बु पिन्बिरु पुडैयेन्नुङ् गुणिप्परु मुरैमैत्
तन्बॅ रुन्वत्मै तान्वॅरि मरैहळिन् तलैहळ्
मन्बॅ रुम्बर मार्त्तमेन् रुरैक्कित्र मार्रम्
अन्ब नित्तैयल् लान्मर्रिङ् गियारैयु मरैया 3993

अन्प–दयालु; मुन्पु–पहले (आदि); पिन्पु–(बाद) और अन्त; इरु पुडै

ॲंतम्–दो सीमाओं के; कुणिप्पु अरु–अननुमेय; मुरैमै–क्रम की; तम् पॅरु तलमै–अपनी महानता को; ताम्–स्वयं; ऒरि–जाननेवाले; मरैकळिन्–वेदों के; तलैकळ्–शीर्ष; मत् पॅरु परमार्त्तम्–अति महान परमार्थ; ॲन्ड्र–ऐसा; उरैक्किन्ऱ–जो कहते; मार्रम्–वे वचन; निन्नै अल्लाल्–आपको छोड़; इङ्कु–यहाँ आये रहे; यारैयुम्–किसी को; अऱैया–नहीं इंगित करते। ३९९३

जीवप्रेमी ! आदि और अंत की दो सीमा के अंदर अगण्य क्रम के अंदर आपकी महिमा को वेदान्त ही जानते हैं और वे आपको परमार्थ (परमतत्त्व) कहते हैं। वह कथन आपकी ओर ही संकेत करना छोड़ यहाँ के (आये) किसी को द्योतित नहीं करता। ३९९३

ॲनक्कु मॅण्वहै यॅरुवर्क्कु मिमैयवर्क् किरैवन्
तनक्कुम् बल्पॅरु मुनिवर्क्कु मुयिरुडन् तळीइय
अनैत्ति नुक्कुनी येपर मॅन्बदै यऱिन्दार्
विनैत्तु वक्कुडै वीट्टरुन् दळैनिन्ऱु मीळ्वार् 3994

ॲनक्कुम्–मुझे और; ॲण् वकै ऒरुवर्क्कुम्–अष्टमूर्ति शिव के; इमैयवर्क्कु–देवों के; इरैवन् तनक्कुम्–राज के; पल्–अनेक; पॅरु मुनिवर्क्कुम्–बड़े मुनियों के; उयिरुडन्–जीवन से; तळी इय–युक्त; अनैत्तिनुक्कुम्–सभी के; नीये परम्–आप ही परम; ॲन्पतै–यह बात; अऱिन्तार्–जाननेवाले; विनै तुवक्कु उडै–कर्मों के कारण बने; वीट्ट अरुम्–अनिवार्य; तळै निन्ऱु–बन्धन से; मीळ्वार्–मुक्त होंगे। ३९९४

जो यह सूक्ष्म बात जानते हैं कि आप ही मेरे, अष्टमूर्ति शिव के देवेंद्र के और अनेक मुनिगणों के, क्यों समस्त जीवराशि के परे रहनेवाले परमतत्त्व हैं, कर्मद्रय के बंधन से छूट जाते हैं जो अन्यथा अवार्य हैं। ३९९४

ॲन्नैत् तान्मुद लाहिय वुरुवङ्ग ळॅवैयुम्
मुन्नैत् तायतन्दै यॅन्मॅरु मायैयिन् मूळ्हित्
तन्नैत् तानऱि यामैयिऱ् चलिप्पवच् चलन्दीर्न्
दुन्नैत् तादैयॆन् ऱुणर्हुव मुत्तिवित् तॊळिन्द 3995

ॲन्नै मुतलाकिय–मुझसे लेकर; उरुवङ्कळ् ॲवैयुम्–सारे रूप (जीव); मुन्नै–जन्म-हेतु; ताय् तन्तै ॲन्पुम्–माँ-बाप आदि की; मायैयिल् मूळ्कि–माया में डूबकर; तन्नै तान्–आप अपने को; अऱियामैयिल्–नहीं समझते इस कारण; चलिप्प–चंचल व दुःखी हैं; अ चलम्–वह अविद्या; तीर्न्तु–दूर करके; ऒळिन्त–अलग रहे जो; उन्नै–वे आपको; तातै ॲन्ऱु–पिता ऐसा; उणर्कुव–जानकर; मुत्ति वित्तु–मोक्ष के मूल हैं। ३९९५

मुझसे लेकर सारे जीव रूप अपने जन्म के हेतु माता-पिता आदि के बंधन रूपी माया में मग्न रहकर आत्मज्ञान खो देते हैं। इसलिए चंचल

और दुःखी होते हैं। उस अविद्या से जो छूटे हैं वे, जो आपको धाता (तथा आदिकारण) समझते हैं, मोक्ष के बीज बनते हैं। ३९९५

ऐयञ् जाहिय तत्तुवन् दॅरिन्दरिन् दवर्रिन्
मॅय्यॅञ् जावहै मेलिनूर निलक्कुमेल् यावुम्
पॉय्यॅञ् जाविल दॅन्नुमी दरुमरै पुहलुम्
वैयञ् जान्रिनिच् चान्रुक्कुच् चान्रिलै वळक्काल् 3996

ऐयञ्चु–पाँच के पाँच; आकिय–जो हैं वे; तत्तुवम्–तत्त्व; तॅरिनूतु अरिनतु–विचारकर जानें तो; अवर्रिन्–उनके; मॅय् ऑञ्चा वकै–सत्य को अक्षय रखकर; मेल् निनूर–उनके ऊपर स्थित; निलक्कु मेल्–आपके ऊपर; यातुम्–कोई; पॉय्–असत्य; ऑम्चा इलतु–न बने; ऑन्नुम्–ऐसा जो कहा जाय; ईतु–वह सत्य; अरु मरै–श्रेष्ठ वेद; पुकलुम्–कहते हैं; वैयम् चान्रु–भूलोक साक्षी है; इनि–अब; वळक्काल्–व्यवहार में; चान्रुक्कु–साक्षी के लिए; चान्रिलै–साक्षी नहीं। ३९९६

पचीस तत्त्व हैं। (पाँच तन्मात्राएँ, पाँच भूत, पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेंद्रिय, मन, चित्त, अहंकार, महत्— फिर जीव —ये पचीस तत्त्व हैं।) ये सब सत्य हैं। उनके परे आप हैं। आपसे परे कोई सत्य तत्त्व नहीं। यह श्रेष्ठ वेदों की सीख है। इसके सभी भूलोकवासी साक्षी हैं। फिर आपके कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं। क्योंकि प्रमाण का प्रमाण नहीं होता। ३९९६

अळवै यालळन् दामन्रॅन् ररिवुरुममैदि
उळवै यावैयु मुनक्किल्लै युपनिडत् तुनदु
कळवै यायन्दुरुत् तॅळिन्दिल दायितुङ् गण्णाल्
तुळवै यायमुडि यायुळै नीयॅनत् तुणियुम् 3997

आय्–सुन्दर; तुळवै मुडियाय्–तुलसी से अलंकृत केशवाले; अळवैयाल्–प्रमाणों के आधार पर; अळन्तु–माप कर; आम् अन्रु–है, या नहीं; ऑन्रु–ऐसा; अरिवुरुम्–जाने जायें; अमैत–वे व्यवस्थायें; उळवै–जो हैं; यावैयुम्–वे सब; उनक्कु इल्लै–आपके विषय में नहीं; उपनिटत्तु–उपनिषद्; उनतु कळवै–आपकी माया को; आयन्तु–खूब अन्वेषण करके; उरु–ठीक-ठीक; तॅळिन्तिलतु–नहीं जानते; आयितुम्–तो भी; कण्णाल्–(ज्ञान-) चक्षु से; नी उळै–आप हैं; ऑन–ऐसा; तुणियुम्–निश्चित रूप से कहते। ३९९७

सुंदर तुलसी से शोभित केशवाले! आप प्रमाणों द्वारा हाँ, या नहीं के रूप में स्थिर करनेवालों में नहीं! उपनिषदों ने आपकी माया की विचारणा करके ठीक तरह से जाना नहीं तो भी ज्ञानचक्षु द्वारा ज्ञेय बताया है। ३९९७

करण मॆन्ऱुळ वुन्नैवन् दऱिवुका णामे
अरण मल्लवर्क् किवैकडन् दऱिवरि दाह
मरणन् दोऱ्ऱमॆन्ऱ् रिवऱ्ऱिडै मयङ्गुब ववर्क्कुन्
शरण मल्लदोर् शरणिल्लै यन्नवै तविर्प्पान् 3998

अरणम्–आपकी शरण; अल्लवर्क्कु–जिन्हें नहीं मिली; अऱिवु वन्तु–ज्ञान हो और; काणामे–आपके दिव्य रूप न दिखे ऐसा; करणम् ऎन्ऱु–'करण' उळ–हैं; इवै–इन्हें; कटन्तु–पार करके; उन्नै–आपको; अऱिवु अरिताक–जानना कठिन है, इसलिए; मरणम्–मरण; तोऱ्ऱम्–जन्म; ऎन्ऱु–जो हैं; इवऱ्ऱिटै–इनके मध्य; मयङ्कुप–भ्रमित रहते हैं; अवर्क्कु–उन्हें; अन्नवै–उनसे; तविर्प्पान्–दूर होने के लिए; उन् चरणम्–आपके श्रीचरणों के; अल्लतु–अलावा; ओर्–कोई; चरण् इल्लै–आश्रय नहीं। ३९९८

आपका शरणागत होकर जिसने अनुभवगम्य ज्ञान प्राप्त नहीं किया है, उससे आपके दिव्य रूप को छिपा देते उसके करण कलेवर! इनसे परे जाकर आपको पहचानना कठिन रहता है। इसलिए जन्म-मरण के चक्कर में फँसे भ्रमित रहते हैं। उनसे बचने के लिए आपकी शरण के सिवा अन्य कोई शरण नहीं! । ३९९८

तोऱ्ऱ मॆन्बदोन् ऱुनक्किल्लै निन्कणे तोऱ्ऱुम्
आऱ्ऱल् शान्मुदऱ् पहुदिमऱ् ऱदनुळाम् बण्बाल्
काऱ्ऱु मुन्नुडैप् पूदङ्ग ळवैयॆन्ऱु कडैक्काल्
वीऱ्ऱु वीऱ्ऱुऱ्ऱु वीवुऱु नीयॆन्ऱुम् विळियाय् 3999

उनक्कु–आपका; तोऱ्ऱम् ऎन्पतु–जन्म ऐसा; ओन्ऱु इल्लै–कुछ नहीं; आऱ्ऱल् चाल्–बलसंयुक्त; मुतल् पकुति–मूलप्रकृति; निन् कणे–आपसे ही; तोऱ्ऱुम्–प्रगट होती है; मऱ्ऱु–और; अतन् उळाम् पण्पाल्–उससे उत्पन्न होने से; काऱ्ऱु मुन् उटै–वायु आदि; पूतङ्कळ् अवै–पाँच भूत जो हैं वे; कडैकाल्–युगक्षय में; चॆन्ऱु–जाकर; वीऱु वीऱु उऱ्ऱु–अलग-अलग हो; वीवु उऱुम्–मिट जायेंगे; नी–आप; ऎन्ऱुम्–सदा; विळियाय्–नहीं मरते। ३९९९

आप अजन्मा हैं। सर्वशक्त मूल प्रकृति आप ही से प्रगट होती है। अन्य प्रपंच उसी से निकलते हैं। इसलिए वायु से लेकर सभी भूत और अन्यत त्व युगक्षय के अवसर पर चूर होकर मिट जाते हैं। ३९९९

मिन्नैक् काट्टुदल् पोल्वनदु विळियुमिव् वुलहम्
तन्नैक् काट्टवन् दरुमत्तै नाट्टवुन् वन्दिये
ऎन्नैक् काट्टुदि यिरुदियुड् गाट्टुदि यॆन्क्कु
मुन्नैक् काट्टलै यौळिक्किनु मिलैमऱ् ऱुरैयाल् 4000

मिन्नै–बिजली को; काट्टतल् पोल–[illegible] ... [illegible]

विळियुम्–मिटनेवाला; इव् उलकम् तन्नै–इस संसार को; काट्टवुम्–प्रगट कराना और; तरुमत्तै–धर्म; नाट्टवुम्–संस्थापना करना; नी तनियै–आप अकेले; ॲन्नै–मुझे; काट्टुति–प्रगट कराते हैं; इरुतियुम्–अंत को भी; काट्टुति–दिखाते हैं; ॲन्तक्कु–मुझे भी; उन्नै–अपने को; काट्टलै–नहीं दिखाते; ओळिक्किनुम्–अवश्य रहें तो भी; मऱै उरैयाल्–वेदवचन-ज्ञान के कारण; इलै–नहीं (अ-जाने) रहते। ४०००

मेघों द्वारा प्रगट विद्युत् के समान प्रगट होकर अदृश्य होनेवाले इस प्रपंच को प्रगट कराने और धर्मसंस्थापन करने के लिए आप केवल मुझे रच देते हैं। फिर सबका अंत भी करा देते हैं। तो भी आप मुझे अपने रूप को नहीं दिखाते। आप अगोचर रहें तो भी वेदवाक्यों के आधार पर मैं आपको पहचान लेता हूँ, इसलिए आप मेरे लिए अज्ञात नहीं रहते। ४०००

ॲन्नु रुक्कोडिव् वुलहिनै यीन्नुदि यिडैये
उन्नु रुक्कोडु पुहुन्वुनिन् ऱोम्बुदि युमैयोन्
तन्नु रुक्कोडु तुडैत्तिमर् ऱिवुतति यरुक्कन्
मुन्नु रुक्कोडु पहल्शॅयुन् वरत्तवु मुदलोय् 4001

मुतलोय्–आदिदेव; ॲन्–मेरा; उरु कोंडु–रूप धरकर; इव् उलकिनै–इस संसार को; ईनुति–सृष्ट करते हैं; उन्–अपने; उरु कोंडु–रूप में आकर; इडैये–मध्य में; पुकुन्तु–प्रवेश करके; निन्ऱु ओम्पुति–स्थिति देकर पालन करते हैं; उमैयोन् तन्–उमापति का; उरु कोंडु–रूप धरकर; तुडैत्ति–संहार कराते हैं; इतु–यह; तति अरक्कन्–विशिष्ट सूर्य; मुन्–समक्ष के; उरु कोंडु–रूप से; पकल्–अह्न; शॅयुम्–जो बनाता; तरत्ततु–उस-सरीखा है। ४००१

हे आदिदेव! मेरा रूप ले आप इस संसार को जनाते हैं। अपना रूप लेकर उसे स्थिति देकर मध्य रहकर पालते हैं। फिर उमापति का रूप लेकर उसे पोंछ लेते हैं। यह वैसा है जैसा अर्क सबके समक्ष रहकर अह्न बना लेता हो। ४००१

तिरुक्कु वान्मलि शॅल्वत्तुच् चॅरुक्कुवेन् विऱत्तुत्
तरुक्कु माय्वुऱत् तानव ररक्कर्वॅञ् जमरिल्
इरिक्क माळ्हिनोन् वुनैप्पुहल् यामुबुह वियैयाक्
करुक्कु ळाय्वन्तु तोऱ्ऱुदि योङ्गिवु कडन्नो 4002

तिरुकुवाल्–श्री ढेर में हो; मलि–ऐसी अधिक; शॅल्वत्तु–निधि से; चॅरुक्कुवेम्–घमंड जो करते ऐसे हमारे; तिऱत्तु–पास के; तरुक्कु–गर्व को; माय्वु उऱ–मिटाते हुए; तानवर्–दानवों; अरक्कर्–और राक्षसों के; वॅम् चमरिल्–कठोर युद्ध में; इरिक्क–हमें भगाने पर; याम्–हम; माळ्कि–क्षुब्ध होकर; नोन्तु–वेदना पाकर; याम् उनै–हम आपको; पुकल् पुक–शरण में आये तो; इयैपा–बिलकुल बेमेल रूप से; करुक्कुळ–गर्भ में जन्म; आम् वन्तु–ले आकर; ईक्कु–
... ... यह आपके लिए फर्ज है क्या। ४००२

श्रीसंपन्नता से हम गर्वीले हो जाते हैं। वैसे हमारे गर्व को तोड़ने के हेतु देव-दानव युद्ध में हमें हारकर भागने की गति देते हैं। हम क्षुब्ध होकर आपकी शरण आते हैं तो आप अपने लिए निपट अनमेल रूप से गर्भ में आकर यहाँ अवतार लेते हैं। यह आपका फ़र्ज़ है क्या ? ।४००२

ओङ्गा रप्पॊरुळ् तेरुवोर् तामुन्नै युणर्वोर्
ओङ्गा रप्पॊरु ळॆन्रुणर्न् दिरुविनै युहुप्पोर्
ओङ्गा रप्पॊरु ळामन्रॆन् रूळिशॆन् ड्रालुम्
ओङ्गा रप्पॊरु ळॊप्पॊरु ळॆन्गला वुरवोर् 4003

ओङ्कारम्–ओंकार (प्रणव) का; पॊरुळ्–अर्थ के; तेरुवोर् ताम्–ज्ञाता लोग; उन्नै–आपको; उणर्वोर्–जानते हैं; ओङ्कारप् पॊरुळ्–ओंकार-तत्व; ऎन्रु–ऐसा; उणर्न्दु–जानकर; इरु विनै–दोनों कर्मों को; उकुप्पोर्–दूर कर देते हैं; ओङ्कारप् पॊरुळे–हे प्रणव-तत्व ही; पॊरुळ्–सत्व है; ऎन्कला–ऐसा जो नहीं जानें; उरवोर्–ऐसे लोग; ओङ्कारप् पॊरुळे–प्रणव-तत्व आपको; आम् ऎन्रुम्–हैं, ऐसा; अन्रु ऎन्रु–नहीं ऐसा; ऐयुरु–संशय करके; ऊऴि चॆन्रालुम्–युग-युग बीतें तो भी ।४००३

प्रणवार्थ जाननेवाले आपको प्रणवरूप जानते हैं, अतः कर्मद्वय के बंधन से छूट जाते हैं। प्रणवार्थ को ही परमार्थ न समझ सकनेवाले प्रणवरूप आपके संबंध में, हाँ या नहीं के संशय में रहते हैं और युग के युग बीत जाते हैं। (पर उनका निस्तार नहीं होता।) ४००३

इतैय दाहलि ऩॆमैयुमून् रुलहैयु मीन्रु
मनैयिन् माट्चियै वळर्त्तवॆम् मोयितै वाळा
मुनैय लॆन्रवु मुडित्तनन् मुन्दुनीर् मुळैत्त
शिनैयिन् पन्दमुम् बहुदिह ळनैत्तैयुञ् जॆय्दोन् 4004

मुन्दु नीर्–सर्वपुरातनता के; मुळैत्त–नाभिकमलोत्पन्न; चिनैयिन् पन्तमुम्–(जीवों के) शरीर-बंधन और; पकुतिकळ् अनैत्तैयुम्–विविध विभागों को; चॆय्तोन्–जिसने रचाया; इतैयतु–आपका रूप ऐसा है; आकलिन्–इसलिए; ऎन्नैयुम् मून्रु उलकैयुम्–मुझे और तीनों लोकों को; ईन्रु–जनाकर; मनैयिन् माट्चियै–गृहस्थी की महिमा को; वळर्त्त–गृहस्थी चलाकर बढ़ानेवाली; ऎम् ओयितै–हमारी जननी से; वाळा मुनैयल्–व्यर्थ कोप न करें; ऎन्रु–ऐसा; अतु–अपना अभिप्राय जो था उसे; मुटित्तनन्–कहकर समाप्त किया ।४००४

सबसे पुरातन (श्रीविष्णु) के नाभीकमल से उत्पन्न और जीव-शरीर-बंधन और जीवों के विविध विभागों के रचयिता ब्रह्मा ने कहा कि यही आपका सच्चा स्वरूप है। इसलिए आप सीताजी से व्यर्थ कोप न करें,

जिन्होंने हमें और तीनों लोकों को जनाया और जो कि आज गृहस्थ धर्म पाल रही हैं। ब्रह्मा ने यह कहकर अपनी बात समाप्त की। ४००४

ऍन्ऩु मात्तिरत् तेऱमर् कडवुळ् मिशैत्तात्
उन्ऩै नीयॊन्ऱु मुणर्न्दिलै पोलुमा लुरवोय्
मुन्ऩै यादिया मूर्त्तिनी मूवहै युलहिऩ्
अन्ऩै शीदैया मादुनिऩ् मार्बिऩ्वन् दमैन्दाळ् 4005

ऍन्ऩु मात्तिरत्तु–कहने पर; एऱु–ऋषभ पर; अमर्–आसीन; कटवुळुम्–ईश्वर ने; इचैत्तान्–कहा; उरवोय्–पराक्रमी; नी–आप; उन्ऩै–अपने को; ऒन्ऱुम्–कुछ; उणर्न्तिलै पोलुम्–नहीं समझे शायद; नी–आप; मुन्ऩै–बहुत; आतियाम् मूर्त्ति–आदिमूर्ति हैं; मूवकै उलकिन्–त्रिविधि लोकों की; अन्ऩै–माता; चीतैयाम् मातु–सीतादेवी; निऩ्–आपके; मार्पिऩ्–श्रीवक्ष पर; वन्तु अमैन्ताळ्–आ रहनेवाली लक्ष्मी ही हैं। ४००५

ब्रह्मा के यह कह चुकने पर ऋषभवाहन शिवजी ने अपनी ओर से निम्नोक्त बातें कहीं। हे पराक्रमी! आप अपने को कुछ नहीं जानते क्या? आप अनादि परब्रह्म हैं। ये देवी त्रिलोकमाता आपके श्रीवक्ष की निवासिनी ही हैं। ४००५

तुऱक्कुन् दऩ्मैय ळल्लळाऱ् ऱॊल्लैयॆव् वुलहुम्
पिऱक्कुम् बॊऩ्वयिऱ् ऱन्ऩैयिप् पॆय्वळै पिऴैक्किऩ्
इऱक्कुम् बल्लुयि रिऱैवनी यिवळ्तिऱत् तिहऴ्च्चि
मऱक्कुन् दऩ्मैय वॆन्ऱनऩ् वरदर्क्कुम् वरवऩ् 4006

इऱैव–सर्वेश्वर; तॊल्लै–पुरातन; ऍव् उलकुम्–सभी लोक; पिऱक्कुम्–जनम जहाँ से ले; पॊऩ् वयिऱ्ऱ अन्ऩै–ऐसे सुन्दर पेट की माता; तुऱक्कुम्–त्याज्य हों; तऩ्मैयळ्–ऐसी स्थिति की; अल्लळ्–नहीं हैं। इ पॆय्वळै–इन कंकणहस्ता के प्रति; पिऴैक्किऩ्–ग़लत भाव रखेंगे तो; पल् उयिर्–अनेक जीव; इऱक्कुम्–मर जायँगे; नी–आप; इवळ् तिऱत्तु–इनके प्रति; इकऴ्च्चि–अपमान का भाव; मऱक्कुम्–भुलाने; तऩ्मैयतु–योग्य हैं; ऍन्ऱऩऩ्–कहा; वरतर्क्कुम्–वरदों के भी; वरतऩ्–वरद ईश्वर ने। ४००६

सर्वेश्वर! सर्वलोकोद्‌भवस्थान, सुंदर-गर्भ की माता सीता त्याज्या नहीं! इन कंकणहस्ता के प्रति आप ग़लत धारणा करेंगे तो अनेक जीव मर जायँगे। आपका इनके प्रति ग़लत भाव भूलने योग्य है। वरदवरद ने ऐसा कहा। ४००६

पिऩ्ऩु नोक्किऩाम् पॆरुन्बहैप् पुदल्वऩैप् पिरिन्द
इऩ्ऩ लालुयिर् तुऱन्दिरुन् दुऱक्कत्तु ळिरुन्द

मन्नर् चन्ऱनिन् मैन्दनै मनङ्गोळ्ळ् तॆरुट्टि
मुन्नै वान्दुयर् नीक्कुदि मॊय्म्बिनो यॆन्ऱान् 4007

पिन्नुम्–और भी; नोक्कितान्–विचार करके; पॆरुतक्क–महान योग्य; पुतल्वनै–अपने पुत्र से; पिरिन्त–बिछुड़े रहे; इन्नलाल्–दुःख से; उयिर् तुऱन्तु–प्राण छोड़कर; इरु तुऱक्कत्तुळ्–श्रेष्ठ मोक्ष में; इरुन्त–जो रहे; मन्नन् चॆन्ऱु–उन (दशरथ) राजा के पास जाकर; मॊय्म्पिनोय्–बलवान; निन् मैन्तनै–आपके पुत्र को; मनम् कॊळ–धीरज धरने; तॆरुट्टि–धैर्य दें; मुन्नै–पहले से रहे; वान् तुयर्–बड़े दुःख को; नीक्कुति–दूर कर लें; ऎन्ऱान्–कहा। ४००७

परमेश्वर ने और सोचा। फिर वे दशरथ के पास गये जो पुत्र-वियोगदुःख से प्राण त्यागकर महान श्रीवैकुण्ठलोक (मोक्ष) में रहे। उनसे कहा कि बलवान ! आप अपने पुत्र के पास जायँ और उन्हें समझायें और अपना गहरा दुःख दूर करें। ४००७

आदि यान्पणि यरुळ्पॆऱ्ऱु वरशरुक् करशन्
कादन् मैन्दनैक् काणिय वुवन्ददोर् करुत्ताल्
पूद लत्तिडैप् पुक्कनन् पुहुदलुम् बॊरुविल्
वेद वेन्दनु मवन्मलर्त् ताळ्मिशै विळुन्दान् 4008

आतियान्–आदि ईश्वर की; पणि अरुळ् पॆऱ्ऱु–कृपापूर्ण आज्ञा जिन्होंने पायी; अरचर्क्कु अरचन्–उन राजा के राजा; कातन् मैन्तनै–प्रिय पुत्र को; काणिय–देखने की; उवन्ततु–चाह करके; ओर् करुत्ताल्–उस राय के साथ; पूतलत्तु–भूतल; इटै पुक्कनन्–मध्य आये; पुकुतलुम्–आते ही; पॊरु इल्–अनुपम; वेतम् वेन्तनुम्–वेद नाथ भी; अवन्–उनके; मलर् ताळ्–कमल-चरणों; मिचै–पर; विळुन्तान्–गिरे। ४००८

राजाधिराज दशरथ आदिनाथ, शिवजी की कृपाज्ञा पाकर अपने पुत्र को देखने की मोदपूर्ण इच्छा से भूमि पर आये। उनके आते ही अप्रतिम वेदपति ने उनके चरणकमलों में गिरकर दण्डवत् की। ४००८

वीळ्न्द मैन्दनै यॆडुत्तुत्तन् विलङ्गला हत्तिन्
आळ्न्द ळुन्दिडत् तळुविन्तन् कण्णिनी राट्टि
वाळ्न्द शिन्दैयिन् मनङ्गळुङ् गळिप्पुऱ मन्नन्
पोळ्न्द पुन्नङ्गळ् पुऱप्पड निन्ऱिवै पुहन्ऱान् 4009

मन्नन्–राजा दशरथ; वीळ्न्त–गिरे; मैन्तनै–पुत्र को; ऎटुत्तु–उठाकर; तन्–अपने; विलङ्कल्–पर्वतोपम; आकत्तिन्–वक्ष से; आळ्न्तु–खूब; अळुन्तिट–दबाकर; तळुवि–लगाकर; तन्–अपनी; कण्णिन्–आँखों के; नीर् आट्टि–जल से नहलाकर; वाळ्न्त–जो गये ऐसे; चिन्तैयिन्–विचार के साथ; मनङ्कळुम्–अंतःकरणों के भी; कळिप्पु उऱ–आनंद विभोर होते; पोळ्न्त–काटते

रहे; तुन्पङ्कळ्-दुःखों के; पुऱप्पट-बाहर निकलते; निन्ऱु-खड़े रहकर; इवै पुकन्ऱान्-ये बातें बोले। ४००६

दशरथ ने उनको उठाया और अपने पर्वतोपम वक्ष से खूब दबाते हुए गाढ़ालिंगन किया। अपने अश्रु से उन्हें नहला-सा दिया। उन्हें लगा कि मेरा उद्धार हो गया और मेरा जीवन सार्थक हो गया। उनके अंतःकरण आनंदविभोर हो गये और उन्हें तोड़ते रहे दुःख दूर हुए। वे यों बोले। ४००९

अन्ऱु केहयन् महळ्कॊण्ड वरमॆन्नु ययिल्वेल्
इन्ऱु काऱुमॆन् निदयत्ति निडैनिन्ऱ दॆन्नैक्
कॊन्ऱु नीङ्गल दिप्पॊऴ्दु दहन्ऱदुन् कुलप्पूण्
मन्ऱ लाहमाङ् गान्दमा मणियिन्ऱु वाङ्ग 4010

अन्ऱु-उस समय; केकयन् मकळ्-केकयतनया ने; कॊण्ट-जो पाया; वरम् ऍन्नुम्-वह वर रूपी; अयिल् वेल्-तीक्ष्ण भाला; इन्ऱु काऱुम्-आज तक; ऍन्-मेरे; इतयत्तिन् इटै-हृदय-मध्य; निन्ऱतु-स्थित है; ऍन्नै-मुझे; कॊन्ऱु-मरवाकर भी; नीङ्कलतु-छोड़ता नहीं था; उन् कुलम् पूण् मन्ऱल्-तुम्हारे श्रेष्ठ आभरणधारी तथा सुगंधपूर्ण मालाधारी; आकमाम्-वक्ष रूपी; कान्तम् मा मणि-लोहकांतामणि ने; इन्ऱु वाङ्क-आज खींच लिया, तो; इप्पॊऴुतु-अब; अकन्ऱतु-दूर हुआ। ४०१०

उस दिन केकयसुता ने जो वर मुझसे लिया था वह वर रूपी शूल आज तक मेरे वक्ष में चुभा रहा। मेरे मरने के बाद भी वह दूर नहीं हुआ था। पर आज तुम्हारे आभरणमंडित तथा सुगंध-माला-विभूषित वक्ष रूपी लोहकांतामणि ने (आलिंगन के समय) उसे निकाल बाहर कर दिया। ४०१०

मैन्द रॆप्पॆऱ्ऱु वानुयर् तोऱ्ऱत्तु मलर्न्दार्
शुन्द रप्पॆरुन् दोळिना यॆन्तुणैत् ताळिन्
पॆन्दु हट्कळु मॊक्किल रामॆनप् पडैत्ताय्
उयन्द वर्क्करुन् दुरक्कमुम् बुहऴुम्बॆर् ऱुयर्न्देन् 4011

चुन्तरम्-सुन्दर; पॆरु तोळिनाय्-बड़ी भुजा वाले; मैन्तरै-पुत्रों को; पॆऱ्ऱु-पाकर; वानुयर्-आकाश-सम उन्नत; तोऱ्ऱत्तु-दृश्य के साथ; मलर्न्तार्-जो शोभित रहे वे भी; ऍन्-मेरे; तुणै ताळिन्-चरणद्वय की; पॆन्तुकळ्कळुम्-छोटी धूलि की; ऑक्किलर्-समानता नहीं कर सकें; आम् ऍन-हाँ, ऐसा; पडैत्ताय्-मुझे गौरव दिलाया; उयन्तवर्क्कु-कर्ममुक्तों के लिए भी; अरु-दुर्लभ; तुरक्कमुम्-मोक्ष (वैकुंठ) लोक और; पुकऴुम्-यश; पॆऱ्ऱु-पाकर; उयर्न्तेन्-बड़ा हो गया। ४०११

सुन्दर-महा-बाहु ! पुत्र पाकर गगनोन्नत गौरव के साथ जो शोभित थे, वे भी मेरे चरणद्वय की धूलि के बराबर नहीं हो सके, ऐसा गौरव तुमने मुझे दिलाया था। और भी कर्मविमुक्त भाग्यवानों के लिए भी दुर्लभ मोक्ष और अपर यश पाकर मैं बहुत उत्कृष्ट हो गया। ४०११

पण्डु नान्तॊऴुन् देवरुम् मुनिवरुम् बाराय्
कण्डु कण्डॆनैक् कैत्तलङ् गुविक्कित्तर काट्चि
पुण्ड रीहत्तुप् पुरादनन् तन्नॊडुम् बौरुन्दि
अण्ड मूलत्तॊ राशनत् तिरुत्तिनै यऴह 4012

अऴक–सुन्दरमूर्ति; पण्टु–पहले; नान्–मैं; तॊऴुम्–जिन्हें नमस्कार करता था; तेवरुम्–वे देव; मुनिवरुम्–और मुनि; ऍनै–मुझे; कण्टु कण्टु–देख-देखकर; कै तलम्—करतल; कुविक्कित्तऱ–जोड़ते; काट्चि–वह दृश्य; पाराय्–देखो; पुण्टरीकत्तु–नाभीकमलोत्पन्न; पुरातनन् तन्नॊटुम्–पुरातन ब्रह्मा के साथ; पॊरुन्ति–सम रहकर; अण्टम् मूलत्तु–अण्डगोल के ऊपर; ओर्–एक; आचनत्तु–आसन पर; इरुत्तिनै–विराजित करा दिया। ४०१२

सुंदरमूर्ति ! देखो। पहले जिन्हें मैं नमस्कार करता था वे देव और ऋषि अब मेरी ओर बार-बार दृष्टि देकर हाथ जोड़ रहे हैं। तुमने मुझे पुरातन देवता श्रीविष्णु के नाभीकमल से उद्भूत ब्रह्मा के समकक्ष अंडगोल के ऊपर एक आसन पर विराजमान करा दिया है ! । ४०१२

ऍन्ऱु मैन्दनै यॆडुत्तॆडुत् तिरुहुऱत् तऴुविक्
कुन्ऱु पोन्ऱुऴ तोळिनान् शीदैयैक् कुऱुहत्
तन्ऱु णैक्कऴल् वणङ्गलुङ् गरुणैयाऱ् ऱऴुवि
निन्ऱु मऱ्ऱिवै निहऴ्त्तिना निहऴ्त्तरुम् बुहऴोन् 4013

ऍन्ऱु–कहकर; मैन्तनै–पुत्र को; कुन्ऱु पोन्ऱु–पर्वत के समान; उऴ तोळिनान्–रहे कंधोंवाले; ऍटुत्तु ऍटुत्तु—बार-बार उठाकर; इऱुकुऱ तऴुवि–खूब गले लगाकर; चीतैयै कुऱुक–सीता के पास गये; तन् तुणै कऴल्–तो उनके चरणद्वय पर; वणङ्कलुम्–नमस्कार करने पर; निकऴ्त्तरुम्–अकथनीय; पुकऴोन्–यशस्वी; करुणैयाल्–कृपा के साथ; तऴुवि निन्ऱु–आलिंगन करके रहकर; इवै–ये; निकऴ्त्तिनान्–कहे। ४०१३

यह सब कहकर पर्वतोपम कंधों वाले दशरथ ने अपने पुत्र को बार-बार उठाकर गाढ़ालिंगन कर लिया। फिर सीतादेवी के पास गये तो उन्होंने उनके चरणों पर नमस्कार किया। अवर्णनीय यशस्वी दशरथ ने उन्हें करुणा के साथ आलिंगन में लेकर निम्न बातें कहीं। ४०१३

नङ्गै मऱ्ऱिनित् कऱ्पिनै युलहुक्कु नाट्ट
अङ्गि पुक्किडन् ऱुणर्त्तिय वदुमनत् तडैयेल्

शङ्गै पुऱ्ऱवर् तेरुव दुण्डदु शरदम्
कङ्गै नाडुडैक् कणवनै मुनिवुऱक् करुदेल् 4014

नङ्कै—देवी; निन् कऱ्पितै—तुम्हारे पातिव्रत्य को; उलकुक्कु—लोक में; नाट्ट—स्थापित कराने; अङ्कि—आग में; पुक्किटु—प्रवेश करो; ॲन्ऱु—ऐसा; उणर्त्तिय—जो कहा; अतु—वह बात; मत्तुतु अटैयेल्—मन में मत रखो; चङ्कै—शंका; उऱ्ऱवर्—करनेवाले; चरतम्—सत्य कराकर; अतु तेरुवतु उण्टु—उससे समाधान पाने की प्रथा है; कङ्कै नाटु—गंगासिंचित देश के; उडै कणवतै—स्वामी पति से; मुनिवु उऱ—कोप करना; करुतेल्—मत सोचो। ४०१४

देवी! तुम्हारे पातिव्रत्य की महिमा को लोक में प्रगट कराने के निमित्त ही राम ने जो कहा कि अग्नि में प्रवेश करो उस बात को मन में मत रखो। कभी शंका पैदा हो तो शंका के पात्र से सत्य को प्रमाणित करने को कहना और शंका निवारण करा लेना —यह प्रचलित बात ही है! इसलिए गंगासिंचित कोसल देश के स्वामी अपने पति से गुस्सा करने की बात मन में मत लाओ। ४०१४

पॉन्नैत् तीयिडैप् पॅय्वदप् पॉन्नुडैत् तूय्मै
तन्नैक् काट्टुदऱ् कॅन्बदु मनक्कॊळल् तहुदि
उन्नैक् काट्टिनन् कऱ्पिनुक् करशियॆन् ऱुलहिल्
पिन्नैक् काट्टुव दरियदॆन् ऱॆण्णियिप् पॅरियोन् 4015

पॊन्नै—स्वर्ण को; ती इटै—आग में; पॅय्वतु—डालना; अ पॊन् उडै—उस स्वर्ण की; तूय्मै तन्नै—शुद्धता को; काट्टुतऱ्कु—दिखाने हेतु; ॲन्पतु—वह बात; मनम् कॊळल्—मन में रखना; तकुति—उचित है; इ पॅरियोन्—यह महापुरुष; उलकिल्—लोक में; पिन्नै—बाद को; काट्टुवतु अरियतु—प्रगट कराना कठिन; ॲण्णि—समझकर; कऱ्पिनुक्कु अरचि—पातिव्रत्य की रानी; ॲन्ऱु—ऐसा; उन्नै काट्टिनन्—तुम्हें दिखाया। ४०१५

'स्वर्ण को आग में तपाना उसकी शुद्धता को प्रमाणित कराने के निमित्त ही' —यह बात मन में धारण करने अर्ह है! महिमावान राम ने सोचा कि पीछे कभी तुम्हारी महिमा प्रकट कराने के संदर्भ का आना कठिन है। इसलिए सभी लोकों को प्रमाणित करा दिया कि तुम पतिव्रताओं में रानी हो। ४०१५

पॅण्पि ऱन्दव ररुन्ददि येमुदऱ् पॅरुमैप्
पण्पि ऱन्दवर्क् करुङ्गल माहिय पावाय्
मण्पि ऱन्दह मुनक्कुनी वातिन्ऱुम् वन्दाय्
ॲण्पि ऱन्दनिन् कुणङ्गळुक् किलैयाल् 4016

ण्पु–महिमामय पातिव्रत्य गुण; इरुन्तवर्क्कु–जिनमें खूब है उनके लिए; अरु
लम् आकिय–अतिश्रेष्ठ आभरण; पावाय्–(सम) देवी सीता; उनक्कु–तुम्हारा;
इरुन्तकम्–जन्मस्थान; मण्–पृथ्वी है; नी–तुम; वानिनुम्–आकाश से;
न्ताय्–आयीं; इनि–अब; निन् ॲण्णु इरुन्त–तुम्हारे अगणित; कुणङ्कळुक्कु–
गुणों को; इळुक्कु इलै–कोई कमी नहीं। ४०१६

हे अरुंधती आदि अपार चारित्र्यवती स्त्रियों के श्रेष्ठ श्रृंगार-सी देवी! प्रतिमा-सी सीते! तुम (परमपद) वैकुंठ से आयीं और पृथ्वी से प्रकट हुई। फिर तुम्हारे अनगिनत सद्गुणों पर क्या बट्टा लगेगा? नहीं लगेगा। ४०१६

ॲन्नक् कूऱिड वेन्दिऴै तिरुमनत् तियादुम्
उन्नच् चॅय्वदोर् मुनिवित्मै मनङ्गॊळा वुवन्दाळ्
पिन्नैच् चॅम्मलव् विळवलै युळ्ळन्बु विणिप्पत्
तन्नैत् तानॅनत् तऴुविनन् कण्गणीर् तदुम्ब 4017

ॲन्न कूऱिट–ऐसा कहने पर; अव् एन्तिऴै–उस आभरणालंकृता के; तिरुमनत्तु–श्रीमन में; यातुम्–कोई; उन्न चॅय्वतु–याद कराये ऐसे; ओर्–एक; मुनिविन्मै–क्रोध की हीनता को; मनम् कॊळा–मन में बना लेकर; उवन्ताळ्–मुदित हुई; पिन्नै–बाद; चॅम्मल्–श्रेष्ठ राजा ने; उळ् अन्पु पिणिप्प–अंतर के प्रेम के बंधन से; कण्कळ् नीर् ततुम्प–आँखों में अश्रु के भरते; अव् इळवलै–उन लघुराज को; तन्नै तान् ॲन–स्वयं आप अपने को जैसे; तऴुविनन्–आलिंगन कर लिया। ४०१७

दशरथ ने ये बातें कहीं तो वे आभरणभूषिता सीताजी अपने उन्नत मन में किसी भी स्मरणीय क्रोध की हीनता का अनुभव करके खुश हुई। फिर श्रेष्ठ राजाधिराज दशरथ ने आंतरिक प्रेम से बद्ध होकर, आँखों से स्नेहाश्रु बहाते हुए श्रीराम के कनिष्ठ को, अपने-आप को ही आलिंगन कर रहे हों, ऐसा (दोनों को एक बनाते हुए) कसकर आलिंगन कर लिया। ४०१७

कण्णि नीर्प्पॅरुन् दारैमऱ् ऱवन्चडैक् कऱ्ऱै
मण्णि नीत्तमॊत् तिऴितरत् तऴीइनिन्ऱु मैन्द
ॲण्णि नीक्करुम् विऱविधु मॆन्नॅञ्जि निऱन्द
पुण्णु नीक्किनै युमैयनैत् तॊडर्न्दुडन् पोन्दाय् 4018

कण्णिन् नीर्–आँखों के जल की; पॅरु तारै–बड़ी धारा; अवन्–उनकी; कऱ्ऱै चटै–जटाजूट को; मण्णिन् नीत्तम्–स्नान कराने पर बहते जल; ऒत्तु–के जैसे; इऴि तर–बहते; तऴी इ निन्ऱु–आलिंगन करके खड़ा रहकर; मैन्त–पुत्र;

ॲण्णिल्–असंख्य; नीक्क अरु पिऱवियुम्–दुर्वार जन्म और; ॲन् नॆञ्चिन्–मेरे मन के; इऱन्त–अपार; पुण्णुम् नीक्किनै–दुःखों को दूर कर दिया। ४०१८

उनकी आँखों से आँसू की धारा मानो लक्ष्मण की जटाजूट को नहलाकर नीचे उतरे, ऐसा आलिंगन करके उन्होंने कहा। हे मेरे पुत्र! अपने भाई का अनुगमन करके तुम उसके साथ वन में आये हो! इससे तुमने अपने अनंत जन्मों को और मेरे मन के व्रणों को काट दिया। ४०१८

पुरन्द रन्पॆरुम् बहैञनैप् पोर्वॆन्ऱ वुन्ऱन्
परन्दु यर्न्दतो ळाऱ्ऱले तेवरुम् बलरुम्
निरन्द रम्बुहल् हिन्ऱदु नीयिन्द वुलहिन्
अरन्दै याम्बहै तुडैत्तऱ निऱुत्तिनै यॆय 4019

ऍय–तात; पुरन्तरन्–पुरंदर के; पॆरु पकैञनै–बड़े शत्रु को; पोर् वॆन्ऱ–युद्ध में हरानेवाले; उन्तन्–तुम्हारे; परन्तु उयर्न्त तोळ्–विशाल उन्नत कंधों का; आऱ्ऱले–बल ही; तेवरुम्–देवों और; पलरुम्–अन्य अनेकों का; निरन्तरम्–निरंतर; पुकल्किन्ऱतु–कथन-विषय है; नी–तुम; इन्त उलकिन्–इस संसार को; अरन्तै–त्रास देनेवाला; आम् पकै–जो है उस शत्रु को; तुटैत्तु–दूर करके; अऱम् निऱुत्तिनै–धर्म स्थापित कर गये। ४०१९

हे सुंदरमूर्ति! इन्द्र के बड़े शत्रु इन्द्रजित् को युद्ध में हराकर मारने वाले तुम्हारे विशाल और उन्नत कंधे ही देवों की सतत प्रशंसा के विषय रहते हैं! तुमने लोकशत्रु को मिटाया और धर्म को स्थापित करा दिया। ४०१९

ॲन्ऱु पिन्नरु मिरामनै यानुनक् कीव
दॊन्ऱु कूऱुदि युयर्कुणत् तोयॆन वुनैयान्
ऱॊन्ऱु वानिडैक् कण्डिडर् तीर्वनॆन् ऱिरुन्देन्
इन्ऱु काणप्पॆऱ् ऱॆनिनिप् पॆऱुवदॆन् ऩॆन्ऱान् 4020

ॲन्ऱु–कहकर; पिन्नरुम्–फिर भी; इरामनै–श्रीराम से; उयर् कुणत्तोय्–उत्कृष्ट गुणोंवाले; यान् उनक्कु–मैं तुम्हें; ईवतु–जो दूं; ऒन्ऱु–वह एक; कूऱुति–कहो; ॲन–ऐसा कहने पर; यान्–मैं; उनै–आपको; वान् इटै चॆन्ऱु–स्वर्ग में जाकर; कण्टु–देखकर; इटर् तीर्वॆन्–क्लेश दूर कर लूंगा; ॲन्ऱु–ऐसा; इरुन्तेन्–सोचता रहा; इन्ऱु–आज; काण पॆऱ्ऱेन्–दर्शन पा गया; इति पॆऱुवतु ॲन्–फिर पाऊँ क्या; ॲन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ४०२०

यह कहकर फिर दशरथ ने श्रीराम की ओर मुखातिब होकर पूछा कि हे उत्कृष्ट गुणों वाले! मैं तुमको दूं ऐसा कोई वर माँग लो। श्रीराम ने उत्तर में निवेदन किया कि मैं ही स्वर्गलोक में आकर अपनी मनोव्यथा दूर करा लेने का विचार कर रहा था। अब आपसे भेंट करने का ... फिर क्या है जो पाने को रह गया? । ४०२०

आयि तुम्मुतक् कमैन्ददोन् ऱुरैयॆन वऴहन्
तीय ळॆन्ऱुनी तुऱन्दवॆन् तॆय्वमु महनुम्
तायुन् दम्बियु माम्वरन् दरुहॆनत् ताऴ्न्दान्
वाय्ति ऱन्दॆऴुन् दार्त्तन वुयिरॆलाम् वऴुत्ति 4021

आयितुम्–तो भी; उनक्कु–तुम्हें; अमैनततु–जो जँचे; ऑन्ऱु उरै–वह कोई कहो; ॲन–कहने पर; अऴकन्–सुन्दरमूर्ति ने; तीयऴ् ॲन्ऱु–दुष्टा कहकर; नी तुऱन्त–आपने जिन्हें त्यागा; ॲन् तॆय्वमुम्–मेरी आराध्या देवी; मकनुम्–और उनका पुत्र; तायुम्–माता और; तम्पियुम्–कनिष्ठ भ्राता; आम्–बने रहें ऐसा; वरम् तरुक–वर दें; ॲन–ऐसा; ताऴ्न्तान्–कहकर नमन किया; उयिर् ॲलाम्–सारी जीवराशियों ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; ॲऴुन्तु–उच्च स्वर में; आर्त्तन–हाहाकार किया। ४०२१

तो भी दशरथ ने कहा। 'तुम जो जँचे वह वर माँग लो)' श्री सुंदर राम ने कहा। आपने जिन्हें दुष्टा कहकर त्याग दिया था, उन मेरी आराध्या देवी कैकयी को और उनके पुत्र को पुनः क्रमशः मेरी माँ और मेरा भाई बनाने का वर प्रदान करें। यह कहकर उन्होंने पिता के चरणों में प्रणमन किया तो भूलोक की सारी जीवराशियाँ मुख खोलकर वाहवाही का हाहाकार करने लगीं। ४०२१

वरद केळॆनत् तयरद नुरैशॆय्वान् मऱुविल्
परद नन्नवु पॆऱुहतान् मुडियिनॆप् पऱित्तिव्
विरद वेडमॆऱ् ऱुदविय पाविमेल् विऴिवु
शरद नीङ्गल दामॆन्ऱान् ऱऴीइयकै तळर 4022

वरत–हे वरद; केऴ्–सुनो; ॲन–कहकर; तयरतन्–दशरथ; उरै चॆय्वान्–बोले; मऱु इल्–अकलंक; परतन्–भरत; अन्नतु पॆऱुक–वह वर प्राप्त करे; मुटियिनै पऱित्तु–मुकुट छीनकर; तान् इव्विरतम् वेटम्–यह व्रत-वेष तुम्हें; उतविय–जिसने दिलाया; पावि मेल्–उस पापी पर; विऴिवु–मेरा क्रोध; चरतम्–निश्चय; नीङ्कलतु आम्–दूर नहीं होगा; ॲन्ऱान्–कहा; तऴीइय–आलिंगित के; कै तळर–हाथों को ढीला करते हुए। ४०२२

दशरथ ने उत्तर में कहा कि हे वरद ! मेरी बात सुनो। अकलंक भरत को वह भाग्य प्राप्त हो। पर तुम्हारे मुकुट को छीनकर जिसने तुम्हें यह तपस्वी का वेश दिला दिया उस पापिनी पर मेरा कोप निश्चय ही दूर नहीं होगा। जब उन्होंने यह कहा तब भावातिरेक से उनके आलिंगन के हाथ भी ढीले पड़ गये। ४०२२

ऊन्पि ळैक्किला वुयिर्नॆडि वऴिक्कुनी ळरशै
वानपि ळैक्किन [illegible]

यान्पि ळैत्तदल् लालॅऩ्ऩै यीऩ्ऱवॆम् बिराट्टि
ताऩ्पि ळैत्तदुण् डोवॆऩ्ऱा ऩवऩ्शलऩ् दविर्न्दाऩ् 4023

ऊऩ्–शरीर को; पिऴैक्किला–जो नहीं छोड़ते; उयिर्–उन जीवों का; नॅटितु–खूब; अळिक्कुम्–पालन करनेवाले; नीळ् अरचं–श्रेष्ठ राज्य-स्वत्व को; इतु–यह; यान्–बड़ी; पिऴैक्कु–ग़लती का; मुतल्–हेतु; ॲंतातु–न मानकर; आळ्वुऱ–शासन करना; मतित्तु–चाहकर; यान्–मैंने; पिऴैत्ततु अल्लाल्–ग़लती की, नहीं तो; ॲंऩ्ऩै ईऩ्ऱ–मेरी जननी; ॲम्पिराट्टि–मेरी आराध्या ने; ताऩ्–स्वयं; पिऴैत्ततु–अपराध किया; उण्टो–था क्या; ॲंऩ्ऱाऩ्–कहा श्रीराम ने; अवऩ्–उन (दशरथ) ने; चलम्–क्रोध; तविर्न्ताऩ्–त्याग दिया। ४०२३

श्रीराम ने कहा कि शरीरबद्ध जीवों का खूब पालन करने का ज़िम्मेवार कार्य है बड़ा शासनाधिकार! वह बड़े-बड़े अपराधों का हेतु बन सकता है। इसका विचार किये विना ही राजपद को मानकर मैंने जो स्वीकारा वह मेरा अपराध था। नहीं तो इसमें मेरी जननी मान्या कैकेयी का इसमें दोष हुआ है क्या? तब दशरथ कोप छोड़कर शांत हुए। ४०२३

ॲव्व रङ्गळुङ् गडन्दव ऩप्पॊरु ळिशैप्पत्
तॆव्व रम्बरु कानिडैच् चॆलुत्तिऩाट् कीन्द
अव्व रङ्गळु मिरण्डवै याऱ्ऱिऩार् कळित्त
इव्व रङ्गळु मिरण्डॆऩ्ऱार् तेवरु मिरङ्गि 4024

ॲव्वरङ्कळुम्–सभी वरों से; कटन्तवऩ्–परे (श्रीराम के); अ पॊरुळ्–वह विषय; इचैप्प–कहते समय; तेवरुम्–देवों ने; इरङ्कि–सहानुभूति करके; तॆव्कान् इटै–शत्रु से भरे कानन में; चॆलुत्तिऩाट्कु–जिसने भेजा उसको; वरम्पु अऱ–असीम; ईन्त–दिये गये; अव्वरङ्कळुम्–वे वर भी; इरण्टु–दो; अवै–उनके अनुसार; आऱ्ऱिऩाऱ्कु–जिन्होंने किया; अळित्त–उन्हें दिये गये; इव्वरङ्कळुम्–ये वर भी; इरण्टु–दो हैं; ॲंऩ्ऱार्–कहा। ४०२४

जब सभी वरों से परे रहनेवाले श्रीराम ने वह वाक्य कहा तब देवों को उन पर तरस आयी। उन्होंने कहा कि असीम शत्रुओं से भरे कानन में जिसने इन्हें भेजा उसे भी दो वर मिले। उन वरों को मानकर जो जंगल में आये उन्हें दिये गये वर भी दो ही हैं। ४०२४

वरमि रण्डळित् तऴहऩ्ऩै यिळवलै मलर्मेल्
विरवु पॊऩ्ऩितै मण्णिडै निऱुत्तिविण् णिडैये
उरवु मातमी देहित्त तुम्बरु मुलहुम्
परवु मॆय्यितुक् कुयिरळित् तुरुपुहऴ् पडैत्तोऩ् 4025

उम्परुम्–व्योमवासी और; उलकुम्–अन्य लोकवासी; परवुम्–जिनकी स्तुति करने; मॆय्यितुक्कु–सत्य के लिए; उयिर् अळित्तु–प्राण का उत्सर्ग करके; वऴ

पुकऴ्–योग्य यश; पॅट्टुत्तोन्–जिन्होंने अर्जन किया था; इरण्डु–उन्होंने दो; वरम्–वर; अळित्तु–देकर; अऴकतै–सुन्दर राम को; इळवलै–और कनिष्ठ को; मलर् मेल्–कमल पर; विरवु पोन्तितै–रहनेवाली श्री को; मण् इटै–भूमि में; निरुत्ति–छोड़कर; उरवु–सबल; मानम् मीतु–यान पर; विण् इटैये–आकाश-मध्य; एकितन्–चले गये। ४०२५

सत्यपालनार्थ जीवनदाता तथा देवों और अन्य लोकवासियों से स्तुत और विपुल यश प्राप्त दशरथ दो वरों को देने के बाद श्री सुंदर राम, उनके कनिष्ठ और कमलासनस्था श्रीदेवी को पृथ्वी पर ही छोड़कर एक सबल यान पर सवार हो व्योममध्य चले गये। ४०२५

कोट्टु वार्शिलैक् कुरिशिलै यमरर्तङ् गुऴाङ्गळ्
मीट्टु नोक्कुरा वीरनी वेण्डुव वरङ्गळ्
केट्टि यालॆन वरक्कर्हळ् किळप्परुञ् जॆरुविल्
वीट्ट माण्डुळ कुरङ्गॆला मॆऴुहॆन विळम्बि 4026

अमरर् तम्–देवों के; कुऴाङ्कळ्–समूह; कोट्टु–झुके हुए; वार् चिलै–लम्बे धनुष के; कुरिचिलै–प्रभु को; मीट्टुम्–फिर एक बार; नोक्कुरा–देखकर; वीर–वीर; नी–तुम; वेण्टुव–इच्छित; वरङ्कळ्–वर; केट्टि–माँगो; ऎन–ऐसा; किळप्पु अरुम्–अवर्णनीय; चॆरुविल्–युद्ध में; अरक्कर्कळ्–राक्षसों के; वीट्ट–मारने से; माण्टुळ–जो मरे; कुरङ्कु ऎलाम्–वे सारे कपि; ऎऴुक–जी उठें; ऎन–ऐसा; विळम्पि–कहकर। ४०२६

देवों के वृन्दों ने कुंचित-धनुर्हस्त महिमावान श्रीराम को फिर से देखकर कहा कि हे वीर! आप जो चाहें वे वर माँग लें। श्रीराम ने कहा कि अवर्णनीय भयंकर युद्ध में राक्षसों के हाथ जो मरे वे सब वानर जी उठें। ४०२६

पिन्नु मोर्वरम् वानरप् पॆरुङ्गडल् पॆयर्न्दु
मन्नु पल्वन माल्वरैक् कुलङ्गळ्मऱ् ऱॆन्न
तुन्नि डङ्गळ्काय् कनिकिळङ् गोडतेन् ऱुऱ्ऱ
इन्नु णीरुळ वाहॆन वियम्बिडु हॆन्ऱान् 4027

वानरर्–वानरों का; पॆरु कटल्–बड़ा सागर; पॆयर्न्तु–जाकर; मन्नुम्–नित्य; पल् वनम्–अनेक वन; माल् वरै कुलक्कळ्–बड़े-बड़े पर्वत; मऱ्ऱु–और; ऎन्न–ऐसे; तुन् इटङ्कळ्–वासयोग्य स्थान; काय् कनि किऴङ्कोटु–तरकारी, फलों, कंदों व; तेन् तुऱ्ऱ–मधुछत्तों से भरे; इन्–मधुर; उण् नीर् उळ–पेयजल-युक्त; आक ऎन–बनें ऐसा; पिन्नुम्–और; ओर् वरम्–एक वर; इयम्पिटुक–कहिए; ऎन्ऱान्–कहा। ४०२७

उन्होंने और भी माँगा— वानर जाकर बसें ऐसे वन, बड़े पर्वत और

ऐसे अन्य वासस्थान हों; और तरकारी, फल, मूल कंद, मधु के छत्ते और मधुर पेय जल उनमें भरपूर रहें। ४०२७

वरन्द रुम्मुदत् मऴुवलात् मुनिवरर् वानोर्
पुरन्द रादिमर् रेनैयोर् तनित्तनिप् पुहऴ्न्दाङ्
गरन्द वॅम्बिरप्प् पऱुक्कुना यहनिन दरुळाऱ्
कुरङ्गि नम्बॅरु हॅन्ऱन रुळ्ळमुङ् गुळिर्प्पार् 4028

वरम् तरुम्–वरदायी; मऴुवलान् मुतल्–परशुधर शिव आदि; वानोर्–देवता लोग; मुनिवरर्–मुनिवर; पुरन्तराति–पुरंदर आदि; मर्र्–और; एनैयोर्–अन्य; तनि तनि–अलग-अलग; पुकऴ्न्तु–स्तुति करके; उळ्ळमुम्–मन में; कुळिर्प्पार्–शीतल (सुखी) बनकर; आङ्कु–वहाँ; अरन्त–दुःखजनक; वॅम्पिरप्पु–भयंकर जन्मबाधा; अऱुक्कुम्–काटनेवाले; नायक–नायक; निन्तु अरुळाल्–आपकी कृपा से; कुरङ्कु इनम्–वानरगण; पॅऱुकॅन्ऱनर्–प्राप्त करें; ऍन्ऱनर्–कहा (उन्होंने)। ४०२८

वरद परशुधर शिव, देवता लोग, मुनिवर और पुरंदरादि प्रधान देवों ने अलग-अलग उनकी स्तुति की और वरवचन कहा कि दुःखमूल भवव्याधि हरनेवाले हे नाथ! आपकी ही कृपा से वानरगण आपके माँगे वर प्राप्त करें। ४०२८

मुन्दै नाण्मुदऱ् कडैमुऱै यळवैयु मुडिन्द
अन्द वानर मडङ्गलु मॅऴुन्दुड नार्त्तुच्
चिन्दै योडुकण् कळिप्पुऱच् चॅरुवॅला निनैया
वन्दु तामरैक् कण्णनै वणङ्गिन महिऴ्न्दु 4029

मुन्तै नाळ् मुतल्–आरंभ के दिन से; कडै मुऱै–आखिरी दिन; अळवैयुम्–तक; मुडिन्त–जो मरे; अन्त वानरम्–वे वानर; अडङ्कलुम्–सभी; उडन् ऍऴुन्तु–झट जी उठकर; चॅरु ऍलाम्–सारे युद्ध का; निनैया–स्मरण करके; आर्त्तु–दुहाई देकर; चिन्तैयोटु–मन के साथ; कण्–आँखें भी; कळिप्पु–आनंद से; उऱ–भरकर; तामरै कण्णनै–अब्जाक्ष के; वन्तु–पास आकर; मकिऴ्न्तु–मुदित होकर; वणङ्किन–विनत हुए। ४०२९

युद्ध के आरम्भ से लेकर अंतिम दिन तक जितने वानर मरे थे वे सब जी उठे। युद्ध-संबंधी सारी बातों का स्मरण करने से मन और आँखों में उदित आनंद के साथ कमलाक्ष श्रीराम के पास आये और मोद के साथ उनको नमस्कार किया। ४०२९

कुम्ब कन्ननो डिन्दिर शित्तुवॅङ् गुलप्पोर्
वॅम्बु वॅञ्जिनत् तिरावणन् मुदलिय वीरर्

अम्बिन् माण्डुळ वानर मङ्गुववन् दार्प्प
उम्बर् यावरु मिरामनैप् पार्त्तिवै युरैत्तार् 4030

कुम्पकन्तनोटु–कुंभकर्ण के साथ; इन्तिर चित्तु–इन्द्रजित्; वॅम् कुलम् पोर्–भयंकर श्रेष्ठ युद्ध में; वॅम्पु–खौलते; वॅम् चित्तत्तु–भयंकर क्रोध का; इरावणन्–रावण; मुतलिय वीरर्–आदि वीरों के; अम्पिन्–शरों से; माण्टु उळ–जो मरे थे; वानरम्–वे वानर; अङ्कु–वहाँ; वन्तु–आकर; आर्प्प–जयकार करने लगे; उम्पर् यावरुम्–सभी देवों ने; इवै–ये बातें; उरैत्तार्–कहीं। ४०३०

कुम्भकर्ण, इंद्रजित्, खौलते क्रोध का रावण आदि वीरों के अस्त्रों से आहत सभी वानर आये और उच्च स्वर में जय-जयकार किया तो देवों ने श्रीराम से निम्न बातें कहीं। ४०३०

इडैयु वाविनिर् चुवेलम्वन् दिरुत्तॅयि लिलङ्गैप्
पुडैय वावुरच् चेनैयै वळैप्पुरप् पोक्किप्
पडैय वावुरु मरक्कर्दङ् गुलमुरुम् बडुत्तुक्
कडैयु वाविनि लिरावणन् तन्नैयुङ् गट्टु 4031

इटै उवाविनिल्–अपर (कृष्ण) पक्ष-मध्य; चुवेलम्–सुवेल पर्वत पर; वन्तु इरुत्तु–आकर ठहरकर; ऍयिल्–प्राचीरों-सहित रहते; इलङ्कै–लंका के; पुटै–चारों ओर; चेनैयै–सेना को; अवा उऱ–उत्साह के साथ; वळैप्पु उऱ–घेरने; पोक्कि–भेजकर; पटै–हथियार; अवाउऱुम्–चाहनेवाले; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुलम् मुऱ्ऱुम्–सारे वर्ग; पटुत्तु–मारकर; कटै उवाविनिल्–अन्तिम दिन में; इरावणन् तन्नैयुम्–रावण को भी; कट्टु–निहत कर। ४०३१

कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि के दिन आप सुबेल पर्वत पर आ ठहरे थे। प्राचीरवलयित लंका को घेरने हेतु उत्सुक वानरों को भेजा। फिर आपने अस्त्राभिलाषी राक्षसों का कुल निर्मूल करके अंतिम दिन में रावण का भी हनन किया। ४०३१

वञ्ज रिल्लैयिव् वण्डत्ति नॅन्नुम्बडि मडित्त
कञ्ज नाण्मलर्क् कैयिना यन्नैशोऱ् कडवा
अञ्जॊ डञ्जुनान् गॅन्ऱॆन्नु माण्डुपोय् मुडिन्द
पञ्ज मिप्पॅयर् पडैत्तुळ तिदियिन्ऱु पयन्द 4032

इव् अण्टत्तिल्–इस अंड में; वञ्चर्–वंचक राक्षस; इल्लै–नहीं रहे; ऍन्नुम्पटि–ऐसा; मटित्त–अंत करनेवाले; नाळ् कञ्चम् मलर्–तद्दिन विकसित कंजपुष्प; कैयिनाय्–हस्त वाले; अन्नै चॊल्–मातृवचन को; कटवा–उल्लंघन किये बिना; अञ्चॊटु अञ्चु नान्कु–पाँच, पाँच, चार (चौदह); ऍन्ऱु ऍन्नुम्–समझे जानेवाले; आण्टु–वर्ष; पोय् मुटिन्त–जो बीत गये; इन्ऱु–आज के दिन ने; पञ्चमि पॅयर् पटैत्तु उळ–पंचमी नाम की जो है; तिति पयन्त–वह तिथि बनायी है। ४०३२

इस संसार में अब वंचक राक्षस ही नहीं रहे। इसे प्रशस्त करते हुए उनका काम तमाम करनेवाले हे तह्निविकसित कमल-से हस्तवाले ! आप मातृवचन का उल्लंघन न करके जंगल आये आपको आज चौदह साल पूरे हो गये। आज पंचमी तिथि है। ४०३२

इऩ्ऱु ऒऩ्ऱुनी परदऩै ऎय्दिलै ऎऩ्ऩिल्
पॊऩ्ऱु मालव ऩॆरियिडै यऩ्ऩदु पोक्क
वॆऩ्ऱि वीरनी पोदिया ऎऩ्बदु विळम्बा
निऩ्ऱ तेवर्हळ् नीङ्गिऩा रिरागव ऩिऩैन्दाऩ् 4033

वॆऩ्ऱि वीर–विजयी वीर; नी–आप; इऩ्ऱु–आज; ऒऩ्ऱु–जाकर; परदऩै–भरत के पास; ऎय्दिलै–पहुँचेंगे नहीं; ऎऩ्ऩिल्–तो; अवऩ्–वह; ऎरि इडै–आग में; पॊऩ्ऱुम्–मर जायगा; अऩ्ऩदु–उसे; पोक्क–रोकने के लिए; पोदि–जाइएगा; ऎऩ्पदु–यह बात; विळम्पा–कहकर; निऩ्ऱ तेवर्कळ्–जो रहे वे देव; नीङ्किऩार्–चले गये; इराकवऩ्–श्रीराघव ने; निऩैन्दाऩ्–विचार किया। ४०३३

विजयी वीर ! आज जाकर आप भरत से नहीं मिलेंगे तो भरत जलती आग में कूदकर आत्महत्या कर लेगा। उसे रोकने के वास्ते आप आज ही जायें ! देव यह कहकर चले गये। श्रीराघव ने विचार किया। ४०३३

आण्डु पत्तॊडु नालुमिऩ् ऱोडऱु मायिऩ्
माण्ड दामिऩि यॆऩ्कुलम् बरदऩे मायिऩ्
ईण्डुप् पोहवो रूर्दियुण् डोवॆऩ विऩ्ऱे
तूण्डु माऩमुण् डॆऩ्ऱडल् वीडणऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 4034

आण्टु–वहाँ; पत्तॊटु नालुम्–दस और चार, चौदह साल; इऩ्ऱोटु–आज के साथ; अऱुम् आयिऩ्–समाप्त हो जायें तो; परतऩ् मायिऩ्–भरत मरें तो; इऩि–आगे; ऎऩ् कुलम्–मेरा वंश; माण्टतु आम्–मरा हो जायगा; ईण्टु–यहाँ; पोक–जाने का; ओर्–कोई; ऊर्ति–वाहन; उण्टो–है क्या; ऎऩ–ऐसा पूछा तो; वीटणऩ्–विभीषण ने; इऩ्ऱे–आज ही; तूण्टुम्–ले जाने का; अटल्–बलवान; माऩम्–यान; उण्टु–है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ४०३४

आज चौदह साल समाप्त हो जायेंगे। भरत मर जायगा तो मेरा कुल ही नष्ट हो गया ! "अभी जाने के लिए कोई वाहन मिलेगा क्या ?" श्रीराम ने विभीषण से पूछा तो विभीषण ने उत्तर दिया कि हाँ; आज ही पहुँचा सकनेवाला एक सशक्त विमान है। ४०३४

इयक्कर् वेन्दऩुक् करुमऱैक् किळवऩ् ऱीन्द

वियक्क वात्‌शॅलुम् बुट्पह विमानमुण् डॅन्‌ड्रे
मयक्कि लात्‌शॊलक् कॊणरुदि वल्लैयि नॅन्‌ड्रान् 4035

इयक्कर् वेन्‌तनुक्कु—यक्षराज कुबेर को; अरु मऱै किळवन्—उत्तम वेदों के रक्षक ब्रह्मा ने; अन्‌ड्रु—उस दिन; ईन्‌त—जो दिया था; तुयक्कु—बंधन; इलातवर्—रहित लोगों के; मतम् अॅन्न—मन के समान; तूयतु—पवित्र; चुरर्‌कळ—देवों को भी; वियक्क—विस्मित करके; वान् चॅलुम्—आकाश में चलनेवाला; पुट्पक विमानम्—पुष्पकयान; उण्टु—है; अॅन्‌ड्रु—ऐसा; मयक्कु—भ्रम; इलान्—रहित विभीषण के; चॊल—कहने पर; वल्लैयिन्—जल्दी; कॊणर्‌ति—लाओ; अॅन्‌ड्रान्—ऐसा कहा श्रीराम ने। ४०३५

वह चतुर्वेद ब्रह्मा का यक्षराज कुबेर को (जिस दिन उसने तपस्या की थी उस दिन) दिया हुआ है। वह निर्लिप्त ज्ञानी के मन के समान पवित्र है। सुरों को भी विस्मयाभिभूत करते हुए आकाश में चलनेवाला पुष्पक विमान यहाँ है। भ्रमरहित मनवाले विभीषण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने आज्ञा दिलायी कि लाओ जल्दी उसे। ४०३५

अण्ड कोडिह ळनन्‌दमीन् तायिर मरुक्कर्
विण्ड दामॆन विशुम्बिडॆन् तिशैयॆलाम् विळङ्गक्
कण्डॆ यायिर कोडिह ळॊलिप्पुऱक् कऩलक्
कॊण्ड णॆन्‌दन नॊडियिनि नरक्कर्‌दङ् गोमान् 4036

अनन्‌तम्—अनंत; अण्ट कोटिकळ्—कोटि अण्ड; ऒन्‌तु—मिलकर; विचुम्पु इटै—आकाश में; आयिरम्—हजार; अरुक्कर्—सूरज; विण्टतु आम्—निकले हों; ऎन्न—ऐसा; तिचै ऎलाम्—सारी दिशाओं में; विळक्क—प्रकाश देते; आयिरम् कोटि—हजार करोड़; कण्टैकळ्—घंटियाँ; ऒलिप्पु उऱ—शब्द हो ऐसे; कऩल—बजतीं; अरक्कर् तम् कोमान्—राक्षसपति; नॊटियिऩिल्—एक 'चुटकी' की देर में; कॊण्टु अणैन्‌तनन्—ले आया। ४०३६

राक्षसपति विभीषण चुटकी बजाते देर में वह यान लाया। अनंत कोटि अण्डों का मिला-सा आकार लिये आकाश में उदित हज़ार सूर्य का सम्मिलित प्रकाश सारी दिशाओं में छिटकाते हुए वह आया और उसमें हज़ार करोड़ घंटियाँ बजकर ध्वनि उठा रही थीं। ४०३६

अन्नैय पुट्पह विमानम्वन् दवनियै यणुह
इन्निय शिन्‌दनै यिराहव नुवहैयो डिनिनम्
विन्नैय मुऱ्‌ऱिय वॆन्‌ड्रुकॊण् डॆऴिनन् विण्णोर्
पुन्नैम लर्‌शॊरिन् दार्‌त्तन राशिहळ् पुहन्‌ड्रे 4037

अन्नैय—वैसा; पुट्पक विमानम्—पुष्पकविमान; अवनियै—भूमि पर; वन्तु—

संपन्न हो गया; ॲन्ऱु कॊण्डु–ऐसा मानकर; एऱिनन्–चढ़े; विण्णोर्–आकाशवासी (देवों) ने; आचिकळ्–आशीर्वचन; पुकन्ऱु–कहकर; पुनै मलर्–सुन्दरपुष्प; चॊरिन्तु–बरसाकर; आर्त्तनर्–जय-जयकार किया। ४०३७

जब वह विमान भूमि पर उतरा तब मधुर भावनाओं से भरे मनवाले श्रीराघव ने आनंद के साथ यह आश्वासन लेकर आरोहण किया कि अब हमारा कार्य सिद्ध हो गया। व्योमवासियों ने आशीर्वचन कहे, पुष्प बरसाये और जय-जयकार किया। ४०३७

वणङ्गु नुण्णिडैत् तिरिशडै वणङ्गवान् कऱ्पिऩ्
किणङ्ग रिऩ्मैया णोक्कियो रिडरिऩ्ऱि यिलङ्गैक्
कणङ्गु ताऩॆऩ विरुत्तियॆंन् ऱैयऩ्माट् टणॆन्दाळ्
मणङ्गॊळ् वेलिळङ् गोळरि मानमीप् पडर्न्दान् 4038

वान् कऱ्पिऱ्कु–श्रेष्ठ पातिव्रत्य में; इणङ्कर्–सानी; इन्मैयाळ्–न रखने वाली देवी; वणङ्कुम्–लचीली; नुण् इडै–पतली कमरवाली; तिरिचडै–त्रिजटा के; वणङ्क–उन्हें नमस्कार करने पर; नोक्कि–देखकर; ओर् इडर् इन्ऱि–बिना किसी संकट के; इलङ्कैक्कु–लंका की; अणङ्कु तान् ॲन–एक देवी के समान; इरुत्ति–रहो; ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; ऐयन् माट्टु–प्रभु श्रीराम के पास; अणॆन्ताळ्–पहुँचीं; मणम् कॊळ्–मांस-गंधयुक्त; वेल्–शक्ति के; इळ कोळरि–बालकेसरी (लक्ष्मण); मानम् मी–विमान पर; पडर्न्तान्–चढ़े। ४०३८

अतिश्रेष्ठ पातिव्रत्यपालिका, जिनकी टक्कर की कोई नहीं थी वे सीताजी, अपने सामने विनत लचीली कमरवाली त्रिजटा को यह आशीर्वाद दिया कि तुम विना किसी संकट के लंका की देवी के समान रहो और तब श्रीराम के पास आयीं। मांसगंधवह भालाधारी बालकेसरी (-सम) लक्ष्मण भी विमान पर आरूढ़ हुए। ४०३८

अण्ड मुण्डवऩ् मणियणि युदरमॊत् तनिलऩ्
शण्ड वेहमुङ् गुऱैतर निऩैवॆनुम् दहैत्ताय्
विण्ड लन्दिहऴ् पुट्पह विमानमा मदन्मेऱ्
कॊण्ड कॊण्डलॊत् तुणैवरैप् पार्त्तिवै कुणित्तान् 4039

अण्टम्–अण्ड के; उण्टवन्–उदरस्थ करनेवाले के; मणि अणि–सुन्दरतायुक्त; उतरम् ऒत्तु–उदर के समान; अनिलन्–पवन के; चण्टम् वेकमुम्–उग्र वेग को; कुऱै तर–कम करते हुए; निनैवु ॲनुम्–मनोवेग कहने; तकैत्ताय्–योग्यरीति से; विण् तलम्–आकाशतल में; तिकऴ्–प्रकाशमान; पुट्पक विमानम् आम्–पुष्पक विमान जो था; अतन् मेल् कॊण्ट–उस पर जो चढ़े वे; कॊण्टल्–मेघ-श्याम ने; तन् तुणैवरै–अपने साथियों को; पार्त्तु–देखकर; इवै–ये वचन; कुणित्तान्–सोचकर बताये। ३०३९

प्रलय के अवसर पर सारे अंडों को अपने उदर में लय करा लेने

वाले श्रीविष्णु के अति सुन्दर उदर के समान जो रहा, जो अनल गति को भी कम बनानेवाली मनोगति से युक्त था और जो आकाश में अत्यद्भुत छवि के साथ रह रहा था, उस पर आरूढ़ होकर मेघश्याम ने अपने साथियों से निम्नोक्त विचार प्रकट किये। ४०३९

वीड णनुरुनै यन्बुड़ नोक्कुरा विमलन्
तोड णैन्दतार् मवुलियाय् शोल्वदोन् ऱुळदुन्
माड णैन्दवर्क् किन्बमे वळङ्गिनी ळरशिन्
नाड णैन्दवर् पुहळ्न्दिड वीट्रिरु नलत्ताल् 4040

विमलन्–विमल श्रीराम; वीटणन् तनै–विभीषण को; अन्पुड़–सस्नेह; नोक्कुरा–देखकर; तोटु–पंखुड़ियों-सहित; अणैन्त तार्–माला पहने; मवुलियाय्–मुकुटधारी; चोल्वतु–कहना; ओन्ऱु–एक; उळतु–है; उन् माटु–तुम्हारे पास; अणैन्तवर्क्कु–जो आते उन्हें; इन्पमे वळङ्कि–सुख ही देकर; नाटु अणैन्तवर्–देशवासी; पुकळ्न्तिट–प्रशंसा करें ऐसा; नीळ् अरचिन्–बड़े इस शासन में; नलत्ताल्–भलाइयों के साथ; वीट्रिरु–विराजमान रहो। ४०४०

विमलमूर्ति ने विभीषण को सस्नेह देखकर कहा कि दलसंकुल पुष्पमालाधारी ! तुमसे कहने की एक बात है। तुम्हारे पास जो आये हैं, उनका हित करो। देशवासियों की प्रशंसा का पात्र बने रहो और इस बड़े शासन-कार्य में सब तरह की भलाइयों के साथ विराजमान रहो। ४०४०

नीदि यारॅनत् तॅरिवुरु निलैमैपॅड्र् ऱुडैयाम्
आदि नान्मरैक् किळवनिन् कुलमॅन वमैन्दाय्
एदि लार्तोळु मिलङ्गैमा नहरिनु ळिनिनी
पोदि यालॅनप् पुहन्ड्रनन् नान्मरै पुहन्ड्रान् 4041

नीति आऱु–नीति-नदी; ॲन्न–के समान; तॅरिवुऱु–माने जाने की; निलैमै–स्थिति; पॅट्रु उडैयाय्–पा चुके हो; आति–अनादि; नान्मऱै किळवन्–चतुर्वेद ब्रह्मा; निन् कुलम्–तुम्हारे कुलजनक हैं; ॲन्न–ऐसा; अमैन्ताय्–पैदा हुए हो; नी–तुम; एतिलार्–शत्रु से; तोळुम्–स्तुत; इलङ्कै–लंका; मा नकरिनुळ्–(के) बड़े नगर (के अंदर); पोति–जाओ; ॲन्न–ऐसा; पुकन्ऱनन्–कहा; नान्मऱै–चतुर्वेद के; पुकन्ऱान्–प्रकाशक ने। ४०४१

नीति-नदी-मान्य स्थिति में रहनेवाले ! अनादि वेदों का ब्रह्मा जिस कुल का आदिपुरुष है, उस कुल में पैदा हुए हो। शत्रुप्रशंसित लंका नगर को लौट जाओ। ऐसा कहा चतुर्वेदप्रकाशक श्रीराम ने। ४०४१

शुक्कि रीवनिन् तोळुडै वन्मैयाऱ् ऱॅशन्दी
हक्कि रीवनैत् तडिनदुवॆम् बडैयिना लशैत्त

मिक्क वानरच् चेनैयि निळैप्पऱ मीण्डूर्
पुक्कु वाऴ्हॆनप् पुहन्ऱनन् ईरिलाप् पुहऴोन् 4042

ईऱु इला—असीम; पुकऴोन्—यश के स्वामी ने; चुक्किरीव—सुग्रीव; निन्—तुम्हारे; तोळ् उटै—वन्मैयाल्—भुजबल से; तॆचम् तीकु—दस के; अ किरीवनै—ग्रीवा वाले को; तटिन्तु—मारकर; वॆम् पटैयिनाल्—भयंकर अस्त्रों से; अवितुत—अस्त-व्यस्त; मिक्क—बहुत; वानर चेनैयिन्—वानरसेना की; इळैप्पु अऱ—थकावट दूर करके; मीण्टु—फिर से; ऊर् पुक्कु—नगर में जाकर; वाऴ्क—रहो; ऎन पुकन्ऱनन्—ऐसा कहा। ४०४२

अनंतयशस्वी श्रीराम ने सुग्रीव से यह कहा:— सुग्रीव ! तुम्हारे भुजबल के कारण ही दशग्रीव का हनन कर सका। तुम भयंकर अस्त्रों से अस्त-व्यस्त तथा शिथिल जो हो गये थे उन वानरों की सेना को लेकर अपने नगर में लौट जाओ और रहो। ४०४२

वालि शेयिनैच् चाम्बनैप् पनशनै वयप्पोर्
नील नादिय नॆडुम्बडैत् तलैवरै नॆडिय
कालिन् वेलैयैत् ताविमीण् डरुळिय करुणै
पोलुम् वीरनै नोक्किमऱ् ऱिम्मॊऴि पुहन्ऱान् 4043

वालि चेयिनै—वालीपुत्र को; चाम्पनै—जाम्बवान को; पनचनै—पनश को; वयम् पोर्—बलवान योद्धा; नीलन् आतिय—नील आदि; नॆटु पटै—बड़ी सेना के; तलैवरै—नायकों को; नॆटिय—बड़े; कालिन्—पैरों के बल; वेलैयै—समुद्र को; तावि—लाँघकर; मीण्टु अरुळिय—लौट जो आया; करुणैपोलुम्—उस मूर्तिमान करुणा-सम; वीरनै—वीर हनुमान को; नोक्कि—देखकर; इ मॊऴि—यही बात; पुकन्ऱान्—कही। ४०४३

फिर श्रीराम ने वालीपुत्र, जाम्बवान, पनस, विजयी नील आदि बड़े योद्धायूथप, हनुमान, जिसने कि अपने लम्बे पैरों के बल समुद्र को लाँघकर लौट आने की कृपा की थी, और जो मूर्तिमान करुणा के समान था —इन सब पर कृपादृष्टि डालकर वही बात दुहरायी। ४०४३

ऐय निम्मॊऴि पुहन्ऱिडत् तुणुक्कमो डवर्हळ्
मॆय्यु मावियुङ् गुलैतर विऴिहणीर् तदुम्बच्
चॆय्य तामरैत् ताळिणै मुडियुरच् चेर्त्ति
उय्हि लेनिनै नीङ्गिनॆन् ऱिनैयन वुरैत्तार् 4044

इ मॊऴि—यह बात; पुकन्ऱिट—कहने पर; अवर्कळ्—ऐयन्—प्रभु के; उन्होंने; तुणुक्कमोटु—घबड़ाकर; मॆय्युम्—शरीर; आवियुम्—और प्राणों के; कुलै तर—काँपते; विऴिकळ्—आँखों में; नीर् ततुम्प—आँसू छलकते; चॆय्य—अरुण; ... मुटिउऱ—सिर पर लगे ऐसा; चेर्त्ति—

मिलाकर; निन्नै नीङ्गकिन्–आपसे अलग होंगे तो; उय्किलेम्–जियेंगे नहीं; ॲन्ऱु–ऐसा; इन्नैयन–और ये बातें; उरैत्तार्–कहीं। ४०४४

प्रभु के यह वचन कहते ही सुग्रीवादि घबड़ा गये, उनके शरीर और प्राण काँप गये। आँखों से अश्रु बहने लगा। उन्होंने अपने सिरों को श्रीराम के अरुणपद्मचरणों पर रखकर निवेदन किया कि अगर हमें आपसे अलग होना पड़ा तो हम जीवित नहीं रहेंगे। आगे भी उन्होंने कहा। ४०४४

पार मामदि लयोत्तियि नॅय्दिनित् पैम्बोत्
आर मामुडिक् कोलमुञ् जॅव्वियु मळ्हुम्
शोर्वि लादियाङ् गाण्गुरु मळवैयुन् दोडर्न्दु
पेर वेयरु ळॅन्ऱुरत्त रुळ्ळन्बु पिणिप्पार् 4045

उळ्ळन्पु–सच्चे मन के; पिणिप्पार्–प्रेमबद्ध; पारम्–भारी; मा मतिल्–बड़े प्राचीरों की; अयोत्तियिन्–अयोध्या में; ॲय्ति–जाकर; निन्–आपके; पैम् पोन् आरम्–चोखे स्वर्ण से निर्मित तथा हारयुक्त; मा मुटि कोलमुम्–बड़े किरीट-धारण की झांकी; चॅव्वियुम्–तथा उत्सव; अऴकुम्–सौंदर्य; चोर्विलातु–क्षोभ दूर हो ऐसा; याम्–हम; काण्कुरुम्–देखें; अळवैयुम्–उतने समय तक; तॊटर्न्तु–पीछे आकर के; पेरवे–लौटें; अरुळ्–यह करुणा करें; ॲन्ऱुरत्तर्–बोले (विशेषण आदि)। ४०४५

मन के अधिक स्नेह से जो श्रीराम को बाँध सकते थे, उन्होंने श्रीराम से कहा कि हम बड़े प्राचीरों वाली अयोध्या में आकर आपके मुकुटधारण उत्सव में आपका, खरे स्वर्ण से निर्मित और हारों से अलंकृत मुकुट धारण करना, अन्य वैभव और तब की आपकी सुन्दरता देखना चाहते हैं। तभी हमारी थकावट दूर होगी। तब तक आपके साथ आने, उसके बाद लौटने की कृपा की आज्ञा दें। ४०४५

अन्बि नालवर् मॊऴिन्दवा शहङ्गळु मवर्हळ्
तुन्ब मॅय्दिय नडुक्कमु नोक्किनोर् तुळङ्गल्
मुन्बु नानिनैन् दिरुन्ददप् परिशुनुम् मुयर्चि
पिन्बु काणुमा ऱुरैत्तदॆन् ऱुरैत्तनन् पॆरियोन् 4046

पॆरियोन्–सम्मान्य श्रीराम; अन्पिनाल्–प्रेम से; अवर्–उनके; मॊऴिन्त–कहे; वाचकक्कळुम्–वचन और; अवर्कळ्–उनका; तुन्पम्–(वियोग) दुःख से; ॲय्तिय–प्राप्त; नटुक्कमुम्–कंपन; नोक्कि–(सुन और) देखकर; नीर्–तुम लोग; तुळङ्कल्–भय मत करो; मुन्पु–पहले; नान्–मैं; निनैन्तिरुन्ततु–जो सोचता था; अप्परिचु–वह उसी प्रकार का था; पिन्पु–बाद (ऐसा); उरैत्ततु–कहना; नुम् मुयर्चि–तुम्हारा प्रबन्ध; काणुमाऱु–जानने के लिए; ॲन्ऱु–ऐसा;

श्रीराम ने उनका स्नेहार्द्र वचन सुना और उनका दुःख और भय देखा, कहा कि डरो मत। मैंने पहले वही सोचा था। पर जानना चाहा कि आपका कोई दूसरा प्रबंध तो नहीं। इसलिए मैंने वह बात कही थी। ४०४६

ऐयन् वाशहङ् गेट्टलु मरिकुलत् तरशुम्
मॉय्हॉळ् शेनैयु मिलङ्गैयर् वेन्दनु मुदलोर्
वैय माळुडै नायहन् मलर्च्चरण् वणङ्गि
मॅय्यि नोडरुन् दुरुक्कमुर् ड्रारॅन वियन्दार् 4047

ऐयन्–प्रभु का; वाचकम्–वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; अरिकुलत्तु–अरिकुल के; अरशुम्–राजा और; मॉय्कॉळ्–धनी; चेनैयुम्–सेना; इलङ्कैयर्–लंकावासियों का; वेन्तनुम्–राजा; मुतलोर्–आदि लोग; वैयम्–भुवन के; आळुडै–शासक; नायकन्–नायक श्रीराम के; मलर् चरण्–कमल-चरणों में; वणङ्कि–नमस्कार करके; मॅय्यित्तोडु–सशरीर; अरु–अगम; तुरुक्कम्–मोक्षलोक; उऱ्ऱार्–पहुँच गये; ॲन–जैसे; वियन्तार्–विस्मित हुए। ४०४७

प्रभु का वचन सुनते ही अरिकुलराज, घनी सेना, लंकापति आदि भुवननिकायपति श्रीराम के चरणों में विनत हुए। उन्हें ऐसा विस्मय तथा आनंद हो गया मानो उन्हें सशरीर ही स्वर्ग मिल गया हो। ४०४७

अनैय दाहिय शेनैयो डरशनै यनिलन्
तनय नादियाम् बडैप्पॅरुन् दलैवर्हळ् तम्मै
वनैयुम् वार्हऴ लिलङ्गैयर् मन्ननै वन्दिङ्
गिनिदि नेऱुमिन् यिमानमॅन् ड्रिराघव निशैत्तान् 4048

अनैयतु–वैसी स्थिति में; आकिय–आयी; चेनैयोडु–सेना के साथ; अरशनै–राजा सुग्रीव को; अनिलन्–और पवनदेव के; तनयन्–पुत्र; आतियाम्–आदि; पटै पॅरु–सेना के बड़े; तलैवर्कळ् तम्मै–नायकों को; वनैयुम्–पहनी; वार् कऴल्–बड़ी पायलधारी; इलङ्कैयर्–लंका के; मन्ननै–राजा को; इङ्कु–यहाँ; वन्तु–आकर; इनितिन्–प्रसन्नता के साथ; विमानम्–यान पर; एऱुमिन्–चढ़ो; ॲन्ऱु–ऐसा; इराकवन्–श्रीराघव ने; इचैत्तान्–कहा। ४०४८

उस तरह विस्मित सेना को श्रीराम ने राजा सुग्रीव, अनिलसुत आदि बड़े वानरयूथपों और पायलधारी विभीषण को 'अंदर सुख से आ बैठो' कहकर बुला लिया। ४०४८

शीत्त वाशहम् बिऱ्पडच् चूरियन् महनुम्
मत्तु वीरस मॅऴ्बवु वॅळ्ळवा नररुम्
कत्ति मामदि लिलङ्गैमन् नॉडुकडऱ् पडैयुम्
ततनि नारॅनडम् बुट्पह मिशैयोरु शूऴल् 4049

चॊन्न वाचकम्–उनका कहा वचन; पिऱ्पट–पिछड़ जाय ऐसा; चूरियन् मकनुम्–सूर्यपुत्र और; मन्नुम्–युक्त; वीररुम्–वीर; ऍळुपतु–सत्तर; वॆळ्ळम्–वॆळ्ळम्; वानररुम्–वानर; कन्ति–अक्षय; मामतिल्–बड़े प्राचीरों की; इलङ्कै मन्नॊटु–लंका के राजा के साथ; कटल् पटैयुम्–समुद्र-सम सेना; नॆटु–बड़े; पुट्पकम्–पुष्पक-विमान; मिचै–पर; ऒरु चूळल्–एक गोल में; तुन्नितार्–सटे हुए बैठ गये। ४०४९

कहने की भी देरी न रही कि सूर्यसूनु, अन्य यूथप, सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर वीर, अक्षय प्राचीरों वाली लंका का राजा और उसकी सागर-सम विशाल सेना —सभी उस बड़े पुष्पक यान पर आये और एक गोल पंक्ति में सटे हुए बैठ गये। ४०४९

पत्तु नालॆन वडुक्किय वुलहङ्गळ् पलवित्
मॆत्ति योनिह ळेऱिनुम् वॆऱ्ऱिड मिहुमाल्
मुत्त रानव रिदनिलै मॊळिहुव दल्लाल्
इत्त रादलत् तियम्बुदऱ् कुरियवर् यारे 4050

पत्तु नालॆन–दस और चार; अटुक्किय–एक-दूसरे के ऊपर रहे; उलकङ्कळ् पलवित्–अनेक लोकों के; मॆत्ति–बहुत; योनिकळ्–जीव; एऱिनुम्–चढ़ें तो भी; वॆऱ्ऱिटम्–खाली स्थान; मिकुम्–अधिक रहेगा; इतन् निलै–इसका हाल; मुत्तर् आनवर्–मुक्त लोग; मॊळिकुवतु–कहें तो कहें; अल्लाल्–नहीं तो; इ तरातलत्तु–इस भूमि के वासियों में; इयम्पुतऱ्कु–कहने; उरियवर्–योग्य; यार्–कौन हैं। ४०५०

वह यान ऐसा था कि उसमें चौदहों भुवनों के सारे अनेक जीव सवार हों तो भी बहुत स्थान खाली रहे। मुक्त लोगों को छोड़ कोई इसके हाल का वर्णन कर सके, ऐसा कोई नहीं। ४०५०

ऍळुबदु वॆळ्ळत् तोरु मिरविकान् मुळैयु मॆण्णिन्
वळुविला विलङ्गै वेन्दुम् वान्पॆरुम् बडैयुञ् जूळत्
तळुवुशी रिळैय कोवुञ् जनहन्मा मयिलुम् बोऱ्ऱ
विळुमिय कुणत्तु वीरन् विळङ्गिनन् विमानत् तुम्बर् 4051

ऍळुपतु–सत्तर; वॆळ्ळत्तोरुम्–वॆळ्ळम् के सभी वीर; इरवि–और रवि का; कान् मुळैयुम्–पुत्र; ऍण्णिल्–मन में; वळु–दोष; इला–न रहा (जिसके); इलङ्कै वेन्तुम्–वह लंकेश; वान्–श्रेष्ठ; पॆरु–बड़ी; पटैयुम्–सेना के; चूळ–घेरे रहते; चीर् तळुवु–महत्तायुक्त; इळैय–छोटे; कोवुम्–राजा और; चनकन्–जनक की; मा मयिलुम्–(दुहिता) बड़ी कलापीनिभ देवी के; पोऱ्ऱ–स्तुति करते; विळुमिय–श्रेष्ठ; कुणत्तु–गुणों के; वीरन्–वीर श्रीराम; विमानत्तु उम्पर्–पुष्पक विमान पर; विळङ्कितन्–शोभायमान रहे। ४०५१

सत्तर वॆळ्ळम् सेनावीर, रविपुत्र, अकलंकमन लंकापति, उसकी

कलापीनिभ जानकी की स्तुति को अपनाते हुए बड़े उत्तम गुणवान श्रीराम पुष्पकयान पर शोभित रहे। ४०५१

अण्डमे पोन्ऱ्ऱ् दैयन् पुट्पहम् मण्डत् तुम्बर्
ऍण्डरुङ् गुणङ्ग ळिन्ऱ्ऱि मुदलिडै योऱ्ऱिन् ऱाहिप्
पण्डैनान् मऱ्ऱैक्कु मॆट्टाप् परञ्जुडर् पोलिवदेपोऱ्
पुण्डरी हक्कण् वॆऩ्ऱिप् पुरवलन् पोलिन्दान् मन्नो 4052

ऐयन्–प्रभु का; पुट्पकम्–पुष्पकयान; अण्टमे–अण्ड के; पोन्ऱ्रतु–ही समान था; पुण्टरीकम्–पुण्डरीक-सम; कण्–आँखें और; वॆन्ऱ्ऱि–विजय के स्वामी; पुरवलन्–पालक श्रीराम; अण्टत्तु–भूमि के; उम्पर्–ऊपर; ऍण् तरु–गिनती में आये; कुणङ्कळ्–गुणों के; इन्ऱ्ऱि–विना; मुतल्–जन्म; इटै–मध्यायु; ईऱु–मरण; इन्ऱु–के विना; आकि–रहकर; पण्टै–पुरातन; नान् मऱ्ऱैक्कुम्–चारों वेदों से भी; ऍट्टा–अग्राह्य; परम् चुटर्–परमज्योति; पोलिवते पोल्–दमकती जैसे; पोलिन्तान्–छविमय रहे। ४०५२

प्रभु का पुष्पक अंड के समान था; पुण्डरीकाक्ष, विजयी, रक्षक भगवान श्रीराम सभी लोकों के ऊपर (परमपद वैकुण्ठ में) असंख्यगुणगणपरिपूर्ण होकर अनादिमध्यांत, पुरातन चतुर्वेदागोचर परम वस्तु जैसे ज्योतिर्मय रहती हैं वैसे ही जाज्वल्यमय रहे। ४०५२

तेनुडै यलङ्गन् मौलिच् चॆङ्गदिर्च् चॆल्वन् शेयुम्
मीनुडै यहळि वेलै यिलङ्गैयर् वेन्दुम् वॆऱ्ऱित्
तानैयुम् बिऱरु मऱ्ऱैप् पडैप्पॆरुन् दलैवर् तामुम्
मानुड वडिवङ् गॊण्डार् वळ्ळलतन् वाय्मै तन्नाल् 4053

तेन् उटै–मधुयुक्त; अलङ्कल्–पुष्पमाला से युक्त; मौलि–किरीटवाला; चॆ कतिर्–लाल किरणों के; चॆल्वन्–धनी सूर्य का; चेयुम्–पुत्र; मीन् उटै–मछलियों-सहित; वेलै–समुद्र की; अकऴि–खाई वाली; इलङ्कैयर् वेन्तुम्–लंका का पति; वॆऱ्ऱि–विजयी; तानैयुम्–सेना; पिऱरुम्–अन्य; मऱ्ऱै–और; पटै–सेना के; पॆरु–बड़े; तलैवर् तामुम्–नायक; वळ्ळल् तन्–प्रभु के; वाय्मै तन्नाल्–वचन के अनुसार; मानुट–मनुष्य के; वटिवम्–रूप; कॊण्टार्–ले लिये (सभी ने)। ४०५३

तब उदार प्रभु श्रीराम की प्रकट कही आज्ञा के अनुसार मधुयुक्त पुष्पमाला से अलंकृत मुकुटधारी, लाल किरणों के स्वामी सूर्य का पुत्र, मकरालय-परिखा लंका के वासियों का राजा और दोनों विजयी सेनाओं के वीर और अन्य सभी यूथप —सभी ने मानव रूप धर लिया। ४०५३

कुडतिशै मऱैन्द पिन्नरक् कुणतिशै युदयञ् जॆय्वान्
वडतिशै ययन मुन्नि वरुवदे कडुप्प मानम्
तडैयीरु शिऱ्ऱिदिन् ऱाहित् ताविवान् पडरुम् वेलै
पडैयमै विळियाद् कैय तिऩैयन पहर लुऱ्ऱान् 4054

कुट तिचै–पश्चिम दिशा में; मरैन्त पिन्नर्–अस्त होने के बाद; कुण तिचै–
र्व दिशा में; उतयम् चॆय्वान्–उदित होनेवाला; वट तिचै–उत्तर दिशा के;
यत्तम्–मार्ग में; मुन्नि–(जाना) सोचकर; वरुवतु–आता हो; कट्पप–जैसे;
ानम्–विमान; तटै–बाधा; ऒरु चिऱितु–कोई छोटी भी; इन्ऱि आकि–न होकर;
ान्–आकाश में; तावि–लाँघकर; पटरुम् वेलै–जाता रहा तब; ऐयन्–प्रभु;
लै पटै–भाला हथियार; अमै विऴियाट्कु–के समान आँखों वाली को; इनैयन–ये;
करल्–कहने; उऱ्ऱान्–लगे। ४०५४

पश्चिम दिशा में अस्त होकर पूर्व दिशा में उदय होता रहा सूर्य मानो उत्तर दिशा के मार्ग में जाता हो, ऐसा पुष्पकयान अबाध गति से आकाश-मार्ग में जाता रहा। तब श्रीराम भाला-सी आँखों वाली सीता को निम्नलिखित विषय बताने लगे। ४०५४

इन्दिरऱ् कञ्जि मेना ळिरुङ्गडल् पुक्कु नीङ्गाक्
कन्दर शयिलन् दन्नैक् कण्डवर् विनैह डीर्क्कुङ्
गन्दमा दनमॆन् ऱोदुङ् गिरियिवण् किडप्पक् कण्डाय्
पॆन्दॊडि यडैत्त शेदु पावन माय दॆन्ऱान् 4055

पॆन्तॊटि–खरे स्वर्ण से निर्मित कंकणधारिणी; मेनाळ्–पहले; इन्तिरऱ्कु–
इन्द्र से; अञ्चि–डरकर; इरु कटल्–बड़े समुद्र में; पुक्कु–घुसकर; नीङ्का–
जो बाहर नहीं आया; कन्तरम्–कंदरासहित; चयिलम् तन्नै–शैल को;
कन्तमातनम्–गंधमादन; ऎन्ऱु–'इति'; ओतुम्–जो कहा जाता है; कण्टवर्–
दर्शक के; विनैकळ् कर्मों को; तीर्क्कुम्–दूर करनेवाले; किरि–पर्वत को;
इवण्–इधर; किटप्प–पड़ा हुआ; कण्टाय्–देखो; अटैत्त–बँधे हुए; चेतु–
सेतु के कारण; पावनम्–पवित्र; आयतु–बना; ऎन्ऱान्–कहा प्रभु ने। ४०५५

खरे स्वर्णकंकणहस्ते! पहले इंद्र से डरकर कंदराओं-सह गंधमादन नामक पर्वत बड़े समुद्र में छिपा और वहीं रह गया। दर्शकों के कर्ममेटक उस गिरि को इधर पड़ा हुआ देखो। उसी से हमारा बाँधा सेतु पावन हुआ। श्रीराम ने वह कहा। ४०५५

कङ्गैयो डियमुनै कोदा विरिनरु मदैका वेरि
पॊङ्गुनीर् नदिहळ् यावुम् बडिन्दलाऱ् पुन्मै पोहा
शङ्गॊऱि तरङ्ग वेलै तट्टविच् चेदु वॆन्नुम्
इङ्गिदि नॆदिर्न्दवोर् पुन्मै यावैयु नीक्कु मन्ऱे 4056

कङ्कैयोटु–गंगा और; यमुनै–यमुना; कोताविरि–गोदावरी; नरुमतै–
नर्मदा; कावेरि–कावेरी आदि; नीर् पॊङ्कुम्–जलसमृद्ध; नतिकळ्–नदियाँ;
यावुम्–सभी में; पटिन्तलाल्–स्नान किये विना; पुन्मै–पाप (नीचता); पोका–
नहीं छूटता; चङ्कु ऎऱि–शंख फेंकती; तरङ्कम्–तरंगाकुल; वेलै–समुद्र;
तट्ट–रोककर; चेतु ऎन्नुम्–सेतु नामक; इङ्कु–यहाँ; इतिन्–इसके; ऎतिर्न्तोर्–

जो दर्शन करते उनका; पुत्मै–मल; यावैयुम्–सारा; नीक्कुम्–दूर कर देगा। ४०५६

गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी आदि नदियाँ, उनमें स्नान करो तभी पाप हरती हैं। पर शंख उछालती तरंगों से पूर्ण इस समुद्र में बाँधे गये इस 'सेतु' के तीर्थ का जिन्होंने दर्शन किया उनका पाप (उनकी नीच भाव) दूर हो जाता है। ४०५६

मरक्कल मियङ्ग वेण्डि वरिशिलैक् कुदैयाऱ् कीऱित्
तरुक्किय विडत्तुप् पञ्ज पादह रेतुञ् जारिऱ्
पॆरुक्किय वेऴु मूनृ पिऱवियुम् बिणिह णीङ्गि
नॆरुक्किय वमररक् कॆल्ला नीणिदि याव रत्ऱे 4057

मरक्कलम्–नौकाएँ; इयङ्क वेण्टि–चलें यह चाहकर; वरिचिलै–सबन्ध धनु के; कुतैयाल्–छोर से; कीऱि–चीरकर; तरुक्किय–जहाँ मैंने गहरा बनाया; इटत्तु–उसको; पञ्च पातकर् एतुम्–पंचमहापातकी भी क्यों न हों; चारिल्–आकर स्नान करें; एऴु मूनृ पॆरुक्किय–तो इक्कीस; पिऱवियुम्–जन्मों के; पिणिकळ् नीङ्कि–रोग दूर होंगे और; नॆरुक्किय–भीड़ के; अमरर्क्कु ऎल्लाम्–सभी देवों के लिए भी; नीळ् निति–बड़ी संपत्ति; आवर्–बनेंगे। ४०५७

मैंने यहाँ नौकाओं के चलने की सुविधा के लिए अपने सबंध धनु के नोक से मार्ग बनाया था। वहाँ पंचमहापातकी भी आकर स्नान करें, तो उनका इक्कीस जन्मों का पाप-रोग दूर हो जायगा। और उन्हें देव भी अपनी संपत्ति (सम्मान्य विभूति) मानेंगे। ४०५७

नॆऱ्ऱियि नऴलुञ् जॆङ्ग णीऱणि कडवु णीडु
कऱ्ऱैयञ् जडैयित् मेवु कङ्गैयुञ् जेदु वाहप्
पॆऱ्ऱिल मॆत्ऱु कॊण्डु पॆरुन्दवम् बुरिहित् ऱाळाल्
मऱ्ऱिदत् तूय्मै यॆव्वा ऱुरैप्पदु मलरक्कण् वन्दाय् 4058

मलर् कण्–कमल से; वन्ताय्–उत्पन्न श्रीमती; नॆऱ्ऱियिल्–भाल पर; अऴलुम्–जलती; चॆंकण्–लाल आँखों से; नीऱु अणि–भभूत से भूषित; कटवुळ्–ईश्वर के; नीटु–लंबे; कऱ्ऱै अम् चटैयिल्–कपर्द पर; मेवुम्–रहनेवाली; कङ्कैयुम्–गंगा भी; चेतुवाक–सेतु; पॆऱ्ऱिलम्–हम नहीं बन पायी; ऎत्ऱु कॊण्टु–ऐसा सोचकर; पॆरु तवम्–बड़ी तपस्या; पुरिकिन्ऱाळाल्–करती तो; इतत् तूय्मै–इसकी पवित्रता का; ऎव्वाऱु–कैसा; उरैप्पतु–वर्णन किया जाय। ४०५८

हे कमले! भाल में जलती आँख से और शरीर पर भभूत से विभूषित शिव के कपर्द पर रहनेवाली गंगा भी पछताती हैं कि हम सेतु नहीं बनीं। वे तदर्थ बड़ी तपस्या कर रही हैं! तो इसकी पवित्रता का कैसा वर्णन हो? । ४०५८

तॅव्वडुम् जिलैक्क वीरन् शेदुविन् पॅरुमै यावुम्
वॅव्विडम् बॉरुदु नीण्डु मिळिर्दरुङ् गरुङ्गट् चॅव्वाय्
नॉव्विडै मयिल नाट्कु नुवन्ऱुळि वरुण नोना
दिव्विडै वन्दु कण्डाय् शरणॅन वियम्बिऱ् ऱॅन्ऱान् 4059

तॅव् अटम्–शत्रु-संहारक; चिलै कै–कोदण्डपाणी; वीरन्–वीर ने; चेतुविन्–सेतु की; पॅरुमै यावुम्–सभी महिमा; वॅव्विटम्–भयंकर विष से; पॉरुतु–लड़कर; कण्ट–(कान तक) लम्बे; मिळिर् तरुम्–उज्ज्वल; करु कण्–नीले नेत्र; चॅव्वाय्–लाल अधर; नॉव् इटै–पतली कमर; मयिल् अताट्कु–कलापीनिभ देवी को; नुवन्ऱुळि–जब बतायी; इव् इटै–यह स्थल; वरुणन्–वरुण ने; नोताटु–सह न सककर; वन्तु–आकर; चरण् ऍन–"शरण" चाहता हूँ; इयम्पिऱ्ऱु–ऐसा कहा; कण्टाय्–देखो (यह स्थान); ऍन्ऱान्–कहा। ४०५६

परंतप कोदंडपाणी श्रीवीरराघव ने कठोर विष से लड़नेवाली और कानों तक लंबी रही नीली आँखें और लाल अधरों से युक्त सीताजी को सेतु की बड़ी महिमा बतायी। (तब वरुण-नमस्कार का स्थल आ गया तो) "देखो, यही स्थल है जहाँ वरुण आग्नेयास्त्र का प्रभाव न सहकर आकर बोला था कि 'मैं आपकी शरण में आया हूँ'। —श्रीराम ने कहा।" ४०५९

इदुतमिऴ् मुनिवन् वैहु मियऱ्हु कुन्ऱ मुन्दान्
अवुवळर् मणिमे लोङ्ग लप्पुऱत् तुयर्न्दु तोन्ऱुम्
अदितिह ळनन्द वॅऱ्पॆन् ऱॅरुडर वनुमन् ऱोन्ऱिऱ्
ऱॅदुवॆन वणङ्गै नोक्कि यिऱ्ऱॆन विरामन् शॊन्नान् 4060

इरामन्–श्रीराम; इतु–यह; तमिऴ् मुनिवन्–"तमिऴ" के महर्षि; वैकुम्–जहाँ रहते हैं; इयल् तकु–वह योग्य; कुन्ऱम्–पर्वत है; अतु–वह; मुतल्वन्–आदिदेव जहाँ रहते; मणि मेल्–रत्नगर्भ; ओङ्कल्–पर्वत (तिरु मालिरुञ् सोलै मलै); अति तिकळ्–बहुत छविमय; अनन्त वॅऱ्पु–अनंत पर्वत (श्री वेंकटाद्रि); अप्पुऱत्तु–उस ओर; उयर्न्तु तोन्ऱुम्–ऊँचा दिखता है; ऍन्ऱु–ऐसा; अरुळ् उरैप्पर–कहने पर; अनुमन्–हनुमान; तोन्ऱिऱ्ऱु–सामने आया; ऍतु–कहाँ; ऍन–ऐसा कहने पर; अणङ्कै नोक्कि–देवी को देखकर; इऱ्ऱु–यहाँ; ऍन–ऐसा; चॊन्नान्–कहा (श्रीराम ने)। ४०६०

श्रीराम ने आगे दिखाया। "यही तमिऴ (वैयाकरण) ऋषि अगस्त्य का वासस्थल गिरि है। आदिभगवान श्रीविष्णु का वह रत्नमय 'तिरुमालिरुञ् जोलै मलै' नाम का पर्वत है। उधर श्री वेंकट गिरि ऊँचा दिखती है।" उनके यह कहने पर देवी ने प्रश्न किया कि हनुमान आपसे मिला कहाँ? श्रीराम ने ऋष्यमूक पर्वत को दिखाकर कहा कि 'यहीं'। ४०६०

वालियॆन् ऱळवि लाऱ्ऱल् वन्मैयात् महर नीर्शूऴ्
वेलैयैक् कडक्कप् पायुम् विऱलुडै यवनै वीट्टि

नूलियर् ररुम नीदि नुतित्तरङ् गुणित्त मेलोर्
पोलियर् रबतन् मैन्द नुरैतरुम् बोरैयो देन्रात् 4061

अळविल् आऱ्ऱल्–अमित विक्रम; वन्मैयात्–बलवान; मकरम्–मकर-भरे; नीर्चूळ्–जलपूर्ण; वेलैयै–समुद्र को; कटक्क–लाँघते; पायुम्–झपटने का; विऱल् उटै–बल जिसमें था; वालि ॲन्नर् अवत्तै–वाली नाम के उसे; वीट्टि–मारकर; नूल् इयल्–शास्त्रोक्त; तरुमन्–धर्म; नीति–नीति आदि; नुतित्तु–गुनकर; अऱम् कुणित्त–धर्मरत; मेलोर्–उत्तम लोगों; पोल् इयल्–के समान स्वभाववाला; तपतन् मैन्तन्–सूर्य का पुत्र; उऱै तरुम्–जहाँ रहता; पोरै ईतु–वह चट्टान यह है; ॲन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ४०६१

श्रीराम ने उसका वर्णन यों किया। अपार बलशाली, मकरजलाशय समुद्र को लाँघ सकनेवाले साहसी वाली को मारनेवाला और शास्त्रोक्त नीतिधर्म आदि गुनकर धर्मावलम्बी रहनेवाले उत्तम लोगों के-से स्वभाव-वाला, सूर्य का पुत्र यहीं रहता है। यही उसके वास का पर्वत है। ४०६१

किट्किन्वै यिदुवे लैय केट्टिया लॅनदु पॅण्मै
मट्कुन्दा नाय वॅळ्ळ महळिरिन् ऱाहि वानोर्
उट्कुम्बोर् शेनै शूळ वोरुत्तिये ययोत्ति यॅय्दिन्
कट्कोन्दार् कुळलि नारै येर्रुदल् कडन्मैत् तॅन्राळ् 4062

ऐय–प्रभु; इतु–यह; किट्किन्तयेल्–किष्किधा हो तो; केट्टियाल्–सुनिए; उट्कुम्–भयभीत होने देकर; पोर्–योद्धाओं को; चेनै चूळ–सेना के चारों ओर रहते; मकळिर्–स्त्रियाँ; इन्ऱाकि–नहीं हैं; ओरुत्तिये–मैं अकेली; अयोत्ति–अयोध्या; ॲय्तिन्–जाऊँ तो; ॲनतु–मेरा; पॅण्मै–स्त्री गौरव; मट्कुम्–कम हो जायगा; कळ् कोन्तु आर्–मधु-सह गुच्छों को पहनी हुई; कुळलितारै–केशिनियों को; एर्ऱुतल्–इसमें चढ़ा लेना; कडन्मैत्तु–करणीय है; ॲन्ऱाळ–कहा (देवी ने)। ४०६२
आन्–वे; वॅळ्ळम् आय–'वॅळ्ळमों' में; वानोर्–देवों को भी;

तब सीता ने कहा। यही किष्किधा हो तो सुनिए। पुरुष वॅळ्ळमों की संख्या में हैं और स्त्री मैं अकेली एक हूँ। अयोध्या में जब पहुँचूँ तब मेरे स्त्रीत्व की कमी मानी जायगी। मधुमिश्रित पुष्प-गुच्छों से अलंकृत केशवाली तन्वियों को ले जाना ही ठीक काम होगा। ४०६२

अम्मोळि यिरवि मैन्दर् कण्णरा नुरैप्प वन्नान्
मॅय्म्मैशे रनुमन् ऱन्नै नोक्किनी विरैविन् वीर
मैम्मलि कुळलि नारै मरबिनार् कोणर्दि यॅन्नाच्
चॅम्मैशे रुळ्ळत् तण्णल् कोणर्न्ददत् तॅन्ऱु मन्नो 4063

अ मोळि–वह वचन; अण्णल्–प्रभु ने; इरवि मैन्तर्क्कु–सूर्यपुत्र से; उरैप्प–कहा तो; अन्नान्–उसने; मॅय्म्मै चेर्–सत्यवादी; अनुमन् तन्नै–हनुमान

; नोक्कि–देखकर; वीर–वीर; नी–तुम; विरैविऩ्–जल्दी; मै मलि–
ली; कुऴलिऩारै–केशिनियों को; मरपिऩाल्–क्रम के अनुसार; कॉणर्ति–
ओ; ऎऩ्ऩा–कहा तो; चॅम्मै चेर्–सीधे-सादे; उळ्ळत्तु–मन का; अण्णल्–
ठ हनुमान; चॅऩ्ऱु–जाकर; कॉणर्न्तऩऩ्–लाया। ४०६३

श्रीराम ने सुग्रीव से उनकी राय कही। सुग्रीव ने सत्यसंध हनुमान
कहा— वीर! जाओ। जल्दी काली केशिनियों को उचित रीति से बुला
ाओ। सीधे-सादे मन वाला हनुमान गया और उन्हें बुला लाया। ४०६३

वरिशैयिऩ् वऴामै नोक्कि मारुदि मादर् वॆळ्ळम्
करैशॅय लरिय वण्णङ् गॉणर्न्दऩऩ् कणत्तिऩ् मुऩ्ऩम्
विरैशॅऱि कुऴलि ऩार्तम् वेन्दऩै वणङ्गिप् पॆण्मैक्
करशियै येय ऩोडु मडियिणै तॊऴुदु निऩ्ऱार् 4064

मारुति–मारुति; करै चॅयल्–सीमा बनाना; अरिय वण्णम्–मुश्किल हो,
इतना; मातर् वॆळ्ळम्–स्त्री-समूह; कणत्तिऩ् मुऩ्ऩम्–पल भर में; वरिचैयिऩ्–
आदर में; वऴामै–दोष न हो ऐसा; नोक्कि–ध्यान देकर; कॉणर्न्तऩऩ्–लाया;
विरैचॅऱि–सुगंधमय; कुऴलिऩार् तम्–केशोंवाली; वेन्तऩै वणङ्कि–राजा को
नमस्कार करके; ऐयऩोटुम्–प्रभु राजाराम और; पॆण्मैक्कु–स्त्रियों में; अरचियै–
रानी के; इणै अटि–चरणद्वय; तॊऴुतु निऩ्ऱार्–नमस्कार करके रहीं। ४०६४

मारुति पल भर में असीम वानरियों को उचित गौरव के साथ ध्यान
से ला चुका। सुगंधित केशिनियाँ वे पहले अपने राजा को नमस्कार करके
फिर प्रभु और स्त्रीत्व की श्रृंगार सीताजी को नमस्कार करके खड़ी
हुईं। ४०६४

मङ्गल मुदला वुळ्ळ मरबिऩिऱ् कॉणर्न्द यावुम्
अङ्गवर् वैत्तुप् पॆण्मैक् करशियैत् तॊऴुदु शूऴ
नङ्गैयु मुवन्दु वेऱोर् नवैयिलै यिऩिमऱ् ऱॆऩ्ऱाळ्
पॊङ्गिय विमाऩन् दाऩु मऩमॆऩ वॆऴुन्दु पोऩ 4065

अङ्कु अवर्–तब वे; मरपिऩिल्–जिस रीति से; कॉणर्न्त–लायी गयीं;
मङ्कलम्–अष्टमंगल द्रव्य; मुतला उळ्ळ–आदि जो थे; यावुम्–उन सबको;
वैत्तु–रखकर; पॆण्मैक्कु–स्त्री-गुणों की; अरचियै–रानी को; तॊऴुतु–नमस्कार
करके; चूऴ–घेरकर खड़ी रहीं; नङ्कैयुम्–देवी ने भी; उवन्तु–खुश होकर;
इऩि–अब; वेऱु ओर्–और कोई; नवै इलै–त्रुटि नहीं है; ऎऩ्ऱाळ्–कहा;
पॊङ्किय–उज्ज्वल; विमाऩम्–विमान; ताऩुम्–स्वयं; मऩम् ऎऩ–मन की गति
में; ऎऴुन्तु पोऩ–उठ चला। ४०६५

वे नियमानुसार जो अष्टमंगल द्रव्य (चामर, दीप, पूर्णकुंभ, आईना
आदि) लायी थीं उन्हें यथोचित रीति से अर्पित करके स्त्रीरत्न सीताजी
के चारों ओर खड़ी हो गयीं। तब सीतादेवी ने कहा कि अब कोई त्रुटि
नहीं! ज्वलंत विमान उठा और मनोगति में चलने लगा। ४०६५

पोदा विशुम्बिऱ् ड्रिहल्पुट्पहम् बोद लोडुम्
शूदार् मुलैत्तोहैयै नोक्किमुऩ् ड्रोऩ्ऱु शूळल्
कोदा विरिमरुङ्गुदत्तमाडुयर् कुऩ्ऱु निऩ्ऱैप्
पेदाय् पिरिवुत् तुयर्पोळ्ऴै पिणित्त दॆऩ्ड्राऩ् 4066

पोता–उठकर; विचुम्पिल् तिकळ्–आकाश में दिखनेवाला; पुष्पकम्–पुष्पक; पोतलोटुम्–जब जाता रहा तब; चूतु आर् मुलै–गोटे के समान स्तनों वाली; तोकैयै नोक्कि–कलापीनिभ सीता को देख; पेताय्–अबोध; मुऩ् तोऩ्ऱु–सामने दिखनेवाला; चूळल्–स्थान; कोताविरि–गोदावरी है; अतऩ् माडु उयर्–उसके पास उन्नत; कुऩ्ऱु निऩ्ऱै–पर्वत ने ही तुम्हें; पिरिवु तुयर्–विरह-दुःख की; पोळै–पीड़ा; पिणित्ततु–में डाल दिया; ऎऩ्ड्राऩ्–कहा। ४०६६

जब पुष्पक आकाश में जा रहा था तब (जुए के) गोटों के समान स्तनों वाली सीता को देखकर श्रीराम ने बताया कि अबोध प्यारी! सामने जो दिखता है वह गोदावरी तट है! उसके पास ऊँचा जो पर्वत है उसी ने तुम्हें वियोग-दुःख में डाला। ४०६६

शिरत्तु वाशवण् डलम्बिडु तॆरिवैके ळिदुनीळ्
तरत्तु वाशवर् वेळ्वियर् तण्डह मदुताऩ्
वरत्तु वाशवऩ् वणङ्गुरु शित्तिर कूडम्
बरत्तु वाशव ऩुऱैविड मिदुवॆऩप् पहर्न्दाऩ् 4067

चिरत्तु वाचम्–केश की सुगंधि के कारण; वण्टु–भ्रमर (जिसके केश पर); अलम्पिटु–गुंजार करते रहें; तॆरिवै–ऐसी रमणी; केळ्–सुनो; इतु–यह; नीळ् तरत्तु–बहुत योग्य; वाचवर्–उपासक और; वेळ्वियर्–याजी (ऋषियों का); तण्टकम्–दंडक वन है; अतु–वह। वरत्तु–महिमावान; वाचवऩ्–वासव द्वारा; वणङ्कुऱु–पूजित; चित्तिर कूटम्–चित्रकूट है; इतु–यह; परत्तुवाचवऩ्–भरद्वाज का; उऱैविटम्–वासस्थान है; ऎऩ पकर्न्ताऩ्–ऐसा कहा। ४०६७

श्रीराम ने आगे कहा— सिर की गंध के कारण भ्रमर जिस पर गुंजार करते हैं ऐसे केशवाली हे रमणी! सुनो। यही दंडकवन है जहाँ सुयोग्य उपासक और याजी वास करते हैं। वही चित्रकूट है जो वासववंद्य है! यह भरद्वाजाश्रम है। ४०६७

मिऩ्ऩै नोक्कियव् वीरऩी दियम्बिडुम् वेलै
तऩ्ऩै नेरिला मुऩिवर ऩुणर्न्दुतऩ् ऩहत्तिऩ्
ऎऩ्ऩै याळुडै नायह ऩॆय्दिऩ ऩॆऩ्ऩात्
तुऩ्ऩु मादवर् शूऴ्तर वॆदिर्कॊळ्वाऩ् ड्रॊडर्न्दाऩ् 4068

मिऩ्ऩै–विद्युत् (-सी देवी) को; नोक्कि–देखकर; अ वीरऩ्–उन वीर के; ईतु–यह; इयम्पिटुम् वेलै–बताते समय; तऩ्ऩै नेर् इला–अनुपम; मुऩिवरऩ्–मुनिवर का; उणर्न्तु–जानकर; तऩ् अकत्तिऩ्–मेरे स्थान में; ऎऩ्ऩै–मेरे;

भाळ् उर्ट-स्वामी; नायकन्-प्रभु; अॅय्तिनन्-आये; ॲन्ऩा-कहकर; ॲतिर् कॉळ्वान्-अगुवानी के लिए; तुन्नुम्-निकट के; मातवर्-महान तपस्वियों के; चूऴ्तर-घेरे आते; तॉटर्न्ताऩ्-गये। ४०६८

जब श्रीराम विद्युच्छवि सीता से यह बता रहे थे, तब उधर अनुपम मुनिवर भरद्वाज यह जानकर कि मेरे स्वामी प्रभु श्रीराम आ गये, उनकी अगुवानी के लिए निकट के तपोधनों के साथ आये। ४०६८

आद पत्तिरङ् गुण्डिहै यॉरुकैयि ऩणेत्तुप्
पोद मुऱ्ऱिय तण्डॉरु कैयिऩिऱ् पॉलिय
माद वप्पय ऩुरुवुकॊण् डॅदिर्वरु मापोल्
नीदि वित्तह ऩडन्दमै नोक्किऩ ऩॆडियोऩ् 4069

आत पत्तिरम्-आतपत्र (छाता); कुण्टिकै-कमण्डल; ऑरु कैयिल्-एक हाथ में; अणेत्तु-लेकर; तण्टु-दण्ड; ऑरु कैयितिल्-एक हाथ में; पॉलिय-रहा, ऐसा; पोतम् मुऱ्ऱिय-आत्मज्ञानपक्व; नोति-नीतिमान; वित्तकन्-विद्वान्; मा तवम्-महान तपस्या का; पयन्-फल; उरुवु कॊण्टु-मूर्तिमान होकर; ॲतिर् वरुमा पोल्-सामना आता जैसे; नटन्तमै-आना; नॆटियोऩ्-त्रिविक्रम् देव ने; नोक्कितन्-देखा। ४०६९

एक हाथ में छत्र और कमंडल और दूसरे हाथ में ब्रह्मदण्ड के साथ शोभायमान, आत्मबोधपक्व, नीतिमान तथा विद्वान् मुनि को मूर्तिमान तपस्या के फल के समान अपने सामने आता हुआ श्रीराम ने देखा। ४०६९

ॲट्प हत्तिनै यळवैयुङ् गरुणैयो डिशैन्द
नट्प हत्तिला वरक्करै नरुक्किमा मेरु
विट्प हत्तुऱै कोळरि यॅऩप्पॊलि वीरऩ्
पुट्प हत्तिऩै वदिहॆऩ निऩैन्दऩऩ् पुवियिल् 4070

कणैयोटु-दया के साथ; इचैन्त-मिश्रित; नट्पु-मित्रता; तिनै अळवैयुम्-बहुत कम भी; अकत्तु-मन में; इला-(जिनका) न रहा; अरक्करै-उन राक्षसों को; नरुक्कि-दबोकर; ऍण् पक-छिन्नमन कर; मा मेरु-बड़े मेरु की; विट्पु अकत्तु-दरार में; उऱै-रहनेवाले; कोळरि-केसरी; ॲन-के समान; पॉलि-शोभित; वीरऩ्-वीर ने; पुट्पकत्तिनै-पुष्पक को; पुवियिल्-भूमि पर; वतिळ-रोकूँ; ॲन-ऐसा; निनैन्तनन्-सोचा। ४०७०

दया, मित्रता आदि जिनके मन में थोड़ी मात्रा में भी नहीं थी, उन राक्षसों के हंता श्रीराम ने, जो कि महान मेरु की दरार के वासी, केसरी के समान शोभते थे, मन में यह भाव किया कि पुष्पक भूमि पर उतरे। ४०७०

उऩ्ऩु मात्तिरत् तुलहिऩै यॅडुत्तुम्ब रोङ्गुम्
पॉऩ्ऩि ऩाडवन् दिळिन्दॆऩ पुष्पह [illegible]

ऎन्नै याळुडै नायहन् वल्लैयि नॆदिर्पोय्प्
पन्नु मामरैत् तबोदनन् ऱाण्मिशैप् पणिन्दान् 4071

उन्नु मात्तिरत्तु–मन में विचार लाते ही; पुट्पकम्–पुष्पक; ञलकिनै–संसार को; ऎंदुत्तु–ढोकर; उम्पर्–आकाश में; ओङ्कुम्–ऊपर चलनेवाली; पॊन्निण् नाटु–अमरावती; वन्तु इळिन्तॆन–आ उतरी जैसे; ताळ–नीचे आयी तो; ऎन्नै–मेरे; आळुटै नायकन्–प्रभु श्रीनाथ; वल्लैयिन्–तुरन्त; ऎतिर् पोय्–सामने जाकर; पन्नुम्–पारायणगत; मामऱै तपोतनन्–चतुर्वेदों के तपस्वी के; ताळ् मिचै–चरणों में; पणिन्तान्–विनत हुए। ४०७१

ज्योंही वे अपने मन में यह भाव लाये त्योंही संसार के लोगों को धारण करते हुए आकाश में चलनेवाली अमरावती नगरी नीचे उतर आयी हो, ऐसा वह पुष्पक नीचे आया। तब हमारे (कवि के और भक्त हमारे) नियंता स्वामी श्रीराम ने सत्वर जाकर सतत वेद के पाठ में लगे रहनेवाले तपोधन भरद्वाज के चरणों में गिरकर नमस्कार किया। ४०७१

अडियिन् वीळ्दलु मॆडत्तुनल् लाशियो डणैत्तु
मुडियै मोयिन्न निन्ऱुळि मुळरियङ् गण्णन्
शडिल नीडुह ळॊळितरत् तन्दुकण् णरुवि
नॆडिय कादलङ् गलशम दाट्टिन नॆडियोन् 4072

अटियिन् वीळ्तलुम्–चरणों पर गिरते ही; नॆटियोन्–महात्मा ने; ऎंदुत्तु–उठाकर; नल् आचियोटु–मंगल वचनों के साथ; अणैत्तु–गले लगाकर; मुटियै–सिर को; मोयित्तन्–सूंघा; निन्ऱुळि–और खड़े रहे तब; मुळरि–पद्म-सम; अम् कण्णन्–सुन्दर आँखों वाले की; चटिलम्–जटाजट पर की; नीळ् तुकळ्–घनी धूलि; ऒळि तर–दूर हो ऐसा; नॆटिय कातल्–गहरे स्नेह के; तन्तु–अपने; कण् अरुवि–आँखों के आंसू के; कलचमतु–कलश से; आट्टिनन्–नहलाया। ४०७२

ज्योंही श्रीराम गिरे त्योंही महान तपस्वी ने उन्हें उठाया और आशीर्वचन कहते हुए आलिंगन करके सिर को सूंघा (जो वात्सल्य-प्रदर्शन का एक उपाय है)। फिर अरुणपद्माक्ष श्रीराम की जटा की धूल को हटाते हुए अपने गहरे स्नेह से उमड़ते आये अश्रुजल के कलश से नहला दिया। ४०७२

करुहुम् वार्हुळर् चनहियो डिळवल्कै तॊळुदे
अरुहु शार्दर वरुन्दव नाशिहळ् वळङ्गि
उरुहु कादलि नॊळुहुकण् णीरिन नुवहै
परुहु मारमिळ् दीत्तुळङ् गळित्तनन् परिवाल् 4073

करुकुम्–काले; वार् कुळल्–लम्बे केशवाली; चनकियोटु–जानकी के साथ; इळवल्–कनिष्ठ लक्ष्मण के; कै तॊळुतु–हाथ जोड़कर; अरुकु चार् तर–पास आने

पर; अरु तवत्–श्रेष्ठ तपस्वी; आचिकळ्–आशीर्वाद; वळङ्कि–देकर; उरुकु कातलित्–पिघलते प्रेम से; ओळुकु–बहनेवाले; कण्णीरितन्–आँसू की आँखोंवाले; उवकै परुकुम्–चाव के साथ पेय; अरुमै–अपूर्व; अमिळ्तु ओत्तु–अमृत के समान; परिवाल्–स्नेह से; उळम्–मन में; कळित्ततन्–संतोषपूरित हुए। ४०७३

काले तथा लंबे केश वाली जानकी और कनिष्ठ लक्ष्मण उनके पास हाथ जोड़ते हुए गये। तो भरद्वाज ने आशीर्वाद दिये। उनका दिल श्रीराम आदि को देखते-देखते स्नेह से पिघल जाता था। आनंदाश्रु बहाते हुए वे मानो चाव के साथ पेय अमृत के पान-से स्नेह के कारण आनंदभाव-विभोर हो गये। ४०७३

वान रेशनुम् वीडणक् कुरिशिलु मऱ्ऱै
एनै वीररुन् दोळुन्दोरु माशिह ळियम्बि
ञान नादनैत् तिरुवोडु नन्मनै कोणर्न्दान्
आन मादवर् कुळात्तोडु मरुमऱै पुहन्ऱे 4074

वानरेचनुम्–वानरेश्वर और; वीटणन्–विभीषण; कुरिचिलुम्–राजा; मऱ्ऱै–और; एनै वीररुम्–अन्य वीर; तोळुन्तोरुम्–ज्यों-ज्यों झुकते; आचिकळ्–त्यों-त्यों आशीर्वाद; इयम्पि–देकर; आन मातवर्–अपने महान तपस्वी; कुळात्तोटुम्–दलों के साथ; अरु मऱै–श्रेष्ठ वेदों का; पुकन्ऱे–पारायण करते हुए; ञान नातनै–ज्ञाननाथ को; तिरुवोटु–श्री के साथ; नन्मनै–अपने श्रेष्ठ आश्रम में; कोणर्न्तान्–लाये। ४०७४

वानरेश, राजा विभीषण और अन्य वीरों ने भरद्वाज को नमस्कार किया। वे उन्हें आशीर्वाद देकर अपनी मंडली के साथ वेदपाठ करते हुए ज्ञानगम्य श्रीराम को श्री के साथ अपने सुंदर आश्रम में लिवा लाये। ४०७४

पन्न शालैयुट् पुहुन्दुनी डरुच्चनै पलवुम्
शोन्न नीदियिऱ् पुरिन्दपिन् शूरियन् मरुमान्
तन्नै नोक्किनन् पन्मुऱै कण्गणीर् तवुम्बप्
पिन्नीर् वाशह मुरैत्तनन् तवोदरिऱ् पॆरियोन् 4075

तपोतरिल् पॆरियोन्–तपोधनों में श्रेष्ठ; पन्नचालैयुळ् पुकुन्तु–पर्णशाला में प्रवेश करके; नीटु अरुच्चनै–श्रेष्ठ सत्कार; पलवुम्–अनेक तरह के; चोन्न नीतियिल्–यथोक्त रीति से; पुरिन्त पिन्–करने के बाद; चूरियन् मरुमान् तन्नै–सूर्यवंशी राम को; कण्कळ्–आँखों में; नीर् तवुम्प–जल छलकाते हुए; पन्मुऱै–अनेक बार; नोक्किनन्–देखा; पिन्–बाद; ओरु वाचकम्–एक वचन; उरैत्तनन्–कहा। ४०७५

तपोधनशिरोमणि ने पर्णशाला में आकर उचित सत्कार विविध प्रकार के और अच्छे, यथावत् रीति से किये। फिर सूर्यवंशी श्रीराम पर

उनके मुकुट को धुलाता हुआ अभिषेक-जल नीचे गिरेगा और उसका अंजाम भरत देख लेंगे। अब तो वे अपने आँसुओं का अंत नहीं देख पाये। ४०९५

अन्नैय ताय बरद तलङ्गलिऱ्, पुऩैयुन् दम्मुऩार् पादुहैप् पूशऩै
निऩैयुङ् गालै निऩैत्तऩ ऩामरो, मऩैयिन् वन्दव ऩॆय्द मदित्त नाळ् 4096

अन्नैयत् आय परतन्–ऐसे भरत ने; अलङ्कलिल्–पुष्पमाला से; पुऩैयुम्–अलंकृत; तम्मुऩार्–अपने बड़े भाई की; पातुकै पूचऩै–पादुका की पूजा का; निऩैयुम् काले–जब स्मरण किया तब; अवन्–उनके; मऩैयिन्–गृह में; वन्तु ऍय्त–आ जाने के लिए; मतित्त नाळ्–निश्चित दिन का; निऩैत्तऩन्–स्मरण किया। ४०९६

(एक दिन) ऐसे भरत ने पुष्पमाला से अलंकृत, अपने ज्येष्ठ भ्राता की पादुकाओं की पूजा करने का स्मरण किया तो उन्हें विचार आया कि यही दिन है जब श्रीराम ने लौट आने को निश्चित किया था। ४०९६

याण्डु वन्दिङ् गिरुक्कुमॆन् ऱॆण्णिऩान्, माण्ड शोदिड वाय्मैप् पुलवरै
ईण्डुक् कूय्त्तरु हॆन्ऩवन् ऱॆय्दिऩार्, आण्ड हैक्किन् ऱुऱुदियॆन् ऱारऱो 4097

याण्टु–कब; इङ्कु वन्तु–यहाँ पधारकर; इरुक्कुम्–रहेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्णिऩान्–सोचा; माण्ट–गौरवयुक्त; चोतिटम्–ज्योतिष में; वाय्मै–तथा भाषण में; पुलवरै–निपुणों को; ईण्टु–यहाँ; कूय् तरुक–बुला लाओ; ऍन्ऩ–ऐसा कहने पर; वन्तु–आ; ऍय्तिऩार्–पहुँचे; आण्टकैक्कु–पुरुषश्रेष्ठ के (आने के) लिए; इन्ऱु–आज; उऱुति–अंतिम दिन है; ऍन्ऱार्–कहा। ४०९७

उसे प्रश्न उठा कि कब आ रहे हैं इधर? उन्होंने भृत्यों से कहा, गौरवयुक्त तथा सत्यवादी हमारे ज्योतिषियों को बुला लाओ। ज्योतिषी आये और बोले कि पुरुषोत्तम के वनवास का अंतिम दिन और इधर आ पहुँचने का दिन आज ही है। ४०९७

ऍन्ऱ पोदत् तिरामन् वऩत्तिडैच्, चॆन्ऱ पोदत्त दव्वुरै शॆल्वत्तै
वॆन्ऱ पोदत्त वीरऩुम् वीऴ्न्दऩऩ्, कॊन्ऱ पोदत् तुयिर्प्पुक् कुऱैन्दुळान् 4098

ऍन्ऱ पोतत्तु–ऐसा कहने पर; चॆल्वत्तै–धन (की इच्छा) को; वॆन्ऱ पोतत्त–जीतनेवाले ज्ञानी; वीरऩुम्–वीर; इरामन्–श्रीराम के; वऩत्तिडै–वन में; चॆन्ऱ–जाने के; पोतत्तु–समय; अव्वुरै–(कहे) वे वचन; कॊन्ऱ पोतत्तु–जब मारने (सताने) लगे; उयिर्प्पु–साँसें; कुऱैन्तुळान्–कम हुई; वीऴ्न्तऩन्–गिर गये। ४०९८

जब उन्होंने वह कहा तो धन के आकर्षण को जो जीत चुके थे उनके मन में भी वनगमन के अवसर पर श्रीराम से उक्त वचन स्मरण हो आये। तो उनकी साँसें क्षीण होने लगीं और वे मूर्च्छित होकर गिर गये। ४०९८

मीट्टॆ ऴुन्दु विरिमुवॆऩ् ऱामरॆ, काट्टै वॆन्ऱॆऴ् कण्कलु ऴिप्पुमल्
ओट्ट वरुळ मयिरिस यशऩित्त, ऱाट्ट वुमुमव लत्तऴिन् ऱाऩरो 4099

मीट्टु ॲळुन्तु–फिर उठकर; विरिन्त–विशाल; चॅं तामरै काट्टै–अरुण-कमल-वन को; वॅन्ऱु–जीत; ॲळुकण्–जो उठी उन आँखों के; कलुळि–क्षुब्ध; पुनल्–जल को; ओट्ट–बहाते; उळ्ळम्–मन के; निन्ऱु–रहकर; उयिरितै–प्राणों को; ऊचल् आट्ट–हिलाते; अवलत्तु–व्यग्रता से; अळिन्तात्–निर्बल हुए। ४०९९

कुछ देर बाद वे होश में आकर उठे। विशाल अरुण-कमल को जीतकर मनोहारिता में बढ़ी आँखों में दुःखविलोडित आँसू की धारा बह निकली। मन हर तरफ़ से प्राणों को दोलायमान करने लगा। अपार दुःख में मग्न होकर मिटे-से रहे। ४०९९

ॲन्तक्कि यम्बिय नाळुमॅन् तिन्तलुम्
तन्नैप्प यन्दवळ् नेयमुन् दाङ्गियव्
वनत्तु वैहल्शॅय् यात्वन् दडुत्तदोर्
विनैक्कों डुम्बहै युण्डॅन विम्मितात् 4100

ॲन्तक्कु–मेरे पास; इयम्पिय–जो कहा; नाळुम्–वह दिन; ॲन्–मेरा; इन्तलुम्–दुःख; तन्नै–उनकी; पयन्तवन्–जननी का; नेयमुम्–स्नेह; ताङ्कि–सहकर; अव्वनत्तु–उस वन में; वैकल्–ठहरना; चॅय्यात्–न करेंगे; वन्तु अटुत्ततु–जो आया हो; ओर्–वह एक; कॉटु–भयंकर; विनै पकै–कर्म का शत्रु; उण्टु–होगा; ॲन–ऐसा; विम्मितात्–रोये। ४१००

(भरत ने विचार किया—) श्रीराम, मेरे पास कहा वचन, मेरा दुःख, उनकी जननी, उन पर वात्सल्य आदि भूलकर तथा उनसे जनित दुःख सहते हुए वन में ठहरनेवाले नहीं हैं। अवश्य कोई निरोधक घटना शत्रु के रूप में घटी है। यह सोचकर वे बहुत व्यग्र हुए। ४१००

मूव हैत्तिरु मूर्त्तिय रायिनुम्, पूव हत्तिल् विशुम्बिर् पुरत्तितिल्
एवर् किऱ्प रॅदिर्निऱ्क वॅन्नुडैच्, चेव हर्कॅन वॅयमुन् देऱितात् 4101

ॲन्नुटै–मेरे; चेवकर्क्कु–बड़े वीर का; ॲतिर् निऱ्क–सामना करने; मू वकै–तीन; तिरु मूर्त्तियर्–श्रेष्ठ मूर्ति भी; आयितुम्–क्यों न हों; पू अकत्तिल–भूतल में; विचुम्पिल्–आकाश में; पुरत्तितिल्–अन्य (पाताल) में; एवर् निऱ्पर्–कौन शक्त हैं; ॲन–सोचकर; ऐयमुम्–शंका से; तेऱितात्–मुक्त हुआ। ४१०१

"मेरे प्रभु वीर को सामना करने में, त्रिमूर्ति क्या, भूमि पर, आकाश में या पाताल में कौन समर्थ होगा ?" यह विश्वास मन में आया तब वे संदेहमुक्त हुए। ४१०१

ॲन्तै यित्नु मरशिय लिच्चॅयात्, अन्न ताहि नवमदु कॉळ्हवॅन्
इन्ति तान्कॉ लरुवदु नोक्कितात्, इतत्त हैतल तॅन्ऱिरुन् दानरो 4102

अॅन्नै-मेरे सबन्ध में; अन्नन्-वह (भरत); इन्नुम्-और भी; अरचियल्-शासन की; इच्चैयान्-इच्छा रखनेवाला है; आकिल्-तो; अवन्-वह; अतु कोळ्क-वही ले; अॅन्ऱु-ऐसा; उन्नितान् कोल्-सोच लिया क्या; अॅन्ऱु-ऐसा; उडवतु-जो करना; नोक्कितान्-सोचा; इन्नते-यही; नलन्-भला है; अॅन्ऱु इरुन्तान्-ऐसा निर्णय कर लिया। ४१०२

(उन्हें और एक संदेह हो गया—) मेरे संबंध में शायद श्रीराम ने यह सोच लिया कि भरत राजभोगेच्छा रखता है। तो वही राज्य ले ले! तो उन्होंने विचारा कि अब क्या करना है ? फिर यह दृढ़ संकल्प कर लिया कि हाँ वही भला है। ४१०२

अनैत्ति लङ्गॊन्ऱु मायिनु माहुक, वनत्ति रुक्कविव् वैयम् बुहुदुह
नितैत्ति रुन्दु तुयर मुळ्क्किलेन्, मनत्तु माशॆन् नुयिरॊडुम् वाङ्गुवेन् 4103

वनत्तु इरुक्क-वन में ही रहें; इव् वैयम्-इस देश में; पुकुतुक-आयें; अनैत्तिल्-उनमें; अङ्कु-वहाँ; ऑन्ऱुम्-कुछ भी; आयिनुम्-हो तो; आकुक-हो; नितैत्तिरुन्तु-सोचते-सोचते; तुयरम्-कष्ट में; उळ्क्किलेन्-पिसूँगा नहीं; अॅन् उयिरॊडुम्-अपनी जान के साथ; मनत्तु माचु-मन का कलंक; वाङ्कुवेन्-दूर करूँगा। ४१०३

वे जंगल में ही रहें; चाहे देश में आ जायँ। उन (बातों) में वहाँ कुछ भी हो जाय ! सोचते-सोचते दुःख में घुलना नहीं चाहता। अपने प्राणों के साथ अपने मन का कलंक भी निकाल लूँगा। ४१०३

अॅन्नप् पन्नि यिळवलै यॆन्नुळ्ळेन्, तुन्नच् चॊल्लुदि रॆन्ऱलुन् दूदर्पोय्
उन्नैक् कूयित नुम्मु नॆन्नामुनम्, मुन्नर्च् चॆन्ऱनन् मूवर्क्कुम् पिन्नुळान् 4104

अॅन्न-ऐसा; पन्नि-विविध प्रकार से कहकर; अॅन् उळ्ळे-मेरे पास; इळवलै-मेरे कनिष्ठ को; तुन्न चॊल्लुतिर्-निकट आने को कहो; अॅन्ऱलुम्-कहते ही; तूतर्-दूत; पोय्-गये; उम्मुन्-आपके ज्येष्ठ ने; उन्नै-आपको; कूयितन्-बुलाया; अॅन्ना-कहने के; मुनम्-पहले; मूवर्क्कुम्-तीनों के; पिन् उळान्-अनुज; मुन्नर्-आगे; चॆन्ऱनन्-गये। ४१०४

इस भाँति विविध प्रकार से बातें कहकर उन्होंने भृत्यों से कहा कि जाओ मेरे छोटे भाई से इधर मेरे समीप आने को कहो। दूतों ने शत्रुघ्न से जाकर कहा कि आपके ज्येष्ठ भ्राता ने आपको बुलाया है। कहते ही तीनों के छोटे भाई भरत के समक्ष गये। ४१०४

तॊळुदु निन्ऱनन् तम्बियैत् तोय्कणीर्, अॅळुदु मार्बन् तिरुहत् तळुविनान्
अळुदु वेण्डुव दुण्डॆय वव्वरम्, बळ्ळि लामैयि ताट्ररर् पाऱ्ऱॆन्ऱान् 4105

तॊळुत निन्ऱ-नमस्कार करके जो खड़ा था; तन्-उस अपने; तम्पियै-

र्पत्तु–उस वक्ष से; इरुक–कसकर; तळुवितान्–लगा लेकर; अळुतु–रोये;
–तात। वेण्टुवतु उण्टु–माँग एक है; अव् वरम्–वह वर; पळुतिलामैयित्–
र्थ न करके; तरल् पारुरु–देने योग्य है; ऎन्ऱान्–कहा। ४१०५

आकर जो नमस्कार करके खड़े रहे उन छोटे भाई को भरत ने अपने क्ष से कसकर लगा लिया, जिस पर कि आँखों का जल गिरता रहा। हा कि तात ! एक वर माँगूँगा। वह अक्षय रूप से दिला देने योग्य । ४१०५

न्न दाहुङ्गो लव्वर मॆन्ऱियेल्, शॊन्न नाळि लिरागवन् तोन्ऱिलन्
तन्नु तीयिडै यानिनि वीडुवॆन्, मन्न नादियॆन् शॊल्लै मऱादॆन्ऱान् 4106

अ वरम्–वह वर; ऎन्नतु–क्या; आकुम् कॊल्–होगा; ऎन्ऱियेल्–ऐसा
छो तो; चॊन्न–निर्णीत; नाळिल्–दिन में; इराकवन्–श्रीराघव; तोन्ऱिलन्–
ाये नहीं; इनि–अब; मिन्नु–चमक, जलती; ती इटै–आग में; यान्–मैं;
टुवॆन्–मरूँगा; ऎन् चॊल्लै–मेरे वचन को; मऱातु–अस्वीकार न कर; मन्नन्
ाति–राजा बन जाओ; ऎन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१०६

क्या, पूछते हो कि वह वर क्या है ? कहूँगा। श्रीराम ने जो दिन नश्चित बताया था उस दिन में नहीं आये। मैं अपने वचन के अनुसार वलंत आग में कूदकर प्राण त्यागूँगा। मेरी बात की अवज्ञा मत करो। म राजा बन जाओ। ४१०६

ट्ट तोन्ऱल् किळर्तडक् कैहळाल्, तोट्ट तन्शॆवि पॊत्तित् तुणुक्कुऱा
ट्ट नञ्जमुण् डान्नॆत् तुयङ्गिनान्, नाट्टमुम् मनमुन् नडुङ्गा निन्ऱान् 4107

केट्ट–श्रोता; तोन्ऱल्–राजकुमार; किळर् तट–शोभित विशाल; कैकळाल्–
थों से; तोट्ट–छेद-सहित; तन्–अपने; चॆवि–कान को; पॊत्ति–ढँककर;
ुक्कुऱा–ठिठककर; ऊट्टुम्–खिलाया गया; नञ्चम्–विष; उण्टान् ऎन्नु–निगल
ा जैसे; उयङ्किनान्–दुःखी हुआ; नाट्टमुम्–आँखें और; मनमुम्–मन;
ङ्का निन्ऱान्–काँप जायें ऐसा हो गये। ४१०७

यह सुनते ही राजकुमार ने अपने विशाल हाथों से कर्णरंध्रों को ढँक या। वे एक दम ठिठक गये। खिलाया गया विष पी चुके जैसे क्षुब्ध ए। उनकी आँखें और मन काँप गया। ४१०७

विळुन्दु मेक्कुयर् विम्मलन् वॆय्दुयिर्त्
तॆळुन्दु नानुतक् कॊन्न पिळैत्तुळेन्
अळुन्दु तुन्बत्ति नायॆन् ऱुरर्ऱिनान्
कॊळुन्दु विट्टु निमिर्हिन्ऱ कोबत्तान् 4108

विळुन्तु–गिरकर; मेक्कुयर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; विम्मलन्–सिसकियों
; वॆयत–गरम; ...

ज्वाला-सहित; निमिर्कित्रू-जलनेवाले; कोपत्तात्-क्रोध के होकर; अऴुन्तु-जिसमें मग्न हों ऐसे दुःख से; तुन्पत्तित्ताय्-दुःखी; नान् उनक्कु-मैंने आपका; ॲन्त-क्या; पिऴैत्तुळेन्-अपराध किया था; ॲन्ऱु-ऐसा; अरऱ्ऱिनान्-विलाप किया। ४१०८

वे गिर गये। सिसकियाँ अधिक होती गयीं। गरम साँसें छोड़ते हुए वे उठे। भभकनेवाली कोपाग्नि के साथ उन्होंने भरत से कहा कि हे दुःखमग्न भाई! मैंने तुम्हारा क्या अपराध किया था (कि तुमने मुझसे यह बात कही)? । ४१०८

❀ कानाळ निलमहळैक् कैविट्टुप् पोनानैक् कात्तुप् पिन्बु
पोनान् मॉरुतम्बि पोनवर्हळ् वरुमवदि पोयिऱ् ऱॆन्ना
आनाद वुयिर्विडवॆन् ऱमैवानु मॉरुतम् ब ययले नाणा
यानामिव् वरशाळ्वॆ नॆन्नेयिव् वरशाट्चि यिनिदे यम्मा 4109

निलमकळै-भूदेवी को; कै विट्टु-त्यागकर; कान् आळ-वनराज को; पोनानै-जो गये; कात्तु-उनकी रक्षा के लिए; पिन्पु-अनुगमन कर; पोनानुम्-जो गया; ऑरु-वह एक; तम्पि-छोटा भाई है; पोनवर्कळ्-जो गये; वरुम् अवति-उनके आने की अवधि; पोयिऱ्ऱु-बीत गयी; ॲन्ना-कहकर; आनात-अशांत; उयिर्विट-प्राण त्यागूँ; ॲन्ऱु-ऐसा; अमैवानुम्-जो तैयार हुए; ऑरु तम्पि-वे भी एक लघु सहोदर हैं; अयले यान्-अन्य मैं; नाणातु-बेशरम; इव् अरचु-यह राज्य; आळ्वॆन् आम्-शासन लूंगा, हाँ; ॲन्ने-क्या ही खूब; इव् अरचाट्चि-यह राज्य-शासन; इनितु-(कितना) मधुर है। ४१०९

भू का शासन छोड़कर जंगल में जानेवाले की रक्षा करते हुए जो गया वह भी एक छोटा सहोदर है! 'जो गये उनके लौट आने की अवधि बीत चुकी' कहकर अशांत होकर प्राण त्यागने को तैयार हो गया, वह भी एक छोटा सहोदर है! पर मैं भी एक छोटा सहोदर हूँ जो निर्लज्ज होकर यह राज करूँगा! यही न बात! वाह! यह राज्यशासन भी अवश्य सुखद है! । ४१०९

मन्निऱ्पिन् वळनहरम् बुक्किरुन्दु वाऴ्न्दाने परद नॆन्नुम्
शॊन्निऱ्कु मॆन्ऱञ्जिप् पुऱत्तिरुन्दु मरुन्दवमे तॊडङ्गि नाये
ॲन्निऱ्पिन् निवनुळना मॆन्ऱॆयुन् नडिमैयुनक् किरुन्द वॆन्
मुन्निऱ्पिन् निरुन्दवुयु मॊरुहुडॆक्की ऴिरुप्पदुवु मॊक्कु मॆन्ऱान् 4110

मन्निन् पिन्-राजाराम के पीछे; परतन्-भरत; वळम् नकरम्-समृद्ध नगर में; पुक्कु इरुन्तु-प्रवेश करके; वाऴ्न्ताने-जीवित रहे; ॲन्नुम्-ऐसा; चॊल् निऱ्कुम्-अपमान स्थिर रहेगा; ॲन्ऱु अञ्चि-ऐसा डरकर; पुऱत्तु इरुन्तु-बाहर रहकर; अरु तवमे-कठिन तपस्या; तॊटङ्किनाये-आपने आरम्भ की; ॲन्निन् पिन्-मेरे (मरने के) बाद; इवन्-यह; उळन् आम्-है; ॲन्ऱे-ऐसा सोचकर

उन्–तुम्हारे; अटिमै–दास के संबंध में; उतक्कु–तुम्हारा विचार; त्ततेतुम्–रहा तो भी; उत्तिन् पिन्–तुम्हारे बाद; इरुन्ततुवुम्–जीवित रहना ; ओरु कुटै कोळ्–एक श्वेत छत्र के नीचे; इरुप्पतुवुम्–रहना; ओक्कुम्–ान रहेगा; अन्ड्रान्–कहा शत्रुघ्न ने। ४११०

'राजाराम के वनगमन के बाद भी भरत समृद्ध नगर में आकर जीवित ा न!' यह अपमान की बात स्थिर रहेगी —इस संभावना से डरकर तुमने हर के नंदिग्राम में रहकर तपस्या का जीवन बिताना आरम्भ कर दिया! ायद आपने सोच लिया कि मेरे बाद यह शत्रुघ्न रहेगा। मुझ दास के बंध में तुम्हारा ऐसा विचार भी रहा हो! तो भी तुम्हारे मरने के बाद रे जीवित रहने में और श्वेतछत्र के नीचे राजा बनकर रहने में क्या अंतर ? दोनों बराबर हैं। —कहा शत्रुघ्न ने। ४११०

मुत्तुरुक्कोण् डमैन्दतैय मुळ्वॅळ्ळिक् कॉळ्निड्तत्तु मुळरिच् चॅङ्गण्
शत्तुरुक्क नः(ह्)दुरैप्प ववनिङ्गुत् ताळ्क्किन्ड्र तन्मै यानिङ्
गॊत्तिरुक्क लालन्ड्रे युळन्दाड्पि निव्वुलहै युलैय वॉट्टान्
अत्तिरुक्कुङ् गॅडुमुडने पुहुन्दाळु मरशॊरपो यमैक्क वॆन्ड्रान् 4111

मुत्तु उरु कॊण्टु–मोती का रूप लेकर; अमैन्ततैय–बना जैसा; मुळु वॅळ्ळि–री चांदी के; कॊळु निड्तत्तु–समृद्ध वर्ण और; मुळरि चॅङ्कण्–कमल-सी लाल ांखों के; चत्तुरुक्कन्–शत्रुघ्न के; अ.ः.तु उरैप्प–वह कहने पर; अवन्–वे; क्कु–यहाँ; ताळ्क्किन्ड्र–विलम्ब करते; तन्मै–कारण; यान्–मेरे; इक्कु–हाँ; ओत्तु इरुक्कलाल्–सम्मत रहने से; अन्ड्रे–न; उलन्ताल्–मर जाऊँ तो; न्–बाद; इव् उलकै–इस पृथ्वी को; उलैय ऑट्टान्–संकट उठाने न देंगे; तिरुक्कुम्–वह विषमता; कॅटुम्–दूर होगी; उटने पुकुन्तु–तुरन्त आकर; रचु–राज्य; आळुम्–शासन करेंगे; पोय्–जाकर; ऍरि–आग; अमैक्क–ाओ; अन्ड्रान्–कहा। ४१११

मुक्ता-रूप तथा खरी चाँदी के रंगवाले कमलाक्ष शत्रुघ्न के ऐसा हने पर भरत ने कहा कि श्रीराम के विलम्ब करने का कारण मेरा इधर म्मत होकर रहना है न? मैं मर जाऊँ तो वे संसार को संकट सहने नहीं गे। यह विषमता दूर हो जायगी। तुरंत आकर राज्य-शासन सँभाल गे। इसलिए जाओ और अग्नि जला दो। ४१११

अप्पॊळुदि नव्वुरैशॆन् ड्रयोत्तियिनि निशैत्तलुमे यरियै यीन्ड्र
ऒप्पॊळुद वॊण्णाद कड्पुडैयाळ् वयिड्पुडैत् तलमन् देङ्गि
इप्पॊळुदे युलहिड्क्कुम् याक्कैयिनै मुडित्तॊळिन्दाम् महने यॆन्ना
वॆप्पॊळुदि नालन्न मॆलिवुडैयाळ् कडिदोडि विलक्क वन्दाळ् 4 12

अ पॊळुतिल्–उस समय; अ उरै–वह शब्द; अयोत्तियितिल्–अयोध्या में; न्ड्र–जाकर; इचैत्तलुमे–सुनाई दिया तो; अरियै ईन्ड्र–हरि को जननी; ...

मॅळ्ुत–उपमा कहने में; ऑण्णात–असमर्थ; कऱ्पुटैयाळ्–पतिव्रता; वयिऱु–पेट; पुडैत्तु–पीटती हुई; अलमन्तु–भ्रमित होकर; एङ्कि–तरसकर; मकने–पुत्र; याक्कैयिनै–शरीर का; मुटित्तु–अंत कर; ऑळ्िन्ताल्–मरोगे तो; इप्पॊळ्ुते–अभी; उलकु–धरती; इऱक्कुम्–मिट जायगी; ॲन्ऩा–कहती हुई; वॅप्पु–ताप से; मॅळ्ुतिताम्–बनी; अन्न–जैसे; मॅलिवु उटैयाळ्–कृश बनीं; विलक्क–रोकने के लिए; कटितु–तेज़ी से; ओटि वन्ताळ्–दौड़कर आयीं। ४११२

तब वह समाचार अयोध्या पहुँच गया। उसके वहाँ पहुँचते ही हरि (श्रीराम) की जननी अनुपम पतिव्रता देवी कौसल्या भ्रांतमन होकर पेट पीटती हुई निकलीं। 'मेरे पुत्र! तुम शरीर को आग में डालकर प्राण त्याग दोगे तो सारे लोकवासी भी मर जायँगे।" —ऐसा विलापती हुई, अन्तर्ताप से गल गयी हो ऐसा कृश होती उसे रोकने के निमित्त तेज़ी से दौड़कर आयीं। ४११२

मन्दिरियर् तन्दिरियर् वळनहरत् तवर्मऱैयोर् मऱ्ऱुम् जुऱ्ऱच्
चुन्दरिय रॅनैपपलरुङ् गैतलैयिऱ् पॅय्दिरङ्गित तॊडर्न्दु तुऱ्ऱ
इन्दिरने मुदलाय विमैयवरु मुनिवररु मिऱैञ्जि येत्त
अन्दरमङ् गैयर्वणङ्ग वळ्दरऱ्ऱिप् परदनैवन् दडैन्दा ळन्ऱे 4113

मन्तिरियर्–मंत्री और; तन्तिरियर्–सेनापति और; चुऱ्ऱम्–बन्धुजन; चुन्तरियर्–सुन्दरी स्त्रियाँ; मऱैयोर्–विप्र; वळम्–समृद्ध; नकरत्तवर्–नगर के वासी; मऱ्ऱुम्–और; एनै–अन्य; पलरुम्–अनेक; कै–हाथ; तलैयिल्–सिर पर; पॅय्तु–रखकर; इरङ्कि–रोते हुए; तॊटर्न्तु–पीछे लगे; तुऱ्ऱ–आते; इन्तिरने–इन्द्र ही; मुतलाय–आदि; इमैयवरुम्–देवों और; मुनिवरुम्–मुनियों के; इऱैञ्चि–विनय करके; एत्त–स्तुति करते; अन्तरम्–आकाशवासिनी; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; वणङ्क–नमन करते; अळ्ुतु–रोती; अरऱ्ऱि–कलपती; वन्तु–आकर; परतनै–भरत के पास; अटैन्ताळ्–पहुँचीं। ४११३

तब मंत्री, सेनापति, रिश्ते की सुन्दरी स्त्रियाँ, ब्राह्मण, समृद्ध अयोध्या नगर के वासी-सभी सिर पर हाथ रखे, रोते हुए उनको घेरकर आये। इंद्रादि देवों ने और ऋषियों ने नमस्कार कर स्तुति की। आकाशलोक-वासिनी अप्सराओं ने उनको नमस्कार किया। इस स्थिति में कौसल्या रोती-कलपती भरत के पास आ पहुँचीं। ४११३

ॲरियमैत्त मयानत्ते यॅय्दुहित्ऱ कादलनै यिडैये वन्दु
विरियमैत्त नॆडुवेणि पुऱत्तशैन्दु वीळ्न्दोशिय मेनि तळ्ळच्
चॊरिवमैप्प दरिदाय मळ्ैक्कण्णाळ् तॊडरुवलुन् दुणुक्क मॅय्दाय्
परिवमैत्त तिरुमनत्ता नडितॊळ्ुदा तवळ्पुहुन्दु पऱ्ऱिक् कॊण्डाळ् 4114

चॊरिवु–बहना; अमैप्पतु–रोकना; अरितु आय–कठिन जो था; मळ्ै कण्णाळ्–वारिश-सी आँखवाली; विरि अमैत्त–बिखरे हुए; नॆटु वेणि–लम्बे केश;

पुऱत्तु–पार्श्व में; अचैन्तु–हिलते; वीऴ्न्तु–गिरते; ऑचिय–लचकते; मेति–शरीर; तळ्ळ–लड़खड़ाता; ऍरि अमैत्त–आग-रचित; मयानत्तै–श्मशान में; ऍय्तुकित्ऱ–जाते; कातलनै–पुत्र को; इटैये–मध्य में; वन्तु–आकर; तॉटरलुम्–साथ लगीं तो; परिवु–प्रेम से; अमैत्त–भरे; तिरुमनत्तुतान्–मनवाले ने; तुणुक्कम्–ठिठक; ऍय्ता–पाकर; अटि तॊऴुतान्–चरणों में नमस्कार किया; अवळ्–उन्होंने; पुकुन्तु–पास आकर; पऱ्ऱि–पकड़; कॊण्टाळ्–लिया। ४११४

उनकी आँखों से अबाध गति से आँसू बह रहा था। लंबे केश खुले, बिखरे और पीछे तथा पार्श्व में लटके हिल रहे थे। शरीर लड़खड़ा रहा था। वे भरत के पास आ लग गयीं, जो कि श्मशान को जा रहे थे जहाँ आग का प्रबंध हुआ था। श्रीराम-प्रेम-परिपूर्ण-मन भरत उनको देखते ही ठिठक गये। उन्होंने माता के चरणों में नमस्कार किया तो देवी ने झट जाकर उन्हें पकड़ लिया। ४११४

मन्नि ळैत्तवु मैन्द निळैत्तदुम्, मुन्नि ळैत्त विदियिन् मुयऱ्चियाल्
पिन्नि ळैत्तदु मॆण्णिलप् पॆऱ्ऱियाल्, ऍन्नि ळैत्तनै यॆन्मह नेयॆन्ऱाळ् 4115

मन् इऴैत्ततुम्–राजा (दशरथ) का कृत्य; मैन्तन्–पुत्र का; इऴैत्ततुम्–कृत्य; मुन् इऴैत्त–पहले कृत; वितियिन्–मेरे कर्मों के; मुयऱ्चियाल्–विधान से हुए; ऍण्णिल्–सोचा जाय तो; पिन् इऴैत्ततुम्–बाद का कृत्य; अ पॆऱ्ऱियाल्–उसी से; ऍन् मकनॆ–मेरे पुत्र; ऍन्–क्या ही; इऴैत्तनै–कर दिया; ऍन्ऱाळ्–पूछा। ४११५

देवी ने कहा कि राजा दशरथ ने जो किया, फिर (मेरे) पुत्र ने जो किया, वह सब मेरे पूर्वकृत दुष्कर्मों का विधान था। विचारा जाय तो पीछे जो हुआ, वह भी उसी का फल है। अब तुम यह क्या काम करने चले ? । ४११५

नीयि दॆण्णिनै येल्नॆडु नाडॆरि, पायु मन्नरुञ् जेनैयुम् बाय्वराल्
ताय रॆम्मळ वत्ऱु तनियऱम्, तीयिन् वीऴु मुलहुन् दिरियुमाल् 4116

नी–तुमने; इतु–यह; ऍण्णितैयेल्–विचार किया तो; नॆटु नाटु–बड़ा देश; ऍरि पायुम्–आग में घुसेगा; मन्नरुम्–राजा और; चेनैयुम्–सेना के लोग; पायवर्–घुसेंगे; तायर्–माता; ऍम् अळवु–हमों तक; अत्ऱु–नहीं रुकेगा; तनि अऱम्–विशिष्ट धर्म भी; तीयिन्–आग में; वीऴुम्–गिर जायगा; उलकुम् तिरियुम्–संसार भी अस्त-व्यस्त होगा। ४११६

अगर तुमने ऐसा करना ठान लिया तो समझ लो यह दीर्घ कीर्तिवाला बड़ा देश आग में घुस जायगा। हमारे मित्र राजा लोग और सेना के वीर सब आग में गिर मर जायँगे। केवल हम माताओं तक बात नहीं रुकेगी। स्वयं अनुपम धर्म भी अग्निप्रवेश कर लेगा। सारा लोक अस्त-व्यस्त हो जायगा। ४११६

तरुम नीदियिऩ् उऱ्पय तावदुऩ्, करुम मेयत्तिरिक् कण्डिलङ् गण्गळाल्
अरुमै योऩ्ऱु मुणर्न्दिलै ययनिऩ्, पॆरुमै यूऴि तिरियिऩुम् बेरुमो 4117

ऐय–तात; उऩ् करुमम्–तुम्हारा कार्य; तरुमम् नीतियिऩ् तन्–धर्म तथा नीति का; पयन्–सार; आवतु–रहता है; अन्ऱि–उसके सिवा; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; कण्टिलम्–हमने नहीं देखा; अरुमै–अपनी उत्कृष्टता; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; उणर्न्तिलै–तुमने नहीं पहचानी; निऩ्–तुम्हारी; पॆरुमै–महत्ता; ऊऴि–युग; तिरियिऩुम्–परिवर्तन में भी; पेरुमो–बदल सकेगी क्या। ४११७

तात! तुम्हारा कार्य धर्म-नीति-सम्मत ही रहा करता है। दूसरे ढंग का होता हमने नहीं देखा। पर अब तुम अपनी महत्ता को पहचानते नहीं दिखते। तुम्हारी महानता युगपरिवर्तन की अवस्था में भी बदल सकेगी क्या? । ४११७

ऍण्णिल् कोडि यिरामर्हळ् ऍन्ऩिनुम्, अण्णल् निऩ्ऩरु ळुक्करु हावरो
पुण्णि यम्मॆऩ्ऩु निऩ्ऩुयिर् पोयिनाल्, मण्णुम् वाऩु मुयिर्हळुम् वाऴ्मो 4118

अण्णल्–महिमावान; ऍण्णिल्–सोचा जाय तो (या असंख्य); कोटि–करोड़; इरामर्कळ्–राम भी; ऍऩ्ऩिऩुम्–एक साथ मिलें; निऩ्–तुम्हारी; अरुळुक्कु–कृपा के; अरुकु–पास; आवरो–आनेवाले बनेंगे क्या; पुण्णियम्–पुण्य ही; ऍऩ्ऩुम्–सम; निऩ् उयिर्–तुम्हारी जान; पोयिनाल्–चली गयी तो; मण्णुम्–भूमि और; वाऩुम्–आकाश; उयिर्कळुम्–और जीव; वाऴ्मो–जीते रहेंगे क्या। ४११८

महिमावान! सोचा जाय तो (असंख्य) करोड़ राम भी एक साथ मिलें तो तुम्हारी कृपा के पास भी नहीं आ सकेंगे। साक्षत् पुण्य-सम रहनेवाले तुम्हारे प्राण चले जायँ तो भूमि तथा आकाश और जीव जीवित रहेंगे क्या? । ४११८

इऩ्ऱु वन्दिल नेयॆऩि नाळैये, ऒऩ्ऱुम् वनुदुनै युऩ्ऩि युरैत्तशॊल्
पिऩ्ऱु मॆऩ्ऱुण रेऱ्पिऴैत् तानॆनिल्, पॊऩ्ऱुन् दऩ्मै पुहुन्दवु पोयॆऩ्ऱाळ् 4119

इऩ्ऱु–आज; वन्तिलते–नहीं आया; ऍऩिल्–तो; नाळैये–कल ही; उनै वनुतु–तुम्हारे पास आ; ऒऩ्ऱुम्–लगेगा; उऩ्ऩि–सोचकर; उरैत्त–जो कहा; चॊल्–वह कथन; पिऩ्ऱुम्–तोड़ देगा; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उणरेल्–मत समझो; पोय् पिऴैत्तान्–उल्लंघन करे; ऍऩिल्–तो; पॊऩ्ऱुम्–मृत्यु का; तऩ्मै–हाल; पुकुन्ततु–आ गया (ऐसी स्थिति होगी); ऍऩ्ऱाळ्–कहा देवी ने। ४११९

राम आज नहीं आया तो कल ही आ जायगा तुम्हारे पास। उसने खूब विचारकर जो कहा है उस वचन से वह मुकरेगा, यह मत सोचो। वचनभंग करेगा तो मृत्यु की संभावना उसमें निहित है। कौसल्या ने यह कहा। ४११९

ऑरुवन् माण्डन ऍन्ऱुकॉण् डूऴिवाऴ्, पॅरुनि लत्तुप् पॅरलरु मिन्नुयिरक्
करुवु माण्डरक् काणुदि योकलैत्, तरुम नीयल दिल्लॅनुन् दन्मैयाय् 4120

कर्म तरुमम्–शास्त्रोक्त धर्म; नी अलतु इल्–तुम्हारे सिवा कोई नहीं; ऍनुम् तन्मैयाय्–ऐसी महिमा वाले; ऑरुवन्–एक; माण्टनन्–मर गया होगा; ऍन्ऱु कॉण्टु–ऐसा समझकर; ऊऴि वाऴ्–युगांत तक जीने योग्य; पॅरु निलत्तु–बड़ी भूमि में; पॅरल् अरु–दुर्लभ; इन् उयिर्–प्यारे प्राणों को; करुवुम् माण्टु–गर्भस्थित जीवों तक; अर–मरें यह; काणुतियो–देखोगे क्या। ४१२०

शास्त्रोक्त धर्म ही तुम हो ! तुम्हारे सिवा कुछ नहीं। इस भाँति रहनेवाले हे भरत ! यह अनुमान करके कि राम मर गया होगा क्या तुम युगांत तक जी सकनेवाले दुर्लभ प्राणों को, गर्भस्थ जीवों तक को मरते देखना चाहते हो ? । ४१२०

इऱक्कै युञ्जिल रेहलु मोहत्ताल्, पिऱक्कै युङ्गड ऍन्ऱुपिन् पाशत्तै
मऱक्कै युम्मह ऩेवलि यावदु, तुऱक्कै तानुमॅन् ऱाऴ्मतन् तूय्मैयाऴ् 4121

मकने–पुत्र; चिलर्–कुछ का; इऱक्कैयुम्–मरना; एकलुम्–छोड़ जाना; मोकत्ताल्–मोह से; पिऱक्कैयुम्–जन्म लेना; कटन् ऍन्ऱु–कर्तव्य समझकर; पिन्–फिर; पाचत्तै–स्नेहपाश को; मऱक्कैयुम्–भूलना; तुऱक्कै तानुम्–संग तोड़ना; वलियावतु–भला होगा; ऍन्ऱाऴ्–कहा; मतम्–मन को; तूय्मैयाऴ्–पवित्र देवी ने। ४१२१

हे पुत्र ! कुछ का मरना, कुछ का चला जाना, कुछ का मोह के फलस्वरूप जन्म लेना आदि लोक सामान्य कार्य हैं —ऐसा मानकर अपना स्नेह-बंधन भूल जाना ही धीरता है। पवित्र हृदय वाली देवी कौशल्या ने कहा। ४१२१

मैन्द ऩॅन्ऩै मऱुत्तुरैत् ताॅनॅतल्, ऍन्दै मॅय्म्मैयु मिक्कुलच् चॅय्हैयुम्
नैन्दु पोह वुयिर्निलै नच्चिलेन्, मुन्दु शॅय्द शबद मुडिप्पॅन्ऩाल् 4122

ऍन्तै–मेरे तात राम की; मॅय्म्मैयुम्–सत्यवादिता और; इ कुलम्–इस कुल के; चॅय्कैयुम्–कृत्यों को; नैन्तु पोक–क्षीण हो मिटने देकर; उयिर् निलै–प्राणों की स्थिति; नच्चिलेन्–नहीं चाहती; मुन्तु–पहले; चॅय्त–कृत; चपतम्–शपथ; मुटिप्पॅन्–पूरा करूंगा; मैन्तन्–पुत्र ने; ऍन्ऩै–मेरी बात; मऱुत्तुरैत्तान्–अस्वीकार की; ऍनल्–ऐसा मत कहिए। ४१२२

भरत ने माता से कहा— मैं अपने पितृ-सम श्रीराम के सत्य को और इस वंश के कार्यों को नाश होने देते हुए जीना नहीं चाहता। मैंने जो शपथ खायी थी, पहले वह अभी पूरा कर दूंगा। आप यह न मानें कि मेरे पुत्र ने मेरी बात को अस्वीकार दिया। ४१२२

यान् मॅय्यिनुक् किन्नुयि रीन्दुपोय्
वान् ऴॅय्दिय मन्नवन् मैन्दनाल्
कान् ऴॅय्दिय काहुत्तर् केकडन्
एनै योर्क्कि दिळुक्किल् वळक्कन्रो 4123

यानुम्–मैं भी; मॅय्यिनुक्कु–सत्य के लिए; इन् उयिर्–प्यारी जान; ईन्तु–देकर; पोय्–जाकर; वानुळ्–मोक्ष; ॲय्तिय–जो पहुँचे हैं; मन्नवन्–उस चक्रवर्ती का; मैन्तन् आल्–पुत्र हूँ न; कान् उळ्–वन में; ॲय्तिय–जो गये उन; काकुत्तर्के–काकुत्स्थ के लिए; कटन्–कर्तव्य; एनैयोर्क्कुम्–अन्यों के लिए; इतु–यह; इळुक्कु इल्–अकलंक; वळक्कु अन्रो–व्यवहार नहीं है क्या। ४१२३

मैं भी तो उस राजा का पुत्र हूँ, जो कि सत्य की वेदी पर प्राणों का उत्सर्ग कर स्वर्ग पहुँचा! वन में गये काकुत्स्थ श्रीराम का यह कार्य हो सकता है! पर अन्यों के लिए (शपथ का न रखना) कलंककारी है न? । ४१२३

तायॅशोर् केट्टलुन् दन्दैशोर् केट्टलुम्
पाशत् तन्बिन्नैप् पऱ्ऱऱ् नोक्कलुम्
ईशऱ् केकडन् यानः(ह्) दिळैक्किलॅन्
माशऱ् ऱेतिदु काट्टुवॅन् माण्डॅन्ऱान् 4124

ताय् चॊल्–मातृ-वचन का; केट्टलुम्–सुनना (पालन) और; तन्तै चॊल्–पिता का कहना; केट्टलुम्–सुनना; पाचत्तु अन्पिनै–बन्धन के प्रेम को; पऱ्ऱु अऱ्–संग काटकर; नोक्कलुम्–दूर करना; ईचर्के–ईश्वर का ही; कटन्–कार्य है; यान्–मैं; अ.’तु–वह; इळैक्किलॅन्–नहीं करूँगा; माण्टु–मरकर; माचऱ्ऱेत्–कलंकहीन होकर; इतु–यह; काट्टुवॅन्–साबित करूँगा; ॲन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१२४

राम ईश्वर हैं। पितृवचन-पालन, मातृवचन-पालन और प्रेम-भंजन आदि उन्हें कर्तव्य लग सकता है! पर मैं वह नहीं करूँगा। मरूँगा और अपना कलंक धुलवा लूँगा। ऐसा करके यह दिखा दूँगा। ४१२४

ॲन्ऱु तीयिनै यॅय्दि यिरैत्तॅळुन्, दॊन्ऱु पूश लिडुमुल होरुडन्
निन्ऱु पूशनै शॅय्हिन्ऱ नेशऱ्कुक्, कुन्ऱु पोल्नॆडु मारुदि कूडिनान् 4125

ॲन्ऱु–यह कहकर; तीयिनै ॲय्ति–आग के पास जाकर; इरैत्तु–शोर करते; ॲळुन्तु–उठते; ऑन्ऱु–और मिलते; पूचल् इटुम्–हाहाकार मचाते; उलकोरुटन्–लोकवासियों के साथ; निन्ऱु–खड़े होकर; पूचनै–पूजा; चॅय्किन्ऱ–करनेवाले; नेचर्कु–(श्रीराम के) भक्त से; कुन्ऱु पोल्–पर्वत-सम; नॆटु मारुति–लंबोतरा मारुति; कूटिनान्–अकस्मात आ मिला। ४१२५

इस भाँति कहकर भरत आग के बहुत निकट गये। सारे लोकवासी भी शोरगुल मचाते हुए वहीं खड़े थे। उनके साथ रहकर भरत अग्नि की पूजा कर ही रहे थे कि उन श्रीरामभक्त से पर्वताकार दीर्घकाय हनुमान अकस्मात् प्रगट होकर मिल गया। ४१२५

ऐयन् वन्दनन् आरियन् वन्दनन्, मॆय्यिन् मॆय्यनन्न निन्नुयिर् वीट्टिनाल्
उय्युमे यवन् ॲन्ऱुरैत् तुट्पुहाक्, कैयि नालॆरि यैक्करि याक्किनान् 4126

ऐयन्—प्रभु श्रीराम; वन्तनन्—आ गये; आरियन् वन्तनन्—आर्य आ गये; मॆय्यिन्—सत्य के; मॆय् अन्न—सत्य-सम; निन् उयिर्—अपने प्राण; वीट्टिनाल्—त्याग देंगे तो; अवन्—वे; उय्युमे—जीते रहेंगे क्या; ॲन्ऱु—ऐसा; उरैत्तु—कहकर; उळ् पुका—अंदर घुसकर; कैयिनाल्—हाथ से; ॲरियै—आग को; करि—राख; आक्किनान्—बना दी। ४१२६

हनुमान ने भीड़ में घुसकर ज़ोर से कहा कि प्रभु आ गये; आर्य आ गये। सत्य के सत्य रूप आप अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दें तो क्या वे (श्रीराम) जीवित रहेंगे? यह कहते हुए आग को अपने हाथों से बुझाकर राख बना दी। ४१२६

आक्कि मऱ्ऱव नाय्मलर्त् ताळ्हळैत्
ताक्कत् तन्तलै ताऴ्न्तु वणङ्गिक्कै
वाक्किर् कूडप् पुदैत्तॊरु माऱ्ऱनी
तूक्किक् कॊळ्ळत् तहुमॆनच् चॊल्लिनान् 4127

आक्कि—बनाकर; अवन्—उन (भरत) के; आय् मलर् ताळ्कळै—सुन्दर कमल-चरणों से; ताक्क—लगाकर; तन् तलै—अपने सिर को; ताऴ्न्तु—नवाया; वणङ्कि—झुककर; वाक्किल्—मुख पर; कै कूट—हाथ लगाकर; पुतैत्तु—ढंककर; ऒरु माऱ्ऱम्—एक बात; नी—आप; तूक्कि कॊळ्ळत् तकुम्—मान लेने अर्ह हैं; ॲन—ऐसा; चॊल्लिनान्—कहा। ४१२७

राख बनाकर हनुमान ने भरत के सुंदर कमल-चरणों पर सिर लगे, ऐसा सिर नवाया। मुख पर हाथ रखकर विनम्रता से बोला। एक बात कह रहा हूँ जिसे आपको मानना पड़ेगा। ४१२७

इन्न नाऴिहै यॆण्णैन् दुळवैय, उन्नै मुन्नम्वन् दॆय्द वुरैत्तनाळ्
इन्न दिल्लै यॆनित्तडि नायिनेन्, मुन्नम् वीऴ्न्दिव् वॆरियिन् मुडिवॆनाल् 4128

ऐय—प्रभु; उन्नै—आपके पास; वन्तु—आ; ॲय्त मुन्नम्—पहुँचें, इसके पहले; उरैत्त नाळ्—कथित दिन में; इन्नम्—अब भी; ॲण् ऐन्तु नाऴिकै—चालीस घड़ियाँ; उळ—बाकी हैं; इन्नतु—यह; इल्लै—नहीं; ॲनिन्—तो; अटि—दास; नायितेन्—कुत्ता-सम मैं; मुन्नम्—पहले; इव्—इस; ॲरियिन्—अग्नि में; वीऴ्न्तु—कूदकर; मुडिवॆन्—मर जाऊँगा। ४१२८

प्रभु ! जिस दिन श्रीराम ने आपसे आने का वादा किया था, उस दिन के बीत जाने में अभी चालीस घड़ियाँ बाक़ी हैं। यह मेरा कथन झूठा साबित किया जाय तो मैं ही आपके पहले इस आग में कूदकर मर जाऊँगा। ४१२८

ऑन्ऱु तान्उळ दुन्नडि येत्शॉलाल् निन्ऱु ताळ्त्तरुळ् नेमिच् चुडर्कुणक्
कुन्ऱु तोन्ऱळ वुम्मिदु कुन्ऱुमेल्, पॉन्ऱु नोयु मुलहमुम् बॉय्यिलाय् 4129

पॉय्यिलाय्–असत्य से दूर रहनेवाले; ऑन्ऱु तान्–एक ही बात; उळतु–है; नेमि–गोल; चुटर्–किरणमाली; कुणक्कु कुन्ऱु–पूर्व की उदयगिरि में; तोन्ऱु अळवुम्–उदित हो तब तक; उन्–आपके; अटियेन्–दास मेरे; चॉलाल्–कथन से; निन्ऱु–रुककर; ताळ्त्तु अरुळ्–विलंब करने की कृपा करो; इतु कुन्ऱुमेल्–यह नहीं होगा तो; नीयुम्–आप और; उलकमुम्–संसार; पॉन्ऱुम्–नाश होंगे। ४१२९

असत्य से दूर रहनेवाले ! एक ही बात है। गोल किरणमाली सूर्य पूर्व की उदयगिरि पर जब तक उदित न हो तब तक मेरी बात पर विश्वास करके रुक जाने की कृपा कीजिए। यह अवधि बीत जायगी तो निश्चित है कि आप ही नहीं सारा लोक भी नष्ट हो जायगा। ४१२९

ऍङ्ग णायहर् कित्तमु दीहुवान्, पङ्ग यत्तुप् परत्तुवन् वेण्डलाल्
अङ्गु वैहिन नल्लवु ताळ्क्कुमो, इङ्ग णल्लदोन् ऱिन्नमुङ् गेट्टियाल् 4130

पङ्कयत्तु–कमलमणि-मंडित; परत्तुवन्–भरद्वाज की; ऍङ्कळ् नायकर्कु–हमारे नायक को; इन्–मधुर; अमुतु–भोज; ईकुवान् वेण्टलाल्–देने की प्रार्थना से; अङ्कु–वहाँ; वैकिनन् अल्लतु–ठहर गये, नहीं तो; ताळ्क्कुमो–देर करेंगे क्या; इङ्कण्–यहाँ; इन्नमुम्–अब भी; नल्लतु–और अच्छी बात; ऑन्ऱु–एक; केट्टि–सुनिए। ४१३०

कमलमणि-भूषित भरद्वाज ने प्रार्थना की कि हम यहाँ मधुर भोज देना चाहते हैं। उसी से श्रीराम वहाँ ठहर गये। नहीं तो कहीं विलंब करेंगे क्या ? अब और भी एक शुभ समाचार कहता हूँ। सुनिये। ४१३०

अण्डर् नाद नरुळि यळित्तुळ, दुण्डोर् पेरडै याळ मुनक्कदु
कॉण्डु वन्दनॅन् कोदऱ्ऱ शिन्दैयाय्, कण्डु कॉण्डरुळ् वाऍनक् काट्टिनान् 4131

अण्टर् नातन्–अंडनायक ने; अरुळि–देने को; अळित्तुळतु–कृपा की की; ओर्–एक; पेर्–बड़ा; अटैयाळम्–अभिज्ञान; उण्टु–है; उनक्कु–आपको; अतु–वह; कॉण्टु–ले; वन्तनॅन्–आया हूँ; कोतु अऱ्ऱ–निर्दोष; चिन्तैयाय्–मन वाले। कण्टु कॉण्टु–देख लेने की; अरुळ्वाय्–कृपा करें; ऍन–ऐसा कहकर; काट्टिनान्–दिखाया। ४१३१

अंडनायक ने मुझ पर कृपा करके एक श्रेष्ठ अभिज्ञान दिया है। मैं उसे आपके लिए लाया हूँ। अकलंकमन ! देखने की कृपा करें, कहकर हनुमान ने उस मुँदरी को दिखाया। ४१३१

काट्टिय मोदिरङ् गण्णिऱ् काण्डलुम्, ऊट्टिय वल्विड मुऱ्ऱु मुऱ्ऱुवाऱ्क्
कूट्टिय नन्मरुन् दौत्त दामरो, ईट्टिय वुलहुक्कु मिळैय वेन्दऱ्कुम् 4132

काट्टिय मोतिरम्–दिखायी गयी मुँदरी; कण्णिल् काण्टलुम्–आँखों से देखने पर; ईट्टिय–एकत्रित; उलकुक्कुम्–लोकवासियों को; इळैय–छोटे; वेन्तऱ्कुम् राजा को; ऊट्टिय–खिलाये गये; वल् विटम्–कठोर विष; उऱ्ऱु–के कारण; मुऱ्ऱुवारक्कु–मरणोन्मुख को; ऊट्टिय–खिलाये गये; नल् मरुन्तु–अच्छे अमृत; ऒत्ततु–के समान साबित; आम्–हुआ। ४१३२

हनुमान की दिखायी अँगूठी को देखते ही वहाँ एकत्रित लोगों के लिए और भरत के लिए कठोर विष खाकर संतप्त रहे लोगों को खिलाये गये अच्छे अमृत के समान रही वह मुँदरी। ४१३२

अऴुहिन्ऱ वायॆला मार्त्तॆऴुन्दन, विऴुहिन्ऱ कण्णॆलाम् वॆळ्ळ माऱ्िन
उऴुहिन्ऱ तलैयॆला मुयर्न्दॆऴुन्दन, तॊऴुहिन्ऱ कैयॆलाङ् गालिन् तोन्ऱलै 4133

अऴुकिन्ऱ–जो रोते थे; वाय् ऎलाम्–वे सभी मुख; आर्त्तु–आनंदरव; ऎऴुन्तन–कर उठे; विऴुकिन्ऱ–(आँसू) गिरानेवाली; कण् ऎलाम्–सभी आँखें; वॆळ्ळम् माऱ्िन–प्रवाह से मुक्त हुईं; उऴुकिन्ऱ–झुके हुए; तलै ऎलाम्–सभी सिर; उयर्न्तु ऎऴुन्तन–उन्नत हो उठे; कै ऎलाम्–सभी हाथ; कालिन् तोन्ऱलै–पवन-सुत को; तॊऴुकिन्ऱ–नमस्कार करते हैं। ४१३३

तब जो रोते रहे वे सभी मुख आनंद-रव कर उठे। आँसू गिराती रही सभी आँखों के आँसू सूख गये। झुके रहे सभी सिर उन्नत हो उठे। सभी (के) हाथों ने हनुमान को नमस्कार किया। ४१३३

मोदिरम् वाङ्गित्तन् मुहत्तिन् मेलणैत्, तादरम् बॆऱुवदऱ् काक्कै योवॆन्ना
ओदिनर् नाणुऱ वोङ्गि नान्तॊऴुम्, तूदनै मुऱैमुऱै तॊऴुदु तुळ्ळुवान् 4134

तॊऴुम् तूतनै–दूत को; मुऱै मुऱै तॊऴुतु–बार-बार नमस्कार कर; तुळ्ळुवान्–आनंद से उछलते; मोतिरम्–मुँदरी को; वाङ्कि–लेकर; तन् मुकत्तिन् मेल्–अपने मुख पर; अणैत्तु–रख लेकर; आतरम्–श्रीराम का प्रेम; पॆऱुवतऱ्कु–धारण करने; आक्कैयो–योग्य शरीर क्या; ऎन्ना–ऐसा; ओतिनर् नाण् उऱ–जो कहते थे, वे लज्जा जायें, ऐसा; ओङ्किनान्–फूल गये। ४१३४

नमस्कार करते हनुमान को भरत ने बार-बार नमस्कार किया। आनंद से उछलकर मुँदरी का ग्रहण किया। फिर उसे अपने मुख से लगा लिया। तब उनका शरीर एकदम फूल उठा और उनको पहले देखकर जो यह सोच रहे थे कि क्या इसका यह कृश शरीर श्रीराम के प्रेम के भार को सह सकेगा, अब लज्जा का अनुभव करने लगे। ४१३४

आदिबॆन् वुयरला लरुन्द लिन्मैयाल्
ऊदुप परुपपवा यलरनद याक्कैपोय

एदिल तॊरुवन्कॊ लॆन्न लायवु
मादिरम् वळर्न्दन वयिरत् तोळ्हळे 4135

भाति–तबसे; वॆम्–कठोर; तुयर्–दुःख; अलाल्–के सिवा; अरुन्तल्–खाना-पीना; इन्मैयाल्–न रहा इसलिए; ऊदुर–फूंकने पर; परुप्पताय्–उड़ जाय, ऐसा; उलर्न्त–सूखा; याक्कै–शरीर; पोय्–बदल गया; ऎतिलन् ऒरुवन् कॊल्–दूसरा एक है क्या; ऎन्तल्–ऐसा कहने योग्य; आयतु–बने; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्र (-सम) सुदृढ़ कंधे; मातिरम् वळर्न्तन–पर्वतों के समान स्थूल हुए। ४१३५

तभी से भरत दुःख को छोड़ अन्य किसी का भोग नहीं करते थे। फूँको तो उड़ जाय, ऐसा उनका शरीर कृश हो गया था। पर अब वे ऐसे स्थूल हो गये कि देखनेवाले समझें कि यह कोई दूसरा है। उनके वज्र-सम कन्धे पर्वतों के समान फूल उठे। ४१३५

अळुनहु मनुमनै याळिक् कैहळाल्
तॊळुमॆळुन् दुळळुम्वॆङ् गळितु ळक्कलाल्
विळुमळिन् देङ्गुम्बोय् वीङ्गुम् वेर्क्कुमक्
कुळुवॊडुङ् गुनिक्कुनृदन् तडक्कै कॊट्टुमाल् 4136

वॆम् कळि–अधिक आनंद के; तुळक्कलाल्–उकसाने से; अळुम्–रोते; नकुम्–हँसते; अनुमनै–हनुमान को; आळि कैकळाल्–मुंदरी-सहित हाथों से; तॊळुम्–नमस्कार करते; ऎळुम्–उठते; तुळळुम्–उछलते; विळुम्–गिरते; अळिन्तु–घुलकर; एङ्कुम्–तरसते; पोय् वीङ्कुम्–फूल जाते; वेर्क्कुम्–स्वेद से भर जाते; अ कुळुवॊटुम्–(वहाँ रहे) उस समूह के साथ; कुनिक्कुम्–नाचते; तन्–अपने; तट कै–विशाल हाथ; कॊट्टुम्–पीटते (ताली बजाते)। ४१३६

भरत की स्थिति विचित्र हो रही। आनंद के प्रभाव से वे कभी रोते, कभी हँसते। हाथ में मुँदरी के साथ हनुमान को बार-बार नमस्कार करते। ऊपर उठते, उछलते, कूदते, गिरते, थककर रोते। फूल जाते और स्वेद से भर जाते। वहाँ रही उस भीड़ के साथ तालियाँ बजाते। ४१३६

आडुमि ताडुमि नॆन्नु मैयन्पाल्, ओडुमि तोडुमि नॆन्नु मोङ्गिश
पाडुमिन् पाडुमि नॆन्नुम् बाविहाळ्, शूडुमिन् शूडुमिन् तूदन् ताळॆन्नुम् 4137

पाविकाळ्–पापी लोगो; आडुमिन् आडुमिन्–नाचो-नाचो; ऎन्नुम्–कहते; ऐयन् पाल्–प्रभु के पास; ओटुमिन् ओटुमिन्–भागो-भागो; ऎन्नुम्–कहते; ओङ्कु इचै–वर्धित यश; पाटुमिन् पाटुमिन्–गान करो, गाओ; ऎन्नुम्–कहते; तूतन् ताळ्–दूतों के चरणों को; चूटुमिन् चूटुमिन्–(सिर पर) धारण कर लो, धारण करो; ऎन्नुम्–कहते। ४१३७

कहते कि हे पापियो! नाचो, नाचो। प्रभु के पास दौड़ो, दौड़ो।

प्रभु का उन्नत यशगान करो। कभी यह कहते कि दूत (हनुमान) के पैरों को सिर पर धारण कर लो। ४१३७

वञ्जनै यियट्रिय मायक् कैहैयार्
तुञ्जुव रिनियॆनत् तोळैक् कॊट्टुमाल्
कुञ्जिद वडिहळ्मण् डिलत्तिऱ् कूट्टुऱ्
अञ्जनक् कुन्ऱिनिऩ् ऱाडुम् बाडुमाल् 4138

वञ्चनै–वंचना; इयट्रिय–जिसने की यह; माय कैकेयार्–मायाविनी कैकेयी; इनि–अब; तुञ्चुवार्–शिथिल होंगी; ऎन–ऐसा कहकर; तोळै कॊट्टुम्–कंधे ठोंकते; कुञ्चित–झुके; अटिकळ–पैर; मण्टलत्तिल्–चक्राकार; कूट्ट उऱ–मिल जायें ऐसा; अञ्चनम् कुन्ऱिन्–अंजन-पर्वत के समान; निन्ऱु–रहकर; आटुम् पाटुम्–नाचते-गाते। ४१३८

यह कहकर कंधे ठोंकते कि अब वंचकी कैकेयी दब जायगी। पैर झुकाकर, चक्राकार घुमाकर अंजनपर्वत के समान भरत नाचे और गाये। ४१३८

*वेदियर् तमैत्तोऴुम् वेन्द रैत्तोऴुम्
तादियर् तमैत्तोऴन् दन्नैत् तान्तोऴुम्
एदुमॊन् ऱुणर्हुऱा दिरुक्कु निऱ्कुमाल्
कादलॊन् ऱदुवुमोर् कळ्ळिन् ऱोऱ्ऱमे 4139

वेतियर् तमै–ब्राह्मणों को; तॊऴुम्–नमस्कार करते; वेन्तरै तॊऴुम्–राजाओं को नमस्कार करते; तातियर् तमै–दासियों को; तॊऴुम्–नमस्कार करते; तन्नै तान्–अपने ही आपको; तॊऴुम्–नमस्कार करते; एतुम् ऒन्ऱु–कुछ भी; उणर्कुऱातु–न जानते से; इरुक्कुम्–रहते; निऱ्कुम्–स्थिर रहते; कातल् ऒन्ऱु–प्रेम जो है; अतुवुम् ओर्–वह भी एक; कळ्ळिन् तोऱ्ऱमे–मद्य के स्वभाव का है। ४१३९

भरत ब्राह्मणों को नमस्कार करते। राजाओं को, दासियों को और फिर अपने-आप को नमस्कार करते। ऐसे विना कुछ समझे-बूझे स्तब्ध खड़े रहते। स्नेह भी मद्य की प्रकृति का ही है! ।४१३९

अत्तिऱत् ताण्डहै यनुमत् तन्नैनी
ऎत्तिऱत् तायॆमक् कियम्बि योदियाल्
मुत्तिऱत् तवरुळे यॊरुवन् मूर्त्तिवे
ऱॊत्तिरुन् दायॆन वुणर्हिन् ऱेन्ऱान् 4140

अ तिऱत्तु–उस भांति के; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अनुमन् तन्नै–हनुमान से; नी–तुम; ऎ–किस; तिऱत्ताय्–तरह के हो; ऎमक्कु–हमें; इयम्पि ईति–कहने की कृपा करो; मुत्तिऱत्तवर् उळे–त्रिमूर्ति में; मूर्त्ति वेऱु ऒरुवन्–एक अलग वेश में;

औत्तिरुन्ताय्–के समान रहे; अँत–ऐसा; उणर्कित्रेन्–मैं समझता हूँ; अँन्ड्रान्–कहा भरत ने। ४१४०

इस भाँति जो रहे, उन भरत ने हनुमान से पूछा कि तुम कैसे आदमी हो ? कृपाकर यह बताओ। अलग तो दिखते तो भी मुझे तो त्रिमूर्ति में एक ही हो पर अलग रूप में दिखते हो। ४१४०

मर्रैयवर् वडिवुकोण् डणह वन्दनै
इर्रैवरि नॉरुत्तनॅन् रॅण्णु हिन्ड्रनॅन्
तुर्रैयॅनक् कियादॅनच् चॉल्लु शॉल्लॅन्ड्रान्
अर्रैकळ लनुमनु मरियक् कूरुवान् 4141

मर्रैयवर्–वेदज्ञ (ब्राह्मण) का; वटिवु–रूप; कोण्डु–लेकर; अणक–मिलने; वन्तनै–आये हो; इर्रैवरिल्–त्रिदेवों में; ओरुत्तन्–एक हो; अँन्ड्र–ऐसा; अँण्णुकिन्ड्रनॅन्–सोचता हूँ; तुर्रैयातु–वृत्तांत क्या है; अँन–ऐसा; अँनक्कु–मेरे पास; चॉल्लु चॉल्लु–कहो, कहो; अँन्ड्रान्–कहा; अर्रैकळल्–क्वणनशील पायलधारी; अनुमनुम्–हनुमान ने भी; अरिय–समझाकर; कूरुवान्–कहा। ४१४१

तुम ब्राह्मण का वेश धरकर आये हो। पर त्रिदेवों में एक मानता हूँ। असल में तुम्हारा वृत्तांत क्या है ? मुझे बताओ। जल्दी कहो। भरत ने सुनना चाहा। क्वणित पायलधारी हनुमान ने समझाकर कहा। ४१४१

कार्ड्रिनुक् करशन्पार् कविक्कु लत्तिनुळ्
नोर्ड्रनळ् वयिर्ड्रिनुवन् दुदित्तु नुम्मुनार्
केर्ड्रिला वडित्तॉळि लेव लाळनेन्
मार्ड्रिनॅ नुरुवोरु कुरङ्गु मन्नयान् 4142

मन्न–राजा; यान्–मैं; ओरु–एक; कुरङ्गु–वानर हूँ; कार्ड्रिनुक्कु–पवन के; अरचन् पाल्–देवता द्वारा; कवि कुलत्तिनुळ्–वानरकुल में; नोर्ड्रनळ्–तपस्या करनेवाली (अंजना) के; वयिर्ड्रिल्–गर्भ से; वन्तु उतित्तु–जनम लेकर; एर्ड्रिला–उपमाहीन; नुम्मुनार्कु–आपके ज्येष्ठ भ्राता के; अटि तॉळिल्–दासता-कृत्य का; एवल्–सेवक; आळनेन्–मनुष्य हूँ; उरु मार्ड्रिनॅन्–रूप बदलकर आया हूँ। ४१४२

राजा ! मैं एक वानर हूँ। पवनदेव का अंजनादेवी के गर्भ में से आया। —जो कि वानर जाति की थीं और जिसने पुत्र के लिए तपस्या की। अनुपम आपके ज्येष्ठ भ्राता की दासता करनेवाला सेवक हूँ। रूप बदलकर मैं इधर आया। ४१४२

अडित्तॉळिल् नायिनॆ नरुप याक्कैयैक्
[illegible] नामरैक कणणि नोक्कॅनाप्

पिडित्तपॊय् युरुवित्तैप् पॆयर्त्तु नीक्किनान्
मुडित्तलम् वानवर् नोक्किन् मुन्नुवान् 4143

अटि तॊऴिल्–दासकृत्य करनेवाला; नायिनेन्–कुत्ता (-सा) हूँ; अऱ्प याक्कैयै–अल्प शरीर को; कटि तट–सुगंधित विशाल; तामरै कण्णिन्–कमल-सी आँखों से; नोक्कु–देख लें; ऍना–कहकर; पिटित्त–धृत; पॊय् उरुवित्तै–मिथ्या रूप को; पॆयर्त्तु नीक्किनान्–छोड़ दिया; मुटि तलम्–सिर का भाग; वानवर् नोक्किन्–देवों के समक्ष; मुन्नुवान्–बढ़ता गया। ४१४३

दास, कुत्ते से भी नीच (यह विनम्रतासूचक तमिळ मुहावरा है) मेरे क्षुद्र शरीर को आप सुगंधपूर्ण कमल-सम आँखों से निहार लें। ऐसा कहकर हनुमान ने अपने गृहीत मिथ्या ब्राह्मण-रूप को दूर फेंक दिया। वह इतना ऊँचा बढ़ने लगा कि देवता लोग (अपने लोक में रहकर) उसके सिर को (अपने समक्ष) देख सकें। ४१४३

वॆञ्जिलै यिरुवरुम् विरिञ्जन् मैन्दनुम्
ऍञ्जलि लदिशय मिदुवॆन् ऱॆण्णिनार्
तुञ्जिल दायिनुञ् जेनै तुण्णॆन
अञ्जिन दञ्जनै शिरुव नाक्कैयाल् 4144

अञ्चनै चिरुवन्–अंजना-सुत के; आक्कैयाल्–शरीर को देखकर; वॆम् चिलै–कठोर धनुर्धर; इरुवरुम्–दोनों ओर; विरिञ्चन् मैन्तनुम्–विरंचिसुत वसिष्ठ; इतु–यह रूप; ऍञ्चल् इल्–अक्षय; अतिचयम्–अतिशय रूप है; ऍन्ऱु ऍण्णिनार्–ऐसा सोचने लगे; चेनै–सेना; तुञ्चिलतु–मरी तो नहीं; आयिनुम्–फिर भी; तुण् ऍन–ठिठककर; अञ्चितु–डर गयी। ४१४४

अंजना-सुत के विश्वरूप के शरीर को देखकर धनुर्धर वीर दोनों भाई, भरत और शत्रुघ्न, और विरंचिसुत वसिष्ठ ने विस्मय किया कि यह अतिशय अद्भुत रूप है! पास रही सेना मरी तो नहीं पर गंभीर रूप से भयभीत हो गयी। ४१४४

ईङ्गुनिन् ऱियामुनक् किशैत्त माऱ्ऱमत्
तूङ्गिरुङ् गुण्डलच् चॆवियिऱ् चूऴ्वर
ओङ्गलिल् उयर्प्पुरु मुलप्पिल् याक्कैयै
वाङ्गुवि ऱॆन्ऱॆन मन्नन् वेण्डिनान् 4145

अ–सुन्दर; ईङ्कु निन्ऱु–इधर खड़े होकर; याम्–हम; उनक्कु–तुमसे; इचैत्त–जो कहेंगे; माऱ्ऱम्–वे शब्द; तूङ्कु–लटकते; इरु–दो; कुण्टलम्–कुंडलों वाले; अ चॆवियिल्–उन कानों में; चूऴ्वर्–घूमें (पड़ें); ओङ्कलिन्–पर्वत-सम; उयर्प्पु उरुम्–ऊँची रहते; उलप्पिल्–इस अक्षय; याक्कैयै–शरीर को; वाङ्कुति–छोटा कर लो; ऍन–ऐसा; मन्नन्–राजा ने; वेण्टिनान्–प्रार्थना की। ४१४५

राजा भरत ने तब हनुमान से प्रार्थना की कि तुम अपने पर्वतोपम उन्नत रूप को छोटा कर लो, ताकि हमारे कहे शब्द तुम्हारे लटकते कुण्डलों से भूषित कानों में पड़ सकें। ४१४५

शुरुक्किय वुरुवन्नाल् तॊऴुदु मुन्निन्ऱ
अरुक्कन्मा णवहनुक् कैय नन्बिनाल्
पॊरुक्कॆन्न निदियमुम् बुनैपॊऩ् पूणगळिन्
वरुक्कमुम् वरम्बिल नन्ऱिव ळङ्गिनान् 4146

ऐयन्–प्रभु भरत; अन्पिनाल्–प्रेम से; चुरुक्किय–अपना शरीर छोटा कर; उरुवन्ना–उस रूप में; तॊऴुतु–नमस्कार करके; मुन् निन्ऱ–जो समक्ष रहा उस; अरुक्कन्–सूर्य भगवान के; माणवकनुक्कु–शिष्य को; पॊरुक्कॆन–झट; नितियमुम्–निधियाँ; पुनै–पहनने योग्य; पॊन्–स्वर्ण; पूण्कळिन्–आभरणों की; वरुक्कमुम्–राशियाँ; वरम्पिल–असीम; नन्ऱि–खूब; वऴङ्कितान्–भेंट किया। ४१४६

हनुमान ने भरत की इच्छा के अनुसार अपना रूप छोटा कर लिया। फिर नमस्कार करके उनके समक्ष खड़ा रहा। तब उस अर्क-शिष्य को भरत ने झट निधियाँ, धारण योग्य अनेक आभरणों की राशियाँ आदि अपार रूप में खूब दान किया। ४१४६

कोवॊडु तूशुनऱ् कुलम णिक्कुऴाम्, मावॊडु परिक्कुलम् वादु तेरिनम्
तावुनी रुडुत्तनऱ् ऱरणि तन्नुडन्, एवरुञ् जिलैवलान् यावु नल्हिनान् 4147

एवरुम्–शर-प्रेषक; चिलै वलान्–धनुर्विद्या में दक्ष; कोवॊटु–गायों के साथ; तूचु–वस्त्र; नल् कुलम् मणि–उत्तम जाति के रत्नों के; कुऴाम्–समूह; मावॊटु–हाथी और; कुलम्परि–श्रेष्ठ अश्व; वातु–तेज जानेवाले; तेर् इनम्–रथवृन्द; तावुम् नीर्–उछल जाते जल से; उटुत्त–आवृत; नल् तरणि तन्नुटन्–श्रेष्ठ भूमि के साथ; यावुम् नल्कितान्–सभी दान में दिया। ४१४७

बाण-प्रेषण-धनुर्निपुण भरत ने और भी गायें, वस्त्र, हाथी, उत्तम रत्नों के ढेर, कुलीन अश्व, तेज चलनेवाले रथों के वृन्द और उछलकर बहने वाले जल से आवृत उत्तम भूमि आदि भी दान में दिया। ४१४७

इळवलै यण्णलुक् कॆदिर्हॊण् मॆन्ऱुनम्
वळैमदि लयोत्तियिल् वाऴु माक्कळैक्
किळैयॊडु मॆन्ऱनक् किळत्ति यॆङ्गणुम्
अळैयॊलि मुरशिन्न मऱैविप् पायॆन्ऱान् 4148

इळवलै–छोटे भाई से; वळै मतिल्–गोलाकार प्राचीर वाली; अयोत्तियिल् वाऴुम्–अयोध्या में रहनेवाले; माक्कळै–लोगों को; अण्णलुक्कु–महिमावान प्रभु को; किळैयॊटुम्–परिवारों के साथ; ऎतिर् कॊळ्म्–अगवानी करें; ऎन्ऱुम्–ऐसा और; किळत्ति–बताने के लिए; ऎङ्कणुम्–सर्वत्र; ... ऎन–ऐसा;

अळै ऑलि–गूँजनेवाली ध्वनि को; मुरचु इतम्–भेरियों के समूह को; अऱैविप्पाय्–पिटवा दो; ॲन्ऱान्–ऐसा कहा। ४१४८

तब भरत ने अपने कनिष्ठ भ्राता शत्रुघ्न से कहा। आवरणयुक्त अयोध्या के वासियों को बड़ी ध्वनि निकलनेवाली भेरियाँ पिटवाकर खबर दो कि वे महिमावान प्रभु के आवभगत में जायँ और अपने बंधु-बांधवों को भी साथ लायें। ४१४८

तोरण नट्टुमेल् तुहिल्पों दिन्दुनल्, पूरणप् पॉऱ्कुडम् बॉलिय वैत्तुनीळ्
वारण मिवुळितेर् वरिशै तान्वळाच्, चीरणि यणिहॅन्तच् चॅप्पु वायॆन्ऱान् 4149

तोरणम् नट्टु–तोरण आदि गाड़कर; मेल्–खम्भों के ऊपर; तुकिल्–वस्त्रों से; पोतिन्तु–आच्छादित करके; नल्–श्रेष्ठ; पूरणम् पोन् कुटम्–स्वर्णपूर्ण कुंभ; पोलिय–शोभायुक्त; वैत्तु–रखकर; नीळ्–बड़े; वारणम्–गजों; इवुळि–अश्वों और; तेर–रथों को; वरिचै वळा–क्रम भंग न करके; चीर् अणि–श्रेष्ठ अलंकार; अणिक ॲन्त–अलंकृत करो, ऐसा; चॅप्पुवाय–कहो; ॲन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१४९

तोरण गाड़कर उन पर वस्त्राच्छादन करें। सुंदर पूर्णकुंभ तैयार कर रखें। बड़े गजों को, अश्वों को और रथों को उचित रीति से पंक्तियों में रखकर नगर को श्रेष्ठ अलंकारों से अलंकृत करें। —यह सब मुनादी पिटवा दो। भरत ने यों कहा। ४१४९

परत्तुव तुऱैविडत् तळवुम् बैम्बॊन्नीळ्
शिरत्तोहै मदिऱ्पुऱत् तिरुदि शेर्दर
वरत्तहु तरळमॅन् पन्दर् वैत्तुवान्
पुरत्तैयुम् बुदुक्कुमा पुहरि पोयॆन्ऱान् 4150

परत्तुवन्–भरद्वाज के; उऱैविटत्तु अळवुम्–आश्रम से लेकर; पैम् पोंसिनु–श्रेष्ठ स्वर्ण के; नीळ्–लंबे; चिरम्–शिखरों के; तोकै–समूह के; मतिल् पुऱत्तु–प्राचीर के; इऱुति अळवुम्–अंत तक; चेर् तर–मिलाकर; वरम् तकु–श्रेष्ठ, युक्त; तरळम्–मोतियों का; मॅल् पन्तर् वैत्तु–सुखद (मृदु) वितान बनाकर; वान् पुरत्तैयुम्–उत्तम नगर को भी; पुतुक्कुमा–नवीन बना लेने को; पोय् पुकऱि–जाकर कह दो; ॲन्ऱान्–कहा। ४१५०

स्वर्णशिखरसहित अयोध्या के प्राचीरों के छोर से भरद्वाज जी के वासस्थान तक श्रेष्ठ मोतियों का वितान तनवा दो। अयोध्या का नवीनीकरण करा दें —यह भी कहो। ४१५०

ॲन्ऱलु मवनडि यिऱैञ्जि यॆय्दियक्
कुन्ऱुऱळ् वरिशिलैक् कुववुत् तोळिनान्
नन्ऱुणर् केळ्विय नवैयिल् शॆय्हैयन्
तन्ऱुणैच् चुमन्दिरऱ् कऱियच् चाऱ्ऱिनान् 4151

अॅऩ्ऱलुम्–कहते ही; वरिचिलै–सबंध धनुर्धर; अ कुऩ्ऱु उऱऴ्–वे पर्वतोपम; कुवव्–पुष्ट; तोळिनाऩ्–कंधों वाले; अवऩ्–उनके; अटि–चरणों में; इऱैञ्चि अॅय्ति–नमस्कार करके जाकर; नऩ्ऱु उणर्–खूब ज्ञात; केळ्वियऩ्–श्रौतज्ञान वाले; मवै इल्–अनिंद्य; चॅय्कैयऩ्–कार्यों के कर्ता; तऩ् तुणै–अपने मित्र; चुमन्तिरऱ्कु–सुमन्त्र के पास; अऱिय–समझाकर; चाऱ्ऱिऩाऩ्–बोल दिये। ४१५१

भरत के यों कहने पर सबंध धनुर्धर पर्वतोपम कंधों वाले शत्रुघ्न भरत के चरणों में नमस्कार करके गया और श्रौतज्ञान के समृद्ध, निर्दोष कार्य करनेवाले अपने मित्र सुमंत्र से भरत की आज्ञा सुना दी। ४१५१

अव्वुरै केट्टलु मऱिविऩ् वेलैयाऩ्
कव्वैयि लऩ्बिऩाऱ् कळिक्कुञ् जिन्दैयाऩ्
वॅव्वॅयि लॅऱिमणि वीदि यॅङ्गणुम्
अॅव्वमिऩ् ऱऱैपऱै यॅऱ्ऱु हॅऩ्ऱिड 4152

अऱिविऩ् वेलैयाऩ्–ज्ञान-सागर के; अव् उरै–वह वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; कव्वै इल्–निर्दोष; अऩ्पिऩाल्–प्रेम से; कळिक्कुम्–मुदित; चिन्तैयाऩ्–मन से; वॅव्वॅयिल् अॅऱिमणि–प्यारी छवि बिखेरनेवाले रत्नों से पूर्ण; वीति अॅङ्कणुम्–सभी वीथियों में; अॅव्वम् इऩ्ऱु–दोषहीन रीति से; अऱै पऱै–पिट सकनेवाले ढिंढोरे; अॅऱ्ऱुक–पीटो; अॅऩ्ऱिट–कहने पर। ४१५२

ज्ञानसागर सुमंत्र का निर्दोष मन यह वचन सुनकर उत्साह से भर गया। उसने 'वळ्ळुवर' लोगों को आज्ञा दी कि उज्ज्वल रत्नमय वीथियों में ठीक तरह से बजनेवाली भेरियाँ हाथियों पर लेकर पीटो और मुनादी करा दो। ४१५२

वाऩैयुन् दिशैयैयुङ् गडन्द वाऩ्पुहऴ्क्
कोऩैयिऩ् ऱॅदिर्हॊळ्वाऩ् कोल मानहर्
ताऩैयु मरशरु मॅऴुह ताऩॆऩा
याऩैयिऩ् वळ्ळुवर् मुरश मॅऱ्ऱिऩार् 4153

वाऩैयुम्–आकाश को; तिचैयैयुम्–और दिशाओं को; कटन्त–जो पार कर चुका; वाऩ् पुकऴ्–ऐसे श्रेष्ठ यश के भाजन; कोऩै–राजा की; इऩ्ऱु–आज; अॅतिर् कॊळ्वाऩ्–अगवानी करने के लिए; कोलम्–सुन्दर; मा नकर्–महान नगर की; ताऩैयुम्–सेना; अरचरुम्–राजा लोग; अॅऴुक–उठें; ऎऩा–ऐसा; याऩैयिऩ्–गजों पर से; वळ्ळुवर्–'वळ्ळुवर' लोगों ने; मुरचम्–ढिंढोरा; अॅऱ्ऱिऩार्–पिटवाया। ४१५३

"आकाश-दिशा-पार यशस्वी श्रीराम की अगवानी के लिए सुंदर

तथा बड़े नगर अयोध्या की सेना और अयोध्या के राजा लोग उठ आयें।" ऐसा हाथियों पर रहकर 'वळ्ळुवरों' ने ढिंढोरा पीटा। ४१५३

मुरशौलि	केट्टलु	मुळङ्गु	मानहर्
अरशरु	मान्दरु	मनुब	णाळरुम्
करैशॅय	लरियदो	रुवहै	कैतरत्
तिरैशॅऱि	कडलॅन	वॅऴुनुदु	शॅऩ्ऱवाल् 4154

मुरचु ओलि–ढिढोरे की ध्वनि; केट्टलुम्–सुनते ही; करै चॅयल्–सीमा बांधना; अरियतु–जिसका कठिन हो; ओर् उवकै–ऐसा एक संतोष; कै तर–अधिक हुआ; अरचरुम्–राजा और; मानृतरुम्–प्रजाजन और; अन्तणाळरुम्–ब्राह्मण लोग; मुळङ्कुम्–कोलाहलमय; मा नकर्–बड़ा नगर; तिरै चॅऱि–तरंगाकीर्ण; कटल्–सागर; ॲन–सम; ॲऴुन्तु चॅऩ्ऱु–उठ चला। ४१५४

ढिंढोरे की ध्वनि सुनते ही सबके मन में अपार हर्ष उमड़ा। राजा लोग, प्रजाजन और ब्राह्मणों के साथ कोलाहलमय वह अयोध्या नगर तरंगाकुल समुद्र के समान उठ चला। ४१५४

अनहनै	यॅदिर्होळ्हॅन्	ऱुरैनुव	पेरिनर्
कनहनल्	कूर्न्दवर्	कैप्पट्	टॅन्नवुम्
शनहन	दूर्क्कॅन	मुन्नम्	जाऱ्ऱिय
वनैकडिप्	पेरियु	मॊत्त	वामरो 4155

अनकनै–अनघ श्रीराम का; ॲतिर् कॊळ्क–आवभगत करें; ॲऩ्ऱु–ऐसा; पेरि–भेरियां; नल् कनकम्–श्रेष्ठ स्वर्ण; नल् कूर्न्तवर्–दरिद्र को; कै पट्टु–मिल गया; ॲन्नवुम्–जैसा और; चनकनतु–जनक के; ऊर्क्कु–नगर को (जाओ); ॲन–ऐसा; मुन्नम् चाऱ्ऱिय–पहले पीटी गयी; वनै–सुंदर बनी; कटि पेरियुम्–विवाह-भेरी; ऑत्त आम्–के समान रही। ४१५५

'अनघ श्रीराम की अगवानी के लिए उठ आयें'—यह जो मुनादी उस दिन पीटी गयी, वह उस दिन का स्मरण दिलाती थी—जिस दिन जनक-राज के नगर को उठ जाने की आज्ञा कही गयी; और दरिद्र को निधि प्राप्त होने पर जो आनंद होगा वैसा आनंद दिलाती थी। ४१५५

अऱुबदि	नायिर	मक्कु	रोणियॅन्
ऱिऱुदिशॅय्	शेनैयु	मेनै	वेन्दरुम्
शॅऱिनहर्	मान्दरुन्	दॅरिवै	मार्हळुम्
उऱुपॊरु	ळॅविर्न्दॅन	वुवनु	पोयिनार् 4156

अऱुपतिनायिरम्–साठ हजार; अक्कुरोणि–अक्षौहिणी; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इऱुति चॅय्–गिनी हुई; चेनैयुम्–सेना और; एनै वेन्तरुम्–अन्य राजा; चॅऱि नकर्–समृद्ध

नगर के; मानृतरम्–वासी और; तॅरिवैमार्कळुम्–स्त्रियाँ; उरु पॉरुळ–इच्छित वस्तु; ऍतिर्न्तॅन–मिली जैसे; उवन्तु पोयिनार्–खुश होकर गये। ४१५६

निश्चित रूप से साठ हज़ार अक्षौहिणी की सेना और राजा, समृद्ध अयोध्यावासी प्रजाजन, स्त्रियाँ --सभी मानो इच्छित वस्तु की प्राप्ति की अभिलाषा से, उत्साह के साथ गये। ४१५६

अन्नैयर् मूवरु ममरर् पोऱ्ऱिडप्
पॊन्तियल् शिविहैयि नॅळुन्दु पोयपिन्
तन्निहर् मुनिवरुन् दमरुञ् जूळ्तर
मन्नवन् मारुदि मलर्क्कै पऱ्ऱुरा 4157

अन्नैयर् मूवरुम्–तीनों जननियाँ; अमरर् पोऱ्ऱिट–देवों के स्तुति करते; पॊन् इयल्–स्वर्णनिर्मित; चिविकैयिन्–शिविका में; ऍळुन्तु–उठकर; पोय पिन्–गयीं फिर; मन्नवन्–राजा; तम् निकर्–स्वोपम; मुनिवरुम्–मुनियों और; तमरुम्–परिवारों के; चूळ् तर–घेरे आते; मारुति–मारुति का; मलर् कै–कमल-हस्त; पऱ्ऱुरा–पकड़े। ४१५७

तीनों जननियाँ, देवों की स्तुति सुनते हुए स्वर्णनिर्मित शिविकाओं में निकल चलीं। बाद राजा भरत स्वोपम मुनिगण और अपने परिवारों के साथ हनुमान के कमल-चरण को हाथ में लिये हुए (चले)। ४१५७

**तिरुवडि यिरण्डुमे शॅम्बॊन् मौलिया, इरुपुरञ् जामरै यिरट्ट वेळ्कडल्
वॅरुवरु मुळक्कॅन वेळ मार्त्तॅळप्, पॊरुवरु वॅण्कुडै निळऱ्ऱप् पोयिनान् 4158**

तिरुवटि इरण्टुम्–दोनों पादुकाओं को; चॅम् पॊन्–लाल स्वर्ण के; मौलिया–किरीट का स्थान देकर; इरु पुरम्–दोनों बाजुओं में; चामरै–चामरों के; इरट्ट–झुलते; एळ् कटल्–सात समुद्रों को; वॆरुवरु–भयभीत करनेवाली; मुळक्कु–ध्वनि; ऍन–जैसी; वेळम्–बाजाओं के; आर्त्तु ऍळ–बजते; पॊरु अरु–अनुपम; वॅण् कुटै–श्वेतछत्र के; निळऱ्ऱ–छाँह देते; पोयिनान्–गये। ४१५८

उनके सिर पर किरीट के स्थान पर खरे सोने की (श्रीराम-) पादुकाएँ थीं। दोनों बाजुओं में चामर झुलता था। सातों समुद्रों के सम्मिलित गर्जन की-सी ध्वनि में बाजे बजते जाते थे। उनके ऊपर श्वेतछत्र छाया दे रहा था। ४१५८

ऍल्लवन् मरैन्दन नॅन्नै याळुडै
विल्लियै यॅदिर्हॊळप् परवन् मीच्चॅल्वान्
अल्लियङ् गमलमे यळैय ताळ्हळिल्
कल्लदर् शुडुन्दन कविरि नॅन्नवे 4159

ऍन्नै–मेरे; आळ उटै–शासक (श्रीराम); विल्लियै–

कोदंडपाणी का; ऍतिर् कॊळ्–आवभगत करने; मीच् चॆल्वान्–भूमि पर चलते हैं; अल्लि–दलसंकुल; अम्–सुंदर; कमलमे–कमल ही; अनैय–सम; ताळ्कळिल्–पैरों में; कल् अतर्–कंकड़ीला मार्ग; तन् कतिरिल्–अपनी किरणों से; चुडुम्–जलायगा; ऍन्न–समझकर; ऍल्लवन्–सूर्य; मऱैन्ततन्–छिप गया। ४१५९

"भरत हमारे (कवि के) शासक कोदंडपाणी के स्वागत के लिए भूमि पर पैदल जा रहा है। उसका पथरीला मार्ग, मेरी किरणों से ताप पाकर उसके दलसंकुल कमल-सम चरणों को जला देगा।" —(यह होने देना नहीं चाहिए) यह समझकर सूर्य डूब गया। ४१५९

अव्वळि मारुदि यङ्गै पऱ्ऱिय
शॆव्वळि युळ्ळत्तान् तिरुवि नायहन्
ऍव्वळि युऱैन्ददच् चॆयलॆ लाम्विरित्
तिव्वळि यॆमक्कुनी यियम्बु वायॆन्ऱान् 4160

अव् वळि–तब; मारुति–मारुति के; अम्–सुंदर; कै–हाथ को; पऱ्ऱिय–पकड़े रहे; चॆव्वळि–सीधे-सादे; उळ्ळत्तान्–मनवाले भरत ने; तिरुविन् नायकन्–श्रियःपति; ऍ वळि उऱैन्ततु–कहाँ ठहरे थे; अ चॆयल्–वह हाल; ऍलाम्–सारा; नी–तुम; ऍमक्कु–हमें; इ वळि–अब; विरित्तु इयम्पुवाय्–विस्तार से कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ४१६०

तब आर्जव-मन भरत ने, जो कि हनुमान का हाथ पकड़े जा रहे थे, उससे कहा कि वन में श्रियःपति कहाँ-कहाँ ठहरे, क्या-क्या किया ? —आदि बातें विस्तार के साथ तुम अभी हमें बताओ। ४१६०

ऍन्ऱलु मारुदि वणङ्गि यॆम्पिरान्, मन्ऱलर् तॊडैयिना मयोत्ति मानहर्
निन्ऱदु मणविनै निरप्पि मीण्डुकान्, शॆन्ऱदुम् नायिनेन् शॆप्पल् वेण्डुमो 4161

ऍन्ऱलुम्–कहने पर; मारुति–मारुति; वणङ्कि–नमन करके; मन्ऱु–सुगन्धपूर्ण; अलर्–खिले फूलों की; तॊडैयिनाय्–मालाधारी; ऍम्पिरान्–हमारे प्रभु का; मा अयोत्ति नकर्–महा अयोध्या नगर में; निन्ऱतुम्–वास; मणम्–विवाह; विनै निरम्पि–कार्य पूरा करके; मीण्टु–लौटकर आने के बाद; कान् चॆन्ऱतुम्–जंगल जाना; नायिनेन्–मुझ दास को; चॆप्पल्–कहना; वेण्टुमो–चाहिए क्या। ४१६१

यह सुनकर हनुमान ने उत्तर दिया। सुगंधित तथा प्रफुल्लित पुष्पों की मालाधारी ! हमारे प्रभु का अयोध्यावास, विवाहोपरांत अयोध्या में प्रत्यागमन, फिर वनगमन आदि वृत्तांत, मुझ कुत्ते को कहना पड़ेगा क्या ? नहीं न ! ४१६१

शित्तिर कूडत्तैत् तीर्न्द पित्शिरम्
पत्तुडै यवत्तुडन् वळैन्द पणबॆलाम्

इत्तलै यडन्ददु मिऱ्दियाय पोर्
वित्तहत् तूवनुम् विरिक्कुज् जिन्दैयात् 4162

चित्तिर कूवत्तै–चित्रकूट को; तीर्न्तपित्–छोड़ने के बाद; चिरम् पत्तु उटै–दशग्रीव से सम्बंधित; विळैन्त–जो हुआ; पण्पु ॲलाम्–वह सारा हाल; इ तलै–यहां तक; अटैन्ततुम्–आने का हाल; इऱुतियाक–(तब) तक; पोर् वित्तकम्–समर्थ योद्धा; तूततुम्–दूत; विरिक्कुम्–वर्णन करने का; चिन्तैयान्–विचार किया (हनुमान ने)। ४१६२

हनुमान ने सोचा कि चित्रकूट-त्याग से लेकर श्रीराम-दशग्रीव-वृत्तांत और अपने यहाँ आने का हेतु और हाल बखानूं। ४१६२

कुन्ऱुरुळ् वरिशिलैक् कुरिशि लॅम्बिरान्
तॅन्ऱिशैच् चित्तिर कूडन् दीर्न्दपिन्
वन्ऱिऱल् विरादनै मडित्तु मादवर्
तुन्ऱिय तण्डह वनत्तुळ् तुन्निनान् 4163

कुन्ऱु उरुळ्–पर्वतोपम; वरिचिलै–सबंध कोदण्ड के; कुरिचिल्–धारक राजाराम; ॲम्पिरान्–हमारे प्रभु; तॅन् तिचै–दक्षिण दिशा के; चित्तिर कूटम्–चित्रकूट को; तीर्न्त पिन्–छोड़ने के बाद; वल् तिऱल्–कठोर बली; विरातनै–विराध को; मट्टित्तु–मारकर; मातवर्–महा तपस्वियों से; तुन्ऱिय–पूर्ण जो रहता है; तण्टक वनत्तुळ्–उस दण्डकवन में; तुन्नितान्–गये। ४१६३

पर्वत-सदृश तथा सबंध धनु के धारक, हमारे पुरुषोत्तम दक्षिण दिशा में चित्रकूट को छोड़ जाने के बाद कठोर बलवान विराध का संहार करके महातपस्वियों से भरे दंडकवन में पहुँचे। ४१६३

आङ्गुऱै तबोदन ररक्कर्क् काऱ्ऱलेम्
नीङ्गिनन् दवत्तुऱै नीदि योॅनत्
तीङ्गुशॅय् बवर्हळैच् चॅहुत्तल् तिण्णनीर्
वाङ्गुमिन् मनत्तुयर् वाय्मै यालॅन्ऱान् 4164

आङ्कु उऱै–वहाँ रहे; तपोतनर्–तपोधनों के; नीतियोय्–नीतिमान; अरक्कर्क्कु–राक्षसों (के अत्याचार) को; आऱ्ऱलेम्–नहीं सह सकते; तवम् तुऱै नीङ्कितम्–तपस्या का मार्ग छोड़ चुके; ॲन–ऐसा करने पर; तीङ्कु चॅय्पवर्कळै–आततायियों को; चॅकुत्तल्–मारना; तिण्णम्–ध्रुव है; वाय्मैयाल्–मेरे सत्य-वचन से; नीर्–आप लोग; मनम् तुयर्–मन का दुःख; वाङ्कुमिन्–छोड़ दें; ॲन्ऱान्–कहा। ४१६४

वहाँ के वासी, तपोधनों ने श्रीराम से अपना कष्ट निवेदन किया। हे नीतिमान! राक्षसों द्वारा दिये जानेवाले कष्टों को हम नहीं सह पाते। हम अपने तप के मार्ग से हट ही गये हैं। तब श्रीराम ने आश्वासन दिया

कि आततायियों का दमन निश्चय होगा। आप हमारे वचन के बल पर निश्चिंत हो जायँ। ४१६४

आऱुना लाण्डवण् वैहि यप्पुऱत्
तीऱिला मुऩिवर रेय वाणैयाल्
माऱिलात् तमिळ्मुऩि वऩत्तै नण्णिऩाऩ्
ऊऱिला मुऩिवर ऩुवन्दु मुऩ्वर 4165

आऱु नाल् आण्टु–छः और चार (दस) साल; अवण्–वहाँ; वैकि–रहकर; अ पुऱत्तु–उसके पश्चात; ईऱु इला–अनंत; मुऩिवरर्–मुनिवरों की; एय–कही हुई; आणैयाल्–आज्ञा के अनुसार; माऱु इला–अप्रतिम; तमिळ् मुऩि वऩत्तै–तमिळ ऋषि (अगस्त्य) के वन में; ऊऱु इला–दुःखहीन; मुऩिवरऩ्–मुनिवर के; उवन्तु–खुशी से; मुऩ्वर–आवभगत करने पर; नण्णिऩाऩ्–गये। ४१६५

श्रीराम दस साल वहाँ रहे। बाद अपार मुनिपुंगवों की हिदायत के अनुसार अप्रतिम तमिळ ऋषि (अगस्त्य) के आश्रम गये। चिंताहीन मुनि-पुंगव ने आनंद के साथ उनका आवभगत किया। ४१६५

कुडङ्गैयिल् वारिदि यणैत्तुक् कॊण्डवऩ्
तडङ्गणाऩ् तऩ्ऩैयॆदिर् तळुविच् चावमुम्
कडुङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गवशऩ् दाऩुमत्
तिडम्बडु शुरिहैयुञ् जेर वीन्दऩऩ् 4166

कुटङ्कैयिल्–हथेली में (अंजलि में); वारिति–वारिधि को; अणैत्तुक् कॊण्टवऩ्–जिन्होंने समा लिया था; तट कणाऩ् तऩ्ऩै–उन्होंने विशालाक्ष श्रीराम का; ऎतिर् तळुवि–सामने से आलिंगन करके; चापमुम्–धनु और; कटुकणै–तेज बाणों से भरे; पुट्टिलुम्–तूणीरों को; कवचम् ताऩुम्–और कवच को; अ–उतने; तिटम् पटु–सुदृढ़; चुरिकैयुम्–छुरे; चेर–के साथ; ईन्तऩऩ्–प्रदान किये। ४१६६

अगस्त्य मुनि ने, जिन्होंने अंजलि में समुद्र को उठाकर आचमन किया था, विशालाक्ष श्रीराम को आलिंगन कर लिया। और उन्हें चाप, तेज शरों के (दो) तूणीर, कवच और सुदृढ़ छुरा —यह सब प्रदान किया। ४१६६

अप्पुऱत् तॆरुवॆयि तऱशॆक् कणणुऱाऩ्
तुप्पुऱच् चिवन्दवाय्त् तोहै तऩ्ऩुडऩ्
मॆय्प्पुहऴ्त् तम्बियुम् वीरऩ् ताऩुम्बोय्
मैप्पॊळि लुऱुपञ्ज वडियिऩ् वैहिऩार् 4167

अ पुऱत्तु–उसके बाद; तुप्पु उऱ–प्रवाल-सम; चिवन्त वाय्–लाल अधरों की; तोकै तऩ्ऩुटऩ्–कलापी-सी देवी के साथ; मॆय् पुकऴ्–सच्चे यशस्वी; तम्पियुम्–

कनिष्ठ सहोदर के साथ; वीरन्-वीर; तानुम्-भी; पोय्-जाकर; अँशमैयिन् अरचं-गीधों के राजा से; कण् उरा-भेंटकर; मै उरु-मेघाश्रय; पोळिल्-वनों से पूर्ण; पञ्चवटियिन्-पंचवटी में; वैकिनार्-ठहरे। ४१६७

उसके बाद प्रवालाधरा कलापी-सी सीताजी, सच्चे यशस्वी वीर लक्ष्मण और श्रीराम आगे गये और उन्होंने गीधों के राजा जटायु से भेंट की। फिर मेघाश्रय वनों से पूर्ण पंचवटी में जा ठहरे। ४१६७

पल्पह लिरनद पिन्रप् पादह वरक्कि तोन्रि
मॅल्लिय विडैयि नाळे वॅहुण्डुळि यिळैय वीरन्
अलहिय तिरुवैत् तेर्रि यवळुडैच् चॅवियु मूक्कुम्
मल्हिय मुलैयुङ् गॉय्दान् मरित्तवळ् करर्कुच् चॉन्नाळ् 4168

पल् पकल्-अनेक दिन; इरनृत पिन्रे-बीते, बाद; पातक अरक्कि-पातकिनी राक्षसी; तोन्रि-प्रगट होकर; मॅल्लिय इटैयिनाळे-पतली कमर वाली सीता से; वॅकुण्टुळि-द्वेष करने लगी तो; इळैय वीरन्-छोटे वीर; अल्किय-दुःखी हुई; तिरुवै-श्रीसीता को; तेर्रि-आश्वासन देकर; अवळ् उटै-उसके; चॅवियुम् मूक्कुम्-कान और नाक को; मल्किय-स्थूल; मुलैयुम्-स्तनों को; कॉय्तान्-काट दिया; अवळ्-उसने; मरित्तु-बाद; करर्कु-खर को; चॉन्नाळ्-बताया। ४१६८

वहाँ अनेक दिन बीते। वहीं राक्षसी शूर्पणखा आयी और उसने क्षीणकटि सीता से द्वेष किया। सीताजी दुःखी हुईं तो छोटे वीर लक्ष्मण ने उनको आश्वस्त करके उस राक्षसी के कानों, नाक और स्थूल स्तनों को काट दिया। वह जाकर खर से बोली। ४१६८

करनॊडु तिरिशि रावुङ् गडियतू डणनुङ् गान्दि
ऑरियुमून् रनले यॊप्पा रॅळुन्दुवॅञ् जेनै योडुम्
विरविन रैयन् शॆङ्गै विल्लिनै नोक्कु मुन्बोर्
ऑरितवळ् पञ्जि नक्का ररक्कियु मिलङ्गं पुक्कान् 4169

करनोटु-खर के साथ; तिरिचिरावुम्-त्रिशिरा और; कटिय-क्रूर; तूटणनुम्-दूषण; कान्ति-खौलकर; ऑरियुम्-जलती; मून्रु अनले ऑप्पार्-तीन अग्नियों के समान; ऍळुन्तु-उठकर; वॅम्-भयंकर; चेनैयोटुम्-सेना लेकर; विरविनर्-मिले आये; ऐयन्-प्रभु के; चॅं कै-लाल हाथ के; विल्लिनै-धनु को; नोक्कुम् मुन्पु-देखने से पहले; ऑरि-आग में; तवळ्-गिरी; पञ्चिन्-रूई के समान; तक्कार्-अवश्य हो गये; अरक्कियुम्-राक्षसी भी; इलङ्कै पुक्काळ्-लंका जा पहुँची। ४१६९

खर, त्रिशिरा और क्रूर दूषण तीनों त्रिदंड के समान मिलकर तीनों अग्नियों के समान आये। उनके साथ भयंकर विराट् सेना भी आयी। श्रीराम अपने सुन्दर धनु को निहारें (लड़ें) इसके पहले ही अग्निगत रूई के समान वे राक्षस मिट गये। बाद राक्षसी लंका पहुँची। ४१६९

इरुपदु तडक्कै यान्माट् टिशैत्तलु मॅळुन्दु पौङ्गि
ऑरुपदु तिशैयु मुट्क वञ्जह वुळैयौन् ऱेवित्
तरुपदञ् जमैन्द मुक्कोर् ऱावद वडिवङ् गॊण्डु
तिरुविनै निलत्तो डेनदित् तॆन्ऱिशै यिलङ्गै पुक्कान् 4170

इरुपतु तटक्कैयान् माट्टु–बीस बड़े-बड़े हाथों वाले रावण के पास; इचैत्तुलुम्–उसके कहते ही; पौङ्कि ऍऴुन्तु–खौल उठकर; ऑरु पतु–दसों; तिचैयुम्–दिशाओं को; उट्क–भयभीत करते हुए; वञ्चकम् उळै–मायामृग; ऑन्ऱु एवि–एक भेजकर; तरु पतम्–ऐन समय पर; चमैन्त–(तीन सिरों का) बना; मुक्कोल्–त्रिदण्डधारी; तापतन्–तपस्वी का; वटिव् कॊण्टु–वेश धरकर; तिरुविनै–श्री सीताजी को; निलत्तोटु एन्ति–भूमि के साथ उठाकर; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा में; इलङ्कै पुक्कान्–लंका पहुँचा। ४१७०

बीस भुजाओं वाले रावण के पास शूर्पणखा के शिकायत करने पर वह बौखला उठा। दशों दिशाओं में भय भरते हुए उसने एक मायामृग को भेजा। वह हरिण श्रीराम को बहका ले जाता रहा। मौक़ा पाकर त्रिदंडी संन्यासी का रूप धरकर रावण आया और सीता को भूमि के साथ उठा लेते हुए लंका पहुँचा। ४१७०

पोहिन्ऱ कालै येर्ऱ शडायुवैप् पॊरुदु वीट्टि
वेहिन्ऱ वुळ्ळत् ताळै वॆञ्जिऱै यदनिन् वैत्तान्
एहिन्ऱ वञ्ज मान्मा रीशऱ्कॊन् ऱिळव लोडु
पाहिन्ऱ कीर्त्ति यण्णल् तन्दैयैप् परिविन् कण्डान् 4171

पोकिन्ऱ कालै–जाते समय; एर्ऱ–सामने जो आया; चटायुवै–उस जटायु से; पॊरुतु–लड़कर; वीट्टि–संहार कर; वेकिन्ऱ–तप्त; उळ्ळत्ताळै–मन वाली सीताजी को; वॆम् चिऱै अतनिन्–कठोर कारा में; वैत्तान्–बंद रखा; पाकिन्ऱ–फैलते; कीर्त्ति अण्णल्–यश के स्वामी; एकिन्ऱ–बहका ले जानेवाले; वञ्चम्मान्–मायामृग के रूप में जो था उस; मारीचन् कॊन्ऱु–मारीच का हनन करके; इळवलोटु–लक्ष्मण के साथ; तन्तैयै–पिता (जटायु) को; परिविल्–प्यार के साथ; कण्टान्–मिले। ४१७१

जब वह देवी को अपहरण करके ले जा रहा था तब जटायु रोकने आया। रावण ने उसे काट गिराया। तप्त मनवाली सीता को कठोर कारा में रख दिया। उधर विस्तारशील यशस्वी श्रीराम ने माया-मृग के रूप में रहे मारीच को मार दिया जो कि उन्हें बहका ले जा रहा था। फिर वे लघुराज के साथ गये और पिता (-सम) जटायु को मिले। ४१७१

अन्नवन् तनक्कु वेण्डु मरुङ्गडन् मुऱैयि नार्ऱि
नन्नदल तननैत तेडित तॆन्दिशै ...

मन्निय कवन्दन् तन्नै युयिरोडु शाब माऱ्ऱित्
तन्नैये मऱप्पि लाद शवरिपू शनैयुङ् गोण्डान् 4172

अन्नवन् तनक्कु–उस जटायु के; वेण्डुम्–कर्तव्य; अरु कडन्–दाहकर्म आदि; मुऱैयिन् आऱ्ऱि–यथाक्रम पूरा करके; मल् नुतल् तन्नै–श्रेष्ठ भाल वाली को; तेडि–खोजते हुए; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा में; नडक्कुम् ऐयन्–जो गये वे श्रीराम; मन्निय–आ जो लगा उस; कवन्तन् तन्नै–कवंध को; उयिरोटु–प्राणों के साथ; चापम् माऱ्ऱि–शाप बदलकर (आगे गये और); तन्नै–उनको; मऱप्पु इलात–जो नहीं भूलती थीं; चवरि–उस शबरी की; पूचनैयुम्–पूजा को भी; कॊण्डान्–स्वीकार कर लिया। ४१७२

मृत जटायु का दाहकर्म यथाविधि संपन्न करके श्रीराम और लक्ष्मण सुन्दर भालवाली सीता की खोज में दक्षिण दिशा में गये। रास्ते में कबंध के प्राणों तथा उसके शाप का अंत किया। फिर श्रीराम ने शबरी का पूजा-सत्कार स्वीकार किया जो कि उन्हें कभी भूलती नहीं थी। ४१७२

आङ्गवळ् तन्दु शोल्ला लरुक्कन्मा महनै यण्मिप्
पाङ्गुऱ् नट्टू वालि परुवरल् कॆडुप्प लॆन्ना
ओङ्गिय मरमुम् वालि युरमुमू डुरुव वॆय्दिट्
टाङ्गवत् तनक्कुच् चॆल्व मरशोडु मरुळि तीन्दान् 4173

आङ्कु–वहाँ; अवळ् तनतु–उसके; चॊल्लाल्–कथनानुसार; अरुक्कन्–सूर्य के; मा मकनै–श्रेष्ठ पुत्र के; अण्मि–पास जाकर; पाङ्कुऱ्–उचित रीति से; नट्टु–मित्रता करके; वालि–वाली का (दिया); परुवरल्–संकट; कॆडुप्पल्–दूर करूंगा; ऎन्ना–कहकर; ओङ्किय मरमुम्–उन्नत (साल) वृक्षों; वालि उरमुम्–और वाली के वक्ष को; ऊडुरुव–भेदते हुए; ऎय्तिट्टु–बाण चलाकर; आङ्कु–वहाँ; अवन् तनक्कु–उसे; चॆल्वम्–राजधन; अरचोटुम्–शासन के साथ; अरुळिन्–कृपा से; ईन्तान्–दिया। ४१७३

तब उसने जो कहा, उस कथनानुसार वे सूर्य के उत्तम पुत्र के पास आये। उनसे उत्तम रीति से मित्रता बना ली। वादा किया कि वाली रूपी कंटक को निकाल दूंगा। फिर उन्होंने सातों ऊँचे साल वृक्षों और बाली के वक्ष को भेदते हुए शर चलाया और वचन के अनुसार सुग्रीव को राज्य-धन के साथ शासनाधिकार भी दिलाया। ४१७३

कालमा मारि नीङ्गक् कवयनो डिडबन् कान्दु
नीलन्मा मयिन्दन् शाम्बन् शदवलि पनश नोडु
वालिमा मैन्द नॆन्ऱिव् वानरत् तलैव रोडु
कूलवान् शेनै शूऴ वडन्दन तॆङ्गळ् कोमान् 4174

मा मारि कालम्–लंबा वर्षाकाल; नीङ्क–बीत गया; कवयनोटु–गवय के साथ; इटपन्–ऋषभ; कान्तुम्–क्रुद्ध; नीलम्–नील और; मा–बड़ा;

यिन्ततु–मैंद; चाम्पन्–जाम्बवान; चतवलि पनचन्–शतबली, पनस; नीट–
ोवृद्ध; वालि मा मैन्तत्–वाली का बड़ा पुत्र; अँन्ड्र–आदि; इव्वानरर्–ये
नर; तलैवरोटु–यूथपों के साथ; कूलम्–दल के दल; वान् चेर्त–श्रेष्ठ सेना के;
ऴ–घेरे आते; अँङ्कळ्–हमारे; कोमान्–राजा; अटैन्ततन्–उस (श्रीराम के
स) पहुँचे। ४१७४

फिर लंबी वर्षाऋतु बीती। हमारे राजा गवय, ऋषभ, क्रोधी नील
ड़ा मैंद, जाम्बवान, शतबली, पनस तथा बड़े यशस्वी वाली का महान
त्र अंगद आदि यूथपों और विपुल वानर-सेना के साथ प्रभु के पास
ाये। ४१७४

अँऴुबवु वॅळ्ळत् तुऱ्ऱ कुरक्कित मॅऴुन्दु पॉङ्गि
अऴुवनीर् वेलै यॅन्न वडैन्दुऴि यरुक्कन् मैन्दन्
तऴुविय तिशैहळ् तोऱुन् दनित्तनि यिरण्डु वॅळ्ळम्
पॉऴुदिऱै तडादु मीळप् पोक्कितन् तिरुवै नाड 4175

अँऴुपतु–सत्तर; वॅळ्ळत्तु उऱ्ऱ–वॅळ्ळम् के; कुरङ्कु इतम्–वानरगण;
पॉङ्कि अँऴुन्तु–उत्साह से उठकर; अऴुवम् नीर्–बड़े जल-विस्तार के; वेलै
अॅन्न–सागर के समान; अटैन्तुऴि–जब आये तब; अरुक्कन् मैन्तन्–सूर्यपुत्र ने;
तऴुविय–सब ओर लगी; तिचैकळ् तोऱुम्–सभी दिशाओं में; तिरुवै नाट–श्री (सीता)
को खोजने; तत्ति तति–अलग-अलग; इरण्टु वॅळ्ळम्–दो वॅळ्ळम्; पॉऴुतु–अवधि
ा; इऱै तटातु–कुछ भी उल्लंघन किये विना; मीळ–लौटने की आज्ञा से; पोक्कितन्–
भिजवाया। ४१७५

जब सत्तर 'वॅळ्ळम्' की सेना के वानर वीर उत्साह और कोप के साथ
विस्तृत जल-सागर के समान उठ आये तब सूर्यपुत्र सुग्रीव ने चारों दिशाओं
में श्रीसीतादेवी के अन्वेषण के कार्य में अलग-अलग दो-दो 'वॅळ्ळम्' नियत
करके भेजा। यह आज्ञा दी कि नियत अवधि का उल्लंघन न हो। ४१७५

तॅन्ऱिशै यिरण्डु वॅळ्ळच् जेनैयुम् वालि शेयुम्
वन्ऱिऱल् चाम्ब नोडु वाविन रेव नायेन्
कुन्ऱिडै यिलङ्गै पुक्कुत् तिरुविनैक् कुऱित्तु मीण्ड
पिन्ऱैवन् दळक्कर् वेलै पॅरुम्बडै यिरुत्त दन्ऱे 4176

इरण्टु वॅळ्ळम्–दो वॅळ्ळम्; चेतैयुम्–सेना के वीर; तॅन् तिचै–दक्षिण दिशा
में; वाविनर्–गये; वालि चेयुम्–वाली का पुत्र और; वल् तिऱल्–कठोर बलिष्ठ;
चाम्पतोटु–जाम्बवान ने; एव–मुझे प्रेरित किया; नायेन्–कुत्ता-सम मैं; कुन्ऱिटै–
महेंद्रपर्वत से; इलङ्कै पुक्कु–लंका जाकर; तिरुविनै–श्री को; कुऱित्तु–देखकर
जानकर; मीण्ड पिन्ऱै–वापस आया, बाद; वेलै पॅरु पटै–सागर-सम बड़ी सेना;
अळक्कर् ... –... के किनारे आकर; ... ४१७६

दक्षिण दिशा में दो 'वॅळ्ळम्' की सेना गयी, जिसके साथ वालीपुत्र और अतिबली जाम्बवान थे। उनके कहने से मैं महेंद्रपर्वत से उछलकर लंका पहुँचा और श्रीदेवी का समाचार लेकर लौट आया। बाद वानर-सेना-सागर सागरतीर पर आ ठहरा। ४१७६

अऱिविनुक् कऱिवु पोल्वान् वीडण नलङ्गऱ् ऱोळात्
ॲऱिपुयत् तरक्कन् तम्बि तिरुविनै विडुदि यन्ऱेल्
इऱुदियुऱ् ऱननित् वाणा ळॅनवव नुरैप्पच् चीऱिक्
कऱुवुऱप् पॅयर्न्दु पोन्दु करुणैयान् शरणम् बूण्डान् 4177

अऱिविन्क्कु-ज्ञान के; अऱिवु-जो ज्ञान के; पोल्वान्-समान है; अलङ्कल् तोळान्-मालाधारी कंधोंवाला; चॅऱि पुयत्तु-घने हाथों वाले; अरक्कन्-राक्षस का; तम्पि-छोटा भाई; वीडणन्-विभीषण; तिरुविनै-श्रीदेवी को; विटुति-छोड़ दो; अन्ऱेल्-नहीं तो; निन्-तुम्हारी; वाळ् नाळ्-आयु के दिन; इऱुति-पूरे; उऱ्ऱन-हो गये; ऍन-ऐसा बोला; अवन्-वह (रावण); चीऱि उरैप्प-गुस्सा कर बोला तो; कऱुवु उऱ-वैर करके; पॅयर्न्तु-अलग हट; पोन्तु-जाकर; करुणैयान्-दयालु के; चरणम्-चरणों को; पूण्टान्-धारण कर लिया (विभीषण ने)। ४१७७

उधर ज्ञानी के ज्ञान के समान रहनेवाला मालाधारी कंधों वाला अधिक संख्या की भुजाओं वाले रावण का छोटा भाई विभीषण जो था, उसने अपने बड़े भाई को समझाया कि श्री को छोड़ दो। नहीं तो तुम्हारी आयु का अन्त हो जायगा। पर रावण क्रोध से बोला तो उसके साथ वैर ठानकर विभीषण दयालु श्रीराम की शरण में आ गया। ४१७७

आङ्गवऱ् कवय नल्हि यरशोडु मुडियु मीन्दु
पाङ्गिनाल् वरुणन् तन्नै यऴैत्तिडप् पदैप्पि लादु
ताङ्गिनन् शिऱिदु पोदु तामरै नयनञ् जेप्प
ओङ्गुनी रेऴु मन्ना नुडलमुम् वॅन्द वन्ऱे 4178

आङ्कु-तब; अवऱ्कु-उसे; अवयम्-अभय; नल्कि-प्रदान करके; अरचोटु-राज्य और; मुटियुम्-मुकुट; ईन्तु-देकर; वरुणन् तन्नै-वरुण को; अऴैत्तिट-निमंत्रित करने; पतैप्पु इलातु-उतावली पाङ्किनाल्-उचित रीति से; बिना; चिऱितु पोतु-कुछ समय तक; ताङ्किनान्-(दर्भशयन में) ठहरे; के तामरै नयनम्-कमल-से नेत्र; चेप्प-लाल हुए; अन्ऱे-तभी; ओङ्कुम्-तरंगें जिनमें ऊँची उठतीं; नीर् एऴुम्-वे सातों समुद्र और; अन्नान्-उस (वरुण) का; उटलमुम्-शरीर; वॅन्त-जल गये। ४१७८

तब श्रीराम ने उसे अभयदान के साथ लंका का राज्य दिया और मुकुट धारण करा दिया। फिर वरुण को निमंत्रित करने की इच्छा से दर्भशयन में कुछ समय रहे। (वह नहीं आया तो) प्रभु की आँखें लाल

हुई ही थीं कि उधर उत्तुंग तरंगोंवाले सातों समुद्र उस वरुण के शरीर के साथ जल गये। ४१७८

मर्रव नवय मॆन्न मलर्च्चरण अडैन्द वेलै
वॆर्रिवा नरर्हळ् पॊङ्गि वॆर्पिनाल् वेलै तट्टल्
मुर्रुर नन्गि यर्रि मॊय्यॊळि यिलङ्गै पुक्कुप्
पर्रिनर् शुर्रि यार्त्तार् वानवर् पयङ्गळ् तीर्न्दार् 4179

मर्रु–बाद; अवन्–उसके; अवयम्–अभय; ऍन्न–(माँगने) कहने पर; मलर् चरण्–कमल-चरण में; अटैन्त वेलै–आये समय; वॆर्रि–विजयी; वानरर्कळ्–वानरों ने; पॊङ्कि–उत्साह के साथ; वॆर्पिनाल्–पर्वतों से; वेलै तट्टल्–समुद्र पर बांध बनाना; नन्कु–अच्छी तरह; मुर्रुर–पूरा; इयर्रि–करके; मॊय् ऑळि–भरे प्रकाशमय; इलङ्कै पुक्कु–लंका में घुसकर; चुर्रि–चारों ओर; पर्रिनर्–घेरकर; आर्त्तार्–नर्दन किया; वानवर्–देव; पयङ्कळ्–भय से; तीर्न्तार्–मुक्त हुए। ४१७९

उसके बाद वरुण अभयदान माँगता हुआ आया और भगवान के कमल-चरणों में लग लगा। तो विजयी वानर उत्साह के साथ उमंगित हुए। बहुत सुचारु रूप से समुद्र पर सेतुबंधन संपन्न करके प्रकाशमय लंका में गये और उसे घेरकर भीम-युद्ध ललकार-नाद करने लगे। देव भयमुक्त हुए। ४१७९

मलैयिनै यॆडुत्त तोळ् मदमलै तिळैत्त मार्बुम्
तलैयॊरु पत्तुम् जिन्दित् तम्बितन् ताळुन् दोळुम्
कॊलैत्तॊळि लरक्क रायोर् कुलत्तॊडु निलत्तु वीळच्
चिलैयिनै वळैवित् तैयन् तेवर्ह ळिडुक्कण् तीर्त्तान् 4180

ऐयन्–प्रभु श्रीराम ने; मलैयिनै–(कैलास) पर्वत को; ऍडुत्त–जिन्होंने उठाया; तोळुम्–वे कंधे; मतम्मलै–मत्त, पर्वतोपम गजों से; तिळैत्त–गुंथे; मार्पुम्–वक्ष को; तलै–सिर; ऑरु पत्तुम्–एक दस को; तम्पि तन्–उसके छोटे भाई के; तोळुम्–कंधों और; ताळुम्–पैरों को; कॊलै तॊळिल्–घातक काम; अरक्कर्–करनेवाले राक्षस; आयोर्–जो थे उन्हें; कुलत्तॊडुम्–कुल के साथ; चिन्ति–मारकर; निलत्तु वीळ–भूमि पर गिराते; चिलैयिनै–धनु को; वळैवित्तु–झुकाकर; तेवर्कळ्–देवों का; इटुक्कण्–संकट; तीर्त्तान्–मिटाया। ४१८०

श्रीराम ने धनुष झुकाकर रावण के कैलासपर्वतोत्पाटक हाथों, मत्त-दिग्गज-विद्ध वक्ष, और दसों सिरों को, उसके भाई के हाथों और पैरों को और सकुल ख़ूनी राक्षसों को मारकर भूमि पर गिराया और देवों का संकट मिटाया। ४१८०

इलक्कुवत् पहळि यॊन्ड्रा लिन्दिर शित्तॆन् ड्रोदुम्
विलक्करु वलत्ति नान् मिळैञरुङ् गिळैयुम् वीळ्न्दार्
मलक्कमुण् डुळ्ळुन् देवर् मलर्मळै तूवि यार्त्तन्
ड्रुलक्कुनर् कुळ्क्कळ् तोरु मुडर्कुरै याडल् कण्डार् 4181

इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; पकळि ऑन्ड्राल्–एक शर से; इन्तिरचित्तु–'इन्द्रजित्'; ऍन्ड्र–ऐसा; ओदुम्–प्रकीर्तित; विलक्क अरु–अवार्य; वलत्तिनानुम् वलवाला; इळैञरम्–युवा वीर; किळैयुम्–बन्धु-बान्धव; वीळ्न्तार–मरे गिरे; मलक्कम्–अस्त-व्यस्तता; उण्डु–(खाकर) पाकर; उळ्ळुम् तेवर्–व्यग्र रहे देवों ने; मलर् मळै तूवि–पुष्प-वर्षा करके; आर्त्तु–नर्दन करके; अन्ड्र–उन दिनों में; उलक्कुनर्–मृतकों के; कुळ्क्कळ् तोरुम्–दल-दल में; उटल् कुरै–कबंधों का; आटल् कण्टार्–नाचना देखा। ४१८१

श्रीलक्ष्मण के एक ही शर से प्रकीर्तित इंद्रजित्, उसके जवान वीर और बंधु मरकर गिर गये। क्षुब्ध तथा व्यग्र देवों ने पुष्पवर्षा की। और आनंद नर्दन-किया। उन दिनों उन्होंने मृतकों के दल-दल में कबंधों को नाचता देखा। ४१८१

तेवरु मुनिवर् तामुञ् जित्तरुन् वॆरिवै मारुम्
मूवहै युलहु ळोरु मुरैमुरै तॊळुदु मॊय्प्पप्
पूवपोल् निरत्ति नानुम् वीडणप् पुलवर् कोमार्कु
यावैयु मियम्बि माण्डार्क् कियर्रुदि कडन्ग ळॆन्ड्रान् 4182

तेवरुम्–देवों; मुनिवर् तामुम्–मुनियों; चित्तरुम्–सिद्धों; तॆरिवै मारुम्–स्त्रियों और; मू वकै उलकुळोरुम्–त्रिविध लोकवासियों के; मुरै मुरै–बारी-बारी से; तॊळुतु मॊय्प्प–स्तुति कर घेरते; पूवै पू–अतसी पुष्प के; निरत्तिनानुम्–रंगवाले श्रीराम; पुलवर् कोमान्–ज्ञानियों में राजा; वीटणर्कु–विभीषण से; यावैयुम् इयम्पि–सभी बातें कहकर; माण्टार्क्कु–मृतकों का; कटन्कळ्–अपर कर्म; इयर्रुति–करो; ऍन्ड्रान्–कहा। ४१८२

देवगण, मुनिवृंद, सिद्ध और उनकी पत्नियाँ बारी-बारी से स्तुति करते आकर घेर गयीं। तब अतसीपुष्पवर्ण अयोध्याधिपति ने ज्ञानियों में श्रेष्ठ विभीषण को समझा-बुझाकर कहा कि मृतकों का अपर कर्म करो। ४१८२

नान्मुहत् विडैयै यूरु नारियोर् पाहत् तण्णल्
मान्मुहत् मुदला युळ्ळ वानवर् तॊळुदु पोर्र
ऊन्मुहङ् गॊळ्वु वेला युम्बर्ना यहियैच् चोर्रित्
तेन्मुह मलरुन् दारा नॆरिशीलच् चीर्रन् दीर्न्दान् 4183

ऊन् मुकम्–मांस, मुख में; कॊळ्वु वेलाय्–लगे रहे ऐसे भाल वाले; तेन् मुकम्–... ; मलरम्–पुष्पित; ताराय्–माला वाले; नान् मुकन्–चतुर्मुख; विटैयै–...

ऋषभ पर; ऊरुम्-सवार; नारियोर् पाकत्तु-अर्धांगी; अण्णल्-भगवान और; मान् मुकत्-हरिण-मुख; मुतलाय् उळ्ळ-मय आदि जो रहे; वानवर्-उन देवों के; तोळ्तु पोऱ्ऱ-स्तुति तथा बधाई देते; उम्पर् नायकियै-देवों की ईश्वरी से; चीऱ्ऱि-कुपित होकर; ॲरि चॊल-अग्नि के कहने से; चीऱ्ऱम् तीर्न्तान्-कोप से शांत हुए। ४१८३

हे मांसलिप्त भालेवाले ! मधुयुक्त पुष्पमालाधारी श्रीराम की जब चतुर्मुख, वृषभवाहन अर्धनारीश्वर और हरिणमुख मय आदि स्तुति कर रहे थे, तब श्रीराम ने देवों की ईश्वरी सीता पर गुस्सा किया। तब अग्नि ने देवी की पवित्रता के संबंध में कहा तो वे कोप छोड़कर शांत हुए। ४१८३

मॆय्यित्तुक् कुयिरै यीन्द वेन्दर्कोन् विमानत् तॆय्द
ऐयनु मिळैय कोवु मन्नमु मडियिल् वीऴ्क्
कॆयिनाऱ् पॊरुन्दप् पुल्लिक् कण्णिनीर्क् कलश माट्टिच्
चॆय्यवट् करुळ्ह वॆन्ऱान् तिरुविना यहनुङ् गॊण्डान् 4184

मॆय्यित्तुक्कु-सत्य के लिए; उयिरै-जीवन को; ईन्त-जिन्होंने दिया; वेन्तर् कोन्-वे चक्रवर्ती; विमानत्तु-विमान पर; ॲय्त-आये तो; ऐयनुम्-प्रभु और; इळैय कोवुम्-लघुराज और; अन्नमुम्-हंस-सी देवी; अटियिल् वीऴ-चरणों में गिरे; कैयिनाल्-हाथों से; पॊरुन्त-कसकर; पुल्लि-आलिगन करके; कण्णिन् कलचम् नीर्-अक्ष-कलश-जल से; आट्टि-मज्जन कराके; चॆय्यवट्कु-श्रीदेवी पर; अरुळ्क-कृपा करो; ॲन्ऱान्-बोले; तिरुविन्-लक्ष्मी के; नायकनुम्-पति भी; कॊण्टान्-सम्मत हुए। ४१८४

तब सत्य के लिए जिन्होंने अपने प्राणों की बलि दी थी वे दशरथ विमान पर सवार हो पधारे। श्रीराम, लघुराज और हंस-सी देवी ने उनके चरणों पर गिरकर दंडवत् की। दशरथ ने इनका खूब आलिंगन किया और अक्ष-कलश-जल से नहला दिया। उन्होंने श्रीराम से कहा कि सुंदरी श्रीसीता पर कृपा रखो। श्रियःपति ने भी सम्मति दिला दी। ४१८४

ॲन्नैनन् करुणै तन्ना लीन्ड्रॆडुत् तिनितु पेणुम्
अन्नैयु महनु मुन्बो लाहॆन वरुळि नीन्दु
मन्नवन् पोय पिन्ऱै वानरम् वाऴ्वु कूरप्
पॊन्नॆंडु नाट्टि नुळ्ळार् वरम्बल वऴङ्गिप् पोनार् 4185

ॲन्नै-मुझे; नल् करुणै तन्नाल्-अच्छी दया से; ईन्ऱु ॲटुत्तु-जना लेकर; इनितु-सुख से; पेणुम्-पालनेवाली; अन्नैयुम्-देवी को; मकनुम्-और पुत्र (भरत) को; मुन्पोल्-पूर्ववत्; आक-बना लें; ॲन-ऐसा प्रार्थना करने पर; अरुळिन् ईन्तु-कृपा से सम्मति देकर; मन्नवन्-राजा के; पोय पिन्ऱै-जाने के

वानरम्–और वानर; वाऴ्वु कूर–अच्छा जीवन पावें; वरम्–यह वर; वऴङ्कि–देकर; पोनार्–गये। ४१८५

'मेरी दयामयी जननी, सुख से पालनेवाली कैकेयी को और उनके पुत्र को पूर्ववत् स्थान दिला दें।' —यह वर श्रीराम ने माँगा तो दशरथ ने कृपा करके दिया। फिर वे चले गये। उसके बाद देव वानरों को यह वर देकर चले गये कि उनका जीवन सदा सुख-सुविधा-पूर्वक रहे। ४१८५

वॆळ्ळमो रेऴ् पत्तु विलङ्गरुम् वीर राहि
उळ्ळव ररुबत् तेऴु कोडियू मॊऱ्ऱै याऴि
वळ्ळरन् महन् मुळ्ळ महिऴ्वुऱ विमान मीन्दान्
अॆळ्ळलि लाद कीर्त्ति वीडण निलङ्गै वेन्दन् 4186

अॆळ्ळल् इलात–अनिंद्य; कीर्त्ति–यशस्वी; इलङ्कै वेन्तन्–लंकापति ने; एऴु पत्तु–सत्तर; वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम्'; विलङ्करुम्–वानर; वीरर् आकि–(राक्षस) वीर; अऱु पत्तु एऴु कोटियुम्–सड़सठ करोड़ और; ऒऱ्ऱै आऴि–एक-चक्र-रथी; वळ्ळल् तन् मकनुम्–भगवान सूर्य के पुत्र; उळ्ळम्–मन में; मकिऴ्वुऱ–संतोष करें, ऐसा; विमानम्–पुष्पक यान; ईन्तान्–दिया। ४१८६

अनिंद्य यशस्वी लंकापति ने पुष्पकविमान दिया, जिससे सत्तर सहस्र वानर वीर, सड़सठ करोड़ राक्षस वीर और एकचक्ररथ के स्वामी सूर्य के पुत्र मुदित हुए। ४१८६

आरियन् पिन्नै निन्नै यन्बिनाल् निनैन्दु कादल्
शूरियन् महनुन् दॊल्लैत् तुणैवरु मिलङ्गै वेन्दुम्
पेरियर् पडैयुञ् जूऴप् पॆण्णिनुक् करशि योडुम्
शीरिय विमानत् तेऱिप् परत्तुव निरुक्कै शेर्न्दान् 4187

आरियन्–आर्य श्रीराम; पिन्नै–बाद; निन्नै–आपका; अन्पिनाल्–प्यार से; निनैन्तु–स्मरण करके; चूरियन्–सूर्य के; कातल् मकनुम्–प्यारे पुत्र; तॊल्लै–और पुरातन; तुणैवरुम्–साथी और; इलङ्कै वेन्तुम्–लंकाधिपति; पेर् इयल्–उत्कृष्ट; पटैयुम्–सेना के; चूऴ–घेरे रहते; पॆण्णिनुक्कु–स्त्रियों में; अरचियोडुम्–रानी के साथ; चीरिय–बहुत श्रेष्ठ; विमानत्तु एऱि–विमान पर चढ़कर; परत्तुवन्–भरद्वाज के; इरुक्कै–आश्रम; चेर्न्तान्–आये। ४१८७

श्रीराम प्यार के साथ आपसे मिलने की त्वरा से सूर्यनंदन सुग्रीव, पुराने संगी-साथी, लंकाधिपति और उत्कृष्ट सेना को चारों ओर रहने देकर उनके मध्य स्त्रियों की रानी सीताजी के साथ विमान पर चढ़े और भरद्वाजाश्रम पधारे। ४१८७

अऩ्बिऩा लॆऩ्ऩै निऩ्पा लाऴियुङ् गाट्टि यातॄर
तुऩ्बॆलाऩ् दुडैत्ति यॆऩ्ऱु तुरन्दऩऩ् तोऩ्ऱल् लॆऩ्ऱु
मुऩ्बिऩा लियऩ्ऱ वॆल्ला मॊऴिन्दऩऩ् मुदुनीर् तावि
अऩ्बिऩा लिलङ्गै मुऱ्ऱु मॆरिक्कुण वाह वैत्तोऩ् 4188

तोऩ्ऱल्–श्री राजाराम ने; अऩ्पिऩाल्–प्यार के साथ; ऎऩ्ऩै–मुझे; निऩ्पाल्–आपके पास; आऴियुम् काट्टि–मुँदरी दिखा; आऩ्ऱ–गम्भीर; तुऩ्पु ऎलाम्–दुःख सब; तुटैत्ति–पोंछ आओ; ऎऩ्ऱु–ऐसा कहकर; तुरन्तऩऩ्–भेजा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; मुऩ्पिऩाल्–पहले; इयऩ्ऱ–जो घटा; ऎल्लाम्–वह सारा; मॊऴिन्तऩऩ्–कहा; मुतु नीर्–प्राचीन समुद्र; तावि–लाँघकर; अऩ्पिऩाल्–प्यार से; इलङ्कै मुऱ्ऱुम्–सारी लंका को; ऎरिक्कु उणवाक–अग्नि का भोजन; वैत्तोऩ्–बनाया (जिसने था) उसने। ४१८८

श्रीराजाराम ने आपसे प्रेम के कारण मुझे यह कहकर भेजा कि अँगूठी दिखाओ और भरत का गंभीर दुःख पोंछ दो। इस भाँति जो श्रीराम-भक्ति के वश में हो पुराना समुद्र लाँघकर, लंका गया और जिसने अग्नि का भोजन बनाया था, उस हनुमान ने पूर्व घटित घटनाएँ बतायीं। ४१८८

कालिऩ्मा मदलै शॊल्लप् परदऩुङ् गण्णीर् शोर
वेलिमा मदिल्हळ् शूऴ् मिलङ्गैयिल् वेट्टङ् गॊण्ड
नीलमा मुहिल्पिऩ् पोऩा ऩॊरुवऩा निऩ्ऱु नैवेऩ्
पोलुमा लिवैहळ् केट्पेऩ् पुहऴुडैत् तडिमै मऩ्ऩो 4189

कालिऩ्–पवन के; मा मतलै–श्रेष्ठ पुत्र के; चॊल्ल–कहने पर; परतऩुम्–भरत; कण्णीर् चोर–आँसू बहाते हुए; ऒरुवऩ्–एक (भाई); मा मतिल्कळ्–बड़े प्राचीरों की; वेलि चूऴुम्–दीवारों की गिरी; इलङ्कैयिल्–लंका में; वेट्टम् कॊण्ट–शिकार करनेवाले; नीलम्–नीले; मा मुकिल्–बड़े मेघ-सम श्रीराम के; पिऩ्–अनुसरण में; पोऩाऩ्–गया था; नाऩ्–मैं; निऩ्ऱु–यहीं रहकर; नैवेऩ्–लटता हूँ; इवैकळ्–ये भी; केट्पेऩ् पोलुम्–सुनूँगा शायद; अटिमै–मेरी दासता; पुकऴ्–यश से; उटैत्तु–युक्त अवश्य है। ४१८९

पवनपुत्र की बातें सुनकर भरत ने अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए अपनी व्यथा जतायी। 'एक भाई है जो प्राचीरवलयित लंका में शिकार खेलने गये नीलमेघ-सदृश श्रीराम का अनुसरण करता गया। मैं भी एक छोटा भाई हूँ, जिसे यहीं रहकर घुलना पड़ा है। मुझे यह सब सुनने का ही सौभाग्य प्राप्त है शायद! हा! दासता मेरी बड़े यश के योग्य रही!। ४१८९

ऎऩ्ऱव ऩिरङ्गि येङ्गि यिरुकणु मरुवि शोर

चॆन्ड्रन् निरुळि नूडु शॆरिपुनर् कङ्गै शेर्न्दान्
कुन्ऱितै वलञ्जॆय् तेरोन् कुणकडर् रोन्ऱु मुन्नर् 4190

अॆन्ऱु–ऐसा कहकर; अवन्–वे भरत; इरङ्कि एङ्कि–दुःखी होकर तरसकर; इरु कणुम्–दोनों आँखों से; अरुवि चोर–नदी-सी बहाते हुए; वल् तिऱल्–कठोर बली; अनुमन्–हनुमान का; चॆङ्कै–सुन्दर हाथ; वलम् कैयाल्–दाहिने हाथ से; पऱ्ऱि–पकड़कर; कालिल्–पैदल; चॆन्ऱनन्–गये; कुन्ऱितै–मेरु पर्वत को; वलम् चॆय्–परिक्रमा करनेवाले; तेरोन्–रथी; कुणक्कु कटल्–पूर्वी समुद्र में; तोन्ऱुम् मुन्नर्–प्रगट हो, उसके पहले; इरुळिन् ऊटु–अँधेरे में ही; पुनल्–जल से; चॆऱि–पूर्ण; कङ्कै–गंगा पर; चेर्न्तान्–आये। ४१९०

इस भाँति भरत दुःखी व व्यग्र होकर दोनों आँखों से आँसू बहाते हुए अतिबली हनुमान के सुंदर हाथ को दाहिने हाथ से पकड़े पैदल चले। मेरु पर्वत की परिक्रमा करनेवाले रथ के रथी सूर्य के पूर्वी समुद्र में उग आने के पहले ही अँधेरे में चलकर जलपूर्ण गंगा के किनारे पहुँच गये। ४१९०

इरावणन् वेट्टम् बोय्मीण् डॆम्बिरान् योत्ति यॆय्दित्
तरादल महळुम् बूविऱ् ऱैयलु महिऴ्च् चूडुम्
अरावुपॊन् मौलिक् केय्न्द शिहामणि कुणपा लण्णल्
विरावुऱ वॆडुत्ता लॆन्न वॆय्यव नुदयञ् जॆय्दान् 4191

अॆम्पिरान्–हमारे नाथ; इरावणन्–रावण के; वेट्टम् पोय्–शिकार के लिए जाकर; मीण्टु–लौटकर; अयोत्ति–अयोध्या; अॆय्ति–आकर; तरातल मकळुम्–भूमिदेवी और; पूविल् तैयलुम्–कमलादेवी; मकिऴ–दोनों के मुदित होते; चूटुम्–धारण जो करेंगे; अरावुम्–तराशे गये; पॊन्–स्वर्ण के; मौलिक्कु–किरीट के; एयन्त–योग्य और; चिकामणि–सिर पर धारण करने योग्य श्रेष्ठ रत्न; कुणक्कु पाल्–पूर्व दिशा के; अण्णल्–पालक इन्द्र ने; विरावु उऱ–चुनकर युक्त हो ऐसा; अॆटुत्ताल् अॆन्न–ले लिया हो, ऐसा; वॆय्यवन्–सूर्य; उतयम् चॆय्तान्–उदित हुआ। ४१९१

हमारे प्रभु रावण के शिकार के लिए गये थे और लौट आ गये। अब भूदेवी और कमलादेवी को मोद में डालते हुए मुकुट धारण करने वाले थे। तदर्थ खूब तराशकर चमकदार किये गये स्वर्ण का मुकुट बना था। उसके योग्य सिर पर धारणार्थ एक महान रत्न की आवश्यकता थी। मानो पूरब के दिग्पाल इंद्र उससे मेल खानेवाला रत्न ले आये हों वैसा लगा सूर्य। ४१९१

कालैवन् दिरुत्त पित्तरक् कडन्मुरै कमलक् कण्णन्
कोलनीळ् कऴलह ळेत्तिक् कुरक्किनत् तरशै नोक्किच्

चालवुङ् गलैहळ् वल्लोय् तवरुण्डु पोलुम् वाय्मै
मूलमे युणरि नुन्ऱन् मौऴिक्कॅदिर् मौऴियु मुण्डो 4192

कालै वन्तु–सवेरा होकर; कटन् मुऱै–संध्या-वंदन आदि आह्निक; इऱुत्त
न्ऱ्तर्–पूरा करने के बाद; कमलम् कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम की; कोलम्–सुन्दर;
ळ्–श्रेष्ठ; कऴल्कळ्–पादुकाओं का; एत्ति–पूजन करके; कुरङ्कु इनत्तु–
ानरकुल के; अरचै नोक्कि–पति को देखकर; चालवुम्–बहुत; कलैकळ्–शास्त्रों
; वल्लोय्–निपुण; वाय्मै–तुम्हारे वचन में; तवऱु–गलती; उण्ट पोलुम्–
ोगी शायद; मूलमे–आदि से; उणरिन्–देखें तो; उन्तन्–तुम्हारे; मौऴिक्कु–
चन का; ऍतिर् मौऴियुम्–उत्तर-वचन भी, उण्टो–होगा क्या। ४१९२

सवेरा होने पर भरत ने आह्निक अनुष्ठान पूरा किया। फिर कमलाक्ष श्रीराम की सुंदर तथा सम्मानित पादुकाओं का पूजन किया। पश्चात् वानरयूथप हनुमान से पूछा कि हे बहुशास्त्र-निपुण! तुम्हारे वचन में कोई गलती है शायद! आदि से देखें तो तुम्हारे वचन की अन्यथा की संभावना होगी क्या? । ४१९२

ऍऴुबदु वॆळ्ळञ् जेनै वानर रिलङ्गै वेन्दन्
मुऴुमुदऱ् चेनै वॆळ्ळङ् गणक्किल मुडुहिऱ् ऱॆन्ऱाल्
अऴवनीर् वेलै यन्न वरवमिन् ऱाह वऱ्ऱो
विऴुमिदॆम् बिरात्वन् दालॆन् ऱुरैत्तदु वीर वॆन्ऱात् 4193

वीर–वीर; ऍऴुपतु वॆळ्ळम्–सत्तर वॆळ्ळम्; वानरर् चेनै–वानर-सेना;
इलङ्कै वेन्तन्–लंकापति की; मुऴु मुतल्–बहुत अधिक; चेनै वॆळ्ळम्–सेना-सागर;
गणक्कु इल–असंख्यक; मुटुकिऩ्ऱु–तेज आती; ऍन्ऱाल्–तो; अऴवम् नीर्–गहरे
जल के; वेलै अन्न–सागर-सम; अरवम् इन्ऱु–शब्द आज; आक वऱ्ऱो–हो न
रहेगा क्या; ऍम्पिरान्–हमारे नायक; वन्तान्–पधारे; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्ततु–
जो कहा; विऴुमितु–बहुत सुन्दर है; ऍन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१९३

वीर! सत्तर 'वॆळ्ळम्' की वानर-सेना और लंकापति की विपुल सेना दोनों अपार तेज़ी से आती रहें तो गंभीर सागर के समान शोर उठता नहीं होगा क्या? (यह तो सुनाई देता। इसलिए) तुमने जो कहा कि हमारे प्रभु आ रहे हैं, वह बहुत ही सुंदर लगता है! भरत ने शंका के साथ ताने के स्वर में कहा। ४१९३

ओशनै यिरण्डुण् डन्ऱे परत्तुव नुऱैयुञ् जोलै
वोशुतॆण् डिरैयिऱ् ऱाय वॆळ्ळमो रेऴु पत्तुम्
मूशिय पऴुव मिङ्ङन् किडप्पवो मुरऱ्ऱ लिन्ऱिप्
पेशिय दमैयु नङ्गो नॆङ्गुळन् पॅरुम वॆन्ऱान् 4194

पॅरुम्–अभिनंदनीय; परत्तुवन्–भरद्वाज का; उऱैयुम् चोलै–आश्रम;

इरण्टु–दो; ओचत्तै उण्टु–योजन है; वीच्–लहरानेवाली; तॆळ्–स्वच्छ; तिरैयिऱ्‌ऱु–लहरोंवाले समुद्र के समान; आय–रहनेवाले; ओर्–एक; वॆळ्ळम् एऴु पत्तुम्–सत्तर वॆळ्ळम्; मूचिय–जिसमें भरे रहते हैं; पऴुवम्–वह उपवन; मुरऱ्‌ऱल् इन्ऱि–विना शोर के; इङ्ङन् किटप्पतो–इस तरह रहे; पेचियतु–तुम जो बोले; अमैयुम्–जचेगा वह; नम् कोन्–हमारे प्रभु; ऎङ्कु–कहाँ; उळान्–हैं; ऎन्ऱान्–पूछा भरत ने। ४१६४

भरत ने अपने अविश्वास के स्वर में आगे कहा कि हे मान्य मारुति ! भरद्वाजाश्रम दो ही योजन पर है। तरंगोद्वेलित तोयनिधि-सम सत्तर 'वॆळ्ळम्' की वानर-सेना तथा लंकाधिपति की विपुल सेना उस आश्रम में रहती है। उस स्थिति में उस आश्रम से कुछ भी शोर नहीं आता। क्या वह ऐसा रह सकता है ? तुम्हारा कथन बड़ा युक्त है ! कहो, हमारे प्रभु हैं कहाँ ? । ४१९४

परदन्ः(ह्) दुरैत्त लोडुम् बणिन्दुमा रुदियुञ् जीर्शाल्
विरदमा तवत्तु मिक्कोय् विण्णवर् तम्मै वेण्डि
वरदन् ऱ्ळित्त वन्द वरत्तिनाल् मलरुन् देनुम्
शरदमे मान्दि मान्दित् तुयिन्ऱदु तानै यॆल्लाम् 4195

परतन्–भरत के; अ.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहते ही; मारुतियुम्–मारुति; पणिन्तु–विनीत होकर; चीर्चाल्–श्रेष्ठतायुक्त; विरतम्–व्रत के रूप में; मातवत्तु–तपस्या में; मिक्कोय्–बढ़े हुए; वरतन्–वरद भरद्वाज; विण्णवर् तम्मै–देवों से; वेण्टि–प्रार्थना करके; अन्ऱु अळिप्प–तब दिये गये; अन्त वरत्तिनाल्–उस वर से; वन्त–जो आये; मलरुम्–उन पुष्पों और; तेनुम्–मधु को; मान्ति मान्ति–पी-पीकर; तानै ऎल्लाम्–सारी सेना; तुयिन्ऱतु–सो गयी; चरतम्–सच। ४१६५

जब भरत ने ऐसा कहा तो हनुमान ने विनीत होकर कहा कि हे महाव्रत तपस्वी ! वरद भरद्वाज ने देवों से प्रार्थना की और देवों ने वर दिया। उसके फलस्वरूप पुष्प और मधु जो मिले उन्हें खा-पीकर सारी सेना सो गयी है। हाँ, सच ! । ४१९५

वानवर् कॊडुक्क वन्द वरत्तिनाल् मदुब मूशुम्
तेनॊडु किऴङ्गुङ् गायुङ् गनिहळुम् बिऱवुञ् जीर्त्तुक्
कानहम् बॊलिद लाले कविक्कुल मवऱ्‌ऱै मान्दि
आनन मलर्न्द दिल्लै याहुनी तुयर लॆन्दाय् 4196

ऎन्ताय्–मेरे धाता; वानवर्–देवों के; कॊटुक्क वन्त–देने से प्राप्त; वरत्तिनाल्–वर से; कानकम्–वन में; मतुपम् मूचुम्–मधुप-मंडरित; तेनॊटु–मधु और; किऴङ्कुम्–कंद; कायुम्–तरकारी; कनिकळुम्–फल; पिऱवुम्–और अन्य; चीर्त्तु–विशेष रूप से; पॊलितलाले–रहते हैं, इसलिए; कवि कुलम्–

नरवृन्द; अवट्रै–उन्हें; मान्ति–खा-पीकर; आननम्–मुख; मलर्न्ततु–
लते; इल्लै आकुम्–नहीं हैं; नी–आप; तुयरल्–दुःखी न हों। ४१९६

मेरे धाता ! देवों के वर से वन में मधुपमंडरित मधु, कंद, मूल, फल
ौर अन्य वन्यपदार्थ बहुतायत से पाये जाने लगे तो वानरवृंद उन्हें
ुगतकर मुख नहीं खोल पाते । ४१९६

इत्तियोरु कणत्ति नॆङ्गो नॆळुन्दरुळ् तन्मै यीण्डुप्
पत्तिवरुङ् गण्णि नीये पार्त्तियॆन् ऱुरैत्ता निप्पाल्
मुत्तितत्त दिडत्तु वन्द मुळरियङ् गण्णत् वण्णक्
कुत्तिशिलैक् कुरिशिल् शॆय्द दिट्रॆन्क् कुणिक्क लुट्राम् 4197

इत्ति–अब; ऑरु कणत्तिल्–एक क्षण में; ऍङ्कोत्–हमारे राजा; ऍळुन्तरुळ्
तन्मै–पधारते, यह हाल; ईण्टु–यहाँ; पत्तिवरुम्–आँसू भरे; कण्णित्–नेत्रवाले;
नीये–आप ही; पार्त्ति–देखेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्तात्–कहा; इप्पाल्–
इधर; मुत्ति तत्तु–मुनि के; इटत्तु वन्त–वासस्थान में आये; मुळरि–कमल-सम;
अम् कण्णत्–सुन्दर आँखों वाले; वण्णम्–सुन्दर; कुत्तिचिलै–कुंचित धनुष वाले;
कुरिचिल्–राजाराम; चॆय्ततु–का कार्य; इट्ऱु ऍन्–ऐसा था ऐसा; कुणिक्कल्–
कहने; उट्राम्–लगते हैं। ४१९७

अब एक ही क्षण में हमारे प्रभु पधारेंगे। यह आप अपने अश्रु-बहाते
नेत्रों से देख लेंगे। —मारुति ने विश्वास दिलाया। अब उधर भरद्वाज
के आश्रम में आगत कमलाक्ष तथा कुंचित-कोदंडपाणि राजाराम ने जो
किया, वह कैसा था, उसका वर्णन करेंगे। ४१९७

अरुन्दवन् शुवैह ळाट्रो डमुदित्ति दळिप्प वैयन्
करुन्दडङ् गण्णि योडुङ् गळैहणान् वुणैव रोडुम्
विरुन्दित्ति दरुन्दि निन्ऱ वेलैयिन् वेलै पोलुम्
बॆरुन्दडन् दानै योडुङ् गिरादर्कोन् पॆयर्न्दु वन्दान् 4198

अरु तवन्–मान्य तपस्वी; आऱु चुवैकळोटु–षड्रसों के साथ; अमुतु–भोज;
इत्तितु अळिप्प–मधुर देने पर; ऐयन्–प्रभु; करु तट–काली, विशाल; कण्णियोटुम्–
आँखों वाली सीताजी के साथ; कळैकणाम्–सहायक; तुणैवरोटुम्–साथियों के साथ;
विरुन्तु–भोज को; इत्तितु–सुख से; अरुन्ति निन्ऱ वेलैयिल्–जब भुगतते रहे तब;
किरातर् कोन्–किरातराज; वेलै पोलुम्–सागर-सम; पॆरु तट–बड़ी, विस्तृत;
तानैयोटुम्–सेना के साथ; पॆयर्न्तु वन्तान्–निकलकर चला आया। ४१९८

कठिन तपस्वी भरद्वाज ने षड्रस भोजन खिलाया। तब प्रभु असित-
विशालाक्षी के साथ और सहायक साथियों के साथ आराम से भोजनकर के
रहे; तब निषादराज गुह विस्तृत सागर-सम सेना के साथ निकल
आया। ४१९८

तॊळुदनऩ् मऩमुङ् गण्णुन् दुळङ्गिऩाऩ् शूळ वोडि
अळुदनऩ् कमल मऩ्ऩ वडित्तल मदलिऩ् वीळ्न्दाऩ्
तळुविऩ ऎडुत्तु मार्बिऱ् ऱम्बियैत् तळुवु मापोल्
वळुविला वलिय रऩ्ऱो मक्कळु मऩैयु मॆऩ्ऱाऩ् 4199

मऩमुम्–मन में; कण्णुम्–और आँखों में; तुळङ्कियऩ्–प्रसन्न होकर; चूळ ओटि–परिक्रमा करके; अळुतनऩ्–रोया; कमलम् अऩ्ऩ–कमल-सम; अटि तळम् अतऩिल्–चरण-तल में; वीळ्न्ताऩ्–गिरा (श्रीराम ने); ऎटुत्तु–उठाकर; तम्पियै–छोटे भाई को; तळुवुमा पोल्–गले लगाते जैसे; मार्पिल्–छाती से; तळुविऩऩ्–लगा लिया; मक्कळुम्–पुत्र; मऩैयुम्–घर वाली; वळुवु इला–बिना कमी के; वलियर् अऩ्ऱो–सकुशल हैं न; ऎऩ्ऱाऩ्–पूछा। ४१९९

श्रीराम के दर्शन करके गुह मन में प्रसन्न हुआ, जिसकी झलक उसकी आँखों में भी प्रकट हो रही थी। पर दीर्घवियोग-जनित दुःख से रोते हुए उनकी परिक्रमा करके उसने उनके कमल-चरणों में गिरकर नमस्कार किया। श्रीराम ने उसे उठाया और भ्रातृवत् आलिंगन कर लिया; फिर प्रश्न किया कि क्या तुम्हारे पुत्र तथा पत्नी सकुशल तथा सानंद हैं ? । ४१९९

अरुळुऩ दुळवु नायेर् कवरॆला मरिय वाय
पॊरुळलर् निऩ्ऩै नीङ्गाप् पुणर्प्पिऩाऱ् ऱॊडर्न्दु पोन्दु
तॆरुळ्तरु मिळैय वीरऩ् शॆय्वऩ शॆय्ह लादेऩ्
मरुळ्तरु मऩत्ति ऩेऩुक् किऩिदऩ्ऱो वाळ्वु मऩ्ऩो 4200

उऩतु अरुळ्–आपकी कृपा; उळ्ळतु–है; अवर् ऎलाम्–वे सभी; नायेऱ्कु–मेरे; अरिय आय–मूल्यवान; पॊरुळ्–पदार्थ; अलर्–नहीं; निऩ्ऩै–आपके; नीङ्का–अपृथक्; पुणर्प्पिऩाल्–प्रेम से; तॊटर्न्तु पोन्तु–पीछे लगे आकर; तॆरुळ् तरुम्–शुद्ध ज्ञानयुक्त; इळैय वीरऩ्–छोटे वीर ने; चॆय्वऩ–जो किये वे कार्य; चॆय्कलातेऩ्–नहीं कर पाया; मरुळ् तरु–अज्ञान-भरे; मऩत्तिऩेऩुक्कु–मनवाले मुझे; वाळ्वु–अपना जीवन; इऩितु अऩ्ऱो–प्यारा था न। ४२००

गुह ने उत्तर में निवेदन किया कि आपकी कृपा से वे सब ठीक हैं। पर वे मुझ दास के लिए मूल्यवान चीज़ नहीं हैं। आपका अक्षुण्ण भक्ति के साथ अनुगमन करके आकर उद्बुद्ध ज्ञानी छोटे वीर ने जो सेवककर्म किया वह मैं कर नहीं पाया। अज्ञमन मेरे लिए यहाँ का जीवन सुखद रह गया न ! । ४२००

आयऩ पिऱवुम् बऩ्ऩि यळङ्गुवाऩ् ऱऩ्ऩै यैय
नीयिवै पुरॆप्प वॆऩ्ऩे परदऩि ऩीवे ऱुण्डो
पोयिऩि दिरुत्ति यॆऩ्ऩप् पुळिऩर्को ऩिळवल् पॊऱ्ऱाळ्
मेयिऩऩ् वणङ्गि यऩ्ऩै विरॆमलरऩ् ऱाळिऩ् वीळ्न्दाऩ् 4201

आयन–वैसे; पिऱवुम् पऩ्ऩि–और अन्य बातें कहकर; अऴुङ्कुवाऩ् तऩ्ऩै–अशांत रहनेवाले उससे; ऐय–तात; नी–तुम; इवै–ये; उरैप्पतु–कहते; ॲऩ्ऩै–क्यों हो; परतऩिऩ्–भरत से; नी–तुम; वेऱु–अन्य; उण्टो–हो क्या; पोय्–जाकर; इऩितु–सुख से; इरुत्ति–रहो; ॲऩ्ऩ–ऐसा बोले; पुळिञर् कोऩ्–निषादराज; इळवल्–छोटे राजा के; पोऩ् ताळ्–सुन्दर चरणों में; मेविऩऩ् वणङ्कि–नमस्कार करके; अऩ्ऩै–माताजी के; विरै मलर्–सुगन्ध-कमल-सम; ताळिऩ्–चरणों में; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा। ४२०१

ऐसी और अन्य ऐसी बातें कहकर गुह दुःखी हो रहा था। श्रीराम ने उससे पूछा कि तात! तुम क्यों ऐसी बातें कह रहे हो? क्या भरत में और तुम में भेद है? जाओ सुख से रहो। निषादराज ने लक्ष्मण के चरणों में, फिर माता सीताजी के सुगंधित कमल-चरणों में गिरकर नमस्कार किया। ४२०१

तॊऴुदुनिऩ् ऱवऩै नोक्कित् तुणैवर्हळ् तमैयु नोक्कि
मुऴुदुणर् केळ्वि मेलोऩ् मॊऴिहुवाऩ् मुऴुनीर्क् कङ्गै
तऴुविरु करैक्कु नादऩ् तायिऩु मुयिर्क्कु नल्लाऩ्
वऴुविला वॆयिऩर् वेन्दऩ् कुहऩॆऩुम् वळ्ळ लॆऩ्बाऩ् 4202

मुऴुतु उणर्–सर्वज्ञ; केळ्वि–श्रौतज्ञान; मेलोऩ्–श्रेष्ठ श्रीराम; तॊऴुतु निऩ्ऱवऩै–विनत उसे; नोक्कि–देखकर; तुणैवर्कळ् तमैयुम्–साथियों को; नोक्कि–देखकर; मॊऴिकुवाऩ्–बोले; मुऴुनीर्–समृद्ध-जल; कङ्कै–गंगा; तऴुवु–के साथ लगी; इरु करैक्कु–दोनों तट की भूमि का; नातऩ्–अधिपति है; उयिर्क्कु–प्राणों से; तायिऩुम्–माता से; नल्लाऩ्–हितैषी है; वऴु इला–निर्दोष; ॲयिऩर् वेन्तऩ्–निषादराज है; कुकऩ् ॲऩुम्–गुह नाम का; वळ्ळल्–उदार पुरुष है; ॲऩ्पाऩ्–बोले। ४२०२

सर्वज्ञ तथा श्रौतज्ञानश्रेष्ठ श्रीराम ने अपने साथियों से गुह की तारीफ़ की। यह जलसमृद्ध गंगा के दोनों तटीय क्षेत्र का पालक है। मेरा प्राणों से और माता से अधिक हितू है! निर्दोष निषादराज है। गुह नाम का है और उदारचेता है। ४२०२

अण्णलः(ह्) दुरैत्त लोडु मरिहुलत् तरश ऩादि
नण्णिय तुणैवर् यारु मितिदुरत् तऴुवि नट्टार्
कण्णहऩ् ञाल मॆल्लाङ् गङ्गुलाङ् पॊदिवाऩ् पोल
वण्णमाल् वरैक्कु मप्पाल् मऱैन्दऩ ऩिरवि यॆऩ्बाऩ् 4203

अण्णल्–प्रभु के; अ:तु–वह; उरैत्तलोडुम्–कहने पर; अरि कुलत्तु–वानरकुल का; अरचऩ् आति–राजा सुग्रीव आदि; नण्णिय–आगत; तुणैवर् यावरुम्–सभी मित्र ने; इऩितु उऱ–मधुरता से; तऴुवि–गले लगाकर; नट्टार्–मित्रता बना ली; इरवि ॲऩ्पाऩ्–सूर्य; कण अकल–विशाल; ञालम् ॲल्लाम्–

भूतल भर को; कङ्कुलाल्–अन्धकार से; पोतिवान् पोल–आच्छादित करता-सा; वण्णम्–श्रेष्ठ; माल् वरैक्कुम्–बड़े मेरु पर्वत के; अप्पाल्–उस तरफ़; मरैन्ततन्–छिप गया। ४२०३

प्रभु श्रीराम द्वारा गुह की तारीफ़ सुनकर वानरराज सुग्रीव ने सामने आकर उससे मित्रता कर ली। तब सूर्य विस्तृत भूतल भर को अँधेरे से आच्छादित करता-सा सुंदर बड़े मेरुपर्वत के पीछे छिप गया। ४२०३

अलङ्गलन् तोंडैयि ताऩ् मन्दियिऩ् कडऩ्ग ळाऱ्ऱिप्
पॊलङ्गुळै मयिलि ऩोडु तुयिलुऱप् पुणरि पोलुम्
इलङ्गिय शेऩै शूऴ विळवलु मॆयिऩर् कोऩुम्
कलङ्गलर् कात्तु निऩ्ऱार् कदिरव ऩुदयञ् जॆय्दाऩ् 4204

अलङ्कल्–हिलनेवाली; अम्–सुन्दर; तोंटैयितानुम्–मालाधारी श्रीराम भी; अन्तियिन्–संध्या का; कटन्कळ्–अनुष्ठान; आऱ्ऱि–पूरा करके; पोलम्–स्वर्ण के; कुऴै–कुंडलधारिणी; मयिलिऩोटुम्–कलापी-सी सीता के साथ; तुयिल् उऱ–सोने गये; इळवलुम्–छोटे वीर; ऍयिऩर् कोनुम्–निषादराज; पुणरि पोलुम्–समुद्र-सम; इलङ्किय–विद्यमान; चेनै चूऴ–सेना के मध्य; कलङ्कलर्–अधीर न होकर; कात्तु निऩ्ऱार्–पहरा दे खड़े रहे; कतिरवन्–सूर्य; उतयम् चॆय्तान्–उदित हुआ। ४२०४

हिलती मालाधारी श्रीराम ने सायंसंध्यावंदन आदि अनुष्ठान पूरा किया। फिर वे स्वर्णकुंडलधारिणी और कलापी-निभ सीताजी के साथ निद्रा करने गये। छोटे वीर और निषादराज सागर-सम सेना को चारों ओर लगा देकर पहरा देते रहे। रात बीती और सूर्य उदित हुआ। ४२०४

कदिरव ऩुदय कालैक् कडऩ्कऴित् तिळव लोडुम्
अदिर्पॊलन् कऴलि ताऩव् वरुन्दवऩ् तऩ्ऩै येत्ति
विदितरु विमाऩ मेवि विळङ्गिऴै योडुङ् गॊऱ्ऱम्
मुदिर्तरु तुणैव रोडु मुऩिमऩत् तोंडरप् पोऩाऩ् 4205

अतिर्–स्वरशील; पोलन्–स्वर्णिम; कऴलिनान्–पायलधारी; कतिरवन्–सूर्य के; उतयम् कालै–उदय के समय में; कटन् कऴित्तु–आह्निक अनुष्ठान करके; अव्–उन; अरु तवन् तन्नै–श्रेष्ठ तपस्वी को; एत्ति–पूजा करके; इळवलोटुम्–छोटे के साथ; विळङ्किऴैयोटुम्–सुन्दर आभरणधारिणी के साथ; कॊऱ्ऱम्–और विजय; मुतिर् तरु–युक्त; तुणैवरोटुम्–साथियों के साथ; विति तरु–ब्रह्मा-दत्त; विमानम्–विमान पर; मेवि–चढ़कर; मुनि मनम्–मुनि के मन के; तोंटर–पीछे आते; पोनान्–गये। ४२०५

ध्वनिमय पायलधारी श्रीराम ने प्रातःकाल का आह्निक अनुष्ठान पूरा किया। उन महान तपस्वी की पूजा की। फिर उज्ज्वल आभरण-भूषिता सीताजी, लघुराज लक्ष्मण, विजयोत्कृष्ट साथियों के साथ ब्रह्मा-

दत्त विमान पर सवार होकर प्रस्थान किया। मुनि का मन उनके पीछे जा रहा था। ४२०५

तावियवात् पडर्न्दु मान्न् दडैयिल देहुम् वेलैत्
तीविय कतिय दाहिच् चॅरुक्किय कामच् चॅव्वि
ओविय मुयिर्पॅर् ट्रॅन्न वुम्बर्को नहरु मॊव्वा
माविय लयोत्ति शूळु मदिद्पुरन् दोन्रिर् रन्रे 4206

मानम्-विमान; तावि-तेज़ी से जाता; वान्-आकाश में; तटै-बाधा से; इलतु-हीन; पटर्न्तु-आगे बढ़कर; एकुम् वेलै-जब जाता रहा; तीविय-मधुर; कतियतु आकि-अक्षय रहकर; चॅरुक्किय-मस्त; कामम्-मनोहारी; चॅव्वि-सौंदर्ययुक्त; ओवियम्-चित्र; उयिर् पॅर्ट्रॅन्न-जीवंत हो उठा जैसे; उम्पर् कोन्-देवेंद्र का; नकरुम्-नगर भी (जिसकी); ऑव्वा-उपमान न बन सके; मा इयल्-प्रशंसा योग्य; अयोत्ति-अयोध्या के; चूळुम्-आवरण की; मतिल् पुरम्-बाहरी दीवार; तोन्रिर्रु-दिखायी दी। ४२०६

पुष्पक विमान आकाशमार्ग में अबाध गति से जा रहा था। तब मधुर तथा अक्षय प्रकृति वाला, तथा मस्त बनानेवाला, मनोहारी सौंदर्य से युक्त चित्र कोई जीवंत हो आए जैसे देवेंद्रनगर भी जिसकी उपमा नहीं बन सकता, उस अयोध्या के प्राचीर की बाहरी दीवार दिखायी दी। ४२०६

पॊन्मदिर् किडक्कै शूळप् पॊलिवुडै नहरन् दोन्र
नन्मदित् तुणैवर् तम्मै नोक्किय ञान मूर्त्ति
शॊन्मदित् तॊरुव रालुञ् जॊलप्पडा वयोत्ति तोन्रिर्
ट्रॅन्नलुङ् गरङ्गळ् कूप्पि यॅळुन्दन रिरैञ्जि निन्रार् 4207

पॊन् मतिल्-स्वर्णिम प्राचीर के; किटक्कै-स्थान; चूळ-घेरे रहे; पॊलिवु उटै-शानदार; नकरम् तोन्र-नगर दिखायी दिया; नन्मति-बुद्धिमान; तुणैवर् तम्मै-साथियों को; नोक्किय-देखकर; ञानमूर्त्ति-ज्ञानमूर्ति श्रीराम के; ऑरुवरालुम्-किसी से भी; मतित्तु-अनुमान कर; चॊल्-वर्णन; चॊलप्पटा-नहीं किया जा सके ऐसी; अयोत्ति-अयोध्या नगरी; तोन्रिर्रु-दिखायी दे गयी; ऍन्नलुम्-कहने पर; करङ्कळ्-हाथ; कूप्पि-जोड़कर; ऍळुन्तनर्-उठे; इरैञ्चि निन्रार्-विनत खड़े रहे। ४२०७

स्वर्ण-प्राचीर की छवि के अंदर शोभायमान अयोध्या दिखायी दी तो सद्बुद्धिमान साथियों को देखकर ज्ञानमूर्ति श्रीराम ने कहा कि किसी से भी अवर्णनीय महिमावाली अयोध्या दिखायी देती है, देख लो। उसे सुनते ही सभी हाथ जोड़ उठे और नमस्कार किया। ४२०७

अन्नदो रळवैयिन् विशुम्ब वायिनुम्
[illegible]

पॊन्ऩणि पुट्पहप् पीरुविन् मातमुम्
मन्ऩवर्क् करशनुम् वन्दु तोन्ऱिऩार् 4208

अन्ऩतु ओर् अळवैयिन्–उस समय; विसुम्पतु–आकाश में रहनेवाला; आयिनुम्–हो तो भी; तुन्–पास-पास रहे; इरु कतिरवर्–दो सूर्य; तोन्ऱुतार् अॅत–प्रगट हों जैसे; पॊन्–स्वर्णमय; अणि–सुन्दर; पुट्पकम्–पुष्पक नाम का; पॊरु इल्–अनुपम; मातमुम्–विमान; मन्ऩवर्क्कु अरचनुम्–और राजाधिराज; वन्तु तोन्ऱिऩार्–आ दिखायी दिये। ४२०८

तब पुष्पक बहुत दूर पर था। तो भी स्वर्णमय, सुंदर पुष्पक नाम का वह अप्रतिम विमान और राजाधिराज श्रीराम दोनों दो (या अनेक) सूर्यों के समान आ दिखायी दिये। ४२०८

अण्णले काण्डिया ललर्न्द तामरैक्
कण्णनुम् वानरक् कडलुङ् गऱ्पुडैप्
पॆण्णरुङ् गलमुनिन् पिन्बु तोन्ऱिय
वण्णविऱ् कुमरनुम् वरुहिन्ऱार्हळे 4209

अण्णले–महापुरुष; अलर्न्त–खिले; तामरै कण्णनुम्–कमल-सम आँखों वाले; वानरर्–और वानरों का; कटलुम्–सेना-सागर; कऱ्पु उटै–पतिव्रता; पॆण्–नारियों का; अरुकलमुम्–श्रेष्ठ श्रृंगार श्री सीताजी; निन्–आपके; पिन्पु–बाद; तोन्ऱिय–जनित; वण्णम्–सुन्दर; विल् कुमरनुम्–धनुर्धर कुमार; वरुकिन्ऱार्कळे–आते हैं (जो); काण्टि–(उन्हें) देख लें। ४२०९

हनुमान ने भरत से कहा कि हे महिमावान! उत्फुल्ल-कमलाक्ष सागर-सम सेना, और पतिव्रता स्त्रियों का श्रृंगार सीताजी और आपके अनुज, चित्र-धनुर्धर लक्ष्मण आ रहे हैं, देख लें। ४२०९

एऴिरण् डाहिय वुलह मेऱिनुम्
पाऴ्पुरङ् गिडक्कुरु पडिय वायदोर्
शूऴॊळि मानतत् तोन्ऱु हिन्ऱनम्
ऊऴिया नॆन्ऱुकॊण् डुणर्त्तुङ् गालैये 4210

एऴु इरण्टु आकिय–सात के दो (चौदह); उलकम् एऱिनुम्–लोक सवार हों; पाऴ् पुरम्–तो भी खाली स्थान; किटक्कुऱु–बाक़ी रखनेवाली; पटियतु आयतु–प्रकृति के बने; ओर्–एक; चूऴ् ऒळि–सर्वव्यापी प्रकाश के; मानततु–विमान पर; ऊऴियान्–युगपति; तोन्ऱुकिन्ऱतन्–दर्शन देते हैं; अॅन्ऱु कॊण्टु–ऐसा; उणर्त्तुम् काले–समझाते समय। ४२१०

वह पुष्पक यान ऐसा है कि उसमें चौदहों लोकों के वासी सवार हो जायँ तो भी खाली स्थान पाया जाय। वह व्यापनेवाली छवि से युक्त है, उस पर युगपति श्रीराम दर्शन देते हैं। ऐसा जब हनुमान ने बताया तब—। ४२१०

पॊत्तॊळि मेरुविन् पॊदुम्बिऱ् पुक्कदोर्
मित्तॊळि मेहम्बोल् वीरन् तोन्ऱलुम्
मत्तॆदिर् वरुहुन रार्प्पि रावणन्
तॆन्नहर्क् कप्पुऱत् तळवुञ् जॆन्ऱदाल् 4211

पॊन् ऑळि–स्वर्ण-छवि; मेरुविन्–मेरु पर; पॊतुम्पिल्–एक कंदरा में; पुक्कतु–घुसी; ओर्–एक; मिन् ऑळि–बिजली के प्रकाश के साथ; मेकम् पोल्–(रहते) मेघ-सदृश; वीरन्–वीर श्रीराम के; तोन्ऱलुम्–दर्शन देने पर; मन्–राजा के; ऍतिर् वरुकुनर्–स्वागतार्थ आनेवालों का; आर्प्पु–कोलाहल; इरावणन्–रावण के; तॆन् नकर्क्कु–दक्षिणी नगर के; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़; तळवुम्–तक भी; चॆन्ऱतु–गया। ४२११

स्वर्णच्छवि मेरु पर कंदरा में घुसी रही बिजली के साथ रहनेवाले मेघ के समान (सीताजी के साथ) श्रीवीरराघव के दर्शन पाते ही अगवानी के लिए आगत लोगों का कोलाहल सुदूर, दक्षिण की लंका के उस तरफ़ भी जा फैल गया। ४२११

ऊनुडै याक्कैविट् टुण्मै वेण्डिय, वानुडैत् तन्दैयार् वरवु कण्डॆनक्
कानिडैप् पोहिय कमलक् कण्णनैत्, तानुडै युयिरिनैत् तम्बि नोक्किनान् 4212

ऊन् उटै–मांसल; याक्कै विट्टु–शरीर त्यागकर जिन्होंने; उण्मै वेण्टिय–सत्य खोजा उन; वान् उटै–स्वर्गवासी; तन्तैयार्–पिता का; वरवु कण्टु अॆन–आगमन देखा जैसे; कान् इटै–वन में; पोकिय–जो गये उन; कमलम् कण्णनै–कमलाक्ष को; तान् उटै–उनके; उयिरिनै–प्राणों (सम) को; तम्पि नोक्किनान्–कनिष्ठ भरत ने देखा। ४२१२

सत्यपालनार्थ मांसमय शरीर को जिन्होंने छोड़ दिया वे स्वर्गीय पिता स्वयं आ रहे हों, ऐसा; वन में जो गये थे उन कमलाक्ष श्रीराम को, अपने प्राण-सम भ्राता को भरत ने देखा। ४२१२

कॆट्टवान् पॊरुळ्वन्दु किडैप्प मुन्बुताम्
बट्टवान् पडरॊऴिन् दवरिऱ् पैयुणोय्
शुट्टवन् मानवर् ऱॊऴुद लुन्निये
विट्टनन् मारुदि करत्तै मन्मैयान् 4213

मॆन्मैयान्–उत्तम भरत; कॆट्ट–खोयी गयी; वान् पॊरुळ्–श्रेष्ठ वस्तु; वन्तु किटैप्प–आ मिल गयी तो; मुन्पु–पहले; ताम् पट्ट–जो सहा; वान् पटर्–वह महादुःख जिनसे; ऑऴिन्तवरिल्–छूट गया उनके समान; पैयुळ् नोय्–दुःख-रोग (जिसको); चुट्टवन्–अब जिन्होंने जला दिया; मानवन्–(उन्होंने) मनुवंश दीप का; तॊऴुतल्–नमस्कार करना; उन्नि–चाहकर; मारुति–मारुति के; करत्तै–हाथ को; विट्टनन्–छोड़ दिया। ४२१३

उन्नत गुणों वाले उत्तम भरत ने, जिन्होंने खोयी चीज़ प्राप्त कर पहले के दुःख-दर्द से मुक्त लोगों के समान दुःख के रोग को जला दिया था, मनुकुलदीप श्रीराम को नमस्कार करने के विचार से हनुमान का हाथ छोड़ दिया। ४२१३

अक्कणत् तनुमनु मवणित् ट्रेहियत्
तिक्कुरु मानत्तैच् चॅव्व नेय्दियच्
चक्करत् तण्णलैत् ताळ्न्दु मुत्तिन्ड्रान्
उक्कुरु कण्णनी रॉळ्हु मार्बिनान् 4214

अ कणत्तु–तब; अनुमत्तुम्–हनुमान; अवण् निन्ड्रु–वहाँ से; एकि–जाकर; अ तिक्कु उरु–उस उत्तर दिशा की ओर आनेवाले; मानत्तै–विमान के पास; चॅव्वन् ॲय्ति–सीधे जाकर; अ–उन; चक्करत्तु–चक्रधारी; अण्णलै–प्रभु के सामने; उकु उरु–बहनेवाले; कण्ण नीर्–अश्रुजल से; ऑळ्कु–सिंचित; मार्पिनान्–वक्षवाले बनकर; ताळ्न्तु–झुककर; मुन् निन्ड्रान्–खड़ा रहा। ४२१४

उसी क्षण हनुमान भी वहाँ से चला। उसके सामने आनेवाले पुष्पक विमान की ओर सीधे गया। अपने वक्ष को अपनी आँखों के अश्रु-जल से भिगोते हुए वह उनके सामने विनत खड़ा हो गया। ४२१४

उरुप्पविर् कन्नलिडै यॉळिक्क लुट्रवप्
पॉरुप्पविर् तोळतैप् पॉरुन्दि नायितेन्
तिरुप्पॉलि मार्बनिन् वरवु शॅप्पितेन्
इरुप्पन वायित वुलहम् यावैयुम् 4215

तिरु पॉलि–श्रीशोभित; मार्प–वक्ष वाले; नायितेन्–कुत्ता (दास) मैं; उरुप्पु अविर्–तापयुक्त; कन्नल् इडै–आग में; ऑळिक्कल् उट्र–छिपने को जो रहे; अ पॉरुप्पु–उन पर्वत; अविर्–के समान; तोळतै–कंधोंवाले के पास; पॉरुन्ति–जाकर; निन् वरवु–आपका आगमन; शॅप्पितेन्–कहा; उलकम् यावैयुम्–सारे लोक; इरुप्पन आयित–स्थायी हुए। ४२१५

श्रीशोभित वक्ष वाले! कुत्ते-सदृश मैंने तापयुक्त आग में छिपने को उद्यत रहे उन पर्वतस्कंध भरत के पास जाकर आपके आगमन की सूचना दी। तभी सारे लोक रहनेवाले हुए। ४२१५

तीवितै याम्बल शॅय्यत् तीर्विला
वीवितै मुट्रैमुट्रै विळैव मॅय्म्मैयाय्
नीयवै तुडैत्तुनित् ट्रळिक्क नेट्रवतै
यायितु मन्बिता यान्जॅय् मादवम् 4216

मॅय्म्मैयाय्–सत्यनिष्ठ; आयितुम् अन्पिताय्–माता से भी प्यारे; याम्–हमारे; पल–अनेक; तीवितै–दुष्कर्म के; शॅय्य–किये रहने से; तीर्विला–

अवार्य; वीविर्ते–मरण के सन्दर्भ; मुरै मुरै–बार-बार; विळैव–आते हैं; नी–तुम; अवै–उन्हें; तुटैत्तु नित्रु–पोंछते रहकर; अळिक्क नेर्न्दनै–बचाने आये; याम्–हमारे; चॅय्–पूर्वकृत; मा तवम्–महान तप (का फल) है। ४२१६

श्रीराम ने हनुमान की प्रशंसा की। हे सत्यनिष्ठ; माता से भी प्यारे! हमारे पूर्वकृत अनेक दुष्कर्मों के अवार्य फलस्वरूप मरण के संदर्भ बार-बार आते हैं। पर तुम उनको दूरकर प्राण बचाने आये हो! यह भी हमारे किये हुए महान तप का फल है! । ४२१६

ऍन्ड्रुरैत् तनुमनै यिरुहप् पुल्लिनान्
ऑन्ड्रुरैत् तिरुप्पदॅन् नुनक्कु मॅन्दॅक्कुम्
इन्ड्रुणैत् तम्बिक्कुम् यायक्कु मॅन्ड्रनन्
कुन्ड्रिणैत् तन्नुयर् कुववुत् तोळिनान् 4217

ऍन्ड्रु उरैत्तु–ऐसा कहकर; कुन्ड्रु इणैत्तु अन्न–दो पर्वत मिले हों ऐसे; उयर्–उन्नत; कुववु–पुष्ट; तोळिनान्–कंधोंवाले; उनक्कुम्–तुम्हारे; ऍन्दैक्कुम्–मेरे पिता जटायु के; इन् तुणै–प्यारे संगी; तम्पिक्कुम्–छोटे भाई के; आयक्कुम्–मेरी जननी के संबंध में; ऑन्ड्रु–एक बात; उरैत्तु–कहकर; इरुप्पतु–छूट जाना; ऍन्–कैसे सम्भव हो; ऍन्ड्रनन्–कहा और; अनुमनै–हनुमान को; इरुक–कसकर; पुल्लिनान्–आलिंगन कर लिया। ४२१७

यह कहकर जुड़े पर्वत-सम उन्नत कंधों वाले श्रीराम ने आगे यह भाव भी प्रकट किया कि तुम्हारे, मेरे पिता (जटायु या दशरथ) के मेरे भाई (लक्ष्मण) के, और मेरी जननी के (प्रतीकार के) संबंध में कोई भी शब्द कहकर कैसे पार पाया जाय? और उसको गाढ़ालिगन कर लिया। ४२१७

इडुरु वान्तुणै यिरामन् शेवडि
शूडिय शॅन्नियन् तॊळुद कैयिनन्
ऊडुयि रुण्डॅन्न वुलर्न्द याक्कैयन्
पाडुरु पॅरुम्बुहळ्प् परदन् तोन्ड्रिनान् 4218

ईडु उरु–परस्पर-सम; वान् तुणै–अपने बड़े आश्रय; इरामन्–श्रीराम की; चेवटि–पादुकाओं को; चूटिय–धारण करते; चॅन्नियन्–सिर वाले; तॊळुत–अंजलिबद्ध; कैयिनन्–हाथों वाले; उयिर्–जान; ऊटु–मध्य में; उण्टु–है; ऍन्न–ऐसा; उलर्न्त–(अनुमान से जाना जाय) शुष्क; याक्कैयन्–शरीरी; पाटु उरु–विशिष्टतायुक्त; पॅरु पुकळ्–प्रबल यशस्वी; परतन् तोन्ड्रिनान्–भरत (पास) दिखाई दिये। ४२१८

(तब पुष्पक स्वागतार्थ आये लोगों के पास आ पहुँचा तो) परस्पर सम और भरत का आधार जो रहीं, उन श्रीराम की पादुकाओं को सिर पर धारण करके अंजलिबद्धहस्त भरत, जिनके प्राणवंत होने में बहुत

बारीकी से देखकर ही कुछ निश्चय किया जा सकता था, जो क्षीणकाय थे और जो बहुत यशस्वी हो गये थे प्रगट हुए। ४२१८

तोऩ्ऱिय परदत्तै तॊऴुदु तॊऴ्लऱच्
चाऩ्ऱोऩ् निऩ्ऱव ऩिऩैय तम्बियै
वाऩ्ऱॊडर् पेरर शाण्ड मऩ्ऩऩै
ईऩ्ऱवळ् पहैञऩैक् काण्डि यॆण्ड्रॆऩ्ऱाऩ् 4219

तॊल् अऱम्-सनातन धर्म के; चाऩ्ऱु-साक्षी; ऒऩ-रूप; निऩ्ऱवऩ्-जो रहा उस (हनुमान) ने; तोऩ्ऱिय-पास आये; परतऩै-भरत को; तॊऴुतु-नमस्कार करके; वाऩ्-मोक्ष; तॊटर्-पहुँचानेवाले; पेर्-बड़े; अरचु-(कैंकर्य) राज्य के; आण्ट-शासक; मऩ्ऩऩै-राजा को; ईऩ्ऱवळ्-जननी के; पकैञऩै-शत्रु को (भरत को); इऩैय तम्पियै-ऐसे छोटे भाई को; ईण्टु-यहाँ; काण्टि-देख लें; ऎऩ्ऱाऩ्-कहा (श्रीराम से)। ४२१६

सनातनधर्म-साक्षीरूप हनुमान ने आगत भरत को नमस्कार किया और श्रीराम को बताया कि मोक्षप्रापक कैंकर्य-राज्य के शासक और मातृ-शत्रु और आपके ऐसे छोटे भाई भरत को इधर देखिये। ४२१९

काट्टिऩऩ् मारुदि कण्णिऩ् कण्डवऩ्
तोट्टलर् तॆरियला निलैमै शॊल्लुङ्गाल्
ओट्टिय माऩत्तु ळुयिरिऩ् ऱऩ्दैयार्
कूट्टुरुक् कण्डऩऩ् तऩ्मै कूडिऩाऩ् 4220

मारुति-मारुति ने; काट्टिऩऩ्-दिखाया; कण्णिल् कण्ट-आँखों से देखकर; अ तोटु-उन पुष्पों से; अलर्-खिली; तॆरियलाऩ्-मालाधारी का; निलैमै-हाल; चॊल्लुङ्काल्-कहा जाय तो; ओट्टिय-चलाये गये; माऩत्तु-विमान पर; उयिरिऩ् तऩ्तैयार्-जीवंत पिता का; कूटु उरु कण्टु अऩ्ऩ-युक्त आकार देखा जैसी; तऩ्मै कूटिऩाऩ्-स्थिति में आये। ४२२०

मारुति ने दिखाया और श्रीराम ने देखा। तो पुष्पित-सुमन-माला-धारी श्रीराम का हाल क्या कहें? विमान में आगत जीवंत पिता के दर्शन होने पर जो आनंद हुआ वैसे आनंद से भर गये। ४२२०

अव्वयि ऩयोत्ति वैहुम् जतमोडु मक्कु रोणि
तव्वलि लाऱु पत्ता यिरमोडुम् ताय रोडुम्
इव्वयि ऩडैन्दु ळोरैक् काण्बतऩ् ऱिराम ऩुऩ्ऩच्
चॆव्वैयि ऩिलत्तै वन्दु शेर्न्ददु विमाऩम् दाऩुम् 4221

अव्वयिऩ्-तब; अयोत्ति-अयोध्या में; वैकुम्-वास करनेवाले; जतमोटुम्-लोगों के साथ; तव्वल् इल्-त्रुटिहीन; आऱुपत्तु आयिरम्-साठ हजार; अक्करोणियोटुम्-अक्षौहिणी सेना के साथ और; तायरोटुम्-माताओं के साथ;

...व्वयित्–यहाँ; अटैन्तुळोरै–आये हुओं को; काण्पेन्–देखूँ; ॲन्ऱु–ऐसा; ...रामन् उन्न–श्रीराम ने सोचा तो; विमानम् तानुम्–विमान स्वयं; निलत्तै–...मि को; चॅव्वॅयिन्–सीधे; वन्तु–आकर; चेर्न्ततु–पहुँचा। ४२२१

श्रीराम ने तुरन्त मन में विचार किया कि मैं अयोध्यापुरिवासी, निर्दोष साठ सहस्र अक्षौहिणी सेना; माताएँ और यहाँ आगत लोग —इनसे मिलना चाहता हूँ। उनका भाव जानकर पुष्पक यान सीधे भूमि पर उतर आया। ४२२१

ॲव्वयि नुयिर्हट्कु मिराम नेऱिय
शॅव्विय पुट्पह निलत्तैच् चेर्दलुम्
अव्ववर्क् कणुहिय वमरर् नाड्डुय्क्कुम्
ॲव्वमिल् मानमॅन् ऱिशैक्क लायदाल् 4222

इरामन् एऱिय–श्रीराम जिस पर सवार थे; चॅव्विय–वह सुन्दर; पुट्पकम्–पुष्पक; निलत्तै–भूमि में; चेर्तलुम्–आया तो; ॲव्वयिल्–सर्वत्र रहनेवाले; उयिर्कट्कुम्–जीवों को; अव्ववर्क्कु–उनके योग्य; अणुकिय–प्राप्त; अमरर् नाट्–स्वर्गलोक; उय्क्कुम्–पहुँचा सकनेवाला; ॲव्वम् इल्–निर्दोष; मानम् ॲन्ऱु–यान; इचैक्कल् आयतु–कहलाने योग्य रहा। ४२२२

जब श्रीराम का वाहन पुष्पक यान भूमि पर आया तब वह उस विमान के समान रहा, जो पुण्यवान जीवों को उनके योग्य स्वर्ग लोकों में पहुँचानेवाला हो और सर्वथा निर्दोष हो। ४२२२

तायरुक् कन्ऱु शार्न्द कन्ऱॅन्नन् दहैय तानान्
मायैयिऱ् पिरिन्दोर्क् कॅल्ला मनोलयम् वन्द वोत्तान्
आयिळै यर्क्कुक् कण्णु ळाडिरुम् बावै यानान्
नोयुऱुत् तुलर्न्द याक्कैक् कुयिर्पुहुन् दालु मोत्तान् 4223

तायरुक्कु–माताओं के सामने; अन्ऱु–उसी दिन; चार्न्त–मिला; कन्ऱु–बछड़ा; ॲन्नम्–कहा जाय; तकैयत् आनान्–ऐसे हो गये; मायैयिन्–माया से; पिरिन्तोर्क्कु–छूटे लोगों (के); ॲल्लाम्–सभी के लिए; मनोलयम्–मन के पहुँचने स्थान; वन्ततु ओत्तान्–आ गया जैसे रहे; आय्–सुन्दर; इळैयर्क्कु–छोटे भाइयों के लिए; कण् उळ्–आँखों के अंदर की; आटु इरुम्–हिलती मूल्यवान; पावै आनान्–पुतली-सदृश रहे; नोय् उऱुत्तु–रोगपीड़ित हो; उलर्न्त–सूख गये-से; याक्कैक्कु–शरीर में; उयिर् पुकुन्तालुम्–जान आयी; ओत्तान्–जैसे भी रहे। ४२२३

श्रीराम तब माताओं के लिए तद्दिन-जनित बछड़े के समान रहे। माया से छूटे लोगों के लिए समाधि (मनोलय) के पद के समान दिखे। सुंदर कनिष्ठ भ्राताओं के लिए आँखों के तारे बने। रोगपीड़ित क्षीण शरीर में प्राण आ गये हों जैसे लगे। ४२२३

ऑळिवरु मुयिर्हट् कॅल्ला मीन्ड्रदा यॅदिर्न्द दौत्तान्
अळिवरु मतत्तोर्क् कॅल्ला मरुम्बद वमुद मानान्
ऑळिवरप् पिड्न्द दौत्ता नुलहिनुक् कौण्क णार्क्कुत्
तॅळिवरुङ् गळिप्पुच् चॅय्युन् देम्बिळित् तेड़ लौत्तान् 4224

ऑळिवरम्—दीन बने; उयिर्कट्कु—जीव; ऑल्लाम्—सभी के लिए; ईन्ड्र ताय्—जननी माता; ऑतिर्न्तु—सामने आयी हो; ऑत्तान्—जैसे बने; अळि वरम्—प्यार-गद्गद; मतत्तोर्क्कु ऑल्लाम्—मन वाले सभी के लिए; अरु पत—श्रेष्ठ, पक्व; अमुतम् आतान्—अमृत बने; उलकितुक्कु—(ज्ञानियों के) लोक को; ऑळिवु अड़—दुराव छोड़कर; पिड्न्तु ओत्तान्—प्रत्यक्ष प्रगट जैसे रहे; ऑळ् कणार्क्कु—सुन्दराक्षियों के लिए; तॅळिवु अरु—अस्पष्टतायुक्त अच्छा; कळिप्पु चॅय्युम्—मोद देनेवाले: तेम्पिळि—मधुर मधु के; तेड़ल्—मद्य; ओत्तान्—के समान रहे। ४२२४

दीन लोगों को जननी के समान लगे। प्यारे लोगों के लिए पक्व अमृत के समान रहे। ज्ञानी लोगों के लिए प्रत्यक्ष प्रकट भगवान लगे। सुंदराक्षी स्त्रियों के लिए अस्पष्ट मस्ती लानेवाले मधुर मद्य के समान लगे। ४२२४

आवियङ् गवन लान्मड़ ड्रिन्मैया लनैय नीङ्गक्
काविियङ् गळनि नाडु नहरमुङ् गवन्ड्र वाळम्
माविय लुण्क णारु मैन्दरुम् वळळ लेय्द
ओविय मुयिर्पॅड़ ड्रैन्न वोङ्गिन रुणर्वु पॅड्रार् 4225

अङ्कु आवि—वहाँ के प्राण; अवन् अलात्—उनके सिवा; मड़्ड्र इन्मैयाल्—और कुछ नहीं थे, अतः; अनैयन्—उनके; नीङ्क—छोड़ जाने पर; काबि—नीलोत्पल-युक्त; अम्—सुन्दर; कळनि नाटुम्—खेतों के कोसल देश में; नकरमुम्—और अयोध्या नगर में; कवन्ड्र वाळुम्—चिंतित जो रहीं; मा इयल्—आमके टिकोरे-सी; उण् कणारुम्—अंजन लगी आँखों वालियाँ; मैन्तरुम्—और पुरुष; वळ्ळल् ऍय्त—प्रभु के लौटने पर; ओवियम्—चित्र; उयिर् पॅड़्ड्र—जीवित हो गये; ऍन्न—जैसे; ओङ्कितर्—फूल उठे; उणर्वु पॅड़्ड्रार्—सप्रज्ञ हो गये। ४२२५

वहाँ के लोगों के लिए प्राण श्रीराम ही थे। अतः उनके चले जाने पर नीलोत्पलसंकुल खेतों वाले कोसल देश में और अयोध्या नगर में आम के टिकोरे-सी आँखों वाली स्त्रियाँ और पुरुष सभी दुःखी तथा कृश रहते थे। अब उनके आकर मिल जाने से जीवन-प्राप्त चित्रों के समान वे सप्रज्ञ हो गये और फूल उठे। ४२२५

चुण्णमुञ् जानुवु नॅय्युञ् जुरिवळै मुत्तुम् बूवुम्
ऍण्णॅण्ण गळिन मावि लाळियु मॅण्णिल् यानै

वण्णवार् मदमुन् नीरु मान्मदन् दळ्वु मादर्
कण्णवाम् बुत्तलु मोडिक् कडलैयुङ् गडन्द वन्ऱे 4226

चुरिबळै-चुणणमुम्-सुगंधचूर्ण; चान्तुम्-चन्दन; नॅय्युम्-और घी; कलितम्-आवर्तयुक्त शंखों; मुत्तुम्-के मोती और; पूवुम्-पुष्प; ऍण्णॅयुम्-तेल; ऍण्णिल्-असंख्य; रासयुक्त; मा-अश्वों के; विलाळियुम्-मुख का झाग; मतमुनीरुम्-त्रिमदनीर; यानै-हाथियों से; वण्णम्-रंगीन; वार्-झरनेवाला; मादर्-रही स्त्रियों के; कण्णवाम् पुत्तलुम्-नेत्र का आनंद-बाष्प; मान्मतम्-कस्तूरी; तळुवुम्-शरीर पर मलकर; ओटि-बहकर; कटलैयुम्-समुद्र को भी; कटन्त-पार कर गये। ४२२६

लोगों ने आनंदातिरेक का उत्सव मनाया और सर्वत्र सुगंध चूर्ण, चंदन, घी, आवर्तयुक्त शंखों के जनाये मोती, पुष्प, तेल आदि बिखेरे। रासयुक्त अश्वों का मुख का झाग, और हाथियों का विविध रंग का त्रिमदनीर निकल बहा। कस्तूरी-चर्चित रमणियों की आँखों से आनंद-बाष्प झरकर बहा। सब मिलकर समुद्र को भी पार कर गया। ४२२६

अनैवरु मनैय राहि यडैन्दुळि यरुळिन् वेलै
तनैयिनि दळित्त तायर् मूवरुन् दम्बि मारुम्
पुनैयुनूल् मुनिवन् तानुम् बोन्नणि विमानत् तेऱ
वनैहळऱ् कुरिशिन् मुन्दि मादवन् ताळिल् वीळ्न्दान् 4227

अनैवरुम्-सभी; अनैयर् आकि-उस स्थिति में; अडैन्तुळि-आये तब; अरुळित्-कृपा के; वेलै तनै-सागर को; इनितु अळित्त-ससुख-जनानेवाली; मूवर् तायरुम्-तीनों माताएँ; तम्पि मारुम्-और छोटे भाई; पुनैयुम् नूल्-यज्ञोपवीतधारी; मुनिवन् तानुम्-मुनि वसिष्ठ; पॊन् अणि-स्वर्णशोभित; विमानत्तु-विमान पर; एऱ-चढ़े तब; वनै कळल्-धृत पायलधारी; कुरिचिल्-पुरुषोत्तम ने; मुन्ति-पहले; मातवन्-महातपस्वी के; ताळिल्-चरणों में; वीळ्न्तान्-दण्डवत् की। ४२२७

ऐसी साज के साथ वे सब गये। विमान आकर रुका। तब तीनों जननियाँ जिन्होंने दयासागर श्रीराम को सुखद रूप से जनाया (या पाला था), और उपवीतधारी महर्षि वसिष्ठ विमान पर चढ़े। धृत पायलधारी श्रीराम ने प्रथमतः महातपस्वी के चरणों में नमस्कार किया। ४२२७

ऍडुत्तनन् मुनिवन् मऱ्ऱव् विरामनै याशि कूऱि
अडुत्तुळ तुन्ब नोङ्ग वणत्तणत् तन्बु कूर्न्दु
विडुत्तुळि मिळैय वीरन् वेदियन् ताळिल् वीळ
वडित्तनून् मुनियु मेन्दि वाळ्त्तिना नाशि कूऱि 4228

मुनिवन्-मुनि ने; अव् इरामनै-उन श्रीराम को; ऍटुत्तनन्-उठाया; आशि कूऱि-आशीर्वाद कहकर; ...

नीङ्क–दूर हो ऐसा; अन्पु कूर्न्तु–प्रेम के आधिक्य से; अणैत्तु अणैत्तु–कई बार आलिंगन करके; विट्टुत्तुळि–छोड़ दिया फिर; इळैय वीरन्–छोटे वीर के; वेतियन् ताळिल्–महर्षि के चरणों में; वीळ–गिरते समय; वटित्त–श्रेष्ठतम; नूल् मुतियुम्–शास्त्रज्ञ मुनि ने; एन्ति–उठाकर; आचि कूरि–आशीर्वाद देकर; वाळ्त्तितान्–मंगल-कामना प्रगट की। ४२२८

मुनिवर ने उन्हें उठाया और आशीर्वाद दिया और भावी (जन्म आदि) दुःख से निवृत्ति के हेतु भक्ति के साथ उन्हें आलिंगन कर लिया। जब उन्होंने आलिंगन छोड़ा तब लघुवीर लक्ष्मण उनके चरणों में गिरे। शास्त्रसारज्ञ महर्षि ने उन्हें आशीर्वाद देकर मंगलकामना प्रकट की। ४२२८

कैहयन् तनयै मुन्दक् कालुरप् पणिन्दु मट्रै
मौय्कुळ लिरुवर् ताळु मुरैमैयिन् वणङ्गुम् जॅङ्गण्
ऐयनै यवर्हळ् तामु मन्बुरत् तळुवित् तन्तम्
शॅय्यता मरैक्क णीराल् मञ्जनत् तॊळिलुञ् जॅय्दार् 4229

कैकयन् तनयै–केकय-तनया को; मुन्त–पहला स्थान देकर; काल् उर–चरणों पर; पणिन्तु–नमन करके; मट्रै–बाद; मौय् कुळल्–घने केश वाली; इरुवर् ताळुम्–दोनों माताओं के चरणों में; मुरैमैयिन्–यथाक्रम; वणङ्कुम्–नमन करने पर; चॅं कण्–अरुणाक्ष; ऐयनै–प्रभु को; अवर्कळ् तामुम्–उन्होंने भी; अन्पु उर–सस्नेह; तळुवि–आलिंगन करके; तम् तम्–अपनी-अपनी; चॅय्य–लाल; तामरै कण् नीराल्–कमल-सी आँखों के जल से; मञ्चनम्–मज्जन का; तॊळिलुम् चॅय्तार्–कार्य कर दिया। ४२२९

फिर अरुणाक्ष प्रभु ने पहले केकयतनया के चरणों में सिर लगाकर नमस्कार करने के बाद अन्य घने केश-वाली दोनों माताओं के चरणों में क्रमानुसार नमस्कार किया। माताओं ने भी उन्हें स्नेह के साथ गले लगा लिया और अपने अरुण-कमल-नेत्रों से बहनेवाले अश्रुजल से मज्जन करा दिया। ४२२९

अन्नमु मुन्नर्च् चॊन्न मुरैमैयि नडियिल् वीळ्न्दाळ्
तन्निह रिलाद वॅन्रित् तम्बियुन् दायर् तङ्गळ्
पॊन्नन्नडित् तलत्तिल् वीळत् तायरुम् पॊरुन्दप् पुल्लि
मन्नवर् किळव नोये वाळियॆन् ट्राशि शॊन्नार् 4230

अन्नमुम्–हंस-सी देवी; मुन्नर्–पहले (ऊपर); चॊन्न–कहे गये; मुरैमैयिन्–क्रम में; अटियिल् वीळ्न्ताळ्–चरणों में गिरीं; तन् निकर्–अपनी सानी; इलात–न रखनेवाले; वॅन्रि तम्पियुम्–विजयी कनिष्ठ भी; तायर् तङ्कळ्–माताओं के; पॊन् अटि–मनोरम चरणों में; तलत्तिल् वीळ–भूमि पर गिरे तो; तायरुम्–माताओं ने; पॊरुन्त–कसकर; पुल्लि–गले लगाकर; मन्नवर्कु–राजाराम के; इळवल् नोये–छोटे भाई (कहने योग्य) तुम ही हो; वाळि–जय हो; ... आचि चॊन्नार्–आशीर्वचन कहे। ४२३०

हंस-सी सीताजी ने भी पूर्वोक्त क्रम में उनका नमस्कार किया। फिर उपमा-रहित लक्ष्मण ने भी माताओं के सुंदर चरणतल में गिरकर दण्डवत् की। माताओं ने गाढ़ालिंगन करके जयोच्चार किया कि (कार्य में) केवल तुम एक राजाराम के छोटे भाई हो! और आशीर्वाद किया। ४२३०

शेवडि यिरण्डु मन्बु मडियुरै याहच् चेर्त्तिप्
पूवडि पणिन्दु वीऴ्न्द परदनैप् पोरुमि विम्मि
नाविडै युरैप्प दोन्रु मुणर्न्दिल निन्र नम्बि
आवियु मुडलु मोन्रत् तऴुविन नऴुदु शोर्वान् 4231

चेवटि इरण्टुम्–दोनों पादुकाओं और; अन्पु–भक्ति को; अटि उरै आक–चरण-भेंट के रूप में; चेर्त्ति–समर्पित करके; पू अटि–कमल-चरणों में; पणिन्तु–झुककर; वीऴ्न्त–जो गिरे; परतनै–उन भरत को देख; पोरुमि विम्मि–सिसक कर, कलप कर; ना इटै–जिह्वा से; उरैप्पतु–कहना; ओन्रुम्–कुछ; उणर्न्तिलन्–नहीं जानकर; निन्र–जो खड़े रहे; नम्पि–उन श्रीराम ने; आवियुम्–प्राण और; उटलुम्–शरीर; ओन्र–मिल जायँ, ऐसा; तऴुविनन्–गले लगा लिया; अऴुतु चोर्वान्–रोकर व्यग्र होनेवाले ने। ४२३१

भरत ने दोनों पादुकाओं को अपनी भक्ति-सहित श्रीराम को भेंट के रूप में समर्पित किया और कमल-चरणों में दण्डवत् की। उन्हें देखकर श्रीराम दुःखी हो सिसके। जीभ से क्या कहा जाय? वे कुछ बोल नहीं पाये। कुछ देर स्तब्ध रहने के बाद वे प्राणों और शरीर को एक करते हुए गाढ़ालिंगन करके रोये और शिथिल बने रहे। ४२३१

तऴुविन निन्र कालैत् तत्तिवी ऴरुवि कालुम्
विऴुमलर्क् कण्णीर् मूरि वॅळ्ळत्ताल् मुरुहिन् शॅव्वि
वऴुवुरप् पिन्नि मूशु माशुण्ड शडैयिन् माले
कऴुविन नुच्चि मोन्दु कन्रुकाण् करवै यन्नान् 4232

तऴुविनन्–गले लगाकर; निन्र कालै–रहते वक्त; तत्ति वीऴ्–उछलकर गिरनेवाली; अरुवि कालुम्–नदी निकालनेवाली; विऴुमलर्–श्रेष्ठ कमल-सी; कण्णीर्–आँखों के जल की; मूरि वॅळ्ळत्ताल्–बड़ी बाढ़ के कारण; मुरुकिन् चॅव्वि–यौवन का सौंदर्य; वऴु उर–बिगाड़कर; पिन्नि मूचु–ऐंठकर बटी; माचु उण्ट–मैली; चटैयिन् मालै–जटाजूट को; कऴुविनन्–धुला दिया; उच्चि मोन्तु–मूर्धा सूंघकर; कन्रु काण्–वत्स को देखनेवाली; करवै अन्नान्–दुधारी गाय के समान रहे। ४२३२

आलिंगन करके श्रीराम ने फाँदती-गिरती अश्रुजल-नदी बहानेवाली आँखों के जल की बाढ़ से यौवन-सौंदर्यहारी, ऐंठकर बटी और मैली (भरत

) जटा को धुलाते हुए सिर सूँघा। वे तब बछड़े से मिलनेवाली दुधारी
ता गाय की-सी स्थिति में रहे। ४२३२

अतैयदोर् कालन् दम्बोर् चडैमुडि यडिय वाहक
कलैक्कळ लमरर् कोमाऩ् कट्टवऩ् पडुत्त काळै
तुलैपरि करिते रूर्दि यॆऩ्ऱिवै पिऱवुन् दोलिन्
विनैयुरु शॆरुप्पुक् कीन्दान् विरैमलर्त् ताळिन् वीऴ्न्दान् 4233

अतैयतु–ऐसे; ओर् कालत्तु–उस समय में; कलैकळल्–ध्वनिमय पायलधारी;
रर् कोमान्–देवेन्द्र के; कट्टवन्–विजेता (इन्द्रजित्) को; पडुत्त काळै–
होंने मारा, उन ऋषभ-सम; तुलै–तीव्रगामी; परि–अश्व; करि–हाथी;
ति तेर्–सवारी का रथ; ॲन्ऱ–जो हैं; इवै–ये और; पिऱवुम्–अन्य;
लिन्–चमड़े की; विनै उरु–बनी; चॆरुप्पुक्कु–पादुका को; ईन्तान्–समर्पित
थे (जिन्होंने) वे भरत; विरै मलर्–सुगंधित कमल-सम; अम् पॊन्–सुन्दर
र्णवर्ण; चडै मुडि–जटाभार को; अडियतु आक–चरणों में लगाकर; ताळिन्
ऴ्न्तान्–चरणों पर गिरे। ४२३३

तब ध्वनिमय पायलधारी देवेंद्रविजेता इंद्रजित् के संहारक, ऋषभ-
म लक्ष्मण ने उन भरत के चरणों से अपना सुगंधित कमल-सम स्वर्णिम
टा वाला सिर लगाकर उनमें नमस्कार किया; जिन्होंने श्रीराम की चमड़े
बनी पादुका को तीव्रगामी अश्व, गज, वाहन रथ आदि समर्पित किये
। ४२३३

ऊडुरु कमलक् कण्णीर् तिशैतॊऱुञ् जिविऱि योडत्
ताडॊडु तडक्कै यारत् तऴुविनन् तनिमै नीङ्गिक्
काडुऱैन् दुलैन्द मॆय्यो कैयऱु कवलै कूर
नाडुऱैन् दुलैन्द मॆय्यो नैन्ददॆन् ऱुलह नैय 4234

उलकम्–लोकवासी; तनिमै नीङ्कि–अकेला रहना असंभव करके; काडु
न्तु–वन में वास करके; उलैन्त–जो धुला; मॆय्यो–वह शरीर; कै अऱु–
ष्क्रिय बनानेवाली; कवलै कूर–चिंता के बढ़ने से; नाडु उऱैन्तु–देश में रहकर;
न्त मॆय्यो–जो घुला वह शरीर; नैन्ततु–कृश हुआ; ॲन्ऱु–ऐसा पूछकर;
–क्षुब्ध हुए; कमलम् कण्–कमल-से नेत्र; ऊडु उऱु–से बहनेवाला; कण्णीर्–
; तिशै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; चिविऱि ओड–छितरकर बहा; ताळ् तोडु–
ानु; तड कै–विशाल बाहुओं से; आर तऴुवितनन्–खूब लपेट लिया। ४२३४

उन दोनों को देखकर लोकवासी यह पूछने लगे कि प्रभु को अकेले न
ने देकर जो वन में रहे और कृश हो गये उन लक्ष्मण का शरीर कृश है
निष्क्रिय बनानेवाले दुःख के बढ़ते राज्य में रहकर जो घुले उन भरत
शरीर कृश है ? लोकवासियों के दुःख के कारण व्यग्र होते उनके
मल-नेत्रों से जो अश्रु बह निकला वह सभी दिशाओं में बिखरकर बहा।

तब भरत ने अपने आजानु भुजाओं से लक्ष्मण को गाढ़ालिंगन कर लिया। ४२३४

मूवर्क्कु मिळैय वळ्ळल् मुडिमिशै मुहिळ्त्त कैयन्
तेवर्क्कुन् देवन् ताळुम् जॅरिकळ लिळवल् ताळुम्
पूवर्क्कम् पॊळिन्दु वीळ्न्दा नॅडुत्तनर् पॊरुन्दप् पुल्लि
वाविक्कु ळन्न मन्नाळ् मलरडित् तलत्तु वीळ्न्दान् 4235

मूवर्क्कुम्–तीनों के; इळैय–छोटे; वळ्ळल्–प्रभु शत्रुघ्न; मुडि मिचै–सिर पर; मुकिळ्त्त–अंजलि करके रखे गये; कैयन्–हाथोंवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के; तेवन्–देव श्रीराम के; ताळुम्–चरणों में और; कॅरि कळल्–पहनी हुई पायल वाले; इळवल् ताळुम्–लघुराज के चरणों में; पू वर्क्कम्–पुष्पवर्ग; पॊळिन्दु–बरसकर; वीळ्न्तान्–गिरे; ऍडुत्तनर्–उठाया; पॊरुन्त–खूब कसकर; पुल्लि–आलिंगन करके; वाविक्कुळ्–सरोवर में (रहते); अन्नम् अन्नाळ्–हंस के समान जो रहती हैं उनके; मलर्–कमल-सम; अटि तलत्तु–चरणतल में; वीळ्न्तान्–गिरा शत्रुघ्न। ४२३५

फिर तीनों के छोटे भाई शत्रुघ्न सिर पर अंजलिबद्ध हाथ धरे आये और देव-देव श्रीराम के और धृत पायलधारी लक्ष्मण के चरणों में पुष्प-राशि बरसाकर विनत हुए। दोनों ने उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया। बाद शत्रुघ्न सरोवरवासी हंस के सदृश रहनेवाली सीताजी के कमल-चरण में गिरे। ४२३५

पिन्निणैक् कुरिशिल् तन्नैप् पॅरुङ्गैयाल् वाङ्गि वीङ्गुम्
तन्निणैत् तोळ्ह ळारत् तळुवियत् तम्बि मारुक्
किन्नुयिरत् तुणैवर् तम्मैक् काट्टिना निरुवर् ताळुम्
मन्नुयिरक् कुवमै कूर वन्दवर् वणक्कञ् जॅय्दार् 4236

पिन् इणै कुरिचिल् तन्नै–अपने लघु भ्राता भरत से जो कभी नहीं बिछुड़ता उसे; पॅरु कैयाल्–विशाल हाथों से; वाङ्कि–उठाकर श्रीराम ने; तन्–अपने; वीङ्कुम्–फूले हुए; इणै तोळ्कळ्–हस्तद्वय से; आर तळुवि–कसकर आलिंगन करके; अ तम्पि मारुक्कु–उन छोटे भाइयों को; इन् उयिर्–अपने प्राणप्यारे; तुणैवर् तम्मै–साथियों को; काट्टिनान्–दिखाया; मन् उयिर्क्कु–नित्य प्राणों के; उवमै कूर–समान जो रहे उन; वन्तवर्–आगतों ने; इरुवर् ताळुम्–दोनों के चरणों में; वणक्कम् चॅय्तार्–नमस्कार किया। ४२३६

बाद श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भरत से अपृथक् रहनेवाले शत्रुघ्न को उठाकर अपने दोनों स्थूल भुजाओं से कसकर आलिंगन किया। फिर उन दोनों भाइयों को अपने प्राणप्यारे मित्रों का परिचय कराया। श्रीराम के मधुर प्राण-सम प्यारे उन लोगों ने जो श्रीराम के साथ आये थे भरत और शत्रुघ्न के चरणों में नमस्कार किया। ४२३६

कुरक्किनत् तरशैच् चेयैक् कुमुदनैच् चाम्बन् तन्नैच्
चॅरुक्किळर् नीलन् तन्नै मऱ्ऱुमत् तिऱत्ति नोरै
अरक्करुक् करशै वॆव्वे ऱडैविनिन् मुदन्मै कूऱि
मरुक्कमळ् तॊडैयल् मालै मार्बिनन् परद निन्ऱान् 4237

मरु कमळ्–सुगंध छिटकानेवाली; तॊटैयल्–गुँथी; मालै मार्पिनन्–माला से शोभित वक्ष वाले भरत; कुरक्कु इननतु–वानरकुल के; अरचै–राजा को; चेयै–पुत्र अंगद को; कुमुतनै–कुमुद को; चाम्पन् तन्नै–जाम्बवान को; चॆरु किळर्–युद्धोत्साही; नीलन् तन्नै–नील को; मऱ्ऱुम्–और; अ तिऱत्तिनोरै–उस वर्ग को; अरक्करुक्कु–राक्षसों के; अरचै–राजा को; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; अटैविनिल्–क्रमानुसार; मुतन्मै–शिष्टवचन; कूऱि निन्ऱान्–कहकर खड़े रहे। ४२३७

सुगंधित, गुँथी मालाधारी भरत ने वानरराजा, राजपुत्र अंगद, कुमुद, जाम्बवान, युद्धोत्साही नील से और अन्य वानरों से, तथा राक्षस-राज से अलग-अलग और क्रमानुसार शिष्ट वचन कहे। कहकर वे खड़े रहे। ४२३७

मन्दिरच् चुऱ्ऱत् तुळ्ळार् तम्मॊडुम् वयङ्गु तानैत्
तन्दिरत् तलैव रोडुन् दमरॊडुन् दरणि याळुम्
शिन्दुरक् कळिऱु पोल्वा रॆवरॊडुञ् जेनै योडुम्
शुन्दरत् तडन्दोळ् वॆऱ्ऱिच् चुमन्दिरन् तोन्ऱि नान् 4238

चुन्तरम्–सुन्दर; तट तोळ्–विशाल-बाहु; वॆऱ्ऱि–विजयी; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; मन्तिरम्–मंत्री; चुऱ्ऱत्तु–मंडल में; उळ्ळार् तम्मॊटुम्–रहे लोगों के साथ; वयङ्कु तानै–गण्य सेना के; तन्तिरर् तलैवरॊटुम्–सेनानायकों के साथ; तमरॊटुम्–परिवारों के साथ; तरणि–धरणी के; आळुम्–पालक; चिन्तुरम्–सिंदूर-तिलक-धारी; कळिऱु पोल्वार्–हाथियों के समान; ऎवरॊटुम्–सभी के साथ; चेनैयॊटुम्–सेना के साथ; तोन्ऱिनान्–आया। ४२३८

सुंदर विशाल-बाहु तथा विजयी सुमंत्र, मंत्रीगण, सेना-सहित सेना-नायकों तथा अपने (या उनके) परिवारों और सिंदूरतिलकधारी हाथियों-सम धराधिपों को साथ लेकर श्रीराम के दर्शन के लिए आया। ४२३८

अळुहैयु मुवहै तानुन् दनित्तनि यमर्शॆय् देऱ्ऱ्
तॊळुदवन् ऱॆळुन्दु विम्मिच् चुमन्दिर निऱ्ऱ लोडुम्
तळुविन ऩिरामन् मऱ्ऱैत् तम्बियु मनैय नीरान्
वळुविलि युळवन् ऱिन्द मानिलक् किळत्तिक् कॆन्ऱान् 4239

अळुकैयुम्–रोना और; उवकै तानुम्–आनन्द; तनि तनि–अलग-अलग; अमर्–युद्ध; चॆय्तु–करके; एऱ्ऱ–चढ़ा; तॊळुतनन्–नमन करके; ऎळुन्तु–उठा; विम्मि–रोकर; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; निऱ्ऱलोटुम्–जब खड़ा रहा तब; इरामन्–श्रीराम ने; तळुविनन्–गले लगा लिया; मऱ्ऱै तम्पियुम्–अन्य भाई (लक्ष्मण) ने

भी; अरौय नीरात्-वही किया; इन्त मानिलम् किळत्तिक्कु-इस बड़ी भूमिदेवी को; इति-आगे; वळु-हानि; उळतु-होगी; अन्रु-नहीं; ऎन्रान्-कहा। ४२३८

सुमंत्र के मन में रोना और आनंद दोनों परस्पर स्पर्धा करके उठ आते थे। नमस्कार करके, सिसकते हुए वह खड़ा रहा। तब श्रीराम ने उसे गले लगा लिया। उनके कनिष्ठ लक्ष्मण ने भी वैसा ही किया। सुमंत्र ने आनंद के साथ श्रीराम से कहा कि अब यह महीयसी भूमिदेवी निर्विघ्न हो गयी। ४२३९

एरुह शेन यॆल्लाम् विमानमी दॆन्रु तन्बोल्
माऱिला वीरन् कूऱ वन्दुळ वनीह वॆळ्ळम्
ऊऱिरुम् बरवै वानत् तॊळ्ळियु ळॊडुङ्गु मापोल्
एऱिमऱ् ऱिळैय वीर निणैयडि तॊळुद दन्ऱे 4240

तन् पोल्-जिनके समान; माऱु इला-दूसरा नहीं रहा; वीरन्-वीर श्रीराम के; चेनै ऎल्लाम्-सारी सेना; विमानम् मीतु-विमान पर; एऱुह-चढ़े; ऎन्ऱु कूऱ-ऐसा कहने पर; वन्तु उळ-जो आयी थी; अनीकम् वॆळ्ळम्-वह सेना की बाढ़; ऊऱु इरु परवै-स्रोतयुक्त बड़ा सागर; वानत्तु-आकाश के; ऎळ्ळियुळ्-मेघ के अन्दर; ऒडुङ्कुमा पोल्-समा जाय जैसे; एऱि-चढ़कर; इळैय वीरन्-छोटे वीरों के; इणै अटि-चरणद्वय की; तॊळुतु-वन्दना करके रही। ४२४०

तब अप्रतिम वीर श्रीराम ने आज्ञा दी कि सारी सेना विमान पर सवार हो जाये। सारी सेना इस प्रकार विमान में घुसी मानो स्रोतयुक्त बड़ा सागर आकाशस्थित मेघ में समा जाता हो। उसने छोटे वीर के चरणद्वय की वन्दना की। ४२४०

उरैशॆयि नुलह मुण्डान् मणियणि युदर मॊव्वा
करैशॆय लरिय वेदक् कुरुमुनि कैयु मॊव्वा
विरैशॆऱि यलङ्गल् मालैप् पुट्पह विमान मॆन्ऱॆन्
ऱुरैशॆय्दु वानु ळोर्ह ळॊण्मलर् तूवि यार्त्तार् 4241

वानुळोर्कळ्-आकाशवासी देवों ने; विरै चॆऱि-सुगन्धपूर्ण; अलङ्कल् मालै-हिलती माला से अलंकृत; पुट्पकम् विमानम्-पुष्पकविमान; उरै चॆयिन्-कहना हो तो; उलकम् उण्टान्-लोकभोक्ता; मणि अणि-सुघड़ सुन्दर; उतरम् ऒव्वा-उदर भी उपमा न होगा; करै चॆयल् अरिय-अपार; वेतम्-वेदज्ञ; कुऱु मुनि कैयुम्-छोटे मुनि अगस्त्य का हस्त; ऒव्वा-उपमा नहीं बन सकता; ऎन्ऱु-ऐसा; ऎन्ऱु-यह; उरै चॆय्तु-कहकर; ऒळ् मलर्-उज्ज्वल पुष्प; तूवि-बिखेरकर; आर्त्तार्-जयनाद किया। ४२४१

आकाशलोकवासी देवों ने कहा कि इस पुष्पकविमान की उपमा कहनी हो तो कहना चाहिए कि श्रीविष्णु ने सारे लोकों को प्रलयमें जिस

अपने उदर में समा लिया था, वह बहुत सुंदर और सुडौल उदर भी इसकी उपमा नहीं हो सकता। क्यों? नाटे मुनि अगस्त्य ने सारे समुद्र को अपने चुल्लू में उठा लिया था वह चुल्लू भी इससे उपमित नहीं किया जा सकता। उन्होंने उज्ज्वल पुष्प बिखेरकर जयनाद किया। ४२४१

अशनियित् कुळुवु माळि येळमोत् तार्त्त वॆन्न
विशैयुरु मुरशुम् वेदत् तोदैयुम् विळिहोळ् शङ्गुम्
इशैयुरु कुरलु मेत्ति नरवमु मॆळुन्दु पॊङ्गित्
तिशैयुरच् चॆन्रु वानो रन्दरत् तॊलियिऱ् ऱीर्न्द 4242

विचै उरु–शीघ्र फैलनेवाली; मुरचुम्–भेरी ध्वनि और; वेतत्तु ओतैयुम्–वेदध्वनि; विळि कोळ्–गूँजनेवाली; चङ्कुम्–शंखध्वनि; इचै उरु–संगीत की; कुरलुम्–कण्ठध्वनि; एत्तिन्–स्तुति का; अरवमुम्–शब्द और; अचनियित्–अशनि की; कुळुवुम्–राशियाँ; एळु आळियुम्–सात समुद्र; ओत्तु–एक साथ; आर्त्तत्तु ऎन्न–ध्वनि कर उठे जैसे; ऎळुन्तु–उठ; पॊङ्कि–बढ़कर; तिचै उऱ–दिशाओं में; चॆन्रु–जाकर; वानोर्–देवों की (स्तुति) की; अन्तरत्तु ऒलियिल्–अंतरिक्ष ध्वनि में; तीर्न्त–समा गये। ४२४२

शीघ्र फैलती भेरी-ध्वनि, वेदस्वर, गूँजती शंखध्वनि, और कंठ-संगीत-ध्वनि तथा स्तुति का शब्द— सब अशनिराशियाँ और सातों समुद्र गर्जन कर उठे हों, ऐसा उठा, बढ़ा, दिशाओं में गया और आकाश में जाकर देवों की स्तुति के नाद में विलीन हो गया। ४२४२

अव्वयिन् विमानन् दावि यन्दरत् तयोत्ति नोक्किच्
चॆव्वैयिऱ् पडर लुऱ्ऱ शॆहतल मडन्दै योडुम्
इव्वुल हत्तु ळोर्ह ळिन्दिर रुलहु काण्बान्
कव्वैयि नेहु हिन्ऱ नीर्मैयैक् कडुक्कु मन्ऱे 4243

अव्वयिन्–वहाँ से; विमानम्–विमान; अन्तरत्तु ताबि–आकाश में उड़कर; अयोत्ति नोक्कि–अयोध्या की तरफ़; चॆव्वैयिल्–सीधे; पटरल् उऱ्ऱ–जो गया वह; चॆक तलम्–जगतल की; मटन्तैयोटुम्–देवी के साथ; इव् उलकत्तु उळोर्कळ्–इस लोक के लोग; इन्तिरर्–इन्द्र के; उलकु–लोक को; काण्पान्–देखने के लिए; कव्वैयिन्–बड़े कोलाहल के साथ; एकुकिन्ऱ–जाते हों जैसी; नीर्मै–स्थिति; कटुक्कुम्–के समान था। ४२४३

तब विमान उठा, आकाश में उड़ा और अयोध्या की तरफ़ जाने लगा। वह दृश्य तब ऐसा लगा मानो भूलोकवासी भूमि की अधीश्वरी के साथ देवेंद्रनगर को देखने के निमित्त बड़े शोर के साथ उठ जा रहे हों। ४२४३

आऩदो रळवैयिऩ् ऩमरर् कोऩ्ऩोडुम्
वाऩवर् तिरुनहर् वरुव दामॆऩ
मेऩिऱै वाऩवर् वीशुम् बूवोडुम्
ताऩुयर् पुट्पह निलत्तैच् चार्न्दवाल् 4244

आऩतु ओर् अळवैयिऩ्–उस (एक) समय; ताऩ् उयर्–सर्वश्रेष्ठ; पुट्पकम्–पुष्पकयान; अमरर् कोऩ्ऩोटुम्–देवेन्द्र के साथ; वाऩवर्–देवों का; तिरुनकर्–श्रीनगर; वरुवतु आम्–आता हो; ऍऩ–जैसे; मेल्–ऊपर; निऱै–भीड़ में रहे; वाऩवर् वीचुम्–देववर्षित; पूवोटुम्–पुष्पों के साथ; निलत्तै–भूमि पर; चार्न्ततु (नंदिग्राम) आया। ४२४४

और उस समय सर्वश्रेष्ठ पुष्पक देवेंद्र-सह देवेंद्रनगर (अयोध्या के दर्शनार्थ) आ रहा हो, जैसे आया। उस पर आकाशस्थ बड़ी भीड़ के देवों ने फूल बरसाये। पुष्पों से भरा वह भूमि पर (नंदिग्राम) आया। ४२४४

38. तिरुमुडि शूट्टु पडलम् (श्रीकिरीट-धारण पटल)

नम्बिय परद ऩोडु नन्दियम् बदियै नण्णि
वम्बलर् शडैयु माऱ्ऱि मयिर्विऩै मुऱ्ऱि मऱ्ऱैत्
तम्बिय रोडु ताऩुम् शरयुविऩ् पुऩलिऱ् ऱोय्न्दे
उम्बरु मुवहै कूर वॊप्पऩै यॊप्पच् चॆय्दार् 4245

नम्पिय–विश्वासी; परतऩोटु–भरत के साथ; मऱ्ऱैत् तम्पियरोटु–अन्य सहोदरों के साथ; ताऩुम्–स्वयं; नन्ति अम्पतियै–सुन्दर नंदिग्राम; नण्णि–आकर; वम्पु–सुगन्ध; अलर्–देनेवाली; चटैयुम् माऱ्ऱि–जटा निवारकर; मयिर् विऩै–केश-शृंगार का कार्य; मुऱ्ऱि–पूरा करके; चरयुविऩ्–सरयू के; पुऩलिल्–तीर्थ में; तोय्न्तु–स्नान करके; उम्परुम्–देवों को भी; उवकै कूर–आनंद अधिक देते हुए; ऒप्पऩै–शृंगार; ऒप्प–युक्त; चॆय्तार्–कर लिये। ४२४५

अपने पर अकाट्य विश्वास रखनेवाले भरत के और अन्य लघु सहोदरों के साथ श्रीराम रमणीय नंदिग्राम आये। वहाँ सुगंधित जटा का निवारण करके बाल के बनाने का कार्य किया गया। सरयू में स्नान करने के बाद उचित रीति से उनका शृंगार किया गया, जिसे देखकर देव लोगों का आनंद बढ़ा। ४२४५

निरुदियिऩ् तिशैयिऱ् ऱोऩ्ऱु नन्दियम् बदियै नीङ्गि
कुरुदिकॊप् पळिक्कुम् वेलाऩ् कॊडिमदि लयोत्ति मेवच्
चुरुदियेत् तऩैय वॆळ्ळैत् तुरहदक् कुलङ्गळ् पूण्डु
परुवियॊत् तिलङ्गुम् बॆम्बॊट् परुमणित् तेरि ऩाऩाऩ् 4246

कुरुति–रक्त; कॊप्पळिक्कुम्–उगलते; वेलाऩ्–भाले वाले; निरुतियिऩ्–दक्षिण-पश्चिम; तिचैयिल्–दिशा में; तोऩ्ऱुम्–रहनेवाले; नन्ति अम् पतियै–सुन्दर नंदिग्राम को; नीङ्कि–छोड़कर; कॊटि मतिल्–ध्वजाओं वाले प्राचीरों को;

अयोत्ति मेय–अयोध्या आये; एत्तु–स्तोता; चुरुति–वेदों के; अनैय–समान; वॆळ्ळै–श्वेत; तुरकतम्–अश्वों को; कुलङ्कळ् पूण्टु–राशियों से जोता जाकर; परुति–सूर्य; ऑत्तु–के समान; इलङ्कुम्–रहनेवाले; पैम्पूण्–ताजे स्वर्ण से निर्मित; परु मणि–बड़े रत्नों से युक्त; तेरिन् आनान्–रथस्थ हुए। ४२४६

रक्तवमनकारी भाले के धारक स्वामी श्रीराम ने दक्षिण-पश्चिम के नंदिग्राम को छोड़कर ध्वजाओं से युक्त प्राचीरों वाली अयोध्या जाने के लिए स्तोता वेद-सदृश श्वेत तुरगचतुष्टय के जुते, सूर्य-सम शोभायमान तथा जडित स्वर्ण-सह मणिमय रथ पर सवार हुए। ४२४६

ऊऴियि निरुदि काणुम् वलियिन् दुयर्पोऱ् ऱेरिन्
एऴुयर् मदमा वन्न विलक्कुवन् कविहै येन्दप्
पाऴिय मऱ्ऱैत् तम्बि पाल्निऱक् कवरि पऱ्ऱप्
पूऴियै यडक्कुङ् गण्णीर्प् परदन्कोल् कॊळ्ळप् पोनान् 4247

ऊऴियिन्–युग का; इऱुति–अन्त; काणुम्–देख सकनेवाले राम; वलियिन्तु–बल से युक्त; उयर्–उन्नत; पॊन् तेरिन्–स्वर्णरथ पर; एऴु–सात हाथ के; उयर्–ऊँचे; मतम्मा अन्न–मस्त गज के समान; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; कविकै एन्त–श्वेत छत्र धारण करते; पाऴिय–पराक्रमी; मऱ्ऱै तम्पि–अन्य भाई (शत्रुघ्न) के; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; कवरि पऱ्ऱ–चामर डुलाते; पूऴियै–धूलि को; अडक्कुम्–थमानेवाले; कण्णीर्–अश्रुजल वाले; परतन्–भरत के; कोल् कॊळ्ळ–वेत्र हाथ में लेते; पोनान्–गये। ४२४७

युगांतदर्शनबली उस उन्नत रथ पर जब श्रीराम गये तब सात हाथ के ऊँचे, मस्त हाथी के समान लक्ष्मण श्वेत छत्र धारण करते गये। बलवान शत्रुघ्न ने दुग्धवर्ण चामर डुलाया। धूलि को जमा दे, इस रीति से आँसू बहानेवाले भरत ने वेत्र लेकर सारथ्य किया। ४२४७

वीडणक् कुरिशिन् मऱ्ऱै वॆङ्गदिर्च् चिऱुवन् वॆऱ्ऱिक्
कोडणै कुन्ऱ मेऱिक् कॊण्डऱेर् मरुङ्गु शॆल्लत्
तोडणै मवुलिच् चॆङ्गण् वालिशेय् तूशि शॆल्लच्
चेडनैप् पॊरुवुम् वीर मारुदि पिन्बु शॆन्ऱान् 4248

कुरिचिल् वीडणन्–श्रेष्ठ विभीषण; मऱ्ऱै–और; वॆम् कतिर् चिऱुवन्–गरम किरणमाली का पुत्र; वॆऱ्ऱि–विजयी; कोटु अणै–तथा दाँतों से युक्त; कुन्ऱम् एऱि–पर्वत (हाथी) पर चढ़कर; कॊण्टल्–मेघसदृश श्रीराम के; तेर् मरुङ्कु–रथ के पास-पास; चॆल्ल–गये और; तोटु अणै–पुष्पदलों वाले; मवुलि–किरीटधारी; चॆं कण्–लाल आँखों के; वालि चेय्–वालीपुत्र के; तूचि चॆल्ल–हरावल में जाते; चेटनै पॊरुवुम्–शेषनाग-सम; वीर मारुति–वीर मारुति; पिन्पु चॆन्ऱान्–पीछे गया। ४२४८

उत्तम विभीषण और गरम किरणों के स्वामी सूर्य का सुत सुग्रीव

दोनों विजयी दंती पर्वत-सम गजों पर आरूढ़ हो रथ के दोनों ओर पास-पास गये। मालाधारी किरीटमंडित लाल आँख का वालीपुत्र अंगद हरावल में चला और शेषनाग-सम मारुति सबसे पीछे। ४२४८

अऱुपत्ते ऴुमैन्द कोडि यानैमेल् वरिशैक् कानॢ
तिऱमुऱ्ऱ शिऱप्प राहि मानुडच् चॅव्वि वीरम्
पॅरुहुऱ्ऱ वऩप्प रुच्चि पिऱङ्गुवॆण् कुडैयर् शॆच्चै
मऱुवऱ्ऱ वलङ्गल् मार्बर् वानरत् तलैवर् पोनार् 4249

वरिशैक्कु–पद के; आनॢ–अनुसार युक्त; तिऱम् उऱ्ऱ–बल से लगकर; शिऱप्पर् आकि–विशिष्ट बनकर; मानुडम्–मानव के; चॅव्वि–रूप में रहकर; वीरम् पॆरुकुऱ्ऱ–वीरता में बढ़े; वऩप्पर्–सौंदर्य वाले; उच्चि पिऱङ्कु–ऊपर शोभित; वॆळ् कुडैयर्–श्वेत छत्रवाले; चॆच्चै–लाल चंदन लेप से लिप्त; मऱु अऱ्ऱ–निर्दोष; अलङ्कल्–मालाधारी; मार्पर्–वक्षवाले; अऱुपत्तु एऴु–सड़सठ; अमैन्त कोटि–करोड़; वानरर् तलैवर्–वानरयूथप; यानै मेल् पोनार्–हाथियों पर (सवार हो) गये। ४२४९

पद के अनुसार स्थान में, युक्त विशेषता के साथ सड़सठ वानरयूथप मानव-रूप में सुन्दर बनकर ऊपर श्वेतछत्र के शोभित होते लाल चंदन-लिप्त तथा मालाधारी वक्ष की शोभा दिखाते हुए गजों पर गये। ४२४९

ऍट्टॅऩ विरुत्त पत्ति नेऴ्पॊऴिल् वळाह वेन्दर्
पट्टमवैत् तमैन्द नॅऱ्ऱिप् पहट्टिऩर् पैम्बोऩ् ऱेरर्
वट्टवॆण् कुडैयर् वीशु शामरै मरुङ्गर् वानैत्
तॊट्टवॆञ् जोदि मोलिच् चॆन्निियर् तॊऴुदु शूऴ्न्दार् 4250

पट्टम् वैत्तु–मुखपट्ट लगाकर; अमैत्त–सजे हुए; नॅऱ्ऱि पकट्टिऩर्–मस्तकों के हाथियों के; पैम् पॊऩ्–खरे स्वर्ण के; तेरर्–रथों पर सवार; वट्टम् वॆण् कुडैयर्–मंडलाकार श्वेत छत्र वाले; चामरै वीचुम्–चामर डुलानेवाले; मरुङ्कर्–जिनके पार्श्व में हों, वे; वाऩै तॊट्ट–आकाशस्पर्शी; वॆम् चोति–तेज ज्योति के; मोलि चॆऩ्ऩियर्–किरीट-धारी सिरों वाले; ऍट्टु ऍऩ–आठ में; इरुत्त पत्तिऩ्–समाप्त दस, अठारह के; एऴ् पॊऴिल्–सात भू के; वळाकम् वेन्तर्–मंडलों के राजा; तॊऴुतु चूऴ्न्तार्–नम कर घेरते आये। ४२५०

अठारह भागों में विभक्त सात मंडलों के अधिपति राजा मुखपटालंकृत गजों के साथ, खरे स्वर्ण के रथों पर, श्वेतछत्र, चामर आदि राज-मर्यादाओं की सेवा स्वीकार करते हुए मनोरम ज्योतिर्मय मुकुट पहने, विनत होकर श्रीराम को घेरे जा रहे थे। ४२५०

वाऩर महळि रॅल्लाम् वाऩवर् महळि रायवन्
वूऩमिल् पिडियु मॊण्डार्प् पुरवियुम् बिऱवु मूर्न्दु

मीऩिऩ मदियैच् चूऴ्न्द तऩ्मैयिऩ् विरिन्दु शुऱ्ऱप्
पूनिऱ विमाऩत्तऩ् दऩ्मेऩ् मिदिलैनाट् टऩ्ऩम् बोऩाळ् 4251

वानर मकळिर् ॲल्लाम्–वानरियाँ सभी; वातवर् मकळिराय् वन्तु–देवांगनाओं के रूप में आकर; ऊतम् इल्–निर्दोष; पिटियुम्–हथिनियों; ओळ् तार्–उज्ज्वल किंकिणी वाले; पुरवियुम्–अश्वों और; पिऱवुम्–अन्यों पर; ऊर्न्तु–सवार हो आयीं; मीऩ् इतम्–नक्षत्रगण; मतियै–चन्द्र को; चूऴ्न्त–आवृत रहें; तऩ्मैयिऩ्–उस प्रकार; विरिन्तु चुऱ्ऱ–विस्तृत मंडल में घेरे रहीं; पू–सौंदर्य तथा; निऱम्–रंगीन; निमातम् तऩ् मेल्–विमान पर; मितिलै नाट्–मिथिला देश की; अऩ्ऩम् पोऩाळ्–हंस-सी सीता गयीं। ४२५१

सभी वानरियाँ अप्सराओं के रूप में आयीं और वे निर्दोष सुडौल हथिनियों, उज्ज्वल हारों से अलंकृत अश्वों और अन्य (शिविका आदि) वाहनों पर आरूढ़ होकर चंद्र को आवृत रहनेवाले नक्षत्रगणों के समान आ रही थीं। सुन्दर सुवर्ण-विमान पर श्री मिथिलादेशजा हंस-सी सीता उनके मध्य गयीं। ४२५१

तेवरु मुऩिवर् तामुन् दिशैतॊऱु मलर्हळ् शिन्द
ओवलिऩ् मारि येय्प्प वॆङ्गण् मुदिर्न्दु वीङ्गिक्
केवल मलराय् वेऱो रिडमिऩ्ऱिक् किडन्द वाऱ्ऱाल्
पूवॆऩ् नाम मिऩ्ऱिव् वुलहिऱ्कुप् पॊरुन्दिऱ् ऱॆऩ्ऱे 4252

तेवरुम्–देवों के; मुऩिवर् तामुम्–और मुनियों के; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; ओवलिल्–निरन्तर; मारि–वर्षा; एय्प्प–के समान; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; मलर्कळ् चिन्त–पुष्पों को बिखेरने से; उतिर्न्तु–छितरकर; वीङ्कि–बहुत फैलकर; केवलम्–केवल; मलराय्–सुमन ही सुमन; वेऱु ओर्–अन्य कोई; इटम् इऩ्ऱि–स्थान नहीं; किटन्त आऱ्ऱाल्–पड़े रहे इसलिए; पू ॲऩुम्–'भू' का; नामम्–नाम; इऩ्ऱु–आज; इव् उलकिऱ्कु–इस लोक के लिए; पॊरुन्तिऱ्ऱु–बहुत ही युक्त रहा। ४२५२

देवगण और मुनि लोग निरंतर बारिश होती हो जैसे फूल बरसा रहे थे। इसलिए सर्वत्र पुष्प ही पुष्प अत्यधिक परिमाण में छितरे पड़े थे और खाली स्थान दिखायी ही नहीं देता था। उस दृश्य को देखकर लगता है भू का नाम इस धरा के सम्बंध में सार्थक तथा समुचित बन गया। (तमिऴ में "पू" संस्कृत की "भू" को भी कहते हैं; यद्यपि संस्कृत में 'पू' और 'भू' में उच्चारण में भी अंतर है और अर्थ में भी। संस्कृत के 'भ' को तमिऴ में 'प' ही लिखा जा सकता है।)। ४२५२

कोडैयिल् वऱ्न्द मेहक् कुलमॆऩप् पदिता लाण्डु

काडुरै यण्ण लॅय्दक् कडान्दिरन् दुहुत्त वारि
ओडिन वुळ्ळत् तुळ्ळ कळितिरन् दुडैत्त देपोल् 4253

कोटैयिर्–ग्रीष्मकाल में; वऱ्ऱन्त–शुष्क; मेकम् कुलम् ॲत–मेघसमूह के समान; पतिनालु आण्टु–चौदह साल; पाटु उऱु–बहनेवाले; मतम्–मद को; ॲय्यात–जिन्होंने न निकाला; पणै–दाँतों को; मुकम्–मुख पर रखनेवाले; परुमम् यानै–हौदेयुक्त गजों ने; काटु उऱै–वनवासी रहे; अण्णल्–प्रभु के; ॲय्त–लौटने पर; कटाम् तिऱन्तु–गण्डस्थल खोलकर; उकुत्त वारि–जो बहाया बह मदजल; उळ्ळत्तु उळ्ळ–अन्दर (मन में) रहा; कळि तिऱन्तु–आनन्द खुलकर; उटैत्तते पोल्–मानो बाँध तोड़कर; ओटिन–बहा। ४२५३

इन चौदह सालों में जो हाथी शुष्क मेघों के समान मदनीर-रहित थे, अब उनमें मस्ती आ गयी और गण्डस्थल खोलकर मदनीर बहाने लगे। वह ऐसा लगा मानो उनका आंतरिक आनंद गाल खोलकर बाहर मदजल के रूप में बह रहा हो। ४२५३

तुरुवत्तार्प् पुरवि यॅल्ला मूङ्गैयर् शॊर्पॆर् ऱॅन्न
अरवप्पोर् मेह मॅन्न वालित्त मरङ्ग ळान्ऱ
परुवत्तार् पूत्त वॆन्नप् पूत्तन पहैविर् चीऱुम्
पुरुवत्तार् मेनि यॆल्लाम् बॊन्निऱप् पशलै पूत्त 4254

तुरुवम् तार्–सदा पहने हुए हारों वाले; पुरवि ॲल्लाम्–सारे अश्व; मूक्कैयर्–गूंगे; चोल् पॆऱ्ऱ–वाणी पा गये हों; ॲन्न–ऐसा; अरवम्–गर्जन; पोर् मेकम्–युक्त मेघों के; ॲन्न–समान; आलित्त–हिनहिनाये; मरक्कळ्–तरु; आन्ऱ–युक्त; परुवत्ताल्–मौसम में; पूत्त ॲन्न–खिले जैसे; पूत्तन–पुष्पों से भर गये; पकै–शत्रु पर; विल् चीऱुम्–धनु के समान गुस्सा करनेवाली; पुरुवत्तार्–भौंहों वाली; मेनि ॲल्लाम्–सभी रमणियों के शरीरों में; पॊन् निऱम्–स्वर्ण-रंग का; पचलै पूत्त–वैवर्ण्य फैला। ४२५४

सदा हारों से अलंकृत रहनेवाले घोड़े भाषण-शक्ति प्राप्त गूँगों के समान, वा अशनिघोषयुक्त मेघों के समान उच्च स्वर में हिनहिनाये। तरुओं में मानो मौसम आया हो, खूब पुष्प लग गये। शत्रु पर झुकाये गये धनुष के समान गुस्सा दिखानेवाली भौंहों से युक्त तरुणियों के शरीर में स्वर्ण वर्ण का रमणीय (हुलस प्रगट करनेवाला शारीरिक परिवर्तन-द्योतक) वैवर्ण्य फैल गया। ४२५४

आयदो रळविल् शॅल्वत् तण्णलु मयोत्ति नण्णित्
तायरै वणङ्गित् तङ्ग ळिऱैयॊडु मुत्तियैत् ताऴ्न्दु
नायहक् कोयि लॅय्दि नानिलक् किळत्ति योडुम्
शेयॊळिक् कमलत् ताळुङ् गळिनडञ् जॅय्यक् कण्डान् 4255

आयतु ओर् अळविल्–ऐसे उस समय; चॆल्वत्तु अण्णलुम्–श्रीमान प्रभु;

अयोत्तुति नण्णि–अयोध्या में आकर; तायरै वणङ्कि–माताओं को नमस्कार करके; नायकम्–सर्वलोकनायक के; कोयिल् ॲय्ति–मंदिर में जाकर; तङ्कळ् इऱैयोटु–अपने इष्टदेव रंगनाथ को और; मुतियै ताळ्नृतु–मुनिवर वसिष्ठ की पूजा करके; नातिलम् किळत्तियोटुम्–भू देवी (श्री) के साथ; चॅम्मै ऑळि–ललाई वालो; कमलत्ताळुम्–कमला को; कळि नटम्–मोद के साथ; चॆय्य कण्टात्–नाचता देखा। ४२५५

उस समय सर्वश्रीमान श्रीराम ने अयोध्या पहुँचकर माताओं को नमस्कार किया। फिर सर्वलोकनायक श्रीविष्णु के मंदिर जाकर इष्टदेव श्रीरंगनाथ की पूजा की। फिर वसिष्ठ का अभिनंदन किया। तब भूदेवी और लाल कमल निवासिनी दोनों अपार संतोष के साथ नाच उठीं। यह श्रीराम ने देखा। ४२५५

वाङ्गुवुन् दुहिल्ह ळॆन्नु मतमिलर् करत्तिऱ् पल्हाल्
ताङ्गिन रॆन्ऱु पोदु मैन्दरुम् तैय लारुम्
वीङ्गिय वुवहै मेति शिऱक्कवु मेन्मेऱ् ऱुळ्ळि
ओङ्गवुङ् गळिप्पाऱ् चोर्न्द वुडैयिला दारै यॊत्तार् 4256

तुकिल्कळ्–वस्त्रों को; वाङ्कुतुम्–उतार दें; ॲन्नुमु–यह; मतम् इलर्–विचार नहीं रखते तो भी; मैन्तरुम्–पुरुष और; तैयलारुम्–स्त्रियाँ (फिसलते वस्त्रों को); करत्तिल्–अपने हाथों से; पल्काल्–बार-बार; ताङ्कित्तर्–पकड़कर ठीक करते; ॲन्ऱ पोतुम्–तो भी; वीङ्किय–बढ़े हुए; उवकै–आनंद से; मेति–शरीर; चिऱक्कवुम्–फूल जाते; मेल् मेल्–उत्तरोत्तर; तुळ्ळि–उछलते; ओङ्कवुम्–कूदते; कळिप्पाल्–मोद से; चोर्न्त–ढलते; उडै इलातारै–वस्त्रहीन (दिगंबर); ऒत्तार्–रहते-से रहे। ४२५६

स्त्रियाँ और पुरुष नंगा रहना चाहनेवाले नहीं थे। इसलिए बार-बार खिसकनेवाले वस्त्रों को पकड़-पकड़कर ठीक कराते रहे। पर संतोषाधिक्य से उनके शरीर फूले; संतोष उत्तरोत्तर बढ़ता गया और वे इतनी उछल-कूद मचाने लगे कि दिगंबर-से रह गये। ४२५६

वेशिय रुडुत्त कूऱै वेन्दर्हळ् शुऱ्ऱ वॆऱ्ऱिप्
पाशिळै महळि राडै यन्दणर् पऱित्तुच् चुऱ्ऱ
वाशमॆन् कलवैच् चान्दॆन् ऱितैयन मयक्कन् वन्दाल्
पूशिनर्क् किरट्टि यानार् पूशलार् पुहुन्दु ळोरुम् 4257

वेचियर्–वेश्याओं के; उडुत्त–पहने हुए; कूऱै–वस्त्रों को; वॆऱ्ऱि वेन्तर्कळ्–विजयी राजाओं के; चुऱ्ऱ–लपेट लेते; पचुमै इऴै–खरे स्वर्णाभरण; मकळिर्–पहनी स्त्रियों के; आडै–वस्त्रों को; अन्तणर्–ब्राह्मणों के; पऱित्तु–छीनकर; ॲन्ऱु चुऱ्ऱ–लपेट लेते; वाचम्–सुगन्ध-द्रव्य; मॆल् कलवै चान्तु–मृदु चंदन लेप; मयक्कम् इतैयत–आदि ऐसा; पूचलार्–न मलकर; पुकुन्तुळोरुम्–जो आये;

तमुताल्-भीड़-भड़भड़ के कारण; पूचित्तर्क्कु-जो मलकर आये थे; इरट्टि आतार्-उनसे दुगुने लिप्त हो रहे। ४२५७

(आनंदातिरेक से और भी कुछ अनोखी बातें हो गयीं।) वेश्याओं की साड़ियों को राजा लोग लपेट आये थे। ब्राह्मणों ने श्रेष्ठ स्वर्णाभरण-भूषिता स्त्रियों के वस्त्रों को छीनकर पहन लिया था। जो सुगंधित अंगराग और चंदन-लेप आदि मलकर नहीं आये थे (या न मल सकनेवाले ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, संन्यासी आदि जो आये थे), उनके शरीर भी भीड़ के कारण अंगराग चंदन आदि से लिप्त हो गये। ४२५७

इऱैप्पॅरुञ् जॅल्व नीत्त वेऴिरण् डाण्डुम् यारुम्
उऱैप्पिल राद लाऱ्ऱे वेऱिरुन् दॉऴिन्द वन्नार्
पिऱैक्कॊऴुन् दऩैय नॅऱ्ऱिप् पॅय्वळै महळिर् मॅय्यै
मऱैत्तनर् पूणिऩ् मैन्द रुयिर्क्कॊरु मऱुक्कन् दोऩ्ऱ 4258

इऱै-राजा के पद का; पॅरु चॅल्वम्-बड़ा धन; नीत्त-छोड़ जो गये थे; एऴिरण्टु आण्टुम्-उन चौदहों वर्ष में; उऱैप्पिलर्-संतोष-रहित रहे; आतलाल्-इसलिए; वेऱु इरुन्तु-अकेले रहकर; ऒऴिन्त-जो समय बिताती रहीं; पिऱै कॊऴुन्तु-बालचन्द्र; अऩैय नॅऱ्ऱि-समान भाल वाली; पॅय् वळै-धारण किये हुए कंकण वाली; मकळिर् अन्नार्-उस नगर की स्त्रियों ने; यारुम्-सभी; मैन्तर्-पुरुषों के; उयिर्क्कु-प्राणों में; ऒरु मऱुक्कम् तोऩ्ऱ-एक विलोडन पैदा करते हुए; मॅय्यै-शरीर को; पूणिऩ्-आभरणों से; मऱैत्तनर्-ढक दिया। ४२५८

राजा राज्य-वैभव को छोड़कर जंगल गये थे। उन चौदहों सालों में स्त्रियाँ दुःख के कारण अपने पतियों से अलग तथा शृंगार-हीन रहती थीं। अब बालचंद्र-से भालवाली, तथा कंकणहस्ता दयिताओं ने मुदित होकर अपने शरीर को खूब आभूषणों से सजा लिया तो उन्हें देखकर उनके प्रेमियों के मन में गुदगुदी और छटपटाहट पैदा हो गयी। ४२५८

विण्णुऱै वोर्तन् दॅय्व वॆऱियॊडुम् वेऱु ळोर्तम्
तण्णऱु नाऱ्ऱन् दम्मिऱ् ऱलैतडु माऱु नीराल्
मण्णुऱै माद रार्क्कुम् वानुऱै मडन्दै मार्क्कुम्
उण्णिऱैन् दुयिर्प्पु वीङ्गु मूडलुण् डायिऱ् ऱन्ऱे 4259

विण् उऱैवोर् तम्-व्योमलोकवासियों के; तॅय्वम् वॆऱियॊटुम्-दिव्य सुगंध के साथ; वेऱु उळोर् तम्-अन्य लोगों के; तण् उऱु-शीतल; नाऱ्ऱम्-सुगन्ध; तम्मिल्-आपस में; तलै तटुमाऱु नीराल्-मिश्रित होते, उस हाल से; मण् उऱै-भूलोकवासिनी; मातरार्क्कुम्-स्त्रियों में; वान् उऱै-और व्योमवासिनी; मटन्तैमार्क्कुम्-स्त्रियों में; उळ् निऱैन्तु-अम्बर से भरकर; उयिर्प्पु-श्वास को; वीङ्कुम्-फुलानेवाली; ऊटल्-रूठन; उण्टायिऱ्ऱु-पैदा हो गयी। ४२५९

देवलोकवासियों की स्वाभाविक दिव्य सुगंध और मानवलोकवासियों की कृत्रिम सुगंध दोनों मिश्रित हो गये तो देवों के शरीर से कृत्रिम सुबास और मानवों के शरीर से दिव्य सुगंध आने लगा तो दोनों तरह की स्त्रियों के मन में रूठन पैदा हो गयी और नाक से निश्वास छूटने लगे। ४२५९

आयदो रळवि लैयन् परदनै यरुळि नोक्कित्
तूयवी डणर्कु मर्रैच् चूरियन् महर्कुन् दॊल्लै
मेयवा नरर्ह ळाय वीरर्क्कुम् बिर्र्क्कु नन्दम्
नायहक् कोयि लुळ्ळ नलमॆलान् दॆरित्ति यॆन्रान् 4260

आयतु ओर् अळविल्–वैसे विशिष्ट काल में; ऐयन्–प्रभु श्रीराम; परतनै–भरत को; अरुळिन्–सस्नेह; नोक्कि–देखकर; तूय वीटणर्कुम्–पवित्र विभीषण को; मर्रै–और; चूरियन्–मकर्कुम्–सूर्यपुत्र को; तॊल्लै मेय–पुरातनतायुक्त; वानरर्कळ् आय–वानरों के; वीरर्क्कुम्–वीरों को और; पिर्र्क्कुम्–दूसरों को; नम् तम्–हमारे; नायकम् कोयिल् उळ्ळ–प्रमुख महल की; नलम् ऍलाम्–सारी श्रेष्ठ विशिष्टताएँ; तॆरित्ति ऍन्रान्–बताओ, यह आज्ञा दी। ४२६०

उस समय श्रीरामनाथ ने भरत को स्नेह के साथ देखकर कहा कि पवित्र विभीषण को और सूर्यपुत्र सुग्रीव को और हमारे बहुत काल के वानर वीरों को प्रमुख महल की सारी विशेषताएँ बतलाओ। ४२६०

ऍन्रलु मिरैञ्जि मर्रैत् तुणैवर्हळ् याव रोडुम्
शॆन्रन नॆळुन्दु माडम् बलवॊरीइ युलहिर् रॆय्वप्
पॊन्रिणिन् दमर रोडुम् बूमह ळुरैयु मेरुक्
कुन्रॆन विळङ्गित् तोन्रु नायहक् कोयिल् पुक्कान् 4261

ऍन्रलुम्–सुनाते ही; इरैञ्चि–नमन करके; मर्रै तुणैवर्कळ्–अन्य मित्रों; यावरोटुम्–सभी के साथ; ऍळुन्तु चॆन्रनन्–उठ चले; माटम् पल–अनेक प्रासाद; ऑरीइ–पार करके; पॊन् तिणिन्तु–स्वर्णनिर्मित; अमररोटुम्–देवों के साथ; पू मकळ् उरैयुम्–कमला जहाँ रहती थी; मेरु कुन्रु ऍन–उस मेरु पर्वत के समान; विळङ्कि तोन्रुम्–शानदार रहनेवाले; तॆय्वम्–दिव्य; उलकिल्–संसार में; नायकम् कोयिल्–प्रमुख महल में; पुक्कान्–गये। ४२६१

यह आज्ञा सुनकर भरत उन्हें नमस्कार करके साथियों को ले गये। अनेक प्रासादों को पार कर प्रमुख मंदिर में आये जो देवों और कमला के वास के योग्य मेरु के समान दैवी शोभा के साथ खड़ा था। ४२६१

वयिरमा णिक्क नील मरहव मुदला युळ्ळ
शॆयिरर मणिह ळीन्र शॆळुञ्जुडर्क् कर्रै शुर्र
उयिर्तुणुक् कुर्र नॆञ्जु मुळ्ळमु मूश लाड
मयर्वुरु मनत्तु वीर रिमैप्पिलर् मयङ्गि निन्रार् 4262

मयर्वु अऱ्म् मत्तत्तु–निभ्रांत मन के; वीरर्–वीर; वयिरम्–वज्र; मणिक्कम्–माणिक्य; नीलम्–नील; मरकतम्–मरकत; मुतलाय् उळ्ळ–आदि जो हैं; चॅयिर् अऱ्–निर्दोष; मणिकळ् ईत्त्र–रत्नों से छूटनेवाले; चॅळ्ळु चुडर् कट्रै–पुष्ट प्रकाश-पुंज के; चुट्र–आवृत रहने से; उयिर्–प्राण; तुणुक्कुट्र–भयत्रस्त होकर; नॅञ्चुम्–मन और; उळ्ळमुम्–चित्त के; ऊचल् आट–झूलते; इमैप्पु इलर्–अपलक; मयङ्कि निन्ऱार्–मुग्ध खड़े रहे। ४२६२

निभ्रांतमन विभीषण आदि के भी उसको देखकर प्राण ठिठक गये। उनके मन डोलायमान हो गये। उनकी आँखें अपलक स्थिर रह गयीं। क्योंकि हीरे, माणिक्य, नील, मरकत आदि रत्नों की कांति की बाढ़ में वह मंदिर जगमगा रहा था। ४२६२

विण्डुवित् मार्बिऱ् कान्दु मणियॅन विळङ्गु माडम्
कण्डनर् परवन् तन्नै विन्नविन रवर्क्कुक् कादऱ्
पुण्डरी हत्तुळ् वैहुम् बुरादनन् कन्नऱ् ट्रोळान्
कॉण्डनर् ऱवन्दन् नाले युवन्दुमुन् कॉडुत्त दॅन्ऱान् 4263

विण्टुवित्–श्रीविष्णु के; मार्पिल्–वक्ष में; कान्तुम्–चमकनेवाली; मणि ॲन्न–श्रीकौस्तुभमणि के समान; विळङ्कुम् माटम्–शोभित प्रासाद को; कण्टतर्–देखा, उन्होंने; परतन् तन्नै–भरत से; विनविनर–पूछा; अवर्क्कु–उन्हें; पुण्टरीकत्तुळ्–कमल में; वैकुम्–रहनेवाले; पुरातनन्–पुरातन पुरुष ब्रह्मा; कन्नल् तोळान्–इक्षु-सम मनोहर कन्धों के इक्ष्वाकु के; कॉण्ट नल्तवम् तन्नाले–अपनाये गये श्रेष्ठ तप से; उवन्तु–खुश होकर; कातल्–प्यार के साथ; मुन् कॉटुत्ततु–पहले दिया गया था; ॲन्ऱान्–यह जवाब दिया भरत ने। ४२६३

श्रीविष्णुवक्षशोभाकारिणी कौस्तुभ मणि के समान रहे उस प्रासाद को देखकर उन लोगों ने भरत से पूछा कि इसकी तारीफ़ क्या है? भरत ने उत्तर दिया कि कमलासन ब्रह्मा ने इसे इक्षु-बाहु को (तमिऴ् और संस्कृत का समास करके इसका विग्रह किया जाय तो इक्षु+बाहु हो जाता है। अतः इक्षु-सम बाहुवाले का अर्थ किया गया है।) उनकी श्रेष्ठ तपस्या से खुश होकर दिया था। ४२६३

पङ्गयत् तोरुव निक्कु वाहुविऱ् कळित्त पान्मै
इङ्गिदु मलराळ् वैहु माडमॅन् ऱिशैत्त पोदिन्
ऍङ्गळाऱ् ऱुदिक्क लाहु मियल्बदो वॅन्ऱु कूऱिच्
चॅङ्गैहळ् कूप्पि वेऱोर् मण्डब मदनिऱ् चेर्न्दार् 4264

पङ्कयत्तु ऒरुवन्–पंकजवासी ब्रह्मा द्वारा; इक्कुवाकुविऱ्कु–इक्षुबाहु (इक्ष्वाकु) को; अळित्तत–दिया गया; पान्मै–ऐसा; इङ्कु इतु–यहाँ यह; मलराळ् वैकुम्–श्रीलक्ष्मी के वास का; माटम्–प्रासाद है; ॲन्ऱु–ऐसा; इचैत्त पोतिल्–जब कहा गया तब; ऍङ्कळाल्–हमारे द्वारा; तुतिक्कल् आकुम्–स्तुति

हो; इयल्पतो–ऐसी प्रकृति का है क्या; ऍन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; चॅ कैकळ्–लाल हाथों को; कूप्पि–जोड़कर; वेऱु ओर्–अन्य एक; मण्टपम् अततिल्–मंडप में; चेर्न्तार्–पहुँचे। ४२६४

इक्ष्वाकु को कमलवासी ब्रह्मा द्वारा दिया हुआ यह प्रासाद श्रीकमला का वासस्थान है। भरत ने जब यह कहा तो उन्होंने विस्मय तथा गौरव-बुद्धि के साथ कहा कि इसका यशोगान हमें संभव है क्या ? हाथ जोड़कर नमस्कार करके वे दूसरे एक मंडप (महल) में चले आये। ४२६४

इरुन्दन रतैय माडत् तियल्बॅला मॅण्णि यॅण्णिप्
परिन्दन तिरवि मैन्दत् परवतै वणङ्गित् तूयोय्
करुन्दडङ् गण्णि नाऱ्कुक् काप्पुना णणियु नन्नाळ्
तॅरिन्दिडा दिरुत्त लॅन्नो वॅन्ऱलु मण्णल् शॅप्पुम् 4265

अतैय माटत्तु–उस प्रासाद की; इयल्पॅलाम्–सारी विशिष्टताओं पर; ऍण्णि ऍण्णि इरुन्ततर्–सोचते-सोचते रहे; इरवि मैन्तत्–सूर्यपुत्र सुग्रीव ने; परिन्ततन्–स्नेह से; परतते वणङ्कि–भरत को नमस्कार करके; तूयोय्–पवित्रमूर्ति; करुतट–असितु विशाल; कण्णितार्कु–आँखों वाले का; काप्पु नाण्–रक्षा-कंकण; अणियुम्–पहनने का; नल् नाळ्–अच्छा दिन; तॅरिन्तिटातु इरुत्तल्–बिना शोधे रहना; ऍन्नो–क्यों तो; ऍन्ऱलुम्–पूछा तो; अण्णल् चॅप्पुम्–भरत ने उत्तर दिया। ४२६५

विभीषण आदि उन प्रासादों की विशेषताओं पर ध्यान दे-देकर विस्मय से अभिभूत रहे। तब रविकुमार सुग्रीव ने स्नेह के साथ भरत से प्रश्न किया कि हे पवित्र मूर्ति ! असितविशालाक्ष श्रीराम का रक्षाकंकण-बंधन का पवित्र दिन अब तक क्यों नहीं शोध लिया गया है ? भरत ने उत्तर में कहा। ४२६५

एळ्कड लवतिऱ् ऱोय मिरुनदि पिऱविऱ् ऱोयम्
ताळ्विला दिवण्वन् दॅय्दऱ् करुमैत्तोर् तन्मैत् तॅन्न
आळियोत् ऱुडैयोत् मैन्द तनुमतैक् कडिदि नोक्कच्
चूळ्पुवि यदतै यॅल्लाङ् गडन्वतन् कालित् तोत्ऱल् 4266

एळ् कटल् अततिल्–सातों समुद्रों से; तोयम्–पवित्र जल; पिऱ इरु नतियिल्–और बड़ी श्रेष्ठ नदियों का; तोयम–तीर्थ; ताळ्वु इलातु–अविलंब; इवण् वन्तु ऍय्तऱ्कु–इधर आ जाय, इसमें; ओर् अरुमै तत्मैत्तु–एक कठिनाई है; ऍन्त–ऐसा कहने पर; ओत्ऱु–एक; आळि–चक्ररथ के; उटैयोत्–स्वामी के; मैन्तत्–पुत्र ने; अनुमतै–हनुमान पर; कटितित् नोक्कि–जल्दी दृष्टि डाली तो; चूळ् पुवि अततै ऍल्लाम्–(समुद्र) आवृत भूमि सारी; कटन्ततत्–पार की। ४२६६

(भरत का उत्तर :) सातों समुद्रों से पवित्र तीर्थ लाना है। अविलम्ब लाना बड़ा कठिन काम है। यह सुनकर एक-चक्र-रथी सूर्य के

त्र सुग्रीव ने तुरन्त हनुमान पर दृष्टि दौड़ायी तो इंगितज्ञ हनुमान समझ
गया और समुद्रमेखला पृथ्वी को पार कर गया। ४२६६

कोमुनि योडु मर्रै मरैयवर्क् कॊणर्ह वॆन्ना
एविनन् तेर्व लान्शॆन् ऱिशैत्तलु मुलह मीन्र
पूमहन् तन्द कादर् पुनिदमा दवन्वन् दॆय्द
यावरु मॆऴुन्दु पोर्रि यिणैयडि तॊऴुदु निन्रार् 4267

को मुनियोटु–मुनिराज वसिष्ठ; मर्रै–और अन्य; मरैयवर्–ब्राह्मणों को; कॊणर्क–ले आओ; ऍन्ना–ऐसा; एविनन्–प्रेरित किया (भरत ने); तेर्वलान्–सारथी सुमन्त्र के; चॆन्रु–जाकर; इचैत्तलुम्–कहते ही; उलकम्–लोक के; ईन्र–सर्जक; पू मकन् तन्त–कमलासन-जनित; कातल्–प्यारे वसिष्ठ; पुनितन्–पवित्र; मातवन्–महान तपस्वी; वन्तु ऍय्त–आ पहुँचे तो; यावरुम्–सभी; मॆऴुन्तु–उठकर; पोर्रि–स्तुति करके; इणै अटि–चरणद्वय की; तॊऴुतु निन्रार्–वंदना कर खड़े हुए। ४२६७

भरत ने सुमंत्र को आज्ञा दी कि मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ और अन्य ब्राह्मणों को बुला लाओ। सारथी सुमंत्र जाकर बोला तो लोकसर्जक ब्रह्मा के पुत्र, पवित्र महर्षि पधारे। सभी ने उठकर उनके चरणद्वय में नमस्कार किया और स्तुति की। ४२६७

अरियणै परद नीय वदन्कणाण् डिरुन्द वन्दप्
पॆरियव नवनै नोक्किप् पॆरुनिलक् किऴत्ति योडुम्
उरियमा मलरा ळोडु मुवन्दिनि दूऴिक् कालम्
करियव नुय्त्तर् कौत्त काप्पुनाळ् नाळै यॆन्रान् 4268

परतन्–भरत के; अरि अणै–सिंहासन; ईय–दिलाने पर; आण्टु–वहाँ; अतन् कण्–उस पर; इरुन्त–विराजे; अन्त पॆरियवन्–उन महानुभाव ने; अवनै नोक्कि–उन भरत को देख; पॆरु निलम् किऴत्तियोटुम्–मान्या भूदेवी के साथ; उरिय–अपने स्वत्व की; मा मलराळोटुम्–श्रीकमलाजी के साथ; उवन्तु–मोद के साथ; इतितु–ससुख; ऊऴि कालम्–युग, युग तक; करियवन्–श्यामल मूर्ति; उय्त्तर्कु–राजभोग करें इसके लिए; औत्त–युक्त; काप्पु नाळ् नाळै–कंकण-धारण का दिन, कल ही; ऍन्रान्–कहा। ४२६८

भरत ने सिंहासन दिया और महानुभाव वसिष्ठ उस पर विराजे। उन्होंने भरत से कहा कि भूदेवी और श्रीदेवी के साथ श्रीराम युग-युग राज्य-वैभव भोगें—तदर्थ कंकण धारण का योग्य शुभ दिन कल होगा। ४२६८

इन्दिर कुरुव मन्ना रेनैय रॆन्न निन्र
मन्बिर विदियि नारुम् वशिट्टनुम् विरैन्दु विट्टार्
शन्बिर कविहै योडुगुन् बयरद रामन् तामच
[illegible] 4269

इन्तिर कुरुवुम्–इन्द्रगुरु बृहस्पति के; अन्तार्–समान रहनेवाले; एत्तैयर् ऍन्न–कितने ही थे; निन्ऱ्–जो खड़े रहे, वे सब; मन्तिर वितियित्तारुम्–मन्त्र-विधि-दक्ष ब्राह्मण; वचिट्टतुम्–और वसिष्ठ; चन्तिरन् कविकै–चन्द्र-श्वेत छत्र; ओङ्कुम्–जिनके ऊपर खुला रहा; तयरत रामन्–उन दशरथराम का; तामम्–प्रकाशमय; चुन्तरम्–सुन्दर; मवुलि–मुकुट के; चट्टम्–धारण का; ओरैयुम्–लग्न और; नाळुम्–तिथि; तूक्कि–शोधकर लिखकर; विरैवुतु बिट्टार्–जल्दी संदेश भेजा। ४२६९

देवगुरु बृहस्पति-तुल्य कितने ही रहे! उन मंत्रविधिज्ञाता गुरुओं और वसिष्ठ ने दाशरथी राम के श्वेत-छत्रधारी होकर छविमय सुन्दर मुकुट धारण करने योग्य दिन शोधा, उसे लेखबद्ध करके सर्वत्र भिजवाया। ४२६९

अडुक्किय वुलह मून्ऱु मादरत् तूवर् कूऱ
इडुक्कोरु पेरु मिन्ऱि ययोत्तिवन् दिरुत्ता रॅन्ऱाल्
तॊडुक्कुरु कवियान् मर्ऱैत् तॊहैयितै मुडिवु तोन्ऱ
ऒडुक्कुरुत् तुरैक्कुन् दन्मै नान्मुहत् तॊरुवर् कुण्डो 4270

आतरम् तूतर्–आतुर दूत; अट्टुक्किय–एक के ऊपर एक रहे; उलकम् मून्ऱम्–तीनों लोकों में; कूऱ–कह आये तो; इट्टुक्कु–कोने में भी; ऑरु पेरुम्–कोई; इन्ऱि–न रहा, ऐसा सब; अयोत्ति वन्तु–अयोध्या आकर; इरुत्तार् ऍन्ऱाल्–ठहर गये तो; मर्ऱै–अलग; तॊकैयितै–संख्या को; मुटिवु तोन्ऱ–निर्धारित कर; तॊट्टुक्कुरु–रचित; कवियात्–कविता द्वारा; ऑट्टुक्कुरुत्तु–संग्रह करके; उरैक्कुम्–कहने को; तन्मै–शक्ति; नान्मुकत्तु–चतुर्मुख के; ऑरुवर्कु उण्टो–उनके पास भी है क्या। ४२७०

आतुर दूतों ने सब जगह संदेश पहुँचा दिया और कोने-कोने के सभी लोग आ गये। उन आगतों की संख्या को निर्धारित कर बताने की शक्ति चर्तुमुख में भी रही क्या ? । ४२७०

अव्वयिन् मुनिव तोडुम् बरदनु मरियिन् शेयुम्
शॅव्विय निरुदर् कोनुञ् जाम्बनुम् वालि शेयुम्
ॲव्वमि लाऱ्ऱल् वीरर् यावरु मॅळ्न्दु शॆन्ऱाङ्
गव्विय मवित्त शिन्दै यण्णलैत् तॊळुदु शॊन्नार् 4271

अव् वयिन्–उस समय; मुनिवतोटुम्–मुनिवर के साथ; परततुम्–भरत और; अरियिन् चेयुम्–सूर्यपुत्र; चॅव्विय–सीधा-सादा; निरुतर् कोनुम्–राक्षसराज और; चाम्पनुम्–जाम्बवान और; वालि चेयुम्–बालीपुत्र, अंगद; ऍव्वम् इल्–अनिंद्य; आऱ्ऱल्–बलवान; यावर् वीररुम्–सभी वीर; आङ्कु–वहाँ से; ऍळुन्तु चॆन्ऱु–निकल चलकर; अव्वियम्–ईर्ष्या-द्वेष; अवित्त–हननकारी; चिन्तै–मन के; अण्णलै–प्रभु को (उन्हें); तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊन्नार्–बोले। ४२७१

तब वसिष्ठ जी के साथ भरत, रविकुमार, सीधा-सादा राक्षसेन्द्र,

जाम्बवान, वालीपुत्र और अनिंद्य बलशाली सारे वीर —सबों ने श्रीराम के पास जाकर नमस्कार किया और निवेदन किया (कि कल आपका मुकुट-धारण होगा)। ४२७१

नाळैनी मवुलि शूड नन्मैशाल् परुमै नन्नाळ्
काळैनी यदनुक् केऱ्ऱ कडन्मैमो दियऱ्ऱु हॆन्ऱु
वेळैये कायु नॆऱ्ऱि विऴियिनन् मेवु मॆन्बूप्
पूळैये शूडु वानॆप् पोरुवुमा मुनिवन् पोनान् 4272

काळै–ऋषभ-सम; नी–आपके; मवुलि–किरीट; चूट–धारण करने; नन्मै चाल्–मंगलकारी; पॆरुमै नल् नाळ्–श्रेष्ठ सुदिन; नाळै–कल है; नी–आप; अतनुक्कु–उसके लिए; एऱ्ऱ–आवश्यक; मोतु कटन्मै–उत्कृष्ट कर्मानुष्ठान; इयऱ्ऱुक–करें; ऎन्ऱु–ऐसा बोलकर; वेळैये कायुम्–मन्मथ को भी दहन करनेवाली; नॆऱ्ऱि विऴियिनन्–भाल की आँखों वाले; मेवुम्–आकर्षक; मॆल्–मृदु; पू–फूल; पूळैये–'पूळै' का; चूटुवाने–धारण करनेवाले शिव; पोरुवुम्–के समान विद्यमान; मा मुनिवन्–महान मुनि; पोनान्–गये। ४२७२

वसिष्ठ ने कहा कि हे ऋषभ-सम! आप मुकुट धारण करें, तदर्थ मंगलमय और श्रेष्ठ सुदिन कल ही है। आप उसके लिए आवश्यक कर्मानुष्ठान करें। यह कहकर मन्मथदाहक भाल के नेत्र वाले, प्यारे मृदुल 'पूळै' (सेमर ?) पुष्पधारी शिवतुल्य महान मुनि विदा हुए। ४२७२

नान्मुहत् तॊरुव नेव नयनरि मयनॆन् ऱोदुम्
नून्मुहत् तोङ्गु केळ्वि नुणङ्गियोन् वणङ्गु नॆञ्जन्
कोन्मुहत् तळन्दु कुऱ्ऱञ् जॆऱ्ऱुल हॆल्लाङ् गॊळ्ळुम्
मान्मुहत् तॊरुव नन्नान् मण्डबम् वयङ्गक् कण्डान् 4273

नान् मुकत्तु ऒरुवन्–अनुपमेय चतुर्मुख के; एव–आज्ञा देने पर; नयन् अरि–कलाविद्; मयन् ऎन्ऱु ओतुम्–मय कहलानेवाला; नूल् मुकत्तु–शास्त्रज्ञान में; ओङ्कुम्–बढ़ा हुआ; केळ्वि–श्रौतज्ञान का; नुणङ्कियोन्–सूक्ष्मज्ञ; मान् मुकत्तु ऒरुवन्–हरिणमुख वाला जो था उस अप्रतिम शिल्पी ने; वणङ्कुम् नॆञ्चन्–विनत दिलवाला; कोल् मुकत्तु–मानदंड से; अळन्तु–नापकर; कुऱ्ऱम् चॆऱ्ऱु–त्रुटियाँ दूर करके; उलकु ऎल्लाम्–सारे लोकों को; कॊळ्ळुम्–समा लेनेवाले; मण्टपम्–मंडप को; वयङ्क–उज्ज्वल रूप से; कण्टान्–(निर्मित) देखा (बनाया)। ४२७३

चतुर्मुख की प्रेरणा से वास्तुशास्त्रचतुर, श्रौत-सूक्ष्म-ज्ञानी, हरिणमुख, श्रेष्ठतम शिल्पी, मय विनय के साथ आया। उसने सारे लोकों को समा लेनेवाला (या सारे लोकों को मोल लेनेवाला) एक मंडप बनाया जो सब तरह से निर्दोष व ज्योतिर्मय था। ४२७३

शूऴ्कड नालृगिऱ् ट्रोय मॅऴुवहै याहच् चॅान्न
आऴ्तिरै याऱ्ऱि नीरो डमैत्तियिन् ऱॅन्न वामॅन्
ऱूऴियि निऱुदि शॅल्लुन् दादैयि नुलवि यन्ऱे
एऴ्तिरै नीरुन् दन्दा निरुन्दुयर् मरुन्दु तन्दान् 4274

चूऴ्–आवरण के; **कटल् नाल्किन्**–चारों सागरों से; **तोयम्**–तीर्थ; **ॲऴुवक्क आक**–सात विध; **चॅान्न**–उक्त; **आऴ्तिरै**–गम्भीर तथा तरंग-सहित सागरों का जल; **आऱ्ऱिन् नीरोडु**–नदियों के तीर्थ के साथ; **इन्ऱु अमैत्ति**–आज लाओ; **ॲन्न**–कहने पर; **इरु तुयर्**–बड़े संकट में; **मरुन्तु तन्तान्**–ओषधि जो लाया था; **आम् ॲन्ऱु**–(वह) हाँ कहकर; **ऊऴियिन् इऱुति चॅल्लुम्**–युगांत में बहनेवाले उसके; **तातैयिन्**–पिता के समान; **उलवि**–चलकर; **एऴ् तिरै**–सातों समुद्रों का; **नीरुम् तन्तान्**–तीर्थ लाया। ४२७४

'आवरण के चारों समुद्रों से, सप्त समुद्र से और अन्य नदियों से पवित्र तीर्थ आज ही लाओ।' यह आज्ञा सुनकर संकट के अवसर पर जो ओषधि लाया था वह हनुमान 'हाँ' कहके गया और उस युगांत काल के अपने पिता वायु के-से वेग में जाकर उसी दिन सागरों का पवित्र तीर्थ लाया। ४२७४

ॲरिमणिक् कुडङ्गळ् पत्तूऱ् ऱियात्तेमेल् वरिशैक् कान्ऱ
विरिमदिक् कुडैयि नीऴल् वेन्दर्हळ् पलरु मेन्दिप्
पुरैमणिक् काळ मार्प्पप् पल्लियन् दुवैप्पप् पॅाङ्गुम्
शरयुविऱ् पुत्तलुन् दन्दार् शङ्गित्त मुरल मत्तो 4275

वेन्तर्कळ् पलरुम्–अनेक राजा लोग सभी; **वरिशैक्कु आन्ऱ**–पद के अनुकूल; **विरि मति**–पूर्ण चन्द्र के समान; **कुटैयिन् नीऴल्**–छत्र के नीचे; **पल् नूऱु**–अनेक सौ; **ॲरि मणि**–कांतिमय रत्न के; **कुटङ्कळ्**–घड़ों को; **यानै मेल् एन्ति**–हाथियों पर चढ़ाकर; **पुरै**–पोले; **मणि**–सुन्दर; **काळम् आर्प्प**–'काहल' वाद्य के बजते; **पल् इयम्**–अनेक बाजों के; **तुवैप्प**–स्वरित होते; **चङ्कितम् मुरल**–शंखराशियों के गूंजते; **पॅाङ्कुम्**–उमगती; **चरयुविल् पुत्तलुम्**–सरयू का जल भी; **तन्तार्**–लाये। ४२७५

राजा जो अनेक थे वे सभी पूर्णचन्द्र-सम श्वेतछत्र के नीचे, गजों की पीठ पर बैठकर ज्योतिर्मय रत्नघटों में पवित्र सरयू का जल ले आये। तब 'पोले काहल' नाम के बाजे तुमुल नाद कर उठे; अन्य विविध बाजे स्वरित हुए और शंखराशियाँ गूंज उठीं। ४२७५

माणिक्कप् पलहै तैत्तु वयिरत्तिन् काल्हळ् शेर्त्ति
आणिप्पॅान् शुऱ्ऱि मुऱ्ऱि यऴुहुरच् चमैत्त पीडम्
एणुऱ्ऱ पळिक्कु माडत् तिट्टन्न रदतिन् मीदु
मणरुट विरुद्योल वीरन् तिरुवीडम् वॅालिन्वात्त मत्तो 4276

मणिक्कम् पलकै–माणिक्य-फलक; तैत्तु–लगाकर; वयिरम्–हीरे के; तिण् काल्कळ्–सुदृढ़ पैर; चेर्त्ति–जोड़कर; आणि पॊन् चुरि–उत्कृष्ट स्वर्ण से बाजुओं को; मुरि–निर्मित करके; अळ्कु उरु–सुघड़ रूप से; चमैत्त–निर्मित; पीटम्–पीठ को; एण् उरु–उत्कृष्ट; पळिङ्कु माटत्तु–स्फटिक मकान में; इट्टतर्–डाला; अतति् मीतु–उस पर; पूण् उरु–आभरणभूषित; तिरळ् तोळ् वीरन्–पुष्ट कंधों वाले; तिरुवोटुम्–श्री (सीता) सह; पॊलिन्तान्–शोभित हुए। ४२७६

स्वर्णमय बाजुओं के साथ हीरों के पैरों पर माणिक्य-फलक ठोंककर पीठ बनायी गयी और वह सुन्दर पीठ उत्कृष्ट एक स्फटिक महल में डाली गयी। उस पर आभरणभूषित पुष्ट भुजाओं के वीर श्रीराम श्रीलक्ष्मी (सीता) जी के साथ शोभित हुए। ४२७६

मङ्गल कीदम् बाड मरैयॊलि मुळ्ङ्ग वल्वाय्च्
चङ्गितङ् गुमुरप् पाण्डिल् तण्णुमै यॊलिप्पत् ताविल्
पॊङ्गुपल् लियङ्ग ळार्प्पप् पूमळै पॊळ्यि विण्णोर्
ऍङ्गणा यहत्तै वॆव्वे ऱुदिरबि डेहञ् जॆय्दार् 4277

मऱै ऒलि मुळ्ङ्क–वेद-स्वर घोषित हुए; मङ्कलम् कीतम् पाट–मंगलगीत गाये गये; वल् वाय्–सघनस्वर; चङ्कु इतम्–शंखराशियाँ; कुमुऱ–गुंजित हुईं; पाण्टिल् तण्णुमै ऒलिप्प–ताल और मृदंग बजे; ता इल्–निर्दोष; पॊङ्कु–उच्चस्वरनिनादी; पल् इयङ्कळ्–अनेक बाजे; आर्प्प–बजाये गये; पू मळै पॊळ्यि–पुष्पवर्षा हुई; विण्णोर्–व्योमवासियों ने; ऍङ्कळ् नायकनै–हमारे नायक को; वॆव्वेऱु–अलग-अलग; ऎतिर्–(अयोध्या के) मुक़ाबले में; अपिटेकम्–अभिषिक्त; चॆय्तार्–करा दिया। ४२७७

वेदस्वर, मंगलगीत, शंखनाद, ताल और मृदंग की ध्वनि और अनेक विविध वाद्यों के नाद के बीच देवों ने पुष्पवर्षा की और हमारे नाथ का अलग-अलग, अयोध्या के मुक़ाबले में अभिषेक किया। ४२७७

मादवर् मऱैव लाळर् मन्दिरक् किळवर् मऱ्ऱुम्
मूदऱि वाळ रुळ्ळ शात्तुवर् मुदनी राट्टच्
चोदियात् महत्तु मऱ्ऱैत् तुणैवरु मनुमन् ऱात्तुम्
तीदिला विलङ्गै वेन्दुम् पित्तनबि डेहञ् जॆय्दार् 4278

मा तवर्–महान तपस्वी; मऱै वलाळर्–वेदज्ञ; मन्तिरम् किळवर्–मंत्रणा में दक्ष; मऱ्ऱुम्–और; मुतुमै अऱिवाळर्–वृद्ध ज्ञानी; उळ्ळ–(जो वहाँ) रहे; चात्तुवर्–उन साधुओं ने; मुतल् नीर् आट्ट–पहले स्नान कराया; पिन्–बाद; चोतियान् मकनुम्–ज्योति (सूर्य) पुत्र; मऱ्ऱै तुणैवरुम्–अन्य साथियों ने; अनुमन् तानुम्–और हनुमान ने; तीतु इला–साधु; इलङ्कै वेन्तुम्–लंकापति ने भी; अपिटेकम् चॆय्तार्–अभिषिक्त कराया। ४२७८

फिर महान तपस्वी, वेदविप्र, मंत्रीगण, वृद्ध ज्ञानी तथा साधूजन —इन्होंने पहले क्रमशः श्रीराम का अभिषेक कराया (पवित्र जल से नहलाया)। फिर ज्योति-अर्क-पुत्र ने, अन्य मित्रों ने और बुराई से रहित साधु विभीषण ने अभिषेचन किया। ४२७८

मरहदच् चयिलञ् जॅन्दा मरॅमलर्क् काडु पूत्तुत्
तिरै यॅरि कङ्गैवीशुन् दिवलैया ननैन्दु शॅय्य
इरुकुळै तोडरुम् वेऱ्कण् मयिलोडु मिरुन्द देय्प्पप्
पॅरुहिय शॅव्वि कण्डार् पिऱप्पॅनुम् बिणिहळ् तीर्न्दार् 4279

मरकतम् चयिलम्–मरकत पर्वत; चॅ तामरै–लाल कमल के; मलर् काटु पूत्तु–पुष्पवनविकसित; तिरै ऍरि–तरंगें फेंकनेवाली; कङ्कै–गंगा; वीचुम्–जिन्हें छिटकातीं; तिवलैयाल्–उन सीकरों में; ननैन्तु–भीगकर; चॅय्य–लाल; इरु कुळै–दो कुंडलों में; तोटरुम्–लगी चलनेवाली; वेल्कण्–भाले-सी आँखों की; मयिलोटुम्–कलापी से; इरुन्ततु एय्प्प–रहता जैसे; पॅरुकिय–अधिक (श्रीराम का); चॅव्वि–सौंदर्य; कण्टार्–देखा (जिन्होंने) वे; पिऱप्पु ऍनुम्–जन्म नाम के; पिणिकळ्–रोगों से; तीर्न्तार्–वियुक्त हो गये। ४२७९

कोई मरकत पर्वत लाल खिले कमलों के वन के साथ तरंगायमान गंगा के सीकरों से भीगे, दोनों कुंडलों तक दौड़नेवाली, भाले-सी आँखों से भूषित एक कलापी के साथ विराजा हो —ऐसे दिखनेवाले श्रीराम का उस दैवी सौंदर्य की झाँकी जिसने देखी उसका भवरोग छूट गया! । ४२७९

तॅय्वनी राडऱ् कोत्त शॅय्विनै वशिट्टन् शॅय्य
ऐयमिल् शिन्दै यानच् चुमन्दिर नमैच्च रोडुम्
नोय्दिनि नियऱ्ऱ नोन्बिन् मादवर् नुनित्तुक् काट्ट
ऎय्दिन वियन्ऱ पल्वे ऱिन्दिरऱ् कियन्ऱ वॅन्न 4280

तॅय्वम्–देवी; नीर् आटऱ्कु–तीर्थस्नान के लिए; ओत्त–योग्य; चॅय्विनै–कर्म आदि; वचिट्टन् चॅय्य–वसिष्ठ ने कराया; नोन्पिन् मातवर्–व्रती तपश्रेष्ठों ने; नुनित्तु काट्ट–सूक्ष्मता से इंगित किया; ऐयम् इल्–असंशय; चिन्तैयान्–मन वाले; अ चुमन्तिरन्–उस सुमन्त्र ने; अमैच्चरोटम्–मन्त्रियों के साथ; नोय्तिनिन् इयऱ्ऱ–जल्दी तैयार किया; इन्तिरऱ्कु–देवेंद्र को; इयन्ऱ ऎन्न–प्राप्त जैसे; पल्वेऱु–अनेक, विविध; इयन्ऱ–सामग्रियाँ; ऎय्तिन–आ पहुँचीं। ४२८०

वसिष्ठ को दिव्य तीर्थाभिषेक-कार्य में सहायता देते हुए व्रती तपस्वियों के सूक्ष्मतत्वों के मार्गदर्शन में असंशयमन सुमंत्र ने मंत्रियों के साथ आवश्यक कार्य किया और देवेंद्र को प्राप्त जैसी सामग्रियाँ आ जुट गयीं। ४२८०

अरियणै यनुमन् ताङ्ग वङ्गद नुडैवाळ् पऱ्ऱप्
परदनूँ वॅण्कुडै कविक्क विरुवरुङ् गवरि वीश

विरैशॆरि कमलत् ताळ्शेर् वॆण्णॆय्मन् शडैयन् तङ्गळ्
मरबुळोर् कॊडुक्क वाङ्गि वशिट्टने पुनैन्दान् मौलि 4281

अरि अणै–सिंहासन को; अनुमन्–हनुमान के; ताङ्क–धारण करते; अङ्कतन्–अंगद के; उटैवाळ्–कटिखड्ग; पट्र्–पकड़े रहते; परतन्–भरत के; वॆण् कुटै–श्वेत छत्र; कविक्क–ऊपर करते; इरुवरुम्–दोनों भाइयों के; कवरि वीय–चामर डुलाते; विरै वॆरि–घनी सुगन्ध के; कमलम् ताळ्–कमल पर आसीन श्री से; चेर्–युक्त; वॆण्णॆय् मन–वॆण्णॆय् नल्लूर के स्वामी; चटैयन् तङ्कळ्–शडैयप्पन के; मरपुळोर्–पूर्वजों के; कॊटुक्क वाङ्कि–बढ़ाते लेकर; वचिट्टते–वसिष्ठ ने ही; मवुलि–किरीट; पुतैन्तान्–पहनाया। ४२८१

हनुमान ने सिंहासन धारण किया। अंगद करिखड्ग पकड़े रहा। भरत ने श्वेत छत्र श्रीराम के ऊपर किया। दोनों भाइयों ने (लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने) चामर डुलाये। सुगंधित कमल पर आसीन श्री से युक्त और तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर के स्वामी शडैयप्प वळ्ळल् (दानी) के पूर्वजों ने किरीट बढ़ाया तो वसिष्ठ ने ही उसे लेकर श्रीराम के सिर पर पहनाया। [१ 'श्री से युक्त' श्रीराम का विशेषण बन सकता है। तब सीताजी का अर्थ होगा। नहीं तो दौलत की देवी लक्ष्मी का अर्थ होगा। तब श्रीमान् शडैयप्प वळ्ळप् का अर्थ होगा। २ शडैयप्पन का नाम अमर कराकर अपनी कृतज्ञता जताने का जो कम्बन ने वादा किया था कहा जाता है कि उसका पालन इधर, अन्य स्थलों में जैसे किया गया। ३ यह पद्य बड़ा प्रसिद्ध मंगलमय पद्य है।]। ४२८१

वॆळ्ळियुम् पॊन्नु मॊप्पार् विदिमुरै मॆय्यिर् कॊण्ड
ऒळ्ळिय नाळि नल्ल वोरैयि नुलहू मून्रुम्
तुळ्ळिन कळिप्प मौलि शूडिनान् कडलिन् वन्द
तॆळ्ळिय तिरुवुन् दॆय्वप् पूमियुञ् जेरुन् दोळान् 4282

कटलिन् वन्त–क्षीरसागर से प्रगट; तॆळ्ळिय तिरुवम्–सुलक्षणा श्रीदेवी; तॆय्वम् पूमियुम्–दिव्य भूदेवी; चेरुम्–जिनसे लगीं उन; तोळान्–कंधों वाले ने; कॊण्ट–शोधित; ऒळ्ळिय–मंगलमय; नाळिल्–दिन में; नल्ल ऒरैयिल्–शुभलग्न में; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों के; तुळ्ळित्त कळिप्प–उछलते और मुदित होते; वॆळ्ळियुम्–शुक्र और; पॊन्नुम्–बृहस्पति के; ऒप्पार्–समान पुरोहितों के; विति मुरै–बताये क्रम में; मौलि–मुकुट को; मॆय्यिल्–सिर पर; चूटिनान्–धारण किया। ४२८२

क्षीरसागर से उत्पन्न सुलक्षणा लक्ष्मी और दिव्य भूदेवी दोनों जिन भुजाओं से लग गयीं उन भुजाओं के स्वामी भगवान श्रीराम ने शोधित शुभ दिन में शुक्र-बृहस्पति-सदृश पुरोहितों के बताये क्रम से अपने सिर पर मुकुट धारण कर लिया। तब तीनों लोक मोद के साथ उछले। ४२८२

शित्तमोत् तुळत्तन् ओदुन् वित्तनहर्त् तॅय्व नन्नूल्
वित्तह तोरुवन् शॅन्नि मिलैच्चिय दॅन्नि मेन्मै
ओत्तमू वुलहत् तोर्क्कु मुवहैयि नुरुदि युन्निल्
तत्तमुच् चियित्मेल् वॅत्त दोत्तदत् ताम मौलि 4283

तिरु नकर्–उस श्रीनगर में; तॅय्व नल् नूल्–दिव्य शास्त्रों में दक्ष; चित्तम् ओत्तुळन्–मनतोषक; ॲन्रु ओतुम्–कहलानेवाले ने; वित्तकन् ओरुवन्–सर्वज्ञ उत्तम श्रीराम के; चॅन्नि–सिर पर; मिलैच्चियतु–पहनाया; ॲन्निनुम्–कहा जाय तो भी; अ तामम् मौलि–वह उज्ज्वल किरीट; मेन्मै ओत्त–गौरवयुक्त; मू उलकत्तोर्क्कुम्–तीनों लोकवासियों को; उवकैयिन् उरुति–संतोष का निश्चय; उन्निल्–सोचें तो; तम् तम्–अलग-अलग उनके; उच्चियिन् मेल्–सिरों पर; वॅत्ततु ओत्ततु–रखा गया हो जैसे रहा। ४२८३

उस श्रीनगर के शास्त्रविदग्ध तथा मनोनुकूल वसिष्ठ ने सर्वज्ञ श्रीराम के सिर पर मुकुट क्या पहनाया; श्रेष्ठ सारे तीनों लोकों ने ऐसा आनंद मनाया मानो अलग-अलग हर एक के सिर पर मुकुट रखा गया हो। ४२८३

पन्नॅडुङ् गाल नोऱ्ऱुत् तन्नुडैप् पण्बिऱ् केऱ्ऱ
पिन्नॅडुङ् गणवऱ् तन्नैप् पॅऱ्ऱिडैप् पिरिन्दु मुऱ्ऱुम्
तन्नॅडुम् बीळै नीङ्गत् तळुवित्ताळ् तळिर्क्कै नीट्टि
नन्नॅडुम् बूमि यॅन्नु नङ्गैतन् कॊङ्गै यार 4284

पल् नॅटुकालम्–दीर्घ काल तक अनेक; नोऱ्ऱु–व्रतों का पालन कर; पिन्–बाद; तन् उडै–अपने; पण्पिऱ्कु एऱ्ऱ–गुण के योग्य; नॅटु कणवन्–माननीय पति को; पॅऱ्ऱु–प्राप्त करके; इडै पिरिन्तु–बीच में अलग होकर; तन्–अपनी; नॅटु पीळै–बड़ी पीड़ा; मुऱ्ऱुम्–पूरी; नीङ्क–दूर होने पर; नल् नॅटु–अच्छी बड़ी; पूमि ॲन्नुम्–भूमि की; नङ्कै–देवी ने; तळिर् कै नीट्टि–अपने पल्लवहस्त बढ़ाकर; तन्–अपने; कॊङ्कै यार–स्तनों को पूर्ण संतोष देते हुए; तळुवित्ताळ्–छाती से खूब लगा लिया। ४२८४

भूदेवी ने बहुत काल तक तपस्या की और फलस्वरूप अपने गुण के योग्य मान्य पति के रूप में श्रीराम को पाया; पर तुरंत ही वियोग हो गया। तो बड़ा दुःख सहती रही। अब फिर वे आ गये और भूमिपति हो गये। उस श्रेष्ठ विशाल भूमि रूपी देवी ने अपने दोनों पल्लवहस्तों को बढ़ाकर अपनी छाती से खूब लगा लिया, जिससे उसके स्तन खूब हुलस गये। (भूमि को देवी के रूप में कल्पित करके राजा की पत्नी बताने की परिपाटी सर्वविदित है ही। राजा को भूप या भूपति कहना भी प्रचलित है। उस कल्पना को कुछ आगे बढ़ाकर पति-पत्नी व्यवहार में रंग लाना कवि की विदग्धता है।)। ४२८४

विरदनूल् मुनिवन् शॊन्न विदिनॆऱि वळामै नोक्कि
वरदन् मिळैजर्क्कु आङ्गण् मामणि महुडम् जूट्टिप्
परदनैत् तनदु शॆङ्गोल् नडावुरप् पणित्तु नाळुम्
करैतॆरि विलाद पोहक् कळिप्पिल् ळिरुन्दान् मन्नो 4285

विरत नूल्—व्रतपालक; मुनिवन्—मुनि के; चॊन्न—कहे अनुसार; वितिनॆऱि—विधि का विधान; वळामै नोक्कि—उल्लंघन न करना देखकर; वरतन्—मा मणि-वरद श्रीराम ने; इळैञर्क्कु—छोटे भाइयों को; आङ्कण्—वहाँ; मा मणि—बड़े रत्नों से निर्मित; मकुटम् चूट्टि—किरीट पहनाकर; परतनै—भरत को; तन् चॆङ्कोल्—अपना राजदण्ड (शासन); नटावुऱ—चलाने को; पणित्तु—आज्ञा देकर; नाळुम्—दिने-दिने; करै तॆरिविलात—अपार; पोकम् कळिप्पिल्—भोग-विलास में; इरुन्तान्—लगे रहे। ४२८५

व्रतशास्त्रविदग्ध वसिष्ठ के कहे अनुसार यथाविधि श्रीराम ने अपने तीनों छोटे भाइयों के सिरों पर बड़े रत्नकिरीट पहनाये। भरत को राज्यपरिपालन की आज्ञा दी और स्वयं अपार भोगविलास में रत रहे। ४२८५

39. विडै कॊडुत्त पडलम् (अनुमति-प्रदान पटल)

पूमहट् कणिय दॆन्नप् पॊलिपशुम् बूरि शेर्त्ति
मामणित् तूणिर् चॆय्द मण्डब मदनि नाप्पण्
कोमणिच् चिविहै मीदे कॊण्डलु मिन्नुम् बोलत्
तामरैक् किळत्ति योडुन् दयरद रामन् शार्न्दान् 4286

पू मकट्कु—भूमिदेवी का; अणियतु ऎन्न—शृंगार जैसा; पॊलि—विद्यमान; पचुम् पूरि—खरा सोना; चेर्त्ति—लगाकर बने; मा मणि—श्रेष्ठ रत्न-जड़ित; तूणिल्—खम्भों पर; चॆय्त—सुनिर्मित; मण्टपम् अततिन्—मंडप के (दरबार के); नाप्पण्—मध्य में; कोमणि—हीरों की; चिविकै मीतु—शिविका पर; कॊण्टलुम्—मेघ और; मिन्नुम् पोल—बिजली के समान; तामरै किळत्तियोटुम्—कमल की स्वामिनी के साथ; तयरत रामन्—दाशरथी राम; चार्न्तान्—आये। ४२८६

देवी पृथ्वी का शृंगार जैसा शोभायुक्त, स्वर्ण-निर्मित तथा रत्न-जड़ित खंभों वाला सभामंडप (दरबार का मंडप) था। दाशरथी श्रीराम और कमला सीताजी मेघ और बिजली के समान शोभायमान होकर रत्न-विशिष्ट एक शिविका पर बैठकर उस मंडप में आये। ४२८६

विरिकडल् नडुवुट् पूत्त मिन्नॆन वारम् वीङ्ग
ऎरिकदिर्क् कडवुळ् तन्नै यिनमणि महुड मेय्प्पक्
करुमुहिर् करशु शॆन्दा मरैमलर्क् काडु पूत्तोर्
अरियणैप् पॊलिन्द दॆन्न विरुन्दन नयोत्ति वन्दान् 4287

विरि कटल्—विशाल सागर के; नटुवुळ् पूत्त—मध्य खिली; मिन् ऎन—बिजली के समान; आरम् वीङ्क—मुक्ताहार ऊँचा दिखा; ऎरि—जलानेवाले;

कतिर् कटवुळ् तन्नै–किरणमाली को; इनम् मणि–राशियों में रत्न; मकुटम्–जिसमें जड़ित हो उस किरीट के; एय्प्प–समान रहते; करु मुकिऱ्कु–काले मेघ का; अरचु–राजा; चॅन्तामरै मलर्–लाल कमल-पुष्प; काटु पूत्तु–वन में खिल रहते; ओर्–अपूर्व; अरि अणै–सिंहासन पर; पॉलिन्ततु अॅन्न–विराजकर शोभित रहा जैसे; अयोत्ति वेन्तन्–अयोध्याधिपति; इरुन्तनन्–आसीन रहे। ४२८७

विस्तृत सागर-मध्य बिजली कौंधती रहती हो, ऐसा मुक्ताहार चमक रहा था। किरणमाली की समानता कर रहा था उनका रत्नजड़ित मुकुट। काला मेघराज खिले कमल-पुष्पों के वन के साथ सिंहासन पर विराज रहा हो, ऐसा अयोध्याधिपति सिंहासन पर दर्शन दे रहे थे। ४२८७

मरहदच् चयिल मीदु वाणिलाप् पाय्व दॅन्न
इरुकुऴै यिडरुम् वेऱ्क णिळमुलै यिऴैन लार्तम्
करकम लङ्गळ् पूत्त कऱ्ऱैयङ् गवरि तॅऱ्ऱ
उरहरु नररुम् वानत् तुम्बरुम् बरवि येत्त 4288

मरकतम्–मरकत के; चयिलम्–पर्वत; मीतु–पर; वाळ् निला–श्वेत चाँदनी; पाय्वतु अॅन्न–फैलती जैसे; इरुकुऴै–दोनों कुंडलों से; इटरुम्–टकराती; वेल् कण्–भाले-सी आँखों; इळ मुलै–बालस्तन वाली; इऴै नलार् तम्–आभरणभूषिता स्त्रियों के; करम् कमलङ्कळ्–कर-कमलों में; पूत्त–खिले; अम्–सुन्दर; कऱ्ऱै कवरि–चामर; तॅऱ्ऱ–शरीर से धीरे से लगते; उरकरुम्–नागलोकवासी और; नररुम्–नर और; वानत्तु उम्परुम्–आकाश के देव; परवि–प्रशंसा में; एत्त–स्तुति करते (उस स्थिति में)। ४२८८

लोल कुंडलों से टकरानेवाली आँखों की, बालस्तनी आभरणालंकृता नारियों के करकमलों पर चामर डुलते थे और उनकी छवि मरकत शैल पर पड़नेवाली श्वेत चाँदनी के समान श्रीराम पर पड़ रही थी। नागलोक-वासी, भूलोकवासी नर और व्योमवासी देव यशगान राजस्तवन कर रहे थे। ४२८८

उलहमी रेऴुन् दन्न वॊळिनिलाप् परप्प वानिल्
तिलहवा णुदल्वॆण् डिङ्गळ् शिन्दैनॊन् दॊळिविऱ् ऱेयक्
कलहवा णिरुदर् कोनैक् कट्टऴित् तिट्ट कीर्त्ति
इलहिमे तिवन्द दॆन्न वॆळुत्तिक् कुडैनिऴ् ऱेय 4289

तिलकम्–तिलक-सहित; वाळ्–सुन्दर; नुतल्–भाल रूपी; वॆळ्–श्वेत; तिङ्कळ्–चन्द्र; उलकम् ईरेऴुम्–चौदहों लोकों में; तन्न–अपनी; ऒळि–उज्ज्वल; निला–ज्योति; परप्प–फैलाता; वानिल्–आकाश में; वॆण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; चिन्तै नॊन्तु–मन में दुःख कर; ऒळितिल् तेय–आसानी से क्षय होता; कलकम्–कलहप्रिय; वाळ् निरुतर् कोनै–तलवारधारी राक्षसेंद्र रावण को; कट्टु अऴित्तु–

निवन्ततु अँतूत--उन्नत रहा जैसे; अँळु--उठा हुआ; तनि कुटै-अनोखा छत्र; निन्ऱु-रहकर; एय-छाया देता रहा (उस साज में)। ४२८९

श्रीराम का तिलक-सहित भाल रूपी चाँद चौदहों भुवनों में प्रकाश (यश) फैला रहा था। इसलिए आकाश का श्वेत चाँद दुःख से घुलकर अनायास क्षीण हो रहा था। कलहप्रिय, तलवारधारी राक्षसेंद्र को निर्मूल करके श्रीराम ने जो यश अर्जित किया था वह यश तेजोमय हो ऊपर झलक रहा हो —ऐसा श्वेत छत्र छाया दे रहा था। ४२८९

मङ्गल कीदम् बाड मऱैयव राशि कूऱच्
चङ्गितम् कुमुऱप् पाण्डिल् तण्णुमै तुवैप्पत् ताविल्
पोङ्गुपल् लियङ्ग ळार्प्पप् पोरुहयऱ् करुङ्गट् चॆव्वाय्प्
पङ्गय मुहत्ति तार्हळ् मयिनडम् बयिल मादो 4290

मङ्कल कीतम् पाट–मंगलगीत गाये जाते; मऱैयवर्–ब्राह्मण; आचि कूऱ–आशीर्वाद देते; चङ्कु इतम्–शंखराशियाँ; कुमुऱ–गूँजतीं; पाण्टिल्–ताल; तण्णुमै–मृदंग आदि; तुवैप्प–बजते हैं; ता इल्–निर्दोष; पोङ्कु–बजनेवाले; पल् इयङ्कळ्–अनेक बाजे; आर्प्प–शब्द करते; पोरु–परस्पर लड़नेवाली; कयल्—'कयल' सी; करु कण्–काली आँखें; चॆव्वाय्–लाल अधर; पङ्कयम्–कमल-से; मुकत्तितार्कळ्–मुखवालियाँ; मयिल् नटम् पयिल–मोर के समान नाचतीं। ४२९०

मंगलगीत, ब्राह्मणों का आशीर्वाद, शंखध्वनि, ताल, मृदंग आदि की ठनक, विविध वाद्यनाद, इनके मध्य परस्पर स्पर्धालू, 'कयल' (मछली-) सी आँखों तथा लाल अधरों वाली पंकजमुखी रमणियाँ 'मयूर-नाच' दिखा रही थीं। ४२९०

तिरैकडऱ् कदिरु नाणच् चॆळुमणि महुड कोडि
करैतॆरि विलाव शोरिक् कदिरॊळि परप्प नाळुम्
वरैपॊरु माड वायिल् नॆरुक्कुऱ वन्दु मन्नर्
परशिये वणङ्गुन् दोऱुम् बदयुहञ् जेप्प मन्नो 4291

तिरै कटल्–तरंग-सागर में; कतिरुम्–सूर्य को; नाण–लजाने देकर; चॆळुमणि–पुष्ट मणियों-सहित; मकुटम् कोटि–मुकुटपंक्तियाँ; करै तॆरिवु इलात–पार न जाना जाय, इस भाँति; चोरि–जो छिटकाते; कतिर्–उस प्रकाश की; ऒळि–ज्योति; परप्प–फैलती; नाळुम्–दिने-दिने; वरै पॊरुम्–पर्वतोपम; माटम् वायिल्–महल के द्वार पर; नॆरुक्कु उऱ–भीड़ लगाकर; वन्तु–आकर; मन्नर्–राजा लोग; परचि–स्तुति करके; वणङ्कुम् तोऱुम्–जब-जब नमस्कार करते; पतयुकम्–दोनों पद; चेप्प–लाल हो जाते (ऐसा)। ४२९१

लहरोंवाले समुद्र-मध्य उठते सूर्य को भी लजानेवाली रीति से जो प्रकाश छिटक रहे थे, उन मुकुटों की पंक्तियाँ अपार ज्योति की वर्षा-सी

कर रही थीं। हर दिन पर्वतोपम प्रासाद के द्वार पर श्रीराम आते तब भीड़ लगाकर राजा लोग आते और पैरों से सिर लगाकर नमस्कार और स्तवन करते। उससे श्रीराम के चरण लाल हो जाते थे। ४२९१

मन्दिरक् किळवर् शुऱ्ऱ मऱैयवर् वळ्ळ्त्ति येत्तत्
तन्दिरत् यलैवर् पोऱ्ऱत् तम्बियर् मरुङ्गु शूळ्च्
चिन्दुरप् पवळच् चॅव्वायत् तॅरिवैयर् पलाण्ड कूऱ
इन्दिरऱ् कुवमै येय्पप वॅम्बिरा निरुन्द काले 4292

मन्तिरम् किळवर्–मंत्रणा के अधिकारी मंत्री लोग; चुऱ्ऱ–घेर लेते तब; मऱैयवर्–ब्राह्मण; वळ्ळ्त्ति–आशीर्वाद देकर; एत्त–स्तुति करते; तन्तिरम् तलैवर्–सेना-नायक; पोऱ्ऱ–स्तवन करते; तम्पियर्–सहोदर; मरुङ्कु चळ्–पार्श्व में घेरते; चिन्तुरम्–सिंदूर तथा; पवळम् चॅव्वाय्–प्रवालोपम लाल अधरों को; तॅरिवैयर्–स्त्रियाँ; पल् आण्टु कूऱ–जयजीव का गान करतीं; इन्तिरऱ्कु–(इस भाँति) इन्द्र से; उवमै एय्पप–उपमित हों ऐसा; ॲम्पिरान्–हमारे प्रभु; इरुन्त काले–जब रहे तब। ४२९२

मंत्रणाचतुर मंत्री लोग घेरे रहे। ब्राह्मण मंगल-कामना में स्तुति करते व सेनापति लोग स्तवन करते रहे। कनिष्ठ सहोदर चारों ओर रहे। सिंदूर-सम, प्रवालोपम लाल अधरों वाली स्त्रियाँ 'जुग-जुग जियो' का गान करती रहीं। इस भाँति जब हमारे प्रभु देवेंद्र की समानता करते हुए रहते थे तब। ४२९२

मयिन्दन्मा तुमिन्दन् कुम्ब नङ्गदन् ननुमन् माट्रिल्
कयन्दरु कुमुदक् कण्णन् शदवलि कुमुदन् तण्डार्
नयन्दॅरि तदिमु हन्को हशमुहन् मुदल नण्णार्
वियन्दॅळु मऴवत् तेळु कोडियाम् वीर रोडुम् 4293

मयिन्तन्–मैंद; मा तुमिन्तन्–बड़ा द्विविद; कुम्पन्–कुंभ; अङ्कतन्–अंगद; अनुमन्–हनुमान; माट्रिल्–श्रेष्ठ; कयम् तरु–तड़ाग से उत्पन्न; कुमुतक्कण्णन्–कुमुद जैसी आँखों वाला; चतवलि–शतबली; कुमुतन्–कुमुद; तण्टार्–शीतल मालाधारी; नयन्तॅरि ततिमुकन्–नयशील दधिमुख; को कचमुकन्–उत्तम गजमुख; मुतल–आदि; नण्णार्–शत्रु को भी; वियन्तु ॲऴुम्–विस्मित कर युद्ध करनेवाले; अऴपत्तेळु–सड़सठ; कोटियाम्–करोड़ संख्या के; वीररोटुम्–वीरों के साथ। ४२९३

मैंद, द्विविद, कुंभ, अंगद, हनुमान, कुमुदाक्ष, शतबली कुमुद, दधिमुख, गजमुख आदि शत्रुविस्मयकारी योद्धा, सड़सठ करोड़ वीरों और—। ४२९३

एत्तैयर् पिऱरुम् शुऱ्ऱ वॅळ्ळवु वॅळ्ळत् तुऱ्ऱ
वानर रोडम् वॅय्योत् महत्तवन्तु वणङ्गिच् चूळ्न्द

तेत्तिमि रलङ्गर् पॆन्दार् वीडणक् कुरिशिल् शॆय्य
मात्तबा ळरक्क रोडु वन्दडि वणङ्गिच् चऴ्न्दात् 4294

एतैयर् पिऱरुम्–अन्य और लोगों के; चुऱ्ऱ–चारों ओर रहते; ऎऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळत्तु–वॆळ्ळम् में; उऱ्ऱ–रहे; वानररोटुम्–वानरों के साथ; वॆय्योन् मकन्–तापक सूर्य का पुत्र; वन्तु–आकर; वणङ्कि चूऴ–नमस्कार कर पास रहा तो; तेन् इमिर्–भ्रमर-गुंजरित; अलङ्कल्–हिलनेवाली; पचुमै तार्–नवीन मालाधारी; वीटणन् कुरिचिल्–विभीषण साधु; चॆय्य मानम्–श्रेष्ठ मान और; अटि वाळ्–तलवार रखनेवाले; अरक्करोटु–राक्षसों के साथ; वन्तु–आकर; अटि वणङ्कि–पालागन करके; चूऴ्न्तान्–पास रहा। ४२९४

अन्य वीरों के मध्य, सत्तर वॆळ्ळम् की सेना के वानरों को लेकर गरम किरणमाली का पुत्र सुग्रीव आया। फिर भ्रमर-मंडरित तथा हिलने वाली मालाधारी साधु विभीषण मान और तलवार रखनेवाले राक्षस वीरों को लेकर आया और स्थित हुआ। ४२९४

वॆऱ्ऱिवॆञ् जॆन्ने योडुम् वॆऱ्ऱिप्पॊऱ्ऱिप् पुलियिन् वॆव्वाल्
शुऱ्ऱुऱत् तॊडुत्तु वीक्कु मरॆयिन्त् शुऴलुङ् गण्णन्
कऱ्ऱिरळ वयिरत् तिण्डोळ कडुन्दिऱ मडङ्ग लन्नान्
ऎऱ्ऱुनीर्क् कङ्गै नावाय्क् किऱैकुहन् तॊऴुदु शूऴ्न्दान् 4295

वॆऱ्ऱि–आग्रह और; पॊऱ्ऱि–चित्तियों-सहित; वॆम्मै पुलियिन्–वैरी बाघ की; वाल्–पूंछ को; चुऱ्ऱु उऱ–घुमाकर; तॊटुत्तु–लपेटकर; वीक्कुम्–बँधी; अरॆयिनन्–कमर वाला; चुऴलुम् कण्णन्–घूमती आँखों का; कल् तिरळ्–पत्थर-सम कठोर; वयिरम्–वज्र-सम; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कंधों का; कटु तिऱम्–सख्त ताक़त के; मटङ्कल् अन्नान्–सिंह के समान; ऎऱ्ऱुम्–लहराते; नीर्–जल की; कङ्कै–गंगा पर; नावाय्क्कु–नौकाओं का; इऱै–मालिक; कुकन्–(जो था वह) गुह ने; वॆऱ्ऱि–विजयी; वॆम् चेनैयोटुम्–भयंकर सेना के साथ; चूऴ्न्तु तॊऴुतान्–आकर नमस्कार किया। ४२९५

फिर गुह अपनी विजयवाहिनी के साथ आया। उसकी कमर में आग्रह तथा चित्तियों-सहित रहे व्याघ्र की पूँछ लपेटी गयी थी। घूमने वाली (चंचल) आँखें, पत्थर-सम वज्रदृढ़ स्थूल कंधे, कठोर, बली सिंह-सम, लहराते जल की गंगा पर की नौकाओं का स्वामी वह नमस्कार करके पास रहा। ४२९५

वळ्ळलु मवर्हळ् तम्मैल् वरम्बिन्ऱि वळर्न्द कादल्
उळ्ळुऱप् पिणित्त शॆय्है यॊळिमुहक् कमलङ् गाट्टि
अळ्ळुऱत् तऴुवि नान्पोन् ऱुहमहिऴ्न् दिन्दि नोक्कि
ऎळ्ळलि लाद मॊय्म्बी रीण्डिनि दिरुत्ति रॆन्ऱान् 4296

वळ्ळलुम्–वरद प्रभु भी; अवर्कळ् तम्मेल्–उनसे; वरम्पु इन्ऱि–असीम रीति से; वळर्न्त कातल्–बढ़ा रहा प्रेम; उळ् उऱ–अंदर से; पिणित्त–जो बाँधे रहा उस; चॆय्कै–हाल को; ऑळि मुकम्–प्रसन्न मुख के; कमलम् काट्टि–कमल में दिखाकर; अळ् उऱ–कसकर; तळुवितान् पोन्ऱु–आलिंगन किया जैसे; अकम् मकिऴ्न्तु–मन में मोद पाकर; इनितिन् नोक्कि–मधुर दृष्टि से देखकर; ऍळ्ळल् इलात–अनिंद्य; मॊय्म्पीर्–वलवान लोगो; ईण्टु–यहाँ; इनितु–सुख से; इरुत्तीर्–आसीन हो जाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ४२९६

वरद प्रभु के मुख पर असीम प्रेम का आंतरिक भाव झलकता था। उन पर उन्होंने ऐसी मधुर दृष्टि डाली, जिससे लगता था कि उन्हें गाढ़ालिंगन का-सा सुख मिल रहा हो। उन्होंने उन्हें आसन दिखाकर कहा कि सुख से आसीन हो जाओ। ४२९६

नन्नॆऱि यऱिवु शान्ऱोर् नान्मऱैक् किऴवर् मऱ्ऱैच्
चॊन्नॆऱि यऱियु नीरार् तोमऱु पुलमैच् चॆल्वर्
पन्नॆऱि तोऱुन् दोन्ऱुम् बरुणिदर् पण्बिन् केळा
मन्नवर्क् करशन् पाङ्गर् मरबिनाऱ् चुऱ्ऱु मन्नो 4297

नल् नॆऱि–सन्मार्गगामी; अऱिवु–बुद्धिमान; चान्ऱोर्–साधु; नाल् मऱै किऴवर्–चतुर्वेदज्ञ और; चॊल् नॆऱि–भाषण-रीति; अऱियुम्–जानने का; नीरार्–सामर्थ्यशाली; तोम् अऱु–निर्दोष; पुलमै–विद्वत्ता के; चॆल्वर्–धनी; मऱ्ऱै–और; पण्पिन्–श्रेष्ठ गुणों के; केळ् आम्–नातेदार ऐसे; पल् नॆऱि तोऱुम्–विविध शास्त्रों में; तोन्ऱुम्–चतुर रहे; परुणितर्–उत्कृष्ट पंडित; मन्नवर्क्कु–राजाओं के; अरचन्–राजा के; पाङ्कर्–पास; मरपिनाल्–क्रम के अनुसार; चुऱ्ऱ–घेरे रहे। ४२९७

सन्मार्गी बुद्धिमान, चतुर्वेदज्ञ, भाषण की रीति के ज्ञाता, निर्दोष विद्वत्ता के धनी और सुसंस्कृत गुणी और विविध शास्त्रों में विदग्ध पंडित राजाधिराज श्रीराम के पास अपने-अपने स्थान में स्थित रहे। ४२९७

तेम्बडु पडप्पै मूदूर्त् तिरुवोडु मयोत्ति शेर्न्द
पाम्बणै यमलन् तन्नैप् पळिच्चॊडुम् वणक्कम् बेणि
वाम्बुनऱ् परवै ञालत् तरशरु मऱ्ऱु ळोरुम्
एम्बलुऱ् ऱिरुन्दार् नॊय्दि निरुमदि यिरुन्द दन्ऱे 4298

वाम् पुनल्–उछलते (तरंगायमान) जल के; परवै–समुद्रावृत; ञालत्तु अरचरुम्–पृथ्वी के राजा; मऱ्ऱुळोरुम्–और अन्य लोग; तेम् पटु–मधुपूर्ण; पटप्पै–उपवनों से युक्त; मुतुमै ऊर्–प्राचीन नगरी; अयोत्ति–अयोध्या में; तिरुवोटु–श्री के साथ; चेर्न्त–मिले; पाम्पु अणै–शेषशायी; अमलन् तन्नै–अमलदेव को; पळिच्चॊटुम्–स्तुति के साथ; वणक्कम्–नमस्कार; पेणि–करके; एम्पल् उऱ्ऱु–संतोष से भरकर; इरुन्तार्–रहे; नॊय्तिन्–अनायास; इरुमति–दो महीने; [illegible] और रहे। ४२९८

इस भाँति लहरों वाले समुद्र से आवृत धरणी के राजा लोग और अन्य जन मधुपूरित उपवनों से भरी पुरातन नगरी अयोध्या में श्रियःपति शेषशायी श्रीराम की स्तुति तथा सेवा करते हुए आनंद के साथ रहते थे। अनायास दो मास बीत गये। ४२९८

नॆरुक्किय वमर रॆल्ला नॆडुङ्गडऱ् किडैनिऩ् ऱेत्तप्
पॊरुक्कॆऩ वयोत्ति यॆय्दि मऱ्ऱवर् पॊरुमल् तीर
वरुक्कमो डरक्कर् यारु मडिदर वरिविऱ् कॊण्ड
तिरुक्किळर् मार्बि ऩाऩ्पिऱ् चॆय्ददु ॲप्प लुऱ्ऱाम् 4299

नॆट्टु–बड़े; कटऱ्कु–क्षीरसागर के; इटै–मध्य; नॆरुक्किय–सघन इकट्ठे हुए; अमरर् ॲल्लाम्–सारे देवों ने; निऩ्ऱु एत्त–रहकर स्तुति की; पॊरुक्कॆऩ–झट करके; अयोत्ति–अयोध्या; ॲय्ति–आकर; अवर् पॊरुमल्–उनका दुःख; तीर–दूर करने; वरुक्कमोटु–सवर्ग; अरक्कर् यारुम्–सभी राक्षसों को; मटितर–मरने देने; वरिविल् कॊण्ट–सबन्ध कोदंड जिन्होंने लिया; तिरु–उन श्री; किळर्–निवास; मार्पिऩाऩ्–वक्षवाले श्रीराम ने; पिऩ् चॆय्ततु–जो बाद किया; चॆप्पल् उऱ्ऱाम्–वह बताने लगते हैं। ४२९९

देवों ने सघन भीड़ में एकत्रित होकर क्षीरसागर-मध्य रहकर श्रीविष्णु से प्रार्थना की थी। वह सुनकर उन्होंने झट अयोध्या में अवतार लेकर, राक्षसों को निर्मूल करके देवों के दुःखनिवारण करने के संकल्प से सबंध कोदंड हाथ में लिया था। उन श्रीनिवासवक्ष श्रीराम ने आगे जो किया वह अब हम (कवि) कहने लगते हैं। ४२९९

मऱैयवर् तङ्गट् कॆल्ला मणियॊडु मुत्तुम् पॊऩ्ऩुम्
निऱैवळम् पॆरुहु पूवुम् चुरबियु निरैत्तु मेल्मेल्
कुऱैयिदॆऩ् ऱिरन्दोर्क् कॆल्लाङ् गुऱैवऱक् कॊडुत्तुप् पिऩ्ऩर्
अऱैकऴ लरशर् तम्मै वरुहॆऩ वरुळ वन्दार् 4300

मऱैयवर् तङ्कट्कु ॲल्लाम्–सभी ब्राह्मणों को; मणियॊटु–रत्नों के साथ; मुत्तुम्–मोती; पॊऩ्ऩुम्–और सोना; वळम् निऱै–उर्वरतापूर्ण; पॆरुकु पूवुम्–समृद्ध भूमि; चुरपियुम्–और गायें; मेल् मेल् निऱैत्तु–बार-बार पंक्तियों में देकर; कुऱै इतु–यह हमारी माँग है; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इरन्तोर्क्कु ॲल्लाम्–जो याचना करते उन सभी को; कुऱैवु अऱ–मनमाने रूप से; कॊटुत्तु–देकर पिऩ्ऩर्–बाद; अऱै कऴल्–क्वणित पायलधारी; अरचर् तम्मै–राजाओं को; वरुक–आओ; ॲऩ–ऐसा; अरुळ–कृपा की आज्ञा देने पर; वन्तार्–आये। ४३००

उन्होंने सारे ब्राह्मणों को, रत्न, मोती, स्वर्ण, उर्वर वा समृद्ध भूमि, गायें आदि बार-बार पंक्तियों में भरकर दान किया। फिर क्वणित पायलधारी धराधिपतियों को 'आओ' कहकर बुलाया। वे भी आये। ४३००

ऐयन् मवर्हळ् तम्मै यहमहिळ्न् दरुळि नोक्कि
वैयहम् जिविहै तोङ्गल् मामणि महुडम् बोंर्पूण्
कोय्युळैप् पुरवि तिणडेर् कुञ्जर माडै यिन्न
मॅय्युरक् कोडुत्त पिन्नरक् कोडुत्तनन् विडैयु मन्नो 4301

ऐयनुम्-स्वामी भी; अवर्कल् तम्मै-उन्हें; अकम् मकिळ्नतु-प्रसन्नचित्त होकर; अरुळिन् नोक्कि-कृपा-दृष्टि डालकर; वैयकम्-भूमि; चिविकै-शिविका; तोङ्कल्-हार; मामणि मकुटम्-किरीट; पोंन् पूण्-स्वर्णाभरण; कोय् उळै-सँवारे अयालवाले; पुरवि-अश्व; तिण् तेर्-सुदृढ़ रथ; कुञ्चरम्-कुंजर; आटै-वस्त्र; ॲन्न-आदि इन्हें; मॅय् उर-सच्चे स्नेह के साथ; कोटुत्त पिन्नर्-देने के बाद; विटैयुम्-विदा भी; कोटुत्तनन्-दिलायी। ४३०१

प्रभु ने उन्हें सस्नेह देखा और उन्हें भूमि, शिविकाएँ, हार, रत्न-मुकुट, स्वर्णाभरण, सँवारे अयालवाले अश्व, सुदृढ़ रथ, कुंजर, बहुमूल्य वस्त्र आदि इन वस्तुओं को सच्चे प्यार के साथ दान किया। उसके बाद विदा भी दिलायी। ४३०१

शम्बरन् तन्नै वॅन्ऱ तयरद नीन्ऱ कालत्
तुम्बर्तम् वेरुमा नीन्द वोळिमणिक् कडहत् तोडुम्
कोम्बुडै मलैयुन् देरुङ् गुरहदक् कुळुवुन् दूशुम्
अम्बरत् तनन्दर् नीत्ता नलरिका दलनुक् कीन्दान् 4302

अम्परत्तु-सागर में; अनन्तर्-निद्रा; नीत्तान्-(के) त्यागी; चम्परन् तन्नै-शम्बरासुर के; वॅन्ऱ-विजेता; तयरतन्-दशरथ ने; ईन्ऱ-जब जनाया; कालत्तु-उस समय; उम्पर् तम्-देवों के; वेन्तान्-राजा देवेंद्र द्वारा; ईन्त-दत्त; ऑळि मणि-उज्ज्वल रत्नमय; कटकत्तोटुम्-कटक के साथ; कोम्पु उटै-दाँतों वाले; मलैयुम्-पर्वत-सम गजों; तेरुम्-रथों और; कुरकतम् कुळुवुम्-अश्ववृन्द और; तूचुम्-वस्त्र; अलरि-सूर्य के; कातलनुक्कु-पुत्र को; ईन्तान्-दिया। ४३०२

क्षीरसागर-शयन त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन श्रीराम ने दशरथ के पुत्र के रूप में जन्म लेने के समय देवेंद्र ने जो कटक-दाँत वाले गज दिये थे उन पर्वतोपम हाथियों, रथों, अश्ववृन्दों और वस्त्रों को सूर्यसूनु को दान किया। ४३०२

अङ्गद मिलाद कोंऱ्ऱत् तणणलु महिल मॅल्लाम्
अङ्गद नॅन्नु नाम मळहुऱ्ऱ् तिहत्तु मापोल्
अङ्गदङ् गनन्ऱ् ऱोळाऱ् कयन्कोडुत् तवत्त योन्दान्
अङ्गदन् पंरुमै मणमे लारऱिन् दरैय हिऱ्पार् 4303

अङ्कतम्-अपयश; इलात-रहित; कोंऱ्ऱत्तु अणणलुम्-विजय के स्वामी

नामम्–नाम; अऴकु उड़–सुन्दर रीति से; तिरुत्तुमा पोल्–सार्थक करते से; कत्तल्–इक्षु-सम; तोळाऱ्कु–कंधों वाले को; अयऩ्–ब्रह्मा ने; कॊटुत्ततै– जो दिया था उस; अङ्कतम्–अंगद को; ईन्ताऩ्–दिया; अङ्कु अतऩ् पॆरुमै–वहाँ उसका महत्व; मण् मेल्–पृथ्वी पर; अऱिन्तु–जानकर; अऱैय निऱ्पार्–कहने की शक्ति रखनेवाला; आर्–कौन है। ४३०३

अकलंक विजयी श्रीराम ने अंगद को इक्ष्वाकु को ब्रह्मा द्वारा दत्त अंगद को दान किया मानो उससे अंगद का नाम सार्थक बनाकर संसार भर में प्रशस्त करा रहे हों ! उस आभरण की महिमा कह सकनेवाले इस पृथ्वी में कौन मिले ? । ४३०३

पिऩ्तरु मवऩुक् कैयऩ् पॆरुविलै यारत् तोडु
मऩ्ऩुनुण् तूशु मावु मदमलैक् कुऴुवु मीन्दु
उऩ्ऩैनी यऩ्ऱि यिन्द वुलहिऩि लॊप्पि लादाय्
मऩ्ऩुह कदिरोऩ् मैन्दऩ् तऩ्ऩोडु मरुवि यॆऩ्ऱाऩ् 4304

पिऩ्तरुम्–फिर भी; ऐयऩ्–प्रभु ने; अवऩुक्कु–उसे; पॆरुविलै–बड़े मूल्य के; आरत्तोटु–हार के साथ; मऩ्ऩुम्–युक्त; नुण्–महीन; तूचुम्–वस्त्र; मावुम्–अश्व; मत मलै–मत्त पर्वतों (गजों) के; कुऴुवुम्–झुण्डों को; ईन्तु–देकर; इन्त–इस; उलकिऩिल्–भूमि पर; उऩ्ऩै अऩ्ऱि–अपने को छोड़कर; ऒप्पु इलाताय्–अपनी सानी न रखनेवाले; नी–तुम; कतिरोऩ्–किरणमाली के; मैन्तऩ् तऩ्ऩोटु–पुत्र के साथ; मरुवि–मेल करके; मऩ्ऩुक–रहो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४३०४

और भी प्रभु ने उसे बहुमूल्य हार, सुंदर सूक्ष्म कारीगरी से युक्त वस्त्र, अश्व और हाथियों के दल आदि दिये और कहा कि स्वोपम वीर ! तुम अर्कपुत्र के साथ मेल बनाकर रहो। ४३०४

मारुदि तऩ्ऩै यैयऩ् महिऴ्न्दिऩि दरुळि ऩोक्कि
आरुद विडुदऱ् कॊत्तार् नीयला लऩ्ऱु शॆय्द
पेरुद विक्कि याऩ्शॆय् शॆयल्पिऱि दिल्लैप् पैम्बूण्
पोरुद वियतिण् तोळाय् पॊरुन्दुऱप् पुल्लु हॆऩ्ऱाऩ् 4305

ऐयऩ्–प्रभु; मारुति तऩ्ऩै–मारुति को; मकिऴ्न्तु–संतोष और; अरुळि–कृपा करके; इऩितु नोक्कि–मधुर दृष्टि से देखकर; उतविटुतऱ्कु–सहायता देने में तुम्हारी; ऒत्तार्–समानता करनेवाले; नी अलाल्–तुम्हारे सिवा; आर्–कौन हैं; अऩ्ऱु चॆय्त–उस दिन कृत; पेरुतविक्कु–बड़ी सहायता का; याऩ् चॆय्–मैं (प्रतिकार) करूँ; चॆयल्–ऐसा कार्य; पिऱितु इल्लै–दूसरा नहीं; पैम् पूण्–स्वर्णाभरण-भूषित; पोर् उतविय–युद्ध सहायक; तिण् तोळाय्–सुदृढ़ कंधों वाले; पॊरुन्तुऱ–कसकर; पुल्लुक–आलिंगन कर लो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४३०५

प्रभु ने मारुति पर संतोष और कृपा की मधुर ... कहा कि

सहायता करने में तुम्हारी, तुमको छोड़कर बराबरी करनेवाले कोई नहीं ! ऐसे बेजोड़ वीर ! उस दिन तुमने जो उपकार किया उसके प्रतीकार में कुछ करके उऋण हो जाऊँ, ऐसा कोई कार्य नहीं। तुम गाढ़ालिंगन कर लो। ४३०५

ऑत्ऱलुम् वणङ्गि नाणि वाय्पुदैत् तिलङ्गु तानै
मुत्ऱलै यौदुक्कि निन्ऱ मॉय्म्बवनै मुळुदु नोक्किप्
पॉन्ऱिणि वयिरप् पैम्बू णारमुम् बुनैमॆन् ऱूशुम्
वन्ऱिऱऱ् कयमु मावुम् वळङ्गिनन् वयङ्गु शीरान् 4306

वयङ्कु–ज्वलंत; चीरान्–कीर्तिवाले के; अन्ऱलुम्–यों कहते ही; नाणि–शरमाकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाय् पुतैत्तु–मुख को ढँककर; इलङ्कु–विद्यमान; तानै–सेना के; मुन् तलै–हरावल में; ऒतुक्किन् निन्ऱ–हटकर जो खड़ा रहा; मॊय्म्पनै–उस बलवान को; मुळुतुम् नोक्कि–पूर्ण रूप से देखकर; पॊन् तिणि–स्वर्णमयी; वयिरम् पैम् पूण्–हीरा का श्रेष्ठ आभरण; आरम्–हार; पुनै–धार्य; मॆल्–महीन; तूचुम्–वस्त्र और; वल् तिऱल्–सशक्त; कयमुम्–गज और; मावुम्–अश्व; वळङ्किनन्–दिये। ४३०६

श्रीराम के ऐसा कहते ही हनुमान लजाते हुए सिर झुकाकर सेना के अग्रभाग में किसी कोने में दूर खड़ा हो गया। अपने मुख पर उँगलियों को (विनय-मुद्रा में) रखकर खड़े रहे उस पर प्रभु ने पूर्ण रूप से कृपा-दृष्टि डाली और स्वर्ण-रत्न-हीरे के आभरण, हार, धार्य वस्त्र और बलवान हाथी और अश्व दिये। ४३०६

पूमलर्त् तविशै नीत्तुप् पॉन्मदिन् मिदिलै पूत्त
तेमॊळित् तिरुवै यैयन् तिरुवरुण् मुहन्दु नोक्कप्
पामरैक् किळत्ति यीन्द परुमुत्त मालै कैक्कॊण्
डेमुऱक् कॊडुत्ता ळन्ना ळिडरऱिन् दुदवि नाऱ्कै 4307

पू मलर्–छविमय कमल के; तविचै–आसन को; नीत्तु–छोड़कर; पॊन् मतिल्–स्वर्णप्राचीर वाली; मितिलै पूत्त–मिथिला में खिल; तेम् मॊऴि–मधुर वाणी; तिरुवै–श्री (सीता) को (एक मुक्तामाला देकर); ऐयन्–प्रभु ने; तिरुवरुण्–कृपा को; मुकन्तु–लेकर; नोक्क–देखने पर; पा मऱै किळत्ति–वेदभाषित सरस्वती के; ईन्त–दिये गये; परु मुत्तम्–स्थूल मोतियों के; मालै–हार को; कै कॊण्टु–हाथ में लेकर; अन्नाळ्–उन्होंने अपना; इटम्–मौक्ता; उऱ–अऱिन्तु–समझकर; उतवितार्क्कु–जिसने सहायता की उसे; एम्–आनंद; के साथ; कॊटुत्ताळ्–दे दिया। ४३०७

श्रीराम ने कमलवास त्यागकर जो मधुरवाणी भगवती लक्ष्मी स्वर्ण-प्राचीरों वाली मिथिलावासिनी हो गयी थीं, उनके हाथ में एक मुक्तामाला दी और एक सार्थक दृष्टि डाली। वह मुक्तामाला वेदभाषित सरस्वती

से दी गयी थी। सीताजी ने उस ऐन मौक़े पर जिसने उनकी सहायता की थी, उस हनुमान के हाथ में दे दिया। ४३०७

चन्दिरऱ् कुवमै शात्ऱ तारहैक् कुऴवै वॅन्ऱ
इन्दिरऱ् केयन्द वाहु मॅन्ऩुमुत् तारत् तोडु
कन्दडु कळिऱु वाशि तूशणि कलन्गळ् मऱ्ऱुम्
उन्दिऩ ऍण्गिऩ् वेन्दऱ् कुलहमुन् दुदवि ऩाऩे 4308

तारकै–नक्षत्रों के; कुऴुवै–समूहों को; वॅऩ्ऱ–जिसने हराया था; चन्तिरऱ्कु–चन्द्र को; उवमै–उपमा; चात्ऱ–जो बन सके; इन्तिरऱ्कु–इन्द्र को; एय्न्तु आकुम्–जो योग्य हो सके; ॲन्नुम्–ऐसे; मुत्तु आरत्तोटु–मुक्ताहार के साथ; कन्तु–खूँटा; अटु–तोड़नेवाले; कळिऱु–हाथी; वाचि–अश्व; तूचु–वस्त्र; अणिकलन्कळ्–आभरण; मऱ्ऱुम्–और अन्य चीज़ों को; ऍण्किऩ्–रीछों के; वेन्तऱ्कु–राजा को; उलकमुम्–प्रपंच को; उतवितान्–जिन्होंने रचा था, उन श्रीराम ने; उन्तिनन्–दिया। ४३०८

फिर त्रिलोकपिता श्रीराम ने रीछों के राजा जाम्बवान को निम्नलिखित उपहार दिये— नक्षत्रप्रकाशहारी, इंद्रयोग्य मुक्तामाला, खूँटे तोड़ सकनेवाले गज, वाजी, वस्त्र, आभरण और अन्य उपहार। ४३०८

नवमणिक् काऴु मुत्तु मालैयु नलङ्गॊळ् तूशुम्
उवमैयऱ् ऱिलाद पॊऩ्पू णुलप्पिल पिऱवु मॊण्डार्क्
कवनवॆम् बरियुम् वेहक् कदमलैक् करशुङ् गादल्
पवनऩुक् किऩिय नण्बऩ् पयन्दॆडुत् तवनुक् कीन्दाऩ् 4309

नवमणि–नव रत्नों से; काळम्–निर्मित; मुत्तु मालैयुम्–मोती-माला; नलम् कॊळ्–मनोहर; तूचुम्–वस्त्र; मऱ्ऱु–और; उवमै–उपमा; इलात–जिसकी न हो; पॊन् पूण्–ऐसे स्वर्णाभरण; उलप्पु इल–अक्षय; पिऱवुम्–अन्य उपहार; ऒळ्–उज्ज्वल; तार्–हार से अलंकृत; कवनम्–तेज़ चलनेवाले; वॆम् परियुम्–क्रूर अश्व; वेकम्–तेज; कतम् मलैक्कु–क्रोधी गजों के; अरचुम्–राजा को; पवनन्–पवन के; इनिय नण्पन्–प्यारे सखा (अग्नि) के; पयन्तु–जाये; ॲटुत्तवनुक्कु–पुत्र को; कातल्–प्यारे नील को; ईन्तान्–दिया। ४३०९

फिर उन्होंने नवरत्नयुक्त मुक्तामाला, सुन्दर वस्त्र, अनुपम स्वर्णाभरण अक्षय अन्य उपहार, उज्ज्वल हारालंकृत तीव्रगामी भयंकर घोड़े, क्रोधी गजराज आदि उपहार, पवन-सखा अग्नि के पुत्र प्यारे (नील) को दिये। ४३०९

पवळ्लिच् चवङ्गैप् पैन्दारप् पाय्परि पणैत्तिण् कोट्टु
मवळ्लिच् चैलम् बॊऱ्पूण् मामणिक् कोवै मऱ्ऱुम्

उदवलिऱ् रहैव वन्ऱि यिल्लन वुळ्ळ वॅल्लाम्
शदवलि तन्नक्कुत् तन्दान् शदुमुहत् तवनैत् तन्दात् 4310

चतु मुकत्तवत्तै–चतुर्मुख के; तन्तान्–जनक (श्रीराम) ने; पतम्–चरणों में; वलि–वल्लरी-सम; चतङ्कै–घुंघुरुओं-सहित; पं तार्–स्वर्णहार से अलंकृत; पाय् परि–फाँद चलनेवाले अश्व; पणै–स्थूल; तिण्–सुदृढ़; कोटु–दाँतों वाले; मतम् वलि–मत्त वली; चैलम्–शैल-सम हाथियों को; पोन् पूण्–स्वर्ण-आभरण; मामणि–श्रेष्ठ रत्नों के; कोवै–हारों को और; मर्रुम्–और; उतवलिल्–देने में; तकैव–देने के; अन्ऱि–सिवा; इल्लन–नहीं है ऐसे; उळ्ळ–जो रहे; ऍल्लाम्–उन सारे पदार्थों को; चतवलि तनक्कु–शतबली को; तन्तान्–दिया। ४३१०

चतुर्मुखजनक श्रीराम ने वल्ली-सम घुंघुरुओं से युक्त स्वर्ण-हार से विभूषित और फाँद चलनेवाले घोड़े, स्थूल सुदृढ़ दाँतों वाले हाथी, स्वर्णाभरण, रत्नहार और ऐसे अन्य उपहार, जिनके संबन्ध में यह नहीं कहा जा सकता कि ये देने योग्य नहीं, वे सारे (उपहार) शतबली को दिये। ४३१०

पेशरि दॉरुवर्क् केयुम् बॅरुविलै यिदनुक् कोदुक्
कोशरि मिलवॅन् ऱॅण्णु मॉळिमणिप् पूणुन् दूशुम्
मूशरिक् कुवमै मुम्मै मुम्मदक् कळिरु मावुम्
केशरि तन्नक्कुत् तन्दान् किळर्मणि मुळवुत् तोळान् 4311

किळर्–भासमान; मणि–रत्नाभरणधारी; मुळवु तोळान्–'मर्दल'-सम कंधों वाले; इततुक्कु–इसके लिए; एयुम्–जो योग्य होगा; पॅरु–वह बड़ा; विलै–मूल्य; ऑरुवर्क्केयुम्–किसी के लिए भी; पेचरितु–कहना कठिन है; ईतुक्को–इसका; चरि इलतु–बराबरी का नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्णुम्–मान्य; ऑळि मणि–उज्ज्वल रत्नों के; पूणुम्–आभरण; तूचुम्–वस्त्र; मूचु–फैलती; अरि–वडबा के; मुम्मै–तिगुने (मान्य); मुम्मतम्–त्रिमद वाले; कळिरुम्–हाथियों को; मावुम्–और अश्वों को; केचरि तनक्कु–केसरी को; तन्तान्–दिया। ४३११

जाज्वल्यमान नवरत्नाभरणों से भूषित भुजावाले श्रीराम ने केसरी को ऐसे ज्वलंत रत्नाभरण दिये, जिनके योग्य बड़े मोल किसी से भी निर्धारित नहीं हो सकते थे और जिनके समान कोई दूसरी वस्तु नहीं थी। और वडबा के तिगुने बलवान तथा सर्वंतग घोड़े और हाथी दिये। ४३११

वळत्तणि कलतुन् दूशु मामदक् कळिरु मावुम्
नळनोडु कुमुदन् तार नवॅयरु पनशन् मर्रोर्
उळमहिळ् वॅय्दुम् वण्ण मुलप्पिल पिरवु मीन्वान्
कळत्तमर् कमल वेलिक् कोशलक् काव लोन् 4312

कळत्–धान पीटने के मैदान; अमर्–युक्त; कमलम् वेलि–कमल के बाड़ों से पूर्ण; कोचलम् कावलोन्–कोसल के अधिपति ने; वळन्–समृद्ध; अणिकलनुम्–… मा मदम्–अधिक मद से युक्त; कळिरुम्–हाथी;

मावुम्–और अश्व; उलप्पु इल–अक्षय; पिऱवुम्–अन्य, सबको; नळनोटु–नल और; कुमुतन् तारन्–कुमुद, तार और; नवै अऱु–निर्दोष; पनचन्–पनस और; मऱ्ऱोर्–अन्यों को; उळम्–मन; मकिऴ्वु–खुश; ॲय्तुम्–हो जाय; वण्णम्–ऐसा; ईन्तान्–दे दिया। ४३१२

धान पीटने के मैदान, कमलवन आदि से भरे कोसल देश के अधिपति श्रीराम ने बहुमूल्य आभूषण, वस्त्र, बहुमदमत्त हाथी, अश्व और अक्षय अनेक उपहार नल, कुमुद, तार, निर्दोष पनस आदि को देकर उनके मन को खूब तृप्त कर दिया। ४३१२

अव्वहै अऱुपत् तेऴु कोडिया मरियित् वेन्दर्क्
कॅव्वहैत् तिऱनुम् नल्हि यिनियन पिऱवुङ् गूऱिप्
पव्वमोत् तुलहिऱ् पल्हु मॅऴुपदु वॅळ्ळम् बार्मेल्
कव्वैयऱ् ऱिनिदु वाऴक् कोडुत्तनन् कडैक्क णोक्कम् 4313

अव्वकै–उस भाँति; अऱुपत्तु एऴु–सड़सठ; कोटियाम्–करोड़ जो थे; अरियित्–उन वानरों के; वेन्तर्क्कु–नायकों को; ॲव्वकै–विविध; तिऱत्तम्–उपहार-पदार्थों को; नल्कि–देकर; इतियन–मधुर वचन; पिऱवुम्–अनेक; कूऱि–कहकर; पव्वम्–समुद्र; ऒत्तु–के समान; उलकिल्–संसार में; पल्कुम्–भरे-से रहनेवाले; ॲऴुपतु–सत्तर; वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्' वानर-सेना को; पार् मेल्–भूमि में; कव्वै–दुःख से; अऱ्ऱु–रहित; इतितु वाऴ–सुख से रहें, तदर्थ; कटै कण्–आँखों के कोर से; नोक्कम्–कृपा की दृष्टि; कॊटुत्ततन्–डाली। ४३१३

इस भाँति सड़सठ हज़ार करोड़ वानर-यूथपों को भाँति-भाँति के उपहार देकर मधुर वचनों से खुश किया। फिर समुद्र-सम संसार में फैले रहनेवाले सत्तर वॅळ्ळम् वानरों पर कृपाकटाक्ष फेरी कि वे इस भूमि में विना किसी बाधा के, सुख से, रहें। ४३१३

मिन्नैयेर् मवुलिच् चॅङ्गण् वीडणप् पुलवर् कोमान्
ऱन्नैये यिनिदु नोक्किच् चराशरज् जूऴ्न्द शाल्बिन्
निन्नैये यॊप्पार् निन्नै यलदिल रुळरे लैय
पॊन्नैये यिरुम्बु नेरु मायिनुम् बॊरुवन् ऱॅन्ऱान् 4314

मिन्नै एर्–विद्युत्-संकाश; मवुलि चॅ कण्–लाल मुकुटधारी व लाल आँखों वाले; वीडणन्–विभीषण; पुलवन्–ज्ञानियों में; कोमान् तन्नैये–राजा को; इतितु नोक्कि–मधुरभाव से देखकर; चराचरम्–चराचर को; चूऴ्न्त–आवृत; चाल्पिल्–इस सृष्टि में; निन्नै–तुम्हारी; ऒप्पार्–बराबरी करनेवाला; निन्नै–तुम्हें; अलतु–छोड़कर; इलर्–है कोई; उळरेल्–तो; ऐय–तात; पॊन्नैये–स्वर्ण को; इरुम्पु–लोहा; नेरुम्–समता करेगा; आयिनुम्–तो भी; पॊरुव अऱु–समान नहीं; ॲन्ऱान्–बोले। ४३१४

कहा । चराचरसंकुल इस सृष्टि में तुम्हारे समान तुमको छोड़कर कोई नहीं होगा । होगा तो भी स्वर्ण की समता करने का व्यर्थ प्रयास करनेवाले लोहे के समान होगा । तुम्हारी पूर्ण रूप से बराबरी करनेवाला कोई होगा ही नहीं । ४३१४

ऍन्ऱुरैत् तमर रीन्द वॅरिमणिक् कडहत् तोडु
वन्ऱिऱर् कळिऱुन् देरुम् वाशियु मणिप्पॊऱ् पूणुम्
पॊन्ऱिणि तूशुम् बाशक् कलवैयुम् बुदुमॆन् शान्दुम्
नन्ऱुर् ववनुक् कीन्दान् नाहणंत् तुयिलैत् तीर्न्दान् 4315

नाकु अणै–शेषशयन; तुयिलै–निद्रा; तीर्न्तान्–जिन्होंने छोड़ा, उन्होंने; ऍन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; अमरर् ईन्त–देवों द्वारा दत्त; ऍरि–ज्वलन्त; मणि कटकत्तोटु–रत्नकटक और; वल् तिऱल्–बहुत ही बलवान; कळिऱुम्–गज और; तेरुम्–रथ; वाचियुम्–अश्व; मणि पॊन्–रत्न, स्वर्ण; पूणुम्–आभरण; पॊन् तिणि–स्वर्ण-खचित; तूचुम्–वस्त्र; वाचम्–सुवासित; कलवैयुम्–लेप; पुतु–नवीन; मल्–मृदु; चान्तुम्–चंदन; नन्ऱु–श्रेष्ठ; उऱवु–रिश्ते के; अवनुक्कु–उसे; ईन्तान्–दिया । ४३१५

ऐसा कहकर शेषशयन-निद्रा त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन्होंने देवों द्वारा दिया गया रत्नकटक और कठोर बलवान हाथी, रथ, वाजी, रत्नखचित आभरण, स्वर्ण-वस्त्र, सुवासित लेप, नवीन मृदु चंदन आदि श्रेष्ठ भाई के रिश्ते के उसे दिये । ४३१५

शिरुङ्गपे रियदॆन् ऱोदुञ् जॆळुनहर्क् किऱैये नोक्कि
मरुङ्गिनि युरैप्प दॆन्नो मऱुवऱु तुणैवर् कॆन्ऱाक्
करुङ्गैमाक् कळिऱु मावुङ् गनहमुन् दूशुम् बूणुम्
ऒरुङ्गुऱ वुदविप् पिन्ऩ रुदवितन् विडैयु मन्ऩो 4316

मरुङ्कु–पास में रहे; चिरुङ्क पेरियतु–श्रृंगवेरपुर; ऍन्ऱु–ऐसा; ओतुम्–कहा जो जाता है; चॆळु नकर्क्कु–उस समृद्ध नगर के; इऱैयै नोक्कि–राजा को देखकर; मऱु अऱु–अनिंद्य; तुणैवर्कु–साथी तुम्हें; इनि–अब; उरैप्पतु–कहने के लिए; ऍन्नो–क्या है; ऍन्ऱा–कहकर; करु–बड़े; कै मा–सूंड़ों वाले; करु–सबल; कळिऱुम्–हाथी और; मावुम्–अश्व; कनकमुम्–कनक और; तूचुम्–वस्त्र; पूणुम्–आभरण; ऒरुङ्कु–एक साथ; उऱ–मिलाकर; उतवि–देकर; पिन्ऩर्–बाद; विटैयुम्–विदा भी; उतवितन्–दिलायी । ४३१६

समृद्ध श्रृंगवेरपुर के अधिपति गुह से श्रीराम ने कहा कि अकलंक सखा, तुमसे क्या कहूँ ? फिर उसे बड़े-बड़े हाथी, अश्व, स्वर्ण, कौशेय-वस्त्र, आभरण आदि एक साथ खूब दिये और विदा भी दिलायी । ४३१६

अनुमनै वालि शेयैच् चाम्बनै यरुक्कन् ऱन्द
कनैहळऱ् कालि ऱानैक् करुणैयङ् गडलु नोक्कि

निनैवदरु करिदु नुम्मैप् पिरिहॆन्ऱ नीविर् वैप्पुम्
ॲनदडु कावर् कॆन्ऱ नेवलि नेहु मॆन्ऱान् 4317

अनुमनै–हनुमान को; वालि चेयै–वालीपुत्र को; चाम्पनै–जाम्बवान को; अरुक्कन् तन्त–सूर्य-जनित; कनै कळल्–स्वरित पायलधारी; कालिनानै–चरणों वाले सुग्रीव को; करुणै–दया के; अम्–सुन्दर; कटलुम्–सागर ने भी; नोक्कि–देखकर; नुम्मै–तुमसे; पिरिक–विदा हों; ऍन्ऱल्–ऐसा कहना; निनैवतऱ्कु–सोचना भी; अरितु–संकट देता है; नीविर्–तुम लोगों का; वैप्पुम्–स्थान भी; कावऱ्कु–पालना; ऍनतु–मेरा ही; अतु–काम है; ऍन्ऱन्–मेरी; एवलिन्–आज्ञा से; एकुम्–चलो; ऍन्ऱान्–कहा श्रीराम ने। ४३१७

फिर करुणासागर श्रीराम ने हनुमान, वालीसुत, जाम्बवान, अर्कपुत्र वीरकटकचरण सुग्रीव आदि की ओर देखकर कहा कि तुमसे 'विदा लो' कहना सोचने के लिए भी कठिन लगता है। पर तुम्हारे देश भी मेरे पालनार्ह हैं ! इसलिए मेरी आज्ञा मानकर तुम लोग अपने-अपने स्थान चले जाओ। ४३१७

इलङ्गैवेन् दऱ्कु मिव्वा ऱिनियन यावुङ् गूऱि
अलङ्गल्वेन् मदुहै यण्णल् विडैहॊडुत् तरुळ लोडुम्
नलङ्गॊळ्पे रुणर्विन् मिक्कोर् नामुऱु नॆञ्जर् पिन्नर्क्
कलङ्गल रेवल् शॆय्दल् कडनॆनक् करुदिच् चूळ्न्दार् 4318

इलङ्कै वेन्तऱ्कुम्–लंकेश से भी; इव्वाऱु–इस भाँति; इनियन–मधुर; यावुम्–वचन सब; कूऱि–कहकर; अलङ्कल्–विजयमाला के; वेल्–मालाधारी; मतुकै–महानुभाव; अण्णल्–प्रभु के; विटै कॊटुत्तु–विदा देकर; अरुळलोटुम्–कृपा कहने पर; नलम् कॊळ्–श्रेष्ठ; पेर् उणर्विन्–बड़ी बुद्धि में; मिक्कोर्–बढ़े सुग्रीव, गुह, विभीषण आदि; नाम् उऱु–भयमिलित; नॆञ्चर्–मनवाले; पिन्नर्–बाद; कलङ्कलर्–अधीरता छोड़कर; एवल् चॆय्तल्–आज्ञा-पालन करना; कटन्–कर्तव्य है; ऍन–ऐसा; करुति–सोचकर; चूळ्न्तार्–निर्धारण किया। ४३१८

मालाभूषित मालाधारी वीर तथा महान श्रीराम ने विभीषण से भी ऐसे मधुर विदाई के वचन कहे। श्रेष्ठ ज्ञानी वे लोग विदाई से घबड़ाये पर धीरे-धीरे धीर हुए और निश्चय किया कि आज्ञा मानना हमारा कर्तव्य है। ४३१८

परदनै यिळैय कोवैच् चत्तुरुक् किननैप् पण्बार्
विरदमा दवनैत् तायर् मूवरै मिदिलैप् पॊन्नै
वरदनै वलङ्गॊण् डेत्ति वणङ्गिनर् विडैयुङ् गॊण्डे
शरदमा नॆऱियुम् वल्लोर् तत्तम पदियैच् चार्न्दार् 4319

चरतम्–शाश्वत; मा नॆऱियुम्–श्रेष्ठ धर्ममार्ग में; वल्लोर्–सदृढ उन्होंने;

परतत्तै–भरत को; इळैय कोवै–लघुराज को; चत्तुरुक्किनत्तै–शत्रुघ्न को; पण्पु आर्–गुणपूर्ण; विरतम्–व्रती; मातवत्तै–महातपस्वी को; मूवर् तायरै–तीनों जननियों को; मितिलैप् पोत्तै–मिथिला की देवी; वरतत्तै–वरद श्रीराम को; वलम् कोण्टु–परिक्रमा कर; एत्ति–स्तुति करके; वणङ्कितर्–नमस्कार किया; विटैयुम्–विदा भी; कोण्टु–लेकर; तम् तम्–अपने-अपने; पतियै–स्थान को; चार्न्तार्–प्रस्थान कर गये। ४३१९

शाश्वत सन्मार्गगामी वे लोग भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, गुणपूर्ण व्रती तथा महातपस्वी वसिष्ठ, तीनों राजमाताएँ; मिथिला की देवी और वरद श्रीराम की परिक्रमा, वंदना और विनती करके विदा लेकर अपने-अपने स्थान को प्रस्थान कर गये। ४३१९

कुहनैत्तन् पदियि नुय्त्तुक् कुन्ऱिनै वलञ्जॅय् तेरोन्
महनैत्तन् पुरत्तिल् विट्टु वाळॅयिऱ् ऱरक्कर् शूळ्क्
कहनत्तिन् मिशैये येहिक् कनैहड लिलङ्गै पुक्कान्
अहनुऱ्ऱ काद लण्ण ललङ्गल् वीडणन्शॅन् ऱन्ऱे 4320

अकन् उऱ्ऱ–मन में स्थिर; कातल् अण्णल्–प्रेम रखनेवाले; अलङ्कल्–विजयमालाधारी; वीटणन्–विभीषण; कुकनै–गुह को; तन् पतियिन्–उसके स्थान में; उय्त्तु–छोड़कर; कुन्ऱिनै–मेरु की; वलम् चॅय्तेरोन्–परिक्रमा करनेवाले सूर्य के; मकनै–पुत्र को; तन्–उसके; पुरत्तिल्–नगर में; विट्टु–छोड़कर; वाळ् ऍयिऱ्–तलवार-सम दाँतों के; अरक्कर् चूळ्–राक्षसों से आवृत; ककनत्तिन्–आकाश; मिचैये–मार्ग में ऊपर; एकि–जाकर; कनै कटल्–गरजते सागर-मध्य; इलङ्कै–लंका में; अन्ऱे–उसी दिन; चॅन्ऱु–जा पहुँचा। ४३२०

आंतरिक प्रीति में बढ़ा तथा महिमावान और विजयमालाविभूषित विभीषण गुह को उसके स्थान में और मेरु की परिक्रमा करनेवाले सूर्य के पुत्र सुग्रीव को उसके स्थान में छोड़ देकर गगनमार्ग से गया और गर्जनशील सागर से आवृत लंका पहुँचा। ४३२०

ऐयनु मवरै नीक्कि यरुळ्शॅरि तुणैव रोडुम्
वैयह मुळ्दुञ् जॅङ्गोन् मनुनॅरि मुऱैयिऱ् चॅल्लच्
चॅय्यमा महळु मऱ्ऱच् चॅहतल महळुञ् जऱ्ऱुम्
नैयुमा ऱिन्ऱिक् कात्ता नानिलप् पोऱैहळ् तीरत्ते 4321

ऐयनुम्–प्रभु ने भी; अवरै नीक्कि–उन्हें आज्ञा देकर; अरुळ् चॅरि–अपनी कृपा के पूर्ण पात्र; तुणैवरोटुम्–साथी, भाइयों के साथ; वैयकम्–संसार; मुळुवतुम्–भर में; चॅङ्कोल्–उत्तम राजदण्ड; मनुनॅरि–मनुधर्म के अनुसार; मुऱैयिल्–उचित क्रम में; चॅल्ल–चलाते हुए; चॅय्य–सौभाग्यदायिनी; मा मकळुम्–भगवती लक्ष्मी; मऱ्ऱु–और; अ–वे; चॅकतलम् मा मकळुम्–जगतल की ईश्वरी

भूदेवी; नॅयुम् आक-कष्ट के हेतु; इन्ऱि-विना ही; पॉऱैकळ्-भार का; तीर्त्तु-निवारण करके; कात्तान्-पालन किया। ४३२१

प्रभु श्रीराम उन्हें विदा देकर अपने पूर्ण प्रेम के पात्र भाई साथियों के साथ भू भर में राजदंड मनुनीति के अनुसार चलाने लगे। उनके शासन में न सौभाग्यदायिनी लक्ष्मी को कोई शिकायत रही; न जगतीतल की ईश्वरी भूमिदेवी को कुछ दुःख करने का संदर्भ आया। भूभार-निवारण करते हुए उन्होंने राज्य किया। ४३२१

उम्बरो डिम्बर् काऱु मुलहमो रेऴु मेऴुम्
ऎम्बॆरु मातॆन् ऱेत्ति यिऱैञ्जिनिन् ऱेवल् शॆय्यत्
तम्बिय रोडुन् दानुन् दरुममुन् दरणि कात्तान्
अम्बरत् तनन्दर् नीङ्गि ययोत्तियिल् वन्द वळ्ळल् 4322

अम् परत्तु—अंबर (क्षीरसागर) में; अनन्तर्-निद्रा; नीङ्कि-त्यागकर; अयोत्तियिल्-अयोध्या में जो; वन्त-आये थे; वळ्ळल्-उन उदार प्रभु ने; उम्परोटु-ऊपर के लोक से; इम्पर्-इस लोक; काऱुम्—तक; उलकम्—लोक; ओर् एऴुम् एऴुम्-सात और सात चौदहों भुवनों के; ऎम् पॆरुमान्-हमारे प्रभु; ऎन्ऱु एत्ति-कहकर स्तुति कर; इऱैञ्चि निन्ऱु-विनत रहकर; एवल् चॆय्य-सेवा करते; तम्पियरोटुम् तानुम्-भाई के साथ, खुद और; तरुममुम्-धर्म के साथ; तरणि-भूमि का; कात्तान्-पालन किया। ४३२२

अंबर के क्षीरसागर में अपना शयन और अपनी निद्रा त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन उदार श्रीमान् श्रीराम ने ऊपर से नीचे तक के चौदहों भुवनों का अपने भाइयों के साथ रहकर पालन किया। धरणी के साथ धर्म का भी पालन हुआ। और सारे लोकवासी हमारे प्रभु कहकर उनकी वंदना करते, स्तुति करते और उनकी सेवा करते रहे। ४३२२

फलश्रुति

इरावणन् तन्नै वीट्टि यिरामनाय् वन्दु तोन्ऱि
तरादल मुऴुदुङ् गात्तुत् तम्बियुन् दानु माहप्
पराबर माहि निन्ऱ पण्बिनैप् पहरु वार्हळ्
नरापदि याहिप् पिन्नु नमनैयुम् वॆल्लु वारे 4323

परावरम्-परात्पर पदार्थ; इरामनाय्-श्रीराम के रूप में; वन्तु-अवतार ले आकर; तोन्ऱि—प्रकट रहकर; इरावणन् तन्नै-रावण को; वीट्टि-मारकर; तम्पियुम् तानुम् आक-भाई और खुद; तरातलम्-धरातल; मुऴुतुम्-सारा; कात्तु-पालन करके; आकि निन्ऱ-इस भाँति जो रहे; पण्पिनै-उस चरित्र को; पकरुवार्कळ्-कहनेवाले; नरापति-नराधिपति; आकि-बनकर; पिन्नुम्-फिर; नमनैयुम्-यम को भी; वॆल्लुवारे-जीत लेंगे। ४३२३

परात्पर पदार्थ वह आदिपुरुष श्रीराम के रूप में प्रगट हुआ। उन्होंने रावण का संहार करके भाई और खुद मिलकर धरातल सारा रक्षित किया। ऐसा जो रहे उनके गुणगण-वर्णन करते उनके चरित्रगान करनेवाले लोग नराधिपति बनेंगे और फिर यम पर भी विजय पा जायँगे। ४३२३

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) समाप्त ।। कम्ब रामायण संपूर्ण ।।

।। जय श्रीरामचरणों की ।।